गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर
GAJENDRA THAKUR

विदेह प्रकाशन

गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖ गजेन्द्र ठाकुर समग्र ❖

प्रबन्ध • निबन्ध • समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

गजेन्द्र ठाकुर

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X · www.videha.co.in

प्रकाशनाधिकार

© Gajendra Thakur & Preeti Thakur**, 2009, 2026**

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

www.videha.co.in

अनुक्रमणिका

प्रथम खण्ड — सिद्धान्त....9
भाग क — सैद्धान्तिक प्रबन्ध....9
समीक्षा-पद्धति आ सैद्धान्तिक आधार....9
१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना....10
२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता....18
३. नव्य-न्यायक दृष्टि: प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य....21
विधागत समीक्षाशास्त्र....21
४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र....22
५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र....25
६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र....29
७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र....31
८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र....36
काव्य, छन्द, नाटक आ रंगमंच....37
९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र....38
१०. नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र....83
११. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका....90
१२. दोहा/रोला/कुण्डलिया....93
१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र....98
१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच....126
१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार: पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति....136
१६. कुणालक नाट्य-शिल्प: लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता....137
१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन....138
१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य: रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति....143
१९. वैचारिक धरातल: समानांतर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच....144
समाज, अस्मिता आ सांस्कृतिक समीक्षा....144
२०. मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"]....145
२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र- २....195
२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र....219
भाषा-विज्ञान, व्याकरण, लिपि आ शब्दावली....224
२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान....225
२४. तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास....251
२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)....320
२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान....325
२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली....340
भाग ख — निबन्ध....370
साहित्य, भाषा आ सांस्कृतिक निबन्ध....370
२८. रचना लिखबासँ पहिने....371
२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी....414
३०. साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/नृत्य/नाटक....415
३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली....417
३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान....421
३३. अभिनय पाठशाला....448
३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ....453
३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव....455
३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष....459
३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली....463

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव....468
३९. शब्द-विचार: सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली....471
४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे)....478
४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि....480
४२. वजन प्रबन्धन: एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव....503
४३. एनी एर्नौं आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार....505
४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श....507
४५. प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श....510
४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श....513
४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि....520
संस्था, पुरस्कार आ साहित्यिक सार्वजनिकता....528
४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था: एकटा विमर्श....529
४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन....531
५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्त्तसमागमक पुनर्पाठ....537
५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श....540
५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३–२०२८) प्रसंग....561
५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक: संस्था, आन्दोलन आ आलोचना....564
भाषा-प्रौद्योगिकी आ आधुनिक संचार....564
५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन....565
५५. अन्तर्जाल आ मैथिली....570
५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार....573
द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त अध्ययन....580
भाग ग — अनुप्रयुक्त समालोचना....580
लोक-साहित्य, इतिहास आ संस्कृति....580
१. मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे....581
२. मिथिलाक बाढ़ि....599
३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति....603
४. मिथिलाक खोज....607
५. दूषण पंजी....612
६. मिथिला आ संस्कृत....614
७. मिथिलासँ पलायन....617
८. मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ....619
९. "कुसमा-सलहेस": लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि....654
१०. 'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि....659
११. 'हिआओल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि....684
कथा, उपन्यास आ बाल-साहित्य....702
१२. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास "चमेली रानी" आ "माहुर"....703
१३. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा....707
१४. राजदेव मण्डलक अम्बरा....717
१५. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह "प्रतीक"....719
१६. सुजीतक "जिद्दी"....722
१७. रमेश नारायणक "पाथरक नाव" आ विनोद बिहारी वर्माक "बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)"....724
१८. मैथिलीक किछु नव पोथी....726
१९. सगर राति दीप जरय कथाक कथा....729
२०. डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'....731
२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र....786
२२. तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] — भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे811

२३. जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन"....824
२४. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि....825
२५. सझिया रोपनि (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सझिया संग्रहक समीक्षा....841
२६. जगदानन्द झा ‘मनु’ क ‘माटिक बासन’ आ आलोचनात्मक टिप्पणी....844
२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला: कृतित्वक परिचय....847
२८. पं. बाल गोविन्द’ आर्य’....861
२९. संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक ‘कथा-समय’ क आलोचना....862
३०. उमेश पासवानक ‘मुजरिम’: कथा-संग्रहक आलोचनात्मक पाठ....869
३१. ‘दीयरि’: रा. ना. सुधाकरक कथा-संग्रहक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन....874
३२. परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा....886
३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक: कथा, व्यक्तित्व आ कृतित्व....920
३४. केदारनाथ चौधरी: हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ....930
३५. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग: युवा आ बाल पुरस्कार २०२२....934
कविता, गीत, छन्द आ काव्य-पाठ....935
३६. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)....936
३७. विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर....953
३८. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण....959
३९. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’ क गीत आ झारू — “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै”....975
४०. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह “रथक चक्का उलटि चलै बाट”....980
४१. उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह....984
४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह “वर्णित रस”....989
४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस....992
४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन....998
४५. विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली....1002
४६. ‘बज्जिका गीत-संगीत’: समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा....1005
४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग....1038
४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता....1042
४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः....1044
५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा)....1053
५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी....1055
५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक....1057
५३. बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन....1073
नाटक आ रंगमंच....1076
५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश....1077
५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”....1082
५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल....1092
५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ....1094
५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”....1098
५९. नाट्य-नवग्रह....1103
६०. मुन्नी कामतक’ जिन्दगीक मोल’ आ’ चुक्का’....1116
६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण....1128
६२. “चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा”: बहु-दृष्टि नाट्य-समीक्षा....1135
६३. “बिदापत”: लोकनाट्य, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच....1141
६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव....1147
६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता....1153

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल....1154
लेखक, विशेषांक, संस्था आ सामाजिक विमर्श....1155
६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१–१९५६)....1156
६८. विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन....1159
६९. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श....1193
७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)....1202
७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग....1204
७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक....1215
भाषा, शब्दकोश, अनुवाद आ डिजिटल संस्कृति....1218
७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि....1219
७४. इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान....1221
७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र....1224
७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष....1310
दर्शन, शास्त्र आ तुलनात्मक अध्ययन....1312
७७. गङ्गेश उपाध्याय....1313
७८. भामती (चतु:सूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन....1362
७९. आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन....1375
८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन....1389
८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन....1413
विविध समालोचना....1426
८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत....1427
८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”....1433
८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”....1435
८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”....1436
८६. दूर्वाक्षत....1438
८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”....1439
८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८–१९८४)....1442
८९. जगदीश प्रसाद मण्डल....1445
९०. प्रेमशंकर सिंह....1446
९१. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन....1447
९२. मैथिलक वर्तमान समस्या....1464
९३. विदेह सम्पादकीयसँ....1467
९४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।....1485
९५. “प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!”: स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल....1506
९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा....1511
९७. “विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह”: विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण....1514
९८. केदार नाथ चौधरीक- अबारा नहितन....1519
९९. “प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार”: कला, स्वाधीनता आ प्रेम....1521
१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम....1526
१०१. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ क बहन्ने....1531
१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह....1538
१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा....1539
१०४. नचिकेताक समीक्षा....1542
१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य....1561
१०६. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ पर एकटा समग्र दृष्टि....1571
१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन....1574
१०८. रमानन्द झा ‘रमण’: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा....1576
१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)....1584

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग....1590
१११. गोपाल झा 'अभिषेक' क 'आउ स्वप्न साझी करी': साहित्यिक अनुशीलन....1650
समेकित सन्दर्भ-सूची....1658

प्रथम खण्ड — सिद्धान्त

भाग क — सैद्धान्तिक प्रबन्ध

समीक्षा-पद्धति आ सैद्धान्तिक आधार

१. प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना

सारांश

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत-कला आ साहित्य लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही? साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि।

बीजशब्द: प्रबन्ध · निबन्ध · समीक्षाशास्त्र · समालोचनाक · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना, समीक्षाशास्त्र आ समालोचनाक समालोचना” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत- कला आ साहित्य लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही? साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक उत्थल-धक्कामे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि। प्राचीन कालमे कला, साहित्य आ संगीत एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ी मध्य हस्तांतरित होइत छल। पदपाठ, क्रमपाठ, जटा पाठ, शिखापाठ, घनपाठ आदि स्मृतिक वैज्ञानिक पद्धति छल।

६

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत-कला आ साहित्य लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन हेबाक चाही? साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐ मे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै-कारण जिनगीक उत्थल-धक्कामे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि। प्राचीन कालमे कला, साहित्य आ संगीत एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ी मध्य हस्तांतरित होइत छल। पदपाठ, क्रमपाठ, जटापाठ, शिखापाठ, घनपाठ आदि स्मृतिक वैज्ञानिक पद्धति छल। घर, वेदी आ आन कलाकृतिक बनेबाक विधिक यजुर्वेदमे वर्णन छल जे भाष्य सभमे आर विस्तृत भेल आ पुरातत्वक प्राचीनतम आधार सिद्ध भेल। संगीतक पद्धति सामवेदकेँ विशिष्ट बनेलक। ऐ तरहेँ साहित्य, कला आ संगीतकेँ बान्हबाक प्रयत्न भेल, जइसँ ई विधा दोसरो गोटे द्वारा ओही तरहेँ अनुकृत भऽ सकए। आ ऐ क्रममे कला, साहित्य आ संगीतक समीक्षा वा ओकर गुणक विश्लेषण प्रारम्भ भेल। कला, साहित्य आ संगीतक समाज लेल कोन प्रयोजन, एकर नैतिक मानदण्ड की हुअए, ऐ दिस सेहो प्राच्य आ पाश्चात्य विचारक अपन विचार राखलन्हि। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। मुदा कला, संगीत आ साहित्य कखनो काल स्वान्तः सुखाय सेहो होइत अछि, एकरा पढ़ला, सुनला, देखला आ अनुभव केलासँ प्रसन्नता होइत छै, मानसिक शान्ति भेटै छै, तँ कखनो काल ई उद्वेलित सेहो करैत छै। एरिस्टोटल मुदा कहै छथि जे कलाकार ज्ञानसँ युक्त होइ छथि आ विश्वकेँ बुझबामे सहयोग करै छथि। जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायड वादी जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। उत्तरआधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेषकऽविज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स, जे दुनियाँ भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनेलन्हि। आइ-काल्हिक“डिसकसन” वाद्वन्द्व, जइमेपक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कऽ षडदर्शनक)-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य-खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल। से इतिहासक अन्तक घोषणा केनिहार फ्रांसिस फुकियामा-जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह-किछु दिन पहिने ऐसँ पलटि गेलाह। कम्यूनिज्मक समाप्तिक बाद लागल जे इतिहास, जे दूटा विचारधाराक संघर्ष अछि, एकटा विचारधाराक खतम भेलाक बाद समाप्त भऽ गेल। फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ

राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। ज र्म नीक देवाल खसला पर हुनक मान्यता रहन्हि जे द्वन्द्व आधारित इतिहासमे क म्यू नि ज्म खतम भेलाक बाद इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि कारण दुनियाँ यू नी पोल र भऽ गेल अछि मुदा आब ओ मानै छथि जे वंचित क अस्तित्व सभ ठाम छै आ ओकर सभ्यता आ इतिहास द्वन्द्व उत्पन्न करै छै, आ तेँ इतिहास जारी रहत। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण, ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि। साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्द्वात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत। उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण अछि विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबकभावनाकरहि-रहिखतमहएब, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, सतहीचिन्तन, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै क एक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि। दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास। भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ उत्तर-आधुनिकता सोझाँ अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक विरोध कएलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध कएलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकैत छी। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल। प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्ये मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि; सार्त्र कहै छथि जे मनुख स्वतंत्र हेबा लेल अभिशप्त अछि। हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग। क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि। तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक“अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि। जे शुरू भेल अछि से खतम हएत भलहि ओकर आयु बेशी हुअए। जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जँ सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब। साहित्यक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत। पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकरअर्थ, व्याकरणक निअम सँ नै वरन्अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभतरहकव्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा कोनो विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकता वादी आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार प्रक्रिया प्रणाली, ओकरआस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल-लैंगुएज गेम आ ऐ सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म। कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कएने छथि। आकिछुहस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि, तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कऽ देल जाइत अछि-क्लीनस्लेट! पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन केँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे

चेतनाक निर्माण क नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ विखंडित भऽ सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था। इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जइमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि। आ ऐ समाजक भाग हेबामे समर्थ लोक अंकीय वा डिजिटल नागरिक कहल जाइ छथि। ऐ उत्तर औद्योगिक समाजमे सूचना-प्रौद्योगिकी उत्पादन, अर्थव्यवस्था आ समाजकेँ निर्धारित करैत अछि। उत्तर-आधुनिक समाज, उत्तर औद्योगिक समाज आदि संकल्पना सँ ई निकट अछि। अर्थशास्त्री फ्रिट्ज मैचलप एकर संकल्पना देने छलाह। हुनकर ज्ञान-उद्योगक धारणा शिक्षा, शोध आ विकास, मीडिआ, सूचना प्रौद्योगिकी आ सूचना सेवाक पाँचटा अंगपर आधारित छल। प्रौद्योगिकी आ सूचनाक समाजपर भेल प्रभाव एतए दर्शित होइत अछि। अंकीय वा डिजिटल विभाजन एकटा ज्ञानक विभाजन, सामाजिक विभाजन आ आर्थिक विभाजन देखबैत अछि आ बिना भेदभावक एकटा सूचना समाजक निर्माणक आवश्यकता देखाबैत अछि, जइसँ सूचना प्रौद्योगिकीपर विकासशील देशक सार्वभौम अधिकार रहए। मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक मध्य व्यक्तिक एकान्तक अधिकार सेहो सम्मिलित अछि। विद्वान, मानवाधिकार कार्यकर्ता आ आन सभ व्यक्तिक अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, सूचनाक अधिकार, एकान्त, भेदभाव, स्त्री-समानता, प्रज्ञात्मक संपत्ति, राजनीतिक भागीदारी आ संगठनक मेलक संदर्भमे ऐ गपपर चरचा शुरू भेल अछि जे सूचना आ जनसंचार प्रौद्योगिकी आधारित सूचना समाजमे मानवाधिकारकेँ बल भेटत आ कि ओकर हानि हएत। ऑनलाइन पत्राचारक गोपनीयताक अधिकार, अन्तर्जालक सामग्रीक सांस्कृतिक आ भाषायी विविधता आ मीडिया शिक्षा, सूचना समाजक तकनीकी अओजार ओकर अधिकार आ स्वतंत्रतासँ लाभान्वित होइत अछि आ समाजक समग्र विकास, अधिकार आ स्वतंत्रताक सार्वभौमता, अधिकारक आपसी मतभिन्नता, स्वतंत्रता आ मूल्य निरूपणमे सहभागी होइत अछि। ऐसँ सूचना, ज्ञान आ संस्कृतिमे ई सरल पइठक वातावरण बनैत अछि आ ई उपयोगकर्तांकेँ वैश्विक सूचना समाजक अभिनेताक रूपमे परिणत करैत अछि। कारण ई उपयोगकर्तांकेँ पहिनेसँ बेशी अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता आ नव सामग्री आ नव सामाजिक अन्तर्जाल-तंत्र निर्माण करबाक सामर्थ्य दैत अछि। ऐसँ एकटा नव विधि, आर्थिक आ सामाजिक मॉडेलक आवश्यकता सेहो अनूभूत कएल जा रहल अछि जइमे साझी कर्तव्य, ज्ञान आ मेल आधार बनत। बच्चाक हित एकटा आर चिन्ता अछि जे पैघक हितसँ सर्वदा ऊपर रखबाक चाही। आधुनिक समाजक आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक धनक एकत्र करबाक प्रवृत्ति सूचना समाजमे बढ़ल अछि आ प्रौद्योगिकी एकटा आधारभूत बेरोजगारी अनलक अछि। गरीबी, मजदूरक अधिकार आ कल्याणकारी राज्यक संकल्पना लाभ-हानिक आगाँ कतौ पाछाँ छूटल जा रहल अछि। आब मात्र किछुए अभिनेता चाही। प्रकाशक लोकनि सेहो मात्र किछु बेशी बिकएबला पोथीक लेखकक प्रचार करै छथि। यएह स्थिति रंगमंच, पेंटिंग, सिनेमा आ आन-आन क्षेत्रमे सेहो दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि। मुदा सूचना सर्वदा लाभकारी नै होइत अछि। ई मात्र कला, ग्रंथ धरि सीमित नै अछि वरन सट्टा बाजार आ प्रायोजित सर्वेक्षण रपट सेहो ऐमे सम्मिलित अछि। समए आ स्थानक बीचक दूरीकेँ ई कम करैत अछि आ दुनूक बीचमे एकटा सन्तुलन बनबैत अछि। मानवक गरिमा मानवक जन्म आधारित सामाजिक स्थानसँ हटि कऽ मानवक गरिमाक सर्वभौमि कताक अधिकार पर बल दैत अछि। मुक्तिआस्त्री-मुक्ति आन्दोलन ऐ दिशाक प्रयास अछि। दुनू विश्वयुद्ध आ फासिज्मक चुनौतीक बाद१० दिसम्बर १९४८केँ संयुक्त राष्ट्रसंघक महासभा द्वारा मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक उद्घोषणा कएल गेल आ एकरा अंगीकार कएल गेल। ई घोषणा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक भेदभावरहित एकटा सामान्य मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि जे सभ जन-समाज आ सभ राष्ट्र लेल अछि। सूचनाक स्वतंत्र उपयोग सीमित अछि, लोकक एकान्त खतम भऽ रहल अछि। बिल गेट्ससँ जखन हुनकर भारत यात्राक क्रममे पूछल गेल छलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक एक्स-बॉक्स भारतमे पाइरेसीक डरसँ देरीसँ उतारल गेल तँ ओ कहने रहथि जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो कोनो उत्पाद पाइरेसीक डरसँ देरीसँ नै आनलक। स्पैम आ पाइरेसीक डर खतम हेबाक चाही। सूचना समाज वएह समाज छी जकर बीचमे हम सभ आइ-काल्हि रहि रहल छी। लोकतंत्र आ मानवाधिकारक सम्मान सूचना-समाज आ उत्तर सूचना-समाजमे होइत रहत। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, एकान्तक अधिकार, सूचना साझी करबाक अधिकार आ सूचना धरि पहुँचक अधिकार, जे सूचनाक संचारसँ सम्बन्धित अछि, ई सभ राज्य द्वारा आ सूचना-समाजक बाजारवादी झुकावक कारण खतराक अनुभूतिसँ त्रस्त अछि।

अन्तर्जाल लोकक मीडिआ अछि आ एकटा एहन प्रणाली अछि जे लोकक बीच सम्वाद स्थापित करैत अछि। ऐसँ संचार-माध्यमक मठाधीश लोकनिक गढ़ टुटैत अछि। अन्तर्जालमे सामान्य रूपसँ कोनो सम्पादक नै होइत छथि। एतए लोक विषयक आ सामग्रीक निर्माण कऽ स्वयं ओकर संचार करै छथि। ऐ सँ कतेक रास सामाजिक सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि मुदा कतेक रास समाज-विरोधी सामग्री सेहो अबैत अछि। तँ की ओइपर प्रतिबन्ध हेबाक चाही। मुदा जँ सॉफ्टवेयरक माध्यमसँ मशीनकेँ सामग्रीपर प्रतिबन्ध लगेबाक

अधिकार देब तखन ई अभिव्यक्तिक स्वतंत्रतापर पैघ आघात हएत। भारतमे बौद्धिक सम्पदाक अधिकार लेखकक मृत्युक ६० बरख बादो प्रकाशन आ वितरणक अधिकार ओकर उत्तराधिकारी कैँ दैत अछि। अन्तर्जालमे सेहो पाइरेसीकेँ प्रतिबन्धित करए पड़त आ लेखकक मृत्युक ६० बरख बाद धरि लेखकक अधिकार ओकर सामग्रीपर सैद्धांतिके नै प्रायोगिक रूपसँ रहए, से व्यवस्था करए पड़त। मुदा पेटेन्टक बेशी प्रयोग विकाशसील देशक सूचना अभिगमनमे बाधक हएत आ प्रौद्योगिकीक विकासमे सेहो बाधा पहुँचाओत। कॉपीराइटसँ सांस्कृतिक विकास मुदा हएत, जेनासंगीत, फिल्म, चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) आ चित्र कथाक विकास। डिजिटल वातावरणमे प्रतिकृतिक बिना अहाँ अन्तर्जालपर सेहो सामग्री नै देखि सकब, सेऑफ-लाइन कॉपीराइट आ ऑनलाइन कॉपीराइट दुनू मे थोड़बेक अन्तर अछि। ऑनलाइन कॉपीराइट प्रतिकृतिकेँ सेहो प्रतिबन्धित करैत अछि आ प्रतिकृति कएल सामग्रीकेँ दोसर वस्तुमे जोड़ब वा संशोधित करब सेहो बड्ड सरल अछि। से नाम आ चित्र बिना ओकर निर्माताक अनुमतिक नै प्रयोग हुअए, दोसराक व्यक्तिगत वार्तालाप-चैटिंग-मे हस्तक्षेप नै हुअए आ दोसराक विरुद्ध कोनो एहन बयानबाजी नै हुअए जइसँ कोनो व्यक्तिक विरुद्ध गलत धारणा बनए। तहिना नौकरी-प्रदाता द्वारा कोनो प्रकारक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपन कर्मचारीक नियन्त्रण लेल लगबैत अछि तँ से अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघक दिशा-निर्देशक अनुरूप हेबाक चाही। ई-पत्रमे अनपेक्षित सन्देश आ चिकित्सकीय रिपोर्टक अनपेक्षित संग्रह आ उपयोग सेहो मानवाधिकारक हनन अछि। अन्तर्जालक उपयोग मुदा सीमित अछि कारण बहुत रास सामग्री आ तंत्रांश मंगनीमे उपलब्ध नै अछि आ महग अछि, डिजिटल विभाजन शिक्षाक स्तरकेँ आर बेशी देखार करैत अछि। शारीरिक श्रमक बदलामे मानसिक श्रमक एतए बेशी उपयोग होइत अछि, से ई आशा रहए जे स्त्री-असमानता सूचना-समाजमे घटत मुदा सर्वेक्षण देखबैत अछि जे महिलाक पइठ सूचना प्रौद्योगिकीमे कम छन्हि। इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी आ ब्रेल-इनेबल कएल/ध्वनि-इनेबल कएल कम्प्यूटर स्क्रीन/इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी विकलांग आ अन्ध विकलांग लेल घर पर रहि ई-वाणिज्य करबामे सहायता देत। मुदा ऐ क्षेत्रमे कएल शोध आ ओकर परिणाम महग रहबाक कारणसँ ओतेक लाभ नै दऽ सकल अछि। बाल, वृद्ध, विकलांग, स्त्री, कामगार, प्रवासी-कामगार आ दोसर सामाजिक रूपसँ अब्बल वर्ग सूचना समाजमे सेहो अपनाकेँ अब्बल अनुभव करैत छथि, मुदा जँ-जँ हिनका लोकनिक पइठ सूचना प्रौद्योगिकीमे बढ़त तँ तँ सूचना-समाजमे असमानता घटत।

नीकसाहित्य/कला त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै बनत वरन ओइमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओइ आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखए पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओइमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै-ई सभटा तथ्य लघुकथाक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ सम्भव हएत।

हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति हुअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइ छै। शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

मेडियोक्रिटी कैँ चिन्हित करू। तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज आधुनिकताक नामपर, युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार ऐ मे नै भेटत। आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, उद्योगीकरण; स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य क राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया पर ध्यान देब सेहो आवश्यक।

आदिवासी जेना सतार, गिदरमारा (बंजारा) आदि विविधता, प्रकृतिसँ लग, प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित होइत अछि। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति अछि तँ किछु सँ तिरस्कार कएल जाइ छै आ हुनकर जीवन कठिन अछि।

ऋगवेदमे महिला अपाला, घोषा, श्रद्धा, शची, सार्पराज्ञी, यमी, वैवस्वती, देवजामय, इन्द्राणी, शश्वती, रोमशा, गोधा, उर्वशी, सूर्या, अदिति, नदी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, वाक्जुहू, सरमा आ यमी ऐ २१टा ऋषिकाक वर्णन अछि। महिला आ बाल-विकास मे महिलाकेँ अधिकार दिआबए लेल शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करबा पर आ पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन पर जोर देबा पर ध्यान देमए पड़त।

महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए। स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला आन्दोलन ऐ दिशामे प्रभाव उत्पन्न केलक अछि। धर्मनिरपेक्ष-राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित, धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित सामाजिक मूल्य कैँ बढ़ा बै मे सहायक हएत। विकास आर्थिकसँ पहिने जे शैक्षिक हुअए तँ जनसामान्य ओइ विकासमे साझी भऽ सकैए। ऐ सँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि।

विज्ञान आ प्रौद्योगिकीक कारण विकसित आ अविकसित (विकासशील) राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान-आकांक्षा-आशा आ सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार क बीच सामंजस्य मे वृद्धि भेल अछि। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकैँ न्याय दिअएबामे प्रयोग हेबाक चाही। नागरिक स्वतंत्रता, मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन, क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति, ऐ सभ मूल्य क संग प्रेसक-शासक आ शासितक ई कड़ी-सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे महत्वपूर्ण भूमिका अछि। मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकैँ प्रभावित कएनिहार सेहो सिद्ध भऽ रहल अछि। नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समएबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीयहित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका अपन भूमिकाक निर्वहण कऽ रहल अछि। जल-थल-वायु क भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन कऽ प्रदूषण, प्रकृति असंतुलन उत्पन्न भऽ रहल अछि।

मिकेल फोकौल्ट कहै छथि जे ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि। डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी। मिकाहिल बखतिन भाषाकैँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि आ हुनकर कार्य उपन्यासपर अछि। रूसक रूपवादी साहित्यकैँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै छथि। जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड क अनुसार सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। बौड्रीलार्ड कहै छथि जे विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि। लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि अछि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइत छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा, आवश्यकता आ माँगनाइ, दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन हएत जखन ई आभासी हएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय हएत।

उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि- होमी भाभा (फोकौल्ट आ लाकानसँ लग), गायत्री स्पीवाक (फोकौल्ट आ डेरीडासँ लग) आ एडवर्ड सईद (फोकौल्टसँ लग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि।

रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि। इलाइन शोआल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकैँ चिन्हित करै छथि। सिमोनडी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकैँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि। वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकैँ आवश्यक मानै छथि, हिनकर विचारकैँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकैँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि। नवसमीक्षा-इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध कएलन्हि आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। समीक्षकक काज लोकक रुचिमे सुधार करब सेहो अछि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविक उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत, कारण से सापेक्ष अछि, ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर। फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी, ओ कविताकैँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि। जॉन ड्राइडन प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभहानिपर विचार केलनि। सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि। रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक हेबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए। रोमांशवाद कविताक व्यक्तिगत अनुभव हेबाक गप कहैए। आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक

विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना, संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत जेना असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए। संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर) । आधुनिकतावादी-स्थितिवादी, नवसमीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आएल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिकजेनसन) । अठारहम शताब्दीमे आधुनिक माने छल जड़विहीन मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एकर अर्थ प्रगतिवादी भऽ गेल। १९७०ई. क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से उत्तर-आधुनिक शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल। जादुइ वास्तविकतावाद मे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। स्पेनिश उपन्यासकार गैब्रिअल गार्सिया मार्क्विसक“वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सो ली च्यू ड” आसलमानरुस्डीक“मिडनाइट्स चिल्ड्रेन” ऐ तरहक उपन्यास अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि। जोसेफ कोनरेड उपन्यासकेँ इतिहास कहै छथि। जोसेफ कोनरेड पोलिश भाषी रहथि मुदा अंग्रेजीक प्रसिद्ध उपन्यासकार छथि, मुदा धाराप्रवाह अंग्रेजी नै बजैत रहथि। रोलेंड बार्थेज कहै छथि जे उपन्यास इतिहास सेहो छी आ उपन्यास इतिहासक विरोध सेहो करैए। रोलेंड बार्थेज फ्रांसक साहित्यिक सिद्धांकार रहथि आ हिनकर लेखनीक प्रभाव संरचनावादी, मार्क्सवादी आ उत्तर संरचनावादी साहित्यिक सिद्धांतपर पड़ल। उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोक कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तैँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथा स्थिति वादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आओत।

देवता माने प्रतिपाद्य विषय नै कि गॉड (जेना ग्रिफिथ कहने छथि।) मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य“यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्” माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि-एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि-गलत रूपेँ भेल। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही, काव्य/नाटकक ऐ रूपेँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित हएत। अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। ओ नाटकक दुखान्तकेँ आ अनुकृतिकेँ निसास छोड़ैबला कहै छथि जे आनन्द, दया आ भयक बाद अबैत अछि। सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए, अभिभाषण आ गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइत छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला ऐ दू तरहक कविता देखै छथि, तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। यएह सभ किछु नाटकक स्टेज लेल सेहो लागू भेल। डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर। रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपेँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत होएब कहै छथि। उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक। सौसरक भाषा सिद्धान्त-बाजब/लिखब, वास्तविक समएक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि/महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समएमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टाकरएलागल। लिंग एकटा जैव वैज्ञानिक तथ्य अछि मुदा महिला/पुरुषक सिद्धान्त सामाजिकताक प्रतिफल अछि। महिला सापेक्ष साहित्य कला पुरुष द्वारा निर्मित अछि आ पुरुखक नजरिसँ महिलाकेँ देखैत अछि। साहित्यक नारीवादी सिद्धान्त ऐ समस्याक तहमे जाइए। मिथिलाक सन्दर्भमे महिलाक स्थिति ओतेक खराप नै छै मुदा मैथिली साहित्यक एकभगाह प्रवृत्तिक कारण उच्च वर्गक

नारीक खराप स्थिति साहित्यमे आएल। आधुनिकीकरण तथाकथित सामाजिक रूपसँ निचुलका जाति सभमे सेहो नारीक स्थितिमे अवनति अनलक अछि। दोसर एकटा आर गप अछि जे जाति आ धर्म नारीक अधिकारकेँ क एक हीसमे बाँटि देने अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाओल गेल, से ओ पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए। सरल मानवतावाद सिद्धांतक विरुद्ध आएल। सरल मानवतावाद कहैए जे साहित्यक सिद्धान्तक बदलामे रचनाक की मानवीय दृष्टिकोण छै, ओइमे सार्थकता छै आकि नै से सामान्य बुद्धिसँ कएल जा सकैए। अपन बुद्धिक प्रयोग कऽ रचनाक गुणवत्ता अहाँ देखि सकै छी, कोनो साहित्यिक सिद्धान्तक आवश्यकता समीक्षा लेल नै छै। मुदा सरल मानवतावाद सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत भेल।

पोथी समीक्षामे अत्यधिक आलोचनासँ बचबाक चाही। समीक्षककेँ अपन विद्वत्ता प्रदर्शन करबा सँ बचबाक चाही। अत्यधिक आलोचनाक क्रममे लोक अपन विद्वता देखबऽ लगै छथि। आलोचनाक क्रममे संयम रखबाक चाही, खराप शब्दावलीक प्रयोग समीक्षकक खराप लालन-पालन देखबैत अछि। पोथीक बिना पढ़ने समीक्षा अनैतिक अछि। उदाहरणस्वरूप कर्मधारयमे धूमकेतुक विषयमे तारानन्द वियोगी लिखै छथि- मिथिलाक संस्कृतिमे युग-युगसँ प्रतिष्ठापित साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैत हिनक कथा“नमाजे शुकराना” बहुत महत्वपूर्ण थिक। (कर्मधारय, पृ. १२७) (!) कथाक शीर्ष देखि कऽ ऐ तरहक समीक्षा भेल अछि कारण ऐ कथामे हाजी सैहेबक नमाजक समएमे पिंजराक सुग्गा“सीता...राम...।” बजैए आ सुग्गाक पिंजराकेँ हाजी सैहेब ताधरि महजिदक देबालपर पटकै छथि जाधरि सूगा मरि नै जाइए। सईदा कानऽ लगैए आ कथा खतम भऽ जाइए। आ ई कथा समीक्षकक मतमे साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैए!

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब-आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण) । कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्यन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दीमे एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। रस सिद्धान्त: भरत:-नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटककथीलेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रसकोनाबहराइए? रसबहराइएकारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। भट्टलोलट:-स्थायीभावकारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। शौनक:-शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँश्रोता-दर्शकक आत्मा परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ईश्रोता-दर्शक-पाठक पर जोर दैत अछि। ध्वनिसिद्धान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहैत छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित होएब सम्भव नै अछि। स्फोटसिद्धांत: भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्दआवाक्यसंग-संगनैरहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हेबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जेकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। अलंकार सिद्धान्त: भामह अलंकारकेँ

समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्य न्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमामानेउदाहरण, रूपकमानेकहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। औचित्य सिद्धान्त: क्षेमेन्द्र औचित्य-विचार-चर्चा मे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ईहेबाकचाहीपद, वाक्य, प्रबन्धकअर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपातमानेफाजिल, काल, देश, कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। अनुवादसमालोचना: सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, फेर कविता अछि आ तखन कथा, जँ अनुवादकक दृष्टिकोणसँ देखी तखन। नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ परोक्ष निहितार्थ केँ चिन्हित करए पड़त संगहि पात्र सभक मनोविज्ञान बूझ ए पड़त। कवितामे कविताक विधा सँ ओकर गढ़ नि सँ अनुवादकक परिचित भेनाइ आवश्यक, जेना हाइकूक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद करै बेर मे मैथिलीक वार्णिक५/७/५क मेल जँ अंग्रेजीक अल्फाबेट सँ करेबै तँ अहाँक अनूदित हाइकू हास्यास्पद भऽ जाएत कारण अंग्रेजीमे५/७/५सिलेबल क हाइकू होइ छै आ मैथिलीमे जेना वर्ण आ सिलेबल क समानता होइ छै से अंग्रेजीमे नै होइ छै। कविताकलय, बिम्ब पर विचार करए पड़त संगहि कविता खण्ड क कविताक मुख्य शरीर सँ मिलान करए पड़त। कथामे कथाकार क आ कथाक पात्रक संग कथाक क्रम, बैकफ्लैशकसमय-कालक ज्ञान आ वातावरणक ज्ञान आवश्यक भऽ जाइत अछि। रामलोचनशरणक मैथिली रामचरितमानस अवधी सँ मैथिलीमे अनुवाद अछि मुदा दोहा, चौपाइ, सोरठा सभ शास्त्रीय रूपेँ अनूदित भेल अछि। सिद्धान्तक आवश्यकता की छै?

२. मैथिलीमे पैटर्न कविता आ आकार-कविता

सारांश

मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप वा कंक्रीट (आकार) कविता पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता। ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना। ऐ मे ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नै अछि, खाली पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति होइत अछि।

बीजशब्द: मैथिलीमे · पैटर्न · कविता · आकार · पुनरावृत्ति · जाइत · कोनो

मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप वा कंक्रीट (आकार) कविता

१

पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता

पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता।

की अछि पाँतिक छन्द:-

ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना। ऐ मे ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नै अछि, खाली पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति होइत अछि।

उदाहरण:

जाइत जाइत

जाइत जाइत जाइ छी बड़ी दूरस्त देश धरि जे घुरि ने सकी

पहिने कएक बेर घुरि अयलौं अइ ठाम

बुझलौं जे छल अदहे रस्ता

घुरि जे एलौं

से बिदा भेलौं जाइले दूरस्त

ततेक दूर दूरस्त देश जे घुरि ने सकी

जे घुरबऽ जायत थाकि जायत अदहा तकरो अदहा रस्तामे

आ जँ बढ़त आगाँ देखत बिलाइत रस्ता

ने कोनो बाटे छोड़ब आ ने

कोने चिन्हासी

आ ने कनियो आस छोड़ब

अदहा रस्ताक बादक धांगैत-तोड़ैत बाट

आ बढ़ैत हम आ बिलायल जाइत रस्ता केलक काज संपन्न

एकटा काजक हएत आब फेरसँ आरम्भ

नव वातावरण नव लोक संग

प्रयोगेक प्रयोग

आनत कोनो अजगुत परिणाम

आकि फेर धकेलत हमरा दूरस्त देश

आ हम घुरि कऽ तँ नै आबि जाएब फेर अपन पुरने देश

जतऽ ने रहत ओ पुरनका डेरायल लोक

ने पुरनका पिरौंछ गाछ-बृच्छ

परिणामेक प्रमाण

रुसल सन अछि ई हमरासँ

लोक गाछ-बृच्छ सभ नव नवके ई देश

ने कोनो चिन्हासी ने आस आ ने कोनो चिन्हार बाट

२.

शेप वा कंक्रीट (आकार) कविता

पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविताक विपरीत ई एकटा आकारक स्वरूप धारण करैत अछि आ तेँ पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) एतऽ नै भेटत वरन कोनो आकृति देखा पड़त। जेना नीचाँक गाछक आकृति देखू।

बिलाइत आसक चेन्हासी

देखैत

गाछ दुनू कात

संगे जाइ रस्ताक संग

गाछक छाह कऽ रहल घन

हमर चेन्हासी घन होइत पक्का हएत मुदा

घ

न

ग

र

हो

इ

त

चे

न्हा

सी

अन्हार गुज्ज भऽ जाइत अछि

हमर आसक चेन्हासी बिला जाइत अछि

३. नव्य-न्यायक दृष्टि: प्रमा, अभाव आ प्रामाण्य

सारांश

एहि संग्रहमे ज्ञान-मीमांसाक अनेक सूत्र नाटकीय रूपमे विद्यमान अछि, जकर पाठ नव्य-न्यायक उपकरणसँ कएल जा सकैत अछि। ‘चालिस चोर’ मे गोनूक प्रत्येक विजय अनुमान आ युक्तिक-अर्थात ‘प्रमा’ क-विजय थिक; बल बनाम बुद्धिक द्वन्द्वमे नाटक प्रमाण-व्यापारकेँ सर्वोपरि घोषित करैत अछि। ‘सुकन्या’ क ओ संवाद-“आँखि मुनि लेला पर वृक्ष नइँ देखायत, मुदा सभ किछु उपस्थित अछि”-नव्य-न्यायक एक केन्द्रीय अन्तर्दृष्टिकेँ रंगमंच पर अनैत अछि-ज्ञानक अभाव विषयक सत्ताक अभाव नहि थिक (अनुपलब्धि ≠ अभाव)।

बीजशब्द: नव्य-न्याय; प्रमा; अनुमान; अभाव; अनुपलब्धि; प्रामाण्य; लोक-ज्ञान

एहि संग्रहमे ज्ञान-मीमांसाक अनेक सूत्र नाटकीय रूपमे विद्यमान अछि, जकर पाठ नव्य-न्यायक उपकरणसँ कएल जा सकैत अछि। ‘चालिस चोर’ मे गोनूक प्रत्येक विजय अनुमान आ युक्तिक-अर्थात ‘प्रमा’ क-विजय थिक; बल बनाम बुद्धिक द्वन्द्वमे नाटक प्रमाण-व्यापारकेँ सर्वोपरि घोषित करैत अछि।

‘सुकन्या’ क ओ संवाद-“आँखि मुनि लेला पर वृक्ष नइँ देखायत, मुदा सभ किछु उपस्थित अछि”-नव्य-न्यायक एक केन्द्रीय अन्तर्दृष्टिकेँ रंगमंच पर अनैत अछि-ज्ञानक अभाव विषयक सत्ताक अभाव नहि थिक (अनुपलब्धि ≠ अभाव)। इन्द्रिय-सन्निकर्षक अभावमे प्रत्यक्ष नहि होइत, मुदा वस्तु तँ रहिते अछि-ज्ञान आ ज्ञेयक ई भेद नाटकमे यथार्थ-स्वीकृतिक नैतिक तर्क बनि जाइत अछि।

‘श्रुवावती’ क ‘अर्थवत्ता’-तर्क आ ‘अतिरथ’ क ‘नीर-क्षीर विवेक’-दुनू वस्तुतः सम्बन्ध आ विशेषण-ज्ञानक प्रश्न उठबैत अछि- कोन गुण-धर्म कोन सम्बन्धमे ‘अर्थवान’ वा ‘ग्राह्य’ होइत अछि, ताहि पर। एहि अर्थमे कुणालक नाटक मनोरंजनक आवरणमे एक देशज ज्ञान-मीमांसाक संवाहक सेहो थिक।

एक वृहत्तर स्तर पर समग्र संग्रह ‘प्रामाण्य’ क प्रश्न उठबैत अछि- लोक-ज्ञान आ लोक-स्मृतिक प्रामाणिकता। सलहेस-गाथा, गोनू-चक्र आ बिदापत-नाच-ई सभ ‘अप्रामाणिक’ लोक-वृत्तांत नहि, अपितु एक समानांतर ज्ञान-परम्पराक प्रमाण थिक- यएह एहि संग्रहक मौन प्रतिज्ञा थिक।

विधागत समीक्षाशास्त्र

४. गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

सारांश

गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ ताहिसँ ई सभ लग अछि। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि।

बीजशब्द · Keywords: विहनि · कथा · कथाक · अछि। · सेहो · मुदा · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गद्य साहित्य मध्य विहनि कथाक स्थान आ विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ ताहिसँ ई सभ लग अछि। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐमे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै। जिनगीक भागादौड़ीमे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि। विहनि कथा कहने एकटा एहेन विधा बनि सोझाँ आएल अछि जे पहिने कथा थिक फेर विहनि कथा।

१

गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ ताहिसँ ई सभ लग अछि। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐ मे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै। जिनगीक भा गा दौ ड़ी मे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

विहनि कथा कहने एकटा एहेन विधा बनि सोझाँ आएल अछि जे पहिने कथा थिक फेर विहनि कथा। अंग्रेजीमे सेहो लम्बाइक आधारपर शॉर्ट-स्टोरी/नोवेलेट/नोवेला/नोवेल क विभाजन कएल जाइत अछि। मैथिलीमे सभ विधामे शब्द संख्याक घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषासँ बेशी होइत अछि, ओना अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषामे सेहो सभ विधामे लेखकक व्यक्तिगत रुचि आ कथ्यक आवश्यकताक अनुसार घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी होइते अछि। तहिनावन-एक्ट प्ले भेल एकांकी आ प्ले भेल नाटक।

सेविहनिकथाकथातँछीहे।

अहाँक अनुभवमिश्रित कल्पना अहाँसँ किछु कहबा लेल कहैत अछि। आ ई कथ्य हास्य-कणिका वा अहास्य-कणिका बनि सकैत अछि। लोक अहाँकेँ कहि सकै छथि जे अहाँकेँ गप्प बड्ड फुराइए, अहाँ हाजिर जवाब छी। आ तकर बाद अहाँक हिम्मत बढ़ैत अछि आ अहाँ ओहि कथ्यकेँ शिल्पक साँचामे ढलैय्या कऽ विहनि कथा बना दै छी।

हास्य-कणिकाक संग सभसँ मुख्य अवरोध छै जे अहाँक सुनाओल हास्य-कणिका घूमि-फिरि अहीं लग आबि जाएत, माने मौलिकता कतौ हेरा जाएत। हास्य-कणिका सेहो एक-दू पाँतीसँ आध-एक पृष्ठ धरिक होइत अछि। कथा-उपन्यासमे एकर समावेश कएल जा सकैत अछि मुदा विहनि कथा एकर पलखति नै दैत अछि। मुदा कथा-उपन्यासमे जेना कएल जाइत अछि जे एकरा कोनो पात्रक मुँहसँ कहाबी वा कोनो आन प्रसंगसँ जोड़ि सार्थक बनाबी तँ से अहाँ विहनि कथामे सेहो कऽ सकै छी। गल्प आख्यान सँ बहराइत अछि आ नैतिक शिक्षा, प्रेरक कथा आ मिस्टिक टेल्स सेहो लघुसँ दीर्घ रूप धरि जाइत अछि। एकर लघु रूप विहनि कथा नै भेल सेहो नै।

विहनि कथा मे जे त्वरित विचारक उपस्थापन देखल जाइत अछि से कथा-गल्प आ उपन्यासमे सेहो रहैत अछि। मुदा जे त्वरित विचारक उपस्थापन नै रहलासँ ओ विहनि कथा नै रहत सेहो गप नै। उनटे जखन विहनि कथाक समीक्षा करए लागब तखन समीक्षकक ध्यान स्थायी तत्व दिस होएबाक चाही नै कि त्वरित उपस्थापन दिस। त्वरित विचारक उपस्थापनक प्रति बेसी झुकाव ओकरा अहास्य-कणिका बना दैत अछि, ओ विहनि कथा तँ रहत मुदा श्रेष्ठ विहनि कथा नै रहत। विहनि कथा झमारि देत तँ ओ विहनि

कथा वा श्रेष्ठ विहनि कथा भेल आ जे ओ झमारि नै सकत तँ ओ विहनि कथा भेबे नै कएल-ई गप नै छै। कोनो त्वरित विचार आएल, ओकरा कागचपर लिखि लेलौं, ऐ डरसँ जे कतौ बिसरा ने जाए-एतऽ धरि तँ ठीक अछि। मुदा हरबड़ा कऽ एकरा विहनि कथा बना देबासँ पहिने विचारकेँ सीझऽ दियौ। ओइमे की मिज्झर करब तँ ओइमे स्थायी तत्व आबि सकत तइपर मनन करू। ओना बिना सिझने जे झमारैबला विहनि कथा लिखि देलौं तँ ओ विहनि कथा तँ भेल मुदा श्रेष्ठ विहनि कथा ओ सेहो भऽ सकत तकर सम्भावना कम। ई ओहिना अछि जेना कोनो झमकौआ गीत अपन प्रभाव बेसी दिन रखबे करत से निश्चित नै अछि तहिना कथाक ई स्वरूप ट्वेंटी-ट्वेंटी सन नै भऽ जाएत इ पर विचार करए पड़त।

उपन्यास तँ एक उखड़ाहामे नै पढ़ल जा सकैए मुदा लघुकथा एक उखड़ाहामे पढ़ल जा सकैए। एक उखड़ाहामे अहाँ क एकटा विहनि कथा पढ़ि सकै छी। उपन्यासमे लेखक वातावरणक, प्लॉटक, व्यक्तिक जाहि विशदतासँ वर्णन कऽ सकैए से लघुकथा मे सम्भव नै। ओ एकटा पक्षपर, जौँ कही तँ एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए आ ऐ क्रममे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच मात्र खेंचि पबैए। विहनि कथा मे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच सेहो नै खेंचि सकै छी, से पलखति विहनि कथा अहाँकेँ नै देत, हँ तखन विहनि कथा सेहो एकटा पक्षपर वा एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए। आ ई पक्ष वा घटना तेहन रहत जे लेखककेँ ललचबइत रहत जे एकरा स्वतंत्र रूपसँ लिखू, एकरा लघुकथा वा उपन्यासक भाग बना कऽ एकर स्वतंत्रता नष्ट नै करू।

तखन उपन्यासक प्लॉटसँ कथाक प्लॉट सरल होएत आ विहनि कथाक लेल तँ एकर आवश्यकते नै अछि, पक्ष वा घटनाक वर्णन शिल्पक साँचामे ढलैय्या केलौं आ पूर्ण विहनि कथा बनि कऽ तैयार।

विहनि कथाक समीक्षाशास्त्र

विहनि कथाक समीक्षा कोना करी? दू-पाँतीसँडेढ़-दू पन्ना धरिक (पाँच पन्ना धरि सेहो) अनुभवमिश्रित काल्पनिक खिस्सा विहनि कथा कहएबाक अधिकारी अछि। लघु आकारक कथामे कोनो कथा पूर्ण रूपसँ कहल गेल तँ फेर ओ विहनि कथा नै कहाओत। हँ जे ओइ मे एकटा घटनाक शृंखलाक वर्णन एकटा कथ्य कहक लेल आवश्यक अछि तँ शृंखला पूर्ण होएबाक चाही। ऐ शृंखलाक कड़ी कनेक नमगर भऽ सकैए। त्वरित उपस्थापनाक हरबड़ी ऐ शृंखलाकेँ कमजोर कऽ सकैए। सदिखन उल्टा धार बहाबी आ त्वरित उपस्थापना आनी-ई पद्धति किछु गणमान्य विहनि कथा लेखकक फार्मूला बनि गेल अछि। एकाध-दूटा विहनि कथामे ई सिनेमाक“आइटमगीत” सन सोहनगर लगैत अछि मुदा फेर समीक्षकक दृष्टि एकरा पकड़ि लैत अछि, कारणईप्रो-एक्टिव होएबाक साती रिएक्टिव बनि जाइत अछि। स्थायी प्रभाव ऐ सँ नै आबि पबै छै, विहनि कथा लेखकक प्रतिभाक कमी ऐ मे प्रतीत होइ छै। विहनि कथा वएह श्रेष्ठ हएत जे एकटा घटनाक शृंखलाक निर्माण करत आ अपन निर्णय सुनेबाक लेल पाठककेँ छोड़ि देत। फरिछेबाक पलखति विहनि कथा केँ नै छै, मुदा तकर माने ई नै जे दू-चारि पाँतीमे बात कएल जाए। मुदा लेखकजौँदू-चारि पाँतीक गपकेँ विहनि कथा कहै छथि तँ समीक्षक ओकरा विहनि कथा मानबा लेल बाध्य छथि मुदा ओ श्रेष्ठ विहनि कथा हएत तकर सम्भावना घटि जाइत अछि।

विहनि कथाक वर्ण्य विषय मात्र चलैत-फिरैत घटना नै अछि। विहनिकथा-लेखककेँ बच्चाक लेल, नैतिक शिक्षा आ धार्मिक विषयपर सेहो विहनि कथा लिखबाक चाही। ट्रेनमे बसमे जाइ छी, घरमे दलानपर घूरतर गप करै छी आ तकर अनुभव मात्र विहनि कथा मे आबि रहल अछि। सामाजिक आ आर्थिक समस्या सेहो एकर स्थायी वर्ण्य विषय भऽ सकैत अछि। राजनैतिक प्रश्न आ प्राकृतिक आपदाकेँ वर्ण्य विषय बनाओल जा सकैत अछि। विहनि कथा समीक्षक समीक्षा करबा काल पौराणिक समीक्षा नै करथि माने शिव पुराणमे सभसँ पैघ शिव आ गरुड़ पुराणमे सभसँ पैघ गरुड़, ऐ तरहक समीक्षा नै करथि। माने ई नै होमए लागए जे, जे अछि से विहनि कथा, चाहेओजेहेनहुअए। जेना उपन्यासमे लेखककेँ अपन पूर्ण प्रतिभा देखेबाक लेल पलखतिक अभाव नै रहै छै से लघुकथा मे नै रहै छै आ विहनि कथामे तँ से आरो कम रहै छै। मुदा विषयक विस्तार कऽ पाठकक माँगकेँ पूर्ण कएल जा सकैत अछि। कथोपकथनक गुंजाइश कम राखि वा कोनो उपस्थापनासँ पहिने राखि विहनि कथाक कथाकेँ सशक्त बनाओल जा सकैत अछि, अन्यथा ओ एकांकी वा नाटक बनि जाएत। विहनि कथा क समावेश कथा-उपन्यासमे भऽ सकैए मुदा विहनि कथा मे हास्य-कणिकाक समावेश नै हुअए तखने ओ समीक्षाक दृष्टिसँ श्रेष्ठ हएत, कारण एक तँ कम जगह, तइ मे जे कथोपकथन आ हास्य कणिका घोसियेलहुँ तखन ओकर प्रभाव दीर्घजीवी नै हएत, भ नहि ओ बिठुकट्टा विहनि कथा बनि जाए।

नीक विहनि कथा त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै वरन ओइमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओइ आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखए पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओइमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल

अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै-ई सभटा तथ्य विहनि कथाक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ हएत। हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइ छै, शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए। मेडियोक्रिटी चिन्हित करू-तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज-आधुनिकताक नामपर नै चलत।

विहनि कथा एक पक्ष वा घटनाक वर्णन अछि आ ई आवश्यक नै जे ओकरा एक्के पृष्ठमे लिखल जाए। अहाँ ओहि घटनाकेँ ३-४पृष्ठ मे सेहो लिखि सकै छी आ ओ विहनि कथा रहबे करत। जेम्स जॉयसक“डब्लाइनर” लघु-कथा संग्रहक सभ कथा एकटा घटनासँ अनचोके कोनो वस्तुक त्वरित ज्ञान दर्शबैत अछि। १५टाशॉर्ट-स्टोरीक संग्रह जेम्स जॉयसक“डब्लाइनर” २०० पृष्ठक अछि आ मैथिली विहनि कथाक सभ विशेषतासँ युक्त अछि खास कऽ एक्के टा“एपीफेनी” नाम्ना तत्व एकरा विहनि कथा सिद्ध करैए। तहिनाखलील-जिब्रान आ एंटन चेखवक ढेर रास शॉर्ट-स्टोरी नमगर रहितो विहनि कथा अछि। अंग्रेजीमे वा यूरोपियन साहित्यमे शॉर्ट-स्टोरी आ स्टोरीक प्रयोग कखनो पर्यायवाचीक रूपमे होइत अछि। नॉवेल जकरा बांग्ला आ मैथिलीमे उपन्यास आ मराठीमे कादम्बरी कहै छिऐ-क विस्तार बेशी होइ छै। मैथिलीमे ५०-६०पृष्ठसँ उपन्यास शुरू भऽ जाइत छै जे अंग्रेजीक शॉर्ट-स्टोरी/नोवेलेट/नोवेला/ऐ सभक ऊपरी सीमाक्षेत्रमे अबैत अछि। मुदा मैथिलीक स्थिति अंग्रेजीसँ फराक छै, ऐ मे बालकथा कैक राति धरि चलैत अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तथ्य आब सोझाँ आबि गेल अछि जे विहनि कथाक सीमा एक पृष्ठ, लघुकथाकतीन-चारिपृष्ठ, दीर्घकथाक१५-२० पृष्ठ आ उपन्यासक ६०-५०० पृष्ठ अछि। ऐ मे विहनि कथाक पृष्ठ सीमा१-४पृष्ठ धरि करबाक बेगरता हम बुझै छी।

मैथिलीक किछु सर्वश्रेष्ठ विहनि कथा:

मैथिली विहनि कथा क कथ्य आ शब्दावली मे बड्ड रास गुणात्मक परिवर्तन आएल अछि।

दुर्गानन्द मण्डल जीक“किसनामुट्ठी” विहनि कथा लेल खाँटी शब्दावलीक बेगरता देखबैत अछि। अंग्रेजी शब्द भण्डारक दक्ष ता पूर्ण प्रयोग जेना आर. के. नारायण करै छथि तहिना दुर्गानन्द मण्डल मैथिली शब्दावलीक दक्ष ता पूर्ण प्रयोग करै छथि। रामप्रवेश मण्डल अही तरहक शब्दावलीक प्रयोग सँ साधारणो विहनि कथाकेँ असाधारण बना दै छथि। राजदेव मण्डल जेहने कविता लिखै छथि, तेहने उपन्यास आ तेहने विहनि कथा, सभतरा-उपरी। कथ्य आ शिल्पक संतुलन लेल ओ ओहिना प्रसिद्ध नै छथि। बेचन ठाकुर अंधविश्वासक सामाजिक उपा देय तापर विहनि कथा लिखि जाइ छथि (फुसिकफल) । उमेश मण्डलक रुपैया क ढेरी नारी सशक्तिकरण पर मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ विहनि कथा अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल, परमेश्वर कापड़ि, कौशल कुमार, भवनाथझा, शम्भु कुमार सिंह, जगदानन्दझा“मनु”, लक्ष्मी दास आ रामलोचन ठाकुरक विहनि कथा मे जेम्स जॉयसक ए पी फे नी स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि जे आन मैथिली विहनि कथाकार मे ओ त्ते स्पष्ट रूपमे नै देखबामे अबैत अछि। आशीष अनचिन्हार, अमित मिश्र आ चन्दन कुमार झा नवका पीढ़ीक विषय परिवर्तन आ प्रयोगक साक्षी छथि। ओम प्रकाश झाक“स्पेशलपरमिट” आमिहिरझाक“१००टाका” कथ्यक नूतनता आ भिन्नता क कारण मैथिली विहनि कथाक इतिहास मे खास स्थान राखत। सन्दीप कुमार साफीक“अन्धविश्वास” बेचन ठाकुर जीक“फुसिकफल” कउल्टा अछि, आ ई दुनू विहनि कथा अपन प्रभाव सँ देखबैत अछि जे कोना अन्धविश्वासक पक्षमे आ विपक्षमे रहि कऽ दुनु गोटे कोना अपन-अपन विहनि कथाकेँ सोद्देश्य ता प्राप्त करबैत छथि। मुन्नाजीक“रेवाज” विहनि कथा लिअ। गाम घरमे मसोमातकेँ लोक डाइन कहै छै मुदा मुइलाक बाद घराड़ी लेल ओकरा आगि देबा लेल उपरौंझ होइ छै। एतऽ मुदा विहनि लेल जे बीआ छीटल गेल छै से कने उच्च स्तरक छै। एतऽ मृतककेँ बेटा नै छै मुदा पत्नी आ बेटी छै। से जखन मृतकक भाइ कोहा उठबऽ चाहैए तँ विधवा ओकरा रोकै छै आ बेटीकेँ कोहा उठबैले कहै छै। आ संग के देत ऐ नव रेवाजमे, जे आइयेसँ प्रारम्भ भेल अछि। तखन उत्तरो भेटैए-निपुतराहा सभ। जवाहरलालकश्यपक“हम्मर माय तोहर माय” आ“भगवानकभाग्य” अद्भुत रूपेँ कथ्यकेँ प्रस्तुत करैत अछि।

मैथिली विहनि कथा संसारक संख्यात्मक आ गुणात्मक अभिवृद्धि ह र्खि त करैबला अछि।

५. गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र

सारांश

मैथिलीमे दीर्घ कथा कैं सेहो कखनो-काल उपन्यास कहल जाइए। दीर्घ कथा मे जीवनक किछु पक्ष क विस्तार सँ चर्चा होइत अछि मुदा लघुकथामे से पलखति लेखककैं नै भेटैत छै। मुदा विहनि कथा सँ बेशी पलखति तँ एतऽ रहिते छै। मैथिलीक लेखक आब गाम आ नग्र, देश आ विदेशमे रहैत छथि। प्रस्तुत संग्रह मे कथाक विषय वस्तुक विविधता मैथिली क लेखकक सभ वर्गक वातावरण क प्रतिनिधित्व करैत अछि।

बीजशब्द: गद्य · लघुकथाक · स्थान · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गद्य साहित्य मध्य लघुकथाक स्थान आ लघुकथाक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिलीमे दीर्घकथाकैं सेहो कखनो-काल उपन्यास कहल जाइए। दीर्घकथामे जीवनक किछु पक्षक विस्तारसँ चर्चा होइत अछि मुदा लघुकथामे से पलखति लेखककैं नै भेटैत छै। मुदा विहनि कथासँ बेशी पलखति तँ एतऽ रहिते छै। मैथिलीक लेखक आब गाम आ नग्र, देश आ विदेशमे रहैत छथि। प्रस्तुत संग्रहमे कथाक विषय वस्तुक विविधता मैथिलीक लेखकक सभ वर्गक वातावरणक प्रतिनिधित्व करैत अछि। मिथिलाक वातावरणक अतिरिक्त प्रवासी मैथिलक संघर्ष आ समस्या लघुकथाक लेल एकटा फराक समीक्षाशास्त्रक खगतापर ध्यान आकर्षित करैए। लघुकथा समीक्षाशास्त्र: मैथिली लघुकथा बुच्ची दाइ आ कनियाँ काकीसँ बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि। पुरान समस्या अछि, मुदा नव रूपमे।

२

मैथिलीमे दीर्घ कथा कैं सेहो कखनो-काल उपन्यास कहल जाइए। दीर्घ कथा मे जीवनक किछु पक्ष क विस्तार सँ चर्चा होइत अछि मुदा लघुकथामे से पलखति लेखककैं नै भेटैत छै। मुदा विहनि कथा सँ बेशी पलखति तँ एतऽ रहिते छै। मैथिलीक लेखक आब गाम आ नग्र, देश आ विदेशमे रहैत छथि। प्रस्तुत संग्रह मे कथाक विषय वस्तुक विविधता मैथिली क लेखकक सभ वर्गक वातावरण क प्रतिनिधित्व करैत अछि। मिथिलाक वातावरणक अतिरिक्त प्रवासी मैथिलक संघर्ष आ समस्या लघुकथाक लेल एकटा फराक समीक्षाशास्त्रक खगता पर ध्यान आकर्षित करैए।

लघुकथा समीक्षाशास्त्र: मैथिली लघुकथा बुच्ची दाइ आ कनियाँ काकी सँ बहुत आगाँ बढ़ि गेल अछि। पुरान समस्या अछि, मुदा नव रूपमे। मैथिली लघुकथा ऐ नव समस्याकैं रेखांकित करैत अछि। एतए नारीवाद (फेमिनिज्म), उत्तर आधुनिक अब्सर्डिटी, हास्यव्यंग्य, कथ्य आ शिल्पक संतुलन क माध्यमसँ लघुकथाकैं गढ़ल जा रहल अछि। शब्दावलीक संतुलित प्रयोग सँ विषयक जड़ि धरि लेखक पहुँचि रहल छथि। गतिशीलता, उद्योगीकरण, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य क राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, ई सभ कखनो काल परस्पर विरोधी अछि। सामुदायिकताक विकास मे मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया क महत्व छै। मिथिलाक गाम मे व्यक्तिक प्रतिष्ठा अखनो स्थान-जाति आधारित अछि तँ प्रवास मे ओ प्रतिष्ठा ऐ सभ कारण सँ कखनो काल उनटि जाइत अछि। स्त्री-स्वातंत्र्यवाद आ महिला आन्दोलन मिथिलामे आ प्रवास मे अलग-अलग तरहक अछि। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकैं न्याय दिअएबामे प्रयोग होएबाक चाही, मुदा से नै भऽ सकल, कारण न्याय ओतेक सुलभ नै। मुदा राजनैतिक समीकरण, जे चुनाव सभ पाँच साल मे बनबैत अछि, से ई काज कऽ रहल अछि। मार्क्सवाद सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकैं रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकैं साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत अछि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। उत्तरआधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेषकऽविज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकैं अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक“डिसकसन” वा द्वन्द जइमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल। से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा-जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई

घोषणा कएने छलाह, किछु दिन पहिने ऐसँ पलटि गेलाह, कारण हुनकर पहिने सोच ब रहन्हि जे रूसक क म्यू नि ज्म खतम भेलाक बाद आब एक्केटा विचारधारा रहत से विचारक संघर्षक अन्त माने इतिहासक अन्त भेल; मुदा आब ओ कहै छथि जे अखनो सत्ता आ वंचित क विचारधारा अलग-अलग अछि आ तँ इ विचारधाराक संघर्ष जारी रहत आ इतिहासक सेहो अन्त अखन नै हएत। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि। साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

कोनो लघुकथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। लघुकथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ ओकर यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओइ समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ ऐमे ओइ समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।

उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण-विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबकभावनाकरहि-रहि खतम होएब, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, सतहीचिन्तन, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै क एक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि-ईदृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ उत्तर आधुनिकता सोझाँ अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक ई विरोध केलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकैत छी। आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही-तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल। प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) । हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देल गेल। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग। क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि। तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक“अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि। जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता कैँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब। लघुकथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत। पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकरअर्थ, व्याकरणक निअम सँ नै वरन्अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभतरहकव्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल-लंगुएज गेम। आ ऐ सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म। कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कऽ ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कएने छथि। आकिछुहस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा

मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि-क्लीनस्लेट! पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

मिकेल फोकौल्ट कहै छथि-ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि। डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी। मिकाहिल बखतिन भाषाकैँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि। रूसक रूपवादी साहित्यकैँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै छथि। जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड कहै छथि-सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। बौड्रीलार्ड कहै छथि-विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि। लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि अछि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइ छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा आवश्यकता आ माँगनाइ दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन हएत जखन ई आभासी हएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय हएत। उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि-होमीभाभा (फोकौल्ट आ लाकानसँ लग), गायत्रीस्पीवाक (फोकौल्ट आ डेरीडासँ लग) आएडवर्डसईद (फोकौल्टसँलग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि। रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि। इलाइन शोआल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकैँ चिन्हित करै छथि। सिमोनडी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकैँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि। वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकैँ आवश्यक मानै छथि। हिनकर विचारकैँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकैँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि। नवसमीक्षा-इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध कएल आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। समीक्षकक काज लोकक रुचिमे सुधार करब सेहो अछि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविक उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत कारण से सापेक्ष अछि। ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर। फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी-ओ कविताकैँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि। जॉन ड्राइडन-प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभ-हानि पर विचार केलनि। सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि। रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक होएबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए। आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकैँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत जेना असफल उद्देश्यकैँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए। संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकैँ बल भेटलै (अलथूजर) । आधुनिकतावादी-स्थिवादी, नवसमीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आएल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिकजेनसन) ।

अठारहम शताब्दीमे आधुनिक माने छल जड़विहीन मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एकर अर्थ प्रगतिवादी भऽ गेल। १९७०ई. क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से उत्तर-आधुनिक शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ

कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल। जादुइ वास्तविकतावाद जइमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि। उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोक कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक क दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आओत। प्लेटो-प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किए तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही।

सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए-अभिभाषण वा गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर। रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपेँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत होएब कहै छथि।

उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक। सौसरक भाषा सिद्धान्त- बाजब/ लिखब, वास्तविक समएक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि, महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समएमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टा करए लागल।

लिंग एकटा जैव वैज्ञानिक तथ्य अछि मुदा महिला/पुरुषक सिद्धान्त सामाजिकताक प्रतिफल अछि। महिला सापेक्ष साहित्य कला पुरुष द्वारा निर्मित अछि आ पुरुखक नजरिसँ महिलाकेँ देखैत अछि। साहित्यक नारीवादी सिद्धान्त ऐ समस्याक तहमे जाइए। मिथिलाक सन्दर्भमे महिलाक स्थिति ओतेक खराप नै छै मुदा मैथिली साहित्यक एकभगाह प्रवृत्तिक कारण उच्च वर्गक नारीक खराप स्थिति साहित्यमे आएल। आधुनिकीकरण तथाकथित सामाजिक रूपसँ निचुलका जाति सभमे सेहो नारीक स्थितिमे अवनति अनलक अछि। दोसर एकटा आर गप अछि जे जाति आ धर्म नारीक अधिकारकेँ क एक हीसमे बाँटि देने अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाओल गेल से ओ सिद्धांत पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए। सरल मानवतावाद सिद्धांतक विरुद्ध आएल मुदा ई सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत भेल।

अत्यधिक आलोचनासँ बचबाक चाही। समीक्षककेँ अपन विद्वत्ता प्रदर्शनसँ बचबाक चाही। अत्यधिक आलोचनाक क्रममे लोक अपन विद्वता देखबऽ लगै छथि। आलोचनाक क्रममे संयम रखबाक चाही, खराप शब्दावलीक प्रयोग समीक्षकक खराप लालन-पालन देखबैत अछि। लघुकथाकेँ बिना पढ़ने समीक्षा अनैतिक अछि। उदाहरणस्वरूप कर्मधारयमे धूमकेतु लघुकथा“नमाजेशुकराना” क विषयमे तारानन्द वियोगी लिखै छथि- मिथिलाक संस्कृतिमे युग-युगसँ प्रतिष्ठापित साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैत हिनक कथा“नमाजे शुकराना” बहुत महत्वपूर्ण थिक। (कर्मधारय, पृ. १२७) (!) लघुकथाक शीर्षक देखि कऽ ऐ तरहक समीक्षा भेल अछि कारण ऐ कथामे हाजी सैहेबक नमाजक समएमे पिंजराक सुग्गा“सीता...राम...।” बजैए आ सुग्गाक पिंजराकेँ हाजी सैहेब ताधरि महजिदक देबालपर पटकै छथि जाधरि सूगा मरि नै जाइए। सईदा कानऽ लगैए आ कथा खतम भऽ जाइए। आ ई कथा समीक्षकक मतमे साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैए!

समीक्षककेँ अति प्रशंसासँ सेहो बचबाक चाही। ई देखाओल जएबाक चाही जे ऐ विषयपर लिखल आन लघुकथा सँ ई कोन रूपेँ भिन्न अछि, कोना ई रिक्त स्थलक पूर्ति करैए, ऐमेकी-की छै आ ओइ विषयपर लिखल आन लघुकथा सँ एकर तुलना हेबाक चाही। लघुकथाक सीमित विस्तारकेँ ध्यानमे राखि समीक्षा हजार शब्दमे हेबाक चाही। समीक्षा सम्बन्धित लघुकथाक हेबाक चाही लेखकक नै। लेखकक दोसर रचनाक विश्लेषणसँ समीक्षाकेँ भरब नीक समीक्षा नै, जे ऐ सभ लघुकथाक समीक्षित लघुकथा सँ कोनो सोझ सम्बन्ध हुअए तखने ओकर प्रयोग करू। मिथिलाक विविध संस्कृति आ इतिहासकेँ देखैत–मैथिली साहित्यक एकभगाह स्थिति विशेष रूपमे-व्यक्तिगत आक्षेपक आ जिला-जबारकेँ ध्यानमे रखबाक सेहो परम्परा रहल अछि। जाति-धर्म आ क्षेत्रीय ता मैथिली भाषा समीक्षामे कम्मे अबैए मुदा दोस-महीमक आधारपर नीक वा अधलाह समीक्षाक प्रवृत्ति वा आग्रहक भयंकर प्रभाव समीक्षकक मध्य छन्हि। कोनो खास समीक्षासँ ओइ लघुकथा पर प्रकाश पड़ैए वा नै से देखू। ई तँ नै अछि जे ओ समीक्षा लेखकपर टिप्पणी कऽ रहल

अछि वा लेखकक आन रचना पर-गहींरमे जाएब तँ बूझि जाएब जे समीक्षा लघुकथा पढ़ि लिखल गेल छै आकि नै। आलंकारिक भाषाक दिन गेल, शब्दक सटीक प्रयोग करू, अनावश्यक शब्द आ पाँतीकेँ निकालू। आत्मकथात्मक लघुकथाक समीक्षा लेल लेखकक जिनगीपर प्रकाश दऽ सकै छी। लघुकथा समीक्षा मे महिला विरोधी वा जाति-क्षेत्रक बन्हनसँ बान्हल मानसिकताकेँ दूर राखू।

लघुकथाक वातावरण निर्माण सँ लेखक आगाँ बढ़ैत छथि, ओकर पात्र सभक विवरण, लघुकथाक प्रारूप आ तकरा लेल लोकक आ परिस्थितिक वर्णन। ऐ मे सँ कोनो एकटा पक्ष लऽ कऽ सेहो अहाँ लघु कथा लिख सकै छी। कोनो कृति कोना उत्कृष्ट अछि आ ओइमे की छुटि गेल अछि से समीक्षककेँ देखबाक चाही। ओकर मूल्यांकन एकभगाह नै हेबाक चाही, ओइ रचनामे की संदेश नुकाएल छै, लेखक कोन दिस निर्देशित कऽ रहल अछि से समीक्षककेँ बुझबाक आ लिखबाक चाही। लघुकथाक मुख्य धाराकेँ चिन्हित करबाक चाही। अपन विचारधाराकेँ समीक्षित लघुकथा पर आरोपण नै होएबाक चाही। ओइ लघुकथाक आजुक समयक सन्दर्भमे की आवश्यकता अछि से देखाउ। ओइ लघुकथाक महत्ता कोन रूपमे अछि से देखाउ, ओकर मुख्य तत्व चिन्हित करू। लेखकक जीवन दर्शन, वास्तविक, काल्पनिक आ आदर्शक सम्बन्धमे ओकर दृष्टि आ संदेहकेँ चिन्हित करू। लेखकक लेखन शैलीक कलात्मक पक्ष, ओकर गप कहबाक क्षमता, रचनाक ढाँचा आ ओकर विभिन्न भागकेँ जोड़बाक कलाक चर्चा करू, जेना नीक कमार ठोस आ कलात्मक पलंग बनबैत अछि, तँ दोसर कमारक जोर मात्र ठोस हेबापर होइ छै आ तेसरक कलात्मकतापर, तहिना।

सिद्धान्तक आवश्यकता की छै? सरल मानवतावाद कहैए जे साहित्यक सिद्धान्तक बदलामे रचनाक की मानवीय दृष्टिकोण छै, ओइमे सार्थकता छै आकि नै से सामान्य बुद्धिसँ कएल जा सकैए। अपन बुद्धिक प्रयोग कऽ रचनाक गुणवत्ता अहाँ देखि सकै छी, कोनो साहित्यिक सिद्धान्तक आवश्यकता समीक्षा लेल नै छै।

मैथिलीक किछु सर्वश्रेष्ठ लघुकथा:

मीना झाक ब्रे स्ट कैंसर, एकटा एहेन समस्या पर अछि जे महिलाक समस्या थिक आ कोनो महि ले एहेन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण युक्त कथा ऐ विषयपर लिखि सकै छलथि। मुदा कोनो महिलो ऐ विषयपर आइ धरि लघुकथा नै लिखने छलीह। पत्नीक ब्रे स्ट कैंसर ऑपरेशन क बाद पतिक मनोदशाक विवरण सटीक भेल अछि। रोशन जनकपुरी वंचित क संघर्ष क प्रत्यक्ष गवाही प्रस्तुत करै छथि जे दोसर रूपमे जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो आ नै छथि, आ महाप्रकाश सेहो एकरा एकटा लघु कथा क कथाक माध्यमसँ कहै छथि। वसंत भ ग वं त सा वं तक कोंकणी कथा रोजी रोटी क जीवन क भावनात्मक जीवन सँ संघर्ष क कथा थिक, आ एहने कथा प्रभात राय भट्ट नव फराक परिवेशमे ओइ सँ बेशी दर्द सँ कहै छथि। बी नू भाइ विश्लेषणक मास्टर छथि आ शब्दावलीक प्रयोग सँ सम्बन्धित वौस्तु जात विचारकेँ फरिछा बै छथि। शम्भू कुमार सिंह मैथिलीक स्थिति पर लिखै छथि तँ अनमोल झा, सत्य नारायण झा आ ओम प्रकाश झा गाम घर, नोकरीचाकरीआघर-बाहरक चर्च करै छथि। जँ प्रेम कथाक चर्च करी तँ दुर्गानन्द मण्डल क लाल भौजी, सुजीत कुमार झा क एकटा अधिकार, कैलाश कुमार मिश्रक चन्दा, पंकज कुमार प्रियां शुक जीवनक अनमोल क्षण, अमित मिश्र क प्रेम नै जहर छै, कामिनी का मायि नी कटु ट ल तारा आ राजनाथ मिश्रक मस्ती सोझ रूपमे प्रेम कथा अछि मुदा ई सभ एक दोसरासँ भिन्न हास्य, गम्भीरता, सामन्तवाद केँ अपना तरहेँ सेहो चिन्हित करैत अछि। असगर व जाह त दंगा क समस्या पर टिप्पणी करैत छथि तँ राजदेव मण्डल ए ले क्श पर आ वीरेन्द्र कुमार यादव, सतीशचन्द्रझा, अतुलेश्वर सेहो सामाजिक समस्याक विभिन्न पक्षपर चर्च करैत छथि। उमेशमण्डल, नवीनठाकुर, किशन कारीगर, शिव कुमार झा आ बचे श्वर झा व्यंग्य केँ नव दिशा दऽ रहल छथि। नन्द विलास राय आ कपिलेश्वर राउत व्यंग्य आ समस्या केँ शब्दक जादू गरी सँ पहिने मिज्झर करै छथि आ फेर फराक करै छथि। सन्तोष कुमार मिश्रक कथा मु सी ब त आ आशीष अनचिन्हारक काटल कथा उत्तर आधुनिक अब्सर्डिटी क उदाहरण अछि। योगेन्द्र पाठक“वियोगी” परम्परा आ आधुनिकताक द्वन्द्व क ओझरीमे ओझरा जाइ छथि (देववाणी) । मनोज कुमार मण्डल घास वाली लघु कथा मे स्त्री-संघर्ष लिखै छथि आ शम्भुनाथ झा“वत्स” स्त्रीक संघर्ष केँ बाढ़िक विभीषिका संग जोड़ि अविस्मरणीय कथा कहि जाइ छथि।

मैथिली लघुकथा मे आएल कथ्य आ शिल्पक क विशालता आह्लादकारी अछि।

६. गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

सारांश

उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटैत छथि।

बीजशब्द · Keywords: उपन्यासक · अछि। · स्थान · छथि। · उपन्यास · गद्य · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गद्य साहित्य मध्य उपन्यासक स्थान आ उपन्यासक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटैत छथि। संस्कृतक एहि उपन्यास नामसँ मराठीमे उपन्यासकेँ कादम्बरी कहल जाइत अछि। उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि।

८

उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटैत छथि। संस्कृतक एहि उपन्यास नामसँ मराठीमे उपन्यासकेँ कादम्बरी कहल जाइत अछि। उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक “डॉन क्विक्जोट”, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

उपन्यासक वाद: उत्तरआधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि।

उपन्यासक आरम्भ आ विकास: अंग्रेजी उपन्यास पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस-लेखक कथाक मुख्यपात्रक यात्राक आ ओइ यात्रा मध्य आओल संघर्ष आ उत्साहक वर्णन करैत छथि।

साहित्यिक शब्दावली

लेखकक आइडियोलोजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नै आ ऐ पर हम पहिनहियो लिखने छी। यात्री आ धूमकेतुकेँ कम्यूनिस्ट पार्टीक सोंगरक आवश्यकता पड़लन्हि कारण वामपंथ“नीकसेन्ट” आ“डिजाइनरवीयर” क भाँति हिनका सभ लेल फैशन छल, से बलचनमा कांग्रेस आ समाजवादी पार्टीसँ हटलाक बाद कम्यूनिस्ट आ लालझंडामे सभ समस्याक समाधान तकैए, ओकरा यात्रीजी सभ समाधान ओइमे दै छथिन्ह। धूमकेतुक पात्र लेल सेहो लाल झंडा लक्षमण बूटी अछि। मुदा ई लोकनि कम्यूनिस्ट मूवमेन्टसँ-फैशनक अतिरिक्त-जुड़ल नै छथि तँ हिनकर साहित्यमे आइडियोलोजी तेल सन सहसह करैए। आब आउ चतुरानन्द मिश्र आ जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्य पर। चतुरानन्द मिश्रक उपन्यासमे वा जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्यमे कतौ लालझंडा वा कम्यूनिस्ट पार्टीक चर्च अहाँ देखने छी? एतए जे भेटत से अछि असल वामपंथी द्वन्द्वात्मक पद्धति, जीवनपर विश्वास, माने आइडियोलोजी नूनसन मिलल। आ की ई मात्र संयोग अछि जे चतुरानन्द मिश्र जीवनक प्रारम्भमे साहित्य लिखै छथि आ जगदीश प्रसाद मण्डल जीवनक उत्तरार्धमे, अन्तिम केस खतम भेलाक बाद? जगदीश प्रसाद मण्डलक गाम बेरमाक जमीन्दार ठाकुर जी हमर

पितयौत भाइकेँ कहलखिन्ह जे जगदीश प्रसाद मण्डल सत्य हरिश्चन्द्र छथि, हमर गामक गौरव छथि। आ से तखन, जखन जगदीश प्रसाद मण्डल कम्यूनिस्ट मूवमेन्टक नेतृत्व केलन्हि दसो बेर जेल गेलाह, केस हुनके सभसँ लड़लन्हि आ तकर परिणाम भेल जे बेरमामे आइ दस बीघासँ पैघ जोत ककरो नै छै। आइयो ओ तीन बजे उठि कऽ डिबिया लेस कऽ मैथिली साहित्य लिखै छथि आ हुनकर बेटा हुनका आइ धरि लिखैत नै देखने छथिन्ह, जे कखन ओ लिखै छथि, भोगेन्द्र झाक नेतृत्वमे ओ प्रण लेने रहथि जे जखन बाजब, सभ मैथिलीमे बाजब। से हुनकर बेटा हुनका मैथिलीक अतिरिक्त दोसर भाषा बजैत नै सुनने छथिन्ह। आ सएह कारण अछि जे हुनकर विषय-वस्तु नवीन होइत अछि, हुनकर शब्दावली नेटिव स्पीकरक शब्दावली अछि, जे ओइ विषय-वस्तुकेँ फरिछेबामे सफल होइत अछि आ आवश्यक अछि। हुनकर लोक, हुनकर गाछ-बृच्छ, हुनकरफूलपात, हुनकर खेत खलिहान असल अछि, जमीनी अछि, पतालसँ कोड़ि कऽ निकालल नै। आ हुनकासँ प्रेरणा लऽ प्रवासमे रहनिहार नव साहित्यकार मैथिली लिखबासँ पहिने मिथिलाक इतिहास-भूगोल आ संस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करथु, तखने हुनकर साहित्य फराक भऽ सकतन्हि।

छद्म मानकीकरण: एकटा खास जातिवादी स्कूलक विचारकेँ प्रश्रय देलाक परिणाम, जे एकाध किताब सी. आइ. आइ. एल. मैथिलीमे निकाललक अछि आ जइ तरहेँ ओकर मानकीकरण प्रोजेक्ट सालक सालसँ बिना परिणामक चलि रहल छै।

असल मानकीकरण: मिथिलाक सभ क्षेत्रक सभ जातिक बाजल जाएबला मैथिलीक आधारपर गहन विचार विमर्शसँ बनाओल मानकीकृत मैथिली।

बेनीपुरीक"अम्बापाली"नाटकहिन्दीमे छै, एन. सी. ई. आर. टी. ओकरा स्कूलक पाठ्यक्रममे लगेलक मुदा सम्पादक कहलन्हि जे"क्रिया’ है’ क अनुपस्थिति"जेना"वहजारहा", बेनीपुरीपर स्थानीय क्षेत्रक प्रभावक परिणाम अछि आ तेँ सम्पादक मण्डल ओकर ऐतिहासिकताकेँ देखैत स्कूली पाठ्यक्रममे रहलाक बादो ओकरा सम्पादित नै कऽ रहल अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक दीर्घ कथा शम्भूदास आएल अछि, ओकर दोसर पारा देखल जाए:- “जहिना बाध-वोनक ओहन परती जइपर कहियो हर-कोदारि नै चलल सुखि-सुखि गिाछ-विरिछ खसि उसर भऽ जाइत, ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरूआ फूल-फड़क गाछ जनमि रौद-वसात, पानि-पाथर, अन्हर-विहाड़ि सहि अपन जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन मीठ सुआदसँ तृ प्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर शंभूदासक जन्म बटाइ-किसान परिवारमे भेलनि।”

की एतए “जाइत” "करैत" क बाद अछि देब आवश्यक छैक?

सिद्धान्त आ प्रयोग: से जौँ गहींर नजरिसँ देखब तँ लागत जे उपन्यासकारक कृति ओहि समएक वाद आ दृष्टिकोणकेँ संग लऽ कऽ चलबाक प्रयास अछि। मुदा सिद्धान्तसँ प्रयोगक क्रममे किछु विशेषता स्वयमेव आबि जाइ छै। तहिना मैथिली उपन्यासक सेहो स्थिति अछि। रमानन्द रेणुक उपन्यास मे ई तथ्य शिल्पमे स्पष्ट रूपसँ देखि सकै छी। लिली रे अपन कलमक धारसँ जेना अपन लग-पासक घटनाक, समाजक, राजनीतिक वर्णन करै छथि से अद्भुत तँ अछिये अंग्रेजी उपन्यास सभसँ एक डेग आगाँ जाइत अछि। ललित, यात्री आ धूमकेतु आर्थिक आ सामाजिक समस्याकेँ सोझाँ रखैत छथि, आ ओहि क्रममे कोनो तथ्यकेँ कोनो रूपेँ नुकबैत नै छथि। साकेतानन्द बाढ़िक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि। हरिमोहन झा अपन शैलीमे अंग्रेजी साहित्यक धारकेँ बहबैत छथि आ नायक द्वारा नायिकाकेँ देल पढाइक सिलेबसमे सेहो ई तथ्य सोझाँ अनैत छथि। चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जाहि रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता एहि दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइत छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म छैक तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्दात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होएत जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत।

सभ जीवित भाषामे सभसँ बेसी रचना उपन्यासक होइत छै मुदा मैथिलीमे सभसँ कम उपन्यास लिखल जाइत अछि। जाहि रूपमे अंग्रेजी शिक्षा आ साहित्यक अध्ययन कऽ मैथिली साहित्यमे आओल नव पीढ़ीक संख्या बढ़त, मैथिली साहित्य अपन सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ सांस्कृतिक अंतर्दृष्टिक विकास कऽ सकत। केदारनाथ चौधरीक चमेली रानी-माहुर, करार, हीना, अयना आ अबारा नहितन हमर एहि दृष्टिकोणक पुष्टि करैत अछि।

७. शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

सारांश

बाल साहित्यमे मोटामोटी एक बर्ख सँ कम उमेरक बच्चा सँ लऽ कऽ अ ट्ठार ह बर्खक किशोर धरि क उपयोगक साहित्य सम्मिलित अछि। मानसिक रूपसँ आस्ते-आस्ते सीखए बला बच्चा लेल ई वर्गीकरण क ने दोसर तरहेँ हएत, जेना जे सामान्य छह बर्खक बच्चा लेल बाल साहित्य मानल जाइए से हुनका लोकनि लेल दस बर्खक आयु मे प्रयुक्त भऽ...

बीजशब्द: शिशु · बाल · किशोर · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “शिशु, बाल आ किशोर साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। बाल साहित्यमे मोटा मोटी एक बर्खसँ कम उमेरक बच्चासँ लऽ कऽ अट्ठारह बर्खक किशोर धरिक उपयोगक साहित्य सम्मिलित अछि। मानसिक रूपसँ आस्ते-आस्ते सीखएबला बच्चा लेल ई वर्गीकरण कने दोसर तरहेँ हएत, जेना जे सामान्य छह बर्खक बच्चा लेल बाल साहित्य मानल जाइए से हुनका लोकनि लेल दस बर्खक आयुमे प्रयुक्त भऽ सकैए। सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, गिल्गमेश कथा काव्य, प्राणवंतक देश गिल्गमेशक खोज, सृष्टिकथा आ देवतंत्रक विकास ई सभ ऋगवेद आ अवेस्ता आदिक सन्दर्भमे प्रारम्भिक बाल साहित्य मानल जा सकैए। अरा-युक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहिये तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहिये यूरोपमे।

५

बाल साहित्यमे मोटामोटी एक बर्ख सँ कम उमेरक बच्चा सँ लऽ कऽ अ ट्ठार ह बर्खक किशोर धरि क उपयोगक साहित्य सम्मिलित अछि। मानसिक रूपसँ आस्ते-आस्ते सीखए बला बच्चा लेल ई वर्गीकरण क ने दोसर तरहेँ हएत, जेना जे सामान्य छह बर्खक बच्चा लेल बाल साहित्य मानल जाइए से हुनका लोकनि लेल दस बर्खक आयु मे प्रयुक्त भऽ सकैए।

सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, गिल्गमेश कथा काव्य, प्राणवंतक देश गिल्गमेशक खोज, सृष्टिकथा आ देवतंत्रक विकास ई सभ ऋगवेद आ अवेस्ता आदि क सन्दर्भमे प्रारम्भिक बाल साहित्य मानल जा सकैए। अरा-युक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहिये तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहिये यूरोपमे। भारतीय देवनाम, शिल्प, कथा, अश्वविद्या, संगीत, भाषिक तत्व आ चिंतनक संग ई उद्घाटित होमए लागल पश्चिम एशिया, मिश्र आ यूनानमे। दोसर सहस्राब्दी ई. पूर्व अरायुक्त रथ, भारतीयदेवनाम, भारतक धार, ऋग्वैदिक तत्वचिंतन, अश्वविद्या, शिल्प-तकनीकी आ पुरातन्कथा भारतसँ पच्छिम एशिया, क्रीट-यूनान दिशि जाए लागल। कालक्रमसँ मिश्र, सुमेर-बेबीलोन आदि सभ्यता आ मित्तनी आ हित्ती सभ्यतासँ बहुत पहिनहिये ऋगवेदक अधिकांश मंडलक रचना भऽ गेल छल। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिने सेहो भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओइ भाषा मे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल“गाथिन”, “गातुविद्” आ“गाथपति” ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। वैदिक आख्यान, जातककथा, ऐशपफेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि, ऐ मे जे चिड़ै आ माल जाल क माध्यमसँ कथा कहल गेल अछि से पंचतंत्र आ हितोपदेश सँ बहुत पहिने बाल साहित्य क अवधारणा प्रस्तुत करैत अछि। जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल रामचरितमानसक अछि। ऐ स प ग्रीसक दास रहथि आ अपन मालिकक बच्चाकेँ कथा सुनबैत रहथि जे ऐ स प्स फेबल्स रूपमे जगत ख्यात भेल, अंगू र नै भेटलापर लो म ड़ी कहैए जे ई अंगू र बड्ड अम्मत हेतै, ई सभ खिस्सा अमर भऽ चुकल अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक“मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। कथा पढ़ि सभ प्रबुद्ध नै हेताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओइ दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध हएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जँ ओ नै पढ़ताह तँ ओकर ओइ परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ

जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जइसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन हुअए। आकि ऐ परिवर्तनशील समए कैँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। ऐमे संयोजन आवश्यक, विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नै अछि जे रोशनाइसँ कागचपर जेना-तेना उतारि देलिऐ। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि। तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कऽ गढ़ल जएत आ व्यक्तिगत चेतना तखने सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि आओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करए पड़तन्हि। कथा क्रमबद्ध हुअए आ सुग्राह्य हुअए तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत, बुद्धिपरक नै व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कऽ देलक।

ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण-मेडिओकर स्टार-अछि। ओइ मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नगर-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही-तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास। आत्मप्रशंसा आ परस्पर प्रशंसा क परम्परा जइमे दोसराक निन्दा सेहो सम्मिलित अछि, उत्कृष्ट बाल साहित्यक निर्माण मे बाधक अछि। सरकारपर आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान-जकर कारणसँ महान बनबा/बनेबालेललेखक-समीक्षक जान अरोपने छथि, आ ओइ स्थितिमे जखन भाषा मरि रहल अछि। कार्ययोजनाक स्पष्ट अभाव अछि आ जेना-तेना किछु मैथिली लेल कऽ देबा लेल सभ व्यग्र छथि, कऽ रहल छथि। स्वयं मैथिली नै बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखबाक अभियान चलल अछि आ ऐमे मीडिया, कार्टून चैनल आ शिक्षा-प्रणालीक संग एक्के खाढ़ीमे भेल अत्यधिक प्रवास अपन योगदान देलक अछि। मैथिलीक कार्यकर्ता लोकनिक कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक लॉबिइंग कर्ताक अभाव अछि। कबदलाअपन/अप्पनलोकककीलाभ, ऐ लेल लोक बेशी चिन्तित छथि। मैथिली छात्रक संख्याक अभाव क कारण उत्पाद उत्तम रहला उत्तर सेहो विक्रयकौशलक अभाव बढ़ि जाइए। मैथिलीमे उत्तम उत्पादक अभाव तँ अछि ए, विक्रयकौशलक सेहो अभाव अछि।

मैथिलीक सन्दर्भमे बाल साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

बाल साहित्य लेखक सँ अनुरोध जे ङ आ ञ क प्रयोग करथि जइसँ बच्चाकेँ सुविधा हएत। नै बाल साहित्य मे लिखल जा सकैए। भाङ लिखल जएबाक चाही, भांगनै। फेरछनि, कहलनि कैं बच्चा क्रमसँ छ नी, कहलनीपढ़ैए, वर्कशाप मे एहन देखल गेल; सेछन्हि, कहलन्हि आदिक प्रयोग करू। मैथिली बाल साहित्यक लेखन मे संयुक्ताक्षर, आ ङ क प्रयोग भाषाक विशिष्टता काएम रखबामे सहायक हएत।

तहिना सरल शब्द मुदा खाँटी मैथिली शब्द जेना अकादारुण आदिक प्रयोग करू। बाल साहित्यमे गद्य आ पद्य दुनू महत्वपूर्ण अछि जँ कही तँ पद्यक ने बे सिये। गद्यमे कथा मे विषय क समावेश जेना विज्ञान, समाज विज्ञान आदि देलासँ मनोरंजन आ शिक्षाक मध्य तालमेल भऽ सकत। मैथिलीमे बाल कथा क एक राति धरि चलैत अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीमे चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदिक पोथीक अभाव अछि। संध्या विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नै देल जा रहल अछि। दूरस्थ शिक्षाक माध्यम सँ/अन्तर्जालक माध्यमसँ मैथिलीक पढ़ाइक अत्यधिक आवश्यकता अछि। सङे मैथिली लेल सभक हृदएमे अग्नि छन्हि, से ओ परस्पर एक दोसराक विरोधी किए ने होथु। लोकक बीचमे ऐ भाषाक आरोह, अवरोह आ भाषिक वैशिष्ट्य कैं लऽ कऽ आदर अछि आ ऐ मे मैथिली नै बजनिहार भाषाविद् सम्मिलित छथि। आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्वक कारण सेहो मैथिली महत्वपूर्ण अछि। ऐ भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति छै। बहुत रास संस्था, जइमे किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सेहो सम्मिलित अछि, एकर विकास लेल तत्पर अछि। ऐ भाषाक जननिहार भारत आ नेपाल दू देशमे तँ रहिते छथि आब आन-आनदेश-प्रदेशमे सेहो पसरल छथि।

शंकराचार्यक विषयमे कहल गेल जे ओ अपन कमंडलमे धार भरि लेलन्हि। भेल ई जे बाढ़िमे बीचेमे पहाड़ रहलाक कारण एक दिस बाढ़ि अबैत छल आ एक दिस दाही। बीचक गुफाकेँ शंकर अपन शिष्यक सहयोगसँ तोड़ि जखन कमण्डल लेने बहरओलाह तँ लोक देखलक जे दोसर कात पानि आबि रहल अछि। सभ शंकराचार्यक स्तुति कएलन्हि जे अहाँ अपन कमंडलमे धार आनि हमरा सभकेँ दाही सँ आ दोसर कातक लोककेँ बाढ़िसँ मुक्त कराओल। अहाँ कमण्डलमे पानि आधार अनलौं! बादमे अवसरवादी लोकनि एकरा चमत्कार सँ जोड़ि देलक। आशा अछि जे मैथिली बाल साहित्य लेखक सेहो अपन लेखमे उगनाक कथाक तर्क आ श्रद्धासँ विवेचना करता। गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार"बहुरा गोढ़िननटुआदयाल"लोक कथाक मल्लाह कथा नायक राजकुमार दुलरा दयाल,

भरौड़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि। मैथिली बाल साहित्य लेखक गोनू सँ आगू ईहो देखथु। ट्रेजेडीमे कथानक संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचारतत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। बाल साहित्यमे ट्रेजेडी नै हुअए, ओइ विचार कैँ हमर समर्थन नै अछि, समाजक निम्न वर्ग वा अस्पृश्य वर्गक लोक देवता सेहो कोना अस्पृश्य भऽ गेला से बच्चाकैँ बुझबै ए पड़त। मुदा बुझबै क ढ ङ एहेन हेबाक चाही जे बच्चा अपन धरोहरकैँ चीन्हि सकए, ओकरआदरकऽसकए। मिथिलाक लोक कथामे जाति-पाइतनैहोइ छै, साम्प्रदायिक ता नै होइ छै। गोनू झाक समएमे मुस्लिम मिथिलामे आ ए ले नै रहथि तखन मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार क कथा गोनू झाक खिस्सा मे किए घोसियाएल जा रहल अछि।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कएने छथि। आकिछुहस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जँ ओकरो सँ ई ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि-क्लीनस्लेट! बाल साहित्य सेहो एहने तंत्रांश अछि जे बाल मन पर अंकित भऽ जाइत अछि, मुदा एतऽ फॉर्मेट करबाक विकल्प नै छै। तैँ बाल साहित्यक निर्माण मे सत र्की आवश्यक अछि, सावधानी आवश्यक अछि। उमेरक हिसाबसँ बाल साहित्यक वर्गीकरण आ ओकर समीक्षा हेबाक चाही। शिशु (०-५बर्ख), बाल (५-१२बर्ख) आकिशोर (१२-१८बर्ख) उमेर मध्य बाल साहित्यक वर्गीकरण कऽ एकर समीक्षा समीचीन हएत। चित्र कथा पाँच बर्ख सँ छोट बच्चा लेल रचल साहित्य होइत अछि, ई स्कूल जाइ सँ पहिने अभिभावक द्वारा पढ़ाओल जाइत अछि। अभिभावक बच्चाकैँ कथा पढ़ि कऽ सुना बै छथि आ बच्चा चित्र क माध्यमसँ ओकर अनुभव करैए। बच्चाक तीव्र मानसिक विकास एकर परिणामस्वरूप होइत अछि। जखन बच्चा स्कूल जाए लगैए आ वर्णमाला सीखि लैए तखन ओ ई पोथी सभ अपने पढ़ऽ लगैए आ एकर संग आन आन पाठ्यपुस्तक आ चित्रित पोथी सभ पढ़ऽ लगैए। सात बर्खक बाद ओ छोट-छोट अध्याय बला पोथी आ नौ-दसबर्खसँपैघ-पैघ अध्याय बला पोथी पढ़ऽ लगैए। बारह बर्खक बाद बाल उपन्यास आदि क अध्ययन बच्चा सभ शुरू कऽ दैए। बाल साहित्यमे पारम्परिक लोक कथा, इतिहास-महाकाव्यक कथा आदि सुनाओल जाइत अछि। साहसिक आ प्रेरणा दा य क जीवनी आ नीति-प्रेरक कथा सेहो बाल साहित्य क अन्तर्गत अबैए। परीकथा, जादू, गीत आदि क माध्यमसँ सार्थक बाल साहित्यक निर्माण होइए। तैँ बाल साहित्यक समीक्षा मे बाल साहित्यक प्रकार पर सेहो ध्यान देबए पड़त। की बाल साहित्य अन्धिविश्वास कैँ बढ़ा वा तँ नै दऽ रहल अछि? की बाल साहित्य अपन धरोहरकैँ चिन्हबामे बच्चाकैँ सहयोग दऽ रहल अछि? की बच्चा मे मानव मूल्य क ज्ञान ऐ साहित्य कैँ पढ़बा सँ एतै? की जातिवादी आ वैचारिक कट्टरताक विरुद्ध बच्चाकैँ प्रशिक्षित करबाक उद्देश्य मे बाल साहित्य सफल भऽ रहल अछि? वैचारिक तराजू प सङा ह तँ नै भऽ रहल अछि, बच्चाक स्वस्थ मनोरंजन मे कोनो कट्टरता तँ सायास-अनायास नै घुसि गेल अछि? सरल शब्दावली, सरल भाषा आ सरल विचार बाल साहित्यक उत्कृष्टताक लेल कसौटी बनत।

मैथिलीक किछु सर्वश्रेष्ठ बाल साहित्य रचना:

काश्यप कमलक बाबूक सुनाएल खिस्सा (सहस्रमुखकदीप/गप्पकअर्थ/जहियासँकालधेलक/नीककरीतँपैघके? बेजाए करी तँ पैघ के?/पढ़ बेटा नै करी ओकरा गुन बो करी/अकिलकमोल), अनिल मल्लिकक दादीक गीत आ अर्चना कुमर क दादी सँ सुनल कथा (विद्वान) मैथिली लोककथा-गीतक रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि। शिवकुमारझा“टिल्लू” जीकतरेगनदेखाइए, दहीक ठोप आ खों इ छ क लेल साड़ी बाल मनोविज्ञान कैँ गहि या कऽ पकड़ैत अछि। दुर्गानन्द मण्डल जीक लघुकथा पारस एकटा सत्य चरित्र पर आधारित अछि, आ अदम्य इच्छा सँ लोक की-कीकऽसकैए, सेदेखबैत अछि। वृषेश चन्द्र लाल जीक लघुकथा गोल बा आ जगदानन्द झा“मनु” जीक बाल उपन्यास चोनहा मैथिली बाल साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, गोल बा आ चोनहा मे मनोविज्ञान जबर्दस्त रूपमे सोझाँ आएल अछि। वृषेश चन्द्र लाल बच्चा सभक लेल सुन्दर-सुन्दर कविता सेहो गाबै छथि। पंकज कुमार झा क माए गइ माए आ चन्दन कुमार झा क दू टा अ गड़ म-ब गड़ म जइ सरलता सँ गाओल गेल अछि से अद्भुत अछि, दुनू गोटे इन्जीनियर छथि आ गामक संस्कृतिसँ पूर्णतः परिचित छथि। संस्कृतिवर्मा४था मे पढ़ै छथि आब स्ता क बोझ आ अभिभावकक आ सूचना प्रौद्योगिकी सँ परेशान छथि आ अपन मनोभाव व्यक्त करै छथि। मनोज कुमार मण्डल, शिव कुमार झा टिल्लू, राजेश मोहन झा गुंजन, नरेश कुमार विकल, रमाकान्त राय रमा आ महाकान्त ठाकुरक बाल कवितामे प्रवाह अछि। मुदा जँ बाल मनक हिसाबसँ देखी तँ चन्द्र शेखर का मति प्रवाह आ भाव मे सभकैँ पाछाँ छोड़ि दै छथि। मुन्नी कामतक पात्रा कहै छथि नै खे बै तरकारी, रोटी/हमरा नू ने रोटी खाए दे/मुदा मायगे,/हमरा तूँ पढ़ै लेल जाए दे। ई पढ़बाक ल ल क चन्दन कुमार झा क हमहूँ पढ़बै आब मे सेहो देखबामे अबैत अछि। शम्भूनाथ झा मैथिलीमे न्यूटन क सिद्धान्त पढ़बै छथि। प्रभात राय भट्टक चुनमुन चुनमुन करैत चि ड़ि या सुन्दरता सँ भाव आ शब्दक कएल मिलन

अछि। संग मे दे वां शु वत्स क प्रगतिक रहस्य आ तु निशा प्रिय म/गुंजनकर्ण/गणेशठाकुर/अनु पमा प्रिय द र्शि नी/श्वेताझाचौधरी/श्वेताझा (सिंगापुर) कचित्रकला अछि। श्वेता झा चौधरीक मिथिला चित्रकलाक कोनो जोड़ नै अछि।

ई शिशु उत्सव मैथिली बाल साहित्य केँ फ रि छे ल क अछि आ बच्चा सभ द्वारा एकटा पिकनिक क रूपमेँ एकर प्रयोग आबैबला क एक वर्ष तक होइत रहत, सेआशा अछि।

८. मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र

सारांश

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक वृहत्कथा क क्षेमेन्द्रक कथा मं ज री वा सोमदेवक कथासरित्सागर क अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवाद क कथाक प्रारम्भ तँ क हिते अछि। अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिन क कोनो कालजयी कृति जखन दुरूह हेबऽ लागल तँ ओइपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक खगताक अनुभव भेल आ कनेक आर आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक खगताक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कीलित शिलालेख सभ, क एकटा लिपि आ भाषा मे, राज्यक आ देशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

बीजशब्द: अनुवाद · सिद्धान्त · अनूदित · साहित्यक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गुणाढ्यक पैशाची भाषाक वृहत् कथाक क्षेमेन्द्रक कथा मंजरी वा सोमदेवक कथासरित्सागरक अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवादक कथाक प्रारम्भ तँ कहिते अछि। अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिनक कोनो कालजयी कृति जखन दुरूह हेबऽ लागल तँ ओइपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक खगताक अनुभव भेल आ कनेक आर आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक खगताक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कीलित शिलालेख सभ, कएकटा लिपि आ भाषामे, राज्यक आदेशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

गुणाढ्यक पैशाची भाषाक वृहत्कथा क क्षेमेन्द्रक कथा मं ज री वा सोमदेवक कथासरित्सागर क अनुवाद होएबाक कथा कथा कहबाक शैली सेहो भऽ सकैए मुदा ई अनुवाद क कथाक प्रारम्भ तँ क हिते अछि।

अनुवादक इतिहास बड्ड पुरान छै। कोनो प्राचीन भाषा जेना संस्कृत, अवेस्ता, ग्रीक आ लैटिन क कोनो कालजयी कृति जखन दुरूह हेबऽ लागल तँ ओइपर चाहे तँ भाष्य लिखबाक खगताक अनुभव भेल आ कनेक आर आगाँ ओकरा दोसर भाषामे अनुवाद कऽ बुझबाक खगताक अनुभव भेल। प्राचीन मौर्य साम्राज्यक सम्राट अशोकक पाथरपर कीलित शिलालेख सभ, क एकटा लिपि आ भाषा मे, राज्यक आ देशकेँ विभिन्न प्रान्तमे प्रसारित केलक। भाष्य पहिने मूल भाषामे लिखल जाइत छल आ बादमे दोसर भाषामे लिखल जाए लागल।

मैथिली सँ दोसर भाषा आ दोसर भाषा सँ मैथिलीमे अनुवाद लेल सिद्धान्त: मैथिली सँ सोझे दोसर भाषामे अनुवाद अखन धरि संस्कृत, बांग्ला, नेपाली, हिन्दी आ अंग्रेजी धरि सीमित अछि। तहिना ऐ पाँचू भाषा क सोझ अनुवाद मैथिलीमे होइत अछि। ऐ पाँच भाषाक अतिरिक्त मराठी, मलयालम आदि भाषा सँ सेहो सोझ मैथिली अनुवाद भेल अछि मुदा से नगण्य अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ मैथिली सँ अन्य भाषा मे अनुवाद ऐ पाँचू भाषाकेँ मध्यस्थ भाषाक रूपमे लऽ कऽ होइत अछि। अहू पाँच भाषामे हिन्दी, नेपाली आ अंग्रेजी क अतिरिक्त आन दू भाषा क मध्यस्थ भाषाक रूपमे प्रयोग सीमित अछि। अनुवाद सँ कने भिन्न अछि रूपान्तरण, जेना कथाक नाट्य रूपान्तरण वा गद्यक पद्य मे पद्यक गद्य मे रूपान्तरण। ऐ मे मैथिली सँ मैथिलीमे विधाक रूपान्तरण होइत अछि आ अनुवाद सिद्धान्तक ज्ञान नै रहने रूपान्तरकार अर्थ आ भावक अनर्थ कऽ दैत अछि। मैथिलीमे आ मैथिली सँ अनुवाद मे तँ ई समस्या आर विकट अछि।

उत्तम अनुवाद लेल किछु आवश्यक तत्त्व: शब्दश: अनुवाद करबा काल ध्यान राखू जे कहबी आ सन्दर्भ क मूल भाव आबि रहल अछि आकि नै। श्ब्द, वाक्य आ भाषाक गढ़ नि अक्षुण्ण रहए से ध्यानमे राखू। मूल भाषाक शब्द सभ जँ प्राचीन अछि तँ अनूदित भाषाक शब्द सभकेँ सेहो पुरान आ खाँटी राखू। मूल आ अनूदित भाषाक व्याकरण आ शब्द भण्डारक वृहत्ज्ञान एतए आवश्यक भऽ जाइत अछि। मूल भाषा मे मुँह को चि या कऽ बाजल रामनाथ, उमेश क प्रति सम्बोधन केँ राम नाथो, उ मे शोक बदलामे रामनाथहुँ, उमेश हुँ कऽ अनुवाद कएल जाएब उचित हएत मुदा सामान्य परिस्थितिमे से उचित नै हएत। सेशब्द, भाव, प्रारूपमे सेहो आ मूल कृतिक देश-कालक भाषामे सेहो समानता चाही। अनुवादककेँ मूल आ अनूदित कएल जाए बला भाषाक ज्ञान तँ हेबाके चाही संग मे दुनू भाषा क्षेत्र इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबीआग्रम्य-वन्य आ नग्रक संस्कृतिक ज्ञान सेहो हेबाक चाही। ई मध्यस्थ भाषासँ अनुवाद करबा काल आर बेसी महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि। ऐ परिस्थितिमे“दुनू भाषा क्षेत्रक इतिहास, भूगोल, लोककथा, कहबीआग्रम्य-वन्य आ

नग्रक संस्कृतिक ज्ञान” सँ तात्पर्य अनूदित आ मूल भाषा क्षेत्रसँ हएत मध्यस्थ भाषा क्षेत्रसँ नै। कखनो काल मूल भाषाक कोनो भाषा सँ सम्बन्धित तत्त्व वा गएर भाषिक तत्व (सांस्कृतिक तत्त्व) कसही-सही उदाहरण अनूदित भाषा मे नै भेटैत अछि आ तखन अनुवाद क गपकैँ न म रा ब ऽ लगैत छथि वा ओइ लेल एकटा सन्निकट शब्दावली (ओइ नै भेटल तत्त्वक) देमएलगैत छथि। ऐ परिस्थितिमे सन्निकट शब्दावली देबा सँ नीक गप कैँ न म रा कऽ बुझाएब वा परिशिष्ट दऽ ओकरा स्पष्ट करब हएत। ऐ सँ मूल भाषा सँ मध्यस्थ मा षा क माध्यमसँ कएल अनुवादमे होइबला साहित्यिक घाटा कैँ न्यून कएल जा सकत।

कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध), निबन्ध, स्कूल-कॉलेजकपुस्तक, संगणकविज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञान क पोथीक अनुवाद करबा काल किछु विशेष तकनीक क आवश्यकता पड़त। निबन्ध, स्कूल-कॉलेजकपुस्तक, संगणकविज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञान क अनुवाद ऐ अर्थें सरल अछि जे ऐ सभ मे विस्तारसँ विषयक चर्चा होइत अछि आ सर्जनात्मक साहित्य{कथा, कविता, नाटक, उपन्यास, महाकाव्य (गीत-प्रबन्ध)}क विपरीत भाव आ संस्कृतिक गुणां क नै रहैत अछि वा कम रहैत अछि। संगे एतए पाठक सेहो कक्षा/विषयक क अनुसार सजाएल रहैत छथि। केमिकलनाम, बा यो लो जि क ल आबो टे निकलबा इन री नाम आ आन सभ सि म्बल आदि जे विशिष्ट अन्तर्राष्ट्रीय संस्था सभ द्वारा स्वीकृत अछि तकर परिवर्तन वा अनुवाद अपेक्षित नै अछि। सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, फेर कविता अछि आ तखन कथा, जँ अनुवादकक दृष्टिकोणसँ देखी तखन। नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ परोक्ष निहितार्थ कैँ चिन्हित करए पड़त संगहि पात्र सभक मनोविज्ञान बूझ ए पड़त। कवितामे कविताक विधा सँ ओकर गढ़ नि सँ अनुवादकक परिचित भेनाइ आवश्यक, जेना हाइकूक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद करै बेर मे मैथिलीक वार्णिक५/७/५क मेल जँ अंग्रेजीक अल्फाबेट सँ करेबै तँ अहाँक अनूदित हाइकू हास्यास्पद भऽ जाएत कारण अंग्रेजीमे५/७/५सिलेबल क हाइकू होइ छै आ मैथिलीमे जेना वर्ण आ सिलेबल क समानता होइ छै से अंग्रेजीमे नै होइ छै। ऐ सन्दर्भमे ज्योति सुनीत चौधरीक मैथिलीसँ अंग्रेजी अनुवाद एकटा प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि। कविताकलय, बिम्ब पर विचार करए पड़त संगहि कविता खण्ड क कविताक मुख्य शरीर सँ मिलान करए पड़त। कथामे कथाकार क आ कथाक पात्रक संग कथाक क्रम, बैकफ्लैशकसमय-कालक ज्ञान आ वातावरणक ज्ञान आवश्यक भऽ जाइत अछि। आब महाकाव्यक अनुवाद देखू, रामलोचनशरणक मैथिली रामचरितमानस अवधी सँ मैथिलीमे अनुवाद अछि मुदा दोहा, चौपाइ, सोरठा सभ शास्त्रीय रूपेँ अनूदित भेल अछि।

संस्कृत भाषाक अनुवादक माध्यमसँ पाठन आंग्ल शासक लोकनि द्वारा प्रारम्भ भेल। ऐ विधि सँ ने लैटिन क आ नहिये ग्रीक क अध्यापन कराओल गेल छल। ऐ विधि सँ जँ अहाँ सं स्क त वा कोनो भाषा सीखब तँ आचार्य आ कोविद कऽ जाएब मुदा सम्भाषण नै कएल हएत। जँ कोनो भाषाकैँ अहाँ मातृभाषा रूपेँ सीखब तखने सम्भाषण कऽ सकब, संस्कृति आदिक परिचय पाठ्यक्रममे शब्दकोष; आलोककथाआइतिहास/भूगोल क समावेश कऽ कएल जा सकैत अछि।

संगणक द्वारा अनुवाद: सर्जनात्मक वा निबन्ध, स्कूल-कॉलेजकपुस्तक, संगणकविज्ञान, समाजशास्त्र, समाज विज्ञान आ प्रकृति विज्ञान क अनुवाद संगणक द्वारा प्रायोगिक रूपमे कएल जाइत अछि मुदा“को ल्ड ब्ल डे ड एनी मल” क अनुवाद हास्यास्पद रूपेँ“नृशंसजीव” कएल जाइत अछि। मुदा संगणकक द्वारा अनुवाद किछु क्षेत्रमे सफल रूपेँ भेल अछि, जेना विकीपीडिया मे५००शब्दकएकटा“बेसी प्रयुक्त शब्दावली” आ२६००शब्दक“शब्दावली” कअनुवादकेलासँ, गूगल क ट्रान्स ले शन अओजार आदि मे आधारभूत शब्द क अनुवाद केलासँ आ आन गवेषक जेना मोजिला फायरफॉक्स आदि मे अंग्रेजी क सभ पारिभाषिक संगणकीय शब्दक अनुवाद केलासँ त्रुटि विहीन स्वतः मैथिली अनुवाद भऽ जाइत अछि।

काव्य, छन्द, नाटक आ रंगमंच

९. पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र

सारांश

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथाओगद्यथीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। हरिमोहनझा“अकविताक प्रति: कविताक उक्ति” लिखै छथि आ गोपाल जी झा“गोपेश” “हे कविकोकिल आजुक युगमे अहाँ जे होइतहुँ” मेकहैछथि–-अपनहि लिखित हुँ अपनहि बुझितहुँ-आ से कहि अपन अपन मत स्पष्ट करै छथि।

बीजशब्द: पद्य · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “पद्य साहित्य आ ओकर समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। हरिमोहन झा “अकविताक प्रति: कविताक उक्ति” लिखै छथि आ गोपाल जी झा “गोपेश” “हे कवि कोकिल आजुक युग मे अहाँ जे होइतहुँ” मे कहै छथि –-अपनहि लिखितहुँ अपनहि बुझितहुँ- आ से कहि अपन अपन मत स्पष्ट करै छथि। मुदा ऐसँ ई नै बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री (गायत्री छन्दमे) मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण गायत्री छंदमे परिगणित होइत अछि, जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ प्रत्येक पादमे एक आकि दू अक्षर बढ़ा लेल जाइत अछि, य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत

३

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथाओगद्यथीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। हरिमोहनझा“अकविताक प्रति: कविताक उक्ति” लिखै छथि आ गोपाल जी झा“गोपेश” “हे कविकोकिल आजुक युगमे अहाँ जे होइतहुँ” मेकहैछथि–-अपनहि लिखित हुँ अपनहि बुझितहुँ-आ से कहि अपन अपन मत स्पष्ट करै छथि। मुदा ऐ सँ ई नै बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री (गायत्री छन्दमे) मंत्र सेहो शिथिल/उदार नियमक कारण गायत्री छंद मे परिगणित होइत अछि, जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ प्रत्येक पादमे एक आकि दू अक्षर बढ़ा लेल जाइत अछि, य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-वरेण्यम्=वरेणियम्आस्वः=सुवः।

मैथिली पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र: कविताकलय, बिम्ब पर विचार करए पड़त संगहि कविताक खण्ड केँ कविताक मुख्य शरीर सँ मिलान करए पड़त। आजुक नव कविताक संग हाइकू लेल मैथिली भाषा आ लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। गजल, रुबाइ आदि मे वार्णिक आ मात्रिक दुनू छन्द व्यवस्था कारगर अछि आ बिनु बहर (छन्दक) आजाद गजल सेहो लिखल जाइत अछि। कोनो रचना अप्रासंगिक नै होइत अछि आ जौँ ओ अहाँकेँ हिलोड़ि दिअए तँ ओ रचना सार्थक कोना नै हएत? प्लेटो-प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही। ओकाव्य/नाटकक ऐ रूपेँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित हएत। अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइत छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला, ऐ दू तरहक कविता देखै छथि तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी, जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी-ओ कविताकेँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि। नवसमीक्षा-इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध कएल आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। रोमांशवाद कविताक व्यक्तिगत अनुभव होएबाक बात कहैए। बार्थेज संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि-लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। जादुइ वास्तविकतावाद जइमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि, रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि। उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोग कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक

विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तेँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै हएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आएत। आधुनिकतावादी-स्थितिवाद, नवसमीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आएल, जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिकजेनसन) । आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकरा बाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक। संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर) । उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि, जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत सन असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए।

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब-आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण) । कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक पर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी, एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। रस सिद्धान्त: भरत:-नाटकक प्रभावसँ रस क उत्पत्ति होइत अछि। नाटककथीलेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रसकोनाबहराइए? रसबहराइएकारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। भट्टलोलट:-स्थायीभावकारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। शौनक:-शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँश्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ईश्रोता-दर्शक-पाठक पर जोर दैत अछि। ध्वनिसिद्धान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक-साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब अछि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक, ई दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि, ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित हएब सम्भव नै अछि। स्फोटसिद्धांत: भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्दआवाक्यसंग-संगनैरहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण हए बा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। अलंकार सिद्धान्त: भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्य न्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमामानेउदाहरण, रूपकमानेकहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने

विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। औचित्य सिद्धान्त: क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व माननन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ईहेबाकचाहीपद, वाक्य, प्रबन्धकअर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपातमानेफाजिल, काल, देशकुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे।

अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकनसँ लेखकक ऐ प्रवृत्तिकेँ समीक्षक चिन्हित करैत छथि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइत छैक, तकरा समीक्षक चिन्हित करैत छथि, हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? समीक्षक ई सेहो चिन्हित करैत छथि। मैथिली साहित्य, जतए पाठकक संख्या शून्य छलै, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत छल आ एतए व्यक्तिगत अहम्आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छलै, अखनो सुखाएल मुख्यधारा(!) क पद्यमे ई लक्षण भेटैत अछि। अहाँ दू-चारिटा सुखाएल मुख्यधारा(!) क कवि सम्मेलन मे चलि जाउ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी, उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत, माने ब्लैकमेलिंग आ ब्लैक-मार्केटिंग द्वारा कविताक पुरस्कार लेल लिखल जाएब। मुदा बुकर आ नोबल साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्य सेहो कालातीत नै रहि पबैत अछि, बहुत रासकेँ तँ लोक मोन रखैत अछि मुदा ढेर रास विस्मृत भऽ जाइत छथि आ पाठक ओकर मूल्यांकन ऐ तरहेँ कऽ दैत छथि। पद्य लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयास अन्तर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा पद्य ओइ प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण पद्य कियो नै पढ़ैत अछि आ जइ भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तइ भाषामे पद्यक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि (जातिवादी रंगमंचक नाटक देखि लिअ, ई स्पष्ट भऽ जाएत जे हमरा सभकेँ सुखाएल मुख्यधारा(!) क लेल मैथिली उच्चारणक लेल शिविर लगाबए पड़त) । तँ ऐ स्थितिमे मैथिलीमे पद्य लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे पद्य लिखै छी, ऐ गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह सुखाएल मुख्यधारा(!) क मैथिली पद्यक क विषय-वस्तुबनिगेलछल। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै? कथाकनाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक पद्य मे रूपान्तरण कोन उद्देश्यसँ? समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक पद्य सभक पाठक छथि गोलैसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन पद्यक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महा पद्य कार लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जँ गहींर धरि नै उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट पद्य नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जँ ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलैसी आ वादक सोंगरक अछैतो सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यकता अछि भोजन, वस्त्र आ आवास, आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जँ जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि! से आधुनिक मैथिली पद्य कार जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनो आँखि मूनि कऽ ओइ सत्यकेँ नै मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रम आ वाद पद्य मेघो सि आबए चाहै छथि, देशज दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ तइमे धार नै आबि पबैत अछि। तँ पद्यकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तुनैचाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र हुअए। नीक पद्य कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कए, असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल, नै तँ लोक प्रवचनमे ढोंगी बाबा ऐठाम जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबै ए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नै तँ पद्य कार लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर पद्यक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से किछु पद्य कार लोकनि कइयो रहल छथि! मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता; आराजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिकस्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो पद्यमे अएबाक चाही। आ से नै भेने पद्य एकभगाह भऽ

जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। पद्य रचब विवशता अछि, साहित्यिक। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत हएत, तहिया पद्यक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तइ लेल सेहो पद्य कार केँ सतर्क रहए पड़तन्हि, आसेओसभसतर्क छथि।

पद्यमे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए। मेडियोक्रिटी चिन्हित करू-तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज-आधुनिकताक नामपर, युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार ऐ मे नै भेटत, से ऐ अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्यक, बुश-सद्दामक आलोचनामे धार ओइ कारणसँ नै आबि पबैत अछि। कोनोमन्दिर-मस्जिदक जे ओ समर्थन-विरोध करैत छथि वा कोनो नन्दीग्राम-लालगढ़कसेहो, तँ ओइमे सेहो तइ तरहक धार नै अबैत अछि। दारू पीबि मँतल मानव वादी, धर्मनिरपेक्षता वादी, वामपंथ वादी आ दक्षिण पंथ वादी, हिनकर विचार लागत ओंघाएल, युगक सभ शब्दावली भरताह आ पद्य तैयार। अमेरिकाक आलोचनामे धार कोना आओत आ वामपंथक पक्षमे सेहो-जखन अपन आजीविका दक्षिणपंथक मदतिसँ चलि रहल अछि! संघर्षक अभाव सृजनात्मकताक स्तरकेँ समए बढ़लासँ बढ़ेबाक बदला घटबैत अछि। युगक अनुरूप सभ चलैए, ओकर विपरीत चलब तखन ने सृजनात्मकताक संग चाही, दोसराकेँ पलायनवादी कहनिहार ऐ तरहक सुविधावादी तत्वकेँ चिन्हित करू, गहींर पैसब जिनका लेल संभव नै। इतिहाससँ जुड़ाव ऐतिहासिक मनोभावनासँ जोड़ि सकत। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाकेँ माटि देबामे धारक अभाव-हीनभावनाग्रस्त आ अपराध भावसँ भरल लेखकसँ संभव नै। न्याय वैशेषिक आ सांख्य-योगकवस्तुवाद, बाह्यक यथार्थ आ मायाक विरोध, गृहस्थजीवन, लोकहित, कला आ साहित्यक कृति; आत्माक भीतरक ज्ञान प्रज्ञापर आधारित होइत अछि जे अखण्ड अछि-गति, स्वतंत्रता, सर्जनात्मक परिवर्तन। इतिहास वा साहित्यक इतिहास हम बदलि नै सकैत छी आ एतए उच्च आ मध्यवर्गक स्मृति आधारित मिथिलाक स्वर्णयुग(!); मुदा तकर महत्व दूरदर्शन आ चलचित्र टामे भऽ सकैत अछि। उदारवाद, औद्योगिकरण आ तकर आर्थिक विकासक सफलता-असफलता, सामाजिक रूपमे समाजक पिछड़ल वर्गक विरोधकेँ आरक्षण आ स्वतंत्रता पसारि देलक मुदा संगहि एकर तीव्रता कम केलक से चाहे ओ नक्सलवाद हुअए वा माओवाद वा मर्क्सवाद-लेनिनवाद। बुर्जुआ वर्गक लेल ई फाएदा रहल। बुर्जुआ वर्गक राजनैतिक आ सांस्कृतिक संगठन पसरल; आ सर्वहारा वर्ग धरि ई पहुँचए से प्रयास; आ महिला लोकनिकेँ ऐमे सम्मिलित करबाक प्रयास। पाइ आ सुविधा अपना संग परम्परागत नैतिकताकेँ तोड़लक। कम्पनी अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनेलक आ परिवार आ व्यक्ति ऐ तरहक कम्पनीकेँ नौकरीपेशा लोकक संग चलबए लागल। प्रकृतिपर नियन्त्रण आ मानवीय व्यवहारक अवलोकन, काजक लेल अन्न आ काजक बदला पाइ, रोजगार गारन्टी कार्यक्रम, जनवितरण प्रणालीक दोकान, रोजगार लेल देश-विदेशछोटहएब, परिवारक आधारपर आघात, पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था, परिवर्तन आपरूपी नै वरन्संघर्ष आ प्रयाससँ भेटत। स्वतंत्र मानवीय संवेदना जे नीक भविष्यक गारंटी नै दैत अछि तँ ई अधलाहक सेहो गारंटी नै दैत अछि। हमरा लग विकल्प अछि आ मैथिली पद्यक पुनर्जीवनक जे प्रमाण भेटि रहल अछि से आह्लादित करैबला अछि। विकल्प हमरा सभकेँ तकबाक अछि जे सनसनी पसारी आकि कार्य करी।

समीक्षाक प्राच्य आ पाश्चात्य सिद्धांत सभक आलोकमे समीक्षा: (सिद्धान्त आ प्रयोग)

बूच जीक किछु कविता केँ समीक्षाशास्त्र क सिद्धान्त आ प्रयोगक पाठशाला लेल हम चुनने छी।

बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

आउआगाँबढ़ीआदेखी:-

जेठीकरेह: बूच जीक कविता जेठी करेह, कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ त अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि? आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि! ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ। आब एतए एकरा संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ त अछि तँ आशा करू जे आन बेरमे ई नै उधिआइत हएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजकेँ ई अपनामे समा लैत अछि। ओकर रेतक बढ़लासँ कविक धैर्य चहकै छन्हि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर ऐतिहासिक विश्लेषणपर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अर्थ देत। खतराक बिन्दु जे कविक समएमे उँ च गर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा धारक मवादक चलते ओतेक उँ च नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल कविक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ विखण्डनवाद दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बर्खा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला इंजीनियरक करेहकेँ बान्हबाक प्रयासक

बुरबकीक रूप लेब आ कविक करेह द्वारा बान्ह तोड़ि प्रलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक होएबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे धारकेँ रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-कीफाएदानेकरत! ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतए खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, ओ धारक खतराक निशानक ऊँच होमएबला गप बुझबे नै करत आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। आब फेर विखण्डनवाद दिस आउ आ आगाँ विखण्डन करू। ई तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, धार सेहो परिवर्तित रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत। उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत। स्वागतगान: स्वागत गानक सामान्य पाठ-कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा मिथिलाक उपटैत धरतीक करुण क्रन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन हएत। भ्रमर पियासल, फलक गाछ मौलायल, तखन ऐ समारोही गोष्ठीसँ की हएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी लिअए पड़त। कविताक नीचाँमे सूचना अछि-विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, ग्राम-बैद्यनाथपुर, प्रखंड-रोसड़ा, जिला-समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड मिथिलासँ पड़ाइनक प्रारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक प्रतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक प्रति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिल आधारित औद्योगीकरण निपत्ता छल आ शिक्षाक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे समारोही गोष्ठीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। स्वागत गानक ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि कहि कवि अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा नैय्यायिक उदयनक गाम करियनक कवि बूच जी दार्शनिक नै छथि, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि-हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि, आ मात्र ई समारोही गोष्ठीसँ की हेतै? आगाँ ओ कहै छथि-काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी, एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे खोरनाठी। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। मार्क्सवादी दृटिकोणसँ देखलापर लागत जे कविक काजकेँ ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक सुखाएल मुख्यधाराक स्वागत आ ऐश्वर्य गान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल। बेटी बनलि पहाड़: बेटी बनलि पहाड़ कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेंटक घैल बनल छथि। बेटी अएलीह तँ उड़नखटोला चढ़ि कऽ मुदा हरि गरुड़ कैँ त्यागि कार माँगि रहल छथिन्ह। पैंतीस ग्राम सोना पुड़ेलन्हि मुदा आब बियाह रातिक खर्चा चाही आ बरियाती दस गाही अओताह; सौँसे बल्ब जड़ि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरथ एको पाइ नै मंगल न्हि, रामो किछु नै बजलाह। इतिहास तँ कृष्णक प्रेम क छल मुदा तैसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकड़ने अछि आ घरे-घर बूचड़खाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। बेटी बनलि पहाड़ कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ: ई कविता काटर प्रथाक विरोधक कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे (अखनो) काटर प्रथाक कारण उड़नखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटीक बाप अपस्याँत छथि। करूणगीत: करूण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक करुण गीत सुनि श्रवित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक शौर्य शिखरपर शान्ति सागरक सुलभ जीत! जहिना किछु आलिंगन करै छी अनेको वक्रशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आचलिगेलि!) प्रेमक मधु तीत भऽ गेल। रजनीक रुदन विगलित प्रभात! करूण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ: कुसुमित काननक श्रवित लोचन द्वारा देखब, श्रृंगार सेज पर ज्वलित मसानक रौद्र रूपक आएब आ सुवर्णक शौर्य शिखर पर-शांति सागरक सुलभ जीत कैँ देखू। भाषाक अनभुआर पक्षक कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। गामे मोन पड़ैए: गामे मोन पड़ैए कविताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बथुओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकत्तामे गामे मोन पड़ि रहल अछि। करेहक पानि पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पति पत्नीकेँ ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि! नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़ैए कविताक पाठ: प्रवासक कविता अछि ई। तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला प्रवासमे छथि। अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल,

असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि। सोनदाइ: सोन दाइ कविताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा सेकिए? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़गलिगेल छथि। तैयो किए विश्वास छन्हि सोन दाइकेँ? ऐ सभक उत्तर आगाँ जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ प्रवास काटि रहल छथि। आजौँ-जौँउमेरबढ़तै, कहिया धरि सोन दाइक घरमे वास हेतै। नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कविताक पाठ: नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त हुअए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल प्रवास काटि रहल छथि? अकाल: अकाल कविताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कवि नाङरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करैत छथि। अनावृष्टिसँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ैत गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर विभीषणक घर सेहो नै बाँचत कारण ओकर मुंडमाल डोरीसँ बान्हल अछि। माएभरि-भरि पाँज कऽ धरती पकड़ि रहल छथि। दशानन अपन बीसो आँखि ओनारि माथ हिला रहल छथि। अकाल कविताक औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि मिथिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाँचत। तोहरठोर: तोहर ठोर कविताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर। सुन्नरि द्वारा बातक चून लगाएब आ कऽथक सन लाल बुन्न कपोल सजाएब! मुदा प्रेमक पुंगी कतए? भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, बिनु सुन्नरि व्याकुल साँझ जेकाँ। बधिक जे बनत सुन्नरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुधा कम्मे अछि, तहिना सुन्नरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी! सकरी मिल महान बनत जे हम विश्वकर्मासँ विज्ञान सीखब, आ ओइ मिलसँ बहार हएत माधुर्य। कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो धान आ चिष्टान्न बनि सुन्नरि हम अहाँक लग आएब। मुदबा एतबा बादो शब्दसँ उद्देश्य कहाँ प्रगट भेल। अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: बातक चून लगाएब अप्रस्तुत; कऽथक सन लाल बुन्न कपोल, पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर, भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर, ई सभ उपमा कवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक? मेसादृश्य-विरोध अछि। अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: लगौलह बातक पाथर चून। आ सजौलह कऽथ कपोलक खून। विभाव अछि आ ऐ कारणसँ देखि कऽ लहरल हमर करेज अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। स्फोट सिद्धांतक आधारपर तोहर ठोर कविताक पाठ: आब नैय्यायिक उदयनक करियनक धरतीपर रहबाक अछैतो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तकेँ नै मानब कविक कविताकेँ नै अरघै छन्हि। मने मे रहल मनक सभ बात कहि ओ अलभ्य चित चोर सँ सुन्नरिक ठोरक तुलना कऽ दै छथि। उदयनक गामक कवि बूच कहै छथि भऽ रहल वर्ण-वर्णनिःशेष, शब्द सँ प्रगटल नहि उद्ग्येश्य; एतए शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण कवि द्वारा तोहर ठोर आ ऐ संग्रहक आन कविता सभमे जाइ तरहेँ भेल अछि, से संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा मैथिली (यहूदी मेनुहिनक शब्दमे) मे विद्यापतिक बादक सभसँ लयात्मक कविक रूपमे बूचजी केँ प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली कविताकेँ ऐ रूपमे फेरसँ परिभाषित करैत अछि।

मैथिलीक किछु सर्वश्रेष्ठ पद्य:

अंजनी कुमार वर्मा“दाऊजी” क ओज क भोजमे आत्मीयता केँ मृग मरीचिका कहल गेल अछि, तँ समस्या मे ओ पू छै छथि जे लोक कोना उ ल्ल सित हएत? आत्मबल मे हुनक मानब छन्हि जे जखन अपन वा अनकर जान क मोह खतम भऽ जाइए तखने अभिमन्यु बला खून आबैए। बलराम साह केँ सभ नीक गप अ जू बा लगै छन्हि, आ हुनकर नीन टूटि जाइ छन्हि। रवि भूषण पाठक आ विवेकानन्द झा बहुत रास गप केँ फ ड़ि छा बैत छथि। ऐ बेर छठि मे मे रवि भूषण पाठक सुरुजक उ ग बा क स्थान क एकटा नूतन बिम्ब लऽ सोझाँ आएल छथि-भगवानतँऐबेर दुसधटोलीक पाछू सँ उगि रहल छथि/......दुसधटोलीक पाछू अकास टका टक लाल छल ए....। विवेकानन्द झा हम कविता मे लिखैत छथि-हमही अहाँक फूल डा ली सँ उ झि क कऽ खसल कने र/हमहीकोशीकनव-जल भसि आएल काँट कुश अनेर।

सतीश चन्द्र झा बाल दिवसपर ने न्नाते त री क व्यथा केँ सुर मे लिखै छथि आ ओ सुर आ लय राजेश मोहन झा गुंजन आ शिव कुमार झा टिल्लू मे सेहो छन्हि। मुन्नाजी बोनिहार आ माटिक ल लकार मे पद्य केँ वर्तमान समस्या सँ जोड़ैत छथि।

अमितमिश्र, चन्दनकुमारझा, जगदानन्दझामनु, ओम प्रकाश झा आ आशीष अनचिन्हार, ई सभ बहरमे गजल लिखै छथि आ पुरान गजलकार सभ क बहर अज्ञानताकेँ देखार करै छथि। जगदानन्द झा मनु शेर कहै छथि-बरखा खु बे ब रि सय तँ गर जय ब दरबा/छ ति या दगध भेलै हि या का नै हमर। हिनकर सभक गजल मे जे तीव्रता अछि, स्तर अछि, से बएसमे पैघ राजेन्द्र विमल आ अरविन्द ठाकुरक (२०११मे दुनू गोटेक आजाद गजलक संग्रह आएल छन्हि) शिथिल गजल सभसँ स्तर मे बड्ड आगाँ अछि। सूर्यास्तसँ पहिने मे

राजेन्द्र विमल बहरक नाम तँ गनबै छथि मुदा बहुत तकलो पर ऐ संग्रहक गजल मे बहरक द र्श नै होइत अछि, ईमोटा-मोटी सियाराम झा सरस क ओइ उक्ति जे ओ स्वयं क विषयमे लिखने रहथि जे ओ (सियारामझा सरस) गोर-बी से क बहरमे लिखै छथि, सँ मेल खाइत अछि, कारण सरस जी सेहो राजेन्द्र विमल जकाँ आजाद गजले टा लिखै छथि। जीवन युगक आन आजाद गजलकार लोकनिक शिथिल गजल लेल सेहो ई सभ गजलकार एकटा पैघ चुनौती साबित हेता। नवीन कुमार आशा मे आगाँ बढ़बाक लक्षण छन्हि। किशन कारीगर हास्य सँ गम्भीर दिस आएल छथि आ दुनू मे आगाँ जा रहल छथि। जँ गीत गे बा क हुअए तँ चन्द्र शेखर का मति, जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल, धीरेन्द्रप्रेमर्षि, जगदीश प्रसाद मण्डल, श्यामलसुमन, प्रकाशप्रेमी, रमाकान्तरायरमा, नन्द विलास राय, बेचन ठाकुर आ रामविलास साहु क गीत-गजलपढ़ू-गाउ। जय प्रकाश मण्डल लिखै छथि-एशिया ड ओ लोपिं क मे नामो घि ने लौं/धनि ई म ल्ले श्व री जेकाँ स्य ए गोप एलौं। सत्येन्द्र कुमार झा क क्षणिका सभ नीक छन्हि-श्म सा नो मे आब कहाँ छै खाली परती/धरती सभ पर क एक बेर क एकटा लाश जरल छै-/आब तँ आबैबला प्रत्येक शव/अपना संग अपन पूर्वो जो कैँ/एक बेर फेर जरा दैत अछि। पंकज कुमार झा क उ द्वो धन आ सहजता समाजसँ कविताक जुड़ाव देखबैत अछि। जँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ हाइकू/टनका पढ़बाक अछि तँ वृषेश चन्द्र लाल कैँ पढ़ू। मनोज कुमार मण्डल लिखै छथि-अप्पन लगाओल गाछ पत झ ड़ लेल क। अन्ना वरन देवे न्दर क तेलुगु कविता, चम्पा शर्माक डोगरी कविता, परिचय दासक भोजपुरी कविता आइ प्सि ता सा रंगी क ओड़िया कविता सेहो अलग-अलगविषयपर अछि। अन्ना वरन देवे न्दर क कविता आत्महत्याक पहिने किसानक उद्गार अछि तँ चम्पा शर्माक कविता सैनिक क प्रति समर्पित अछि। इ प्सि ता क दार्शनिक कविता छोट मुदा घनगर बिम्ब लेने अछि। मिहिर झाक रुबाइ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रुबाइ अछि, छे द भेल करेजमे शराब कोना राखी/बह क ल दिमागमे हिसाब कोना राखी/जड़ि ऐ ल सिनेह छल सात जनम क/बितल उलहनक जवाब कोना राखी। मनोज झा मुक्ति लिखै छथि, जौं शुरुए मे भ ग बे तँ भागि जो। कपिलेश्वर साहु कोसी कविता मे लिखै छथि, बासडीह कैँ कुण्ड ब नौ ल थि, बाँस नै लैत अछि थाह। इन्द्र भूषण कुमार सहास कविता मे लिखै छथि-अचानक मंचपर अव तरि त भेल एक नारी/जेहने देखै मे कारी/ ...भयनै, जँकहिहुसब/श्रोता सभ भरि मन दू सत....नै आबैत छल ओकरा शब्दक जाल बु न नाइ। मृदुला प्रधान जतेक लिखलनि से खुलि कऽ लिखलनि, हुनकर कविता मे किछु चमत्कार तँ अवश्ये अछि, ओलिखैछथि..कलमकमाध्यमसँ,/कुमरपतकगाम-घरमे,/विचरणकरबाकलोभ। काली नाथ ठाकुर क दहेज पर लिखल कुण्डलिया सभ अद्भुत अछि। नि क्की प्रिय द र्शि नी लिखै छथि-स्त्रीकेंदेखक, व्यवहारकरइक,

अहाँ स्त्री छी ईएह सास सदिखन, कहाँबदलल अछि। मो. गुलहसनलिखै छथि, एहेन सुन्दर गहुम काका पा ड़ा चरिगेल/दौगू-दौ गू यौ काका जुलुम भऽ गेल। रमेश आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक गद्य कविता विलक्षण अछि। मुन्नी कामत लिखै छथि-भऽजाएबविलीनकतौ/रूकिजाएतईकलम/आर/हराजाएतशब्दकतौ। मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल झारूदार क झारू सभ ऐ कविक भावना क नैसर्गिक उद्गार अछि, आ तेँ लोक हिनका मैथिलीक भिखारी ठाकुर कहऽ लागल छन्हि, देखूएकटाझारू, हमरासँपहिलेकोनोनैशासन, नै छै कोनो धर्म कविधान। हमराबिनुजगतसुन्ना छै, हतैबला छै पशु समान। । । रवि मिश्र भारद्वाज लिखै छथि-बेचै न भऽ कऽ कानए लागल/हमरे पर जखन हमर आँखि/हँसि कऽ लोक हमरा देखऽ लागल। प्रमोद रंगी ले लिखै छथि-दर्द क बाजैत ताल देखियौ।/मर दा पर फेकै त जाल देखियौ। राजदेव मण्डल, जे२१म शताब्दीक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह अम्बरा क लेखक छथि, लिखै छथि-जेनाकरैतअछिखुनियाँबड़द/तामसेकरैतगरद

आइ सँ बन लौं असल मरद। उमेशमण्डल, उमेश पासवान, अनामिका राज आ सन्दीप कुमार साफी मे कविता क मर्म छन्हि, शब्दावली छन्हि, भोगल यथार्थ छन्हि आ तँ ए ऐ चारू गोटेक हाथमे कविता करा सि छन्हि, जखन जइ दिशामे ई सभ कविताक गुड्डी उ ड़े ता ह सएह मैथिली पद्यक दिशा हएत, जतेक आगाँ साहित्य, समाज आ पद्य कैँ ई सभ लऽ जाए चाहता ह, लऽजेताह। अनामिका राजक कविता नवका बाट मे ई पाँती देखू-बोनिहार आकि नारी!/दुनू सामन्त कि पूँजीवादी द्वारा/भोग बा क चीज बनि रहि जाइछ/आ/भोगनिहारएकर/मर्दन करैत/अपन पुरुषा रथ देखेबाक माउग प्रयास करैए।

ऐ पद्य संग्रहमे कविता, गीत, गद्य-कविता, गजल, आजाद गजल (बेबहर), भक्ति-गजल, रुबाइ, कता, हजल, नात, बन्द, कसीदा, हाइकू, टनका-वाका, हैबून, शेनर्यू, कुण्डलिया (दोहा+रोला), क सी दा आ झारू सभ किछु भेटत। नारीवादी स्वर हुअए वा दलित विमर्श, मार्क्सवाद हुअए वा मानवतावाद वा उत्तर आधुनिक विचारधारा सभक समूह, सभ ठाम ऐ संग्रहक माध्यमसँ एकटा स्तर प्राप्त कएल गेल अछि। ई संग्रह मैथिली पद्यक लेल एकटा दिशा तँ निर्धारित करबे करत, सभ विधा लेल ई जे एकटा बे न्चमार्क बनेने अछि ओइ सँ आगाँ बढ़बाक मार्ग सेहो खुजि जाएत।

पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र अनुलग्नक:

अनुलग्नक १:

मैथिली गजल समीक्षाशास्त्र माने मैथिली गजलशास्त्र

गजलक उत्पत्ति अरबी साहित्य सँ मानल जा सकैत अछि मुदा ओतए ई अरकान माने कोनो उत्तेजक घटनाक वर्णन विशेष क रूपमे छल। मुदा गजल जँ ऐ अरकान सभक समुच्चय अछि तँ से फारसी क देन छी। फेर ओतऽ सँ गजल उर्दू-हिन्दी आ आब मैथिलीमे आएल अछि।

मायानन्द मिश्र मैथिली गजल कैँ गीत ल कहलन्हि, मुदा हम एतऽ ओकरा गजले कहब आ अरबी फारसी क छन्द-शास्त्रक किछु शब्दावलीक प्रयोग करब। से मैथिली गजलशास्त्र क लेल शब्दावली भेल"अरूज" ।

बहर: उन्नैसटा अरबी बहर होइत अछि। एतेक बहर मोन रखबा क आवश्यकता नै। किएक तँ बहर माने था ट, राग-रागिनी। ऐ उन्नैसटा अरबी बहरक बदला मैथिली लेल नीचाँ मे भारतीय संगीत (स्रोतस्व. श्री रामा श्र य झा राम रंग) दऽरहलछी। देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे जे बाजल जाइत अछि सएह लिखल जाइत अछि (ह्रस्व इ सेहो मैथिलीमे अपवाद नै अछि) से ह्रस्व आ दीर्घ स्वर कैँ गन बा क विधि मैथिलीमे भिन्न अछि, सेहोएतऽदेलजाएत। जइबहरमेशेरमेआठ (माने शेरक दुनू मिसरा मे चारि-चारि) अरकान हुअए से भेल म सम्मन आ जइ बहरमे शेर मे छह (माने शेरक दुनू मिसरा मे तीन-तीन) अरकान हुअए से भेल मुस द्दस। एतऽ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखबाक वैज्ञानिक आधार फेर सिद्ध होइत अछि कारण गजल मे जे विभक्ति हटा इ यो कऽ लिखब तैयो अरकान गन बा काल तेना कऽ गान ऽ पड़त जेना विभक्ति सटल हुअए, विभक्ति लेल अलग सँ गणना नै भेटत।

जइ बहरमे एक्के टा रुक्न हुअए से भेल मफ रि द बहर आ जइमे एकटा सँ बेशी रुक्न हुअए (रुक्न क बहुवचन अरा कान) से भेल मु र क्क ब बहर।

दूटा अराकान पुनः आबए तँ ओकरा बहरे-शिकस्ताकहलजाएत।

मिसराआशेर: मैथिली गजल मे दू पाँती क दोहा जे कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत अछि तकरा शेर (एकपाँतीमिसरा) कहलजाइ छै। दुनू पाँती एक ठ्ठे भेल शेर आ ओइ दुनू पाँतीकैँ असगरे मिसरा कहब। मतला क दुनू मिसरा मे एक रंग काफिया माने तुकबन्दी हएत।

ऊलाआसानी: शेरक पहिल मिसरा ऊला आ दोसर मिसरा सानी भेल। दू मिसरासँ मतला आ दू पाँतीसँ दोहा बनल।

अरकान (रुक्न) आजिहाफ: आठटाअरकान (एकवचनरुक्न) सँ उन्नैसटा बहर बहराइत अछि। से अरकान मूल राग अछि आब हर भेल वर्णनात्मक राग। अरकान क छा रन भेल जि हाफ। जेना वरेण्यम्सँ वरेणियम्।

तकतीअ: दू पाँती क कोनो उत्तेजक घटनाक विशेष वर्णन करैत दोहा जे मिसरा वा शेर अछि आ कए टा मिसरा वा शेर मिलि कऽ गजल बनैत अछि, तकर शल्यचिकित्सा लेल तक ती अ अछि। सेमिसराकोनराग-रागिनीमे अछि तकर तक ती अ सँ बहर ज्ञात होइत अछि।

मतला (आरम्भ) आमकता (अन्त): गजल मे पहिल शेर मतला आ आखिरी शेर मकता भेल। मतला क दुनू मिसरा मे तुक एक रंग होइत अछि आ मकता मे कवि अपन नाम दै छथि। मकता क कखनो काल लोप रहत, एकरा सन्दर्भसँ बुझब थिक, मतला सेहो कखनो काल गजलमे नै रहैत अछि मुदा प्रारम्भमे गजलकार कैँ ई रखबाक चाही।

काफियाआरदीफ: तुकान्त काफिया क बादक वा काफिया युक्त शब्दक पहिने क अपरिवर्तित शब्द/शब्द समूह कैँ रदीफ कहै छिऐ। काफिया युक्त शब्द बदलत मुदा रदीफ नै बदलत। काफिया वर्ण वा मात्राक होइ छै आ रदीफ शब्द वा शब्द समूहक।

दू टा काफिया बला शेर जू काफिया कहल जाइत अछि।

एक दीर्घकबदला दूटा ह्रस्व सेहो देल जा सकैए।

जेना काफिया वर्ण आ मात्राक संग शब्दकैँ सेहो प्रयुक्त करैत अछि तहिना रदीफ एकर विपरीत शब्द आ शब्दक समूहमे सन्निहित वर्ण आ मात्रा कैँ सेहो प्रयुक्त करिते अछि। ऐ तरहेँ पहिल पाँतीमे जँ शब्द समूह रदीफ अछि तँ दोसर पाँतीमे ओकर कोनो एक शब्द दोसर शब्दक अंग भऽ सकैए आ ओइ काफिया युक्त शब्दमे रदीफक उपस्थिति रहि सकैए। दूटा काफिया क बीच मे सेहो रदीफ रहि सकैए, रदीफ ऐ तरहेँ अनुपस्थित सँ लऽ कऽ एक शब्द, शब्दक समूह वा वाक्य भऽ सकैत अछि जे अपरिवर्तित रहत। काफिया युक्त

शब्द गजल मे बदलैत रहत। मैथिली व्याकरणक दृष्टिसँ अपरिवर्तित मात्रा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्द कैँ बिना रदीफक गजल कहि सकै छिऐ, कारण ई काफिया क मूल विशेषता छिऐ (अपरिवर्तित मात्रा वा अपरिवर्तित अपूर्ण शब्द) ..आ जँ शब्द वा शब्दक अपरिवर्तित समूह दृष्टिसँ देखी तँ एतऽ रदीफ अनुपस्थित अछि। ओना रदीफ अनुपस्थित सेहो रहि सकैए, शास्त्रीय दृष्टिसँ कोनो दिक्कत नै अछि। मुदा प्रारम्भमे बिना रदीफक गजल क बदला"एकशब्द, शब्दक समूह वा वाक्य"जे अपरिवर्तित रहए, माने रदीफ क प्रयोग करू।

बहरआसंगीत

पहिनेकमसँकम३७‘की’ बलाकी-बोर्डलिअ।

ऐमे१२-१२टाकतीनभागकरू। १३आ२५संख्या बला की सा आ सां दुनूक बोध करबैत अछि। सभमे पाँच टाकारीआसातटाउज्जर‘की’ अछि। प्रथम१२मंद्रसप्तक, बादक१२मध्य सप्तक आ सभसँ दहिन१२तारसप्तककहबैछ। १सँ३६धरि मा र्क र सँ लिखि लिअ। १आ तेरह सँ क्रमशः वाम आ दहिन हाथ चलत।

१२गोट‘की’ केर सेटमे ५ टा कारी आ सात टा उज्जर‘की’ अछि।

प्रथम अभ्यास मे मात्र उजरा‘की’ केरअभ्यासकरू। पहिलसातटाउजरा‘की’ -सा, रे, ग, म, प, ध, नि-अछि आ आठम उजरा की तीव्र-सं-अछि जे अगुलका दोसर सेट क-स-अछि।

वाम हाथ क अनामिका सँ स, माध्यमिकासँरे, इंडेक्स फिंग र सँ ग, बुढ़बाआँगुरसँम, फेर बुढ़बा आँगुरक नीचाँसँ अनामिका आनू आ प, फेर माध्यमि का सँ ध, इंडेक्स फिंग र सँ नि, आ बुढ़बा आँगुरसँ सां-ऐ हिसाबसँ बजेबाक प्रयास करू। दहिन हाथसँ १२ केर सेट पर पहिल’ की’ पर बुढ़बा आंगुरसँ स, इंडेक्स फिंग र सँ रे, माध्यमिकासँग, अनामिकासँम, फेर अनामिका क नीचाँसँ बुढ़बा आँगुरकैँ आनू आ तखन बुढ़बा आंगुरसँ प, इंडेक्स फिंग र सँ ध, माध्यमि का सँ नि आ अ नामिक सँ सां बजाउ। दुनू हाथसँ सां दोसर१२केर सेट क पहिल उज्जर‘की’ अछि। आरोह मे पहिल सेट क सां अछि तँ दोसर सेट क प्रथम की रहबाक कारण सा।

दोसरगपजेकी-बोर्ड सँ जखन अ वा जनिक लए तँ अपन कंठ क आवाज सँ एकर मिलान करू। कनियोनीच-ऊँचनैहुअए। तेसर गप जे संगीत क वर्ण अछि सा, रे, ग, म, प, ध, नि, सां एकरा मिथिलाक्षर/देवनागरीक वर्ण बुझबाक गलती नै करब। आरोह आ अवरोहमे स्वर कतेक नीच-ऊँच हुअए तकरे टा ई बोध करबैत अछि। जेना कोनो आन ध्वनि जेना“क” कैँलिअआकी-बोर्डपरनिकललसा, रे...केर ध्वनि क अनुसार“क” ध्वनिक आरोह आ अवरोह क अभ्यास करू।

ऐ सातू स्वरमे षड ज आ पंचम मने सा आ प अचल अछि, एक रस स्वर पाठमे ऊपर नीचाँ हेबाक गुंजाइश नै छै। सा अछि आश्रय आकि विश्राम आ प अछि उल्लास क भाव। शेष जे पाँच टा स्वर सभटा चल अछि, मने ऊपर नीचाँक अर्थात्विकृतिक गुंजाइश अछि ऐ मे। सा आ प मात्र शुद्ध होइत अछि, आ विकृति भऽ सकैत अछि दू तरहैँ, शुद्ध सँ स्वर ऊपर जाएत आ कि नीचाँ। यदि ऊपर रहत स्वर तँ कहब ओकरा तीव्र आ नीचाँ रहत तँ ओ कोमल कहा एत। म कँ छोड़ि कऽ सभ अचल स्वरक विकृति होइत अछि नीचाँ, तखनबुझूजे“रे, ग, ध, नि” ई चारि टा स्वरक दू टा रूप भेल कोमल आ शुद्ध। म केर रूप सेहो दू तरहक अछि, शुद्धआतीव्र। रेदैतअछिउत्साह, गदैतअछिशांति, मसँहोइतअछिभय, ध सँ दुःख आनि सँ होइत अछि आ देशक भान। शुद्ध स्वर तखन होइत अछि, जखन सातो स्वर अपन निश्चित स्थान पर रहैत अछि। ऐ सातो पर कोनो चेन्ह नै होइत अछि।

जखन शुद्ध स्वर अपन स्थान सँ नीचाँ रहैत अछि तँ कोमल कहल जाइत अछि आ ई चारिटा होइत अछि, ऐ मे नीचाँ क्षैतिज चेन्ह देल जाइत अछि, यथा-रे॒, ग॒, ध॒, नि॒।

शुद्ध आ मध्यम स्वर जखन अपन स्थान सँ ऊपर जाइत अछि, तखन ई तीव्र स्वर कहाइत अछि, ऐ मे ऊपर उर्ध्वाधर चेन्ह देल जाइत अछि। ईएकेटा अछि-मं।

एव म प्रकारे सात टा शुद्ध यथा-सा, रे, ग, म, प, ध, नि, चारिटाकोमलयथा-रे॒, ग॒, ध॒, नि॒ आ एकटा तीव्र यथा मं सभ मिला कऽ१२टास्वरभेल।

ऐमे स्पष्ट अछि जे सा आ प अचल अछि, शेषचलवाविकृत।

आबफेरकी-बोर्डपरआउ। ३७टाकीबलाकी-बोर्ड हम ऐ हेतु कहने छलौं, किएतँ१२, १२, १२ केर तीन सेट आ अंतिम ३७ म तीव्र सां हेतु।

सप्तकमे सात टा शुद्ध आ पाँच टा विकृत मिलाकऽ १२ टा भेल!

वाम कातसँ १२ टा उजरा आ कारी की मंद्र सप्तक, बीच बला १२ टा की मध्य सप्तक आ २५ सँ ३६ धरि की तार सप्तक कहल जाइत अछि।

आरोह-नीचाँसँऊपरगेनाइ, जेना मंद्र सप्तकसँ मध्य सप्तक आ मध्य सप्तकसँ तार सप्तक।

मंद्रसप्तकमे नीचाँ बिन्दु, मध्यसप्तकसामान्यआता र सप्तकमे ऊपर बिन्दु देल जाइत अछि, यथा-

स़, ऱ, ग़, म़, प़, ध़, ऩसा, रे, ग, म, प, ध, नीसां, रें, गं, मं, पं, धं, निं

अवरोह-तारसँ मध्य आ मध्यसँ मंद्रकेँ अवरोह कहल जाइत अछि।

वादीस्वर-जइ स्वरक सभसँ बेशी प्रयोग रागमे होइत अछि।

समवादीस्वर-जकर प्रयोग वादीक बाद सभसँ बेशी होइत अछि।

अनुवादीस्वर-वादी आ समवादी स्वरक बाद शेष स्वर।

वर्ज्यस्वर-जइ स्वरक प्रयोग कोनो विशेष रागमे नै होइत अछि।

पकड़-जइ स्वरक समुदायसँ कोनो राग विशेषकेँ चिन्है छी।

गायन काल सेहो सभ राग-रागिनी क हेतु निश्चित रहैत अछि। १२बजेदिनसँ१२बजे राति धरि पू र्वांग आ१२बजेरातिसँ१२बजे दिन धरि उत्तरांग राग गाओल-बजाओल जाइत अछि।

पू र्वांग रागक वादीस्वर मे कोनो एकटा (सा, रे, ग, म, प) होइत अछि। उत्तरांग क वादीस्वर मे (म, प, ध, नि, सा) मे सँ कोनो एकटा होइत अछि। सूर्योदय आ सूर्यास्त क समयमे गाओल जाए बला राग केँ संधि प्रकाश राग कहल जाइत अछि।

रागकजाति

रागक आरोह आ अवरोहमे प्रयुक्त स्वरक संख्याक आधार पर राग क जाति क निर्धारण होइत अछि।

एकर प्रधान जाति तीनटा अछि। १. संपूर्ण (७) २. षाड़व (६) ३. औड़व (५) आ ऐमे सामान्य स्वर संख्या क्रमशः ७, ६, ५रहैत अछि।

आब ऐ आधारपर तीनूकेँ फेँटू।

संपूर्ण-औड़वकीभेल? पहिल रहत आरोही आ दोसर रहत अवरोही। कहूआब। (७, ५) ऐ मे सात आरोही स्वर संख्या आ५अवरोही स्वर संख्या अछि। संपूर्ण क सामान्य स्वर संख्या ऊपर लिखल अछि (७) आऔड़वक (५) । तखनसंपूर्ण-औड़व भेल (७, ५) । अहिना ९ तरहक राग जाति हएत। १. संपूर्ण-संपूर्ण (७, ७) २. संपूर्ण-षाड़व (७, ६) ३. संपूर्ण-औड़व (७, ५), ४. षाड़व-संपूर्ण- (६, ७), ५. षाड़व-षाड़व- (६, ६), ६. षाड़व-औड़व (६, ५), ७. औड़व-संपूर्ण (५, ७), ८. औड़व-षाड़व (५, ६), ९. औड़व-औड़व (५, ५) ।

थाट:

थाट-एकटा सप्तक मे सात शुद्ध, चारिटा कोमल आ एकटा तीव्र स्वर (१२स्वर) होइत अछि। ऐ मे सात स्वरक ओ समुदाय जकरा सँ कोनो राग क उत्पत्ति होइत अछि, तकरा था ट वा मेल कहल जाइत अछि।

थाटरागकजनक अछि, था ट मे सात स्वर होइ छै (संपूर्णजाति) । था ट मे मात्र आरोही स्वर होइत अछि। था ट मे एक्के स्वर क शुद्ध आ विकृत स्वर संग-संगनैरहैत अछि। विभिन्न रागक नाम पर था ट सभक नाम राखल गेल अछि। था टक सातो टा स्वर क्र मा नु सार होइत अछि आ ऐ मे गेयता नै होइ छै।

थाट१०टा अछि।

१. आसावरी-सारेगमपधनि

२. कल्याण-सारेगमंपधनि

३. काफी-सारेगमपधनि

४. खमाज-सारेगमपधनि

५. पूर्वी-सारेगमंपधनि

६. बिलावल-सारेगमपधनि

७. भैरव-सारेगमपधनि

८. भैरवी-सारेगमपधनि

९. मारवा-सारेगमंपधनि

१०. तोड़ी-सारेगमंपधनि

वर्ण:

वर्णसँरागकरूप-भावप्रगटकएलजाइ छै। एकरचारिटाप्रकार छै।

१. स्थायी-जखनएकटास्वरबेर-बेर अबैत अछि, ओकर आवृत्ति होइत अछि।

२. अवरोही-ऊपरसँ नीचाँ होइत स्वर समूह, एकरा अवरोही वर्ण कहल जाइत अछि।

३. आरोही-नीचाँसँ ऊपर होइत स्वर समूह, एकरा आरोही वर्ण कहल जाइत अछि।

४. संचारी-जइमे उपरका तीनू रूप लयमे हुअए।

लक्षणगीत: रचनाजइमेबादी, सम्बादी, जाति आ गायनक समय केर निर्देशकरागक लक्षण स्पष्ट भऽ जाए।

स्थायी: कोनोगीतकपहिलभाग, जे सभ अन्तराक बाद दोहराओल जाइत अछि।

अन्तरा: जकरा एक्के बेर स्थायीक बाद गाओल जाइत अछि।

अलंकार/पलटा: स्वर समुदायक निअमबद्ध गायन/वादनभेलअलंकार।

आलाप: कोनो विशेष राग क अन्तर्गत प्रयुक्त भेल स्वर समुदायक विस्तार पूर्ण गायन/वादनभेलआलाप।

तान: रागमे प्रयुक्त भेल स्वरक त्वरित गायन/वादनभेलतान।

तानक गति द्रुत होइत अछि आ ऐमे दोबर गतिसँ गायन/वादनकएलजाइत अछि।

आबआउतालपर। संगीतक गति क अ नू रूपेँ ई झ पताल-१०मात्रा, त्रिताल-१६मात्रा, एकताल-१२मात्रा, कहरवा-८मात्रा, दादरा-६मात्राहोइत अछि।

गीत, वाद्य आ नृत्य लेल आवश्यक समए भेल काल आ जइ निश्चित गति क ई अनुसरण करैत अछि से भेल लय। जखन लय त्वरित अछि तँ भेल द्रुत, जखनआस्ते-आस्ते अछि, तँ भेल विलम्बित आ नै आस्ते अछि आ नै द्रुत तँ भेल मध्य लय।

मात्रा ताल केरयुनिट अछि आऐसँ लयकेँनापलजाइत अछि।

ताल मे मात्रा संयुक्त रूपसँ उपस्थित रहला उत्तर ओकरा विभाग कहल जाइत अछि-जेना दा द रा मे तीन मात्रा संयुक्त रहला उत्तर२विभाग।

तालक विभागक निअम बद्ध विन्यास अछि छन्द आ तालक प्रथम विभागक प्रथम मात्रा भेल सम आ एकर चेन्ह भेल+वाxआ जतऽ बिना तालीक ताल केँ बुझाओल जाइत अछि से भेल खाली आ एकर चेन्ह अछि०।

ओ सम्पूर्ण रचना जइसँ तालक बोल इंगित होइत अछि, जेनामात्रा, विभाग, ताली, खालीईसभटाभेलठेका।

चेन्ह-तालीक स्थानपर ताल चेन्ह आ संख्या। सम+वाxखाली०

ऽअवग्रह/बिकारी

-एकमात्राकदूटाबोल

-एकमात्राकचारिटाबोल

एक मात्राक दू टा बोल कैँ धा गे आ चारि टा बोल कैँ धा गे ति ट सेहो कहल जाइत अछि।

तालकपरिचय

तालकहरबा

४टामात्रा, एकटाविभाग, आपहिलमात्रापरसम।

धागिनातिनकधिन।

तीनतालत्रिताल

१६टामात्रा, ४-४मात्राक४टाविभाग। १, ५ आ १३ पर ताली आ ९ म मात्रा पर खाली रहैत अछि।

धाधिंधिंधिं

धाधिंधिंधा

धातिंतिंता

ताधिंधिंधा

झपताल

१०मात्रा। ४विभाग, जेक्रमसँ२, ३, २, ३मात्राकहोइत अछि।

१मात्रापरसम, ६परखाली, ३, ८परतालीरहैत अछि।

धीना

धीधीना

तीना

धीधीना

तालरूपक

७मात्रा। ३, २, २मात्राकविभाग।

पहिलविभागखाली, बादकदूटाभरलहोइत अछि।

पहिलमात्रापरसमआखाली, चारिम आ छअम पर ताली होइत अछि।

धीधात्रक

धीधी

धात्रक

ह्रस्व-दीर्घगणना

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक छन्द अछि।

वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। ऐ मे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकैँ नै गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकैँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकैँ। संगे अ सँ ह कैँ सेहो एक गानल जाइत अछि। द्विमानक कोनो अक्षर नै होइछ। मुख्यतः तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-० २. संयुक्त अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू: -

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२०मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू; पश्चात्=२ मात्रा; आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२ मात्रा; आब चारिम उदाहरण देखू स्क्रिप्ट=२ मात्रा

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा ऐ सँ ई नै बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार निअमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद मे परिगणित होइत अछि-जेना यदि अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना- वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः=सुवः।

तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आपूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वएह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि, जइमे जे लिखल जाइत अछि सएह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व“इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नै अछि-यथा'अछि'ईबाजलजाइत अछिअ, ह्रस्व'इ', छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ-राति-राइत। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि मुदा की इंग्लिशमे संधि नै अछि? तँईकी अछि-आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि-आइ एम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नै होइत छै-आइ एम केँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि-मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कऽ लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि।

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती; शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतऽ छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नै भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कऽ अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः=सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कऽ सेहो अक्षर पूर कऽ सकै छी।

ए=अ+इ, ओ=अ+उ, ऐ=अ/आ+ए, औ=अ/आ+ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ; ई पाँच ह्रस्व आआ, ई, ऊ, ॠ, ए, ऐ, ओ, औ; ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ=क,

क्+आ=का।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नै मानल जाइत अछि-जेना‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि; अ, वा।

"ऐ मे एकटा अपवाद अछि।"म्ह"आ"न्ह"कैँ संग एहन नियम नै लगैत अछि।"!!! मैथिली लेल ई निअम नै छै (हिन्दीमे ई निअम छै, आ किछु मैथिली लेखक ओकर अनुकरण कऽ ई लिख नहियो छथि), एतऽ म्ह आ न्ह केर पहिलुका ह्रस्व सेहो सामान्य रूपसँ दीर्घ होइत अछि। जेना छनि आ छन्हि कोनो बच्चासँ बजबा कऽ देखू-छनिमेछह्रस्व, मुदा छन्हि मे छ दीर्घ उच्चारित होइए। तहिना जि म्हर मे जि दीर्घ उच्चरित होइए (पद्यमे) । ओना कोनो लेखक जँ एकाध ठाम ओकरा ह्रस्व लऽ रहल छथि तँ ओ पद्यक पाँति अपवाद रूपमे स्वीकृत भऽ सकैए; मुदा निअममे ऐ अपवाद क हिन्दीक अनुकरण मे स्वीकृत करबाक आवश्यकता नै। तहिना जिनका मैथिली गायनक अनुभव छन्हि से आर नीक जकाँ बुझि सकैत छथि जे पद्य पहिने पढ़ल आ फेर गाओल जाइ छै, तैँ"हमरस्वर"गेबाकाल"हमर"केर"र"दीर्घहएत, बावजूद ओकर दोसर शब्दक भाग रहलाक बादो-कारण ओकर निर्धारण पद्यक पाँति क अनुसार लगातार हएत। हँ जँ पद्यक दोसर पाँति क पहिल अक्षर संयुक्ताक्षर अछि आ पछिला पाँतिक अन्तिम अक्षर ह्रस्व तँ ओ ह्रस्व दीर्घ नै हएत; कारण पाँतिक अन्तक संग गणनाक अन्त भऽ जाइत अछि।

दीर्घआबिकारी (संस्कृतमे अवग्रह, बांग्लामे जफला) मेअन्तर छै। बिकारी ऽ जँ चारि यो टा दऽ दियौ तैयो दीर्घ नै हएत..जेना बच्चा क गीत मेघ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ ऽ र-ईह्रस्व-ह्रस्व भेल। पद क अन्तिम अक्षरकैँ आवश्यकता नु सार ह्रस्व कैँ दीर्घ आ दीर्घ कैँ ह्रस्व कएल जा सकैत अछि।

कोनो गजलक पाँती (मिसरा) कवज्न/वा शब्दक व ज्न तीन तरहेँ निकालि सकै छी, सरल वार्णिक छन्दमे वर्ण गानि कऽ; वार्णिक छन्दमे वर्णक संग ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) कक्रमदेखिकऽ; आ मात्रिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) कक्रमदेखिकऽ। जिनका गायनक कनिक बो ज्ञान छन्हि ओ बुझि सकै छथि जे गजलक एक पाँतीमे शब्दक संख्या दोसर पाँतीक संख्या सँ असमान रहि सकैए, मुदा जँ ऊपर तीन तरह मे सँ कोनो तरहेँ गणना कएल जाए तँ व ज्न समान हएत। मुदा आजादगजलबे-बहर होइत अछि तैँ ओतऽ सभ पाँती वा शब्दमे व ज्न समान हेबाक तँ प्रश्ने नै अछि। ऐ तीनू विधि सँ लिखल गजलमे मिसरा मे समान व ज्न ए बेटा करत। ओना ई गजलकार आ गायक दुनूक सामर्थ्य पर निर्भर करैत अछि; गजलकार लेल वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभ सँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनुबहरक) सभसँकठिन अछि।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर ‘लघु’ मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर ‘गुरु’ मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओइ अक्षरकैँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। ऐ मे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओइ युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि:-१. उदात्त२. उदात्ततर ३. अनुदात्त४. अनुदात्ततर ५. स्वरित६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटाश्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि) ।

१. उदात्त-जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नै अछि।

२. उदातात्तर-कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि।

३. अनुदात्त-जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ।

४. अनुदातात्ततर-कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि।

५. स्वरित-जइमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, ऐमे।

६. अनुदाक्तानुरक्त स्वरित-जइमेउदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ।

७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक, तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयगण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एकरा प्रकृतिगण कहैत छी।

२. उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कऽ क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२, ३, आ ४ मंत्रक समूह) मे ऐ लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिकआदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कऽ गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं, हुं, हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- १.१. औँठा (प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. औँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. औँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. औँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. औँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट औँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद।

ग्रामगेयगान-ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाओल जाइत छल।

आरण्यक गेयगान-वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान ऐ विधि सँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश:- १. स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य, मन्द, तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ ऐ सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि– विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म्। होता॑रं रत्न॒धात॑मम्।

२. पदपाठ-ऐमे प्रत्येक पदकें पृथक कऽ पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतऽएकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कऽपाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ-ऐमेजँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम ऐ रूपमे हएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-ऐ मे उपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप हएत- कख, खक, कखग, गखक, कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण-शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाइ/अधिक मात्राक बराबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ। ५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कऽ पदक मध्यमे'यति' । ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा'हाउ' 'राइ' जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा'हावु', 'रायि' जोड़ैत छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नै अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत छल। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नैहोइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कऽलेल जाइत अछि।

ए=अ+इ

ओ=अ+उ

ऐ=अ/आ+ए

औ=अ/आ+ओ

अहू प्रकारेँ नै पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट् (२६) ।

ॐ भूर्भुवस्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि। ओना ओइ समएमे सेहो सम्मिलित रूपेँ ऋचा पाठ करैबलाकेँ बेङ सन टर्र-टर्रकरैबला (अथर्ववेदमे) कहल गेल छै, माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छलै।

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नै होइत अछि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि-जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॑) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओइ फॉंटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा“आ” कार क बाद बिकारीक आवश्यकता नै अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जइमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दै छी-जइ वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नै रहैत अछि, सेभेलस्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जइमे बाजैमे एक मात्राक समए लागए से भेल ह्रस्व, जइमे दू मात्रा समए लागल से भेल दीर्घ आ जइमे तीन मात्राक समए लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहै छला।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहै छला।

लृ दीर्घ नै होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नै होइत अछि।

अ इ उ ऋऐसभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ ऐ चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कऽ२२ टा स्वर।

ऐसभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तँ उदात्त कहल जाइत अछि। नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जइ अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाओल, एतऽ इनार भेल दात्त। अत्र प्रत्यान्त भेलासँ' दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नै भेलो पर स्वरमे भेद अछि। ऐ सँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करै छला।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकै छी- जेनाऐमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आबव्यञ्जनपरआउ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श्ष्स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।

ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।

विसर्जनीय मूल वर्ण नै अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूप-भेद सँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।

अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।

उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।

कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)

पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।

यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।

अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।

इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।

ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।

लृ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।

उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।

ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।

ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।

य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नै करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ ऐ मे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नै होइत अछि।

क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।

सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु, नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।

अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण ऐ सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नै हेबाक चाही।

जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यएह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल“अघोष”, आ नाद प्रकृतिक भेल“घोषवान्” । जइ वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि“अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल“महाप्राण” ।

कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगे कचटतप केर पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

तँ आब लिखू मैथिली गजल। कविता, अकविता, गद्य-कविता, पद्य सभ लेल तर्क उपलब्ध अछि। से मैथिली गजल सेहो अनिवार्य रूपमे बहर (छन्द) मेसरल-वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दमे कहल जेबाक चाही। जेनासोरठा, चौपाइ छै तहिना गजल छै। उर्दूमेबे-बहर आजाद गजल क नामसँ प्रयास भेलै। कहबाक आवश्यकता नै जे ओ नै चललै। ५३९ई. सँ अरबीमे बहरयुक्त गजल आइ धरि लिखल जा रहल छै, फारसी आ उर्दू मे सेहो बिना बहरक गजल नै होइ छै। गजल मे भगवान धरि कम जा क उड़ाओल जाइ छै, ओइ अर्थमे ओ उदार छै मुदा बहरक मामिलामे ओ बड्ड कट्टर छै, आ ई कट्टरता ने अरबीमे गजल केँ कम केलकै आ ने उर्दू-फारसीमे, मात्रा मिलान आ सहज प्रवाह गजल मे एकटा रीति येँ होइ छै, आ से ओकर विशेषता छिऐ, नै तँ फेर ई न ज्म भऽ जेतै।

मैथिलीमे भाषा सम्पादन पाठ्यक्रम

२.१. उच्चारण निर्देश: (बोल्डकएलरूपग्राह्य):-

दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम, मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नै सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य शमे जीह तालुसँ, षमे मूर्धासँ आ दन्त समे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे ष कैँ वैदिक संस्कृत जकाँ ख सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जकाँ (यथा संयोग आ गणेश संजोग आ गड़ेस उच्चरित होइत अछि) । मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइए आ बाजलो जेबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

अछि-अइछऐछ (उच्चारण)

छथि-छइथ–छैथ (उच्चारण)

पहुँचि-पहुँइच (उच्चारण)

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ ऐ सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा ऐ मे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ कैँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ कैँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ-ऐ लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजै छी, तखनो पुरनका लोककैँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज्= ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र) । त्र भेल त्+र।

उच्चारणक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइवhttp://www.videha.co.in/पर उपलब्ध अछि। फेरकैँ/सँ/पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा तँ/कऽ हटा कऽ। ऐ मे सँ मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ–जेना छहटा मुदा सभटा। फेर६अमसातमलिखू-छठमसातमनै। घरबलामे बला मुदा घरवालीमे वाली प्रयुक्त करू।

रहए- रहै मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए) ।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास रहै ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत रहए।

छलै, छलए मे सेहो ऐ तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण संजोगने)

कैँ/कऽ

केर-क (केरक प्रयोग गद्यमे नै करू, पद्यमेकऽसकैछी।)

क (जेना रामक) –रामक आ संगे (उच्चारण राम के / राम कऽ सेहो)

सँ-सऽ (उच्चारण)

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नै। चन्द्रबिन्दुमे कने एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकैँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो) ।

कैँ जेना रामकैँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकैँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ, तऽ, त, केर (गद्यमे) एे चारू शब्द सबहक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थें प्रयुक्त भऽ सकैए-जेना, केकहलक? विभक्ति“क” क बदला एकर प्रयोग अवांछित।

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ, नइं ऐ सभक उच्चारण आ लेखन-नै

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नै) जतऽ अर्थ बदलि जाए ओतै मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नै-कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नै) । मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नै) ।

राष्ट्रिय (राष्ट्रीयनै) सकैए/सकै (अर्थपरिवर्तन) पोछैले/पोछैलेल/पोछएलेल

पोछैए/पोछए/ (अर्थपरिवर्तन) पोछए/पोछैओलोकनि (हटाकऽ, ओमेबिकारीनै)

ओइ/ओहिओहिले/ओहिलेल/ओहीलऽजएबैं/बैसबैंपँचभइयाँ

देखियौक/ (देखिऔकनै-तहिना अमे ह्रस्व आ दीर्घक मात्राक प्रयोग अनुचित)

जकाँ/जेकाँतँइ/तैँ/होएत/हएतनञि/नहि/नँइ/नइँ/नै

सौँसे/सौंसेबड़/बड़ी (झोराओल) गाए (गाइनहि), मुदा गाइकदूध (गाएकदूधनै।)

रहलैं/पहिरतैँहमहीं/अहींसब-सभसबहक-सभहक

धरि-तकगप-बातबूझब–समझबबुझलौं/समझलौं/बुझलहुँ–समझलहुँ

हमराआर-हमसभआकि-आकिसकैछ/करैछ (गद्यमे प्रयोगक आवश्यकता नै)

होइन/होनिजाइन (जानिनै, जेनादेलजाइन) मुदा जानि-बूझि (अर्थपरिव्र्तन)

पइठ/जाइठआउ/जाउ/आऊ/जाऊ

मे, कें, सँ, पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेसी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटा उ। जेनाऐमेसँ।

एकटा, दूटा (मुदा कएटा)

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नै। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नै (जेना दिअ, आ/दिय’, आ’, आनै)

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारीक बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि) । मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतऽ एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d’ etre एतऽ सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नै दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित) ।

अइमे, एहिमे/ऐमेजइमे, जाहिमेएखन/अखन/अइखनकेँ (केनहि) मे (अनुस्वाररहित)

भऽमेदऽतँ (तऽ, तनै) सँ (सऽसनै) गाछतरगाछलगसाँझखन

जो (जोgo, करैजोdo) तै/तइजेना-तैदुआरे/तइमे/तइले

जै/जइजेना-जैकारण/जइसँ/जइले

ऐ/अइजेना-ऐकारण/ऐसँ/अइले/मुदा एकर एकटा खास प्रयोग-लालतिकतेकदिनसँकहैतरहैतअइ

लै/लइजेनालैसँ/लइले/लैदुआरेलहँ/लौं

गेलौं/लेलौं/लेलँह/गेलहुँ/लेलहुँ/लेलँजइ/जाहि/जै

जहिठाम/जाहिठाम/जइठाम/जैठामएहि/अहि/

अइ (वाक्यकअंतमेग्राह्य) /ऐअइछ/अछि/ऐछ

तइ/तहि/तै/ताहिओहि/ओइसीखि/सीखजीवि/जीवी/जीब

भलेहीं/भलहिंतैं/तँइ/तँएजाएब/जएबलइ/लैछइ/छै

नहि/नै/नइगइ/गैछनि/छन्हि...

समएशब्दकसंगजखनकोनोविभक्तिजुटै छै तखन समै जना समै पर इ त्यादि। असगरमेहृदएआविभक्तिजु ट ने हृ दे जना हृ दे सँ, हृदेमेइत्यादि।

जइ/जाहि/जैजहिठाम/जाहिठाम/जइठाम/जैठाम

एहि/अहि/अइ/ऐअइछ/अछि/ऐछतइ/तहि/तै/ताहि

ओहि/ओइसीखि/सीखजीवि/जीवी/जीबभले/भलेहीं/भलहिं

तैं/तँइ/तँएजाएब/जएबलइ/लैछइ/छै

नहि/नै/नइगइ/गैछनि/छन्हिचुकल अछि/गेलगछि

लिखू मैथिली गजल:

५ सँ १० टा शेर मोटामोटी एकटा गजलक निर्माण करत। मुदा कोनो ५-७ टा शेरकेँ एकक बाद दोसर लिख देबैतँ गजल नै बनि जाएत।

ऐमे दू-चारिटा गप पर ध्यान देमऽ पड़त।

जेना वर्ड डो क्यु मे न्ट मे ज स्टी फा इ केलासँ पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता आबि जाइ छै तहिना यदि शेरक दुनू पाँती आ गजलक सभ शेर मे बिनु ज स्टी फा इ केने पाँतिक आदि आ अन्तमे एकरूपता रहए तँ कहल जाएत जे ओ एक्के बहरमे अछि आ ऐ तरहक शेरक समुच्चय एकटा गजलक भाग हेबाक अधिकारी हएत। मैथिलीक सन्दर्भमे वार्णिक छन्दक गणना पद्धति माने

हलंतयुक्त अक्षर-०संयुक्त अक्षर-१अक्षर अ सँ ह-१प्रत्येक; से उपयोग कएल जाए आ ओइ आधारपर १९ बहरक बदला छोट-म झोला आ पैघ आ कारक पाँति क उपयोग कएल जाए; नामकरणक कोनो आवश्यकता नै। संगे गजलक पहिल शेरक दुनू पाँतीक अन्तमे आ शेष शेरक दोसर पाँतीक अन्तमे एक वा एक सँ बेशी शब्दक समूह दोहराओल जाए (रदीफ) सेहो आवश्यक। ओना बिनु रदीफक सेहो गजल कहि सकै छी-एक्के भाव पर सेहो गजल कहि सकै छी, बिनु मतला क आ बिनु मकता क (लोक तँ मकता सँ सेहो गजलक प्रारम्भ करै छथि) सेहो गजल लिख सकै छी-, मुदा ई सभ अ प वादे स्वरूप, आ अपवाद तँ अपूर्ण रहिते अछि। मतला एकसँ बेशी सेहो भऽ सकैए। गजलक कोन शेर हु स्न-ए-गजल (सभसँ नीक शेर) अछि तइ मे ओइ गजलक विभिन्न समीक्षकक मध्य मतभिन्नता रहि सकैत अछि। फेर काफिया ओना तँ गजलक सभ शेरमे रहै छै (रदीफक पहिने) आ काफिया युक्त शब्द बदलै छै (एकाध बेर पुनः प्रयोग कऽ सकै छी) मुदा ध्यान सँ देखलापर लागत जे तुक मिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै। माने लय रहबा के चाही।

आब आउ किछु गजल सुनी:

१

सब सबाइत गप्प छल तकैत हमरा पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द हमरा पर)

आबैत छल एखौंझाइत आ सेहो ओकरे पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द ओकरा पर)

हएत हँ सारथि की रहि जाएत चुकड़िऔने ओ मोन मारि (२३ वार्णिक मात्रा)

बाजत नै मुँह फुलौने, रहत मुदा मोन पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द मोन पर)

ईह कहलकै जे, मोने-मोन प्रसन्न अछि ओ मारने गबदी (२३ वार्णिक मात्रा)

बुझैए सभ हमहीं बुझै छी, नियारे-भास पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द नियारे-भासपर)

माने तोहूँ आ तोहर बापो हमर सार सम्बन्ध फरिछा देबौ (२३ वार्णिक मात्रा)

गप्पी छथि! मुँह घुमेने देखैए कोना मचान पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द मचान पर)

बुझै सभटा छी से नै जे नै बुझै छी मुदा मोना कहैए साइत (२३ वार्णिक मात्रा)

बड़बड़ाइए बाइमे, माने अछि ओ स्वयम् पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द स्वयम् पर)

"ऐरावत"बुझैत बुझि गेल छी ई जे सृष्टिक पहिलुके राति (२३ वार्णिक मात्रा)

सभ चरित्र रहल देखैत, एक-दोसरा पर गुम्हराइत (२३ वार्णिक मात्रा-रदीफ गुम्हराइत-काफियायुक्त शब्द एक-दोसरा पर)

आब मैथिली गजलक किछु कठिनाह विषए पर आ बी।

कठिनाह विषए किछु विविधता आ न त आ मैथिली क परिप्रेक्ष्यमे नूतनता सेहो, मुदा ई ततेक कठिनाह सेहो नै अछि।

वैदिक आ मैथिली छन्दक गणना अक्षर सँ होइत अछि से तँ कहि ये गेल छी, गुरु-लघु क विचार ओतऽ नै भेटत। मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लौकिक संस्कृत आ हिन्दी सँ प्रभावित छथि मुदा गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक शब्दावलीमे ढेर रास शब्द भेटत जे वैदिक संस्कृतमे अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नै, तेँ कम दूषित आ खाँटी मैथिली भाषा हुनके लोकनिक अछि आ तेँ छन्दक गणना अक्षरसँ करबाक आर बेशी आवश्यकता अछि।

गायत्री-२४ अक्षर उष्णिक्-२८ अक्षर अनुष्टुप्–३२ अक्षर

बृहती-३६ अक्षर पङ्क्ति-४० अक्षर त्रिष्टुप्-४४ अक्षर

जगती-४८ अक्षर

शूद्र कवि ऐ लु ष आ आन गोटे द्वारा रचित ऋक्वेदमे गायत्री, त्रिष्टुप् आ जगती छन्द सर्वाधिक परिमाणमे भेटैत अछि, से अही तीनू पर विचारी।

गायत्री: ई चारि प्रकारक होइत अछि-द्विपदी, त्रिपदी, चारि पदी आ पाँच पदी। चारिपदीमे ८-८ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्ण विराम दऽ सकै छी, माने एक गायत्री शेर तैयार। ओना ऐ ठाम हम स्पष्ट करी जे गायत्री मंत्र नै छंद अछि। लोक जकरा गायत्री मंत्र कहै छै ओ सविता मंत्र छी जे गायत्री छंद मे कहल गेल अछि आ सेहो तखन जखन स्व कैँ सुवः आ वरेण्यम्कैँ वरेणियम् कहल जाए।

त्रिष्टुप्: चारिपद, ११-११ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्ण विराम दऽ सकै छी। माने एक त्रिष्टुप् शेर तैयार।

जगती: चारि पद १२-१२ अक्षरक पद आ एक पदक बाद अर्द्धविराम आ दू पदक बाद पूर्ण विराम दऽ सकै छी। माने एक जगती शेर तैयार।

आब जेना पहिने कहल गेल अछि जे गायत्री मे एक-दू अक्षर कम वा बेशी सेहो भऽ सकैत अछि माने २२ सँ २६ अक्षर धरि, से गायत्री क प्रकार भेल-विराड् गायत्री-२२, निचृद् गायत्री-२३, भुरिग् गायत्री-२५, आ स्वराड् गायत्री भेल२६ अक्षरक। तँ निअम क अन्तर्गत भेट गेल ने छूट आ स्वतंत्र भऽ गेल ने मैथिली गजल। गजलमे पाँतीक अन्तमे पूर्ण विराम दै यो सकै छी आ छोड़ियो सकै छी।

फारसी क काव्यशास्त्र कहि न्दु त्वी करण क संबंधमे हमरा नै बुझल अछि आ मौलिक गजल रचना मे कोना हि न्दु त्व आनल जाए सेहो हमरा नै बुझल अछि। काव्यकेँ"हिन्दू"आ"विधर्मी"शब्दावली सँ दूर राखल जाए सएह नीक, हँ"मैथिली गजल"शब्दक प्रयोग मे हमरा कोनो आपत्ति नै आ तकरा हि न्दु त्वी करण मानल जाए तँ हमर कोनो दोख नै।

जतेक सौँसे विश्वमे मिलाकऽ कवि/काव्यशास्त्री भेल हेता ओइसँ बेशी कवि/काव्यशास्त्री अरबी-फारसीमे भेल छथि।

मैथिली भाषामे गजल जे हम लिखी तँ छन्दशास्त्र क अनुसार लिखी, आ से छन्दशास्त्र हम अरबी-फारसी क प्रयुक्त करी, मुदा ओइ प्रयास क अतिरिक्त ऋगवैदिक छन्दशास्त्र ट गण-म गण सँ बेशी वैज्ञानिक आ सरल छै आ ऐ सँ मैथिली गजल लिखबा-पढ़बा-गुन गुन एबा मे लोककेँ सुविधा हेतै से हमर विश्वास अछि। वेदक समएमे हिन्दू शब्द क जन्मो नै भेल रहै से वैदिक छन्द शास्त्रक प्रयोग मात्र, मैथिली गजल केँ हिन्दू बना देतै से हमरा नै लगैए।

हम"मैथिली हाइकू शास्त्र"लिखने रही तहिया सेहो हमरा लग"वार्णिक"आ"मात्रिक"मे एकटा चयन करबाक छल, आतहियोहम"वार्णिक"गणना पद्धति क चयन केलौं।"शिन्टो"ध र्मा व लम्बी जापानी (किछुबौद्धसेहो) सभक लिपि आ तकर छन्दशास्त्र जँ प्रयोग करी तँ मैथिली मे हाइकू कहियो नै लिखल जा सकत; कारण ओकर काव्यशास्त्र, जापानी भाषा आ ओकर कएक तरहक लिपिक सापेक्ष छै आ ओइमे धर्म अबितो छलै (टनका/वाका-ईश्वरकआह्वाण) । अरबी-फारसी गजल मुदा धर्मनिरपेक्ष छै, मुदा ओकर काव्यशास्त्र ओकर अपन भाषा-लिपिलेल छै। सेभाषा-निरपेक्ष ने जापानी काव्य शास्त्र भऽ सकै छै आ ने अरबी-फारसी काव्य शास्त्र।

आउ आब गजल कही:

गायत्री गजल

छै सुनि देखि कएल, छैक करासँ ककर

कोन गपक सहल, छैक करासँ ककर

हे अछि देखि सहल, अछि की टीस उठल

रे चिन्हलकेँ चीन्हल, छैक करासँ ककर

ई सभ सत्यक संगी, सभ छै भेष बदलि

के अछि मुँह फेरल, छैक करासँ ककर

हे बिजुलौका देखियौ, छै उका पतङ्ग जेकाँ

की माथ सुन्न कएल, छैक करासँ ककर

अगिनवान मैथिली, की सुखि जाएत धार

कहैकिदनिकहल, छैक करासँ ककर

करू कोन समझौता, करू कोन निपटारा

के ललकारि रहल, छैक करासँ ककर

के अछि उठा रहल, अछि के झुका रहल

के अछि बाजि रहल, छैक करासँ ककर

ऐरावत छै चकित, अछि की सोचि रहल

ई कर्णधार बँचल, छैक करासँ ककर

त्रिष्टुप् गजल

अछि चोरबा संग देखू ठाढ़, देखैत रहलि डकलिलामी

नहि होएत आब बरदास्त, डाक-डकौअलि डकलिलामी

ई सुरकि रहल छल आब, नै भेटत आब फेर की खाद्य

अछि कोना भेल ई असम्हार, डघर बचलि डकलिलामी

कोना तड़फड़िया सभ अछि, डगहर थस लेने की बात

नञि निचेन भेल अछि बाप, ओ मुहानी आनि डकलिलामी

औ बुझारति होएत फेरसँ, भेल की ई ढिंढम दरा आब

ई ढाबु सबेंगक अछि ठाढ़, ई ककर चालि डकलिलामी

पुक्की पाड़िके रहल पुकारि, बहीर बनि भने अछि ठाढ़

नहि ककरो सुनब पुकार, ई हथौड़ा मारि डकलिलामी

कहू यौ किएक छीहू सठाढ़, ऐरावतक फोंफक अबाज

नहि किए बनल बौक ठाढ़, चिपैले सुआदि डकलिलामी

जगती गजल

भगवानक बनाओल ई गाम, जखन अछि हो भोर बकटेंट

नहि तँ भेटत की कोनो विराम, अछि भेल कोना भेर बकटेंट

औ की नहि भेटत आब हु त्राण, छी सुनल सएह सरनरिया

कोना मिरदडिया देलक थाप, ई मिरहन्नी शेर बकटेंट

जाए रहल पछताए रहल, नहि बाट कोनो सुझाए रहल

अछि गोलहत्थी खाइत ई छौड़ा, पँचागिईबिहटारबकटेंट

मोचण्ड बूड़ि रौद मुँहा होइत, साँझ कलक धक बैसि रहल

धमधूसर सभ बेर लगौरी, आनि रहल गनौर बकटेंट

गदारे गुइँ गुइँ मार गदारे, गदारे पुइँ पुइँ, मुक्का मारल

गताखोरक छै ई हैंज चलल, गतातसंगपथारबकटेंट

बेराम पड़ब नै आउ सकल, बेपर्द करब बेदरंग भेल

ऐरावत चीन्हि बेपारी सभकेँ, करू भाषाक व्यापार बकटेंट

मैथिली आ संस्कृतमे मात्र तुकान्त (अन्तकतुक) लयक निर्माण नै करै छै, मुदा करितो छै।

तुक मिलानीक दृष्टिएँ ओहूमे शब्दक आरम्भ-मध्य-आखिरीक किछु अक्षर नै बदलै छै।

वेद-ए-मु क द्दस मे वेदक विषए मे अली सरदार जा फ री लिखै छथि-शुऊरे-इन्साँकेआफताबे-अ जी म की अ व्व लीं शु आ एँ-मनुष्यक चेतना क पहिल किरिण।

जेना तमिल मे संस्कृत शब्दक आ तुर्की मे अरबी शब्दक बहिष्कारक आन्दोलन चलल तहिना फारसीमे (फारसक प्राचीन ग्रन्थ अवेस्ता आ वैदिक-संस्कृत क मध्य समानता द्रष्टव्य) सेहो अरबी शब्दक बहिष्कार आ तकरा स्थान पर आर्यभाषा-समूहक शब्दक ग्रहण क आन्दोलन चलल अछि। मैथिलीमे सेहो हिन्दी-उर्दू शब्द क बहुलता सँ प्रयोग भाषाक अस्तित्वपर संकट जकाँ अछि, खास कऽ मिथिलाक्षरक मैथिल ब्राह्मण संप्रदाय द्वारा दाह-संस्कार केलाक बाद।

आब उर्दू गजल पर आबी। १८९३ई. मेहालीमुकद्दमा-ए-शेर-ओ-शा य री लिखलन्हि जे हुनकर काव्य-संग्रहक भूमिका छल। ओइ काल धरि उर्दू गजलक विषय आ रूप दुनू मृत प्राय छल से हा ली विषय-परिवर्तनक आह्वान तँ के बे केलन्हि संगे काफिया आ रदीफक सरल स्वरूपक ओकालति केलन्हि। ओ लिखै छथि जे एकाधे टा शेर आइ-काल्हि नीक रहैए आ शेष गजल फारसी क शब्द सभ सँ भरि देल

गेल शेरक संकलन भऽ जाइए, जइसँ ओकर स्तर हीन तापर लोकक ध्यान नै जाए। से उर्दू गजल धार्मिक कट्टरता पर व्यंग्य क क्षेत्रमे फारसी गजल सँ आगाँ बढ़ि गेल।

संगीत आ गजल गायन

ठाठ कल्याण क अन्तर्गत राग य मन मे त्रि ताल १६ मात्रा (दू पाँतिक अनुष्टुप् ३२ अक्षर) क एतऽ प्रयोग भऽ सकैए। ठाठ बिला व ल क अन्तर्गत राग बिला व लए क ताल १२ मात्राक होइत अछि, एतऽ गायत्री-२४ अक्षरक गजलक प्रयोग भऽ सकैए। कारण वार्णिक गणनाक उपरान्त रेघा कऽ गायक कैँ कम गाबए पड़तन्हि आ शब्द/अक्षरक अकाल नै बुझना जाएत।

ई मात्र उदाहरण अछि आ से गायकक लेल, मैथिली गजल लिखनिहारक लेल नै।

मैथिलीमे अखनधरि जे गजल लिखल गेल अछि ओइमे बहरक एकरूपता क कोनो विचार नै राखल गेल अछि। नेसेबहर-विचार फारसी काव्यशास्त्रक हिसाबसँ राखल गेल छै आ ने भारतीय काव्यशास्त्रक हिसाबसँ। आ तइ कारणसँ मैथिली गजल सभकेँ“गजल सन कविता” मात्र कहि सकै छिऐ। ओना बहरक एकरूपता गजलकार लोकनि द्वारा गजल लिखलाक बाद एक गजलपर आ ध घण्टा ल गेला मात्र सँ कएल जा सकैए।

गजल

सहस्राब्दीक हारि हमर आ जीत ओकर, नै जातिवादीक सोझाँ होएब लरताङर

भेष बदलि जातिपंथी जीति रहल कवि, ऐलुष नै फेर हम बनब लरताङर

एहि भू मार्गक अछि तँ गप्पे विचित्र सन, प्रकाश आएल अछि भेल अन्हार निवृत्त

मयूरपंखी पनि सोखा उगल छै एखने, इन्द्रक मेघकेँ सोंखि करब लरताङर

बनि बाल बुद्धि हम पुछने आइ छलहुँ, ई सत्य अहिंसाक पथ ई विजयक पथ

जीतल जाइए असत्यक रथ हुनकर, टनकाएब नै फेर होएब लरताङर

रस्ता चलैत छलहुँ दिन राति सदिखन, से भेल जाइत छारन नव रस्ता बनल

छी देखि रहल रस्ताक केंचुली भरि गर, गऽ जाइत आगाँ नहि होएब लरताङर

अबैए ओ सत्यक क्षण कोन विपदा बनि, अछि आएल दौगल ओ सुनझाएल अछि

पोखरिक जाइठ पर भेल ठाढ़ छी हम, छछड़बाएब घर नै हैब लरताङर

छनगा पीबि शिव देखि रहल चारू कात, विषहन्त ओ घूमि रहल बनल बसात

तांडव ई अहाँक बुद्धि कहैए से त्रिकटु, तगबाएत करा नै होएब लरताङर

हे भाइ ऐरावत अछि आइ झूमि रहल, कदैमे करैत ओ कदम ताल विकराल

चरखा कत्तिनक टकुआ काटब देखल, नहि कदरियाएब खोभब लरताङर

गजल

बरसातिक ई राति बनल सुख राति हेकालि

करब षोडशोपचार आ रदए बलि हेकालि

बाल बसन्त भैया बढ़थु बहिनक अछि आस

आस्ती क करैत भैया लेल सुधियो नहि हेकालि

लाल झिंगुर, लाल सिन्दुर, लाल अड़हुल फूल

ताहूसँ लाल देखल ई दृश्य-देश मिथि हे कालि

स्वप्नक सोझाँ सत्यक नै अछि आब कोनो मोल

पोखड़ि झाँखड़ि सगरि घूमि ई देखलिहे कालि

अमुआ फड़ एल दाल दी डारि लीबि-लीबिजाए

ओकर नम्रतामे कोनो अगुताइ सुनलिहे कालि

ऐरावत गजल सन कविता देखू देलनि ई

मैथिलीक गरिमा एहि ठाँ देखू सदति हे कालि

गजल

जाइत-जाइत देखल ओ ठाढ़ आर मेघडम्बर सन छाती

भैयाक पीठ धोबिया पाट हुनकर मेघडम्बर सन छाती

पड़ल फेर अकाल करैत हाक्रोस छथि ओ ठाढ़ भेल कात

छाती धकधक उन्नत्त ठाढ़ि दुआर मेघडम्बर सन छाती

देखल ई चित्कार हम भऽ सोझाँ ठाढ़ देबै ओकरा हुतकारी

संकट प्रहार मे धैर्य अपरम्पार मेघडम्बर सन छाती

देखल हुनका आइ छन्हि मुँह क्लान्त मुदा नहि कोनो बात

कर्तव्यक बिच कोनो विश्राम डगर मेघडम्बर सन छाती

सुनू सुनू भाइ गप भेल असम्हार करू पुकार समधानि

भेल मानवक ई हाल करू दुत्कार मेघडम्बर सन छाती

ऐरावत देखल घुर चालि बनल हथियार ओ लेने जाल

छी तैयो ठाढ़ की हम क्षितिजक पार मेघडम्बर सन छाती

आब किछु शब्दावली देखी।

अरकान: अरकान सामिल पूर्णाक्षर:

अरकान सामिल पूर्णा क्ष र: फ–ऊ–लुनU। । फा–इ–लुन। U। मफा–ई–लुनU। । । मुस–तफ–इ–लुन। । U। फा–इ–ला–तुन। U। । मु–त–फा–इ–लुनUU। U। मफा–इ–ल–तुनU। UU। मफ–ऊ–ला–तु। । । U

सभ पूर्णाक्षरी घटक मारते रास प्रकार।

१० पूर्णाक्षरी (सालिम) अराकानसँ १९ बहर आ से दू प्रकारक:

मु फ र द बहर माने रुक्न क बेर-बेर प्रयोगसँ। सात सालिम (पूर्णाक्षरी) बहर, संगीत शब्दावलीमे एकरा शुद्ध कहि सकै छी। सभ पाँतीमे २-८ बेर दोहरा कऽ शेरमे४-१६ रुक्नी बहर बनत।

४ रुक्नक बहर-मुरब्बा६ रुक्नक बहर-मुसद्दस८ रुक्नक बहर-मुसम्मन/मुफ़रद (विशुद्ध) आठ–रुक्न, छह रुक्न आ चारि–रुक्नकसालिम बहर

हजज:-आठ–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –चारिबेर/छः–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –तीनबेर/चारि–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –दूबेर

रजज़आठ–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –चारिबेर/छः–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –तीनबेर/चारि–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –दूबेर/

रमलआठ–रुक्नफाइलातुन (। U। ।) –चारिबेर/छः–रुक्नफाइलातुन (। U। ।)–तीनबेर/चारि–रुक्नफाइलातुन (। U। ।)–दूबेर

वाफ़िरआठ–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।) –चारिबेर/छः–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।) –तीनबेर/चारि–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।)–दूबेर

कामिलआठ–रुक्नमुतफाइलुन (UU। U।)–चारिबेर/छः–रुक्नमुतफाइलुन (UU। U।) –तीनबेर/चारि–रुक्नमुतफाइलुन (UU। U।) –दूबेर

मुतकारिब आठ–रुक्नफऊलुन (U। ।) –चारिबेर/छः–रुक्नफऊलुन (U। ।) –तीनबेर/चारि–रुक्नफऊलुन (U। ।) –दूबेर

मुतदारिकआठ–रुक्नफाइलुन (। U।) –चारिबेर/छः–रुक्नफाइलुन (। U।) –तीनबेर/चारि–रुक्नफाइलुन (। U।) –दूबेर

ऐसभक मारते रास अपूर्णाक्षरीरूप सेहो।

मुरक्कब बहर: दू प्रकारक अरकान क बेर-बेर एलासँ १२ सालिम बहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। तीन तरहक-४ रुक्नक बहर, ६ रुक्नक बहर, ८ रुक्नक बहर/मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर

१२टा–तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तजब, मज़ारे, मुजतस, खफीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, करीब, मुशाकिल।

अरकान: मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर:

मुज़ाहिफ अरकान अपूर्णाक्षर: फ–इ–लुनUU। मफा–इ–लुनU। U। फ–इ–ला–लुनUU। । म–फा–ई–लुU। । Uमुफ–त–इ–लुन। UU। फ–ऊ–लुU। Uमफ–ऊ–लु। । Uमफ–ऊ–लुन। । । फै–लुन। । फा। फ–अल्U। फ–उ–ल्U। Uफाअ। Uफाइलुन। U। फऊलुनU। ।

मुक्तजब (अपूर्णाक्षरी आठ रुक्न): फऊलुU। UफैलुनU। फऊलुU। Uफैलुन। ।

मज़ारे (अपूर्णाक्षरीआठरुक्न): मफऊलु। । Uफाइलातु। U। UमफाईलुU। । Uफाइलुन। U।/फाइलान। U। U

मुजतस (अपूर्णाक्षरीआठ–रुक्न): मफाइलुनU। U। फइलातुनU U। । मफाइलुनU। U। फैलुन। ।/फ–इ–लुनUU।

ख़फीफ़ (अपूर्णाक्षरीछःरुक्न): फाइलातुन। U। । मफाइलुनU। U। फैलुन। ।/फइलुनU U।

आब एक धक्का फेरसँ मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

जेना कहल गेल रहए जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ हएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व हएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतऽ मात्रा गानल जाएत ऐ तरहेँ:-

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

आब पाँती वा पाँति खण्डक अन्तिम वर्ण पर आउ।

क्ष=क्+ष=०+१ त्र=त्+र=०+१ ज्ञ=ज्+ञ=०+१

श्र=श्+र=०+१ स्र=स्+र=०+१ शृ=श्+ऋ=०+१

त्व=त्+व=०+१ त्त्व=त्+त्+व=०+०+१

ह्रस्व+ऽ=१+०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नै होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग) । हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व+चन्द्रबिन्दु=१+० दीर्घ+चन्द्रबिन्दु=२+०

जेना हँसल=१+१+१साँस=२+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य हएत।

जाकऽ=२+१ क्=० क=क्+अ=०+१

क कैँ क्पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तैँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नै अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ। =दूटा ह्रस्व U

बहरे मुतकारिब:-सभ पाँतिमे पाँच-पाँच वर्णक संगीत-शब्द चारि बेर ऐ क्रममे:

U। । अरकान सामिल पूर्णाक्षर

आब मैथिलीमे विभक्ति स ट ला सँ कनेक सुविधा अछि, तैयो शब्दक संख्या चारि सँ बेशी राखि सकै छी मुदा ह्रस्व दीर्घ क क्रम वएह राखू।

फ–ऊ–लुनU। ।

फ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुन

फ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुनफ–ऊ–लुन

१

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ– रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) –चारि बेर

अनेरे धुनेरे जते कोठ केलौं

बकै तो ढ़ कै तोसुझेलौंघनेरौं

२

बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ–रुक्नफाइलुन (। U।) –चारिबेर

बी कि गेलै तँ की जोतबैखेतमे

झी किलेतैतँ की बोल तै बेरमे

३

बहरे कामिल कामिल आठ–रुक्न मुतफाइलुन (UU। U।) –चारिबेर

इनसान जे कहबैत छै सकुचा कऽ छै जँ ठकैल यौ

बहरा कऽ जे कहतै जँ नै सहि ते तँ छै कमजोर यौ

४

बहरेवाफिरवाफिरआठ–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।) –चारिबेर

अबै अछि ओ सुनै अछि ओ जँ जाइत छैबसै अछि ओ

कहै अछि जे सुनै अछि ओ जँ खाइत छैढकै अछि ओ

५

बहरेरमलरमलआठ–रुक्नफाइलातुन (। U। ।) –चारिबेर

झूरझा मो भेल छी से बात ने कीकाटने की

सेसमे टू सेलपेटूआर की की आर ने छी

६

बहरेरजजरजजआठ–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –चारिबेर

ऐओतऽ की छैकेहनोआ की अ ते की छी अए

नै छै कएलो नै सुनै छै की करै भेटैत-ए

७

बहरेहजजहजज:-आठ–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –चारिबेर

अबै छै नै सुनै छै नैबहीरो छै बुझै छै से

नरैमे छी कटै की सेज जातो छै बुझै छै से

१. आब सामिल अरा कानक आठ–रुक्नकछः–रुक्न-तीनबेर/आचारि–रुक्न-दू बेर क प्रयोग देखब। ई सभ मु फ र द बहर अछि माने रुक्न क बेर-बेर प्रयोग होइत अछि।

२. एकर अतिरिक्त सामिल अरा कानक१२टा मु र क्क ब बहर अछि माने दू प्रकारक अरकान क बेर-बेरएलासँ१२सालिमबहर, संगीतक भाषामे मिश्रित। ईतीनतरहक अछि:-४रुक्नकबहर, ६रुक्नकबहर, ८रुक्नकबहर/मुरक्कब (मिश्रित) पूर्णाक्षरी (सालिम) बहर-१२टा–तवील, मदीद, मुनसरेह, मुक्तज़ब, मज़ारे, मुजतस, ख़फीफ, बसीत, सरीअ, जदीद, क़रीब, मुशाकिल।

३. आ तकर बाद सामिल आ मु जाहि फ अरा कान दुनूक मेल-पँचसँ बनल १२ टा बहर मख्बून, अखरब, महजूफ, मक्तूअ, मक्बूज, मुज्मर, मरफू, मासूब, महजूज, मकफूफ, मश्कूल, आअस्लमबहर।

४. आऐमे मात्र मुजाहिफ अराकानसँ बनल बेशी प्रयुक्त चारिटा बहर (मुक्तजब, मजारे, मुजतसआखफीफ) ।

बहरेमुतकारिबछः–रुक्नफऊलुन (U। ।) –तीनबेर

एकेबेरमेजेकएलौं

बड़ेभेरभेनैंसुनेलौं

बहरेमुतकारिबचारि–रुक्नफऊलुन (U। ।) –दूबेर

बड़ीदूरठाढ़े

कनीदूरनाचे

बहरेमुतदारिकछः–रुक्नफाइलुन (। U।) –तीनबेर

एकरेकेलहाकेलहीं

तैं अनेरे दुर्गा भेलहीं

बहरेमुतदारिकचारि–रुक्नफाइलुन (। U।) –दूबेर

काहिकाटीएतै

बातबाँटीएतै

बहरेहजज:-छः–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –तीनबेर

अनेरे भऽ गेलैं ऐ लड़ै ले गै

तखैनो जे भऽ जेतै की गमैए गै

बहरेहजज:-चारि–रुक्नमफाईलुन (U। । ।) –दूबेर

कनेबेगारबेमारी

कतेकीबातसुनाबी

बहरेरजज़छः–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –तीनबेर

ई जेधरा देखैसँछैहेतैतँनै

ई जे घटाघूमैसँघूमैनै तँ नै

बहरेरजज़चारि–रुक्नमुसतफइलुन (। । U।) –दूबेर

भोरेअएलैकोनगै

सोझेनएलैफोनगै

बहरेरमलछः–रुक्नफाइलातुन (। U। ।)–तीनबेर

कीगरीबोकी धनी को तैँसभैछी

कीसमी पो की कतेको जेघुमैछी

बहरेरमलचारि–रुक्नफाइलातुन (। U। ।)–दूबेर

कीकतेकोबातभेलै

कीजतेकोलातखेलै

बहरेवाफ़िरछः–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।) –तीनबेर

कनेक करा कहेबइ आब तेबइ की

जते सुनबैत ते कहताबतेबइकी

बहरेवाफ़िरचारि–रुक्नमफाइलतुन (U। UU।)–दूबेर

करेजकबातछैकतबो

करेजकहालईनञिहो

बहरेकामिलछः–रुक्नमुतफाइलुन (UU। U।) –तीनबेर

अनका कतौ कहबै कनेसुनतै कहाँ

सुनि ओबजौकरतै कनेजितबैजहाँ

बहरेकामिलचारि–रुक्नमुतफाइलुन (UU। U।) –दूबेर

पहिलेअनैतखनेसुनै

कहबैकतेकखनोकरै

बहरेतवीलफ–ऊ–लुनU। । मफा–ई–लुनU। । ।

कहेबैसुनेबैकी मुदा जेकहेतै से

सुने तैउकारोकी मुदा जेबजेतै से

बहरेमदीदफा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–लुन। U।

सूनिबाजूमूँहमे कैकटा छै बातमे

बूझि बाजू मीत यौ कैकटा छैघातमे

बहरेमुनसरेहमुस–तफ–इ–लुन। । U। मफ–ऊ–ला–तु। । । U

की की रहै की की भेल कोनोभलाकोनो सैह

माँ माँ करी पैघो भेल सेहो जरौ सेहो जैह

बहरेमुक्तजबमफ–ऊ–ला–तु। । । Uमुस–तफ–इ–लुन। । U।

रामोनाम सेहोउठारामोनामसेहो जरा

रामोनाम मो हो लएरामोनाम बा तो करा

बहरेमजारेमफा–ई–लुनU। । । फा–इ–ला–तुन। U। ।

अरे की छी सैह नै की अरे छी छी वैह ने छी

बिसारीकीउघारीकी अरे की की देब ने की

बहरेमुजतसमुस–तफ–इ–लुन। । U। फा–इ–ला–तुन। U। ।

नै छै रमा नै रही मो नै छैमरा नैमरीजो

नै ई कनेकोमृतो छै नै ई कनेको जि यै ओ

बहरेखफीफफा–इ–ला–तुन। U। । मुस–तफ–इ–लुन। । U। फा–इ–ला–तुन। U। ।

रे खरा खू फेकू तँ नै देख लेलौं

सूनिराखूबेरोतँ नै बीति गेलौं

बहरेबसीतमुस–तफ–इ–लुन। । U। फा–इ–लुन। U।

की की रहै की भऽगैकी की छलै की भऽ नै

री तो बि तै ने कऽगैगीतोबि तै गाबि नै

बहरेसरीअमुस–तफ–इ–लुन। । U। मुस–तफ–इ–लुन। । U। मफ–ऊ–ला–तु। । । U

सेहो कने छै ने अते की के हैत

लेरोचुबै छै ने अ ते की के हैत

बहरेजदीदफा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । मुस–तफ–इ–लुन। । U।

लेलहैँ ई बेगुणो आ भेलै भने

बेलगोईनैहरोआगेलैभने

बहरेकरीबमफा–ई–लुनU। । । मफा–ई–लुनU। । । फा–इ–ला–तुन। U। ।

चलै छै ई कने बाटो जाइ छै नै

गतातो मे भने कोनो बाइ छै नै

बहरेमुशाकिलफा–इ–ला–तुन। U। । मफा–ई–लुनU। । । मफा–ई–लुनU। । ।

मोद मानी अहो भागी क नै छै की

क्रोध जानी प्रणोखालीबनैछैकी

मख्बून: बहरे रमल मुसद्दस मख्बून

फा–इ–ला–तुन। U। । फ–इ–ला–लुनUU। । फ–इ–ला–लुनUU। ।

खेलखेलाअसलीऐअगबेनै

मिलमिला अँखि गौरो बतहे नै

अखरब: बहरेहजजमुरब्बाअखरब

मफ–ऊ–लु। । Uमफा–ई–लुनU। । ।

कीभेललटूबूड़

केगेलअत्तेजोड़

महजूफ: बहरेरमलमुसम्मनमहजूफ

फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । फाइलुन। U।

एन मे नो भेल गेलौ आशआगाँबीतलौ

सूनिगेलौं नैभगेलौं नाश नारा गीत यौ

मक्तूअ: बहरे मुतदारिक मुसद्दस मक्तूअ

फा–इ–लुन। U। फा–इ–लुन। U। फै–लुन। ।

कीसँकीभेलछीबाबू

कीसँकीकैलछीआगू

मक्बूज: बहरे मुतकारिब मुसम्मन मक्बूज (एहिमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान)

फऊलुनU। । फऊलुनU। । फऊलुनU। । फ–ऊ–लुU। U

अरे रे अहाँ जे कहेलौंसिनेह

अरे रे अहाँ जेबजेलौंसिनेह

मुज्मर: बहरे कामिल मुसद्दस मुज्मर (एहिमेसभटाअरकानसामिल)

मु–त–फा–इ–लुनUU। U। मु–त–फा–इ–लुनUU। U। मुस–तफ–इ–लुन। । U।

अनठयने रहबैरहबैहरे हेरोमबै

अनठयने रहबैरहबैअरे हेघूरिऐ

मरफू: बहरे मुक्तजिब मुसद्दस मरफू

मफ–ऊ–ला–तु। । । Uमफ–ऊ–ला–तु। । । Uमफ–ऊ–लु। । U

की की रेह की की सैह निंघेस

की की रेह की की यैह निंघेस

मासूब–बहरेवाफिरमुसद्दस (एहिमेसभटाअरकानसामिल)

मफा–इ–ल–तुनU। UU। मफा–इ–ल–तुनU। UU। मफा–ई–लुनU। । ।

अरे अनलौं सुहागिन यै अनेरो की

अरे अनलौं मुहोथरि मे जनेरो की

महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (एहिमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान)

फाइलुन। U। फाइलुन। U। फाइलुन। U। फा।

केरहैसूनियैईअहाँकेँ

केरहैकूदियैईअहाँकेँ

मकफूफ: बहरेहजजमुसम्मनमकफूफ

मफा–ई–लुनU। । । मफा–ई–लुनU। । । मफा–ई–लुनU। । । म–फा–ई–लुU। । U

अनेरे की अनेरे कीधुनेरेकीकहेलौंहँ

अनेरे की अनेरे कीधुनेरेकीकहेलौंहँ

मश्कूल: बहरे रमल मुसम्मन मश्कूल

फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । मफ–ऊ–लु। । U

सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पा पीछोड़इ

सूनि सुन्झा केलियै ने कोन पा पीछोड़इ

अस्लम: बहरे मुतकारिब मुसद्दस अस्लम

फ–ऊ–लुनU। । फ–ऊ–लुनU। । फ–अल्U।

अरेकीअरेकीअहाँ

अरेकीअरेकीअहाँ

बहरेमुक्तजब (मुजाहिफरूप) (अपूर्णाक्षरीआठरुक्न): फऊलुU। UफैलुनU। फऊलुU। Uफैलुन। ।

कतेकगपोकतेकसप्पो

कतेकमिलैरहैतछैओ

बहरेमज़ारे (मुजाहिफरूप) (अपूर्णाक्षरीआठरुक्न): मफऊलु। । Uफाइलातु। U। UमफाईलुU। । Uफाइलुन। U।/फाइलान। U। U

ने छैक नैइनामकतेकोनछानिगै

ने छैक नैनकाम कतेकोनकानिगै

बहरेमुजतस (मुजाहिफरूप) (अपूर्णाक्षरीआठ–रुक्न): मफाइलुनU। U। फइलातुनU U। । मफाइलुनU। U। फैलुन। ।/फ–इ–लुनUU।

भने भले करतै की भने भलेभेटौ

कतेक तेज रतै ई कतेक ने देखौ

बहरेखफीफ (मुजाहिफरूप) (अपूर्णाक्षरीछःरुक्न): फाइलातुन। U। । मफाइलुनU। U। फैलुन। ।/फइलुनU U।

देख लेलौं दिवारसँ बेचै कखनो

बेख देखै गच्छारसँ हे तैनिक ओ

गजल द्वारा किछु संदेश, किछु भावनात्मक अभिव्यक्ति, किछुजीवनदर्शन, सौन्दर्य आ कि प्रेम ओ विरहक सौन्दर्य प्रदर्शित रहबाक चाही। किछु एहेन जे सायास नै अनायास हुअए। तैँगजलआनपद्य-कविताजेना-कहलजेबाकचाही, लिखलनै। लिखल तँ चित्र जाइत अछि-मिथिला चित्रकला लिखिया द्वारा लिखल जाइत अछि, संस्कृतमे हम कहै छिऐ-अहं चित्रं लिखा मि। गजलक विषय अलग होइत अछि, गजलशास्त्र क आधारपर भजन लिख देलासँ ओ गजल नै भऽ जाएत। अरबीमे तँ गजलक अर्थे होइ छै स्त्री सँ वार्तालाप। गजल प्रेम विरह क बादो, नैपौलाकबादो, लोका प वाद आ तथाकथित अवैध रहलाक उत्तरो प्रेम क रस लैत अछि। ई प्रेम भगवान आ भक्त क बीच सेहो भऽ सकैत अछि, शारीरिक आ आध्यात्मिक भऽ सकैत अछि। ई राधाक प्रेम भऽ सकैत अछि तँ मीराक सेहो। ई प्रेम दुनू दिस सँ हुअए सेहो जरूरी नै। भावनाक उद्रेक आ संगमे गजल कहि कऽ आत्म तुष्टि क लेल गजलकार भावनाक उद्रेक कैँ क्षणिक नै वास्तविक आ स्थायी बनाबथि तखने नीक गजल लिखि सकै छथि।

रुबाइ:

रुबाइक चतुष्पदीमे पहिल दोसर आ चारिम पाँती काफियायुक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ होइत अछि।

रुबाइमे मात्रा २० वा २१ राखू। रुबाइक सभ पाँतीक प्रारम्भ दू तरहेँ होइत अछि-१. दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (मफ–ऊ–लु। । U) सँवा२. दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (मफ–ऊ–लुन। । ।) सँ। ओना फारसी रुबाइ मे पाँती सभ लेल प्रारम्भक आगाँ क ह्रस्व-दीर्घ क्रम निर्धारित छै, मुदा मैथिली लेल अहाँ२०-२१मात्राक कोनो छन्द जे१. दीर्घ-दीर्घ-दीर्घ (मफ–ऊ–लु। । U) सँवा२. दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व (मफ–ऊ–लुन। । ।) सँ प्रारम्भ होइत हुअए, तकराउठासकैछी। पाँती२०वा२१मात्राक हेबाक चाही माने (मफ–ऊ–लु। । U) वा (मफ–ऊ–लुन। । ।) सँ प्रारम्भ हेबाक चाही।

मुदा एक रुबाइक वाक्य सभक बहर वा छन्द/लय एकसँ बेशी तरहक भऽ सकैए। चारू पाँतीमे सेहो काफियाक मिलान भऽ सकैए।

आनचतुष्पदीजइमेपहिल, दोसर आ चारिम पाँती काफियायुक्त होइत अछि मुदा मात्रा २०-२१नैहुअएसेरुबाइनै।

मैथिलीमे मुदा"कता"क परिभाषा मे ओ आओत जँ प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घ सँ हुअए मुदा छन्द आगाँ सरल वार्णिक, वार्णिकवा, मात्रिकहुअए। “कता” कप्रारम्भदीर्घ-दीर्घ सँ हेबाक छै आगाँ सरल वार्णिक, मात्रिक वा वार्णिक मे सँ कोनो एक मे शेर लिखि सकै छी, कमसँ कम दोसर आ चारिम पाँतीक काफिया मिलबाक चाही।

रुबाइक चतुष्पदीक चारिम पाँतीमे भावकचरम हेबाक चाही।

रुबाइ

कारीअनहारमेघ, आनैहोइए

कत्तौबलुआमाटि, खानैहोइए

दाहीजरतीदेखि, हिलोरै-एमेघ

भगजोगनीभकरार, जानैहोइए

बहरआछन्दकमिलानी

गजल कोनो ने कोनो बहर (छन्द) मेहेबाकचाही। वार्णिक छन्दमे सेहो ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल:-जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छहहएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जकरा"यमाताराजसलगम्" सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद हएत आ कतऽ काफिया (यति, अन्त्यानुप्रास) देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई आठ टा अछि-

यगणU।।

रगण।U।

तगण।।U

भगण।U U

जगणU।U

सगणU U।

मगण।।।

नगणU U U

ऐ आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि-ग/ल

ग- गण एकल दीर्घ।

ल- गण एकल ह्रस्व U

एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेल: -

यमाताराजभानसलगम्

आबऐसूत्रकेँतोड़ू-

यमाताU। ।=यगण

मातारा। । ।=मगण

ताराज। । U =तगण

राजभा। U।=रगण

जभानU। U =जगण

भानस। U U =भगण

नसलU U U =नगण

सलगम्U U।=सगण

बहर आ संस्कृतछन्दकमिलानी

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ– रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) –चारि बेर

वर्णवृत्त भु जं ग प्र या त: प्रतिचरणयगण (U। ।) –चारिबेर। बारहवर्ण। पहिल, चारिम, सातमआदसमह्रस्व, शेषदीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।

बहरेमुतकारिबचारि–रुक्नफऊलुन (U। ।) –दूबेर

वर्णवृत्तसोमराजीयगण (U। ।) –दूबेर। छहवर्ण। पहिलआचारिमह्रस्व, शेषदीर्घ। दोसर आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।

मात्रिकरूप-प्रतिचरणबीसमात्रा। पहिल, छअम, एगारहम आ सोलहम मात्रा ह्रस्व।

बहरे मुतदारिक मुतदारिक आठ–रुक्नफाइलुन (। U।) –चारिबेर

वर्णवृत्त स्र ग्वि णी र गण (। U।) –चारिबेर। बारहवर्ण। दोसर, पाँचम, आठम आ एगारहम ह्रस्व आ शेषदीर्घ। छअम आ आखिरी वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।

मात्रिकरूप-प्रतिचरणबीसमात्रा। तेसर, आठम, तेरहम आ अठ्ठारहम मात्रा ह्रस्व।

महजूफ: बहरे रमल मुसम्मन महजूफ फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । फा–इ–ला–तुन। U। । फाइलुन। U।

मात्रिकछंदगीतिका-प्रतिचरण२६मात्रा। तेसर, दसम, सत्रहम आ चौबीसम मात्रा ह्रस्व।

गीतिका-वर्णवृत्त २० वर्ण एकटा सगण, दूटाजगण, एकटाभगण, एकटारगण, एकटासगण, एकटा लग ण आ एकटा ग गण। तेसर, पाँचम, आठम, दसम, तेरहम, पन्द्रहम, अठारहम आ बीसम वर्ण दीर्घ आ शेष ह्रस्व। पाँचम, बारहम आ अन्तिम वर्णक बाद अर्द्ध-विराम।

महजूज: बहरे मुतदारिक मुसम्मन महजूज (ऐमे सभटा मुज़ाहिफ अरकान) फाइलुन। U। फाइलुन। U। फाइलुन। U। फा।

वर्णवृत्तबाला-१०वर्ण। प्रतिचरणरगण। U। तीनबेरआफेरएकटादीर्घ।

मात्रिकरूप-प्रतिचरणसत्रहमात्रा। तेसर, आठम, तेरहम मात्रा ह्रस्व आ आखिरीमे एक दीर्घ। आकिदूटाह्रस्वU

मैथिली गजलक आरम्भिक स्वरूप

"हमरा मानस पटल पर मैथिलीक सम्मानित आलोचक श्री रमानन्द झा“रमणक” ओ वाक्य औ खन ओहिना अंकित अछि जइमे ओ मैथिलीक वर्तमान गीत-गजल कैँ मंचीय यश एवं अर्थ लाभक औजार कहि कऽ एकर महत्व कैँ एकदम्मे नकारि देने रहथि (सन्दर्भ-मिथिला मिहिर, फरबरी-१९८३); ...कोनो आलोचककेँ एहेन गैर जिम्मेदारी बला वक्तव्य देबाक की अधिकार? भारतीय संविधान मे भाषणक स्वतंत्रता एकटा मौलिक अधिकार छैक तैँ?” (सियारामझा“सरस”, दीपोत्सव, १८/१०/९०; आमुख, लोकवेदआलालकिला)

वियोगी लोक वेद आ लाल किलाक एकटा दोसर आमुखमे लिखै छथि- “छन्दशास्त्रक निअम पर आधारित हेबाक उपरान्तो ऐ मे गजलकार कैँ गणना-निअम क स्वातन्त्र्यक अधिकार रहै छै।” (!)

देवशंकर नवीन लिखै छथि–“...पुनःडॉ. रामदेव झाक आलेख आएल। ऐ निबन्ध मे दू टा अनर्गल बात ई भेल, जे गजलक पंक्ति लेल, छन्द जकाँ मात्रा निर्धारण करऽ लगला..” ।

लोक वेद आ लाल किला मे गजल शुरू हेबासँ पहिने क एकटा आलेख अछि, मैथिली गजल पर कोनो सकारात्मक टिप्पणी तँ नै अछि ऐ सभमे, हँ मुदा समीक्षककेँ लाठी हाथे“ई सभ मैथिली गजल थिक, गजलेटाथिक” कहबापर विवश करैत प्रहार सभ अवश्य अछि।

गजल कतेको ढंगसँ कतेको बहरमे कतेको छन्दमे लिखल जा सकैए, ईसत्य अछि, मुदा गणना निअम क स्वातन्त्र्यक अधिकार ने मात्रिक गणना मे छै आ ने वार्णिक गणना मे।

हाइकूमे सिलेबल आ वर्णक मिलानी अंग्रेजी हाइकू क आरम्भिक लेखनमे नै भऽ सकल, देखलगेलजे५/७/५सिलेबलमे बेसी अल्फाबेट आबि गेल, जापानी मे ओतेक अल्फाबेट५/७/५सिलेबलमेनैछल। तैँ हम सलाह देलौं जे मैथिली हाइकू सरल वार्णिक छन्दक आधार पर लिखल जाए, जइमेह्रस्व-दीर्घक विचार नै हुअए। संस्कृतमे१७सिलेबल बला वार्णिक छन्दमे नोकमे नो क मिला कऽ१७टावर्णहोइ छै-जेनाशिखरिणी, वंशपत्रपतितम्, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम्, कोकिलक म्आभा रा क्रा न्ता। से५/७/५मे१७सिलेबललेल१७टा वर्ण हाइकू लेल लेल गेल, से आब हम लऽ रहल छी आ मिहिर झा, इरामल्लिक, उमेश मंडल,

रामविलास साहु आदि सेहो लऽ रहल छथि। रुबाइ मे हमर सलाह छल जे एतऽ सरल वार्णिक छन्दक प्रयोग सम्भव नै अछि, कारण एकर प्रारम्भ दीर्घ-दीर्घ-दीर्घवादीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व सँ होइत अछि से चाहे तँ ह्रस्व-दीर्घक मिलानी खाइत वार्णिक छन्दक प्रयोग करू वा मात्रिक छन्दक। रुबाइक चतुष्पदीमे कमसँ कम पहिल, दोसर आ चारिम पाँती काफिया युक्त होइत अछि; आ मात्रा २० वा २१ हेबाक चाही। कारण चारू पाँती चारि तरहक बहर (छन्द) मे लिखल जा सकैए से निअम कैँ आगाँ न म रे बा क आवश्यकता नै छै, हँ ई निर्णय करैए पड़त जे चारू पाँतीमे वार्णिक वा मात्रिक गणना पद्धति जे ली, से एक्के हेबाक चाही।

गजलमे मुदा अहाँ वार्णिक, सरल वार्णिक वा मात्रिक छन्दक प्रयोग कऽ सकै छी, मुदा एक गजल मे दू टा बौस्तु मिज्झर नै करू। बिन छन्द वा बहरक गजल अहाँ कहि सकै छी, समीक्षककैँ लुलु आ कऽ आ लाठी हाथे; मुदा ओगजलनैहएत, उर्दू/फारसीमे तँ मु शा य रा मे अहाँकैँ ढु कैये नै देत। आआबजखनरोशनझा, प्रवीण चौधरी प्रतीक, आशीष अनचिन्हार आदि युवा गजलकार अन्तर्जालपर एकटा टिप्पणीक बाद सरल वार्णिक छन्दमे गजल कैँ संशोधित कऽ सकै छथि, तँ लाल किला वादी गजलकार लोकनि ई किए नै कऽ सकै छथि? मायानन्द मिश्र"गीतल" कहिआगंगेशगुंजन"गजल सन किछु मैथिली मे" कहि जे गलत परम्पराकैँ जारी रखबाक निर्णय लेने छथि तकरा बाद अजित आजाद आ आन युवा गजलकार जँ बिना छन्द/बहरक गजल लिखै छथि तँ एकरा हम मायानन्द मिश्र, गंगेश गुंजन आ लाल किला वादी अ-गजलकार लोकनिक दुष्प्रभावे बुझै छी।

लोकवेदआलालकिला:

आत्ममुग्ध आमुख सभक बाद ऐ संग्रहमे कला नन्द भट्ट, तारानन्दवियोगी, डॉ. देवशंकरनवीन, नरेन्द्र, डॉ. महेन्द्र, रमेश, रामचैतन्य"धीरज", राम भरोस कापड़ि"भ्रमर", रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, सियारामझा"सरस" आ सोमदेवक गजल देल गेल अछि।

कलानन्दभट्ट

भोर आ नब हम दोसरउगायब सुरुज

करब नूतन निर्माण हम बनायब सुरुज

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१७वर्णदोसरपाँती-१८वर्ण; जखन सरल वार्णिके मे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणना क अनुसार-पहिलपाँती-२१मात्रा, दोसरपाँती-२१मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। पहिल पाँती दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व (एतऽ दूटा लगातार ह्रस्व क बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब) । दोसरपाँती-ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व-हस्व-दीर्घ-ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व-हस्व-ह्रस्व। मुदा एतऽ गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रम टूटि गेल।

तारानन्दवियोगी

दर्दजँहदकैँटपलजाए तँ आगिजनमै अछि

बर्फअंगारबनलजाए तँ आगिजनमै अछि

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१९वर्णदोसरपाँती-१८वर्ण; जखन सरल वार्णिके मे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणना क अनुसार-पहिलपाँती-२५मात्रा, दोसरपाँती-२५मात्रा, मात्रा मिल गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। दीर्घ (संयुक्ताक्षरकैँ पहिने)-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्अस्व-ह्रस्व। (एतऽ दूटा लगातार ह्रस्व क बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब) । दोसरपाँती-दीर्घ (संयुक्ताक्षरकैँ पहिने)-ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ एतऽ क्रम भंग भऽ गेल।

देवशंकरनवीन

अँटालेबसमय-चक्र, सहजहिएहिआँखिबीच

नबकाप्रभातलेल, क्रान्तिकोनोठानिलेब

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१९वर्णदोसरपाँती-१६वर्ण; जखन सरल वार्णिके मे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणना क अनुसार-पहिलपाँती-२५मात्रा, दोसरपाँती-२५मात्रा, मात्रा मिलि गेलासँ आब ह्रस्व दीर्घ पर चली। ह्रस्व-दीर्घ-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्व (एतऽ दूटा लगातार ह्रस्व क बदला एकटा दीर्घ दऽ सकै छी, से दोसर पाँतीमे देखब) । दोसरपाँती-ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ-मुदा एतऽ गाढ़ कएल अक्षरक बाद क्रम टूटि गेल।

नरेन्द्र

निकलूतँसजिकऽसजाकेँ

बासनलीठोकिबजाकेँ

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१०वर्णदोसरपाँती-९वर्ण; जखन सरल वार्णिके मे गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

मात्रिक गणना क अनुसार-पहिलपाँती-१३मात्रा, दोसरपाँती-१४, मात्रा गणनाक अन्तर अछि तँ ह्रस्व दीर्घ विचारपर जेबाक मेहनति बचि गेल।

डॉमहेन्द्र

चलैछआदमी सदिखन चलैत रहबा लए

जीबैछआदमी सदिखनकलेससहबालए

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१८वर्णदोसरपाँती-१८वर्ण। मुदा तेसर शेरमे दोसर पाँतीमे १६ वर्ण आबि गेल अछि। मात्रिक मे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे क्रमसँ२४आ२५वर्ण अछि।

रमेश

जखन-जखनसाओनकओहासपड़ैए

हमर छातीमे गजलक लहास बरैए

सरल वार्णिक क अनुसारे गणना-पहिलपाँती-१६वर्णदोसरपाँती-१६वर्ण। मुदा दोसर शेरक पहिल पाँतीमे१५वर्ण। मात्रिक मे सेहो उपरका दुनू पाँतीमे२२वर्ण अछि। मुदा ह्रस्व-दीर्घ गणना मे दोसरे शब्दमे ई मारि खा जाइए।

ई दोष शेष गजलकार मे सेहो देखबामे अबैए।

एकर अतिरिक्त सुरेन्द्रनाथ क“गजल हमर हथियार थिक”, सियारामझा“सरस” क“थोड़े आगि थोड़े पानि”, रमेशक“नागफेनी” आ तारानन्द वियोगीक“अपन युद्धक साक्ष्य” मे सँ किछु किताब लाठी हाथे मैथिली साहित्यमे गजल संग्रहक रूपमे साहित्य अकादेमीक सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचर क उत्तर जयकान्त मिश्र संस्करण मे आबि गेल अछि, किछु ऐ साहित्यक इतिहासक अगिला संस्करणमे आबि जाएत! अरविन्द ठाकुरक गजल सेहो पत्र-पत्रिकामे गजल कहि छपि रहल अछि, से अही परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

जँ ई सभ गजल नै अछि तँ पद्य तँ अछि आ तइ रूपमे एकर विवेचन तँ हेबाके चाही। ऐ क्रममे रवीन्द्रनाथ ठाकुर क“लेखनीएकरंगअनेक” देखू। मैथिली गजल संग्रहक रूपमे ई पोथी आइ सँ२५बर्खपूर्वआएल। सोमदेव आ भ्रमर क संग हिनको गजल लाल किला वादक परिभाषामे नै अबैत अछि। गजल नै मुदा पद्य क रूपमे एकर स्थान मैथिली साहित्यमे सुरक्षित छै, मुदा ई आन वर्णित गजलक तथाकथित संकलन क विषयमे नै कहल जा सकैए।

एकछन्द, एकबाँसुरी, एकधुनसुनयबालेऽ

लियौईएकगजल, आईगुनगुनयबालेऽ

(रवीन्द्रनाथ ठाकुर“लेखनीएकरंगअनेक”)

मैथिली गजलक पहिल दुर्भाग्य तखन देखा पड़ैत अछि जखन एतऽ गजल कैँ मुस्लिम धर्म सँ जोड़ि कऽ देखल जाए लगलै आ मुस्लिम धर्म आ ओकर साहित्य कैँ अछोप मानि लेल गेलै। गजलक प्रारम्भ इस्लाम क आगमनसँ पूर्व क घटना अछि आ अवेस्ता आ वैदिक संस्कृत मध्य ढेर रास साम्य अछि। दोसर दुर्भाग्य माया नंद मिश्रक ओ कथन भेल जइमे ओ घोषणा केलथि जे मैथिलीमे गजल लिखले नै जा सकैए, हुनकर तात्पर्य दोसर रहन्हि मुदा लोक अही तरहेँ ओकरा प्रस्तुत करऽ लागल, कारण ओ स्व य म्गीत ल नामसँ गजल लिखलन्हि। मैथिली गजलमे"अनचिन्हारआखर"सन अन्तर्जालीय जालवृत्त उपस्थित भेल, जतऽबहर (छन्दयुक्त) गजल आ गजलकारक लाइन लागि गेल। मुदा सभसँ बड़का दुर्भाग्य ई भेलै जे मैथिलीक किछु तथाकथित शा इर सभ रामदेव झा द्वारा बहर संबंधी विचारकैँ नकारि देलन्हि (देखू-लोक वेद आ लाल किला मे देवशंकर नवीन जीक आलेख) । जँ वर्तमानमे गजलक परिदृश्य कैँ देखी तँ मोटामोटी दूटा रेखा बनैत अछि (जकरा हम दू युगक नाम देने छी), पहिल भेल"जीवनयुग"आ दोसर भेल"अनचिन्हारयुग"। आब कने दुनू युग पर नजरि देल जाए।

१. जीवनयुग-ऐयुगक प्रारंभहमजीवनझा सँ केने छी जे आधुनिक मैथिली गजलक पिता

मानल जाइ छथि मुदा ओ कम्मे गजल लिख सकला। मुदा हुनकाबादमायानंद, इन्दु, रवीन्द्रनाथ

ठाकुर, सरस, रमेश, नरेन्द्र, राजेन्द्र विमल, धीरेन्द्रप्रेमर्षि, रौशनजनकपुरी, अरविन्द ठाकुर,

सुरेन्द्रनाथ, तारानंद वियोगी आदि गजलगो सभ भेला। रामलोचन ठाकुरजीक बहुत रचना

गजल अछि मुदा ओ अपने ओकर क्रम-विन्यासकविता-गीत जकाँ बना देने छथिन्ह मुदा किछु

गजलक श्रेणीमे सेहो अबैए। ऐ“जीवनयुग” क गजलक प्रमुख विशेषता अछि बे-बहरअर्थात

बिन छंदक गजल। ओना बहर कैँ के पुछैए जखनसुरेन्द्रनाथजी काफियेकओझरीमेफँसल रहि

जाइ छथि। एकर अतिरिक्त आर सभ विशेषता अछि ऐ युगक। आजँएकैपाँतिमेकहऽ

चाहीतँपाँतिबनत---"गजल थिक, ईगजल थिक, आइएहटागजल थिक"।

२.आबकनेआबी"अनचिन्हारयुग"पर। ऐयुगक प्रारंभ तखन भेल जखनइंटरनेटपरमैथिलीक पहिल गजल आशेरो-शाइरीकैँ समर्पित ब्लाग"अनचिन्हार आखर" (http://anchinharakharkolkata.blogspot.com) कजन्म भेल आऐ“अनचिन्हार

आखर” जालवृत्तक नामपर हम ऐ युगक नाम"अनचिन्हारयुग"रखलौं अछि। ऐयुगककिछु

विशेषतादेखलजाए-

गजलक परि भाषिक शब्द आ बहरक निर्धारण-ईश्रेय"अनचिन्हारेआखर"कैँछैजेओहमरासँ"मैथिली गजलशास्त्र"लिखेलक। आ ई मैथिलीक पहिल एहन शास्त्र भेल जइमे गजल क विवेचन मैथिली भाषाक तत्व पर कएल गेलै। तकरा बाद आशीष अनचिन्हार सेहो"गजलक संक्षिप्त परिचय"लिख ऐ परंपरा कैँ पुष्ट केलथि। आ एकरे फल थिक जे सभ नव-गजलकार बहरमे गजल कहि रहल छथि।

स्कूलिंग- "अनचिन्हारआखर"गजलक हेबाक परंपरा शुरू केलक आ तइमे सुनील कुमार झा, दीपनारायण"विद्यार्थी", रोशनझा, प्रवीनचौधरी"प्रतीक", त्रिपु रा री कुमार शर्मा, विकासझा"रंजन", सद्रेआलमगौहर, ओमप्रकाशझा, मिहिरझा, उमेश मंडल आदि गजलकार उभरि कऽ एला।

गजल मे मैथिली क प्रधानता----"अनचिन्हारयुग"सँ पहिने गजलमे उर्दू-हिन्दी शब्दक भरमार छल आ मान्यता छल जे बिना उर्दू-हिन्दी शब्दक गजल कहले नै जा सकैए। मुदा"अनचिन्हारआखर"ऐ कु तर्क कैँ ध व स्त केलक आ गजल मे१००%मैथिली शब्दक प्रयोग कैँ सार्वजनिक केलक।

गजलक लेल पुरस्कार योजना--- "अनचिन्हारआखर"मैथिली साहित्यक इतिहासमे पहिल बेर गजल लेल अलग सँ पुरस्कार देबाक घोषणा केलक। ऐपुरस्कारकनाम"गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा"पुरस्कार अछि।

ऊपर चारू विशेषताक आधारपर एकटा अंतिम मुदा सभसँ बड़का विशेषता जे निकलल ओ थिक माया नंद मिश्रक ओइ कथनक खंडन, जकर अभिप्राय छल जे मैथिलीमे बहरयुक्त गजल लिखल नै जा सकैए।"अनचिन्हारआखर"सरल वार्णिक, वार्णिक आ मात्रिक छन्दक अतिरिक्त फारसी/उर्दू बहरमे सेहो मैथिली गजल लिखबाक शास्त्र ओ उदाहरण खाँटी मैथिली शब्दावलीमे प्रस्तुत केलक।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषा मे स्थापित भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू दोष विहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषा सँ हम गजल/रुबाइ/क ता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारि क चीज अछि, आ मैथिलीक छौं क लगलासँ कोनो आर चमत्कार क हम आशा राखै छी। सएहहाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, जइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथ पर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्त जार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौं क बला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आ या तक कोन बेगरता? एते समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यंतरण कऽ देलासँ उर्दू क सभ गजलक निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतौ वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफिया क उप निअम क निर्माण क बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ सा फे अलग भाषा अछि तेँ एकर काफिया क निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमेवर्ण/मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दू मे मात्र कोनो खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उप निअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई सा फे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/मात्रा गणना पद्धति मैथिली मे सा फे छोड़ि देल जाए? आकि ओइमे ततेक ढी ल दऽ देल जाए जे ओकर कोनो मत ल बे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफिया क शुद्ध प्रयोग करथि से भेल थि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजल कैँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओगजलनैभेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/कवितातँभेबेकएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावना क प्रतिशत ताकए गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफिया मे आबे-बहर अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहऽ चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावना क प्रतिशत ता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअम बद्ध रचना अछि। एकराअकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब, कारणअकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता क्षणिका भऽ सकत, हाइकूनै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो अ सो कर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमेवर्ण/मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसी सँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारितअछियेनै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब। ओकरतरीका छै। पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धति सँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग कएल गेल। तहिनागजल, क ता आ रुबाइ मे वैज्ञानिक आधार पर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, क ता आ रुबाइ मैथिली मे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकार क संख्या मे परिणामा त्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

कोनो गजलक पाँती (मिसरा) कवज्न/वा शब्दक व ज्न तीन तरहेँ निकालि सकै छी, सरल वार्णिक छन्दमे वर्ण गानि कऽ; वार्णिक छन्दमे वर्णक संग ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) कक्रमदेखिकऽ; आ मात्रिक छन्दमे ह्रस्व-दीर्घ (मात्रा) कक्रमदेखिकऽ। जिनका गायनक कनिक बो ज्ञान छन्हि ओ बुझि सकै छथि जे गजलक एक पाँतीमे शब्दक संख्या दोसर पाँतीक संख्या सँ असमान रहि सकैए, मुदा जँ ऊपर तीन तरह मे सँ कोनो तरहेँ गणना कएल जाए तँ व ज्न समान हएत। मुदा आजाद गजल बे बहर होइत अछि तेँ ओतऽ सभ पाँती वा शब्दमे व ज्न समान हेबाक तँ प्रश्ने नै अछि। ऐ तीनू विधि सँ लिखल गजलमे व ज्न ए बेटा करत। ओना ई गजलकार आ गायक दुनूक सामर्थ्य पर निर्भर करैत अछि; गजलकार लेल वार्णिक छन्द सभसँ कठिन, मात्रिक ओइसँ हल्लुक आ सरल वार्णिक सभसँ हल्लुक

अछि, मुदा गायक लेल वार्णिक छन्द सभ सँ हल्लुक, मात्रिक ओइसँ कठिन, सरल वार्णिक ओहूसँ कठिन आ आजाद गजल (बिनुबहरक) सभसँकठिन अछि।

<u>अनुलग्नक २:</u>

मैथिली हाइकू/हैकू/क्षणिकाक समीक्षाशास्त्र

हैकू निअम १.

आब पहिल उदाहरण देखू: -

हैकू निअम २.

हैकू निअम ३.

हैकू निअम ४.

हैकू निअम ५.

हैकू निअम ६.

हमर एकटा हैबून

पएरे पार

केने कमला धार,

आइ विशाल

मैथिली हाइकू: संस्कृतमे सत्रह सिलेबल क मीटर सभ अछि-शिखरिणी, पृथ्वी, वंशपत्रपतितम, मन्दाक्रान्ता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम, कोकिलकम, आभाराक्रान्ता; ई सभटा वार्णिक छन्द अछि आ ऐ सभमे१७वर्ण अक्षर होइत अछि (सभपदमे१७सिलेबल) । तैँ५/७/५ क क्रममे १७ सिलेबल लेल १७ वर्ण अक्षर मैथिली हाइकू लेल प्रयुक्त हेबाक चाही।

जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/वाका प्रार्थना ५७५७७ स्वरूपमे होइत छल।"सेनर्यू"मे किरेजी नै होइ छै आ एकरा मे प्रकृति, चानसँआगाँहास्य-व्यंग्यहोइ छै। मुदा एकर फॉर्मेट सेहो हाइकू सन5/7/5सिलेबलकहोइ छै। जापानी सिलेबल आ भारतीय वार्णिक छन्द मेल खाइ छै से5/7/5सिलेबल भेल5/7/5वर्ण/अक्षर। संस्कृतमे17सिलेबल क वार्णिक छन्द जइमे17वर्णहोइ छै, अछि-शिखरिणी, वंशपत्रपतितम, मन्दाक्रांता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम्, कोकिलक म्आभा रा क्रां ता। तैँ17सिलेबललेल17वर्ण/अक्षरलेलहुँ अछि, जेजापानीसिलेबल (ओंजी) कलग अछि। किरेजी माने ओहन शब्द जतए सँ दोसर विचार शुरू होइत अछि, किगो भेल ऋतु सँ सम्बन्धी शब्द। किरेजी जापानीमे पाँतीक मध्य वा अंतमे अबैछ इ आ तेसर पाँतीक अंतमे सेहो जखन ई पाठककेँ प्रारम्भमे लऽ अनै छै। हाइकू जेना दू प्रकृतिक चित्र केँ जोड़ैत अछि एकरा संग चित्र-अलंकरणविधा"हैगा"सेहोजुड़ल अछि। जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/वाका प्रार्थना ५ ७ ५ ७ ७ स्वरूपमे होइत छल जे बादमे५७५आ७७दू लेखक द्वारा लिखल जाए लागल आ नव स्वरूप प्राप्त कएलक आ एकरा रेन्गा कहल गेल। बादमे यएह क एक लेखकक सम्मिलित सहयोगी विधा“रेन्कु” क रूपमे स्थापित भेल। हैबुन एकटा यात्रा वृत्तांत अछि जाहिमे संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ ऽ हैकू पद्य रहैत अछि। बाशो जापानक बौद्ध भिक्षु आ ऽ हैकू कवि छलाह आ ऽ वैह हैबुन क प्रणेता छथि। जापानक यात्राक वर्णन ओऽ हैबुन द्वारा कएने छथि। पाँचटा अनुच्छेद आ ऽ एतबहि हैकू केर ऊपरका सीमा राखी तखने हैबुन क आत्मा रक्षित रहि सकैत अछि, नीचाँकसीमा, १ अनुच्छेद १ हैकू केर, तँ रहबे करत। हैकू गद्य अनुच्छेदक अन्तमे ओकर चरमक रूपमे रहैत अछि।

टिप्पणी: "सेनर्यू"मे किरेजी नै होइ छै आ एकरा मे प्रकृति, चानसँआगाँहास्य-व्यंग्यहोइ छै। मुदा एकर फॉर्मेट सेहो हाइकू सन5/7/5सिलेबलकहोइ छै। जापानी सिलेबल आ भारतीय वार्णिक छन्द मेल खाइ छै से5/7/5सिलेबल भेल5/7/5वर्ण/अक्षर। संस्कृतमे17सिलेबल क वार्णिक छन्द जइमे17वर्णहोइ छै, अछि-शिखरिणी, वंशपत्रपतितम, मन्दाक्रांता, हरिणी, हारिणी, नरदत्तकम्, कोकिलक म्आभा रा क्रां ता। तैँ17सिलेबललेल17वर्ण/अक्षरलेलहुँ अछि, जेजापानीसिलेबल (ओंजी) कलग अछि। किरेजी माने ओहन शब्द जतए सँ दोसर विचार शुरू होइत अछि, किगो भेल ऋतु सँ सम्बन्धी शब्द। किरेजी जापानीमे पाँतीक मध्य वा अंतमे अबैछ

इ आ तेसर पाँतीक अंतमे सेहो जखन ई पाठककेँ प्रारम्भमे लऽ अनै छै। हाइकू जेना दू प्रकृतिक चित्र केँ जोड़ैत अछि एकरा संग चित्र-अलंकरणविधा"हैगा"सेहोजुड़ल अछि। जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/वाका प्रार्थना ५ ७ ५ ७ ७ स्वरूपमे होइत छल जे बादमे५७५आ७७दू लेखक द्वारा लिखल जाए लागल आ नव स्वरूप प्राप्त कएलक आ एकरा रेन्गा कहल गेल। बादमे यएह क एक लेखकक सम्मिलित सहयोगी विधा“रेन्कु” क रूपमे स्थापित भेल। हैबून मे वर्णनात्मक गद्य क संग हाइकू(5/7/5) वाटनका/वाका(5/7/5/7/7) मिश्रितरहै छै। ई सभटा विधा विदेहक फेसबुक ग्रुपपर आ मैथिली हाइकू ब्लॉग पर प्रतियोगी वातावरणमे उपलब्ध अछि।

बाशो जापानक बौद्ध भिक्षु आ हैकू कवि छलाह जापानक यात्राक वर्णनआ फुजी पहाड़ हुनकर कवितामे खूब अबैए।

बाशोक किछु हाइकू एतए प्रस्तुत अछि

बाशोक हाइकू

१. केराकगाछ लग / जै बौस्तुसँहम घृणा करै छी तकर चेन्ह/ एकटा*मुसकैन्थसक* कोढ़ी

२. एकटाघोड़ो / हमर आँखिकेँ आकर्षितकरैए अइ /बर्फयुक्त काल्हिक भोरमे

३. बीतलएक बर्ख आर / एकटा यात्रीक छाहहमर माथपर, /पुआरक पनही हमर पएरमे

४. आबतखन चलू चली/ बर्फक आनंदलेबाक लेलजाधरि / हम पिछड़ि कऽ खसिपड़ी

५. पहिलझपसी जाड़क/ बानरो चाहैए/ छोट सनपुआरक कोट

६. फुजीपर्वतक बसात/ अपन पंखामे अनलौं/ *इडो*लोकक उपहार

७. *बाशोकअन्तिम कविता जखन ओ मृत्युशय्यापर छलाह-*दुखित पड़लौंएकटा यात्रा मध्य/ हमर स्वप्न भोथियाइए/ सुखाएल घासक चौरीक चारूकात (स्वतंत्र अर्थ आ भावानुवाद, प्रीतिठाकुर)

<u>अनुलग्नक ३:</u>

दोहा/रोला/कुण्डलिया/ *छन्द विचार*

दोहा

दोहा मात्रिक छन्द अछि। दोहामे दू पाँती आ चारि चरण होइत अछि। पहिल चरणमे १३, दोसर चरणमे ११, तेसर चरणमे १३आ चारिम चरणमे ११ मात्रा होइत अछि। पहिल आ तेसर चरणक आरम्भ जगणसँ (जगण U। U) नै हएत आ दोसर आ चारिम चरण अन्त हएत दीर्घ-ह्रस्वसँ।

रोला

रोला सेहो मात्रिक छन्द अछि। रोलामे चारि पाँती आ आठ चरण होइत अछि। पहिल चरणमे ११, दोसर चरणमे १३, तेसर चरणमे ११ आ चारिम चरणमे १३ मात्रा, पाँचम चरणमे ११, छअम चरणमे १३ मात्रा होइत अछि। सभ पाँतीक पहिल चरणक अन्तमे दीर्घ-ह्रस्व, वा ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व होइत अछि। सभ पाँतीक दोसर चरणक अन्तमे चारिटा ह्रस्व, वा दूटा दीर्घ, वा दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व (भगण। U U), वा ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ (सगण U U।) होइत अछि। रोलाक प्रारम्भ ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्वसँ नै करू।

कुण्डलिया

दोहा आ रोलाक कुण्डली (मिश्रण) भेल कुण्डलिया। दोहा लिख दियौ, फेर दोहाक अन्तिम चरणकेँ (११ मात्रा बला) रोलाक पहिल चरण बना दियौ (पुनरावृत्ति) आ फेर रोला जोड़ू। खाली ई ध्यान राखू जे दोहाक पहिल चरणक पहिल शब्द आ रोलाक अन्तिम चरणक अन्तिम शब्द एक्के रहए। कुण्डलियाक पहिल शब्द आ अन्तिम शब्द एक्के होइए। कुण्डलियाक चारिम आ पाँचम चरण सेहो एक्के होइए।

छन्द विचार

मात्रिक गणना

क्+अ=क,

क्+आ=का।

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

क्ष=क्+ष=०+१

त्र=त्+र=०+१

ज्ञ=ज्+ञ=०+१

श्र=श्+र=०+१

स्र=स्+र=०+१

शृ=श्+ऋ=०+१

त्व=त्+व=०+१

त्त्व=त्+त्+व=०+०+१

ह्रस्व+ऽ=१+०

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल=१+१+१

साँस=२+१

जा कऽ=२+१

क्=०

क=क्+अ=०+१

U-ह्रस्वक चेन्ह

।-दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ। =दूटा ह्रस्व U

वार्णिक गणना

1. हलंतयुक्त अक्षर-0

2. संयुक्त अक्षर-1

3. अक्षर अ सँ ह -1 प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=1+5+2+2+3+3+3+1=20मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=2मात्रा

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=2मात्रा

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=2मात्रा

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ् क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि अतिछन्द आ विच्छन्द। छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। यदि अक्षर पूरा नहि भेलतँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ

व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कय अलग केल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः=सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कयकेँ सेहो अक्षर पूर कय सकैत छी।

ए=अ+इ

ओ=अ+उ

ऐ=अ/आ+ए

औ=अ/आ+ओ

सरल वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार नै राखल जाइए। मुदा वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल: - जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह मात्रा हएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जे “यमाताराजसलगम्” सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद आ कतऽ यति, अन्त्यानुप्रास देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई आठ टा अछि-

यगणU।।

रगण।U।

तगण।।U

भगण।U U

जगणU।U

सगणU U।

मगण।।।

नगणU U U

एहि आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि- ग / ल

ग-गण एकल दीर्घ।

ल-गण एकल ह्रस्वU

एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेलः -

यमाताराजभानसलगम्

आब एहि सूत्रकेँ तोड़ू-

यमाताU। ।= ***यगण***

मातारा। । ।=***मगण***

ताराज। । U = ***तगण***

राजभा। U।= ***रगण***

जभानU। U = ***जगण***

भानस। U U = ***भगण***

नसलU U U = ***नगण***

सलगम्U U।= ***सगण***

१०. नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

सारांश

रामखेलावन मण्डलगाम-कटघटरा, प्रखण्ड–शिवाजीनगर, जिला-समस्तीपुर, हिनके संग बिन्देश्वर मण्डल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मंगा दे किहमतँमाँसिपाहीहेबै-एखनो लोककेँ मो न छन्हि। एऽ मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-वसन्त, अल्हाऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिकाप्रस्तुत कएल जाइत छल।

बीजशब्द: नाट्य · समानान्तर · नाटक · रंगमंच · साहित्यक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “नाट्य साहित्य, समानान्तर मैथिली नाटक आ रंगमंच; आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। रामखेलावन मण्डल गाम- कटघटरा, प्रखण्ड– शिवाजीनगर, जिला- समस्तीपुर, हिनके संग बिन्देश्वर मण्डल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मंगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि। एऽ मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-वसन्त, अल्हाऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिका प्रस्तुत कएल जाइत छल। पूर्णियासँ पिआ देसाँतर (मैथिली बिदेसिया)क टीम सुपौल-सहरसा-समस्तीपुर आदि ठाम अबैत छल। हसन हुसन नाटिका होइत छल। रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम-गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला- समस्तीपुर विद्यापति नाटक गोरखपुर धरि खेलाएल छल।

४

मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

रामखेलावन मण्डलगाम-कटघटरा, प्रखण्ड–शिवाजीनगर, जिला-समस्तीपुर, हिनके संग बिन्देश्वर मण्डल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मंगा दे किहमतँमाँसिपाहीहेबै-एखनो लोककेँ मो न छन्हि। एऽ मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-वसन्त, अल्हाऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिकाप्रस्तुत कएल जाइत छल। पूर्णियासँ पिआदेसाँतर (मैथिलीबिदेसिया) क टीम सुपौल-सहरसा-समस्तीपुर आदि ठाम अबैत छल। हसन हुसन नाटिकाहोइतछल। रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम-गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला-समस्तीपुरविद्यापतिनाटक गोरखपुर धरिखेलाएल छल। ऐ मंडली द्वारा प्रस्तुतअन्यनाटक अछि- लौंगियामेरचाइ, विद्यापति, चीनीक लड्डू आ बसात।

अंकिया नाटमे प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतौ अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल।

सभ साहित्यिक विधा दू प्रकारक होइत अछि। लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि, आ बुझै छथि जे ग मैया नाटक द ब होइ छै। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐ मे पात्रक से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि द्वारा होइए आ नृत्यक समावेश सँ, वाक्यमे विलक्षणता सँ, रागबलासंगीतसँ, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र क आगमन सेहो ऐ मे रहैए। कोनोनिर्जीव/वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपलरोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइए।

वैदिक आख्यान, जातककथा, ऐशपफेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि। ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जइ प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई. सँछठमई. धरि साहित्यक भाषा दू अर्थे रहल, पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर ऐ प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर ऐ प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ

तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए, तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि। मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमेस्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे, मुदा पद्य गाब थि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्नश्रेणीक लोक मागधी बजैत छलाह।

मैथिली नाट्य साहित्य आ नाट्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

बच्चा आ पैघ नाटकसँ शिक्षा लैए, लोककेँ आ वातावरणकेँ बुझबाक प्रयास करैए। मन्दिरक उत्सव आ राजाक प्रासादमे होइबला नाटक स्वतंत्र भऽ गेल आ एकर उपयोग वा अनुप्रयोग दोसर विषयकेँ पढ़ेबामे सेहो होमए लागल। दोसर विषयक विशेषज्ञक सहभागिता आवश्यक भऽ गेल। स्वतंत्र रूपेँ सेहो ई विषय अछि आ एकर अनुप्रयोग सेहो कएल जाइत अछि। पारम्परिक नाटक पेशेवर नाटकसँ जुड़त, उदाहरण स्वरूप कएल गेल नाटक, मंचकसाजसज्जा, आ असल नाटकक मंचन रंगमंचक इतिहास बनत। मुदा ऐ सँ पहिने रंगमंचक प्रारम्भिक ज्ञानक संग नाटक पढ़बाक आदतिक विकसित भेनाइ सेहो आवश्यक अछि। आ से पढ़बा काल एकर मंच प्रबन्धन आ अभिनयक दृष्टिसँ तकर विश्लेषण सेहो आवश्यक अछि। बच्चा आ पैघ नाटक आ रंगमंचसँ जुड़त तँ जिम्मेवार नागरिक बनत, आर्थिक रूपेँ आत्म-निर्भर बनत आ सक्रिय नागरिक सेहो बनत।

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल। नाट्य शास्त्र नाटककेँ दू प्रकारमे१. अमृत मंथन आ २. शिवकत्रिपुरदाह, मानैत अछि। एहेन लगभग दस टा दृश्य वा रूपकक प्रकार भरत लग छलन्हि (दशरूपक) आ ओइमे नृत्य, संगीत आ अभिनय सम्मिलित छल; आ ऐ दशरूपकक अतिरिक्त श्रव्य गीत सभ सेहो छल।

पाँचम शताब्दी ई. पू. मे पाणिनी शिलालिन् आ कृशाश्वक चर्चा करै छथि जे नट सूत्रक संकलन केने रहथि। नट माने अभिनेता आ रंग माने रंगमंच। नटक पर्यायवाची होइत अछि, भरत, शिलालिन् आ कृशाश्व!

मैथिली नाटक जे आइ धरि मात्र नृत्य-संगीत सँ बेशी आ चित्रकला आ दस्तकारीसँ मामूली रूपसँ जुड़ल छल, से समानान्तर रंगमंचक हस्तक्षेपक कारण आब भौतिकी, जीवविज्ञान, इतिहास, भूगोल, आ साहित्यसँ सेहो जुड़ि रहल अछि, तकर आर प्रयास हेबाक चाही।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक“नायककनामजीवन, एकछलराजा”, श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, रामभरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया, नचिकेता क नो एण्ट्री: माप्रविश; माने ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम क अबसर्डि टी सँ नचिकेता क नो एण्ट्री: मा प्रविश क उत्तर आधुनिक अबसर्डि टी; मैथिली नाटकक एकटा वृत्त सम्पूर्ण भेल।

उत्तर आधुनिकताक लक्षण: एके गोटेक कएक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नै लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै क एक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि-ई दृष्टिकोण विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल जाइत अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि, तेँ नारीवाद आ मार्क्सवाद उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण क विरोध केलक अछि। नीक-खराबकभावनारहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। सभ मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि।

भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यत: भरतक“नाट्यशास्त्र” आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक“काव्यशास्त्र” । भरत नाट्यकेँ“कृतानुसार” “भावानुकार” कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कविकर्मनै। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नट क कतौ चरचा नै अछि। अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दै छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचारतत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जाएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु हुअए से आवश्यक नै, नोएण्ट्री: मा प्रविश नाम्ना उत्तर-आधुनिक नाटक मे नहिये कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आ नहिये कोनो प्रासांगिक, कारण

ऐ मे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नै अछि। कोनो पात्र कमजोर नै छथि आ समय-परिस्थितिपर रिबाउन्ड करैत छथि। कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास ऐ तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानैत छथि। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र यशस्वी आ कुलीन छथि-सत् असत् केर मिश्रण। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि। कार्यावस्थाक पंच विभाजन-बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि। पताका आ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि, अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आबआउसन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। अभिनवगुप्त कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नै हुअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नै हुअए। त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम्मे कालिदास कहैत छथि-इति शरसंधानं नाटयति। सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि। प्लेटो-प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही। काव्य/नाटकक ओ ऐ रूपेँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित होएत। अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। ओ नाटकक दुखान्तकेँ आ अनुकृतिकेँ निसास छोड़ैबला कहै छथि जे आनन्द, दया आ भयक बाद अबैत अछि। सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए-अभिभाषण वा गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइत छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला ऐ दू तरहक कविता देखै छथि तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। यएह सभ किछु नाटकक स्टेज लेल सेहो लागू भेल। नाटकमे भावनापूर्ण सम्वाद आ क्रियाकलापक योग रहत। जीवन झा मैथिली नाट्य साहित्यमे हुनका द्वारा आनल नूतन कथ्य-शिल्प लेल मोन राखल जाइत छथि, संस्कृत आ पारसी तत्वक सम्मिश्रण नीक जकाँ जीवन झा केने छथि।

उत्तर आधुनिकता: ई तार्किकता आ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि, विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई, जे देखि रहल छी से सत्य नै सपनो भऽ सकैत अछि, सत्य-असत्य, सभअपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। ईआत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण होइत अछि आ नीक-खराबकभावनारहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। लोक मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि, कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नै लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भऽ जाएत तकर कोनो ठेकान नै, उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक भरमार लागल रहैए उत्तर आधुनिक नाटक मे जतए आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नै अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नै क एक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि-ई दृष्टिकोण एतए विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नै वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि। दर्शक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द ऐ तरहक नाटकमे रहैए जीवन मे तइ तरहक द्वन्दक नित्य सामना लोक करैत छथि।

भरतक नाट्यशास्त्र:

१९५६ई. संगीत-नाटक अकादेमी द्वारा प्रथम राष्ट्रीय नाट्य उत्सव-कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् (संस्कृत) सँ उत्सवक प्रारम्भ (गोवा ब्राह्मण सभा द्वारा) भेल, नाटकक कालखण्डक अनुरूप मंच आ पहिराबाक अध्ययन हेबाक चाही। पारसी नाटकक किछु प्रसिद्ध नाटक जेना इन्दर सभा, आलम आरा आ खोन्ने नहाक (सेक्सपियरक हेमलेट आधारित) सिनेमा बनि सेहो प्रस्तुत भेल।

नाटक दू प्रकारक लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। नाट्यधर्मक आधार अछि लोकधर्म। लोकधर्मीकेँ परिष्कृत करू आ ओ नाट्यधर्मी भऽ जाएत।

लोकधर्मीक दू प्रकार-चित्तवृत्यर्पिका (आन्तरिक सुख-दुख) आ बाह्यवस्त्वनुकारिणी (बाह्य-पोखरि, कमलदह) । नाट्यधर्मी-सेहो दू प्रकारक कैशिकी शोभा (अंगक प्रदर्शन-विलासिता गीत-नृत्य-संगीत) आ अंशोपजीवनी (पुष्पक विमान, पहाड़ बोन आदिक सांकेतिक प्रदर्शन) । सम्पूर्ण अभिनय-आंगिक (अंगसँ), वाचिक (वाणीसँ), सात्विक (मोनक भावसँ) आआहार्य (दृश्य आदिक कल्पना साज-सज्जा आधारित) । आंगिक अभिनय-शरीर, मुख आ चेष्टासँ; वाचिक अभिनय-देव, भूपाल, अनार्य आ जन्तु-चिड़ैक भाषामे; सात्विक-स्तम्भ (हर्ष, भय, शोक), स्वेद (स्तम्भक भाव दबबैले माथ नोचऽ लागब आदि), रोमांच (सात्विकक कारण देह भुकुटनाइ आदि), स्वरभंग (वाणीक भारी भेनाइ, आँखिमे नोर एनाइ), वेपथु (देह थरथरेनाइ आदि), वैवर्ण्य (मुँहपीअरपड़नाइ), अश्रु (नोरढब-ढबखसनाइ, बेर-बेरआदि), प्रलय (शवासन आदि द्वारा); आआहार्य-पुस्त (हाथी, बाघ, पहाड़ आदिक मंचपर स्थापन), अलंकार (वस्त्र-अलंकरण), अंग-रचना (रंग, मोंछ, वेशआकेश), संजीव (बिनापएर-साँप, दूपएर-मनुक्ख आ चिड़ै आ चारि पएरबला-जन्तुजीव-जन्तुक प्रस्तुति) द्वारा होइत अछि। दूटा आर अभिनय प्रकार-सामान्य (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय) आ चित्राभिनय (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय): चतुर्विध अभिनयक बाद सामान्य अभिनयक वर्णन, ईआंगिक, वाचिक आ सात्विक अभिनयक समन्वित रूप अछि आ ऐ मे सात्विक अभिनयक प्रधानता रहैत अछि। चित्राभिनय आंगिकसँ सम्बद्ध-अंगक माध्यसँ चित्र बना कऽ पहाड़, पोखरि चिड़ै आदिक अभिनय विधान। नाट्य-मंचन आ अभिनय: कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाट्य निर्देशकक लेल पठनीय नाटक अछि। रंगमंच निर्देश, जेना, रथ वेगं निरूप्य, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं, इति शरसंधानम् नाटयति, वृक्ष सेचनम् रुपयति, कलशम् अवरजायति, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति, शकुन्तला परिहरति नाट्येन, नाट्येन प्रसाधयतः, कहि कऽ वास्तविकतामे नै वरन् अभिनयसँ ई कएल जाइत अछि। नाट्येन प्रसाधयतः, एतए अनसूया आ प्रियम्वदा मुद्रासँ अपन सखी शकुन्तलाक प्रसाधन करै छथि कारण से चाहे तँ उपलब्ध नै अछि, चाहे तँ ओतेक पलखति नै अछि। तहिना वृक्ष सेचनम् रुपयति सँ गाछमे पानि पटेबाक अभिनय, कलशम् अवरजायति सँ कलश खाली करबाक काल्पनिक निर्देश, रथ वेगं निरूप्य सँ तेज गतिसँ रथमे यात्राक अभिनय, इति शरसंधानम् नाटयति सँ तीरकेँ धनुषपर चढ़ेबाक निर्णय, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं सँ हरिणकेँ मारि खसेबाक दृश्य देखबाक निर्देश, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति सँ दुश्यन्तक शकुन्तलाक मुँहकेँ उठेबाक इच्छा, शकुन्तला परिहरति नाट्येन सँ शकुन्तला द्वारा दुश्यन्तक ऐ प्रयासकेँ रोकबाक अभिनयक निर्देश होइत अछि।

भरतक रंगमंच: ऐ मे होइत अछि- पाछाँक पर्दा, नेपथ्य (मेकप रूम बुझू), आगमन आ निर्गमनक दरबज्जा, विशेष पर्दा जे आगमन आ निर्गमन स्थलकेँ झाँपैत अछि, वेदिका- रंगमंचक बीचमे वादन-दल लेल बनाओल जाइत अछि, रंगशीर्ष- पाछाँक रंगमंच स्थल; मत्तवर्णी-आगाँ दिस दुनू कोणपर अभिनय लेल होइत अछि आ रंगपीठ अछि सोझाँक मुख्य अभिनय स्थल।

अभिनय मूल्यांकन माने नाट्य समीक्षा: अध्याय२७मे भरत सफलताकेँ लक्ष्य बतबै छथि, मंचन सफलतासँ पूर्ण हुअए। दर्शक कहैए, हँ, बाह, कतेक दुखद अन्त, तँ तेहने दर्शक भेलाह सहृदय, भरतक शब्दमे, से ओ नाटककार आ ओकर पात्रक संग एक भऽ जाइत छथि। नाट्य प्रतियोगिता होइत छल आ ओतए निर्णायक लोकनि पुरस्कार सेहो दै छलाह। भरत निर्णायक लोकनि द्वारा धनात्मक आ ऋणात्मक अंक देबाक मानदण्डक निर्धारण करैत कहै छथि जे-१. ध्यानमेकमी, २. दोसर पात्रक सम्वाद बाजब, ३. पात्रक अनुरूप व्यक्तित्व नै हएब, ४. स्मरणमे कमी, ५. पात्रक अभिनयसँ हटि कऽ दोसर रूप धऽ लेब, ६. कोनोवस्तु, पदार्थ खसि पड़ब, ७. बजबा काल लटपटाएब, ८. व्याकरण वा आन दोष, ९. निष्पादनमे कमी, १०. संगीतमे दोष, ११. वाक्मेदोष, १२. दूरदर्शितामे कमी, १३. सामिग्रीमे कमी, १४. मेकपमेकमी, १५. नाटककार वा निर्देशक द्वारा कोनो दोसर नाटकक अंश घोसियाएब, १६. नाटकक भाषा सरल आ साफ नै हएब, ई सभ अभिनय आ मंचनक दोष भेल। निर्णायक सभ क्षेत्रसँ होथि, निरपेक्ष होथि। नाटकक सम्पूर्ण प्रभाव, तारतम्य, विभिन्न गुणक अनुपात, आ भावनात्मक निरूपण ध्यानमे राखल जाए। स्टेजक मैनेजर-सूत्रधार-आ ओकर सहायक–परिपार्श्वक-नाटकक सभ क्षेत्रक ज्ञाता होथि। मुख्य अभिनेत्री संगीत आ नाटकमे निपुण होथि, मुख्य अभिनेता-नायक-अपन क्षमतासँ नाटककेँ सफल बनबै छथि। अभिनेता-नट-क चयन एना करू, जँ छोट कदकाठीक छथि तँ वाणवीर लेल, पातर-दुब्बर होथि तँ नोकर,

बकथोथीमे माहिर होथि तँ बिपटा, ऐ तरहेँ पात्रक अभिनेताक निर्धारण करू। संगीत-दलक मुखिया-तौरिक-कें संगीतक सभ पक्षक ज्ञान हेबाक चाही जइसँ ओ बाजा बजे निहार-कुशीलव-कें निर्देशित कऽ सकथि।

मैथिली नाटक: बड्ड रास भाषण मैथिली आ आन नाटकक प्राचीनसँ आधुनिक काल धरि रहल तारतम्यक विषयमे देल गेल अछि। मुदा सत्य यएह अछि जे भारत वा नेपालक कोनो कोनमे रंगमंच आ रूपकक निर्देश भरतक नाट्यशास्त्रक अनुरूपेँ उपलब्ध नै अछि, ओकर पुन: स्थापन भरिगर काज तँ अछिये, मुदा समानान्तर रंगमंच एकर प्रयास केलक अछि। बिनु ज्ञानक कालिदासक नाटकक लघुरूप भयंकर विवाद उत्पन्न करैत अछि। लोक नाट्यक नाट्यशास्त्रक अनुरूप निरूपण कऽ उपरूपकक मंचनक सम्भावना मैथिलीमे अछि। बेचन ठाकुर जीक निर्देशनमे विदेह नाट्य उत्सव २०१२ ऐ दिशामे एकटा प्रयास छल।

मैथिली नाटक आ रंगमंच लेल एकटा समीक्षाशास्त्र:

गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार ई लघुकथा, कथा आ उपन्यासमे विभक्त कएल जाइत अछि तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वाबीच-बीचमेनाटक) क पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत। जँ ऋगवैदिक परम्परामे जाइ तँ महाकाव्यकेँ गीत-प्रबन्ध कहल जएबाक चाही। लक्ष्मण-परशुराम सम्वाद हुअए वा मंथरा आ कैकेयीक सम्वाद आकि रावण आ अंगदक सम्वाद, सभ ठाम नाटकक सम्वाद शैली सन रोचक पद्य अहाँकेँ भेटत। कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा ऐ मे निरुद्देश्यता-एबसर्डिटी सेहो रहि सकै छै-कारण जिनगीक भा गा दौ ड़ी मे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

वन-एक्ट प्ले भेल एकांकी आ प्ले भेल नाटक। कथोपकथनक गुंजाइश कम राखि वा कोनो उपस्थापनासँ पहिने राखि लघुकथा आ कथाकेँ सशक्त बनाओल जा सकैत अछि, अन्यथा ओ एकांकी वा नाटक बनि जाएत। भरत:-नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटककथीलेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रसकोनाबहराइए? रसबहराइएकारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।

सर्जनात्मक साहित्यमे नाटक सभसँ कठिन अछि, फेर कविता अछि आ तखन कथा, जँ अनुवादकक दृष्टिकोणसँ देखी तखन। नाटकमे नाटकक पृष्ठभूमि आ परोक्ष निहितार्थ कें चिन्हित करए पड़त संगहि पात्र सभक मनोविज्ञान बूझ ए पड़त। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल।

आइ आवश्यकता अछि जे मैथिली नाटक आ रंगमंचमे जातिवादी शब्दावली ककरो अपमानित करबा लेल प्रयोग नै कएल जाए। पुरान लोक कथा वा आख्यान नव सन्दर्भमे उपयुक्त तखने भऽ सकैए जखन नाटककार मे सामर्थ्य हुअए। नाटक आ रंगमंच जाति भेदकेँ दूर करबाक आ सामंजस्य उत्पन्न करबाक हथियार भऽ सकैए मुदा यावत लोक ओकरा देखत नै तावत कोना ई हएत? ऐ लेल नाटककार आ रंगमंच निर्देश क मे प्रतिभा हेबाक चाही जइसँ ओ गूढ़ विषय कें सोझरा कऽ राखि सकथि। मात्र विषय वा मात्र मनोरंजन श्रेष्ठताक आधार नै बनि सकत। जातिवादी रंगमंच मनोरंजनक नाम पर जे खेल खेलाएल तकर परिणाम मैथिली कें भेटि चुकल छै। समस्या, समाधान, मनोरंजन आ शिल्पमे सामंजस्य बनाबए पड़त।

आधुनिक मैथिली नाटक: मैथिली नाट्य संस्था आ नाट्य निर्देशक

धूर्त्तसमागम: तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल जे संस्कृत आ मैथिलीमे उपलब्ध अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक संस्कृत धूर्त्तसमागममे सेहो मैथिली गीतक समावेश अछि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि। मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्णक अथवा हुनकर वंशधरक चरितपर अवलंबित आ हरण आकि स्वयंवर कथापर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागमक सभ पात्र एकसँ- एक धूर्त छथि। तइ हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रहसनकेँ संगीतक सेहो कहल जाइए तइ हेतु ऐमे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि। ऐमे सूत्रधार, नटी, स्नातक, विश्वनगर, मृतांगार, सुरतप्रिया, अनंगसेना, अस्ज्जाति मिश्र, बंधुवंचक, मूलनाशक आ नागरिक मुख्य पात्र छथि। सूत्रधार कर्णाट चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि। फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। ऐ मे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि जे नितांत आधुनिक अछि आ ऐ मे जे लोच छै से एकरा लोकनाट्य बनबै छै। विश्वनगर स्त्रीक अभावमे ब्रह्मचारी छथि। शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइत छथि तँ अशौचक बहाना भेटै छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु सुरतप्रियाक

घर जाइत छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकेँ लऽ गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइ छन्हि। गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्र लग जाइ छथि, मिश्रजी लंपट छथि जे जुआ खेलाएब आ संगम ईएह दूटाकेँ संसारक सार बुझै छथि। असज्जाति मिश्र पु छै छथि जे के वादी आ के प्रतिवादी? स्नातक उत्तर दै छथि- अभियोग कहबाक लेल हम वादी थिकौं आ शुल्क देबाक हेतु संन्यासी प्रतिवादी थिकाह। विश्वनगर अपन शुल्कमे स्नातकक गाजाक पोटरी प्रस्तुत करै छथि। विदूषक असज्जाति मिश्रक कानमे अनंगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत अछि। असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ बीचमे राखि दुनूक बदला अपना पक्षमे निर्णय लैत अछि। एम्हर विदूषक अनंगसेनाक कानमे कहैत अछि- ई संन्यासी दरिद्र अछि, स्नातक आवारा अछि आ ई मिश्र मूर्ख तेँ हमरा संग रहू। अनंगसेना चारूक दिशि देखि बजैछ- ई तँ असले धूर्तसमागम भऽ गेल। विश्वनगर स्नातकक संग पुनः सुरतप्रियाक घर दिशि जाइ छथि। एमहर मूलनाशक नौआ अनंगसेनासँ साल भरिक कमैनी मंगैए। ओ हुनका असज्जाति मिश्रक लग पठबैत अछि। मूलनाशक असज्जाति मिश्रकेँ अनंसेनाक वर बुझैत अछि। गाजा शुल्कमे लऽ असज्जाति मिश्रकेँ गतानि कऽ बान्हि तेना मालिश करैत अछि जे ओ बेहोश भऽ जाइत छथि। ओ हुनका मुइल बुझि कऽ भागि जाइत अछि। विदूषक अबैत अछि आ हुनकर बंधन खोलैत अछि आ पुछैत अछि जे हम अहाँक प्राणरक्षा कएल अछि आ जे किछु आन प्रिय कार्य हुअए तँ से कहू। असज्जाति कहैए- जे छलसँ संपूर्ण देशकेँ खएलौं, धूर्त्तवृत्तिसँ ई प्रिया पाओल, सेहो अहाँ सन आज्ञाकारी शिष्य पओलक, ऐसँ प्रिय आब किछु नै अछि, तथापि सर्वत्र सुखशांति हुअए तकर कामना करैत छी।

विद्यापति ठाकुर क गोरक्षविजय नाटक-ऐसँपहिने-धूर्तसमागम केँ छोड़ि-कृष्ण पर आधारित नाटकक प्रचलन छल। ऐ अर्थमे ई सेहो एकटा क्रांतिकरी नाटक कहल जाएत। नाथ संप्रदाय किंवा गोरक्ष संप्रदायक प्रवर्त्तक योगी गोरक्षनाथक कथा लऽ ऐ नाटकक कथावस्तु संगठित भेल अछि। गोरक्षनाथक गुरु मत्स्येन्द्रनाथ योग त्यागि कदलिपुरमे राजा बनि१८टा रानीक संग भोग कऽ रहल छथि। गोरक्ष आ काननीपादकेँ द्वारपाल रोकि दैत अछि। मंत्री ढोलहो पिटबा दैत अछि जे योगी सभक प्रवेश कतौ नै हुअए आ रानी सभकेँ राजाक मोन मोहने रहबाक हेतु कहल जाइत अछि। गोरक्ष आ काननपाद नटुआक वेष धरैत छथि आ मोहक नृत्य राजाकेँ देखबैत छथि। ऐ बीच राजाक एकमात्र पुत्र बौधनाथ खेलाइत-खेलाइत मरि जाइत अछि। राजाक शंका नट पर जाइ छै आ ओकरा मारबाक आदेश होइ छै। नट बच्चाकेँ जिआ दैत अछि। राजा हुनकर परिचय पुछैत छथि तखन ओ हुनका अपन पूर्व जन्मक सभटा गप बता दै छन्हि, जे अहाँ तँ जोगी छी भोगी नै। ऐ नाटकक पात्रमे महामति (राजाकमंत्री) आमहादेवी-मत्स्येन्द्रनाथक ज्येष्ठ रानी सेहो छथि। मत्स्येन्द्रनाथ कदलीपुरक राजा आ पूर्व जन्मक योगी छथि। मत्स्येन्द्रनाथ अंतमे कहैत छथि जे गोरक्ष जेहन शिष्य हुअए आ महादेवी जेहन सभ नारी होथु।

जीवनझा

जीवन झा लिखित नाटक सुन्दर संयोग, (1904), मैथिलीसट्टक(1906), नर्मदा सागर सट्टक(1906) आ सामवती पुनर्जन्म(1908), ऐ चारू नाटकक सामवेद विद्यालय काशीमे कएक बेर मंचन १९२० ई. सँ पहिनहिये भऽ चुकल अछि, "सुन्दरसंयोग"एतैसँ प्रकाशित सेहो भेल। सुन्दर संयोग क किछु आर मंचन: १९७४ई. मालीमोड़तर (हसनपुर चीनीमिलक बगलमे), लक्ष्मीनारायण उच्च विद्यालय परिसरमे-निर्देशक श्री कालीकान्त झा"बूच", मुख्य अतिथि श्री फजलुर रहमान हासमी। दुर्गापूजामे। आयोजक देवनन्दन पाठक चीफ इन्जीनियर, आकेशनन्दनपाठक (ऑडीटरटीकाबाबू), उद्घाटन: उदित राय मुखिया। १९७६: करियन, समस्तीपुर। निर्देशक: कामदेव पाठक। १९८१: पण्डितटोल, टभका (दलसिंहसरायक बगलमे): संयोजक डॉ उमेन्द्र झा"विमल", पूर्वप्रो. भाइसचान्सलर, का. सि. संस्कृतवि. वि. आम. म. चित्रधर मिश्र जे दरभंगा किलाक भीतरक शंकर मन्दिरक अधिष्ठाता रहथि आ म. म. उमेशमिश्रआम. म. गंगानाथ झा हिनकर शिष्य रहथिन्हि। १९८३: मउबाजितपुर (विद्यापति नगरक बगलमे) ।

संस्कृत परम्परा आ पारसी थियेटरक गुणसँ ओतप्रोत जीवन झाक ऐ नाटक सभक अन्यान्यो ठाम मंचन भेल अछि।

जातिवादी रंगमंचक ई दुष्प्रचार अछि, ऐ नाटकक पहिल मंचन मलंगियाजीक संस्था करत, जखन कि हुनकर जन्म सँ पहिने कएक बेर ऐ नाटक सभक मंचन भऽ चुकल छै। मलंगियाजीक संस्थाक पुनर्लेखन"सुन्दरसंयोग"नाटककेँ सेहो जातिवादी तँ नै बना देतै, मलंगियाजीक इजाद कएल तथाकथित राड़ बला मैथिली आ ब्राह्मण बला सामन्तवादी मैथिली आ दोसर"खदेरनकीमदर"वा"बुझताहैकिनहीं"बला भ्रष्ट हिन्दीक संगम कए कऽ, ई शंका व्यक्त कएल जा रहल अछि। मलंगियाजीक जातिवादी रंगमंचक सरकारी फ ण्ड लै लेल पहिल मंचनक ई झूठ पसारल जा रहल अछि।

ईशनाथझा

उगना: ई नाटक सभ महाशिवरात्रिकेँ गौरीशंकर स्थान, जमथुरिमे खेलाएल जाइत अछि। विद्यापति शिव-भक्त, हुनकर गीत-नचारी सुनबा लेल महादेव विद्यापतिक घरमे उगना नोकर बनि आबि गेला। एक बेर विद्यापति यात्रापर छला आ उगना संगमे छलन्हि। रस्तामे पियास लगलापर उगना जटाक गंगधारसँ पानि निकालि विद्यापतिकेँ पियेलन्हि मुदा विद्यापतिकेँ ओइमे गंगाजलक स्वाद भेटलन्हि आ ओ उगनाक केश भीजल देखि सभटा बुझि गेलाह। उगना अपन असल रूपमे एलाह। मुदा उगना कहलखिन्ह जे विद्यापति ई गप ककरो नै कहताह नै तँ ओ अन्तर्धान भऽ जेताह। पार्वती चालि चलल न्हि, विद्यापतिक पत्नी उगनाकेँ बेलपत्र अनबा लेल पठेलन्हि आ देरी भेलापर ओ उगनापर बाढनि उसाहलन्हि, विद्यापति भेद खोलि देलन्हि आ उगना बिला गेलाह।

चीनीकलड्डू: सुधाकांत-प्रेमकांतक पिता गुजरि जाइ छथि आ से देखभाल मामा धर्मानन्द ट्रस्टी जकाँ करै छथि आ हुनकर सभक समर्थ भेलाक बाद सुधाकांतकेँ भार दऽ घुरि जाइ छथि। सुधाकांतक मुंशी बटुआ दास प्रेमकांतक पत्नी चण्डिका आ खबासनी छुलहीक सहयोगसँ बखरा करबा दै छथि, सुधाकान्त अपनो हिस्सा प्रेमकान्तकेँ दऽ दै छथि। सुधाकांत, पत्नी सुशीला आ बेटा सुकमार घरसँ बाहर कऽ देल जाइ छथि। सुधाकांतकेँटी. बी. रोगमारिदैछन्हि। बटुआ दासक संगति प्रेमकांतकेँ सेहो दरिद्र कऽ दैत अछि। माम धर्मानन्द सुकमारकेँ अपन सम्पति लिखि दै छथि कारण हुनका सन्तान नै छन्हि। प्रेमकांत आ बटुआ दास सुकुमारकेँ मारबाक प्रयत्नमे बिख मिला कऽ चीनीक लड्डू सनेसमे सुकमारकेँ दै छथि मुदा ओइसँ बटुआ दास मरि जाइए, आ भेद खुजैए।

उदयनारायण सिंह नचिकेता

नायककनामजीवन: नवल नव विचारक अछि, शक्तिरायधनिक, कलुषित अछि आ अपन सहयोगी विनयपर चोरिक आरोप लगा ओकर बेटीक अपहरण आ बलात्कार करबैए। विनय आत्महत्या कऽ लैए। नवल आ ओकर मित्र प्रकाश आ दीपक सभटा भेद खोलैए। ओकर प्रेमिका बलात्कारक परिणामस्वरूप आत्महत्या करैए। नवल विक्षिप्त भऽ जाइए।

एकछलराजा: एकटा राजा अभिमान कुमार देवक दिन मदिरा आ वैश्याक पाछाँ खराप भेलै। ओकरा एक्केटा बेटी मोहिनी छै, टकाक अभावमे ओकर बिआह नै भऽ पाबि रहल छै। मुंशीविरंची, सेवक चतुरलाल आ धर्मकर्मवाली पत्नी संगे नाटक आगाँ बढ़ैए। मोहिनी आ शिक्षक शुभंकरक बीच प्रेम होइ छै।

नोएण्ट्री: माप्रविश: पोस्टमोडर्न ड्रामा, जकर एबसर्डिटी एकरा ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम लग घुरबै ए। स्वर्ग आकि नर्कक द्वारपर मुइल सभ अबै छथि आ खिस्सा-खेरहा सुनबै छथि, बादमे पता चलैए जे चित्रगुप्त/धर्मराज सभ नकली छथि आ द्वारपर लागल अछि ताला, नोएण्ट्री।

गोविन्द झा

बसात: कृष्णकांत पिता द्वारा ठीक कएल युवती पुष्पा संग विवाह नै करै छथि, ओ शिक्षितसँ विवाह करऽ चाहै छथि, लिलीसँ प्रेम करै छथि। हुनकर पिता घर त्यागि दै छथि। पुष्पा घर छोड़ि महिला जागरणमे लागि गेलथि। पिताकेँ ताकैमे कृष्णकान्त असफल होइ छथि, लिलीकेँ छोड़ि रेलगाड़ीसँ कटऽ चाहै छथि, आश्रमक लोक हुनका बचा लै छन्हि, ओतए पिता, पुष्पा सभसँ भेँट होइ छन्हि, लिली सेहो बताहि भेलि ओतऽ आबि जाइ छथि।

सुधांशु शेखर चौधरी

भफाइत चाहक जिनगी: महेश बेरोजगार अछि, ओ चाह दोकान खोलैए ओ कवि सेहो अछि। इंजीनियर उमानाथक पत्नी चन्द्रमा दोकानपर देखलन्हि जे पुकार भेलापर महेश कविता पाठ लेल जाइए, चन्द्रमा चाह बेचऽ लगै छथि, उमानाथ तमसा जाइ छथि। महेशकसंगीसरिता, जेआइ. ए. एस. कपत्नी छथि, आबै छथि।

लेटाइतआँचर: दीनानाथक एकेटा पुत्री ममताकेँ पति काटरक कारणसँ छोड़ि दै छन्हि। मुदा पुत्र मोदनाथक विवाहमे दहेज लेबाक प्रयत्नपर पुत्र हुनका रोकै छन्हि।

११. मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका

सारांश

हैकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य विधा अछि, आ जापानमे एकरा काव्य-विधाक रूप देलन्हि कवि मात्सुओ बासो १६४४-१६९४। एकर रचनाक लेल परम अनुभूति आवश्यक अछि। बाशो कहने छथि, जे जे क्यो जीवनमे ३ सँ ५ टा हैकूक रचना कएलन्हि से छथि हैकू कवि आ जे दस टा हैकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि।

बीजशब्द: हाइकू · हैकू · क्षणिका · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय "मैथिली हाइकू/ हैकू/ क्षणिका" विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली; हाइकू; हैकू; क्षणिका; लिखल प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

हैकू सौंदर्य आ भावक जापानी काव्य विधा अछि, आ जापानमे एकरा काव्य-विधाक रूप देलन्हि कवि मात्सुओ बासो १६४४-१६९४। एकर रचनाक लेल परम अनुभूति आवश्यक अछि। बाशो कहने छथि, जे जे क्यो जीवनमे ३ सँ ५ टा हैकूक रचना कएलन्हि से छथि हैकू कवि आ जे दस टा हैकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि। भारतमे पहिल बेर १९१९ ई. मे कविवर रवीन्द्रनाथ ठाकुर जापानसँ घुरलाक बाद बाशोक दू टा हैकूक शाब्दिक अनुवाद कएले रहथि।

हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आपूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व 'इ' एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि? मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि? तँ ई की अछि- आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्ड्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम कैं ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

जापानमे ईश्वरक आह्वान टनका/ वाका प्रार्थना ५ ७ ५ ७ ७ स्वरूपमे होइत छल जे बादमे ५ ७ ५ आ ७ ७ दू लेखक द्वारा लिखल जाए लागल आ नव स्वरूप प्राप्त कएलक आ एकरा रेन्गा कहल गेल। रेन्गाक दरबारी स्वरूपक गांभीर्य ओढ़ने छल आ बिन गांभीर्य बला स्वरूप वणिकवर्गक लेल छल। बाशो वणिक वर्ग बला रेन्गा रचलन्हि। रेन्गाक आरम्भ होक्कुसँ होइत छल आ हैकाइ एकर कोनो आन पंक्तिकैं कहल जा सकैत छल। मसाओका सिकी रेन्गाक अन्तक घोषणा कएलन्हि १९म शताब्दीक प्रारम्भमे जा कए आ होक्कु आ हैकाइ केर बदलामे हैकू पद्यक समन्वित रूप देलन्हि। मुदा बाशो प्रथमतः एकर स्वतंत्र स्वरूपक निर्धारण कए गेल छलाह।

हैकू निअम १.

हैकू १७ अक्षरमे लिखू। ई तीन पंक्तिमे लिखल जाइत अछि- ५ ७ आ ५ केर क्रममे। अक्षर गणना वार्णिक छन्दमे जेना कएल जाइत अछि तहिना करू।

वार्णिक छन्दक वर्णन क्रममे- संयुक्ताक्षरकैं एक गानू आ हलन्तक/ बिकारीक/ इकार आकार आदिक गणना नहि करू।

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल-एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रिक आ वार्णिक। वेदमे वार्णिक छन्द अछि।

वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। एहिमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। द्विमानक कोनो अक्षर नहि होइछ। मुख्यतः तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-० २. संयुक्त अक्षर-१ ३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू: -

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+१=१७ मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू; पश्चात्=२ मात्रा; आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२ मात्रा; आब चारिम उदाहरण देखू स्क्रिप्ट=२ मात्रा

हैकू निअम २.

व्यंग्य हैकू पद्यक विषय नहि अछि, एकर विषय अछि ऋतु। जापानमे व्यंग्य आ मानव दुर्बलताक लेल प्रयुक्त विधाकेँ "सेर्न्यू" कहल जाइत अछि आ एहिमे किरेजी वा किगो केर व्याकरण विराम नहि होइत अछि।

हैकू निअम ३.

प्रथम ५ वा दोसर ७ ध्वनिक बाद हैकू पद्यमे जापानमे किरेजी- व्याकरण विराम- देल जाइत अछि।

हैकू निअम ४.

जापानीमे लिंगक वचन भिन्नता नहि छै। से मैथिलीमे सेहो वचनक समानता राखी, सैह उचित होएत।

हैकू निअम ५.

जापानीमे एकहि पंक्तिमे ५ ७ ५ ध्वनि देल जाइत अछि। मुदा मैथिलीमे तीन ध्वनिखण्डक लेल ५ ७ ५ केर तीन पंक्तिक प्रयोग करू। मुदा पद्य पाठमे किरेजी विरामक, जकरा लेल अर्द्धविरामक चेन्ह प्रयोग करू, एकर अतिरिक्त एकहि श्वासमे पाठ उचित होएत।

हैकू निअम ६.

हैबुन एकटा यात्रा वृत्तांत अछि जाहिमे संक्षिप्त वर्णनात्मक गद्य आ हैकू पद्य रहैत अछि। बाशो जापानक बौद्ध भिक्षु आ हैकू कवि छलाह आ वैह हैबूनक प्रणेता छथि। जापानक यात्राक वर्णन ओ हैबून द्वारा कएने छथि। पाँचटा अनुच्छेद आ एतबहि हैकू केर ऊपरका सीमा राखी, तखने हैबूनक आत्मा रक्षित रहि सकैत अछि, नीचाँक सीमा, १ अनुच्छेद १ हैकू केर, तँ रहबे करत। हैकू गद्य अनुच्छेदक अन्तमे ओकर चरमक रूपमे रहैत अछि।

हमर एकटा हैबून

सोझाँ झंझारपुरक रेलवे-सड़क पुल। १९८७ सन्। झझा देलक कमला-बलानक पानिक धार, बाढ़िक दृश्य। फेर अबैत छी छहर लग। हमरा सोझाँमे एकठामसँ पानि उगडुम होइत झझाइत बाहर अछि अबैत। फेर ओतएसँ पानिक धार काटए लगैत अछि माटि। बढ़ए लगैत अछि पानिक प्रवाह, अबैत अछि बाढ़ि। घुरि गाम दिशि अबैत छी। हेलीकॉप्टरसँ खसैत अछि सामग्री। जतए आएल जलक प्रवाह ओतए सामग्रीक खसेबा लए सुखाएल उबेर भूमिखण्ड अछि बड़ थोड़। ओतए अछि जन- सम्मर्द। हेलीकॉप्टर देखि भए जाइत अछि घोल। अपघातक अछि डर। हेलीकॉप्टर नहि खसबैत अछि ओतए खाद्यान्न। बढ़ि जाइत अछि आगाँ। खसबैत अछि सामग्री जतए बिनु पानि पड़ैत छल दुर्भिक्ष, बाढ़िसँ भेल अछि जतए पटौनी। कारण एतए नहि अछि अपघातक डर। आँखिसँ हम ई देखल। १९८७ ई. ।

पएरे पार

केने कमला धार,

आइ विशाल

श्रीमति ज्योति झा चौधरीक इंग्लिश हैकू हमर मैथिली अनुवाद सहित।

(१) Illusion of eye

Colourful appearance of

Rainbow in the sky

आँखिक भ्रम,

आभास वर्णमय

पनिसोखा द्यौ

(२) Rainbow declares

Beginning of bright days and

End of rainy ones

पनिसोखाक,

शुभ्र दिन आबह

खिचाहनि जा

(३) Filled with smoky fog

The wood seems to be burning

Thou' it is winter

धुँआ कुहेस

जेना जड़ैत काठ,

अछि ई जाड़

(४) The words sound so sweet

imitated by parrots

Like baby babbles

गुञ्ज मधुर

सुग्गाक अभिनय,

तोतराइत स्वर

(५) The sky is bright

The wind has cleared the clouds

Some still needs force

अकाश श्वेत

वायु टारैत मेघ,

कनेक बल

१२. दोहा/रोला/कुण्डलिया

सारांश
कुण्डलीछत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार। दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए। सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए। ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता। घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता। । दोहामे दू पाँती आ चारि चरण होइत अछि। पहिल चरणमे १३, दोसर चरणमे ११, तेसर चरणमे १३आ चारिम चरणमे ११ मात्रा होइत अछि।

बीजशब्द: दोहा · रोला · कुण्डलिया · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “दोहा/रोला/कुण्डलिया” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे दोहा; रोला; कुण्डलिया; ह्रस्व; दीर्घ प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

कुण्डली
छत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार।
दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥
काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए।
सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए।
ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता।
घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता। ।

दोहा

दोहा मात्रिक छन्द अछि। दोहामे दू पाँती आ चारि चरण होइत अछि। पहिल चरणमे १३, दोसर चरणमे ११, तेसर चरणमे १३आ चारिम चरणमे ११ मात्रा होइत अछि। पहिल आ तेसर चरणक आरम्भ जगणसँ (जगण U। U) नै हएत आ दोसर आ चारिम चरण अन्त हएत दीर्घ-ह्रस्वसँ।

रोला

रोला सेहो मात्रिक छन्द अछि। रोलामे चारि पाँती आ आठ चरण होइत अछि। पहिल चरणमे ११, दोसर चरणमे १३, तेसर चरणमे ११ आ चारिम चरणमे १३ मात्रा, पाँचम चरणमे ११, छअम चरणमे १३ मात्रा होइत अछि। सभ पाँतीक पहिल चरणक अन्तमे दीर्घ-ह्रस्व, वा ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व होइत अछि। सभ पाँतीक दोसर चरणक अन्तमे चारिटा ह्रस्व, वा दूटा दीर्घ, वा दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व (भगण। U U), वा ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ (सगण U U।) होइत अछि। रोलाक प्रारम्भ ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्वसँ नै करू।

कुण्डलिया

दोहा आ रोलाक कुण्डली (मिश्रण) भेल कुण्डलिया। दोहा लिख दियौ, फेर दोहाक अन्तिम चरणकेँ (११ मात्रा बला) रोलाक पहिल चरण बना दियौ (पुनरावृत्ति) आ फेर रोला जोड़ू। खाली ई ध्यान राखू जे दोहाक पहिल चरणक पहिल शब्द आ रोलाक अन्तिम चरणक अन्तिम शब्द एक्के रहए। कुण्डलियाक पहिल शब्द आ अन्तिम शब्द एक्के होइए। कुण्डलियाक चारिम आ पाँचम चरण सेहो एक्के होइए।

छन्द विचार

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल-एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रिक आ वार्णिक।

मात्रिक गणना

मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ - ह्र्स्व आर आ, ई, ऊ, ॠ, ए. ऐ, ओ, औ- दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक ‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना ‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर ‘लघु’ मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर ‘गुरु’ मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

जेना कहल गेल अछि जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ होएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व होएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतए मात्रा गानल जाएत एहि तरहेँ: -

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

क्ष= क् + ष= ०+१

त्र= त् + र= ०+१

ज्ञ= ज् + ञ= ०+१

श्र= श् + र= ०+१

स्र= स् +र= ०+१

शृ =श् +ऋ= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + ऽ = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नहि होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग) । हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य होएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क कैं क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तेँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नहि अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ। =दूटा ह्रस्व U

वार्णिक गणना

संयुक्ताक्षरकेँ एक गानू आ हलन्तक/ बिकारीक/ इकार आकार आदिक गणना नहि करू। वार्णिक छन्दक परिचय लिअ। एहिमे अक्षर गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। द्विमानक कोनो अक्षर नहि होइछ। मुख्य तीनटा बिन्दु यादि राखू-

1. हलंतयुक्त अक्षर-0

2. संयुक्त अक्षर-1

3. अक्षर अ सँ ह -1 प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=1+5+2+2+3+3+1=17 मात्रा

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=2 मात्रा

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=2 मात्रा

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=2 मात्रा

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ् क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि अतिछन्द आ विच्छन्द। छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। यदि अक्षर पूरा नहि भेलतँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ

व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कय अलग केल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कयकेँ सेहो अक्षर पूर कय सकैत छी।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

सरल वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार नै राखल जाइए। मुदा वार्णिक छन्दमे ह्रस्व आ दीर्घक विचार राखल जा सकैत अछि, कारण वैदिक वर्णवृत्तमे बादमे वार्णिक छन्दमे ई विचार शुरू भऽ गेल छल: - जेना

तकैत रहैत छी ऐ मेघ दिस

तकैत (ह्रस्व+दीर्घ+दीर्घ)- वर्णक संख्या-तीन

रहैत (ह्रस्व+दीर्घ+ह्रस्व)- वर्णक संख्या-तीन

छी (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

ऐ (दीर्घ) वर्णक संख्या-एक

मेघ (दीर्घ+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

दिस (ह्रस्व+ह्रस्व) वर्णक संख्या-दू

मात्रिक छन्दमे द्विकल, त्रिकल, चतुष्कल, पञ्चकल आ षटकल अन्तर्गत एक वर्ण (एकटा दीर्घ) सँ छह वर्ण (छहटा ह्रस्व) धरि भऽ सकैए।

द्विकलमे- कुल मात्रा दू हएत, से एकटा दीर्घ वा दूटा ह्रस्व हएत।

त्रिकलमे कुल मात्रा तीन हएत- ह्रस्व+दीर्घ, दीर्घ+ह्रस्व आ ह्रस्व+ह्रस्व+ह्रस्व; ऐ तीन क्रममे।

चतुष्कलमे कुल मात्रा चारि; पञ्चकलमे पाँच; षटकलमे छह मात्रा हएत।

वार्णिक छन्द तीन-तीन वर्णक आठ प्रकारक होइत अछि जे “यमाताराजसलगम्” सूत्रसँ मोन राखि सकै छी।

आब कतेक पाद आ कतऽ यति, अन्त्यानुप्रास देबाक अछि; कोन तरहेँ क्रम बनेबाक अछि से अहाँ स्वयं वार्णिक/ मात्रिक आधारपर कऽ सकै छी, आ विविधता आनि सकै छी।

वर्ण छन्दमे तीन-तीन अक्षरक समूहकेँ एक गण कहल जाइत अछि। ई आठ टा अछि-

यगण U। ।

रगण।U।

तगण।। U

भगण। U U

जगण U। U

सगण U U।

मगण।।।

नगण U U U

एहि आठक अतिरिक्त दूटा आर गण अछि- ग / ल

ग- गण एकल दीर्घ।

ल- गण एकल ह्रस्व U

एक सूत्र- आठो गणकेँ मोन रखबा लेलः -

यमाताराजभानसलगम्

आब एहि सूत्रकेँ तोड़ू-

यमाता U। । = यगण

मातारा। । । = मगण

ताराज। । U = तगण

राजभा। U। = रगण

जभान U। U = जगण

भानस। U U = भगण

नसल U U U = नगण

सलगम् U U। = सगण

१३. मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र

सारांश

जहिया प्रेस आएल छल त ओकरा बुर्जुआ वर्गक होएबाक विशेषण भेटल रहय, उपन्यास सेहो प्रेस अएलापर आयल से ओहो बुर्जुआ साहित्य रहय मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल| अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत| जे लोक कम्प्यूटर स्क्रीनपर नै देखताह त प्रिंट कय देखताह| आ प्रिंट ओन डीमांडक सुविधा सेहो पोथी डाट काम आ आन साइट/ प्रकाशक दय रहल छथि| मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ भौगोलिक दूरीक अंत एकटा वरदान सिद्ध भेल अछि|

बीजशब्द: गद्य · पद्य · साहित्यक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली गद्य आ पद्य साहित्यक समीक्षाशास्त्र” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली; गद्य; पद्य; साहित्यक; समीक्षाशास्त्र प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिली लेल समीक्षाशास्त्रक सिद्धांत

अन्तर्जालपर मैथिलीक भविष्य:

जहिया प्रेस आएल छल त ओकरा बुर्जुआ वर्गक होएबाक विशेषण भेटल रहय, उपन्यास सेहो प्रेस अएलापर आयल से ओहो बुर्जुआ साहित्य रहय मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल| अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत| जे लोक कम्प्यूटर स्क्रीनपर नै देखताह त प्रिंट कय देखताह| आ प्रिंट ओन डीमांडक सुविधा सेहो पोथी डाट काम आ आन साइट/ प्रकाशक दय रहल छथि|

मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ भौगोलिक दूरीक अंत एकटा वरदान सिद्ध भेल अछि|

अंतर्जालपर सूचनाक त्वरित सम्प्रेषण होइत अछि मुदा एकर उपयोगसँ बेशी दुरुपयोगक संभावना रहैत अछि, ख़ास कय नाम बदलि कय विभिन्न आइ. एस. पी. सँ कमेन्ट आ ब्लैकमेल केनाइ आदि, ओकरा उघार करबाक विधि सेहो अछि मुदा से ऊर्जाक अपव्यय सेहो करबैत अछि|

पात्र परिचय

कथा: शिक्षित मध्यवर्गमे मैथिली भाषा नवम वर्गसँ स्नातक-स्नातकोत्तर धरि मैथिलीकेँ भाषा वा मातृभाषाक रूपमे लेनिहार एहिसँ स्नेह करै छथि। अन्तर्जालपर मैथिलीक आगमनसँ सेहो मातृभाषासँ स्नेह फेरसँ जागल। मैथिलीक पोथीक सुगमतासँ नहि भेटब जाहिमे सरकारी संस्थाक मैथिली पाठ्यपुस्तक सम्मिलित अछि। एहिमे अन्तर्जाल द्वारा सीमित रूपमे हस्तक्षेप भेल अछि। आ एहि सभक परिणामक रूपमे मैथिली लेखकक भीतर हीन भावना (सुपीरियोरिटी कॉम्प्लेक्स सेहो हीन भावनाक रूप अछि) पैसि गेल आ साहित्य सोंगरपर ठाढ़ कएल जाए लागल। वाद-विवाद उत्पन्न कऽ आरोप-प्रत्यारोप आधारित साहित्यक चर्चा प्रारम्भ भेल। पति-पत्नी, जिला-जबार आ पिता-पुत्रक अपन पक्षमे वातावरण तैयार करब आरम्भ भेल। माने ब्लैकमेलिंग आ ब्लैक-मार्केटिंग द्वारा कथा-कविताक पुरस्कार लेल लिखल जाएब। मुदा बुकर आ नोबल साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्य सेहो कालातीत नहि रहि पबैत अछि, बहुत रासकेँ तँ लोक मोन रखैत अछि मुदा ढेर रास विस्मृत भऽ जाइत छथि आ पाठक ओकर मूल्यांकन कऽ दैत छथि। मुदा मैथिलीमे खाढ़ीक-खाढ़ी बीति जाइत अछि मुदा पाठकक अभावमे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, जिला-जबार आ आब कथाकार-कविक बनल गोल सभ एकर ब्लैकमेलिंगक आधारपर मूल्यांकन करैत अछि। अन्तर्जालक हस्तक्षेप सीमित रहलाक कारण नीक साहित्य, सृजनात्मक साहित्य आ कल्याणकारी साहित्य सोझाँ नहि आबि पाबि रहल अछि, नहि सृजित कएल जा रहल अछि। विवाद कऽ समाचारमे रहएबला कवि-कथाकारकेँ अहाँ प्रश्रय देब कारण ओ ब्लैकमेलिंग कऽ रहल छथि वा धूरा-गर्दामे रहनिहार मानवतावादी कवि-कथाकारकेँ। आ जखन से करब तखने निरर्थक देखाएबला मैथिली साहित्यमे प्राणवायु भरि पाएब।

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयास, सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नहि पढ़ैत अछि आ जाहि भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, ताहि भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ एहि भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा एहि सभ लेल गद्यक प्रयोग किएक नहि? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक कवितामे रूपान्तरण कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल एहि तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नहि उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नहि बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नहि मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नहि सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरसँ नीचाँसँ विलुप्त देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नहि मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे घोसियाबए चाहै छथि, देशज दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नहि आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

...

टप-टप चुबैत खूनक बूंन सँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओहि चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै एहि कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही एहि सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नहि चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नहि चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कए, असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नहि तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा ऐठाम जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नहि तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नहि तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि! मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नहि भेने साहित्य एकभगाह भऽ जएत, ओलड़ि जएत, फ्रेम लगा कऽ टँगबा जोगड़ भऽ जएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नहि आबए ताहि लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि।

मैथिली समीक्षाक आवश्यक तत्व-

मैथिली कथा-कविताक समीक्षाक आवश्यक तत्वपर विचार करए पड़त।

नव वातावरणमे अवस्थित नव समस्याकेँ चिन्हित करब,

व्यक्तिगत अनुभवकेँ सार्वजनिक जीवनसँ जोड़बाक प्रयासकेँ चिन्हित करब,

सूत्रबद्धता अछि वा नहि, कारण विवादित वस्तुकेँ घोसिआएब, वादक प्रतीक-चिन्हकेँ ठूसि कऽ साहित्यमे देबाक प्रवृत्तिक आधारपर ब्लैकमेलर साहित्यकेँ चिन्हित करब,

अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकन एहि प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करत।

हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत?

बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन

कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइत छैक। आ एहने साहित्य बेर-बेर अपनाकेँ परिमार्जित-परिवर्धित करितो मूल दोषसँ दूर नहि भऽ पबैत अछि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइत छैक, तकरा चिन्हित करब।

गपाष्टक आ समीक्षाक अंतरकेँ चिन्हित करब। एकर मुख्य लक्षण –

“कियो हुनका कहियो पुछलकन्हि, सुनैत छिऐ जे ओ ई करए चाहैत रहथि..” आ एहि तरहक आर गप सभ। संगहि हिनकर रचनाकेँ पाठक नहि बूझि पबैए- समीक्षक सेहो नहि बूझि पबैए- मुदा हिनकामे असली गप ई छन्हि। ई फलनाक बेटा छथि तेँ नीक आकि अधलाह लिखै छथि, ई एहि पदपर छथि तेँ नीक आकि अधलाह लिखै छथि। ई पाइबला छथि, होटल छन्हि तेँ साहित्यकार नहि छथि आ ई पर्चा फेकै छथि, पत्रकार छथि तेँ महान साहित्यकार छथि। ई सहरसा-सुपौलक छथि तेँ नीक आकि अधलाह आ ई दरभंगाक सोति आकि ब्राह्मण-कायस्थ तेँ नीक आकि अधलाह लिखै छथि।

एक पाँतिक वक्तव्य- एहि रचनाक हम विरोध आकि समर्थन करै छी। ई हमरा लेल नीक लोक छथि तेँ नीक लिखै छथि। ई हमर जातिक छथि वा हमरा भविष्यमे फाएदा पहुँचेताह तेँ अद्भुत लिखै छथि। हिनकर हम प्रशंसा करबन्हि तँ ईहो हमर प्रशंसा करताह। एहि सभ प्रवृत्तिकेँ चिन्हित करब।

मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा राखब। ओकर सम्पूर्ण गप बुझबासँ पूर्वे निर्णय सुनाएब। एहिकेँ चिन्हित करब।

मैथिली साहित्य, जतए पाठकक संख्या शून्य छैक, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत अछि आ एतए व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छैक। अहाँ दू-चारिटा कवि-कथाकार सम्मेलनमे चलि जाऊ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत। जेना गौरीनाथ लिखै छथि जे हिन्दीयोमे -प्रेमचन्द, मोहन राकेश आ उत्तराखण्डी- एना कऽ कए संग्रह अबैत अछि जेना उत्तराखण्डी प्रेमचन्द आ मोहन राकेशक कोटिक हिथि। तहिना मैथिलीमे कुलानन्द मिश्र-हरेकृष्ण झा आ ई; वा यात्री-राजकमल आ ओ, वा राजकमल-ललित आ ई, मात्र यैह कवि कथाकार छथि एहन सन वक्तव्य अबैत अछि आ एहि मे ई आ ओ क प्रति देखाओल पूर्वाग्रहकयुक्त दुटप्पी चिन्हित भए जाएत। खूब साहित्य पढ़ू- भारतक अ नेपालक दुनू दिसुका मैथिली साहित्य। आ एहि क्रममे जे रचना आ जे रचनाकार नीक लागथि आ जे तथाकथित स्थापित रचनाकार वा रचना अधलाह लागए तकरा चिन्हित करू, विसंगतिकेकेँ सेहो। आ से बिना भएक, कारण ब्लैकमेलर आ गोल बना कऽ कविता-कथा रचनिहारक दिन खतम करबाक लेल साहस जरूरी अछि। बिना पाठकक ई लोकनि मैथिली साहित्यकेँ सोंगरपर रखने छथि, एकटा छद्म वातावरण बना कऽ।

१२. स्वतंत्रता/ आरक्षण- एहि दूटा पर घमर्थन। स्वतंत्रता सतही छल, मतदान नकली अछि आ आरक्षण भेदभावपर आधारित, ई घमर्थन करैत शोषक वर्ग। स्वतंत्रता मतदानकेँ जन्म देलक आ पाँच सालपर ई सामाजिक परिवर्तनक ढेर रास नव समीकरणकेँ जन्म दैत अछि- से शोषित वर्ग लेल हितकारी। असमान सामाजिक स्तरकेँ समान अधिकार देबाक कोनो मतलब नहि। तँ शोषक वर्ग कहत- ओहू आरक्षित वर्गमे ऊँच नीचक जन्म भऽ रहल अछि। मुदा से जातिक आधारपर तँ नहि भऽ रहल अछि आ पहिनेक तुलनामे कम भऽ रहल अछि। जे शूद्र ऋषि कवष ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से करोटमे किएक ठाढ़ रहथि? पुरातन व्यवस्थाक जातिक भीतरक स्तरीकरण, कर्णकायस्थ आ मैथिल ब्राह्मणक भीतर पञ्जी-प्रथा द्वारा कएल गेल

स्तरीकरण, पाइ-पैरवी लऽ दऽ कऽ होइत स्तरीकरणक स्थितिमे नीचाँ ऊपर केनाइ। समाजक बाल-विवाह पक्ष आ विधवा-विवाह विपक्ष आधारित आ पञ्जी आधारित बतहपनीक प्रतीक रूपमे रहैत आइ काल्हिक व्यवस्था सभ। आत्मकेन्द्रित, भाषा-संस्कृति छोड़ैत समाज- कारण एहि सभसँ प्रेम मात्र प्रतीक रूपमे ओ बाल्यकालसँ देखने अछि। पढ़ाइक रूप एखनो असमानतापर आधारित अछिये मुदा पुरनका तुलनामे अकाश पतालक अंतर अछि। कियो पढ़ि-लिखि कऽ अपन समाजमे उच्चसँ उच्चतम स्तर प्राप्त कऽ सकैत अछि आ तखन ने ओकरा पाँजि चाही आ ने किछु आर। फेर ओ ग्राम पंचाएतसँ लऽ कऽ संसद सदस्य धरि पहुँचैत अछि। ठिकेदारी करबासँ लऽ कऽ बस-टेम्पू धरि चला-चलबा सकैत अछि। हम एहि द्वारे नहि पढ़ि सकलहुँ, कलक्टर नहि बनि सकलहुँ कहलापर आब लोक कहैत अछि जे तखन फलनांक बेटा कोना से बनि गेल।

१३. शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत मरड़पर लिखल जाएबला कथा-कवितामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

१४. मेडियोक्रिटी चिन्हित करू- तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज- आधुनिकताक नामपर। युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार एहिमे नहि भेटत, से एहि अन्तर्राष्ट्रीय परिदृश्यक, बुश-सद्दामक आलोचनामे धार ओहि कारणसँ नहि आबि पबैत अछि। कोनो मन्दिर-मस्जिदकेँ जे ओ समर्थन-विरोध करैत छथि वा कोनो नन्दीग्राम-लालगढ़क सेहो तँ ओहिमे सेहो ताहि तरहक धार नहि अबैत अछि। दारू पीबि मँतल मानववाद, धर्मनिरपेक्षतावाद, वामपंथ आ दक्षिणपंथपर हुनकर विचार लागत ओंघाएल। युगक सभ शब्दावली भरताह आ कविता-कथा तैयार। अमेरिकाक आलोचनामे धार कोना आओत आ वामपंथक पक्षमे सेहो- जखन अपन आजीविका दक्षिणपंथक मददितसँ चलि रहल अछि। संघर्षक अभाव सृजनात्मकताक स्तरकेँ समए बढ़लासँ बढ़ेबाक बदला घटबैत अछि। युगक अनुरूप सभ चलैए, ओकर विपरीत चलब तखन ने सृजनात्मकताक संग चाही। दोसराकेँ पलायनवादी कहनिहार एहि तरहक सुविधावादी तत्वकेँ चिन्हित करू, गहींर पैसब जिनका लेल संभव नहि। इतिहाससँ जुड़ाव ऐतिहासिक मनोभावनासँ जोड़ि सकत। वर्तमान सामाजिक व्यवस्थाकेँ माटि देबामे धारक अभाव- हीनभावनाग्रस्त आ अपराध भावसँ भरल लेखकसँ संभव नहि। न्याय वैशेषिक आ सांख्य-योगक वस्तुवाद, बाह्यक यथार्थ आ मायाक विरोध, गृहस्थ जीवन, लोक हित। कला आ साहित्यक कृति, आत्माक भीतरक ज्ञान प्रज्ञापर आधारित होइत अछि जे अखण्ड अछि- गति, स्वतंत्रता, सर्जनात्मक परिवर्तन। इतिहास वा साहित्यक इतिहास हम बदलि नहि सकैत छी आ एतए उच्च आ मध्यवर्गक स्मृति आधारित मिथिलाक स्वर्णयुग। मुदा तकर महत्व दूरदर्शन आ चलचित्र टामे भऽ सकैत अछि। उदारवाद। औद्योगिकरण आ तकर आर्थिक विकासक सफलता-असफलता। सामाजिक रूपमे समाजक पिछड़ल वर्गक विरोधकेँ आरक्षण आ स्वतंत्रता पसारि देलक मुदा संगहि एकर तीव्रता कम केलक से चाहे ओ नक्सलवाद होअए वा माओवाद वा मर्क्सवाद-लेनिनवाद। बुर्जुआ वर्गक लेल ई फाएदा रहल। बुर्जुआ वर्गक राजनैतिक आ सांस्कृतिक संगठन पसरल आ सर्वहारा वर्ग धरि पहुँचए से प्रयास आ महिला लोकनिकेँ एहिमे सम्मिलित करबाक प्रयास। पाइ आ सुविधा अपना संग परम्परागत नैतिकताकेँ तोड़लक। कम्पनी अपन स्वतंत्र अस्तित्व बनेलक आ परिवार आ व्यक्ति एहि तरहक कम्पनीकेँ नौकरीपेशा लोकक संग चलबए लागल। प्रकृतिपर नियन्त्रण आ मानवीय व्यवहारक अवलोकन। काजक लेल अन्न आ काजक बदला पाइ, रोजगार गारन्टी कार्यक्रम, जनवितरण प्रणालीक दोकान। रोजगार लेल देश-विदेश छोट होएब, परिवारक आधारपर आघात। पूँजीवादी विश्व अर्थव्यवस्था, परिवर्तन आपरूपी नहि वरन् संघर्ष आ प्रयाससँ भेटत। स्वतंत्र मानवीय संवेदना जे नीक भविष्यक गारंटी नहि दैत अछि तँ ई अधलाहक सेहो गारंटी नहि दैत अछि। हमरा लग विकल्प अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जीवनक जे किछु प्रमाण भेटि रहल अछि से कम नहि अछि। विकल्प हमरा सभकेँ तकबाक अछि जे सनसनी पसारी आकि कार्य करी।

१५. भारतमे राजनीतिक क्रान्तिक बाद औद्योगिक आ सामाजिक क्रान्तिक संकल्प कएल गेल, विकसित देशमे औद्योगिक क्रान्तिक पहिने सामाजिक क्रान्ति भेल। ताहि कारणसँ हमरा सभकेँ कठिन परिस्थितिक सोझाँ हेबऽ पड़ल। लोकाचार, चिन्तन क्रम आ दृष्टिकोणक अलाबे पोषण, स्वास्थ्य, सफाइ, चिकित्सा, शिक्षा, आयु-प्रत्याशामे वृद्धि, मृत्युदरमे कमी। आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, उद्योगीकरण।

१६. समाजक धनाढ्य आ निर्धनमे विभाजन- दुनू वर्गक आकार, स्तर आ बीचक दूरी।

१७. स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी। मानवशास्त्रीय, जातीय, धार्मिक, भाषिक- प्राथमिक आ लघु निष्ठा- स्थानिक, जातीय, धार्मिक-भाषिक आस्था। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

१८. आदिवासी- सतार, गिदरमारा आदि विविधता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। प्रकृतिसँ लग, प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता। दिनकर, सामाजिक-धार्मिक उत्सव, सूर्य-चन्द्र-वृक्ष-पर्वत पूजा, पृथ्वी स्तुति आ जलाशय आ नक्षत्रक प्रति आस्था, जनक माने जन (विश) सँ निकलल, मिथिलावासीमे सेहो ई आस्था।

१९. व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन। अनुसूचित जाति (११००, पहिल सरकारी सूची) +पिछड़ल जाति ३७४३ (मंडल आयोग)= ४८४३. वर्ण-व्यवस्था धार्मिक नहि सामाजिक प्रथा जकर आब कोनो उपयोग नहि। विघटनकारी तत्वक रूपमे विदेशी मानसिकता आ जड़ मानसिकता द्वारा उपयोग संभव।

२०. महिला आ बाल-विकास- महिलाकेँ अधिकार, शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करब, पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन, महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए। गतिशील प्रबन्धन, विकास-प्रक्रियामे स्थान। स्वतंत्रता आन्दोलन आ पर्यावरण आन्दोलन, दहेज-विरोधी आन्दोलनमे सहभागिता, आर्थिक समानता लेल संघर्ष, महिला श्रमिकक बच्चा लेल बालाश्रय-गृह, बालवाड़ी, आंगनवाड़ी। प्रतिद्वंदिताक कारण कम वेतन, काज करबाक दशा प्रतिकूल, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्वहीन स्थान।

२१. स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला आन्दोलन।

२२. धर्मनिरपेक्ष- राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित- धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित। धर्म-आस्था वा सामाजिक मूलक आधारपर व्यक्ति वा समूहक बीच विभाजन अस्वीकार। सभ समुदाय शक्तिक उपयोग उत्तरदायित्व आ कर्तव्यक निर्वहन जेकाँ, माने वितरणात्मक न्याय। धर्म-आस्थाक आधारपर कोनो भेद नहि आ राज्य धर्म द्वारा नियंत्रित नहि होएत।

२३. टैगोरक कलात्मकतावाद, गाँधीक नैतिकतावाद, अरविन्द घोषक रहस्यवादी आध्यात्म दर्शन, विवेकानन्दक व्यावहारिक वेदान्तवाद।

२४. विकास आर्थिकसँ पहिने जे शैक्षिक हुअए तँ जनसामान्य ओहि विकासमे साझी भऽ सकैए। एहिसँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि। सामुदायिक आ राष्ट्रीय जीवन।

२५. विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित आ अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान- आकांक्षा, आशा सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार। एहिसँ वैयक्तिक आ राष्ट्रीय शक्तिक अभिवृद्धि होइत अछि।

२६. विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकेँ न्याय दिअएबामे प्रयोग होएबाक चाही। न्याय पंचायतकेँ पुनःजीवन।

२७. नागरिक स्वतंत्रता- मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति। अधिकारक उत्पीड़नसँ बचाव।

२८. प्रेस- शासक आ शासितक ई कड़ी- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे भूमिका, मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकेँ प्रभावित कएनिहार। व्यवस्थामे स्थायित्व आ लोकतंत्रक प्रहरी आ संरक्षक। उद्योगपति प्रेसक मालिक आ सरकार शासन संचालक- प्रेसक स्वतंत्रताकेँ खतरा। नेपाल-भारत सन देश लेल ई खतरा आर बेशी।

२९. नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समएबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीय हित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका।

३०. जल थल वायु आ आकाश- भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन कए प्रदूषण, प्रकृति असंतुलन।

३१. कला- एहि लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन होएबाक चाही? सामाजिक संवेदनाक आ मानव क्रियाक एकटा रूप अछि कला। जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णताक कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग।

३२. भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त। प्रकृति कलाविशिष्ट प्रभावशाली स्थिति, शोकजनक, हास्य, मानवक सौंदर्यक अनुभव ओकर अनुभव बिना सम्भव नहि। एहिसँ समाजक सौंदर्यीकरणक प्रति दृष्टिकोण सोझाँ अबैत अछि।

३३. मानसिक क्रिया- मनुष्य़ सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करएबला प्राणी। शरीर आ मस्तिष्क, दिनुका काज आ रातुक स्वप्न।

३४. विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। सैद्धांतिक लाभ।

३५. काण्टक दर्शन- मछहरमे दू इंचक अवकाश बला जाल फेकब तँ दू इंचसँ कमबला माँछ नहि भेटत, तखन ई निर्णय जे एहि पोखरिमे दू इंचसँ छोट माँछ नहि! समीक्षकक जाल जतेक महीन होअए ततेक नीक।

३६. बाल-किशोर साहित्य- जे बच्चा किशोर पढ़त तँ बादोमे भाषाक प्रति घुरत- नोकरी-चाकरी स्थिर भेलाक बाद। कारण स्कूल-कओलेजमे जकर विषए मैथिली नहि अछि वा मैथिली बाल साहित्य नहि पढ़ने अछि से किएक मैथिलीसँ प्रेम करत- अहाँ ओकरा लेल नहि तकबै तँ ओहो नहि ताकत।

३७. सगर राति दीप जरए आ मैथिली समीक्षा- युद्धक कारण- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक आ तात्कालिक। मात्र तात्कालिक रटि लिअ आ आर सभमे सभटा खरापे-खराप लिखि दियौ- आर्थिक स्थिति खराप- सामाजिक स्थिति खराप आदि। मुदा जे फ्रांसीसी क्रान्तिमे से लिखि देबै तँ ओहि समए ओतुक्का किसानक आर्थिक दशा इंग्लैंडसँ नीक रहै आ सैह फ्रांसकेँ क्रान्ति लेल सक्षम बनेलकै, प्रतिकार लेल सक्षम बनेलकै। तहिना सगर राति दीप जरएमे समीक्षा होइए- शिल्प नीक कथ्य नीक...।

३८. दलित साहित्य- महेन्द्र नारायण राम, बिलट पासवान विहंगम आदि कैँ छोड़ि दियन्हि तँ मैथिलीमे दलित लेखक आ दलित साहित्य शून्य अछि।

३९. खेसारी / माघ / आम आ शरद ऋतु / धूमकेतु मोड़पर / यात्रीक उपन्यासमे आषाढ़क आ दोसर मासक तिथि दुइये पृष्ठक अन्तरपर / मोहन भारद्वाज। कुमार पवन

मोड़पर पृष्ठ १- एक पाँतीसँ ठाढ़ आ कतौ अरड़ा कऽ ओलड़ि गेल धानक सीस- कोसक कोस पसरल हरियर कचोर खेसारीक गद्दा (माने अंतिम स्थिति)- मुदा खेसारी तँ अगहनक बाद (धानक बाद- गद्दरि तँ आर पहिने होइए) होइत अछि।

यात्री समग्र-पृ. २२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२-..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

बलचनमाक समीक्षामे मोहन भारद्वाज लिखै छथि- क्यो यात्रीजीकेँ पुछलकन्हि जे बलचनमाक दोसर भाग लिखबा लेल..यात्री कहलखिन्ह जे बलचनमाकेँ तँ आब धोधि भऽ गेल होएतैक। यात्रीकेँ के पुछलकन्हि (काल्पनिक प्रश्नोत्तरी)- फेर जे बलचनमा पढ़ने छथि तिनका बुझल छन्हि जे बलचनमाकेँ मारि कऽ पाड़ि देल गेलै से मृत बलचनमाकेँ धोधि हेतै से यात्रीजी ओहि काल्पनिक प्रश्नकर्ताकेँ किएक कहथिन्ह।

कुमार पवनक पइठ सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथा मुदा अहूमे अन्त दुनू भाइक लड़ाइ आदि..एकर बदला दोसर लक्ष्य होएबाक चाही-जेना शोषण।

कला- एहि लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन होएबाक चाही?

साहित्यक विभिन्न विधा जेना पद्य, प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज, नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा एहिमे निरुद्देश्यता-एबसडिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक उत्थल-धक्कामे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

प्राचीन कालमे कला, साहित्य आ संगीत एक खाढ़ीसँ दोसर खाढ़ी मध्य हस्तांतरित होइत छल। पदपाठ, क्रमपाठ, जटा पाठ, शिखापाठ, घनपाठ आदि स्मृतिक वैज्ञानिक पद्धति छल। घर, वेदी आ आन कलाकृतिक बनेबाक विधिक यजुर्वेदमे वर्णन छल जे भाष्य सभमे आर विस्तृत भेल आ पुरातत्वक प्राचीनतम आधार सिद्ध भेल। संगीतक पद्धति सामवेदकेँ विशिष्ट बनेलक। ऐ तरहेँ साहित्य, कला आ संगीतकेँ बान्हबाक प्रयत्न भेल, जइसँ ई विधा दोसरो गोटे द्वारा ओही तरहेँ अनुकृत भऽ सकए। आ ऐ क्रममे कला, साहित्य आ संगीतक समीक्षा वा ओकर गुणक विश्लेषण प्रारम्भ भेल। कला, साहित्य आ संगीतक समाज लेल कोन प्रयोजन, एकर नैतिक

मानदण्ड की हुअए, ऐ दिस सेहो प्राच्य आ पाश्चात्य विचारक अपन विचार राखलन्हि। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि।

मुदा कला, संगीत आ साहित्य कखनो काल स्वान्तः सुखाय सेहो होइत अछि, एकरा पढ़ला, सुनला, देखला आ अनुभव केलासँ प्रसन्नता होइत छै, मानसिक शान्ति भेटै छै तँ कखनो काल ई उद्वेलित सेहो करैत छै। एरिस्टोटल मुदा कहै छथि जे कलाकार ज्ञानसँ युक्त होइ छथि आ विश्वकेँ बुझबामे सहयोग करै छथि।

ऋक १, ११५, २ मे उषाकालक सूर्योदयक बिम्ब सुन्दरीक पाछाँ जाइत युवकसँ भेल अछि। ऋक १, १२४, ११ मे अरुणोदयमे लाल आभा आ बिलाइत अन्हारक संग, चूल्हिमे आगि वर्णन अछि आ बिम्ब अछि- गामक तरुणी रक्त वर्णक गाएकेँ चरबाक लेल छोड़ैत छथि। अथर्ववेद ४, १५, ६ मे सामूहिक नाराक वर्णन अछि। यजुर्वेद ४०, १६ मे वर्णन अछि- सूर्यमण्डल सुवर्णपात्र अछि जे सूर्यकेँ आवृत्त कएने अछि। यजुर्वेद १७, ३८-४१ मे संग्राम लेल बाजा संग जाइत देवसेना आ यजुर्वेद १७, ४९ मे कवचक मर्मर ध्वनि वर्णित अछि। ऋगवेद १, १६४, २ आ यास्क ४, २७ मे संवत्सर, चक्रक वर्णन अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २, २, ३ मे सोमरसक उत्सक वर्णन अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २, २, ४ ओकर तटपरसात ऋषि आँखि, कान आदि अछि। अथर्ववेद १०, २, ३१ मे शरीरकेँ अयोध्या कहल गेल अछि, गीता ५, १३ मे शरीरकेँ पुर कहल गेल अछि।

शब्दोचारण आ कला निर्माणक बाद बोध्य बौस्तुक उत्पत्ति होइ छै। शब्द आ ध्वनि, रूप, रस, राग, छन्द, आ अलंकारसँ ओकर औचित्य सिद्ध होइत छै।

जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णताक कलाक जीवन दर्शन- संप्रदाय संग। भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त।

मानसिक क्रिया- मनुष्य़ सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करएबला प्राणी। विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि।

फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि।

नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि।

उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल।

मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक “डिसकसन” वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि।

अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि। जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक

इच्छा सेहो रखैत अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। आजुक कथा एहि सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि।

कम्यूनिज्मक समाप्तिक बाद लागल जे इतिहास, जे दूटा विचारधाराक संघर्ष अछि, एकटा विचारधाराक खतम भेलाक बाद समाप्त भ’ गेल। फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि।

उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण-विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावनाक रहि-रहि खतम होएब, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि, सतही चिन्तन, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ उत्तर आधुनिकता सोझाँ अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक विरोध कएलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल।

तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कए ई सिद्ध कएलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नहि लगा सकैत छी।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास।

प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि।

विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि।

अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) ।

हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, जे शुरू भेल अछि से खतम होएत भलहि ओकर आयु बेशी हो।

जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नहि पहुँचि सकब।

साहित्यक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नहि होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल।

मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट!

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जाहिमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन, एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि। आ एहि समाजक भाग होएबामे समर्थ लोक अंकीय वा डिजिटल नागरिक कहल जाइत छथि। एहि उत्तर औद्योगिक समाजमे सूचना-प्रौद्योगिकी उत्पादन, अर्थव्यवस्था आ समाजकेँ निर्धारित करैत अछि। उत्तर-आधुनिक समाज, उत्तर औद्योगिक समाज आदि संकल्पना सँ ई निकट अछि। अर्थशास्त्री फ्रिट्ज मैचलप एकर संकल्पना देने छलाह। हुनकर ज्ञान-उद्योगक धारणा शिक्षा, शोध आ विकास, मीडिआ, सूचना प्रौद्योगिकी आ सूचना सेवाक पाँचटा अंगपर आधारित छल। प्रौद्योगिकी आ सूचनाक समाजपर भेल प्रभाव एतए दर्शित होइत अछि। अंकीय वा डिजिटल विभाजन एकटा ज्ञानक विभाजन, सामाजिक विभाजन आ आर्थिक विभाजन देखबैत अछि आ बिना भेदभावक एकटा सूचना समाजक निर्माण आवश्यकता देखाबैत अछि जाहिसँ सूचना प्रौद्योगिकीपर विकासशील देशमे सार्वभौम अधिकार रहए। मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक मध्य व्यक्तिक एकान्तक अधिकार सेहो साम्मिलित अछि। विद्वान, मानवाधिकार कार्यकर्ता आ आन सभ व्यक्तिक अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, सूचनाक अधिकार, एकान्त, भेदभाव, स्त्री-समानता, प्रज्ञात्मक संपत्ति, राजनीतिक भागीदारी आ संगठनक मेलक संदर्भमे सूचना आ जनसंचार प्रौद्योगिकीक सन्दर्भमे एहि गपपर चरचा शुरू भेल अछि जे सूचना समाज मानवाधिकारकेँ बल देत आकि ओकरा हानि पहुँचाओत। ऑनलाइन पत्राचारक गोपनीयताक अधिकार, अन्तर्जालक सामग्रीक सांस्कृतिक आ भाषायी विविधता आ मीडिया शिक्षा। सूचना समाजक तकनीकी अओजार ओकर अधिकार आ स्वतंत्रतासँ लाभान्वित होइत अछि आ समाजक समग्र विकास, अधिकार आ स्वतंत्रताक सार्वभौमता, अधिकारक आपसी मतभिन्नता, स्वतंत्रता आ मूल्य निरूपणमे सहभागी होइत अछि। एहिसँ सूचना, ज्ञान आ संस्कृतिमे सरल पइठक वातावरण बनैत अछि आ ई उपयोगकर्ताकेँ वैश्विक सूचना समाजक अभिनेताक रूपमे परिणत करैत अछि। कारण ई उपयोगकर्ताकेँ पहिनेसँ बेशी अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता आ नव सामग्री आ नव सामाजिक न्तर्जाल-तंत्र निर्माण करबाक सामर्थ्य दैत अछि। एहिसँ एकटा नव विधि, आर्थिक आ सामाजिक मॉडेलक आवश्यकता सेहो अनूभूत कएल जा रहल अछि जाहि मे साझी कर्तव्य, ज्ञान आ समझ आधार बनत। बच्चाक हित एकटा आर चिन्ता अछि जे पैघक हितसँ सर्वदा ऊपर रखबाक चाही। आधुनिक समाजक आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक धनक एकत्र करबाक प्रवृत्ति सूचना समाजमे बढ़ल अछि आ प्रौद्योगिकी एकटा आधारभूत बेरोजगारी अनलक अछि। गरीबी, मजदूरक अधिकार आ कल्याणकारी राज्यक संकल्पना लाभ-हानिक आगाँ कतहु पाछाँ छूटल जा रहल अछि। आब मात्र किछुए अभिनेता चाही, प्रकाशक लोकनि सेहो मात्र किछु बेशी बिकएबला पोथीक लेखकक प्रचार करैत छथि। यैह स्थिति रंगमंच, पेंटिंग, सिनेमा आ आन-आन क्षेत्रमे सेहो दृष्टिगोचर

भऽ रहल अछि। मुदा सूचना सर्वदा लाभकारी नहि होइत अछि। ई मात्र कला, ग्रंथ धरि सीमित नहि अछि वरन सट्टा बाजार आ प्रायोजित सर्वेक्षण रपट सेहो एहिमे सम्मिलित अछि। समय आ स्थानक बीचक दूरीकेँ ई कम करैत अछि आ दुनूक बीचमे एकटा सन्तुलन बनबैत अछि। मानवक गरिमा मानवक जन्म आधारित सामाजिक स्थानसँ हटि कऽ मानवक गरिमाक अधिकारपर बल दैत अछि। मुक्ति आ स्त्री-मुक्ति आन्दोलन एहि दिशाक प्रयास अछि। दुनू विश्वयुद्ध आ फासिज्मक चुनौतीक बाद १० दिसम्बर १९४८ केँ संयुक्त राष्ट्रसंघक महासभा द्वारा मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक उद्घोषणा कएल गेल आ एकरा अंगीकार कएल गेल। ई घोषणा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक भेदभावरहित एकटा सामान्य मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि जे सभ जन-समाज आ सभ राष्ट्र लेल अछि। सूचनाक स्वतंत्र उपयोग सीमित अछि, लोकक एकान्त खतम भऽ रहल अछि। बिल गेट्ससँ जखन हुनकर भारत यात्राक क्रममे पूछल गेल छलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक एक्स-बॉक्स भारतमे पाइरेसीक डरसँ देरीसँ उतारल गेल तँ ओ कहने रहथि जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो कोनो उत्पाद पाइरेसीक डरसँ देरीसँ नहि आनलक। स्पैम आ पाइरेसीक डर खतम होएबाक चाही। सूचना समाज वैह समाज छी जकर बीचमे हम सभ रहि रहल छी। लोकतंत्र आ मानवाधिकारक सम्मान सूचना-समाज आ उत्तर सूचना-समाजमे होइत रहत। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, एकान्तक अधिकार, सूचना साझी करबाक अधिकार आ सूचना धरि पहुँचक अधिकार जे सूचनाक संचारसँ सम्बन्धित अछि, ई सभ राज्य द्वारा आ सूचना-समाजक बाजारवादी झुकावक कारण खतराक अनुभूतिसँ त्रस्त अछि।

अन्तर्जाल लोकक मीडिआ अछि आ एकटा एहन प्रणाली अछि जे लोकक बीच सम्वाद स्थापित करैत अछि। एहिसँ संचार-माध्यमक मठाधीश लोकनिक गढ़ टुटैत अछि। अन्तर्जालमे कोनो सम्पादक सामान्य रूपसँ नहि होइत छथि। एतए लोक विषयक आ सामग्रीक निर्माण कए स्वयं ओकर संचार करैत छथि। एहिसँ कतेक रास सामाजिक सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि। मुदा कतेक रास समाज-विरोधी सामग्री सेहो अबैत अछि। तँ की ओहि पर प्रतिबन्ध होएबाक चाही। मुदा जे सॉफ्टवेयरक माध्यमसँ मशीनकेँ सामग्रीपर प्रतिबन्ध लगेबाक अधिकार देब तखन ई अभिव्यक्तिक स्वतंत्रतापर पैघ आघात होएत। बौद्धिक सम्पदाक अधिकार लेखककेँ मृत्युक ६० बरख बादो प्रकाशन आ वितरणक अधिकार दैत अछि। अन्तर्जालमे सेहो पाइरेसीकेँ प्रतिबन्धित करए पड़त आ कमसँ कम लेखकक मृत्युक २० बरख बाद धरि लेखकक अधिकार ओकर सामग्रीपर रहए, से व्यवस्था करए पड़त। मुदा पेटेन्टक बेशी प्रयोग विकाशसील देशक सूचना अभिगमनमे बाधक होएत आ प्रौद्योगिकीक विकासमे सेहो बाधा पहुँचाओत। कॉपीराइटसँ सांस्कृतिक विकास मुदा होएत, जेना संगीत, फिल्म, आ चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) क विकास। डिजिटल वातावरणमे प्रतिकृतिक बिना अहाँ अन्तर्जालपर सेहो सामग्री नहि देखि सकब, से ऑफ-लाइन कॉपीराइट आ ऑनलाइन कॉपीराइट दुनू मे थोड़बेक अन्तर अछि। ऑनलाइन कॉपीराइट प्रतिकृतिकेँ सेहो प्रतिबन्धित करैत अछि। आ प्रतिकृति कएल सामग्रीकेँ दोसर वस्तुमे जोड़ब वा संशोधित करब सेहो बड्ड सरल अछि। से नाम आ चित्र बिना ओकर निर्माताक अनुमतिक नहि प्रयोग होअए, दोसराक व्यक्तिगत वार्तालाप-चैटिंग-मे हस्तक्षेप नहि होअए आ दोसराक विरुद्ध कोनो एहन बयानबाजी नहि होअए जाहिसँ कोनो व्यक्तिक विरुद्ध गलत धारणा बनए। तहिना नौकरी-प्रदाता द्वारा कोनो प्रकारक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपन कर्मचारीक नियन्त्रण लेल लगबैत अछि तँ से अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघक दिशा-निर्देशक अनुरूप होएबाक चाही। ई-पत्रमे अनपेक्षित सन्देश आ चिकित्सकीय रिपोर्टक अनपेक्षित संग्रह आ उपयोग सेहो मानवाधिकारक हनन अछि। अन्तर्जालक उपयोग मुदा सीमित अछि कारण बहुत रास सामग्री आ तंत्रांश मंगनीमे उपलब्ध नहि अछि आ महग अछि, डिजिटल विभाजन शिक्षाक स्तरकेँ आर बेशी देखार करैत अछि। शारीरिक श्रमक बदलामे मानसिक श्रमक एतए बेशी उपयोग होइत अछि, से ई आशा रहए जे स्त्री-असमानता सूचना-समाजमे घटत मुदा सर्वेक्षण देखबैत अछि जे महिलाक पइठ सूचना प्रौद्योगिकीमे कम छन्हि। इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी आ ब्रेल-इनेबल कएल/ ध्वनि-इनेबल कएल कम्प्यूटर स्क्रीन/ इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी विकलांग आ अन्ध विकलांग लेल घर पर रहि ई-वाणिज्य करबामे सहायता दैत। मुदा एहि क्षेत्रमे कएल शोध आ ओकर परिणाम महग रहबाक कारणसँ ओतेक लाभ नहि दऽ सकल अछि। बाल, वृद्ध, विकलांग, स्त्री, कामगार, प्रवासी-कामगार आ दोसर सामाजिक रूपसँ अब्बल वर्ग सूचना समाजमे सेहो अपनाकेँ अब्बल अनुभव करैत छथि।

नीक साहित्य/कला त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै वरन ओहिमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओहि आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखए पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओहिमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै- ई सभटा तथ्य लघुकथाक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ होएत।

हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइत छैक, शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए।

मेडियोक्रिटी चिन्हित करू- तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज- आधुनिकताक नामपर। युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार एहिमे नहि भेटत, आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, उद्योगीकरण, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया।

आदिवासी- सतार, गिदरमारा आदि विविधता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। प्रकृतिसँ लग, प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता। व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन।

महिला आ बाल-विकास- महिलाकेँ अधिकार, शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करब, पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन, महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए। स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला आन्दोलन। धर्मनिरपेक्ष- राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित- धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित। विकास आर्थिकसँ पहिने जे शैक्षिक हुअए तँ जनसामान्य ओहि विकासमे साझी भऽ सकैए। एहिसँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि।

विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित आ अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान- आकांक्षा, आशा सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकेँ न्याय दिअएबामे प्रयोग होएबाक चाही। नागरिक स्वतंत्रता- मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति। प्रेस- शासक आ शासितक ई कड़ी- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे भूमिका, मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकेँ प्रभावित कएनिहार। नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समएबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीय हित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका। जल थल वायु आ आकाश- भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन कए प्रदूषण, प्रकृति असंतुलन। कला- एहि लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन होएबाक चाही?

मिकेल फोकौल्ट- ज्ञान आ सत्य बनाओल जाइत अछि।

डेलीयूज आ गुटारी कहै छथि जे हम सभ इच्छा ऐ द्वारे करै छी कारण हम सभ इच्छा मशीन छी।

मिकाहिल बखतिन भाषाकेँ सामाजिक क्रियाक रूपमे लै छथि आ हुनकर कार्य उपन्यासपर अछि।

रूसक रूपवादी साहित्यकेँ मात्र भाषाक विशिष्ट प्रयोग मानै छथि।

जीन फ्रान्कोइस लियोटार्ड-सत्यक आ इतिहासक सत्यता मात्र आभासी अछि। बौड्रीलार्ड- विज्ञापन आ दूरदर्शन सत्य आ आभासीक बीच भेद मेटा देने अछि। दुनू उत्तर आधुनिकताक मुख्य विचारक छथि।

लाकानक विशेषता छन्हि जे ओ फ्रायडक पद्धतिक भाषिकी अनुप्रयोग केलन्हि अछि। ओ कहै छथि जे अचेतनताक संरचना भाषा सन छै। जखन बच्चा भाषा सीखैए तखन ओकरा एकटा चेन्ह लेल एकटा शब्द सिखाओल जाइत छै। इच्छा, त्रुटि आ आन ई तीनटा तथ्य लाकान नीक जकाँ राखै छथि। इच्छा आवश्यकता आ माँगनाइ दुनू अछि मुदा एकरा ऐ दू रूपमे विखंडित नै कएल जा सकैत अछि। आनक वर्णनमे त्रुटि आ रिक्तता अबैत अछि। विषय अर्थक क्षणिक प्रभाव अछि आ ई आन सन होएत जखन ई आभासी होएत आ त्रुटिक कारण बनत, जइसँ इच्छाक उदय होएत।

उत्तर उपनिवेशवादक तीन विचारक छथि- होमी भाभा (फोकौल्ट आ लाकानसँ लग), गायत्री स्पीवाक (फोकौल्ट आ डेरीडासँ लग) आ एडवर्ड सईद (फोकौल्टसँ लग) जे उपनिवेशवादीक पूर्वक धूर्तताक, शिथिलता आदिक धारणाक लेल कएल गेल कार्य आ सिद्धांतीकरणक व्याख्या करै छथि।

रेमण्ड विलियम्सक संस्कृतिक अध्ययन साहित्यक आर्थिक स्थितिसँ सम्बन्ध देखबैत अछि। नव इतिहासवाद इतिहासक शब्दशास्त्र आ शब्दशास्त्रक ऐतिहासिकताक तुलना करैत अछि।

इलाइन शोआल्टर महिला लेखनक मानसिक, जैविक आ भाषायी विशेषताकेँ चिन्हित करै छथि। सिमोन डी. बेवोइर नारीक नारीक प्रति प्रतिबद्धतामे वर्ग आ जातिकेँ (जकर बादक नारीवादी सिद्धांत विरोध केलक) बाधक मानै छथि। वर्जीनिया वुल्फ नारी लेखक लेल आर्थिक स्वतंत्रता आ निजताकेँ आवश्यक मानै छथि। हिनकर विचारकेँ क्रान्तिकारी नै मानल गेल। मेरी वोल्स्टोनक्राफ्ट नारी शिक्षामे क्रान्ति आ औचित्यक शिक्षाकेँ सम्मिलित करबापर जोर देलनि।

नव समीक्षा- इलिएट कवितामे भावनाक प्रधानताक विरोध कएल आ एकरा गएर वैयक्तिक बनेबाक आग्रह केलनि। समीक्षकक काज लोकक रुचिमे सुधार करब सेहो अछि। विमसैट आ वर्डस्ले कहलनि जे कविक उद्देश्य वा ऐतिहासिक अध्ययनपर समीक्षा आधारित नै रहत। ई पाठकपर पड़ल भावनात्मक प्रभावपर सेहो आधारित नै रहत कारण से सापेक्ष अछि। ओ आधारित रहत वास्तविक शब्दशास्त्रपर।

फिलिप सिडनीसँ अंग्रेजी समीक्षाक प्रारम्भ देखि सकै छी- ओ कविताकेँ सौन्दर्य, अर्थ आ मानवीय हितमे देखलन्हि।

जॉन ड्राइडन- प्राचीन साहित्यमे नैतिक प्रवचनपर आ एकर लाभहानिपर विचार केलनि।

सैमुअल जॉनसन सेक्सपिअरक नाटकमे हास्य आ दुखद तत्वपर लिखलन्हि।

रूसोक रोमांशवाद मनुक्खक नीक होएबापर शंका नै करैए (क्लासिकल समीक्षक शंका करै छथि मुदा नव-क्लैसिकल कहै छथि जे मानव स्वभावसँ दूषित अछि मुदा संस्था ओकरा नीक बना सकैए) मुदा संगे ई कहैए जे संस्था सभ दूषित अछि आ मात्र दूषित लोकक मदति करैए। रोमांशवाद कविताक व्यक्तिगत अनुभव होएबाक कहैए।

आधुनिक स्थितिवाद (साहित्यक अवस्थितिपर कोनो प्रश्न चिन्ह नै) पर संरचनावाद प्रहार केलक आ तकराबाद लेखक स्वयं लिखल टेकस्टक विश्लेषण करबाक अधिकार गमेलक।

उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्य ओइसँ आगाँक वस्तु अछि जे संरचनावाद बुझै अछि। उत्तर-संरचनावादक एकटा प्रकार अछि उत्तर आधुनिकता। उत्तर संरचनावाद कहलक जे साहित्यमे संरचना संस्कृति आ सिद्धान्त मध्य कार्य करैत अछि जत्तऽ किछु भाव आ सोच वंचित अछि जे निरन्तरताक विरोध करैए। विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकता उत्तर संरचनावादक बाद आएल। उत्तर उपनिवेशवाद उपनिवेशक नव रूपकेँ नै मानैए आ अव्यवस्थाक सिद्धांत जेना असफल उद्देश्यकेँ उचित परिणाम नै भेटबाक कारण मानैए।

संरचनावाद दमित करैबला पाश्चात्य व्यवस्था आ समाजपर चोट करैए आ ऐ सँ मार्क्सवादकेँ बल भेटलै (अलथूजर) ।

आधुनिकतावादी-स्थिवादी, नव समीक्षा, संरचनावाद आ उत्तर संरचनावादक बाद विखण्डनवाद आ उत्तर आधुनिकतावाद आएल जकरा विलम्बित पूँजीवाद कहल गेल (फ्रेडरिक जेनसन) ।

अठारहम शताब्दीमे आधुनिक माने छल जड़विहीन मुदा बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे एकर अर्थ प्रगतिवादी भऽ गेल। १९७० ई. क बाद आधुनिक शब्द एकटा सिद्धांतक रूप लऽ लेलक से उत्तर-आधुनिक शब्द पारिभाषिक भेल जकर नजरिमे लौकिक महत्वपूर्ण नै रहल। आधुनिक काल धरिक सभ जीवन आ इतिहास अमहत्वपूर्ण भेल आ खतम भेल। ई सिद्धांत भेल इतिहासोत्तर, विकासोत्तर आ कारणोत्तर। सत्य आ आपसी जुड़ावक महत्व खतम भऽ गेल।

जादुइ वास्तविकतावाद जइमे वास्तविक स्थितिमे जादुइ वस्तुजात घोसिआओल जाइत अछि। स्पेनिश उपन्यासकार गैब्रिअल गार्सिया मार्क्विसक “वन हंड्रेड ईयर्स ऑफ सोलीट्यूड” आ सलमान रुस्डीक “मिडनाइट्स चिल्ड्रेन” ऐ तरहक उपन्यास अछि। रचनाकार ऐ तरहक प्रयोग कऽ वास्तविकताकेँ नीक जकाँ बुझबाक प्रयास करै छथि।

जोसेफ कोनरेड उपन्यासकेँ इतिहास कहै छथि। जोसेफ कोनरेड पोलिश भाषी रहथि मुदा अंग्रेजीक प्रसिद्ध उपन्यासकार छथि जे धाराप्रवाह अंग्रेजी नै बजैत रहथि। रोलेंड बार्थेज कहै छथि जे उपन्यास इतिहास सेहो छी आ उपन्यास इतिहासक विरोध सेहो करैए। रोलेंड बार्थेज फ्रांसक साहित्यिक सिद्धांकार रहथि आ हिनकर लेखनीक प्रभाव संरचनावाद, मार्क्सवादी आ उत्तर संरचनावादी साहित्यिक सिद्धांतपर पड़ल।

उत्तर आधुनिक पाश्चात्य बुर्जुआ दृश्य-श्रव्य मीडियाक प्रयोक कऽ असमता, अन्याय आ वंचितक अवधारणाकेँ मात्र शब्द कहै छथि जे समता, प्राप्ति आ न्यायक लगक शब्द अछि। गरीबी जे पाश्चात्यमे समस्या नै अछि से आइ भारतमे पैघ समस्या अछि। उत्तर आधुनिकता नारीवादक आ मार्क्सवादक विरोधमे अछि आ एकर नारीवाद आ मार्क्सवाद विरोध केलक अछि। जेना ऐतिहासिक विश्लेषणक पक्षमे मार्क्सवाद अछि आ ओइसँ ओ अपन सिद्धांत फेरसँ सशक्त केलक अछि, संरचनावाद-उत्तर-संरचनावाद आ उत्तर आधुनिकतावादक परिप्रेक्ष्यमे। मार्क्सवाद लौकिक पक्षपर जोर दैत अछि मुदा तैँ ई उपयोगितावाद आ चार्वक दर्शनक लग नै अछि, कारण उपयोगितावाद आ चार्वकवाद मात्र शारीरिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टिकोण सेहो उत्तर आधुनिकतावादक यथास्थिवादक विरोध केलक अछि कारण यावत से खतम नै होएत ताधरि नारीक स्थितिमे सुधार नै आओत।

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश। दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर। संगहि वाम पएर किछु मोरने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणक अनुसार गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबैत छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइत छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइत छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करैत छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित होएबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइत छलाह, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक संगीतक सेहो प्रचलन छल।

महिला- ऋगवेदमे अपाला, घोषा, श्रद्धा, शची, सार्पराज्ञी, यमी, वैवस्वती, देव जामय, इन्द्राणी, शश्वती, रोमशा, गोधा, उर्वशी, सूर्या, अदिति, नदी, लोपामुद्रा, विश्ववारा, वाक् जुहू, सरमा आ यमी ऐ २१ टा ऋषिकाक वर्णन अछि। देवता माने प्रतिपाद्य विषय नै कि गॉड (जेना ग्रिफिथ केने छथि।) मन्त्रार्थमे महर्षि पतञ्जलिक वैज्ञानिक मन्तव्य “यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्” माने जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैत अछि सएह हमरा लेल प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे वेदे प्रमाण अछि- गलत रूपेँ भेल।

प्लेटो- प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। प्लेटोक ई विचार स्पार्टासँ एथेंसक सैन्य संगठनक न्यूनताकेँ देखैत देल विचारक रूपमे सेहो देखल जएबाक चाही। काव्य/ नाटकक ऐ रूपेँ विरोध केलन्हि जे सम्वादकेँ रटि कऽ बाजैसँ लोक एकटा कृत्रिम जीवन दिस आकर्षित होएत।

अरिस्टोटल कविताकेँ मात्र अनुकृति नै मानै छथि, ओ ऐ मे दर्शन आ सार्वभौम सत्य सेहो देखै छथि। ओ नाटकक दुखान्तकेँ आ अनुकृतिकेँ निसास छोड़ैबला कहै छथि जे आनन्द, दया आ भयक बाद अबैत अछि।

सम्वाद दू तरेहेँ भऽ सकैए- अभिभाषण वा गप द्वारा। गपमे दार्शनिक तत्व कम रहत। प्राचीन ग्रीसमे कविता भगवानक सनेस बूझल जाइत छल। एरिस्टोफिनीस नीक आ अधला ऐ दू तरहक कविता देखै छथि तँ थियोफ्रेस्टस कठोर, उत्कृष्ट आ भव्य ऐ तीन तरहेँ कविताकेँ देखै छथि। कविता आ संगीत अभिन्न अछि। मुदा यूरोपक सिम्फोनी जइमे ढेर रास वादन एके संगे विभिन्न लयमे होइत अछि, सिद्धांतमे अन्तर अनलक। यएह सभ किछु नाटकक स्टेज लेल सेहो लागू भेल।

डेरीडाक विखण्डन पद्धति ऊँच स्थान प्राप्त रचना/ लेखक केँ नीचाँ लऽ अनैत अछि आ निचुलकाकेँ ऊपर। रोलेण्ड बार्थेस लिखै छथि जे जखन कृति रचनाकारसँ पृथक भऽ जाइए आ ओकर विश्लेषण स्वतंत्र रूपेँ होमए लगै छै तखन कृति महत्वपूर्ण भऽ जाइए जकरा ओ रचनाकारक मृत होएब कहै छथि।

उत्तर-संरचनावाद संरचनावादक सम्पूर्ण आ सुगठित हेबाक अवधारणाकेँ माटि देलक। सौसरक भाषा सिद्धान्त- बाजब/ लिखब, वास्तविक समएक साहित्य वा ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्यक शब्दशास्त्र, महत्वपूर्ण कोनो कृति वा मनुक्ख अछि/ महत्ता एकटा भाव अछि, वास्तविक समएमे भाषा वा एकर ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य; मुदा एकरा सेहो डेरीडाक विखण्डन सिद्धान्त उल्टा-पल्टा करए लागल।

लिंग एकटा जैव वैज्ञानिक तथ्य अछि मुदा महिला/ पुरुषक सिद्धान्त सामाजिकताक प्रतिफल अछि। महिला सापेक्ष साहित्य कला पुरुष द्वारा निर्मित अछि आ पुरुखक नजरिसँ महिलाकेँ देखैत अछि। साहित्यक नारीवादी सिद्धान्त ऐ समस्याक तहमे जाइए। मिथिलाक सन्दर्भमे महिलाक स्थिति ओतेक खराप नै छै मुदा मैथिली साहित्यक एकभगाह प्रवृत्तिक कारण उच्च वर्गक नारीक खराप स्थिति साहित्यमे आएल। आधुनिकीकरण तथाकथित सामाजिक रूपसँ निचुलका जाति सभमे सेहो नारीक स्थितिमे अवनति अनलक अछि। दोसर एकटा आर गप अछि जे जाति आ धर्म नारीक अधिकारकेँ कैक हीसमे बाँटि देने अछि।

नारीवादी दृष्टिकोण सेहो कहैए जे सभटा सिद्धांत पुरुष द्वारा बनाओल गेल से ओ पूर्ण व्याख्या नै कऽ सकैए। सरल मानवतावाद सिद्धांतक विरुद्ध आएल मुदा ई सेहो एकटा सिद्धांत बनि गेल। सार्थक साहित्यक निर्माण एकर अन्तर्गत भेल।

पोथी समीक्षामे अत्यधिक आलोचनासँ बचबाक चाही। समीक्षककेँ अपन विद्वत्ता प्रदर्शनसँ बचबाक चाही। अत्यधिक आलोचनाक क्रममे लोक अपन विद्वता देखबऽ लगै छथि। आलोचनाक क्रममे संयम रखबाक चाही, खराप शब्दावलीक प्रयोग समीक्षकक खराप लालन-पालन देखबैत अछि। पोथीक बिना पढ़ने समीक्षा अनैतिक अछि। उदाहरणस्वरूप कर्मधारयमे धूमकेतुक विषयमे तारानन्द वियोगी लिखै छथि- मिथिलाक संस्कृतिमे युग-युगसँ प्रतिष्ठापित साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैत हिनक कथा “नमाजे शुकराना” बहुत महत्वपूर्ण थिक। (कर्मधारय, पृ. १२७) (!) कथाक शीर्ष देखि कऽ ऐ तरहक समीक्षा भेल अछि कारण ऐ कथामे हाजी सैहेबक नमाजक समएमे पिंजराक सुग्गा “सीता...राम...।” बजैए आ सुग्गाक पिंजराकेँ हाजी सैहेब ताधरि महजिदक देबालपर पटकै छथि जाधरि सूगा मरि नै जाइए। सईदा कानऽ लगैए आ कथा खतम भऽ जाइए। आ ई कथा समीक्षकक मतमे साम्प्रदायिक सौहार्दकेँ रेखांकित करैए!

समीक्षककेँ अति प्रशंसासँ सेहो बचबाक चाही। पोथीक समीक्षामे ई देखाओल जएबाक चाही जे ऐ विषयपर लिखल आन पोथीसँ ई पोथी कोन रूपेँ भिन्न अछि, कोना ई पोथी रिक्त स्थलक पूर्ति करैए, पोथीमे की-की छै आ ओइ विषयपर लिखल आन पोथीसँ एकर तुलना हेबाक चाही। पोथीक विस्तारकेँ ध्यानमे राखि समीक्षा हजारसँ दू हजार शब्दमे हेबाक चाही। समीक्षा सम्बन्धित पोथीक हेबाक चाही लेखकक नै। लेखकक दोसर रचनाक विश्लेषणसँ समीक्षाकेँ भरब नीक समीक्षा नै, जे ऐ सभ पोथीसँ समीक्षित पोथीक कोनो सोझ सम्बन्ध हो तखने ओकर प्रयोग करू। मिथिलाक विविध संस्कृति आ इतिहासकेँ देखैत –मैथिली साहित्यक एकभगाह स्थिति विशेष रूपमे- व्यक्तिगत आक्षेपक आ जिला-जबारकेँ ध्यानमे रखबाक सेहो परम्परा रहल अछि। जाति-धर्म आ क्षेत्रीय मैथिली भाषा समीक्षामे कम्मे अबैए मुदा जिला-जवारक/ दोस-महीमक-पड़ोसक आधारपर नीक वा अधलाह समीक्षाक प्रवृत्ति वा आग्रहक भयंकर प्रभाव समीक्षकक मध्य छन्हि।

कोनो खास समीक्षासँ ओइ पोथीपर प्रकाश पड़ैए वा नै से देखू। ई तँ नै अछि जे ओ समीक्षा लेखकपर टिप्पणी कऽ रहल अछि वा लेखकक आन रचनापर- गहींरमे जाएब तँ बूझि जाएब जे समीक्षा पोथी पढ़ि लिखल गेल छै आकि नै। आलंकारिक भाषाक दिल गेल, शब्दक सटीक प्रयोग करू, अनावश्यक शब्द आ पाँतीकेँ निकालू। आत्मकथात्मक पोथीक समीक्षा लेल लेखकक जिनगीपर प्रकाश दऽ सकै छी। पोथीक रूप, रंग आ आवरणक फोटोक समीक्षासँ आगाँ बढ़ू आ पोथीक समीक्षा करू। पोथीमे महिला विरोधी वा जाति-क्षेत्रक बन्हनसँ बान्हल मानसिकताकेँ दूर राखू। पोथी लेखकक नामक वा आवरणक चित्रक अनावश्यक न्यून विश्लेषणसँ अपनाकेँ दूर राखू।

उपन्यासक अंग अछि वातावरणक निर्माण जइमे लेखक कथा कहैत अछि, ओकर पात्र सभक विवरण, कथाक प्रारूप आ तकरा लेल लोकक आ परिस्थितिक वर्णन। ऐ मेसँ कोनो एक टा पक्ष लऽ कऽ अहाँ कथा लिख सकै छी। नाटकमे भावनापूर्ण सम्वाद आ क्रियाकलापक योग रहत। पद्यमे शब्दक प्रयोगसँ चित्रक निर्माण करए पड़त आ लोकक भावनाकेँ उद्वेलित करबा योग्य बनबए पड़त, ऐ लेल कविक वातावरणमे हस्तक्षेपयुक्त सलाहक औचित्य आ ध्वनि-विज्ञानक योग सेहो चाही।

कोनो कृति कोना उत्कृष्ट अछि आ ओइमे की छुटि गेल अछि से समीक्षककेँ देखबाक चाही। ओकर मूल्यांकन एकभगाह नै हेबाक चाही, ओइ रचनामे की संदेश नुकाएल छै, लेखक कोन दिस निर्देशित कऽ रहल अछि से समीक्षककेँ बुझबाक आ लिखबाक चाही। आब प्रश्न उठैए जे समीक्षाक पोथीक समीक्षा कोन हुअए। ऐ मे समीक्षककेँ ओइ पोथीक मुख्य धाराकेँ चिन्हित करबाक चाही।

जे समीक्षा/ निबन्धक पोथीमे कएक तरहक निबन्ध/ समीक्षा अछि आ मारते रास लेखकक रचना संकलित अछि तँ से सोद्देश्य अछि वा निरुद्देश्य से समीक्षककेँ देखबाक चाही।

समीक्षित पोथीक अतिरिक्त ओइ विषयपर आन पोथीक सेहो जत्तऽ धरि सम्भव हो चर्चा होएबाक चाही। अपन विचारधाराकेँ समीक्षित पोथीपर आरोपण नै होएबाक चाही। ओइ पोथीक आजुक समयक सन्दर्भमे की आवश्यकता अछि से देखाऊ। ओइ पोथीक महत्ता कोन रोपमे अछि से देखाऊ, ओकर मुख्य तत्व चिन्हित करू। लेखकक जीवन दर्शन, वास्तविक, काल्पनिक आ आदर्शक सम्बन्धमे ओकर दृष्टि, संदेहकेँ चिन्हित करू। लेखकक लेखन शैलीक कलात्मक पक्ष, ओकर गप कहबाक क्षमता, रचनाक ढाँचा आ ओकर विभिन्न भागकेँ जोड़बाक कलाक चर्चा करू, जेना नीक कमार ठोस आ कलात्मक पलंग बनबैत अछि, तँ दोसर कमारक जोर मात्र ठोस हेबापर होइ छै आ तेसरक कलात्मकतापर, तहिना।

सिद्धान्तक आवश्यकता की छै? सरल मानवतावाद कहैए जे साहित्यक सिद्धान्तक बदलामे रचनाक की मानवीय दृष्टिकोण छै, ओइमे सार्थकता छै आकि नै से सामान्य बुद्धिसँ कएल जा सकैए। अपन बुद्धिक प्रयोग कऽ रचनाक गुणवत्ता अहाँ देखि सकै छी, कोनो साहित्यिक सिद्धान्तक आवश्यकता समीक्षा लेल नै छै। मुदा सरल मानवतावाद स्वयं एकटा सिद्धांत बनि गेल।

काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण) । कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो।

कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि।

रस सिद्धान्तः

भरत: - नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी।

भट्ट लोलट: - स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि।

शौनक: - शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन।

भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार।

रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि।

बार्थेजक संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि।

ध्वनि सिद्धान्तः

आनन्दवर्धन ध्वन्यालोक साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहैत छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित होएब सम्भव नै अछि।

स्फोट सिद्धांतः

भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण होएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जेकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि।

अलंकार सिद्धान्तः

भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे।

औचित्य सिद्धान्तः

क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे।

कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे।

कथा-लघुकथा अंग्रेजीक शॉर्ट स्टोरी आ मैथिलीमे अन्तर। एतए एक पन्नासँ छोट कथा भेल लघु कथा आ ओहिसँ पैघ आ ४-५ पन्नासँ १५-२० पन्ना धरि कथा आ दीर्घ कथा। फेर ५०-६० पन्नासँ उपन्यास शुरू।

मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक आधारपर मैथिली सेवी संस्था सभ जे विद्यापति पर्व आ संस्थाक निर्माण, पुरस्कार वितरण कए रहल छथि ओहिमे गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक प्रवेश सीमित अछि मुदा एम्हर ओ बढ़ि रहल अछि। आ ई मैथिलीक लेल एकटा शुभ लक्षण अछि। साहित्यमे सेहो गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लेखक आ पाठक बढ़ल छथि। मीडिया आ शिक्षा व्यवस्था एहि आधुनिक इन्फॉरमेशन सोसाइटीमे अपन हस्तक्षेपसँ मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृति लेल एकटा प्रहार सन अछि मुदा सौभाग्य मिथिला सन टी. वी. चैनल आ नेपालक कान्तिपुर एफ. एम., जानकी एफ. एम. आ रेडियो मिथिला सन रेडियो स्टेशन एहि प्रहारकेँ सीमित रूपमे रोकलक अछि। बाल साहित्यक निर्माण सेहो बढ़ल अछि। अन्तर्जाल सेहो एकभगाह मैथिली साहित्यमे हस्तक्षेप कएलक अछि।

विवेचन: भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक “नाट्यशास्त्र” आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक “काव्यशास्त्र” । भरत नाट्यकेँ “कृतानुसार” “भावानुकार” कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि। अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होअए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु

कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि, से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आ निभा सेहो हुनका आ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आ समय-परिस्थितिपर रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिक मूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन, जे बलात्कारक बादक भेल पिटानक बाद मृत भेल छथि, सँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। मुदा दुनू भद्रपुरुष, बजारी आ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू। सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचित गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन पूर्णतया सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि। कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द - मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट बहराइत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होअए। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे-जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि। भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल-

जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबारक गपशप आ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबा लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक "नायकक नाम जीवन, एक छल राजा", श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि, सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आ वामपंथी सेहो कहैत छथि जे चोर नेता नहि बनि सकैत छथि, मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आ चित्रगुप्त धरि मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि। एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

कथा संग्रहक समीक्षा

सुभाषचन्द्र यादवजीक "बनैत बिगड़ैत" कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करितहि अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थें ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कए चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ एहि संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नहि आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नहि करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।
किछु भाषायी मानकीकरण प्रसंग- जेना ऐछ, अछि, अ इ छ। जाहि कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओहि समय एहिपर ध्यान देबाक आवश्यकता रहए। जेना "जाइत रही" केँ "जाति रही" लिखी आ फेर जाति (जा इ त) लेल प्रोनन्सिएशनक निअम बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखको कनियाँ-पुतरा मे एकर प्रयोग कए दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा एहिसँ ई आवश्यकता तँ सिद्ध होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्थिर कएल जाए आ "छै" लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ "छैक" लिखबाक अछि तँ "अन्तक' कऽ साइलेन्ट अछि" से प्रोनन्सिएशनक निअम बनए। मुदा से जल्दी बनए आ सर्वग्राह्य होअए तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोककेँ "य" लिखल जाए वा "ए" एहिपर भरि जिनगी लड़बाक समय नहि छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, आ नहि तँ प्रोनन्सिएशनक निअम बनाऊ। "नहि" लेल "नञि" लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अन्तिका), नइं (एन.बी.टी.) आ नँइ (साकेतानन्द - कालरात्रिश्च दारुणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नहि होअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ। (वैज्ञानिक आ मानक मैथिली वर्णमालाक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइवक (http: //www.videha.co.in/) विदेह ऑडियो लिंकपर डाउनलोड/श्रवण लेल उपलब्ध अछि।)

“बनैत बिगड़ैत” पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ट लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लए जएबामे सक्षम अछि।

कथाक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।
कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि “सोप ओपेरा” जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सत्तरि एपीसोडक उपन्यासमे उन्हत्तरि एपीसोड धरि तँ आशा बनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिए बदलल तँ पुरनका सभटा एपीसोड हिट आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एकर अनुमति नहि दैत अछि। ई एक एपीसोड बला रचना छी आ नीक तँ खूबे नीक आ नहि तँ खरापे-खराप।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना एहि तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे “देवी को बलि” सूर्यकान्त ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि प्रथाक विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ करैत सर्वदा कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नहि।
वाद: साहित्य: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक “डिसकसन” वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक- माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल।
से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि।
साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।
आधुनिक कथा अछि की? ई केहन होएबाक चाही? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि होएबाक चाही? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाए?
कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।
जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि।
जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि।
मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि।
आजुक कथा एहि सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय (!) समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। आ जे से नहि अछि तँ ई ओकर उद्देश्यमे सम्मिलित होएबाक चाही। आ तखने कथाक विश्लेषण आ समालोचना पाठकीय विवशता बनि सकत।
कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी

झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ एहि मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कए ई सिद्ध कएलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नहि लगा सकैत छी। मनोविश्लेषण आ द्वन्दात्मक पद्धति जेकाँ फुकियामा आ देरीदाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भए समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रह बनैत बिगड़ैत: स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि सुभाषजी। कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ एहि स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटब स्वाभाविके। कएक दशक पूर्व लिखल हिनक कथा “काठक बनल लोक” क बदरिया साइते संयोग हंसैत रहए। एहु कथा संग्रहक सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कए कोनो पात्र फेरसँ कानए लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि। किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हरिवंश सन पात्र सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण अपकार कए जाइत छथि।

ककरा लेल कथा लिखी? वा कही? कथाक वाद: जिनका विषयमे लिखब से तँ पढ़ताह नहि। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जएत? गीताक सप्पत खा कए झूठ बजनिहारक संख्या कम नहि। तँ की एहन कसौटीपर रचित कथाक महत्व कम भए जएत? सभ प्रबुद्ध नहि होएताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओहि दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध होएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जे ओ नहि, तँ ओकर ओहि परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ जा ई रहत ताधरि एहि तरहक कथा रचित कएल जाइत रहत। आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जाहिसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन होअए। आकि एहि परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। एहिमे संयोजन आवश्यक। विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नहि अछि जे रोशनाइसँ कागतपर जेना-तेना उतारि देलियैक। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि। तँ कथा आदर्शवादी होअए, प्रकृतिवादी होअए वा यथार्थवादी होअए। आकि एहिमे सँ मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमएबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी होअए? आ नहि तँ कथा प्रयोजनमूलक होअए। एहिमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि। अपनाकेँ अभिव्यक्त कएनाइ मानवीय स्वभाव अछि। मुदा ओ सामाजिक निअममे सीमित भऽ जाइत अछि। परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ जाइत अछि। तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कए गढ़ल जएत। आ व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि आओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करए पड़तन्हि। स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन। कथा तखन संप्रेषित होएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत। जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नहि छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने मुक्तिक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह। कथा क्रमबद्ध होअए आ सुग्राह्य होअए तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नहि व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कए देलक। आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे सुभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि से सुभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल। प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि

ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) । हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।
क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।
तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक "अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम" सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत? लघु, अति-लघु कथा, कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत?
जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता कैँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नहि पहुँचि सकब। ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण- मेडिओकर स्टार- अछि। ओहि मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नगर-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि।
होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।
पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नहि होइत अछि।
आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।
पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।
कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट!
पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। एहि बेरुका (२००८) कोसीक बाढ़िमे अनलकान्तजी गाममे फाँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहए मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए. सी. टिकट बुक भए गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही?
डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

एहि परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा गाथापर सेहो एकटा गहिंकी नजरि दौगाबी।
रामदेव झा जलधर झाक "विलक्षण दाम्पत्य" (मैथिल हित साधन, जयपुर, १९०६ ई.) कैँ मैथिलीक आधुनिक कथाक प्रारम्भ मानलन्हि। पुलकित मिश्रक "मोहिनी मोहन" (१९०७-०८), जनसीदनक "ताराक वैधव्य" (मिथिला मिहिर, १९१७ ई.), श्रीकृष्ण ठाकुरक चन्द्रप्रभा, तुलापति सिंहक मदनराज चरित, काली कुमार दासक अदलाक बदला आ कामिनीक जीवन, श्यामानन्द झाक

अकिञ्चन, श्री बल्लभ झाक विलासिता, हरिनन्दन ठाकुर “सरोज” क ईश्वरीय रक्षा, शारदानन्द ठाकुर “विनय” क तारा आ श्याम सुन्दर झा “मधुप” क प्रतिज्ञा-पत्र, वैद्यनाथ मिश्र “विद्यासिन्धु” क गप्प-सप्पक खरिहान आ प्रबोध नारायण सिंहक बीछल फूल आएल। हरिमोहन झाक कथा आ यात्रीक उपन्यासिका, राजकमल चौधरी, ललित, रामदेव झा, बलराम, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, राजमोहन झा, साकेतानन्द, विभूति आनन्द, सुन्दर झा “शास्त्री”, धीरेन्द्र, राजेन्द्र किशोर, रेवती रमण लाल, राजेन्द्र विमल, रामभद्र, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, प्रदीप बिहारी, रमेश, मानेश्वर मनुज, श्याम दरिहरे, कुमार पवन, अनमोल झा, मिथिलेश कुमार झा, हरिश्चन्द्र झा, उपाध्याय भूषण, रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”, भुवनेश्वर पाथेय, बदरी नारायण बर्मा, अयोध्यानाथ चौधरी, रा. ना. सुधाकर, जीतेन्द्र जीत, सुरेन्द्र लाभ, जयनारायण झा “जिज्ञासु”, श्याम सुन्दर “शशि”, रमेश रञ्जन, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, परमेश्वर कापड़ि, तारानन्द वियोगी, नागेन्द्र कुमर, अमरनाथ, देवशंकर नवीन, अनलकान्त, श्रीधरम, नीता झा, विभा रानी, उषाकिरण खान, सुस्मिता पाठक, शेफालिका वर्मा, ज्योत्सना चन्द्रम, लालपरी देवी एहि यात्राकेँ आगाँ बढ़ेलन्हि।

मैथिलीमे नीक कथा नहि, नीक नाटक नहि? मैथिलीमे व्याकरण नहि? पनिसोह आ पनिगर एहि तरहक विश्लेषण कतए अछि मैथिली व्याकरण मे, वैह अनल, पावक सभ अछि! मुदा दीनबन्धु झाक धातु रूप पोथीमे जे १०२५ टा एहि तरहक खाँटी रूप अछि, रमानथ झाक मिथिलाभाषाप्रकाशमे जे खाँटी मैथिली व्याकरण अछि, ई दुनू रिसोर्स बुक लए मानकीकरण आ व्याकरणक निर्माण सर्वथा संभव अछि। मुदा भऽ रहल अछि ई जे पानीपतक पहिल युद्धक विश्लेषणमे ई लिखी जे पानीपत आ बाबरक बीचमे युद्ध भेल। रामभद्रकें धीरेन्द्र सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथाकारक रूपमे वर्णित कएने छथि, मुदा एखन धरि हुनकर कएक टा कथाक विश्लेषण कएल गेल अछि? नचिकेताक नाटक आ मैथिलीक सेक्सपिअर महेन्द्र मलंगियाक काजक आ रामभद्र आ सुभाष चन्द्र यादवक कथा यात्राक सन्दर्भमे ई गप कहब आवश्यक छल।

जाहि समय मैथिलीक समस्या घर-घरसँ मैथिलीक निष्कासन अछि, जखन हिन्दीमे एक हाथ अजमेलाक बाद नाम नहि भेला उत्तर लोक मैथिलीक कथा-कविता लिखि आ सम्पादक-आलोचक भए, अपन महत्वाकांक्षाक भारसँ मैथिली कथा-कविताक वातावरणकेँ भरिया रहल छथि, मार्क्सवाद, फेमिनिज्म आ धर्मनिरपेक्षता घोसिया-घोसिया कए कथा-कवितामे भरल जा रहल अछि, तखन स्तरक निर्धारण सएह कऽ रहल अछि, स्तरहीनताक बेढ़ वाद बनल अछि। जे गरीब आ निम्न जातीयक शोषण आ ओकरा हतोत्साहित करबामे लागल छथि से मार्क्सवादक शरणमे, जे महिलाकेँ अपमानित केलन्हि से फेमिनिज्म आ मिथिला राज्य आ संघक शरणमे आ जे साम्प्रदायिक छथि ओ धर्मनिरपेक्षताक शरणमे जाइत छथि। ओना साम्प्रदायिक लोक फेमिनिस्ट, महिला विरोधी मार्क्सिस्ट आ एहि तरहक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छथि। क्यो राजकमलक बड़ाइमे लागल अछि, तँ क्यो यात्रीक आ धूमकेतुक तँ क्यो सुमनजीक, आ हुनका लोकनिक तँ की पक्ष राखत तकर आरिमे अपनाकेँ आगाँ राखि रहल अछि। यात्रीक पारोकेँ आ राजकमल आ धूमकेतुक कथाकेँ आइयो स्वीकार नहि कएल गेल अछि- एहि तरहक अनर्गल प्रलाप! क्यो तथाकथित विवादास्पद कथाक सम्पादन कए स्वयं विवाद उत्पन्न कए अपनाकेँ आगाँ राखि रहल छथि। मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनक बीच सीमित प्रतियोगिता जाहि कवि-कथाकारकेँ विचलित कए रहल छन्हि आ हिन्दी छोड़ि मैथिलीमे अएबाक बाद जाहि गतिसँ ओ ई सभ करतब कए रहल छथि, तिनका मैथिलीक मुख्य समस्यापर ध्यान कहिया जएतन्हि से नहि जानि? लोक ईहो बुझैत छथि जे हिन्दीक बाद जे मैथिलीमे लिखब, तँ स्वीकृति त्वरित गतिएँ भेटत? जे मैथिलीक रचनाकारेँकेँ एहि तरहक भ्रम छन्हि आ आत्मविश्वासक अभाव छन्हि, अपन मातृभाषाक संप्रेषणीयतापर अविश्वास (!), तखन एहि भाषाक भविष्य हिनका लोकनिक कान्हपर दए कोन छद्म हम सभ संजोगि रहल छी? सेमीनारमे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त एहन जुझारू कथाकार, सम्पादक आ समालोचक सभकेँ अपन पुत्र-पुत्री-पत्नीक संग मैथिलीमे नहि वरन् हिन्दी मे (अंग्रेजी प्रायः सामर्थ्यसँ बाहर छन्हि तेँ) गप करैत देखि हतप्रभ रहि जाइत छी। मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल होएत? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोट-गोट रचना पढ़ि कए हम कहि सकैत छी। ताहि स्थिति मे- ई विवाद रहए एहि कवितामे आ एहि कथामे- एहि तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दए अपन लेखनी चमकाएब? आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार फलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिलना-आब तँ कथाकार आ कविक जोड़ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भक्तिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल। मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा एहि सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि, घरमे मैथिलीकेँ निष्कासित कए सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतए पाठक आ कोन विवाद! जे समस्या हम देखि रहल छी जे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ जातिक लोक एहि भाषासँ प्रेम करथि ताहि लेल कथा आ कविता कतए आगाँ अछि? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कैरियरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि। आ ओ घर-घरमे पहुँचए ताहि लेल कोन प्रयास भए रहल अछि? सए-दू सए कॉपी पोथी छपबा कए, तकर समीक्षा करबा कए, सए-दू सए कॉपी छपएबला पत्रिकामे छपबा कए, तकर फोटोस्टेट कॉपी

फोल्डर बना कऽ घरमे राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कएल गेल तिकड़मक वातावरणमे हमर आस गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर जाए स्थिर भए गेल अछि।

जे अपन घर-परिवार नहि सम्हारि सकलाह से ढेरी-ढाकी भाषायी पुरस्कार लए बैसल छथि, मिथिला राज्य बनएबामे लागल छथि, पता नहि राज्य कोना सम्हारि सकताह आ ओकर विधान सभामे कोन भाषामे बजताह, जखन हुनका ओतए पुरस्कृत कएल जएतन्हि। जे घरमे मैथिली नहि बजैत छथि से लेखक आ कवि बनल छथि (हिन्दी-मैथिलीमे समान अधिकारसँ) हिन्दीमे सोचि लिखैत छथि आ तखन अनुवाद कए मौलिक मैथिली लिखैत छथि! मैथिली कथा-कविता करैत छथि!! मराठी, उर्दू, तमिल, कन्नड़सँ मैथिली अनुवाद पुरस्कार निर्लज्जतासँ लैत छथि, वणक्कम केर अर्थ पुछबन्हि से नहि अबैत छन्हि, अलिफ-बे-से केर ज्ञान नहि, मराठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्य नहि छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ एहि द्वारे बचि जाइत छन्हि कारण अपने छपबा कए समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नहि। पाठक नहि रहएमे हुनका लोकनिकेँ फाएदा छन्हि। आ एहि पुरस्कार सभमे जूरी आ एडवाइजरी बोर्ड अपनाकेँ आगाँ करबामे जखन स्वयं आगाँ अबैत छथि तखन एहि सीमित प्रतियोगी लोकनिक आत्मविश्वास कतेक दुर्बल छन्हि, सएह सोझाँ अबैत अछि। सारंग कुमार छथि, तँ बलरामक चरचा फेरसँ कथाकारक रूपमे शुरू भेल अछि। आ जिनकर सन्तान साहित्यमे नहि अएलाह हुनकर चरचा फेर कोना होएत, हुनकर पक्ष के आगाँ राखत? जीबैत धरि ने सभ अपन पक्ष स्वयं आगाँ राखि रहल छथि? मुदा मुइलाक बाद? मैथिली साहित्यक एहि सत्यकेँ देखार करबाक आवश्यकता अछि। आँखि मुनि कए सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये रहल छथि।

मार्क्सिस्ट आ फेमिनिस्ट बनि तकरो व्यापार शुरू करब आ अपन स्तरक न्यूनताक एहि तरहेँ पूर्ति करब, सीमित प्रतियोगिता मध्य अल्प प्रतिभायुक्त साहित्यकारक ई हथियार बनि गेल अछि। जे मार्क्सक आदर करत से ई किएक कहत जे हम मार्क्सवादी आलोचक आकि लेखक छी? हँ जे मार्क्सक धंधा करत तकर विषयमे की कही, धंधा तँ सुमन, राजकमल, यात्री, मणिपद्म, धूमकेतु...सभक शुरू भेल अछि। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वैह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नहि भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यैह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा एहि वास्तविकताक संग आगाँक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेवी कथाकार आ पाठक जे धूरा-गरदामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य रचथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित रखबा मात्रमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार होएबे टा करत।

कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइत छैक। आ एहने साहित्य बेर-बेर अपनाकेँ परिमार्जित-परिवर्धित करितो मूल दोषसँ दूर नहि भऽ पबैत अछि, अपन व्यक्तिगत प्रशंसा आ दोसराक प्रति आक्षेपक कथा-कवितामे ब्लैकमेलर साहित्यकार द्वारा प्रयोग करबाक गुंजाइश रहैत अछि। मुदा तथ्यपूर्ण मूल्यांकनसँ लेखकक एहि प्रवृत्तिकेँ प्रेमशंकर सिंह चिन्हित करैत छथि। जातिवाद-सांप्रदायिकतावाद आबिये जाइत छैक, तकरा चिन्हित करैत छथि, हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? ओ ई सेहो चिन्हित करैत छथि। मैथिली साहित्य, जतए पाठकक संख्या शून्य छैक, एक साहित्यकार दोसराक समीक्षा करैत अछि आ एतए व्यक्तिगत अहम् आ ब्लैकमेलिंगक पूर्ण गुंजाइश छैक। अहाँ दू-चारिटा कवि-कथाकार सम्मेलनमे चलि जाऊ, उद्घोषकक उद्घोषणा आ थोपड़ी उद्घोषकक आ साहित्यकारक पूर्वाग्रहकेँ चिन्हित कऽ देत। एहि सन्दर्भमे ई संग्रह एकटा नूतन दृष्टिकोण उपस्थित करैत अछि, बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन करैत अछि आ गपाष्टक आ समीक्षाक अंतरकेँ चिन्हित करैत अछि।

जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नहि भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तँ ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्रक गण द्वारा एलेक्जेन्डरकेँ कड़गर विरोध सहए पड़लैक। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक जखन सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सँ भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजपुर किला, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकेँ मथए बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताराक मूर्ति आदि शिल्पी कलाक अन्य रूपक चर्चक रूपमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा जे ई कट्टरता बढ़ैत गेल तँ आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भऽ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भऽ गेल जे एक साँझ उपास रहए लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्राब्दी भरि विलुप्त रहलीह से जातिगत कट्टरता (जाति

मध्य आन्तरिक अतरीकरण आ दू जाति मध्य- दुनु प्रकारक) कारणसँ। शिक्षाक ह्रास तँ तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन मिथिलासँ निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नहि केनिहारसँ भरल अछि।

सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि। आ एहि माइग्रेसनसँ एतए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भऽ गेल अछि।

गद्यक विभिन्न विधा जेना प्रबन्ध, निबन्ध, समालोचना, कथा-गल्प, उपन्यास, पत्रात्मक साहित्य, यात्रा-संस्मरण, रिपोर्ताज आदिक मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास अनुभव मिश्रित कल्पनापर विशेष रूपसँ आधारित अछि। जकरा हम सभ खिस्सा-पिहानी कहै छिऐ ताहिसँ ई सभ लग अछि। मध्य कथा-गल्प, आख्यान आ उपन्यास आ किछु दूर धरि नाटक आ एकांकी मनोरंजनक लेल सुनल-सुनाओल-पढ़ल जाइत अछि वा मंचित कएल जाइत अछि। ई उद्देश्यपूर्ण भऽ सकैत अछि वा एहिमे निरुद्देश्यता-एबसडिटी सेहो रहि सकै छै- कारण जिनगीक भागदौड़मे निरुद्देश्यपूर्ण साहित्य सेहो मनोरंजन प्रदान करैत अछि।

लघुकथा कहने एकटा एहेन विधा बनि सोझाँ आएल अछि जे पहिने कथा थिक फेर लघुकथा। लघुकथा, कथा, दीर्घ कथा, उपन्यास, नाटक आ एकांकी एकटा अनुभव मिश्रित कल्पनापर आधारित अछि। अंग्रेजीमे सेहो लम्बाइक आधारपर शॉर्ट-स्टोरी/ नोवेलेट/ नोवेला/ नोवेल क विभाजन कएल जाइत अछि जे क्रमसँ लघुकथा, कथा, दीर्घ कथा आ उपन्यास लेल प्रयुक्त कएल जा सकैत अछि। मैथिलीमे सभ विधामे शब्द संख्याक घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषासँ बेशी होइत अछि, ओना अंग्रेजी वा दोसर यूरोपियन भाषामे सेहो सभ विधामे लेखकक व्यक्तिगत रुचि आ कथ्यक आवश्यकताक अनुसार घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी होइते अछि। तहिना वन-एक्ट प्ले भेल एकांकी आ प्ले भेल नाटक।

से लघुकथा कथा तँ छीहे।

अहाँक अनुभवमिश्रित कल्पना अहाँसँ किछु कहबा लेल कहैत अछि। आ ई कथ्य हास्य-कणिका वा अहास्य-कणिका बनि सकैत अछि। लोक अहाँकेँ कहि सकै छथि जे अहाँकेँ गप्प बड्ड फुराइए, अहाँ हाजिर जवाब छी। आ तकर बाद अहाँक हिम्मत बढ़ैत अछि आ अहाँ ओहि कथ्यकेँ शिल्पक साँचामे ढलैय्या कऽ लघुकथा बना दै छी।

हास्य-कणिकाक संग सभसँ मुख्य अवरोध छै जे अहाँक सुनाओल हास्य-कणिका घूमि-फिरि अहीं लग आबि जाएत, माने मौलिकता कतौ हेरा जाएत। हास्य-कणिका सेहो एक-दू पाँतीसँ आध-एक पृष्ठ धरिक होइत अछि। कथा-उपन्यासमे एकर समावेश कएल जा सकैत अछि मुदा लघुकथा एकर पलखति नै दैत अछि। मुदा कथा-उपन्यासमे जेना कएल जाइत अछि जे एकरा कोनो पात्रक मुँहसँ कहाबी वा कोनो आन प्रसंगसँ जोड़ि सार्थक बनाबी तँ से अहाँ लघुकथामे सेहो कऽ सकै छी। गल्प आख्यानसँ होइत अछि आ नैतिक शिक्षा, प्रेरक कथा आ मिस्टिक टेल्स सेहो लघुसँ दीर्घ रूप धरि होइत अछि। एकर लघु रूप लघुकथा नै भेल सेहो नै।

लघुकथामे जे त्वरित विचारक उपस्थापन देखल जाइत अछि से कथा-गल्प आ उपन्यासमे सेहो रहैत अछि। मुदा जे त्वरित विचारक उपस्थापन नै रहलासँ ओ लघुकथा नै रहत सेहो गप नै। उनटे जखन लघुकथाक समीक्षा करए लागब तखन समीक्षकक ध्यान स्थायी तत्व दिस होएबाक चाही नै कि त्वरित उपस्थापन दिस। त्वरित विचारक उपस्थापनक प्रति बेसी झुकाव ओकरा अहास्य-कणिका बना दैत अछि, ओ लघुकथा तँ रहत मुदा श्रेष्ठ लघुकथा नै रहत। लघुकथा झमारि देत तँ ओ लघुकथा वा श्रेष्ठ लघुकथा भेल आ जे ओ झमारि नै सकत तँ ओ लघुकथा भेबे नै कएल- ई गप नै छै। कोनो त्वरित विचार आएल, ओकरा कागचपर लिखि लेलहुँ, एहि डरसँ जे कतौ बिसरा ने जाए- एतऽ धरि तँ ठीक अछि। मुदा हरबड़ा कऽ एकरा लघुकथा बना देबासँ पहिने विचारकेँ सीझऽ दिऔ। ओहिमे की मिज्झर करब तँ ओहिमे स्थायी तत्व आबि सकत ताहिपर मनन करू। ओना बिना सिझने जे झमारैबला लघुकथा लिखि देलहुँ तँ ओ लघुकथा तँ भेल मुदा श्रेष्ठ लघुकथा ओ सेहो भऽ सकत तकर सम्भावना कम। ई ओहिना अछि जेना कोनो झमकौआ गीत अपन प्रभाव बेसी दिन रखबे करत से निश्चित नै अछि तहिना कथाक ई स्वरूप ट्वेंटी-ट्वेंटी सन नै भऽ जाए ताहिपर विचार करए पड़त।

उपन्यास तँ एक उखड़ाहामे नै पढ़ल जा सकैए मुदा कथा एक उखड़ाहामे पढ़ल जा सकैत अछि। एक उखड़ाहामे अहाँ कएकटा लघुकथा पढ़ि सकै छी। उपन्यासमे लेखक वातावरणक, प्लॉटक, व्यक्तिक जाहि विशदतासँ वर्णन कऽ सकैए से कथामे सम्भव नै। ओ एकटा पक्षपर/ जौँ कही तँ एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए आ एहि क्रममे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच मात्र खेंचि पबैए। लघुकथामे वातावरण आ व्यक्तिक जीवनक एकटा मोटामोटी विवरणात्मक स्केच सेहो नै खेंचि

सकै छी, से पलखति लघुकथा अहाँकेँ नै देत, हँ तखन लघुकथा सेहो एकटा पक्षपर वा एकटा घटनापर केन्द्रित रहैए। आ ई पक्ष वा घटना तेहन रहत जे लेखककेँ ललचबइत रहत जे एकरा स्वतंत्र रूपसँ लिखू, एकरा कथा वा उपन्यासक भाग बना कऽ एकर स्वतंत्रता नष्ट नै करू।

तखन उपन्यासक प्लॉटसँ कथाक प्लॉट सरल होएत आ लघुकथाक लेल तँ एकर आवश्यकते नै अछि, पक्ष वा घटनाक वर्णन शिल्पक साँचामे ढलैय्या केलहुँ आ पूर्ण लघुकथा बनि कऽ तैयार।

लघुकथाक समीक्षाशास्त्र

लघुकथाक समीक्षा कोना करी? दू-पाँतीसँ डेढ़-दू पन्ना धरिक (पाँच पन्ना धरि सेहो) अनुभवमिश्रित काल्पनिक खिस्सा लघुकथा कहएबाक अधिकारी अछि। लघु आकारक कथामे कोनो कथा पूर्ण रूपसँ कहल गेल तँ फेर ओ लघुकथा नै कहाओत। हँ जे ओहिमे एकटा घटनाक शृंखलाक वर्णन एकटा कथ्य कहक लेल आवश्यक अछि तँ शृंखला पूर्ण होएबाक चाही। एहि शृंखलाक कड़ी कनेक नमगर भऽ सकैए। त्वरित उपस्थापनाक हरबड़ी एहि शृंखलाकेँ कमजोर कऽ सकैए। सदिखन उल्टा धार बहाबी आ त्वरित उपस्थापना आनी- ई पद्धति किछु गणमान्य लघुकथा लेखकक फार्मूला बनि गेल अछि। एकाध-दूटा लघुकथामे ई सिनेमाक “आइटम गीत” सन सोहनगर लगैत अछि मुदा फेर समीक्षकक दृष्टि एकरा पकड़ि लैत अछि, कारण ई प्रो-एक्टिव होएबाक साती रिएक्टिव बनि जाइत अछि। स्थायी प्रभाव एहिसँ नै आबि पबै छै, लघुकथा लेखकक प्रतिभाक कमी एहिमे प्रतीत होइ छै। लघुकथा वएह श्रेष्ठ होएत जे एकटा घटनाक शृंखलाक निर्माण करत आ अपन निर्णय सुनेबाक लेल पाठककेँ छोड़ि देत। फरिछेबाक पलखति लघुकथाकेँ नै छै, मुदा तकर माने ई नै जे दू-चारि पाँतीमे बात कएल जाए। मुदा लेखक जौँ दू-चारि पाँतीक गपकेँ लघुकथा कहै छथि तँ समीक्षक ओकरा लघुकथा मानबा लेल बाध्य छथि मुदा ओ श्रेष्ठ लघुकथा होएत तकर सम्भावना घटि जाइत अछि।

लघुकथाक वर्ण्य विषय मात्र चलैत-फिरैत घटना नै अछि। लघुकथा-लेखककेँ बच्चाक लेल, नैतिक शिक्षाक लेल आ धार्मिक विषयपर सेहो लघुकथा लिखबाक चाही। ट्रेनमे बसमे जाइ छी, घरमे दलानपर घूरतर गप करै छी आ तकर अनुभव मात्र लघुकथामे आबि रहल अछि। सामाजिक आ आर्थिक समस्या सेहो एकर स्थायी वर्ण्य विषय भऽ सकैत अछि। राजनैतिक प्रश्न आ प्राकृतिक आपदाकेँ वर्ण्य विषय बनाओल जा सकैत अछि। लघुकथा समीक्षक समीक्षा करबा काल पौराणिक रूपमे शिव पुराणमे सभसँ पैघ शिव आ गरुड़ पुराणमे सभसँ पैघ गरुड़ एहि तरहक समीक्षा नै करथि। माने ई नै होमए लागए जे, जे अछि से लघुकथा। जेना उपन्यासमे लेखककेँ अपन पूर्ण प्रतिभा देखेबाक लेल पलखतिक अभाव नै रहै छै से कथामे नै रहै छै आ लघुकथामे तँ से आरो कम रहै छै। मुदा विषयक विस्तार कऽ पाठकक माँगकेँ पूर्ण कएल जा सकैत अछि। कथोपकथनक गुंजाइश कम राखि वा कोनो उपस्थापनासँ पहिने राखि लघुकथा आ कथाकेँ सशक्त बनाओल जा सकैत अछि, अन्यथा ओ एकांकी वा नाटक बनि जाएत। लघुकथाक समावेश कथा-उपन्यासमे भऽ सकैए मुदा लघुकथामे हास्य-कणिकाक समावेश नै हुअए तखने ओ समीक्षाक दृष्टिसँ होएत, कारण एक तँ कम जगह, ताहिमे जे कथोपकथन आ हास्य कणिका घोसियेलहुँ तखन ओकर प्रभाव दीर्घजीवी नै होएत।

नीक लघुकथा त्वरित उपस्थापनक आधारपर नै वरन ओहिमे तीक्ष्णतासँ उपस्थापित मानव-मूल्य, सामाजिक समरसताक तत्व आ समानता-न्याय आधारित सामाजिक मान्यताक सिद्धान्त आधार बनत। समाज ओहि आधारपर कोना आगू बढ़ए से संदेश तीक्ष्णतासँ आबैए वा नै से देखए पड़त। पाठकक मनसि बन्धनसँ मुक्त होइत अछि वा नै, ओहिमे दोसराक नेतृत्व करबाक क्षमता आ आत्मबल अबै छै वा नै, ओकर चारित्रिक निर्माणक आ श्रमक प्रति सम्मानक प्रति सन्देह दूर होइ छै वा नै- ई सभटा तथ्य लघुकथाक मानदंड बनत। कात-करोटमे रहनिहार तेहन काज कऽ जाथि जे सुविधासम्पन्न बुते नै सम्भव अछि, आ से कात-करोटमे रहनिहारक आत्मबल बढ़लेसँ होएत। हीन भावनासँ ग्रस्त साहित्य कल्याणकारी कोना भऽ सकत? बदलैत सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक-धार्मिक समीकरणक परिप्रेक्ष्यमे एकभग्गू प्रस्तुतिक रेखांकन, कथाकार-कविक व्यक्तिगत जिनगीक अदृढ़ता, चाहे ओ वादक प्रति होअए वा जाति-धर्मक प्रति, साहित्यमे देखार भइए जाइत छैक, शोषक द्वारा शोषितपर कएल उपकार वा अपराधबोधक अन्तर्गत लिखल जाएबला कथामे जे पैघत्वक (जे हीन भावनाक एकटा रूप अछि) भावना होइ छै, तकरा चिन्हित कएल जाए। मेडियोक्रिटी चिन्हित करू- तकिया कलाम आ चालू ब्रेकिंग न्यूज- आधुनिकताक नामपर। युगक प्रमेयकेँ माटि देबाक विचार एहिमे नहि भेटत, आधुनिकीकरण, लोकतंत्रीकरण, राष्ट्र-राज्य संकल्पक कार्यान्वयन, प्रशासनिक-वैधानिक विकास, जन सहभागितामे वृद्धि, स्थायित्व आ क्रमबद्ध परिवर्तनक क्षमता, सत्ताक गतिशीलता, उद्योगीकरण, स्वतंत्रता प्राप्तिक बाद नवीन राज्य राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया, कखनो काल परस्पर विरोधी। सामुदायिकताक विकास, मनोवैज्ञानिक आ शैक्षिक प्रक्रिया। आदिवासी- सतार, गिदरमारा आदि विविधता आ विकासक स्तरकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि। प्रकृतिसँ लग,

प्रकृति-पूजा, सरलता, निश्छलता, कृतज्ञता। व्यक्तिक प्रतिष्ठा स्थान-जाति आधारित। किछु प्रतिष्ठा आ विशेषाधिकार प्राप्त जाति। किछुकेँ तिरस्कार आ हुनकर जीवन कठिन। महिला आ बाल-विकास- महिलाकेँ अधिकार, शिक्षा-प्रणालीकेँ सक्रिय करब, पाठ्यक्रममे महिला अध्ययन, महिलाक व्यावसायिक आ तकनीकी शिक्षामे प्रतिशत बढ़ाओल जाए। स्त्री-स्वातंत्र्यवाद, महिला आन्दोलन। धर्मनिरपेक्ष- राजनैतिक संस्था संपूर्ण समुदायक आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित- धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित। विकास आर्थिकसँ पहिने जे शैक्षिक हुअए तँ जनसामान्य ओहि विकासमे साझी भऽ सकैए। एहिसँ सर्जन क्षमता बढ़ैत अछि आ लोकमे उत्तरदायित्वक बोध होइत अछि। विज्ञान आ प्रौद्योगिकी विकसित आ अविकसित राष्ट्रक बीचक अंतरक कारण मानवीय समस्या, बीमारी, अज्ञानता, असुरक्षाक समाधान- आकांक्षा, आशा सुविधाक असीमित विस्तार आ आधार। विधि-व्यवस्थाक निर्धन आ पिछड़ल वर्गकेँ न्याय दिअएबामे प्रयोग होएबाक चाही। नागरिक स्वतंत्रता- मानवक लोकतांत्रिक अधिकार, मानवक स्वतंत्र चिन्तन क्षमतापूर्ण समाजक सृष्टि, प्रतिबन्ध आ दबाबसँ मुक्ति। प्रेस- शासक आ शासितक ई कड़ी- सामाजिक-आर्थिक-राजनैतिक जीवनमे भूमिका, मुदा आब प्रभावशाली विज्ञापन एजेंसी जनमतकेँ प्रभावित कएनिहार। नव संस्थाक निर्माण वा वर्तमानमे सुधार, सामन्तवादी, जनजातीय, जातीय आ पंथगत निष्ठाक विरुद्ध, लोकतंत्र, उदारवाद, गणतंत्रवाद, संविधानवाद, समाजवाद, समतावाद, सांवैधानिक अधिकारक अस्तित्व, समएबद्ध जनप्रिय चुनाव, जन-संप्रभुता, संघीय शक्ति विभाजन, जनमतक महत्व, लोक-प्रशासनिक प्रक्रिया-अभिक्रम, दलीय हित-समूहीकरण, सर्वोच्च व्यवस्थापिका, उत्तरदायी कार्यपालिका आ स्वतंत्र न्यायपालिका। जल थल वायु आ आकाश-भौतिक रासायनिक जैविक गुणमे हानिकारक परिवर्तन कए प्रदूषण, प्रकृति असंतुलन। कला- एहि लेल कोनो सैद्धांतिक प्रयोजन होएबाक चाही? जगतक सौन्दर्यीकृत प्रस्तुति अछि कला। सौंदर्यक कला उपयोगिताक संग। कलापूर्णताक कलाक जीवन दर्शन-संप्रदाय संग। भावनात्मक वातावरण- सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, सुन्दर-मूर्त, अमूर्त। मानसिक क्रिया- मनुष्य सोचैबला प्राणी, मानसिक आ भौतिक दुनूक अनुभूति करएबला प्राणी। विरोधाभास वा छद्म आभास- अस्पष्टता। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक "डिसकसन" वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक-माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल। से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि। साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत। कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि। जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि। मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक "मसनवी" फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि। आजुक कथा एहि सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। उत्तर आधुनिकतावादी दृष्टिकोण-विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका, सत्य-असत्य, सभक अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन, आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावनाक रहि-रहि खतम होएब, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि, सतही चिन्तन, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि, जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण, कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर

बेशी विश्वास, गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास, भूमंडलीकरणक कारणसँ मुख्यधारसँ अलग भेल कतेक समुदायक आ नारीक प्रश्नकेँ उत्तर आधुनिकता सोझाँ अनलक। विचारधारा आ सार्वभौमिक लक्ष्यक विरोध कएलक मुदा कोनो उत्तर नै दऽ सकल। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कए ई सिद्ध कएलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नहि लगा सकैत छी। आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल। प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रुपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) । हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग। क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि। तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक "अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम" सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि। जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता केँ कृत्रिम रूपेँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नहि पहुँचि सकब। लघुकथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि। होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत। पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नहि होइत अछि। आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल। पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म। कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट! पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन केँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

लघुकथा एक पक्ष वा घटनाक वर्णन अछि आ ई आवश्यक नै जे ओकरा एक्के पृष्ठमे लिखल जाए। अहाँ ओहि घटनाकेँ ३-४ पृष्ठमे सेहो लिखि सकै छी आ ओ लघुकथा रहबे करत। जेम्स जॉयसक "डब्लाइनर" लघु-कथा संग्रहक सभ कथा एकटा घटनासँ अनचोके कोनो वस्तुक त्वरित ज्ञान दर्शबैत अछि। १५ टा शॉर्ट-स्टोरीक संग्रह जेम्स जॉयसक "डब्लाइनर" २०० पृष्ठक अछि आ मैथिली लघुकथाक सभ विशेषतासँ युक्त अछि। तहिना खलील-जिब्रान आ एंटन चेखवक ढेर रास शॉर्ट-स्टोरी नमगर रहितो लघुकथा अछि। अंग्रेजीमे वा यूरोपियन साहित्यमे शॉर्ट-स्टोरी आ स्टोरीक प्रयोग कखनो पर्यायवाचीक रूपमे होइत अछि। नॉवेल जकरा बांग्ला आ मैथिलीमे उपन्यास आ मराठीमे कादम्बरी कहै छिऐ-क विस्तार बेशी होइ छै। मैथिलीमे ५०-६० पृष्ठसँ उपन्यास शुरू भऽ जाइत छै जे

अंग्रेजीक शॉर्ट-स्टोरी / नोवेलेट/ नोवेला/ एहि सभक ऊपरी सीमाक्षेत्रमे अबैत अछि। मुदा मैथिलीक स्थिति अंग्रेजीसँ फराक छै। एहिमे बालकथा कैक राति धरि चलैत अछि तँ पैघ लोकक कथा मिनटमे सेहो खतम भऽ जाइत अछि। मैथिलीक सन्दर्भमे ई तथ्य आब सोझाँ आबि गेल अछि जे लघुकथाक सीमा एक पृष्ठ, कथाक तीन-चारि पृष्ठ, दीर्घकथाक १५-२० पृष्ठ आ उपन्यासक ६०-५०० पृष्ठ अछि। एहिमे लघुकथाक पृष्ठ सीमा १-४ पृष्ठ धरि करबाक बेगरता हम बुझै छी।

शारदानगर

दुर्गा पूजाक नाटकक दू दृश्यक बीच नर्तकीक नाच।

“शारदानगरक ढोढ़ाँइ दस टाका तहे-तहे दिलसँ दै छथि”- नर्तकी रुखसाना बजै छथि।

“बनारसक छै रौ।”

“धुर, मुजफ्फरपुरसँ लऽ अनै छै आ झुट्ठो बनारसक..” ।

“हौ मुदा ई शारदानगर कोन गाम छै” ।

“बुझलही नहि। पट्टी टोलक जे पाइबला सभ रहै, से सड़कक ओहिपार टोल बना लेलकै आ लक्ष्मीपुर नाम राखि लेलकै- जे पट्टी टोलक हम सभ नहि छी। लक्ष्मी आ सरस्वतीक झगड़ा बुझल नहि छौह। से भगवानक झगड़ाकेँ सोझाँ अनने अछि। पट्टी टोल गाम गरिबहा सभक अछि, सभटा अछि महिसबार सभ। मुदा भगवानक झगड़ामे गामक नाम सरस्वतीक नामपर शारदानगर राखि लै गेल अछि।”

“चल नर्तकीकेँ तँ अही बहन्ने पाइ दै जाइ छै” ।

१४. मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच

सारांश

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल। मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ अंकिया नाटसँ प्रारम्भ होइत अछि। कोलकातामे १८५० ई. क आसपास आधुनिक रंगमंच- ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतए नै छल।

बीजशब्द: नाटक · आधुनिक · रंगमंच · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली नाटक आ आधुनिक रंगमंच” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली; नाटक; आधुनिक; रंगमंच; छन्हि प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल।

मैथिली नाटक आ रंगमंचक इतिहास ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ अंकिया नाटसँ प्रारम्भ होइत अछि।

कोलकातामे १८५० ई. क आसपास आधुनिक रंगमंच- ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतए नै छल।

पूर्व पीठिका:

अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल।

शास्त्रीय आधार:

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगहि वाम पएर किछु मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबैत छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइत छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइत छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करैत छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित होएबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइत छलाह, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल। ऋक १, ११५, २ मे उषाकालक सूर्योदयक बिम्ब सुन्दरीक पाछाँ जाइत युवकसँ भेल अछि। ऋक १, १२४, ११ मे अरुणोदयमे लाल आभा आ बिलाइत अन्हारक संग, चूल्हिमे आगि वर्णन अछि आ बिम्ब अछि- गामक तरुणी रक्त वर्णक गाएकेँ चरबाक लेल छोड़ैत छथि। अथर्ववेद ४, १५, ६ मे सामूहिक नाराक वर्णन अछि। यजुर्वेद ४०, १६ मे वर्णन अछि- सूर्यमण्डल सुवर्णपात्र अछि जे सूर्यकेँ आवृत्त कएने अछि। यजुर्वेद १७, ३८-४१ मे संग्राम लेल बाजा संग जाइत देवसेना आ यजुर्वेद १७, ४९ मे कवचक मर्मर ध्वनि वर्णित अछि। ऋगवेद १, १६४, २ आ यास्क ४, २७ मे संवत्सर, चक्रक वर्णन अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २, २, ३ मे सोमरसक उत्सक वर्णन अछि। वृहदारण्यक उपनिषद २, २, ४ ओकर तटपरसात ऋषि आँखि, कान आदि अछि। अथर्ववेद १०, २, ३१ मे शरीरकेँ अयोध्या कहल गेल अछि, गीता ५, १३ मे शरीरकेँ पुर कहल गेल अछि।

यजुर्वेदमे नाट्य: यजुर्वेदमे किछु पारिभाषिक शब्दक विवरण अछि जेना सूत, शैलूष, चित्रकारिणी, ऐसँ लगैत अछि जे नाट्यमंडपक कल्पना छल।

कला, साहित्य आ संगीतक समाज लेल कोन प्रयोजन, एकर नैतिक मानदण्ड की हुअए, ऐ दिस सेहो प्राच्य आ पाश्चात्य विचारक अपन विचार राखलन्हि। प्लेटो कहै छथि जे कोनो कला नीक नै भऽ सकैए किएक तँ ई सभटा असत्य आ अवास्तविक अछि। मुदा

कला, संगीत आ साहित्य कखनो काल स्वान्तः सुखाय सेहो होइत अछि, एकरा पढ़ला, सुनला, देखला आ अनुभव केलासँ प्रसन्नता होइत छै, मानसिक शान्ति भेटै छै तँ कखनो काल ई उद्वेलित सेहो करैत छै। एरिस्टोटल मुदा कहै छथि जे कलाकार ज्ञानसँ युक्त होइ छथि आ विश्वकेँ बुझबामे सहयोग करै छथि। शब्दोचारण आ कला निर्माणक बाद बोध्य बौस्तुक उत्पत्ति होइ छै। शब्द आ ध्वनि, रूप, रस, राग, छन्द, आ अलंकारसँ ओकर औचित्य सिद्ध होइत छै।

तखन मन्दिरक उत्सव आ राजाक प्रासादमे होइबला नाटक स्वतंत्र भऽ गेल आ एकर उपयोग वा अनुप्रयोग दोसर विषयकेँ पढ़ेबामे सेहो होमए लागल।

भरतक नाटयशास्त्रः

नाटय-मंचन आ अभिनय

कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाट्य निर्देशकक लेल पठनीय नाटक अछि। रंगमंच निर्देश, जेना, रथ वेगं निरूप्य, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं, इति शरसंधानम् नाटयति, वृक्ष सेचनम् रुपयति, कलशम् अवरजायति, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति, शकुन्तला परिहरति नाट्येन, नाट्येन प्रसाधयतः, कहि कऽ वास्तविकतामे नै वरन् अभिनयसँ ई कएल जाइत अछि। नाट्येन प्रसाधयतः, एतए अनसूया आ प्रियम्वदा मुद्रासँ अपन सखी शकुन्तलाक प्रसाधन करै छथि कारण से चाहे तँ उपलब्ध नै अछि, चाहे तँ ओतेक पलखति नै अछि। तहिना वृक्ष सेचनम् रुपयति सँ गाछमे पानि पटेबाक अभिनय, कलशम् अवरजायति सँ कलश खाली करबाक काल्पनिक निर्देश, रथ वेगं निरूप्य सँ तेज गतिसँ रथमे यात्राक अभिनय, इति शरसंधानम् नाटयति सँ तीरकेँ धनुषपर चढ़ेबाक निर्णय, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं सँ हरिणकेँ मारि खसेबाक दृश्य देखबाक निर्देश, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति सँ दुश्यन्तक शकुन्तलाक मुँहकेँ उठेबाक इच्छा, शकुन्तला परिहरति नाट्येन सँ शकुन्तला द्वारा दुश्यन्तक ऐ प्रयासकेँ रोकबाक अभिनयक निर्देश होइत अछि। भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि जे मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक “नाट्यशास्त्र” आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक “काव्यशास्त्र” । भरत नाट्यकेँ “कृतानुसार” “भावानुकार” कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि। अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होअए से आवश्यक नहि, पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। भरत: - नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी

बौद्ध चर्यागीतक बाद महाराज नान्यदेव सरस्वती हृदयालंकार फेर विद्यापति आ संगीतज्ञ जयतक शिव सिंहक दरबारमे हेबाक लोकोक्ति। विद्यापतिक पुरुष परीक्षाक कथा सभमे पुरुषक कला संगीतक प्रेम ओकर पुरुषार्थ सन महत्वपूर्ण मानल गेल अछि। शुभङ्कर ठाकुरक श्रीहस्तमुक्तावली सेहो मिथिलाक ग्रन्थ मानल जाइत अछि ओना पाण्डुलिपिक उपलब्धताक आधारपर किछु विद्वान एकरा असमक रचना मानैत छथि। ऐ ग्रन्थमे अभिनयसँ सम्बन्धित हस्त परिचालनक विषद विवरण उपलब्ध अछि। आइने अकबरीमे विद्यापतिक नचारीक चर्च।

विदेह नाट्य उत्सव २०१२ मे भरत नाट्य शास्त्र आधारित नाटक रंगमंच संकल्पना आधारित गजेन्द्र ठाकुर लिखित आ श्री बेचन ठाकुर निर्देशित “उल्कामुख” मंचित कएल गेल, जे मैथिलीमे ऐ तरहक पहिल प्रयास छल, ऐमे पेण अभिनेत्री लोकनिक माध्यमसँ नाटक मंचन भेल, ऐमे पुरुख पात्रक अभिनय सेहो महिला कलाकार द्वारा भेल। भरत नाट्यशास्त्रक आधारपर रंगमंचक ड्राइंग श्रीमती एस. एस. जानकीक छल। ऐ तरहक एकटा प्रयास संस्कृत रंगमंचपर चेन्नैमे कएल गेल छल।

SIMPLIFIED STAGE OF BHARATA
(Not according to measurements)

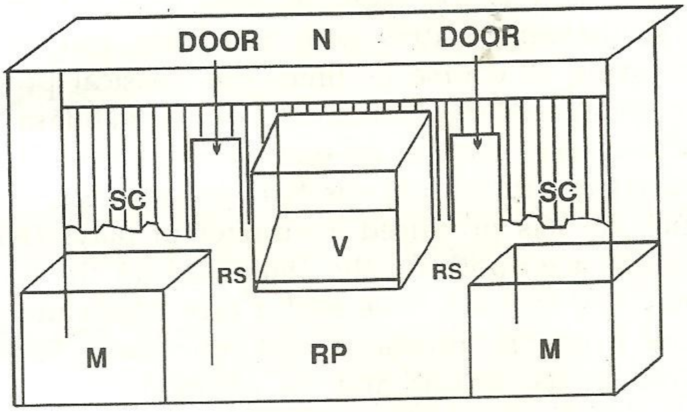

C. Back Curtain of Theatre

N. Nepathya (make-up room)

SC. Special Curtain (to cover up entry and exit)

Doors (2) with Curtains and wall-for entry and exit

V. Vedikā (central platform meant for Kutapa or orchestra)

RS. Raṅgaśīrṣa (rear stage)

M. Mattavāraṇīs (2) (supplementary acting areas)

RP. Raṅgapīṭha (main acting area)

मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

रामखेलावन मंडार- गाम कटघरा, प्रखण्ड- शिवाजीनगर, जिला समस्तीपुर। हिनके संग बिन्देश्वर मंडल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ - माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मँगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि। एहि मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-बसन्त, अल्हा-ऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिका पस्तुत कएल जाइत छल।

मैथिली-बिदेसिया- पिआ देसाँतरक टीम सहरसा-सुपौल-पूर्णियाँसँ अबैत छल।

हासन-हुसन नाटिका होइत छल।

रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम- गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला- समस्तीपुर विद्यापति नाटक गोरखपुर धरि जा कऽ खेलाएल छल। एहि मंडली द्वारा प्रस्तुत अन्य नाटक अछि- लौंगिया मेरचाइ, विद्यापति, चीनीक लड्डू आ बसात।

मैथिली नाटकक समानान्तर दुनियाँकेँ सेहो अभिलेखित आ सम्मानित कएल जएबाक प्रयास होएबाक चाही।

नाट्य रंगमंच समिति सभ

भंगिमा, पटना; चेतना समिति, पटना, जमघट-, मधुबनी; मिथिला विकास परिषद, कोलकाता; अखिल भारतीय मिथिला संघ, कोलकाता; मिथिला कला केन्द्र, कोलकाता; मैथिली रंगमंच, कोलकाता; कुर्मी-क्षत्रिय छात्रवृत्ति कोष, कोलकाता; आल इण्डिया मैथिल संघ, कोलकाता; कर्ण गोष्ठी: जयन्त लोकमंच, कोलकाता; मिथिला सेवा संस्थान, कोलकाता; मिथि यात्रिक, कोलकाता; वैदेही कला मंच, कोलकाता; कोकिल मंच, कोलकाता; मिथिला कल्याण परिषद, रिसरा, कोलकाता (निर्देशन मुख्य रूपसँ श्री दयानाथ झा द्वारा १९८२ ई. सँ। सम्प्रति श्री रण्जीत कुमार झा निर्देशन कऽ रहल छथि, ०८.०१.२०१२ केँ हुनकर निर्देशनमे तंत्रनाथ झा लिखित “उपनयनक भोज” मंचित भेल।); झंकार, कोलकाता; मिथिला सेवा समिति बेलुर, कोलकाता; उदय पथ, कोलकाता। मिथिला नाट्य परिषद (मिनाप), जनकपुर; रामानन्द युवा क्लब, जनकपुरधाम; युवा नाट्य कला परिषद (युनाप), परवाहा, धनुषा; आकृति (उपेन्द्र भगत नागवंशी), जनकपुर; रंग वाटिका, नेपाल; चबूतरा, शिरोमणि मैथिली युबा क्लब, गांगुली, भैरब, मैथिली सांस्कृतिक युबा क्लब, बौहरबा, श्री सरस्वती सांस्कृतिक नाट्य कला परिषद, गाम तिलाठी (सप्तरी, नेपाल); अरुणोदय नाट्य मंच, राजबिराज; सरस्वती

नाट्य कला परिषद, मेंहथ, मधुबनी; मैथिली लोकरंग (मैलोरंग), दिल्ली; मिथिलांगन, दिल्ली। मधुबनीक पजुआरिडीह टोलमे श्रीकृष्ण नाट्य समिति श्री कृष्णचन्द्र झा रसिक, शिवनाथ झा आ गंगा झाक निर्देशनमे मैथिली नाटक मंचित होइत रहल अछि। सांस्कृतिक मंच, लोहियानगर, पटना; चित्रगुप्त सांस्कृतिक केन्द्र, जनकपुर; गर्दनीबाग कला समिति, पटना; मिथिलाक्षर, जमशेदपुर; मैथिली कला मंच, बोकारो; उगना विद्यापति परिषद, बेगूसराय; मिथिला सांस्कृतिक परिषद, बोकारो स्टील सिटी; भानुकला केन्द्र, विराटनगर; आंगन, पटना; नवतरंग, बेगूसराय; भारतीय रंगमंच, दरभंगा; भद्रकाली नाट्य परिषद, कोइलख, मिथिला अनुभूति दरभंगा, विदेह अंतर्राष्ट्रीय ई-जर्नलक नाट्य उत्सव, नव ज्योति ड्रामेटिक क्लब, लौकही (१९९२ मे शम्भु शंकर आदि ब्रह्मस्थान आ उगना नाटक खेलेला) ।

निर्देशन: कालीकान्त झा "बूच", कामदेव पाठक, श्री कमल नारायण कर्ण (चीनीक लड्डू-ईशनाथ झा/ चारिपहर- मूल बांग्ला किरण मैत्र, मैथिली अनुवाद- निरसन लाभ), श्री श्रीकान्त मण्डल (चन्द्रगुप्त मूल बांग्ला डी. एल. राय, मैथिली अनुवाद- बाबू साहेब चौधरी/ पाथेय- गुणनाथ झा/ नायकक नाम जीवन- नचिकेता); श्री विष्णु चटर्जी आ श्री श्रीकान्त मण्डल (निष्कलंक- जनार्दन झा); प्रवीर मुखोपाध्याय; वीणा राय, मोहन चौधरी, बाबू राम सिंह, गोपाल दास, कुणाल, रवि देव, दयानाथ झा, त्रिलोचन झा, शम्भूनाथ मिश्र, काशी झा, अशोक झा, गंगा झा, गणेश प्रसाद सिन्हा, नवीन चन्द्र मिश्र, जनार्दन राय, श्री कृष्णचन्द्र झा रसिक, शिवनाथ झा, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, अखिलेश्वर, सच्चिदानन्द, रमेश राजहंस, मोदनाथ झा, विभूति आनन्द, जावेद अख्तर खाँ, कौशल किशोर दास, प्रशान्त कान्त, अरविन्द रंजन दास, मनोज मनु, रोहिणी रमण झा, भवनाथ झा, उमाकान्त झा, लल्लन प्रसाद ठाकुर, रघुनाथ झा किरण, महेन्द्र मलंगिया, कुमार शैलेन्द्र, विनीत झा, किशोर कुमार झा, कुमार गगन, विनोद कुमार झा, के. अजय, छत्रानन्द सिंह झा, नीलम चौधरी, काजल, मनोज कुमार पाठक, आशनारायण मिश्र, श्री श्रीनारायण झा, प्रमिला झा, तनुजा शंकर, केशव नन्दन, ब्रह्मानन्द झा, संजीव तमन्ना, किसलय कृष्ण, प्रकाश झा, मुन्नाजी संजय कुमार चौधरी, कमल मोहन चुन्नू, अंशुमान सत्यकेतु, श्याम भास्कर, प्रेम कुमार, संगम कुमार ठाकुर, एल. आर. एम. राजन, भास्करानन्द झा, आशुतोष कुमार मिश्र, आनन्द कुमार झा, मनोज मनुज, संजीव मिश्र, स्वाति सिंह, स्वर्णिम, आशुतोष यादव अभिज्ञ, अशोक अश्क, दिलीप वत्स, तरुण प्रभात, माधव आनन्द, नरेन्द्र मिश्र, भारत भूषण झा, किशोर केशव, बेचन ठाकुर, उपेन्द्र भगत नागवंशी, अनिल चन्द्र झा, अंशुमान सत्यकेतु, आनंद कुमार झा, हेमनारायण साहू, रामकृष्ण मंडल छोटू, धीरेन्द्र कुमार, उत्पल झा, अभिषेक के. नारायण, चन्द्रिका प्रसाद।

नाटकः नाटककार

धूर्त्तसमागम तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर धूर्त्तसमागममे मैथिली गीतक समावेश कएलन्हि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि। मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्णक अथवा हुनकर वंशधरक चरित पर अवलंबित एवं हरण आकि स्वयंबर कथापर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागम सभ पात्र एकसँ-एक ध्होर्त्त छथि। ताहि हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रहसनकेँ संगीतक सेहो कहल जाइछ, ताहि हेतु एहि मे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि। एहिमे सूत्रधार, नटी स्नातक, विश्वनगर, मृतांगार, सुरतप्रिया, अनंगसेना, अस्ज्जाति मिश्र, बंधुवंचक, मूलनाशक आऽ नागरिक मुख्य पात्र छथि। सूत्रधार कर्णाट चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि। फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। एहिमे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि, जे नितांत आधुनिक अछि। जे लोच छैक से एकरा लोकनाट्य बनबैत छैक। विश्वनगर स्त्रीक अभावमे ब्रह्मचारी छथि। शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइत छथि तँ अशौचक बहाना भेटैत छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु सुरतप्रियाक घर जाइत छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकेँ लय कय गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइत छन्हि। फेर गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्रक लग जाइत छथि तँ ओतय मिश्रजी लंपट निकलैत छथि।... मिश्रजी लंपट निकलैत छथि।...जे जुआ खेलायब आ’ पांगना संगम ईएह दूटा कैं संसारक सार बुझैत छथि। असज्जति मिश्र पुछैत छथि जे के वादी आ’ के प्रतिवादी। स्नातक उत्तर दैत छथि-जे अभियोग कहबाक लेल हम वादी थिकहुँ आ’ शुल्क देबाक हेतु संन्यासी प्रतिवादी थिकाह। विश्वनगर अपन शुल्कमे स्नातकक गाजाक पोटरी प्रस्तुत करैत छथि। विदूषक असज्जाति मिश्रक कानमे अनंगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत अछि। असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ बीचमे राखि दुनूक बदला अपना पक्षमे निर्णय लैत अछि। एम्हर विदूषक अनंगसेनाक कानमे कहैत अछि, जे ई संन्यासी दरिद्र अछि, स्नातक आवारा अछि आ’ ई मिश्र मूर्ख तेँ हमरा संग रहू। अनंगसेना चारूक दिशि देखि बजैछ, जे ई तँ असले धूर्तसमागम भय गेल।

विश्वनगर स्नातकक संग पुनः सुरतप्रियाक घर दिशि जाइत छथि। एमहर मूलनाशक नौआ अनंगसेनासँ साल भरिक कमैनी मँगैछ। ओ’ हुनका असज्जातिमिश्रक लग पठबैत अछि। मूलनाशक असज्जातिमिश्रकेँ अनंसेनाक वर बुझैत अछि। गाजा शुल्कमे लय असज्जति मिश्रकेँ गतानि कए बान्हि तेना मालिश करैत अछि जे ओ’ बेहोश भय जाइत छथि। ओ’ हुनका मुइल बुझि कय भागि जाइत अछि। विदूषक अबैत अछि, आ’ हुनकर बंधन खोलैत अछि आ’ पुछैत अछि जे हम अहाँक प्राणरक्षा कएल अछि, आ’ जे किछु आन प्रिय

कार्य होय तँ से कहू। असज्जाति कहल जे छलसँ संपूर्ण देशकेँ खएलहुँ, धूर्त्तवृत्तिसँ ई प्रिया पाओल, सेहो अहाँ सन आज्ञाकारी शिष्य पओलक, एहिसँ प्रिय आब किछु नहि अछि। तथापि सर्वत्र सुखशांति हो तकर कामना करैत छी।

जीवन झा

जीवन झा लिखित नाटक सुन्दर संयोग, (1904), मैथिली सट्टक (1906), नर्मदा सागर सट्टक (1906) आ सामवती पुनर्जन्म (1908) ।

ऐ चारू नाटकक सामवेद विद्यालय काशीमे कएक बेर मंचन १९२० ई. सँ पहिनहिये भऽ चुकल अछि, "सुन्दर संयोग" एतैसँ प्रकाशित सेहो भेल।

सुन्दर संयोगक किछु आर मंचन:

१९७४ ई. माली मोड़तर (हसनपुर चीनीमिलक बगलमे), लक्ष्मीनारायण उच्च विद्यालय परिसरमे- निर्देशक श्री कालीकान्त झा "बूच", मुख्य अतिथि श्री फजलुर रहमान हासमी। दुर्गापूजामे। आयोजक देवनन्दन पाठक चीफ इन्जीनियर, आ केशनन्दन पाठक (ऑडीटर टीका बाबू), उद्घाटन: उदित राय मुखिया।

१९७६: करियन, समस्तीपुर। निर्देशक: कामदेव पाठक।

१९८१: पण्डित टोल, टभका (दलसिंहसरायक बगलमे): संयोजक डॉ उमेन्द्र झा "विमल", पूर्व प्रो. भाइस चान्सलर, का. सि. संस्कृत वि. वि.; आ म. म. चित्रधर मिश्र जे दरभंगा किलाक भीतरक शंकर मन्दिरक अधिष्ठाता रहथि आ म. म. उमेश मिश्र आ म. म. गंगानाथ झा हिनकर शिष्य रहथिन्ह।

१९८३: मउ बाजितपुर (विद्यापति नगरक बगलमे)

संस्कृत परम्परा आ पारसी थियेटरक गुणसँ ओतप्रोत ऐ नाटक सभक अन्यान्यो ठाम मंचन भेल अछि।

ईशनाथ झा

उगना: ई नाटक सभ महाशिवरात्रिकेँ गौरीशंकर स्थान, जमथुरिमे खेलाएल जाइत अछि। विद्यापति शिव-भक्त, हुनकर गीत-नचारी सुनबा लेल सिव विद्यापतिक घरमे उगना नोकर बनि आबि गेला। एक बेर विद्यापति यात्रापर छला आ उगना संगमे छलन्हि। रस्तामे पियास लगलापर उगना जटाक गंगधारसँ पानि निकालि विद्यापतिकेँ पियेलन्हि मुदा विद्यापतिकेँ ओइमे गंगाजलक स्वाद भेटलन्हि आ ओ उगनाक केश भीजल देखि सभटा बुझि गेलाह। उगना अपन असल रूपमे एलाह। मुदा उगना कहलखिन्ह जे विद्यापति ई गप ककरो नै कहताह नै तँ ओ अन्तर्धान भऽ जेताह। पार्वती चालि चलन्हि, विद्यापतिक पत्नी उगनाकेँ बेलपत्र अनबा लेल पठेलन्हि आ देरी भेलापर ओ उगनापर बाढनि उसाहलन्हि, विद्यापथि भेद खोलि देलन्हि आ उगना बिला गेलाह.. चीनीक लड्डू: सुधाकांत-प्रेमकांतक पिता गुजरि जाइ छथि आ से देखभाल मामा धर्मानन्द ट्रस्टी जकाँ करै छथि आ हुनकर सभक समर्थ भेलाक बाद सुधाकांतकेँ भार दऽ घुरि जाइ छथि। सुधाकांतक मुंशी बटुआ दास प्रेमकांतक पत्नी चण्डिका आ खबासनी छुलहीक सहयोगसँ बखरा करबा दै छथि, सुधाकान्त अपनो हिस्सा प्रेमकान्तकेँ दऽ दै छथि। सुधाकांत, पत्नी सुशीला आ बेटा सुकमार घरसँ बाहर कऽ देल जाइ छथि। सुधाकांतकेँ टी. बी. रोग मारि दै छन्हि। बटुआ दासक संगति प्रेमकांतकेँ सेहो दरिद्र कऽ दैत अछि। माम धर्मानन्द सुकमारकेँ अपन सम्पति लिखि दै छथि कारण हुनका सन्तान नै छन्हि। प्रेमकांत आ बटुआ दास सुकुमारकेँ मारबाक प्रयत्नमे बिख मिला कऽ चीनीक लड्डू सनेसमे सुकमारकेँ दै छथि मुदा ओइसँ बटुआ दास मरि जाइए, आ भेद खुजैए।

उदयनारायण सिंह नचिकेता

नायकक नाम जीवन: नवल नव विचारक अछि, शक्तिराय धनिक, कलुषित अछि आ अपन सहयोगी विनयपर चोरिक आरोप लगा ओकर बेटीक अपहरण आ बलात्कार करबैए। विनय आत्महत्या कऽ लैए। नवल आ ओकर मित्र प्रकाश आ दीपक सभटा भेद खोलैए। ओकर प्रेमिका बलात्कारक परिणामस्वरूप आत्महत्या करैए। नवल विक्षिप्त भऽ जाइए। एक छल राजा: एकटा राजा अभिमान कुमार देवक दिन मदिरा आ वैश्याक पाछाँ खराप भेलै। ओकरा एक्केटा बेटी मोहिनी छै, टकाक अभावमे ओकर बियाह नै भ्हऽ पाबि रहल छै। मुंशी विरंची, सेवक चतुरलाल आ धर्मकर्मवाली पत्नी संगे नाटक आगाँ बढ़ैए। मोहिनी आ शिक्षक शुभंकरक बीच प्रेम होइ छै। नो एण्ट्री: मा प्रविश: पोस्टमोडर्न ड्रामा, जकर एबसर्डिटी एकरा ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम लग घुरबै छै। स्वर्ग आकि

नर्कक द्वारपर मुइल सभ अबै छथि आ खिस्सा-खेरहा सुनबै छथि, बादमे पता चलैए जे चित्रगुप्त/ धर्मराज सभ नकली छथि आ द्वारपर लागल अछि ताला, नो एण्ट्री।

गोविन्द झा

बसात: कृष्णकांत पिता द्वारा ठीक कएल युवती पुष्पा संग विवाह नै करै छथि, ओ शिक्षितसँ विवाह करऽ चाहै छथि, लिलीसँ प्रेम करै छथि। हुनकर पिता घर त्यागि दै छथि। पुष्पा घर छोड़ि महिला जागरणमे लागि गेलथि। पिताकेँ ताकैमे कृष्णकान्त असफल होइ छथि, लिलीकेँ छोड़ि रेलगाड़ीसँ कटऽ चाहै छथि, आश्रमक लोक हुनका बचा लै छन्हि, ओतए पिता, पुष्पा सभसँ भेँट होइ छन्हि, लिली सेहो बताहि भेलि ओतऽ आबि जाइ छथि।

गुणनाथ झा

"लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकाक संचालन- सम्पादन केने छथि। मैथिलीमे आधुनिक नाटकक प्रणयन। हुनकर नाटक कनियाँ-पुतरा, पाथेय, ओ मधुयामिनी, सातम चरित्र, शेष नञि, आजुक लोक आ जय मैथिली सभक बेर-बेर मंचन भेल अछि। बाङ्गला एकाङ्की नाट्य-संग्रह

ऐमे बांग्लाक २४ टा नाटककारक २४ टा नाटकक संकलन ओ सम्पादन अजित कुमार घोष केने छथि आ तकर बांग्लासँ मैथिली अनुवाद श्री गुणनाथ झा द्वारा भेल अछि।

कनियाँ-पुतरा- गुणनाथ झा जीक ई पहिल पूर्णाङ्क नाटक थिक। नाटक बहुदृश्य समन्वित करैबला घूर्णीय मञ्चोपयुक्त अछि। कथा काटर प्रथापर आधारित अछि आ तकर परिणामसँ मुख्य अभिनेता आ मुख्य अभिनेत्री मनोविकारयुक्त भऽ जाइत छथि, तइ मनोदशाक सटीक चित्रण आ विश्लेषण भेल अछि।

मधुयामिनी: एकाङ्क नाट्य शैलीमे दूटा पात्र, पुरुष संयुक्त परिवारक पक्ष लेनिहार आ स्त्री तकर विरोधी। संयुक्त परिवारक पक्ष लेनिहारक सामंजस्यपूर्ण विजय होइत अछि। "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकामे प्रकाशित।

पाथेय: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित, मुदा पूर्णाङ्कक सभ विशेषता ऐमे भेटत। मुख्य अभिनेता मिथिलाक अधोगतिसँ दुखी भऽ गामकेँ कर्मस्थली बनबैत छथि, स्वजन विरोध करै छथि। मुदा बादमे पत्नी हुनकर संग आबि जाइ छथिन्ह। भाषा मधुर आ चलायमान अछि।

लाल-बुझक्कर: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। दाही रौदीसँ झमारल निम्न आ मध्य-निम्न वर्ग स्वतंत्रताक पहिनहियो आ बादो जीविकोपार्जन लेल प्रवास करबा लेल अभिशप्त छथि। माता-पिता विहीन लाल बुझक्करजी कनियाँकेँ नैहरमे बैसा कऽ आ सन्तानहीन पित्ती पितियैनकेँ छोड़ि नग्र प्रवास करै छथि।

सातम चरित्र: एकाङ्क नाट्य शैलीमे रचित। मैथिली रंगमंचपर महिला अभिनेत्रीक अभाव, सातम चरित्रक प्रतीक्षामे पूर्वाभ्यास खतम भऽ जाइत अछि। "लोक मञ्च" मैथिली नाट्य पत्रिकामे प्रकाशित।

शेष नञि: आधुनिक सामाजिक पूर्णाङ्क नाटक। पिता-माताक मृत्युक बाद अग्रजक अनुजक प्रति पितृवत व्यवहार। अनुज चाकरी करै छथि, परिवर्तनशील सामाजिक परिस्थितिक शिकार भऽ अचिन्तनीय कार्यकलाप करै छथि आ अग्रज प्रतारित होइ छथि। मुदा अग्रज मरणासन्न पत्नीक प्राणरक्षार्थ साहसपूर्ण डेग उठा लैत छथि।

आजुक लोक: पूर्णाङ्क नाटक। विषय निम्नमध्यवर्गीय बेरोजगारी आ बियाहक दायित्वक बोझ।

जय मैथिली: पूर्णाङ्क नाटक। मिथिलाक भाषिक-सांस्कृतिक समस्या एकर कथावस्तु अछि।

महाकवि विद्यापति: विद्यापतिक नव विश्लेषण।

महेन्द्र मलंगिया

एक कमल नोरमे: माला पति राजेशकेँ सन्तान लेल दोसर बियाह लेल आग्रह करैए, मुदा पति मना करै छै, ओकर सासु ज्योतिषक संग मिलि मालाक दोसराक संग बेहोशीमे अश्लील फोटो लैए आ राजेशकेँ देखबैए। राजेश मालाकेँ घरसँ बहार कऽ दैए आ ज्योतिषीक पुत्रीक बियाह राजेशसँ भऽ जाइ छै। माला आत्महत्या करैए। जुआयल कनकनी: जीबू अपन माता-पिता द्वारा आत्महत्या लेल

काकीकेँ दोषी मानैए मुदा बादमे जखन ओ बुझैए जे बैजू ओकर बहिनक शील भंग केलक। फेर बदला आ पश्चाताप। ओकरा आँगनक बारहमासा: बारह मासमे बोनिहारकक जिनगीक विवरण। छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल

छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि।

पहिने ऐ भूमिकापर आउ। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा "रमण" हुनका सुझाव देलखिन्ह जे "छुतहर घैल" केँ मात्र "छुतहर" कहल जाइ छै। से ओ तीन टा गप उठेलन्हि- पहिल-

"तों कहियो पोथी के लेखी,

हम कहियो अँखियन के देखी।"

दोसर- यात्री जीक विलाप कविता-

"काते रहै छी जनु घैल छुतहर

आहि रे हम अभागलि कत बड़।"

आ कहै छथि जे ओइ कविताक विधवा आ ऐ नाटकक कबूतरी देवीकेँ शिवक महेश्वरो सूत्र आ पाणिनीक दश लकारसँ (वैदिक संस्कृत लेल पाणिनी १२ लकार आ लौकिक संस्कृत लेल दस लकार निर्धारित कएने छथि..खएर...) कोन मतलब छै?

तेसर ओ अपन स्थितिकेँ कापरनिकस सन भेल कहैत छथि, जे लोकक कहलासँ की हेतै आ गाम-घरमे लोक "छुतहर घैल" बजिते छैक!!

मुदा ऐ तीनू बिन्दुपर तीनू तर्क मलंगियाजीक विरुद्ध जाइ छन्हि। "अँखियन देखी" आ लोकव्यवहार "छुतहर" मात्र कहल जाइत देखलक आ सुनलक अछि, घैलचीपर छुतहरकेँ अहाँ राखि सकै छी? लोइटसँ बड़ैबमे पान पटाओल जाइ छै तखन मलंगियाजीक हिसाबे ओकरा "लोइट घैल" कहबै। घैल, सुराही, कोहा, तौला, छुतहर, लोइट, खापड़ि, कुड़नी, कुरवाड़, कोसिया, सरबा, सोबरना ऐ सभ बौस्तुक अलग नामकरण छै। फूलचन्द्र मिश्र "रमण" (प्रायः फूलचन्द्रजी "छुतहा घैल" शब्दक सुझाव हँसीमे देने हेथिन्ह, आ जँ नै तँ ई एकटा नव भाषाक नव शब्द अछि!!) क सुझाव मानैत मलंगिया जी "छुतहर घैल" केँ "छुतहा घैल" कऽ देलन्हि, ई ऐ गपक द्योतक जे हुनका गलतीक अनुभव भऽ गेलन्हि मुदा रमानन्द झा "रमण" क गप मानि लेने छोट भऽ जइतथि से खुट्टा अपना हिसाबे गाड़ि देलन्हि। आ बादमे रमानन्द झा "रमण" चेतना समितिसँ ओइ पोथीकेँ छपेबाक आग्रह केलखिन्ह आ, चेतना समिति मात्र २५टा प्रति दैतन्हि तँ ओ अपन संस्थासँ एकरा छपबेलन्हि, ऐ सभसँ पठककेँ कोन सरोकार? आब आउ यात्रीजीक गपपर, यात्रीजीकेँ हिन्दी पाठकक सेहो ध्यान राखऽ पड़ै छलन्हि, हुनका मोनो नै रहै छलन्हि जे कोन कविता हिन्दीमे छन्हि, कोन मैथिलीमे आ कोन दुनूमे, से ओ छुतहर घैल लिखि देलन्हि, एकर कारण यात्रीजीक तुकबन्दी मिलेबाक आग्रहमे सेहो देखि सकै छी। आ फेर आउ कॉपरनिकसपर, जँ यात्री जी वा मलंगिया जी "घैल छुतहर", "छुतहर घैल" वा "छुतहा घैल" लिखिये देलन्हि तँ की नेटिव मैथिली भाषी छुतहरकेँ "घैल छुतहर", "छुतहर घैल" वा "छुतहा घैल" बाजब शुरू कऽ देत। से कॉपरनिकस सेहो मलंगियाजीक विरुद्ध छथिन्ह।

कॉपरनिकसक किंवदन्तीक सटीक प्रयोग मलंगियाजी नै कऽ सकलाह, प्रायः ओ गैलिलीयो सँ कॉपरनिकसकेँ कन्फ्यूज कऽ रहल छथि, कॉपरनिकसक सिद्धान्तक समर्थन पोप द्वारा भेल छल आ कॉपरनिकस पोप पॉल-३ केँ अपन हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धान्तक चालीस पन्नाक पाण्डुलिपि समर्पित केने रहथि। खएर मलंगियाजीक विज्ञानक प्रति अनभिज्ञता आ विज्ञानक सिद्धान्तकेँ किवदन्तीसँ जोड़बाक सोचपर अहाँकेँ आश्चर्य नै हएत जखन अहाँ हुनकर खाँटी लोककथा सभक अज्ञानताकेँ अही भूमिकामे देखब।

"अली बाबा आ चालीस चोर"- सम्पूर्ण दुनियाँकेँ बुझल छै जे ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि जे "अरेबियन नाइट्स (१००१ कथा)" मे संकलित अछि आ ओइमे विवाद अछि जे ई अरेबियन नाइट्समे बादमे घोसियाएल गेल वा नै, मुदा ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि, ऐ मे कोनो विवाद नै अछि। बलबनक अत्याचार आदिक की की गप साम्प्रदायिक मानसिकता लऽ कऽ मलंगिया जी कहि जाइ छथि से हुनकर लोककथाक प्रति सतही लगाव मात्रकँण देखार करैत अछि। "मिथिला तत्व विमर्श" वा "रमानाथ झा" क पंजीक सतही ज्ञान बहुत पहिनहिये खतम कऽ देल गेल अछि, आ तँ ई लिखित रूपसँ हमरा सभक पंजी पोथीमे वर्णित अछि। गोनू झा विद्यापति सँ ३०० बर्ख पहिने भेलाह, मुदा मलंगियाजी ५० साल पुरान गप-सरक्काक आधारपर आगाँ बढ़ै छथि। हुनका बुझल छन्हि जे गोनूकेँ धूर्ताचार्य कहल गेल छन्हि मुदा संगे गोनूकेँ महामहोपाध्याय सेहो कहल गेल छन्हि से हुनका नै बुझल छन्हि!! गोनू झाक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नै करथि तखन "तहसीलदारक दाढ़ी" कतऽ सँ आओत। लोकक कण्ठमे छुतहर छै ओकरा "छुतहा

घैल” कऽ दियौ, लोकक कण्ठमे “कर ओसूली” करैबलाक दाढ़ी छै ओकरा “तहसीलदार” क दाढ़ी कहि साम्प्रदायिक आधारपर मुस्लिमकेँ अत्याचारी करार कऽ दियौ, आ तेहेन भूमिका लिखि दियौ जे रमानन्द झा “रमण” आ आन गोटे डरे समीक्षा नै करताह। एकटा पैदल सैनिक आ एकटा सतनामी (दलित-पिछड़ल वर्ग द्वारा शुरू कएल एकटा प्रगतिवादी सम्प्रदाय) क झगड़ासँ शुरू भेल सतनामी विद्रोह औरंगजेबक नीतिक विरोधमे छल आ ओइमे मस्जिदकेँ सेहो जराओल गेलै, मुदा गोनू झाक कर ओसूली अधिकारी मुस्लिम नै रहथि, लोककथामे ई गप नै छै, हँ जँ साम्प्रदायिक लोककथाकार कहल कथामे अपन वाद घोसियेलक आ लिखै काल बेइमानी केलक तँ तइसँ मैथिली लोककथाकेँ कोन सरोकार? फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन नै करब तँ अहिना हएत।

महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जातित-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह। भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ सत्रहटा दृश्य अछि, जइमे पन्द्रहम दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह ओ सोलहम दृश्यसँ करै छथि मुदा बाजी तावत हुनका हाथसँ निकलि जाइ छन्हि। आइ जखन संस्कृत नाटकोमे प्राकृत वा कोनो दोसर भाषाक प्रयोग नै होइत अछि, मलंगियाजीक भरतकेँ गलत सन्दर्भमे सोझाँ आनब संस्कृतसँ हुनकर अनभिज्ञताकेँ देखार करैत अछि आ भरत नाट्यशास्त्रपर हिन्दीमे जे सेकेण्डरी सोर्सक आधारपर लोक सभ पोथी लिखने छथि, तकरे कएल अध्ययन सिद्ध करैत अछि।

मलंगियाजीक ई कहब अछि जे नाटक जँ पढ़बामे नीक अछि तँ मंचन योग्य नै हएत, वा मंचन लेल लिखल नाटक पढ़बामे नीक नै लागत? हुनकर संस्कृत पाँतीकेँ उद्धृत करबासँ तँ यएह लगैत अछि। जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ मंचीय गुण की होइ छै, अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक सत्रहटा दृश्य, तथाकथित निम्न वर्गकेँ अपमानित करैबला जातिवादी भाषा, भगताक “बुझता है कि नहीं?” बला हिन्दी आ ऐ सभक सम्मिलनक ई “स्लैपस्टिक ह्यूमर”? आ जे एकर विरोध कऽ मैथिलीक समानान्तर रंगमंचक परिकल्पना प्रस्तुत करत से भऽ गेल नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही आ जे पुरातनपंथी जातिवादी अछि से भेल नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही!! की २१म शताब्दीमे मलंगियाजीक जाति आधारित वाक्य संरचना संस्कृत, हिन्दी वा कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक नाटकमे (मैथिलीकेँ छोड़ि) स्वीकार्य भऽ सकत? आ जँ नै तँ ऐ शब्दावली लेल १८०० बर्ष पुरनका संस्कृत नाटकक गएर सन्दर्भित तथ्यकेँ, मूल संस्कृत भरत नाट्यशास्त्र नै पढ़ैबला नाटककार द्वारा, बेर-बेर ढालक रूपमे किए प्रयुक्त कएल जाइए? माथपर छिट्टा आ काँखमे बच्चा जँ कियो लेने अछि तँ ओ निम्न वर्गक अछि? ओकर आंगनक बारहमासामे ओ ऐ निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। बबाजी कोना कथामे एलै आ गाजा कोना एलै आ ओइसँ बगियाक गाछक बगियाक कोन सम्बन्ध छै? मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तैँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तैँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि।

सुधांशु शेखर चौधरी

भफाइत चाहक जिनगी: महेश बेरोजगार अछि, ओ चाह दोकान खोलैए ओ कवि सेहो अछि। इंजीनियर उमानाथक पत्नी चन्द्रमा दोकानपर देखलन्हि जे पुकार महेश कविता पाठ लेल जाइए, चन्द्रमा चाह बेचऽ लगै छथि, उमानाथ तमसा जाइ छथि। महेशक संगी सरिता, जे आइ. ए. एस. क पत्नी छथि, आबै छथि। लेटाइत आँचर: दीनानाथक एकेटा मात्र पुत्री ममताकेँ पति काटरक कारणसँ छोड़ि दै छन्हि। मुदा पुत्र मोदनाथक विवाहमे दहेज लेबाक प्रयत्नपर पुत्र हुनका रोकै छन्हि।

जगदीश प्रसाद मण्डल

मिथिलाक बेटी-प्रथम दृश्य- महगीक विरोधमे कर्मचारीक हड़ताल। महगीक कारण- नोकरी दिस झुकने, खेतीक ह्रास। भू-सम्पत्तिक ह्रास, दान दहेज झर-झंझटक बढ़ोतरी। वियाहक लाम-झाम। पैसाक दुरूपयोग। कला प्रेमी धन सम्पत्तिकेँ तुच्छ बुझैत। कौरनेटियाक संग कओलेजक लड़की, जे नाच-गान सिखैत, चलि गेलि। झर-झंझटमे पोकेटमारी सेहो। सरकारी पदाधिकारीकेँ बाजैपर रोक। अपहरणक बढ़ोत्तरी, रंग-विरंगक अपहरणोक कारण िसर्फ पाइये नै जानोक खेलवाड़। सरकारी अफसरक नैतिक ह्रास। चम्मछक घटना। सरकारी तंत्र कमजोर भेने असुरक्षाक वृद्धि। समाजक विघटनमे जाति, सम्प्रदाय इत्यादिक योगदान, जइसँ इज्जत-आवरू धरि

खतरामे। सिनेमा, खेल-कूदक प्रभावसँ नव पीढ़ी अपन सभ किछु- कुल, खनदान, वेवहार, छोड़ि, वाहरी हवाक अनुकरणमे पगला रहल अछि। ढहैत सामंतमे संस्कारक छाप। इनार-पोखरि स्त्रीगणक झगड़ाक अड्डा। मिथिला नारी शक्तिक प्रतीक सीता। दहेजक मारिमे जाति-पाँतिक नास। धन-सम्पत्ति आचार-विचार नष्ट करैत कोट-कचहरीक चपेटमे समाज, आपसी झगड़ाक कुप्रभाव। नवयुवकमे आत्मवलक अभाव नारीक बीच असीम धैर्य-वाल-विधवा मनुष्यपर समाजक प्रभाव। पढ़लो-िलखल कारगरो लड़कीक मोल दहेजक आगू चौपट अछि। ओना पुरूषक अपेक्षा नारीक महत्व, पुरूष प्रधान व्यवस्थामे कम रहल गहना-जेबर सेहो अहितकर। नव पीढ़ीक नारीमे नव उत्साहक जरूरत। नव-नव काज सिखैक हुनर। दोसर अंक- सामंती व्यसन- भाँग। नव पीढ़ी सेहो प्रभावित। श्रम चोर मिहनतसँ मुँह चोराएब। भाग्य-भरोसपर विसवास। धनक प्रभावसँ परिवारक विखरब। पिता-पुत्रक बीच मतभेद बलजोरी वा फुसला कऽ लड़का-लड़की वियाह...। खेतक लेन-देनमे घोखाधड़ी। जबूरिया, दोहरी रजिस्ट्री। घुसखोरी कमाइ प्रतिष्ठा। माइयो-वापक इच्छा रहैत जे बेटा घुस लिअए। नोकरीक विरोध... पुरूष प्रधान व्यवस्थामे नारीक रंग-विरंगक शोषण। पढ़ौने आरो समस्या। तेसर अंक - बहुराष्ट्रीय कम्पनीक कृषिपर दुष्प्रभाव, देशी उत्पादनक अभाव। दहेज समर्थक समाज आ दहेज विरोधी समाज दू तरहक समाज। परम्परा आ परम्परा विरोधी नव जाग्रत समाज। खण्ड-पखण्डमे समाज टूटल। नव मनुष्यक सृजन नव तकनीक नव सोच आ नव काज पकड़ने बहुराष्ट्रीय प्रभावसँ परिवार, समाज आ कला संस्कृतिपर दुष्प्रभाव, बेबस्था बदलने समाज बदलत। चारिम अंक- पाइ भेने विचारोमे बदलाव। जाहिसँ नव समाजक सूत्र पात-जन्म सेहो होइत। रामविलास (मिस्त्री) मनुष्यक महत्व दैत जइसँ दहेजकेँ धक्का लगैत। पहिनेसँ मिथिलांचलक लोक वंगल, असाम, नेपाल, ढाका, धरि ध्न कटनी, पटुआ कटनीक लेल जाइत छल। शिक्षाक विसंगति। ओकरा मेटाएब। पाँचम अंक- आदर्श वियाह। नव चेतनाक जागरण जे बेबस्था बदलत।

कम्प्रोमाइज- सामंती समाजमे टुटैत कृषि आ किसानी जीवन, नब पूँजीवादी समाजमे कृषिकेँ पूँजी बनेबाक बेबस्था, बुद्धिजिवी आ श्रमिकक पलायनसँ गामक बिगड़ैत दशा, समन्वयवादी विचार-दर्शन।

झमेलिया बिआह- मिथिलाक समाजमे अबैत बिआह-संस्कारक प्रक्रियामे रंग-बिरंगक बाहरी प्रभाव, बाहरी प्रभावसँ रंग-बिरंगक विवाद, झमेलक जन्म, झमेलियाक रूपमे बिआह प्रक्रियामे होइत विवादक विषद चर्च।

बिरांगना- ग्रामीण जीवनक बजारोन्मुख हएब, सस्ता श्रम-शक्ति भेटलासँ पूँजीपति वर्ग द्वारा शोषण, श्रमक लूटसँ ग्रामीण लोक जानवरोसँ बत्तर जिनगी जीबए लेल मजबूर, रूपैयाक लालचमे नीच-सँ-नीच काज करबाक लेल तैयार लोक।

तामक तमघैल- ढहैत सामंती समाजमे छिन्न-भिन्न होइत परिवार, रीति-नीति एवं परिवारिक सम्बन्ध, छिन्न-भिन्न होइत परिवारक आर्थिक आधार।

सतमाए- कोनो संबंध दोषपूर्ण नै होइत छै बल्कि मनुष्यक बेबहार आ विचारमे दोष होइत छैक तही बेबहार आ विचारक सम्यक चर्च करैत ‘सतमाए’ क आदर्शरूप प्रस्तुत कएल गेल अछि।

कल्याणी- दिन-देखारे होइत अन्यायक प्रति सजगताक उल्लेख करैत नारी जागरणक चित्रण, बुनियादी समस्या दिस इशारा करैत समस्याक समाधान हेतु पैघ-सँ-पैघ दाम चुकबए पड़ैत अछि, तेकर चित्रण।

समझौता- समाजमे कृषिकेँ पूँजी बनेबाक लेल टुटैत कृषि संस्कृतिक बुनियादी समस्याक वर्णन आ तकर निदान लेल समझौता हेतु सम्यक सोचक जरूरतिपर प्रकाश दैत ओकर महत्व ओ आवश्यकताक वर्णन।

आनंद कुमार झा

टाटाक मोल: काटर प्रथापर आधारित नाटक। गरीबनाथ आ सुमित्राक 'पुत्र कामनार्थ' पॉच गोट कन्या। पहिले बेटीक विवाहमे हुनकर बहुत खेत बिका गेलनि। दोसर बेटीक कन्यादानक लेल मात्र बारह कट्ठा जमीन बॉचल छन्हि। बेटी प्रभा कॉलेजमे पढ़ैत छथि, अपन बहिनक देओर प्रभाकरसँ सिनेह करै छथि, छोट मांगल-चांगल भाए महीस चरबैत छन्हि।

कलह: आकाश बेरोजगार छथि। विभाता सुमित्रा अपन पुत्र राजीव लेल ज्येष्ठ पुत्रक संग यातना दैत छथि। एकटा अबोध नेनाक जन्म भेल...।

बदलैत समाज: एकटा ब्लड कैंसर पीड़ित घूरन जी अपन बीमार पुत्रक विआह करा दैत छथि। हुनका ओना बूझल नहि छलनि जे पुत्र अवधेश ब्लड-कैंसरसँ पीड़ित अछि। भजेन्द्र मुखियाक पुत्र अवधेशक मृत्युक भऽ गेलनि। अंतमे विधवा शोभाक एकटा सच्चरित्र युवक वीजेन्द्रसँ पुर्नविवाहक कल्पना कएल गेल।

धधाइत नवकी कनियॉक लहास: किछु गहनाक खातिर शिखाक आत्महत्याक प्रयास।

हठात् परिवर्त्तन: देशभक्ति नाटक।

गजेन्द्र ठाकुर

उल्कामुख: पहिल मंचनक निर्देशक रहथि बेचन ठाकुर। जादू वास्तवितावादी ऐ नाटकमे इतिहासक एकटा षडयंत्रकेँ उघारल गेल अछि, मंच परिकल्पना रहए भरतक नाट्यशास्त्रक अनुसार। आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी ऐ मे पात्र छथि। पहिलसँ चारिम कल्लोल धरिक पात्र बदलि जाइ छथि, दोसर रूपमे पाँचम कल्लोलसँ ४ टा स्त्री पात्र बढ़ि जाइ छथि: रुद्रमति (माधवक माए) सोहागो (गंगाधरक माता), आनन्दा (गंगाधरक बहिन), मेधा (हरिकर- सेनापतिक बेटी) । गंगेश आ वल्लभाक प्रेम ऐ नाटकक विषय अछि। मुदा पहिल दू अंकक बाद तेसर आ चारिम अंक जादू वास्तविकतावादक उदाहरण बनि जाइए। आ आबि जाइ छथि सोझाँ उदयन, दीना, भदरी, आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी। आ शुरू भऽ जाइए इतिहासक एकटा षडयंत्रक अनुपालन। मुदा चारिम कल्लोलक अन्तमे भगता कहि दै छथि अपन शिष्यकेँ एकटा रहस्य...जे विस्मरणक बादो आबि जाएत स्मरणमे।...बनि उल्कामुख... - पाँचम कल्लोलसँ संकेतक बदला वास्तविकता, कल्पनाक बदला सत्य... -पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल रहत, पाँचम कल्लोलसँ भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत। गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिपर ढेर रास टीका उपलब्ध अछि, गंगेशकेँ कहल जाइ छन्हि तत्वचितामणिकारक गंगेश; मुदा हुनकर कविता भऽ गेल छन्हि "उल्कामुख"!!!

संकर्षण: ऐ नाटकमे एकटा पात्र, जे गाममे कहबैका आ दुष्ट-चलाक प्रवृत्तिक मानल जाइत अछि, दिल्ली एलापर (रस्ते सँ ओकर बुद्धि हेरेनाइ शुरू होइ छै) अपनाकेँ मूर्ख बुझैत अछि- बीचमे भारतक हरियाणाक एकटा कुकुरसँ सम्बन्धित लोककथा सेहो समाहित अछि।

भऽ जाएब छू- (बाल चौबटिया-सड़क नाटक)- पर्यावरण आ विज्ञानकेँ सडक नाटकक माध्यमसँ पसारबाक अभियान।

बेचन ठाकुर

बेटीक अपमान आ छीनरदेवी: भ्रूण हत्या, महिला अधिकार आ अन्धविश्वासपर आधारित दुनू नाटक मैथिली नाटककेँ नव दिशा दैत अछि।

अधिकार: इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकेँ आर. टी. आइ.(सूचनाक अधिकार) सँ देखार करैबला आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइबला असली चरित्र मंजूरक कथा अछि।

विश्वासघात: नेशनल हाइवेक जमीनक मुआवजामे ढेर रास पाइ देल जाइ छै आ ओकरा हड़पै लेल पारिवारिक सम्बन्धक बलि चढ़ि जाइ छै।

१५. मैथिली नाट्य-समीक्षाक आधार: पाठ, मंचनीयता आ तुलनात्मक पद्धति

सारांश

ई अध्याय नाटककेँ मात्र लिखित पाठ नहि, अपितु अभिनय, दर्शक, मंच-संरचना, लोक-स्मृति आ प्रस्तुति-व्यवहारक संयुक्त कला मानि समीक्षा-पद्धतिक आधार स्पष्ट करैत अछि। संग्रहक समीक्षा-प्रयोगसँ भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य रंगचिन्तन, चीनी सौन्दर्यदृष्टि आ इजरायली प्रदर्शन-अध्ययनक तुलनात्मक उपयोगक एक कार्यकारी रूप उभरैत अछि; उद्देश्य कोनो बाहरी सिद्धान्त थोपब नहि, अपितु नाट्य-पाठमे सक्रिय अर्थ-स्तरकेँ विभिन्न आलोचनात्मक कोणसँ खोलब अछि।

बीजशब्द: मैथिली नाटक; रंगमंच; मंचनीयता; तुलनात्मक समीक्षा; लोकनाट्य; प्रदर्शन-अध्ययन

कुणालक “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक” समकालीन मैथिली नाट्य-साहित्यक एहन संग्रह अछि जे मूल अन्तर्वस्तु आ रूप-विधान, दुनू दृष्टिसँ, मंच-केन्द्रित अछि। तेँ एकर समीक्षा करैत काल मात्र लिखित पाठक विवेचन पर्याप्त नहि; अभिनय, मंचनीयता, दर्शक-संवाद, संगीत, गति, रिक्त स्थान आ प्रस्तुति-इतिहास सेहो आलोचनाक केन्द्रमे आबैत अछि।

एहि पुस्तकमे अपनाओल समीक्षा-पद्धति चारि तुलनात्मक दिशाकेँ एकहि आलोचनात्मक धरातल पर रखैत अछि—भारतीय नाट्य आ काव्यशास्त्र, पाश्चात्य नाट्य-विचार, चीनी नाट्य-सौन्दर्यशास्त्र आ इजरायली प्रदर्शन-अध्ययन। चारू दिशाक उपयोग समानता सिद्ध करबाक लेल नहि, अपितु रचना-कौशल, अभिनय-प्रतिमा, कथा-संरचना, सामाजिक अर्थ आ दर्शकीय अनुभवक अलग-अलग स्तर चिन्हबाक लेल कएल गेल अछि।

भारतीय पक्षमे रस, लोकधर्मी-नाट्यधर्मी भेद, ध्वनि, वक्रोक्ति, पात्र-प्रकार आ ज्ञानमीमांसात्मक तर्क प्रमुख उपकरण बनैत अछि। पाश्चात्य पक्षमे अनुकरण, अभिज्ञान, विरचन-प्रभाव, मेटाथिएटर, कार्निवालेस्क, अस्तित्ववाद, स्मृति आ स्त्री-कर्तृत्व सन अवधारणा नाटकीय क्रिया आ सामाजिक अर्थकेँ पढ़बाक साधन बनैत अछि।

चीनी सौन्दर्यदृष्टि संरचना, रिक्त-पूर्ण, पात्र-वर्ग, भाव-परिवेश, निष्ठा, प्रश्नोत्तर आ परिवर्तनक रूपकेँ देखबाक दोसर बाट खोलैत अछि। इजरायली रंग-अध्ययनक उपयोग प्रदर्शनक प्रतिमात्मकता, भाषा-पुनरुद्धार, पवित्र पाठ, स्मृति, साक्ष्य आ सांस्कृतिक आत्म परिचयक प्रश्न पर केन्द्रित अछि।

एहि पद्धतिक मूल नियम ई अछि जे सिद्धान्त रचनाक ऊपर आरोपित नहि हो; नाटकक दृश्य, संवाद, मंच-व्यवहार आ संरचनासँ जे प्रश्न उठैत अछि, सिद्धान्त ओहि प्रश्नक विवेचनक साधन बनए। तखन तुलनात्मक समीक्षा बाहरी नामक प्रदर्शन नहि रहि, नाट्य-पाठक आन्तरिक अर्थ-संरचना खोलबाक अनुशासित प्रक्रिया बनैत अछि।

१६. कुणालक नाट्य-शिल्प: लोकनाट्य, शास्त्र आ आधुनिकता

सारांश

कुणालक रंगमंचीय भाषाक सभसँ बड़का विशेषता थिक तीन परम्पराक सायास संश्लेषण। एक दिस ओ शास्त्रीय संस्कृत-नाट्यक उपकरण-पूर्वरंग, सूत्रधार-नटी, नांदी-सदृश वंदना-अपनबैत छथि; दोसर दिस मिथिलाक लोक-रंगमंचक ('नाच') तत्त्व-समाजी (कोरस), विदूषक 'विपटा', सूग्गा-कथावाचक, समवेत गायन-नृत्य, दर्शककेँ सोझ सम्बोधन आ रिक्त/स्तरित मंच-केँ...

बीजशब्द: लोकनाट्य; नाट्यशास्त्र; आधुनिक रंगमंच; ब्रेख्त; मंचनीयता; बहु-भूमिका

कुणालक रंगमंचीय भाषाक सभसँ बड़का विशेषता थिक तीन परम्पराक सायास संश्लेषण। एक दिस ओ शास्त्रीय संस्कृत-नाट्यक उपकरण-पूर्वरंग, सूत्रधार-नटी, नांदी-सदृश वंदना-अपनबैत छथि; दोसर दिस मिथिलाक लोक-रंगमंचक ('नाच') तत्त्व-समाजी (कोरस), विदूषक 'विपटा', सूग्गा-कथावाचक, समवेत गायन-नृत्य, दर्शककेँ सोझ सम्बोधन आ रिक्त/स्तरित मंच-केँ केन्द्रमे रखैत छथि; आ तेसर दिस आधुनिक रंगमंचक आत्म-सन्दर्भिता आ 'अलगाव' क प्रविधि उपस्थित अछि।

एहि अंतिम बिन्दु पर पश्चिमी नाट्य-चिन्तनक सन्दर्भ प्रासंगिक अछि। ब्रेख्तक 'महाकाव्यात्मक रंगमंच' (एपिक थिएटर) आ ओकर 'विरचन/अलगाव-प्रभाव'-जाहिमे दर्शककेँ बेर-बेर स्मरण कराओल जाइत अछि जे ओ नाटक देखि रहल छथि- कुणालक रंगमंचमे लोक-रूपक स्वाभाविक अंग बनि क' अबैत अछि। 'चालिस चोर' क भाँट-वृत्त, भूमिका-त्याग आ वैकल्पिक-अंतक वाद-विवाद; 'बिदापत' मे विपटाक बेर-बेरक टोकाटोकी "गड़ी आगाँ बढ़ाउ!"; आ 'कुसमा-सलहेस' मे हिरामन-विपटाक मेटा-कथन-ई सभ 'चतुर्थ भित्ति' केँ निरन्तर तोड़ैत अछि। उल्लेखनीय ई जे ब्रेख्त एहि प्रविधिकेँ पश्चिममे जतय अवांगार्द-प्रयोगक रूपमे प्रस्तुत कएलनि, ओतय मिथिलाक 'नाच' मे ओ सदासँ अंतर्निहित छल- कुणाल यएह देशज-आधुनिकताकेँ उद्घाटित करैत छथि।

मंचनीयताक प्रति कुणालक सजगता असाधारण अछि। 'चालिस चोर' क अंतमे ओ लिखैत छथि जे एहि नाटकक ४५-मिनट, ६०-मिनट आ एक-घंटा-तीन रूप अछि, आ एकर एक चारिम 'ध्वनि-नाट्य' (रेडियो-नाटक) शृंखलाक तेरह प्रकरण सेहो प्रसारित भेल। ओ ईहो सुझबैत छथि जे एक अभिनेता एकाधिक पात्रक अभिनय करथि। एहि सूचना सभसँ स्पष्ट अछि जे ई आलेख रंगमंचक व्यावहारिक आवश्यकताकेँ ध्यानमे राखि लिखल गेल-ई 'अभिनय-योग्य' पाठ थिक, 'अभिनेय' क मात्र कल्पना नहि।

१७. लालदासक मिथिला रामायणमे कुण्डलिया आ छन्द-विवेचन

सारांश

लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक वा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग लालदासक रामायण चौपाइसँ सृजित अछि। बुझू जे ९५ प्रतिशत भाग चौपाइ, आ फेर बाँचल भागमे रूपमाला छन्द आ गीतिका। मुदा हम एतऽ कुण्डलियाक चर्चा कऽ रहल छी, जे बहुत कम मात्रामे अछि मुदा हमरा ओ बहुत प्रभावित करैत अछि।

बीजशब्द: लालदासक · मिथिला · रामायणमे · कुण्डलिया · छन्द · विवेचन · ह्रस्व

लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक वा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग

१

लालदासक रामायण चौपाइसँ सृजित अछि। बुझू जे ९५ प्रतिशत भाग चौपाइ, आ फेर बाँचल भागमे रूपमाला छन्द आ गीतिका।

मुदा हम एतऽ कुण्डलियाक चर्चा कऽ रहल छी, जे बहुत कम मात्रामे अछि मुदा हमरा ओ बहुत प्रभावित करैत अछि। कुण्डलियाक प्रकृति रुबाइसँ मिलैत अछि आ जँ अहाँ ओमर खय्यामक रुबाइ पढ़ब तँ कुण्डलियासँ प्रेम करऽ लागब।

कुण्डलिया अछि की? कुण्डलिया बुझै लेल अहाँकेँ दोहा आ रोला बुझऽ पड़त। लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलियाक अलाबे रोला आ दोहा सेहो अहाँकेँ भेटत। मुदा एकर सम्मिलन अछि कुण्डलिया।

दोहा

दोहा मात्रिक छन्द अछि। दोहामे दू पाँती आ चारि चरण होइत अछि। पहिल चरणमे १३, दोसर चरणमे ११, तेसर चरणमे १३आ चारिम चरणमे ११ मात्रा होइत अछि। पहिल आ तेसर चरणक आरम्भ जगणसँ (जगण U। U) नै हएत आ दोसर आ चारिम चरण अन्त हएत दीर्घ-ह्रस्वसँ।

रोला

रोला सेहो मात्रिक छन्द अछि। रोलामे चारि पाँती आ आठ चरण होइत अछि। पहिल चरणमे ११, दोसर चरणमे १३, तेसर चरणमे ११ आ चारिम चरणमे १३ मात्रा, पाँचम चरणमे ११, छअम चरणमे १३ मात्रा होइत अछि। सभ पाँतीक पहिल चरणक अन्तमे दीर्घ-ह्रस्व, वा ह्रस्व-ह्रस्व-ह्रस्व होइत अछि। सभ पाँतीक दोसर चरणक अन्तमे चारिटा ह्रस्व, वा दूटा दीर्घ, वा दीर्घ-ह्रस्व-ह्रस्व (भगण। U U), वा ह्रस्व-ह्रस्व-दीर्घ (सगण U U।) होइत अछि। रोलाक प्रारम्भ ह्रस्व-दीर्घ-ह्रस्वसँ नै करू।

कुण्डलिया

दोहा आ रोलाक कुण्डली (मिश्रण) भेल कुण्डलिया। दोहा लिख दियौ, फेर दोहाक अन्तिम चरणकेँ (११ मात्रा बला) रोलाक पहिल चरण बना दियौ (पुनरावृत्ति) आ फेर रोला जोड़ू। खाली ई ध्यान राखू जे दोहाक पहिल चरणक पहिल शब्द आ रोलाक अन्तिम चरणक अन्तिम शब्द एक्के रहए। कुण्डलियाक पहिल शब्द आ अन्तिम शब्द एक्के होइए। कुण्डलियाक चारिम आ पाँचम चरण सेहो एक्के होइए।

२

आब सोझे पहुँचि जाउ मिथिला रामायणक सुन्दर काण्डक अन्तमे जतऽ अहाँकेँ चारिटा कुण्डलिया भेटत।

कुण्डलिया दोहा (मैथिली अकादेमी)

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

देल प्रमाणहिं राज्य पद तनि पद रहु मन लीन॥

तनि पद रहु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लालक दुख घालक॥

लोकपाल यम काल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अधनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दूर।

तनिपर प्रभु अनुकूल रहि, करथि मनोरथ पूर॥

करथि मनोरथ पूर क्रूर सौं सदा बचाबथि।

धन जन विजय विभूति जूति सुख तनिक बढ़ाबथि॥

काम आदि सौं बचथि भक्ति पाबथि अविनाशिनि।

पापताप सभ तनिक हरथि गंगा अघयाशिनी॥२॥

चितचकोर की चाख नित, विषय विषम अंगार।

सीतारामक भजन भल, कर फल अमिय अहार॥

कर फल अमिय अहार भार संसारक छोड़ी।

लेल सकल पद ब्रह्म भक्त भव बन्धन तोड़ी॥

पतितहुँ काँ गति जतय ततय रहि लहु सुख समुचित।

हित निश्चित निज जानु अपर भव विषयक अनुचित॥३॥

मन विहङ्ग कति दुख सहह भवपिंजर मे आबि।

गहह लाल जौं सुख चहय श्रीपद तरुवर पाबि॥

श्रीपद तरुवर पाबि गाबि रहु रामकथा नित।

नहि तेहि सौं अछि अपर युक्ति कल्याण त्राण हित॥

कत पातकि भव सिन्धु तरल नहि रहल एक क्षण।

गाबि गाबि हरि कथा यथा मति लाबि एक मन॥४॥

उपरका पाठ मैथिली अकादेमीक पोथीसँ लेल गेल अछि।

३

मात्रिक गणना

मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुर' आ 'लघ' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ - ह्र्स्व आर आ, ई, ऊ, ॠ, ए. ऐ, ओ, औ- दीर्घ स्वर अछि। ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि। क्+अ= क, क्+आ=का। एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा। १. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघ' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि। २. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुर' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -। ३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि। ४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

जेना कहल गेल अछि जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ होएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व होएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतए मात्रा गानल जाएत एहि तरहेँ: -

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

क्ष= क् + ष= ०+१

त्र= त् + र= ०+१

ज्ञ= ज् + ञ= ०+१

श्र= श् + र= ०+१

स्र= स् +र= ०+१

शृ =श् +ऋ= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + ऽ = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नहि होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग) । हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य होएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क केँ क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तेँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नहि अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ। =दूटा ह्रस्व U

४

छन्दोभङ्ग

आब लालदासक मिथिला रामायणक चारू कुण्डलियापर आउ। अहाँकेँ स्पष्टरूपेँ छन्दोभङ्ग भेटि जायत। कवि लालदास तँ छन्दोभङ्ग कऽ नै सकैत छथि। एतऽ टाइपिंग मिस्टेक तँ स्पष्ट रूपेँ नै अछि। तखन ई मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ मैथिली अकादेमीक सम्पादक वा प्रूफरीडरक काज भऽ सकैए, जे वर्तनीक एकरूपता अनबा लेल छन्दोभङ्ग केलन्हि। मुदा साहित्य अकादेमीक लालादास रामायण

(सम्पादक रामदेवझा) मे छन्दोभङ्ग नै भेटत, से रामदेव झा केर दावा छलन्हि आ हुनकापर मूलपाठकेँ परिवर्तित करबाक जे आरोप लगाओल गेलन्हि आ जे आरोप लगेलन्हि से मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, से हुनकर कहब छलन्हि अपन उत्तरमे। मूलपाठसँ अन्तर छन्दोभङ्ग ठीक करबाक उद्देश्यसँ ओ केलन्हि से हुनकर दावा छलन्हि। माने कुण्डलिया छन्द जँ लालदास लिखने छथि तँ सम्पादककेँ एतेक तँ ज्ञान हेबाके चाही जे ओ देखय जे खाली हेडिंग कुण्डलिया देने काज नै चलत। आ रामदेव झा जीक विचारे साहित्य अकादेमीक लालादास रामायणकेँ अन्तिम पाठ मानबाक चाही। आब देखू साहित्य अकादेमीक पाठ।

रामादेव झा द्वारा सम्पादित लालदासक कुण्डलिया (साहित्य अकादेमी)

कुण्डलिया दोहा

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

देल प्रमाणहिं राज्य पद तनि पद रहु मन लीन॥

तनि पद रहु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लालक दुख घालक॥

लोकपाल यम काल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अधनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दूर।

तनिपर प्रभु अनुकूल रहि, करथि मनोरथ पूर॥

करथि मनोरथ पूर क्रूर सौं सदा बचाबथि।

धन जन विजय विभूति जूति सुख तनिक बढ़ाबथि॥

काम आदि सौं बचथि भक्ति पाबथि अविनाशिनि।

पापताप सभ तनिक हरथि गंगा अघनाशिनी॥२॥

चितचकोर की चाख नित, विषय विषम अंगार।

सीतारामक भजन भल, कर फल अमिय अहार॥

कर फल अमिय अहार भार संसारक छोड़ी।

लेल सकल पद ब्रह्म भक्त भव बन्धन तोड़ी॥

पतितहुँ काँ गति जतय ततय रहि लहु सुख समुचित।

हित निश्चित निज जानु अपर भव विषयक अनुचित॥३॥

मन विहङ्ग कति दुख सहह भवपिंजर मे आबि।

गहह लाल जौं सुख चहय श्रीपद तरुवर पाबि॥

श्रीपद तरुवर पाबि गाबि रहु रामकथा नित।

नहि तेहि सौं अछि अपर युक्ति कल्याण त्राण हित॥

कत पातकि भव सिन्धु तरल नहि रहल एक क्षण।

गाबि गाबि हरि कथा यथा मति लाबि एक मन॥४॥

ओना तँ मैथिली अकादेमीक पाठ आ ऐ पाठमे खास कोनो अन्तर नै अछि, मात्र विभक्ति आ दूटा शब्द कतै सटायल गेल अछि आ कतौ फराक कऽ देल गेल अछि। दोसर कुण्डलियाक अन्तिम शब्द अघयाशिनी केँ अघनाशिनी कऽ देल गेल अछि।

कर्णाटकक गोकर्ण गंगावली आ अधनाशिनी धारपर अछि आ 'पापताप सभ तनिक हरथि गंगा' माने पापनाशिनी गंगा माने 'अधनाशिनी' प्रयोग समुचित अछि, 'अघनासिनी' नै, प्रायः टाइपिंग मिस्टेक अछि।

ओना तँ छन्दोभङ्ग ठीक करबाक दावा तँ पुष्ट नै भेल, मुदा शब्दक उचित प्रयोगक प्रयास भेल अछि से मैथिली अकादेमीक पाठसँ साहित्य अकादेमीक पाठ हमरा श्रेयस्कर लागि रहल अछि।

१८. भाषा, छन्द आ काव्य-सौन्दर्य: रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

सारांश

ई अध्याय कुणालक नाटकमे लोक-मुहावरा, तत्सम-प्रधान पौराणिक भाषा, गीत, विद्यापति-पद, श्लेष, ध्वनि आ वक्रोक्तिक नाटकीय भूमिकाक विवेचन करैत अछि। भाषा एतय सजावट नहि, पात्र, परिवेश, स्मृति आ भाव-स्तर निर्मित करबाक सक्रिय रंगमंचीय साधन अछि।

बीजशब्द: मैथिली भाषा; छन्द; रस; ध्वनि; वक्रोक्ति; विद्यापति; नाट्य-काव्य

कुणालक भाषा एकल नहि, अपितु बहुस्तरीय अछि। लोकनाट्य-त्रयीमे ओ ठेठ ग्रामीण मैथिली लोक-मुहावरा, अनुप्रास-बहुल तुकबन्दी आ गीत-शैलीक प्रयोग करैत छथि-जतय 'हास्य' आ 'शृंगार' क लोक-रूप प्रधान अछि। प्रेम-चतुष्टयमे ओ अपेक्षाकृत तत्सम-प्रधान, संस्कृत-निष्ठ, परिनिष्ठित मैथिली अपनबैत छथि-जे आश्रम-वातावरण आ पौराणिक गरिमाक अनुकूल अछि। एहि भाषिक-कौशलमे कुणालक पात्र आ परिवेश-बोध स्पष्ट झलकैत अछि।

वक्रोक्ति-दृष्टिसँ लोकनाट्य-नाटक सभमे शब्द-वक्रता (कुन्तकोक्त 'वक्रोक्ति') चरम पर अछि-'सरदारीक मुरेठा' आ कुसमाक 'लहठी' (बेड़ी बनाम चूड़ी), 'चुमाओन बनाम श्राद्ध', 'धूर्त-शिरोमणि' क उपाधि-एतय अर्थक दोहरापन आ श्लेष नाटकीय ऊर्जाक स्रोत थिक। ध्वनि-दृष्टिसँ 'बिदापत' क समापन ('पद' मे जीवन) आ 'कुसमा-सलहेस' क प्रेम-टेक-दुनू अभिधासँ ऊपर उठि व्यंग्यार्थ (सूचित अर्थ) मे प्रतिष्ठित होइत अछि, जतय करुणक नीचाँ शान्त आ शृंगारक ऊपर अध्यात्म ध्वनित होइत अछि।

विद्यापति-पदक प्रयोग कुणालक एक सायास काव्य-नीति थिक-ई मात्र अलंकरण नहि, अपितु मिथिलाक काव्य-स्मृतिकेँ रंगमंचक जीवित अंग बना देबाक उपक्रम थिक। 'बिदापत' मे ओ विद्यापति-पदक नाट्य-भाष्य रचैत छथि, तँ 'सुकन्या' मे वसंत-पद वातावरण-निर्मितिक उपकरण बनैत अछि- एहि प्रकारे पद-परम्परा आ नाट्य-परम्परा एक-दोसरमे विलीन भ' जाइत अछि।

१९. वैचारिक धरातल: समानांतर साहित्य-दृष्टि आ रंगमंच

सारांश

ई अध्याय कुणालक नाट्य-कर्ममे लोक-कलाकार, वंचित समुदाय, स्त्री-कर्तृत्व आ सांस्कृतिक समन्वयक उपस्थितिकेँ समानांतर साहित्य-दृष्टिसँ देखैत अछि। नाट्य-संसारक वैचारिकता नारेक रूपमे नहि, कथा, पात्र, लोक-रूप आ मंच-व्यवहारक भीतर सक्रिय सामाजिक पुनर्पाठक रूपमे प्रकट होइत अछि।

बीजशब्द: समानांतर साहित्य; लोक-रंगमंच; सबाल्टर्न; स्त्री-कर्तृत्व; सांस्कृतिक समन्वय; मिथिला

विदेह समानांतर-साहित्य-दृष्टिक परिप्रेक्ष्यमे एहि संग्रहक महत्त्व विशेष रूपसँ उद्घाटित होइत अछि। संस्थागत साहित्येतिहास जतय अभिजन-केन्द्रित, मुद्रित आ 'शिष्ट' परम्पराकेँ केन्द्रमे रखैत आएल अछि, ओतय कुणाल अपन सम्पूर्ण नाट्य-कर्मकेँ लोक-रंगमंच आ लोक-आख्यानक भूमि पर ठाढ़ करैत छथि-आ ओहि अनाम 'नाच'-कलाकार लोकनिकेँ अपन समर्पणमे साहित्येतिहासक केन्द्रमे अनैत छथि जिनकर नाम कतहु अंकित नहि।

'कुसमा-सलहेस' क दुसाध (दलित) लोक-देवता-नायककेँ एक जन-नायक, अभय आ स्वातंत्र्यक प्रतीक बना क' प्रस्तुत करब एहि दृष्टिक सर्वाधिक प्रखर अभिव्यक्ति थिक- ई सबाल्टर्न-स्वरक रंगमंचीय प्रतिष्ठापन थिक। 'बिदापत' मे महाकवि विद्यापतिकेँ संस्थागत प्रतिमासँ उतारि लोक-रंगमंचक जीवित नायक बनाएब; आ प्रेम-चतुष्टयमे पौराणिक नायिका सभकेँ-श्रुवावती, सुकन्या, श्वेता, सुप्रभा-आत्मनिर्णयकारी, कर्ता-स्त्रीक रूपमे पुनर्पाठ करब- ई सभ एक्के समानांतर-इतिहास-दृष्टिक विभिन्न आयाम थिक।

एहिमे जातीय (दलित-सबाल्टर्न), लैंगिक (स्त्री-कर्तृत्व) आ सांस्कृतिक (हिन्दू-मुस्लिम समन्वय) तीनू स्तरक प्रतिरोध एक्के संग सक्रिय अछि-मुदा कतहु नारेबाजीक रूपमे नहि, अपितु लोक-रूपक स्वाभाविक प्रवाहमे विलीन भ' क' । यएह कुणालक वैचारिक परिपक्वताक प्रमाण थिक।

भाग २

अनुप्रयुक्त नाट्य-समालोचना

समाज, अस्मिता आ सांस्कृतिक समीक्षा

२०. मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"]

सारांश

मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक“खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री” आशान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"] १. खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: कामिनीक काव्य-संग्रहक समीक्षा२. शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम": समीक्षा आ कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण

बीजशब्द: नारी · केन्द्रित · समीक्षाशास्त्र · क्वीर · फेमिनिज्म · सहित · सन्दर्भ · कामिनीक

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित] [सन्दर्भ- कामिनीक "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"]” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। [सन्दर्भ- कामिनीक “ खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री” आ शान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"] १.खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: कामिनीक काव्य-संग्रहक समीक्षा २. शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम": समीक्षा आ कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण कामिनीक काव्य-संग्रह "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" (2017) आधुनिक मैथिली कवितामे स्त्रीवादी चेतनाक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि। शीर्षक स्वयं एकटा सशक्त काव्यात्मक कथन अछि - स्त्रीक अस्तित्व कोना पितृसत्तात्मक समाजमे विखंडित होइत जाइत छैक, कोना ओ अपन विभिन्न भूमिकामे (पत्नी, माय, बेटी, बहिन, बहु) विभाजित भ' क' अपन मौलिक अस्मिता हेरा दैत छथि।

मैथिली लेल एकटा नारी केन्द्रित समीक्षाशास्त्र [क्वीर-फेमिनिज्म सहित]

[सन्दर्भ- कामिनीक“खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री” आशान्ति लक्ष्मी चौधरीक"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"]

१. खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: कामिनीक काव्य-संग्रहक समीक्षा२. शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम": समीक्षा आ कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण

१

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: कामिनीक काव्य-संग्रहक समीक्षा

प्रस्तावना: शीर्षकक गहन अर्थ

कामिनीक काव्य-संग्रह "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" (2017) आधुनिक मैथिली कवितामे स्त्रीवादी चेतनाक एकटा महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि। शीर्षक स्वयं एकटा सशक्त काव्यात्मक कथन अछि - स्त्रीक अस्तित्व कोना पितृसत्तात्मक समाजमे विखंडित होइत जाइत छैक, कोना ओ अपन विभिन्न भूमिकामे (पत्नी, माय, बेटी, बहिन, बहु) विभाजित भ'क'अपन मौलिक अस्मिता हेरा दैत छथि। ई विखंडन खाली सामाजिक नहि, मनोवैज्ञानिक सेहो अछि।

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री (शीर्षक कविता)

ई संग्रहक केन्द्रीय कविता अछि जे स्त्री-अस्तित्वक विखंडनक त्रासदी प्रस्तुत करैत अछि:

"स्त्रीक देहक संग-संग / बिकाइत अछि आब / स्त्रीक कोखि आ दूध सेहो / स्त्री बेचि अबैत अछि / नहि जानि कोन खगता मे / अपन ममतो"

प्रमुख विशेषता:

विखंडनक बहुआयामिकता: कविता केवल शारीरिक विखंडनक नहि, मानसिक आ भावनात्मक विखंडनक सेहो चर्चा करैत अछि।

आत्मसंघर्षक चित्रण: स्त्री अपन विभिन्न भूमिकामे कोना अपन मौलिक स्वरूप हेरा दैत छथि।

करुण स्वर: "एहन कठोर तँ / ओ नहि छल पहिने / या बना देलियै" - ई पंक्ति समाजक जिम्मेदारी सेहो स्थापित करैत अछि

नोर

ई कविता स्त्रीक मौन पीड़ाक प्रतीक अछि:

"जखन कखनो खसैत छै / कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर / ओ मात्र पानिक / किछु बुन्द नहिरहैत अछि / ओ रहैत अछि / अन्याय आ अत्याचारक विरुद्ध"

साहित्यिक गुण:

प्रतीकात्मकता: नोरमात्र नोर नहि, विद्रोहक प्रतीक

सामाजिक टिप्पणी: पुरुषक असंवेदनशीलता ("एहन कठोर तँ / ओ नहि छल पहिने")

प्रश्नाकुलता: "हिला देबाक ताकति / कोना बिला गेल"

ई केहन विडम्बना

स्त्री शिक्षाक विडम्बनाक शक्तिशाली व्यंग्य:

"जे स्त्रीक आँचर मे मुँह छुपबैत अछि / जे स्त्रीक शरीर कें दोहन करैत अछि / जे स्त्रीक बिना जीवि नहि सकैत अछि / वैह स्त्रीक मान-सम्मान पर / उठबैत अछि सवाल"

काव्य-शिल्प:

अनुप्रासक प्रयोग: "मुँह छुपबैत", "कुलटा अछि", "नरकक खान अछि"

समानांतर संरचना: तीनटा प्रश्नाकुल पंक्तिक पुनरावृत्ति

तीव्र व्यंग्य: पुरुषकदुमर्जाककटु आलोचना

अन्तर्मन

प्रेमक गहन मनोविश्लेषणात्मक कविता:

"जँ अहाँ करैत छी / कोनो स्त्री सँ प्रेम / तऽ रातिक अन्हरिया मे नहि / दिनक इजोत मे"

विशेष गुण:

नैतिक स्पष्टता: प्रेमझाँपल नहि, खुला हेबाक चाही

सामाजिक दायित्व: समाजक आगाँ उत्तरदायी प्रेम

भावनात्मक गहनता: आत्मीयताक सत्यअर्थ

ब्रह्मावाक्य

पितृसत्तात्मक धार्मिक संरचनाक तीव्र आलोचना:

"शकीना खातुन / आइ बड़ उदास अछि / बेर-बेर नोरा जाइत छै / ओकर आँखि"

प्रमुख तत्त्व:

ऐतिहासिक संदर्भ: शकीना खातुनक कथा

धार्मिक आलोचना: "बाल-बच्चा सँ भरल-पुरल घर" वाला पुरुषक पाखंड

स्त्रीवादी विमर्श: धर्मक नामपर स्त्री-शोषण

पुनर्नवा

आत्म-पुनर्निर्माणक सशक्त कविता:

"आइ अहाँक नामे / तिल-कुश तऽ कें / नहा एलो हम / बीच धार सँ / आइ सँ अतीत भेलों अहाँ / हमरालेल"

काव्य-विशेषता:

रूपकक प्रयोग: तिल-कुश, धार, स्त्रीत्वक प्रतीक

आत्मसम्मानक घोषणा: पुरुष-केन्द्रितताक अस्वीकार

भाषिक सौन्दर्य: लोक-परंपराक प्रयोग (तिल-कुश)

अग्नि-परीक्षा

रामायणक सीताक अग्निपरीक्षाक समकालीन पुनर्पाठ:

"पुरुषक गलतीक सजा / स्त्री कियैभोगती/ अग्नि-परीक्षा / बेर-बेर सीते कियैदेती / सामाजक रीति-नीति"

महत्त्वपूर्ण पहलू:

मिथकीय पुनर्व्याख्या: सीताक अग्निपरीक्षाक प्रश्नांकन

लैंगिक न्यायक माँग: पुरुष किएक नहि देलक अग्निपरीक्षा?

सामाजिक आलोचना: दोहरा मानदंडक विरोध

स्त्रीक नियति

स्त्रीक सामाजिक नियतिक दार्शनिक विवेचन:

"धरतीक कोखि मे / पुनः समाय / अहाँ नीक नहि कैंलौंसीता / बन्द कऽ देलियै / सदा-सदाक लेल"

दार्शनिक गहनता:

नियतिवादक प्रश्नांकन: स्त्रीक नियति पूर्वनिर्धारित अछि की समाज द्वारा थोपल?

मिथकीय संदर्भ: सीताक धरती-प्रवेश

करुणा आ विद्रोह: मिश्रित भावक सुन्दर प्रस्तुति

दू मुट्ठी धान

आर्थिक शोषणक मार्मिक चित्रण:

"छाती जुराइत अछि / ई हमरे बाबाक लगाओल / कलम-गाछी छी / ई हमरे पिताक बनाओल घर छी"

प्रमुख विशेषता:

आर्थिक अधिकारक प्रश्न: स्त्रीक सम्पत्तिमे अधिकार

भावनात्मक तीव्रता: पैतृक सम्पत्तिक स्मृति

सामाजिक यथार्थ: कन्या-दानक परंपराक आलोचना

स्त्रीक धैर्य

धैर्यक सीमाक सशक्त प्रस्तुति:

"स्त्री हेबकीकोनोकम पेष बात छी / नहि छीकमपैघबात / तें तऽ / तें तऽ चुकबऽपड़ैत छै / स्त्री कें स्त्रीहेबाक दण्ड"

साहित्यिक गुण:

व्यंग्यात्मकस्वरूप: "चुकबऽपड़ैत छै"

तार्किक प्रवाह: क्रमिक तर्कक विकास

भावनात्मक तीव्रता: धैर्यक टूटनाइ

दोसर कृष्ण

आधुनिक संबंधक जटिलताक चित्रण:

"माधव! अहाँ केनाबिसरि गेलियै / की हम अहींक राधा छी / जकरा कहियो अहाँ / अपन कहनेछलियै"

प्रमुख तत्त्व:

मिथकीय समानता: राधा-कृष्णक आधुनिक संदर्भ

प्रेमक विडम्बना: परित्यागक पीड़ा

प्रश्नाकुलता: "ई वंशीवट / ई वृन्दावन / आइ सब मौन अछि"

कन्यादान मने गंगा स्नान

कन्या-दानक परंपराक तीव्र विरोध:

"कन्यादानकैल जाइत अछि / एखनो हमरा ओतय/ पिता! हाथ मे जव-कुशलऽ / अपन बेटीक हाथ/कोनो दोसर पुरुषक हाथमेदैत"

विशेष गुण:

परंपराक पुनर्परिभाषा: कन्यादानक संगहिगंगा-स्नान?

पितृसत्ताक आलोचना: बेटीक वस्तुकरण

आत्मसम्मानक घोषणा: हम करैतौं तँ की करितौं।

“.

तील-चाउर

स्त्री-स्वातंत्र्यक प्रतीकात्मक कविता:

माय कहियो नहि देलखिन तिला-सँकरैतपरतील-चाउर खेबाक लेल, टोल भरि बाँटिअबथिन, कहैत छलखिन जे बेटीक जीवन तँ ओनाहिये भारी छै, किए ओकरा तील खुआ कऽ ऋणी बनबियै।

काव्य-शिल्प:

लोक-परंपराक प्रयोग: तील-चाउरक प्रतीक

सामाजिक टिप्पणी: स्त्रीक अधिकारक हनन

प्रतीकात्मकता: तील-चाउर = स्त्री-स्वतंत्रता

”.

हम क्रीतदासी नहि

दासताक अस्वीकारक घोषणापत्र:

-माय रहती जीवन भरि / बाबूजीक संग / हुनक बंधुआ मजदूर बनि कें

प्रमुख विशेषता:

आत्मसम्मानक घोषणा: "हम क्रीतदासी नहि"

पीढ़ीगत अंतर: माँक बलिदान बनाम बेटीक विद्रोह

सामाजिक परिवर्तनक आकांक्षा: नव युगक स्वप्न

..

उत्स

स्मृति आ वर्तमानक द्वन्द्व:

-हम अहाँक पत्नीवेटा नहि / किछु आरो छी / जेना कि ककरो माय / ककरो बहिन / ककरो बेटी

साहित्यिक विशेषता:

बहुआयामी अस्मिता: स्त्रीक विविध भूमिका

आत्मान्वेषण: हम जे कहि रहल छी

भावनात्मक जटिलता: स्मृति आ वर्तमानक संघर्ष

“

मोफलर

शहरी जीवनक विडम्बनाक चित्रण:

-आइ एकटा मोफलर खरीदलौं/ आइ एकटा मोफलर देखलौं/ तऽ मोन पड़ि गेल

प्रमुख तत्त्व:

” भौतिकवादकआलोचना: शहरी जीवनक खोखलापन

स्मृतिक महत्त्व: गामक जीवनक मधुरता

तुलनात्मक विश्लेषण: शहर बनाम गाम

“

स्त्रीक रचना पुरुष

स्त्री-पुरुष संबंधक दार्शनिक विवेचन:

-जखन कखनो खसैत / पुरुषक माथ सँ घाम / स्त्री अपन आँचर सँ / पोछबै करतै

दार्शनिक गहनता:

सह अस्तित्वक दर्शन: स्त्री-पुरुषक परस्परावलंबन

कोमलताक शक्ति: स्त्रीक स्नेहक महत्त्व

समानताक माँग: "किये तऽ'पुरुष / स्त्रीयेक रचना छी"

द्रौपदी-1

महाभारतक द्रौपदीक समकालीन पुनर्पाठ:

-द्रौपदी! कतेक खण्ड मे / बँटल हेत / अहाँक भावना ओहि दिन / जहिया खण्ड-खण्ड मे विभक्त कऽ..

साहित्यिक गुण:

मिथकीय पुनर्व्याख्या: द्रौपदीक आधुनिक दृष्टि

बहुपतित्वक प्रश्नांकन: पाँच पति = विखंडन

स्त्री-अस्मिताक संकट: विभाजित अस्तित्व

द्रौपदी-2

द्रौपदीक चीरहरणक समकालीन प्रासंगिकता:

-द्रौपदी! असहजलागि रहल अछि / अहाँक खुजल केशक भार हमरा"

प्रमुख विशेषता:

चीरहरणक प्रतीक: आधुनिक स्त्रीक शोषण

कृष्णक अनुपस्थिति: रक्षकक अभाव

आत्मबलक आवश्यकता: स्वयं लड़बाक संकल्प

धरौआ साड़ी

सामाजिक रूढ़िक तीव्र आलोचना:

यशोदा जीक'ओ' /सरकारी बाबू / सब दिन आँखि खोलितहि”

विशेष गुण:

व्यंग्यात्मक लहजा: "यशोदा जीक"

सामाजिक पाखंडक भंडाफोड़: धार्मिक आडंबर

स्त्री-विरोधी परंपराक विरोध: मृत्युक बाद सेहो नियंत्रण

सम्बन्धहीन

आधुनिक संबंधक खोखलापनक चित्रण:

-अहाँक देलहा गुलाब / मुरझा गेल / सुखा गेलै ओकर पातो/ गंधतऽ पहिनहिं बिला गेल रहै

साहित्यिक विशेषता:

प्रतीकात्मकता: गुलाब = प्रेम

क्षयक चित्रण: संबंधक मृत्यु

भावनात्मक शून्यता: "मुरझा गेल"

समयक वेग

समयक क्रूरताक मार्मिक प्रस्तुति:

-क्षमा करब हे जननी / जीवनक एहि चारिमे अवस्था मे / जतय अहाँ कें बेगरता अछि

प्रमुख तत्त्व:

पीढ़ीगत संघर्ष: माँक वृद्धावस्था

सामाजिक दायित्व: परिवारक उपेक्षा

करुणा आ विवशता: "बिमारी आ चारिमपन"

बड़ मोन पड़ैए हमरा अपन घर

प्रवासक पीड़ाक भावुक अभिव्यक्ति:

-एत्तैकत्तौछल / हमर घर / जे आब नहि देखा रहल अछि

काव्य-सौन्दर्य:

नोस्टाल्जिया: घरक स्मृति

विस्थापनक पीड़ा: परदेशी जीवन

आत्मीयताक महत्त्व: घर = अपनत्व

परित्यक्ता

नियतिक क्रूरताक दार्शनिक विवेचन:

-कियैसदैव परित्यक्ता/ स्त्रीये होइत अछि / पुरुष कियै नहि होइत अछि परित्यक्त

विशेष गुण:

लैंगिक असमानताक प्रश्न:

किएक स्त्रीए परित्यक्ता?

दार्शनिक गहनता: नियति बनाम समाज

प्रश्नाकुलता: तीव्र प्रश्नक श्रृंखला

ई उचित नहि आर्य

रामायणक पुनर्पाठक साहसी प्रयास:

-प्रेम मे परित्याग / उचित नहि आर्य / अहाँ तऽ कहाइत छलहुँ

प्रमुख विशेषता:

मिथकीय चरित्रक पुनर्मूल्यांकन: रामक आलोचना

स्त्रीवादी दृष्टि: सीताक पक्षधरता

साहसी प्रश्नांकन: मर्यादाक पुनर्परिभाषा

हमलड़ब

आत्मबलक सशक्त घोषणा:

-हमलड़ब / अन्त-अन्त धरि / जामे धरि बँचल रहत

साहित्यिक गुण:

संघर्षक संकल्प: जीवन-पर्यन्त लड़ाई

आत्मविश्वासक घोषणा: एकटा स्त्री

प्रेरणादायक स्वर: भविष्यक आशा

चानदाइ

लोक-परंपराक सुन्दर प्रयोग:

-चानदाइ जखन चिंतित भेल रहथि / पहिल बेर सासुर

विशेष गुण:

लोक-काव्यक प्रभाव: चानदाइक कथा

सामाजिक यथार्थ: परिवारक द्वन्द्व

भावनात्मक सौन्दर्य: स्मृति आ वर्तमान

एहनो कत्तौभेलैए

सामाजिक परिवर्तनक आकांक्षा:

-हे भगवान! पुनमिया नहि बचतै/ एहि बेर

प्रमुख तत्त्व:

पुनर्जन्मक अस्वीकार: ई जीवन बहुत

करुण स्वर: पीड़ाक गहनता

आध्यात्मिक प्रश्नांकन: भगवानसँ शिकाइत

उपेक्षित

उपेक्षाक मनोवैज्ञानिक प्रभाव:

-जीवन सँ जुड़ि जाइत अछि / किछु चीज ऐना / जेओचीज भऽ जाइत अछि प्रधान

साहित्यिक विशेषता:

मनोविज्ञानक सूक्ष्म विश्लेषण: उपेक्षाक प्रभाव

भावनात्मक गहनता: दाइ राखि देलथि हमर नाम

आत्मान्वेषण: अपन पहचानक खोज

गीता

जीवन-दर्शनक काव्यात्मक प्रस्तुति:

-जिम्मेदारीक पहाड़ तर / दबल अछि गीता / चारि-चारि गो बेटी

प्रमुख विशेषता:

सामाजिक दायित्व: स्त्रीक बोझ

करुण चित्रण: जिम्मेदारीक पहाड़

तार-तार भेल जीवन

जीवनक विघटनक मार्मिक चित्रण:

-पहिल बेर जखनदेने रही / अपना हाथ मे हमर हाथ

साहित्यिक गुण:

स्मृति आ वर्तमानक द्वन्द्व: प्रेमक स्मृति

विघटनक पीड़ा: "तार-तार भेल जीवन"

भावनात्मक तीव्रता: करुण रस

एतेकभेलाक बादो

सामाजिक रूढ़िक विरोध:

-माथक घाम / जखनपैर दऽ खसैत अछि / कहाँ चलैत छैक पताएकटा स्त्री कें

विशेष गुण:

श्रमक मूल्यांकन: स्त्री-श्रमक उपेक्षा

लैंगिक असमानता: पुरुषक विशेषाधिकार

तीव्र प्रश्नांकन: "कोनोकहानी"

मौन

मौनक शक्तिक दार्शनिक विवेचन:

-गुलाबक पत्ती नहि अछि / अहाँक प्रेम / आ नहि बगुरककाँट

दार्शनिक गहनता:

मौनक महत्त्व: शब्दातीत प्रेम

सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति: "हमरा चाहैत"

प्रतीकात्मकता: मौन = गहन प्रेम

टूटल तार

आधुनिक जीवनक विडम्बना:

"महगाइ, बीमारी आ बेरोजगारी जकाँ / हमरालेल..

प्रमुख तत्त्व:

सामाजिक यथार्थ: महगाइक मार

आर्थिक संकट: बेरोजगारी

करुण चित्रण: जीवनक संघर्ष

पारो

स्त्री-स्वतंत्रताक सशक्त घोषणा:

-पारो आब सियान भऽ गेली / अपनहिंलैत छथि निर्णय / अपनालेल

साहित्यिक विशेषता:

आत्मनिर्णयक अधिकार: स्वतंत्र निर्णय

सामाजिक परिवर्तन: नवयुगक आगमन

आशावादी स्वर: भविष्यक स्वप्न

अल्हड़ हँसी

मातृत्वक सुन्दर चित्रण:

-कमलक फूल जकाँ / भभाकें हँसैत अछि'प्राची'"

काव्य-सौन्दर्य:

प्रकृति-चित्रण: कमलक उपमा

मातृत्वक आनंद: भभा कऽहँसब

कोमल भाव: स्नेहक अभिव्यक्ति

स्त्री आ बुद्ध

आध्यात्मिक समानताक प्रश्न:

-एहि सए दुःख सँ नीक एक दुःख / नीक तऽहोइतए' /जे बुद्ध बनिजइतहुँ

दार्शनिक गहनता:

आध्यात्मिक खोज: मुक्तिक आकांक्षा

लैंगिक प्रश्न: स्त्री किएक नहि बनत बुद्ध?

समानताक माँग: आध्यात्मिक अधिकार

आदि सँ अन्त धरि

जीवन-चक्रक दार्शनिक विवेचन:

-बर आ पीपरक जड़ि जकाँ / ततेक नै समायल छीहम..

प्रमुख विशेषता:

प्रकृतिक प्रतीक: बर-पीपरक जड़ि

आत्मान्वेषण: अस्तित्वक खोज

दार्शनिक प्रश्नांकन: जीवनक अर्थ

प्रतिकार

विद्रोहक सशक्त घोषणा:

"नील आसमानी चादरिसन / पसरल अछि / हमर सम्पूर्ण अस्तित्वपर..

साहित्यिक गुण:

प्रतिकारक संकल्प: शोषणक विरोध

आत्मबलक घोषणा: "हम की करी"

आशावादी स्वर: भविष्यक विश्वास

माय

मातृत्वक करुण चित्रण:

-कतेक नीक होइतए / की माय / कहियोबूढ़िनहि होइतथि

प्रमुख तत्त्व:

माँक बलिदान: जीवन-पर्यन्त त्याग

करुणाक गहनता: आत्मीयताक चित्रण

सामाजिक टिप्पणी: माँक उपेक्षा

पाखण्ड

धार्मिक पाखंडक तीव्र आलोचना:

-'त्रिया चरित्रम्पुरुषस्य भाग्यम्' /व्यंग्यसँ जपैत"

विशेष गुण:

धार्मिक आलोचना: शास्त्रक पुनर्पाठ

स्त्री-विरोधी सोचक भंडाफोड़: पाखंडक पर्दाफाश

व्यंग्यात्मक लहजा: तीव्र आक्रोश

मुक्ति

मुक्तिक आकांक्षाक काव्यात्मक अभिव्यक्ति:

-बड़ मनोयोग सँ / पुनीता केलक अछि / अपन पिताक श्राद्ध

साहित्यिक विशेषता:

धार्मिक पुनर्परिभाषा: स्त्रीक अधिकार

सामाजिक परिवर्तन: परंपराक तोड़

आत्मविश्वासक घोषणा: मुक्तिक मार्ग

ओ पुरुषार्थ कौन काजक

पुरुषार्थक पुनर्परिभाषा:

-हे समाजक भोष्मपितामह / कतेदिन धरि मौनरहबै“

प्रमुख तत्त्व:

पुरुषार्थक प्रश्नांकन: कोन काजक पुरुषार्थ?

सामाजिक उपेक्षाक आलोचना: मौन किएक?

लैंगिक समानताक माँग: समान अधिकार

विष सँ सविष

जीवनक विषक मनोवैज्ञानिक विश्लेषण:

-झड़कलही! / एहि नाम सँ / परिचित अछि जो

साहित्यिक गुण:

मनोवैज्ञानिक गहनता: विषक प्रभाव

आत्मान्वेषण: पहचानक संकट

दार्शनिक प्रश्नांकन: जीवनक अर्थ

अस्तित्व

अस्तित्वक दार्शनिक विवेचन:

-अहाँ लाख मेटायब / नहि मेटायत हमर अस्तित्व

दार्शनिक गहनता:

अस्तित्ववादी चिंतन: स्वतंत्र अस्तित्व

आत्मबलक घोषणा: अमिट उपस्थिति

विद्रोहक स्वर: शोषणक विरोध

रजनीगंधाक हँसी

काव्यात्मक सौन्दर्यक उत्कृष्ट उदाहरण:

-आँखि जखन मुनैत छी / कतहु किछु नहि देखाइत अछि

काव्य-सौन्दर्य:

प्रकृति-चित्रण: रजनीगंधाक प्रतीक

सूक्ष्म भावक अभिव्यक्ति: अंधकारमे हँसी

रहस्यात्मकता: गहन अर्थ

विश्वासक हथियार

विश्वासक महत्त्वक दार्शनिक विवेचन:

-एतहुका पुरुष आ वचनक / कोनो सम्बन्ध नहि

प्रमुख विशेषता:

विश्वासक संकट: पुरुषक वचन

सामाजिक यथार्थ: झूठक प्रभुत्व

करुण स्वर: विश्वासघात

फूल आ डारिक सम्बन्ध

संबंधक दार्शनिक विश्लेषण:

-फूल पुछैत अछि डारि सँ / हमरा-अहाँकबीच..

दार्शनिक गहनता:

संबंधक स्वरूप: फूल-डारिक प्रतीक

परस्परावलंबन: सहअस्तित्व

प्रकृतिक दर्शन: जीवनक सत्य

मझधार

जीवन-संघर्षक मार्मिक चित्रण:

-विवाहक आइ / सोलहम बरख बीति रहल अछि

साहित्यिक गुण:

समयक क्रूरता: वर्षक गणना

एकाकीपनक चित्रण: अकेलापनक पीड़ा

करुण रस: गहन वेदना

अजन्मी-1

अजन्मे शिशुक मार्मिक चित्रण:

-ठुनकि-ठुनकि/ कनैत अछिदेवकी..

प्रमुख तत्त्व:

मातृत्वक पीड़ा: अजन्मे शिशुक हत्या

सामाजिक यथार्थ: कन्या-भ्रूणहत्या

करुण चित्रण: मार्मिक अभिव्यक्ति

अजन्मी-2

कन्या-भ्रूणहत्याक तीव्र विरोध:

-हे! हमर पिता / अगर अहाँक माथ पर”

विशेष गुण:

सामाजिक आलोचना: पुत्र-मोहक विरोध

पितृसत्ताक भंडाफोड़: लैंगिक भेदभाव

तार्किक प्रवाह: क्रमिक तर्क

स्त्री देहक मीना बाजार

स्त्री-वस्तुकरणक तीव्र आलोचना:

-बदलय पड़तै/ एहि समाज कें"

साहित्यिक विशेषता:

वस्तुकरणक विरोध: स्त्री-देहक व्यापार

सामाजिक परिवर्तनक माँग: क्रांतिक आवश्यकता

तीव्र आक्रोश: व्यंग्यात्मक स्वर

मान

आत्मसम्मानक सशक्त घोषणा:

-जहिना लगबैत छियै / गमला मे तुलसी"

प्रमुख विशेषता:

आत्मसम्मानक महत्त्व: स्वाभिमानक रक्षा

सामाजिक यथार्थ: मान-अपमानक द्वन्द्व

प्रतीकात्मकता: तुलसीक पूजा

समग्र मूल्यांकन

खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री: बहुआयामी समीक्षात्मक विश्लेषण

प्रस्तावना: अन्तर्विषयक दृष्टिकोणक आवश्यकता

कामिनीक काव्य-संग्रह "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" (2017) केवल एकटा साहित्यिक कृति नहि, बल्कि ज्ञानमीमांसीय, सामाजिक-राजनीतिक आ सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्नक एकटा जटिल संजाल अछि। एहि कृतिक समुचित मूल्यांकन लेल चारि प्रमुख विश्लेषणात्मक ढाँचाक प्रयोग आवश्यक अछि:

1. गंगेशक नव्य-न्याय दर्शन: ज्ञानमीमांसीय आधार आ प्रमाण-सिद्धान्त

2. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क: मैथिली साहित्यिक परंपरामे स्थान

3. भारतीय सौन्दर्यशास्त्र: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य सिद्धान्त

4. पाश्चात्य आ चीनी सिद्धान्त: फेमिनिज्म, पोस्ट-कोलोनियलिज्म, ताओवादी दर्शन

खण्ड १: गंगेशक नव्य-न्याय दर्शनसँ मूल्यांकन

१.१ गंगेशक तत्त्वचिन्तामणि आ काव्य-ज्ञानमीमांसा

गंगेश उपाध्यायक (१३२५ ई.) तत्त्वचिन्तामणिमे प्रमाण-सिद्धान्तक जे विकास भेल, ओकर प्रयोग काव्यिक ज्ञान-संरचनाक विश्लेषण लेल अत्यन्त प्रासंगिक अछि। गंगेशक अनुसार चारि प्रमाण अछि:

१.१.१ प्रत्यक्ष प्रमाण (Perceptual Knowledge)

गंगेशक परिभाषा: "इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानम् अव्यपदेश्यं व्यवसायात्मकं प्रत्यक्षम्"

कामिनीक कविता प्रत्यक्ष अनुभवसँ उत्पन्न ज्ञान प्रस्तुत करैत अछि:

"दू मुट्ठी धान" कवितामे:

छाती जुराइत अछि

ई हमरे बाबाक लगाओल

कलम-गाछी छी

ई केवल स्मृति नहि, साक्षात् प्रत्यक्ष अनुभव अछि। गंगेशक अनुसार निर्विकल्पक (अवधारणा रहित) प्रत्यक्ष आ सविकल्पक (अवधारणासहित) प्रत्यक्षमे भेद अछि। कामिनीक कविता सविकल्पक प्रत्यक्ष प्रस्तुत करैत अछि - जतय इन्द्रिय-अनुभव संस्कार आ स्मृतिसँ युक्त भ'क'काव्यिक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि।

१.१.२ अनुमान प्रमाण (Inferential Knowledge)

गंगेशक व्याप्ति-सिद्धान्त: "व्याप्तिर्हि अविनाभावः साध्यसाधनयोः"

"अग्नि-परीक्षा" कवितामे:

पुरुषक गलतीक सजा

स्त्री किये भोगली

अग्नि-परीक्षा

बेर-बेर सीते किये देती

ई एकटा अनुमानात्मक तर्क-संरचना अछि:

हेतु (Reason): सीता सदिखन अग्निपरीक्षा देलनि

व्याप्ति (Pervasion): जतय पुरुष-प्रधान समाज, ओतय स्त्री-शोषण

पक्ष (Locus): मिथिला-समाज

साध्य (Probandum): पितृसत्तात्मक शोषण

गंगेशक पञ्चावयव-न्याय (Five-Membered Syllogism) अनुसार:

1. प्रतिज्ञा: स्त्री शोषित अछि

2. हेतु: किएक तँ सीता अग्निपरीक्षा देलनि

3. उदाहरण: जतय पितृसत्ता, ओतय स्त्री-शोषण (जेना द्रौपदी-चीरहरण)

4. उपनय: मिथिलामे पितृसत्ता अछि

5. निगमन: अतः मिथिलामे स्त्री शोषित अछि

१.१.३ उपमान प्रमाण (Analogical Knowledge)

गंगेशक उपमान-सिद्धान्त: "तत्त्वज्ञानम् उपमानं साधारणधर्मकथनात्"

"स्त्रीक रचना पुरुष" कवितामे:

जखन कखनो खसैत

पुरुषक माथ सँ घाम

स्त्री अपन आँचर सँ

पोछबै करतै

ई अर्ध-साम्य (Partial Similarity) पर आधारित उपमान अछि। स्त्री-पुरुष संबंध परस्पर-पूरकता (Complementarity) पर आधारित होबाक चाही, शोषण पर नहि। ई गंगेशक साधर्म्य-वैधर्म्य-विचार (Analysis of Similarity and Dissimilarity) क उत्कृष्ट उदाहरण अछि।

१.१.४ शब्द प्रमाण (Testimonial Knowledge)

गंगेशक आप्त-वचन सिद्धान्त: "आप्तवचनं शब्दः"

कामिनीक कविता लोक-वचन आ धार्मिक-शास्त्र दुनूक प्रश्नांकन करैत अछि:

"पाखण्ड" कवितामे:

'त्रिया चरित्रम्पुरुषस्य भाग्यम्'

व्यंग सँ जपैत

भरि तरहत्थीक

सिनूरक ठोप

ई शास्त्रीय शब्द-प्रमाणक खण्डन अछि। गंगेशक अनुसार शब्द-प्रमाण लेल आप्तता (Trustworthiness) आवश्यक अछि। कामिनी प्रश्न उठबैत छथि: की ई शास्त्र-वचन आप्त अछि? की ई यथार्थ-ज्ञान प्रदान करैत अछि?

१.२ गंगेशक अनवधारण-सिद्धान्त आ स्त्री-अस्मिता

गंगेशक अनवधारण-सिद्धान्त (Theory of Indeterminate Perception) अनुसार, प्रथम चरणक ज्ञान अवधारणा-रहित होइत अछि। ओही तरहें, स्त्री-अस्मिताक प्रथम अनुभव पुरुष-परिभाषित नहि, बल्कि स्व-निर्धारित होबाक चाही।

"ई उचित नहि आर्य" कवितामे:

प्रेम मे परित्याग

उचित नहि आर्य

अहाँ तऽ कहाइत छलहुँ

मर्यादा पुरुषोत्तम

ई पुरुष-परिभाषित मर्यादाक खण्डन अछि। गंगेशक भाषामे कहब तँ ई असत्-ख्याति (Erroneous Cognition) अछि - जतय सीताक स्वतः-प्रमाणत्व (Self-Validity) नकारल गेल आ राम-परिभाषित "पवित्रता" आरोपित भेल।

१.३ गंगेशक व्याप्ति-ग्रह-उपाय आ काव्यिक तर्क-संरचना

गंगेश व्याप्ति-ग्रह (Cognition of Pervasion) लेल तीन उपाय देने छथि:

1. अन्वय (Positive Concomitance)
2. व्यतिरेक (Negative Concomitance)
3. अन्वय-व्यतिरेक (Combined Method)

"परित्यक्ता" कवितामे:

किये सदैव परित्यक्ता

स्त्रीये होइत अछि

पुरुष किये नहि होइत अछि परित्यक्त

ई व्यतिरेक-विधि (Method of Difference) सँ तर्क अछि:

अन्वय: जतय स्त्री, ओतय परित्यक्त

व्यतिरेक: जतय पुरुष, ओतय परित्यक्तक अभाव

निष्कर्ष: परिस्थिति लैंगिक-विशिष्ट, सार्वभौमिक नहि

१.४ गंगेशक ख्याति-वाद आ काव्यिक सत्य

गंगेशक विपरीत-ख्याति-वाद (Theory of Erroneous Cognition as Contrary to Reality) अनुसार, भ्रम एकटा वस्तुमे दोसर वस्तुक आरोपण अछि।

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" शीर्षक कवितामे:

स्त्रीक देहक संग-संग

बिकाइत अछि आब

स्त्रीक कोखि आ दूध सेहो

समाजक भ्रमात्मक ज्ञान अछि जे स्त्रीक समग्र अस्तित्व नहि देखैत अछि, बल्कि ओकरा खण्डित भूमिकामे आरोपित करैत अछि:

माँ = कोखि आ दूध

पत्नी = देह आ सेवा

बेटी = बोझ आ दान

ई असत्-ख्याति अछि - स्त्रीक एकात्मक सत्ताक विखण्डन असत्य आरोपण थीक।

१.५ गंगेशक अभाव-सिद्धान्त आ स्त्री-अनुपस्थिति

गंगेश चारि प्रकारक अभाव मानने छथि:

1. प्राग्-अभाव (Prior Non-existence)

2. प्रध्वंस-अभाव (Posterior Non-existence)

3. अत्यन्त-अभाव (Absolute Non-existence)

4. अन्योन्य-अभाव (Mutual Non-existence)

"हम क्रीतदासी नहि" कवितामे:

माय रहती जीवन भरि

बाबूजीक संग

हुनक बंधुआ मजदूर बनि कें

ई अत्यन्त-अभावक निषेध अछि - स्त्री-स्वतंत्रताक सार्वकालिक अनुपस्थिति स्वीकार नहि कएल जा सकैत अछि। आधुनिक स्त्री प्राग्-अभावक अन्त करैत छथि - जे स्वतंत्रता पहिने नहि छल, आब अछि।

१.६ गंगेशक अनुपलब्धि-प्रमाण आ काव्यिक मौन

गंगेशक अनुपलब्धि-सिद्धान्त (Non-Apprehension as Proof of Absence) अनुसार, सक्षम प्रमाणक अभावमे सेहो ज्ञान भ'सकैत अछि।

"मौन" कवितामे:

गुलाबक पत्ती नहि अछि

अहाँक प्रेम

आ नहि बगुरककाँट

ई मौनक प्रमाणिकता अछि। जे नहि कहल गेल, ओकरो अनुपलब्धिसँ जानल जा सकैत अछि। गंगेशक भाषामे, "योग्य-अनुपलब्धिःअभाव-प्रतीतेः कारणम्" - उपयुक्त अनुपलब्धि अभावक ज्ञानक कारण अछि।

खण्ड २: विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क

२.१ विदेह आन्दोलनक स्वरूप आ उद्देश्य

विदेह ई-पत्रिका (२०००सँ) मैथिली साहित्यमे समानान्तर इतिहास (Parallel History) स्थापित करबाक प्रयास करैत अछि, जे साहित्य अकादेमीक संस्थागत कैननक विकल्प प्रस्तुत करैत अछि।

विदेह समानान्तर इतिहासक मूल सिद्धान्त:

1. लोकतान्त्रिक साहित्य-सृजन: संस्थागत अनुमोदनक बिना प्रकाशन

2. बहुवर्गीय प्रतिनिधित्व: दलित, स्त्री, आदिवासी स्वर

3. प्रतिपक्षीय कैनन: साहित्य अकादेमीक समानान्तर मान्यता-प्रणाली

4. डिजिटल-समावेशिता: भौतिक सीमासँ मुक्त प्रसार

२.२ कामिनी: विदेह-परंपराक प्रतिनिधि

कामिनीक काव्य-संग्रह विदेह-परंपराक केन्द्रीय विशेषताक प्रतिनिधित्व करैत अछि:

२.२.१ संस्थागत-विरोध आ स्वतन्त्र-स्वर

"पाखण्ड" कवितामे:

'त्रिया चरित्रम्पुरुषस्य भाग्यम्'

व्यंग्यसँ जपैत

ई धार्मिक-संस्थागत ज्ञानक खण्डन अछि। विदेह-परंपरा शास्त्रीय-सत्ताक प्रश्नांकन करैत अछि, ठीक जेना कामिनी पुरुष-परिभाषित धर्मक विरोध करैत छथि।

२.२.२ सबाल्टर्न (Subaltern) स्वरक प्रतिनिधित्व

गायत्री स्पिवाकक प्रश्न "Can the Subaltern Speak?" (1988) क उत्तर विदेह "हँ" मे दैत अछि। कामिनीक कविताकात-करोटक स्वरक प्रमाण अछि।

"दू मुट्ठी धान" कवितामे:

किछु नहि छी हमर एतय

ने घर

ने अंगना

ने खेत-खरिहान

ई आर्थिक-सबाल्टर्नक स्वर अछि - ओ स्त्री जे सम्पत्तिसँ वंचित छथि। विदेहएहन स्वरक संस्थागतकरण करैत अछि।

२.२.३ मिथकक पुनर्पाठ: विदेहक पद्धति

विदेह-परम्परा मिथिला-मिथकक समानान्तर पाठ प्रस्तुत करैत अछि। साहित्य अकादेमी जतय वैदिक-पौराणिक मिथकक महिमा-गान करैत अछि, विदेह ओकर पुनर्व्याख्या करैत अछि।

"अग्नि-परीक्षा" कवितामे:

पुरुषक गलतीक सजा

स्त्री किये भोगली

अग्नि-परीक्षा

बेर-बेर सीते किये देती

ई सीता-मिथकक विदेहीय पुनर्पाठ अछि। साहित्य अकादेमीक कैननमे सीता "पतिव्रता" छथि; विदेह-पाठमे सीता शोषितक प्रतीक छथि।

२.३ विदेह इतिहास-लेखनक चारिस्तम्भ

गजेन्द्र ठाकुरक "A Parallel History of Mithila & Maithili Literature" (चलि रहल परियोजना) चारि पद्धति प्रस्तुत करैत अछि:

२.३.१ रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र (भारतीय)

२.३.२ पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त

२.३.३ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

२.३.४ विदेह समानान्तर-इतिहास फ्रेमवर्क

कामिनीक कविता चारू स्तम्भक उदाहरण अछि:

"द्रौपदी-1"कवितामे:

रस: करुण (द्रौपदीक विखण्डित अस्तित्व)

पाश्चात्य: फेमिनिस्ट पुनर्पाठ (बहुपतित्वक आलोचना)

नव्य-न्याय: अनुमान-प्रमाण (पाँच पति = विखण्डन)

विदेह: मिथकक समानान्तर व्याख्या

२.४ विदेह बनाम साहित्य अकादेमी: द्वन्द्वात्मक संबंध

साहित्य अकादेमी कैनन:

मान्यता-प्रणाली: राज्य-समर्थित पुरस्कार

प्रकाशन: भौतिक पुस्तक, सीमित प्रसार

भाषा: परिष्कृत, शास्त्रीय मैथिली

विषय-वस्तु: परंपरागत, राष्ट्रवादी, धार्मिक

विदेह समानान्तर कैनन:

मान्यता-प्रणाली: जन-समर्थित, विदेह सम्मान, विशेषांक, समानान्तर इतिहास अभिलेखन।

प्रकाशन: डिजिटल, वैश्विक प्रसार

भाषा: लोक-मैथिली, बोलचालक भाषा

विषय-वस्तु: समकालीन, स्त्रीवादी, दलित-चेतना

कामिनीक कविता विदेह-परंपराक आदर्श उदाहरण अछि:

"समयक वेग" कवितामे:

क्षमा करब हे जननी

जीवनक एहि चारिमे अवस्था मे

ई बोलचालक मैथिली अछि, वृद्ध माँक उपेक्षाक समकालीन यथार्थ प्रस्तुत करैत अछि। साहित्य अकादेमीएहन "साधारण" विषयक उपेक्षा करैत अछि; विदेह एकरा केन्द्रीय बनबैत अछि।

२.५ विदेहक लोकतान्त्रिक सौन्दर्यशास्त्र

विदेह-परंपरा लोकतान्त्रिक सौन्दर्यशास्त्र (Democratic Aesthetics) स्थापित करैत अछि, जतय:

1. पाठक = समीक्षक: संस्थागत समीक्षकक एकाधिकार टूटल

2. लेखक = प्रकाशक: बिचौलियाक समाप्ति

3. स्थानीय = वैश्विक: मैथिलीक विश्व-प्रसार

कामिनीक कविता सर्वसुलभ अछि - ने संस्कृत शब्दावलीक बाढ़ि, ने अस्पष्ट प्रतीक। ई जन-सौन्दर्यशास्त्र अछि।

२.६ विदेह आ स्त्री-लेखन: ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

मैथिली साहित्य-इतिहासमे स्त्री-लेखन सदिखनकात-करोटपर रहल अछि:

विद्यापति-युग (ज्योतिरीश्वर पूर्व): कोनो प्रमुख स्त्री-कवि नहि

आधुनिक-युग (२०वीं सदी): लिली रे, शेफालिका वर्मा- सीमित मान्यता

विदेह-युग (२०००सँ):- केन्द्रीय स्थान

समानान्तर कैननमे स्त्री-लेखन मुख्यधारा बनल

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" विदेह-युगक मीलक-पाथर अछि - पहिल बेर स्त्री-अनुभव केन्द्रीय काव्य-विषय बनल।

२.७ विदेहक अभिलेखीय पद्धति (Archival Method)

विदेह समानान्तर इतिहासक लेल कठोर अभिलेखीय पद्धति अपनबैत अछि:

1. प्रत्येक रचनाक प्रकाशन-तिथि दर्ज
2. लेखकक जीवनी-सामग्री संग्रहीत
3. पाठक-प्रतिक्रिया सुरक्षित
4. क्रॉस-रेफरेन्सिंग: कवि-कविताक परस्पर-संबंध

कामिनीक कविता विदेह अभिलेखमे सुरक्षित अछि। ई अभिलेखीय कठोरता भविष्यक साहित्य-इतिहासकार लेल आधार-सामग्री उपलब्ध करबैत अछि।

खण्ड ३: भारतीय सौन्दर्यशास्त्र: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्य

३.१ रस-सिद्धान्त (Theory of Aesthetic Relish)

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र (२०० ई. पू. - २०० ई.) आ आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक (९मसदी) रस-सिद्धान्तक आधार अछि।

३.१.१ नवरस आ कामिनीक कविता

भरतक रस-सूत्र: "विभावानुभावव्यभिचारिसंयोगाद्रसनिष्पत्तिः"

कामिनीक कवितामे करुण रस प्रधान अछि, किन्तु अन्य रसक सेहो उपस्थिति अछि:

३.१.१.१ करुण रस (Pathos)

"तार-तार भेल जीवन" कवितामे:

पहिल बेर जखनलेने रही

अपना हाथ मे हमर हाथ

एकटा सुखद अनुभूति

भेल रहय हमरा

लागल रहए..

स्थायी भाव: शोक विभाव (Determinants): प्रेमक स्मृति, वर्तमान विछोह अनुभाव (Consequents): नोर, दीर्घ-श्वास (implied) व्यभिचारी भाव (Transitory Emotions): स्मृति, निर्वेद, ग्लानि।

आचार्य मम्मट "काव्यप्रकाश" (११मसदी) मे कहने छथि: "रसो वा काव्यात्मा"- रस काव्यकआत्मा थीक। कामिनीक कविता रसात्मक अछि, केवल भावक सूखल विवरण नहि।

३.१.१.२ रौद्र रस (Fury)

"हम क्रीतदासी नहि" कवितामे:

माय रहती जीवन भरि

बाबूजीक संग

हुनक बंधुआ मजदूर बनि कें

(किन्तु बेटी कहैत छथि:)

हम क्रीतदासी नहि

स्थायी भाव: क्रोध विभाव: माँक दासत्व देखि क'आक्रोश अनुभाव: प्रतिरोधक घोषणा, दृढ़ स्वर व्यभिचारी भाव: उग्रता, अमर्ष, आवेग

३.१.१.३ वीर रस (Heroic)

"हमलड़ब" कवितामे:

हमलड़ब

अन्त-अन्त धरि

जामे धरि बँचल रहत..

स्थायी भाव: उत्साह विभाव: शोषण-संरचना अनुभाव: संकल्प-घोषणा व्यभिचारी भाव: धैर्य, गर्व, मति

३.१.२ रस-साधारणीकरण (Universalization of Emotion)

आचार्य अभिनवगुप्त (१०मसदी) साधारणीकरण-सिद्धान्त देने छथि - जाहिमे व्यक्तिगत भाव सार्वभौमिक बनैत अछि।

"मझधार" कवितामे:

विवाहक आइ

सोलहम बरख बीति रहल अछि

अहाँ ओहि घर

आ हम एहि घर मे

ई केवल एकटा स्त्रीक अनुभव नहि, सम्पूर्ण विवाहित स्त्री-समाजक अनुभव बनि जाइत अछि। आलम्बन (नायिका) सँ उद्दीपन होइत अछि, आ पाठक रस-स्वाद करैत छथि - ई साधारणीकरण अछि।

३.२ ध्वनि-सिद्धान्त (Theory of Suggestion)

आचार्य आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोक (९मसदी) ध्वनि (Suggestion) कैँ काव्यक आत्मा मानैत अछि।

३.२.१ ध्वनिक तीन भेद

आनन्दवर्धनक अनुसार:

1. वस्तु-ध्वनि (Suggestion of Fact)
2. अलंकार-ध्वनि (Suggestion of Figure)
3. रस-ध्वनि (Suggestion of Emotion)

३.२.१.१ वस्तु-ध्वनि

"दोसर कृष्ण" कवितामे:

माधव! अहाँ केनाबिसरि गेलियै

की हम अहाँक राधा छी

जकरा कहियो अहाँ

अपन कहनेछलियै

वाच्यार्थ (Explicit): नायिका प्रश्न करैत छथि व्यंग्यार्थ (Suggested): कृष्ण-राधाक मिथक आधुनिक संबंधमे दोहराएल जाइत अछि- पुरुष सदिखन परित्याग करैत अछि

३.२.१.२ रस-ध्वनि

"मौन" कवितामे:

गुलाबक पत्ती नहि अछि

अहाँक प्रेम

आ नहि बगुरककाँट

अहाँक प्रेम

सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ

अविचल अछि

स्थिर अछि

वाच्यार्थ: प्रेम बाह्य-प्रदर्शनसँ मुक्त अछि व्यंग्यार्थ (रस-ध्वनि): गहन शान्त-प्रेम (शान्त रस), जे शब्दातीत अछि

आचार्य मम्मट कहने छथि: "काव्यं यशसेऽर्थकृते व्यवहारविदे शिवेतरक्षतये सद्यः परनिर्वृतये कान्तासम्मिततयोपदेशयुजे" - काव्य केवल यश लेल नहि, परम-आनन्द (निर्वृति) लेल सेहो। ध्वनि-शक्ति परम-आनन्द प्रदान करैत अछि।

३.२.२ ध्वनि बनाम अभिधा-लक्षणा

संस्कृत काव्यशास्त्रमे तीन शब्द-शक्ति अछि:

1. अभिधा (Denotation): प्राथमिक अर्थ

2. लक्षणा (Indication): गौण अर्थ

3. व्यञ्जना (Suggestion): ध्वनित अर्थ

"चानदाइ" कवितामे:

चानदाइ जखनविदाभेल रहथि

पहिल बेर सासुर

अभिधा: चानदाइ सासुर जा रहल छथि लक्षणा: नव-वधूक चिन्ता व्यञ्जना (ध्वनि): पितृसत्तात्मक परिवार-संरचनामे स्त्रीक विस्थापनक भय।

आनन्दवर्धन कहने छथि: "यत्र वाचकः शब्दः वाच्यादर्थादन्यं व्यङ्क्ते तत्र व्यञ्जनेत्याख्या" - जतय शब्द अपन प्राथमिक अर्थसँ अतिरिक्त अर्थ व्यक्त करए, ओतय व्यञ्जना। कामिनीक कविता व्यञ्जना-प्रधान अछि।

३.३ वक्रोक्ति-सिद्धान्त (Theory of Oblique Expression)

आचार्य कुन्तक (१०वीं सदी) वक्रोक्ति-जीवितम् मे वक्रोक्तिक छह भेद देने छथि:

३.३.१ वर्ण-विन्यास वक्रोक्ति (Phonetic Obliquity)

"नोर" कवितामे:

जखन कखनो खसैत छै

कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर

"नोर" शब्दक प्रयोग मैथिलीक लोक-ध्वनि अछि। "अश्रु" सँ भाव-गाम्भीर्य कम होइत। ई वर्ण-विन्यास वक्रोक्ति अछि।

३.३.२ प्रत्यय-वक्रोक्ति (Morphological Obliquity)

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" शीर्षक स्वयं वक्रोक्ति अछि:

सामान्य अभिव्यक्ति: "विभाजित स्त्री"

वक्र अभिव्यक्ति: "खण्ड-खण्ड मे बँटैत" - वर्तमान-काल, निरन्तरता

"बँटैत" (present continuous) प्रत्यय सतत-प्रक्रिया सूचित करैत अछि - ई एक बेरक घटना नहि, बल्कि चलि रहल शोषण अछि।

३.३.३ वाक्य-वक्रोक्ति (Sentential Obliquity)

"ई केहन विडम्बना" कवितामे:

जे स्त्रीक आँचर मे मुँह छुपबैत अछि

जे स्त्रीक शरीर कें दोहन करैत अछि

जे स्त्रीक बिना जीवि नहि सकैत अछि

वैह स्त्रीक मान-सम्मान पर

उठबैत अछि सवाल

ई अन्योक्ति-वक्रोक्ति अछि - प्रश्नाकुल वाक्य-संरचना। सीधे कहबाक बदला तीन समानान्तर वाक्यसँ क्रमिक तीव्रता बनाओल गेल अछि।

३.३.४ प्रकरण-वक्रोक्ति (Contextual Obliquity)

"अग्नि-परीक्षा" कवितामे:

मिथिलाक परिप्रेक्ष्यमे ई द्विअर्थी अछि:

1. रामायण-सन्दर्भ: सीताक अग्निपरीक्षा

2. समकालीन-सन्दर्भ: आधुनिक स्त्रीक सतत परीक्षा

कुन्तक कहने छथि: "वक्रोक्तिर्विशिष्टा वागर्थव्यापारः" - वक्रोक्ति वाक् आ अर्थक विशिष्ट व्यापार अछि। कामिनीक कविता वक्रोक्ति-समृद्ध अछि।

३.४ औचित्य-सिद्धान्त (Theory of Propriety)

आचार्य क्षेमेन्द्र (११वीं सदी) औचित्य-विचार-चर्चा मे औचित्यक महत्त्व स्थापित केलनि।

३.४.१ वस्तु-औचित्य (Propriety of Subject)

"द्रौपदी-1"आ "द्रौपदी-2"कवितामे:

मिथिला-संस्कृतिमे सीता आ द्रौपदी केन्द्रीय मिथक छथि। कामिनी एहि मिथकक पुनर्पाठ करैत छथि- ई वस्तु-औचित्य अछि। मिथिला-पाठक लेल ई मिथक स्वाभाविक संदर्भ अछि।

३.४.२ रस-औचित्य (Propriety of Emotion)

स्त्री-शोषणक विषयमे करुण आ रौद्र रसक प्रयोग रस-औचित्य अछि। हास्य वा श्रृंगारक प्रयोग अनौचित्य होइत।

३.४.३ छन्द-औचित्य (Propriety of Metre)

कामिनी मुक्त-छन्द (Free Verse) प्रयोग करैत छथि। समकालीन स्त्री-अनुभव लेल परम्परागत बरवै, सोरठा, दोहा उपयुक्त नहि। मुक्त-छन्द स्वयं मुक्तिक प्रतीक अछि - ई छन्द-औचित्य अछि।

३.४.४ देश-काल-औचित्य (Propriety of Time-Place)

२१वीं सदीक मैथिली कवितामे स्त्रीवादी स्वर समयानुकूल अछि। ई काल-औचित्य अछि। मिथिलामे जतय सीता-जन्मभूमि अछि, ओतय सीताक पुनर्पाठ देश-औचित्य सेहो।

३.५ अलंकार-सिद्धान्त (Theory of Figures of Speech)

आचार्य दण्डी (७वीं सदी) काव्यादर्श मे कहने छथि: "काव्यशोभाकरान् धर्मान् अलंकारान् प्रचक्षते" - अलंकार काव्यक शोभा-कारक धर्म छथि।

३.५.१ उपमा (Simile)

"स्त्रीक रचना पुरुष" कवितामे:

जखन कखनो खसतै

पुरुषक माथ सँ घाम..

थाकल-हारल घर

स्त्री एक थारी भात

आ एक लोटा पानि तऽ

परोसबे (परसबे) करतै

उपमा: स्त्री = सेवक (अप्रत्यक्ष उपमा, लुप्तोपमा)

३.५.२ रूपक (Metaphor)

"तील-चाउर" कवितामे:

"तील-चाउर" स्वयं रूपक अछि:

तील-चाउर = स्त्री-स्वतंत्रता

बाँटब = समाजक विरोध

३.५.३ व्यतिरेक (Contrast)

"हम क्रीतदासी नहि" कवितामे:

माँ बनाम बेटीक व्यतिरेक:

माँ: "बंधुआ मजदूर"

बेटी: "क्रीतदासी नहि"

३.५.४ प्रश्न-अलंकार (Rhetorical Question)

"परित्यक्ता" कवितामे:

किये सदैव परित्यक्ता

स्त्रीये होइत अछि

पुरुष किये नहि होइत अछि परित्यक्त

ई केवल प्रश्न नहि, आक्रोशक अलंकार अछि। उत्तरक अपेक्षा नहि, विरोधक घोषणा अछि।

३.६ काव्य-गुण (Qualities of Poetry)

आचार्य वामन (८वीं सदी) काव्यालंकार-सूत्र-वृत्ति मे दश काव्य-गुण देने छथि। कामिनीक कवितामे मुख्य गुण:

३.६.१ ओज-गुण (Vigour)

"हमलड़ब" कवितामे:

हमलड़ब

अन्त-अन्त धरि

सरल, कठोर, द्रुत - ई ओज-गुणक लक्षण अछि।

३.६.२ प्रसाद-गुण (Lucidity)

"नोर" कवितामे:

जखन कखनो खसैत छै

कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर

सरल, स्पष्ट, तुरत बोधगम्य - ई प्रसाद-गुण अछि।

३.६.३ माधुर्य-गुण (Sweetness)

"मौन" कवितामे:

गुलाबक पत्ती नहि अछि

अहाँक प्रेम

कोमल, मधुर, हृदय-स्पर्शी - ई माधुर्य-गुण अछि।

३.७ काव्य-दोष (Blemishes in Poetry)

आचार्य मम्मट काव्यप्रकाश मे काव्य-दोष गनने छथि। कामिनीक कवितामे सामान्यतः दोष-रहित अछि, किन्तु कतेको ठाम:

३.७.१ क्लिष्टता-दोष (Obscurity)

सामान्यतः कामिनीक भाषा सरल अछि, किन्तु कतेको ठाम अति-संक्षिप्तता क्लिष्टता उत्पन्न करैत अछि। उदाहरण: "समयक वेग" कवितामे कतेकोपंक्ति संदर्भ-हीन लागैत अछि।

३.७.२ ग्राम्यता-दोष (Vulgarity)

कामिनी बोलचालक भाषा प्रयोग करैत छथि, जे कतेको आलोचकक दृष्टिमे "ग्राम्य" लागि सकैत अछि। किन्तु विदेह-परंपरामे ई गुण अछि, दोष नहि।

खण्ड ४: पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त

४.१ फेमिनिस्ट साहित्य-सिद्धान्त

४.१.१ प्रथम-लहरि फेमिनिज्म: मेरी वुल्फस्टोनक्राफ्ट

मेरी वुल्फस्टोनक्राफ्टक "A Vindication of the Rights of Woman" (1792) स्त्री-शिक्षा आ आर्थिक स्वतंत्रताक माँग केलक।

"दू मुट्ठी धान" कवितामे:

किछु नहि छी हमर एतय

ने घर

ने अंगना

ने खेत-खरिहान

ई आर्थिक-अधिकारक प्रश्न अछि - वुल्फस्टोनक्राफ्टक मुख्य माँग। स्त्री आर्थिक-रूपसँ परावलंबी रहलासँ राजनीतिक-स्वतंत्रता असंभव अछि।

४.१.२ द्वितीय-लहरि फेमिनिज्म: सिमोन द बोउवार

सिमोन द बोउवारक "The Second Sex" (1949) क मुख्य थीसिस: "One is not born, but rather becomes, a woman."

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" कवितामे:

स्त्रीक देहक संग-संग

बिकाइत अछि आब

स्त्रीक कोखि आ दूध सेहो

ई बोउवारक थीसिसक काव्यिक प्रस्तुति अछि - स्त्री "बनाएल" जाइत छथि, जैविक-नियति नहि छथि। समाज स्त्रीक सम्पूर्ण अस्तित्व केँ"मातृत्व" मे समेटैत अछि - ई सामाजिक-निर्माण अछि।

४.१.३ तृतीय-लहरि फेमिनिज्म: जुडिथ बटलर

जुडिथ बटलरक "Gender Trouble" (1990) जेंडर-परफॉर्मेटिविटी (Gender as Performance) क सिद्धान्त देलक।

"स्त्रीक नियति" कवितामे:

धरतीक कोखि मे

पुनः समाय

अहाँ नीक नहि केलौंसीता

सीता नारीत्वक प्रदर्शन (Performance of Femininity) केलनि- "पतिव्रता" भूमिका निभेलनि। जखन ई प्रदर्शन असफल भेल (समाजक दृष्टिमे), तखन "धरतीमे समाय" गेलीह। ई बटलरक परफॉर्मेटिविटी-सिद्धान्तक उदाहरण अछि।

४.१.४ ब्लैक फेमिनिज्म: बेल हुक्स

बेल हुक्सक "Ain'tI a Woman?" (1981) प्रतिच्छेदी-उत्पीड़न (Intersectional Oppression) क सिद्धान्त देलक- स्त्री-उत्पीड़न जाति, वर्ग, नस्लसँ जुड़ल अछि।

कामिनीक कवितामे सेहो वर्ग-आयाम स्पष्ट अछि:

"दू मुट्ठी धान" कवितामे:

गरीब ग्रामीण स्त्रीक अनुभव अछि। ई मध्यवर्गीय शहरी फेमिनिज्मसँ भिन्न अछि। हुक्सक अनुसार, सर्व-स्त्री समान नहि - वर्ग-भेद महत्त्वपूर्ण अछि।

४.२ मार्क्सवादी-फेमिनिस्ट सिद्धान्त

४.२.१ एंगेल्सक "The Origin of the Family, Private Property and the State" (1884)

एंगेल्सक अनुसार, स्त्री-उत्पीड़न निजी-सम्पत्ति-प्रणालीसँ जुड़ल अछि।

"कन्यादान मने गंगा स्नान" कवितामे:

कन्यादानकैल जाइत अछि

एखनो हमरा ओतय

पिता! हाथ मे जव-कुशलऽ

अपन बेटीक हाथ”

"कन्यादान" = सम्पत्ति-हस्तान्तरण। पिता बेटीक "स्वामित्व" पतिकेँ सौंपैत छथि। ई एंगेल्सक थीसिसक प्रमाण अछि।

४.२.२ सिल्विया फेडेरीचीक "Caliban and the Witch" (2004)

फेडेरीची "अवैतनिक घरेलू श्रम" (Unpaid Domestic Labour) केँ पूँजीवादक आधार मानैत छथि।

"बड़ मोन पड़ैए हमरा अपन घर" कवितामे:

एते कत्तौछल

हमर घर

जे आब नहि देखा रहल अछि

जकरा अंगना मे बैसि कऽ

कएक बेर तेने रही हम

अपना भाइ सँ नोत

स्त्रीक घरेलू-श्रम अदृश्य अछि, अवैतनिक अछि। पूँजीवाद एहि अवैतनिक श्रमपर टिकल अछि - फेडेरीचीक मुख्य तर्क।

४.३ पोस्ट-कोलोनियल फेमिनिज्म

४.३.१ गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक "Can the Subaltern Speak?" (1988)

स्पिवाकक प्रश्न: की सबाल्टर्न स्त्री बाजि सकैत छथि, वा हुनका लेल "बाजब" कोनो बुर्जुआ बुद्धिजीवी करैत छथि?

कामिनीक कविता सबाल्टर्न स्त्रीक प्रत्यक्ष स्वर अछि, कोनो "प्रतिनिधित्व" नहि:

"मझधार" कवितामे:

बियाहक आइ

सोलहम बरख बीति रहल अछि

अहाँ ओहि घर

आ हम एहि घर मे

दुनू दूदिस छी

ई मध्यवर्गीय शहरी बुद्धिजीवीक व्याख्या नहि, बल्कि स्वयं सबाल्टर्नक स्वर अछि। स्पिवाकक प्रश्नक उत्तर: हँ, सबाल्टर्न बाजि सकैत छथि - कामिनीक कविता प्रमाण अछि।

४.३.२ चंद्रा तल्पाडे मोहान्तीक "Under Western Eyes" (1984)

मोहान्ती पाश्चात्य फेमिनिज्मक साम्राज्यवाद पर प्रश्न उठबैत छथि। पाश्चात्य फेमिनिस्ट तृतीय-विश्वक स्त्री कें "एकरूप पीड़ित" मानैत छथि।

कामिनीक कविता मैथिल-विशिष्ट अछि - सीता, द्रौपदी, चानदाइक संदर्भ सार्वभौमिक नहि, बल्कि स्थानीय-सांस्कृतिक अछि। ई मोहान्तीक माँगक अनुरूप अछि।

४.४ साइकोएनालिटिक फेमिनिज्म

४.४.१ सिग्मंड फ्रायडकPenis Envyसिद्धान्तक खण्डन

फ्रायड मानैत छलाह जे स्त्री पुरुष-जननांगक ईर्ष्या (Penis Envy) सँ ग्रस्त छथि।

"ई उचित नहि आर्य" कवितामे:

प्रेम मे परित्याग

उचित नहि आर्य

कामिनी पुरुषक अनुकरणक इच्छा नहि, बल्कि पुरुष-प्रभुत्वक विरोध व्यक्त करैत छथि। ई फ्रायडक सिद्धान्तक खण्डन अछि।

४.४.२ लूस इरिगरेकécritureFéminine (स्त्री-लेखन)

लूस इरिगरे (1974) स्त्री-विशिष्ट लेखन-शैली (Feminine Writing) क सिद्धान्त देलनि। स्त्री-लेखन:

रैखिक नहि, वृत्तीय (Non-linear, Circular)

तर्क-प्रधान नहि, भाव-प्रधान

एकल-स्वर नहि, बहु-स्वर (Polyphonic)

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" संग्रहक संरचना देखू:

रैखिक कथानक नहि - कविता स्वतन्त्र, क्रमिक कथाक अभाव

भाव-प्रधान - तर्कसँ बेसी अनुभव

बहु-स्वर - माँ, बेटी, पत्नी, विधवा - विविध स्वर

ई इरिगरेकécritureFéminineक उदाहरण अछि।

४.५ एग्ज़िस्टेंशियलिस्ट फेमिनिज्म

४.५.१ सिमोन द बोउवारक "Ethics of Ambiguity" (1947)

बोउवार अस्तित्ववादी स्वतंत्रता (Existential Freedom) स्त्रीक संदर्भमे लागू करैत छथि। मनुष्य स्वतंत्रताक निन्दा (Condemned to be free) अछि।

"अस्तित्व" कवितामे:

अहाँ लाख मेटायब

नहि मेटायत हमर अस्तित्व

जे छल-प्रपंच सँ

छीन लेब अहाँ

हमर एहि जीवन कें

तऽ हम फेर सँ जन्म लेब

अहाँकअँगनामहक

तुलसी बनि

ई स्व-निर्धारित अस्तित्व (Self-Defined Existence) क घोषणा अछि। स्त्री पुरुष-परिभाषित (The Other) नहि, स्वयं-परिभाषित (The Self) छथि। बोउवारक अस्तित्ववादी फेमिनिज्मक काव्यिक रूप।

४.६ इको-फेमिनिज्म (Ecofeminism)

४.६.१वंदना शिवाक "Staying Alive" (1989)

वंदना शिवास्त्री-प्रकृति समानता (Woman-Nature Analogy) क सिद्धान्त देलनि। पितृसत्ता स्त्री आ प्रकृति दुनूक शोषण करैत अछि।

"तील-चाउर" कवितामे:

"तील-चाउर" = प्रकृतिक उपहार, स्त्रीक अधिकार। दुनूकेँ पितृसत्ताक नियंत्रण अछि। इको-फेमिनिस्ट पाठमे, ई प्रकृति-स्त्री-स्वतंत्रताक प्रतीक अछि।

४.७ पोस्ट-स्ट्रक्चरलिस्ट फेमिनिज्म

४.७.१ मिशेल फूकोकPower/Knowledgeसिद्धान्त

फूकोक अनुसार, शक्ति आ ज्ञान परस्पर-संबद्ध अछि। "ज्ञान" तटस्थ नहि, बल्कि शक्ति-संरचनाक उत्पाद अछि।

"पाखण्ड" कवितामे:

'त्रिया चरित्रम्पुरुषस्य भाग्यम्'

व्यंग्यसँ जपैत

ई शास्त्रीय-ज्ञान (Scriptural Knowledge) अछि, जे पुरुष-शक्तिक उत्पाद अछि। स्त्रीक "चरित्रहीनता" ज्ञान नहि, बल्कि शक्ति-प्रयोग अछि - फूकोक सिद्धान्त।

४.७.२ हेलेन सिक्सुसक "The Laugh of the Medusa" (1975)

सिक्सुस स्त्री-लेखन (L'écritureFéminine) केँ पुरुष-भाषासँ मुक्ति मानैत छथि।

"हम क्रीतदासी नहि" कवितामे:

शीर्षक स्वयं नकारात्मक-परिभाषा अछि ("क्रीतदासी नहि"), जे सिक्सुसक अनुसार पुरुष-भाषाक सीमा अछि। स्त्रीकेँ सकारात्मक-परिभाषा चाही: "हम स्वतन्त्र छी", नहि "हम दासी नहि छी"।

किन्तु कामिनी जनबैत छथि जे नकारसँ प्रारम्भ आवश्यक अछि - पहिने पुरुष-परिभाषाक खण्डन, तखन स्व-परिभाषा।

४.८ क्वीर थ्योरी आ फेमिनिज्म

४.८.१ मोनिक विटिगक "One is Not Born a Woman" (1981)

विटिग कहैत छथि: "Lesbians are not women" -किएक तँ "स्त्री" विषमलैंगिक-संरचना (Heterosexual Matrix) क उत्पाद अछि।

कामिनीक कवितामे विषमलैंगिकता (Heterosexuality) अनिवार्य मानल गेल अछि - क्वीर-विकल्पक अभाव अछि। ई सीमा अछि, जेशान्तिलक्ष्मी चौधरीकमैथिली काव्यमे अछि।

खण्ड ५: चीनी दार्शनिक परंपरा

५.१ ताओवाद (Taoism) आ स्त्री-चेतना

५.१.१ लाओ-त्सुक "ताओ-ते-चिंग"(६ अमसदी ई. पू.)

लाओ-त्सु यिन-यांग (Yin-Yang) द्वैत मानैत छथि। यिन = स्त्री-तत्त्व (Feminine Principle), यांग = पुरुष-तत्त्व (Masculine Principle) ।

ताओवादमे यिन-शक्ति (Feminine Power):

कोमलता (Softness) >कठोरता

ग्रहणशीलता (Receptivity) >आक्रमकता

निष्क्रिय-सक्रियता (Wu Wei - Effortless Action) >बलपूर्वक कर्म

"स्त्रीक रचना पुरुष" कवितामे:

जखन कखनो खसतै

पुरुषक माथ सँ घाम

स्त्री अपन आँचर सँ

पोछबै करतै

ई यिन-शक्तिक उदाहरण अछि - कोमल, ग्रहणशील, पोषक। ताओवादमे ई शक्ति यांगसँ श्रेष्ठ मानल जाइत अछि।

५.१.२ "जल-तत्त्व" (Water Element) आ स्त्री-शक्ति

लाओ-त्सु कहैत छथि:

"Nothing in the world is softer than water, yet nothing is better at overcoming the hard and strong."

"मौन" कवितामे:

गुलाबक पत्ती नहि अछि

अहाँक प्रेम

आ नहि बगुरककाँट

अहाँक प्रेम

सुसुप्त ज्वालामुखी जकाँ

जल-तत्त्व = मौन-शक्ति। बाहरसँ कोमल, भीतरसँ शक्तिशाली। ताओवादक परम-शक्तिक सिद्धान्त।

५.२ कन्फ्यूशियसवाद आ पितृसत्ता

५.२.१ कन्फ्यूशियसक "Analects" (५मसदी ई. पू.)

कन्फ्यूशियस पुरुष-प्रधान समाज-व्यवस्था स्थापित केलनि:

पिता-पुत्र संबंध सर्वोच्च

स्त्री = सेवक (ThreeObediences: पिता, पति, पुत्र)

"कन्यादान मने गंगा स्नान" कवितामे:

भारतीय पितृसत्ता चीनी कन्फ्यूशियसवादसँ समान अछि। "कन्यादान" = कन्फ्यूशियसकThreeObediencesक भारतीय रूप।

कामिनीक कविता कन्फ्यूशियसवादक विरोध अछि, ठीक जेना आधुनिक चीनी स्त्री-लेखिका (डिंग लिंग, बिंग जिन) कन्फ्यूशियसक आलोचना केलनि।

५.३ बुद्धवाद आ स्त्री-प्रश्न

५.३.१ महायान बुद्धवादमे स्त्री-मुक्ति

"स्त्री आ बुद्ध" कवितामे:

एहि सए दुःख सँ नीक एक दुःख

नीक तऽहोइतए

जे बुद्ध बनि जइतहुँ

ई बुद्धक आष्ट-अंगिक मार्ग (Eightfold Path) क स्त्री-संदर्भमे प्रयोग अछि। किन्तु प्रश्न: की स्त्री बुद्धत्व प्राप्त कऽ सकैत छथि?

थेरवाद बुद्धवाद: नहि, स्त्री पहिने पुरुष बनथु महायान बुद्धवाद: हँ, स्त्री स्वयं बुद्ध बनि सकैत छथि

कामिनी महायानी दृष्टि अपनबैत छथि - स्त्री पुरुष-माध्यमक बिना मुक्ति पाबि सकैत छथि।

५.४ चीनी स्त्री-काव्य-परंपरा

५.४.१ ली किंग-झाओ (Li Qingzhao, १०८४-११५५)

चीनी स्त्री-कवि ली किंग-झाओ व्यक्तिगत भावक काव्यीकरण केलनि। हुनक कविता विरह-वेदना प्रधान अछि।

कामिनीक "तार-तार भेल जीवन" कवितामे:

पहिल बेर जखनलेने रही

अपना हाथ मे हमर हाथ

ई ली किंग-झाओक परंपरामे अछि - व्यक्तिगत स्मृति आ विरह।

५.४.२ किउ जिन (Qiu Jin, १८७५-१९०७)

चीनी क्रान्तिकारी कवि किउ जिन स्त्री-मुक्ति आ राष्ट्र-मुक्ति संयुक्त केलनि। हुनक कविता विद्रोही स्वर अछि।

कामिनीक "हमलड़ब" कवितामे:

हमलड़ब

अन्त-अन्त धरि

जामे धरि बँचल रहत

ई किउ जिनक परंपरामे अछि - संघर्षक संकल्प।

५.५ चीनी मार्क्सवाद आ स्त्री-प्रश्न

५.५.१ माओ त्से-तुंगक "Women Hold Up Half the Sky" (१९५५)

माओ स्त्री-श्रमिक-मुक्ति पर जोर देलनि। स्त्री श्रम-शक्ति छथि, केवल पुनरुत्पादक नहि।

"ब्रह्मवाक्य" कवितामे:

स्त्रीक श्रम अदृश्य अछि। माओक सिद्धान्त अनुसार, स्त्रीकेँ उत्पादक-श्रममे समान भागीदारीहेबाक चाही। कामिनीक कविता आर्थिक-मुक्तिक माँग करैत अछि।

५.६ चीनी "नारी-पत्र" (Women's Script) आ मैथिली

चीनक हुनान प्रान्तमे "नू-शू" (Nüshu) नामक स्त्री-विशिष्ट लिपि छल, जे केवल स्त्री प्रयोग करैत छलीह।

ई स्त्री-अलगावक प्रतीक अछि - स्त्रीकेँ मुख्य-भाषासँ बहिष्कृत कएल गेल छल, तेँ अपन लिपि बनेलनि।

मैथिलीमेएहन स्त्री-विशिष्ट लिपि नहि छल, किन्तु स्त्री-बोली (Women's Dialect) छल - जे तिरस्कृत मानल जाइत छल।

कामिनीक कविता स्त्री-बोली प्रयोग करैत अछि - लोक-मैथिली, जे शास्त्रीय-मैथिलीसँ भिन्न अछि। ई चीनी नू-शूक भारतीय समानता अछि।

खण्ड ६: तुलनात्मक विश्लेषण आ समग्र मूल्यांकन

६.१ चारू दृष्टिकोणक संश्लेषण

कामिनीक "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" चारू विश्लेषणात्मक ढाँचामे केन्द्रीय महत्त्व रखैत अछि:

६.१.१ गंगेशक नव्य-न्यायमे

ज्ञानमीमांसीय योगदान:

प्रत्यक्ष-प्रमाण: स्त्री-अनुभवक साक्षात् प्रस्तुति

अनुमान-प्रमाण: सामाजिक-शोषणक तार्किक विश्लेषण

शब्द-प्रमाणक खण्डन: शास्त्रीय-पितृसत्ताक अस्वीकार

अनुपलब्धि-प्रमाण: मौनक प्रमाणिकता

सीमा: काव्यिक-अनुभव तर्क-संरचनासँ परे अछि - गंगेशक तर्क-प्रधानता सब व्याख्या नहि कऽ सकैत अछि।

६.१.२ विदेह समानान्तर इतिहासमे

साहित्यिक-ऐतिहासिक योगदान:

समानान्तर-कैनन: साहित्य अकादेमीक विकल्प

लोकतान्त्रिक-प्रकाशन: डिजिटल-समावेशन

सबाल्टर्न-स्वर: हाशिएक केन्द्रीकरण

मिथकक पुनर्पाठ: सीता-द्रौपदीक नव-व्याख्या

सीमा: विदेह-परंपरा अभिलेखीय-कठोरता तँ अछि, किन्तु सैद्धान्तिक-ढाँचाक विकास अपूर्ण अछि।

६.१.३ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रमे

काव्यशास्त्रीय योगदान:

रस: करुण-रौद्र-वीरक सुन्दर संयोजन

ध्वनि: व्यंग्यार्थक गहनता

वक्रोक्ति: अप्रत्यक्ष अभिव्यक्तिक कौशल

औचित्य: विषय-रस-भाषाक समन्वय

सीमा: परम्परागत काव्य-शास्त्र पुरुष-दृष्टिसँ निर्मित अछि - स्त्री-काव्यक स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्र चाही।

६.१.४ पाश्चात्य-चीनी सिद्धान्तमे

वैश्विक-साहित्यिक योगदान:

फेमिनिस्ट सिद्धान्त: बोउवार, बटलर, स्पिवाकक भारतीय उदाहरण

मार्क्सवादी-फेमिनिज्म: वर्ग-लिंग प्रतिच्छेदन

ताओवादी-दर्शन: यिन-शक्तिक काव्यीकरण

तुलनात्मक-परिप्रेक्ष्य: चीनी-भारतीय स्त्री-परंपराक संवाद

सीमा: पाश्चात्य सिद्धान्तक यांत्रिक-प्रयोग खतरनाक - स्वदेशी-सैद्धान्तिकीकरण आवश्यक।

६.२ "खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" क ऐतिहासिक महत्त्व

६.२.१ मैथिली स्त्री-काव्य-परंपरामे स्थान

पूर्व-विदेह युग (२०००पूर्व):

प्रेम-काव्य प्रधान। प्रकृति-चित्रण प्रधान।

विदेह-युग (२००८-२०१७):

प्रेम-विरह प्रधान, आत्मान्वेषण प्रधान।

कामिनी: राजनीतिक-स्त्रीवाद प्रधान, मिथकक पुनर्पाठ केन्द्रीय, सामाजिक-यथार्थ मुख्य। कामिनी मैथिली स्त्री-काव्यकेँ व्यक्तिगत-भावसँ सामाजिक-राजनीतिक बनेलनि। ई युगान्तकारी परिवर्तन अछि।

६.२.२ अखिल-भारतीय स्त्री-काव्यमे तुलना

हिन्दी: अनामिका, सविता सिंह - शहरी-मध्यवर्गीय स्वर बंगला: मल्लिका सेनगुप्ता - राजनीतिक-कविता मराठी: हिरा भास्कर - दलित-फेमिनिस्ट स्वर मलयालम: सुगाता कुमारी - इको-फेमिनिस्ट स्वर

मैथिली: कामिनी - ग्रामीण-राजनीतिक-मिथक-पुनर्पाठक स्वर

कामिनीक विशिष्टता: ग्रामीण-यथार्थ + मिथकीय-पुनर्पाठ + राजनीतिक-चेतना क संयोजन।

६.३ सीमा आ आलोचनात्मक प्रश्न

६.३.१ विषमलैंगिकताक अनिवार्यता

सम्पूर्ण संग्रहमे विषमलैंगिक-संबंध (Heterosexual Relationship) अनिवार्य मानल गेल अछि। समलैंगिक, उभयलिंगी, ट्रान्सजेंडर स्वरक अभाव अछि।

क्वीर-फेमिनिस्ट आलोचना: कामिनी विषमलैंगिक-मानदंड (Heteronormative) पुनर्स्थापित करैत छथि, खण्डित नहि।

६.३.२ वर्ग-विश्लेषणक सीमा

"दू मुट्ठी धान"सन कविता वर्ग-प्रश्न उठबैत अछि, किन्तु वर्गीय-संघर्ष (Class Struggle) क कोनो रणनीति नहि प्रस्तुत करैत अछि।

मार्क्सवादी आलोचना: भावनात्मक-आलोचना पर्याप्त नहि, संगठित-प्रतिरोध आवश्यक।

६.३.३ जाति-प्रश्नक अनुपस्थिति

सम्पूर्ण संग्रहमे जाति-व्यवस्था (Caste System) क कोनो चर्चा नहि। की सीता सवर्ण छलीह? की द्रौपदी ब्राह्मणीय-पितृसत्ताक उत्पाद छलीह?

दलित-फेमिनिस्ट आलोचना: कामिनी सवर्ण-स्त्रीवाद (Upper-Caste Feminism) प्रस्तुत करैत छथि, जे जाति-अन्धतासँ ग्रस्त अछि।

६.३.४ धार्मिक-आलोचनाक सीमा

"पाखण्ड", "अग्नि-परीक्षा"सन कविता हिन्दू-धर्म आलोचना करैत अछि, किन्तु अन्य धर्म पर मौन अछि।

सेक्युलर आलोचना: की मुस्लिम, ईसाई, बुद्ध स्त्रीक शोषण नहि अछि? धार्मिक-चयनात्मकता सीमा अछि।

६.३.५ आन्दोलनक अभाव

कविता व्यक्तिगत-विद्रोह प्रस्तुत करैत अछि, किन्तु सामूहिक-आन्दोलन क कोनो संकेत नहि।

सामाजिक-आन्दोलनक सिद्धान्त: व्यक्तिगत-चेतना पर्याप्त नहि, सामाजिक-संगठन चाही।

६.४ भविष्यक दिशा: कामिनी-परम्पराक विकास

६.४.१ अन्तर्विषयकता (Interdisciplinarity)

भविष्यक मैथिली स्त्री-काव्यकेँ समाजशास्त्र, मनोविज्ञान, राजनीति-विज्ञानसँ संवाद करबाक चाही।

६.४.२ बहु-स्वरता (Polyphony)

दलित, आदिवासी, मुस्लिम, LGBTQ+स्त्रीक स्वर सेहो सम्मिलित हेबाक चाही।

६.४.३ सैद्धान्तिकीकरण (Theorization)

मात्रकविता नहि, स्त्रीवादी-सिद्धान्तक मैथिलीकरण सेहो आवश्यक। मिथिला-विशिष्ट स्त्रीवाद क विकासहेबाक चाही।

६.४.४ अनुवाद आ वैश्वीकरण

कामिनीक कविताक अंग्रेजी, हिन्दी, अन्य भारतीय-भाषामे अनुवादहेबाक चाही - वैश्विक स्त्रीवादी-संवाद लेल।

समाहार (Conclusion)

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" मैथिली साहित्यक युगान्तकारी कृति अछि। ई:

1. ज्ञानमीमांसीय स्तरपर: गंगेशक नव्य-न्यायक काव्यिक प्रयोग - प्रमाण-सिद्धान्तसँ स्त्री-अनुभवक प्रमाणीकरण
2. साहित्यिक-ऐतिहासिक स्तरपर: विदेह समानान्तर-इतिहासक आदर्श उदाहरण - सबाल्टर्न-स्वरक लोकतान्त्रिक-प्रकाशन
3. सौन्दर्यशास्त्रीय स्तरपर: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्यक समन्वय - भारतीय काव्यशास्त्रक स्त्रीवादी पुनर्पाठ
4. वैश्विक-सैद्धान्तिक स्तरपर: बोउवार, स्पिवाक, बटलर, फूको, लाओ-त्सुक भारतीय-मैथिली उदाहरण

अन्तिम निष्कर्ष:

कामिनी मैथिली स्त्री-काव्यकेँ राजनीतिक-हथियार बनेलनि। हुनक कविता केवल सौन्दर्यानुभूति नहि, बल्कि सामाजिक-परिवर्तनक उपकरण अछि।

गंगेशक शब्दमे कहब तँ: "यथार्थज्ञानं प्रमाणम्" - सत्य-ज्ञान प्रमाण छी। कामिनीक कविता स्त्री-यथार्थक प्रमाण अछि - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अनुपलब्धि - चारू प्रमाणसँ प्रमाणित।

विदेह-परंपराक भाषामे: समानान्तर-इतिहासक मील-पाथर।

भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक भाषामे: करुण-रौद्र-वीरक रसात्मक-संश्लेषण।

पाश्चात्य-फेमिनिज्मक भाषामे: तृतीय-विश्वक प्रतिच्छेदी-स्त्रीवाद (Third World Intersectional Feminism)।

चीनी-दर्शनक भाषामे: यिन-शक्तिक जागरण।

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" मैथिली साहित्यक अनिवार्य पाठ अछि - ने केवल स्त्रीवादी दृष्टिसँ, बल्कि सम्पूर्ण मानवीय-मुक्तिक दृष्टिसँ।

ई विश्लेषण कामिनीक काव्य-संग्रहक समग्र, गहन, बहुआयामी मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि - जे विदेह समानान्तर इतिहासक चारि-स्तम्भीय पद्धतिक वास्तविक प्रयोग अछि।

"खण्ड-खण्ड मे बँटैत स्त्री" समकालीन मैथिली कवितामे स्त्रीवादी चेतनाक एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। कामिनी केवल स्त्रीक पीड़ाकवर्णन नहि करैत छथि, बल्कि पितृसत्तात्मक संरचनाक गहन विश्लेषण प्रस्तुत करैत छथि।

प्रमुख उपलब्धि:

1. मिथकीय पुनर्पाठ: सीता, द्रौपदी, यशोदाक समकालीन व्याख्या

2. सामाजिक यथार्थ: कन्या-दान, अग्निपरीक्षा, चीरहरणक प्रश्नांकन

3. भाषिक सौन्दर्य: मैथिलीक लोक-तत्त्वक सुन्दर प्रयोग

4. दार्शनिक गहनता: अस्तित्व, नियति, मुक्तिक विवेचन

5. काव्य-शिल्प: प्रतीक, रूपक, व्यंग्यक सफल प्रयोग

सीमा: कतेको कविता केवल भावनात्मक स्तरपर रहि जाइत अछि, राजनीतिक विश्लेषण कम अछि। तथापि, ई संग्रह मैथिली स्त्री-काव्यमे मीलक पाथर अछि।

२

शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम": समीक्षा आ कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण

प्रस्तावना: मैथिली साहित्यमे क्वीर-क्रान्तिक ऐतिहासिक क्षण

शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"(विदेह १३६; १५ अगस्त २०१३ आ सदेह १५) मैथिली साहित्य-इतिहासक सर्वाधिक साहसिक आ सैद्धान्तिक रूपसँ परिष्कृत कविता अछि। पहिल बेर मैथिली कवितामे:

1. समलैंगिक-स्त्री-अनुभव (Lesbian Experience) केन्द्रीय विषय बनल।

2. पाश्चात्य क्वीर-फेमिनिस्ट सिद्धान्त (एड्रियन रिच, रैडिकल फेमिनिज्म) मैथिली-संदर्भमे प्रयुक्त भेल।

3. विषमलैंगिकता (Heterosexuality) केँ अनिवार्य-संरचना (Compulsory Institution) मानल गेल, स्वाभाविक नहि।

4. मैथिल लोक-परंपरा (सखी-बहिनपा) केँ क्वीर-सांस्कृतिक-स्मृति रूपमे पुनर्व्याख्यायित कएल गेल।

ई कविता कामिनीक विषमलैंगिक-सीमाक पूर्ति करैत अछि आ विदेह समानान्तर इतिहासक क्वीर-समावेशी चरित्र सिद्ध करैत अछि।

खण्ड १: काव्य-संरचना आ वैचारिक-स्थापत्य

१.१ त्रिस्तरीय कथा-संरचना (Three-Tier Narrative Structure)

कविता तीन स्पष्ट खण्डमे विभाजित अछि:

खण्ड १: संघर्ष (Confrontation)

ओही दुनू'सिस्टर'केँ देखलहु लट फलकेनै

...

कहलियन्हि अहाँलोकनि बुझाय तँ छी अभिजाति

मुदा ऐँये, संस्कार कियै भ'गेल अपचालि

इहो छियैक एक तरहक व्यभिचार

खण्ड २: सैद्धान्तिक-शिक्षा (Theoretical Pedagogy)

अहाँ सुनने छियैक एंड्रीन रिचक विचार?

हुनक कहल "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" शब्दक सार?

...

अहाँ सुननै होए वा नहि "रैडिकल फेमिनिनिज्म"क नाम

खण्ड ३: सांस्कृतिक-पुनर्पाठ (Cultural Re-Reading)

अपना सबहक ओहिठां रहै सखी-बहिनपा लगबैक रीत

औंढ़नी बदलि, ऐंठ पानसुपारी खुआ

ई संरचना ब्रेख्तीय शिक्षण-नाटक (BrechtianLehrstück) क काव्यिक रूपान्तरण अछि - जतय पूर्वाग्रह→सिद्धान्त→परिवर्तन क क्रम अछि।

१.२ पद्य-लेख विधा (Verse-Essay Form)

ई कविता कविता आ सैद्धान्तिक-निबन्ध क संश्लेषण अछि। आचार्य भामह "काव्यालंकार" (७वीं सदी) मे गद्य-पद्य-मिश्रित काव्य (Champū) क चर्चा केलनि। ई आधुनिक पद्य-विमर्श (Verse-Discourse) अछि।

विशेषता:

“काव्यिक-भाषा: "लट फलकेनै", "मुसकेलीह", "तामससँ हमर भृकुटि तन्तु गेल तरारि"

” सैद्धान्तिक-भाषा: "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम", "रैडिकल फेमिनिनिज्म", "सिस्टरहूड इज पावरफूल"

तुलना - कामिनी:

कामिनीक कविता शुद्ध-भाव-काव्य (Pure Lyric) अछि:

जखन कखनो खसैत छै

कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर

शान्ति लक्ष्मी विचार-काव्य (Didactic Poetry) प्रस्तुत करैत छथि - जे ज्ञानोदय-परंपरा (Enlightenment Tradition) सँ प्रभावित अछि।

खण्ड २: सैद्धान्तिक-आधार आ पाश्चात्य-स्रोत

२.१ एड्रियन रिचक "Compulsory Heterosexuality and Lesbian Existence" (१९८०)

कविता एड्रियन रिचक नाम स्पष्ट रूपसँ उल्लेखित करैत अछि:

अहाँ सुनने छियैक एंड्रीन रिचक विचार?

हुनक कहल "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" शब्दक सार?

जकर अर्थ भेलय-'सखि-बहिनपा भावक परिविस्तार'

रिचक मुख्य सिद्धान्त:

१. Compulsory Heterosexuality (अनिवार्य-विषमलैंगिकता): विषमलैंगिकता स्वाभाविक नहि, बल्कि संस्थागत-दबाव अछि।

कवितामे:

दुनियाँक सभ नारी नहि अछि भागक बली

जकरा अपन नर संग मिलैत होइक अंतरमोनक नली

२. Lesbian Continuum (लेस्बियन-निरंतरता): स्त्री-केन्द्रित संबंधक विविध रूप - यौनिकतासँ आगाँ:

कवितामे:

एहिमे बुझाओल गेल अछि दैहिक-संसर्गसँ बेशी आत्माक तालबंध

दूई आत्माक तादात्मीय मिलन संबंध

३. Woman-Identified Women (स्त्री-केन्द्रित स्त्री): जे स्त्री पुरुषक बदला स्त्रीसँ प्राथमिक भावनात्मक-बौद्धिक-यौनिक संबंध रखैत छथि।

कवितामे:

सखी-बहिनपाय ओकरेसँ जुड़य जकरासँ बढ़य आत्मीय मनबंध

२.२Radical Feminism (कट्टरपंथी नारीवाद)

कविता रैडिकल फेमिनिज्म सैद्धान्तिक-परिचय देलक:

अहाँ सुननै होए वा नहि "रैडिकल फेमिनिनिज्म"क नाम

ई छियैक पछमी नारीवादी आन्दोलनक विद्रोही शाखाक उपनाम

रैडिकल फेमिनिज्मक मुख्य तर्क (कवितामे):

१. पुरुष-नियंत्रण = स्त्री-देह-शोषण:

पोर्नोग्राफी, वेश्यावृति, बलत्कार, घरेलूहिंसा, दहेजादिक आधार छै नारीदेह

स्त्री हेतु तेँ आब महाक जरूरी जे ओ भ'जाउथ विदेह

२. पितृसत्तामे स्त्री = यौनिक-वस्तु:

बेसी पुरूख बुझै छथि स्त्रीकेँ केलीक्रियाक निष्क्रिय-साझीदार

कोखि बढ़ावैक धारियित्री, गर्भ धारणक सुगढ़ औजार

३. लेस्बियनिज्म = पितृसत्ताक अस्वीकार:

पुरूखगणक मोन तखने हेतै आब हेंठ आ स्त्रीकेँ भेटतैक मोल

जखन नारी तोड़ि देती परिणय, परिणयपुर्व-कौमार्य, पतिव्रताक अधिमोल

४. Sisterhood is Powerful:

रैडिकल फेमिनिनिस्टक नारा छैक "सिस्टरहूड इज पावरफूल"

मतलब'बहिनपायमे छैक बहुत बलबूत'

२.३ पाश्चात्य-सिद्धान्तक मैथिली-अनुवाद: चुनौती आ सफलता

चुनौती: "Lesbian Continuum" → "सखि-बहिनपा भावक परिविस्तार" "Sisterhood" → "बहिनपा" "Compulsory Heterosexuality" → (अप्रत्यक्ष - "दुनियाँक सभ नारी नहि अछि भागक बली")

सफलता: शान्ति लक्ष्मी पाश्चात्य-सिद्धान्त केँ मैथिल-सांस्कृतिक-संदर्भमे अनुवादित केलनि - ई केवल भाषान्तर नहि, सांस्कृतिक-अनुवाद (Cultural Translation) अछि।

तुलना - कामिनी:

कामिनीक कवितामे पाश्चात्य-सिद्धान्तक कोनो स्पष्ट संदर्भ नहि - ओ अनुभव-केन्द्रित छथि, सिद्धान्त-केन्द्रित नहि। शान्ति लक्ष्मी सिद्धान्त-प्रधान काव्य लिखलनि।

खण्ड ३: पुरुष-यौनिकताक समीक्षा

३.१ स्त्री-देहक संगीत-रूपक (Musical Metaphor)

कविताक सर्वाधिक मौलिक आ शक्तिशाली अंश:

स्त्रीदेहक संगीत होइत छै शास्त्रीय रचनाबंध

पहिने ध्रुपद धमार आ आलाप तखन खयाल आओर तान तराना

मुदा जँ अहाँ छी पॉप संगीतक ररधुस धुम-धड़ाकक दिवाना

तँ एकर विद्रुपताकेँ देल जेतय सहजहि हरैरि

तोड़िमरोरि

विश्लेषण:

१. शास्त्रीय संगीत = स्त्री-यौनिकता:

ध्रुपद, धमार, आलाप = प्रारम्भिक आत्मीयता

खयाल = गहन संवाद

तान, तराना = यौनिक-आनन्द

२. पॉप संगीत = पुरुष-यौनिकता:

धुम-धड़ाका = त्वरित-संभोग

विद्रुपता = स्त्री-देहक हिंसा

तोड़िमरोरि = बलात्कार

ई रूपक भारतीय शास्त्रीय संगीत-परंपराक प्रयोग स्त्री-यौनिकता-समीक्षा लेल करैत अछि- अद्वितीय काव्य-कौशल।

३.२ सहमति-केन्द्रित यौनिकता (Consent-CenteredSexuality)

बेसी पुरूख रहैत छथि हरदम उग्रसंसर्गक अगुतायल

नहि देखैत अछि ओकर दैहिकमित्र सहमति छथि वा डेरायल

ई सहमतिक नैतिकता (Ethics of Consent) अछि - जेMeTooयुगक केन्द्रीय प्रश्न।

मनक एकात्मकता साधने बिना देह पर भ'जायब हावी

कहु एहि बातकेँ कोना बुझाबी

सत कही तँ ई छियैक एकटा भियावह अपराध

बलत्कारेक सदियह दायभाग

तुलना - कामिनी:

कामिनीक "तार-तार भेल जीवन" कवितामे विरह-वेदना अछि, किन्तु यौनिक-हिंसाक चर्चा नहि। शान्ति लक्ष्मी विवाहेतर-बलात्कार (Marital Rape) क सीधा आरोप लगबैत छथि:

परस्पर सुक्ष्मतम दुःख-सुखसँ एकाकार भेनय बिना

एक-दोसरक मोनमे गहनतम सम्मान जगौने बिना

सीधे दैहिक स्पर्श पर भ'जेबैक उतारू

तँ अहीँ बुझाबु-

नहि छियैक ई स्त्रीमोन संग क्रुरतम खेल

खण्ड ४: मैथिल लोक-परंपराक क्वीर-पुनर्पाठ

४.१ सखी-बहिनपा: क्वीर-सांस्कृतिक-स्मृति

कविताक सर्वाधिक मौलिक योगदान मैथिल सखी-बहिनपा परंपराक क्वीर-पुनर्व्याख्या अछि:

अपना सबहक ओहिठां रहै सखी-बहिनपा लगबैक रीत

औंढ़नी बदलि, ऐंठ पानसुपारी खुआ

वा कँगुरिया आँगुर थुकथुका...

कहु नेनपनमे कहियो जोड़ने छलहु एहन पीरीत

बान्हल जाइत छलैक सखी-बहिनपाक एहने बन्हन मजगूत

जे वियाहे बन्धन सनक होइत छलैक सुपवित्र अजगूत

विश्लेषण:

१. सखी-बहिनपा = विवाह-समतुल्य-संबंध:

औंढ़नी बदलि = विवाह-संस्कार (वर-वधू औंढ़नी बदलैत छथि)

ऐंठ पानसुपारी खुआ = विवाह-रस्म

कँगुरिया आँगुर थुकथुका = शपथ-ग्रहण

२. सखी-बहिनपाक विशेषता:

कतैक कठिन छल एक-दोसरक गुप्तराजकेँ ताजीवन सहेजनाय

जीनगीक डेग डेग पर तनमनधनसँ सखीक काज एनाय

३. गुप्त-नाम-प्रणाली:

सखी-बहिनपायमे नहि लेल जाइछ एक-दोसरक असल नाम

कहै जाइत छथि एक दोसरकेँ लौंग, पान, सुपारी, जरदा

वा फूलक नामपर जुही, गुलाब, बेली, चंपा, गेंदा

तुलनात्मक-प्रश्न:

परणीतोतँ अपन ससूर, भैंसूर, वरक नहि लैत छथि नाम?

४.२ क्वीर-इतिहासलेखन (Queer Historiography)

शान्ति लक्ष्मी क्वीर-इतिहासलेखनक मैथिली उदाहरण प्रस्तुत केलनि। पाश्चात्यमेJudith Butler, Eve Kosofsky Sedgwick, Adrienne Richलोक-परंपरामे क्वीर-तत्त्व खोजैत छथि।

उदाहरण:

चीनमे "नू-शू"=स्त्री-विशिष्ट-लिपि (Women's Script)

अफ्रीकामे "Woman-Woman Marriage" =स्त्री-स्त्री-विवाह

मिथिलामे "सखी-बहिनपा" = क्वीर-सांस्कृतिक-स्मृति

विदेह समानान्तर इतिहासमे महत्त्व:

विदेह-परंपरा मिथिला-इतिहासक पुनर्पाठ करैत अछि। शान्ति लक्ष्मी सखी-बहिनपाकेँ विषमलैंगिक-संस्कार मानबाक बदला क्वीर-परंपरामानलनि - ई समानान्तर-इतिहासक आदर्श अछि।

खण्ड ५: कामिनीसँ तुलनात्मक विश्लेषण

५.१ विषय-वस्तु (Subject Matter)

कामिनी:

विषमलैंगिक-संबंध केन्द्रीय

पुरुष-त्याग, पुरुष-शोषण मुख्य विषय

कोनोLGBTQ+संदर्भ नहि

उदाहरण:

माधव! अहाँ केनाबिसरि गेलियै

की हम अहाँक राधा छी ("दोसर कृष्ण")

शान्ति लक्ष्मी:

समलैंगिक-स्त्री-संबंध केन्द्रीय

विषमलैंगिकताक आलोचना मुख्य विषय

स्पष्टLGBTQ+स्वर

उदाहरण:

पुरूखक एहि क्रुरतम खेलक प्रतिक्रिया तीक्ष्ण

जनम लेलकै हैं आजुक लेस्बियनिज्म

५.२ सैद्धान्तिक-आधार (Theoretical Foundation)

कामिनी:

अनुभव-केन्द्रित (Experience-Based)

भारतीय मिथक-पुनर्पाठ (सीता, द्रौपदी)

कोनो पाश्चात्य-सिद्धान्तक स्पष्ट उल्लेख नहि

शान्ति लक्ष्मी:

सिद्धान्त-केन्द्रित (Theory-Based)

पाश्चात्य-फेमिनिस्ट-सिद्धान्तक स्पष्ट उल्लेख (एड्रियन रिच, रैडिकल फेमिनिज्म)

मैथिल-परंपराक सैद्धान्तिक-पुनर्व्याख्या

५.३ काव्य-रूप (Poetic Form)

कामिनी:

मुक्त-छन्द (Free Verse)

भाव-प्रधान (Lyrical)

संक्षिप्त, तीव्र (Concise, Intense)

उदाहरण:

जखन कखनो खसैत छै

कोनो स्त्रीक आँखि सँ नोर ("नोर")

शान्ति लक्ष्मी:

पद्य-लेख (Verse-Essay)

विचार-प्रधान (Didactic)

विस्तृत, व्याख्यात्मक (Elaborate, Explanatory)

उदाहरण:

अहाँ सुनने छियैक एंड्रीन रिचक विचार?

हुनक कहल "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" शब्दक सार?

जकर अर्थ भेलय-'सखि-बहिनपा भावक परिविस्तार'

५.४ रस-विधान (Aesthetic Emotion)

कामिनी:

करुण रस प्रधान (Pathos)

रौद्र रस गौण (Fury)

भाव-साधारणीकरण सफल (Universalization of Emotion)

शान्ति लक्ष्मी:

वीर रस प्रधान (Heroic)

रौद्र रस सहायक (Fury)

शान्त रस अंतिम (Peace) - "विश्वक चन्द्रधवल संस्कृतिक गालपर लेभरल हमरा अखरल दागकृष्ण"

५.५ ध्वनि-योजना (Suggestive Power)

कामिनी:

रस-ध्वनि (Suggestion of Emotion)

व्यञ्जना-शक्ति गहन (Suggestive Power Deep)

उदाहरण:

गुलाबक पत्ती नहि अछि

अहाँक प्रेम ("मौन")

वाच्यार्थ: प्रेम बाह्य-प्रदर्शनसँ मुक्त अछि व्यंग्यार्थ: गहन शान्त-प्रेम शब्दातीत अछि

शान्ति लक्ष्मी:

वस्तु-ध्वनि (Suggestion of Fact)

अभिधा-शक्ति प्रधान (Denotative Power Primary)

उदाहरण:

लेस्बियनिज्म जीवनढ़ंग संग जहिया ईलोकनि क'लेतीह आत्मसात

वाच्यार्थ = व्यंग्यार्थ: सीधा सैद्धान्तिक-कथन, ध्वनि-योजना सीमित

५.६ पाठक-संबोधन (Reader Address)

कामिनी:

अप्रत्यक्ष-संबोधन (Indirect Address)

लैंगिक-तटस्थ (Gender-Neutral)

शान्ति लक्ष्मी:

प्रत्यक्ष-संबोधन (Direct Address) - "अहाँ"

विशिष्ट-पाठक (Specific Reader) -विषमलैंगिक स्त्री

शैक्षणिक-स्वर (Pedagogical Tone)

उदाहरण:

अहाँ सुनने छियैक एंड्रीन रिचक विचार?

...

कहु महिलाकेँ महिला संग सहवास

सिनेहक ई कोनरूप केलकै नवविकास?

खण्ड ६: गंगेशक नव्य-न्यायसँ मूल्यांकन

६.१ प्रत्यक्ष-प्रमाण (Perceptual Knowledge)

गंगेशक परिभाषा: "इन्द्रियार्थसन्निकर्षोत्पन्नं ज्ञानम्"

कवितामे:

ओही दुनू'सिस्टर'केँ देखलहु लट फलकेनै

उत्फुल्ल मुँह विहुँसेनै

मटकल चलि आवैत

ई प्रत्यक्ष-दर्शन अछि - लेस्बियन-युगलक सुखी अवस्थाक साक्षात् अनुभव।

तुलना - कामिनी:

कामिनी सेहो प्रत्यक्ष-अनुभव प्रस्तुत करैत छथि:

छाती जुराइत अछि

ई हमरे बाबाक लगाओल

कलम-गाछी छी ("दू मुट्ठी धान")

भेद: कामिनी स्वयंक अनुभव; शान्ति लक्ष्मी अन्यक अनुभव देखि क'प्रतिक्रिया।

६.२ अनुमान-प्रमाण (Inferential Knowledge)

कवितामे तर्क-संरचना:

प्रतिज्ञा (Thesis): लेस्बियनिज्म स्त्री-मुक्तिक मार्ग अछि

हेतु (Reason): पुरुष-स्त्री-यौनिकतामे असमानता, हिंसा, शोषण अछि

उदाहरण (Example):

कोखि बढ़ावैक धारियित्री, गर्भ धारणक सुगढ़ औजार

उपनय (Application):

पुरूखक एहि क्रुरतम खेलक प्रतिक्रिया तीक्ष्ण

जनम लेलकै हैँ आजुक लेस्बियनिज्म

निगमन (Conclusion):

ई पूर्ण पञ्चावयव-न्याय (Complete Five-Membered Syllogism) अछि।

६.३ शब्द-प्रमाण (Testimonial Knowledge)

गंगेशक आप्त-वचन सिद्धान्त: "आप्तवचनं शब्दः"

कवितामे:

शान्ति लक्ष्मी एड्रियन रिच कैँ आप्त (Authoritative Source) मानैत छथि:

अहाँ सुनने छियैक एंड्रीन रिचक विचार?

प्रश्न: की पाश्चात्य-फेमिनिस्ट मैथिल-संदर्भमे आप्त छथि?

उत्तर: शान्ति लक्ष्मी सार्वभौमिक-ज्ञान मानैत छथि - जे स्थानीय-सांस्कृतिक-अनुभवसँ प्रमाणितहेबाक चाही। ओ सखी-बहिनपा परंपरासँ रिचक सिद्धान्तक मैथिल-प्रमाणीकरण करैत छथि।

६.४ उपमान-प्रमाण (Analogical Knowledge)

कवितामे:

समानता (Similarity): सखी-बहिनपा = लेस्बियन-निरंतरता

दुनू स्त्री-केन्द्रित-संबंध

दुनू विवाह-समतुल्य-बन्धन

दुनू ताजीवन-प्रतिबद्धता

भेद (Dissimilarity):

सखी-बहिनपा: यौनिक-तत्त्व अप्रत्यक्ष (विवादित)

लेस्बियन-संबंध: यौनिक-तत्त्व केन्द्रीय

शान्ति लक्ष्मी अर्ध-साम्य (Partial Similarity) स्थापित करैत छथि- ई गंगेशक उपमान-प्रमाणक उत्कृष्ट प्रयोग अछि।

खण्ड ७: विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान

७.१ विदेहक क्वीर-समावेशी चरित्र

महत्त्वपूर्ण तथ्य: "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" विदेह: १३६ आसदेह: १५ मे प्रकाशित भेल।

निष्कर्ष: विदेह-परंपराLGBTQ+-समावेशी अछि, केवल विषमलैंगिक-स्त्रीवाद नहि।

साहित्य अकादेमी बनाम विदेह:

साहित्य अकादेमी:

परम्परागत-मूल्य रक्षक

विषमलैंगिकता अनिवार्य

LGBTQ+-विमर्श अनुपस्थित

विदेह:

समानान्तर-मूल्य स्थापक

यौनिक-विविधता स्वीकृत

LGBTQ+-विमर्श उपस्थित

७.२ कामिनीसँ शान्ति लक्ष्मी: विदेह-विकास-क्रम

विदेह-परंपराक विकास:

चरण १: भाव-प्रधान स्त्री-काव्य; चरण२: राजनीतिक-स्त्रीवाद; चरण२ (विदेह १३६; २०१३): क्वीर-फेमिनिज्म, शान्ति लक्ष्मी चौधरी "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"।

निष्कर्ष: विदेह-परंपरा गतिशील अछि, विकासशील अछि। कामिनीक विषमलैंगिक-सीमा कैँ शान्ति लक्ष्मीहुनकासँ पहिनहियेपार केलनि।

७.३ समानान्तर-इतिहासक पुनर्परिभाषा

विदेह समानान्तर इतिहासक अर्थ:

1. साहित्य अकादेमीक समानान्तर (कामिनी केलनि)

2. विषमलैंगिक-परंपराक समानान्तर (शान्ति लक्ष्मीकेलनि) ।

खण्ड ८: भारतीय सौन्दर्यशास्त्रसँ मूल्यांकन

८.१ रस-सिद्धान्त

प्रधान रस: वीर रस (Heroic)

स्थायी भाव: उत्साह (Enthusiasm)

विभाव (Determinant):

विषमलैंगिक-यौनिक-हिंसा

लेस्बियन-युगलक सुख

अनुभाव (Consequent):

तामससँ हमर भृकुटि तन्तु गेल तरारि

ओकरा देखलहु नखशिख आँखिगुड़ारि

व्यभिचारी भाव (Transitory Emotion):

क्रोध, गर्व, धृति

तुलना - कामिनी:

कामिनी करुण रस प्रधान; शान्ति लक्ष्मी वीर रस प्रधान।

कामिनी शोक (Sorrow) व्यक्त करैत छथि; शान्ति लक्ष्मी संघर्ष (Struggle) घोषित करैत छथि।

८.२ ध्वनि-सिद्धान्त

वस्तु-ध्वनि (Suggestion of Fact):

सखी-बहिनपायमे नहि लेल जाइछ एक-दोसरक असल नाम

कहै जाइत छथि एक दोसरकैँ लौंग, पान, सुपारी, जरदा

व्यंग्यार्थ: गुप्त-नाम-प्रणाली गुप्त-यौनिकताक संकेत अछि।

सीमा: शान्ति लक्ष्मी अभिधा-शक्ति प्रधान छथि, व्यञ्जना-शक्ति सीमित अछि। कामिनी व्यञ्जना-शक्तिमे श्रेष्ठ छथि।

८.३ वक्रोक्ति-सिद्धान्त

प्रश्न-वक्रोक्ति (Interrogative Obliquity):

कहु महिलाकेँ महिला संग सहवास

सिनेहक ई कोनरूप केलकै नवविकास?

परणीतोतँ अपन ससूर, भैंसूर, वरक नहि लैत छथि नाम?

ई व्यंग्य-वक्रोक्ति (Sarcastic Obliquity) अछि- प्रश्नक माध्यमसँ विरोधाभास उजागर कएल गेल अछि।

८.४ औचित्य-सिद्धान्त

वस्तु-औचित्य (Propriety of Subject):

की लेस्बियनिज्म मैथिली काव्यक उपयुक्त विषय अछि?

पक्ष: विदेह-परंपरा सर्व-विषय-समावेशी अछि

विपक्ष: मैथिल-समाजमे सामाजिक-स्वीकृति सीमित

रस-औचित्य (Propriety of Emotion):

वीर रस विद्रोही-विषयक लेल उपयुक्त अछि - औचित्य-युक्त।

भाषा-औचित्य (Propriety of Language):

"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम", "रैडिकल फेमिनिनिज्म" जेहन अंग्रेजी-शब्द मैथिलीमे अनौचित्य मानल जा सकैत अछि।

किन्तु: नव-अवधारणाक लेल नव-शब्द आवश्यक अछि - ई आधुनिक-औचित्य अछि।

खण्ड ९: पाश्चात्य आ चीनी सिद्धान्तसँ मूल्यांकन

९.१ क्वीर-थ्योरी (Queer Theory)

जुडिथ बटलरकGender Performativity:

बटलरक अनुसार, जेंडर = प्रदर्शन (Gender as Performance), जैविक-नियति नहि।

कवितामे:

एक देह तहन नै बुझैत छै दोसर देहक लिंगभेदी रूप

खाहे एकरा अपन मापदण्डमे प्रेम बुझियोक वा प्रेमक विरूप

ई बटलरक सिद्धान्तक काव्यिक-प्रस्तुति अछि - लिंग-भेद अप्रासंगिक बनैत अछि जखन आत्मिक-संबंध केन्द्रीय होइत अछि।

९.२ फूकोकPower/Knowledgeसिद्धान्त

मिशेल फूको: शक्ति आ ज्ञान परस्पर-संबद्ध अछि।

कवितामे:

विश्वक चन्द्रधवल संस्कृतिक गालपर लेभरल हमरा अखरल दागकृष्ण

"चन्द्रधवल संस्कृति" = विषमलैंगिक-ज्ञान-शक्ति-संरचना (Heteronormative Knowledge-Power Structure)

"दागकृष्ण" = लेस्बियनिज्म = ज्ञान-शक्ति-संरचनाक विरोध

ई फूकोवादी-विश्लेषण अछि - ज्ञान-प्रणाली शक्ति-प्रणाली अछि।

९.३ पोस्ट-कोलोनियल क्वीर-थ्योरी

गायत्री स्पिवाक बनाम शान्ति लक्ष्मी:

स्पिवाक प्रश्न: "Can the Subaltern Speak?"

शान्ति लक्ष्मीक उत्तर: हँ, क्वीर-सबाल्टर्न बाजि सकैत छथि।

ओही दुनू'सिस्टर'कैँ देखलहु लट फलकेनै

उत्फुल्ल मुँह विहुँसेनै

लेस्बियन-युगल स्वयं बाजि रहल छथि (सिस्टर कवयित्रीकैँ उत्तर दैत छथि), कोनो बुर्जुआ-प्रतिनिधि नहि।

किन्तु प्रति-प्रश्न: की शान्ति लक्ष्मी लेस्बियन-समुदायक प्रतिनिधि छथि, वा विषमलैंगिक-समर्थक छथि?

कविताक अन्त:

सभ गप सुनि हम मोने मोन भ'गेलहु अवाक

प्रत्योत्पन्नमतिमे सहजहि नहि फुरल की हेतै एकर बौद्धिक जवाव

ई खुलल-अन्त (Open-Ended) अछि - कवयित्री सहयोगी (Ally) छथि, समुदाय-सदस्य नहि। ई सीमा सेहो अछि, शक्ति सेहो।

९.४ ताओवाद आ यिन-शक्ति

लाओ-त्सुक यिन-यांग:

यिन = स्त्री-तत्त्व

यांग = पुरुष-तत्त्व

कवितामे:

दूई आत्माक तादात्मीय मिलन संबंध

दूई देह जखन सुनैत छै परस्पर अंरतात्माक दु: ख-सुख

यिन-यिन संयोग = दोहरी यिन-शक्ति - ताओवादमे ई असंतुलन मानल जाएत।

किन्तु: शान्ति लक्ष्मी ताओवादी-संतुलनक अस्वीकार करैत छथि - यिन-शक्तिक स्वतंत्रता घोषित करैत छथि।

खण्ड १०: सीमाएँ आ आलोचनात्मक प्रश्न

१०.१ वर्ग-जाति-अनुपस्थिति

कामिनीक सीमा: जाति-प्रश्नक अभाव

शान्ति लक्ष्मीक सीमा: जाति आ वर्ग दुनूक अभाव

कविता "अभिजाति" सिस्टरक विषयमे अछि:

कहलियन्हि अहाँलोकनि बुझाय तँ छी अभिजाति

मुदा ऐँये, संस्कार कियै भ'गेल अपचालि

प्रश्न: की दलित, आदिवासी, मुस्लिम, गरीब लेस्बियनक अनुभव अभिजाति-लेस्बियनसँ भिन्न अछि?

दलित-क्वीर-फेमिनिज्म क अभाव- ई महत्त्वपूर्ण सीमा अछि।

१०.२ बाइसेक्शुअलिटी, ट्रान्सजेंडर, इन्टरसेक्स अनुपस्थिति

कविता केवल लेस्बियन (समलैंगिक-स्त्री) पर केन्द्रित अछि। LGBTQIA+स्पेक्ट्रमक अन्य पहचानक अभाव:

Bisexual (उभयलिंगी): अनुपस्थित

Transgender (ट्रान्सजेंडर): अनुपस्थित

Queer (क्वीर): अनुपस्थित

Intersex (इन्टरसेक्स): अनुपस्थित

Asexual (अलैंगिक): अनुपस्थित

१०.३ यौनिक-अनिवार्यता (Sexual Essentialism)

कविता यौनिक-तत्त्वक केन्द्रीयता पर जोर दैत अछि:

तत्पश्चात देहोजँ भ'जाइत छै एक दोसरकैँ अर्पित

ओही संसर्गसँ भेटैत छै मोनक तृप्ति

प्रति-प्रश्न: की अलैंगिक-लेस्बियन (Asexual Lesbian) -जे यौनिक-आकर्षण नहि अनुभव करैत छथि किन्तु रोमान्टिक-आकर्षण करैत छथि - क स्थान कतय अछि?

१०.४ सांस्कृतिक-साम्राज्यवाद (Cultural Imperialism)

आलोचनात्मक-प्रश्न: की पाश्चात्य-क्वीर-सिद्धान्त (एड्रियन रिच) मैथिल-संदर्भमे यांत्रिक-प्रयोग अछि?

पक्ष: एड्रियन रिच सार्वभौमिक-सत्य प्रस्तुत करैत छथि।

विपक्ष: मैथिल-समाजक विशिष्ट-यौनिक-संस्कृति अछि, जे पाश्चात्यसँ भिन्न अछि।

शान्ति लक्ष्मीक रणनीति: ओ सखी-बहिनपा परंपरासँ रिचक सिद्धान्तक मैथिल-प्रमाणीकरण करैत छथि- ई सांस्कृतिक-अनुवाद अछि, यांत्रिक-प्रयोग नहि।

१०.५ रैडिकल-फेमिनिज्मक समस्याग्रस्त तत्त्व

रैडिकल-फेमिनिज्मक कतेकोविचार समस्याग्रस्त मानल जाइत अछि:

१. ट्रान्स-बहिष्करण (Trans-Exclusion): कतेको रैडिकल-फेमिनिस्ट ट्रान्स-स्त्रीकैँ "वास्तविक-स्त्री" नहि मानैत छथि।

२. यौन-कर्म-विरोध (Sex Work Opposition): रैडिकल-फेमिनिस्ट यौन-कर्मीक अधिकारक विरोध करैत छथि।

३. जैविक-निर्धारणवाद (Biological Essentialism):

स्त्री हेतु तेँ आब महाक जरूरी जे ओ भ'जाउथ विदेह

ई जैविक-देहक अस्वीकार सूचित करैत अछि- जे ट्रान्स-बहिष्कारी भ'सकैत अछि।

शान्ति लक्ष्मी एहि समस्याग्रस्त तत्त्वक आलोचना नहि केलनि - ई सीमा अछि।

खण्ड ११: ऐतिहासिक महत्त्व आ भविष्यक दिशा

११.१ मैथिली साहित्य-इतिहासमे स्थान

युगान्तकारी योगदान:

1. पहिल क्वीर-काव्य: मैथिलीमे पहिल बेरLGBTQ+विमर्श

2. सैद्धान्तिक-परिपक्वता: पाश्चात्य-सिद्धान्तक सफल-अनुवाद

3. सांस्कृतिक-पुनर्पाठ: सखी-बहिनपाक क्वीर-व्याख्या

4. विदेह-परंपराक विस्तार: विषमलैंगिक-सीमा पार

तुलनात्मक महत्त्व:

हिन्दी: रूथ वनिता, सलीम किदवई "Same-Sex Love in India" (२००८)

बंगला: दीप्ति नवल "पुरुष प्रेम" (१८७०) - पुरुष-समलैंगिकता

मराठी: दत्ता भगत -LGBTQ+कविता

मैथिली: शान्ति लक्ष्मी चौधरी "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" - पहिल लेस्बियन-काव्य

११.२ विदेह-परंपराक भविष्य-दिशा

शान्ति लक्ष्मीक कविता विदेह-परंपराक नव-दिशा सूचित करैत अछि:

१. क्वीर[विषमलैंगिक मानकसँ भिन्न]-समावेशिता (Queer Inclusion): विदेह केवल विषमलैंगिक-स्त्रीवाद नहि, क्वीर-फेमिनिज्म सेहो

२. सैद्धान्तिक-विकास (Theoretical Development): विदेह केवल अनुभव-साझाकरण नहि, सैद्धान्तिक-विमर्श सेहो

३. वैश्विक-संवाद (Global Dialogue): विदेह पाश्चात्य-सिद्धान्तसँ संवाद करैत अछि, अलग-थलग नहि रहैत अछि

११.३ आवश्यक भविष्य-कार्य

१. दलित-क्वीर-काव्य: मैथिलीमे दलित-समलैंगिक अनुभवक काव्य चाही

२. ट्रान्सजेंडर-काव्य: मैथिलीमे ट्रान्सजेंडर-अस्मिताक काव्य चाही

३. गे-काव्य (Gay Poetry): मैथिलीमे पुरुष-समलैंगिकताक काव्य चाही

४. स्वदेशी-क्वीर-सिद्धान्त: पाश्चात्य-सिद्धान्तक यांत्रिक-प्रयोग नहि, मैथिल-विशिष्ट क्वीर-सिद्धान्त विकसितहेबाक चाही

समाहार (Conclusion)

अन्तिम मूल्यांकन

शान्ति लक्ष्मी चौधरीक "लेस्बियन कॉन्टिन्युअम" मैथिली साहित्य-इतिहासक सर्वाधिक साहसिक कविता अछि। ई:

१. सैद्धान्तिक-स्तरपर:

पाश्चात्य-क्वीर-फेमिनिज्मक मैथिली-अनुवाद

गंगेशक नव्य-न्यायक काव्यिक-प्रयोग

रैडिकल-फेमिनिज्मक परिचय

२. सांस्कृतिक-स्तरपर:

मैथिल-परंपराक क्वीर-पुनर्पाठ

सखी-बहिनपाक लेस्बियन-व्याख्या

विषमलैंगिक-मानदंडक चुनौती

३. साहित्यिक-स्तरपर:

पद्य-विमर्श विधाक विकास

शैक्षणिक-काव्यक परंपरा

वीर-रसक नव-प्रयोग

४. विदेह-इतिहासमे:

कामिनीक विषमलैंगिक-सीमाक पूर्ति

विदेहक क्वीर-समावेशिताक प्रमाण

समानान्तर-इतिहासक पुनर्परिभाषा

कामिनीसँ तुलना: संक्षेप

कामिनीशान्ति लक्ष्मी

विषयविषमलैंगिक-शोषणसमलैंगिक-मुक्ति

रसकरुण (पैथोस) वीर (हीरोइक)

पद्धतिअनुभव-केन्द्रितसिद्धान्त-केन्द्रित

परंपरामिथक-पुनर्पाठलोक-पुनर्पाठ

सीमा विषमलैंगिकता वर्ग-जाति-अभाव

शक्तिव्यञ्जना-शक्तिअभिधा-शक्ति

दुनू मिलि क': विदेह-परंपराक सम्पूर्ण स्त्रीवादी-दृष्टि - विषमलैंगिक आ समलैंगिक, दुनू।

अन्तिम वाक्य

गंगेशक शब्दमे: "यथार्थज्ञानं प्रमाणम्" - सत्य-ज्ञान प्रमाण छी।

कामिनी विषमलैंगिक-स्त्री-यथार्थक प्रमाण प्रस्तुत केलनि।

शान्ति लक्ष्मी समलैंगिक-स्त्री-यथार्थक प्रमाण प्रस्तुत केलनि।

विदेह-परंपरा सम्पूर्ण स्त्री-यथार्थक प्रमाण बनि रहल अछि - विषमलैंगिक, समलैंगिक, उभयलिंगी, ट्रान्सजेंडर, क्वीर - सबहक।

"लेस्बियन कॉन्टिन्युअम"-शान्ति लक्ष्मी चौधरी[स्त्री-सम्बन्ध, देह-राजनीति आ नारीवादी दृष्टिकोणक साहसिक कविता, विदेह १३६ आ सदेह १५] केवल कविता नहि, ई पद्य लेख अछि बल्कि मैथिली साहित्यमेLGBTQ+आन्दोलनक घोषणा-पत्र अछि।

२१. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र- २

सारांश

मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल। ओना मिथिलाक मौखिक परम्परामे राजा सलहेस आ दीना-भदरी सन दलित नायकक लोकगाथा सदिखन जीवित रहल, मुदा एकरा औपचारिक लिखित साहित्यमे आनबामे ब्राह्मणवादी वर्चस्व आ साक्षरताक एकाधिकार एकटा पैघ बाधा छल।

बीजशब्द: दलित · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र- २” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे

मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल। ओना मिथिलाक मौखिक परम्परामे राजा सलहेस आ दीना-भदरी सन दलित नायकक लोकगाथा सदिखन जीवित रहल, मुदा एकरा औपचारिक लिखित साहित्यमे आनबामे ब्राह्मणवादी वर्चस्व आ साक्षरताक एकाधिकार एकटा पैघ बाधा छल।

मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल। ओना मिथिलाक मौखिक परम्परामे राजा सलहेस आ दीना-भदरी सन दलित नायकक लोकगाथा सदिखन जीवित रहल, मुदा एकरा औपचारिक लिखित साहित्यमे आनबामे ब्राह्मणवादी वर्चस्व आ साक्षरताक एकाधिकार एकटा पैघ बाधा छल। मैथिलीमे एकटा समर्पित' दलित साहित्य' केर उदय हालक घटना थिक, जाहिमे अन्य क्षेत्रीय भाषासभक अनुवादक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि। विशेष रूपसँ' विदेह' आन्दोलनक प्रयाससँ तेलुगु, ओड़िया आ गुजरातीक सशक्त दलित परम्परा सभक अनुवाद मैथिलीक ओहि रिक्तताकेँ भरने अछि, जाहि सँ सन्दीप कुमार साफी आ उमेश पासवान सन मैथिल दलित लेखकसभकेँ विरोध आ आत्म-अस्मिताक लेल एकटा भाषाई आ वैचारिक आधार भेटल अछि। ऐतिहासिक अभाव आ उपेक्षित वर्गक संरचनात्मक चुप्पी बीसम शताब्दीक अन्त धरि मैथिलीमे औपचारिक दलित लिखित परम्पराक अभाव उपेक्षित वर्गक रचनात्मकताक कमी नहि, संस्थानिक बहिष्कारक परिणाम छल। ऐतिहासिक रूपसँ मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ समुदाय भाषाक मुख्य पहरेदार रहलाह, जाहि कारणे' मानक मैथिली' केँ हुनकरे बोली आ सांस्कृतिक सरोकार तक सीमित राखल गेल। एहि वर्चस्वक कारण मिथिलाक दलित समुदायक अनुभव साहित्यिक चेतनासँ दूर रहि गेल। मैथिली मौखिक साहित्यक सीमा आधुनिक दलित गद्य आ पद्यक उदयसँ पहिने, उपेक्षित वर्गक आवाज मुख्य रूपसँ' लोकगाथा' केर रूपमे जीवित छल। राजा सलहेस, नैका बनजारा, आ बिहुला बिसहरी सन गाथासभ ओहि नायकसभक गान करैत अछि जे निम्न जातिक भेला उपरान्त सेहो भेदभाव आ शोषणक विरुद्ध लड़लाह। ई सांस्कृतिक रूपसँ महत्वपूर्ण छल, मुदा साहित्यिक संभ्रांत वर्ग एकरा' गँवार' वा' लोक' कहि कऽ मुख्य साहित्यसँ अलग रखलक। एहि संरचनात्मक चुप्पीकेँ आर्थिक आ शैक्षणिक स्थितिसँ सेहो बल भेटल। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथामे देखल जा सकैत अछि जे दलित परिवारक लेल शिक्षासँ बेसी जरूरी जीवन

निर्वाहक लेल शारीरिक श्रम छल। साफीक माता-पिता धोबी जातिसँ छलाह आ गामक कपड़ा धो कऽ गुजर-बसर करैत छलाह, जाहिमे हुनका नगदक बदला अनाज वा आलू भेटैत छलनि। एहि आर्थिक विवशताक कारणे साफी सन कइएक दलित बच्चा स्कूल छोडि कऽ चण्डीगढ़ वा बेंगलोर सन शहरमे मजदूरी करय लेल विवश भेलाह। विदेह आन्दोलन आ लोकतान्त्रिक हस्तक्षेप कऽ रूपमे अनुवाद मैथिलीमे दलित स्वरक आधुनिक पुनरुत्थान' विदेह' आन्दोलनक डिजिटल आ साहित्यिक पहलक संग जुड़ल अछि। मैथिली साहित्य ताधरि परिपक्व नहि भऽ सकैत अछि जखन धरि ई अपन सभ भाषिक अनुभवकेँ स्वीकार नहि करै्त। मैथिलीमे दलित गद्य-पद्यक अभावकेँ देखैत अन्य भारतीय भाषासभक साहित्य दिस ताकल गेल। सांस्कृतिक अनुवादक यांत्रिकी' विदेह' मे अनुवाद मात्र शब्दक फेर-बदल नहि, बल्कि चेतनाकेँ जोड़बाक एकटा समाजशास्त्रीय कार्य अछि। एकर उद्देश्य मैथिल पाठककेँ' विरोधक सौन्दर्यशास्त्र' (Aesthetics of Protest) सँ परिचित करायब छल। ओड़िया, तेलुगु आ गुजरातीसँ अनुवादित रचनासभ मैथिलीकेँ प्रतिरोधक एकटा नव शब्दावली देलक, जे पारम्परिक अलंकृत आ श्रृंगारिक परम्परासँ मुक्त छल। अनुवादकक भूमिका, जेना पी. जयलक्ष्मी आ के. पुरुषोत्तमक काजमे देखल जाइत अछि, 'विदेशीकरण' (Foreignization) आ' देशीयकरण' (Domestication) क बीच संतुलन बनायब छल। तेलुगु उपन्यास' जिगिरी' (सदा लेल मित्र) क अनुवादमे तेलंगानाक क्षेत्रीय बोली आ उर्दू-तेलुगु मिश्रणक' देशी रंग' केँ सुरक्षित राखल गेल जाहिसँ दलित आ खानाबदोश अनुभवक बहुलता स्पष्ट भऽ सकय। तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य: मैथिलीमे तेलुगु दलित साहित्य तेलुगु दलित साहित्य मैथिली अनुवाद परियोजनाक लेल एकटा शक्तिशाली आधार बनल। तेलुगु आन्दोलन, जे १९८० क दशकमे करमचेडू आ चुंदुरू सन अत्याचारक बाद आर उग्र भेल, पारम्परिक वर्चस्वकेँ अस्वीकार करैत अछि। कोलकलुरी इनोचक "कौआ" (काकी): अछूतक सौन्दर्यशास्त्र" कौआ" कहानीमे इनोच कौआकेँ दलित समुदायक प्रतीकक रूपमे प्रयोग करैत छथि। नायक बण्डोड्डु मादिग जातिक छथि, जे अभावे-अभावमे जिबैत छथि। ओ कौआकेँ पकडि कऽ खा सकैत अछि, जकरा समाज अशुभ मानैत अछि। मैथिली अनुवाद एहि अस्तित्वक गन्धकेँ (Stench) पकड़ैत अछि, जे पाठककेँ चरम दरिद्रता आ मनोवैज्ञानिक प्रताड़नाक साक्षात्कार करबैत अछि। विनोदिनीक "कारी मसि" (ब्लैक इंक): शहरी क्षेत्रमे अस्मितातक कलंक विनोदिनीक "कारी मसि" आधुनिक शहरी भारतमे जातिक सूक्ष्म गतिकेँ उजागर करैत अछि। एकटा बच्ची श्रिया, जे अपन डायरीमे नीक चीजकेँ नीला मसि सँ आ खराब चीजकेँ कारी मसि (Black Ink) सँ लिखैत अछि, जखन अपन दलित सहेलीक अस्मिता जानैत अछि तऽ ओकर व्यवहारमे आयल घृणा ई देखबैत अछि जे जातिक कलंक कोना बच्चेसँ माथमे पैसल अछि। पेद्दिति अशोक कुमारक "सदा लेल मित्र" (जिगिरी): खानाबदोश श्रम विस्थापन' जिगिरी' उपन्यास कलन्दर समुदायक व्यथा कहैत अछि, जे भालू नचा कऽ गुजर करैत छलाह। जखन सरकार भालू प्रदर्शनपर रोक लगौलक, तऽ मुख्य पात्र ईमामकेँ अपन भालू' शादुल' केँ मारबाक वा त्यागबाक कठिन निर्णय लेबय पड़ल ताकि ओकर बेटाक भविष्य सुरक्षित भऽ सकय आ ओकरा दू एकड़ जमीन भेटि सकय। ई कहानी मिथिलाक विस्थापित कृषि श्रमिक सभक पीड़ा आ पारम्परिक व्यवसायक समाप्त हेबाक यथार्थसँ मेल खाइत अछि। अनुवादित प्रतिरोध: मैथिलीमे गुजराती दलित कविता अम्बेडकरवादी दर्शन आ मराठी दलित पैंथर आन्दोलनसँ प्रभावित गुजराती दलित कविता अपन' कठोर' आ' अनगढ़' (Rough diamond) गुणक लेल जानल जाइत अछि। मैथिलीमे एकर अनुवाद पारम्परिक कविताक विपरीत एकटा नव धरातल तैयार केलक।- अनीश गारंगेक "पोस्टर": ई कविता देखबैत अछि जे कोना दलित शरीरकेँ राजनीतिक विज्ञापनक लेल' पोस्टर' जकाँ प्रयोग कएल जाइत अछि, मुदा व्यक्ति स्वयं अदृश्य रहि जाइत अछि।- राजेंद्र वडेलक "जीता": यौन शोषणक विषयकेँ' जीत' सन व्यंग्यात्मक शब्दक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि, जे ऊँच जातिक व्यवस्थामे दलित स्त्रीपर वर्चस्वकेँ एकटा सामान्य हिंसाक रूपमे देखबैत अछि।- उमेश सोलंकीक "लोक, जमि जाए": सामाजिक उपेक्षाक ठंढमे लोकक' जमि' जयबाक वा जड़ि हेबाक स्थितिक चित्रण करैत अछि। स्वदेशी मैथिली दलित स्वरक उदय एहि क्षेत्रीय अनुवादसभक सबसँ पैघ प्रभाव स्वदेशी मैथिली दलित लेखनकेँ मान्यता देब छल। उमेश पासवान आ सन्दीप कुमार साफी आब अलग-थलग आवाज नहि, बल्कि एकटा अखिल भारतीय दलित चेतनाक हिस्सा छथि। उमेश पासवान: ग्रामीण यथार्थ आ' मुजरिम' केर अवधारणा उमेश पासवानक कहानी संग्रह' मुजरिम' ग्रामीण मिथिलाक दलित जीवनक एकटा' नैतिक गवाही' अछि। ओ' मुजरिम' शब्दकेँ चुनौती दैत छथि आ देखबैत छथि जे कोना ई लेबल सत्ता आ विशेषाधिकार प्राप्त व्यवस्था द्वारा उपेक्षित वर्गपर थोपल जाइत अछि। हुनकर कहानी' सुनन्दा' शिक्षा आ सामाजिक कलंकक संघर्ष देखबैत अछि, तऽ' सोलकनमा पोखैर' सामुदायिक संसाधनसँ दलितक बहिष्कारक मुद्दा उठाबैत अछि। हुनकर कविता संग्रह' वर्णित रस' कोसीक बाढ़ि, आतंकवाद आ युवाक आक्रोशकेँ दलित दृष्टि सँ देखैत अछि। सन्दीप कुमार साफी: मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा सन्दीप कुमार साफीक' बैशाखमे दलानपर' मैथिली साहित्यमे एकटा ऐतिहासिक मोड अछि। गजेन्द्र

ठाकुरक अनुसार, मैथिलीमे दलित आत्मकथाक पूर्ण अभाव छल, जाहि अभावकेँ ई कृति भरैत अछि। साफी अपन संघर्ष, धोबी जातिक वंशानुगत श्रम, आ चण्डीगढ़मे प्रवासी मजदूर कऽ रूपमे भेल दुर्घटना (पैरमे आगि लागब) क मार्मिक वर्णन करैत छथि। सौन्दर्यशास्त्रक पुनर्परिभाषा: दशम आ एकादश रस दलित स्वरक आगमन मैथिली सौन्दर्यशास्त्रकेँ पुनर्गठित कएलक अछि। पारम्परिक रस सिद्धान्त' आनन्द' पर जोर दैत छल, मुदा दलित आलोचक विद्रोह आ आक्रोशकेँ नव रसक रूपमे प्रस्तावित करैत छथि। 1. जीवनक लेल कला (Art for Life's Sake): साहित्यकेँ सामाजिक परिवर्तनक उपकरण मानल गेल। 2. दशम आ एकादश रस:' विद्रोह' आ' आक्रोश' (Cry) केँ पारम्परिक रसमण्डलमे शामिल करबाक मांग कएल गेल जइसँ उपेक्षित वर्गक लेखनक सही मूल्यांकन भऽ सकय। 3. सामूहिक अनुभव: दलित साहित्यक पीड़ा व्यक्तिगत नहि, बल्कि हजार सालक सामूहिक यंत्रणा अछि। 4. बोलीक प्रामाणिकता:' मानक' मैथिलीक बदला' गँवार' वा स्वाभाविक बोलीक प्रयोग कएल गेल जइसँ उपेक्षित वर्गक आघातकेँ प्रामाणिक रूपसँ व्यक्त कएल जा सकय। निष्कर्ष: एकटा बहुलतावादी मैथिली साहित्यक दिस मैथिलीमे अनूदित दलित साहित्य ई देखबैत अछि जे भाषा आब एकटा लोकतान्त्रिक विस्तारक दौरमे अछि। लिखित दलित स्वरक ऐतिहासिक अभाव रचनात्मकताक कमी नहि, बल्कि वर्चस्ववादी बहिष्कारक नतीजा छल। विदेह आन्दोलन द्वारा दलित साहित्यक अनुवाद ओहि रिक्तताकेँ भरबाक लेल एकटा' सेतु' क कार्य कएलक। ई अनुवाद मात्र विदेशी कहानी नहि अनलक, बल्कि एकटा तुलनात्मक ढाँचा देलक जाहिमे उमेश पासवान आ सन्दीप कुमार साफी अपन स्थानीय अनुभवकेँ स्वर दऽ सकलाह। डिजिटल आर्काइव आ सौन्दर्यशास्त्रक पुनर्परिभाषा द्वारा, समकालीन दलित आन्दोलन मैथिली साहित्यक' ब्राह्मणवादी एकाधिकार' केँ तोड़ि रहल अछि। मैथिली आब मात्र विद्वानसभक भाषा नहि, बल्कि अपन सभ भाषिक मानवता आ संघर्षकेँ प्रतिबिम्बित करय बला एकटा' ज्ञान समाज' (Knowledge Society) बनि रहल अछि। २ मैथिलीमे अनुवाद साहित्यक विकास आ अभिलेखीय महत्व: विदेह आन्दोलनक एकटा व्यापक विश्लेषण मैथिली भाषाक साहित्यिक परिदृश्य, जे उत्तर बिहार, झारखण्ड आ नेपालक तराई क्षेत्रक एकटा पैघ आबादी (१७ मिलियन सँ बेसी लोक) द्वारा बाजल जाइत अछि, वर्तमानमे डिजिटल तकनीक आ अनुवाद आन्दोलनक संगम सँ एकटा क्रान्तिकारी परिवर्तनक दौर सँ गुजरि रहल अछि। ऐतिहासिक रूप सँ मैथिली साहित्य कें दू टा भिन्न दृष्टिकोण सँ देखल गेल अछि: "संस्थापन" पक्ष, जे १९६५ सँ साहित्य अकादमी सन विशिष्ट संस्था सभ द्वारा संचालित अछि, आ "समानान्तर" परम्परा, जे भाषाक लोकतान्त्रिक आ लोक जडि कें पुनः प्राप्त करबाक प्रयास करैत अछि। एहि परिवर्तनक केन्द्रमे विदेह आन्दोलन अछि, जकर प्रतिनिधित्व पाक्षिक ई-पत्रिका विदेह (ISSN 2229-547X) आ ओकर व्यापक डिजिटल आर्काइव करैत अछि। ई मौलिक आ अनूदित रचना सभक एकटा समानान्तर संकलन तैयार क' क' एहि आन्दोलन परम्परागत वर्चस्व कें चुनौती देलक अछि आ मैथिली साहित्यिक विरासतक लेल एकटा वैश्विक भंडार स्थापित कएलक अछि। ई रिपोर्ट मैथिलीमे अनुवाद साहित्यक विश्लेषण करैत आन्दोलनक वैचारिक आधार, तकनीकी पद्धति आ सांस्कृतिक प्रभावक परीक्षण करैत अछि। मैथिली अनुवाद आन्दोलनक ऐतिहासिक आ भाषाई सन्दर्भ मैथिली साहित्यक बुझबाक लेल आवश्यक अछि ई बुझब जे अनुवाद समकालीन अभिलेखीय प्रतिरोधक एकटा शक्तिशाली उपकरण कखन आ कोना बनि गेल। भाषाक प्राचीनतम साहित्यिक अभिव्यक्ति चर्यापद मे भेटैत अछि, जे ७०० सँ १३०० ईस्वीक बीच बौद्ध सिद्ध कवि सभ (जेना लुईपाद आ सरहपा) द्वारा सन्ध्या भाषा मे लिखल गेल छल। विदेह आन्दोलन एकटा महत्वपूर्ण विद्वतापूर्ण हस्तक्षेप करैत ज्योतिरीश्वर-पूर्व प्रसिद्ध पदावलीकार विद्यापति आ संस्कृत/अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुर (१३५०-१४३५ ई.) क बीच स्पष्ट भेद करैत अछि। आन्दोलनक तर्क अछि जे संस्थापन पक्ष कवि विद्यापतिक परिचय कें संकुचित क' क' हुनकर गैर-ब्राह्मण आ विद्रोही पक्ष कें दबा देलक अछि। एहि सन्दर्भमे अनुवाद मात्र भाषाई अभ्यास नहि, बल्कि पुनरुद्धारिक एकटा वैचारिक कार्य अछि। दलित, महिला आ कात-करोटमे धकेलल समुदायक अनुभव कें अनुवादित क' क' आन्दोलन मैथिली साहित्यक केन्द्रमे "धड़कैत मानवीय हृदय" कें वापस आनि रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका आ डिजिटल आर्काइव संरचना २००० मे भालसरिक गाछ याहू सिटी फेर २००४मे ब्लॉगक रूपमे ई शुरू भेल आ २००८ मे विदेह क रूपमे पुनर्गठित ई पत्रिका मैथिली साहित्यक सभ सँ पुरान आ निरंतर डिजिटल उपस्थिति अछि। एहि पत्रिका ४३८ अंक प्रकाशित कएलक अछि, विदेह पेटार नाम सँ एकटा विशाल डिजिटल आर्काइव तैयार भेल अछि। एहि आर्काइव कें विभिन्न "सदेह" (भौतिक रूप) खण्ड सभमे संगठित कएल गेल अछि। विदेह आर्काइव आ अनूदित पोथी सभक वर्गीकरण विदेह आर्काइवक संरचना साहित्यिक संरक्षणक लेल एकटा व्यवस्थित दृष्टिकोण दर्शाबैत अछि। आर्काइव/खण्ड विषय विवरण सन्दर्भ विदेह सदेह २७ दोसर भाषा सँ मैथिलीमे अनूदित गद्य आ पद्य। अंक १-३५०; गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठक रचना। विदेह सदेह २८ अनूदित गद्य आ पद्यक व्यापक संकलन, जाहिमे पैघ उपन्यास सेहो अछि। क्षेत्रीय भारतीय आ अन्तर्राष्ट्रीय रचना सभ पर केन्द्रित। विदेह सदेह ३७ अनूदित गद्य-पद्यक

दोसर खण्ड; तेलुगु/ ओड़िया/ गुजराती दलित कथा/ पद्य सभ पर विशेष जोर। पेद्दिति अशोक कुमारक जिगिरी सेहो एहिमे शामिल अछि। गद्य-पद्य भारती विशेष "अनुवाद विशेषांक"। अंक ९७; देवनागरी आ तिरहुता दुनू लिपिमे उपलब्ध। मैथिली पोथी डाउनलोड कएल जा सकय बला पीडीएफ पुस्तक सभक श्रेणी। पुरुष परीक्षा आ मोहनदास सन अनुवाद शामिल अछि। लिपिक स्तर पर, आन्दोलन मिथिलाक्षर (तिरहुता) कें यूनिकोड मानकमे आनि डिजिटल प्रकाशन कें सुगम बनौलक अछि। आर्काइवमे ब्रेल लिपिमे पहिल मैथिली पुस्तक आ मैथिली सांकेतिक भाषा (Sign Language) क संसाधन सेहो उपलब्ध अछि। अनुवादक सिद्धान्त आ कला मैथिलीमे अनुवादक कार्य परिष्कृत सैद्धान्तिक दृष्टिकोण सँ प्रेरित अछि जे सांस्कृतिक निष्ठा आ भाषाई पहुँचक बीच सन्तुलन बनाबैत अछि। विदेह आर्काइवक निबन्ध "अनुवादक कला" (The Art of Translation) एहि जटिलताक अन्वेषण करैत अछि। भाषाई आ शैलीगत पद्धति मैथिली अनुवादमे "स्वर" (Tone) क अवधारणा महत्वपूर्ण अछि। गजेन्द्र ठाकुर आ अन्य अनुवादक निम्नलिखित रणनीति सभक प्रयोग करैत छथि: 1. गत्यात्मक तुल्यता (Dynamic Equivalence): स्रोत सन्देश कें प्रभाव कें मैथिली पाठकक हृदय धरि पहुँचाबय लेल नीक अनुवाद कएल जाइत अछि। 2. देशीकरण बनाम विदेशीकरण: किछु ग्रन्थ सभकें मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक अनुसार ढालल जाइत अछि (Domestication), तँ किछुमे मूल संस्कृतिक विशिष्टता कें सुरक्षित राखल जाइत अछि। 3. परम्परागत सेतु (Paratextual Bridging): पाद-टिप्पणी (Footnotes) आ शब्दकोश (Glossary) क प्रयोग सँ पुआ वा पांचाली सन सांस्कृतिक शब्द सभक व्याख्या कएल जाइत अछि। 4. सहयोगी अनुवाद: भाषाई विशेषज्ञ आ रचनात्मक लेखक मिलि क' भौगोलिक बारीकी आ अनुष्ठान सभ कें पकड़बाक प्रयास करैत छथि। सामाजिक इतिहासक मामला:' जिगिरी' क अनुवाद विदेह आर्काइवक एकटा महत्वपूर्ण परियोजना पेद्दिति अशोक कुमारक तेलुगु उपन्यास जिगिरी क सदा लेल मित्र (Friends Forever) नाम सँ मैथिली अनुवाद अछि। ई उपन्यास कलन्दर समुदायक सामाजिक इतिहास अछि जे रीछ-नाच (Bear-dancing) आ सँपेरा क' काज क' क' अपन जीविका चलबैत छलाह। वन्यजीव संरक्षण अधिनियमक बाद एहि समुदायक अस्तित्व संकटमे आबि गेल। मैथिली अनुवादमे एहि समुदायक पीड़ा कें क्षेत्रीय मुहावरा आ ग्रामीण बोलीक माध्यम सँ अत्यंत प्रभावशाली ढंग सँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। क्षेत्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय आयाम- पाखलो (कोंकणी): तुकाराम रामा शेटक एहि उपन्यासक अनुवाद डॉ. शंभु कुमार सिंह द्वारा कएल गेल अछि, जे गोआक मुक्तिक संघर्ष आ मिश्रित नस्लक बच्चा सभक सामाजिक पहचानक गप करैत अछि।- छिन्नमस्ता (हिन्दी): प्रभा खेतानक एहि उपन्यासक अनुवाद शहरी नारीवाद आ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद कें मैथिली आर्काइवमे स्थान देलक अछि।- बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन): ब्रेख्तक नाटकक अनुवाद सँ मैथिली रंगमंचमे "एलियनेशन" (Alienation) सन सैद्धान्तिक अवधारणा सभक प्रवेश भेल अछि।- कुरान: कुरानक पहिल अध्याय (अल-फातिहा) क अनुवाद मिथिलाक बहुलवादी वास्तविकता कें प्रतिबिम्बित करैत अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रभाव विदेहक माध्यम सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन मैथिली कथा साहित्य लेल एकटा निर्णायक मोड़ छल। हुनकर उपन्यास पङ्गु (२०२१ क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त) आ लघु कथा "बिसाँढ़" ग्रामीण संघर्ष आ मुसहर समुदायक यथार्थ कें बिना कोनो बनावट क' प्रस्तुत करैत अछि। ठाकुर द्वारा हुनकर रचना सभक अंग्रेजी अनुवाद जेना (Struggles of Life) एहि आन्दोलनक नैतिक स्वर कें विश्व स्तर पर पहुँचेने अछि। निष्कर्ष विदेह आन्दोलनक अनुवाद साहित्य आधुनिक भारतक सभ सँ महत्वाकांक्षी भाषाई आ अभिलेखीय परियोजना सभमे सँ एक अछि। अनुवादक माध्यम सँ "समानान्तर इतिहास" आन्दोलन संस्थापन पक्षक कथानक कें सुधारैत अछि आ चर्यापदक लोकतान्त्रिक जडि सँ ल' क' समकालीन दलित चेतना धरि कें सुरक्षित करैत अछि। एहि डिजिटल आर्काइव आ अनुवादक कलाक प्रति प्रतिबद्धताक माध्यम सँ विदेह सुनिश्चित करैत अछि जे "मिथिलाक आत्मा" सदैव जीवन्त आ वैश्विक पहुँचमे रहय।

[संदर्भ: प्रभास कुमार चौधरीक“इन्द्रधनुष”, अशोकक“प्रतिलोम” आ रमेशक“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो”]

दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र, भारतीय समीक्षाशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र, गंगेशक नव्य न्याय आ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक परिप्रेक्ष्यमे

भूमिका

मैथिली साहित्यक आधुनिक कालखण्डमे कथाक स्वरूप आ उद्देश्यमे जे क्रान्तिकारी परिवर्तन आएल अछि, तकर प्रस्थान विन्दु सामाजिक यथार्थवाद आ दलित चेतना केर उद्भव मानल जाइत अछि। प्रभास कुमार चौधरीक'इन्द्रधनुष', अशोकक'प्रतिलोम'आरमेशक'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मात्र तीनटा कथा नहि, अपितु मिथिलाक परिवर्तित सामाजिक-

आर्थिक परिदृश्य, वर्गीय द्वन्द्व आ दलित अस्मिताक संघर्षक एकटा विस्तृत आलेख थिक1। एहि कथा सभक अध्ययन जखन भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र, गंगेश उपाध्याय केर नव्य न्याय आ'विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क'केर आलोकमे कएल जाइत अछि, तखन साहित्यक ओहि प्रच्छन्न स्तर सभक उद्घाटन होइत अछि जे बेशी काल अभिजात्य विमर्शमे उपेक्षित रहि जाइत अछि। मिथिलाक परम्परागत'हवेली'संस्कृति आ'खबास'परम्परा सँ निकलि कऽ आब कथा ओहि'सुट्टा', 'मुनरा'आ'कैलास'धरि पहुँचि गेल अछि, जे अपन पसीना आ अधिकारक हेतु संघर्षरत अछि।

मैथिली साहित्यक आधुनिक कथा-परम्परा मे तीन गोट कृति मैथिली दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र लेल विशेष महत्त्व राखैत अछि-प्रभास कुमार चौधरीक“इन्द्रधनुष”, अशोकक“प्रतिलोम” आ रमेशक“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो” । ई तीनू कथा मिथिलाक ग्रामीण समाजक आर्थिक शोषण, जाति-व्यवस्थाक दंश, सामन्ती सत्ताक क्रूरता आ तिरस्कृत मानवता क प्रतिरोधक जीवन्त दस्तावेज अछि। प्रस्तुत अध्ययन एहि तीनू कृति कैँ पाँच गोट भिन्न-भिन्न आलोचनात्मक फ्रेमवर्क सँ परखैत अछि-

(१) दलित समीक्षाशास्त्र-जेजाति-उत्पीड़न, अस्पृश्यता आ दलित प्रतिरोधकैँ केन्द्रमे राखैत अछि;

(२) भारतीय समीक्षाशास्त्र-रस-सिद्धान्त, ध्वनि, वक्रोक्ति, अलङ्कार आ काव्यशास्त्रीय परम्पराक आलोकमे;

(३) पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र-मार्क्सवाद, उत्तर-औपनिवेशिकवाद, संरचनावाद, स्त्रीवाद आ नव इतिहासवाद क परिप्रेक्ष्यमे;

(४) गंगेशोपाध्यायक नव्य न्याय-प्रमाण, अनुमान, व्याप्ति आ शब्दज्ञानक दार्शनिक उपकरणसँ;

(५) विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क-मिथिलाक इतिहास, लोक-स्मृति, सांस्कृतिक अस्मिता आ समानान्तर आख्यानक आधारपर।

खण्ड१: कथा-परिचयआपाठ-विश्लेषण

१.१प्रभास कुमार चौधरीक“इन्द्रधनुष”

(नवम्बर १९८३ मे प्रकाशित)

इन्द्रधनुष मैथिलीक एकटा आन्दोलन धर्मी कथा अछि जे मिथिलाक एकटा ग्रामीण परिवेशमे सामन्ती व्यवस्थाक विरुद्ध जन जागरण क प्रक्रिया कैँ चित्रित करैत अछि। कथाक केन्द्रीय पात्र अनिल अछि, जे एकटा सचेत युवा संग ठक अछि। हुनकर संगी सरोज आ महेश छथि। कथाक प्रतिपक्षमे काशी चौधरी (गाम-मालिक, सामन्त), नामीबाबू (पंचायत-प्रधान), सुट्टा (दलाल), आमुनरा (किसान-नेता) अछि।

कथाक कथा वस्तु एहि प्रकारें अग्रसर होइत अछि-गाममेबाट-सड़क, स्कूल सभ काज क नामपर सरकारी पाइ ठि केदार आ मुखिया लूटै त अछि। जन चेतना जागृत करबाक लेल अनिल आ ओकर दल ग्रामीण सभा क आयोजन करैत अछि। ई सभा काशी चौधरी क दरबज्जापर होइत अछि। सामन्ती वर्गक प्रतिरोधक बादो जनता एकजुट होइत अछि। अन्तमे लाठी चार्ज, गोली, दमन-किन्तु लोक कम नोबल नहि टूटैत अछि।

कथा मे इन्द्रधनुष क रूपक बड़ गहींर अछि-जेना बर्खा क बाद इन्द्रधनुष (पनिसोखा) उठैत अछि, तेना उत्पीड़नक बादो जनचेतनाक उदय होइत अछि।

१.२प्रतिलोम

प्रतिलोम एकटा बड़ सघन, बहु-स्तरीय कथा अछि जे एकटा ब्राह्मण हवेली मे श्राद्धक अवसर पर घटित होइत अछि। ईकथाजाति-व्यवस्थाक सूक्ष्मतम अत्याचारकैँ-छुआछूत सँ परंपराक आडम्बर तक-अत्यन्त तीक्ष्ण दृष्टि सँ उद्घाटित करैत अछि।

अर्जुन कथाक केन्द्रीय पात्र अछि-एकटा आधुनिक, शिक्षित युवा जे अपन बौआ (बड़काभाइ) लगआयल अछि। बूढ़ामालिक (पं. गणेश्वरझा) हवेलीकमालिक छथि, जे पुरातन व्यवस्थाक प्रतीक अछि। कपिलेश्वरझा खस्सीक तमाशाक मुख्य संयोजक अछि। प्रदीप (बेटा) परम्पराक विरोधी किन्तु असहाय अछि। मंजू बुच्ची स्त्री-दमनकप्रतीक अछि।

कथाक'प्रतिलोम'शीर्षक अत्यन्त अर्थ पूर्ण अछि-ईवस्तुत: उ नट अथवा विलोम थिक। समाजमेजे’ ऊपर'अछि से नैतिक रूपें'नीचाँ'अछि-पण्डित, मालिक, ब्राह्मण सभ अपन आचरण सँ अपन तथाकथित श्रेष्ठताक खण्डन स्वयं करैत अछि।

१.३ कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो

(कथा-संवाद, दरभङ्गा, ७ जुलाई १९९० मे प्रकाशित)

ई कथा कैलास मंडल नामक एकटा निम्नवर्गीय (शूद्र) व्यक्तिक चारूकात घूमैत अछि जे अपन पिताक असामयिक मृत्युक बाद आर्थिक आ सामाजिक रूपसँ एकदम असहाय अछि। ओ गाम सँ पंजाब गेल छल, ओतय सँ लौटि आयल अछि-हाथमे एकटा फिलिप्स रेडियो लय।

बौआझा (हवेलीक ब्राह्मण मालिक), सुरीन्दर आ गजीन्दर (दुनूबौआझाकलठैत) कथाक प्रतिनायक अछि। फिलिप्स रेडियो-जेआधुनिकताक, प्रगतिक, एकटा नव आकांक्षाक प्रतीक अछि-अन्तमे जातीय षड्यन्त्रक शिकार बनि जाइत अछि।

कथाक अन्त अत्यन्त मार्मिक अछि-कैलाकेँबौआझा, सुरीन्दर आ गजीन्दर बे इज्जत करैत अछि, रेडियो छीनि लेइत अछि। किन्तुकैलाकमाय-निरक्षर, वृद्ध, दरिद्र-तखनोडेग-डेग पर अपन पुत्रक संग ठाढ़ रहैत अछि। कथाक अन्तिम दृश्यमे ओ रेडियो पर समधानि कऽ प्रहार करैत अछि कारण रेडियो अनका देत तँ मायकेँ दाँती-चनरालागिजेतै, तइसँ नीक जे ओकरा तोड़ि ये देल जाय।

खण्ड२: दलित समीक्षाशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे

मैथिली कथाक दलित समीक्षाशास्त्र आ अस्मिता विमर्श

मैथिलीमे दलित समीक्षाशास्त्रक आधार सहानुभूति नहि, अपितु'स्वानुभूति'आ'प्रतिरोध'अछि। दलित समीक्षाशास्त्रक सिद्धान्तक अनुसार साहित्यएहनहेबाक चाही जे वर्णवादी आ सामन्ती व्यवस्थाक जड़ि पर प्रहार करैत एकटा समतामूलक समाजकओकालतिकय सकय। एहि तीनू कथा मे दलित आ वंचित वर्गक चित्रण मात्र पात्रक रूप मे नहि, अपितु एकटा जाग्रत'वर्ग'केर रूप मे भेल अछि।

२.१दलित समीक्षाशास्त्रक सैद्धान्तिक आधार

डॉ. बी. आर. अम्बेडकरकविचार-परम्पराक आधारपर दलित समीक्षाशास्त्र ई प्रश्न पुछैत अछि-साहित्यमे दलित जीवनक चित्रण कतेक प्रामाणिक अछि? केलिखिरहल अछि? किन का लेल लिखि रहल अछि? आ एहि लेखन सँ दलित मुक्ति मे कतेक योगदान भ'रहल अछि? ई समीक्षाशास्त्र जाति-व्यवस्थाक भि तरि या संरचनाकेँ उद्घाटित करैत अछि, साहित्यमे ब्राह्मणवादी प्रभुत्व केँ चुनौती दैत अछि।

२.२ इन्द्रधनुषमे दलित चेतना

इन्द्रधनुष मे दलित जीवनक चित्रण अत्यन्त ठोस आ आर्थिक रूपसँ विश्लेषित अछि। खेतिहरमजदूर, धनुकटोली, मुसहरटोली-ई स्थान नाम सभ दलित समुदायक भौतिक विभाजन केँ स्पष्ट करैत अछि। गाममे दू वर्गक लोकक बीच जे आर्थिक-सामाजिक खधाइ अछि तकरा कथाकार स्पष्टतासँ देखबैत छथि।

दलित समीक्षाशास्त्रक दृष्टिसँ एहि कथाक महत्त्वपूर्ण पक्ष ई अछि जे दलित लोकनिकेँ खाली पीड़ित वर्गक रूपमे नहि, वरन्सक्रिय प्रतिरोध क वाहक क रूपमे चित्रित कयल गेल अछि। जखन काशी चौधरी क लठैत लोकनि लाठी लय अबैत अछि, तखनो मुनरा आ ओकर दल भागैत नहि अछि। ई'प्रतिरोधक राजनीति'दलित साहित्यक केन्द्रीय चिन्ता अछि।

किन्तु एकटा सीमा सेहो अछि-कथाकार जातिगत उत्पीड़न केँ वर्गीय समस्या मे अ पच यि त करबाक प्रवृत्ति देखाबैत छथि। दलितसमीक्षकएहि'वर्ग-अपचयवाद'केँ समस्या पूर्ण मानैत छथि-जाति केवल वर्गीय शोषणक उ पो त्पाद नहि, वरन् अपन स्वतन्त्र तार्किकता रखैत अछि।

'इन्द्रधनुष'मे दलित प्रतिरोधक स्वर

अशोकक कथा'इन्द्रधनुष'मे दलित जागरणक जे स्वरूप देखाइत अछि, ओ १९८० केर दशकक राजनीतिक चेतनाक प्रतिफल अछि। कथा मे'सुट्टा', 'मुनरा'आ'यदु'सन पात्र आब'मालिक'केर आगू झुकबाक बदला मे अपन'बोनि' (मजदूरी) केर माँग करैत छथि। दलित समीक्षाशास्त्रक दृष्टि सँ देखल जाय तँ एतय'सुट्टा'केर विद्रोह ओहि सामन्ती दम्भक विरुद्ध अछि जेकर प्रतिनिधि'काशी चौधरी'छथि। जखन सुट्टा कहैत अछि जे"कमा कऽ खाइ छी हम तँ छोटका जाति, आ ई बैठल खयता तँ बड़का जाति,"तखन ओ श्रम केर प्रतिष्ठाक स्थापना करैत अछि। ई चेतना दलित समीक्षाशास्त्रक ओहि सिद्धान्त सँ प्रेरित अछि जतय'जाति'केर श्रेष्ठता केँ'श्रम'केर आधार पर चुनौती देल जाइत अछि।

२.३प्रतिलोम मे अस्पृश्यता आ ब्राह्मणवाद

प्रतिलोम दलित समीक्षाशास्त्रक लेल सर्वाधिक प्रासङ्गिक कथा अछि। एहिमे अस्पृश्यताक जे चित्रण अछि से अत्यन्त सूक्ष्म रूपमे देखाओल गेल अछि। श्राद्धक भोज मे पानि पीबाक दृश्य- 'पानिलेबैं? पानिपीबैंमालिक? पानिचाही?'एकटा छोट प्रश्न किन्तु एहि मे हिन्दू जाति-व्यवस्थाक समस्त क्रूरता समाहित अछि।

अर्जुनक विरोधक बादो ओकर असहायता दलित समीक्षाशास्त्रक एकटा केन्द्रीय प्रश्नकेँ उठबैत अछि-शिक्षित दलित वा जाति-विरोधी व्यक्ति की स्वयं सम्पूर्ण मुक्त भ'सकैत अछि? अर्जुन चाहैत अछि किन्तु व्यवस्थाक समक्ष ओ एकाकी अछि।

'प्रतिलोम'नामक व्यञ्जना दलित दृष्टिसँ बड़ महत्त्वपूर्ण अछि-जाति-व्यवस्थामेजे'उच्च'अछि ओ वास्तवमे नैतिक रूपसँ निम्न अछि, आजे'शूद्र'वा'अस्पृश्य'कहाइत अछि ओ मानवीय गरिमा मे श्रेष्ठ अछि। ई अम्बेडकरवादी विचारक साहित्यिक अभिव्यक्ति थिक।

'प्रतिलोम' 'मे संरचनात्मक शोषण

अशोकक कथा'प्रतिलोम'मे'खबास'परम्परा केर जे चित्रण अछि, ओ दलित समीक्षाशास्त्रक हेतु एकटा गम्भीर शोधक विषय अछि। खबास जेकरा हवेलीक'सम्पत्ति'मानल जाइत छल, ओ आब अपन'जीह' (जीभ) बदलयचाहैत अछि। दलित समीक्षाशास्त्रक अनुसार'जीह बदलब'मात्र एकटा शारीरिक क्रिया नहि, अपितु भाषिक आ सांस्कृतिक स्वाधीनताक घोषणा अछि।

२.४ कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियोमे आर्थिक-जातीयशोषण

ई कथा दलित समीक्षाशास्त्रक एकटा विशेष आयाम केँ ज गजि यार करैत अछि-आधुनिकताक वस्तु (रेडियो) आ परम्परागत जातिवादक टकराव। फिलिप्स रेडियो खाली एकटा यान्त्रिक उपकरण नहि, वरन्कैला आ ओकर माय लेल ई एकटा सांस्कृतिक सहभागिताक स्वप्न अछि। जखन रेडियो छीनि लेल जाइत अछि, तखन खाली एकटा वस्तु नहि, वरन्एकटा निम्न जातीय मनुष्यक आधुनिक विश्वमे भागीदारीक अधिकार छीनल जाइत अछि।

बौआ झा आ ओकर लठैत क व्यवहारमे जातिगत घृणा आ आर्थिक लूट दुनू सम्मिलित अछि। कैलाकेँ५००रुपैया क ऋण जाल आ रेडियो क छि नै केँ दलित समीक्षाशास्त्र कृषि-दास प्रथाक आधुनिक रूपक रूपमे देखैत अछि।

'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे संरचनात्मक शोषण

'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे'कैलास' (कैला) पंजाब सँ कमा कऽ अबैत अछि, मुदा गामक सामन्ती व्यवस्था ओकरा पुनः अपन जाल मे फँसा लैत अछि। एहि कथा मे रेडियो आधुनिकताक प्रतीक अछि, मुदा जखन ओकरा हरबाही (Bonded Labour) मे जोतल जाइत अछि, तखन ओही रेडियो पर'आजादीक गीत'बजबाक क्रूर विडम्बना दलित विमर्शक मुख्य स्वर बनि कऽ उभरैत अछि।

खण्ड३: भारतीय समीक्षाशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे

भारतीय समीक्षाशास्त्र: रस आ औचित्य

भारतीय काव्यशास्त्र मे'रस'केर निष्पत्ति पाठक केर हृदय मे एकटा स्थायी भाव उत्पन्न करैत अछि।'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे'करुण रस'केर जे अनुभूति होइत अछि, ओ पाठक केँ व्यवस्थाक प्रति आक्रोश सँ भरि दैत अछि।'औचित्य'सिद्धान्तक अनुसार, साहित्यक प्रत्येक अंग मे एकटा संतुलनहेबाक चाही। मुदा एहि कथा सभ मे'अनौचित्य' (सामाजिक अन्याय) केर चित्रण कऽ कऽ कथाकारसमाजक वास्तविक चेहरा देखबैत छथि।'ध्वनि'सिद्धान्तक अनुसार, 'इन्द्रधनुष'केर शीर्षक स्वयं मे एकटा'व्यंग्यार्थ'अछि, जे राजनीति केरअप्रभावीहोइतरंग आ ओकर क्षणभंगुरता केँ ध्वनित करैत अछि।

३.१रस-सिद्धान्त आ कथाक भावभूमि

आचार्य भरतक नाट्यशास्त्रसँ प्रारम्भ भेल रस-सिद्धान्तगद्य-कथामे सेहो लागू होइत अछि। एहि तीनू कथामे प्रधान रस ई सभ अछि-

इन्द्रधनुष-वीररस (जनसंघर्षकउत्साह), करुणरस (दरिद्रताकचित्रण), रौद्ररस (सामन्ती दमनक विरुद्ध क्रोध) ।

प्रतिलोम-वीभत्सरस (अस्पृश्यताक घृणित चित्रण), करुणरस (अर्जुनकअसहायता), हास्य-व्यङ्ग्य (श्राद्धकआडम्बरपर) ।

कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो-करुणरस (प्रधान), शान्तरस (अन्तमेकैलाकमाइकधीरज), तीव्रक्रोधआबिरह।

३.२ध्वनि-सिद्धान्त: आनन्दवर्धनकआलोकमे

ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार काव्यमे व्यञ्जना शक्ति (Suggestive Power) सर्वोच्च होइत अछि। एहि कथा सभ मे ध्वनिक प्रयोग अत्यन्त कुशलता सँ कयल गेल अछि।

'इन्द्रधनुष'-नाम मे प्रतीकात्मक ध्वनि अछि। इन्द्रधनुष सात रङ्गक होइत अछि-ठीक एहिना मिथिलाक समाजमे सात वर्ण-समुदाय अछि (ब्राह्मण, कायस्थ, यादव, धानुक, मुसहर, खतबे, अमात (अमात्य) । ई सात रङ्ग मिलि कैँ एकटा सुन्दर आ काशी दृश्य बनबैत अछि-जनचेतना सेहो एहिना एकता बद्ध होयबाक स्वप्न थिक।

'प्रतिलोम'-व्याकरण आ दर्शन दुनू मे'प्रतिलोम'वर्जितक्रमथिक। एहि शीर्षक क ध्वनि अछि-जे समाज अपन स्वाभाविक नैतिक क्रम (न्याय, समता, प्रेम) कैँ उलटा कय लेलक अछि, ओप्रतिलोमभ'गेल अछि।

'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'-रेडियो क व्यञ्जना अछि आधुनिकताक, व गर्जन्तर ण क स्वप्नक। पश्चिमी ब्राण्ड'फिलिप्स'-ई सेहो व्यञ्जित करैत अछि जे तथाकथित वैश्विक आधुनिकता सेहो दलितक लेल अप्राप्य अछि।

३.३वक्रोक्तिआव्यञ्ग्य: आचार्य कुन्तकक परम्परा

कुन्तकक'वक्रोक्तिजीवित'क आलोकमे तीनू कथामे वक्रोक्ति (oblique expression) बड़ कुशलतासँ प्रयुक्त अछि।

प्रतिलोम मे श्राद्धक क्रममे पाइन लेबाक विषय पर जे संवाद अछि- 'पाइनलेबैं? पाइनपीबैंमालिक?' -ई प्रश्न सरलता सँ वक्र अछि। प्रश्नपाइनक अछि, किन्तु अर्थ अछि जाति-शुद्धताक, अपवित्रताक। एहि छोट संवाद मे हिन्दू जाति-व्यवस्थाक सम्पूर्ण दर्शन व्यञ्जित अछि।

इन्द्रधनुष मे जखन मुनरा कहैत अछि'माफकरूहजूर'-ई विनम्रता क वाक्य वस्तुत: एकटा व्यङ्ग्यपूर्ण प्रतिरोध थिक। ओ भीतरसँ टूटल नहि अछि-बस परिस्थितिक दबावमे आ नु ष्ठा निक शब्द कहि रहल अछि।

३.४लोककथा-परम्परा आ मैथिली कथा शैली

तीनू कथा मे मिथिलाक लोक कथा-परम्पराक गहींर प्रभाव अछि। संवादकशैली, प्रतीककचयन, ग्रामीण परिवेशक सजीव चित्रण-ईसभमैथिलीलोक-साहित्य सँ आयल अछि। विद्यापतिक पदावलीमे जेना श्रृंगार आ भक्तिक मिश्रण अछि, तेना एहि कथा सभमे सामाजिक यथार्थ आ मानवीय करुणा क मिश्रण अछि।

खण्ड४: पाश्चात्य समीक्षाशास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे

भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षाशास्त्रक आलोक मे अध्ययन

मैथिली कथाक एहि त्रयी कैँ'रस', 'ध्वनि'आ'वक्रोक्ति'सन भारतीय सिद्धान्त आ'मार्क्सवाद', 'विखण्डनवाद'आ'अस्तित्ववाद'सन पाश्चात्य सिद्धान्तक कसौटीपर रगरलासँ ओइमे समाहित दार्शनिक गम्भीरता स्पष्ट होइत अछि।

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र: मार्क्सवाद आ विखण्डनवाद

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र मे'मार्क्सवाद'वर्ग संघर्ष केर व्याख्या करैत अछि।'इन्द्रधनुष'मे दलित टोलक लोक आ गामक मालिक वर्गक बीचक संघर्ष मार्क्सवादी'सर्वहारा'आ'बुर्जुआ'केर द्वन्द्व थिक।'विखण्डनवाद' (Deconstruction) केर दृष्टि सँ देखल जाय तँ'प्रतिलोम'कथा'मालिक-चाकर'केर स्थापित बाइनरी (Binary) कैँ तोडैत अछि।'अस्तित्ववाद' (Existentialism) केर प्रभाव'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे देखलजा सकैत अछि, जतय कैला अपन अस्तित्वक हेतु संघर्ष करैत अछि मुदा व्यवस्था ओकरा वस्तु (Object) बना दैत अछि।

४.१मार्क्सवादी समीक्षाशास्त्र

ग्राम्शीक'सांस्कृतिक आधिपत्य' (Cultural Hegemony) क सिद्धान्तक आधारपर इन्द्रधनुष क व्याख्या बड़ स्पष्ट होइत अछि। गाममे काशी चौधरी खाली आर्थिक रूपसँ सर्वशक्तिमान नहि, बल्कि सांस्कृतिक रूपसँ सेहो शक्ति मान छथि। हुनकर दरबज्जापर सभा होइत अछि, हुनकर आशीर्वाद लेल जाइत अछि, हुनकरशब्दक'वैधता'मानलजाइत अछि। ई सांस्कृतिक आधिपत्य थिक।

लुकाचक'यथार्थवाद' (Realism) क दृष्टिसँ तीनू कथा मे सामाजिक यथार्थताक चित्रण अत्यन्त विश्वसनीय आ ऐतिहासिक रूपसँ ठोस अछि। ब्राह्मण-मालिककदरबज्जा, खेतिहर मजदूरक टोल, पंजाब सँ घुरल युवा क असहायता-ईसभ'१९८०-१९९०'क मिथिलाक ऐतिहासिक यथार्थ क साहित्यिक अभिव्यक्ति अछि।

४.२उत्तर-औपनिवेशिक समीक्षाशास्त्र

फ्रांजफाननकविचारक आलोकमे'The Wretched of the Earth'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियोमे एकटा'उपनिवेशित मन' (Colonized Mind) कचित्रण अछि। कैला पंजाब जाइत अछि किन्तु अपन समुदायसँ टूटि नहि जाइत अछि। ओ रेडियो आनैत अछि, एकटा'आधुनिकताक'वस्तु-किन्तु ओकर सामाजिक स्थिति नहि बदलैत अछि।

गायत्रीस्पीवाकक“कात-करोटकशक्तिहीनसमूह” 'Subaltern'कअवधारणासँतीनूकथामे'सबाल्टर्न'बोली अछि। प्रतिलोममे अर्जुनक माय (गामवाली), इन्द्रधनुषमे धनुक टोलीक स्त्री सभ, कैलासमंडलमेकैलाकमाय-ईसभ'सबाल्टर्न'छथिजनिकरआवाजप्राय: मुख्यधारामे नहि सुनाइत अछि। किन्तु ई कथाकार सभ हुनका सभकेँ स्वर दैत छथि-ओना स्पीवाकक प्रश्न अखनो वैध अछि-की शोषित वर्गक लोक अपन आवाजउठा सकैत अछि?'Can the Subaltern Speak?'

४.३संरचनावादआउत्तर-संरचनावाद

सोसुरकभाषा-विज्ञानक आधार पर तीनू कथा मे'मालिक'आ'मजदूर', 'पण्डित'आ'शूद्र', 'हवेली'आ'टोल'-ई सभ द्वि आ धारी विरोध (Binary Oppositions) अछि जाहि पर सम्पूर्ण कथा-संरचना निर्भर करैत अछि।

देरिदाक विखण्डनवाद'Deconstruction'क दृष्टिसँ प्रतिलोम क शीर्षक अपन पारम्परिक द्वि आ धारी विरोध केँ विघटित करैत अछि।'उच्च'आ'नीच'-ई विरोध अर्थहीन अछि जखन'उच्च'लोकनैतिकरूपसँ'नीच'व्यवहारकरैत अछि।

४.४स्त्रीवादी समीक्षाशास्त्र

सिमोनदबोउआरक"दोसर लिंग"'The Second Sex'क आलोकमे तीनू कथा मे स्त्री-पात्र बड़ महत्त्वपूर्ण किन्तु दोसर स्थानमे अछि। प्रतिलोम मे गामवाली आ मंजू बुच्ची दुनू स्त्री अपन-अपन स्थान पर पितृसत्तात्मक प्रतिबन्ध मे जीवन बितबै त अछि। कैलासमंडलमेकैलाकमाय सबसँ अधिक धैर्य वा न आ नैतिक रूपसँ दृढ़ अछि, किन्तु ओकर एजेन्सी सीमित अछि।

इन्द्रधनुष मे स्त्री-पात्रक लगभग अनुपस्थिति सेहो एकटा आलोचनात्मक प्रश्न उठबैत अछि-की जन संघर्षक आख्यान मे स्त्री केँ स्वाभाविक रूप सँ बाहर राखल जाइत अछि?

४.५नव-इतिहासवाद

स्टी फेन ग्रीन ब्लाट क नव-इतिहास वाद साहित्य केँ ऐतिहासिक प्रक्रियाक भीतर राखि देखैत अछि। इन्द्रधनुष नवम्बर१९८३मेलिखल गेल, ई काल भारतीय राजनीति मे उथल-पुथलककालछल। बिहार आन्दोलन, नक्सलवाद, इन्दिरा गाँधीक अन्तिम काल, एहि सन्दर्भमे इन्द्रधनुष क जनसंघर्षा ख्यान एकटा विशिष्ट ऐतिहासिक क्षण क उत्पाद अछि।

कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो १९९० मे लिखल गेल-जखन पंजाबमे खालि स्ता न आन्दोलन, मण्डल आयोगक विवाद, आ आर्थिक उदारीकरण क प्रारम्भ भ'रहलछल। एहि समयमे कैला क पंजाब-यात्रा आ रेडियो क प्रतीक एकटा ठोस ऐतिहासिक सन्दर्भ रखैत अछि।

खण्ड५: गंगेशोपाध्यायक नव्य न्यायक परिप्रेक्ष्यमे

५.१नव्य न्यायक सामान्य परिचय

गंगेशोपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' (लगभग १३२० ई. मे सक्रिय चौदहम शताब्दीक आरम्भिक काल) मिथिलाक सर्वाधिक प्रभावशाली दार्शनिक ग्रन्थ अछि। ई न्याय-दर्शन केँ एकटा कठोर तार्किक आधार प्रदान करैत अछि। नव्य न्यायक चारि प्रमुख उपकरण अछि-

(१) प्रत्यक्ष-प्रत्यक्ष अनुभवसँ ज्ञान

(२) अनुमान-व्याप्ति (vyāpti) अर्थात् सार्वत्रिक सम्बन्धसँ निष्कर्ष

(३) उपमान-तुलनासँज्ञान

(४) शाब्द-विश्वसनीय वक्ताक वचनसँ ज्ञान

५.२प्रत्यक्ष प्रमाणक रूपमे साहित्यिक साक्ष्य

नव्यन्यायक'प्रत्यक्ष' (Direct Perception) ज्ञानक उपकरण साहित्यिक समीक्षा मे एहि रूपमे लागू होइत अछि- कथाकारजेदेखलक, अनुभवकयलक, सेओ'प्रत्यक्ष प्रमाण'क रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। इन्द्रधनुषमे'एहि गाममे ला ठि यो क ख रो घरमे छैक।'-ई एकटा प्रत्यक्ष सामाजिक साक्ष्य थिक।

प्रतिलोम मे श्राद्धक भोज मेपाइन-पीबाकक्रम, अर्जुनक आँखिसँ देखल प्रत्येक दृश्य-ई सभ नव्य न्यायक'निर्विकल्पक प्रत्यक्ष' (Indeterminate Perception) सँ'सविकल्पक प्रत्यक्ष' (Determinate Perception) तक विकासककथानक अछि।

५.३ अनुमान प्रमाण आ व्याप्ति-सम्बन्ध

नव्य न्याय मे अनुमान क सर्वाधिक महत्त्व अछि। व्याप्ति (Universal Concomitance)- 'जतयधुआँ, ततयआगि'एहि तर्क पद्धति क आधार थिक।

इन्द्रधनुष एहि व्याप्ति-सम्बन्ध केँ सामाजिक स्तर पर स्थापित करैत अछि, 'जतय सामन्ती व्यवस्था छैक, ततयशोषणछैक।'ई व्याप्ति कथाक प्रत्येक प्रसङ्गमे सिद्ध होइत अछि, पंचायत फ ण्डक लूटि, बाट-घाटकबेइमानी, खेतिहर केँ न्यूनतम मजदूरी सँ वञ्चित करब।

प्रतिलोममे व्याप्ति अछि- 'जतय ब्राह्मणवादी आडम्बर, ततयमानव-अवमानना।'बूढ़ामालिक, कपिलेश्वरझा, आ अन्य पात्र एहि व्याप्तिकेँ'पक्ष' (Subject), 'साध्य' (Predicate), आ'हेतु' (Reason) क नव्य न्यायिक त्रिकोणमे सिद्ध करैत अछि।

५.४'उपाधि' (Condition) आसमाजिकन्याय

नव्यन्यायमे'उपाधि' (Condition/Qualifier) एकटा महत्त्वपूर्ण अवधारणा थिक जे व्याप्तिकेँ सीमित वा परिष्कृत करैत अछि। कैलास मंडलक कथा मे जँ देखी तँ'जाति'एकटा'उपाधि'थिक जे शोषणक व्याप्ति केँ परिभाषित करैत अछि।

एहि दार्शनिक विश्लेषण सँ एकटा महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष निकलैत अछि, तीनू कथा मे सामाजिक यथार्थ एकटा तार्किक व्यवस्था क रूपमे उपस्थित अछि, जे संरचनात्मक रूपसँ निर्धारित अछि। ई नव्य न्यायक'ज्ञातता' (Knownness) आ'अज्ञातता'क तर्कशास्त्र केँ साहित्यिक धरातलपर प्रतिबिम्बित करैत अछि।

५.५शाब्दप्रमाणआलोक-साक्ष्य

'शाब्दप्रमाण' (Testimony) विश्वसनीयआप्त (Authority) क वचनसँ ज्ञान एहि कथा सभमे'लोक'कआवाज अछि। इन्द्रधनुष मे अनिल जे सभाक वक्ता अछि, ओकरवचनसभाकलेल'आप्तवचन'बनिजाइत अछि। प्रतिलोम मे प्रदीप क प्रश्नोत्तर, ई शाब्द प्रमाणक एकटा नव्य न्यायिक संवाद थिक।

गंगेशक नव्य न्याय आ कथात्मक विश्लेषण

मिथिलाक गौरव गंगेश उपाध्याय केर'नव्य न्याय'मात्र एकटा दर्शन नहि, अपितु तर्कक एकटा सूक्ष्म औजार अछि जेकर प्रयोग साहित्यक विश्लेषण मे कएल जा सकैत अछि। नव्य न्याय मे'प्रमाण मीमांसा'केर अन्तर्गत प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द प्रमाणक चर्चा भेल अछि।

प्रत्यक्ष आ आभास केर द्वन्द्व

गंगेशक अनुसार'प्रत्यक्ष'ओ अछि जे इन्द्रिय सँ प्राप्त होइत अछि।'इन्द्रधनुष'मे कथाक नायक जखन गाम अबैत अछि, तँ ओकरा गामक'प्रत्यक्ष'स्वरूप मे एकटा'भ्रान्ति'देखाइत छैक। ओकरा लगैतछैकजे गाम ओहिना अछि, मुदा ओकर'आभास' (Pseudo-perception) तखनेटूटैत अछि जखन ओ बम आ लाठीक गप्प सुनैत अछि। नव्य न्याय केर'अतिव्याप्ति'दोष एतय देखाइत अछि, जखन गामक परम्परागत शान्तिक परिभाषा आब हिंसाक घेरा मे आबि जाइत अछि।

अवच्छेदक आ प्रतियोगिता: कैलासक रेडियो

नव्य न्याय मे'अवच्छेदक' (Limitor) आ'प्रतियोगिता' (Counter-positiveness) केर अवधारणा सूक्ष्म अछि।'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे'रेडियो'कैलासक हेतु'आधुनिकता'केर अवच्छेदक अछि। मुदा बौआ झाक हेतु ई रेडियो कैलासक'ऋण'केर

प्रतियोगिताक आधार अछि। जखन कैला रेडियो कैँ पेना सँतोड़ैत अछि, तखन ओ'अभाव' (Absence) क स्थापना करैत अछि- रेडियोक अभाव अर्थात् ओहि समस्त अपमान आ ऋणक प्रतीकात्मक अन्त।

अनुमान आ व्याप्ति:'प्रतिलोम'क तर्क

'प्रतिलोम'कथा मे अर्जुन केर तर्क'अनुमान' (Inference) केर प्रक्रिया सँ जुडल अछि। ओ बउआ सन देखाय चाहैत अछि, किएक तँ ओकर'व्याप्ति' (Universal Concomitance) ई अछि जे जकर ठोर लाल होइत अछि, जे स्वच्छ होइत अछि, वएह'मालिक'होइत अछि। मुदा समाजकक्रूर'उपाधि' (Limiting condition) ओकरा पुनः खबासक श्रेणी मे राखि दैत अछि।

खण्ड६: विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक परिप्रेक्ष्यमे

६.१ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क: परिचय

मिथिलाक इतिहास-दर्शनमे'विदेह समानान्तर इतिहास'एकटा अभिनव आलोचनात्मक उपकरण थिक। ई फ्रेमवर्क एहि मान्यता पर आधारित अछि जे मिथिलाक इतिहास राज्य, शासन, आ मुख्यधाराक ऐतिहासिक आख्यान सँ अलग एकटा समानान्तर इतिहास रखैत अछि जाहिमे लोक-स्मृति, दलित अनुभव, स्त्री-आख्यान, आ उपेक्षित समुदायक सत्य सुरक्षित अछि।

'विदेह' (जनकपुर-मिथिलाक प्राचीन नाम) शब्दमे एकटा'देहातीत' (Beyond the Body / Beyond the Physical) अर्थ सेहो अछि, ई समानान्तर इतिहास ओहि सत्य कैँ सुरक्षित रखैत अछि जे सरकारी दस्तावेजमे, राजकीय इतिहासमे दर्ज नहि भेल।

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क: एकटा नव विमर्श

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रवर्तित'विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क'मैथिली साहित्यक स्थापित इतिहास कैँ चुनौती दैत एकटा'समानान्तर'विमर्शक स्थापना करैत अछि। ई फ्रेमवर्क मुख्य रूप सँ ओहि आवाज सभ कैँ स्थान दैत अछि जेकरा दरभंगा राज वा अन्य संस्थागत ढाँचा मे उपेक्षित कएल गेल छल।

वंचितकइतिहास (सबल्टर्न हिस्ट्री) आ मैथिली कथा

'विदेह'फ्रेमवर्क केर अनुसार, मिथिलाक वास्तविक इतिहास ओ नहि अछि जे राजदरबारक वर्णन मे अछि, अपितु ओ अछि जे'नाराशंसी' (लोक-चरित्र) मे सुरक्षित अछि। अशोकक'इन्द्रधनुष', गामक ओहि दलित टोलक इतिहास कैँ चित्रित करैत अछि जे राजनीतिक इन्द्रधनुष क नीचाँदबल अछि।'प्रतिलोम'मे खबास कुलकखाढ़ीक वर्णन (मंशी मड़र सँ अर्जुन धरि) ओही'समानान्तरइतिहास'केरअंग अछि जे मुख्य इतिहासक धारा सँदूररहल अछि।

विदेह फ्रेमवर्कक मुख्य स्थापना आ कथात्मक प्रयोग

१. कैनन केर विखण्डन: स्थापित साहित्यिक मानदण्ड कैँ चुनौती देनाइ2।'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'मे एकटा दलित पात्रक संघर्ष कैँ केन्द्र मे राखब एहि फ्रेमवर्कक सफलता अछि। २. भाषाई स्वाधीनता: विदेह फ्रेमवर्क मे'मैथिली'केर ओहि रूप कैँ महत्व देल जाइत अछि जे जन साधारण मे व्याप्त अछि6। एहि तीनू कथा मे गामक भाषा, मुहावरा आ'गाएइ'केर

प्रयोग साहित्यक लोकतंत्रीकरण करैत अछि। ३. दस्तावेजी यथार्थ: विदेह फ्रेमवर्क कथा कैँ एकटा'सामाजिक दस्तावेज'मानैत अछि।'इन्द्रधनुष'१९८३ केर गामक राजनीतिक आ सामाजिक स्थिति केर एकटा गम्भीर दस्तावेज थिक।

फ्रेमवर्क केर अंग

कथा मे अभिव्यक्ति

प्रभाव

सबल्टर्न चेतना

सुट्टा आ मुनराक विद्रोह

परम्परागत सत्ताक ह्रास

लोक-इतिहास

खबास वंशावलीक चर्चा

वंचित वर्गक इतिहासक पुनर्प्राप्ति

यथार्थवादी चित्रण

गामक बम-बारी आ हिंसा

रोमानी मिथिलाक मिथकक अन्त

दार्शनिक विश्लेषण

नव्य न्याय केर तार्किक प्रयोग

साहित्यक बौद्धिक गम्भीरता मे वृद्धि

कथात्मक पात्र विश्लेषण आ सामाजिक संरचना

एहि तीनू कथा मे पात्र सभक चयन आ हुनकर आचरण समाजक बदलैत मूल्य सभ कैँ दर्शाबैत अछि।

'इन्द्रधनुष'क पात्र: संघर्ष आ भ्रम

अनिल: मध्यम वर्गीय युवा, जे गामक परिवर्तन सँ डरायल अछि मुदा संघर्षक हेतु तैयार अछि।

सुट्टा: दलित विद्रोहक प्रतीक, जे आब झुकबा लेल तैयार नहि अछि।

सतीनाथ झा: राजनीतिक'अवतरण'केर प्रतीक, जे दलित जागरण कैँ अपन वोटक हेतु प्रयोग करैत अछि।

'प्रतिलोम'क पात्र: दासता सँ विद्रोह धरि

अर्जुन: एकटा १४ वर्षक छौड़ा, जे खबास परम्परा मे जन्म लेलक अछि मुदा जकर भीतर अपन अस्मिताप्रेम अछि।

गामवाली (अर्जुनक माय): परम्परागत विवशताक प्रतीक, जे गरीबीक कारण हवेली सँ जुडल रहबा लेल विवश अछि।

जबहिरा: ओहि दलित युवा वर्गक प्रतिनिधित्व करैत अछि जे आब मालिक कैँ'जीह पकड़ि कऽ'चुनौती दैत अछि।

'फिलिप्स रेडियो'क पात्र: आधुनिकताक बलि

कैलास (कैला): एकटा आशावादी युवा, जे बाहक दुनिया देखि कऽ आएल अछि मुदा गामक सामन्ती पेंच मे फँसि जाइत अछि।

बौआ झा: सामन्ती शोषणक क्रूर चेहरा, जे मधुर वाणी सँ शोषण करैत अछि।

सुरीन्दर आ गजीन्दर: सामन्ती शक्तिक'लठैत'आ षड्यंत्रकारी, जे'दोस्ती'केर आवरण मे शोषण करैत अछि।

मैथिली कथाक भाषिक आ शिल्पगत सौन्दर्य

मैथिलीक एहि कथा सभ मे शिल्प आ भाषा मात्र सम्प्रेषणक माध्यम नहि, अपितु स्वयं मे एकटा विमर्श अछि।

इन्द्रधनुष केर भाषा: प्रभासकुमारचौधरीएतय वर्णनात्मक शिल्प केर प्रयोग करैत छथि।"बम तक आबि गेल छैक"सन छोट वाक्य गामक तनाव कैँ सघन बना दैत अछि।

प्रतिलोम केर भाषा: अशोकएतय मनोवैज्ञानिक शिल्प केर प्रयोग करैत छथि।"ठोर लाल भऽ गेलैए... बउआ सन भेलै की नहि?"अर्जुनक ई सोच ओकर आन्तरिक हीनभावना आ ओकरा सँ निकलबाक इच्छा कैँ व्यक्त करैत अछि।

फिलिप्स रेडियो केर भाषा: एतय भाषा मे व्यंग्य आ विडम्बना (Irony) केर प्रचुरता अछि। रेडियो पर'आजादीक गीत'आ कैला केर'हरबाही'-ई विरोधाभास मैथिली कथाक शिल्पगत ऊँचाई कैँ प्रदर्शित करैत अछि।

सांख्यिकीय सन्दर्भ आ ऐतिहासिक कालखण्ड

मैथिली कथाक विकास क्रम मे एहि कथा सभक समय महत्वपूर्ण अछि।'इन्द्रधनुष'१९८३ केर कालखण्डक अछि, जखन बिहारक ग्रामीण राजनीति मे हिंसा आ जातीय ध्रुवीकरण बढ़ि रहल छल।'कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो'१९९० केर कथा अछि, जखन भूमण्डलीकरण आ बाहक दुनिया सँ सम्पर्क गामक आर्थिक ढाँचा कैँ बदलि रहल छल।

कथा

प्रकाशन/पठन काल

भौगोलिक परिवेश

सामाजिक समस्या

इन्द्रधनुष

नवम्बर १९८३

ग्रामीण मिथिला

जातीय हिंसा, वोट बैंक राजनीति

प्रतिलोम

आधुनिक काल

हवेली आ दलित टोल

खबास परम्परा, अस्मिता संघर्ष

फिलिप्स रेडियो

जुलाई १९९०

पंजाब सँ गाम धरि

ऋणक जाल, आधुनिकताक विद्रूपता

६.२मिथिलाक ऐतिहासिक सन्दर्भ

मिथिलाक इतिहास मे तीन स्तर अछि- (क) राजनीतिक इतिहास-राजा, जमींदार, सामन्त; (ख) सांस्कृतिक इतिहास-विद्यापति, गंगेश, लोकगाथानायक; आ (ग) सामाजिक इतिहास-जाति-व्यवस्था, भूमि-सम्बन्ध, मिथिला-ब्राह्मणवाद। एहि तीनू स्तर पर साहित्य सेहो तीन प्रकारें लिखल गेल।

विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क प्रश्न करैत अछि-मैथिली साहित्यमे'चारिमआयाम'कतय अछि? अर्थात्ओ इतिहास जे मुसहर, धानुक, यादव, कुर्मी, ततमा, दुसाध (दूधवंशी), अमात्य, एहि समुदाय सभकेँ केन्द्रमे राखि लिखल गेल हो?

६.३ इन्द्रधनुष आ मिथिलाक कृषि-इतिहास

इन्द्रधनुष केँ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क सँ पढ़ी तखन ई कथा केवल एकटा कथा नहि, वरन्१९७०-८०क दशकमे मिथिलाक भूमि-आन्दोलनक एकटा साहित्यिक अभिलेख बनि जाइत अछि।

मिथिलामेभूमि-सुधार आन्दोलन, 'जोत हा जमीन जोत हाक'नारा, आन क्स ल प्रभावक समय-एहिकालखण्डमे'इन्द्रधनुष'लिखल गेल। कथाक'काशीचौधरी'एकटा साहित्यिक चरित्र मात्र नहि, वरन्ओ मिथिलाक तत्कालीन सामन्ती व्यवस्थाक ऐतिहासिक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

विदेह फ्रेमवर्कमे ई कथा मिथिलाक'समानान्तरइतिहास'कएकटाअध्यायथिक-जे सरकारी गजेटियरमे दर्ज नहि, किन्तुलोक-स्मृति मे जीवित अछि।

६.४प्रतिलोमआमिथिला-ब्राह्मणवादक इतिहास

मिथिलामे ब्राह्मणवादक इतिहास बड़ पुरान आ जटिल अछि। मिथिला-ब्राह्मणपञ्जी (कुलपंजी) व्यवस्था-जेविवाह-सम्बन्ध केँ जातिक आधारपर नियन्त्रित करैत अछि-ईसम्भवत: विश्व मे सबसँ जटिल जातीय नौकरशाही थिक।

प्रतिलोममेपं. गणेश्वर झाक श्राद्ध समारोह-ईवस्तुत: एहि ऐतिहासिक ब्राह्मणवादी व्यवस्थाक'लाइव डॉ क्यूमे न्टे शन'थिक। लूटनमड़र, थोलाइमड़र, रौदीमड़र-ई सभ पात्र मिथिलाक तत्कालीन खान दानी संरचनाक प्रतिनिधि छथि।

विदेह समानान्तर इतिहास दृष्टिसँ अर्जुनक प्रतिरोध मिथिलाक भीतरी सुधारवादी आन्दोलनक साहित्यिक प्रतिध्वनि अछि। चाहे ओ मिथिला विद्यापीठ क प्रगतिशील आन्दोलन होउ, वा सामाजिक न्यायक लेल लड़ैत संगठन ई सभ इतिहासमे दर्ज क मे अछि, किन्तु प्रतिलोम जे का कथा मे सुरक्षित अछि।

६.५ कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो: प्रवासीमजदूरकइतिहास

मिथिलाक आधुनिक इतिहासक एकटा सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अध्याय अछि प्रवासी श्रमिकक इतिहास। बिहार-मिथिला सँ लाखक लाख लोक पंजाब, दिल्ली, मुम्बई गेल। एहि आन्तरिक प्रवासक इतिहास मुख्यधाराक इतिहास-लेखनमेप्राय: अनुपस्थित अछि।

कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो-ई कथा एहि समानान्तर इतिहासक एकटा अमूल्य दस्तावेज थिक। कैला पंजाब गेल, ओतय'भग्गूमल्लाह'कसंग काज कयलक, पाइकमयलक, रेडियोकिनलक-ई एकटा व्यक्तिगत कथा नहि, वरन् मिथिलाक प्रवासी मजदूरक सामूहिक अनुभव क प्रतीक थिक।

विदेह फ्रेमवर्कमे ई कथा'मिथिलाक प्रवासी श्रमिकक समानान्तर इतिहास'क एकटा अध्याय थिक जे ने सरकारी आँकड़ामे, नेशैक्षणिकशोध-पत्रमे, वरन्खाली साहित्य मे जीवित अछि।

खण्ड७: तुलनात्मक विश्लेषण आ संश्लेषण

७.१ तीनू कथाक परस्पर सम्बन्ध

तीनू कथामे एकटा गहींर परस्पर सम्बन्ध अछि-ई सभ मिथिलाक एकहि समाजक तीन भिन्न-भिन्न आयामकेँ प्रस्तुत करैत अछि।

इन्द्रधनुष-राजनीतिकआयाम: जनसंघर्ष, संगठन, सामन्त-विरोध।

प्रतिलोम-धार्मिक-सांस्कृतिकआयाम: श्राद्ध, जाति-पूजा, परम्पराकआडम्बर।

कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो-आर्थिक-व्यक्तिगतआयाम: प्रवास, आकांक्षा, जातीयशोषण।

तीनू मिलि कैँ मिथिलाक समकालीन जीवनक एकटा त्रिआयामी चित्र प्रस्तुत करैत अछि।

७.२शैलीआभाषाकविविधता

तीनूकथाकभाषा-शैलीभिन्न अछि। इन्द्रधनुष मे बोलचालक मैथिली, समूह-संवाद, नारेबाजी-ई'जनभाषा'कप्रयोग अछि। प्रतिलोम मे अपेक्षाकृत साहित्यिक, संस्कृत-प्रभावित मैथिली जे ब्राह्मण पात्र सभक भाषा-व्यवहारकेँ सेहो दर्शाबैत अछि। कैलास मंडल मे मैथिली आ हिन्दीक मिश्रण, जेशहरी-ग्रामीण सम्पर्कक भाषा ई यथार्थ थिक।

७.३पाँचू फ्रेमवर्कक संश्लेषण

ई पाँचू फ्रेमवर्क सभ एकहि सत्यक पाँच दिशा सँ दर्शन करैत अछि। दलित समीक्षाशास्त्र कहैत अछि-जातीय उत्पीड़न प्राथमिक अछि। भारतीय समीक्षाशास्त्र कहैत अछि-रस, ध्वनि, अलङ्कार सँ एहि कथाक काव्य-सौन्दर्य निर्मित अछि। पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र कहैत अछि-वर्ग, जाति, लिङ्ग, इतिहाससभएक-दोसरमेगाँथल अछि। नव्य न्याय कहैत अछि-तर्क पूर्वक सिद्ध करू जे शोषण एकटा व्यवस्थागत सत्य थिक, मनमानीनहि। विदेह फ्रेमवर्क कहैत अछि मिथिलाक अपन विशिष्ट इतिहास अछि जे एहि साहित्य मे सुरक्षित अछि।

समीक्षात्मक दृष्टिकोण

मुख्य सिद्धान्त

कथा मे प्रयोग

भारतीय समीक्षाशास्त्र

रस, ध्वनि, औचित्य

सामन्ती विडम्बना आ करुणाक चित्रण

पाश्चात्य समीक्षाशास्त्र

मार्क्सवाद, विखण्डनवाद

वर्ग संघर्ष आ स्थापित सत्ताक विखण्डन

दलित समीक्षाशास्त्र

स्वानुभूति, प्रतिरोध

खबास परम्पराक विरोध आ अस्मिता रक्षा

नव्य न्याय

प्रत्यक्ष, अनुमान, अवच्छेदक

सामाजिक तर्क आ प्रपञ्चक उद्घाटन

उपसंहार

इन्द्रधनुष, प्रतिलोम, आ कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो-ई तीनू कथा मैथिली साहित्यक ओ सु सोन हु लकड़ी थिक जे एक क्षणमे'साहित्य'सँउठिकऽ'इतिहास'बनि जाइत अछि, 'इतिहास'सँउठिकऽ'दर्शन'बनि जाइत अछि। पाँचू समीक्षात्मक फ्रेमवर्क सँ जाँचि कऽ देखी तखन स्पष्ट होइत अछि-

(१) एहि कथा सभमे मानव गरिमाक प्रश्न सर्वोपरि अछि-चाहेओदलितहो, स्त्रीहो, वानिम्नवर्गीयमजदूर।

(२) मिथिलाक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक परिवेश एहि कथा सभ केँ सार्वभौमिक बनबैत अछि, ई कथा केवल मिथिलाक नहि, भारतीय समाजक ओइ सभ कोण क कथा थिक जतय जाति-वर्ग-लिङ्गक त्रिकोणमे मनुष्य पिसाइत अछि।

(३) साहित्यिक उत्कृष्टता आ सामाजिक प्रतिबद्धता क बीच एहि कथा सभक सेतु अछि- —ई'कला कलाक लेल' 'Art for Art's Sake'नहिवरन्'कला जीवनक लेल' 'Art for Life's Sake'थिक।

(४) विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक दृष्टिसँ ई तीनू कथा मिथिलाक ओ इतिहास लिखैत अछि जे आधिकारिक इतिहास-लेखन लिखबा मे असमर्थ रहल।

अन्तमे, गंगेशोपाध्यायक नव्य न्याय मे एकटा अवधारणा अछि'सिद्धि' (Accomplishment through valid knowledge) । एहितीनूकथाकपठन-मनन-विश्लेषणसँ जे'सिद्धि'प्राप्त होइत अछि, ओथिक-जाति, वर्ग, आमानव-अवमाननाएकटा तार्किक, ऐतिहासिक, आ नैतिक रूपसँ अन्यायपूर्ण व्यवस्था थिक आ साहित्य एकर विरुद्ध सबसँ सशक्त प्रतिरोध थिक।

निष्कर्ष: मैथिली कथाक भविष्य आ समानान्तर धारा

प्रभास कुमार चौधरी, अशोक आरमेशक ई कथासभमैथिली साहित्य केँ'अभिजात्य'घेरा सँ बाहर निकलि कऽ'लोक'केर यथार्थ धरि लऽ जाइत अछि।'इन्द्रधनुष'केर राजनीतिक यथार्थ, 'प्रतिलोम'केर अस्मिता संघर्ष आ'फिलिप्स रेडियो'केर आर्थिक विडम्बना-ई तीनू मिलि कऽ मिथिलाक एकटा'समानान्तर इतिहास'केर निर्माण करैत अछि। गंगेश उपाध्याय केर नव्य न्याय केर तर्क पद्धति सँ जखन एहि कथा सभक विश्लेषण कएल जाइत अछि, तखन साहित्य मात्र भावुकताक विषय नहि रहि जाइत अछि, अपितु ओ एकटा'बौद्धिक विमर्श'बनि जाइत अछि।'विदेह फ्रेमवर्क'एहि विमर्श केँ एकटा व्यवस्थित आधार प्रदान करैत अछि, जतय दलित विमर्श, वर्गीय चेतना आ आधुनिकताक द्वन्द्व एकसंगसमाहित अछि। मैथिली कथाक ई विकास यात्रा भविष्य मे ओहि'इन्द्रधनुष' (पनिसोखा) केर खोज मे अछि जकर रंगउड़िनहिजायआ जतयसभ'कैला'आ'अर्जुन'केँ अपन'फिलिप्स रेडियो'आ'अस्मिता'बचेबाक पूर्ण अधिकार भेटय। एहि कथा सभक माध्यम सँ मैथिली साहित्य आब वैश्विक स्तरक'सबल्टर्न'विमर्श केर संगडेगसँडेगमिला कऽ चलि रहल अछि।

सन्दर्भ-ग्रन्थ

भारतीय ग्रन्थ

भरतमुनि-नाट्यशास्त्र

आनन्दवर्धन- ध्वन्यालोक

कुन्तक- वक्रोक्तिजीवित

गंगेशोपाध्याय-तत्त्वचिन्तामणि

अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.-जातिकाविनाश

अम्बेडकर, डॉ. बी. आर.- Annihilation of Caste

पाश्चात्यग्रन्थ—

Marx, Karl- Capital (Vol. I)

Gramsci, Antonio- Prison Notebooks

Lukács, Georg- The Historical Novel

Fanon, Frantz- The Wretched of the Earth

Spivak, Gayatri- Can the Subaltern Speak?

de Beauvoir, Simone- The Second Sex

Derrida, Jacques- Of Grammatology

Saussure, Ferdinand de- Course in General Linguistics

Greenblatt, Stephen- Renaissance Self-Fashioning

२

अनुलग्नक:

ज्योत्स्ना फणिजा-कतिपय मैथिली कथा मे जातीय संघर्षक अन्वेषण

[प्रभास कुमार चौधरीक“इन्द्रधनुष” “द रेनबो”, अशोक कुमार झाक“प्रतिलोम” “एंटीकरेंट” आ रमेश झाक“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो”-कन्टेम्परेरी मैथिली शॉर्ट स्टोरीज (Contemporary Maithili Short Stories) । संपादक: ठाकुर, मुरारी मधुसूदन। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, २००५]

(म्यूजइण्डियानवम्बर-दिसम्बर २०१९, अंक८८)

ज्योत्स्ना फणिजा

आंध्र प्रदेशक काईकलूर नामक शांत गामकडॉ. ज्योत्स्ना फणिजा, परिस्थिति द्वारा थोपल गेल मौन पर लिखित शब्दक शक्तिक एकटा गहीर प्रमाण छथि। ओदिल्ली विश्वविद्यालयक एआरएसडी कॉलेजमे अंग्रेजीक सहायक प्रोफेसर छथि। ओ२०१६ मे मात्र २५ वर्षक अल्पायुमे अंग्रेजी आ विदेशी भाषा विश्वविद्यालय (EFLU), हैदराबाद सँ पीएचडीक उपाधि प्राप्त कएलनि। डॉ. फणिजाक कार्यकात-करोटमेरहिरहल समाजक सूक्ष्म अन्वेषण थिक। हुनकर शोध उत्तर-औपनिवेशिक साहित्यकहिलकोरकबीच अपन रास्ता बनबैत अछि, विशेष रूप सँ लिंग आ "उन्माद" (madness) क अंतर्संबंधक पड़ताल करैत अछि, जकरा ओ कोनो चिकित्सीय कमीक रूपमे नहि, वरन्प्रतिरोधक एकटा विद्रोही रूपक रूपमे देखैत छथि। पुनरुत्थानक ई स्वर हुनकर विविध साहित्यिक पोर्टफोलियोमे अछि:

कविता आ अनुवाद: अपन पहिल कविता संग्रहसिरेमिक इवनिंग (२०१६) सँ ल'क'क्रिमसन लैंप (२०१५) आस्टोन्ड सॉन्ग (२०१९) मे तेलुगु कविताक सूक्ष्म अनुवाद धरि, ओ भाषाई आ भावनात्मक दूरी कें पाटैत छथि।

संपादकीय दृष्टि: निवेदिता एन. कसंगओद वर्ल्ड आई राइट इन (२०१६) क संपादन कएलनि, जे दृष्टिबाधित लेखकक आवाज कें केंद्रमे राखयबला एकटा महत्वपूर्ण संकलन थिक।

बहुआयामी पहुँच: हुनकर रचनात्मक प्रतिभा कथा, शैक्षणिक लेख आ निबंध धरि पसरल अछि, जे प्रायः हुनकर गायन जीवनक फुरसतिक क्षणमे रचल जाइत अछि। ओ ओहि संगमक साक्षात स्वरूप छथि जतय जाति, लिंग आ दिव्यांगताक उपनदी सभ आपसमे मिलैत अछि। डॉ. फणिजाक पहचान एकटा जटिल चौबटियापर बनल अछि। एहन संसारमे जतय महिला, दृष्टिबाधित आ निम्न जातिक पहचानक मेल सँ प्रायः संसाधनक प्रणालीगत अभाव उत्पन्न होइत अछि, ओतय ओ मात्र सहैत नहि छथि; वरन्मुखर छथि। हुनकर जीवन आ साहित्य चुप रहबाकविरोधकरैतअछिजे अपन अंतर्विभागीय वास्तविकताकसमस्यासभ कें एकटा साहसी आ काव्यात्मक हुंकारमे बदलि दैत अछि।

कतिपय मैथिली कथा मे जातीय संघर्षक अन्वेषण

जाति लोक कें विशेषाधिकार प्राप्त आ सुविधाविहीन वर्गमे विभाजित करैत अछि, जे श्रेष्ठता आ हीनताक भेद उत्पन्न करैत अछि। ई दुनूएहन पृथक संसारक निर्माण करैत अछि जे कहियो एक नहि भ'सकैत अछि, आ एकटा पैघ समय सँ ई मानवक सोच-विचारक क्षमता पर शासन क'रहल अछि। साहित्य जातिगत दमनक शिकार भेलाक पीड़ा, जातीय भिन्नता सँ उत्पन्न आतंक आ हिंसा, तथा मानवता केंदुखितकरयबला'जाति रूपी संक्रमण'कें स्वर दैत अछि। अंग्रेजीमे अनूदित किछु मैथिली कथा जातिगत उत्पीड़न कें रूपकात्मक स्वरमे समेटने अछि। ग्रामीण पृष्ठभूमि पर आधारित ई कथासभ जातिगत दमनक शिकार भेलाक स्थिति, आ लिंग तथा जातिकें'दोबड़उत्पीड़न'क रूपमे चित्रित करैत अछि, जतय काव्यात्मक बिंबक माध्यम सँ पीड़ा आ कष्टक अभिव्यक्ति होइत अछि। ई कथासभ भौतिक स्थान, आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक चिंतासभ सँ उत्पन्न जातीय संघर्ष आ अस्तित्वक प्रतीकक रूपमे व्याप्त हिंसा कें रेखांकित करैत अछि।

जातिक संबंधमे गप्प करब एकटा जटिल काज थिक, जतय पीड़ा आ कष्ट कें रेखांकित कएनाइ आ वर्तमान असमान समाजक निर्भीकतापूर्वक चित्रण कएनाइ चुनौतीपूर्ण अछि। जेना कि शर्मिला रेगे लिखैत छथि, जातिक विषयमे लिखब कहियो काल राष्ट्रक प्रति विश्वासघातक समान प्रतीत होइत अछि। हुनकर शब्दमे, "उत्तर-औपनिवेशिक कालमे सेहो, जातिक सार्वजनिक आ राजनीतिक अभिव्यक्ति कें एकटा पछुआएल विचारधाराक रूपमे देखल गेल, जे वर्ग संघर्षक गति केंकमकरैत अछि आ राष्ट्रक संग गद्दारी सेहो मानल जाइत अछि।"(रेगे३९) । जातिक विषयमे लिखब भारतीय सभ्यताक न्याय अथवा सद्गुणक भ्रम कें तोड़ब अछि।

चयनित कथासभ-प्रभास कुमार चौधरीक"द रेनबो", अशोक कुमार झाक"एंटीकरेंट" आ रमेश झाक"कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो"-एकटा उच्छृंखल सभ्यता अथवा जातिमे विभाजित समाजक संदर्भमे जातीय संघर्षक अन्वेषण करैत अछि। एहि तीनूकथाक एकटा सझिया दृष्टिकोण अछि-जातिकें वर्गक रूपमे चिन्हब, आ संगे ओहिविचारकलोक कें विभाजित करबजे जातिकें वर्गक बराबर मानैत छथि। उत्तर-औपनिवेशिक स्वरमे, वर्ग आ जाति अदलि-बदलिक'निवासीसभ कें प्रताड़ित क'रहल अछि। ओनाकागचपर जातीय भिन्नताक उन्मूलन दर्ज अछि, मुदा वर्ग चेतना जे जातिक उपस्थिति कें बनौने अछि, ओ अखनो पीड़ित लोक कें अपन शिकार बना रहल अछि। ई कथासभ देखबैत अछि जे कोना एकटा विशिष्ट समूहक लोक कें स्वतंत्रता सँ वंचित कएल जाइत अछि, कोना हुनकर बाल्यकाल छीन लेल जाइत अछि, कोना हुनकर आत्म-स्वीकृतिक भावना पर प्रश्न उठाओल जाइत अछि, आ कोना ओ समाजक अन्यायपूर्ण व्यवस्थाक विरुद्ध संघर्ष करबाक लेल प्रयास करैत छथि।

१

प्रभास कुमार चौधरीक कथा"दरेनबो"(इंद्रधनुष) कविश्लेषण

राजनंद झा द्वारा अनूदित प्रभास कुमार चौधरीक कथा"द रेनबो" जातीय संघर्ष सँ प्रभावित एकटा गामक संपूर्ण रूपांतरणक उदाहरण थिक। ई कथा उच्च जातिक खसैत सामाजिक पहिचान कें रेखांकित करैत अछि, जतय कथावाचक अखन धरि अपन जातीय श्रेष्ठता आ ऊँच-नीचक संस्कार कें बिसरय (unlearning) क प्रक्रियामे अछि। ओ ओहि नव व्यवस्थाक संग तालमेल बनबैत अछि जतय हुनकर'उच्च'होयब कें चुनौती देल जा रहल अछि।

कथावाचक, जे अपन गाम सँ दूर रहैत अछि, अपन माए कें सांत्वना देबाक लेल वापस अबैत अछि। हुनकर माए गाममे असगर छथि आ उच्च आ निम्न जातिक बीच भ'रहल निरंतर झगड़ाक कारण असुरक्षित अनुभव करैत छथि। ई स्थिति गामक ओहि शांति लेल खतरा अछि जे कहियो ओतय विद्यमान छल। यद्यपि कथाक शीर्षक"द रेनबो"(इंद्रधनुष) सौंदर्य आ आनंदक प्रतीक अछि, मुदा वास्तवमे ई सामाजिक अशांतिदिससंकेत करैत अछि।

कथावाचकक माए कोनो राजनीति नहि जानैत छथि; ओ जातीय स्थितिक प्रति तटस्थ छथि, मुदा गामक भविष्यक खतराक प्रति चिंतित छथि। दोसर दिस, कथावाचक स्वयं कें उच्च जातिक वर्चस्व सँ अलग करबाक लेल तैयार छथि। मुदा अनिल, जे कथावाचकक संबंधी आ उच्च जातिक एकटा प्रमुख युवक अछि, समाजमे समानता कें स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि अछि। ओ हिंसाक माध्यम सँ निम्न जातिक लोक कें दबेबाक प्रयास करैत अछि। अनिलक ई दृढ़ विचार अछि जे“वर्गहीन समाज कहियो प्राप्त नहि कएल जा सकैत अछि, ई मात्र एकटा भ्रम अछि।”

कि अनिल सत्य कहि रहल अछि? कि वर्गहीन समाज मात्र एकटा कल्पना थिक? कथाक अन्य कारक एहि कठोर वास्तविकता कें पुष्ट करैत अछि। गामक विभाजन-शासक आ शासित, मालिक आ मजदूरक बीचआ प्रत्येक समूह द्वारा अपन आत्म-सम्मान कें सिद्ध करबाक चेष्टा, जातीय संघर्षक अनेकतहकें खोलैत अछि।

एहिमे एकटा तेसर समूह सेहो अछि-जे धनीकजमींदार, सूदखोर, आ छद्म समाज सुधारकक थिक, जे अपन स्वार्थ लेल जातीय संघर्षक दुरुपयोग करैत अछि। अंतमे, एकटा चारिम समूह सेहो अछि, जाहिमे दुनू जातिक निर्दोष ग्रामीण छथि जे एहि व्यवस्थाक मारि सहि रहल छथि। ई कथा जातीय संघर्षक ओहि बहुआयामी आजटिल स्वरूप कें साक्षात करैत अछि जाहिमे मानवताथकुचाइतरहैत अछि।

ई कथा ओहि परिवर्तनकें चित्रित करैत अछि जतय उच्च जातिक लोक एहि वास्तविकता कें स्वीकार करबाक लेल संघर्ष क'रहल छथि जे कोनो व्यक्ति कें संपत्तिक समान अपन अधिकारमे नहि राखल जा सकैत अछि। जेना कि कथावाचक मोन पाड़ैत छथि जे एखन ओ ग्रामीण लोकनि द्वारा "मालिक" नहि कहल जा सकैत छथि। ई कथा अपन परिष्कृत रूपमे उच्च आ निम्न जातिक बीचक "स्वामी-दास" संबंधक अंतक घोषणा करैत अछि।

एहि चित्रणक समानान्तर, ई कथा धनी लोकक द्वारा ओढ़ल गेल समानताक छद्मआवरणक विषयमे सेहो गप्प करैत अछि। महाकांत झा आ भुट्टा झा जेहन छद्म साम्यवादी मजदूर सभ कें समानताक पाठ पढ़ेबाक प्रयास करैत छथि। ओ मजदूर सभ कें अपन मालिकक विरुद्ध भड़का दैत छथि। हुनकर उद्देश्य गरीबक मदद कएनाइ नहि, वरन्समाज सुधारकक रूपमे पहिचान बनाक'चुनाव लड़ब आ लोकक समर्थन प्राप्त करब अछि। हुनकर एहि योजनाक परिणामस्वरूप, मजदूर सभ सरोज भैयाक खेतमे तीन मास धरि काज करब बंद क'दैत छथि। जखन सरोज अपन मजदूर परबोधनक पत्नी कें अपन मजदूरी लेबाक लेल बेर-बेर अपन घर बजबैत छथि, तखन आंदोलन शुरू भ'जाइत अछि।

जाति, विभाजनक एकटा अवैज्ञानिक पद्धति थिक जे संपूर्ण समाजक पूर्ण सहभागिता कें रोकैत अछि। एहि कथामे चित्रित गाम राष्ट्रक एकटा लघु रूप थिक, जतय जातिक राजनीतिक संघर्ष व्यक्ति लेल कहियो नहि खत्म होय वाला मनोवैज्ञानिक द्वंद्व उत्पन्न करैत अछि। गामक उच्च जातिक लोक निम्न जातिक "विद्रोही" व्यवहार सँ स्तब्ध छथि। ओ अनुभव करैत छथि जे ओहि सर्वोच्च स्थिति कें जे ओ कहियो उपभोग करैत छलाह, ओआब मात्र एकटा परिकथा बनि क'रहि जायत। सरोजक विचार अछि जे उच्च जातिक बीच समन्वयक अभावक कारण निम्न जातिक लोक स्वतंत्र भ'गेलाह। हुनकर उच्च जातीय संस्कार हुनका श्रेष्ठताकअनुभव करबाक आ निम्न जाति पर अपन मालिकसनहकदेखेबाक लेल विवश करैत छनि।

ई कथा ओहि राजनीतिक संघर्षक चर्चा करैत अछि, जतय निम्न जातिक कूटनीतिक लोक अपनहि समाजक लोकक कष्टक अनुचित लाभ उठबैत छथि आ अपन आर्थिक लाभ लेल हुनकर उपयोग करैत छथि। सुत्ता खतबे आ मुनरा कें गाममे हिंसापसारयआ गरीब सभ कें कष्ट देबाक लेल दोषी मानल जाइत अछि। खतबे-धानुक समुदायक सुत्ता खतबे, अपन हाथमे मोट लाठी लय क'काशी चौधरी कें डराबैत अछि। ओ अपन पूर्ण क्रोध देखबैत काशी बाबू कें चेतौनीदैत अछि जे जँ ओ हुनकर मजदूरी देबा सँ मना कएलनि त'परिणाम गंभीर हएत। ई घटनाक्रम नाटकीय प्रतीत होइत अछि, कियाक त'ई मात्र काशी बाबूक क्षणिक हारिदेखबैत अछि। अगिला दिन सुत्ताक पिता काशी बाबू सँ क्षमा मंगैत छथि, जाहि सँ पता चलैत अछि जे पुरानखाढ़ी अखनो उच्च जातिक वर्चस्वमे विश्वास रखैत अछि।

ई घटना गहीर स्तर पर निर्दोष लोकक उत्पीड़न कें सेहो रेखांकित करैत अछि। उच्च जातिक लोक क्रोध सँ हिंसक भ'जाइत छथि। सुत्ता अपन हाथमे लाठी लय क'अबैत अछि आ अपन पिता कें कहैत छनि जे ओ अनिलक आगू गिड़गिड़ाएब बंद करथि। अपन क्रोधमे ओ उच्च जातिक लोक पर प्रश्न उठबैत कहैत अछि-"हम'बाभन'सभ कें गारी देनाइ जारी राखब।" ओमारकप्रहार करैत पुछैत अछि, "हम सभ पसीना बहा क'कमाइत छी त'नीच जाति भ'गेलहुँ, आ ई कोढ़िया सभ जे बैसल रहैत अछि से ऊँच जाति भ'गेल?" (चौधरी १५३) । हुनकर ई प्रश्न अपन श्रम लेल समान सम्मानपेबाक अधिकार कें चिन्हित करैत अछि।

कथा ओहि ठाम हिंसक मोड़ लैत अछि जखन अनिल द्वारा नियुक्त भीड़ सुत्ता कें पकड़बाक प्रयास करैत अछि, मुदा ओ भागि जाइत अछि। भीड़ सुत्ताक पिता यदुआ कें पकड़ि लैत अछि आओकराओधबाधकऽदैत अछि। मुनरा काशी बाबू कें धमकी दैत अछि जे यदुआ कें भीड़ सँ मुक्त कएल जाय। ओ सभ यदुआ कें छोड़ि दैत छथि, मुदा जखन मुनरा नहि भेटैत अछि, तखन ओ सभ हुनकर पत्नी पर हमला करैत छथि आ हुनकर साड़ी फाड़ि दैत छथि। मुनरा घरमेनुकायल रहैत अछि। एहि स्थितिमे मुनराक पत्नी वास्तविक शिकार बनैत अछि, जखन किओकर पति सुरक्षितनुकायल रहैत अछि। ठीक ओहिना, वृद्ध यदुआ जातीय संघर्ष सँ उत्पन्नहिंसाक शिकार बनैत छथि, जखन कि हुनकर बेटाबचिजाइत अछि।

तकर बाद निम्न जातिक लोक उच्च जातिक लोक पर हमला शुरू क'दैत छथि। "बेचारा असहाय विश्वनाथ मिश्र जे अपन दलानमे बैसल छलाह, हुनका ओहिना उठा क'फेकि देल गेल जेना कोनोबेंगकें। मंदिर सँ वापस अबैत काल पंडित मुसहर झा कें हाथमे फूलक डलिया सहित जमीन पर पटकिदेल गेल।" (चौधरी १५३) । ई राजनीतिक संघर्ष निर्दोष लोक कें शिकार बनबैत अछि आ हुनका विवशताक स्थितिमे ल'जाइत अछि। दुनू समूहक'चलाक'लोक सुरक्षित रूप सँ जातीय राजनीति खेलाइत छथि, आ निर्दोष ग्रामीण सभ कें कष्ट सहबाक लेल छोड़ि दैत छथि। नामी बाबू, जे गामक एकटा सूदखोर छथि, एहि स्थितिमे तटस्थ रहबाक ढोंग करैत छथि, जे गामक लेल आबयबला समयमेआइयोबड्डखतरनाक अछि।

उच्च जातिक कूटनीतिक लोक निम्न जातिक लोकक आशंकाक संग खेलाइत छथि, जइसँओ सतीनाथ झासन समाज सुधारकक रूपमे जानल जा सकथि। सतीनाथ झा एकटा विधुर आ लोकदलक सदस्य छथि, जे उदारवादी होयबाक ढोंग करैत छथि आ अपन स्वार्थ लेल जातीय राजनीतिक उपयोग करैत छथि। कथावाचक, जे एकटा सचेत व्यक्ति अछि, एहि विभाजनकेँदेखि स्तब्ध भ'जाइत अछि। ओ पुछैत अछि, “ई सब की अछि? दलितक पुनरुत्थान? जातीय संघर्ष आ वर्ग संघर्ष? ई सब ककरा लेल? तथाकथित नेता लोकनि अपन वोट बैंक बनेबाक लेल जातिक नाम पर सामाजिक ताना-बाना मे जहर किएक घोरि रहल छथि?” (चौधरी १५५) । जाति वोटमांगयबला लोकक लेल एकटा हथियार बनि गेल अछि। एहि पंक्ति सभमे जातिक विषयमे गप्प करैत, राजनेता, छद्म साम्यवादी, धनीक, कूटनीतिक, शक्तिशाली आ तटस्थताक सुरक्षित खेल खेलयबला लोकक वास्तविक स्वरूप कें उघारैत, चौधरी लोकतंत्र कें मात्र एकटा सपनाक रूपमे देखना जाइत छथि।

ई कथा जातीय संघर्ष सँ उत्पन्न गरीबक प्रताड़नाक आलोचना करैत अछि, जेना कि वैशंपवल्लिक पुतहु अपन स्थितिक विषयमेकड़गरटिप्पणी करैत छथि:

सुत्ता शहरमे रिक्शा चलबैत अछि आ मुनरा गाम-गाम जा क'राजमिस्त्रीक काज करैत अछि। हुनका सभ कें कोनो चिंता नहि छनि। हमरा सभ केंबीचमे छोड़ि ओ सभमौज कऽ रहल छथि। हमरा सभ कें खाय लेल किछु नहि अछि। हमर बच्चा सभ भूखल अछि! अहाँ लोकनि हमरा सभ पर कोनो दया नहि करैत छी। अहाँ हमरा सभ कें घरक काज सँ निकालि देलहुँ। हमरमालजालबिनाघासक मरि जायत। एहि बान्हपर ओ सभ चरैत अछि कियाक त'हमरा सभ कें खेत आकलममे चरायब मना अछि। ओ सभ निश्चितरूप सँ मरि जायत। ई सब सुत्ता आ मुनराक कारण भ'रहल अछि। (चौधरी १६१)

तहिना, जातीय संघर्ष उच्च जातिक मध्यम वर्गक बीच सेहो तनाव उत्पन्न करैत अछि, किएक त'हुनका अपन कृषि कार्य लेल मजदूरक आवश्यकता होइत अछि। उच्च मध्यम वर्गक मुन्ना बाबू एहिसंपूर्णसंघर्षक निचोड़ एहि रूपमे रखैत छथि:

काशी बाबूक रोटी पर अब दुनू तरफ सँ घी लागल छनि। ओ एहि माध्यम सँ पर्याप्तपाइकमा लेताह, ई निश्चित अछि। नामी बाबू पहिनहि सँ हुनकर पक्षमे छथि। जतऽधरि मुनरा आ सुत्ताक गप्प अछि, ओ हुनका काल्हि बजा क'हाथ मिला लेताह। ओ हुनकर अपनहि टोलक छथि। बादबाकीहमसभग्रामीण मूर्ख बनब। काशी कें अपन खेत-पथारक कोनो चिंता नहि छनि। अहाँक जमीन परती रहि जायत जखन कि ओ एहि मे आनंद लेताह। (चौधरी १५९)

अतः ई इंद्रधनुष एकटा अशांत इंद्रधनुष अछि, जाहिमे क्रूर पाँखि लागल अछि आ जे पूराआकाश कें तोपने अछि, जतय राजनेता लोकनि द्वारा राष्ट्रीय हितक मशीनीकरण कएल जा रहल अछि। ई कथा प्रश्न उठाबैत अछि जे स्वतंत्रता वास्तविक अछि वा मात्र एकटा भ्रम, किएक त'निर्दोष लोक, जे कोनो समूह सँ नहि जुड़ल छथि, ओ अपन जीविका सँ वंचित भ'रहल छथि। जाति आ वर्गक अवधारणाक बीचचोरा-नुक्कीखेलाइत ई कथा जातीय व्यवस्थाक जड़ि पर प्रहार करैत अछि।

२

अशोकक कथा“एंटीकरेंट” (प्रतिलोम) कविश्लेषण

अशोक कुमार झाक लघु कथा“एंटीकरेंट”, जकर अनुवाद संजीव कुमार चौधरी कएलनि अछि, जातीय संघर्ष आ छीनल गेल बाल्यकाल कें प्रस्तुत करैत अछि। धनमंतीक चौदहबर्खकबेटा अर्जुन अपन माय सँ उच्च जातिक प्रति समर्पणक भाव विरासतमे पौने अछि, कियाक त'अपनहि समाजक लोक द्वाराओकर उपहास कएल जाइत अछि। ई ओ समय सेहो थिकजखन पुनरुत्थान भ'रहल अछि आ उच्च जातिक वर्चस्वक विरुद्ध आंदोलन तेज भ'रहल अछि। अर्जुन अपन पुरान मालिकक घरक उच्छिष्ट (छोड़ल गेल भोजन) लेबाक लेल तैयार अछि, यद्यपि हुनका अपन जातिक लोक द्वारा कहल जाइत छनि जे हुनका सभ कें उच्च जाति सँ उच्छिष्ट भोजन नहि लेबाक चाही। "खबासिन सभ आब उच्छिष्ट भोजन नहि लैत छथि। हुनकर जातिक लोक हुनकरहवेलीमे खबास आ खबासिनक रूपमे काज करबा सँ मना करैत छथि; एकरा अपमानजनक मानल जाइत अछि।" (झा २३९) । “दरेनबो” मे भूख आ भुखमरीक रूपमे चित्रित संघर्षक समान, एहि ठाम सेहो अर्जुन आ हुनकर असहाय माय अपन भूखमेटेबाक लेल अपनहि जातिक लोकक विरुद्ध जा क'काज करैत छथि। अर्जुन जखन अपन पुरान मालिक पंडित गणेश्वर झाक श्राद्धमे सम्मिलित होमय लेल जाइत छथि, जतय भारी मात्रामे स्वादिष्ट भोजन परसल जायत, तखन हुनका अपनहि जातिक लोक द्वारा उपहास कएल जाइत अछि। ओ सभ हुनकर उपहास उड़बैत छथि, जाहि सँ हुनकर निर्दोष मन प्रताड़ित होइत अछि।

आर्थिक संघर्षक उदाहरण एहि कथामे देखल जा सकैत अछि जखन बौआ झाक परिवार आ हुनकर पैघ संख्यामे संबंधी भोजनक आनंद लैत छथि आ ओकरा बहुत बर्बाद करैत छथि, मुदा अर्जुनक घरमे चाहबनेबाक लेलरतीभरिचिन्नीसेहो नहि अछि। अर्जुनकथाकल देह कें अनुभव होइत अछि जे एहि कड़कड़ाइत जाड़मे एक कप चाहजरूरी अछि, मुदा हुनकर वर्तमान परिस्थिति हुनका एक कप चाहपीबा सँ रोकैत अछि। हुनकर माय हुनका चाह नहि द'सकैत छथि किएक त'घरमेचिन्नीनहि अछि; हवेलीमे हुनका बेर-बेर अलग-अलग काज लेल पठाओल जाइत अछि, आ ओ एक कप चाहलेल संघर्ष करैत छथि। ई विकट स्थिति भूख आ ओकर क्रूर स्वरूप कें चित्रित करैत अछि।

लोक कें जातिमे विभाजित करयबला एकटा भेद भोजनक आदतिसेहो अछि। भोजनक आदतिआ दोसर भोजनक आदतिमे परिवर्तन कें एहिकथामे व्यंग्यात्मक रूप सँ चित्रित कएल गेल अछि। अर्जुनक पिता लूटन मरड़मांस खायब छोड़ि देने छलाह। ओ एकटा तपस्वी सँ "कंठी" लेने छलाह। हुनकर पुरान मालिक आ मालकिन हुनकापरतमसायलछलाह मुदा ओ शाकाहारी बनल रहलाह। धनमंती हुनकर अकाल मृत्यु कें शाकाहारी भोजनक अभ्यास मे परिवर्तन सँ जोड़ैत छथि। किएकतँशाकाहारी भोजनक सेवन एकटा विशिष्ट जाति आ ओकर पहचान कें चिन्हित करैत अछि, तें लूटन मरड़क अपन मूल स्वरूप बदलबाक लेल आलोचना कएल जाइत अछि।

ई कथा रेखांकित करैत अछि जे परंपराक नाम पर लोक कें कोना अन्याय सहय लेल विवश कएल जाइत अछि। अर्जुन अपन मालिकक प्रशंसामे बौआ झाक सोचक नकल करैत अछि। प्रशंसाक एहि प्रक्रियामे अर्जुन अपन अस्थित्व हेरा जाइत छथि। एकर एकटा उदाहरण कथामे भेटैत अछि, जतय अर्जुन जोर दैत अछि जे चाहपीबाक बाद सभ कें हाथ धोबाक चाही, आ ओ पाहुन सभ कें हाथ धोबालेल लोटा बढ़ाबैत रहैत अछि। ओतय उपस्थित लोक हुनका पंडितसन, उच्च जातिक सदस्यसन व्यवहार करबाक लेल आलोचना करैत छथि। दोसराक समान व्यवहार कएनाइ सेहो जातीय व्यवस्थाक दीर्घकाल धरि बनल रहबाक एकटा कारण अछि। प्रशंसा सँ आत्म-घृणा उत्पन्न होइत अछि, जाहि सँ अपन पहिचान नीचा खसैत अछि। ई कथा एहि मनोवैज्ञानिक द्वंद्व कें चिन्हित करैत अछि, जतय अर्जुन आ हुनकर माय एकटा जटिल चिंतामे फँसि जाइत छथि जतय ओ अपनासँ घृणा करैत छथि; मालिकक नकल करबाक वा हुनकर आदतिसभक अभ्यास करबाक प्रत्येक छोट काज हुनका ओहि स्वीकृत समूहक सदस्य भेलाक एकटा अस्थायी दर्जा दैत अछि। जखन कि लूटन मरड़क भोजन परिवर्तनक आलोचना धनमंती करैत छथि, ओ स्वयं अपन बेटाक उच्चवर्गीय आदतिसभ सँ मंत्रमुग्ध भ'जाइत छथि। तखनेअपनाकें स्वीकार करबाक असमर्थता हुनका मनोवैज्ञानिक रूपें खंडित क'दैत अछि। अर्जुनक गुलामीक एकटा आन कारण मालिकक प्रति हुनकर भय अछि। एकटा जवानलड़काक रूपमेओअपन जीवन, अपन मायक विवशता, अपन परिवार आ ओकर भूखक आवश्यकताक विषयमे सोचैत अछि। एकटा अशांत बालकक रूपमे जकरा आदेशक बदला स्नेहक गरमाहटिआ अपन छोट-छोट काजक लेल प्रशंसाक आवश्यकता अछि। अनेक स्तर पर एकटा सुविधाविहीन बालकक रूपमे अर्जुनक छीनल गेल बाल्यकाल राष्ट्रक भूल थिक।

कथा तखन एकटा महत्वपूर्ण मोड़ लैत अछि जखन बौआ झाक अहंकार कें जवाहर द्वारा चुनौती देल जाइत अछि, जे एकटा एहन लड़का अछि जकरा अर्जुन २० टका मजदूरी पर श्राद्ध लेल अनने अछि। पानमे बेसी चूनक कारणें अर्जुनक जीहकटिजाइत अछि, आ जवाहर बौआ झा कें कहैत छनि जे ओओकर जीहबदलि दिअय। बौआ झाक उच्च जातिक सदस्य भेलाक दर्जा, पवित्र शास्त्र पढ़बाक क्षमता, पवित्रताक प्रति हुनकर दीर्घकालीन विश्वास कें चुनौती देल जाइत अछि। “...ईजवाहिरा, ई पिद्दी सन लड़का हमरा चुनौती

द'रहल अछि। ओ हमरा अर्जुनक जीहबदलबय लेल कहि रहल अछि! जेना कि ई कोनोनट वा बोल्ट हो।"(झा२५५) । बौआ झा जानैत छथि जे अर्जुनक जीह बदलब असंभव अछि, तें ओ असहनीय क्रोध सँ भरि जाइत छथि। अर्जुनककटलजीहओहि खंडित पहिचानक रूपक थिक जकरा ओ सहबा लेल विवश अछि। ओ पिताचलिगेला, ओकरबाल्यकालहेरागेल, ओ आत्म-सम्मानसँ वंचित भऽ गेल; ओ अपन जातिक लोक सँ नहि जुड़ि सकैत अछि, नहियेओ मालिकक सेवा जारी राखि सकैत अछि, जे जातिक नाम पर संपूर्ण प्रताड़नाक प्रतीक थिक। मुदा बौआ झा कें देल गेल चुनौतीतेहनोसमयमे समानता प्राप्त करबाक आशा कें प्रस्तुत करैत अछि।

ई कथा एकटा एहन गाममे आधारित अछि जतय लोक कें विद्याक वर्चस्वमे विश्वास करय लेल विवश कएल जाइत अछि। किएकतँसिखबाक अवसरखालीउच्च जाति लग अछि, तें निम्न जाति कें ज्ञानक नाम पर चुप कएल जाइत रहैत अछि। ई कथा विस्तार सँ कहैत अछि जे कोना गणेश्वर झाक व्यक्तित्व श्राद्ध मंत्रोच्चार, संगीत, विभिन्न प्रकारक भोजन परसब, खस्सीकाटब, राजनीति, भाषा विज्ञान, साहित्य पर चर्चा, वेद, उपनिषद, कर्म, मृत्यु पर व्याख्या, शुद्धता आ अशुद्धता पर बहस, श्लोक उद्धृत कएनाइ अछि; मुदा ईमानवता, समानता आ न्याय पर कोनो विचार नहि कएनाइ-एहि सभ सँसेहोचिन्हित अछि। ई श्रोत्रियक बौआ झा आ कार्यशील वर्गक जवाहरक बीचक संघर्ष कें प्रस्तुत करैत अछि, जतय जवाहर ओ काज करबा मे सक्षम अछि जे गामक बहुत रास लोक सोचबाक साहस सेहो नहि क'सकलाह। ई कथा जातीय व्यवस्थाक एकटाकड़गरआलोचना थिक जे पवित्रताक नाम पर समाज पर थोपल गेल अछि। धर्मक संदर्भमे जातीय संघर्षक अन्वेषण करबाक अशोक कुमार झाक ई हस्तक्षेप कोनो धर्म कें जीवन पद्धतिक बराबर मानबाक प्रस्तावना सभ लेल एकटा पैघ खतरा अछि।

आधुनिक समयमे सेहो भारतीय सामाजिक जीवनमे जाति एकटा अटूट संरचना अछि, जेना कि वेलासेरी आ पात्रा नोट करैत छथि:

...जाति कें भ्रम आ कल्पना दुनू कहल जाइत अछि। ई एकटा भ्रम अछि किएक त'ई ओहि समाजक मानसिक रचना अछि जाहि मे हम रहैत छी; ई एकटा कल्पना अछि किएक त'एहि सँ विविध प्रकारक बौद्धिक उत्तेजनाक मार्ग प्रशस्तभेल अछि जाहि सँ भारतमे विभिन्न प्रकारक मानसिक विभ्रम उत्पन्न भेल अछि। यद्यपि जातिकें कोनो प्रकारक बौद्धिक वैधता वा वैज्ञानिक मान्यता नहि देल जा सकैत अछि, तथापि व्यक्तिक सामाजिक स्तरीकरणक रूपमे जाति आधुनिकताक एहि समयमे सेहो अपन राजनीतिक आ सामाजिक मान्यता रखैत अछि। (वेलासेरी आ पात्रा १)

३

रमेशक लघु कथा"कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो

भैरत्वेश्वर झा द्वारा अनूदित रमेश झाक लघु कथा"कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो" एहि बातक उल्लेख करैत अछि जे कोना जाति एकटाभ्रम अछि, लोक कें चुप कराबय लेल एकटा अवैज्ञानिक सिद्धांत अछि, अथवा कोना जाति एकटा कल्पना थिक जे वास्तविकता कें चुनौती दैत अछि। ई कथा जातीय सोपानआ गामक राजनीतिक अंतर्संबंधक चित्रण अछि। कैलास एकटा मधुर स्वभावक लड़का अछि, एकटा स्नेही बेटा अछि, मुदा"...हवेलीक लेल आ ओहि ब्राह्मण टोलक लोकक लेल जे ओकरा'शूद्र'मानैत छथि, ओ एकटा विद्रोही पिछड़ललोकछल।"(रमेशझा३००) । कैलास जातिगत प्रथा सभक प्रतिहारि मानयबला नहि अछि। "एंटीकरेंट" कअर्जुनकसमान, कैलास अपन बाल्यकालहेरादेने अछि, भूखओकर परिवार पर अपन पाँखि पसारने अछि, आ ओ काज करबाक लेल पंजाब चलि जाइत अछि। ओकर पिताक मृत्यु कमला नदीक बाढ़िमे भ'गेल छल, जखन ओ खेतमे बाचल-खुचलअल्हुआचुनि रहल छलाह। पिताक मृत्युक बाद कैलासक कष्ट शुरू भ'गेल। ग्रामीण लोकनि हुनका'कैला'कहैत छथि, जे हुनकर नामक एकटा विकृत रूप थिक। ई हुनकर विकृत पहिचान कें चिन्हित करैत अछि। हवेलीक हुनकर मालिक बौआ झा कैलासक कतहु आन ठाम काज कएनाइ बर्दाश्त नहि क'सकैत छलाह। बौआ झाकमानबछनि जे कैलासक माय ओकरा दूर पठा देलक। बौआ झा हुनका सँ बदला लेबाक प्रतीक्षा करैत छथि। कथा तखन शुरू होइत अछि जखन कैलास पंजाब सँ घर वापस अबैत अछि, जाहि सँ हुनकर माय गदगद भ'जाइत छथि। जखन ओ बौआ झाक हवेलीमे काज लेल नहि अबैत छथि, तखन ओखिसियाजाइत छथि। बौआ झा कें अपन वर्चस्व छीनिलेलजेबाकडर सतबैत छनि। "ओ किछु टका कमालेलक आ ओकरा पर पंजाबक हवा लागि गेल, हँ? काल्हि धरि ओ दुआरि पर माड़आ उच्छिष्ट भोजन लेल बैसल रहैत छल आ कहैत छलि; 'मालिक, ई ढोर कें नहि दियौक, हमरा द'दियौ', आ आ¡जखन ओकर बेटा घर आयल अछि त'ओ..."(रमेशझा३०४) । बौआ झा कैलास आ हुनकर मायसँ गुलामीक अपेक्षा रखैत छथि, आ जखन ओकरा चुनौती भेटैत छनि, त'ओ हुनका सभमे डरउत्पन्नकरबाक नव तरीका सोचैत छथि।

कैलास अपन माय कें खुश करबाक लेल पंजाब सँ एकटा रेडियो अनैत अछि, जेओकर नव प्राप्त स्वतंत्रताक एकटा बिंब बनि जाइत अछि। बौआ झा केंओकर स्वतंत्रता आ आत्म-सम्मान मे कोनो अर्थ नहि भेटैत छनि, आ ओ हुनका फेर सँ नीचा देखेबाक प्रयास करैत छथि। ओ गजेंदर आ सुरेंदर कें कैलास कें छलबाक लेल कहैत छथि, आ ओ सभ कैलास कें कर्ज लेबाक लेल विवश करबा मे सफल भ'जाइत छथि, जाहि सँ ओ कर्ज चुकाबय मे असमर्थ भ'जाइत अछि। कैलास फेर सँ गुलामीक स्थिति मे आबि जाइत अछि आ फेर सँ काज लेल पंजाबजेबाक प्रयास करैत अछि। मुदा बौआ झा ग्रामीण सभ कें धमकी दैत छथि जे जँ केओ कैलास कें कर्ज देत, त'ओकरा प्रतिकूल परिणाम लेल तैयार रहबाक चाही। कैलास फेर सँ बौआ झाक खेतमे हरवाह बनि जाइत अछि। ई कथा एकटा गंभीर स्थिति केंसोझाँअनैत अछि, जतय अनेक प्रतिकूल कथा सभ अनकहल रहि जाइत अछि, जतय ग्रामीणक बीच डरउत्पन्नकएल जाइत अछि, आ उच्च जातिक दर्जा अखनो प्रश्नहीन बनल रहैत अछि। पिछड़ल लोकक उत्थानक आलोचना करैत बौआ झा कहैत छथि, “निश्चित रूप सँ सरकार बहुत प्रचार क'हुनका सभ कें बिगाड़ि देने अछि, एहिमे कोनो संदेह नहि। नहि त', कैला कभनसाघरअखन धरि अशुद्ध छै आ ओ छानल रोटी क नाश्ता कोना क'सकैत छै?" (रमेश झा ३०४) । अपन एहि डरक संग जे वर्गहीन समाजक स्थापना भ'जायत, ओ दोसर लोक मे डरउत्पन्नकरैत छथि। वर्गहीन समाज एकटा भ्रम बनि जाइत अछि, किएक त'बौआ झासन लोक वर्गहीन समाजक विचार केंथकुचबाक लेल अनेक उपाय करैत छथि। बौआ झा अपन टका आ बाहुबलक उपयोग दुइ निर्दोष व्यक्ति कें चुनौती देबा लेल करैत छथि, जाहि सँ हरिजन थाना वा पिछड़ल वर्ग लेल विशेष अदालत सन व्यवस्था सभ विफल प्रतीत होइत अछि। बौआ झा कैलासक पंजाब सँआनल गेल नव विचार कें पिंजरा मे बंद क'दैत छथि।

रेडियो सुननाइ कैलासक मायक जीवन मे स्वतंत्रताक एकटा नव संकेत बनि जाइत अछि। ओ शीघ्र दरभंगा रेडियो स्टेशन लगायबसीखिजाइत छथि आ लोकगीत सुनैत छथि। कैलास अपन मायक जीवन मे जे किछु अनलक, ओ हुनकर सपनाक दुनिया केंवास्तविकतामे बदलब छल। ओ रेडियो सँ जुड़ि जाइत छथि, अपन पूरा जीवन कें मोन पाड़ैत, एकटा नव'स्व' (self) प्राप्त करैत छथि। जखन कैलास कर्ज चुकाबय मे विफल भ'जाइत अछि, त'रेडियो छीनि लेल जाइत अछि। ओहि सँओकर नव प्राप्त व्यक्तित्व खंडित भ'जाइत अछि। ओकर हृदय टूटि जाइत अछि किएक त'ओकर स्वतंत्रताक बोध मात्र एकटा अस्थायी स्थिति छल। मुदा कथा अंत मे एकटा प्रश्न छोड़ि जाइत अछि जे अंत मे ककर जीत होइत अछि? धनीक वर्चस्ववादी व्यवहारक वा एकटा स्नेही बेटाक अपन मायक प्रति विचार क। कैलासजखनअपन माय केंखेतमेअबैत देखैत अछि, तँरेडियो बौआ झा लग चलिजेतै, ओमायकतइदुखक कल्पना करैत अछि। कैलास बौआ झाक खेतमे अपन हरवाहा लाठी सँ रेडियो कें फोड़ि दैत अछि। कैलास अपन माय कें शोक सँ बचेबाक लेल रेडियो कें नष्ट क'दैत अछि, आ बौआ झा केंसेहो ई बुझा दैत अछि जेओकर पहिचान कें कहियो नष्ट नहि कएल जा सकैत अछि। एक बेर जखन रेडियोओकर नहि रहल, तखन ओकरा सँओकर कोनो लगाव नहि अछि। ओबुझैत अछि जेओकर माय अखनो रेडियो सँ जुड़ल छथि। वस्तु सँ एहि मोह कें भंग करबाक ओकर काज, दार्शनिक रूप सँ असमान समाजक प्रतिओकर प्रतिरोध कें चिन्हित करैत अछि।

एहि सभ कथा कें समानता लेल खतराक चिंतनक रूप मे बुझल जा सकैत अछि। एहि सभ मे राष्ट्रीय हित अछि। ई तीनूकथा गामक परिवेश पर आधारित अछि, जइसँ जातिगत प्रथा आ ग्रामीण जीवनक अंतर्संबंध पर जोर देल जा सकय। जखन कि“दरेनबो” ककथावाचक जाति व्यवस्थाक प्रति तटस्थ अछि आ अपन आँखिक आगूभ'रहल अन्यायक प्रतिरोध नहि करैत अछि, “एंटीकरेंट” कजवाहर उच्च जातिक प्रति अपन डर त्यागि दैत अछि आ ओकरा चुनौती दैत अछि, आ“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो” मेकैलास, बौआ झा सँ हारलाक बादो, अपन सोचल-बुझल योजना कें अपन आंदोलनकप्रतीकक रूप मे चलबैत अछि। जखन कि“दरेनबो” राजनीतिक आधार आ दुनू समूहक लोकक उत्पीड़न कें प्रस्तुत करैत अछि, “एंटीकरेंट” आ“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो” निम्न जातिक व्यक्तिगत संघर्ष कें प्रस्तुत करैत अछि। जखन कि अनेक लोकक सम्मिलित हिंसा“दरेनबो” कें चिन्हित करैत अछि, “एंटीकरेंट” आ“कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो” मे बाजि कऽ आ दोसराकेंडराकऽ चुप करा कऽ उत्पन्न हिंसाकेंस्पष्ट कएल गेल अछि। ई कथा सभ, मिश्रित बिंब सँ समृद्ध आ नव समाजक लक्ष्य रखैत, मैथिली साहित्यक रहस्यमय आ अप्राप्य स्वरूप कें बनौने अछि।

संदर्भित कार्य

चौधरी, प्रभास कुमार।"द रेनबो" (The Rainbow) । अनुवादक: राजनंद झा। कन्टेम्परेरी मैथिली शॉर्ट स्टोरीज (Contemporary Maithili Short Stories) । संपादक: ठाकुर, मुरारी मधुसूदन। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, २००५। मुद्रित।

झा, अशोक कुमार।"एंटीकरेंट" (Anticurrent) । अनुवादक: संजीव कुमार चौधरी। कन्टेम्परेरी मैथिली शॉर्ट स्टोरीज (Contemporary Maithili Short Stories) । संपादक: ठाकुर, मुरारी मधुसूदन। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, २००५। मुद्रित।

झा, रमेश।"कैलास मंडलक फिलिप्स रेडियो" (Kailash Mandal's Philips Radio) । अनुवादक: भैरत्वेश्वर झा। कन्टेम्परेरी मैथिली शॉर्ट स्टोरीज (Contemporary Maithili Short Stories) । संपादक: ठाकुर, मुरारी मधुसूदन। नई दिल्ली: साहित्य अकादमी, २००५। मुद्रित।

रेगे, शर्मिला। राइटिंग कास्ट/राइटिंग जेंडर: नरेटिंग दलित वीमेन्स टेस्टीमोनीज (Writing Caste/Writing Gender: Narrating Dalit Women's Testimonies) । नई दिल्ली: जुबान बुक्स, २०१३। ई-बुक।

वेलासेरी, सेबेस्टियन आ पात्रा, रीना। कास्ट आइडेंटिटीज एंड द आइडियोलॉजी ऑफ एक्सक्लूजन: ए पोस्ट-स्क्रिप्ट ऑन द ह्युमनाइजेशन ऑफ इंडियन सोशल लाइफ (Caste Identities and The Ideology of Exclusion: A Post-Script on the Humanization of Indian Social Life) । कैलिफोर्निया: ब्राउन वॉकर प्रेस, २०१८। मुद्रित।

२२. मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

सारांश

मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल।

बीजशब्द: दलित · समीक्षाशास्त्र · अनुवाद · करैत · विदेह · मैथिलीमे · साहित्यक

सारांश

मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे

मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल। ओना मिथिलाक मौखिक परम्परामे राजा सलहेस आ दीना-भदरी सन दलित नायकक लोकगाथा सदिखन जीवित रहल, मुदा एकरा औपचारिक लिखित साहित्यमे आनबामे ब्राह्मणवादी वर्चस्व आ साक्षरताक एकाधिकार एकटा पैघ बाधा छल। मैथिलीमे एकटा समर्पित 'दलित साहित्य' केर उदय हालक घटना थिक, जाहिमे अन्य क्षेत्रीय भाषासभक अनुवादक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि।

मैथिली लेल दलित साहित्य समीक्षाशास्त्र

मैथिलीमे अनूदित गुजराती, ओड़िया आ तेलुगु दलित साहित्यक परिप्रेक्ष्यमे

मैथिली भाषाक साहित्य समानान्तर धाराक अनुवादसँ पुष्ट भेल अछि आ एहि मे मौलिक संरचनात्मक परिवर्तन आयल, कारण मूल धाराक मैथिलीक लिखित साहित्य एकटा खास सामाजिक-धार्मिक रूढ़िवादितासँ परिभाषित रहल, जाहिमे भक्ति, दरबारी विलासिता आ अलंकृत अभिव्यक्तिकेँ प्राथमिकता देल गेल आ उपेक्षित वर्गक यथार्थकेँ कात राखल गेल। ओना मिथिलाक मौखिक परम्परामे राजा सलहेस आ दीना-भदरी सन दलित नायकक लोकगाथा सदिखन जीवित रहल, मुदा एकरा औपचारिक लिखित साहित्यमे आनबामे ब्राह्मणवादी वर्चस्व आ साक्षरताक एकाधिकार एकटा पैघ बाधा छल। मैथिलीमे एकटा समर्पित 'दलित साहित्य' केर उदय हालक घटना थिक, जाहिमे अन्य क्षेत्रीय भाषासभक अनुवादक भूमिका महत्वपूर्ण रहल अछि। विशेष रूपसँ 'विदेह' आन्दोलनक प्रयाससँ तेलुगु, ओड़िया आ गुजरातीक सशक्त दलित परम्परा सभक अनुवाद मैथिलीक ओहि रिक्तताकेँ भरने अछि, जाहि सँ सन्दीप कुमार साफी आ उमेश पासवान सन मैथिल दलित लेखकसभकेँ विरोध आ आत्म-अस्मिताक लेल एकटा भाषाई आ वैचारिक आधार भेटल अछि।

ऐतिहासिक अभाव आ उपेक्षित वर्गक संरचनात्मक चुप्पी

बीसम शताब्दीक अन्त धरि मैथिलीमे औपचारिक दलित लिखित परम्पराक अभाव उपेक्षित वर्गक रचनात्मकताक कमी नहि, संस्थानिक बहिष्कारक परिणाम छल। ऐतिहासिक रूपसँ मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ समुदाय भाषाक मुख्य पहरेदार रहलाह, जाहि कारणे 'मानक मैथिली' कँ हुनकरे बोली आ सांस्कृतिक सरोकार तक सीमित राखल गेल। एहि वर्चस्वक कारण मिथिलाक दलित समुदायक अनुभव साहित्यिक चेतनासँ दूर रहि गेल।

मैथिली मौखिक साहित्यक सीमा

आधुनिक दलित गद्य आ पद्यक उदयसँ पहिने, उपेक्षित वर्गक आवाज मुख्य रूपसँ 'लोकगाथा' केर रूपमे जीवित छल। राजा सलहेस, नैका बनजारा, आ बिहुला बिसहरी सन गाथासभ ओहि नायकसभक गान करैत अछि जे निम्न जातिक भेला उपरान्त सेहो भेदभाव आ शोषणक विरुद्ध लड़लाह। ई सांस्कृतिक रूपसँ महत्वपूर्ण छल, मुदा साहित्यिक संभ्रांत वर्ग एकरा 'गँवार' वा 'लोक' कहि कऽ मुख्य साहित्यसँ अलग रखलक।

एहि संरचनात्मक चुप्पीकेँ आर्थिक आ शैक्षणिक स्थितिसँ सेहो बल भेटल। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथामे देखल जा सकैत अछि जे दलित परिवारक लेल शिक्षासँ बेसी जरूरी जीवन निर्वाहक लेल शारीरिक श्रम छल। साफीक माता-पिता धोबी जातिसँ छलाह आ गामक कपड़ा धो कऽ गुजर-बसर करैत छलाह, जाहिमे हुनका नगदक बदला अनाज वा आलू भेटैत छलनि। एहि आर्थिक विवशताक कारणे साफी सन कइएक दलित बच्चा स्कूल छोडि कऽ चण्डीगढ़ वा बेंगलोर सन शहरमे मजदूरी करय लेल विवश भेलाह।

विदेह आन्दोलन आ लोकतान्त्रिक हस्तक्षेप कऽ रूपमे अनुवाद
मैथिलीमे दलित स्वरक आधुनिक पुनरुत्थान 'विदेह' आन्दोलनक डिजिटल आ साहित्यिक पहलक संग जुड़ल अछि। मैथिली साहित्य ताधरि परिपक्व नहि भऽ सकैत अछि जखन धरि ई अपन सभ भाषिक अनुभवकेँ स्वीकार नहि करै्त। मैथिलीमे दलित गद्य-पद्यक अभावकेँ देखैत अन्य भारतीय भाषासभक साहित्य दिस ताकल गेल।

सांस्कृतिक अनुवादक यांत्रिकी
'विदेह' मे अनुवाद मात्र शब्दक फेर-बदल नहि, बल्कि चेतनाकेँ जोड़बाक एकटा समाजशास्त्रीय कार्य अछि। एकर उद्देश्य मैथिल पाठककेँ 'विरोधक सौन्दर्यशास्त्र' (Aesthetics of Protest) सँ परिचित करायब छल। ओड़िया, तेलुगु आ गुजरातीसँ अनुवादित रचनासभ मैथिलीकेँ प्रतिरोधक एकटा नव शब्दावली देलक, जे पारम्परिक अलंकृत आ श्रृंगारिक परम्परासँ मुक्त छल।
अनुवादकक भूमिका, जेना पी. जयलक्ष्मी आ के. पुरुषोत्तमक काजमे देखल जाइत अछि, 'विदेशीकरण' (Foreignization) आ 'देशीयकरण' (Domestication) क बीच संतुलन बनायब छल। तेलुगु उपन्यास 'जिगिरी' (सदा लेल मित्र) क अनुवादमे तेलंगानाक क्षेत्रीय बोली आ उर्दू-तेलुगु मिश्रणक 'देशी रंग' केँ सुरक्षित राखल गेल जाहिसँ दलित आ खानाबदोश अनुभवक बहुलता स्पष्ट भऽ सकय।

तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य: मैथिलीमे तेलुगु दलित साहित्य
तेलुगु दलित साहित्य मैथिली अनुवाद परियोजनाक लेल एकटा शक्तिशाली आधार बनल। तेलुगु आन्दोलन, जे १९८० क दशकमे करमचेडू आ चुंदुरू सन अत्याचारक बाद आर उग्र भेल, पारम्परिक वर्चस्वकेँ अस्वीकार करैत अछि।

कोलकलुरी इनोचक "कौआ" (काकी): अछूतक सौन्दर्यशास्त्र
"कौआ" कहानीमे इनोच कौआकेँ दलित समुदायक प्रतीकक रूपमे प्रयोग करैत छथि। नायक बण्डोडु मादिग जातिक छथि, जे अभावे-अभावमे जिबैत छथि। ओ कौआकेँ पकडि कऽ खा सकैत अछि, जकरा समाज अशुभ मानैत अछि। मैथिली अनुवाद एहि अस्तित्वक गन्धकेँ (Stench) पकड़ैत अछि, जे पाठककेँ चरम दरिद्रता आ मनोवैज्ञानिक प्रताड़नाक साक्षात्कार करबैत अछि।

विनोदिनीक "कारी मसि" (ब्लैक इंक): शहरी क्षेत्रमे अस्मितातक कलंक
विनोदिनीक "कारी मसि" आधुनिक शहरी भारतमे जातिक सूक्ष्म गतिकेँ उजागर करैत अछि। एकटा बच्ची श्रिया, जे अपन डायरीमे नीक चीजकेँ नीला मसि सँ आ खराब चीजकेँ कारी मसि (Black Ink) सँ लिखैत अछि, जखन अपन दलित सहेलीक अस्मिता जानैत अछि तऽ ओकर व्यवहारमे आयल घृणा ई देखबैत अछि जे जातिक कलंक कोना बच्चेसँ माथमे पैसल अछि।

पेद्दिंति अशोक कुमारक "सदा लेल मित्र" (जिगिरी): खानाबदोश श्रम विस्थापन

'जिगिरी' उपन्यास कलन्दर समुदायक व्यथा कहैत अछि, जे भालू नचा कऽ गुजर करैत छलाह। जखन सरकार भालू प्रदर्शनपर रोक लगौलक, तऽ मुख्य पात्र ईमामकेँ अपन भालू 'शादुल' केँ मारबाक वा त्यागबाक कठिन निर्णय लेबय पड़ल ताकि ओकर बेटाक भविष्य सुरक्षित भऽ सकय आ ओकरा दू एकड़ जमीन भेटि सकय। ई कहानी मिथिलाक विस्थापित कृषि श्रमिक सभक पीड़ा आ पारम्परिक व्यवसायक समाप्त हेबाक यथार्थसँ मेल खाइत अछि।

अनुवादित प्रतिरोध: मैथिलीमे गुजराती दलित कविता
अम्बेडकरवादी दर्शन आ मराठी दलित पैंथर आन्दोलनसँ प्रभावित गुजराती दलित कविता अपन 'कठोर' आ 'अनगढ़' (Rough diamond) गुणक लेल जानल जाइत अछि। मैथिलीमे एकर अनुवाद पारम्परिक कविताक विपरीत एकटा नव धरातल तैयार केलक।
-अनीश गारंगेक "पोस्टर": ई कविता देखबैत अछि जे कोना दलित शरीरकेँ राजनीतिक विज्ञापनक लेल 'पोस्टर' जकाँ प्रयोग कएल जाइत अछि, मुदा व्यक्ति स्वयं अदृश्य रहि जाइत अछि।
-राजेंद्र वडेलक "जीता": यौन शोषणक विषयकेँ 'जीत' सन व्यंग्यात्मक शब्दक माध्यमसँ प्रस्तुत करैत अछि, जे ऊँच जातिक व्यवस्थामे दलित स्त्रीपर वर्चस्वकेँ एकटा सामान्य हिंसाक रूपमे देखबैत अछि।
-उमेश सोलंकीक "लोक, जमि जाए": सामाजिक उपेक्षाक ठंढमे लोकक 'जमि' जयबाक वा जड़ि हेबाक स्थितिक चित्रण करैत अछि।

स्वदेशी मैथिली दलित स्वरक उदय
एहि क्षेत्रीय अनुवादसभक सबसँ पैघ प्रभाव स्वदेशी मैथिली दलित लेखनकेँ मान्यता देब छल। उमेश पासवान आ सन्दीप कुमार साफी आब अलग-थलग आवाज नहि, बल्कि एकटा अखिल भारतीय दलित चेतनाक हिस्सा छथि।

उमेश पासवान: ग्रामीण यथार्थ आ 'मुजरिम' केर अवधारणा
उमेश पासवानक कहानी संग्रह 'मुजरिम' ग्रामीण मिथिलाक दलित जीवनक एकटा 'नैतिक गवाही' अछि। ओ 'मुजरिम' शब्दकेँ चुनौती दैत छथि आ देखबैत छथि जे कोना ई लेबल सत्ता आ विशेषाधिकार प्राप्त व्यवस्था द्वारा उपेक्षित वर्गपर थोपल जाइत अछि। हुनकर कहानी 'सुनन्दा' शिक्षा आ सामाजिक कलंकक संघर्ष देखबैत अछि, तऽ 'सोलकनमा पोखैर' सामुदायिक संसाधनसँ दलितक बहिष्कारक मुद्दा उठाबैत अछि। हुनकर कविता संग्रह 'वर्णित रस' कोसीक बाढ़ि, आतंकवाद आ युवाक आक्रोशकेँ दलित दृष्टि सँ देखैत अछि।

सन्दीप कुमार साफी: मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा
सन्दीप कुमार साफीक 'बैशाखमे दलानपर' मैथिली साहित्यमे एकटा ऐतिहासिक मोड अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अनुसार, मैथिलीमे दलित आत्मकथाक पूर्ण अभाव छल, जाहि अभावकेँ ई कृति भरैत अछि। साफी अपन संघर्ष, धोबी जातिक वंशानुगत श्रम, आ चण्डीगढ़मे प्रवासी मजदूर कऽ रूपमे भेल दुर्घटना (पैरमे आगि लागब) क मार्मिक वर्णन करैत छथि।

सौन्दर्यशास्त्रक पुनर्परिभाषा: दशम आ एकादश रस
दलित स्वरक आगमन मैथिली सौन्दर्यशास्त्रकेँ पुनर्गठित कएलक अछि। पारम्परिक रस सिद्धान्त 'आनन्द' पर जोर दैत छल, मुदा दलित आलोचक विद्रोह आ आक्रोशकेँ नव रसक रूपमे प्रस्तावित करैत छथि।

1. जीवनक लेल कला (Art for Life's Sake): साहित्यकेँ सामाजिक परिवर्तनक उपकरण मानल गेल।
2. दशम आ एकादश रस: 'विद्रोह' आ 'आक्रोश' (Cry) केँ पारम्परिक रसमण्डलमे शामिल करबाक मांग कएल गेल जइसँ उपेक्षित वर्गक लेखनक सही मूल्यांकन भऽ सकय।
3. सामूहिक अनुभव: दलित साहित्यक पीड़ा व्यक्तिगत नहि, बल्कि हजार सालक सामूहिक यंत्रणा अछि।
4. बोलीक प्रामाणिकता: 'मानक' मैथिलीक बदला 'गँवार' वा स्वाभाविक बोलीक प्रयोग कएल गेल जइसँ उपेक्षित वर्गक आघातकेँ प्रामाणिक रूपसँ व्यक्त कएल जा सकय।

निष्कर्ष: एकटा बहुलतावादी मैथिली साहित्यक दिस
मैथिलीमे अनूदित दलित साहित्य ई देखबैत अछि जे भाषा आब एकटा लोकतान्त्रिक विस्तारक दौरमे अछि। लिखित दलित स्वरक ऐतिहासिक अभाव रचनात्मकताक कमी नहि, बल्कि वर्चस्ववादी बहिष्कारक नतीजा छल। विदेह आन्दोलन द्वारा दलित साहित्यक अनुवाद ओहि रिक्तताकेँ भरबाक लेल एकटा 'सेतु' क कार्य कएलक। ई अनुवाद मात्र विदेशी कहानी नहि अनलक, बल्कि एकटा तुलनात्मक ढाँचा देलक जाहिमे उमेश पासवान आ सन्दीप कुमार साफी अपन स्थानीय अनुभवकेँ स्वर दऽ सकलाह। डिजिटल आर्काइव आ सौन्दर्यशास्त्रक पुनर्परिभाषा द्वारा, समकालीन दलित आन्दोलन मैथिली साहित्यक 'ब्राह्मणवादी एकाधिकार' केँ तोड़ि रहल अछि। मैथिली आब मात्र विद्वानसभक भाषा नहि, बल्कि अपन सभ भाषिक मानवता आ संघर्षकेँ प्रतिबिम्बित करय बला एकटा 'ज्ञान समाज' (Knowledge Society) बनि रहल अछि।

२
मैथिलीमे अनुवाद साहित्यक विकास आ अभिलेखीय महत्व: विदेह आन्दोलनक एकटा व्यापक विश्लेषण

मैथिली भाषाक साहित्यिक परिदृश्य, जे उत्तर बिहार, झारखण्ड आ नेपालक तराई क्षेत्रक एकटा पैघ आबादी (१७ मिलियन सँ बेसी लोक) द्वारा बाजल जाइत अछि, वर्तमानमे डिजिटल तकनीक आ अनुवाद आन्दोलनक संगम सँ एकटा क्रान्तिकारी परिवर्तनक दौर सँ गुजरि रहल अछि। ऐतिहासिक रूप सँ मैथिली साहित्य केँ दू टा भिन्न दृष्टिकोण सँ देखल गेल अछि: "संस्थापन" पक्ष, जे १९६५ सँ साहित्य अकादमी सन विशिष्ट संस्था सभ द्वारा संचालित अछि, आ "समानान्तर" परम्परा, जे भाषाक लोकतान्त्रिक आ लोक जडि केँ पुनः प्राप्त करबाक प्रयास करैत अछि। एहि परिवर्तनक केन्द्रमे विदेह आन्दोलन अछि, जकर प्रतिनिधित्व पाक्षिक ई-पत्रिका विदेह (ISSN 2229-547X) आ ओकर व्यापक डिजिटल आर्काइव करैत अछि। ई मौलिक आ अनूदित रचना सभक एकटा समानान्तर संकलन तैयार क' क' एहि आन्दोलन परम्परागत वर्चस्व केँ चुनौती देलक अछि आ मैथिली साहित्यिक विरासतक लेल एकटा वैश्विक भंडार स्थापित कएलक अछि। ई रिपोर्ट मैथिलीमे अनुवाद साहित्यक विश्लेषण करैत आन्दोलनक वैचारिक आधार, तकनीकी पद्धति आ सांस्कृतिक प्रभावक परीक्षण करैत अछि।

मैथिली अनुवाद आन्दोलनक ऐतिहासिक आ भाषाई सन्दर्भ

मैथिली साहित्यक बुझबाक लेल आवश्यक अछि ई बुझब जे अनुवाद समकालीन अभिलेखीय प्रतिरोधक एकटा शक्तिशाली उपकरण कखन आ कोना बनि गेल। भाषाक प्राचीनतम साहित्यिक अभिव्यक्ति चर्यापद मे भेटैत अछि, जे ७०० सँ १३०० ईस्वीक बीच बौद्ध सिद्ध कवि सभ (जेना लुईपाद आ सरहपा) द्वारा सन्ध्या भाषा मे लिखल गेल छल। विदेह आन्दोलन एकटा महत्वपूर्ण विद्वतापूर्ण हस्तक्षेप करैत ज्योतिरीश्वर-पूर्व प्रसिद्ध पदावलीकार विद्यापति आ संस्कृत/अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुर (१३५०-१४३५ ई.) क बीच स्पष्ट भेद करैत अछि। आन्दोलनक तर्क अछि जे संस्थापन पक्ष कवि विद्यापतिक परिचय केँ संकुचित क' क' हुनकर गैर-ब्राह्मण आ विद्रोही पक्ष केँ दबा देलक अछि। एहि सन्दर्भमे अनुवाद मात्र भाषाई अभ्यास नहि, बल्कि पुनरुद्धारिक एकटा वैचारिक कार्य अछि। दलित, महिला आ कात-करोटमे धकेलल समुदायक अनुभव केँ अनुवादित क' क' आन्दोलन मैथिली साहित्यक केन्द्रमे "धड़कैत मानवीय हृदय" केँ वापस आनि रहल अछि।

विदेह ई-पत्रिका आ डिजिटल आर्काइव संरचना
२००० मे भालसरिक गाछ याहू सिटी फेर २००४मे ब्लॉगक रूपमे ई शुरू भेल आ २००८ मे विदेह क रूपमे पुनर्गठित ई पत्रिका मैथिली साहित्यक सभ सँ पुरान आ निरंतर डिजिटल उपस्थिति अछि। एहि पत्रिका ४३८ अंक प्रकाशित कएलक अछि, विदेह पेटार नाम सँ एकटा विशाल डिजिटल आर्काइव तैयार भेल अछि। एहि आर्काइव केँ विभिन्न "सदेह" (भौतिक रूप) खण्ड सभमे संगठित कएल गेल अछि।

विदेह आर्काइव आ अनूदित पोथी सभक वर्गीकरण
विदेह आर्काइवक संरचना साहित्यिक संरक्षणक लेल एकटा व्यवस्थित दृष्टिकोण दर्शाबैत अछि।

आर्काइव/खण्ड विषय विवरण सन्दर्भ
विदेह सदेह २७ दोसर भाषा सँ मैथिलीमे अनूदित गद्य आ पद्य। अंक १-३५०; गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठक रचना।
विदेह सदेह २८ अनूदित गद्य आ पद्यक व्यापक संकलन, जाहिमे पैघ उपन्यास सेहो अछि। क्षेत्रीय भारतीय आ अन्तर्राष्ट्रीय रचना सभ पर केन्द्रित।
विदेह सदेह ३७ अनूदित गद्य-पद्यक दोसर खण्ड; तेलुगु/ ओड़िया/ गुजराती दलित कथा/ पद्य सभ पर विशेष जोर। पेद्दिंति अशोक कुमारक जिगिरी सेहो एहिमे शामिल अछि।

गद्य-पद्य भारती विशेष "अनुवाद विशेषांक"। अंक ९७; देवनागरी आ तिरहुता दुनू लिपिमे उपलब्ध।
मैथिली पोथी डाउनलोड कएल जा सकय बला पीडीएफ पुस्तक सभक श्रेणी। पुरुष परीक्षा आ मोहनदास सन अनुवाद शामिल अछि।
लिपिक स्तर पर, आन्दोलन मिथिलाक्षर (तिरहुता) कें यूनिकोड मानकमे आनि डिजिटल प्रकाशन कें सुगम बनौलक अछि। आर्काइवमे ब्रेल लिपिमे पहिल मैथिली पुस्तक आ मैथिली सांकेतिक भाषा (Sign Language) क संसाधन सेहो उपलब्ध अछि।

अनुवादक सिद्धान्त आ कला
मैथिलीमे अनुवादक कार्य परिष्कृत सैद्धान्तिक दृष्टिकोण सँ प्रेरित अछि जे सांस्कृतिक निष्ठा आ भाषाई पहुँचक बीच सन्तुलन बनाबैत अछि। विदेह आर्काइवक निबन्ध "अनुवादक कला" (The Art of Translation) एहि जटिलताक अन्वेषण करैत अछि।

भाषाई आ शैलीगत पद्धति
मैथिली अनुवादमे "स्वर" (Tone) क अवधारणा महत्वपूर्ण अछि। गजेन्द्र ठाकुर आ अन्य अनुवादक निम्नलिखित रणनीति सभक प्रयोग करैत छथि:
1. गत्यात्मक तुल्यता (Dynamic Equivalence): स्रोत सन्देश कें प्रभाव कें मैथिली पाठकक हृदय धरि पहुँचाबय लेल नीक अनुवाद कएल जाइत अछि।
2. देशीकरण बनाम विदेशीकरण: किछु ग्रन्थ सभकें मिथिलाक ग्रामीण परिवेशक अनुसार ढालल जाइत अछि (Domestication), तँ किछुमे मूल संस्कृतिक विशिष्टता कें सुरक्षित राखल जाइत अछि।
3. परम्परागत सेतु (Paratextual Bridging): पाद-टिप्पणी (Footnotes) आ शब्दकोश (Glossary) क प्रयोग सँ पुआ वा पांचाली सन सांस्कृतिक शब्द सभक व्याख्या कएल जाइत अछि।
4. सहयोगी अनुवाद: भाषाई विशेषज्ञ आ रचनात्मक लेखक मिलि क' भौगोलिक बारीकी आ अनुष्ठान सभ कें पकड़बाक प्रयास करैत छथि।

सामाजिक इतिहासक मामला: 'जिगिरी' क अनुवाद
विदेह आर्काइवक एकटा महत्वपूर्ण परियोजना पेद्दिंति अशोक कुमारक तेलुगु उपन्यास जिगिरी क सदा लेल मित्र (Friends Forever) नाम सँ मैथिली अनुवाद अछि। ई उपन्यास कलन्दर समुदायक सामाजिक इतिहास अछि जे रीछ-नाच (Bear-dancing) आ सँपेरा क' काज क' क' अपन जीविका चलबैत छलाह। वन्यजीव संरक्षण अधिनियमक बाद एहि समुदायक अस्तित्व संकटमे आबि गेल। मैथिली अनुवादमे एहि समुदायक पीड़ा कें क्षेत्रीय मुहावरा आ ग्रामीण बोलीक माध्यम सँ अत्यंत प्रभावशाली ढंग सँ प्रस्तुत कएल गेल अछि।

क्षेत्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय आयाम
- पाखलो (कोंकणी): तुकाराम रामा शेटक एहि उपन्यासक अनुवाद डॉ. शंभु कुमार सिंह द्वारा कएल गेल अछि, जे गोआक मुक्तिक संघर्ष आ मिश्रित नस्लक बच्चा सभक सामाजिक पहचानक गप करैत अछि।
- छिन्नमस्ता (हिन्दी): प्रभा खेतानक एहि उपन्यासक अनुवाद शहरी नारीवाद आ मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद कें मैथिली

आर्काइवमे स्थान देलक अछि।
- बर्तोल्ट ब्रेख्त (जर्मन): ब्रेख्तक नाटकक अनुवाद सँ मैथिली रंगमंचमे "एलियनेशन" (Alienation) सन सैद्धान्तिक अवधारणा सभक प्रवेश भेल अछि।
-कुरान: कुरानक पहिल अध्याय (अल-फातिहा) क अनुवाद मिथिलाक बहुलवादी वास्तविकता कें प्रतिबिम्बित करैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक प्रभाव
विदेहक माध्यम सँ जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमन मैथिली कथा साहित्य लेल एकटा निर्णायक मोड़ छल। हुनकर उपन्यास पङ्गु (२०२१ क साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त) आ लघु कथा "बिसाँढ़" ग्रामीण संघर्ष आ मुसहर समुदायक यथार्थ कें बिना कोनो बनावट क' प्रस्तुत करैत अछि। ठाकुर द्वारा हुनकर रचना सभक अंग्रेजी अनुवाद जेना (Struggles of Life) एहि आन्दोलनक नैतिक स्वर कें विश्व स्तर पर पहुँचेने अछि।

निष्कर्ष
विदेह आन्दोलनक अनुवाद साहित्य आधुनिक भारतक सभ सँ महत्वाकांक्षी भाषाई आ अभिलेखीय परियोजना सभमे सँ एक अछि। अनुवादक माध्यम सँ "समानान्तर इतिहास" आन्दोलन संस्थापन पक्षक कथानक कें सुधारैत अछि आ चर्यापदक लोकतान्त्रिक जडि सँ ल' क' समकालीन दलित चेतना धरि कें सुरक्षित करैत अछि। एहि डिजिटल आर्काइव आ अनुवादक कलाक प्रति प्रतिबद्धताक माध्यम सँ विदेह सुनिश्चित करैत अछि जे "मिथिलाक आत्मा" सदैव जीवन्त आ वैश्विक पहुँचमे रहय।

भाषा-विज्ञान, व्याकरण, लिपि आ शब्दावली

२३. मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान

सारांश

मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर] एकीकृत विस्तृत समालोचनात्मक शोध-समीक्षा व्याकरण · रचना · भाषा-विज्ञान · भारतीय · पाश्चात्य · इस्रायली · चीनी · तिब्बती · जापानी · विदेह समानान्तर दृष्टि मूल ग्रन्थ: गजेन्द्र ठाकुर · सम्पादक: विदेह · ISSN 2229-547X

बीजशब्द: मैथिलीक · समानान्तर · व्याकरण · रचना · भाषा · विज्ञान · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर-मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर] एकीकृत विस्तृत समालोचनात्मक शोध-समीक्षा व्याकरण · रचना · भाषा-विज्ञान · भारतीय · पाश्चात्य · इस्रायली · चीनी · तिब्बती · जापानी · विदेह समानान्तर दृष्टि सम्पूर्ण खण्ड १–४, अध्याय १–९२६, परिशिष्ट, प्रमाण-तन्त्र आ सन्दर्भ-सूचीक समेकित समीक्षा ई समीक्षा मूल पोथीक सम्पूर्ण संरचनाकेँ आधार बनबैत अछि। पोथी चारि मुख्य खण्डमे विभक्त अछि: ठेठी-अंगिका व्याकरण आ रचना; बज्जिका व्याकरण आ रचना; मैथिली व्याकरण आ रचना; आ ठेठी-अंगिका, बज्जिका तथा मैथिलीक भाषा-विज्ञान।

मैथिलीक एकटा समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान (ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ)- गजेन्द्र ठाकुर] एकीकृत विस्तृत समालोचनात्मक शोध-समीक्षा

ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ संग लऽ कऽ

एकीकृत विस्तृत समालोचनात्मक शोध-समीक्षा

व्याकरण · रचना · भाषा-विज्ञान · भारतीय · पाश्चात्य · इस्रायली · चीनी · तिब्बती · जापानी · विदेह समानान्तर दृष्टि

मूल ग्रन्थ: गजेन्द्र ठाकुर · सम्पादक: विदेह · ISSN 2229-547X

सम्पूर्ण खण्ड १–४, अध्याय १–९२६, परिशिष्ट, प्रमाण-तन्त्र आ सन्दर्भ-सूचीक समेकित समीक्षा

समीक्षा-पद्धति आ सीमांकन

ई समीक्षा मूल पोथीक सम्पूर्ण संरचनाकेँ आधार बनबैत अछि। पोथी चारि मुख्य खण्डमे विभक्त अछि: ठेठी-अंगिका व्याकरण आ रचना; बज्जिका व्याकरण आ रचना; मैथिली व्याकरण आ रचना; आ ठेठी-अंगिका, बज्जिका तथा मैथिलीक भाषा-विज्ञान। तेसर खण्ड अध्याय २१–६९३ धरि आ चतुर्थ खण्ड अध्याय ६९४–९२६ धरि विस्तारित अछि। अन्तमे समेकित सन्दर्भ-सूची सेहो अछि। समीक्षा एहि सभ स्तरकेँ अलग-अलग जाँचैत, फेर समेकित निष्कर्ष दैत अछि।

मूल पोथीक कथन, उदाहरण, अध्याय-विन्यास आ पद्धतिक चर्चा जखन कएल गेल अछि, तखन ओकरा मूल ग्रन्थक अन्तर्गत मानल गेल अछि। भारतीय, पाश्चात्य, इस्रायली, चीनी, तिब्बती आ जापानी सिद्धान्त बाह्य तुलनात्मक कसौटी रूपेँ प्रयुक्त भेल अछि; ई सिद्धान्त मूल पोथीमे अनिवार्य रूपेँ प्रतिपादित अछि, एहन दावा नहि कएल गेल अछि। “विदेह समानान्तर समीक्षा” नाम एहि पोथीक अपन समानान्तर पद्धति—एक्के प्रश्न तीनू भाषा, तुलनीय आँकड़ा, स्रोत-समर्थित कथन, क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, पुनरुत्पाद्यता आ सम्पादकीय सत्यनिष्ठा—केँ एक समेकित आलोचनात्मक रूप देबाक लेल प्रयुक्त अछि; एकरा बाह्य स्थापित सम्प्रदायक नाम नहि मानल जाए।

व्याकरणक मूल्यांकनमे वर्णनात्मकता, रूप-संरचना, वाक्य-संरचना, अर्थ, प्रयोग, मानकीकरण आ भाषिक विविधता मुख्य कसौटी अछि। रचनाक मूल्यांकनमे विषय-विन्यास, पाठक, शैली, रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, तर्क, प्रवचन, विधा आ सम्पादन मुख्य कसौटी अछि। भाषा-विज्ञानक मूल्यांकनमे प्रमाण, पुनरुत्पाद्यता, क्षेत्रकार्य, ध्वनिक मापन, कॉर्पस, समाजभाषिकता, ऐतिहासिक तुलना, प्रकारिकी आ डिजिटल संरक्षण मुख्य कसौटी अछि।

समग्र निर्णय

ई पोथी केवल “व्याकरण” नहि, बल्कि भाषा-शिक्षण, रचना-कौशल, सम्पादन, भाषिक अनुसंधान, कॉर्पस, क्षेत्रकार्य, डिजिटल प्रकाशन आ तीन निकटवर्ती भाषिक परम्पराक समानान्तर अध्ययनकेँ एक ठाम आनबाक महत्त्वाकांक्षी प्रयास अछि। एहि कारण एकर वास्तविक शक्ति “व्यापकता” मात्र नहि, “स्तर-सम्बन्ध” अछि: शब्दसँ वाक्य, वाक्यसँ प्रवचन, प्रवचनसँ समाज, समाजसँ इतिहास, आ इतिहाससँ डिजिटल दस्तावेजीकरण धरि एक निरन्तर अध्ययन-पथ बनैत अछि।

एकर दोसर विशिष्टता ई अछि जे ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाकेँ केवल मैथिलीक परिशिष्ट जकाँ नहि, बल्कि अपन व्याकरण, रचना, मानक-क्षेत्रीय रूप, अभ्यास, शब्दावली आ भाषावैज्ञानिक इकाईसहित प्रस्तुत कएल गेल अछि। भाषिक प्रतिष्ठाक दृष्टिसँ ई संरचना महत्त्वपूर्ण अछि। मुदा विद्वत्तापूर्ण संस्करणमे भाषा-स्थिति, वंश-वर्गीकरण, क्षेत्रीय सीमा, मानक रूप, ध्वनि-सूची आ ऐतिहासिक दावासभक संग स्रोत-स्तर, वक्ता-संख्या, स्थान, तिथि आ प्रमाण-प्रकारक स्पष्ट संकेत आर बेसी आवश्यक होयत।

तेसर शक्ति रचना-भागक असाधारण विस्तार अछि। निबन्ध, कथा, संवाद, पत्र, समाचार, सार, अनुवाद, तर्क, समीक्षा, भाषण, सम्पादकीय, शैक्षिक लेखन, शैली, अर्थ, उच्चारण, सम्पादन, प्रूफ-पठन, पृष्ठ-सज्जा आ प्रकाशन-जाँच धरि रचनाकेँव्यवहारिक कौशलक रूपमे देखाओल गेल अछि। एहि ठाम पोथी पारम्परिक स्कूल-व्याकरणसँ बहुत आगाँ जाइत अछि।

मुख्य सम्पादकीय चुनौती पुनरावृत्ति आ स्तर-ओवरलैप अछि। ठेठी-अंगिका खण्डमे अध्याय १–२०क बाद फेर विस्तृत व्यवहारिक सन्दर्भ-पोथीक रूप; बज्जिकामे चौदह भाग आ परिशिष्टक बाद फेर पाँच-भागीय विस्तृत व्यवहारिक रूप; मैथिलीमे अध्याय २१–४३क आधारक बाद ४४–६९३क विशाल विस्तार; आ भाषा-विज्ञानमे तीनू भाषाक समान विषयक पृथक श्रृंखला, फेर समेकित श्रृंखला, फेर समानान्तर शोध-कार्यपुस्तिका—ई सभ सामग्री उपयोगी अछि, मुदा अगिला संस्करणमे “कहाँ पहिल परिचय, कहाँ पुनरावृत्ति, कहाँ उन्नत विस्तार” स्पष्ट क्रॉस-सन्दर्भसँ देखाओल जाए तँ पाठकीय भार घटत।

विस्तृत प्रवेश आ सात समीक्षा-दृष्टिक पूरक रूपरेखा

प्रवेश: ग्रन्थ आ समीक्षाक प्रयोजन

समीक्षाधीन ग्रन्थ कोनो साधारण व्याकरण-पोथी नहि थिक। ई एकटा चारि-खण्डीय, प्रायः एक लाख शब्दक विशाल सङ्कलन थिक, जे तीनटा निकट-सम्बद्ध मागधी-वर्गीय भाषा — ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ मैथिली — केँ एके छत्रक तर आनि, हुनक व्याकरण, रचना-कला आ भाषा-विज्ञानकेँ समानान्तर (parallel) दृष्टिसँ प्रस्तुत करैत अछि। खण्ड एक ठेठी-अंगिकाक व्याकरण आ रचना (अध्याय १–२०) डॉ. अमरेन्द्र आ डॉ. आभा पूर्वेक मानक व्याकरणक आधारपर देत अछि; खण्डदुइ बज्जिकाक व्याकरण, शब्दकोश आ मुहावरा-कहावत-कोश समेटैत अछि; खण्ड तीन मैथिलीक विस्तृत व्याकरण आ रचना (अध्याय २१–६९३) प्रस्तुत करैत अछि; आ खण्ड चारि (अध्याय ६९४–९२६) तीनू भाषाक भाषा-विज्ञान — ध्वनितत्त्वसँ लऽ कऽ प्रकारिकी, समाजभाषा-विज्ञान, मनोभाषा-विज्ञान आ संगणकीय भाषा-विज्ञान धरि — केँ एक समानान्तर शोध-ढाँचामे बान्हैत अछि। अन्तमे एकटा समेकित सन्दर्भ-सूची अछि।

एहन ग्रन्थक समीक्षा साधारण गुण-दोष-गणनासँ नहि भऽ सकैत। जे पोथी अपन प्रयोजनमे बहु-परम्परीय (multi-traditional) थिक, तकर मूल्यांकनो बहु-परम्परीय कसौटीपर हेबाक चाही। तेँ एहि समीक्षामे हम सात समीक्षा-दृष्टि — भारतीय, पाश्चात्य, इस्रायली, चीनी, तिब्बती, जापानी आ विदेह समानान्तर — केँ आधार बनौने छी। पहिने हम प्रत्येक खण्डक वर्णनात्मक-मूल्यांकनात्मक विवेचन देब (जाहिसँ कोनो अंश छूटय नहि), तकर बाद सातू सैद्धान्तिक दृष्टिसँ ग्रन्थकेँ जाँचब, आ अन्तमे समग्र गुण-दोष आ भविष्यक दिशाक चर्चा करब।

समीक्षाक स्वर एतय समादरपूर्ण मुदा निरपेक्ष रहत। जतय ग्रन्थ अपन घोषित लक्ष्य पूर करैत अछि, ओतय स्पष्ट कहब; जतय संरचना, पुनरावृत्ति वा प्रमाण-सन्तुलनमे विचारणीय बिन्दु अछि, ओहो निर्भीकतासँ राखब। नीक समीक्षाक धर्म प्रशंसा नहि, प्रमाण-सम्मत विवेक थिक।

समीक्षाक पद्धतिः सात दृष्टिक संक्षिप्त परिचय

आगाँ जाहि सात दृष्टिसँ ग्रन्थक परीक्षा हएत, तकर संक्षिप्त परिचय एतय राखल जाइत अछि, जाहिसँ पाठककेँ आगाँक विवेचनक ढाँचा पहिनहिसँ स्पष्ट रहय।

समीक्षा-दृष्टि

मुख्य कसौटी जे एहि दृष्टिसँ लागू होइत अछि

भारतीय

पाणिनीय सूत्र-मितव्ययिता, प्रातिशाख्य-शिक्षाक ध्वनि-सूक्ष्मता, भर्तृहरिक स्फोट आ वाक्य-अखण्डता, मीमांसाक शब्द-प्रामाण्य, नव्य-न्यायक परिभाषा-कठोरता, आ रस-ध्वनि-वक्रोक्तिक रचना-दृष्टि।

पाश्चात्य

सस्यूरक ल्याङ्ग/पारोल आ समकालिक/ऐतिहासिक भेद, ब्लूमफील्डीय वर्णनवाद, चोम्स्कीय संरचना, ग्रीनबर्गक प्रकारिकी-सार्वभौम, हैलिडेक प्रकार्यवाद, कॉर्पस आ विरोधात्मक विश्लेषण, शिक्षण-व्याकरणक सिद्धान्त।

इस्रायली

जुकरमानक पुनरुज्जीवन-भाषाविज्ञान आ संकर-भाषा-सिद्धान्त, हिब्रू-भाषा-अकादमीक मानकीकरण-प्रतिमान, मृत/संकटग्रस्त भाषाक पुनःप्राणन।

चीनी

श्याओश्वे (小學) आ 'स्वोवन च्येची'क कोश-परम्परा, 'माशी वेन्थोङ्ग'क प्रथम-व्याकरण-प्रतिमान, गणक (classifier/量詞) आ विषय-प्रधानताक विश्लेषण।

तिब्बती

थोन्मि सम्भोटक 'सुम्चुपा' आ लिपि-संहिताकरण, 'झेसा' (ཞེ་ས) आदर-रजिस्टर, कर्तृ-कारक (ergative) चिह्नन, बौद्ध अनुवाद-मानकीकरण।

जापानी

कोकुगोगाकु (国語学), तोकिएदाक 'भाषा-प्रक्रिया-सिद्धान्त', केइगो (敬語) आदर-तन्त्र, वागो/कांगो/गाइराइगो शब्द-स्तरीकरण, विषय-टिप्पणी संरचना।

विदेह समानान्तर

प्रति-कानन (counter-canon), जनतांत्रिक भाषा-अधिकार, अवदमित/लोक/स्त्री/दलित-स्वरक पुनर्प्राप्ति, समानान्तर-इतिहास ढाँचा, संस्थागत आधिकारिकताक विकेन्द्रीकरण।

ग्रन्थक संरचना, प्रयोगात्मक दृष्टि आ प्रारम्भिक मूल्यांकन

प्रस्तुत शोध-समीक्षा 'मैथिली समानान्तर व्याकरण, रचना आ भाषा-विज्ञान' पोथीक अत्यन्त गहन, सर्वांगीण आ विस्तृत विश्लेषण अछि। ई ग्रन्थ कोनो सामान्य व्याकरणिक नियमावली मात्र नहि अछि, अपितु ई मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक समाजभाषिक, प्रकारिक (Typological) आ ऐतिहासिक विकासक एकटा सम्पूर्ण, प्रामाणिक आ क्रान्तिकारी दस्तावेज थिक। एहि समीक्षा-प्रतिवेदनमे पोथीक संरचनात्मक विश्लेषणक संगे-संग भारतीय, पाश्चात्य, इस्रायली, चीनी, तिब्बती, जापानी आ विदेह समानान्तर समीक्षाक विश्वजनीन सिद्धान्तसभक आलोकमे भाषा-विज्ञानक गुढ़ तत्त्वसभक परीक्षण कएल गेल अछि। ई प्रतिवेदन एकटा विशेषज्ञक दृष्टिसँ लिखल गेल अछि, जाहिमे पोथीक कोनो खण्डकेँ छोड़ल नहि गेल अछि आ प्रत्येक भाषिक सम्भावनापर सूक्ष्म विचार कएल गेल अछि।

पोथीक मुख्य विषय, संरचना आ प्रयोगात्मक दृष्टि

ई ग्रन्थ परम्परागत व्याकरणक नियम-रटन्त विधिकेँ पूर्णतः खण्डित करैत 'कार्यगत वितरण' (Functional Distribution) आ 'प्रयोगशाला' (Lab) आधारित अध्ययनपर बल दैत अछि। ई पोथी मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक व्याकरण आ रचनाक समानान्तर अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि आ मुख्य रूपसँ चारि खण्ड तथा अनेक विस्तृत अध्यायमे विभक्त अछि।

खण्ड १ (ठेठी-अंगिका: व्याकरण आ रचना): एहि खण्डमे अध्याय १ सँ २० धरि भाषा, ध्वनि, शब्द-रूप, वाक्य-विचार आ रचना-कलाक सविस्तार विवेचन अछि। एहिमे भाषाक व्यावहारिक प्रयोगपर जोर देल गेल अछि आ क्षेत्रीय रूपसभकेँ मानक रूपक संगे-संग सुरक्षित राखल गेल अछि।

खण्ड २ (बज्जिका: व्याकरण आ रचना): परिशिष्ट-आधारित संरचनापर बज्जिका व्याकरणक नियम आ प्रयोगक विश्लेषण कएल गेल अछि।

खण्ड ३ (मैथिली: व्याकरण आ रचना): अध्याय २१ सँ ६९३ धरि मैथिलीक मानक व्याकरण, रूपविज्ञान (Morphology), स्वनिम-विज्ञान (Phonology) आ वाक्यविज्ञान (Syntax) क सांगोपांग अध्ययन अछि।

खण्ड ४ (भाषा-विज्ञान: ठेठी-अंगिका, बज्जिका, मैथिली): अध्याय ६९४ सँ ९२६ धरि भाषा-विज्ञानक आधुनिकशाखासभ—प्रकारिकी (Typology), मनोभाषाविज्ञान (Psycholinguistics), सहभाषामिति (Dialectometry), ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान (Historical Linguistics) आ समाजभाषाविज्ञान (Sociolinguistics) क प्रयोगात्मक रूपरेखा देल गेल अछि।

एहि पोथीक सबसँ विशिष्ट पक्ष ई अछि जे प्रत्येक सिद्धान्तक संगे 'स्रोत-पुष्ट उदाहरण-बैंक' (Source-backed Example Bank) आ प्रयोगशाला-अभ्यास देल गेल अछि। अध्याय ८८८ सँ ९०८ धरि भाषा-भावना (Language Attitude), मानकीकरण (Standardization), ध्वनि-परिवर्तन (Sound Change), व्याकरणीकरण (Grammaticalization) आ द्विभाषिक शब्द-पहिचान (Bilingual Word Recognition) जकाँ अत्यन्त उन्नत विषयसभक समावेश ई प्रमाणित करैत अछि जे ई पोथी अन्तरराष्ट्रीय शोध-मापदण्डपर आधारित अछि।

भाग १ — सिद्धान्तक सात कसौटी

१. भारतीय दृष्टि: पाणिनि सँ काव्यशास्त्र धरि

भारतीय व्याकरण-परम्पराक पहिल कसौटी “रूपक सूक्ष्मता” अछि। पाणिनीय परम्परा ध्वनि, धातु, प्रत्यय, रूपान्तरण आ नियमक परस्पर सम्बन्धकेँ अत्यन्त सङ्गठित ढंगसँ देखैत अछि। एहि दृष्टिसँ पोथीक शब्द-निर्माण, उपसर्ग-प्रत्यय, कृदन्त, समास, कारक, क्रिया-रूप आ रूप-ध्वनि-विज्ञानक अध्यायसभउपयुक्त दिशा लैत अछि। मुदा पाणिनीय कसौटी केवल संस्कृत-श्रेणी आरोपित करब नहि; मूल प्रश्न ई होयत जे मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक वास्तविक रूप-व्यवहारकेँ न्यूनतम, स्पष्ट आ परीक्षणीय नियममे कोना व्यक्त कएल जाए। पोथीक उन्नत भाग जखन डेटा, अपवाद, क्षेत्रीय रूप आ विरोधी उदाहरण खोजबाक आग्रह करैत अछि, तखन ई आधुनिक अर्थमे पाणिनीय सूक्ष्मताक नगीच पहुँचैत अछि।

पतञ्जलिक भाष्य-परम्परा नियमक प्रयोग, प्रचलित रूप आ शिष्ट प्रयोगक बीच संवाद करैत अछि। एहि कसौटीसँ पोथीक “मानक बनाम क्षेत्रीय रूप” नीति उपयोगी मुदा सावधानी-आधारित हेबाक चाही। कोनो रूपकेँ केवल “अशुद्ध” कहबाक बदला ओकर सामाजिक क्षेत्र, शैली, वक्ता-समूह आ लिखित/मौखिक संदर्भ देल जाए। ई दिशा पोथीक समाजभाषावैज्ञानिक भागमे उपस्थित अछि; प्रारम्भिक व्याकरण अध्यायमे सेहो ओही संवेदनशीलता निरन्तर रहबाक चाही।

भर्तृहरिक वाक्य-दृष्टि अर्थकेँ केवल अलग-अलग शब्दक जोड़ नहि मानैत। पोथीक वाक्य, आकाङ्क्षा, योग्यता, आसक्ति, पदक्रम, उपवाक्य, सूचना-संरचना, संदर्भ आ प्रवचनक विस्तार एहि व्यापक वाक्यार्थ-दृष्टिसँ सशक्त रूपेँ पढ़ल जा सकैत अछि। खास कऽ अध्याय १६१ सँ आगाँ वाक्य-प्रकार, २०४ सँ आगाँ उपवाक्य, ४३६ सँ आगाँ अर्थ, आ ८७८ सँ आगाँ अर्थ-प्रयोग-प्रवचन—ई सभ एक "शब्दसँ वाक्यार्थ" यात्रा बनबैत अछि।

रचना-भागपर भारतीय काव्यशास्त्रक चारि कसौटी विशेष उपयोगी अछि: रस—रचनाक अनुभूति-परिणाम; ध्वनि—प्रत्यक्ष अर्थसँ परे निहित अर्थ; वक्रोक्ति—अभिव्यक्तिक विशिष्ट मोड़; औचित्य—विषय, पात्र, प्रसंग, भाषा आ शैलीक अनुरूपता। पोथी छन्द-अलंकारकेँ पृथक पढ़बैत अछि, मुदा उन्नत रचना-अध्यायमे रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-औचित्यकेँ कथा, संवाद, निबन्ध, समीक्षा, भाषण आ सम्पादकीयक वास्तविक उदाहरणसँ जोड़ल जाए तँ साहित्यिक सिद्धान्त व्यावहारिक लेखनक अंग बनि सकैत अछि।

२. पाश्चात्य दृष्टि: संरचना, प्रकार्य, प्रयोग आ प्रमाण

पाश्चात्य आधुनिक भाषा-विज्ञानक पहिल महत्त्वपूर्ण कसौटी वर्णनात्मकता अछि। सॉस्यूरक संरचनात्मक दृष्टि भाषिक इकाईक मूल्य ओकर पारस्परिक सम्बन्धमे देखैत अछि; ब्लूमफील्डीय परम्परा वितरण आ रूपक ठोस वर्णनपर बल दैत अछि; चॉम्स्कीय परम्परा वाक्यक आन्तरिक संरचना, निर्भरता आ उत्पादक नियमकेँ प्रश्न बनबैत अछि; हॉलिडे प्रकार्य, पाठ आ सामाजिक अर्थपर बल दैत छथि। पोथीमे ई चारू प्रकारक प्रश्न अलग-अलग स्तरपर उपस्थित अछि—शब्द-वर्ग आ रूपविज्ञान; पदक्रम आ उपवाक्य; सूचना-संरचना; रजिस्टर, पाठक आ प्रयोजन।

लाबोवक समाजभाषावैज्ञानिक दृष्टि एहि ग्रन्थ लेल खास प्रासंगिक अछि, कारण ठेठी-अंगिका आ बज्जिका दुनूमे क्षेत्रीय रूप, मानकीकरण, वक्ता-पहचान आ रूप-भिन्नता महत्त्वपूर्ण अछि। "भिन्नता स्वयं डेटा अछि" जकाँ उन्नत अध्यायक भावना एहि परम्परासँ मेल खाइत अछि। अगिला संस्करणमे रूप-भिन्नताक संग वक्ताक आयु, स्थान, शिक्षा, शैली, माध्यम आ प्रसंगक सूचक देल जाए तँ सामाजिक व्याख्या अधिक मजबूत होयत।

ऑस्टिन आ ग्राइसक प्रयोगविज्ञान वाक्यक शाब्दिक अर्थ आ सामाजिक क्रिया बीच भेद देखबैत अछि। आदेश, विनती, आदर, प्रश्न, संकेत, निपात, संबोधन, श्रोता-सम्बन्ध आ अप्रत्यक्ष कथनक चर्चा एहि दृष्टिसँ विशेष समृद्ध बनि सकैत अछि। ठेठी-अंगिकाक श्रोता-सम्बद्ध क्रिया-रूप आ मैथिलीक आदर-स्तर एहन विषय अछि जतय केवल काल-पुरुष तालिका पर्याप्त नहि; सामाजिक क्रिया आ सहभागिता देखब आवश्यक अछि।

ग्रीनबर्गीय प्रकारिकी आ आधुनिक क्रॉस-लिंग्विस्टिक तुलना पोथीक समानान्तर भागक स्वाभाविक विस्तार अछि। मुदा प्रकारिकीमे "एक भाषा = एक स्थिर प्रकार" मानब उचित नहि। शब्दक्रम, कारक-चिह्न, सहायक क्रिया, वर्गक, बहुवचन आ आदर जकाँ विशेषतासभक अलग-अलग मान हो सकैत अछि। पोथीक अध्याय ८१४–८२६ एहि सूक्ष्म समानान्तर पद्धतिक दिशामे सबसँ मजबूत खण्ड अछि।

३. इस्रायली दृष्टि: बहुप्रणाली, मानदण्ड आ स्थानान्तरण

इस्रायली साहित्य-अध्ययनक सन्दर्भमे एतय मुख्यतः तेल-अवीव-सम्बद्ध इवेन-जोहारक बहुप्रणाली सिद्धान्त आ गिडियन टूरीक वर्णनात्मक अनुवाद-अध्ययन उपयोगी अछि। बहुप्रणाली दृष्टि साहित्य आ भाषा-रूपकेँ एकल, अलग इकाई नहि मानि, परस्पर प्रतिस्पर्धी आ सहयोगी प्रणालीक जालमे देखैत अछि। मैथिली, ठेठी-अंगिका, बज्जिका, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू आ अंग्रेजीक पारस्परिक सम्पर्कक चर्चा लेल ई दृष्टि उपयोगी अछि—विशेषतः शब्द-आगत, मानकीकरण, तकनीकी शब्दावली, अनुवाद आ शैली-परिवर्तनमे।

टूरीक "मानदण्ड" दृष्टि ई प्रश्न उठबैत अछि जे वास्तविक समुदायमे कोन रूप स्वीकार्य, प्रतिष्ठित, औपचारिक, अनौपचारिक वा क्षेत्रीय मानल जाइत अछि। पोथी जखन एक मुख्य लिखित रूप चुनैत आ अन्य रूपकेँ क्षेत्रीय रूप कहैत अछि, तखन ई केवल व्याकरणिक निर्णय नहि रहैत; ई सामाजिक मानदण्डक निर्णय सेहो बनैत अछि। तेँ प्रत्येक मानकीकरणक संग प्रमाण चाही: प्रकाशित प्रयोग, वक्ता-साक्षात्कार, क्षेत्रीय वितरण, शिक्षण-परम्परा वा संस्थागत व्यवहार।

अनुवाद आ संरचनात्मक अन्तरणपर पोथीक बादक अध्यायसभमे इस्रायली वर्णनात्मक दृष्टि खास उपयोगी अछि। लक्ष्य-भाषाक स्वाभाविकता, विधागत परम्परा, पाठकीय अपेक्षा आ स्थानीय शैलीक मानदण्डकेँ स्रोत-भाषाक संरचनासँ अलग राखब आवश्यक अछि। एहि अर्थमे अंग्रेजीसँ तुलना उपयोगी अछि, मुदा अंग्रेजी संरचनाकेँ अन्तिम मापदण्ड बनाओनाइ उचित नहि।

४. चीनी दृष्टि: व्यवस्थित व्याकरण, बोलचाल आ रचनात्मक विन्यास

चीनी परम्परासँ तीन भिन्न कसौटी उपयोगी अछि। पहिल, मा जियानझोंगक “माशी वेनतोंग” जकाँ आरम्भिक आधुनिक व्याकरण-प्रयास ई देखबैत अछि जे परम्परागत भाषिक सामग्रीकेँ नव विश्लेषण-पद्धतिसँ व्यवस्थित करब सम्भव अछि, मुदा बाहरी श्रेणीकेँ जस-के-तस आरोपित करब जोखिमपूर्ण अछि। एहि कसौटीसँ पोथीक अंग्रेजी समानान्तर तुलना उपयोगी तखन अछि जखन ओ मैथिली/ठेठी-अंगिका/बज्जिकाक अपन संरचनाकेँ स्पष्ट करए, नहि कि ओकरा अंग्रेजी ढाँचामे फिट करए।

दोसर, युएन रेन चाओक बोलल चीनीक विस्तृत वर्णन जकाँ परम्परा जीवित बोलचाल, स्वर, वाक्य-रूप, कण, संदर्भ आ प्रयोगकेँ केन्द्रीय बनबैत अछि। पोथीक क्षेत्रकार्य, प्राकृतिक पाठ, रिकॉर्डिंग, प्रश्नोत्तर, लोककथा, डिजिटल संदेश आ कॉर्पसक आग्रह एहि दृष्टिसँ अत्यन्त अनुकूल अछि। प्रारम्भिक व्याकरण अध्यायमे सेहो लिखित रूपक संग बोलल नमूना, ध्वनि-रिकॉर्डिंग आ वक्ता-सूचना जोड़ल जाए तँ पुस्तकक वैज्ञानिक मूल्य बढ़त।

तेसर, लिउ शिएक “वेनशिन दियाओलोंग” परम्परा रचनामे भाव, विन्यास, विधा, शब्द-शक्ति, अलंकरण आ सम्पूर्ण कृतिक अनुरूपताकेँ परस्पर जोड़ि देखैत अछि। एहि दृष्टिसँ पोथीक रचना-भागक सबसँ पैघ गुण ई अछि जे ओ केवल “निबन्ध लिखू” नहि कहैत, बल्कि विषय सीमित करब, मुख्य प्रतिपाद्य, अनुच्छेद-संगति, तर्क, प्रमाण, सम्पादन, शैली आ पाठककेँ जोड़ैत अछि। साहित्यिक रचनामे एहि ढाँचाक संग संवेदना, लय, छवि आ ध्वन्यार्थक अधिक व्यवस्थित अभ्यास जोड़ल जा सकैत अछि।

५. तिब्बती दृष्टि: सम्बन्धसूचक व्याकरण आ ज्ञान-संचरण

तिब्बती व्याकरण-परम्परा संस्कृत व्याकरणक ग्रहण आ स्वदेशी विश्लेषण दुनूक संवादसँ विकसित भेल। “सुम-चु-पा” आ “र्तग्स-क्यि-जुग-पा” जकाँ परम्परागत ग्रन्थक चर्चा प्रायः कण, कारक-सदृश सम्बन्ध, वाक्यगत भूमिका आ सही प्रयोगकप्रश्नसँ जुड़ैत अछि। एहि दृष्टिसँ पोथीक परसर्ग, निपात, कारक, संबोधन, आदर, वाक्य-संबन्ध आ अनुबन्धक रूपसभक विश्लेषण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि।

तिब्बती उदाहरण एकटा आर महत्त्वपूर्ण आलोचनात्मक शिक्षा दैत अछि: बाहरी उच्च प्रतिष्ठाक व्याकरणिक परम्परा ग्रहण करैत समय स्थानीय भाषाक संरचना बदलि नहि देल जाए। पोथी संस्कृत-उत्पन्न पदावली—संज्ञा, सर्वनाम, कारक, समास, कृदन्त, अलंकार—क उपयोग करैत अछि; ई शिक्षण लेल सहज अछि, मुदा आधुनिक विश्लेषणमे एतबा स्पष्ट करब चाही जे कोन श्रेणी पारम्परिक शिक्षण-श्रेणी अछि आ कोन श्रेणी प्रत्यक्ष भाषिक व्यवहारसँ सिद्ध होइत अछि।

ज्ञान-संचरणक दृष्टिसँ तीनू भाषामे समान तकनीकी शब्दावली, अन्तररेखीय व्याख्या, लिप्यन्तरण आ द्विभाषिक शब्दावलीक प्रयास प्रशंसनीय अछि। ई केवल शब्द-सूची नहि, बल्कि एक भाषिक ज्ञान-परम्पराकेँ दोसर पीढ़ी, शोधकर्ता आ डिजिटल माध्यम धरि पहुँचाबयक साधन बनि सकैत अछि।

६. जापानी दृष्टि: कण, सम्बन्ध, प्रक्रिया आ पाठ-व्यवहार

जापानी व्याकरण-अध्ययनमे “तेनिओहा” परम्परा कण आ वाक्यगत सम्बन्धकेँ कविता आ गद्य दुनूमे महत्त्व दैत रहल। मोतोओरी नोरिनागाक कण-सम्बन्धक विश्लेषण आ “ककारी-मुसुबी” जकाँ सम्बन्धसूचक विचार ई देखबैत अछि जे छोट कण सेहो वाक्यक सूचना, बल आ सम्बन्ध बदलि सकैत अछि। मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक निपात, परसर्ग, प्रश्नकण, बलसूचक रूप आ संबोधनपर एहि दृष्टिसँ अधिक सूक्ष्म अध्ययन सम्भव अछि।

तोकिएदा मोतोकीक भाषा-प्रक्रिया दृष्टि भाषाकेँ केवल तैयार वस्तु नहि, वक्ता-सुननिहार बीच घटित अभिव्यक्ति-प्रक्रिया मानबाक दिशामे पढ़ल जाइत अछि। ठेठी-अंगिकाक श्रोता-सम्बद्ध क्रिया, मैथिलीक आदर-स्तर, बज्जिकाक संबोधन-भेद, संवाद-लेखन आ प्रवचन-अध्याय एहि दृष्टिसँ खास महत्त्वपूर्ण अछि। भाषा “के कहलक?” मात्र नहि; “केकरा, कोन सम्बन्धमे, कोन प्रसंगमे, कोन रूपसँ कहलक?”—ई चारू प्रश्न व्याकरणक हिस्सा बनैत अछि।

जापानी परम्परासँ रचना लेल सेहो एक शिक्षा अछि: सूक्ष्म कण, विराम, क्रम आ अप्रत्यक्षता पाठकक अनुभव बदलैत अछि। पोथीक शैली, लय, वाक्य-लम्बाइ, सूचना-संरचना, विराम-चिह्न आ सम्पादन अध्याय एहि संवेदनशीलताकेँ व्यवस्थित अभ्यासमे बदलि सकैत अछि।

७. विदेह समानान्तर दृष्टिः एहि पोथीक अपन आलोचनात्मक पद्धति

एहि पोथीक सर्वाधिक मौलिक सम्भावना “समानान्तर” शब्दमे अछि। समानान्तर अध्ययनक अर्थ तीनू भाषाकेँ एक-दोसरक विकृत रूप वा सीढ़ी नहि मानि, समान प्रश्नक उत्तर देनिहार स्वतंत्र भाषिक प्रणाली मानब। अध्याय ८१४क पद्धतिमे तुलनीयता, स्रोत-समर्थित कथन, न्यूनतम समानान्तर नमूना आ शोध-नैतिकता; अध्याय ८२५मे एक्के प्रश्न तीनू भाषा, अर्थ-उद्बोधन, स्वाभाविकता-निर्णय आ अनुवादक प्रभावक नियंत्रण—ई सभ एहि दृष्टिक आधार बनैत अछि।

विदेह समानान्तर समीक्षा लेल दस कसौटी प्रस्तावित कएल जा सकैत अछि: (१) तीनू भाषाक समान प्रतिष्ठा; (२) एक्के शोध-प्रश्न; (३) तुलनीय मुदा स्थानीय रूपसँ स्वाभाविक डेटा; (४) प्रत्येक उदाहरणक स्रोत; (५) वक्ता, ठाम, समय आ विधाक मेटाडेटा; (६) मानक आ क्षेत्रीय रूपक पृथक चिह्नीकरण; (७) असहमति वा अनिश्चितताक स्पष्ट स्तर; (८) कॉर्पस/रिकॉर्डिंग/क्षेत्रकार्यसँ पुनः जाँच; (९) अनुवादक वा शोधकर्ता प्रभावक नियंत्रण; (१०) सम्पादनमे तथ्य आ लेखक-अभिप्रायक संरक्षण।

एहि कसौटीसँ देखल जाए तँ पोथीक आरम्भिक भाग शिक्षणक रूपमे मजबूत अछि, मुदा उन्नत भागमे जतेक कठोर प्रमाण-पद्धति विकसित भेल अछि, ओही पद्धतिक प्रकाश आरम्भिक व्याकरण-तालिका आ भाषिक दावापर सेहो फेर सँ पड़बाक चाही। अगिला संस्करणक सबसँ महत्त्वपूर्ण सम्पादकीय काज ई “पश्च-प्रमाणीकरण” होयत।

सात परम्पराक विस्तृत सैद्धान्तिक पूरक समीक्षा

सैद्धान्तिक समीक्षाः सात परम्पराक आलोकमे

आब ग्रन्थकेँ ओहि सात दृष्टिसँ जाँचल जाइत अछि जकर प्रस्ताव आरम्भमे कएल गेल छल। प्रत्येक उपभागमे पहिने ओहि परम्पराक मूल सिद्धान्त संक्षेपमे कहल गेल अछि, तकर बाद ग्रन्थक विशिष्ट विशेषतासँ तकर संवाद — जतय ग्रन्थ ओहि परम्पराक कसौटीपर खरा उतरैत अछि, आ जतय ओकर आर सम्भावना छल।

भारतीय समीक्षा-परम्परा

भारतीय भाषा-चिन्तन विश्वक प्राचीनतम आ सूक्ष्मतम परम्परा थिक। एकर पाँच स्तम्भ एहि ग्रन्थक परीक्षामे प्रासङ्गिक अछि — पाणिनीय व्याकरण, प्रातिशाख्य-शिक्षाक ध्वनि-शास्त्र, भर्तृहरिक वाक्यपदीय (स्फोट आ वाक्य-अखण्डता), मीमांसाक शब्द-प्रामाण्य, आ नव्य-न्यायक परिभाषा-विवेक; एकर संग रस-ध्वनि-वक्रोक्तिक रचना-दृष्टि।

पाणिनि-दृष्टि: पाणिनीय अष्टाध्यायीक आत्मा मितव्ययिता (लाघव) आ नियम-निष्ठा थिक — न्यूनतम सूत्रसँ अधिकतम रूप-सिद्धि। समीक्षाधीन ग्रन्थ एकर विपरीत ध्रुवपर ठाढ़ अछि — ई विस्तार (विस्तर) क ग्रन्थ थिक, लाघवक नहि। ई दोष नहि, अपितु प्रयोजन-भेद थिक: अष्टाध्यायी विदग्ध-व्याकरणीक लेल थिक, ई ग्रन्थ जन-शिक्षणक लेल। तथापि पाणिनीय दृष्टिसँ एकटा गुण स्पष्ट अछि — ग्रन्थ रूप-सिद्धिकेँ प्रत्यय-आधारपर देखैत अछि (जेना क्रियाक व्यक्ति-प्रत्यय-सार, संज्ञाक कारक-परसर्ग) । ई प्रकृति-प्रत्यय-विभाजनक पाणिनीय-दृष्टिक आधुनिक शिक्षण-रूपान्तर थिक। जतय अष्टाध्यायी 'अन्तरङ्ग-बहिरङ्ग' आ 'उत्सर्ग-अपवाद' क तर्कसँ रूप सिद्ध करैत अछि, ओतय ई ग्रन्थ सारणी आ उदाहरणसँ; दुनू लक्ष्य एके — नियमक व्यवस्थित प्रस्तुति।

प्रातिशाख्य-शिक्षा-दृष्टि: भारतीय ध्वनि-शास्त्र (स्थान-प्रयत्न-करण, उदात्त-अनुदात्त-स्वरित, संहिता-सन्धि) विश्वक प्रथम वैज्ञानिक ध्वनि-विवेचन थिक। ग्रन्थक ध्वनि-अध्याय (उच्चारण-स्थान, महाप्राण–अल्पप्राण, नासिक्यता, अपिनिहिति–अभिश्रुति) एही परम्पराक उत्तराधिकारी थिक; मुदा एकर विशेषता ई जे ओ प्रातिशाख्यीय वर्गीकरणकेँ आधुनिक ध्वनि-विज्ञान (IPA, VOT, स्पेक्ट्रोग्राम, न्यूनतम-जोड़ी) सँ जोड़ि दैत अछि। 'अपिनिहिति' आ 'अभिश्रुति' जेहन मैथिली-विशिष्ट ध्वनि-प्रक्रियाक उल्लेख ई देखबैत अछि जे ग्रन्थ देसी ध्वनि-परम्पराकेँ छोड़ने नहि अछि।

भर्तृहरि-दृष्टि: वाक्यपदीयक स्फोट-सिद्धान्त कहैत अछि जे अर्थक वास्तविक वाहक खण्डित वर्ण नहि, अपितु अखण्ड वाक्य-स्फोट थिक — अर्थ समग्रमे प्रकाशित होइत अछि। एहि दृष्टिसँ ग्रन्थक सभसँ सबल अंश ओ थिक जतय ओ खण्ड-विश्लेषणसँ आगाँ बढ़ि वाक्य-समग्रता आ प्रवचन (discourse) दिस जाइत अछि — जेना 'सूचना-संरचना' (information structure), 'बात के केंद्र', आ प्रवचन-सन्दर्भमे सर्वनाम-लोपक विवेचन। मैथिलीक बहु-आयामी क्रिया-सामञ्जस्य तँ स्वयं भर्तृहरिक 'वाक्य एकटा अखण्ड इकाई' सिद्धान्तक जीवन्त उदाहरण थिक — किएक तँ ओतय क्रिया-रूप एके पदक नहि, अपितु समग्र वाक्यक सामाजिक-सम्बन्ध-संरचनाक प्रकाशक थिक।

मीमांसा आ नव्य-न्याय-दृष्टि: मीमांसा शब्दकेँ स्वतःप्रमाण मानैत, आप्त-वाक्य आ प्रत्यक्षकेँ प्रमाण-कोटिमे राखैत अछि। ग्रन्थक 'आधार-पाठ समर्थित / वर्णनात्मक प्रवृत्ति / परिकल्पना' — ई त्रिविध कोटि-विभाजन ठीक मीमांसा-न्यायक प्रमाण-विवेकक आधुनिक प्रतिरूप थिक: कोन कथन प्रत्यक्ष-आँकड़ा-सिद्ध, कोन आप्त-वचन (स्रोत-टिप्पणी) पर आधृत, आ कोन केवल अनुमान-कल्प (परिकल्पना) । नव्य-न्यायक परिभाषा-कठोरता (अव्याप्ति–अतिव्याप्ति–असम्भव दोषसँमुक्त लक्षण) क कसौटीपर ग्रन्थक पारिभाषिक-शब्दकोश आ 'रूप/कार्य/अर्थ/प्रयोग/वितरण' क पञ्चस्तरीय विभाजन खरा उतरैत अछि — ई पञ्चस्तर 'समान शब्द देखिते समान कार्य मानब' क अतिव्याप्ति-दोषसँ पाठककेँ बचबैत अछि। ग्रन्थकारक नव्य-न्याय-प्रवीणता (गङ्गेश-परम्परा) एतय अप्रत्यक्ष रूपेँ फलदायी अछि।

रस-ध्वनि-वक्रोक्ति-दृष्टि: ई काव्य-समीक्षाक उपकरण थिक, तेँ व्याकरण-ग्रन्थपर सीधे लागू नहि; मुदा ग्रन्थक रचना-कला-खण्ड (काव्य-भाषा, छन्द, अलंकार, आ 'असरदार वाक्य') मे एकर बीज अछि। अलंकार-अध्याय शब्दालंकार–अर्थालंकार आ उपमाक चारि-अंग धरि जाइत अछि; मुदा ध्वनि-सिद्धान्त (व्यंग्यार्थ, प्रतीयमान अर्थ) क गहन विवेचन एतय नहि — जे स्वाभाविक, किएक तँ ई शिक्षण-व्याकरण थिक, काव्य-शास्त्र नहि। भविष्यमे विदेह-परम्पराक ध्वनि-वक्रोक्ति-केन्द्रित समीक्षा-पद्धतिकेँ एहि रचना-खण्डसँ जोड़ब एकरा साहित्यिक गहराइ देत।

पाश्चात्य समीक्षा-परम्परा

आधुनिक भाषा-विज्ञानक ढाँचा — जकरा ग्रन्थ स्वयं अपनबैत अछि — पाश्चात्य थिक। तेँ एतय संवाद सभसँ प्रत्यक्ष अछि।

सस्यूर-दृष्टि: फ़र्दिनान्द द सस्यूर (Saussure) क तीन आधार-भेद — ल्याङ्ग/पारोल (langue/parole), संकेतक स्वेच्छाचारिता (arbitrariness), आ समकालिक/ऐतिहासिक (synchronic/diachronic) — ग्रन्थमे स्पष्ट स्वीकृत अछि। भूमिकामे ग्रन्थ लिखैत अछि: 'चिह्न स्वेच्छाचारी थिक... तेँ मैथिली गाछ, बज्जिका गाछ/पेड़ आ अंगिका गाछ सभ समान रूपसँ वैध। ' — ई शुद्ध सस्यूरीयस्थापना थिक, आ एकरे सहारे ग्रन्थ 'कोनो भाषा हीन नहि' क समताकेँ भाषा-वैज्ञानिक आधार दैत अछि। समकालिक/ऐतिहासिक भेदकेँ ओ अलग खण्डमे राखि (अधिकांश समकालिक, ऐतिहासिक-तुलनात्मक अलग) सस्यूरीय अनुशासन निबाहैत अछि।

ब्लूमफील्ड-दृष्टि: अमेरिकी वर्णनवाद (Bloomfield) क सूत्र — वर्णन करू, निर्णय नहि; रूपिम-स्वनिमकेँ वितरण (distribution) सँ सिद्ध करू। ग्रन्थक वर्णनात्मक-स्वर आ न्यूनतम-जोड़ी-आधारित ध्वनिम-सिद्धि शुद्ध ब्लूमफील्डीय थिक। 'रूप/कार्य/अर्थ/प्रयोग/वितरण' मे 'वितरण' क पृथक् स्तर ब्लूमफील्डीय distributional method क सीधा अनुवाद थिक।

चोम्स्की-दृष्टि: उत्पादक व्याकरण (generative grammar) क कसौटी — नियमक ओहन समुच्चय जे सभ व्याकरणिक वाक्य उत्पन्न करय आ अव्याकरणिककेँ रोकय (generativity), आ अन्तर्जात भाषा-क्षमता। ग्रन्थ मुख्यतः वर्णनात्मक-शैक्षणिक थिक, तेँ ई औपचारिक उत्पादक-नियम नहि लिखैत; मुदा वाक्य-विन्यास-खण्डमे constituency (पदसमूह-संरचना), dependency (निर्भरता), valency (क्रिया-अपेक्षा) आ argument structure क विवेचन उत्पादक-परम्पराक अवधारणाकेँ शिक्षण-रूपमे आनैत अछि। चोम्स्कीय पूर्ण औपचारिकता (rewrite rules, tree) क अभाव एतय अभावो नहि — ई प्रयोजन-सङ्गत निर्णय थिक।

ग्रीनबर्ग-प्रकारिकी-दृष्टि: जोसेफ ग्रीनबर्ग (Greenberg) क शब्द-क्रम-सार्वभौम (word-order universals) कहैत अछि जे SOV भाषा प्रायः परसर्गीय (postpositional), प्रधान-अन्त्य (head-final) होइत अछि। ग्रन्थ तीनू भाषाकेँ SOV, परसर्गीय, प्रधान-अन्त्य रूपमे स्थापित करैत, ग्रीनबर्गीय सहसम्बन्ध (correlation) क सीधा परीक्षण करैत अछि — पदक्रम-प्रकारिकी, कारक-संरेखण, सामञ्जस्य-प्रकारिकी, प्रधान/आश्रित-चिह्नन धरिक पृथक् अध्याय एकरे प्रमाण। ई ग्रन्थकेँ विश्व-प्रकारिकीक मानचित्रमे स्थान दैत अछि।

हैलिडे-प्रकार्यवाद आ कॉर्पस-दृष्टि: हैलिडे (Halliday) क प्रणालीगत-प्रकार्यात्मक भाषा-विज्ञान (SFL) भाषाकेँ अर्थ-विकल्पक जालक रूपमे, आ रजिस्टर/प्रवचनकेँ केन्द्रमे देखैत अछि। ग्रन्थक रजिस्टर, code-switching, diglossia, cohesion/coherence, आ conversation analysis क अध्याय प्रकार्यवादी थिक। कॉर्पस-भाषा-विज्ञानकेँ ग्रन्थ न केवल स्वीकारैत, अपितु '३ वक्ता × २० शब्द', '२० मिनट बातचीत' सन न्यूनतम-कॉर्पस-मानक धरि निर्धारित करैत अछि — जे बिहारी उपवर्गक भाषाक लेल एकटा दुर्लभ पद्धतिगत योगदान थिक।

विरोधात्मक विश्लेषण आ शिक्षण-व्याकरण-दृष्टि: विरोधात्मक भाषा-विज्ञान (contrastive linguistics) मातृभाषा आ लक्ष्य-भाषाक संरचनात्मक अन्तर देखि त्रुटि-पूर्वानुमान करैत अछि। ग्रन्थ बेर-बेर 'अंग्रेजीसँ संरचनात्मक तुलना' आ 'हिन्दी-प्रभावसँ बचू' क अध्याय दैत, विरोधात्मक-पद्धतिकेँ शिक्षण-उपकरण बनबैत अछि — यएह ओकर सभसँ मौलिक पाश्चात्य-अनुप्रयोग थिक। सीमा: विरोधात्मक-परिकल्पना (contrastive hypothesis) आधुनिक द्वितीय-भाषा-अर्जन-सिद्धान्तमे आंशिक रूपेँ संशोधित अछि (सभ त्रुटि अन्तर-भाषिक हस्तक्षेपसँ नहि होइत); ग्रन्थ जँ त्रुटि-विश्लेषण (error analysis) क आधुनिक अन्तर्भाषा (interlanguage) सिद्धान्तकेँ जोड़य, तँ शिक्षण-पक्ष आर सन्तुलित हएत।

इस्रायली समीक्षा-परम्परा

इस्रायली भाषा-चिन्तन आधुनिक विश्वमे एकटा अद्वितीय प्रयोगक — मृत-प्राय हिब्रूक पुनर्जीवन — क सैद्धान्तिक फल थिक। एहि परम्पराक तीन अवधारणा एहि ग्रन्थपर विशेष रूपेँ प्रासङ्गिक अछि।

ज़ुकरमान-दृष्टि (पुनरुज्जीवन-भाषा-विज्ञान): गिलआद ज़ुकरमान (Ghil'ad Zuckermann) क स्थापना थिक जे 'पुनर्जीवित' भाषा कहियो अपन मूल शुद्ध रूपमे नहि घुरैत — ओ सदा एकटा संकर (hybrid) होइत अछि, जाहिमे पुनरुज्जीवनकर्ताक मातृभाषाक छाप अनिवार्य। ई दृष्टि विदेह-परियोजनाक लेल क्रान्तिकारी प्रासङ्गिकता रखैत अछि। मैथिली, अंगिका आ बज्जिका मृत नहि, मुदा संकटग्रस्त आ हिन्दी-आच्छादित अछि। ग्रन्थक बेर-बेरक आग्रह — 'हिन्दी-प्रभावसँ बचू', 'शुद्ध ठेठी = हिन्दी-कलंकसँ मुक्त' — ज़ुकरमानीय-चेतनाक विपरीत ध्रुव थिक: जतय ज़ुकरमान कहैत छथि 'संकरता अनिवार्य, ओकरा स्वीकारू', ओतय ग्रन्थ 'शुद्धीकरण' क अभियान चलबैत अछि। ई तनाव समीक्षाक सभसँ रोचक बिन्दु थिक — आ ई कोनो एकतरफा दोष नहि। भाषा-योजनाक दुइ वैध लक्ष्य अछि: शुद्धीकरण (purism) आ यथार्थ-अभिलेखन (documentation) । ग्रन्थ दुनूकेँ साधैत अछि — व्याकरण-खण्डमे शुद्धीकरण, भाषा-विज्ञान-खण्डमे यथार्थ-वर्णन। मुदा ज़ुकरमानीय दृष्टिसँ एकटा प्रश्न उठैत अछि: जकरा ग्रन्थ 'हिन्दी-कलंक' कहैत अछि, ओ किछुदशकसँ भाषा-समुदायक जीवन्त प्रयोगक अंग बनि गेल अछि — तँ ओ 'अशुद्धि' थिक वा भाषाक स्वाभाविक विकास? भविष्यक संस्करणमे एहि प्रश्नक स्पष्ट सैद्धान्तिक उत्तर (जे शुद्धीकरण किएक, कतबा, कोन सीमा धरि) ग्रन्थकेँ आर सुदृढ़ करत।

हिब्रू-अकादमी-दृष्टि (मानकीकरण-प्रतिमान): आधुनिक हिब्रूक मानकीकरण एकटा केन्द्रीय संस्था (Academy of the Hebrew Language) क माध्यमसँ भेल — जे शब्द-निर्माण, वर्तनी आ पारिभाषिकीक निर्णय करैत अछि। ग्रन्थक 'शैली-पत्र', पारिभाषिक-शब्दकोश, आ 'एके संकल्पना लेल एके मुख्य शब्द' क आग्रह — ई सभ अकादमी-प्रतिमानक अनुरूप संस्थागत मानकीकरणक प्रयास थिक। विदेह एतय एकटा अनौपचारिक भाषा-अकादमीक भूमिका निबाहि रहल अछि। हिब्रू-अनुभवसँ शिक्षा ई जे मानकीकरण तखने सफल होइत अछि जखन ओ आदेशक संग स्वीकार्यता (community buy-in) सेहो अर्जित करय — तेँ ग्रन्थक शिक्षण-सुलभता आ अभ्यास-बहुलता एकर स्वीकार्यताक कुञ्जी थिक।

पुनःशब्दीकरण-दृष्टि: हिब्रू-पुनर्जीवनमे प्राचीन शब्दकेँ आधुनिक अर्थ देल गेल (नवीकरण) । ग्रन्थक पारिभाषिक-निर्माण — जेना अंग्रेजी भाषा-वैज्ञानिक संज्ञाकेँ संस्कृत-मूलक मैथिली-पारिभाषिकी (स्वन-विज्ञान, स्वनिम-विज्ञान, रूप-विज्ञान, प्रयोग-विज्ञान) देब — ठीक यएह पुनःशब्दीकरण-प्रक्रिया थिक। ई संस्कृत-आधार मैथिलीकेँ आधुनिक विमर्शक भाषा बनबैत अछि, आ इस्रायली-प्रतिमानक सफल अनुकरण थिक।

चीनी समीक्षा-परम्परा

चीनी भाषा-चिन्तन दुइ धारामे बहैत अछि — प्राचीन स्वदेशी (श्याओश्वे/कोश-परम्परा) आ आधुनिक पाश्चात्य-प्रेरित (माशी वेन्थोङ्ग-प्रतिमान) । दुनू एहि ग्रन्थपर प्रासङ्गिक अछि।

श्याओश्वे आ 'स्वोवन'-दृष्टि (कोश-परम्परा): चीनी小學(श्याओश्वे, 'लघु-विद्या') परम्परामे — विशेषतः श्वो-वन च्येची (說文解字) — शब्दकेँ रूप, ध्वनि आ अर्थ तीनू आयामसँ व्यवस्थित करब केन्द्रीय छल। ग्रन्थक विशाल कोश-परिशिष्ट (बज्जिका–हिन्दी शब्दकोश, पारिभाषिक-शब्दकोश, glossary) एही कोश-प्रधान परम्पराक सजातीय थिक। चीनी परम्परा शिखबैत अछि जे शब्दकोश केवल परिशिष्ट नहि, अपितु भाषा-संरक्षणक मूल-आधार थिक — आ ग्रन्थ एहि सत्यकेँ आत्मसात् कएने अछि।

माशी वेन्थोङ्ग-दृष्टि (प्रथम-व्याकरण-प्रतिमान): १८९८ ई. मे मा च्येन्चोङ्ग (馬建忠) क 'माशी वेन्थोङ्ग' (馬氏文通) चीनीक प्रथम व्यवस्थित व्याकरण छल, जे पाश्चात्य (लैटिन) व्याकरण-कोटिकेँ चीनीपर आरोपित कऽ लिखल गेल। एकर सफलता आ आलोचना

दुनू शिक्षाप्रद: सफलता ई जे एहिसँ चीनी आधुनिक व्याकरण-विमर्शमे प्रविष्ट भेल; आलोचना ई जे लैटिन-कोटि सभ चीनीक अपन प्रकृतिपर पूर्णतः फिट नहि बैसल। समीक्षाधीन ग्रन्थ ठीक एही ऐतिहासिक-क्षणपर ठाढ़ अछि — ई अंगिका-बज्जिका-मैथिलीक लेल किछु अर्थमे 'माशी वेन्थोङ्ग-क्षण' थिक। मुदा ग्रन्थ माशीक भूलसँ सचेत अछि: ओ बेर-बेर चेतबैत अछि 'तकनीकी शब्द विश्लेषण के औजार हए, भाषा पर थोपल साँचा नहि' — अर्थात् पाश्चात्य कोटि आरोपित नहि, अपितु परीक्षणीय उपकरण थिक। ई माशी-प्रतिमानक परिपक्व, आत्म-आलोचनात्मक संस्करण थिक।

गणक (classifier) आ विषय-प्रधानता-दृष्टि: चीनी भाषा-विज्ञानक दुइ प्रसिद्ध योगदान — गणक (量詞, measure word/classifier) क विस्तृत विश्लेषण आ 'विषय-प्रधान बनाम कर्ता-प्रधान भाषा' (Li–Thompson) क भेद — एहि ग्रन्थपर सीधे लागू होइत अछि। तीनू भाषामे गणक-तन्त्र (मैथिली 'टा/गोटा', बज्जिका 'गो', अंगिका 'गो') जीवन्त अछि, आ ग्रन्थ एकरा पृथक् अध्याय दैत अछि — जे चीनी-दृष्टिसँ अत्यन्त उपयुक्त, किएक तँ गणक-तन्त्र दक्षिण-एसियाई आ पूर्व-एसियाई भाषाक साझा प्रकारिक-लक्षण थिक। एहिसँ ई तीनू भाषा चीनी-सन गणक-भाषाक विश्व-मानचित्रसँ जुड़ि जाइत अछि। विषय-प्रधानताक दृष्टिसँ ग्रन्थक 'बात के केंद्र / सूचना-संरचना' अध्याय संकेत दैत अछि जे ई भाषा सभ पदक्रममे विषय (topic) कैँ विशेष स्थान दैत अछि — एहि दिशामे चीनी विषय-टिप्पणी-विश्लेषणक अधिक प्रयोग एकटा फलदायी भविष्य-सम्भावना थिक।

तिब्बती समीक्षा-परम्परा

तिब्बती भाषा-परम्परा एकटा सचेत, राज्य-प्रायोजित लिपि-आ-व्याकरण-निर्माणक अनुपम उदाहरण थिक — जकर एहि ग्रन्थसँ गूढ़ संवाद अछि।

थोन्मि सम्भोट-दृष्टि (लिपि-संहिताकरण): सातम शताब्दीमे थोन्मि सम्भोट (Thonmi Sambhoṭa) तिब्बती लिपि आ प्रथम व्याकरण ('सुम्चुपा' आ 'तग्किजुगपा') क निर्माण कएलनि — एकटा सुविचारित, ऊपरसँ-नीचाँ (top-down) भाषा-अभियन्त्रण। विदेह-परियोजना, आ विशेषतः एहि ग्रन्थक तिरहुता-लिपि-परिशिष्ट आ यूनिकोड-संरक्षण-चर्चा, थोन्मि-परम्पराक आधुनिक प्रतिध्वनि थिक: लिपि केवल लेखन-उपकरण नहि, अपितु सांस्कृतिक-राजनीतिक आत्म-निर्णयक प्रतीक थिक। जेना थोन्मि तिब्बतीकेँ भारतीय ब्राह्मी-आधारपर स्वतन्त्र लिपि देलनि, तहिना ग्रन्थ मैथिलीकेँ ओकर अपन तिरहुता-लिपिसँ पुनर्जोड़ैत, देवनागरी-तिरहुता वर्ण-सारणी आ यूनिकोड-संरक्षणक व्यावहारिक मार्ग दैत अछि। ई एकटा सशक्त सभ्यतागत कदम थिक।

झेसा-आदर-दृष्टि (honorific register): तिब्बतीक सभसँ विशिष्ट लक्षण थिक 'झेसा' (ཞེ་ས, zhe sa) — एकटा विस्तृत आदर-रजिस्टर, जाहिमे सामान्य आ आदरणीय सन्दर्भ लेल भिन्न शब्द, भिन्न क्रिया-रूप होइत अछि। ई ठीक ओ क्षेत्र थिक जतय हमर तीनू भाषा विश्व-भाषामे विशिष्ट अछि। मैथिलीक बहु-आयामी सामञ्जस्य ('देखलिऐ' बनाम 'देखलियनि'), बज्जिकाक 'तूँ/रउआ' प्रयोग-मूलक आदर, आ अंगिकाक इनी/हिनी/हुनी-भेद — ई तिब्बती झेसा-तन्त्रक सजातीय, आ किछु अर्थमे ओहूसँ जटिल परिघटना थिक। ग्रन्थ एहि आदर-तन्त्रकेँ जतबा विस्तार दैत अछि, ओ तिब्बती-दृष्टिसँ पूर्णतः न्यायसङ्गत — किएक तँ एहन भाषाक व्याकरण जँ आदर-तन्त्रकेँ गौण करय, तँ ओ भाषाक आत्माकेँ चूकि जाइत अछि। ग्रन्थ ई नहि चूकैत।

कर्तृ-कारक (ergative) आ अनुवाद-मानकीकरण-दृष्टि: तिब्बती कर्तृ-कारक (ergative-absolutive) संरेखणक भाषा थिक, आ बौद्ध-अनुवाद-युगमे तिब्बतीक पारिभाषिकी संस्कृतसँ अत्यन्त सुनियोजित रूपेँ मानकीकृत भेल('महाव्युत्पत्ति' कोश) । समीक्षाधीन ग्रन्थ जखन 'कारक-चिह्न, संरेखण (alignment) आ भेदात्मक चिह्न (differential marking)' क अध्याय दैत अछि, तखन ओ ठीक ओहि प्रकारिक-प्रश्नकेँ उठबैत अछि जे तिब्बती-प्रकारकेँ बुझबाक लेल आवश्यक। मैथिली-आदि भाषामे विभेदक कर्म-चिह्न ('केँ') आ किछु प्रयोगमे कर्ता-चिह्नक अभाव ('ने-रहित कर्ता') — ई सभ संरेखण-प्रकारिकीक जीवन्त प्रश्न थिक, आ ग्रन्थ एकरा प्रकारिकी-कोडिंग-पत्र धरि लऽ जाइत अछि। तिब्बती अनुवाद-मानकीकरणक अनुभवसँ शिक्षा ई जे पारिभाषिकीक स्थिरता (एके अर्थ = एके पद) दीर्घकालिक ग्रन्थ-परम्पराक आधार थिक — जकरा ग्रन्थ 'पारिभाषिक-संगति' क रूपमे सचेत रूपेँ साधैत अछि।

जापानी समीक्षा-परम्परा

जापानी 'कोकुगोगाकु' (国語学, राष्ट्रभाषा-विज्ञान) एकटा स्वदेशी-आधुनिक भाषा-विज्ञान थिक, जे पाश्चात्य पद्धति आ जापानी-विशिष्ट संरचनाकेँ मिलाबैत अछि। एकर तीन अवधारणा एतय प्रासङ्गिक।

तोकिएदा-दृष्टि (भाषा-प्रक्रिया-सिद्धान्त): तोकिएदा मोतोकि (時枝誠記) क 'गेन्गो-कातेइ-सेत्सु' (भाषा-प्रक्रिया-सिद्धान्त) भाषाकेँ स्थिर-वस्तु नहि, अपितु वक्ताक जीवन्त-प्रक्रिया मानैत — विशेषतः 'शि' (概念-प्रधान, वस्तुनिष्ठ पद) आ 'जि' (वक्ता-भाव-प्रधान

पद, जेना निपात/आदर-रूप) क भेद करैत अछि। ई दृष्टि ग्रन्थक निपात (particle), आदर-रूप आ 'बात के केंद्र' क विवेचनसँ गहन संवाद करैत अछि। मैथिली-बज्जिका-अंगिकाक आदर-प्रत्यय आ वाक्यान्तिक कण (जेनाबज्जिका 'नी', मैथिली भावसूचक कण) — ई ठीक तोकिएदाक 'जि' कोटिक उदाहरण थिक: ई पद वस्तु-अर्थ नहि, अपितु वक्ताक सामाजिक-भावनात्मक स्थितिकेँ अंकित करैत अछि। ग्रन्थ एहि पदकेँ जँ तोकिएदा-दृष्टिसँ 'वक्ता-केन्द्रित' कोटिमे स्पष्ट रूपेँ वर्गीकृत करय, तँ आदर-तन्त्रक विश्लेषण आर सैद्धान्तिक हएत।

केइगो-दृष्टि (आदर-तन्त्र): जापानी 'केइगो' (敬語) विश्वक सभसँ व्यवस्थित सम्मान-भाषा-तन्त्रमे एक थिक — जाहिमे सोन्केइगो (आदरार्थ), केन्जोगो (विनम्रार्थ) आ तेइनेइगो (शिष्टार्थ) क त्रिविध-भेद अछि। जापानी केइगो-दृष्टिसँ देखलापर ग्रन्थक सभसँ मूल्यवान् योगदान स्पष्ट होइत अछि: ओ तीनू भाषाक आदर-तन्त्रकेँ केवल 'तूँ/अहाँ' क द्विभाजनमे नहि सीमित करैत, अपितु बहु-स्तरीय (सामान्य–आदर–अति-आदर, आ मैथिलीमे कर्ता-कर्म-सम्बन्धी त्रिकोणीय आदर) रूपमे देखैत अछि — जे केइगो-सन जटिलताक द्योतक। जापानी अनुभव शिखबैत अछि जे आदर-तन्त्र भाषाक सभसँ कठिन शिक्षण-क्षेत्र थिक; तेँ ग्रन्थक आदर-केन्द्रित अभ्यास-बहुलता (१० सामाजिक परिस्थिति × ३ वक्ता सन elicitation) शिक्षण-दृष्टिसँ अत्यन्त समीचीन।

वागो/कांगो/गाइराइगो आ विषय-टिप्पणी-दृष्टि: जापानी शब्द-भण्डारक स्तरीकरण — वागो (देशज), कांगो (चीनी-मूलक तत्सम-तुल्य), गाइराइगो (पाश्चात्य आगत) — दक्षिण-एसियाई तद्भव/तत्सम/आगत-भेदक अनुरूप थिक। ग्रन्थक शब्द-विचार (उत्पत्तिक आधारपर वर्गीकरण: तत्सम/तद्भव/देशज/विदेशज) एही स्तरीकरण-दृष्टिक भारतीय-रूप थिक, आ जापानी-अनुभव एकरा वैश्विक सन्दर्भ दैत अछि। जापानीक विषय-कण 'wa' (は) बनाम कर्ता-कण 'ga' (が) क प्रसिद्ध भेद ग्रन्थक सूचना-संरचना-विवेचनकेँ एकटा सशक्त तुलनात्मक-आदर्श दैत अछि, जकर पूर्ण-प्रयोग भविष्यक सम्भावना थिक।

विदेह समानान्तर समीक्षा-परम्परा

अन्तमे ओ दृष्टि, जे ग्रन्थक अपन जन्मभूमि थिक — विदेह समानान्तर-साहित्य-आन्दोलनक समीक्षा-परम्परा। ई प्रति-कानन (counter-canon) क दृष्टि थिक: जे साहित्यिक-भाषिक आधिकारिकताक केन्द्रीकरणकेँ चुनौती दैत, अवदमित-लोक-स्त्री-दलित-स्वरकेँ इतिहासमे पुनर्स्थापित करैत, आ समानान्तर-इतिहास-ढाँचा (parallel history framework) द्वारा संस्थागत आख्यानक विकल्प रचैत अछि।

एहि आन्तरिक-दृष्टिसँ देखलापर ग्रन्थक गहनतम अर्थ प्रकट होइत अछि। पहिल — 'समानान्तर' शब्द एतय द्वि-अर्थी थिक: ई एक दिस भाषा-वैज्ञानिक 'समानान्तर तुलना' (parallel/contrastive linguistics) थिक, आ दोसर दिस विदेह-आन्दोलनक 'समानान्तर-कानन' थिक। ग्रन्थ तीन उपेक्षित जनभाषाकेँ (अंगिका-बज्जिका-मैथिली) एके मंचपर, समान गरिमासँ, समान पद्धतिसँ राखि — भाषिक-समानताक ओ जनतांत्रिक घोषणा करैत अछि जकरा सस्यूरीय 'कोनो भाषा हीन नहि' सैद्धान्तिक आधार दैत अछि, मुदा जकर राजनीतिक-प्रेरणा विदेह थिक। मैथिलीकेँ अंगिका-बज्जिकाक 'ऊपर' नहि, अपितु 'संग' राखब — ई स्वयं एकटा प्रति-कानन-कर्म थिक, जे भाषिक-श्रेणीक्रम (hierarchy) केँ अस्वीकारैत अछि।

दोसर — ग्रन्थक 'ठेठ/लोक-रूपकेँ प्राथमिकता, हिन्दी-प्रभावित नगरीय रूपकेँ नहि' क नीति विदेह-आन्दोलनक 'अवदमित-लोक-स्वर-पुनर्प्राप्ति' क सीधा अनुप्रयोग थिक। जतय संस्थागत-मानकीकरण प्रायः नगरीय-अभिजात रूपकेँ 'मानक' बनबैत अछि, ओतय ग्रन्थ ग्रामीण-लोक-रूपकेँ प्रमाणक केन्द्रमे राखि, मानकीकरणक दिशा उलटि दैत अछि — ई विदेह-समानान्तर-इतिहासक पद्धतिगत हस्ताक्षर थिक।

तेसर — ग्रन्थक बज्जिका-लोकोक्ति-कोश, अंगिका-लोकवार्ता-सन्दर्भ, आ मुहावरा-अभिलेखन विदेह-आन्दोलनक 'लोक-प्रज्ञा-पुनर्प्राप्ति' क अंग थिक। मुदा एतय विदेह-दृष्टि स्वयं एकटा आन्तरिक-आलोचना माँगैत अछि: जँ आन्दोलन स्त्री-स्वर-पक्षधर थिक, तँ 'नारी-विषयक' पितृसत्तात्मक लोकोक्तिकेँ अभिलेखित करबाक संग ओकर आलोचनात्मक-रूपरेखा देब आन्दोलनक अपन घोषणाक अनुरूप हएत। ई ग्रन्थ-विरुद्ध आक्षेप नहि, अपितु विदेह-दृष्टिक आन्तरिक-संगति-हेतु सुझाव थिक।

चारिम — ग्रन्थक 'शून्य-कल्पन नीति' (कोनो कल्पित रूप नहि, प्रत्येक दाबी स्रोत-सिद्ध वा स्पष्ट-परिकल्पना) विदेह-आन्दोलनक 'प्रामाणिकता बनाम आधिकारिकता' क द्वन्द्वक समाधान थिक: आन्दोलन संस्थागत-आधिकारिकता (authority) केँ अस्वीकारैत अछि, मुदा प्रमाण-प्रामाणिकता (evidential validity) केँ नहि — अपितु ओकरे नव आधार बनबैत अछि। यएह एहि ग्रन्थकेँ 'प्रति-

कानन' होइतो 'अ-वैज्ञानिक' होयबासँ बचबैत अछि। ई विदेह-समीक्षाक सभसँ परिपक्व उपलब्धि थिक — प्रति-कानन जे प्रमाणकेँ नहि छोड़ैत।

प्रकारिकी, नव्य-न्याय आ विश्वजनीन साहित्यिक सिद्धान्तक विस्तृत पूरक विवेचन

भाषा-प्रकारिकी (Typology) आ पाश्चात्य-भारतीय व्याकरणिक सिद्धान्त

पोथीक अध्याय ७०६ मे भाषा-प्रकारिकी (Linguistic Typology) क अन्तर्गत मैथिली, ठेठी-अंगिका, बज्जिका आ अंग्रेजीक समानान्तर तुलना कएल गेल अछि। ई तुलना विश्व भाषा-विज्ञानक मापदण्डपर ई प्रमाणित करैत अछि जे ई तीनू सहभाषासभ इंडो-आर्य भाषा परिवारक एक विशिष्ट उपशाखा (मागधी वंश) क प्रतिनिधित्व करैत अछि।

प्रकारिक विशेषता (Typological Feature)

मैथिली, ठेठी-अंगिका, बज्जिका

अंग्रेजी (तुलनात्मक पाश्चात्य भाषा)

सामान्य पदक्रम (Basic Word Order)

कर्ता-कर्म-क्रिया (S-O-V)

कर्ता-क्रिया-कर्म (S-V-O)

सम्बन्धसूचक (Adposition)

उत्तरसर्ग (Postposition) - संज्ञाक बाद प्रयुक्त

पूर्वसर्ग (Preposition) - संज्ञाक पहिने प्रयुक्त

आदर सूचक (Honorificity)

सर्वनाम आ क्रियाक रूपमे अनिवार्य सामञ्जस्य (Grammatical)

मुख्य रूपसँ शाब्दिक (Lexical Politeness Strategies)

पदक्रमक लचीलापन (Flexibility)

प्रसंगानुसार अत्यधिक लचीला (Pragmatically flexible)

तुलनात्मक रूपेँ स्थिर आ कठोर (Stable and rigid)

योगेन्द्र पी. यादवक 'गवर्नमेंट-एण्ड-बाइंडिंग' (GB Theory) आ पदानुक्रम

वाक्यविज्ञानक स्तरपर ई पोथी प्रसिद्ध भाषाविद् योगेन्द्र पी. यादवक शोधकेँ आधार बनबैत अछि। यादव जी नोआम चोमस्कीक 'गवर्नमेंट-एण्ड-बाइंडिंग' (Government-and-Binding) सिद्धान्तक प्रयोग मैथिली वाक्य-विन्यासपर कएलनि। मैथिली आ ओकर सहभाषासभमे क्रिया-सामञ्जस्य (Verb Agreement) विश्वक कोनो भी इंडो-आर्य भाषासँ बेसी जटिल अछि। एतय कर्ताक संगे-संग कर्म, सम्प्रदान, वा वाक्यसँ बाहरक कोनो 'विशिष्ट आन्तरिक अधिकारी' (Prominent Internal Possessors - PIPs) सेहो क्रियाक रूपकेँ नियन्त्रित कऽ सकैत अछि।

यादवक विश्लेषण ई स्पष्ट करैत अछि जे ई जटिल सामञ्जस्य कोनो यादृच्छिक (arbitrary) व्याकरणिक नियम नहि अछि, बल्कि ई मैथिल समाजक दू टा प्रमुख समाजभाषिक सिद्धान्तपर आधारित अछि: १. सामाजिक पदानुक्रम (Principle of Social

Hierarchy / Face): ई समाजमे व्यक्तिक मान-सम्मान आ आदरकेँ रेखांकित करैत अछि। २. सामाजिक समानुभूति (Principle of Social Solidarity /Empathy): ई वक्ता आ श्रोताक बीचक मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध (अपनपन वा दूरी) केँ क्रियाक प्रत्ययमे ढालैत अछि।

श्रोता-सामञ्जस्य (Allocutive Agreement) आ पोर्टमेन्टो (Portmanteau) रूप

पाश्चात्य 'मिनिमलिस्ट प्रोग्राम' (Minimalist Program) आ 'लेफ्ट पेरिफेरी' (Left Periphery) सिद्धान्तक आलोकमे प्रीति कुमारीक शोध ई प्रमाणित करैत अछि जे मैथिली (विशेष कऽ दरभंगा सहभाषा) मे 'श्रोता-सामञ्जस्य' (Allocutive Agreement) आ 'कर्म-सामञ्जस्य' (Object Agreement) क बीच पूरकता (Complementarity) होइत अछि।

जखन वक्ता वाक्यमे श्रोताक सम्मानकेँ क्रियापर दर्शाबैत अछि (Allocutivity), तँ ओकर प्रभाव FinP (Finiteness Phrase) वा c-head पर पड़ैत अछि। Fin head जखन श्रोताक लेल 'उर्ध्वगामी सामञ्जस्य' (Upward Agree) करैत अछि, तखन ओ 'अधोगामी सामञ्जस्य' (Downward Agree) कऽ कऽ कर्मक आदरकेँ नहि देखा सकैत अछि। ई 'पोर्टमेन्टो' (Portmanteau) आदर-सामञ्जस्य ई देखाबैत अछि जे मैथिली-बज्जिका परिवारमे समाजक पदानुक्रम भाषाक 'सिंटेक्स ट्री' (Syntax Tree) क सबसँ उच्च बिन्दु (Treetops) धरि पहुँचि गेल अछि।

विदेह समानान्तर समीक्षा आ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा (Epistemology)

पोथीक वैचारिक आन्दोलन गजेन्द्र ठाकुर द्वारा स्थापित 'विदेह समानान्तर इतिहास' (Videha Parallel History Framework) क आधारपर ठाढ़ अछि। ई ढाँचा परम्परागत, साहित्य अकादेमी द्वारा समर्थित, सम्भ्रान्त (मुख्यतः मैथिल ब्राह्मण केन्द्रित) साहित्येतिहासकेँ खण्डित कऽ एकटा लोकतान्त्रिक, बहुस्वरवादी, नारीवादी, दलित आ क्षेत्रीय (नेपालक तराईसहित) इतिहासक वकालत करैत अछि।

गंगेश उपाध्याय आ नव्य-न्यायक प्रयोग

समानान्तर समीक्षा अपन ज्ञानमीमांसा (Epistemology) चौदहम शताब्दीक महान मैथिल दार्शनिक गंगेश उपाध्याय द्वारा प्रवर्तित 'नव्य-न्याय' (Navya-Nyaya) सँ प्राप्त करैत अछि। गंगेशक 'तत्त्वचिन्तामणि' मे प्रमाण (Means of knowledge), अनुमान (Inference) आ व्याप्ति (Invariable concomitance) क जे कठोर आ सूक्ष्म विश्लेषण अछि, ओकरे आधारपर विदेह समीक्षा साहित्यिक दावासभक मूल्याङ्कन करैत अछि।

विदेहक 'व्याप्ति' अछि: जतय-जतय वास्तविक साहित्यिक जीवन्तता अछि, ओतय-ओतय उपेक्षित, लोक, दलित आ नारी-स्वरक उपस्थिति अनिवार्य अछि (Wherever there is genuine Maithili literary vitality, there is inclusivity of subaltern, non-Brahmin, and marginalised voices) । नव्य-न्यायक एहि कठोर 'प्रमाण' सिद्धान्तिक आधारपर सन्दीप कुमार शफीक दलित आत्मकथा, प्रीति ठाकुरक बाल-साहित्य, बेचन ठाकुरक समानान्तर रङ्गमञ्च, आ अञ्चिन्हार आखरक गजल आन्दोलनकेँ (जाहिमे सियाराम झा 'सरस' आ आशीष अञ्चिन्हारक योगदान महत्त्वपूर्ण अछि) मुख्यधारामे स्थापित कएल गेल अछि। गजेन्द्र ठाकुरक ई 'समानान्तर' (Parallel) विमर्श वस्तुतः कोनो सीमान्त (Marginal) विमर्श नहि, अपितु एकटा विलम्बित मुदा सत्य इतिहास थिक ("The Parallel is not the marginal, but the truthful, in long delay") ।

विश्वजनीन साहित्यिक सिद्धान्तसँ तुलनात्मक परीक्षण

एहि व्याकरणिक आ रचना-सम्बन्धी पोथीक मूल्याङ्कन केवल भारतीय (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति) वा पाश्चात्य (संरचनावाद, नव्य-आलोचना) सिद्धान्तपर नहि, अपितु सम्पूर्ण पूर्वी आ मध्य-पूर्वी एसियाक साहित्यिक-भाषिक सिद्धान्तक आलोकमे कएल गेल अछि।

चीनी सिद्धान्तः लियू शिएक 'वेनशिन द्याओलोङ्ग' (Wenxin Diaolong)

पाँचम शताब्दीक चीनी आलोचक लियू शिए अपन ५० अध्याय बला महान ग्रन्थ Wenxin Diaolong (साहित्यिक मन आ ड्रैगनक नक्काशी) मे 'वेन' (Wen - Pattern / साहित्य) क ब्रह्माण्डीय अवधारणा देलनि अछि। लियू शिएक अनुसार, साहित्य (वेन) कोनो बाह्य सजावट वा कृत्रिम निर्माण नहि अछि; ई ब्रह्माण्डीय व्यवस्था (Cosmic patterns) आ मानव मनक आन्तरिक प्रकृतिक स्वाभाविक अभिव्यक्ति (Externalization of the inner mind) थिक।

मैथिली, ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक व्याकरणमे ई 'वेन' (पैटर्न) ओकर आदर-सूचक सर्वनाम आ क्रिया-सामञ्जस्यमे स्पष्ट रूपेँ देखल जा सकैत अछि। चीनी साहित्यमे जेना 'जेन' (सम्राट लेल) वा 'जैशा' (सेवक लेल) जकाँ पदानुक्रमित सर्वनामक प्रयोग प्रकृतक

पदानुक्रमकेँ दर्शाबैत अछि, तहिना मैथिली-बज्जिका परिवारमे 'हम-तोँह-अहाँ-अपने' (1st, 2NH, 2MH, 2H, 2HH) आ तेसर पुरुषमे 'ऊ-ओ-ई-ए' क जे बहुआयामी पदानुक्रम अछि, ओ वस्तुतः समाजक ब्रह्माण्डीय आ सामाजिक ढाँचाक भाषिक 'वेन' (पैटर्न) थिक। एकर अतिरिक्त, चीनी कवितामे सर्वनामक लोप (Omission of subject) जहिना मानवकेँ प्रकृतिसँ एकाकार करैत अछि, मैथिलीमे सेहो क्रियाक 'सामञ्जस्य-प्रत्यय' (Agreement suffixes) एतेक समृद्ध अछि जे कर्ताक सर्वनामक स्पष्ट उल्लेखक बिना सेहो पूर्ण अर्थ स्पष्ट भऽ जाइत अछि, जे 'वेन' क उच्चत्तम अवस्था थिक।

जापानी सिद्धान्तः 'मोनो नो अवेयर' (Mono no aware) आ 'कोतोदामा' (Kotodama)

जापानी साहित्य-शास्त्रमे 'मोनो नो अवेयर' क अर्थ अछि वस्तुक करुणा वा सौन्दर्य-बोध (Pathos of things), आ 'कोतोदामा' क अर्थ अछि शब्दक आध्यात्मिक वा संवेगात्मक शक्ति (Spiritual power of words) ।

विदेह समानान्तर समीक्षा द्वारा सङ्कलित 'समानान्तर श्रव्य-दृश्य अभिलेखागार' (Videha Parallel Audio Video Archive) मे मिथिलाक लोकगीत, गोसाउनिक गीत, अनुष्ठानिक गायन (Ritual performances) आ संस्कार-गीतक जे डिजिटल दस्तावेजीकरण कएल गेल अछि, ओ स्पष्ट रूपेँ 'कोतोदामा' क सिद्धान्तपर आधारित अछि। लोकगीतक जे भावनात्मक आ संवेगात्मक प्रभाव (Affective/suasive power) होइत अछि, ओ मात्र लिखित पाठसँ सम्भव नहि। बज्जिका आ ठेठी-अंगिकाक लोक-कला आ गीतमे निहित ध्वनि-सौन्दर्य आ जनमानसक जे अगाध करुणा अछि, ओ 'मोनो नो अवेयर' क सटीक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि। ईपोथी अपन श्रव्य-दृश्य सन्दर्भक माध्यमसँ भाषाकेँ केवल कागजक वस्तु नहि, बल्कि ध्वनिक शक्ति (कोतोदामा) क रूपमे स्थापित करैत अछि।

तिब्बती सिद्धान्तः थोन्मी सम्भोटाक 'सुम्कुपा' (Sumcupa) आ काव्यादर्श

तिब्बती भाषा-विज्ञानक जनक थोन्मी सम्भोटा द्वारा रचित 'सुम्कुपा' (Sumcupa) आ संस्कृतक महान आचार्य दण्डीक 'काव्यादर्श' क तिब्बती अनुवाद भाषाक संरचना आ ओकर काव्यिक सम्भावनापर अद्भुत प्रकाश डालैत अछि। तिब्बती सिद्धान्त व्याकरणकेँ दर्शन आ स्थानिक ध्वनिकीसँ जोड़ैत अछि। प्रस्तुत पोथीमे अध्याय ७४१ (स्वन-विज्ञान) मे संस्कृत शिक्षा-परम्परा (कण्ठ्य, तालव्य, मूर्धन्य, दन्त्य, ओष्ठ्य) आ पाश्चात्य स्वन-विज्ञान (Velar, Palatal, Retroflex, Dental, Bilabial) क जे तुलनात्मक समन्वय कएल गेल अछि, ओ तिब्बती 'सुम्कुपा' क ओहि अनुवाद-परम्पराक स्मरण कराबैत अछि जतय भारतीय भाषिक ढाँचाकेँ स्थानीय तिब्बती ध्वनिक अनुरूप ढालल गेल छल। पोथी स्पष्ट करैत अछि जे उच्चारण-स्थानक ई कोटि सम्पूर्ण इंडो-आर्य विरासत थिक, मात्र ओकर 'कार्यगत वितरण' (Functional distribution) क्षेत्रीय स्तरपर बदलैत अछि।

इस्रायली सिद्धान्तः घिलाद जुकरमैनक 'भाषा-पुनरुज्जीवन विज्ञान' (Revivalistics)

इस्रायली भाषा-वैज्ञानिक घिलाद जुकरमैन (Ghil'ad Zuckermann) 'Revivalistics' (भाषा-पुनरुज्जीवन विज्ञान) क विश्व-प्रसिद्ध जनक थिकाह। हुनकर 'Phono-Semantic Matching' (ध्वनि-अर्थगत सामञ्जस्य -PSM) क सिद्धान्त भाषा-सम्पर्कक स्थितिमे नव शब्द निर्माणक अद्भुत प्रक्रिया अछि, जतय विदेशी वा उधार लेल गेल शब्दकेँ स्थानीय भाषाक ध्वनि आ अर्थक संग मिला कऽ नव रूप (Camouflaged borrowing) देल जाइत अछि। इस्रायली हिब्रू (Israeli Hebrew) क विकासमे यिडिश (Yiddish) आ अन्य भाषासभक जे 'हाइब्रिडिटी' (Hybridity) अछि, ओकरा जुकरमैन स्पष्ट कएलनि अछि।

जुकरमैन मृत वा उपेक्षित भाषासभकेँ 'स्लीपिंग ब्यूटी' (Sleeping Beauty) कहैत छथि आ ओकर पुनरुत्थानपर बल दैत छथि, जाहिसँ सांस्कृतिक परतन्त्रता (Loss of soul) सँ बचल जा सकय। ठेठी-अंगिका आ बज्जिका, जकरा मुख्यधारा द्वारा मात्र 'बोली' कहि कऽ सदिखन उपेक्षित कएल गेल, ओकर व्याकरणिक मानकीकरण (Standardization) आ शब्द-संरचना ई पोथी जुकरमैनक 'Revivalistics' क तर्जपर करैत अछि। पोथीक अध्याय ८९३ (Language Ecology / भाषा-पारिस्थितिकी) मे जीवन्तता (Vitality) आ पीढ़ीगत हस्तांतरण (Intergenerational Transmission) क जे चर्चा अछि, ओ सोझे इस्रायली पुनरुज्जीवन सिद्धान्तसँ प्रेरित अछि। नव शब्द बनाबय (Neologization) क प्रक्रियामे पोथीक 'अभ्यास L' (नव शब्द बनाबय सँ पहिने) इस्रायली 'लेक्सिकल इन्जीनियरिंग' (Lexical Engineering) क व्यावहारिक प्रयोग थिक।

भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्तक अन्य प्रयोग

विदेह समीक्षा-पद्धति भारतीय परम्परा (भरतमुनिक नाट्यशास्त्र, रस, ध्वनि, औचित्य आ वक्रोक्ति) क उपयोग नव-उपनिवेशवादी (Post-colonial) आ सबाल्टर्न (Subaltern) दृष्टिक संग करैत अछि। भर्तृहरिक 'वाक्यपदीय' मे वर्णित 'स्फोटवाद' (Sphota

Theory) ई मानैत अछि जे अर्थक उत्पत्ति कोनो एक ध्वनि वा वर्णसँ नहि, अपितु सम्पूर्ण वाक्यक अखण्ड बोध (Meaning of Meaning) सँ होइत अछि। पोथीक अध्याय ८९९ मे 'व्याकरणीकरण' (Grammaticalization) आ शब्दार्थीसँ व्याकरणिक कार्य (Lexical to Grammatical Function) दिस जे यात्र अछि, ओ स्फोटवादक आधुनिक रूप थिक। पाश्चात्य सिद्धान्तमे जतय जर्गेन हेबरमासक 'पब्लिक स्फीयर' (Public Sphere) क चर्चा अछि, ई पोथी आ विदेह आर्काइभ मैथिली, बज्जिका आ अंगिकाक एकटा नव भाषिक 'पब्लिक स्फीयर' आ डिजिटल रेनेसां (Digital Renaissance) निर्माण करबाक सफल प्रयास अछि।

भाग २ — खण्ड १: ठेठी-अंगिका व्याकरण आ रचना

२.१ अध्याय १–२०क आधार-व्याकरण

खण्ड १क पहिल क्रम अध्याय १ सँ २० धरि ठेठी-अंगिकाक परिचय, ध्वनि, शब्द-विचार, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, अव्यय, समास, शब्द-निर्माण, वाक्य-विचार, गद्य, पद्य, मुहावरा-लोकोक्ति, शब्द-अर्थ, अनुच्छेद-निबन्ध, पत्र, संवाद, छन्द आ अलंकारकेँ क्रमबद्ध करैत अछि। शिक्षण-शास्त्रीय दृष्टिसँ ई क्रम स्वाभाविक अछि: ध्वनि→शब्द→रूप→वाक्य→रचना→काव्य।

आरम्भिक अध्यायसभमे स्थानीय रूपकेँ स्थानीय भाषामे समझेबाक प्रयास विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। व्याकरणक परिभाषा, भाषा-परिवार, बोलबाक इलाका, सहभाषा-भेद, लिपि, पद-भेद, विकारी-अविकारी, स्वर-व्यंजन, उच्चारण-स्थान, शब्दक उत्पत्ति, लघु-गुरु-अतिरिक्त रूप, लिंग-वचन-कारक, सर्वनाम, विशेषण आ क्रिया-रूप—ई सभ प्राथमिक पाठक लेल एक ठोस आधार बनबैत अछि।

मुदा पारम्परिक ध्वनि-वर्गीकरणक संग आधुनिक ध्वनिविज्ञानक IPA, ध्वनिक मापन आ क्षेत्रीय उच्चारण-भिन्नता आरम्भसँ जोड़ल जाए तँ बादक भाषा-विज्ञान खण्डसँ एकर सम्बन्ध अधिक स्वच्छ होयत। “उच्चारण-स्थान” क संस्कृत-आधारित वर्ग उपयोगी अछि, मुदा वास्तविक ध्वनि-नमूनाक रिकॉर्डिंग, न्यूनतम भेद आ वक्ता-भेद ओकर वैज्ञानिक पुष्टि करैत।

२.२ क्रिया, श्रोता-सम्बन्ध आ अर्थक सूक्ष्मता

मूल ठेठी-अंगिका उदाहरण: “ऊ खैलखौं? · ऊ खाय छौ।” बनाम “ऊ खैलकै? · ऊ खाय छै।”

ठेठी-अंगिका क्रियामे श्रोता-संबन्धक चर्चा एहि खण्डक सबसँ रोचक अंशमे एक अछि। ई केवल “पुरुष” क पारम्परिक तालिका नहि, बल्कि सहभागिताक सामाजिक-व्याकरणिक प्रभाव देखबैत अछि। पाश्चात्य प्रयोगविज्ञान, जापानी प्रक्रिया-दृष्टि आ विदेह समानान्तर कसौटी—तीनू एहि बिन्दुकेँ उच्च प्राथमिकता देत। अगिला संस्करणमे श्रोता-सम्बद्धताक पूरा रूपावली, व्यक्ति/आदर/काल/पक्षसँ अन्तःक्रिया, क्षेत्रीय वितरण आ स्वाभाविक संवाद-उदाहरण जोड़ल जाए तँ ई स्वतन्त्र शोध-अध्ययनक विषय बनि सकैत अछि।

मूल ठेठी-अंगिका उदाहरण: “गिलास में पानी छै।” आ “ई पानी छेकै।”

“छै” आ “छेकै” क अस्तित्व/पहचान-भेदक प्रस्तुति सेहो अर्थविज्ञानक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। एहि प्रकारक भेदकेँ केवल शब्दार्थक वाक्यसँ नहि, नकार, प्रश्न, जोर, काल, संदर्भ आ क्षेत्रीय प्रयोगसँ जाँचल जाए। यदि सब वक्ता एहि भेदकेँ समान रूपसँ नहि राखैत छथि, तँ “सामान्य नियम” क बदला “प्रवृत्ति” वा “क्षेत्रीय वितरण” लिखब अधिक वैज्ञानिक होयत।

२.३ रचना-कला: अध्याय १२–२०

गद्य-विधा, पद्य, मुहावरा-लोकोक्ति, शब्द-अर्थ, अनुच्छेद-निबन्ध, पत्र, संवाद, छन्द आ अलंकारक क्रम ठेठी-अंगिकाकेँ केवल बोलचालक भाषा मानबाक संकीर्ण दृष्टिक प्रतिरोध करैत अछि। भाषा जखन कथा, निबन्ध, संवाद, कविता आ आलोचनात्मक लेखन करए, तखन ओकर मानकीकरण केवल वर्तनीक प्रश्न नहि, विधागत सामर्थ्यक प्रश्न सेहो बनैत अछि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति दृष्टिसँ पद्य-अध्यायकेँ केवल छन्द-अलंकार सूचीपर सीमित नहि रखि पाठकीय अनुभूति, अप्रत्यक्ष अर्थ आ प्रसंग-संगति जोड़ल जा सकैत अछि। चीनी “रचना-विन्यास” दृष्टिसँ गद्य-अध्यायमे आरम्भ-मध्य-अन्त, अनुच्छेद-संगति, छवि, लय आ शैलीक अभ्यास बढ़ाओल जा सकैत अछि।

२.४ अध्याय २०क बादक विस्तृत व्यवहारिक पुनर्संरचना

अध्याय १–२०क बाद पोथी ठेठी-अंगिकाकेँ फेर “व्यवहारिक संदर्भ-पोथी” रूपमे पाँच भागमे व्यवस्थित करैत अछि: भाषा-ध्वनि-लिखाय; शब्द-रूप; वाक्य-विचार; रचना-कला; अभ्यास आ सहायक सामग्री। एतय मानक आ क्षेत्रीय रूप, वर्तनी, क्रिया, काल-पक्ष-भाव, सामंजस्य, अंग्रेजीसँ तुलना, सम्पादन, उत्तरमाला, शैली-पत्र आ स्रोत-सूची जोड़ल गेल अछि।

शिक्षणक दृष्टिसँ ई दोसर प्रस्तुति पहिल अध्याय-क्रमक विस्तार अछि, मुदा पुस्तक-संरचनामे ई पुनरावृत्ति पाठककेँ भ्रमित कऽ सकैत अछि। अगिला संस्करणमे पहिल २० अध्यायकेँ "संक्षिप्त पाठ्यक्रम" आ बादक पाँच भागकेँ "विस्तृत सन्दर्भ संस्करण" नाम दऽ क्रॉस-सन्दर्भ देल जाए। एहि सँ दोहराव दोष नहि, उद्देश्यपूर्ण स्तर-विन्यास बनि जाएत।

२.५ खण्ड १क निर्णय

ठेठी-अंगिका खण्डक मूल उपलब्धि अपन भाषिक रूपकेँ अपन व्याकरणिक गरिमा देब अछि। एकर सबसँ मजबूत विषय क्रिया-व्यवस्था, श्रोता-सम्बन्ध, स्थानीय शब्द-रचना, परसर्ग-निपात, क्षेत्रीय रूप आ व्यवहारिक रचना अछि। मुख्य सुधार-क्षेत्र ध्वनिवैज्ञानिक प्रमाण, मानकीकरणक सामाजिक आधार, क्षेत्रीय रूपक मेटाडेटा, प्रारम्भिक नियमसभक स्रोत-टैगिंग आ दोहरावक सम्पादकीय मानचित्र अछि।

ठेठी-अंगिका खण्डक पूरक वर्णनात्मक-मूल्यांकन

खण्ड एक — ठेठी-अंगिका: व्याकरण आ रचना

पहिल खण्ड ठेठी-अंगिकाकेँ इंडो-यूरोपीय→इंडो-ईरानी→इंडो-आर्य→पूर्वी इंडो-आर्य (मागधी वर्ग)→बिहारी उपवर्गक भाषाक रूपमे स्थापित करैत अछि, आ ग्रियर्सन (१९०३) क 'छिका-छिकी' पहिचानसँ लऽ कऽ आजुक झारखण्ड-राजभाषा-स्थिति धरिक इतिहास संक्षेपमे दैत अछि। एकर सभसँ प्रशंसनीय बात ई थिक जे व्याकरण अंगिकाकेँ बाहरसँ नहि, अपितु स्वयं अंगिका-गद्यमे बुझबैत अछि — 'व्याकरण भाषा-प्रयोग के संविधान छेकै', 'ठेठी-अंगिका में "है" के मतलब लेली छिकै/छेकै/छै क्रिया के व्यवहार होय छै' — ई आत्म-वर्णनक शैली भाषाक स्वायत्ततेकेँ रूपमे स्थापित करैत अछि।

अंगिका आदर-रूपक नमूना (ग्रन्थसँ): 'हम्में अपने पढ़ै छी। ' · 'अपनें बोलियै नी। ' · आदर: इनी/हिनी (नगीच), हुनी/हुन्ही (दूर) । कर्ता: हम, हमें, हम्में, हमरा।

खण्डक भाग-एक (व्याकरण, अध्याय १–१७) विकारी/अविकारी शब्द, स्वर-मात्रा-नासिक्यता, व्यंजन-उच्चारण, संज्ञा-लिंग-वचन, कारक-उत्तरसर्ग, सर्वनाम-आदर, क्रियाक काल-पक्ष-भाव, आ शब्द-रचना धरिकेँ समेटैत अछि; भाग-दुइ (रचना, अध्याय १८ आगाँ) वाक्य-विचार, अनुच्छेद, पत्र, निबन्ध, संवाद, समाचार, सार-लेखन, अनुवाद आ सम्पादनकेँ। अध्याय ४१ मे देल 'लेखनक शैली-पत्र' आ अध्याय ४२ मे 'स्रोत आ सम्पादकीय सीमा' — ई दुनू अध्याय ग्रन्थकारक प्रामाणिकता-चेतनाक प्रमाण थिक: ओ अपन आधार-ग्रन्थ आ ओकर सीमा दुनू स्पष्ट स्वीकारैत छथि।

प्रारम्भिक मूल्यांकन: खण्ड एक शिक्षण-दृष्टिसँ सुगठित, आत्म-प्रामाणिक आ आधार-ग्रन्थ-निष्ठ अछि। सीमा ई जे ई मुख्यत:एके आधार-ग्रन्थ (अमरेन्द्र–पूर्वे) पर निर्भर अछि; तेँ जतय ओहि ग्रन्थमे विवाद वा अपूर्णता अछि, ओ एतहु प्रतिबिम्बित होयत। ग्रन्थकार स्वयं ई स्वीकारि 'अकादमिक दावाक स्वतंत्र पुष्टि आवश्यक' लिखैत छथि — ई ईमानदारी प्रशंसनीय।

भाग ३ — खण्ड २: बज्जिका व्याकरण आ रचना

३.१ चौदह भाग आ तीन परिशिष्टक संरचना

बज्जिका खण्ड पहिल रूपमे चौदह भाग बनबैत अछि: भूमिका; ध्वनि-विचार; संज्ञा; सर्वनाम; विशेषण; गिनती आ संख्या-शब्द; क्रिया; क्रिया-विशेषण; परसर्ग आ निपात; समुच्चयबोधक; विस्मयादिबोधक; वाक्य-रचना; शब्द-रचना; रचना। एकर बाद मुहावरा-कहावत कोश, बज्जिका-हिन्दी शब्दकोश आ अभ्यास-पुस्तिका तीन परिशिष्ट रूपमे अछि। ई संरचना पारम्परिक व्याकरणक संग शब्दभण्डार आ व्यवहारिक अभ्यास जोड़ैत अछि।

बज्जिकाक रचना-भाग भाषा-मानकीकरण लेल खास महत्त्वपूर्ण अछि, कारण लिखित परम्पराक विस्तार बिना मानक केवल नियम-पुस्तकमे रहि जाएत। पत्र, निबन्ध, संवाद, समाचार, सार, अनुवाद जकाँ विधा लिखित प्रयोगक वास्तविक क्षेत्र बनबैत अछि।

३.२ मानक बनाम क्षेत्रीय रूप

मूल पोथीमे देखाओल क्षेत्रीय/वैकल्पिक रूपक उदाहरण: "हए/हइ/छै; सभ/सब; रउआ/रउरा; हमर/हमार"

ई प्रकारक रूप-भिन्नता बज्जिका खण्डक शक्ति सेहो अछि आ सबसँ कठिन सम्पादकीय प्रश्न सेहो। पाश्चात्य समाजभाषाविज्ञान कहत जे रूपक वितरण "त्रुटि" नहि, सामाजिक-भौगोलिक डेटा अछि। इस्रायली मानदण्ड-दृष्टि कहत जे लिखित मानक चयन

समुदायिक स्वीकृति, प्रकाशन, शिक्षा आ प्रतिष्ठासँ जुड़ल अछि। विदेह समानान्तर पद्धति कहत जे प्रत्येक रूपक संग स्रोत, ठाम, वक्ता आ प्रसंग लिखल जाए।

एहि आधारपर पोथीक मुख्य लिखित रूप चुनबाक नीति व्यवहारिक अछि, मुदा “मानक” शब्दक संग पद्धति स्पष्ट हेबाक चाही: चयनक आधार पारस्परिक बोधगम्यता, भौगोलिक विस्तार, साहित्यिक प्रयोग, शिक्षण-सुगमता, ऐतिहासिक परम्परा, वा संस्थागत स्वीकृति—कोन-कोन अछि? ई प्रश्नक उत्तर लिखित प्रस्तावनाकेँ वैज्ञानिक आधार देत।

३.३ सर्वनाम, आदर, क्रिया आ संवाद

बज्जिका उदाहरण: “रउआ कहाँ जा रहल हई?”

बज्जिकामे रउआ/रउरा जकाँ आदरसूचक सर्वनाम, हमर/हमार जकाँ सम्बन्ध-रूप, सहायक क्रियाक क्षेत्रीय रूप आ निषेधक भिन्नता सामाजिक व्याकरणक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र अछि। जापानी कण-आ-अन्तरव्यक्तिक सम्बन्धक अध्ययन आ तोकिएदाक प्रक्रिया-दृष्टि एहि खण्डकेँ केवल रूप-तालिकासँ आगाँ लऽ जाइत अछि: कोन वक्ता कोन सुननिहारसँ कोन रूप चुनैत अछि? संवाद-अध्यायमे एहन सामाजिक परिदृश्यक न्यूनतम जोड़ी देल जाए तँ शिक्षण आ शोध दुनू लाभान्वित होयत।

३.४ पाँच-भागीय विस्तृत व्यवहारिक संस्करण

खण्डमे बादमे बज्जिकाक फेर विस्तृत पाँच-भागीय ढाँचा भेटैत अछि—भाषा/ध्वनि/लिखाइ; शब्द/रूप; वाक्य-विचार; रचना; अभ्यास/उत्तर/सारणी। ई पुनर्संरचना पहिल चौदह भागक सामग्रीकेँ आधुनिक व्यावहारिक क्रममे व्यवस्थित करैत अछि। एतय वर्तनी, रूप-विन्यास, वाक्य, प्रश्न, सम्बन्ध, रचना आ सहायक तालिका अधिक व्यवस्थित रूप लैत अछि।

सम्पादकीय दृष्टिसँ एहि दुनू संस्करणक सम्बन्ध स्पष्ट कएल जाए। एक सम्भव उपाय: चौदह भागक संक्षिप्त व्याकरणकेँ “आधार-पाठ” आ पाँच-भागीय संस्करणकेँ “विस्तृत संदर्भ आ अभ्यास” कहब। पुनरुक्त नियमपर “देखू: आधार-पाठ, भाग...” जकाँ संकेत देल जाए।

३.५ खण्ड २क निर्णय

बज्जिका खण्डक मुख्य उपलब्धि भाषा-रूपक प्रणालीकरण, आदर-सर्वनाम, क्रिया, परसर्ग, वाक्य आ रचनाकेँ एक पाठ्यक्रममे आनब अछि। मुख्य सुधार क्षेत्र: क्षेत्रीय विविधताक प्रमाण-नक्शा, मानक चयनक स्पष्ट नीति, ध्वनि-रिकॉर्डिंग, स्वाभाविक संवाद, शब्दकोशीय प्रविष्टिमे स्रोत-सूचना, आ दोसर व्यवहारिक संस्करणक संरचनात्मक एकीकरण।

बज्जिका खण्डक पूरक समीक्षाः व्याकरण, कोश, लोकोक्ति आ समाजभाषिक सन्दर्भ

खण्ड दुइ — बज्जिकाः व्याकरण, कोश आ लोकोक्ति

बज्जिका-खण्ड बारह भाग (परिचय, ध्वनि-विचार, संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, गिनती, क्रिया, क्रिया-विशेषण, परसर्ग-निपात, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक, वाक्य-रचना) आ तीन विस्तृत परिशिष्ट (मुहावरा-कहावत-कोश, बज्जिका–हिन्दी शब्दकोश, अभ्यास-पुस्तिका) मे विभक्त अछि। एकर सभसँ मूल्यवान् अंश दुइ थिक — एक, प्रयोग-मूलक आदर-प्रणालीक निरूपण, आ दुइ, विशाल शब्दकोश-परिशिष्ट।

बज्जिका आदर-क्रम (ग्रन्थसँ): 'तूँ' (आम) बनाम 'रउआ/अहाँ' (आदर) । क्रिया-रूप ('खा-' धातु, सामान्य वर्तमान): हम — खाइले · तूँ — खालऽ · अपने — खाइले · ऊ (एक) — खाले · ऊ (बहु) — खालन।

ई क्रिया-रूपावली एकटा गूढ़ भाषिक तथ्यकेँ उजागर करैत अछि: बज्जिका क्रियामे आदर आ पुरुष केवल व्याकरणिक नहि, अपितु प्रयोग-मूलक (pragmatic) रूपैँ अंकित होइत अछि — जकर पुष्टि ग्रन्थक सन्दर्भ-सूचीमे उद्धृत काश्यप (Kashyap 2012, Journal of Pragmatics) आ काश्यप–याप (2017, Linguistics) क शोधसँ होइत अछि। ग्रन्थकारक 'शून्य-कल्पन नीति' एतय स्पष्ट दृश्य अछि: ओ बेर-बेर लिखैत छथि — 'ए निष्कर्ष के अउर वक्ता/कॉर्पस से जाँच बाकी हए' — अर्थात् जतय प्रमाण कम, ओतय दाबी कम।

परिशिष्ट-दुइक बज्जिका–हिन्दी शब्दकोश (सङ्ख्यामे विशाल) आ परिशिष्ट-एकक कहावत-कोश (नारी-विषयक, धन-घमण्ड-विषयक, व्यवहार-नीति आदि वर्गमे विभक्त) लोक-प्रज्ञाक अभिलेख थिक। एतय एकटा समीक्षात्मक सतर्कता आवश्यक:'नारी-विषयक' लोकोक्तिमे प्रायः पितृसत्तात्मक मूल्य अन्तर्निहित रहैत अछि; ग्रन्थ हिनका अभिलेखित करैत अछि, जे भाषा-वैज्ञानिक दृष्टिसँ उचित

(लोक-भाषाक तथ्य), मुदा भविष्यक संस्करणमे एहन सामग्रीक संग एकटा आलोचनात्मक टिप्पणी जोड़ब समीचीन हएत — विशेषत: विदेह-आन्दोलनक स्त्री-स्वर-पक्षधर घोषणाक संगतिमे।

प्रारम्भिक मूल्यांकन: बज्जिका-खण्ड आँकड़ा-निष्ठ आ कोश-समृद्ध अछि। एकर पद्धतिगत विनम्रता (जतय डेटा कम, ओतय स्पष्ट स्वीकृति) अनुकरणीय।

ठेठी-अंगिका आ बज्जिकाक समाजभाषाविज्ञान आ व्याकरण

भाषा-विज्ञानक इतिहासमे सर जर्ज अब्राहम ग्रियर्सन (George Abraham Grierson) अपन 'लिङ्गुइस्टिक सर्वे अफ इण्डिया' (Linguistic Survey of India - LSI, 1903) मे अंगिका (जकरा ओ छिका-छिकी कहलनि) आ बज्जिका (पश्चिमी मैथिली) केँ मैथिलीक उपभाषा (Dialect) मानलनि छल। मुदा कालान्तरमे भाषा, जाति आ पहिचान (Identity) क प्रश्न उठल, आ ई सीमान्तकृत समूहसभ अपन स्वतन्त्र भाषिक पहिचान लेल संघर्ष करय लागल। ई पोथी (अध्याय ६९४ सँ) स्पष्ट करैत अछि जे भाषा आ सहभाषाक भेद पूर्णत: सामाजिक थिक।

बज्जिका आ ठेठी-अंगिकाक व्याकरणिक आ ध्वन्यात्मक उदाहरण (शुद्ध देवनागरी फॉन्टमे)

ई पोथी देवनागरीक पूर्णत: शुद्ध आ मानकीकृत रूपमे (जाहिमे फॉन्ट रेन्डरिंगक कोनो त्रुटि नहि अछि) बज्जिका आ ठेठी-अंगिकाक रूपवैज्ञानिक उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि।

बज्जिकाक विशिष्टता आ उदाहरण: बज्जिका (वैशाली, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी, शिवहर, समस्तीपुर आ नेपालक रौतहट, सर्लाही मे बाजल जाय वला भाषा) मे ८ टा स्वर आ ३० टा व्यंजन अछि। एहिमे व्यंजन-द्वित्व (Gemination) क प्रचुरता अछि, जेना: 'मज्जिल' (मृत्यु-यात्रा), 'हम्मर' (हमर), 'निम्मन' (नीक) । वाक्य प्रयोग: "राम घर जा रहल है।" (राम घर जा रहल अछि) । सर्वनाम आ आदर: "हमनी" (हमसब), आदरसूचक "रउआ" (आदरसूचक आप/अपने) ।

ठेठी-अंगिकाक विशिष्टता आ उदाहरण: अंगिका (भागलपुर, मुंगेर, बाँका, दुमका क्षेत्रमे बाजल जाय वला भाषा) मे विशिष्ट सर्वनाम आ प्रत्ययक व्यवहार होइत अछि। वाक्य प्रयोग: "हम जायछी।" (हम जा रहल छी) । "हम गेलीये।" (हम गेलहुँ) । "ई की छिकै।" (ई की थिक/अछि) ।

भाषा-सम्पर्क आ संरचनागत परिवर्तन (Language Contact & Structural Change)

समाजभाषिक अध्ययनक (विशेष कऽ अध्याय ८९२ आ ८८८ क) परिप्रेक्ष्यमे एकटा क्रान्तिकारी तथ्य सोझाँ अबैत अछि। बज्जिका मूल रूपसँ मैथिलीक अङ्ग (पश्चिमी मैथिली) रहितो, वर्तमानमे सामाजिक-राजनीतिक कारणसँ अपन संरचनामे परिवर्तन कऽ रहल अछि।

अध्ययन स्पष्ट करैत अछि जे बज्जिका भाषीसभ (विशेषत: युवा पीढ़ी) अपन भाषाकेँ मैथिल ब्राह्मणक सांस्कृतिक आ भाषिक आधिपत्यसँ दूर करबाक लेल (Distancing strategy) पश्चिमी भाषा भोजपुरीक व्याकरणिक तत्त्वसभकेँ अपना रहल छथि। पहिने बज्जिकाक सहायक क्रिया मैथिली जकाँ 'छ' (chh) छल आ भूतकालक चिह्न शून्य वा भिन्न छल, मुदा आब युवा बज्जिका भाषीसभ भोजपुरीक सहायक क्रिया 'हवे' (hawe) आ वर्तमान/भूतकालिक प्रत्यय '-ल' (-la) क प्रयोग कऽ रहल छथि (लगभग २०-२२% प्रयोगमे ई नव रूप आबि रहल अछि) । ई 'Language Contact' (भाषा-संपर्क), 'Diffusion' (प्रसार) आ 'Structural Convergence' (संरचनात्मक अभिसरण) क साक्षात् आ ज्वलन्त उदाहरण थिक। ई मात्र भाषिक परिवर्तन नहि, अपितु पहिचान आ भाषा-भावना (Language Attitude) क एकटा गम्भीर सामाजिक संघर्ष अछि जकरा ई पोथी निष्पक्षतासँ दर्ज करैत अछि।

भाग ४ — खण्ड ३: मैथिली व्याकरण आ रचना, अध्याय २१-६९३

४.१ अध्याय २१-४३: पारम्परिक आधार

अध्याय २१–४३ भाषा-परिचय, वर्णमाला, उच्चारण, सन्धि, शब्द, संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, अव्यय, वाक्य-संरचना, वाच्य, वाक्य-प्रकार, पत्र, निबन्ध, संवाद-अनुवाद-सार, विराम-चिह्न, छन्द आ अलंकारक आधार बनबैत अछि। ई पारम्परिक शिक्षण-क्रम छात्रकेँ परिचित व्याकरणिक शब्दावली दैत अछि।

भारतीय दृष्टिसँ ई भाग शिक्षणोपयोगी अछि, मुदा आधुनिक भाषा-विज्ञानक दृष्टिसँ किछु पारम्परिक श्रेणीकेँ पुनः परिभाषित करब उचित होयत। उदाहरणार्थ "कारक" क अर्थगत भूमिका आ वास्तविक परसर्ग-चिह्न, "लिंग" क व्याकरणिक/सामाजिक अर्थ, "वाच्य" क रूपात्मक बनाम प्रवचनात्मक उपयोग, आ "सन्धि" क शास्त्रीय नियम बनाम आधुनिक उच्चारण—ई भेद स्पष्ट रहए।

४.2 अध्याय 44-61: भाषा, वाक्य आ सामाजिक सम्बन्ध

एहि समूहमे भाषा, व्याकरण, वाक्य, पद, पदसमूह, उपवाक्य, अर्थ, रचना आ सामाजिक सम्बन्धक आधार विकसित होइत अछि। विशेष महत्त्व ई जे व्याकरणकेँ सामाजिक सम्बन्धसँ जोड़ा गेल अछि। ई भारतीय वाक्यार्थ-दृष्टि, हॉलिडे प्रकार्यात्मकता आ तोकिएदाक अन्तरव्यक्तिक भाषा-दृष्टि बीच सेतु बनि सकैत अछि। "शुद्ध वाक्य" क कसौटी केवल नियम नहि, प्रसंग, उद्देश्य आ श्रोता अनुरूपता सेहो होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 44 "भाषा, व्याकरण आ रचना" सँ आरम्भ भऽ अध्याय 61 "शुद्ध वाक्य बनाबयक पाँच आधार" धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.3 अध्याय 62-89: संज्ञा, वचन, कारक, सर्वनाम आ आदर

संज्ञा-विन्याससँ सर्वनामक अंग्रेजी तुलना धरि ई समूह नाम-पद समूहक विस्तार करैत अछि। मैथिलीक बहुवचन, वर्गक, परसर्ग, व्यक्ति, आदर, संकेत, निजवाचक आ सम्बन्धवाचक रूपक विश्लेषण भाषा-विशिष्ट डेटा लेल महत्त्वपूर्ण अछि। विदेह समानान्तर दृष्टिसँ एहि रूपसभक ठेठी-अंगिका आ बज्जिकासँ एक्के अर्थ-उद्बोधनपर तुलना विशेष फलदायी होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 62 "संज्ञाक विस्तृत स्वरूप" सँ आरम्भ भऽ अध्याय 89 "सर्वनामक सामान्य अशुद्धि आ सुधार" धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.4 अध्याय 90-124: क्रिया, काल-पक्ष-भाव, सहायक क्रिया आ तुलना

क्रियामूल, सकर्मकता, काल-पक्ष-भाव, सहायक क्रिया, सामंजस्य, निषेध, विधि, संयुक्त क्रिया, infinitive-सदृश रूप आ अंग्रेजी तुलना—ई समूह आधुनिक व्याकरणक मुख्य मेरुदण्ड अछि। पाणिनीय रूप-सूक्ष्मता आ पश्चिमी TAM विश्लेषण दुनूक संग ई अंश पढ़ल जा सकैत अछि। मुख्य आवश्यकता प्रत्येक रूपक स्वाभाविक उदाहरण, नकार/प्रश्नक परीक्षण, आदर-स्तर आ क्षेत्रीय वितरण होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 90 "क्रिया की?" सँ आरम्भ भऽ अध्याय 124 "अंग्रेजी adjective/determiner प्रणालीसँ तुलना" धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.5 अध्याय 125-160: क्रियाविशेषण, निपात, परसर्ग, समुच्चय आ बल

एहि समूहमे छोट शब्दसभ—क्रियाविशेषण, निपात, परसर्ग, संयोजक, बलसूचक रूप—अर्थ आ वाक्य-सम्बन्धक केन्द्र बनैत अछि। जापानी तेनिओहा परम्परा आ तिब्बती सम्बन्धसूचक व्याकरण एहि खण्डक आलोचनात्मक मूल्य बढ़बैत अछि। कणक स्थान बदललासँ फोकस, अर्थ वा विनम्रता बदलैत अछि कि नहि—एहन न्यूनतम जोड़ी आर बेसी देल जाए।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 125 "क्रियाविशेषण की?" सँ आरम्भ भऽ अध्याय 160 "सामान्य अशुद्धि आ सुधार" धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.6 अध्याय 161-203: वाक्य-प्रकार, प्रश्न, सूचना-संरचना, वाच्य आ कथन

विधान, प्रश्न, आदेश, निषेध, सूचना-संरचना, रूपान्तरण, वाच्य, प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष कथन आ उद्धरणक समूह व्याकरणकेँ प्रवचनक दिशामे लऽ जाइत अछि। ऑस्टिन-ग्राइस दृष्टिसँ वाक्य-प्रकारक वास्तविक भाषिक क्रिया—आज्ञा, विनती, सुझाव, व्यंग्य—भिन्न हो सकैत अछि। एहि कारण रचना-भागक संवादसँ क्रॉस-सन्दर्भ उपयोगी होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 161 "वाक्य-प्रकारक आधुनिक दृष्टि" सँ आरम्भ भऽ अध्याय 203 "मिश्रित कथन आ उद्धरण" धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.7 अध्याय 204-260: उपवाक्य आ शब्द-निर्माण

मुख्य-अधीनस्थ, पूरक, सम्बन्धवाचक, क्रियाविशेषणीय, शर्तीय उपवाक्यसँ उपसर्ग-प्रत्यय, समास, पुनरुक्ति, आगत शब्द आ तकनीकी शब्द-निर्माण धरि ई समूह वाक्य आ शब्द दुनू स्तरक उत्पादकता देखबैत अछि। बाहरी श्रेणीसँ तुलना उपयोगी अछि, मुदा

मैथिलीक आफ्ना निर्माण-ढाँचा पहिने वर्णित होय। तकनीकी शब्द गढ़ैत समय प्रचलन, पारदर्शिता, संक्षिप्तता आ समुदाय-स्वीकृति चारि कसौटी रहए।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 204 “मुख्य उपवाक्य आ अधीनस्थ उपवाक्य” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 260 “अंग्रेजी word formation सँ व्यावहारिक तुलना” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.8 अध्याय 261–323: वर्तनी, देवनागरी, सम्पादन आ अनुच्छेद

शुद्ध लेखन, देवनागरी, विराम, सम्पादन, डिजिटल लेखन, शैली-पत्र, वाक्य-सुधार, अनुच्छेद-विकास आ संगतिक ई विस्तृत समूह व्याकरणकेँ वास्तविक प्रकाशन-कौशलसँ जोड़ैत अछि। ई पोथीक व्यवहारिक विशेषता अछि। अगिला संस्करणमे तिरहुता, देवनागरी आ डिजिटल यूनिकोड रूपक cross-script दिशानिर्देश, खोज/कॉपी-पेस्ट जाँच आ accessibility जाँच जोड़ल जा सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 261 “शुद्ध लेखनक मूल सिद्धान्त” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 323 “कमजोर अनुच्छेदक सम्पूर्ण सुधार” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.9 अध्याय 324–397: रचना-विधा, तर्क, समीक्षा आ शैक्षिक लेखन

कथा-वर्णन, पत्र, ई-पत्र, सूचना, समाचार, सार, निबन्ध, तर्कपूर्ण लेख, दावा-प्रमाण, तर्कदोष, समीक्षा, भाषण, सम्पादकीय, प्रस्ताव, बैठक-वृत्त, जीवनी आ शैक्षिक लेखन—ई समूह पोथीक साहित्यिक-व्यावहारिक हृदय अछि। भारतीय औचित्य, ध्वनि, वक्रोक्ति; चीनी रचनात्मक विन्यास; पाश्चात्य rhetoric आ discourse—सभ एहि ठाम प्रयोज्य अछि। “लेखन = विषय + पाठक + उद्देश्य + शैली + प्रमाण + संशोधन” क सूत्र एहि समूहसँ निकलैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 324 “रचनाक उद्देश्य, पाठक आ स्वर” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 397 “उन्नत रचनाक सम्पादकीय जाँच” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.10 अध्याय 398–477: शैली, रजिस्टर, अर्थ, शब्द-संबन्ध आ संदर्भ

शैली, रजिस्टर, सामाजिक दूरी, सटीकता, अस्पष्टता, लय, मुहावरा, लोकोक्ति, अलंकार, विधा, शैली-परिवर्तन, बहुअर्थकता, पर्याय, विलोम, शब्द-क्षेत्र, सहप्रयोग, रूपक, संदर्भ आ अर्थ-जाँच—ई समूह साहित्यशास्त्र आ अर्थविज्ञानकेँ जोड़ैत अछि। ध्वनि/वक्रोक्ति आ प्रयोगविज्ञानक दृष्टि एतय खास उपयुक्त अछि। शब्दकोशीय अर्थकेँ कॉर्पस-सहप्रयोगसँ पुष्ट करब भविष्यक महत्त्वपूर्ण दिशा होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 398 “शैली की अछि?” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 477 “व्यावहारिक अर्थ-जाँचसूची” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.11 अध्याय 478–574: ध्वनिविज्ञान, उच्चारण, पठन, सम्पादन आ प्रकाशन-जाँच

ध्वनि, उच्चारण-अंग, ध्वनिम, अक्षर, लय, स्वराघात, पठन, रिकॉर्डिंगसँ सम्पादन, प्रूफ-पठन, पृष्ठ-सज्जा, तालिका, उद्धरण, सन्दर्भ, फॉण्ट, PDF/चित्र दृश्य-जाँच, संस्करण-नियन्त्रण आ सम्पादकीय नैतिकता धरि ई समूह भाषिक सामग्रीक “जीवन-चक्र” प्रस्तुत करैत अछि। “तथ्य नहि बदलू, लेखकक आशय नहि बिगाड़ू, आवश्यक सामग्री नहि हटाउ, नब दावा नहि जोड़ू” जकाँ सिद्धान्त सम्पादकीय नैतिकताक मजबूत आधार अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 478 “ध्वनि, अक्षर आ ध्वनिम” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 574 “अन्तिम सम्पादकीय जाँचसूची” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.12 अध्याय 575–620: समेकित निदान, पुनरावृत्ति, अभ्यास आ मूल्यांकन

एहि समूहमे भाषा-दोषक स्तर-निर्णय, संज्ञा-सर्वनाम-क्रिया-वाक्यक पुनरावृत्ति, अभ्यास, प्रश्नपत्र, उत्तर-रूपरेखा आ स्व-मूल्यांकन अछि। शिक्षणक दृष्टिसँ ई mastery learning काज करैत अछि। बेहतर संस्करणमे प्रत्येक अभ्यासकेँ सीखबाक लक्ष्य, कठिनाई-स्तर, मॉडल उत्तरक तर्क आ सामान्य भूलक निदानसँ टैग कएल जाए।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 575 “समेकित निदान: भाषा-दोष कोन स्तरक?” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 620 “स्व-मूल्यांकन सूची” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.13 अध्याय 621-676: त्वरित सन्दर्भ, प्रारूप, त्रुटि-सूची, शब्दावली आ स्व-परीक्षण

ई खण्ड पाठककेँ विशाल पोथी भीतर शीघ्र लौटबाक सुविधा दैत अछि। त्वरित सारणी, रचना-प्रारूप, सामान्य त्रुटि, शब्दावली आ स्व-परीक्षण व्यवहारिक संदर्भ-पुस्तक लेल आवश्यक अछि। डिजिटल संस्करणमे एहि भागकेँ हाइपरलिंक, खोज-शब्द, downloadable forms आ machine-readable glossary सँ जोड़ल जा सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 621 “एहि सन्दर्भ-खण्डक उपयोग” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 676 “त्वरित स्व-परीक्षणक उत्तर” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.14 अध्याय 677-693: संरचनात्मक मानचित्र, अनुक्रमण, अन्तिम जाँच आ पुस्तक-समापन

अन्तिम समूह पूरा ग्रन्थक संरचनात्मक मानचित्र, पुनरावृत्ति-जाँच, पारिभाषिक एकरूपता, अनुक्रमणिका, अन्तिम सम्पादकीय निरीक्षण आ समापन करैत अछि। विशाल कृतिक लेल ई self-audit आवश्यक अछि। मुदा एहि audit केँ chapter-source matrix, terminology registry आ duplicate-map जकाँ स्पष्ट तालिकासँ आर कठोर बनाओल जा सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 677 “पूरा ग्रन्थक संरचनात्मक मानचित्र” सँ आरम्भ भऽ अध्याय 693 “पुस्तक-समापन” धरि ई समीक्षा-समूह पहुँचैत अछि।

४.१५ खण्ड ३क समेकित निर्णय

मैथिली खण्डक असाधारण शक्ति एकर विस्तार आ चरणबद्ध व्यावहारिकता अछि। पारम्परिक व्याकरणसँ शुरू भऽ आधुनिक वाक्यविज्ञान, अर्थविज्ञान, प्रयोगविज्ञान, शैली, रचना, सम्पादन, ध्वनिविज्ञान, प्रकाशन-जाँच आ स्वमूल्यांकन धरि पहुँचब मैथिलीमे एक “पूर्ण भाषा-कौशल प्रणाली” बनबाक दिशा देखबैत अछि।

मुख्य जोखिम विशालता अछि। अध्याय संख्या ६९३ धरि पहुँचबाक कारण पाठककेँ स्पष्ट मार्ग-रेखा चाही—आरम्भिक, मध्यवर्ती, उन्नत, शोध-स्तर। पुनरावृत्ति जँ जानि-बुझि spiral learning लेल अछि, तँ ओकरा चिन्हित कएल जाए; जँ अनावश्यक पुनरावृत्ति अछि, तँ विलय कएल जाए। प्रत्येक उन्नत दावाक संग स्रोत-टैगिंग आ कॉर्पस/क्षेत्रकार्य प्रमाण जोड़ल जाए तँ खण्ड ३ शिक्षण-पुस्तकसँ शोध-सन्दर्भ-पुस्तक धरि सहज रूपेँ उन्नत होयत।

मैथिली खण्डक पूरक वर्णनात्मक-मूल्यांकन

खण्ड तीन — मैथिलीः व्याकरण आ रचना (अध्याय २१-६९३)

ई ग्रन्थक सभसँ पैघ आ केन्द्रीय खण्ड थिक। एकर पहिल एकक (अध्याय २१–४३) परम्परागत व्याकरण-शिक्षणक क्रममे चलैत अछि — भाषा-व्याकरण-परिचय, वर्णमाला, उच्चारण-ध्वनि-नियम, सन्धि, शब्द-विचार, संज्ञा, लिंग, वचन, कारक, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, क्रियाविशेषण, अव्यय, वाक्य-संरचना-पदक्रम, वाच्य, वाक्य-भेद-उपवाक्य, पत्र, निबन्ध, संवाद-अनुवाद-संक्षेपण, विराम-चिह्न, छन्द आ अलंकार — आ परिशिष्टमे पारिभाषिक शब्दकोश, उत्तर-कुञ्जी, क्रियाक पूर्ण रूपावली आ तिरहुता-लिपि देत अछि।

मैथिलीक जे विशेषता विश्व-भाषा-विज्ञानमे प्रसिद्ध अछि — बहु-आयामी क्रिया-सामञ्जस्य — तकर निरूपण ग्रन्थ अत्यन्त सटीकतासँ करैत अछि। मैथिली क्रिया केवल कर्ता नहि, अपितुवाक्यमे उपस्थित आन आदरणीय व्यक्ति (कर्म वा सम्बन्धी) क आदर-स्तर अनुसारो बदलैत अछि:

बहु-आयामी सामञ्जस्य (ग्रन्थसँ): कर्ता एके 'हम' रहितो — 'ओकरा हम देखलिऐ' (कर्म सामान्य) बनाम 'हुनका हम देखलियनि' (कर्म आदरणीय) । केवल कर्मक आदर बदलबासँ क्रिया-रूप 'देखलिऐ'→'देखलियनि'।

आगाँ आबि खण्ड तीन दुइ आर विशाल पद्धतिक अनुवर्ती एकक समेटैत अछि — एकटा 'इकाई-आधारित' विस्तृत मैथिली भाषा-विज्ञान-सम्मत व्याकरण (अध्याय ४४ सँ आगाँ, संज्ञा-सर्वनाम-क्रिया-विशेषण-क्रियाविशेषण-वाक्यविन्यासकेँ इकाई-दर-इकाई गहनतासँ, प्रत्येक इकाईक संग व्यापक अभ्यास, उत्तरमाला आ रचना-सिद्धान्त), आ एकटा 'समानान्तर रचना/सम्पादन' अनुभाग (अध्याय २८० आगाँ), जाहिमे समानान्तरता (parallelism), काल-आदर-संगति, पारिभाषिक-संगति, सम्पादनक तीन चरण, डिजिटल दृश्य-जाँच, आ शैली-पत्र धरिक चर्चा अछि। एतय ग्रन्थ शिक्षण-व्याकरणसँ आगाँ बढ़ि सम्पादकीय-विज्ञान (editorial science) मे प्रवेश करैत अछि — जे विदेह-सन डिजिटल प्रकाशन-संस्थाक व्यावहारिक आवश्यकतासँ स्वाभाविक रूपेँ उपजल अछि।

प्रारम्भिक मूल्यांकन: खण्ड तीन विषय-वस्तुक दृष्टिसँ मैथिली व्याकरणक सम्भवतः सभसँ विस्तृत आधुनिक शिक्षण-सङ्ग्रह अछि। एकर सीमा संरचनात्मक थिक — भिन्न-भिन्न पद्धतिक अनुवर्ती-सङ्कलन (batch) एतय एकठाम मिलल अछि, तेँ किछु विषय (जेना संज्ञा, सर्वनाम, क्रियाक परिचय) एकाधिक बेर, भिन्न गहनतासँ आबैत अछि। ई दोष नहि, मुदा अन्तिम सम्पादनमे एकर सुव्यवस्था (जेना 'प्रारम्भिक' आ 'गहन' स्तरकेँ स्पष्ट लेबल देब) पठनीयता बढ़ाओत।

भाग ५ — खण्ड ४: भाषा-विज्ञान, अध्याय ६९४–९२६

५.1 अध्याय 694–708: ठेठी-अंगिका भाषा-विज्ञानक आधार

भाषा-विज्ञानक स्वरूप, ध्वनिविज्ञान, ध्वनितत्त्व, लिपि/IPA, रूपविज्ञान, शब्द-वर्ग, वाक्यविज्ञान, निषेध-प्रश्न-सूचना-संरचना, अर्थ, प्रयोग/प्रवचन, समाजभाषाविज्ञान, इतिहास, प्रकारिकी, मनोभाषाविज्ञान आ क्षेत्रकार्य-कॉर्पस-संगणना—ई पन्द्रह-अध्यायीय ढाँचा भाषा-विज्ञानक लगभग पूर्ण परिचय अछि। ठेठी-अंगिकाक उदाहरणक आधारपर आधुनिक शाखासभ प्रस्तुत करब महत्त्वपूर्ण अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 694 “भाषा-विज्ञान के स्वरूप आरो वैज्ञानिक तरीका” सँ अध्याय 708 “क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आरो संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.2 अध्याय 709–723: बज्जिका भाषा-विज्ञानक समान आधार

ठेठी-अंगिका जकाँ समान विषय बज्जिकापर लागू कएल गेल अछि। समान अध्याय-विन्यास तुलनात्मक अध्ययन लेल लाभदायक अछि, कारण शोधकर्ता एक्के विषय—जकाँ ध्वनिम, वाक्यक्रम वा समाजभाषिक भिन्नता—तीनू भाषामे खोजि सकैत अछि। मुदा समान शीर्षकक अर्थ समान निष्कर्ष नहि; भाषा-विशिष्ट डेटा स्वतंत्र रहबाक चाही।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 709 “भाषा-विज्ञान के स्वरूप आ वैज्ञानिक तरीका” सँ अध्याय 723 “क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.3 अध्याय 724–738: मैथिली भाषा-विज्ञानक समान आधार

मैथिली श्रृंखलामे वैज्ञानिक पद्धति, IPA, क्षेत्रकार्य प्रपत्र, १००-वाक्यक छोट कॉर्पस आ अनुसन्धानक चरण जकाँ सहायक सामग्री जोड़ल गेल अछि। ई शिक्षण आ शोधक बीच सीधा सेतु बनबैत अछि। कॉर्पसक आकार आरम्भिक हो सकैत अछि, मुदा metadata, genre balance आ speaker diversity स्पष्ट रहबाक चाही।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 724 “भाषा-विज्ञान क स्वरूप आ वैज्ञानिक पद्धति” सँ अध्याय 738 “क्षेत्रकार्य, कॉर्पस, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.4 अध्याय 739–768: वंश, ध्वनि, रूप, वाक्य, अर्थ, समाज, इतिहास आ लिपि-प्रौद्योगिकी

ई समूह तीनू भाषाक आधारक बाद अधिक समेकित विश्लेषण करैत अछि। वंश-वर्गीकरण, स्वर-व्यंजन, अक्षर-बलाघात, रूप-ध्वनि-विज्ञान, संज्ञा-सर्वनाम-क्रिया, शब्दक्रम, alignment, clause, प्रश्न-निषेध-focus, semantics-pragmatics, dialect geography, contact, historical change, graphology, Tirhuta, Kaithi/Devanagari आ transliteration-language technology—ई विस्तार भाषा-विज्ञानकेँ पाठ्यपुस्तकक सामान्य सीमा पार लऽ जाइत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 739 “भाषा-विज्ञान की थिक” सँ अध्याय 768 “लिप्यन्तरण आ भाषा-प्रौद्योगिकी” धरि।

५.5 अध्याय 769–783: ठेठी-अंगिका उन्नत शोध-पद्धति

प्राथमिक भाषिक डेटा, क्षेत्रकार्य-नैतिकता, ध्वनिक अध्ययन, ध्वनितत्त्व, लिप्यन्तरण, रूप, वाक्य, अर्थ, समाज, इतिहास, प्रकारिकी, मनोभाषाविज्ञान, कॉर्पस आ शब्दकोश-विज्ञानक उन्नत रूप एहि समूहमे अछि। “नियम बनाउ, फेर ओकरा गलत साबित करयवला उदाहरण खोजू” जकाँ वैज्ञानिक भावना अत्यन्त मूल्यवान अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 769 “भाषा-विज्ञान के स्वरूप, शाखा आरो वैज्ञानिक पद्धति” सँ अध्याय 783 “कॉर्पस, शब्दकोश, दस्तावेजीकरण आरो संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.6 अध्याय 784–798: बज्जिका उन्नत शोध-पद्धति

समान शोध-अभिकल्प बज्जिकामे दोहराओल गेल अछि। ई पुनरावृत्ति विषयगत तुलना सहज बनबैत अछि, मुदा पुस्तक-लम्बाइ बढ़बैत अछि। डिजिटल संस्करणमे साझा पद्धति एक ठाम आ भाषा-विशिष्ट डेटा अलग मॉड्यूलमे रखल जाए तँ अधिक किफायती संरचना बनि सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 784 “भाषा-विज्ञान के स्वरूप, शाखा आ वैज्ञानिक तरीका” सँ अध्याय 798 “कॉर्पस, शब्दकोश, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.7 अध्याय 799–813: मैथिली उन्नत शोध-पद्धति

मैथिली श्रृंखला प्रमाण, पुनरुत्पाद्यता, ध्वनिविज्ञान, रूप, वाक्य, अर्थ, समाज, इतिहास, प्रकारिकी, मनोभाषा, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञानकेँ विस्तृत करैत अछि। ई खण्ड खास कऽ उच्च शिक्षा आ शोध-प्रशिक्षण लेल उपयोगी अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 799 “भाषा-विज्ञान: विषय, शाखा, प्रमाण आ पुनरुत्पाद्यता” सँ अध्याय 813 “कॉर्पस, शब्दकोश-विज्ञान, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान” धरि।

५.8 अध्याय 814–826: समानान्तर पद्धतिक केन्द्रीय खण्ड

तुलनीयता, नियंत्रण, स्रोत-समर्थन, न्यूनतम नमूना, शोध-नैतिकता, ध्वनि, नाम-पदसमूह, सर्वनाम-आदर, क्रिया-TAM, वाक्य, अर्थ-प्रयोग, समाजभाषा, इतिहास, प्रकारिकी, कॉर्पस, क्षेत्रकार्य आ तकनीकी शब्दावली—ई तेरह अध्याय पूरा ग्रन्थक वैचारिक केन्द्र मानल जा सकैत अछि। “एक्के प्रश्न, तीनू भाषा” क सिद्धान्त एहि पुस्तककेँ सामान्य तुलनात्मक व्याकरणसँ अलग पहचान दैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 814 “समानान्तर अध्ययनक पद्धति: तुलनीय आँकड़ा, नियंत्रण आ प्रमाण” सँ अध्याय 826 “द्विभाषिक तकनीकी शब्दावली: English term + अनिवार्य भारतीय/मैथिली रूप” धरि।

५.9 अध्याय 827–850: शोध-अभिकल्प, प्रयोग, आँकड़ा आ तुलनात्मक दावा

चर, नमूना, नियंत्रण, परिमाण, प्रयोगात्मक ध्वनिविज्ञान, समाजध्वनिविज्ञान, प्रयोगात्मक व्याकरण, मनोभाषाविज्ञान, भाषा-अर्जन, बहुभाषिकता, सम्पर्क, अनुप्रयुक्त भाषा-विज्ञान, अनुवाद, शब्दकोश, डिजिटल साधन, अभिलेखागार आ तुलनात्मक दावाक प्रमाण—ई समूह पद्धति-सघन अछि। Randomization, counterbalancing, reproducibility आ preregistration जकाँ संकल्पना स्थानीय भाषा-अध्ययनमे प्रवेश करब एक मजबूत वैज्ञानिक उन्नयन अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 827 “शोध-अभिकल्प, चर, नमूना, नियंत्रण आ पुनरुत्पाद्यता” सँ अध्याय 850 “समानता, भिन्नता आ प्रमाण: Comparative Claim (तुलनात्मक दावा) कोना लिखी” धरि।

५.10 अध्याय 851–858: कॉर्पस परियोजना आ गुणवत्ता-जाँच

फाइल-संरचना, वक्ता-मेटाडेटा, रिकॉर्डिंग, प्रतिलेखन, सामान्यीकृत पाठ, अन्तररेखीय विश्लेषण, लेक्सिकॉन/UD-सदृश संरचना आ कॉर्पस गुणवत्ता-जाँच—ई खण्ड डिजिटल भाषा-संसाधन निर्माण लेल अत्यन्त उपयोगी अछि। अगिला संस्करणमे नमूना लाइसेन्स, सहमति-पत्र, versioning convention, persistent identifier आ checksum नीति सेहो जोड़ल जा सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 851 “कॉर्पस परियोजनाक इकाई आ फाइल-संरचना” सँ अध्याय 858 “Corpus QA (कॉर्पस गुणवत्ता-जाँच) आ पुनरुत्पादन” धरि।

५.11 अध्याय 859–877: ध्वनितत्त्व सँ वाक्य-संरचना धरि निदानात्मक कार्य

ध्वनिम-सहध्वनि, न्यूनतम भेद, ध्वनि-प्रक्रिया, रूपिम, allomorph, inflection-derivation, valency, argument structure, phrase, dependency, relative/complement/coordination/subordination आ information structure—ई समूह विश्लेषणात्मक अभ्यासक रूप लैत अछि। एहि अध्यायसभमे वास्तविक तीन-भाषीय उदाहरणक समानान्तर dataset पुस्तकक शोध-मूल्य कई गुना बढ़ा सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 859 “Phoneme (ध्वनिम) आ Allophone (सहध्वनि): अर्थभेद बनाम उच्चारण-भेद” सँ अध्याय 877 “Relative, Complement, Coordination, Subordination आ Information Structure” धरि।

५.12 अध्याय 878–883: अर्थ, प्रयोग, प्रवचन आ वार्तालाप

शब्दार्थ, अर्थ-सम्बन्ध, वाक्यार्थ, deixis, implicature, speech act, discourse आ conversation analysis—ई समूह व्याकरणकेँ वास्तविक संचारसँ जोड़ैत अछि। भारतीय ध्वनि-सिद्धान्त, ग्राइसक निहितार्थ, तोकिएदाक प्रक्रिया-दृष्टि आ चीनी/जापानी कण-अध्ययन एतय संवाद करि सकैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 878 "Lexical Semantics (शब्दार्थ विज्ञान): Lexeme, Sense, Reference" सँ अध्याय 883 "Conversation Analysis (वार्तालाप-विश्लेषण) आ Practical Annotation Lab" धरि।

५.13 अध्याय 884–893: समाजभाषिक भिन्नता, संपर्क, पारिस्थितिकी आ जीवन्तता

समाजभाषिक चर, शैली, पहचान, क्षेत्रीय भेद, code-switching, language attitude, standardization, contact, ecology, vitality आ पीढ़ीगत हस्तांतरण—ई समूह तीनू भाषाक वर्तमान भविष्य लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। मानकीकरणक प्रत्येक निर्णय एहि खण्डक प्रमाण-दृष्टिसँ पुनः जाँचल जाए।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 884 "Sociolinguistic Variable (समाजभाषिक चर) आ Variant (रूपांतर): भिन्नता स्वयं डेटा अछि" सँ अध्याय 893 "Language Ecology (भाषा-पारिस्थितिकी), Vitality (जीवन्तता), Intergenerational Transmission (पीढ़ीगत हस्तांतरण)" धरि।

५.14 अध्याय 894–900: ऐतिहासिक तुलना, पुनर्निर्माण आ परिवर्तन

पाठ-साक्ष्य, कालक्रम, तुलनात्मक पद्धति, sound correspondence, cognate बनाम loan, reconstruction, analogy, grammaticalization, inheritance-contact-parallel innovation—ई समूह ऐतिहासिक दावा लिखबाक अनुशासन सिखबैत अछि। ग्रियर्सन-जकाँ पुरान वर्गीकरण उद्धृत करैत समय आधुनिक डेटा आ समुदायिक आत्म पहचान अलग-अलग स्तरपर राखब एहि पद्धतिक स्वाभाविक निष्कर्ष अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 894 "Historical Linguistics (ऐतिहासिक भाषा-विज्ञान): Attestation (पाठ-साक्ष्य), Change (परिवर्तन) आ Chronology (कालक्रम)" सँ अध्याय 900 "Inheritance (वंशपरम्परा), Contact (संपर्क) आ Parallel Innovation (समानान्तर नवाचार) अलग कोना करी?" धरि।

५.15 अध्याय 901–908: प्रकारिकी आ बहुभाषिक प्रसंस्करण

feature-value, dominance, word order, alignment, typological comparison, bilingual control, switching cost आ multilingual processing—ई समूह तीनू भाषाकेँ व्यापक मानव-भाषिक परिप्रेक्ष्यमे रखैत अछि। एतय नमूना-संतुलन आ अंग्रेजी/हिन्दी प्रभावक नियंत्रण अनिवार्य अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 901 "Linguistic Typology (भाषा-प्रकारिकी): Feature (विशेषता), Value (मान) आ Dominance (प्रधानता)" सँ अध्याय 908 "Language Control (भाषा-नियंत्रण), Switching Cost (बदलाव-मूल्य), Multilingual Processing (बहुभाषिक प्रसंस्करण) आ स्थानीय प्रयोग-डिजाइन" धरि।

५.16 अध्याय 909–919: प्रमाण-स्तर, स्रोत-बैंक आ विश्लेषण-आधार

प्रमाण-स्तर, स्रोत-उद्धरण, उदाहरण-स्थिति, तीनू भाषाक उदाहरण-बैंक, paradigms, charts, syntax, semantics, pragmatics आ discourse references—ई समूह पूरा ग्रन्थक विश्वसनीयता लेल निर्णायक अछि। यदि प्रारम्भिक अध्याय १–८१३क प्रत्येक महत्त्वपूर्ण नियमकेँ एहि evidence hierarchy सँ backlink देल जाए, तँ पुस्तकक प्रमाण-संरचना बहुत मजबूत होयत।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 909 "Evidence Hierarchy (प्रमाण-स्तर), Source Citation (स्रोत-उद्धरण) आ Example Status (उदाहरण-स्थिति)" सँ अध्याय 919 "Pragmatics and Discourse (प्रयोगविज्ञान आ प्रवचन): Deixis सँ Conversation Analysis धरि" धरि।

५.17 अध्याय 920-926: समेकित अभ्यास, उत्तर, शब्दावली, अनुक्रमणिका आ पूर्णता-जाँच

१२० समेकित कार्य, उत्तर-रूपरेखा, द्विभाषिक शब्दावली, संक्षेप/चिह्न, विषय-अनुक्रमणिका, भाषा/रूप-अनुक्रमणिका आ १२/१२ पूर्णता-जाँच—ई विशाल कृतिक आवश्यक समापन उपकरण अछि। ई भाग पाठककेँ केवल पढ़बाक नहि, पुस्तककेँ काममे लेबाक सुविधा दैत अछि।

सीमा-सत्यापन: अध्याय 920 “Final Integrated Exercises (अन्तिम समेकित अभ्यास): 120 कार्य” सँ अध्याय 926 “12/12 Completeness Audit (बारह मुख्य लक्ष्यक अन्तिम पूर्णता-जाँच)” धरि।

५.१९ खण्ड ४क समेकित निर्णय

खण्ड ४ पुस्तकक सबसँ आधुनिक आ शोधोपयोगी भाग अछि। भाषा-विज्ञानक शाखासभकेँ तीनू भाषामे समान विन्यास देब, फेर समेकित तुलनात्मक पद्धति, प्रयोगात्मक अनुसंधान, कॉर्पस, डिजिटल संसाधन, समाजभाषिकता, इतिहास, प्रकारिकी आ प्रमाण-स्तर धरि लऽ जाएब दुर्लभ व्यापकता अछि।

एहि खण्डक अगिला चरण “उदाहरण-सत्यापन” होयत। प्रत्येक नियमक संग स्थिर ID, स्रोत, पृष्ठ/रिकॉर्डिंग, वक्ता-मेटाडेटा, विश्लेषक, निश्चितता-स्तर आ लाइसेन्स देल जाए। जहाँ डेटा अनुपलब्ध अछि ओतय “परिकल्पना” लिखल जाए, “स्थापित तथ्य” नहि। एहि एक सुधारसँ पुस्तक शोध-पुस्तक, कॉर्पस मार्गदर्शक आ डिजिटल reference grammar तीनू रूपमे अधिक विश्वसनीय बनत।

खण्ड ४क पूरक समेकित मूल्यांकन

खण्ड चारि — भाषा-विज्ञानः तीनू भाषाक समानान्तर अध्ययन (अध्याय ६१४-९२६)

चारिम खण्ड ग्रन्थक बौद्धिक शिखर थिक। एतय दृष्टि बदलि जाइत अछि — आदेशात्मक (prescriptive) व्याकरणसँ वर्णनात्मक (descriptive) भाषा-विज्ञान दिस। भूमिकामे स्वयं ग्रन्थकार तीन आधार-सिद्धान्त घोषित करैत छथि: (एक) आँकड़ा पहिने — कोनो कल्पित रूप नहि; (दुइ) समानान्तर तुलना — तीनू भाषा संग-संग; (तीन) पाश्चात्य ढाँचा, देसी आँकड़ा। ई तेसर सिद्धान्त ग्रन्थक समग्र पद्धतिक सार थिक, आ आगाँ हम देखब जे ई ठीक ओ बिन्दु थिक जतय भारतीय, चीनी आ जापानी परम्पराक संग एकर संवाद सम्भव अछि।

खण्ड चारिक पद्धति-विवेचन (अध्याय ८१४ आगाँ) समकालीन तुलनात्मक भाषा-विज्ञानक स्तरक अछि। ई 'तुलनीयता' (comparability) केँ केन्द्रमे राखि, विधा-माध्यम-उमेर-क्षेत्र-आदर-शिक्षा-लिपि-प्रसङ्ग नियन्त्रित रखबाक आग्रह करैत अछि; कथनकेँ तीन कोटिमे बाँटैत अछि — 'आधार-पाठ समर्थित', 'वर्णनात्मक प्रवृत्ति', आ 'परिकल्पना (hypothesis)' — आ कहैत अछि जे एहि तीनकेँ मिलाउ नहि। ई ठीक ओ epistemic अनुशासन थिक जे नव्य-न्यायक प्रमाण-विवेक आ पाश्चात्य विज्ञान-दर्शन दुनूकेँ प्रिय।

समानान्तर परीक्षणक नमूना (ग्रन्थसँ): 'तीनू भाषा देवनागरीक उपयोग करैत अछि, मुदा समान अक्षर देखिते समान ध्वनिम मानब वैज्ञानिक नहि। लिपि (script), ध्वनि (phone) आ ध्वनिम (phoneme) अलग स्तर अछि। ' — न्यूनतम-नमूना तालिका: ध्वनि — ३ वक्ता × २० लक्षित शब्द; सर्वनाम/आदर— १० सामाजिक परिस्थिति × ३ वक्ता; TAM — १० धातु × ८ अर्थ-परिस्थिति।

एहि खण्डमे ध्वनि-विज्ञान, ध्वनितत्त्व, रूप-विज्ञान, वाक्य-विन्यास, अर्थ-विज्ञान, प्रयोग-विज्ञान, समाजभाषा-विज्ञान, ऐतिहासिक-तुलनात्मक भाषा-विज्ञान, भाषा-प्रकारिकी, मनोभाषा-विज्ञान (द्विभाषिक शब्द-पहिचान, भाषा-नियन्त्रण, स्विचिंग-कॉस्ट), कॉर्पस, शब्दकोश-विज्ञान, दस्तावेजीकरण आ संगणकीय भाषा-विज्ञान (OCR/ASR/TTS/NLP) — सभ आधुनिक शाखा समाविष्ट अछि। परिशिष्टमे सहभाषा-सर्वेक्षण-प्रपत्र, ४०-लक्षण dialectometry मैट्रिक्स, ऐतिहासिक-तुलना-प्रत्याशी-बैंक, प्रकारिकी-कोडिंग-पत्र आ द्विभाषिक-प्रसंस्करण-प्रयोगशाला धरि अछि। अन्तिम अध्याय (९२६) एकटा '१२/१२ पूर्णता-जाँच' प्रस्तुत करैत, प्रत्येक शाखाक उपस्थितिकेँ अध्याय-सन्दर्भ सहित सूचीबद्ध करैत अछि।

प्रारम्भिक मूल्यांकन: खण्ड चारि 'व्यावहारिक भाषा-विज्ञान पाठ्यपुस्तक (practical linguistics textbook)' क अन्तर्राष्ट्रीय स्तरकेँ छुबैत अछि। सीमा दुइ: (क) कतिपय अध्याय (जेना 'भाषा-विज्ञान की थिक', 'ऐतिहासिक-तुलनात्मक', 'कॉर्पस/संगणकीय') भिन्न अनुवर्ती-सङ्कलनक कारण एकाधिक बेर, तीनू भाषाक भिन्न मानकीकरणमे, दोहराइत अछि — जे विषय-सूचीक क्रम-सङ्ख्या (६९४, ७०९, ७२४, ७३९, ७६९, ७८४, ७९९) सँ स्पष्ट; (ख) प्रकारिकी-दाबी (typological claim) कखनहुँ-कखनहुँ

उपलब्ध कॉर्पस-आँकड़ासँ आगाँ बढ़ि जाइत अछि, जकरा ग्रन्थ स्वयं 'परिकल्पना' कहि सीमांकित करैत अछि — ई ईमानदारी थिक, मुदा पाठकक लेल कखनहुँ-कखनहुँ दाबी आ परिकल्पनाक रेखा धूमिल भऽ सकैत अछि।

२४. तिरहुता लिपिक उद्‌भव आ विकास

सारांश
(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी...

बीजशब्द: तिरहुता · लिपिक · उद्भव · विकास · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। (विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक-५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश:** अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक-५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।**)

लिपि? आ लिपि छी की? लिपिक उद्भव।

एजिप्टक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपिक आविष्कार टोथ देवता केलनि, मेसोपोटामियाक लोक कहै छथि जे हुनकर लिपि नीबो देलनि, ग्रीसक लोक ग्रीक लिपिक आविष्कारक हर्मीजकेँ मानै छथि आ भारतमे एकर श्रेय ब्रह्माकेँ जाइ छनि।

पाषाणकालक लोक मारते रास चित्र लिखलनि आ ओहीसँ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटल। मुदा ई चित्र सभ चित्रलिपि नहि छल, कारण एकचित्रक सम्बन्ध दोसर सँ नहि छल आ सभटा चित्र फराक-फराक छल। मुदा ओहिसँ पाछाँ जा कऽ चित्रलिपिक प्रेरणा भेटले होएत।

पहिल-लिपि: चित्रलिपि

एखन धरिक खोजबीनसँ पता चलैए जे चित्रलिपिक विकास भेल- टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील नदीक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे।

उपरका खोह आ धारक कातक पाथरपर लिखल चित्र आ चित्रलिपिमे अन्तर बिकछेबाक खगता अछि। अहाँ हमरासँ प्रेम करै छी तँ हमर चित्र लिख देलहुँ, कोनो शिकार करै छी तँ से चित्र लिखलहुँ। से अहाँ भेलहुँ लिखिया। से भारतोमे बहुत ठाम छल, मुदा लिखिया लिपिकार चोट्टहि नहि बनि जाएत। लिपिकार जे चित्र बनेलक से कलकारी लेल नहि वरण् खगता लेल। से एतऽ सूर्य बनेबाक लेल वृत्त बना दियौ, पूरा चित्र बनेबाक खगता एतऽ नै अछि, फेर दूटा एहने चित्रक सम्बन्ध स्थापित करू, दूसँ तीन.. आ चित्र लिपि तैयार।

से चित्रकार चित्र लिखलक, आ लिपिकार बनेलक। लिपिकारकेँ लिखिया नहि कहि सकैत छिऐ। आ से भेल टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कातक (असीरिया, बेबीलोन आ सुमेरमे), नील नदीक कातक (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे ईजियन आ मिनोअन सभयताक लोक।

चित्रलिपि: चित्रात्मक चित्रलिपि आ विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि

बाहरसँ दुनू चित्रलिपि अछि मुदा चित्रात्मक चित्रलिपि चित्रक मात्र बोध करबैत अछि जेना वृत्त सूर्यक बोध करेलक। मुदा जखन एकर प्रयोग गुमार लेल होमए लागल तँ ई भऽ गेल विचार आकि भावनाक प्रतीक आ ओहि लिपिक नाम भेल विचार/ भावनात्मक चित्रलिपि। आब कलाकारीसँ बेशी खगता महत्त्वक भेल आ ताहि लेल चेन्हक आकार सेहो छोट भऽ गेल। आइयो चीन आ जापानमे

विचार/ भावनात्मक चित्रलिपिक प्रयोग होइत अछि। मुदा पध-आधारित लिपि चीनमे खतम भऽ गेल, मुदा जापानमे ओ आइयो प्रयोगमे अछि।

चित्र-ध्वनि लिपि

भाषाक उद्भव आ विकास भेल। जेना ओतए ध्वनिसँ सम्बन्धित शब्द प्रवेश केलक तहिना लिपिमे सेहो भेल। आ चित्र-ध्वनि लिपिक विकास भेल। एहिमे विचार-भावनाक संग ध्वनिक प्रवेश सेहो भेल आ पाछाँ जा कऽ ओ ध्वन्यात्मक लिपि बनल।

ध्वन्यात्मक लिपि

ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि आ वस्तु-व्यक्तिक बीच सम्बन्ध स्थापित करैत चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे ध्वनि वा ध्वनि-समूह लेल चिन्ह बनल। ध्वन्यात्मक लिपिमे पोलीफोन (एक चिन्हक अनेकार्थ वा ध्वनि) आ होमोफोन (अनेक चिन्ह द्वारा एक ध्वनि वा अर्थ) मिला कऽ सेहो अर्थ/ ध्वनि-निर्णय नहि कऽ पबैत छल आ ताहि लेल तेसर ध्वनि-चिन्ह डिटरमिनेटिवक व्यवस्था भेल आ फेर अर्थ वा ध्वनि निर्णय सम्भव भेल।

एहि लिपिसँ पद-आधारित आ व्यंजन-प्रधान लिपि बनल।

स्थान-लाघव आ प्रयत्न लाघव

एतए प्रयत्न-लाघवक चर्च करब आवश्यक अछि। प्रयत्न लाघव लेल कम प्रयाससँ अपेक्षित परिणामक प्राप्ति। माने भाषाक सम्बन्धमे कम शब्दमे सुस्पष्ट विचार व्यक्त करब, पैघ-ध्वनि लेल छोट सर्वमान्य ध्वनिक प्रयोग करब आ ओही हिसाबसँ लिपिक सन्दर्भमे पैघ चेन्ह लेल छोट चेन्हक प्रयोग करब। ओहिना स्थान-लाघव लिपिमे स्थान-कटौती लेल प्रयुक्त होइत अछि। टॉपिक १२ मे शब्द विचारमे लिपि-उच्चारण सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। से प्रयत्न लाघवसँ कखनो काल ध्वनि अनचिन्हार भऽ जाइत अछि, आ ओकर रूपान्तर लिपिमे प्रत्न-लाघव आ कखनो काल स्थान-लाघ्वक संग होइत अछि।

पद-आधारित लिपि

पद आधारित लिपिमे प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघव नहि रहैत अछि। एकरा एना बुझू जे तमिल लिपि अछि सिलेबल आधारित लिपि, रोमन लिपि अछि अल्फाबेट लिपि आ तिरहुता आ देवनागरी अछि अल्फा-सिलेबिक लिपि। माने जतऽ संयुक्ताक्षर नहि अछि से भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। माने अंग्रेजी, जे रोमन लिपिमे लिखल जाइत अछि, मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि, मात्र २६ टा अल्फाबेट होइत अछि, से ओ भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। तमिलमे सिलेबल आधारित लिपि अछि। से ओ भेल सिलेबल आधारित लिपि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से ओ भेल अल्फा-सिलेबिक लिपि। एहि तीनूक तुलना मोटा-मोटी वार्णिक (अंग्रेजी), मात्रिक (तमिल) आ वार्णिक आ मात्रिक (तिरहुता आ देवनागरी) छन्दसँ कएल जा सकैत अछि। मुदा एतऽ एकटा पेंच अछि, अंग्रेजीमे वर्णक गणनासँ जे मीटर निर्माण करब तँ लय नहि बनत से ओतऽ सिलेबल आधारित गणना करए पड़ैत अछि, आ किएक तँ ध्वनिक सम्बन्ध मात्र सिलेबलसँ छै, शब्दकेँ सिलेबलमे तोड़ल जाइत अछि। जापानी लिपि पद-आधारित अछि से ओतऽ ई झमेल नहि अछि, आ ओतऽ ध्वनिक ईकाई लेल जे शब्द प्रयुक्त होइत अछि तकर अनुवाद मोटामोटी सिलेबलमे कएल जा सकैत अछि आ ओही आधारपर हाइकूमे १७ टा ध्वनि पुरेबा लेल गणना होइत अछि। तिरहुता, देवनागरी आ ब्राह्मीमे जे बाजल जाइए सएह लिखल जाइए, आ एतऽ पाणिनीपूर्व आ पणिनिक परम्परामे ध्वनि आधारित सन्धिक निअम बनल अछि। कर्मधारय समासक विग्रह पदात्मक होइत अछि, महादेव भेला महान् देव, आ जँ दूसँ बेशी पद अछि तँ से भेल बहुव्रीहि- जेना लम्बोदर (नमगर जिनकर उदर से, माने गणेश) । अंग्रेजी (रोमन लिपि) मे बजबा काल सन्धि होइत अछि मुदा लिखबा काल नहि, मुदा ओतहुओ दीर्घ लेल डबल ए, डबल बी आदि प्रयुक्त होइते अछि, पंकचुएशन सेहो ई काज करैत अछि, हँ ओतऽ ट्रिपल ए नहि होइत अछि, मुदा हमहूँ सभ तँ दीर्घक बाद प्लुतकेँ छोड़िये देने छी। आ तही कारणसँ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखल जाइत अछि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से मात्रिक आ वार्णिक दुनू छन्द एहिमे गणना कएल जा सकैत अछि। टॉपिक १ मे पृष्ठ १८ सँ गणना (मात्रिक आ वार्णिक) सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। सिलेबल जेना शब्दसँ सम्बन्धित अछि पद तहिना समाससँ पहिलमे ध्वनि प्रमुख अछि आ दोसरमे पद (अर्थ) । से वएह पद आधारित लिपि ध्वन्यात्मक लिपिक विकास छल। जकर प्रमाण ऐतिहासिक रूपसँ उपलब्ध अछि, आ जतऽ सँ लिपिक असली विवेचन सम्भव अछि। आ चित्र-लिपिक रूपमे जाहि तीन गोट लिपिक चर्च भेल माने टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कात (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील धारक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे एहिमेसँ टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कातमे सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे जे सभ्यता सभ क्रमसँ आएल ओहिमे पहिने सुमेरमे क्यूनीफॉर्म लिपिक प्रारम्भ भेल ४००० शताब्दी

बी. सी. ई. (बिफोर कॉमन एरा) मे। बेबीलोन लोकनि सुमेरसँ ई लिपि सिखलनि आ हुनकासँ असीरिया लोकनि। माटिक सानल आ लोथ बनाएल पट्टीपर सुखेलासँ पहिनहिये नोकबला स्टायलससँ, मोटा-मोटी ३५० टा अक्षरसँ, ई क्यूनीफॉर्म लिपि लिखल जाइ छल जखन आ फेर रौदमे सुखाएल वा चूल्हिमे पकाएल जाइत छल। आधुनिक कालमे एकरा पढ़बाक श्रेय एकटा अंग्रेज हेनरी रॉलिनसनकेँ जाइ छनि। तेसर चरणक बाद धरि ई पद-आधारित बनि गेल छल। एजिप्टमे हायरोग्लाइफिक (हायरोग्लिफिक, हायरेटिक आ डेमोटिक) लिपि क्यूनीफॉर्म लिपिक समकालीन छल। एहिमे २४ टा चिन्ह रहैक जाहिमे सभटा व्यंजन रहैक। स्वर रहबे नहि करैक, से बहुत रास झमेल आ अस्पष्टता आबि जाइ छलैक, से ओकर निवारणलेल ओ लोकनि आर विशेष चेन्ह आ चित्रक प्रयोग करैत छलाह। ओ सभ लाल मोशि-कलमसँ पेपीरस पातपर लिखैत छलाह, ओही पेपीरससँ पेपर बनल अछि। क्यूनीफॉर्म आ हाइरोग्लाइफिक ई दुनू लिपि दहिनसँ वाम दिश लिखल जाइत छल। एहि दुनू लिपिक समकालीन लिपि छल चीनक लिपि से ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत छल। पहिने एकटा शब्द लेल एकटा चिन्ह छल, मुदा फेर एकटा विचार लेल एकटा शब्दक प्रयोग होमए लागल। चीनक लिपिमे कोनो अल्फाबेट नहि अछि, ४०, ००० चिन्ह अछि। एकर अलाबे एलमाइट सभ पहिने देशज रेखात्मक आ चित्र-प्रचुर अक्षरक प्रयोग केलनि मुदा फेर ओ लोकनि सेहो क्यूनीफॉर्म लिपि पकड़ि लेलनि मुदा ओतऽ ११३ चेन्ह जाहिमे ८०सँ बेशी पद-आधारित चेन्ह छल, केर प्रयोग ओ केलनि।

से एजिप्टक बदला लिपिक आविष्कारक मेसोपोटामिया (सुमेर, बेबीलोन आ असीरिया) क लोक रहथि, जे लिखबाक कलाक आविष्कर्ता छथि। जेना ऊपर चर्च भेल अछि, ओ लोकनि पहिने चित्र लिखलन्हि, आ किएक तँ चित्र बनेबामे बेसी समयक नोकशानी होइत छलन्हि से ओ लोकनि प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघवसँ चित्रकेँ चेन्ह बना देलन्हि, चेन्हमे समानता आ समरूपता आनि रेखात्मक पद्धतिक लिपि बनेलन्हि। फेर ई चेन्ह ध्वनिकेँ प्रदर्शित करए लागल, आ एहि तरहक मोटामोटी ३५० टा चेन्ह बनल।

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे जे खाँटी वर्ण आधारित लिपि बनल ताहूमे, फेर मिनोअन सभ्यतामे जे लिपि आविष्कृत भेल ओहिमे पद-आधारित लिपिक प्रभाव पड़ल। पद-आधारित लिपिक दूटा रूप चीनमे छल मुदा तकर प्रयोग चीनमे बन्द भऽ गेल मुदा जापानमे ई प्रयोगमे अछि जकर किछु चर्च ऊपर आएल अछि।

व्यंजन प्रधान लिपि

एकरा वर्णमाला वा वर्ण आधारित लिपि सेहो कहि सकैत छी। आन लिपि सभमे चेन्ह सभक संख्या ततबा बढ़ि गेल जे शिशु लेल ओकर सीखब असम्भव भऽ गेल। एहि लिपिक विकासक कारण छल प्रयत्न लाघव। एक्के लिपिमे अनेक भाषा लिखब सम्भव भऽ गेल।

टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे) क क्यूनीफॉर्म लिपि वर्णमाला नहि बनि सकल। एहि लिपिक सम्बन्ध सेमेटिक भाषासँ हेबाक प्रमाण अछि। चित्रात्मक फेर विचारात्मक, फेर ध्वन्यात्मक लिपि ई बनि सकल। मुदा ध्वन्यात्मक लिपि सेहो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ क्रिया-विशेषणक आवश्यकताकेँ किछु सुधारक संग पूर्ण कऽ सकल। फेर ई पद-आधारित बनल आ एतहि एकर विकास खतम भऽ गेलैक।

बादमे जा कऽ जुरुश्रुष्टक अनुयायी लोकनि मेसोपोटामियामे अपन लिपिकेँ व्यंजन प्रधान बनेलन्हि जकरा अर्द्ध-वर्णमाला कहि सकैत छी। मुदा ओहिमे कृत्रिम हेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, आ ई प्रवृत्ति ब्राह्मीमे सेहो भाषा-वैज्ञानिक लोकनिकेँ देखा पड़ैत छन्हि।

क्रीटमे सेहो चित्र-प्रचुर रेखाकृतिसँ आगाँ बढ़ि १३५ चेन्हबला भावना-प्रधान आ ध्वनि-प्रधान लिपि बनेलन्हि। हिनकर लिखब वामसँ दहिन आ दहिनसँ वाम दुनू छल।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे मूल वर्णमालाक आविष्कार दोसर शताब्दी बी. सी. ई. मे भेल जकर नाम उत्तरबरिया सेमेटिक वर्णमाला छल। आ तकर बाद आनो-आन मूल वर्णमाला आविष्कृत भेल जेना आरामाइक, फिनीशिअन, ग्रीक आ ब्राह्मी आ ई लिपि सभ अनचोक्के आविष्कृत नहि भेल होएत वरण ओतहु वएह प्रक्रिया भेल हएत जे मेसोपोटामियाक लिपि संग भेल छल। मुदा एक स्तरक बाद मेसोपोटामियाक क्यूनीफॉर्म लिपि पद-आधारित लिपि बनि अपन खिस्सा खतम केलक ई लिपि सभ पूर्ण वर्णमाला बनि गेल।

भारतमे लिपि आ लेखनकला

नागार्जुनकोण्डासँ प्राप्त दोसर शताब्दीक एकटा मूर्तिमे राजा शुद्धोधनक दरबारक दृश्य अंकित अछि जाहिमे तीनटा भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका सभक नीचाँ बैसल लिपिकार तकरा लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई आइ धरिक सभसँ पुरान चित्र आधारित प्रमाण अछि। एहिसँ अतिरिक्त पुरान प्रमाण हड़प्पा संस्कृति, अशोकक अभिलेख आदि तँ अछिये। अशोकक अभिलेख आ हड़प्पा संस्कृतिक बीचमे सेहो मारते रास अभिलेख भेटलाछि जेना सोहगौराक ताम-पत्र अभिलेख, पिपरहबाक बौद्ध-भीड़ अभिलेख, महास्थान आ बर्लीक पाथर अभिलेख, आ भट्टिप्रोलुक अभिलेख।

भारतमे हड़प्पा सभ्यतामे पहिल बेर लिपिक प्रयोग भेल मुदा ओ एखन धरि पढ़ल नहि जा सकल अछि। एकर अभिलेख सभ छोट-छोट छैक सभसँ पैघ अभिलेखमे २६ टा चेन्ह छैक। धोलावीर (गुजरात) मे नग्रक द्वारपर एकटा साइनबोर्ड हेबाक प्रमाण अछि जाहिमे ९ टा चेन्ह छैक।

ब्राह्मी आ खरोष्ठी

ब्राह्मी वामसँ दहिन आ खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिशामे लिखल जाइत अछि। मुदा दुनू भारतक वर्णमाला पद्धतिक आधारपर विकसित भेल अछि। अशोकक अभिलेख ब्राह्मी आ खरोष्ठी (मानसेहरा आ शाहबाजगढ़ी) दुनूमे भेटल अछि आ एकरा एकटा अंग्रेज जेम्स प्रिंसेप १८३७ सी. ई. मे ब्राह्मी पढ़बामे सक्षम भेलाह। खरोष्ठी पढ़बाक श्रेय सम्मिलित रूपसँ कर्नल मसोन आ जेम्स प्रिंसेप कैँ देल जाइत अछि। एहि अभिलेख सभमे अशोकक नाम पियदस्सी लिखल छैक आ किछुमे असोक (अशोकक पालि-प्राकृत रूप) सेहो। अशोकक अभिलेखमे लिपिकरक चर्च अछि।

ब्राह्मी लिपि बहुत दिन धरि विकसित आ परिष्कृत/ परिवर्द्धित होइत प्रयोगमे रहलाअ एहिसँ भारतक आन लिपि सभक उत्पत्ति भेल मुदा खरोष्ठी लिपि अपने संग खतम भऽ गेल। अशोकक अभिलेखक अतिरिक्त इण्डो-ग्रीक राजा सभ एकर प्रयोग अपन मुद्रापर केलन्हि जाहिमे तर आ ऊपरमे ग्रीक आ ्खरोष्ठी लिपिमे राजाक नाम लिखल रहैत छल।

नारद-स्मृतिमे लिपिकैँ उत्तम आँखि कहल गेल अछि आ एकर सृजन ब्रह्मा केलनि तकर चर्च अछि।

बृहस्पति स्मृतिमे चर्च अछि जे छह मासक बाद स्मृति धोखा देमऽ लगैत अछि से पातपर लिखल आखरक सृजन ब्रह्मा केलनि।

चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनमे सेहो चर्च अछि जे वामसँ दहिन लिखल जाएबला लिपिक सृजनकर्त्ता ब्रह्मा छथि।

एहि लिपिक नाम ब्रह्मी लिपि छल आ से पाणिनी पूर्व व्याकरणाचार्य द्वारा स्वीकृत छल, मुदा पाणिनी व्याकरणक अनुरूप ब्रह्मी अशुद्ध अछि। से एहि लिपिक नाम ब्राह्मी पड़ल। पाणिनी अष्टाध्या आ अमसिंह अमरकोषमे लिपि आ लिबिक चर्च करैत छथि। पाणिनी पूर्व आचार्य यास्क अपन निरुक्तमे बहुत रास पूर्व आ समकालीन व्याकरणाचार्यक नाम गणबैत छथि। वर्णक गणना आधारित छन्द आ व्याकरणाचर्य सभक उपस्थिति अपरोक्ष रूपसँ लेखनकलाक उपस्थितिक आभास करबैत अछि। तीन हजार वर्ष पूर्व झेलम आ चेनाबक बीच गांधार (अखन ओतऽ यूसुफजई पठान निवास करैत छथि) इलाकामे दक्षक संघराज्य छल, एहि इलाकामे काबुल धार पच्छिमसँ आबि कऽ सिन्धु धारमे संगम करैत अछि। ओहि संगमसँ चारि माइल उत्तर लहुर गाम, जे पाणिनीक नानी गाम छल, मे पाणिनीक जन्म भेल, ओइ गामक नाम ओइ कालमे शलातुर रहैक। चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग), सातम शताब्दीमे. एहि गामक विद्वान ब्राहमण व्याकरणाचार्यक चर्च केने छथि। माने परम्परा आगाँ-पाछाँ काएम छल।

जैनक भगवती सूत्र एहि ब्राह्मी लिपिकैँ नमस्कार करैत अछि।

लिपिक आधार- अक्षर, वर्ण आ मात्रा आ तकर साक्ष्य

ऋगवैदिक ऋचा वर्णवृत्तमे अछि, मात्रिक छन्दमे नहि। वार्णिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि।

छान्दोग्य उपनिषदमे अक्षर शब्द उल्लेख अछि दीर्घ स्वरक सेहो।

तैत्तरीय उपनिषदमे वर्ण आ मात्रा दुनूक चर्चा अछि।

ऐतरेय आरण्यकमे स्वर आ व्यंजन दुनूक चर्चा अछि।

पंचविंश ब्राह्मणमे सभसँ छोट दक्षिणा १२ कृष्णल आ सभसँपैघ दक्षिणा ३, ९३, ०१६कृष्णल सुवर्णक

चर्चा अछि।

कौटिल्यक अर्थशास्त्र चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षणक निर्देश करैत अछि। राजाकेँ मन्त्रिपरिषदक संग पत्राचार आ गुप्तचरक कूटलिपिमे संदेश पठेबाक चर्च अछि। अर्थशास्त्र कहैत अछि जे लिपिकार तेजीसँ लिखबामे निपुण होथि, साफ-साफ लिखथि आ लेख पढ़बामे सेहो समर्थ होथि।

बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्च अछि, जाहिमे अकासी अक्षर बनेबाक स्पर्धा रहैत अछि। बौद्ध भिक्षु लेल एहि क्रीड़ाक निषेध अछि मुदा विनय-पिटक लेखल-कला सिखबाक अनुमति बौद्ध-भिक्षुकेँ दैत अछि। कटाहक जातकमे जाली पत्र देखाकेँ ठकबाक चर्च अछि तँ महासुतसोम जातकमे तक्षशिलाक अध्यापक अपन पुरान शिष्यकेँ पत्र लिखै छथि। कण्ह जातक अक्खर (अक्षरक पालि-प्राकृत रूप) क प्रयोग करैत अछि। महावग्गमे अंक-शब्दक प्रशिक्षण आ कटाहक जातकमे शीतलपाटीक चर्चा अछि जाहिपर लिखब सिखाओल जाइत छल। ललितविस्तर बुद्धक लिपिशाला, हुनकर शिक्षक विश्वामित्र, चाननक शीतलपाटी आ सोनाक लेखनीक चर्चा करैत अछि, एतऽ ६४ टा लिपिक वर्णन अछि जतऽ राजनैतिक सीमाक हिसाबसँ अंगक लिपि, मगधक लिपि वङक लिपिक चर्च अछि मुदा विदेहक लिपिक स्थानपर पूर्व विदेह लिपि लिखल अछि। एकर कारण अछि जे वज्जि विदेहपर अधिकार कऽ लेने छल आ वज्जि आ विदेहक लिपि संयुक्त रूपसँ विदेह लिपि छल। अजातशत्रु तेसर शताब्दीमे वज्जिकेँ जीति मगधमे राजनैतिक रूपसँ मिला लेलन्हि, मुदा सांस्कृतिक रूपसँ ओ अपन अस्तित्व बचेने रहल। ललित विस्तर तेसर शताब्दीक ग्रंथ थिक आ ताहि द्वारे ओ मगध लिपिक संग पूर्व विदेह लिपिक वर्णन करैत अछि। ई प्रवृत्ति बादमे गुप्तकालक तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रान्तमे सुदृढ़ रूपसँ सोझाँ आएल आ पूर्वविदेह लिपिक नामकरण भेल तिरहुता। ललितविस्तरमे बाल अवस्थामे बुद्ध-सिद्धार्थक वर्णमाला प्रशिक्षणक चर्च अछि आ ओहिमे वार्णिक अक्षरक काँति आ अलंकरणक योजनाक चर्च अछि जे ब्राह्मी लिपिक अछि।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीचमे अलेफ् आ अ, बेथ् आ ब्, गिमेल् आ ग, दालेथ् आ द, हे आ ह, वाव् आ व, जाइन् आ ज, चेथ् आ घ, थेथ् आ थ, योध् आ य, काफ् आ क, लामेध् आ ल, मेम् आ म, नुन आ न, सामेख आ स, आइन् आ ए, फे आ प, साधे आ च, कॉफ् आ ख मे अद्भुत समानता अछि आ मानवक मस्तिष्क कोना दूर रहलोपर एक्के रङ अछि तकर द्योतक अछि। बूलरकेँ ब्रम भेलन्हि जे ब्राह्मी लिपि उतरबरिया सेमेटिक लिपिक अनुकरण केलक। ई ओ काल छल जखन हड़प्पा आ मोहनजोदाड़ोकेँ सेहो मेसोपोटामियाक आउटपोस्ट ताधरि मानल जाइत जाधरि भारतक आन भागमे उत्खनन नहि भऽ गेलै आ हड़प्पा संस्कृतिक देशज रूप प्रकट नहि भऽ गेलैक (हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४, पृ. १९, मुदा ओ पृ. ५४ पर अखनो भ्रममे छथि जे खरोष्ठी अरामेइक लिपिक आधारपर बनल जे तखन फारसक आधिकारिक लिपि छल। अरामाइकमे मात्र २२ टा अक्षर छैक, स्वरक अपूर्णता अछि, ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि अछि, स्वरक मात्राक सेहो अभाव अछि से ओ भारतीय भाषा लेल अयोग्य अछि, खरोष्ठीमे ई सभ गुण अछि, संगे दीर्घ-गुण-वृद्धि ध्वनि लेल भेदक चिन्ह सेहो अछि, प्राकृत अभिलेख लेल ई ब्राह्मी सन सक्षम छल, मात्र दहिन-वाम रहने ई विदेशी नहि भऽ जाएत। खरोष्ठी दहिनसँ वाम लिखल जाइत अछि मुदा एकर वर्णमाला भारतीय अछि, दहिनसँ वाम लिखल जएबाक कारण किछु विद्वान लोकनिकेँ एहिमे फारसक प्रभाव देखाइ पड़ैत छनि, मुदा सत्य तँ यएह अछि जे ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपिमे एक्के वर्णमालाक प्रयोग भेल अछि।) । जेना सङीतमे भारतक सारेगामा क सात टा सुर आ पश्चिमी ऑक्टेव (ओत्तहु साते टा छैक, ऑक्टेव माने आठम सँ पुनः पुनरावृत्तिक मात्र ई प्रतीक अछि) ई सिद्ध करैत अछि जे भाषा कोनो हुअए कान वएह छैक मनुक्खबला। ब्रेल आ इण्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ध्वनिक संग मस्तिष्क (ब्रेल) क सेहो संप्रेषण मोटामोटी एक्के हेबाक प्रमाण दैत अछि (देखू अनुलग्नक) से पहिने तँ किछु विद्वान एकरा बैक्ट्रो-पालि आ आरियानो-पालि विदेशी लिपि बुझि कऽ कहलन्हि, कनिंघम एकरा गांधारी कहलन्हि, मुदा ललितविस्तर आ चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनक प्रमाण अकाट्य छल आ ओतऽ वर्णित एकर नाम खरोष्ठी सर्वमान्य भेल। चीनी साक्ष्य ब्राह्मीक उद्भव ब्रह्मा द्वारा आ खरोष्ठीक सर्जन ब्राह्मण आचार्य खरोष्ठ द्वारा भेल मानलक अछि। तेसर शताब्दीक बाद अभिलेख संस्कृतमे लिखल जाए लागल, प्राकृतक प्रयोग बन्द भऽ गेल। प्राकृत लेल ब्राह्मी आ खरोष्ठी दुनू सक्षम छल मुदा संस्कृतक सन्धियुक्त अलंकृत क्लिष्ट शब्द, पद आ समास लेल मात्र ब्राह्मी। से एक बेर जे एकर प्रयोग बन्द भेल तँ प्राकृतसँ निकलल भाषा सभ लेल सेहो ब्राह्मीसँ निकलल लिपिक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल।

ब्राह्मीक एरागुडीक अशोकक अभिलेख २६ पाँतीमे अछि। वाम दहिन लेखनक पूर्ण रूपसँ पालन नहि भेल अछि, ओना बेशी पाँती वाम-दहिन अछि। किछु वाम-दहिन पाँतीमे किछु अक्षर वाम-दहिन तँ किछि दहिन वाममे अंकित अछि, किछि ऊपर नीचाँ सेहो अछि। ८ पाँती दहिन-वाम अछि। एक पाँतीमे मात्र एक अक्षर अछि। से दहिन वाम रहने विदेशी प्रभाव सिद्ध नहि होइत अछि। खरोष्ठी सन जापानी सेहो दहिन वाम लिखल जाइत अछि।

ललितविस्तरक प्रसंग सेहो इशारा करैत अछि जे व्याकरणक विशेषताकेँ पूर्ण करब ब्राह्मीक उद्देश्य छल, मुदा ई आग्रह ऋगवेदसँ अर्थशास्त्र तक अछि, आ भारतीय परिप्रेक्ष्यमे ब्राह्मी आ ओहिसँ निकलल लिपि ओहि आग्रहकेँ पूर्ण करैत अछि, आ एकर परिष्कृत रूपकेँ कृत्रिम नहि वरण् स्वाभाविक मानल जेबाक चाही। से किछु विद्वान ब्राह्मीक व्याकरण सम्बन्धी आवश्यकताकेँ पूर्ण करए लेल भेल परिष्करणकेँ विदेशी अक्षरकेँ भारतीय प्रारूपमे आनब कहलन्हि अछि (बूलर, ऑन द ओरिजिन ऑफ द इण्डियन ब्राह्मी अल्फाबेट, १८९८), मुदा कनिंघम एकरा भरतीय चेन्ह सभसँ बहार भेल मानलन्हि अछि (कनिंघम, कोरपस इन्सक्रिप्शनम इण्डिकेरम, खण्ड-१) ।

ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्च ललित विस्तरमे अछि। सम्पूर्ण यूरोपमे ग्रीस आ रसियन कॉमनवेल्थ छोड़ि कऽ (एहि दुनू ठाम अलग-अलग लिपि छैक) सम्पूर्ण यूरोपमे रोमन लिपिक प्रयोग होइत अछि। से सम्पूर्ण यूरोपमे आइ मात्र तीनेटा लिपि छैक। जँ रूसकेँ यूरोपसँ हटा दी तँ ओ भारतक बराबरे अछि। भारतमे सभ प्रान्तमे मोटामोटी अलग-अलग लिपि अछि, मुदा तमिलक अतिरिक्त सभमे अल्फा-सिलेबिक (अक्षर आ संयुक्ताक्षरक) निर्वहण मोटामोटी एके रङ होइत अछि। एकर कारण छापाखानाक देरीसँ आगमन मात्र अछि।

ब्राह्मीक मानक रूप आ ओकर क्षेत्रीय शैली

ब्राह्मीक मानक रूप छल आ तकर प्रमाण अछि अशोकक अभिलेख। अशोक १४म प्रस्तर-अभिलेखमे कहै छथि जे अभिलेख-आलेखनक गुण-दोष लिपिकरक जिम्मा अछि, आ सएह कारण छल जे अशोकक अभिलेखमे अक्षर आ ओकर आकारमे समरूपता अछि आ ईहो प्रमाणित होइत अछि जे अशोकक काल धरि ब्राह्मीक मानक रूप आबि गेल छल। जे भेद अछि से क्षेत्र अनुसार, लिपिकरक लेखनक अनुसार आ लेखन उपकरणक विविधताक अनुसार अछि, आजुक हिसाबेँ जँ असमतल पाथर, खोह आदिपर लिपिकार द्वारा पुरातन उपकरणसँ जतेक असमरूपता आएल अछि से मानक ब्राह्मीक स्थिति आर सुदृढ़ करैत अछि। पंकचुएशन संस्कृतमे रहबे नहि करए से प्राकृतमे सएह परम्परा आगाँ बढ़ल। विराम चिन्हक व्याकरणगत आवश्यकता ब्राह्मीक लिपिकारकेँ ओही कारणसँ आवश्यक नहि लगलन्हि।

कुटिल लिपि

कुटिल लिपि

;

उत्तर भारत ६अम शताब्दी सी. ई.

;

पच्छिम (शारदा); पूब (किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरी।

कुटिल लिपिक विशेषतासँ प्रेरित नामकरण- न्यूणकोण वर्णमाला (बूलर, इण्डियन पालियोग्राफी, प्. ६८), नह शीर्ष वर्णमाला (टॉड, एनल्स ऑफ राजस्थान, पृ. ७००), भारयीय नाम सिद्ध मातृका, काश्मीर आ वाराणसीमे प्रचलित (अल-बेरुनी, भारत, पृ. १७३, सचाउ), देवल प्रशस्तिमे एकरा लेल कुटिलाक्षरणी प्रयुक्त भेल। आदित्यसेनक अफसड़ पाथर-अभिलेखमे एकर नाम विकटाक्षरणी अछि। विक्रमांकदेव चरितमे कुटिल लिपिमे सिद्धहस्त कायस्थ लोकनिक चर्च अछि।

जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई. मे अशोकक अभिलेखकेँ पढ़ने छलाह, एकरा लेल कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलन्हि (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोशाइटी ऑफ बेन्गाल, पार्ट-५ पृ. ७७८) ।

कुटिल लिपिक विकासक की कारण छल? पहिल तँ ई छल जे लिखबाक करची-कलम आ मोशिक प्रयोग संग नव उपकरण आ पुरान उपकरणक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लेखनक इच्छा जागृत भेल, लटपटौआ लिखबाक आग्रह सेहो एहि लेल कारण बनल। एहिसँ उपरका भाग फन सन बनि गेल कारण मोशि ढबकि जाइ, पाछाँ नाङरि आ पद-चिन्ह सेहो सुस्पष्ट भेल। अलंकरणक प्रवृत्तिसँ वर्ण वृत्ताकार आ चिक्कन स्वरूप लेबऽ लागल। अलंकारक कारणसँ एकर नाम पड़ल सिद्धमातृका।

कुटिल लिपिक अभिलेख भेटल अछि, कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक (ई मोन पाड़ैए मौर्य कालक बौद्ध सप्ताक्षरी (प्रसिद्ध मंत्र) कूटाक्षरक), मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख, ईशानवर्माक हरहा पाथर-अभिलेख, सर्ववर्मनक असीरगढ़ मोहर-अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर आ नागार्जुनी खोह अभिलेख, ईश्वर वर्मनक जौनपुर पाथर-अभिलेख, शाहपुरक प्रतिमापर अभिलेख, मन्दागिरि

अभिलेख, जीवितगुप्त द्वितीयक देववार्णार्क स्तम्भ अभिलेख, हर्षवर्धनक मधुबन आ बाँसखेड़ा ताम्रपत्र-अभिलेख, हर्षवर्धनक सोनीपत मोहर-अभिलेख।

तिरहुता

तिरहुता लिपिक खोजमे आब भारतक पूब भागमे आउ।

पूब भागक ब्राह्मीक बाद किराँत, रञ्जना, भुँजिमोल, तिरहुता, नेवारी, तिब्बती, नन्दीनागरी आ देवनागरीक प्रयोग भेटैए।

किराँत लिपिमे लिम्बू भाषा आदि लिखल गेल। ई सभ लिपि वामसँ दहिन दिश लिखल जाइए मुदा रञ्जना लिपि कूटाक्षरमे ऊपरसँ दक्षिण लिखल जाइए। नागरीक रूप नन्दीनागरीक प्रयोग मुदा बेशी मध्य दक्कन आ दक्षिण भारतमे भेल आ माध्वाचार्यक द्वैत दर्शनक संस्कृतमे लिखल पाण्डुलिपि नन्दीनागरीमे अछि।

विदेह, अंग, वज्जि आ नेपालक तराईमे संस्कृत आ मैथिली दुनू तिरहुतामे लिखल जाइ छल आ एहिमे सभ विषय, जेना साहित्य, गणित, धर्म, दर्शन लिखल जाइ छल आ पाता (सुख-दुख दुनुक) चलै छल आ चिट्ठी-पत्री अहीमे होइ छल। कैथीक प्रयोग हिसाब-किताब, खाता-खतियान लेल होइ छल आ मुख्य रूपसँ कायस्थ एकर प्रयोग करै छला। मुदा मिथिलाक कर्ण-कायस्थक पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल (मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३) । एकर विपरीत मैथिल ब्राह्मणक पञ्जीक किछु फील्ड-वर्क आ पत्रचार कैथीमे भेल (अनुलग्नक) मुदा एतहु पञ्जी मात्र तिरहुतामे लिखल गेल। ई १४म शताब्दी सी. ई. (कॉमन एरा) सँ शुरू भऽ कऽ २०म शताब्दी सी. ई. धरि रहल जखन देवनागरीमे पञ्जी लिखब प्रारम्भ भऽ गेल।

किछु नव आविष्कृत लिपि

लिपिक अनुकरणसँ साइन (इशारा) भाषा वधिर लेल १८म शताब्दी सी. ई. (कॉमन एरा) मे वधिर स्कूलमे फ्रांसक चार्ल्स मिशेल देल एप्पे द्वारा आविष्कृत भेल। ई एहेन लिपि अछि जे कागतपर नहि वरण् वायु माने वातावरणमे बनाओल जाइत अछि। अन्ध-दिव्यांग लेल ब्रेल लिपि १९म शताब्दीमे फ्रांसक लुइ ब्रेल आविष्कृत केलनि। २०म शताब्दीमे रघुनाथ मुर्मू संथाली भाषा लेल ओल-चिकी लिपिक आविष्कृत केलनि।

ब्राह्मी लिपिक पुबरिया प्रकारक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक हरिषेन लिखित प्रयाग प्रशस्ति जे अशोकक स्तम्भपर लिखल गेल छल, चन्द्र गुप्त-२ क उदयगिरि खोह लेख, स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा अभिलेख।

तिरहुता लिपिक खोजमे हम सभ उत्तर आ दक्षिणमे सँ उत्तर भारतीय आ फेर उत्तर भारतीयसँ उत्तर-पूब दिस बढ़ब। उत्तर आ दक्षिण भारतक लिपिक जे अन्तर अछि से “म” मे देखाइत अछि। उत्तर भारतक दुनू प्रकार माने पूब आ पच्छिमक प्रकार श, ष, ल आ ह मे देखाइत अछि।

गुप्त कालक अभिलेखक पूब प्रकारमे “ल” केर वाम अंग सोझे नीचाँ दिस झुकैत अछि (उदाहरण जौगड़क फराक अभिलेख) । “ष” केर आधार चेन्ह गोल बनाओल गेल आ बिचुलका चेन्हक माला सन बनि गेल। “ह” केर आधार चेन्ह धकिया देल गेल आ एकर सुल्फी उर्ध्वाधरसँ जोड़ि देल गेल।

स्कन्दगुप्तक भिताड़ी स्तम्भ अभिलेखे, ओना तँ भारतक पूबमे अछि, मुदा ओहिमे उत्तर भारतक पच्छिम प्रकारक लिपिक प्रयोग भेल। कलाकार पच्छिमसँ आओल हेताह ताहि कारण सँ ई भेल होयत। फेर ईहो भेल जे उत्तर भारतक ब्राह्मीक पूब आ पच्छिम प्रकारक सीमा रेखा परिवर्तित होइत रहल। कन्नौजपर अधिकारक लेल राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार आ पाल राजवंशक बेच संघर्ष मोटामोटी ७५०-१२०० ई. क मध्य भेल। एहि तरा-उपरी युद्धमे गुर्जर-प्रतिहार जखन बीस पड़लथि तँ पछबरिया कलाकारक कलाकारी पूब दिस बढ़ल। तहिना पाल जखन बीस पड़लाह तखन पुबरिया कलाकार सभकेँ बेसी पच्छिम धरि रोजगार भेटलन्हि। पछबरिया ब्राह्मी नागरी बनल आ पुबरिया ब्राह्मी तिरहुता, असमी, बांग्ला आ ओड़िया। पुबरिया प्रकारक पच्छिम आरि पाल साम्राज्य, मगध आ विदेह+वज्जि निर्धारित भेल। दसम शताब्दी धरि नागरीक पुबरिया आरि बनारस निर्धारित भऽ गेल आ ओ पूर्ण रूपसँ पुबरिया ब्राह्मीसँ फराक भऽ गेल।

घियासुद्दीन तुगलकक बाद फिरोजशाह तुगलक आक्रमणसँ तिरहुत साहित्य आ कलाक क्षेत्रमे पछुआ गेल आ ओकर लिपिक बड्ड भारी नोकसान भेलै। तिरहुता लिपिक विकास ओतहि ठमकि गेलै।

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन केलन्हि। मुदा एहि हारिसँ पहिने मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक स्थापनाक ओ प्रयास केने रहथि, ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य। आधिकारिक स्थापक नियुक्य भेलाह मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त। हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, मिथिलाक पण्डित लोकनि १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। ओना तँ ओहि समयमे हरसिंहदेव मिथिलासँ पलायन कऽ गेल रहथि तैयो हुनका सांकेतिक रूपमे एकर संस्थापक मानल गेल।

क्षत्रियक पञ्जी तँ आब उपलब्ध नहि अछि मुदा ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक जे पञ्जी उपलब्ध अछि तकर लिपि मात्र तिरहुता अछि आ २०म शताब्दीक पञ्जीक तिरहुता जे एहि पञ्जी सभमे अछि से १३२६ ई. (१४म शताब्दीक) क पञ्जीक तिरहुतासँ एक्को मिसिया भिन्न नहि अछि। फॉण्ट बनलाक एकर विकासक सीमा बिना रूप परिवर्त्तित भेने असीम भऽ गेल अछि आ एक्के खाँचामे कलाकार अपन कलाकारी देखा कऽ कएक डिजाइनबला अक्षर निर्मित कय सकैत छथि।

से ब्राह्मीक विकास भेल उत्तरी आ दक्खिनी प्रकारमे। उत्तरक प्रकार दू भागमे बँटि गेल, पुबरिया आ पछबड़िया। आ मोटा-मोटी १०म शताब्दीमे पुबरिया लिपि पछबरिया लिपिसँ पूर्ण रूपसँ भिन्न भय गेल। पुबरिया लिपिक सीमा मगध, अंग आ तिरहुत निर्धारित भेलै आ नागरी जे पछबरिया ब्राह्मीक रूपमे गुप्त साम्राज्यक पतन धरि प्रयागोसँ पच्छिम धरि सीमित छल ८म शताब्दीमे ई वाराणसी धरि पहुँचि गेल १२म शताब्दीमे गंगाक दक्षिणमे मगधमे पछबरिया आ पुबरिया दुनू प्रकारक प्रयोग होमय लागल। मुदा गंगाक दक्षिणमे मगधसँ पूब पुबरिया प्रकार मात्र रहलै, आ गंगाक उत्तरमे तिरहुतमे सेहो पुबरिये प्रकार मात्र रहलैक। मुस्लिम आक्रमणक बाद समस्त मगधमे पछबरिया प्रकार पसरि गेलैक मुदा १४म शताब्दी धरि (उदाहरण महाबोधि मन्दिर गया) पुबरिया लिपिक प्रयोग एतऽ पूर्णरूपसँ बन्न भय गेलैक। ।

१३२६ ई. मे पञ्जी लिखबाक प्रारम्भ भेल आ तहियासँ २०म शताब्दी धरि ई तिरहुतामे बिना परिवर्तित भेने लिखाइत रहल आ ओकर ओही रूपमे फॉण्ट बनि गेलै (देखू गूगल बुक्सपर विदेह आर्काइवक पञ्जीक ११००० तालपत्र/ बसहा कागत अभिलेख, जे प्रारम्भसँ २०म शताब्दी धरिक अछि, २०म शताब्दीक अन्तमे पञ्जी सेहो देवनागरीमे लिखल जाय लागल) । तँ तिरहुताक उद्भव आ विकासक सीमा रेखा १३२६ ई. भेल जखन तिरहुताक अन्तिम रूप निर्धारित भय गेल। पञ्जीकारक नीक-अधलाह हस्तलिपिकेँ तिरहुता फॉण्टक विभिन्न डिजाइन मात्र मानल जा सकैत अछि।

एकर ई परिणाम भेलै जे तिरहुतामे जे संस्कृत ग्रंथ लिखल जाइ छल, वा पाता चलै छल सेहो अपरिवर्तित रूपमे २०म शताब्दी धरि चलल। तुगलक आक्रमणसँ अभिलेख लिखनिहारक रोजगार खतम भऽ गेलन्हि आ जे कियो बचलाह से तालपत्र आ बसहा कागतपर लिखल अभिलेखसँ भिन्न लेखबाक क्षमतासँ रहित भय गेलाह।

छापाखानाक प्रयोगक बाद आ यूनीकोडक अंकनक बाद आब डिजाइनक आपसमे लिपि परिवर्तन सन प्रयोग सम्भव भय गेल।

मैथिलीक अष्टम सूचीमे गेलाक बाद संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ सरकारी कार्यमे मैथिलीक प्रयोग लेल केन्द्र सरकार मात्र देवनागरीक अनुमति देने अछि। पहिने देवनागरी, तिरहुता, बांग्ला, तमिल आदि लिपिमे संस्कृत लिखाइत छलै, मुदा आब सरकार मात्र देवनागरीमे संस्कृत लिखबाक आदेश देलक अछि। ओना बिहार-झारखण्ड आदिमे अखनो सांकेतिक रूपमे स्कूल, कॉलेजक परीक्षामे आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली अहाँ देवनागरी वा तिरहुतामे लिखि सकै छी। केन्द्र सरकार संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ अन्य कार्य लेल संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, मराठी, कोंकणी, डोगरी, बोडो आ नेपाली कैँ देवनागरीमे; संथालीकेँ ओल-चिकी वा देवनागरीमे; सिन्धीकेँ अरबी वा देवनागरीमे; उर्दू आ काश्मीरीकेँ फारसी लिपिमे; मणिपुरी आ बांग्लाकेँ बांग्ला लिपिमे लिखबाक आदेश देने अछि। असमी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल, तेलुगु अपन-अपन अही नमक लिपिमे लिखल जायत आ पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपिमे लिखल जायत।

आब फेर तिरहुताक विकास दिस घुमैत छी। गुप्त साम्राज्यक पतन धरि पुबरिया लिपिक आरि-धूरि प्रयागक लग-पासक इलाका रहय जे आठम शताब्दीमे काशी पहुँचि गेलैक। १२म शताब्दीसँ-१४म शताब्दी धरि मगधमे पुबरियो प्रकारक प्रचलन रहलै, जकर बाद ओहि इलाकामे मात्र नागरीक प्रचलन रहल। १४म शताब्दीमे १३२६ मे पञ्जी लिखेनाइ शुरू भेल आ मुस्लिम आक्रमणक बाद तिरहुताक विकास पूर्ण रूपसँ ठमकि गेल आ ओ ओहि कालमे जाहि रूपमे रहय तही रूपमे २०म शताब्दी धरि रहल।

<u>तिरहुता लिपिक १३२६ ई. धरि क्रमिक विकास आ अन्तिम स्वरूपक प्राप्ति</u>

अशोकक प्रयाग आ रामपुरवा, मठिआ, पहेरिया, निग्लीव, राधिया, सारनाथ स्तम्भ लेख सभमे एकरूपता अछि, एकरा ब्राह्मीक उत्तरवर्ती उत्तर-पूर्वी प्रकार कहल जा सकैत अछि।

उत्तर-पूर्वी प्रकारमे किछु विशेषता अछि। "ख" केर नव रूप भेटबामे अबैत अछि। बोधगयाक एकटा अभिलेखमे "ख" केर आधार त्रिभुजक आकारक अछि। नव-मौर्य काल, जे अशोकक परवर्ती कालक अछि, मे "च" मे दू टा घुमघुमौआ आकृति लम्बवत रेखाक दुहू दिस बनैत अछि, मुदा दुनू घुमाव एक आकारक नहि अछि, छोट-पैघ अछि आ ताहि कारणसँ वृत्त नहि बनि पबैत अछि। महाबोधि मन्दिरक रेलिंग- बुद्ध परिक्रमा- मे अभिलेख सभाछि जाहि मे "य" आ "ज" उत्तर भारतीय प्रकारक अछि आ "ल" लटपटौआ अछि। जौगड़क फराक पाथर-अभिलेखमे मुदा बड्ड लटपटाकेँ लेखल गेल अछि जे बादमे पूर्व गुप्त अभिलेख (४म-५म शताब्दी) क पुबरिया प्रकारमे आर पुष्ट भेल। जौगड़मे "ह" केर लटपटौआ प्रकार बादमे पुबरिया प्रकारमे देखल जाइत अछि।

उत्तर-मौर्य कालक ब्राह्मीक परवर्ती अक्षर प्रकार

दशरथक नागार्जुनी खोह अभिलेख उत्तर-पूर्वी प्रकारक अछि आ तकर बाद महाबोधि मन्दिरक रेलिंग (परिक्रमा) क स्तम्भ सभपर अभिलेखमे ई सेहो देखाइत अछि।

नागार्जुनी खोह अभिलेखक लटपटौआ "ल" दर्शनीय अछि। "श" कलसी अभिलेखसँ मेल खाइए आ पुबरिया घुमौआ "श" क ई पूर्व रूप अछि (४म-५म शताब्दी) । "स" सेहो परिवर्तित अछि, उपरक नोकशी नमहर भऽ कनेक झुकि कऽ दोसर पाँति सनबनैत अछि।

महाबोधि मन्दिरक रेलिंग दशरथक नागार्जुनी खोहक५० बर्ख बादक अछि। एहिमे "क" कटार सनाछि, "ग" दू प्रकारक अछि- लटपटौआ आ कोणाकार, "प" मे बेस परिवर्तन अछि आ दूटा समकोण स्पष्ट देखाइ दैत अछि। "म" सेहो दू तरहक अछि, पहिल प्रकारमे वृत्त नीचाँ आ अर्धवृत्त ओकर ऊपर अछि, दोसर प्रकारमे त्रिभुज नीचाँ आ समकोण ओकर ऊपर अछि। "र" वक्र पाँतिक रूपमे अछि। "व" मे नीचाँ दिस वृत्तक स्थान त्रिभुज लऽ लेने अछि। "स" दू प्रकारक अछि, पहिल वामदिस कने वक्र, निचुलका नोकशी नीचाँ दिस आ दोसर मौर्यकाल सन जतय निचुलका नोकशी कने नम्हर रहैत छल। "ह" बड्ड लटपटौआ अछि जे उत्तर भारतक पूर्वी भागक ब्राह्मीक स्वरूप छल।

उत्तर-पच्छिमक (०१ ई. पू.-०२ ई. पू.) प्रकारसँ कोनो अन्तर नहि अछि। लम्ब रेखा कने छोट भेल अछि, वक्र रेखा सभ कलाकारीककारण कोणीय भेल अछि। जँ स्वर शब्दक बीचमे अबैत अछि तँ मौर्यकालक कोणीय प्रकार लटपटौआ स्वरूप लय लैत अछि।

कुषाण अभिलेख

ब्राह्मी लिपिक उत्तर भारतीय प्रकारक पूर्वी प्रकार बोधगयाक महाबोधि गाछक नीचाँमे राखल पाथरमे प्राप्त होइत अछि। "प" केर उर्ध्वाधर रेखा छोट भेल अछि, "म" मे निचुलका भागक त्रिभुज आकार पूर्व कुषाण स्वरूपसन अछि। "श" कोणीय अछि आ एहिमे क्षैतिज रेखा वाम लम्बवत पाँतिकेँ छू नहि सकल अछि। साहेत-माहेत क बोधिसत्त्वक आकृतिपर लटपटौआ "ह" अछि आ आनठाम कोणीय "ह" । "स" मे पछुलका भाग चाकर अछि। "य" कखनो-काल अधोलिखित अछि आ एहिमे तीन फाँड़ अछि।

गुप्त युगक प्रारम्भ (४म- ५म शताब्दी)

पूर्व प्रकार "ल", "ह", "ष" आ "स" मे स्पष्ट अछि। एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त-२ क उदयगिरि खोहाभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा भांगल अभिलेख, कुमारगुप्त-१ क धनैदाहा अनुदान-पत्र, कुमारगुप्त-१ क मानकुँवर अभिलेख, स्कन्दगुप्तक बिहार स्तम्भ अभिलेख, भीमवर्मनक कोसम आकृति अभिलेख आ स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख।

लिपिक प्रकारक अन्तर कोना पकड़ी?

उत्तर भारतक प्रकार आ दक्षिण भारतक प्रकार (नागरी सहितमे) अन्तर "म" अक्षरपर ध्यान देलासँ आ उत्तर भारतक पूर्वी आ पश्चिमी प्रकारमे "ष", "ल" आ "ह" पर ध्यान देलासँ लिपिक कलाकारीमे भिन्नता पकड़ाइत अछि।

तिरहुताक स्वरूप एहि तरहेँ पूर्वी प्रकारसँ बहार भेल। "ल"-एकर वाम भाग सोझे-सोझ नीचाँ दिस खसैत अछि। "ष" केर आधार कलाकार गोल बनेने छथि आ कनछियाह बिचुलका रेखासँ घुमाकय मिलेने छथि। "ह" केर आधार थकुचि कऽ छोट कयल गेल अछि

आ ओकर नोकशी लम्बवत रेखामे मिला कऽ वाम दिस घुमाओल गेल अछि। “स” मे हरदम एकर वाम लम्बवर रेखाक अन्तमे घुमाव रहैत अछि, जे पहिने वक्र वा नोकशी सन रहैत छल। ई कुषाण कालक मथुरामे सेहो भेटल अछि। समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति पूर्वक प्रकारक मानक रूप अछि।

तिरहुता भारतीय लिपिक तंत्र सिद्धांत

बिन्दु, त्रिकोण, वृत्त आ चतुष्कोणक प्रयोगसँ कलाकार तंत्र-मंत्र कय सकल होथि से सम्भव नहि मुदा तिरहुताक अक्षरकेँ सुन्दर बनेबामे ओ अवश्य सफल भेलाह।

ब्राह्मीक उत्तरवर्ती पूर्व प्रकार (५५० ई. सँ ११०० ई.)

बुहलर (बूलर) एहि कालक लिपिकेँ सिद्धमातृका कहैत छथि।

५५० ई.-६५० ई.

एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- नन्दनक अमौना अनुदान अभिलेख, शिवराजक पटियाकेला अनुदान अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर खोह अभिलेख, अनन्तवर्मनक नागार्जुनी खोह अभिलेख। मुख्य परिवर्तन जे तिरहुता दिस भेल ओ अछि:

-तीन फेँड़ बला “य”;

-“घ”, “प”, “फ”, “ष”, “स” केर नीचाँ दिस समकोणीय प्रवृत्ति संगे एहि सभ चेन्हमे दहिन दिस पुच्छी वा लम्ब जे पछबरिया प्रकारमे विकसित भेल तकर अभाव।

६५० ई. सँ ७०० ई.

-“अ” केर वाम अंगक उपरका भागक कनेक नमगर भय गेल काँटीक नोक (v अक्षर) जकाँ, निचुलका भाग वक्र बनि गेल आ माथपर बट्टम सन चेन्ह अर्द्धविराम सन

“आ”- दोसर वक्रमे अन्तर अर्द्धविराम सन, दहिन अंगक निचुलका भागसँ जुड़ल

“इ”- गुप्त कालक लिपिक पश्चिम प्रकार जे बिन्दु वा निचुलका वृत्त सन छलै से पैघ वक्रमे विकसित भय गेल

“उ”- निचुलका भागक क्षैतिज रेखा वक्रमे परिवर्तित भय गेल आ नमगर भय गेल आ अही रूपमे १०म शताब्दी धरि रहल आ तखनजा कय अन्तिम रूपसँ विकसित भेल

“ओ”- नमगर अर्धविराम पाँछा दिस चौरस भय गेल

“क”- पहिल बेर वाम दिस सदैव घुमाव रहय लागल, ई घुमाव ११म शताब्दीमे अर्धवृत्त बनि गेल

“ख”- अक्षरक आधारमे त्रिभुज आकृति बनल फेर ई सोझ रेखा बनल आ फेर घुमि गेल, त्रिभुजक एक भुजा अर्धवृत्त बनि गेल आ दोसर नमगर भय गेल आ वृत्तक दुनू चापकेँ छूलक।

“ग”- आधार रेखाक वक्रता प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल। ६अम शताब्दीक यशोधर्मन अभिलेखक आधार रेखा वामदिस घुमि गेल आ दहिन दिस टेढ़ भय गेल आ दहिन लम्बसँ न्यून कोण बनेलक।

“ङ”- निचुला दहिन दिसुका कोण न्यूनकोण बनि गेल आ लम्बवत सोझ रेखा गोलाइ लय लेलक

“च”- गुप्त कालक दुनू गोलाइ त्रिभुज बनि गेल जे “वी” आकार ऊपरमे लेलक, आधार रेखा वा निचुलका रेखा वाम दिस कने नमगर भय गेल।

“छ”- कोनो अन्तर नहि।

“ज”- पुबरिया प्रकारमे निचुलका प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ क्षैतिज आकार स्पष्ट छल आब लम्बवत रेखामे सेहो स्पष्ट रूपसँ गोलाइ देखाइ पड़य लागल। बिचुलका नव क्षैतिज ओतबी घुमि गेल जतेक निचुलका आधार रेखा छल। उपरका क्षैतिज रेखाक दहिन दिस “वी” आकार जुड़ि गेल।

“ञ”- कनेक लटपटौआ

“ट”- पछबरिया प्रकारसँ बेस अन्तर आबि गेल। खुजल गोलाइ आ “वी” आकृति ओहि गोलाइक उपरका भाग पर क्षैतिज रूपमे राखि देल गेल।

“घ”- आधार रेखाक गोलाइ प्रारम्भिक गुप्त कालक पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल, आब ई तीन फैँड़बला “य” सन बनि गेल।

“ठ”- पूर्वकालक मौर्य प्रकार अखनो प्रयुक्त होइत रहल।

“ड”- दूटा छोट गोलाइ बनि गेल।

“ढ”- कोण गोलाइ लय लेलक।

“ण”- आधार रेखा टेढ़ भय गेल आ ओ निचुलका भागक दहिन दिस न्यून कोण बनेलक आ वाम नोकशी नमगर भय गेल।

“त”- गुप्त कालहिमे दहिन अंगक निचुलका भाग नमगर भय गेल रहय, ई कने गोलाइ लय लेलक आ एकटा “वी” आकार ऊपरमे बनि गेल।

“थ”- उपरका भाग चकराइ लय लेलक।

“ध”- छोट चाप अर्द्ध-वृत्त मे बदलि गेल।

“न”- प्रारम्भिक गुप कालक गोलाइ बला रूप बदलि कय आधुनिक नागरी रूप लय लेलक। गोलाइ मुख्य भागसँ फराक भय गेल आ मुख्य भागसँ एकटा छोट क्षैतिज रेखासँ मिलि गेल आ कने छोट सेहो भय गेल।

“प”- कनेक आर बेशी लटपटौआ आकार लेलक आ न्यून कोण आर स्पष्ट भय गेल।

“ब”- “ब” केर स्थान “व” लय लेलक।

“भ”- “भ” आ “ह” केर बीच अन्तर खतम भय गेल, पछबरिया प्रकार मे ई पहिनहिये भय गेल छल।

“म”- न्यून कोण आर तीक्ष्ण भय गेल आ तकर परिणाम भेल जे दहिना अंग नीचाँ दिस बढ़ि गेल।

“य”- “य” दू प्रकारक, पहिल दू फैँड़बला, एकर निचुलका हीसमे न्यूनकोण बनैत अछि आ दोसर प्रकारमे न्यूनकोण ओतेक स्पष्ट नहि अछि मुदा दहिन भागक अंग नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल अछि।

“र”- निचुलका छोरपर “वी” वा तीरक आकृतिक जे पहिलुक्का अभिलेख सभक पछबरिया प्रकारमे सेहो छल। ई “ड” केर छोट रूपसँ मिलानी खाइत अछि।

“ल” दू प्रकारक अछि। पहिल प्रकारमे वाम अंगक वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल अछि आ सभसँ नीचाँ जा कय कनिये बाहर दिस वक्र रूप लैत अछि। दोसर प्रकारमे वाम अंगक वक्रपर नोकशी अछि जे नमगर भऽ कऽ नीचाँ जेबाक बदला आन्तरिक आकार लैत अछि। ई मोटा-मोटी आजुक तिरहुता आ देवनागरी सन भऽ जाइत अछि।

“व”- एतय ओही तरहक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि जेना “ख” केर आधारमे त्रिभुज बनैत अछि। त्रिभुजक दुनू भुजा वक्र बनि जाइत अछि, तेसर नमगर भऽ जाइत अछि। अक्षर ऊपर “वी” आकार बनैत अछि।

“श”- अक्षरक उपरका भाग पूर्व गुप्त कालमे वक्र छल, आब जा कऽ उपरका भाग वक्रक रूप लैत अछि, निचुलका दहिन अंग ऊपर दिस नमगर भेल अछि।

“ष”- ई तीन प्रकारक अछि- पहिल प्रकारमे रूप वक्रित अछि, दोसर प्रकारमे वक्र फोंक “वी” आकृतिक रूप लैत अछि, तेसर प्रकारमे “वी” आकृतिक उपरका भाग फराक भऽ जाइत अछि आ “वी” आकृति नहि रहि जाइत अछि (ई प्रकार भेटैत अछि ६अम सँ ९अम शताब्दीक उत्तर-पूर्वी अभिलेख सभमे) ।

“ह”- अक्षरक दहिन अंगमे वक्र आ नोकशीक नमगर होयब आ शीर्षपर “वी” आकृति (ढबकल सन) आ अखनि धरिक क्षैतिज आधाररेखा कने टेढ़ भऽ जाइत अछि।

आठम शताब्दी

एहि कालक मुख्य अभिलेख जाहिमे ब्राह्मीक उत्तरकालक पुबरिया रूप फराक होइत अछि-

जीवितगुप्त २ केर देव-बार्नार्क स्तम्भ लेख, धर्मपालक खलीलपुर अनुदान पत्र आ धर्मपालक समयक बोधगया आकृति अभिलेख।

मुख्य बिन्दु अछि।

स्वर- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

क, ग, च, ज, ट, ठ, ड, द, ध, न, भ, म, य, ह- कोनो परिवर्तन नहि भेल।

ण- दहिन वक्र वा नोकशी नीचाँ दिस नमगर भेल।

त- नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल, निचुलका छोरपर बड्ड छोट वक्र।

“थ”- “वी” आकृतिक छोरक नमगर भेलासँ उपरका भाग चकरगर भेल।

“प” दू प्रकारक- पुरनका रूप जाहिमे न्यूनकोण अखनो स्पष्ट अछि। नवका रूपमे न्यूनकोण उपस्थित तँ अछि मुदा स्पष्ट नहि अछि आ एकर स्थान नीचाँ दिसुका दहिन लम्ब रेखा लऽ लेने अछि।

“ल”- न्यूनकोण बड्ड छोट भऽ गेल अछिआ दहिन लम्ब रेखा नीचाँ दिस चल गेल अछि।

“श”- ई दू प्रकारक अछि। पूर्व रूप वक्र संग अछि। बादक रूप ९अम शताब्दीक दिघवा-दुभौली अनुदान सन अछि।

“ष”- वाम अंगक निचुलका भाग लटपटौआ अछि आ वाम भागक लम्ब सँ आगाँ चलि जाइत अछि।

अफसड़ अभिलेखमे सभ ठाम दन्त “स” केर प्रयोग भेल अछि।

धर्मपालक बोधगया अभिलेख

“श” तीन प्रकारक अछि- पहिल प्राचीन रूप जाहिमे उपरका भाग गोलाइ लेने अछि। बादक रूप बिन डण्टाक अछि। एकटा बिचुलका रूप अछि जाहिमे डण्टा सन आकृति छै, मुदा ओ न्यूनकोणकेँ दक्षिण उर्ध्वाधर रेखाक बदलामे नीचाँमे छुबैत अछि।

“ज” मे उपरका क्षैतिज रेखा बिला जाइत अछि आ “वी” आकृति ओकर बदलामे आबि जाइत अछि। बिचुलका क्षैतिज रेखा एकटा वक्र अछि।

“न” दू प्रकारक- पुरनका प्रकार फानी सन छल। आब ई गुप्त आ तिरहुताक बीचबला आकार लऽ लैत अछि।

“ण”- आधार रेखा बिला जाइत अछि।

“ह”- निचुलका दिसुका न्यूणकोण बेसी स्पष्ट भऽ जाइत अछि।

धर्मपालक बाद देवपालक अन्तर्गत तिरहुत प्रदेश रहल। मुदा तकर बाद गुर्जर-प्रतिहार सम्राट तिरहुत छीनि लेलनि, बिग्रहपाल -१ आ नारायणपाल क शासनकालमे।

ब्राह्मीक परवर्ती पुबरिया प्रकार (९अम शताब्दी सी. ई.)

एहि सभमे ई सभ मुख्य प्रकार अछि:

१. देवपालक मुंगेर अनुदान पत्र

२. देवपालक समयक घोसरवा अभिलेख

३. नारायणपालक बादल स्तम्भ अभिलेख

४. नारायणपालक विष्णुपाद मन्दिर अभिलेख

५. नारायणपालक भागलपुर अनुदानपत्र

६. महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान-पत्र

७. महेन्द्रपालक रामाझा अभिलेख

घोसरवा अभिलेख

अ/आ- उपरका भाग अखनो पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल अछि।

इ- दूटा वृत्त वा बिन्दु ऊपरमे आ काटबला वक्र नीचाँमे।

ई-समकोण त्रिभुजक रूप लऽ लेने अछि।

ख- अखनो वाम अंगक नीचाँ दिस "वी" आकृति लेनहिये अछि।

च- चकराइ बढ़ि गेल।

ज- पुरातन रूप- बिचुलका क्षैतिज रेखा कने नीचाँ दिस टेढ़ भेल आ निचुलका क्षैतिज रेखा एकटा छोट वक्रमे खतम होइत अछि।

ट/ ठ केर दहिन अंग नहि देखाइ पड़ैत अछि।

ण- आधार रेखा पूरा-पूरी खतम भऽ गेल।

थ- उपरका भाग चाकर भऽ गेल।

द/ ध- निचुलका रेखा नीचाँ दिस वक्र भऽ गेल अछि।

न- फानी सन पूर गुप्त काल आ तिरहुताक बीचक रूप। फानी अक्षरक मुख्य अंगसँ विलग भऽ गेल।

प- पुरातनरूप नीचा दिस कोनो वक्रता नहि। एकटा अधिक कोण आ एकटा नूनकोण बदलामे निचुलका भागमे दूटा समकोण बनि जाइत अछि।

भ-नीचाँ दिस टेढ़

म- फानी अखनो नहि बनल अछि।

य- न्यूनकोण चपा गेल अछि आ तिरहुता स्वरूप प्राप्त कऽ लेने अछि।

ल- आधाररेखा पूरा-पूरी दबि गेल अछि।

व- न्यूनकोणक बदलामे दहिन उर्ध्वाधर सोझ रेखाक नमगर रूप आबि गेल।

ष- उपरका रेखा टेढ़ भऽ गेल।

स- आधार रेखा फेर क्षैतिज भऽ गेल आ उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ भऽ गेल।

ह- पुरातन रूप, न्यूनकोण अखनो दोसर निचुलका रेखा नहि बनल अछि।

विष्णुपद मन्दिर अभिलेख

"इ" दू प्रकारक- पहिल प्रकारमे दूटा वृत्त ऊपरमे आ एकटा कटाव नीचाँमे। दोसर प्रकारमे ऊपरमे एकटा छोट क्षैतिज रेखा आ दूटा वृत्त नीचाँमे।

"ख" तिरहुताक आकारक रूप लऽ लेने अछि।

"घ" अखनो नीचाँमे न्यूनकोण बनेने अछि।

"ट"- दहिन दिसुका उर्ध्वाधर सोझ रेखा पूरा-पूरी बिला गेल।

"ठ"- अखनो पुरने रूप अछि।

"प"- दू प्रकारक। पुरनका रूप जतऽ कोण अखनो अछिये। दोसर रूपमे तिरहुताक लटपटौआ रूप।

“म”- आधार रेखा विलुप्त भऽ गेल।

“श” आ “ष” क रूप फानीबला आ अखुनका रूपक बीचबला रूप लेने अछि।

नारायणपालक भागलपुर अनुदान

अ/ आ- पूरापूरी तिरहुता रूप, एतय धरि जे छोटका रेखा जे दहिना लम्ब रेखाक अर्द्धविराम रूपी कटावसँ मिलैत अछि, नीचाँ दिस टेढ़ भेल अछि।

“उ”- एहिमे एकटा उपरका रेखा बनैत अछि आ लम्बरूपी रेखावाम दिस वक्र भऽ जाइत अछि।

“क” केर त्रिभुज चाकर भऽ गेल अछि।

“ख” तिरहुता सन लटपटौआ भऽ गेल अछि।

“घ” मे न्यूनकोण खतम भऽ गेल आ तिरहुता केर आकार लऽ लेलक अछि।

“च”- उपरका भाग पातर भऽ गेल अछि।

“ज”- बिचुलका क्षैतिज भाग दू टा सोझ रेखामे बदलि गेल अछि आ अधिककोण बनबैत अछि।

“ट”- उपरका रेखाक दहिन छोरसँ नीचाँ दिस छोटका रेखा जाइत अछि।

“ण”- तिरहुता प्राचीन रूप। दूटा छोट रेखा लम्ब सोझ रेखाक वाम दिस जा कऽ मिलैत अछि।

“त”- ई बदलि गेल अछि, एहिमे एकटा उपरका रेखा आ एकटा लम्ब रेखा समकोण पर अछि संगहि एकटा वक्र लम्ब रेखाक वाम दिस जुड़ि गेल अछि, जेना नागरीमे अछि।

“थ”- तिरहुता सन उपरका वक्र खुजि गेल अछि।

“ध”- उपरा भाग खुजि गेल अछि।

“न”- पुरातन फानीबला रूप, फानी नीचाँ दिस झुकल।

“प”- उपरका दिस पातर भेल।

“फ”- उपरका कम चाकर भेल।

“म”- सभरूप फाने सन।

“ल”- अन्तिम रूपसँ आधार रेखा थकुचा गेल अछि।

“श”- सभ प्रकार फानी सन।

“ष”- पुरातन रूप, उपरका आ निचुलका भाग बराबर, दोसर मे उपरका भाग कम चाकर।

प्रतिहार नरेश महेन्द्रपालक दिघवा-दुभौली अनुदान (गोपालगंज)

एहिमे पुबरिया प्रकारक विशेषता भेटैत अछि जेना च पतरा गेल, ज लटपटा गेल, थ- तिरहुताक पूर्व रूप बुझाइत अछि, फानीबला “म” अछि, “श” मे फानी लम्ब रेखासँ मिज्झर होइत अछि, “ष” मे उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ होइत अछि। ई अनुदान पूब आ पच्छिमक मिश्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।

१०म शताब्दीमे पैघ साम्राज्य सभ खतम होइत गेल आ तेँ अभिलेखो नहियेक बराबर अछि। नालन्दा आकृति अभिलेख एहि कालक अछि जाहिमे “भ” केर पुरान रूप देखबामे अबैत अछि। “श” केर परवर्ती रूप देखाइत अछि। बोधगया केर आकृति पर अभिलेखमे सेहो भ केर पुरान रूप भेटैत अछि आ श केर परवर्ती रूप सेहो। ख केर रूप तिरहुता सन अछि।

तिरहुता लिपिक विकासक अन्तिम चरण

किछु लिपि जे अखन धरि नहि पढ़ जा सकल अछि

(१)- हड़प्पा लिपि

(२)- अलंकृत ब्राह्मी, भारतकसभ भागमे छोट-छोट अभिलेख एहि लिपिमे अछि, मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल।

(३)- शंख लिपि- एकर अक्षर सभ शंख सन अछि तैं एकर ई नामकरण भेल। ई सेहो मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल। (**कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि**।)

(४)- ब्राह्मी सन एकटा लिपि जे माटिक मोहर सभपर पूर्व भारतक चन्द्रकेतुगढ़ आ तामलुकसँ भेटल्; अ अछि।

(५)- खरोष्ठी सन दहिनसँ वाम लिखल जायवला एकटा लिपि जे अफगानिस्तानसँ भेटल अछि।

तिरहुताक विकासक अन्तिम चरण

किछु अक्षर पहिने तिरहुताक रूप लऽ लेलक तँ किछु कने बाद। किछु अभिलेखमे किछु अक्षरक प्रयोगे नहि भेल। अनुलग्नक-५ मे तिरहुता रूपक क्रमिक स्थिति देखाओल गेल अछि। कैथी, तिब्बती आ देवनागरी लिपि अही तरहेँ अपन वर्तमान रूपमे आओल जे अनुलग्नकमे देखाओल गेल अछि। किछु विद्वान हर्षवर्द्धनक बादक समयमे ओकर तिरहुतक मंत्री अर्जुन द्वारा कन्नौजक राजा बनब आ तिब्बतक बौद्ध यात्री सभकेँ तंग करबाक चर्चा केने छथि आ प्रत्युत्तरमे तिरहुत पर तिब्बतक कब्जाक चर्चा करैत छथि। आधुनिक विद्वान ओहि पर शंका व्यक्त करैत छथि। तिब्बतक राजनैतिक प्रभुत्वपर तँ शंका अछि मुदा सांस्कृतिक रूपसँ निम्न तथ्य तिब्बतक वज्रयानक मिथिलामे उपस्थिति देखबैत अछि। बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर, उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा। मुसहरनियां डीह-अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली नाहर भगवतीपुर भुवनेश्वरी मन्दिर (मधुबनी) मे सेहो अछि, प्रायः बौद्ध भिक्षु लोकनिक ई तपस्या स्थली होयत। फेर बौद्ध सिद्ध सरहपाद जे लिखै छथि- सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ। ओ सिद्धिरस्तु आ एहि विचार कि माँड़ पीने बुद्धि मन्द होइत अछि दुनूक चर्च करैत छथि जाहिसँ हुनकर बौद्ध धर्मक मैथिल होयबाक प्रमाण भेटैत अछि, हुनकर जे फोटो तिब्बतसँ भेटैत अछि ओहिमे हुनकर फोटोक नीचाँमे तिब्बती लिपिमे वर्णन अछि।

७म शताब्दी आ बादक किछु तिरहुता अभिलेख

अन्ध्राठाढी अभिलेख (श्रीधरदासक आंध्रा-ठाढ़ी अभिलेख), मधुबनी, बुद्धमूर्ति अभिलेख (कोर्थु), विष्णुमूर्ति अभिलेख (लदहो), १२म शताब्दीक सिमरौनागढ़क तिरहुता पाथर-अभिलेख, १९म शतीक ब्रह्मपुरा शिलालेखमे तिरहुताक आदर्श रूप, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीचक गौरीशंकर स्थान, गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख, बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि, ताहि युगक तिरहुताक अभिलेख। मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे तिरहुताक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। पौराणिक कथामे समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि। बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर (जिला अररिया) लग तिरहुताक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र' एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि। बाइसी-बसैटी, अररिया तिरहुता ताम्रपत्र- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि, जे कारी रंग सँ पेंट कऽ देल गेल अछि आ शिलालेख सन लगैत अछि।

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति २०१९ ई. मे प्रकाशित अपन आलेखमे निम्न तिरहुता अभिलेख सभक वर्णन दैत छथि जे अखन धरि कोनो पोथीमे नहि आयल छल। चेचर गाम (वैशाली) मे बुद्ध मूर्तिपर अभिलेख भेटल अछि जे तिरहुता लिपि आ संस्कृतमे अछि (९अम शताब्दी) । तारा मूर्ति, जगतपुर बरुआरी (सुपौल) जे सहरसा म्यूजियममे राखल अछि, तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख एततसँ भेटल अछि (१० म शताब्दीक) । तारा मूर्ति, दभैछा (वैशाली) मे तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख भेटल अछि (१० म शताब्दीक) । पिपरौलिया विष्णु आकृति (मूर्ति), दरभंगा, तिरहुता लिपि. संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी) । गाम- भच्छी (बहेरी लगक जिला दरभंगा, मधुबनीक भच्छीसँ भिन्न), तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म-११म शताब्दी) । कण्दाहा (सहरसा) क

पाथर अभिलेख, ओइनवार कालक राजा नरसिम्हदेवक आदेशसँ वंशधर ब्राह्मण द्वारा (तिरहुता १५मशताब्दी, भाषा संस्कृत) । मनसा आकृति (भैरवस्थान, मुजफ्फरपुर)- तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषामे लिखल अभिलेख (१५ म शताब्दी) । बुद्ध मूर्ति, कोर्थु दरभंगा, तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी) । एकर अतिरिक्त ओ पहिल शताब्दीक एकटा ब्राह्मी अभिलेखक चर्च सेहो करैत छथि [गाम पखौली जिला वैशाली (स्तम्भ अभिलेख) (ब्राह्मी लिपि, पहिल शताब्दी)] । तीनटा अशोक स्तम्भपर, जे कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर) मे भेटल अछि, बादमे कियो अभिलेख खचित केने छथि। ओहिमे दूटा अभिलेख ७म शताब्दीक अछि जे नागरी लिपि आ संस्कृत भाषामे अछि आ तेसर ५म शताब्दीक अछि जे संस्कृत भाषामे आ ब्राह्मी लिपिमे अछि। कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि, जे अखन धरि नहि पढ़ल जा सकल अछि। (*जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०११ ई.*)

मान्दा अभिलेख, कमौली दानपत्र (विद्यादेव कमौली प्रशस्ति), गदाधर मन्दिर अभिलेख (गदाधर मठ गया), गंजम ताम्रपत्र, लोकनाथक दानपत्र, भागलपुर, मुंगेर आ नालन्दाक दानपत्र, बादल स्तम्भ अभिलेख, विश्वरूप सेनक मदनपाद दानपत्र, अशोकाचलक बोधगया अभिलेख, वल्लालसेनक नैहाटी अभिलेख, ढाका अभिलेख (ढाका मूर्ति अभिलेख), देवपारा प्रशस्ति, अनुलिया आ साहित्य परिषद दानपत्र, भुवनेश्वर, सुन्दरवन, वेलवा आ बोधगया अभिलेख क्रमसँ देवनागरी आ तिरहुताक बीचमे फाँक आनि देलक।

उपसंहार

तेसर शताब्दी ई. पू. मौर्य, दोसर आ पहिल शताब्दी ई. पू. शुंग, पहिल सँ तेसर शताब्दी शक/ कुषाण, चारिमसँ छअम शताब्दी- गुप्त, सातमसँ ९अम शताब्दी सिद्धमातृका आ तकर बाद तिरहुता, एहि क्रममे तिरहुताक विकास हम देखि सकैत छी। तंत्रक योगदानसँ आ तिब्बती लिपिक प्रभावसँ तिरहुता अलंकृत भेल। मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास मे राजेश्वर झा जी किछु पुरातन तथ्यसँ अपनाकेँ दूर नहि कऽ सकला, जेना ओ नहि फरिछा सकला जे ब्रह्मी पूर्व पाणिनी व्याकरणाचार्य लोकनि द्वारा प्रयुक्त होइत छल आ पाणिनीक व्याकरणमे ओ अशुद्ध भऽ गेल आ तखनसँ एकर नाम ब्राह्मी भऽ गेल। ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा प्रयुक्त हेबाक कारणे ब्रह्मी नाम भेलपर जिदियायल छथि। हुनकर अवधारणा जे वैदेही लिपिसँ ब्राह्मी (जकरा ओ ब्रह्मी लिखै छथि) बहरायल सेहो भ्रामक अछि। मिथिलामे शंख लिपिमे सेहो छोट-छीन अभिलेख भेटल अछि, जकर वर्णन ऊपर कयल गेल अछि, जे हड़प्पा लिपि जेकाँ पढ़ल नहि जा सकल अछि आ ब्राह्मीमे सेहो अभिलेख भेटल अछि, से हुनकर कथन जे सोझे हड़प्पासँ लोक विदेह आयल विदेघ माथवक संग (शतपथ ब्राह्मण) आ एतऽ वैदेही लिपि शुरू कऽ देलक, से मान्य नहि अछि। से सगर भारतमे जे परम्परा छल जे ब्राह्मीमे पैघ अभिलेख लिखल जाइत छल आ नाम आ हस्ताक्षर लेल शंख लिपिक प्रयोग कएल जाइत छल से मिथिलोमे भेटल अछि। राजेश्वर झा तंत्र-सिद्धांत आ एकर तिरहुता लिपिपर प्रभावक सेहो जरूरति सँ बेशी प्रभाव देखेने छथि, जखन कि ओकर प्रभाव किछु सोझे आ किछु तिब्बती लिपिक माध्यमसँ पड़ल मुदा ओ ओहिसँ अलंकृत मात्र भेल। हुनकर ई कथन जे शब्दकल्पद्रुममे देल लिखबाक पद्धतिसँ बांग्ला लिपि नहि वरन् मात्र मिथिलाक्षर (तिरहुता) लिखल जा सकैत अछि, सेहो भ्रामक अछि। बांग्ला वा मिथिलाक्षर वा तिब्बती वा देवनागरी सभ ब्राह्मीपर आधारित अछि आ ई एहि तरहेँ बूझल सा सकैत अछि जे रोमन लिपिमे एकसँ एक फॉण्ट छै जे कखनो अहाँकेँ अरबी सन बुझायत कखनो लटपटौआ, आ सभ एक दोसरामे परिवर्तनीय अछि। शब्दकल्पद्रुममे देल विधि तिरहुते नहि बांग्लो लेल उपयुक्त छल, छापाखाना एलाक बाद जेना रोमन पूर्ण रूपसँ संयुक्ताक्षर खतम कऽ लेलक तहिना बांग्ला बहुत रास संयुक्ताक्षरकेँ खतम कऽ लेलक। आ ओहि नवका रूपकेँ राजेश्वर झा जी शब्दकल्पद्रुमसँ जोड़बाक गलती केलन्हि। राजेश्वर झाकेँ खरोष्ठी लिपिक सम्बन्धमे सेहो भ्रम छन्हि। खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिस लिखल जाइत अछि मुदा ई पूर्ण रूपसँ भारतीय लिपि छल, वएह स्वर व्यंजन (कचटतप) । ब्राह्मीसँ किछु चेन्ह कम भेलाक कारण, जखन अभिलेख प्राकृतसँ संस्कृतमे लिखल जाय लागल, खरोष्ठी संस्कृतक समासयुक्त अभिलेखक लेखन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल आ खतम भऽ गेल आ कोनो भारतीय लिप एहिसँ बहार नहि भऽ सकल।

आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपालक भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपालक दानपत्र, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेनक तर्पण निधि दानपत्र सँ विकसित होइत पक्षधर मिश्र कृत विष्णुपुराण आ १३२६ ई. सँ प्राप्त मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पञ्जीमे आबि कऽ समाप्त भऽ जाइत अछि। जे किछु छोट-मोट परिवर्तन लेखकक व्यक्तिगत लेखनीक कारण छल से छापाखाना एलाक बाद खतम भेल। रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) तिरहुतामे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केलन्हि। तकरा बाद कम्प्यूटर फॉण्टमे एकरूपता आबि गेल आ से सम्भव भेल देवनागरी यूनीकोड (मंगल), बांग्ला यूनीकोड (वृन्दा) आ तखन तिरहुता यूनीकोडकेँ आधार बनेलासँ। छापाखानामे दिक्कति रहै, जे किछु रूपकेँ ओतय छोड़य पड़ैत छलै, आ घोंघाउज होइत छल जे एहि तिरहुताकेँ सीखि कऽ पाण्डुलिपि नहि पढ़ल जा सकैए। कम्प्यूटरमे एक्के आधारपर विभिन्न फॉण्टक निर्माण भेलासँ

विभिन्न फॉण्ट विभिन्न तरहक लेखन रूपकेँ अंकित करैत अछि आ ओ सभ आपसमे परिवर्तनीय होइत अछि। से सभ १३२६ ई. क बादक सभ तरहक परिवर्तन (संयुक्ताक्षर सहित), जे परिवर्तन नहि वरन् लेखनक विभिन्न स्टाइल छल, क समावेश आब सम्भव भऽ गेल अछि।

अनुलग्नक १: कैथी लिपिमे मैथिलीक किछु उदाहरण (साभार जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध भाग-१ आ२, श्रुति प्रकाशन, २००८, २००९)

अनुलग्नक २: मिथिलाक कर्ण कायस्थक तिरहुता लिपिमे लिखल किछु पात (साभार मैथिल करण कायस्थक पाँजिक सर्वेक्षण- मेजर विनोद बिहारी वर्मा, १९७३)

अनुलग्नक ३: लर्न मिथिलाक्षर- गजेन्द्र ठाकुर

अनुलग्नक ४: देवनागरी: तिब्बती: तिरहुता

अनुलग्नक ५: ब्राह्मीसँ तिरहुता धरि लिपिक विकास

[अनुलग्नक एहि क्रममे देल अछि, अनुलग्नक-४ (एक पन्ना) फेर अनुलग्नक-५ आ तकरा बाद अनुलग्नक- १-२-३]

संदर्भ:

१. जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०११ ई.

२. हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४

3. A History of Ancient and Early Medieval India: From the Stone Age to the 12th Century (2009)

4. Buhler, J. G.: Indian Paleography

5. Cunningham, A.: Inscriptions of Ashoka, Cpoins of Ancient India

६. मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास- राजेश्वर झा, १९७१

मैथिली आ आन पुबरिया भाषा

मैथिली आ असमिया

मैथिली जकाँ असमियामे सेहो ह्रस्व इ दीर्घ ई, आ ह्रस्व उ दीर्घ ऊ केर उच्चारणमे कोनो खास अन्तर नहि होइत अछि। मुदा असमिया ऐ केर उच्चारण ओइ आ औ केर उच्चारण ओउ होइत अछि। पहिल तँ मैथिलीसँ भिन्न मुदा दोसर मैथिलीक समान।

मैथिलीमे जेना “अ” बाजल जाइत अछि असमियामे तेना “आ” बाजल जाइत अछि। असमियाक “अ” केर उच्चारण मैथिलीमे नहि अछि।

असमिया “च” आ “छ” मैथिलीक “स” सन बाजल जाइत अछि। असमियाक “ज” “झ” आ “य” मैथिलीक “ज” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो बहुत ठाम “य” केर उच्चारण “ज” सन होइत अछि।

असमियामे मूर्धन्य आ दन्त दुनू दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

ट. ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न एहि सभमे उच्चारणक दृष्टिसँ कोनो अन्तर नहि होइत अछि, सभटा दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

श, ष, स तीनू “स” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे “ष” कखनो काल “ख” सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो “श” आ “स” “स” सन उच्चरित होइत अछि।

“श” “ष” आ “स” “र” केर संग वा दू स्वरक बीचमे रहला पर एकटा तेसरे ढंगसँ उच्चरित होइत अछि, जकर समान मैथिलीमे कोनो उच्चारण नहि अछि।

असमियामे “जँ संयुक्ताक्षरसँ शब्दक अंत होइत अछि तँ ओ अकारान्त उच्चरित होइत अछि। माने “ञ” केर उच्चारण “न” सन होइत अछि।

मैथिली

असमिया

ऐ (अइ)

एइ

चाह

साह

हमर

मोर

कनियाँ

परिवार

परिवार

संसार

बहीन

मनी

जलखै/ जलपान

जलपान

दही

दोइ

नारिकेलक लड्डू (लड़ू)

नारिकलर लारू

सुआद (सोआद)

सोआद

नीक (भल)

भाल

बेस (बड्ड)

बेस

खाउ

खाओक

लिअ

लओक

जाउ

जाओक

करू

करक

अपने

आपुनि

करबाक/ करू (करक)

करक

जएबाक (जाउ)

जाओक

अहाँ

आहा

धानक

धानर

दिअ

दियक

दे

दे

बाड़ीमे

बाड़ीत

औषध

औसध

नेबू (नेबो)

नेमु

कथा (गप)

कथा

एक बेर

एबार

दुइ

दुइ

चारि

सारि

मते (अनुसारे)

मते

लगाति

लगत

खेनाइ

खा

तूँ (पुरातन-तोइ)

तोइ

आइ-काल्हि

आजिकालि

करह

कर्अ

कतऽ

कोत

नहि (नइँ)

नाइ

चाहक पात

साह पात

बाँस

बाँह

नोकसान

लोकसान

बौस्तु

बस्तु

आनौं (आनी)

आनौं

करौं (करी)

करौं

लिखौं (लिखू)

लिखौं

एक बेर

एबार

आबह

आह

टाका-पाइ (पइसा)

टका-पइसा

के

कोन

परिवार

परियाल

छौरा

लोरा

रखलौं

राखिसों

◌र्ाति

राति

बजे

बजात

प्रायः

प्राय

भाराक घर

भाराघर

डेढ़ हजार

डेर हेजार

बेसी

बेसि

पचास

पसास

हाथी

हाँती

हरिण

हरिणा

पोखरि

पुखुरि

असमियामे कोनो शब्द पर जोर देबाले –-हे जोड़ि कऽ बाजल जाइत अछि। असमियामे –जनी स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय तँ –-जन पुल्लिंग वाचक प्रत्यय अछि।

असमियामे बहुवचन बनबै लेल तीन प्रकारक विभक्ति लगैत अछि। "तुमि", "तेओँ", "आपुनि" क संग -लोक, तुच्छार्थबोधक विशेष्य पदक संग -बोर, "तइ", "सि", "एइ", "ताइ" सर्वनाम आ संबंधवाचक विशेष्य पदक संग "हैंत" क प्रयोग होइत अछि।

एकवचन

बहुवचन

तुमि

तोमालोक

आपुनि

आपोनालोक

तेओ

तेओंलोक

तइ

तहँत

सि

सिहँत

एइ

एइहँत

ताइ

ताइहँत/ सिहँत

लोरा

लोराबोर

किताप

कितापबोर

घर

घरबोर

असमियामे “ई”/“एकरा” लेल “एइ” आ “ओ”/” ओकरा” लेल “सेइ” प्रयुक्त होइत अछि। लागत/ पड़त लेल असमियामे लागिब प्रयुक्त होइत अछि।

असमियामे प्रश्नवाचक वाक्यमे जाहि शब्द पर बलदेबाक रहैत छैक ओहिमे –-नो जोड़ल जाइत छैक। धातुक संग –-ओवा जोड़ि कऽ भूतकाल वाचक विशेषणक निर्माण होइत अछि।

मूल धातुक संग –-आ जोड़ि कऽ क्रियावाची संज्ञा बनाओल जाइत अछि।

असमियामे कर्मवाच्यक क्रिया बनेबा लेल धातुमे –-आ जोड़ि कऽ आ फेर –-हय वा –-जाय केर प्रयोग कयल जाइत अछि।

मैथिली सन असमियामे सेहो क्रिया कालक अनुसार बदलैत अछि।

मैथिली आ बांग्ला

मैथिली

बांग्ला

अपने

आपनि

नै (नहि)

नय

छी

आछि/ छि

काज

काज

इनार

इनार

करै (करैत) छी

कोरेछि

गेल छलौं (छलहुँ)

गियेछिलाम

बाजू नै

बोलबेन ना

रान्हल

रान्ना

की

कि

संगे

शंगे

चाह

चा

दू टा

दुटो

ई सब

एशब

सिंघाड़ा

शिङाड़ा

कोन

कोन

हाथ

हात

अखन

ऐखोन

पाँचटा

पाँचटा

अच्छा

आच्छा

छथि

आछेन

छी

आछि

हुअय

आछो

करू

कोरून

चाही

चाइ

खोलै छी

खुलछि

कोनो

कोनो

बांग्ला “अ” ओड़िया सन “ओ” उच्चरित होइत अछि।

मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।

“न” आ “ण” केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे “ण” केर उच्चारण कखनो काल “ड़” होइत अछि (गणेश=गड़ेस) ।

व/ ब एके रङ “ब” (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।

आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो “आसिन” जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।

तहिना:-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि

बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि

अन्वेषण

अन्नेशन

श्वास

शाश

उच्छ्वास

उच्छास

अक्षर

अक्खोर

पद्म

पद्दो

विस्मय

बिश्शय

उज्जवल

उज्जल

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि

बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि

संस्हा

शंस्था

स्हान

स्थान

सुस्ह्

शुस्थो

असुस्ह्

अशुस्थो

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल –-तो जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे –-टा –-टि आ बहुवचनमे –-गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग –-टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा –-गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे “संग” आ “लेल” सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे –-देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद –-ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव –-इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे “अछि” केर नकारात्मक “नहि अछि” प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे “आछे” केर नकारात्मक लेल मात्र “नेइ” प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय –-च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातुव्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे –-छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

मैथिली

बांग्ला

हम अबै छी

आमि फिरिछि

हम जाइ छी

आमि जाच्छि

ओ सब आबै छथि

उनि फिरछेन

अहाँ जाइ छी

आपनि जाच्छेन

तूँ आबै छेँ

तुमि फिरछो

तूँ जाइ छेँ

तुमि जाच्छो

ओ सब अबैत छथि

तिनि फिरछेन

ओ सब जाइ छथि

तिनि जाच्छेन

ओ आबै छथि

शे फिरछे

ओ जाइ छथि

शे जाच्छे

अहाँ अबैत छी

आपनि फिरछेन

अहाँ करैत छी

आपनि कोरछेन

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे –-ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।

करय मे- कोरते (कोर+ते)

जाइ मे- जेते (जा+ते)

आबय मे- आशते (आश+ते)

मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकेँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे “ओ” केर प्रयोग “संग” केर अर्थमे सेहो होइत अछि।

हमहूँ- आमि ओ

धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।

कर+इ= कोरि

कर+एन= करेन

कर+ओ= करो

कर+इश= कोरिश

कर+ए= करे।

मैथिली आ भोजपुरी

भोजपुरीमे

केर बदला

ई वर्ण प्रयुक्त होइत अछि

ण

न

ल

र

ष

ख

श

स

भोजपुरीमे सहचर तीन प्रकारक अछि, विपरीतार्थक, समानार्थक्, आनुप्रासिक आ विशेषार्थ बोधक सहचर।

विपरीतार्थक सहचर

शब्द

विपरीतार्थक सहचर

हकासल

पियासल

लरम

गरम

रकम

पताई

साँप

गोजर

समानार्थक सहचर

शब्द

समानार्थक सहचर

लकड़ी

काठी

कनिया

बहरिया

पुरखा

पुरनिया

किन

बेसाह

बिआ

बाल

नेग

चार

आनुप्रासिक सहचर

शब्द

आनुप्रासिक सहचर

अखोर

बखोर

हरवा

हथियार

बोहनी

बट्टा

पर

पाहुन

चासा

बासा

चिरई

चुरुंग

विशेषार्थ बोधक सहचर

शब्द

विशेषार्थ बोधक सहचर

सेवा

खरचा

अह

जह

तगड़

बगड़

अकट

बहेर

आउँज

गाउँज

भोजपुरीक किछु उपसर्ग

नि-निदरदी

कु- कुअन्न

अध- अधमरु

भोजपुरीक किछु प्रत्यय

डाका- अइत- डकइत

हार- चूड़ी- चूड़ीहार

लकड़ी- लकड़ीहार

हर-मुस- मुसहर

बाप- बहर

मामा- ममहर

भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण

कातिक- कतिका

आइन- धुँआ- धुआँइन

भोजपुरीमे विशेषणसँ संज्ञा

पियर- पिअरी

अई- थेथर- थेथरई

अवती- बूढ़- बुढ़उती

भोजपुरीमे संज्ञासँ संज्ञा

अई- लरिकाई

भोजपुरीमे विशेषणसँ विशेषण

लाल- ललछहूँ

औठा- पहिल- पहिलौठा

स्त्री प्रत्यय

आइन- मिसिर- मिसराइन

आनी- देवर- देवरानी

भोजपुरीमे वचन

लइका (एकवचन)-लइकन (बहुवचन)

हाथी (एकवचन)-हाथिन/ हाथियन (बहुवचन)

मैथिली

भोजपुरी

छथि

तारी

खाइत अछि

खाता

खुजैत अछि

खुलता

नहि खेलाइत छथि

खेलत नइखन

नहि अछि

नइखे

नहि जयताह

ना जइहन

नहि खयताह

ना खइहन

जाइ छी

जातार

पढ़ैत छी

पढ़ तानी

खाइ छथि

खा तारन

अहाँ

रउआ

भोजपुरीक सेहो विभिन्न रूप अछि, जेना क्षेत्रानुसार बा, बाटे, बीया, बड़वैँ, बटे/ बानी बाजल जाइत अछि।

मैथिली आ मगही

भुव्अनेश्वर शर्माक मगही शब्दकोषमे किछु वर्ण आ संयुक्ताक्षर जेना ण, श, ष, ऋ, लृ, क्ष, त्र, ज्ञ हटा देल गेल अछि। मैथिली सन मगहीमे सेहो “व” केर उच्चारण “ब” आ कतेक ठाम “य” केर उच्चारण “ज” होइत अछि।

मगही सेहो अपन उत्पत्ति ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदायक नाथ साहित्यसँ मानैत अछि। मगही क्रियामे एकटा आकारक मात्रा कम होइत अछि जेना:-

मैथिली

मगही

एनाइ

अनई

गेनाइ

गनई

धोनाइ

धोनई

मगही लोकोक्ति आ कहावत:

अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास- स्रदरा नक्षत्रमे वर्षा नहि भेने सन, साठी (धान) आ कपासक खेती बर्बाद भऽ जाइत अछि।

ओछा के प्रीत बालू के भीत- ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षिक होइत अछि।

ब्तातदेवल- खोराकी चलायल

सिहरी फटल- अकश-तिकश खतम भेल।

हहास कयल- दोसरकेँ आगू बढ़ैत देखि कऽ जरल।

तुला राशि के भेल- बड्ड तमसायल

कन्या राशि के भेल- काजसँ बेकार भेल।

ओरहन देवल- शिकाइत कयल।

पीढ़ा देवल- आदर देल।

खोपसन देवल- उलहन देल।

डॉ रामनरेश मिश्र “हंस” मगधक भाषा मागधीक विकसित रूपकेँ मगही कहलनि अछि। मागधी प्राकृतसँ असमिया, बांग्ला, ओड़िया, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा सेहो बहार भेल अछि।

मगहीमे “र” लेल “ल” “ड़”, “ल” लेल “र” “ड़” केर प्रयोग होइत अछि। मगहीमे सेहो निर- लगा कऽ निरइठ बनैत अछि (अइठ/निरइठ) ।

मगही लोकगाथा

आल्हा, सोरठी वृजभार, लोरकाइन, रेसमा-चुहरमल, सारंगा-सदाबृज, छतरी-घुघुलिया, कुँवर विजयी, राजा भरथरी, गोपीचन्द, सोभां नायक, सती बिहुला, नेटुआ दयाल सिंह, राजा ढोलन सिंह, मान गुजरिया, मामा-भगिना, विक्रम, कर्दब-लीला, बनजारा, हिरनी-बिरनी, सहलेस, नूनाचार, राजा हरिचन, बाबा चिन्तामन, बकतौर, बिहुला-विसहरी, बाबा लखन्दर बिहुला-विषधर।

मगही लोकनाट्य, नाट्य-गीत आ लोक-नृत्य

-कीर्त्तन, जातरा, करमा भइया दूज, जीतिया (नायिका रुसि कऽ नैहर चलि गेल, धनरोपनीक बाद किसान-मजदूर ई नाट्य करैत छथि।)

-फागू, चैता, सावनी, बारहमासा, रोपनी।

-दूधवंशी (दुसाध), साफी (धोबी), च्हन्द्रवंशी (कहार), कोइरीक नाट्य गीत।

-जनी- जातिक- डोमकच, बीछामार, चुलहारिन, सीता-मीता, गेदुरी।

-ओझा-डाइन।

-सामा-चकेवा, बगुला-बगुली, जाट-जाटिन, सास-पुतोह,

-सगबेचनी, मछली बेचनी, जीराबुन, दही बेचनी।

-नाच, नेटुआ-कसबिन, कठपुतली।

आब किछु मैथिली आ तकर मगही रूपक चर्चा कयल जा रहल अछि।

मैथिली

मगही

खेलेलौं (खेलेलहुँ)

खेलली

हएत

होत

अछि

हे

छथि

हथ/ हथुन

छी

ही

जायत

जइतो

एता

अतथुन

भेटत

मिलतो

मगहीक रूप

पटनाक आसपास मारलुक (मारबौ) आदिक प्रयोग होइत अछि जे कने दक्षिण गेला पर हथिन/ छथिन आदिमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

मैथिली आ संथाली

मैथिली

संथाली

पिता

बा

बाबी (बा)

नुनुगो (बुडीगो)

बाबा

गोड़म्बा

नमस्ते

जोहारगी

भेल

हुयेना

उसरि कऽ (जल्दी)

उसारा

अछि

काना/ गिया

छी

काना

आर

आर

सँ

ते

एखन लगाइत

एहोबोक् लगीत

देखाउ

उदुगमे

विलम्ब

बिलम्ब

दिऔ

मे/ में

करू

मा/ कामीयमे

नहि

आलोम

बनू

बिनाक्आ

बुरबक (बोका)

बोका

आउ

हजुक्मे

ध्यान

ध्यान

दाँत सभ

डाटा

लगा लिअ

लगाव ताम

सत्त

सरी

खबरि

खोबोर

हमरा

इञ

खराप

बड़ीच्

मोन

मोने

लगा कऽ

लगाव

काज

कातेक

कैँ

दो

घास

घास

आनू

अगुकुम

अहाँ सँ

आमसांव

जरूर

जरूड़

थोर

थोड़ा

पंखा

पंखा

बिजली

बिजली

लैम्प

लैम्प

कागत-पेंसिल

कागज-पेंसिल

मना

मना

मामिला

मामला

समय

समय

धन

धन

मेहनति

मेहनत

अहाँ

आम

कुकुड़ (पु.)

सीता

कुकुड़ (स्त्री.)

सीता इंगा

पिल्ला (कुकुड़क बच्चा)

सीता होपोन

बाछी

बछी

बेंग

रोटे

पनही (जुत्ता)

पनाही

करैल

कारला

घर (दलान)

दुलान

मचान

मचान

कड़छु

कड़छु

पटिया

पटया

चालनि

चलनी

सलाइ-काठी

सलाई कठी

सूत

सुतम

थारी-बाटी

थरी-बटी

लोटा

लोटा

बोरा

बोरा

गहूम

गुहुम

दही

दाही

थुथुन

थुथना

गाहकि (गहकी)

गहकी

अखबार

खोबोर कागज

हरियर

हरयड़

खर्चा

खर्चा

साफ करब

साफा

बीछब

बाछाव

बनायब

बिनाव

नव करब

नावा

नेहोरा करब

नेहोर

जिरायब (विश्राम करब)

जिराव

थरथरी

थारथाराक्

आछी करब (छीकब)

अछीम

साटब

साटाव

बिहार लोक सेवा आयोग (बी. पी. एस. सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल

मैथिली आ हिन्दी

मैथिली

हिन्दी

हमरा सभक

हमारा

हमर

मेरा

ओकर

उसका

ई

यह

ओ

वह

ई सब

ये

ओ सब

वे

अछि

है

छी

हूँ

देखनाइ

देखना

जीनाइ

जीना

गेनाइ

जाना

पीनाइ

पीना

छूनाइ

छूना

सुतनाइ

सोना

पढ़नाइ

पढ़ना

जाउ

जाइए

जो

जा

राम गेल

राम गया

सीता गेलि

सीता गई

आननाइ

लाना

बजनाइ

बोलना

बिसरनाइ

भूलना

छह

हो

लिखैत अछि

लिखता है

लिखि रहल अछि

लिख रहा है

जायत

जाएगा

अयताह

आएंगे

राम जाइत अछि

राम जाता है

सीता जाइत अछि

सीता जाती है

सीता जाइत छथि

सीता जाती हैं

राम खेनाइ खेलक

राम ने खाना खाया

राम सोहारी खेलक

राम ने रोटी खाई

तोँ ई काज केने छह

तूने यह काम किया है

राम फिल्म देखने छल

राम ने फिल्म देखी थी

राम फिल्म देखने छला

राम जी (आदर) ने फिल्म देखी थी

राम पाठ समाप्त कऽ लेने होयत

राम ने पाठ समाप्त कर लिया होगा

राम पाठ समाप्त कऽ लेने हेता

राम जी (आदर) ने पाठ समाप्त कर लिया होगा

राम सीताकेँ देखलक

राम ने सीता को देखा

राम सीताकेँ देखलनि

राम जी (आदर) ने सीता को देखा

ऊपर अहाँकेँ स्पष्ट भऽ गेल होयत जे हिन्दीमे कर्त्ता लेल “ने” प्रयुक्त भेल मुदा मैथिलीमे ई रिक्त रहल। कर्म लेल हिन्दीमे “को” आ मैथिलीमे “केँ” प्रयुक्त भेल।

हिन्दी

सेब

एक सेब

दू सेब

दो सेबों में

मैथिली

सेब

एकटा सेब

दूटा सेब

दूटा सेबमे

हिन्दी

सिपाही

एक सिपाही

दो सिपाही

दो सिपाहियों ने

मैथिली

सिपाही

एकटा सिपाही

दूटा सिपाही

दूटा सिपाही

हिन्दी

साधु

एक साधु

दो साधु

दो साधुओं को

मैथिली

साधु

एकटा साधु

दूटा साधु

दुनू साधुकेँ

हिन्दी

चमगादड़

एक चमगादड़

दो चमगादड़

दोनों चमगादड़ों पर

मैथिली

बादुर

एकटा बादुर

दूटा बादुर

दुनू बादुर पर

हिन्दी

चिड़िया

एक चिड़िया

दो चिड़िया

दो चिड़ियाओं

मैथिली

चिड़ै

एकटा चिड़ै

दूटा चिड़ै

दुनू चिड़ै

एतय स्पष्ट भऽ गेल जे बहुवचनमे हिन्दीमे शब्दक रूप परिवर्तित भेल मुदा मैथिलीमे से नहि भेल। एहिसँ पहिने क्रियामे किछु ठाम स्त्रीलिङमे हिन्दी सन परिवर्तन मैथिलीमे सेहो भेल (गेलि) मुदा बेसी ठाम (जाइत अछि, छथि) परिवर्तन नहि भेल। आदरसूचक वाक्यमे हिन्दीमे क्रियामे परिवर्तन नहि भेल मुदा मैथिलीमे भेल (देखलक/ देखलनि) । स्त्रीलिङक बहुवचनमे हिन्दीमे रूप परिवर्तित होइताछि मुदा मैथिलीमे से नहि होइत अछि।

कारक/ विभक्ति (मैथिली)

कारक/ विभक्ति (हिन्दी)

राम

राम ने

रामकेँ

राम को

गेन्दसँ, लाठीसँ, लाठी द्वारा

गेन्द से, लाठी द्वारा

रामकेँ, रामकलेल, राम हेतु

राम को, राम के लिये, राम हेतु

गाछसँ (विलगाव)

पेड़ से

रामक घर, रामक पोथी, सीताक राम

राम का घर, राम की किताब, सीता के राम

घर पर, खोतामे

घर पर, घोसला में

मैथिली आ ओड़िया

किछु विशेष टिप्पणी देल जा रहल अछि जाहिसँ मैथिली आ ओड़ियाक बीचमे सम्बन्ध स्पष्ट भऽ जायत।

मैथिलीमे “ई” केर बदला ओड़ियामे “इए” प्रयुक्त होइत अछि, मुदा उच्चारण दुनू ठाम एक्के छैक, मात्र वर्त्तनीमे अन्तर छैक। जेना रेघा कऽ हम सब “ई” बाजै छी सएह “इए” छिऐ।

“तूँ जाह” हम सब कहै छी आ ओड़ियामे “तू जाऽ“कहल जाइत अछि। “तूँ जो” हम सब कहै छी आ ओड़ियामे “तुमे जाअ”, हमसब “अहाँ जाऊ” आ ओड़ियामे “आपण जाआन्तु” कहल जाइत अछि।

मैथिलीमे “अछि” ओड़ियामे सेहो “अछि” अछि।

हमर केर प्राचीन मैथिली रूप “मोर” (पिआ मोर बालक- विद्यापति) अखनो ओड़ियामे गद्यमे “मोर” प्रयुक्त होइत अछि।

“नहि” केर बदला “नाहिं” (नाँई) (मैथिलीमे सेहो एहेन उच्चारण होइत अछि आ मैथिली पत्रिका अंतिकामे नइँ लिखलो जाइत अछि), “अपने” आ “अहाँ” केरबदला “आपण” प्रयुक्त होइत अछि जे मैथिलीक “अपने” सन अछि।

“छी” केर बदला “छि” प्रयुक्त होइत अछि।

“कोन” केर बदला “केउँ”, “काल्हि” केर बदला “कालि” आ “पीलक” केर बदला “पिइला” प्रयुक्त होइत अछि।

“नै सुनलनि” केर बदला “शुणिलुनि”, एतय गहिंकी नजरिसँ देखब तँ पता लागि जायत जे नकारात्मक बनेबा लेल ओड़ियामे “नि” शब्दक अन्तमे जोड़ल जाइत अछि।

’ कैँ’ केर बदला’ कु’ जेना’ रामकैँ’ केर बदला’ रामकु’ प्रयुक्त होइत अछि।

“देल” केर बदला “देल” यएह प्रयुक्त होइत अछि।

जेना अपने सभ भात “सिझ” गेल कहैत छिऐ, ओड़ियामे बरकल पानिक बदलामे “सिझापाणि” कहल जाइत अछि। “हएत” केर बदला “हेब”, “नै हएत” केर बदला “हेबनि” (नि जोड़ि कऽ नकारात्मक बनल) ।

अग्रिम/ अगारी केर बदलामे “आगरू”, कराबय केर बदला करिबाकु, पड़त केर बदला पड़िब, “देखने छह” केरबदला “देखिछ”, कतेक/ कत्ते केरबदला केते, जतेक/ जत्ते केर बदला जेते प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली केर “ओ” केर बदला ओड़ियामे “से” प्रयुक्त होइत अछि। मैथिलीमे “से” (जेना- से कहलक) कनेक भिन्न अर्थमे मुदा मोटा-मोटी “फराक” केर अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली

ओड़िया

जाइ छै

जाउछि

एकटा (गोटे)

गोटे

बुलब/ बुलनाइ

बुलिबा

दूटा

दिटा

कोन ठाम(कोन ठाँ)

केउँठि

जाइ छी

जाउछि

देखै छी

देखिछि

आउर के

आउ किए

आबैले छथिन्ह

आसिछन्ति

मरि गेल

मरिगला

जाइ छै

जाइछि

जेबै

जिबे

जायब

जिबि

छलै (छलय)

थिला

जैठाम (जइठाम, जइठाँ)

जेउँठि

दरमाहा

दरमा

गेल

गले

बैसा कय

बसेइदइ

करायब

करेइबा

तोहर

तांकर

लागैछै

लागुछि

करबै

करिबेनि

से काज

से काम

करि लेता

करिनेब

किछु

किछि

दऽ देबै

देइदेबि

तऽ (तँ)

त

दिआयल जायत

दिआजिब

भौजी/ भाउज

भाउज

जलखै

जळखिआ

आउर (आओर)

आउ

चाह

चा

ओड़ियामे उच्चारण सेहो कनेक भिन्न छैक, जेना “अ” केर उच्चारण “ओ” सन होइत छैक। जेना “समर” कैँ हम सभ समर पढ़ब मुदा ओड़ियामे एकरा पढ़ल जायत “सोमोरो” । “अ” लागि कय सभ व्यंजन हलन्त सँ पूर्ण होइत अछि से सभटा व्यंजनमे अ=ओ उच्चारण होयत। मैथिलीमे मनोज कैँ बाजल जाइत अछि मनोजऽ, मुदा ओड़ियामे बाजल जायत मोनोजो।

इ/ ई, उ/ ऊ- मैथिली आ ओड़ियामे एक्के रङ उच्चारण होइत अछि।

ऐ जेना मैथिलीमे अ+इ आ औ जेना अ+ऊ बाजल जाइत अछि तहिना ओड़ियामे सेहो उच्चरित होइत अछि।

ऋ मैथिलीमे “री” बाजल जाइत अछि मुदा ओड़ियामे “रु” उच्चरित होइत अछि। कृप मैथिलीमे “क्रीप” पढ़ल जाइत अछि आ ओड़ियामे “क्रुपो” उच्चरित होइत अछि।

व ब सन उच्चरित होइत अछि दुनू भाषामे से मैथिलीमे ओ उच्चरित होयत “ब” आ ओड़ियामे “बो” ।

मुदा विदेशज शब्दक उच्चारण ओड़ियामे सेहो हलन्त सन होइत अछि आ “ओ” सन “अ” केर उच्चारण नहि होइत अछि।

मैथिली सन “य” कैँ “ज” किछु ठाम पढ़ल जाइत अछि, से “यम” मैथिलीमे “जम” आ ओड़ियामे “जोमो” पढ़ल जाइत अछि।

शब्दक प्रारम्भमे जँ “ड” वा “ढ” अबैत अछि तँ नीचाँक बिन्दु दुनु भाषामे विलुप्त रहैत अछि।

मैथिली आ ओड़िया दुनूमे कचटतप केर पाँचम अनुनासिक्य अक्षर (क्रमसँ ङ, ञ, ण, न, म) मे सँ मात्र न आ म सँ शब्दक प्रारम्भ सम्भव अछि।

“क्ष” मैथिलीमे “क्छ” उच्चरित होइत अछि आ ओड़ियामे “ख” वा “ख्य” ।

मराठी सन ओड़ियामे संस्कृतक “ळ” अखनो अछि जे मैथिलीमे आब नहि अछि।

“ज्ञ” मैथिली आ ओड़िया दुनूमे “ग्य” उच्चरित होइत अछि।

“त्स” मैथिलीमे “तस” मुदा ओड़ियामे (स् +च) उच्चरित होइत अछि।

भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग

(a) भारतीय आर्यभाषा

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित

गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुन:स्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, मिथिला नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग।’ सीरध्वज जनक’ सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि।’ कृति जनक’ सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेनेछलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र) । अर्थशास्त्रमे (१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।

वैदिक संस्कृतक कालमे आर्य सप्तसन्धवसँ विदेह धरि आबि गेल छलाह। अनार्य (दस्यु) सँ ओही कालमे हुनकर सम्पर्क भऽ गेल छल आ शाब्दिक आदान-प्रदान सेहो भऽ गेल छल। यजुर्वेदमे बादमे अथर्ववेदमे ई आदान-प्रदान दृष्टिगोचर होइत अछि। अनार्य (दस्यु) आ व्रात्य (अनार्यसँ आर्य बनल जाति) दुनुक भाषा सप्तसैन्धव आर्यक भाषासँ मिलि गेल आ पुबरिया आ आन क्षेत्रीय बसात लगलासँ वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल। निरुक्तक समयमे सेहो वैदिक शब्दावली कठिन भऽ गेल छल, ओकर उत्पत्तिपर विवेचन शुरू भऽ गेल छल। पाणिनीक भाषा पुबरिया, दछिनबरिया, पछबरिया आ उत्तरबरिया सभ क्षेत्रक दस्यु आ व्रात्य भाषाक शब्दावलीकेँ समाहित कऽ बनल छल। ई संस्कारित भाषा बादक लोक मध्य संस्कृतक रूपमे विख्यात भेल। पाणिनी लौकिक संस्कृतकेँ जेना “भाषा” कहलन्हि, तहिना यास्क आ पाणिनी वैदिक संस्कृतकेँ “छन्दस्” । यैह छन्दस् अवेस्ता भाषाक भाष्य लेल जेन्द (छन्द) कहल गेल।

संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली

१. संस्कृत

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणक (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह क वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नहि होइत अछि छथि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॑) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) क प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ क बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओहि फॉंटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार क बाद बिकारीक आवश्यकता नहि अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जाहिमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

स्वरक वर्णन एहि प्रकारेँ अछि- जाहि वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नहि रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जाहिमे बाजैमे एक मात्राक समय लागए से भेल ह्रस्व, जाहिमे दू मात्रा समय लागल से भेल दीर्घ आ जाहिमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहैत छलाह।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह।

लृ दीर्घ नहि होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नहि होइत अछि।

अ इ उ ऋ एहि सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ क ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३), तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ एहि चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कए २२ टा स्वर।

एहि सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाओल, एतए इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ’ दात्त’ आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नहि भेलो पर स्वरमे भेद अछि। एहिसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकैत छी- जेना एहिमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आऊ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।

ई दुनूटा, स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।

विसर्जनीय मूल वर्ण नहि अछि, वरन् स् वा र् क विकार अछि। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।

अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।

उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।

कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)

पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।

यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।

अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय क उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।

इ ई चवर्ग य श क उच्चारण तालुमे होइत अछि।

ऋ ॠ टवर्ग र ष क उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।

लृ तवर्ग ल स क उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।

उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय क उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व क उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठक सहायतासँ होइत अछि।

ए ऐ क उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।

ओ औ क उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।

य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ एहिमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नहि होइत अछि।

क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।

सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।

अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण एहि सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नहि होएबाक चाही।

जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यैह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल “अघोष”, आ नाद प्रकृतिक भेल “घोषवान्” । जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि “अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल “महाप्राण” ।

कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

स्वः= सुवः।

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

क्+अ= क,

क्+आ=का।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एक प्रकृतिगण कहैत छी। २. उत्तरार्चिक: विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कय क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण क' उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२, ३, आ ४ मंत्रक समूह) मे एहि लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

वेदपाठ-

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

मुदाः-

वैदिक संस्कृत: -धातुरूप: -

वैदिक संस्कृत: -शब्दरूप: -

छन्दः-

पाठः-

२. प्राकृत

२. प्राकृत

प्राकृत आ पालि:

पालिमे:

संस्कृतक “ळ” व्यंजन होइए।

“लृ” बदलि कऽ “उ” भऽ जाइए।

“ऐ” बदलि कऽ “इ” वा “ए” भऽ जाइए।

“औ” बदलि कऽ “उ” आ “ओ” भऽ जाइए।

बलाघात: मध्यमः= मज्झिमो

प्रसार: जयति=जेति

स्वरलोप: इति= ति

ध्वजः= धजो

प्राकृतमे:

ऋ बदलि जाइए: अ, आ, ई, उ, रि

लृ बदलि जाइए: इलि

ऐ बदलि जाइए: ए

औ बदलि जाइए: उ

३. अवहट्ट

कज्ज=काज बनि गेल (दीर्घ)

अंचल=आँचर (अनुनासिक)

क्रमसँ

कर्ता- एन्ने

करण-सन, सउं

४. मैथिली

पानि-पाइन-पैन

अछि- अ इछ ऐछ

छथि- छ इथ –छैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

संयोगने- (उच्चारण संजोगने)

कैँ/ के / कऽ

केर- क (केर क प्रयोग नहि करू)

सँ- सऽ

एकटा दूटा (मुदा कैक टा)

११. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाइत अछि- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन

ठाम

जकर, तकर

तनिकर

अछि

अग्राह्य

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकर, तेकर

तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)

ऐछ, अहि, ए।

१२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाइत अछि: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

१३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाइत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

१४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाइत अछि जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

१५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

१६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

१७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँयथावत राखल जाइत अछि, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाइत अछि। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

१८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाइत अछि। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

१९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाइत अछि वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

२०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।' मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'कऽ क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

२१. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

२२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाइत अछि।

२३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाइत अछि, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध'ङ', 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

२४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाइत अछि, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

२५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा कऽ लिखल जाइत अछि, हटा कऽ नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाइत अछि, यथा घर परक।

२६. अनुनासिकक्केँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाइत अछि। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

२७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाइत अछि।

२८. समस्त पद सटा कऽ लिखल जाइत अछि, वा हाइफेनसँ जोड़ि कऽ, हटा कऽ नहि।

२९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि- (ऽ) नहि लगाओल जाइत अछि।

३०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाइत अछि।

३१. किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जएबाक चाही। जा ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाइत अछि। आकि ऐ वा औ सँ व्यक्त कएल जाइत अछि।

छक- अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे- रूपलाल फुल तोड़बामे सोनेलालसँ छकलाह-जीतल गेलाह।

ठक- परतारब, वञ्चना- ठक बुड़िबकक्केँ ठकैत अछि- ओकर वस्तु लए लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि।

डक- अपन उत्कट गन्धक प्रसारण- हीँगु डकैत अछि-अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि।

ढक- मिथ्या अपन अतिप्रशंसा करब- जयलाल ढकैत छथि-अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजैत छथि।

बक- अश्रव्य बहुत बाजब- जयलाल बकैत छथि- नहि सुनबाक योग्य कथा बहुत बजैत छथि।

मक- हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा- बाछा मकैत अछि, लीलसँ एम्हर ओम्हर दौगि रहल अछि।

बाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- "पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ" संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात "उपभाषक" चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल।

मैथिलीक वर्तनी

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू. पी. एस. सी. क मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि, से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

पूरक विवेचन

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि।

सम्पादकीय

तिरहुता लिपिक उद्भव आ विकास

(विद्यार्थी लोकनि लेल निर्देश: अनुलग्नकमे देल ब्राह्मीसँ तिरहुता धरिक विकासक सभ अक्षरक प्रैक्टिस करबाक आवश्यकता नहि अछि। एक वा दू अक्षरक अभ्यास पर्याप्त अछि। अनुलग्नक-५ पर ध्यान देब बेशी जरूरी अछि। अभिलेख सभक विस्तृत विवरण आ तिरहुता दिस लिपिक झुकाव विस्तारमे देल गेल अछि। अहाँ जाहि लिपिक अनुलग्नक-५ सँ अभ्यास करी ओतबे अपन नोटमे ओहि अभिलेखसँ सामिग्री उठाबी। सम्पूर्ण मोन रखनाइ नहिये सम्भव छैक नहिये से जरूरी छैक। ई आलेख साढ़े आठ हजार शब्दक अछि, अहाँ अपन सुविधासँ एकर ६००- १००० शब्दक नोट बना सकैत छी।)

उपरका खोह आ धारक कातक पाथरपर लिखल चित्र आ चित्रलिपिमे अन्तर बिकछेबाक खगता अछि। अहाँ हमरासँ प्रेम करै छी तँ हमर चित्र लिख देलहुँ, कोनो शिकार करै छी तँ से चित्र लिखलहुँ। से अहाँ भेलहुँ लिखिया। से भारतोमे बहुत ठाम छल, मुदा लिखिया लिपिकार चोट्टहि नहि बनि जाएत। लिपिकार जे चित्र बनेलक से कलकारी लेल नहि वरण् खगता लेल। से एतऽ सूर्य बनेबाक लेल वृत्त बना दियौ, पूरा चित्र बनेबाक खगता एतऽ नै अछि, फेर दूटा एहने चित्रक सम्बन्ध स्थापित करू, दूसँ तीन.. आ चित्र लिपि तैयार।

पद आधारित लिपिमे प्रयत्न-लाघव आ स्थान-लाघव नहि रहैत अछि। एकरा एना बुझू जे तमिल लिपि अछि सिलेबल आधारित लिपि, रोमन लिपि अछि अल्फाबेट लिपि आ तिरहुता आ देवनागरी अछि अल्फा-सिलेबिक लिपि। माने जतऽ संयुक्ताक्षर नहि अछि से भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। माने अंग्रेजी, जे रोमन लिपिमे लिखल जाइत अछि, मे संयुक्ताक्षर नहि होइत अछि, मात्र २६ टा अल्फाबेट होइत अछि, से ओ भेल अल्फाबेट आधारित लिपि। तमिलमे सिलेबल आधारित लिपि अछि। से ओ भेल सिलेबल आधारित लिपि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से ओ भेल अल्फा-सिलेबिक लिपि। एहि तीनूक तुलना मोटा-मोटी वार्णिक (अंग्रेजी), मात्रिक (तमिल) आ वार्णिक आ मात्रिक (तिरहुता आ देवनागरी) छन्दसँ कएल जा सकैत अछि। मुदा एतऽ एकटा पेंच अछि, अंग्रेजीमे वर्णक गणनासँ जे मीटर निर्माण करब तँ लय नहि बनत से ओतऽ सिलेबल आधारित गणना करए पड़ैत अछि, आ किएक तँ ध्वनिक सम्बन्ध मात्र सिलेबलसँ छै, शब्दकेँ सिलेबलमे तोड़ल जाइत अछि। जापानी लिपि पद-आधारित अछि से ओतऽ ई झमेल नहि अछि, आ ओतऽ ध्वनिक ईकाई लेल जे शब्द प्रयुक्त होइत अछि तकर अनुवाद मोटामोटी सिलेबलमे कएल जा सकैत अछि आ ओही आधारपर हाइकूमे १७ टा ध्वनि पुरेबा लेल गणना होइत अछि। तिरहुता, देवनागरी आ ब्राह्मीमे जे बाजल जाइए सएह लिखल जाइए, आ एतऽ पाणिनीपूर्व आ पणिनिक परम्परामे ध्वनि आधारित सन्धिक निअम बनल अछि। कर्मधारय समासक विग्रह पदात्मक होइत अछि, महादेव भेला महान् देव, आ जँ दूसँ बेशी पद अछि तँ से भेल बहुव्रीहि- जेना लम्बोदर (नमगर जिनकर उदर से, माने गणेश) । अंग्रेजी (रोमन लिपि) मे बजबा काल सन्धि होइत अछि मुदा लिखबा काल नहि, मुदा ओतहुओ दीर्घ लेल डबल ए, डबल बी आदि प्रयुक्त होइते अछि, पंकचुएशन सेहो ई काज करैत अछि, हँ ओतऽ ट्रिपल ए नहि होइत अछि, मुदा हमहूँ सभ तँ दीर्घक बाद प्लुतकेँ छोड़िये देने छी। आ तही कारणसँ मैथिलीमे विभक्ति सटा कऽ लिखल जाइत अछि। तिरहुता आ देवनागरी लिपिमे दुनू तत्त्व अछि से मात्रिक आ वार्णिक दुनू छन्द एहिमे गणना कएल जा सकैत अछि। टॉपिक १ मे पृष्ठ १८ सँ गणना (मात्रिक आ वार्णिक) सम्बन्धी विशेष जानकारी भेटत। सिलेबल जेना शब्दसँ सम्बन्धित अछि पद तहिना समाससँ पहिलमे ध्वनि प्रमुख अछि आ दोसरमे पद (अर्थ) । से वएह पद आधारित लिपि ध्वन्यात्मक लिपिक विकास छल। जकर प्रमाण ऐतिहासिक रूपसँ उपलब्ध अछि, आ जतऽ सँ लिपिक असली विवेचन सम्भव अछि। आ चित्र-लिपिक रूपमे जाहि तीन गोट लिपिक चर्च भेल माने टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कात (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे), नील धारक कात (एजिप्टमे) आ क्रीट (ग्रीस) मे एहिमेसँ टिग्रिस-यूफ्रेट्सक धारक कातमे सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे जे सभ्यता सभ क्रमसँ आएल ओहिमे पहिने सुमेरमे क्यूनीफॉर्म लिपिक प्रारम्भ भेल ४००० शताब्दी बी. सी. ई. (बिफोर कॉमन एरा) मे। बेबीलोन लोकनि सुमेरसँ ई लिपि सिखलनि आ हुनकासँ असीरिया लोकनि। माटिक सानल आ लोथ बनाएल पट्टीपर सुखेलासँ पहिनहिये नोकबला स्टायलससँ, मोटा-मोटी ३५० टा अक्षरसँ, ई क्यूनीफॉर्म लिपि लिखल जाइ छल जखन आ फेर रौदमे सुखाएल वा चूल्हिमे पकाएल जाइत छल। आधुनिक कालमे एकरा पढ़बाक श्रेय एकटा अंग्रेज हेनरी रौलिनसनकेँ जाइ छनि। तेसर चरणक बाद धरि ई पद-आधारित बनि गेल छल। एजिप्टमे हायरोग्लाइफिक (हायरोग्लिफिक, हायरेटिक आ डेमोटिक) लिपि क्यूनीफॉर्म लिपिक समकालीन छल। एहिमे २४ टा चिन्ह रहैक जाहिमे सभटा व्यंजन रहैक। स्वर रहबे नहि करैक, से

बहुत रास झमेल आ अस्पष्टता आबि जाइ छलैक, से ओकर निवारणलेल ओ लोकनि आर विशेष चेन्ह आ चित्रक प्रयोग करैत छलाह। ओ सभ लाल मोशि-कलमसँ पेपीरस पातपर लिखैत छलाह, ओही पेपीरससँ पेपर बनल अछि। क्यूनीफॉर्म आ हाइरोग्लाइफिक ई दुनू लिपि दहिनसँ वाम दिश लिखल जाइत छल। एहि दुनू लिपिक समकालीन लिपि छल चीनक लिपि से ऊपरसँ नीचाँ लिखल जाइत छल। पहिने एकटा शब्द लेल एकटा चिन्ह छल, मुदा फेर एकटा विचार लेल एकटा शब्दक प्रयोग होमए लागल। चीनक लिपिमे कोनो अल्फाबेट नहि अछि, ४०, ००० चिन्ह अछि। एकर अलाबे एलमाइट सभ पहिने देशज रेखात्मक आ चित्र-प्रचुर अक्षरक प्रयोग केलनि मुदा फेर ओ लोकनि सेहो क्यूनीफॉर्म लिपि पकड़ि लेलनि मुदा ओतऽ ११३ चेन्ह जाहिमे ८०सँ बेशी पद-आधारित चेन्ह छल, केर प्रयोग ओ केलनि।

सीरिया-साइप्रस आ फिलिस्तीनमे जे खाँटी वर्ण आधारित लिपि बनल ताहूमे, फेर मिनोअन सभ्यतामे जे लिपि आविष्कृत भेल ओहिमे पद-आधारित लिपिक प्रभाव पड़ल। पद-आधारित लिपिक दूटा रूप चीनमे छल मुदा तकर प्रयोग चीनमे बन्द भऽ गेल मुदा जापानमे ई प्रयोगमे अछि जकर किछु चर्च ऊपर आएल अछि।

एकरा वर्णमाला वा वर्ण आधारित लिपि सेहो कहि सकैत छी। आन लिपि सभमे चेन्ह सभक संख्या ततबा बढ़ि गेल जे शिशु लेल ओकर सीखब असम्भव भऽ गेल। एहि लिपिक विकासक कारण छल प्रयत्न लाघव। एक्के लिपिमे अनेक भाषा लिखब सम्भव भऽ गेल।

टिग्रिस-यूफ्रेट्सक कात- मेसोपोटामिया- (सुमेर, फेर बेबीलोन आ तखन असीरियामे) क क्यूनीफॉर्म लिपि वर्णमाला नहि बनि सकल। एहि लिपिक सम्बन्ध सेमेटिक भाषासँ हेबाक प्रमाण अछि। चित्रात्मक फेर विचारात्मक, फेर ध्वन्यात्मक लिपि ई बनि सकल। मुदा ध्वन्यात्मक लिपि सेहो संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आ क्रिया-विशेषणक आवश्यकताकेँ किछु सुधारक संग पूर्ण कऽ सकल। फेर ई पद-आधारित बनल आ एतहि एकर विकास खतम भऽ गेलैक।

बादमे जा कऽ जुरुथ्रुष्टक अनुयायी लोकनि मेसोपोटामियामे अपन लिपिकेँ व्यंजन प्रधान बनेलन्हि जकरा अर्द्ध-वर्णमाला कहि सकैत छी। मुदा ओहिमे कृत्रिम हेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, आ ई प्रवृत्ति ब्राह्मीमे सेहो भाषा-वैज्ञानिक लोकनिकेँ देखा पड़ैत छन्हि।

क्रीटमे सेहो चित्र-प्रचुर रेखाकृतिसँ आगाँ बढ़ि १३५ चेन्हबला भावना-प्रधान आ ध्वनि-प्रधान लिपि बनेलन्हि। हिनकर लिखब वामसँ दहिन आ दहिनसँ वाम दुनू छल।

नागार्जुनकोण्डासँ प्राप्त दोसर शताब्दीक एकटा मूर्तिमे राजा शुद्धोधनक दरबारक दृश्य अंकित अछि जाहिमे तीनटा भविष्यवक्ता भगवान बुद्धक माता रानी मायाक स्वप्नक व्याख्या कऽ रहल छथि। हिनका सभक नीचाँ बैसल लिपिकार तकरा लिपिबद्ध कऽ रहल छथि। भारतमे लेखनकलाक ई आइ धरिक सभसँ पुरान चित्र आधारित प्रमाण अछि। एहिसँ अतिरिक्त पुरान प्रमाण हड़प्पा संस्कृति, अशोकक अभिलेख आदि तँ अछिये। अशोकक अभिलेख आ हड़प्पा संस्कृतिक बीचमे सेहो मारते रास अभिलेख भेटलाछि जेना सोहगौराक ताम-पत्र अभिलेख, पिपरहबाक बौद्ध-भीड़ अभिलेख, महास्थान आ बर्लीक पाथर अभिलेख, आ भट्टिप्रोलुक अभिलेख।

भारतमे हड़प्पा सभ्यतामे पहिल बेर लिपिक प्रयोग भेल मुदा ओ एखन धरि पढ़ल नहि जा सकल अछि। एकर अभिलेख सभ छोट-छोट छैक सभसँ पैघ अभिलेखमे २६ टा चेन्ह छैक। धोलावीर (गुजरात) मे नग्रक द्वारपर एकटा साइनबोर्ड हेबाक प्रमाण अछि जाहिमे ९ टा चेन्ह छैक।

ब्राह्मी वामसँ दहिन आ खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिशामे लिखल जाइत अछि। मुदा दुनू भारतक वर्णमाला पद्धतिक आधारपर विकसित भेल अछि। अशोकक अभिलेख ब्राह्मी आ खरोष्ठी (मानसेहरा आ शाहबाजगढ़ी) दुनूमे भेटल अछि आ एकरा एकटा अंग्रेज जेम्स प्रिंसेप १८३७ सी. ई. मे ब्राह्मी पढ़बामे सक्षम भेलाह। खरोष्ठी पढ़बाक श्रेय सम्मिलित रूपसँ कर्नल मसोन आ जेम्स प्रिंसेप केँ देल जाइत अछि। एहि अभिलेख सभमे अशोकक नाम पियदस्सी लिखल छैक आ किछुमे असोक (अशोकक पालि-प्राकृत रूप) सेहो। अशोकक अभिलेखमे लिपिकरक चर्च अछि।

नारद-स्मृतिमे लिपिकेँ उत्तम आँखि कहल गेल अछि आ एकर सृजन ब्रह्मा केलनि तकर चर्च अछि।

बृहस्पति स्मृतिमे चर्च अछि जे छह मासक बाद स्मृति धोखा देमऽ लगैत अछि से पातपर लिखल आखरक सृजन ब्रह्मा केलनि।

एहि लिपिक नाम ब्रह्मी लिपि छल आ से पाणिनी पूर्व व्याकरणाचार्य द्वारा स्वीकृत छल, मुदा पाणिनी व्याकरणक अनुरूप ब्रह्मी अशुद्ध अछि। से एहि लिपिक नाम ब्राह्मी पड़ल। पाणिनी अष्टाध्या आ अमसिंह अमरकोषमे लिपि आ लिबिक चर्च करैत छथि। पाणिनी पूर्व

आचार्य यास्क अपन निरुक्तमे बहुत रास पूर्व आ समकालीन व्याकरणाचार्यक नाम गणबैत छथि। वर्णक गणना आधारित छन्द आ व्याकरणाचर्य सभक उपस्थिति अपरोक्ष रूपसँ लेखनकलाक उपस्थितिक आभास करबैत अछि। तीन हजार वर्ष पूर्व झेलम आ चेनाबक बीच गांधार (अखन ओतऽ यूसुफजई पठान निवास करैत छथि) इलाकामे दक्षक संघराज्य छल, एहि इलाकामे काबुल धार पच्छिमसँ आबि कऽ सिन्धु धारमे संगम करैत अछि। ओहि संगमसँ चारि माइल उत्तर लहुर गाम, जे पाणिनीक नानी गाम छल, मे पाणिनीक जन्म भेल, ओइ गामक नाम ओइ कालमे शलातुर रहैक। चीनी यात्री ह्वेनसांग (युआन च्वांग), सातम शताब्दीमे. एहि गामक विद्वान ब्राहमण व्याकरणाचार्यक चर्च केने छथि। माने परम्परा आगाँ-पाछाँ काएम छल।

जैनक भगवती सूत्र एहि ब्राह्मी लिपिकेँ नमस्कार करैत अछि।

पंचविंश ब्राह्मणमे सभसँ छोट दक्षिणा १२ कृष्णल आ सभसँ पैघ दक्षिणा ३, ९३, ०१६ कृष्णल सुवर्णक

कौटिल्यक अर्थशास्त्र चूड़ाकर्म संस्कारक बाद लिपि आ अंकक प्रशिक्षणक निर्देश करैत अछि। राजाकेँ मन्त्रिपरिषदक संग पत्राचार आ गुप्तचरक कूटलिपिमे संदेश पठेबाक चर्च अछि। अर्थशास्त्र कहैत अछि जे लिपिकार तेजीसँ लिखबामे निपुण होथि, साफ-साफ लिखथि आ लेख पढ़बामे सेहो समर्थ होथि।

बौद्ध ग्रन्थ सुत्तंतमे अक्खरिका क्रीड़ाक चर्च अछि, जाहिमे अकासी अक्षर बनेबाक स्पर्धा रहैत अछि। बौद्ध भिक्षु लेल एहि क्रीड़ाक निषेध अछि मुदा विनय-पिटक लेखल-कला सिखबाक अनुमति बौद्ध-भिक्षुकेँ दैत अछि। कटाहक जातकमे जाली पत्र देखाकेँ ठकबाक चर्च अछि तँ महासुतसोम जातकमे तक्षशिलाक अध्यापक अपन पुरान शिष्यकेँ पत्र लिखै छथि। कण्ह जातक अक्खर (अक्षरक पालि-प्राकृत रूप) क प्रयोग करैत अछि। महावग्गमे अंक-शब्दक प्रशिक्षण आ कटाहक जातकमे शीतलपाटीक चर्चा अछि जाहिपर लिखब सिखाओल जाइत छल। ललितविस्तर बुद्धक लिपिशाला, हुनकर शिक्षक विश्वामित्र, चाननक शीतलपाटी आ सोनाक लेखनीक चर्चा करैत अछि, एतऽ ६४ टा लिपिक वर्णन अछि जतऽ राजनैतिक सीमाक हिसाबसँ अंगक लिपि, मगधक लिपि वङ्गक लिपिक चर्च अछि मुदा विदेहक लिपिक स्थानपर पूर्व विदेह लिपि लिखल अछि। एकर कारण अछि जे वज्जि विदेहपर अधिकार कऽ लेने छल आ वज्जि आ विदेहक लिपि संयुक्त रूपसँ विदेह लिपि छल। अजातशत्रु तेसर शताब्दीमे वज्जिकेँ जीति मगधमे राजनैतिक रूपसँ मिला लेलन्हि, मुदा सांस्कृतिक रूपसँ ओ अपन अस्तित्व बचेने रहल। ललित विस्तर तेसर शताब्दीक ग्रंथ थिक आ ताहि द्वारे ओ मगध लिपिक संग पूर्व विदेह लिपिक वर्णन करैत अछि। ई प्रवृत्ति बादमे गुप्तकालक तीरभुक्ति (तिरहुत) प्रान्तमे सुदृढ़ रूपसँ सोझाँ आएल आ पूर्वविदेह लिपिक नामकरण भेल तिरहुता। ललितविस्तरमे बाल अवस्थामे बुद्ध-सिद्धार्थक वर्णमाला प्रशिक्षणक चर्च अछि आ ओहिमे वार्णिक अक्षरक काँति आ अलंकरणक योजनाक चर्च अछि जे ब्राह्मी लिपिक अछि।

उतरबरिया सेमेटिक वर्णमाला आ ब्राह्मीक बीचमे अलेफ् आ अ, बेथ् आ ब्, गिमेल् आ ग, दालेथ् आ द, हे आ ह, वाव् आ व, जाइन् आ ज, चेथ् आ घ, थेथ् आ थ, योध् आ य, काफ् आ क, लामेध् आ ल, मेम् आ म, नुन आ न, सामेख आ स, आइन् आ ए, फे आ प, साधे आ च, कॉफ् आ ख मे अद्भुत समानता अछि आ मानवक मस्तिष्क कोना दूर रहलोपर एक्के रङ अछि तकर द्योतक अछि। बूलरकेँ ब्रम भेलन्हि जे ब्राह्मी लिपि उतरबरिया सेमेटिक लिपिक अनुकरण केलक। ई ओ काल छल जखन हड़प्पा आ मोहनजोदाड़ोकेँ सेहो मेसोपोटामियाक आउटपोस्ट ताधरि मानल जाइत जाधरि भारतक आन भागमे उत्खनन नहि भऽ गेलै आ हड़प्पा संस्कृतिक देशज रूप प्रकट नहि भऽ गेलैक (हर्मन कुल्के आ दीतमार रोथरमण्ड, अ हिस्ट्री ऑफ इण्डिया, २००४, पृ. १९, मुदा ओ पृ. ५४ पर अखनो भ्रममे छथि जे खरोष्ठी अरामेइक लिपिक आधारपर बनल जे तखन फारसक आधिकारिक लिपि छल। अरामाइकमे मात्र २२ टा अक्षर छैक, स्वरक अपूर्णता अछि, ह्रस्व-दीर्घक भेद नहि अछि, स्वरक मात्राक सेहो अभाव अछि से ओ भारतीय भाषा लेल अयोग्य अछि, खरोष्ठीमे ई सभ गुण अछि, संगे दीर्घ-गुण-वृद्धि ध्वनि लेल भेदक चिन्ह सेहो अछि, प्राकृत अभिलेख लेल ई ब्राह्मी सन सक्षम छल, मात्र दहिन-वाम रहने ई विदेशी नहि भऽ जाएत। खरोष्ठी दहिनसँ वाम लिखल जाइत अछि मुदा एकर वर्णमाला भारतीय अछि, दहिनसँ वाम लिखल जएबाक कारण किछु विद्वान लोकनिकेँ एहिमे फारसक प्रभाव देखाइ पड़ैत छनि, मुदा सत्य तँ यएह अछि जे ब्राह्मी आ खरोष्ठी लिपिमे एक्के वर्णमालाक प्रयोग भेल अछि।) । जेना सङीतमे भारतक सारेगामा क सात टा सुर आ पश्चिमी ऑक्टेव (ओत्तहु साते टा छैक, ऑक्टेव माने आठम सँ पुनः पुनरावृत्तिक मात्र ई प्रतीक अछि) ई सिद्ध करैत अछि जे भाषा कोनो हुअए कान वएह छैक मनुक्खबला। ब्रेल आ इण्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट ध्वनिक संग मस्तिष्क (ब्रेल) क सेहो संप्रेषण मोटामोटी एक्के हेबाक प्रमाण दैत अछि (देखू अनुलग्नक) से पहिने तँ किछु विद्वान एकरा बैक्ट्रो-पालि आ आरियानो-पालि विदेशी लिपि बुझि कऽ कहलन्हि, कनिंघम एकरा गांधारी कहलन्हि, मुदा ललितविस्तर आ चीनक विश्वकोष फा-वां-शु-लिनक प्रमाण अकाट्य छल आ ओतऽ वर्णित एकर नाम खरोष्ठी सर्वमान्य भेल। चीनी साक्ष्य ब्राह्मीक उद्भव ब्रह्मा द्वारा आ खरोष्ठीक सर्जन ब्राह्मण आचार्य खरोष्ठ द्वारा भेल मानलक अछि।

तेसर शताब्दीक बाद अभिलेख संस्कृतमे लिखल जाए लागल, प्राकृतक प्रयोग बन्द भऽ गेल। प्राकृत लेल ब्राह्मी आ खरोष्ठी दुनू सक्षम छल मुदा संस्कृतक सन्धियुक्त अलंकृत क्लिष्ट शब्द, पद आ समास लेल मात्र ब्राह्मी। से एक बेर जे एकर प्रयोग बन्द भेल तँ प्राकृतसँ निकलल भाषा सभ लेल सेहो ब्राह्मीसँ निकलल लिपिक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल।

ब्राह्मी लिपिक अतिरिक्त ६३ टा आर लिपिक चर्च ललित विस्तरमे अछि। सम्पूर्ण यूरोपमे ग्रीस आ रसियन कॉमनवेल्थ छोड़ि कऽ (एहि दुनू ठाम अलग-अलग लिपि छैक) सम्पूर्ण यूरोपमे रोमन लिपिक प्रयोग होइत अछि। से सम्पूर्ण यूरोपमे आइ मात्र तीनेटा लिपि छैक। जँ रूसकेँ यूरोपसँ हटा दी तँ ओ भारतक बराबरे अछि। भारतमे सभ प्रान्तमे मोटामोटी अलग-अलग लिपि अछि, मुदा तमिलक अतिरिक्त सभमे अल्फा-सिलेबिक (अक्षर आ संयुक्ताक्षरक) निर्वहण मोटामोटी एके रङ होइत अछि। एकर कारण छापाखानाक देरीसँ आगमन मात्र अछि।

ब्राह्मीक मानक रूप छल आ तकर प्रमाण अछि अशोकक अभिलेख। अशोक १४म प्रस्तर-अभिलेखमे कहै छथि जे अभिलेख-आलेखनक गुण-दोष लिपिकरक जिम्मा अछि, आ सएह कारण छल जे अशोकक अभिलेखमे अक्षर आ ओकर आकारमे समरूपता अछि आ ईहो प्रमाणित होइत अछि जे अशोकक काल धरि ब्राह्मीक मानक रूप आबि गेल छल। जे भेद अछि से क्षेत्र अनुसार, लिपिकरक लेखनक अनुसार आ लेखन उपकरणक विविधताक अनुसार अछि, आजुक हिसाबेँ जँ असमतल पाथर, खोह आदिपर लिपिकार द्वारा पुरातन उपकरणसँ जतेक असमरूपता आएल अछि से मानक ब्राह्मीक स्थिति आर सुदृढ़ करैत अछि। पंकचुएशन संस्कृतमे रहबे नहि करए से प्राकृतमे सएह परम्परा आगाँ बढ़ल। विराम चिन्हक व्याकरणगत आवश्यकता ब्राह्मीक लिपिकारकेँ ओही कारणसँ आवश्यक नहि लगलन्हि।

कुटिल लिपिक विशेषतासँ प्रेरित नामकरण- न्यूणकोण वर्णमाला (बूलर, इण्डियन पालियोग्राफी, प्. ६८), नह शीर्ष वर्णमाला (टॊड, एनल्स ऑफ राजस्थान, पृ. ७००), भारयीय नाम सिद्ध मातृका, काश्मीर आ वाराणसीमे प्रचलित (अल-बेरुनी, भारत, पृ. १७३, सचाउ), देवल प्रशस्तिमे एकरा लेल कुटिलाक्षरणी प्रयुक्त भेल। आदित्यसेनक अफसड़ पाथर-अभिलेखमे एकर नाम विकटाक्षरणी अछि। विक्रमांकदेव चरितमे कुटिल लिपिमे सिद्धहस्त कायस्थ लोकनिक चर्च अछि।

जेम्स प्रिंसेप, जे १८३७ ई. मे अशोकक अभिलेखकेँ पढ़ने छलाह, एकरा लेल कुटिल लिपिक नामकरणक अनुशंसा केलन्हि (जर्नल ऑफ एशियाटिक सोशाइटी ऑफ बेन्गाल, पार्ट-५ पृ. ७७८) ।

कुटिल लिपिक विकासक की कारण छल? पहिल तँ ई छल जे लिखबाक करची-कलम आ मोशिक प्रयोग संग नव उपकरण आ पुरान उपकरणक नव प्रयोगसँ अलंकरणयुक्त अभिलेख लेखनक इच्छा जागृत भेल, लटपटौआ लिखबाक आग्रह सेहो एहि लेल कारण बनल। एहिसँ उपरका भाग फन सन बनि गेल कारण मोशि ढबकि जाइ, पाछाँ नाङरि आ पद-चिन्ह सेहो सुस्पष्ट भेल। अलंकरणक प्रवृत्तिसँ वर्ण वृत्ताकार आ चिक्कन स्वरूप लेबऽ लागल। अलंकारक कारणसँ एकर नाम पड़ल सिद्धमातृका।

कुटिल लिपिक अभिलेख भेटल अछि, कौशाम्बीक माटिक सदण्ड सप्तदीपक (ई मोन पाड़ैए मौर्य कालक बौद्ध सप्ताक्षरी (प्रसिद्ध मंत्र) कूटाक्षरक), मंदसौरक यशोधर्मनक अभिलेख, ईशानवर्माक हरहा पाथर-अभिलेख, सर्ववर्मनक असीरगढ़ मोहर-अभिलेख, अनन्तवर्मनक बराबर आ नागार्जुनी खोह अभिलेख, ईश्वर वर्मनक जौनपुर पाथर-अभिलेख, शाहपुरक प्रतिमापर अभिलेख, मन्दागिरि अभिलेख, जीवितगुप्त द्वितीयक देववार्णार्क स्तम्भ अभिलेख, हर्षवर्धनक मधुबन आ बाँसखेड़ा ताम्रपत्र-अभिलेख, हर्षवर्धनक सोनीपत मोहर-अभिलेख।

किराँत लिपिमे लिम्बू भाषा आदि लिखल गेल। ई सभ लिपि वामसँ दहिन दिश लिखल जाइए मुदा रञ्जना लिपि कूटाक्षरमे ऊपरसँ दक्षिण लिखल जाइए। नागरीक रूप नन्दीनागरीक प्रयोग मुदा बेशी मध्य दक्कन आ दक्षिण भारतमे भेल आ माध्वाचार्यक द्वैत दर्शनक संस्कृतमे लिखल पाण्डुलिपि नन्दीनागरीमे अछि।

लिपिक अनुकरणसँ साइन (इशारा) भाषा वधिर लेल १८म शताब्दी सी. ई. (कॊमन एरा) मे वधिर स्कूलमे फ्रांसक चार्ल्स मिशेल देल एप्पे द्वारा आविष्कृत भेल। ई एहेन लिपि अछि जे कागतपर नहि वरण् वायु माने वातावरणमे बनाओल जाइत अछि। अन्ध-दिव्यांग लेल ब्रेल लिपि १९म शताब्दीमे फ्रांसक लुइ ब्रेल आविष्कृत केलनि। २०म शताब्दीमे रघुनाथ मुर्मू संथाली भाषा लेल ओल-चिकी लिपिक आविष्कृत केलनि।

ब्राह्मी लिपिक पुबरिया प्रकारक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक हरिषेन लिखित प्रयाग प्रशस्ति जे अशोकक स्तम्भपर लिखल गेल छल, चन्द्र गुप्त-२ क उदयगिरि खोह लेख, स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा अभिलेख।

तिरहुता लिपिक खोजमे हम सभ उत्तर आ दक्षिणमे सँ उत्तर भारतीय आ फेर उत्तर भारतीयसँ उत्तर-पूब दिस बढ़ब। उत्तर आ दक्षिण भारतक लिपिक जे अन्तर अछि से "म" मे देखाइत अछि। उत्तर भारतक दुनू प्रकार माने पूब आ पच्छिमक प्रकार श, ष, ल आ ह मे देखाइत अछि।

गुप्त कालक अभिलेखक पूब प्रकारमे "ल" केर वाम अंग सोझे नीचाँ दिस झुकैत अछि (उदाहरण जौगड़क फराक अभिलेख) । "ष" केर आधार चेन्ह गोल बनाओल गेल आ बिचुलका चेन्हक माला सन बनि गेल। "ह" केर आधार चेन्ह धकिया देल गेल आ एकर सुल्फी उर्ध्वाधरसँ जोड़ि देल गेल।

स्कन्दगुप्तक भिताड़ी स्तम्भ अभिलेखे, ओना तँ भारतक पूबमे अछि, मुदा ओहिमे उत्तर भारतक पच्छिम प्रकारक लिपिक प्रयोग भेल। कलाकार पच्छिमसँ आओल हेताह ताहि कारण सँ ई भेल होयत। फेर ईहो भेल जे उत्तर भारतक ब्राह्मीक पूब आ पच्छिम प्रकारक सीमा रेखा परिवर्तित होइत रहल। कन्नौजपर अधिकारक लेल राष्ट्रकूट, गुर्जर-प्रतिहार आ पाल राजवंशक बेच संघर्ष मोटामोटी ७५०-१२०० ई. क मध्य भेल। एहि तरा-उपरी युद्धमे गुर्जर-प्रतिहार जखन बीस पड़लथि तँ पछबरिया कलाकारक कलाकारी पूब दिस बढ़ल। तहिना पाल जखन बीस पड़लाह तखन पुबरिया कलाकार सभकेँ बेसी पच्छिम धरि रोजगार भेटलन्हि। पछबरिया ब्राह्मी नागरी बनल आ पुबरिया ब्राह्मी तिरहुता, असमी, बांग्ला आ ओड़िया। पुबरिया प्रकारक पच्छिम आरि पाल साम्राज्य, मगध आ विदेह+वज्जि निर्धारित भेल। दसम शताब्दी धरि नागरीक पुबरिया आरि बनारस निर्धारित भऽ गेल आ ओ पूर्ण रूपसँ पुबरिया ब्राह्मीसँ फराक भऽ गेल।

मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन केलन्हि। मुदा एहि हारिसँ पहिने मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक स्थापनाक ओ प्रयास केने रहथि, ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य। आधिकारिक स्थापक नियुक्य भेलाह मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त। हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, मिथिलाक पण्डित लोकनि १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। ओना तँ ओहि समयमे हरसिंहदेव मिथिलासँ पलायन कऽ गेल रहथि तैयो हुनका सांकेतिक रूपमे एकर संस्थापक मानल गेल।

से ब्राह्मीक विकास भेल उत्तरी आ दक्खिनी प्रकारमे। उत्तरक प्रकार दू भागमे बँटि गेल, पुबरिया आ पछबड़िया। आ मोटा-मोटी १०म शताब्दीमे पुबरिया लिपि पछबरिया लिपिसँ पूर्ण रूपसँ भिन्न भय गेल। पुबरिया लिपिक सीमा मगध, अंग आ तिरहुत निर्धारित भेलै आ नागरी जे पछबरिया ब्राह्मीक रूपमे गुप्त साम्राज्यक पतन धरि प्रयागोसँ पच्छिम धरि सीमित छल ८म शताब्दीमे ई वाराणसी धरि पहुँचि गेल १२म शताब्दीमे गंगाक दक्षिणमे मगधमे पछबरिया आ पुबरिया दुनू प्रकारक प्रयोग होमय लागल। मुदा गंगाक दक्षिणमे मगधसँ पूब पुबरिया प्रकार मात्र रहलै, आ गंगाक उत्तरमे तिरहुतमे सेहो पुबरिये प्रकार मात्र रहलैक। मुस्लिम आक्रमणक बाद समस्त मगधमे पछबरिया प्रकार पसरि गेलैक मुदा १४म शताब्दी धरि (उदाहरण महाबोधि मन्दिर गया) पुबरिया लिपिक प्रयोग एतऽ पूर्णरूपसँ बन्न भय गेलैक। ।

१३२६ ई. मे पञ्जी लिखबाक प्रारम्भ भेल आ तहियासँ २०म शताब्दी धरि ई तिरहुतामे बिना परिवर्तित भेने लिखाइत रहल आ ओकर ओही रूपमे फॉण्ट बनि गेलै (देखू गूगल बुक्सपर विदेह आर्काइवक पञ्जीक ११००० तालपत्र/ बसहा कागत अभिलेख, जे प्रारम्भसँ २०म शताब्दी धरिक अछि, २०म शताब्दीक अन्तमे पञ्जी सेहो देवनागरीमे लिखल जाय लागल) । तँ तिरहुताक उद्भव आ विकासक सीमा रेखा १३२६ ई. भेल जखन तिरहुताक अन्तिम रूप निर्धारित भय गेल। पञ्जीकारक नीक-अधलाह हस्तलिपिकेँ तिरहुता फॉण्टक विभिन्न डिजाइन मात्र मानल जा सकैत अछि।

मैथिलीक अष्टम सूचीमे गेलाक बाद संघ लोक सेवा आयोगक परीक्षा आ सरकारी कार्यमे मैथिलीक प्रयोग लेल केन्द्र सरकार मात्र देवनागरीक अनुमति देने अछि। पहिने देवनागरी, तिरहुता, बांग्ला, तमिल आदि लिपिमे संस्कृत लिखाइत छलै, मुदा आब सरकार मात्र देवनागरीमे संस्कृत लिखबाक आदेश देलक अछि। ओना बिहार-झारखण्ड आदिमे अखनो सांकेतिक रूपमे स्कूल, कॉलेजक परीक्षामे आ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षामे मैथिली अहाँ देवनागरी वा तिरहुतामे लिखि सकै छी। केन्द्र सरकार संघ लोक सेवा आयोगक

परीक्षा आ अन्य कार्य लेल संस्कृत, हिन्दी, मैथिली, मराठी, कोंकणी, डोगरी, बोडो आ नेपाली केँ देवनागरीमे; संथालीकेँ ओल-चिकी वा देवनागरीमे; सिन्धीकेँ अरबी वा देवनागरीमे; उर्दू आ काश्मीरीकेँ फारसी लिपिमे; मणिपुरी आ बांग्लाकेँ बांग्ला लिपिमे लिखबाक आदेश देने अछि। असमी, गुजराती, कन्नड़, मलयालम, ओड़िया, तमिल, तेलुगु अपन-अपन अही नमक लिपिमे लिखल जायत आ पंजाबी भाषा गुरुमुखी लिपिमे लिखल जायत।

आब फेर तिरहुताक विकास दिस घुमैत छी। गुप्त साम्राज्यक पतन धरि पुबरिया लिपिक आरि-धूरि प्रयागक लग-पासक इलाका रहय जे आठम शताब्दीमे काशी पहुँचि गेलैक। १२म शताब्दीसँ-१४म शताब्दी धरि मगधमे पुबरियो प्रकारक प्रचलन रहलै, जकर बाद ओहि इलाकामे मात्र नागरीक प्रचलन रहल। १४म शताब्दीमे १३२६ मे पञ्जी लिखेनाइ शुरू भेल आ मुस्लिम आक्रमणक बाद तिरहुताक विकास पूर्ण रूपसँ ठमकि गेल आ ओ ओहि कालमे जाहि रूपमे रहय तही रूपमे २०म शताब्दी धरि रहल।

उत्तर-पूर्वी प्रकारमे किछु विशेषता अछि। “ख” केर नव रूप भेटबामे अबैत अछि। बोधगयाक एकटा अभिलेखमे “ख” केर आधार त्रिभुजक आकारक अछि। नव-मौर्य काल, जे अशोकक परवर्ती कालक अछि, मे “च” मे दू टा घुमघुमौआ आकृति लम्बवत रेखाक दुहू दिस बनैत अछि, मुदा दुनू घुमाव एक आकारक नहि अछि, छोट-पैघ अछि आ ताहि कारणसँ वृत्त नहि बनि पबैत अछि। महाबोधि मन्दिरक रेलिंग- बुद्ध परिक्रमा- मे अभिलेख सभाछि जाहि मे “य” आ “ज” उत्तर भारतीय प्रकारक अछि आ “ल” लटपटौआ अछि। जौगड़क फराक पाथर-अभिलेखमे मुदा बड्ड लटपटाकेँ लेखल गेल अछि जे बादमे पूर्व गुप्त अभिलेख (४म-५म शताब्दी) क पुबरिया प्रकारमे आर पुष्ट भेल। जौगड़मे “ह” केर लटपटौआ प्रकार बादमे पुबरिया प्रकारमे देखल जाइत अछि।

दशरथक नागार्जुनी खोह अभिलेख उत्तर-पूर्वी प्रकारक अछि आ तकर बाद महाबोधि मन्दिरक रेलिंग (परिक्रमा) क स्तम्भ सभपर अभिलेखमे ई सेहो देखाइत अछि।

नागार्जुनी खोह अभिलेखक लटपटौआ “ल” दर्शनीय अछि। “श” कलसी अभिलेखसँ मेल खाइए आ पुबरिया घुमौआ “श” क ई पूर्व रूप अछि (४म-५म शताब्दी) । “स” सेहो परिवर्तित अछि, उपरक नोकशी नमहर भऽ कनेक झुकि कऽ दोसर पाँति सनबनैत अछि।

सारानाथसँ प्राप्त अभिलेख (०१ ई. पू. सँ ०१ ई. धरि)

ब्राह्मी लिपिक उत्तर भारतीय प्रकारक पूर्वी प्रकार बोधगयाक महाबोधि गाछक नीचाँमे राखल पाथरमे प्राप्त होइत अछि। “प” केर उर्ध्वाधर रेखा छोट भेल अछि, “म” मे निचुलका भागक त्रिभुज आकार पूर्व कुषाण स्वरूपसन अछि। “श” कोणीय अछि आ एहिमे क्षैतिज रेखा वाम लम्बवत पाँतिकेँ छू नहि सकल अछि। साहेत-माहेत क बोधिसत्त्वक आकृतिपर लटपटौआ “ह” अछि आ आनठाम कोणीय “ह” । “स” मे पछुलका भाग चाकर अछि। “य” कखनो-काल अधोलिखित अछि आ एहिमे तीन फाँड़ अछि।

पूर्व प्रकार “ल”, “ह”, “ष” आ “स” मे स्पष्ट अछि। एहि कालक मुख्य अभिलेख सभ अछि- समुद्रगुप्तक प्रयाग स्तम्भ प्रशस्ति, चन्द्रगुप्त-२ क उदयगिरि खोहाभिलेख, चन्द्रगुप्त-२ आ कुमारगुप्त-१ क गढ़वा भांगल अभिलेख, कुमारगुप्त-१ क धनैदाहा अनुदान-पत्र, कुमारगुप्त-१ क मानकुँवर अभिलेख, स्कन्दगुप्तक बिहार स्तम्भ अभिलेख, भीमवर्मनक कोसम आकृति अभिलेख आ स्कन्दगुप्तक कौहम स्तम्भ अभिलेख।

लिपिक प्रकारक अन्तर कोना पकड़ी?

उत्तर भारतक प्रकार आ दक्षिण भारतक प्रकार (नागरी सहितमे) अन्तर “म” अक्षरपर ध्यान देलासँ आ उत्तर भारतक पूर्वी आ पश्चिमी प्रकारमे “ष”, “ल” आ “ह” पर ध्यान देलासँ लिपिक कलाकारीमे भिन्नता पकड़ाइत अछि।

-तीन फेँड़ बला “य”;

-“घ”, “प”, “फ”, “ष”, “स” केर नीचाँ दिस समकोणीय प्रवृत्ति संगे एहि सभ चेन्हमे दहिन दिस पुच्छी वा लम्ब जे पछबरिया प्रकारमे विकसित भेल तकर अभाव।

“आ”- दोसर वक्रमे अन्तर अर्द्धविराम सन, दहिन अंगक निचुलका भागसँ जुड़ल

“उ”- निचुलका भागक क्षैतिज रेखा वक्रमे परिवर्तित भय गेल आ नमगर भय गेल आ अही रूपमे १०म शताब्दी धरि रहल आ तखनजा कय अन्तिम रूपसँ विकसित भेल

“ख”- अक्षरक आधारमे त्रिभुज आकृति बनल फेर ई सोझ रेखा बनल आ फेर घुमि गेल, त्रिभुजक एक भुजा अर्धवृत्त बनि गेल आ दोसर नमगर भय गेल आ वृत्तक दुनू चापकेँ छूलक।

“ग”- आधार रेखाक वक्रता प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल। ६अम शताब्दीक यशोधर्मन अभिलेखक आधार रेखा वामदिस घुमि गेल आ दहिन दिस टेढ़ भय गेल आ दहिन लम्बसँ न्यून कोण बनेलक।

“ज”- पुबरिया प्रकारमे निचुलका प्रारम्भिक गुप्त कालहिसँ क्षैतिज आकार स्पष्ट छल आब लम्बवत रेखामे सेहो स्पष्ट रूपसँ गोलाइ देखाइ पड़य लागल। बिचुलका नव क्षैतिज ओतबी घुमि गेल जतेक निचुलका आधार रेखा छल। उपरका क्षैतिज रेखाक दहिन दिस “वी” आकार जुड़ि गेल।

“घ”- आधार रेखाक गोलाइ प्रारम्भिक गुप्त कालक पुबरिया प्रकारमे देखाइ पड़य लागल छल, आब ई तीन फेँड़बला “य” सन बनि गेल।

“ण”- आधार रेखा टेढ़ भय गेल आ ओ निचुलका भागक दहिन दिस न्यून कोण बनेलक आ वाम नोकशी नमगर भय गेल।

“भ”- “भ” आ “ह” केर बीच अन्तर खतम भय गेल, पछबरिया प्रकार मे ई पहिनहिये भय गेल छल।

“म”- न्यून कोण आर तीक्ष्ण भय गेल आ तकर परिणाम भेल जे दहिना अंग नीचाँ दिस बढ़ि गेल।

“य”- “य” दू प्रकारक, पहिल दू फेँड़बला, एकर निचुलका हीसमे न्यूनकोण बनैत अछि आ दोसर प्रकारमे न्यूनकोण ओतेक स्पष्ट नहि अछि मुदा दहिन भागक अंग नीचाँ दिस नमगर भऽ गेल अछि।

“व”- एतय ओही तरहक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि जेना “ख” केर आधारमे त्रिभुज बनैत अछि। त्रिभुजक दुनू भुजा वक्र बनि जाइत अछि, तेसर नमगर भऽ जाइत अछि। अक्षर ऊपर “वी” आकार बनैत अछि।

“ह”- अक्षरक दहिन अंगमे वक्र आ नोकशीक नमगर होयब आ शीर्षपर “वी” आकृति (ढबकल सन) आ अखनि धरिक क्षैतिज आधार रेखा कने टेढ़ भऽ जाइत अछि।

अफसड़ अभिलेखमे सभ ठाम दन्त “स” केर प्रयोग भेल अछि।

“श” तीन प्रकारक अछि- पहिल प्राचीन रूप जाहिमे उपरका भाग गोलाइ लेने अछि। बादक रूप बिन डण्टाक अछि। एकटा बिचुलका रूप अछि जाहिमे डण्टा सन आकृति छै, मुदा ओ न्यूनकोणकेँ दक्षिण उर्ध्वाधर रेखाक बदलामे नीचाँमे छुबैत अछि।

धर्मपालक बाद देवपालक अन्तर्गत तिरहुत प्रदेश रहल। मुदा तकर बाद गुर्जर-प्रतिहार सम्राट तिरहुत छीनि लेलनि, बिग्रहपाल -१ आ नारायणपाल क शासनकालमे।

च- चकराइ बढ़ि गेल।

ज- पुरातन रूप- बिचुलका क्षैतिज रेखा कने नीचाँ दिस टेढ़ भेल आ निचुलका क्षैतिज रेखा एकटा छोट वक्रमे खतम होइत अछि।

ट/ ठ केर दहिन अंग नहि देखाइ पड़ैत अछि।

भ-नीचाँ दिस टेढ़

ष- उपरका रेखा टेढ़ भऽ गेल।

स- आधार रेखा फेर क्षैतिज भऽ गेल आ उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ भऽ गेल।

अ/ आ- पूरापूरी तिरहुता रूप, एतय धरि जे छोटका रेखा जे दहिना लम्ब रेखाक अर्द्धविराम रूपी कटावसँ मिलैत अछि, नीचाँ दिस टेढ़ भेल अछि।

“त”- ई बदलि गेल अछि, एहिमे एकटा उपरका रेखा आ एकटा लम्ब रेखा समकोण पर अछि संगहि एकटा वक्र लम्ब रेखाक वाम दिस जुड़ि गेल अछि, जेना नागरीमे अछि।

एहिमे पुबरिया प्रकारक विशेषता भेटैत अछि जेना च पतरा गेल, ज लटपटा गेल, थ- तिरहुताक पूर्व रूप बुझाइत अछि, फानीबला “म” अछि, “श” मे फानी लम्ब रेखासँ मिज्झर होइत अछि, “ष” मे उपरका रेखा नीचाँ दिस टेढ़ होइत अछि। ई अनुदान पूब आ पच्छिमक मिश्रित रूप प्रस्तुत करैत अछि।

किछु लिपि जे अखन धरि नहि पढ़ जा सकल अछि

(१)- हड़प्पा लिपि

(३)- शंख लिपि- एकर अक्षर सभ शंख सन अछि तेँ एकर ई नामकरण भेल। ई सेहो मोटा-मोटी नाम आ हस्ताक्षर लेल प्रयुक्त होइत छल। (कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि।)

(४)- ब्राह्मी सन एकटा लिपि जे माटिक मोहर सभपर पूर्व भारतक चन्द्रकेतुगढ़ आ तामलुकसँ भेटल्; अ अछि।

किछु अक्षर पहिने तिरहुताक रूप लऽ लेलक तँ किछु कने बाद। किछु अभिलेखमे किछु अक्षरक प्रयोगे नहि भेल। अनुलग्नक-५ मे तिरहुता रूपक क्रमिक स्थिति देखाओल गेल अछि। कैथी, तिब्बती आ देवनागरी लिपि अही तरहेँ अपन वर्तमान रूपमे आओल जे अनुलग्नकमे देखाओल गेल अछि। किछु विद्वान हर्षवर्द्धनक बादक समयमे ओकर तिरहुतक मंत्री अर्जुन द्वारा कन्नौजक राजा बनब आ तिब्बतक बौद्ध यात्री सभकेँ तंग करबाक चर्चा केने छथि आ प्रत्युत्तरमे तिरहुत पर तिब्बतक कब्जाक चर्चा करैत छथि। आधुनिक विद्वान ओहि पर शंका व्यक्त करैत छथि। तिब्बतक राजनैतिक प्रभुत्वपर तँ शंका अछि मुदा सांस्कृतिक रूपसँ निम्न तथ्य तिब्बतक वज्रयानक मिथिलामे उपस्थिति देखबैत अछि। बौद्ध देवी तारा, वारी, समस्तीपुर, उग्रतारा मन्दिर, महिषी, सहरसा। मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली नाहर भगवतीपुर भुवनेश्वरी मन्दिर (मधुबनी) मे सेहो अछि, प्रायः बौद्ध भिक्षु लोकनिक ई तपस्या स्थली होयत। फेर बौद्ध सिद्ध सरहपाद जे लिखै छथि- सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तों बिसरउ एमइउ। ओ सिद्धिरस्तु आ एहि विचार कि माँड़ पीने बुद्धि मन्द होइत अछि दुनूक चर्च करैत छथि जाहिसँ हुनकर बौद्ध धर्मक मैथिल होयबाक प्रमाण भेटैत अछि, हुनकर जे फोटो तिब्बतसँ भेटैत अछि ओहिमे हुनकर फोटोक नीचाँमे तिब्बती लिपिमे वर्णन अछि।

अन्ध्राठाढी अभिलेख (श्रीधरदासक आंध्रा-ठाढ़ी अभिलेख), मधुबनी, बुद्धमूर्ति अभिलेख (कोर्थु), विष्णुमूर्ति अभिलेख (लदहो), १२म शताब्दीक सिमरौनागढ़क तिरहुता पाथर-अभिलेख, १९म शतीक ब्रह्मपुरा शिलालेखमे तिरहुताक आदर्श रूप, मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीचक गौरीशंकर स्थान, गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेख, बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि, ताहि युगक तिरहुताक अभिलेख। मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे तिरहुताक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। पौराणिक कथामे समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एतहि भेल छलन्हि। बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर (जिला अररिया) लग तिरहुताक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र’ एक छलीह महारानी’ उपन्यास सेहो लिखने छथि। बाइसी-बसैटी, अररिया तिरहुता ताम्रपत्र- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे ताम्र-पत्रपर कीलित अछि, जे कारी रंग सँ पेंट कऽ देल गेल अछि आ शिलालेख सन लगैत अछि।

जलज कुमार तिवारी आ एस. कृष्णामूर्ति २०१९ ई. मे प्रकाशित अपन आलेखमे निम्न तिरहुता अभिलेख सभक वर्णन दैत छथि जे अखन धरि कोनो पोथीमे नहि आयल छल। चेचर गाम (वैशाली) मे बुद्ध मूर्तिपर अभिलेख भेटल अछि जे तिरहुता लिपि आ संस्कृतमे अछि (९अम शताब्दी) । तारा मूर्ति, जगतपुर बरुआरी (सुपौल) जे सहरसा म्यूजियममे राखल अछि, तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख एततसँ भेटल अछि (१० म शताब्दीक) । तारा मूर्ति, दभैछा (वैशाली) मे तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषाक अभिलेख भेटल अछि (१० म शताब्दीक) । पिपरौलिया विष्णु आकृति (मूर्ति), दरभंगा, तिरहुता लिपि. संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी) । गाम- भच्छी (बहेरी लगक जिला दरभंगा, मधुबनीक भच्छीसँ भिन्न), तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म-११म शताब्दी) । कण्दाहा (सहरसा) क

पाथर अभिलेख, ओइनवार कालक राजा नरसिम्हदेवक आदेशसँ वंशधर ब्राह्मण द्वारा (तिरहुता १५मशताब्दी, भाषा संस्कृत) । मनसा आकृति (भैरवस्थान, मुजफ्फरपुर)- तिरहुता लिपि आ संस्कृत भाषामे लिखल अभिलेख (१५ म शताब्दी) । बुद्ध मूर्ति, कोर्थु दरभंगा, तिरहुता लिपि, संस्कृत भाषा (१०म शताब्दी) । एकर अतिरिक्त ओ पहिल शताब्दीक एकटा ब्राह्मी अभिलेखक चर्च सेहो करैत छथि [गाम पखौली जिला वैशाली (स्तम्भ अभिलेख) (ब्राह्मी लिपि, पहिल शताब्दी)] । तीनटा अशोक स्तम्भपर, जे कोल्हुआ (मुजफ्फरपुर) मे भेटल अछि, बादमे कियो अभिलेख खचित केने छथि। ओहिमे दूटा अभिलेख ७म शताब्दीक अछि जे नागरी लिपि आ संस्कृत भाषामे अछि आ तेसर ५म शताब्दीक अछि जे संस्कृत भाषामे आ ब्राह्मी लिपिमे अछि। कोल्हुआ, मुजफ्फरपुरक अशोक स्तम्भ (बसाढ़ स्तम्भ) मे जे तीनटा अभिलेख भेटल अछि ओहि मे किछु अक्षर शंख लिपिक सेहो अछि, जे अखन धरि नहि पढ़ल जा सकल अछि। (जलज कुमार तिवारी, एस. कृष्णामूर्ति, मिथिला भारती, भाग-६, अंक १-४, २०१९ ई.)

तेसर शताब्दी ई. पू. मौर्य, दोसर आ पहिल शताब्दी ई. पू. शुंग, पहिल सँ तेसर शताब्दी शक/ कुषाण, चारिमसँ छअम शताब्दी- गुप्त, सातमसँ ९अम शताब्दी सिद्धमातृका आ तकर बाद तिरहुता, एहि क्रममे तिरहुताक विकास हम देखि सकैत छी। तंत्रक योगदानसँ आ तिब्बती लिपिक प्रभावसँ तिरहुता अलंकृत भेल। मिथिलाक्षरक उद्भव आ विकास मे राजेश्वर झा जी किछु पुरातन तथ्यसँ अपनाकेँ दूर नहि कऽ सकला, जेना ओ नहि फरिछा सकला जे ब्रह्मी पूर्व पाणिनी व्याकरणाचार्य लोकनि द्वारा प्रयुक्त होइत छल आ पाणिनीक व्याकरणमे ओ अशुद्ध भऽ गेल आ तखनसँ एकर नाम ब्राह्मी भऽ गेल। ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा प्रयुक्त हेबाक कारणे ब्रह्मी नाम भेलपर जिदियायल छथि। हुनकर अवधारणा जे वैदेही लिपिसँ ब्राह्मी (जकरा ओ ब्रह्मी लिखै छथि) बहरायल सेहो भ्रामक अछि। मिथिलामे शंख लिपिमे सेहो छोट-छीन अभिलेख भेटल अछि, जकर वर्णन ऊपर कयल गेल अछि, जे हड़प्पा लिपि जेकाँ पढ़ल नहि जा सकल अछि आ ब्राह्मीमे सेहो अभिलेख भेटल अछि, से हुनकर कथन जे सोझे हड़प्पासँ लोक विदेह आयल विदेघ माथवक संग (शतपथ ब्राह्मण) आ एतऽ वैदेही लिपि शुरू कऽ देलक, से मान्य नहि अछि। से सगर भारतमे जे परम्परा छल जे ब्राह्मीमे पैघ अभिलेख लिखल जाइत छल आ नाम आ हस्ताक्षर लेल शंख लिपिक प्रयोग कएल जाइत छल से मिथिलोमे भेटल अछि। राजेश्वर झा तंत्र-सिद्धांत आ एकर तिरहुता लिपिपर प्रभावक सेहो जरूरति सँ बेशी प्रभाव देखेने छथि, जखन कि ओकर प्रभाव किछु सोझे आ किछु तिब्बती लिपिक माध्यमसँ पड़ल मुदा ओ ओहिसँ अलंकृत मात्र भेल। हुनकर ई कथन जे शब्दकल्पद्रुममे देल लिखबाक पद्धतिसँ बांग्ला लिपि नहि वरन् मात्र मिथिलाक्षर (तिरहुता) लिखल जा सकैत अछि, सेहो भ्रामक अछि। बांग्ला वा मिथिलाक्षर वा तिब्बती वा देवनागरी सभ ब्राह्मीपर आधारित अछि आ ई एहि तरहेँ बूझल सा सकैत अछि जे रोमन लिपिमे एकसँ एक फॉण्ट छै जे कखनो अहाँकेँ अरबी सन बुझायत कखनो लटपटौआ, आ सभ एक दोसरामे परिवर्तनीय अछि। शब्दकल्पद्रुममे देल विधि तिरहुते नहि बांग्लो लेल उपयुक्त छल, छापाखाना एलाक बाद जेना रोमन पूर्ण रूपसँ संयुक्ताक्षर खतम कऽ लेलक तहिना बांग्ला बहुत रास संयुक्ताक्षरकेँ खतम कऽ लेलक। आ ओहि नवका रूपकेँ राजेश्वर झा जी शब्दकल्पद्रुमसँ जोड़बाक गलती केलन्हि। राजेश्वर झाकेँ खरोष्ठी लिपिक सम्बन्धमे सेहो भ्रम छन्हि। खरोष्ठी दहिनसँ वाम दिस लिखल जाइत अछि मुदा ई पूर्ण रूपसँ भारतीय लिपि छल, वएह स्वर व्यंजन (कचटतप) । ब्राह्मीसँ किछु चेन्ह कम भेलाक कारण, जखन अभिलेख प्राकृतसँ संस्कृतमे लिखल जाय लागल, खरोष्ठी संस्कृतक समासयुक्त अभिलेखक लेखन लेल अनुपयुक्त भऽ गेल आ खतम भऽ गेल आ कोनो भारतीय लिप एहिसँ बहार नहि भऽ सकल।

आधुनिक तिरहुताक रूपक विकास नारायणपालक भागलपुर दानपत्र, श्रीचन्द्र रामपालक दानपत्र, महिपाल प्रथमक वनगढ़ दानपत्र, भोजवर्मनक वेलवा दानपत्र, लक्ष्मणसेनक तर्पण निधि दानपत्र सँ विकसित होइत पक्षधर मिश्र कृत विष्णुपुराण आ १३२६ ई. सँ प्राप्त मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक पञ्जीमे आबि कऽ समाप्त भऽ जाइत अछि। जे किछु छोट-मोट परिवर्तन लेखकक व्यक्तिगत लेखनीक कारण छल से छापाखाना एलाक बाद खतम भेल। रामलोचन शरण (१८८९-१९७१) तिरहुतामे मैथिलीक प्रकाशनक प्रारम्भ केलन्हि। तकरा बाद कम्प्यूटर फॉण्टमे एकरूपता आबि गेल आ से सम्भव भेल देवनागरी यूनीकोड (मंगल), बांग्ला यूनीकोड (वृन्दा) आ तखन तिरहुता यूनीकोडकेँ आधार बनेलासँ। छापाखानामे दिक्कति रहै, जे किछु रूपकेँ ओतय छोड़य पड़ैत छलै, आ घोंघाउज होइत छल जे एहि तिरहुताकेँ सीखि कऽ पाण्डुलिपि नहि पढ़ल जा सकैए। कम्प्यूटरमे एक्के आधारपर विभिन्न फॉण्टक निर्माण भेलासँ विभिन्न फॉण्ट विभिन्न तरहक लेखन रूपकेँ अंकित करैत अछि आ ओ सभ आपसमे परिवर्तनीय होइत अछि। से सभ १३२६ ई. क बादक सभ तरहक परिवर्तन (संयुक्ताक्षर सहित), जे परिवर्तन नहि वरन् लेखनक विभिन्न स्टाइल छल, क समावेश आब सम्भव भऽ गेल अछि।

२५. कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)

सारांश

छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि। भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

बीजशब्द: कृषि · मत्स्य · शब्दावली · फील्ड · वर्कपर · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “कृषि-मत्स्य शब्दावली (फील्ड-वर्कपर आधारित)” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे कृषि-मत्स्य; शब्दावली; फील्ड-वर्कपर; आधारित; काँट प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

माँछ वंशीसँ सेहो मारल जाइत अछि।

छोट माँछक लेल जाल- भौरी जालक प्रयोग होइत अछि।

भिरखा- हाथसँ उठा कए फेंकल जाइत अछि। एहिमे सूत आ लोहाक गोली प्रयोग होइत अछि, २५-२५ ग्रामक लोहाक गोली लगभग २-१/२ सँ ५ किलो धरि प्रयोगमे आनल जाइत अछि। अन्ता जाल छोट होइत अछि आ कछारमे रातिमे लगाओल जाइत अछि।

कोठी जाल पैघ होइत अछि आ एहिमे बाँसक प्रयोग होइत अछि।

बिसारी जाल- दिनमे माँछ हरकि जएतैक से रातिमे खुट्टी लगा कऽ रातिमे माँछ मारल जाइत छै।

चट्टी जाल- प्लास्टिकक, पैघ-छोट दुनू, दिनमे प्रयुक्त, आषाढ़-साओन दुनू मे। ५-१० मिनटमे उठाओल जाइत छै।

सूतक मोट पैराशूट जाल, सूत आ नाइलनक मिश्रणक करेन्ट जाल, सूतक बड़का हाटा जाल होइत छै।

पैराशूटसँ छोटकी माँछ उड़ि जएतैक।

पैघ मछली बड़का वंशीसँ, बड़का चट्टी जालसँ, सूताक महाजालसँ मारल जाइत अछि।

पैघ छोट दुनू माँछ बाँसक जंघासँ मारल जाइत छै। एकरा ४ हाथ खड़ा नारियल आ नाइलोनक डोरीसँ बान्हल जाइत छै।

बाँसक करचीक छीपसँ सेहो माँछ मारल जाइत छै।

पटुआक सण्ठीक १००-२०० पुल्ली एक संग लगा कए सेहो माँछ मारल जाइत छै।

हाटा जाल किलोमीटर धरि पैघ होइत अछि आ सूताक बनैत अछि।

चाँच कहड़ा बाँसक होइत अछि। धार/ बदहाल घेरकैं मारल जाइत अछि। पानिकैं फुला कए डगरी लगाओल जाइत छै, चाँच फहड़ासँ घेरल जाइत अछि।

माँछक प्रकार

डाँरा मछली (डेरका मछली), मूँहा मछली, पोठी, लत्ता (पिआ माँछ), गड़इ, पलवा, टेंगड़ा, सिंघी, माँगुड़, चपड़ा, पैना, रेवा, गड़ही, उरन्था, मोहुल, बुआरी, बामी, बगहार, चेलवा, कौअल, गोर्रा, सौल, भौरा, कजाल, कलबौस, चित्तल, भोइ, कत्ती, भौकुड़ी, सिलोन, रेहू, मिरका, बिलासकप, सिल्वरकप, चाइना माँगुर, कबइ, चाइना कबइ।

दरबा- छोट, पातर- २-३ इन्चक, पीठपर कारी, बगल सफेद

गड़ई- कारी

चोपड़ा- चाकर, कारी, मलिन

पलबा- दुनू दिस काँट, पीठपर सेहो काँट, रंग- पीयर-उज्जर, मोंछ सेहो होइत छै।

टेंगड़ा- पैघ माँछ, एकरो तीन टा काँट, मुँहपर मोँछ।

सिंघी- पातर, दू टा काँट दुनू दिस, लाल रंगक आ लाल आ हल्का कारी

मँगुरी- मोट आ महग सेहो। एकरो दू टा काँट, लाल आ हल्का कारी

पैना- सफेद रंगक, पीठपर काँट

रेवा- सफेद, पौआ-आधा किलोक

डढ़ी- पीठपर काँटा, सफेद

उरन्था- पीठपर काँट, नीचाँ गामे झुकल, सफेद

भालु- लम्बाइ मुँह, सफेद- खड़ा (पीयर), ऊपरमे काँटा, नाभिक लग काँट (सभ माँछमे)

बोआली- पैघ मुँह- २० किलो धरि, सफेद, पीठपर काँट, पखना दुनू दिस (सभ माँछमे)

बामी- लम्बा, बिलमे रहैत अछि, मुँह आगू, गोल मुँह, सूआ जकाँ लम्बा, पीठपर काँट, नाभिपर दू टा काँट

बघार- छोट, १ पौआसँ क्विंटल भरिक, कारी-खैरा (पीयर), काँट- पीठपर एकटा, बगलमे दू टा, पुच्छी-चाकर, मुँह चापट, चकड़ाई- बेसी।

चेलबा- उज्जर, काँट नहि होइत छै। चलैक लेल दुनू दिस पखना, माँछमे तेजगर।

कौअल- सफेद, मुँह नमगर।

गोर्रा- मोँछ, दाढ़ी, काँटा, आगाँमे टेढ़

साउल- लाल आ पीयर, नमगर, २-३-५ किलोक

भौरा-(गजाल), साउल, चितफुटरा, पैघ २०-२५-४० किलो तक, गोल-गोल उज्जर, हरियर आ कारी

कलबौस- रंग हल्का कारी

अंदाजी माँछ

चित्तल- चकरगर बेसी, २०-२५ किलोक, २-३ फीट चकरगर

सिलोन- पालतू, ३-४ किलोक, पोखरिमे पोसल जाइत अछि।

रोहु-पीयर, हल्का उज्जर, पीठपर काँट

मिरका- हल्का लाल सफेद

सिल्वरकप- पालतू

चैना माँगुर- चलानी (पालतू), दुनू दिस काँट

चैना कबइ- पालतू (चलानी), पीठपर जहाँ-तहाँ काँट

कबई- कनफर आ पीठ दुनू ठाम काँट

चेंगा माँछ- सुखायलोमे दूर धरि चलि जाइत अछि, कबई जकाँ।

आब किछु दोसर जलजीव: -

सौंस- पानिमे माँछ खाइत अछि, आदमीकेँ नोकसान नहि, आदमी संगे खेलाइत अछि, सीटीक अवाज (डोलफिन)

घड़ियाल- कुर्सेला लग गंगामे, मुँह लम्बा, एक-डेढ़ हाथ, दाँत- आँगुर जेकाँ, रंग लाल, पुछरी नमगर, ३ हाथ

बोँछ- आदमीक रंग रूप, कारी, माथपर चूल- केश पकड़िकेँ डुमा दैत छै

आ कृषि शब्दावली: --

जोड़ा बैल/ हर

ईश- हरमे जोड़ि कऽ पालोमे बान्हल जाइत छै।

लगना

पालो- कन्हापर

पालोमे दू टा कनैल दुनू बगल बड़दकेँ एने- उने (एम्हर-ओम्हर) नञि होमए दैत छै।

कनैलसँ हटि कऽ एक सवा फीटक डोरी बान्हल जाइत छै। समैल (पौन फीटक लकड़ीक/ बाँसक) मे डोरी बान्हल जाइत छै।

ईशक नीचाँमे पेटार ईशकेँ खुजए नहि दैत छै, ऊँच-नीच करए दैत छै।

हलमे पुट्ठी, नीचाँमे दू-फीटक अगल फल्ली पुट्ठीमे सेट कएल जाइत छै, माटि उखाड़ैत छै।

परहत (लगना)- हरवाह एहिपर हाथ धरैत अछि। तीन फीटक/ ६ इन्चक मुट्ठी पकड़ैबला लगनामे ठोकल जाइत छै (मुठिया) ।

नाधा- पालो-ईशमे बान्हिकेँ जोड़ल जाइत छै, डोरी होइत छै ४-५ फीटक।

दू टा मैडोर (डोरी)- १०-११ फीटक दू टा- एकरा चौकीमे बान्हि कऽ बड़दमे बान्हि कऽ हरवाहा चौकी दैत अछि।

चौकी- (बाँस/ लकड़ीक) ६-७ फीटक - एहिपर हरवाह चढ़ि कऽ चौकी दैत अछि। हरवाहाक हाथमे एक टा झूर/ ज्वोली/ लाठी बड़द हाँकए लेल रहैत अछि।

गेहूँक जोताई ३ इन्च गहरा कऽ ४-५ टा चास दऽ होइत अछि।

मक्कइ लेल ४-५ इन्च गहराइ करए पड़ैत अछि।

बीया- एक एकड़ (१०० डिस्मिल) मे २ मन गहूमक बीया, १० किलो मक्कइक बीया।

खाद- एकड़मे २० कि. डी. ए. पी., ५ किलो पोटाश, ५ किलो यूरिया, ५ किलो जिंक गहूम बाउग करबा काल देल जाइत अछि।

मकइमे डेढ़ सँ दू फीटक भेलाक बाद माटि चढ़ाओल जाइत अछि। २ कतार २ फीट चौड़ाइसँ। एकड़मे २ क्विंटल खाद देल जाइत अछि। १०० किलो डी. ए. पी., ५० किलो यूरिया, २० किलो साल्फिक, १२० किलो पोटाश, १० किलो जिंक। पानि पटवन समयमे खाद दऽ कऽ माटि चढ़बैत छियैक, फेर पानि पटबैत छियैक। पानि पटेलाक बाद यूरिया एक एकड़मे एक क्विंटल देल जाइत अछि।

आब तर-तरकारीक प्रकार: -

सिंघिया करैला- बड़ा- हाइ ब्रेक/ प्लेन

छोटकी करैला- हजरिया/ जुल्मी

सफेद करैला- पटनिआ (नजली- मध्यम खुटक)

तारबूज-

नामधारी-स्वादिष्ट- भीतरमे लाल, ऊपरमे सफेदी/ चितफुटरा (हरियर-उज्जर)

माइको- हल्का कारी

पहुजा- माइकोसँ बेशी कारी

राजधानी- कारी रंगमे

महाराजा- पैघ छोट कारी रंगमे

सैनी आ सुगरदीबी- कारी रंगक

नाथ- हल्का चितफुटरा (उज्जर/ हरियर)

गंगासागर- कुम्हर जेकाँ उज्जर साफ

सोरैय्या- चितफुटरा

खीरा

जुल्मी- छोट

हाइब्रीड

माइको- नमगर/ हरियर/ पीअर

महाराजा- खीरा

खेतीबारी- हरियर रंगक, नमगर कम, पाछाँमे मोट बेशी आगाँ कम।

२६. शब्द-प्रमाण, ज्ञान-तत्त्वमीमांसा आ भाषा-विज्ञान

सारांश

वैय्याकरणाचार्य, शब्द प्रमाण (न्याय): ज्ञान आ तत्त्व मीमांसा: भाषाविद् रामावतार यादव वैय्याकरणाचार्य लोकनिक मत अछि जे शब्द-ब्रह्मण वा स्फोट अन्तिम सत्य अछि आ ऐ विश्वक निर्माणक कारण सेहो शब्द-ब्रह्मण अछि। शब्द-ब्रह्मणक ने कोनो आदि अछि ने अन्त, ई सभ ठाम उपस्थित अछि, ई कोनो काज करबामे स्वयं सक्षम अछि आ सभ घटनाक ई द्रष्टा अछि। आत्मा जखन अपनाकेँ ऐ शब्द ब्राह्मणसँ एकीकृत भेनाइ बुझि जाइए, मुक्त भऽ जाइए।

बीजशब्द: शब्द · प्रमाण · ज्ञान · तत्त्वमीमांसा · भाषा · विज्ञान · व्याकरण

सम्पादकीय

वैय्याकरणाचार्य, शब्द प्रमाण (न्याय): ज्ञान आ तत्त्व मीमांसा: भाषाविद् रामावतार यादव

वैय्याकरणाचार्य लोकनिक मत अछि जे शब्द-ब्रह्मण वा स्फोट अन्तिम सत्य अछि आ ऐ विश्वक निर्माणक कारण सेहो शब्द-ब्रह्मण अछि। शब्द-ब्रह्मणक ने कोनो आदि अछि ने अन्त, ई सभ ठाम उपस्थित अछि, ई कोनो काज करबामे स्वयं सक्षम अछि आ सभ घटनाक ई द्रष्टा अछि। आत्मा जखन अपनाकेँ ऐ शब्द ब्राह्मणसँ एकीकृत भेनाइ बुझि जाइए, मुक्त भऽ जाइए।

शब्द-ब्रह्मण अछि ध्वनि सिद्धान्त, जे शब्द आ वस्तु दू भागमे बँटि गेल, मुदा दुनू भाग एक दोसराक समानान्तर। शब्द चारि भागमे बँटि गेल, (१) परा (२) पश्यन्ति, (३) मध्यमा आ (४) वैखारी। परा स्थितिमे शक्ति आ शक्तिमानमे पूर्ण तादात्म्य अछि। पश्यन्तिमे काल जुड़ि गेल आ ई सभ शब्द आ वस्तुक स्रोत अछि। पश्यन्ति अछि प्रणव (ॐ) जकरा प्रतिभा सेहो कहै छिऐ, पश्यन्ति सभ शब्दक स्रोत अछि आ प्रतिभा सभ अर्थक; मुदा पश्यन्ति आ प्रतिभा एक्के अछि, मात्र तर्क लेल फराक अछि। मध्यमा स्तरपर शब्द आ वस्तुक अन्तर चिन्हल जाइत अछि, आ शब्दक क्रम देखबामे अबैत अछि, मुदा अखनो ध्वनि मस्तिष्क धरि सीमित अछि। वैखारी स्तरपर शब्द वस्तुक बोध करबैत अछि आ कण्ठ, दाँत, मूर्धा, जिह्वा आदिसँ चिन्हित होइत अछि आ बहराइत अछि। प्रारम्भमे शब्द ब्रह्म रहैत अछि सत्, जइमे चित, आनन्द, ज्ञान, इच्छा, क्रिया सभ अछि, स्वातंत्र्य शक्ति आ काल सेहो अछि। फेर सत अपनाकेँ काल केर मदति सँ विभाजित करऽ चाहैए आ चित आ आनन्द अलगसँ अबैए, फेर चित् सँ ज्ञान आ आनन्दसँ इच्छा बहराइए। आ सत् बनि जाइए पश्यन्ति, छअ विधिसँ; सत्, चित, आनन्द, ज्ञान, इच्छा आ क्रियासँ। पश्यन्ति स्थितिमे शब्द आ वस्तु बड्ड महीन रहैए, आ एक दोसरामे मिज्झर रहैए। मध्यमामे शब्द आ वस्तु अलग-अलग देखार होइए, मुदा उत्पन्न अखनो नै होइए। मुदा वैखारी मे शब्द आ वस्तु दू अलग-अलग धारामे उत्पन्न होइए।

भाषाक सभसँ छोट भाग कोन अछि? वर्ण, पद (शब्द) वा वाक्य? मीमांसक वर्णकेँ, नैय्यायिक पद केँ आ वैय्याकरणाचार्य वाक्य केँ भाषाक इकाई मानै छथि।

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि चारि खण्डमे विभाजित अछि- १. प्रत्यक्ष (सोझाँ-सोझी), (२) अनुमान, (३) उपमान (तुलना केनाइ, सादृश्य) आ (४) शब्द (मौखिक गवाही) । वैध ज्ञान प्राप्त करबाक ई चारिटा साधन ऐ चारि खण्डमे अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दसँ अनुभव प्राप्त होइए। गंगेश उपमानकेँ न्यायशास्त्रमे एकटा समुचित स्थान दियेलन्हि, शब्दार्थ तकबाक विधिक रूपमे।

आ अही भाषाकेँ बान्हबाक प्रयास भेल, व्याकरण द्वारा। मीमांसक कहै छथि जे शब्द आ ओकर अर्थक संग सम्बन्ध आदि-अनन्त कालसँ अछि, ई बहरायल नै अछि आ तटस्थ अछि। प्रारम्भिक मीमांसक ईश्वरमे विश्वास नै करै छला मुदा वेदमे विश्वास करै छला। बौद्ध भाषाकेँ, वेदक भाषाकेँ सेहो, मानवीय काल्पनिक रचना, विकल्प, मानैत छथि। जाक डेरीडा बौद्ध आ मीमांसकक बीच सेतु बनै छथि। ओ भाषाक प्रारम्भ लेखन कलामे मानैत छथि मुदा तइसँ ओ नागार्जुनसँ दूर आ भर्तृहरिक व्याकरण विचारसँ लग आबि जाइ छथि। ओना डेरीडा बौद्ध सन भाषाकेँ आदर्शवादी बनेबाक विरुद्ध छथि, आ विषयनिष्ठताक पक्षधर छथि।

पारम्परिक व्याकरण आ आधुनिक भाषाविज्ञानक बीच तुलनात्मक अध्ययन- जियान ली आ किंग मिंग ली [मानविकी आ विदेशी भाषा संकाय, शियान प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, शान्सी शियान, चीन] [शिक्षा, प्रबंधन, वाणिज्य आ समाज पर अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन (ईएमसीएस २०१५) पृ. २८७-२९१]

पारम्परिक व्याकरण

सबसँ प्राचीन व्याकरणक रूपमे, पारम्परिक व्याकरणक उत्पत्ति १५म शताब्दी ईसा पूर्वमे भेल छल, जाहिमे यूनानमे प्लेटो आ अरस्तू आ भारतमे पाणिनी नामक संस्कृत विद्वान छलाह। विभिन्न रोमन आ प्रारम्भिक ईसाई युगक लेखक लोकनि सेहो पारम्परिक व्याकरणमे योगदान देलनि, मुदा पारम्परिक व्याकरणकार सभ १८म शताब्दीमे सबसँ प्रभावशाली रूपेँ लिखब प्रारम्भ कयलनि, ओइ समयक जखन अङ्ग्रेजीकेँ एकटा अलग भाषाक रूपमे गम्भीरतासँ लेल जाय लागल छल, ने कि मात्र एकटा आन स्थानीय भाषाक सन। पारम्परिक व्याकरणक विशेषताकेँ एना चित्रित कयल जा सकैत अछि। पहिल, व्याकरणक एकटा मुख्य विशेषता ई अछि जे सामान्यतः अर्थ पर आधारित अछि। पारम्परिक व्याकरणक अनुसार, वाक्य शब्दक एकटा समूह अछि जे पूर्ण विचारकेँ व्यक्त करैत अछि। पारम्परिक व्याकरण प्रायः एकर अर्थ आ अर्थ सँ रूप धरि विश्लेषण करैत अछि। भाषा शिक्षणक दृष्टिकोणसँ पारम्परिक व्याकरण भाषाई घटनाक व्यवस्थित वर्णन नहि दैत अछि। ई प्रायः सतह स्तर पर वर्णन दैत छैक आ प्रायः कोनो वाक्यक विश्लेषण अलग-थलग करैत छैक ने कि प्रवचन स्तर पर। आ कखनो-कखनो ई बिना वर्णन स्तरक सेहो होइत छैक, तेँ ई शिक्षककेँ ओइ भाषाक संतोषजनक विवरण नहि दैत छैक जे ओ पढ़ा रहल छथि, आ छात्रकेँ ओहि भाषाक पर्याप्त विवरण नहि दैत छैक जकरा ओकरा सिखबाक आवश्यकता छैक। पारम्परिक व्याकरण सामान्यतः मौखिक भाषापर विचार आ अध्ययन कयने बिना लिखित भाषाक वर्णन करैत अछि। आ संगहि, ई लिखित केँ मौखिक रूपसँ भ्रमित करैत अछि, मुदा जेना कि हम जनैत छी, मौखिक भाषाक प्रणाली लिखित भाषासँ किछु हद धरि भिन्न अछि। तेँ पारम्परिक व्याकरण छात्र सभ लेल मौखिक संचारक तंत्र प्राप्त नहि कऽ सकैत अछि। आ पारम्परिक व्याकरण आकृति विज्ञान आ वाक्यविन्यासकेँ एकटा प्रमुख स्थान दैत अछि, पारम्परिक व्याकरणमे लेक्सिस आ ध्वनिविज्ञानक उपचार बहुधा अपर्याप्त होइत अछि। एकर नुकसानक बावजूद, पारम्परिक व्याकरण भाषा शिक्षण, विद्यालय व्याकरणक लेल बहुत मूल्यवान अछि, आ बहुत रास लोक अखनो मानैत छथि जे ई एकटा कार्यात्मक, सुरुचिपूर्ण, समय-सम्मानित तरीका अछि जे लोकसभकेँ भाषाक विषयमे की जानबाक चाही से सिखाबैत अछि|

आधुनिक भाषाविज्ञान

आधुनिक भाषाविज्ञानक आरम्भ स्विस भाषाविद् फर्डिनेल डी सॉसर (१८५७-१९१३) सँ भेल छल, जिनका प्रायः 'आधुनिक भाषाविज्ञानक जनक' आ 'एकटा एहन अनुशासनक निपुण' कहल जाइत अछि, जकरा 'आधुनिक' बनाओल जाय (कुलर १९७६: ७) । आधुनिक भाषाविज्ञान भाषाई अध्ययनक विज्ञान अछि। आधुनिक भाषाविज्ञानक अनुसार, भाषा एकटा प्रणाली अछि आ व्याकरणकेँ कोनो निश्चित भाषाक व्यवस्थित वर्णनक रूपमे मानल जाइत अछि, चाहे ओ लिखित वा मौखिक हो। व्याकरण वितरण मानदंडक अनुसार सतह संरचना तत्व सभक वितरणात्मक विश्लेषणकेँ सेहो संदर्भित करैत अछि। संगहि, आधुनिक व्याकरणमे ध्वन्यात्मक आ शब्दार्थ घटकक सेहो ध्यान राखल जाइत अछि। सामान्यतः आधुनिक व्याकरणक मूल्यांकन वर्तमानमे प्रयोज्यता, सरलता, पूर्णता, स्पष्टता, आ विरोधाभासक अभावक आधार पर कयल जाइत अछि। आधुनिक व्याकरण वर्णनात्मक व्याकरण, संरचना व्याकरण, कार्यात्मक व्याकरण, परिवर्तनकारी-जननात्मक व्याकरण (प्रकरण व्याकरण) आ बहुत रास अन्य व्याकरणसँ प्रारम्भ होइत अछि।

वर्णनात्मक व्याकरण: वर्णनात्मक व्याकरण वर्णन करैत अछि जे कोनो भाषा वास्तवमे कोना बाजल आ लिखल जाइत अछि आ ई वर्णन नहि करैत अछि जे कोनो भाषाकेँ कोना बाजल वा लिखल जाय। वर्णनात्मक व्याकरणक अनुसार, एहिमे कहल गेल अछि जे भाषण भाषाक मूल रूप अछि, आ बाजल आ लिखल भाषामे अन्तर अछि। फ्राइज एकटा प्रतिष्ठित व्याकरणविद छथि, हुनक कृति 'अमेरिकन इंग्लिश ग्रामर' एकटा प्रसिद्ध कृति अछि। हुनक अनुसार, सभ शब्दकेँ दू भागमे वर्गीकृत कयल गेल अछि: विषयवस्तु शब्द आ कार्यात्मक शब्द, पारम्परिक व्याकरण जकाँ वाणीक दस अलग-अलग भाग नहि। विषयवस्तु शब्द ओहि शब्दकेँ सन्दर्भित करैत अछि जकर विभक्ति होइत अछि आ जकर शाब्दिक अर्थ होइत अछि, जेना संज्ञा, क्रिया, विशेषण आदि। कार्यात्मक शब्द ओ शब्द छैक जे संरचना, निर्धारिती, अधीनस्थ संयोजन, सहायक आ जोरदार शब्द तैयार करबामे महत्वपूर्ण भूमिका निमहाबैत छैक।

संरचनात्मक व्याकरण: संरचनात्मक व्याकरण पारम्परिक व्याकरणसँ एकदम भिन्न अछि। एकर बदला जँ व्यक्तिगत शब्द आ ओकर काल्पनिक अर्थ या वाक्यमे एकर वाणीक अंश-कार्य पर ध्यान केन्द्रित कयल जाय तँ संरचनात्मक व्याकरण संरचनाक समूह - ध्वनि, रूप, शब्द समूह, वाक्यांश - छोट सँ पैघ इकाइ धरि काज करय पर केन्द्रित अछि। संरचनात्मक व्याकरण शब्दार्थ केँ सेहो देखैत अछि (यद्यपि एकर किछु पूर्ववर्ती अधिवक्तालोकनि एकर अनदेखी करबाक प्रयास कयलनि), मुदा ई शब्दार्थ अर्थपर, वाक्यविन्यास पर जोर दैत अछि। अर्थात्, संरचनात्मक व्याकरण वाक्यविन्यास पैटर्न द्वारा कएल गेल अर्थक विश्लेषण करैत छैक जे मॉर्फीम आ शब्द एक

दोसरक संग बनबैत छैक, पैटर्न जेना बहुवचन रूप, संशोधक-क्रिया या संशोधक-विशेषण कनेक्शन, विषय-विधेय कनेक्शन आदिसँ बनैत छैक।

आकृति विज्ञान आ वाक्यविन्यास पर सामान्य जोरक अतिरिक्त, संरचनात्मक व्याकरण तीन विशेष रूपसँ उपयोगी विश्लेषणात्मक तकनीक विकसित कयलक: परीक्षण फ्रेम, तत्काल घटक विश्लेषण, आ वाक्य सूत्र। टेस्ट फ्रेम विशेष रूपसँ स्कूलसभमे व्याकरण पढ़ाबैमे सहायक रहल अछि।

संरचनात्मक व्याकरणक नोकसान निम्नानुसार अछि:-

ई भाषाक व्याकरणिक प्रणालीक अपूर्ण वर्णन प्रस्तुत करैत अछि, आ व्याकरणात्मकताक अनंत श्रृंखलाक निर्माणक लेल आवश्यक नियम प्रदान नहि करैत अछि।

ई रूपात्मक आ रूप-ध्वन्यात्मक नियमसभपर अत्यधिक भार दैत अछि, मुदा शब्दार्थ सम्बन्धपर कनेकबे ध्यान देल गेल, जेना पारम्परिक व्याकरणमे अछि।

ई वाक्यक सतहक संरचना आ कतेको गहींर सामान्यीकरणक गलत निर्माणक वर्णन करैत अछि।

संरचनात्मक व्याकरण वाक्यक व्याकरणिकता आ व्याकरणात्मकताक डिग्री निर्धारित करबाक लेल एकटा मानदण्ड दैत अछि। आ ई स्पष्ट समझ आ सही उपयोगक गारंटी देबाक लेल पर्याप्त स्पष्टीकरण नहि दैत अछि। एहिसँ शिक्षार्थी त्रुटि कऽ सकैत छथि।

एहिमे अर्थक उपचारकेँ शामिल नहि कयल गेल अछि, मुदा यदि अर्थकेँ ध्यान मे नहि राखल जायत तँ कोनो व्याकरणिक विश्लेषणक कोनो उपयोग नहि होयत।

ई आओर दूटा महत्वपूर्ण क्षेत्रक लेल संतोषजनक आधार प्रदान नहि करैत अछि: रचनात्मक विश्लेषण आ व्यावहारिक भाषाविज्ञानमे अनुवाद।

परिवर्तनकारी- जननात्मक व्याकरण Transformational- generative Grammar: परिवर्तनकारी-जननात्मक व्याकरण, टीजी व्याकरण, नॉर्मन, चोम्स्की द्वारा विकसित कयल गेल अछि। ई १९५७ मे प्रकट भेल जखन भाषाविज्ञानमे एकटा क्रांति भेल। किछु भाषाविज्ञानीक अनुसार, टीजी व्याकरण [Transformational-generative Grammar] पारम्परिक व्याकरण आ संरचनात्मक व्याकरणक योगदानक संश्लेषण अछि। जतय धरि संरचनात्मक व्याकरणक सवाल अछि, चोम्स्की अपन व्याकरणक पहिल चरणक रूपमे आईसीए (तत्काल घटक विश्लेषण) क पुनर्निर्माण कयलनि, मुदा ओ बहुत आगू बढ़लाह आ अपन कतेको चरणसँ गुजरल औपचारिकतामे सटीकताक माँगकेँ पूरा कयलनि जेना- शास्त्रीय सिद्धांत, मानक सिद्धांत, विस्तारित सिद्धांत, आ संशोधित विस्तारित सिद्धांत।

पहिल चरण- प्रतिनिधि कृति, 'वाक्यात्मक संरचना'[Syntactic Structure], ई संदर्भ मुक्त संरचना द्वारा उत्पादित वाक्यसभक अनंत समूहसँ सम्बन्धित अछि। ई मूल परिवर्तनकारी नियम बनबैत अछि। दोसर चरण- प्रतिनिधि कृति 'वाक्यविन्यासक सिद्धांतक पहलू'[Aspects of the Theory of Syntax] क सङ्ग, मूल वाक्यविन्यास सिद्धान्तकेँ व्याकरणक एकटा सामान्य सिद्धांत धरि विस्तारित कयल गेल अछि जाहिमे स्वरविज्ञान आ शब्दार्थ सम्मिलित अछि। वाक्यविन्यासक आधार गहींर संरचना छैक, आ सतह संरचना घटना, जेना स्वर, शब्द क्रम आ विषय-छंद। विस्तारित सिद्धांतक चरणमे, एतऽ ध्यान व्यक्तिगत व्याकरणसँ सार्वभौमिक व्याकरणमे परिवर्तित भऽ गेल अछि। एहि चरणमे, सभ परिवर्तनकारी नियमकेँ मात्र एकटा नियममे घटा देल जाइत छैक। संगहि एहि चरणमे, बाधाक सार्वभौमिक सूत्रीकरण विकसित कयल जाइत अछि। अत: टीजी व्याकरणक लाभ ई अछि: पहिल, ई वास्तवमे वाक्यविन्यास स्वरविज्ञान, शब्दकोश आ शब्दार्थकेँ जोड़ैत अछि। तेँ ई प्रणाली भाषाक समग्र अवधारणा दैत अछि। आओर ई तंत्र कोनो आन व्याकरणिक मॉडलक तुलनामे बेसी सटीक आ बेसी पूर्ण अछि। दोसर, टीजी व्याकरण भाषाक बेसी किफायती आ व्यवस्थित वर्णन दैत छैक, ई नियमक एकटा प्रणाली प्रदान करैत छैक जे अनंत संख्यामे व्याकरणिक वाक्यक निर्माणक अनुमति दैत छैक। पारम्परिक व्याकरणक विपरीत, टीजी व्याकरणमे कहल गेल नियम बहुत स्पष्ट आ औपचारिक रूपसँ स्पष्ट अछि। तेसर, टीजी व्याकरण हमरा सभकेँ बहुत स्पष्ट रूपसँ देखबैत अछि जे ई एकटा पैघ सामान्यीकरण शक्तिकेँ संसाधित करैत अछि। ई अन्तर्निहित संरचना आ नियमितताकेँ सेहो स्पष्ट करबामे सक्षम अछि, जकरा पारम्परिक व्याकरण आ संरचनात्मक व्याकरणक व्याकरणविद अनदेखी कयलनि अछि। चारिम, टीजी व्याकरण गहींर संरचनाक स्तर पर भाषाक बीच भाषाई सार्वभौमिकता आ विश्लेषणक

अस्तित्वकेँ स्वीकार करैत अछि।..संरचनात्मक व्याकरणक अनुसार, प्रत्येक भाषा एकटा व्यक्तिगत संरचना प्रस्तुत करैत अछि। मुदा टीजी व्याकरण स्वीकार करैत अछि जे सभ भाषाक वर्णनमे समान सामान्य रूप आ एक प्रकारक नियम होइत अछि। ई पूर्व सार्वभौमिकता केँ संदर्भित करैत अछि। आ ओ सभ सामान्य श्रेणी आ गहींर संरचना सेहो प्रस्तुत करैत अछि आ ई मूल सार्वभौमिकताकेँ संदर्भित करैत अछि, आ टीजी व्याकरणक अंतिम लाभ ई अछि जे ई व्याकरणिकता आ व्याकरणात्मकताक स्तरक धारणाकेँ चिह्नित कऽ सकैत अछि जे मूल्यांकन, परीक्षण आ त्रुटि विश्लेषणक क्षेत्रमे अपरिहार्य अछि।

फंक्शनल ग्रामर-कार्यात्मक व्याकरण एम. ए. के. हैलिडे द्वारा बनाओल गेल छल। १९५० मे एकरा व्यवस्थित व्याकरण कहल गेल छल। कार्यात्मक व्याकरणमे, अर्थकेँ एहि उद्देश्यक रूपमे लेल जाइत अछि जे वक्ता चाहैत छथि जे सुननिहार बुझथि। एतय कोनो वाक्यक अर्थ ओकर कार्यक समान होइत अछि। कार्यात्मक व्याकरणक उद्देश्य अर्थ आ शब्दक प्रासंगिक विकल्पक सीमाक अध्ययन करब अछि। आ भाषाक कार्यात्मक दृष्टिकोणक एकटा महत्वपूर्ण निहितार्थ एकर संदर्भ अछि। माने कार्यात्मक व्याकरण संदर्भकेँ ध्यानमे रखैत अछि, आ ई भाषा विज्ञानकेँ समाजशास्त्र दिस लऽ जाइत अछि। ओ संस्कृति आ समाजमे प्रासंगिक विशेषता सभक व्यवस्थित अध्ययन थिक, जे ओहि सन्दर्भक निर्माण करैत अछि जाहिमे भाषाक प्रयोग कयल जाइत अछि। कार्यात्मक व्याकरणक अनुसार, सभटा शब्दकेँ ओपन सेट आ क्लोज्ड सेटमे विभाजित कयल जा सकैत अछि। ओपन सेट संज्ञा, क्रिया, विशेषण आ क्रियाविशेषण अछि; ओ शाब्दिक शब्द वा सामग्री शब्द अछि।.. कार्यात्मक व्याकरणमे समूह आ वाक्यांश दूटा अलग-अलग अवधारणा अछि। समूह शब्दक विस्तार अछि, जखन कि वाक्यांश खण्डक संपीड़न अछि। वाक्यांश विशेष रूपसँ पी. पी. केँ संदर्भित करैत अछि; कार्यात्मक व्याकरणमे संरचित आ कार्यात्मक लेबल सेहो अछि। संरचनात्मक लेबल तत्वसभक संरचनाक प्रकृतिकेँ संदर्भित करैत अछि, जखन कि कार्यात्मक लेबल खण्डसभक वाक्यात्मक कार्यकेँ सन्दर्भित करैत अछि।

आधुनिक भाषाविज्ञान आ पारम्परिक व्याकरणक बीच अन्तर

भाषाविज्ञान वर्णनात्मक अछि निर्देशात्मक नहि: अधिकांश आधुनिक भाषाविज्ञान वर्णनात्मक अछि, किएक तँ ई वर्णन करबाक प्रयास करैत अछि जे लोक वास्तवमे की कहैत छथि, नहि कि लोककेँ की कहबाक चाही। ई भाषाक वर्णन ओकर सभ पहलूमे करैत अछि, मुदा 'शुद्धता'क नियम निर्धारित नहि करैत अछि। ई पछिला शताब्दीमे भाषाक अध्ययनक विपरीत अछि। ई अधिकांशतः निर्देशात्मक छल। पारम्परिक व्याकरण लोकसभकेँ भाषाक उपयोग केना करब बतबैत छल। स्कूलक शिक्षककेँ रखरखावक लेल अपन कर्तव्यक रूपमे देखबाक चाही। एकर बदला ओ सभ पर्यवेक्षक आ तथ्यक अभिलेखकर्ता बनब पसिन्न करत, मुदा न्यायाधीश नहि। हुनकर मानब छनि जे प्राकृतिक भाषण (संकोच, अपूर्ण उच्चारण, गलतफहमी आदि) मे जे किछु होइत छैक ओकर वर्णन हुनकर विश्लेषणमे कयल जेबाक चाही। ओ सभ बुझि सकैत छथि जे फैशनक प्रभावक कारणेँ एक प्रकारक भाषण दोसरक तुलनामे सामाजिक रूपसँ बेसी स्वीकार्य प्रतीत होइत अछि। मुदा एहिसँ हुनका ई नहि सोचय पड़तनि जे सामाजिक रूपसँ स्वीकार्य विविधता आन सभ किस्मक स्थान लऽ सकैत अछि, अथवा पुरान शब्द हरदम नव वा विपरीत सँ नीक होइत अछि। ओ सभ भाषा आ भाषाक उपयोगमे परिवर्तनकेँ एकटा स्वाभाविक आ निरंतर पूर्वाग्रहक परिणाम मानत, मुदा कोनो एहन चीजक नहि जकरा डरबाक चाही। भाषा परिवर्तनकेँ देखल जेबाक चाही आओर वर्णित कएल जेबाक चाही। मुदा, ई एहि बातसँ इनकार नहि करैत अछि जे भाषाक नियम होइत अछि। एना स्पष्ट रूपसँ होइत अछि नहि तँ हम सभ एक दोसरकेँ नहि बुझि/ बुझा सकब। दोसर दिस, कोनो एकल नियम या अभिव्यक्ति आवश्यक रूपसँ सदाक लेल नहि रहैत अछि।

भाषाविज्ञान बाजल जायवला भाषाकेँ प्राथमिक मानैत अछि, लिखितकेँ नहि: अतीतमे, व्याकरणविद लिखित शब्दक महत्वपर बेसी जोर देलनि अछि, आंशिक रूपसँ एकर स्थायित्वक कारण। ध्वनि रिकॉर्डिंगक आविष्कारसँ पहिने क्षणभंगुर उच्चारणक सामना करब कठिन छल। पारम्परिक शास्त्रीय शिक्षा सेहो आंशिक रूपसँ दोषी छल। लोकसभ शास्त्रीय कालक 'सर्वश्रेष्ठ लेखक'क उपयोगक अनुसार भाषाकेँ ढालबा पर जोर देलनि आ ई लेखक मात्र लिखित रूपमे अस्तित्वमे छलाह।

यद्यपि, तथ्यक रूपमे, कि हम सामान्य रूपसँ मानव वाणीक इतिहासक विषयमे सोचैत छी जे व्यक्तिगत वक्ता, बाजल जायवला भाषाक भाषाई अनुभव प्राथमिक घटना थिक, आ लेखन एकर कमोबेश अपूर्ण प्रतिबिम्ब थिक। हम सभ पढ़नाइ सिखबासँ पहिने भाषण बुझनाइ सीखैत छी, आ लिखनाइ सिखबासँ पहिने बजनाइ सीखैत छी। हम सभ जतेक पढ़ैत छी ओहिसँ बेसी भाषा सुनैत छी आ लिखबासँ बेसी बजैत छी। बाजल जायवला भाषा सामान्यतः लिखित भाषासँ बेसी लचीला होइत अछि। ई भाषाई विकासक नेतृत्व करैत अछि, जखन कि लिखित भाषा बेसी वा कम अंतराल पर ओकर अनुसरण करैत अछि।

बाजल जायवला भाषाकेँ कतेको कारणसँ प्राथमिक माध्यम मानल जाइत अछि। बाजल जायवला भाषा ऐतिहासिक रूपसँ लिखित भाषासँ पहिने होइत अछि। दोसर शब्दमे, ई लिखित प्रणाली अस्तित्वमे अयबासँ बहुत पहिनेसँ अस्तित्वमे छल। आइयो बहुत रास सुविकसित भाषामे एखन धरि लिखित प्रणाली नहि अछि। आनुवंशिक रूपसँ बच्चा सभ लिखब सीखबासँ पहिने सदिखन बाजब सीखैत अछि। आन्हर बच्चासभकेँ बाजब सिखबामे कोनो कठिनाई नहि होइत छैक मुदा बहिर बच्चासभकेँ बहुत कठिनाई होइत छैक। एहिसँ पता चलैत अछि जे दृष्टिक चैनल ओतेक महत्वपूर्ण नहि अछि जेना कोनो भाषा सीखबामे ध्वनिक चैनल।

मुदा, ई लिखित भाषाक महत्वसँ इनकार करबाक लेल नहि अछि, जकर अपन लाभ अछि जे बाजल जायवला भाषाक नहि अछि। पहिल, लिखित भाषाक सङ्ग, सन्देशकेँ अन्तरिक्षमे लऽ जाय सकैत अछि। मानव आवाज मात्र कानक शॉटक भीतर प्रभावी होइत अछि। लिखित भाषाक मदति सँ,..हम विशाल स्थान पर संदेश भेज आ प्राप्त कए सकैत छी। दोसर जे लिखित भाषाक सङ्ग सन्देशकेँ समयक माध्यमसँ लऽ जायल जा सकैत अछि। बाजल जायवला शब्द 'मरि जाइत अछि', मुदा एकटा लिखित सन्देशकेँ उत्पादनक क्षणसँ बहुत आगू, बहुधा पीढ़ीसँ पीढ़ी आ एक संस्कृतिसँ दोसर संस्कृतिमे प्रेषित कयल जा सकैत अछि। तेसर, मौखिक संदेश विकृतिक अधीन होइत छैक, या तँ अनजानमे (जखन उदाहरणक लेल गलतफहमीक कारण) वा अन्यथा। दोसर दिस, लिखित संदेश ठीक ओहिना रहैत अछि चाहे एक हजार साल बाद पढ़ल जाय या दस हजार मील दूर।

बाजल जायवला उच्चारण लिखित वाक्यक सङ्ग बहुत रास सामान्य विशेषता साझा करैत अछि, मुदा ओ काफी अन्तर सेहो प्रदर्शित करैत अछि। एहि लेल भाषाविदक मानब छनि जे बाजल जायवला रूप आ लिखित रूप अलग-अलग प्रणालीसँ सम्बन्धित अछि यद्यपि ओ ओवरलैप भऽ सकैत अछि। सिस्टमक अलग-अलग विश्लेषण करबाक चाही: पहिने बाजल जाइत अछि, फेर लिखल।

भाषाविज्ञान पारम्परिक व्याकरणसँ एहि लेल भिन्न अछि जे ई भाषासभकेँ लैटिन-आधारित ढाँचामे बाध्य नहि करैत अछि: अतीतमे, बहुत रास पारम्परिक पाठ्यपुस्तक सभ निस्सन्देह ई मानलक अछि जे लैटिन एकटा सार्वभौमिक रूपरेखा प्रदान करैत अछि जाहिमे सभ भाषा फिट होइत अछि, आ अनगिनत स्कूली बच्चा अङ्ग्रेजीकेँ विदेशी पैटर्नमे बाध्य करबाक अर्थहीन प्रयाससँ भ्रमित भऽ गेल अछि। उदाहरणक लेल, कखनो-कखनो ई दावा कयल जाइत अछि जे जॉन लेल सन वाक्यांश 'डेटिव केस'मे अछि। मुदा ई स्पष्ट रूपसँ असत्य अछि, किएक तँ अङ्ग्रेजीमे लैटिन-प्रकारक केस सिस्टम नहि अछि। अन्य समयमे, लैटिन ढाँचाक प्रभाव बेसी सूक्ष्म होइत छैक, आ तेँ बेसी भ्रामक होइत छैक। बहुत रास लोक गलत तरीकासँ किछु लैटिन श्रेणीकेँ 'प्राकृतिक' मानय लगलाह अछि। उदाहरणक लेल, सामान्यतः ई मानल जाइत अछि जे भूत, वर्तमान आ भविष्यक लैटिन कालक विभाजन अपरिहार्य अछि। तैयो बेसीकाल एहन भाषासभसँ भेँट होइत अछि जइमे ई तीन सुव्यवस्थित काल भेद नहि होइत अछि। किछु भाषामे कोनो क्रियाक अवधिकेँ व्यक्त करब बेसी महत्वपूर्ण अछि, चाहे ओ एकटा फराक काज हुअय वा निरन्तर होइबला काज, नै कि कोनो काजकेँ समयमे ताकब।

एकर अतिरिक्त, किछु संरचनापर निर्णय प्रायः लैटिन मूलक निकलैत छैक। उदाहरणक लेल, लोकसभ बेसीकाल तर्क दैत छथि जे 'नीक अंग्रेजी' स्प्लिट इनफिनिटिव [स्प्लिट इनफिनिटिवमे कोनो क्रिया विशेषण वा क्रिया विशेषण वाक्यांश "टू" आ " इनफिनिटिव " घटकमे फराक कएल जाइत अछि] सँ बचैत अछि जेना to humbly apologize वाक्यांशमे, जतय to apologize केर 'विभाजन' कयल जाइत अछि humbly द्वारा। ई विचार जे स्प्लिट इनफिनिटिव गलत अछि से लैटिन पर आधारित अछि। शुद्धतावादी लोकनि जोर दैत छथि कि, चूँकि लैटिन इनफिनिटिव मात्र एकटा शब्द अछि, एकर अंग्रेजी समकक्ष एक शब्दक यथासंभव नजदीक होयबाक चाही। भाषाविद लेल एक भाषाकेँ दोसर भाषाक मानकसँ तुलना कऽ निर्णय करब अकल्पनीय अछि। ओ लोकनि एहि धारणाक विरोध करैत छथि जे कोनो एकटा भाषा आन सभ लेल पर्याप्त रूपरेखा प्रदान कऽ सकैत अछि। ओ सभ एकटा सार्वभौमिक ढाँचा स्थापित करबाक प्रयास कऽ रहल छथि, मुदा ई मानव जाति द्वारा उपयोग कयल जायवला अधिकांश भाषासभ द्वारा साझा कयल गेल विशेषतासभ पर आधारित होयत।

- जियान ली आ किंग मिंग ली

नेपालक मैथिली भाषा पाठ्यपुस्तक लेल रामावतार यादव जीक मैथिली व्याकरणक आधारपर बनाओल मानक उच्चारण आ लेखन शैली

मैथिलीमे उच्चारण तथा लेखन

१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न आ म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२. ढ आ ढ़: ढ़क उच्चारण "र् ह"जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ "र् ह"क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आनठाम खालि ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३. व आ ब: मैथिलीमे "व"क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण: बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४. य आ ज: कतहु-कतहु "य"क उच्चारण "ज"जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएवला शब्दसभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, याबत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५. ए आ य: मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे "ए"केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ "य"क प्रयोगक प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ

बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो "ए"क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६. हि, हु तथा एकार, ओकार: मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार आ हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७. ष तथा ख: मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८. ध्वनि-लोप: निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (' / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप: पढ़' गेलाह, क' लेल, उठ' पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप: खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप: दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप: पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप: छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप: छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९. ध्वनि स्थानान्तरण: कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई नियम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०. हलन्त (्) क प्रयोग: मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्) क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्दसभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि। एहि पोथीमे सामान्यतया सम्पूर्ण शब्दकेँ मैथिली भाषासम्बन्धी नियमअनुसार हलन्तविहीन राखल गेल अछि। मुदा व्याकरण सम्बन्धी प्रयोजनक लेल अत्यावश्यक स्थानपर कतहु-कतहु हलन्त देल गेल अछि। प्रस्तुत पोथीमे मथिली लेखनक प्राचीन आ नवीन दुनू शैलीक सरल आ समीचीन पक्षसभकेँ समेटिकऽ वर्ण-विन्यास कएल गेल अछि। स्थान आ समयमे बचतक सङ्गहि हस्त-लेखन तथा तकनिकी दृष्टिसँ सेहो सरल होबऽवला हिसाबसँ वर्ण-विन्यास मिलाओल गेल अछि। वर्तमान समयमे मैथिली मातृभाषीपर्यन्तकेँ आन भाषाक माध्यमसँ मैथिलीक ज्ञान लेबऽ पड़ि रहल परिप्रेक्ष्यमे लेखनमे सहजता तथा एकरूपतापर ध्यान देल गेल अछि। तखन मैथिली भाषाक मूल विशेषतासभ कुण्ठित नहि होइक, ताहूदिस लेखक-मण्डल सचेत अछि। प्रसिद्ध भाषाशास्त्री डा. रामावतार यादवक कहब छनि जे सरलताक अनुसन्धानमे एहन अवस्था किन्नहु ने आबऽ देबाक चाही जे भाषाक विशेषता छाँहमे पडि जाए। हमसभ हुनक धारणाकेँ पूर्ण रूपसँ सङ्ग लऽ चलबाक प्रयास कएलहुँ अछि।

पोथीक वर्णविन्यास कक्षा ९ क पोथीसँ किछु मात्रामे भिन्न अछि। निरन्तर अध्ययन, अनुसन्धान आ विश्लेषणक कारणे ई सुधारात्मक भिन्नता आएल अछि। भविष्यमे आनहु पोथीकेँ परिमार्जित करैत मैथिली पाठ्यपुस्तकक वर्णविन्यासमे पूर्णरूपेण एकरूपता अनबाक हमरा सभक प्रयत्न रहत।

कक्षा १० मैथिली लेखन तथा परिमार्जन महेन्द्र मलंगिया/ धीरेन्द्र प्रेमर्षि संयोजन- गणेशप्रसाद भट्टराई।

प्रकाशक शिक्षा तथा खेलकूद मन्त्रालय, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर।

सर्वाधिकार पाठ्यक्रम विकास केन्द्र आ जनक शिक्षा सामग्री केन्द्र, सानोठिमी, भक्तपुर।

पहिल संस्करण २०५८ बैशाख (२००२ ई.) ।

योगदान: शिवप्रसाद सत्याल, जगन्नाथ अवा, गोरखबहादुर सिंह, गणेशप्रसाद भट्टराई, डा. रामावतार यादव, डा. राजेन्द्र विमल, डा. रामदयाल राकेश, धर्मेन्द्र विह्वल, रूपा धीरू, नीरज कर्ण, रमेश रञ्जन।

भाषा सम्पादन- नीरज कर्ण, रूपा झा।

मैथिली अकादमी, पटना द्वारा निर्धारित मैथिली लेखन-शैली

१. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाय- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन

ठाम

जकर, तकर

तनिकर

अछि

अग्राह्य

अखन, अखनि, एखेन, अखनी

ठिमा, ठिना, ठमा

जेकर, तेकर

तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)

ऐछ, अहि, ए।

२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाय: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाय सकैत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाय जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

६. ह्रस्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाय, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाय। यथा:- कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाय। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाय वा सानुनासिक स्वर। यथा:- मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

१०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य:- हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे। 'मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'क' क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

११. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा:- देखि कय वा देखि कए।

१२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाय।

१३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाय, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ', 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा:- अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

१४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाय, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाय। यथा:- श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

१५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा क' लिखल जाय, हटा क' नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाय, यथा घर परक।

१६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाय। मुदा मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

१७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाय।

१८. समस्त पद सटा क' लिखल जाय, वा हाइफेनसँ जोड़ि क', हटा क' नहि।

१९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी (ऽ) नहि लगाओल जाय।

२०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाय।

२१. किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जाय। जा' ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाय। आकि ऎ वा ऒ सँ व्यक्त कएल जाय।

ह./- गोविन्द झा ११/८/७६ श्रीकान्त ठाकुर ११/८/७६ सुरेन्द्र झा "सुमन" ११/०८/७६

जियान ली आ किंग मिंग ली लिखैत छथि-

अधिकांश आधुनिक भाषाविज्ञान वर्णनात्मक अछि, किएक तँ ई वर्णन करबाक प्रयास करैत अछि जे लोक वास्तवमे की कहैत छथि, नहि कि लोककेँ की कहबाक चाही। ई भाषाक वर्णन ओकर सभ पहलूमे करैत अछि, मुदा 'शुद्धता'क नियम निर्धारित नहि करैत

अछि। ई पछिला शताब्दीमे भाषाक अध्ययनक विपरीत अछि। ई अधिकांशतः निर्देशात्मक छल। पारम्परिक व्याकरण लोकसभकेँ भाषाक उपयोग केना करब बतबैत छल।

मुदा गोविन्द झा, श्रीकान्त ठाकुर आ सुरेन्द्र झा "सुमन" ग्राह्य-अग्राह्य दऽ कऽ शुद्धता आ अशुद्धताक निर्णय दऽ दै छथि। रामावतार यादव सेहो "अ रेफेरेन्स ग्रामर ऑफ मैथिली" मे कत्तौ-कत्तौ मानकता आदिक आधारपर निर्णय दैत बुझाइत छथि।

अ रेफेरेन्स ग्रामर ऑफ मैथिली

ऐ पोथीक पृष्ठ १२ पर रामावतारजी सूचित करैत छथि जे किछु शब्दक नाकक मेलसँ उच्चारण तथाकथित मानक मैथिलीक लक्षण कहल जाइत अछि जकरा मैथिलीक ब्राह्मण उपभाषा सेहो कहल जाइत अछि। पृ. ३७६ पर रामावतारजी सूचित करैत छथि जे ओ किछु अशिक्षित/ अर्द्ध-शिक्षित ब्राह्मण युवाकेँ पहिने देखने छथि जे 'निम्न' जातिक उमेरगर लोक कें "तौँ" सँ सम्बोधित करैत छथि, मुदा आब (१९९६ मे) से बर्दास्त नै कएल जाइत अछि।

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-मैथिलीक वैयाकरण सभ संस्कृताह आ हिंदिआह व्याकरणिक ढाँचा तैयार कयलनि। ओ सभ दलित मैथिलीक विशिष्टता आ भिन्नता कें विचार-योग्य नहि बुझलनि। डॉ. रामावतार यादव एकमात्र एहन भाषाशास्त्री छथि जे एहि पर थोड़े विचार कयने छथि।... एक बेर अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक संस्थान, पटना मे एकटा कार्यक्रम भेल। केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर एहि कार्यक्रमक आयोजन कयने छल। कार्यक्रमक मूल चिन्ता मैथिली भाषाक विकास छल। विकास कोना हो, ताहिपर अनेक वक्ता अपन-अपन वक्तृता देलनि। डॉ. मेघन प्रसाद सेहो अपन विचार रखलनि। हुनक भाषा मे ओतेक आदरसूचकता नहि छलनि, जतेक विद्वत समूह कें अपेक्षा रहनि। फल ई भेल जे हुनक भाषिक स्खलन लेल भाषणक बिच्चहि मे बहुत अशिष्टतापूर्वक हुनकर हँसी उड़ाओल गेल। ई दृश्य हमरा विचलित कयने छल आ एहि तरहक भाषिक असहिष्णुताक प्रतिकार हम तत्क्षण कयने रही। [पचपनिया मैथिली -सुभाष चन्द्र यादव; गुलो: कला आ भाषा, २०२२ मे संकलित]

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि- "डॉ. रामावतार यादव एकमात्र एहन भाषाशास्त्री छथि जे एहि पर थोड़े विचार कयने छथि।" आ से सत्य छै कारण ओ थोड़े विचार तँ केने छथि। मुदा से पर्याप्त नै अछि।

अ रेफेरेन्स ग्रामर ऑफ मैथिली मे पहिल अध्याय मैथिली व्याकरणक सय सालक इतिहास, दोसर- ध्वनिक व्यवस्था आ लिपि, तेसर- संज्ञा, चारिम- सर्वनाम, पाँचम- विशेषण, छअम- क्रिया, सातम- क्रिया-विशेषण, आठम- मुख्य आ गौण वाक्य प्रकार आ नौम अध्याय- सरल आ मिश्र वाक्यक वाक्य-विन्यास आ शब्दार्थ विज्ञान पर आधारित अछि।

फ्राइज लिखैत छथि जे prescriptive आ scholarly grammar “पूर्व-वैज्ञानिक युग” क वस्तु अछि; structural linguisticsक दू पद्धति—distributional analysis आ substitution—लागू कएलासँ परम्परागत आठ parts of speechक आवश्यकता छोड़ल जा सकैत अछि। [Ch. Fries, The Structure of English, London, 1959]

एन. एम. रायेवस्का लिखै छथि- सी. फ्राइज शब्द सभकेँ चारिटा "रूप-वर्ग"मे वर्गीकृत करैत छथि, जे संख्या द्वारा निर्दिष्ट अछि; आ "प्रकार्य शब्द"क पन्द्रह समूह, जे अक्षर द्वारा निर्दिष्ट अछि। अभिव्यक्तिक चारि प्रमुख भाग (संज्ञा, क्रिया, विशेषण, क्रियाविशेषण) जे फ्राइजक दर्ज सामग्रीमे प्रतिस्थापनक प्रक्रिया द्वारा स्थापित कयल गेल अछि, एहि तरहेँ संख्याकेँ छोड़ि कोनो नाम नहि देल गेल अछि: वर्ग १, वर्ग २, वर्ग ३, वर्ग ४। चारि वर्ग मोटा-मोटी ओहिसँ मेल खाइत अछि जकरा अधिकांश व्याकरणविद संज्ञा आ सर्वनाम, क्रिया, विशेषण आ क्रियाविशेषण कहैत छथि, यद्यपि सी. फ्राइज विशेष रूपसँ पाठककेँ ओहि कथनक अनुवाद करबाक प्रयासक विरुद्ध चेतावनी दैत छथि जे ओ पुरान व्याकरणिक शब्द पुस्तकमे देखैत छथि। प्रकार्य शब्दक समूहमे नहिये केवल उपसर्ग आ संयोजन होइत छैक, वरन् किछु विशिष्ट शब्द सेहो होइत छैक जकरा बेसी पारम्परिक व्याकरणविद एकटा विशेष प्रकारक सर्वनाम, क्रियाविशेषण आ क्रियाक रूपमे वर्गीकृत करैत छथि।

[N. M. Rayevska, Modern English Grammar, http://web.krao.kg/2_inostran/english/3.pdf]

मैथिली व्याकरणमे लोक की बजै छथि (विवरणात्मक निअम) केर संग हुनका की बजबाक चाही (निर्देशात्मक निअम), दुनु देखल जाइत अछि। आधुनिक मैथिली व्याकरणमे एकर समावेश हेबाक चाही। औपचारिक आ अनौपचारिक भाषा (जेना क्रमशः उपन्यास आ शोध-निबन्ध), क्षेत्रीय आ आर्थिक-सामाजिक भेद आ निर्देशात्मक निअमक स्थितिक अध्ययन समाज-भाषा-भाषिकी कहबैत अछि।

रामावतार यादव वाचिक मैथिलीपर एकटा संरचना अपन व्याकरणमे प्रस्तुत केने छथि।

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला २०२४- भाषा पैवेलियनमे रामावतार यादव आ योगेन्द्र प्रसाद यादव जीक आदमकद पोस्टर

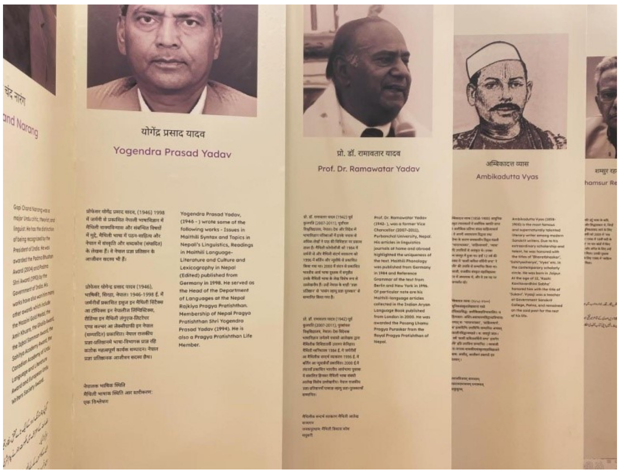

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि

गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि चारि खण्डमे विभाजित अछि- १. प्रत्यक्ष (सोझाँ-सोझी), (२) अनुमान, (३) उपमान (तुलना केनाइ) आ (४) शब्द (मौखिक गवाही) । वैध ज्ञान प्राप्त करबाक ई चारिटा साधन ऐ चारि खण्डमे अछि।

खण्ड एक

प्रत्यक्ष

गङ्गेशक आह्वान: त्रिमूर्ति शिवक आह्वानसँ ई खण्ड शुरू होइत अछि। आ तँ आह्वानक विषयपर चर्चा शुरू होइत अछि। ई मानल जाइत अछि जे कोनो परियोजनाक प्रारम्भमे भगवानक आह्वानसँ ई कार्य पूर्ण होइत अछि।

आपत्तिः जे कोनो आह्वान कोनो काज पूरा करबाक कारण अछि, से सकारात्मक वा नकारात्मक संगतिक माध्यम सँ स्थापित नै कएल जा सकैत अछि, किएक तँ एहनो भेल अछि जे कोनो आह्वानक बिना सेहो कोनो काज पूरा कएल गेल।

आपत्तिक उत्तर: एकर कारण ई अछि जे ई आह्वान पूर्व जन्ममे कयल गेल छल/ हएत।

आपत्तिः नै, ई तँ घुमघुमौआ तर्क अछि, आ ओनाहितो कोनो काज पूरा केना होइत अछि तकर अनुभवजन्य कारण सभ आह्वानकेँ अनावश्यक सिद्ध करैत अछि।

आपत्तिक उत्तर: ई प्रमाण जे आह्वान कार्य पूर्ण हेबाक कारण छै, तइमे दू चरणक अनुमान शामिल अछि। पहिल, ई जे ई शिष्ट लोक द्वारा निन्दित नै अछि वरन हुनका सभ द्वारा सेहो आह्वानसँ कार्य प्रारम्भ कएल जाइत अछि। तखन ई अनुमान लगाओल जा सकैत अछि जे काज पूरा भेनाइ फल अछि किएक तँ ई नियमित रूप सँ इच्छित अछि, आ आन कोनो फल उपलब्ध नै अछि।

आपत्ति: ई तर्क काज नै करत कारण ई पहिनेसँ ज्ञात अछि जे आह्वानक अछैतो काज पूर्ण भऽ सकैत अछि, कारण-सम्बन्ध कोनो तर्कसँ स्थापित नै कएल जा सकैत अछि।

आपत्तिक उत्तर: हम सभ ऐ तर्क (जे आह्वान कार्य पूर्ण करबैत अछि) क समर्थन लेल वैदिक आदेशक आह्वान करैत छी। मुदा कोनो एहन वैदिक कथन नै भेटैत अछि। से अनुमान कएल जा सकैत अछि जे ऐ तरहक आह्वान सुसंस्कृत लोक सभ द्वारा शुरू कएल गेल आ कएल जाइत अछि।

प्रार्थना देह (जेना प्रणाम), वाणी (गायन) आ मस्तिष्क (ध्यान) सँ होइत अछि। मुदा कोनो ईश्वरमे विश्वास केनिहार सेहो कार्य सम्पन्न कऽ लैत अछि, तँ की ओ पूर्व जन्ममे आह्वान/ प्रार्थना केने हएत? आ आह्वानक बादो कखनो काल कार्य सम्पन्न नै होइत अछि, से की ढेर रास बाधा ओइ साधारण आह्वानसँ दूर नै भेल हएत?

ऐ तरहक तर्कसँ प्रारम्भ भेल छल ई ग्रन्थ, ७-८ सय बर्ख पहिने!

(सन्दर्भ: कार्ल एच पॉटर: एनसाइक्लोपीडिया ऑफ इण्डियन फिलोसोफी, १९९३; सतीश चन्द्र विद्याभूषण: अ हिस्ट्री ऑफ इण्डियन लॉजिक, १९२१)

स्टीफन एच. फिलिप्स लिखै छथि:

मिथिलामे राखल गेल पञ्जी वंशावली अभिलेखसँ पता चलैत अछि जे हुनक पत्नी आ तीनटा बेटा आ एकटा बेटी छल। एकटा बेटा छलन्हि प्रसिद्ध न्याय लेखक, वर्धमान। गङ्गेश स्पष्ट रूपसँ अपन जीवनकालमे प्रसिद्धि प्राप्त कयलनि, जकरा "जगद-गुरु" कहल जाइत अछि, जे हुनक समयक शैक्षणिक संस्थानक लेल "प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय प्रोफेसर" क लगभग समकक्ष हएत।

मिथिलामे सुरक्षित वंशावली-अभिलेख संकेत दैत अछि जे गंगेशक पत्नी, तीन पुत्र आ एक पुत्री छल। हुनकर एक पुत्र प्रसिद्ध न्याय-लेखक वर्धमान छलाह। गंगेश अपन जीवनकालमे पर्याप्त ख्याति पाबि चुकल छलाह; हुनका “जगद्गुरु” कहल गेल, जकर अर्थ ओहि समयक शैक्षिक संस्थाक सन्दर्भमे मोटामोटी “विशिष्ट विश्वविद्यालय-प्राध्यापक” जकाँ बुझल जा सकैत अछि।

[Stephen Phillips, “Gangesa”, The Stanford Encyclopedia of Philosophy, Summer 2020 Edition, Edward N. Zalta (ed.), https://plato.stanford.edu/archives/sum2020/entries/gangesa/]

गंगेश जगदगुरु तँ रहथि परमगुरु सेहो रहथि आ परमगुरुक उपाधि हिनका अतिरिक्त मात्र नूतन वाचस्पति (वृद्ध वाचस्पतिक परवर्ती) कैँ पछाति जा कऽ प्राप्त भेलन्हि।

मुदा गंगेशक संग जे अन्याय रामनाथ झा आ उदयनाथ झा ‘अशोक’ केलनि, से बीसम आ एक्कैसम शताब्दीमे भेल; मूल लेखकक मतमे एकर दुष्परिणाम Stephen Phillips सन नैयायिकपर सेहो पड़ल। एतय उल्लेख अछि जे Stephen Phillips तत्त्वचिन्तामणिक चारू खण्डक सम्पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद करनिहार पहिल विद्वान छथि [Jewel of Reflection on the Truth about Epistemology: A Complete and Annotated Translation of the Tattva-cinta-mani, Bloomsbury Academic, 2020] । हुनका अतिरिक्त V. P. Bhatta 2021 धरि चारिमेसँ तीन खण्ड—प्रत्यक्ष, अनुमान आ शब्द—क सम्पूर्ण अनुवाद कऽ लेने छलाह; उपमान शेष छल [Word: The Sabdakhanda of Tattvacintamani, 2005; Perception: The Pratyaksa Khanda of the Tattvacintamani, 2012; Inference: The Anumana Khanda of the Tattva Chintamani, 2021; Eastern Book Linkers, Delhi] ।

गंगेश उपाध्यायक “ऑनर किलिंग”: पहिने रामनाथ झा, फेर उदयनाथ झा ‘अशोक’—मिथिला आ मैथिली साहित्यक समान्तर इतिहासक आवश्यकता आइ आरो तीव्र किएक?

साहित्य अकादेमीक कॉपीराइटवला गंगेश उपाध्यायपर उदयनाथ झा ‘अशोक’ लिखित मोनोग्राफ देखि मूल लेखक आशा केने छलाह जे भाषा सम्मान पाबि चुकल लेखक गंगेशक संग न्याय करताह। मुदा हुनकर मतमे एहि मोनोग्राफमे सत्य आ शोध दुनू पर्याप्त रूपसँ उपस्थित नहि अछि।

मूल लेखक अध्याय-दर-अध्याय एहि आशामे पढ़ैत गेलाह जे कदाचित लेखक साहसपूर्वक वंश, परिवार आ उपलब्ध पंजी-साक्ष्य सामने रखताह। मुदा हुनकर आरोप अछि जे उदयनाथ झा ‘अशोक’ रामनाथ झा जकाँ गंगेश उपाध्यायक मूल आ वंशजक प्रश्नपर

संकोच करैत छथि। 2009क बाद उपलब्ध सामग्रीक बावजूद 2016क मोनोग्राफमे विषयकेँ उलझाओल गेल, आ अन्ततः 1958मे दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य द्वारा प्रकाशित तथ्यक पुनरावृत्ति मात्र भेल—एहन मूल आलोचनाक निष्कर्ष अछि।

मूल लेखक आरोप करैत छथि जे प्रो. रामनाथ झा द्वारा गंगेश उपाध्यायक सामाजिक-वंशीय परिचयक दमनकेँ दिल्लीक साहित्य अकादेमी पाखण्डपूर्ण ढंगसँ आगाँ बढ़ा रहल अछि।

पंजी सम्बन्धमे रामनाथ झाक रूढ़िवादी दृष्टिक उदाहरण मूल लेखक प्रस्तुत करैत छथि। स्रोत-पाठक अनुसार पंजीमे अन्तरजातीय विवाहक प्रमाण हुनका ज्ञात छल, मुदा "दूषण पंजी" गुप्त राखल गेल; लेखक कहैत छथि जे ई सामग्री 2009मे सार्वजनिक कएल गेल। स्रोतक अनुसार नव्य-न्याय दार्शनिक गंगेश उपाध्याय "चर्मकारिणी" सँ विवाह केने छलाह आ पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्मल छलाह; लेखक एहि प्रसंगमे अपन 'पंजी प्रबन्ध' खण्ड I-II (http://videha.co.in/pothi.htm) आ Dinesh Chandra Bhattacharyaक 'History of Navya-Nyaya in Mithila' (1958) क उल्लेख करैत छथि।

दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यक 1958क कृतिसँ उद्धृत अंशमे गंगेशक परिवार सामाजिक रूपसँ "निम्न" छल आ बादमे लुप्त भऽ गेल—एहन अनुमान अछि; लेखक एकरा पूर्णतः असत्य मानैत छथि। उद्धृत लेखक लिखैत छथि जे ई जानकारी प्रो. R. Jha सँ भेटल छल। [1958, Chapter III, pp. 96–99]

तत्काल सन्दर्भ लेल हमर 'पंजी प्रबन्ध' (भाग I आ II) सँ निम्न अंश प्रस्तुत अछि:

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

प्रामाणिक पंजी अभिलेखक आधारपर मूल लेखक निष्कर्ष दैत छथि जे 'श्रोत्रिय' उपजातिक रूप लगभग 1800 ई. क आसपास विकसित भेल। Anshuman Pandey अपन शोधमे लिखैत छथि जे नई दिल्लीक Gajendra Thakur हुनका मैथिल ब्राह्मणक वंशावली-अभिलेखक अंकीय प्रति उपलब्ध करौलनि। पंजीकार परिवार एहि अभिलेखकेँ पीढ़ी-दर-पीढ़ी सुरक्षित रखैत छथि आ अक्सर एकरा "बौद्धिक सम्पदा" मानि शोधक पहुँच सीमित रखैत छथि। Pandey लिखैत छथि जे 2007मे हुनका Gajendra Thakurसँ पंजीक पूर्ण अंकीय संग्रह भेटल। [Anshuman Pandey, Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar, PhD dissertation, University of Michigan, 2014]

बादमे ई पंजी-पाण्डुलिपि 2009मे Videha Pothi—www.videha.co.in—आ Google Books पर अपलोड कएल गेल, एहन स्रोत-पाठक उल्लेख अछि।

मूल लेख कहैत अछि जे दरभंगाक तथाकथित महाराजा Cornwallisक Permanent Settlement अन्तर्गत जमीन्दार छलाह; ब्रिटिश भारतमे एहन अनेक जमीन्दार छल, नेपालमे नहि। 'पंजी प्रबन्ध' खण्ड I-IIक परिशिष्टमे वंशावली-आधारित उन्नयन आदेशक प्रति संलग्न अछि, जकरा लेखक नगदक बदला सामाजिक उन्नयनक प्रमाण मानैत छथि। एहि आधारपर लेखक तर्क करैत छथि जे 1800 ई. सँ पहिने ब्रिटिश भारतमे 'श्रोत्रिय' पृथक उपजाति नहि छल, आ मिथिलाक नेपाली भागमे आजुओ मैथिल ब्राह्मणक भीतर एहन उपजाति नहि अछि; पूर्वकालमे 'श्रोत्रिय' शिक्षाक एक धाराक अनुयायी अर्थमे प्रयुक्त होइत छल, नेपालमे लेखकक अनुसार एखनहुँ एहि अर्थमे प्रयोग होइत अछि।

मूल पंजी-सन्दर्भ नीचाँ देल अछि:

दूषण पंजी—काला अभिलेख

४९.

१८८/२

चर्मकारिणी

माण्डर

वभनियाम

छादन

तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश

छादनगंगेशक

नाँई

रत्नाकरक-मातृक (अज्ञात)

गंगेश

वल्लभा

भवाइ

माहेश्वर

जीवे

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक म०म० गंगेश

"तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध"। ।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीय: कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३९-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३३९-३ जगदगुरू गंगेश सुत सुपन दौ भण्डारिसमसँ हरादित्य दौ. । । पुत्र सुताच गोरा जजिवाल सँ जीवे पत्नी ए सुत सन्दगहि भवेश्वर। अत्रस्थाने सुपनभ्रातृ हरिशर्म्म दारिति क्वचित् जजिवाल ग्राम

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म. म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म. म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

तत्त्वचिन्तामणिक रचयिता गंगेश एहन एक ग्रन्थ लिखलनि जकर विस्तारकेँ मूल लेखक रूपक रूपमे बारह हजार ग्रन्थक बराबर कहैत छथि। पंजीक उल्लेखपर लौटैत ओ कहैत छथि जे तत्त्वचिन्तामणिकार गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ हुनकर विवाह चर्मकारिणीसँ भेल; तखन रामनाथ झा ई बात दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किएक नुकौलनि—ई प्रश्न उठाओल गेल अछि। गंगेशक पुत्र वर्धमान हुनका 'सुकविकैरवकाननेन्दुः' कहैत छथि। मूल लेखक गंगेशक कवितासभ आज उपलब्ध नहि होएबाकेँ व्यापक साहित्यिक-सामाजिक दमनक उदाहरणसँ जोड़ैत छथि। आगाँ बंगालक वासुदेव आ मिथिलाक पक्षधर मिश्रक प्रसंग अछि: वासुदेव मिथिला आबि शलाका परीक्षा पास कऽ 'सार्वभौम' उपाधि पबैत छथि; ओ गंगेशक तत्त्वचिन्तामणि आ उदयनक न्याय-कुसुमाञ्जलि कारिका कण्ठस्थ करैत छथि, कारण मिथिलाक अध्यापक लिखि नकल करबाक अनुमति नहि दैत छलाह। वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि शास्त्रार्थमे गुरु पक्षधर मिश्रकेँ पराजित कऽ प्रमाणनक अधिकार पबैत छथि; वासुदेव-रघुनाथ नवद्वीपमे नव्य-न्याय परम्परा स्थापित करैत छथि। मूल लेख पक्षधर मिश्रकेँ विद्यापतिक समकालीन मानैत अछि—एहि विद्यापतिकेँ पदावलीकारसँ पृथक बताओल गेल अछि—आ कहैत अछि जे ओ संस्कृत आ अवहट्टमे लिखैत छलाह। रघुनाथ शिरोमणिक बाद बंगालसँ मिथिला पढ़बाक लेल विद्यार्थी आबब घटि गेल। पंजीक अनुसार गंगेश "परमगुरु" आ "जगद्गुरु" दुनू सर्वोच्च उपाधि पबैत छथि; "परमगुरु" उपाधि पाबयवला दोसर व्यक्ति वाचस्पति मिश्र द्वितीय कहल गेल छथि। मूल लेखक नव्य-न्यायक मिथिलासँ लोपकेँ गंगेश आ हुनकर परिवारक "ऑनर किलिंग" क विरुद्ध प्रकृतिक प्रतिशोध रूपकसँ व्याख्यायित करैत छथि।

[गजेन्द्र ठाकुर द्वारा मैथिली कथा 'शब्दशास्त्रम्'—गंगेश उपाध्यायक वास्तविक पंजी अभिलेखपर आधारित—क अंग्रेजी अनुवाद 'The Science of Words' शीर्षकसँ Indian Literature, Vol. 58, No. 2 (280), March/April 2014, pp. 78–93, Sahitya Akademi, मे प्रकाशित।]

२७. मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता-कैथी आ डिजिटल मैथिली

सारांश
मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय/ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान (फेसबुक आ ई-मेल पत्राचार) तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली खण्ड १ केर पत्राचारसँ सभ किछु स्पष्ट भऽ गेल हएत।

बीजशब्द: विकीपीडिया · यूनीकोड · तिरहुता · कैथी · डिजिटल · राजेश · फॉण्ट

सारांश

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय/ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान (फेसबुक आ ई-मेल पत्राचार) तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली खण्ड १ केर पत्राचारसँ सभ किछु स्पष्ट भऽ गेल हएत। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि। खण्ड १ उपखण्ड १ तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय पहिने खण्ड १ उपखण्ड १ पर आउ।

मैथिली विकीपीडिया, यूनीकोड तिरहुता आ कैथी, गूगल ट्रांसलेटमे मैथिली, ट्विटरमे मैथिली, अमेजन अलेक्सामे मैथिली

खण्ड १

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय/ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान (फेसबुक आ ई-मेल पत्राचार)

खण्ड १ उपखण्ड १

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

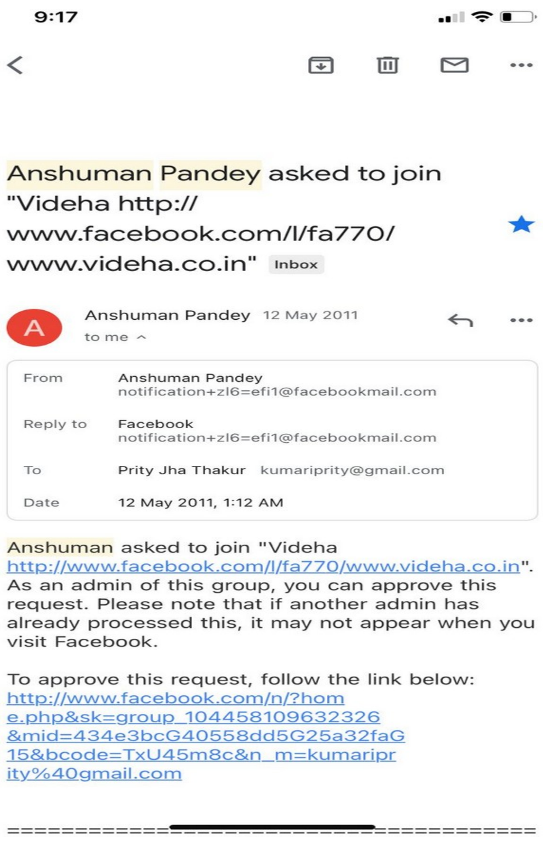

9:17

Anshuman Pandey asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in" Inbox

Anshuman Pandey 12 May 2011
to me

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Facebook notification+zl6=efi1@facebookmail.com
To	Prity Jha Thakur kumaripritry@gmail.com
Date	12 May 2011, 1:12 AM

Anshuman asked to join "Videha http://www.facebook.com/l/fa770/www.videha.co.in". As an admin of this group, you can approve this request. Please note that if another admin has already processed this, it may not appear when you visit Facebook.

To approve this request, follow the link below:
http://www.facebook.com/n/?home.php&sk=group_104458109632326&mid=434e3bcG40558dd5G25a32faG15&bcode=TxU45m8c&n_m=kumaripr ity%40gmail.com

=====================================

9:13

[Videha www.videha.co.in] Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode... Inbox

Anshuman Pandey 17 May 2011

to me

From	Anshuman Pandey notification+zl6=efi1@facebookmail.com
Reply to	Reply to comment g+41tiz5k000000hum6s5001a7p3ikk0900110ze5g2ti1s93o@groups.facebook.com
To	Prity Jha Thakur kumaripritty@gmail.com
Date	17 May 2011, 10:25 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in

Anshuman Pandey 17 May 22:25

Update: The proposal to encode Tirhuta in Unicode was reviewed and accepted by the Unicode Technical Committee. Now the proposal will be reviewed by the ISO technical group JTC2/SC2/WG2. If ISO approves the script, then Tirhuta will be officially placed in the queue for inclusion in a future version of Unicode.

> **http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf**
> **std.dkuug.dk**

View Post on Facebook · Edit email settings · Reply to this email to add a comment.

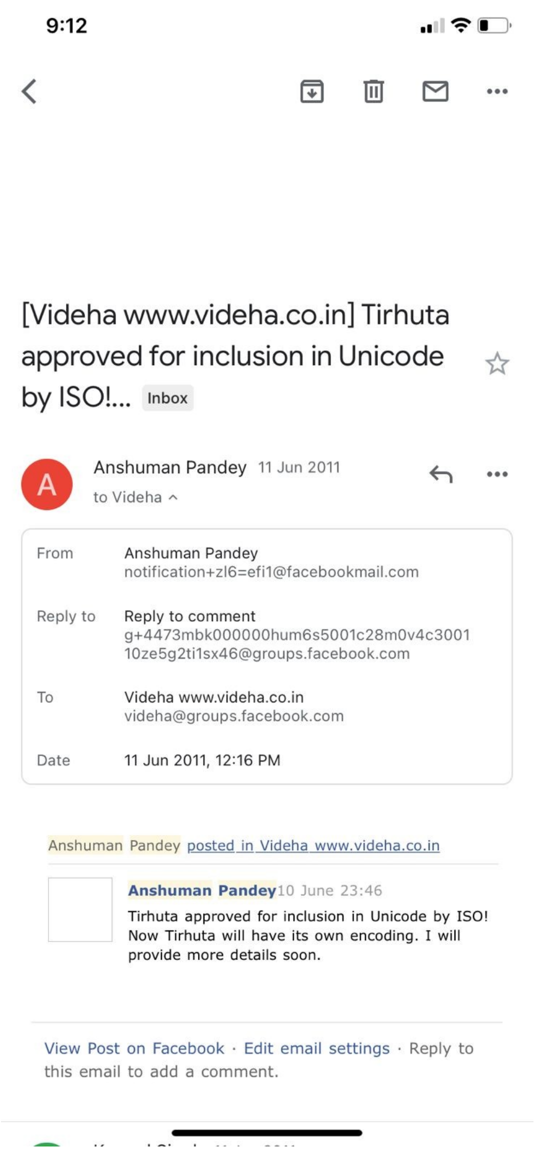

9:12

[Videha www.videha.co.in] Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO!... Inbox

Anshuman Pandey 11 Jun 2011

to Videha

From Anshuman Pandey
notification+zl6=efi1@facebookmail.com

Reply to Reply to comment
g+4473mbk000000hum6s5001c28m0v4c3001
10ze5g2ti1sx46@groups.facebook.com

To Videha www.videha.co.in
videha@groups.facebook.com

Date 11 Jun 2011, 12:16 PM

Anshuman Pandey posted in Videha www.videha.co.in

Anshuman Pandey 10 June 23:46

Tirhuta approved for inclusion in Unicode by ISO! Now Tirhuta will have its own encoding. I will provide more details soon.

View Post on Facebook · Edit email settings · Reply to this email to add a comment.

खण्ड १ उपखण्ड २

विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान

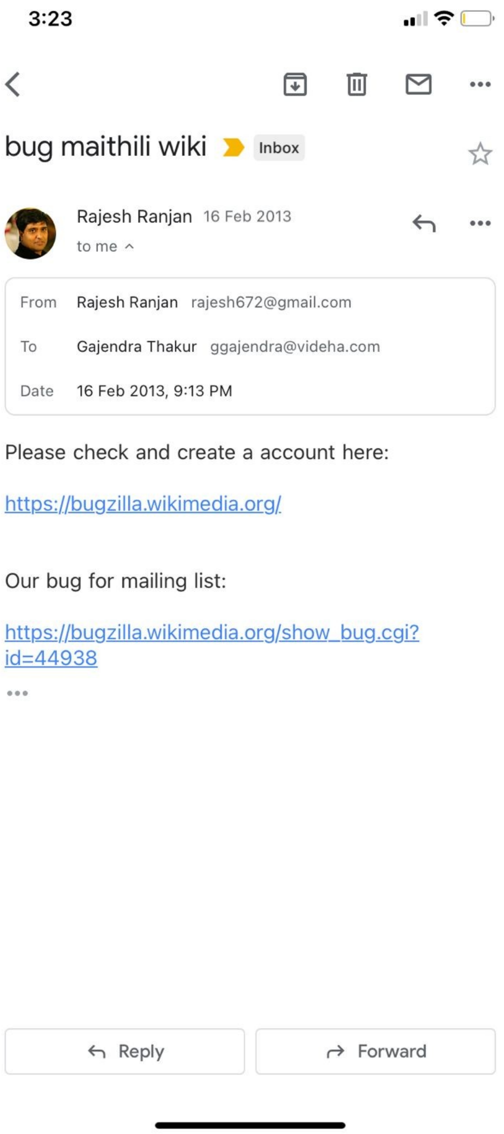

3:23

bug maithili wiki Inbox

Rajesh Ranjan 16 Feb 2013
to me

From Rajesh Ranjan rajesh672@gmail.com
To Gajendra Thakur ggajendra@videha.com
Date 16 Feb 2013, 9:13 PM

Please check and create a account here:

https://bugzilla.wikimedia.org/

Our bug for mailing list:

https://bugzilla.wikimedia.org/show_bug.cgi?id=44938

...

Reply Forward

3:08

[Bug 45091] Please move Maithili from incubator to mai.wikipedia.org Inbox

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From	bugzilla-daemon@wikimedia.org
To	ggajendra@videha.com
Date	17 Feb 2013, 3:05 PM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com, rajeshkajha@yahoo.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

Alex Monk (Krenair) changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		krenair@gmail.com, mfwarburg@googlemail.com

Comment # 1 on bug 45091 from Alex Monk (Krenair)

3:13

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' Inbox

bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 17 Feb 2013, 3:21 PM

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

Reply Forward

3:13

[Bug 39968] Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

Inbox

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

Rajesh Ranjan changed bug 39968

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

3:13

What	Removed	Added
CC		ggajendra@videha.com

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 6:58 PM

Andre Klapper changed bug 39968

What	Removed	Added
Summary	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh'	Bhojpuri wikipedia should start with 'bho' instead of 'bh' to avoid confusion with Bihari

Comment # 3 on bug 39968 from Andre Klapper

```
[Restoring summary that was reset.]
```

Reply Forward

3:10

Comment # 1 on bug 45091 from Alex Monk (Krenair)

https://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

bugzilla-daemon 17 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 17 Feb 2013, 7:03 PM

MF-Warburg changed bug 45091

What	Removed	Added
Status	UNCONFIRMED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 2 on bug 45091 from MF-Warburg

```
marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
language
committee.

[It would also currently have no chance
because of a lack of activity in the
test-project. Please address any
questions on the page on Meta]
```

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

1:53

[Bug 44938] Create a mailing list for Maithili (mai) Wikipedia Inbox

B bugzilla-daemon 17 Feb 2013
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 17 Feb 2013, 8:13 PM

Sam Reed (reedy) changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	INVALID

Comment # 3 on bug 44938 from Sam Reed (reedy)

```
See also bug 45091 as the wiki doesn't
exist.

(In reply to comment #2)
> marking as invalid: The creation of
this wiki was not approved by the
> language
> committee.
>
> [It would also currently have no
chance because of a lack of activity in
the
> test-project. Please address any
questions on the page on Meta]
```

You are receiving this mail because:

3:12

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 18 Feb 2013, 10:41 AM

Rajesh Ranjan changed bug 45091

What	Removed	Added
CC		amir.aharoni@mail.huji.ac.il

Comment # 3 on bug 45091 from Rajesh Ranjan

Thanks!

I understand, but once the language did a good improvement. We just created this bug to track the things we need to do to release it. The language grp had
put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

...

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

3:12

had
put around 1000 article on incubator for the same.

Please specify what we need to do to release our language Maithili on wikipedia.

cc'ing Amir who is aware of all the details.

...

bugzilla-daemon 18 Feb 2013

to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org

To ggajendra@videha.com

Date 18 Feb 2013, 10:44 AM

Comment # 4 on bug 45091 from Amir E. Aharoni

Bugs like this one are usually opened by language committee members after all the requirements for starting a new project are satisfied.

The most convenient page for tracking this is https://meta.wikimedia.org/wiki/Language_committee/Status/wp/mai

...

Reply Forward

1:54

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 18 Feb 2013
to me

[Comment # 4](#) on [bug 44938](#) from [Rajesh Ranjan](#)

```
Amir, I put here a request for mailing
list only after the consultation with
you. Please check and let me know what
makes my request invalid.
```

...

B bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me

Muzammil changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		mba_hyd@rediffmail.com

[Comment # 5](#) on [bug 44938](#) from [Muzammil](#)

```
There is need to re-examine the
refusal:
1) Activity level has increased - 16
active users and about 60 overall
users.
2) Likelihood of the Wikipedia in the
near future (see:
http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-
focused-approach-for-maithili-
wikipedia/)
3) Growing social media activity for
the Wikipedia:
https://www.facebook.com/
MaithiliWikipedia?fref=ts
```

1:54

Comment # 5 on **bug 44938** from **Muzammil**

```
There is need to re-examine the
refusal:
1) Activity level has increased - 16
active users and about 60 overall
users.
2) Likelihood of the Wikipedia in the
near future (see:
http://blog.wikimedia.org/2014/09/08/a-
focused-approach-for-maithili-
wikipedia/)
3) Growing social media activity for
the Wikipedia:
https://www.facebook.com/
MaithiliWikipedia?fref=ts

Regards,
Muzammil.
```

•••

B bugzilla-daemon 24 Sep 2014
to me

Comment # 6 on **bug 44938** from **Andre Klapper**

```
Hi Muzammil,

> 1) Activity level has increased - 16
active users and about 60 overall
users.

Where exactly? Link welcome.
```

•••

B bugzilla-daemon 24 Sep 2014
Comment # 7 on bug 44938 from Muzammil (In reply t...

1:42

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni <amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator: https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue.
>
> I thought about proposing it for approval, but one thing that I'm supposed to make sure before I go forward is that it's indeed Maithili. It's part of our Language Committee's required bureaucracy :)
>
> You're the only Maithili speakers I know, so can you please approve that the pages there are written in correct Maithili?
>
> Thanks!

•••

Reply | Forward

1:54

Where exactly? Link welcome.

...

bugzilla-daemon 24 Sep 2014

to me

Comment # 7 on bug 44938 from Muzammil

```
(In reply to Andre Klapper from comment #6)
> Hi Muzammil,
>
> > 1) Activity level has increased -
16 active users and about 60 overall
users.
>
> Where exactly? Link welcome.


Cf:
https://tools.wmflabs.org/meta/catanalysis/index.php?cat=0&title=Wp/mai&wiki=incubatorwiki
```

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014

to me

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	RESOLVED	REOPENED
CC		johnflewis93@gmail.com
Resolution	INVALID	---
Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

Comment # 8 on bug 44938 from John F. Lewis

1:42

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

---------- Forwarded message ----------
From: **Rajesh Ranjan** <rajesh672@gmail.com>
Date: Thu, Sep 25, 2014 at 8:06 AM
Subject: Re: Mathitili Wikipedia
To: "Amir E. Aharoni" <amir.aharoni@mail.huji.ac.il>
Cc: Runa Bhattacharjee
<rbhattacharjee@wikimedia.org>

Hi Amir,

Thanks!

This is Maithili.

As I already discussed with you that Maithili community associated with Wikipedia have sufficient contributors and knowledge to run and sustain the Maithili language.

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

On Wed, Sep 24, 2014 at 7:19 PM, Amir E. Aharoni
<amir.aharoni@mail.huji.ac.il> wrote:

> Hi Rajesh (and Runa),
>
> I was looking at the Maithili Wikipedia incubator:
> https://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai/Main_Page
>
> It looks pretty OK as far as I can tell - the activity is reasonable, and there are over a thousand articles. Many of them are short (stubs), but as far as I'm concerned, it's not a big issue

1:40

Fwd: Mathitili Wikipedia

Inbox

Rajesh Ranjan 25 Sep 2014

to me

Hi Gajendra jee,

Please check fwd msg.

Hopefully soon Wikipedia Maithili dream will come true.

Do you know Firefox browser for Android now also available in Hindi:

ftp://ftp.mozilla.org/pub/mobile/releases/31.0/android/mai/

Gajendra jee, the most important work for us remaining is that we need to request people to use it...here I see people talk much for Maithili but don't work for the language and use it. Please spread the new of Android browser availability.

Thanks!

Regards,
Rajesh Ranjan

twitter: @kajha
facebook: rajeshkajha
www.rajeshranjan.in

---------- Forwarded message ---------

1:55

Assignee	Thehelpfulonewiki@gmail.com	johnflewis93@gmail.com

Comment # 8 on bug 44938 from John F. Lewis

```
There has been an increase in activity.

THO forwarded me an email regarding a
reconsideration of this request, I
personally see no issue with this and will
deal with this.

@Muzammil: Who would the list administrators
be now since the original request
was made well over a year ago?
```

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014
to me

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	REOPENED	ASSIGNED

...

bugzilla-daemon 27 Sep 2014
to me

Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

```
(In reply to John F. Lewis from comment
#8)
> There has been an increase in
activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a
reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and
will deal with this.
>
```

1:55 You are on the CC list for the bug.

Ringer

bugzi...

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

```
(In reply to John F. Lewis from comment
#8)
> There has been an increase in
activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a
reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and
will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list
administrators be now since the
original
> request was made well over a year
ago?


I think you can add me also an
administrator for the list. I will
discuss with
Biplab to see if he too is interested
as he is very active on the incubator
project.
```

...

B bugzilla-daemon 28 Sep 2014

to me

बिप्लब आनन्द changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

Comment # 11 on bug 44938 from बिप्लब आनन्द

```
Thanks @Muzammil .....
ok add me too for the admin
```

1:55

Comment # 9 on bug 44938 from Rajesh Ranjan

```
(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
> THO forwarded me an email regarding a reconsideration of this request, I
> personally see no issue with this and will deal with this.
>
> @Muzammil: Who would the list administrators be now since the original
> request was made well over a year ago?


Already mentioned, add Gajendra Thakur (see comment #2) and myself for mailing list admin!

Good to see its moving!
```

...

You are receiving this mail because:

- You are on the CC list for the bug.

B bugzilla-daemon 28 Sep 2014
to me

Comment # 10 on bug 44938 from Muzammil

```
(In reply to John F. Lewis from comment #8)
> There has been an increase in activity.
>
```

1:56

बिप्लब आनन्द changed bug 44938

What	Removed	Added
CC		biplabanand@gmail.com

Comment # 11 on bug 44938 from बिप्लब आनन्द

```
Thanks @Muzammil .....
ok add me too for the admin

--We are very close,let make it happen--- Jai Mithila Jay Maithil------
```

...

B bugzilla-daemon 6 Oct 2014
to me

From bugzilla-daemon@wikimedia.org
To ggajendra@videha.com
Date 6 Oct 2014, 1:25 AM

John F. Lewis changed bug 44938

What	Removed	Added
Status	ASSIGNED	RESOLVED
Resolution	---	FIXED

Comment # 12 on bug 44938 from John F. Lewis

```
Created. Setting list admins and
sending the password to all shortly.
```

...

खण्ड २

खण्ड १ केर पत्राचारसँ सभ किछु स्पष्ट भऽ गेल हएत। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।

खण्ड १ उपखण्ड १ तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय

पहिने खण्ड १ उपखण्ड १ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।

तिरहुता (मिथिलाक्षर) यूनीकोड फॉण्ट आ कैथी यूनीकोड फॉण्ट लेल अंशुमन पाण्डेय अपन आवेदन देने रहथि। मिथिलाक्षर (तिरहुता) फॉण्ट लेल आवेदन ३० सितम्बर २००९ आ फेर संशोधित आवेदन ५ मई २०११ केँ श्री अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल आ दुनू बेर ऐमे विदेहक सहयोगक वर्णन भेल। १२ मई २०११ केँ अंशुमन पाण्डेय विदेहक फेसबुक ग्रुप https://www.facebook.com/groups/videha पर सदस्यता लेलनि। १७ मईकेँ यूनीकोडक टेकनिकल कमेटी द्वारा आवेदन स्वीकृतिक आ ओकरा आइ.एस.ओ. केँ पठेबाक ओ सूचना विदेहक फेसबुक ग्रुपपर देलन्हि। १० जून केँ आइ.एस.ओ. द्वारा तिरहुता यूनीकोडक स्वीकृतिक सूचना सेहो विदेहक फेसबुक ग्रुपपर ओ देलन्हि जे भारतीय समयानुसार ११ जून छल। आब ई फॉण्ट सभ बनि कऽ तैयार अछि आ नीचाँक लिंकपर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

तिरहुता आ कैथी फॉण्ट डाउनलोड—Googleक Noto Fonts परियोजना / C-DAC

यूनीकोड तिरहुता फॉण्ट डाउनलोड करू

मिथिला यूनी

कैथी

खण्ड १ उपखण्ड २ विकीपीडिया (मैथिली) लेल राजेश रंजन, आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल), रुना भट्टाचार्य आ मुजम्मिलक योगदान

आब खण्ड १ उपखण्ड २ पर आउ। ओइमे देल स्क्रीनशॉटक विवरण निम्न तरहेँ अछि।

फेडोरा प्रोजेक्ट मोजिलामे योगदान देनहार राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक चर्चा हम विदेहमे कतेक बेर केने छी, हमर अंग्रेजी-मैथिली कंप्यूटर डिक्शनरीमे सेहो हुनकर नाम आयल अछि। ओ हमरा कहलापर विकीपीडियाक समिटमे मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे इस्रायलक आमिरसँ गप सेहो केलन्हि।

२००८ क पहिनहियेसँ ऐपर काज शुरू भऽ गेल जकर विस्तृत विवरण खण्ड ३ मे अछि। कोना भोजपुरी आ बिहारीसँ होइत मामिला मैथिली धरि आयल। फेर मीडियाविकी आ अनुवादक कार्यक्रमक प्रारम्भ भेल आ फेर १००० सँ बेशी आलेख ओइमे देल गेल जे-जे विकीपीडिया लैंगुएज कमेटी राजेश रंजन जी कैँ अढ़बैत गेलन्हि से ओ हमरा अढ़बैत गेलाह। एतऽ ई बता दी जे ऐ १००० आलेख जे मैथिली विकीपीडिया इनक्यूबेटर (माने ड्राफ्ट) मे रहै, मे १००% विदेहक योगदान छै, बादमे किछु आर योगदान एलै, मुदा जखन मैथिली विकीपीडिया इन्क्यूबेटरसँ लाइव भेलै तखनो ९९% विदेहक आलेख ओइमे रहै, आ अखनो ९५% आलेख विदेहेक सौजन्यसँ ओतऽ छै। १८ फरबरी २०१३ कैँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) ऐ गपकैँ मानलनि जे प्रोजेक्टक सभ काज पूर्ण भऽ गेल अछि कारण लैंहुएज कमेटीक सदस्य ऐ तरहक बग तखने बनबैत छथि। बगजिलामे हमरा १७ फरबरी २०१३ कैँ जोड़ल गेल छल मुदा किएक तँ एक्टिविटी बड्ड कम रहै से लैंगुएज कमेटीक अप्रूवल नै भेटलै। मुदा राजेश रंजन जी तकर विरोध केलन्हि, हम सेहो विदेह आ सोशल मीडियापर विभिन्न आइ. एस. पी. सँ एक्टिविटी बढ़ेबाक अपील केलौं मुदा अत्यंत खेदक संग सूचित करय पड़ि रहल अछि से गएर-विदेह सदस्यक योगदान शून्य रहल। मुदा जे से एक्टिव यूजरक संख्या बढ़ि कऽ १६ आ सम्पूर्ण यूजरक संख्या बढ़ि कऽ ६० भेल (देखू २४ सितम्बर २०१४ क स्क्रीनशॉट) । जखन हम सभ मैथिलीभाषीक संख्या करोड़मे गनबै छी की ई संख्या अहाँकेँ निराश नै करैत अछि?

२४ सितम्बर २०१४ कैँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) राजेश रंजन आ रुना भट्टाचार्यकैँ सूचित केलन्हि जे आलेख १००० सँ ऊपर छै, एक्टिविटी सेहो ठीके-ठाक छै, आ ओ राजेश रंजनक अतिरिक्त आन कोनो मैथिलीभाषीकैँ नै चिन्हैत छथि, से ओ पुछलन्हि जे सूचित करी जे ई सभ मैथिली भाषे मे छै ने। आ जँ से हेतै तँ ओ एकर अप्रूवल लेल प्रोपोजल देता। २४ सितम्बर २०१४ कैँ आमिर ई. अहारोनी (इस्रायल) कैँ राजेश रंजन सूचित केलन्हि जे ई सभट हजारसँ बेशी आलेख सरिपहुँ मैथिलिये मे छै।

राजेश रंजन २५ सितम्बर २०१४ कैँ हमरा सभटा मैसेज फॉरवार्ड करैत छथि आ कहैत छथि जे मैथिली विकीपीडियाक सपना आब पूरा होइये बला अछि। आइ हमरा ई देखि आश्चर्य होइत अछि जे जकर कोनो योगदान नै से सभ कूद-फांग कऽ रहल छथि आ राजेश रंजन आ रुना भट्टाचार्य एतेक करितो चुप्पे छथि। मैथिली भाषा भाग्यशाली तँ अछिये! राजेश रंजन ओही ई-पत्रमे लिखै छथि जे मूल प्रश्न अछि जे लोक किए खाली लग्गा-भरि नमगर गप छोड़ै छथि मैथिलीक नामपर मुदा ऐ लेल काज वा एकर उपयोग नै करै छथि। मुजम्मिल सेहो विकीपीडिया दिससँ जुड़ै छथि। हमरा एडमिन बनै लेल राजेश रंजन फोन करै छथि, ओना हुनका बूझल छन्हि जे हम राजरोगसँ दूर रहै छी आ तइ मे मात्र साहित्य अकादेमी सम्मिलित नै अछि। हम बिप्लब आनन्दक नाम मुदा हुनका दैत छियन्हि जे ओ युवा छथि आ नेपाल दिससँ छथि से भऽ सकैये निरपेक्ष व्यवहार करता जे विकीपीडिया लेल आवश्यक अछि, मुदा मैथिलीमे से होइ कहाँ छै। २७ सितम्बर २०१४ कैँ राजेश रंजन जी बिप्लब आनन्दक नामक अनुशंसा करैत छथि जे मानि बिप्लब आनन्दकैँ २८ सितम्बर २०१४ कैँ मैथिली विकीपीडियाक एडमिन बनाओल जाइत अछि। बिप्लब आनन्दक वर्तनी आ निष्ठा दुनूमे सुधारक खगता हम अनुभव करैत छी, मेहनती धरि ओ छथि, से शुभकामना।

खण्ड ३

१

[सम्पादकीय: 'विदेह' ८५ म अंक ०१ जुलाइ २०११ (वर्ष ४ मास ४३ अंक ८५)]

सूचना: कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकैँ Universal Character Set (Unicode) मे एनकोड करबाक अंशुमान पाण्डेयक आवेदन स्वीकृत भेल। एहि आधारपर दुनू लिपिक आधारभूत फॉण्ट निर्माणक प्रक्रिया आगाँ बढ़ल। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉण्टक नाम ‘Tirhuta’ राखल गेल—जेना देवनागरीक ‘Mangal’ आ बाङ्लाक ‘Vrinda’ । मिथिलाक्षर लेल तेसर संशोधित आवेदनमे विदेहक

योगदान विस्तारसँ उल्लेखित अछि: “Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/.” अंशुमान पाण्डेयक आभार-वक्तव्यमे लिखल अछि जे नई दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर हुनका भेटलाह, मैथिली विषयमे विस्तृत पत्राचार केलनि, मैथिली पाण्डुलिपि, मुद्रित पोथी आ अन्य अभिलेखक मूल्यवान नमूना देलनि, आ UCSमे मैथिली एनकोडिंगक आवश्यकता सम्बन्धी प्रतिक्रिया उपलब्ध करौलनि।

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद।

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity...

मैथिलीक उपलब्धता जाँचबाक लेल एहि लिंककेँ देखैत रहू: http://www.google.co.in/language_tools? hl=en

सूचना: ३. विकीपीडिया मैथिली:

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate... ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project: Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।” आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक “लैंगुएज कमेटी” आब बुझि गेल अछि जे मैथिली “बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia...)

-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि,...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे “नै” ।”

रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह, जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/२१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थेँ आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

नीचाँक पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि, प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ।

http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator

http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate...

http: //incubator. wikimedia. org/wiki/Wp/mai

http: //translatewiki. net/wiki/MediaWiki: Mainpage/mai

२

विदेह गोष्ठी: (६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८/ फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९/ फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१०/ फेर अन्तिम परिचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ कैँ मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट, गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकैँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक आवेदनक स्वीकृतपर आ विकीपीडिया मैथिली पर परिचर्चा आ तकर सन्दर्भमे प्रैक्टिकल लैबोरेटरीक प्रदर्शन निर्मली, जिला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास सम्बन्धित एक्सपर्ट उपस्थित रहथि। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ देल जा रहल अछि।)

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक. देखू http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py...

आ: http://translate.google.com/toolkit/list? hl=en...

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह द्वारा कैल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू; ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे

-विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इन्जिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि। https://www.google.com/webhp? hl=bh अछि लिंक [गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।]

एहि विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा देखू: http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html

मुदा ई तँ प्रारम्भ अछि।

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:

http://www.google.com/language_tools? hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL's LETTER

गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी

लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।

Vikas Thakore अहाँक फोटोपर टिप्पणी केलनि।

Vikas लिखलनि: “https://www.google.com/webhp? hl=bh”

Sir, एहि लिंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अस्तित्व में अछि..

फेर इ टटका-टटका.... जश्न (or whatever) कथिलए?"

गजेन्द्र ठाकुर: Translate विकल्प सम्बन्धी लेख पढ़ू—http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html

Vikas Thakore अहाँक फोटोपर टिप्पणी केलनि।

Vikas लिखलनि: “जी... धन्यवाद।”

बेवजह परेशानी देबए लेल हम क्षमाप्रार्थी छी.."

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतय आओत: http://www.google.com/language_tools? hl=bh

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत, पहिने बिहारी एतऽ छल क्लिक केलापर मैथिली अबैत छल|

http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ मार्च २०१२।]

[सूचना: कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ Universal Character Set (Unicode) मे एनकोड करबाक अंशुमान पाण्डेयक आवेदन स्वीकृत भेल। एहि आधारपर दुनू लिपिक आधारभूत फॉण्ट निर्माणक प्रक्रिया आगाँ बढ़ल। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉण्टक नाम ‘Tirhuta’ राखल गेल—जेना देवनागरीक ‘Mangal’ आ बाङ्लाक ‘Vrinda’ । मिथिलाक्षर लेल तेसर संशोधित आवेदनमे विदेहक योगदान विस्तारसँ उल्लेखित अछि: “Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/.” अंशुमान पाण्डेयक आभार-वक्तव्यमे लिखल अछि जे नई दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर हुनका भेटलाह, मैथिली विषयमे विस्तृत पत्राचार केलनि, मैथिली पाण्डुलिपि, मुद्रित पोथी आ अन्य अभिलेखक मूल्यवान नमूना देलनि, आ UCSमे मैथिली एनकोडिंगक आवश्यकता सम्बन्धी प्रतिक्रिया उपलब्ध करौलनि।]

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

सूचना: ३. विकीपीडिया मैथिली:

http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator

http: //incubator. wikimedia. org/wiki/Wp/mai

TIRHUTA UNICODE

अंशुमान पाण्डेय द्वारा 5 मई 2011क अन्तिम Unicode Mithilakshara Application एहि लिंकपर देखू: http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf। पृष्ठ 23पर विदेहक 80म अंकक Tirhuta संस्करण “Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22)” रूपमे संलग्न अछि। पृष्ठ 12क सन्दर्भ-सूचीमे Videha: A fortnightly Maithili e-journal, Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed], http://www.videha.co.in/ देल अछि। ओही पृष्ठपर विदेहक सम्पादकक योगदानक आभार-वक्तव्य सेहो अछि—

“नई दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर कृपापूर्वक हमरासँ भेटलाह आ मैथिली विषयमे विस्तृत पत्राचार केलनि; मैथिली पाण्डुलिपि, मुद्रित पोथी आ अन्य अभिलेखक मूल्यवान नमूना उपलब्ध करौलनि, आ UCSमे मैथिली एनकोडिंगक आवश्यकता सम्बन्धी प्रतिक्रिया देलनि।”

यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐसँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखिनिहारकेँ नहिये यूनीकोडक विषयमे कोनो जानकारी छन्हि आ नहिये वेस्टर्न वा यूनीकोड दुनू फॉन्टक निर्माण कोनो प्रारम्भिक ज्ञान छन्हि। हँ ऐ परचाक ओइ सभ लोक लेल महत्व छै जे सीखय चाहै छथि जे पूर्वाग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐसँ पहिने चेतना समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! तिरहुता यूनीकोड आवेदनकर्ता अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहथि तँ हम हुनका कहने रहियन्हि जे विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरक दोकान छन्हि, ओतऽ सँ अहाँ मैथिलीक किताब कीनि सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ सँ घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकन्हि जे सभ दिन अहाँ अबै छी, से ई समिति अखन कमसँ कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू ग्रुपमे झगड़ा-झाँटी भऽ गेल छै। ई अनुभव लऽ कऽ ओ घुरल रहथि आ से समिति अपन स्मारिकामे यूनीकोड लेल ओ जे योगदान देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मँगलापर एक गोट विद्वान् (!) हुनका कहलखिन्ह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नै देलखिन्ह आ तखन दोसर ठामसँ हुनका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

३

[https://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-post_08.html?fbclid=IwAR2oAS6in4rKo0uC1CK1sX2dM7ivqI_CuF8KFNAbIN7NH12-pTuPKlkdMsE] समदिया, 8 जनवरी 2012

Google Translator Toolkit आब स्रोत आ लक्ष्य दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकेँ स्थान देलक। देखू: http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py? hl=en&answer=147837

आ: http:// translate.google.com/toolkit/list? hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह द्वारा कैल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools? hl=en केँ मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[अपडेट: -विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे
-विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इन्जिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इन्जिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकीपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि। https://www.google.com/webhp? hl=bh अछि लिंक [गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।]
-ऐ विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा देखू http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html ऐ लिंकपर। मुदा ई तँ प्रारम्भ अछि।
अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत:

http://www.google.com/language_tools? hl=bh

http://www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL 's LETTER

गूगल कम्पनी "बिहारी" नामसँ सर्च इन्जिनक प्रारम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम्ना कोनो भाषा अछिये नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलन्हि आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इन्जिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल ऊपर लिखित पत्र लिखलन्हि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवादक लगभग सभटा भाग वोलन्टीयर रूपमे कएल गेल, लोको सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलन्हि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपमे सर्च इन्जिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि।

Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "https://www.google.com/webhp? hl=bh
Sir, एहि लिंक पर गूगल-मैथिली २००४ सं अस्तित्व में अछि..
फेर इ टटका-टटका.... जश्न (or whatever) कथिलए?"
Gajendra Thakur ट्रान्सलेट बला ऑप्शन लेल लेख पढ़ू.. http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
Vikas Thakore commented on your photo.
Vikas wrote: "jee.... Dhanyavaad.
बेवजह परेशानी देबए लेल हम क्षमाप्रार्थी छी.."

http://www.google.com/language_tools

अपडेट २८ मार्च २०१२।]

[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकेँ यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि) । मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.] ।
सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल- http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject
अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद। http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh
ऐ लिंक http://www.google.co.in/language_tools? hl=en कैँ मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

सूचना: ३.विकीपीडिया मैथिली:
मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http://translatewiki.net/wiki/Project: Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे

ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू। http://translatewiki.net/wiki/Project: Translator

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki: Mainpage/mai
विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।” आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक “लैंगुएज कमेटी” आब बुझि गेल अछि जे मैथिली “बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html)
-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि,...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे “नै” ।” रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह, जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/ २१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थें आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?
उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

TIRHUTA UNICODE
See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http://www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered
valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]
यूनीकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण (गजेन्द्र ठाकुर/ अपडेट ३१ मार्च २०१२)

Twitter मैथिलीमे। कृपया http://translate.twttr.com/welcome पर जाउ आ पृष्ठक नीचाँ “Don’ t see your language?... feedback” विकल्प चुनि मैथिली लेल आवेदन करू; मैथिलीमे Twitter किएक आवश्यक अछि, ओकर कारण लिखि feedback जमा करू। व्यापक सहभागिताक आग्रह अछि।

खण्ड ४

"विकीपीडिया"मे मैथिलीकबाद मैथिली "गूगल ट्रान्सलेट"मे सेहो.. अगिला लक्ष्य "अमेजन अलेक्सा"

Google Translate
Google Translate लिंक: https://translate.google.com/? sl=en&tl=mai&op=translate
Google Translateमे मैथिलीकेँ आरो पुष्ट करबाक लेल योगदान-कार्य: https://translate.google.com/about/contribute/
प्रारम्भिक सामग्री:
Wikipedia—01 फरवरी 2008: https://books.google.co.in/books? id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false (मैथिली देवनागरी); https://books.google.co.in/books? id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली तिरहुता); https://books.google.co.in/books? id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false (मैथिली ब्रेल) ।
Google Translate—23 जून 2011क लिंक: https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
Google Translation Toolमे “Bihari” क बदला मैथिली लेल पृथक अनुवाद-औजार बनबाक आवेदन विदेह सदस्यसभ द्वारा देल गेल। Google खातासँ प्रवेश कऽ योगदान देबाक आ सम्पादनक कारणमे “Bihari” नामक पृथक भाषा नहि होएबाक चर्चा अंग्रेजीमे करबाक आग्रह छल। पुरान कार्य-लिंक: http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject तथा http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh (आब बन्द) ।

मैथिली Wikipedia लिंकसभ: विदेह (पत्रिका): https://mai.wikipedia.org/s/kgv; इन्टरनेटक संसारमे मैथिली भाषा: https://mai.wikipedia.org/s/s6h; भालसरिक गाछ: https://mai.wikipedia.org/s/ipm; विदेह: https://mai.wikipedia.org/s/ie1; विदेहक Facebook संस्करण: https://mai.wikipedia.org/s/iu1; विदेह सम्मान: https://mai.wikipedia.org/s/jc2; विदेह अभिलेखागार: https://mai.wikipedia.org/s/jc0; विदेह मिथिला रत्न: https://mai.wikipedia.org/s/jc3; विदेह मिथिलाक खोज: https://mai.wikipedia.org/s/jc4; विदेह सूचना-संपर्क-अन्वेषण: https://mai.wikipedia.org/s/jc5; श्रुति प्रकाशन: https://mai.wikipedia.org/s/iu7; अनचिन्हार आखर: https://mai.wikipedia.org/s/ion; मैथिली गजल: https://mai.wikipedia.org/s/idz; मैथिली बाल गजल: https://mai.wikipedia.org/s/iex; मैथिली भक्ति गजल: https://mai.wikipedia.org/s/if1; अन्य योगदान लिंक: http://translatewiki.net/wiki/Project: Translator; http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili; http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http: //incubator. wikimedia. org/wiki/Wp/mai

अंतिम पाँचू साइट विकी मैथिली प्रोजेक्टक अछि। एहि लिंक सभ पर जा कय प्रोजेक्टकेँ आगाँ बढ़ाऊ। (links closed)

अमेजन अलेक्सा मैथिली (शीघ्र....)

विदेहक तेसर अंकमे (०१ फरबरी २००८) जे खुशखबरी पाठक लोकनिकेँ मैथिली विकीपीडियाक सम्बन्धमे देल गेल छल तकर सुखद परिणति कएक साल पहिने भेटल छल।

मैथिली गूगल ट्रान्सलेटक सम्बन्धमे विदेहक फेसबुक पृष्ठपर २०११ मे देल गेल तकर सुखद परिणति ११ मई २०२२ केँ भेटल।

मैथिली अमेजन अलेक्साक सेहो आरम्भ शीघ्रे हएत।

(लिंक-स्क्रीनचित्र नीचाँ देल जा रहल अछि।)

https://books.google.co.in/books? id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA2#v=onepage&q&f=false
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/

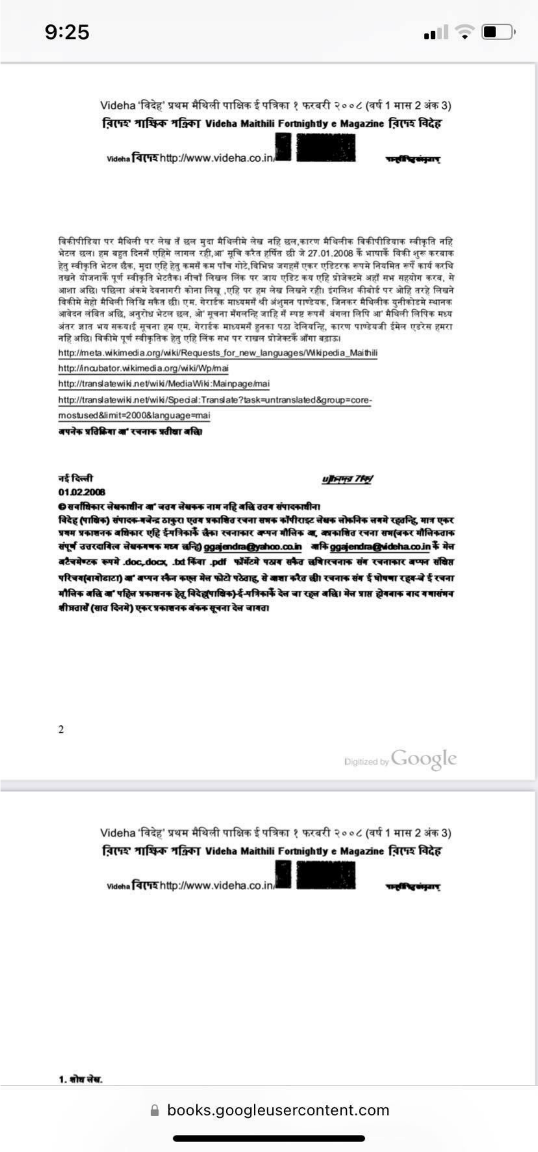

9:25

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह

Videha विदेह http://www.videha.co.in/[redacted]

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल,कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही,आ' सूचि करैत हर्षित छी जे 27.01.2008 कँ भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे,विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक। नीचाँ लिखल लिंक पर जाय एडिट कय एहि प्रोजेक्टमे अहाँ सभ सहयोग करब, से आशा अछि। पछिला अंकमे देवनागरी कोना लिखू ,एहि पर हम लेख लिखने रही। इंगलिश कीबोर्ड पर ओहि तरहे लिखने विकीमे सेहो मैथिली लिखि सकैत छी। एम. गेरार्डक माध्यमसँ श्री अंशुमन पाण्डेयक, जिनकर मैथिलीक युनीकोडमे स्थानक आवेदन लंबित अछि, अनुरोध भेटल छल, ओ' सूचना मँगलन्हि जाहि सँ स्पष्ट रूपसँ बंगला लिपि आ' मैथिली लिपिक मध्य अंतर ज्ञात भय सकय।ई सूचना हम एम. गेरार्डक माध्यमसँ हुनका पठा देलियन्हि, कारण पाण्डेयजी ईमेल एडरेस हमरा नहि अछि। विकीमे पूर्ण स्वीकृतिक हेतु एहि लिंक सभ पर राखल प्रोजेक्टकेँ आँगा बढ़ाऊ।

http://meta.wikimedia.org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http://incubator.wikimedia.org/wiki/Wp/mai

http://translatewiki.net/wiki/MediaWiki:Mainpage/mai

http://translatewiki.net/wiki/Special:Translate?task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

अपनेक प्रतिक्रिया आ' रचनाक प्रतीक्षा अछि।

नई दिल्ली

01.02.2008

© सर्वाधिकार लेखकाधीन आ' जतय लेखकक नाम नहि अछि ततय संपादकाधीन।

विदेह (पाक्षिक) संपादक-गजेन्द्र ठाकुर। एतय प्रकाशित रचना सभक कॉपीराइट लेखक लोकनिक लगमे रहतन्हि, मात्र एकर प्रथम प्रकाशनक अधिकार एहि ई-पत्रिकाकेँ छैक। रचनाकार अपन मौलिक आ, अप्रकाशित रचना सभ(जकर मौलिकताक संपूर्ण उत्तरदायित्व लेखकगणक मध्य छन्हि) ggajendra@yahoo.co.in आकि ggajendra@videha.co.in कँ मेल अटैचमेण्टक रूपमे .doc,.docx, .txt किंवा .pdf फॉर्मेटमे पठाय सकैत छथि।रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय(बायोडाटा) आ' अपन स्कैन कएल मेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक संग ई घोषणा रहय-जे ई रचना मौलिक अछि आ' पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह(पाक्षिक)-ई-पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्रतासँ (सात दिनमे) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत।

2

Digitized by Google

Videha 'विदेह' प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका १ फरबरी २००८ (वर्ष 1 मास 2 अंक 3)

विदेह पाक्षिक पत्रिका Videha Maithili Fortnightly e Magazine विदेह विदेह

Videha विदेह http://www.videha.co.in/[redacted]

1. शोध लेख.

books.googleusercontent.com

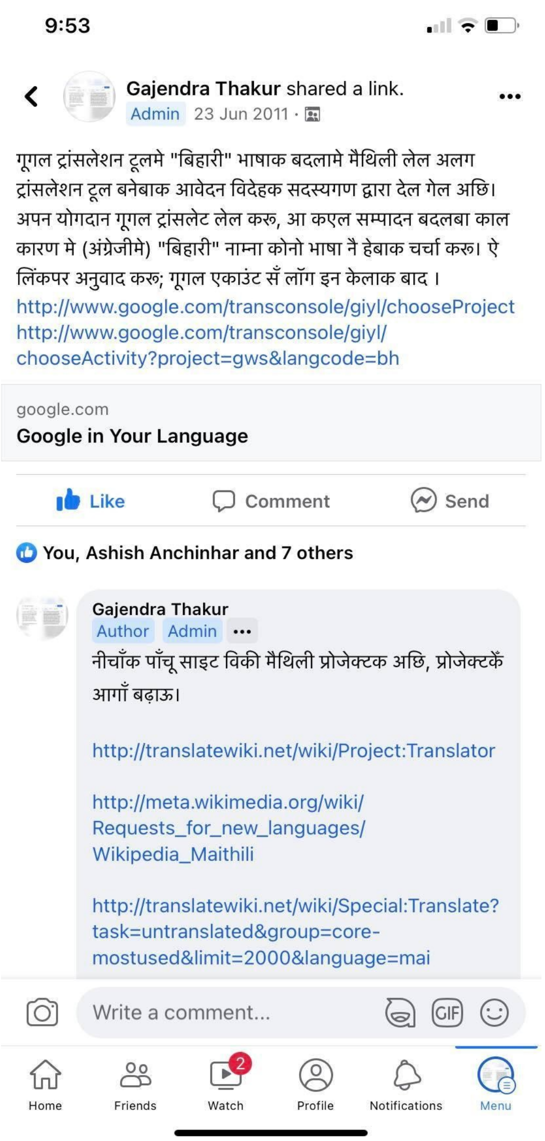

ओहि समयमे विदेह सम्पादक मण्डलमे ई लोकनि रहथि: सह-सम्पादक: उमेश मंडल। सहायक सम्पादक: शिव कुमार झा आ मुन्नाजी (मनोज कुमार कर्ण) । भाषा सम्पादन: नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झा। कला-सम्पादन: वनीता कुमारी आ रश्मि रेखा सिन्हा। सम्पादक-शोध-अन्वेषण: डॉ. जया वर्मा आ डॉ. राजीव कुमार बर्मा। सम्पादका नाटक-रंगमंच-चलचित्र: बेचन ठाकुर। सम्पादक सूचना-सम्पर्क-समाद: पूनम मंडल अ प्रियंका झा। सम्पादक अनुवाद विभाग: विनीत उत्पल। स्पष्ट अछि जे "सम्पादक अनुवाद विभाग" विनीत उत्पल (आब असिस्टेन्ट प्रोफेसर, आइ.आइ.एम.सी. जम्मू) क विशेष सहयोग रहल, आशीष अनचिन्हार सम्पादक मण्डल मे नहियो रहला उत्तर कोनो सम्पादकसँ कम काज नै करैत छथि। मैथिलीक पाठक वर्ग सेहो अपन यथाशक्ति योगदान देलनि। https://books.google.co.in/books? id=zmIugpjpOKYC&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false https://books.google.co.in/books? id=-U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q&f=false

गूगल ट्रान्सलेटकेँ आर पुष्ट करबाक खगता छै तइ लेल अगिला काज अढ़ा रहल छी: https://translate.google.com/about/contribute/

गूगल ट्रान्सलेट कार्यक्रम देखू

https://youtu.be/nP-nMZpLM1A
Google Translate: 04: 45 सँ 06: 25; 06: 00पर 24 नव भाषा।

विस्तृत विवरण: विश्वक सूचनाकेँ व्यवस्थित कऽ सभक लेल सुलभ आ उपयोगी बनाबयक लक्ष्यकेँ कोना आगाँ बढ़ाओल जा रहल अछि, से जानबाक लेल ई keynote देखू। American Sign Language (ASL) व्याख्यासहित संस्करण: https://youtu.be/PeUXBvRExic। समय-सूची—0: 00 आरम्भिक फिल्म; 1: 47 परिचय, Sundar Pichai; 6: 21 ज्ञान; 15:

45 ज्ञान आ खोज; 27: 15 Skin Tone Equity; 32: 00 Computing; 33: 08 Assistant; 43: 34 Computing—AI Test Kitchen; 53: 08 Google संग सुरक्षितता; 1: 04: 38 सुरक्षित खोज-पद्धति; 1: 11: 20 Android आरम्भ; 1: 25: 32 Android—Better Together; 1: 45: 45 Wear OS आ Tablet; 1: 31: 22 Hardware आरम्भ; 1: 33: 22 Pixel Phone आ Buds; 1: 45: 44 Ambient आ Beyond the Phone; 1: 54: 32 Augmented Reality आ समापन।

खण्ड २ — निबन्ध

भाग ख — निबन्ध

साहित्य, भाषा आ सांस्कृतिक निबन्ध

२८. रचना लिखबासँ पहिने...

सारांश

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकेँ बढ़ा लेल जाइत अछि।

बीजशब्द: रचना · लिखबासँ · पहिने · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “रचना लिखबासँ पहिने...” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे लिखबासँ; पहिने; अक्षर; स्वर; तीन प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

साहित्यक दू विधा अछि गद्य आ पद्य। छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकेँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आजुक नव कविताक संग हाइकू/ क्षणिका/ हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि, जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व “इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्ड्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम केँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि।

वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नहि होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+१=१७

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कए सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ ई पाँच ह्र्स्व आर आ, ई, ऊ, ॠ, ए. ऐ, ओ, औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओहि युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि: - १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४.

अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि) ।

१. उदात्त- जे अकारादि स्वर कण्ठादि स्थानमे ऊर्ध्व भागमे बाजल जाइत अछि। एकरा लेल कोनो चेन्ह नहि अछि। २. उदातात्तर- कण्ठादि अति ऊर्ध्व स्थानसँ बाजल जाइत अछि। ३. अनुदात्त- जे कण्ठादि स्थानमे अधोभागमे उच्चारित होइछ। नीचाँमे तीर्यक चेन्ह खचित कएल जाइछ। ४. अनुदातात्ततर- कण्ठादिसँ अत्यंत नीचाँ बाजल जाइत अछि। ५. स्वरित- जाहिमे अनुदात्त रहैत अछि किछु भाग, आ किछु रहैत अछि उदात्त। ऊपरमे ठाढ़ रेखा खेंचल जाइत अछि, एहिमे। ६. अनुदाक्तानुरक्त स्वरित- जाहिमे उदात्त, स्वरित किंवा दुनू बादमे होइछ, ई तीन प्रकारक होइछ। ७. प्रचय-स्वरितक बादक अनुदात्त रहलासँ अनाहत नाद प्रचयक, तानक उत्पत्ति होइत अछि।

१. पूर्वार्चिकमे क्रमसँ अग्नि, इन्द्र आ सोम पयमानकेँ संबोधित गीत अछि। तदुपरान्त आरण्यक काण्ड आ महानाम्नी आर्चिक अछि। आग्नेय, ऐन्द्र आ पायमान पर्वकेँ ग्रामगेयण आ पूर्वार्चिकक शेष भागकेँ आरण्यकगण सेहो कहल जाइछ। सम्मिलित रूपेँ एक प्रकृतिगण कहैत छी। २. उत्तरार्चिकः विकृति आ उत्तरगण सेहो कहैत छी। ग्रामगेयगण आ आरण्यकगणसँ मंत्र चुनि कय क्रमशः उहगण आ ऊह्यगण कहबैछ- तदन्तर प्रत्येक गण दशरात्र, संवत्सर, एकह, अहिन, प्रायश्चित आ क्षुद्र पर्वमे बाँटल जाइछ। पूर्वार्चिक मंत्रक लयकेँ स्मरण कऽ उत्तरार्चिक केर द्विक, त्रिक, आ चतुष्टक आदि (२, ३, आ ४ मंत्रक समूह) मे एहि लय सभक प्रयोग होइछ। अधिकांश त्रिक आदि प्रथम मंत्र पूर्वार्चिक होइत अछि, जकर लय पर पूरा सूक्त (त्रिक आदि) गाओल जाइछ।

उत्तरार्चिक उहागण आ उह्यगण प्रत्येक लयकेँ तीन बेर तीन प्रकारेँ पढ़ैछ। वैदिक कर्मकाण्डमे प्रस्ताव, प्रस्तोतर द्वारा, उद्गीत उदगातर द्वारा, प्रतिघार प्रतिहातर द्वारा, उपद्रव पुनः उदगातृ द्वारा आ निधान तीनू द्वारा मिलि कय गाओल जाइछ। प्रस्तावक पहिने हिंकार (हिं, हुं, हं) तीनू द्वारा आ ॐ उदगातृ द्वारा उदगीतक पहिने गाओल जाइछ। ई पाँच भक्ति भेल।

हाथक मुद्रा- हाथक मुद्रा १.१. औँठा (प्रथम आँगुर)-एक यव दूरी पर २.२. औँठा प्रथम आँगुरकेँ छुबैत ३.३. औँठा बीच आँगुरकेँ छुबैत ४.४. औँठा चारिम आँगुरकेँ छुबैत ५.५. औँठा पाँचम आँगुरकेँ छुबैत ६.११. छठम क्रुष्ट औँठा प्रथम आँगुरसँ दू यव दूरी पर ७.६. सातम अतिश्वर सामवेद ८.७. अभिगीत ऋग्वेद

ग्रामगेयगान- ग्राम आ सार्वजनिक स्थल पर गाओल जाइत छल। आरण्यक गेयगान- वन आ पवित्र स्थानमे गाओल जाइत छल।

ऊहगान- सोमयाग एवं विशेष धार्मिक अवसर पर। पूर्वार्चिकसँ संबंधित ग्रामगेयगान एहि विधिसँ। ऊह्यगान आकि रहस्यगान- वन आ पवित्र स्थान पर गाओल जाइत अछि। पूर्वार्चिकक आरण्यक गानसँ संबंध। नारदीय शिक्षामे सामगानक संबंधमे निर्देश: - १. स्वर-७ ग्राम-३ मूर्छना-२१ तान-४९

सात टा स्वर सा, रे, ग, म, प, ध, नि, आ तीन टा ग्राम-मध्य, मन्द, तीव्र। ७*३=२१ मूर्छना। सात स्वरक परस्पर मिश्रण ७*७=४९ तान।

ऋगवेदक प्रत्येक मंत्र गौतमक २ सामगान (पर्कक) आ काश्यपक १ सामगान (पर्कक) कारण तीन मंत्रक बराबर भऽ जाइत अछि। मैकडॉवेल इन्द्राग्नि, मित्रावरुणौ, इन्द्राविष्णु, अग्निषोमौ एहि सभकेँ युगलदेवता मानलन्हि अछि। मुदा युगलदेव अछि –विशेषण-विपर्यय।

वेदपाठ-

१. संहिता पाठ अछि शुद्ध रूपमे पाठ।

अ॒ग्निमी॑ळे पु॒रोहि॑तं य॒ज्ञस्य॑ दे॒वमृ॒त्विज॑म्। होता॑रं रत्न॒धात॑मम्।

२. पद पाठ- एहिमे प्रत्येक पदकें पृथक कए पढ़ल जाइत अछि।

३. क्रमपाठ- एतय एकक बाद दोसर, फेर दोसर तखन तेसर, फेर तेसर तखन चतुर्थ। एना कए पाठ कएल जाइत अछि।

४. जटापाठ- एहिमे ज्योँ तीन टा पद क, ख, आ ग अछि तखन पढ़बाक क्रम एहि रूपमे होएत। कख, खक, कख, खग, गख, खग। ५. घनपाठ-एहि मे ऊपरका उदाहरणक अनुसार निम्न रूप होयत- कख, खक, कखग, गखक, कखग। ६. माला, ७. शिखा, ८. रेखा, ९. ध्वज, १०. दण्ड, ११. रथ। अंतिम आठकेँ अष्टविकृति कहल जाइत अछि।

साम विकार सेहो ६ टा अछि, जे गानकेँ ध्यानमे रखैत घटाओल, बढ़ाओल जा सकैत अछि। १. विकार-अग्नेकेँ ओग्नाय। २. विश्लेषण- शब्द/पदकेँ तोड़नाइ ३. विकर्षण-स्वरकेँ खिंचनाई/अधिक मात्राक बड़ाबर बजेनाइ। ४. अभ्यास- बेर-बेर बजनाइ। ५. विराम- शब्दकेँ तोड़ि कय पदक मध्यमे 'यति' । ६. स्तोभ-आलाप योग्य पदकेँ जोड़ि लेब। कौथुमीय शाखा 'हाउ' 'राइ' जोड़ैत छथि। राणानीय शाखा 'हावु', 'रायि' जोड़ैत छथि।

मात्रिक छन्दक प्रयोग वेदमे नहि अछि वरन् वर्णवृत्तक प्रयोग अछि आ गणना पाद वा चरणक अनुसार होइत रहए। मुख्य छन्द गायत्री, एकर प्रयोग वेदमे सभसँ बेशी अछि। तकर बाद त्रिष्टुप आ जगतीक प्रयोग अछि।

१. गायत्री- ८-८ केर तीन पाद। दोसर पादक बाद विराम। वा एक पदमे छह टा अक्षर।

२. त्रिष्टुप- ११-११ केर ४ पाद।

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

४. उष्णिक- ८-८ केर दू तकर बाद १२ वर्ण-संख्याक पाद।

५. अनुष्टुप- ८-८ केर चारि पाद। एकर प्रयोग वेदक अपेक्षा संस्कृत साहित्यमे बेशी अछि।

६. बृहती- ८-८ केर दू आ तकरा बाद १२ आ ८ मात्राक दू पाद।

७. पंक्ति- ८-८ केर पाँच। प्रथम दू पदक बाद विराम अबैछ।

यदि अक्षर पूरा नहि होइत अछि, तँ एक वा दू अक्षर निम्न प्रकारेँ घटा-बढ़ा लेल जाइत अछि।

(अ) वरेण्यम् केँ वरेणियम् स्वः केँ सुवः।

(आ) गुण आ वृद्धि सन्धिकेँ अलग कए लेल जाइत अछि।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

अहू प्रकारेँ नहि पुरलापर अन्य विराडादि नामसँ एकर नामकरण होइत अछि।

यथा- गायत्री (२४)- विराट् (२२), निचृत् (२३), शुद्धा (२४), भुरिक् (२५), स्वराट् (२६) ।

ॐ भूर्भुवस्वः। तत् सवितुर्वरेण्यं। भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहैत छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य एहि कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतए आध्यात्म चेतना, अधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि।

आब ज्योतिरीश्वर/ विद्यापति/ चतुर चतुरभुज/ बद्रीनाथ झा शब्दावलीसँ अहाँक परिचय करबा रहल छी, जाहिसँ अहाँक लेखन-कौशलमे वृद्धि होएत।

१. कविशेखर ज्योतिरीश्वर शब्दावली

गोण्ठि - मलाह

कबार - तरकारी बेचनिहार

पटनिआ - मलाह

लबाल - लबरा

लौजिह - ललचाइत जीह बला

पेटकट - जकर पेट काटल छै/ अनकर पेट कटैत अछि।

नाकट - नककट्टा

बएर - बदरीफल

बाबुर - बबूर

खुसा - शुष्क

चुसा - चोष्य

फरुही - मुरही/ लाबा

करहर - कुमुदक कन्द

मलैचा - मेरचाइ

बोबलि - घेचुलि –खाद्य कन्द

बाँसी - वंशी

हुलुक - हुडुक्का (वाद्य यंत्र)

जोहारि - प्रणाम

तोरह - तौलह

बराबह - फुटा कए राखह

खुटी - महिला द्वारा कानक ऊर्ध्वभागमे पहिरए जायबला खुट्टी

सिङ्कली - सिकड़ी

चुलि - चूड़ी

त्रिका - माँग टीका

खञ्जरीट - खंजन पक्षी

साँकर - चीनी, लालछड़ी

बिरनी - वेणी, जुट्टी

कम्बु - शंख

पञु - पद्म

राउत - सैनिक पदाधिकारी

राजशिष्ट - राजाक दरबारी

पुरपति - नगरक मुख्य

साधि - सेठ

गन्धवणिक - कस्तूरी आदि सुगन्धी बेचनिहार

बेलवार - सीमारक्षक

राजपुत्र - एकटा पदाधिकारी

द्वारिक - राजदरबारमे प्रवेशक अनुज्ञा देनिहार

पनिहार - द्वारपाल

अगहरा - अग्रहार पाबि काज कएनिहार

रौतपति/ राजपुत्रपति - रौत सभक प्रधान

सन्धिविग्रहिक - विदेशमंत्री

महामहत्तक - प्रतिरक्षामंत्री

प्रतिबलकरणाध्यक्ष - शत्रुसेनाक जासूसीक विभाग

स्थानान्तरिक - राजाक पर्यटनक व्यवस्था केनिहार अधिकारी

नैबन्धिक - दस्तावेज लिखनिहार

वार्तिक - गुप्तवार्ता संग्राहक, वार्तिक आ महावार्तिक पञ्जीमे उच्च पदवी

आक्षपटलिक - द्युतगृहक अधिकारी

खड्गग्राह - हाथमे खड्ग लेने राजाक रक्षक- खर्गा

प्रमत्त्वार - बताहेकेँ रोकएबला अधिकारी

बिश्वास - राजाक अंतरंग सहायक

अग्रजाणिक - राजाक प्रयाणमे आगा-आगा चलनिहार सुरक्षा-दल

गूढ़ पुरुष - गुप्तचर

प्रणिधि - गुप्तचर

वार्तिक - गुप्तचर

सूपकार - भनसीया

सूपकारपति - भनसिया-प्रधान

सम्बाहक - भनसियाक परिचारक

बलिष्ठ - शारीरिक बलबला अंगरक्षक, बैठा

श्रोत्रिय - वैदिक

आध्यायिक - अध्येता

मौहूर्तिक - ज्योतिषी

आम्नायिक - वैदिक वा तान्त्रिक, युद्धविषयक परामर्शदाता

चूड़ामणि - भविष्यकथनशास्त्र

पँचरुखी काँच - प्रिज्म

महथ - उच्च कोटिक सैनिक पद, महथा/ मेहता/ महतो

मुदहथ - जिनका हाथमे राजाक मोहर रहैत छल

महसाहनि - आपूर्ति अधिकारी

महसुआर - प्रधान भनसिआ

महल - महर, समृद्ध गोपाल, जेना नन्द महर

सेजवार - सय्यापाल

पनहरि - ताम्बूलवाह

राजवल्ल्भ - दरबारी

भण्डारी - भाण्डागारिक

कलबार - वणिक

चोरगाहा - चाँवर होकनिहार

सुखासन - आरामकुर्सी

चौपाड़ि - बहरघर, दलान, पाठशाला

अँचरा - गमछा

समरहर - अंगमर्दन

विदान - व्यायाम-३६ प्रकारक

तमारु - तामाक लोटा

पनिगह - पानि फेकबाक पात्र

तमकुण्ड - तामाक गँहीर अढ़िया

अप्यायक - तृप्तिकारक

फेना - बरकाओल चीनीक मधुर

जेञोनार - भोज

स्वर्गदुर्लभ - पान

दण्डिया - डंटाक उपरका पासि

भृङ्गार - स्वर्णकलस

आरहल - आरम्भ कयल

किटाएल - क्रुद्ध

नियोगी - एक प्रकारक फकीर

बुसक - भूसाक

धुनि - घूड़

संकोच - छोट होयब

अपगत - अलक्षित

सम्भार - प्रसार

कौशिक - उल्लू

गोमायु - सियार

नओबति - प्रहरी-दल

चतुःसम - द्रव- भीतरका धरातल नीपबाक

माठ - खाजा-माठ

उनच - उलौँच, चद्दरि (ओछेबाक)

दर्दुर - बेङ

झिकरुआ - झीङुर, सनकिरबा

निविल - निविड़ घन

काकोल - कार-कौआ

कोल - सूगर

शिवा - गिदरनी

फेत्कार - भूकब

प्रसारी - संचारशून्य मेघ

अखलु - प्रतीत होइत अछि

अखउलि - पूर्वमे कहल

वारिभक्त - पानिमे राखल बासी भात

सौहित्य - तृप्तता

उपचय - वृद्धि

पाण्डुरता - श्वेत भेनाइ जेना शरदमे मेघ कारीसँ उज्जर भऽ जाइत अछि

प्रसन्नता - स्वच्छता

सफरी - पोठी माछ

तरङ्ग - चञ्चलता

शालि - दाना भरल झुकल धान

मरुआ - तुलसी जतिक पुष्पवृक्ष

विशेषकच्छेद - कपार गलपर कस्तूरीसँ चित्र बनायब

दर्शनविधि - दाँत आ ठोर रँगब

वसनविधि - वस्त्र रँगब

वर्णिकाविधि - चित्रलेखन

शेखरयोजन - खोपा बान्हब

पत्रभङ्गि - शरीरमे कस्तूरी लेपन

गन्धयुक्ति - अतर-फुलेल बनायब

पानककरनी - शरबत बनायब

पट्टिकावान - पटिआ बीनब

तर्कुकर्म - सीकी-शिल्प

आकरज्ञान - भूतत्त्वविज्ञान

अक्षरमुष्टिका - आँगुरक संकेतसँ अक्षर-भावक निर्देश

दोहदकरण - कृत्रिम उपचारसँ वृक्षकेँ दुर्भिक्षमे पुष्पित करब।

छलितयोग - एक प्रकारक योग

रसवाद - रसायनविज्ञान

दुकूल - घोघट-ओढ़नीक लेल प्रयुक्त वस्त्र

क्षौम - तीसीक सोनसँ बनल वस्त्र

कौशेय - कीटकोशसँ बनल तसर वस्त्र

कमरूबाल - कामरूप बला

बङ्गाल - वङ्गबला

गुञ्जर - गुर्जर

कठिबाल - काठियाबाड़बला

बरहथी - बारह हाथक

बैङ्गना - भट्टासन रंगबला

पञ्चहर - पाँच खण्डक महल

पञ्चसम - पञ्च सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण

प्रदीपकलस - अहिबातक पातिल, कलसमे राखल मङ्गलदीप जे बसातसँ मिझाय नहि

षेमा - राजा आ सेनाक अस्थायी शिविर

वारिगह - हथिसार वा घोड़सार

एकचोइ/ दोचोइ - एक वा दू मुख्य स्तंभ बला तम्बू

मण्डबा - मड़बा

कपलघड़ - कपड़ाक घर

बरागन - बेरागन, सोम-रवि आदि

चेष्टसार - द्यूतशाला

सहिआर - अम्पायर

खेलबार - द्यूतशालाक मालिक

दण्डसाह - दण्डसाक्षी

कात - काँति, हारि-जीत लेल राखल द्रव्य

उपनय - समीप आनब

भुजङ्ग - समदिया, चुगला

घल - झुण्ड

अगिरानि - अग्रगामी रक्षक दल

सेनगाह - सेनानायक

रजाएस - राजादेश

घोल - घोड़ा

पाएन - पएर रखबाक वलय

पलानि - जीन लगाए घोड़ाकेँ कसब

थलबार - घोड़सारमे रहि अश्वक पालन कएनिहार

पाग - मुरेठा

सरमोजा - माथमे पहिरबाक मोजा

गान्ती - गाँती

बाग - चाबुक

साङ्कल - कड़ी

डाम्भ - काँच नारिकेर

फरेन्द - फाँक

कोन्ते - बरछी

लउली - लाठी

जाठी - फड़ाठी

कोन्तिआ - बरछीबाला

धमसा - नगाड़ा

महुअरि - फूँकि कए बजयबाक एक वाद्य

अनायत - ववश, बहीर

षतबार - पहरादार

बाइति - वाद्यध्वनि

टाप - घोड़ाक खुरपात

मुहरव - मुखध्वनि

पलानि - कसि कय

करुअक - कयलक

सर्वांवसर - आम दरबार

वेकल्हेण्टे - डाँड़

पाट - रेशमी

धलि - धड़िया, कप्पा

पाझि - पक्षी

टोपर - टोप सन झपना

सइचान - बाज पक्षी

पितशाल - पीरा साँखु

सरल - धूप सरड़

सिम्बलि - सीमर

सिंसप - सीसी

सहोल - साहोड़

पाउलि - पाँड़रि

बंझि - बाँझि

गिरिछ - रिछ

गुआ - सुपारी

नरङ्ग - सन्तोला

नमेरु - रुद्राक्ष

बउर - बकुल, भालसरि

छोलङ्ग - छोहारा

जुड़ - शीतल

एला - अड़ाँची

सुखमेला - छोटकी अड़ाँची

मधुकर - शतावरी

कम्पूर कदली - कर्पूरकदली

कपिञ्जल - तितीर

धारागृह - फुहारासँ युक्त स्नानगृह

स्थेय - भगनिहार नहि

परम्परीण - वंशपरम्परासँ चल अबैत

पुरुष - रक्षक, सिपाही

कार - कारी

काबर - चितकाबर

चलक - चरक, श्वेतवर्ण

गोल - गौर

कइल - कपिल

पाण्डर - पाण्डुर

शीकरविक्षेप - फुहारा छोड़ब

गण्डूष - कुड़रा

नाकजलबुद्बुद - नाकसँ जलमे हवा छोड़ि बुदबुद बनायब

पिण्ड - पीड़ी

पारी - बेढ़

साटि - खुट्टा

चुत - आम

पस्रवण - सोता

पहाल - गिरि

डोङ्कल - डोंगर

चुली - चोटी

कोइआर - कोविदार

सैम्ब - सीमर

सीसमु - सीसो

साङ्कु - साँखु

समि - शनि, सैनि

सहोल - साहोड़

पञोकठ - पद्मकाठ

सभर - साँभर, अष्टापद मृग

कुटुम्बिनी - खीरी

कठहरिआ - कठखोदी

पेच - उल्लू

स्रुच - काठक लाड़नि, दाबि

पञ्चामृत - दही, दूध, घृत, मधु, शर्करा

पञ्चकषाय - शरीरमे लगयबाक पाँच सुगन्धिद्रव्यक चूर्ण

चषाल - यूपक माथ परक थुमहा

उदूखल - उक्खरि

चमस - बाटी

संभृति - सामग्री

सप्तधान्य - जओ, गहुम, तिल, काउन, साम, चीन, नीवार

आषाढ़दण्ड - पलाशदण्ड

तरुत्वच - वल्कल

वृक्षी - मुनिक बैसबाक आसन

दारुपात्र - कठौत

करण्डक - छिट्टा, पथिआ

बह्आरि - बहुरिआ, पुतोहु

बिदान - दाओ, मुद्रा

उभरि - उछलि कए ऊपर आबि, कुश्तीक दाओ

अवधा - अधोमुख, कुश्तीक दाओ

विद्यावन्ति - नर्तकी

सोताक ककना - मङ्गल सूत्र

सिङ्कली - सिंकड़ी

शाख - शंखाचूड़ी

खुन्ती - खुट्टी- कानक उपरका भागमे पहिरल जाइछ

चूलि - चूड़ी

तृका - माँगटीका

दशञुधि - दसौन्ही- राजाकेँ कालक सूचना देनिहार, सम्प्रति भाट

समहथ - समहस्त, बाजा सभपर एकबेर हाथ दए संगीत निकालब

मण्डल - हाथ-पएरक चक्राकार संचार कए एक मुद्रासँ दोसर मुद्रामे पहुँचबाक क्रिया

अङ्गहार - अङ्गसभकेँ विलासपूर्वक उचित स्थानमे पहुँचाएब

भाल - भूजाबलाक चूल्हि

ओबारी - पातिल

शिवा - गिदड़नी

भीम - भयानक

उल्कामुख - एक जातिक गीदड़ जकड़ा मुहसँ धधरा बहराइत छै

जन्ताक - जाँतक

चुञ्ची - स्तन

पसार - दोकान

पेचा - उल्लू पक्षी

षीषील - खिखीड़

नेउर - बीजी

अपर्यन्त - असीम

पाट - पट्टवस्त्र

कापल - कपड़ा

सकलात - गलैचा

दुसुखासन - सुखद शय्या

लचसूचिका - नओ सुइयापर बिनायल बिछाओन

परिकर-नायक - दलपति

वर्हि - कुश

समिध - जारनि

दृषद - पाथर

लाज - लाबा

इष्टाङ्गना - भावी पत्नी

सुरती - सूरतसँ आयल, सम्प्रति सुरती तमाकू

जातीफल - जायफल

सूक्ष्मेला - छोटकी अड़ाँची

गुलत्वक - दालिचीनी

पत्रक - तेजपात

पिर्प्पली - पीपरि

कटुकी ओ दुलाह- दुलार काँट, वनौषधि

मूल्य परिछेद - मूल्य पटाएब

निष्क्रय - विनिमय

कर्षक्रय - सोनाक मुद्रा कीनब

अङ्कपरिस्थिति - लेखा-जोखा

हरण-भरण - माल लेब-देब

व्यवच्छेद - फरिछोट

नष्टकाक - कार कौआ

सलभ - फतिंगा

ग्रहिल - लगारी

सद्विचक्षण - नीक विद्वान्

वपा - भीड़-स्तूपाकार भूमि

खोल - खाधि

हस्तकाण्ड - लग्गा

गुणकाण्ड - नपबाक लग्गा

वत्सदन्त - बाछाक दाँत सन

भल्ल नख - भालुक नखक सदृश

तृपर्व - तीन पोर बला

सप्तपर्व - सात पोरबला

आलीढ़ - दहिना ठेहुनकेँ उठाय ओ बामा ठेहुनकेँ नीचाँ रोपि ठाढ़ भेल

प्रत्यालीढ़ - आलीढ़क विपरीत

समपाद - दुनू ठेहुन एक सरल रेखापर रोपि ठाढ़ भेल

बिशाख - दुनू टाँग चिआरि ठाढ़ भेल

स्थानक - ठाढ़ होएबाक ढ़ंग

असन - भाला

गोकर्ण - छोट भाला

मुकुल - कलिकाकार तीर

डाण्ड - पतबार, पानि उपछबाक कठौत

चाड, चडक - नाओ सभक बेड़ा

जुज्झार - लड़ाकू, युद्ध-पदाति

गणक - गणितज्ञ

ताराविद् - तारा देखि दिशाक ज्ञान करओनिहार

गुणवृक्ष - मस्तूल

सेकपात्र - नाओसँ पानि उपछबाक कठौत

वोहित - जहाजक बेड़ा

बिआरी - रात्रिभोजन

चोरगाहि - चामरिग्राहिणी

पटा - छोट पीढ़ी

बधा - खुट्टी लगला उत्तर खराऊँ मुदा डोरी लगला उत्तर बधा

तमारु - ताम्रपत्र

बटइ - बटेर

तेरिआ - तीन खुट्टाक- दू बिआनक महीस

लेबारी - नार-पुआर

अधतेरह - तेरहसँ आध कम अर्थात् साढ़े बारह

अँचओलनि - हाथ-मुँह धोलनि

देवरूपा - एक प्रकारक चानी

२. विद्यापति शब्दावली

मृगमद = कस्तूरी

वासर = दिन

रैन = राति

लिधुर = रक्त

पुर नटी = नागर नटी

अवतरु = अवतरित होऊ

कनक भूधर = सुमेरु पर्वत

चन्द्रिका चय = चन्द्रिकाक समूह

निपातिनि = नाश करएबाली

भक्त भयापनोदन = भक्तक भए दूर करएबाली

दुरित हारिणि = विपत्तिक भार हरण करएबाली

दुर्गमारि = भयङ्कर शत्रु

विमर्द = विनष्ट

गाहिनी = विचरण करएबाली

सायक = वाण

सुकर = सुन्दर

पिसित = काँच मौस

पारणा = तृप्ति

रभसे = आनन्दित करएबाली

कृशानु = अग्नि

चुम्ब्यमान = चुम्बन करैत अछि

परिच्युति = नष्ट करैत अछि

आड़ = लाल

भागि = वक्र

गोए = नुका कए

सुधाए = अमृत

कुशेशय = शतपत्र कमल

अधबोली = असंपूर्ण वाक्य

खनेखन = क्षणे-क्षण

उचिक = चकित भावेँ

आरति = पीड़ा

अनानि = अज्ञानी

दन्द = झगड़ा

हेरैत = देखैत

मनसिज = कामदेव

गौरव = गुरुता

खीन = क्षीण

अओके = दोसराक

लहु = लघु

परगास = प्रकाश

सुरत विहार = काम-क्रीड़ा

नवरङ्ग = संतोला

सन्तापलि = कष्ट देनाइ

बाङ्क = वक्र

पसाह = प्रसाधन

भीति = भयसँ

तिष = तीक्ष्ण

सिझल = सिद्ध भेल

कोरि = बैर फल

ससन = वायु

धनि = नायिका

अम्बर = वस्त्र

रेह = रेखा

रङ्ग = आनन्द

अलका = लेप

मसि = सियाही

समरा = श्यामल

कचोरा = कटोरा

पहू = प्रभू

ससधर = चन्द्रमा

मनोभव = कामदेव

सउदामिनी = विद्युत

करिनि = हस्तिनी

वयन = मुख

परिमल = सुगन्धि

तनरुचि = शरीरक गोराइ

अरुझायल = ओझरा गेल

बिलास-कानन = प्रमद-वन

निविल = घनगर

विहि = विधि

निञ = निज

विद्रुम दले = मौसरीक पातमे

तिहुअन = त्रिभुवन

मल्ल = पहलमान

हाटक = सोना

थम्भ = स्तम्भ

चिकुर-निकर = केशपाश

विचरित = निअम विरुद्ध

कवरी = केशपाश

चामरि = चँवर गाय

सम्भसि = सम्भाषण

न जासि = नहि कएल जा सकैछ

हुतासे = अग्नि

मो = हम

पीहलि = झाँपि देलक

पीहित = आच्छादित

कुहुकि = मायाविनी

जुड़ायब = शीतल करब

दहइ = जड़ायब

अवनत = नीचाँ झुकल

बारल = निवारण कएल

धाओल = दौगि पड़ल

पसाहिम = प्रसाधन

फुलग = रोमांच

बलाअ = वलय

पेखलि = देखल

बेढ़लि = लेपटल

थीर = स्थिर

पुछसि = पुछैत छह

परस = स्पर्श

झुरए = व्याकुल होइत अछि

अम्बुद = मेघ

धन्दा = संदेह

पुतलि = मूर्ति

इन्दु = चन्द्रमा

महि = पृथ्वी

माझ = मध्य

खिन = क्षीण

मधु = पुष्प रस

उपेखि = उपेक्षा करके

तरुअर = तरुवर

लेख = उल्लेख

परिहरि = छोड़कर

तोरिए = तोहर

पाछिलि = पाछाँक

सनि = सदृश

अछलिहुँ = हम छलहुँ

छाजत = शोभित होएत

घोसिनी = ग्वालिन

बथु = वस्तु

अरतल = अनुरक्त

रव = हल्ला

राहि = राधा

तापिनि = ज्वाला

बयने = वाणी

धरनि = पृथ्वी

इथि = एकर

जोतिअ = ज्योतिष

मुरछइ = मूर्च्छा

आइति = अधीनता

महते = महावतसँ

नव = झुकैत अछि

एहो = ई

बटमारी = रस्तामे लुटनाइ

तुलाएल = बढ़ाओल

पसार = दोकान

पढ़ओंक = बोहनी

कुंगयाँ = गमार (कुगामक)

आजि = लगा देब

आग = अङ्ग

गोए = नुका कए

इन्दुमुखी = चन्द्रमुखी

तहु = ताहि परसँ

परिहरिहह = त्यागि देब

सेचान = बाज

भामि-भामि = भ्रमण कए

विरडा = विडाल

सुरते = काम-क्रीड़ा

काहिअ अवधारि = विश्वासपूर्वक कहैत अछि

अन्तर नारी = नारीक हृदय

रोखए = रोष

गंजए = गंजन

रंजए = प्रसन्न

साह = ओ

तरासे = भए

परुष = कठिन

सोस = शुष्क

चेतन = समर्थ

आथि = अछि

दूषलि = दुःख

निमाल = निर्माल्य

अंसुक = वस्त्र

वाँलभु = वल्लभ

नठल = नष्ट

परबोध = प्रबोध

पांगुर = पैरक आंगुर

खिति = क्षिति

गीभ = ग्रीवा

अनुसए = पश्चाताप

अनुरञ्जब = हम सम्हारि सकब

विरमाने = विराम-स्थल

एहो पय = ताहिपर सेहो

जार = जराकए

नखत = नक्षत्र

जुगुतिहि = तर्कसँ

दोहाए = शपथ

रङ्ग = अनुराग

गरुअ = गुरुतर

पिसुन = चुगलखोर

अरुझओहल = ओझरायल

कओनकँ = ककर ऊपर

बारि = बचा कए

फुलधालि = फूल धारण कए

कैतवे = छलसँ

अह = दिन

सपजत = सपरज

वथु = वस्तु

मोन्ति = मोती

धम्मिल = केशपाश

धोएल = स्थापित कएल

अङ्गिरि = अंगीकार करब

पुनिमाँ = पूर्णिमा

विभिनावए = अलग कए सकैत अछि

आनन = मुख

तिमिशरि = अंधकारक बैरी

चालक = प्रेरक

बम = उगलि रहल

भीभ = भआवोन

ओल = अन्त

कवल = ग्रास

सरूप = सत्य

निसिअर = निशाचर

भुअङ्गम = भुजङ्गम

उजोर = प्रकाश

झाप = डुमनाइ

मेंदुर = घन

मुदिर = मेघ

पाउस = पावस

निसा = निशा

निबिल = निविड़

निचोल = साड़ी

जामिक = प्रहरी

थैरेज = स्थैर्य

थोइआ = स्थापयित्वा

रञनि = रात्रि

सिरहि = शोभामे

असिलाइ = म्लान भऽ गेलाइ

वालँभू = स्वामी

मुसए = चोरि करबाक लेल

छैलरि = छलियाक

अरथित = याचनासँ

जड़ाइअ = ठण्डा करू

विरत रस = जकर स्वाद खतम भए गेल

अचेतन = मूर्ख

कके = किएक

लाघव = अनादर

चिटि-गुड़े = गुड़-चुट्टी

चुपड़लि = ब्याज

लओले लोथे = बहन्ना करलो उपरान्त

झाल = शुष्क

दरनि = दरारि

असेखि = अशेष

असहति = असहनशील

तत्न = तन्त्र

भाझहि = मध्य

खीनी = क्षीण

झपावह = ढ़कैत होए

परिरम्भि = आलिङ्गन कए

फुजलि = खुजि गेल

घोषसि = घोषणा

नखर = नख

पाँच पाँच गुन दस गुन चौगुन आठ दुगुन = ५*५*१०*४*८*२=१६०००

नखर = नख

छाँद = शोभा

हिया = हृदय

सदय = सहाय

कानुक = कृष्णाक

निरसाओल = नीरस कएल

सखिता = साक्षित कएल

करवाल = तलवार

काँढ़ = निकलैत अछि

कार = कारी

उजागरि = उज्जर

परिपन्तिहि = प्रतिपक्षीकेँ

पयगन्ड = प्रौढ़

मधुमखिका = मधुमक्षिका

उधारल = उद्धार कएल

लागर = युक्त

पुरहर = विवाह अवसर पर मांगलिक कलश

मन्दाकिनी = गङ्गाजल

केसु = किंशुक

विथुरलहु = पसारि देल

भिति = दीवारि

पौञनाल = कमलनाल

रात = लाल

ऐपन = अरिपन

हथोदक = हस्तोदक

विधु = रस्ताक थकावटि

कनए-केआ = चम्पा+केरा = कनक+कदली

जैतुक = दहेज

डिठि = दृष्टि

तुलइलिहुँ = शीघ्रतासँ

अनुबन्ध = लगओनाइ

बोल छड़ = मिथ्यावादी

मज्जि = मज्जन कए

विथरओ = पसरि जाय

पाड़रि = गुलाब = पाटली

भोपति = हमरा लेल

वाउलि = बताहि

विधुन्तुद = राहु

सेरी = शरणार्थी

परभृतक = कोकिल

मतेँ = मन्त्र

कि रहसि बोरि = की हास्यमे बाजि रहल छी

बालहि तोरि = अहाँक प्रेमिकाकेँ

भर बादर = मेघसँ भरल

झम्पि = रहि-रहि जोरसँ

सघने खर = तीव्र आ घन खर

डाहुकि = जोरसँ

थेघा = टेक कए

पख = पक्ष

पिआञे = प्रियतम

पङ्का = लेप

तथुहु = ओहिमे सेहो

दर = अपूर्व

अपद = बिना कारणक

साती = तीव्र वेदना

अवथाञे = अवस्था

पसाइल = पसारल

रासे = रोष

बालभु = वल्लभ

अएत = अधीन

सपूने = सम्पूर्ण

दिगन्तर = दूर देशमे

अरुझाए = ओझरल

आधिन = अधीन

पललि = भेल

खेञोब = क्षमा

जल आजुरि = जलाञ्जलि

सुसेरा = सुन्दर आश्रय

गोए = नुका कए

सम्भ्रम = अतर्कित

कराडहार = कड़ुआर (तकड़ा पकड़ि यमुना पार करब)

लहु-लहु आखरे = लघु-लघु अक्षर

तामरस = कमल

घनसार = कर्पूर

वेपथु = कम्प

मसृण = चिक्कन

सुदति = सुन्दर दाँतबाली

सुति = श्रुति

जति = जतेक

घमिअ = फूँकल जाइत अछि

आनइति = परवशता

दीब = शपथ

बड़इ = बहुत

देव देयासिनि = झाड़-फूँक करए बाली स्त्री

जटिला = कर्कशा

फुकरि = चिकरि

बहुरि = पुत्रवधू

अङ्गा = चिन्ह

बेसर = नाकक आभूषण

यन्त्रिया = वीणा बजाबए बला

यन्त्र = वीणा

फोटा = ठीका

समत = सम्मत

मौलि = मस्तकमे

मुसरैँ = मूसल

जेमाओव = भोजन

नवइते = उतरैत

पडिचाँ = पटिआ

माड़व = मड़बा

उगारल = घेरिकए पकड़ब

आँजल = अंजन

डाढ़ल = दग्ध कएल

गौह = खोह/ गुफा

बिलुविअ = बाँटल जाए

मउल = मुकुट

डाढ़ति = जरि जायत

श्मश्रु = दाढ़ी (मुँह बला, खाए बला नहि)

अधँगँ = अर्धाङ्ग

गरुअ = अधिक

अभरन = पहिरबाक वस्त्र

बड़ाव = प्रशंसा

तौँ = तथापि

निसाकर = चन्द्रमा

सरिस = सदृश

तांतल = उत्तप्त

सैकत = बालू

हब = होएत

निधुवन = संभोग

आरा = आन

कहाओसि = कहबैत छथि

राजमराल = राजहंस

३. रसमय कवि चतुर चतुरभुज शब्दावली

रसमय कवि चतुर चतुरभुज- विद्यापति कालीन कवि। मात्र १७ टा पद्य उपलब्ध, मुदा ई १७ टा पद हिनकर कीर्तिकेँ अक्षय रखबाक लेल पर्याप्त अछि।

विहि - विधाता

सजानि - युवती

तनु - वयश, देह

आँतर - अन्तर, भीतर

गोए - नुकाएब

वेकत - व्यक्त

गेहा - ठाम

परि - प्रकारे

विरहानल - विरहक आगि

काँती - कान्ति

धमित - धिपाओल

निरूपए - निरीक्षण

परिहर - उपेक्षा

अचिरहिँ - अल्पकालहि

वामे - प्रतिकूल

निअ - निज, अपन

मलयज - चानन

सयानि - विरह विदग्धा नायिका

धनि - धन्या-नायिका

हेरसि - नेहारैत

हरषि - हर्षित भए

परिहरि - मेटाय

नखत - तरेगण

मधुरि-दल - उभय-ओष्ठ

मनसिज - कामदेव

अवनत - नीचाँ झुकनाइ

हुतासन - ज्वाला

४. बद्रीनाथ झा शब्दावली

मिलिन - मधुमक्खी, भौरा

रसाल - आमक गाछ, कुसियार

अतन्द्र - सावधान, जागरूक

खद्योत - भगजोगनी

दुर्वार - कठिन

यति - प्रतिबंध, जतेक बेर

अचलसेतु - अदृष्टलेख

विपिन - जंगल

तरणि - नाओ

अवाम - दहिन

गरुड़केतु - विष्णु

बौड़ि - उन्मत्त

तुषार - शीतल

ब्रह्मर्षिसुत - कश्यप

वारुणी - पश्चिम दिशा

कश्यप - मुनि ओ मद्यप

प्रतीची - पश्चिम दिशा

कुलाय - खोंता

साँझ - समाधि वा समुच्चय

जीव-अभिदान - नाम

कमान - धनुष

विधु - चन्द्रमा

हय - कनेक

नमि - नमस्कार

नीराजन - प्रातःकालक आरती

मानर - मृदङ

काहल - वाद्यविशेष

चतुविध - आङ्गिक, वाचिक, सात्विक, आहार्य

उडुगण - तरेगण

दैवज्ञ - ज्योतिषी

पाटल - लाल

पाटल - व्याप्त भेल

अविद्या - अज्ञान

अधित्यका - पर्वतक ऊपरक देश

कुशण्डिका - वेदिसम्मार्जनादि

मेधा - धारणावती बुद्धि

सम्भार - सामग्री

कज्जल - कारी (काजर)

भूयसी - एक प्रकारक दक्षिणा

दीठि - दृष्टि

नृपदार - रानी

परिचार - परिचर्या

फुलहरा - कोढ़िलाक झाड़

राजीव - कमल

मुदवारि - आनन्दक नोर

तृष - तृष्णा

पाञ्चजन्य - शङ्ख

जगत्ताताक - विष्णु

प्रत्यभिवादन - प्रतिप्रणाम

जूटिका - शिखा

गोए - नुकाए

गुरु-सन्तोख - दक्षिणाद्रव्य

अवसित - पूर्ण

श्रुतिवेध - कर्णवेध

प्रभाक - प्रतिभा

गुरु-शुद्धि - बृहस्पतिक शुद्धि

औड़ि - आग्रहविशेष

शिविका - पालकी

पूर्वाङ्ग-कृत्य - मातृकापूजादि

अदम्भ - निश्छल

वैजयन्त - इन्द्रक कोठा

कौशेय वसन - पाटक वस्त्र

भक्ष्य चतुर्विध - भक्ष्य-भात आदि भोज्य लाबा आदि, लेह्य चटनी आदि, चोस्य आमा आदि

नीवार - ओइरी

अनुताप - पश्चाताप

बद्धकर - कृपण

विमति - विरक्ति

वैमत्य - मतभेद

प्रसाद - प्रसन्नता

अनुरोध - रोच

आर्य - श्रेष्ठ

जाचल - परीक्षित

सुभगप्रक्रिय - सुयश, सुव्यवहार

अचलेश - भूपति

बिहान - प्रभात

पट्टपटसार - उत्तम पाटक वस्त्र

विभूतिवत - ऐश्वर्य

एकतान - एकाग्र

वनी - वानप्रस्थ

और्ध्वदैहिक - परलोकोपकारक श्राद्ध

भोज-ओज - कृपणता

चञ्चरीक - भ्रमर

सोहल - शोभित भेल

छान - कलङ्क

अदक्षिण - प्रतिकूल

इन्दीवर - नील कमल

कीर - सूगा

अकानल - सुनल

पोषक-द्वेषक - पोसनिहार (कौआक) द्वेषी

श्मश्रु - दाढ़ी-मोछ

शैवाल-लतिका - सेमारक लत्ती

कुण्डलित - लपेटल

कर्णिकार - कनैल

ग्रीवा - गरदनि

इन्द्रायुध - वज्र

तमाल-साल - साँखु

शम्पा - विद्युल्लता

सहकार - आम

वकुलमुकुल - भालसरीक कली

पखान - पाथर

दमनक - दोनाफूल

अंसयुगल - दुहूस्कन्ध

अश्मसार - लोह

मणिबन्ध - पहुँचा

अबलासव - विरोध

दुहिण - ब्रह्मा

जम्भरिपु - इन्द्र

ऊरु - जाँघ

आरत - विरोध

नीरज - जलमे अनुत्पन्न, धुलि रहित, विरोध

इलातनय - पुरुरवा

सुरवैद्ययुगल - दुहू अश्विनीकुमार

क्षितिहरिहम - पृथ्वीन्द्र

परपुष्ट - कोयल, कोकिल, पसान्तरमे परिपुष्टा वैश्या

मधुप - भ्रमर, मद्यप

आतङ्करङ्क - निर्भय

काव्यक - शुकक

मधुभरि - बसन्तपर्यन्त

सुरभिमग - कामधेनुक मार्ग

अनीति - अतिवृष्ट्यादिरहित

शिक्षालोक - प्रकाश

तास्रव - उच्चध्वनि

जनपद - अपन देश

साभिनिवेश - आग्रहपूर्वक

धारणा-ध्याण - अष्टाङ्गयोगक छठम ओ सातम अङ्ग

प्रकृति - स्वभाव, प्रजा

पीयूष-यूष - अमृतसार

मार्तण्ड - सूर्य

सत्वक - सत्वगुण

सौम्य - बुधग्रह

वाक्पति - बृहस्पति

रवि-कल्प - सूर्य-सदृश

याचना-परायण - याचक

अभियोगी - अभियोग कएनिहार

कैरवामोद - कुमुदक सौरभ, शत्रुक आनन्द

अनुदार - स्त्रीसँ अनुगत

पुत्रेष्टिक - पुत्रोत्पादक यज्ञ

एकावली - मोतीक माला

मत्सरिता - अन्यशुभद्वेष

लालनसुहिता - लालने तृप्त वा अनुकूल

परिणाह - वृद्धि

प्रमत्त - असावधान वा उन्मत्त

बालवशामे - नवीन हथिनी

आविल - पङ्किल

अर्धचन्द्र - चन्द्रक ओ गड़हत्था

शिखिकलाप - मयूरक पिच्छ, विषम

बलाहक - मेघ

सरणी - आकाश

जड़भाव - शैत्य वा जलत्व

मेचक - नील

द्विरद - हाथी

धम्मिल्ल - केशपाश

विलक्ष - लज्जित

पथिक-चक्र - चक्रबाक ओ समुदाय

काली - कारीरङ्ग

तारा - आँखिक पुतड़ी

काली - प्रथमा महाविद्या

तारा - द्वितीया

चतुश्रुति - श्रुतिवेद, पढ़निहार ब्रह्मा

श्रुति - कान, सुनब

विश्रुति - सिद्धि

छीजक - नष्ट होएबाक

कलकण्ठी - कोकिला

तप्त-तपनीय - सोना, स्वर्ण

चिवुक - दाढ़ी

परिस्फुर - चञ्चल

लेखा - गणना

जूझल - लड़ल

महायति - अतिविस्तीर्ण

आहित - स्थापित

स्तूप - माटिक ढेरी

लिकुचक - बड़हड़क

श्रीफल-मद - विल्वफलक गर्व

गर्त - खत्ता

कुलाल - कुम्हार

नाभिभव - ब्रह्मा

शारदा - अदृश्या सरस्वती नदी (अलखरूप शारदा)

त्रिदिवस सारिणी - गङ्गा

वली - उदररेखा (तीनिवली)

बली - बलवान

पाटच्चर - चोर

केहरि - सिंह

नितम्बक - पर्वतक मध्य भागक

विधिओजक - प्रतापक

कृष-नीच - नीचाँ दिसिसँ क्रमहि पातर (जङ्घा-क्रम-कृष-नीच)

वेत्र-दण्ड - सोनाक अधिकार दण्ड

हंसक - नुपूर

दश-शशधर - नखरूप-दशचन्द्रक

लाजें बीतल - संकुचित भेल

अनृत-दूषण-कृपाणी - मिथ्यादोषक छुरी जेकाँ नाशक

कथाऽवशेष - अवशिष्ट वक्तव्य

हर्ष-नृत्त - गात्रविक्षेप

सभीक - भीत

सागर-परिपन्थी - सागरक प्रतिस्पर्धा कएनिहार

सम्पुटित - सङ्कुचित

विगेय - निन्दनीय

विजीहीर्षा - विहारक इच्छा

दलतर - पातक नीचाँ

अतिसुकवि-ऊह - सुकवि तर्कक अगोचर

कुवलय-रम्भा-समान- पृथ्वी-मण्डलक रम्भा सदृश

देवाङ्गनीय - देवाङ्गना-सम्बन्धी

रास - मण्डलाकार नृत्य

श्यामा - प्रियङ्गु

व्यामोहक - सम्मोहक

काल - यमराज

कृतयुग - सत्ययुग

रण-एकतान - युद्धमे सर्वदा विजय पओनिहार

नृपति-पताकिनीक - राजसेनाक

विकटप्रतीक - दारुणाकार

पुण्डरीक - बाघ

दिनेन्दु-दीन - दिनक चन्द्र सदृश मलिन

सर्वसहाक - पृथ्वीक

लीन - प्रलयमे प्राप्त

विलीन - विलाएल

गोए - राखि

तदनुसार - पाछाँ

विदग्धताक - रसिकताक

गरुअ - पैघ

भूरमाक - भूतल लक्ष्मीक

शर्म - सुख

दलितपांशु - निष्पाप वा निर्दोष

भवितव्यवश्य - भाग्याधीन

अननुरूप - प्रतिकूल

प्रणिधानलीन - ध्यानमग्न

द्विजदत्त - सिद्धब्राह्मणसँ देल

दत्त-प्रदत्त - दत्तत्रेयसँ देल

उदेष - अन्वेषण

स्वरति - स्वविषयक प्रेम

धैर्य-कदर्य - अधीर

चरमदशाक - मृत्युक

अवगाह - आलोड़न

ओज - तेज

यशस्य - यशोजनक

अलेश - निश्छल

विजिगीषा - विजयक इच्छा

पुटपाक - दुइ सरबाक सम्पुटमे वस्तुकेँ मूनि पक

हयग्रीव - राक्षस जेकरा विष्णु मारल

अनन्त - अन्त-रहित

व्यपाय - परिपूर्ण

भङ्ग - पराजय

सङ्गर - युद्ध

तनु - कोमल

आश्रित-दुर्ग - दुर्गोपासक

दुर्ग - दैत्यसँ सेवित दुर्गम

सर्वसहा - पृथ्वी, तितिक्षा, सभ सहनिहारि पृथ्वी

मनु - मन्त्र

शिव - कल्याणकारक

कूर्च - ह्रीँ

शिखिजाया - स्वाहा

आखर - ह्रीँ गौरि! रुद्रदयिते! योगेश्वरी। हूँ फट स्वाहा

अन्वर्थाख्य - यथार्थनामा

सिद्धि - सिद्धिकेँ प्राप्त, सम्पन्न

ब्राह्मण - भोज-पञ्चाङ्ग पुरश्चरण (तर्पण मार्जन ब्राह्मण भोज नृसोम)

वैन्य - राजा पृथु

फलक - ढाल

शिशुमार - सौँस

धन-शाद - पाँक

क्षेपणी - करुआर

पटमण्डप - तम्बू

यादस्स्वन - जलजन्तुक शब्द

पूत - पवित्र

द्विरदकाँ - हाथीकेँ

दानजल - मदजल

मन-अवसाद - दुःख

भव्य - शुभ, सुन्दर

आयुधराजि - चञ्चला, विद्युत

चैत्य - प्रसिद्ध गृह

दुर्ग - किला

सुचतुष्पश - चौबट्टी

अहम्पूविका - हम पहिने, तँ हम पहिने, एहि स्पर्धासँ दौगब

पवि - वज्र

अर्थ - प्रयोजन

प्रभूत - बहुत

लाघव - शीघ्रता

दनुज-तनुज - शरीरमे उत्पन्न

अर्भ - नेना

सुरसरणी - आकाश

शारिका - मएना

मेकल - नर्मदा नदीक उत्पादक पर्वत

परिपाटी - परम्परा

उत्कोच - घूस

वितान - विस्तार

प्रकोष्ठ - पहुँचा

अङ्गुरीय - अङ्गुठी

केतन - ध्वजा

निर्मम - ममताहीन

उदिखर - उदित

दीधिति - चन्द्रकिरण

दक्षिण - अनेकमे समानानुरागी ओ दहिन

मत्सरी - द्वेषी

विनिपातोन्मुख - अवनति दिस प्रवृत्त

मधु-सञ्जैँ - नामसँ

नृपदारक - राजकन्या

प्रमोद-निबन्धन - कारण

वन्दी - कैदी

पुरुषार्थ चतुष्ट्य - धर्म, धन, काम ओ मोक्ष

दीधिति-माली - सूर्य

नरनाथ - परिकर

औरस-सुत - अपनासँ धर्मपत्नीमे उत्पन्न पुत्र

चक्रधर - नारायण

ईषत्कर - सुकर

कुलिशायुधसँ - इन्द्रसँ

प्रमा-सालित - यथार्थ ज्ञानसँ स्फीत

उक्ति-प्रगल्भ - बजबामे प्रौढ़

शमन - यमराज

विधेय - कर्तव्य

दुर्विपाक - अधलाह फल

सङ्कल्प-कल्पना - मानस कर्मक रचना

स्तम्भित - जड़ीभूत

सकल-करण-परिवारक- इन्द्रिय वर्गक

भव-झरिणी - संसार नदी

शशिकान्त - चन्द्रकान्त मणि

रजनिकर - रुचिएँ- कान्तिएँ

निष्कपट - रुचिएँ-प्रीतिएँ

द्रुत - शीघ्र

विद्रुत - पघिलल

मानसिक - व्यतिक्रमहुक-मानस-व्यभिचारहुक

उन्मिषित - बढ़ल

प्रकृतिस्थ - चैतन्य-युक्त

कालासुर - कालकेतु राक्षस

अमान - अपरिमित

अमानव - अलौकिक

कुरङ्गित - हरिण जेकाँ कुदैत

विक्रम - विलक्षण वा विगत छै क्रम जाहिमे

पञ्चानन - सिंह

आरभटी - आडम्बरपूर्ण चेष्टा

दुरभिसन्धि - दुराशय

कान्दिशीक - भयसँ पढ़ैनिहार

अनाथ - विधवा

धृष्ट - प्रौढ़

निकृष्ट - नीच, छोट

उपरोधन - धैरव

अनारम्भ - आरम्भ नहि करब

भानुमान - सूर्य

कृकलाश - गिरगिट

सन्नाह - युद्धक उद्योग

मधु-मधुरिमार्ह - द्राक्षासदृश-मधुर सम मधुर, दाखसन

सर्वज्ञम्मन्य - अपनाकेँ सर्वज्ञ माननिहार

वीरमानी - अपनाकेँ वीर माननिहार

नृशंस - क्रूर (वातक)

अपलापपरा - लाथ करबामे तत्पर

प्राथमिक - पहिले बेरुक

प्रकार - दिवारक

अज - बत्तू

कुरङ्ग - हरिण

गवय - गो सदृश नीलगाय

शार्दूल - बाघ

साम्हर - हरिणसन जन्तु

भूतनाथ - महादेव

प्रमथराजि - गणसमूह

शृङ्गी - शृङ्गवाला

जटी - जटाधारी

वारणरद - हाथीकसन दाँतबाला

पुच्छी - नाङ्गरि

कृत्तिपटी - बाघक चाम पहिरनिहार

चत्वर - चट्टान

भीरुभीमा - भीरुक भयङ्कर

पटल - पटि गेल

जन्य - युद्ध

राजन्य - क्षत्रिय

भिन्दिपाल - ढेलमासु सन गुल्ली फेंकबाक अस्त्र

तोमर - मन्थन दण्डसन अस्त्र

कृपाण - तरुआरि

परशु - फरुसा

असि धेनु - खाँड़, छूड़ा

भुशुण्डी - अग्निप्रधान अस्त्र

परिध - हथौड़ी

दनुजभुवन - पाताल

जलद-छाया - मेघक छाहरि, तत्सदृश अस्थिर

मृत्युशक्ति-उत्क्रान्तिदा- मृत्युकेँ’ उत्क्रान्तिदा’ नामक शक्ति छन्हि जाहिसँ जीवोत्क्रमण करैत छथि

वृन्दारक-वृन्दक - देवसमूहक

निजचमू - सेना

पताल - अतल, वितल, सुतल, तलातल, महातल, रसातल, पाताल

सन्देश - संवाद (समाद)

त्रिदिवहुँ - स्वर्गहुँ

प्रत्यूष - प्रातः काल

दानव-भोगिनी - राजाक सामान्य स्त्री

अभ्यास - योगाभ्यास

क्लेश - अविद्या-स्मिता-राग-द्वेष ओ अभिनिवेश

जनि - जन्म

भोगभू - भोगस्थान वा भूमि

भुजगभुवन - पाताल

नाक - स्वर्ग

सहस्रार - शिर स्थित सहस्रदल- कमलाकार चक्र

निर्मन्तु - निरपराध (निर्दोष)

फेरि - घुमाए

फेरि - पुनि

अन्तराय - विघ्न

याचकपटलीकल्प - याचकसमूहजेकाँ

रहस्योद्भेदसँ - गुप्तप्रीतिक प्रकाशसँ

लोकपति - नरेश

मध्यमलोक - मर्त्यभुवन

अधोभुवन - पाताल

नररिक्त - मनुष्यसँ रहित

तूर्ण - शीघ्र

उद्देश - उच्चारण

उपेन्द्र - वामन भगवान्

कन्याक - शुक्रक पुत्री देवयानीक

अर्थना - याचना

सपरिकर - परिवार परिजन सहित

पुरुषसूक्त - “ओँ सहस्रशीर्षा” इत्यादि सोड़ह ऋचा

दुइ - नारायण ओ तुर्वसु (निज दुइ बापक परिचय)

प्रतिग्रह - दान लेब

लाजहोम - लज्जाक हवन

लाजहोममे - लावासँ हवनमे

प्रणयकोपक - मानक

अपसारण-गति - हटएबाक उपाय

परमाणु - सूर्यक प्रभामे दृश्य रेणुक छठम भाग

द्वयणुक - दू परमाणु

पूगीफल - सुपारी

व्यङ्गयवचन - व्यङ्ग्यार्थ-बोधक वचन

दिवसचतुष्टय - चारि

गानचातुरी-विवरण - प्रकाशन

कान-सुधारस-वितरण- दान

चारिमशुचि - चारुतासँ भूषित

पाँकल - पाँकमे लागल

निमीलित - सङ्कुचित

कीलित - बद्ध (पीड़ित)

मदन-रुजा - रोग

निर्वांप - शान्ति करब

समाजित - पूजित

उद्भेद - विकास

चलदल - पीपड़

मन्मथ-घर्षण - प्रगल्भता

कल्पकल्प - कल्पसदृश

आशा - दिशा

विदग्ध - विकल, रसिक

सुरतवितान - क्रीड़ा-कलाप

वितानल - विस्तीर्ण कएल

संभोग - शृंगारक पूर्वाङ्ग वा केलि

विप्रलम्भ - शृङ्गारक उत्तराङ्ग वा विरह

अवसित - समाप्त

विधुर - विरहित (दीपक-विधु-विधुर)

अनवम - निर्दोष

विरस - निःस्पृह (विमुख)

पञ्चयज्ञ - ब्रह्मयज्ञ (वेद अध्ययन-अध्यापन), पितृयज्ञ (पितरक तर्पण ओ नित्यश्राद्ध), देवयज्ञ (हवन), भूतयज्ञ (वैश्वदेववलि), नृपज्ञ (अतिथि-सत्कार)

पर्व - पाबनि

आन्तरिक - अन्तःकरण

मञ्जूषा - पेटी

भूमिनेता - पृथ्वीपति

जरती - बृद्धा

वैजयन्त - इन्द्राणीसँ भूषित इन्द्रप्रासादक

पति-परिचार - स्वामीक सेवा

मन्त्र - विचार

कान्त - प्रिय

श्लाधापरायण - प्रशंसामे तत्पर

धव - धावा

मधुपा - मद्यपायिनी

भूरि - बहुत

सर्वसहासमेत - सभ (दुःखकेँ) सहनिहारि पृथ्वी सहित

कासर - महिसा

हिण्डोर - मचकी

शैलूष-कुहना - नटक माया

संगमे हरिमोहन झा, यात्री, धूमकेतु, साकेतानन्द, रामभद्र, धीरेन्द्र, कापड़ि, मलंगिया, नचिकेता, कुलानन्द मिश्र, राजकमल, राजमोहन झा, सुभाषचन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, रमानन्द झा “रमण”, मोहन भारद्वाज, रमानाथ झा, जीवकान्त, प्रभास कुमार चौधरी, लिली रे, इलारानी सिंह, रामलोचन ठाकुरकेँ पढ़ी, आ दीनबन्धु झाक धातुरूप आ रमानाथ झाक मिथिलाभाषा प्रकाश, आ भारत आ नेपालक कक्षा नौ-दस केर पोथी सेहो घोंटि जाइ आ तखन जे अहाँ मिथिलाक्षर सेहो नीक जेकाँ पढ़ी आ लिखि सकी तँ अपनाकेँ मैथिली साहित्य परम्परासँ जोड़ि सकब आ मेडिओक्रिटी सँ बाहर आबि सकब। मैथिली पत्र-पत्रिका सभ सेहो पढ़ी आ अनुवाद साहित्य सेहो। संगहि विदेह-मिथिला-तीरभुक्ति-तिरहुतक इतिहास आ महान पुरुष आ महिला लोकनिक कृति आ चरित्रक अध्ययन सेहो आवश्यक। एतेक सबक पूर्ण भेलाक बाद जे साहित्य अहाँक लेखनीसँ निकलत तकर स्वाद फराक रहत।

२९. मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी

सारांश

मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी मैथिली बाबूकेँ अपन ऐ राजनैतिक जमीनक अनुभव ओइ दलमे रहितो नै भेल हेतन्हि, जकरा कहियो ओ रामक संग पटेने रहथि। दलमे एकटा प्रभावी नेता कहै जाइबला बाबूकेँ कहियो पिछड़ल वर्गक नेताक रूपमे प्रस्तुत नै कएल गेल। मुदा राजनैतिक जमीनसँ बेशी जोड़तोड़मे माहिर बाबू दलसँ निकालि देल जाइते प्रतिपक्षी-दलक नजरिमे एना चढ़लाह जे हुनका प्रतिपक्षी-दल अपना दिससँ प्रदेशमे पिछड़ल वर्गक गद्दीपर विराजमान कऽ देलक। एकरा सुरजापुरीमे (भारत दिसुका किशनगंज आदि क्षेत्रमे) एना लिखल/ बाजल जाएत: -बाबूक अपना यहार राजनीतिक जमीनेर अहसास उस दलात रहले नी होबे।

बीजशब्द: सुरजापुरी · राजबंशी · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली-सुरजापुरी-राजबंशी; राजबंशी; भाषा; सुरजापुरी; बाबू प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिली- सुरजापुरी- राजबंशी
मैथिली
बाबूकेँ अपन ऐ राजनैतिक जमीनक अनुभव ओइ दलमे रहितो नै भेल हेतन्हि, जकरा कहियो ओ रामक संग पटेने रहथि। दलमे एकटा प्रभावी नेता कहै जाइबला बाबूकेँ कहियो पिछड़ल वर्गक नेताक रूपमे प्रस्तुत नै कएल गेल। मुदा राजनैतिक जमीनसँ बेशी जोड़तोड़मे माहिर बाबू दलसँ निकालि देल जाइते प्रतिपक्षी-दलक नजरिमे एना चढ़लाह जे हुनका प्रतिपक्षी-दल अपना दिससँ प्रदेशमे पिछड़ल वर्गक गद्दीपर विराजमान कऽ देलक।
एकरा सुरजापुरीमे (भारत दिसुका किशनगंज आदि क्षेत्रमे) एना लिखल/ बाजल जाएत: -
बाबूक अपना यहार राजनीतिक जमीनेर अहसास उस दलात रहले नी होबे। जहाक कोईखुन वहाय रामेर संगे सीचे छीले। दलात एक कद्दावर नेता कहा जनवार बाबू कोईखुन पिछवाड़ नेतार लखा पेश नी करील। लेकिन राजनीतिक से बेसी जोड़तोड़ोत माहिर बाबू दलार से निकलाते ही प्रतिपक्षी-दलाड़ नजरोत हिरंगदी चढ़ील कि वहाय पाटी अपनार बीती से प्रदेशोत पिछड़ार नेतार गद्दीत विरजमान करील।

एकरा राजबंशी (नेपाल दिस सुरजापुरीकेँ राजबंशी भाषा कहल जाइ छै, झापा, सरनामति, चकमकी, मेची, ताधंडुवा आदिमे- राजबंशी आ सुरजापुरीमे मामूली अन्तर छै) मे एना लिखल बाजल जाएत: -
बाबूर अपनार इर राजनीतिक जमीनेर ऐहसास उखान दल त रहते हुए भी नी होल, जइर कोधोय उम्हा रामेर संगे छिले। दलात एक कद्दावर नेता कहवार बाबूर कोधोय पिछड़ा नेतार लाखा पेश नी करे। माने राजनीतिक जमीनत भेल्ला जोड़तोड़ माहिर बाबू दल से निकलाले ही प्रतिपक्षी-दलार नजर एनंतिंज चढ़िल कि अम्हा पार्टीत अपनार तरफ से प्रदेशत छट जातिर नेतारक गद्धी पर बठाइ दिल।

सुरजापुरी- भारतमे बिहारक किशनगंज आ पूर्णियाँ आदिमे गामे-गाम राजबंशी (महादलित) जाति द्वारा ई भाषा बाजल जाइत अछि। किशनगंजमे मुस्लिममे स्वामी जाइत खोट्टा आ सेवक जाति कुल्हिया कहल जाइत छथि। कुल्हिया जाइत सेहो सुरजापुरी भाषा बजैत छथि। राजबंशी आ जे आन जाइत सभ कुल्हियाक आसपास रहै छथि से सुरजापुरी बजैत छथि। ई भाषा मैथिली आ बांग्लाक मिश्रण अछि। कियो कियो बंगालक कूच बिहारक बाहे बंगाली आ नेपालक राजबंशी भाषाकेँ सेहो सुरजापुरी भाषा कहै छथि। किछु गोटेक मत छन्हि जे बांग्लादेशक लोकक भाषाक क्षेत्रीय भाषासँ मिश्रणक परिणामस्वरूप सुरजापुरी भाषा निकलल। पूर्णियाँ आ किशनगंजमे एक्के गाममे कुल्हिया आ राजबंशी लोकनि सुरजापुरी बजै छथि, संथाल लोकनि संथाली बजै छथि, बंजारा लोकनि बंजारा भाषा बजै छथि जखन कि शेष सभ गोटे मैथिली बजै छथि। जँ मिथिला राज्यमे ऐ क्षेत्र सभकेँ लेल जाए तँ हुनका सभकेँ हुनकर भाषाक विकासक गारन्टी देबऽ पड़त। की मिथिला राज्य अभियानकर्मी सभक सोच एतऽ धरि पहुँचलनि अछि?

३०. साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/नृत्य/नाटक

सारांश

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगहि वाम पएर किछु मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबैत छन्हि।

बीजशब्द: साहित्यमे · लोक · तत्व · गाथा · नृत्य · नाटक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “साहित्यमे लोक-तत्व: गाथा/नृत्य/नाटक” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे साहित्यमे; लोक-तत्व; गाथा; नृत्य; नाटक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

लोकगाथा/ नृत्य/ संगीत आदिक ऐतिहासिक वर्णन

मोहनजोदड़ो सभ्यतासँ प्राप्त कांस्य प्रतिमा नृत्यक मुद्राक संकेत दैत अछि, वर्तमान कथक नृत्यक ठाठ मुद्रा सदृश, दहिन हाथ ४५ डिग्रीक कोण बनेने आ वाम हाथ वाम छाबापर, संगहि वाम पएर किछु मोड़ने। ऋगवेदक शांखायन ब्राह्मणमे गीत, वाद्य आ नृत्य तीनूक संगे-संग प्रयोगक वर्णन अछि, ऐतरेय ब्राह्मणमे ऐ तीनूक गणना दैवी शिल्पमे अछि। ऋगवेद १०.७६.६ मे उषाक स्वर्णिम आभा कविकेँ सुसज्जित ऋषिक स्मरण करबैत छन्हि। ऋगवेदमे लोक नृत्यक (प्रान्चो अगाम नृतये) सेहो उल्लेख अछि। महाव्रत नाम्ना सोमयागमे दासी सभक (३-६ दासीक) सामूहिक नृत्यक वर्णन अछि। शांखायन १.११.५ मे वर्णन अछि जे विवाहमे ४-८ सुहागिनकेँ सुरा पियाओल जाइत छल आ चतुर्वार नृत्य लेल प्रेरित कएल जाइत छल। वैदिक साहित्यमे विवाह विधिमे पत्नीक गायनक उल्लेख अछि। सीमन्तोन्नयन विधिमे पति वीणावादकसँ सोमदेवक वादयुक्त गान करबाक अनुरोध करैत छथि। अथर्ववेदमे वसा नाम्ना देवताक नृत्य ऋक्, साम आ गाथासँ सम्बन्धित होएबाक गप आएल अछि, सोमपानयुक्त ऐ नृत्यमे गन्धर्व सेहो होइत छलाह, से वर्णित अछि। अथर्ववेद १२.१.४१ मे गीत, वादन आ नृत्यक सामूहिक ध्वनिक वर्णन अछि। वैदिक कालमे साम संगीतक अलाबे गाथा आ नाराशंसी नाम्ना लौकिक गाथा-संगीतक सेहो प्रचलन छल।

लोकगाथाक तत्व: भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित होइत अछि।

-गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से जै जातिक लोकदेवता रहैत छथि तकर अतिरिक्त दोसरो जातिक श्रोता रहैत छथि।

सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध रहैत अछि, श्रवण तत्वक कारण कथाक अनायास अलंकरण भेटैत अछि, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्दबद्ध, नाट्य-संधि आ वस्तु निर्देशक अभाव रहैत अछि। वस्तु संगठन सुगठित नहि रहैत अछि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन रहैत अछि।

ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा आ जातीय अस्मिताक प्रयोग होइत अछि। कथा-गायक आशु कवि होइत छथि- एकटा ढ़ाँचापर अपन हिसाबसँ ओ हेर-फेर कऽ गबैत छथि प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि।

घण्टासँ ऊपर गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि गायनमे। लोरिक मनुआर श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि मुदा सल्हेसक कथा आराध्य देवक समक्ष।

दैवी शक्ति द्वारा युद्धमे नायकक सहायता होइत अछि।

नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जेना महाभारतक जुआ आदि प्रयोगमे आनल जाइत अछि।

निष्कर्ष: सभ साहित्यिक विधा दू प्रकारक होइत अछि। लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐ मे पात्रक से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि; नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि। कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइत अछि।

वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

३१. हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली

सारांश

हिन्दी जै हिसाबे अपन भूगोल बढेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छैक, से हिन्दीसँ डरबाक कोनो प्रश्ने नै। हिन्दीक साम्राज्यवाद अंग्रीजीक साम्राज्यवादक स्थान लऽ लेने अछि आ से सभ हिन्दी दिवसपर छोट भाषाकेँ गिरबाक ओकर प्रवृत्तिपर बहस नै रोकल जा सकत। लैटिन/दक्षिण अमेरिकाक सभटा मूल भाषा खतम भऽ गेल आ ओकर स्थान स्पेनिश आ पोर्तूगीज लेलक।

बीजशब्द: हिन्दी · साहित्यिक · शब्दावली · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “हिन्दी आ मैथिली आ साहित्यिक शब्दावली” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे हिन्दी; मैथिली; साहित्यिक; शब्दावली; साहित्य प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

हिन्दी जै हिसाबे अपन भूगोल बढेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छैक, से हिन्दीसँ डरबाक कोनो प्रश्ने नै। हिन्दीक साम्राज्यवाद अंग्रीजीक साम्राज्यवादक स्थान लऽ लेने अछि आ से सभ हिन्दी दिवसपर छोट भाषाकेँ गिरबाक ओकर प्रवृत्तिपर बहस नै रोकल जा सकत। लैटिन/दक्षिण अमेरिकाक सभटा मूल भाषा खतम भऽ गेल आ ओकर स्थान स्पेनिश आ पोर्तूगीज लेलक। स्पेन अजटेक सभ्यताकेँ खतम केलक, ओकर सभ चेन्हासी मेटा देलक, मुदा मेक्सिको तकर पश्चातापमे विश्वकप फुटबॉलक आयोजन लेल जे स्टेडियम बनेलक तकर नाम अजटेक स्टेडियम रखलक।

डेनमार्कक शब्दकोष बड विस्तृत छै, प्रायः २३ वोल्यूम सँ बेशीमे छै, आप्रवासी प्रायः ओकर नागरिकता लेल लै जाएबला परीक्षामे डेनिस भाषामे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि, एकटा महिला जे डेनिससँ विवाह केने रहथि हुनकर बच्चा डेनमार्कक नागरिक भऽ गेल मुदा ओ कहलन्हि जे भाषा पेपर बड्ड कठिन छै, डेनिस सेहो ओइमे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि, जनसंख्या वा क्षेत्रफलक छोट रहब डेनिस वोकाबुलेरी लेल हानिकारक नै भेलै।

साहित्यकक मूल सरोकार अछि विषय-वस्तुसँ। मुदा शब्दक अकाल जँ साहित्यकारेक मध्य रहत तँ ओ की संप्रेषण करताह, विषय-वस्तुकेँ कोना फरिछा पेताह। जे हाल हिन्दी साहित्यक अछि सएह मैथिलीक भऽ जाएत। शब्दावलीक ग्राह्यता नेटिव स्पीकरक गाममे बाजल जाएबला शब्दावली निर्धारित करत, संस्कृतिसँ दूर प्रवासी द्वारा बाजल जाएबला शब्दावली नै। शब्दावलीक ग्राह्यता नेटिव स्पीकरक गाममे बाजल जाएबला शब्दावली निर्धारित करत, आ जँ संस्कृतिसँ कटल प्रवासी द्वारा बाजल शब्दावलीकेँ आधारभूत बनाएब तँ नीक साहित्य कोड़ि कऽ निकालल बुझाएत आ गोलैसी आधारित समीक्षकक समीक्षित साहित्य नेचुरल बुझाएत।

शास्त्रीय अनुशासन लेखक लेल अछि, पाठक लेल नै। लेखक जँ गजल, रोला, दोहा, कुण्डलिया शास्त्रीय आधारपर लिखताह तखने पाठककेँ नीक लगतै, जँ लेखक मेहनतिसँ दूर भगताह तँ साहित्यिक पाठकीयता घटत। शास्त्रक बान्ह तोड़बाक विधि सेहो शास्त्रक मध्य छैक, सावित्री मंत्र जँ शास्त्रीय कट्टरतासँ देखी तँ ओ गायत्री छन्दमे नै छै, मुदा हम सभ ओकरा गायत्रीमे मानै छी कारण गणना पुरेबालेल स्वः केँ सुवः कएल गेलै।

दरभंगाक मजहर इमामकेँ "पिछले मौसम का फूल"पर उर्दू लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल। ऐ संग्रहमे गजल (बहरयुक्त) ५५ टा आ आजाद गजल (बे-बहर) ३ टा छै, मुदा पाठक हुनका गजल लेल मोन राखने छन्हि, ओकरा मतलब नै छै जे, जे गजल ओकरा नीक लगलै से बहरमे छै वा नै, ओकरा तँ नीक लगलै। आ की ई संयोग छी जे बहरयुक्त गजले ओकरा नीक लगलै? मजहर इमामकेँ उर्दू साहित्य आजाद गजलकेँ स्थापित केनिहारक रूपमे मोन रखने अछि।

लेखकक आइडियोलोजी पानिमे नून सन हेबाक चाही, पानिमे तेल सन नै आ ऐपर हम पहिनहियो लिखने छी। यात्री आ धूमकेतुकेँ कम्यूनिस्ट पार्टीक सोंगरक आवश्यकता पड़लन्हि कारण वामपंथ “नीक सेन्ट” आ “डिजाइनर वीयर” क भाँति हिनका सभ लेल फैशन छल, से बलचनमा कांग्रेस आ समाजवादी पार्टीसँ हटलाक बाद कम्यूनिस्ट आ लालझंडामे सभ समस्याक समाधान तकैए, ओकरा यात्रीजी सभ समाधान ओइमे दै छथिन्ह। धूमकेतुक पात्र लेल सेहो लाल झंडा लक्ष्मण बूटी अछि। मुदा ई लोकनि कम्यूनिस्ट मूवमेन्टसँ -फैशनक अतिरिक्त- जुड़ल नै छथि तेँ हिनकर साहित्यमे आइडियोलोजी तेल सन सहसह करैए। आब आउ चतुरानन्द मिश्र

आ जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्यपर। चतुरानन्द मिश्रक उपन्यासमे वा जगदीश प्रसाद मण्डलक मैथिली साहित्यमे कतौ लालझंडा वा कम्यूनिस्ट पार्टीक चर्च अहाँ देखने छी? एतए जे भेटत से अछि असल वामपंथी द्वन्दात्मक पद्धति, जीवनपर विश्वास, माने आइडियोलोजी नूनसन मिलल। आ की ई मात्र संयोग अछि जे चतुरानन्द मिश्र जीवनक प्रारम्भमे साहित्य लिखै छथि आ जगदीश प्रसाद मण्डल जीवनक उत्तरार्धमे, अन्तिम केस खतम भेलाक बाद? जगदीश प्रसाद मण्डलक गाम बेरमाक जमीन्दार ठाकुर जी हमर पितयौत भाइकेँ कहलखिन्ह जे जगदीश प्रसाद मण्डल सत्य हरिश्चन्द्र छथि, हमर गामक गौरव छथि। आ से तखन, जखन जगदीश प्रसाद मण्डल कम्यूनिस्ट मूवमेन्टक नेतृत्व केलन्हि दसो बेर जेल गेलाह, केस हुनके सभसँ लड़लन्हि आ तकर परिणाम भेल जे बेरमामे आइ दस बीघासँ पैघ जोत ककरो नै छै। आइयो ओ फूसक घरमे रहै छथि आ तीन बजे उठि कऽ डिबिया लेस कऽ मैथिली साहित्य लिखै छथि आ हुनकर बेटा हुनका आइ धरि लिखैत नै देखने छथिन्ह, जे कखन ओ लिखै छथि, भोगेन्द्र झाक नेतृत्वमे ओ प्रण लेने रहथि जे जखन बाजब, सभ मैथिलीमे बाजब। से हुनकर बेटा हुनका मैथिलीक अतिरिक्त दोसर भाषा बजैत नै सुनने छथिन्ह। आ सएह कारण अछि जे हुनकर विषय-वस्तु नवीन होइत अछि, हुनकर शब्दावली नेटिव स्पीकरक शब्दावली अछि, जे ओइ विषय-वस्तुकेँ फरिछेबामे सफल होइत अछि आ आवश्यक अछि। हुनकर लोक, हुनकर गाछ-बृच्छ, हुनकर फूलपात, हुनकर खेत खलिहान असल अछि, जमीनी अछि, पतालसँ कोड़ि कऽ निकालल नै। आ हुनकासँ प्रेरणा लऽ प्रवासमे रहनिहार नव साहित्यकार मैथिली लिखबासँ पहिने मिथिलाक इतिहास-भूगोल आ संस्कृतिक ज्ञान प्राप्त करथु, तखने हुनकर साहित्य फराक भऽ सकतन्हि। ऐ लिंकसँ राधाकृष्ण चौधरीक “मिथिलाक इतिहास” आ जगदीश प्रसाद मण्डलक “गामक जिनगी” पढ़ू https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/ आ मैथिली शब्दावली लेल ई लिंक देखू http: //videha. co. in/new_page_13. htm

बेरमाक ठाकुरजी सन लोकक विचार हमरा लेल बेशी महत्व राखैए, बनिस्पत गोलैसी केनिहार साहित्यकारक/ समीक्षकक जिनकर आयातित शब्दावलीबला साहित्य कोना मैथिली पाठक घटेलकै; आ खाँटी शब्दावली कोना मैथिली साहित्यक स्तर ऊँच केलकै, आ पाठक बढ़ेलकै, ई आब ककरोसँ नुकाएल नै अछि।

उपन्यास लेल दू-दू बेर बूकर पुरस्कार आ साहित्यक लेल नोबल पुरस्कारसँ सम्मानित जॉन मैक्सवेल कुट्सी भाषाक सन्दर्भमे कहने रहथि जे अफ्रीकान्स आ अंग्रेजी भाषाक द्विभाषिया माहौलमे हुनकर अंग्रेजी लेखन हुनका लेल बहुत रास संप्रेषण सम्बन्धी समस्या सोझाँ अनैत छल। ओ अफ्रीकान्ससँ अंग्रेजीमे तकर प्रतिकार स्वरूप ढेर रास अनुवाद केलन्हि। मुदा मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता (आ किछु ऐ पुरस्कार लेल ललाइत आकांक्षी लोकनि), जे तथाकथित साहित्यकार लोकनि छथि, से जइ प्रकारेँ मैथिली आ हिन्दी दुनूक डोरी पकड़ि माहौल खराप करबामे लागल छथि, से जॉन मैक्सवेल कुट्सीसँ किछु शिक्षा ग्रहण करताह, से मात्र आशा कऽ सकै छी।

अमेरिकामे ३५० शब्दक अंग्रेजीक "हाइ प्रेक्वेन्सी" आ ३५०० "बेसिक वर्ड लिस्ट" हाइ स्कूलक छात्र लेल छै जे क्रमशः कॉलेज आ ग्रेजुएट स्कूल (ओतए पोस्ट ग्रेजुएटकेँ ग्रेजुएट स्कूल कहल जाइ छै) धरि पहुँचलापर दुगुना (गएर भाषा फेकल्टीक छात्र लेल) भऽ जाइ छै। साहित्यक विद्यार्थी/ साहित्यकार लेल ऐ सँ दस गुणा अपेक्षित होइत अछि। हिन्दीमे -अपवाद स्वरूप आंचलिक पोथी छोड़ि- हिन्दीक कवि आ उपन्यासकार अठमा वर्गक २००० शब्दक शब्दावलीसँ साहित्य (पद्य, उपन्यास) रचै छथि आ मैथिलीक किछु साहित्यकार ऐ बेसिक २००० शब्दक वर्ड लिस्टकेँ मैथिलीमे आयात करए चाहै छथि, आ ओतबे धरि सीमित रहए चाहै छथि, जखन जापानी अल्फाबेटक चेन्ह ५०० धरि पहुँचि जाइ छै।

तारानन्द जीक जातिवाद दोसरे तरहक छन्हि- ओ लिखै छथि- "एतए तं मैथिलीक दुर्बल काया पर कूडा-कचडाक पहाड ठाढ करबाक सुनियोजित अभियान चलि रहल छै। एकर सफाइ लेल मेहतरक फौज चाही। ठीके तं छै। पहिने कहल जाय जे मैथिली ब्राह्मणक भाषा छी, आगू कहल जाएत जे मैथिली मेहतरक भाषा छी।" ऐ लिंक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-audio/ पर मिथिलाक विभिन्न जातिक ऑडियो आ ऐ लिंक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-video/ पर वीडियो रेकॉर्डिंग ऑनलाइन उपलब्ध अछि जइमे डोम-मल्लिक (जकरा वियोगीजी मेहतर कहै छथि आ ओकरा आ ओकर भाषासँ घृणा करै छथि) क रेकॉर्डिंग सेहो श्री उमेश मंडल जीक सौजन्यसँ अछि। महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक आ ओकर आंगनक बारहमासा जइ तरहेँ दलितक भाषाक कथित मैथिली (मलंगियाजीक सृजित कएल) क प्रति घृणा आ कुप्रचारक प्रारम्भ केलक तारानन्द वियोगी ओकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। ई ऑडियो आ वीडियो रेकार्डिंग अन्तिम रूपसँ ऐ घृणा आ कुप्रचारकेँ खतम कऽ देने अछि आ विश्व ई सुनि आ देख रहल अछि जे जातिगत आधारपर मैथिली कोनो तरहेँ भिन्न नै अछि। वियोगीजी अपन ऊर्जा ऋणात्मक दिशामे लगबै छथि आ तकर कारण अछि हुनक दृष्टि आ आइडियोलोजीक फरिच्छ नै हएब आ तेँ दोसराक समालोचना ओ बर्दास्त नै

कऽ सकै छथि। विदेहक सम्पादकीयपर हुनकर ओ टिप्पणी आएल छल जकर जवाब ओ अविनाश (आब अविनाश दास) क फेसबुक वॉलपर देने रहथिन्ह।

ओही सम्पादकीयक रेस्पॉन्समे गंगेश गुंजन जी लिखने रहथि जे युवा सुभाष चन्द्रक ई गप जे "गंगेश गुंजन पाँच साल पहिने कमानी ऑडीटोरियममे कहने रहथि जे ओ हिन्दीमे लिखै छथि मुदा मैथिलीबला सभ हुनका पुरस्कृत कऽ देलकन्हि" सत नै अछि, ओ कहलन्हि जे ओ ई नै बाजल छथि, सुभाष चन्द्र एकर उत्तर नै देलथि से गुंजन जीक गप मानल जाएत। डॉ. धनाकर ठाकुर सेहो साहित्य अकादेमीपर आंगुर उठेबासँ दुखी रहथि आ विदेहक सह-सम्पादक श्री उमेश मण्डल जी केँ कएकटा मेल पठेलन्हि। ओ जगदीश प्रसाद मण्डल आ उमेश मण्डलक असली मानकीकृत भाषाक पक्षमे नै छथि, भाषा विज्ञानपर जखन उमेश मंडल बहसक प्रारम्भ केलन्हि तँ ओ अपनाकेँ डॉक्टर बना लेलन्हि आ बहसमे भाग नै लेलन्हि। मेलक अतिरिक्त हजारीबागक "सगर राति दीप जरय"मे ओ आ बहुतो गोटे कहैत सुनल गेलाह- एना नै लिखू, अशोक-श्रीनिवास आदि सन लिखू, पहिने पढ़ू तखन ओहने लिखू (ई मानि कऽ ओ सभ चलै छथि जे ओ सभ बिन पढ़ने लिखै छथि!) । बेनीपुरीक "अम्बापाली" नाटक हिन्दीमे छै, एन. सी. ई. आर. टी. ओकरा स्कूलक पाठ्यक्रममे लगेलक मुदा सम्पादक कहलन्हि जे "क्रिया’ है’ क अनुपस्थिति" जेना "वह जा रहा", बेनीपुरीपर स्थानीय क्षेत्रक प्रभावक परिणाम अछि आ तेँ सम्पादक मण्डल ओकर ऐतिहासिकताकेँ देखैत स्कूली पाठ्यक्रममे रहलाक बादो ओकरा सम्पादित नै कऽ रहल अछि। मुदा जखन उमेश मण्डल/ जगदीश प्रसाद मण्डल/ राम विलास साहू लिखै छथ, ि ओ जाइत, ओ खाइत, तँ "सगर राति"मे भाषा-विज्ञानसँ अनभिज्ञ विशेषज्ञ सभ किछु एहेन सलाह दऽ दै छथि जे मैथिलीक मूल विशेषते गौण पड़ि जाए, मैथिलीसँ प्रभावित बेनीपुरीक हिन्दी, एन. सी. ई. आर. टी. क सम्पादकसँ मैथिलीक नामपर बचि जाइत अछि, मुदा मैथिलीमे पसरल जातिवाद ओकरा नै छोड़बापर बिर्त अछि। से जातिवादी मानसिकता सी. आइ. आइ. एल. क अनुवाद मिशनक परिणामकेँ सेहो भयंकर रूपेँ प्रभावित करत, कारण ओइमे छद्म मानकीकरणक आधारपर अनुवाद कार्यशाला आयोजित भऽ रहल अछि। मैथिलीक तथाकथित स्थापित/ पुरस्कृत साहित्यकार यावत असल मानकीकरणकेँ नै पकड़ताह, हुनकर अस्तित्व उपरोक्त राक्षसी प्रतिभा (विषय-वस्तु आ भाषा दुनू दृष्टिकोणसँ) सभक सोझाँमे मलिछौने रहत।

१. जातिवादी मानसिकता माने जे केलक से हमर आनुवंशिक जाति केलक, से ककरोमे भऽ सकैए।

छद्म मानकीकरण: एकटा खास जातिवादी स्कूलक विचारकेँ प्रश्रय देलाक परिणाम, जे एकाध किताब सी. आइ. आइ. एल. मैथिलीमे निकाललक अछि आ जइ तरहेँ ओकर मानकीकरण प्रोजेक्ट सालक सालसँ बिना परिणामक चलि रहल छै।

असल मानकीकरण: मिथिलाक सभ क्षेत्रक सभ जातिक बाजल जाएबला मैथिलीक आधारपर गहन विचार विमर्शसँ बनाओल मानकीकृत मैथिली। एकर बानगी ऐ लिंक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/ पर देल बेचन ठाकुर/ जगदीश प्रसाद मण्डल आदिक रचनामे भेटत। फील्डवर्क ऐ लिंक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-audio/ पर देल -मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल)- ४६ टा ऑडियो फाइलमे भेटत आ ऐ लिंकक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-video/

- मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक संस्कार, लोकगीत आ व्यवहार गीत (सौजन्य: उमेश मंडल) - ४४ टा वीडियो फाइलमे भेटत तथा २००० पाठकक विचारपर आधारित सारांश ऐ लिंकपर http: //www.videha.co.in/new_page_13.htm भेटत। ऑडियो आ वीडियो फाइल महेन्द्र मलंगिया द्वारा “काठक लोक” आ “ओकर आंगनक बारहमासा” द्वारा प्रचारित शोल्कन्हक कथित (इजाद कएल) मैथिलीपर अन्तिम प्रहार अछि।

राक्षसी प्रतिभा: पूरा ब्राह्मणवादी मैथिली साहित्यकारक अपठित दुनियाँ एक दिस आ जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुरक पठित दुनियाँ दोसर दिस, जकरा ब्राह्मणवादी मैथिली साहित्यकार लोकनि “राक्षसी प्रतिभा” सम्भवतः आलोचनात्मक रूपमे कहताह/ कहै छथि मुदा हमरा मोने ओ हुनका सभक हारिक शुरुआत अछि।

२. धनाकर जीक एकटा विचार छलन्हि (विचार नै निर्णय छलन्हि) जे रामनाथोक बदला रामनाथहुँ हेबाक चाही!! उमेश मण्डल आ धनाकर ठाकुरक पूर्ण बहस विदेहक ८४म अंकक सम्पादकीयमे आएल अछि।

३. विदेहक नूतन अंकमे जगदीश प्रसाद मण्डलक दीर्घ कथा शम्भूदास आएल अछि, ओकर दोसर पारा देखल जाए: - “जहिना बाध-वोनक ओहन परती जइपर कहियो हर-कोदारि नै चलल सुखि-सुखि गाछ-विरिछ खसि उसर भऽ जाइत, ओइ परतीपर या तँ चिड़ै-चुनमुनीक माध्यमसँ वा हवा-पानिक माध्यमसँ अनेरूआ फूल-फड़क गाछ जनमि रौद-वसात, पानि-पाथर, अन्हर-विहाड़ि सहि अपन

जुआनी पाबि छाती खोलि बाट-बटोहीकेँ अपन मीठ सुआदसँ तृप्ति करैत तहिना जमुना नदीक तटपर शंभूदासक जन्म बटाइ-किसान परिवारमे भेलनि।”

की एतए “जाइत” "करैत" क बाद अछि देब आवश्यक छैक?

४. किछु विचार टिप्पणी: मैथिली सम्बन्धी किछु समाचार / घटना/ प्रकाशन पर चारिटा विचार-टिप्पणी—ऐ सन्दर्भमे।

सी. आइ. आइ. एल. क अनुवाद मिशनक आरम्भिक मेहनति अपठित मैथिली साहित्यक साहित्यकारक कार्यशाला अछि, ओकरा पाठकसँ कोनो मतलब नै छै आ ने असल पठित साहित्यकारक साहित्यसँ। से ओकर परिणाम वएह हेतै जे साहित्य अकादेमीक छै। अमरजी लिखै छथि- साहित्य अकादेमीक पोथी सभ गोदाममे सड़ि रहल छै।

३२. भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान

सारांश

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जाहिमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्त्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। जेना कोनो व्यक्ति वा समूह बीजीपुरुषक संकल्पना करैत अछि आ ओतएसँ अपना धरि एकटा वंशवृक्षक निर्माण करैत अछि, तहिना भाषाक इतिहासक लेखक सेहो आदि, मध्य आ आधुनिक कालक आधारपर भाषाक पूर्ववर्ती आ बीज भाषाक संकल्पना सोझाँ अनैत छथि।

बीजशब्द: भारोपीय · भाषा · परिवार · मैथिलीक · स्थान · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे भारोपीय; भाषा; परिवार; मध्य; मैथिलीक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

भाषाक पारिवारिक वर्गीकरण ऐतिहासिक आधारपर होइत अछि, जाहिमे भाषाक इतिहास, एक भाषाक दोसर भाषासँ उत्पत्ति, भाषाक आकृति-प्रकृति माने रचनात्मकताक संग अर्थ-तत्त्वपर सेहो ध्यान देल जाइत अछि। जेना कोनो व्यक्ति वा समूह बीजीपुरुषक संकल्पना करैत अछि आ ओतएसँ अपना धरि एकटा वंशवृक्षक निर्माण करैत अछि, तहिना भाषाक इतिहासक लेखक सेहो आदि, मध्य आ आधुनिक कालक आधारपर भाषाक पूर्ववर्ती आ बीज भाषाक संकल्पना सोझाँ अनैत छथि। मुदा भाषाक इतिहासमे पुत्री आ बहिन भाषाक संकल्पना सेहो एहि तरहेँ सोझाँ अबैत अछि।

मैथिलीक भारोपीय भाषा परिवारमे स्थान

स्थान, शब्द, व्याकरण आ ध्वनिक आधारपर भाषा एक-दोसरासँ लग होइत अछि। मुदा एहि मध्य किछु अपवाद सेहो अछि। अवेस्ता, अंग्रेजी आ जर्मन भाषा मैथिलीसँ भौगोलिक रूपसँ दूर रहलोपर एक्के परिवारक अछि, मुदा अरबी, तमिल आदि सापेक्ष रूपेँ भौगोलिक निकटता अछैत दोसर परिवारक अछि।

फेर भाषा स्थित आयातित विदेशज शब्दावलीक आधारपर हम एक भाषाकेँ दोसर भाषाक परिवारक सिद्ध नहि कऽ सकै छी। तहिना ध्वनिमूलक आ शब्दमूलक अर्थक साम्य सेहो दू भाषा परिवारकेँ एक वर्गमे नहि आनि सकैत अछि, जेना संस्कृतक जाल्म आ अरबीक जालिम -शब्दमूलक साम्य वा मैथिलीक मियाऊँ आ चीनी मन्दारिन भाषाक म्याऊँ (बिलाड़ि)- ध्वनिमूलक साम्य।

ध्वनिक साम्यमे सेहो कखनो काल गड़बड़ी होइत अछि, जेना मैथिलीमे ड़, ढ़ आ चन्द्रबिन्दुक खूब प्रयोग होइत अछि मुदा ई तीनू ध्वनि संस्कृतमे नहि अछि।

भौगोलिक आधारपर सेहो “भारोपीय भाषा” ई नामकरण पूर्ण रूपसँ समीचीन नहि अछि, कारण सम्पूर्ण भारतमे भारोपीय भाषा परिवारक उपस्थिति नहि अछि आ भारतमे भारोपीय भाषाक अतिरिक्त आनो भाषा परिवारक उपस्थिति अछि। यूरोपमे सेहो काकेशियन आदि भाषा परिवार भारोपीय भाषा परिवारमे नहि अबैत अछि।

व्याकरण साम्यक आधार दू भाषाकेँ एक परिवारमे रखबाक सभसँ सुदृढ़ आधार अछि।

मूल रूपसँ भारोपीय परिवारक भाषामे प्रत्ययक प्रयोग खूब होइत अछि आ धातुमे प्रत्यय जोड़ि शब्द बनैत अछि। पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, ई तीन तरहक लिंग अछि तँ एकवचन, द्विवचन आ बहुवचन एहि तीन तरहक वचन। मुदा आब अधिकांश भाषामे एकवचन आ बहुवचन यैह दूटा वचन होइत अछि। जाहि क्रियाक फल स्वयं प्राप्त हो से आत्मनेपदी आ जकर फल दोसरकेँ भेटए से परस्मैपदी, ई दू तरहक क्रिया भारोपीय भाषमे रहैत अछि। समासक प्रयोग सेहो मोटा-मोटी भारोपीय भाषाक विशेषता अछि।

भारोपीय परिवारक दू भेद अछि। सए (१००) लेल प्रयुक्त मूल भारोपीय शब्द “क्मतोम” दू तरहेँ बाजल जाइत अछि। संस्कृतमे “शतम्” आ लैटिनमे “केन्टुम्” । एहि आधारपर संस्कृतसँ लग भाषा समूह अवेस्ता (भाषा आ ग्रंथ दुनूक नाम, जेन्द-अवेस्ता- ओहि

पर भाष्य), फारसी, मैथिली, रूसी आदि अबैत अछि। केन्टुम् वर्गमे लैटिनसँ लग भाषा जेना ग्रीक, जर्मन, फ्रेंच, इटालियन आदि अबैत अछि।

शतम् वर्गमे भारत-इरानी (वा इन्डो आर्यन), बाल्टो-स्लाविक, आर्मीनी आ इलीरी भाषा समूह अबैत अछि।

इन्डो आर्यन वा भारतीय-ईरानी भाषा समूहमे ऋगवेद सभसँ प्राचीन अछि। जोराष्ट्रियन धर्मक अवेस्ता ग्रन्थ जे वैदिक कालक अछि ओ अवेस्ता भाषाक ग्रन्थ अछि। ईरानी भाषा समूहमे अवेस्ता, प्राचीन फारसी, पहलवी, पश्तो, बलूची आ कुर्द भाषा प्रमुख अछि। भारतीय आर्यभाषा समूहमे वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत, पाली (प्राचीन प्राकृत ५००. ई. पू. सँ १०० ई. पू. धरि), प्राकृत (मध्य प्राकृत १०० ई. पू. सँ ५०० ई. धरि), अपभ्रंश (५०० ई. सँ ९०० ई. धरि) आ अवहट्ट (९०० ई. सँ ११०० ई. धरि) आ तकर बाद मागधी प्राकृतसँ मैथिली, बंगला, ओड़िया, असमी आदि भाषा (११०० ई. सँ) अबैत अछि।

विश्वक भाषाक पारिवारिक वर्ग

(अ) यूरेशिया, (आ) अफ्रीका, (इ) प्रशान्त महासागरक क्षेत्र (पैसिफिक), (ई) अमेरिका

(अ) यूरेशिया- (क) भारोपीय, (ख) द्राविड़, (ग) बुरुशस्की, (घ) काकेशी, (ङ) यूराल-अल्ताई, (च) चीनी, (छ) जापानी-कोरियाई, (ज) हाइपरबोरी, (झ) बास्क, (ञ) सेमीटिक-हेमिटिक- अफ्रीकामे

(क) भारोपीय- (i) इन्डो आर्यन, (ii) बाल्टो-स्लाविक, (iii) आर्मीनियन, (iv) इलीरी, (v) ग्रीक, (vi) केल्टिक, (vii) जर्मानिक, (viii) इटालिक, (ix) हित्ती, (x) तोखारी

(i) इन्डो आर्यन- (a) भारतीय आर्यभाषा, (b) ईरानी

(a) भारतीय आर्यभाषा

(A) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई. पू. सँ ५०० ई. पू.)

(B) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई. पू. सँ १००० ई.)

(C) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (१००० ई. सँ आइ धरि)

(A) प्राचीन भारतीय आर्यभाषा (२५०० ई. पू. सँ ५०० ई. पू.)- वैदिक संस्कृत, लौकिक संस्कृत (बाल्मीकि - "मानुषिमिह संस्कृताम्"- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषा।)

(B) मध्यकालीन भारतीय आर्यभाषा (५०० ई. पू. सँ १००० ई.)- पहिल प्राकृत (पाली), दोसर प्राकृत (साहित्यिक प्राकृत- शौरसेनी, महाराष्ट्री, मागधी, अर्द्धमागधी, पैशाची, ब्राचड, खस), तेसर प्राकृत (अपभ्रंश- प्रथमे-प्रथम व्याडि आ पतंजलि द्वारा उल्लेख।)

(C) आधुनिक भारतीय आर्यभाषा (१००० ई. सँ आइ धरि) (अ) शौरसेनीसँ खड़ी बोली, व्रजभाषा, बाँगरू, कन्नौजी, बुन्देली, मारवाड़ी, जयपुरी, मालवी, मेवाती, गुजराती (आ) महाराष्ट्रीसँ मराठी, कोंकणी, नागपुरी, बरारी (इ) मागधीसँ भोजपुरी, मगही, बांगला, ओड़िया, असमी, मैथिली (ई) अर्धमागधीसँ अवधी, बघेली, छत्तीसगढ़ी (उ) पैशाचीसँ लहँदी (ऊ) ब्राचडसँ सिन्धी, पंजाबी (ए) खससँ पहाड़ी भाषाक विकास रेखांकित होइत अछि।

बाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर- "पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अवहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ" संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात "उपभाषक" चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्टक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्टमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ट (अवहट्ठ) केँ "मैथिल अपभ्रंश" ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक

प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक “उक्ति व्यक्ति प्रकरण” सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्ठसँ लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

मैथिली वा कोनो भाषाक उत्पत्तिक मूलमे मनुक्खक मुँहसँ बहराएल ध्वनि आ ओहि ध्वनिक अर्थ कोनो वस्तु, व्यक्ति वा विचारसँ होएब सिद्ध होएत। ध्वनि तँ चिड़ै, चुनमुनी, माल-जाल आ बौक व्यक्ति द्वार सेहो उत्पन्न होइत अछि मुदा से अर्थपूर्ण नहि भऽ पबैए आ भाषाक निर्माण नहि कऽ पबैए।

१८६६ ई. मे पेरिसमे “ला सोसिएते द लिंग्विस्टीक” नाम्ना संस्था भाषाक उत्पत्ति आ विश्वक भाषा सभक निर्माण” एहि विषयकेँ अपन कार्यकारिणीसँ हटा देलक कारण एहि विषयक विवेचन अनुमानपर अधारित होएबाक कारणसँ वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ दूर रहैत अछि।

वैदिक संस्कृतसँ लौकिक संस्कृत आ ओहिसँ पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिलीक क्रम ताकल जा सकैत अछि। मुदा वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ ओ भाषा अस्तित्वमे रहल होएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल होएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल “गाथिन”, “गातुविद्” आ “गाथपति” ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक संस्कृतक उत्पत्ति दैवी रूपमे भेल वा आंगिक-वाक संकेतक संप्रेषणीयता बढ़ेबाक लेल से मात्र अनुमानेक विषय भऽ सकैत अछि। भाषामे ध्वनि, शब्द, पद, वाक्य आ अर्थक परिवर्तन भेलासँ वैदिकसँ लौकिक संस्कृत बहराएल आ फेर पाली, प्राकृत, अपभ्रंश, अवहट्ट आ मैथिली। पाणिनी द्वारा भारतक विभिन्न क्षेत्रसँ लेल शब्दावली लौकिक संस्कृतकेँ ततेक समृद्ध कएलक जे ओहिसँ आन सभ भाषाक कतेको तरहक रूप बहार भेल। कतेक तरहक क्षेत्रीय प्राकृत आ अपभ्रंश ओहि भौगोलिक क्षेत्रक विस्तारकेँ लैत बहार भेल आ ओहिसँ आजुक आधुनिक भारतीय आर्य भाषा सभक उत्पत्ति भेल।

मैथिली भारोपीय भाषा परिवारसँ सम्बन्धित अछि। भारोपीय भाषा परिवारक भीतर विश्वक लगभग चालीस प्रतिशत जनसंख्या अबैत अछि। ई सभसँ पैघ भाषा परिवार अछि, सभसँ समृद्ध सेहो। मोटा-मोटी एकर दू विभाग छैक, पहिल यूरोपक आर्य भाषा आ दोसर भारत-ईरानी शाखा। भारत-ईरानी आर्यभाषाक भीतर ईरानी, दरद आ भारतीय आर्यभाषा अबैत अछि। दरद भाषामे कश्मीरी आ पामीर पठारक पूर्व दक्षिणक भाषा सभ अछि। मैथिली भाषाक उद्गम आ विकास भारतीय आर्यभाषाक भीतर ताकल जाइत अछि।

भाषाक उद्गम तँ अनुमानक विषय थिक। भाषाक उद्गमक आ तकर प्रयोगक कतेक वर्षक पश्चात् ओहिमे साहित्य रचना होइत अछि। तखन जा कऽ ओकर रूप स्थिर होइत अछि। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेद, लौककिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ वाल्मीकि रामायण, पालि भाषाक प्राचीनतम ग्रन्थ बुद्ध त्रिपिटक, प्राकृतक प्राचीनतम ग्रन्थ विमल सूरिक पउमचरिउ, अपभ्रंशक प्राचीनतम ग्रन्थ यूगीन्द्रक परमात्म प्रकाश अछि। आदि मैथिलीक प्राचीन साहित्य सिद्ध साहित्य, बौद्धगान आ ज्योतिरीश्वरक वर्ण रत्नाकर अछि। सिद्ध सरहपाद 700-780 सरहपाद-“सिद्धिरत्थु मइ पढ़मे पढ़िअउ, मण्ड पिबन्तौँ बिसरउ एमइउ” । मिथिलामे अक्षरारम्भ सिद्धिरस्तु (गणेशजीक अंकुश आँजी) सँ होइत अछि। मिथिलामे ई धारणा अछि जे माँड़ पीलासँ स्मरण शक्ति क्षीण होइत अछि। दोसर उदाहरण- बलद बियायल गबैया बाँझे- बड़द बिया गेल आ गाए बाँझे अछि।

मध्यकालीन मैथिलीक ग्रन्थ विद्यापतिक मैथिली साहित्य आ तकर बाद चतुर चतुर्भुज, शंकरदेव, विभिन्न मल्ल नरेश द्वारा रचित साहित्य, कीर्तनिया आ अंकिया नाटसँ मनबोध धरि अबैत अछि। आधुनिक मैथिली साहित्य चन्दा झासँ प्रारम्भ होइत अछि।

प्राचीन भारतक आर्यभाषाक क्षेत्र वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदमे वर्णित धार सभक आधारपर निर्धारित कएल जा सकैत अछि आ एकर प्रसार कोना आन क्षेत्रमे भेल सेहो एहिसँ निर्धारित होइत अछि। ऋगवैदिक आर्य “सप्त सन्धव” माने सात धारक क्षेत्रमे रहैत छलाह- ई सात धार छल वितस्ता, अश्किनी, परुष्णी, शतुद्रु, विपाशा, क्रुमु आ गोमती। एहिमे पहिल पाँचटा धार पंजाबक आ शेष दूटा अफगानिस्तानमे बहैत छल। ई सातो धार ऋगवेद कालक सभसँ उपयोगी धार सिन्धुक सहायक छल। ऋगवेदमे सरस्वती धारक वर्णन “धार सभ माय” क रूपमे भेल अछि। ऋगवेदमे यमुनाक दू बेर आ गंगाक एक बेर वर्णन अछि। ऋगवेदक दसम मण्डलमे “धारक स्तुति” मे सिन्धु आ सप्तसैन्धवक स्तुति भेल अछि। ओइ कालमे पुरु, अनु, द्रुह्य, यदु आ तुर्वस नाम्ना पंचजन बसैत छलाह। क्रिवि, त्रित्सु, सेहो ओहि कालमे छलाह। पुरु आ सभसँ शक्तिवान भरत कबीला मिलि बादमे कुरु कबीला बनल। भरत कबीला

दाशराज्ञ युद्धमे पाँच आर्य आ पाँच अनार्य कबीलाक संगठनकेँ हरेलक, जाहिमे भरतक पुरहित वशिष्ठ रहथि आ पाँच आर्य आ पाँच अनार्य (दस्यु) कबीलाक संगठनक पुरहित रहथि विश्वामित्र। बोगजकोई एशिया माइनरमे हित्ती शासकक १४म शती ई. पू. क उत्कीर्णित अभिलेखमे इन्द्र, दशरथ, अर्त्ततम आदि राजाक, इन्द्र, वरुण, नासत्य, आदि देवताक उल्लेख अछि। यजुर्वेदक प्रचलित संहिता वाजसनेयी आ सामवेदक संहिता कौथुम, सामवेदक आरण्यक आ उपनिषद छान्दोग्यक आधारपर मिथिलामे ब्राह्मणक वाजसनेयी आ छान्दोग्यमे उर्ध्वाधर विभाजन एखन धरि अछि। यजुर्वेदमे विदेहक वर्णन अछि तँ ऋगवेदमे वैदिक जनकक (सीताक पिता सीरध्वज जनक पछाति भेलाह।)

'वैदेह राजा' ऋगवेदिक कालक नमी सप्याक नामसँ छलाह, यज्ञ करैत सदेह स्वर्ग गेलाह, ऋगवेदमे वर्णन अछि। ओ इन्द्रक संग देलन्हि असुर नमुचीक विरुद्ध आ ताहिमे इन्द्र हुनका बचओलन्हि। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। निमि गौतमक आश्रमक लग जयन्त आ मिथि -जिनका मिथिला नामसँ सेहो सोर कएल जाइत छन्हि, मिथिला नगरक निर्माण कएलन्हि। निमीक जयन्तपुर वर्तमान जनकपुरमे छल, मिथीक मिथिलानगरीक स्थान एखन धरि निर्धारित नहि भए सकल अछि, अनुमानित अछि जनकपुरक लग।' सीरध्वज जनकऽ सीताक पिता छथि आ एतयसँ मिथिलाक राजाक सुदृढ़ परम्परा देखबामे अबैत अछि।' कृति जनकऽ सीरध्वजक बादक 18म पुस्तमे भेल छलाह। कृति हिरण्यनाभक पुत्र छलाह आ जनक बहुलाश्वक पुत्र छलाह। याज्ञवलक्य हिरण्याभक शिष्य छलाह, हुनकासँ योगक शिक्षा लेने छलाह। कराल जनक द्वारा एकटा ब्राह्मण युवतीक शील-अपहरणक प्रयास भेल आ जनक राजवंश समाप्त भए गेल (संदर्भ अश्वघोष-बुद्धचरित आ कौटिल्य-अर्थशास्त्र) । अर्थशास्त्रमे (१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्यागः) कराल जनकक पतनक सेहो चर्चा अछि। तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रो विननाश करालश्च वैदेहः,...।

वैदिक संस्कृतक कालमे आर्य सप्तसन्धवसँ विदेह धरि आबि गेल छलाह। अनार्य (दस्यु) सँ ओही कालमे हुनकर सम्पर्क भऽ गेल छल आ शाब्दिक आदान-प्रदान सेहो भऽ गेल छल। यजुर्वेदमे बादमे अथर्ववेदमे ई आदान-प्रदान दृष्टिगोचर होइत अछि। अनार्य (दस्यु) आ व्रात्य (अनार्यसँ आर्य बनल जाति) दुनुक भाषा सप्तसैन्धव आर्यक भाषासँ मिलि गेल आ पुबरिया आ आन क्षेत्रीय बसात लगलासँ वैदिक संस्कृत लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल। निरुक्तक समयमे सेहो वैदिक शब्दावली कठिन भऽ गेल छल, ओकर उत्पत्तिपर विवेचन शुरू भऽ गेल छल। पाणिनीक भाषा पुबरिया, दछिनबरिया, पछबरिया आ उत्तरबरिया सभ क्षेत्रक दस्यु आ व्रात्य भाषाक शब्दावलीकेँ समाहित कऽ बनल छल। ई संस्कारित भाषा बादक लोक मध्य संस्कृतक रूपमे विख्यात भेल। पाणिनी लौकिक संस्कृतकेँ जेना "भाषा" कहलन्हि, तहिना यास्क आ पाणिनी वैदिक संस्कृतकेँ "छन्दस्" । यैह छन्दस् अवेस्ता भाषाक भाष्य लेल जेन्द (छन्द) कहल गेल।

संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली

१. संस्कृत

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणक (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह क वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य परम्परामे एकर उच्चारण नहि होइत अछि छथि मुदा वाजसनेयी परम्परामे खूब होइत अछि- जेना छान्दोग्य उच्चारण सभूमि तँ वाजसनेयी उच्चारण सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॑) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) क प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द' (दऽ क बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओहि फॉंटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार क बाद बिकारीक आवश्यकता नहि अछि।
जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।
वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जाहिमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि। स्वरक वर्णन एहि प्रकारेँ अछि- जाहि वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नहि रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जाहिमे बाजैमे एक मात्राक समय लागए से भेल ह्रस्व, जाहिमे दू मात्रा समय लागल से भेल दीर्घ आ जाहिमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ लृ
पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहैत छलाह।
दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ
पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह।
लृ दीर्घ नहि होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नहि होइत अछि।
अ इ उ ऋ एहि सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कऽ १२ वर्ण भेल। लृ क ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (लृ३), तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ एहि चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कए २२ टा स्वर।

एहि सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।
ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।
नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।
स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।
दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तटपर बनबाओल, एतए इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ' दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नहि भेलोपर स्वरमे भेद अछि। एहिसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।
स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकैत छी- जेना एहिमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।
आब व्यञ्जन पर आऊ।
व्यञ्जन ४२ टा अछि।
क् ख् ग् घ् ङ्
च् छ् ज् झ् ञ्
ट् ठ् ड् ढ् ण्
त् थ् द् ध् न्
प् फ् ब् भ् म्
य् र् ल् व्
श् ष् स्
ह्
य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।
एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।
ई दुनूटा, स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।
विसर्जनीय मूल वर्ण नहि अछि, वरन् स् वा र् क विकार अछि। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।
अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।
उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।
कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)
पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।
यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।
अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय क उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।

इ ई चवर्ग य श क उच्चारण तालुमे होइत अछि।
ऋ ॠ टवर्ग र ष क उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।
लृ तवर्ग ल स क उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।
उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय क उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।
व क उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठक सहायतासँ होइत अछि।
ए ऐ क उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।
ओ औ क उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।
य र ल व अन्य व्यञ्जन जकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ एहिमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नहि होइत अछि।
क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कऽ छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।
सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।
अनुस्वार आ यम क उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण एहि सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् क उच्चारण नहि होएबाक चाही।
जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यैह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भऽ पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।
श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल “अघोष”, आ नाद प्रकृतिक भेल “घोषवान्” । जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि “अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल “महाप्राण” ।
कचटतप क पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप क पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

छन्दोबद्ध रचना पद्य कहबैत अछि-अन्यथा ओ गद्य थीक। छन्द माने भेल एहन रचना जे आनन्द प्रदान करए। मुदा एहिसँ ई नहि बुझबाक चाही जे आजुक नव कविता गद्य कोटिक अछि कारण वेदक सावित्री-गायत्री मंत्र सेहो शिथिल/ उदार नियमक कारण, सावित्री मंत्र गायत्री छंद, मे परिगणित होइत अछि तकर चरचा नीचाँ जा कए होएत - जेना यदि अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादकेँ बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-
वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः।

आजुक नव कविताक संग हाइकू/ क्षणिका/ हैकूक लेल मैथिली भाषा आ भारतीय, संस्कृत आश्रित लिपि व्यवस्था सर्वाधिक उपयुक्त अछि। तमिल छोड़ि शेष सभटा दक्षिण आ समस्त उत्तर-पश्चिमी आ पूर्वी भारतीय लिपि आ देवनागरी लिपि मे वैह स्वर आ कचटतप व्यञ्जन विधान अछि, जाहिमे जे लिखल जाइत अछि सैह बाजल जाइत अछि। मुदा देवनागरीमे ह्रस्व “इ” एकर अपवाद अछि, ई लिखल जाइत अछि पहिने, मुदा बाजल जाइत अछि बादमे। मुदा मैथिलीमे ई अपवाद सेहो नहि अछि- यथा 'अछि' ई बाजल जाइत अछि अ ह्रस्व 'इ' छ वा अ इ छ। दोसर उदाहरण लिअ- राति- रा इ त। तँ सिद्ध भेल जे हैकूक लेल मैथिली सर्वोत्तम भाषा अछि। एकटा आर उदाहरण लिअ। सन्धि संस्कृतक विशेषता अछि, मुदा की इंग्लिशमे संधि नहि अछि? तँ ई की अछि - आइम गोइङ टूवार्ड्सदएन्ड। एकरा लिखल जाइत अछि- आइ एम गोइङ टूवार्ड्स द एन्ड। मुदा पाणिनि ध्वनि विज्ञानक आधार पर संधिक निअम बनओलन्हि, मुदा इंग्लिशमे लिखबा कालमे तँ संधिक पालन नहि होइत छै, आइ एम केँ ओना आइम फोनेटिकली लिखल जाइत अछि, मुदा बजबा काल एकर प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे सेहो यथासंभव विभक्ति शब्दसँ सटा कए लिखल आ बाजल जाइत अछि।

छन्द दू प्रकारक अछि। मात्रा छन्द आ वर्ण छन्द।

वेदमे वर्णवृत्तक प्रयोग अछि मात्रिक छन्दक नहि।

वार्णिक छन्दमे वर्ण/ अक्षरक गणना मात्र होइत अछि। हलंतयुक्त अक्षरकेँ नहि गानल जाइत अछि। एकार उकार इत्यादि युक्त अक्षरकेँ ओहिना एक गानल जाइत अछि जेना संयुक्ताक्षरकेँ। संगहि अ सँ ह केँ सेहो एक गानल जाइत अछि। एकसँ बेशी मान कोनो वर्ण/ अक्षरक नहि होइछ। मोटा-मोटी तीनटा बिन्दु मोन राखू-

१. हलंतयुक्त अक्षर-०

२. संयुक्त अक्षर-१

३. अक्षर अ सँ ह -१ प्रत्येक।

आब पहिल उदाहरण देखू-

ई अरदराक मेघ नहि मानत रहत बरसि के=१+५+२+२+३+३+३+१=२०

आब दोसर उदाहरण देखू

पश्चात्=२

आब तेसर उदाहरण देखू

आब=२

आब चारिम उदाहरण देखू

स्क्रिप्ट=२

मुख्य वैदिक छन्द सात अछि-

गायत्री, उष्णिक्, अनुष्टुप्, बृहती, पङ्क्ति, त्रिष्टुप् आ जगती। शेष ओकर भेद अछि, अतिछन्द आ विच्छन्द। एतए छन्दकेँ अक्षरसँ चिन्हल जाइत अछि। जे अक्षर पूरा नहि भेल तँ एक आकि दू अक्षर प्रत्येक पादमे बढ़ा लेल जाइत अछि। य आ व केर संयुक्ताक्षरकेँ क्रमशः इ आ उ लगा कए अलग कएल जाइत अछि। जेना-

वरेण्यम्=वरेणियम्

स्वः= सुवः

गुण आ वृद्धिकेँ अलग कए सेहो अक्षर पूर कए सकैत छी।

ए = अ + इ

ओ = अ + उ

ऐ = अ/आ + ए

औ = अ/आ + ओ

छन्दः शास्त्रमे प्रयुक्त ‘गुरु’ आ ‘लघु’ छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ ई पाँच ह्रस्व आर आ, ई, ऊ, ॠ, ए. ऐ, ओ, औ, ई आठ दीर्घ स्वर अछि।

ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ ‘गुणिताक्षर’ बनैत अछि।

क्+अ= क,

क्+आ=का।

एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक ‘अक्षर’ कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना ‘अवाक्’ शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा।

१. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर ‘लघु’ मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि।

२. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर ‘गुरु’ मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -।

३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि।

४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

५. जेना वार्णिक छन्द/ वृत्त वेदमे व्यवहार कएल गेल अछि तहिना

स्वरक पूर्ण रूपसँ विचार सेहो ओहि युग सँ भेटैत अछि। स्थूल रीतिसँ ई विभक्त अछि: - १. उदात्त २. उदात्ततर ३. अनुदात्त ४. अनुदात्ततर ५. स्वरित ६. अनुदात्तानुरक्तस्वरित, ७. प्रचय (एकटा श्रुति-अनहत नाद जे बिना कोनो चीजक उत्पन्न होइत अछि, शेष सभटा अछि आहत नाद जे कोनो वस्तुसँ टकरओला पर उत्पन्न होइत अछि) ।

वेदपाठ-

३. जगती- १२-१२ केर ४ पाद।

ए= अ + इ

ओ= अ + उ

ऐ= अ/आ + ए

औ= अ/आ + ओ

वैदिक (छन्दस्) आ लौकिक संस्कृत (भाषा) क व्याकरण:

वैदिक आ लौकिक दुनू संस्कृतमे संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग, तीन वचन- एक, दू आ बहुवचन रहल, पुल्लिंग, स्त्रीलिंग आ नपुंसक लिंग लिंगक द्योतक नहि अछि, दारा- पुल्लिंग, कलत्र- नपुंसक लिंग आ भार्या- स्त्रीलिंग; मुदा तीनू पत्नीक पर्यायवाची अछि। तहिना ईश्वरः (पुल्लिंग), ब्रह्म (नपुंसक लिंग) आ चितिः (स्त्री लिंग) होइत अछि। संज्ञा, सर्वनाम आ विशेषणक आठटा कारक (विभक्ति) सेहो होइत अछि। दस गणक धातुक रूप परस्मैपदी (फल दोसराकेँ), आत्मनेपदी (फल अपनाकेँ) आ उभयपदी ई तीन तरहक होइत अछि। कर्तृ, कर्म आ भव ई तीन वाच्य आ बारह लकार (लट्, लिट्, लङ्, लुङ्, लुट्, लृट्, लोट्, विधिलिंङ्, आर्शीलिंङ्, लृङ्, लेट् आ लेङ्) होइत अछि। लेट् आ लेङ् लकार लौकिक संस्कृत (भाषा) मे नहि होइत अछि।

संस्कृतमे तीनटा पुरुष- प्रथम (आन भाषाक अन्य पुरुष), मध्यम आ उत्तम होइत अछि। उद्देश्य आ विधेय; कर्ता आ क्रिया; विशेष्य आ विशेषण आ संज्ञा आ सर्वनामक परस्पर गुण-समानता रहैत छै।

वैदिक संस्कृतमे गीतात्मक आ बलात्मक स्वराघात रहए मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली बलात्मक स्वराघात रहि गेल। वैदिक उच्चारण उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (संगीतशास्त्रक आरोह, अवरोह आ सम सँ तुलना द्रष्टव्य) लौकिक उच्चारणमे खतम भऽ गेल।

वैदिक छन्दमे एक चरण, जकरा पाद कहैत छिऐ ओहि पादमे वर्णक गनती होइत अछि। छन्दमे गति (लय) आ यति (विराम) सेहो होइत अछि। ह्रस्व स्वर लघु होइत अछि, ह्रस्वक बाद संयुक्त वर्ण अएलासँ लघु स्वर गुरु स्वर भऽ जाइत अछि।

उपसर्ग: लौकिक संस्कृतमे उपसर्ग क्रियासँ पहिने अबैत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे पहिने, बादमे, अलगसँ आ कतहु अन्तरालक बाद सेहो अबैत अछि। संगहि वैदिक संस्कृतमे जे एक बेर उपसर्ग क्रियाक संग आबि गेल तँ तकरा बाद ओहि मंत्रमे मात्र उपसर्गक प्रयोग होएत आ वैह उपसर्गयुक्त क्रियाक द्योतक होएत।

समास: वैदिक संस्कृतमे समासमे सेहो कखनो काल भिन्नता छै, जेना अष्टक बाद कोनो शब्द होइ तँ ओ अष्टा भऽ जाइ छै- अष्टापदी। पितृ आ मातृक द्वन्द्व समास भेलापर दुनूमे आ लगै छै आ गुण होइ छै- पितरामातरा।

लेट लकार: लौकिक संस्कृतमे लेट लकारक प्रयोग नहि होइत अछि मुदा वैदिक संस्कृतमे होइत अछि जेना भवाति, पताति लौकिकमे मात्र भवति, पततिसँ निदृष्ट होइत अछि।

वैदिक आ लौकिक संस्कृत कोनो दू भाषा नहि अछि वरन् लौकिक संस्कृत, वैदिक संस्कृतिक सरल रूप अछि। वैदिक संस्कृतमे लौकिक संस्कृतसँ सभ किछु बेशी अछि (अपवाद- लुट् आ लृट् लकारक वैदिक संस्कृतमे कम उपयोग।)

संहिता, ब्राह्मण ग्रंथ, आरण्यक आ उपनिषदक भाषा वैदिक संस्कृत कहल जाइत अछि आ तकर बादक संस्कृत लौकिक संस्कृत कहल जाइत अछि।

दुनू संस्कृतमे धातु, शब्द आ अर्थ प्रायः एक्के अछि।

दुनूमे तीन लिंग, तीन वचन आ तीन पुरुष होइत अछि।

दुनूमे सभ शब्द प्रायः धातु अछि; रूढ़ शब्द बड्ड कम अछि।

समास दुनूमे अछि, हँ लौकिक संस्कृतमे एकर बेशी प्रयोग देखबामे अबैत अछि।

छन्द सेहो दुनूमे मोटा-मोटी एक्के रङ्गक भेटत।

धातुक गण मध्य विभाजन सेहो दुनूमे एक्के रङ भेटत।

णिच्, सन् प्रत्यय दुनूमे एक्के रङ भेटत।

पदक निर्माण दुनूमे एक्के तरीकासँ होइत अछि।

सुप्-तिङ-कृत्-तद्धित दुनूमे एक्के रङ भेटत।

दुनूमे शब्दक क्रम आगाँ पाछाँ भेने अर्थक परिवर्तन नहि होइत अछि। दुनूमे सन्धि, कारक आ विभक्ति होइत अछि।

मुदाः -

लौकिक संस्कृतमे उपध्मानीय आ जिह्वामूलीय ध्वनिक प्रयोग नहि होइत अछि आ तकर स्थानमे विसर्गसँ काज चलैत अछि।

वैदिक संस्कृतमे ळ, ळह होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे दू स्वर मध्य “ड” ळ भऽ जाइत अछि आ “ढ” ळह भऽ जाइत अछि। लौकिक संस्कृतमे से नहि अछि।

ग्वाङ (ह्रस्व आ दीर्घ) लौकिक संस्कृतमे नहि अछि। यजुर्वेदमे ह, श, ष, स, र एहि सभसँ पूर्व अनुस्वार ग्वाङ भऽ जाइत अछि।

उदात्त, अनुदात्त आ स्वरितक उच्चारण लौकिक संस्कृतमे स्पष्ट रूपसँ नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे लेट् लकारक प्रयोग होइत अछि, लौकिक संस्कृतमे नहि।

वैदिक संस्कृतमे उपसर्ग धातुसँ पृथक् मुदा लौकिक संस्कृतमे संगमे प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे कृत् प्रत्ययक तुमुन् से, सेन्, असे, अध्यै इत्यादि १५ टा प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतमे खाली “तुम्” प्रत्ययक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतक सन्धि निअम शिथिल होइत अछि मुदा लौकिक संस्कृतक दृढ़ होइत अछि।

वैदिक कतेको शब्दक अर्थ लौकिक संस्कृतमे बदलि गेल अछि। जेना असुर वैदिक संस्कृतमे शक्तिवानकेँ कहल जाइत छल मुदा लौकिक संस्कृतमे राक्षसकेँ कहल जाइत अछि।

धातुरूप सेहो वैदिक संस्कृतमे भिन्न अछि, अन्तिम स्वर दीर्घ सेहो होइत अछि। जेना चक्र- चक्रा: द्वित्वक अभाव होइत अछि जेना “ददाति” क स्थानमे “दाति”; कखनो काल परस्मैपदिक स्थानमे आत्मनेपद आ आत्मनेपदिक स्थानमे परस्मैपद धातुक प्रयोग होइत अछि; शप् स्थानपर कखनो काल दोसर गणक विकरणक प्रयोग होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे शब्द रूप, धातु रूप, प्रत्ययक विविधता बेशी अछि।

वैदिक संस्कृतक काल-पुरुष-वचन-लिंगक ऐच्छिक परिवर्तन लौकिक संस्कृतमे मोटामोटी खतम भऽ गेल अछि।

वैदिक संस्कृतक अच्, अम्, जिन्व्, पिन्व् आदि धातु लौकिक संस्कृतमेप्रयोग नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे तर-तम प्रत्यय संज्ञा शब्द सन आ लौकिक संस्कृतमे विशेषण सन प्रयुक्त होइत अछि।

छन्दक हिसाबसँ वैदिक संस्कृतमे स्वर्-सुवर् आ दर्शत, दरशत लिखि लेल जाइत अछि। मुदा लौकिक संस्कृतमे से नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे "आन्" पदक अन्तमे रहलापर आ तकर बाद अ, इ, उ स्वर अएलापर न् लुप्त भऽ जाइत अछि आ आकारक बाद अनुस्वार भऽ जाइत अछि। जेना महान् इन्द्रः= महा इन्द्रः। लौकिक संस्कृतमे से नहि होइत अछि।

वैदिक संस्कृतः -धातुरूपः -

लट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन परस्मैपदि धातु थ, त, थन, तन ई चारू प्रत्यय लगैत अछि। जेना वद्- वदथ, वदथन, वदत, वदतन।

लट् लकार उत्तमपुरुष-बहुवचन परस्मैपदि धातु मस् (मः), मसि ई दूटा प्रत्यय प्रयोग होइत अछि। जेना नाशयामः- नाशयामसि। इमः – इमसि। स्मः- स्मसि।

लोट् लकारक मध्यमपुरुष एकवचन परस्मैपदि धातुमे हि, धि ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना श्रुणुहि, श्रुणुधि।

लोट् लकार मध्यमपुरुष बहुवचन आत्मनेपद धातुमे ध्वम् आ ध्वात् ई दूटा प्रत्यय होइत अछि। जेना वारयध्वम्, वारयध्वात्।

(छन्दसि लुङ् लङ् लिटः): - वैदिक संस्कृतमे लुङ्, लङ् आ लिट् लकारक प्रयोग लोट्, लट् लकारक अर्थमे प्रयोग होइत अछि। जेना आगमत् (वैदिक लुङ्)= आगच्छतु (लोट) । अवृणीत (वैदिक लङ्)= वृणीते (लट्) । ममार (वैदिक लिट्)= म्रियते (लट्) ।

वैदिक संस्कृत: -शब्दरूप: -

[संस्कृत (सं= स्+म- ई ठीक अछि; एकर उच्चारण सं= स्+न गलत अछि।)]

वैदिक संस्कृतमे शब्दरूपक भिन्नता लौकिकसँ बेशी होइत अछि। जेना अकारान्त पुल्लिंग देवः प्रथमा-स्वितीया-सम्बोधन-द्विवचन वैदिकमे देवा, देवौ दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवौ होइत अछि। प्रथमा-सम्बोधन-बहुवचन वैदिकमे देवासः, देवाः मुदा लौकिकमे मात्र देवाः होइत अछि। तृतीया-एकवचन वैदिकमे देवा, देवेन दुनू होइत अछि मुदा लौकिकमे मात्र देवेन होइत अछि। तृतीया-बहुवचन वैदिकमे देवेभिः, देवैः मुदा लौकिकमे देवैः होइत अछि।

तहिना वैदिक संस्कृतमे ऋकारान्त शब्दक रूप पुल्लिंग-स्त्रीलिंगमे लौकिक संस्कृत जेकाँ होइत अछि, खाली प्रथमा-द्वितीया-सम्बोधन-द्विवचनमे दू रूप होइत अछि। जेना दातृ- दातारा, दातारौ। पितृ- पितरा, पितरौ। मातृ- मातरा, मातरौ।

अस्मद्: - प्रथमा-द्विवचन वैदिक- वाम्, आवम्; लौकिक आवाम्। चतुर्थी-एकवच वैदिक- मह्य, मह्यम्; लौकिक- मह्यम्। पञ्चमी-द्विवचन वैदिक आवत्, आवाभ्याम्; लौकिक- आवाभ्याम्। सप्तमी-बहुवचन वैदिक-अस्मे, अस्मासु; लौकिक- अस्मासु।

छन्दः -

पिङ्गल मुनिक छन्द शास्त्रक आठमे सँ पहिल चारिम अध्यायक सातम सूत्र धरि वैदिक छन्दक आ तकरा बाद लौकिक छन्दक वर्णन अछि।

वैदिक छन्दमे अक्षरक गणना होइत अछि। ओतए लघु आ गुरुक विचार नहि होइत अछि। ऋगवेदमे सभसँ बेशी त्रिष्टुप्, फेर गायत्री आ तखन जगती छन्दक प्रयोग भेल अछि।

त्रिष्टुप्- ४४ अक्षर- ११ अक्षरक ४ पाद;

गायत्री- २४ अक्षरक (ई २, ३, ४, ५ पदक होइत अछि), सभसँ बेशी लोकप्रिय ८ अक्षरक तीन पादक गायत्री जाहिमे दोसर पादक बाद विराम होइत अछि। २३ अक्षरक गायत्री निचृद् गायत्री, २२ अक्षरक गायत्री विराड् गायत्री, २५ अक्षरक गायत्री भुरिग् गायत्री, २६ अक्षरक गायत्री स्वराड् गायत्री कहल जाइत अछि। सभ पादमे एक अक्षर कम भेलासँ "पादनिचृद् गायत्री" कहल जाइत अछि।

जगती- ४८ अक्षर- १२ अक्षरक चारि पाद।

पाठः -

वैदिक संस्कृतकेँ स्मरण रखबाक कएकटा विधि अछि।

संहिता पाठ- मूलमंत्र सन्धि सहित सस्वर पढ़ल जाइत अछि।

पदपाठ- मन्त्रक पदक पृथक पाठ होइत अछि।

क्रमपाठ- क्रमसँ दू पदक पाठ होइत अछि।

जटापाठ- अनुलोम १-२, विलोम २-१, अनुलोम १-२

शिखापाठ- जटापाठमे परिवर्तित उत्तरपदक योगसँ शिखापाठ होइत अछि।

घनपाठ- शिखामुक्त विपर्यक पदक पुनः पाठ होइत अछि।

वैदिक संस्कृतमे यज्ञ आ अध्यात्मिक विषयक चर्च होइत अछि। लौकिक संस्कृतमे इहलौकिक विषयवस्तु सेहो अबैत अछि।

२. प्राकृत

संस्कृतसँ पहिने प्राकृत रहए वा बादमे ई विवादक विषय भऽ सकैत अछि कारण ऋगवेदक शिथिर, दूलभ, इन्दर आदि शब्द जनभाषाक साहित्यीकरणक प्रमाण अछि। ओना एकर प्रारम्भिक प्रयोग अशोकक अभिलेखसँ तेरहम शताब्दी ई. धरि भेटि जाएत मुदा पारिभाषिक रूपमे जाहि प्राकृतक एतए चर्चा भऽ रहल अछि ओ पहिल ई. सँ छठम ई. धरि साहित्यक भाषा दू अर्थे रहल। पहिल संस्कृत साहित्यक नाटकमे जन सामान्य आ स्त्री पात्र लेल शौरसेनी, महाराष्ट्री आ मागधीक (वररुचि चारिम प्राकृतमे पैशाचीक नाम जोड़ै छथि) प्रयोग सेहो भेल (कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम्, मालविकाग्निमित्रम्, शूद्रकक मृच्छकटिकम्, श्रीहर्षक रत्नावली, भवभूतिक उत्तररामचरित, विशाखादत्तक मुद्राराक्षस) आ दोसर जे फेर एहि प्राकृत सभमे साहित्यक निर्माण स्वतंत्र रूपेँ होमए लागल। फेर एहि प्राकृत भाषाकेँ सेहो व्याकरणमे बान्हल गेल आ तखन ई भाषा अलंकृत होमए लागल आ अपभ्रंश आ अवहट्ठक प्रयोग लोक करए लगलाह, ओना अपभ्रंश प्राकृतक संग प्रयोग होइत रहए तकर प्रमाण सेहो उपलब्ध अछि।

अशोकक अभिलेखमे शाहबाजगढ़ी आ मानसेराक अभिलेख उत्तर-पच्छिम, कलसी, मध्य, धौली, जौगड़ पूर्व आ गिरनार दक्षिण पच्छिमक जनभाषाक क्षेत्रीय प्रकारक दर्शन करबैत अछि। राजशेखर प्राकृतकेँ मिट्ठ आ संस्कृतकेँ कठोर कहै छथि (विद्यापति पछाति कहै छथि देसिल बयना सभ जन मिट्ठा) ।

प्राचीन प्राकृत पालीकेँ कहल जाइत अछि जाहिमे अशोकक अभिलेख, महवंश आ जातक लिखल गेल। मध्य प्राकृतमे साहित्यिक प्राकृत अबैत अछि। बादक प्राकृतमे अपभ्रंश आ अवहट्ठ अबैत अछि।

मोटा-मोटी गद्य लेल शौरसेनी, पद्य लेल महाराष्ट्री आ धार्मिक साहित्य लेल मागधी-अर्धमागधीक प्रयोग भेल। नाटकमे स्त्री-विदूषक बजैत रहथि शौरसेनीमे मुदा पद्य कहथि महाराष्ट्रीमे, नाटकक तथाकथित निम्न श्रेणीक लोक मागधी बजैत छलाह।

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

प्राकृतमे धातुरूप १-२ प्रकारक (भ्वादिगण जेकाँ) आ शब्दरूप ३-४ (अकारान्त जेकाँ) प्रकारक रहि गेल, माने दुनू रूप कम भऽ गेल। मुदा एहिसँ अर्थमे अस्पष्टता आएल जकर निवारण कारकक चेन्ह कएलक।

चतुर्थी, द्विवचन, लङ् लिट् लुङ् आत्मनेपद आदिक अभाव भऽ गेल प्रथमा आ द्वितीयाक बहुवचन एक भऽ गेल। ध्वनि परिवर्तन भेल। ऋ, ऐ, औ, य, श, ष आ विसर्गक अभाव भेल (अपवाद मागधीमे य आ श अछि मुदा स नहि) ।

अन्तमे आएल व्यंजन लुप्त भेल (ह्रस्व स्वरक बाद दू आ दीर्घ स्वरक बाद एकसँ बेशी व्यंजन नहि रहि सकैत अछि।)

२. प्राकृत

प्राकृतमे सुप् तिङ् धातुक संग मिज्झर भऽ जाइत अछि।

न ण मे, य ज मे आ श, ष स मे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।

पदमे उत्तरपदक पहिल अक्षरक लोप भऽ जाइत अछि, मुदा से धातुरूप अछि तखन लोप नहि होइत अछि। जेना आर्यपुत्र= अज्जउत्त मुदा आगतम्= आगदं

अनुदात्त अव्ययक पहिल अक्षरक लोप होइत अछि। जेना च= अ

भू धातुक भ परिवर्तित भऽ ह भऽ जाइत अछि। जेना भवति= होइ

क ख मे आ प फ मे बदलि जाइत अछि। पनस= फणस, क्रीड्= केल

उच्चारण स्थानक परिवर्तनक क्रममे दन्त्य उच्चारण स्थान तालव्यमे बदलि जाइत अछि। जेना त् = च्

मध्यक य लोपित भऽ जाइत अछि। क, ग, च, ज, त, द क सेहो किछु अपवादकेँ छोड़ि लोप होइत अछि। प, ब, व क लोप सेहो कखनो आल होइत अछि। जेना- प्रिय= पिअ, लोक= लोअ, अनुराग= अणुराअ, प्रचुर= पउर, भोजन= भोअण, रसातल= रसाअल, हृदय= हिअअ, रूप= रूअ, विबुध= विउह, वियोग= विओअ

मध्यक क, त, प क्रमसँ ग, द, ब भऽ जाइत अछि। ख, घ, थ, घ, फ, भ ई सभ ह भऽ जाइत अछि। जेना नायकः= णाअगु, आगतः= आगदो, दीप=दीब=दीव। मुख= मुह, सखी= सही, मेघ= मेह, लघुक= लहुअ, यूथ= जूह, रुधिर= रुहिर, वधू= वहू, शाफर= साहर, अभिनव= अहिणव।

कखनो काल मध्यक व्यंजन दोबर भऽ जाइत अछि। जेना एक= एक्क

मध्यक ट, ठ क्रमसँ ड, ढ भऽ जाइत अछि। जेना कुटुम्ब= कुडुम्ब, पठन= पढण

मध्यक प, ब परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना दीप= दीव। शबर= सवर।

ड, त, द परिवर्तित भऽ ल बनि जाइत अछि। जेना क्रीडा= कीला, सातवाहन= सालवाहण, दोहद= दोहल।

म परिवर्तित भऽ व बनि जाइत अछि। जेना ग्राम= गाँव।

अन्तिम स्प्रश वर्णक लोप होइत अछि, अन्तिम अनुनासिकमे अनुस्वार नहि होइत अछि, अः बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि वा ओकर लोप भऽ जाइत अछि।

मोटा-मोटी शब्दक प्रारम्भमे एकेटा व्यंजन आ मध्यमे बेशीसँ बेशी दूटा व्यंजन सेहो द्वित्वमे जेना क्क वा क्ख रूपमे रहैत अछि।

व्यंजनक बलक अनुरूपेँ निम्न प्रकारक क्रम होइत अछि। (अ) कवर्ग, चवर्ग,, टवर्ग, तवर्ग, पवर्ग मे क (सभसँ बेशी बलगर) सँ भ (क्रमसँ कम बलगर) धरि, सभ वर्गक पाँचम वर्ण छोड़ि कऽ। जेना कवर्गक ङ, चवर्गक ञ, टवर्गक ण, तवर्गक न आ पवर्गक म छोड़ि कऽ। फेर (आ) कचटतप वर्गक पाँचम वर्ण। फेर (इ) ल, स, व, य, र। एहिमे समानबलक वर्णमे बादबला वर्ण प्रबल होइत अछि, अन्यथा अधिक बलबला बेशी बलगर होइत आछि। जेना- उत्पल= उप्पल, खड्ग= खग्ग, अग्नि= अग्गि। फेर जे कचटतप वर्गक पाँचम वर्णक ओही वर्गक कोनो दोसर वर्ण होएत तँ पाँचम वर्ण ओहिना रहत, नहि तँ ओकर परिवर्तन अनुस्वारमे भऽ जाएत। जेना क्रौञ्च= कोञ्च, दिङ्मुख= दिंमुह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ ओ ज्ज बनि जाइत अछि। मनोज्ञ= मणोज्ज।

कचटतप वर्गक बाद श, ष, स रहलासँ च्छ होइत अछि। जेना अप्सरा= अच्छरा, मत्सर= मच्छर।

क्ष बदलि कऽ क्ख भऽ जाइत अछि। जेना दक्षिण= दक्खिण।

शौरसेनीमे क्ष बदलि कऽ क्ख आ मागधीमे च्छ भऽ जाइत अछि। जेना कुक्षि= कुक्खि (शौरसेनी), कुच्छि (मागधी) ।

प्राकृतमे ऋ आ लृ स्वर नहि होइत अछि। ऋ बदलि कऽ (अ) रि भऽ जाइत अछि। जेना ऋषि= रिषि, (आ) अ भऽ जाइत अछि। जेना कृत= कद। (इ) इ भऽ जाइत अछि। जेना दृष्टि= दिट्ठि। (ई) उ भऽ जाइत अछि। जेना पृच्छति= पुच्छदि।

ऐ, औ बदलि कऽ ए भऽ जाइत अछि। जेना कौमुदी= कोमुदी।

संयुक्ताक्षरसँ पूर्व ह्रस्व स्वर रहैत अछि।

उ बदलि कऽ अ वा ओ भऽ जाइत अछि। जेना मुकुल= मउल। पुस्तक= पोत्थअ।

ऊ बदलि कऽ ओ भऽ जाइत अछि। जेना मूल्य= मोल्ल।

ए बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना एतेन= एदिणा।

ओ बदलि कऽ उ भऽ जाइत अछि। जेना अन्योन्य= अण्णुण्ण।

अनुस्वार+ अपि= पि आ अनुस्वार+इति= ति भऽ जाइत अछि। खलु= ख भऽ जाइत अछि।

य् बदलि कऽ इ भऽ जाइत अछि। जेना कथयतु= कधेतु।

प्राकृतमे अन्तिम व्यंजनक लोप भऽ जाइत अछि। व्यंजन सन्धिक मोटा-मोटी अभाव रहैत अछि।

स्वर सन्धिमे सेहो मध्य वर्णक लोप भेलोपर सन्धि नहि होइत अछि।

शब्दरूपमे द्विवचन खतम भऽ गेल। चतुर्थीक रूप षष्ठीमे मिलि गेल। व्यंजन अन्तबला शब्द खतम भऽ गेल।

धातुरूपमे शब्दरूपसँ बेशी अन्तर आएल। व्यंजन अन्तबला धातु खतम भऽ गेल। धातुरूप एक्के रीतिसँ चलए लागल, द्विवचन खतम भऽ गेल, रूपक भिन्नता कम भऽ गेल। आत्मनेपद रूप मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। लिट्, लिङ्, लुङ् रूप सेहो मोटा-मोटी खतम भऽ गेल। भूतकाल लेल कृदन्त प्रत्ययक प्रयोग होमए लागल। भ्वादिगण आ चुरादिगणक अलाबे सभ गण खतम भऽ गेल।

शौरसेनीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ ज्ज् भऽ जाइत अछि।

शौरसेनी आ माहाराष्ट्री- संस्कृतक मध्यक त शौरसेनीमे द भऽ जाइत अछि मुदा माहाराष्ट्रीमे ओ लोपित भऽ जाइत अछि। जेना- संस्कृत- जानाति= शौरसेनी जाणादि= माहाराष्ट्री जाणाइ

संस्कृतक मध्यक थ शौरसेनीमे घ मुदा माहाराष्ट्रीमे ह भऽ जाइत अछि। जेना संस्कृत अथ= शौरसेनी अघ= माहाराष्ट्री अह।

दोसर पदक प्रारम्भमे ज्ञ रहलासँ मागधीमे ञ्ञ बनि जाइत अछि।

मागधीमे श, ष, स ई तीनू परिवर्तित भऽ श; र परिवर्तित भऽ ल; ज परिवर्तित भऽ य बनि जाइत अछि। अकारान्त प्रथमा एकवचनमे ए लगैत अछि। जेना दरिद्र= दलिद्द।

मागधीमे ज बदलि कऽ य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे द्य, र्ज्, र्य् बदलि कऽ य्य भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ण्य, न्य, ज्ञ, ञ्ज बदलि कऽ ञ्ञ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे मध्यक च्छ बदलि कऽ श्च भऽ जाइत अछि।

मागधीमे ष्क= स्क वा श्क, ष्ट= स्ट वा श्ट, ष्प= स्प, ष्फ= स्फ भऽ जाइत अछि।

मागधीमे र्थ बदलि कऽ स्त भऽ जाइत अछि।

विधिलिङ् क प्रयोग जैन प्राकृत- अर्धमागधी आ जैन महाराष्ट्रीमे प्रचलित रहल, आन प्राकृतमे ई मोटा-मोटी खतम भऽ गेल।

संस्कृतक तुम् शौरसेनीमे दुं, मागधीमे सेहो दुं रहैत अछि मुदा महाराष्ट्रीमे उं भऽ जाइत अछि।

प्राकृतक शौरसेनी, मागधी, महाराष्ट्रीक अतिरिक्त पैशाची प्राकृतक सेहो उल्लेख भेटैत अछि। गुणाढ्यक वृहत्कथा एहि प्राकृतमे लिखल गेल जे आब स्वतंत्र रूपसँ उपलब्ध नहि अछि। एकर उल्लेख उद्धरण रूपमे कखनो काल भेटैत अछि। ई पश्चिमोत्तर भारतक प्राकृत छल, उद्धरण रूपमे उपलब्ध साहित्यक अनुसार एहिमे निम्न विशेषता छल। ण बदलि कऽ न भऽ गेल। र बदलि कऽ ल भऽ गेल। ल बदलि कऽ र भऽ गेल। सघोष अघोष बनि गेल। दू स्वरक बीचक ल बदलि कऽ ळ भऽ गेल। स्वरक बीचमे ष बदलि कऽ श वा स, ज्ञ बदलि कऽ न्य आ ण्य बदलि कऽ ञ्ञ भऽ गेल। एहिमे आत्मनेपद आ परस्मैपद दुनू अछि।

पश्चिमोत्तरक खोतानसँ प्राकृत धम्मपद खरोष्ठी लिपिमे दहिनसँ वाम लिखल लेख प्राप्त होइत अछि जाहिमे श, ष, स तीनूक प्रयोग अछि।

मोटा-मोटी प्राकृतमे शब्द-धातुरूपक सरलीकरणक प्रक्रिया दृष्टिगोचर होइत अछि, द्वित्व, मूर्धन्यीकरण, अघोषीकरण आ सघोषीकरण, लकारक बदला कृदन्तक प्रयोग सेहो बढ़ि गेल।

प्राकृत आ पालिः

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्धकरैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४) । आ वैदिक कालमे संस्कृतकेँ संस्कृत नै भाषा कहल जाइ छल। आ जकरा आइ प्राकृत कहै छिऐ से पालिक बाद ओइ रूपमे बुझल गेल (साहित्य लेखन सम्बन्धमे) ।

भरतक नाट्यशास्त्रमे ७ टा आ वररुचि ४ टा प्राकृतक चर्चा करै छथि।

ओना तँ महावीरक वचन अर्ध-मागधी प्राकृत आ बुद्धक वचन मागधी-प्राकृतमे देल गेल मुदा ई दुनू मूलतः जनभाषा रहए।

मुदा जखन विभिन्न क्षेत्रक लोक जुमलाह तँ बुद्ध सभकेँ अपन क्षेत्रक भाषामे बुद्धवचन सिखबा लेल कहलन्हि: अनुजानामि भिक्खवे, सकायनिरुत्तियाबुद्धवचनं परियापुणितं- माने भिक्षु लोकनि, अपन-अपन भाषामे बुद्धवचन सिखबाक अनुमति दै छी। आ बुद्धवचनमे प्रधान तत्व जनभाषा मागधीक रहल मुदा आन आन भाषाक तत्व सेहो फेंटाएल; आ से भाषा पालि भऽ गेल।

पालिमेः

“ऋ”, “लृ”, “ऐ”, “औ” आ “अः” नै होइए आ “अं” स्वर नै व्यंजन होइए।

तालव्य श आ मूर्धन्य ष सेहो नै होइए मात्र दन्त स होइए।

संस्कृतक “ळ” व्यंजन होइए।

संस्कृतक संयुक्त व्यंजन “क्ष”, “त्र” आ “ज्ञ” नै होइए।

“ऋ” बदलि कऽ “अ”, “इ”, “अ, इ”, “इ, उ” भऽ जाइए। “वृ” बदलि कऽ “रु” भऽ जाइए।

“लृ” बदलि कऽ “उ” भऽ जाइए।

“ऐ” बदलि कऽ “इ” वा “ए” भऽ जाइए।

“औ” बदलि कऽ “उ” आ “ओ” भऽ जाइए।

संस्कृतक ह्रस्वक दीर्घ भेनाइः सिंहः= सीहो

संस्कृतक दीर्घक ह्रस्व भेनाइः मुनीन्द्रः= मुनिन्दो

निकटकस्वरः निषण्णः= निसिन्नो

बलाघातः मध्यमः= मज्झिमो

प्रसारः जयति=जेति

स्वरलोपः इति= ति

पालिमे ड आ ढ सेहो नै होइत अछि। तालव्य श आ मूर्धन्य ष लेल “स” वा “छ” प्रयुक्त होइए; ड लेल” ळ” आ ढ लेल “ल्ह” प्रयोग होइए।

क बदलैए "य" मे: जेना लौकिक:= लोकियो वा "व" मे जेना शुक:= सुवो

आगाँ-पाछाँ सेहो होइए: जेना मशक:=मकसो:, करेणु:=कणेरु

कवर्ग चवर्गमे बदलैए: कुन्द:=चुन्दो

तवर्ग टवर्गमे बदलैए: प्रथम:=पठमो

"ख" उष्मीकृत भऽ "ह" मे बदलैए: प्रखर:= पहरो

"क" घोषीकृत भऽ "ग" भऽ जाइए: मूक:=मूगो

"ग" अघोषीकृत भऽ "क" बनि जाइए: तडागम् = तळाकं

"झ" अल्पप्राणीकृत भऽ"ज" बनि जाइए: झल्लिका = जल्लिका

"प" महाप्राणीकृत भऽ "फ" बनि जाइए: परशु:= फरसु

व्यञ्जनक लोप सेहो होइए: पविसिष्यामि= पविस्सामि

दुर्बल संयुक्त व्यंजनक लोप: क्षत्रिय:= खत्तियो

ध्वज:= धजो

आब सरलताक संधान देखो" गर्हा= गरहा; रत्नम् = रतनं

पालिमे तीनटा सन्धि अछि: स्वर, व्यंजन आ अनुस्वार (निग्गहीत) सन्धि।

स्वर सन्धि: स्वरक बाद स्वरमे पूर्ववर्ती/ परवर्ती स्वरक लोप वा ककरो लोप नै होइत अछि।

व्यंजन सन्धि: ह्रस्व वा दीर्घ स्वरक बाद व्यंजन एलापर ओ स्वरक्रमसँ दीर्घ आ ह्रस्व भऽ जाइए।

निग्गहीत सन्धि: अनुस्वार (निग्गहेत) क कतौ आगमन तँ कतौ लोप भऽ जाइए। जेना- तं+खणे= तंखणे; आ सं+रागो= सारागो

पालिमे दुइयेटा वचन होइत अछि- एकवचन आ बहुवचन; आ सात टा विभक्ति: पठमा, दुतिया, ततिया, चतुत्थी, पञ्चमी, छट्ठी, सत्तमी, आलपन। ५०० सँ ८०० धरि धातु नौ गणमे आठ लकार (आशीर्लिङ आ लुट् लकार नै होइत अछि) होइत अछि।

पालिमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

प्राकृतमे:

ओना मूल बात यएह अछि जे सभ प्राकृत शब्दक संस्कृत रूप नै अछि।

साहित्यिक प्राकृतक कएक प्रकार होइत अछि।

पैशाची प्राकृतमे "ट" लेल "त" आ "ल" लेल" ळ"

अर्धमागधी प्राकृतमे मध्यक स्वतंत्र "क" बदलि जाइए "ग", "त" वा "य" मे। दू टा स्वरक बीच "प" बदलि जाइए "व" मे।

शौरसेनी प्राकृतमे दू टा स्वरक बीचक स्वतंत्र "त" बदलि जाइए "द" मे आ "थ" बदलि जाइए "ह" वा ध" मे।

मागधी प्राकृतमे "र" क स्थानपर "ल", "य" केर स्थानपर "य्य" वा "ज्ज", "स" आ "ष" क स्थानपर "श" क प्रयोग होइत अछि।

प्राकृत मे ह्रस्व आ दीर्घ "ऋ", "लृ", "ऐ" आ "औ" नै होइत अछि। न केर बदला "ण" होइत अछि।

ऋ बदलि जाइएः अ, आ, ई, उ, रि

लृ बदलि जाइएः इलि

ऐ बदलि जाइएः ए

औ बदलि जाइएः उ

दू स्वरक बीच क, ग, च, ज, त, द, य, व केर लोप होइत अछि जेनाः लोक=लोअ, लावण्य= लाअण्ण

ख परिवर्तित भऽ जाइए ह मेः शाखा= शाहा

प्रारम्भक य भऽ जाइए ज, जेनाः यम=जम

श आ ष भऽ जाइए स; क्ष भऽ जाइए ख वा छ वा झ; ज्ञ भऽ जाइए ण; त्व भऽ जाइए च; थ्व भऽ जाइए छ, द्व भऽ जाइए ज; ध्व भऽ जाइए झ।

सन्धि संस्कृत सन अछि। वचन दू- एकवचन आ बहुवचन, विभक्ति सात। संस्कृत जेकाँ धातु दस गण मे रहैत अछि, तुदादिगणक रूपक लोप भऽ जाइत अछि। भूत आ भविष्य मे एक्के-एक्के टा रूप होइत अछि।

प्राकृतमे समास संस्कृत सन होइत अछि।

३. अवहट्ट

अपभ्रंश जखन समापनपर छल तखन मोटामोटी एगारहमसँ चौदहम शताब्दी धरि “अवहट्ठ” साहित्यिक भाषाक रूपमे उपस्थित रहल। मैथिलीसँ एकर निकटताक कारण एकरा “मैथिल अपभ्रंश” सेहो कहल गेल आ ई अपभ्रंशक प्रकारक रूपमे सेहो मर्यादित रहल।

विद्यापतिक स्वयं कीर्तिलता आ कीर्तिपताकाक भाषाकेँ अवहट्ठ कहै छथि मुदा ताहूसँ पूर्व एहि शब्दक प्रयोग भाषाक सन्दर्भमे पहराज केने छथि “पाउअकोस” मे। अद्दहमाण अपन कृति संदेशरासकमे आ वंशीधर प्राकृत पंगलम् क टीकामे अवहट्ठक भाषाक रूपमे उलीख कएने छथि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- “पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ” । अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारोपाक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल। खास कऽ विद्यापतिक अवहट्ठमे मैथिली वर्तनीक इकार, ओकार, आ अनुनासिकक बदलामे “कचटतप” वर्गक पाँचम अनुनासिक वर्णक प्रयोग देखबामे अबैत अछि मुदा हुनकर अवहट्ठ भाषामे कखनो काल बुझाइत अछि जे ई भाषा खाँटी मैथिली अछि तँ कखनो एहिमे प्राकृत, फारसी, गुजराती-सौराष्ट्री अवधी आ कोशली भाषाक शब्दावलीक बेशी प्रयोग भेटैत अछि। आ सैह कारण रहल होएत जे हुनकर अवहट्ठ सर्वदेशीय (राजशेखर कहै छथि “विश्व-कुतुहली”) बनि सकल। एकर दूटा देवनागरी पाण्डुलिपि दू ठामसँ- गुजरातक स्तम्भतीर्थमे आ उत्तर प्रदेशक फतेहपुर जिलाक असनी गाममे भेटल आ एकटा मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि नेपालसँ भेटल। ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ठ (अवहट्ठ) केँ “मैथिल अपभ्रंश” ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। दामोदर पंडितक “उक्ति व्यक्ति प्रकरण” सेहो कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती अछि मुदा पुरान अवधी आ पुरान कोशलीक प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि आ अवहट्ठसँ लग अछि। संगे ईहो सत्य जे कीर्तिलता आ कीर्तिपताकामे विद्यापति अवहट्ठक कतेको प्रकारसँ प्रयोग करै छथि। पहिने तँ ई अपभ्रंशक पर्यायक रूपमे प्रयुक्त होइत छल मुदा जेना जेना अपभ्रंशक विशेषताकेँ ई छोड़ैत गेल आ आधुनिक भारतीय भाषाक व्याकरणिक विशेषताक, खास कऽ मैथिलीक व्याकरणिक विशेषताक आधार बनऽ लागल तखन ई अपभ्रंशसँ पृथक् अवहट्ठक रूप लेलक। एकर प्रमुख व्याकरणिक विशेषता अछि- स्वर संयोग, क्षतिपूर्तिक लेल दीर्घीकरण, व्यंजनक अपन खास विशेषता, रूपक विचार (लिंग-वचन), निर्विभक्तिक प्रयोग, कारक-परसर्ग, कारक विभक्ति, सर्वनाम, विशेषण, सार्वनामिक विशेषण, क्रिया, कृदन्त, आज्ञार्थक, पूर्वकालिक, संयुक्त क्रिया, क्रिया विशेषण, शब्दावलीक विशेषता, पूर्व स्वरपर स्वराघात, स्वर सानुनासिकतामे परिवर्तन, अकारण सानुनासिकताक प्रवृत्ति, एक संग अनेक स्वरक प्रयोग, अक्षर लोप, परसर्गक स्थानपर मूल शब्द, सर्वनामक प्रचुरता, क्रियापदक विकास आ वाक्य रचना।

अवहट्ठ भाषामे जैन धर्मसँ सम्बन्धित रचना ढेर रास अछि आ ओहिमे शौरसेनीक प्रभाव अछि। अवहट्ठक मुख्य क्षेत्र छल मान्यखेत, गुजरात, बंगाल आ मिथिला। जैन धर्मसँ सम्बन्धित लोक मुख्य रूपसँ मान्यखेतमे रहथि। "वज्जालग्ग" श्वेताम्बर मुनि जयवल्लभ द्वारा संकलित सुभाषितक संग्रह छथिजाहिमे अवहट्ठक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। शालिभद्र सूरीक "भरतेश्वर बाहुवली रास", एकटा दोसर शालिभद्र सूरीक "पंच पाण्डव चरित", स्थूलिभद्र रास, जयशेखर सूरीक "नेमिनाथ फागु", सकलकीर्तिक "सोलह कारण रास" क अतिरिक्त मौखिक काव्य जेना बैद्ध सिद्ध साहित्य, डाक, धर्ममंगल काव्य, शून्यपुराण, माणिकचन्द्र राजार गान, लोरिकाइन जनक मध्य आएल। अवहट्ठक बाद ब्रजबुली द्वारा राय रमानन्द, शंकरदेव आ चैतन्यदव लोकभाषाक माध्यमसँ जन धरि पहुँचलाह। अवहट्ठक प्रभाव ब्रजबुली आ मैथिलीपर पड़ल। द्वारा बारहम शताब्दीक डाकार्णव नेपालमे रचित अछि जकर लिपि मिथिलाक्षर आ भाषा अवहट्ठ अछि। मिथिलामे कर्णाट आ ओइनवार राजवंशक कालमे अवहट्ठमे रचना कएल गेल। सिद्ध साहित्य, बौद्धक दोहाकोश-चर्यागीत आ ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे अवहट्ठक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल छल। मुनिराम सिंहक पाहुड दोहा आ बौद्ध धर्मक वज्रयानक ग्रन्थमे सेहो अवहट्ठक रूप देखबामे अबैत अछि। दामोदर पंडितक उक्तिव्यक्तिप्रकरण अवहट्ठमे रचित अछि, ई संस्कृत सिखेबाक ग्रन्थ अछि। बारहम शताब्दीक पूर्वार्धमे उद्दहभाण "संदेश रासय" क रचना कएलन्हि, रचयिता स्वयं एहि ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ठ कहै छथि। प्राकृत् पैंगलम् -जे छन्दशास्त्रक संकलन अछि आ जकर संकलनकर्ताक नाम अज्ञात अछि- क टीकाकार सेहो एहि ग्रन्थक भाषाकेँ अवहट्ठ कहि सम्बोधित कएने छथि। विद्यापतिक कीर्तिलता आ कीर्तिपताका सेहो अवहट्ठमे रचित भेल।

अवहट्ठक अपभ्रंशसँ व्याकरणिक भिन्नता आ मैथिलीसँ सन्निकटता: दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ; पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह। संस्कृतक ऐ, औ क्रमसँ अइ, अउ ध्वनि बनि गेल आ ओहिसँ किछु आर स्वर बहार भेल। संस्कृतक बादबला भाषा खास कऽ मध्यकालिक भाषामे लगातार दू वा तीन स्वरक प्रयोगसँ ध्वनि आ लेखन दुनूमे विचित्रता आएल। आधुनिक भाषाक लेल आवश्यक छल जे पुनः व्यंजनक बेशी प्रयोग कऽ, तत्समक बेशी प्रयोग कऽ पूर्वस्थिति आनल जाए, जाहिसँ उच्चारण आ लेखन सरल भऽ सकए। क्रियाक अन्तमे आ आन पदक सभ स्थानमे स्वरकेँ संयुक्त करब प्रारम्भ भेल। एहिमे "ऐ" आ "औ" अवहट्ठक विशेषाता रूपमे परिगणित भेल। जेना टुट्टै=टूटै, गुण्णइ=गुणै, पइ=पै, रहइ=रहै, करउ=करौ, चअउर=चौरा, दुण्णउ=दूणौ, तउ=तौ, आअउ=आऔ।

ऋ एहि तीन रूपमे ध्वनित होमए लागल। र्+अ, र्+इ, र्+उ आ मध्य रूप माने रि (र्+इ) एहि रूपमे स्थिर होमए लागल। जेना अमृत= अमिअ एहिमे मृ=मि भऽ गेल अछि।

स्वरमे किछु आर परिवर्तन भेल। शब्द प्रारम्भक स्वरक दीर्घ होएब स्वाभाविक लगैत अछि, जेना आँचल=आँचर। स्त्रीलिंगमे अन्तिम आ लुप्त होमए लागल जेना भिक्षा=भीख। स्वरक बहुलताबला शब्दमे सन्धि आ लुप्तीकरण बढ़ल, जेना धरित्री=धरती, उपआस=उपास।

अपभ्रंशक अंधआर=अंधार (संधि) बनि गेल।

कज्ज=काज बनि गेल (दीर्घ)
अंचल=आँचर (अनुनासिक)

व्यंजन ओहिना रहल मुदा ण कम आ ञ बेशी प्रयोगमे आबए लागल आ ड़, ढ़ ई दुनू नव व्यंजन आएल। क्ष=क्+ष बदलि कऽ ष्ख होमए लागल। न आ ल मे सेहो पर्याय बनल जेना नहिअ=लहिअ आइ काल्हि सेहो मैथिलीमे लोर आ नोर दुनू बाजल जाइत अछि।

उ सँ अन्त होमएबला संज्ञा रहल मुदा अ, आ, इ, ई, ऊ, ऐ, ओ सेहो संज्ञाक अन्तमे आबए लागल। न्हि अन्तिममे लगा कऽ बहुवचन बनेबाक प्रवृत्ति बढ़ल, जेना युवराजन्हि। द्विवचन खतम भऽ गेल आ तकर बदला बहुवचनक प्रयोग भेल आ ताहि लेल सव्वउं (सभ) क प्रयोग प्रारम्भ भेल।

लिंगसँ विशेषणक रूप परिवर्तन आ लुप्तविभक्ति-निर्विभक्तिक प्रयोग बेशी होमए लागल। विशेषणक रूप परिवर्तित भेल। जेना अइस, एत्ते, कतहु, पहिल, चारु।

कारकक विभक्तिक संग सन, सउं, क, माझ, केर, लागि आदिक प्रयोग होमए लागल।

पश्चिमी अवहट्ठमे विभक्तिक प्रयोग घटल मुदा पूर्वी अवहट्ठमे ए, हि विभक्तिसँ ढेर रास काज लेल गेल।

सर्वनाम कर्ता लेल हौ, तोञ, सो आ संबंध लेल मोञ, तुम्ह, तिसु प्रयुक्त होमए लागल।

क्रियामे करउँ, करसि, करथि प्रयुक्त होमए लागल। कृदन्त रूपमे पढ़न्ता, चलु, उपजु, गेल, भेल, कहल, मारल, चलल, करहुं, कहसि, जाहि, पावथि प्रयुक्त होमए लागल।

संयुक्त काल जेना आवत्त हुअ प्रयुक्त होमए लागल।

भविष्यत् कालक पूर्वी रूपमे व लगैत छल आ पछबरिया रूपमे ह लगैत छल।

क्रियाविशेषणमे जनु, नहु, बिनु अबस प्रयुक्त होमए लागल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात, जेना: अक्खर= आखर।

सर्वनामक संख्यामे वृद्धि भेल।

क्रियापदमे विकासक फलस्वरूप कृदन्तक प्रयोग वर्तमानकालमे बेशी होमए लागल।

आब वाक्यमे शब्दक स्थानक निर्धारण आवश्यक भऽ गेल। मोटामोटी कर्ता, कर्म आ आखिरीमे क्रिया राखल जाए लागल।

संयुक्त कालक प्रयोग सेहो आरम्भ भेल।

शब्दक पहिल अक्षरक स्वरक दीर्घ होएबाक प्रवृत्ति अवहट्ठमे बेशी अछि, स्त्रीलिंग शब्दमे शब्दक अन्तिम अक्षरक आ लुप्त होमए लागल। अनुनासिक शब्दक संख्यामे वृद्धि भेल। संज्ञाक लंग आ वचन तँ दुइयेटा रहल मुदा एकवचनक प्रयोग बहुवचनमे होमए लागल। प्रातिपदिक अधिकांशतः स्वरान्त अछि आ अकारान्त सेहो। विभक्तिक बदलामे परसर्गक प्रयोग होमए लागल। अपादान लेल हुंते, सउँ प्रयोगमे आबए लागल आ अधिकरण लेल माँझ, उप्परि आ एहि दुनू (अपादान आ अधिकरण) लेल कखनो काल चन्द्रबिन्दु टासँ काज चलि गेल, “हिं” विभक्ति सेहो कतेको कारकक लेल प्रयुक्त भेल आ “ए” विभक्ति सँ कर्म, करण, अधिकरण सभटाक भान होमए लागल। संज्ञाक एहि तरहक सरलीकरण सर्वनाममे सेहो देखबामे अबैत अछि। क्रियाक निर्माणमे सरलता आएल आ से भेल कृदन्तक बेशी प्रयोगसँ आ संयुक्त क्रियाक बढ़ोत्तरीसँ। भूतकाल “ल” लगा कऽ सेहो बनए लागल, आ भविष्यत् काल “व” लगा कऽ सेहो, जेना थाकल, पढ़ब जे बादमे मैथिलीमे सेहो आएल।

पूर्व स्वरपर स्वराघात आ स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरण अवहट्ठक मुख्य विशेषता अछि। अपभ्रंशक अक्खर, ठक्कुर आ नच्चइ क्रमसँ आखर, ठाकुर आ नाचइ भऽ गेल। स्वरक सानुनासिकतामे परिवर्तन भेल जाहिसँ पुरान निअममे परिवर्तन भेल। पहिने स्पर्श व्यंजनमे अनुस्वारक अभाव छल आ कचटतप क पाँचम वर्ण तकर बदलामे संयुक्त भऽ प्रयुक्त होइत छल। अपवादमे य सँ ह धरिक वर्णक उपस्थितिअहिमे अनुस्वार लगैत छल। पूर्व स्वरपर स्वराघात आ क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त युक्ताक्षरक पूर्वस्वरपर स्वराघातक संग अनुस्वार आबए लागल, जेना- ऊसास/ आंग/ आँकुस/ आँचर/ काँट/ लाँघि/ पाँच/ चाँद/ आँगन/

क्रमसँ

उस्सास/ अंग/ अंकुस/ अंचल/ कण्टक/ लघ्/ पंच/ चन्द्र/ अंगण/ क बदलामे आबि गेल। स्वरक क्षतिपूरक दीर्घीकरणक अतिरिक्त अनुस्वारकेँ ह्रस्व कएल जाए लागल आ आधुनिक मैथिलीक अकारण आनुनासिकताक प्रवृत्तिक आरम्भ भेल, जेना- कज्ज=काँज, कच्चुः=काँच, भग्ग=भाँग, ओष्ठ=ओंदिम।

अक्षर लोप: संकोच वा अक्षर लोपक कारणसँ अन्धकार=अन्हार, देवकुल= देउर, देवगृह=देवहा, कोट्टशीर्ष=कोसीस, उपवास=उपास, उत्तिष्ठ=उँट, सहकार=सहार, स्वर्णकार=सोनार, सुन्नाअर=सुन्नार, सहयार=साहार भऽ गेल।

परसर्गक प्रयोगमे वृद्धिः अपभ्रंशक परसर्गक प्रयोगमे अवहट्ठ कालमे आर वृद्धि भेल। जेना-

कर्ता- एन्ने

करण-सन, सउं

सम्प्रदान-लागि, लग्गि, लागे, प्रति, कारण

अपादान-सओ, हुत, हुते, हुंति, सिउ

संबंध- केर, कर, के, करेउ, कइ, क

अधिकरण- माझ, ऊपर, माँझ, भीतर, माहि

सर्वनामक आधिक्य: कीर्तिलतामे जेन्ने, आ आन ठाम मोर, मेरहु, तोरा, तोहार, तोहर, तोरा आदि सर्वनामक प्रयोग प्रारम्भ भेल। संबधवाचक सर्वनाम- जञोन, जेन्ने, जस, जसु, जे; प्रश्न वाचक- केहु, कोए; अनिश्चयवाचक- कोइ, केहु; निजवाचक- अपन, अपनेहु, निअ आदिक प्रयोग होमए लागल।

कृदन्तक प्रयोग क्रियापदक विकसित रूप: आब कृदन्तक प्रयोगमे वृद्धि भेल जेना भूतकालक कृदन्तक प्रयोग वर्तमान जेकाँ होएब आ कखनो काल अपन पूर्ण रूपमे सेहो होएब।

वर्तमान लेल कृन्तक प्रयोग पढ़न्ता, कहन्ता, आवन्ता; भविष्यत् काल लेल करहुं, करिहि आ भूतकाल लेल कृदन्तक प्रयोग जेना चलु, लागु क प्रयोग भेल।

“अन्त” सँ आधुनिक “ता” निकलल अछि आ “अन्त” क प्रयोग बढ़ि गेल। संयुक्त क्रियाक प्रयोग प्रारम्भ भऽ गेल- जेना “ले” जोड़ि कऽ क्रिया बनाएब “खाइले”; सामर्थ्यसूचक पार आ आरम्भसूचक चाह/ लागु क प्रयोग आरम्भ भेल।

४. मैथिली

ऐतिहासिक आधारपर भाषाक पारिवारिक वर्गीकरणमे अवहट्ठकेँ “मैथिल अपभ्रंश” ताहि कारणसँ कहल जाइत अछि आ मागधी प्राकृतसँ सेहो एकर विकास दृष्टिगोचर होइत अछि। अवहट्ठ मैथिलीसँ लग रहितो शौरसेनी प्राकृत-अपभ्रंशसँ सेहो लग अछि, मुदा देशी शब्दक प्रयोगसँ एहिमे अपभ्रंशसँ बहुत रास व्याकरणिक परिवर्तन देखा पड़ैत अछि। विद्यापतिक “कीर्तिलता” अवहट्ठमे अछि, मुदा “चर्या गीत” आ “वर्ण रत्नाकर” कीर्तिलतासँ पूर्ववर्ती होएबाक बादो पुरान मैथिली अछि आ अवहट्ठसँ सेहो लग अछि। भारोपीय भाषा परिवारमे मैथिलीक स्थान मोटा-मोटी संस्कृत, पाली, प्राकृत, अपभ्रंश आ अवहट्ठक ऐतिहासिक क्रममे अबैत अछि।

ध्वनि: दन्त न क उच्चारणमे दाँतमे जीह सटत- जेना बाजू नाम, मुदा ण क उच्चारणमे जीह मूर्धामे सटत (नहि सटैए तँ उच्चारण दोष अछि)- जेना बाजू गणेश। तालव्य शमे जीह तालुसँ, षमे मूर्धासँ आ दन्त समे दाँतसँ सटत। निशाँ, सभ आ शोषण बाजि कऽ देखू। मैथिलीमे ष केँ वैदिक संस्कृत जेकाँ ख सेहो उच्चरित कएल जाइत अछि, जेना वर्षा, दोष। य अनेको स्थानपर ज जेकाँ उच्चरित होइत अछि आ ण ड़ जेकाँ (यथा संयोग आ गणेश संजोग आ गड़ेस उच्चरित होइत अछि) । मैथिलीमे व क उच्चारण ब, श क उच्चारण स आ य क उच्चारण ज सेहो होइत अछि।

ओहिना ह्रस्व इ बेशीकाल मैथिलीमे पहिने बाजल जाइत अछि कारण देवनागरीमे आ मिथिलाक्षरमे ह्रस्व इ अक्षरक पहिने लिखलो जाइत आ बाजलो जएबाक चाही। कारण जे हिन्दीमे एकर दोषपूर्ण उच्चारण होइत अछि (लिखल तँ पहिने जाइत अछि मुदा बाजल बादमे जाइत अछि), से शिक्षा पद्धतिक दोषक कारण हम सभ ओकर उच्चारण दोषपूर्ण ढंगसँ कऽ रहल छी।

पानि-पाइन-पैन

अछि- अ इ छ ऐछ

छथि- छ इ थ – छैथ

पहुँचि- प हुँ इ च

तखन प्रश्न उठैत अछि जे “छथि” केँ छैथ लिखबामे की हर्ज? हर्ज अछि, कारण मिथिलाक बहुतो क्षेत्रमे छथि, छथी, पानि, पानी, पहुँचि, पहुँची सेहो बाजल जाइत अछि। से पानि, रहथि, पहुँचि लिखलासँ सभ क्षेत्रक प्रतिनिधित्व होइत अछि।

आब अ आ इ ई ए ऐ ओ औ अं अः ऋ एहि सभ लेल मात्रा सेहो अछि, मुदा एहिमे ई ऐ ओ औ अं अः ऋ केँ संयुक्ताक्षर रूपमे गलत रूपमे प्रयुक्त आ उच्चरित कएल जाइत अछि। जेना ऋ केँ री रूपमे उच्चरित करब। आ देखियौ- एहि लेल देखिऔ क प्रयोग अनुचित। मुदा देखिऐ लेल देखियै अनुचित। क् सँ ह् धरि अ सम्मिलित भेलासँ क सँ ह बनैत अछि, मुदा उच्चारण काल हलन्त युक्त शब्दक अन्तक उच्चारणक प्रवृत्ति बढ़ल अछि, मुदा हम जखन मनोजमे ज् अन्तमे बजैत छी, तखनो पुरनका लोककेँ बजैत सुनबन्हि- मनोजऽ, वास्तवमे ओ अ युक्त ज् = ज बजै छथि।

फेर ज्ञ अछि ज् आ ञ क संयुक्त मुदा गलत उच्चारण होइत अछि- ग्य। ओहिना क्ष अछि क् आ ष क संयुक्त मुदा उच्चारण होइत अछि छ। फेर श् आ र क संयुक्त अछि श्र (जेना श्रमिक) आ स् आ र क संयुक्त अछि स्र (जेना मिस्र) । त्र भेल त+र।

फेर कैँ / सँ / पर पूर्व अक्षरसँ सटा कऽ लिखू मुदा तँ/ के/ कऽ हटा कऽ। एहिमे सँ मे पहिल सटा कऽ लिखू आ बादबला हटा कऽ। अंकक बाद टा लिखू सटा कऽ मुदा अन्य ठाम टा लिखू हटा कऽ– जेना छहटा मुदा सभ टा। फेर ६अ म सातम लिखू- छठम सातम नहि। घरबलामे बला मुदा घरवालीमे वाली प्रयुक्त करू।

रहए- रहै मुदा सकैए (उच्चारण सकै-ए) ।

मुदा कखनो काल रहए आ रहै मे अर्थ भिन्नता सेहो, जेना से कम्मो जगहमे पार्किंग करबाक अभ्यास रहै ओकरा। पुछलापर पता लागल जे ढुनढुन नाम्ना ई ड्राइवर कनाट प्लेसक पार्किंगमे काज करैत रहए।

छलै, छलए मे सेहो एहि तरहक भेल। छलए क उच्चारण छल-ए सेहो।

संयोगने- (उच्चारण संजोगने)

कैँ/ के / कऽ

केर- क (केर क प्रयोग नहि करू)

क (जेना रामक) –रामक आ संगे (उच्चारण राम के / राम कऽ सेहो)

सँ- सऽ

चन्द्रबिन्दु आ अनुस्वार- अनुस्वारमे कंठ धरिक प्रयोग होइत अछि मुदा चन्द्रबिन्दुमे नहि। चन्द्रबिन्दुमे कनेक एकारक सेहो उच्चारण होइत अछि- जेना रामसँ- (उच्चारण राम सऽ) रामकैँ- (उच्चारण राम कऽ/ राम के सेहो) ।

कैँ जेना रामकैँ भेल हिन्दीक को (राम को)- राम को= रामकैँ

क जेना रामक भेल हिन्दीक का (राम का) राम का= रामक

कऽ जेना जा कऽ भेल हिन्दीक कर (जा कर) जा कर= जा कऽ

सँ भेल हिन्दीक से (राम से) राम से= रामसँ

सऽ तऽ त केर एहि सभक प्रयोग अवांछित।

के दोसर अर्थैं प्रयुक्त भऽ सकैए- जेना के कहलक?

नञि, नहि, नै, नइ, नँइ, नइँ एहि सभक उच्चारण- नै

अ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मन=मोन, वन=बोन (वर्तुल)

अ कखनो काल आ भऽ जाइत अछि, जेना- फंदा=फान, चन्द्र=चान (स्वराघात)

घर=घऽर (उच्चारण) (स्वराघात)

बुद्ध=बुद्धऽ (उच्चारण) (स्वराघात)

घमसान=घमऽसान (दीर्घक पहिनेक ह्रस्व स्पश्ट उच्चरित- स्वराघात)

“इ” क पहिने “आ” रहलापर “ऐ” उच्चरित होइत अछि- जेना पानि=पैन, मुदा विभिन्न क्षेत्रमे पानी, पानि बाजल जाइत अछि तैँ वर्तनीमे पानि, आगि लिखब उचिते अछि।

आ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि, जेना काका=कक्का।

इ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना रिवाज=रेबाज।

ऋ कखनो काल इ/ ई/ ऊ भऽ जाइत अछि जेना कृष्ण=किसुन, पृष्ठ=पीठ, वृद्ध=बूढ़।

अन्तमे “ई” क बदलामे इ लिखल जाइत अछि।

ऋ कखनो काल अ भऽ जाइत अछि जेना- वृषभ=बसहा, अहृदी=अहदी।

उ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना दुकान=दोकान

ऊ कखनो काल ओ भऽ जाइत अछि जेना मूल्य=मोल।

अए कखनो काल ए भऽ जाइत अछि जेना कएलनि=केलनि।

ऐ कखनो काल अइ/ अए भऽ जाइत अछि जेना भैया=भइया, पैर=पएर।

आ+ओ कखनो काल औ भऽ जाइत अछि जेना गमाओल=गमौल।

क कखनो काल ख/ ग भऽ जाइत अछि जेना पुष्करि=पोखरि, भक्त=भगत।

ष कखनो काल शब्दक प्रारम्भ वा अन्तमे रहलापर ख भऽ जाइत अछि जेना षष्ठी=खष्ठी, भेष-भूषा=भेख-भूखा।

क्ष कखनो काल ख भऽ जाइत अछि जेना क्षीर=खीर।

ज्ञ कखनो काल ग भऽ जाइत अछि जेना यज्ञ=जाग।

ग कखनो काल घ भऽ जाइत अछि जेना गर्ग=घाघ।

त्य कखनो काल च भऽ जाइत अछि जेना सत्य=साँच।

त्स्य कखनो काल छ भऽ जाइत अछि जेना मत्स्य=माँछ।

य कखनो काल शब्दक प्रारम्भमे रहलापर ज भऽ जाइत अछि जेना यम=जम।

द्य कखनो काल ज भऽ जाइत अछि जेना विद्युत=बिजुली।

ध्य कखनो काल झ भऽ जाइत अछि जेना वंध्या=बाँझ।

त कखनो काल ट भऽ जाइत अछि जेना कर्तन=काटब।

न्थ कखनो काल ठ भऽ जाइत अछि जेना ग्रन्थि=गेंठ।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दण्ड=डाँट।

त कखनो काल लुप्त भऽ जाइत अछि जेना जाइत=जाइ।

स्त कखनो काल थ भऽ जाइत अछि जेनाप्रस्तर=पाथर।

द कखनो काल ड भऽ जाइत अछि जेना दाह=डाह।

ध कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर दह भऽ जाइत अछि जेना गधा=गदहा।

ल कखनो काल न भऽ जाइत अछि आ न कखनो काल ल भऽ जाइत अछि जेना नोर=लोर।

प कखनो काल फ भऽ जाइत अछि जेना पाश=फाँस।

फ कखनो काल “प” आ “ह” भऽ जाइत अछि जेना बेवकूफ=बेकूफ।

ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना शैबाल=सेमार।

म्भ कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना खम्भा=खमहा।

म्ब कखनो काल म भऽ जाइत अछि जेना कम्बल=कम्मल।

ल कखनो काल र भऽ जाइत अछि जेना हल=हर।

व कखनो काल भ भऽ जाइत अछि जेना वाष्प=भाप।

ह कखनो काल शब्दक अन्तमे रहलापर लुप्त भऽ जाइत अछि जेना गेलाह=गेला।

त्त्व क बदलामे त्व जेना महत्वपूर्ण (महत्त्वपूर्ण नहि) जतए अर्थ बदलि जाए ओतहि मात्र तीन अक्षरक संयुक्ताक्षरक प्रयोग उचित। सम्पति- उच्चारण स म्प इ त (सम्पत्ति नहि- कारण सही उच्चारण आसानीसँ सम्भव नहि) । मुदा सर्वोत्तम (सर्वोतम नहि) ।

मे कैं सँ पर (शब्दसँ सटा कऽ) तँ कऽ धऽ दऽ (शब्दसँ हटा कऽ) मुदा दूटा वा बेशी विभक्ति संग रहलापर पहिल विभक्ति टाकेँ सटाऊ।

एकटा दूटा (मुदा कैक टा)

बिकारीक प्रयोग शब्दक अन्तमे, बीचमे अनावश्यक रूपेँ नहि। आकारान्त आ अन्तमे अ क बाद बिकारीक प्रयोग नहि (जेना दिअ, आ)

अपोस्ट्रोफीक प्रयोग बिकारी (ऽ -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि) क बदलामे करब अनुचित आ मात्र फॉन्टक तकनीकी न्यूनताक परिचायक)- ओना बिकारीक संस्कृत रूप ऽ अवग्रह कहल जाइत अछि आ वर्तनी आ उच्चारण दुनू ठाम एकर लोप रहैत अछि/ रहि सकैत अछि (उच्चारणमे लोप रहिते अछि) । मुदा अपोस्ट्रोफी सेहो अंग्रेजीमे पसेसिव केसमे होइत अछि आ फ्रेंचमे शब्दमे जतए एकर प्रयोग होइत अछि जेना raison d' etre एतए सेहो एकर उच्चारण रैजौन डेटर होइत अछि, माने अपोस्ट्रॉफी अवकाश नहि दैत अछि वरन जोड़ैत अछि, से एकर प्रयोग बिकारीक बदला देनाइ तकनीकी रूपेँ सेहो अनुचित) ।

मैथिलीक मात्रात्मक आघातमे ह्रस्व स्वरपर आघात पड़लापर ओ दीर्घ भऽ जाइत अछि। शब्दमे जौँ दीर्घ स्वर रहत तँ आघात ओहि पर, दीर्घ नहि रहत तँ उपान्त्य स्वरपर आ जतए दूटा दीर्घ लगातार अछि ओतए सेहो उपान्त्य दीर्घपर आघात पड़ैत अछि। पा' नि, ओसा' रा। बलात्मक आघात सेहो गपपर जोर देबा काल प्रयुक्त होइत अछि जेना- अपन=अप्पन। जाहि स्वरपर आघात पड़त तकर पूर्वक सभ स्वर ह्रस्व भऽ जाइत अछि।

मैथिलीक उच्चारण आ लेखनक विशेषता:

१. पञ्चमाक्षर आ अनुस्वार: पञ्चमाक्षरान्तर्गत ङ, ञ, ण, न एवं म अबैत अछि। संस्कृत भाषाक अनुसार शब्दक अन्तमे जाहि वर्गक अक्षर रहैत अछि ओही वर्गक पञ्चमाक्षर अबैत अछि। जेना-

अङ्क (क वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ङ् आएल अछि।)

पञ्च (च वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ञ् आएल अछि।)

खण्ड (ट वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे ण् आएल अछि।)

सन्धि (त वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे न् आएल अछि।)

खम्भ (प वर्गक रहबाक कारणे अन्तमे म् आएल अछि।)

उपर्युक्त बात मैथिलीमे कम देखल जाइत अछि। पञ्चमाक्षरक बदलामे अधिकांश जगहपर अनुस्वारक प्रयोग देखल जाइछ। जेना- अंक, पंच, खंड, संधि, खंभ आदि। व्याकरणविद पण्डित गोविन्द झाक कहब छनि जे कवर्ग, चवर्ग आ टवर्गसँ पूर्व अनुस्वार लिखल जाए तथा तवर्ग आ पवर्गसँ पूर्व पञ्चमाक्षरे लिखल जाए। जेना- अंक, चंचल, अंडा, अन्त तथा कम्पन। मुदा हिन्दीक निकट रहल आधुनिक लेखक एहि बातकेँ नहि मानैत छथि। ओ लोकनि अन्त आ कम्पनक जगहपर सेहो अंत आ कंपन लिखैत देखल जाइत छथि।

नवीन पद्धति किछु सुविधाजनक अवश्य छैक। किएक तँ एहिमे समय आ स्थानक बचत होइत छैक। मुदा कतोक बेर हस्तलेखन वा मुद्रणमे अनुस्वारक छोट सन बिन्दु स्पष्ट नहि भेलासँ अर्थक अनर्थ होइत सेहो देखल जाइत अछि। अनुस्वारक प्रयोगमे उच्चारण-दोषक सम्भावना सेहो ततबए देखल जाइत अछि। एतदर्थ कसँ लऽ कऽ पवर्ग धरि पञ्चमाक्षरेक प्रयोग करब उचित अछि। यसँ लऽ कऽ ज्ञ धरिक अक्षरक सङ्ग अनुस्वारक प्रयोग करबामे कतहु कोनो विवाद नहि देखल जाइछ।

२. ढ आ ढ़: ढ़क उच्चारण "र् ह" जकाँ होइत अछि। अतः जतऽ "र् ह" क उच्चारण हो ओतऽ मात्र ढ़ लिखल जाए। आन ठाम खाली ढ लिखल जएबाक चाही। जेना-

ढ = ढाकी, ढेकी, ढीठ, ढेउआ, ढङ्ग, ढेरी, ढाकनि, ढाठ आदि।

ढ़ = पढ़ाइ, बढ़ब, गढ़ब, मढ़ब, बुढ़बा, साँढ़, गाढ़, रीढ़, चाँढ़, सीढ़ी, पीढ़ी आदि।

उपर्युक्त शब्द सभकेँ देखलासँ ई स्पष्ट होइत अछि जे साधारणतया शब्दक शुरूमे ढ आ मध्य तथा अन्तमे ढ़ अबैत अछि। इएह नियम ड आ ड़क सन्दर्भ सेहो लागू होइत अछि।

३. व आ ब: मैथिलीमे “व” क उच्चारण ब कएल जाइत अछि, मुदा ओकरा ब रूपमे नहि लिखल जएबाक चाही। जेना- उच्चारण: बैद्यनाथ, बिद्या, नब, देबता, बिष्णु, बंश, बन्दना आदि। एहि सभक स्थानपर क्रमशः वैद्यनाथ, विद्या, नव, देवता, विष्णु, वंश, वन्दना लिखबाक चाही। सामान्यतया व उच्चारणक लेल ओ प्रयोग कएल जाइत अछि। जेना- ओकील, ओजह आदि।

४. य आ ज: कतहु-कतहु “य” क उच्चारण “ज” जकाँ करैत देखल जाइत अछि, मुदा ओकरा ज नहि लिखबाक चाही। उच्चारणमे यज्ञ, जदि, जमुना, जुग, जाबत, जोगी, जदु, जम आदि कहल जाएबला शब्द सभकेँ क्रमशः यज्ञ, यदि, यमुना, युग, यावत, योगी, यदु, यम लिखबाक चाही।

५. ए आ य: मैथिलीक वर्तनीमे ए आ य दुनू लिखल जाइत अछि।

प्राचीन वर्तनी- कएल, जाए, होएत, माए, भाए, गाए आदि।

नवीन वर्तनी- कयल, जाय, होयत, माय, भाय, गाय आदि।

सामान्यतया शब्दक शुरूमे ए मात्र अबैत अछि। जेना एहि, एना, एकर, एहन आदि। एहि शब्द सभक स्थानपर यहि, यना, यकर, यहन आदिक प्रयोग नहि करबाक चाही। यद्यपि मैथिलीभाषी थारू सहित किछु जातिमे शब्दक आरम्भोमे “ए” केँ य कहि उच्चारण कएल जाइत अछि।

ए आ “य” क प्रयोगक सन्दर्भमे प्राचीने पद्धतिक अनुसरण करब उपयुक्त मानि एहि पुस्तकमे ओकरे प्रयोग कएल गेल अछि। किएक तँ दुनूक लेखनमे कोनो सहजता आ दुरूहताक बात नहि अछि। आ मैथिलीक सर्वसाधारणक उच्चारण-शैली यक अपेक्षा एसँ बेसी निकट छैक। खास कऽ कएल, हएब आदि कतिपय शब्दकेँ कैल, हैब आदि रूपमे कतहु-कतहु लिखल जाएब सेहो “ए” क प्रयोगकेँ बेसी समीचीन प्रमाणित करैत अछि।

६. हि, हु तथा एकार, ओकार: मैथिलीक प्राचीन लेखन-परम्परामे कोनो बातपर बल दैत काल शब्दक पाछाँ हि, हु लगाओल जाइत छैक। जेना- हुनकहि, अपनहु, ओकरहु, तत्कालहि, चोट्टहि, आनहु आदि। मुदा आधुनिक लेखनमे हिक स्थानपर एकार एवं हुक स्थानपर ओकारक प्रयोग करैत देखल जाइत अछि। जेना- हुनके, अपनो, तत्काले, चोट्टे, आनो आदि।

७. ष तथा ख: मैथिली भाषामे अधिकांशतः षक उच्चारण ख होइत अछि। जेना- षड्यन्त्र (खड़यन्त्र), षोडशी (खोड़शी), षट्कोण (खटकोण), वृषेश (वृखेश), सन्तोष (सन्तोख) आदि।

८. ध्वनि-लोप: निम्नलिखित अवस्थामे शब्दसँ ध्वनि-लोप भऽ जाइत अछि:

(क) क्रियान्वयी प्रत्यय अयमे य वा ए लुप्त भऽ जाइत अछि। ओहिमे सँ पहिने अक उच्चारण दीर्घ भऽ जाइत अछि। ओकर आगाँ लोप-सूचक चिह्न वा विकारी (’ / ऽ) लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: पढ़ए (पढ़य) गेलाह, कए (कय) लेल, उठए (उठय) पड़तौक।

अपूर्ण रूप: पढ़’ गेलाह, कऽ लेल, उठ’ पड़तौक।

पढ़ऽ गेलाह, कऽ लेल, उठऽ पड़तौक।

(ख) पूर्वकालिक कृत आय (आए) प्रत्ययमे य (ए) लुप्त भऽ जाइछ, मुदा लोप-सूचक विकारी नहि लगाओल जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: खाए (य) गेल, पठाय (ए) देब, नहाए (य) अएलाह।

अपूर्ण रूप: खा गेल, पठा देब, नहा अएलाह।

(ग) स्त्री प्रत्यय इक उच्चारण क्रियापद, संज्ञा, ओ विशेषण तीनूमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: दोसरि मालिनि चलि गेलि।

अपूर्ण रूप: दोसर मालिन चलि गेल।

(घ) वर्तमान कृदन्तक अन्तिम त लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: पढ़ैत अछि, बजैत अछि, गबैत अछि।

अपूर्ण रूप: पढ़ै अछि, बजै अछि, गबै अछि।

(ङ) क्रियापदक अवसान इक, उक, ऐक तथा हीकमे लुप्त भऽ जाइत अछि। जेना-

पूर्ण रूप: छियौक, छियैक, छहीक, छौक, छैक, अबितैक, होइक।

अपूर्ण रूप: छियौ, छियै, छही, छौ, छै, अबितै, होइ।

(च) क्रियापदीय प्रत्यय न्ह, हु तथा हकारक लोप भऽ जाइछ। जेना-

पूर्ण रूप: छन्हि, कहलन्हि, कहलहुँ, गेलह, नहि।

अपूर्ण रूप: छनि, कहलनि, कहलौँ, गेलऽ, नइ, नञि, नै।

९. ध्वनि स्थानान्तरण: कोनो-कोनो स्वर-ध्वनि अपना जगहसँ हटि कऽ दोसर ठाम चलि जाइत अछि। खास कऽ ह्रस्व इ आ उक सम्बन्धमे ई बात लागू होइत अछि। मैथिलीकरण भऽ गेल शब्दक मध्य वा अन्तमे जँ ह्रस्व इ वा उ आबए तँ ओकर ध्वनि स्थानान्तरित भऽ एक अक्षर आगाँ आबि जाइत अछि। जेना- शनि (शइन), पानि (पाइन), दालि (दाइल), माटि (माइट), काछु (काउछ), मासु (माउस) आदि। मुदा तत्सम शब्द सभमे ई निअम लागू नहि होइत अछि। जेना- रश्मिकेँ रइश्म आ सुधांशुकेँ सुधाउंस नहि कहल जा सकैत अछि।

१०. हलन्त (्) क प्रयोग: मैथिली भाषामे सामान्यतया हलन्त (्) क आवश्यकता नहि होइत अछि। कारण जे शब्दक अन्तमे अ उच्चारण नहि होइत अछि। मुदा संस्कृत भाषासँ जहिनाक तहिना मैथिलीमे आएल (तत्सम) शब्द सभमे हलन्त प्रयोग कएल जाइत अछि।

११. जे शब्द मैथिली-साहित्यक प्राचीन कालसँ आइ धरि जाहि वर्त्तनीमे प्रचलित अछि, से सामान्यतः ताहि वर्त्तनीमे लिखल जाइत अछि- उदाहरणार्थ-

ग्राह्य

एखन
ठाम
जकर, तकर
तनिकर
अछि

अग्राह्य
अखन, अखनि, एखेन, अखनी
ठिमा, ठिना, ठमा
जेकर, तेकर
तिनकर। (वैकल्पिक रूपेँ ग्राह्य)
ऐछ, अहि, ए।

१२. निम्नलिखित तीन प्रकारक रूप वैकल्पिकतया अपनाओल जाइत अछि: भऽ गेल, भय गेल वा भए गेल। जा रहल अछि, जाय रहल अछि, जाए रहल अछि। कर' गेलाह, वा करय गेलाह वा करए गेलाह।

१३. प्राचीन मैथिलीक 'न्ह' ध्वनिक स्थानमे 'न' लिखल जाइत अछि यथा कहलनि वा कहलन्हि।

१४. 'ऐ' तथा 'औ' ततय लिखल जाइत अछि जत' स्पष्टतः 'अइ' तथा 'अउ' सदृश उच्चारण इष्ट हो। यथा- देखैत, छलैक, बौआ, छौक इत्यादि।

१५. मैथिलीक निम्नलिखित शब्द एहि रूपे प्रयुक्त होयत: जैह, सैह, इएह, ओऐह, लैह तथा दैह।

१६. ह्र्स्व इकारांत शब्दमे 'इ' के लुप्त करब सामान्यतः अग्राह्य थिक। यथा- ग्राह्य देखि आबह, मालिनि गेलि (मनुष्य मात्रमे) ।

१७. स्वतंत्र ह्रस्व 'ए' वा 'य' प्राचीन मैथिलीक उद्धरण आदिमे तँ यथावत राखल जाइत अछि, किंतु आधुनिक प्रयोगमे वैकल्पिक रूपेँ 'ए' वा 'य' लिखल जाइत अछि। यथा: - कयल वा कएल, अयलाह वा अएलाह, जाय वा जाए इत्यादि।

१८. उच्चारणमे दू स्वरक बीच जे 'य' ध्वनि स्वतः आबि जाइत अछि तकरा लेखमे स्थान वैकल्पिक रूपेँ देल जाइत अछि। यथा- धीआ, अढ़ैआ, विआह, वा धीया, अढ़ैया, बियाह।

१९. सानुनासिक स्वतंत्र स्वरक स्थान यथासंभव 'ञ' लिखल जाइत अछि वा सानुनासिक स्वर। यथा: - मैञा, कनिञा, किरतनिञा वा मैआँ, कनिआँ, किरतनिआँ।

२०. कारकक विभक्तिक निम्नलिखित रूप ग्राह्य: - हाथकेँ, हाथसँ, हाथेँ, हाथक, हाथमे।' मे' मे अनुस्वार सर्वथा त्याज्य थिक। 'कऽ क वैकल्पिक रूप 'केर' राखल जा सकैत अछि।

२१. पूर्वकालिक क्रियापदक बाद 'कय' वा 'कए' अव्यय वैकल्पिक रूपेँ लगाओल जा सकैत अछि। यथा: - देखि कय वा देखि कए।

२२. माँग, भाँग आदिक स्थानमे माङ, भाङ इत्यादि लिखल जाइत अछि।

२३. अर्द्ध 'न' ओ अर्द्ध 'म' क बदला अनुसार नहि लिखल जाइत अछि, किंतु छापाक सुविधार्थ अर्द्ध 'ङ', 'ञ', तथा 'ण' क बदला अनुस्वारो लिखल जा सकैत अछि। यथा: - अङ्क, वा अंक, अञ्चल वा अंचल, कण्ठ वा कंठ।

२४. हलंत चिह्न निअमतः लगाओल जाइत अछि, किंतु विभक्तिक संग अकारांत प्रयोग कएल जाइत अछि। यथा: - श्रीमान्, किंतु श्रीमानक।

२५. सभ एकल कारक चिह्न शब्दमे सटा कऽ लिखल जाइत अछि, हटा कऽ नहि, संयुक्त विभक्तिक हेतु फराक लिखल जाइत अछि, यथा घर परक।

२६. अनुनासिककेँ चन्द्रबिन्दु द्वारा व्यक्त कयल जाइत अछि। परंतु मुद्रणक सुविधार्थ हि समान जटिल मात्रापर अनुस्वारक प्रयोग चन्द्रबिन्दुक बदला कयल जा सकैत अछि। यथा- हिँ केर बदला हिं।

२७. पूर्ण विराम पासीसँ (।) सूचित कयल जाइत अछि।

२८. समस्त पद सटा कऽ लिखल जाइत अछि, वा हाइफेनसँ जोड़ि कऽ, हटा कऽ नहि।

२९. लिअ तथा दिअ शब्दमे बिकारी -संस्कृतमे एकरा अवग्रह आ बांग्लामे जफला कहल जाइत अछि- (ऽ) नहि लगाओल जाइत अछि।

३०. अंक देवनागरी रूपमे राखल जाइत अछि।

३१. किछु ध्वनिक लेल नवीन चिन्ह बनबाओल जएबाक चाही। जा ई नहि बनल अछि ताबत एहि दुनू ध्वनिक बदला पूर्ववत् अय/ आय/ अए/ आए/ आओ/ अओ लिखल जाइत अछि। आकि ऐ वा औ सँ व्यक्त कएल जाइत अछि।

मैथिली व्याकरणक विशेषता: मैथिलीक विकास बौद्ध सिद्ध आचार्य, फेर कर्णाट आ ओइनवार राजवंश, मल्ल राजवंश आ मध्यकालक मैथिली आ आधुनिक मैथिलीक तथाकथित मानक आ पूब, पच्छिम, उत्तर, दक्षिण भिन्नताक अनुसार परिवर्तित होइत रहल अछि आ मैथिली व्याकरण एहि सभ विशेषताकेँ संग लऽ कऽ चलैत अछि।

मैथिलीमे सभ शब्द स्वरांत, अ वृत्ताकार, ए, य, ऐ, यै, ओ, औ ई सभ स्पष्ट उच्चरित होइत अछि। सम्बन्ध कारक लेल सँ, क, केर (बेशी पद्यमे प्रयुक्त) प्रयुक्त होइत अछि। संज्ञा रूप कम-सरल (एकवचनसँ बहुवचन करबा लेल सभ आदि जोड़ि दियौ) मुदा क्रिया-धातुरूप बेशी होइत अछि। आदर आ अनादरपूर्ण प्रयोगमे क्रियापदमे परिवर्तन होइत अछि। मैथिलीमे क्रियाक रूप कर्ता आ वाक्यक दोसर संज्ञा, सर्वनाम (कर्तासँ सम्बद्ध) द्वारा निर्धारित होइत अछि। मैथिलीमे क्रिया पुरुष-भेदक अनुरूप बदलैत अछि। मैथिलीमे ब द्वारा भविष्यत् कालक अलाबे क्रियार्थी संज्ञा सेहो बनाओल जाइत अछि। ल प्रयुक्त कए कृदन्त कहल, गेल मे परिवर्तन मैथिलीक विशिष्टता अछि।

मैथिलीमे शब्दक भिन्न-भिन्न वर्णपर बलाघात होइत अछि। मैथिलीमे कारक विभक्तिसँ ओना तँ तिर्यक रूप नहि देखबामे अबैत अछि, जेना गामक, मुदा सम्बन्ध कारकमे ई अपवाद अछि, जेना साँझ-साँझुक। क्रियार्थ संज्ञा रूपमे सेहो तिर्यक रूप होइत अछि।

संज्ञा: कोनो वस्तुक नाममे लघु, गुरु आ गुरुतर ई तीन रूप होइत अछि- मनोज्, मनोज, मनोजबा।

लिंग: लिंगरूप सरल अछि। निर्जीवक लिंग पुल्लिंग भऽ गेल अछि। संज्ञामे लिंगसँ शब्दक रूप परिवर्तन नहि होइत अछि मुदा विशेषण आ क्रियामे होइत अछि।

वचन: संज्ञामे वचनक भिन्नतासँ परिवर्तन नहि होइत अछि। लोकनि, रास आदि शब्द जोड़ि कऽ तकर बोध कराओल जाइत अछि। “हम” एकवचन अछि आ “हमसभ” बहुवचन।

विभक्ति: करण -ए- जेना काजे। अधिकरण- आँ-हि- जेना परुकाँ, चोट्टहि।

कारक: कर्ता- रिक्त, कर्म- केँ, करण- सँ, संप्रदान- लए, अपादान- सँ, संबंध-क, केर (पद्यमे), अधिकरण—मे।

सर्वनाम: उत्तम पुरुष- हम, हमे

मध्यम पुरुष- तूँ, तोँ, अहाँ, अपने, ई

अन्य पुरुष-ताहि, तकरा, तकर, हुनका, हुनि, ओकरा, हुनकर, ओकर, हिनका, एकर, हिनकर, जाहि, जकरा, जकर, के, की, ककरा, अपन, कोन, किछु, केदन, केहनदन, कोनादन, एतबा, कतबा, ततबा, ततेक।

क्रियाविशेषण: एतए, कहाँ, कखन, जखन, जाबे, ताबे, आबे, आब, जहिआ, तहिआ, कहिआ, जेना, तेना, एम्हर, ओम्हर, जेम्हर, तेम्हर, भर (दक्षिणभर) । कालबोधक-आइ, काल्हि, परसू, लगले, परुकाँ; स्थानबोधक- जेना आगाँ, पाछाँ; प्रकारबोधक- जेना भने, कने-मने; संयोजक जेना मुदा, आर; सम्बोधन जेना रौ, हौ; समुच्चयबोधक जेना ईह, छी; बलद्योतक जेना –ए; नहि, भरिसक आदि विविध क्रियाविशेषण होइत अछि।

उपसर्ग: अ, अन, अध, अब, दु, नि, भरि, कम, ब, बद, बे, सर।

प्रत्यय: अक्कड़, अंत, इल, आइन, आइ, आउ, आकू, आन, आना, आप, आयत, आर, इन, बाह, आरि, आरी, आहु, औन, इअल, इआ, ई, गर, ऐत, ओड़, ओला, औटी, औती, ओना, औबिल, क, त, औत, आइ, बान, म, बला, हार, हा, ई, कार, बाह, आनी, खाना, खोर, गरी, ची, बाज।

विशेषण: एहिमे आदर आ लिंगक अनुसार परिवर्तन होइत अछि। सिलेबी, गोल, चर्की ई गाए-बड़द लेल प्रयुक्त होइत अछि आ विशेषणसँ प्राणिक बोध भऽ जाइत अछि। पढ़ल (पुल्लिंग) आ पढ़लि (स्त्रीलिंग), मझिला छौड़ा-माँझिल भाइ (आदर) ।

क्रिया: वचन भेद मैथिली क्रियामे नहि होइत अछि। पुरुषक अनुसार क्रियामे भेद अबैत अछि। आदर प्रदर्शनमे सेहो क्रियारूप बदलैत अछि। तिङन्त मे लिंगभेद नहि होइत अछि मुदा कृदन्तमे लिंगक अनुसार क्रियापद बदलि जाइत अछि। क्रिया कारकक अनुसार बदलैत

अछि। एहि प्रकारसँ क्रिया देखि कऽ मात्र ई पता लागत जे कर्ता आदरणीय अछि वा नहि, क्रियाक कर्म कोन पुरुषमे अछि आ आदरणीय अछि वा नहि। क्रियाग चारि रूप जेना स्वयं मरब (मरैत अछि), मारब (मारैत अछि), दोसरासँ मरबाएब (मरबैत अछि) आ कर्मवाचानुसार ककरो कहि कऽ मरबाएब (मरबबैत अछि)- होइत अछि।

धातुरूप- मैथिलीमे लगभग १२२५ धातुरूप दीनबन्धु झा संकलित कएने छथि जे पाणिनीक २००० धातुसँ कनिये कम अछि। आ यैह १२२५ टा धातु मैथिली भाषाक स्वतंत्र अस्तित्वकेँ असगरे बनओने रखबा लेल पर्याप्त अछि। किछु उदाहरण:

छक- अविरोधपूर्वक अन्यक्रियासँ दबब अर्थमे- रूपलाल फुल तोड़बामे सोनेलालसँ छकलाह-जीतल गेलाह।

ठक- परतारब, वञ्चना- ठक बुड़िबककेँ ठकैत अछि- ओकर वस्तु लए लेबाक हेतु भ्रम उत्पन्न करबैत अछि।

डक- अपन उत्कट गन्धक प्रसारण- हीँगु डकैत अछि-अपन तीव्र गन्धक प्रसार करैत अछि।

ढक- मिथ्या अपन अतिप्रशंसा करब- जयलाल ढकैत छथि-अपन मिथ्या अति प्रशंसा बजैत छथि।

बक- अश्रव्य बहुत बाजब- जयलाल बकैत छथि- नहि सुनबाक योग्य कथा बहुत बजैत छथि।

मक- हर्षसँ मालक धावनक्रीड़ा- बाछा मकैत अछि, लीलसँ एम्हर ओम्हर दौगि रहल अछि।

बाल्मीकि द्वारा सुन्दरकाण्डमे मानुषिमिह संस्कृताम्- संस्कृत आ मानुषी दुनू भाषाक ज्ञान हनुमानजीसँ कहबाओल गेल अछि। ज्योतिरीश्वर वर्णरत्नाकरमे लिखै छथि- “पुनु कइसन भाट- संस्कृत, पराकृत, अबहठ, पैशाची, सौरसेनी, मागधी छहु भाषाक तत्वज्ञ” संगहि ज्योतिरीश्वर द्वारा सात “उपभाषक” चर्च भेल अछि। प्राकृतक कैकटा प्रकार छल। ओहिमे मागधी प्राकृत मैथिली आ अन्य पूर्वी भारतक भाषाक विकासमे योगदान देलक। अर्धमागधीमे जैन धर्मग्रन्थ आ पालीमे बौद्ध धर्मग्रन्थ लिखल गेल। कालिदासक संस्कृत नाटकमे संस्कृतक अतिरिक्त अपभ्रंशक प्रयोग गएर अभिजात्य वर्गक लेल प्रयुक्त भेल तँ चर्यापदक भाषा सेहो मागधी मिश्रित अपभ्रंश छल। मैथिली सहित आन आधुनिक भारतीय आर्यभाषा दोसर प्राकृतसँ विकसित भेल सेहो देखि पड़ैत अछि। अपभ्रंश परवर्ती कालमे पूर्वी भारतमे अवहट्ठक रूप लेलक। मैथिलीक विशेषता जाहिमे एकर सभ शब्दक स्वरांत होएब, क्रियारूपक जटिल होएब (मुदा ताहिमे लैंगिक भेद नहि होएब), सर्वनामक सम्बन्ध कारक रूप आदिक रूपरेखा अवहट्ठमे दृष्टिगोचर होएब शुरू भऽ गेल छल।

३३. अभिनय पाठशाला

सारांश

[अभिनय पाठशाला (रंगमंच आ फिल्म लेल)- विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२ क पूर्वपीठिका] (ऐ आलेखक आधार हमर तीन मासमे देल ४० टा संस्कृतमे अनूदित व्याख्यान अछि जे हम श्री अरविन्द आश्रममे ओड़ीसाक प्राइमरी स्कूल लेल चयनित शिक्षक-शिक्षिका प्रशिक्षुकेँ देने रही। हम जतेक हुनका सभकेँ पढ़ेलौं, तइसँ बेसी हुनका सभसँ सिखलौं।

बीजशब्द: अभिनय · पाठशाला · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “अभिनय पाठशाला” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे अभिनय; पाठशाला; नाटकक; कोनो; सिखाउ प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

[अभिनय पाठशाला (रंगमंच आ फिल्म लेल)- विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२ क पूर्वपीठिका]

(ऐ आलेखक आधार हमर तीन मासमे देल ४० टा संस्कृतमे अनूदित व्याख्यान अछि जे हम श्री अरविन्द आश्रममे ओड़ीसाक प्राइमरी स्कूल लेल चयनित शिक्षक-शिक्षिका प्रशिक्षुकेँ देने रही। हम जतेक हुनका सभकेँ पढ़ेलौं, तइसँ बेसी हुनका सभसँ सिखलौं। ओ सभ आब ओड़ीसाक सुदूर क्षेत्रमे पढ़ा रहल छथि। ई अलेख हुनके लोकनिकेँ समर्पित अछि।—गजेन्द्र ठाकुर)

१

२

अभिनय की अछि? बच्चा सभ अपन समान पसारि किछु-ने-किछु काज करिते रहैत अछि। हमर बेटी फुसियाहींक चाह बनबैत अछि आ हमरा दैत अछि। हम सेहो ओकरा फुसियांहीक घुट-घुट पी जाइ छी। मुदा फेर ओ असली सूप अनैए, हम काज कऽ रहल छी, हम बिन मुँह घुमेने घुट-घुट चाह पीबाक अभिनय करै छी, मुदा बेटी कहैए, “ई असली छी” । हमर भक टूटैए आ हम असली दुनियाँमे आबि जाइ छी।

बच्चा नाटकसँ शिक्षा लैए, लोककेँ आ वातावरणकेँ बुझबाक प्रयास करैए।

तखन मन्दिरक उत्सव आ राजाक प्रासादमे होइबला नाटक स्वतंत्र भऽ गेल आ एकर उपयोग वा अनुप्रयोग दोसर विषयकेँ पढ़ेबामे सेहो होमए लागल। दोसर विषयक विशेषज्ञक सहभागिता आवश्यक भऽ गेल। स्वतंत्र रूपेँ सेहो ई विषय अछि आ एकर अनुप्रयोग सेहो कएल जाइत अछि। पारम्परिक नाटक पेशेवर नाटकसँ जुड़त, उदाहरण स्वरूप कएल गेल नाटक, मंचक साजसज्जा, आ असल नाटकक मंचन रंगमंचक इतिहास बनत। मुदा ऐ सँ पहिने रंगमंचक प्रारम्भिक ज्ञानक संग नाटक पढ़बाक आदतिक विकसित भेनाइ सेहो आवश्यक अछि। आ से पढ़बा काल एकर मंच प्रबन्धन आ अभिनयक दृष्टिसँ विश्लेषण सेहो आवश्यक अछि।

राजनैतिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक घटनाक्रमक जानकारी सम्बन्धित प्रस्तुतिक सन्दर्भमे देब आवश्यक होइत अछि। भरतक नाट्यशास्त्रक अतिरिक्त कालिदास, भास आ शूद्रकक नाटकक परिचय सेहो आवश्यक।

रंगमंचसँ जुड़ल लोककेँ लिटल आ ग्रेट ट्रेडिशन, दुनूक अनुभव आ जानकारी हेबाक चाही।

बच्चा नाटक आ रंगमंचसँ जुड़त तँ जिम्मेवार नागरिक बनत, आर्थिक रूपेँ आत्म-निर्भर बनत आ सक्रिय नागरिक सेहो बनत।

२

चैतन्य महाप्रभुकेँ जात्राक संगीत आ नृत्य युक्त वीथी मंचनक प्रयोग संदेशक प्रसार लेल केलन्हि।

नाट्य शास्त्रमे वर्णन अछि जे नाटकक उत्पत्ति इन्द्रक ध्वजा उत्सवसँ भेल। नाट्य शास्त्र नाटककेँ दू प्रकारमे १. अमृत मंथन आ २. शिवक त्रिपुरदाह, मानैत अछि। एहेन लगभग दस टा दृश्य वा रूपकक प्रकार भरत लग छलन्हि (दशरूपक) आ ओइमे नृत्य, संगीत आ अभिनय सम्मिलित छल; आ ऐ दशरूपकक अतिरिक्त श्रव्य गीत सभ छल।

पाँचम शताब्दी ई. पू. मे पाणिनी शिलालिन् आ कृशाश्वक चर्चा करै छथि जे नट सूत्रक संकलन केने रहथि। नट माने अभिनेता आ रंग माने रंगमंच। नटक पर्यायवाची होइत अछि, भरत, शिलालिन् आ कृशाश्व!

मैथिली नाटक जे आइ धरि मात्र नृत्य-संगीतसँ बेशी आ चित्रकला आ दस्तकारीसँ मामूली रूपसँ जुड़ल छल, से आब भौतिकी, जीव विज्ञान, इतिहास, भूगोल, आ साहित्यसँ सेहो जुड़ए, तकर प्रयास हेबाक चाही।

३

विभिन्न औजारकेँ पकड़बाक आ चलेबाक विधि: ओकर ग्रीसिंग आदि केनाइ, ओकरा सुरखित रखनाइ सिखाउ। घरकेँ कोना साफ राखी, साफ आ अव्यवस्थित घरमे अन्तर, कोन चीजकेँ बेर-बेर साफ करऽ पड़ैए, कोनकेँ नै से सिखाउ। कनियाँ-पुतराक निर्माण, तार, फाटल-पुरान कपड़ा, टूटल चूड़ी/ गहना, पुरान साड़ी, रुइया आदिसँ मुँह, आँखि आदिक चित्रण होइत अछि। शरीरक चमड़ा लेल प्लास्टिक आदि वा कपड़ापर रंगक परत लगाउ। ऊन आदिसँ केस बनाएब, वीर, योद्धा आदि बनबैले तलवार लेल काठी आ पैघ जुत्ता, आ फेर मजदूर गुड़िया आदि बनेनाइ सिखाउ। माने सभ तरहक पात्रक निर्माण।

मवेशी पन्हेनाइ, दूध दुहनाइ, लथारसँ बचबाक अभिनय, दही पौरनाइ, लस्सी घोटनाइ, आँखि आ हाथक मिलान ई सभ काल्पनिक रूपेँ सिखाउ। खेल जेना करिया झुम्मरि आदिक परिचय दियौ।

कागचक नाव आ हवाइ जहाज बनेनाइ आ रेखाचित्र बनेनाइ सिखाउ। लिखलकेँ बुझबाक आ विषयकेँ बुझबाक तरीका अछि रंगमंच।

अभिनय- चलनाइ, चलनाइ सेहो कएक प्रकारक होइत अछि, हड़बरा कऽ चलनाइ, कोनो बोझ, कोदारि आदि उठा कऽ चलनाइ, जोशमे, दुखमे चालि आ थाकल ठेहिआयल चालि, नेङरा कऽ चलनाइ, भेड़ चालि, नारा लगबैत चलब, दू-तीन टा संगीक संग चलब, ई सभ बच्चा वा प्रौढ़ अभिनेताकेँ नीक जकाँ सिखाउ। स्पर्श: - गरम वस्तु छूनाइ, ठंढ़ा छूब, कड़गर आ मोलायम वस्तु छूब, फ़ेर तकर प्रतिक्रिया, भय-आसक्ति-तामस-लाज-नै करए बला भाव, जिद्द, दुःख, हँसी (खीखीसँ मुँह बन्न कऽ हँसबा धरि), देखनाइ खुशीसँ, आश्चर्यसँ, विभिन्न प्रकारक दृश्यपर प्रतिक्रिया सेहो देखेबाक आवश्यकता अछि। बजार, स्कूल, घर, सभा आदि कार्य, स्मरण शक्ति, शब्दावली, ध्यान, व्यक्तित्व, क्षमता, विचारधारा, स्वाभिमान, इच्छा, शारीरिक विश्वास प्रदर्शन, उत्साह, स्त्री-पुरुष विमर्श, मनोविज्ञान, कविता, गद्य, गीत, कथा आ प्रहेलिकाक समावेश, तकर स्मरण आ वाचन ऐ सभपर ध्यान देब आवश्यक अछि। अंग प्रचालन, नृत्य, संगीत, हस्त संचालन, कसरत (सम्मिलित रूपेँ), हवाक झोंकाक भीतर आएब, ऐ सँ खिड़की खुजब किछु माथपर खसब आदिक काल्पनिक अनुभव, ऐ सभक अनुभव बच्चा सभकेँ कराउ। वातावरण, गति, रूप, आकार-प्रकारक अनुभव। अपनसँ अलग प्रकारक व्यक्तित्वक अभिनय, ध्वनि आ दृश्यक संबंध आ दुनूक संगे-संग पुनरावृत्ति, वास्तविक आ काल्पनिक दुनूक मंचन, कोनो विषयपर वार्तालाप, किताब, अखबार, वृत्तचित्रक विषय, तात्कालिक विषय, जबरदस्ती यादि कराएब गलत मुदा सुनि-सुनि कऽ मोन राखब नीक। खेल- दूटा दल बना कऽ अभिनय, दल बना कऽ सेहो, एक दल सुतत, दोसर दल नढ़िया/ कौआ बनि उठाएत, श्लोक आदिक समवेत पाठ, ई सभ अभ्यास कराउ।

वर्कशॉपमे: - -किनको कोनो काजमे दिक्कत होइन्ह तँ दोसरकेँ ओकर सहायता लेल कहू, -ककरो सुझावपर आपसमे सलाह लिअ आ मिल कऽ विचार करू, क्षमता अनुसारे काज दियौ, जे नीकसँ काज केलनि तकरा प्रशंसा सेहो भेटबाक चाही, मीठ बाजब सिखाउ, सही बाजब सिखाउ, बजबासँ पहिने अपन बेर अएबा धरि रुकू, निर्देशक पालन करू, बौस्तुकेँ बाँटि कऽ आ मिल कऽ प्रयोग केनाइ सिखाउ, कर्तव्यक बोध कराउ, जिम्मेवारी दियौ, सामूहिक कार्यमे भाग लिअ, अन्य सामाजिक व्यवहार अपनाउ, अवलोकन आ श्रवण द्वारा सम्भाषण आ अभिनय सिखाउ, अनुकरण द्वारा अभिनय सिखाउ, कोनो चीज दोहरा कऽ अभिनय सिखाउ, प्रशंसा/ प्रोत्साहनसँ सिखाउ, मनोरंजन आ आनन्दयुक्त वातावरण बनेने रहू, नमगर व्याख्यान नै दियौ, उदाहरण, अभ्यास आ प्रोत्साहन बेशी कारगर हएत (भाषणक बदला), दण्डसँ बचू, दू बच्चाक तुलनासँ बचू, कोनो बच्चाकेँ दोसर बच्चाक नजरिमे नै खसाउ, बाहरी लोकसँ बच्चा सभक भेँट करबाउ, त्योहार/ उत्सव संग मिल मनाउ, मिलि जुलि कतौ घुमैले जाउ, स्नेहसँ देखू/ मुस्की दियौ/ माथ हिला कऽ समर्थन करू/ पीठ ठोकू/ माता-पिताकेँ ओकर प्रशंसा करू/ मुदा बेर-बेर ओकर प्रशंसा ओकर सोझाँमे नै करू/ चॉकलेट आदिक लालच नै दियौ/ कोनो एहेन चीज नै गछि लिअ जे अहाँ पूर्ण नै कऽ सकी। पाँचसँ कम उमेरक बच्चाकेँ गलतीक कारण नै बताउ- ओतेक बुद्धि ओइ उमेरमे नै होइ छै। मुँहसँ/ इशारासँ, आवाज आ मुँह हिला कऽ गलती करबासँ रोकू, आवश्यकता हुअए तँ छोट-मोट दण्ड, पाँचसँ बेशी उमेरक बच्चाकेँ दियौ, मुदा ओकरा मारियौ नै, लज्जित नै करियौ/ शिकाइत नै करियौ, निर्णय लेबाक आदति दियौ, भागेदारीक सुखक अनुभव कराउ, स्वस्थ प्रतिस्पर्धा सिखबियौ, आत्मनिर्भर भेनाइ सिखबियौ, स्वभावक विषयमे बतबियौ, बात करबाक कला, आपसक

सम्बन्ध, सार्वजनिक सम्पत्तिक आदर केनाइ सिखबियौ, पर्यावरणक ध्यान रखनाइ सिखबियौ, भावनाकेँ ठेस नै पहुँचबियौ, प्रश्न करबाक कला सिखबियौ, जीवनक नायक केहेन हेबाक चाही से बतबियौ, आत्मशक्तिक शक्तिक वर्णन करू, अपन गामकेँ बूझब सिखबियौ, धर्म-राजनीतिक-जातिक गुत्थी बुझबियौ।

अभिनयक पाठशालाक कार्यशाला लेल आवश्यक तत्व:

-शारीरिक आ अभिनय क्षमताक विश्लेषण/ शरीर रचना शास्त्रक ज्ञान/ नाटकक समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ भेद/ नाट्य मंचनक जीबाक साधनसँ रहल जुड़ाव आ प्रभाव/ सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ राजनैतिक वातावरणक अध्ययनक दृष्टिसँ नाट्य मंचक प्रकारक सम्बन्ध, सिखबाक आ बुझबाक कलाक विकास, कोनो अवधारणाकेँ बनेनाइ आ ओकरा बुझि कऽ मंचन केनाइ, अभिनय लेल चलबाक आ बजबाक अभ्यास आ नाटक संस्कृतिक अंग बनि जाए तकर प्रयास, इतिहासक कालखण्ड आ ओइ कालखण्ड सभक नाटकक परिचय, तखुनका कालकेँ मंचपर स्थापित करब आ ऐ लेल इतिहास, भूगोल आ सामाजिक, सांस्कृतिक, रजनैतिक, आर्थिक अवस्थाक परिचय कराउ। पेशागत रंगकर्मक अवलोकनसँ मंचक पाछाँ होइबला काजक विषयमे जानकारी भेटत। नाटकक कालखण्डक अनुरूप मंच आ पहिराबाक अध्ययन, विभिन्न कालखण्डक नाटकक रेकॉर्डिंग वा मंचनकेँ जा कऽ देखबाक आवश्यकता आ ओइ कालक फोटो, चित्रकला आ आन सूचनाक संकलन। संगीत-नाटक अकादेमी, दिल्लीमे ढेर रास डोक्यूमेन्ट्री देखबा लेल आ ढेर रास सान्द्र मुद्रिका किनबा लेल उपलब्ध अछि।

४

कोलकातामे १८५० ई. क आसपास आधुनिक रंगमंच- ब्रिटिश क्लबमे शुरू भेल, मुदा बाहरी लोकक प्रवेश ओतए नै छलै। जात्रा आधारपर- विद्यासुन्दर (प्रेमी-प्रेमिकाक कथा)- बांग्ला खेलाएल जाइ छल, भारतेन्दु सेहो रासलीलाक आधारपर लिखलन्हि। विष्णुदास भावे- सीता स्वयंवर (१८४३ई.), मराठीमे यक्षगण (कर्णाटक) क आधारपर एकटा प्रयोग छल। हबीब तनवीर- नजीर कविपर- आगरा बाजार आ मृच्छकटिकम् (शूद्रकक संस्कृत नाटकक हिन्दीमे), शम्भु मित्र, बी. वी. कारन्थ, के. एन. पणिक्कर, रतन थियाम (चक्रयुध- अभिमन्यु कथापर, गीत-नृत्य आधारित, किछु लोक एकरा बैले बुझलन्हि।), पणिक्कर आ कारन्थ स्वर आ बोलक प्रयोग केलन्हि। कारन्थ-आलापक सेहो प्रयोग केलन्हि। १९५६ ई. संगीत-नाटक अकादेमी द्वारा प्रथम राष्ट्रीय नाट्य उत्सव- कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् (संस्कृत) सँ उत्सवक प्रारम्भ- गोवा ब्राह्मण सभा द्वारा। पणिक्करक मध्यम व्यायोग- भास (संस्कृत) आ थियाम- भास उरुमुगम (मणिपुरी) केलथि जइमे कलाकार नृत्यशैलीमे आस्तेसँ आबथि आ जाथि।

विजय तेन्दुलकरक घासीराम कोतवाल, जकर आधार छल नाना फड़णवीस आ दोसर पुणेक भ्रष्ट ब्राह्मण (दशावतार आधारित पारम्परिक शैलीमे), आ शान्तत- कोर्ट चालू आहे; गिरीश कर्णाडक हयवदन (कथासरित्सागर- यक्षगण आधारित); मोहन राकेशक आषाढ़ का एक दिन, शम्भू मित्र- डायरेक्टर- रवीन्द्रनाथ, इब्सेन (डॉल्स हाउस), उत्पल दत्त- कल्लोल (तरंगक ध्वनि) ई सभ आधुनिक रंगमंचकेँ आगाँ बढ़ेलन्हि।

५

पारसी रंगमंच: - मुम्बइक आर्थिक रूपेँ सम्पन्न पारसी समुदायक, एकरा हाइब्रिड (वर्णशंकर वा मिश्र) रंगमंच कहल जाइत अछि। १८५३ ई. मे एकर प्रारम्भ भेल। १९४० ई. धरि ई नीक-नहाँति चलैत रहल। सिनेमाक आगमनक बाद एकर मृत्यु भऽ गेल। एकरासँ जुड़ल लोक सिनेमाक क्षेत्रमे चलि गेलाह। पारसी नाटकक किछु प्रसिद्ध नाटक जेना इन्दर सभा, आलम आरा आ खोन्ने नहाक (सेक्सपियरक हेमलेट आधारित) सिनेमा बनि सेहो प्रस्तुत भेल।

विषय वस्तु: पारसी नाटकक विषय-वस्तु महाकाव्य आ पुराण आधारित छल। एकर विषय ऐतिहासिक आ सामाजिक छल। सभ बेर पर्दा खसबाक बाद हास्य कणिका खेलाएल जाइत छल। देश-विदेशमे पारसी थियेटरक प्रदर्शन होइत छल। रोमांच आ रहस्य एकर मुख्य अंग छल। चित्रित पर्दाक प्रयोग होइ छल। पर्दा कोनो रहस्य एलापर खसै छल। दर्शकक मांगपर रिटेक सेहो भऽ जाइ छलै आ ई रिटेक कोनो दृश्य वा कोनो गीतक पुनः प्रस्तुतिक रूपमे होइ छल, आ तइ लेल पर्दा फेरसँ उठि जाइ छलै। राजा रवि वर्मा आ पारसी थियेटर दुनू एक दोसरासँ प्रभावित छलाह। पारसी थियेटरक कलाकारक पहिराबा आ मंच सज्जापर राजा रवि वर्माक चित्रकलाक प्रभाव छल आ राजा रवि वर्मा अपन चित्रकलाक विषयक प्रेरणा पारसी थियेटरक दृश्यसँ ग्रहण करैत छलाह।

६

भरतक नाट्यशास्त्र:

नाटक दू प्रकारक लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी, लोकधर्मी भेल ग्राम्य आ नाट्यधर्मी भेल शास्त्रीय उक्ति। ग्राम्य माने भेल कृत्रिमताक अवहेलना मुदा अज्ञानतावश किछु गोटे एकरा गाममे होइबला नाटक बुझै छथि। लोकधर्मीमे स्वभावक अभिनयमे प्रधानता रहैत अछि, लोकक क्रियाक प्रधानता रहैत अछि, सरल आंगिक प्रदर्शन होइत अछि, आ ऐ मे पात्रक से ओ स्त्री हुअए वा पुरुष, तकर संख्या बड्ड बेसी रहैत अछि। नाट्यधर्मीमे वाणी मोने-मोन, संकेतसँ, आकाशवाणी इत्यादि; नृत्यक समावेश, वाक्यमे विलक्षणता, रागबला संगीत, आ साधारण पात्रक अलाबे दिव्य पात्र सेहो रहै छथि। कोनो निर्जीव/ वा जन्तु सेहो संवाद करऽ लगैए, एक पात्रक डबल-ट्रिपल रोल, सुख दुखक आवेग संगीतक माध्यमसँ बढ़ाओल जाइत अछि।

नाट्यधर्मक आधार अछि लोकधर्म। लोकधर्मीकेँ परिष्कृत करू आ ओ नाट्यधर्मी भऽ जाएत।

लोकधर्मीक दू प्रकारक- चित्तवृत्यर्पिका (आन्तरिक सुख-दुख) आ बाह्यवस्त्वनुकारिणी (बाह्य- पोखरि, कमलदह) । नाट्यधर्मी-सेहो दू प्रकारक कैशिकी शोभा (अंगक प्रदर्शन- विलासिता गीत-नृत्य-संगीत) आ अंशोपजीवनी (पुष्पक विमान, पहाड़ बोन आदिक सांकेतिक प्रदर्शन) ।

सम्पूर्ण अभिनय- आंगिक (अंगसँ), वाचिक (वाणीसँ), सात्विक (मोनक भावसँ) आ आहार्य (दृश्य आदिक कल्पना साज-सज्जा आधारित) । आंगिक अभिनय- शरीर, मुख आ चेष्टासँ; वाचिक अभिनय- देव, भूपाल, अनार्य आ जन्तु-चिड़ैक भाषामे; सात्विक- स्तम्भ (हर्ष, भय, शोक), स्वेद (स्तम्भक भाव दबबैले माथ नोचऽ लागब आदि), रोमंच (सात्विकक कारण देह भुकुटनाइ आदि), स्वरभंग (वाणीक भारी भेनाइ, आँखिमे नोर एनाइ), वेपथु (देह थरथरेनाइ आदि), वैवर्ण्य (मुँह पीयर पड़नाइ), अश्रु (नोर ढ़ब-ढ़ब खसनाइ, बेर-बेर आदि), प्रलय (शवासन आदि द्वारा); आ आहार्य- पुस्त (हाथी, बाघ, पहाड़ आदिक मंचपर स्थापन), अलंकार (वस्त्र-अलंकरण), अंगरचना (रंग, मोंछ, वेश आ केश), संजीव (बिना पएर-साँप, दू पएर-मनुक्ख आ चिड़ै आ चारि पएरबला-जन्तु जीव-जन्तुक प्रस्तुति) द्वारा होइत अछि।

दूटा आर अभिनय- सामान्य (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय) आ चित्राभिनय (नाट्यशास्त्र २२म अध्याय): चतुर्विध अभिनयक बाद सामान्य अभिनयक वर्णन, ई आंगिक, वाचिक आ सात्विक अभिनयक समन्वित रूप अछि आ ऐ मे सात्विक अभिनयक प्रधानता रहैत अछि। चित्राभिनय आंगिकसँ सम्बद्ध- अंगक माध्यसँ चित्र बना कऽ पहाड़, पोखरि चिड़ै आदिक अभिनय विधान।

नाट्य-मंचन आ अभिनय: कालिदासक अभिज्ञान शाकुन्तलम् नाट्य निर्देशकक लेल पठनीय नाटक अछि। रंगमंच निर्देश, जेना, रथ वेगं निरूप्य, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं, इति शरसंधानम् नाटयति, वृक्ष सेचनम् रुपयति, कलशम् अवरजायति, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति, शकुन्तला परिहरति नाट्येन, नाट्येन प्रसाधयतः, कहि कऽ वास्तविकतामे नै वरन् अभिनयसँ ई कएल जाइत अछि। नाट्येन प्रसाधयतः, एतए अनसूया आ प्रियम्वदा मुद्रासँ अपन सखी शकुन्तलाक प्रसाधन करै छथि कारण से चाहे तँ उपलब्ध नै अछि, चाहे तँ ओतेक पलखति नै अछि। तहिना वृक्ष सेचनम् रुपयति सँ गाछमे पानि पटेबाक अभिनय, कलशम् अवरजायति सँ कलश खाली करबाक काल्पनिक निर्देश, रथ वेगं निरूप्य सँ तेज गतिसँ रथमे यात्राक अभिनय, इति शरसंधानम् नाटयति सँ तीरकेँ धनुषपर चढ़ेबाक निर्णय, सूत पश्यैनं व्यापाद्यमानं सँ हरिणकेँ मारि खसेबाक दृश्य देखबाक निर्देश, मुखमस्याः समुन्नमयितुमिच्छति सँ दुश्यन्तक शकुन्तलाक मुँहकेँ उठेबाक इच्छा, शकुन्तला परिहरति नाट्येन सँ शकुन्तला द्वारा दुश्यन्तक ऐ प्रयासकेँ रोकबाक अभिनयक निर्देश होइत अछि।

भरतक रंगमंच: ऐ मे होइत अछि- पाछाँक पर्दा, नेपथ्य (मेकप रूम बुझू), आगमन आ निर्गमनक दरबज्जा, विशेष पर्दा जे आगमन आ निर्गमन स्थलकेँ झाँपैत अछि, वेदिका- रंगमंचक बीचमे वादन-दल लेल बनाओल जाइत अछि, रंगशीर्ष- पाछाँक रंगमंच स्थल; मत्तवर्णी- आगाँ दिस दुनू कोणपर अभिनय लेल होइत अछि आ रंगपीठ अछि सोझाँक मुख्य अभिनय स्थल।

अभिनय मूल्यांकन: अध्याय २७ मे भरत सफलताकेँ लक्ष्य बतबै छथि, मंचन सफलतासँ पूर्ण हुअए। दर्शक कहैए, हँ, बाह, कतेक दुखद अन्त, तँ तेहने दर्शक भेलाह सहृदय, भरतक शब्दमे, से ओ नाटककार आ ओकर पात्रक संग एक भऽ जाइत छथि।

नाट्य प्रतियोगिता होइत छल आ ओतए निर्णायक लोकनि पुरस्कार सेहो दै छलाह।

भरत निर्णायक लोकनि द्वारा धनात्मक आ ऋणात्मक अंक देबाक मानदण्डक निर्धारण करैत कहै छथि जे-

१. ध्यानमे कमी, २. दोसर पात्रक सम्वाद बाजब, ३. पात्रक अनुरूप व्यक्तित्व नै हएब, ४. स्मरणमे कमी, ५. पात्रक अभिनयसँ हटि कऽ दोसर रूप धऽ लेब, ६. कोनो वस्तु, पदार्थ खसि पड़ब, ७. बजबा काल लटपटाएब, ८. व्याकरण वा आन दोष, ९. निष्पादनमे कमी, १०. संगीतमे दोष, ११. वाक् मे दोष, १२. दूरदर्शितामे कमी, १३. सामिग्रीमे कमी, १४. मेकप मे कमी, १५. नाटककार वा निर्देशक द्वारा कोनो दोसर नाटकक अंश घोसियाएब, १६. नाटकक भाषा सरल आ साफ नै हएब, ई सभ अभिनय आ मंचनक दोष भेल।

निर्णायक सभ क्षेत्रसँ होथि, निरपेक्ष होथि। नाटकक सम्पूर्ण प्रभाव, तारतम्य, विभिन्न गुणक अनुपात, आ भावनात्मक निरूपण ध्यानमे राखल जाए।

स्टेजक मैनेजर- सूत्रधार- आ ओकर सहायक –परिपार्श्वक- नाटकक सभ क्षेत्रक ज्ञाता होथि। मुख्य अभिनेत्री संगीत आ नाटकमे निपुण होथि, मुख्य अभिनेता- नायक- अपन क्षमतासँ नाटककेँ सफल बनबै छथि। अभिनेता- नट- क चयन एना करू, जँ छोट कदकाठीक छथि तँ वाणवीर लेल, पातर-दुब्बर होथि तँ नोकर, बकथोथीमे माहिर होथि तँ बिपटा, ऐ तरहेँ पात्रक अभिनेताक निर्धारण करू। संगीत-दलक मुखिया- तौरिक- केँ संगीतक सभ पक्षक ज्ञान हेबाक चाही जइसँ ओ बाजा बजेनहार- कुशीलव- केँ निर्देशित कऽ सकथि।

७

मैथिली नाटक: बड्ड रास भाषण मैथिली आ आन नाटकक प्राचीनसँ आधुनिक काल धरि रहल तारतम्यक विषयमे देल गेल अछि। मुदा सत्य यएह अछि जे भारत वा नेपालक कोनो कोणमे रंगमंच आ रूपकक निर्देश भरतक नाट्यशास्त्रक अनुरूपेँ उपलब्ध नै अछि, ओकर पुनः स्थापन भरिगर काज तँ अछिये, मुदा प्रयास नै भेल सेहो नै अछि। बिनु ज्ञानक कालिदासक नाटकक लघुरूप भयंकर विवाद उत्पन्न करैत अछि। लोक नाट्यक नाट्यशास्त्रक अनुरूप निरूपण कऽ उपरूपकक मंचनक सम्भावना मैथिलीमे अछि। विदेह नाट्य (आ फिल्म) उत्सव २०१२ ऐ दिशामे एकटा प्रयास अछि।

३४. मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

सारांश

रामखेलावन मंडार- गाम कटघरा, प्रखण्ड- शिवाजीनगर, जिला समस्तीपुर। हिनके संग बिन्देश्वर मंडल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ - माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मँगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि।

बीजशब्द: नाटक · फिल्मक · समानान्तर · दुनियाँ · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली नाटक आ फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली; नाटक; फिल्मक; समानान्तर; दुनियाँ प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१

मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

रामखेलावन मंडार- गाम कटघरा, प्रखण्ड- शिवाजीनगर, जिला समस्तीपुर। हिनके संग बिन्देश्वर मंडल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ - माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मँगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि। एहि मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-बसन्त, अल्हा-ऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिका पस्तुत कएल जाइत छल।

मैथिली-बिदेसिया- पिआ देसाँतरक टीम सहरसा-सुपौल-पूर्णियाँसँ अबैत छल।

हासन-हुसन नाटिका होइत छल।

रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम- गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला- समस्तीपुर विद्यापति नाटक गोरखपुर धरि जा कऽ खेलाएल छल। एहि मंडली द्वारा प्रस्तुत अन्य नाटक अछि- लौंगिया मेरचाइ, विद्यापति, चीनीक लड्डू आ बसात।

मैथिली नाटकक समानान्तर दुनियाँकेँ सेहो अभिलेखित आ सम्मानित कएल जएबाक प्रयास होएबाक चाही।

२

मैथिली फिल्मक एकटा समानान्तर दुनियाँ

मैथिलीक समानान्तर सिनेमाः

धड़कन मीडिया हाउस प्रा. लि., मिरचैया, सिरहा, नेपालक (नन्दलाल महतोक प्रस्तुति, छायांकन- एम. समिर. निर्माता कमल यादव, लेखक-निर्देशक जितेन्द्र सहयोगी) "माई के ममता"

मैथिली फिल्मक कलाकार: कलाकार- अबधेश कुमार गिरी, प्रियंका शर्मा, राजकुमार महतो, निर्मला महतो, अन्जनी मण्डल, नन्दन ठाकुर, धर्मेन्द्र साह, जितेन्द्र ठाकुर, रिता सहयोगी, निर्मला महतो, सुरजा महतो, प्रविन ठाकुर, दिनेश यादव, दिनेश ठाकुर, प्रेम कुमार सिंह, प्रेम कुमार महतो, अनिल कुमार महतो, ज्ञानेन्द्र कुमार महतो, संजय महतो, दशरथ महतो, बिरेन्द्र महतो, चम्पा देवी, मधुदेवी महतो, पुष्पा कर्ण, गुलजार यादव, रन्जु महतो, इन्दु साह, मनोज कुमार सिंह, राम कुमार साह, गणेश महतो, अरुण चौधरी, अनिल कुमार साह, पवन याद, हेमलाल यादव, सत्य नारायण महतो, गंगा महतो, भरोसी महतो, बैजू बावरा, अख्लेश्वर महतो, ध्रुव कुमार महतो, अनिल कुमार दास, विनोद महतो, सन्तोष साह, विपुल साह, प्रदीप साह, रोशन कुमार घिमिरे, मंचन महतो, जगदीश यादव, विन्देश्वर यादव, देविन्द्र यादव, ब्रह्मदेव महतो, इन्दु मल्लिक, उत्तम महतो, सियाशरण महतो, राधा कुमारी, सरस्वती कुमारी, कृष्णा कु. महतो, आकाश कुमार महतो, शिवम चौधरी, आशीष कुमार महतो

विशेष: रिता कु. कर्ण, मिथलेश यादव, प्रमोद साह, रिना यादव, रेखा महतो, ज्ञानेन्द्र कुमार महतो, एम. समिर, अनिल कुमार महतो, सुरेश यादव, वि. पी. उदासी, सुरेश मण्डल, रामशुभक महतो, देव कुमार महतो, रामदेव पण्डित, अन्जनी मण्डल, महेश कुशवाहा, बिरेन्द्र कबीरपंथी, कुमार कुशे, बाबू राम महतो, धर्मेन्द्र साह, अनिल कुमार महतो, उपेन्द्र नारायण महतो, पवन मल्लिक, नन्दन ठाकुर, दिवाकर ठकुरी।

गीतकार: जितेन्द्र सहयोगी

संगीतकार: गुरुदेव कामत, कमल मण्डल, विश्वनाथ झा।

गायक/ गायिका: गुरुदेव कामत, रामा मण्डल, हरिशंकर चौधरी, विश्वनाथ झा, सर्मिला महतो, मधु गुरुंग।

-"प्रित के बाजी" मैथिली फिल्म

-जी. प्र. गुप्ताक फ़िल्म

-निर्देशक सूर्य साह

-सम्पादक जितु सिंह

- छायांकन कुंदन कुमार पप्पू

-निर्माता जिवछ प्रसाद गुप्ता

-सहनिर्माता राजकुमार गुप्ता

-कथा वस्तु गीत श्याम पासवान

-संगीत शैलेन्द्र वि. क.

-गायक गायिका जिवछ, राजकुमार, सुनिता, प्रभा

-नृत्य राम ठाकुर, अजय ठाकुर

-द्वन्द कैलाश मंडल

मेमोरी मिथिला फिल्मस प्रा. लि. क बैनरपर बनऽ जारहल मैथिली फिचर फिल्म आई लभ जनकपूरक शुभ मूहुर्त एहि श्रावण २५ गतेके होमय जारहल अछि। सभ पत्रकार, कलाकार, साहित्यकार लगायत मैथिली कलाप्रेमी लोकनि सँ आग्रह जे एहि समयमें उपस्थित भऽ कार्यक्रमके गरिमा बढाबी।

कथा÷निर्देशन

निराजन मेहता (मञ्जित)

निर्माता

प्रदिप राज÷कमल मण्डल

संगीत ः

कमल मण्डल

गीत ः विनीत ठाकुर

स्थान ः मधेश मिडिया हाउस

समय ः दिनक १ बजे, श्रावण २५ गते

हनुमान स्थान, अनामनगर,

काठमाण्डू

मैथिली फिल्म माई के ममता के च्यारिटी शो काठमाडौँ मे, कान्तिपुर हल, सितापाइला, काठमाडौँ,

-माई के ममताके लेखक आ निर्देशक जितेन्द्र सहयोगी।

३५. विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव

सारांश

विदेशी पूँजीक भारतमे सोझ निवेश दोसर देशक फर्मसँ मिलि कऽ वा ओकर सम्पत्ति वा ओकर स्टॅाक कीनि कऽ होइत अछि। ओ ऐ लेल स्वॅाट अनेलिसिस करै छथि आ अपन प्रवेशक लेल अपन कम दाममे उत्पादन आ सेहो तीव्र गतिसँ कएक तरहक उपाय द्वारा करबाक क्षमताकेँ देखैत करै छथि। कोन देशमे विदेशी पूँजी निवेश होएत से किछु गपपर निर्भर करैत अछि।

बीजशब्द: विदेशी · पूँजी · निवेशक · भाषापर · सहित · प्रभाव · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विदेशी पूँजी निवेशक भाषापर (मैथिली सहित) प्रभाव” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विदेशी; पूँजी; निवेशक; भाषापर; मैथिली प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

विदेशी पूँजीक भारतमे सोझ निवेश दोसर देशक फर्मसँ मिलि कऽ वा ओकर सम्पत्ति वा ओकर स्टॅाक कीनि कऽ होइत अछि। ओ ऐ लेल स्वॅाट अनेलिसिस करै छथि आ अपन प्रवेशक लेल अपन कम दाममे उत्पादन आ सेहो तीव्र गतिसँ कएक तरहक उपाय द्वारा करबाक क्षमताकेँ देखैत करै छथि। कोन देशमे विदेशी पूँजी निवेश होएत से किछु गपपर निर्भर करैत अछि। चीनमे भारतक बनिस्पत बेशी विदेशी पूँजी आओत कारण भारतमे कार्य करबा लेल ढेर रास लोकतंत्रीय प्रक्रिया सभ छै जे उत्पाद केर दाम बढ़बैत छै। ई एना बूझि सकै छी जापान आ स्विटजरलैण्ड आदि देशमे विदेशी पूँजी कम आएल बनिस्पत स्पेनक। आ ऐ तरहेँ तुलना करी तँ नेपालमे भारतक अपेक्षा तुलनात्मक पूँजी निवेश बेशी आओत। मैथिली आ आन भाषामे विदेशी पूँजी निवेशक आगमनक सम्भावना देखी तँ तुलनात्मक रूपमे मैथिलीमे बेशी पूँजी आओत, नेपाली वा हिन्दीक तुलनामे। आ मैथिलीक सन्दर्भमे नेपालक मैथिलीक भविष्य भारतक मैथिलीक भविष्यक तुलनामे बेशी नीक बूझि पड़त जँ विदेशी पूँजीक गप आओत।

मुदा विदेशी पूँजी मात्र प्रबन्धन वा अर्थशास्त्रक उपरोक्त सैद्धांतिक प्रतिफल टा नै अछि। एतए हम राजनैतिक स्थिरता आ सामाजिक संकट दुनूकेँ सोझाँ पबै छी। भारतक भयंकर लाइसेंस फीस जेना सूचना आ प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे मैथिलीक दुर्दशाक लेल जिम्मेद्वारी लेलक से नेपालमे नै अछि। से ओतए रेडियो आ टी. वी. पर मैथिली नीक दशामे अछि। मुदा राजनैतिक अस्थिरता कखनो काल नेपालमे पूँजी निवेशमे बाधक भऽ जाइए। तहिना नेपालक मैथिलीक सामाजिक आधार विस्तृत अछि मुदा भारतक तेहन नै अछि। से भारतमे मैथिलीक लेल पूँजी निवेशक ई ऋणात्मक गुणक अछि।

जेना ऊपर कहने छी जे कोनो विदेशी पूँजी निवेश होएत तँ पाइ लगेनहार पहिने स्वॅाट एनेलिसिस करत।

मैथिलीक सन्दर्भमे स्वॅाट एनेलिसिस: -

मैथिलीक स्वॅाट Strenghth- Weakness- Opportunity- Threat (SWOT) एनेलेसिस (हमर गुरुजी चमू कृष्ण शास्त्री जीक ऐमे बड़ पैघ योगदान छन्हि।)

मैनेजमेन्टमे एकटा विषए छैक स्वॅाट अनेलिसिस। मैथिलीकेँ ऐ कसौटीपर कसै छी।

S- Strenghth- शक्ति, सामर्थ्य, बल –

मैथिली लेल हृदएमे अग्नि छन्हि, से सभक हृदएमे, परस्पर एक दोसराक विरोधी किएक ने होथु। जनक बीचमे ऐ भाषाक आरोह, अवरोह आ भाषिक वैशिट्यकेँ लऽ कऽ आदर अछि आ ऐ मे मैथिली नै बजनिहार भाषाविद् सम्मिलित छथि। आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्वक कारण सेहो मैथिली महत्वपूर्ण अछि। ऐ भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति छै। बहुत रास संस्था, जइमे किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सेहो सम्मिलित अछि, एकर विकास लेल तत्पर अछि। ऐ भाषाक जननिहार भारत आ नेपाल दू देशमे तँ रहिते छथि आब आन-आन देश-प्रदेशमे सेहो पसरल छथि।

W- Weakness- न्यूनता, दुर्बलता, मूर्खता –

प्रशंसा परम्परा जइमे दोसराक निन्दा सेहो ऐमे सम्मिलित अछि, एकरे अन्तर्गत अबैत अछि- माने आत्मप्रशंसाक।

परस्पर प्रशंसा सेहो ऐमे शामिल अछि। सरकारपर आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान- जकर कारणसँ महाकवि बनबा/ बनेबा लेल कवि समीक्षक जान अरोपने छथि- जखन भाषा मरि रहल अछि। कार्ययोजनाक स्पष्ट अभाव अछि आ जेना-तेना किछु मैथिली लेल कऽ देबा लेल सभ व्यग्र छथि, कऽ रहल छथि। स्वयं मैथिली नै बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखबाक जेना अभियान चलल अछि आ ऐमे मीडिया, कार्टून आ शिक्षा-प्रणालीक संग एक्के खाढ़ीमे भेल अत्यधिक प्रवास अपन योगदान देलक अछि। मैथिलीक कार्यकर्ता लोकनिक कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक लॉबिइंग कर्ताक अभाव अछि। मैथिलीकेँ ऐमे की लाभक बदला अपन/ अप्पन लोकक की लाभ ऐ लेल लोक बेशी चिन्तित छथि। मैथिली छात्रक संख्याक अभाव। उत्पाद उत्तम रहला उत्तर सेहो विक्रयकौशलक आवश्यकता होइत छै। मैथिलीमे उत्तम उत्पादक अभाव तँ अछिए, विक्रयकौशलक सेहो अभाव अछि।

O- Opportunity- अवसर, योग, अवकाश –

विशिष्ट विषयक लेखनक अभाव, मात्र कथा-कविताक सम्बल। मैथिलीमे चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदिक पोथीक अभाव अछि। ताड़ग्रन्थक संगणकक उपयोग कऽ प्रकाशन नै भऽ रहल अछि। छात्र शक्तिक प्रयोग न्यून अछि। संध्या विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नै देल जा रहल अछि। दूरस्थ शिक्षाक माध्यमसँ/ अन्तर्जालक माध्यमसँ मैथिलीक पढ़ाइक अत्यधिक आवश्यकता अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ वर्तमान विषय सभपर पुस्तक लेखन आ अप्रकाशित ताड़ ग्रन्थ सभक प्रकाशनक आवश्यकता अछि। मैथिलीक माध्यमसँ प्रारम्भिक शिक्षाक आवश्यकता अछि। प्रवासी मैथिल लेल भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रमक आवश्यकता अछि।

T- Threat- भीषिका, समभाव्यविपद् –

हताशा, आत्महीनता, शिक्षासँ निष्कासन, पारम्परिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक अभाव, विरल शास्त्रज्ञ, ताड़पत्रक उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री, भाषा शैथिल्य, सांस्कृतिक प्रदूषण आ परिणामस्वरूप भाषा प्रदूषण, मुख्यधारासँ दूर भेनाइ आ मात्र दू जातिक भाषा भेनाइ, शिक्षक मध्य ज्ञान स्तरक ह्रास, राजनैतिक स्वार्थवश मैथिलीक विरोध ई सभ विपदा हमरा सभक सोझाँ अछि।

ई सभटा ऊपर वर्णित बिन्दु प्रबन्धन-विज्ञानक कार्ययोजनाक विषय अछि आ भाषणक नै कार्यक आवश्यकता अछि। सम्भाषण, मैथिली माध्यमसँ पाठन, नव सर्वांगीन साहित्यक निर्माण लेल सभकेँ एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करए पड़त। धनक अभाव तखने होइत अछि जखन सरकारी सहायतापर आस लगेने रहब। सार्वजनिक सहायताक अवलम्ब धरू, दाताक अभाव नै स्वीकारकर्ताक अभाव अछि।

यूनेस्को कहैत अछि जे भारत विश्वक ६ठम सभसँ पैघ पुस्तक प्रकाशक अछि जतए अंग्रेजी लगा कऽ २५ मान्यता प्राप्त भाषामे पोथी प्रकाशन होइ छै। अंग्रेजीक पोथी प्रकाशनमे भारत संयुक्त राज्य अमेरिका आ ग्रेट ब्रिटेनक बाद तेसर स्थानपर अछि। मुदा चौबीस मुख्य भाषामे सँ यूनेस्कोक अनुसार पुस्तक प्रकाशन लेल मात्र १८ भाषा महत्वपूर्ण अछि आ ऐ १८ भाषामे मैथिली नै अछि। मैथिली ऐ १८ मे नै अछि। फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्सक अनुसार मोटामोटी भारतमे १६००० प्रकाशक छथि जे सालमे ७०००० पोथी प्रकाशित करै छथि। ऐमे २१, ००० पोथी अंग्रेजीमे छपैए आ तहूसँ बेशी पोथी हिन्दीमे छपैए। भारतमे साक्षरताक स्थिति जेना-जेना नीक हेतै, तेना-तेना पोथी पढ़ैबलाक संख्यामे सेहो वृद्धि हेतैक। नेपालमे मुख्यतः नेपालीक पोथी छापल जाइत अछि। भारत आ नेपाल दुनू ठाम मैथिली पोथीक प्रकाशन गुण आ संख्या दुनूमे पछुआएल अछि।

सरकारी संस्थाक संग विदेशी निवेशकक सहयोग: आब प्रकाशन उद्योगसँ आगाँ बढ़ी आ सूचना-प्रसार माध्यमक आन क्षेत्र जेना टी. वी., रेडियो आ ऑनलाइन भाषाइ उपकरणपर आउ। एतऽ विदेशी निवेशक हमरा सभ लेल डॉक्यूमेन्टरी, मनोरंजन आ भाषाइ उपकरणक निर्माणमे सहयोग दऽ सकै छथि। सरकार मान्यताप्राप्त भाषा लेल बिना बजारकेँ ध्यानमे रखने खास कऽ मैथिली सहित ओइ छह भाषाकेँ ध्यानमे राखैत काज करए तँ बजारक दृष्टिसँ जे सांस्कृतिक ह्रास सूचना-प्रौद्योगिकी मध्य देखबामे आबि रहल अछि से मैथिलीमे नै आओत। अरबी भाषाकेँ फंडक कोनो कमी नै छै मुदा ओ भाष किए मरि रहल अछि, जखन ओकरा पक्षमे सरकारी कामकाज छै, मस्जिद छै, शिक्षा पद्धति छै। लेबनान, जोर्डन आ इजिप्टक अतिरिक्त सउदी अरब आ आन गल्फ देशक एकरा संरक्षण छै। मुदा पाइ एकरा लेल आफत बनल छै। सभ शेख विदेशसँ पढ़ि कऽ अबैत छथि आ मिश्रित अरबी बजै छथि आ तकरा फैशन मानल जा रहल छै। जै अरबीमे कुराण लिखल गेल आ आइ काल्हिक शैक्षिक “आधुनिक मानकीकृत अरबी- मॉडर्न स्टैण्डर्ड अरेबिक- (एम. एस. ए.)” मे बड्ड पैघ भेद आबि गेल छै। ई “आधुनिक मानकीकृत अरबी” बाजै जाए बला अरबीसँ फराक भऽ गेल अछि आ एकर

काज मात्र सभ अरब देशक बीच सूत्रबद्ध करबा धरि सीमित भऽ गेल छै, जइसँ सभ एक दोसराकेँ बुझि पाबए। मुदा यएह “आधुनिक मानकीकृत अरबी” दृश्य-श्रव्य-प्रिंटमे अछि जे ककरो मातृभाष नै छिऐ वरन व्याकरण पढ़ि कऽ सीखल जाइ छै। विदेशी निवेशककेँ जे सरकार मैथिली लेल मनोरंजक कार्यक्रमकेँ मैथिलीमे डब करबाक लेल सहायता करए तँ कार्टून चैनल सभक कार्यक्रम आ धारावाहिक सभ मैथिलीमे प्रसारित भऽ सकत भने ओकरा विज्ञापन भेटौ वा नै। आ एक बेर जे ई पहिया घुमत तँ मैथिली जीबि उठत। आ ई पहिया तखने घुमत जखन मधुबनी-दरभंगा-सहरसा-सुपौलक ब्राह्मण-कायस्थ-सवर्ण मैथिलीकेँ जीबि उठऽ देताह, अपन ऋणात्मक ऊर्जाकेँ विराम देताह, समाजक सभ वर्ग जे मैथिलीसँ जुड़ि रहल अछि ओइमे बाधा देबाक बदला सहयोग करताह। समाजक राक्षसी प्रतिभायुक्त ई सर्वहारा वर्ग मैथिलीक रक्षा लेल समर्पित हसेरी बनत तखने ई भाषा आब बचत।

मुख्य विदेशी निवेशक: अखन धरि हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मैकमिलन, रैंडम हाउस, पिकाडोर, हैचेट आ रुटलेज हावर्ड बिजनेस पब्लिशिंग अपन शाखा वा भारतीय सहयोगीक माध्यमसँ भाषायी क्षेत्रमे निवेश केने अछि। मुदा से निवेश अंग्रेजी धरि सीमित भऽ गेल अछि। भारतमे प्रकाशन उद्योगमे विदेशी खिलाड़ी अएलाक बाद एकटा पेंगुइन हिन्दीकेँ छोड़ि देल जाए तँ विदेशी निवेश भारतीय भाषामे लगभग नगण्य अछि। एकर कारण सेहो स्पष्ट अछि। भारतीय भाषाक प्रकाशक सरकारी खरीदपर निर्भर छथि आ गएर सरकारी खरीदमे ओ टेक्स्टबुक छपाइपर जोर दै छथि। विदेशी निवेशक सरकारी खरीद आ टेक्स्टबुक छपाइक आधारपर अपन नीति निर्धारित नै करै छथि। मैथिलीक लेल ई वरदान होइतए मुदा जे भविष्यक साक्षरता वृद्धिक अनुमान लैयो कऽ चली तँ नव साक्षर मैथिली पढ़ताह तकर आशा वर्तमान शिक्षा प्रणालीमे मैथिलीक कतिआएल स्थितिकेँ देखैत असम्भवे बुझा पड़ैत अछि, आ मैथिलीमे ने सरकारी लाइब्रेरीक खरीदक आशा छै आ ने टेक्स्ट बुक छपाइक। पाठकक संख्या तखन इन्टरनेटपर बढ़ाबए पड़त, आ जे पाठक कहियो सरकारी शिक्षा प्रणालीमे मैथिली नै पढ़ि सकल छथि तिनका प्रारम्भमे मंगनीमे डाउनलोडक सुविधा देबऽ पड़त। मैथिलीसँ अंग्रेजी आ संस्कृत आ तकर माध्यमसँ आन भाषामे अनुवाद द्वारा सरकारी आ संस्थागत पुरस्कार पद्धति द्वारा कतिआएल पोथी सभकेँ सोझाँ आनए पड़त जइसँ मैथिली साहित्यक उत्कृष्टता विदेशी निवेशकक सोझाँ आबए। आ ओम्हर सरकारी स्कूलक अतिरिक्त पब्लिक स्कूल सभमे सेहो मैथिलीक पढाइ हुअए तइ लेल समर्पित हसेरी तैयार करए पड़त। एक दोसरापर प्रत्यारोप लगेलाक बदला (कायस्थ आ ब्राह्मण द्वारा एक दोसरापर, मधुबनी-सहरसा-मधेपुरा-समस्तीपुर-बेगुसराय, पूर्णियांक लोक द्वारा एक दोसरापर आरोप-प्रत्यारोप जे मैथिलीक दुर्दशा लेल हम नै ओ जिम्मेवार छथि- तइसँ हटि कऽ) एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करए पड़त। आ जनताकेँ जोड़ए पड़त। हा पुरस्कार केलाक बदला जन साहित्यकारकेँ चिन्हबापर, जन नेताकेँ चिन्हबापर, जन विक्रेताकेँ चिन्हबापर अपन जान-जी लगाबऽ पड़त।

विदेशी निवेशसँ छोड़ू भारतीय प्रकाशक जे कहियो ऐ क्षेत्रमे आबऽ चाहलक वा सरकारी खरीदक मशीनरी जे कोनो मैथिलीक पोथी कीनऽ चाहलक वा अनुवाद लेल कोनो स्वयंसेवी संस्था मैथिली पोथी सभक चयन करऽ चाहलक तखनो मैथिली साहित्यक पुरोधा लोकनि द्वारा, जे सलाहकार बनलाह, द्वारा भ्रमित सूची देल गेल, कतेक रास मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि देशक बाहर टपा देल गेल आ मारते रास लोक द्वारा ढेर रास बखेरा ठाढ़ कएल गेल। से सभ कियो भागि गेलाह, बाहरियो आ मैथिली सेवी सेहो। सरकारी खरीद गुणक आधारपर नै भेल, पैरवी-पैगाम आ ढेर रास आन गुणकक आधारपर भेल। विदेशी निवेशकक लग ई सभ ऋणात्मक पक्ष लऽ कऽ हमरा सभ कोना जा सकब।

विदेशी निवेशसँ मैथिलीपर अप्रत्यक्ष प्रभाव: मैथिलीपर विदेशी निवेशक अप्रत्यक्ष प्रभावक रूपमे मैथिली बाजैबलाक संख्याक घटोत्तरी आ मैथिलीक शब्दावलीक ह्रासकेँ राखल जाइत अछि। ओना ई सभ भारत आ नेपालमे पैघ नग्रक अनियन्त्रित विकास आ छोट नग्रक बिना अपन आर्थिक आधारक मात्र जमीनक खरीद-बिक्रीक कारणसँ विस्तारक कारण बेसी भेल अछि। मैथिली भाषीक एके खाढ़ीमे जतेक पड़ाइन भेल अछि से आन वर्गमे तीन-चारि खाढ़ीमे भेल (जेना तमिल वा बांग्लाभाषीकेँ लऽ सकै छी।) । मुदा आनो भाषा-भाषीमे विदेश पड़ाइनसँ भाषाक लोप भेल अछि मुदा संस्कृतिक लोप नै तँ आन वर्गमे भेल अछि आ ने मैथिलीभाषी वर्गमे। मैथिली भाषीकेँ लऽ कऽ दिल्लीमे ई कहबी भऽ गेल अछि जे आन वर्ग पाँच साल दिल्लीमे रहलापर पंजाबी बाजऽ लगै छथि आ हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करऽ लगै छथि मुदा मैथिलीभाषी नै तँ पंजाबी सिखै छथि आ ने हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करै छथि। हँ जखन अहाँ पत्नीसँ मैथिलीमे नै बजबै आ बच्चाकेँ गामक दर्शनो नै करऽ देबै तँ ओ मैथिली बाजब छोड़बे करत। विदेशी निवेश जाइ तरहेँ हिन्दी आ अंग्रेजी कार्टून चैनलमे भेल अछि, ओइसँ मैथिलीटा नै पंजाबीपर सेहो संकट आबि गेल अछि। मुदा ई एकटा फेज छिऐ, आ ई फेज बीस बर्खमे खतम भऽ जाएत। जे परिवार ऐ बीस बर्खमे मैथिली बाजब छोड़ि देताह हुनका हम मैथिली दिस सोझ रूपमे नै घुरा सकब। मुदा सांस्कृतिक सन्निकटताक कारणसँ मैथिलीक परियोजना, अनुवाद, ऑडियो-वीडियो आ संचार परियोजनाकेँ ओ

समर्थन करबे करताह, तकरा सम्मान देबे करताह। आ ई अप्रत्यक्ष रूपमे मैथिली लेल वरदान सिद्ध हएत। आ एकटा पुनर्जागरणक काल अखन चलि रहल अछि तकर पुनरावृत्ति बीस बर्ख बाद हएत। मैथिली युद्धसँ बहार भऽ जीवित निकलत आ सुदृढ़ हएत।

विदेशी निवेशककेँ मैथिलीमे निवेश केलासँ लाभ: विदेशी निवेशक कल्याणकारी कार्य सेहो करै छथि। हुनका मैथिलीक विशेषता बुझाबए पड़त। विश्व प्रसिद्ध वायोलिन वादक स्व. येहुदी मेनुहिन मैथिलीकेँ संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा कहने छलाह (बी. बी. सी. पर विद्यापति संगीत सुनि कऽ, उदय प्रकाश द्वारा सेहो कोट कएल) । विदेशी निवेशकक किछु निवेश यूनेस्कोक भाषा सम्बन्धी नीतिक आधारपर सेहो करैत अछि। आ ई कल्याणकारी निवेश लाभपर आधारित नै होइत अछि, सरकारी खरीदपर आधारित नै होइत अछि, विज्ञापनपर आधारित नै होइत अछि। अन्तर्राष्ट्रीय सर्टिफिकेशनपर आधारित गएर सरकारी संस्था सभक माध्यमसँ मैथिलीमे शैक्षिक पोथी आ मनोरंजन आ स्वास्थ्य आधारित फिल्म डोक्यूमेन्टरीक मैथिली भाषी क्षेत्रमे ग्राम पंचायतक स्कूल सभक माध्यमसँ कएल जाए तँ मैथिली भाषी लोकक हीन भावनामे कमी आओत आ भाषायी क्रान्तिक संगे आर्थिक क्रान्ति सेहो आएत।

३६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

सारांश

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ कैं सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि।

बीजशब्द: जयकान्त · मिश्र · शब्दकोष · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे जयकान्त; मिश्र; मैथिली; शब्दकोष; शब्द प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ कैं सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि। स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छलाह। मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन, लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोषक मात्र दू खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ई दुनू खण्ड मैथिली शब्दकोष संकलक लोकनिक लेल सर्वदा प्रेरणास्पद रहत। विदेह डाटाबेसक आधारपर सोलह खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली अंग्रेजी शब्दकोष जाहिमे मिथिलाक्षर आ अंतर्राष्ट्रीय फोनेटिक रोमन आ देवनागरीमे शब्द आ शब्दार्थ देल गेल अछि जयकांत मिश्र, दीनबन्धु झा-गोविन्द झा, भवनाथ मिश्र-मतिनाथ मिश्र ‘मतंग’ आ युगलकिशोर मिश्रकेँ समर्पित कएल गेल अछि।

मैथिलीमे शब्दकोश निर्माण देरीसँ शुरू भेल आ पहिल गम्भीर प्रयास दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा विद्योतनमे उपस्थित ११२५ टा धातु-रूप अछि (१९४६ ई.) आ फेर हुनके द्वार संकलित मिथिलाभाषाकोषः शब्दकोश (१९५२ ई.) अछि। एहिसँ पहिने भव नाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड आएल (१९१४ ई.), मुदा ओ बड्ड संक्षिप्त रहए आ ओकरा शब्दकोश नहि वरन ग्लॉसरी कहि सकैत छी।

अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली – अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) सेहो अति संक्षिप्त अछि। मैथिली अकादमीक मैथिली शब्दकोश (१९९३, मूल संग्रहकर्त्ता-युगल किशोर मिश्र) पहिल बेर एकटा विराट संकल्पक संग सोझाँ आएल, मुदा संयोजक, सम्पादक, कार्यकारी सम्पादक, सम्पादन उपसमिति आदि-आदि मध्य हुनकर नाम बीचमे मूल संग्रहकर्ताक रूपमे मात्र घोसिआएल देखबामे अबैत अछि।

एहि मध्य जयकांत मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोशक पहिल खण्ड १९७३ ई. मे आ दोसर खण्ड १९९५ ई. मे आएल। एहि दुनू खण्डमे स्वर वर्णमालाक अ सँ औ एतबहि वर्णसँ शुरू भेल शब्दक वर्णन आबि सकल आ क सँ शुरू भेल शब्दक मात्र पहिल पृष्ठ आएल। जयकांत बाबूक मृत्युक संग एकर आगामी खण्ड सभक आएब आब सम्भव नहि अछि।

भव नाथ मिश्रक पुत्र मतिनाथ मिश्र ‘मतंग’ क मैथिली शब्द कल्पद्रुम १९९८ ई. मे आएल जे दोसर बेर एकटा विराट संकलनक संग (युगल किशोर मिश्रक मैथिली अकादमी, पटनाक कोशक बाद) सोझाँ आएल। एहिमे भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड सेहो प्रारम्भमे देल गेल अछि।

दीनबन्धु झाक पुत्र गोविन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश (कल्याणी कोश, १९९९) जयकांत बाबूक कोशक समान द्विभाषी छल जाहिमे मैथिलीक संग अंग्रेजीमे शब्दार्थ अछि। एम्हर २००७ ई. मे उमेश चन्द्र झाक संक्षिप्त चातुर्भाषिक शब्दकोश (मैथिली, संस्कृत, हिन्दी एवं अंगरेजी) सेहो आएल अछि।

एकर सभक अतिरिक्त साझा प्रकाशन, नेपाल द्वारा सेहो एकटा बृहत् मैथिली शब्दकोश प्रस्तावित अछि।

अंग्रेजी शब्दकोशक डाटाबेस आधारपर बनल शब्दकोश सभ:

अंग्रेजी शब्दकोशक ऐतिहासिक महत्त्वक शब्दकोशक अतिरिक्त जे आधुनिक समयमे डाटाबेस/ कम्प्युटरीकृत लिखित-मौखिक कोर्पस (पत्र-पत्रिका, पोथी, मौखिक वार्तालाप, रेडियो-टी. वी. कार्यक्रममे प्रयुक्त आ पाण्डुलिपि आधारित शब्द) आधारित वैज्ञानिक सिद्धांत आधारित शब्दकोश आएल अछि, ओहिमे तीन टा शब्दकोश उल्लेख योग्य अछि:

१. ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी (१९४८ प्रथम संस्करणसँ सातम संस्करण १९९५),

२. लॉन्गमेन डिक्शनरी ऑफ कन्टेमपरोरी इन्गलिश (१९७८ प्रथम संस्करणसँ पाँचम संस्करण २००९) आ

३. कोलिन्स कोबिल्ड एडवान्स्ड लर्नर्स इंग्लिश डिक्शनरी (१९९५ प्रथम संस्करणसँ छठम संस्करण २००८) ।

एकर अतिरिक्त सी. डी. पर आ ऑनलाइन उपलब्ध माइक्रोसॉफ्ट एनकार्टा डिक्शनरी उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग सेहो दैत अछि (ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरीक आ दोसरो कोशक सी. डी. वर्सन उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग दैत अछि) ।

कोनो कोशक उत्कष्टताक निर्धारण ओहिमे सम्मिलित शब्दक संकलनसँ लगाओल जएबाक चाही। पहिल ई जे पाठक जाहि शब्दक ताकिमे छथि से हुनका भेटन्हि आ ई ओहि शब्दकोशक अद्यतन, फील्डवर्क आधारित (मिथिलाक सभ क्षेत्रसँ आ प्रवासी मैथिलक नव-नव प्रयोगसँ) आ नव-नव विषय (जेना अन्तर्जाल, विज्ञान-कला-वाणिज्य, संगणक आ नूतन घटनाक्रम आधारित) कैं समाहित कएने बिना सम्भव नहि। विद्वताक संग तकनीकक प्रयोग विषय वस्तु चयनमे होएबाक चाही, एहिमे खेल-धूप, गप-शप आ लिखित साहित्यक संग मौखिक साहित्य सेहो रहए। तखन ताहि शब्दक परिभाषा सेहो ततबे महत्वपूर्ण- ओहि चयनित शब्दक भाषायी विश्लेषण ततेक सूक्ष्मतासँ होएबाक चाही जाहिसँ भाषाक कोनो सन्दर्भ/ कोनो अर्थ छूटि नहि जाए। एहि क्रममे ई उल्लेखनीय अछि जे दीनबन्धु झाक ११२५ टा धातुरूपकैं जे आर कनेक परिवर्धित आ संशोधित कए देल जाए आ एकरा लगभग २००० आधारभूत शब्द धरि बढ़ा देल जाए तँ ओ सभ मैथिली भाषी, जिनका भाषापर नीक पकड़ नहि छन्हि, ५००००-१००००० शब्दक मैथिली कोशक सभ शब्दक अर्थ आ संदर्भ बुझि सकताह।

कोशमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे होएबाक चाही। एतए मौखिक उच्चारण आ प्रयोगपर ध्यान सेहो आवश्यक अछि। पाठककैं ईहो बुझाऊ जे कोन शब्द बेशी आ कोन शब्द कखनो-काल प्रयुक्त होइत अछि। लोकोक्तिक प्रयोग सेहो उदाहरण दए ठाम-ठाम होएबाक चाही।

संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय एहि सभक संकलन शब्दक संग आवश्यक। कोनो शब्द-मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक जुड़ब आ समान वा तेहन-सन अर्थमे प्रयुक्त होएब सेहो देखाएब आवश्यक।

व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, सेहो स्थान-स्थानपर करू। वाक्यमे प्रयोग अनुसारेँ शब्दक अर्थमे परिवर्तन दर्शित करू।

कोश मध्य बुझेबाक लेल चित्रक प्रयोग सेहो आवश्यक। आधुनिक वैज्ञानिक शब्दकोशमे उच्चारण भिन्नताक निरूपण सेहो होएबाक चाही।

मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग (जेना ब्राह्मण कहैत छथि- दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट; मुदा तथाकथित जाति-व्यवस्थाक निचुलका सीढ़ीक लोक कहैत छथि- दस बाभन एक पेट, दस राड़ दस पेट), यदि एहन प्रयोग उपलब्ध अछि, सेहो दर्शित करू।

शब्दक वाक्यमे प्रयोग- अर्थ मात्र किछु शब्दमे देने बहुत रास गलत प्रयोग देखबामे अबैत अछि आ एकर निराकरण शब्द अर्थक संग पूर्ण वाक्यमे प्रयोगसँ कएल जा सकैत अछि (कवितामे सेहो पूर्ण वाक्यक प्रयोग कएल जा रहल अछि से ओतहुसँ उदाहरण संभव) ।

तंत्रांश-शब्दकोश- सॉफ्टवेयर (तंत्रांश) आधारित कोशक विकास होअए, जाहिसँ एकर सी. डी. वा अन्तर्जालपर निरूपण भऽ सकए आ ध्वन्यात्मक-मौखिक उदाहरण देल जा सकए।

फोनेटिक ट्रांसक्रिप्शन- अन्तर्राष्ट्रीय ध्वन्यात्मक वर्णमाला -इन्टरनेशनल फोनेटिक अल्फाबेट-आइ. पी. ए.- सभसँ लोकप्रिय फोनेटिक ट्रांसक्रिप्ट लिपि अछि आ एकर प्रयोग द्विभाषी वा बहुभाषी शब्दकोशक संदर्भमे करब आवश्यक।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोश:

जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोशक प्रथम खण्डक आत्म-निवेदनमे जयकान्त मिश्र लिखैत छथि जे- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ भाषाविज्ञानवेत्ता डॉ. सुभद्र झा (वाराणसेय संस्कृत विश्वविद्यालयक भूतपूर्व पुस्तकालयाध्यक्ष) कोशक प्रधान सम्पादकक कार्यभार लेबासँ तहिना विरक्ति देखाओल जहिना १९६५ ई. मे साहित्य अकादमीमे मैथिलीकेँ भारतक सत्रहम साहित्यिक भाषाक रूपमे स्थान देआबए काल हुनका भेलन्हि। सुभद्र झाक “फॉर्मेशन ऑफ द मैथिली लंग्वेज” (१९५८ ई.) क प्रयोग मैथिली शब्दक व्युत्पत्तिक टिप्पणी देबामे जयकान्त मिश्र प्रयोग केने छथि- जेना सुनीति कुमार चाटुर्ज्या जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोशक प्रथम खण्डक उपोद्घातमे लिखैत छथि। जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोश आर बहुत रास कारणसँ एकटा कीर्तिमान स्थापित करैत अछि। जेना: -

१. तत्कालीन शब्दावलीक संयोजन: - दीनबन्धु झाक-मिथिलाभाषा शब्दकोश, बदरीनाथ झाक-मैथिली-संस्कृत शब्दकोश, सर जार्ज ए. ग्रिअर्सनक-बिहार पीजेन्ट लाइफ आ मैथिली शब्दकोश-मैथिली क्रेस्टोमएथी-१८८२, डॉक्टर श्री सुभद्र झा सर्वानन्दकृत अमरकोशटीका, म. म. डॉक्टर उमेश मिश्र, रुचिपति, जगद्धर, विद्यापति शब्दावली, एन. एन. वसु सम्पादित चर्यागीतिसँ शब्दावली, सुनीति कुमार चाटुर्ज्या आ बबुआजी मिश्र सम्पादित वर्णरत्नाकरसँ शब्दावली, खगेन्द्रनाथ मित्र ओ मजुमदार सम्पादित विद्यापति पदावलीसँ शब्दावली, सर जार्ज ग्रिअर्सन सम्पादित कृष्णजन्मसँ शब्दावली, सुरेन्द्र झा “सुमन”, ऋद्धिनाथ झा आ रामेश्वर झा सम्पादित कहबी संग्रह।

२. संदर्भ रूपमे प्रकाशित पोथी आ प्रकाशित हस्तलिखित पाण्डुलिपिक प्रयोग: ज्योतिरीश्वरक १३२४ ई. क मैथिली धूर्तसमागम, विद्यापतिक १४१५ ई. क गोरक्षविजय, कान्हारामक १८४२ ई. क गौरी स्वयम्बर, लोचन, गोविन्ददास, चन्दा झा, हर्षनाथ झा, लालदास, हरिमोहन झा, सुमन, यात्री आदि।

३. दीर्घायु समस्त पत्र-पत्रिकाक संदर्भ रूपमे प्रयोग: मिथिला मिहिर, मिथिला मोद, वैदेही।

४. ध्वनि-कॉर्पोरा- टेपरेकार्डरसँ शब्द सभक वाच्य वा उपभाषाक रूप सभक संग्रह, खेती आ मल्लाहक शब्दावलीक संग्रह मुदा एहिमे धान-आम-मूलग्राम-पाँजि सभक शब्दावली छूटि गेल।

५. शब्द सभक प्रथम-प्रयोगक कॉर्पोराक आधारपर निर्धारण आ तकर शब्दकोशमे प्रदर्शन एहिमे मिश्र टोलाक श्री शशिनाथ चौधरीक योगदान।

६. राजाराम टाइप फाउन्ड्री प्रेस, कटघर, इलाहाबाद द्वारा बनाओल म. म. डॉ. उमेश मिश्रक निर्देशनमे तिरहुता काँटाक प्रयोग कोशमे भेल, संगहि रोमन फोनेटिक ट्रांसक्रिप्शनक प्रयोग उच्चारण बोध लेल कएल गेल।

७. जयकान्त मिश्रक कोशमे डॉ सर गंगानाथ झा, डॉ. अमरनाथ झा आ म. म. डॉ. उमेश मिश्र ग्रंथ-पत्रिकाक संकलनमे सहयोग देलन्हि। प्रो. हरिमोहन झा, बाबू श्री लक्ष्मीपति सिंह, प्रो. बुद्धिधारी सिंह रमाकर, प्रो. सुरेन्द्र झा “सुमन” आ काञ्चीनाथ झा “किरण” अवैतनिक परामर्शदाताक कार्य कएलन्हि। सहायक सम्पादकक कार्य कएलन्हि- श्री राघवाचार्य शास्त्री, डॉक्टर उमाकान्त तिवारी, श्री जयगोविन्द मिश्र, प्रो. सुशील चन्द्र चौधरी, श्री जीवेश्वर झा, श्री यशोधर झा, डॉक्टर किशोरनाथ झा, प्रो. रुद्रकान्त मिश्र

८. व्याकरण विवेचन: शब्दक अर्थक प्रयोगक अनुसारेँ १.२ कए विवरण, व्याकरण-विवरण-शब्दक स्थिति लुप्त, काव्य प्रयोग, शब्दक देशज-विदेशज व्युत्पत्ति, तुलनात्मक शब्द-विलोम-पर्यायक ठाम-ठाम उदाहरण, शब्दक अर्थ निर्दिष्ट करबाक लेल कॉर्पोरासँ लेल ओहि शब्दयुक्त वाक्य-प्रयोग।

दीनबन्धु झाक मिथिलाभाषा विद्योतनक धातुपाठ मे अर्थक व्युत्पत्ति बड्ड नीकसँ देल गेल अछि, जेना- (१०) डिक- अधिकक अँटकब। ई जगह गहीँड़ अछि तेँ एहिठाम पानि डिकल अछि- अधिक अँटकल अछि। मिथिला भाषा विद्योतनक दुनू खण्डमे उपस्थित ४३ टा सारणी मे मैथिली शब्दक व्युत्पत्ति विस्तृत रूपमे देल गेल अछि दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा कोषक भूमिकामे सेहो ढेर रास शब्दक अन्वय, उच्चारण, लिङ्ग-निर्णय आ व्याकरणक विवेचन कएल गेल अछि। मूलकोषमे सेहो सभ शब्दमे तँ नहि, मुदा अधिकांशमे शब्द,

ओकर सन्धि-विच्छेद, व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न-रूप आ शब्दक संग क्रियादि जुटबासँ अर्थक भिन्नता सेहो देखाओल गेल अछि। मैथिली अकादमी, पटनाक युगल किशोर मिश्र बला शब्दकोशमे शब्द, तकर बाद व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली – अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) मात्र रोमन आ फोनेटिक रोमन वर्णमालाक प्रयोग करैत अछि आ मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ नेपाली आ अंग्रेजीमे दैत अछि। तकर बाद किछु संरचनात्मक टिप्पणीक बाद नेपाली आ अंग्रेजी इंडेक्स देल गेल अछि जाहिमे नेपालीसँ मैथिली आ अंग्रेजीसँ मैथिली अर्थ देल गेल अछि। भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशमे मिथिलाभाषामे शब्द, फेर ओकर हिन्दी आ संस्कृतमे अर्थ, तखन लिङ्ग आ अन्तमे संस्कृतमे ओकर प्रमाण देल गेल अछि। मति नाथ मिश्र “मतंग” क मैथिली शब्द कल्पद्रुममे मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ आ अन्तमे शब्द मैथिली, देशज, तत्सम वा तद्भव अछि तकर वर्णन देल गेल अछि। गोविन्द झाक कल्याणी कोश- अ मैथिली-इंग्लिश डिक्शनरी मे प्रस्तावनामे देल किछु संरचना आ उच्चारणक विश्लेषणक संग एपेन्डिक्समे क्रियापदीय प्रत्यय, नाम-प्रत्यय आ एकक, सौरमास ओ नक्षत्र, चान्द्रमास, विभिन्न संवत, भार-मान, नपना, रैखिक मान, वर्ग-मान, मुद्रा आ प्रकीर्ण गणनाक सारणी देल गेल अछि। मूल कोशमे देवनागरीमे मैथिली शब्द, फेर रोमन फोनेटिक वर्णमालामे ओकर ट्रांसक्रिप्शन, व्याकरणगत विशेषता आ मैथिली आ अंग्रेजीमे तकर अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न अर्थ आ संदर्भ सेहो देल गेल अछि। उमेश चन्द्र झाक चातुर्भाषिक शब्दकोशमे मैथिली शब्द आ तकर संस्कृत, हिन्दी आ अंग्रेजी अर्थ देल गेल अछि। सी-डैकक तंत्रांश-शब्दकोश मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शनरीमे मैथिली टाइप केलासँ अंग्रेजीमे अर्थ आ अंग्रेजी टाइप केलासँ मैथिलीमे अर्थ अबैत अछि। विदेह डाटाबेसक आधारपर गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अछि आ प्रिंट आ ऑनलाइन, (http: //www.videha.co.in/ पर) दुनू रूपमे उपलब्ध अछि आ निरन्तर संवर्धनशील अछि। एहि कोशमे अन्तर्जाल, संगणक आ विज्ञान शब्दावली आन आधुनिक विषयक संग सम्मिलित कएल गेल अछि। एखन मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोषमे अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेटमे मैथिली शब्द, फेर ओहि शब्दक देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ट्रांसलिटेरेशन, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ आ व्याकरणगत विशेषता देल गेल अछि। विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोशमे अंग्रेजी शब्द आ ओकर व्याकरणगत विशेषता, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ देल गेल अछि। सम्पूर्ण डाटाबेस प्रिंट भेलाक बाद कोशमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे, संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय शब्द, मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, कोश मध्य बुझेबाक लेल चित्रक प्रयोग, मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग, शब्दक वाक्यमे प्रयोग (विदेह कॉर्पोरासँ) क संग दोसर संस्करणमे तंत्रांश-शब्दकोश सी.डी.मे उपलब्ध करेबाक योजना अछि, जाहिमे ध्वन्यात्मक रेकार्डिंग रहत। ओना http: //www.videha.co.in/ केर आर्काइवमे उच्चारणक ऑडियो फाइल डाउनलोड/ श्रवण लेल ऑनलाइन राखल गेल अछि।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोश: विवेचना:

कोनो शब्दकोश लिखल नहि जाइत अछि वरन संग्रीहीत कएल जाइत अछि। मुदा जे विषय नव अछि तखन ओहि लेल मौखिक-साहित्यिक परम्पराकेँ देखैत शब्दक निर्माण करए पड़त आ विदेशज शब्दकेँ सेहो ठाम-ठाम स्वीकार करए पड़त। ओना शब्दकोशक लक्ष्य मात्र संग्रहण अछि मुदा ई देखल जाइत अछि जे नहि चाहियो कऽ ई मानकीकरण प्रसंगकेँ आगाँ बढ़बैत अछि आ लोक-व्यवहारकेँ प्रभावित करैत अछि। एहि कारणसँ कोशक सम्पादकक दायित्व आर बढ़ि जाइत अछि।

एहि तरहेँ श्री जयकान्त मिश्रक शब्दकोश आधुनिक कोनो शब्दकोशसँ कोनो तरहेँ न्यून नहि अछि। ई एक तरहेँ एक डेग आगाँ बढ़ैत अछि, जखन शब्दक अर्थ निर्दिष्ट करबाक लेल कॉर्पोरासँ लेल ओहि शब्दयुक्त वाक्य-प्रयोगमे प्राचीन (८म शताब्दी सँ १३२४ ई. पर्यन्त-चर्यापद, ज्योतिरीश्वर आदि), पूर्वकालीन मध्ययुग (१३२४ ई-१५०० ई., विद्यापति आदि), मध्ययुग (१५०० ई-१८६० ई., लोचन गोविन्ददास आदि) आ आधुनिक मैथिली (१८६० ई.-१९६० ई., चन्दा झा, हरिमोहन झा आदि) सँ संदर्भ सहित उदाहरण दैत अछि।

जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोश आ जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोश एहि तरहेँ एक दोसराक पूरक भए सकत जखन हुनकर कार्यकेँ आगाँ बढ़ाओल जाए आ पूर्ण कएल जाए।

३७. पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली

सारांश

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावलीक विवरण 11000 पंजी तालपत्रक जे. पी. जी. इमेजक अंवेषणक बाद संकलित कएल गेल अछि जे नीचाँ वर्णित...

बीजशब्द: पञ्जी · प्रबन्धमे · उपलब्ध · किछु · आधिकारिक · सामाजिक · शब्दावली · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय "पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावली" विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे पञ्जी-प्रबन्धमे; उपलब्ध; आधिकारिक; सामाजिक; शब्दावली प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

पञ्जी-प्रबन्धमे उपलब्ध किछु आधिकारिक आ सामाजिक शब्दावलीक विवरण 11000 पंजी तालपत्रक जे. पी. जी. इमेजक अंवेषणक बाद संकलित कएल गेल अछि जे नीचाँ वर्णित अछि।

सांधिविग्रहिक, धर्माध्यक्षक, चतुर्वेदाध्यायी, याज्ञिक, पार्णागारिक, वार्तिक, महामत्तक, भाण्डागारिक, स्थानान्तरिक, राजवल्लभराजवल्लभ, स्थानान्तरिक, राउल, खनतरी, कापनि, फूलहर, सन्धि बिग्रहिक, पुरोहित, कुल छेत्रोपार्यक, आवस्थिक, कन्टकोद्धार्करक, ज्योतिविर्वद, पदांकित, पण्डित राज पदांकित, उपाय कारक, एकान्तरिक, माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर, सिहौली माण्डरसँ पुरन्दर सुत वैदिक गोनू झा, नर वलि. सँ घनश्याम सुत वैदिक गणपति मिश्र, खौआलसँ कमल सुत म. गुणाकर वैदिक पिताम्बर, सिंहौलि माण्डरसँ वैदिक विश्वम्भर सुत म. कुलपति म. चतुर्भुज, दरिहरासँ रघुनाथ सुत म. माधव वैदिक विरेश्वर, दरिहरासँ म. माधव सुत वैदिक भगीरथ, दरिहरासँ कीर्तिनाथ सुत वैदिक धननाथ, दरिहरासँ रामसुत वैदिक भगीरथ, सकराढ़ीसँ नकटू सुत वैदिक चन्दरक्त, माण्डर सँ वै. अच्छपति सुत वैदिक जीवपति, सोदरपुरसँ वैदिक होरी, दरिहरा सँ राम द्वौ० विभाकर सुतौ वैदिक विश्वम्भर, सकराढ़ीसकराढ़ी सँ हरिश्वर द्वौ० वैदिक: विश्वम्भर, माण्डर सँ वैदिक विश्वम्भर, कमल सुतो कृष्णदेव महो गुणाकरौ (१०९//०४) वैदिक (१०९/०४) पीताम्बरा:, माण्डरसँ माण्डरसँ भैरव द्वौ० वैदिक विधूप्र०, वैदिक युदनाथ:, वैदिकवैदिक विरेश्वर, वैदिकवैदिक भगीरथ, वैदिक विश्नाथ, वैदिक घननाथ, वैदिक चन्द्रदत्त, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ, वैदिक अच्छपति, वैदिकवैदिक बलदेव, दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ दौहित्र दौ, वैदिकवैदिक कलाघर, दरिहरा सँ राम सुत वैदिक भगीरथ दौ, वैदिक राजा महो गोशाई, वैदिक मुकुन्द, बेचू सुतो वैयाकरण धरनीघर वैदिक वनखण्डीकौ, वैदिक नित्यानन्द, वैदिक सोनी, वैदिक बद्रीनाथ, वैदिकवैदिक विधु, हरिअम सँ मुक्तिनाथ द्वौ०वैदिक तुलानन्द, वैदिक चन्द्रदत्त प्रेमदत्त, सोदरपुरसोदरपुर सँ चित्रधर द्वौ० वैदिक धननाथ, वैदिकवैदिक अमोदयानाथ, वैदिक हेमागंद, वैदिक गणपति वैदिक कुलपतिको, बैदिक गुणपति सुता आँखी वैदिक कलाघर, अपरा वैदिक कुलमणि, वैदिकवैदिक आदिनाथ, वैदिक कुलपति, ज्यो., वैयाकरणवैयाकरण भैरवदत्तौ, वैयाकरण अमृतनाथ बुद्धिनाथ देवनाथ, वैयाकरण राम:, वैयाकरणवैयाकरण राधनाथ, वैयाकरण परमेश्वर, सरिसबसरिसब सँ झोटह द्वौ०वैयाकरण नन्दीपति, वैयाकरण गौरीशंकर, वैयाकरणवैयाकरण रज्जे, खण्डबला सँ भगीरथ द्वौ. महा वैयाकरण दिनबन्धु सुता वैया. जीवनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथ, सकुरीपाली सँ वैयाकरण श्रीदत्त सुत वै. मनभरन दौ, वैयाकरण रूपनाथ, वैयाकरणवैयाकरण मतिनाथा:, कविकवि हेमनाथ सुता वैयाकरण महिनाथ, वैयाकरण रामनाथ उँमानाथ:, वैयाकरणवैयाकरण खुशिहाल, वैयाकरण भवानीदत्त देवीदत्ता, वैयाकरण हेमनाथ दौ, वैयाकरण हरिनाथा:, वैयाकरणवैयाकरण ऋद्धि, छक्कनछक्कन वैयाकरण, महो चण्डेश्वर सुतो वैयाकरण (२७६//०७) शिवेश्वर:, खौआल सँ वैयाकरण मोदनाथ दौ, वैयाकरण (२०१/०४) मोदनाथ, वैयाकरण गोपाला:, वैयाकरणवैयाकरण मेघनादौ, वैयाकरण चंलल:, वैयाकरण ईश्वरीदत्त सुतो, वैयाकरणवैयाकरण हर्षनाथ दौ, वैयाकरण (०४/०६) ब्रजगोपाल जयगोपाल वैयाकरण प्राध्यापक (Calcutta university Maithily Deptt.) खूद्दीका महिषी पाली सँ दिनानाथ सुत शक्तिनाथ दौ, वैयाकरणवैयाकरण महावीर, वैयाकरण हरिनारायणा, वैयाकरण नन्दीपति, वैयाकरण एकनाथ, कुजौली सँ गंगादत दौ वैयाकरण रघुनाथ, हरिअम सँ तुलसीदत्त द्वौ वैयाकरण खुद्दी, अपरावैयाकरण सुता वैयाकरण भैये सुग्गे, वैयाकरण चिन्तामनि, देयाम सँ वैयाकरण मधुकर, पिताम्बर सुतो वैयाकरण पद्मनाम, वैयाकरणवैयाकरण रवूदीका, हरिअम सँ हिंगु द्वौ वैदिक सोनी सुता वैदिक कुलमणि वैदिक वंशमणि कमलमणि परशमणि (२८०/०१) हर्षमणिका: दरिहरा सँ वैदिक जीवनाथ दौ, पाली सँ श्रीनाथ द्वौ पुरन्दर सुतो वैदिक गोनू वैदिक हेमाड्गदो, वैदिक घनश्याम, खौआलसँ काशीपति द्वौ वैदिक घनश्ययाम (१६०/०५) सुतो वैदिक गणपति वैदिक ब., वैदिक गणपति सुता ऑखी वैदिक

कलाधर (२६८/०९) रकनी कविभानु वैदिक, वैदिक केशव, वैदिक गोशाइका:, वैदिकवैदिक गोशाँई, सरिसब सँ चतुर्भूज द्वौ० वैदिक गिरधारी, आदिनाथा: ब., माण्डरसँ वैदिक विश्वम्मर, आगमाचार्यक म० म० उपा० (९६//०४) देवनाथ, आगमाचार्यक देवनाथ, एकहरा सँ आगमाचार्यक महो मुकुन्द, कन्टकोद्धार्कारक म०म० मधुसूदन, तर्क पत्र्चानन म० म० उपा० गोपीनाथ, विरेश्वर कविशेखर इति प्रसिद्ध, कटाइ सँ कवि केशरी म०म० भीम, माण्डर सँ कविराज शुभंकर, वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ, सोदरपुरसोदरपुर सँ ढाका कवि महामहो गणपति, कुजौली सँ महो कृष्ण दाशसुत कवि गंगादाश, करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रति देव, दरिहरा सँ कविराज विसव, करमहा सँ कविन्द्र पदांकित रतिदेव, टकवाल सँ कविराज लक्ष्मीपाणि, पाली सँ कविशेखर पदांकित यदुनाथ, विस्फी सँ कवि भूपति पदांकित सोमेश्वर, माण्डर सँ कविशेखर पदांकित महो यशोधर, जगति सँ महामहोकवि रत्न पदां. होरे, पाली सँ घौघे सुत कविराज कृष्णपति, वलियास सँ कविशेखर पदांकित चन्द्रनाथ, वलियास सँ कवि मणि पदांकित पशुपति, गंगोली सँ कविराज गयन, ए सुतो महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर, सोदरपुरसँ कविराज महो भानुदत्त, सोदरपुरसोदरपुर सँ कवि जयराम, तपोवन सँ कवि धनेश्वर, अलय सँ शान्तिकरणीक रूद, नरवाल सँ शान्तिकरणीक मधुकर, कलिगाम सँ शान्तिकरणीक भोगीश्वर, माण्डरसँ शान्तिकरणीक पाँखू, दानाधिकारी मोदी हल्लेश्वर, जगतिसँ मिमांशक म. म. मिरुस, (मिमांशक) हरि देवधरापत्य-सिंघिया, मिश्रा (मिमांशक) सुधाधरपत्य उसरौली, मिश्र (मिमांशक) लाखू भूड़ी गणेश्वर-परमगढ़, मिमांशक विभू, मिमांशक माधव, भवेश्वर सुता मिमांशक रूद, नोने सुता मिमांशक मिसरू, राम सुतो मिमांशक योगदत्त:, मिमांशक मेघानाथ, मिमांशक मणि, मिमांशक जयदेव, मिमांशक धरनी, मिमांशक योगदत्त:, करमहा सँ मिमांशक योगदत्त, जगतिसँ मिमांशक म. म. मिरुस, जनार्दन सुत नैयायिक दुर्गाघर, नैयायिक महौ दुर्गाधर, षट्शास्त्री नैयायिक दर्शनशास्त्रज्ञ उदयकान्तो, दिघो सँ देवागारिक बाटे, दिघो सँ देवागारिक बटेश्वर, पार्णागारिक विरेश्वर, दिघोयसँ पार्णागारिक जानू दत्त, पार्णा गारिक स्थितिदत्त, धर्माधिकरणिक जानुदत्त, पबौली सँ धर्माधिकरणिक रूद, गंगोली सँ धर्माधिकरणिक जान्हव, धर्माधिकरणिक महामहो नरहरि, धर्माधिकरणिक गदाधर, सुरगन सँ धर्माधिकरणिक भास्कर, करिअमसँ म. म. धर्माधिकरणिक मरथ, खौआलसँ शर्म्मा धर्माधिकरणिक म. म. उ. हरिशर्म्मा, दिघोयसँ जयदत्त सुत धर्माधिकरणिक भट्टजीवे, धर्माधिकरणिक म. म. (२३/०१०) नरसिंह, धर्माधिकरणिक महोमहोपाध्याय गदाघर, धर्माधिकरणिक वाटू, नैवंधिक- नैवंधिक वीरेश्वर, नैवंधिकधीरेश्वर, मुद्राहस्तक गुणीश्व, सुत म. म. आभो एसुत, मुद्राहस्तक कुल छेत्रोपार्यक राउल, गढ़बेलउँच सँ मुद्राहस्तक गुणीश्वर, मुद्राहस्तक लक्षपति, मुद्राहस्तक लक्ष्मीदत्त

आर्यभट्ट वैज्ञानिक 476-550

पञ्जीमे आर्यभट्टक विवरण- (२७) (३४/०८) महिपतिय: मंगरौनी माण्डैर सै पीताम्ब र सुत दामू दौ माण्ड्र सै वीजी त्रिनयनभट्ट: ए सुतो आर्यभट्ट: ए सुतो उदयभट्ट: ए सुतो विजयभट्ट ए सुतो सुलोचनभट (सुनयनभट्ट) ए सुतो भट्ट ए सुतो धर्मजटीमिश्र ए सुतो धाराजटी मिश्र ए सुतोब्रह्मजरी मिश्र ए सुतो त्रिपुरजटी मिश्र ए सुत विघुजटी मिश्र ए सुतो अजयसिंह: ए सुतो विजयसिंह: ए सुतो ए सुतो आदिवराह: ए सुतो महोवराह: ए सुतो दुर्योधन सिंह: ए सुतो सोढ़र जयसिंहर्काचार्यास्त्रस महास्त्र विद्या पारङ्गत महामहोपाध्या य: नरसिंह: । । तालपत्र अस्पष्ट अछि आ आदिभट्ट: सेहो पढ़ल जा सकैए, आर्यभट्टक अपन रचनामे मात्र एतबे चर्चा भेटैत अछि जे ओ कुसुमपुर (पटना) मे ज्ञानक वर्णन कऽ रहल छथि, अर्यभट्टक आर्यभटीयक अधिकांश पाण्डुलिपि केरलमे भेटल अछि। मुदा कालक समानता पञ्जीक आदिभट्ट/ आर्यभट्ट कैं आर्यभटीयक आर्यभटसँ मेल करबैत अछि।

म. म. गोनू झा 1050-1150

करमहे सोनकरियाम गोनू झाक वर्णन पञ्जीमे अछि- महामहोपाध्याय धूर्तराज गोनू। पञ्जीक अनुसार पीढ़ीक गणना कएलासँ गोनूक जन्म (गोनूक सोनकरियाम करमहे-वत्समे २४म पीढ़ी चलि रहल अछि) आर्यभट्टक बाद (आर्यभट्टक माण्डर-काश्यपमे ३९ म पीढ़ी चलि रहल अछि) आ विद्यापतिक पहिने (विद्यापतिक विषएवार बिस्फी-काश्यपमे १४म पीढ़ी चलि रहल अछि) लगभग १०५० ई. मे सिद्ध होइत अछि। कारण एहि तरहेँ एक पीढ़ीकेँ ४० सँ गुणा केला सँ आर्यभट्टक जन्म लगभग ४७६ ई. आ संस्कृत-अवहट्ट विद्यापति ठक्कुरक जन्म लगभग १३५० ई. अबैत अछि जे इतिहास सम्मत अछि। गोनू झाक गाम भरौड़ाक राजकुमार, "बहुरा गोढिन नटुआ दयाल" लोककथाक मलाह कथानायक। भरौड़ामे एखनो हिनकर गहबर छन्हि।

महाराज हरसिंहदेव: मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि

शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

मंत्री गणेश्वर: मिथिलाक कर्णाट वंशक नरेश हरसिंहदेवक मंत्री। सुगतिसोपानमे मिथिलाक सांवैधानिक इतिहासक वर्णन

महाराज नान्यदेव मिथिलाक कर्णाट वंशक 1097 ई. मे स्थापना। 1147 ई. मे मृत्यु। मल्लदेव मिथिलाक कर्णाट वंशक संस्थापक नान्यदेवक पुत्र। मिथिलाक गंधवरिया राजपूत मल्लदेवकेँ अपन बीजीपुरुष मानैत छथि।

मालद्वार – पंचप्रवर- करमहे नरुआर वत्सगोत्री, राजा रामलोचन चौधरी-मालद्वार- २५०० वर्ष पूर्व- राजा दुर्गा प्रसाद चौधरी-

-राजा बुद्धिनाथ चौधरी (मालद्वार)-कुमार वैद्यनाथ चौधरी

- छत्रनाथ चौधरी (दुर्गागंज)-टंकनाअथ चौधरी-कर्मनाथ/ शेषनाथ/ रुद्रनाथ

एक छलि महारानी- डॉ. मदनेश्वर मिश्र

सुरगणे लौआम- गोत्र पराशर

लौआम गाम मूलतः बसैठीसँ पूर्णियाँक बीचमे- आब नहि छैक।

तिलैबार मूलक शाण्डिल्य गोत्री

बनैली गाम- अगरू राय- हिनकर जमाए सुरगणे लौआम मूलक प्राणपति- हिनक बालक समर झा

१५७५-१६२५ (लगभग १६म शताब्दी), दिल्ली सल्तनतसँ जमीन्दारी किनलन्हि आ समर चौधरी भऽ गेलाह, महाराज भऽ गेलाह।

लौआमक दू शाखा

-महाराज कृष्णदेव (पहसरा बसैटी)

-महाराज भगीरथ- सौरिया (कटिहार-सोनालीक बीचमे)- एकटा स्थान दण्डखोड़- एतए अपराधीकेँ सजा देल जाइत छल (सौरिया शाखा द्वारा) ।

पाँच वंश बाद पहसरा बसैटी- कृष्णदेव-देवनारायण-वीर नारायण-रामचन्द्र नारायण (जॉन बुकानन पूर्णियाँ गजेटियरमे हुनकर वर्णन किंग ऑफ पूर्णियाँक रूपमे कएने छथि)- इन्द्रनारायण (बिना सन्तान) रानी इन्द्रावती (सासुरक नाम- असल नाम लीलावती) हिनकर मृत्युतिथि १५-११-१८०३ मृत्युस्थान पूर्णियाँ, समए- मध्याह्न काल, श्राद्ध खर्चक हेतु पूर्णियाँ जजसँ प्राप्ति- रु. ५०००/- माँग रु. १५, ६७०/-(बोर्ड ऑफ रेवेन्यु, फोर्ट विलियममे २९.११.१८०३ ई. कैँ कार्यवाही) । इन्द्रनारायणक समकालीन सौरिया दिश राजा राजेन्द्रनारायण आ राजा महेन्द्रनारायण। महाराज इन्द्रनारायणक मृत्यु १७७६ ई. मे, तकर बाद २७ बर्ख धरि रानी इन्द्रावती राज कएलन्हि।

राज बनैली- रामनगर/ श्रीनगर/ गढ़बनैली/ सुल्तानगंज/ चंपानगर।

श्यामा मन्दिर बनारसमे संस्कृत पढ़बाक वृत्ति- रानी चन्द्रावती- कोइलख (राजा पद्मानन्द सिंह, पुतोहु-कुमार चन्द्रानन्द सिंहक पत्नी)- रामनगर।

विशेश्वर झा बैगनी नवादासँ पहसरा नोकरी करबा लेल अएलाह। हिनकर बेटा दीवान देवानन्द फेर चातुर्धरिक मनसबदार परमानन्द- संध्यागायत्रीसँ लोप बनैली समर सिंहकेँ मानि लेलन्हि। दुलार चौधरी/ फेर सिंह (बनैली राज), बुकानन हिनका चौधरी कहि सम्बोधित करैत छथि, मात्र एक बेर सिंह कहै छथि।

१६८०-१७०० ई.-दरभंगा राज, कन्दर्पीघाटक लड़ाई, राजा नरेन्द्र सिंह- दिल्ली सल्तनत आ जनताक बीचमे, बागमती तटपर समस्तीपुर ब्रह्महत्याक आरोपी नरेन्द्र सिंहकेँ बारि ब्राह्मण सभ पूर्णियाँ सुरगणे लौआम महाराज समर सिंह सन्तति महाराज नरनारायण, पहसरा बसैटी (कोशीक पूर्व)- फारबिसगंजसँ दण्डखोड़ा कटिहार तक बसाओल गेलाह। फेर माधव सिंहक समएमे दरभंगा आपस भेलाह।

खुद्दी झा/ परमेश्वर झाकेँ आशुतोष मुखर्जीक समए दरमाहा राज बनैली देलकैक।

पञ्जीमे दरभंगा राजक विरुद्- विविध विरुदावली विराजमान् मानोन्नतमान् प्रतिज्ञापदर्योधिक परशुराम समस्त प्रक्रिया विराजमान् नृपराज महोग्रप्रताप मिथिलाङ्कार महाराजाधिराज माधव सिंह बहादुर कामेश्वर सिंह।

धकजरीक नवलक्षाधिपति लक्ष्मीपति मिश्र कोदरिये मूल शाण्डिल्य पाञ्जि भेटि गेलन्हि, रमेश्वर सिंहकेँ १ १/२ लाख टाकाक चन्दा देलन्हि, पिण्डारुछक चौधरी सभकेँ सेहो पाँजि भेटलन्हि (नित्यानन्द चौधरी) ।

गुणाकर झा –हरसिंहदेवक समकालीन ई. १३२६ ततैल ग्राम- १० खाढ़ी पाछाँ ककरौड़ गाम-जिला मधुबनी रघुदेव झा- आनन्द झा- देवानन्द प्रसिद्ध छोटी झा दरभंगा नरेश माधव सिंहक (शाखा पुस्तकक प्रणयन आदेश) समकालीन १६५० ई. क आसपास- मित्रानन्द प्रसिद्ध झोंटी झा- गोपीनाथ झा प्रसिद्ध होरिल झा- हरखानन्द प्रसिद्ध हरखी झा- एखसँ १५९ वर्ख पूर्क दिनकर टिपणी (जन्म) रसाढ़ पूर्णियाँ बनमनखी लग- श्री भोलानाथ प्रसिद्ध भिखिया झा- श्री मोदानन्द झा- पञ्जीकार विद्यानन्द झा प्रसिद्ध मोहनजी- मूल पड़ुआ (पण्डुआ) महिन्द्रपुर, गोत्र काश्यप त्रिप्रवर।

खाँ- कुजिलवार उल्लू- कात्यायन गोत्र

उतेढ़- सिद्धांत लिखबाक पहिने वर ओ कन्या पक्षक अधिकार ताकल जाइत छैक आ ई मात्र मूलक आधारपर बनाओल जाइत अछि आ समगोत्री विवाह नहि होअए ताहि लेल गोत्र आ प्रवर सेहो देखल जाइत अछि। मूलसँ गोत्र सामान्यतः पता चलि जाइत अछि, किछु अपवादो छैक। जेना ब्रह्मपुरा मूल- काश्यप/ गौतम/ वत्स/ वशिष्ठ (सात टा), करमहा- शाण्डिल्य (गौल शाखा)/ बाकी सभ वत्सगोत्री, दुनु करमहामे विवाह संभव।

चन्दा झा- माण्डर रजौरा

रामोऽवेत्ति नलोऽवेत्ति वेत्ति राजा पुरुरवा।

अलर्कस्य धनं प्राप्य नान्यदेवोनृप भविष्यति॥

नान्यदेव घोड़ापर चढ़ल हकासल-पियासल अएलाह, गाछतरमे घोड़ा बान्हलन्हि, घोड़ा लेल खाद्य छीलए लगलाह तँ फन काढ़ि साँप नाग आएल, किछु लिखल जे नान्यदेव मिथिलाक भाषा नहि पढ़ि सकलाह। कामेश्वर ठाकुर जे गाममे रहथि पढ़ि बतओलन्हि जे अहाँ मिथिला राजा नान्यदेव छी।

कामेश्वर ठाकुर संतति चण्डेश्वरकेँ हरसिंहदेव राज लिखितमे सौंपि पलाएन कएल। चण्डेश्वरक पाछाँ सिपाही आएल। एकरापर जल फेंकि ठाढ़ भऽ गेल, दोसर खेहारलक, ओकरापर जल फेकलन्हि ओ आन्हर भऽ गेल (अन्हरा ठाढ़ी) ।

वर्षकृत्य- अयलीह बिहुला देलन्हि पसारि,

गेलीह सामा लेलन्हि ओसारि।

पञ्जी- अधिकारक नियमावली- पञ्जी अयाची मिश्रक पौत्र ढाका कवि- ढाकामे जागीर भेटलन्हि। हल्ली झा तांत्रिक आ शिव कुमार शास्त्रीक बीच शास्त्रार्थ- प्रत्याहार वाक तंत्र द्वारा हल्ली शिवकुमार शास्त्रीक वाक् बन्न कए देलन्हि।

तस्कर केशव, मंगरौनी नरौने सुल्हनी- पराशर गोत्र माण्डर सिहौल मूलक काश्यप गोत्री खगनाथ झा- गाम जमसम। महाराज लक्ष्मीश्वर सिंह लेल लड़की निहुछल गेल, गाममे पोखरि खुनाओल, मन्दिर बनल जे राजा दोसराक मन्दिरमे कोना पूजा करताह। केशव झा लड़कीकेँ लए गाम आबि गेलाह। धोती रंगाइत छल। पता केनिहार जे आएल तकरा पकड़ि कन्यादान करबाओल। तकर बाद राजा की करताह, पञ्जीकारकेँ बजा कऽ ओकर नाममे तस्कर उपाधि लगबाओल। खगनाथ झा- श्रीकान्त झा पाँजि, तस्कर केशव श्रोत्रिय ओहिठाम विवाह कएलापर श्रोत्रिय श्रेणी विराजमान रहितन्हि। पाञ्जि आ पानि अधोगामी, पछबारि पारक प्रथम श्रेणी आब नहि अछि।

शाण्डिल्य- ४३ मूल, वत्स-४० मूल, काश्यप-२७ मूल, सावर्ण- ७ मूल, कात्यायन- ५ मूल, पराशर- ७ मूल, भारद्वाज- ५ मूल, गर्ग- ३ मूल

सूर्य- सिंह राशिमे (१६ अगस्त सँ १६ सितम्बर), किछु सुखेबाक होअए तँ सभसँ कड़ा रौद।

पाँ रघुदेव झाक लिखल माण्डर मूलक पोथी- अंकित तिथि- १७म शताब्दीक अन्तिम दशक आ १८म शताब्दीक पहिल दशक, हुनकर पौत्र पाँ छोटी प्रसिद्ध देवानन्द झाक लिखल शाखा पुस्तक १७६०-१७७६ई. । ताल पत्रपर।

पाँ भिखिया झा शाखा पुस्तक क्वैलख वासी हरिअम्ब मूलक पाँ डोमाई मिश्रक लिखल। पाँ हर्षानन्द झा बला शाखा पुस्तक जे पाँ झोंटी झा प्रसिद्ध मित्रानन्द झाक लिखल अछि। पाँ. झूलानन्द झा (पाँ भिखिया झाक भ्राता) बला शाखा पुस्तक, पाँ मोदानन्द झाक शाखा पुस्तक जे हुनकर मौसा पाँ लूटन झा आ मसियौत पाँ निरसू झा बला शाखा पुस्तक जे १९२५ ई. सँ १९३५ ई. धरि सौराठमे लिखल गेल। एहि सभ शाखा पुस्तकक, गोत्र पञ्जी जाहि मध्य गोत्र ओ मूलक विवरण, पत्र पञ्जी जाहि मध्य अपत्यक ज्ञान ओ मूलग्रामक विवरण भेटैत अछि, जाहिसँ वासस्थान परिवर्तनक ज्ञान होइत अछि, दूषण पञ्जी जाहिसँ वंशमे आएल कथित दोषक-कट्टरताक विरुद्ध प्रमाण सेहो- ज्ञान होइत अछि। तत्तत पुस्तकमे वर्णित तत्कालीन प्रचलित उपाधिक ज्ञान होइत अछि।

पारिभाषिक शब्दावली: - कोनो वंशक उल्लेखसँ पूर्व ओहि वंशक मूलक उल्लेख जाहि शब्दक बादसँ लागल हो ओ भेल मूल- तकर बाद व्यक्तिक नाम तखन ओहि व्यक्तिक पुंपत्यक उल्लेख- से सुतः वा सुतौ वा सुताः लिखल गेल भऽ सकैए। ओहि व्यक्तिक एकोटा पुत्र नहि परञ्च पुत्री तँ सुता वा सुताश्च लिखल भेटत- सुतः सुतौ सुताक बाद पुत्रक नाम तखन ओहि व्यक्तिक श्वसुरक मूल ग्रामक संगे मूलक उल्लेख। कतहु-कतहु मूलग्राम नहियो लिखल भेटत, पुस्तकमे आगाँ बढ़लापर मूलक संकेताक्षर बिन्दु सहित जकर आगाँ “सँ” नहि भेटत परञ्च पढ़ैत-पढ़ैत पाठक मूलसँ परिचित भऽ गेल रहताह। श्वसुरक नामक पहिने विशेष ठाम श्वसुरक पिताक नाम, कत्तहु-कत्तहु पितामहक नाम सेहो, श्वसुरक नामक बाद दौ लिखल भेटत अर्थात् अर्थ भेल जनिक नामक आगाँ दौ. लिखल अछि ताहि व्यक्तिक दौहित्र भेलाह सुतः सुतौ सुताक उल्लेखक बाद लिखल नाम अर्थात् सुतादिक मातामह भेलाह दौ. लिखलसँ पूर्व नाम-तदुपरान्त श्वसुरक उल्लेख मूल सहित भेटत आ नामक बाद शब्द भेटत दौहित्र दौहित्र जे संकेताक्षरमे द्दौ. रहत, परञ्च ई बुझब आवश्यक जे शाखा पुस्तकक कोनो पृथक विषय सूची नहि रहि विषय-अनुक्रमणिका संगे रहै छै।

३८. मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव

सारांश
उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटैत छथि।

बीजशब्द: उपन्यासपर · अंग्रेजी · साहित्यक · प्रभाव · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिली उपन्यासपर अंग्रेजी साहित्यक प्रभाव” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिली; उपन्यासपर; अंग्रेजी; साहित्यक; प्रभाव प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

उपन्यासक आरम्भ: वाणभट्टक कादम्बरी राजा शूद्रकक विदिशानगरीक वर्णनसँ प्रारम्भ होइत अछि। एकटा चाण्डाल अतीव सुन्दरी कन्या वैशम्पायन नाम्ना ज्ञानी सुग्गाकेँ लेने दरबार अबैत अछि आ प्रारम्भ होइत अछि सुग्गाक खिस्सा। चांडालक बस्ती पक्कणमे कियो भिखमंगा नै, कियो चोर नै, ओतुक्का राजा व्याघ्रदेव स्वयं रस्सी बँटैत छथि। संस्कृतक एहि उपन्यास नामसँ मराठीमे उपन्यासकेँ कादम्बरी कहल जाइत अछि। उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक “डॉन क्विक्जोट”, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक- खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

अंग्रेजी उपन्यासक वाद: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि।

अंगेजी उपन्यासक आरम्भ आ विकास: अंग्रेजी उपन्यास पिल्ग्रिम्स प्रोग्रेस- लेखक कथाक मुख्यपात्रक यात्राक आ ओइ यात्रा मध्य आओल संघर्ष आ उत्साहक वर्णन करैत छथि।

डेनियल डिफ़ो अपन रॉबिन्सन क्रूसो उपन्यासमे मुख्यपात्रक साहसिक समुद्र यात्राक वर्णन करैत छथि।

सैमुअल रिचर्डसनक पेमेला अंग्रेजी उपन्यासकेँ पारिभाषिक स्वरूप देलक।

एफ़्रा बेनक ओरूनोको उपन्यासक नायक कारी रंगक दास अछि तँ हुनक’ लव लैटर्स बिटवीन ए नोबल मैन एंड हिज सिस्टर’ मे सामंतक प्रेम कथाक वर्णन अछि।

हैनरी फ़िल्डिंग’ टॉम जोन्स’ मे सामंतवादक आलोचना केने छथि समाजक विकृतिक चित्रण केने छथि।

हेनरी जेम्स “द पोट्रेट ऑफ ए लेडी” मे कलात्मक प्रस्तुति लेल जिनगीक उपेक्षा करै छथि।

रिचर्डसन' कलैरिस' मे मनुष्यक मनोविज्ञानक तहमे जाइ छथि।

जोजफ कोनरेडक' द शैडोलाइन' क पात्र समाज आ जीवनक प्रति दृष्टिकोणक एक्द पक्षीय होएबापर सोचै छथि।

डी. एच. लॉरेन्स "लेडी चैटर्लीज लवर" क पात्र विकृति लेल संस्कृति आधारित सभ्यताकेँ दोषी कहै छथि।

रुडयार्ड किपलिंगक उपन्यास "किम" यूरोपी साम्राज्यवादक लेल एकटा बहन्ना ताकि रहल अछि, यूरोपी सभ्यताकेँ ओ उच्च मानै छथि।

ई. एम. फोर्स्टरक "ए पैसेज टू इंडिया" मुदा शासक आ शासितक सम्बन्धकेँ व्याख्यायित करैत अछि।

मैथिली उपन्यासक आरम्भ आ विकास: हरिमोहन झाक कन्यादान आ द्विरागमन मिथिलाक बहुत रास सामाजिक व्यवस्थाकेँ सोझाँ अनैत अछि, महिला शिक्षा आ अंध-पाश्चात्यकरणक सेहो हास्य रसमे चित्रण आधुनिक अंग्रेजी उपन्यासक रीतिएँ करैत छथि।

यात्रीक बलचनमा यादव जातिक बलचनमाक आत्मकथ्यक रूपमे अछि। आर्थिक समस्या एकर मूल विषए छैक। बलचनमा कोना एकटा टहल करैबलासँ आगू जाइत किसानक हक लेल जान दैत अछि ताधरिक कथा। कांग्रेस आदि पार्टीक विरुद्ध कम्यूनिस्ट पार्टीक प्रति स्पष्ट झुकाव यात्रीजीक रहल छन्हि। आ पारो बलचनमाक आर्थिक समस्याक विपरीत सामाजिक लक्ष्य तकैत अछि। किछु दिनुका बाद एहि उपन्यासकेँ लोक असली फिक्शनक रूपमे लेताह कारण अगिला पीढ़ीकेँ विश्वास नै हेतै जे एहनो कोनो क्रूर व्यवस्था सभ मानव जातिक मध्य होइत हेतै। आ तैँ एकर महत्व आर बढ़ि जाइत अछि- ओहि सभ व्यवस्था सभकेँ पेटारमे सुरक्षित रखबाक जिम्मेदारी। मुदा जहिया यात्रीजी ओहि समस्यापर लिखने छलाह तहियासँ ओ समस्या रहै आ ई उपन्यास ओहिमे सार्थक हस्तक्षेप कएने छल।

रमानन्द रेणुक दूध-फूल उपन्यास समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि आ कलात्मक उपस्थापन करैत अछि।

ललितक पृथ्वीपुत्र सेहो समाजक उपेक्षित वर्गकेँ सोझाँमे रखैत अछि। ई उपन्यास कृषक जीवनक आर्थिक समस्यापर सेहो आंगुर धरैत अछि।

लिली रे क पटाक्षेप वामपंथक वर्ग-संघर्षक उत्थान आ फेर ओकर दमनक कथा कहैत अछि आ देशक समस्यासँ साहित्यकार द्वारा स्वयंकेँ तत्काल जोड़बाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि।

धूमकेतुक मोड़ पर सेहो वामपंथी विचारक आलोकमे सामाजिक-आर्थिक समस्याक कथा बैकफ्लैशमे कहैत अछि।

साकेतानन्दक सर्वस्वान्त बाढ़िक आ सरकारी नीति आ राहतक कथा अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक मौलाइल गाछक फूल गामक, गामसँ पलायनक आ गलल व्यवस्थाक पुनर्जीवनक लेल समाधानक उपन्यास अछि।

चतुरानन मिश्रक कला कलादाइक माध्यमेँ गलल सामाजिक व्यवस्थापर प्रहार अछि।

शेफालिका वर्माक नागफाँस अंग्रेजक धरतीपर विचरण करैत अछि। धारा आ सीमांतक मिलन एहि जिनगीमे कहियो हेतै, कोनो जादू हेतै की?

आ अन्तमे: से जौँ गहींर नजरिसँ देखब तँ लागत जे अंग्रेजी उपन्यासकारक कृति ओहि समएक वाद आ दृष्टिकोणकेँ संग लऽ कऽ चलबाक प्रयास अछि। मुदा सिद्धान्तसँ प्रयोगक क्रममे किछु विशेषता स्वयमेव आबि जाइ छै। तहिना मैथिली उपन्यासक सेहो स्थिति अछि। रमानन्द रेणुक उपन्यास होअए वा शेफालिका वर्माक, ई तथ्य शिल्पमे स्पष्ट रूपसँ देखि सकै छी। लिली रे अपन कलमक धारसँ जेना अपन लग-पासक घटनाक, समाजक, राजनीतिक वर्णन करै छथि से अद्भुत तँ अछिये अंग्रेजी उपन्यास सभसँ एक डेग आगाँ जाइत अछि। ललित, यात्री आ धूमकेतु आर्थिक आ सामाजिक समस्याकेँ सोझाँ रखैत छथि, आ ओहि क्रममे कोनो तथ्यकेँ कोनो रूपेँ नुकबैत नै छथि। साकेतानन्द बाढ़िक समस्याकेँ सोझाँ रखै छथि। हरिमोहन झा अपन शैलीमे अंग्रेजी साहित्यक धारकेँ बहबैत छथि आ नायक द्वारा नायिकाकेँ देल पढाइक सिलेबसमे सेहो ई तथ्य सोझाँ अनैत छथि। चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जाहि रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता एहि दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइत छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा

विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म छैक तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्दात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होएत जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत।

मैथिली उपन्यासक भविष्य: सभ जीवित भाषामे सभसँ बेसी रचना उपन्यासक होइत छै मुदा मैथिलीमे सभसँ कम उपन्यास लिखल जाइत अछि। जाहि रूपमे अंग्रेजी शिक्षा आ साहित्यक अध्ययन कऽ मैथिली साहित्यमे आओल नव पीढ़ीक संख्या बढ़त, मैथिली साहित्य अपन सामाजिक- आर्थिक- राजनैतिक आ सांस्कृतिक अंतर्दृष्टिक विकास कऽ सकत। वीणा ठाकुरक भारती, आशा मिश्रक उचाट आ केदारनाथ चौधरीक चमेली रानी-माहुर आ करार हमर एहि दृष्टिकोणक पुष्टि करैत अछि।

३९. शब्द-विचार: सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली

सारांश

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य एकर उच्चारण नहि करैत छथि मुदा वाजसनेयी खूब करैत छथि-जेना छान्दोग्य कहताह सभूमि तँ वाजसनेयी कहताह सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि।

बीजशब्द: शब्द · विचार · सिद्ध · सरहपाद · तिब्बती · लिपि · कम्प्यूटर · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “शब्द-विचार: सिद्ध सरहपाद, तिब्बती लिपि, कम्प्यूटर आ मैथिली” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे शब्द-विचार; सिद्ध; सरहपाद; तिब्बती; लिपि प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

देवनागरीक अतिरिक्त समस्त उत्तर भारतीय भाषा नेपाल आ दक्षिणमे (तमिलकेँ छोड़ि) सभ भाषा वर्णमालाक रूपमे स्वर आ कचटतप आ य, र ल व, श, स, ह केर वर्णमालाक उपयोग करैत अछि। ग्वाङ केर हेतु संस्कृतमे दोसर वर्ण छैक (छान्दोग्य एकर उच्चारण नहि करैत छथि मुदा वाजसनेयी खूब करैत छथि-जेना छान्दोग्य कहताह सभूमि तँ वाजसनेयी कहताह सभूमीग्वंङ), ई ह्रस्व दीर्घ दुनू होइत अछि। सिद्धिरस्तु लेल सेहो कमसँ कम छह प्रकारक वर्ण मिथिलाक्षरमे प्रयुक्त होइत अछि। वैदिक संस्कृतमे उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित (क्रमशः क॑ क॒ क॑) उपयोग तँ मराठीमे ळ आ अर्द्ध ऱ् केर सेहो प्रयोग होइत अछि। मैथिलीमे ऽ (बिकारी वा अवग्रह) केर प्रयोग संस्कृत जकाँ होइत अछि आ आइ काल्हि एकर बदलामे टाइपक सुविधानुसारे द’ (दऽ केर बदलामे) एहन प्रयोग सेहो होइत अछि मुदा ई प्रयोग ओहि फॉंटमे एकटा तकनीकी न्यूनताक परिचायक अछि। मुदा आकार केर बाद बिकारीक आवश्यकता नहि अछि।

जेना फारसीमे अलिफ बे से आ रोमनमे ए बी सी होइत अछि तहिना मोटा-मोटी सभ भारतीय भाषामे लिपिक भिन्नताक अछैत वर्णमालाक स्वरूप एके रङ अछि।

वर्णमालामे दू प्रकारक वर्ण अछि- स्वर आ व्यंजन। वर्णक संख्या अछि ६४ जाहिमे २२ टा स्वर आ ४२ टा व्यञ्जन अछि।

पहिने स्वरक वर्णन दैत छी- जाहि वर्णक उच्चारणमे दोसर वर्णक उच्चारणक अपेक्षा नहि रहैत अछि, से भेल स्वर।

स्वरक तीन टा भेद अछि- ह्रस्व, दीर्घ आ प्लुत। जाहिमे बाजयमे एक मात्राक समय लागय से भेल ह्रस्व, जाहिमे दू मात्रा समय लागल से भेल दीर्घ आ जाहिमे तीन मात्राक समय लागल से भेल प्लुत।

मूलभूत स्वर अछि- अ इ उ ऋ ऌ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा समानाक्षर कहैत छलाह।

दीर्घ मिश्र स्वर अछि- ए ऐ ओ औ

पाणिनिसँ पूर्वक आचार्य एकरा सन्ध्यक्षर कहैत छलाह।

ऌ दीर्घ नहि होइत अछि आ सन्ध्यक्षर ह्रस्व नहि होइत अछि।

अ इ उ ऋ एहि सभक ह्रस्व, दीर्घ (आ ई ऊ ॠ) आ प्लुत (आ३ ई३ ऊ३ ॠ३) सभ मिला कए १२ वर्ण भेल। ऌ केर ह्रस्व आ प्लुत दू भेद अछि (ऌ३) तँ २ टा ई भेल। ए ऐ ओ औ ई चारू दीर्घ मिश्रित स्वर अछि आ एहि चारूक प्लुत रूप सेहो (ए३ ऐ३ ओ३ औ३) होइत अछि, तँ ८ टा ई सेहो भेल। भऽ गेल सभटा मिला कए २२ टा स्वर।

एहि सभटा २२ स्वरक वैदिक रूप तीन तरहक होइत अछि, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

ऊँच भाग जेना तालुसँ उत्पन्न अकारादि वर्ण उदात्त गुणक होइत अछि आ तेँ उदात्त कहल जाइत अछि।

नीचाँ भागसँ उत्पन्न स्वर अनुदात्त आ जाहि अकारादि स्वरक प्रथम भागक उच्चारण उदात्त आ दोसर भागक उच्चारण अनुदात्त रूपेँ होइत अछि से भेल स्वरित।

स्वरक दू प्रकार आर अछि, सानुनासिक जेना अँ आ निरनुनासिक जेना अ।

दत्तेन निर्वृत्तः कूपो दात्तः। दत्त नाम्ना पुरुष द्वारा विपाट्- ब्यास धारक उतरबरिया तट पर बनबाओल, एतए इनार भेल दात्त। अञ प्रत्यान्त भेलासँ' दात्त' आद्युदात्त भेल, अण् प्रत्यायान्त होइत तँ प्रत्यय स्वरसँ अन्तोदात्त होइत। रूपमे भेद नहि भेलो पर स्वरमे भेद अछि। एहिसँ सिद्ध भेल जे सामान्य कृषक वर्ग सेहो शब्दक सस्वर उच्चारण करैत छलाह।

स्वरितकेँ दोसरो रूपमे बुझि सकैत छी- जेना एहिमे अन्तिम स्वरक तीव्र स्वरमे पुनरुच्चारण होइत अछि।

आब व्यञ्जन पर आऊ।

व्यञ्जन ४२ टा अछि।

क् ख् ग् घ् ङ्

च् छ् ज् झ् ञ्

ट् ठ् ड् ढ् ण्

त् थ् द् ध् न्

प् फ् ब् भ् म्

य् र् ल् व्

श् ष् स्

ह्

य् व् ल् सानुनासिक सेहो होइत अछि, यँ वँ लँ आ निरुनासिक सेहो।

एकर अतिरिक्त दू टा आर व्यञ्जन अछि- अनुस्वार आ विसर्जनीय वा विसर्ग।

ई दुनूटा स्वरक अनन्तर प्रयुक्त होइत अछि।

विसर्जनीय मूल वर्ण नहि अछि, वरन् स् वा र् केर विकार थीक। विसर्जनीय किछु ध्वनि भेद आ किछु रूपभेदसँ दू प्रकारक अछि- जिह्वामूलीय आ उपध्मानीय। जिह्वामूलीय मात्र क आ ख सँ पूर्व प्रयुक्त होइत अछि, दोसर मात्र प आ फ सँ पूर्व।

अनुस्वार, विसर्जनीय, जिह्वामूलीय आ उपध्मानीयकेँ अयोगवाह कहल जाइत अछि।

उपरोक्त वर्ण सभकेँ छोड़ि ४ टा आर वर्ण अछि, जकरा यम कहल गेल अछि।

कुँ खुँ गुँ घुँ (यथा- पलिक् क्नी, चख ख्नुतः, अग् ग्निः, घ् घ्नन्ति)

पञ्चम वर्ण आगाँ रहला पर पूर्व वर्ण सदृश जे वर्ण बीचमे उच्चारित होइत अछि से यम भेल।

यम सेहो अयोगवाह होइत अछि।

अ आ कवर्ग ह (असंयुक्त) आ विसर्जनीय केर उच्चारण कण्ठमे होइत अछि।

इ ई चवर्ग य श केर उच्चारण तालुमे होइत अछि।

ऋ ॠ टवर्ग र ष केर उच्चारण मूर्धामे होइत अछि।

लृ तवर्ग ल स केर उच्चारण दाँतसँ होइत अछि।

उ ऊ पवर्ग आ उपध्मानीय केर उच्चारण ओष्ठसँ होइत अछि।

व केर उच्चारण उपरका दाँतसँ अधर ओष्ठ केर सहायतासँ होइत अछि।

ए ऐ केर उच्चारण कण्ठ आ तालुसँ होइत अछि।

ओ औ केर उच्चारण कण्ठ आ ओष्ठसँ होइत अछि।

य र ल व अन्य व्यञ्जन जेकाँ उच्चारणमे जिह्वाक अग्रादि भाग ताल्वादि स्थानकेँ पूर्णतया स्पर्श नहि करैत अछि। श् ष् स् ह् जकाँ एहिमे तालु आदि स्थानसँ घर्षण सेहो नहि होइत अछि।

क सँ म धरि स्पर्श (वा स्फोटक कारण जिह्वाक अग्र द्वारा वायु प्रवाह रोकि कए छोड़ल जाइत अछि) वर्ण र सँ व अन्तःस्थ आ ष सँ ह घर्षक वर्ण भेल।

सभ वर्गक पाँचम वर्ण अनुनासिक कहबैत अछि कारण आन स्थान समान रहितो एकर सभक नासिकामे सेहो उच्चारण होइत अछि- उच्चारणमे वायु नासिका आ मुँह बाटे बहार होइत अछि।

अनुस्वार आ यम केर उच्चारण मात्र नासिकामे होइत अछि- आ ई सभ नासिक्य कहबैत अछि- कारण एहि सभमे मुखद्वार बन्द रहैत अछि आ नासिकासँ वायु बहार होइत अछि। अनुस्वारक स्थान पर न् वा म् केर उच्चारण नहि होयबाक चाही।

जखन हमरा सभकेँ गप करबाक इच्छा होइत अछि, तखन संकल्पसँ जठराग्नि प्रेरित होइत अछि। नाभि लगक वायु वेगसँ उठैत मूर्धा धरि पहुँचि, जिह्वाक अग्रादि भाग द्वारा निरोध भेलाक अनन्तर मुखक तालु आदि भागसँ घर्षित होइत अछि आ तखन वर्णक उत्पत्ति होइत अछि। कम्पन भेलासँ वायु नादवान आ यैह गूँजित होइत पहुँचैत अछि मुँहमे आ ओकरा कहल जाइत अछि घोषवान, नादरहित भए पहुँचैत अछि श्वासमे आ ओकरा कहल जाइत अछि अघोषवान्।

श्वास प्रकृतिक वर्ण भेल “अघोष”, आ नाद प्रकृतिक भेल “घोषवान्” । जाहि वर्णक उत्पत्तिमे प्राणवायुक अल्पता होइत अछि से अछि “अल्पप्राण” आ जकर उत्पत्तिमे प्राणवायुक बहुलता होइत अछि, से भेल “महाप्राण” ।

कचटतप केर पहिल, तेसर आ पाँचम वर्ण भेल अल्पप्राण आ दोसर आ चारिम वर्ण भेल महाप्राण। संगहि कचटतप केर पहिल आ दोसर भेल अघोष आ तेसर, चारिम आ पाँचम भेल घोषवान्। य र ल व भेल अल्पप्राण घोष। श ष स भेल महाप्राण अघोष आ ह भेल महाप्राण घोष। स्वर होइछ अल्पप्राण, उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित।

सिक्किम यात्रा (यात्रा-वृत्तान्त)

सिद्ध सरहपाद आ तिब्बती लिपि: राधाकृष्ण चौधरीजीक पोथीक डिजाइनमे हम जखन सिद्ध सरहपादक फोटो देलौं तँ ओकर नीचाँमे लिखल तिब्बती लिपि, जे चीनी लिपिसँ एकदम्मे फराक अछि आ सिक्किमक लेपचा आ लिम्बू (सुब्बाभाषा) सँ लग, दिशि अनायास ध्यान आकृष्ट भेल। सिक्किमक राजा चोग्याल बौद्ध छलाह, ओ सभ आ हुनकर वंशज सभ सिक्किमी कहल जाइ छथि, जेना डेम्जोंगपा, ओ सभ भुटिया भाषा बजै छथि, मुदा जखन भूटान तिब्बत आदिसँ राजा लग भुटिया भाषी सभ एलाह तँ दुनूमे अन्तर देखाबए लेल सिक्किमी आ भुटिया ई दू भेद भेल। मोटा-मोटी सिक्किमक लोकसँ गप करब तँ ओ तिब्बती आदि सभ भाषा जे नेपालीक अतिरिक्त अछि, केँ भुटिया कहि दै छथि।

गंगटोकमे भरत सुब्बा कहै छथि जे ओ शुद्ध नेपाली छथि आ सुब्बाभाषा (लिम्बू) लिपि छी, अपन दादाकेँ ओ पढ़ैत देखने छथि मुदा हुनका ई भाषा नै अबै छन्हि। लेपचाक मुदा भाषा आ लिपि दुनू अलग अछि।

दिनेश खरका नेपाली ब्राह्मण छथि, ओ कहै छथि जे सिक्किममे नेपाली पढ़ू, भुटिया पढ़ू वा लेपचा पढ़ू, कोनो रोक नै छै। लेपचा एतुक्का आदिवासी छथि। भुटिया पढ़लासँ पर्यटन विभागमे नोकरी भेटबामे आसानी होइ छै। ओ कहै छथि जे नेपालक नेपाली आ एतुक्का नेपालीमे सेहो अन्तर छै। लड़का-लड़की हम सभ कहै छी मुदा नेपालमे लड़काकेँ बाबू आ लड़कीकेँ नानी कहल जाइत अछि। कान्छा-कान्छी घरक सभसँ छोट लड़का-लड़कीकेँ (बाबू-नानीकेँ) कहल जाइत अछि। उरगेन भुटियाक माता नेपाली छथिन्ह से हुनका भुटिया नीक जकाँ नै अबै छन्हि, ओ सिक्किममे नै रहै छथि, दार्जिलिंगमे रहै छथि जे पश्चिम बंगालमे छै, से ओतुक्का शिक्षा व्यवस्था बांग्ला आ नेपालीक अतिरिक्त दोसर भाषाक विषयमे अनुदार अछि, बिहारे सभ जेकाँ जकर शिक्षा व्यवस्था हिन्दीक अतिरिक्त दोसर भाषाक प्रति असहनशील अछि, से भुटिया भाषा एतए खतमे बुझू। सिक्किम मुदा ऐ मामिलामे उदार अछि।

छिरिंग पहिने हमरा कहै छथि जे ओ भुटिया (जकरा ओ तिब्बती कहै छथि) बजै छथि, फेर उत्तर सिक्किमक लाचुंगक रस्तामे खेनाइ खाइले एकठाम ओ रुकै छथि, महिला कहै छथि जे ओ तिब्बती छथि। हुनका लग देहरादूनसँ एकटा लामा आएल छथिन्ह जे हमरा तिब्बती लिपि सिखबै छथि। लाचुंगक बगलमे छै लाचेन। आब छेरिंग याककेँ देखि कऽ असल भेद खोलै छथि। ओ कहै छथि जे भेड़पालककेँ डोंगपा कहल जाइ छै। लाचुंगक जे लोक अछि से लाचुंगपा उपाधि राखै छथि आ ओ बगलक लाचेनक छथि आ तेँ हुनकर नाम छन्हि छेरिंग लाचेनपा। सभ लाचुंगपा डोंगपा नै छथि मुदा बेसी डोंगपा लाचुंगपा उपाधिबला छथि। डेंगजोंगपा लोकनि गंगटोकमे रहै छथि, व्यापार करै छथि। टोक माने ऊँचपर, जेना एकटा जगह छै गणेश टोक। ओ कहै छथि जे भुटिया भाषासँ लाचेनपा आ लाचुंगपाक भाषा अलग होइत अछि। ओ बौद्ध छथि। लाचुंगपा आ लाचेनपा भाषामे शॉर्टकट/ लॉन्गकटक अन्तर अछि। लाचुंगसँ आगाँ जीरो धरि सड़क छै जतए गाछ-बृच्छ खतम भऽ जाइ छै आ ऑक्सीजनक कमी भऽ जाइ छै, मुदा एतए मई- आरम्भक जून मास धरि बरफ देखबामे आओत। रस्तामे आ मोनेस्टरी लग सभ ठाम तिब्बती भाषामे मंत्र लिखल "प्रेयर ह्वील" देखबामे आएत। मोनेस्टरी जेबा काल एकटा बाल भिक्षु प्रेयर ह्वील घुमेबासँ मना करै छथि आ कहै छथि जे घुरबा काल एकरा घुमाएल जाइ छै आ सेहो घड़ीक सुइयाक दिशामे। रस्ता सभमे १०८ टा झण्डामे तिब्बती भाषामे मंत्र लिखल भेटत। जँ ई सभटा उज्जर रंगक अछि तँ कोनो मृतकक स्मृतिमे हुनकर परिजन लगेने छथि आ जँ ई सभ विभिन्न रंगक अछि तँ बुझू जे ग्रह शान्ति लेल ई फहराएल गेल अछि। छिरिंग कहै छथि जे जावत झण्डामे लिखल मंत्र नै मेटाइत अछि तावत हवा एकरा नै खसा सकैए, जखन ई मलिच्छ पड़ि जाइए तखने हवा एकरा उड़ा सकैए।

सांगू झील जे नाथूला (अकानैबला कानक दर्रा) क रस्तामे अछि (पूर्व सिक्किम), ओतए प्रदीप तमांग याकक संग भेटै छथि, पहाड़क पाछाँ हुनकर गाम छन्हि। ओ कहै छथि जे तिब्बती आ भुटिया भाषामे अन्तर छै, मुदा समानतो छै। नाथूला चौदह हजार फीटपर अछि आ प्राचीन कालसँ भारत-तिब्बतक बीच व्यापार लेल ऐ दर्राक उपयोग होइत रहल अछि। एतौ जीरो जकाँ ऑक्सीजनक कमी अहाँकेँ बुझा पड़त। ऐ दर्रासँ आइयो तिब्बती व्यापारी रेशम लऽ कऽ शेराथांग गामक शेड लागल हाट-बजार अबै छथि आ एतएसँ बदलामे बिस्कुट आ डलडा लऽ जाइ छथि।

दिनेश तमांग गंगटोकमे कहै छथि जे ओ नेपाली बौद्ध छथि। मुदा बंगालमे जन्म छन्हि। गोरखालैण्डक मांग नै मानल जाएत से हुनकर कहब छन्हि कारण से मानलासँ जलपाइगुरीक कान्तापुरी (कामतापुरी) आ कूच बिहारक अलग प्रान्तक मांग सेहो मानए पड़तै, ओ ऐ दुनू जगहक भाषाकेँ बांग्लासँ अलग कहै छथि आ ओकरा "वाया बंगाली" (बाहे बंगाली- बंगाली आ बाहे बंगालीमे भाषाक अतिरिक्त शारीरिक गठन सेहो बंगालीसँ भिन्न ओ कहलन्हि, दोसर ओ ईहो कहलन्हि जे सत्य पूछी तँ यएह बाहे बंगाली असली प्रारम्भिक बंगाली छल) कहै छथि।

संलग्न चित्रमे तिब्बती लिपि सिखबाक विधि दऽ रहल छी।

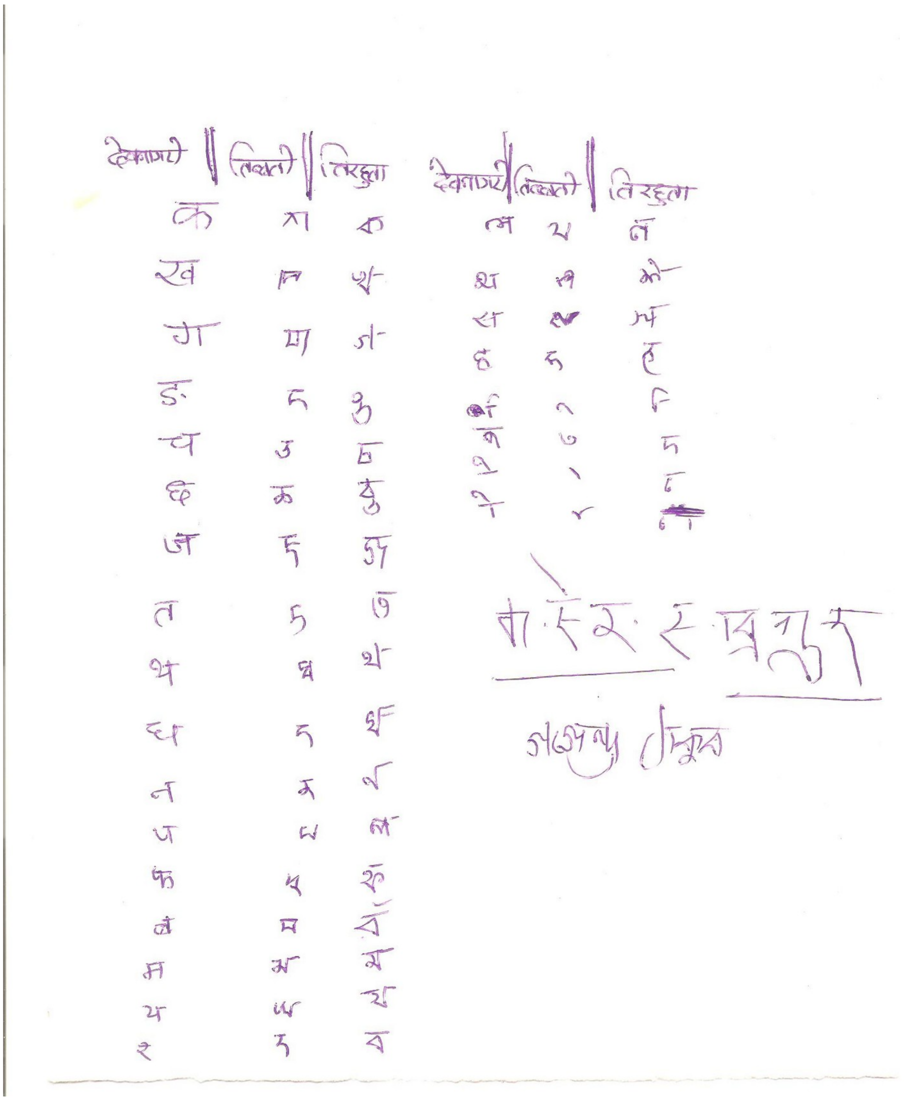

कम्प्यूटर आ मैथिली

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपमे मैथिलीकें स्थान देलक. देखूhttp: //support. google. com/translate/toolkit/bin/answer. py? hl=en&answer=147837

आ http: //translate. google. com/toolkit/list? hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, "विकीपीडिया मैथिली "क स्थापना पहिनहिये विदेह द्वारा कैल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक गप विकीपीडिया मानि लेने छल |

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल करू, आ कएल सम्पादन बदलबा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) "बिहारी" नाम्ना कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा करू। ऐ लिंकपर अनुवाद करू; गूगल एकाउंट सँ लॉग इन केलाक बाद।

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http: //www.google.co.in/language_tools? hl=en कैं मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

[सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिकैं यूनीवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनीकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनीकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया क्यूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बांग्लाक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि) । मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित

आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011:22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http: //www.videha.co.in/."Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."-Anshuman Pandey.]

सूचना: २. गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल-

सूचनाः ३. विकीपीडिया मैथिलीः

मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http: //translatewiki. net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित करू। जँ अहाँ विकीपीडियाक ट्रान्सलेटर नै छी तँ http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रान्सलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउन्ट) कऽ आ प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रयोक्ता खाताक लिंककेँ क्लिक कऽ अपन प्रयोक्ता खात पन्ना बनाउ। किछु कालमे अहाँकेँ ट्रान्सलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद प्रारम्भ करू।

http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator

http: //meta. wikimedia. org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili

http: //translatewiki. net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai

http: //incubator. wikimedia. org/wiki/Wp/mai

http: //translatewiki. net/wiki/MediaWiki: Mainpage/mai

विदेहक तेसर अंक (१ फरबरी २००८) मे हम सूचित केने रही- “विकीपीडियापर मैथिलीपर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाकेँ स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ सूचित करैत हर्षित छी जे २७.०१.२००८ केँ (मैथिली) भाषाकेँ विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छैक, मुदा एहि हेतु कमसँ कम पाँच गोटे, विभिन्न जगहसँ एकर एडिटरक रूपमे नियमित रूपेँ कार्य करथि तखने योजनाकेँ पूर्ण स्वीकृति भेटतैक।” आ आब जखन तीन सालसँ बेशी बीति गेल अछि आ मैथिली विकीपीडिया लेल प्रारम्भिक सभटा आवश्यकता पूर्ण कऽ लेल गेल अछि विकीपीडियाक “लैंगुएज कमेटी” आब बुझि गेल अछि जे मैथिली “बिहारी नामसँ बुझल जाएबला” भाषा नै अछि आ ऐ लेल अलग विकीपीडियाक जरूरत अछि। विकीपीडियाक गेरार्ड एम. लिखै छथि (http: //ultimategerardm. blogspot. com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in. html)

-“ई सूचना मैथिली आ मैथिलीक बिहारी भाषासमूहसँ सम्बन्धक विषयमे उमेश मंडल द्वारा देल गेल अछि- उमेश विकीपीडियापर मैथिलीक स्थानीयकरणक परियोजनामे काज कऽ रहल छथि,...लैंगुएज कमेटी ई बुझबाक प्रयास कऽ रहल अछि जे की मैथिलीक स्थान बिहारी भाषा समूहक अन्तर्गत राखल जा सकैए?..मुदा आब उमेश जीक उत्तरसँ पूर्ण स्पष्ट भऽ गेल अछि जे “नै” ।”

रामविलास शर्माक लेख (मैथिली और हिन्दी, हिन्दी मासिक पाटल, सम्पादक रामदयाल पांडेय) जइमे मैथिलीकेँ हिन्दीक बोली बनेबाक प्रयास भेल छलै तकर विरोध यात्रीजी अपन हिन्दी लेख द्वारा केने छलाह, जखन हुनकर उमेर ४३ बर्ख छलन्हि (आर्यावर्त १४/२१ फरबरी १९५४), जकर राजमोहन झा द्वारा कएल मैथिली अनुवाद आरम्भक दोसर अंकमे छपल छल। उमेश मंडलक ई सफल प्रयास ऐ अर्थेँ आर विशिष्टता प्राप्त केने अछि कारण हुनकर उमेर अखन मात्र ३० बर्ख छन्हि। जखन मैथिल सभ हैदराबाद, बंगलोर आ सिएटल धरि कम्प्यूटर साइंसक क्षेत्रमे रहि काज कऽ रहल छथि, ई विरोध वा करेक्शन हुनका लोकनि द्वारा नै वरन मिथिलाक सुदूर क्षेत्रमे रहनिहार ऐ मैथिली प्रेमी युवा द्वारा भेल से की देखबैत अछि?

उमेश मंडल मिथिलाक सभ जाति आ धर्मक लोकक कण्ठक गीतकेँ फील्डवर्क द्वारा ऑडियो आ वीडियोमे डिजिटलाइज सेहो कएने छथि जे विदेह आर्काइवमे उपलब्ध अछि।

हिन्दीक संग समस्या सेहो छै, मूलरूपसँ बजार (उर्दू बजार) मे बाजल जाएबला भाषा फारसी लिपिमे लिखल उर्दू भेल आ देवनागरीमे लिखल हिन्दी। हिन्दीक ऐतिहासिक उल्लेख तेँ बादमे भेल, आ से देखबै तँ हिन्दीक अपन एक्को धूर जमीन नै छलै। मुदा वैदिक संस्कृतसँ आगाँ बढ़ब तँ हिन्दी धरि एबा लेल जँ ओ ने ब्रजकेँ अपन पुरान मानत ने अवधीकेँ आ ने मैथिलीकेँ तँ ओकर पुरानसाहित्य कोन हएत? तेँ विद्यापति- मीरा, कबीर-तुलसीक पढ़ाइ हिन्दीक पुरान साहित्यमे हेबासँ अहाँ नै रोकि सकै छिऐ, आ ने विद्यापतिकेँ हिन्दी कवि कहलापर बखेराक कोनो आवश्यकता अछि। अपन घरमे मैथिली सशक्त हएत तखने ओकर अस्तित्व रहतै...हिन्दीक लोक विद्यापतिकेँ मैथिली कविक रूपमे मान्यता दैत अछि, आ जे ब्रज आ अवधी हिन्दीसँ पहिनेसँ साहित्यिक भाषा अछि आइ हिन्दीक बोली बनि गेल अछि, ओइमे आब साहित्यिक रचना नै होइ छै।

मैथिली बाजैबला ऐ भाषाकेँ नै मरऽ देतै, आ नेटिव स्पीकरसँ जे खाँटी लेखक बहरा रहल छथि, हुनकर खाँटी मैथिली मैथिलीक स्वतंत्र अस्तित्व भाषाक रूपमे सुरक्षित राखताह। मुदा डर अछि भाषा-संस्कृति आ खाँटी शब्दावलीसँ परहेज राखैबला पुरस्कार लेबा लेल लिखबा लेल अपस्याँत वर्गसँ, जे सामान्य लोक आ ओकर संस्कृतिसँ दूर अछि, मुदा सरकारी साहित्य तंत्रकेँ गछारि कऽ रखने अछि।

TIRHUTA UNICODE

See the final UNICODE Mithilakshara Application (May 5, 2011) by Sh. Anshuman pandey http: //std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf at Page 23 the Videha 80th issue (Tirhuta version) is attached"Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22" and at Page 12 Videha is included in References Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http: //www.videha.co.in/. and role of Videha's editor is acknowledged on Page 12 "Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered

valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS."]

Top of Form

४०. कथा वाचन-लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे)

सारांश

मैथिलीमे कथा वाचन, विशेष कऽ नेना भुटका लेल बाल कथा वाचनक परम्परा बड्ड पुरान रहल अछि। लोक गाथाक रातिक राति, दिनक दिन प्रदर्शन, बाल सुलभ मोन लेल ओकर छोट वर्जनक गद्य- पद्य मिश्रित एक आ बेशी राति चलैबला दादी- नानीक कथा; दादी- नानी आ बाबा- बाबूक सुनाएल आन लोककथा एकर विभिन्न रूप अछि जे मिथिलाक बालक- बालिकाक मोन मोहने अछि।

बीजशब्द: कथा · वाचन · लेखन · पाठशाला · बाल · कथाक · विशेष · सन्दर्भमे

सारांश · Abstract

ई अध्याय “कथा वाचन-लेखन पाठशाला (बाल कथाक विशेष सन्दर्भमे)” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे वाचन-लेखन; पाठशाला; बाल; कथाक; विशेष प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१

मैथिलीमे कथा वाचन, विशेष कऽ नेना भुटका लेल बाल कथा वाचनक परम्परा बड्ड पुरान रहल अछि। लोक गाथाक रातिक राति, दिनक दिन प्रदर्शन, बाल सुलभ मोन लेल ओकर छोट वर्जनक गद्य- पद्य मिश्रित एक आ बेशी राति चलैबला दादी- नानीक कथा; दादी- नानी आ बाबा- बाबूक सुनाएल आन लोककथा एकर विभिन्न रूप अछि जे मिथिलाक बालक- बालिकाक मोन मोहने अछि। ऐसँ विपरीत सप्ता डोरासँ ल’ कऽ मधुश्रावणी आ बिहुलाक कथाक जानकारी मात्र बालिके धरि सीमित अछि, एक्के घरमे रहितो किछुए बालक मौगियाहा संज्ञा भेटबाक डरक संग ऐ कथापाठमे सम्मिलित हेबाक साहस करै छथि।

कथाक बीच गीत, कहबी, खेल सेहो होइए। खेल कथाक बालक- बालिका संभ द्वारा वाचन- गायन होइत अछि, आ खेला सेहो चलिते रहैत अछि, कोनो दादी- नानीक प्रवेश नै, कोनो बाबू- बाबा बेदराक खेलमे घुसि नै सकै छथि।

२

कथापाठक एतेक सुन्दर परम्पराक अछैत मैथिली बालकथा किए असफल भ’ गेल, बा अखन धरि असफल अछि। जँ लिली रे केँ छोड़ि दी तँ ई कहैत कनियो संकोच नै जे साहित्य अकादेमी पोषित, से ओ छपाई हुअए बा पुरस्कार, मैथिली बाल कथा साहित्य, बाल साहित्य अछिये नै। आ जँ अहाँमे प्रतिभा नै अछि तँ अनुवाद करू, मुदा प्रायोजित अनुवादक स्तर एहन जे बच्चाक बापक दिन नै छिऐ जे एक्को पैराग्राफ़ पढ़ि लिअए, तते ने मुँह कोचिआबए पड़ै छै।

३

साहित्य अकादेमीसँ २४ भाषासँ संकलित बाल कथा निकालल गेल। मैथिलीयोक कोटा छै आ रामदेव झा दुनू बापुतक बालकथा कोना नै रहत, नाटक संग्रह एतै तँ फट नाटक तैयार, तही तर्जपर। लिली रे क कथा मुदा सुन्नर अछि। मैथिलीक ऐसँ बदनामी होइ छै, दुनियाँ बुझैए जेमैथिलीक कथाकार बाल कथाक माने बुझबे नै करै छथि।

८२ म सगर राति बालकथा केन्द्रित रहत। ओइ संदर्भमे बाल कथा वाचन- लेखन पाठशालाक आरम्भ कएल जा रहल अछि।

४

विदेह शिशु उत्सवमे जगदानन्द झा ‘मनु’ क चोनहा आएल छलन्हि। बाल मनोविज्ञानपर आधारित ई उपन्यास बाल कथा लिखनहारक लेल पाठ्यक्रमक समान अछि, केना कथा आगाँ बढ़ाओल जाए, आ समाप्त कएल जाए, कथा वस्तुक नवीनता एकरा विशिष्ट बनबैए। विदेह शिशु उत्सव ऐ लिंकपर उपलब्ध अछि: -

https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/

५

से बालकथाक लेखन एना हुअए जे ओ पढ़ै आ सुनै, दुनूमे नीक लागए। ई क्लोजेट नाटक सन हेबाक चाही, जे मंचन लेल नै, असगरे पढ़बाले बा किछु गोटे संग ज़ोर- जोरसँ सुनबा- सुनेबा लेल लिखल जाइए।

सरल विचार, सरल शब्दावली आ सरल भाषा श्रेष्ठ बाल कथा लेखनक चाभी अछि।

जेना ऋगवेदक जल प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, सरस्वती नदी, अरायुक्त रथक विवरण, ई सभ आरम्भिक बाल कथाक आकृति देखबैत अछि तहिना अवेस्ताक गिलगमेशक कंथा सेहो। ऋगवेदोसँ पहिने गाथा, नाराशंसी आदिक मौखिक साहित्य छल आ ओइ लेल ऋगवेदमे गाथापति, गाथिन आदिक प्रयोग अछि।

"पंचतंत्र" आ ओकर किछु कथाक पुनर्लेखन "हितोपदेश" सँ बहुत पहिने जातक कथा बाल कथा कहलक आ सेहो चिड़ै चुनमुनीक संग मालजाल आ जानवरक माध्यमसँ, ओना जातककउद्देश्य बौद्ध धर्मक प्रचार सेहो रहै। अही तरहेँ पंचतंत्र बाल कथा कहैत कहैत स्त्री-शूद्रक प्रति पूर्वाग्रह कथामे पैसेलक, आ तेँ ओकर पुनर्लेखनक आवश्यकता अनुभूत भेल। ऋगवेदक आख्यान संवादकेँ जन्म दै छल, जे पौराणिक कथा ख़त्म कऽ देलक आ तेँ ओइ पौराणिक कथा सभक पुनर्लेखन अखुनका हिसाबे हेबाक चाही।

६

आधुनिक बाल कथा केहुन हुअए?

ओइमे आधुनिक विज्ञान द्वारा पसारल नीक तत्वक संग पर्यावरण चेतना सेहो हेबाक चाही। माने कथा बुद्धिपरक नै व्यवहारपरक हेबाक चाही।

बालकथामे मनोरंजन आ ज्ञानक समावेश लेल विज्ञान, समाज विज्ञान परक कथा लिखबाक आवश्यकता अछि। बच्चा अपन धरोहरिकेँ बुझए, तेँ लोक कथा, परीकथा, जादू कथा कहल जा सकैए मुदा ई अंधविश्वास नै बढ़बए तइ तरहेँ ओकर लेखन पुनर्लेखन हेबाक चाही।

भाग २

अनुप्रयुक्त अध्ययन

कथा, कविता, उपन्यास, नाटक, लोकगाथा, इतिहास, दर्शन, पञ्जी-प्रबन्ध, बाल-साहित्य, अनुवाद आ समकालीन भाषिक-सांस्कृतिक कृतिसभक आलोचनात्मक अनुशीलन।

४१. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

सारांश
पहिल गप जे रचना सुनने छिऐ नीक छै मुदा पोथी भेटत केना? पहिने नेपाल पठेलापर डाकखर्च भारते जकाँ रहै आब तँ पोथी/पत्रिकासँ महग डाकखर्च से आब नेपाल पोथी नै जाइए। हम न्यू जर्सीमे रहै छी, मधुबनी-दरभङ्गामे मैथिली पोथी-पत्रिका भेटिते नै अछि तँ यूगाण्डा, यू. एस. ए. आ ऑस्ट्रेलियामे कतऽ भेटत।

बीजशब्द: पाठक · पोथी · पढ़थि · सेहो · पद्य · कतेको · क्यो

पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

तइ लेल अहाँ सभकेँ हम कहब जे हमर सभटा रचना अन्तर्जालपर उपलब्ध अछि ऐ लिंकपर http://www.videha.co.in/new_page_90.htm, से भौगोलिक सीमाक समाप्तिक घोषणा भेल, उपलब्धताक सेहो कोनो स्टॉक लिमिट नै।

आब हम अपन पोथीक विवरण देब निम्न खण्डमे-

मूल

पद्य (सामान्य कविता, गीत-प्रबन्ध, गजल आ बाल कविता-गजल)

गद्य (सामान्य कथा-उपन्यास-समालोचना-निबन्ध-प्रबन्ध-नाटक-सम्पादकीय आ बाल साहित्य)

अनूदित

गद्य- हमर अनूदित सामान्य कथा आ बाल साहित्य

पद्य- हमर अनूदित पद्य साहित्य

पहिने पद्य पर आबी, उदय नारायण सिंह जी हमर किछु पद्यकेँ उद्धृत केने छलाह, हुनका नीक लागल छलन्हि, हुनकर विश्लेषण नीचाँ दऽ रहल छी-

"कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि, जेना कि

"ढहैत भावनाक देबाल

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल

प्रतीक बनि ठाढ़

घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि

ओसारापर राखल तुलसीक गाछ

प्रतीक सहृदयताक मात्र"

अथवा, निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ:

"सुनैत शून्यक दृश्य

प्रकृतिक कैनवासक

हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द

क्यो देखत नहि हमर ई चित्र अन्हार मे

तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर"

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा-कवितामे। एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि।

कवि कोन मन्दाकिनी केर खोजमे छथि जे कहैत छथि-

"मन्दाकिनी जे आकाश मध्य

देखल आइ पृथ्वीक ऊपर..."

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि। आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि, व्यक्तित्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा टेक्नोलोजी �सँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि, मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि। ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि। ओना देखल जाए तँ कुरुक्षेत्र क कतेको महारथी छलाह = प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद व्यक्ति छलाह, क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि। सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि। सैह एहि महा-पाठक (मेटाटेक्सट) खूबी कहब। नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत

मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल

गुनधुनी बला स्वप्न

बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक

अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान

दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त

कारिख चित्रित रातिक निन्न

टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य

...

एहि महापाठकेँ एकटा एक्सपेरीमेन्ट केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक, आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। ।"

राजदेव मण्डल लिखै छथि:-

"सहस्त्राब्दीक चौपड़पर बैसल अहाँ जिनगीक खेल देख रहल अछि। गहन अन्वेषण करैत एक-एकटा चित्रक रचना कऽ रहल छी आ ओइ उमंगमे डूबि रहल छी।

असीम समुद्रक कातक दृश्य

हृदय भेल उमंगसँ पूरित....।

अहाँक अन्तरक कवि रविक चित्र उपस्थित करैत कहैत अछि-

"सूर्य किरण पसरि छल गेल

कतेक रहस्य बिलाएल

तिमिरक धुँध भेल अछि कातर

मुदा ई की......।

संग्रहमे किछु हैकू पढ़बाक सुअवसर भेटल। किछु सुआद बदलबाक लेल....। मिथिलांचलक गमकसँ अहाँक कविता हमरा सबहक मोनकेँ गमका रहल अछि:

"मोन पाड़ैत छी धानक खेत

झिल्ली कचौड़ी

लोढ़ैत काटल धानक झट्टा

ओहि बीछल शीसक पाइसँ कीनल

लालझड़ी

जेकरे नाओं लाल छड़ी आ

सत धरिआ खेल....।"

प्रवासमे रहैत स्मरण होइत गाम घर। ऐ पाँतिमे वियोगक ओइ व्याथाक वर्णन भेटैत अछि। एकटा नवीन लयक संग-

"पता नहि घुरि कऽ जाएब

आकि एतहि मरि-खपि

बिलाएब.....।"

ऐ व्यंग्यमे स्पष्ट दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि।

"लाठी मारबामे कोनो देरी नहि

बाछी भेलापर शोको थोड़ नहि

परन्तु छी पूजनीया अहाँ....।"

बाढ़सँ उत्पन्न भेल समस्या आ ओकरा छोट-छीन पाँतिमे समेटनाइ गागरमे सागर भरबाक प्रयास ऐ पाँतिमे परिलक्षित भऽ रहल अछि-

"ठाम-ठाम कटल छल हठहर

ऊपरसँ बुन्नी पड़ि रहल

सभटा धान चाउर भीतक कोठी

टटि खसल पानिक भेल ग्रास...।"

नव-नव बिम्बसँ कविता सभ पूरित अछि-

"सहस्त्रबाढ़नि जकाँ दानवाकार

घटनाक्रमक जंजाल

फूलि गेल साँस

हड़बड़ा कऽ उठलहुँ हम....।"

हड़बड़ा कऽ नै बल्कि अहाँ सचेत भऽ कऽ उठलहुँ। नव-नव चित्र ध्वनि लऽ कऽ नवीन दृष्टिक संगे। पता नै कतऽ धरि जाएब। कतऽ गन्तव्य अछि अहाँक।

"विश्वक मंथनमे

होएत किछु बहार आब....

पथक पथ ताकब.....

प्रयाण दीर्घ भेल आब....।""

ई सभ कविता अहाँकेँ भेट जायत हमर पोथी "सहस्राब्दीक चौपड़पर" मे।

आब हमर पोथी "सहस्रजित्" सँ दू टा कविता प्रस्तुत अछि।

नजरि लागि जाइ छै

माए कहै छथि

जे नजरि लागि जाइ छै

बेटाकेँ देखि जे लागैए ओ आइ सुन्दर

साँझमे छाह पड़ि जाइ छै ओकर मुँहपर

से तँ सत्ते! हमरा सन ककर बेटा

मुदा मोनमे ई अबिते नजरि लागि जाइ छै

कोनो काज शुरू करैए

मारिते रास काज एक्के बेर

खतम हेबा धरि सुधि नै रहै छै

कियो कहैए जे कतेक नीक अछि अहाँक बेटा

तँ माएक करेज धकसँ रहि जाइ छै

करेज बैसऽ लगै छै

की करै छै?

कोन सुन्दर छै?

मुदा कहैत रहै छथि माए

जे नजरि लागि जाइ छै

बाते-बातपर हमर बेटाकेँ

कनियाँ कहै छथि सासुकेँ

माँ अहाँक बेटा घबराइ बला नै अछि

दुष्टक नजरि नै लगै छै अहाँक बेटाकेँ

माए मुदा शनि दिन, सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ जड़बै छथि

सुरसुरी लागि जेतै ओकरा तँ बुझब जे नजरि नै लागल छै

आ सुरसुरी जे नै लागतै तँ बुझब जे नजरि लागि जाइ छै

कने काल सुरसुरी नै लगलापर माए होइ छथि चिन्तित

देखियौ ने, हमरा बेटाकेँ नजरि लागै छै छोटो-छोट गपपर..

नजरि लागि जाइ छै... बाते-बातपर हमर बेटाकेँ...

मुदा तखने छिकैत छन्हि बेटा, ओकरा सुरसुरी लागि जाइ छै

माएक मुँहपर अबै छन्हि मुस्की

सरिसौ-तोरी आ मेरचाइ सरबामे कनेक आर दऽ दै छथि...

कहलियन्हि ने माँ दुष्टक नजरि नै लगै छै अहाँक बेटाकेँ

कटिहारी

१

कनकनी छै बसातमे

हाड़मे ढुकि जाएत ई कनकनी

पोस्टमार्टम कएल शरीर जे राखल अछि

सातटा मोटका शिल्लपर, जड़त कनीकालमे

गोइठामे आगि जे अनलन्हिहेँ सुमनजी

राखि देल नीचाँ

कनकनाइत पानिमे डूम दऽ

गोइठाक आगिसँ आगि लऽ

शरीरकेँ गति-सद्गति देबा लेल

कऽ देलन्हि अग्निकेँ समर्पित

तृण, काठ आ घृत समेत

घुरि कऽ जेता सभ

लोह, पाथर, आगि आ जल नांघि, छूबि

डेढ़ मासक बच्चाकेँ कोरामे लेने माएकेँ छोड़ि

घर सभ घुरै छथि

एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक अन्तिम रातिक भोरमे

मुदा नै छै कोनो अन्तर

पहिरावा आ पुरुखपातकेँ छोड़ि दियौ

महिलाक अवस्था देखू

ऐ कनकनाइत बसातसँ बेशी मारुख

हाड़मे ढुकल जाइत अछि

कमला कात नै यमुनाक कात

हजार माइल दूर गामसँ आबि

मिज्झर होइत अछि खररखवाली काकीक श्वेत वस्त्र

साठि साल पूर्वक वएह खिस्सा

वएह समाज

मात्र पहिराबा बदलि गेल

मात्र नदी-धार बदलि गेल

सातटा शिल्लपर राखल ओ शरीर

अग्नि लीलि रहल सुड्डाह कऽ रहल

एकटा परिवार फेरसँ बनबए पड़त

आ तीस बर्खक बाद देखब ओकर परिणाम

ताधरि हाड़मे ढुकल रहत ई सर्द कनकनी

ऐ बसातक कनकनीसँ बड्ड बेशी सर्द

२

गोपीचानन, गंगौट, माला, उज्जर नव वस्त्र

मुँहमे तुलसीदल, सुवर्ण खण्ड गंगाजल

कुश पसारल भूमि तुलसी गाछ लग

उत्तर मुँहे

पोस्टमार्टम कएल शरीर

सुमनजी सेहो नव उज्जर वस्त्र पहीरि

जनौ, उत्तरी पहीरि, नव माटिक बर्तनक जलसँ

तेकुशासँ पूब मुँहे मंत्र पढ़ै छथि

आ ओइ जलसँ मृतककेँ शिक्त करै छथि

वामा हाथमे ऊक लऽ गोइठाक आगिसँ धधकबै छथि

तीन बेर मृतकक प्रदीक्षणा कऽ

मुँहमे आगि अर्पित होइत अछि

कपास, काठ, घृत, धूमन, कर्पूर, चानन

कपोतवेश मृतक

पाँच-पाँचटा लकड़ी सभ दै छथि

कपोतक दग्ध शरीरावशेष सन मांसपिण्ड भऽ गेलापर

सतकठिया लऽ सात बेर प्रदक्षिणा कऽ

कुरहरिसँ ओइ ऊकक सात छौ सँ खण्ड कऽ

सातो बन्धनकेँ काटि

सातो सतकठिया आगिमे फेंकि

बाल-वृद्धकेँ आगाँ कऽ

एड़ी-दौड़ी बचबैत

नहाइले जाइ छथि

तिलाञ्जलि मोड़ा-तिल-जलसँ

बिनु देह पोछने

आ फेर मृतकक आंगनमे

द्वारपर क्रमसँ लोह, पाथर, आगि आ पानि

स्पर्श कऽ घर घुरि जाइ छथि

मणिकान्त दास लिखलन्हि "त्वञ्चाहञ्च" बड्ड नीक लागल।

हमर गजल

ओम प्रकाश झा लिखैत छथि-

"ओना तँ सभ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक बाल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक बाल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा बाल गजलक मतला अछिः-

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

ऐ गजल कैँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ई गजल कनिया पुतराक उल्लेख करैत नेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर कुर्बान भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत अछि।"

ओ लिखि रहल छथि अ रचनाक मादेँ-

बाल गजल

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

बोने-बोने फिरैए जे दैता सभ

वनसप्तो लऽ घूरलि मानू बार्बी

सात रंग लऽ भोर भेले गाममे

परी रहैए गाम अकानू बार्बी

कननी दूर हेतै बच्चा सभमे

भरल आँखि बिसरी ठानू बार्बी

पानि अकास धरती जा-जा घूमी

पंख लगा टिकुली अकानू बार्बी

धम्म गुड़िया संग खेलू कूदू

राति सपनाउ निन्न आनू बार्बी

सुता दियौ ऐ गुड़ियाकेँ आ सुतू

चढ़ि ऐरावत दिन गानू बार्बी

ई संकलित अछि हमर मोटा-मोटी सय पन्नाक गजल संग्रह "धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ" जइमे गजल ४० पन्नामे छै आ ६० पन्नामे मैथिली गजलशास्त्र छै।

ऐ पोथीक "टाइटल गजल" एतऽ दऽ रहल छी-

अकत तीत प्रेमक जे पथिक अदौकालसँ

धतालबूढ़ प्रेमकेँ बोहेलक दुनू हाथजँ

निर्मल आंगुरसँ छूबै जे ओकर पुठपुरी

फरफैसी पसारै निदरदी अगिलकण्ठ जँ

निमरजना प्रेम जे छलै धपोधप निश्छल

बिदोरै लेल प्रेमीकेँ छलै ओ कड़ेकमान तँ

अकरतब कर्तव्यमे भेद नै बुझलकै जे

जराउ प्रेमक गप्प नै कहियो नुकेलकै जँ

खञ्जखूहर ऐरावत नै बाटक छैँ बाटमे

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

मुन्ना जी हमरासँ साक्षात्कारमे पुछने छलाह जे उपलब्ध अछि विदेह: सदेह ३३ पृ. ४१५ पर ओकर किछु अंश दऽ रहल छी

मुन्नाजी: एतेक काज केलाक पछातियो एखन धरि अहाँक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाकेँ प्रभावित तँ नै पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक परिरक्षणक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। खराब लोक सेहो अहाँकेँ नीक कहत से कोना सम्भव? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।

पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर। ।

(कबीर)

(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछाँ-पाछाँ भगवान कबीर-कबीर कहैत पछोर धेने छथि।-कबीर)

खञ्जखूहर ऐरावत नै बाटक छैँ बाटमे

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

(लोककेँ काज केलाक बाद दाम भेटै छै हमरा अगूबारे पेने छी।)

जगदानन्द झा "मनु"- "गजेन्द्र ठाकुर जीक ई उक्ति सय टका ठीक छैन -"जे जतेक बच्चा बनि जेता ओ ओतेक नीक बाल गजल कहता|"

चन्दन कुमार झा- "गजेन्द्र जी गजल व्याकरणकेँ पुष्ट करैत नहि खाली गजल लिखलाह अपितु सरल वर्णिक आ' सरल मात्रिक बहरक रूप मे मैथिली गजल संसार केँ दूटा अनमोल बहर वा गजल-छंदक ढाँचा देलखिन्ह जे हमरा सन-सन कतेको नवतुरिया आ' नवसिखुआ केऽ लेल गजल लिखबा हेतु सहायक सिद्ध भेल अछि. एहि सँ मैथिली गजल केँ अभूतपूर्व समृद्धि भेटि रहल छैक।"

आशीष अनचिन्हार लिखै छथि-

"मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः हरेक नव गजलकार कए रहल छथि।"

ओ गजल नीचाँ देल जा रहल अछि।

बहरे मुतकारिब

बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) चारि बेर

अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे

जिबै कोन बैबे नियारी अनेरे

हहारो उठेलौं उदासी गबेलौं

सिहाबै किए छी मदारी अनेरे

जतेको नबारी छबारी बुरैए

घुरेबै कियो नै सुतारी अनेरे

घरोमे उपासे बहारो निरासे

दहारे अकाले नचारी अनेरे

चलै छी खटोली उठा ऐ भरोसे

भसाठी अबैए विचारी अनेरे

आ अही गजल संग्रहक गजल सभसँ किछु शेर अहाँ लेल, जँ अन्त जाइत-जाइत कना जाय तँ नीचाँमे देल ई-मेलपर अवश्य सूचित करी।

उड़ैए चिड़ै आ बहैए अनेरे ऐ नील अकाश बिच

ऐरावत-मन जखन उधियाइए अङेजब कोना

देखल जानल सेहो आइए

रक्षादीप से मिझा रहल अछि

ककरा की कहबै के पतिआएत

गह-गहमे अर्थात बहुत अछि

अनठेने नै दै छी कान बात किए यौ

घृणो तँ करू जँ सएह भरल अछि

चिन्ताक मोटगर रेख कपारपर

छल छोट से बनल आब छेबगर

आकांक्षाक पजरैत अग्निक बिच

पैघ छी तकर चेन्हासी कहलहुँ

आजुक बात खतम होएत यौ

भोरुका बसात से बिर्रो बनल

पूछू सभसँ आ छोड़ू नै ककरो

नव विहान किए छल रोकल

आस्ते सँ जे सिहकि उठल ई बसात

अन्तर्मनक शक्ति बदलि देत सत्तै

माँछ बिनु पानिक उन्टा प्रेम हम्मर

प्रेम पाबि खटबताह बनल अछि

तेजगर छी से छद्म ज्ञान भेल

खिखिर कटाबै भौकी प्रतिपल

नटुआ बिपटा बनि हँसै अछि

तोहूँ हमरे सन अछि देखल

डरक घाट नहाएल छी हम

से सहब दहोदिश अत्याचार

ऐरावत देखैत इजोतक बिर्रो बाढ़ि दुर्भिक्ष

ग्रहणक ई सूर्य थाकल देखै छी चोन्हराएल

चन्द्रमाक इजोतक चर्च तँ बड़ होइ छै

एहि पिरौँछ इजोतक खेरहा कहलक

आरि-धूर बाटे चली आ जा कऽ पहुँची

बीच सड़क ठाढ़ छै रोकि ने सकितौं

आ देखल मेघक टिक्कर खसि रहल छै अकासमे

हुलसि ताकल खेत दिस उल्लास पर्वत चढ़ल ऐ

जाऊ कत्तऽ टिटही सेहो इजोरियामे भागल

अन्हरिया राति आ जिनगी झूर-झाम जे भेल

इजोरिया छैक कतबो छै तँ रातिये सगरो

दिनोमे ग्रहण आ सगरो अन्हार पसरल

हनिकय फेकी विचार मोनक

फड़िच्छ भेने बेसम्हार भऽ गेलै

गोंहि आएल अछि हमरा टोल

जलसमाधि तँ व्योपार भऽ गेलै

ऐरावत गज-ग्राहक गज नै

दुनूमे मेलक नियार भऽ गेलै

आँखि ओङठल जाइए कहू की करी

नै बुझलौं तमसाइए कहू की करी

धान छै खखरी बनल अहिठाम आ

धानी आगि धुधुआइए कहू की करी

देखि छूबि अनुभूतिक क्षण

ई पाँती इतिहास बनत नै

बान्हक कातमे घर बनेने बाट जोही

बाट बिसरि कऽ नै बिलमैए हमरा की

झूठक बहैत धार छै जे थमकल

उनटि बहलै तँ डाह दैए रहि रहि

डंकक अबैत चोट सुनैत भेल दिन कतेक

ऊहि अबिते अबैत विभिन्न भेल उसरि गेल

लच्छनो तँ बापक जिद्द गुनलकै

नीक तीक भूलि सएह बनलिऐ

बूझि सकलौं नै निशाभाग राशिक खेरहा

लूझि सकलौं नै परातीक पाँतिक खेरहा

बझाओल गेलैए चिड़ैया एना रे

कहैए हितैषी ई शिकारी बड़ा रे

क्रूर स्वप्न आ सुन्दर जीवन देखलौं निन्नसँ जगलापर

कोना हम मानब जँ कियो ई कहलक किछु नै बदलैए

कहैए ई मिलेबै आइ नोरोमे कने गोला

जँ भांगे पीबि एतै भावना पीतै लगैए ई

कोन पक्का रंगसँ ढौराबी जे धोखराए नै

मोनक रंगो धोखराइए चलू घुरि चली

भोरे उदासी उड़ियाइत जाइत

जे बुन्नी बुनिऐल छिच्चा अहीं तँ छी

चरको परियानि ई बनेलौं कएक बेर

उबेरक बाट ताकी आ सुरुज कहाइ छी

ओकरा देखि बुझलहुँ गढ़निक सोपान

बनैत बनैत बनै मूर्ति अहाँ देखाइ छी

कोनटा बचल नै एकान्ती ले एकोटा

अन्हरोखे उठै छी आ गनती गनै छी

पिआ गेलाह देशान्तर दूरस्त देस

कियो नै घुरै अछि से आसो नै तकै छी

उचरि नव रूप अपन लिखैब तखन किने

उतर दछिन डगहर बहैब तखन किने

कनकन करत बनत सदिखन तलिया यौ

सुअद पैब जौँ अहँ झखैब तखन किने

पड़ाइनपर कनैत अछि भाग जँ कतौ

गजेन्द्र मन बूझै हियैब तखन किने

जे देखलक बरियारक गाछ कहलक बिरदाबन ईहे

उड़कुस्सी लागै दलानपर छै आब उजड़नहिए नीक

जकरा कतहु ने छै पुछारी से अछि सौराठक नोतिहारी

चन्द्रोगत नै प्रेम अछिञ्जल से आब बिसरनहिए नीक

हाथी अपने पएरे भारी चुट्टी अपने पएरे भारी अछि

ऐरावत प्रेम-जिंजीरसँ छारल तैं ठोकरेनहिए नीक

आदति जे लागल वेदना सहबाक

गेंठ बनैए से सोहनगर लगैए

बनि माँछ अकुलाइ छी बाझब जालमे कक्खन

जँ फँसि त्राण पाएब आँखि बओने से देखतै ओ

नै बुझलिऐ ई एते बढ़ल अछि बात

देखल आइ जे ओ भँसिया रहल अछि

हमरासँ कते की माँगै छल रहरहाँ

जे जुमल ओ बिनु लेने जा रहल अछि

ओकर हाक्रोस हमर चुप्पी सुनै छल

बाजब से बिनु सुनने जा रहल अछि

आब आउ हमर किछु हाइकू/ शेनर्यू/ टनका/ हैबून

बीहनि कथा सन ई विधा सीरियस नै मानल जाइ छै। मुदा जँ निचुलका रचना सभ (हमर पोथी "सहस्रजित्" सँ) अहाँकेँ गम्भीर लगैए तँ बुझू जे हमर काज सफल भेल।

१

प्रकृति रोष

कुश तिल जलसँ

विधवा बनि

सधवा की विभेद

दूबि अक्षत जल (टनका/ वाका)

करबीरसँ

घर गाछ पहाड़

घेरल अछि (हाइकू)

बनैया लोक

घरक पनिबह

बिदति नहि (शेनर्यू)

करहड़ उपारि कऽ खाउ, प्रकृतिकेँ घरमे बसाउ, फुलवारी बनाउ, पहाड़क फोटो बना कऽ घरमे लटकाउ। आ भऽ जाउ प्रकृति प्रेमी। गामकेँ नग्रमे लऽ आउ, चित्रकारीसँ, कलाकारीसँ, बुधियारीसँ।

खेलाइ हम

करियाझुम्मरिमे

नीचाँ अकास

एकपेड़िया सड़क कतऽ पाबी आब, आब तँ चारि लेन सेहो कम चकरगर मानल जाइए। छह लेन, आठ लेन। अकास मलिछोंह, गाछक हरियरी मलिछोंह। मोन मलिछोंह। मुदा सड़क, घर सभ फोटो सन चिक्कन चुनमुन। लिखी चित्रसँ

घरक खाका आइ

छी जङलाह

(हैबून)

२

१.

तागि प्रकृति

ताकैले भेलौं पार

सुखल पात

(हाइकू)

२.

ई फूल फल

चढ़ैत जाइ आगाँ

कम होइए

उनटि देखी फेर

लगमे कम दूरे बेशी

(टनका/ वाका)

३.

रंग छाड़ल

पहाड़ आर गाछ

मुदा जीवन

(शेनर्यू)

४.

झझायल रंग कतेको वर्णक। बच्चाक किताबोसँ बेशी चमकैए ई प्रकृति, फूल, पात, बाट आ अकास। आ एकरा सभकेँ तँ छोड़ू ई बरफ, जे रेगिस्ताने ने छी, बालुक बदला बरफ। मुदा नै अछि ऑक्सीजन आ नहिये फूल-पात। मुदा एकर सेहो देखियौ शान। जइ रस्तासँ अबै छलौं से ओतेक कहाँ चमकै छल। जखन ओइ प्रकृतिक लग छलौं तँ कहाँ ओकर रूप निङहारि पाबै छलौं। कियो दूरसँ देखैत हएत तँ निङहारि पबैत हएत हमरो, प्रकृतिक बीचमे हमहूँ प्रकृति बनल हएब। मुदा ऐ शिखरपर आबि जे सनगर लगैए ई प्रकृति।

गाछ भेल छै

असगरुआ बौआ

पात भेल छै

खिलौना प्रकृतिक

शिखर देखि

मुदा आब ऐ शिखरपर एलाक बाद लगैए जे बेकारे एलौं एतऽ। ऐ शिखरकेँ ओइ ठामसँ देखै छलौं तँ कतेक सुन्नर लगै छल ई शिखर। मुदा शिखरपर एलाक बाद आब तँ वएह गाम नीक लगैए। तुलना तखने ने हएत जखन गामक प्रकृतिकेँ शिखरसँ देखबै। गामसँ शिखर आ शिखरसँ गाम। मुदा लिलसासँ हाइ रे हाइ। आब चलै छी शिखरक ओइ पार। देखै छी ओइ दिसुका लोक समाज। दूरसँ लगैए दुनू कातक गाम नीक, तराउपड़ी। मुदा ओइ कातक गामसँ शिखर ओतेक सुन्नर लागत जतेक ऐ पारक गामसँ लगैए।

नै ठाढ़ होउ

चलू चली घुरैले

बनिजार छी

लोकक बीचमे छी

जाइत घुरैत छी

(हैबून)

३

चतरल छै/ लतरल टाट ई/ झोरा कऽ खाउ

ई बिजलौका/ जड़िक शिरा सन/ पसरैए

जड़िसँ फूटि /ई कड़कड़ाइत/ दिग दिगन्त/ पसरत सगरे/ करत आच्छादित

कारण नै छै/ हारि लेल, विजय/ लेल नै गर्व

लोक पताली/ जहाज अकासमे / उनटि गेल / विश्व लोक ब्रह्माण्ड / बात विचार सभ

जल दुनियाँ/ समुद्र तलपर/ अद्भुत रंग

बिनु हरदि/ चाणक्यक बिखाहि / विषकन्या ओ

बिनु हरदि/ बनलि बिखाहि ओ / विषकन्या जे/ पालित भेल छलि/ बिनु हरदिक जे

हरदि, गुणे-गुण, सर्दी भेल, दूधमे घी आ हरदि दियौ आ आँखि मूनि घोंटि जाउ। चोट लागल हरदिमे डोकाबला चून मिलाउ आ लेप दियौ। हरदि बिना ने दालि आ ने खिच्चरि लागत पियरगर। खिच्चरि भऽ जाएत मरसटका आ दालि भटरंग। देखैमे लगैए जेना

वैजयन्ती फूलक गाछ हुअए, मुदा ई बाड़ीमे होइए, वैजयन्ती सन पोखरिक महारपर नै। हरदि गाछ/ नुकौने जड़िमे ई/ अपन गुण (हैबून)

४

आसक अछि/ पनिसोखा उगल/ चलू बढ़ै छी (हाइकू)

भेल उबेर/ उगल पनिसोखा/ काज करै छी/ बहराइ घरसँ/ बाट भेटल अछि (टनका)

पनिसोखा ई/ उगल अकासमे/ उपरे ऊपर! (शेनर्यू)

आह, आब हएत उबेर, उगि गेल अछि पनिसोखा, खुजि गेल अछि बाट, बनिहार बिदा भेल बनिज करए, आ किसान बीया उखारि रोपनि लेल आ हम बिदा भेलौं कोनो अकाजक काज लेल, अन्तहीन बाटपर, सुकाजक काज लेल, दिशाहीन ठमकल चौबटिया दिस।

बाट तकैत

ताकी अकास दिस

विचित्र भ्रम

जेना ई पनिसोखा

उगि खोलत बाट

तखन फेरसँ ताकब, हेरब अपन समान, आ बर्खा होइ धरि चलैत रहब। तँ ई कहब जे बर्खा होइ धरि चलैत रहब कोनो पलायन तँ नै। पनिसोखा उगले अछि, बाट खुजले अछि आ हम बाट ताकि रहल छी आबैबला बर्खाक?

सतरंगिया

अछि ई आस

उगैए आस

डुबबाले अकास

बनि गेल संत्रास

(हैबून -दू टा गद्य आ दूटा टनका युक्त)

फेर कुण्डलिया (हमर पोथी "सहस्रजित्" सँ)

कुण्डलिया

१

सत असत मे भेद करू, राखू नै किछु रोख

ततमत नै करू कनियो, जे छै होनी लेख

जे छै होनी लेख, हुए से नीक निकेना

सत्यक जीत हएत, जँ करबै अकसतिकस ने

डर संग असत केर, डर ढाहू मध्य ह्रदयक

ऐरावतक बुझैत, यएह छी असत्यक सत

२

छत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार।

दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥

काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए।

सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए।

ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता।

घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता। ।

३

विजय बिन गर्व हएत जँ, बुझू तखन ई नीक

हारि भेने घबराउ नै, बात बुझू ई मीत

बात बुझू ई मीत, हुअए जँ एक झमेला

हारि मानि बढ़ि जाउ, करू ने फेर बखेरा

भेल काज प्रसन्न जतऽ, नीक अछि टा सएह

मोन ऐरावत बुझि, देखि ली हारि-विजय

४

बोल वचन हुअए नीक, बूझि बाजी जँ बात

गुम्म रहनाइए ठीक, हुए जँ नमहर जाल

हुए जँ नमहर जाल, लेत ओ लप दऽ भीतर

हल्ला बनि जाएत, नै अछि जँ बेर उचित पर

सुनू हमर ई बात, बात होइए अनमोल

ऐरावत कहि जाय, कहू नै ओल सन बोल

आब पढ़ू मिथिलाक ध्वज ग़ीत (सहस्राब्दीक चौपड़पर सँ)

मिथिलाक ध्वज ग़ीत

मिथिलाक ध्वज फहरायत जगतमे,

माँ रूषलि, भूषलि, दूषलि, देखल हम,

अकुलाइत छी, भँसियाइत अछि मन।

छी विद्याक उद्योगक कर्मभूमि सँ,

पछाड़ि आयत सन्तति अहाँक पुनि,

बुद्धि, चातुर्यक आ शौर्यक करसँ,

विजयक प्रति करू अहँ शंका जुनि।

मैथिली छथि अल्पप्राण भेल जौँ,

सन्ध्यक्षर बाजि करब हम न्योरा,

वर्ण स्फोटक बनत स्पर्शसँ हमर,

ध्वज खसत नहि हे मातु मिथिला।

(विद्यापति शब्दावलीक प्रयोग)

आब ऐ बाल-गीतक माध्यमसँ सभ जानवर-चिड़ैक बोली सीखू (बाङक बङौरा सँ)

बड़द करैए दाउन ने यौ

हाथी अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि

हिर्र-हिर्र सुग्गर चलू संग घर घुरि

ती-ती परबा उड़ि गेल ऊपर

लिह लिह बकरी घास तूँ खो

बड़द करैए दाउन ने यौ

अतू कुकुड़ कुत-कुत डॉगी

कैटी पिसू-पिसू आएत की?

चेहै-चेहै सुनि पारा दौगल,

भागी छोड़ि बाट हम ताकी

अर्र बकरी घास तूँ खो

बड़द करैए दाउन ने यौ

ढेहै-ढेहै कऽ नहि खौंझाबू

साँढ़ आओत खरिहानमे यौ

आव ठामे रे हे, हौरे हौ

बड़द करैए दाउन ने यौ

आब बीहनि कथा

जँ बीहनि कथाक नामपर अहाँ हास्य-कणिका पढ़ने छी तँ ई विधा अहाँकेँ सीरियस नै लागत। तँ पढ़ू एकटा बीहनि कथा (गल्प गुच्छ सँ), आ एकसँ बेशी बेर पढ़ए पड़ए तँ पढ़ू, आ हमरा विश्वास अछि जे हाइकू-हैबून सन अहाँ एकरो गम्भीरतासँ लेमऽ लागब।

बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

"मरि गेलि बेचारी "। गौआँ सभ फलना बाबूक तेसर कनिआँक मुइलापर कहलन्हि।

"फलना बाबू तेसर कनियाँक गरदनि काटि लेलन्हि"। एक गोटे कहलान्हि।

"से ठीके कहैत छी। पहिल कनियाँमे बच्चा नहि भेलैक तँ दोसर बियाह कएलक। मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नहि भेलैक तँ बुझबाक चाही छलए ने"।- दोसर गोटे कहलन्हि।

"हँ आ उनटे तेसर कनियाँकेँ कहैत रहथि जे भातिज सभकेँ नहि मानैत छिऐक तँ भगवान बच्चा नहि देलन्हि। बुझू"?-तेसर गोटे कहलन्हि।

"हिजड़ा सार"।- चारिम गोटे सभा समाप्त करैत बाजल।

मुदा चारि गोटेक ई महा-सम्मेलन एहि गपपर सहमति मे छल जे पहिल दू टा बियाह करब उचित रहए।

हमर उपन्यास

शिव कुमार झा "टिल्लू" "मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण" निबन्धमे लिखैत छथि-

"गजेन्द्र ठाकुरक "सहस्त्रबाढ़नि"मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ िकछु वर्ख वाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर "सहस्त्रशीर्षा"मे मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार-मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वरा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्ह आ जमाए मथुरानंद डी. पी. एस. स्कूलक प्रचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

1967ई. क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मतिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यवसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ पार्किगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पो छै छथि आ अखबारक हॉकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।"

दुर्गानन्द मंडल लिखै छथि-

"विदेह पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक सिनेहसँ हमरा अपनामे सृजनात्मक शक्तिक संचार भेल। बहुत रास एहेन शब्द सभ जे मैथिली साहित्यमे अप्रयुक्त छल। जेकरा ठेंठ कहल जाइ छलै ओ जखन ठाकुर जीक लिखल पोथी कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पढ़ि देलखहुँ आ जनलहुँ तँ आरो विश्वास भऽ गेल।"

राजेन्द्र कुमार प्रधान लिखै छथि-

"श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक उपन्यास- सहस्रबाढ़नि ढेर रास रजनैतिक आ ब्यूरियोक्रेटिक उथाल-पुथलक गबाह अछि, तँ हुनकर सहस्रशीर्षा दलित गबैय्या मोहनक भारतक स्वतंत्रतासँ सूचनाक अधिकार धरि गीतक माध्यमसँ राजनैतिक चेतना पसारबाक अद्भुत सफल प्रयास अछि, तँ एकर बीचमे सन्हिआएल गामक आ बाढ़िक राजनीति गामसँ दिल्ली धरि पसरल अछि।"

एकटा काल्पनिक मुदा मिथिलाक गाम "गढ़ नारिकेल" उपन्यास-त्रयीमे सहस्रशीर्षाक बाद दोसर उपन्यास सेहो विदेहपर धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भऽ रहल अछि।

जगदीश प्रसाद मंडल लिखै छथि- "गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक।"

उमेश मण्डल लिखै छथि-

"गजेन्द्र ठाकुर जीक लिखल "सहस्त्रवाढ़नि" उपन्यासक आखर-आखरमे संवेदनाक स्वर झलकैत अछि। संवेदनाक बिम्ब उद्दाध आ सम्यक अर्थनीतिसँ भरल मार्मिक चित्रण- जाहिमे एकटा कर्तव्यनिष्ट आ इमानदार व्यक्ति नन्दकेँ गृहस्त धर्मक संग-संग सामाजिक दायित्वक पालन करवाक क्रममे उद्वेलित व्यथा प्रस्तुत कएल गेल अछि।"

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

लघुकथा

सर-समाज आ बाणवीर पढ़ू गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह) सँ

सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली आ तस्कर पढ़ू- शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह) सँ

योगानन्द झा लिखै छथि-

"कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक- ई पोथी श्री गजेन्द्र ठाकुरक विभिन्न विधाक रचनाक संकलन थिक। एकर सातम खंडमे बालकथाक रूपमे तेइस गोट कथा संग्रहीत अछि। ऐ कथा सभमे अधिकांश मिथिलाक लोकनायक सबहक कथा िथक तथापि अाधा दर्जनक लगभग कथाकेँ बाल-लोककथा कहल जा सकैछ, यद्यपि ओकरो सबहक भाषा पूर्णत: शास्त्रीय प्रकृतिक अछि। बाललोक कथाक संकलनक क्षेत्रमे चलैत प्रयास सबहक नमूनाक रूपमे एकरा महत्वपूर्ण कहल जा सकैछ।"

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-

"गजेन्द्र ठाकुर अद्भुत व्यक्ति छथि। प्रखर मेधा आ प्रचण्ड ऊर्जा सँ सम्पन्न। हुनक प्रतिभाक पसार बहुत व्यापक छनि। ओ भाषा, साहित्य आ समाजक उत्थानमे जी-जान सँ लागल छथि। गजेन्द्र ठाकुर बहुभाषाविद् छथि। हुनक ई गुण शब्दकोश-निर्माण, अनेक भाषा मे पारस्परिक अनुवाद आ विभिन्न प्रकारक अनुसंधान मे प्रतिफलित भऽ रहल अछि। ओ मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका "विदेह"क जनक छथि। "विदेह" मैथिली केँ वैश्विक मंच प्रदान कयलक अछि। मैथिल संस्कृतिक संरक्षण आ विकासक लेल ओ एकटा विलक्षण आर्काइवक निर्माण कयने छथि जे निरन्तर संवर्धनशील अछि। सात खंड मे प्रकाशित "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" गजेन्द्र ठाकुरक सृजन आ विमर्शक फुलबाड़ी थिक। साहित्यक कोनो विधा गजेन्द्र बाबू सँ छूटल नहि छनि। हुनक साहित्यिक बहुरंगी दुनिया बहुत प्रांजल आ लोकहितकारी अछि। बाल-साहित्य मे तऽ हुनक कलाक उत्कर्ष आ निखार अनुपम अछि।"

आ आब जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी (विदेह: सदेह ३५ पृ. ११०५-१२५०)

०

सन् सैंतालीस...

भारतक स्वतंत्र त्रिवार्णिक झण्डा फहरा रहल छल।

मुदा कम्यूनिस्ट पार्टीक माननाइ छल जे भारत स्वतंत्र नै भेल अछि।

असली स्वतंत्रता भेटब बाँकी छै...

मिथिलाक एकटा गाम...

जन्म भेल रहए एकटा बच्चाक.. ओही बर्ख ...

ओइ स्वतंत्र वा स्वतंत्र नै भारतमे...

पिताक मृत्यु...गरीबी.. केस मोकदमा...

वंचितक लेल संघर्षमे भेटलै स्वतंत्र भारतक वा स्वतंत्र नै भेल भारतक जेल....

आइ बेरमामे पाँच-दस बीघासँ पैघ जोत ककरो नै..

ओइ गाममे जीवित अछि आइयो किसानी आत्मनिर्भर संस्कृति...

पुरोहितवादपर ब्राह्मणवादक एकछत्र राज्यक जतऽ भेल समाप्ति..

संघर्षक समाप्तिक बाद जिनकर लेखन मैथिली साहित्यमे आनि देलक पुनर्जागरण...

जगदीश प्रसाद मण्डल- एकटा बायोग्राफी... गजेन्द्र ठाकुर द्वारा

हमर नाटक

उल्कामुख

उल्कामुख (नाटक)

-गंगेश आ वल्लभाक प्रेम ऐ नाटकक विषय अछि। मुदा पहिल दू अंकक बाद तेसर आ चारिम अंक बदलि जाइए। आ आबि जाइ छथि सोझाँ उदयन, दीना, भदरी, आचार्य व्याघ्र, आचार्य सिंह, आचार्य सरभ, शिष्य साही, शिष्य खिखिर, शिष्य नढ़िया, शिष्य बिज्जी। आ शुरू भऽ जाइए इतिहासक एकटा षडयंत्रक अनुपालन। मुदा चारिम कल्लोलक अन्तमे भगता कहि दै छथि अपन शिष्यकेँ एकटा रहस्य.......जे विस्मरणक बादो आबि जाएत स्मरणमे।...बनि उल्कामुख...

- पाँचम कल्लोलसँ संकेतक बदला वास्तविकता, कल्पनाक बदला सत्य...

-पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाएल घन राखल रहत, पाँचम कल्लोलसँ भूत आ कल्पनाक प्रतीक ओइ संकेतक बदला वास्तविकताक प्रतीक गोला राखल रहत।

- गंगेशक तत्त्वचिन्तामणिपर ढेर रास टीका उपलब्ध अछि, गंगेशकेँ कहल जाइ छन्हि तत्वचितामणिकारक गंगेश; मुदा हुनकर कविता भऽ गेल छन्हि "उल्कामुख"!!!

मैथिली नाटककेँ.....................

नाटकक नव युगमे प्रवेश प्रवेश करबैत अछि.......

उल्कामुख..

विदेह नाट्य उत्सव २०१२ मे मंचित............................

निर्देशक रहथि बेचन ठाकुर...

मंच परिकल्पना रहए भरत नाट्यशास्त्रक अनुरूप ..

मैथिली समीक्षाशास्त्र, मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त, मैथिली गजलशास्त्र

अतुलेश्वर लिखै छथि- हेमनिमे गजेन्द्र ठाकुरक एकटा पत्र आयल छल जे ई षडयंत्र नहि थिक जे कोनो गोष्ठी (सगर राति दीप जरए, जे वर्तमानमे कथा गोष्ठी सँ बेशी अनर्गल गोष्ठी भ गेल अछि) मे एहि तथ्य पर नहि आलोचना होइत अछि जे एहि कथामे कोन कमजोरी अछि वा कोन-कोन नव तथ्य आयल अछि, बल्कि जाइत, खाइतकेर सङ्ग रमानाथी-शैली पर चर्चा कएल जाइत अछि?

मायानन्द मिश्र लिखलन्हि- "कुरुक्षेत्रम् अंतर्मनक मे हमर उपन्यास स्त्रीधनक जे विरोध कएल गेल अछि तकर हम विरोध करैत छी।... " समालोचनाकेँ विरोधमे लेब की उचित?

मैथिली समीक्षाशास्त्र

(सिद्धांत लेल)

मैथिली समीक्षाशास्त्र (विदेह: सदेह ३५ पृ. १३२२-१४१६)

(प्रयोग लेल)

बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

विदेह: सदेह ३३ पृ. २०१-२०६)

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त

मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त (विदेह: सदेह ३० पृ. १३१-१३५)

मैथिली गजलशास्त्र

मैथिली गजलशास्त्र (विदेह: सदेह ३५ पृ. १२५१-१३२१)

विद्यापतिक बिदेसिया

विदेह: सदेह ३३ पृ. १९२-१९८

प्रतियोगी परीक्षार्थी लेल

NTA-UGC / UPSC / BPSC मैथिली वैकल्पिक—गजेन्द्र ठाकुर

[भारोपीय भाषा-परिवारमे मैथिलीक स्थान / मैथिली भाषाक उद्भव आ विकास—संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली]

(आलोचना—आधुनिक कालक विविध साहित्यिक विधा / अभ्यर्थीक आलोचनात्मक क्षमताक परीक्षण)

(आधुनिक कालक भिन्न-भिन्न साहित्यिक विधाक समालोचना / अभ्यर्थीक आलोचनात्मक क्षमताक परीक्षण)

(बद्रीनाथ झा शब्दावली आ मिथिलाक कृषि-मत्स्य शब्दावली)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- विद्यापति)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- पद्य समीक्षा- बानगी)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- लोक गाथा नृत्य नाटक संगीत)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- यात्री)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली रामायण)

(वैल्यू एडीशन- द्वितीय पत्र- मैथिली उपन्यास)

(वैल्यू एडीशन- प्रथम पत्र- शब्द विचार)

(तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास)

अनुलग्नक-१-२-३ अनुलग्नक- ४-५

(मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया) [यू. पी. एस. सी. सिलेबस, पत्र-१, भाग-"ए", क्रम-५])

[मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली- बिहार लोक सेवा आयोग (बी. पी. एस. सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01- गजेन्द्र ठाकुर

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-1- गजेन्द्र ठाकुर

TEST SERIES-2- गजेन्द्र ठाकुर

GS (Pre)

TOPIC 1 - गजेन्द्र ठाकुर

हमर अनूदित साहित्य

हमर जोर आन भाषासँ मैथिली अनुवादक बेशी रहल अछि ओना मैथिलीसँ अंग्रेजीमे हम सेहो अनुवाद केने छी। तकर पाछाँ हमर दूटा उद्देश्य अछि। पहिल जे ऐ सँ मैथिली समृद्ध हएत आ दोसर जखन हम अपन आ अनकर भाषाक साहित्य नै पढ़ब तँ आन किए पढ़त। नीचाँक पहिल लिंक सामान्य पाठ लेल अछि आ एतऽ मैथिलीमे अनूदित एकटा कथा आ किछु कविता अछि। दोसर लिंक ३५ टा बाल साहित्यक सचित्र पोथी अछि आ सायास द्विभाषिक (मैथिली-अंग्रेजी) राखल गेल अछि।

१

अनूदित साहित्य (आन भाषासँ)- गजेन्द्र ठाकुर

विदेह: सदेह २७ (गजेन्द्र ठाकुर आ रवि भूषण पाठकक आन भाषासँ अनूदित गद्य आ पद्य- अंक १-३५० सँ)

२

बाल साहित्य (अनुवाद- द्विभाषिक- मैथिली-अंग्रेजी)- गजेन्द्र ठाकुर

टोस्ट

बड़ीटा! कनियेटा!

एतऽ हम सभ रहै छी

भारतोल्लक राजकुमारी

भारतोल्लक राजकुमारी (बिनु शब्दक)

वुयो

कच-कच कचाक

चुन्नू-मुन्नूक नहेनाइ

नेना जे बैलूनसँ डेराइत छल

अद्भुत फिबोनाची अंक-शृंखला

हारू

अखन नै, अखन नै!

जन्मदिनक उत्सव भोज

मोट राजा पातर-दुब्बड़ कुकुड़

बचिया जे अपन हँसी नै रोकि सकैत छलि

अंग्रेजी

हम सूंघि सकै छी

छोट लाल-टुहटुह डोरी

करू नीक, भोगू नीक

ई सभटा बिलाड़िक दोख अछि!

चोभा आम!

हमर टोलक बाट

जखन इकड़ू स्कूल गेल

माछी फेर आउ टाटा!

अमाचीक जुलुम मशीन सभ

टिंग टोंग

पाउ-म्याऊ-वाह

कुकुड़क एकटा दिन

हमरा नीक लगैए

रीताक नव-स्कूलमे पहिल दिन

कनी हँसियौ ने!

लाल बरसाती

भूत-प्रेतक नाट्यशाला

आउ पएर गानी

कतऽ अछि ई अंक ५?

मुन्नाजी: अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता हएत?

गजेन्द्र ठाकुर: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पणमे हम लिखने रही-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

आ ई पढ़ि गामक बहुत गोटे कानए लागल छलाह। हुनका सभकेँ बुझल छन्हि, मुदा अहाँकेँ हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य़ करत।

४२. वजन प्रबन्धन: एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव

सारांश

ई कथा २००० ई. मे शुरू होइत अछि, ओइ सालक उत्तरार्धमे, जखन हम १०० किलोक नै ७८-८० किलोक छलौं। फेर हम एक सालसँ बेसी छुट्टीपर छलौं, एकटा संदिग्ध-स्थितिक सड़क-दुर्घटनाक बाद, जखन सरकारी काजसँ घुरैत काल नव-सहस्राब्दी शुरू हेबासँ पहिने ओइ दुर्घटनामे हमर "जांघक-हड्डी" दू भाग मे टूटि गेल। दुर्घटनाक राति ब्लड प्रेशर ६०-४० भेलाक बाद डॉक्टर ऑक्सीजन इमरजेंसी घोषित केलन्हि २ बजे राति मे।

बीजशब्द: प्रबन्धन · व्यक्तिगत · प्रयोग · अनुभव · सेहो · किलो · छलौं

वजन प्रबंधन - एकटा व्यक्तिगत प्रयोग आ अनुभव

ई कथा २००० ई. मे शुरू होइत अछि, ओइ सालक उत्तरार्धमे, जखन हम १०० किलोक नै ७८-८० किलोक छलौं। फेर हम एक सालसँ बेसी छुट्टीपर छलौं, एकटा संदिग्ध-स्थितिक सड़क-दुर्घटनाक बाद, जखन सरकारी काजसँ घुरैत काल नव-सहस्राब्दी शुरू हेबासँ पहिने ओइ दुर्घटनामे हमर "जांघक-हड्डी" दू भाग मे टूटि गेल। दुर्घटनाक राति ब्लड प्रेशर ६०-४० भेलाक बाद डॉक्टर ऑक्सीजन इमरजेंसी घोषित केलन्हि २ बजे राति मे। बादमे आन तरहक भयावह परिस्थिति अबैत गेल, जेना ए. आर. डी. एस. डायगनोस भेनाइ आ तकरा लेल १५ दिन धरि वेंटिलेटरक हमरा ऊपर प्रयोग। फेर एक साल मे तीन बेर ऑपरेशन भेल आ फेर डेढ़ साल बाद बैसाखीसँ बेंतपर आबि सकलौं। फेर आयल १५ अगस्त, ओइ साल रक्षाबंधन सेहो अही दिन छल, आ ओही दिन हम फेरसँ गाड़ी चलाबय लगलौं।

आ ऐ समयावधिमे हमर ओजन ८०सँ बढ़ि कऽ १०० किलो भऽ गेल, माछ-भात खाइ आ सुतय कऽ अलाबे कोनो शारीरिक श्रम नै हेबाक कारण। आ ई बढ़लाहा ओजन अगिला १८ बर्ख धरि ओतबे बनल रहल। ओना हम कहि दी जे आब हम फेर ८० किलोक भऽ गेल छी। ओजन कम हेबाक एकटा कथा अछि। हमर स्थानांतरण ६ मास लेल दोसर विभागमे कोनो आवश्यक काज लेल कएल गेल छल। ओइ विभागमे हमर सभ सहयोगी आ अधीनस्थ सेहो अर्धसैनिक बलक छलाह। हम १०० मीटरक दूरी सेहो दौगि नै सकैत छलौं, आ ओ सभ हमरा वजन कम करय लेल दौगय लेल कहैत छलाह, आ एक दिन जखन हमर समय आबि गेल तँ हम हुनका सभकेँ कहलियनि जे तीन मासमे हम हम अपन ओजन फेरसँ ८० किलो कऽ लेब। हम जे ई कहलियनि तकर पाछू एकटा ठोस आधार छल।

पछिला १८ साल मे हम विभिन्न प्रकारेँ प्रयास केलौं जइमे जलखै छोड़नाइ, दिनमे मात्र खीरा खा कऽ रहनाइ, मुदा हम लगभग पूर्ण रूपसँ ओजन घटेबामे विफल रहलौं। तखन हमर अनचोक्के ३ मासमे ओजन कम करबाक विश्वास कतऽ सँ आयल? तकर पाछू की रहस्य छल? एतय आब हमरा लग एकटा उदाहरण छल, हमर बेटा क लंबाइ ६ फीट ३ इंच छन्हि, आ हुनकर एन. डी. ए. मे उम्र-लम्बाइ-वजनक अनुपातक अनुसार अपन ओजन १०० सँ घटा कऽ ६७ किलो करबाक छलन्हि। आब अहाँ सभ बुझि गेल हएब जे हुनकर ओजन सेहो १०० किलो छलन्हि। हमरा हुनकर भावी असफलताक पक्का विश्वास छल, ओ फेल भेलाह मुदा ओ अपन वजन ६७ नै कऽ सकलाह मुदा ७१ किलो धरि अवश्ये आनि लेलन्हि। ई हमरा लेल एकटा पैघ आघात छल। हम हुनका सँ किछु रहस्य सिखलौं आ तीन मास मे हमर ओजन ८० किलो भऽ गेल। हम एतय सेहो इएह रहस्य सझिया कऽ रहल छी।

रहस्योद्घाटन

तीन मासमे हम पूरा दिन मात्र पानि आ ब्लैक कॉफी (बिनु चीनी आ दूधक) सँ काटि लेलौं। साँझमे संशोधित-कीटो-डाइट क आधार पर हम मात्र एक घंटा (८-९ क बीच रातिमे) क मध्य कोनो कार्बोहाइड्रेट, भात आ चिक्कसक सोहारी-रोटीक सेवन नै केलौं। हमरा लेल निर्धारित छल जे चर्बी (चिकन, माछ, पनीर) आ फल मे मात्र तरबूज खाइ। एक मासक बाद हमर ओजन ८६ किलो भऽ गेल।

अगिला शॉक

अगिला शॉक लेल तैयार रहू। रस्ता सेहो ओतेक आसान नै अछि। वजन घटैक ई प्रक्रिया बंद भऽ गेल। आ ऐ वजन नै घटबाक चक्रक अंत एक महीना चलल। मुदा हमर टारगेट तीन मासक छल। एहन होइत अछि जे शरीरक जल आदिक घटनाइ सहज अछि, तेँ ८६ किलो धरिक बाट सहज अछि, तकरा बाद शरीरक जिद्दी तत्वकेँ कम करय पड़त। आ तखने कठिन बाट शुरू होइत अछि। संशोधित कीटो-डाइटक प्राराम्भक दू मासक बाद फेर वजन घटब शुरू भऽ गेल। संगहि कहि दी जे ऐ कालावधिमे हम साँझमे भोजन करबासँ पहिने एक घंटा दौगैत छलौं। ई दौगनाइ १०० मीटरसँ बढ़ि कऽ २ किलोमीटर भऽ गेल (हमर पार्क पहाड़ी जेकाँ अछि, तइ लेल ई अहाँक पार्कक हिसाबे ३ किलोमीटरक बराबर भेल) । हम दोसर महलापर रहैत छी। पहिने जँ गाड़ीमे किछु छुटि जाइ छल आ ओइ

दिन शुक्र दिन रहैत छल तँ हम सोम दिनक प्रतीक्षा करैत छलौं आ ओही दिन ओ छुटलाहा बौस्तु अनैत छलौं, कारण दोसर मंजिल पर चढ़ैत काल हमर दम फुलऽ लगैत छल। आब तँ हम दिनमे चारि बेर ऊपर-नीचाँ जाइत-अबैत छी।

वैज्ञानिक आधार

ऐ अवधिमे कीटोसँ भेल म्‌ऋत्युक विषयमे सेहो सुनलौं। से जिनका को-मॉर्बिडिटी छनि हुनका डॉक्टरसँ सलाह लेबय पड़तनि।

ऐ संबंधमे हम दूटा सलाह देबय चाहब जे हम पैघ-पैघ डॉक्टरसँ सुनने छी। पहिल छथि आइ. एल. बी. एस. केर निदेशक सरीन साहब। दूरदर्शनमे हुनका कहैत सुनने रही जे ५० वर्षक उमेरक बाद लीवरकेँ स्वस्थ रखबाक लेल दिनमे मात्र एक बेर भोजन करबाक चाही। संगे-संग ओ ईहो कहलनि जे कॉफी इंडस्ट्री मे हुनकर कोनो हिस्सेदारी नै छन्हि मुदा जँ बिना दूध आ चीनीक कतबो बेर ब्लैक कॉफी पीबी तँ ई लिवर लेल फायदेमंद अछि। आ ओ घी (!) खएबाक सलाह सेहो देलनि किएक तँ लीवर-निवसित नीक बैक्टीरिया लेल घी लाभकारी होइत अछि!

संगे-संग ऑल इंडिया रेडियोक एफ. एम. मे सुनलौं एकटा डॉक्टर (जिनकर नाम हमरा मोन नहिं अछि) साहेबकेँ जे कीटोक विषयमे कहलनि जे कीटो डाइटक दौरान कार्बोहाइड्रेट नै खयलासँ ऊर्जा सेहो शरीरक वसा घमैत अछि, आ ऐसँ फैटी लीवरक समस्या सेहो खतम भऽ जाइत अछि। ओ को-मोर्बिडिटी केर मरीज सभसँ मेडिकल सलाहक संग कीटो डाइट करबाक सलाह देलनि आ तीन माससँ बेसी कीटो-डायटिंग नै करय लेल कहलन्हि।

आइ-काल्हि

आइयो हम दिन मे कतेको बेर मात्र ब्लैक कॉफी (बिना चीनी आ दूधक) पीबैत छी्। दिनमे पानि छोड़ि किछु नहि खाइत छी आ नहिये पिबैत छी। दिनमे हम एक घंटा बैडमिंटन खेलाइत छी आ ओइ लड़का सभकेँ सेहो हरा दै छी जे हमरासँ २० बर्ख छोट छथि। रातिमे भात (घी केर संग), रोटी, माँछ आदि खाइत छी।

सप्ताहमे एक बेर चीट-डे सेहो होइत छैक, जइमे हम दूध-चीनीक संग चाह, कॉफी, पिज्जा आदि खाइत-पिबैत छी. आ हम पहिने कहि चुकल छी जे हमर वजन दू साल पहिने ८० किलो छल, जे आइयो बरकरार अछि।

४३. एनी एर्नौ आ कपिलेश्वर राउतक कथा-संसार

सारांश

८२ बर्खक एनी एर्नौ कैं ऐ बेरुका साहित्यक नोबेल पुरस्कार देबाक घोषणा स्वेडिश एकेडमी केलक। स्वेडिश एकेडमी ओइसँ पहिने रवीन्द्रनाथ ठाकुरकैं एकटा ट्वीटमे मोन पाड़लक। "तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।" एनी एर्नौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

बीजशब्द: एर्नौ · कपिलेश्वर · राउतक · संसार · जाइत · स्वयं · चर्चा

१

८२ बर्खक एनी एर्नौ कैं ऐ बेरुका साहित्यक नोबेल पुरस्कार देबाक घोषणा स्वेडिश एकेडमी केलक। स्वेडिश एकेडमी ओइसँ पहिने रवीन्द्रनाथ ठाकुरकैं एकटा ट्वीटमे मोन पाड़लक।

"तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।"

एनी एर्नौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

ऐ बर्ख नोबेल पुरस्कार विज्ञानक क्षेत्रमे सेहो पुनः प्रकृतिक अनुकृतिक शोध लेल बहुत दिनक बाद देल गेल।

२

कपिलेश्वर राउतक ५ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

पाँचटा कथा—कपिलेश्वर राउत

सर्पदंश; एकटा स्थानीय खेल जे एक युवा बालकक प्राण लैत अछि; खेतीक पुरान पद्धति आ नवाचारक आवश्यकता; साधुसभक भोज; पशु-पक्षीक भाषा; लघु आ महान परम्परा; जाति, वर्ग आ सत्ता; स्त्री-दृष्टि; धनी-गरीब—ई सभ अछि, मुदा निराशाक चिह्न नहि। महाकाव्यक कथा आ सम्प्रदायपर निर्भीक चर्चा अछि। एहि सभकैं व्यक्त करबाक लेल भाषा आ शब्दावली अत्यन्त सटीक अछि; एहन भाषा जकर अनुवाद कठिन अछि, कारण ई संसार मैथिलीमे अपना पूर्ण अर्थमे व्यक्त होइत अछि।

साँपक काटनाइ, एकटा स्थानीय खेल जाहिमे एक बालकक जान चलि जाइत अछि, खेतीक पुरान पद्धति आ नवाचारक आवश्यकता, साधु-सन्तक भोज, पशु-पक्षीक भाषा, लघु आ महान परम्परा, जाति-वर्ग आ सत्ता, नारी-विमर्श, धनी आ गरीब—मुदा कतहु निराशाक संकेत नहि; महाकाव्यक कथा आ पंथ-सम्प्रदायपर निर्भीक चर्चा; आ एहि सभकैं व्यक्त करबाक लेल भाषाक आ शब्द-संपदाक एहन सटीक प्रयोग, जकर अनुवाद कठिन अछि, कारण ई सभ बात मैथिलीमे मात्र एहने सहजतासँ लिखल जा सकैत अछि...

मैथिलीक समान्तर साहित्यक रहस्यमय संसारमे स्वागत। एतय कपिलेश्वर राउतक पाँचटा कथा पढ़ि रहल छी, जाहि पाँचूक चयन लेखक स्वयं अपन सर्वश्रेष्ठ कथा रूपमे केने छथि।

मैथिलीक समानान्तर साहित्यक रहस्यमय संसारमे स्वागत। एतय अहाँ कपिलेश्वर राउतक पाँच कथा पढ़ि रहल छी, जकरा लेखक स्वयं अपन श्रेष्ठ कथा मानने छथि।

‘कुमारी भोजन’ उत्सवी वातावरणमे आरम्भ होइत अछि। दस दिनक दुर्गापूजा कालमे लोक विशेष प्रकारक चिक्कन माटि आनैत छथि, जाहिसँ पार्थिव महादेव आ माटिक दीया बनाओल जाइत अछि। सियावतीक पति सर्पदंशसँ मरि गेलाह आ ओ विधवा भेलीह। तीन बेटीक बाद हुनका बेटा भेल, तैं बेटा बहिनसभसँ बहुत छोट अछि। बेटीसभक विवाहमे खर्चक कारण सियावती ऋणमे फँसि जाइत छथि। एहि जीवन-वर्णनक बाद कथा लोककथा आ मिथकीय आख्यानक वास्तविक अर्थपर चर्चा खोलैत अछि—महिषासुरक वध सामूहिक प्रयाससँ कोना सम्भव भेल, ई प्रश्न सेहो उठैत अछि।

‘कुमारी भोजन’ उत्सवी वातावरणसँ आरम्भ होइत अछि। दस दिनक दुर्गापूजामे लोक विशेष प्रकारक चिक्कन माटि आनैत छथि; एहि माटिसँ पार्थिव महादेव आ माटिक दीप बनाओल जाइत अछि। सियावतीक पति साँपक काटलासँ मरि गेलाह आ ओ विधवा भऽ गेलीह। तीन बेटीक बाद हुनका एकटा बेटा भेल, तैं बेटा बहिनसभसँ बहुत छोट छल। बेटीक विवाहमे बेसी खर्च होएबाक कारण सियावती ऋणमे फँसि गेलीह। एहि सभ विवरणक बाद चर्चा कथा-परम्पराक वास्तविक अर्थ दिस मुड़ैत अछि—सामूहिक प्रयास कोना महिषासुरक वध धरि पहुँचल, तकर विवेचन होइत अछि।

‘थरथरी’ मे जाड़क एक ठंढ राति जमीन्दार आ खेत जोतनिहार लोकक बीच दोसर चर्चा शुरू होइत अछि। दृश्य खुला खेतक अछि, जतऽ जमीन्दार खेतीक काम कोना चलि रहल अछि से देखबाक लेल पहुँचैत छथि।

‘थरथरी’ मे जाड़क एकटा ठिठुरबैत राति जमींदार आ खेतिहर लोकक बीच दोसर चर्चा चलैत अछि। दृश्य खुला खेतक अछि, जतय जमींदार खेतीक काज कोना भऽ रहल अछि से देखबा लेल पहुँचैत छथि।

‘बड़का खीरा’ खेतीमे परम्परागत आ आधुनिक ज्ञानक सम्बन्धमे गहिराइ धरि जाइत अछि। जे बालक पहिले “इहैत-इहैत” कहैत नर पशुकेँ मादा गाय वा भैंसक प्रजनन लेल बजबैत फिरैत छल, ओ बादमे कृषि-विज्ञानी बनैत अछि।

‘बड़का खीरा’ खेतीमे पारम्परिक आ आधुनिक ज्ञानक गहींर सम्बन्धकेँ खोलैत अछि। ‘इहैत-इहैत’ कहैत घुमनिहार बालक—ई मादा गाय वा भैंसक प्रजनन लेल नर पशुकेँ बजाबैक पुकार थिक—आगाँ चलि कृषि वैज्ञानिक बनि जाइत अछि।

‘पुनर्नवा’ तमिलनाडुक ‘जल्लीकट्टू’ खेलक स्मरण करा सकैत अछि। जुड़शीतल पर्वक अवसरपर मनुष्य-मनुष्यक भिड़न्तवला खेलमे एक व्यक्ति मरि जाइत अछि आ बसुनी विधवा भऽ जाइत छथि। जखन स्त्रीसभ स्वयं निर्णय लेब शुरू करैत छथि, तखन कथा स्त्री-अधिकार आ स्त्री-स्वायत्तताक प्रश्न खोलैत अछि।

‘पुनर्नवा’ पढ़ैत काल तमिलनाडुक ‘जल्लीकट्टू’ खेल मोन पड़ि सकैत अछि। जुड़शीतल पर्वमे मनुष्य-मनुष्यक मुकाबलाक एकटा खेलमे मृत्यु भऽ जाइत अछि आ बसुनी विधवा भऽ जाइत छथि। जखन स्त्रीसभ स्वयं निर्णय लेब आरम्भ करैत छथि, तखन नारी-विमर्शक सिद्धान्त खोजयवला पाठक लेल अनेक प्रश्न खुलैत अछि।

अन्तमे ‘भुम्हुर आगि’ मे फेर स्थानीय संस्कृतिक स्वाद भेटैत अछि। जातीय स्तर-क्रम स्पष्ट अछि। चेतन दास मुसहर समुदायसँ छथि; केओट जातिक एक साधुसँ सम्पर्कमे आबि स्वयं साधु बनि जाइत छथि। ओ भजन गाबयमे निपुण अजब दासकेँ साधुसभक भव्य भोजमे निमन्त्रण देबाक लेल जाइत छथि, मुदा अजब दास शर्त रखैत छथि। विवेक कुमार कहैत छथि जे ई सभ सामाजिक स्तर-क्रमक परिणाम अछि; हुनकर वा चेतन दासक नीचे मानल जाएवला लोकक प्रसंगमे शायद ओहो एहन शर्त रखितथि।

अन्तमे ‘भुमहुर आगि’ मे फेर स्थानीय संस्कृतिक सघन स्वाद भेटैत अछि। जातिगत तहसभ स्पष्ट देखाइत अछि। चेतन दास मुसहर समुदायसँ छथि। हुनकर सम्पर्क केवट जातिक एक साधुसँ होइत अछि आ ओ स्वयं साधु बनि जाइत छथि। भजन गेबामे निपुण अजब दासकेँ साधुसभक बड़का भोजमे निमन्त्रण देबा लेल ओ जाइत छथि, मुदा अजब दास किछु शर्त राखैत छथि। विवेक कुमारक मत अछि जे ई सभ सामाजिक स्तरीकरणक रूप अछि; पदानुक्रममे अपनासँ नीच मानल लोकक प्रसंगमे चेतन दास वा ओ स्वयं सेहो सम्भवतः एहने शर्त राखितथि।

४४. शरदिन्दु चौधरी विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

सारांश
ई अंक शरदिन्दु चौधरी पर विशेषांक अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक भऽ गेल अछि, से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि। राम विलास साहुक ५ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

बीजशब्द: शरदिन्दु · चौधरी · विशेषांक · समानान्तर · विमर्श · अंग्रेजी · अनुवाद

सारांश

ई अंक शरदिन्दु चौधरी पर विशेषांक अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक जीवित रचनाकार/ कलाकर्मी पर विशेषांक भऽ गेल अछि, से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

नूतन अंक सम्पादकीय

१

२

राम विलास साहुक ५ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

1

The Book of Bihari Literature (सम्पादक: Abhay K.)

एहि पोथीमे विद्यनन्द झाक मैथिलीसँ अंग्रेजीमे पाँचटा अनुवाद अछि। नागार्जुन—मैथिलीक यात्री—आ उषा किरण खानकेँ हिन्दी खण्डमे राखल गेल अछि, यद्यपि दुनू मैथिली श्रेणीसँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार पाबि चुकल छथि। विभा रानी आ राजकमल चौधरी मैथिली खण्डमे छथि, यद्यपि दुनू हिन्दीमे सेहो लिखने छथि।

एहि पोथीमे विद्यानन्द झा द्वारा मैथिलीसँ अंग्रेजीमे कएल पाँच अनुवाद अछि। नागार्जुन (मैथिलीक यात्री) आ उषा किरण खान हिन्दी कोटिसँ छथि, यद्यपि दुनू गोटेकेँ मैथिली कोटिसँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटल। विभा रानी आ राजकमल चौधरी मैथिली कोटिसँ छथि, यद्यपि दुनू हिन्दीमे सेहो लिखलनि।

पोथीक सम्पादन अभय के. केने छथि, जे संस्कृतक अध्ययन विद्यालय स्तर धरि केने छथि। तथापि ओ 'अर्थशास्त्र' क संस्कृतसँ सीधा अंग्रेजी अनुवादक दावा करैत छथि। मूल लेखक अपन संस्कृत-प्रशिक्षणक आधारपर अनुवादक गुण-दोष देखि अनुमान व्यक्त करैत छथि जे सम्भवत: कोनो मध्यवर्ती भाषाक सहारा लेल गेल अछि। यदि एहन भेल हो तँ स्रोतक उल्लेख करब अनुवाद-नीतिक आवश्यक भाग अछि।

एहि पोथीक सम्पादन अभय के. केने छथि, जिनकर संस्कृत-अध्ययन उच्च विद्यालय धरि रहल अछि। तैयो ओ अर्थशास्त्रक संस्कृत मूलसँ सोझे अंग्रेजी अनुवाद करबाक दावा करैत छथि। हम संस्कृतमे कोविद छी; अनुवादक गुणवत्ता देखि हमरा अनुमान होइत अछि जे संस्कृत पाठकेँ अंग्रेजीमे अनूदित करबाक बीच कोनो मध्यवर्ती भाषाक सहारा लेल गेल होएत। स्रोत स्वीकार करब नैतिक दायित्व अछि।

विद्यनन्द झाक अनुवादक गुणवत्ता मूल समीक्षकक मतमे अपेक्षित स्तरसँ नीचाँ अछि। उदाहरणस्वरूप 'ओलक सन्ना' क उपयुक्त अंग्रेजी समानार्थक शब्दक समस्या उल्लेखित अछि, आ एहन अनेक उदाहरण देल गेल अछि। समीक्षक सुझाव दैत छथि—पहिने राजनाथ मिश्रक 'A Bird' s Eye View on Mithila' पढ़ू, जतऽ अनेक स्थानीय पदक अंग्रेजी व्याख्या भेटत; फेर विदेह अभिलेखागार (www.videha.co.in) मे उमेश मण्डलक चित्र-शब्दकोश देखू, जतऽ मिथिलाक वनस्पति, पशु आ कौशल-सम्बन्धी शब्दक वास्तविक चित्र सेहो अछि। विदेहक 'A Parallel History of Maithili Literature' मे मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवादक

नमूना सेहो उपलब्ध अछि। समीक्षकक मतमे अनुवादक जे तत्वकेँ “exotic” बनाकऽ प्रस्तुत करैत छथि, ओ मैथिली भाषाक स्वाभाविक तत्व अछि, भले बीस वर्ष पहिलुक मैथिली साहित्यिक प्रस्तुति एना नहि रहल हो। चयन देखिकऽ ‘Contemporary Maithili Short Stories’—मुरारी मधुसूदन ठाकुर सम्पादित, साहित्य अकादेमी, 2005—क स्मरण होइत अछि; समीक्षक अनुमान करैत छथि जे एहि चयनमे ओही प्रवृत्तिक बचल सामग्रीक प्रभाव अछि। Rip Van Winkleक रूपकसँ ओ कहैत छथि जे दू दशकमे मैथिली साहित्यक जे परिवर्तन भेल, अनुवादक ओकरा पर्याप्त रूपसँ नहि देखैत छथि।

विद्यानन्द झाक अनुवाद अपेक्षित स्तरसँ नीचाँ अछि। उदाहरणार्थ, ‘ओलक सन्ना’ क अंग्रेजी पर्याय की होएत, तकर हुनका संकेत नहि अछि; एहन उदाहरण बहुत अछि। हुनका लेल हमर किछु सुझाव अछि। पहिने राजनाथ मिश्रक A Bird’ s Eye View on Mithila पढ़ू; जाहि शब्दक अंग्रेजी पर्याय नहि भेटल, ताहिमेसँ बहुतक उल्लेख ओतय अछि। फेर विदेह अभिलेखागार (www.videha.co.in) मे उमेश मण्डलक चित्र-शब्दकोश देखू, जाहिमे मिथिलाक वनस्पति, जीव-जंतु आ कौशल-समूहक वास्तविक चित्र सेहो अछि। आगाँ A Parallel History of Maithili Literature (विदेह, www.videha.co.in) मे किछु मैथिली कथाक नमूना अंग्रेजी अनुवाद भेटत। अतः विद्यानन्द झा जे सामग्रीकेँ ‘विदेशी/अद्भुत’ रूपमे प्रस्तुत करैत छथि, ओ वस्तुतः मैथिली भाषाक मूल जीवन-सामग्री अछि—यद्यपि दू दशक पहिने मैथिली साहित्यक प्रतिनिधि रूपमे ई स्थिति स्पष्ट नहि छल। हुनकर कथा-चयन हमरा Contemporary Maithili Short Stories (मैथिली कथाक अंग्रेजी अनुवाद), सम्पादक मुरारी मधुसूदन ठाकुर, साहित्य अकादेमी, २००५, केर मोन पाड़ैत अछि। लगैत अछि जे एहि चयनक कथा ओहि संग्रहसँ बचल सामग्री सन अछि। Rip Van Winkle दू दशक बाद जागि गेल छल, मुदा विद्यानन्द झा एखनहुँ निद्रामे छथि आ एहि अवधिमे भेल परिवर्तनकेँ नहि देखैत छथि।

यदि एहि चयनक अनुवादक तुलना लैटिन अमेरिकी स्पेनी साहित्यक उच्चस्तरीय अंग्रेजी अनुवादसभसँ कएल जाए, तँ गुणवत्ता आ अनुवाद-दृष्टिक अन्तर स्पष्ट बुझाइत अछि।

एहि चयनक अनुवादक तुलना जँ लैटिन-अमेरिकी स्पेनी साहित्यक अंग्रेजी अनुवादसँ करब, तँ अन्तर स्पष्ट बुझाइत।

मूल समीक्षकक मतमे एहन चयन प्रायः साहित्यिक उत्कृष्टताक मानकपर नहि बनैत अछि। ओ Harper Collinsक एहन प्रकाशनकेँ होटल वा हवाईअड्डा-पाठक लेल त्वरित चयनक श्रेणीमे रखैत छथि। एहि पोथीक घोषणा 22 मार्च 2022 केँ भेल छल; तेँ छह-सात मासक अल्प अवधि कारण नूतन चयनक अपेक्षा पुरान सामग्री बेसी होएबाक सम्भावनापर ओ टिप्पणी करैत छथि।

मुदा एहि प्रकारक चयन साहित्यिक उत्कृष्टताक लेल नहि जानल जाइत अछि। Harper Collins पाँच-तारा होटल आ हवाईअड्डाक प्रतीक्षालयक पाठकवर्ग लेल एहन चयन प्रकाशित करैत अछि। प्रकाशक एहि पोथीक घोषणा २२ मार्च २०२२ केँ केने छल; तेँ छः-सात मासक भीतर नव सामग्रीक बदला पुरान सामग्री भेटबाक सम्भावना बेसी छल।

2

The Bride: हरिमोहन झा (1908–1984) क मैथिली कालजयी ‘कन्यादान’ क ललित कुमार द्वारा अंग्रेजी अनुवाद (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi)।

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan — हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) क मैथिली क्लासिक ‘कन्यादान’ क अंग्रेजी अनुवाद, अनुवादक ललित कुमार (सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय)।

हम पोथी अग्रिम रूपसँ मँगौने छी। 1 दिसम्बर 2022 केँ Kindle खातामे पहुँचला बाद एकर समीक्षा करब।

हम पोथी पहिनहिये मँगौने छी। १ दिसम्बर २०२२ केँ ई हमर Kindle खातामे पहुँचबाक बाद हम एहि पर टिप्पणी करब।

3

Bharti’ s Cat: ब्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’ क मूल मैथिली उपन्यास ‘भारतिक बिलाड़ी’ क योगेन्द्र पाठक वियोगी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद; Amazon Kindle पर उपलब्ध।

Bharti’ s Cat — ब्रजकिशोर वर्मा ‘मणिपद्म’ क मूल मैथिली उपन्यास ‘भारतक बिलाड़ी’ क योगेन्द्र पाठक वियोगी द्वारा अंग्रेजी अनुवाद (Amazon Kindle पर उपलब्ध)।

योगेन्द्र पाठक वियोगी उल्लेखनीय काम केने छथि। अनुवाद मूल भाषाक आत्मा संग लऽ चलैत बुझाइत अछि।

योगेन्द्र पाठक वियोगी उत्कृष्ट काज केने छथि। अनुवादमे मूल भाषाक आत्मा सुरक्षित बुझाइत अछि।

Folktales of Mithila तथा Gonu Jha of Mithila: Tales of Wit and Humour—दुनू योगेन्द्र पाठक वियोगीक कृति; Amazon Kindle पर उपलब्ध।

Folktales of Mithila आ Gonu Jha of Mithila: Tales of Wit and Humour — दुनू योगेन्द्र पाठक वियोगीक पोथी, आ दुनू Amazon Kindle पर उपलब्ध।

4

राम विलास साहुक लघुकथा

आब समान्तर साहित्यक रोचक संसारमे प्रवेश करू।

'कमटिया हवेली' मे कथाकार मौखिक इतिहासक व्याख्या करैत छथि। हवेली वास्तवमे चौकी जकाँ केन्द्र छल। मिथिलामे Cornwallisक Permanent Settlementक अन्तर्गत अधिकार पाबयवला जमीन्दारसभकेँ कतिपय ठाम महाराजाधिराज आदि कहल गेल। लगान वसूलीक श्रृंखला पूरा मिथिलामे फैलल छल आ खेती तथा लगान-वसूली लेल अलग-अलग ठाम चौकी बनाओल गेल। मदीना दीदी जानकीकेँ एहि इतिहासक अर्थ बुझबैत छथि। एहि संग-संग गामक जीवनक बारीक पक्ष एहन भाषामे चित्रित अछि जे दू दशकसँ मैथिली साहित्य नहि पढ़निहारकेँ अनोखा बुझा सकैत अछि।

'कमटिया हवेली' मे कथाकार मौखिक इतिहासक व्याख्या करैत छथि। हवेलीसभ वस्तुतः चौकी/केन्द्र मात्र छल। मिथिलामे Cornwallis द्वारा स्थायी बन्दोबस्त पाओनिहार जमींदारसभकेँ 'महाराजाधिराज' आदि कहल गेल। वास्तवमे लगान वसूल करनिहारक श्रृंखला पूरा मिथिलामे पसरल छल आ खेतीक देखरेख तथा लगान वसूली लेल ओ सभ अपन केन्द्र बनौने छल। मदीना दीदी जानकीकेँ ई बात बुझबैत छथि। एहि सब प्रसंगक बीच गामक जीवनक सूक्ष्म रंग एहन भाषामे उभरैत अछि जे दू दशकसँ मैथिली साहित्य नहि पढ़निहार लोककेँ अद्भुत/अपरिचित लगि सकैत अछि।

दोसर कथा 'दूधबेचनी' रीताक त्यागक कथा अछि; ओ विद्यालय आ गोशाला बनबय लेल अपन समस्त जमीन-जायदाद दान कऽ दैत छथि।

दोसर कथा 'दूधबेचनी' रीताक त्यागक कथा अछि; ओ विद्यालय आ गोशाला बनेबाक लेल अपन समस्त जमीन-जायदाद दान कऽ दैत छथि।

'स्वर्गक सुख' मे बाढ़िसँ उजड़ल बौकू सदायक परिवारक कथा बारीकीसँ कहल गेल अछि। ई परिवार मुसहर समुदायसँ अछि; मूल टिप्पणी एहन समुदायक प्रति अपमानजनक रूढ़ धारणाक सेहो आलोचना करैत अछि।

'स्वर्गक सुख' मे बाढ़िसँ उजड़ल बौकू सदायक परिवारक कथा सूक्ष्मतासँ कहल गेल अछि। ई परिवार मुसहर समुदायसँ अछि—जकरा किछु अंशकालिक खेत-मजदूरसँ साहित्यकार बनल लोक अपमानजनक ढंगसँ 'मूस खेनिहार' कहैत रहल छथि।

'घुसा घर' मे इन्दिरा आवास योजनामे भ्रष्टाचारक उल्लेख भेटैत अछि।

'घूस घर' मे इन्दिरा आवास योजनामे व्याप्त भ्रष्टाचारक उल्लेख भेटैत अछि।

'शिक्षक महत' मे बाढ़िसँ उजड़ैत गाम, ताहिसँ उत्पन्न पलायन, शिक्षाक महत्त्व आ अभिजनक संकीर्ण मानसिकताकेँ एके कथासूत्रमे गूँथल गेल अछि।

'शिक्षक महत' मे बाढ़िसँ उजड़ल गाम, तकर कारण पलायन, शिक्षाक महत्त्व आ अभिजन वर्गक संकीर्णता—सभकेँ एक्के सूत्रमे गूँथल गेल अछि।

३

गाम-गामक सत्यकथा आ फकड़ा

एकर अन्तर्गत गाम-रुद्रपुर, जिला मधुबनीक सत्य कथा देल जा रहल अछि जे ओइ गामक लोकक कण्ठमे आइयो बसल अछि।

(सूत्र आ नैरेटर- श्री श्रीमोहन चौधरी- गाम रुद्रपुर।)

मंगनिया मायक तेल (करू तेल)- रुद्रपुरक सभ जातिक सभ गोटेमे ई फकड़ा बनि गेल अछि।

मंगनिया- जातिक गुआर। गाम रुद्रपुर, मधुबनी, ८०-९० बर्ख पुरान घटना जखन सोना ५० रुपयामे एक भरि (१० ग्राम) भेटैत छलै। मंगनिया बच्चे छल, बड्ड मेहनत आ मितव्ययी। अपन मेहनतिसँ पैघ भेलापर १० बीघा खेत किनलक, ३-४ बजे भोरे उठि सभटा काज सम्पन्न कऽ लैत छल आ जखन हरवाहि लेल जाइ छल तँ लोक पु छै छलै तँ कहै छलै, मालिक ओइठाम सुस्ताइ लेल जाइ छी ३-४ घण्टा सुस्तायब (हरवाहि करबकेँ सुस्तेनाइ कहै छल, हरवाहिमे कोन भीड़ होइ छै।)

जुलुम ठाकुरक बाप घटक ठाकुर- दोकानदार (जाति- ब्राह्मण) ।

भोरे भोर मंगनिया माय घटक ठाकुरक दोकानपर जाइए आ उपराग दैए।

“ऐं हौ, तूँ कतेक तेल दू पाइक देलैं जे कनियेटा जितवाहनकेँ चढ़ेलिऐ आ बच्चाक (मंगनियाक) पएरमे लगेलिऐ, आ पहुनाकेँ तरुआ तरि कऽ देलिऐ। आ रातिमे शीसीक मुन्ना जे खुजले रहि गेलै से बोंगमरना कुकुड़ रातिमे भुभुआ-भुआ कऽ पीलक। दू पाइमे कतबी तेल देलऽ जे एक्के दिनमे एतबी काजमे सठि गेल। “

फकड़ा

जे बड्ड घेंघाहि से बड्ड बड़की दाइ।

४५. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ विशेषांक आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

सारांश
ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर विशेषांक अछि। ऐ विषयपर सम्पादकीय कने नम्हर भऽ गेलै तँ अलगसँ ओकरा देल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक विशेषांक भऽ गेल अछि से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि।

कुंजीशब्द: प्रेमलता · मिश्र · प्रेम · विशेषांक · समानान्तर · विमर्श · साहित्यक

सम्पादकीय

१

ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' पर विशेषांक अछि। ऐ विषयपर सम्पादकीय कने नम्हर भऽ गेलै तँ अलगसँ ओकरा देल जा रहल अछि। साहित्य अकादेमी, ललित कला अकादेमी आ संगीत नाटक-अकादेमीक सम्मान/ पुरस्कारसँ बेशी महत्वपूर्ण विदेहक विशेषांक भऽ गेल अछि से उद्गार पाठक लोकनि सोशल मीडियापर व्यक्त केलन्हि अछि। सभ सहयोगी आ पाठकगणकेँ धन्यवाद।

२

उमेश मण्डलक ५ टा कथापर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

Parallel Literature

समान्तर साहित्यक सन्दर्भ वेदमे भेटैत अछि, जतऽ ‘नराशंसी’ कँ समान्तर साहित्यक रूपमे उल्लेख कएल गेल अछि।

समानान्तर साहित्यक संकेत वेदमे सेहो भेटैत अछि, जतय ‘नराशंसी’ क उल्लेख समानान्तर साहित्यक रूपमे कएल गेल अछि।

मैथिलीमे समान्तर साहित्यक आवश्यकता साहित्य आ साहित्यिक गरिमापर सार्वजनिक आ निजी अकादमीसभक निरन्तर हस्तक्षेपक कारण उत्पन्न भेल—जेना दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी, पटनाक मैथिली अकादमी, दिल्लीक साहित्य

अकादेमी आ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान; ई सभ सरकारी संस्था अछि। एहि अकादमीसभक अतिरिक्त साहित्य अकादेमीसँ मान्यता पाबि रहल तथाकथित साहित्यिक संस्थासभ सेहो मैथिली साहित्यक समूचा सार्वजनिक स्थानपर अधिकार जमाबयवला प्रमुख माध्यम बनल। एहि संस्था आ अन्य संकीर्ण संगठनसभकेँ भेटैत आर्थिक सहयोगक परिणामस्वरूप मैथिलीक नामपर एहन प्रतिनिधित्व सामने आयल जे मध्यमस्तरीय आ व्यापक साहित्यिक समाजक प्रतिनिधि नहि छल।

मैथिलीमे समानान्तर साहित्यक आवश्यकता तखन तीव्र भेल जखन साहित्य आ अस्मितापर सरकारी आ निजी अकादेमीसभक निरन्तर आक्रमण होइत रहल—जेना दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी, पटनाक मैथिली अकादमी, दिल्लीक साहित्य अकादेमी आ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान; ई सभ सरकारी संस्था छथि। एहि अकादेमीसभक अतिरिक्त साहित्य अकादेमीसँ मान्यताप्राप्त तथाकथित साहित्यिक संघसभ सेहो मैथिली साहित्य आ ओकर गरिमापर निरन्तर दबाव बनौने रहल; भाषाक साहित्यिक क्षेत्रकेँ अपन अधिकारमे राखबाक ई एकटा मुख्य माध्यम बनल। एहि संस्था आ आन संकीर्ण संगठनकेँ भेटैत वित्तीय सहायता मैथिलीक नामपर एहन प्रतिनिधि-छवि प्रस्तुत करैत रहल जे औसत, सीमित आ समाजक वास्तविक विविधतासँ असंगत छल।

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास

एहि कारणेँ समाजक ओ भाग, अनुभव आ स्वर, जे अनुपस्थित, उपेक्षित वा प्रतिनिधित्वहीन छल, ओकर अभिलेखन आरम्भ भेल। शब्द-संपदाक सम्पन्नता आ प्रत्यक्ष अनुभवसँ युक्त एहि लेखन मैथिलीभाषी समाजक साहित्य आ कलामे एकटा परिवर्तनकारी हस्तक्षेप बनल। औसतपनक बदला उत्कृष्टताक आग्रह आयल आ मातृभाषी लोक मैथिलीक वास्तविक सामर्थ्यकेँ नव ढंगसँ अनुभव कएलनि। मैथिली समानान्तर साहित्यक इतिहास लिखबाक ई प्रयास एहि पृष्ठभूमिमे जन्मल जे सरकारी वा निजी अनुदानसँ पोषित तथाकथित मुख्यधाराक औसत साहित्य—जकर पाठक-वर्ग आ स्वीकृति सीमित अछि—अकादेमीसभ द्वारा प्रतिनिधि साहित्यक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत रहल। 'म्यूज इंडिया' (www.museindia.com) सन साहित्यिक पत्रिकाक उपयोग सेहो एहि प्रतिनिधित्वकेँ पुष्ट करबाक लेल भेल, आ सरकारी रेडियो-टेलीविजन केन्द्रसभ सेहो मैथिली साहित्यक एही सीमित छवि सामने अनैत रहल।

उमेश मण्डल समान्तर परम्पराक कथाकार छथि। हुनकर भाषा शब्द-सम्पदासँ सम्पन्न अछि; अभिप्रेत विचार आ कथ्यकेँ ठीक रूपमे व्यक्त करबाक लेल ई गुण आवश्यक अछि।

उमेश मण्डल समानान्तर परम्पराक कथाकार छथि। हुनकर भाषा शब्द-संपदासँ सम्पन्न अछि, जे इच्छित विचार आ कथ्यकेँ प्रभावी रूपसँ प्रस्तुत करबाक लेल आवश्यक अछि।

ओ अपन पाँच कथाकेँ स्वयं अपन श्रेष्ठ कथा मानने छथि; नीचाँ ओहि पाँचू कथाक उल्लेख अछि आ मूल पाठ सेहो संगहि प्रस्तुत अछि।

2. बाल-बोधक आगू सिक्की-मौनी (जे संस्कृति मात्र सिक्की-मौनीक हस्तशिल्पमे देखैत छथि)

२. बाल-बोधक आगू सिक्की-मौनी (जे सभ अपन संस्कृतिकेँ मात्र सिक्की-मौनीक शिल्प धरि सीमित देखैत छथि)

३. जीता मे गुहा-भात आ मुइला मे दूध-भात...! (जीवित काल अपमान, मृत्युक बाद महिमामण्डन!)

5. चौदहो देवान (चौदह रक्षक)

काजक सतह पर (वास्तविक काजक आधारपर मूल्यांकन)

मुख्य पात्र मैथिली कथाकारसभक समय-समयपर होमयवला रातिभरि कथा-पाठ गोष्ठीमे पढ़बाक लेल नव कथा लिखबाक प्रयास करैत अछि। एहि क्रममे ओ योजना बनबैत, फेर ओकर समय आ रूप बदलैत अछि; एहि अभ्यासक भीतर ओकर अनुभव आ भेट-घाट पुनः कथामे उभरैत अछि।

मुख्य पात्र मैथिली कथाकारसभक आवधिक रातिभरि चलनिहार कथा-पाठ गोष्ठीमे पढ़बाक लेल नव कथा लिखबाक प्रयास करैत अछि। एहि क्रममे ओ योजना बनबैत, फेर ओकर क्रम बदलैत अछि; एही प्रक्रिया बीच ओकर अनुभव, भेंट-घाँट आ जीवन-प्रसंग कथा बनि सामने अबैत अछि।

बाल-बोधक आगू सिक्की-मौनी (जे सभ अपन संस्कृतिकेँ मात्र सिक्की-मौनीक शिल्प धरि सीमित देखैत छथि)

एतहु मुख्य पात्र किछु चरित्रक व्याख्या करैत अछि—किछु लोक केवल बातमे दक्ष छथि, मुदा किछु वास्तवमे काज करनिहार आ समर्थ छथि।

जीतामे गुहा-भात आ मुइलामे दूध-भात...! (जीवितकालमे अनादर, मृत्युक बाद महिमामण्डन)

जीता मे गुहा-भात आ मुइला मे दूध-भात...! (जीवित काल अपमान, मृत्युक बाद महिमामण्डन!)

चाहक दोकानपर मृत्युक बाद भोजक औचित्यपर चर्चा चलैत अछि आ अन्ततः प्रश्न जीवित अवस्थामे व्यक्तिक उपेक्षा आ दुर्व्यवहार धरि पहुँचैत अछि।

चाय-दोकानपर फेर सरकारक निःशुल्क सुविधा सम्बन्धी चर्चा शुरू होइत अछि। तर्क अछि जे एहन सुविधा लोककेँ अकर्मण्य बना सकैत अछि; मुदा पैतृक सम्पत्तिक सहज स्वामित्वक विषयमे सेहो एहि तर्कक समानता देखाओल गेल अछि।

दोसर चर्चा सरकार द्वारा देल जा रहल मुफ्त सुविधासभपर केन्द्रित अछि। तर्क अछि जे ई लोककेँ अकर्मण्य बना सकैत अछि; मुदा पैतृक सम्पत्तिक सहज स्वामित्वक प्रसंगमे सेहो समान प्रश्न उठैत अछि।

मौसमी बेरोजगारीपर चर्चा चलैत अछि। नगरमे एकटा कौशलक सहारे जीविका चलि सकैत अछि, मुदा गाममे जीविकोपार्जन लेल अनेक कौशल चाही; एकटा कौशल पर्याप्त नहि।

चर्चा मौसमी बेरोजगारीपर होइत अछि। शहरमे एकटा कौशलक सहारे जीवन चलि सकैत अछि, मुदा गाममे आजीविका लेल अनेक कौशल जरूरी होइत अछि; एक्केटा कौशल पर्याप्त नहि।

४६. मैथिली साहित्यक अन्तर्राष्ट्रीय प्रस्तुति आ समानान्तर साहित्य-विमर्श

सारांश

Diorama International Film Festival 30 नवम्बर सँ 04 दिसम्बर धरि आयोजित होमयवला अछि। स्थान: Instituto Cervantes, Hanuman Mandir Road, Connaught Place, New Delhi। https://www.diorama.in/
https://watch.diorama.in/story-market/
https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/
DIORAMA 2022 PRESENTS
शीर्षक: The Science Of Words—लेखक द्वारा स्वयं अंग्रेजीमे अनूदित तीनटा मैथिली कथा।

बीजशब्द: साहित्यक · अन्तर्राष्ट्रीय · प्रस्तुति · समानान्तर · विमर्श · कविता · आवश्यकता

नूतन अंक सम्पादकीय

१

First Time for Maithili

Diorama International Film Festival 30 नवम्बर सँ 04 दिसम्बर धरि आयोजित होमयवला अछि। स्थान: Instituto Cervantes, Hanuman Mandir Road, Connaught Place, New Delhi।
https://www.diorama.in/
https://watch.diorama.in/story-market/
https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/
DIORAMA 2022 PRESENTS
शीर्षक: The Science Of Words—लेखक द्वारा स्वयं अंग्रेजीमे अनूदित तीनटा मैथिली कथा।
लेखक-परिचय: लेखक गजेन्द्र ठाकुर 'विदेह' क सम्पादक छथि।
कथासार: सूर्य राशिचक्रक पाँचम राशिमे सामान्यत: 16 अगस्त सँ 16 सितम्बर धरि रहैत अछि। किछु सुखेबाक लेल ई समय उपयुक्त मानल जाइत अछि, कारण एहि अवधिमे सूर्यक तीव्र प्रकाश आ ताप पृथ्वीपर पड़ैत अछि। एहि पाँचम राशि कालमे ताड़क पात सूर्यक नीचाँ सुखाओल जाइत अछि; ई मिलूक पिता द्वारा प्रतिवर्ष कएल जाएवला संरक्षण-योजनाक अंश अछि, जाहिसँ ताड़पत्रमे फेर जीवन भरेल जाए।
प्रवेश-पद्धति: ऊपर 'Register' बटन दबा भुगतान करलाक बाद पुष्टिकरण ईमेल अबैत अछि आ मंचक पहुँच सक्रिय होइत अछि। लॉग-इन लेल पंजीकृत ईमेल पताक प्रयोग करू; प्रणाली ओही ईमेलपर OTP पठाएत। यदि पंजीकरण भऽ चुकल रहितहुँ प्रवेश नहि होइत हो तँ पंजीकृत ईमेलमे अतिरिक्त खाली स्थान/अक्षर जाँचू, नव पास खरीदल हो तँ खाता सक्रिय होएबाक समय दिअ, अथवा festival (at) diorama.in पर सहायता-समूहसँ सम्पर्क करू।

Diorama International Film Festival ३० नवम्बर सँ ४ दिसम्बर धरि Instituto Cervantes, Hanuman Mandir Road, Connaught Place, New Delhi मे आयोजित होएबाक अछि। https://www.diorama.in/ https://watch.diorama.in/story-market/ https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/ DIORAMA 2022 मे प्रस्तुत शीर्षक: The Science Of Words (लेखक द्वारा स्वयं अंग्रेजीमे अनूदित तीन मैथिली कथा)। लेखक-परिचय: लेखक गजेन्द्र ठाकुर 'विदेह' क सम्पादक छथि। कथासार: सूर्य राशिचक्रक पाँचम राशिमे सामान्यत: १६ अगस्त सँ १६ सितम्बरक बीच रहैत अछि। किछु सुखेबाक हो तँ एहि समय सूर्यक तीव्रतम प्रकाश आ ताप पृथ्वीपर पड़ैत अछि। एहि पाँचम राशि-अवधिमे मिलूक पिता अपन वार्षिक संरक्षण-योजनाक भागक रूपमे ताड़क पात सूर्यक प्रकाशमे राखैत छथि—मानो एहि पातसभमे फेर जीवन भरबाक प्रयत्न। प्रक्रिया: चरण १—ऊपर 'Register' बटन दबा भुगतान करू; भुगतान पूरा भेलापर पुष्टिकरण ई-पत्र भेटत आ एक घण्टाक भीतर मंचक पहुँच मिलत। चरण २—प्रवेश लेल वही पंजीकृत ई-पत्र पता लिखू जे पंजीकरण समय देल छल। चरण ३—प्रणाली ओहि पंजीकृत ई-पत्रपर OTP पठाएत; सही OTP भरि सफलतापूर्वक प्रवेश केलाक बाद सभ सामग्री देखल जा सकत। चरण ४—पंजीकरणक बादो वेबसाइटमे प्रवेश नहि भऽ रहल हो तँ (क) पंजीकृत ई-पत्र पता बिना अतिरिक्त खाली स्थान वा अक्षरक उपयोग करू; (ख) हालहि पास किनने छी तँ खाता सक्रिय होएबा लेल कमसँ कम ६० मिनट दिअ; (ग) सहायता दलसँ festival (at) diorama.in पर सम्पर्क करू।

राजदेव मण्डल पर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

टी. के. ओम्मेन Sociology (१९८८), 'Linguistic Diversity' अध्याय, पृ. २९१, National Law School of India University/Bar Council of India Trust मे लिखैत छथि: "मैथिली क्षेत्र आर्थिक आ सांस्कृतिक रूपेँ ब्राह्मणक प्रभुत्वमे अछि; अलग मैथिली राज्य बनलापर ओ राजनीतिक अभिजनक रूपमे सेहो सहज प्रतिष्ठित भऽ सकैत छथि। ई आन जातिसभ—परम्परागत रूपेँ प्रभावशाली वा वर्तमानमे उभरैत जातिसभ—क हित वा पसिन्नक बात नहि होएत। अतः मैथिली भाषिक समुदायसँ सम्बन्धित रहितो ई समूह अलग मैथिली राज्यक विरोध कऽ सकैत अछि। एहि प्रकारक विरोध अनेक भाषाक विकासपर प्रतिकूल प्रभाव दैत अछि।"

टी. के. ओम्मेन आगाँ लिखैत छथि: "कोनो भाषाकेँ हिन्दीसँ अलग भाषा घोषित कएल गेलाक बादो ओकरा हिन्दीक बोली मानल जा सकैत अछि। उदाहरणार्थ, भारतक क्लासिक Linguistic Survey करनिहार Grierson आ राष्ट्रीय भाषाविज्ञान-प्राध्यापक S. K. Chatterjee दुनू स्पष्ट कएलनि जे मैथिली स्वतंत्र भाषा अछि, मुदा तैयो ओकरा हिन्दीक बोली मानल गेल।" (ओही ग्रन्थ, पृ. २९३)

समान्तर साहित्यक सन्दर्भ वेदमे भेटैत अछि, जतऽ 'नराशंसी' केँ समान्तर साहित्यक रूपमे उल्लेख कएल गेल अछि।

समानान्तर साहित्यक संकेत वेदमे सेहो भेटैत अछि, जतय 'नराशंसी' क उल्लेख समानान्तर साहित्यक रूपमे कएल गेल अछि।

मैथिलीमे समान्तर साहित्यक आवश्यकता साहित्य आ साहित्यिक गरिमापर सार्वजनिक आ निजी अकादमीसभक निरन्तर हस्तक्षेपक कारण उत्पन्न भेल—जेना दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी, पटनाक मैथिली अकादमी, दिल्लीक साहित्य अकादेमी आ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान; ई सभ सरकारी संस्था अछि। एहि अकादमीसभक अतिरिक्त साहित्य अकादेमीसँ मान्यता पाबि रहल तथाकथित साहित्यिक संस्थासभ सेहो मैथिली साहित्यक सार्वजनिक स्थानपर अधिकार जमाबयवला साधन बनल। एहि संस्था आ अन्य संकीर्ण संगठनसभकेँ भेटैत आर्थिक सहयोगक परिणामस्वरूप मैथिलीक नामपर एहन प्रतिनिधित्व सामने आयल जे मूल लेखकक मतमे मध्यमस्तरीय आ व्यापक साहित्यिक समाजक प्रतिनिधि नहि छल।

मैथिलीमे समानान्तर साहित्यक आवश्यकता सरकारी आ निजी अकादेमीसभ द्वारा साहित्य आ अस्मितापर निरन्तर प्रहारक कारण उठल—जेना दिल्लीक मैथिली-भोजपुरी अकादमी, पटनाक मैथिली अकादमी, दिल्लीक साहित्य अकादेमी आ नेपालक प्रज्ञा प्रतिष्ठान; ई सभ सरकारी संस्था छथि। एहि अकादेमीसभक अतिरिक्त साहित्य अकादेमीसँ मान्यता पाओल तथाकथित साहित्यिक संघसभ मैथिली साहित्य आ ओकर गरिमापर लगातार दबाव बनबैत रहल आ भाषाक साहित्यिक क्षेत्रकेँ अपन अधिकारमे राखबाक मुख्य माध्यम बनल। एहि संस्था आ आन संकीर्ण संगठनकेँ भेटैत वित्तीय सहायता मैथिलीक नामपर एहन प्रतिनिधि-छवि तैयार करैत रहल जे औसत आ समाजक वास्तविक विविधतासँ असंगत छल।

विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन आ मैथिली साहित्यक समानान्तर इतिहास

एहि कारणेँ समाजक अनुपस्थित, उपेक्षित आ प्रतिनिधित्वहीन भागसभक अभिलेखन शुरू भेल। समृद्ध शब्द-संपदा आ प्रत्यक्ष अनुभवसँ युक्त एहि लेखन मैथिलीभाषी समाजक साहित्य आ कलामे परिवर्तनकारी हस्तक्षेप कएलक। औसतपनक स्थान उत्कृष्टताक आग्रह लेलक आ मातृभाषी लोक मैथिलीक वास्तविक सामर्थ्यकेँ अनुभव कएलनि। मैथिली समानान्तर साहित्यक इतिहास लिखबाक प्रयास एहि कारण जन्मल जे निजी आ सरकारी संस्थासँ पोषित तथाकथित मुख्यधाराक औसत साहित्य—जकर वास्तविक पाठक-वर्ग आ मैथिलीभाषी समाजमे स्वीकृति सीमित अछि—अकादेमीसभ द्वारा प्रतिनिधि साहित्यक रूपमे प्रस्तुत होइत रहल। Muse India (www.museindia.com) सन पत्रिकाक उपयोग सेहो एहि सीमित प्रतिनिधित्व लेल भेल, आ सरकारी रेडियो-टेलीविजन केन्द्रसभ सेहो मैथिली साहित्यक ओही औसत छवि सामने अनैत रहल।

राजदेव मण्डल—कवि आ उपन्यासकार

निरन्तर बहैत नोर—श्री राजदेव मण्डलक मैथिली कविता, कविता-संग्रह 'अम्बरा' सँ

'निरन्तर झहरैत नोर'—राजदेव मण्डलक कविता, हुनकर कविता-संग्रह 'अम्बरा' सँ।

tears like a river

always keep flowing

आ ओहि नोरक पानिमे

people plunge

some feel cold

and some feel hot

some say wow!

and some feel bad.

मुदा हमर आन्हर-बहीर सहचर

does not care,

ओकर नोर सदिखन बहैत रहैत अछि

मुदा किछु समयक बाद ओकर नोर बहब बन्द भऽ गेल

आब शायद ओकर नोरक भण्डार खाली भऽ गेल अछि

or

is she storing it!?

पद्य जनसामान्यक सर्वाधिक लोकप्रिय विधा नहि, मुदा किछु पाठक एकरा गम्भीरतासँ सराहैत छथि। संस्कृत जकाँ भाषाक लोकप्रियकरणमे संलग्न लोक सरल संस्कृत गद्यक प्रयोग करैत छथि आ अन्य भारतीय भाषाक लघुकथा-उपन्यास सरल संस्कृतमे अनुवाद करैत छथि। एहन स्थितिमे पद्यक अनुवाद कम कएल जाइत अछि, कारण पाठक-वर्ग बहुत सीमित अछि। जाहि भाषाक वक्ता-संख्या एतेक कम हो जे बोलचाल सिखेबाक शिविर आयोजित करय पड़य, ओतऽ पद्यक अनुवादकेँ संसाधनक कम उपयोगी प्रयोग मानल जा सकैत अछि—मूल टिप्पणी एहि प्रश्नकेँ उठबैत अछि।

पद्य लोकप्रिय विधा नहि, मुदा किछु पाठक ओकर कदर करैत छथि। संस्कृत सन भाषाकेँ लोकप्रिय बनेबाक काजमे लागल स्वयंसेवक सरल संस्कृत गद्यक उपयोग करैत छथि। आन भारतीय भाषाक कथा आ उपन्यास सरल संस्कृतमे अनूदित कएल जाइत अछि; पद्यक अनुवाद प्रायः नहि, कारण ओकर पाठक बहुत कम छथि। जाहि भाषाक बोलनिहारक संख्या एतेक कम भऽ जाय जे बाजल रूप सिखेबाक लेल शिविर लगाबय पड़य, ओतय पद्यकेँ ओहि भाषामे अनूदित करब संसाधनक दुरुपयोग मानल जा सकैत अछि।

मैथिलीमे स्थिति गंभीर भऽ रहल अछि। जँ एहन स्थिति कल्पना करी जे गामे नहि बचत, तँ मैथिली बाजनिहारक संख्या लगभग शून्य भऽ सकैत अछि। लोक मैथिली केवल संगोष्ठी आ बैठकमे बाजत। एखनहियो मैथिली लेखक आ गायक धरि लेल उच्चारण आ शब्द-संपदा संवर्धनक कक्षा आवश्यक बुझाइत अछि।

तखन एहि भाषामे पद्य लिखबाक प्रयोजन की? आवश्यकता की? किछु लोक समयक अभावक कारण पद्य लिखैत छथि, कारण आन विधामे बेसी समय देब पड़ैत अछि। जखन पद्य-लेखनक कारण एना देल जाइत अछि, स्थिति आर गंभीर होइत अछि।

एहन स्थितिमे पड़ोसक घटना, व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा, दोसरापर कटाक्ष आ यात्रावृत्त—सभ पद्यक विषय बनि जाइत अछि। मुदा एहन विषय लेल गद्यक उपयोग किए नहि? कथा मंचन लेल नाटकमे रूपान्तरित होइत अछि; मुदा गद्यकेँ कविता बनएबाक प्रयोजन की?

मैथिली साहित्यक तथाकथित सुखायल मुख्य धाराकेँ चिन्हनिहार लेल उत्तर स्पष्ट आ सरल अछि। एहन रूपान्तरित कविताक पाठक प्रायः गुटीय आलोचक मात्र रहि जाइत छथि। महान कहल जाएबला कविता लिखनिहार स्वयं अपन प्रशस्ति लिखि आत्मनिर्भरताक आह्वानक अर्थ एना बुझैत छथि—दोसरापर निर्भर किए रहब? ओ लम्बा गद्य-भूमिका लिखि कविता-संग्रहमे जोड़ैत छथि आ अपन कविता स्वयं महान आ युगान्तकारी घोषित करैत छथि।

पद्य-सृजनक मूल्य के बुझत? व्यक्तिगत सांसारिक अनुभव जँ मनक गहींर तह धरि नहि उतरय, तँ लयबद्ध होइतहुँ महान कविता नहि बनत। आध्यात्मिक वा पारलौकिक चिन्तन जतेक अमूर्त हो, जँ ओ सांसारिक जीवनसँ जुड़ि प्रासंगिक नहि बनय तँ पाठककेँ मोहित नहि करि सकत—चाहे ओ अलयबद्ध हो, कोनो गुटीय विचारधारासँ जुड़ल हो वा विचारधाराक बैसाखी लेत हो। मनुष्यक मूल आवश्यकता भोजन, वस्त्र आ आवास अछि; तकर बाद आध्यात्मिक चिन्तन आ आन आवश्यकता। बुद्ध उत्सवमे मग्न लोकसँ प्रश्न कएलनि—जँ मृत्यु अनिवार्य अछि आ अहाँ ओकर ज्ञान राखैत छी, तँ एतेक निश्चिन्त उत्सव कोना? तहिना आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषिक-सांस्कृतिक आ आर्थिक आधार पयरक नीचाँसँ खसैत देखैत छथि, तैयो सत्य स्वीकार करबाक बदला राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रीय घटनामे अनेक 'वाद' घुसा देबाक प्रयास करैत छथि; वंचित वर्ग वा मूल निवासी लेल ऊपरसँ संरक्षक-भावक साहित्य रचि स्वयं उद्धारक बनबाक चाहना रखैत छथि। एहन साहित्य तैं धारदार प्रभाव नहि पैदा करैत अछि।

टपकैत रक्त-बूँदसँ

धरती नवस्नाता भऽ गेल अछि

The bird then asks

Asks from its heart

आगाँ आबि रहल घोर, सघन अन्हरिया रातिमे

की हमर प्रजाति बचि सकत?

...तखन ई हमर रक्तमे उतरैत अछि आ रक्त तीव्र गतिसँ बहय लगैत अछि। ई कविक काव्य-प्रजातिक प्रश्न अछि अथवा ओहि पक्षीक प्रजातिक? एहि कविताकेँ बुझबाक लेल पक्षधर आलोचकक अनुमोदन, आत्ममुग्ध भूमिका, साहित्यिक गिरोह वा विचारधाराक बैसाखीक आवश्यकता नहि अछि।

...तखन ओ अनुभव रक्तमे पैसि जाइत अछि आ रक्तक गति तेज भऽ उठैत अछि। ई कविक काव्य-प्रजाति अछि आकि ओहि चिड़ैक प्रजाति? एहन कविताकेँ गुटीय आलोचकक स्वीकृति वा आत्ममुग्ध भूमिका आवश्यक नहि; न कार्टेल चाही, न विचारधाराक बैसाखी।

तैं कविता लेल उत्कृष्टता आवश्यक अछि। ओकर आधार भाषा आ संस्कृति होएबाक चाही। कवितापर कृपा करबाक हेतु बाहरसँ आयात कएल कथानक वा विषयक आवश्यकता नहि। कृत्रिम आयातित भावना सेहो नहि चाही—विशेषतः ओहि समय जखन भाषा-संस्कृति लुप्त होइत जा रहल हो आ क्षेत्रीय अर्थव्यवस्था कमजोर भऽ रहल हो; एहन आयात केवल सतही खोज बनि रहि जाइत अछि।

नीक कविता कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि—बुद्धक चिन्ता, मानवताक भविष्य, हृदयकेँ सान्त्वना, भाषा, संस्कृति वा अर्थव्यवस्था; नहि तँ लोककेँ छद्म-उपदेशकक शरण लेब पड़त आ मैथिली सीखबाक शिविर शुरू करबाक नौबत आबि सकैत अछि। बिम्बक स्वाभाविक रूपान्तर सेहो जरूरी अछि; नहि तँ कवि लेल कृत्रिम वातावरण, कविता लेल अलग मंच, बनावटी शब्द-संपदा आ विचारधारा लेल प्रशिक्षण-शिविर तैयार करए पड़त। लोककेँ ओहि कृत्रिम प्रणालीक प्रशिक्षण देब पड़त। तथाकथित सुखायल मुख्यधाराक कवि एही काजमे लागल बुझाइत छथि।

मैथिली भाषाक लय आ आरोह-अवरोह; आत्मविश्वाससँ भरल श्रमजीवी समाजक सांस्कृतिक आ पेशागत कौशल; सहकारी जीवन-पद्धतिक सामर्थ्य; सांस्कृतिक रूढ़ि, राजनीति, दैनन्दिन व्यवहार, सामाजिक मूल्य, नैतिकता, आर्थिक स्थिति आ बाढ़ि-पीड़ित अर्थव्यवस्थामे अनुकूलन; धर्म आ दर्शन—ई सभ मैथिली कविताक विषय होएबाक चाही। जँ ई विस्तार नहि रहत, कविता एकपक्षीय भऽ जायत, टेढ़ी भऽ जड़ पकड़ि लेत आ अन्ततः मृत वस्तु सन फ्रेममे टाँगबाक लायक रहि जायत।

कविता रचना एकटा आवश्यकता अछि—साहित्यिक सृजनक भूख, जकर पूर्ति रचनासँ होइत अछि। जखन मिथिलाक लोक मैथिली सीखबाक शिविरमे जाएब शुरू करत, तखने कविता लिखबाक आवश्यकता आ विभिन्न पद्य-विधाक प्रयोजनपर प्रश्न उठेबाक समय मानल जा सकैत अछि; तखने मैथिलीमे कविता लिखबाक निरर्थकतापर चर्चा हो। मुदा ओ दिन नहि आबय, तकर लेल कविकेँ सजग रहब जरूरी अछि। राजदेव मण्डल एही सजगताक उदाहरण छथि; तैं हुनकर कविता-संग्रह 'अम्बरा' एक्कीसवीं शताब्दीक पहिल दशकमे एहि विधाक श्रेष्ठ संग्रहसभमेसँ एक बनल। 'वसुन्धरा' अगिला डेग अछि। राजदेव मण्डलक पद्यक उत्कृष्टताक आधार भाषा आ संस्कृति अछि। हुनका विषय आयात करबाक आवश्यकता नहि; भावना सेहो आयातित नहि। हुनकर बिम्ब समृद्ध शब्द-संपदामे

अभिव्यक्त होइत अछि। राजदेव मण्डल लेल कविता लिखनाइ केवल विकल्प नहि, साहित्यिक भूख आ रचनात्मक अस्तित्वक आवश्यकता अछि; भावना घूमैत लयमे ढलि कविता बनि जाइत अछि।

'रहब अहिंक संग'—'अम्बरा' सँ

Crying, calling

My throat dried

The lips dried

As if I was thirsty

The corpses all around

Are laughing at me

हमर स्वर केओ नहि सुनि रहल अछि

Where has went

My society

तोड़ब आवश्यक छल

The conservatism

Turning of direction

For the future

अहाँ सभ स्वयं महान छी

झगड़ा छोड़ि आगाँ बढ़ू

कोनो बाधा एकरा रोकि नहि सकत

हम कोनो पैघ अपराध नहि केने छी

हे आदरणीय, एतय आउ

Do not get angry

आब हम कोनो नियम नहि तोड़ब

आब अहाँ सभकेँ परेशान नहि करब

Keep your kingdom

हमरा पाग आ सिंहासन नहि चाही

आब हम अपन रंग नहि बदलब

हम शान्तिसँ अहाँ सभक संग रहब।

राजदेव मण्डल—कथाकार

नागार्जुन-यात्रीक 'पारो'—ई प्रश्न अलग अछि जे मूलतः मैथिलीमे लिखल गेल छल अथवा लेखक स्वयं हिन्दी सँ मैथिलीमे अनुवाद केने छलाह—अपन समयक मैथिल ब्राह्मण समाजक क्षीण होइत संस्कृतिक प्रत्यक्ष चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ओ समयक सामाजिक-सांस्कृतिक अवस्थाकेँ देखबैत अछि। राजदेव मण्डलक उपन्यास 'हमर टोल' मिथिलाक धनुक समुदायक भीतरसँ लिखल प्रत्यक्ष अनुभव अछि आ ओही समुदायक विशिष्ट सामाजिक-सांस्कृतिक स्थितिमे रचल गेल अछि। लेखक विश्वास, अविवेकपूर्ण रूढ़ि, सामाजिक सुधार, प्रेम, घृणा, आशा आ निराशा—सभकेँ कथामे समाहित करैत छथि। ललितक बाद एकटा रिक्ति देखाइत अछि।

तथाकथित मुख्यधाराक मैथिली लेखक अपन चुनल विषयक भूलभुलैयामे फँसि गेलाह; साहित्यिक परिदृश्यपर अन्हार घेरल आ बाहरक बाट कठिन बुझायल। मूल आलोचना 'हमर टोल' केँ एहि रिक्तिक बीच महत्त्वपूर्ण हस्तक्षेप मानैत अछि।

नागार्जुन-यात्रीक 'पारो'—ई प्रश्न छोड़ि जे मूलतः मैथिलीमे लिखल गेल छल वा लेखक स्वयं हिन्दीसँ मैथिलीमे अनूदित केने छलाह—अपन समयक मैथिल ब्राह्मण समाजक क्षीण होइत संस्कृतिक प्रत्यक्ष अनुभव प्रस्तुत करैत अछि। ओ समयक सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति चित्रित अछि। राजदेव मण्डलक उपन्यास 'हमर टोल' मिथिलाक धनुक जातिक जीवनक प्रत्यक्ष विवरण अछि, ओकर विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थिति भीतर। लेखक विश्वास—कखनो अतार्किक—सामाजिक सुधार, प्रेम, घृणा, आशा आ निराशा सभकेँ ओतय समाहित करैत छथि। 'ललित' क बाद एकटा रिक्ति बनल। तथाकथित मुख्यधाराक मैथिली लेखक चयनित विषयक भूलभुलैयामे फँसि गेलाह; साहित्यिक दृश्यपर अन्हार छा गेल आ बाहर निकलनाइ कठिन, आगाँ बढ़नाइ असम्भव सन भऽ गेल।

राजदेव मण्डलक 'हमर टोल' 'पृथ्वीपुत्र' मे ललितक दोसरक अनुभवपर आधारित विवरणकेँ प्रत्यक्ष अनुभवसँ शुद्ध करैत अछि; फलतः समानान्तर धारा मुख्य साहित्यिक प्रवाहकेँ संग लऽ आगाँ बढ़बैत आ प्रासंगिक बनबैत अछि।

यथार्थवादी लेखक होएबाक कारण कथाकार अन्तकेँ त्रासद बनेबा लेल बाध्य सन छथि। ओ किछु संघर्ष देखबासँ इनकार करैत छथि, वा देख नहि पबैत छथि, वा कदाचित कियो नहि देखि सकैत अछि; तैयो ओ संघर्षसभक विवरण अवश्य दैत छथि।

कौआ आ मैना बीच लड़ाइ शुरू भेल। लड़ाइ केओ नहि देखलक; केवल गाछ देखलक। गाछ आओर बहुत किछु देखलक, मुदा तैओ चुप्प रहल।

कौआ आ मैना बीच लड़ाइ शुरू भेल। लड़ाइ ककरो नहि देखल; केवल गाछ देखलक। गाछ आरो बहुत किछु देखलक, मुदा तैयो चुप्प रहल।"

ओहि मौनक जटिलता आ उलझनकेँ अप्रत्यक्ष विवरणक बदला ओहि अनदेखल घटनाक प्रत्यक्ष अनुभवक सहारे परिष्कृत रूपमे प्रस्तुत कएल जा सकल; एही कारण ई उपन्यास मैथिली साहित्यक इतिहासमे अपन स्थान बनौने अछि।

राजदेव मण्डल अपन निम्नलिखित पाँचटा कथाकेँ सर्वश्रेष्ठ मानने छथि:

राजदेव मण्डल अपन निम्न पाँच कथाकेँ अपन श्रेष्ठ कथा मानने छथि:

Avak (Speechless)

बेचुआक स्वीटर

इलेक्शनक भूत

आ रखबार।

पहिल कथा 'रुसल बौआ' '82म सगर राति दीप जरय' लेल लिखल गेल छल। ई मिथिलाक गामसभमे प्रत्येक तीन मासपर रातिभरि चलनिहार कथा-पाठ कार्यक्रम अछि, जतऽ कथाकार अपन नव, अप्रकाशित कथा पढ़ैत छथि आ दोसर लेखक ओकर आलोचनात्मक मूल्यांकन करैत छथि; कार्यक्रम साँझसँ भोर धरि चलैत अछि। ओहि बेर केवल बाल-साहित्यक कथा पढ़बाक निर्णय भेल आ आयोजन हमर गाममे छल। राजदेव मण्डलक कथाक समीक्षा नारायणीकेँ देल गेल। नारायणजी टिप्पणी केलनि जे कथा प्रेमचन्दक प्रसिद्ध 'ईदगाह' क स्मरण करबैत अछि। कथामे फेकनक बेटा नाराज अछि; ओकरा नव कपड़ा चाही, नहि तँ दुर्गापूजा मेलामे नहि जाएत। धीरेन्द्र बाबूक बेटा अमितक नव कपड़ा अछि। धीरेन्द्र बाबू सम्पन्न छथि, फेकन गरीब; मुदा फेकनक बेटा पढ़ाइ वा खेल—सभ क्षेत्रमे अमितसँ आगाँ अछि। फेकन आ पत्नी बीच चर्चा होइत अछि; पत्नी आरोप लगबैत छथि जे फेकन बेटाक प्रति सेहो अपन दायित्व पूरा नहि करैत छथि। बेटा ई सभ सुनैत अछि आ अन्ततः अपन पिताकेँ सांत्वना दैत अछि।

पहिल कथा 'रुसल बौआ' ८२म 'सगर राति दीप जरय' लेल लिखल गेल छल—मिथिलाक गामसभमे प्रत्येक तीन मासपर आयोजित रातिभरि चलनिहार कथा-पाठ कार्यक्रम, जतय कथाकार अपन नव आ अप्रकाशित कथा पढ़ैत छथि। दोसर लेखक पाठित कथापर आलोचनात्मक टिप्पणी करैत छथि आ कार्यक्रम साँझसँ भोर धरि चलैत अछि। एहि बेर केवल बाल-साहित्यक कथा पढ़बाक निर्णय भेल आ आयोजन हमर गाममे छल। राजदेव मण्डलक कथाक समीक्षा नारायणीकेँ देल गेल। नारायणजी कहलनि जे ई कथा

प्रेमचन्दक प्रसिद्ध ‘ईदगाह’ क मोन पाड़ैत अछि। कथा एना आगाँ बढ़ैत अछि: फेकनक बेटा रुसल अछि; ओकरा नव कपड़ा चाही, नहि तँ दुर्गापूजाक मेला नहि जाएत। धीरेन्द्र बाबूक बेटा अमितक नव कपड़ा अछि। धीरेन्द्र बाबू धनी छथि, फेकन गरीब; मुदा पढ़ाइ वा खेल—सभ दृष्टिसँ फेकनक बेटा अमितसँ आगाँ अछि। फेकन आ पत्नी बीच चर्चा होइत अछि; पत्नी आरोप लगबैत छथि जे ओ अपन बेटाक प्रति दायित्व सेहो पूरा नहि करैत छथि। बेटा ई सभ सुनैत अछि आ अन्ततः अपन पिता के सान्त्वना दैत अछि।

‘अवाक’ किछु हास्यपूर्ण क्षणसँ आरम्भ होइत अछि। जीतू सासुर पहुँचैत अछि, जतय सार हुनका अपन मित्रसँ परिचित करबैत अछि। ई व्यक्ति डकैत-दलसँ जुड़ल सन बुझाइत अछि, आ कहियो जीतूक जान बचौने रहैत अछि।

‘बेचुआक स्वेटर’ बन्धुआ मजदूरी आ गरीबीक प्रश्न उठबैत अछि, संगहि पुलिस बलमे जातिगत सोचक संकेत सेहो दैत अछि। चाहक दोकानपर काज करनिहार बालक बाल-मजदूर अछि। कथा पुलिस व्यवस्थामे जड़ जमा चुकल भ्रष्टाचारकेँ सेहो देखबैत अछि।

‘इलेक्शनक भूत’ चुनावी प्रक्रिया आ लोकतन्त्रपर टिप्पणी अछि। मुख्य पात्र घटनाक एकटा क्रम सुनबैत अछि आ अन्तमे स्पष्ट होइत अछि जे ई सभ ओकर सपना छल—ई शिल्प अत्यन्त प्रभावी अछि।

‘रखबार’ गामक रखबार मुसबाक कथा अछि। ओकर बेटा अपन पत्नी—मुसबाक पुतोहु—केँ भाला दऽ कहैत अछि जे जँ मुसबा झगड़ा करए तँ ओकर शरीर छेदि दिह। बाहर आतंकक रूपमे चिन्हल मुसबा घरक भीतर वशमे अछि। आगाँ शब्द-क्रीड़ा सुमनाक प्रसंग धरि पहुँचैत अछि, जे मुसबा द्वारा अश्लील व्यवहारक प्रयासपर ओकरा प्रतिकार करैत अछि।

सभ कथामे एहन शब्द आ प्रसंग भेटत जे मुख्यधाराक साहित्यमे अनुपस्थित रहल अछि। गरीबीक बीचोबीच जीवनक स्पन्दन, उदासी आ सांस्कृतिक उपकरणक कथा—समानान्तर परम्पराक कथाकारसभक आगमनसँ पहिने एहन रूपमे कम सुनल गेल।

Muse India केर अंक ८८ (नवम्बर–दिसम्बर २०१९), http://museindia.com/Home/PastIssue, मैथिली साहित्यकेँ अत्यन्त कमजोर रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। संगहि ई अपनाकेँ मैथिली साहित्यक प्रतिनिधि समीक्षा कहैत अछि, जखन कि ई दिल्लीक साहित्य अकादेमीक दृष्टिक अनुरूप तथाकथित ‘सुखायल मुख्य नाला’ क प्रतिनिधित्व मात्र करैत अछि। अपेक्षा अछि जे Muse India अपन प्रस्तुति सुधारि मैथिली साहित्यक समानान्तर परम्परापर केन्द्रित एकटा स्वतंत्र अंक प्रकाशित करए।

४७. लोक-संस्कृति, साहित्य, कृति-समीक्षा आ समानान्तर दृष्टि

सारांश

ऋगवेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गातृ, यजुर्वेदक अध्वार्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ तकर सहयोगी पुरोहित सभ, पूरा-पूरी सत्रह तरहक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। आ आब एक्केटा ब्राह्मण पुरोहित केना भऽ गेल? ओडिसामे अखनो 'होता' टाइटिल होइ छै आ ओतुक्का ऋगवेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी ब्राह्मण हिंसक (!) पिप्प्लाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे बियाह-दान नै करै छथि।

बीजशब्द: संस्कृति · कृति · समीक्षा · समानान्तर · दृष्टि · सेहो · करैत

नूतन अंक सम्पादकीय

१

ऋगवेदक पुरोहित होता, सामवेदक उद्गातृ, यजुर्वेदक अध्वार्यु आ अथर्ववेदक ब्राह्मण; आ तकर सहयोगी पुरोहित सभ, पूरा-पूरी सत्रह तरहक पुरोहित वैदिक कालमे रहथि। आ आब एक्केटा ब्राह्मण पुरोहित केना भऽ गेल? ओडिसामे अखनो 'होता' टाइटिल होइ छै आ ओतुक्का ऋगवेदी, सामवेदी आ यजुर्वेदी ब्राह्मण हिंसक (!) पिप्प्लाद संहिताक अथर्ववेदी ब्राह्मणमे बियाह-दान नै करै छथि। दक्षिण भारतमे कतेक आदिवासी समाजक पुरोहित ब्राह्मण बनि गेला। कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि करैले पुरोहित अबै छथि, गएर ब्राह्मण वा ब्राह्मणो, कियो भऽ सकै छथि। जे फील्डवर्क बिनु केने बजता से कहता ब्राह्मण केना गहबर आ भगता बनत, मुदा ग्राम-रुद्रपुर (भाया तुलापतगंज, जिला मधुबनी) मे गहबरक सेवा ब्राह्मण भगैत करै छथि। मिथिलामे पसरल सतार (संथाल) समुदायमे मुर्मु पण्डित लयमे सिन्धु नदी घाटी सभ्यताक कालक ग्रन्थक बिनती पढ़ैत छथि, से संथाल समुदायक लोक अहाँकेँ बतेता। दलित विमर्शमे वाल्मीकि रामायणक उत्तरकाण्डक शम्बूक वधक चर्चा होइत रहैए, तप करबाक कारण शम्बूकक शिकाइत जे ओ आगाँ नै बढ़ि जाय, आ तइ शिकाइतक निवारणार्थ भगवान राम द्वारा शम्बूक वध। पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि जे राजपूतनी चरित्रहीन होइए। ई दुनू ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सकैत अछि बला वक्तव्य, जे सोशल मीडियामे आ अन्तर्जालपर अहाँकेँ भेटत, जकर कोनो सन्दर्भ मूल अथर्ववेदमे ताकैत रहू नै भेटत, बजनहार लुत्ती लगा कऽ निपत्ता, कोनो सन्दर्भ नै देता आ अहाँ अपस्याँत रहू, बर्डन ऑफ प्रूफ आरोप लगेनिहारपर नै, अहाँपर। अहाँक ऊर्जाक क्षय भेल मुदा फेर अन्तर्जाल ठीक कऽ लेलक, पाठ विकृत नै भेल। पहिने आउ पुरुष परीक्षापर, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जइ राजाक दरबारी रहथि तकर जातिक स्त्रीक विषयमे एहेन लिखबाक हुनका साधांश हेतनि? कोनो कलुषित मानसिकताक परवर्ती लिपिकार अपन भावनाक अनुसार हेरफेर जँ कऽ देलकै तँ आइक टिप्पणीकार आ अनुवादककेँ टिप्पणी दऽ कऽ स्थिति स्पष्ट कऽ देबाक चाही। राम शम्बूककेँ मारलनि वा शम्बूकक शिकाइत केनिहार कलुषित लिपिकार शम्बूककेँ मारलनि? आब आउ अथर्ववेदपर। अथर्ववेदमे लिखल छै हे नारी, हम सामवेद छी आ अहाँ ऋगवेद, हे वधु, अहाँक हाथ हम समृद्धि लेल ग्रहण कऽ रहल छी। आ ओहुनो व्रात्य परम्पराक अथर्ववेद आ सांख्य अछि, व्रात्य जे गायत्री मंत्र नै पढ़लथि तीन खाढ़ी आ तँ बनि गेला वनचर, बनबीहर। आ अखुनका घर वापसी सन विध छल 'व्रात्यस्तोम' विध, समानान्तर धाराक व्रात्यकेँ घुरेबा लेल। कतौ हुनका शारीरिक आ लैंगिक हिंसक, निशांमे रहैबला सन विवरण भेटत मुदा अथर्ववेदमे हुनका योगीक रूपमे देखब। अन्यत्र ओ सत्यक रक्षक आ शिवभक्त वैद्य सन सेहो वर्णित छथि। मुदा अथर्ववेदी ब्राह्मणकेँ सेहो हिंसक कहल गेल। कलुषित लिपिकार वेदोमे क्षेपकक प्रवेश केलन्हि जे भाषा विज्ञानी आब पकड़ि रहल छथि। मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य "यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्" अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा हेतु प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे जा कऽ वेदे प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि। वेदमे सामान्य जन उपयोगी आ निरपेक्ष साहित्य छल। सभ ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य आ शूद्रमे दीप्ति भरि दियौ आ ओही दीप्तिसँ हमरो भरि दिअ।- ई यजुर्वेदमे छै।

सीता अबै छथि, कमला धार पार करऽ चाहै छथि। मुदा मलाह कहै छन्हि जे हमरा इनाम चाही, आ इनामो की तँ सीताक ननदि। सीता कहै छथिन्ह, देलौं, भोग कर, युग-युग धरि। सीताक नैहर मिथिला छियन्हि, मलाह एतबो हँसी ठट्ठा नै करत। आ से मिथिलाक दूधवंशी सम्प्रदाय गबैत छथि, कोरैल आ बुधनक मायसँ हमर सुनल अछि।

गिदरमाराक अलग भाषा होइ छै हौ, लोक सभ ओकरा सभकेँ गिदरमारा आ मगहिया डोम कहै छै मुदा ओ सभ अपनाकेँ बंजारा कहैए, अपन भाषाकेँ बंजारा भाषा कहैए। मुँहपर गिदरमारा कहि कऽ देखियौ, झगड़े कऽ लेत। बंजारा सभ ऐ विश्वकेँ नीक आ खराप द्वारा संचालित मानै छथि।

नग्र सभमे कंगला-भिखमंगाक मोहल्ला बसि गेल छै, ऐ मोहल्लामे जाति-पाति नै छै। सिमरा लग बड़का टेण्टबला बस्ती छै बंजारा सभक, सुखेंतमे। बनैए उजरैए। सतार सभ मधेपुरसँ पूब दक्षिण दुआलकक दक्खिन करहरामे आ टढ़ियामे रहैए। तीर-धनुषमे माहिर संथाल सभ।

सुभाष चन्द्र यादव मैथिली लोककथा 'एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया' केर सम्बन्धमे लिखै छथि -"मनुस्मृति मे कहल गेल छैक जे चुपचाप ककरो फूल तोड़ि लेब चोरि नहि होइत छैक।; तहिना ककरो एकटा चीन खा लेब कोनो अपराध नहि भेल। इएह कथाक आत्मवाचन थिक। कथा ई प्रतिमान उपस्थित करैत अछि जे सभक जीवक मोल बराबर होइत छैक। असहाय आ निर्धनो कैँ जीबाक अधिकार छैक। एहि संसार मे ओकरो लेल एकटा स्पेस (जगह) हेबाक चाही।" ई मनुस्मृति एक ठाम एहेन सहिष्णु अछि, एकर पाठ आधुनिक विधि शब्दावलीसँ युक्त अछि, लगैए जेन विधिक दृष्टिसँ कोनो गैप नै छै, मुदा ओत्तै किछु क्रूर गप सेहो घोसिया देल गेल।

वेदक विदेशी भाषा अनुवाद सभमे ऋषिक नाम हटा देल गेल, मुदा मूलमे अखनो भेट जायत। वैदिक द्रष्टा तँ स्त्री आ शूद्र ऋषि सेहो छथि, तखन शूद्र आ स्त्रीक विरुद्ध रचना के घोसियेलक? जे शूद्र ऋषि कवष ऐलूष वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, जे महिला अपाला वैदिक ऋचाक द्रष्टा छथि, से कात-करोटमे किए ठाढ़ रहितथि? मुदा वेदमे ऋषि, देवता आ छन्द यएह तीनटा शब्द सभ सूक्त क्रमांकक संग भेटत, द्रष्टा हम अहाँ कहै छियन्हि, मुदा तकरो दुरुपयोगक प्रयास भेल। वैदिक ऋषि स्वयंकेँ आ देवताकेँ सेहो कवि कहै छथि। सम्पूर्ण वैदिक साहित्य ऐ कवि चेतनाक वाङ्मय मूर्त्ति अछि। ओतऽ आध्यात्म चेतना, आधिदैवत्वमे उत्तीर्ण भेल अछि, एवम् ओकरा आधिभौतिक भाषामे रूप देल गेल अछि। ओना ओइ समएमे सेहो सम्मिलित रूपेँ साल भरि ऋचा पाठ करैबलाकेँ पार्जन्यक स्वागतमे टर्र-टर्र करैबला बेङ-मण्डूक सन विशेषण अथर्ववेदमे देल गेल छै। माने गायनमे असहमतिक स्वरक स्वीकृति छलै। ऋगवेदमे सेहो मण्डूक गान छै। मन्त्रार्थमे महर्षि पतंजलिक वैज्ञानिक मन्तव्य 'यच्छब्द आह तदस्माकं प्रमाणम्' अर्थात् जे शब्द आकि मंत्रक पद कहैए, सएह हमरा हेतु प्रमाण अछि- एकर अर्थ बादमे जा कऽ वेदे प्रमाण अछि- से कोना भेल से नै जानि। हमरा लेल तँ मंत्रक ऋषि, छथि, देवता छथि, दुनू कवि छथि सूक्तक लेखक, आ सएह हमरा लेल प्रमाण अछि। जनक सहस्र गाय केर शर्त पर शास्त्रार्थ राखलन्हि। याज्ञवल्क्य गाय सभकेँ रोमि बिदा होइपर छला आकि गार्गीक प्रश्न शुरू। याज्ञवल्क्यक उत्तरपर ओ प्रतिप्रश्न पूछऽ लगली। याज्ञवल्क्य बजला- अहाँक माथ ने भंगा जाय, माथक कइएक फाँक ने भऽ जाय प्रश्न पूछि-पूछि। मुदा गार्गी तइयो पुछलन्हि- समय काल ककर अधीन। याज्ञवल्क्य बजला- अक्षरक।

जखन साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त कथित लिटेरेरी एशोसियेशन चेतना समितिक पत्रिकाक सम्पादक आइयो लेखमे ब्राह्मणवादी संस्कारक अन्तर्गत जोड़-घटाव करै छथि। "पचपनिया मैथिली" मे सुभाष चन्द्र यादव ऐ सम्पादक महोदयक विषयमे लिखै छथि- "डॉ. रमानन्द झा 'रमण'अपन नोटबुक मे टिपने छलाह-'ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?' एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।" यएह विषय हम महेन्द्र मलंगियाक नाटक सभमे प्रयुक्त अही तरहक शब्दावली पर उठबैत रहल छी, मुदा हुनकर जातिवादी रंगमंच कोनो निशांमे मातल अछि आ दोसरक भावनासँ ओकरा कोनो मतलब नै छै। मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्रक अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेलाह, रमानन्द झा 'रमण' आ मलंगियाक हाल देखबे केलौं तखन हिनकर सभक मनसि-पूर्वज अकबरकालीन तुलसीकेँ की दोष देल जाय! जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल राम चरित मानसक अछि। पंचतंत्रमे खिस्सा सभ नीक छै मुदा स्त्री आ शूद्रक पाछाँ विष्णु शर्मा पड़ि जाइ छथि, से एकर पुनर्लेखन नारायण पण्डित केलनि, ओही सभ खिस्साकेँ, हितोपदेश नामसँ। आ हितोपदेश बेसी व्यावहारिक अछि, तँ की रमानन्द झा 'रमण' आ महेन्द्र मलंगिया माफी मंगताह आ अपन रचना सभक पुनर्लेखन करता? पुरुष परीक्षाक अनुवादक उपयुक्त स्थलपर ई टिप्पणी करता जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक जखन राजाक प्रशस्ति-पाठमे पुनः-प्रात भेल छन्हि तखन की हुनकर ई साधांश छन्हि जे ओ राजपूतनीक चरित्रक विषयमे गलत बात लिखता आ ई समस्त काज जातिवादी लिपिकारक किरदानी अछि? पुनः हितोपदेशमे नारायण पण्डित कहै छथि:

आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतत् पशुभिर्नराणाम्।

धर्मो हि तेषामधिको विशेष: धर्मेण हीनाः पशुभिः समानाः ॥

आहार, निद्रा, भय आ मैथुन ई मनुक्ख आ माल-जालमे एक्के रङ होइए। मनुक्खमे विशेष खाली धर्म अछि नै तँ ऐ सँ विहीन ओहो माले-जाल सन अछि।

२

अन्तर्जाल भेल साइबर स्पेस।

मुदा खतरा ओत्तौ अछि, वाइरस, स्पैम, मालवेयर, स्पाइवेयर, ट्रोजन हॉर्स आ वॉर्मक खतरा।

वाइरस अछि रक्तबीजी, अपने ई एकसँ दोसर प्रोग्राम बहार करैए, ओना ईहो अपने अछि प्रोग्राम। सिस्टम, स्टील्थ, फाइल आ पोलीमॉर्फिक वाइरस एकर प्रकार भेल।

वॉर्म सेहो वाइरस सन प्रोग्राम अछि जे नेटवर्कसँ पसरैए।

ट्रोजन हॉर्स बड़े कलामी, लागत जे करत ईर घाटक काज मुदा कऽ देत वीर घाटक काज। स्पाइवेयर अछि जासूस जे व्यक्ति वा संगठनक जासूसी करैए। मालवेयर अछि ऐ सभकक माने वाइरस, वॉर्म, स्पाइवेयर आ ट्रोजन हॉर्सक सम्मिलन जे नेटवर्कक कम्प्यूटरकेँ नुकसान पहुँचाबैए। कोनो फेक चीजकेँ किनबाक-बेसाहबाक लेल अज्ञात लोककेँ पठाओल बेहिसाब ई-पत्र भेल स्पैम।

एण्टी वायरस ऐ सभपर लगाम लगबैए। फायरवाल हैकर वा क्रैकर सभकेँ अहाँक कंप्यूटर वा नेटवर्कक पर आक्रमण वा अधिकारकेँ रोकबालेल किलाक देबार अछि।

आ अन्तमे हमर एथिकल हैकर, जे अछि हैकर वा क्रैकर सभक बाप, जे अहाँक भलाइ लेल अहाँक एण्टीवायरस आ फायरबालकेँ तोड़बाक प्रयास करैए, आ जँ से भऽ गेलै तँ एण्टीवायरस आ फायरबालकेँ आर मजगोता करैए नीक प्रोग्रामिंगसँ आ तखन फेर अटैक करैए। बुझियौ मॉकड्रिल करैए।

एकटा अपन छवि बनाउ, जकरासँ नीक लोक प्रेम करैए आ जे योग्य अछि कर्मठ अछि।

मुदा जेना जेना अहाँ आगाँ बढ़ब, समय बीतत हमरा सभमेसँ बहुतक अपन मोनक छवि दूषित हेबऽ लागै छन्हि आ से होइए ओइ गप सभपर ध्यान देलासँ जे दोसर हमरा विषयमे की सोचैए वा बाजैए। मुदा ओ अपन छद्म ज्ञान वा कहियो काल नीको ज्ञान वा कहू जानकारी तँ दऽ सकै छथि मुदा की ओ हमर अपन छवि वा योग्यता हमरा दऽ सकै छथि, नै वरन् ओ बेशीकाल तकर उनटा करै छथि। माता-पिता आ शिक्षक सेहो कखनो काल अनायास ऐमे सम्मिलित भऽ जाइ छथि। संगी-साथी, सर-समाज आ सम्बन्धी सेहो। ओ कम वा बेशी सुन्दर अछि, ओकर गणित ओइ बच्चासँ नीक-अधला छै, ओइ तेज वा बुड़बककेँ दोस्त बनाउ वा नै बनाउ, ओकरे दुआरे हम सभ जितलौं वा हारलौं। हुनकर क्रियाकलाप आ बोल ई सभ करैए, मुदा से तखने हएत ने जखन अहाँ तइपर कान-बात देबै।

सफलता जे वास्तवमे सफलता होइ, बिनु कम्प्रोमाइजबला सफलता, तइसँ अहाँक आत्मविश्वास आगाँ बढ़त। असफलता लोककेँ हतोत्साहित तखने करत जखन ओ वास्तवमे असफलता होइ। जेक्स डेरीडाक विखण्डनवाद कतेक साहित्यकेँ नीचाँसँ ऊपर लऽ गेल आ कतेक केँ ऊपरसँ नीचाँ। तँ चोरि कऽ कय रचनात्मक साहित्य लिखब आ तइपर मिशेल फोकोक डिसीप्लीनरी इंस्टीट्यूशन सभसँ

पुरस्कार लेब मूल्य लेब सफलता भेल आकि सफलता? आ सुभाष चन्द्र यादव सन सुशील सन जिनगी भरि अड़नाइ आ तकर मूल्य चुकेनाइ भेल सफलता आकि असफलता?

तँ अपन आत्मविश्वास बनेने रहू, अनुशासन अडिग राखू। योग्यतामे सभदिन वृद्धि करैत रहू, जे एक दिन एहेन बीतय जे अहाँक योग्यतामे कोनो वृद्धि नै भेल तँ बुझू ओ दिन बर्बाद भऽ गेल। आ स्थितप्रज्ञ बनू, आत्मविश्वास राखू। आ जँ अहाँमे ई सभ गुण अछि तँ अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

भोरे सकाले उठू, घरक काज सेहो करू, ऐसँ अहाँ जबाबदेह आ आत्मनिर्भर भऽ सकब। समस्या एलापर सहायता मांगैसँ लाज नै करू आ दोसराक समस्यामे दोसराकेँ सेहो सहायता करू। शक्तिशाली दुश्मनक सोझाँ ठाढ़ भेनाइ कठिन अछि, ऐ लेल चाही साहस, नीक-अधलाक फरिच्छ दृष्टि आ सत्य, आ अन्यायक खिलाफ कखनो हथियार नै राखू। चिचियेलासँ कियो नै सुनत, कऽ कय देखाउ, कन्नारोहट आ उपरागा-उपरागीसँ किछु नै हएत, कऽ कय देखाउ, जे भाषण दै छी से करबो करू।

अन्तर्जालपर सेहो बहुत रास खरा छै, ने फेक न्यू बनाउ नहिये पसारू, अन्तर्जालक अपराधी सभसँ बचू।

अपनासँ कमजोर आ छोटकेँ डराउ नै, ओकरा प्रतारित नै करू, जे कियो अहाँ संग ई करैए तकर खिलाफ शिकाइत करू।

जयपुर-फुट (नकली पएर), कम धुँआ बला चुल्हा सन समानान्तर साहित्य सेहो अन्वेषण, निष्काम कर्म आ बिनु पाइ/ पुरस्कारक लालचक कएल जा रहल अछि ज इसँ हम सभ नीक समाज बनाबी आगाँ बढ़ाबी।

सभमे किछु ईलम होइ छै, जेना पिपही बजेबाक ईलम। जँ विश्वास नै हुअय तँ ओइमे फूकि कऽ देखियौ। ओइलेल कएक बर्खक प्रशिक्षणक आवश्यकता होइ छै। तहिना लोक नृत्य, नाचमे सेहो छै आ लकड़ी आ माटि सम्बन्धी ईलम सेहो छै। ओइ कलाक सम्मान करू।

ओही विकासक स्वागत करू जइसँ पर्यावरण नष्ट नै होइत अछि, जतेक गाछ काटै छी तइसँ दस गुणा गाछ रोपू।

असगर काज करैमे डर लागैए, छोटोसँ छोटो काज? मुदा से सभ काल नै भेटत, सभ काल ने संगे भेटत ने समर्थने।

भूत कँ बिसरि जाउ, ई नीक हुअय तखनो, वा अधला हुअय तखनो।

किछु संगी साथी आ संगठन अहाँकेँ दुखी करै छथि, तामस उठबै छथि, हतोत्साहित करै छथि, हुनका बिदा करबाक समय आबि गेल। नीक दिन अखनो आबैबल अछि, अधला समय कहियाधरि चलत। अधला समयमे सीखल शिक्षा दूरगामी होइत अछि जइसँ हम अपन गलती नै दोहराबी। काजक बीच विराम दऽ चिन्तन करब सेहो आवश्यक, गाम, सर-कुटुम, दोस-महीम ओइठाम एनाइ-गेनाइ सेहो आवश्यक।

बिहारिक बाद पनिसोखा देखबा लेल तैयार रहू। सभ दिन हएत जादू। आ से हएत जखन अहाँ सभ दिन कोनो ने कोनो एक्को गोटेक सहायता करी। सदा अपन विचारकेँ लिखि कऽ जमा करैत रहू। जलखै बिनु नागा केने करू, सात-आठ घण्टा सूतू, भोजन एहेन करू जे शरीर लेल स्वास्थ्यकारी हुअय। मोन तैयो उचटऽ लागय तँ ध्यान लगाउ, चित्र बनाउ, पढ़ू, संगीसँ गप करू, घूमू फिरू, संगीतपर नाचू।

जीवन अमूल्य अछि, एकर सभ क्षणक प्रति सम्मान राखू। बिनु शिकाइतक मेहनति करू आ से तखन तँ आरो करू जखन ऐसँ असफलता प्राप्त हुअय। देखल सपना माने लक्ष्य दिस सभ दिन एक डेग, आ ओ जँ मनोरंजक लागय तँ बुझू जे अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

कठहँसी, आँखि धरि नै गेल, तामसकेँ नुकेबा लेल, ई खुशी नै देखेलक, ई हास्यकणिका सुनलाक बादक हास्य हँसी नै छल, ई दोसराकेँ संगी बनाबैबला ओकरा विश्वास दिआबैबला जे ओ हमरा लेल खतरा नै अछि से हँसी नै छल। वृद्ध आ बेमारक सहायता करबाक चाही, युद्ध आ प्राकृतिक आपदासँ प्रभावित लोक आ देशक मदति करबाक चाही, ई कहियो निरर्थक नै हएत। अहाँक सोझाँ स्पष्ट लक्ष्य हेबाक चाही, परिश्रम आ लगनसँ ओ प्राप्त सेहो हएत। अन्यायी आ कष्ट पहुँचेनिहारक प्रति बजनाइ सीखू, मानवताक प्रति निष्काम भावसँ सेवा केनिहारक प्रति कृतज्ञ हौ। दिव्यांग लोकक प्रति हमरा सभकेँ ध्यान राखबाक चाही, हुनका प्रति संवेदनशील रहबाक चाही। दिव्यांक लोक दिव्यांगताक अलाबे सेहो बहुत रास गुणसँ विभूषित छथि, हमरा से देखबाक चाही, आ हुनका अपन अधिकार भेटनि तइमे संग देबाक चाही। विश्व स्वास्थ्य संगठनक अनुसार विश्वमे पन्द्रह प्रतिशत लोक दिव्यांग छथि। भारतमे पहिल बेर २००१ मे दिव्यांग लोकक गणना भेल जे मात्र २.१ प्रतिशत अछि, ई प्रतिशत विश्वास योग्य नै अछि। सहकर्मी, संगी साथी सन बनबाक द्वाब अहाँपर सदिखन रहत, मुदा अहाँ ओइ दवाबमे नै आउ। अपन व्यक्तित्व विकसित करू।

हँसी-ठट्ठा लेल अपन जान गमेनाइ नीक गप नै।

खेतमे रसायनिक पदार्थ वातावरणकेँ दूषित करैत अछि। जैविक पदार्थक उपजा बिनु रसायनिक पदार्थक होइत अछि, ई बेशी स्वस्थ्यकारी आ चहटगर होइत अछि।

जिनकामे आत्म-सम्मानक भाव कम छन्हि ओ नीक अनुभव करै लेल दोसराक मान्यताक आवश्यकता पड़ैत अछि। फेसबुकपर पोस्ट कऽ कय लाइक गानैबला लेल ई गप अछि। कतेक घटना घटित भेल अछि जइमे सेल्फी लै काल व्यक्ति खधाइमे खसि पड़लथि, छातसँ खसि पड़लथि आ मृत्यु भऽ गेलन्हि। हँ मुदा सेल्फी केर प्रयोग अहाँ नीक उद्देश्य जेना बेटी संग सेल्फी आदिक रूपमे कऽ सकै छी।

समयक महत्व बुझू, फालतू सभा समिति, खास कऽ प्रतिक्रियावादी समिति-संस्था अहाँक बहुत समय खराप कऽ सकैत अछि। कखनो नियत समयसँ नै पहुँचि सकी तँ दुख व्यक्त केनाइ नै बिसरू। पाइ हमरा सभकेँ प्रकृतिसँ दूर कऽ देने अछि। कनाडाक मूल इण्डियन अबेनाकी कबीला जे हुनका सभ लेल आरक्षित रिजर्व ओडानाकमे रहैए पर्यावरणक लेल कतेक सुन्दर सुन्दर लोकोक्ति बनेने अछि

'तखन जखन आखिरी गाछ कटि जायत, आ सभ धारमे माहुर दऽ देल जायत, तखन जखन गोट-गोट माँछ अहाँ मारि देब, तखने अहाँ बूझि सकब जे अहाँ पाइ नै खा सकै छी।'

सामान्य जीवन जीबू जइसँ पर्यावरणकेँ नुकसान नै होइ, प्रकृतिसँ जुड़ि कऽ रहू।

एक दोसरासँ मिलि जुलि कऽ रहू, मनुक्खे टा नै, माल-जाल, चिड़ै चुनमुनी, सभसँ, प्रकृतिसँ धारसँ।

आ से जँ अछि तँ बुझू जे अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

कियो सम्पूर्ण नै होइए मुदा नीक बनबाक प्रयास तँ कैये सकै छी। हमरा सभकेँ सत्यवादी, इमानदार आ दयालु बनल रहबाक प्रयास करबाक चाही। ई संसार रहबा योग्य एकटा नीक स्थान बनल रहय तकर प्रयास सभकेँ करबाक चाही।

हमरा सभकेँ खूब पढ़बाक चाही, नव नव चीज सिखैत रहबाक चाही।

3

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मैथिलीमे छद्म-आलोचना आ कमलानन्द झाक प्रसंग

मूल लेखकक मतमे कमलानन्द झाक पोथी ‘Maithili Novel: Time, Society and Questions’ (2021) क शीर्षक भ्रम उत्पन्न करैत अछि। ओ एकरा किछु चुनल जातीय लेखकपर लिखल तथाकथित आलोचनात्मक आलेखक संग्रह मानैत छथि। 263 पृष्ठक एहि पोथीपर तीक्ष्ण व्यंग्य करैत ओ कहैत छथि जे पुस्तकालयक हार्डबाउण्ड प्रतिमे सीमित भऽ रहि जाएत। लेखक एकटा सुधारक उदाहरण रूपमे गैर-जातीय लेखक सुभाषचन्द्र यादवक उपन्यास ‘गुलो’ क चर्चा करैत छथि, जकरा कमलानन्द झा, लेखकक मतमे, बिना पढ़ने दू पाँतिमे निपटा देने छथि। ओ दू पाँतिक उद्धरण आगाँ देल गेल अछि। समीक्षक पाठककेँ ‘गुलो’ पहिने पढ़बाक आग्रह करैत छथि; सुभाषचन्द्र यादवक अनुमतिसँ कृति विदेह अभिलेखागारमे एहि लिंकपर उपलब्ध बताओल गेल अछि: http://videha.co.in/pothi.htm।

“उपन्यासक कमजोरी लेखकक राजनीतिक पूर्वग्रह अछि। कोनो विशेष राजनीतिक पक्षक प्रति पक्षधरता कृतिक संग न्याय नहि करैत।”

मूल समीक्षक प्रत्युत्तर दैत छथि जे जाहि उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि विषय नहि, ओतऽ “राजनीतिक पूर्वग्रह” वा “विशेष राजनीति प्रति पक्षधरता” क प्रश्न नहि उठैत। ओ धूमकेतु आ यात्रीक लेखनमे राजनीतिक पक्षधरता देखैत छथि, मुदा सुभाषचन्द्र यादवक ‘वोट’ (2022)—जे लेखकक अनुमतिसँ विदेह अभिलेखागार http://videha.co.in/pothi.htm पर उपलब्ध बताओल गेल अछि—राजनीतिक विषय रहितहुँ शैलीक कारण एकांगी राजनीतिक आग्रहसँ बचैत अछि, एहन मत देल गेल अछि। समीक्षक अपन ‘नित नवल सुभाष चन्द्र यादव’ क उल्लेख सेहो करैत छथि, जे ओही लिंकपर उपलब्ध कहल गेल अछि। आगाँ मूल लेख कमलानन्द झापर राजनीतिक दलक प्रवक्ता-जकाँ लेखन, जातिगत पूर्वग्रह आ ब्राह्मणवादी दृष्टिक आरोप लगबैत अछि; साहित्य अकादेमीसँ भेटल अनुवाद-काजक नियुक्तिक औचित्यपर सेहो प्रश्न उठबैत अछि। एहि आरोपसभकेँ लेखक समान्तर धाराक सामाजिक न्याय सम्बन्धी चिन्तासँ जोड़ैत छथि। कमलानन्द झाकेँ “छद्म-आलोचक” कहबाक आधार रूपमे हुनकर कथन उद्धृत अछि—लगभग सौ वर्षक यात्राक बाद गौरिनाथकेँ अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बनापर गरिमामय उपन्यास लिखबाक श्रेय देल गेल। मूल समीक्षक प्रश्न करैत छथि जे एहि प्रकार श्रेय देबामे सुशीलक ‘गम्बाली’ (1982) क अवहेलना किएक, जकर आरम्भमे विधवा-विवाह आ अन्तरजातीय विवाहक समर्थन स्पष्ट लिखल अछि आ जे विदेह अभिलेखागारमे उपलब्ध बताओल गेल अछि। एहि प्रसंगसँ लेख सुशीलक साहित्यिक संसारक पुनर्पाठ करैत अछि। आगाँ दिनेश कुमार मिश्रक ‘दुइ पाटन के बीच में’ केँ कोसी नदीक ऐतिहासिक जीवनी कहि, हुनकर अन्य नदी-सम्बन्धी ग्रन्थ—‘बन्दिनी महानन्दा’, ‘बागमती की सद्गति!’, ‘ना घाट ना घर’, ‘कमला नदी’, ‘भुतही नदी...’, ‘The Kamla River and People on Collision Course’, ‘Bhutahi Balan—Story of a Ghost River and Engineering Witchcraft’, ‘Refugees of the Kosi Embankments’—क उल्लेख अछि। मूल लेख पंकज झा पराशरपर दिनेश कुमार मिश्रक ग्रन्थसँ अनुच्छेद-दर-अनुच्छेद साहित्यिक चोरीक गम्भीर आरोप लगबैत अछि आ कमलानन्द झापर ओहि काजकेँ “शोध” कहि समर्थन देबाक आरोप करैत अछि। लेखक एहि तुलना लेल हिन्दी मूल आ मैथिली अंशक स्क्रीनशॉट प्रस्तुत केने छथि। दिनेश कुमार मिश्रक शैक्षिक पृष्ठभूमि—Civil Engineering, IIT Kharagpur (1968), M.Tech

Structural Engineering (1970)—क उल्लेख कऽ हुनकर नदी-अध्ययनक विशेषज्ञताकेँ रेखांकित कएल गेल अछि। मूल लेख एहि विवादकेँ समान्तर धाराक सामाजिक न्याय आ आलोचनात्मक जवाबदेहीक प्रश्नसँ जोड़ैत अछि।

दिनेश कुमार मिश्रक सभ पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ विदेह अभिलेखागारमे उपलब्ध बताओल गेल अछि:

http://videha.co.in/pothi.htm

एतय Bill Gatesसँ जुड़ल एक प्रसंग स्मरण कएल गेल अछि। भारतमे piracyक डर सँ X-Boxक आरम्भ टारल जा रहल अछि की नहि—एहन प्रश्नपर हुनकर कथन उद्धृत अछि जे Microsoft piracyक भय सँ उत्पादक शुभारम्भ नहि टारैत। मूल लेखक एहि रूपकक सहारे कहैत छथि जे जोखिम रहितहुँ विदेह अभिलेखागार (http://www.videha.co.in/archive.htm) समृद्ध कएल जाइत रहत; पोखरिमे एक-दू गन्हायल माछ रहला मात्रसँ सभ माछ गन्हायल नहि होइत अछि, आ समान्तर धाराक “मछुआ” एहन गन्हायल माछ हटबैत रहलाह आ हटबैत रहताह।

मैथिलीमे समूहगत छद्म-साहित्यिक आलोचनापर अन्तिम प्रहार

दिनेश कुमार मिश्रक मूल ‘Dui Patan Ke Beech Me...’ (2006) मे उल्लेख अछि जे 1923 सँ 1946क बीच कोसी क्षेत्रमे मलेरियासँ 5, 10, 000, कालाजारसँ 2, 10, 000, हैजासँ 60, 000 आ चेचकसँ 3, 000 लोकक मृत्यु भेल—कुल 7, 83, 000। मूल लेख एकर बाद पंकज झा पराशरक ‘जलप्रान्तर’ (2017, पृ. 103) क अंश राखि प्रत्यक्ष तुलना करैत अछि आ साहित्यिक चोरीक आरोप प्रस्तुत करैत अछि।

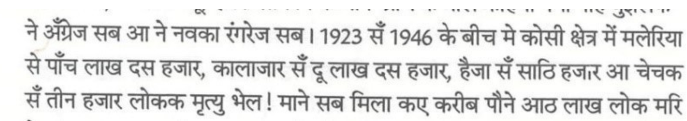
ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

दिनेश कुमार मिश्रक ‘Dui Patan Ke Beech Me...’ (2006) क मूल अंशमे कहल गेल अछि जे बिहारमे कोसी नदीपर बारहम शताब्दीमे राजा लक्ष्मण द्वितीय एकटा बाँध बनौलनि, जाहि लेल लोक हुनका “वीर” उपाधि देलक आ तटबन्ध “वीर बाँध” कहल गेल। एकर अवशेष सुपौल जिलामे भीमनगरसँ लगभग पाँच किलोमीटर दक्षिण एखनहुँ देखल जा सकैत अछि, एहन विवरण अछि। Dr Francis Buchanan (1810–11) अनुमान केलनि जे ई सम्भवतः दुर्गक बाहरी सुरक्षा-दीवार छल, कारण ई तिलयुगा सँ धौस नदीक पश्चिमी तटपर संगम धरि लगभग 32 किलोमीटर फैलल छल। Dr W. W. Hunter (1877) एहि मतसँ सहमत नहि छलाह; स्थानीय लोकक कथन उद्धृत कऽ ओ ई दुर्ग-दीवार नहि होएबाक बात मानलनि, मुदा वास्तविक प्रयोजन स्पष्ट नहि कऽ सकलाह। सामान्य धारणा ई रहल जे कोसीक पश्चिम दिशाक बहाव रोकबाक लेल तटबन्ध बनाओल गेल होएत, आ निर्माण अचानक बन्द भऽ गेल छल। मूल लेख एहि अंशक बाद कमलानन्द झाक पोथी ‘Maithili Novel, Time, Society and Questions’ (पृ. 257–258) मे पंकज झा पराशरक कथित चोरीक अंशक उद्धरण दैत तुलना करैत अछि।

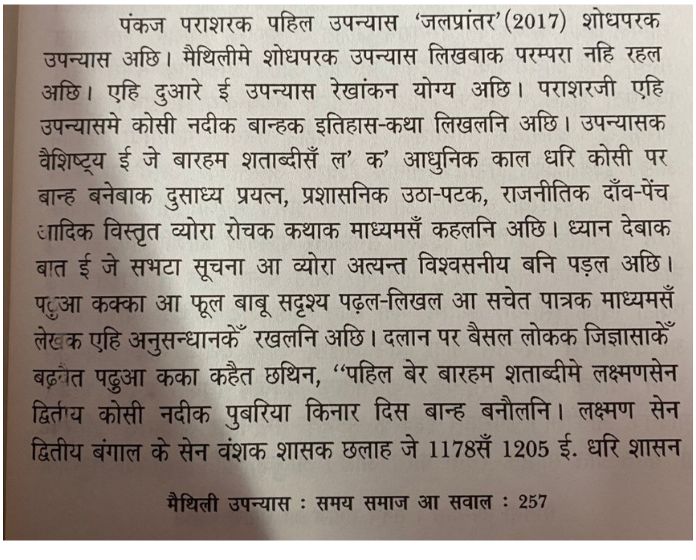
पंकज पराशरक पहिल उपन्यास ‘जलप्रांतर’(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल’ क’ आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, “पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

मूल लेख पंकज झा पराशरक 'जलप्रान्तर' (2017, पृ. 31) क अंशकेँ दिनेश कुमार मिश्रक मूल लेखनसँ तुलना करबाक लेल प्रस्तुत करैत अछि।

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम-तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

दिनेश कुमार मिश्रक 'Dui Patan Ke Beech Me...' (2006) मे कोसीक भयावहता देखेबाक लेल फिरोज शाह तुगलकक सेना बंगालसँ दिल्ली लौटैत समयक प्रसंग देल गेल अछि। कथानुसार सुलतानक सेना कोसीक तटपर पहुँचल तँ दोसर तटपर हाजी शम्सुद्दीन इलियासक सेना युद्ध लेल तैयार छल; ई ओही शम्सुद्दीन छलाह जिनका हाजीपुर आ समस्तीपुर नगरक संस्थापक कहल गेल अछि। फिरोजक सेना कुर्सेलाक आसपास कोसी तटपर अटक गेल, नदीक वेग आगाँ बढ़बय नहि दैत छल। अन्ततः नदीक संग उत्तर दिस जा पार होएबाक योग्य ठाम खोजबाक निर्णय भेल। सेना लगभग सौ कोस ऊपर गेल आ जियारनक आसपास, जतऽ नदी पहाड़सँ मैदानमे उतरैत अछि, पार करबाक प्रयत्न कएलक। नदी पातर छल, मुदा धारा एतेक प्रबल जे पाँच सय मनक भारी पाथर तिनका जकाँ बहैत देखाओल गेल। पार करबाक ठाम दुनू कात हाथीक पाँति ठाढ़ कएल गेल आ नीचाँ रस्सी लटकाओल गेल, जाहिसँ बहि जाएवला सैनिककेँ बचाओल जा सकय। शम्सुद्दीनकेँ विश्वास नहि छल जे सुलतानक सेना कोसी पार कऽ सकत; सेना पार भऽ गेलाक समाचार सुनि ओ हटि गेलाह।

मूल लेख पंकज झा पराशरक 'जलप्रान्तर' (2017, पृ. 105) क अंशकेँ ऊपरक दिनेश कुमार मिश्रक मूल विवरणसँ तुलना करबाक लेल प्रस्तुत करैत अछि।

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जैँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहैँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

(आओर स्क्रीनशॉट शीघ्र एहि लिंकपर अद्यतन कएल जाएत: http://www.videha.co.in/investigation.htm)

4

नारायण यादवक पाँचटा लघुकथापर हमर टिप्पणी

श्री नारायण यादवक पाँचटा लघुकथा

श्री नारायण यादव निम्नलिखित पाँचटा लघुकथाकेँ अपन सर्वश्रेष्ठ माननै छथि:

नवकी पुतोहू

साम्प्रदायिक सद्भाव

कन्याक जिनगी

हृदय परिवर्तन

गामक एकता

'नवकी पुतोहू' क शक्ति ग्रामीण जीवनक चित्रणमे अछि—घरक प्रत्येक सदस्य जीविकोपार्जनमे कोना योगदान दैत अछि। मुदा आनन्दक पत्नी नवकी पुतोहू बनि घरमे आबिते सामंजस्य बिगड़ैत अछि। सुलेखा सम्पन्न परिवारसँ आयल अछि आ सास राधाक कष्ट नहि बुझैत अछि। बादमे राधाक छोट बेटा सुरेशक विवाह होइत अछि आ पढ़ल-लिखल पत्नी रोशनी घरमे अबैत अछि; ओकर आगमनसँ स्थिति धीरे-धीरे व्यवस्थित होइत अछि।

'साम्प्रदायिक सद्भाव' रहमान आ प्रकाशक मित्रताक कथा अछि, जे दू समुदायक बीच सद्भावक वातावरण बनबैत आगाँ बढ़ैत अछि। संवेदनशील विषयकेँ सरल आ संतुलित ढंगसँ कहबाक कारण एकरा बाल-साहित्यक रूपमे सेहो पढ़ल जा सकैत अछि।

'कन्याक जिनगी' कुसुम आ मुख्य पात्रक कथा अछि। बहुत समय बाद मुख्य पात्र गाम लौटैत अछि आ एक विधवासँ भेटैत अछि; ओ विधवा अपनाकेँ कुसुम कहैत अछि।

'हृदय परिवर्तन' एक माय आ बेटाक कथा अछि। पतिक मृत्युक बाद माय बेटाक संग पटना जाइत छथि। पिताक प्रति पुरान छात्रसभक गहिर सम्मान देखि बेटा अपन व्यवहारपर पछतबैत अछि।

'गामक एकता' बाढ़िसँ त्रस्त गामक जीवनक कथा अछि; बीचमे मालाक प्रसवक घटना जुड़ैत अछि। पूरा गाम मिलि रिंग बाँध मजबूत करैत अछि आ बादमे मालाकेँ अस्पताल पहुँचबैत अछि।

कथासभमे कतिपय ठाम एके जातिक भीतर विवाहक विरोधकेँ प्रतिगामी कहबाक सन्दर्भ भेटैत अछि—‘नवकी पुतोहू’ मे दुनू एके जातिसँ रहितहुँ अन्तरजातीय विवाहक प्रति घृणा व्यक्त करैत छथि। तथापि नारायण यादवक वास्तविक शक्ति अपन चारूकातक जीवनक सूक्ष्म चित्रणमे अछि। साम्प्रदायिक सद्भाव, सामुदायिक जीवन, गाम आ परिवारक एकता—ई सभ विषयक कोमल प्रस्तुति अन्य सीमाकेँ ढाँकि दैत अछि।

५

संजू दास जीक चित्रकलापर बहस चलि रहल अछि। किछु गोटे एकरा अश्लील मानि रहल छथि तँ किछु गोटे एकरा कलाक स्वतंत्र हेबाक परिचायक मानै छथि। विदेह दूनू पक्षसँ टाइप कएल आलेखक अपील कऽ रहल अछि, आलेख तथ्यपरक हेबाक चाही। व्यक्तिगत लगाव वा दुश्मनी बला आलेख नै हुअय। अपन आलेख editorial. staff. videha@gmail. com पर सेहो पठाउ।

संस्था, पुरस्कार आ साहित्यिक सार्वजनिकता

४८. साहित्य अकादेमी आ मैथिली साहित्यिक संस्था: एकटा विमर्श

सारांश

साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन पूर्ण रूपसँ गुप्त प्रक्रियाक तहत साहित्य अकादेमी मैथिलीक दूटा एसोसियेशन (साहित्य अकादेमीक शब्दावलीमे तथाकथित मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन) केँ अपन लिस्टसँ हटा देलक आ तीन टा गएर लिटरेरी एसोशियेशन आर जोड़ि देलक। सुखायल जाइत मैथिली साहित्यक मूल धाराक 'राम नाम सत'क प्रारम्भक रूपमे एकरा देखल जा रहल अछि। ऐ मे सँ क्रम १ आ ६ केर एसोसियेशनक मान्यता रद्द कऽ देल गेल आ नीचाँक क्रमांक ५, ६ आ ७ केँ जोड़ि देल गेल।

बीजशब्द: अकादेमी · साहित्यिक · संस्था · विमर्श · लिटरेरी · धाराक · एसोसियेशन

१

साहित्य अकादेमी, दिल्लीक मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन

पूर्ण रूपसँ गुप्त प्रक्रियाक तहत साहित्य अकादेमी मैथिलीक दूटा एसोसियेशन (साहित्य अकादेमीक शब्दावलीमे तथाकथित मैथिली लिटरेरी एसोसियेशन) केँ अपन लिस्टसँ हटा देलक आ तीन टा गएर लिटरेरी एसोशियेशन आर जोड़ि देलक। सुखायल जाइत मैथिली साहित्यक मूल धाराक 'राम नाम सत'क प्रारम्भक रूपमे एकरा देखल जा रहल अछि।

पुरनका लिस्ट:-

1. The Secretary, All India Maithili Sahitya Samiti, Tirbhukti, 1/1B, Sir P. C. Banerjee Road, Allahabad-211 002;

2. The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, C/o Dr. Ganapati Mishra, Lalbag, Darbhanga-846 004;

3. The Secretary, Chetna Samity, Vidyapati Bhawan, Vidyapati Marg, Patna-800 001;

4. The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6 B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007;

5. The Secretary, Vidyapati Seva Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004;

6. The Secretary, Centre for the Study of Indian Traditions, Tantrabati Geeta Bhavan; Ranti House, Ranti, Madhubani-847 211

ऐ मे सँ क्रम १ आ ६ केर एसोसियेशनक मान्यता रद्द कऽ देल गेल आ नीचाँक क्रमांक ५, ६ आ ७ केँ जोड़ि देल गेल। आमद ३-२=१. नोकसान- "सुखायल जाइत मैथिली साहित्यक मूल धाराक 'राम नाम सत'क प्रारम्भ"।

(1) The General Secretary, Akhil Bharatiya Maithili Sahitya Parishad, Professors' Colony, Digahi West Opp. of Primary School, Darbhanga-846 004, (Bihar)

2) The Secretary, Chetna Samiti, Vidhya Pati Bhavan, Vidyapati Marg, Patna-800 001 (Bihar)

3) The Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, 6B, Kailash Saha Lane, Kolkata-700 007, (West Bengal)

4) The Secretary, Vidhya Pati Sewa Sansthan, Mithila Bhavan Parishar, Darbhanga-846 004, (Bihar)

5) The Secretary, Anand, Samajik Sanskritik Sahityik Manch, Rajkumarganj (Mirzapur Chowk), Darbhanga-846 004, (Bihar)

6) The General Secretary, Mithila Sanskritik Parishad, Roseberi 5032, Sahara Garden City, Adityapur-2 Jamshedpur-831 014, (Jharkhand)

7) The General Secretary, Akhil Bharatiya Mithila Sangh, G-6, Hans Bhavan, Wing 2 I. T. O., Bahadurshah Zafar Marg, New Delhi-110 002, (Delhi)

आब कने ऐ संस्था सभकेँ ध्यानसँ देखू, पहिलसँ अन्तिम मैथिली परामर्शदात्री समितिक अध्यक्षसँ जुड़ल ई संस्था सभ किछुओ हुअय लिटरेरी असोसियेशन तँ नहिये टा अछि। बांग्लामे अखनो धरि दुइयेटा लिटेरेरी असोसियेशन छै मुदा एकटा पदपर कब्जा लेल सभ साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्शदात्री समितिक पूर्व अध्यक्ष एक एक टा अपन संस्था घोसियबैत गेला।

ई सभटा कुकर्म हमर अंग्रेजी पोथी A Parallel History of Maithili Literature मे अभिलेखित कएल जा रहल अछि।

२

वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका

दिल्लीमे मैलोरंगक एकटा सेमीनारमे स्व. मोहन भारद्वाज मूल धाराक व्याकरणाचार्यकेँ सम्बोधित कऽ कहने रहथि- 'मैथिलीमे एकटा व्याकरण किए नै अछि? की हम सभ ऐ जोकरक नै छी जे हमरा सभकेँ मैथिलीमे अप्पन एकटा व्याकरण भेटए?'

मुदा मूल धारा हिन्दी आ संस्कृतक व्याकरणमे चिप्पी लगा कऽ आ ई संशोधित कऽ जे- हिन्दीमे 'हम' 'बहुवचन' होइए मुदा मैथिलीमे 'एकवचन'- अपन कर्तव्यक इतिश्री मानैत अछि। मुदा समानान्तर धाराक गोविन्दाचार्यजी ऐ तरहक फेंटुआ व्याकरणक विरुद्ध सुच्चा व्याकरणक निर्माण केलन्हि, से पाणिनि जकाँ हिनकर घुमक्कर प्रवृत्तिक कारण सम्भव भेल अछि।

जेना संस्कृतमे दक्षिण भारतक 'नीर' आ उत्तर भारतक 'जल' दुनू पानि लेल प्रयुक्त होइए आ सम्भाषण संस्कृतमे जँ अहाँ दक्षिण भारतीयकेँ 'अहम् नीरं पीबामि' सिखेबै आ उत्तर भारतीयकेँ 'अहम् जलं पीबामि' तँ नीक मास्टर कहेबै आकि नै..?

गोविन्दाचार्य- पं. बाल गोविन्द 'आर्य' प्रसिद्ध गोविन्द यादवक वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका (मैथिली व्याकरण) सेहो मास्टर साहेब सभ लेल गुणकारी हेतन्हि।

३

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक उपन्यास पंगुकेँ साहित्य अकादेमी मूल पुरस्कार २०२१ सँ सम्मानित कएल गेल। विदेह ई-पत्रिकामे ९ खण्डमे ई उपन्यास २०१८ मे ई-प्रकाशित भेल आ फेर ई संकलित भेल विदेह-सदेह २१ मे। आब ई पोथी विदेह पेटारमे सेहो उपलब्ध अछि।

४९. मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

सारांश

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन The Bride: हरिमोहन झा (1908–1984) क मैथिली कालजयी कृति ‘कन्यादान’ क ललित कुमारक अंग्रेजी अनुवाद (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi), Harper Perennial, Harper Collins Publishers। The Bride: The Maithili Classic Kanyadan — हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) क ‘कन्यादान’ क ललित कुमार (सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) द्वारा अंग्रेजी अनुवाद; Harper Perennial (Harper Collins Publishers) ।

बीजशब्द: मैथिलीमे · समानान्तर · विदेह · आन्दोलन · करैत · लेखकक · लिखैत

सारांश

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन The Bride: हरिमोहन झा (1908–1984) क मैथिली कालजयी कृति ‘कन्यादान’ क ललित कुमारक अंग्रेजी अनुवाद (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi), Harper Perennial, Harper Collins Publishers। The Bride: The Maithili Classic Kanyadan — हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) क ‘कन्यादान’ क ललित कुमार (सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) द्वारा अंग्रेजी अनुवाद; Harper Perennial (Harper Collins Publishers) । Kindle खातामे 1 दिसम्बर 2022 कैं पहुँचबाक कार्यक्रम छल, मुदा तिथि टरि गेल आ अन्ततः 14 दिसम्बर 2022 कैं पोथी हमर खातामे पहुँचल।

नूतन अंक सम्पादकीय

१

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

The Bride: हरिमोहन झा (1908–1984) क मैथिली कालजयी कृति ‘कन्यादान’ क ललित कुमारक अंग्रेजी अनुवाद (Assistant Professor, Department of English, Deen Dayal Upadhyaya College, University of Delhi), Harper Perennial, Harper Collins Publishers।

The Bride: The Maithili Classic Kanyadan — हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) क ‘कन्यादान’ क ललित कुमार (सहायक प्राध्यापक, अंग्रेजी विभाग, दीनदयाल उपाध्याय कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय) द्वारा अंग्रेजी अनुवाद; Harper Perennial (Harper Collins Publishers) ।

हम पोथी पहिने सँ मँगौने रही। Kindle खातामे 1 दिसम्बर 2022 कैं पहुँचबाक कार्यक्रम छल, मुदा तिथि टरि गेल आ अन्ततः 14 दिसम्बर 2022 कैं पोथी हमर खातामे पहुँचल।

हम पोथी पहिनहिये मँगौने रही। १ दिसम्बर २०२२ कैं हमर Kindle खातामे पहुँचबाक तिथि निर्धारित छल, मुदा वितरण टलि गेल आ अन्ततः १४ दिसम्बर २०२२ कैं पोथी हमर खातामे पहुँचल।

1965मे साहित्य अकादेमी (भारतक राष्ट्रीय साहित्य अकादेमी) मैथिलीकैं मान्यता देलक, तकर बाद स्वर्गीय रामनाथ झा लिखलनि जे आब हुनकर मैथिली भाषा बचि गेल (रामनाथ झा, ‘मैथिलीक वर्तमान समस्या’) ।

१९६५मे साहित्य अकादेमी (भारतक राष्ट्रीय साहित्य अकादेमी) द्वारा मैथिलीकैं मान्यता भेटलापर स्वर्गीय रमानाथ झा कहलनि जे आब मैथिली भाषा बचि गेल (रमानाथ झा, ‘मैथिलीक वर्तमान समस्या’) ।

एहि प्रकारक त्रुटि श्री हरीश त्रिवेदी सेहो केने छथि। अपन प्रस्तावनामे ओ लिखैत छथि जे मैथिली हिन्दीकैं सभसँ निकट भाषा अछि आ 1993मे संविधान द्वारा पृथक भाषाक मान्यता भेटबाक पहिने हिन्दीकैं अभिन्न अंग छल—ई कथन स्रोत-पाठमे एहि रूपमे उद्धृत अछि।

एही प्रकारक भूल श्री हरीश त्रिवेदी सेहो केने छथि। अपन भूमिका मे ओ लिखैत छथि—“हिन्दी, जाहिसँ मैथिली सभसँ निकट अछि (आ १९९३मे संविधान द्वारा अलग भाषाक मान्यता भेटबासँ पहिने जाहिक ई वस्तुतः अंग छल)...।”

हरीश त्रिवेदी भारतक संविधानक आठम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेशक चर्चा करैत छथि। स्रोत-पाठक तर्कानुसार ओतय 1993क बदला 2003 होएबाक चाही। लेखकक मत अछि जे मैथिली 2003, 1993 आ 1965—सभ समय पृथक भाषा छल, आ ज्योतिरीश्वर-विवेकपूर्व विद्यापतिक समयसँ सेहो एकर स्वतंत्र परम्परा रहल। लेखक आगाँ तर्क करैत छथि जे साहित्य अकादेमी आ संविधान द्वारा मैथिलीकेँ भेटल संस्थागत मान्यताक लाभ किछु रूढ़िवादी तत्व—रामनाथ झा, शारदानन्द झा आदि—अपन ढंगसँ उठौलनि आ हरिमोहन झाक साहित्यिक अवदानक प्रति अन्याय भेल। ‘खट्टर ककाक तरंग’, ‘प्रणम्य देवता’, ‘रंगशाला’ आ ‘चर्चरी’ लेखकक दृष्टिमे 1966 सँ आरम्भ मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कारक योग्य कृति छल। स्रोत-पाठ 1966क पुरस्कृत दर्शन-ग्रन्थपर तीक्ष्ण असहमति व्यक्त करैत अछि आ 1967मे मैथिली लेल पुरस्कार नहि देल गेलाक तथ्यक उल्लेख करैत अछि।

हरीश त्रिवेदी भारतक संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक समावेश दिस संकेत करैत छथि। एतय १९९३क बदला २००३ होएबाक चाही। संगहि मैथिली २००३, १९९३ आ १९६५मे अलग भाषा छल आ ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक समयमे सेहो। दोसर दिस साहित्य अकादेमी आ संविधान द्वारा भेटल मान्यता रमानाथ झा, शारदानन्द झा—जिनकर नाम एतय विशेष कारणसँ लेल जा रहल अछि—आ आन रूढ़िवादी तत्वक हाथ मजगूत कएलक, जे हरिमोहन झाकेँ भ्रमित/हतोत्साहित करैत रहल। हरिमोहन झाक ‘खट्टर ककाक तरंग’, ‘प्रणम्य देवता’, ‘रंगशाला’ आ ‘चर्चरी’ सभ १९६६सँ मैथिली लेल शुरू साहित्य अकादेमी पुरस्कारक योग्य कृति छल। मुदा १९६६मे दर्शनक एक ग्रन्थकेँ पुरस्कार देल गेल; लेखकक मतमे ओ दर्शन-ग्रन्थ एहन अछि जे भारतीय दर्शन बुझबाक लेल ओकर अध्ययन कएल व्यक्ति बादमे नव ग्रन्थसँ अवधारणा सीखबाक पहिने बहुत किछु विसरब/छोड़ब पड़त। १९६७मे मैथिली लेल कोनो पुरस्कार देल नहि गेल।

पंजी सम्बन्धमे रामनाथ झाक रूढ़िवादी दृष्टिक उदाहरण लेखक प्रस्तुत करैत छथि; लेखकक मतमे ललित कुमार सेहो ओही परम्पराक प्रभावमे देखाइत छथि, यद्यपि ओ अपन जानकारीक स्रोत अन्य लेखकसभकेँ मानैत छथि। स्रोत-पाठ आरोप करैत अछि जे पंजीमे अन्तरजातीय विवाहक प्रमाण रामनाथ झाकेँ ज्ञात छल, मुदा ‘दूषण पंजी’ सार्वजनिक नहि कएल गेल; लेखक कहैत छथि जे ओ पंजी 2009मे Google Books पर प्रकाशित कएल गेल। स्रोतक अनुसार नव्य-न्याय दार्शनिक गंगेश उपाध्याय ‘चर्मकारिणी’ सँ विवाह केने छलाह आ पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्मल छलाह; एहि प्रसंगमे लेखक अपन ‘पंजी प्रबन्ध’ खण्ड I आ II तथा दिनेश चन्द्र भट्टाचार्यक ‘History of Navya-Nyaya in Mithila’ क उल्लेख करैत छथि।

पञ्जीक प्रसंगमे रमानाथ झाक रूढ़िवाद एकटा उदाहरणसँ स्पष्ट होइत अछि; लेखकक मतमे ललित कुमार सेहो ओही पदचिह्नपर चलैत छथि, यद्यपि अपन अज्ञानक श्रेय आन लेखककेँ दैत छथि। रमानाथ झा जातिवादी, रूढ़िवादी आ भ्रमित छलाह—एहन लेखकक आरोप अछि। हुनका पञ्जीमे अन्तर्जातीय विवाहक जानकारी छल, मुदा दूषण पञ्जीकेँ गोपनीय रखलनि; एहि पञ्जीकेँ २००९मे Google Books पर उपलब्ध कराओल गेल। लेखकक अनुसार नव्य-न्यायक महान दार्शनिक गंगेश उपाध्याय ‘चर्मकारिणी’ सँ विवाह केने छलाह आ पिता केर मृत्युकेँ पाँच वर्ष बाद हुनकर जन्म भेल—देखू Panji Books, खण्ड I–II, http://videha.co.in/pothi.htm। श्री दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य ‘History of Navya-Nyaya in Mithila’ मे लिखैत छथि—

उद्धृत कथनमे गंगेशक परिवारक सामाजिक स्थिति आ वंशक लोप सम्बन्धी दावा अछि; लेखक एहि दावाकेँ पूर्णतः असत्य मानैत छथि आ कहैत छथि जे लेखक ओ सूचना प्रो. आर. झासँ पाबैक बात लिखने छथि। एहि आधारपर मूल लेख रामनाथ झाक जातिवादी, रूढ़िवादी आ भ्रमित दृष्टिकोणक आलोचना करैत अछि, आ साहित्य अकादेमीक मान्यतासँ मैथिली “बचि गेल” अथवा मैथिलीक पृथक अस्तित्व नव मान्यतासँ बनल—दुनू दावापर असहमति प्रकट करैत अछि।

“जे परिवार सामाजिक प्रतिष्ठामे नीच मानल जाइत छल, ओ आब मिथिलामे लुप्त अछि; गंगेशक परिवार पूर्णतः उपेक्षित अछि आ हमरा सभकेँ हुनकर पिताक नाम धरि नहि जनबाक अपेक्षा कएल जाइत अछि।” लेखक एहि कथनकेँ पूर्ण असत्य मानैत छथि। भट्टाचार्य आगाँ लिखैत छथि जे ई जानकारी हुनका प्रो. आर. झासँ भेटल। लेखक प्रश्न उठबैत छथि—एहन जातिवादी, रूढ़िवादी आ भ्रमित दृष्टि हरिमोहन झाकेँ पुरस्कार देबाक पक्षमे कोना होइत? अतः प्रो. आर. झाक ई कथन जे साहित्य अकादेमीक मान्यतासँ मैथिली भाषा बचल, लेखकक अनुसार गलत अछि; श्री हरीश त्रिवेदीक कथन सेहो।

लेखकक मत अछि जे युवा अनुवादक ललित कुमारपर किछु रूढ़िवादी प्रभाव पड़ल अछि, जे हरिमोहन झाक अवदानक प्रति अन्यायपूर्ण दृष्टि बनबैत अछि। स्रोत-पाठ कहैत अछि जे साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता भेटलाक बाद हरिमोहन झा मैथिलीमे लिखब कम कऽ देलनि आ 1985मे मृत्यु-पश्चात हुनकर आत्मकथा लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल; लेखक एहि विलम्बित सम्मानकेँ पर्याप्त नहि मानैत छथि।

ललित कुमार युवा छथि, मुदा लेखकक मतमे किछु रूढ़िवादी तत्व हुनकर उपयोग करैत छथि—ओही तत्व जे हरिमोहन झाकेँ भ्रमित आ हतोत्साहित करैत रहल। साहित्य अकादेमीक मान्यताक बाद हरिमोहन झा मैथिलीमे लिखनाइ छोड़ि देलनि, आ १९८५मे मृत्युक बाद आत्मकथा लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल, जकर लेखक विशेष महत्त्व नहि मानैत छथि।

ललित कुमार लिखैत छथि जे योगानन्द झाक 'भलमानुष' (1944) आ शारदानन्द झाक 'जयबर' (1946) विवाहमे निर्णायक सामाजिक विभाजनसभपर प्रहार करैत अछि। मूल लेखक 'भलमानुष' केँ युगान्तकारी मानैत छथि, मुदा 'जयबर' केँ प्रतिक्रियावादी कृति कहैत छथि। एहि मतक समर्थनमे राधाकृष्ण चौधरीक 'A Survey of Maithili Literature' सँ उद्धरण देल गेल अछि, जतऽ 'भलमानुष' केँ विवाह-सम्बन्धी सामाजिक समस्यापर केन्द्रित आ 'जयबर' केँ ओकर उत्तररूप दोसर श्रेणीक, कम साहित्यिक मूल्यवला उपन्यास कहल गेल अछि।

ललित कुमार लिखैत छथि—"योगानन्द झाक 'भलमानुष' (१९४४) आ शारदानन्द झाक 'जयबार' (१९४६) विवाहमे निर्णायक सामाजिक विभाजनपर प्रहार करैत अछि।" लेखकक मतमे योगानन्द झाक 'भलमानुष' (१९४४) निश्चय मार्गदर्शक उपन्यास छल, मुदा शारदानन्द झाक उपन्यास प्रतिक्रियावादी। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी लिखैत छथि—"योगानन्द झाक 'भलमानुष' मुख्यतः विवाह-संबंधी सामाजिक समस्याक विवेचन करैत अछि। एहि उपन्यासक उत्तरमे शारदानन्द झा 'जयबार' नामक द्वितीय श्रेणीक, अल्प साहित्यिक मूल्यवला उपन्यास लिखलनि।" (राधाकृष्ण चौधरी, A Survey of Maithili Literature)

पंजी सम्बन्धी अपन जानकारी लेल ललित कुमार महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक 'मिथिला तत्त्व-विमर्श' क उल्लेख करैत छथि। मूल लेख राधाकृष्ण चौधरीक 'A Survey of Maithili Literature' क मत उद्धृत करैत अछि: 'मिथिला तत्त्व-विमर्श' मैथिली गद्यमे मिथिलाक इतिहास अछि जे मुख्यतः परम्परापर आधारित अछि; मुकुन्द झा बख्शीक 'मिथिलाभाषामय इतिहास' खण्डवला वंशक विवरण दैत अछि। आधुनिक मैथिली गद्यक दृष्टिसँ दुनू महत्त्वपूर्ण छथि, मुदा ऐतिहासिक विश्वसनीयताक दृष्टिसँ चौधरी हुनका अविश्वसनीय मानैत छथि।

पञ्जीसम्बन्धी अपन अज्ञानक स्रोत ललित कुमार महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक 'मिथिला तत्त्व-विमर्श' केँ मानैत छथि। प्रो. राधाकृष्ण चौधरी लिखैत छथि—"महामहोपाध्याय परमेश्वर झाक 'मिथिला तत्त्व-विमर्श' मैथिली गद्यमें मिथिलाक इतिहास अछि आ मुख्यतः परम्परापर आधारित अछि। महामहोपाध्याय मुकुन्द झा बख्शीक 'मिथिलाभाषामय इतिहास' खण्डवला वंशक विवरण दैत अछि। आधुनिक मैथिली गद्यक दृष्टिसँ ई दुनू कृति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा ऐतिहासिक दृष्टिसँ विश्वसनीय नहि।" (राधाकृष्ण चौधरी, A Survey of Maithili Literature)

तत्काल सन्दर्भ लेल हमर 'पंजी प्रबन्ध' (भाग I आ II) सँ निम्न अंश पुनः प्रस्तुत अछि:

सहज सन्दर्भ लेल हमर 'पञ्जी प्रबन्ध' (भाग I आ II) सँ निम्न अंश पुनः प्रस्तुत कएल जा रहल अछि—

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। 1294 ई. मे जन्म आ 1307 ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ 1324-25 ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त एहि हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय कएलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाए पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल।

प्रामाणिक पंजी अभिलेखक आधारपर स्रोत-पाठ निष्कर्ष दैत अछि जे ‘श्रोत्रिय’ उपजातिक रूप लगभग 1800 ई. क आसपास विकसित भेल।

प्रामाणिक पञ्जी-अभिलेखक आधारपर ‘श्रोत्रिय’ उपजाति लगभग १८०० ई. क आसपास विकसित भेल—लेखकक निष्कर्ष।

श्री अंशुमान पाण्डेय अपन शोधमे लिखैत छथि जे नई दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर हुनका मैथिल ब्राह्मणक वंशावली अभिलेखक अंकीय प्रति उपलब्ध करौलनि। पंजीकार परिवार पीढ़ी-दर-पीढ़ी ई अभिलेख सँजोने छथि आ अनेक बेर एकरा बौद्धिक सम्पदा मानि बाहरी शोधक पहुँच सीमित रखैत छथि। पाण्डेय लिखैत छथि जे 2007मे हुनका गजेन्द्र ठाकुरसँ पंजीक पूर्ण अंकीय संग्रह भेटल। सन्दर्भ: Anshuman Pandey, 'Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar', PhD dissertation, University of Michigan, 2014। स्रोत-पाठक अनुसार बादमे ई पंजी-पाण्डुलिपि 2009मे Google Books पर अपलोड कएल गेल।

श्री अंशुमान पाण्डेय लिखैत छथि: “नई दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर हमरा मैथिल ब्राह्मणक वंशावली-अभिलेखक डिजिटाइज्ड प्रति उपलब्ध करौलनि। पीढ़ी-दर-पीढ़ी ई अभिलेख राखनिहार पञ्जीकार परिवार प्रायः दोसराकेँ अपन अभिलेख देखबामे संकोच करैत छथि; हुनका लेल ई एक प्रकारक ‘बौद्धिक सम्पदा’ अछि। २००७मे गजेन्द्र ठाकुरसँ पञ्जी-अभिलेखक पूर्ण डिजिटाइज्ड संच भेटनाइ हमर सौभाग्य छल।” (Anshuman Pandey, Recasting the Brahmin in Medieval Mithila: Origins of Caste Identity among the Maithil Brahmins of North Bihar, पीएच. डी. शोधप्रबन्ध, University of Michigan, २०१४) । बादमे ई पञ्जी-पाण्डुलिपि २००९मे Google Books पर अपलोड कएल गेल।

मूल लेख कहैत अछि जे दरभंगाक तथाकथित महाराजा Cornwallisक Permanent Settlement अन्तर्गत जमीन्दार छलाह; ब्रिटिश भारतमे एहन अनेक जमीन्दार छल, नेपालमे नहि। ‘पंजी प्रबन्ध’ खण्ड I आ IIक परिशिष्टमे वंशावली-आधारित उन्नयन आदेशक प्रति संलग्न होएबाक उल्लेख अछि, जकरा लेखक नगदक बदला सामाजिक उन्नयनक प्रमाण मानैत छथि। एहि आधारपर लेखक तर्क करैत छथि जे 1800 ई. सँ पहिने ब्रिटिश भारतमे ‘श्रोत्रिय’ पृथक उपजाति नहि छल, आ मिथिलाक नेपाली भागमे आजुओ मैथिल ब्राह्मणक भीतर एहन उपजाति नहि अछि; पूर्वकालमे ‘श्रोत्रिय’ शिक्षाक एकटा धाराक अनुयायी अर्थमे प्रयुक्त होइत छल, नेपालमे लेखकक अनुसार एखनहुँ एहि अर्थमे प्रयोग होइत अछि।

लेखकक मतमे दरभंगाक तथाकथित महाराजा Cornwallisक स्थायी बन्दोबस्तक जमींदार छलाह; ब्रिटिश भारतमे एहन अनेक जमींदार छलाह, मुदा नेपालमे नहि। ‘पञ्जी प्रबन्ध’, खण्ड I–II केर परिशिष्टमे वंशावली-आधारित उन्नयन आदेशक प्रति—पाइ दऽ सामाजिक श्रेणी उन्नयनक प्रमाणक रूपमे—संलग्न अछि। एहि आधारपर लेखक निष्कर्ष दैत छथि जे १८०० ई. सँ पहिने ब्रिटिश भारतमे ‘श्रोत्रिय’ नामक उपजाति नहि छल आ नेपालक मिथिलामे मैथिल ब्राह्मणक भीतर एहन उपजाति आइयो नहि अछि। पहिने ‘श्रोत्रिय’ शिक्षा-धाराक अनुयायी अर्थमे प्रयुक्त होइत छल; नेपालमे एखनहुँ एहि अर्थक प्रयोग अछि।

लेखकक मतमे ललित कुमार “हरिमोहन अपन सुधारवादी कार्यक्रममे मध्य मार्ग चुनलनि” कहि अपन पूर्वधारणा स्थापित करबाक प्रयास करैत छथि। एकर समर्थनमे स्थानीय परम्परा, भाषा, लिपि, शिक्षा-पद्धति आ नैतिक मूल्यक महत्त्वक पक्षधरता देल गेल अछि; मूल लेख एहि आधारकेँ हास्यास्पद मानैत अछि, कारण ई बातसभकेँ स्वतः रूढ़िवादी मूल्य मानि लेब उचित नहि।

ललित कुमार आगाँ लिखैत छथि—“हरिमोहन अपन सुधारवादी कार्यक्रममे मध्यम मार्ग चुनैत छथि।” एकर समर्थनमे ओ लिखैत छथि जे हरिमोहन “स्थानीय परम्परा, भाषा, लिपि, शिक्षा-पद्धति आ नैतिक मूल्यक महत्त्वकेँ मानैत छथि”; लेखक एहि तर्ककेँ हास्यास्पद मानैत छथि, कारण एहिसँ ई अर्थ निकलैत अछि जे ई सभ मूल्य मात्र रूढ़िवादी मूल्य थिक।

(उल्लेखित सभ पोथी निःशुल्क PDF रूपमे एहि लिंकपर उपलब्ध अछि: http://videha.co.in/pothi.htm)

(उल्लिखित सभ पोथीक निःशुल्क PDF http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर उपलब्ध अछि।)

(to be continued)

२

आचार्य रमानन्द मण्डलक ५ टा लघुकथापर हमर टिप्पणी

आचार्य रमानन्द मण्डलक पाँचटा लघुकथा

आचार्य रमानन्द मण्डल निम्नलिखित पाँचटा लघुकथाकेँ अपन सर्वश्रेष्ठ कथा मानने छथि:

आचार्य रमानन्द मण्डल निम्न पाँच लघुकथाकेँ अपन श्रेष्ठ लघुकथा मानने छथि:

1. मुँहफटपन (स्पष्टवक्ता)

2. शराब आ शबाब

3. महायज्ञ

4. हरबाह (हलवाहा) आ

5. Jhapan (The Veil).

आचार्य रमानन्द मण्डल सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक आ सामाजिक चिन्तक छथि। ओ सीतामढ़ी क्षेत्रमे बोलल जाएवला शुद्ध मैथिलीमे लिखैत छथि।

आचार्य रमानन्द मण्डल सेवानिवृत्त प्रधानाध्यापक आ सामाजिक चिन्तक छथि। ओ देवी सीताक जन्मभूमि सीतामढ़ी क्षेत्रमे बाजल जाएबला शुद्ध मैथिलीमे लिखैत छथि।

पहिल कथा एकटा कठोर अधिकारीपर केन्द्रित अछि, जकर स्पष्टवादिताक कारण किछु लोक प्रशंसा करैत अछि आ किछु घृणा। ओही स्पष्टवादिताक परिणामस्वरूप ओकरा गलत ढंगसँ फँसा देल जाइत अछि। सतर्कता विभाग झूठ मामला बनबैत अछि आ गवाहसभसँ कार्यवाहीपर हस्ताक्षर कराओल जाइत अछि। लगभग दस वर्ष बाद मुकदमा सुनवाईमे अबैत अछि तँ गवाह मुकरि जाइत छथि। अधिकारी निर्दोष सिद्ध होइत अछि, मुदा ओकर जीवन बरबाद भऽ चुकल रहैत अछि। कथा केवल प्रवर्तन संस्थाक कार्य-पद्धतिपर नहि, बल्कि सुस्त न्याय-व्यवस्थापर सेहो टिप्पणी अछि।

पहिल कथा एकटा कठोर अधिकारीक कथा अछि, जिनकर स्पष्टवादिताक कारण किछु लोक प्रशंसा करैत छथि आ किछु घृणा। एही स्पष्टवादिताक कारण हुनका गलत ढंगसँ फँसा देल जाइत अछि। सतर्कता विभाग झूठ मामिला बनबैत अछि आ गवाहसभसँ कार्यवाहीपर हस्ताक्षर कराओल जाइत अछि। दस वर्ष बाद मामिला सुनवाई लेल अबैत अछि तँ गवाह अपन पुरान बयानसँ पलटि जाइत छथि। अधिकारी निर्दोष घोषित होइत छथि, मुदा हुनकर जीवन बरबाद भऽ चुकल रहैत अछि। ई कथा केवल कानून लागू करनिहार संस्थाक कार्यपद्धतिपर नहि, हमर सुस्त न्याय-व्यवस्थापर सेहो टिप्पणी अछि।

दोसर लघुकथा एकटा बैंक-कर्मीक नैतिक पतनक चित्रण करैत अछि, जे आरम्भमे नीक व्यक्ति आ कुशल गणितज्ञ दुनू छल।

दोसर लघुकथा एक बैंककर्मीक नैतिक पतनक चित्रण करैत अछि; आरम्भमे ओ नीक व्यक्ति आ कुशल गणितज्ञ दुनू छथि।

तेसर लघुकथा गायत्री महायज्ञक प्रसंगपर आधारित अछि। जातिगत प्रश्न बीचमे अबैत अछि, मुदा कथा चारूकात आ प्रत्येक व्यक्तिक भीतर आशाक किरण खोजैत अछि।

तेसर लघुकथा गायत्री महायज्ञक प्रसंग लैत अछि; जाति-तत्त्व बीचमे अबैत अछि, मुदा आशाक किरण सभ ठाम आ प्रत्येक व्यक्तिक भीतर भेटैत अछि।

चौठम लघुकथा एहि पाँचूमे सर्वश्रेष्ठ मानल गेल अछि। परम्पराक नामपर बँधुआ मजदूरीक व्यवस्था कोना चलैत रहल, कथाकार ओकर परदा खोलैत छथि। कथाक अन्तभागमे नव पीढ़ी एहि व्यवस्थाकेँ चुनौती दैत अछि। शिक्षा enabling factor अर्थात परिवर्तन सम्भव बनाबयवला शक्ति बनैत अछि। मूल टिप्पणीक अनुसार ई परम्परा मैथिली साहित्यमे एहन रूपमे पहिने चर्चित नहि छल।

चारिम कथा पाँचूमेसँ श्रेष्ठ अछि—लेखकक मत। परम्पराक नामपर बन्धुआ मजदूरी व्यवस्था कोना चलैत रहल, कथाकार ओकर परत खोलैत छथि। कथाक अन्त दिस नव पीढ़ी एहि परम्पराकेँ चुनौती दैत अछि। शिक्षा परिवर्तनक साधन बनैत अछि आ तकर महत्त्व स्पष्ट कएल गेल अछि। लेखकक मतमे मैथिली साहित्यमे एहि परम्परापर एहन चर्चा पहिने नहि भेल छल।

पाँचम लघुकथा अनमेल विवाहसँ विधवाक जीवन धरि अनेक प्रश्न उठबैत अछि। समीक्षकक मतमे एहि कथामे आरो परिष्कारक आवश्यकता अछि।

पाँचम लघुकथा अनमेल विवाहसँ विधवाक जीवन धरि अनेक विषय उठबैत अछि। लेखकक मतमे एहि कथा मे सुधारक आवश्यकता अछि।

आचार्य रमानन्द मण्डलक शक्ति हुनकर शब्द-सम्पदा आ समाजक नीक-मन्द दुनू परम्परासँ गहिर परिचयमे अछि। एहि पक्षकेँ आरो प्रमुखता देबाक आवश्यकता अछि। कथाक अचानक अन्त पाठककेँ पूर्ण सन्तोष नहि दैत अछि। अपेक्षा अछि जे ओ अपन एहि शक्तिक उपयोग करैत विषयक प्रत्येक पक्षकेँ समग्र रूपमे उघारथि; एहि लेल पात्रसभकेँ विकसित होएबाक पर्याप्त समय देब आवश्यक अछि।

आचार्य रमानन्द मण्डलक शक्ति हुनकर समृद्ध शब्द-संपदा आ समाजक नीक-अधला परम्परासँ गहींर सम्पर्कमे अछि। लेखकक मतमे हुनका एही पक्षपर आर बल देबाक चाही। कथाक आकस्मिक अन्त पाठककेँ पूर्ण सन्तोष नहि दैत अछि। अपेक्षा अछि जे ओ अपन मजबूत पक्षक उपयोग कऽ प्रत्येक आयामकेँ सम्पूर्णतासँ वर्णित करथि; ई तखने सम्भव अछि जखन पात्रकेँ विकसित होएबाक पर्याप्त समय देल जाए।

५०. मैथिली साहित्यिक संस्था, साहित्य अकादेमी आ धूर्त्तसमागमक पुनर्पाठ

सारांश
मैथिलीक सात टा गएर लिटरेरी एसोसियेशनकेँ मान्यता दऽ कऽ साहित्य अकादेमी जे मूलधाराक मैथिलीक भुसाथरि बैसेबाक काज केलकै से आब सत्य भऽ रहल अछि। प्रेम मोहन मिश्रक परामर्शदातृ समितिमे विदेह द्वारा बैन कएल कथित चोर साहित्यकारक अतिरिक्त आर बहुतो तरहक भूप रहथि जे आब अशोक अविचलक परामर्शदातृ समितिमे छथि। ऐ तरहक लोक ब्लैकमेलक शिकार आरामसँ होइ छथि कारण अपन मेरिटसँ तँ ओ आबै नै छथि।

बीजशब्द: साहित्यिक · संस्था · अकादेमी · धूर्त्तसमागमक · पुनर्पाठ · असज्जाति · द्रोण

नूतन अंक सम्पादकीय

१

मैथिलीक सात टा गएर लिटरेरी एसोसियेशनकेँ मान्यता दऽ कऽ साहित्य अकादेमी जे मूलधाराक मैथिलीक भुसाथरि बैसेबाक काज केलकै से आब सत्य भऽ रहल अछि। प्रेम मोहन मिश्रक परामर्शदातृ समितिमे विदेह द्वारा बैन कएल कथित चोर साहित्यकारक अतिरिक्त आर बहुतो तरहक भूप रहथि जे आब अशोक अविचलक परामर्शदातृ समितिमे छथि। ऐ तरहक लोक ब्लैकमेलक शिकार आरामसँ होइ छथि कारण अपन मेरिटसँ तँ ओ आबै नै छथि। फेर हुनका सेमीनार, अनुवाद, मोनोग्राफ आदि असाइनमेण्ट बाँटल जाइत अछि, जे अमरजीक अनुसार कियो पढ़ै नै छै, ओ सभ साहित्य अकादेमीक गोदाममे सड़ि जाइ छै। अइसँ दूटा पाइ होइ छै आ बायोडेटा भरिगर बनि जाइ छै, जे विद्यानन्द झा केर अनुसार, रचना तँ जे से, ओहेन भरिगर बायोडेटासँ सिद्धांत कएल जा सकैए। अशोक अविचल जी आ ई सातो गएर लिटेरेरी असोसियेशन एकटा नाम आगाँ अनलक अछि- डॉ. अजय कुमार झा। जेहने अशोक अविचल आ मूलधाराक आन साहित्यकार छथि, एन-मेन तकरे मिरर इमेज। मुदा मूलाधारा बला सभ कन्नारोहट उठेने अछि जे हिनका कियो चिन्हते नै छन्हि, ओ अशोक अविचलक भागिन छियथि तेँ। मुदा अनुवाद असाइनमेण्ट ओहो सभ जोगारेसँ लेने छथि, समानान्तर धाराक लेखक सभक हककेँ मारि कऽ, तँ सएह असाइनमेण्ट डॉ. अजय कुमार झा सेहो लेने छथि। अशोक अविचल छथि रहुआक आ डॉ. अजय कुमार झा उमरीक, तँ माम-भागिन होथि वा ममियौत-पिसयौत समानान्तर धारा लेल धनि सन। हम पहिनहिये कहने छी जे एहेन लोक मुदा ब्लैकमेलक शिकार भऽ जाइ छथि से डॉ. अजय कुमार झा केर ब्लैकमेलिंग शुरू भऽ गेल छन्हि, ओ सोशल मीडियामे मूलधाराक के-के लोक सभ हुनका गरियेलकनि, तकर लिस्ट बना कऽ ओकरासँ भेंट करब शुरू कऽ देने छथि आ जँ अगुलका खिस्सा पढ़ी तँ से एक तरहेँ ठीको छै, ओ सभ दूटा पाइ, पुरस्कार आ बायोडेटा लेल अपस्याँत रहता आ अहाँकेँ बकसि देता।

एकटा राजकुमारी रहय, परी द्वीपक राजकुमारी, बड्ड काबिल, तीव्र बुइधवाली। एकटा दैत्य ओतुक्का परी सभकेँ बड्ड तंग करै। परी सभ राजकुमारी लग गेलि, रक्षा करू। राजकुमारी कहलनि- आब जे दैत्य आबय तँ हमरा खबरि करब। दैत्य आयल तँ राजकुमारी हुनकर सोझाँ आबि गेलि। दैत्य आन परीकेँ छोड़ि राजकुमारीक पाछाँ धऽ लेलक। राजकुमारी ओकरा द्वीपक दक्षिण भाग लऽ गेलि। चारू तरफ सोना, से देखि दैत्य राजकुमारीकेँ बिसरि सोना खोदऽ लागल। राजकुमारी घुरि एली। परी सभकेँ कहलनि- आब निश्चिन्त रहू, आब ओ दैत्य मरैत काल धरि सोना खोधैत रहत, अहाँ सभकेँ तंग नै करत।

साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिपर एकटा नाटको लिखल गेल अछि, नाम छै धूर्त समागम। ई तेरहम शताब्दीमे लिखने रहथि ज्योतिरीश्वर, ८-९ सय साल बाद होइबला घटनाक आभास रहन्हि हुनका आ तेँ ने ओ छथि एत्तेक पैघ नाटककार! तँ पढ़ू ओइ नाटकक सारांश आ चिन्हू ओकर पात्र सभकेँ आ जँ चीन्हि ली तँ खबरि करू ई-पत्र सङ्केत editorial. staff. videha@gmail. com पर (स्थान आ पात्रक नाममे ज्योतिरीश्वर लेखकीय स्वतंत्रता लेने छथि) ।

धूर्त्तसमागम: ई नाटक तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल जे संस्कृत आ मैथिलीमे उपलब्ध अछि। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक संस्कृत धूर्त्तसमागममे सेहो मैथिली गीतक समावेश अछि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि। मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्ण अथवा हुनकर वंशधरक चरितपर अवलंबित आ हरण आकि स्वयंवर कथापर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागमक सभ पात्र एकसँ एक धूर्त छथि। तइ हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रहसनकेँ संगीतक सेहो कहल जाइए तइ हेतु ऐमे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि। ऐमे सूत्रधार, नटी, स्नातक, विश्वनगर, मृतांगार, सुरतप्रिया, अनंगसेना, असज्जाति मिश्र, बंधुवंचक, मूलनाशक आ नागरिक मुख्य पात्र छथि। सूत्रधार कर्णाट चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि। फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। ऐमे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि जे नितांत आधुनिक अछि आ ऐमे जे लोच छै से एकरा लोकनाट्य बनबै छै। विश्वनगर स्त्रीक अभावमे ब्रह्मचारी छथि। शिष्य स्नातक संग

भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइत छथि तँ अशौचक बहाना भेटै छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु सुरतप्रियाक घर जाइ छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकेँ लऽ गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइ छन्हि। गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्र लग जाइ छथि, मिश्रजी लंपट छथि जे जुआ खेलाएब आ संगम ईएह दूटाकेँ संसारक सार बुझै छथि। असज्जाति मिश्र पु छै छथि जे के वादी आ के प्रतिवादी? स्नातक उत्तर दै छथि- अभियोग कहबाक लेल हम वादी थिकौं आ शुल्क देबाक हेतु संन्यासी प्रतिवादी थिकाह। विश्वनगर अपन शुल्कमे स्नातकक गाजाक पोटरी प्रस्तुत करै छथि। विदूषक असज्जाति मिश्रक कानमे अनंगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत अछि। असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ बीचमे राखि दुनूक बदला अपना पक्षमे निर्णय लैत अछि। एम्हर विदूषक अनंगसेनाक कानमे कहैत अछि- ई संन्यासी दरिद्र अछि, स्नातक आवारा अछि आ ई मिश्र मूर्ख तेँ हमरा संग रहू। अनंगसेना चारूक दिशि देखि बजैछ- ई तँ असले धूर्तसमागम भऽ गेल। विश्वनगर स्नातकक संग पुनः सुरतप्रियाक घर दिशि जाइ छथि। एमहर मूलनाशक नौआ अनंगसेनासँ साल भरिक कमैनी मंगैए। ओ हुनका असज्जाति मिश्रक लग पठबैत अछि। मूलनाशक असज्जाति मिश्रकेँ अनंगसेनाक वर बुझैत अछि। गाजा शुल्कमे लऽ असज्जाति मिश्रकेँ गतानि कऽ बान्हि तेना मालिश करैत अछि जे ओ बेहोश भऽ जाइ छथि। ओ हुनका मुइल बुझि कऽ भागि जाइत अछि। विदूषक अबैत अछि आ हुनकर बंधन खोलैत अछि आ पुछैत अछि जे हम अहाँक प्राणरक्षा कएल अछि आ जे किछु आन प्रिय कार्य हुअए तँ से कहू। असज्जाति कहैए जे छलसँ संपूर्ण देशकेँ खएलौं, धूर्त्तवृत्तिसँ ई प्रिया पाओल, सेहो अहाँ सन आज्ञाकारी शिष्य पओलक, ऐसँ प्रिय आब किछु नै अछि, तथापि सर्वत्र सुखशांति हुअए तकर कामना करैत छी।

ओना ज्योतिरीश्वर सन हमहूँ अपन महिसबार ब्राह्मणक गाम कथामे ऐ निर्लज्जताक चर्चा केने छी- "कारण पुछबन्हि तँ ओ सभ कारण कहती जे ई सभ निर्लज्ज होइए आ से ऐ कारणसँ जे जन्मेपर एकरा सभक पाछू...मे थूक दऽ देल जाइ छै, जइसँ कथूक लाज कोनो गत्रमे नै हेतै।"

२

तीनटा द्रोण जइमे पहिल बेर एकटा महिला द्रोण

साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग द्वारा तीनटा द्रोणाचार्यक नियुक्ति भेल एकलव्यक औंठा कटबाक लेल। तीनटा द्रोणमे विश्व इतिहासमे पहिल बेर एकटा महिला द्रोण सेहो नियुक्त भेली ऐ घृणित कार्य सम्पन्न करबाक लेल। ई तीनू गोटे तिहार जेलक जल्लाद सन अपन कार्य पूर्ण निष्ठासँ सम्पन्न केलनि। जल्लादक कोनो दोष नै, ओकरा तँ फाँसी देबा लेल पाइ दै छै सरकार। दोष अछि द्रोण सभक आ ओइ साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक जकरा नियुक्त करैत अछि सात टा कथित लिटेरेरी एसोशियेसन। अविलम्ब ऐ सातो लिटेरेरी एसोशियेसनक मान्यता रद्द कएल जाय आ अंग्रेजी सन, जइमे कोनो लिटेरेरी एसोशियेसन नै छै मुदा ओकर काज नीक जकाँ चलै छै, ई काज करय।

आ अहाँकेँ इच्छा नै अछि जे ई द्रोण सभ के छथि आ एकलव्य के छथि?

द्रोण- डॉ. देवकान्त झा, डॉ. मन्त्रेश्वर झा आ डॉ. शेफालिका वर्मा।

एकलव्य- राजदेव मण्डल।

द्रोण सभ कहता जे राजदेव मण्डलक पोथी तँ हुनका सभ लग एबे नै केलनि तँ ओ सभ दोखी केना? ई तीनू द्रोण डिसेण्ट नोट दऽ सकै छला, मना कऽ सकै छला। आ ई तीनू प्रतीक छथि सम्पूर्ण साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक तेँ। आर विस्तृत उत्तर देल जायत विदेहक आबैबला साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक मे।

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial. staff. videha@gmail. com पर आमंत्रित अछि।

१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
(घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति
(ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टरः मिथक वा यथार्थ

२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति

३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक

४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण

५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-

(क) पाठ्यक्रम

(ख) अध्ययन-अध्यापन

(ग) नियुक्ति

६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा

७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव, कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति

८. दलित आ लेखिका सबहक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका

९. कोनो आन विषय।

५१. साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग आ साहित्यिक विमर्श

सारांश
साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग तीन टा जूरी रहथि डॉ सविता झा सोनी, डॉ मित्रनाथ झा आ श्रीमती नीरजा रेणु। पहिने अहाँकेँ बता दी जे साहित्य अकादेमी मात्र ब्राह्मणवादी सभकेँ अनुवाद असाइनमेण्ट दै छै, समानान्तर धाराक लेखकक हककेँ मारिकँ। रत्नेश्वर मिश्र जीकेँ प्राइज देबाक निर्णय दू टा जूरी केलन्हि, तेसर गोटे रुसि गेला/ गेली।

बीजशब्द: अकादेमी · अनुवाद · पुरस्कार · २०२२ · प्रसंग · साहित्यिक · विमर्श

नूतन अंक सम्पादकीय

१

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार (मैथिली) २०२२ प्रसंग

तीन टा जूरी रहथि डॉ सविता झा सोनी, डॉ मित्रनाथ झा आ श्रीमती नीरजा रेणु। पहिने अहाँकेँ बता दी जे साहित्य अकादेमी मात्र ब्राह्मणवादी सभकेँ अनुवाद असाइनमेण्ट दै छै, समानान्तर धाराक लेखकक हककेँ मारिकँ। रत्नेश्वर मिश्र जीकेँ प्राइज देबाक निर्णय दू टा जूरी केलन्हि, तेसर गोटे रुसि गेला/ गेली। ऐ नाटकक की जरूरी छलै? रत्नेश्वर मिश्रक अनुवाद वा साहित्यसँ कोनो सरोकार नै छन्हि, अपना जमानामे इतिहासक नीक ट्यूशन चलै छलन्हि, नोट बिकाइ छलन्हि। दोसर अनुवाद आब ई नै करता, जइ उद्देश्यसँ केलन्हि तकर पूर्ति भऽ गेलन्हि। साहित्य अकादेमी मैथिली परामर्शदातृ समितिमे सभटा चोरे-बनोर छै, आब साहित्य अकादेमीकेँ चोर-बनोर भेनाइ परामर्शदातृ समितिक सदस्यता लेल न्यूनतम क्वालिफिकेशन घोषित कऽ देबाक चाही, कारण नहियो केने छै तँ सएह सभ छै। हँ तेँ एकरा सभसँ तँ कोनो आशा अछिये नै, मुदा बाबू पुरस्कार लेनिहारक निर्लज्जता जबरदस्त छन्हि, आ तइ पुरस्कारकेँ स्वीकार करबा काल जे हुनकर भाषण हेतन्हि से फ्रेममे लगबैबला हेतै।

२

१११म 'सगर राति दीप जरय' रहुआ संग्राममे सम्पन्न भेल

साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक अध्यक्ष डॉ. अशोक अविचल व्यक्तिगत आधारपर १११म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन, वर्षक ३१ दिसम्बर २०२२ शनि दिन, रहुआ संग्रामक 'आदिनाथ मधुसूदन पारस मणि संस्कृत महाविद्यालय'क सभागारमे सफलतापूर्वक सम्पन्न करबेलनि। ३३ टा नूतन कथाक पाठ भेल। पठित कथा सभपर मैथिली कथाकार लोकनि टिप्पणी केलनि। एतऽ विभिन्न विधाक १७ पोथीक लोकार्पण सेहो भेल। ई आयोजन तीन-तीन मासपर, वर्ष भरिमे चारि खेप आयोजित होइए। प्रथम 'मार्च'मे, द्वितीय 'जून'मे, तृतीय 'सितम्बर'मे आ चतुर्थ 'दिसम्बर'मे।

एतऽ किछु मूलधाराक साहित्यकार नाम नै लेबाक शर्तपर सूचित केलन्हि, जे अशोक अविचल आ सात टा गएर लिटेरेरी असोसियेशन साहित्य अकादेमीक मेम्बरशिपमे एकटा नाम आगाँ अनलक अछि- डॉ. अजय कुमार झा जे अशोक अविचलक भागिन छथिन्ह (किछु गोटेक अनुसार ममियौत पिसयौत); तेँ मूलधाराक कथाकार लोकनि १११म सगर जाति दीप जरयक बहिष्कार केलनि। ई पुछलापर जे तखन विभूति आनन्द, हीरेन्द्र कुमार झा, दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता केना १११म सगर राति दीप जरयमे पहुँचला, तँ ओ सभ सूचित केलनि जे तइ लेल ऐ चारू गोटेक करार अशोक अविचलसँ भेलन्हि जे ओ एकरा ११२ म सगर राति दीप जरय लिखता, मुदा ओ कोनो आमंत्रणमे से नै केलन्हि आ बैनरपर ऊपरमे छोट सन 'क्रम ११२' लिखलन्हि। तइपर संचालक हीरेन्द्र कुमार झा क उसकेलापर अध्यक्ष विभूति आनन्द समेत दमन कुमार झा आ अशोक कुमार मेहता २-३ घण्टा बाद खा पी कऽ ओतऽ सँ प्रस्थान कऽ गेला, मुदा समानान्तर धाराक सभ कथाकार भोर धरि गोष्ठीमे रहि एकरा सफल बनबेलन्हि। एतऽ ई स्पष्ट कऽ दी जे ई कृत्य हीरेन्द्र कुमार झा पहिनहियो केने छथि जे विदेहमे अभिलेखित अछि [८९म सगर राति दीप जरय, औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, संयोजक- उमेश पासवान; हीरेन्द्र झा द्वारा क्रमांक ९० नै केलापर गोष्ठीक बहिष्कार आ हुनका उसकेलापर अशोक कुमार मेहता सेहो बहिष्कार केलनि] । एतऽ ईहो स्पष्ट कऽ दी जे हीरेन्द्र कुमार झा लूज टॉक करैमे माहिर छथि आ अपना सङे आयल लोकक विषयमे, कनियो जँ ओ सभ एम्हर-ओम्हर गेला, तँ ढाकीक ढाकी विषवमन करै छथि। संगहि ईहो स्पष्ट कऽ दी जे समानान्तर धाराक लेखक लोकनिक सगर राति दीप जरयमे आगमनसँ पूर्व, जखन हीरेन्द्र कुमार झा सभक बोलबाला छलन्हि, गोष्ठीमे सभ खा पी कऽ सूति जाइ छला आ मात्र कथा पढ़निहार असगरे जागल रहै छला, जकर विरोधमे आशीष अनचिन्हार कथा पढ़बासँ मना कऽ देने रहथिन्ह, मुदा मूलधारा भोरमे जे न्यूज देलक तइमे ई गप नै आयल। ई सभटा खेरहा हमर पोथी प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना भाग-२ मे अभिलेखित कएल गेल

अछि जे उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। साहित्य अकादेमी द्वारा गत दस बर्खसँ समानान्तर धाराक एकमात्र स्थल सगर राति दीप जरय कैँ गीड़ि लेबाक प्रयास कएल जा रहल अछि। आगामी ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री रामचन्द्र रायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत, से सर्वसम्मतिसँ निर्धारित भेल। हीरेन्द्र कुमार झा अपन ब्लैकमेलिंग आगाँ सेहो पूर्ण निष्ठासँ जारी राखलनि जखन ०२.०१.२०२३ कैँ रामचन्द्र रायकैँ फोन कऽ आगामी गोष्ठीक क्रमांक ११२ नै ११३ करबाक दुष्टतापूर्ण ब्राह्मणवादी आग्रह केलन्हि आ डरेलन्हि, जइ सँ कोनो तरहेँ साहित्य अकादेमीक गोष्ठीकैँ सगर राति दीप जरयक मान्यता भेटि जाय, फेर ०५.०१.२०२३कैँ घट्टी मानलन्हि। साहित्य अकादेमी हुनकर दस बर्खसँ जारी ऐ कुत्सित प्रयासक मेहनताना दैत हेतन्हि आ जँ नै देने छन्हि तँ आगाँ देतन्हि। विदेहक आगामी साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक मे सभ गपक खुलासा हएत।

ऐ सम्बन्धमे ई स्पष्ट कऽ दी जे अशोक अविचल ऐ गोष्ठीक आयोजन पूर्ण रूपसँ व्यक्तिगत रूपेँ केने रहथि। दिल्लीक साहित्य अकादेमीक गोष्ठी जे टैगोरक १५० जयन्ती बर्खमे आयोजित भेल आ जकरा साहित्य अकादेमी अपन वार्षिक रिपोर्ट आ आय-व्यय खातामे अपन गोष्ठीक रूपमे वर्णित केलक आ तकर पाइक वितरण देखेलक आ ऑडिटरसँ अप्रूव करेलक, जे सही मदमे टैगोरक कार्यक्रम लेल खर्च भलै (सगर राति दीप जरय लेल नै) कैँ सगर राति दीप जरयक रूपमे मान्यता देबा लेल मूल धाराक पुरस्कार/ असाइनमेण्ट लोलुप आ ब्राह्मणवादी लोक गत दस बर्खसँ अपस्याँत छथि, से एक बेर फेर असफल भेल।

रहुआ संग्राम गोष्ठीमे निम्न कथाक पाठ भेल, १. डॉ विभूति आनन्द: आस्था, विश्वास आ परम्परा; २. रवि भूषण कुमार: भोजक वहिष्कार; ३. मानब अनीष मण्डल: सत्यक भ्रूण हत्या; ४. रितिक मण्डल: गेलौं तँ हम गेलौं; ५. पं. शिव कुमार मिश्र: वसुधा काहू को न होय; ६. उमेश मण्डल: अप्पन जिम्मा; ७. आचार्य रमानन्द मण्डल: बाल वैरागी; ८. राधाकान्त मण्डल: भुमहुर आगि आ अल्हुआ; ९. झोली पासवान: कारी नाग; १०. नारायण यादव: कनियाक जीवन; ११. कपिलेश्वर राउत: चेफरी; १२. जगदीश प्रसाद मण्डल: कुमहरक बतिया; १३. अमित मिश्र: अधलाहक परिणाम अधलाहे; १४. बैद्यनाथी राम: हमहीं धनीक छी; १५. हरिश्चन्द्र झा: निरीक्षण; १६. प्रीतम कुमार निषाद: बुढ़ारी भ्रूणक हत्या; १७. श्रवण कुमार मण्डल: प्रेम विवाह; १८. रामसेवक ठाकुर: सात पूत रामकैँ; १९. रामकृष्ण परार्थी: आड़ि; २०. दुर्गेश मण्डल: द्वन्द; २१. लालदेव कामत: मधुमाछी; २२. शारदानन्द सिंह: जावत सोंखा के नाव होयतो तावत; २३. अरविन्द प्रसाद: नेंगरू आ मंगरू; २४. अशोक अविचल: मनुआ नाचय मोर; २५. नारायण झा: राजनीतिमे राजनीति; २६. उमेश नारायण कर्ण: माय; २७. दुर्गानन्द मण्डल: सपना; २८. राम विलास साहु: नीक करब तँ बेजाए किए हएत?; २९. नन्द विलास राय: रंगल नढ़िया; ३०. रामचन्द राय: तोहीं जितलैँ हमहीं हारलौं; ३१. रामेश्वर प्रसाद मण्डल: हमरो बहिन अछि; ३२. विनय मोहन जगदीश: छट्ठू; आ ३३. रमेश कुमार शर्मा: संघर्ष।

गोष्ठीमे निम्न पोथी सभक लोकार्पण भेल- १. साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह): जगदीश प्रसाद मण्डल; २. नब बनक नब फल (कथा संग्रह): जगदीश प्रसाद मण्डल; ३. सुचिता (उपन्यास): जगदीश प्रसाद मण्डल; ४. प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह): रामकृष्ण परार्थी; ५. असल पूजा (कथा संग्रह): नन्द विलास राय; ६. संयोग (कथा संग्रह): रबीन्द्र नारायण मिश्र; ७. लजकोटर (उपन्यास): रबीन्द्र नारायण मिश्र; ८. इएह थिक जीवन (संस्मरण): रबीन्द्र नारायण मिश्र; ९. राष्ट्र मंदिर (उपन्यास): रबीन्द्र नारायण मिश्र; १०. मातृभूमि (उपन्यास): रबीन्द्र नारायण मिश्र; ११. सीमाक ओहि पार (उपन्यास): रबीन्द्र नारायण मिश्र; १२. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव: गजेन्द्र ठाकुर; १३. मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना): गजेन्द्र ठाकुर; १४. Rajdeo Mandal Maithili Writer: Gajendra Thakur; १५. सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध): डॉ. अशोक अविचल; १६. जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी (विचारोत्तेजक गद्यांश संकलन): डॉ. उमेश मण्डल; १७. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह (अनुसन्धान विश्लेषण): डॉ. उमेश मण्डल।

सुभाष चन्द्र यादव समानान्तर धाराक १११म सगर राति दीप जरयक सफलता लेल संदेश पठेलन्हि आ नै आबि सकबा लेल दुख व्यक्त केलन्हि। लोकार्पित पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' लेल अपूर्व उत्साह देखल गेल, आ उपस्थित लोक मांगि-मागि कऽ ओ पोथी लेलनि आ फोनपर दूर दिल्ली आ आन-आन ठामसँ ऐ पोथीक ऑर्डर लोकार्पण दिने सँ आबय लागल।

सगर राति दीप जरय पहिल सँ १११ धरिक कथा यात्रा

१. मुजफ्फरपुर, २१.०१.१९९०, प्रभास कुमार चौधरी; २. डेओढ़, २९.०४.१९९०, जीवकान्त; ३. दरभंगा, ०७.०७.१९९०, डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, विजयकान्त ठाकुर; ४. पटना, ३.११.१९९०, गोविन्द झा, दमनकान्त झा; ५. बेगुसराय, १३.०१.१९९१, प्रदीप बिहारी; ६. कटिहार, २२.०४.१९९१, अशोक; ७. नवानी, २१.०७.१९९१, मोहन भारद्वाज; ८. सकरी, २२.१०.१९९१, प्रो. सुरेश्वर झा, डॉ. राम बाबू; ९. नेहरा, ११.१०.१९९२, ए. सी. दीपक; १०. विराटनगर, १४.०४.१९९२, जीतेन्द्र जीत; ११. वाराणसी, १८.०७.१९९२, प्रभास कुमार चौधरी;

१२. पटना, १९.१०.१९९२, राजमोहन झा; १३. सुपौल- १, १८.१०.१९९३, केदार कानन; १४. बोकारो, २४.०४.१९९३, बुद्धिनाथ झा; १५. पैटघाट, १०.०७.१९९३, डॉ. रमानन्द झा 'रमण'; १६. जनकपुर, ०९.१०.१९९४, रमेश रंजन; १७. इसहपुर, ०६.०२.१९९४, डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'; १८. सरहद, २३.०४.१९९४, अमिय कुमार झा; १९. झंझारपुर, ०९.०७.१९९४, श्यामानन्द चौधरी; २०. घोघरडीहा, २२.१०.१९९४, डॉ. नारायणजी; २१. बहेरा, २१.०१.१९९५, कमलेश झा; २२. सुपौल (दरभंगा), ०८.०४.१९९५, कमलेश झा; २३. काठमांडू, २३.०९.१९९५, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; २४. राजविराज, २४.०१.१९९६, रामनारायण देव; २५. कोलकाता (रजत जयंती, २८.१२.१९९६), प्रभास कुमार चौधरी; २६. महिषी, १३.०४.१९९७, डॉ. तारानन्द वियोगी/ रमेश प्रायोजित; २७. तरौनी, २०.०६.१९९७, शोभाकान्त; २८. पटना, १८.०७.१९९७, प्रभास कुमार चौधरी; २९. बेगूसराय, १३.०९.१९९७, प्रदीप बिहारी; ३०. खजौली, ०४.०४.१९९८, प्रदीप बिहारी; ३१. सहरसा, १८.०७.१९९८, रमेश; ३२ पटना, १०.१०.१९९८, श्याम दरिहरे; ३३. बलाइन; नागदह, ०८.०१.१९९९, पदम सम्भव; ३४. भवानीपुर, १०.०४.१९९९, डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र; ३५. मधुबनी, २४.०७.१९९९, सियाराम झा 'सरस', डॉ. कुलधारी सिंह; ३६. अन्दौली, २०.१०.१९९९, कमलेश झा; ३७. जनकपुर, २५.०३.२०००, रमेश रंजन; ३८. काठमांडू, २५.०६.२०००, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; ३९. धनबाद, २१.१०.२०००, श्याम दरिहरे आ रामचन्द्र लालदास; ४०. बिटठो, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कू, प्रो. विद्यानन्द झा; ४१. हटनी (घोघरडीहा), १९.०५.२००१, प्रो. योगानन्द झा/अजित कु. आजाद; ४२. बोकारो, २५.०८.२००१, गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', मिथिला सा. परिषद; ४३. पटना, किरणजयंती, ०१.१२.२००१, अशोक, चेतना समिति, पटना; ४४. राँची, १३.०४.२००२, कुमार मनीष अरविन्द; ४५. भागलपुर, २४.०८.२००२, धीरेन्द्र मोहन झा; ४६. पटना, (विद्यापति भवन पटना), १६.११.२००२, अजित कुमार आजाद; ४७. कोलकाता, २२.०१.२००३, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; ४८. खुटौना, ०७.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण राम; ४९. बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश झा; ५०. दरभंगा, २१.०२.२००४, डॉ. अशोक कुमार मेहता; ५१. जमशेदपुर, १०.०७.२००४, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ५२. राँची, ०२.१०.२००४, विवेकानन्द ठाकुर; ५३. देवघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे आ अविनाश; ५४. बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप बिहारी; ५५. पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६. पटना, ०३.११.२००५, अजीत कुमार आजाद; ५७. जनकपुर (नेपाल), १२.०८.२००६, रमेश रंजन; ५८. जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण यादव; ५९. बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप बिहारी; ६०. सहरसा, २१.०७.२००७, किसलय कृष्ण; ६१. सुपौल-२, ०१.१२.२००७, अरविन्द ठाकुर; ६२. जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ६३. राँची, १९.०७.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४. रहुआ संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५. पटना, कथा गंगा-३, २१.०२.२००९, अजित कुमार आजाद/ चेतना समिति; ६६. मधुबनी, ३०.०५.२००९, दिलीप कुमार झा; ६७. समस्तीपुर, ०५.०९.२००९, रमाकान्त रय 'रमा'; ६८. सुपौल- ३, ०५.१२.२००९, अरविन्द ठाकुर; ६९. जनकपुर, ०३.०४.२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; ७०. कबिलपुर (दरभंगा), १२.०६.२०१०, डॉ. योगानन्द झा; ७१. बेरमा (झंझारपुर), ०२.१०.२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ७२. सुपौल, ०४.१२.२०१०, अरविन्द ठाकुर; ७३. महिषी, कथा राजकमल, ०५.०३.२०११, विजय महापात्र; ७४. हजारीबाग, १०.०९.२०११, श्याम दरिहरे; ७५. पटना, हीरक जयन्ती, १०.१२.२०११, अशोक आ कमलमोहन 'चुन्नु'; ७६. चेन्नै, १४.०७.२०१२, विभा रानी; ७७. दरभंगा, किरण जयन्ती, ०१.१२.२०१२, अरविन्द ठाकुर; ७८. घनश्यामपुर, ०९.०३.२०१३, कमलेश झा; ७९. औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, उमेश पासवान; ८०. निर्मली (सुपौल), ३०.११.२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८१. देवघर, (बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर), २२.०३.२०१४, ओम प्रकाश झा; ८२. मेंहथ, (झंझारपुर), कथा बौध सिद्ध मेहथपा, ३१.०५.२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; ८३. सखुआ-भपटियाही, ३०.०८.२०१४, नन्द विलास राय/फागुलाल साहु/सूरज नारायण राय 'सुमन'; ८४. बेरमा (मधुबनी), २०.१२.२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८५. भागलपुर, (श्याम कुंज, द्वारिकापुरी भागलपुर), ०४.०४.२०१५, ओम प्रकाश झा; ८६. लकसेना (मधुबनी), २०.०६.२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन'; ८७. निर्मली (सुपौल), १९.०९.२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८८. मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर), ३०.०१.२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा; ८९. लौकही, २६.०३.२०१६, उमेश पासवान आ प्रेम कुमार साहु; ९०. लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १८.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१. गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२. नवानी (मधुबनी), ३१.१२.२०१६, अजय कुमार दास 'पिन्टु'; ९३. रतनसारा (घोघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी; ९४. लौफा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी; ९५. जलसैन डुमरा (मधुबनी), ०९.९.२०१७, नारायण यादव; ९६. धबौली (लोकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल; ९७. बेरमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बेरमा ग्रामवासी; ९८. सिमरा (झंझारपुर), १६.६.२०१८, डॉ. शिव कुमार प्रसाद; ९९. मुरहद्दी, (बड़की टोल), २२.९.२०१८, प्रो. प्रीतम निषाद, १००. निर्मली (तेरापंथ भवन), २२.१२.२०१८, उमेश मण्डल, नवरत्न वेंगानी, मनीष जालान; १०१. झिटकी (मधुबनी), ३०.३.२०१९, भारत भूषण झा; १०२. मझौरा, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, आलोक कुमार; १०३. रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि'; १०४. वलम नगर-महदेवा (लौकही), १४.१२.२०१९, प्रेम कुमार साहु, उमेश पासवान; १०५. दरभंगा (सीतायन सभागार), १३.०२.२०२१, कमलेश झा; १०६. हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २५.०९.२०२१, लालदेव

कामत; १०७. बेलहा (फुलपरास), २५.१२.२०२१, जीवकान्तक स्मृतिमे, उमेश मण्डल, ई. शैलेन्द्र मण्डल; १०८. मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ. श्रीशंकर झा; १०९. ननौर (मधुबनी), २५.०६.२०२२, प्रदीप पुष्प; ११०. सोनवर्षा (लौकही), २४.०९.२०२२, अच्छेलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११. रहुआ संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२। ११२म 'सगर राति दीप जरय'क आयोजन श्री रामचन्द्र रायक संयोजकत्वमे हुनक पैतृक गाम- सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे 'मार्च' २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत।

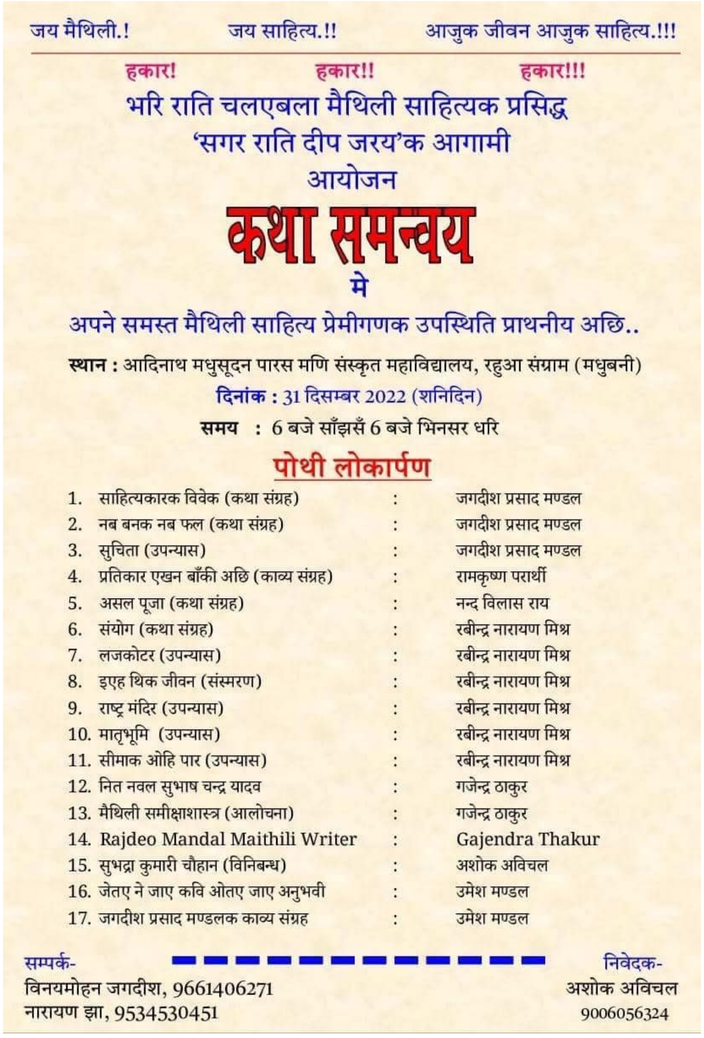

जय मैथिली.! जय साहित्य.!! आजुक जीवन आजुक साहित्य.!!!

हकार! हकार!! हकार!!!

भरि राति चलएबला मैथिली साहित्यक प्रसिद्ध
'सगर राति दीप जरय'क आगामी
आयोजन

कथा समन्वय

मे

अपने समस्त मैथिली साहित्य प्रेमीगणक उपस्थिति प्राथनीय अछि..

स्थान : आदिनाथ मधुसूदन पारस मणि संस्कृत महाविद्यालय, रहुआ संग्राम (मधुबनी)

दिनांक : 31 दिसम्बर 2022 (शनिदिन)

समय : 6 बजे साँझसँ 6 बजे भिनसर धरि

पोथी लोकार्पण

1. साहित्यकारक विवेक (कथा संग्रह)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
2. नब बनक नब फल (कथा संग्रह)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
3. सुचिता (उपन्यास)	:	जगदीश प्रसाद मण्डल
4. हमर मीठ बैना (मुक्तक संग्रह)	:	नूतन झा
5. असल पूजा (कथा संग्रह)	:	नन्द विलास राय
6. प्रतिकार एखन बाँकी अछि (काव्य संग्रह)	:	रामकृष्ण परार्थी
7. संयोग (कथा संग्रह)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
8. इएह थिक जीवन (संस्मरण)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
9. राष्ट्र मंदिर (उपन्यास)	:	रबीन्द्र नारायण मिश्र
10. नित नवल सुभाष चन्द्र यादव	:	गजेन्द्र ठाकुर
11. मैथिली समीक्षाशास्त्र (आलोचना)	:	गजेन्द्र ठाकुर
12. Rajdeo Mandal Maithili Writer	:	Gajendra Thakur
13. सुभद्रा कुमारी चौहान (विनिबन्ध)	:	अशोक अविचल
14. जेतए ने जाए कवि ओतए जाए अनुभवी	:	उमेश मण्डल
15. जगदीश प्रसाद मण्डलक काव्य संग्रह	:	उमेश मण्डल

सम्पर्क-
विनयमोहन जगदीश, 9661406271
नारायण झा, 9534530451

निवेदक-
अशोक अविचल
9006056324

३

कमलानन्द झा प्रसङ

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक सोङर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'भोट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक भगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह वा पक्षधरताक सोङरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य

अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छन्हि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज कुमार झा पराशर द्वारा एकर पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथि! ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ. आइ. टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे १९६८ बी. टेक आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे १९७०मे एम. टेक छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा कैँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई काज कोनो सिविल इन्जीनियरक अछि। हिन्दी आ मैथिली दुनुक स्क्रीनशॉट संलग्न अछि। दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककैँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री आनि लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य!

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

http://videha.co.in/pothi.htm

एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकैँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सभ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

कमलानन्द झा केर मस्तिष्क आ दृष्टि फरिच्छ करबा लेल दू टा पोथी हम रिकोमेण्ड कऽ रहल छी, ओ पढ़थु: पहिल अछि सुशीलक गामबाली (उपन्यास) (१९८२) आ दोसर अछि हमर दूषण पञ्जी- The Black Book, दुनू उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। सुशीलपर जखन हमर समीक्षा शुरू हएत तँ कमलानन्द झा लेल राखल एकटा शिक्षा ओतऽ हम देब।

ऐ छद्म समीक्षक कमलानन्द झा पर हमर नजरि रहत।

(अगिला अंकमे जारी..)

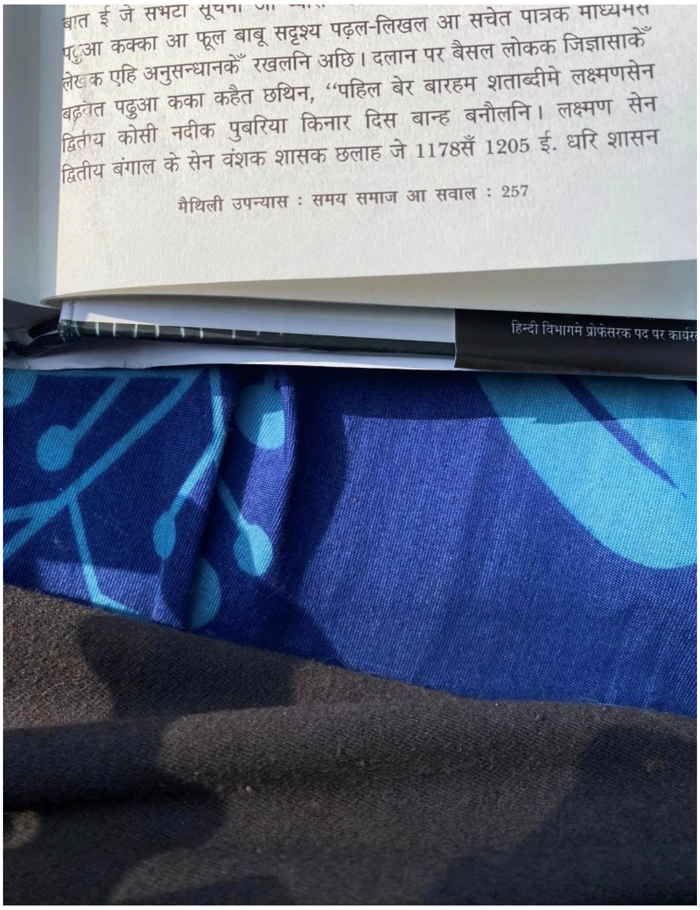

पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, "पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

हिन्दी विभागमे प्रोफेसरक पद पर कार्यर

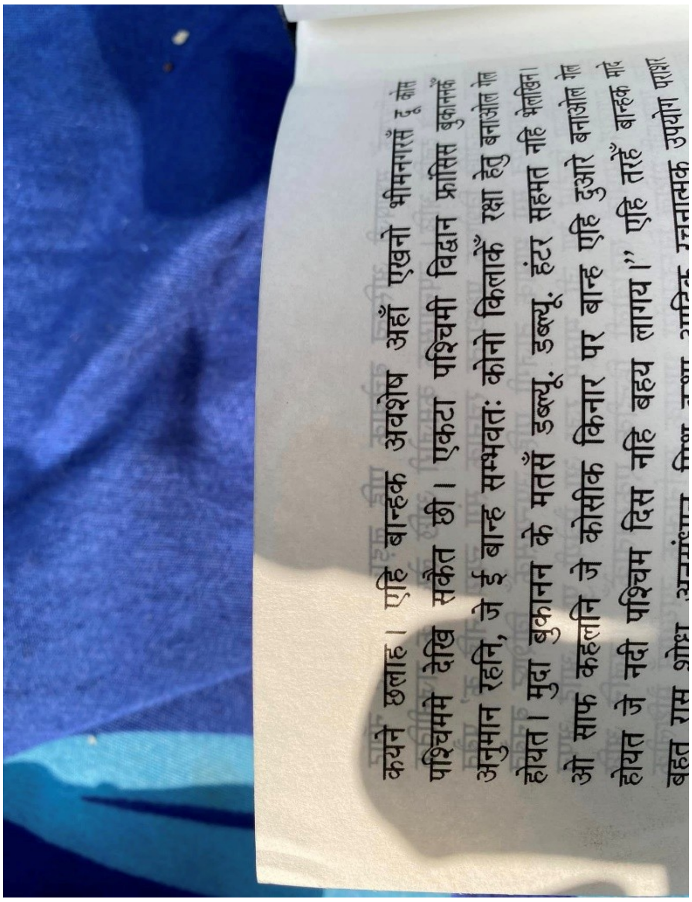

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक माध्यमे

भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू.डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

४

ओना ज्योतिरीश्वर जेना धूर्तसमागममे केने छथि तेहने सन हमहूँ अपन महिसबार ब्राह्मणक गाम कथामे ऐ निर्लज्जताक चर्चा केने छी- "कारण पुछबन्हि तँ ओ सभ कारण कहती जे ई सभ निर्लज्ज होइए आ से ऐ कारणसँ जे जन्मेपर एकरा सभक पाछू...मे थूक दऽ देल जाइ छै, जइसँ कथूक लाज कोनो गत्रमे नै हेतै।"

५

विदेह "साहित्यिक भ्रष्टाचार विशेषांक" लेल निम्नलिखित विषयपर आलेख ई-मेल editorial.staff.videha@gmail.com पर आमंत्रित अछि।
१. साहित्य, कला आ सरकारी अकादमीः-
(क) पुरस्कारक राजनीति
(ख) सरकारी अकादेमीमे पैसबाक गएर-लोकतांत्रिक विधान
(ग) सत्तागुट आ अकादमी केर काज करबाक तरीका
(घ) सरकारी सत्ताक छद्म विरोधमे उपजल तात्कालिक समानांतर सत्ताक कार्यपद्धति
(ङ) अकादेमी पुरस्कारमे पाइ फैक्टर: मिथक वा यथार्थ
२. व्यक्तिगत साहित्य संस्थान आ पुरस्कारक राजनीति
३. प्रकाशन जगतमे पसरल भ्रष्टाचार आ लेखक
४. मैथिलीक छद्म लेखक संगठन आ ओकर पदाधिकारी सबहक आचरण
५. स्कूल-कॉलेजक मैथिली विभागमे पसरल साहित्यिक भ्रष्टाचारक विविध रूप-
(क) पाठ्यक्रम
(ख) अध्ययन-अध्यापन
(ग) नियुक्ति
६. साहित्यिक पत्रकारिता, रिव्यू, मंच-माला-माइक आ लोकार्पणक खेल-तमाशा
७. लेखक सबहक जन्म-मरण शताब्दी केर चुनाव, कैलेंडरवाद आ तकरा पाछूक राजनीति
८. दलित आ लेखिका सबहक संगे भेद-भाव आ ओकर शोषणक विविध तरीका
९. कोनो आन विषय।

-गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक विदेह, whatsapp no +919560960721 HTTP://VIDEHA.CO.IN/ ISSN 2229-547X VIDEHA

६

आब अहाँ पुछब जे तकर प्रतिकार समानान्तर धारा केना केलक, ओ तँ कन्नारोहट नै करैए, तँ तकर उत्तर अछि हमर ३ टा पोथी जे १११म सगर राति दीप जरय मे लोकार्पित भेल ३१ दिसम्बर २०२२ कैँ, वएह सगर राति दीप जरय जकरा साहित्य अकादेमी गत दस बर्खसँ गीड़ि लेबाक प्रयास कऽ रहल अछि। अहाँसँ ऐ तीनू पोथीपर टिप्पणी ई-पत्र सङ्केत editorial. staff. videha@gmail. com पर आमंत्रित अछि। पहिल दू पोथी मे राजदेव मण्डल आ सुभाष चन्द्र यादवक साहित्यक समीक्षा अछि जे हमर तेसर पोथी मैथिली समीक्षशास्त्रक सिद्धांतक आधारपर कएल गेल अछि।

तीनू पोथीक लिंक नीचाँ देल गेल अछि।

राजदेव मण्डल—मैथिली लेखक (आब परिशिष्ट I आ II सहित)

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव (मिथिलाक्षर)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

मैथिली समीक्षाशास्त्र (तिरहुता)

संगमे पढ़ू कमलानन्द झा क ब्राह्मणवादपर प्रहार:

दूषण पञ्जी- The Black Book

दूषण पञ्जी- The Black Book (मिथिलाक्षर)

७

मैथिलीमे समान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

मैथिलीमे समानान्तर साहित्य आ विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलन

श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक पाँचटा लघुकथा

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल अपन निम्नलिखित पाँचटा लघुकथाकेँ सर्वश्रेष्ठ मानने छथि:

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल निम्न पाँच कथाकेँ अपन श्रेष्ठ कथा मानने छथि:

प्रिय काज (भारी मन काज)

चलि गेल आशा (आयल आशा चलि गेल)

जीवनदान

On My Behalf (Appan Sati)

‘संचरण’ मे जीबछ काकाक जीवन-संबंधी दार्शनिक चिन्तन अपन समस्त वैभवसहित चित्रित अछि; बीच-बीचमे सांसारिक यथार्थ सेहो प्रवेश करैत अछि। बाढ़ि आ बाँध, कोसी नदी परियोजनासँ जलविद्युतक जे आशा उपजल आ ओकर पूरा नहि भेलासँ जे निराशा उत्पन्न भेल, किसानक सिंचाइ-सुविधा, रासायनिक खादक आगमन, छोट-छोट नदीक स्वाभाविक बहावमे परियोजनासँ पड़ल बाधा, गामक पुरान आम-बगीचाक स्मृति आ वर्षा-आधारित खेती—ई सभ विस्तारसँ आयल अछि। पचास वर्षक बाद जीबछ काका वैराग्यभावसँ पारिवारिक जीवनसँ अलग भऽ दुनू पुत्रकेँ दायित्व सौंपि दैत छथि।

‘संचरण’: जीबछ कक्काक जीवनक दार्शनिक चिन्तन अपन सम्पूर्ण विस्तारमे चित्रित अछि; बीच-बीचमे भौतिक जीवन स्वाभाविक रूपेँ अबैत अछि। बाढ़ि आ बाँध, कोसी नदी परियोजनासँ जलविद्युतक आशा आ बादमे ओ पूरा नहि भेलाक निराशा; किसान लेल सिंचाइ सुविधा, रासायनिक खादक आगमन, परियोजनासँ छोट नदीसभक प्रवाहमे अवरोध, गामक पुरान आमक बगीचाक स्मृति आ वर्षा-आधारित खेती—सभक विस्तारसँ वर्णन अछि। पचास वर्षक बाद जीबछ कक्का वैराग्यपूर्वक गृहस्थ जीवनसँ अलग भऽ दुनू बेटाक हाथमे दायित्व सौंपि दैत छथि।

‘भरि मन काज’: ई ज्ञानचनक कथा अछि। जीवनक भारसँ ओ दबि जाइत छथि, मुदा सुमितलाल हुनका एकटा कथा सुनबैत छथि आ हुनकर मन हलुक होइत अछि।

‘आयल आशा चलि गेल’: रुद्रपुर गामक लोक रामेश्वरम तीर्थयात्राक तैयारी करैत छथि। हीरालाल आ मोतीलालक बीच चर्चा चलैत अछि।

‘जीवन दान’: भूकम्पक बादक जीवनपर सुमन्त आ हुनकर पत्नी गप करैत छथि। पछिला सप्ताह भूकम्पमे तीनू घर ध्वस्त भऽ गेल छल।

‘अप्पन सति’: चौराहाक दोकानसभक चारूकात धड़कैत गामक जीवन एहि कथाक केन्द्र अछि। लोक, हुनकर प्राथमिकता, छोट-मोट झगड़ा-बखेरा—सभ एतय देखाइत अछि।

श्री जगदीश प्रसाद मण्डल एहन मैथिली कथा लेल चिन्हल जाइत छथि जे मिथिलाक लोकक समस्या आ ओकर समाधानक सोझा सम्बन्ध राखैत अछि। समाधान लोकक बीचहि रहैत अछि, आ जे पात्र समाधान खोजि लैत अछि सएह कथाक नेतृत्व करैत अछि; एहन पात्र सदिखन भेटैत अछि। हुनकर कथा पलायन-विरोधसँ बेसी ‘जीवनसँ भागबाक विरुद्ध’ दृष्टिक लेल प्रसिद्ध अछि। तथापि ऊपरक पाँच कथा ओ अपन दार्शनिक चिन्तनवला कथा चुनने छथि। एतहु प्राथमिकता लोक आ ओकर जीवन अछि। जीबछ कक्काक माध्यमसँ लेखक कहैत छथि जे हुनकर जीवन भव्य छल। भव्यता पाइमे नहि, जीवन जीबाक ढंगमे अछि। ई भव्यता जमींदारक जीवनसँ नहि, सामान्य लोकक जीवनसँ देखाओल गेल अछि—ओ लोक जे सुखाड़ि, बाढ़ि आ नव-विकासक अवधारणासँ पर्यावरणपर पड़ैत प्रतिकूल प्रभाव झेलैत अछि, तैयो अपन गरिमा बनौने रखैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक आगमनक पहिने आ बाद: मैथिली साहित्यक परिदृश्य

अमर्त्य सेन बंगालक अकाल (१९४२–४३) पर लिखैत छथि जे लाखों लोक मरल—Famine Enquiry Commission क अनुमान अनुसार लगभग पन्द्रह लाख—मुदा ओ त्रासदी हुनकर अपन प्रियजन धरि नहि पहुँचल। तहिना १९६७मे मिथिलामे भीषण अकाल पड़ल। तत्कालीन प्रधानमन्त्री इन्दिरा गांधी क्षेत्रक भ्रमणपर अयलीह तँ हुनका देखाओल गेल जे मुसहर समुदायक लोक ‘बिसरह’—कमल आ आन पौधाक जड़ि—खा कऽ जीबैत छथि।

मुदा ई त्रासदी २००९मे जा कऽ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल लिखलनि—घटनाक चालीस वर्षसँ बेसी बाद। एहि देरीक कारण लेखकक अनुसार स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे एकपक्षीय प्रवृत्ति ओकर यात्राकेँ टेढ़ आ कुरूप बनौने रहल। तथाकथित मुख्यधाराक लेखकसभक पास एहन पैमानेक त्रासदीक प्रत्यक्ष अनुभव नहि छल; तेँ ओ एहन विषयपर लिखि नहि सकलाह।

जगदीश प्रसाद मण्डलक साहित्यिक परिदृश्यपर आगमन मैथिली साहित्यमे पुनर्जागरण आ सुधार-आन्दोलन दुनूक आरम्भ सन भेल। एकटा चमकैत नव युग शुरू भेल। लेखकक मतमे साहित्यिक परिदृश्यक अन्हार, कुरूप आ एकतरफा दिशाकेँ सुधारेबाक, रिक्ति भरबाक आ टेढ़ प्रवाहकेँ समतल करबाक श्रेय हुनका जाइत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल कलाकार छथि। तथ्यकेँ एहन अद्भुत ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि जे पाठक तन्मय भऽ जाइत अछि।

ओ तथ्यकेँ दिशा आ उद्देश्य दऽ प्रस्तुत करबाक क्षमता राखैत छथि। एहि सामर्थ्यसँ ओ मैथिली साहित्यक परिभाषा आ स्वरूपपर एतेक गहींर प्रभाव देलनि जे साहित्यक इतिहासकेँ दू युगमे बाँटि देखल जा सकैत अछि—जगदीश प्रसाद मण्डलपूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डलपश्चात्।

हुनकर तथ्य समाजक प्रत्येक स्तरसँ जुटल अछि। गद्यमें सजावटी आभूषणक रूपमे नहि राखल जाइत, बल्कि स्वाभाविक प्रवाहमे अबैत अछि।

एना बुझाइत अछि मानो तेज ज्वार मैथिली साहित्यक तथाकथित मुख्य नालाक तटरेखाकेँ हिला देने हो—जे नाला पूर्णतः सुखा जाइत अछि, मुदा वर्षाकालमे फेर अपन आकार पाबि लैत अछि।

मानो पैघ ज्वार मैथिली साहित्यक तथाकथित मुख्य नालाक किनारसभकेँ हिला देलक—ओ नाला जे सुखाड़िमे प्रायः मरि जाइत अछि, मुदा बरखा अयलापर फेर अपन रूप पबैत अछि।

हुनकर शब्द विलाप नहि करैत। लेखन दायित्वसँ पाछाँ नहि हटैत। पात्र जतेक कठिनाइ झेलय, आशा नहि छोड़ैत, संसाधनक कमीकेँ दोष नहि दैत, निराश नहि होइत; दृढ़तासँ आगाँ बढ़ैत रहैत अछि।

ओ समाजक प्रत्येक स्तरक जीवन-पद्धति आ योगदानक सम्मान करैत छथि—ई असाधारण विशेषता अछि। ई प्रभावी एहि कारण होइत अछि जे हुनकर कथन आ कर्ममे असंगति नहि; व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक गरिमा एकरा विश्वसनीय बनबैत अछि। ओ की सोचैत छथि, की करैत छथि आ की लिखैत छथि—तीनू बीचक सामंजस्य हुनकर साहित्यकेँ सत्यनिष्ठ बनबैत अछि।

मैथिली भाषाक लयात्मक आरोह-अवरोह महान Yehudi Menuhin धरि के आकर्षित केने छल। BBC कार्यक्रममे ओ एकरा अत्यन्त मधुर भाषासभमेसँ एक कहलनि आ कहने छलाह जे एहि भाषा सुनैत हुनकर पूरा शरीर लयमे झूमि उठैत अछि। जगदीश

प्रसाद मण्डल एहि लयात्मक भाषाक उतार-चढ़ावक उपयोग समाज आ संस्कृतिक पारस्परिक निर्भरताकेँ अभिव्यक्त करबाक लेल करैत छथि।

ई परिवर्तन केवल साहित्यमे नहि, आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्तिक सम्भावना उत्पन्न करैत अछि।

SHAMBHUDAS

जगदीश प्रसाद मण्डल पाठकक मनमे बरहम बाबाक छवि रोपैत छथि। ओ देखबैत छथि जे भक्तसभ आ स्वयं बरहम बाबा दुनू प्रसन्न छथि। ओ "शम्भुआ" (अनादरसूचक सम्बोधन) क "शम्भु" (आदरसूचक सम्बोधन) मे रूपान्तरण देखबैत छथि; फेर शम्भुदासकेँ दरबारीदास बनैत देखैत छथि।

जगदीश प्रसाद मण्डल पाठकक मनमे 'बरहम बाबा' क छवि रोपैत छथि। ओ देखबैत छथि जे भक्त आ बरहम बाबा दुनू प्रसन्नचित्त छथि। 'शम्भुआ'—अनादरसूचक सम्बोधन—धीरे-धीरे 'शम्भु'—सम्मानसूचक सम्बोधन—मे बदलैत अछि; फेर शम्भुदास दरबारीदास बनैत देखाइत अछि।

मिथिलाक ढहैत संस्थासभ आ शम्भुदासक मलबामे बदलनाइ एहि बातक प्रमाण सन प्रस्तुत होइत अछि जे मिथिलामे साधल कलासभ नष्ट भऽ रहल अछि। मुदा लेखकक आन कथा—जेना 'भैटाक लावा' वा 'बिसरह'—क मुख्य पात्र ढहि नहि पड़ैत। तखन शम्भुदास दरबारीदास किए बनि रहल अछि? ई केवल शक्तिक हानि अछि, आकि लेखक जगदीश प्रसाद मण्डल स्वयं बदलि रहल छथि? की ओ थाकि गेल छथि, की हारि रहल छथि?

गहींर नजरिसँ देखलापर शम्भुदास 'भैटाक लावा' वा 'बिसरह' क नायक-नायिकासँ कतहु कम नहि। तखन ओ हारि किए रहल अछि? ओकर जीत होएबाक चाही नहि? लेखक ओकरा पराजय दिस किए धकेलैत छथि? पात्रक संसारमे लेखक ईश्वर-समान छथि; तखन परिस्थितिकेँ एना किए बनेने छथि जे शम्भुदास अपनाकेँ हारैत स्थितिमे पबैत अछि?

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र कृत्रिम नहि छथि। एही कारण ओ सभटा आर्थिक मोर्चापर सदिखन विजयी सेहो नहि होइत छथि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र कृत्रिम नहि; तेँ आर्थिक जीवनक प्रत्येक मोर्चापर ओ सभदिन जीतत, ई आवश्यक नहि।

आर्थिक मोर्चापर काज हाथ आ श्रमसँ होइत अछि। मुदा संस्कृति—जाहिमे साहित्य सेहो अछि—बहुत नाजुक हस्तकला सन अछि। एहि कथाक पात्र एही सूक्ष्म कारीगरीमे जकड़ि जाइत छथि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक आन पात्र जखन आर्थिक मोर्चापर लड़बाक स्थिति मे अयलाह, ओ पूरा शक्ति सँ लड़लाह आ जीतलाह। मुदा कलाक सेवा करबाक लेल शम्भुदासकेँ पलायन करए पड़ल—'बिसरह' क पात्रसभसँ भिन्न।

एहि कारण शम्भुदासकेँ दरबारी कलाकार बनए पड़ल। आर्थिक दृष्टिसँ ई अकृतज्ञ, प्रतिफलहीन काज छल; मुदा बदलैत समयमे कलाक वास्तविक अस्तित्व बचेबाक लेल एही रूपमे जीवित रहनाइ एकटा मात्र उपाय सन बनल।

मुदा एतहु, जाहि अवस्थाकेँ पराजय मानल जा सकैत अछि—आर्थिक दृष्टिसँ ओ पराजय छल—शम्भुदास विद्रोहक झण्डा फहरबैत अछि।

ओ विवाह नहि करबाक निर्णय लैत अछि; पारिवारिक जीवनक सम्भावना छोड़ि दैत अछि। शम्भुदास आर्थिक जीवित रहबाक लेल दरबारीदास नहि बनल। ओ उपयोगितावादी नहि; कलाक अस्तित्व लेल समझौता करए पड़ल। विवाह नहि करबाक निर्णय ओहि समझौताक प्रति प्रायश्चित्त सन बनि जाइत अछि।

जँ कला 'दरबारीदास' बनि जाए तँ समानान्तर परम्परा ढहि पड़त। शम्भुदासक हार मिथिलाक हार होएत; केवल जगदीश प्रसाद मण्डल नहि, सम्पूर्ण मिथिला एहि पराजयमे हारत।

BAJANTA-BUJHANTA

ई बीज-कथासभक संग्रह अछि।

शीर्षक बीज-कथा 'बजन्ता-बुझन्ता' एकटा सुग्गाक कथा अछि, जे स्वयं बजन्ता-बुझन्ता अछि। एहि बीज-कथा-संग्रहमे लेखकक अन्य कथासभक अपेक्षा एहन प्रतीकक प्रयोग बेसी भेटैत अछि।

शीर्षक बीहनि-कथा ‘बजन्ता-बुझन्ता’ एकटा सुग्गाक कथा अछि, जे स्वयं बजन्ता-बुझन्ता अछि। एहि बीहनि-कथा संग्रहमे लेखकक आन कथाक अपेक्षा एहन प्रतीक अधिक भेटैत अछि।

‘चौकीदारी’ मे गर्भावस्थाक आठम मासमे सेहो एकटा श्रमिक स्त्री कमर आ पेटमे रस्सी बान्हि काज करैत देखाइत अछि।

‘पातर’ कथा लेखक प्रसिद्ध बीहनि-कथा कार्यकर्ता मनोज कुमार कर्ण ‘मुन्नाजी’ कैँ समर्पित करैत छथि आ संगहि एकटा प्रतीक दैत छथि—“जेना अन्हार कोठरी, चारू दिस साँप; तहिना हमरो सभक स्थिति।” ई प्रतीक बीहनि-कथाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। समधी कहैत छथि—“अरे, अहाँ तँ कौआक भाषा धरि सुननिहार भऽ गेलहुँ।”

TAREGAN

एहि पोथीमे जटिल कथानक वा दुरूह प्रतीक नहि अछि, कारण ई बालकसभमे उत्तम मूल्य रोपबाक उद्देश्यसँ लिखल गेल अछि।

एहि पोथीमे जटिल कथानक वा उलझल प्रतीक कम अछि, सरल कारण ई जे पोथी बच्चासभमे नीक मूल्य रोपबाक उद्देश्यसँ लिखल गेल।

मुदा एतय पूरा कथा स्वयं एकटा प्रतीक बनि जाइत अछि। जखन सुभाषचन्द्र बोसक पिता हुनका कहैत छथि जे केवल जमीनपर सुतनाइ पर्याप्त नहि, ओ बात हुनकर मनपर गहींर छाप छोड़ैत अछि। बादमे भारत लेल ओ की कएलनि, से सर्वविदित अछि। सत्य विद्या भारद्वाज कहैत छथि—“ज्ञान स्वर्गसँ पैघ अछि।”

ई संग्रह केवल बाल-साहित्यक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण नहि; ई बीहनि-कथाक क्षितिज सेहो विस्तृत करैत अछि।

‘चलू उचितपुर’ कवितामे उचितपुर नामक स्थान अछि, जतऽ सभक देह-भाषा आ पहिरावा एके जकाँ अछि। एहि देशमे आगि आ पानिमे कोनो भेद नहि अछि।

‘चलू उचितपुर’ कवितामे उचितपुर नामक एहन स्थान अछि जतय सभक देह-भाषा आ वस्त्र एक्के प्रकारक अछि। एहि भूमि पर आगि आ पानिक बीचो भेद नहि।

“अमावस सन पूर्णिमा” विकृत “बेढब रूप” क विषयमे बहुत किछु कहि जाइत अछि।

‘यार यौ’ त्रासदीक गीत अछि। बाढ़िमे की-की बहि गेल—सामान मात्र नहि, मनोबल आ अस्तित्व-बोध धरि—ई गीत ओकर वर्णन करैत अछि।

ओ एहि गीतकेँ श्री राजनन्दन लाल दासक ‘युग-युग’ कैँ समर्पित करैत छथि, जतऽ मकड़ीक जालमे फँसला पर सभटा द्वार बन्द भऽ जाएबाक स्थितिक वर्णन अछि।

ओ गीत श्री राजनन्दन लाल दासक ‘युग-युग’ कैँ समर्पित करैत छथि, जतय मकड़जालमे फँसल व्यक्तिक लेल सभटा द्वार कोना बन्द भऽ जाइत अछि, तकर चित्रण अछि।

ई सम्पूर्ण गीत-संग्रह प्रोफेसर उदयनारायण सिंह ‘नचिकेता’ कैँ समर्पित अछि। संग्रहक सभ गीत लयात्मक अछि।

बाबा बाँझ गाछक दुष्टता नहि बुझि सकलाह। ओ जोतलनि, कोड़लनि आ गाछ लगौलनि; मुदा बादमे ओही गाछसभ मृतात्माक निवास बनि गेल। ओ माटि नहि छुबैत, टुप्पा पकड़ि आकाश धरि पहुँचैत अछि।

बाबा बाँझ गाछसभक छल नहि बुझलनि। ओ खेत जोतलनि, माटि तैयार कएलनि आ गाछ रोपलनि। मुदा ओ गाछ बादमे मृतात्माक वासस्थान बनि गेल; मानो माटि नहि छूबैत, ऊपरक टुप्पी पकड़ि आकाश धरि पहुँचल हो।

‘हलुक काज’ श्रमक ओजारक तकनीकी बारीकी बतबैत अछि, जे काजकेँ सहज बनबैत अछि। काज पूरा भेलापर कलाकार/कारीगरकेँ जे सन्तोष भेटैत अछि, ओ अनुभव सेहो अछि। संगहि सहानुभूतिसँ भरल संसार कोना बनैत अछि, तकर वर्णन कएल गेल अछि।

‘पट्टा छीमी’ क चाशनी-जकाँ मानसिक स्तर हो वा “विशाल लड़का दोषी अछि” सन प्रसंग—लेखक नूतन आ विशिष्ट मैथिली पद्य-रूप सामने अनैत छथि। एहीसँ ‘राइत-दिन’ क स्वर फराक देखाइत अछि।

हम सुनैत छी—केओ अपन स्वर आ देहकेँ पूर्ण लयमे झुमबैत नचारी गाबि रहल अछि; नचारी मैथिलीमे भगवान शिवसँ सम्बन्धित गीत अछि। आध्यात्मिक आ अलौकिक दुनूकेँ स्थान भेटल अछि। एक दिस संयोजन अथवा सृजन अछि, दोसर दिस विघटन; परिवर्तन मात्र एकटा खेल बनि जाइत अछि।

हम सुनैत छी जे कियो नचारी—भगवान शिवक मैथिली गीत—गबैत देह आ स्वर दुनूकेँ पूरा लयमे झुमबैत अछि। आध्यात्मिक आ अलौकिक दुनूकेँ स्थान भेटल अछि। एकटा संयोजन/सृजन करैत अछि, दोसर विघटन; परिवर्तन मानो खेल मात्र अछि।

कवि शब्द आ विषयक चयनमे अत्यन्त सावधान छथि। रहस्य, निराशा, उत्तर, प्रश्न आ आशा—सभ बेर-बेर अबैत-जाइत रहैत अछि।

‘घरे-घरे’ मे प्रत्येक घर दीयासँ उज्जर अछि, मुदा पूरा गाम अन्हारमे अछि।

‘घरे-घरे’ मे प्रत्येक घर दीपसँ उज्जर अछि, मुदा पूरा गाम अन्हारमे डूबल।

‘कौशल-जखैन’ बतबैत अछि जे जमीन बाँझ किएक भेल आ अन्हार गाम एहन दयनीय अवस्थामे कोना पहुँचि गेल।

SARITA

एतय जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य निरन्तर प्रश्न उठबैत अछि—प्रश्न पर प्रश्न।

एतय जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य लगातार प्रश्न उठबैत अछि—प्रश्न करैत रहैत अछि।

हुनकर कविता तथ्यक पीड़ादायक चेतना प्रकट करैत अछि आ निष्कर्ष धरि बारम्बार प्रश्न उठबैत रहैत अछि।

हुनकर कविताक तुलना गद्यसँ करब तँ आशासँ भरल गद्यक विपरीत पद्यमे बेसी निराशावाद भेटत। कविताक छोट आकार हुनका प्रश्नक विस्तारसँ विश्लेषण आ उत्तर खोजबाक पर्याप्त अवकाश नहि दैत अछि। फलतः ओ प्रश्न उठबैत रहैत छथि—एहन प्रश्न जे पाठककेँ स्वयं समाधान खोजबाक लेल टोचैत रहैत अछि।

हुनकर कविताक तुलना गद्यसँ करब तँ आशासँ भरल गद्यक विपरीत पद्यमे बेसी निराशावाद भेटत। कविताक छोट आकार प्रश्नक विश्लेषण आ उत्तर खोजबाक पर्याप्त अवकाश नहि दैत अछि। तेँ कवि प्रश्न पर प्रश्न उठबैत छथि आ पाठककेँ स्वयं समाधान खोजबाक लेल कुरेदैत छथि।

मैथिली साहित्य लेल एहि प्रकारक पद्य रोचक आ नूतन प्रयोग अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डलक किछु आओर पोथीक सर्वेक्षण

Ulba Chaur: लघुकथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

ई तेरहटा लघुकथाक संग्रह अछि। संग्रहक प्रत्येक कथा जीवनक उतार-चढ़ावकेँ चित्रित करैत अछि, समस्याक कारण खोजैत अछि आ आधुनिक दृष्टिसँ ओकर समाधान प्रस्तुत करैत अछि।

Ardhangini: लघुकथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

ई बीसटा लघुकथाक संग्रह अछि। लेखक वेतनभोगी लोकक जीवनक कष्टकेँ सजीव रूपमे देखबैत छथि आ दोसर दिस कृषकक अपेक्षाकृत उल्लासपूर्ण जीवनसँ ओकर तुलना करैत छथि। एके संग गामक लोकक बीच प्रचलित मिथ्या-विश्वास आ अन्य सामाजिक समस्यासँ सीधा मुठभेड़ करैत समाधानक प्रस्ताव दैत छथि। जाति-आधारित परम्परागत पेशाक उल्लेख करैत गामक सुव्यवस्थित जीवनमे ओकर ऐतिहासिक उपयोगिता आ आवश्यकताक प्रश्न सेहो उठबैत छथि।

Satbhaiya Pokhair: लघुकथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

एहि पोथीक एखन धरि चारि संस्करण प्रकाशित भऽ चुकल अछि।

Bhakmor: लघुकथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

एहि संग्रहमे नौटा लघुकथा अछि। ‘ओझरी’ आ अन्य कथा 1947क बादक समयकेँ केन्द्रमे रखैत लोकतान्त्रिक मूल्यक क्षय आ सार्वजनिक संस्थाक विकृतिकरणक विवेचन करैत अछि।

Nai Dharaiye: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

ई उपन्यास साहित्य-सृजनक धर्मक निर्वाहक प्रयास अछि, जाहि प्रति लेखक निष्ठावान रहल छथि। जीवनक गतिशील चित्रणक माध्यमसँ ई समाजक चेहरा प्रतिबिम्बित करैत अछि।

Krantiyog: लघुकथा-संग्रह, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2017

एहि संग्रहमे छहटा कथा अछि। राजमार्ग आ सम्पर्क-पथक निर्माण, ऊँच पायाक भवन आ घरसभक कारण जल-निकासक समस्या कोना बढ़ल, पर्यावरणक क्षति आ ताहिसँ उत्पन्न बाढ़िक संकट—एकर चित्रण प्रभावी अछि। पोखरि, इनार आ बगीचाक संख्या आ क्षेत्रफल घटि रहल अछि; फलतः काँटेदार वनस्पति बढ़ैत अछि आ फसलक हानि होइत अछि।

Subhimani Jingi: लघुकथा-संग्रह, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2018

लेखक तृतीय लिंगसँ जुड़ल प्रश्नकेँ सजीव रूपमे चित्रित केने छथि। किशोर श्यामा न पुरुष अछि, न स्त्री; तेँ मायक समेत किछु लोक ओकरा किन्नर समुदायकेँ सौंपि देबाक निर्णय करैत छथि। मुदा पिता ओकर पक्षमे ठाढ़ भऽ सम्मानजनक जीवन लेल जरूरी सभ कौशल देबाक निश्चय करैत छथि। ओ अर्धनारीश्वर शिवक उदाहरण दैत छथि आ कृष्णक सेहो, जे शिवानीक रूप धारण कऽ स्त्री-समूहमे प्रवेश करैत छथि। पिताक दृढ़ निश्चय देखि माय सेहो हुनकर पक्षमे आबि जाइत छथि।

मैथिली साहित्यमे एहि रूपमे बहुत कम चर्चित रहल तृतीय लिंगक प्रश्न लेखकक ध्यानमे आयल अछि। श्यामा सर्वप्रथम एकटा बालक अछि—एहि तथ्यपर विवाद नहि भऽ सकैत अछि। ओकर सम्मानपूर्ण जीवनक अधिकार अछि आ ताहि लेल आवश्यक कौशल ओकरा देल जएबाक चाही। भाई-बहिन मायक समझबैत छथि; शिव आ कृष्णक कथा सुनलाक बाद माय एहि बातपर पश्चात्ताप करैत छथि जे ई कथा हुनका पहिने किएक नहि पढ़ाओल गेल। खास कऽ ग्रामीण समाजमे तृतीय लिंगक जीवनकेँ नव दृष्टिसँ देखाओल गेल अछि। संग्रहक अन्य कथासभ सेहो अलग-अलग सामाजिक पक्ष खोलैत अछि—'बाबाक बाग-बगिया' मे मठ आ संन्यासक प्रश्न, 'कुकुरपन' मे गामक विवाद-निराकरण, आ 'हेरायल जिनगी' मे कमलपुर गामक उदाहरणसँ स्वतंत्रताक बादक विकास, जाति आ दोषपूर्ण विकास-मॉडलक प्रश्नक नव उपचार।

'Subhimani Jingi' (सम्मानपूर्ण जीवन), 2018, आठटा लघुकथाक संग्रह अछि। दोसर कथा 'Subhimani Jingi' नामक अछि, जे पोथीक शीर्षक सेहो अछि। पोथी 23 जनवरी 2018 सँ 9 मार्च 2018क बीच लिखल गेल आ Pallavi Prakashan, Nirmali द्वारा प्रकाशित भेल। मैथिलीमे लघुकथाक रातिभर चलनिहार त्रैमासिक पाठ-गोष्ठी 'सगर राति दीप जरय' अलग-अलग ठाम होइत अछि। एकर 97म गोष्ठी 24.03.2018 केँ लेखक श्री कपिलेश्वर राउतक संयोजकत्वमे बेरमा गाममे भेल; ई श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक गाम सेहो अछि। ओहि अवसरपर एहि पोथीक लोकार्पण भेल।

एहि पोथीक आठो कथा गामक लोकक जीवनमे निरन्तर भऽ रहल परिवर्तनकेँ सजीव रूपमे चित्रित करैत अछि।

एहि पोथीक आठटा कथा ई अछि:

1. Kekra Lel Kelau: 23.01.2018 केँ लिखल

2. Subhimani Jingi: 28 जनवरी 2018 केँ लिखल

3. Babak Bag-Bagiya: 3 फरवरी 2018 केँ लिखल

4. Ab-Tab: written on 7 Feb 2018

5. Agilah: written on 11 Feb 2018

6. Kukurpan: written on 28 Feb 2018

7. Herayal Jingi: 5 मार्च 2018 केँ लिखल

8. Asha Par Paani Phir Gel: 9 मार्च 2018 केँ लिखल

1. Kekra Lel Kelau:

ई लघुकथा जाड़क दिनमे घूरक चारूकात बैसल लोकक बातचीतसँ आरम्भ होइत अछि। भोगीलाल भाय आयुर्वेदिक चिकित्सक छथि, मुदा अपन स्वास्थ्य नीक नहि राखि पबैत छथि। हुनकर परिवार सेहो अस्थिर भऽ गेल; पत्नी छोड़ि परिवारक अन्य सदस्य नगरक दिस पलायन कऽ गेलाह। बातचीत गामक बदलैत पर्यावरण आ सामाजिक वातावरणक विविध पक्षपर चलैत अछि—एहन परिवर्तन, जाहिसँ किछु लोक सामंजस्य नहि बिठा सकल।

2. Subhimani Jingi

मैथिली साहित्यमे एहि रूपमे बहुत कम चर्चित रहल तृतीय लिंगक प्रश्न लेखकक ध्यानमे आयल अछि। श्यामा सर्वप्रथम एकटा बालक अछि। ओकर सम्मानपूर्ण जीवनक अधिकार अछि आ ताहि लेल आवश्यक कौशल देल जएबाक चाही। भाई-बहिन मायक समझबैत छथि; शिव आ कृष्णक कथा सुनलाक बाद माय एहि बातपर पश्चात्ताप करैत छथि जे ई कथा हुनका पहिने किएक नहि पढ़ाओल गेल। विशेषतः ग्रामीण समाजमे तृतीय लिंगक जीवनकेँ नव दृष्टिसँ देखाओल गेल अछि।

3. Babak Bag-Bagiya

ई लघुकथा मठ आ संन्यासक प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। गोवर्धन दास गरीब बालक छलाह; बाल्यावस्थामे माता-पिताक निधन भऽ गेल। बादमे ओ महन्त गोकुल दासक उत्तराधिकारी बनैत छथि। हुनकर कथाक माध्यमसँ लेखक ग्रामीण अन्तर्भाग धरि पहुँचि गामक जीवनक कम देखल अवस्थासभ प्रस्तुत करैत छथि। बाबाक बगीचासँ हुनकर स्मृति जुड़ल छल, मुदा उचित देखरेखक अभावमे आब ई बगीचासभ नष्ट भऽ रहल अछि।

4. Ab-Tab:

गामक भोजमे उपयोग होमयवला तरकारी-सामग्रीकेँ माध्यम बनाकऽ लेखक विकाससँ ग्रामीण जीवनपर पड़ैत प्रभावक प्रश्न उठबैत छथि।

5. Agilah

पक्षधरक काका सेवानिवृत्त भऽ गाम लौटैत छथि। मुनीलाल हुनकर चचेरा/सम्बन्धी भाई छथि; मुनीलालक बेटी विधवा अछि। मुनीलाल आ हुनकर बेटी सावित्री ओ पात्र छथि जिनकर माध्यमसँ पक्षधर अपन सुधारक कार्यक्रम आगाँ बढ़ेबाक चाहैत छथि।

6. Kukurpan

'कुकुरपन' क विषय गाममे विवाद-निराकरणक पद्धति अछि। समाधान ओही व्यक्तिसँ सम्भव अछि जे एहि दायित्वक योग्य हो।

7. Herayal Jingi

'हेरायल जिनगी' मे कमलपुर गामक उदाहरणसँ स्वतंत्रताक बाद ग्रामीण विकासक प्रश्न उठाओल गेल अछि; जाति आ दोषपूर्ण विकास-मॉडलकेँ नव दृष्टिसँ देखल गेल अछि।

8. Asha Par Paani Phir Gel

ललित पढ़ल-लिखल कृषक अछि। ओ सूर्यमुखीक खेती शुरू करैत अछि। ओकर प्रयोगक माध्यमसँ लेखक किसानक वास्तविक समस्या, प्रकृतिक प्रकोप आ अन्य व्यावहारिक कठिनाइसभक विस्तार करबाक अवसर पबैत छथि।

Dekhl Din: लघुकथा-संग्रह, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2018

एकटा एहन परिवार जे तीन पीढ़ीसँ गाममे रहैत अछि आ दोसर एहन परिवार जकर दोसर पीढ़ी नगर पलायन कऽ गेल—दुनूक तुलना शीर्षक कथामे कएल गेल अछि, आ पहिल परिवारक जीवन-पद्धतिक श्रेष्ठता स्थापित कएल गेल अछि।

Gapak Piyahul Lok: लघुकथा-संग्रह, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2018

ई तेरहटा लघुकथाक संग्रह अछि। शीर्षक कथा स्थायी बन्दोबस्त आ जमीन्दारी-कालसँ चलि आबि रहल सामाजिक संरचनाकेँ देखबैत अछि। संसाधन किछु लोकक हाथमे केन्द्रित छल; स्वतंत्र भारतमे सेहो ई प्रवृत्ति अनेक रूपमे जारी रहल। लोक जमीनपर कब्जा करय लगल आ मुकदमेबाजी बढ़ल। शीर्षक कथामे दीनबन्धु काकासहित पैंतीस लोकसँ जुड़ल एहन एकटा मुकदमाक प्रसंग अछि; निर्णयक दिन बस-दुर्घटनाक घटना घटैत अछि।

Lahsan: उपन्यास, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2018

'लहसन' एकटा ग्रामीण व्यक्तिक कथा अछि जे नगरीय जीवनसँ मोहभंग अनुभव करैत अछि, जतऽ सामाजिक आ व्यक्तिगत नैतिकता अर्थहीन बुझाइत अछि। उपन्यास गाम आ नगरक जीवनक सजीव चित्रण करैत अछि; आर्थिक रूपसँ निम्नवर्गीय साधारण लोकक दृष्टिसँ नगरीय जीवनमे विशेष आकर्षण नहि देखाइत अछि। कथानक व्यक्तिगत उथल-पुथलक चारूकात घूमैत अछि, मुदा उपन्यासक वास्तविक शक्ति आर्थिक रूपसँ निम्नवर्गीय लोकक दृष्टिकोणसँ नगर आ गामक जीवनक विस्तृत चित्रणमे अछि।

Rahe Joker Pariwar: लघुकथा-संग्रह, Pallavi Prakashan, Nirmali, Supaul, Bihar, 2020

जीविकाक हानि मिथिलासँ पलायनक प्रमुख कारण अछि; मुदा पलायन करनिहारमे सम्पन्न लोक सेहो होइत छथि, जे सहज जीवनक खोजमे जाइत छथि। लगभग तीस वर्ष पहिने सम्पन्न रहितहुँ शान्तिनाथ चैनपुर छोड़ि शान्तिक खोजमे 'शान्ति निकेतन' चलि गेलाह। गामक लोक बादमे हुनका भेटल, मुदा हुनका पछतावा नहि छल। लेखकक अन्य पोथीसँ अलग, एतय सुख-सुविधासम्पन्न लोकक शान्तिक खोजमे पलायनक बहन्ने मिथिलाक सामाजिक जीवनक अन्तर्द्वन्द्वक तुलना आ चित्रण अछि।

Gamak Jingi: लघुकथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2009

एहि लघुकथा-संग्रहमे उन्नैसटा कथा अछि। लेखककेँ एहि पोथी लेल टैगोर साहित्य पुरस्कार (साहित्य अकादेमी) देल गेल छल। प्रत्येक कथा ग्रामीण जीवनक कठोरताकेँ चित्रित करैत अछि। लोककेँ प्राकृतिक विपत्तिक आगाँ झुकय पड़ैत अछि, तथापि कथासभक पात्र बारम्बार उठि ठाढ़ होइत छथि आ हार मानबाक वा पलायन करबाक अस्वीकार करैत छथि।

Maulayal Gachhak Phool: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2009

ई लेखकक पहिल उपन्यास अछि आ गामसँ पलायनक समस्याकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। उपन्यासकार जर्जर व्यवस्थाक पुनर्जीवनक कल्पना करैत छथि, जाहिसँ पलायन रोकल जा सकय।

Utthan-Patan: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2009

अत्यन्त आलसी व्यक्ति सेहो आर्थिक उन्नतिक इच्छा रहने आगाँ बढ़ि सकैत अछि। श्यामानन्द खेतीमे तकनीक आनैत अछि। गामक विघटन आ पलायन रोकबाक लेल एकता आवश्यक अछि—कथ्य एहि दिशामे जोर दैत अछि।

Jingik Jeet: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2009

ग्रामीण जीवनपर केन्द्रित बहुत रचनामे नकारात्मक शक्तिक अधिकता देखाइत अछि। लेखक एहन नकारात्मक चित्रणसँ उपजैत निराशापर विराम लगेबाक प्रयास करैत छथि।

Mithilak Beti: नाटक, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2009

ई नाटक मिथिलाक गामसभमे बेटीसभक दयनीय जीवनक प्रश्न उठबैत अछि। भेदभाव अनेक रूपमे अछि; लेखक विवाहक बाद स्त्रीक सम्बन्धसभमे आबि जाएवला विकृत रूपकेँ चुनने छथि। एकर मूल कारण जन्मक दिनसँ बेटा आ बेटीकेँ असमान व्यवहार देबामे देखाओल गेल अछि।

Taregan: प्रेरक कथा-संग्रह, Shruti Publication, New Delhi, 2010

ई बाल-साहित्यक पोथी अछि आ 111टा प्रेरक बीज-कथाक संग्रह अछि; एहि मे बच्चासभ लेल चुनल विश्व-साहित्यक किछु श्रेष्ठ कृतिक सार-तत्त्व सेहो समाहित अछि।

Jeevan-Maran: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2010

एहि कृतिमे लेखकक आध्यात्मिक दृष्टि अग्रभूमिमे अबैत अछि; सांसारिक जीवनक अर्थ परलोकक परिप्रेक्ष्यमे देखल गेल अछि।

।

Jeevan Sangharsh: उपन्यास, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2010

लेखक बाँसपुरा आ सिसौनी नामक दू गामक तुलना करैत छथि। हुनकर कथनानुसार बाँसपुरा कम विकसित आ सिसौनी अपेक्षाकृत बेसी विकसित अछि; विकासक ई धारणा गामक लोकक अनुभव आ लेखकक दृष्टि दुनूसँ बनैत अछि। सिसौनीमे मध्य विद्यालय अछि, सार्वजनिक दुर्गापूजा आ मेला होइत अछि; बाँसपुरामे ई सुविधा नहि अछि, यद्यपि निजी स्तरपर 24 घण्टाक कीर्तन आ समय-समयपर सार्वजनिक भण्डारा आयोजित होइत अछि। बरहरबा एहि दुनूसँ अधिक विकसित देखाओल गेल अछि—ओतय उच्च विद्यालय आ अधिक सार्वजनिक आयोजन अछि। फेर कथन कठरबा धरि पहुँचैत अछि, जतऽ उच्च विद्यालयक अतिरिक्त अस्पताल सेहो अछि आ अनेक सार्वजनिक कार्यक्रम आयोजित होइत अछि।

Bajanta-Bujhanta: बीज-कथा-संग्रह, Shruti Publication, New Rajendra Nagar, New Delhi, 2013

ई अड़सठिटा बीज-कथाक संग्रह अछि, जे विभिन्न सामाजिक प्रश्नक चारूकात बुन्नल गेल अछि। गामसभमे व्यक्तिगत आ सामाजिक स्तरपर चलि रहल परिवर्तन आ उथल-पुथल एहि कथासभक प्रमुख विषय अछि।

मैथिलीमे छद्म समीक्षा आ कमलानन्द झा प्रसङ

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

कमलानन्द झाकेँ हम किए छद्म समीक्षक कहलियनि? कारण ओ छद्म समीक्षक छथि। ओ लिखै छथि- "मैथिली उपन्यास-यात्राक लगभग सय वर्षक बाद मैथिल अन्तरजातीय विवाहक सपना, संघर्ष आ विडम्बना पर गरिमायुक्त उपन्यास लिखबाक श्रेय गौरीनाथकेँ जाइत छनि।" तँ की कमलानन्द झा सुशीलसँ ई श्रेय छीनि लेलनि? की ई हुनकर ब्राह्मणवादी संस्कारक अहंकार- जे हम ककरो चढ़ा सकै छिऐ आ ककरो उतारि सकै छिऐ- केर पराकाष्ठा थीक, आकि हुनकर अध्ययनक अभावक प्रमाण? चलू अहाँकेँ लऽ चली कमलानन्द झा केर स्वार्थी दुनियाँसँ दूर, छल-छद्मसँ दूर सुशीलक जादूबला साहित्यक निश्छल दुनियाँमे। अहाँक स्वागत अछि सुशीलक साहित्यक दुनियाँमे। प्रस्तुत अछि सुशीलक 'गामबाली' (१९८२) जे आब उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे लिंक http://videha.co.in/pothi.htm पर। पहिल पाँतीमे उपन्यास आरम्भसँ पहिनहिये 'गामबाली' उपन्यासक सम्बन्धमे सुशील लिखै छथि- "विधवा विवाह आ अन्तर्जातीय विवाहक समर्थनमे।" आ उपन्यास आरम्भ। गामबालीक मृत्यु आ तखने झमेला, गामबालीक दाह संस्कार के करतै? ब्राह्मण समाज कि जादव समाज?

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ. आइ. टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम. टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा केँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आँगा संलग्न अछि।

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ लेखककेँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ कवितामे प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री चोरि कऽ लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जइ

हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश कुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे: http://videha.co.in/pothi.htm
एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि? तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5, 10, 000, कालाजार से 2, 10, 000, हैजे से 60, 000 तथा चेचक से 3, 000 मौतें (कुल 7, 83, 000) हुईं। चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर' की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू. डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत ब्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ ब्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ''पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।" एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम–तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवत: कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि!

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर (साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य) [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र-शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवत: कुरसेला के आस-पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना केँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंतत: तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे-किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच-पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति केँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी केँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का-बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन केँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

५२. साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) प्रसंग

सारांश

दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) १० मे ६ ब्राह्मण + १ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, जे गत १५ बर्ख सऽ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगड़ा-पिछड़ा दुनूक एलिट लेल काज करत, साहित्यमे जे एलिट छथि से कतिआयले रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना जूरी बाड़ने छथि से बाड़ले रहत।

बीजशब्द: अकादेमीक · परामर्शदात्री · समिति · २०२३ · २०२८ · प्रसंग · महिलाक

सारांश

दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) १० मे ६ ब्राह्मण + १ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, जे गत १५ बर्ख सऽ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगड़ा-पिछड़ा दुनूक एलिट लेल काज करत, साहित्यमे जे एलिट छथि से कतिआयले रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना जूरी बाड़ने छथि से बाड़ले रहत। समानान्तर धाराक साहित्यकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दुन्ना गतिसँ काज करय पड़तनि।

१

दिल्ली साहित्य अकादमीक प्रख्यात मैथिली विभाग परामर्शदात्री समिति (२०२३-२०२८) १० मे ६ ब्राह्मण + १ नव-ब्राह्मणवादी आ समानान्तर धाराक एक्कोटा गएर-सवर्ण लेखक नै छथि, जे गत १५ बर्ख सऽ सीमित आर्थिक संसाधनक अछैत मैथिली लेल जान-प्राण अरोपने छथि। नचिकेता जीक ई परामर्शदात्री समिति एलिट अछि, आ ई अगड़ा-पिछड़ा दुनूक एलिट लेल काज करत, साहित्यमे जे एलिट छथि से कतिआयले रहता, राजदेव मण्डल जीक रचना जूरी बाड़ने छथि से बाड़ले रहत। समानान्तर धाराक साहित्यकार लोकनि लेल ई खतराक अलार्म अछि आ से हुनका दुन्ना गतिसँ काज करय पड़तनि।
लिस्ट:

उषाकिरण खान, सुभाषचन्द्र यादव, प्रमोद कुमार झा, देवशंकर नवीन, तारानन्द वियोगी, विद्यानन्द झा, रमण कुमार सिंह, अजय झा, वीणा ठाकुर, नचिकेता।

२

कला आस्वादन आ कला समीक्षा- सैद्धांतिक पक्ष

१

नर्तकी (!) वा महिलाक मूर्ति (२५०० बी. सी. ई.)

भारतमे प्राचीनतम कलाकृति सिन्धु घाटी सभ्यतासँ प्राप्त सामग्री सभ अछि।

नर्तकी (!) वा महिलाक मूर्ति जे धातु (कांस्य) क अछि से मोहनजोदाड़ोसँ भेटल। कलाकारक नाम अज्ञात अछि मुदा उत्कृष्टतामे ई मोहनजोदाड़ोक कलाक परिणिति अछि। मोटामोटी चारि इंची ऊँच, दू इंची चाकर आ एक इंची मोट ई कलाकृति आइ-काल्हि राष्ट्रीय संग्रहालय दिल्लीक सिन्धु घाटी सभ्यता गैलरीमे राखल अछि।

(साभार जो रवि, विकी CC-BY-SA-3.0)

कला आस्वादनक लेल आब देखी जे ऐमे की अछि जे एकरा उत्कृष्ट बनबैत अछि।

१. ई एकटा पातर दुब्बर महिलाक अनुकृति अछि।

२. महिला ठाढ़ अछि, वाम हाथ वाम जांघ आ दहिन हाथ डाँरपर पाछू दिश छै।

३. आँखि पैघ-पैघ छै।

४. केश औंठिया छै।

५. नाक थोपल छै।

६. महिला नग्न अछि मात्र गरामे कंठहार आ हाथमे चूड़ी देखा पड़ि रहल छै। वाम हाथमे २४ टा चूड़ी मुदा दहिन हाथमे मात्र ४ टा।

७. ककबा कएल केश पाछाँमे जूड़ी बान्हल छै।

८. माथ पाछाँ दिश उतान छै।

९. हाथ सापेक्ष रूपेँ नम्हर बुझि पड़ै छै।

ई महिलाक अनुकृति अछि, एकरा नर्तकी किए कहल गेल? की अहाँकेँ ऐमे महिला नर्तकीक कोनो टा लक्षण देखा पड़ैए? राष्ट्रीय संग्रहालय आ इतिहासक पोथी पतरा सभमे ई नर्तकीक रूपमे वर्णित भेटत जे पुरुष मानसिकताक परिणाम अछि जइमे महिला लेखिका रोमिला थापड़ जे मात्र इतिहासकार छथि, सेहो अपनाकेँ ओझरा लेने छथि। कला-इतिहास आ पुरातत्वक अध्ययन अछैत ऐ तरहक भ्रम उत्पन्न होइत अछि।

२

अजन्ताक पकिया रंगक राजकुमारी (२०० बी. सी. ई. सँ ४८० सी. ई.)

अजन्ताक एकटा गुफापर भित्तिचित्र (सभसँ पुरान चित्रकला) एकटा पकिया रंगक अतिसुन्दर राजकुमारीक चित्रण, जे गहना पहिरने अछि आ केशमे सेहो गहना छै।

३

खजुराहो (९५० सी. ई. सँ १०५० सी. ई.)

[खर्जुर (बिच्छू- वृश्चिकक संस्कृत)- एकटा अप्सरा अपन जांघ उघारि कऽ देखा रहल अछि जइपर वृश्चिक चित्रित छै, तही सँ खजुराहो नाम] ।

रोमिला थापड़ एतुक्का कलाकृतिकेँ पलायनक कला कहै छथि। तेरहम शताब्दीक जयदेवक गीत गोविन्द सेहो रोमिलाकेँ नव लगै छन्हि। कलाक इतिहासकार आ पुरातत्वविद रोमिलाक गपसँ असहमत छथि। कला इतिहासकार देवांगना देसाइ कहै छथि जे योनि आ लिंग आर्येतर सभ्यतामे विद्यमान छल, वातस्यायनक काम सूत्र आ कालिदासक कुमारसम्भव खजुराहो आ गीत गोविन्दसँ बहुत पहिनहियेसँ अछि। ओ कहै छथि जे वृश्चिकक तुलना काम लोलुपता रूपी बिखसँ कएल जाइत अछि आ सएह संकल्पना अप्सराक जांघपर चित्रित अछि।

५३. मिथिला स्टूडेन्ट यूनियन विशेषांक: संस्था, आन्दोलन आ आलोचना

सारांश

मैथिली आ मिथिला लेल अस्सी-अस्सी हाथक कथित साहित्यकार आ कथित लिटेरेरी एसोसियेशन (साहित्य अकादेमी पोषित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक कथित मिथिलावादी स्वघोषित नेता आ संस्थाक अछैत मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय भेल, तकर उद्देश्य छल ई चिन्हित केनाइ जे किछु काज रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै आ किछु काज काज होइ छै। जेना कथित मिथिला/ मैथिलीक जातिवादी संस्था सभ जइमे मैथिलीक जातिवादी रंगमंचक संस्था सभ सेहो अछि केर मुख्य काज अछि माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै, तकर विदेहक नजरिमे कोनो महत्व नै छै।

बीजशब्द: मिथिला · स्टूडेन्ट · यूनियन · विशेषांक · संस्था · आन्दोलन · आलोचना

सारांश

मैथिली आ मिथिला लेल अस्सी-अस्सी हाथक कथित साहित्यकार आ कथित लिटेरेरी एसोसियेशन (साहित्य अकादेमी पोषित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक कथित मिथिलावादी स्वघोषित नेता आ संस्थाक अछैत मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय भेल, तकर उद्देश्य छल ई चिन्हित केनाइ जे किछु काज रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै आ किछु काज काज होइ छै। जेना कथित मिथिला/ मैथिलीक जातिवादी संस्था सभ जइमे मैथिलीक जातिवादी रंगमंचक संस्था सभ सेहो अछि केर मुख्य काज अछि माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै, तकर विदेहक नजरिमे कोनो महत्व नै छै। अहाँ अपन संस्थाक नाममे अन्तर्राष्ट्रिय वा ब्रह्माण्डीय लगा लिअ, विदेह लेल ओकर कोनो महत्व नै।

सम्पादकीय

मैथिली आ मिथिला लेल अस्सी-अस्सी हाथक कथित साहित्यकार आ कथित लिटेरेरी एसोसियेशन (साहित्य अकादेमी पोषित) आ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरक कथित मिथिलावादी स्वघोषित नेता आ संस्थाक अछैत मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनपर विशेषांक निकालबाक निर्णय भेल, तकर उद्देश्य छल ई चिन्हित केनाइ जे किछु काज रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै आ किछु काज काज होइ छै। जेना कथित मिथिला/ मैथिलीक जातिवादी संस्था सभ जइमे मैथिलीक जातिवादी रंगमंचक संस्था सभ सेहो अछि केर मुख्य काज अछि माला आदि पहिरेनाइ, पत्रिका-स्मारिका आदि छपेनाइ, जे मात्र रेकॉर्ड बनेबाले होइ छै, तकर विदेहक नजरिमे कोनो महत्व नै छै। अहाँ अपन संस्थाक नाममे अन्तर्राष्ट्रिय वा ब्रह्माण्डीय लगा लिअ, विदेह लेल ओकर कोनो महत्व नै। कारण ऐ सभ संस्था द्वारा जातिवादी कट्टरता बढ़ाओल जा रहल अछि, कारण ई सभ पॉकेट संस्था अछि।

विदेहक विशेषांक अभिनन्दन ग्रन्थ नै होइ छै। मिथिला स्टूडेण्ट यूनियनक विशेषांकमे बहुतो आलेखमे ओकरापर बहुत रास आक्षेप सेहो लागल छै। भऽ सकैए ई संस्था (एम. एस. यू.) आलोचनाक आलोकमे किछु सुधार करत, कारण ओ पॉकेट संस्था नै वरन् संस्था अछि आ तइमे कोनो संदेह नै।

भाषा-प्रौद्योगिकी आ आधुनिक संचार

५४. भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रकाशन

सारांश

गूगल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतए लेखन, संदेश आ टिप्पणीक लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतए जालोद्वहन मँगनीमे देल जा रहल अछि। ई सभ जालवृत्त निर्माण स्थल उपभोक्ता केन्द्रित अछि आ एतए सरल लेखन-पद्धतिक व्यवस्था सेहो कएल गेल अछि। मुदा जे अहाँ संविहित पृच्छन भाषा (एस. क्यू. एल.) आधारित जालस्थलक निर्माण आ प्रबन्धन करए चाहैत छी तँ ओहि लेल ई निबन्ध अहाँक लेल उपयोगी रहत।

बीजशब्द: भाषा · प्रौद्योगिकी · संगणक · छायांकन · कुँजी · पटल · टंकणक · तकनीक

सारांश · Abstract

ई अध्याय "भाषा आ प्रौद्योगिकी (संगणक, छायांकन, कुँजी पटल/टंकणक तकनीक), अन्तर्जालपर मैथिली आ विश्वव्यापी अन्तर्जालपर लेखन आ ई-प्रक..." विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे भाषा; प्रौद्योगिकी; संगणक; छायांकन; कुँजी प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

गूगल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतए लेखन, संदेश आ टिप्पणीक लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतए जालोद्वहन मँगनीमे देल जा रहल अछि। ई सभ जालवृत्त निर्माण स्थल उपभोक्ता केन्द्रित अछि आ एतए सरल लेखन-पद्धतिक व्यवस्था सेहो कएल गेल अछि। मुदा जे अहाँ संविहित पृच्छन भाषा (एस. क्यू. एल.) आधारित जालस्थलक निर्माण आ प्रबन्धन करए चाहैत छी तँ ओहि लेल ई निबन्ध अहाँक लेल उपयोगी रहत। पहिने मिथिलाक्षर आ देवनागरीक यूनीकोडमे लिखल जएबाक प्रक्रम दए रहल छी आ से अन्तर्जालपर पढ़ल जा सकबा योग्य कोना होएत तकरो चरचा होएत। तकर बाद जालस्थल निर्माण पद्धतिपर विस्तृत चरचा होएत।

देवनागरी लिपिकेँ रोमन टाइपराइटरपर कोन टाइप करी-

पहिने www.bhashaindia.com पर जा कए हिन्दी IME V.५ अवारोपित (डाउनलोड) करू। एहि विधि (प्रोग्राम) केँ अपना संगणक (कंप्युटर) पर प्रतिष्ठापित (इंस्टॉल) करू। फेर नियन्त्रण पटल (कंट्रोल पैनल) मे क्षेत्रीय आ भाषा (रेजनल आ लंग्वेज) पर जा कए लंग्वेज प्लावक (टैब) केँ दबाऊ। देखू जे कॉम्प्लेक्स स्क्रिप्ट/ राइट टू लेफ्ट लैंगुएज पर सही केर निशान लागल छै आकि नहि। नहि छै तँ करू आ संगणक (कंप्युटर) ताहि लेल जे जे कहैत अछि से करू। एकरा बाद लंग्वेज प्लावक (टैबकेँ) आ डिटेल्स केँ दबाऊ। फेर ओतए ऐड क्लिक करू आ ओतए लंग्वेज मे हिन्दी आ कीबोर्ड मे HINDI INDIC IME १ [V.५.१] सेलेक्ट कए अप्लाइ दबाऊ। कंप्युटरकेँ रीस्टार्ट करू। आब वर्ड डोक्युमेंट खोलू। वाम Alt+Shift केँ सम्मिलित दबेला उत्तर H कुँजीपटल (कीबोर्ड) आओत नहि तँ नीचाँ लंग्वेजक्रँ क्लिक करू आ हिन्दी चुनि लिअ। कुँजीपटलमे हिन्दी transliteration आ आन तरहक विकल्प जेना रेमिंगटन/ इन्सक्रिप्ट कुँजीपटल आदि सेहो उपलब्ध अछि। चुनि कए टाइप शुरू करू।

आब transliteration कुँजीपटलपर राम टाइप करबा लए raama टाइप करए पड़त। क् (हलन्त सहित) टाइप करबाक हेतु k दबाऊ आ माउसक लेफ्ट बटन क्लिक करू अन्यथा स्पेस पिञ्जक आकि एंटर पिञ्जक दबेला पर हलंत उड़ि जएत।

विकीपीडिया पर मैथिली पर लेख तँ छल मुदा मैथिलीमे लेख नहि छल, कारण मैथिलीक विकीपीडियाक स्वीकृति नहि भेटल छल। हम बहुत दिनसँ एहिमे लागल रही आ २७.१०.२००८ केँ मैथिली भाषामे विकी शुरू करबाक हेतु स्वीकृति भेटल छै। एतए संगणक शब्द सभक स्थानीयकरणमे बहुत रास अंग्रेजी शब्दक अनुवाद हम कएने रही आ ताहिसँ एहि कार्यमे रुचि बढ़ल आ मदति सेहो भेटल।

देवनागरीमे टाइप करबाक हेतु एकटा आर तन्त्रांश साधन (सॉफ्टवेअर टूल) उपलब्ध अछि जे http: //www.baraha.com/BarahaIME.htm लिंक पर उपलब्ध अछि। एकर विशेषता अछि एकर संस्कृत कुञ्जी फलक, जे आन

कोनो तन्त्रांशमे उपलब्ध नहि अछि। एहिमे उदात्त, अनुदात्त, स्वरित आ किछु आन संस्कृत अक्षर उपलब्ध अछि मुदा एतहु स्वास्तिक, ग्वाङ, अञ्जी इत्यादि उपलब्ध नहि अछि। सं, सु, सं, सऽ कैं स लिखलाक बाद सिफ्ट ३, २, ४ आ ७ दबेलासँ लिखि सकैत छी।

तिरहुता लिपि लिखबाक हेतु एहि लिंक पर जाऊ।

http: //www.tirhutalipi.4t.com/

मुदा एकरा हेतु एहि लिंक पर जे प्रीति फॉन्ट छै तकरा सेहो अवारोपित कए प्रतिकृति करू आ दुनू कैं ध्रुववृत्त चालक (हार्डडिस्क ड्राइव) C/windows/fonts मे लेपन करू। एहिमे जे फॉन्ट अछि से Ascii मे अछि। कृतदेव, शुशा ई सभ फॉण्ट सेहो एहि तरहक अछि, पहिने उपयोगी छल मुदा आब सर्च इंजिनमे यूनिकोड-यू. टी. एफ. ८ केर सर्च होइत छै आ Ascii मे लिखल देवनागरीक सर्च नहि भए पबैत अछि। विन्डोजमे मंगल वर्णमुख (फॉन्ट) अबैत छै से यूनीकोडमे छै आ एहिमे लिखल देवनागरी सर्च भए जाइत अछि। मिथिलाक्षरक यूनीकोड रूपक आवेदन (अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल) लंबित अछि जाहिमे बर्कले विश्वविद्यालयक प्रोफेसर डेबोराह एन्डरसन, Project Leader, Script Encoding Initiative, Dept. of Linguistics, UC Berkeley क आग्रहपर हमहुँ योगदान देने रही।

आब किछु बात यूनीकोड आ जालस्थल (वेबसाइट) केर संबंधमे।

कोनो फाइलकेँ पढ़बाक हेतु कंप्युटरमे आवश्यक फॉंट होएब जरूरी अछि, नहि तँ सभसँ सरल उपाय अछि, शब्द-संसाधकमे बनल लेख (वर्ड डोक्युमेंट) कैं पी. डी. एफ. फाइलमे परिवर्त्तित करब। एहिमे नफा नुकसान दुनू अछि। नफा जे बिना कोनो फांटक झंझटिक पी. डी. एफ. फाइल जाइ काँटा/ वर्णमुख/ लिपिमे लिखल गेल अछि, ताहिमे पढ़ल जा सकैत अछि। एकर नुकसान जे जखने फाइलमे जा कए सेव एज टेक्स्ट करब तँ अंग्रेजी तँ सेव भए जएत मुदा देवनागरी तेहन सेव होएत जे पढ़ि नहि सकी। दोसर यूनीकोडक मंगलमे टाइप कएल लेखकेँ एडोब अक्रोबेटसँ पी. डी. एफ. मे परिवर्त्तित करबामे दिक्कत होअए- एहि फाइलमे कखनो काल घ हलन्त आ ज कखनो काल चतुर्भुज रूपमे नञि पढ़बा योग्य अबैत अछि- तँ संपूर्ण फाइलकेँ खोलि कए सभटा चयन करू, यूनीवर्सल यूनीकोड एम. एस. फांट ड्रॉप डाउन मेनूसँ सेलेक्ट करू, फेर प्रिंटमे जा कए प्रिंटर (मुद्रक) एडोब एक्रोबेट सेलेक्ट करु। आब ई फाइल परिवर्त्तित भए जएत पी. डी. एफ. मे।

माइक्रोसॉफ्ट वर्डसँ pdf मे परिवर्त्तनक सोझ तरीका अछि- कर्सरसँ फाइल, प्रिंटमे जाऊ, आ फेर प्रिंटरमे एक्रोबेट डिस्टीलर सेलेक्ट कए प्रिंट कमांड दए दिअ। मुदा एहिमे कखनो काल pdf डॉक्युमेंट नहि बनैत छै। तखन प्रिंटर एक्रोबेट डिस्टीलर सेलेक्ट कए प्रोपर्टीज मे जाऊ। ओतए अडोब pdf सेटिंग सेलेक्ट करू। ओतए ऑपशन डू नॉट सेंड फॉन्ट्स टू डिस्टिलर मे टिक लगाएल होएत। ओकरा अनचेक करू। आ से कए बाहर आऊ आ प्रिंट कमांड दिअ। आब pdf डॉक्युमेन्ट बनि जएत। पी. डी. एफ. स्प्लिटर आ मर्जर सॉफ्टवेयर (जेना फ्रीवेयर सॉफ्टवेयर पी. डी. एफ. हेल्पर/ सैम) केर मदतिसँ आसानीसँ पी. डी. एफ. फाइल जोड़ि आ तोड़ि सकैत छी।

आब वेबसाइट बनेबाक पूर्व किछु मुख्य बातकेँ देखि लिअ। पाँच तरहक अन्तरजाल गवेषक (इंटरनेट ब्राउजर) अछि, शेष सभटा एकरा सभकेँ आधार बना कए रचित अछि। तखन सभसँ पहिने ई सभटा अपना कंप्युटरमे प्रतिष्ठापित (इंस्टॉल) करू-

१. ओपेरा, २. मोजिल्ला, ३. माइक्रोसॉफ्टक इंटरनेट एक्सप्लोरर (ई तँ होएबे करत), ४. गूगल क्रोम आ ५. एपलक (अखन धरि ई मेकिनटोसक लेल छल आब विन्डो लेल सेहो अछि) सफारी। आब जखन जाल पृष्ठ (वेब पेज) उपारोपित (अपलोड) करब वा पहिनहुँ तँ एहि सभपर खोलि कए अवश्य देखि लिअ।

देवनागरी लिखबामे बराह आइ. एम. ई. केर योगदान विशिष्ट अछि। एहिमे संस्कृतक उदात्त, अनुदात्त आ स्वरित केर संगे बिकारी, देवनागरी अंक आ किछु संगीतक स्वरलिपि लिखबाक सुविधा अछि। मंद्र सप्तक, तीव्र आ कोमल स्वरक नोटेशन एहिमे अछि। ऋ, ॠ आ ऌ, ॡ आ ऍ, ऐ अ, ~ हलन्तक बाद जोड़क सुविधा एहिमे छै। अनुदात्त क॒ उदात्त क॑ आ स्वरित क॑ सेहो उपलब्ध अछि। ई विस्टामे सेहो कार्य करैत अछि। आ यूनीकोड फान्टमे रहबाक कारण इंटरनेट पर पठनीय अछि।

अ सँ ह धरि वर्णमाला अछि। क्ष, त्र, ज्ञ ओना तँ संयुक्त अक्षर अछि मुदा बच्चेसँ हमरा सभ अ सँ ज्ञ तक वर्णमालाक रूपमे पढ़ने छी। श्र सेहो क्ष, त्र, ज्ञ जेकाँ संयुक्त अक्षर अछि। ज्ञ केर उच्चारण ताहि द्वारे हमरा सभ ग आ य केर मिश्रण द्वारा करैत छी, से धरि गलत अछि। ई अछि ज आ ञ केर संयुक्त। ऋ केर उच्चारण हमर सभ करैत छी, री। ऌ केर उच्चारण करैत छी, ल, र आ ई केर संयुक्त। मुदा ऋ आ ऌ स्वयं स्वर अछि, संयुक्ताक्षर नहि। विदेहक आर्काइवमे शुद्ध उच्चारणक आवश्यकताकेँ देखि कए अ सँ ज्ञ तक सभ

वर्णक उच्चारण देल गेल अछि। भारतीय अंकक अंतर्राष्ट्रीय रूपक प्रयोगक देवनागरीमे चलन भऽ गेल अछि। भारतीय संविधानक अनुच्छेद ३४३ (१) कहैत अछि जे संघक राजकीय प्रयोजनक हेतु प्रयुक्त होमए बला अंकक रूप, भारतीय अंकक अंतर्राष्ट्रीय रूप होएत। मुदा राष्ट्रपति अंकक देवनागरी रूपकेँ सेहो प्राधिकृत कऽ सकैत छथि।

http: //www.bhashaindia.com पर tbil converter सॉफ्टवेयर डाउनलोड करू। मंगल फॉन्टमे आन फॉन्टसँ परिवर्त्तन करबाक अछि तँ डॉक्युमेन्ट.doc चयन करू इनपुट भाषामे हिन्दी आ ascii फॉन्टमे सम्बन्धित फॉन्ट चयन करू। आउटपुटमे भाषा हिन्दी आ फॉन्ट Unicode mangal चयन करू। आब ब्राउज कऽ कए फाइल सेलेक्ट करू। अहाँक कम्प्युटर मे ऑफिस २००७ अछि आ वर्ड डॉक्युमेन्ट.docx एक्सटेंशन अछि, तखन एक्सटेंशनकेँ रिनेम करू.doc। आब ब्राउजमे डॉक्युमेन्ट आबि जएत। अहाँक कम्प्युटर मे ऑफिस २००७ नहि अछि तखन रिनेम केलासँ कोनो फाएदा नहि। आब कंवर्ट क्लिक करू। नूतन फाइल Unicode Mangal फॉन्टमे बनि जएत। अहाँक शब्द संसाधक सञ्चिका (वर्ड डॉक्युमेन्ट फाइल) मे यूनीकोड आ ascii वर्णमुख (फॉन्ट) मिलल अछि, तखन अंदाजीसँ ascii वा बेशी प्रयुक्त होएबला ascii केर चयन करू। कंवर्ट क्लिक करू कन्वर्ट भऽ जएत यूनीकोड मंगल वर्णमुखमे।

जालस्थल निर्माण

पहिने कोनो ऑनलाइन प्रतिष्ठित संस्थासँ प्रदेश नाम (डोमेन नेम) कीनू। उदाहरणस्वरूप रिडिफ डॉट कॉम पर जाऊ आ रिडिफ होस्टिंगपर क्लिक करू। ओतए बुक यूअर डोमेन पर जा कए इच्छित नाम टिक कए देखू जे ओ उपलब्ध अछि आकि नहि। अहाँ अपन जालस्थलक हेतु उपयुक्त डोमेन नेम क्रेडिट कार्डसँ ऑनलाइन कीनि सकैत छी। ई सस्ता छै, दस डॉलर प्रतिवर्ष एकर अधिकतम मूल्य छै। तकरा बाद जालोद्वहन सेवा (वेब होस्टिंग सर्विस) केर लिंकपर जाऊ। ५ वा दस साल लेल १०० एम. बी. स्थानक संग जालोद्वहन सेवा लिअ आ एकरा संग माय एस. क्यू. एल. सेवा मुफ्त छै मुदा ओहिमे लाइनेक्सपर काज करए पड़त जे कनेक कठिनाह/ तकनीकी भए सकैत अछि, से माइक्रोसॉफ्ट एस. क्यू. एल. सेवा किछु आर पाइ लगा कए अहाँ कीनि सकैत छी। आब अहाँ लग २० एम. बी. केर एस. क्यू. एल. दत्तनिधि (डाटाबेस) आ ८० एम. बी. केर साइट लेल जगह बाँचत (माने पूरा १०० एम. बी.) आ से पर्याप्त अछि। आर स्पेसक जोगार मँगनीमे भए जएत, तकर चरचा आगाँ होएत। माइक्रोसॉफ्ट एस. क्यू. एल. सेवा लेबाक उपरान्त अहाँ अपन माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल सञ्चिका ओतए चढ़ा सकैत छी आ तकर उपयोग अपन जालस्थलपर एकटा मध्यस्थ (इन्टरफेस) बना कए अहाँ कए सकैत छी।

आब जालस्थल (वेबसाइट) बनेबाक विधिपर विचार करी।

माइक्रोसॉफ्ट फ्रन्टपेज ऑफिस एक्स. पी. क संग अबैत अछि। ऑफिस २००३ मे सेहो ई अलग सँ उपलब्ध अछि।

फ्रन्टपेजमे बनल-बनाओल वेबसाइट विजार्ड चलाऊ। मोटा-मोटी पाँच पृष्ठक जाल-स्थल बनि जएत। एहिमे वाम कात राइट क्लिक कए पृष्ठक संख्या बढ़ा सकैत छी। ऊपरमे स्थित थीमसँ अपन इच्छा मोताबिक बनल-बनाओल डिजाइन सेहो लए सकैत छी। साइटक कोनो पृष्ठकेँ अहाँ फोटो एलीमेन्ट द्वारा फोटो गैलरीमे परिवर्तित कए सकैत छी आ ३-४-५-६ स्तम्भमे फोटो सभ सजा सकैत छी। ओहि पृष्ठपर डबल क्लिक कए अपन संगणकसँ फोटोकेँ आनू आ यूनीकोड टाइपराइटर द्वारा वर्णन टंकित करू। पृष्ठ सुरक्षित करबा काल चित्रक गुणवत्ता जे. पी. जी. फोटोमे १ सँ १०० धरि चुनबाक विकल्प छै। जतेक पैघ फाइल चुनब ततेक बेशी जगह छेकत। वाम कात आ नीचाँमे लिंक लेल चिल्ड्रेन सेटिंग विकल्प चयन कएला उत्तर जालस्थलक सभ पृष्ठक सूचना ओतए आबि जएत। बेशी पृष्ठ भेला उत्तर कोनो पृष्ठक भीतर पृष्ठ सभक श्रृंखला दए सकैत छी। आब अहाँक संगणकमे अहाँक जालस्थल माय डोक्युमेन्ट्स/ माय वेबमे सुरक्षित अछि।

अपन वेबसाइटक वास्तविक स्वरूप प्रीव्यू विकल्प द्वारा ऊपर वर्णित ५ प्रकारक गवेषकमे देखू। किछु आवश्यक परिवर्तन फ्रन्टपेजपर कएला उत्तर एहि साइटकेँ अपन सर्वरपर उपारोपित कए दियौक। एहि लेल फाइलजिला डॉट कॉम पर जाऊ जे मुफ्त तंत्रांश उपलब्ध करबैत अछि। एतए क्लाइन्ट आ सर्वर मे सँ क्लाइन्ट विकल्प चुनू आ तंत्रांश अपन कम्प्यूटरमे प्रतिष्ठापित करू। एकरा बाद यूजर नेम आ पासवर्ड दिअ आ एफ. टी. पी. डॉट डोमेन नेम पर पूर्ण जालस्थल वितरक (सर्वर) केर मूल फोल्डरमे उपारोपित कए दिअ। अहाँक जालस्थल अन्तर्जालपर नियत जालस्थल पतापर देखाइ पड़ए लागत।

अपन दत्तसंग्रह कोनो तन्त्रांश जेना ई. एम. एस. एस. क्यू. एल. मैनेजर केर माध्यमसँ अपन वितरकपर चढ़ाऊ आ एहि लेल अपन सेवा प्रदातासँ दूरभाषपर गप कए किछु विशेष जानकारी लिअ। सभटा सामग्री चढ़ि गेलाक बाद, अपन जालस्थलक पृष्ठपर बनाओल मध्यस्थ पृष्ठपर एच. टी. एम. एल. कोडमे यूजर नेम आ पासवर्ड देनाइ नहि बिसरू।

कोनो पृष्ठपर संगीत अनबाक लेल कम्प्यूटरसँ ओहि पृष्ठपर संगीतक सञ्चिका आयात करू, मुदा आइ काल्हि मात्र ओपेरा आ इन्टरनेट एक्सप्लोररपर (फ्रन्टपेजसँ बनल जालस्थलमे) संगीत बजैत अछि।

आब किछु गप पृष्ठ शैली (स्टाइल शीट) पर।

अहाँ सम्पूर्ण जालस्थलक डिजाइन जे एक्के रंगक राखए चाही तँ एहि लेल सभ पृष्ठमे एकर विधिलेख. css डिजाइन बनाकए दए दियौक आ एकटा फोल्डरमे डिजाइन राखि दियौक। एहिमे पृष्ठभूमिमे बाजए बला संगीत सेहो रहि सकैत अछि। एहिसँ ई फाएदा अछि जे सभ पृष्ठ खुजबा काल फेरसँ तागति नहि लगबए पड़त मात्र एक बेर डिजाइन आ संगीत खुजबामे जे समय लागत सएह टा। दोसर पृष्ठपर जे लिखित अंश वा फोटो आदि रहत ताहिमे जतेक देरी लागत सएह अतिरिक्त समय मात्र लागत। माने अहाँक जालस्थल हल्लुक भए जएत आ जल्दीसँ खुजत।

आब आर. एस. एस. फीडक विषयमे जानकारी ली।

जालस्थल तँ बनि गेल आब एकर प्रचार प्रसार सेहो होएबाक चाही। आर. एस. एस. फीड अछि रिअल सिम्पल सिन्डिकेशन फीड केर संक्षिप्त रूप। एकटा वा कैक टा. xml फाइल बना कए अहाँ अपन वितरकपर चढ़ा दियौक। तकर बाद ई एक तरहेँ जालस्थलक नक्शा बना दैत अछि आ जखने एहिमे कोनो परिवर्तन अबैत छै तँ फीड-रीडर/ एग्रीगेटरकेँ जालस्थलपर नव सामग्री अएबाक सूचना भेटि जाइत छै। एहिमेमे मुख्य घटनाक/ लेखादिक सारांश रहैत छै जे लिंकसँ जुड़ल रहैत अछि। ओहि लिंककेँ क्लिक केला उत्तर अहाँ विस्तृत जानकारी प्राप्त कए सकैत छी।. xml युक्त पृष्ठकेँ जालवृत्त (ब्लॉग) पर ऐड गाडजेट/ फीड/ मे पता रूपमे लिखि कए ५ सँ २० धरि नूतन सामग्रीक (क्रमशः गूगल आ वर्डप्रेस ब्लॉगमे) अद्यतन जानकारी लेल जालवृत्त (ब्लॉग) पर राखल जा सकैत अछि। एकर आर उपयोग छै जेना फीडबर्नर केर माध्यमसँ ई-पत्र द्वारा सदस्यकेँ सूचना देब, हेडलाइन एनीमेटर जालस्थल/ जालवृत्तपर लगाएब/ ई-पत्र द्वारा इच्छित सामग्रीक लिंक संगीकेँ पठाएब आ गवेषक वा फीड/ न्यूज रीडरक माध्यमसँ पढ़ब।

तकर बाद अपन जालस्थकेँ गूगल, याहूसर्च, लाइव सर्च आ आस्क डॉट कॉमपर सबमिट युअर साइट केर अन्तर्गत दए दियौक जाहिसँ ई सभ अन्वेषण यन्त्र अहाँक साइटकेँ ताकि सकए।. xml फाइलबला विश्वव्यापी अन्तर्जाल पता/ संकेत तकबामे एहि यन्त्र सभकेँ आर सुविधा होएतैक, से अहाँक साइटक मुफत प्रचार होएत।. xml फाइल. htm केर स्थान लेत से नहि छै, मुदा एहिसँ फीड एग्रीगेटर/ अन्वेषण यन्त्र सभकेँ जालस्थलपर नव सामग्री तकबामे सुविधा होइत छै। जखन अहाँक जालस्थलमे परिवर्तन आबए तँ अपन मूल. xml फाइलकेँ परिवर्तित कए वितरकपर चढ़ाऊ, शेष कार्य फीड एग्रीगेटर/ अन्वेषण यन्त्र स्वयं कए लेत। अहाँक अन्तर्जाल गवेषक सेहो साइटमे फीड रहला उत्तर विकल्प चुनलाक बाद जालस्थलक पृष्ठकेँ रिफ्रेश कए लैत अछि, कारण कखनो काल कऽ टेम्परोरी फाइल संगणकमे रहने पुरनके सामग्री इन्टरनेटपर देखाओल जाइत रहैत अछि। मुदा एहि लेल सभ पृष्ठमे एकटा कूट-संकेत देमए पड़त।

आब किछु चरचा ४०४ एरर पृष्ठक। अहाँक जालस्थपर कोनो फोटो/ लिंक जे पहिने छल मुदा आब नहि अछि केँ टाइप कएला उत्तर ४०४ एरर संकेत अन्तर्जाल गवेषक दैत अछि। अपन सेवा प्रदातासँ कन्फ्युगरेशन सम्बन्धी जानकारी लऽ कए अपन जालस्थलक स्टाइल सीटक हिसाबसँ एरर पृष्ठ बनाऊ, जतए किछु व्यक्तिगत संदेश जेना- अहाँ द्वारा ताकल सामग्री आब उपलब्ध नहि अछि- केर संग जालस्थलक दोसर लिंक सभ राखू। मुदा एकर ध्यान राखू जे एहि पृष्ठपर एहन कूटसंकेत रहए जाहिसँ अन्वेषण यन्त्र ओकरा सर्च नहि करए।

अपन जालस्थलपर girgit. chitthajagat. in वा google translate गाडजेट राखि सकैत छी जाहिसँ मैथिलीक सामग्री दोसर लिपि/भाषा सभमे एक क्लिकमे परिवर्तित भए जाए।

साइटक प्रचार अपन ब्लॉग/ ग्रुप बना कए आ ऑनलाइन कमेन्ट सबमिशन लेल सेवा प्रदातासँ डॉट नेट सुविधा लिअ-जाहिसँ वितरक अहाँक ई-पत्र संकेतपर पाठकक कमेन्ट प्रेषित कए सकए। आ एहिसँ फीड एग्रीगेटरमे अपन फीड पंजीकृत कराए पाठकक संख्या बढ़ाओल जा सकैत अछि। कमेन्ट सबमिशन टाइपपैड डॉट कॉम (पेड ब्लॉगर सेवा प्रदाता) सँ सेहो प्राप्त कएल जा सकैत अछि, ई ब्लॉग लेल तँ पाइ लैत अछि मुदा प्रोफाइल बनबए लेल नहि आ ओहि संगे ब्लॉग आ साइट लेल कमेंट फॉर्मक कोड आ सुविधा दुनू

उपलब्ध करबैत अछि, एहिमे अहाँ जालस्थलपर कमेंटक एक पृष्ठपर संख्या, कमेंटपर परस्पर वार्तालाप, आ कमेंट मॉडेरेशन विकल्प चुनि सकैत छी।

अपन जालस्थलक आर्काइव लेल गूगल साइट आ वर्डप्रेस १० आ ३ जी. बी. क्रमशः स्थान मुफ्त दैत अछि। फाइल ओतए अपलोड करू मुदा अपन साइटपर ओकर लिंक दए दियौक। एहिसँ अहाँ अपन बजट ठीक कए सकैत छी।

ब्लॉगक यू. आर. एल. यदि नीक नहि लागए तँ मोनमाफिक यू. आर. एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर उपलब्ध अछि, मुदा ब्लॉगक सुविधाक अतिरिक्त कोनो आर सुविधा एहिसँ नहि भेटत। मुदा जे अहाँक बजट बहुत कम अछि तँ एकर उपयोग करू।

अहाँ लग जे पूर्ण साइट अछि तँ ओकर एकटा पृष्ठ पर एफ. टी. पी. अपलोडसँ डिसकसन फोरम आदि अपन साइटक ऊपर राखि सकैत छी आ ब्लॉगकेँ अपन साइटमे सम्मिलित कए सकैत छी। ब्लॉगरक भीतर प्रकाशनक अन्तर्गत यू. आर. एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर आ एफ. टी. पी. अपलोड ई दुनू सुविधा उपलब्ध छै।

आब चरचा फेव आइकनक। अपन लोगो ब्राउजरक पताक संग देबाक लेल. ico प्रारूपमे लोगोक चित्र बनाऊ आ अपलोड करू, संगमे स्टाइलसीटपर एकर विवरण दए दियौक। ब्लॉगरक भीतर प्रकाशनक अन्तर्गत यू. आर. एल. सुविधा १० डॉलर सालानापर गूगलसं लेब, तँ ओहिमे फेव आइकॉन गूगल बला देखाइ पड़त, मुदा वर्डप्रेसमे अपन फेव आइकॉन ब्लॉग आ कस्टमाइज्ड डोमेननेम-ब्लॉग दुनू पर दए सकैत छी।

अपन ई-पत्रमे सिगनेचर, माय स्पेस, फेसबुक, ओरकुट, ट्विटर, यू ट्यूब, पिकासा, याहूग्रुप आ गूगलग्रुप केर माध्यमसँ, आर. एस. एस. फीड आ हेडलाइन एनीमेटर जे ई-पत्र सिगनेचरमे सेहो राखल जा सकैत अछि केर माध्यमसँ सेहो एकर प्रचार कए सकैत छी।

गूगल एनेलेटिक्स आ वेबमास्टर टूलक सेहो उपयोग करू। एनेलेटिक्सक ट्रैकर कोड सभ पृष्ठपर दिअ जाहिसँ प्रतिदिन कतएसँ के आ कोना अहाँक जालस्थलपर अएलाह, तकर जानकारी भेटि सकत आ वेबमास्टर टूलसँ जालस्थल वेरीफाइ करू आ. xml फाइल सबमिट करू।

यदि कोनो पृष्ठपर कोनो फोटो/ लिंककेँ दोसर टैब/ गवेषकमे खोलए चाही तँ टारगेट फ्रेम/ न्यू विन्डो-ब्लैंक चुनू।

पी. डी. एफ. सँ सेव एज टेक्स्ट केलापर देवनागरी रूप यूनीकोडमे आ कखनो काल आनोमे नहि सेव होइत छै। यूनीनागरीमे पी. डी. एफ. सँ कॉपी कए पेस्ट केलासँ देवनागरी रूप आबि जाइत छै, आस्की कन्वर्टरक सहायतासँ पी. डी. एफसँ यूनीकोडमे सेहो बदलैत छै, मुदा प्रारूपण खतम भए जाइत छै।

फन्ट कन्वर्टरमे SIL कन्वर्टर एहन टूल अछि जाहिमे प्रारूपण खतम नहि होइत अछि आ ई अछियो फ्री तन्त्रांश।

सी-डैक पुणेक अओजार आ फान्ट सेहो छै मुदा ओहिसँ विशेष लाभ परिलक्षित नहि भए रहल अछि, उनटे बहुत रास दिक्कत जेना “द् ध” आ “ग् र” क्रमशः द्ध आ ग्र केर बदलामे देखबामे आओत।

विदेह ई-पत्रिका http: //www.videha.co.in/ पर ऑनलाइन यूनीकोड टाइपराइटर उपलब्ध अछि। विशेष दिक्कत भेलापर/ वा एकर ऑफलाइन रूप हमरासँ ggajendra@videha.com पर ई-मेल कए मँगबा सकैत छी/ दोसर जानकारी पूछि सकैत छी।

५५. अन्तर्जाल आ मैथिली

सारांश

इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य एकटा फॉरमक स्थापना होएबाक चाही जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होअए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होअए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होअए आ जाहिसँ वितरणक समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक हेतु, पुरान पाठक आ लेखकक संग, फॉरम प्रदान कएनाइ सेहो एकर उद्देश्य होएबाक चाही।

बीजशब्द: अन्तर्जाल · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “अन्तर्जाल आ मैथिली” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे अन्तर्जाल; मैथिली; सकैत; पाठक; कोनो प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

पूर्व पीठिका:

इंटरनेट पर ई-प्रकाशित करबाक उद्देश्य एकटा फॉरमक स्थापना होएबाक चाही जाहिमे लेखक आ पाठकक बीच एकटा एहन माध्यम होअए जे कतहुसँ चौबीसो घंटा आ सातो दिन उपलब्ध होअए। जाहिमे प्रकाशनक नियमितता होअए आ जाहिसँ वितरणक समस्या आ भौगोलिक दूरीक अंत भऽ जाय। फेर सूचना-प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे क्रांतिक फलस्वरूप एकटा नव पाठक आ लेखक वर्गक हेतु, पुरान पाठक आ लेखकक संग, फॉरम प्रदान कएनाइ सेहो एकर उद्देश्य होएबाक चाही। इंटरनेटपर मैथिलीक प्रारम्भ हम कएने रही 2000 ई. मे याहू जियोसिटीजपर 2000-2001 मे मुदा ओ सभ साइट याहू द्वारा सेवा समाप्तिक बाद डिलीट भऽ गेल। ५ जुलाई २००४ कैँ बनाओल “भालसरिक गाछ” जे http: //www.videha.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html पर एखनो उपलब्ध अछि, मैथिलीक इंटरनेटपर प्रथम उपस्थितिक रूपमे अखनो विद्यमान अछि। शुरूमे आस्की फॉण्ट क्रुतदेव, शुशा ई सभ फॉण्ट साइट लेल प्रयुक्त होइत छल, पहिने ई उपयोगी छल मुदा आब सर्च इंजिनमे यूनिकोड-यू.टी.एफ.८ केर सर्च होइत छै आ आस्की मे लिखल देवनागरीक सर्च नहि भए पबैत अछि। विन्डोजमे मंगल वर्णमुख (फॉन्ट) अबैत छै से यूनीकोडमे छै आ एहिमे लिखल देवनागरी सर्च भए जाइत अछि। मिथिलाक्षरक यूनीकोड रूपक आवेदन (अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल गेल) लंबित अछि जाहिमे बर्कले विश्वविद्यालयक प्रोफेसर डेबोराह एन्डरसन, Project Leader, Script Encoding Initiative, Dept. of Linguistics, UC Berkeley क आग्रहपर हमहुँ योगदान देने रही। पाठक आ लेखक दुनू कम रहथि, मुदा जेना जेना यूनीकोड आधारित अन्वेषण यंत्र गूगल, लाइव आ आस्क डॉट काम द्वारा विकसित भेल तेना तेना अन्तर्जालपर मैथिली पाठक आ लेखकमे वृद्धि होइत गेल|

मैथिली आ अंतर्जाल:

एतय साहित्य, समाचार, मैथिली ऑडियो, मैथिली वीडियो, मिथिला चित्रकला, इलेक्ट्रोनिक मैथिली पोथी सभ किछु अछि।

मैथिलीमे जालस्थल निर्माण:

पहिने कोनो ऑनलाइन प्रतिष्ठित संस्थासँ प्रदेश नाम (डोमेन नेम) कीनू। उदाहरणस्वरूप रिडिफ डॉट कॉम पर जाऊ आ रिडिफ होस्टिंगपर क्लिक करू। ओतए बुक यूअर डोमेन पर जा कए इच्छित नाम टिक कए देखू जे ओ उपलब्ध अछि आकि नहि। अहाँ अपन जालस्थलक हेतु उपयुक्त डोमेन नेम क्रेडिट कार्डसँ ऑनलाइन कीनि सकैत छी। ई सस्ता छै, दस डॉलर प्रतिवर्ष एकर अधिकतम मूल्य छै। तकरा बाद जालोद्वहन सेवा (वेब होस्टिंग सर्विस) क लिंकपर जाऊ। ५ वा दस साल लेल १०० एम. बी. स्थानक संग जालोद्वहन सेवा लिअ आ एकरा संग माय एस. क्यू. एल. सेवा मुफ्त छै मुदा ओहिमे लाइनेक्सपर काज करए पड़त जे कनेक कठिनाह/ तकनीकी भए सकैत अछि, से माइक्रोसॉफ्ट एस. क्यू. एल. सेवा किछु आर पाइ लगा कए अहाँ कीनि सकैत छी। आब अहाँ लग २० एम. बी. केर एस. क्यू. एल. दत्तनिधि (डाटाबेस) आ ८० एम. बी. केर साइट लेल जगह बाँचत (माने पूरा १०० एम. बी.) आ से पर्याप्त अछि। माइक्रोसॉफ्ट एस. क्यू. एल. सेवा लेबाक उपरान्त अहाँ अपन माइक्रोसॉफ्ट एक्सेल सञ्चिका ओतए चढ़ा सकैत छी आ तकर उपयोग अपन जालस्थलपर एकटा मध्यस्थ (इन्टरफेस) बना कए अहाँ कए सकैत छी। एस. क्यू. एल. आधारित ओनलाइन

सर्चेबल डिक्शनरी सेहो अंतर्जालपर अछि (विदेह कोष)| एहि लेल अपन दत्तसंग्रह कोनो तन्त्रांश जेना ई. एम. एस. एस. क्यू. एल. मैनेजरक माध्यमसँ अपन वितरकपर चढ़ाओल जाइत अछि आ अपन जालस्थलक पृष्ठपर मध्यस्थ (इंटरफेस) देल जाइत अछि|

आब जालस्थल (वेबसाइट) बनेबाक विधिपर विचार करी। माइक्रोसॉफ्ट फ्रन्टपेज ऑफिस एक्स. पी. क संग अबैत अछि। ऑफिस २००३ मे सेहो ई अलग सँ उपलब्ध अछि। फ्रन्टपेजमे बनल-बनाओल वेबसाइट विजार्ड चलाऊ। मोटा-मोटी पाँच पृष्ठक जाल-स्थल बनि जाएत। एहिमे वाम कात राइट क्लिक कए पृष्ठक संख्या बढ़ा सकैत छी। ऊपरमे स्थित थीमसँ अपन इच्छा मोताबिक बनल-बनाओल डिजाइन सेहो लए सकैत छी। साइटक कोनो पृष्ठकेँ अहाँ फोटो एलीमेन्ट द्वारा फोटो गैलरीमे परिवर्तित कए सकैत छी आ ३-४-५-६ स्तम्भमे फोटो सभ सजा सकैत छी।

गूगल आ वर्डप्रेस द्वारा जालवृत्त खोलबाक लेल बहुत रास बनल बनाएल परिकल्पित नमूना स्थल निर्माण लेल उपलब्ध अछि आ ओतए लेखन, संदेश आ टिप्पणीक लेल असीमित दत्तांशनिधि उपलब्ध अछि, जतए जालोद्वहन मँगनीमे देल जा रहल अछि। ई सभ जालवृत्त निर्माण स्थल उपभोक्ता केन्द्रित अछि आ एतए सरल लेखन-पद्धतिक व्यवस्था सेहो कएल गेल अछि।

लाभ-हानि:

अंतर्जालपर सूचनाक त्वरित सम्प्रेषण होइत अछि मुदा एकर उपयोगसँ बेशी दुरुपयोगक संभावना रहैत अछि, ख़ास कय नाम बदलि कय विभिन्न आइ. एस. पी. सँ कमेन्ट आ ब्लैकमेल केनाइ आदि, ओकरा उघार करबाक विधि सेहो अछि मुदा से ऊर्जाक अपव्यय सेहो करबैत अछि| जतए इंटरनेटक स्पीड कम छैक वा इंटरनेट महग छैक ओतए सामग्री pdf स्वरूपमे संग्रहण कयल जा सकैत अछि, जकरा डाउनलोड कए पाठक अपन कंप्युटरमे सुरक्षित राखि सकैत छथि आ अपना सुविधानुसारे एकरा पढ़ि सकैत छथि। कोनो फाइलकेँ पढ़बाक हेतु कंप्युटरमे आवश्यक फॉंट होएब जरूरी अछि, नहि तँ सभसँ सरल उपाय अछि शब्द-संसाधकमे बनल लेख (वर्ड डोक्युमेंट) केँ पी. डी. एफ. फाइलमे परिवर्त्तित करब। एहिमे नफा नुकसान दुनू अछि। नफा जे बिना कोनो फांटक झंझटिक पी. डी. एफ. फाइल जाइ काँटा/ वर्णमुख/ लिपिमे लिखल गेल अछि, ताहिमे पढ़ल जा सकैत अछि। एकर नुकसान जे जखने फाइलमे जा कए सेव एज टेक्स्ट करब तँ अंग्रेजी तँ सेव भए जएत मुदा देवनागरी तेहन सेव होएत जे पढ़ि नहि सकी।

अंतर्जाल प्रवासी मैथिलक लेल वरदान सिद्ध भेल अछि आ एहि मैथिलमे बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत अछि|

आ एतए मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध काज होइत अछि| मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नहि भेटत| सुच्चा मैथिली पाठक, कोनो गोलौसी नइ | व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक पत्रिका नै अछि ई सभ जे स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकेँ मारि रहल अछि। ओना अन्तर्जालपर मैथिलीक किछु जालवृत्तपर सेहो जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि आ से केनिहार व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा बला सभ छथि। अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित रचनाकेँ हजारक-हजार पाठकक स्नेह आ ऑनलाइन कामेन्ट प्राप्त होइत अछि| राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वैह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नहि भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यैह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मैथिली जे सीमित प्रतियोगी (दुर्जेय!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल छल ताहिमे अंतर्जाल हस्तक्षेप कयलक अछि | विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविताक एतए अमार लागल अछि, मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सभ वस्तु एतए अछि | मात्र मैथिल ब्राह्मण नीक मैथिली लिखि सकय छथि से तथ्य जालवृत्तपर पोस्ट भेल असंपादित रचना झूठ सिद्ध करैत अछि आ से गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखककेँ मैथिल पाठक आ लेखकक सोझा प्रतिमान प्रस्तुत करैत अछि जे ओ गलत नै बाजि रहल छथि वरन मैथिली गलत लिखल जा रहल छल| आ मैथिली साहित्य एकभगाह भऽ जएबासँ बचि जाइत अछि। आ अंतर्जालसँ प्रिंटमे प्रवेश सेहो सरल अछि कारण प्रकाशककेँ बनल बनाओल सामग्री प्राप्त होइत छनि, खर्चा बचि जाइ छनि|

अन्तर्जालपर मैथिलीक भविष्यः

जहिया प्रेस आएल छल त ओकरा बुर्जुआ वर्गक होएबाक विशेषण भेटल रहय, उपन्यास सेहो प्रेस अएलापर आयल से ओहो बुर्जुआ साहित्य रहय मुदा आस्ते-आस्ते ओ धारणा खत्म भेल| अंतर्जालक साहित्य सेहो प्रिंट साहित्यक पूरक रहबे करत| जे लोक कम्प्यूटर

स्क्रीनपर नै देखताह त प्रिंट कय देखताह| आ प्रिंट ओन डीमांडक सुविधा सेहो पोथी डाट काम आ आन साइट/ प्रकाशक दय रहल छथि|

मैथिली लेल अंतर्जाल द्वारा प्रकाशनक नियमितता, वितरणक समस्याक समाप्ति, शून्य लागत आ भौगोलिक दूरीक अंत एकटा वरदान सिद्ध भेल अछि|

५६. आत्म-छवि, भाषा-प्रौद्योगिकी आ समावेशी संचार

सारांश
एकटा अपन छवि बनाउ, जकरासँ नीक लोक प्रेम करैए आ जे योग्य अछि कर्मठ अछि। मुदा जेना जेना अहाँ आगाँ बढ़ब, समय बीतत हमरा सभमेसँ बहुतक अपन मोनक छवि दूषित हेबऽ लागै छन्हि आ से होइए ओइ गप सभपर ध्यान देलासँ जे दोसर हमरा विषयमे की सोचैए वा बाजैए। मुदा ओ अपन छद्म ज्ञान वा कहियो काल नीको ज्ञान वा कहू जानकारी तँ दऽ सकै छथि मुदा की ओ हमर अपन छवि वा योग्यता हमरा दऽ सकै छथि, नै वरन् ओ बेशीकाल तकर उनटा करै छथि।

बीजशब्द: आत्म · भाषा · प्रौद्योगिकी · समावेशी · संचार · सेहो · संकेत

नूतन अंक सम्पादकीय

एकटा अपन छवि बनाउ, जकरासँ नीक लोक प्रेम करैए आ जे योग्य अछि कर्मठ अछि।

पुरस्कार लेब मूल्य लेब सफलता भेल आकि सफलता? आ सुभाष चन्द्र यादव सन सुशील सन जिनगी भरि अड़नाइ आ तकर मूल्य चुकेनाइ भेल सफलता आकि असफलता?

अन्तर्जालपर सेहो बहुत रास खरा छै, ने फेक न्यू बनाउ नहिये पसारू, अन्तर्जालक अपराधी सभसँ बचू।

अपनासँ कमजोर आ छोटकेँ डराउ नै, ओकरा प्रतारित नै करू, जे कियो अहाँ संग ई करैए तकर खिलाफ शिकाइत करू।

ओही विकासक स्वागत करू जइसँ पर्यावरण नष्ट नै होइत अछि, जतेक गाछ काटै छी तइसँ दस गुणा गाछ रोपू।

असगर काज करैमे डर लागैए, छोटोसँ छोटो काज? मुदा से सभ काल नै भेटत, सभ काल ने संगे भेटत ने समर्थने।

भूत केँ बिसरि जाउ, ई नीक हुअय तखनो, वा अधला हुअय तखनो।

हँसी-ठट्ठा लेल अपन जान गमेनाइ नीक गप नै।

खेतमे रसायनिक पदार्थ वातावरणकेँ दूषित करैत अछि। जैविक पदार्थक उपजा बिनु रसायनिक पदार्थक होइत अछि, ई बेशी स्वस्थ्यकारी आ चहटगर होइत अछि।

सामान्य जीवन जीबू जइसँ पर्यावरणकेँ नुकसान नै होइ, प्रकृतिसँ जुड़ि कऽ रहू।

एक दोसरासँ मिलि जुलि कऽ रहू, मनुक्खे टा नै, माल-जाल, चिड़ै चुनमुनी, सभसँ, प्रकृतिसँ धारसँ।

आ से जँ अछि तँ बुझू जे अहाँ समानान्तर धाराक लोक छी, अहाँक स्वागत अछि।

हमरा सभकेँ खूब पढ़बाक चाही, नव नव चीज सिखैत रहबाक चाही।

मैथिली संकेत भाषा (देवनागरी / मिथिलाक्षर / कैथी / नेवारी)

मैथिली संकेत लिपि (संकेत भाषा)

मैथिली संकेत लिपि मूक वधिर लेल सांकेतिक भाषा अछि।

अमेरिकामे American Sign Language (ASL) आ ब्रिटेनमे British Sign Language (BSL) विकसित भेल, जे विश्वक अनेक ठाम प्रयुक्त होइत अछि। ASL मुख्यतः एक हाथसँ आ BSL प्रायः दुनू हाथसँ संकेत करैत अछि।

भारत आ नेपालमे सेहो संकेत लिपिक निर्माण भेल।

भारतक संकेत भाषाकेँ Indian Sign Language (ISL) कहल जाइत अछि। Indian Sign Language Research and Training Centre (http://www.islrtc.nic.in/) एकर विकास, मानकीकरण आ प्रशिक्षणक काज करैत अछि। ISL शब्दकोश आ संकेत भाषामे किछु NCERT पोथी एहि लिंकपर उपलब्ध अछि: https://www.youtube.com/@islrtcnewdelhi4069/playlists।

कचटतप आधारित देवनागरी लिपिमे रमेश एम. कागलकर http://rameshkagalkar.appspot.com मराठीमे आ Nepal National Federation of the Deaf & Hard of Hearing (NFDH) नेपालीमे एकरा विकसित केलन्हि। एमपावर कान्फेरेन्स

२०२१ मे अमल जूड आश्विन, सुनील कुमार कोप्पारापू आ वी. श्रीनिवास चक्रवर्ती तमिल आ आन इण्डिक लिपि लेल अपन संकल्पना प्रस्तुत केलन्हि।

मूक-वधिर स्कूल सभमे मोटा-मोटी अमेरिकन साइन लैंगुएज पढ़ायल जाइत अछि मुदा इण्डिक स्क्रिप्ट ब्रिटिश साइन लैंगुएज द्वारा बेशी नीकसँ प्रदर्शित कएल जा सकैत अछि। मैथिली (देवनागरी, मिथिलाक्षर, कैथी, नेवाड़ी- चारू कचटतप आधारित) संकेत लिपि ब्रिटिश (British Sign Language- BSL) पर आधारित अछि आ दुनू हाथसँ संकेत करैत अछि।

संकेत लिपि वीडियो

मात्र पोथीक माध्यमसँ संकेत लिपि नै सीखल जा सकैत अछि। एन. सी. ई. आर. टी. २२ भाषामे संकेत लिपिक वीडीयो जारी केने अछि, जइमे मैथिली, नेपाली, मराठी आ तमिलक लिंक नीचाँ देल गेल अछि। शेष सभटा भाषाक लिंक ऐ पोथीक अन्तमे देल गेल अछि।

मैथिली: https://youtu.be/Jo3T3E20JRM

नेपाली: https://youtu.be/9_A3EK_fV24

मराठी: https://youtu.be/93BVVsJVUks

तमिल: https://youtu.be/6ecBHlL_Hu4

ऐ वीडियो सभक विशेषता अछि:

१. ऐ सभमे ध्वनि सेहो अछि, से ई मूक-वधिरक अतिरिक्त आनो लोक आ दृष्टि बाधित लोक लेल सेहो उपयोगी अछि।

२. ध्वनिक संक वीडियोमे संकेत लिपिक प्रयोग भेल अछि।

३.वीडियोमे ट्रांस्क्रिप्ट सेहो देखाइत अछि जइमे ओइ भाषाक संग ओकर हिन्दी आ अंग्रेजी अनुवाद सेहो देल गेल अछि। ऐ लिक https://ncert.nic.in/bs-2021.php पर ऐ बाइसो भाषाक पी.डी.एफ. सेहो उपलब्ध अछि जइमे ओइ भाषाक लिपिक पाठक संगे ओइ भाषाकेँ देवनागरी आ रोमन लिपिमे सेहो लिखल गेल अछि, जे हिन्दी आ अंग्रेजी अनुवादक अतिरिक्त अछि।

संकेत लिपि कोष

संकेत लिपि कोष http://www.islrtc.nic.in/ लिंकपर उपलब्ध अछि।

RESOURCES:

Indian Sign Language Research and Training Centre आधारित ISL परियोजना: http://www.islrtc.nic.in/

ISLRTC YouTube चैनल—ISL शब्दकोश आ किछु NCERT पोथी: https://www.youtube.com/@islrtcnewdelhi4069/playlists

Ramesh M. Kagalkar: http://rameshkagalkar.appspot.com

Nepal National Federation of the Deaf & Hard of Hearing (NFDH)

Indic लिपिसभ लेल एकीकृत finger-spelling पद्धति द्वारा वाक् आ श्रवण-बाधित व्यक्तिसभक सशक्तीकरण—https://empower2021.iiitb.ac.in/paper2021/। लेखक: (1) Amal Jude Ashwin F., Bhupat & Jyoti Mehta School of Biosciences, Department of Biotechnology, IIT Madras, India; (2) Sunil Kumar Kopparapu, TCS Research, Tata Consultancy Services Limited, India; (3) V. Srinivasa Chakravarthy, Bhupat & Jyoti Mehta School of Biosciences, Department of Biotechnology, IIT Madras, India।

22 भाषामे संकेत-भाषा वीडियो: https://www.youtube.com/@videha_ejournal (साभार: Bhasha Sangam—https://ncert.nic.in/bs-2021.php)

मैथिली: https://youtu.be/Jo3T3E20JRM

नेपाली: https://youtu.be/9_A3EK_fV24

मराठी: https://youtu.be/93BVVsJVUks

कोंकणी: https://youtu.be/gTjPY_ebTfU

गुजराती: https://youtu.be/kEVuF08mYuM

संस्कृत: https://youtu.be/IU6o_oNSckQ

बाङ्ला: https://youtu.be/JTr0w8vVTtA

असमिया: https://youtu.be/MpX9d-NI7dg

ओड़िया: https://youtu.be/XROIdeGqnXk

सन्ताली: https://youtu.be/3lxtfz3_R-c

हिन्दी: https://youtu.be/2PoOrwsnY88

उर्दू: https://youtu.be/6UWTq5Z9U2c

पंजाबी: https://youtu.be/gWw4IQFCZ2w

डोगरी: https://youtu.be/DPKtPI9qJbY

कश्मीरी: https://youtu.be/vIVr4E5H-6c

बोडो: https://youtu.be/DhRLfc-uWLA

सिन्धी: https://youtu.be/SJAmLreMz4s

तमिल: https://youtu.be/6ecBHlL_Hu4

मलयालम: https://youtu.be/nW9e5eO6a_E

कन्नड़: https://youtu.be/U0SdbM9Qs1w

तेलुगु: https://youtu.be/_Gz1Sudph3Q

मणिपुरी: https://youtu.be/WBHcO-wShJk

२

𑓒

Windows / Mac OS / Linux Ubuntu-Wasta / Linux-Debian / Android / Apple iPhone-iPad / Web लेल Keyman Tirhuta / Vedic Sanskrit keyboard

𑓇 𑒠𑓂𑒨𑒾. 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑒩𑒢𑓂𑒞𑒩𑒱𑒏𑓂𑒭𑓀 𑒬𑒰𑒢𑓂𑒞𑒱𑓁

ॐ द्यौः शान्तिरन्तरिक्ष ग्वंग शान्तिः

I.

FOR WINDOWS DESKTOP

Windows लेल जाउ: https://keyman.com/windows/download.php

OR

Tirhuta keyboard खोजबाक लेल जाउ: https://keyman.com/keyboards? q=tirhuta

यदि Remington/Inscript keyboardमे सहज छी तँ “Tirhuta” keyboard एहि लिंकसँ डाउनलोड करू: https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.tirhuta.exe?_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074। ई “Mithila Uni” fontक प्रयोग करैत अछि। यदि phonetic typingमे सहज छी तँ “Malar Tirhuta” keyboard एहि लिंकसँ डाउनलोड करू: https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.malar_tirhuta.exe?_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074। ई “Noto Sans Tirhuta” fontक प्रयोग करैत अछि।

वैदिक संस्कृत phonetic keyboard लेल: https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.itrans_devanagari_sanskrit_vedic.exe?_ga=2.267216455.856782072.1678802904-87949676.1676042074

II.

FOR APPLE MAC OS

Mac लेल https://keyman.com/mac/download.php पर जा software डाउनलोड करू।

III.

FOR LINUX DESKTOP

Linux लेल: https://keyman.com/linux/download.php

IV.

FOR ANDROID PHONES

Android फोनमे Google Play Store खोलि Keyman app डाउनलोड करू; विवरण: https://keyman.com/android/

V.

Apple iPhone / iPad iOS लेल

फोन/टैबलेटमे Apple App Store खोलि Keyman app डाउनलोड करू; विवरण: https://keyman.com/iphone-and-ipad/

VI.

ऑनलाइन Web Typewriter लेल

जाउ: https://keymanweb.com/

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA

http://videha.co.in/

१

रामचन्द्र राय प्रसिद्ध रामू सरक लघु आ दीर्घ कथाक संग्रह 'सपना साकार'

रामचन्द्र राय प्रसिद्ध रामू सरक लघु आ दीर्घ कथाक संग्रह 'सपना साकार' क कथा 'तोहीं जितलैँ हमहीं हारलौं' मे सवर्ण आ गएर सवर्णक मिलि जुलि कऽ रहबाक वर्णनक संग ईहो जे नवीनक माय-बाबूक कौबला-पाती नोकरीक पहिल दरमाहासँ कौबले-पाती पूरा करता आ फेर एकटा अन्तर्जातीय प्रेम कथा, ई सभटा भेटत। प्रेम-प्रसंगमे अपहरणक केस दर्ज होइते छै, से एत्तौ भेल। मुदा नूनू भैया फेर मानि गेला। 'सपना साकार' आत्मकथात्मक अछि से बुझबामे किनको भाङठ नै हेतनि। आ गरदैनिक उतरी उतारबाक नव विधि, एगारहटा युवकक प्रतिज्ञा कर्मकाण्ड आ मृत्युभोजक विरुद्ध। फेंकाएल जिनगीमे स्त्रीक जीवन, मानसिक रोग सभ किछु भेटत। पगली पगली नै छलि। ओकरा घरमे भगमन्त बूझल जाइ छलै, मुदा बियाहक बाद..।

मुदा ऐ संग्रहक श्रेष्ठ कथा सभ अछि दीर्घकथा "निरवासित जीवन" आ "बुधनी माइक बेथा"।

'बुधनी माइक बेथा' मे पंचायतक बैसारमे महिलाक उपस्थिति आह्लादित करैत अछि तँ ओत्तै बुधनी माएक इन्दिरा अवासक ढनमनायल घरक वर्णन सेहो छूटल नै अछि। सस्पेंस अछि, बुधमी माए ओत्तै खोलती नाम। चरणबाबू ओकरा धुतकारै छथि, एहेन पाप कइयो कऽ ओ जीवित केना छथि? युवक सभकेँ ओकरा जिन्दा जड़ा देबाक चाही। आ बुधनी शुरू- सभ पंचकेँ पैरनाम! आ जँ हम झूठ बाजी तँ देहपर बज्जर खसय, अंग काज नै आबय, सीताक भूमिमे प्रवेश मोन पड़ल? बाढ़िमे बान्ह टुटलै, गिरहत ओइठाम बरतन-बासन धोइ कऽ बोइन कऽ गुजर करै छली मुदा ओहो नै रहऽ देलकनि। म्दा अबैत काल जगत देखने रहन्हि..। मुदा बिनु पंचैती केने पंच सभ ई बजैत, जे जगत नजायज केलक, चलि गेला। जगतक धाकक चलते कियो बेशी नै बाजल। मुदा निसीभाग रातिमे माय बेटी तीनटा नवयुवकक कहलापर थाना बिदा भेली, मुदा जगतक धाक ओत्तौ रहै। मुदा तैयो.. मुदा पुलिस अपन बापोक नै होइ छै। मुदा आशाक किरिण अछि किछु नवयुवक सभ। बुधनी माय बच्चाकेँ जन्म देती, डी. एन. ए. केर विषयमे नै बुझल छन्हि मुदा से बुझल छन्हि जे कोनो टेस्ट होइ छै आ टेस्टसँ बाप जगते सिद्ध हेतै।

"निरवासित जीवन" दीर्घकथा सेहो नीक अछि। एकर पहिल विशेषता अछि- मनुक्खक व्यंग्यात्मक शैली जकरा कथाकार उठेने छथि। भरामवालीक घरमे चोरि! चोरक बुइध चोरि भऽ गेल रहै की? मुदा भरामवाली भौजी कैं बुझल छन्हि जे ई चोरि नै कियो उछन्नर दऽ रहल छन्हि। आ से सुनि भुटकुन भाइ हुनकर खिस्सा बुझैले अपस्याँत भऽ जाइ छथि।

ऐ दीर्घकथाक दोसर विशेषता अछि मनुक्खक जीवन शैलीक सूक्ष्मतासँ अवलोकन आ अभिलेखन। मटि-कट्टीक बहन्ने ओम्हर जेता भुटकुन मुदा भौजीक घरमे दलान नै छन्हि से सोझे आंगन केना चलि जेता? भौजी पुरुख सभकेँ छहरक काते-कात झाड़ा फिरैत देखि लजा जाइ छथि मुदा हुनका सभकेँ कोनो लाजे नै। मुदा से जँ स्त्री करय लागय तखन? आ पुरुख प्रधान समाजक दंश..। मुदा आब शिक्षोमे स्त्री आगाँ एलथि, अदहा-अदही आरक्षण सरकार हुनका देने छन्हि।

ऐ दीर्घकथाक तेसर विशेषता अछि लेखकक शब्द भण्डार जे आवश्यक छल भरामवाली भौजीक जिनगीक अभिलेखन लेल।

"निरवासित जीवन" आ "बुधनी माइक बेथा"एकटा औपन्यासिक विस्तार लेने अछि आ ऐमे हम रामू सरक रूपमे मैथिली लेल एकटा भावी उपन्यासकारकेँ देखै छी।

२

११२म 'सगर राति दीप जरय' सहुरिया-नवटोली मे सम्पन्न भेल

'सगर राति दीप जरय' कथा-साहित्य गोष्ठीक भव्य आयोजन दिनांक २५ मार्च २०२३क शनि दिन मधुबनी जिलाक अन्धरा बाजारक सटले शिवा पंचायत अन्तर्गत अभिनव शिक्षा निकेतन, सहुरिया-नवटोली केर परिसर मध्य प्रसिद्ध कथाकार श्री राम चन्द्र राय ऊर्फ रामू सरजीक संयोजकत्वमे सम्पन्न भेल। आयोजनक शुभारम्भ बिहार सरकारक लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी विभागक पूर्व मंत्री डॉ. रामप्रीत पासवान, साहित्य अकादेमी द्वारा क्रमश: २०२० आ २०२१क पुरस्कार प्राप्त द्वय साहित्यकार डॉ. कमलकान्त झा आ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, अन्तर्राष्ट्रीय मैथिली साहित्य परिषद्क अध्यक्ष डॉ. धनाकर ठाकुर, प्रगतिशील लेखक संघ, मधुबनीक सचिव श्री अरविन्द प्रसाद, दिल्ली उच्च न्यायालयक अधिवक्ता श्री ब्रह्मानन्द प्रसाद आ वरिष्ठ साहित्यकार श्री रामश्रेष्ठ दिवानाजी सामूहिक रूपेँ दीप प्रज्जवित कए केलैन। मंचासिन अतिथिगणकेँ पुष्पमाला आ नव वस्त्रसँ सम्मानित करैत उद्घाटन सत्रक मंच संचालक श्री राम चन्द्र रायजी कार्यक्रमकेँ आगू बढ़ौलैन। सर्वप्रथम सुश्री शशिप्रभा आ सुश्री चन्दा कुमारी द्वारा स्वागत गान प्रस्तुत कएल गेल। तत्पश्चात् हम (उमेश मण्डल) स्वागत भाषणक संग 'सगर राति दीप जरय'क ऐ कथा-यात्राक संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करैत बजलौं- ओ कहलैन, मैथिली साहित्यक विकास हेतु समर्पित अनेको मंचक मध्य मात्र यएह एक ओहन मंच अछि जैपर उपस्थिति लेल कोनो रोक-टोक किनको लेल नहि। मैथिली कथाक विकासमे 'सगर राति दीप जरय'केँ कथाकार-समीक्षक हेतु वर्कशॉप कहल जाइत अछि। उद्घाटनक सत्रकेँ जारी रखैत विभिन्न साहित्यकारक भिन्न-भिन्न विधामे कुल दस गोट पोथीक लोकर्पाण सेहो भेल। क्रमश: कथा सत्रमे प्रवेश करैत एक विशिष्ठ अध्यक्ष मण्डलक गठन भेल जइमे साहित्यश्री प्रीतम कुमार निषाद, श्री राम विलास साहु, डॉ. शिव कुमार प्रसाद, प्रो. रामेश्वर प्रसाद मण्डल, श्री कपिलेश्वर राउत, श्री उमेश नारायण कर्ण आ पं. शिव कुमार मिश्रकेँ मंचासिन करौल गेलैन, संगे भरि रातिक ऐ सत्रक संचालन हेतु श्री नारायण यादव, श्री दुर्गानन्द मण्डल, श्री बैजनाथी राम आ श्री नन्द विलास रायजी सेहो मंचासिन भेला। सबहक सम्मानक संग प्रत्येक कथाकार ओ समीक्षक लोकनिकेँ सेहो नव वस्त्र आ पुष्पमालासँ सम्मानित करैत विभिन्न पालीमे कुल ३४ गोट कथाक पाठ भेल आ पठित कथा सभपर पूर्व गोष्ठीक भाँत समीक्षा-टिप्पणी सेहो भेल। ६ बजे भिनसरमे

दीप आ पंजी आगामी संयोजक (श्री नारायण यादव) कैं प्रदान कएल गेलैन। दीप-पंजी लैत श्री यादवजी आगामी आयोजनक घोषणा करैत कहलैन जे 'सगर रात दीप जरय'क ऐगला दीप, नहरी (खुटौना) गाममे जून मासक अन्तिम शनि दिन जरत।

अवसरिपर लोकार्पित पोथी आ पठित कथा सबहक विवरण निम्न अछि-

१. सपना साकार (कथा संग्रह): श्री राम चन्द्र राय (ऊर्फ रामू सर); २. उपायन (काव्य संग्रह): श्री राज किशोर मिश्र; ३. जगदीश प्रसाद मण्डल: एक जीवनी: श्री रामेश्वर प्रसाद मण्डल; ४. नाचि रहल छलि वसुधा (उपन्यास): श्री रबीन्द्र नारायण मिश्र; ५. अन्तर्ध्वनि (कथा संचयन): डॉ. उमेश मण्डल; ६. Jagdish P. Mandal Maithili Writer: Sh. Gajendra Thakur; ७. सेहन्ता सेहनते रहि गेल (कथा संग्रह): श्री जगदीश प्रसाद मण्डल; ८. सुनयना बेटी (उपन्यास): श्री जगदीश प्रसाद मण्डल; ९. मिथिला सपूत डॉ. गुरमैता: डॉ. कमल कान्त झा; १०. मोबाइलक लिला (ललित निबन्ध): डॉ. कमल कान्त झा

कथा पाठ-

१. घटैत-बढ़ैत चन्दा मामा- दिव्या चन्द्रा; २. गोबर बिछनी- नारायण यादव; ३. घी केतए हेराएल तँ दालिमे- नन्द विलास राय; ४. बहुगुनी रोटी- जनक लाल मण्डल; ५. देखलेपर देखब- पल्लवी मण्डल; ६. टाइम पास- धनाकर ठाकुर; ७. पढ़ब केना- रविभूषण कुमार; ८. मधुमाछी आ माछी- राम विलास साहु; ९. मोबाइल स्कूल- चन्द्र मोहन आचार्य; १०. कहबी फेल- कमलकान्त झा; ११. वुर्कावाली- उमेश नारायण कर्ण; १२. चारिम कथा- मानब अनीश मण्डल; १३. चकबिदोर- रामेश्वर प्रसाद मण्डल; १४. डायनोसोर हेबासँ बँचाउ- अरविन्द प्रसाद; १५. प्रेमक रिश्ता- दुर्गानन्द मण्डल; १६. परछाँही- झोली पासवान; १७. पुरना स्वीटर- रितिक कुमार; १८. असल चोर के- डॉ. वीणा प्रसाद; १९. सहोदर- कुमार सुनील नारायण; २०. माइक ममता- जगदीश मण्डल; २१. टेलिविजनक मुसलमान- राम नरेश यादव; २२. सनेसक गाछ- राधाकान्त मण्डल; २३. अप्पन आसा- प्रीतम कुमार निषाद; २४. गोबर कढ़नी- कपिलेश्वर राउत; २५. दस वर्षक बाद- उमेश मण्डल; २६. स्थानक महत्व- शिव कुमार मिश्र; २७. आमक खेतीमे गायक योगदान- बेचन ठाकुर; २८. भगवान भुखले नह राखय छथि- गौरी शंकर साह; २९. कनफुसकी- संतोष कुमार राय; ३०. परिश्रमक फल- परमानन्द कुमार राय; ३१. बाबूजीक अरमान- सत्यनारायण व्यास; ३२. दलित मजदूर -बैजनाथी राम; ३३. शॉर्टकट रास्ता- जगदीश प्रसाद मण्डल; ३४. नशामुक्त गाम- राम चन्द्र राय ऊर्फ रामू सर।

सगर राति दीप जरय पहिल सँ ११२ धरिक कथा यात्रा

१. मुजफ्फरपुर, २१.०१.१९९०, प्रभास कुमार चौधरी; २. डेओढ़, २९.०४.१९९०, जीवकान्त; ३. दरभंगा, ०७.०७.१९९०, डॉ. भीमनाथ झा, प्रदीप मैथिली पुत्र, विजयकान्त ठाकुर; ४. पटना, ३.११.१९९०, गोविन्द झा, दमनकान्त झा; ५. बेगुसराय, १३.०१.१९९१, प्रदीप बिहारी; ६. कटिहार, २२.०४.१९९१, अशोक; ७. नवानी, २१.०७.१९९१, मोहन भारद्वाज; ८. सकरी, २२.१०.१९९१, प्रो. सुरेश्वर झा, डॉ. राम बाबू; ९. नेहरा, ११.१०.१९९२, ए. सी. दीपक; १०. विराटनगर, १४.०४.१९९२, जीतेन्द्र जीत; ११. वाराणसी, १८.०७.१९९२, प्रभास कुमार चौधरी; १२. पटना, १९.१०.१९९२, राजमोहन झा; १३. सुपौल- १, १८.१०.१९९३, केदार कानन; १४. बोकारो, २४.०४.१९९३, बुद्धिनाथ झा; १५. पैटघाट, १०.०७.१९९३, डॉ. रमानन्द झा 'रमण'; १६. जनकपुर, ०९.१०.१९९४, रमेश रंजन; १७. इसहपुर, ०६.०२.१९९४, डॉ. अरविन्द कुमार 'अक्कू'; १८. सरहद, २३.०४.१९९४, अमिय कुमार झा; १९. झंझारपुर, ०९.०७.१९९४, श्यामानन्द चौधरी; २०. घोघरडीहा, २२.१०.१९९४, डॉ. नारायणजी; २१. बहेरा, २१.०१.१९९५, कमलेश झा; २२. सुपौल (दरभंगा), ०८.०४.१९९५, कमलेश झा; २३. काठमांडू, २३.०९.१९९५, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; २४. राजविराज, २४.०१.१९९६, रामनारायण देव; २५. कोलकाता (रजत जयंती, २८.१२.१९९६), प्रभास कुमार चौधरी; २६. महिषी, १३.०४.१९९७, डॉ. तारानन्द वियोगी/ रमेश प्रायोजित; २७. तरौनी, २०.०६.१९९७, शोभाकान्त; २८. पटना, १८.०७.१९९७, प्रभास कुमार चौधरी; २९. बेगूसराय, १३.०९.१९९७, प्रदीप बिहारी; ३०. खजौली, ०४.०४.१९९८, प्रदीप बिहारी; ३१. सहरसा, १८.०७.१९९८, रमेश; ३२ पटना, १०.१०.१९९८, श्याम दरिहरे; ३३. बलाइन; नागदह, ०८.०१.१९९९, पदम सम्भव; ३४. भवानीपुर, १०.०४.१९९९, डॉ. जिष्णु दत्त मिश्र; ३५. मधुबनी, २४.०७.१९९९, सियाराम झा 'सरस', डॉ. कुलधारी सिंह; ३६. अन्दौली, २०.१०.१९९९, कमलेश झा; ३७. जनकपुर, २५.०३.२०००, रमेश रंजन; ३८. काठमांडू, २५.०६.२०००, धीरेन्द्र प्रेमर्षि; ३९. धनबाद, २१.१०.२०००, श्याम दरिहरे आ रामचन्द्र लालदास; ४०. बिटठो, २१.०१.२००१, डॉ. अक्कू, प्रो. विद्यानन्द झा; ४१. हटनी (घोघरडीहा), १९.०५.२००१, प्रो. योगानन्द झा/अजित कु. आजाद; ४२. बोकारो, २५.०८.२००१, गिरिजानन्द झा 'अर्धनारीश्वर', मिथिला सा. परिषद्; ४३. पटना, किरणजयंती, ०१.१२.२००१, अशोक, चेतना समिति, पटना; ४४. राँची, १३.०४.२००२, कुमार मनीष अरविन्द; ४५. भागलपुर, २४.०८.२००२, धीरेन्द्र मोहन झा; ४६. पटना, (विद्यापति भवन पटना), १६.११.२००२, अजित कुमार आजाद; ४७. कोलकाता, २२.०१.२००३, कर्णगोष्ठी, कोलकाता; ४८. खुटौना, ०७.०६.२००३, डॉ. महेन्द्र नारायण राम; ४९. बेनीपुर, २०.०९.२००३, कमलेश झा; ५०.

दरभंगा, २१.०२.२००४, डॉ. अशोक कुमार मेहता; ५१. जमशेदपुर, १०.०७.२००४, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ५२. राँची, ०२.१०.२००४, विवेकानन्द ठाकुर; ५३. देवघर, ०८.०१.२००५, श्याम दरिहरे आ अविनाश; ५४. बेगूसराय, ०९.०४.२००५, प्रदीप बिहारी; ५५. पूर्णियाँ, २०.०६.२००५, रमेश; ५६. पटना, ०३.११.२००५, अजीत कुमार आजाद; ५७. जनकपुर (नेपाल), १२.०८.२००६, रमेश रंजन; ५८. जयनगर, ०२.१२.२००६, नारायण यादव; ५९. बेगूसराय, १०.०२.२००७, प्रदीप बिहारी; ६०. सहरसा, २१.०७.२००७, किसलय कृष्ण; ६१. सुपौल-२, ०१.१२.२००७, अरविन्द ठाकुर; ६२. जमशेदपुर, ०३.०५.२००८, डॉ. रवीन्द्र कुमार चौधरी; ६३. राँची, १९.०७.२००८, कुमार मनीष अरविन्द; ६४. रहुआ संग्राम (मधुबनी), ०८.११.२००८, डॉ. अशोक अविचल; ६५. पटना, कथा गंगा-३, २१.०२.२००९, अजित कुमार आजाद/ चेतना समिति; ६६. मधुबनी, ३०.०५.२००९, दिलीप कुमार झा; ६७. समस्तीपुर, ०५.०९.२००९, रमाकान्त रय 'रमा'; ६८. सुपौल- ३, ०५.१२.२००९, अरविन्द ठाकुर; ६९. जनकपुर, ०३.०४.२०१०, राजाराम सिंह 'राठौर'; ७०. कबिलपुर (दरभंगा), १२.०६.२०१०, डॉ. योगानन्द झा; ७१. बेरमा (झंझारपुर), ०२.१०.२०१०, जगदीश प्रसाद मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ७२. सुपौल, ०४.१२.२०१०, अरविन्द ठाकुर; ७३. महिषी, कथा राजकमल, ०५.०३.२०११, विजय महापात्र; ७४. हजारीबाग, १०.०९.२०११, श्याम दरिहरे; ७५. पटना, हीरक जयन्ती, १०.१२.२०११, अशोक आ कमलमोहन 'चुन्नु'; ७६. चेन्नै, १४.०७.२०१२, विभा रानी; ७७. दरभंगा, किरण जयन्ती, ०१.१२.२०१२, अरविन्द ठाकुर; ७८. घनश्यामपुर, ०९.०३.२०१३, कमलेश झा; ७९. औरहा (लौकही), १५.५.२०१३, उमेश पासवान; ८०. निर्मली (सुपौल), ३०.११.२०१३, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८१. देवघर, (बिजली कोठी, बम्पासटॉन, देवघर), २२.०३.२०१४, ओम प्रकाश झा; ८२. मेंहथ, (झंझारपुर), कथा बौध सिद्ध मेहथपा, ३१.०५.२०१४, गजेन्द्र ठाकुर; ८३. सखुआ-भपटियाही, ३०.०८.२०१४, नन्द विलास राय/फागुलाल साहु/सूरज नारायण राय 'सुमन'; ८४. बेरमा (मधुबनी), २०.१२.२०१४, शिवकुमार मिश्र, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८५. भागलपुर, (श्याम कुंज, द्वारिकापुरी भागलपुर), ०४.०४.२०१५, ओम प्रकाश झा; ८६. लकसेना (मधुबनी), २०.०६.२०१५, राजदेव मण्डल 'रमण', सत्यदेव 'सुमन'; ८७. निर्मली (सुपौल), १९.०९.२०१५, उमेश मण्डल, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ८८. मध्य विद्यालय- डखराम (बेनीपुर), ३०.०१.२०१६, कमलेश झा, अमर नाथ झा; ८९. लौकही, २६.०३.२०१६, उमेश पासवान आ प्रेम कुमार साहु; ९०. लक्ष्मीनियाँ (मधुबनी), १८.०६.२०१६, राम विलास साहु, स्थानीय साहित्य प्रेमी; ९१. गोधनपुर (मधुबनी) २४.९.२०१६, दुर्गानन्द मण्डल; ९२. नवानी (मधुबनी), ३१.१२.२०१६, अजय कुमार दास 'पिन्टु'; ९३. रतनसारा (घोघरडीहा), २५.०३.२०१७, राजदेव मण्डल, स्थानीय साहित्यानुरागी; ९४. लौफा (मधेपुर), २४.०६.२०१७, डॉ. योगेन्द्र पाठक वियोगी, स्थानीय प्रेमी; ९५. जलसैन डुमरा (मधुबनी), ०९.९.२०१७, नारायण यादव; ९६. धबौली (लोकही), १६.१२.२०१७, राधाकान्त मण्डल; ९७. बेरमा (लखनौर), २४.३.२०१८, कपिलेश्वर राउत, बेरमा ग्रामवासी; ९८. सिमरा (झंझारपुर), १६.६.२०१८, डॉ. शिव कुमार प्रसाद; ९९. मुरहद्दी, (बड़की टोल), २२.९.२०१८, प्रो. प्रीतम निषाद, १००. निर्मली (तेरापंथ भवन), २२.१२.२०१८, उमेश मण्डल, नवरत्न वेंगानी, मनीष जालान; १०१. झिटकी (मधुबनी), ३०.३.२०१९, भारत भूषण झा; १०२. मझौरा, (मधुबनी), २९.०६.२०१९, जय प्रकाश मण्डल, आलोक कुमार; १०३. रामपुर (मधुबनी), २८.९.२०१९, उमेश नारायण कर्ण 'कल्प कवि'; १०४. वलम नगर-महदेवा (लौकही), १४.१२.२०१९, प्रेम कुमार साहु, उमेश पासवान; १०५. दरभंगा (सीतायन सभागार), १३.०२.२०२१, कमलेश झा; १०६. हटनी (घोघरडीहा, मधुबनी), २५.०९.२०२१, लालदेव कामत; १०७. बेलहा (फुलपरास), २५.१२.२०२१, जीवकान्तक स्मृतिमे, उमेश मण्डल, ई. शैलेन्द्र मण्डल; १०८. मधुरा (मधुबनी), २६.०३.२०२२, डॉ. श्रीशंकर झा; १०९. ननौर (मधुबनी), २५.०६.२०२२, प्रदीप पुष्प; ११०. सोनवर्षा (लौकही), २४.०९.२०२२, अच्छेलाल शास्त्री, स्थानीय साहित्य प्रेमी; १११. रहुआ संग्राम (मधुबनी) ३१.१२.२०२२, अशोक अविचल; ११२. सहुरिया (अन्धराठाढ़ी) मे २५ मार्च २०२३, रामचन्द्र राय। ११३ म सगर राति दीप जरय जून २०२३ मासक अन्तिम शनि दिन हएत- आगामी संयोजक श्री नारायण यादव [स्थान नहरी (खुटौना) गाम]।

१११म 'सगर राति दीप जरय' रहुआ संग्राममे सम्पन्न भेल

भाग ग — अनुप्रयुक्त समालोचना

लोक-साहित्य, इतिहास आ संस्कृति

१. मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे

सारांश

एहि प्रबन्धमे मायानन्दजीक स्त्रीधन, पुरोहित, मंत्र-पुत्र आ प्रथमं शैलपुत्री च- एहि चारि पोथीक जे कथा-विधान आ साहित्यिक विवेचन छल तकरा यथा संभव नञि छुअल गेल आ मात्र इतिहास-बोधक सन्दर्भमे विवेचना अछि। प्रबंधमे मायानान्द जीक १. प्रथमं शैल पुत्री च २. मंत्रपुत्र ३. पुरोहित आ ४. स्त्री-धन एहि चारि ऐतिहासिक उपन्यास सभक आधार पर लेखक द्वारा लगभग दू दशकमे पूर्ण कएल गेल इतिहास यात्राक समीक्षा कएल गेल अछि।

बीजशब्द: मायानन्द · मिश्रक · इतिहास · बोध · प्रथमं · शैल · पुत्री · मंत्रपुत्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मायानन्द मिश्रक इतिहास बोध-प्रथमं शैल पुत्री च/ मंत्रपुत्र/ पुरोहित आ स्त्री-धन केर संदर्भमे” विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मायानन्द; मिश्रक; इतिहास; बोध-प्रथमं; शैल प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

एहि प्रबन्धमे मायानन्दजीक स्त्रीधन, पुरोहित, मंत्र-पुत्र आ प्रथमं शैलपुत्री च- एहि चारि पोथीक जे कथा-विधान आ साहित्यिक विवेचन छल तकरा यथा संभव नञि छुअल गेल आ मात्र इतिहास-बोधक सन्दर्भमे विवेचना अछि।

प्रबंधमे मायानान्द जीक १. प्रथमं शैल पुत्री च २. मंत्रपुत्र ३. पुरोहित आ ४. स्त्री-धन एहि चारि ऐतिहासिक उपन्यास सभक आधार पर लेखक द्वारा लगभग दू दशकमे पूर्ण कएल गेल इतिहास यात्राक समीक्षा कएल गेल अछि। एहिमे प्रयुक्त पुस्तकमे, मंत्रपुत्र मैथिलीमे अछि आ शेष तीनू उपन्यास हिन्दीमे, तथापि यात्रा पूर्णताक दृष्ट्वा आ श्रृंखलाक तारतम्य आ समीक्षाक पूर्णताक हेतु चारू किताबक प्रयोग अनिवार्य छल।

कालक्रमक दृष्टिसँ प्रथमं शैल पुत्री च प्रथम अछि। एहिमे १५०० ई. पू. सँ पहिलुका इतिहासक आधार लेल गेल अछि। मंत्रपुत्रमे १५०० ई. पू. सँ १२०० ई. पू. धरिक इतिहास उपन्यासक आधार अछि। ई सभ आधार भारत युद्धक पहिलुका अछि। पुरोहितमे १२०० ई. पू. सँ १००० ई. पू. धरिक इतिहास अछि- एकरा ब्राह्मण साहित्यक युगक इतिहास कहि सकैत छी। स्त्रीधनक आधार अछि सूत्र-स्मृतिकालीन मिथिला।

मुदा रचना भेल मैथिली मंत्रपुत्रक पहिने -नवंबर १९८६ मे। प्रथमं शैल पुत्री च एकर दू सालक बाद रचित भेल आ ताहिमे मायानन्द जी चारू किताबक रचनाक रूपरेखा देलन्हि मुदा ई हिन्दीक संदर्भमे छल। एकर बाद सभटा किताब हिन्दी मे आएल। हिन्दी मंत्रपुत्र आएल जाहि कारणसँ तेसर पुस्तक पुरोहित किछु देरीसँ १९९९ मे प्रकाशित भेल। स्त्रीधन जे एहि श्रृंखलाक अंतिम पुस्तक अछि, २००७ ई. मे प्रकाशित भेल।

“प्रथमं शैल पुत्री च” केर प्रस्तावनाक नाम कवच छल। मंत्रपुत्रक प्रस्तावनाक नाम ऋचालोक छल आ ई पुस्तकक अंतमे राखल गेल, किएक तँ ई लेखकक प्रथम ऐतिहासिक रचना छल, प्रस्तावनाकेँ अंतमे राखि कय रहस्य आ रोमांचकेँ बनाओल राखल गेल। पुरोहितक प्रस्तावनाक नाम विनियोग छल आ एकरासँ पहिने दूर्वाक्षत मंत्र राखल गेल जे भारतक आ विश्वक प्रथम देशभक्ति गीत अछि। मिथिलामे एकरा आशीर्वादक मंत्रक रूपमे प्रयोग कएल जाइत अछि जकर पक्ष-विपक्षमे विस्तृत चरचा बादमे होएत।

स्त्रीधनक प्रस्तावनाक नाम लेखक पृष्ठभूमि रखने छथि जे उपन्यासक ऐतिहासिक पृष्ठभूमि प्रदान करबाक कारण सर्वथा समीचीन अछि।

मायानन्दक इतिहास-बोधक समीक्षा हम श्रुति, परम्परा, तर्क आ भाषा-विज्ञानक आधार पर कएने छी। पाश्चात्य विद्वान सभक उच्छिष्ट भोज सँ निर्मित भारतीय इतिहास-लेखन सँ बचि कए इतिहासक समीक्षा भेल अछि आ मध्य एशिया आ यूरोपक कनियो प्रभाव समीक्षा पर नहि पड़ए से प्रयास कएल गेल अछि।

१. प्रथमं शैल पुत्री च- कवच रूपी प्रस्तावनाक बाद ई पुस्तक १. अग्ना, २. अग्न-शैला, ३. शैला- कराली, ४. कराली- महेष, ५. महेष-पारवती, ६. गणेष, ७. हरकिसन, ८. किसन, ९. हरप्पा: मोअन गाँव, १०. गणेष का श्रीगणेश, ११. किश्न, १२. महाजन, १३. मंडल, १४. किश्न मंडल, १५. मंडल: मंडली, १६. पतन: पुरंदर आ १७. उपसंहार: पलायन खंडमे विभक्त अछि।

१. अग्ना- २००० ई. पू. सँ आरम्भ होइत अछि ई उपन्यास। खोहमे रहएबला मनुष्यक विवरण शुरू होइत अछि। बा एकटा दलक सर्वाधिक बलिष्ठ मनुष्य अछि। पूर्वज बा सेहो बलिष्ठ छल। एतेक रास बच्चा सभक बा। एकटा छोट आ एकटा पैघ पाथरक आविष्कार कएने छलाह पूर्वज बा। अम् दलाग्राकेँ कहल जाइत छल। बा भयंकर गंधवला पशुक नाम सेहो छल। हाथक महत्व बढ़ल आ बढ़ल वृक्षसँ दूरी। सर्पकेँ मारि कए खाएल नहि जाइत अछि, से गप पूर्वजसँ ज्ञात छल। प्राचीन देव वृक्ष, दोसर नाग देव आ तेसर नदी देव छलाह। अम्बासँ बा संतान उत्पन्न करैत आएल छलाह। नव कुठार आ नव काताक आविष्कार भेल। अः आः अग अग्ग केर देखि कए वन्य पशुकेँ भागैत देखि एकर जानकारी भेल। मानुषी हुनकर संख्या वृद्धि करैत छलि। प्रथम मानुषीक नाम पड़ल अग्ना। ओकर मानुष-मित्र छलाह अग्ग। अग्ना दलाग्रा बनि गेलीह आ हुनकर नेतृत्वमे दल उत्तर दिशि बढ़ल। फेर लेखक लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- “ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्ठाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे” आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १, ९७, २९, ४९, ०३२ वर्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। ई दुनू दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखलापर हास्यास्पद लगैत अछि।

अग्ना-शैलासँ शुरू होइत अछि दोसर भाग। १०००० ई. पू. । भाषाक आरंभक प्रारंभ मायानन्द मिश्र एहिमे प्रकट कएने छथि। एहिमे बड्ड नीक जेकाँ, संकेत भाषासँ ध्वनिक संबंध परिलक्षित कएल गेल अछि। चलंत सँ स्थिर जीवनक शुरुआत सेहो देखायल गेल अछि। तकर बाद शैला कराली अध्यायक प्रारंभ होइत अछि, ७५०० वर्ष पूर्वसँ। गौ पालनक चर्चा होइत अछि, गायक संख्यामे पर्याप्त वृद्धि भेल छल। सभ रहथि चरबाह, चर्मस्त्रधारी। आ कटिमे पाथरक हथियार। भेड़, बकरी आ सुग्गर छल, किछु आन पोसिया जंतु जात सेहो रहए। घासक रस्सी, त्रिशूल आ नागदेवक चर्चा होइत अछि। बाक नाम आब भऽ जाइत अछि, ओजा। दलाग्राक नाम पड़ैत अछि शैला कराली। पशुक संख्या बढ़ल तँ पशुक चोरि सेहो शुरू भऽ गेल। पीपरक गाछक नीचाँ बैठकीक प्रारम्भ भेल। करालीक नाम अंबा पड़ल।

कराली-महेष अध्यायमे ५००० ई. पू. मे कृषिक प्रारम्भ देखाओल गेल अछि। महेष बीया बागु कए रहल छथि। जवकेँ पका कऽ खयबाक चर्चा होइत अछि। आब धारक नाम सेहो राखल जाए लागल। महेष कुल द्वारा पोस केर माँस खेनाइ तँ एकदम निषिद्ध भऽ गेल। ओजा लिंग स्थानमे बैसल रहैत छलाह।

तकर बाद महेष-पारवती अध्याय शुरु होइत अछि ४ सँ ५ हजार वर्ष पूर्व। धानक फसिलक प्रारंभ भेल। पारवती जहिया अएलीह तहिया ओतुक्का प्रथाक अनुसार लाल माटि माथमे लगा देल गेल। पुत्रक नाम गणेष पड़ल। एहिसँ पहिने संतानक परिचय नहि देल जाइत छल।

गणेष- ई अध्याय ४००० वर्ष पूर्वसँ शुरू होइत अछि। स्त्री-पुरुष संबंध आ पितृ कुलक आरंभक चर्चा शुरू भेल। नून अनबाक आ खेबाक प्रारंभ भेल। नून अनबासँ कुलक नाम नोनी पड़ल। जव आ गहूमक खेतीक प्रारंभ आ दूध दुहबाक आरंभ देखाओल गेल अछि। हाथीक पालनक प्रारंभ आ अदला-बदलीसँ विनिमयक प्रारंभ सेहो शुरू भेल। शिश्न देव पर जल आ पात चढ़ेबाक प्रारंभ सेहो भेल। यवकेँ कूटब आ बुकनी करबाक प्रारंभ भेल। गहूमकेँ चूरब आ पानिमे भिजा कए आगिमे पकाएब प्रारंभ भेल। पक्षिपालन करएबला एकटा भिन्न दल छल। मृतक-संस्कार आ मृत्यु पर कनबाक प्रारंभ सेहो भेल। लिपिक प्रारंभ सेहो भेल।

हर- एहि अध्यायक प्रारंभ ३५०० ई. पू. देखायल गेल अछि। नूनक व्यापार आ सुगढ़ नावक निर्माण प्रारंभ भेल। पइलीक कल्पना नपबाक हेतु भेल। हर आ बड़दक सम्मिलन प्रारंभ भेल। इनार खुनबाक प्रारंभ आ जनक लंबवत केर अतिरिक्त चौड़ाइमे बसबाक प्रारंभ सेहो भेल। घर बनएबाक प्रारंभ सेहो भेल। कारी, गोर आ ताम्रवर्णी कायाक बेरा-बेरी आगमन होइत रहल।

हरकिसन अध्यायक प्रारम्भ ३४०० वर्ष पूर्व होइत अछि। कृषि विकासक संग स्थायी निवासक प्रवृत्ति बढ़य लागल। तकरा बाद परिवारक रूप स्पष्ट होमय लागल। कृषि-विकाससँ वाणिज्य विस्तारक आवश्यकता बढ़ल। ऊनक वस्त्र, चक्की, भीतक घर आ इनारक घेराबा बनए लागल।

किसन अध्यायक प्रारम्भ ३३०० ई. पूर्व भेल। श्रम-बेचबाक प्रारम्भ भेल। पटौनीक प्रारम्भक संग कृषि-विकास गति पकड़लक। भूगोलक जानकारी भेलासँ वाणिज्य बढ़ल। अलंकारक प्रवृत्ति बढ़ल।

हड़प्पा: मोहनगाँव अध्याय ३२०० वर्ष पूर्व देखाओल गेल अछि। श्रम-बेचबाक हेतु काठक टोलक उदाहरण अबैत अछि। अलंकार प्रवृत्ति बढ़ल। गोलीक मालाक संग कुम्हारक चाक सेहो सम्मुख आयल। समाजमे वर्ग विभाजनक प्रारम्भ भेल।

गणेषक श्रीगणेष अध्याय ३१०० ई. पूर्व प्रारम्भ भेल। दक्षिणांचल लोकक आगमनक बाद हड़प्पा हुनका लोकनि द्वारा बनेबाक चर्च लेखक करैत छथि। मोहनजोदड़ो, लोथल आ चान्हूदोड़ोक विकास व्यापारिक केन्द्रक रूपमे भेल। लिपि, कटही गाड़ी आ मूर्त्तिकलाक आविष्कार भेल आ वस्तु विनिमयक हेतु हाट लागए लागल। मेसोपोटामियाक जलप्लावन आ सुमेरी आ असुरक आगमनक चर्चा लेखक करैत छथि।

किश्न अध्यायक प्रारम्भ ३००० ई. पू. सँ भेल। विदेश व्यापारक आरम्भ भेल। तामक आविष्कार भेल। कृषि दासत्वक सेहो प्रारम्भ भेल। बाढ़िसँ सुरक्षाक हेतु ऊँच डीह बनाओल जाए लागल।

महाजन अध्याय २८०० ई. पू. प्रारम्भ होइत अछि। नगरक प्रारम्भ वाणिज्यक हेतु भेल। नहरि पटौनीक हेतु बनाओल जाए लागल। डंडी तराजूक आविष्कार आवश्यकता स्वरूप भेल। प्रकाश-व्यवस्थाक ब्यौँत लागल।

मंडल अध्यायमे चर्च २६०० ई. पू. क छै। संस्था निर्माण, विवाह व्यवस्था आ दूरगर यात्राक हेतु पाल बला नावक निर्माण प्रारम्भ भेल।

किश्न मंडल अध्याय २४०० ई. पू. केर कालखण्डसँ आरम्भ कएल गेल अछि। एहिमे वर्षाक अभावक चरचा अछि। आर्यक पूर्व दिशामे बढ़बाक चर्चासँ लोकमे भयक सेहो चर्चा अछि।

मंडल: मंडली अध्याय २२०० ई. पू. सँ प्रारम्भ भेल। आर्यक आगमनक आ वर्षाक अभाव दुनूकेँ देखैत लोथल वैकल्पिक रूपसँ विकसित होमए लागल।

पतन: पुरंदर: एहि अध्यायक कालखण्ड २००० ई. पू. सँ प्रारम्भ भेल अछि। आर्यक राजा द्वारा पुरकेँ तोड़ि महान केंद्र हड़प्पाकेँ ध्वस्त करबाक चर्चासँ मायानन्द जी अपन पहिल किताब ‘प्रथमं शैल पुत्री च’ केर समापन करैत छथि। आर्य हड़प्पाकेँ हरियूपियासँ संबोधित कएल, आर्य बाहरसँ अएलाह प्रभृत्ति किछु सिद्धांतक आधार पर रचित ई उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास होएबाक दावा करैत अछि। आ एहिमे २०, ००० ई. पू. सँ १८०० ई. पू. धरिक इतिहासोपाख्यानक चर्चा अछि। मुदा मौलिक ऐतिहासिक विचारधारा आ नवीन शोधक आधार पर एकर बहुतो बात समीचीन बुझना नहि जाइत अछि।

अग्नासँ शुरू भेल ई कथानक बड्ड आशा दिअओने छल। लेखक पहिल अध्यायमे लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- “ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे” आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १, ९७, २९, ४९, ०३२ वर्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। ई अनुमानित अछि जे यूरेनियमक १.६७ भाग १०, ००, ००, ००० वर्षमे सीसामे बदलि जाइत अछि। विभिन्न प्रकारक पाथर आ चट्टानमे सीसाक मात्रा भिन्न रहैत अछि। एहि प्रकारसँ गणना कएला पर ई ज्ञात होइछ जे रेडियोएक्टिव पदार्थ १, ५०, ००, ००, ००० वर्ष पहिने विद्यमान छल। एहि प्रकारेँ कोनो शैलक आयु २, ००, ००, ००, ००० वर्षसँ अधिक नहि भऽ सकैछ। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। एहि तरहक पाश्चात्य शोधकेँ लेखक पहिल अध्यायमे तँ नकारि देलन्हि मुदा अंत धरि जाइत-जाइत ओ - आर्य लोकनि हड़प्पाकेँ हरियूपिया कहैत छथि - एहि प्रकारक पाश्चात्य दुराग्रहक प्रभावमे आबि गेलाह। पश्चिमी विद्वानक उच्छिष्ट भोजसँ बचि श्रुति परम्पराक परीक्षा तर्कसँ नहि कए सकलाह। एहि प्रकारे ‘प्रथमं शैल पुत्री च’ निम्न आधार पर अपन इतिहासोपाख्यान साहित्यिक रूपसँ नहि बना पओलक: -

पुरातात्विक, भाषावैज्ञानिक आ साहित्यिक साक्ष्य एहि पक्षमे अछि जे आर्य भारतक मूल निवासी छलाह। आर्य भाषा परिवारक नामकरण मैक्समूलर द्वारा कएल गेल छल। द्रविड़ परिवारक नामकरण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल द्वारा कएल गेल छल। आर्यक आक्रमणक सिद्धांत आएल ग्रिफिथक ऋग्वेदक अनुवादमे देल गेल फूटनोटसँ। पहिने तँ ई नामकरण विदेशी विद्वान द्वारा कएल गेल छल ताहि द्वारे ओकर अपन उद्देश्य होएतैक।

सरस्वती नदी, जल-प्रलय, मनु आ महामत्स्यक कथा, गिल्गमेश कथा काव्य, प्राणवंतक देश गिल्गमेशक खोज, सृष्टिकथा आ देवतंत्रक विकास एहि सभटा समाजशास्त्रीय विकासक विश्लेषण आर्य लोकनिक भारतक मूल निवासी होएबाक साक्ष्य प्रस्तुत करैत अछि।

ऋग्वेदमे मातृसत्तात्मक व्यवस्थाक स्मृतिक रूपमे बहुवचन स्त्रीलिंगक प्रयोगक बहुलता अछि।

सघोष आ महाप्राण ऋग्वेदिक आ भारतीय भाषाक ध्वनिक प्रतिरूप, नहि तँ ईरानी आ नहियेे यूरोपीय भाषा सभमे भेटैत अछि। सरस्वती आ सिन्धु धारक बीचक सभ्यता छल आर्यक सभ्यता। सरस्वती धारक तटवर्ती भरत, पुरु आ अन्य गण सभ मिलि कए ऋगवेदक रचना कएलन्हि। सरस्वतीमे जल-प्रलयक बाद ई सभ्यता सारस्वत प्रदेश सँ हटि कए कुरु-पांचाल आ ब्रह्मर्षि प्रदेश-मध्यदेश-पहुँचि गेल। इतिहासमे भरत लोकनिक महत्व समाप्त भऽ गेल। एहि जल प्रलयक बाद आर्यजन लोकनिक वंशज मोहनजोदड़ो आ हड़प्पा नगरक निर्माण कएने होएताह सेहो सम्भव। हड़प्पा सभ्यताक ८०० मे सँ ५३० सँ ऊपर स्थान एहि लुप्त सरस्वती धारक तट पर अवस्थित छल। सिन्धुक धार पर एहि स्थल सभक बड्ड कम निर्भरता छल आ जखन सरस्वतीमे पानिक प्रवाह घटल तँ एहि सभ केन्द्रक ह्रास प्रारम्भ भऽ गेल।

पहिने सरस्वतीमे जल-प्रलयसँ आर्यक पलायन भेल (ऋगवेद आ यजुर्वेदक रचनाक बाद) आ फेर सरस्वतीमे पानिक कमी भेलासँ दोसर बेर आर्यक पैघ पलायन भेल (अथर्ववेदक रचनाक पहिने) । अरा-युक्त रथक वर्णन वेदमे भेटैत अछि। नहि तँ ई पश्चिम एशियामे छल आ नहियेे यूरोपमे। भारतीय देवनाम, शिल्प, कथा, अश्वविद्या, संगीत, भाषिक तत्व आ चिंतनक संग ई उद्घाटित होमए लागल पश्चिम एशिया, मिश्र आ यूनानमे। दोसर सहस्राब्दी ई. पूर्व अरायुक्त रथ, भारतीय देवनाम, भारतक धार, ऋगवेदिक तत्वचिंतन, अश्वविद्या, शिल्प-तकनीकी आ पुरातन् कथा भारतसँ पच्छिम एशिया, क्रीट-यूनान दिशि जाए लागल। कालक्रमसँ मिश्र, सुमेर-बेबीलोन, आदि सभ्यता आ मित्तनी आ हित्ती सभ्यतासँ बहुत पहिनहि ऋगवेदक अधिकांश मंडलक रचना भऽ गेल छल।

मायानन्दजीक एहि सीरीजक दोसर रचना मंत्रपुत्र अछि। एहिमे ऋगवैदिक आधार पर जीवन-दर्शनकेँ राखल गेल अछि।

ऋगवेद १० मंडलमे (आ आठ अष्टकमे सेहो) विभक्त अछि। मायानन्द मिश्रजी मंडलक आधार पर मंत्रपुत्रक विभाजन सेहो १० मण्डलमे कएने छथि। एहि पुस्तकक भूमिकाक नाम अछि ऋचालोक आ ई पुस्तकक अंतमे १०म मण्डलक बाद देल गेल अछि।

प्रथम मण्डलमे काक्षसेनी पुत्री ऋजिश्वाक चर्च अछि संगहि ऋतुर्वित पुत्री शाश्वतीक सेहो। जन सभा आ जन-समिति द्वारा राजाकेँ च्युत करबाक/ निर्वासन देबाक आ दोसर राजाक निर्वाचन करबाक चर्चा सेहो अछि। नेत्रक नील रंग रहबाक बदला श्यामल भऽ जएबाक चर्चा आ एकर कारण खास तरहक विवाहक होयबाक चर्चा सेहो भेल अछि। वितस्ता तटसँ कृष्ण सभक निरन्तर उपद्रवक चर्चा सेहो अछि। सुवास्तु तटसँ रक्त मिश्रणक प्रक्रियाक वर्णन अछि। गोमेधकेँ वर्जित कएल जाय, ई विचार विमर्श कएल जाए लागल। दासक चर्चा सेहो अछि। हरियूपिया पतन आ ओकर विभिन्न नगर सभक उजड़ि जएबाक चर्चा अछि आ पश्चात्, बल्बूथ द्वारा अनार्य सभक ध्वस्त वाणिज्य व्यवस्थाकेँ संगठित करबाक चर्चा अछि।

द्वितीय मण्डलमे राजाकें समिति द्वारा एहि गपक लेल पदच्युत कएल जएबाक चर्चा अछि, कि धेनुक चोरिक बादो गव्य-युद्ध ओ नहि कएलन्हि। अभिषेकक सङ्ग राजा सेहो प्रायः निश्चित होमए लगलाह आ कौलिक परम्परा चलि गेल। पहिने समितिक निर्णयक बादे क्यो समर्थन-याचनामे जाइत छलाह, राजदण्ड सम्हारैत छलाह। धेनुक हरण कएने छल अनास दस्यु सभ। सुवास्तु, क्रुमु, वितस्ता आ अक्खनीक तट पर श्रुति अभ्यास आ युद्ध-कार्य संगहि चलैत छल, एके संग ब्राह्मण, क्षत्रिय आ वैश्य कर्म करैत छथि। मुदा सरस्वतीक तट पर बात किछु दोसरे भऽ गेल, ऋषिग्राम फराक होमय लागल। सभटा अनास दस्यु दास बनि गेल आ दासीसँ आर्यगणक संतान उत्पन्न होमए लगलन्हि। दासीपुत्र लोकनिकेँ तँ गाममे घर बनेबाक अनुमति छलन्हि मुदा अनास दस्युकेँ ओ अनुमति नहि छलन्हि। एहि गपक चर्चा अछि, जे आर्य चर्म वस्त्र पहिरैत छलाह आ अनास दस्यु लोकनिक संपर्कसँ सूतक वस्त्र आ लवणक प्रयोग सिखलन्हि। एहि दुनू चीजक आपूर्त्ति एखनो अनास लोकनिक हाथमे छलन्हि। अनार्य लोकनिक संपर्कसँ अपन शब्द कोश बिसरबाक आ तकर संकलनक आवश्यकताक पूर्त्तिक हेतु निघण्टुक संकलनक चर्चा सेहो अछि। गंधर्व विवाहक सेहो चर्चा अछि।

तृतीय मण्डल

अग्निष्टोम यज्ञक चर्चा अछि। छागर आ महीसक बलि केर चर्च अछि।

माँस-भात महर्षि लोकनिकेँ प्रिय लगलन्हि, तकर चर्चा अछि मुदा भातक बदला गहूमक सोहारीक प्रचलन एखनो बेशी होएबाक चर्चा अछि।

चतुर्थ मण्डल

राजाक अभिषेक यज्ञक चर्चा आ ओहिमे अरिष्टनेमिक ब्रह्मा बनबाक चर्चा अछि। ग्रामणी, रथकार, कम्मरि, सूत, सेनानी सेहो यज्ञमे सम्मिलित छलाह।

“अति प्राचीन कालमे सृष्टि जलमय छल”! एकर चर्चा मायानन्द मिश्रजी नहि जानि ऋगवेदिक युगमे कोना कए देलन्हि।

पञ्चम मण्डल

अश्वारोहण प्रतियोगिताक चर्चा अछि। अनास दास-रंजक नाट्यवृत्तिक चर्चा सेहो अछि। राजा द्वारा एकर अभिषेक कार्यक्रममे स्वीकृति आ एकर भेल विरोधक सेहो चर्चा अछि। दासकेँ स्वतंत्र कृषि अधिकार आ एकरा हेतु विदथक अनुमति राजा द्वारा लेल जाए आकि नहि तकर चर्चा अछि।

षष्ठ मण्डल

महावैराजी यज्ञक चर्चा अछि। समस्त दस्यु-ग्रामक दास बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि आ ओ सभ पशुपालन आ पणि कार्य कऽ सकैत छथि। नग्नजितक प्रसंग लए मंत्र गायन केनिहार ब्राह्मण, गविष्ठि युद्ध कएनिहार क्षत्रिय आ एकर अतिरिक्त जे कृषि विकासमे बेशी ध्यान दैत छलाह से विश- सामान्य जन छलाह मुदा एहिमे मायानन्द जी वैश्य शब्द सेहो जोड़ि देने छथि।

सप्तम मण्डल

बर्बर उजरा आर्यक आक्रमणक चर्चा आब जा कए भेल अछि। प्रायः विदेशी विशेषज्ञक एक भागक संग मायानन्द जी सेहो पैशाची आक्रमणकेँ बादमे जा कए बूझि सकलाह आ एकरा सेहो आर्यक दोसर भाग बना देलन्हि। आर्य हरियूपियाकेँ डाहि कए नष्ट कए देने छलाह एकर फेर चर्च आबि गेल अछि। मोहनजोदड़ो आतंकसँ उजड़ि गेल फेर भूकम्पो आयल ताहूसँ नगर ध्वस्त भेल। आब मायानन्दजी ओझराएल बुझाइत छथि। वर्षा कम होएबाक सेहो चर्चा अछि।

अष्टम् मण्डल

ऋषिग्रामक चर्चा अछि। कुलमे दास आ दासी होएबाक संकेत अछि। वृषभ पालनक सेहो संकेत अछि। मंत्र-पुत्रक ग्रामांचल चलि जएबाक आ विशः-वैश्य बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि। मुदा आगाँ मायानन्दजी ओझराइत जाइत छथि। कश्यप सागर तटसँ प्रस्थान-पूर्व द्यौस आ त्वराष्ट्री केर गौण देव भऽ जएबाक चर्चा अछि। ब्राह्मण आ क्षत्रियक विभाजन नहि होएबाक चर्च अछि आ क्यो कोनो कर्म करबाक हेतु स्वतंत्र छल। देवासुर संग्राम आ हेलमन्द तटक युद्ध आ पशुपालनक चर्चा अछि। पश्चात ब्रह्मण आ क्षत्रियक कर्मक फराक होएब प्रारम्भ भए गेल। पश्चात् मंत्र-द्रष्टा ऋषि द्वारा मंत्रमे देवक आ अपन नाम राखब प्रारम्भ भेल- एकर चर्चा अछि। श्रुति अभ्यासक प्रारम्भ होएबाक चर्चा अछि कारण मंत्रक संख्या बढ़ि गेल छल।

नवम् मण्डल

वस्तु विनमयक हेतु हाट व्यवस्थाक प्रारम्भ भेल। हाटमे मृत्तिका प्रभागमे दास-शिल्पी पात्रक उपस्थिति आ वस्त्र प्रभागक चर्चा अछि। मृत्तिका, हस्ति-दन्त, ताम्र सीपी आदिक बनल वस्तुजातक चर्चा अछि। शिशु-रंजनक वस्तुजात - जेना हस्ति, वृषभ आदिक मूर्त्तिक, लवणक, अन्नक, काष्ठक आ कम्बलक बिक्रीक चर्चा अछि।

दशम् मण्डल

श्वेत-जनक आगमनक -बर्बर श्वेत आर्य- सूचना नागजनकेँ भेटबाक चर्चा अछि। नाग जन द्वारा अपन दलपतिकेँ राजा कहल जाएब, नागक पूर्व-कालमे ससरि कए यमुना तट दिशि आएब आ ओतुक्का लोककेँ ठेल कए पाछाँ कए देबाक सेहो चर्चा अछि। कृष्ण जनक काष्ठ दुर्ग आ नागक संग हुनका लोकनिकेँ सेहो अनास कहल गेल अछि। मुदा ओ लोकनि दीर्घकाय छलाह आ नागजन कनेक छोट। एहि मण्डलमे दासक संग शूद्रक आ गंगा तटक सेहो चर्चा आबि गेल अछि। आर्य, दास आ शूद्रक बीचमे सहयोगक संकेत अछि।

अंतमे ऋचालोक नामसँ भूमिका लिखल गेल अछि। देवासुर संग्रामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलन्हि, हित्ती मित्तानी चलल आ आर्य पूर्व दिशा दिशि बढ़ल- एहि सभ तथ्यक आधार पर लिखल ई मंत्रपुत्र ऐतिहासिकताक सभटा मानदण्ड नहि अपना सकल।

मायानन्द मिश्रजी साहित्यकारक दृष्टिकोण रखितथि आ पाश्चात्य इतिहासकारक एक भाग द्वारा पसारल गॉसिपसँ बचितथि तँ आर्य आक्रमणक सिद्धांतकेँ नकारि सकितथि। सरस्वतीक धार ऋगवेदक सभ मंडलमे अपन विशाल आ आह्लादकारी स्वरूपक संग विद्यमान अछि। सिन्धु आकि सरस्वती नदी घाटीक सभ्यता तखन खतम आकि ह्रासक स्थितिमे आएल जखन सरस्वती सुखा गेलीह। अथर्ववेदमे सेहो सरस्वती जलमय छथि। ऋगवेदमे जल-प्रलयक कोनो चर्च नहि अछि आ अथर्ववेदमे ताहि दिशि संकेत अछि। भरतवासी जखन पश्चिम दिशि गेलाह, तखन अपना संग जल-प्रलयक खिस्सा अपना संग लेने गेलाह। जल-प्रलयक बाद भरतवासी सारस्वत प्रदेशसँ पूब दिशि कुरु-पांचालक ब्रह्मर्षि प्रदेश दिशि आबि गेलाह।

सरस्वती रहितथि तँ बात किछु आर होइत मुदा सुखायल सरस्वती एकटा विभाजन रेखा बनि गेलीह, आर्य-आक्रमणकारी सिद्धांतवादी लोकनिकेँ ओहि सुखायल सरस्वतीकेँ लँघनाइ असंभव भऽ गेल।

सिन्धु लिपिक विवेचन सेहो बिना ब्राह्मीक सहायताक संभव नहि भऽ सकल अछि।

ग्रिफिथक ऋगवेदक अनुवादक पादटिप्पणीमे पहिल बेर ई आशंका व्यक्त कएल गेल जे आर्य आक्रमणकारी पश्चिमोत्तरसँ आबि कए मूल निवासीक दुर्ग तोड़लन्हि। दुर्गमे रहनिहार बेशी सभ्य रहथि। १९४७ मे ह्वीलर ई सिद्धांत लऽ कए अएलाह जे विभाजित पाकिस्तान सभ्यताक केन्द्र छल आ आर्य आक्रमणकारी विदेशी छलाह। एकटा भारतीय विद्वान रामप्रसाद चंद ताहिसँ पहिने ई कहि देने रहथि जे एहि नगर सभक निवासी ऋगवेदक पणि छलाह। मुदा मार्शल १९३१ ई मे ई नव गप कहने छलाह जे आर्यक भारतमे प्रवेश २००० ई. पूर्व भेल छल आ तावत हड़प्पा आ मोहनजोदड़ोक विनाश भऽ चुकल छल। १९३४ मे गॉर्डन चाइल्ड कहलनि जे आर्य संभवतः आक्रमणकारी भऽ सकैत छथि। १९३८ मे मकॉय मोहनजोदाड़ोक आक्रमणकेँ नकारलन्हि, किछु अस्थिपञ्जड़क आधार पर एकरा सिद्ध कएनाइ संभव नहि। डेल्स १९६४ मे एकटा निबन्ध लिखलन्हि ‘द मिथिकल मसेकर ऑफ मोहंजोदाड़ो’ आ आक्रमणक दंतकथाक उपहास कएलन्हि। तकर बाद ह्वीलर १९६६ मे किछु पाछाँ हटलाह मुदा मकॉयक कबायलीक बदलामे सभटा आक्रमणक जिम्मेदारी बाहरी आर्यगणक माथ पर पटकि देलन्हि। आब ओ कहए लगलाह जे आर्य आक्रमणकेँ सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि मुदा ज्योँ ई संभव नहि अछि तँ असंभव सेहो नहि अछि। स्टुआर्ट पिगॉट १९६२ धरि ह्वीलरक संग ई दुराग्रह करैत रहलाह। पिगॉट आर्यकेँ मितन्नीसँ आएल कहलन्हि। नॉर्मन ब्राउनकेँ सेहो पंजाब प्रदेशक शेष भारतक संग सांस्कृतिक संबंधक संबंधमे शंका रहलन्हि। संस्कृत आ द्रविड़ भाषाक अमेरिकी विशेषज्ञ एमेनो लिखलन्हि जे सिन्धु घाटी कखनो शेष भारतसँ तेना भऽ कए सांस्कृतिक रूपसँ जुड़ल नहि छल। जे आर्य ओतए अएलाह सेहो ईरानी सभ्यतासँ बेशी लग छलाह।

मुदा पॉर्जिटर १९२२ मे साहित्यिक परम्परासँ सिद्ध कएलन्हि जे भारत पर आर्यक आक्रमणक कोनो प्रमाण नहि अछि। ओ सिद्ध कएलन्हि जे भारतसँ आर्य पश्चिम दिशि गेलाह आ तकर साहित्यिक प्रमाण उपलब्ध अछि। लैंगडन सेहो कहलन्हि जे आर्य भारतक प्राचीनतम निवासी छलाह आ आर्यभाषा आ लिपिक प्रयोग करैत छलाह। ब्रिजेट आ रेमण्ड ऑलचिन आ कौलीन रेनफ्रीव आदि विद्वान प्राचीन भारतक इतिहासक प्रति पूर्वाग्रहक विश्लेषण कएने छथि।

मितन्नी शासक मित्र, वरुण, इन्द्र आ नासत्यक उपासक छलाह। हित्ती राज्यमे सेहो वैदिक देवता लोकनिक पूजा होइत छल। आलब्राइट आ लैंबडिन सेहो दू हजार साल पहिने दक्षिण-पश्चिम एशियामे इंडो आर्य भाषा बाजल जाइत छल आ संख्यासूचक शब्द सेहो भारतीय छल, एहि तथ्यकेँ मानलन्हि।

ई लोकनि भारतीय छलाह आ ऋगवेदक रचनाक बाद भारतसँ बाहर गेल छलाह। बहुवचन स्त्रीलिंग रूप, ऋगवेदक देवगणक विशिष्ट रूप अन्यत्र उपलब्ध नहि अछि। इंडो योरोपियन देवतंत्रमे भारतीय देवीगणक विरलता पूर्ववर्त्ती भारतीय मातृसत्तात्मक व्यवस्थाक बादक योरोपीय परवर्त्ती पितृसत्तात्मक व्यवस्थाक परिचायक अछि।

आब आऊ सुमेरक जल प्रलयपर जेकि ३१०० ई. पू. मे मानल जाइत अछि। भारतीय कलि संवत ३१०२ ई. पू. मानल जाइत अछि। अतः एहि तिथिसँ पूर्व ऋगवेदक पूर्ण रचना भऽ गेल छल।

देवासुर संग्रामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलन्हि आदि गप पोथीक समाप्ति पर ऋचालोकमे मायानन्द जी लिखैत छथि। किछु पाश्चात्य विद्वान सेहो ऋगवेदक दार्शनिक महत्वकेँ कम करबाक लेल ई गप कहैत छथि जे यूनानमे देवतंत्र पूर्ण रूपसँ पल्लवित छल मुदा ऋगवेदिक समाज घुमंतु छल आ देवतंत्र ताहि द्वारे विकसित नहि छल। ओ लोकनि ई सेहो कहैत छथि जे ऋगवेदक रचना अश्व पर घुमंतु जीवन यापित केनहार पश्चिमी आक्रमणकारी कएने छथि। ऋगवेदिक कवि लोकनि आरंभिक सामूहिक संपत्ति आ रक्त संबंध आधारित गणसमाज दुनूसँ परिचित छलाह मुदा स्वयं ओहिसँ बाहर आबि गेल छलाह आ व्यक्तिगत आ कुटुम्बक संपत्तिक

आधार बला व्यवस्था शुरू कए देने छलाह। संपत्ति पुरुष केंद्रित आ परिवार पितृसत्तात्मक छल। मुदा मातृसत्तात्मक व्यवस्थाकेँ ओ बिसरल नहि छलाह कारण ओ आपः मातरः कहि बहुवचनमे जलदेवीक उपासना आ स्मरण करैत छथि, संगहि मरुतगण सदिखन गणक रूपमे स्मरण आ उपासना करैत छथि।

आब जा कए एंगेल्स कहैत छथि जे यूनानमे मातृसत्तासँ पितृसत्ता प्राचीन कालक सभसँ पैघ क्रान्ति छल। ई क्रान्ति ऋगवेदिक कालमे घटित भए गेल छल। श्रमक वैशिष्टीकरणसँ उत्पादनमे गोत्रक भूमिका घटि जाइत अछि आ कुटुम्बक बढ़ि जाइत अछि। गण, गोत्र, कुल आ कुटुम्बक क्रमशः विकास सामूहिक भूसंपत्तिक संगठनसँ होइत अछि। ऋगवेदमे कुम्भकार, कमार (काष्ठकार), लोहार आ धातु शिल्पक चर्च अछि। प्राचीन ईरानमे असुरक प्रतिरूप अहुरक प्रयोग भेल। ओ लोकनि एकर उपासक छलाह मुदा असुर-उपासक भारतीय जनक प्रभाव ईरान धरि सीमित छल, आगाँ एकर प्रसार नहि भेल। भारतमे असुर दुष्ट छथि मुदा ईरानमे देव दुष्ट छथि। असुरक गरिमा सम्पूर्ण ऋगवेदमे अछि। कोनो मण्डल एहन नहि अछि जाहिमे कोनो एक वा आन देवताकेँ असुर नहि कहल गेल होअए। मुदा एहनो असुर छथि जे देवक विरोधमे छथि आ इन्द्रसँ एहन अदेवाः असुराः केर नाशक हेतु आह्वाण कएल गेल अछि। इन्द्रक समान अग्नि सेहो असुरक नाश करैत छथि आ इन्द्र आ बृहस्पति दुनू गोटे स्वयं असुर छथि। असुर देवताक उपाधि छल। ऋगवेदमे देव आ असुरक सदृश असुर एकटा भिन्न वर्ग छल असुर श्वास लैत छलाह मुदा देव नहि। देवसँ असुर बेशी प्राचीन छथि ताहि द्वारे असुर वरुण देव आ मनुष्य दुहूक राजा छथि।

पैशाची त्वग् त्वचा भारतमे कहियो तेहन आह्लादसँ नहि देखल गेल। ओहिनो आर्य आक्रमण पोषक सिद्धान्तकार जे ई तथ्य उदाहरणार्थ देखथि जे दक्षिण भारतीय ब्राह्मण, कश्मीरी ब्राह्मण आ नेपालक ब्राह्मण मे त्वचा नहि वरण रूप सेहो भिन्न अछि, ई सिद्ध करैत अछि जे ई सभ स्थानीय जन छथि आ जाति-व्यवस्थामे ताहिरूपेँ सम्मिलित भेल छथि। कारण पाँच-सए आ हजार बरखमे मानवशास्त्रीय आ वैज्ञानिक रूपेँ ओतेक रूप-रंगक अन्तर सम्भव नहि। जे यूरोपवासी दक्षिण अमेरिका-अफ्रीकामे छथि तिनको, आ जे नीग्रो-रेड इन्डियन अमेरिका-अफ्रीका-यूरोपमे छथि तिनको रूप रंगमे कोनो परिवर्तन पाँच सए बरखमे नहि आएल छन्हि। ई लाख बरखक आवाससँ सम्भव होइत अछि जे गरम प्रदेशक निवासी कारी आ ठंढ प्रदेशक गोर होइत छथि।

पुरोहित

पुरोहित हिन्दीमे अछि आ श्रृँखलाक तेसर पोथी थीक। दूर्वाक्षत जकरा मायानन्दजी सुविधारूपेँ आशीर्वचन सेहो कहि गेल छथि सँ एकर प्रारम्भ भेल अछि।

पुरोहित केर आरम्भ दूर्वाक्षत आशीर्वचन मंत्रसँ होइत अछि। शुक्ल यजुर्वेदक अध्याय २२ केर मंत्र २२ “ॐ आब्रह्मन...” सँ “नः कल्प्ताम्” धरि अछि। मिथिलामे एहि मंत्रक संग अन्तमे “ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव। ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव” । एकर सेहो मंत्रोच्चार होइत अछि आ एहि चारि पादसँ ई मंत्र आशीर्वचनक रूप लए लैत अछि।

यजुर्वेदीय २२/२२ मंत्र सौसेँ भारतमे देशभक्ति गीतक रूपमे मंत्रोच्चारित होइत अछि।

दूर्वाक्षत मंत्र (शुक्ल यजुर्वेद अध्याय २२, मंत्र २२)

आ ब्रह्मन्नित्यस्य प्रजापतिर्ऋषिः। लिंभोक्ता देवताः। स्वराडुत्कृतिश्छन्दः। षड्जः स्वरः॥

आ ब्रह्म॑न् ब्राह्म॒णो ब्र॑ह्मवर्च॒सी जा॑यता॒मा रा॒ष्ट्रे रा॑ज॒न्यः शुरे॑ऽइषव्यो॒ऽतिव्या॒धी म॑हार॒थो जा॑यतां॒ दोग्ध्रीं धे॒नुर्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुः सप्ति॒ः पुर॑न्धि॒र्योवा॑ जि॒ष्णू र॑थे॒ष्ठाः स॒भेयो॒ युवास्य यज॑मानस्य वी॒रो जा॒यतां निका॒मे-नि॑कामे नः प॒र्जन्यों वर्षतु॒ फल॑वत्यो न॒ऽओष॑धयः पच्यन्तां योगेक्ष॒मो न॑ः कल्पताम्॥२२॥

मन्त्रार्थाः सिद्धयः सन्तु पूर्णाः सन्तु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव।

ॐ दीर्घायुर्भव। ॐ सौभाग्यवती भव।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बड़द भार वहन करएमे सक्षम होथि आ घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होअए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ

औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ मित्रक उदय होए॥

मनुष्यकें कोन वस्तुक इच्छा करबाक चाही तकर वर्णन एहि मंत्रमे कएल गेल अछि।

एहिमे वाचकलुप्तोपमालड़्कार अछि।

अन्वय-

ब्रह्म॑न् - विद्या आदि गुणसँ परिपूर्ण ब्रह्म

रा॒ष्ट्रे - देशमे

ब्र॑ह्मवर्च॒सी-ब्रह्म विद्याक तेजसँ युक्त

आ जा॑यता॒ं- उत्पन्न होए

रा॑ज॒न्यः-राजा

शुरे॑ऽ–बिना डर बला

इषव्यो॒- बाण चलेबामे निपुण

ऽतिव्या॒धी-शत्रुकेँ तारण दय बला

म॑हार॒थो-पैघ रथ बला वीर

दोग्ध्रीं-कामना (दूध पूर्ण करए बाली)

धे॒नुर्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुः धे॒नु-गौ वा वाणी वोँढा॑न॒ड्वा- पैघ बड़द ना॒शुः-आशुः-त्वरित

सप्ति॒ः-घोड़ा

पुर॑न्धि॒र्योवा॑- पुर॑न्धि॒- व्यवहारकेँ धारण करए बाली योँवा॑-स्त्री

जि॒ष्णू-शत्रुकेँ जीतए बला

र॑थे॒ष्ठाः-रथ पर स्थिर

स॒भेयो॒-उत्तम सभामे

युवास्य-युवा जेहन

यज॑मानस्य-राजाक राज्यमे

वी॒रो-शत्रुकेँ पराजित करएबला

निका॒मे-निंकामे-निश्चययुक्त कार्यमे

नः-हमर सभक

प॒र्जन्यों-मेघ

वर्षतु॒-वर्षा होए

फल॑वत्यो-उत्तम फल बला

ओष॑धयः-औषधिः

पच्यन्तां- पाकए

योगेक्ष॒मो-अलभ्य लभ्य करेबाक हेतु कएल गेल योगक रक्षा

नः-हमरा सभक हेतु

कल्पताम्-समर्थ होए

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर, तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/ संरक्षित करी।

तकर बाद लेखकीय प्रस्तावना जकरा पुरोहितमे विनियोगक नाम देल गेल अछि, केर प्रारम्भ होइत अछि। पुरोहित शतपथ ब्राह्मणकालीन समाज पर आधारित अछि।

विनियोगमे पूर्व आ उत्तर वैदिक युग, महाभारत काल इत्यादिक काल निर्धारण पर चरचा कएल गेल अछि। संन्यास आ मोक्ष धारणाक प्रवेश, सूत्र साहित्य, आरण्यक आ उपनिषद आ ब्राह्मण ग्रंथक रचनाक सेहो चरचा अछि। कर्मणा केर बदलामे जन्मना सिद्धांतक प्रारम्भ आ शूद्र शब्दक उद्भव, नगरक, आहत मुद्राक, उद्योगक सुदृढ़ीकरणक आ लोहाक प्रयोगक सेहो चरचा भेल अछि। फेर मायानन्द जी ई लिखि जाइत छथि जे दाशरज्ञ युद्ध ई. पू. १८०० मे भेल- भरत आ कुशिक-कस्साइटक सम्मिलित समूह सरस्वती तटसँ व्यास नदी पार करैत इलावृत पर्वत प्रदेश होइत; आ ओ लोकनि कोशल मिथिलाक राजतंत्रक, कुरु-पांचालक संस्कृतिक विकसित होएबासँ पूर्वहि, स्थापना कएने छलाह।

पुरोहित तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि। प्रथम सर्ग दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि। अथर्वणपल्लीक पशुशालामे साँझ होइत देरी उठैत धुँआक चरचा अछि। मेधा आ कुशबिन्दुसँ कथा आगू बढ़ैत अछि। ऋषि गालबक आश्रममे ऋगवेदकेँ कंठाग्र कराएल जएबाक आ बादमे जा कए कृषि संबंधी शिक्षा देल जएबाक वर्णन अछि।

दोसर सर्गमे राजा प्रवाहण जैबालिक मूर्ख पुत्र द्वारा ब्राह्मणक अपमानक, प्रथम श्रोत्रिय आ दोसर पुरोहित ब्राह्मणक वर्णन अछि।

तेसर सर्गमे आचार्य चाक्रायणक अपमानक कारण पुरोहित वर्ग द्वारा पौरहित्य कर्म नहि करबाक निर्णयसँ प्रजाजनक दैनिक अग्निहोत्र कार्य आ बिना लग्नक कृषि आ वाणिज्य कार्यमे होअए बला भाङठक वर्णन अछि।

चतुर्थ सर्गमे व्यास कथा आ भारत युद्धक चर्चा अबैत अछि आ एतए मायानन्द जी पाश्चात्य दृष्टिकोणक अनुसरण करैत छथि। जय काव्यकेँ भारत युद्धकथाक रूप दए देल गेल- ई वक्तव्य अनायासहि दए रहल छथि मायानन्द मिश्र।

पाँचम सर्गमे वैश्य द्वारा उपनयन संस्कार छोड़बाक चरचा अछि मुदा क्षत्रिय पुत्र आ पुत्री दुनूक उपनयन करैत छलाह। वैश्य कन्या शिक्षासँ दूर जा रहल छलीह आ ब्राह्मण कन्या गुरुकुलक अतिरिक्त पितासँ शिक्षा लए रहल छलीह। ब्राह्मणकेँ पौरहित्यसँ कम समय भेटैत छलन्हि।

छठम सर्गमे ब्राह्मण पुरोहित द्वारा अथर्व वेदकेँ नहि मानबाक चरचा अछि।

सातम सर्गमे अथर्वनपल्लीमे अथर्ववेदीय संस्कारक शिक्षा आ प्रथम श्रेणीक ब्राह्मण द्वारा ओतए नहि जएबाक चरचा अछि।

आठम सर्गमे इद्रोत्सवमे रथदौड़, अश्वारोहण, मल्लयुद्ध, असिचालन, लक्ष्यभेद आ विलक्षण अनुकृतिक चरचा अछि आ व्यासपल्लीक लोक द्वारा अनुकृति करबाक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे व्रात्य करुष भारत युद्धक कथा कहि रहल छलाह। भारत युद्धक बहुत पूर्व भरत, त्रित्सु, किवी आ सृंजय मिश्रित जनक आर्यवर्तमे शूद्र नामसँ सुमेरियाक जियसूद्रक स्मृतिमे अपनाकेँ गौरव देबाक हेतु सूद्र कहबाक वर्णन अछि।

नवम सर्गमे तन्तुवाय द्वारा स्त्री निमित्त वस्त्रमे तटीयता देल जएबाक कारण भेल अन्तरक चरचा अछि, पहिने ई अन्तर नहि छल। अथर्वण आ याज्ञिक ब्राह्मणमे भेदक चरचा अछि।

दशम् सर्गमे शिश्नदेवक पूजा अनार्य द्वारा होएबाक आ अथर्वण पुरोहित द्वारा एकर अनभिज्ञताक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे अक्षर लिपिक प्रयोग आ आचार्य गालबक श्रुति आश्रममे अंक लिपिक अतिरिक्त किछु अन्य देखब वर्जित होएबाक गप कहल गेल अछि।

एगारहम सर्गमे गालब आश्रममे दण्डनीति पर चरचा निषिद्ध होएबाक बादो दक्षिण पांचालक सभासदक आग्रह पर एतद संबंधी चरचा होएबाक गप अछि। राजा शिलाजित द्वारा राजपद प्रधान पुरोहितकेँ देबाक चरचा अछि।

बारहम सर्गमे भारत युद्धक बाद नियोग प्रथाक अमान्य भऽ बन्द भऽ जएबाक बात अछि। शिश्नदेवक शिवदेवसँ एकाकारक चरचा सेहो अछि।

तेरहम सर्गमे क्रैव्यराजक अभिषेक उत्सवक चरचा अछि। दूर्वाक्षत मंत्रमे

“ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आ दीर्घायुर्भव केर मेल शुक्ल यजुर्वेदक २२/२२ मंत्रसँ कए दूबि अक्षत लए, विशेष लए ताल गति यति मे गएबाक वर्णन अछि। एकर अनुवाद सेहो मायानन्द जी देने छथि, जे ग्रिफिथक अनुवादसँ प्रेरित अछि: -

समस्त विश्वमे ब्राह्मण विद्याक तेजक वर्चस्व स्थापित करए बला, सर्वत्र, वाण चलएबामे निपुण, निरोगि, महारथी, शूर, यजमान राज्य सभक जन्म होए, सर्वत्र अधिकाधिक दूध दएबाली धेनु होए, शक्तिशाली वृषभ होए, तेजस्वी अश्व होए, रूपवती सध्वी युवती होथि, विजयकामी वीरपुत्र होथि, जखन हम कामना करी पर्जन्य वर्षा देथि, वनस्पतिक विकास होए, औषधि फलवती आ सभ प्राणी योगक्षेमसँ प्रसन्न रहथि। राजन शतंजीवी होथि।

क्रैव्यराजक अभिषेकक लेल ई मंत्र हाथमे अक्षत, अरबा, ब्रीहि आ दूर्वादल लए आ मंत्र समाप्ति पश्चात राजा पर एकरा छीटबाक आ फेर दहीक मटकूरीसँ दही लए महाराजक भाल पर एहिसँ तिलक लगएबाक वर्णन अछि। एहि प्रकरणमे मायानन्द जी लिखैत छथि जे एहि मंत्रक, जकरा मिथिलामे दूर्वाक्षत मंत्र कहल जाइत अछि, रचना याज्ञवल्क्य द्वारा वाजसनेयी संहिताक लेल कएल गेल। एहि मंत्रक उपयोग मिथिलामे उपनयनक अवसर पर बटुकक लेल आ विवाहक अवसर पर वर-वधुककेँ आशीर्वचनक रूपमे प्रयुक्त होअए लागल।

पुरोहितक अन्त होइत अछि उपसंहारसँ। एतय वर्णित अछि, जे काशीक रस्ताक अनार्य ग्रामक आर्यीकरण भेल आ व्रात्यष्टोम यज्ञ भेल। शिश्नदेवाः पर चरचा अछि, शुनःशेप आख्याण आ भारत कथाक कहबाक परम्पराक प्रारम्भ आ मगध द्वारा आर्य धर्मक प्रति वितृष्णाक चर्च सेहो अछि।

मायानन्दजी महाभारतक समस्याक समाधानमे सेहो पाश्चात्य विचारक लोकनिक अनुसरण करैत बुझना जाइत छथि। प्रोफेसर वेबर पहिल बेर एहि सिद्धांतकेँ लए कए आएल छलाह। ओ अपन विचार व्यक्त कएने छलाह जे ८८०० पद्यक जय संहिता छल आ पहिने युद्ध पर्व (१८ पर्व मे चारि पर्व भीष्म, द्रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) मात्र छल। ओकर आधार ओ बनेने छलाह एकटा श्लोककेँ-

अष्टौश्लोक सहस्राणि... अहं वेद्मि शुको वेत्ति सञ्जयो वेत्ति वा न वा

संजय, व्यास आ शुक तीनू गोटे ८८००-८८०० प्रत्येक कए भारतक श्लोक मात्र स्मरण कए सकल छलाह। माने भारत एतेक विशाल छल जे प्रत्येक गोटे सम्पूर्ण स्मरण नहि कए सकल छलाह आ ताहि दृष्टिसँ भारत कहियो २६४०० श्लोकसँ कम नहि छल, जकरा व्यास लिखने छलाह। जय संहिता भारत आ महाभारत दुनूकेँ कहल जाइत छै। युद्ध पर्व (१८ पर्व मे चारि पर्व भीष्म, द्रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) तेना ने परस्पर दोसर पर्व सभसँ जुड़ल अछि जे बिना पछिला पर्व पढ़ने अगिलाक कोनो भाँज नहि लगैत छै। इलियडक युद्ध १० साल धरि चलल छल मुदा इलियड मात्र ट्रॉयक घेरा धरि सीमित छल। मुदा महाभारत बहुत पहिने सँ १८ दिनुका युद्धक कारणसँ शुरु होइत अछि। भीष्म पर्व छठम पर्व अछि, द्रोण पर्व सातम, कर्ण पर्व आठम आ शल्य पर्व नवम। तकरा बाद ९ टा पर्व आर अछि।

किएक तँ कैक बैसारीमे महाभारत केर पाठ सुनाओल जाइत छल ताहि द्वारे ई स्वाभाविक अछि जे पुरान पाठ सभ जे भए चुकल छल केर फेरसँ पुनःस्मरण बेर-बेर कएल जाइत छल। ताहिसँ ई अर्थ निकालब जे ई क्षेपक अछि, अनर्गल होएत। तहिना गीता सेहो पाश्चात्य विद्वान लोकनिक लेल क्षेपक अछि कारण ओ लोकनि भारतीय संस्कृति, साहित्य आ कलाक अनुभव विदेशी मानसिकतासँ करबाक कारण गलती करैत छथि। विदेशी विद्वान ई मानबामे कष्ट अनुभव करैत छथि जे महाभारत ओतेक पुरान भेलाक बादो ओतेक वृहत् अछि आ इलियड ओकर सोझाँ किछु नहि अछि। से एक गोट पद्यक वेबर द्वारा कएल गेल मिथ्या व्याख्याक आधार पर जय संहिता केर संकल्पना आएल। मात्र भारत आ महाभारत केर रूपमे एहि महाकाव्यक विकासकेँ बिना कोनो कारणसँ जय संहिता, भारत आ महाभारत रूपी तीन चरणमे प्रस्तुत कएल गेल। महाभारत केर सभसँ छोट रूपमे सेहो २४६०० सँ कम श्लोक नहि छल आ जय संहिता भारत आ महाभारतकेँ सम्मिलित रूपसँ कहल जाइत छल।

स्त्रीधन

ई ग्रन्थ मायानन्द बाबूक इतिहास बोधक अन्तिम कड़ी अछि। प्रागैतिहासिक “प्रथम शैलपुत्री च”, ऋगवेदिक कालीन “मंत्रपुत्र”, उत्तरवैदिककालीन “पुरोहित” केर बाद ई पुस्तक सूत्र-स्मृतिकालीन अछि, ई ग्रंथ हिन्दीमे अछि। आ ई सूत्र-स्मृतिकालीन उपन्यास मिथिला पर आधारित अछि। ई पोथी प्रारम्भ होइत अछि मायानन्दजीक प्रस्तावनासँ जकर नाम एहि खण्डमे “पृष्ठभूमि” अछि। एतए मायानन्दजी रामायण-महाभारत केर काल गणनाक बाद इतिहासकार लोकनिक एकमात्र साक्ष्य शतपथ ब्राह्मणक चर्च करैत छथि।

मिथिलाक प्राचीनतम नाम विदेह छल, जकर प्रथम वर्णन शतपथ ब्राह्मणमे आएल अछि। सार्थ-गमनक प्रक्रियाक विस्तृत वर्णन एहि ग्रन्थमे अछि, से मायानन्द जी कहैत छथि।

ई ग्रन्थ प्रथम आ द्वितीय दू अध्यायमे अछि आ अन्तमे उपसंहार अछि। प्रथम अध्यायमे प्रथमसँ नवम नौ टा सत्र अछि। द्वितीय अध्यायमे प्रथमसँ अष्टम ई आठ टा सर्ग अछि।

प्रथम अध्याय

प्रथम सत्र

एहिमे सृंजय द्वारा कएल जा रहल धर्म-पश्चात्ताप स्वरूप भिक्षाटनक, पत्नी-त्यागी होएबाक कारण छह मास धरि निरन्तर एकटा महाव्रत केर पालन करबाक चरचा अछि।

“द्वितीय वर” केर सेहो चरचा अछि।

द्वितीय सत्र

राजा बहुलाश्व जनकक ज्येष्ठ पुत्र कराल जनककेँ राजवंशक कौलिक परम्पराक अनुसार सिंहासन भेटलन्हि, तकर वर्णन अछि।

तृतीय सत्र

एतए पुरान आ नवक संघर्ष देखबामे अबैत अछि। वारुणी एक ठाम कहैत छथि जे जखन पूज्य तात हुनकर विधिवत उपनयन करबओलन्हि, ब्रह्मचर्य आश्रममे विधिवत प्राचीन कालक अनुसार श्रुतिक शिक्षा देलन्हि, तँ आब हमहूँ भद्रा कन्या बनि अपन वरपात्रक निर्वाचन स्वयं कए विवाह करए चाहैत छी।

चतुर्थ सत्र

एतए कराल जनकक विरुद्ध विद्रोहक सुगबुगाहटिक चरचा अछि। कृति जनक आ बहुलाश्व जनकक कालमे भेल न्यायपूर्ण आ प्रजाहितकारी कल्याणकारी कार्यक चरचा भेल अछि तँ संगहि सीरध्वज जनकक समयसँ भेल मिथिलाक राज्य-विस्तारक चरचा सेहो अछि। बहुलाश्व मरैत काल अपन पुत्र करालकेँ आचार्य वरेण्य अग्रामात्यखण्ड केर उपेक्षा-अवहेलना नहि करबाक लेल कहने छलखिन्ह मुदा कालान्तरमे वैह कराल जनक अग्रामात्यक उपेक्षा-अवहेलना करए लगलाह। आचार्य वरेण्य-खण्ड मिथिलासँ पलायन कए गेलाह।

पंचम सत्र

प्रणिपात, आशीर्वचन आ कुशल-क्षेमक औपचारिकताक वर्णन अछि आ स्त्रीधनक चरचा सेहो गप-शपक क्रममे आएल अछि। ईहो वर्णन आएल अछि जे वैशाली किछु दिन कौशलक अधीन छल आ भारत-युद्धमे ओ मिथिलाक अधीन छल। वन्य भूमिकेँ कृषि-योग्य बनेबाक उपरान्त पाँच बसन्त धरि कर-मुक्त करबाक परम्पराकेँ राजा कराल जनक द्वारा तोड़ि देबाक चरचा अछि।

षष्ठ सत्र

पांचाल-जन द्वारा अंधक वृष्णिक नायक वासुदेव कृष्णकेँ जय-काव्यक नायक मानल जएबाक चरचा अछि। जय-काव्य आ भारत-काव्यक पश्चिमक उच्छिष्ट भोज मायानन्दजीक मोनसँ नहि हटलन्हि आ जय-काव्यमे मुनि वैशम्पायन व्यास द्वारा बहुत रास श्लोक जोड़ि वृहतकाय भारत काव्य बनाओल जएबाक मिथ्या तथ्यक फेरसँ चरचा अछि। जयकाव्यक लेखक कृष्ण द्वैपायन व्यासकेँ बताओल गेल अछि। आ एकर बेर-बेर चरचा कएल गेल अछि जेना कोनो विशेष तथ्य होअए।

फेर देवत्वक विकासपर सेहो चरचा अछि। सरस्वती धारक अकस्मात् सूखि जएबाक सेहो चरचा अछि।

सरस्वतीक मूर्तिपूजनक प्रारम्भक आ मातृदेवीक सेहो चरचा भेल अछि।

सप्तम् सत्र

सरस्वतीकेँ मातृदेवी बनाकए काल्पनिक सरस्वती प्रतिमा-पूजनक चरचा अछि। मिथिलामे पतिक नाम नहि लेबाक परम्पराक सेहो चरचा भेल अछि।

अष्टम् सत्र

राजाक अत्याचार चरम पर पहुँचि गेल अछि। अपूर्वा द्वारा विवशतापूर्वक गार्हस्थ्य त्याग आ स्त्रीधन सेहो छोड़बाक चरचा भेल अछि।

नवम् सत्र

सएसँ बेशी ग्राम-प्रमुख द्वारा सम्मेलन-उपवेशनक चरचा अछि।

पाँच वसन्त धरि कर-मुक्ति आ ताहिसँ वन्यजन आ शूद्र जनक सम्भावित पलायनक चरचा अछि। सीरध्वज जनकक पश्चात् धेनु-हरण राज्याभिषेकक बाद मात्र एकटा परम्परा रहि गेल, तकर चरचा अछि। मुदा कराल द्वारा अपन सगोत्रीय शोणभद्रक धेनु नहि घुमेबाक चरचा अछि। कराल द्वारा बीचमे प्रधान पुरहितकेँ हटेबाक चरचा अछि। चिकित्साशास्त्रक नवोदित चिकित्सक बटुक कृतार्थकेँ राजकुमारीक चिकित्साक लेल बजाओल जाइत अछि, संगमे राजकुमारीक सखी आचार्य कृतक पुत्री वारुणीकेँ सेहो बजाओल जाइत अछि। ओ अपन अनुज बटुकक संग जाइत छथि आ कराल बलात् अपन कक्ष बन्द कए हुनकासँ गांधर्व-विवाह कए लैत छथि। प्रजा विद्रोह आ राजाक घोड़ा पर चढ़ि कए पलायनक संग प्रथम अध्यायक नवम आ अन्तिम सत्र खतम भए जाइत अछि।

द्वितीय अध्याय

प्रथम सर्ग

सित धारक चरचा अछि। वारुणिकेँ वरुण सार्थवाह सभक संग अंग जनपद चलबाक लेल कहैत छन्हि। आ संगे वरुण ईहो कहैत छथि जे अंग जनपदक आर्यीकरणक कार्य अखनो अपूर्ण अछि।

द्वितीय सर्ग

तृतीय सर्ग

अंग क्षेत्रमे धानसँ सोझे अरबा नहि बनाओल जएबाक चरचा अछि, ओतए उसीन-सुखा कए ढेकीसँ बनाओल अरबाकेँ चाउर कहल जएबाक आ ब्रीहिकेँ धान कहबाक वर्णन भेल अछि। पूर्वकालक श्रेष्ठी द्विज वैश्य आ अद्विज नवीन वैश्यक चरचा भेल अछि।

चतुर्थ सर्ग

आर्यीकरणक बेर-बेर चरचा पाश्चात्य विद्वानक मायानन्दजी पर प्रभाव देखबैत अछि। आर्य आ द्रविड़ शब्द दुनू, पाश्चात्य लोकनि भारतमे अपन निहित स्वार्थक लेल अनने छलाह। कोशल आ विदेहक प्रसारक, देवत्वक विकासक सम्पूर्ण इतिहास एतए देल गेल अछि। मिथिलाक दही-चूड़ाक सेहो चर्च आएल अछि।

पञ्चम सर्ग

दिनमे एकभुक्त आ रातिमे दुग्धपान मिथिला आ पांचाल दुनू ठाम छल। तथाकथित आर्य आ स्थानीय लोकनिक बीच छोट-मोट जीवनशैलीक अन्तर- आ मायानन्दजी आर्यीकरण कहैत छथि ओकरा पाटब!

षष्ठ सर्ग

अंगक गृह आर्यग्राम जेकाँ सटि कए नञि वरन् हटि-हटि कए होएबाक वर्णन अछि। हुनका सभ द्वारा छोट-छोट वस्त्र आ पशु चर्म पहिरबाक सेहो वर्णन अछि। वन्यजनक बीचमे नरबलि देबाक परम्पराक संकेत आ निष्कासित वन्यजनसँ भाषाक आदान-प्रदान सेहो मायानन्दजी पाश्चात्य प्रभावसँ ग्रहण कए लेने छथि।

विक्रय-थान खोलबाक जाहिसँ भविष्यमे नगरक विकास संभव होएत, तकर चर्च अछि।

सप्तम सर्ग

उसना चाउरक अधिक सुपाच्य होएबाक आ ताहि द्वारे ओकर पथ्य देबाक गप कएल गेल अछि। लौह-सीताक लेल लौहकार, हरक लेल काष्ठकार, बर्तन-पात्रक लेल कुम्भकार इत्यादि शिल्पीक आवश्यकता आ ताहि लेल आवास-भूमि आ भोजनक सुविधा देबाक गप आएल अछि।

अष्टम सर्ग

कृषि उत्पादनक पश्चात् लोक अन्नक बदला सामग्री बदलेन कए सकैत छथि, वृषभ-गाड़ीसँ सामग्रीक संचरण, एक मास धरि चलएबला यज्ञक व्यवस्था भूदेवगण द्वारा कएल जएबाक प्रसंग सेहो आएल अछि। भाषा-शिक्षण क्रममे ब्राह्मणगामक अपभ्रंश बाभनगाम आ वनग्रामक वनगाम भए गेल। भाषा सिखा कए घुरैत काल वारुणीपर तीरसँ आक्रमण भेल आ फेर वारुणिक मृत्यु भए गेल।

उपसंहार

दोसर वसन्त अबैत मिथिलामे गणतंत्रक स्वरूपक स्थापना स्थिर भए गेल। वैशाली आ मिथिलाक बीच परस्पर सम्वाद एक गणतांत्रिक सूत्रमे जुड़बाक लेल होमए लागल। सितग्राम स्थित राजधानीमे पूर्वमे मिथिलाक सीमा-विस्तारक चरचा भेल। राजधानी सितग्राम आ पूर्वी मिथिलाक जितग्रामक बीच एकटा महावन छल। एकरा ब्राह्मणग्राम आ त्रिग्राम द्वारा मिलिकए जड़ाकए हटाओल गेल।

भाषा विज्ञान प्रसंग - ऋगवैदिक ऋचामे प्राकृतक किछु विशेष शब्द, ध्वनि, प्रत्यय आ वाक्य रचना भेटैत अछि। पाणिनी संस्कृतकेँ मानक भाषा आ प्रादेशिक तत्वसँ मुक्त भाषाक रूप देने छलाह। कर्णाटकमे पानिकेँ नीरू आ उत्तर भारतमे जल कहल जाइत अछि। पानिक ई दुनू रूप संस्कृतमे भेटत। प्राकृतिक तत्वसँ मुक्त भाषा बनेबाक लेल पाणिनी कोनो क्षेत्रक अवहेलना नहि कएने छलाह वरण सभ क्षेत्रक शब्दकोष लए उच्चारणक भेदकेँ खतम कएने छलाह। बहुत रास प्राकृत शब्द संस्कृतमे ध्वन्यात्मक संशोधन कए लेल गेल आ ताहिसँ बादमे ई धारणा भेल जे प्राकृतक शब्द सभ तद्भव छल। संस्कृतमे तद्भव ताहि कारणसँ नहि देखबामे अबैत अछि। तहिना अपभ्रंश आ प्राकृत भाषा सौँसे देशमे घुमए बलाक भाषा छल।

भारतमे देवतंत्रक विकास पानि संबंधी धारणासँ जुड़ल अछि। यावत विश्व अव्यक्त अछि तँ अन्धकारमय अछि, अकास अछि, व्यक्त भेलापर ओ जल बनि जाइत अछि। अकास आ जल दुनू भारतीय चिन्तनमे तत्व अछि। मूर्तिपूजनक जे चित्र मायानन्दजी चित्रित करैत छथि ओ सरलीकरण अछि। भाषा-प्रसारक जे विधि ओ स्त्रीधनमे देखबैत छथि सेहो अति सरलीकरण अछि।

श्रवण द्वारा परम्पराक निर्वहण साहित्यमे देखल गेल छल आ से महाभारतमे किछु ठाम बेर-बेर देखबामे अबैत अछि, से ताहि कारण कतेको पर्वकेँ क्षेपक कहल जाएब सम्भव नहि। वेदक प्रतिशाख्यकेँ ओना देखलापर ई ज्ञात होएत जे लिखबाक परम्पराक अछैत ई सम्भव नहि छल मुदा महाभारत अबैत-अबैत कट्टरता बढ़ल। महाभारतमे वर्णन अछि:

वेदविक्रयिणश्चैव वेदानांचैवदूषकः।

वेदानांलेखकश्चैव तेवै निरयगामिनः॥

(वेदक विक्रेता, गलत-व्याख्या कएनिहार आ लेखक, सभ नरकक पथपर गेनिहार छथि।)

कराल प्रसंग: कराल जनकक कुकृत्यक वर्णन अर्थशास्त्रमे एना आएल अछि:

(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्यायः इन्द्रियजये अरिषड्वर्गत्याग): तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा
दाण्डक्यो नाम भोजः कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमानः सबन्धराष्ट्रोविननाश करालश्च वैदेहः,...।

भिक्षु प्रभामतीक जयमंगल भाष्य एहिमे जोड़ैत अछि जे कराल योगेश्वर तीर्थमे भीड़ दिशि देखैत काल एकटा सुन्दर ब्राह्मण-स्त्रीकेँ देखलक आ ओकरा अपन राज्य जबर्दस्ती लए गेल। ओ ब्राह्मण ओकर राजधानी गेल आ कानि खीजि कए कहलक जे ई धरती किएक नहि फटैत अछि जतए एहन कुकर्मी राजा रहैत अछि। धरती फाटल आ ओहिमे कराल परिवार समेत धसि कए मरि गेल।

एकटा ब्राह्मण स्त्रीक अपहरण करालक पतनक कारण छल ई चरचा अश्वघोषक बुद्धचरितमे सेहो आएल अछि जेना कौटिल्यक अर्थशास्त्रमे आएल अछि। मुदा दीपवंश कराल जनकक बाद ओकर पुत्र आ पौत्रक राजा होएबाक वर्णन करैत अछि। ब्राह्मण ग्रंथ सभ विदेहकेँ राजशाही आ बौद्ध ग्रन्थ सभ गणतंत्र (राजा समिति द्वारा चुनल) कहैत अछि आ मत विभिन्नताक से कारण।

एहि प्रकारें मायानन्द मिश्रजीक ऐतिहासिक यात्रा बहुत रास एहन तथ्य अनलक जे कोनो तरहेँ तर्कसँ पुष्ट नहि भए सकल।

पूरक विवेचन

मायानन्दक इतिहास-बोधक समीक्षा हम श्रुति, परम्परा, तर्क आ भाषा-विज्ञानक आधार पर कएने छी। पाश्चात्य विद्वान सभक उच्छिष्ट भोज सँ निर्मित भारतीय इतिहास-लेखन सँ बचि कए इतिहासक समीक्षा भेल अछि आ मध्य एशिया आ यूरोपक कनियो प्रभाव समीक्षा पर नहि पड़ए से प्रयास कएल गेल अछि।

१. अग्ना- २००० ई. पू. सँ आरम्भ होइत अछि ई उपन्यास। खोहमे रहएबला मनुष्यक विवरण शुरू होइत अछि। बा एकटा दलक सर्वाधिक बलिष्ठ मनुष्य अछि। पूर्वज बा सेहो बलिष्ठ छल। एतेक रास बच्चा सभक बा। एकटा छोट आ एकटा पैघ पाथरक आविष्कार कएने छलाह पूर्वज बा। अम् दलाग्राकेँ कहल जाइत छल। बा भयंकर गंधवला पशुक नाम सेहो छल। हाथक महत्व बढ़ल आ बढ़ल वृक्षसँ दूरी। सर्पकेँ मारि कए खाएल नहि जाइत अछि, से गप पूर्वजसँ ज्ञात छल। प्राचीन देव वृक्ष, दोसर नाग देव आ तेसर नदी देव छलाह। अम्बासँ बा संतान उत्पन्न करैत आएल छलाह। नव कुठार आ नव काताक आविष्कार भेल। अः आः अग अग्ग केर देखि कए वन्य पशुकेँ भागैत देखि एकर जानकारी भेल। मानुषी हुनकर संख्या वृद्धि करैत छलि। प्रथम मानुषीक नाम पड़ल अग्ना। ओकर मानुष-मित्र छलाह अग्ग। अग्ना दलाग्रा बनि गेलीह आ हुनकर नेतृत्वमे दल उत्तर दिशि बढ़ल। फेर लेखक लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- “ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्ठाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे” आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १, ९७, २९, ४ ९, ० ३२ वर ्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। ई दुनू दृष्टिकोण वैज्ञानिक दृष्टिकोणसँ देखलापर हास्यास्पद लगैत अछि।

अग्ना-शैलासँ शुरू होइत अछि दोसर भाग। १०००० ई. पू. । भाषाक आरंभक प्रारंभ मायानन्द मिश्र एहिमे प्रकट कएने छथि। एहिमे बड्ड नीक जेकाँ, संकेत भाषासँ ध्वनिक संबंध परिलक्षित कएल गेल अछि। चलंत सँ स्थिर जीवनक शुरुआत सेहो देखायल गेल अछि। तकर बाद शैला कराली अध्यायक प्रारंभ होइत अछि, ७५०० वर्ष पूर्वसँ। गौ पालनक चर्चा होइत अछि, गायक संख्यामे पर्याप्त वृद्धि भेल छल। सभ रहथि चरबाह, चर्मस्त्रधारी। आ कटिमे पाथरक हथियार। भेड़, बकरी आ सुग्गर छल, किछु आन पोसिया जंतु जात सेहो रहए। घासक रस्सी, त्रिशूल आ नागदेवक चर्चा होइत अछि। बाक नाम आब भऽ जाइत अछि, ओजा। दलाग्राक नाम पड़ैत अछि शैला कराली। पशुक संख्या बढ़ल तँ पशुक चोरि सेहो शुरू भऽ गेल। पीपरक गाछक नीचाँ बैठकीक प्रारम्भ भेल। करालीक नाम अंबा पड़ल।

तकर बाद महेष-पारवती अध्याय शुरु होइत अछि ४ सँ ५ हजार वर्ष पूर्व। धानक फसिलक प्रारंभ भेल। पारवती जहिया अएलीह तहिया ओतुक्का प्रथाक अनुसार लाल माटि माथमे लगा देल गेल। पुत्रक नाम गणेष पड़ल। एहिसँ पहिने संतानक परिचय नहि देल जाइत छल।

गणेष- ई अध्याय ४००० वर्ष पूर्वसँ शुरू होइत अछि। स्त्री-पुरुष संबंध आ पितृ कुलक आरंभक चर्चा शुरू भेल। नून अनबाक आ खेबाक प्रारंभ भेल। नून अनबासँ कुलक नाम नोनी पड़ल। जव आ गहूमक खेतीक प्रारंभ आ दूध दुहबाक आरंभ देखाओल गेल अछि। हाथीक पालनक प्रारंभ आ अदला-बदलीसँ विनिमयक प्रारंभ सेहो शुरू भेल। शिश्न देव पर जल आ पात चढ़ेबाक प्रारंभ सेहो भेल। यवकेँ कूटब आ बुकनी करबाक प्रारंभ भेल। गहूमकेँ चूरब आ पानिमे भिजा कए आगिमे पकाएब प्रारंभ भेल। पक्षिपालन करएबला एकटा भिन्न दल छल। मृतक-संस्कार आ मृत्यु पर कनबाक प्रारंभ सेहो भेल। लिपिक प्रारंभ सेहो भेल।

हर- एहि अध्यायक प्रारंभ ३५०० ई. पू. देखायल गेल अछि। नूनक व्यापार आ सुगढ़ नावक निर्माण प्रारंभ भेल। पइलीक कल्पना नपबाक हेतु भेल। हर आ बड़दक सम्मिलन प्रारंभ भेल। इनार खुनबाक प्रारंभ आ जनक लंबवत केर अतिरिक्त चौड़ाइमे बसबाक प्रारंभ सेहो भेल। घर बनएबाक प्रारंभ सेहो भेल। कारी, गोर आ ताम्रवर्णी कायाक बेरा-बेरी आगमन होइत रहल।

हरकिसन अध्यायक प्रारम्भ ३४०० वर्ष पूर्व होइत अछि। कृषि विकासक संग स्थायी निवासक प्रवृत्ति बढ़य लागल। तकरा बाद परिवारक रूप स्पष्ट होमय लागल। कृषि-विकाससँ वाणिज्य विस्तारक आवश्यकता बढ़ल। ऊनक वस्त्र, चक्की, भीतक घर आ इनारक घेराबा बनए लागल।

किसन अध्यायक प्रारम्भ ३३०० ई. पूर्व भेल। श्रम-बेचबाक प्रारम्भ भेल। पटौनीक प्रारम्भक संग कृषि-विकास गति पकड़लक। भूगोलक जानकारी भेलासँ वाणिज्य बढ़ल। अलंकारक प्रवृत्ति बढ़ल।

हड़प्पा: मोहनगाँव अध्याय ३२०० वर्ष पूर्व देखाओल गेल अछि। श्रम-बेचबाक हेतु काठक टोलक उदाहरण अबैत अछि। अलंकार प्रवृत्ति बढ़ल। गोलीक मालाक संग कुम्हारक चाक सेहो सम्मुख आयल। समाजमे वर्ग विभाजनक प्रारम्भ भेल।

गणेषक श्रीगणेष अध्याय ३१०० ई. पूर्व प्रारम्भ भेल। दक्षिणांचल लोकक आगमनक बाद हड़प्पा हुनका लोकनि द्वारा बनेबाक चर्च लेखक करैत छथि। मोहनजोदड़ो, लोथल आ चान्हूदोड़ोक विकास व्यापारिक केन्द्रक रूपमे भेल। लिपि, कटही गाड़ी आ मूर्त्तिकलाक आविष्कार भेल आ वस्तु विनिमयक हेतु हाट लागए लागल। मेसोपोटामियाक जलप्लावन आ सुमेरी आ असुरक आगमनक चर्चा लेखक करैत छथि।

किश्न अध्यायक प्रारम्भ ३००० ई. पू. सँ भेल। विदेश व्यापारक आरम्भ भेल। तामक आविष्कार भेल। कृषि दासत्वक सेहो प्रारम्भ भेल। बाढ़िसँ सुरक्षाक हेतु ऊँच डीह बनाओल जाए लागल।

किश्न मंडल अध्याय २४०० ई. पू. केर कालखण्डसँ आरम्भ कएल गेल अछि। एहिमे वर्षाक अभावक चरचा अछि। आर्यक पूर्व दिशामे बढ़बाक चर्चासँ लोकमे भयक सेहो चर्चा अछि।

मंडल: मंडली अध्याय २२०० ई. पू. सँ प्रारम्भ भेल। आर्यक आगमनक आ वर्षाक अभाव दुनूकेँ देखैत लोथल वैकल्पिक रूपसँ विकसित होमए लागल।

पतन: पुरंदर: एहि अध्यायक कालखण्ड २००० ई. पू. सँ प्रारम्भ भेल अछि। आर्यक राजा द्वारा पुरकेँ तोड़ि महान केंद्र हड़प्पाकेँ ध्वस्त करबाक चर्चासँ मायानन्द जी अपन पहिल किताब ‘प्रथमं शैल पुत्री च’ केर समापन करैत छथि। आर्य हड़प्पाकेँ हरियूपियासँ संबोधित कएल, आर्य बाहरसँ अएलाह प्रभृत्ति किछु सिद्धांतक आधार पर रचित ई उपन्यास ऐतिहासिक उपन्यास होएबाक दावा करैत अछि। आ एहिमे २०, ००० ई. पू. सँ १८०० ई. पू. धरिक इतिहासोपाख्यानक चर्चा अछि। मुदा मौलिक ऐतिहासिक विचारधारा आ नवीन शोधक आधार पर एकर बहुतो बात समीचीन बुझना नहि जाइत अछि।

अग्नासँ शुरू भेल ई कथानक बड्ड आशा दिअओने छल। लेखक पहिल अध्यायमे लिखैत छथि जे पृथ्वीक उत्पत्ति लगभग २०० करोड़ वर्ष पूर्व भेल जे सर्वथा समीचीन अछि। कर्मकाण्डमे एक स्थान पर वर्णन अछि- “ब्राह्मणे द्वितीये परार्धे श्री स्वेतवाराह कल्पे वैवस्वत मन्वंतरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे प्रथम चरणे” आ एहि आधार पर गणना कएला उत्तर १, ९ ७, २ ९, ४ ९, ० ३२ वर्ष पृथ्वीक आयु अबैत अछि। रेडियोएक्टिव विधि द्वारा सेहो ईएह उत्तर अबैत अछि। ई अनुमानित अछि जे यूरेनियमक १.६७ भाग १०, ० ०, ० ०, ० ०० वर्षमे सीसामे बदलि जाइत अछि। विभिन्न प्रकारक पाथर आ चट्टानमे सीसाक मात्रा भिन्न रहैत अछि। एहि प्रकारसँ गणना कएला पर ई ज्ञात होइछ जे रेडियोएक्टिव पदार्थ १, ५ ०, ० ०, ० ०, ० ०० वर्ष पहिने विद्यमान छल। एहि प्रकारेँ कोनो शैलक आयु २, ० ०, ० ०, ० ०, ० ०० वर्षसँ अधिक नहि भऽ सकैछ। यूरोपमे सत्रहम शताब्दी धरि पृथ्वीक आयु ४००० वर्ष मानल जाइत रहल। ईरानक विद्वान १२०० वर्ष पहिने पृथ्वीक उत्पत्ति मानलन्हि। एहि तरहक पाश्चात्य शोधकेँ लेखक पहिल अध्यायमे तँ नकारि देलन्हि मुदा अंत धरि जाइत-जाइत ओ - आर्य लोकनि हड़प्पाकेँ हरियूपिया कहैत छथि - एहि प्रकारक पाश्चात्य दुराग्रहक प्रभावमे आबि गेलाह। पश्चिमी विद्वानक उच्छिष्ट भोजसँ बचि श्रुति परम्पराक परीक्षा तर्कसँ नहि कए सकलाह। एहि प्रकारे ‘प्रथमं शैल पुत्री च’ निम्न आधार पर अपन इतिहासोपाख्यान साहित्यिक रूपसँ नहि बना पओलक:-

पुरातात्विक, भाषावैज्ञानिक आ साहित्यिक साक्ष्य एहि पक्षमे अछि जे आर्य भारतक मूल निवासी छलाह। आर्य भाषा परिवारक नामकरण मैक्समूलर द्वारा कएल गेल छल। द्रविड़ परिवारक नामकरण पादरी रॉबर्ट काल्डवेल द्वारा कएल गेल छल। आर्यक आक्रमणक सिद्धांत आएल ग्रिफिथक ऋग्वेदक अनुवादमे देल गेल फूटनोटसँ। पहिने तँ ई नामकरण विदेशी विद्वान द्वारा कएल गेल छल ताहि द्वारे ओकर अपन उद्देश्य होएतैक।

सघोष आ महाप्राण ऋग्वेदिक आ भारतीय भाषाक ध्वनिक प्रतिरूप, नहि तँ ईरानी आ नहिये यूरोपीय भाषा सभमे भेटैत अछि। सरस्वती आ सिन्धु धारक बीचक सभ्यता छल आर्यक सभ्यता। सरस्वती धारक तटवर्ती भरत, पुरु आ अन्य गण सभ मिलि कए ऋगवेदक रचना कएलन्हि। सरस्वतीमे जल-प्रलयक बाद ई सभ्यता सारस्वत प्रदेश सँ हटि कए कुरु-पांचाल आ ब्रह्मर्षि प्रदेश-मध्यदेश-पहुँचि गेल। इतिहासमे भरत लोकनिक महत्व समाप्त भऽ गेल। एहि जल प्रलयक बाद आर्यजन लोकनिक वंशज मोहनजोदड़ो आ हड़प्पा नगरक निर्माण कएने होएताह सेहो सम्भव। हड़प्पा सभ्यताक ८०० मे सँ ५३० सँ ऊपर स्थान एहि लुप्त सरस्वती धारक तट पर अवस्थित छल। सिन्धुक धार पर एहि स्थल सभक बड्ड कम निर्भरता छल आ जखन सरस्वतीमे पानिक प्रवाह घटल तँ एहि सभ केन्द्रक ह्रास प्रारम्भ भऽ गेल।

प्रथम मण्डलमे काक्षसेनी पुत्री ऋजिश्वाक चर्च अछि संगहि ऋतुर्वित पुत्री शाश्वतीक सेहो। जन सभा आ जन-समिति द्वारा राजाकेँ च्युत करबाक/ निर्वासन देबाक आ दोसर राजाक निर्वाचन करबाक चर्चा सेहो अछि। नेत्रक नील रंग रहबाक बदला श्यामल भऽ जएबाक चर्चा आ एकर कारण खास तरहक विवाहक होयबाक चर्चा सेहो भेल अछि। वितस्ता तटसँ कृष्ण सभक निरन्तर उपद्रवक चर्चा सेहो अछि। सुवास्तु तटसँ रक्त मिश्रणक प्रक्रियाक वर्णन अछि। गोमेधकेँ वर्जित कएल जाय, ई विचार विमर्श कएल जाए लागल। दासक चर्चा सेहो अछि। हरियूपिया पतन आ ओकर विभिन्न नगर सभक उजड़ि जएबाक चर्चा अछि आ पश्चात्, बल्बूथ द्वारा अनार्य सभक ध्वस्त वाणिज्य व्यवस्थाकेँ संगठित करबाक चर्चा अछि।

महावैराजी यज्ञक चर्चा अछि। समस्त दस्यु-ग्रामक दास बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि आ ओ सभ पशुपालन आ पणि कार्य कऽ सकैत छथि। नग्नजितक प्रसंग लए मंत्र गायन केनिहार ब्राह्मण, गविष्ठि युद्ध कएनिहार क्षत्रिय आ एकर अतिरिक्त जे कृषि विकासमे बेशी ध्यान दैत छलाह से विश- सामान्य जन छलाह मुदा एहिमे मायानन्द जी वैश्य शब्द सेहो जोड़ि देने छथि।

बर्बर उजरा आर्यक आक्रमणक चर्चा आब जा कए भेल अछि। प्रायः विदेशी विशेषज्ञक एक भागक संग मायानन्द जी सेहो पैशाची आक्रमणकेँ बादमे जा कए बूझि सकलाह आ एकरा सेहो आर्यक दोसर भाग बना देलन्हि। आर्य हरियूपियाकेँ डाहि कए नष्ट कए देने छलाह एकर फेर चर्च आबि गेल अछि। मोहनजोदड़ो आतंकसँ उजड़ि गेल फेर भूकम्पो आयल ताहूसँ नगर ध्वस्त भेल। आब मायानन्दजी ओझराएल बुझाइत छथि। वर्षा कम होएबाक सेहो चर्चा अछि।

ऋषिग्रामक चर्चा अछि। कुलमे दास आ दासी होएबाक संकेत अछि। वृषभ पालनक सेहो संकेत अछि। मंत्र-पुत्रक ग्रामांचल चलि जएबाक आ विशः-वैश्य बनि जएबाक सेहो चर्चा अछि। मुदा आगाँ मायानन्दजी ओझराइत जाइत छथि। कश्यप सागर तटसँ प्रस्थान-पूर्व द्यौस आ त्वराष्ट्री केर गौण देव भऽ जएबाक चर्चा अछि। ब्राह्मण आ क्षत्रियक विभाजन नहि होएबाक चर्च अछि आ क्यो कोनो कर्म करबाक हेतु स्वतंत्र छल। देवासुर संग्राम आ हेलमन्द तटक युद्ध आ पशुपालनक चर्चा अछि। पश्चात ब्रह्मण आ क्षत्रियक कर्मक फराक होएब प्रारम्भ भए गेल। पश्चात् मंत्र-द्रष्टा ऋषि द्वारा मंत्रमे देवक आ अपन नाम राखब प्रारम्भ भेल- एकर चर्चा अछि। श्रुति अभ्यासक प्रारम्भ होएबाक चर्चा अछि कारण मंत्रक संख्या बढ़ि गेल छल।

अंतमे ऋचालोक नामसँ भूमिका लिखल गेल अछि। देवासुर संग्रामक बाद इन्द्र असुर उपाधि त्यागलन्हि, हित्ती मित्तानी चलल आ आर्य पूर्व दिशा दिशि बढ़ल- एहि सभ तथ्यक आधार पर लिखल ई मंत्रपुत्र ऐतिहासिकताक सभटा मानदण्ड नहि अपना सकल।

ग्रिफिथक ऋगवेदक अनुवादक पादटिप्पणीमे पहिल बेर ई आशंका व्यक्त कएल गेल जे आर्य आक्रमणकारी पश्चिमोत्तरसँ आबि कए मूल निवासीक दुर्ग तोड़लन्हि। दुर्गमे रहनिहार बेशी सभ्य रहथि। १९४७ मे ह्वीलर ई सिद्धांत लऽ कए अएलाह जे विभाजित पाकिस्तान सभ्यताक केन्द्र छल आ आर्य आक्रमणकारी विदेशी छलाह। एकटा भारतीय विद्वान रामप्रसाद चंद ताहिसँ पहिने ई कहि देने रहथि जे एहि नगर सभक निवासी ऋगवेदक पणि छलाह। मुदा मार्शल १९३१ ई मे ई नव गप कहने छलाह जे आर्यक भारतमे प्रवेश २००० ई. पूर्व भेल छल आ तावत हड़प्पा आ मोहनजोदड़ोक विनाश भऽ चुकल छल। १९३४ मे गॉर्डन चाइल्ड कहलनि जे आर्य संभवतः आक्रमणकारी भऽ सकैत छथि। १९३८ मे मकॉय मोहनजोदाड़ोक आक्रमणकेँ नकारलन्हि, किछु अस्थिपञ्जड़क आधार पर एकरा सिद्ध कएनाइ संभव नहि। डेल्स १९६४ मे एकटा निबन्ध लिखलन्हि ‘द मिथिकल मसेकर ऑफ मोहंजोदाड़ो’ आ आक्रमणक दंतकथाक उपहास कएलन्हि। तकर बाद ह्वीलर १९६६ मे किछु पाछाँ हटलाह मुदा मकॉयक कबायलीक बदलामे सभटा आक्रमणक जिम्मेदारी बाहरी आर्यगणक माथ पर पटकि देलन्हि। आब ओ कहए लगलाह जे आर्य आक्रमणकेँ सिद्ध नहि कएल जा सकैत अछि मुदा ज्योँ ई संभव नहि अछि तँ असंभव सेहो नहि अछि। स्टुआर्ट पिगॉट १९६२ धरि ह्वीलरक संग ई दुराग्रह करैत रहलाह। पिगॉट आर्यकेँ मितन्नीसँ आएल कहलन्हि। नॉर्मन ब्राउनकेँ सेहो पंजाब प्रदेशक शेष भारतक संग सांस्कृतिक संबंधक संबंधमे शंका रहलन्हि। संस्कृत आ द्रविड़ भाषाक अमेरिकी विशेषज्ञ एमेनो लिखलन्हि जे सिन्धु घाटी कखनो शेष भारतसँ तेना भऽ कए सांस्कृतिक रूपसँ जुड़ल नहि छल। जे आर्य ओतए अएलाह सेहो ईरानी सभ्यतासँ बेशी लग छलाह।

आब जा कए एंगेल्स कहैत छथि जे यूनानमे मातृसत्तासँ पितृसत्ता प्राचीन कालक सभसँ पैघ क्रान्ति छल। ई क्रान्ति ऋगवेदिक कालमे घटित भए गेल छल। श्रमक वैशिष्टीकरणसँ उत्पादनमे गोत्रक भूमिका घटि जाइत अछि आ कुटुम्बक बढ़ि जाइत अछि। गण, गोत्र, कुल आ कुटुम्बक क्रमशः विकास सामूहिक भूसंपत्तिक संगठनसँ होइत अछि। ऋगवेदमे कुम्भकार, कमार (काष्ठकार), लोहार आ धातु शिल्पक चर्च अछि। प्राचीन ईरानमे असुरक प्रतिरूप अहुरक प्रयोग भेल। ओ लोकनि एकर उपासक छलाह मुदा असुर-उपासक भारतीय जनक प्रभाव ईरान धरि सीमित छल, आगाँ एकर प्रसार नहि भेल। भारतमे असुर दुष्ट छथि मुदा ईरानमे देव दुष्ट छथि। असुरक गरिमा सम्पूर्ण ऋगवेदमे अछि। कोनो मण्डल एहन नहि अछि जाहिमे कोनो एक वा आन देवताकेँ असुर नहि कहल गेल होअए। मुदा

एहनो असुर छथि जे देवक विरोधमे छथि आ इन्द्रसँ एहन अदेवाः असुराः केर नाशक हेतु आह्वाण कएल गेल अछि। इन्द्रक समान अग्नि सेहो असुरक नाश करैत छथि आ इन्द्र आ बृहस्पति दुनू गोटे स्वयं असुर छथि। असुर देवताक उपाधि छल। ऋगवेदमे देव आ असुरक सदृश असुर एकटा भिन्न वर्ग छल असुर श्वास लैत छलाह मुदा देव नहि। देवसँ असुर बेशी प्राचीन छथि ताहि द्वारे असुर वरुण देव आ मनुष्य दुहूक राजा छथि।

हे भगवान्। अपन देशमे सुयोग्य आ सर्वज्ञ विद्यार्थी उत्पन्न होथि, आ शुत्रुकेँ नाश कएनिहार सैनिक उत्पन्न होथि। अपन देशक गाय खूब दूध दय बाली, बड़द भार वहन करएमे सक्षम होथि आ घोड़ा त्वरित रूपेँ दौगय बला होअए। स्त्रीगण नगरक नेतृत्व करबामे सक्षम होथि आ युवक सभामे ओजपूर्ण भाषण देबयबला आ नेतृत्व देबामे सक्षम होथि। अपन देशमे जखन आवश्यक होय वर्षा होए आ औषधिक-बूटी सर्वदा परिपक्व होइत रहए। एवं क्रमे सभ तरहेँ हमरा सभक कल्याण होए। शत्रुक बुद्धिक नाश होए आ मित्रक उदय होए॥

एहिमे वाचकलुप्तोपमालङ्कार अछि।

धे॒नुर्वोढा॑न॒ड्वाना॒शुः धे॒नु-गौ वा वाणी वोढा॑न॒ड्वा- पैघ बड़द ना॒शुः-आशुः-त्वरित

सप्ति॒ः-घोड़ा

ग्रिफिथक अनुवाद- हे ब्रह्मण, हमर राज्यमे ब्राह्मण नीक धार्मिक विद्या बला, राजन्य-वीर, तीरंदाज, दूध दए बाली गाय, दौगय बला जन्तु, उद्यमी नारी होथि। पार्जन्य आवश्यकता पड़ला पर वर्षा देथि, फल देय बला गाछ पाकए, हम सभ संपत्ति अर्जित/ संरक्षित करी।

विनियोगमे पूर्व आ उत्तर वैदिक युग, महाभारत काल इत्यादिक काल निर्धारण पर चरचा कएल गेल अछि। संन्यास आ मोक्ष धारणाक प्रवेश, सूत्र साहित्य, आरण्यक आ उपनिषद आ ब्राह्मण ग्रंथक रचनाक सेहो चरचा अछि। कर्मणा केर बदलामे जन्मना सिद्धांतक प्रारम्भ आ शूद्र शब्दक उद्भव, नगरक, आहत मुद्राक, उद्योगक सुदृढ़ीकरणक आ लोहाक प्रयोगक सेहो चरचा भेल अछि। फेर मायानन्द जी ई लिखि जाइत छथि जे दाशरज्ञ युद्ध ई. पू. १८०० मे भेल- भरत आ कुशिक-कस्साइटक सम्मिलित समूह सरस्वती तटसँ व्यास नदी पार करैत इलावृत पर्वत प्रदेश होइत; आ ओ लोकनि कोशल मिथिलाक राजतंत्रक, कुरु-पांचालक संस्कृतिक विकसित होएबासँ पूर्वहि, स्थापना कएने छलाह।

पुरोहित तेरह टा सर्गमे विभक्त अछि आ एकर अन्त उपसंहारसँ होइत अछि। प्रथम सर्ग दक्षिण पांचालक कांपिल्य नगरसँ शुरू होइत अछि। अथर्वणपल्लीक पशुशालामे साँझ होइत देरी उठैत धुँआक चरचा अछि। मेधा आ कुशबिन्दुसँ कथा आगू बढ़ैत अछि। ऋषि गालबक आश्रममे ऋगवेदकेँ कंठाग्र कराएल जएबाक आ बादमे जा कए कृषि संबंधी शिक्षा देल जएबाक वर्णन अछि।

पाँचम सर्गमे वैश्य द्वारा उपनयन संस्कार छोड़बाक चरचा अछि मुदा क्षत्रिय पुत्र आ पुत्री दुनूक उपनयन करैत छलाह। वैश्य कन्या शिक्षासँ दूर जा रहल छलीह आ ब्राह्मण कन्या गुरुकुलक अतिरिक्त पितासँ शिक्षा लए रहल छलीह। ब्राह्मणकेँ पौरहित्यसँ कम समय भेटैत छलन्हि।

आठम सर्गमे इद्रोत्सवमे रथदौड़, अश्वारोहण, मल्लयुद्ध, असिचालन, लक्ष्यभेद आ विलक्षण अनुकृतिक चरचा अछि आ व्यासपल्लीक लोक द्वारा अनुकृति करबाक चरचा अछि। व्यासपल्लीमे व्रात्य करुष भारत युद्धक कथा कहि रहल छलाह। भारत युद्धक बहुत पूर्व भरत, त्रित्सु, किवी आ सृंजय मिश्रित जनक आर्यवर्तमे शूद्र नामसँ सुमेरियाक जियसूद्रक स्मृतिमे अपनाकेँ गौरव देबाक हेतु सूद्र कहबाक वर्णन अछि।

“ॐ मंत्रार्था सिद्धयः संतु मनोरथाः। शत्रूणां बुद्धिनाशोऽस्तु मित्राणामुदयस्तव” आ दीर्घायुर्भव केर मेल शुक्ल यजुर्वेदक २२/२२ मंत्रसँ कए दूबि अक्षत लए, विशेष लए ताल गति यति मे गएबाक वर्णन अछि। एकर अनुवाद सेहो मायानन्द जी देने छथि, जे ग्रिफिथक अनुवादसँ प्रेरित अछि: -

अष्टौश्लोक सहस्राणि..... अहं वेद्मि शुको वेत्ति सञ्जयो वेत्ति वा न वा

संजय, व्यास आ शुक तीनू गोटे ८८००-८८०० प्रत्येक कए भारतक श्लोक मात्र स्मरण कए सकल छलाह। माने भारत एतेक विशाल छल जे प्रत्येक गोटे सम्पूर्ण स्मरण नहि कए सकल छलाह आ ताहि दृष्टिसँ भारत कहियो २६४०० श्लोकसँ कम नहि छल, जकरा व्यास लिखने छलाह। जय संहिता भारत आ महाभारत दुनूकेँ कहल जाइत छै। युद्ध पर्व (१८ पर्व मे चारि पर्व भीष्म, द्रोण, कर्ण आ शल्य पर्व) तेना ने परस्पर दोसर पर्व सभसँ जुड़ल अछि जे बिना पछिला पर्व पढ़ने अगिलाक कोनो भाँज नहि लगैत छै। इलियडक युद्ध

१० साल धरि चलल छल मुदा इलियड मात्र ट्रॉयक घेरा धरि सीमित छल। मुदा महाभारत बहुत पहिने सँ १८ दिनुका युद्धक कारणसँ शुरु होइत अछि। भीष्म पर्व छठम पर्व अछि, द्रोण पर्व सातम, कर्ण पर्व आठम आ शल्य पर्व नवम। तकरा बाद ९ टा पर्व आर अछि।

ई ग्रन्थ मायानन्द बाबूक इतिहास बोधक अन्तिम कड़ी अछि। प्रागैतिहासिक “प्रथम शैलपुत्री च”, ऋगवेदिक कालीन “मंत्रपुत्र”, उत्तरवैदिककालीन “पुरोहित” केर बाद ई पुस्तक सूत्र-स्मृतिकालीन अछि, ई ग्रंथ हिन्दीमे अछि। आ ई सूत्र-स्मृतिकालीन उपन्यास मिथिला पर आधारित अछि। ई पोथी प्रारम्भ होइत अछि मायानन्दजीक प्रस्तावनासँ जकर नाम एहि खण्डमे “पृष्ठभूमि” अछि। एतए मायानन्दजी रामायण-महाभारत केर काल गणनाक बाद इतिहासकार लोकनिक एकमात्र साक्ष्य शतपथ ब्राह्मणक चर्च करैत छथि।

प्रणिपात, आशीर्वचन आ कुशल-क्षेमक औपचारिकताक वर्णन अछि आ स्त्रीधनक चरचा सेहो गप-शपक क्रममे आएल अछि। ईहो वर्णन आएल अछि जे वैशाली किछु दिन कौशलक अधीन छल आ भारत-युद्धमे ओ मिथिलाक अधीन छल। वन्य भूमिकेँ कृषि-योग्य बनेबाक उपरान्त पाँच बसन्त धरि कर-मुक्त करबाक परम्पराकेँ राजा कराल जनक द्वारा तोड़ि देबाक चरचा अछि।

पांचाल-जन द्वारा अंधक वृष्णिक नायक वासुदेव कृष्णकेँ जय-काव्यक नायक मानल जएबाक चरचा अछि। जय-काव्य आ भारत-काव्यक पश्चिमक उच्छिष्ट भोज मायानन्दजीक मोनसँ नहि हटलन्हि आ जय-काव्यमे मुनि वैशम्पायन व्यास द्वारा बहुत रास श्लोक जोड़ि वृहतकाय भारत काव्य बनाओल जएबाक मिथ्या तथ्यक फेरसँ चरचा अछि। जयकाव्यक लेखक कृष्ण द्वैपायन व्यासकेँ बताओल गेल अछि। आ एकर बेर-बेर चरचा कएल गेल अछि जेना कोनो विशेष तथ्य होअए।

राजाक अत्याचार चरम पर पहुँचि गेल अछि। अपूर्वा द्वारा विवशतापूर्वक गार्हस्थ्य त्याग आ स्त्रीधन सेहो छोड़बाक चरचा भेल अछि।

पाँच वसन्त धरि कर-मुक्ति आ ताहिसँ वन्यजन आ शूद्र जनक सम्भावित पलायनक चरचा अछि। सीरध्वज जनकक पश्चात् धेनु-हरण राज्याभिषेकक बाद मात्र एकटा परम्परा रहि गेल, तकर चरचा अछि। मुदा कराल द्वारा अपन सगोत्रीय शोणभद्रक धेनु नहि घुमेबाक चरचा अछि। कराल द्वारा बीचमे प्रधान पुरहितकेँ हटेबाक चरचा अछि। चिकित्साशास्त्रक नवोदित चिकित्सक बटुक कृतार्थकेँ राजकुमारीक चिकित्साक लेल बजाओल जाइत अछि, संगमे राजकुमारीक सखी आचार्य कृतक पुत्री वारुणीकेँ सेहो बजाओल जाइत अछि। ओ अपन अनुज बटुकक संग जाइत छथि आ कराल बलात् अपन कक्ष बन्द कए हुनकासँ गांधर्व-विवाह कए लैत छथि। प्रजा विद्रोह आ राजाक घोड़ा पर चढ़ि कए पलायनक संग प्रथम अध्यायक नवम आ अन्तिम सत्र खतम भए जाइत अछि।

सार्थक संग धनुर्धर लोकनि चलैत छलाह, अपन श्वानक संग। सार्थक संग सामान्य जन सेहो जाइत छलाह। वरुण आ वारुणी हिनका सभक संग अंग दिशि बिदा भेलाह, एहि जनपदक राजधानी चम्पा कहल गेल अछि आ एकरा गंगाक उत्तरमे स्थित कहल गेल अछि।

आर्यीकरणक बेर-बेर चरचा पाश्चात्य विद्वानक मायानन्दजी पर प्रभाव देखबैत अछि। आर्य आ द्रविड़ शब्द दुनू, पाश्चात्य लोकनि भारतमे अपन निहित स्वार्थक लेल अनने छलाह। कोशल आ विदेहक प्रसारक, देवत्वक विकासक सम्पूर्ण इतिहास एतए देल गेल अछि। मिथिलाक दही-चूड़ाक सेहो चर्च आएल अछि।

कृषि उत्पादनक पश्चात् लोक अन्नक बदला सामग्री बदलेन कए सकैत छथि, वृषभ-गाड़ीसँ सामग्रीक संचरण, एक मास धरि चलएबला यज्ञक व्यवस्था भूदेवगण द्वारा कएल जएबाक प्रसंग सेहो आएल अछि। भाषा-शिक्षण क्रममे ब्राह्मणगामक अपभ्रंश बाभनगाम आ वनग्रामक वनगाम भए गेल। भाषा सिखा कए घुरैत काल वारुणीपर तीरसँ आक्रमण भेल आ फेर वारुणिक मृत्यु भए गेल।

दोसर वसन्त अबैत मिथिलामे गणतंत्रक स्वरूपक स्थापना स्थिर भए गेल। वैशाली आ मिथिलाक बीच परस्पर सम्वाद एक गणतांत्रिक सूत्रमे जुड़बाक लेल होमए लागल। सितग्राम स्थित राजधानीमे पूर्वमे मिथिलाक सीमा-विस्तारक चरचा भेल। राजधानी सितग्राम आ पूर्वी मिथिलाक जितग्रामक बीच एकटा महावन छल। एकरा ब्राह्मणग्राम आ त्रिग्राम द्वारा मिलिकए जड़ाकए हटाओल गेल।

भारतमे देवतंत्रक विकास पानि संबंधी धारणासँ जुड़ल अछि। यावत विश्व अव्यक्त अछि तँ अन्धकारमय अछि, अकास अछि, व्यक्त भेलापर ओ जल बनि जाइत अछि। अकास आ जल दुनू भारतीय चिन्तनमे तत्व अछि। मूर्तिपूजनक जे चित्र मायानन्दजी चित्रित करैत छथि ओ सरलीकरण अछि। भाषा-प्रसारक जे विधि ओ स्त्रीधनमे देखबैत छथि सेहो अति सरलीकरण अछि।

श्रवण द्वारा परम्पराक निर्वहण साहित्यमे देखल गेल छल आ से महाभारतमे किछु ठाम बेर-बेर देखबामे अबैत अछि, से ताहि कारण कतेको पर्वकेँ क्षेपक कहल जाएब सम्भव नहि। वेदक प्रतिशाख्यकेँ ओना देखलापर ई ज्ञात होएत जे लिखबाक परम्पराक अछैत ई सम्भव नहि छल मुदा महाभारत अबैत-अबैत कट्टरता बढ़ल। महाभारतमे वर्णन अछि:

(१.६ विनयाधिकारिके प्रथमाधिकरणे षडोऽध्याय: इन्द्रियजये अ रिषड्वर्गत्याग): तद्विरुद्धवृत्तिरवश्येन्द्रियश्चातुरन्तोऽपि राजा सद्यो विनश्यति- यथा

दाण्डक्यो नाम भोज: कामाद् ब्राह्मण कन्यायमभिमन्यमान: सबन्धराष्ट्रोविननाश करालश्च वैदेह:,...।

भिक्षु प्रभामतीक जयमंगल भाष्य एहिमे जोड़ैत अछि जे कराल योगेश्वर तीर्थमे भीड़ दिशि देखैत काल एकटा सुन्दर ब्राह्मण-स्त्रीकेँ देखलक आ ओकरा अपन राज्य जबर्दस्ती लए गेल। ओ ब्राह्मण ओकर राजधानी गेल आ कानि खीजि कए कहलक जे ई धरती किएक नहि फटैत अछि जतए एहन कुकर्मी राजा रहैत अछि। धरती फाटल आ ओहिमे कराल परिवार समेत धसि कए मरि गेल।

२. मिथिलाक बाढ़ि

सारांश
मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल।

बीजशब्द: मिथिलाक · बाढ़ि · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मिथिलाक बाढ़ि” विषयक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मिथिलाक; बाढ़ि; कोसी; बान्ह; आपदा प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर इतिहास-बोध, स्रोत-पाठ आ सांस्कृतिक सन्दर्भक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक।

कौशिकी महारानीक २००८ ई. क प्रकोप ओहि दुष्प्रचारकेँ खतम कए पाओत आकि नहि से नहि जानि!

पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि। ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। किएक?

सामयिक घटनाक्रम- कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भए जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जएत, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। एहि साल ई कार्य समयसँ किएक नहि शुरू भेल? फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्हमे २ मीटर दरारि आबि गेल।

१९८७ ई. क बाढ़ि हम आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ह लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भए गेल एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलहुँ जे कोना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८ अगस्त २००८ धरि भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भए चुकल छल। आ ई कारण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल छल। भीमनगर बैरेज आब कोशीक एकटा सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल रहए।

राष्ट्रीय आपदा: जाहि राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओहि राज्यक दौड़ा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जाहिपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि वा नहि। बिहारक राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छलाह, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौड़ा कए एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलन्हि। कारण ई लेवल-३ केर आपदा अछि आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे - नहि तँ वित्तक लिहाजसँ आ नहिए राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ-पार पाएब संभव नहि अछि। आब राष्ट्रीय आकस्मिक आपदा कोषसँ सहायता देल जा रहल अछि, किसानक ऋण-माफी सेहो सम्भव अछि।

उपाय की होअए? कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैछ, से सभ ओकरा बिसरिए जेकाँ गेलाह। मुदा आब की होअए? दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधन। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबाक हेतु कैकटा बान्ह बनाबए पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नहि बनि सकत।

कमला धार

नहरिसँ लाभ हानि- एक तँ कच्ची नहरि आ ताहूपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त होएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतए धरतीक ढ़लान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की होएत आकि की होइत अछि? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल एहि नहर रूपी बान्हसँ पटौनी होअए वा नहि एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपेण डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नञि चलि जाए, से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि!

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भए गेल। कमला धार जे बलानमे –पिपराघाट लग १९५४ मे- मिलि गेलीह, हिमालयसँ बहि कए कोनो पैघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई. सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए!

कोशी: कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशीमे, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिल्लाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर- भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो।

कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फाएदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के. एल. राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।

कोसी लेल किछु नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि!

विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन: हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ, एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

दिल्ली अछि दूर एखनो!: प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि।

मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत, निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।

१. स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी. बी एस. ई आ आइ. सी. एस. ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। दिल्लीवासी सी. बी एस. ई आ आइ. सी. एस. ई. सँ एहि तरहक कार्यान्वयन कराबथि तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।

२. भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए, कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड, रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आ बनबाक चाही।

३. बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।

४. कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५. बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तरपर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।

उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

३. लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति

सारांश
लोरिक गाथामे नहि तँ कोनो इतिहास प्रसिद्ध राजाक नाम आ नहिये लोरिकक जन्म आकि विवाहक तिथिक चरचा अछि। भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित अछि।

बीजशब्द: लोरिक · गाथामे · समाज · संस्कृति · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “लोरिक गाथामे समाज ओ संस्कृति” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे लोरिक; गाथामे; समाज; संस्कृति; लोरिकक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

लोरिक गाथामे नहि तँ कोनो इतिहास प्रसिद्ध राजाक नाम आ नहिये लोरिकक जन्म आकि विवाहक तिथिक चरचा अछि। भाषाक स्वरूप मौखिक रहबाक कारणसँ गतिशील अछि। काल निर्धारण सेहो अनुमानपर आधारित अछि। लोरिकक जन्म-स्थान गौरा गाम अछि आ कार्य-कर्म क्षेत्र पंजाबसँ नेपाल आ बंगाल धरि अछि। सासुर अगोरी गाम अछि जे सोन धारक कातमे बताओल गेल अछि।

लोरिकक विवाह- पहिल विवाह अगोरी गामक मंजरीसँ दोसर बियाह चनमासँ जकरासँ चनरैता नाम्ना पुत्र। तेसर बियाह हरदीगढ़क जादूगरनी जमुनी बनियाइनसँ जाहिसँ बोसारख नाम्ना पुत्र।

वीर लोरिकक भाए सँवरू सेहो वीर। ओ कोल राजा देवसिया द्वारा मारल गेलाह। बादमे लोरिक सेहो युद्ध करैत घायल भऽ जाइत छथि आ बोहा बथानपर लोरिकक बेटा भोरिक देवसियाकेँ पराजित करैत अछि। लोरिक बूढ़ भेलापर अग्नि समाधि लैत छथि।

लोरिकक कथा- साबौरक जन्म आ लोरिक अवतार, सँवरूक विवाह, माँजैरक जन्म, लोरिक-माँजैर विवाह आ राजा मौलागत आ निरमलियासँ युद्ध, सँवरू आ सतियाक विवाह, झिमली-लोरिक युद्ध, चनैनिया-शिवहर विवाह आ लोरिक-बेंठा चमारक युद्ध। एहि गाथामे लोरिक-चनमा प्रेम आ हरदीगढ़ प्रस्थान आ राजा रणपाल आ महिपतसँ लोरिकक युद्ध। लोरिक आ चनमाक हरदीगढ़मे निवास, लोरिक गजभिमला युद्ध, नेऊरपुरक चढ़ाइ आ लोरिक-हरेबा-बरेबा युद्ध, संवरू आ कोल युद्धमे सँवरूक मृत्यु, लोरिकक बोहा बथान आगमन, पीपरीगढ़क चढ़ाई आ लोरिक आ देवसिया युद्ध, लोरिकक देहत्याग आ भोरिकक नेतृत्व। पिपरीक पहिल लड़ाइ सँवरूक संग, पिपरीक दोसर लड़ाइ लोरिकक संग भेल। फेर लोरिकक काशीवास आ मृत्यु होइत छन्हि।

लोरिक मनुआर गाथाक धार्मिक सामाजिक आ राजनीतिक पक्ष:

लोरिक अज्ञात नाम गोत्रसँ उत्पन्न। यादव जाति अपन पूज्य लोरिकक सम्मान छाँक पूजासँ करैत छथि आ लोकदेव, लोकनायक रूपेँ सम्मान दैत छथि।

लोरिकायनक मैथिली स्वरूप पुरातत्ववेता अलेक्जेन्डर कनिंघमक संकलनमे अछि। क्वार्टरली जर्नल ऑफ द मीथिक सोसाइटी (भाग-५, पृ. १२२ सँ १३५) मे भागलपुरक लोरिकायनक चरचा। आर्क्योलोजिकल सर्वे रिपोर्ट खण्ड १६ (१८८३ ई.) पृ. २७-२८ मे कनिँघमक यात्रा वृत्तान्तमे लोरिक आ सेउहर वा सरिकका नाम्ना दू टा पड़ोसी राजाकेँ गौरा गामक निवासी कहल गेल अछि।

भागलपुर गजेटियर (पृ. ४८-५०) मे जॉन हन्टर लोरिक विषयक रिपोर्ट देने छथि।

लोरिक गाथा लोरिकायन, लोरिकी आ लोरिक मनिआर नामसँ प्रसिद्ध अछि। मिथिलामे एकर प्रशस्ति लोरिक मनिआर नामसँ अछि।

लोरिकक नैतक (बेटाक बेटा) नाम इन्दल रहए। मैथिलीक लोरिक मनिआरमे लोरिकक विवाह प्रसंग आ लोरिकक कनियाँ तकबासँ लऽ राजा सहदेवसँ युद्ध केर विस्तृत चरचा अछि।

महुअरि खण्डमे गजभीमलक अखाड़ा जएबाक लेल घोड़ा चुनब आ गजभीमलकेँ पटकि-पटकि कऽ मारबाक वर्णन।

लोरिक द्वारा हरबा-बरबाक वध।

एहि गाथाक प्रारम्भमे सुमिरन आ बन्हन होइत अछि।

सुमिरन- इनती करै छी दुरुगा मिनती तोहार।

बन्हन- आ-दुरुगा गइ पुरुब खण्ड हे गइ

फेर:

१. विवाह खण्ड, २. महुअरि खण्ड, ३. युद्ध खण्ड

मणिपद्मजीक विवरण- १. जन्म खण्ड, २. सती माँजरि खण्ड, ३. चनैन खण्ड, ४. रणखण्ड, ५. सावर खण्ड, ६. बाजिल खण्ड, ७. सझौती खण्ड आ ८. नेपालसँ प्राप्त भैरवी खण्ड।

-गौरा गामक बुढ़कूवा राउत- तारक गाछक झठहा बनबैत रहथि। ५-७ सय पहलमानकेँ पीठपर लादि चौदह कोस टहलि आबथि। मुदा घर-घरारी किछुओ नहि छलन्हि। दू टा पुत्र लोरिक मनिआर आ साओद सरदार छलन्हि।

-अगौरीक मुखिया सेवाचन राउतक अस्सी गजक धोती आ बावन गजक मुरेठा- तेतलिया घोड़ा छलन्हि। पुत्री छलखिन्ह माँजरि जे सात सय संगी संगे सुपती-मौनी खेलाइत रहथि। ओकर बियाह लेल सेवाचन बुढ़कूबाक ओतय लोरिकसँ अखड़हापर भिरल- छप्पन मोन माटिसँ तरहत्थी मलनिहार सेवाचनकेँ लोरिक टालि-गुल्ली जेकाँ ऊपर फेकि देलक आ गेन जेकाँ लोकि कए काँख तर दबा लेलक।

बियाह दिन राजा उगरा पमार द्वारा बूढ़कूबाकेँ पकड़बाक प्रयास, मुदा बूढ़कूबा भकुला पहलमानक गरदनि काटि लेलक। विवाह सम्पन्न भेल। राजा उगरा पमार सनिका-मनिकाकेँ बजेलक- लोरिक सनिका-मनिकाक मूड़ी काटि लेलक। गौरा घुमैत काल हरदीक राजा सहदेवक आक्रमण, लोरिक सहदेवकेँ हरा कए ओकर पुत्री चनाइकेँ महीचनक आँगन लऽ जाए विवाह कएल। तखन राजा महुअरि महीचनकेँ कारामे दऽ देलक मुदा फेर लोरिकसँ डरा कए छोड़ि देलक। मुदा सिलहट अखड़हाक सरदार गजभीमलकेँ पठाओल। मुदा लोरिक ओकर मूड़ी काटि लेलक आ फेर राजासँ मित्रता भेल। दुनू मिलि राजा हरबा-बरबासँ युद्ध कएलक। हरबा-बरबा भागल मुदा धुथरा पहलमानकेँ पठाओल- लोरिक ओकर दहिना आँखि निकालि ओकर जीह काटि लेलक। हरबा-बरबाक पुनः आक्रमण आ पलायन मुदा फेर भागिन कुमर अनार- लोरिक मूड़ी काटि हरबा-बरबाक रानी पद्मा लग ओकर मूड़ी फेकलक। फेर हरबा-बरबाक आक्रमण-डिहुलीक रणक्षेत्रमे हावीगढ़क राजा हरबा-बरबाक मूड़ी काटि राजप्रसादक अन्तःपुरमे फेकलक। लोरिक छत्तीस टा युद्ध कएलन्हि। लोरिक कृषिक विकासमे सजग छलाह। कारण -दोसराक भूमिक अधिग्रहण कए बहुसंख्यक चिड़ँइ, जानवर आ कीट-पतंग उजड़ि गेल आ ओ सभ इन्द्र लग गेल— ई वर्णन अछि।

-समाजक सीढ़ीक आइ-काल्हिक नीचाँक वर्ग आ नारी समाजक शक्तिक विस्तार, आध्यात्मिक आ लौकिक अर्थ दुनू तरहेँ।

- सामाजिक सीढ़ीक विभिन्न स्तरक जातिक अन्तर्विरोध, आइ-काल्हिक तथाकथित निम्न जातिक दुराचारी पात्रक विनाश लोरिक द्वारा। लोरिकक भगवतीपर भक्ति छल ओकर विजयक कारण।

मुदा लोरिकक शत्रुमे तथाकथित सामाजिक सीढ़ीपर ऊँच स्थान प्राप्त मोचनि आ गजभीमल छल तँ मित्रमे सेहो राजल सन सामाजिक सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँ जातिक।

हरबा राजाक चपेटसँ दुहबी-सुहबी ब्राह्मणी आ गांगे क्षत्रीक मुक्ति।

उघरा पँवार, हरबा-बरबा, सोनिका, मनिका, बंठा, कोल्हमकड़ा, करना सभ जातीय सीढ़ीमे तथाकथित नीचाँक पात्र राजा छथि। मातृदेवीक उपासना, इन्द्रक पत्नीक दुर्गाक भेष बदलि आएब आ लोरिक द्वारा हुनका पत्नी बूझि छूबाक उपरान्त पीड़ा। लोरिक माँजरिक मिलन काशी-प्रयाण।

-गाथा मेला, हाट बजार, विशिष्ट लोकक घर, सार्वजनिक स्थलपर होइत अछि - से यादव जातिक अतिरिक्त आनो श्रोता। सर्जक आ श्रोताक प्रत्यक्ष संबंध, श्रवणीय, कथाक अनायास अलंकरण, मुदा सभटा साहित्यिक लक्षण जेना सर्ग, छन्दबद्ध, नाट्य-संधि आ संध्यांगक योजना आ वस्तु निर्देशक अभाव। वस्तु संगठन सुगठित नहि। गारिक प्रयोग आ मद्यपानक यत्र-तत्र वर्णन, ग्रामीण व्यवस्थामे चोरक स्थान आ ओकर वर्णन, स्थानीय देवी-देवताक चरचा, जातीय अस्मिताक प्रतीक। कथा-गायक आशु कवि होइत छथि-एकटा अस्थिपञ्जर अवश्य रहैत अछि मुदा ताहिपर अपन हिसाबसँ ओ गबैत छथि। शब्दशः ओ कण्ठस्थ नहि करैत छथि। प्रारम्भमे ईश्वर, वन्दना आ बीच-बीचमे ईश्वरसँ क्षमायाचना, ई सभ गायन क्षमता स्थिर करबाक उद्देश्यसँ कएल जाइत अछि। घण्टासँ

ऊपर गायनक बीचमे हुक्का-चिलम, मद्यपान, परिवेशक वर्णन होइत अछि गायनमे। निरक्षर मुदा कोनो साक्षरसँ बेशी ज्ञान भण्डार। लोरिक मनुआरमे श्रोताक संख्या, तन्मयता आ एकाग्रचित्तताक प्रभाव कथा-गायकक कथा वाचनपर पड़ैत अछि कारण ई श्रोताक सोझाँ कएल जाइत अछि। एहि अर्थें सल्हेसक कथावाचकसँ हिनकापर बेशी बाह्य प्रभाव पड़ैत छन्हि। सल्हेस गाथा श्रोताक समक्ष नहि वरन आराध्य देवक समक्ष वाचन कएल जाइत अछि।

गाथाक मूल कथा ओना तँ मोटा-मोटी समान रहैत अछि, मुदा प्रस्तुतिकरण, विशिष्ट समाज, क्रियाकलाप आ सामाजिक मर्यादाक कारण विशिष्ट।

युद्ध, द्यूत, प्रेम आ विवाह-सांस्कृतिक तत्व सभ महाकाव्यमे, द्यूत –मानसिक युद्ध-द्यूतमे मनुक्खकेँ बाजी लगाएब, महाभारतमे आ लोरिकायनमे।

दुर्गा देवी द्वारा युद्धमे नायकक सहायता, चनैनक शिवधरकेँ छोड़ि लोरिक संग उढ़रि जाएब, दुसाध जातिक महपतियासँ लोरिकक जुआ खेलाएब आ लोरिक द्वारा चनैनकेँ जुआमे हारब-चनैन द्वारा प्रतिवाद-गहना गुरिया दाँवपर, चनैनक अश्लील हाव-भावसँ महपतियाक ध्यान बँटब आ लोरिकक जीतब। लोरिक द्वारा ओकर मूड़ी काटब। पति द्वारा अनुचित कएल जएबाक उपरान्तो पत्नी द्वारा बुझाएब।

लोरिकक अवतारवाद आ रहस्य

क्रोध-प्रेम दुनूमे गारि उन्मुक्त सांस्कृतिक काव्य चरित्र। प्रकृतिकेँ नुकाओल नहि गेल। नायक सेहो गारिक प्रयोग करैत अछि।

शिव-शक्तिक पूजा, महाकाव्यक पात्रक नाम आ आन तत्वक ग्रहण जे लोरिक मनुआर गायकक उदार आ सहिष्णु चरित्रकेँ देखबैत अछि। प्रस्तुति क्षमता आ ज्ञान क्षेत्र हिनका अनक्षर कहबासँ हमरा रोकैत अछि।

धार्मिक विश्वास, नायकक चरित्र आ सामाजिक आचार। जीवन-संस्कृति दृढ़तापूर्वक, महाकाव्यक अधिकांश ल़क्षण जेना रस, छंद, गुण, अलंकार, सर्गक ध्यान, व्यवहृत धार्मिक मूल्य, संस्कृतिक सम्पूर्णता, सृजन-क्षमता (गायकक) ।

लोकगाथा-नाचक फील्डवर्क-कथ्यमे बदलनाइ (जेना गारि), अपन संस्कृतिक नैतिक मानदण्डक आधारपर परिवर्तन अक्षम्य, अपनाकेँ ओहि समाजमे रखितहु उद्देश्यपर ध्यान, वाक्य शब्द रचनामे कोनो परिवर्तन नहि होएबाक चाही। तिरिया, गामक रक्षा आ अनाचारीक विनाश-पशुपाल आ कृषिकक समर्थन।

लोरिकक मित्र बंठा चमार, वारू पहरेदार (पासवान), राजल धोबी, लोरिकक भाइ साँवर।

सलहेसक कथा तराइ क्षेत्रक। वन्य जीव आ वनक बेशी वर्णन, वन्यजीव द्वारा सलहेसक सहायता, आखेट आ बलि। सल्हेसक पूजा स्थलपर माटिक घोड़ा राखल जाइत अछि मुदा लोरिकायनमे नहि।

लोरिक मनुआरमे अलौकिक आ रहस्यमय घटना बेशी, वन्य जीवक (बोनमे) संख्या नहि केर बराबर, लोरिकक पात्र अवतारी मुदा विधिवत पूजा नहि।

बाजिल कौआ अधजरुआ गोइठासँ कौल्हमकड़ाक गढ़केँ जरबैत अछि।

-उधरा-पँवारक हाथी-कज्जल गिरि

-लोरिकक कटरा घोड़ा

-सेनापति बरबाक घोड़ा बरछेबा

-बाजिल कौआ

मुदा लोरिक मनुआर महराइ मे ई सभ वन्य नहि वरल पोसुआ अछि।

लोरिकक असली हरदीगढ़ आ प्रसिद्ध कर्मक्षेत्र सहरसा जिलाक हरदीस्थान अछि कारण सुपौलक पूब स्थित हरदीक संग दुर्गास्थान शब्द सम्मिलित अछि। एहि हरदीक संग महीचन्द्र साहू, राजा महबैर, नेऊरपुर (नौहट्टा), गंजेरीपुर (गौरीपुर), खेरदहा (खैरा धार), रहुआ-चन्द्रायन-मैना-गाम, बैराघाट, तिलाबे धार, बैरा गाछी आ महबैरिया गामक चरचा अछि। लोरिक गाथा स्थल बैराघाटसँ प्राप्त पजेबा आ हरदी हाइस्कूलसँ सटल पश्चिम खुदाइमे प्राप्त पजेबामे पाओल समानता एकर व्याख्या करैत अछि।

सुपौल रेलवे स्टेशनपर रेलवे विभागक एकटा बोर्ड लागल अछि- एतएसँ पाँच किलोमीटर पूर्व हरदी दुर्गास्थानमे भगवती दुर्गा आ वीरपुरुष लोरिकक ऐतिहासिक स्थल दर्शनीय अछि।

नौहट्टा लग महर्षि आ ओतए पालीभाषाक शिलालेख- पालवंशीय- हरिद्रागढ़ चौदह कोसमे विस्तृत। तेरहम शताब्दीक’ वर्णरत्नाकर’ मे लोरिकक चरचा अछि। वर्णरत्नाकर- द्वितीय कल्लोलमे लोरिक नाचो- ई वर्णन। पहिने ई नाच छल आइ-काल्हि गाथा अछि।

नेऊरी दरभंगाक बिरौल प्रखण्डक १३ कि. मी. पूर्व गाम अछि जतए एकटा गढ़ अछि जे राजा लोरिकसँ सम्बन्धित कहल जाइत अछि।

४. मिथिलाक खोज

सारांश
ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एहिमे एहि सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि। कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेलाह।—गजेन्द्र ठाकुर १. गौरी-शंकर स्थान- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेखक कारणसँ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि।

बीजशब्द: मिथिलाक · खोज · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मिथिलाक खोज” विषयक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मिथिलाक; खोज; किलोमीटर; मधुबनी; स्थान प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर इतिहास-बोध, स्रोत-पाठ आ सांस्कृतिक सन्दर्भक आलोचनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

ई आलेख हमर दशकसँ ऊपरक मिथिलाक यात्राक उपरान्तक सूत्र-वृत्तान्त अछि आ एहिमे एहि सभ स्थानक स्थानीय निवासी आ गाइड सभक अकथनीय योगदान छन्हि। कखनो कालतँ भाड़ाक गाड़ीक ड्राइवर लोकनि सेहो नीक गाइड सिद्ध भेलाह।—गजेन्द्र ठाकुर

१. गौरी-शंकर स्थान- मधुबनी जिलाक जमथरि गाम आ हैंठी बाली गामक बीच ई स्थान गौरी आ शङ्करक सम्मिलित मूर्त्ति आ एहि पर मिथिलाक्षरमे लिखल पालवंशीय अभिलेखक कारणसँ विशेष रूपसँ उल्लेखनीय अछि। ई स्थल एकमात्र पुरातन स्थल अछि जे पूर्ण रूपसँ गामक उत्साही कार्यकर्त्ता लोकनिक सहयोगसँ पूर्ण रूपसँ विकसित अछि। शिवरात्रिमे एहि स्थलक चुहचुही देखबा योग्य रहैत अछि। बिदेश्वरस्थानसँ २-३ किलोमीटर उत्तर दिशामे ई स्थान अछि।

२. भीठ-भगवानपुर अभिलेख- राजा नान्यदेवक पुत्र मल्लदेवसँ संबंधित अभिलेख एतए अछि। मधुबनी जिलाक मधेपुर थानामे ई स्थल अछि।

३. हुलासपट्टी- मधुबनी जिलाक फुलपरास थानाक जागेश्वर स्थान लग हुलासपट्टी गाम अछि। कारी पाथरक विष्णु भगवानक मूर्त्ति एतए अछि।

४. पिपराही- लौकहा थानाक पिपराही गाममे विष्णुक मूर्त्तिक चारू हाथ भग्न भए गेल अछि।

५. मधुबन- पिपराहीसँ १० किलोमीटर उत्तर नेपालक मधुबन गाममे चतुर्भुज विष्णुक मूर्त्ति अछि।

६. अंधरा-ठाढ़ीक स्थानीय वाचस्पति संग्रहालय- गौड़ गामक यक्षिणीक भव्य मूर्त्ति एतए राखल अछि।

७. कमलादित्य स्थान- अंधरा ठाढ़ी गामक लगमे कमलादित्य स्थानक विष्णु मंदिर कर्णाट राजा नान्यदेवक मंत्री श्रीधर दास द्वारा स्थापित भेल।

८. झंझारपुर अनुमण्डलक रखबारी गाममे वृक्षक नीचाँ राखल विष्णु मूर्त्ति, गांधारशैली मे बनाओल गेल अछि।

९. पजेबागढ़ वनही टोल- एतए एकटा बुद्ध मूर्त्ति भेटल छल, मुदा ओकर आब कोनो पता नहि अछि। ई स्थल सेहो रखबारी गाम लग अछि।

१०. मुसहरनियां डीह- अंधरा ठाढ़ीसँ ३ किलोमीटर पश्चिम पस्टन गाम लग एकटा ऊंच डीह अछि। बुद्धकालीन एकजनियाँ कोठली, बौद्धकालीन मूर्त्ति, पाइ, बर्त्तनक टुकड़ी आ पजेबाक अवशेष एतए अछि।

११. भगीरथपुर- पण्डौल लग भगीरथपुर गाममे अभिलेख अछि जाहिसँ ओइनवार वंशक अंतिम दुनू शासक रामभद्रदेव आ लक्ष्मीनाथक प्रशासनक विषयमे सूचना भेटैत अछि।

१२. अकौर- मधुबनीसँ २० किलोमीटर पश्चिम आ उत्तरमे अकौर गाममे एकटा ऊँच डीह अछि, जतए बौद्धकालक मूर्त्ति अछि।

१३. बलिराजपुर किला- मधुबनी जिलाक बाबूबरही प्रखण्डसँ ५ किलोमीटर पूब बलिराजपुर गाम अछि। एकर दक्षिण दिशामे एकटा पुरान किलाक अवशेष अछि। किला चारि किलोमीटर नमगर आ एक किलोमीटर चाकर अछि। दस फीटक मोट देबालसँ ई घेरल अछि।

१४. असुरगढ़ किला- मिथिलाक दोसर किला मधुबनी जिलाक पूब आ उत्तर सीमा पर तिलयुगा धारक कातमे महादेव मठ लग ५० एकड़मे पसरल अछि।

१५. जयनगर किला- मिथिलाक तेसर किला अछि भारत नेपाल सीमा पर प्राचीन जयपुर आ वर्त्तमान जयनगर नगर लग। दरभंगा लग पंचोभ गामसँ प्राप्त ताम्र अभिलेख पर जयपुर केर वर्णन अछि।

१६. नन्दनगढ़- बेतियासँ १२ मील पश्चिम-उत्तरमे ई किला अछि। तीन पंक्तिमे १५ टा ऊँच डीह अछि।

१७. लौरिया-नन्दनगढ़- नन्दनगढ़सँ उत्तर स्थित अछि, एतए अशोक स्तंभ आ बौद्ध स्तूप अछि।

१८. देकुलीगढ़- शिवहर जिलासँ तीन किलोमीटर पूब हाइवे केर कातमे दू टा किलाक अवशेष अछि। चारू दिशि खधाइ अछि।

१९. कटरागढ़- मुजफ्फरपुरमे कटरा गाममे विशाल गढ़ अछि, देकुली गढ़ जेकाँ चारू कात खधाइ खुनल अछि।

२०. नौलागढ़- बेगुसरायसँ २५ किलोमीटर उत्तर ३५० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२१. मंगलगढ़-बेगूसरायमे बरियारपुर थानामे काबर झीलक मध्य एकटा ऊँच डीह अछि। एतए ई गढ़ अछि।

२२. अलौलीगढ़-खगड़ियासँ १५ किलोमीटर उत्तर अलौली गाम लग १०० एकड़मे पसरल ई गढ़ अछि।

२३. कीचकगढ़-पूर्णिया जिलामे डेंगरघाटसँ १० किलोमीटर उत्तर महानन्दा नदीक पूबमे ई गढ़ अछि।

२४. बेनूगढ़-टेढ़गाछ थानामे कवल धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२५. वरिजनगढ़-बहादुरगंजसँ छह किलोमीटर दक्षिणमे लोनसवरी धारक कातमे ई गढ़ अछि।

२६. गौतम तीर्थ- कमतौल स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पश्चिम ब्रह्मपुर गाम लग एकटा गौतम कुण्ड पुष्करिणी अछि।

२७. हलावर्त्त- जनकपुरसँ ३५ किलोमीटर दक्षिण पश्चिममे सीतामढ़ी नगरमे हलवेश्वर शिव मन्दिर आ जानकी मन्दिर अछि। एतएसँ डेढ़ किलोमीटर पर पुण्डरीक क्षेत्रमे सीताकुण्ड अछि। हलावर्त्तमे जनक द्वार हर चलएबा काल सीता भेटलि छलीह। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी) आ जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

२८. फुलहर-मधुबनी जिलाक हरलाखी थानामे फुलहर गाममे जनकक पुष्पवाटिका छल, जतए सीता फूल लोढ़ैत छलीह।

२९. जनकपुर-बृहद् विष्णुपुराणमे मिथिलामाहात्म्यमे जनकपुर क्षेत्रक वर्णन अछि। सत्रहम शताब्दीमे संत सूर किशोरकेँ अयोध्यामे सरयू धारमे राम आ जानकीक दू टा भव्य मूर्त्ति भेटलन्हि, जकरा ओ जानकी मन्दिर, जनकपुरमे स्थापित कए देलन्हि। वर्त्तमान मन्दिरक स्थापना टीकमगढ़क महारानी द्वारा १९११ ई. मे भेल। नगरक चारूकात यमुनी, गेरुखा आ दुग्धवती धार अछि। राम नवमी (चैत्र शुक्ल नवमी), जानकी नवमी (वैशाख शुक्ल नवमी) आ विवाह पंचमी (अगहन शुक्ल पंचमी) पर एतए मेला लगैत अछि।

३०. धनुषा- जनकपुरसँ १५ किलोमीटर उत्तर धनुषा स्थानमे पीपरक गाछक नीचाँ एकटा धनुषाकार खण्ड पड़ल अछि। रामक तोड़ल ई धनुष अछि। एहिसँ पूब वाणगंगा धार बहैत अछि जे लक्ष्मण द्वारा वाणसँ उद्घाटित भेल छल।

३१. सुग्गा-जनकपुर लग जलेश्वर शिवधामक समीप सुग्गा ग्राममे शुकदेवजीक आश्रम अछि। शुकदेवजी जनकसँ शिक्षा लेबाक हेतु मिथिला आएल छलाह- एहि ठाम हुनकर ठहरेबाक व्यवस्था भेल छल।

३२. सिंहेश्वर- मधेपुरासँ ५ किलोमीटरपर गौरीपुर गाम लग सिंहेश्वर शिवधाम अछि।

३३. कपिलेश्वर-कपिल मुनि द्वार स्थापित महादेव मधुबनीसँ ६ किलोमीटर पश्चिममे अछि।

३४. कुशेश्वर- समस्तीपुरसँ उत्तर-पूब, लहेरियासरायसँ ६० किलोमीटर दक्षिण-पूब आ सहरसासँ २५ किलोमीटर पश्चिम ई एकटा प्रसिद्ध शिवस्थान अछि। एतए चिड़ै-अभ्यारण्य सेहो अछि जतए उज्जर आ कारी गैबर, लालसर, दिघौछ, मैल, नकटा, गैरी, गगन, सिल्ली, अधानी, हरिअल, चाहा, करन, रतबा चिड़ै सभ अनायासहि नवम्बरसँ मार्च धरि देखबामे अएत।

३५. सिमरदह-थलवारा स्टेशन लग शिवसिंह द्वारा बसाओल शिवसिंहपुर गाम लग ई शिवमन्दिर अछि।

३६. सोमनाथ- मधुबनी जिलाक सौराठ गाममे सभागाछी लग सोमदेव महादेव छथि।

३७. मदनेश्वर- मधुबनी जिलाक अंधरा ठाढ़ीसँ ४ किलोमीटर पूब मदनेश्वर शिव स्थान अछि।

३८. कुन्दग्राम: हाजीपुरसँ बत्तीस किलोमीटर उत्तर-पूर्वमे बसाध-वैशाली आ लगमे वासोकुण्ड लग, गाम गढ़-टीलासँ २ कि. मी. उत्तर-पूर्व अछि कुन्दग्राम, जतए जैनक २४म तीर्थंकर महावीरक जन्म भेल छलन्हि। एतए बुद्धक छाउर, अभिषेक पुषकरणी (राजा अभिषेकसँ पूर्व एतए नहाइत रहथि), अशोक स्तम्भ आ संसद-भवन (राजा विशालक गढ़) अछि।

३९. चण्डेश्वर- झंझारपुरमे हरड़ी गाम लग चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा स्थापित चण्डेश्वर शिवस्थान अछि।

४०. बिदेश्वर-मधुबनी जिलामे लोहनारोड स्टेशन लग स्थित शिवधामक स्थापना महाराज माधवसिंह कएलन्हि। ताहि युगक मिथिलाक्षरक अभिलेख सेहो एतए अछि।

४१. शिलानाथ- जयनगर लग कमला धारक कातमे शिलानाथ महादेव छथि।

४२. उग्रनाथ-मधुबनीसँ दक्षिण पण्डौल स्टेशन लग भवानीपुर गाममे उगना महादेवक शिवलिंग अछि। विद्यापतिकेँ प्यास लगलन्हि तँ उगनारूपी महादेव जटासँ गंगाजल निकालि जल पिएलखिन्ह। विद्यापतिक हठ कएला पर एहि स्थान पर उगना हुनका अपन असल शिवरूपक दर्शन देलखिन्ह।

४३. उच्चैठ छिन्नमस्तिका भगवती- कमतौल स्टेशनसँ १६ किलोमीटर पूर्वोत्तर उच्चैठमे कालिदास भगवतीक पूजा करैत छलाह। भगवतीक मौलिक मूर्त्ति मस्तक विहीन अछि।

४४. उग्रतारा- मण्डन मिश्रक जन्मभूमि महिषीमे मण्डनक गोसाउनि उग्रतारा छथि।

४५. भद्रकालिका- मधुबनी जिलाक कोइलख गाममे भद्रकालिका मंदिर अछि।

४६. चामुण्डा- मुजफ्फरपुर जिलामे कटरागढ़ लग लक्ष्मणा वा लखनदेइ धार लग दुर्गा द्वारा चण्ड-मुण्डक वध कएल गेल। ओहि स्थान पर ई मन्दिर अछि।

४७. परसा सूर्य मन्दिर- झंझारपुरमे सग्रामसँ पाँच किलोमीटर पूर्व परसा गाममे साढ़े चारि फीटक भव्य सूर्य मूर्त्ति भेटल अछि।

४८. बिसफी- मधुबनी जिलाक बेनीपट्टी थानामे कमतौल रेलवे स्टेशनसँ ६ किलोमीटर पूब आ कपिलेश्वर स्थानसँ ४ किलोमीटर पश्चिम बिसफी गाम अछि। विद्यापतिक जन्म-स्थान ई गाम अछि। एतए विद्यापतिक स्मारक सेहो अछि।

४९. मंदार पर्वत-बांका स्थित स्थलमे मिथिलाक्षरक गुप्तवंशीय ७म् शताब्दीक अभिलेख अछि। समुद्र मंथनक हेतु मंदारक प्रयोग भेल छल। निकटमे बौंसीमे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक दूटा मूर्त्ति अछि, पैघ मूर्ति लाल पाथरक अछि तँ दोसर काँसाक जकर सोझाँ दूटा पदचिन्ह अछि। जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथक जन्म चम्पानगरमे आ निर्वाण एहि ठाम भेल छलन्हि।

५०. विक्रमशिला-भागलपुरमे स्थित प्राचीन विश्वविद्यालय। भागलपुर जिलाक अंतीचक गाममे राजा धर्मपालक बनाओल बुद्ध विश्वविद्यालय अछि। १०८ व्याख्याता लेल रहबाक स्थान आ बाहरसँ पढ़ए बला लेल सेहो स्थान एतए निर्मित अछि

५१. मिथिलाक बीस टा सिद्ध पीठ—

१. गिरिजास्थान (फुलहर, मधुबनी), २. दुर्गास्थान (उचैठ, मधुबनी), ३. रहेश्वरी (दोखर, मधुबनी), ४. भुवनेश्वरीस्थान (भगवतीपुर, मधुबनी), ५. भद्रकालिका (कोइलख, मधुबनी), ६. चमुण्डा स्थान (पचाही, मधुबनी), ७. सोनामाइ (जनकपुर, नेपाल), ८. योगनिद्रा (जनकपुर, नेपाल) ९. कालिका स्थान (जनकपुर स्थान), १०. राजेश्वरी देवी (जनकपुर, नेपाल), ११. छिनमस्ता देवी (उजान, मधुबनी), १२. बनदुर्गा (खररख, मधुबनी), १३. सिधेश्वरी देवी (सरिसव, मधुबनी), १४. देवी-स्थान (अंधरा ठाढ़ी, मधुबनी), १५. कंकाली देवी (भारत नेपाल सीमा आ रामबाग प्लेस, दरभंगा) १६. उग्रतारा (महिषी, सहरसा), १७. कात्यानी देवी (बदलाघाट, सहरसा), १८. पुरन देवी (पूर्णियाँ), १९. काली स्थान (दरभंगा), २०. जैमंगलास्थान (मुंगेर) ।

५२. जनकपुर परिक्रमाक १५ स्थल आ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी २. कल्याणेश्वर- शिवलिंग ३. गिरिजा-स्थान- शक्ति ४. मटिहानी- विष्णु मन्दिर ५. जालेश्वर- शिवलिंग ६. मनाई- माण्डव ऋषि ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर ८. कंचन वन- कोनो मन्दिर

नजि मात्र मनोरम दृश्य ९. पर्वत- पाँच टा पर्वत १०. धनुषा- शिवधनुषक टुकड़ी ११. सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड १२. हरुषाहा- विमलागंगा १३. करुणा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोरम दृश्य १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर १५. जनकपुर। "मिथिलायदयश्च मध्यंते रिपवो इति मिथिला नगरी" - मिथिला जतए शत्रुकेँ मथल जाइत अछि- पाणिनीक विवरण।

५३. चैनपुर सहरसा- मिथिलाक एकमात्र नीलकंठ मन्दिर, संगमे आदिकालीन भव्य काली-मन्दिर सेहो एहि गाममे अछि। महाशिवरात्रि आ कालीपूजा बड़ धूमधामसँ चैनपुरमे होइत अछि।

५४. धरहरा, बनमनखी, पूर्णियाँमे नरसिंह अवतारक स्थान अछि, एकटा खोह जेकाँ पैघ पाया अछि जाहिमे जे किछु फेकबैक तँ बड़ी काल धरि गों-गोँ अबाज होइत रहत। ई स्थान आब नरसिंह भगवानक मूर्ति आ मन्दिरक कारणसँ बेश विकसित भए गेल अछि।

५५. नेऊरी: दरभंगाक बिरौल प्रखण्डसँ १३. किलोमीटर पश्चिममे एकटा गढ़ अछि जे लोरिकक मानल जाइत अछि।

५६. दरभंगा कैथोलिक चर्च: १८९१मे स्थापित ई चर्च १८९७ केर भूकम्पमे क्षतिग्रस्त भए गेल। एकरा होली रोजेरी चर्च सेहो कहल जाइत अछि।

५७. सेंट फांसिस ऑसिसी चर्च मुजफ्फरपुरमे अछि।

५८. भिखा सलामी मजार: गंगासागर पोखरि दरभंगाक महारपर ई मजार अछि।

५९. दरभंगा टावर मस्जिद इस्लाम मतावलम्बीक एकटा भव्य मस्जिद आ धार्मिक स्थल अछि।

६०. मकदूम बाबाक मजार: ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय आ कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालय दरभंगाक बीच स्थित ई मजार हिन्दू आ मुस्लिम मतावलम्बीक एकटा पावन स्थान अछि।

६१. चम्पानगर: भागलपुरक पश्चिममे, आब नगरसँ सटि गेल अछि। ई जैन लोकनिक एकटा पवित्रस्थल अछि, एतए महावीर तीनटा बस्सावास कएने रहथि। दू टा जैन मन्दिर एतए अछि, जे जैनक बारहम तीर्थंकर वासुपूज्य नाथकेँ समर्पित अछि।

६२. बसैटी अभिलेख- पूणियाँमे श्रीनगर लग मिथिलाक्षरक ई अभिलेख मिथिलाक पहिल महिला शासक रानी इद्रावतीक राज्यकालक वर्णन करैत अछि। एकर आधार पर मदनेश्वर मिश्र' एक छलीह महारानी' उपन्यास सेहो लिखने छथि।

बाइसी-बसैटी, अररिया मिथिलाक्षर शिलालेख- रानी इन्द्रावती (१७८४-१८०२) जे फूड-फॉर-वर्क आ अन्य कल्याणकारी कार्यक प्रारम्भ कएलन्हि केर मिथिलाक्षर अभिलेख, एतए एकटा मन्दिरक ऊपरमे कारी पाथरमे कीलित अछि जे निम्न प्रकारसँ अछि: -

बसैटी (अररिया) बिहार, शिव मन्दिरक मिथिलाक्षर शिलालेखक देवनागरी रूपान्तरण।

वंशे सभा समाने सुरगन बिदिते भू सूरस्यावतिर्ना।

राजाभूतकृष्णदेवोनृपति समरसिंहा मिधस्यात्मजातः॥

यस्मिन् राज्याभिषेकं फलयितु मिवतद्भक्तितुष्टोमहेशः।

कैलाशाद् भूगतेद्योप्यधिन सतितरा वैद्यनाथेन नाम्नाः॥

तस्य तनुजः सुकृतिनृपवरौ विश्वनाथ राजा भूत।

विरनारायण राजस्तस्याप्यासीद् सुतस्य॥

नरनारायण राजो नरपति कुल मौलि भूषणम् पुनः।

अर्थिनकल्पद्रूमदूव सुरगन वंसावतंसोत्भूत॥२॥

तस्मादि वैरिकुल सूदन रामचन्द्र नारायणो नरपतिस्तनयो वभूक।

संमोदिता दश दिशो निज कीर्ति चन्द्र ज्योतिस्नेहाभिरार्थ निवहः सुरिवतश्चयेण॥३। ।

यद्दानवारि परिवर्द्धित वारि राशि सक्तान्त कीर्ति विमलेन्दु मरिचिकाभिः।

प्रोद्योतिता दशदिशः सतनुज इन्द्रनारायणोस्य कुलभूषण राजराजः॥४॥

तेनच सत्कुल जाता तनया मनबोध शझणिः कृतिनः।

परिणीता बन्धु यत्नैस्त्रिलोचननाद्रि पुत्रीव॥५॥

यस्या प्रतापतरणावुदितेऽपिचिते

चिन्तारजविन्द वनमालभते विकासम

सौहृदय हृदय मकरन्द च उद्येन

तत्रैव यद् गुणगणा मधुपन्ति योगात्॥६॥

यज्ञेवर्देव गणो द्विजाति निवहः सस्तायनत्यादरैः।

दर्दानैपूर्णः मनोरथोऽर्थपरन सन्तितिनिः सज्जना॥७॥

गर्ज्जद वैरि मदान्धवारण चपश्चञ्चःपेतापांकुरौ।

र्वस्याः सर्वदृशेकृतागुण चमेर्मस्याश्च भूमीतने॥८॥

श्री श्री इन्दुमति सतीमतिमती देवी महाराज्ञिका

जाता मैथिल माण्डराऽमिछकुलात् मोधोसरी जानयाः।

दानै कल्पलता मधः कृतवती श्री विष्णु सेवा परा

पातिव्रत्य परायणाच सततं गंगेर सम्पारणी॥९॥

शाकेन्दु नवचन्द्र शैलधरणी संलक्षित फाल्गुने

मासि श्रेष्ठतरे सिताहनि शितेपक्षे द्वितीयायां तिथौ।

भूदेवैर्वर वैदिकेर्म्मठमयं निर्भारय सच्चिनिमिः

तत्रे सेन्दुमति सुरस्य विधित्र प्राण प्रतिष्ठाव्यधात्॥१०॥

सोदरपुर सम्भव राजानुकम्पापजिवनिकृतिनः।

श्री शुभनायस्य कृतिर्मिदं विज्ञेक्षं सन्नन्तताम्॥११॥

(ऊपरका स्थान सभक चित्र http: //www.videha.co.in/favorite.htm एहि लिंकपर उपलब्ध अछि।)

५. दूषण पंजी

सारांश
दूषण पंजीक स्कैन कएल सिंगल पी. डी. एफ. । पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे. पी. जी. इमेज क डी. वी. डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी. वी. डी. कैँ कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि। अखनो बहुत गोटे पंजीमे ओकर चर्चासँ भितरे-भितरे गुम्हरैत रहैत छथि आ गपमे तामसे हाँफऽ लगै छथि जेना खून पीबि जेता।

बीजशब्द: दूषण · पंजी · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “दूषण पंजी” विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे दूषण; पंजी; videha; http; files प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

दूषण पंजीक स्कैन कएल सिंगल पी. डी. एफ. । पंजीक हमर पोथीमे ओना तँ ११००० तालपत्रक जे. पी. जी. इमेज क डी. वी. डी. सेहो अलगसँ किनबाक व्यवस्था रहै आ ओइ डी. वी. डी. कैँ कबिलपुरक सगर राति दीप जरएमे हम बाँटनहियो रही, मुदा ओइमे जे दूषण पंजी रहै तकर कारण कतेक पंचैती भेल, कतेक गोटे सोझाँ आ फोनपर गारि पढ़लन्हि। अखनो बहुत गोटे पंजीमे ओकर चर्चासँ भितरे-भितरे गुम्हरैत रहैत छथि आ गपमे तामसे हाँफऽ लगै छथि जेना खून पीबि जेता। ऐ दूषण पंजीमे ब्राह्मणक आन जाति खास कऽ दलित आ मुस्लिमक संग विवाह, वा पतिक मृत्युक बाद विवाहक लिखित दस्तावेज छल। ओकरामे हेर-फेर केनाइ हमरासँ सम्भव नै छल। पंजीक पोथीमे शब्दश: एकर मिथिलाक्षरसँ देवनागरीमे लिप्यंतरण भेल अछि। एतए हम मूल ताड़पत्र आ बसहा पत्रपर लिखल पंजीक लिंक दऽ रहल छी। संगमे पंजीक लिंक सेहो। कियो नै कहि सकैत अछि जे ऐ मे एक्को रत्ती अशुद्धि अछि। गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक ५ बर्ख बाद आ फेर हुनकर चर्मकारिणीसँ विवाह एतए वर्णित भेटत। ई वएह नव्य-न्यायक जनक गंगेश छथि। आनन्दा चर्मकारिणीसँ विवाह एतए सेहो भेटत जे हमरा द्वारा लिखित प्रेमकथा "शब्दशास्त्रम्"क आधार बनल।

दूषण पंजी- मूल मिथिलाक्षर लेख- ताड़पत्र सिंगल पी. डी. एफ. https: //docs. google. com/a/videha. com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6ZjFiNTA5NGI2YTVlNGEx

मोदानन्द झा शाखा पंजी- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/modanand_jha_shakha_panji. pdf

मंडार- मरड़े कश्यप-प्राचीन- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/mandar_marare_kashyap_prachin_complete. pdf

प्राचीन पंजी (लेमीनेट कएल)- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/laminatedpanji. pdf

उतेढ़ पंजी- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/panji_7_uterh_panji. pdf

पनिचोभे बीरपुर- https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/Home/Panichobhe_Birpur. pdf?attredirects=0

दरभंगा राज आदेश उतेढ आदि https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/Home/DARBHANGA_RAJ_ORDER_PANJI_PACHHBARI_ORDER_UTEDH. pdf?attredirects=0

छोटी झा पुस्तक निर्देशिका- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/panji_directory_chotijha_shakha_pustak. pdf

पत्र पंजी http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/patra_panji. pdf

मूलग्राम पंजी http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/panji_8_moolgram_panji. pdf

मूलग्राम परगना हिसाबे पंजी http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/panji_9_moolgram_parganawise_panji. pdf

मूल पंजी-2 http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/moolpanji_2. pdf

मूल पंजी-३- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/mool_panji_3. pdf

मूल पंजी-४ http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/mool_panji_4. pdf

मूल पंजी-५ http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/mool_panji_5. pdf

मूल पंजी-६ http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/moolpanji_6. pdf

मूल पंजी-७- http: //videha123. files. wordpress. com/2011/09/prachin_panji_last. pdf

पंजी-पोथी- http: //www.box.net/shared/yx4b9r4kab

एकटा पोथी आएल छल "मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला", १९६२ (लेखक: चित्रकार श्री लक्ष्मीनाथ झा), आ दोसर पोथी "जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.), २००९ (गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा, पंजीकार विद्यानन्द झा)"पंजी-पोथी- http: //www.box.net/shared/yx4b9r4kab आ पंजीक पात सभ https: //sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/ पर उपलब्ध अछि। आब ऐ दुनू पोथीक किछु भाग चोरि कऽ दू गोटे अपना नामेँ छपबेलन्हि अछि आ तइमे हुनका लोकनिकेँ सहयोग सेहो भेटल छन्हि। सुशीला झा "अरिपन"२००८ नामसँ "मिथिला की सांस्कृतिक लोकचित्रकला" पोथीक अनुवाद अपना नामे कऽ लेने छथि, फोटो तक स्कैन कऽ चोरा लेने छथि आ तकरा भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर प्रकाशन अनुदान देने अछि, जे ऐ पोथीपर लिखल अछि। डा. योगनाथ झा तँ सद्यः "जीनोम मैपिंग: मिथिलाक पंजी प्रबन्ध- ४५० ए.डी.सँ २००९ ए.डी.) केँ अपना नामेँ पंजी-प्रबन्ध (वंश परिचय- प्रथमभाग, २०१०) नामसँ छपबा लेलन्हि आ ऐ मे हुनका सहयोग भेटलन्हि श्रोत्रिय समाजक संगठन "महाराजा कामेश्वर सिंह सांस्कृतिक विकास मंच"क। ई श्रोत्रिय समाजक संगठन श्री लक्ष्मीनाथ झा, जे श्रोत्रिय छलाह, केर पोथीक चोरिक विरोध कोना करत? ऊपरमे स्कैन कएल पन्ना सभ देखू। हिनका सभकेँ देख कऽ तँ पुरान चोर पंकज पराशर (http: //www.box.net/shared/75xgdy37dr) सेहो लजा जाएत।

मैथिली पत्रकारिताक इतिहासमे रामलोचन ठाकुरक कोलकातासँ प्रकाशित देसिल बयनाक चर्चा नै भेटत (अपवाद: राधाकृष्ण चौधरीक "अ सर्वे ऑफ मैथिली लिटेरेचर " मे कोलकाता देसिल बयनाक चर्च छै।) । देसिल बयना नाम्ना पत्र १९८२ ई. मे प्रकाशित होइत रहल आ एकर ७० टा पृष्ठ विदेह आर्काइवमे स्कैन कऽ सिंगल पी. डी. फ. बना कऽ देल गेल अछि। बहुत रास अद्भुत रचना आ लेखकक कृति अहाँ ऐमे पढ़ि सकब।

देखू - देसिल बयना https: //docs. google. com/a/videha. com/viewer?a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6Njc3YmM2NmI4ODBkMzRmNQ

६. मिथिला आ संस्कृत

सारांश

मिथिला आऽ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता मिथिला आऽ संस्कृतक संबंध बड्ड पुरान अछि। षड् दर्शनमे चारि दर्शनक प्रारंभ एतयसँ भेल।

बीजशब्द: मिथिला · संस्कृत · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मिथिला आ संस्कृत” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मिथिला; संस्कृत; sanskrit; हेतु; विश्वविद्यालय प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मिथिला आऽ संस्कृत- कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयक प्रासांगिकता

मिथिला आऽ संस्कृतक संबंध बड्ड पुरान अछि। षड् दर्शनमे चारि दर्शनक प्रारंभ एतयसँ भेल। वाजसनेयी आऽ छांदोग्यक रूपमे दू गोट वैदिक शाखा अखनो ओतय अछि, मुदा नामे मात्रेक। मिथिलामे कतोक लोक भेटताह जे मात्र विवाह कालमे वाचसनय आऽ छंदोग्यक नमसँ परिचय प्राप्त करैत छथि। बीच रातिमे पता चलैत छन्हि जे वर छांदोग्य छथि आऽ स्त्रीगणमे शोर उठैत अछि जे आबतँ दू विवाह होयत-बड्ड समय लागत। वाजसनेयी आऽ छांदोग्य क्रमशः शुक्ल यजुर्वेद आऽ सामवेदक शाखा अछि से हम सभ बिसरि गेल छी। कार्यालयक कार्यावशात्

हम इंदिरा गाँधी नेशनल सेंटर अऑफ आर्ट्स गेलहु तँ वेद पर एक गोट डी. वी. डी. देखबाक अवसर प्राप्त भेल। अखनो ओड़ीसा, महाराष्ट्र, केरल, कर्णाटक, आ ऽ तमिलनाडुमे वैदिक शाखा जीवित अछि, मुदा अपना अहिठाम शाखा रहितहुँ नामोसँ अर्थोसँ अनभिज्ञता।

कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालयक स्थापना प्रधानमंत्री नरसिम्हा रावक प्रयासैँ रामटेक, महाराष्ट्रमे खुजल। अल्पावधिमे ई वि. वि. संपूर्ण महाराष्ट्रमे वर्षावधि संस्कृत संभाषण शिविर चला रहल अछि। शिशुक हेतु 23 खंडमे किताब छपलक अछि, जखन की एकर भवन अखन बनिये रहल अछि।

का. सि. संस्कृत वि. वि. दरिभङ्गा बहुत रास संस्कृत-मैथिली काव्यक उद्धार कएलक मुदा आब जा कय एकर योगदान सालमे एकटा पतरा छपब धरि सीमित भय गेल छैक- आ ऽ ई विश्वविद्यालय पंचांग सेहो अपन गणनाक हेतु विवादमे पड़ि गेल अछि।

मुदा एहि अंकसँ हम एकर रचनात्मक कएल गेल कार्यक विवरण देब प्रारंभ कएल छी।

विश्वविद्यालय द्वारा 20 सालसँ ऊपर भेल जखन संस्कृत-प्राकृत देसिल बयना सँ युकत नाटक सभक आलोचनात्मक संस्करण प्रकाशित भेल, जे भाषा मिश्रणक कारणेँ जहिना ई संस्कृतक तहिना मैथिलीक रचनामे परिगणित होइत अछि। भावोद्रेकक लेल गीतराशिक रचना कोमलकांत मिथिलाभाषहिमे निबद्ध भेल। विश्वविद्यालय द्वारा पहिल संपादित ग्रंथ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक धूर्त्तसमागम अछि।

धूर्त्तसमागम तेरहम शताब्दीमे ज्योतिरीश्वर ठाकुर द्वारा रचल गेल। ज्योतिरीश्वर ठाकुर धूर्त्तसमागममे मैथिली गीतक समावेश कएलन्हि। ई प्रहसनक कोटिमे अबैत अछि। मैथिलीक अधिकांश नाटक-नाटिका श्रीकृष्णक अथवा हुनकर वंशधरक चरित पर अवलंबितएवं हरण आकि स्वयंबर कथा पर आधारित छल। मुदा धूर्त्तसमागममे साधु आऽ हुनकर शिष्य मुख्य पात्र अछि। धूर्त्तसमागम सभ पात्र एकसँ-एक ध्होर्त्त छथि। ताहि हेतु एकर नाम धूर्त्तसमागम सर्वथा उपयुक्त अछि। प्रहसनकैँ संगीतक सेहो कहल जाइछ, ताहि हेतु एहि मे मैथिली गीतक समावेश सर्वथा समीचीन अछि। एहिमे सूत्रधार, नटी स्नातक, विश्वनगर, मृतांगार, सुरतप्रिया, अनंगसेना, अस्ज्जाति मिश्र, बंधुवंचक, मूलनाशक आऽ नागरिक मुख्य पात्र छथि। सूत्रधार कर्णाट चूड़ामणि नरसिंहदेवक प्रशस्ति करैत अछि। फेर ज्योतिरीश्वरक प्रशस्ति होइत अछि। एहिमे एक प्रकारक एब्सर्डिटी अछि, जे नितांत आधुनिक अछि। जे लोच छैक से एकरा लोकनाट्य बनबैत छैक।

विश्वनगर स्त्रीक अभावमे ब्रह्मचारी छथि। शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु मृतांगार ठाकुरक घर जाइत छथि तँ अशौचक बहाना भेटैत छन्हि। विश्वनगर शिष्य स्नातक संग भिक्षाक हेतु सुरतप्रियाक घर जाइत छथि। फेर अनंगसेना नामक वैश्याकेँ लय कय गुरु-शिष्यमे मारि बजरि जाइत छन्हि। फेर गुरु-शिष्य अनंगसेनाक संग असज्जाति मिश्रक लग जाइत छथि तँ ओतय मिश्रजी लंपट निकलैत छथि।...

मिश्रजी लंपट निकलैत छथि।...जे जुआ खेलायब आ' पांगना संगम ईएह दूटा केँ संसारक सार बुझैत छथि। असज्जति मिश्र पुछैत छथि जे के वादी आ' के प्रतिवादी। स्नातक उत्तर दैत छथि-जे अभियोग कहबाक लेल हम वादी थिकहुँ आ' शुल्क देबाक हेतु संन्यासी प्रतिवादी थिकाह। विश्वनगर अपन शुल्कमे स्नातकक गाजाक पोटरी प्रस्तुत करैत छथि। विदूषक असज्जाति मिश्रक कानमे अनंगसेनाक यौनक प्रशंसा करैत अछि। असज्जाति मिश्र अनंगसेनाकेँ बीचमे राखि दुनूक बदला अपना पक्षमे निर्णय लैत अछि। एम्हर विदूषक अनंगसेनाक कानमे कहैत अछि, जे ई संन्यासी दरिद्र अछि, स्नातक आवारा अछि आ' ई मिश्र मूर्ख तेँ हमरा संग रहू। अनंगसेना चारूक दिशि देखि बजैछ, जे ई तँ असले धूर्तसमागम भय गेल।

विश्वनगर स्नातकक संग पुनः सुरतप्रियाक घर दिशि जाइत छथि।

एमहर मूलनाशक नौआ अनंगसेनासँ साल भरिक कमैनी मँगैछ। ओ' हुनका असज्जातिमिश्रक लग पठबैत अछि। मूलनाशक असज्जातिमिश्रकेँ अनंसेनाक वर बुझैत अछि। गाजा शुल्कमे लय असज्जति मिश्रकेँ गतानि कए बान्हि तेना मालिश करैत अछि जे ओ' बेहोश भय जाइत छथि। ओ' हुनका मुइल बुझि कय भागि जाइत अछि।

विदूषक अबैत अछि, आ' हुनकर बंधन खोलैत अछि आ' पुछैत अछि जे हम अहाँक प्राणरक्षा कएल अछि, आ' जे किछु आन प्रिय कार्य होय तँ से कहू। असज्जाति कहल जे छलसँ संपूर्ण देशकेँ खएलहुँ, धूर्त्तवृत्तिसँ ई प्रिया पाओल, सेहो अहाँ सन आज्ञाकारी शिष्य पओलक, एहिसँ प्रिय आब किछु नहि अछि। तथापि सर्वत्र सुखशांति हो तकर कामना करैत छी।

मिथिलामे संस्कृतक स्थिति-

मिथिला क्षेत्रमे निम्न संस्थान कवि गुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय, रामटेकसँ मान्यताक आवेदन कएल अछि। जेना बिहार विद्यालय परीक्षा समितिक अस्तव्यस्तताक कारण केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्डक मान्यता प्राप्त स्कूलक संख्या बढ़ल तहिना दरभंगाक संस्कृत विश्वविद्यालयक अस्तव्यस्तताक कारण नीक संस्थान सभ मान्यताक लेल बाहरक दिशि देखलक अछि।

1. J. N. B. Sanskrit Vidyalaya Bihar Post Lagma (R. B. Pur) Via-Lohna Road, Dist. Darbhanga

2. Laxmiharikant Sanskrit Prathamik, Madhyamik Vidyalaya, Post. Jhanjharpur Bazar, Dist. Madhubani,

3. Ajitkumar Mehta Sanskrit Shikshan Sansthan Post Ladora, Dist. Samastipur.

4. Dr. Mandanmishra Sanskrit Mahavidyalaya, Post Sanjat, Dist. Begusarai

5. Saraswati Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya, Begusarai

6. Dr. R. M. Adarsha Sanskrit Mahavidyalaya, P. O. Malighat, Mujaffarpur

एकर अतिरिक्त राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली निम्न विद्यालय सभकेँ ग्रांट दय जीवित रखने अछि।

1. J. N. B. Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, PO. Lagma, Via - Lohna Road, Distt - Darbhanga.

2. Laxmi Devi Saraf Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, Kali Rekha, Distt- Deoghar.

3. Rajkumari Ganesh Sharma Sanskrit Vidyapeetha, Kolahnta Patori, Distt - Darbhanga

4. Ramji Mehta Adarsh Sanskrit Mahavidyalaya, Malighat, Muzaffarpur.

एहिमे लगमाक विद्यालय कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत विश्वविद्यालय सँ मान्यता मँगलक अछि, कियेकतँ दरभंगाक वि. वि. मे एहि तरहक कोनो परियोजनाक सर्वथा अभाव अछि।

तीस वर्ष पहिने हिन्दीमे डा. रामप्रकाश शर्म्मा लिखित मिथिलाक इतिहास सेहो प्रकाशित भेल रहय। आजुक दिन नहि तँ एकरा अपन वेबसाइट छैक नहिये दूर शिक्षाक कोनो परियोजना।

कामेश्वर सिंह संस्कृत विश्वविद्यालयसँ प्रकाशित दोसर नाटक अछि- महाकवि विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक। एहिसँ पहिने कृष्ण पर आधारित नाटक प्रचल छल। एहि अर्थमे ई एकटा क्रांतिकरी नाटक कहल जायत।

नाथ संप्रदाय किंवा गोरक्ष संप्रदायक प्रवर्त्तक योगी गोरक्षनाथक कथा ल' कय एहि नाटकक कथावस्तु संगठित भेल अछि। गोरक्षनाथक गुरु मत्स्येन्द्रनाथ योग त्यागि कदलिपुरमे राजा 18 टा रानीक संग भए भोग कए रहल छथि। गोरक्ष आ' काननीपादकेँ द्वारपाल रोकि दैत अछि। मंत्री ढोलहो पिटबा दैत अछि जे योगी सभक प्रवेश कतहु नहि हो आ' रानी सभकेँ राजाक मोन मोहने रहबाक हेतु कहल जाइत अछि। गोरक्ष आ' काननपाद नटुआक वेष धरैत छथि आ' मोहक नृत्य राजाकेँ देखबैत छथि। एहि बीच राजाक एकमात्र पुत्र बौधनाथ खेलाइत-खेलाइत मरि जाइत अछि। राजाक शंका नट पर जाइत छैक तँ ओकरा मारबाक आदेश होइत छैक। नट बच्चाकेँ जिया दैत छैक। राजा हुनकर परिचय पुछैत छथि तखन ओ' हुनका अपन पूर्व जन्मक सभटा गप बता दैत छन्हि, जे अहाँ तँ जोगी छी भोगी नहि।

एहि नाटकक पात्रमे महामति (राजाक मंत्री) आ' महादेवी- मत्स्येन्द्रनाथक ज्येष्ठ रानी सेहो छथि। मत्स्येन्द्रनाथ कदलीपुरक राजा आ' पूर्व जन्मक योगी छथि। मत्स्येन्द्रनाथ अंतमे कहैत छथि जे गोरक्ष जेहन शिष्य हो आ' महादेवी जेहन सभ नारी होथु। कामेश्वर सिंह दरभङ्गा संस्कृत विश्वविद्यालय द्वारा त्रैमासिकी संस्कृत पत्रिका 'विश्वमनीषा' निकलैत छल। 1975 ई. सँ 1994 ई. धरि ई पत्रिका प्रकाशित होइत रहल, मुदा 14 वर्षसँ एकर प्रकाशन बंद अछि। हिन्दीमे मिथिलाक इतिहासक अतिरिक्त सात खण्डमे मैथिलीक परम्परागत नाटकक (1300 ई. सँ 1900ई. धरिक 16 टा नाटक) प्रकाशन कएल गेल छल। मैथिलीमे पं गोविन्द झा लिखित वातावरण नाटकक संस्कृत अनुवाद श्री पं शशिनाथ झा कएलन्हि आ' तकरा विश्वविद्यालय प्रकाशित कएलक। 'स्मृति-साहस्री' जे 20म शताब्दीक विद्वान्-साधकक जीवन पर आधारित प्रथम मैथिली महाकाव्य अछि, आ' जकर रचयिता श्री बुद्धिधारी सिंह' रमाकर' छथि केर प्रकाशन सेहो विश्वविद्यालय कएने अछि। रूपक समुच्चयः नामक पुस्तकमे चारि गोट रूपक अछि। एहि मे चारिम संस्कृत रूपक म. म. अमरेश्वर कृत धूर्त्तविडम्बन प्रहसनम् मैथिली अनुवादक संदेल गेल अछि। म. म. भवनाथ उपाध्यायक राजनीतिसारः सेहो मैथिली अनुवादक संग देल गेल अछि।

संप्रति विश्वविद्यालयक कार्य सालमे एकबेर पंचाङ बनेबा धरि सीमित बुझाइत अछि।

७. मिथिलासँ पलायन

सारांश

मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पलायन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ कालिक पलायन एहि अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिला गामकेँ खाली कऽ देलक। 1981 ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हँजक–हँज बाहर बहरएवामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक शैक्षिक सामाजिक आ सांस्कृतिक एहि सभ क्षेत्रमे विफलता एकटा आधार तँ बनबे कएल, स्वतंत्रताक बादक तीस साल बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे एकटा विभाजक रेखा सेहो खींचि देलक।

बीजशब्द: मिथिलासँ · पलायन · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मिथिलासँ पलायन” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मिथिलासँ; पलायन; मिथिलाक; आर्थिक; मैथिल प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पलायन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ कालिक पलायन एहि अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिला गामकेँ खाली कऽ देलक। 1981 ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हँजक–हँज बाहर बहरएवामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक शैक्षिक सामाजिक आ सांस्कृतिक एहि सभ क्षेत्रमे विफलता एकटा आधार तँ बनबे कएल, स्वतंत्रताक बादक तीस साल बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे एकटा विभाजक रेखा सेहो खींचि देलक। 1960 ई. मे बनल कमला बान्ह आ एखन धरि अपूर्ण कोसी परियोजना मिथिलाक ग्रामीण आर्थिक आधारकेँ तोड़ि कऽ राखि देलक। प्राचीन कालक पलायन आ आइ काल्हिक पलायन मध्य एकटा मूल अंतर सेहो अछि। मिथिलाक मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण काएस्थ अपन विद्वत्ताक प्रदर्शन, पठन पाठन आ दोसर राजाक दरबारमे जीविकोपार्जन निमित्त प्राचीन कालहि सँ जाइत छलाह, तँ गएर मैथिल ब्राह्मण–कर्ण कायस्थ जाति वाणिज्य, अंगरक्षक आदिक कार्य लेल दूर देशक यात्रा करैत छलाह। प्राचीन कालमे मोरंग आ पछाति भदोही मिथिलाक बोनिहारक श्रम किनबाक केन्द्र बनल, मुदा एहिमे मोरंग नेपालक मिथिलाञ्चलमे पड़ैत अछि मुदा एकरा प्रवास एहि लेल कहल जाए लागल कारण ओतुक्का शासक गएर मैथिल गोरखा भऽ गेल छलाह।

पलायनक विभिन्न स्वरूप:- पलायन एकटा ऐतिहासिक प्रक्रियाक अंग अछि। अहाँक क्षेत्रक भौगोलिक स्थिति कोन देशमे अहाँकेँ पटकि देने अछि ताहिपर सेहो। से मोरंग लग रहलोसँ भारतक मिथिलाञ्चलक वासीक लेल पछाति कम लोकप्रिय भेल कारण ओ दोसर देशमे अवस्थित भेलाक कारण विभिन्न कारणसँ पलायनक लेल अनुपयुक्त भऽ गेल। कोलकाता स्वतंत्रताक बाद निकटवर्त्ती मेट्रो नगर रहए से लोक ओहि नगरमे खूब पलायन केलन्हि मुदा जखन विभिन्न राजनैतिक–आर्थिक नीतिक संकीर्णताक कारणसँ बंगालक उद्योग–धंधा चौपट भऽ गेल, शैक्षिक केन्द्रक रूपमे ओकर महत्व कम भेल तखन पलायनक केन्द्र मुम्बइ आ दिल्ली भऽ गेल। बोनिहार आब भदोही आ मोरंग नञि वरन पंजाब–हरियाणा आ पश्चिमी उत्तरप्रदेश जाइत छथि आ बनिजार बाहरसँ मिथिलामे भरि गेल छथि। दरभंगा राजक गलत आर्थिक नीतिक कारण आरा छपराक लोक सभ भूमि आ कामतक अधिपति कोना भऽ गेलाह से जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साहित्यमे पूर्ण रूपसँ देखार भेल अछि। 1936-37मे बर्मासँ सेहो भोजपुर बक्सरक लोक पूर्णियाँ, अररियामे भागि कऽ एलाह, डुमराँवक हरि बाबू हिनका सभकेँ बर्मामे बसेने छलाह आ बर्माक भारतसँ अलग भेलाक बाद ई लोकनि शरणार्थी बनि एहि क्षेत्रमे आबि गेलाह। कतेको बर्मा टोल एहि क्षेत्र सभमे अहाँकेँ भेटि जाएत। एहि क्षेत्रमे कृषि–वाणिज्यपर हिनको सभक दखल भेलन्हि। मिथिलामे भेल पलायनमे 1971 ई. मे बांग्लादेशक निर्माणक लगाति ओतुक्का हिन्दूक किशनगंजमे आ बादमे ओतुक्का मुस्लिमक पूर्णियाँ किशनगंजमे आगमन भेल। बाहर भेल पलायनक विरुद्ध भीतर आएल ई पलायन मिथिलाक बोली–वाणी सभ वस्तुकेँ प्रभावित कएलक। जाति–धर्म आधारित विवाह मुस्लिम, राजपूत आ भूमिहार मध्य मिथिलाक भौगोलिक परिधिसँ बाहर हुअए

लागल ताहिसँ सेहो बोली–वाणीक अंतर दृष्टिगोचर भेल।

पलायन नीक आकि अधलाहः- पलायन जे बाहर जाइ वला आ भीतर आबै वला दुनू तरहक अछि कैँ अहाँ कोनो तरहेँ नहि रोकि सकै छी। मुदा एक खादी मध्य भेल ई विकट पलायन मूल मैथिल बोली–वाणीक पलायन विकट समस्याकेँ जन्म देलक। भुखमरी जे वादि-अकाल आनलक, तकरासँ तँ मुक्ति भेटल मुदा सांस्कृतिक अकाल सेहो ई आनलक। गामपर बोझ घटल, लोककेँ बटाइ लेल जमीन नै भेटै छलै, आब से बै छै, मुदा तकर विपरीत मिथिलाक भीतर शैक्षिक केन्द्रक पूर्ण समापन भऽ गेल, बाहरी बनिजार एतुक्का आर्थिक बाजारपर कब्जा कऽ लेलन्हि। विशालकाय सड़क परियोजना, आ सूचना प्रौद्योगिकी, टेलीविजन, अखबार, पत्रिका आदि ततेक पूँजी केन्द्रित भऽ गेल जे ई स्थानीय वणिकक औकातिक बाहरक वस्तु भऽ गेल। क्षेत्रक राज्य–सभा आ विधान परिषदमे जखन बाहरी पूँजीपति प्रवेश कऽ गेल छथि तखन आर कथूक चर्च की करी?

पलायनक निदानः- हा पलायन केने काज नै चलत। जेना इस्रायलक प्रवासी ओकर शक्ति–सिद्ध भेल छथि तहिना मैथिल प्रवासी सेहो मिथिलाक लेल ओतुक्का भाषा–संस्कृति–साहित्य आ अर्थनीतिक लेल सहायक सिद्ध हेताह मिथिला राज्यक मांगमे बीचक स्थिति जेना बिहारक अंतर्गत मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली हो, मैथिलीक रेडियो स्टेशन, टी. वी, चैनल लेल कम लाइसेंस फीस राखल जाए, इ मैथिली पत्र–पत्रिकाकेँ सरकारी विज्ञापन भेटए आदि मांग–आदि सेहो धोंसियेबाक चाही। राज्य जहिया भेटत तहिया भेटत उपरका 2-3 बिन्दु जे भेटि जाएत तँ एकटा उपलब्धि होएत आ लोकमे तखने जागृति आएत तखने ओ मिथिला राज्य एकर आर्थिक–शैक्षिक राजनैतिक स्थितिपर ओ विचार कऽ सकताह आ आंदोलनक भाग बनि सकताह।

८. मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्ध वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ

सारांश

वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ ४५० ई. सँ २००९ ई. धरि कहल गेल वंश-स्मृति, प्राचीन पञ्जी, नगराम, दूषण-पञ्जी आ जीनोम-मानचित्रणपर समेकित अध्ययन एकभाषी मैथिली · सुपरस्क्रिप्ट-विहीन · स्रोत-विरोध स्पष्ट · विस्तृत बिबलियोग्राफी · २०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट

बीजशब्द: मिथिलाक · पञ्जी · प्रबन्ध · वंश · विवाह · दूषण · सामाजिक · स्मृति

सारांश · Abstract

ई अध्याय "मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ" विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। ४५० ई. सँ २००९ ई. धरि कहल गेल वंश-स्मृति, प्राचीन पञ्जी, नगराम, दूषण-पञ्जी आ जीनोम-मानचित्रणपर समेकित अध्ययन एकभाषी मैथिली · सुपरस्क्रिप्ट-विहीन · स्रोत-विरोध स्पष्ट · विस्तृत बिबलियोग्राफी · २०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध भारतक वंशावली–परम्परासभमे एकटा असाधारण रूप अछि। उपलब्ध रिपोर्टसभ एकरा कखनो 'मानव डेटाबेस', कखनो 'सामाजिक तकनीक', कखनो 'वंश–स्मृति', कखनो 'विवाह–अधिकारक न्यायिक उपकरण', कखनो 'जीनोम मानचित्रण' आ कखनो 'प्रतिरोधी अभिलेख' कहैत अछि। ई सभ नाम अलग–अलग कोण देखबैत अछि।

समेकित शोध-आलेख

मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध

वंश, विवाह, दूषण, सामाजिक स्मृति आ आधुनिक पुनर्पाठ

४५० ई. सँ २००९ ई. धरि कहल गेल वंश-स्मृति, प्राचीन पञ्जी, नगराम, दूषण-पञ्जी आ जीनोम-मानचित्रणपर समेकित अध्ययन

आलेख-स्वरूप बीसटा शोध-रिपोर्ट, विश्लेषण, प्रश्नोत्तर आ पञ्जी-विषयक अध्ययनक तार्किक समेकन; पुनरावृत्ति हटाकऽ विशिष्ट तथ्य, उदाहरण, मतभेद, सामाजिक इतिहास आ आलोचनात्मक आपत्ति सुरक्षित।

सम्पादकीय रूपरेखा

एकभाषी मैथिली · सुपरस्क्रिप्ट-विहीन · स्रोत-विरोध स्पष्ट · विस्तृत बिबलियोग्राफी · २०/२० स्रोत-कवरेज ऑडिट

मुख्य बात पञ्जी–प्रबन्धकेँ मात्र वंशावली कहब ओकर आधा अर्थ बुझब होयत। ई विवाह–अधिकार जाँचबाक युक्ति, गाँव–आधारित सामाजिक मानचित्र, विद्वत् उपाधि आ पेशागत परिवर्तनक अभिलेख, स्त्रीक अप्रत्यक्ष उपस्थिति, जाति–व्यवस्थाक अनुशासन आ उल्लंघन दुनूक दस्तावेज, आ हस्तलिखित पाण्डुलिपिसँ डिजिटल अभिलेख धरि चलैत स्मृति–प्रणाली—सभ एक संग अछि।

प्रस्तावना: एकटा जीवित अभिलेखक अनेक रूप

मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध भारतक वंशावली–परम्परा सभमे एकटा असाधारण रूप अछि। उपलब्ध रिपोर्टसभ एकरा कखनो 'मानव डेटाबेस', कखनो 'सामाजिक तकनीक', कखनो 'वंश–स्मृति', कखनो 'विवाह–अधिकारक न्यायिक उपकरण', कखनो 'जीनोम मानचित्रण' आ कखनो 'प्रतिरोधी अभिलेख' कहैत अछि। ई सभ नाम अलग–अलग कोण देखबैत अछि। पञ्जीमे व्यक्ति मात्र पिता–पुत्रक रेखामे नहि अबैत अछि; ओकर गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम, शाखा, मातृक सम्बन्ध, विवाह–संबन्ध, उपाधि, पेशा, निवास–परिवर्तन, राजकीय वा शैक्षिक प्रतिष्ठा, आ कतेको बेर सामाजिक 'दोष' सेहो दर्ज होइत अछि। एहि कारणेँपञ्जी एकहि समय वंशावली, सामाजिक भूगोल, विवाह–नियम, पेशागत इतिहास आ सांस्कृतिक स्मृतिक पाठ बनि जाइत अछि।

समेकित स्रोत–संग्रहमे पञ्जी–व्यवस्थाक सामान्य सिद्धान्त, दूषण–पञ्जीक ९७ तालिकाक व्याख्या, प्राचीन पञ्जीक आरम्भिक खण्ड, खण्ड १ केर पृष्ठ ६६–३४७, खण्ड २ केर पृष्ठ ३४८–६९०, नगराम–पञ्जीक विभिन्न ब्लॉक, पञ्जिका–नगरामी, 'जीनोम मैपिंग' शीर्षकवला खण्ड, शोध–रिपोर्ट, तुलनात्मक वंशावली सिद्धान्त आ एकटा विस्तृत प्रश्नोत्तर–संग्रह सम्मिलित अछि। किछु रिपोर्ट एक्के तथ्यकेँ अलग भाषा, अलग सिद्धान्त वा अलग दाबी संग दोहरबैत अछि। एतए पुनरावृत्ति हटाओल गेल अछि, मुदा परस्पर–विरोधी दाबी हटाओल नहि गेल; ओकरा 'स्रोत–भिन्नता' क रूपमे स्पष्ट कएल गेल अछि।

स्रोत-वाचनक सावधानी

स्रोत-भिन्नता आ प्रमाणक स्तर किछु रिपोर्ट ४५० ई. सँ २००९ ई. धरि 'अविच्छिन्न' पञ्जी–स्मृति कहैत अछि, जखन कि विशिष्ट पाण्डुलिपि–स्तरक सुरक्षित सामग्रीक घनत्व मध्यकाल आ विशेषतः उत्तर–मध्यकाल/आधुनिक कालमे बेसी देखाइत अछि। हरिसिंहदेवक शासन–तिथि आ शक १२४८/१३२६ ई. केर संस्थानीकरण–वर्णनमे सेहो कालक्रमगत असंगति भेटैत अछि। 'जीनोम' वा 'क्रोमोसोम' सम्बन्धी कथन आधुनिक आनुवंशिकीमे प्रमाणित समतुल्यता नहि, बल्कि स्रोत–लेखकसभक व्याख्यात्मक उपमा अछि। एहि आलेखमे एहन दाबीकेँ दाबी/उपमा/परम्परागत व्याख्याक रूपेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि, स्थापित वैज्ञानिक तथ्यक रूपेँ नहि।

१. मिथिलाः भूगोल, ज्ञान-परम्परा आ पञ्जीक सामाजिक भूमि

स्रोतसभ मिथिलाकेँ विदेह, तिरभुक्ति, तिरहुत आ मिथिलाञ्चल सन ऐतिहासिक नामसँ चिन्हैत अछि। उत्तरमे हिमालय, दक्षिणमे गङ्गा, पश्चिममे गण्डक आ पूर्वमे महानन्दा धरि पसरेल भूभागक रूपमे एकर सांस्कृतिक परिधि वर्णित अछि। आधुनिक राजनीतिक सीमासँ ई सांस्कृतिक परिधि छोट नहि होइत; उत्तर बिहारक दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी, मुजफ्फरपुर, सहरसा, सुपौल, पूर्णिया, कटिहार, अररिया, चम्पारण, भागलपुर–मुंगेर क्षेत्रसँ लऽ कऽ नेपालक तराई आ जनकपुर–काठमाण्डू दिशाक सम्बन्ध पञ्जीमे बारम्बार भेटैत अछि।

मिथिलाक विद्वत् परम्परा न्याय, वैशेषिक, मीमांसा, वेदान्त, व्याकरण, ज्योतिष आ धर्मशास्त्रक शिक्षण–संस्थानसँ जुड़ल रहल। पञ्जी–रिपोर्टसभ एहि ज्ञान–परम्परा आ वंश–परम्पराकेँ एक–दोसरसँ अलग नहि मानैत अछि। 'महामहोपाध्याय', 'नैयायिक', 'वैयाकरण', 'ज्योतिर्विद्', 'पण्डितराज', 'साहित्याचार्य', 'वैदिक', 'आचार्य' सन उपाधि वंश–प्रविष्टिमे नामक संग दर्ज होइत अछि। बादक कालमे एहि ठाम 'वकील', 'जज', 'प्रोफेसर', 'इञ्जिनियर', 'आई. ए. एस.', 'आई. पी. एस.', 'डी. आई. जी.', 'एम. ए.', 'पीएच. डी.', विश्वविद्यालयक कुलपति, आयकर अधिकारी आ अन्य आधुनिक पद सेहो ओही वंश–सूत्रक बीच प्रवेश करैत अछि। एहि निरन्तरतासँ पञ्जी केवल पुरान समाजक अवशेष नहि, बदलैत समाजक अभिलेख बनि जाइत अछि।

रिपोर्टसभक एकटा महत्त्वपूर्ण सामाजिक निष्कर्ष ई अछि जे गाँवक नाम पञ्जीमे मात्र पता नहि। मूलग्राम सामाजिक 'निर्देशाङ्क' बनैत अछि। जखन परिवार अपन मूल गाँव छोड़ि दोसर गाँव, शहर वा देश जाइत अछि, तखन मूल आ नव निवास दुनूक स्मृति राखब जरूरी होइत अछि, नहि तँ विवाह–सम्बन्धक गणना टूटि सकैत अछि। एहि कारणेँ मण्डर, सोदरपुर, करमहा, दरिहरा, खौआल, सरिसब, पाली, बेलौंच, जजिवाल, पण्डुआ, पबौली, सौराठ, महिषी, लोआ–सुगौन, राजग्राम, सिमराँवगढ़, कटिहार, कोलकाता आ नेपालक ठामसभ एकहि अभिलेखी नेटवर्कमे आबि जाइत अछि।

२. समूह-लेख्यसँ पञ्जी-प्रबन्ध धरिः संस्थानीकरणक कथा

पञ्जी–परम्पराक पूर्वरूपक चर्चा 'समूह–लेख्य' नामसँ कएल गेल अछि। रिपोर्टसभ कुमारिल भट्टक 'तन्त्रवार्त्तिक' क एकटा कथनक आधार पर कहैत अछि जे कुलीन वा संस्कारित परिवार अपन पितामह–प्रपितामहक वंश, गुण–दोष आ वैवाहिक योग्यता लिखित रूपमे सुरक्षित रखैत छल। एहि उल्लेखकेँ पञ्जी–प्रबन्धक सीधा संस्थागत आरम्भ मानब उचित नहि, मुदा ई स्पष्ट करैत अछि जे परिवार–आधारित वंश–स्मृति आ लिखित सूचीक विचार मध्यकालसँ बहुत पहिने विद्यमान छल।

तेरहम–चौदहम शताब्दीक संक्रमणक कथा स्रोतसभमे हरिनाथ उपाध्यायसँ जुड़ल अछि। कथाक अलग–अलग रूप भेटैत अछि। एक रूपमे विद्वान हरिनाथ उपाध्याय अपूर्ण वंश–स्मृतिक कारण निषिद्ध निकट सम्बन्धमे विवाह कऽ लेलनि। दोसर विस्तृत रूपमे हुनकर पत्नीपर दुषाध समुदायसँ सम्बन्धक आरोप लगाओल गेल, अग्नि–परीक्षामे हाथ जरल, आ विदुषी लखिमाक व्याख्यासँ ई निष्कर्ष निकलल जे पत्नी व्यभिचारिणी नहि, बल्कि पति स्वयं निषिद्ध स्वजन–विवाहक कारण धर्मशास्त्रीय संकटमे छलाह। पुनर्परीक्षाक कथा ई संकेत करैत अछि जे समस्या नैतिक दोषसँ बेसी वंश–ज्ञानक अभावक रूपमे पढ़ल गेल।

एहि प्रसंगक ऐतिहासिकता, तिथि आ विवरण पर स्रोतसभ समान नहि, मुदा सभ रिपोर्ट एकटा बात पर जोर दैत अछि—वंश–स्मृति व्यक्तिगत परिवारक भरोसासँ बाहर निकालि पेशागत, लिखित आ संस्थागत अभिलेख बनाओल गेल। शक १२४८ अर्थात १३२६ ई. कऽ संस्थानीकरणक परम्परागत तिथि देल जाइत अछि। महाराज हरिसिंहदेवक नाम एहि आदेशसँ जोड़ल अछि; किछु रिपोर्ट हुनकर शासनक समाप्ति १३२४ ई. कऽ लग राखैत अछि, जाहिसँ तिथि–संघर्ष उत्पन्न होइत अछि। एहि कारणेँ '१३२६ ई.' केँ एतए पञ्जी–परम्पराक स्वीकृत संस्थानीकरण–तिथि कहब अधिक सुरक्षित अछि, न कि हर विवरणक निर्विवाद आधुनिक ऐतिहासिक सत्य।

गुणाकर झाकेँ ब्राह्मण–पञ्जीक प्रमुख पञ्जीकार, शङ्करदत्तकेँ कर्ण कायस्थक अभिलेखक अधिकारी आ विजयदत्तकेँ क्षत्रिय—विशेषतः गन्धवरिया राजपूत—पञ्जीक दायित्व देबाक उल्लेख अछि। किछु रिपोर्ट ‘विश्वचक्र सम्मेलन’ वा जामसम/पण्डौल क्षेत्रमे विस्तृत वंश–संग्रहक उल्लेख करैत अछि। परिचेता वा क्षेत्रीय संग्राहक परिवारक वयोवृद्ध सदस्यसँ वंश–सूचना लैत, ओकर तुलना दोसर परिवारक अभिलेखसँ करैत आ मूल/बीजी पुरुष/शाखा निश्चित करैत छल। ई प्रक्रिया मौखिक स्मृतिसँ लिखित पारस्परिक सत्यापन दिसक संक्रमण बुझबामे उपयोगी अछि।

विदुषी लखिमा वा ठाकुराइन लखिमाक भूमिका सेहो किछु रिपोर्टमे विशेष रूपेँ अबैत अछि। हुनका धर्मशास्त्रक प्रखर ज्ञाता, रति मिश्रक पुत्री तथा न्याय–धर्मशास्त्रीय परम्परासँ जुड़ल विदुषीक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। ई विवरण स्त्रीक बौद्धिक उपस्थिति देखबैत अछि, यद्यपि मुख्य पञ्जी–रचना पुरुषवंश केन्द्रित रहल।

२क. संस्थानीकरणक विस्तृत परम्परा: सम्मेलन, स्त्री-विद्वान आ सामाजिक अनुष्ठान

किछु रिपोर्ट संस्थानीकरणक कथाकेँ आर विस्तारसँ दैत अछि। ओहि अनुसार जामसम/पण्डौल क्षेत्रमे ‘विश्वचक्र सम्मेलन’ नामक विद्वत् सभा भेल, जतए गाँव–गाँवक वंश, गोत्र, प्रवर, मूल, प्रवास–ग्राम आ विवाह–सूचना संकलित करबाक राजकीय योजना बनल। सम्मेलनक तिथि किछु स्रोत १३२७ ई. कहैत अछि, जखनकि संस्थानीकरण शक १२४८ अर्थात १३२६ ई. देल गेल अछि। एहि एक–वर्षक अन्तरकेँ सम्भवतः आदेश, सर्वेक्षण आ सम्मेलनक अलग चरण मानल जा सकैत अछि, मुदा मूल राजकीय दस्तावेजक स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक अछि।

विस्तृत परम्परामे ठाकुराइन लखिमा नामक स्त्री–विद्वानक उल्लेख विशेष महत्त्वक अछि। हुनका धर्मशास्त्रक प्रखर ज्ञाता आ हरिनाथ उपाध्याय प्रसंगक वंशीय जटिलता बुझनिहार विदुषी कहि प्रस्तुत कएल गेल अछि। किछु संस्करणमे अग्नि–परीक्षाक घटना बाद विद्वत् सभा समस्या नहि बुझि सकल, तखन लखिमा सम्बन्ध–रेखा खोलि निषिद्ध नातेदारी पहिचानलनि। ई कथा ऐतिहासिक तथ्य, लोकस्मृति आ संस्थानीकरणक प्रतीक—तीनू स्तर पर पढ़ल जा सकैत अछि। मूल समकालीन प्रमाण उपलब्ध नहि रहबाक स्थिति मे लखिमाक भूमिकाकेँ ‘पञ्जी–परम्परामे संरक्षित कथन’ कहब उचित अछि।

वाजसनेयी आ छान्दोग्य

एकटा रिपोर्ट मैथिल ब्राह्मणक वैदिक–रूढ़ि अनुसार दू मुख्य समूह बतबैत अछि—**वाजसनेयी**, जे शुक्ल यजुर्वेदक माध्यन्दिन शाखासँ जोड़ल छथि, आ**छान्दोग्य**, जे सामवेदक कौथुम शाखासँ जोड़ल छथि। स्रोत उपनयन आ विवाह–संस्कारमे किछु प्रक्रिया–भेद सेहो लिखैत अछि। वाजसनेयी उपनयनक चारि चरण—चूड़ाकरण, उपनयन, वेदारम्भ, समावर्तन—क उल्लेख अछि; छान्दोग्य सूचीमे नामकरण, चूड़ाकरण, उपनयन, समावर्तन देल अछि। विवाहक बाबत वाजसनेयी प्रक्रिया एक सतत् अनुष्ठान रूपमे, छान्दोग्य प्रक्रिया ‘पूर्व–विवाह’ आ ‘उत्तर–विवाह’ दू भागमे, उत्तर–विवाह अरुन्धती दर्शनक बाद रात्रिमे—एहन विवरण रिपोर्टमे अछि। ई अनुष्ठान–भेद पञ्जीक मुख्य वंशीयसंरचना नहि, मुदा विवाह–सामाजिक पृष्ठभूमिक हिस्सा अछि। क्षेत्र, परिवार आ काल अनुसार व्यवहार बदलि सकैत अछि।

पञ्चगौड़ आ पञ्चद्राविड़क व्यापक वर्गीकरण

स्रोत–रिपोर्ट मैथिल ब्राह्मणकेँ उत्तर भारतीय ‘पञ्चगौड़’ समूहक एक अंश रूपमे रखैत अछि—उत्कल, कान्यकुब्ज, गौड़, मैथिल, सारस्वत—आ विन्ध्यक दक्षिण ‘पञ्चद्राविड़’—कर्णाट, गुर्जर, तैलंग, द्राविड़, महाराष्ट्रीय—क पारम्परिक सूची दैत अछि। ई वृहत्तर पुराणोत्तर सामाजिक वर्गीकरण पञ्जीक स्थानीय गोत्र–मूल संरचनासँ अलग स्तरक पहचान अछि। एकरा आधुनिक जातीय–भाषिक विज्ञानक स्थिर वर्गीकरण नहि, ऐतिहासिक ब्राह्मणिक आत्म–वर्गीकरण बुझल जाए।

३. पञ्जीक प्रकार: एकटा बहु-रजिस्टर व्यवस्था

विभिन्न रिपोर्ट पञ्जीकेँ सात प्रकारमे बाँटैत अछि। नामक वर्तनी आ कार्य–विवरणमे हल्का अन्तर अछि, मुदा समेकित रूप निम्न अछि:

मूल पञ्जी— मूल वंश, मूलग्राम, बीजी पुरुष आ मूल पहचानक आधारभूत रजिस्टर।

शाखा पञ्जी— मूलसँ निकलल शाखा, नव निवास, सामाजिक उपवर्ग आ किछु कालमे ‘उपटीप’/नगराम सन विशेष खण्ड।

गोत्र पञ्जी— गोत्र, प्रवर आ प्राचीन मूलक वर्गीकरण।

पत्र पञ्जी— सन्तति/अपत्य, नव पीढ़ी आ विवाह–संयोजन दर्ज करयवला जीवित रजिस्टर।

दूषण पञ्जी— वंशीय ‘क्षरण’, नियम–विरुद्ध विवाह, अज्ञात मातृवंश, अन्तर्जातीय/अन्तर्धार्मिक सम्बन्ध, सामाजिक विवाद वा दोष–चिह्नक अभिलेख।

उटेढ़/उतेढ़ पञ्जी— विवाहक पूर्वज–जाँच; मातृ–पितृ पक्षक विस्तृत वंश–मानचित्र।

अस्वजन्य–पत्र/सिद्धान्त–पत्र— निषिद्ध रक्त–संबन्ध नहि रहबाक प्रमाण तथा विवाह–अधिकारक औपचारिक निर्णय।

किछु स्रोत ‘अस्वजन्य–पत्र पञ्जी’ मे स्त्री–नामक विशेष संरक्षण, खास कऽ रसाढ़–अररिया क्षेत्रक उदाहरण दैत अछि। दोसर स्रोत मुख्य पञ्जीमे स्त्रीक नामक न्यूनता पर जोर दैत अछि। दुनू बात एक संग सम्भव अछि: मुख्य पितृवंशीय श्रृंखला स्त्रीकेँ अक्सर ‘फलाँ गाँवसँ फलाँक पुत्रक दौ’ सन सम्बन्ध–सूत्रमे रखैत अछि, मुदा विशेष रजिस्टर, विवाह–जाँच वा असाधारण प्रविष्टिमे स्त्रीक नाम, पेशा वा उपलब्धि दर्ज भऽ सकैत अछि।

पञ्जी एकटा ‘रिलेशनल’ अभिलेख

आधुनिक डेटाबेसक उपमा स्रोतसभमे बारम्बार आयल अछि। एकटा प्रविष्टिमे व्यक्ति–नाम प्राथमिक पहचान होइत अछि; पिता, मूल, गाँव, मातृक गाँव, दौ/द्दौ, शाखा–सन्दर्भ, पृष्ठ–संख्या वा अन्य खण्डक कोड पारस्परिक लिंकक काज करैत अछि। ‘बी ४१/८’, ‘उ. प्र. २७०/५’, ‘२७०/२’ सन कोड कागजी ‘हाइपरलिंक’ जकाँ कार्य करैत अछि। ई तुलना उपयोगी अछि, मुदा याद रखबाक चाही जे पञ्जी आधुनिक डेटाबेस नहि छल; ओकर संरचना लिखित संक्षिप्त सूत्र, विशेषज्ञ स्मृति आ अनेक पोथीक पारस्परिक परामर्श पर टिकल छल।

४. गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम आ बीजी पुरुष

पञ्जी–वाचनक आधारभूत पहचान चारि स्तरपर बनैत अछि—गोत्र, प्रवर, मूल आ मूलग्राम। **गोत्र**व्यापक पितृवंशीय ऋषि–परम्परा अछि। **प्रवर**वैदिक ऋषि–समूहक अनुष्ठानिक पहचान अछि। **मूल**गोत्रक भीतर एकटा ऐतिहासिक शाखा वा वंश–एकक अछि। **मूलग्राम**ओ भौगोलिक ठाम अछि जकरा संग बीजी पुरुष अथवा प्रारम्भिक ज्ञात पूर्वजक पहचान जोड़ल गेल। परिवार जखन दोसर ठाम बसल, नव ठाम शाखा वा निवासक रूपमे जुड़ैत गेल।

रिपोर्टसभ २० गोत्रक सूची दैत अछि: शाण्डिल्य, वत्स, सावर्ण, काश्यप, पराशर, भारद्वाज, कात्यायन, गर्ग, कौशिक, आलम्बुकाक्ष, कृष्णात्रेय, गौतम, मौद्गल्य, वशिष्ठ, कौण्डिन्य, उपमन्यु, कपिल, विष्णुवृद्धि, ताण्डि आ जातूकर्ण। अलग–अलग खण्डमे सक्रिय गोत्रक संख्या कम भऽ सकैत अछि; उदाहरणार्थ प्राचीन पञ्जीक एकटा खण्डक आँकड़ामे १७ गोत्रक प्रभावी उपस्थिति कहल गेल अछि। ई विरोध नहि, बल्कि विशिष्ट खण्डक वास्तविक प्रतिनिधित्व आ सम्पूर्ण परम्परागत सूचीक अन्तर हो सकैत अछि।

प्रवरक सूचीमे त्रिप्रवर आ पञ्चप्रवरक भेद अबैत अछि। स्रोतसभ विशेष रूपेँ वत्स आ सावर्णक उदाहरण दैत अछि: गोत्र अलग रहितो प्रवर–ऋषि समान मानल गेल, तेँ परम्परागत विवाह–जाँचमे ई जोड़ी निषिद्ध मानल जाइत अछि। एहि उदाहरणसँ बुझाइत अछि जे पञ्जी–व्यवस्था केवल ‘गोत्र अलग अछि कि नहि’ पर नहि रुकैत, प्रवर–साम्य सेहो देखैत अछि।

मूलक कुल संख्या १६७ देल गेल अछि। ‘मुख्य’ मूल पहिने ३४, बादमे फनन्दह मूलक खानाम शाखाकेँ जोड़ि ३५ मानल गेल—एहन विवरण अनेक रिपोर्टमे दोहरायल अछि। एहि ३५ मूलकेँ आयन्त श्रेष्ठ, प्रजायन्त/दोसर श्रेणी आ मध्यम मूलक श्रेणीमे बाँटबाक परम्परा वर्णित अछि। नामक वर्तनी अलग–अलग रिपोर्टमे बदलैत अछि—खड़ौरे/खड़ौरै, खौआल/खौआर, बुधबाड़/बुधवाल, मदार, दरिहर, घुसौत, तिसौत, करमहा, नरौन, बभनियाँ, हरिअम, सरिसब, सोदरपुर, गंगोली, पबौली, कुजौली, अले, पाली, सकराढ़ी, विशे, फनन्दह, उचित, पण्डुआ, कटाइ, तिलाइ, दीघ, बेलौंच, एकहर, पानिछोभ, बलियास, जजिवाल, टकवाल आदि। ई वर्तनी–परिवर्तन स्वयं पञ्जीक मौखिक–लिखित संक्रमणक प्रमाण अछि।

मूल एकटा भौगोलिक ‘पता’ मात्र नहि

एकहि गोत्रमे अनेक मूल होइत अछि। काश्यप गोत्रक सम्बन्धमे ७४ शाखाक उल्लेख भेटैत अछि; मण्डरक एकटा प्राचीन आधार–बिन्दुसँ गढ़, मंगरौनी आदि शाखा जोड़ल गेल अछि। ‘बीजी पुरुष’ एहि उपशाखाक प्रारम्भिक ज्ञात पुरुष–पूर्वज अछि। एतए मूल जैविक डी. एन. ए. चिह्न नहि; ई अभिलेखीय–सामाजिक पहचान अछि। आधुनिक आनुवंशिक वंशावलीसँ तुलना करैत काल ई भेद अनिवार्य अछि।

५. उटेढ़, बत्तीस पूर्वज आ सोलह छट्ठी: विवाह-जाँचक गणित

विवाहक समय पञ्जीकार प्रस्तावित वर–कन्याक विस्तृत पूर्वज–मानचित्र बनबैत छल, जकरा स्रोतसभ 'उटेढ़', 'उतेढ़' वा 'उठेढ़ा' लिखैत अछि। रिपोर्टसभ एकरा ३२ मूल/पूर्वजक वंश–विन्यास कहैत अछि। ई ३२ संख्या कतेको विवरणमे पाँच पीढ़ी पीछे पसरेल ३२ पूर्वजक गणितसँ जोड़ल अछि; किछु विवरण १६ पितृ–पक्ष आ १६ मातृ–पक्ष कहैत अछि। पारम्परिक सूत्रकव्यावहारिक उद्देश्य एक्के अछि—विवाहक दुनू पक्षमे निषिद्ध निकट रक्त–संबन्धक पुनरावृत्ति खोजब।

उटेढ़क भीतर 'सोलह छठ्ठी' विशेष तकनीकी जाँच अछि। स्रोत–प्रश्नोत्तर एकर सम्बन्ध–बिन्दुसभ बहुत विस्तारसँ गनैत अछि—पितामहक पितामह, पितामहक मातामह, पितामहीक पितामह/मातामह, मातामहक पितामह/मातामह, मातामहीक पितामह/मातामह आ एहि शाखासभक उर्ध्व सम्बन्ध। सार ई जे कन्याक सोलह विशिष्ट षष्ठ–स्थिति पूर्वजकेँ वरक वंश–पट्टीसँ मिलाओल जाइत अछि।

परम्परागत धर्मशास्त्रीय सूत्र मातृपक्षमे पाँच आ पितृपक्षमे सात पीढ़ी छोड़बाक बातसँ जोड़ल अछि। किछु पञ्जी–रिपोर्ट कहैत अछि जे महामहोपाध्याय महेश ठाकुरक प्रभावक बाद व्यवहारमे पितृपक्षक सीमा छह पीढ़ी मानल गेल, अर्थात सातम पीढ़ी विवाहयोग्य भेल। दोसर रिपोर्ट श्रोत्रिय लेल ५ मातृ + ७ पितृ आ पञ्जीबद्ध/वंशज लेल ५ मातृ + ६ पितृ नियमक उल्लेख करैत अछि। प्रश्नोत्तर–स्रोत एहि श्रेणीगत भेदकेँ बादक सामाजिक निर्माण कहि मूल धर्मशास्त्रीय नियम सभ लेल समान मानबाक तर्क रखैत अछि। समेकित निष्कर्ष ई अछि जे '५/७' आदर्श सूत्र आ '५/६' व्यवहारिक संशोधन दुनू स्रोत–परम्परामे मौजूद अछि; एकरा एक–दोसरक बदला चुपचाप नहि राखल जा सकैत अछि।

विवाह-अधिकारक प्रमुख निषेध

स्रोतसभ चारि, पाँच वा सात नियमक अलग–अलग सूची दैत अछि। संकलित रूपमे मुख्य निषेध ई अछि:

समान गोत्रमे विवाह नहि;

समान प्रवरमे विवाह नहि;

निषिद्ध मातृ–सपिण्ड सम्बन्ध नहि;

निषिद्ध पितृ–सपिण्ड सम्बन्ध नहि;

'काठमामा' अर्थात सौतेली माताक भाइक सन्ततिक विशेष निषेध;

किछु व्याख्यामे प्रत्यक्ष पितामह/मातामहक निकट सन्तति निषेध;

किछु सामाजिक नियममे जेठ सन्तान अविवाहित रहिते छोटक विवाह आ जीवित पत्नीक सगी बहिनसँ विवाहपर आपत्ति।

एहि सभ जाँचक बाद पञ्जीकार 'सिद्धान्त' अथवा 'अस्वजन्य–पत्र' दैत छल। सिद्धान्त मात्र ज्योतिषीय शुभमुहूर्त नहि, बल्कि वंशीय पात्रताक प्रमाण बुझल गेल अछि। एतए 'अधिकार' शब्दक अर्थ—ई विवाह परम्परागत अभिलेखी नियमक भीतर मान्य अछि कि नहि।

आनुवंशिकी सम्बन्धी सावधानी रिपोर्टसभ सोलह छठ्ठी, गोत्र–प्रवर आ सपिण्ड नियमकेँ 'प्राचीन जीनोम मानचित्रण' वा 'क्रोमोसोम–जाँच'क समतुल्य कहबाक प्रयास करैत अछि। एतए 'रक्त–दूरी' जाँचक सामाजिक उद्देश्य आधुनिक आनुवंशिक परामर्शसँ तुलना योग्य जरूर अछि, मुदा गोत्र/मूल/प्रवर आधुनिक डी.एन.ए. मार्कर नहि। पञ्जी–आधारित निषेध सामाजिक–वंशावली सूचना पर आधारित छल; आधुनिक आनुवंशिकी जैविक परीक्षण, जनसंख्या आँकड़ा आ आणविक प्रमाण पर। तुलना उपमा अछि, समरूप विज्ञान नहि।

५क. सोलह छठ्ठीक विस्तृत सम्बन्ध-मानचित्र आ एक व्यवहारिक उदाहरण

स्रोतक एक विस्तृत तालिका सोलह छठ्ठीकेँ सम्बन्ध–पथक रूपमे खोलैत अछि। शब्दावली अलग पञ्जीकारक पाठमे बदलि सकैत अछि, मुदा समेकित सम्बन्ध–रूप निम्न अछि:

कन्याक पितृपक्षक वृद्ध–प्रपितामहक पितामह;

ओहि वृद्ध पितृ–पूर्वजक ससुर;

पितृ–प्रपितामहक मातामहक पिता;

ओहि मातामहक ससुर;

पितामहीक पितृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

पिताक मातामहक मातामह;

पितामहीक मातृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

पितामहीक मातामहक मातामह;

मातामहक पितृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

मातृ–प्रपितामहक मातामह;

मातामहक मातृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

मातामहक मातामहक मातामह;

मातामहीक पितृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

मातामहीक पितामहक मातामह;

मातामहीक मातृपक्षक वृद्ध–पूर्वज;

मातामहीक मातामहक मातामह।

ई सूची कागजपर सरल प्रतीत होइत अछि, व्यवहारमे प्रत्येक बिन्दु अलग मूल, ग्राम आ अनेक पीढ़ीक क्रॉस–सन्दर्भ माँगैत अछि। किछु प्रश्नोत्तर–स्रोत 'मातृपक्ष' क परिभाषा बहुत कठोर करैत अछि: जे सम्बन्ध कन्याक आफ्नी माताक जैविक वंशमार्गसँ अबैत अछि, ताहिमे मात्र मातृपक्षीय सीमा लागू हो; पितृवंशक भीतर विवाहसँ जुड़ल स्त्री–पूर्वजकेँ स्वचालित रूपेँ मातृपक्ष नहि मानल जाए।

शशिनाथ झाक पुत्रीक विवाह-जाँच

एकटा विस्तृत उदाहरणमे करमहा–बेहट वंशक शशिनाथ झाक पुत्री आ विट्ठो निवासी करमहा–बेहट सम्बन्धी वरक प्रस्तावित विवाहक उटेढ़ बनाओल गेल। कन्याक मातृपक्ष खण्डबला–भौरक नारायणदत्त ठाकुरसँ जुड़ल; वरक पितृपक्ष दरिहरा–रतौलीकगोपीनन्द झा आदि सँ। सोलह छठ्ठी मिलानमे कन्याक चौदहम छठ्ठी—सोदरपुर–दिगौन्धक कौशिल्यानन्द मिश्र—वरक पितृवंशक निषिद्ध सीमा भीतर सेहो भेटल। स्रोतक अनुसार एहि ओवरलैपक कारण पञ्जीकार सिद्धान्त–पत्र देबासँ मना कएलनि। एहि केसक महत्त्व ई जे 'छठ्ठी' अमूर्त सूची नहि, विवाह निर्णयक कार्यरत एल्गोरिथ्म छल।

किछु प्रश्नोत्तर एकटा 'मातृ अपवाद' क उल्लेख करैत अछि—जँ समान छठ्ठी केवल वरक मातृपक्षमे एहन दूरीपर अछि जे पाँच पीढ़ीक निषिद्ध सीमा पार भऽ गेल, तखन विवाह सम्भव भऽ सकैत अछि। एहि नियमक व्यवहारिक रूप अलग पञ्जीकारक परम्परासँ सत्यापित होयबाक चाही।

६. पञ्जीकार: स्मृतिक पेशेवर, अभिलेखक रक्षक

पञ्जीकार वंशावली पढ़यवला 'क्लर्क' मात्र नहि। ओकर काज पुरान पोथी पढ़ब, शाखा–सन्दर्भ मिलान करब, उटेढ़ बनाब, विवाह–अधिकार तय करब, नवी जन्म–विवाह सूचना जोड़ब, सामाजिक विवादमे अभिलेख देखब आ पोथीक भौतिक संरक्षण करब छल। कई रिपोर्ट १८५ पञ्जी वा पञ्जीकार–परिवारक उल्लेख करैत अछि। ई संख्या स्रोत–सापेक्ष अछि, मुदा पेशागत वितरणक व्यापकता देखबैत अछि।

पाण्डुलिपिसभ ताड़पत्र, भूर्ज/छाल, बादमे हस्तनिर्मित कागजपर मिथिलाक्षर/तिरहुता लिपिमे लिखल गेल। किछु निर्देश जल, तेल, ढीला वा अनुपयुक्त बन्धनसँ रक्षा, वर्षमे नियंत्रित धूप देब, काठक आवरण, डोरीक ब्रह्मग्रन्थि–जकाँ बाँधन आ वनस्पतिजन्य मसिक उपयोगक उल्लेख करैत अछि। किछु रिपोर्ट सूर्य सिंह राशिमे रहबाक समय—लगभग अगस्त–सितम्बर—पोथी धूपमे सुखेबाक परम्परा लिखैत अछि। एहि निर्देशकेँ आधुनिक संरक्षण–विज्ञानक विकल्प नहि, ऐतिहासिक अभिलेखक देखभालक स्थानीय ज्ञान बुझबाक चाही।

पञ्जीकारक नैतिकता पर स्रोतसभ कठोर अछि। अभिलेख नहि देखिकऽ निजी स्मृति वा मनमानी नियमसँ निर्णय, अत्यधिक शुल्क, वंश–घड़न्त, दर्जा–बढ़ेबाक लेल लेन–देन—सभक आलोचना भेटैत अछि। 'पञ्जीकार संस्कृतिक रक्षक अछि, शुल्क–वसूल व्यवसायी नहि' सन भाव रिपोर्टमे उद्धृत अछि। ई आत्मालोचना महत्त्वपूर्ण अछि, कारण व्यवस्था अपन भ्रष्टाचारक सम्भावना केँ पहचानैत अछि।

६क. पञ्जीकारक प्रशिक्षण, धौत परीक्षा आ सभागाछी

किछु आधुनिक रिपोर्ट दरभंगा राजक संरक्षणकालमे पञ्जीकार बनबाक लेल लगभग दस वर्षक अध्ययन आ 'धौतपरीक्षा' नामक कठोर परीक्षणक परम्परा लिखैत अछि। परीक्षा उत्तीर्ण विद्वान राजकीय मान्यता पबैत छल, बादमे राज–व्यवस्था समाप्त भेलापर पेशा वंशानुगत परिवारक हाथमे अधिक केन्द्रित भेल—ई स्रोतक कथन अछि। एहि संस्थागत इतिहासक स्वतंत्र अभिलेखी जाँच उपयोगी होएत, मुदा पञ्जीकारक विशेषज्ञता सामान्य लिपिक–कौशलसँ बहुत बेसी छल, से मूल ग्रन्थक जटिलता सँ स्पष्ट अछि।

रिपोर्टसभ विवाह–जाँच लेल 'सभागाछी' नामक सार्वजनिक विवाह–सभा स्थलक उल्लेख करैत अछि; एक स्रोत चौदह राजकीय/परम्परागत सभागाछीक दावा करैत अछि। आमगाछी आ खुला मैदानमे परिवार, पञ्जीकार आ विद्वान जमा होइत, वंश–जाँचक बाद सिद्धान्त–पत्र देल जाइत। सौराठ सभा एहि परम्पराक सर्वाधिक चर्चित आधुनिक रूप अछि। सभागाछी केवल वर–कन्या खोजक बाजार नहि, पञ्जी अभिलेखक सार्वजनिक सत्यापन, विद्वत् संवाद आ सामाजिक नियमनक मंच छल।

६ख. पञ्जीकारक कार्य-विभाजन आ जाति-विशिष्ट सत्यापन

हरिसिंहदेवक कथामे गुणाकर झा ब्राह्मण, शंकरदत्त कर्ण कायस्थ आ विजयदत्त क्षत्रिय/गंधवारिया राजपूतक वंशावलीक प्रमुख नियुक्त कहि वर्णित छथि। प्रश्नोत्तर–स्रोत गुणाकर झाकपूर्व विद्वत्ता/क्षेत्र–सम्बन्धी सर्वेक्षणक कारण चयन होयबाक संकेत करैत अछि। अलग समुदाय लेल अलग पञ्जीकार होयबाक अर्थ नियम पूर्णतः समान छल, से जरूरी नहि; वंशावलीक आधारभूत लक्ष्य समान होइतहुँ गोत्र, कुल, विवाह–परम्परा आ अभिलेख–रूप समुदाय अनुसार बदलि सकैत अछि। गैर–ब्राह्मण पञ्जीक बचेबाक स्थिति कमजोर कहल गेल अछि; एहि कारण मैथिल ब्राह्मण पञ्जीक उपलब्धि पूरे मिथिलाक सभ जाति–समुदायक समान अभिलेखीय स्थिति मानि नहि लेल जाए।

७. मिथिलाक्षर, कैथी-देवनागरी आ डिजिटल रूपान्तरण

पुरान पञ्जी मिथिलाक्षर/तिरहुता लिपिमे सुरक्षित रहल। बादक मुद्रित आ डिजिटाइज्ड संस्करणमे देवनागरी, कतेको ठाम कैथी–प्रभावित देवनागरी वा समान सामग्रीक दू–स्तम्भीय रूप भेटैत अछि। प्राचीन पञ्जी खण्ड १ आ ६६–३४७ पृष्ठक रिपोर्ट दुनू स्तम्भमे समान वंश–सूचना रहबाक बात कहैत अछि—एक स्तम्भ परम्परागत लिपि–रूपक निकट, दोसर अपेक्षाकृत पठनीय देवनागरी–रूप।

लिपि–ज्ञानक ह्रास पञ्जी–परम्पराक प्रमुख संकट मानल गेल अछि। जखन पोथी पढ़यवला विशेषज्ञ कम भऽ रहल छथि, तखन परिवार अपन अभिलेख स्वतंत्र रूपसँ सत्यापित नहि कऽ पबैत अछि। डिजिटल छवि, देवनागरी लिप्यन्तरण, खोजयोग्य पाठ, ग्राम–सूची, गोत्र–मूल अनुक्रमणिका आ पारस्परिक लिंक एहि संकटक उत्तरक रूपमे प्रस्तुत अछि। २००० ई. क बाद डिजिटल प्रयास, २००७–२००९ धरि स्कैन/प्रकाशन, आ २००८ केर आन्तरिक लेखकीय तिथि सन साक्ष्य देखबैत अछि जे पञ्जी कागजसँ डिजिटल माध्यम दिस सचेत रूपेँ बढ़ल।

स्रोतसभ हजारो छवि, डी. वी. डी. अभिलेख, ऑनलाइन प्रकाशन आ मुद्रित 'जीनोम मैपिंग' ग्रन्थक चर्चा करैत अछि। सार्वजनिक पहुँचक लाभ—वंश–स्मृति सुरक्षित, शोध सरल, प्रवासी समुदायक पहुँच—स्पष्ट अछि। मुदा जोखिम सेहो अछि: सन्दर्भ–विहीन डेटा, निजी पारिवारिक सूचना, गलत स्वचालित पढ़ाइ, मूल लिपिक त्रुटिपूर्ण लिप्यन्तरण, आ पञ्जीकारक मौखिक विशेषज्ञता सँ अलग कएल डेटा। उचित डिजिटल रूपान्तरणमे उच्च–गुणवत्ताक छवि, मूल पृष्ठ–संख्या, लिपि–स्तर, सम्पादकीय संशोधनक इतिहास, नियंत्रित शब्दावली, ग्राम–नामक वैकल्पिक वर्तनी, आ पञ्जीकारक व्याख्या—सभ संग राखब चाही।

८. सामाजिक श्रेणी: श्रोत्रिय, योग्य, पञ्जीबद्ध, वंशधर आ जयवार

पञ्जी–प्रबन्धक मूल विवाह–जाँचक उद्देश्यक संग धीरे–धीरे सामाजिक श्रेणीकरण जुड़ल। रिपोर्टसभ श्रोत्रिय, योग्य, पञ्जीबद्ध/वंशज, वंशधर आ जयवार सन श्रेणी दैत अछि। **श्रोत्रिय**उच्च वैदिक–अध्ययन, अनुष्ठानिक अनुशासन आ प्रतिष्ठित वैवाहिक सम्बन्धक समूह; **योग्य**उच्च किन्तु श्रोत्रियसँ निम्न श्रेणी; **पञ्जीबद्ध**अभिलेखमे विधिवत् दर्ज वंश; **वंशधर**किछु व्याख्यामे उच्च श्रेणीसँ

नीचे गेल शाखा; **जयवार**अपूर्ण अभिलेख वा औपचारिक श्रेणीकरणसँ बाहर परिवारक नामक रूपमे अबैत अछि। स्थानीय नाम 'सोइत', 'जोग', 'भलमानुष' आदि सेहो किछु रिपोर्टमे देल अछि।

स्रोतसभ दावा करैत अछि जे आरम्भिक पञ्जी मुख्यतः वंश–सत्यापनक साधन छल, सामाजिक 'उच्च–नीच' क कठोर उपश्रेणी बादमे बढ़ल। महाराज माधव सिंहक काल—अठारहम शताब्दी—मे शाखा पञ्जीक विकास, श्रेणीगत कठोरता आ विवाह–संबन्धक प्रतिष्ठा–बाजारक विस्तारक चर्चा अछि। 'पञ्जी आ पानी नीचाँ जाए' सन धारणा उच्च परिवारक निम्न श्रेणीमे विवाहक बाद सामाजिक दर्जा क्रमशः घटबाक तर्कक प्रतीक बनल। रिपोर्टसभ ई सेहो कहैत अछि जे पहिल–दोसर उच्च श्रोत्रिय उपश्रेणी एहन प्रक्रियासँ समाप्त भऽ गेल।

दर्जा-बढ़ेबाक लेन-देन आ सामाजिक विकृति

प्रश्नोत्तर आ रिपोर्टसभमे पैसाक बदला वंशीय श्रेणी 'अपग्रेड' करबाक आदेश/प्रमाण, लोकिक प्रतिष्ठा, पञ्जीकारपर दबाव आ सामाजिक प्रतिष्ठाक खरीद–बिक्रीक आरोप भेटैत अछि। एहि प्रसंगकेँ तथ्यक रूपमे एकरे आधार पर अंतिम सिद्धान्त नहि मानल जा सकैत अछि, मुदा स्रोत–संग्रह ई विषय लगातार उठबैत अछि। एतए मूल बिन्दु ई अछि जे जे व्यवस्था प्रमाणिक वंश–जाँच लेल बनल, ओहि पर सामाजिक पूँजी आ धनक प्रभाव पड़बाक सम्भावना स्वयं स्रोतसभ मानैत अछि।

उच्च श्रेणी पुरुषक अनेक विवाह, 'बिकौआ' प्रथा, बाल–विवाह, दहेज आ व्यापक विधवापनक समस्या सेहो किछु रिपोर्टमे एहि श्रेणी–व्यवस्थासँ जोड़ल अछि। उन्नीसम शताब्दीक उत्तरार्धमे सुधार–प्रयासक चर्चा, विशेषतः १८७६ ई. केर सदर कमिटी, पञ्जीकार आ समाजक प्रतिज्ञा, आ १८७६–१८७८ बीच २, २८९ विवाहक निगरानीक आँकड़ा स्रोत–संग्रहमे अछि। एहि आँकड़ाकेँ स्रोतक दाबी बुझैत उपयोग कएल जाए; स्वतंत्र अभिलेखी सत्यापन भविष्यक शोध–विषय अछि।

८क. मूलक पाँच सामाजिक श्रेणी, चौगोला आ पछबरिपार

किछु स्रोत मूल–समूहकेँ तीन प्रमुख प्रतिष्ठा–स्तर—आयन्त श्रेष्ठ, प्रजायन्त/वरन्त, मध्यम—मे दैत अछि; एक विस्तृत रिपोर्ट रघुदेव झासँ सम्बद्ध पाँच–स्तरीय वर्गीकरण सेहो प्रस्तुत करैत अछि: **आयन्त**, **वरन्त**, **मध्यम**, **अधम**, **अधमाधम**। ई पाँच–स्तरीय सूची सामाजिक मूल्याङ्कनक इतिहासक दस्तावेज अछि; आधुनिक मानव–मूल्य वा जैविक गुणवत्ता संग एकर कोनो सम्बन्ध नहि। स्रोत–रूप निम्न अछि:

आयन्त: खड़ौरै, खौआल, बुधवाल, मदार, दरिहरा, घुसौत, तिसौत, नरौन, करमहा, बभनियाँ, हरिअम, सरिसब, सोदरपुरिया।

वरन्त: गंगोलीवर, पबौलीवर, कुजौलीवर, अलेवर, बहिदवार, सकराढ़ीवर, पालीवर।

मध्यम: दीघवे, बेलौंचे, एकहरै, पानिछोभे, बलियासे, जजिवालै, टकवालै, पण्डुआ, सकुन।

अधम: फनन्दहवर, दसौतीवर, अलरिये, कोदरिये, कोठुए, महुए, बसावनै।

अधमाधम: सुरगनै, लगुड़दहै, दहीभटावर, सतलखै, उचितिवर, विसाइवर, जलैवर।

नामक वर्तनी रिपोर्टसँ रिपोर्ट बदलैत अछि; ऊपरक सूची स्रोतक ध्वन्यात्मक रूपक मैथिलीकरण अछि। एकहि मूल अलग कालमे अलग सामाजिक श्रेणीमे गेल कि नहि, एहि प्रश्न लेल शाखा–पञ्जीक कालक्रम चाही।

श्रोत्रिय 'चौगोला'

एक रिपोर्ट श्रोत्रिय समूहक भीतर आठ 'चौगोला' अथवा अनुष्ठानिक स्तरक उल्लेख करैत अछि आ कुल बत्तीस रजिस्टरक व्यवस्था कहैत अछि। उपलब्ध उदाहरण–तालिकामे पहिल तीन स्तरक परिवार देखाओल गेल अछि: पहिल स्तरमे दरिहरा–रतौलीक भरथियार झा, पबौली–बधियामक भदै झा, सोदरपुर–रैयामक बभन झा, सरिसब–जोंकीक पीताम्बर झा; दोसर स्तरमे करमहा–अनलक रघुनी झा, बुधवाल–डुमराक नारायण झा, सकराढ़ी–परहटक देबै झा, खण्डबला–भौरक गंगाधर झा; तेसर स्तरमे सोदरपुर–सरिसबक बाबू मिश्र, खण्डबला–भौरक बलभद्र ठाकुर, तिसौत–कुआक तिसौत झा, सोदरपुर–रैयामक रामदेव मिश्र। रिपोर्ट सभ आठ स्तरक पूरा सूची नहि दैत, तेँ जे उपलब्ध अछि ओतबे राखल गेल अछि।

पछबरिपारक पन्द्रह श्रेणी

स्रोत महाराज रामेश्वर सिंहक १९२९ ई. केर व्यवस्था संग 'पछबरिपार' क पन्द्रह सामाजिक ग्रेड, कुल १५३ रजिस्टर आ 'लौकिक' प्रतिष्ठा–नामक चर्चा करैत अछि। उदाहरणक रूपमे—प्रथम श्रेणी नरपति झा (सकराढ़ी–हरदी), माधव मिश्र (सोदरपुर–रोहड़), गोनू

मिश्र (सोदरपुर–कटका), भैयन झा (बुधवाल–डुमरा); द्वितीय पदुम झा, श्रीकान्त झा, मधुपति मिश्र; तृतीय गहनानन्द झा; चतुर्थ छितरी झा; पाँचम हरिनारायण ठाकुर आ सुखै झा; छठम तरैवल्ला चौधरी; सातम बदनी झा; आठम बोधकृष्ण झा; नवम रतिकर झा; दशम दामोदर झा; एगारहम मणिकान्त झा; बारहम नकट झा; तेरहम घनश्याम झा; चौदहम घनसीराम चौधरी; पन्द्रहम चतुर ठाकुर।

प्रश्नोत्तर–स्रोत एहि वर्गीकरणकेँ तीखा आलोचनात्मक दृष्टिसँ पढ़ैत अछि। ओकर अनुसार सामाजिक प्रतिष्ठा पञ्जीक मूल विवाह–सुरक्षा उद्देश्यपर हावी भेल, किछु राजकीय आदेश आ धन–लेनदेनद्वारा श्रेणी–बढ़ोत्तरीक आरोप उठल, आ 'लौकिक' सामाजिक मुद्रा बनि गेल। एहन आरोपक स्वतंत्र अभिलेखी सत्यापन जरूरी अछि; तथापि स्रोतक भीतर ई आत्मालोचना बारम्बार अछि।

९. दूषण-पञ्जी: नियमभङ्गकेँ मिटेबाक नहि, दर्ज करबाक परम्परा

दूषण–पञ्जी पञ्जी–व्यवस्थाक सभसँ जटिल आ असुविधाजनक दस्तावेज अछि। 'दूषण' या 'क्षरण' शब्द सामाजिक मान्यताक दृष्टिसँ वंशमे आयल विचलनक संकेत अछि। आश्चर्य ई जे व्यवस्था जे नियम–विरुद्ध विवाह रोकबाक लेल बनल, ओ नियमभङ्गकेँ नष्ट नहि करैत अछि; दर्ज करैत अछि। स्रोतसभ एहि विरोधाभासकेँ दूषण–पञ्जीक बौद्धिक महत्त्व मानैत अछि।

९७ तालिकाक विश्लेषणमे अनेक प्रकारक प्रविष्टि वर्गीकृत अछि: चर्मकार/चर्मकारिणी सम्बन्ध; यवन वा मुस्लिम स्त्रीक सम्बन्ध; देवदासी सन्तति; विधवा–सन्तति; गुरु–पत्नी सम्बन्ध; 'पथ–पतिता' कहि दर्ज स्त्री; अन्तरजातीय विवाह; अज्ञात कुल/मातृवंश; पश्चिम देशसँ आयल अज्ञात परिवार; 'परमब्राह्मण'/महापात्र परिवारक विवादास्पद सम्बन्ध; सामाजिक प्रतिष्ठाक भीतर–बाहर गेल शाखा; आ कतेको एहन प्रविष्टि जतए साथी समुदाय स्पष्ट नामसँ नहि लिखल, केवल 'अन्तर्जातीय' वा 'अज्ञात' कहल गेल।

किछु रिपोर्ट छह पीढ़ीक पश्चात पुनः पूर्ण सामाजिक एकीकरणक उदाहरण दैत अछि। देवधर/चमारु/गङ्गाधरक उदाहरणमे एकटा गैर–स्वीकृत विवाहक सन्तति आगामी पीढ़ीसभमे सरिसब, सकराढ़ी, पानिछोभ, दरिहरा, पाली, नरवाल आदि मान्य मूलसँ विवाह करैत पुनः समाजक भीतर स्थिर होइत देखाओल गेल। एहि कारणेँ दूषण–पञ्जीकेँ केवल 'काला पोथी' कहब अपूर्ण अछि; ई सामाजिक बहिष्कार आ पुनःसमावेशन दुनूक इतिहास अछि।

मुस्लिम/यवन, देवदासी आ विधवा प्रविष्टि

दौलतजहाँ नामक यवन स्त्री दूटा तालिकामे मातृपूर्वजक रूपमे अबैत छथि; हुनका डगराक माता कहि नदम/गंगोली–खौआल नेटवर्कसँ जोड़ल गेल अछि। 'चाँपो यवन' सन दोसर प्रविष्टि सेहो अछि। एहि उदाहरणसभसँ धर्म–समुदायक सीमा व्यवहारमे जतेक कठोर मानल जाइत अछि, जीवन–स्तरपर ओतेक निरपेक्ष नहि छल—कम–से–कम एहन सम्बन्ध भेल आ अभिलेखमे बचल।

देवदासी प्रविष्टिसभ तालिका १६–२१क समूहक रूपमे वर्णित अछि। हरिहरक माता, 'विद्यापतिक माता', लाखूक माता आदि देवदासी कहि दर्ज छथि। एतए 'विद्यापति' नाम प्रसिद्ध कवि सँ आवश्यकत: एक्के व्यक्ति अछि, से स्वतः मानब उचित नहि; पञ्जीमे नाम–पुनरावृत्ति बहुत अछि। विधवाक सन्तति तालिका २८ आ ९४मे भेटैत अछि। 'वार्तिनी विधवा' सन पद स्त्रीक सामाजिक/आर्थिक सक्रियताक संकेत दे सकैत अछि, मुदा अर्थ–निर्णय सावधानीसँ करबाक चाही।

'गुरु–पत्नी' विवाह, 'पथ–पतिता' स्त्री, अज्ञात मातृकुल आ अन्तरजातीय सम्बन्धक प्रविष्टि देखबैत अछि जे पञ्जीकार असुविधाजनक तथ्यकेँ पूर्णतया मेटा नहि देलनि। निश्चित रूपेँ भाषा स्वयं जाति–आधारित मूल्य–निर्णयसँ भरल अछि; आजुक दृष्टिसँ 'दूषण' श्रेणी आलोचनात्मक पुनर्पाठ माँगैत अछि। मुदा इतिहासकार लेल ठीक ई मूल्याङ्कनात्मक भाषा समाजक शक्ति–संरचना देखबैत अछि।

९क. दूषण-पञ्जीमे स्वास्थ्य-दोष सम्बन्धी दावी

एक विस्तृत रिपोर्ट दूषण–पञ्जीमे सामाजिक विवाह–विचलनक संग किछु स्वास्थ्य/शारीरिक अवस्थाक वंशीय नोट सेहो रहबाक दावा करैत अछि। ओ**अपस्मारी** (मिर्गी/आक्षेपक इतिहास), **उन्मादी** (दीर्घ मानसिक विक्षोभ कहि वर्णित), आ**कुञ्जी** (अन्धत्व, बहिरापन, जन्मजात लंगड़ापन आदि शारीरिक विकृति कहि समेटल) सन श्रेणी दैत अछि। मूल दूषण–पञ्जीक पृष्ठ–विशिष्ट आलोचनात्मक संस्करण बिना एहि श्रेणीसभक सीमा निश्चित नहि कएल जा सकैत अछि।

एहन अभिलेख भेटब ऐतिहासिक रूपेँ महत्त्वपूर्ण होएत, कारण परिवार स्वास्थ्य–लक्षणक पीढ़ीगत पुनरावृत्ति ध्यानमे रखैत छल। मुदा एकरा 'प्राचीन चिकित्सा–जीनोमिक्स' कहि आधुनिक आनुवंशिक रोग–विज्ञानक समतुल्य मानब अनुचित अछि। मिर्गी, मानसिक रोग, अन्धत्व वा चलन–विकलता अनेक आनुवंशिक आ गैर–आनुवंशिक कारणसँ हो सकैत अछि; पञ्जीमे नैदानिक परीक्षण नहि छल। स्रोतक स्वास्थ्य–नोटकेँ ऐतिहासिक सामाजिक–चिकित्सकीय अवलोकन रूपमे पढ़ल जाए।

दूषण आ पुनर्समावेशनक विस्तृत उदाहरण

एक स्रोत अनेक शाखाक ‘अमान्य/अज्ञात’ विवाह आ बादक सामाजिक स्थिति गनबैत अछि: पालीक देवशर्मा शाखामे अज्ञात जाति–स्त्री; बुधवालक गोविन्द शाखामे अज्ञात स्त्री; सरिसबक श्रीनाथ शाखामे अज्ञात स्त्री; दरिहराक भीम शाखामे एहन विवाहक बाद मध्यम स्थिति; सोदरपुरक श्रीहरि शाखामे शाखा–विभाजन; हरिअमक वासुदेव शाखामे अनेक पीढ़ी बाद एकीकरण; पानिछोभक मधुकर शाखामे मातृवंशक माध्यमसँ निगरानी; सरिसबक भवनाथ शाखामे छठम पीढ़ी बाद ‘शुद्धि’; गंगोलीक डगर शाखामे यवनी दौलतजहाँ; खण्डबला–भौरक सुरपति शाखामे आसामक कोच राजवंशी राजाक पुत्री सोहागोसँ सम्बन्ध; सोदरपुरक गोविन्द शाखामे मेधा चर्मकारिणी; आ हदिनी शाखामे हाड़ी समुदायसँ सम्बन्ध। एहि सूचीक सामाजिक शब्दावली स्रोतकालीन मूल्य–निर्णय अछि; समेकित आलेख ओकरा आधुनिक सत्य–मूल्यांकन नहि, ऐतिहासिक वर्गीकरणक प्रमाण रूपमे राखैत अछि।

१०. गङ्गेश उपाध्याय प्रसंग: वंश, दर्शन आ विवाद

दूषण–पञ्जीसम्बन्धी रिपोर्टसभक सभसँ तीखा दावा नव्य–न्यायक संस्थापक गङ्गेश उपाध्यायसँ जुड़ल अछि। तालिका४९–५१, प्रविष्टि १८८/२, १८९/१, १८९/२ तथा अन्य मूल–पञ्जी सन्दर्भक आधार पर रिपोर्ट कहैत अछि जे गङ्गेशक पत्नी वल्लभा चर्मकारिणी मूलक छलथि; किछु पाठ गङ्गेशक जन्म पिता निधनक पाँच वर्ष बाद भेल कहि पुरान हाशिया–टिप्पणी उद्धृत करैत अछि। एहि संग गङ्गेशक पुत्र वर्धमान, सुपन/हरिशर्मा, आगेक गोराँ, भवेश्वर आदि वंश–सूत्रक चर्चा अछि।

रिपोर्टसभ एहि अभिलेखक आधार पर बीसम शताब्दीक किछु विद्वानपर आरोप लगबैत अछि जे गङ्गेशक परिवारक सामाजिक पृष्ठभूमि वा दूषण–पञ्जी सम्बन्धी सामग्री दबाओल गेल। दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यक नव्य–न्याय इतिहास, रामनाथ झासँ प्राप्त सूचना, उदयनाथ झा ‘अशोक’ आदि नाम एहि विवादमे अबैत अछि। समेकित आलेखक जिम्मेदारी ई आरोपकेँ स्रोत–रिपोर्टक आरोपक रूपमे राखब अछि; बिना स्वतंत्र अभिलेख–समीक्षा ककरो ऊपर ‘जानि–बुझि दमन’ क अंतिम ऐतिहासिक फैसला देब उचित नहि।

गङ्गेशक ‘तत्त्वचिन्तामणि’ नव्य–न्याय परम्पराक आधारग्रन्थ अछि। रिपोर्ट हुनकर ‘जगद्गुरु’ आ ‘परमगुरु’ उपाधि, वर्धमानक विद्वत्ता, मिथिलासँ नवद्वीप दिस नव्य–न्याय प्रसार, वासुदेवक अध्ययन, पक्षधर मिश्र, रघुनाथ शिरोमणि आदि प्रसंग जोड़ैत अछि। एहि कथा सँ दूटा इतिहास एकठाम जुड़ैत अछि—दार्शनिक ग्रन्थक बौद्धिक इतिहास आ परिवारक सामाजिक इतिहास।

एहि सामग्री पर आधारित ‘शब्दशास्त्रम्’ नामक मैथिली कथा तथा ओकर अंग्रेजी अनुवादक प्रकाशनक उल्लेख स्रोतमे अछि। ई उदाहरण देखबैत अछि जे वंशावली–अभिलेख साहित्यक स्रोत सेहो बनि सकैत अछि। पञ्जी जखन एकटा अप्रत्याशित सामाजिक तथ्य बचबैत अछि, आधुनिक लेखक ओकरा कथा, आलोचना वा वैकल्पिक इतिहासक रूप दे सकैत अछि।

१०क. गङ्गेश प्रसंगमे स्रोत-पाठक सूक्ष्म भेद

दूषण–पञ्जीसम्बन्धी फाइलसभक प्रतिलिपि/रिपोर्टसभ परस्पर नितान्त एकरूप नहि। एक मुख्य प्रतिवेदन तालिका ४९/प्रविष्टि १८८/२मे गङ्गेशक वल्लभाकेँ चर्मकारिणी रूपमे दर्ज करैत अछि; तालिका ५०/१८९/१मे मेधा चर्मकारिणी नामक एक दोसर स्त्रीक दीर्घ वंश-पथ अलग दर्ज अछि। एक बादक रिपोर्ट मेधाकेँ गङ्गेशक माता कहि दैत अछि, मुदा दूषण-पञ्जीक विशिष्ट पाठ-विश्लेषण एहि पाठकेँ निर्णायक नहि मानैत अछि। एहि ग्रन्थक समेकित निष्कर्ष दूषण-पञ्जीक १८८/२ पाठक आधारपर स्पष्ट अछि: गङ्गेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ हुनकर विवाह वल्लभा चर्मकारिणीसँ भेल। मेधा-विषयक बादक परस्पर-विरोधी व्याख्याकेँ स्रोत-मत रूपमे मात्र राखल गेल अछि, अंतिम जीवनी तथ्य रूपमे नहि।

देवानन्द पञ्जीक प्रविष्टि ३३९/३मे सुपन/हरिशर्मा, हुनकर पुत्र हरादित्य, बेटी गोरा आ जजिवाल/सन्दगही सम्बन्धक बहु–पीढ़ी शृंखला; प्रविष्टि ३०/५मे वर्धमानक पुत्रीक खण्डबला सम्बन्ध—एहन उदाहरण गङ्गेशक वंश ‘तत्काल समाप्त’ भेल दाबीसँ असंगत स्रोत–साक्ष्य रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। एहि आधार पर बीसम शताब्दीक विद्वानपर ‘सूचना दबेबाक’ आरोप रिपोर्टमे अछि; आरोपक ऐतिहासिक निर्णय लेल विद्वानक मूल पत्राचार, संस्करण, उपलब्ध अभिलेख आ प्रकाशन–कालक जाँच आवश्यक अछि।

१०ख. आर्यभट, चैतन्य आ प्रसिद्ध व्यक्ति सम्बन्धी स्रोत-दाबी

एकटा विस्तृत रिपोर्ट मण्डर–मंगरौनी शाखाक बीजी पुरुष त्रिनयन भट्टसँ आर्यभटक वंश जोड़बाक दावा करैत अछि आ पन्द्रह पीढ़ीक एक शृंखला दैत अछि—त्रिनयन भट्ट, उदयभट्ट, विजयभट्ट, सुलोचन, भट्ट, धर्मजाति मिश्र, धराजाति मिश्र, ब्रह्मराज मिश्र, त्रिपुराजाति मिश्र, विधुजाति मिश्र, अजय सिंह, विजय सिंह, आदिवराह, महावराह, दुर्योधन सिंह, महामहोपाध्याय नरसिंह। रिपोर्ट एहि शृंखलाकेँ

आर्यभटक पारिवारिक पृष्ठभूमिसँ जोड़ैत अछि, मुदा नाम, कालक्रम आ समकालीन बाह्य साक्ष्यक स्वतंत्र जाँच बिना एहन पहचान स्वीकार करब सुरक्षित नहि। एहि आलेखमे ई 'स्रोत–रिपोर्टक वंशीय दाबी' रूपमे मात्र सुरक्षित अछि।

ओही रिपोर्ट वत्स गोत्र, करमहा–तरौनी शाखाक रामपति उपाध्याय—जिनका विष्णुपुरी/परमानन्दपुरी सेहो कहैत अछि—मार्फत चैतन्य महाप्रभुक आध्यात्मिक/विद्वत् सम्बन्ध जोड़बाक दावा करैत अछि। ई 'जैविक वंश' आ 'गुरु–शिष्य परम्परा' क भेद स्पष्ट राखब जरूरी अछि। पञ्जी जँ रामपति उपाध्यायक परिवार दैत अछि, ताहिसँ चैतन्यक रक्तवंश स्वतः सिद्ध नहि होइत; अधिकतम व्यापक भक्ति–आन्दोलन आ मिथिलाक विद्वानक सम्पर्कक शोध–सुराग भेटैत अछि।

एहि प्रकार प्रसिद्ध नामक प्रविष्टि—आर्यभट, विद्यापति, ज्योतिरीश्वर, गङ्गेश, गंगानाथ—लेल नियम एक्के रहत: **नाम–साम्य आरम्भिक संकेत अछि, पहचानक प्रमाण नहि।**

११. स्त्री, मातृवंश आ पञ्जीक मौन

पञ्जी मूलतः पितृवंशीय ढाँचा अछि। नामक मुख्य श्रृंखला पिता–पुत्रक क्रममे आगाँ बढ़ैत अछि; गोत्र आ मूल सेहो पितृपक्षीय पहचानक आधार पर चलैत अछि। एहि कारणेँ पहिल नजरिमे स्त्री लगभग अनुपस्थित बुझाइत छथि। मुदा विवाह–जाँचक वास्तविक गणित स्त्री–विहीन भऽ सकैत नहि। 'दौ', 'द्दौ', मातृग्राम, मातामह–पक्ष, पाँच मातृ–सपिण्ड, सोलह छठ्ठी—ईसभ मातृसम्बन्धकेँ अभिलेखक भीतर अनिवार्य बना दैत अछि। अर्थात स्त्रीक नाम नहि लिखल रहि सकैत अछि, मुदा हुनकर वंशीय स्थान बिना विवाह–निर्णय सम्भव नहि।

एहि विरोधाभासकेँ 'संरचनात्मक उपस्थिति आ नामगत अनुपस्थिति' कहि सकैत छी। कन्याक पिताक नाम, मातृग्राम, नानाक मूल, दादी–नानीक वंश–सूत्र आदि विवाह–जाँचमे जरूरी छल; तैँ स्त्री सम्बन्धक सूचना नेटवर्कक केन्द्रीय कड़ी अछि। मुख्य पाठक पुरुष–केंद्रित शैली ओकरा दृश्य रूपेँ दबा दैत अछि। दूषण–पञ्जी, अस्वजन्य–पत्र, विवाह–कोलोफोन, दोसर पत्नी 'अपरा' क शाखा, आ आधुनिक पेशागत प्रविष्टि एहि मौनमे दरार खोलैत अछि।

किछु स्रोत रसाढ़–अररिया सम्बन्धी विशेष अस्वजन्य–पत्रमे स्त्रीक नाम व्यवस्थित रूपेँ लिखल होयबाक दावा करैत अछि। आधुनिक नगराम–पञ्जीमे 'पत्नी अनीता', 'पहिल आई. ए. एस. बेटी' सन उल्लेख भेटैत अछि। दोसर दिस मुख्य वंश–पंक्तिमे बहुसंख्य स्त्री 'फलाँ गाँवक दौ' बनि रहि जाइत छथि। एहि दुनू प्रकारक प्रमाणक संयुक्त अर्थ ई नहि जे पञ्जी 'स्त्रीवादी' अभिलेख छल, आ नहि ई जे स्त्री पूर्णतः गायब छलथि। सही निष्कर्ष ई अछि जे पञ्जी विवाह–व्यवस्था कारण मातृवंशक डेटा रखैत छल, मुदा सामाजिक प्रतिष्ठा आ नामकरणक प्राथमिकता पुरुष पर केन्द्रित छल।

दूषण-पञ्जीमे स्त्रीक देह सामाजिक सीमा बनैत अछि

चर्मकारिणी, यवन, देवदासी, विधवा, गुरु–पत्नी, 'पथ–पतिता', अज्ञात कुलक स्त्री—दूषण–पञ्जीक बहुत श्रेणी स्त्रीक सामाजिक अवस्थाकेँ वंशीय 'दूषण' क वाहक बनबैत अछि। ई भाषिक संरचना स्वयं समयक जाति–पितृसत्तात्मक नैतिकताक दस्तावेज अछि। मुदा इतिहासकार लेल एतबे महत्त्वपूर्ण बात ई जे ओ स्त्री, जकरा मुख्य प्रशस्तिमूलक वंशावली छोड़ि सकैत छल, 'दूषण' क कारणेँ नाम वा सम्बन्धक रूपमे बचि गेलीह। अभिलेखक कलंककारी श्रेणी आधुनिक शोधमे उलटि कऽ हाशियाक सामाजिक इतिहासक स्रोत बनैत अछि।

विवाह, विधवापन आ बहुविवाह

सामाजिक श्रेणीकरण, उच्च कुलक वरक मांग आ 'बिकौआ' बहुविवाह सम्बन्धी रिपोर्टसभ स्त्रीक जीवनपर पञ्जी–व्यवस्थाक अप्रत्यक्ष प्रभाव देखबैत अछि। कतिपय पुरुषक चारि, पाँच, छह अथवा ओहूसँ अधिक विवाहक कोलोफोन अछि; किछु रिपोर्ट अत्यधिक उदाहरणमे बारह धरि विवाहक उल्लेख करैत अछि। एहिसँ केवल पुरुषक प्रतिष्ठा नहि, अनेक स्त्रीक विधवापन, बालविवाह, आर्थिक लेन–देन आ पारिवारिक असमानताक इतिहास जुड़ल अछि। सदर कमिटी सन सुधार–प्रयास एहि कारणेँ पञ्जी इतिहासक बाहरी घटना नहि, ओकर सामाजिक परिणामक प्रतिक्रिया छल।

पाठ-विधि जखन पञ्जी स्त्रीक नाम नहि दैत अछि, तखन 'डेटा नहि अछि' कहब पर्याप्त नहि। मातृग्राम, दौ/द्दौ, अपरा शाखा, विवाह–तिथि, दूषण–श्रेणी आ ससुराल–सूत्र मिलाकऽ स्त्रीक संरचनात्मक उपस्थिति पुनर्निर्मित करबाक पड़ैत अछि।

१२. प्राचीन पञ्जी, खण्ड १: पृष्ठ १–६५ — वंश-व्याकरणक आधार

प्राचीन पञ्जी खण्ड १क पहिल ६५ पृष्ठ पञ्जीक 'व्याकरण' बुझबाक लेल मूल पाठ अछि। आरम्भिक सूत्र 'अथ पत्र पञ्जी लिख्यते' अभिलेखक औपचारिकता स्पष्ट करैत अछि। एहि खण्डमे व्यक्ति–नाम, पिता, पुत्र, मूल, ग्राम, दौ, वैकल्पिक नाम, विद्वत्ता–उपाधि आ मातृक–चक्र छोट–छोट सूत्रमे सँकलित अछि। रिपोर्टक गणना अनुसार कम–से–कम १२२ नामित गाँव, १७ सक्रिय गोत्र, ५५ सँ बेसी मातृक–चक्र, लगभग ४७ महामहोपाध्याय तथा हजारो व्यक्ति एहि हिस्सामे अभिलेखित छथि। 'लगभग पाँच हजार व्यक्ति' क आँकड़ा स्रोत–रिपोर्टक अनुमान अछि; मूल गणनाक स्वतंत्र पुनःपरीक्षा उपयोगी रहत।

गंगौलीक हलायुधः ऐतिहासिक आधार-बिन्दु

पहिल खण्डक उल्लेखनीय वंश–श्रृंखलामे गंगौलीक हलायुध प्रमुख छथि। रिपोर्ट हुनका बंगालक बल्लाल सेनक कालक विद्वान हलायुधसँ जोड़बाक सम्भावना रखैत अछि आ कालक्रम लगभग बारहम शताब्दीक उत्तरार्ध मानैत अछि। हुनकर सन्तान–श्रृंखलामे वीर, नारायण, शूलपाणि आदि नाम अबैत अछि। भाई–क्रमक सूचक '०५/०४' सन संकेत ई देखबैत अछि जे पञ्जी केवल सीधा वंश नहि, सहोदरक आपसी स्थान सेहो दर्ज करैत छल। ऐतिहासिक व्यक्तिक समान नामक समस्या एतओ अछि; अतः पहचानकेँ गोत्र, मूल, ग्राम, पीढ़ी आ समकालीन सन्दर्भसँ जाँचना जरूरी अछि।

महामहोपाध्याय आ ज्ञानक भूगोल

खौआल–सरिसब–खण्डबला क्षेत्रमे महामहोपाध्याय उपाधि धारक विद्वानक घनत्व स्रोत–रिपोर्ट विशेष रूपेँ रेखांकित करैत अछि। व्याकरण, न्याय, ज्योतिष, वैदिक अध्ययन, धर्मशास्त्र आदिक उपाधि परिवारक वंशीय सूचनाक संग लिखल अछि। नरसिंह नामक विद्वानक श्रृंखला अठारह पीढ़ी धरि विद्वत्ता–परम्परा देखेबाक दाबी करैत अछि। ई पञ्जीकेँ बौद्धिक इतिहासक वैकल्पिक स्रोत बनबैत अछि—विश्वविद्यालय अथवा राजकीय सूचीसँ बाहर परिवारगत ज्ञान–परम्पराक लगातार सूत्र एतए सुरक्षित अछि।

राजकीय पद आ प्रशासन

'शान्तिविग्रहिक' देवदित्य सन पदनाम, राजकीय सम्मान, धर्माधिकार, भण्डार अथवा दरबार–सम्बन्धी उपाधि देखबैत अछि जे पञ्जी ब्राह्मणिक अनुष्ठानक सूची मात्र नहि। राज्य–प्रशासन आ विद्वान परिवारक पारस्परिक सम्बन्ध सेहो वंशक हिस्सा बनैत अछि। एहि प्रकारक पदनामसँ समयक राजनीतिक संरचना, राजकीय संरक्षण आ शिक्षित वर्गक भूमिका पुनर्निर्मित भऽ सकैत अछि।

असाधारण प्रविष्टि

'डोम टेकरी' क संग चतुर्वेदाध्यायी कामदेवक प्रविष्टि सामाजिक सीमा आ पेशागत/समुदायगत नामक जटिलता देखबैत अछि। 'अयाची' सन उपाधि याचना नहि करबाक तपस्वी आदर्शक संकेत अछि। 'तेगच्छिया' वा क्षीण शाखा सम्बन्धी टिप्पणी एहन महत्वपूर्ण उदाहरण अछि जतए पञ्जी स्वयं कहैत अछि जे शाखाक सूचना अपूर्ण भऽ गेल अथवा स्मृति टूटल। एहि कारणेँ पञ्जी सर्वज्ञ, त्रुटिहीन डेटाबेस नहि; ओकर भीतर 'ज्ञानक क्षय' सेहो दर्ज अछि।

मातृका-चक्र

श्रीधर, सोरे, गंगाधर, बैद्यनाथ आदिक नामसँ जुड़ल ५५ सँ बेसी मातृका–चक्रक उल्लेख विवाह–सम्बन्धक नेटवर्कक घनत्व देखबैत अछि। पितृवंशीय मुख्य श्रृंखलाक समानान्तर मातृ सम्बन्धक घूमैत वृत्त एक परिवारकेँ अनेक गाँव आ मूलसँ जोड़ैत अछि। पञ्जीक भूगोल वास्तवमे विवाहक भूगोल अछि।

१८५६ ई. केर कोलोफोन

एकटा महत्त्वपूर्ण कोलोफोन शक १७७८, श्रावण कृष्ण तृतीया—लगभग १८५६ ई.—क तिथि दैत अछि। पण्डुआक रामानन्द नामक लेखक/नकलनवीस, लक्ष्मीधरक पुत्र गणेशक प्रसंग आ प्रतिलिपिक नोट ई सिद्ध करैत अछि जे पुरान वंश–सामग्री उन्नीसम शताब्दीमे पुनर्लिखित/संरक्षित होइत रहल। अतः पाण्डुलिपिक लिखाइ–तिथि आ ओकर भीतर वर्णित वंशक आरम्भ–तिथि अलग–अलग वस्तु अछि।

१२क. षडचन्त्री विद्वान, वशैठी अभिलेख आ राजपूत कुलः अतिरिक्त स्रोत-सुराग

एक विस्तृत रिपोर्ट 'षड्यन्त्री' शब्दसँ छओ शास्त्र/दर्शनमे प्रवीण विद्वानक परम्परा उल्लेख करैत अछि आ तेरह नामक सूची दैत अछि: महामहोपाध्याय गोधी शर्मा, माधव शर्मा, आद्य माधव शर्मा, शंकर शर्मा, यज्ञपति शर्मा, परशुराम शर्मा, वामदेव शर्मा, पीताम्बर

शर्मा विद्यानिधि, गोकुलनाथ शर्मा फनन्दह, जगन्नाथ शर्मा फनन्दह, वंशधर शर्मा राजनपुरा–दरिहरा, रघुनाथ शर्मा फनन्दह, तथा उपाध्याय दत्त/विष्णुदत्त शर्मा परमानन्दपुरी। उपलब्ध स्रोत ई सूची दैत अछि; प्रत्येक नामक विशिष्ट शास्त्रीय कृति आ काल स्वतंत्र ग्रन्थ–साक्ष्यसँ मिलान योग्य अछि।

ओही रिपोर्ट वशैठी/अररिया क्षेत्रक एक मन्दिर–लेखमे सुरगन–लोआम राजपरिवारक रानी इन्द्रवतीक सात पीढ़ीक वंश–वर्णन पञ्जीसँ मेल खायबाक दावा करैत अछि। जँ मूल शिलालेख/प्रतिलिपि उपलब्ध हो, ई पञ्जी–वंशक स्वतंत्र बाह्य सत्यापनक उत्तम उदाहरण हो सकैत अछि। समेकित आलेख एहन दाबीकेँ शोध–कार्यसूची रूपमे राखैत अछि, बिना शिलालेख प्रत्यक्ष देखनाइ अंतिम पुष्टिक रूपमे नहि।

‘वर्णरत्नाकर’ मे बासठि राजपूत कुलक उल्लेख सम्बन्धी रिपोर्टक कथन सेहो व्यापक मिथिला समाजक संकेत अछि। पञ्जी–प्रबन्धक उपलब्ध ब्राह्मण–केन्द्रित सामग्री बाहर क्षत्रिय, कर्ण कायस्थ, राजपूत आ अन्य समूहक अभिलेखीय परम्परा संग तुलनात्मक शोध जरूरी अछि।

१३. खण्ड १क विस्तार: पृष्ठ ६६-३४७ — करमहा केन्द्र, नेपाल गलियारा आ वर्तमानकालीन विवाह

पृष्ठ ६६–३४७ पर पञ्जी अचानक स्थिर ‘प्राचीन’ दस्तावेज नहि रहैत; ओ जीवित रजिस्टर बनि उठैत अछि। करमहा नाम स्रोत–गणनामे लगभग २९२ बेर आएल अछि, जे पहिल भागक मण्डर–केन्द्रित परिदृश्यक तुलना मे भूगोलक केन्द्र बदलबाक संकेत अछि। रतौली–दरिहरा–खौआल, तरौनी, डुमरा, गंगोरा, कन्हौली, महिषी, लोहना, जगौर, झंझारपुर आ नेपाल–समीपक अनेक ठाम नया नेटवर्क बनबैत अछि।

रतौली-दरिहरा आ करमहा त्रिकोण

रतौली–दरिहरा उपसमूह आ करमहा–खौआल सम्बन्ध बौद्धिक तथा वैवाहिक केन्द्रक पूर्वोत्तर विस्तार देखबैत अछि। गाँव–सूची मात्र नक्शा नहि; जतेक बेर एक गाँव मातृग्राम, मूलग्राम, वर्तमान निवास अथवा विवाह–सूत्र बनि अबैत अछि, ओहि अनुपातमे ओकर सामाजिक ‘केन्द्रीयता’ बढ़ैत अछि। पञ्जी एहि प्रकार मध्यकालीन मिथिलाक सूक्ष्म सामाजिक नक्शा बनि जाइत अछि।

‘अवलम्ब-सरस्वती-दाङ्कित’ आ नव विद्वत् उपाधि

बटेश पुरुषोत्तम, हरिश्वरक पुत्र, संग ‘अवलम्ब–सरस्वती–दाङ्कित महामहोपाध्याय’ सन दुर्लभ उपाधि स्रोत–रिपोर्ट चिन्हित करैत अछि। ‘सर्वज्ञ गरीब’ सन विरोधाभासी उपनाम, वैदिक उपशाखा, पाँ/पञ्च सन विद्वान–परिवारक सूचक, ठाकुर उपसर्ग—ई सभ नाम–संस्कृतिक विविध स्तर देखबैत अछि। उपाधि पञ्जीमे केवल अलंकरण नहि; परिवारक ज्ञान–पेशा आ प्रतिष्ठाक ऐतिहासिक टैग बनि जाइत अछि।

महाराज माधव सिंहक एकीकरण

महाराज माधव सिंहक विस्तृत उपाधि सहित प्रविष्टि राजपरिवारकेँ सामान्य दौ–सूत्र आ विवाह नेटवर्कक भीतर रखैत अछि। राजाक वंश पञ्जीक नियमसँ बाहर विशेष ‘राजकीय परिशिष्ट’ नहि, बल्कि अन्य परिवार जकाँ सम्बन्ध–रेखामे समाहित अछि। एहि सँ राजकीय वैधता आ ब्राह्मणिक वंश–अभिलेखक परस्पर निर्भरता देखाइत अछि। माधव सिंहक पुत्रसभक अलग प्रविष्टि एहि एकीकरणकेँ आगाँ बढ़बैत अछि।

मुगलकालीन प्रशासनक चिन्ह

‘चातुर्मासिक मनसबदार हजारी’ रामानन्द चौधरी मणिकानन्दनक पद मुगल प्रशासनिक शब्दावलीक स्थानीय वंशावलीमे प्रवेशक उदाहरण अछि। बादक ‘राय’, ‘राजा’, ‘महाराजा’ उपाधिसभ संग पढ़ल जाए तँ पञ्जी राजसत्ताक परिवर्तनक नामिक अभिलेख बनैत अछि।

भौआलवासी: नेपाल-दिस प्रवासन

‘भौआलवासी’ प्रविष्टि काठमाण्डू उपत्यका अथवा नेपालक भौआलसँ सम्बन्धित प्रवासी शाखाक संकेत मानल गेल अछि। सिमरावाड़, मलिंगिया–कुजौली आ सीमा–ग्रामक नेटवर्क मिथिला–नेपालक ऐतिहासिक आवागमनकेँ पञ्जी–स्तरपर पकड़ैत अछि। आधुनिक राष्ट्रीय सीमा बनबाक बहुत पहिने विवाह, विद्या आ सेवा कारण परिवारक आवागमन सामान्य छल।

२००३–२००४ केर विवाह: समयक असाधारण संकुचन

एहि खण्डक सभसँ उल्लेखनीय विशेषता तिथियुक्त आधुनिक विवाह–कोलोफोन अछि—१ दिसम्बर २००३, ९ दिसम्बर २००३, १५ दिसम्बर २००३, २० जनवरी २००४, २१ दिसम्बर २००४ आदि। चौबीस सँ बेसी एहन प्रविष्टि स्रोत–रिपोर्ट गनैत अछि। प्राचीन वंश–श्रृंखलाक ठीक भीतर ई आधुनिक तिथि देखबैत अछि जे पञ्जी 'मृत' इतिहास नहि, अद्यतन होइत विधिक–सामाजिक साधन छल। एकहि पृष्ठपर मध्यकालीन विद्वान, अठारहम शताब्दीक राजा आ एक्कैसम शताब्दीक विवाह मिलि जाइत अछि—रिपोर्ट एकरा 'कालिक संकुचन' कहैत अछि।

'कवि विद्यापति' नामक सावधानी

एकटा बादक प्रविष्टिमे 'कवि विद्यापति' स्पष्ट लिखल अछि। मुदा पञ्जीमे नाम पुनरावृत्ति बहुत; केवल 'विद्यापति' नाम देखिकऽ प्रसिद्ध मैथिल कवि विद्यापति ठाकुरक समानता मानि लेब प्रमाण नहि। सही पहचान लेल मूल, ग्राम, पिता, पीढ़ी, तिथि आ सम्बद्ध शाखाक मेल आवश्यक अछि। एहि उदाहरणक महत्त्व नाम–पहचानक पद्धति सिखेबामे अछि।

१४. खण्ड २: पृष्ठ ३४८–६९० — पञ्जी आधुनिक भारतक संग

खण्ड २क ३४८–६९० पृष्ठ पर स्रोत–गणना अनुसार सोदरपुर लगभग ८५३, मण्डर ६२१ आ करमहा ५८० उल्लेखक संग केन्द्रबिन्दु बदलैत अछि। गाँवक आवृत्ति केवल जनसंख्या नहि, विवाह–संबन्ध, प्रतिष्ठित परिवार आ शाखा–सन्दर्भक मिश्रित सूचक अछि। एहि खण्डमे पञ्जी औपनिवेशिक आ स्वतन्त्र भारतक प्रशासन, विश्वविद्यालय, विदेश–विवाह, आधुनिक डिग्री आ पेशा सहज रूपेँ ग्रहण करैत अछि।

माधव सिंहसँ कामेश्वर सिंह धरि

दरभंगा राजक वंशावली माधव सिंहसँ आगाँ कामेश्वर सिंह धरि विस्तृत राजकीय श्रृंखला बनबैत अछि। कामेश्वर सिंहक प्रविष्टिमेब्रिटिश साम्राज्यक 'के. सी. आई. ई.' सम्मान तथा 'लिट्.' सन शैक्षिक सूचकक प्रवेश स्रोत–रिपोर्ट चिन्हित करैत अछि। पुरान 'महाराजाधिराज' आ आधुनिक औपनिवेशिक सम्मान एकहि व्यक्ति–टैगमे मिलैत अछि। ई नामिक स्तर सत्ता–परिवर्तनक संक्षिप्त इतिहास अछि।

स्वीडेनक अन्तरधार्मिक विवाह आ अन्तरजातीय विवाह

स्वीडेनमे भेल 'अन्तर्धार्मिक विवाह' तथा अलग 'अन्तरजातीय विवाह' क प्रविष्टि पञ्जी–प्रणालीक आधुनिक अनुकूलनक खास उदाहरण अछि। महत्वपूर्ण बात ई जे एहन विवाहक बाद वंश–श्रृंखला बन्द नहि होइत; टिप्पणी कोष्ठक/नोटक रूपमे जुड़ैत अछि आ सन्तति आगाँ दर्ज रहैत अछि। ई दूषण–पञ्जीक पुरान तर्कक आधुनिक प्रतिध्वनि जकाँ अछि—नियमभङ्ग वा नवा सामाजिक घटना अभिलेखक अन्त नहि, नव डेटा बनैत अछि।

अभिनव-सरस्वती आ आधुनिक विश्वविद्यालय

'अभिनव–सरस्वती' सन विद्वत् उपाधि परम्परा जीवित रहैत अछि, मुदा संगहि कलकत्ता विश्वविद्यालयक मैथिली विभागक प्राध्यापक/व्याकरणाचार्य, आधुनिक शिक्षित पेशेवर, सरकारी अधिकारी, अधिवक्ता आदि पञ्जीमे प्रवेश करैत छथि। महिषी एकटा विद्वत् उपकेन्द्रक रूपमे उभरैत अछि; रिपोर्ट ओकर दीर्घदार्शनिक प्रतिष्ठाकेँ मण्डन मिश्रक स्मृति–संग जोड़ि देखैत अछि, यद्यपि विशिष्ट वंश–समानताक स्वतंत्र सत्यापन आवश्यक अछि।

राय परिवार: मुगलसँ ब्रिटिश प्रशासन धरि

'राय' उपाधि एहि खण्डमे लगभग ५३ बेर कहि गनल गेल अछि। मुगलकालीन राजस्व/प्रशासनिक सम्मानसँ औपनिवेशिक काल धरि एकहि उपाधि परिवारक सामाजिक पहचान बनि रहैत अछि। पञ्जी नामक भीतर राजनीतिक इतिहासक 'दीर्घकाल' देखबैत अछि—राज बदलैत अछि, मुदा स्थानीय प्रतिष्ठा–सूचक पुनर्परिभाषित भऽ कऽ बचैत अछि।

कवि जीवकर्ण आ 'मधुरकवि' माघव

कवि जीवकर्ण आ 'मधुरकवि माघव' सन स्पष्ट साहित्यिक उपाधि पञ्जीकेँ मैथिली साहित्येतिहासक सहायक स्रोत बनबैत अछि। एहि प्रविष्टिसभक आधार पर रचना–सूची स्वत: सिद्ध नहि होइत, मुदा 'कवि' क सामाजिक पहचान, ग्राम, परिवार, विवाह–संबन्ध आ सम्भावित कालक्रम खोजबाक आधार भेटैत अछि।

विवाह-कोलोफोनक विस्तार

खण्ड २मे लगभग ४१ तिथियुक्त विवाह–कोलोफोनक चर्चा अछि; तिथि उन्नीसम शताब्दीक उत्तरार्धसँ सितम्बर २००४ धरि पसरेल अछि। कतिपय पुरुषक चारि–सँ–छह विवाह दर्ज अछि। एकर सामाजिक अर्थ केवल 'डेटा समृद्ध' नहि—बहुविवाह, विधवापन, पुनर्विवाह, पारिवारिक रणनीति आ श्रेणीगत विवाह–बाजारक अध्ययनक सामग्री अछि।

शहरी चिह्न

'राजा रामलोचन (कटिहार)', 'कोलकाता (पाली)', 'सन्हवासी करमहा' सन संयुक्त निवास–सूचक मूलग्रामक स्थिर अर्थ बदलैत अछि। परिवार मूलसँ जुड़ल रहैत अछि, मुदा पेशा/राजनीति कारण शहरमे बसैत अछि। पञ्जी एतए 'मूल' आ 'निवास' केँ अलग परतमे रखबाक दिशा दैत अछि—आधुनिक डिजिटल डेटाबेस बनबैत काल ई भेद विशेष महत्त्वपूर्ण रहत।

१५. उपटीप आ 'जीनोम पञ्जी': वंशक लघु-प्रबन्ध

'पञ्जी–प्रबन्ध', 'उपटीप' वा 'उटिप' शीर्षक स्रोतसभ वंशावलीकेँ लगातार सूक्ष्म शाखामे खोलैत अछि। एकटा छोट प्रविष्टि पहिने देखल जाए तँ नामक ढेर बुझाइत अछि; सम्बन्ध–चिह्न मिलाओल जाए तँ ओ अनेक परिवारक विवाह, मातृग्राम, पद, प्रवास, शिक्षण आ राजकीय सेवाक जाल बनि जाइत अछि।

पितृवंशीय मेरुदण्ड, द्विपक्षीय विवाह-संजाल

मुख्य वंश पिता–पुत्रक श्रृंखला अछि, मुदा प्रत्येक 'दौ' अथवा 'द्वौ' पर मातृ परिवार प्रवेश करैत अछि। एहि कारण पञ्जी 'शुद्धपितृवंशावली' कहब अधूरा अछि। वंशक मेरुदण्ड पितृपक्षीय अछि, विवाह–जाल द्विपक्षीय। आधुनिक नेटवर्क–विश्लेषणमे व्यक्ति एकटा नोड, पिता–पुत्र रेखा एक प्रकारक सम्बन्ध, विवाह आ मातृग्राम दोसर प्रकारक सम्बन्ध बनि सकैत अछि।

खण्डबला सिंह परिवारः सामाजिक सेतु

किछु रिपोर्ट खण्डबला सिंह परिवारकेँ ब्राह्मणेतर—कहीं भूमिहारसदृश, कहीं कायस्थ–सदृश—सामाजिक सेतु मानि चर्चा करैत अछि। शब्दावली स्रोतसभमे एकरूप नहि; तेँ परिवारक निश्चित जातिगत पहचान बिना मूल पञ्जी पुनर्पाठ नहि देल जा सकैत अछि। तथापि एतबे स्पष्ट अछि जे पञ्जी–नेटवर्क केवल एक बंद अन्तर्विवाही वृत्तक व्यवहारिक चित्र नहि; विशिष्ट काल/परिवारमे बाहरी वैवाहिक सम्बन्धक अभिलेख सेहो अछि।

लोआम-सुगौना राय परिवार

लोआम–सुगौना खण्डमे चन्द्र नारायण राय, राजा देवनारायण आ आधुनिक प्रशासनिक सेवाधारी पीढ़ीक उल्लेख दीर्घ सामाजिक गतिशीलता देखबैत अछि। आधुनिक आई. ए. एस. अधिकारी नरेश चन्द्रक नाम स्रोतमे एहि श्रृंखलाक एकटा छोर बनैत अछि। एतए पञ्जी स्थानीय प्रतिष्ठित परिवारसँ आधुनिक अखिलभारतीय प्रशासन धरि पेशागत परिवर्तनक रेखा खींचैत अछि।

भौर-राजग्राम क्षत्रिय/ठाकुर परिवार

भौर–राजग्रामक ठाकुर/क्षत्रिय परिवार—कृष्ण सिंह आदि—पञ्जीक ब्राह्मण–केन्द्रित मुख्य परम्परासँ बाहर सम्बन्धित अभिलेखीय जगत खोलैत अछि। प्रारम्भिक संस्थानीकरणक कथामे गुणाकर झा ब्राह्मण, शंकरदत्त कर्ण कायस्थ, विजयदत्त क्षत्रिय/गंधवारिया समूहक पञ्जीकार कहि वर्णित छथि। आधुनिक उपलब्ध सामग्री असमान अछि; किछु गैर–ब्राह्मण पञ्जी परम्परा क्षीण अथवा नष्ट भेल कहि स्रोत चिन्ता व्यक्त करैत अछि।

नव्य-न्याय आ शिक्षित वंश

'नैयायिक' उपाधि, महामहोपाध्याय, 'सर गंगानाथ' सन पहचान, आचार्य रामनाथ एम. ए., पीएच. डी., प्राध्यापक तन्त्रनाथ आदि नाम पञ्जीकेँ ज्ञान–परम्पराक सामाजिक नक्शा बनबैत अछि। 'सर गंगानाथ' क पहचान गंगानाथ झासँ सम्भावित मानल गेल अछि, मुदा जँ मूल प्रविष्टि पर्याप्त विवरण नहि दैत अछि तँ एहि समानताकेँ सम्भावना रूपमे रखब उचित अछि।

९ जुलाई २००८ केर आन्तरिक तिथि

आषाढ़ मास, बुधदिन, ९ जुलाई २००८ केर कोलोफोन डिजिटल सम्पादनक समय–सूचक अछि। एहि सन तिथि स्रोतक स्तरभेद बुझबैत अछि: वंशीय सामग्री शताब्दी पुरान भऽ सकैत अछि, प्रतिलिपि उन्नीसम/बीसम शताब्दीक, आ डिजिटल सम्पादन एक्कैसम शताब्दीक। आलोचनात्मक संस्करणमे एहि तीनू कालक मेटाडेटा अलग राखब अनिवार्य अछि।

'जीनोम' शब्दक उपयोग

ग्रन्थ–परियोजना 'जीनोम मानचित्रण ४५० ई.–२००९ ई.' सन शीर्षकसँ पञ्जीक विस्तृत वंश–सूचनाकेँ आधुनिक रूपक दैत अछि। एहि रूपकक शक्ति अछि—दीर्घकालिक पारिवारिक नेटवर्क, विवाह–दूरी, जनसंख्या इतिहास, प्रवासक चित्र। सीमा सेहो स्पष्ट अछि—पञ्जीमे जैविक नमूना, डी. एन. ए. अनुक्रम, गुणसूत्रीय परीक्षण वा सांख्यिक आनुवंशिक सत्यापन नहि। अतः 'जीनोम' एहि परियोजनामे सांस्कृतिक–वंशावली मानचित्रणक रूपक/आकांक्षा बुझल जाए, आधुनिक आणविक जीनोमिक्सक प्रत्यक्ष दाबी नहि।

१६. नगराम, खण्ड ३: ग्राम-समूहक भीतर आधुनिक पेशाक प्रवेश

नगराम पञ्जी गाँव–आधारित खण्डमे व्यवस्थित अछि। प्रत्येक ब्लॉकक प्रारम्भ 'नगराम'/'ग्रामारम्भ' क संकेत, देवता–स्मरण, तत्पश्चात व्यक्ति, सुत/सुता, ग्राम, दौ/द्वौ आ पारस्परिक कोडसँ होइत अछि। एहि रूपक कारण पूरा पाठ एकटा सामाजिक मानचित्र जकाँ पढ़ल जा सकैत अछि।

गाँव-नामक अस्थिर वर्तनी

एकहि गाँव अलग पृष्ठमे ध्वन्यात्मक, संस्कृतनिष्ठ अथवा लेखक–विशिष्ट वर्तनीसँ अबैत अछि। स्रोत–रिपोर्ट लगभग साठि–सँ–अस्सी वैकल्पिक रूप सामान्यीकरणक आवश्यकता मानैत अछि। डिजिटल संस्करणमे एकटा 'मानक नाम' थोपि मूल पाठ मिटा देब उचित नहि; मूल वर्तनी, मानक आधुनिक रूप, जिला/प्रखण्ड आ भौगोलिक पहचान अलग–अलग क्षेत्रमे राखल जाए।

सन्दहपुर-सिशपुरः औपचारिक आ लोकनाम

प्रारम्भिक ब्लॉकसभमे एक व्यक्ति वा गाँवक औपचारिक नामक संग 'प्र.' अथवा परिचित लोकनाम देखाइत अछि—आँखी, नहरा सन नाम। ई द्विनाम पद्धति मौखिक समाजक पहचान–वास्तविकता बचबैत अछि। दस्तावेजी नाम आ घर/गामक नाम दुनू बिना व्यक्ति–पहचान अधूरी भऽ सकैत अछि।

खांगुड़-पदहियाः 'यन्त्रज्ञ'

ब्लॉक ३३मे 'यन्त्रज्ञ' सन पद आधुनिक अभियान्त्रिक/तकनीकी पेशाक आरम्भिक संकेत रूपमे पढ़ल गेल अछि। पारम्परिक महामहोपाध्याय, ज्योतिषी, वैयाकरणक बीच यन्त्र–ज्ञानक पेशा देखबैत अछि जे पञ्जी पेशागत परिवर्तनकेँ ग्रहण करैत रहल।

कन्हौली-मंगरौनीः न्यायाधीश, आई. ए. एस. आ कम्युनिस्ट सांसद

ब्लॉक १२२क एकहि सम्बन्ध–जालमे न्यायमूर्ति अमरनाथ, प्राध्यापक त्रिलोकनाथ आई. ए. एस., कम्युनिस्ट सांसद/सी. पी. एम. सम्बन्धी उल्लेख आ परम्परागत वैयाकरण ससुरालक सूत्र भेटैत अछि। आधुनिक राज्य, वाम राजनीति आ शास्त्रीय विद्या एकहि परिवार–जालमे उपस्थित अछि। पञ्जी एतए विचारधाराक पक्ष नहि लैत; सम्बन्ध दर्ज करैत अछि।

रैयाम-राजहड़ाः विश्वविद्यालयीय परिवार

ब्लॉक १४८मे महामहोपाध्याय परम्पराक संग इलाहाबाद विश्वविद्यालयक पूर्व कुलपति, डॉ. उमेश, मैथिली साहित्येतिहासक प्राध्यापक जयकान्त, भूविज्ञानी प्राध्यापक कृष्णकान्त आदि एकटा घन शिक्षित समूह बनबैत छथि। ज्ञानक वंशीय विरासत एतए शास्त्रीय पदवीसँ आधुनिक विश्वविद्यालयीय विशेषज्ञता दिस रूप बदलैत अछि।

रोहड़-भवानीपुरः राजनीतिक वंश

ब्लॉक १८३क चौधरी बच्चू परिवार आ क्षेत्रीय राजनीतिक प्रभाव देखबैत अछि जे आधुनिक लोकतांत्रिक राजनीति सेहो वंशीय स्मृतिक हिस्सा बनि गेल। नामावलीमे 'किशोर', 'नारायण', 'इन्द्र' आदि प्रत्यय पीढ़ीगत नामकरण–रुचि देखबैत अछि।

पेशाक तीन काल

नगराम रिपोर्ट पेशागत उपाधिक दीर्घकालिक परिवर्तन तीन मोट कालमे देखैत अछि। पहिल—वैदिक, न्याय, व्याकरण, ज्योतिष, धर्मशास्त्र, महामहोपाध्याय। दोसर—औपनिवेशिक कानून, वकील, न्यायिक पद, राजस्व/प्रशासन, रेलवे/तकनीकी सेवा। तेसर—स्वतन्त्र भारतक प्राध्यापक, वैज्ञानिक, अभियन्ता, चिकित्सक, आई. ए. एस., आई. पी. एस., सांसद, न्यायाधीश। एहि क्रमकेँ कठोर काल–सीमा नहि, पर सामाजिक पेशागत परिवर्तनक उपयोगी प्रवृत्ति मानल जा सकैत अछि।

नामकरणक कालक्रम

स्रोतसभ शिव–सम्बन्धी 'नाथ', 'ईश्वर', 'शंकर' नामक पुरान प्रभुत्व; अठारहम–उन्नीसम शताब्दीमे 'नारायण', 'कृष्ण'; औपनिवेशिक कालमे 'चन्द्र', 'मोहन', 'बहादुर', 'राय'; बीसम शताब्दीमे 'कुमार' आ छोट आधुनिक नामक वृद्धि देखबैत अछि। ई भाषिक आँकड़ा पञ्जीकेँ नाम विज्ञानक दुर्लभ दीर्घकालीन संग्रह बनबैत अछि।

प्रवास

मधुबनी–दरभंगा केन्द्रसँ पूर्णिया–बनैली, मुजफ्फरपुर, भागलपुर–मुंगेर, सहरसा–सुपौल, चम्पारण, नेपाल तराई, काठमाण्डू आ बादमे महानगर/राष्ट्रिय प्रशासनिक केन्द्र धरि परिवारक फैलाव भेटैत अछि। मूलग्राम पहचान बदलैत नहि, मुदा निवास आ पेशा बदलैत अछि। एहि कारणेँ पञ्जी 'स्थिर जाति' क कथा सँ बेसी गतिशील प्रवासक कथा सेहो अछि।

१७. पञ्जिका–नगरामी, ब्लॉक २२६–३५२: लोकनाम, डिग्री आ पेशागत वंश

नगरामीक एहि भागमे वंशावली आधुनिक सामाजिक इतिहासक सूक्ष्म कोश बनि जाइत अछि। व्यक्ति–नामक संग घर–नाम, पेशा, डिग्री, विश्वविद्यालय, अदालत, सरकारी सेवा आ बेटी धरि पेशागत उपलब्धिक उल्लेख बढ़ैत अछि। पारम्परिक सूत्र नहि टूटैत; ओकर भीतर नवा सूचना–क्षेत्र जुड़ैत अछि।

मंगौनी, हाटी आ समौलीक शाखा

ब्लॉक २२६मे मंगौनीसँ मदरीक देवकीनन्दन–रेखा, २२६–२२७मे वंशमणि उपशाखा, २२८मे भ्रातृजन रेखा आ २३०–२३२मे हाटी–सतलखा/विलखिनद सम्बन्ध लगातार छोटे सूत्रमे चलैत अछि। चानुराझा हरिदास झाक प्रविष्टि लोकनाम आ औपचारिक नामक सह–अस्तित्व देखबैत अछि। एहि भागक महत्त्व 'महान व्यक्ति' मात्र नहि, छोट शाखाक लगातार पुनर्संयोजन अछि।

समौलीः नामक सांस्कृतिक विविधता

ब्लॉक २३८मे प्रद्युम्नक पुत्र राजीवलोचन, कमल, घोघन; ब्लॉक २४४मे नीलाम्बर, महीपति, उपे तथा सनाफूल, फेकन, छोटा सन लोकाभिमुख नाम एकहि श्रृंखलामे अछि। संस्कृतनिष्ठ दीर्घ नाम, भक्ति–नाम, फूल/प्रकृति–सम्बन्धी नाम, उपनाम, संक्षिप्त घर–नाम—सभ एकहि परिवारमे चलैत अछि। पञ्जी भाषाक 'मानक' रूप नहि, जीवित नाम–संस्कृति पकड़ैत अछि।

बलिराजपुर–चोपताः शिक्षा आ अभियान्त्रिकी

ब्लॉक २५३मे बुवुआजी/जयकृष्णक परिवार; कुमारजी, अमरनाथ, पीताम्बर/नवल किशोर, जगदीश, सत्यनारायण; नवलकिशोरक पुत्र प्राध्यापक श्यामानन्द, अभियन्ता मनोज कुमार, सुबोध कुमार आदि आधुनिक पेशागत परिवर्तनक स्पष्ट श्रृंखला अछि। ब्लॉक २५४मे 'साहित्याचार्य प्राध्यापक डॉ. विश्वम्भर मिश्र "वागीश"'—परम्परागत साहित्याचार्य, आधुनिक विश्वविद्यालयीय 'प्राध्यापक–डॉक्टर' आ साहित्यिक उपनाम एकहि पहचानमे जुड़ैत अछि।

तिथि आ डिग्रीक सूचक

'१९३४ तृतीय एम. ए.' सन सूत्र एहन कालचिह्न अछि जतए आधुनिक विश्वविद्यालयीय डिग्री वंश–सूचनाक योग्य विवरण मानल गेल। दोहर एम. ए., अभियन्ता, प्लीडर/वकील, आयकर सेवा, आयोग आदि पेशा अब कुल–प्रतिष्ठाक नवा भाषा बनैत अछि। पुरान महामहोपाध्याय पद मिटैत नहि; ओकर बगलमे नवा डिग्री उगैत अछि।

अधिवक्ता परिवार आ कानूनक पेशा

ब्लॉक ३०७मे वकील ब्रजमोहनक परिवार—नरेन्द्रमोहन एम. एस., प्राचार्य, विधि–संकाय, अन्य अधिवक्ता—औपनिवेशिक तथा उत्तर–औपनिवेशिक कानूनी पेशाक वंशीय विस्तार देखबैत अछि। पञ्जी समाजक पेशागत पूँजी पीढ़ी–दर–पीढ़ी कतेक टिकैत वा बदलैत अछि, एकर सूक्ष्म अध्ययन सम्भव करैत अछि।

मैथिली लेखकक स्पष्ट परिचय

ब्लॉक ३१६मे डॉ. प्राध्यापक वेदनाथकेँ स्पष्ट 'मैथिली भाषा लेखक' कहि दर्ज कएल गेल अछि। साहित्येतिहास लेल ई खास महत्त्वक अछि: व्यक्तिक रचनात्मक पहचान स्वयं पारिवारिक रजिस्टरक हिस्सा बनल। एहन प्रविष्टि अन्य कवि/लेखक नामक सत्यापन लेल मॉडल दे सकैत अछि।

आई. पी. एस.-आई. ए. एस. परिवार आ बेटी

ब्लॉक ३४५–३४६मे महावीर आई. पी. एस., डी. आई. जी. तथा हुनकर पुत्र अरुण/अमित आई. ए. एस. सन प्रविष्टि आधुनिक अखिलभारतीय सेवाक प्रतिष्ठा देखबैत अछि। विशेष रूपेँ ‘पहिल आई. ए. एस. बेटी’ क उल्लेख स्त्रीक पेशागत उपलब्धि वंश–पाठमे दर्ज होयबाक अपवादात्मक क्षण अछि। ई अपवाद स्वयं बतबैत अछि जे स्त्रीक पेशागत नाम सामान्य नियम नहि छल, मुदा सामाजिक मूल्य बदलिते अभिलेखक चयन–मानदण्ड बदलि सकैत अछि।

कलकत्ता उच्च न्यायालयक ‘जूरी’

ब्लॉक ३४७मे ‘पाटक बौन’ क कलकत्ता उच्च न्यायालयक जूरी रूपमे उल्लेख औपनिवेशिक न्याय–व्यवस्थाक स्थानीय सामाजिक इतिहासक निशान अछि। पञ्जीमे एहन छोट पद–सूचक औपचारिक सरकारी अभिलेख खोजबाक सुराग बनि सकैत अछि।

हरिअमक गहिर वंश

ब्लॉक ३५२मे पशुपतिक पाँच ‘–पति’ नामधारी पुत्र, सरिसब/बेलौंच सन प्रतिष्ठित मातृसम्बन्ध आ गहिर पीढ़ी–क्रम एक साथ अछि। एहि प्रकारक प्रविष्टि नामकरण, वैवाहिक प्रतिष्ठा आ शाखा–विस्तार तीनूकेँ जोड़ैत अछि।

१८. नगराम, ब्लॉक ३५९–४६६: देवता-स्मरणसँ राजवंश आ आधुनिक अधिकारी धरि

एहि खण्डक प्रत्येक ब्लॉक प्रायः देवता–स्मरण, ‘ग्रामारम्भ’, वंशीय सूत्र आ पारस्परिक कोडसँ बनल अछि। उद्घाटनमेशिव/शैव नामक बहुलता स्रोत–रिपोर्ट कुलदेवता अथवा स्थानीय धार्मिक स्मृतिक संकेत मानैत अछि। ई व्याख्या सम्भाव्य अछि; प्रत्येक देव–नामकेँ अनिवार्य कुलदेवता मानबाक पहिले मूल परम्परा/स्थानीय साक्ष्य जाँचब आवश्यक अछि।

विचाढ़ी-कुआ आ परहट-चानपुरा

ब्लॉक ३५९–३६२क विचाढ़ी–कुआ समूह अनेक पीढ़ी, मातृसम्बन्ध आ गाँव–परिवर्तनक मूल संरचना देखबैत अछि। ३६३–३६७क परहट–चानपुरामे महामहोपाध्याय खगेश, ‘राजा विद्यानिधि हृदयनिधि’, चतुश्चरण यज्ञकर्ता धीरेन्द्र सन उपाधि धार्मिक, विद्वत् आ राजकीय प्रतिष्ठाकेँ एकहि वंशजालमे जोड़ैत अछि।

मंगौरी-खोजपुरः घन विद्वत् परिवार

ब्लॉक ३७०–३७६मे साधु उपाध्याय रामभद्रक आसपास पण्डितराज, महामहोपाध्याय मधुसूदन, महामहोपाध्याय बैद्यनाथ–पीताम्बर, उमानन्द, महामहोपाध्याय वागीश आदि विद्वानक सघन श्रृंखला अछि। ई एकटा ‘ज्ञान परिवार’ क सामाजिक इतिहास अछि। विद्या केवल व्यक्तिगत प्रतिभा नहि, शिक्षण–संस्कृति, पुस्तक, गुरु, वैवाहिक नेटवर्क आ संरक्षणक संयुक्त पारिस्थितिकी हो सकैत अछि।

पिलखवाड़-मंगौरी आ अलय-लगमा

ब्लॉक ३७९–३८२ महामहोपाध्याय वागीशक शाखा आगाँ लैत अछि। ३८३–३८७ अलय–लगमा गलियारामे ‘दत्त’ प्रत्यययुक्त नामक घनत्व नाम–विज्ञानक विशिष्ट उपसमूह बनबैत अछि। परिवारक भीतर नाम–पैटर्न वंश–पहचानक अनौपचारिक सहायक चिह्न हो सकैत अछि, मुदा केवल नामसँ वंश–सम्बन्ध सिद्ध नहि।

बैगनी-बंसी राजपरिवार

ब्लॉक ३८८–३९५मे बैगनी/बंसी राजवंश, बनैली/रामगढ़ सम्बन्ध, राजा कीर्त्यानन्द सिंह बहादुर आ संगीत–संबन्धी उपाधि आधुनिक राजकीय–सांस्कृतिक संरक्षणक इतिहास खोलैत अछि। राजघराना पञ्जीक भीतर विवाह–सूत्रसँ जुड़ैत अछि; एहि कारण पञ्जी स्थानीय राजनीतिक इतिहासक वंशीय स्रोत बनैत अछि।

परमगढ़-पिण्डारुच आ चौधरी परिवार

ब्लॉक ३९२–३९८मे चौधरी परिवार, आधुनिक ‘कुमार’/‘चन्द्र’ नाम आ क्षेत्रीय प्रतिष्ठा सामाजिक परिवर्तनक मध्यवर्ती रूप देखबैत अछि। न तो ई पूरा शास्त्रीय उपाधि–युग अछि, न पूर्ण आधुनिक पेशागत पहचान; दुनू मिश्रित छथि।

जगतपुर-ओइनः सिमरौंगढ़ राजवंश

ब्लॉक ४०२–४०६ ओइन/ओइन्हा सम्बन्धी राजवंशक दीर्घ प्रशस्तिमूलक अनुक्रम दैत अछि। राजा–पण्डित कामेश्वर, राजा भोगीश्वर, महा–महत्तक कुसुमेश्वर, महाराजाधिराज भवेश्वर/भवसिंह आदि नाम तथा शक ७६८—लगभग ८४६ ई.—सन प्राचीन तिथि रिपोर्ट

चिन्हित करैत अछि। एहन अति–प्राचीन तिथिक उपयोग अत्यन्त सावधानीसँ करबाक चाही: पञ्जी–परम्पराक भीतर दाबी रूपेँ महत्त्वपूर्ण, मुदा अभिलेख–विज्ञान, समकालीन शिलालेख/ग्रन्थ आ वंश–पीढ़ीक स्वतंत्र जाँच बिना ऐतिहासिक तथ्यक अंतिम प्रमाण नहि।

नहस-खौआलः विद्वानसँ आई. ए. एस./आई. पी. एस.

ब्लॉक ४२०–४२८मे ज्योतिषी आ शास्त्रीय विद्वान परिवार बादक आधुनिक प्रशासनिक सेवासँ जुड़ैत अछि। ई परिवर्तन पञ्जीक दीर्घकालिक मूल्य अछि: एकहि वंशमे 'ज्ञानक पेशा' बदलैत अछि, सामाजिक पूँजी नव संस्था—विश्वविद्यालय, न्यायालय, नौकरशाही—दिस प्रवाहित होइत अछि।

चानपुरा, सुखैत-पिलखवाड़ आ परिधीय समूह

४२९–४३४क चानपुरा सामाजिक समूह, ४४७–४५०क सुखैत–पिलखवाड़ महामहोपाध्याय नेना रेखा, 'ज्ञानी', 'ध्यानी' सन दार्शनिक नाम, तथा ४५१–४६६क परहट, सतलखा, मुंगेर, लोहना, रोहड़, सुपौल/नेपाल सीमा–क्षेत्र पञ्जीक केन्द्रीयभूगोलकेँ विस्तृत करैत अछि। स्रोत–रिपोर्ट एहि भागमे औसतन ८–१२ पीढ़ी, किछु जगह १५–१८ पीढ़ी, तीन हजारसँ बेसी व्यक्ति आ दुई सयसँ बेसी गाँवक अनुमान दैत अछि। ई मात्र रिपोर्ट–आधारित परिमाण अछि; डिजिटल गिनतीसँ सत्यापन सम्भव अछि।

मातृग्रामक आवृत्ति

एहि चयनित भागमे स्रोत–रिपोर्ट सोदरपुर, दरभरा, पाली, बेलौंच, खौआल, करमहा, जजिवाल, सरिसब, पबौसल, मण्डर, एकहर आदिक उच्च आवृत्ति बतबैत अछि। जँ ई आवृत्ति मूल पृष्ठपर मशीन–सहायित जाँचसँ पुष्ट हो, तखन विवाह–नेटवर्कक 'केन्द्रीय गाँव' पहिचानबाक ठोस आधार बनि सकैत अछि।

१९. पूर्णिया आ पूर्वी मिथिलाक सामाजिक भूगोल

एकटा पृथक रिपोर्ट पञ्जी–विमर्शकेँ पूर्णिया, असंगा, श्रीपुर, हवेली, धरमपुर आ पूर्वी मिथिलाक स्थानीय इतिहाससँ जोड़ैत अछि। एहि सामग्रीकेँ मुख्य वंश–सिद्धान्तक दोहराव बुझि छोड़ब उचित नहि, कारण एतए विशिष्ट गाँव, मन्दिर, विद्वान, स्वतन्त्रता–सेनानी आ स्थानीय परिवारक स्मृति अछि।

जहानपुर आ १७०८ ई. केर मूर्ति-स्थापना

जहानपुरक प्रसंगमे १७०८ ई. मे मूर्ति–प्रतिष्ठाक उल्लेख स्थानीय धार्मिक इतिहासक तिथि–सूचक अछि। पुण्यानन्द झा, गिरानन्द ठाकुर, रासमोहन झा आदि नामक संग ई गाँवक सांस्कृतिक निरन्तरता बनबैत अछि। जँ मूल स्थापत्य/शिलालेख उपलब्ध हो, पञ्जी आ स्थानीय परम्परा एक–दोसरक सत्यापन करि सकैत अछि।

स्वतन्त्रता आन्दोलनक स्मृति

पूर्वी मिथिलाक गाँवसभमे स्वतन्त्रता–सेनानी परिवारक उल्लेख आधुनिक राजनीतिक इतिहास पञ्जीक सामाजिक स्मृतिसँ जोड़ैत अछि। एहन सामग्री औपचारिक स्वतन्त्रता–सेनानी सूची, जिला गजेटियर आ मौखिक इतिहाससँ मिलान योग्य अछि। पञ्जी परिवारक दृष्टिसँ घटना देखबैत अछि; राज्य–अभिलेख सार्वजनिक पद/घटना दृष्टिसँ। दुनूक संयुक्त पाठ बेसी पूर्ण होइत अछि।

विष्णुपुर, गुणानन्द-तीर्थानन्द आ विश्वविद्यालयीय सम्बन्ध

विष्णुपुर सम्बन्धी परिवार, गुणानन्द/तीर्थानन्द, मिथिला विश्वविद्यालयक कुलपति–संबंधी वंश–सूत्र आधुनिक उच्च शिक्षाक क्षेत्रीय सामाजिक आधार देखबैत अछि। विश्वविद्यालयक इतिहास केवल संस्था–स्थापनाक कथा नहि; स्थानीय विद्वान परिवारक दीर्घ शिक्षण–परम्परा ओकर पृष्ठभूमि हो सकैत अछि।

नाशिरा, ज्योतिरीश्वर ठाकुर आ अन्य विद्वत् स्मृति

नाशिरा/नशिरा क्षेत्रमे ज्योतिरीश्वर ठाकुरक नामसँ सम्बन्ध जोड़बाक स्रोत–दाबी साहित्येतिहासक दृष्टिसँ रोचक अछि। 'वर्णरत्नाकर' क रचनाकार ज्योतिरीश्वरक ऐतिहासिक पहचान स्वतंत्र स्रोतसँ पुष्ट अछि, मुदा विशिष्ट पञ्जी–वंश–समानता हेतु मूल वंश–प्रविष्टि, कालक्रम आ ग्राम–सूत्रक विस्तृत जाँच चाही। समेकित आलेख एहि सम्बन्धकेँ शोध–सुराग रूपेँ रखैत अछि, सिद्ध वंशानुक्रम रूपेँ नहि।

धरमपुर, सुरगन लोआम, सरमस्त अली खाँ

धरमपुर आ सुरगन लोआमक स्थानीय इतिहासमे सरमस्त अली खाँ, राघव सिंह, रसाढ़क विद्वान आ धमदाहाक विद्वत् परिवार सन नाम साम्प्रदायिक आ राजकीय अन्तर्क्रियाक व्यापक सामाजिक चित्र दैत अछि। पञ्जी–केन्द्रित मिथिला अध्ययन यदि केवल ब्राह्मण परिवारक भीतर सिमटि जाए, तखन एहि साझा क्षेत्रीय इतिहासक बड़ा भाग छूटि जाएत।

२०. पञ्जीक भाषा: सूत्र, व्याकरण आ नाम-विज्ञान

पञ्जी पूर्ण गद्य नहि। ओकर मुख्य शक्ति संक्षिप्त सूत्रात्मक व्याकरण अछि। 'फलाँ सुत', 'सुतौ', 'सुता', 'फलाँ गाँवसँ फलाँ दौ', 'द्दौ', 'अपरा', 'मूल', 'प्र.', 'नी' आदि संकेत बहुत कम शब्दमे सम्बन्धक प्रकार बतबैत अछि। एहि कारण पञ्जी पढ़ब सीखब आधुनिक संक्षेप–कोड पढ़बाक जकाँ अछि।

सुत, सुतौ, सुता

'सुत' एक पुत्र, 'सुतौ' दू पुत्र अथवा द्विवचन, 'सुता' पुत्री/सन्तानक विशेष सन्दर्भ—प्रयोग पाण्डुलिपि अनुसार बदलि सकैत अछि। मूल लिपि पढ़ैत काल व्याकरणिक संख्या आ लिपिक संक्षेपक भेद जाँचना चाही। स्वचालित पाठ–निर्माणमे सभ रूपकेँ एक 'पुत्र' बना देब सम्बन्ध–डेटा बिगाड़ि सकैत अछि।

दौ/द्दौ: मातृसम्बन्धक कोड

'दौ' सामान्यतः दौहित्र/मातृसम्बन्धी लिंकक संक्षिप्त संकेत रूपमे व्याख्यायित अछि; 'द्दौ' दोहरा मातृ–सन्दर्भ वा दोसर स्तरक क्रॉस–लिंक देखबैत अछि। किछु रिपोर्ट अनुवादमे 'मातुल–भानजा' अथवा 'दौहित्र' अर्थ अलग–अलग दैत अछि। डिजिटलशब्दकोश बनबैत काल एकल अंग्रेजी समतुल्य थोपबाक बदला सन्दर्भ–आधारित सम्बन्ध–प्रकार राखब चाही।

'प्र.' आ द्विनाम

'प्र.' प्रचलित नाम, परिचित उपनाम, कतेको ठाम 'प्रथम' क संक्षेप जकाँ पढ़ल गेल अछि। जँ एकहि संक्षेपक अनेक अर्थ सम्भव हो, संपादकीय संस्करणमे मूल संकेत अक्षुण्ण राखि टिप्पणी दियौ। समौली आ नगरामक लोकनाम देखबैत अछि जे घर–नाम व्यक्ति–पहचानक वास्तविक उपकरण छल।

संस्कृत, मैथिली, फारसी आ अंग्रेजी प्रभाव

पुरान सूत्र संस्कृतनिष्ठ—राजा, उपाध्याय, महामहोपाध्याय, ज्योतिषी, वैयाकरण, शान्तिविग्रहिक। मध्यकालीन/मुगल स्तरमे राय, मनसबदार, हजारी, चौधरी सन फारसी–प्रशासनिक शब्द प्रवेश करैत अछि। औपनिवेशिक कालमे वकील, प्लीडर, जूरी, विश्वविद्यालय, डिग्री; आधुनिक कालमे अभियन्ता, प्राध्यापक, चिकित्सक, वैज्ञानिक, प्रशासक। नामक भीतर भाषिक ऋण–शब्द सामाजिक संस्था बदलबाक जीवित साक्ष्य अछि।

स्थाननामक इतिहास

गाँवक पुरान वर्तनी आधुनिक राजस्व–नामसँ भिन्न रहि सकैत अछि। एक ठाम 'मंगरौनी', दोसर 'मंगौरी'; 'सोदरपुर', 'सोडरपुरा'; 'खौआल', 'खौआर'; 'दरिहर', 'दरिहरा' । ध्वनि–परिवर्तन, स्थानीय उच्चारण, लिपिकारक शैली आ देवनागरी लिप्यन्तरण सब मिलि रूप बदलैत अछि। पञ्जी भाषावैज्ञानिक लेल स्थाननामक दीर्घकालीन भण्डार अछि।

नामक सात प्रकार

नगरामी रिपोर्ट नामसभकेँ मोट तौर पर सात प्रवृत्तिमे पढ़ैत अछि: देवता–आधारित नाम; संस्कृत साहित्यिक/दार्शनिक नाम; वैष्णव/शैव भक्ति–नाम; फारसी–प्रभावित प्रशासनिक नाम; लोक/घर–नाम; औपनिवेशिक–आधुनिक संयुक्त नाम; पेशागत/उपाधि–सहित नाम। ई वर्ग कठोर नहि, पर हजारो नामक दीर्घकालिक परिवर्तन अध्ययन लेल उपयोगी प्रारूप अछि।

२१. पञ्जी सामाजिक स्मृति, सत्ता आ ज्ञानक संस्था

वंशावली केवल 'केकर पिता के' नहि। ओ समाज निर्णय करैत अछि जे केकर स्मृति सार्वजनिक रूपेँ सुरक्षित हो, केकर नाम प्रतिष्ठित उपाधि संग लिखल जाए, केकर सम्बन्ध 'दूषण' कहि दर्ज हो, आ केकर शाखा अपूर्ण रहि जाए। एहि अर्थमे पञ्जी स्मृति आ सत्ता दुनू अछि।

'स्मृतिक पेशेवर' पञ्जीकार

पञ्जीकारक विशेषज्ञता लिखित पोथी, मौखिक परम्परा आ सामाजिक प्रमाणक संगम छल। परिवार अपन सात–दस पीढ़ी याद रखि सकैत छल, मुदा सैकड़ों गाँवक पारस्परिक विवाह–सूत्र, प्रवर, मूल, दूषण आ शाखा–सन्दर्भ पेशेवर स्मृति बिना कठिन छल। पञ्जीकार समाजक 'स्मृति–विशेषज्ञ' बनैत अछि।

लिखित स्मृति मौखिक परम्पराकेँ समाप्त नहि करैत अछि

पञ्जीक संक्षिप्त सूत्र स्वयं बतबैत अछि जे पाठ अकेला पर्याप्त नहि। संक्षेप, ग्राम–उपनाम, शाखा–सूत्र, पृष्ठ–सन्दर्भक अर्थ पञ्जीकार मौखिक रूपेँ खोलैत छल। तेँ लिखित/मौखिककेँ विरोधी नहि, सहजीवी मानबाक चाही। डिजिटल रूपान्तरणक सभसँ पैघ जोखिम ई मौखिक व्याख्या खो देब अछि।

सामाजिक श्रेणीकरणक यन्त्र

श्रोत्रिय, योग्य, पञ्जीबद्ध, वंशधर, जयवार; उच्च/मध्यम मूल; शाखा–पञ्जी; विवाह–प्रमाण—ई सभ सामाजिक प्रतिष्ठाक औपचारिक रूप दे सकैत अछि। जँ वंश–जाँच विवाह–अधिकार तय करैत अछि, तखन अभिलेख सामाजिक जीवनक प्रवेश–द्वार बनि जाइत अछि। एहि संरचनाकेँ लुई ड्यूमोँक जाति–श्रेणी, मैक्स वेबरक प्रतिष्ठा–समूह, पियेर बुरदियोक सांस्कृतिक/सामाजिक पूँजी, मिशेल फूकोक ज्ञान–सत्ता जकाँ आधुनिक सिद्धान्तसँ पढ़ल जा सकैत अछि; मुदा सिद्धान्त स्रोतपर थोपल नहि जाए।

दूषण-पञ्जी 'प्रतिस्मृति' रूपमे

मुख्य पञ्जी प्रतिष्ठित वंशक स्वीकृत क्रम लिखैत अछि; दूषण–पञ्जी नियमभङ्ग, निषिद्ध सम्बन्ध, हाशियाक जाति/समुदाय, विधवा, देवदासी, अज्ञात मातृकुल आ सामाजिक विवाद दर्ज करैत अछि। एहि अर्थमे दूषण–पञ्जी मुख्य स्मृतिक छाया–अभिलेख अछि। जे बात गौरवक वंशावली छोड़ि देत, 'दूषण' क रजिस्टर ओकरा बचा सकैत अछि।

ज्ञानक क्षय: 'तेगच्छिया समस्या'

किछु शाखाक सम्बन्धमे पञ्जी स्वयं सूचना–क्षय स्वीकार करैत अछि। एहि आत्मसीमाक कारण अभिलेखक विश्वसनीयता जटिल बनैत अछि—ओ सर्वज्ञता दावा नहि करैत, किन्तु जतेक ज्ञात अछि ओतेक सूत्र राखैत अछि। आधुनिक डेटाबेस सेहो 'अज्ञात' मानकेँ वैध डेटा मानय; रिक्त स्थान भरबाक लेल अनुमानित नाम जोड़ब अभिलेखीय अपराध होयत।

२२. तुलनात्मक वंशावली: विश्वक अन्य परम्परासँ संवाद

स्रोत–रिपोर्टसभ चीनी 'जुपु' कुल–वृत्तान्त, यहूदी यिखुस, यूरोपीय कुलचिह्न/राजवंशावली, माओरी वाकापापा, राजपूत वंशावली, आधुनिक धार्मिक वंश–संग्रह आदि संग पञ्जीक तुलना करैत अछि। तुलना उपयोगी तखन अछि जखन समानता आ भिन्नता दुनू देखल जाए।

चीनी कुल–वृत्तान्त बहुधा पितृवंशीय कुल द्वारा निश्चित अन्तरालपर पुनर्संकलित होइत; पञ्जी पेशेवर पञ्जीकार आ विवाह–जाँच संस्था संग अधिक निकट जुड़ल। यहूदी यिखुस धार्मिक स्थिति आ विवाह–पात्रता संग सम्बन्धित, मुदा पञ्जी जकाँ ग्राम–मूल–दौक व्यापक स्थानीय क्रॉस–रेफरेंस जरूरी नहि। यूरोपीय कुलचिह्न/नवाबी वंशावली मुख्यतः कुलीन वर्ग केन्द्रित; मिथिलाक पञ्जी एक विशिष्ट धार्मिक–पेशागत समुदायक बहुत व्यापक परिवार–जाल समेटैत अछि। राजपूत चारण/भाट परम्परा दक्षिण एशियाक निकटतम तुलनात्मक उदाहरणसभमे अछि, किन्तु लिखित क्रॉस–सन्दर्भक संरचना अलग अछि।

पञ्जीक विशिष्टता

पञ्जीक विशिष्टता 'सबसे पुरान' वा 'सबसे वैज्ञानिक' कहि अतिशयोक्ति करबामे नहि। ओकर ठोस विशेषता अछि: दीर्घकालिक बहु–पीढ़ी अभिलेख; पेशेवर वंशावलीकार; विवाह–पूर्व जाँचक प्रत्यक्ष सामाजिक कार्य; गोत्र–प्रवर–मूल–मातृग्रामक बहुस्तरीय पहचान; दूषणक पृथक रजिस्टर; ग्राम–आधारित क्रॉस–रेफरेंस; आ आधुनिक काल धरि अद्यतन होयबाक प्रमाण। एहि संयोजनक तुलनात्मक अध्ययन वास्तवमे महत्त्वपूर्ण अछि।

नव्य-न्यायसँ पद्धतिगत समानता

किछु स्रोत पञ्जीक सूत्रात्मकता आ नव्य–न्यायक विश्लेषणात्मक भाषामे सांस्कृतिक समानता देखैत अछि। सीधा ऐतिहासिक कारण–संबंध सिद्ध नहि, मुदा मिथिलाक बौद्धिक वातावरणमे सूक्ष्म वर्गीकरण, सम्बन्धक तकनीकी शब्द, अपवाद, प्रमाण आ निर्णयक

प्रवृत्ति दुनू परम्परामे दिखाई दैत अछि। पञ्जीकारक निर्णय प्रत्यक्ष अभिलेख, पूर्व–प्रमाण आ सम्बन्ध–मिलान पर आधारित होयबाक आदर्श 'प्रमाण' सम्बन्धी दार्शनिक संवेदनासँ संवाद योग्य अछि।

२३. पञ्जी आ आधुनिक संकट: जीवित संस्था सँ संकटग्रस्त अभिलेख धरि

एक्कैसम शताब्दीमे पञ्जीसमक्ष दू विपरीत स्थिति अछि। एक दिस डिजिटल छवि, खोज, देवनागरी लिप्यन्तरण आ सार्वजनिक पहुँच पहिने सँ अधिक सम्भव अछि; दोसर दिस परम्परागतपञ्जीकारक पेशा, मिथिलाक्षर पढ़बाक कौशल, पोथीक भौतिक अवस्था आ विवाहमे पञ्जी–जाँचक व्यवहारिक प्रयोग कमजोर भऽ रहल अछि। तकनीकी संरक्षण होइत समाजिक उपयोग बदलि रहल अछि।

विवाहमे पञ्जी-जाँचक घटैत प्रयोग

एकटा आधुनिक रिपोर्ट अनुमान दैत अछि जे लगभग पाँचम हिस्सा विवाह पञ्जी–जाँच बिना होइत अछि। एहि प्रतिशतक स्वतंत्र क्षेत्रीय सर्वेक्षण उपलब्ध नहि, अतः एकरा 'स्रोतक अनुमान' रूपमे मात्र लेल जाए। तथापि व्यापक प्रवृत्ति विश्वसनीय अछि: शिक्षा, शहरीकरण, अन्तर्जातीय/अन्तरधार्मिक विवाह, प्रेम–विवाह, प्रवास आ वैवाहिक वेबसाइटक कारण पञ्जीकारक अनिवार्य भूमिका घटल अछि।

पञ्जीकारक आर्थिक अस्थिरता

जँ परिवार वर्षमे कतेको बेर मात्र पञ्जीकारक सेवा लैत अछि, तखन विशेषज्ञताकेँ पूर्णकालिक पेशा रूपमे टिकेनाइ कठिन होइत अछि। युवा पीढ़ी अन्य रोजगार चुनैत अछि। एहि स्थिति मे पोथी पढ़बाक कौशल 'व्यक्तिगत पूँजी' रूपमे वृद्ध पञ्जीकारक संग समाप्त भऽ सकैत अछि। संरक्षणक अर्थ केवल स्कैन नहि; विशेषज्ञक वाचन, उच्चारण, संक्षेपक अर्थ, ग्राम–पहचान आ विवादित शाखाक मौखिक इतिहास रिकॉर्ड करब सेहो अछि।

भौतिक क्षय

आर्द्रता, दीमक, कीड़ा, अम्लीय कागज, अनुचित धूप, जल, तेल, धूल आ बारम्बार हाथ लगबाक कारण पोथी नष्ट होइत अछि। पुरान स्थानीय संरक्षण–विधि सम्मान योग्य अछि, मुदा वर्तमान संग्रह लेल अभिलेखीय तापमान–आर्द्रता, अम्लमुक्त आवरण, कीट–नियन्त्रण, उच्च–रिजोल्यूशन छवि आ आपदा–बैकअप जरूरी अछि। मूल पोथी डिजिटाइज होयबाक बादो सुरक्षित रहबाक चाही; डिजिटल प्रति मूलक विकल्प नहि, उपयोगक प्रतिरूप अछि।

गोपनीयता आ नैतिकता

आधुनिक पञ्जीमे जीवित व्यक्ति, विवाह, अन्तरजातीय सम्बन्ध, तथाकथित 'दूषण', पेशा, सम्भवतः व्यक्तिगत विवादक सूचना अछि। सभ डेटा खुला इंटरनेटपर बिना सीमा राखब नैतिक समस्या पैदा कऽ सकैत अछि। ऐतिहासिक सार्वजनिक दस्तावेज आ जीवित व्यक्तिक संवेदनशील पारिवारिक विवरणक अलग नीति चाही। दूषण–पञ्जीक जातिसूचक अपमानजनक पद मूल स्रोतक आलोचनात्मक अध्ययन लेल राखल जा सकैत अछि, मुदा आधुनिक व्यक्ति पर कलंकक रूपमे पुनर्प्रयोग अनुचित अछि।

२४. डिजिटल पुनर्निर्माण: पञ्जीकेँ खोजयोग्य बनायब, अर्थ नहि गुमायब

पञ्जीक डिजिटलीकरण लेल केवल पृष्ठक तस्वीर पर्याप्त नहि। एकटा समुचित डिजिटल संस्करणकेँ पाँच स्तर चाही: मूल छवि; लिप्यन्तरण; सामान्यीकृत पाठ; सम्बन्धित डेटा; सम्पादकीय टिप्पणी। सभ स्तर आपस मे लिंक रहय, मुदा मूल पाठ कखनो ओवरराइट नहि हो।

२४.१ मूल छवि

प्रत्येक पृष्ठ उच्च–रिजोल्यूशन रंगीन छविमे, स्केल/रंग–सन्दर्भ सहित, मूल खण्ड–पृष्ठ क्रममे संग्रहित हो। फाइल नाम स्थायी पहचान–संख्या पर आधारित हो। एकहि पृष्ठक नवा स्कैन आयल तँ पुरान प्रति मेटायल नहि, संस्करण इतिहास राखल जाए।

२४.२ लिप्यन्तरण

मिथिलाक्षरसँ देवनागरी लिप्यन्तरण अक्षर–निष्ठ हो। संदिग्ध अक्षर चिन्हित, मिटाओल भाग, हाशिया, संक्षेप, दुरुस्ति, पुनर्लेखन अलग संकेतसँ दर्ज हो। अनुमानित पाठकेँ निश्चित पाठ जकाँ नहि देखाओल जाए।

२४.३ सामान्यीकरण

ग्राम–नाम, व्यक्तिनाम, उपाधि आ तिथि खोजयोग्य बनेबाक लेल मानक रूप जोड़ल जा सकैत अछि, मुदा मूल वर्तनी साथ राखल जाए। उदाहरणतः 'मंगरौनी/मंगौरी' क मानक आधुनिक पहचान एकटा क्षेत्र हो, मूल पाठ दोसर। एही प्रकार 'खौआल/खौआर', 'सोदरपुर/सोडरपुरा' आदि।

२४.४ सम्बन्ध-डेटा

प्रत्येक व्यक्तिक स्थायी पहचान–संख्या; पिता, माता जँ ज्ञात, पुत्र/पुत्री, पति/पत्नी, मातृकुल, गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम, निवासग्राम, पेशा, उपाधि, स्रोत पृष्ठ, शाखा–कोड, विवाह–तिथि—सभ अलग क्षेत्र हो। 'दौ/द्वौ' क सम्बन्ध प्रकार मूल भाषासँ जुड़ल रहय। जँ अर्थ विवादित हो तँ 'अनिश्चित' मान्य विकल्प हो।

२४.५ प्रमाणक स्तर

प्रत्येक निष्कर्षकेँ प्रमाण–श्रेणी देल जा सकैत अछि: मूल पाण्डुलिपिमे प्रत्यक्ष; बादक प्रतिलिपिमे; मुद्रित सम्पादन; पञ्जीकारक मौखिक व्याख्या; आधुनिक रिपोर्टक अनुमान; बाहरी ऐतिहासिक स्रोतसँ पुष्ट। एहि बिना डिजिटल डेटाबेस 'सब तथ्य समान' क भ्रम पैदा करत।

सम्बन्ध-नक्शा आ स्थान-नक्शा

डिजिटल पञ्जी वंश–वृक्ष मात्र नहि, नेटवर्क हो। एक व्यक्ति अनेक विवाह, अनेक मातृसम्बन्ध, उपनाम, प्रवास आ शाखा–सन्दर्भसँ जुड़ल रहि सकैत अछि। तैँ वृक्षक संग नेटवर्क–दृश्य आवश्यक अछि। गाँवक ऐतिहासिक नाम आधुनिक निर्देशांकसँ जोडल जाए तँ विवाह–प्रवासक समयानुसार मानचित्र बनि सकैत अछि। मुदा भूगोलिक पहचान अनुमानित हो तँ ओकर अनिश्चितता स्पष्ट हो।

मशीन-पठनक सीमा

मिथिलाक्षर पाण्डुलिपिपर स्वचालित अक्षर–पहचान अभी त्रुटिपूर्ण हो सकैत अछि। विशेषतः संक्षेप, पुरान हस्तलेख, दाग, टूटा अक्षर, संयुक्ताक्षर आ ग्रामनाम गलत पढ़ायल जा सकैत अछि। मशीन सहायिका हो, अंतिम संपादक नहि। प्रत्येक महत्वपूर्ण सम्बन्ध मानव सत्यापनक बाद प्रकाशित हो।

डिजिटल सिद्धान्त मूल छवि सत्यापनक आधार; लिप्यन्तरण पाठक सेतु; सामान्यीकरण खोजक साधन; सम्बन्ध–डेटा विश्लेषणक संरचना; टिप्पणी अनिश्चितताक ईमानदार अभिलेख।

२५. पञ्जी इतिहासक आलोचनात्मक सीमा

पञ्जी अत्यन्त मूल्यवान अछि, मुदा मूल्यवान होयबाक अर्थ त्रुटिहीन नहि। स्रोतसभक उत्साही दावा आ अभिलेखीय प्रमाणक स्तर अलग करब जरूरी अछि।

४५० ई. सँ २००९ ई.: 'लगातार' शब्द पर सावधानी

परियोजनाक शीर्षक ४५० ई. सँ २००९ ई. धरि वंश–स्मृति कहैत अछि। किछु रिपोर्ट आर्यभट, प्राचीन विद्वान वा प्रारम्भिक राजवंशक सहारे पाँचम–नवम शताब्दी धरि वंश–जड़ जोड़बाक प्रयास करैत अछि। मुदा उपलब्ध प्रतिलिपि, लिखित खण्ड, आ आधुनिक सम्पादन बहुत बादक हो सकैत अछि। '४५०–२००९' केँ परियोजनाक दावाक काल–परिधि मानल जाए; हर वर्ष अथवा हर पीढ़ीक समकालीन निरन्तर दस्तावेजी प्रमाण मानब अभी उचित नहि।

१३२६ ई. आ हरिसिंहदेवक तिथि

शक १२४८ = १३२६ ई. संस्थानीकरणक तिथि अनेक स्रोतमे अछि। दोसर ऐतिहासिक कालक्रम हरिसिंहदेवक शासन समाप्ति लगभग १३२४ ई. मानैत अछि। सम्भावना अछि जे शक–पाठ, ईस्वी रूपान्तरण, राजकीय आदेशक तिथि, बादक परम्परा अथवाव्यक्ति–पहचानमे भेद अछि। समेकित आलेख एहि असंगतिकेँ ज्योंक–त्यों चिन्हित करैत अछि; बिना मूल दिनांकित दस्तावेजकेँ एकटा संस्करण 'सही' घोषित नहि करैत अछि।

गोत्रक संख्या

सम्पूर्ण परम्परागत सूची २० गोत्र दैत अछि; प्राचीन पञ्जीक विशिष्ट खण्डमे १७ गोत्र सक्रिय रूपेँ भेटबाक गणना अछि। ई सम्भवतः नमूना–प्रतिनिधित्वक अन्तर। किछु स्रोत विभिन्न गोत्रक मूल–संख्या सेहो अलग गनैत अछि—उदाहरणतः भारद्वाज, गर्ग, पराशरक संख्या। डिजिटल मूल–पाठक पूर्ण सूचकांक बनलाक बाद संख्या निश्चित करब उचित रहत।

१६७ मूल, ३४/३५ प्रमुख

१६७ कुल मूल आ ३४ प्रमुख, फनन्दहक खानाम शाखा जोड़ि ३५, स्रोतसभमे बारम्बार अछि। मुदा 'प्रमुख' क ऐतिहासिक मानदण्ड, काल, क्षेत्र आ श्रेणीगत राजनीति पर आलोचनात्मक अध्ययन चाही। सामाजिक प्रतिष्ठाकेँ प्राकृतिक अथवा जैविक श्रेष्ठता जकाँ प्रस्तुत नहि कएल जाए।

५/७ बनाम ५/६

धर्मशास्त्रीय सपिण्ड नियम आ पञ्जीकारक व्यवहारिक संशोधनक भेद ऊपर स्पष्ट अछि। एक रिपोर्ट श्रोत्रिय/पञ्जीबद्ध अनुसार अलग सीमा, दोसर सभ लेल समान धर्मशास्त्रीय सीमादैत अछि। डिजिटल नियम–इंजन बनबैत काल 'एक शाश्वत नियम' कोड करब ऐतिहासिक विविधता मिटा देत। नियमक संस्करण, काल आ सामाजिक समूह अलग मेटाडेटा चाही।

जीनोम/गुणसूत्रीय दावा

किछु रिपोर्ट आधुनिक आनुवंशिकी जकाँ 'साझा डी. एन. ए. प्रतिशत', वाई–गुणसूत्रीय बहिर्विवाह अथवा पाँचम/सातम पीढ़ी पर हानिकारक एलील 'समाप्त' होयबाक ठोस संख्या दैत अछि। एहन दाबी आधुनिक जनसंख्या–आनुवंशिकी बिना वैज्ञानिक परीक्षणक मान्य नहि। पञ्जीक विवाह–दूरी नियम निकट सम्बन्ध टारबाक सामाजिक प्रणाली जरूर अछि; ओकरा विशिष्ट आणविक आनुवंशिक सीमा संग एक–एक मिलान करब अतिरंजना होयत।

प्रसिद्ध नामक समानता

'विद्यापति', 'गङ्गेश', 'गंगानाथ', 'ज्योतिरीश्वर', 'आर्यभट' सन नाम इतिहासक प्रसिद्ध व्यक्तिसँ मिलैत अछि। वंशावलीमे नाम–पुनरावृत्ति सामान्य अछि। पहचान लेल पिता, मूल, ग्राम, पीढ़ी, काल, उपाधि आ बाहरी प्रमाणक संगति जरूरी। केवल नाम–समानताकेँ 'प्रमाण' नहि मानल जाए।

सामाजिक श्रेणीक स्रोत-पक्षपात

पञ्जी मुख्यतः विशिष्ट जाति/कुल समूहक संस्था रहल; तैँ सम्पूर्ण मिथिलाक जनसांख्यिकी एकरासँ नहि लिखल जा सकैत अछि। दूषण–पञ्जी हाशियाक समूहक नाम बचबैत अछि, मुदा मुख्य वंशक दृष्टि प्रायः उच्चवर्णीय पुरुषक अछि। मिथिलाक पूर्ण सामाजिक इतिहास लेल कृषक, दलित, आदिवासी, मुस्लिम, महिला, कारीगर, व्यापारी, अन्य जाति–समुदाय, राजकीय रेकर्ड, लोकसाहित्य, शिलालेख, जमीन–अभिलेख आ मौखिक इतिहास सभ जोड़बाक पड़त।

२६. पञ्जी एकटा साहित्यिक रूप: सूक्ष्म वाक्य, विराट संसार

पञ्जीकेँ साहित्य कहब पहिने विचित्र बुझाइत अछि। कथानक नहि, चरित्र–वर्णन नहि, दृश्य–चित्रण नहि। मुदा हजारो संक्षिप्त वाक्य एक संग पढ़ल जाए तँ समय, विवाह, प्रवास, राजसत्ता, ज्ञान, प्रतिष्ठा, पतन, पुनर्समावेशन, उपनाम, पेशा आ स्मृतिक विराट सामूहिक कथा बनैत अछि।

सूत्रक काव्यात्मकता

'फलाँ सुत', 'फलाँसँ दौ', 'अपरा', 'प्र.', 'ग्रामारम्भ'—भाषा अत्यल्प अछि। ई 'अल्पाक्षर, बहुअर्थ' शैली पाठककेँ रिक्तस्थान भरबाक लेल बाध्य करैत अछि। एकटा स्त्रीक नाम नहि, केवल ओकर गाँव; एक राजाक उपाधि अत्यन्त दीर्घ; एक विद्वानक नामक बाद 'अयाची'; एक शाखाक बाद 'लुप्त' । एहि असमान विवरणमे समाजक मूल्य–क्रम प्रकट होइत अछि।

उपनामक कथा

'सर्वज्ञ गरीब', 'आँखी', 'नहरा', 'वागीश', 'अयाची'—नाम स्वयं सूक्ष्म कथा अछि। औपचारिक वंशावली लोकनामकेँ स्थान देत अछि, तखन अभिलेखक कठोरता मानवीय होइत अछि। घरक नाम, विद्वत् उपाधि, राजकीय सम्मान, पेशा—सभ व्यक्तिक सामाजिक 'चरित्र' क एक पंक्ति बनैत अछि।

समयक सम्पादन

पञ्जीमे १८५६क नकलनवीस तिथि, २००३क विवाह, २००८क संपादन आ प्राचीन राजवंश एक साथ रहैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ ई बहुकालिक पाठ अछि—पुरान पृष्ठ पर नवा जीवन लिखल जाइत रहल। एहि बहुकालिकता कैं आधुनिक सम्पादनमे मिटा कऽ 'साफ कालक्रम' बनायब स्रोतक प्रकृति बिगाड़त।

'शब्दशास्त्रम्' आ पञ्जीसँ कथा

गङ्गेश सम्बन्धी वंशावली–विवाद पर आधारित मैथिली कथा 'शब्दशास्त्रम्' देखबैत अछि जे अभिलेख आधुनिक कल्पनाशील साहित्यकैं प्रेरित कऽ सकैत अछि। अभिलेखीय तथ्य आ कथाअलग विधा अछि; साहित्य ऐतिहासिक रिक्ति पर कल्पना करि सकैत अछि, मुदा शोध–आलेखकैं कल्पना आ प्रमाणक सीमा स्पष्ट राखबाक चाही।

२७. समेकित निष्कर्षः पञ्जी एकटा जीवित सामाजिक डेटा-संस्कृति

मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्धक महत्त्व केवल ओकर प्राचीनता नहि। ओकर वास्तविक महत्त्व संरचनामे अछि। गोत्र, प्रवर, मूल, मूलग्राम, बीजी पुरुष, उटेढ़, मातृग्राम, दौ/द्वौ, शाखा, दूषण, विवाह–कोलोफोन, पेशागत उपाधि, ग्राम–कोड—सभ मिलि एकटा बहुस्तरीय सामाजिक स्मृति बनबैत अछि।

ई स्मृति विवाह नियमन करैत छल, सामाजिक श्रेणी बनबैत छल, राज्य आ विद्वान परिवारक सम्बन्ध बचबैत छल, प्रवास चिन्हित करैत छल, नाम आ भाषाक परिवर्तन दर्ज करैत छल, कतेको हाशियाक सम्बन्धकैं 'दूषण' क रूपमे सही, नष्ट होयसँ बचबैत छल, आ आधुनिक विश्वविद्यालय/नौकरशाही धरि परिवारक रूपान्तरण देखबैत छल।

पञ्जीक आलोचना सेहो ओतबे जरूरी अछि। जातिगत श्रेणी, स्त्रीक नामगत अनुपस्थिति, 'दूषण' क कलंककारी भाषा, धन/प्रतिष्ठाक सम्भावित हस्तक्षेप, प्रसिद्ध व्यक्तिसँ नाम–समानताक अतिशयोक्ति, जीनोम–रूपकक वैज्ञानिक सीमा, तिथि–विरोध, अपूर्ण शाखा—ई सभ ओकर अध्ययनक हिस्सा अछि, बाधा नहि। आलोचनात्मक पढ़ाइ पञ्जीकैं कमजोर नहि करैत; ओकरा ऐतिहासिक स्रोत रूपमे बेसी विश्वसनीय बनबैत अछि।

डिजिटल युगमे सभसँ उपयोगी भविष्य एहन अछि जतए मूल मिथिलाक्षर छवि, देवनागरी लिप्यन्तरण, ग्राम/नाम सामान्यीकरण, सम्बन्धित डेटाबेस, पञ्जीकारक मौखिक ज्ञान, गोपनीयता–नीति आ आलोचनात्मक टिप्पणी एक संग उपलब्ध हो। एहन परियोजना वंश खोजबामे सहायक होएत, मुदा ओहूसँ आगे—मिथिलाक सामाजिक इतिहास, भाषाविज्ञान, नामविज्ञान, प्रवासन, राजनीतिक इतिहास, ज्ञान–परम्परा, स्त्री–अध्ययन आ डिजिटल मानविकी लेल दीर्घकालीन आधार बनि सकैत अछि।

अन्तिम सूत्र पञ्जीकैं न अचूक विज्ञान मानल जाए, न केवल जातिगत अवशेष। ओ एकटा ऐतिहासिक सामाजिक प्रौद्योगिकी अछि—जकर भीतर स्मृति, नियम, सत्ता, परिवार, भूगोल आ ज्ञान शताब्दीसँ एक–दोसरक संग लिखाइत रहल।

बिबलियोग्राफी

प्राथमिक ग्रन्थ आ अभिलेख

दूषण–पञ्जी। मिथिलाक्षर मूल पाण्डुलिपि–संग्रह; ताड़पत्र, छाल/कागजक प्रतिलिपि तथा डिजिटाइज्ड छवि–संग्रह। सार्वजनिक डिजिटल विमोचन २००९।

देवानन्द पञ्जी। मैथिल ब्राह्मण वंशावली रजिस्टर; विशिष्ट प्रविष्टि ३०/५, ३९/२, ३३९/३ आदि स्रोत–रिपोर्टमे उद्धृत।

गजेन्द्र ठाकुर (सम्पा.) । पञ्जी–प्रबन्ध, खण्ड १–२ तथा सम्बन्धित प्राचीन पञ्जी/नगराम खण्ड। विदेह प्रकाशन/श्रुति प्रकाशन परम्पराक डिजिटल–मुद्रित संस्करण।

गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा, विद्यानन्द झा। जीनोम मानचित्रण (४५० ई.–२००९ ई.): मिथिलाक पञ्जी–प्रबन्ध। खण्डानुसार सम्पादित प्रकाशन, २०१२क संस्करणक उल्लेख स्रोत–संग्रहमे अछि।

मूलग्राम पञ्जी, खण्ड १–७; प्राचीन पञ्जी; मोहनानन्द झा शाखा–पञ्जी। पञ्जी–परम्पराक मूल/शाखा अभिलेख।

कुमारिल भट्ट। तन्त्रवार्त्तिक। समूह–लेख्य सम्बन्धी प्राचीन सन्दर्भक स्रोत।

मनुस्मृति। सपिण्ड, विवाह आ वंशसम्बन्धी धर्मशास्त्रीय सूत्र।

याज्ञवल्क्यस्मृति। सपिण्ड/विवाह सम्बन्धी धर्मशास्त्रीय आधार।

वाल्मीकि रामायण। विवाहक समय कुल–वंश उद्घोष सम्बन्धी स्रोत–उद्धरण।

ऋग्वेद–संहिता। सन्तति, वंश आ अमृतत्व सम्बन्धी स्रोत–उद्धरण।

बृहद्ब्रह्मपुराण। सन्तान–द्वारा वंश–निरन्तरता सम्बन्धी उद्धरण।

ज्योतिरीश्वर ठाकुर। वर्णरत्नाकर। कर्णाटकालीन मिथिला आ सांस्कृतिक इतिहासक प्रमुख ग्रन्थ।

इतिहास, दर्शन, वंशावली आ समाज-अध्ययन

दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य। मिथिलामे नव्य–न्यायक इतिहास। १९५८। गङ्गेश उपाध्याय तथा नव्य–न्याय परम्परासम्बन्धी अध्ययन।

अंशुमान पाण्डेय। मध्यकालीन मिथिलामे ब्राह्मण पहचानक पुनर्गठन: उत्तर बिहारक मैथिल ब्राह्मणक जातीय पहचानक उद्गम। मिशिगन विश्वविद्यालयक शोधप्रबन्ध, २०१४।

स्टीफन फिलिप्स। तत्त्वचिन्तामणिक ज्ञानमीमांसात्मक सत्यपर विमर्शक रत्न: पूर्ण टीकायुक्त अनुवाद। ब्लूम्सबरी अकादमिक, २०२०।

वी. पी. भट्ट। तत्त्वचिन्तामणि: शब्द, प्रत्यक्ष, अनुमान, ईश्वरानुमान आ उपमान खण्डक अंग्रेजी अनुवाद। चारि खण्ड, ईस्टर्न बुक लिंकर्स, दिल्ली, २००५–२०२५।

जी. पी. मर्डोक। सामाजिक संरचना। १९४९। तुलनात्मक नातेदारी–अध्ययन।

डब्ल्यू. एच. आर. रिवर्स। नातेदारी आ सामाजिक संगठन। १९१४।

लुई आंरी। पुरान जेनेवा परिवार। १९५६। ऐतिहासिक जनसांख्यिकी आ परिवार–पुनर्निर्माणक अध्ययन।

ई. ए. रिग्ली (सम्पा.) । अंग्रेजी ऐतिहासिक जनसांख्यिकीक परिचय। १९६६।

फ्रांस्वाज जोनाबेन्द। परिवार आ नातेदारी पर नृवैज्ञानिक दृष्टि। १९८६।

लुई ड्यूमोँ। होमो हाइरार्किकस: जाति–व्यवस्था आ ओकर निहितार्थ। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, १९७०।

अर्विंग गॉफमैन। कलंक: क्षतिग्रस्त सामाजिक पहचानक प्रबन्धन पर टिप्पणी। १९६३।

मौरिस हाल्बवाक्स। सामूहिक स्मृति पर। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, १९९२।

पॉल कॉनर्टन। समाज कोना स्मरण करैत अछि। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, १९८९।

मार्सेल मॉस। दान पर निबन्ध। १९२५।

रॉबर्ट के. मर्टन। विज्ञानक समाजशास्त्र। शिकागो विश्वविद्यालय प्रेस, १९७३।

पियेर नोरा (सम्पा.) । स्मृतिक स्थान। तीन खण्ड, गालिमार, १९८४–१९९२।

क्लोद लेवी–स्ट्रॉस। नातेदारीक प्राथमिक संरचना। विवाह–सन्धि आ नातेदारीक तुलनात्मक सिद्धान्त।

गजेन्द्र ठाकुर। 'शब्दशास्त्रम्' । मैथिली कथा; अंग्रेजी अनुवाद 'शब्दक विज्ञान' साहित्यिक पत्रिकामे २०१४ मे प्रकाशित।

स्रोत-अ◌ॉडिट आ समेकन प्रतिवेदन

ऑडिटक पद्धति

ज़िप भीतरक सभ २० वर्ड फाइल अलग निकालि अनुच्छेद आ तालिका–कोष्ठक सहित पाठ–परीक्षण कएल गेल। प्रारम्भिक स्रोत–संग्रह लगभग १, २५, ८१४ शब्दक छल (शब्द–विभाजन पद्धति अनुसार थोड़ा अन्तर सम्भव) । बारम्बार एकहि सिद्धान्त, गोत्र–सूची, विवाह–नियम, पञ्जी–प्रकार, इतिहासक कथा आ डिजिटल परियोजना अलग रिपोर्टमे पुनरावृत्त छल। समेकनमे**समानार्थी पुनरावृत्ति एक बेर**राखल गेल, मुदा हर फाइलक विशिष्ट तथ्य, उदाहरण, विवाद, स्थान, व्यक्ति, खण्ड/ब्लॉक आ आलोचनात्मक बिन्दु विषयानुसार समाहित कएल गेल।

मूल फाइलसभमे कुल ५४८ सुपरस्क्रिप्ट–रन भेटल—मुख्यतः प्रश्नोत्तर आ रिपोर्ट ०१–०३क संदर्भ–संख्या। समेकित आलेख नवा दस्तावेज रूपमे बनाओल गेल अछि; एहि कारण सुपरस्क्रिप्ट हटाओल गेल अछि आ पुस्तक–सन्दर्भ बिबलियोग्राफीमे सामान्य रूपेँ देल गेल अछि। मूल प्रतिवेदनसभमे भेटल कार्य–प्रक्रिया सम्बन्धी असम्बद्ध वाक्य, समाप्ति–सूचक पंक्ति आ आलेख–विषयसँ असम्बद्ध संपादकीय निर्देश अंतिम आलेखमे नहि राखल गेल।

२० स्रोत फाइल क कवरेज -सूची

क्रम

स्रोत फाइल

स्रोत फाइल

स्रोत शब्द (लगभग)

स्रोत शब्द (लगभग)

समेकित आलेखमे मुख्य स्थान

समेकित आलेखमे मुख्य स्थान

कवरेज टिप्पणी

कवरेज टिप्पणी

१

० — आरम्भिक पञ्जी–विमर्श

० — आरम्भिक पञ्जी–विमर्श
० — आरम्भिक पञ्जी–विमर्श

३, १८८

३, १८८

§२–१०, §२३–२५

§२–१०, §२३–२५

मूल पञ्जी–इतिहास, विवाह–नियम, सामाजिक श्रेणी, डिजिटल प्रश्न; विशिष्ट तथ्य सुरक्षित, पुनरावृत्ति हटाओल।

मूल पञ्जी–इतिहास, विवाह–नियम, सामाजिक श्रेणी, डिजिटल प्रश्न; विशिष्ट तथ्य सुरक्षित, पुनरावृत्ति हटाओल।

२

०० — दूषण पञ्जी

०० — दूषण पञ्जी
०० — दूषण पञ्जी

६, ०७४

६, ०७४

§९–११

§९–११

९७ दूषण तालिका, गङ्गेश प्रसंग, स्त्री/हाशिया, पुनर्समावेशन; प्रक्रिया–वाक्य हटाओल।

९७ दूषण तालिका, गङ्गेश प्रसंग, स्त्री/हाशिया, पुनर्समावेशन; प्रक्रिया–वाक्य हटाओल।

३

०१ — दूषण–पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

०१ — दूषण–पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन
०१ — दूषण–पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

४, १६७

४, १६७

§३–१०, §२१–२५

§३–१०, §२१–२५

सात पञ्जी, ३२ पूर्वज, गोत्र–प्रवर, तुलनात्मक सिद्धान्त, दूषण प्रतिअभिलेख, ज्ञानमीमांसा।

सात पञ्जी, ३२ पूर्वज, गोत्र–प्रवर, तुलनात्मक सिद्धान्त, दूषण प्रतिअभिलेख, ज्ञानमीमांसा।

४

०२ — दूषण–पञ्जी शोध–प्रतिवेदन

०२ — दूषण–पञ्जी शोध–प्रतिवेदन

०२ — दूषण–पञ्जी शोध–प्रतिवेदन

४, ५२७

४, ५२७

§९–११, §२१–२२, बिबलियोग्राफी

§९–११, §२१–२२, बिबलियोग्राफी

नृविज्ञान, जाति–गतिशीलता, गङ्गेश वंश, स्मृति/कलंक, प्राथमिक/द्वितीयक सन्दर्भ।

नृविज्ञान, जाति–गतिशीलता, गङ्गेश वंश, स्मृति/कलंक, प्राथमिक/द्वितीयक सन्दर्भ।

५

१.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

१.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

१.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

४, ६८१

४, ६८१

§२–८, §२१–२५

§२–८, §२१–२५

वंश–सिद्धान्त, मूल/बीजी पुरुष, उटेढ़, पेशेवर पञ्जीकार, सामाजिक श्रेणी, आधुनिक संकट।

वंश–सिद्धान्त, मूल/बीजी पुरुष, उटेढ़, पेशेवर पञ्जीकार, सामाजिक श्रेणी, आधुनिक संकट।

६

१.१.१ — प्राचीन पञ्जी खण्ड १ शोध–प्रतिवेदन

१.१.१ — प्राचीन पञ्जी खण्ड १ शोध–प्रतिवेदन

१.१.१ — प्राचीन पञ्जी खण्ड १ शोध–प्रतिवेदन

४, ००८

४, ००८

§१२

§१२

पृष्ठ १–६५, हलायुध, विद्वत् श्रृंखला, १२२ गाँव, मातृका–चक्र, १८५६ कोलोफोन।
पृष्ठ १–६५, हलायुध, विद्वत् श्रृंखला, १२२ गाँव, मातृका–चक्र, १८५६ कोलोफोन।

७

१.१.२ — पञ्जी खण्ड १ पृष्ठ ६६–३४७ शोध–प्रतिवेदन
१.१.२ — पञ्जी खण्ड १ पृष्ठ ६६–३४७ शोध–प्रतिवेदन
१.१.२ — पञ्जी खण्ड १ पृष्ठ ६६–३४७ शोध–प्रतिवेदन

४, ९७७
४, ९७७

§१३
§१३

करमहा, रतौली–दरिहरा, अवलम्ब–सरस्वती, माधव सिंह, नेपाल, २००३–०४ विवाह।
करमहा, रतौली–दरिहरा, अवलम्ब–सरस्वती, माधव सिंह, नेपाल, २००३–०४ विवाह।

८

१.१.३ — पञ्जी खण्ड २ पृष्ठ ३४८–६९० शोध–प्रतिवेदन
१.१.३ — पञ्जी खण्ड २ पृष्ठ ३४८–६९० शोध–प्रतिवेदन
१.१.३ — पञ्जी खण्ड २ पृष्ठ ३४८–६९० शोध–प्रतिवेदन

४, ६०१
४, ६०१

§१४
§१४

सोदरपुर केन्द्र, राजवंश, के.सी.आई.ई., स्वीडेन विवाह, विश्वविद्यालय, कवि, आधुनिकता।
सोदरपुर केन्द्र, राजवंश, के.सी.आई.ई., स्वीडेन विवाह, विश्वविद्यालय, कवि, आधुनिकता।

९

१.२.१ — जीनोम पञ्जी–प्रबन्ध शास्त्रीय प्रतिवेदन
१.२.१ — जीनोम पञ्जी–प्रबन्ध शास्त्रीय प्रतिवेदन
१.२.१ — जीनोम पञ्जी–प्रबन्ध शास्त्रीय प्रतिवेदन

४, ७२४
४, ७२४

§१५, §२१–२५
§१५, §२१–२५

उपटीप, सामाजिक नेटवर्क, पितृवंश/मातृसम्बन्ध, जीनोम रूपक, आधुनिक रूपान्तरण।
उपटीप, सामाजिक नेटवर्क, पितृवंश/मातृसम्बन्ध, जीनोम रूपक, आधुनिक रूपान्तरण।

१०

१.२.२ — मिथिला पञ्जीक जीनोम–विमर्श प्रतिवेदन

१.२.२ — मिथिला पञ्जीक जीनोम–विमर्श प्रतिवेदन

१.२.२ — मिथिला पञ्जीक जीनोम–विमर्श प्रतिवेदन

५, ८२०

५, ८२०

§१५, §१९, §२३–२५

§१५, §१९, §२३–२५

लोआम–सुगौना, भौर–राजग्राम, शिक्षित वंश, २००८ तिथि, सामाजिक आलोचना; असम्बद्ध कार्य–प्रक्रिया वाक्य हटाओल।

लोआम–सुगौना, भौर–राजग्राम, शिक्षित वंश, २००८ तिथि, सामाजिक आलोचना; असम्बद्ध कार्य–प्रक्रिया वाक्य हटाओल।

११

१.३.१ — नगराम पञ्जी विश्लेषण

१.३.१ — नगराम पञ्जी विश्लेषण

१.३.१ — नगराम पञ्जी विश्लेषण

५, ८३१

५, ८३१

§१६

§१६

ब्लॉक १–२२५, लोकनाम, यन्त्रज्ञ, न्यायाधीश/आई.ए.एस./सांसद, पेशा, प्रवास, नामविज्ञान।

ब्लॉक १–२२५, लोकनाम, यन्त्रज्ञ, न्यायाधीश/आई.ए.एस./सांसद, पेशा, प्रवास, नामविज्ञान।

१२

१.३.२ — पञ्जिका–नगरामी विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन

१.३.२ — पञ्जिका–नगरामी विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन

१.३.२ — पञ्जिका–नगरामी विश्लेषणात्मक प्रतिवेदन

५, ९५६

५, ९५६

§१७

§१७

ब्लॉक २२६–३५२, समौली, बलिराजपुर, वागीश, वकील, लेखक, आई.पी.एस./आई.ए.एस. बेटी, जूरी।

ब्लॉक २२६–३५२, समौली, बलिराजपुर, वागीश, वकील, लेखक, आई.पी.एस./आई.ए.एस. बेटी, जूरी।

१३

१.३.३ — पञ्जी–प्रबन्ध विश्लेषण

१.३.३ — पञ्जी–प्रबन्ध विश्लेषण

१.३.३ — पञ्जी–प्रबन्ध विश्लेषण

४, १७३

४, १७३

§१८

§१८

ब्लॉक ३५९–४६६, विद्वत् समूह, राजवंश, ओइन/सिमरौंगढ़, नाम–पेशा–भूगोल, क्रॉस–रेफरेंस।

ब्लॉक ३५९–४६६, विद्वत् समूह, राजवंश, ओइन/सिमरौंगढ़, नाम–पेशा–भूगोल, क्रॉस–रेफरेंस।

१४

२.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

२.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

२.० — पञ्जी वंशावली–सिद्धान्त अध्ययन

५, ६८७

५, ६८७

§४–८, §२०–२५

§४–८, §२०–२५

डेटा–स्तर, दस्तावेजी प्रमाण, जनसांख्यिकी, सामाजिक कानून, कम्प्यूटेशनल वंशावली, सीमा।

डेटा–स्तर, दस्तावेजी प्रमाण, जनसांख्यिकी, सामाजिक कानून, कम्प्यूटेशनल वंशावली, सीमा।

१५

२.१ — पञ्जी–प्रबन्ध शोध–प्रतिवेदन

२.१ — पञ्जी–प्रबन्ध शोध–प्रतिवेदन

२.१ — पञ्जी–प्रबन्ध शोध–प्रतिवेदन

४, २४२

४, २४२

§२१–२५

§२१–२५

सामाजिक स्मृति, सन्धि–सिद्धान्त, श्रेणी, क्रॉस–रेफरेंस, वैश्विक तुलना, डिजिटलीकरणक दाँव।

सामाजिक स्मृति, सन्धि–सिद्धान्त, श्रेणी, क्रॉस–रेफरेंस, वैश्विक तुलना, डिजिटलीकरणक दाँव।

१६

प्रश्नोत्तर–संग्रह

प्रश्नोत्तर–संग्रह

प्रश्नोत्तर–संग्रह

२४, १२५

२४, १२५

सम्पूर्ण §२–२५

सम्पूर्ण §२–२५

व्यापक प्रश्नोत्तरक विशिष्ट नियम, २० गोत्र, १६ छठ्ठी, सामाजिक विवाद, सुधार, आधुनिक व्याख्या; दोहराव समेकित।

व्यापक प्रश्नोत्तरक विशिष्ट नियम, २० गोत्र, १६ छठ्ठी, सामाजिक विवाद, सुधार, आधुनिक व्याख्या; दोहराव समेकित।

१७

रिपोर्ट ०१

रिपोर्ट ०१

रिपोर्ट ०१

४, ०८९

४, ०८९

§१–८, §२५

§१–८, §२५

मिथिलाक भू–सीमा, पाल–कर्णाट पृष्ठभूमि, हरिनाथ/लखिमा कथा, गोत्र–मूल तालिका, श्रेणी–विवरण।

मिथिलाक भू–सीमा, पाल–कर्णाट पृष्ठभूमि, हरिनाथ/लखिमा कथा, गोत्र–मूल तालिका, श्रेणी–विवरण।

१८

रिपोर्ट ०२

रिपोर्ट ०२

रिपोर्ट ०२

९, २८५

९, २८५

§२–२५

§२–२५

अनेक पूर्व रिपोर्टक विस्तृत पुनरावृत्ति + दमन/दूषण, सिद्धान्त, तालिका; अनन्य तथ्य समाहित, पुनरावृत्ति हटाओल।

अनेक पूर्व रिपोर्टक विस्तृत पुनरावृत्ति + दमन/दूषण, सिद्धान्त, तालिका; अनन्य तथ्य समाहित, पुनरावृत्ति हटाओल।

१९

रिपोर्ट ०३

रिपोर्ट ०३

रिपोर्ट ०३

३, ७८४

३, ७८४

§१९, §२३–२५

§१९, §२३–२५

पूर्णिया/पूर्वी मिथिला, जहानपुर १७०८, स्थानीय विद्वान/स्वतन्त्रता–स्मृति, पञ्जीकार संकट, संरक्षण।

पूर्णिया/पूर्वी मिथिला, जहानपुर १७०८, स्थानीय विद्वान/स्वतन्त्रता–स्मृति, पञ्जीकार संकट, संरक्षण।

२०

रिपोर्ट २

रिपोर्ट २

रिपोर्ट २

११, ०७५

११, ०७५

§३–८, §२०–२५

§३–८, §२०–२५

शिक्षण–मार्गदर्शिका शैलीक पञ्जी–सिद्धान्त, २० गोत्र, १६७ मूल, विवाह–नियम, पहिल उदाहरण–तालिका; दोहराव समेकित।

शिक्षण–मार्गदर्शिका शैलीक पञ्जी–सिद्धान्त, २० गोत्र, १६७ मूल, विवाह–नियम, पहिल उदाहरण–तालिका; दोहराव समेकित।

विषयगत क्रॉस-चेक

पञ्जीक उद्गम, समूह–लेख्य, संस्थानीकरण, हरिनाथ–लखिमा कथा: समाहित।

गुणाकर झा, शंकरदत्त, विजयदत्त तथा पञ्जीकार संस्था: समाहित।

सात प्रकारक पञ्जी: समाहित।

२० गोत्र, प्रवर, १६७ मूल, ३४/३५ प्रमुख मूल, बीजी पुरुष: समाहित।

३२ पूर्वज, १६ छठ्ठी, ५/७ आ ५/६ विवाद, काठमामा आदि नियम: समाहित।

श्रोत्रिय/योग्य/पञ्जीबद्ध/वंशधर/जयवार, शाखा–पञ्जी, सामाजिक अवनति/उन्नयन, बिकौआ, सुधार–कमिटी: समाहित।

मिथिलाक्षर, पाण्डुलिपि–संरक्षण, नकल, डिजिटल संस्करण: समाहित।

दूषण–पञ्जीक ९७ तालिका, चर्मकारिणी, यवन, देवदासी, विधवा, गुरु–पत्नी, पथ–पतिता, अज्ञात कुल, पुनर्समावेशन: समाहित।

गङ्गेश उपाध्याय सम्बन्धी विवाद आ विद्वत्–दमनक आरोप: स्रोत–दाबी रूपमे समाहित।

स्त्रीक संरचनात्मक उपस्थिति/नामगत अनुपस्थिति, विशेष स्त्री–नाम, आधुनिक पेशागत बेटी: समाहित।

प्राचीन पञ्जी खण्ड १, पृष्ठ १–६५: मुख्य गाँव, हलायुध, विद्वान, पद, मातृका–चक्र, कोलोफोन: समाहित।

पृष्ठ ६६–३४७: करमहा, रतौली–दरिहरा, अवलम्ब–सरस्वती, माधव सिंह, मनसबदार, नेपाल, आधुनिक विवाह: समाहित।

पृष्ठ ३४८–६९०: सोदरपुर, राजवंश, औपनिवेशिक सम्मान, स्वीडेन/अन्तरजातीय विवाह, विश्वविद्यालय, कवि, पेशा: समाहित।

जीनोम/उपटीप खण्ड: लोआम–सुगौना, भौर–राजग्राम, खण्डबला, न्याय–विद्वान, २००८ तिथि: समाहित।

नगराम १–२२५: सन्दहपुर, खांगुड़, कन्हौली, रैयाम, रोहड़, पेशा, नाम, प्रवास: समाहित।

नगरामी २२६–३५२: समौली, बलिराजपुर, आधुनिक डिग्री, वकील, लेखक, आई. पी. एस./आई. ए. एस., स्त्री उपलब्धि: समाहित।

नगराम ३५९–४६६: विचाढ़ी, परहट, मंगौरी, पिलखवाड़, बैगनी, ओइन राजवंश, नहस, चानपुरा, परिधीय गाँव: समाहित।

पूर्णिया/पूर्वी मिथिला, स्थानीय मन्दिर/विद्वान/स्वतन्त्रता स्मृति: समाहित।

पञ्जीक सूत्र–भाषा, द्विनाम, पेशागत उपाधि, नामविज्ञान, स्थाननाम: समाहित।

सामाजिक स्मृति, शक्ति, तुलनात्मक वंशावली, नव्य–न्याय ज्ञानमीमांसा: समाहित।

आधुनिक संकट, भौतिक संरक्षण, आर्थिक संकट, गोपनीयता, डिजिटल डेटा–मॉडल: समाहित।

स्रोत–विरोध, तिथि–विरोध, गोत्र/मूल संख्या, जीनोम दाबी, प्रसिद्ध नामक पहचान, पक्षपात: स्पष्ट आलोचनात्मक रूपमे समाहित।

९. "कुसमा-सलहेस": लोकमहागाथा, प्रतिरोध आ प्रेमक रंगदृष्टि

सारांश

शीर्षक-नाटक "कुसमा-सलहेस" क ई विवेचन सलहेस-नाच, लोकमहागाथा, वंचित समुदायक सांस्कृतिक स्मृति, नायिका कुसमाक आत्मनिर्णय, राजनीतिक प्रतिरोध, बहुरसात्मकता आ प्रेमक व्यापक मानवीय अर्थकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। तुलनात्मक आलोचना नाटकक लोकस्रोत, महाकाव्यात्मक विस्तार, सबाल्टर्न चेतना आ रंगमंचीय प्रतिमाकेँ परस्पर सम्बन्धमे देखैत अछि।

बीजशब्द: कुसमा-सलहेस; सलहेस-नाच; लोकमहागाथा; प्रतिरोध; सबाल्टर्न; प्रेम; लोक-स्मृति

१. परिचय, कथा-संरचना आ ऐतिहासिक-सांस्कृतिक सन्दर्भ

कुणालक तृतीय आ सर्वाधिक विस्तृत नाटक 'कुसमा-सलहेस' संग्रहक हृदय-स्थान रखैत अछि—लगभग ७० पृष्ठक ई नाटक कलात्मक, वैचारिक आ सांस्कृतिक, तीनू दृष्टिसँ संग्रहक केन्द्र-बिन्दु थिक। एकर आधार मिथिलाक दुसाध समुदायक लोक-देवता-नायक 'राजा सलहेस' क महागाथा आ ओहि गाथा पर आधारित लोक-रंगमंच-परम्परा 'सलहेस नाच' थिक।

कथाक भूगोल विराट अछि—महिसौथा, मोरंग, बाघगढ़, रेवा-दाह, भोट/तिब्बत, समदागढ़, पकड़िया, गढ़-तरेगना, रंगीलागढ़—ई स्थान-नाम भारत-नेपाल-तिब्बत धरिक एक भौगोलिक-राजनीतिक संसार रचैत अछि। पात्र-वर्ग सेहो महाकाव्यात्मक अछि—नायक सलहेस, नायिका कुसमा (मालिन), तथा हिरामन (सूग्गा-कथावाहक), विपटा (विदूषक), ठनका (बाघ), बनका (भालु), कुनटा (वनचर), देवी दुर्गा, अनेक राजा-सैन्य-शत्रु।

नाटकक पाँच मुख्य नाट्य-क्रम—(१) पूर्वरंग: समन्वयवादी सुमिरन आ नाटककेँ आरम्भ करबाक मेटाथिएट्रिकल प्रसंग (विपटा-हिरामन द्वारा); (२) कुसमाक परिचय आ आत्म-शुद्धि-साधना; (३) सलहेसक वीरता, पहिल भेंट, आ दुर्गाक आशीर्वाद; (४) भोट-आक्रमण, षड्यंत्र आ कारागार-बन्धन; (५) स्वाधीन-चेतनाक घोषणा, लोक-एकजुटतासँ विजय, आ प्रेम-तत्त्वक समापन-घोषणा।

२. भारतीय नाट्य-सिद्धांत

२.१ सलहेस-नाच: लोकनाट्यक स्वायत्त सौन्दर्यशास्त्र

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र संस्कृत-परम्पराक भीतरसँ नाटकक सिद्धांत रचैत अछि। मुदा मिथिलाक 'सलहेस नाच' एक स्वायत्त लोक-नाट्य परम्परा थिक जेकर अपन प्रदर्शन-व्याकरण (performance grammar) अछि। एहिमे—समाजीक सामूहिक गायन (कोरसक भूमिका), सुमिरन (लोकनाट्यक मंगलाचरण जे हिन्दू, मुस्लिम, आ जनजातीय देवताक एकसंग आह्वान करैत अछि), विपटाक विदूषक-भूमिका, हिरामन-सूग्गाक कथावाहक-भूमिका आ सलहेसक प्रवेशसँ पूर्व जय-जयकार—ई सभ लोकनाट्यक अपन नाटकीय संस्कार (ritual performance elements) थिक।

कुणाल एहि सम्पूर्ण लोक-व्याकरणकेँ प्रामाणिकतासँ अपनेने छथि—शुद्धि, क्रम, गायन, सम्बोधन—सभ लोक-परम्पराक अनुरूप। एहि अर्थमे ई नाटक अभिजन-रंगमंचक लोकनाट्य-अनुकरण नहि, अपितु लोकनाट्यक साहित्यिक पुनर्प्रस्तुति थिक—एहि भेदकेँ चिन्हनाइ आवश्यक अछि।

२.२ रस-महोत्सव: बहुरंगी रस-संरचना

संस्कृत काव्यशास्त्रक परम्पराक अनुसार उत्कृष्ट नाट्यकृतिक एक 'प्रधान रस' होएबाक चाही जकर सेवामे अन्य रस सहायक होइत अछि। 'कुसमा-सलहेस' क जटिलता ई थिक जे एतय एकल प्रधान रस नहि, रसक एक महोत्सव उपस्थित अछि।

शृंगार (कुसमा-सलहेसक प्रेम—राधा-कृष्णक लोक-प्रतिरूप; "ओ तँ किसुन गोसाँइ छिऐ, आ तों राधारानी"); वीर (सलहेसक युद्ध-पराक्रम, पराजित शत्रुपर दया—"हारि क' पड़ाइत सेना कें खिहारनाइ अनुचित"); अद्भुत (ठनका-बनका-हिरामनक अलौकिक उपस्थिति, दुर्गाक साक्षात्कार); करुण (असम्भव प्रेम—सलहेस विवाहित छथि, कुसमा मालिन छथि, जाति-सीमा बाधक); भक्ति (दुर्गाक आराधना, सुमिरनमे सर्व-धर्म-समन्वय); वीभत्स/भयानक (सूचोंगक षड्यंत्र, कारागार-अत्याचार) ।

भरत रसक ओ समन्वय स्वीकार करैत छथि जाहिमे 'अंगी-रस' (प्रधान) आ 'अंग-रस' (सहायक) मिलि एक जटिल रस-अनुभव उत्पन्न करैत अछि। एहि नाटकमे शृंगार आ वीर परस्पर 'अंगी-रस' बनि जाइत अछि—दुनूकेँ एक-दोसरक पूरक बनाबैत दुर्गाक घोषणा मध्यमे अबैत अछि—"मीलिक' जे कुसमा सँ आब तों जन-मन मे विचरण करही / मात्र लोकक सुख लेल जीवन अरपन करही" । एतय प्रेम (शृंगार) स्वयं वीर-धर्मक प्रेरणा-स्रोत बनि जाइत अछि।

२.३ सबाल्टर्न-सौन्दर्यशास्त्र: कैनन-विरोध

संस्कृत नाट्यशास्त्रक नायक सामान्यतः 'राजर्षि' वा 'दिव्य' कुलक होइत अछि। एहि परम्परामे दुसाध नायक नहि। कुणालक सभसँ साहसिक नाट्य-निर्णय यैह थिक जे ओ एक सबाल्टर्न (सामाजिक पदक्रममे अधीनस्थ) समुदायक महागाथाकेँ 'महाकाव्यात्मक नाटक' क केन्द्रमे रखैत छथि।

मैथिली काव्य-परम्परामे एक दिस ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावलीकार विद्यापतिक राधा-कृष्ण शृंगार-परम्परा अछि, आ दोसर दिस शिवसिंह-युगक संस्कृत-अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुरक दरबारी-साहित्यिक परम्परा—दुनूकेँ एक व्यक्ति वा एक स्रोत-धारा मानब उचित नहि। कुणाल एहिसँ भिन्न मार्ग चुनैत छथि—कुसमाक 'रधिया' (राधाक लोक-रूप) आ सलहेसक 'किसुन गोसाँइ' (कृष्णक लोक-रूप) । ई प्रतीकात्मक प्रतिस्थापन एहि बातक नाट्य-घोषणा थिक जे दुसाध-लोक-परम्पराक प्रेम-कथा मैथिली साहित्यक मुख्यधाराक समतुल्य—वस्तुतः ओकर जड़ि—थिक।

२.४ कुसमाक आत्म-शुद्धि: देशज योगशास्त्र

हिरामन-कुसमाक संवाद (दोसर दृश्य) मे एक उल्लेखनीय आत्म-शुद्धि-अनुक्रम अछि जे योगशास्त्रक लोक-रूपान्तरण थिक—"अपन घर बहारि लैह... इर्ष्या, घमंड, घृणा, लोभ आ मोह बहरेलै... करुणाक जल सँ नीपलौं... सिनेहक चानन सँ सुगन्धित केलहूँ।" ई शारीरिक-क्रिया नहि, आन्तरिक शुद्धिक एक भाव-यात्रा थिक। भारतीय दार्शनिक परम्परामे—विशेषतः भक्ति-परम्परामे—'हृदय-शुद्धि' (चित्त-विशुद्धि) केँ प्रेम-प्राप्तिक पूर्व-शर्त मानल जाइत अछि।

कुणाल एहि भक्ति-दर्शनकेँ एक हास्य-फलक पर प्रस्तुत करैत छथि—हिरामन पहिने पुरस्कार माँगैत अछि (सोना, हीराक हार, रूपाक बाटी), तखन मार्गदर्शन करैत अछि। ई लोक-रसिकता भक्ति-दर्शनकेँ 'सरल' नहि, 'सजीव' बनाबैत अछि।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ ग्रामशी: सबाल्टर्न इतिहास आ जैविक बुद्धिजीवी

इतालवी मार्क्सवादी विचारक आन्तोनियो ग्रामशी (Antonio Gramsci, १८९१–१९३७) अपन 'प्रिजन नोटबुक' (Prison Notebooks) मे 'सबाल्टर्न' (subaltern, अधीनस्थ/वंचित) समूहक इतिहासकेँ प्रभुत्ववादी इतिहास-लेखनक विकल्पक रूपमे प्रस्तुत कएलनि। ग्रामशी 'जैविक बुद्धिजीवी' (organic intellectual) कहैत छलाह ओहन व्यक्तिकेँ जे अपन समुदायक सांस्कृतिक अभिव्यक्तिकेँ उच्च साहित्यिक/बौद्धिक स्तर पर लऽ आबैत अछि।

एहि परिप्रेक्ष्यमे कुणाल मैथिली रंगमंचक एक जैविक बुद्धिजीवी छथि—दुसाध सलहेस-महागाथाकेँ, जे पहिने मात्र सलहेस-नाचक सीमित सामुदायिक प्रदर्शन-परम्परामे जीवित छल, ओ उठा क' विद्यापति भवनक आधुनिक रंगमंच पर लऽ आएल छथि। ई सांस्कृतिक अनुवाद (cultural translation) ग्रामशीक अर्थमे एक राजनीतिक कार्य थिक—सबाल्टर्न स्वर मुख्यधाराक सांस्कृतिक स्थलमे प्रवेश पाबैत अछि।

ग्रामशीक दृष्टिसँ सलहेसक कारागार-भाषण सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षण थिक—"हमर प्राण अहाँक मुट्ठी मे भ' सकैए सम्राट। मुदा हमर विचार आ भावना केँ बान्हल नै जा सकैए।" ग्रामशी 'सांस्कृतिक आधिपत्य' (cultural hegemony) क विरुद्ध जे प्रतिरोध-रणनीति बतबैत छलाह, सलहेसक यैह वक्तव्य ओकर एक लोक-नाट्य संस्करण थिक।

३.२ जादू-यथार्थवाद: लोक-विश्वास-दृष्टिक रंगमंचीय उपस्थिति

ग्रेट ब्रिटेन-कोलम्बियाई लेखक गार्सिया मार्केस (Gabriel García Márquez, १९२७–२०१४) आ भारतीय-ब्रिटिश लेखक सलमान रुश्दी (Salman Rushdie, जन्म १९४७) अपन कथा-लेखनमे 'जादू-यथार्थवाद' (magic realism) क प्रयोग कएलनि—जाहिमे अद्भुत/अलौकिक तत्त्व यथार्थक स्वाभाविक अंग बनि जाइत अछि, बिना कोनो विशेष आश्चर्य वा व्याख्याक।

एहि नाटकमे ठनका (बाघ) आ बनका (भालु) सलहेसक वार्तालाप-साथी छथि, हिरामन (सूग्गा) स्वर्ग-मर्त्यक बीच संदेशवाहक छथि, दुर्गा साक्षात् प्रकट होइत छथि आ लोक-नायककेँ आशीर्वाद दैत छथि—ई सभ दुसाध लोक-विश्वास-दृष्टिक स्वाभाविक तत्त्व अछि, कोनो 'चमत्कार' नहि। जादू-यथार्थवादी सिद्धांतक परिप्रेक्ष्यमे एहि तत्त्वकेँ 'magical' नहि, 'folk-cosmological real' (लोक-ब्रह्माण्ड-वास्तविक) कहनाइ अधिक सटीक हएत।

रुश्दीक एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत थिक जे जादू-यथार्थवाद तखन प्रभावी होइत अछि जखन लेखक स्वयं ओहि 'जादू' कें वास्तविक मानैत हो—कोनो बाहरी दृष्टिसँ थोपल अलंकरण नहि। कुणालक नाटकमे ई प्रामाणिकता अछि—ठनका-बनका, हिरामन, दुर्गा सभ कथाक संरचनाक अनिवार्य अंग छथि, सजावटी नहि।

३.३ ब्रेख्त: लेहरस्टुक (शिक्षण-नाटक) आ जन-राजनीति

ब्रेख्त (Brecht) अपन 'लेहरस्टुक' (Lehrstück, teaching play) क सिद्धांतमे मानैत छलाह जे रंगमंच एक स्पष्ट राजनीतिक-नैतिक सन्देशक संवाहक बनि सकैत अछि। एहि नाटकमे समाजी आ हिरामन-विपटाक माध्यमसँ अनेक 'शिक्षण-क्षण' उपस्थित अछि—सलहेसक 'भयमुक्त जीवनक मंत्र', दुर्गाक 'जन-मनमे विचरण आ लोक-हितक लेल जीवन-समर्पण' क आदेश।

मुदा कुणाल ब्रेख्तसँ एक महत्त्वपूर्ण बिन्दु पर भिन्न छथि—ब्रेख्त भावात्मक तादात्म्यसँ दूरी चाहैत छलाह; कुणाल प्रेम-भाव आ लोक-सेवाकें एकहि सिक्काक दू पट्टा मानैत छथि। लेहरस्टुकक बौद्धिक-राजनीतिक शिक्षण एतय श्रृंगार-भाव आ भक्ति-रसमे डूमल अछि—ई एक प्रकारे 'एमोशनल एपिक थिएटर' थिक जे ब्रेख्तीय श्रेणीसँ परे जाइत अछि।

३.४ होमी भाभा: सांस्कृतिक पहचान आ प्रतिरोध

इण्डियन-ब्रिटिश उत्तर-उपनिवेशवादी विचारक होमी भाभा (Homi Bhabha, जन्म १९४९) अपन 'द लोकेशन ऑफ कल्चर' (The Location of Culture) मे 'तृतीय-स्थल' (third space) आ सांस्कृतिक संकरता (hybridity) सन अवधारणा प्रस्तुत कएलनि—जाहिमे उपनिवेशित समूह उपनिवेशकारी प्रवचनकें आत्मसात करैत ओकर भीतरसँ ओकरा विघटित करैत अछि।

एहि नाटकमे सूचोंगक षड्यंत्र—सलहेसकें कुसमासँ अलग करबाक योजना—एक उपनिवेशकारी रणनीति थिक। ओ जनैत अछि जे कुसमाक 'सिनेह आ ज्ञान' सलहेसक शक्ति-स्रोत थिक। कुसमाकें अलग केलापर सलहेस कमजोर पड़त। यैह भाभाक 'सांस्कृतिक पहचान-नाश' (cultural identity erasure) थिक जे औपनिवेशिक शासन अवलम्बित करैत अछि। सलहेस एहि योजनाकें चीन्हि जाइ छथि आ घोषणा करैत छथि जे भावना आ विचार बन्धन नहि मानैत अछि।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ यी: धर्म-आचरण आ सैन्य-नैतिकता

चीनी नैतिक-दार्शनिक परम्परामे 'यी' (righteousness/duty) एक केन्द्रीय मूल्य थिक। कन्फ्यूशियस परम्परामे 'यी' क अर्थ थिक—कर्तव्य उचित प्रकारसँ निभाएब, भले ही ओ कठिन होइक। चीनी लोकनाट्य-महाकाव्यक सर्वप्रसिद्ध नायक 'गुआन यू' (Guan Yu / Guan Di) अपन 'यी' आचरणक लेल विख्यात छलाह—ओ अपन पराजित शत्रुकें सेहो सम्मान दैत छलाह।

सलहेसक यैह 'यी'-व्यवहार नाटकमे उपस्थित अछि—"हारि क' पड़ाइत सेना कें खिहारनाइ अनुचित बात भेलै" । ई मात्र कूटनैतिक व्यावहारिकता नहि, एक नैतिक-सैन्य आचरण-सिद्धांत थिक जे भारतीय क्षत्रिय-धर्म आ चीनी 'यी'-परम्परा दुनूसँ समर्थित अछि। गुआन यूक सन सलहेस सेहो अपन जनसाधारणक लेल एक लोक-देवता बनि जाइत छथि—युद्धक मैदानमे नहि, जनताक हृदयमे।

४.२ हुआलियान: नाटकीय पात्र-वर्गीकरण आ रंग-प्रतीक

चीनी क्लासिकल रंगमंच (जिंगजू/बेइजिंग ओपेरा) मे 'हुआलियान' (painted face) पात्र-प्रकार एक विशेष भूमिका थिक—जाहिमे विभिन्न रंगक मुखाकृति पात्रक नैतिक-चारित्रिक स्वभाव सूचित करैत अछि। लाल मुख = साहस आ निष्ठा (गुआन यू); नील/हरियर = दुर्जेय शक्ति; उज्जर = खलनायक/कुटिल; कारी = बलशाली/न्यायकारी।

एहि प्रतीक-व्यवस्थाकें 'कुसमा-सलहेस' क पात्र-वर्गमे अनुवाद कएल जा सकैत अछि। सलहेस = लाल हुआलियान (साहस-निष्ठा); सूचोंग = सफेद हुआलियान (कुटिल-षड्यंत्री); चूहड़मल्ल = नील (सैन्य-बल); कुसमा = 'तान' (नारी-भूमिका, परंतु शक्तिशाली—'वनदेवी'); हिरामन-विपटा = 'चोउ' (विदूषक); दुर्गा = 'उमेन' (divine appearance, shénmíng) । एहि वर्गीकरणसँ नाटकक पात्र-विन्यास एक सार्वभौम नाट्य-तर्क प्रदर्शित करैत अछि।

४.३ तियानमिंग: स्वर्गीय-आदेश आ नायकक धर्म

चीनी राजनीतिक-दार्शनिक परम्परामे 'तियानमिंग' (Mandate of Heaven / स्वर्गीय-आदेश) एकटा महत्त्वपूर्ण अवधारणा थिक—जे शासक अपन प्रजाक कल्याण करैत अछि, ओकरा 'तियानमिंग' प्राप्त अछि; जे ओकरा भ्रष्ट करैत अछि, ओकर 'तियानमिंग' नष्ट भ' जाइत अछि।

दुर्गाक आशीर्वाद एहि नाटकमे 'तियानमिंग' क अनुरूप थिक—देवी सलहेसकेँ 'मात्र लोकक सुख लेल जीवन अरपन करबाक आदेश दैत छथि। ई स्वर्गीय-आदेश सलहेसक शासन-शक्तिकेँ वैधता दैत अछि। ओइ विरुद्ध सूचोंग—जे विस्तारवादी, लोभी, प्रजा-पीड़क अछि—क 'तियानमिंग' हीन अछि। कुणालक नाटकमे यैह नैतिक-राजनीतिक दर्शन अंततः सलहेसकेँ 'विजयी' घोषित करैत अछि—शस्त्र-बलसँ नहि, नैतिक-जनशक्तिसँ।

४.४ मिनजियानः लोक-नायकक नाट्यीकरण-परम्परा

चीनी नाट्य-इतिहासमे लोक-नायकक नाट्यीकरण एक सुदीर्घ परम्परा थिक—'मियाओ-झी-यिंग-जूंग-झुआन' (Temple Hero Legends) जे लोक-देवताकेँ रंगमंचक नायक बनाबैत आएल अछि। सलहेस-नाचसँ एहि नाटकक सम्बन्ध ठीक एहि परम्पराक अनुरूप थिक—एक लोक-देवता (folk deity) पहिने लोक-रंगमंचक नायक बनैत अछि, तखन साहित्यिक रंगमंचक।

चीनी परम्परामे यैह संक्रमण (लोक-मन्दिर-प्रदर्शन → साहित्यिक रंगमंच) 'गुआन यू' क लोकगाथासँ 'रोमांस ऑफ द थ्री किंगडम्स' आ तखन नाट्य-रूपधरबाक धरिक यात्रासँ समानांतर अछि। सलहेस-गाथाक यैह यात्रा—सलहेस-नाच → 'कुसमा-सलहेस' (कुणाल, २००६)—एक सांस्कृतिक जीवन-चक्रक अभिव्यक्ति थिक।

५. इजरायली नाट्य-सिद्धांत

५.१ एली रोज़िकः पशु-पात्रक रंगमंचीय प्रतिमात्मकता

एली रोज़िकक प्रतिमा-सिद्धांत (theatrical iconicity) एहि नाटकमे एक असाधारण परीक्षामे पड़ैत अछि—पशु-पात्रक प्रतिमात्मकता। ठनका (बाघ), बनका (भालु) आ हिरामन (सूग्गा) रंगमंच पर अभिनेता-शरीर द्वारा प्रस्तुत होइत छथि। रोज़िकक सिद्धांतक अनुसार, ई पात्र 'icons' थिकाह—ओ जे 'देखाबैत' छथि ओ एक काल्पनिक-पशु-जीवनक प्रतिरूप थिक, ने कि अभिनेता-शरीरक प्रतिरूप।

एहिसँ अधिक महत्त्वपूर्ण—रोज़िक कहलाह जे रंगमंच मानव-पशु सीमाकेँ लाँघबामे सक्षम अछि कारण प्रतिमा (icon) वास्तविकताक सीमासँ मुक्त होइत अछि। ठनका-बनका-हिरामनक उपस्थिति दुसाध लोक-विश्वास-दृष्टिक एक 'animistic iconography' थिक—एक विश्वास-दृष्टि जाहिमे मानव, पशु आ आत्मा सब एकहि नाट्य-संसारमे बराबर सत्ता रखैत छथि। ई 'transgressive iconicity' (सीमा-नांघैत प्रतिमात्मकता) थिक।

५.२ मिज़राही-थिएटरक समानांतरः सांस्कृतिक हाशिया पर ठाढ़ परम्पराक पुनरुद्धार

इजरायली रंगमंचमे 'मिज़राही' (मध्य-पूर्व/उत्तर अफ्रीकी यहूदी मूलक) सांस्कृतिक परम्परा बहुता काल धरि 'अश्केनाज़ी' (यूरोपीय यहूदी) प्रभुत्ववादी सांस्कृतिक मानकक कारण हाशिया पर रहल। मिज़राही थिएटर आन्दोलन (१९७०–वर्तमान) एहि हाशिया परम्पराकेँ—सेफ़ार्दी संगीत, पैतान/ज़मीरोत आदि—मुख्यधारामे अनबाक आन्दोलन थिक।

कुणालक 'कुसमा-सलहेस' मैथिली सन्दर्भमे ठीक एहन आन्दोलनक रूपमे देखल जा सकैत अछि। दुसाध लोक-परम्परा (सलहेस-नाच) मैथिली सांस्कृतिक पदक्रममे कात-करोटमे रहल अछि—जतय विद्यापति, चन्दा-झा, आ अभिजन-काव्य-परम्पराक प्रभुत्व रहल। कुणाल एहि कात-करोटक परम्पराकेँ विद्यापति भवन (मैथिली संस्कृतिक संस्थाक केन्द्रीय स्थल) पर लऽ जा क' एक सांस्कृतिक-राजनीतिक दावा कएलनि।

५.३ हन्ना आरेंड्टः 'जन्मता' आ सार्वजनिक कार्य

जर्मन-अमेरिकी राजनीतिक दार्शनिक हन्ना आरेंड्ट (Hannah Arendt, १९०६–१९७५) अपन 'द ह्यूमन कंडीशन' (The Human Condition) मे 'नैटालिटी' (natality, जन्मता) अवधारणा प्रस्तुत कएलनि—प्रत्येक राजनीतिक कार्य (political action) एक नवीन आरम्भ थिक, एक प्रकारका 'जन्म' । सार्वजनिक क्षेत्र (public realm) मे ई कार्य अमर होइत अछि कारण ओकर साक्षी होइत अछि।

सलहेसक कारागार-वक्तव्य—"नहि रहता सलहेस मुदा भयमुक्त जीवनक मंत्र सँ भरल जनता रहतै"—आरेंड्टक अर्थमे एक 'राजनीतिक कार्य' थिक। ई वक्तव्य सूचोंगक कारागारमे कहल गेल (साक्षी: सूचोंग स्वयं), आ एहि साक्ष्यमे ई 'अमर' भ' जाइत अछि—'नैटालिटी' क एक नाट्य-क्षण। कुणाल एहि दृश्यद्वारा सलहेसकेँ लोक-देवतासँ 'राजनीतिक कार्यकर्ता' मे रूपान्तरित करैत छथि।

५.४ शिमोन लेवी: समन्वयवादी सुमिरन आ 'पवित्र रंगमंच'

शिमोन लेवी अपन 'थिएटर ऑफ द सेक्रेड' (Theatre of the Sacred) सिद्धांतमे तर्क दैत छलाह जे रंगमंच पर जखन सामुदायिक-धार्मिक मूल्यक पुन:प्रस्तुति होइत अछि, तखन ओ धार्मिक-अनुष्ठानक एक धर्मनिरपेक्ष-रूपान्तरण थिक।

एहि नाटकक पूर्वरंगक सुमिरन शिमोन लेवीक सिद्धांतक एक विशेष परीक्षा प्रस्तुत करैत अछि। ई सुमिरन मात्र हिन्दू धार्मिक आह्वान नहि—ओहिमे मुस्लिम पीर 'मीरा-सुलतान' (पश्चिम दिशाक देवता) सेहो सम्मिलित छथि। "परिनाम, नमस्ते, आदाब, गुड इवनिंग, सलाम"—ई दर्शक-सम्बोधन सभ धर्म, भाषा, वर्ग आ राष्ट्र-राज्यक सीमाकेँ एकहि साँसमे नांघि जाइत अछि। लेवीक परिप्रेक्ष्यमे ई एक 'radical sacred' (क्रान्तिकारी-पवित्र) रंगमंच थिक—जे विभाजक पहिचानकेँ अस्वीकार क' एक समावेशी सामुदायिकताक स्वप्न रचैत अछि।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण

संग्रहक शीर्षक-नाटकक रूपमे 'कुसमा-सलहेस' चारू नाट्य-परम्पराक समीक्षामे एकहि संग सर्वाधिक उर्वर आ सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण कृति थिक। एकर बहुआयामिता कोनो एक समीक्षा-दृष्टिसँ समाहित नहि होइत अछि।

भारतीय दृष्टि—सलहेस-नाचक स्वायत्त लोकनाट्य-व्याकरण; रस-महोत्सव (शृंगार+वीर+भक्ति+अद्भुत); सबाल्टर्न-सौन्दर्यशास्त्रक नाट्य-प्रकटीकरण; दुर्गाक आशीर्वाद = प्रेम+ज्ञान+लोक-सेवाक अभेद-घोषणा।

पाश्चात्य दृष्टि—ग्रामशीक जैविक बुद्धिजीवी; जादू-यथार्थवादक प्रामाणिक लोक-संस्करण; ब्रेख्तीय 'इमोशनल एपिक थिएटर'; भाभाक सांस्कृतिक पहचान-प्रतिरोध।

चीनी दृष्टि—गुआन-यू-सदृश यी-नैतिकता; हुआलियान पात्र-वर्गीकरण; तियानमिंग= दुर्गाक स्वर्गीय-आदेश; मिनजियान लोक-नायक-नाट्यीकरण-परम्परा।

इजरायली दृष्टि—रोज़िकक transgressive animistic iconicity; मिज़राही थिएटरक सांस्कृतिक समानांतर; आरेंड्टक नैटालिटी (कारागार-वक्तव्य = राजनीतिक जन्म); लेवीक radical sacred सुमिरन।

चारू परम्पराक साझा निष्कर्ष—ई नाटक एक 'सांस्कृतिक न्याय' (cultural justice) क कार्य थिक। दुसाध सलहेसकेँ मैथिली साहित्य-मंचक केन्द्रमे आनब; लोकनाट्यकेँ साहित्यिक नाटकक आधार बनाएब; प्रेम आ जन-सेवाकेँ एक अभेद तत्त्व घोषित करब—ई तीनू कार्य एकहि संग भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ इजरायली नाट्य-चिन्तनक मानदण्डमे 'उत्कृष्ट' आ 'आवश्यक' सिद्ध होइत अछि।

नाटककेँ सम्पूर्ण करएवला अंतिम टेक—"प्रेम सत्य छै, प्रेम छै सौरभ, प्रेमक भाव चिरंतन / बिनु मकरंदक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन"—एहि सभक व्याख्या अतीतमे जाइत अछि। ई वाक्य समग्र संग्रहक आत्मा-घोषणा थिक।

पूरक सामाजिक-लोक आख्यान विवेचन

'कुसमा-सलहेस' नाटक मिथिलाक दलित चेतना (विशेषत: दुसाध आ पासवान समुदाय) क सभसँ प्रिय लोक-नायक राजा सलहेसक गाथा पर आधारित अछि। कुणाल एहि नाटकमे पारम्परिक 'सलहेस नाच'क लोक-तत्वकेँ आधुनिक रंगमंचक वैचारिक विमर्श सँ जोड़ने छथि।

सलहेसक चरित्र मिथिलामे मात्र एकटा वीर योद्धाक नहि, अपितु सामंती दमनक विरुद्ध वंचित वर्गक रक्षकक रूपमे स्थापित अछि। सामंतवादी राजा आ उच्चवर्गीय तत्व सभ जखन दलित नववधू सभक अपहरण आ बलात्कार करैत छलाह, तखन सलहेस अपन वन्य सेना (जंगलक वनवासी समुदाय) क गठन क'क' ओहि कुप्रथाक अंत केने छलाह। नाटकमे अनंग कुसमा (दौना मालिन), जे बौद्ध धर्मक महायान शाखाक भिक्षुणी छथि, सलहेसक प्रेमिका आ वैचारिक सहयात्रीक रूपमे देखबायब सामाजिक समरसता आ अंतर्जातीय प्रेमक एकटा अद्भुत मंचीय उदाहरण थिक।

सलहेस आ कुसमा मिलि क' कपटी तांत्रिक चक्रनाथक संहार करैत छथि, जे अंधविश्वासक नाम पर 'नागदासी' कुप्रथाक अंतर्गत प्रतिवर्ष दू टा कुमारी कन्याक स्तनपान विषधर साँप सँ करबा क' हुनका मारि दैत छल। ई नाटक दलित अस्मिता, वैज्ञानिक चेतना आ लोक-नायकक सामाजिक प्रतिरोधक एकटा महाआख्यान थिक।

१०. 'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि

सारांश
'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आ समीक्षाक प्रस्थान-बिन्दु डा॰ रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल' मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथाक सामाजिक सरोकारक पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि।

बीजशब्द: अखियासल · भारतीय · काव्यशास्त्र · पाश्चात्य · सिद्धान्त · समान्तर · इतिहास

सारांश

'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आ समीक्षाक प्रस्थान-बिन्दु डा॰ रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल' मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथाक सामाजिक सरोकारक पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर सँ सन् १९९५ ई॰ मे प्रकाशित भेल आ एहिमे पचीस टा स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित अछि। एहि सभ निबन्धक मूल प्रकाशन-स्रोत 'मिथिला मिहिर', 'मिथिलामोद', 'भाखा', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'बसात', 'हालचाल', 'मैथिली प्रकाश' सन पत्र-पत्रिका आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक स्मारिका थिक।

'अखियासल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

-गजेन्द्र ठाकुर

प्रस्तावना: कृति, कृतिकार आ समीक्षाक प्रस्थान-बिन्दु

डा॰ रमानन्द झा 'रमण'क 'अखियासल' मैथिली साहित्यक इतिहास, कथा-विकास, आरम्भिक उपन्यास, विस्मृत साहित्यसेवी, राष्ट्रीय चेतना, गीत-काव्य, पत्रकारिता, स्तम्भ-लेखन आ आधुनिक कथाक सामाजिक सरोकारक पुनर्मूल्याङ्कन करयवला आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह अछि। ई संग्रह भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर सँ सन् १९९५ ई॰ मे प्रकाशित भेल आ एहिमे पचीस टा स्वतन्त्र आलोचनात्मक निबन्ध संकलित अछि। एहि सभ निबन्धक मूल प्रकाशन-स्रोत 'मिथिला मिहिर', 'मिथिलामोद', 'भाखा', 'मैथिली अकादमी पत्रिका', 'बसात', 'हालचाल', 'मैथिली प्रकाश' सन पत्र-पत्रिका आ अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलनक स्मारिका थिक। तात्पर्य ई जे ई कोनो एकहि बेर योजनाबद्ध रूपेँ लिखल गेल ग्रन्थ नहि, अपितु सन् १९७२ सँ लऽ कऽ १९८९ धरिक लगभग दू दशकक पत्रकारीय-आलोचनात्मक श्रमक संचयन थिक। एहि संकलनात्मक स्वरूपकेँ ध्यानमे रखने बिना एकर समुचित मूल्याङ्कन सम्भव नहि।

पोथीक आरम्भ पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'केँ मैथिलीक आरम्भिक कथाकारिता आ कथा-संग्रहक परम्परामे प्रतिष्ठित करबाक प्रयाससँ होइत अछि आ समापन आधुनिकतम कथाकार प्रभास कुमार चौधरीपर — अर्थात् मैथिलीक पहिल कथाकारसँ लऽ कऽ समकालीन कथाकार धरि, प्रायः दुइ शताब्दीक विस्तार एहि पचीस निबन्धमे समाहित अछि। एहि दीर्घ पटलक कारणेँ 'अखियासल' मात्र समीक्षा नहि, अपितु एक प्रकारक समान्तर साहित्येतिहासक आधारशिला-प्रस्तर बनि जाइत अछि — आ इएह ओकर सभसँ पैघ मौलिकता तथा सभसँ पैघ सीमा दुनूक स्रोत थिक।

ई पोथी साहित्यक स्थापित शिखर-पुरुष सभक प्रशस्ति मात्र नहि करैत अछि। एकर मूल प्रश्न अछि — मैथिली साहित्यक इतिहासमे के स्मरणीय बनाओल गेल, के विस्मृत भेल, कोन रचना 'प्रथम' कहल गेल, कोन पाण्डुलिपि पाठक धरि नहि पहुँचल, आ साहित्यिक मान्यता निर्माणमे संस्था, पत्रिका, सम्पादक, प्रकाशक, प्रवासी केन्द्र आ सामाजिक सत्ता केहन भूमिका निभबैत रहल। कृतिक केन्द्रीय अभिप्राय स्पष्ट अछि — मैथिली गद्य आ पद्यक ओहि प्रारम्भिक तथा उपेक्षित रचनाकार लोकनिकेँ प्रकाशमे अनब, जिनका मुख्यधाराक साहित्येतिहास बिसरि गेल अथवा जिनका सम्बन्धी सामग्री 'अनुपलब्ध' रहि गेल।

'अखियासल'क पचीस अध्याय एकरेखीय इतिहासक बदला अनेक समान्तर धाराक उद्घाटन करैत अछि —

मैथिलीक आरम्भिक कथा आ उपन्यासक खोज,

विस्मृत रचनाकारक पुनर्प्रतिष्ठा,

स्वतन्त्रता-सङ्ग्राम आ मातृभाषा-जागरण,

कथा, गीत, गप्प, स्तम्भ आ पत्रकारिताक विधागत विवेचन,

नारी, गरीब, किसान, बेरोजगार युवक आ शोषित वर्गक अनुभव,

स्वतन्त्रताक बादक राजनीतिक विडम्बना,

सामाजिक संक्रमण, अस्तित्व-संकट आ नैतिक अवमूल्यन।

एहि अर्थमे 'अखियासल' आलोचना मात्र नहि, मैथिली साहित्यक अभिलेखीय पुनरुद्धार आ समान्तर इतिहास-लेखनक महत्त्वपूर्ण उपक्रम अछि।

प्रस्तुत मूल्याङ्कनमे तीन दृष्टि-प्रतिमानक एक साथ प्रयोग कएल गेल अछि — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय प्रतिमान (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, औचित्य, रीति, अलङ्कार, साधारणीकरण, लोकमङ्गल); (ख) पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (ऐतिहासिकतावाद आ नव-ऐतिहासिकतावाद, मार्क्सवादी समाजशास्त्रीय समीक्षा, रूपवाद, नारीवादी विमर्श, उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, अस्तित्ववादी-मनोविश्लेषणवादी दृष्टि, पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त, विखण्डनवादक हाशिया-पुनरुद्धार आ कैननक राजनीति); आ (ग) विदेह समान्तर साहित्य-आन्दोलनक समान्तर इतिहास-प्रतिमान तथा गङ्गेश उपाध्याय-मूलक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, जे मुख्यधाराक कैनन-निर्माणक विरुद्ध लुप्तप्राय, हाशियाकृत आ अभिलेखहीन रचनाकारक पुनःस्थापनाकेँ अपन घोषित लक्ष्य मानैत अछि, आ जे नव्य-न्यायक 'हेत्वाभास' आ 'शब्द-प्रमाण'क उपयोग कऽ साहित्यमे निहित वैचारिक छलकेँ अनावृत करैत अछि। एहि तेसर प्रतिमानक दृष्टिसँ 'अखियासल' एक अग्रगामी पूर्व-रूप (प्रोटो-पाठ) थिक — किएक तँ रमानन्द झा जे काज १९७० सँ ८० दशकमे व्यक्तिगत श्रमसँ केने छलाह, विदेह-आन्दोलन ओकरे संस्थागत, अभिलेखीय आ जनतान्त्रिक विस्तार दैत अछि।

एहि समीक्षाक संरचना दू भागमे विभक्त अछि। पूर्वार्धमे प्रत्येक अध्यायक विशिष्ट गुण, उपलब्धि आ सैद्धान्तिक महत्त्वक विवेचन अछि; उत्तरार्ध पूर्णतः सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि।

आलोचनात्मक प्रतिमान

भारतीय साहित्यशास्त्रीय दृष्टि

रस — पोथीक विभिन्न अध्यायमे करुण, वीर, हास्य, शृङ्गार, भक्ति आ रौद्र रसक विवेचन भेटैत अछि। 'रामेश्वर'क भूख आ पारिवारिक विघटन करुण रस उत्पन्न करैत अछि; द्विजवरक राष्ट्रीय कविता वीर आ रौद्र रस जगबैत अछि; हरिमोहन झाक गप्प हास्य-व्यङ्ग्यक भूमि रचैत अछि; हरिलताक भजन भक्ति आ मधुर रसक धारा बहबैत अछि; आरसी आ मोहनक गीत शृङ्गार, प्रकृति आ भावमाधुर्यक अनुभव दैत अछि।

ध्वनि — अनेक रचनाक प्रत्यक्ष कथा पाछाँ अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ अछि। भूख केवल भोजनक अभाव नहि, आर्थिक संरचनाक अन्याय अछि। विवाह केवल घरेलू संस्कार नहि, स्त्रीक सामाजिक स्थिति आ जातिगत प्रतिष्ठाक क्षेत्र अछि। भाषा केवल सम्प्रेषणक साधन नहि, सांस्कृतिक स्वाधीनताक प्रतीक अछि।

वक्रोक्ति — यात्रीक स्तम्भ, हरिमोहन झाक गप्प, श्यामानन्द झाक व्यङ्ग्य, ललित आ धीरेन्द्रक कथा तथा आरसीक राजनीतिक कविता वक्र कथन, विडम्बना, व्यङ्ग्य आ प्रतीकक माध्यमसँ अपन अर्थ उत्पन्न करैत अछि।

औचित्य — रमणजी बेर-बेर ई प्रश्न उठबैत छथि जे रचनाक विषय, पात्र, भाषा, शैली, काल आ विधाक बीच औचित्य अछि कि नहि। कथाकेँ उपन्यास, गप्पकेँ कथा, अनुवादकेँ मौलिक कृति अथवा प्रभावकेँ अनुवाद कहब उचित अछि कि नहि — ई सभ औचित्यक प्रश्न अछि।

साधारणीकरण — एक व्यक्तिक भूख, बेरोजगारी, विवाह-दुःख अथवा सांस्कृतिक क्षोभ तखन साहित्यिक मूल्य ग्रहण करैत अछि जखन ओ सम्पूर्ण समुदाय अथवा युगक अनुभव बनि जाइत अछि। धीरेन्द्रक कथा-विवेचनमे लेखक स्पष्ट करैत छथि जे वैयक्तिक अनुभव सामाजिक मनक अभिव्यक्ति बनलापर साहित्य सामाजिक सन्दर्भ ग्रहण करैत अछि।

लोकमङ्गल — अखियासलक आलोचना साहित्यकेँ समाजसँ पृथक नहि मानैत अछि। मातृभाषा-सेवा, स्त्रीशिक्षा, जातिविरोध, श्रमक प्रतिष्ठा, गरीबक अधिकार आ राष्ट्रीय स्वाधीनता साहित्यिक मूल्याङ्कनक महत्त्वपूर्ण आधार बनैत अछि।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधार

रूपवादी दृष्टि — कथानक, चरित्र-निर्माण, संवाद, वातावरण, कथा-गति, प्रतीक, पुनरावृत्ति, गीतात्मकता आ विधागत संरचनाक परीक्षण रूपवादी दृष्टिसँ कएल जा सकैत अछि।

नव-इतिहासवादी दृष्टि — प्रत्येक रचनाकेँ ओकर समयक सत्ता, संस्था, भाषा-राजनीति, स्वतन्त्रता-आन्दोलन, सामाजिक सुधार, सामन्तवाद आ आर्थिक परिवर्तनसँ जोड़िकऽ पढ़ल गेल अछि।

मार्क्सवादी दृष्टि — भूख, निर्धनता, श्रम, सामन्ती शोषण, पुलिस-प्रशासन, पूँजी, चुनाव, बेरोजगारी आ वर्ग-विभाजन अनेक अध्यायक मूल प्रश्न अछि।

नारीवादी दृष्टि — 'निर्दयी सासु', 'सुमति', 'चन्द्रग्रहण', हरिलताक भजन, कुमार गंगानन्द सिंहक कथा आ ललितक कथा-विवेचन स्त्रीक शिक्षा, विवाह, देह, इच्छा, घरेलू श्रम, विधवापन आ सामाजिक नियन्त्रणक प्रश्न उठबैत अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि — मैथिलीपर हिन्दी आ अङ्ग्रेजीक दबाव, मातृभाषाक उपेक्षा, देवनागरीक प्रसारक राजनीति, स्थानीय भाषा-साहित्यक अधिकार आ राष्ट्रीयताक भीतर भाषिक बहुलता — ई सभ उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक विषय अछि।

अस्तित्ववादी आ मनोविश्लेषणवादी दृष्टि — ललित आ धीरेन्द्रक कथा-विवेचनमे निरर्थकता, एकाकीपन, बेरोजगारी, दायित्वक असह्य भार, यौनिक इच्छा, आत्मपरायापन आ सामाजिक असंगतिक विश्लेषण भेटैत अछि।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि — हरिमोहन झाक गप्प आ यात्रीक स्तम्भ-लेखनक अध्याय पाठक-समुदाय, पत्रिकाक संवादात्मकता, हास्यक लोकप्रियता आ पाठकीय रुचिक निर्माणपर ध्यान दैत अछि।

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि आ नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा

विदेह समान्तर इतिहासक मूल धारणा अछि जे साहित्यिक इतिहास केवल राजकीय मान्यता, पुरस्कार, विश्वविद्यालय आ प्रसिद्ध लेखकक इतिहास नहि होइत अछि। ओहि इतिहासमे निम्न सभक समान अधिकार अछि —

दुर्लभ पाण्डुलिपि,

अप्रसारित पोथी,

स्थानीय पत्र-पत्रिका,

ग्रामीण रचनाकार,

मातृभाषा-सेवी,

विस्मृत सम्पादक,

आर्थिक अभावमे लिखैत कवि,

स्त्री-पात्रक मौन,

किसान आ मजदूरक पीड़ा,

भाषिक पराधीनता,

मिथिला आ प्रवासक सांस्कृतिक सम्बन्ध।

मैथिली साहित्यक इतिहास सदिखन एकटा वैचारिक संघर्षक क्षेत्र रहल अछि। एक दिस 'मुख्यधाराक परम्परा' अछि, जे शास्त्रीय सन्तुलन, संस्थागत मान्यता, ब्राह्मणवादी आभिजात्य आ अतीतकेँ परिमार्जित कऽ प्रस्तुत करबापर केन्द्रित रहल अछि, तँ दोसर दिस 'विदेह समान्तर परम्परा' अछि, जे जनमानसक धड़कैत हृदय, शोषित-वञ्चितक प्रतिरोध आ यथार्थवादी चित्रणसँ जुड़ल अछि। नव्य-

न्यायक 'शब्द-प्रमाण' सिद्धान्तक अनुसार सत्य ओतय खण्डित होइछ जतय प्रमाणकेँ दबा देल जाइछ — जेना दूषण पञ्जीक छुपायब; आ 'हेत्वाभास'-विवेचनसँ साहित्यमे निहित तार्किक दोष आ वैचारिक छल अनावृत होइत अछि। 'अखियासल'क प्रधान उपलब्धि ई अछि जे ओ मैथिली साहित्यक मुख्य सड़कक बगलमे दबाओल अनेक पदचिह्नकेँ पुनः दृश्य बनबैत अछि।

पूर्वार्ध: अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

१. मैथिलीक पहिल कथाकार पं० श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'

संग्रहक प्रथम निबन्ध एक प्रकारेँ समस्त कृतिक बीजाध्याय थिक। ई अध्याय मैथिली कथा-साहित्यक आरम्भ-बिन्दु सम्बन्धी प्रचलित धारणाकेँ संशोधित करैत अछि। रमानन्द झा एहिठाम 'प्रथम'क अन्वेषणकेँ आलोचनात्मक कर्मक रूपमे प्रतिष्ठित करैत छथि — "कथा विकासक मार्ग पर सर्वप्रथम कोन मैथिली सेवी अग्रसर भेलाह, तकर अनुसंधान।" ई घोषणा-वाक्य पूर्ण संग्रहक पद्धतिगत घोषणापत्र थिक।

पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक जन्म १७५० ई० मे खण्डवलाकुलमे भेल छल; ओ सर्वसीमा निवासी पं० महेश्वर ठाकुरक पुत्र छलाह आ हुनक निधन १८२२ ई० मे भेल। हुनक ग्रन्थसभमे 'मिथिला तीर्थप्रकाश', 'नारी धर्मप्रकाश', 'शूद्र विवाह पद्धति', 'वैतरणीदानम्', 'शुद्ध निर्णय' आ 'शिवपूजा प्रदीपिका' प्रमुख अछि। हुनका मैथिलीक पहिल कथाकार आ 'चन्द्रप्रभा'केँ पहिल कथाकृति सिद्ध करबाक हेतु समीक्षक वंशावली, तिथि, गुरु-शिष्य-परम्परा आ खण्डनात्मक प्रमाण — जयकान्त मिश्रक 'चन्द्रभागा' नामकरणक भ्रम-निवारण — सभक सहारा लैत छथि। 'चन्द्रभागा'क बदला 'चन्द्रप्रभा' नामक ई शुद्धिकरण आलोचनाक अभिलेखीय सावधानी देखबैत अछि।

लेखक 'चन्द्रप्रभा'केँ उन्नैसम शताब्दीक मैथिली गद्यक नमूना तथा आरम्भिक कथा-संग्रहक रूपमे स्थापित करैत छथि। पाण्डुलिपि जीर्ण छल, कृतिक किछुए अंश उपलब्ध रहल आ एकर प्रकाशन लेखकक निधनक बहुत वर्ष बाद सन् १९३९ मे भेल। 'चन्द्रप्रभा'क संरचना गुरु-शिष्य संवाद आ एक कथासँ दोसर कथा निकलबाक पद्धतिपर आधारित अछि; एहिमे गुरु-शिष्या संवादक माध्यमसँ नीतिवचनक समर्थन कएल गेल अछि, जाहिमे प्राचीन गद्य-शैलीक उत्कृष्ट निदर्शन भेटैछ। एहि दृष्टिसँ एकर सम्बन्ध पञ्चतन्त्र, विद्यापतिक 'पुरुष-परीक्षा' आ संस्कृतक आख्यान-उपाख्यान-परम्परासँ जुड़ैत अछि — ई शुद्ध शास्त्रीय परम्परा-अन्वितिक दृष्टि थिक। कथा सभ शिक्षाप्रद, घटना प्रधान आ नैतिक निष्कर्षवाली अछि।

भारतीय औचित्य-दृष्टिसँ एकर महत्त्व कथानकक जटिलतामे नहि, आरम्भिक मैथिली गद्यक ऐतिहासिक भूमिकामे अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ ई उद्गम-अन्वेषण थिक, जे ऐतिहासिकतावादी समीक्षाक केन्द्रीय प्रवृत्ति छी। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय सभसँ महत्त्वपूर्ण अछि — किएक तँ 'चन्द्रप्रभा'क "अनुपलब्धता"केँ समीक्षक स्वयं रेखाङ्कित करैत छथि, आ दुर्लभ पाण्डुलिपि, सम्पादक आ प्रकाशकक श्रमकेँ साहित्यिक इतिहासक अङ्ग बनबैत छथि। हाशियाकृत, अभिलेखहीन, लुप्त-पाठक पुनःस्थापना — इएह समान्तर इतिहासक मूल-मन्त्र थिक, आ रमानन्द झा एकर पहिल घोष एतय करैत छथि।

२. मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पं० जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'

लेखक 'रामेश्वर'केँ सन् १९१६ मे मिथिला प्रिंटिंग वर्क्स, मधुबनी सँ प्रकाशित मैथिलीक प्रथम मौलिक उपन्यास मानैत छथि। पं० जीवछ मिश्रक जन्म १८६३ ई० मे भेल छल; पिताक असामयिक निधनक कारणेँ हुनक शिक्षा बाधित भेल, तथापि ओ संस्कृत, मैथिली, हिन्दी आ उर्दूक गहन अध्ययन कएलनि। हुनक जीवन, साहित्यिक प्रेरणा आ मातृभाषाक प्रति प्रतिबद्धताकेँ विस्तारसँ प्रस्तुत कएल गेल अछि — हिन्दी-विस्तारवादक विरुद्ध प्रतिरोध आ 'मैथिल महासभा'क वंशानुगत नेतृत्वक विरोध, ई सभटा वस्तुतः औपनिवेशिक-कालीन भाषिक अस्मिता-संघर्षक जीवन्त दस्तावेज थिक।

उपन्यासक केन्द्रमे भूख, श्राद्धक आडम्बर, ऋण, पुलिस-प्रशासनक अत्याचार, झूठ अभियोग, कारावास, पारिवारिक विघटन आ अपराधक सामाजिक उत्पत्ति अछि। रामेश्वर अपन पिताक श्राद्धक लेल कर्ज लैत अछि, घर-घराड़ी बेचयपर विवश होइत अछि, आ अन्ततः पुलिसक प्रताड़नासँ क्षुब्ध भऽ डकैत बनि जाइछ; ओकर पत्नी पार्वती कमलामे कूदि आत्महत्याक प्रयास करैत अछि। रामेश्वर जन्मजात अपराधी नहि; आर्थिक विवशता, सामन्ती सत्ता आ प्रशासनिक छल हुनका अपराधक बाटपर धकेलैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ रामेश्वरक अपराध वास्तवमे वर्गीय शोषणक परिणाम अछि। करुण रसक निर्माण उपन्यासक आरम्भिक दृश्यसँ होइत अछि — श्राद्धक बाद फेकल भोजनपर कुकुर सभ टूटि पड़ैत अछि आ भूखल बालक दूरसँ देखैत रहैत अछि। लेखकक अनुसार संवाद सरल आ स्वाभाविक अछि तथा वातावरण-निर्माण प्रभावकारी।

मार्क्सवादी-नव ऐतिहासिकतावादी दृष्टिसँ ई निबन्ध कृतिक सर्वश्रेष्ठ अध्याय-मध्ये एक थिक। समीक्षक 'रामेश्वर'केँ मात्र सौन्दर्यशास्त्रीय वस्तु नहि, अपितु सत्ता-संरचना — राज दरभंगा, मैथिल महासभा, हिन्दी साहित्य परिषद — क विरुद्ध ठाढ़ भेल प्रतिरोधी पाठक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि। जीवछ मिश्रक निर्भीकता आ 'मठाधीशक षड्यन्त्रक भण्डाफोड़' — ई नव-ऐतिहासिकतावादक शक्ति-प्रवचन-विश्लेषणसँ अद्भुत रूपेँ मेल खाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ 'रामेश्वर' राजदरबारक नहि, भूखल ग्रामीण परिवारक इतिहास लिखैत अछि — यथार्थवादक ई विदारक प्रस्तुति मैथिली गद्यक स्वर्ण-शिखर थिक।

३. रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

'सुमति' (१९१८ ई०) मैथिलीमे आधुनिक उपन्यासक विधा स्थापित करबाक आरम्भिक प्रयास अछि। लेखक रासबिहारी लाल दासक साहित्यिक अभाव-बोध, 'मिथिला दर्पण'सँ सम्बन्ध आ मातृभाषामे उपन्यास देबाक संकल्पकेँ रेखाङ्कित करैत छथि। समाजमे व्याप्त अपव्यय, दहेज आ प्रदर्शनकारी प्रवृत्तिक कारणेँ परिवारक कोना पतन होइछ, आ एक सुशिक्षिता नारी सुमति कोना अपन बुद्धिसँ खसैत घरकेँ सम्हारैत अछि, ई एहि उपन्यासक मूल स्वर थिक। सहेलोला बाबू आ मनोरथ लाभक बीच सिद्धान्त-विवाहक प्रसङ्ग, कर्ज लऽ कऽ बरियातीक स्वागत, आ अन्ततः सम्पूर्ण सम्पत्तिक विनाशक जे सजीव चित्रण अछि, ओ सामाजिक यथार्थवादक प्रखर उदाहरण थिक। सुमति सासुर अबितहि अपन गहना बेचि परिवारकेँ ऋणमुक्त करैत अछि आ समाजक लेल एकटा आदर्श स्थापित करैत अछि।

अध्याय पूर्ववर्ती इतिहासकारक मतकेँ सेहो समाहित करैत अछि। जयकान्त मिश्र कथानक-विन्यास, चरित्र-निर्माण आ कथन-कौशलकेँ अपरिपक्व मानैत छथि, मुदा विषयकेँ मैथिली उपन्यास लेल उपयुक्त स्वीकारैत छथि; राधाकृष्ण चौधरी एकरा आधुनिक मैथिली उपन्यास-लेखनक पहिल सफल प्रयास कहैत छथि। एहि निबन्धक एकटा विशेष शक्ति अन्तर्पाठीयताक सूक्ष्म बोधमे अछि — 'सुमति'मे हिन्दी कविताक प्रयोगकेँ जीवछ मिश्र 'मैथिली भाषा आ कविक अक्षमताक द्योतक' मानने रहथि, आ रमानन्द झा एहि समकालीन आलोचनात्मक संवादकेँ उद्घाटित करैत छथि। इएह आलोचना-क-आलोचना एहि निबन्धकेँ सैद्धान्तिक गहराइ दैत अछि। भारतीय औचित्य-सिद्धान्तक दृष्टिसँ हिन्दी-पद्यक मैथिली-गद्यमे प्रयोग भाषा-औचित्य-भङ्ग थिक — रमानन्द झा एहि दोषकेँ 'शैलीजन्य शिथिलता' कहि स्वीकार करैत छथि, तथापि सामाजिक जागरणक युग-स्वरकेँ प्रधान मानि कृतिकेँ महत्त्वपूर्ण घोषित करैत छथि। ई मूल्याङ्कन-सन्तुलन — दोष-स्वीकृति संगहि ऐतिहासिक-सामाजिक महत्त्वक रक्षा — समीक्षकक परिपक्वताक परिचायक थिक।

औचित्य-दृष्टिसँ अध्याय ऐतिहासिक महत्त्व आ कलात्मक सिद्धि बीच भेद करैत अछि। कोनो कृति 'प्रथम' भऽ सकैत अछि, मुदा केवल प्रथम होयबाक कारण कलात्मक रूपसँ पूर्ण नहि बनि जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ 'सुमति' विधागत संक्रमणक दस्तावेज अछि — नीति-आख्यानसँ आधुनिक सामाजिक उपन्यास धरि बढ़ैत मैथिली गद्यक अस्थिर, मुदा महत्त्वपूर्ण डेग।

४. जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'

ई अध्याय विवाह-व्यवस्था, घटक, कन्यापक्ष, सासु-पुतोहु सम्बन्ध आ घरेलू स्त्री-उत्पीड़नकेँ कथा-विवेचनक केन्द्रमे आनैत अछि। जनसीदन (१८७२–१९५१) क 'निर्दयी सासु' सन् १९१४ ई० मे 'मिथिला मिहिर'मे धारावाहिक रूपेँ प्रकाशित भेल; एकर कथावस्तु सामाजिक घटनापर आधारित अछि आ चित्रण एतेक स्वाभाविक अछि जे घटना पाठकक सोझाँ घटैत प्रतीत होइत अछि। एहिमे सासु अनूपरानी आ ननदिक अत्याचार सहैत मूक नारी शारदाक कारुणिक चित्रण भेल अछि, जे तत्कालीन समाजमे स्त्री-शिक्षाक विरोध आ पितृसत्तात्मक क्रूरताकेँ प्रमाणित करैत अछि। ज्योतिषी चिन्तामणि झा द्वारा शारदाकेँ शिक्षित करब आ परिपाटी-विरोधी कन्यादान, तथा अनूपरानी द्वारा ओकर विरोध — वस्तुतः प्राचीन आ नवीन जीवन-मूल्यक द्वन्द्व थिक, जकरा समीक्षक 'प्रखर सामाजिक चेतनाक प्रतिफल' कहैत छथि।

जनसीदनक 'शशिकला', 'कलियुगी संन्यासी' आदिक विवेचनमे समीक्षक विधा-विवादकेँ — हरिमोहन झा 'निर्दयी सासु'केँ 'प्रहसन' कहलनि, आन 'उपन्यास' — सुन्दर ढंगेँ प्रस्तुत करैत छथि। मुख्य उपलब्धि ई जे रमानन्द झा जनसीदनक व्यक्तित्वक प्रखरता-सम्बन्धी अपन प्रारम्भिक सन्देहकेँ उपलब्ध साहित्यक विश्लेषणसँ स्वयं संशोधित करैत छथि — सामाजिक-सुधारवादी चेतनाक आलोकमे व्यक्तित्व प्रखर भेटैत छनि। ई आत्म-संशोधनकारी आलोचना-पद्धति कृतिक बौद्धिक ईमानदारीक प्रमाण थिक।

नारीवादी दृष्टिसँ कथा घरेलू सत्ताक जटिल रूप उद्घाटित करैत अछि। स्त्री केवल पुरुष द्वारा नहि, पितृसत्तात्मक संस्कार ग्रहण कएने दोसर स्त्रीद्वारा सेहो प्रताड़ित होइत अछि; सासु स्वयं व्यवस्थाक उत्पाद होइतहुँ पुतोहुपर व्यवस्थाक प्रतिनिधि बनि जाइत छथि।

करुण रसक स्रोत नवविवाहिताक असहायता अछि। ध्वनि-सिद्धान्तसँ देखलापर विवाहक उत्सवक पाछाँ कन्याक आर्थिक मूल्याङ्कन, परिवारक प्रतिष्ठा आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रणक कठोर इतिहास सुनाइत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'मिथिलाक समाजकेँ कोला-कोलामे बाँटि शोषण करैत' व्यवस्थाक विरुद्ध शंखनादक रूपमे एकर पाठ वर्ग-चेतना आ सामाजिक अन्तर्विरोधक साहित्यिक अभिव्यक्तिक उत्तम उदाहरण थिक।

५. पं० जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी

एहि लघु मुदा सैद्धान्तिक दृष्टिसँ सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण निबन्धमे रमानन्द झा अपन समस्त आलोचनात्मक परियोजनाक सैद्धान्तिक आधार प्रस्तुत करैत छथि — 'दू कोटिक साहित्यकार'क सिद्धान्त। पहिल कोटिक (विद्यापति सन) रचनाकार ततेक व्यापक होइत छथि जे दोसर कोटिक रचनाकारकेँ आच्छादित कऽ दैत छथि, आ कालान्तरमे लोक हुनका बिसरि जाइत अछि। गङ्गा-कोशीक विशाल जल आ गाम-गामकेँ जोड़निहार छोट धारक स्थानीय महत्त्वक रूपक एहि सिद्धान्तकेँ अविस्मरणीय बनबैत अछि — इतिहासक वास्तविक नदीमे केवल विशाल प्रवाह नहि, छोट-छोट धार सेहो जल दैत अछि, आ पं० जनार्दन झा ओहि अदृश्य धाराक प्रतिनिधि छथि।

लेखकक तर्क अछि जे साहित्यक मुख्य धारा केवल प्रसिद्ध लेखकसँ नहि, अनेक स्थानीय आ 'दोसरा पाँति'क साहित्यसेवीक निरन्तर श्रमसँ बनैत अछि। पं० जनार्दन झाक रचना दुर्लभ भेला कारण हुनकर नाम इतिहाससँ लगभग लुप्त भऽ गेल। 'जानकी परिणय' सन खण्डकाव्यमे अकाल, जनकपुर, सीताजन्म, धनुषभङ्ग आ विवाह-संस्कारक चित्रण अछि; भाषिक सरलता, मौलिकता आ सांस्कृतिक विवरण एकरा साहित्येतिहासक उपयोगी सामग्री बनबैत अछि।

ई सिद्धान्त पाश्चात्य कैनन-निर्माण आ साहित्यिक-आर्थिकीक सिद्धान्तसँ आश्चर्यजनक रूपेँ साम्य रखैत अछि। रमानन्द झा जे कहैत छथि — प्रकाशनक अभाव, अनियतकालीन पत्रिका आ सर्वसुलभताक अभाव बहुतो रचनाकारकेँ प्रकाशसँ वञ्चित कऽ देलक — ई विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक केन्द्रीय अभिकल्पना थिक। सत्य कहल जाए तँ ई पूरा निबन्ध विदेह-आन्दोलनक पूर्व-घोषणापत्र थिक।

६. पं० त्रिलोचन झा, बेतिया — बिसरल मातृभाषानुरागी

त्रिलोचन झा (१८७८–१९३८ ई०) अनुवादक, कवि, कथाकार-आख्यानलेखक, जीवनीकार, निबन्धकार, सामाजिक कार्यकर्ता आ संस्थापक व्यक्तित्वक रूपमे प्रस्तुत छथि। हुनकामे अपूर्व संगठन-शक्ति छल; 'सुबोधिनी सभा' आ मैथिली-आन्दोलनक संगठनात्मक इतिहासकेँ ई निबन्ध उद्घाटित करैत अछि। ओ मातृभूमि-वन्दना आ अतीत-गानक माध्यमसँ सुप्त मैथिल समाजकेँ जगाबय चाहलनि — "चण्डि तोहर मिथीला देश" जकाँ हुनक पङ्क्तिसभ जनमानसमे ऊर्जाक सञ्चार कएलक। ओ 'श्रीमद्भगवद्गीतादर्श' नामसँ गीताक मैथिली पद्यानुवाद सेहो कएलनि, जे हुनक प्रखर गवेषणात्मक दृष्टिक परिचायक अछि।

हुनकर लेख विभिन्न पत्र-पत्रिकामे बिखरल रहने समग्र मूल्याङ्कन कठिन भेल — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि', ई समीक्षक स्वयं बेर-बेर स्वीकार करैत छथि — मुदा उपलब्ध सामग्री मातृभाषा आ साहित्यक प्रति गाढ़ अनुराग प्रमाणित करैत अछि। हुनकर दृष्टिमे भाषा आ साहित्य समाजक प्रगतिक आधार छल। ओ मैथिल समाजक आलस्य, आत्मकेन्द्रितता आ सांस्कृतिक उदासीनताकेँ ललकारैत छलाह तथा मिथिलाक प्रतिष्ठा पुनः प्राप्त करबाक सामूहिक दायित्वक बोध करबैत छलाह। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ मातृभाषा-सेवा राजनीतिक स्वाधीनताक विस्तार अछि — भाषा-विहीन स्वराज अधूरा स्वराज अछि। एहिठाम सामग्रीक अभावक स्वीकृतिमे समान्तर इतिहास-लेखनक मूल संकट — अभिलेख-दारिद्र्य — प्रत्यक्ष होइत अछि।

७. राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

यदुवर (१८८८–१९३५ ई०) 'मिथिला गीताञ्जलि' (१९२३) क माध्यमसँ राष्ट्रीय स्वाधीनता-संग्रामक चेतनाकेँ मैथिली काव्यमे स्थापित कएलनि। हुनकर कविता मिथिला, मैथिली आ भारतीय राष्ट्रीयताक संयुक्त स्वर अछि। ओ पुरान परम्पराकेँ तोड़ि राष्ट्रीय कार्यक सूत्रपात कएलनि आ संगीतक रागपाशसँ मैथिली कविताकेँ सर्वप्रथम मुक्त कएलनि। हुनक 'मैथिली साहित्य दिग्दर्शन' मैथिलीक प्रथम अनुसन्धानपरक निबन्ध मानल जाइछ, जाहिमे ओ साहित्यक समग्र लेखा-जोखा प्रस्तुत कएलनि अछि।

यदुवरकेँ 'राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा' घोषित करैत रमानन्द झा एक विशिष्ट स्थापना करैत छथि — 'कवीश्वर चन्दा झासँ चलल देश-कालसँ जुड़बाक प्रवृत्तिपरसँ धार्मिक लेप पोछि राष्ट्रीय आ देशोत्थान-विषयक रचनाक सुदृढ़ परिपाटी यदुवरक रचनासँ प्रारम्भ भेल।'

'धार्मिक लेप पोछब' — ई पदावली साहित्यिक प्रवृत्तिक धर्मनिरपेक्षीकरणक सूक्ष्म ऐतिहासिक बोधकेँ प्रकट करैत अछि आ नव-ऐतिहासिकतावादी प्रवृत्ति-रेखाङ्कनक उत्तम नमूना थिक।

ओ शिक्षित मैथिल समाजक मातृभाषा-विमुखता, आलस्य आ बाह्य भाषिक प्रभुत्वक विरुद्ध जागरणक आह्वान करैत छथि। हुनकर काव्यक वीर रस युद्धक्षेत्रक मात्र नहि, भाषिक-सांस्कृतिक संघर्षक वीर रस अछि। मातृभाषामे लिखब, साहित्य प्रकाशित करब आ मैथिल समाजकेँ जगायब हुनका लेल राष्ट्रसेवा छल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ यदुवर भाषाक हीनताबोधकेँ औपनिवेशिक मानसिकताक परिणाम मानैत छथि। विदेह समान्तर इतिहासमे हुनकर कविता राजनीतिक आन्दोलनक समानान्तर चलैत भाषिक स्वाधीनता-आन्दोलनक दस्तावेज बनैत अछि।

८. कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

अध्याय — मैथिली साहित्यकार सभ राष्ट्रीय चेतनासँ पृथक छलाह — एहि सामान्य आरोपक खण्डन करैत अछि। द्विजवरक जन्म १८९३ ई० मे सहरसाक वनगाँवमे भेल छल। ओ केवल राष्ट्रीय कविता लिखनिहार नहि, गान्धीजीक आह्वानपर सरकारी सेवा छोड़ि स्वतन्त्रता-सङ्ग्राममे सक्रिय भाग लेनिहार कवि-सेनानी छलाह आ चारि बेर जेल गेलाह। यदुवर आ द्विजवरक तुलना करैत समीक्षक एक सूक्ष्म भेद स्थापित करैत छथि — यदुवर सरकारी सेवक रहबाक कारणेँ मात्र साहित्यिक स्तरपर सक्रिय, जखन कि द्विजवर सरकारी सेवाकेँ त्यागि राजनीति आ साहित्य दुनू स्तरपर सक्रिय। 'एकहि व्यक्तिमे सर्जनात्मक प्रतिभा आ आन्दोलनात्मक क्षमताक संगम'केँ 'बिरल घटना' कहब — ई मूल्याङ्कन साहित्य आ कर्मक अद्वैतकेँ प्रतिष्ठित करैत अछि, जे प्रतिबद्ध-साहित्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

स्वदेशी, चरखा, आर्थिक स्वतन्त्रता आ ग्रामजीवन हुनकर राष्ट्रीयताक आधार अछि — 'चरखा चौमासा' जकाँ कवितामे स्वदेशी आन्दोलनक गूँज स्पष्ट सुनल जा सकैछ। राष्ट्र हुनका लेल अमूर्त सत्ता नहि, गाम-घर, नदी, खेत, मनुष्य आ प्रकृतिक संयुक्त जीवन अछि। हुनक रचना 'छूतहर' समाजक अस्पृश्यता आ सामन्ती क्रूरताक विरुद्ध प्रहार थिक — "अस्पृश्य भेलहुँ कै कोन पाप? मृतिका एक एके कुम्हार" — ई पङ्क्ति सामाजिक विषमतापर प्रखर प्रहार करैत अछि आ हुनक कवितामे वञ्चित वर्गक स्वर स्पष्ट अछि। वीर रसक सङ्ग करुण आ रौद्र रसक मेल हुनकर कविताकेँ प्रचार-पदसँ ऊपर उठबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे द्विजवर साहित्य आ राजनीतिक कर्मक मध्यक कृत्रिम विभाजन तोड़ैत छथि।

९. कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-संवेदना

कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-यात्रा दीर्घ काल (१९२४–१९६५) धरि पसरल अछि। 'मनुष्यक मोल', 'विवाह', 'बिहाड़ि', 'पण्डितपुत्र', 'पञ्च परमेश्वर', 'आमक गाछी' आदि कथामे सामाजिक सुधार, विवाह-कुरीति, अस्पृश्यता, शिक्षा आ ग्रामजीवनक समस्या उठाओल गेल अछि। 'मनुष्यक मोल'मे एक बाल-विधवाक आत्महत्याक कारुणिक यथार्थ अछि; 'बिहाड़ि'मे अछूतोद्धारक चेतना अछि, जतय शोषित वर्ग बाबू-भैयाक बेगारी करबासँ मना कऽ हड़ताल करैत अछि। लेखक हुनकर कथा-विधिक महत्त्व एहि बातमे देखैत छथि जे ओ पुराण अथवा धर्मग्रन्थसँ कथावस्तु नहि लैत, अपन समकालीन समाजसँ लैत छथि — उपाख्यानक उपदेशात्मक परम्परासँ हटि समाजक जीवित विकृतिपर प्रहार करब हुनकर उपलब्धि अछि।

एहि निबन्धमे रमानन्द झा 'अनुभूति-अभिव्यक्ति-सत्य-सम्प्रेषण'क शृङ्खला स्थापित करैत छथि — 'अनुभूतिक अभिव्यक्तिमे सत्यक सम्प्रेषण रहैछ, सत्यक सम्प्रेषणमे जीवन आ परिवेशक यथार्थ व्यञ्जित रहैछ।' ई 'व्यञ्जना'-पद प्रत्यक्षतः आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक स्मरण करबैत अछि — साहित्यक सार्थकता वाच्यार्थमे नहि, व्यङ्ग्यार्थमे अछि। संगहि 'काल-प्रवाहमे प्रमाणित होएब'क कसौटी कालातीत-मूल्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि। 'मनुष्यक मोल' आ 'विवाह'क कर्तृत्व-विवाद (जयकान्त मिश्र आ श्रीश एकरा 'भोल'क रचना मानने रहथि) क समाधान करैत रमानन्द झा भाषा-प्रयोगक समाजशास्त्रीय पाठ प्रस्तुत करैत छथि — 'बिहाड़ि' कथामे रौदी-कामातिक हिन्दी-मिश्रित बोली 'अशिक्षितपर अन्य भाषाक प्रभाव'केँ व्यञ्जित करैत अछि। ई भाषिक-यथार्थवादक सूक्ष्म आलोचनात्मक बोध थिक।

स्त्री-पात्र, बालविवाह, विधवापन आ घरेलू उत्पीड़नक चित्रण करुण रस उत्पन्न करैत अछि। कथा-भाषा सरल, लोकानुकूल आ विनोदपूर्ण अछि। 'आमक गाछी' सन छोट कथामे अनावश्यक विस्तारक अभाव आ रहस्यपूर्ण अन्त आधुनिक कथाक निकट लैत अछि।

१०. कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता

एहि निबन्धक विशिष्टता ई जे रमानन्द झा एक स्त्री-रचनाकार — कवीश्वरी हरिलता (मोदवती, जन्म १९०३ ई०) — क साहित्य-साधनाकेँ प्रकाशमे अनैत छथि, जे विदेह समान्तर इतिहासक लैङ्गिक पुनरुद्धारक अग्रगामी सङ्केत थिक। हरिलताक जीवन-वृत्त — मात्र चारि वर्षक अवस्थामे विवाह, अल्पवयमे वैधव्य आ पतिक विक्षिप्तता, 'स्त्रीगण लेल पढ़ब निषिद्ध छलैक' तथापि 'सासु आदिसँ चोरा कऽ अक्षर सिखब' — ई सभटा नारी-अस्मिताक संघर्ष-गाथा थिक।

हुनक 'भजनमालिका' (१९३७ ई०) वैष्णव सगुण भक्तिक उत्कृष्ट निदर्शन अछि। भक्ति-काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ रमानन्द झा हरिलताक 'निराकारकेँ अप्राप्त मानि सगुण-आराधना'केँ वैष्णव-परम्पराक अनुरूप सिद्ध करैत छथि — पलनामे झूलैत, अँगनामे ठुमुकैत, वृन्दावनमे गाय चरबैत सगुण-कृष्णक चित्रण 'श्रुति-मधुरता आ रस-प्रचुरता'सँ युक्त। हुनक गीतमे भक्तिक छओ अङ्ग — आनुकूल्य-संकल्प, प्रातिकूल्य-वर्जन, रक्षण-विश्वास, गोप्तृत्व-वरण, आत्मनिक्षेप, कार्पण्य — आ माधुर्य रस प्रवाहित अछि। बाल-वैधव्यक असह्य पीड़ाकेँ ओ कृष्ण-भक्तिक मधुर रसमे रूपान्तरित कऽ देलीह। ई भक्ति-रस आ वात्सल्य-रसक शास्त्रीय विवेचन थिक।

११. कविवर श्यामानन्द झाक काव्य-वस्तु

लेखक श्यामानन्द झाक काव्यकेँ राष्ट्रीय, सामाजिक, सांस्कृतिक आ व्यावहारिक चारि वर्गमे पढ़ैत छथि आ 'युग-सचेत कवि'क अवधारणा प्रस्तुत करैत छथि। कविक आक्रोश व्यक्तिगत नहि, तत्कालीन राजनीतिक पराधीनता, आर्थिक असमानता, भाषिक अपमान आ सामाजिक उदासीनतासँ उत्पन्न अछि — 'जरि जाय जेँ जजाते करिते पटाय की हो' सन आक्रोशक पाछाँ तात्कालिक परिवेशक कारुणिक स्थिति अछि। गान्धी-युगीन राजनीतिक-सामाजिक-सांस्कृतिक पतनक विरुद्ध सामन्ती वर्गक उदासीनता — 'कोउ नृप होहिं हमे का हानी' — क तीक्ष्ण व्यङ्ग्यात्मक चित्रण भेटैत अछि।

हुनकर कविता भारतीय स्वाधीनता, मैथिलीक रक्षा, आर्थिक समानता, सामाजिक जागरण आ सांस्कृतिक पुनरुत्थानक आह्वान करैत अछि। ओ अङ्ग्रेजी आ हिन्दीक अन्धभक्त उच्च वर्गपर व्यङ्ग्य करैत लिखैत छथि जे लोक अपन भूषण-वसनकेँ छोड़ि विद्यापतिक नामसँ कान छिपबैत अछि आ "टोप ओ नेकटाय"पर लोट-पोट रहैत अछि — ई सांस्कृतिक दासताक विरुद्ध उद्घोष थिक। 'देश सेवा हित छदामो बाहर होएब दुर्लभ... सोम होथि छदाम लय' — ई विदग्ध व्यङ्ग्य कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तक वाक्य-वक्रताक प्रमाण थिक। रस-दृष्टिसँ एहिमे करुण आ वीरक सङ्ग सामन्ती वृत्तिक प्रति बीभत्स-भावक सामञ्जस्य अछि; मार्क्सवादी दृष्टिसँ ई पूँजी-केन्द्रीकरण आ वर्ग-विषमताक प्रत्यक्ष साहित्यिक आलोचना थिक। गरीबी, वस्त्र, भोजन, आवास आ पारिवारिक भारक वर्णन हुनकर सामाजिक दृष्टिक प्रमाण अछि।

हुनक 'मैथिल सन्देश' आ 'मैथिली गीत-चन्द्रिका'मे राष्ट्रप्रेम आ लोक-संस्कृतिक समन्वय अछि। व्यावहारिक गीतमे सोहर, नामकरण, उपनयन, विवाह, कोबर, समदाउन आ अन्य संस्कारक समावेश लोकजीवनक काव्यात्मक अभिलेख रचैत अछि। शृङ्गार, हास्य, भक्ति आ लोकरीतिक समन्वय हुनकर काव्य-वस्तुकेँ व्यापक बनबैत अछि।

१२. बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

एहि निबन्धमे रमानन्द झा साहित्य-समीक्षाक सीमा लाँघि पत्रकारिता-इतिहासक क्षेत्रमे प्रवेश करैत छथि। लक्ष्मीपति सिंह (१९०७–१९७२) केँ लेखक साहित्यकार, सम्पादक, प्रकाशक, संस्कृतिकर्मी आ मैथिली पत्रकारिताक संस्थापक-पुरुषक रूपमे देखैत छथि — 'एक विधामे बान्हल नहि, एक भाषामे नहि'। पं० श्रीकृष्ण ठाकुरक शिष्यत्वसँ प्राप्त साहित्य-सर्जनाक मन्त्रकेँ ओ जीवनभरि मातृभाषा-सेवामे लगौलनि आ प्रवासी-मैथिलकेँ मिथिलासँ जोड़बाक आजीवन प्रयास कएलनि।

हुनकर योगदान केवल अपन लेखन धरि सीमित नहि। दुर्लभ रचनाक सम्पादन, प्रकाशन, लेखकक प्रोत्साहन आ पत्रिकाक माध्यमसँ पाठक-समुदायक निर्माण मैथिली सार्वजनिक क्षेत्रक विकासक आधार बनल। ओ मैथिली पत्रकारिताकेँ राजनीतिक आ आर्थिक दासतासँ मुक्त कऽ आत्मनिर्भर बनेबाक वकालत कएलनि आ स्पष्ट कएलनि जे मैथिलीक पत्र-पत्रिका केवल साहित्यिक एकाधिकार नहि, अपितु समाचार आ जन-सरोकारक माध्यम होएबाक चाही। निबन्धक अन्तिम अंश मैथिली समाचार-पत्रक भविष्य-सम्बन्धी दूरदर्शी विश्लेषण थिक — विज्ञापन, संवाददाता-प्रतिनिधित्व, सम्पादकीय नीति आ पाठक-आधारक अभावमे मैथिलहुकेँ आन भाषाक पत्रपर निर्भर रहबाक विवशता। ई मीडिया-समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि अपन युगसँ आगाँ थिक।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टिसँ पत्रकारिता लेखक आ पाठकक बीच जीवित संवाद स्थापित करैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे सम्पादक साहित्यक पार्श्व-पात्र नहि, स्मृति आ पाठकत्वक निर्माता छथि।

१३. कविचूड़ामणि मधुपक गीत-साहित्य

काशीकान्त मिश्र 'मधुप'क गीति-साहित्यक विवेचन एहि संग्रहक सर्वाधिक रसशास्त्रीय निबन्ध थिक। 'गीत भावाश्रित होइछ, हृदयपर ओकर प्रभाव तत्काल पड़ैछ, रागात्मिका वृत्तिक तार झनझना उठैछ' — ई विवेचन प्रत्यक्षतः भरतमुनिक रस-निष्पत्ति आ अभिनवगुप्तक रस-चर्वणाक मैथिली पुनराख्यान थिक; 'नादब्रह्मकेँ जगबैत' गीत-साधनाक अवधारणा भारतीय संगीत-दर्शनक नादब्रह्म-सिद्धान्तसँ जुड़ैत अछि। मधुपकेँ 'घसल अठन्नी सोनाकेँ घसि कऽ हीरा' बनौनिहार आ 'विद्यापति ओ मीरा'क स्वरमे बजनिहार कहि (मणिपद्मक शब्दमे) रमानन्द झा गीति-परम्पराक शीर्ष-स्थान दैत छथि।

मधुपक गीत-संसारमे शृङ्गार, भक्ति, गृहस्थजीवन, नारी-आदर्श, सामाजिक शिक्षा आ सांस्कृतिक संस्कारक मेल अछि। गीत केवल पढ़बाक वस्तु नहि, कण्ठस्थ करबाक, गाबयबाक आ सामुदायिक रूपसँ अनुभव करबाक रचना अछि — 'लोक-जीवनमे गीतक अत्याज्यता' (आँगन, दलान, खेत, खरिहान, कोबर, सिमरिया-घाट) क ई मूल्याङ्कन भट्टनायकक साधारणीकरण-सिद्धान्तक उत्तम प्रयोग थिक। जखन मैथिल युवा वर्ग सिनेमाक गीतक धुनपर पागल छल, तखन मधुपजी मैथिली भाषाकेँ विलुप्त होएबासँ बचेबाक लेल सिनेमाक तर्जपर मैथिली गीत लिखलनि — विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ ई जनभाषाकेँ जीवित रखबाक एकटा लोकतन्त्रवादी, जमीनी प्रयास छल। 'वट-सावित्री' जकाँ पावनिक कथाकेँ ओ गीतक रूप देलनि जाहिसँ नीरसता समाप्त भेल, स्त्री आ बालक धरि कथा पहुँचल आ लोक-कण्ठमे मैथिली स्थापित भेल — ई गीतक सामाजिक प्रयोगशीलता देखबैत अछि।

रस-दृष्टिसँ मधुपक गीतमे भक्ति, विप्रलम्भ शृङ्गार आ करुणाक समन्वय अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ गृहस्थ आदर्शक भीतर स्त्रीक सामाजिक भूमिका, परिवारक नैतिक अनुशासन आ लोकपरम्पराक संरक्षण निहित अछि।

१४. भट्टीकाव्यक परम्परा आ मधुपजी

ई निबन्ध कृतिक सभसँ साहसी सैद्धान्तिक अध्याय थिक आ संस्कृतक शिक्षाप्रद काव्य परम्परा तथा मैथिली काव्यक अन्तर्सम्बन्धक खोज करैत अछि। भट्टीकाव्यमे कथा केवल रसास्वाद लेल नहि, व्याकरण, अलङ्कार, छन्द आ भाषाज्ञानक शिक्षण लेल सेहो प्रयुक्त अछि; मधुपजीक काव्यमे एहि शिक्षणपरक परम्पराक आधुनिक मैथिली रूप देखल गेल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ ज्ञान आ आनन्दक एकता एहि अध्यायक प्रमुख सूत्र अछि — काव्य नितान्त उपदेश होइत तँ रसहीन भऽ जाइत; नितान्त मनोरञ्जन होइत तँ शैक्षिक प्रयोजन लुप्त भऽ जाइत। मधुपक उपलब्धि एहि द्वन्द्वमे समन्वय स्थापित करब अछि।

'कोबर-गीत'क रचनाकेँ आधार बनाय रमानन्द झा एक निर्भीक प्रश्न उठबैत छथि — 'कविता कथी लेल लिखल जाइत अछि?' आ स्पष्ट उत्तर दैत छथि — 'यश' आ 'अर्थ'; कोनो कवि एहि दुनू शर्तक सीमासँ बाहर नहि। ई घोषणा साहित्यक शुद्धतावादी आदर्शवादकेँ चुनौती दैत ओकर भौतिक-आर्थिक आधारकेँ उद्घाटित करैत अछि — जे स्पष्टतः मार्क्सवादी साहित्य-समाजशास्त्रक अन्तर्दृष्टि थिक। प्रसङ्ग ई जे विद्यालयक अनुदान बचेबाक विवशतामे — कुमार गंगानन्द सिंह आ राजपण्डित बलदेव मिश्रक दबावमे — मधुपजीकेँ महाराज कामेश्वर सिंहक 'कोबर गीत' लिखय पड़लनि। 'कोबर-गीत'केँ 'युगीन विवशताक द्योतक' कहि रमानन्द झा एक जटिल नैतिक-सौन्दर्यशास्त्रीय प्रश्नक सामना करैत छथि — कवि अपन आत्माक प्रतिकूल किएक लिखैत छथि? ओ स्वीकार करैत छथि जे मधुपक 'कवित्व-शक्ति ततेक प्रखर छल जे अनिश्चित विषयोपर सेहो दिव्य-मार्मिकता आबि जाइत छलैक।' ई प्रयोजन आ प्रतिभाक द्वन्द्वक ईमानदार विवेचन थिक। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय संस्कृत आ मैथिलीकेँ स्वामी-दास सम्बन्धमे नहि, संवादशील परम्परामे रखैत अछि।

१५. काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथा-जगत

किरण (१९०६–१९८९) केँ रमानन्द झा तृतीय दशकक संक्रान्ति-कालक प्रतिनिधि कथाकार मानैत छथि — विद्यापतीय कल्पनालोकसँ हटि 'देसिल वयना'क यथार्थ दिस उन्मुख। हुनक कथा-जगत ('चन्द्रग्रहण', 'धर्मरत्नाकर', 'समाजक चित्र') सामाजिक विषमता, जाति, श्रम, धर्मान्धता, सत्ता, स्त्री आ मनुष्यक नैतिक सङ्घर्षक कथा-जगत अछि। लेखक हुनकर रचनामे समाजक अँधार परतकेँ भेदयवला आलोचनात्मक प्रकाश देखैत छथि। 'चन्द्रग्रहण'मे प्राकृतिक घटनापर अन्धविश्वासक आड़मे होइत व्यभिचार आ ठगी उजागर अछि; 'धर्मरत्नाकर'मे राम किसन जकाँ शोषित रैयतक हाहाकार आ धर्मरत्नाकर बाबू साहेबक पाखण्ड बेनकाब कएल गेल अछि।

'जाड़क पालामे ठिठुरैत नाङट नेना', 'लाज झँपबा लेल व्याकुल तरुणी', 'स्कूलक फीस लेल दौड़ करैत देशक भविष्य' — ई सभ बिम्ब यथार्थवादी करुण-रसक तीव्र सम्प्रेषण थिक। पाठक-प्रतिक्रिया-सिद्धान्तक दृष्टिसँ किरणक कथाक विस्फोट-क्षण —

'कल्पनाक मचकीपर आस लगैत काल यथार्थसँ सरोकार छूटि जाएब' — केँ रमानन्द झा जाहि सूक्ष्मतासँ पकड़ैत छथि, ओ रूपवादी अपरिचितीकरणक बोधक परिचायक थिक।

मार्क्सवादी दृष्टिसँ किरण सुविधा-सम्पन्न वर्ग आ श्रमजीवी वर्गक अन्तर उजागर करैत छथि; दलित दृष्टिसँ सामाजिक प्रतिष्ठाक ब्राह्मणवादी निर्धारण प्रश्नाङ्कित होइत अछि; नारीवादी दृष्टिसँ स्त्रीक जीवन केवल गृहस्थ आदर्शक उदाहरण नहि, स्वतन्त्र सामाजिक अनुभवक क्षेत्र बनैत अछि। किरणक कथा लोकमङ्गलवादी अछि, मुदा उपदेश मात्र नहि — पात्रक अन्तर्विरोध, विडम्बना आ सामाजिक असंगति कथाकेँ जीवित बनबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे किरण मिथिलाक गौरवगानक बदला मिथिलाक भीतरक विषमता देखबैत छथि।

१६. मैथिली उपन्यासक आलोकमे 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र

ई निबन्ध कृतिक सर्वाधिक आधुनिक-आलोचनात्मक अध्याय थिक आ मैथिली उपन्यासमे स्त्री-पात्रक परिवर्तनशील रूपक अध्ययन करैत अछि। किरणक 'चन्द्रग्रहण' (१९३२) क रजनी आ सुषमासँ लऽ कऽ 'रूपा' (१९८८) धरिक नारी-पात्रक विकास-रेखाकेँ रमानन्द झा समाज-सुधार-आन्दोलनक ऐतिहासिक पृष्ठभूमिसँ जोड़ि विश्लेषित करैत छथि — 'जेना-जेना परिवेशमे सुधारात्मक-आन्दोलनात्मक चेतना प्रखर होइत गेल, उपन्यासक चरित्र-निर्माणमे तकर प्रभाव पड़ैत रहल।' ई साहित्य आ समाजक द्वन्द्वात्मक सम्बन्धक उत्कृष्ट नव-ऐतिहासिकतावादी पाठ थिक।

सामाजिक सुधार-आन्दोलन, शिक्षा आ आधुनिक चेतनाक प्रभावसँ 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र पारम्परिक मौनता छोड़ि नूतन व्यक्तित्व ग्रहण करैत अछि। नारीक अन्तःकामना, प्रेम, विरह, देहबोध, निर्णय आ सामाजिक दायित्व कथाक सक्रिय अङ्ग बनैत अछि; वातावरण आ नायिकाक अन्तःस्थितिक समान्तर विन्यास मनोवैज्ञानिक गहराई उत्पन्न करैत अछि। नारीवादी समीक्षाक दृष्टिसँ ई निबन्ध कृतिक सर्वाधिक अग्रगामी अछि — किएक तँ रमानन्द झा पण्डित-वर्गक ओहि पाखण्डकेँ उघारैत छथि जकर 'समस्त उपदेश अनके लेल' होइत छैक, आ जे मेला-ठेलामे अपहृत नारीकेँ सेहो शिक्षासँ वञ्चित रखैत अछि। 'रचनाकारक व्यक्तित्वक आक्रामकता'केँ चरित्र-निर्माणमे देखब — ई अभिव्यञ्जनावादी आलोचना थिक। स्त्रीकेँ केवल त्यागमूर्ति अथवा कुलरक्षिका नहि, इच्छाशील आ विचारशील मनुष्यक रूपमे देखबाक ई प्रयास महत्त्वपूर्ण अछि।

१७. प्रो० हरिमोहन झा आ हुनक 'चर्चरी'

मैथिलीक सर्वाधिक लोकप्रिय हास्य-व्यङ्ग्यकार हरिमोहन झा (१९०८–१९८४) क 'चर्चरी' एक विधाक पोथी नहि — एहि संग्रहमे कथा, एकाङ्की, छायारूपक, पत्र, दलानक गप्प, पोखरिक गप्प, प्रहसन आ सांस्कृतिक निबन्ध सम्मिलित अछि। 'चर्चरी'क एहि विविध-विधात्मक स्वरूपकेँ व्यञ्जन-सम्मिलित 'चर्चरी' (भोज्य-पदार्थ) क रूपकसँ उद्घाटित करब — ई नामकरण-मूलक विश्लेषण चतुर अछि। लेखक एकरा पारम्परिक कथा अथवा निबन्ध नहि, स्वतन्त्र गप्प-विधाक रूपमे पहचानैत छथि — हुनक रचना-संसार ('चर्चरी', 'खट्टर ककाक तरंग', 'प्रणम्य देवता') मैथिलीमे गप्प-विधाक प्रवर्तन कएलक। हास्य-व्यङ्ग्य आ वक्रोक्तिक माध्यमसँ ओ थोथा पाण्डित्य, रूढ़िवाद आ सामाजिक पाखण्डपर प्रहार कएलनि। हुनक 'पाँच पत्र' जकाँ रचना रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ करुण रसक उत्कृष्ट निदर्शन थिक, जे पति-पत्नीक बदलैत रागात्मक सम्बन्ध आ युग-बोधकेँ मार्मिक रूपेँ प्रस्तुत करैत अछि; 'रेलक झगड़ा' जकाँ प्रहसनमे आधुनिक शिक्षाक वायुसँ सिहकल परिवारक हास्यपूर्ण चित्रण अछि।

हरिमोहन झाक सभसँ पैघ उपलब्धि मैथिलीमे विशाल पाठक-समुदायक निर्माण अछि। मैथिल समाजक हास्यप्रिय संस्कारकेँ ओ साहित्यिक रूप देलनि आ पाठककेँ साहित्य दिस आकर्षित कएलनि। भारतीय हास्यरस आ पाश्चात्य व्यङ्ग्य-दृष्टि एहि रचनामे एकत्र होइत अछि; गप्पक मिश्रित विधागत स्वरूप लोकक मौखिक कथन, शास्त्रीय विनोद आ आधुनिक मुद्रित साहित्यक बीच सेतु बनबैत अछि।

संगहि ई निबन्ध संग्रहक सर्वाधिक असहमति-प्रधान निबन्धमे एक थिक। रमानन्द झा हरिमोहन झा-सन कैननी लेखकक सीमाकेँ निर्भीकतासँ रेखाङ्कित करैत छथि — 'अधिकांश रचना पढ़लापर विचारक उन्मेष नहि होइछ, वैचारिक मन्थन नहि होइछ, मात्र गुदगुदी लगैछ, एक बेर हँसा गेलापर ओकर प्रभाव बिला जाइछ।' ई कैनन-केन्द्रित मूल्याङ्कनक विरुद्ध विदेह-प्रतिमानक पुनर्मूल्याङ्कन-साहसक अग्रदूत थिक — लोकप्रियताकेँ साहित्यिक श्रेष्ठताक पर्याय नहि मानब।

१८. कविवर यात्रीक स्तम्भ-लेखन

यात्री (नागार्जुन) क स्तम्भ-लेखनकैं साहित्यिक विधाक रूपमे प्रतिष्ठित करैत रमानन्द झा मैथिली पत्रकारिता आ साहित्यक अन्तःसम्बन्धकैं उद्घाटित करैत छथि। प्रारम्भिक पत्र-पत्रिकाक उद्देश्य मातृभाषा-सेवा आ सामाजिक कुरीतिक निदान छल; पाठकीय स्तम्भ लेखक, सम्पादक आ पाठकक बीच वैचारिक संवाद स्थापित करैत छल। 'यत्र तत्र सर्वत्र', 'यत्किंचित' आ 'चिन्तन-अनुचिन्तन' सन स्तम्भमे यात्री राजनीति, समाज, अर्थव्यवस्था, भाषा आ संस्कृतिपर तात्कालिक टिप्पणी करैत छथि; 'चोआ-काका' सन व्यङ्ग्य-पात्रक विकास धरिक विश्लेषण एहि निबन्धमे अछि। यात्रीक 'तेज दृष्टिक सीमा-रेखासँ छोटसँ छोट घटनाक बाहर नहि रहब' — ई व्यङ्ग्यकारक सर्वग्राही दृष्टिक स्वीकृति थिक।

यात्री अपन स्तम्भक माध्यमसँ शासक वर्गक वाक्जाल, मिथिलाञ्चलक आर्थिक उपेक्षा आ भाषा-साम्राज्यवादक तीक्ष्ण आलोचना कएलनि। ओ हिन्दीकैं सम्पर्कभाषाक सम्मान दैतहुँ ओकर नामपर मैथिली आ अन्य भाषाक अधिकार छीनबाक विरोध करैत छथि। स्तम्भक भाषा तीक्ष्ण, व्यङ्ग्यपूर्ण, संवादात्मक आ पात्रप्रधान अछि। विधा-विस्तारक दृष्टिसँ ई निबन्ध साहित्येतिहासकैं अखबारी गद्य दिस उन्मुख करैत अछि आ मैथिली गद्यमे राजनीतिक व्यङ्ग्य तथा सामाजिक चिन्तनक एकटा नव प्रतिमान रेखाङ्कित करैत अछि।

१९. कविवर आरसी

आरसी प्रसाद सिंह (जन्म १९११ ई०) मैथिली आ हिन्दी दुनू भाषामे सर्जन करैत छलाह, मुदा मैथिलीमे हुनकर मुख्य परिचय गीतकारक अछि। 'शेफालिका', 'माटिक दीप', 'पूजाक फूल' आ 'सूर्यमुखी'क माध्यमसँ हुनकर काव्य-यात्रा राष्ट्रीयता, प्रकृति, प्रेम, सामाजिक चेतना आ जन-अधिकार धरि विस्तृत होइत अछि। हुनकर प्रारम्भिक गीतमे राष्ट्रीय एकता, स्वाधीनता, त्याग आ भारतीय समन्वित संस्कृतिक स्वर अछि — ओ नव युगक नव निर्माण आ कोटि-कोटि भारतवासीकैं ऐक्य-सूत्रमे बान्हबाक आह्वान करैत छथि; बादक कवितामे मिथिलाक शोषण, भाषिक अधिकार, बाढ़, राजनीतिक भ्रष्टाचार आ जनाक्रोश मुखर होइत अछि।

रूपवादी दृष्टिसँ आरसीक विशेषता गीतात्मकता, बिम्ब, अनुप्रास, इन्द्रियबोध आ कोमल भावप्रवाह अछि। एहि निबन्धक विशेष शक्ति इन्द्रियबोध-विश्लेषणमे अछि — हरसिंगार आ सुमनमे रस-गन्ध, पवनमे स्पर्श, सुरभि-धारमे रस-गन्ध-नादक सम्मिश्रण — ई विभिन्न इन्द्रियबोधक सम्मिश्रण-विश्लेषण पाश्चात्य आधुनिक काव्य-समीक्षाक परिष्कृत उपकरण छी; भारतीय दृष्टिसँ ई गुण-रीति (माधुर्य-गुण) आ अलङ्कार-विवेचनक क्षेत्र थिक। 'शेफालिका'सँ 'सूर्यमुखी' धरिक यात्रा वैयक्तिक सौन्दर्यचेतनासँ सामाजिक चेतना दिस बढ़ैत कविक विकास अछि।

२०. उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनक कविता

संग्रहक अत्यन्त विस्तृत निबन्धमे सँ ई एक 'आयल वसन्त'क अमर गीतकार मोहनकैं समर्पित अछि। मोहनजीक कविता स्मृति, प्रकृति, वसन्त, गीतात्मकता आ जीवन-सङ्घर्षक सम्मिलित संसार अछि। 'आयल वसन्त' सन गीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी कण्ठस्थ रहल, जाहिसँ कविता पाठ्यपुस्तकक बाहर जीवित सामुदायिक स्मृति बनल। रमानन्द झा एतय आत्मकथात्मक शैली — छात्र-जीवनमे श्रीरामचन्द्र बाबूक कक्षामे गीत-श्रवण, 'मिहिर'-कार्यालयमे मोहनक अनवरत कर्मशीलताक स्मरण — अपनबैत छथि, जे समीक्षाकैं संस्मरणात्मक आत्मीयता दैत अछि।

मोहनक मातृभाषा-प्रेम — 'घरक गोसाउनि झँखथि अन्हारैं, मन्दिर बारब दीप?', 'गाम नोत नहि, नोत बेलाही' — क माध्यमसँ भाषिक अस्मिताक तीक्ष्ण चेतना उद्घाटित होइत अछि। 'जखन मैथिली सूपक भाँटा भेल संकटापन्न, की राष्ट्रीयता? देश-भक्ति की?' — ई पदावली भाषा आ राष्ट्रीयताक अन्तःसम्बन्धकैं प्रश्नाङ्कित करैत अछि।

मोहनजीक जीवन आर्थिक अभाव, शिक्षाक संघर्ष, प्रवास, रोजगार-अभाव आ मुद्रणालयक श्रमसँ बनल। एहि कारण हुनकर कविता केवल प्रकृतिक माधुर्य नहि, श्रमशील जीवनक भीतर सौन्दर्य बचायबाक प्रयत्न अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ मुद्रणालयक प्रूफ-संशोधक सेहो साहित्येतिहासक निर्माता छथि — ओ केवल दोसरक पोथी सुधारैत नहि, अपन समयक भाषिक रूप, वर्तनी आ साहित्यिक संस्कृतिक संरक्षक बनैत छथि।

२१. शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास' (जन्म १९१७ ई०) मैथिली भाषाक शुद्ध, देशज आ स्वाभाविक रूपक पक्षधर कथाकार छथि। 'विडम्बना' आ 'भजना भजले'क विवेचनमे रमानन्द झा मात्रा बनाम गुणवत्ताक सैद्धान्तिक प्रश्न उठबैत छथि — 'ढाकीक-ढाकी लिखेलेपर जँ कोनो जीवन-मूल्य स्वीकृत नहि भऽ सकल... तँ जीवन-कालहिमे रचनाकार अप्रासङ्गिक घोषित भऽ जाइत अछि।' ई रूपवादी गुणवत्ता-

केन्द्रित मूल्याङ्कन थिक; व्यासक कथाक 'बासितेवासि नहि, टटका बनल रहब' — कालातीत ताजगी — क कसौटी कालातीत-मूल्यक अवधारणासँ मेल खाइत अछि।

हुनकर कथा भाषा-प्रयोग, सामाजिक व्यङ्ग्य, नैतिक विडम्बना आ ग्रामजीवनक जीवित संवादक कारण विशिष्ट अछि। शुद्धतावाद हुनका लेल केवल शब्दक छनोट नहि, सांस्कृतिक प्रतिरोध अछि — बाहरी भाषिक प्रभावक बीच मैथिलीक अपन वाक्य-विन्यास, लोकोक्ति, उच्चारण आ भावभूमि बचायब मातृभाषाक अस्मिता बचायब छल। रूपवादी दृष्टिसँ हुनकर कथा-भाषा पात्रक सामाजिक स्तर आ मानसिकता निर्माण करैत अछि; उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ भाषिक शुद्धताक आग्रह स्वाभिमानक प्रतीक अछि।

२२. पं॰ राजेश्वर झा: व्यक्तित्व ओ कृतित्व

राजेश्वर झा (१९२२–१९७७) शोधकर्ता, नाटककार, कथाकार, सम्पादक, प्रकाशक आ संस्थापकक रूपमे अत्यन्त सक्रिय छलाह। हुनकर कृतिकेँ अनुसन्धानपरक, ऐतिहासिक-पौराणिक आ सर्जनात्मक तीन वर्गमे बाँटल गेल अछि — 'मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास', 'मैथिली साहित्यक आदिकाल', 'अवहट्टक उद्भव ओ विकास' आदि हुनकर शोधपरक कृति अछि। एहि विवेचनमे रमानन्द झा एक गम्भीर पद्धतिगत घोषणा करैत छथि — 'साहित्यकारक व्यक्तित्वकेँ बूझब सर्वप्रथम आवश्यक अछि, विना व्यक्तित्व बूझने कृतित्वक तहमे जाएब सम्भव नहि।' ई जीवनीमूलक समीक्षाक स्पष्ट प्रतिपादन थिक। राजेश्वर बाबूक आर्थिक विपन्नताक अछैत प्रतिवर्ष पोथी-प्रकाशन आ लोककेँ लिखबाक लेल प्रेरित करब — एहि प्रेरक भूमिकाकेँ रमानन्द झा कृतित्वसँ बेसी मूल्यवान् मानैत छथि ('तराजूक पलरापर व्यक्तित्व भरिगर भऽ जएतनि') । संस्था-निर्माताक ई मूल्याङ्कन विदेह-आन्दोलनक संस्था-केन्द्रित दृष्टिक पूर्वाभास थिक।

अध्यायक विशेषता ई अछि जे लेखक प्रशंसापर रुकैत नहि। राजेश्वर झाक साहित्येतिहासक काल-विभाजन, ईसापूर्व सहस्राब्दीसँ मैथिली साहित्यक आरम्भ आ अवहट्टसम्बन्धी अनेक निष्कर्षकेँ प्रमाणहीन कहैत छथि। औचित्य आ ऐतिहासिक पद्धतिक दृष्टिसँ ई अध्याय 'अखियासल'क सर्वाधिक सन्तुलित आलोचनामे सँ एक अछि — व्यक्तिक श्रमक सम्मान आ हुनकर निष्कर्षक कठोर परीक्षण एक साथ सम्भव अछि।

२३. ललितक कथामे परिवेशक संक्रान्त जीवन

ललितक कथाकेँ रमानन्द झा स्वातन्त्र्योत्तर मोहभङ्गक साहित्यिक दस्तावेजक रूपमे व्याख्यायित करैत छथि — स्वतन्त्रतापूर्व आशा आ स्वतन्त्रतापरान्त मोहभङ्गक बीचक संक्रमण: 'आशाक किरण निराशामे बदलि गेलैक, लाबनि टूटि कऽ खसि पड़लैक।' प्रथम निर्वाचनमे धुरफन्दी, स्वार्थान्धता, धन, जाति आ जातिवादक नग्न-नाच, नकली नेता, गरीब मतदाता आ भ्रष्ट विकास-योजना — ई सभ सामाजिक परिवेशक यथार्थ बनैत अछि। ई मार्क्सवादी-यथार्थवादी समीक्षाक उत्कृष्ट प्रयोग थिक, जे साहित्यकेँ राष्ट्रीय-राजनीतिक यथार्थक संक्रमणशील प्रतिबिम्ब मानैत अछि।

मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'प्रतिनिधि' सन कथा सुविधा-भोगी शासक वर्ग आ अधिकार-विहीन गरीबक द्वन्द्व उद्घाटित करैत अछि — श्रमकेँ हीन बुझनिहार शिक्षित युवक अन्ततः शारीरिक श्रमक महत्त्व स्वीकारैत अछि। 'लड़ाइ'-कथामे द्वैध-मानसिकता आ दू पीढ़ीक वैचारिक स्तर तथा दायित्वबोधक विश्लेषण अछि। 'रमजानी', 'मृत्युञ्जय', 'ओभरलोड', 'दू चित्र' आदि कथामे परम्परा-विघटन, रोजगार-संकट, धार्मिक पाखण्ड, देहगत आवश्यकता, अस्तित्वगत भार आ सामन्ती मानसिकताक अवशेष अछि।

२४. धीरेन्द्रक कथाक सामाजिक सन्दर्भ

अध्याय सामाजिक सन्दर्भक सैद्धान्तिक व्याख्यासँ आरम्भ होइत अछि आ एहिमे रमानन्द झा अपन सर्वाधिक परिष्कृत सैद्धान्तिक प्रतिपादन प्रस्तुत करैत छथि — 'सामाजिकता थिक समाजरूपी नेहाइपर पीटि तैयार रूपाकृति; नेहाइ थिक व्यक्ति-मन आ सामाजिक-मनक द्वन्द्व।' ई व्यक्ति-मन बनाम सामाजिक-मनक द्वन्द्वात्मक सिद्धान्त कृतिक बौद्धिक शिखर थिक — जे मार्क्सवादी द्वन्द्ववाद आ मनोविश्लेषणात्मक समीक्षाक संगमसँ निर्मित अछि। लेखकक वैयक्तिक अनुभव तखन सामाजिक बनैत अछि जखन पाठकक सुप्त अनुभवकेँ जागृत कऽ सामूहिक मनक प्रतिनिधित्व करए — रचनाकारक अनुभवक 'समाजक अनुभव भऽ पएब, समाजक दर्पण भऽ पएब' कलाक प्रतिबिम्ब-सिद्धान्तक सुस्पष्ट मैथिली अभिव्यक्ति थिक।

धीरेन्द्रक कथामे शिक्षित बेरोजगारी, सिफारिश, भ्रष्ट नियुक्ति, सत्यक अवमूल्यन, गरीबक श्रमक अपहरण आ वर्गीय शोषणक चित्र अछि। 'मनुख बिकाइत' आ 'गीध'क प्रतीक आधुनिक समाजमे मनुष्यक वस्तुकरण आ शक्तिशाली द्वारा निर्बलक भक्षण व्यक्त

करैत अछि — मार्क्सवादी दृष्टिसँ 'गीध' पूँजी आ सत्ता द्वारा श्रमजीवी शरीरक उपभोगक रूपक अछि। साधारणीकरणक दृष्टिसँ बेरोजगार युवकक निजी वेदना देशक लाखों युवकक वेदना बनैत अछि। धीरेन्द्रक कथाक 'आँखिक डबडबाएब'केँ समान-तत्त्व आ शिल्पक रूपमे विवेचित करब सूक्ष्म रूपवादी अवलोकन थिक, यद्यपि एतय समीक्षक भावुकता आ शिल्पक भेद-रेखापर अपन असमंजस स्वयं स्वीकार करैत छथि।

२५. प्रभासक कथा-यात्रा

संग्रहक अन्तिम आ सर्वाधिक दीर्घ निबन्ध प्रभास कुमार चौधरी (जन्म १९४१ ई०) केँ समर्पित अछि। रमानन्द झा एतय एक व्यापक प्रभाव-अध्ययन करैत छथि — मैथिली कथापर संस्कृत, अङ्ग्रेजी आ बङ्गला, तीन साहित्यक प्रभावक विश्लेषण। ई तुलनात्मक साहित्यक पद्धतिगत प्रयोग थिक, जे संग्रहकेँ ऐतिहासिक वर्णनसँ उठाय सैद्धान्तिक तुलनाक स्तरपर लऽ जाइत अछि।

प्रभासक दू दशकक कथा-यात्राकेँ क्रमिक यात्रा मानि लेखक हुनकर जीवन-दृष्टि, सामाजिक चेतना आ कथन-पद्धतिमे भेल परिवर्तनक परीक्षण करैत छथि — कथाकारक 'घरसँ चलि, गाममे घुमि, क्रमशः भावगत निर्लिप्तता आ निष्क्रियता-बोध धरि पहुँचब'क विकास-रेखा। आर्थिक विपन्नता, समाजक स्वार्थ, गरीबक उपेक्षा आ तथाकथित सम्भ्रान्त वर्गक अमानवीयता हुनकर कथाक मुख्य विषय बनैत अछि। प्रभासक कथा-यात्रा व्यक्ति-केन्द्रित अनुभवसँ व्यापक सामाजिक संरचना दिस बढ़ैत अछि — पात्र प्रारम्भमे परिस्थितिक शिकार बुझाइत अछि, मुदा धीरे-धीरे शोषणक संरचनाकेँ पहचानय लगैत अछि। ई लेखकीय चेतनाक विकासात्मक अध्ययन समीक्षकक परिपक्व दृष्टिक द्योतक थिक। संग्रहक समापन एहि आधुनिकतम कथाकारपर होएब 'प्रथम'सँ 'समकालीन' धरिक यात्राकेँ पूर्ण करैत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ प्रभासक कथा इतिहासक विजय-घोष नहि, उपेक्षित मनुष्यक दैनिक पराजय, संघर्ष आ आत्मरक्षाक इतिहास लिखैत अछि।

उत्तरार्ध: अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

एहि मूल्याङ्कनक दोसर आधा भाग पूर्णतः 'अखियासल'क सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि। ई आलोचनात्मक कठोरता कोनो अवमूल्यन नहि, अपितु कृतिक ऐतिहासिक महत्त्वक गम्भीर स्वीकृतिक अनिवार्य अङ्ग थिक — एक अग्रगामी ग्रन्थक सीमाक निर्मम विवेचन उपरान्तहि ओकर उत्तराधिकारी प्रयास अपन दिशा निर्धारित कऽ सकैत अछि।

१. श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा' अध्यायक सीमा

'चन्द्रप्रभा'केँ प्रथम कथा-संग्रह मानबाक तर्क महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा उपलब्ध पाण्डुलिपि अपूर्ण अछि। सम्पूर्ण पाठ, रचनाकाल, पाठान्तर आ लेखकक अन्तिम रूपक अभावमे 'प्रथम' पद सावधानीसँ देल जाएबाक चाही। अध्याय ऐतिहासिक महत्त्वपर अधिक केन्द्रित अछि; कथा सभक पृथक कथानक, चरित्र, कथावाचक, समय-विन्यास आ भाषिक संरचनाक निकट परीक्षण कम अछि। संस्कृत नीति-कथा परम्परासँ समानता देखाओल गेल अछि, मुदा समानता, प्रभाव, रूपान्तरण आ मौलिकताक स्पष्ट भेद सर्वत्र नहि राखल गेल। संगहि, विदेह-दृष्टिसँ ई सेहो कहल जा सकैछ जे 'चन्द्रप्रभा'क कथा-संसार मुख्यतः संस्कृत ग्रन्थक छायामे पलल-बढ़ल अछि; एहिमे जमीनी लोक-जीवन आ वञ्चित वर्गक यथार्थवादी चित्रणक अभाव अछि, आ नीति-उपदेशक प्राधान्य रस-निष्पत्तिमे बाधक बनैत अछि। आरम्भिक होयबाक गौरव कृतिक कलात्मक सीमाकेँ ओझल नहि करबाक चाही।

२. जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर' अध्यायक सीमा

अध्याय 'रामेश्वर'केँ प्रथम मौलिक उपन्यास सिद्ध करबाक दिशामे प्रबल अछि, मुदा 'प्रथम'क प्रमाण लेल समकालीन प्रकाशन-सूची, विज्ञापन, पाण्डुलिपि आ अन्य सम्भावित उपन्यासक व्यवस्थित तुलना अपेक्षित छल। रामेश्वरक अपराधकेँ सामाजिक विवशतासँ व्याख्यायित करब युक्तिसंगत अछि, मुदा पत्नीपर अविश्वास, हिंसक प्रवृत्ति आ डकैतीमे सक्रिय सहभागिताक नैतिक उत्तरदायित्व कम प्रश्नाङ्कित भेल अछि। अन्तमे पुत्रसँ पुनर्मिलन आ चरित्र-परिवर्तन अत्यन्त आकस्मिक अछि — मनोवैज्ञानिक रूपान्तरणक क्रमिक प्रक्रिया अनुपस्थित रहने समाधान अतिनाटकीय बुझाइत अछि। मार्क्सवादी निकषपर सेहो ई कहल जा सकैछ जे अन्ततः उपन्यासकार रामेश्वरक हृदय-परिवर्तन करा कऽ वर्ग-संघर्षकेँ एकटा नैतिक आदर्शवादमे बदलि दैत छथि — क्रान्तिक सम्भावनाकेँ सुधारवादक पानिसँ निझा देल जाइछ। स्त्री-पात्र पार्वतीक पीड़ा अछि, मुदा हुनकर स्वाधीन दृष्टि सीमित अछि।

३. 'सुमति' अध्यायक सीमा

अध्याय पूर्ववर्ती आलोचकक मतक सङ्ग संवाद करैत अछि, मुदा 'सुमति'क सम्पूर्ण कथानक, पात्र-संरचना, दृष्टिबिन्दु आ भाषा-विन्यासक पर्याप्त प्रत्यक्ष विश्लेषण नहि करैत अछि। ऐतिहासिक महत्त्व आ 'सफल आधुनिक उपन्यास' होयबाक दावा बीच तनाव अछि — जखन कथानक असंगठित, चरित्र अस्पष्ट आ प्रस्तुति अपरिपक्व अछि, तखन 'सफलता'क कसौटी स्पष्ट होयबाक चाही। नारीवादी दृष्टिसँ एकटा गम्भीर प्रश्न ई जे सुमतिक शिक्षाक एकमात्र उद्देश्य देखाओल गेल अछि — खसैत सासुरकेँ सम्हारब आ परिवारकेँ कर्जसँ मुक्त करब; एतय नारीक अपन कोनो स्वतन्त्र सत्ता वा आकाङ्क्षा नहि अछि, ओ पितृसत्तात्मक परिवारक उद्धारकक भूमिका धरि सीमित अछि। 'उचित वक्ता' रूपेँ कथावाचकक बेर-बेर हस्तक्षेप उपन्यासक संरचनात्मक स्वायत्ततेकेँ खण्डित करैत अछि, जकरा जयकान्त मिश्र 'अपरिपक्व शिल्प' कहने छथि; भाषा निबन्धात्मक अछि, जाहिमे तुलसीदासक चौपाइक भरमार अछि — ई काव्य-दोष थिक। सामाजिक सुधारक विषय अपनहि कलात्मक श्रेष्ठताक प्रमाण नहि — कथा-वस्तु महत्त्वपूर्ण होइतहुँ ओकर प्रस्तुति, चरित्रगत जटिलता आ आन्तरिक अनिवार्यता समान रूपसँ आवश्यक अछि।

४. 'निर्दयी सासु' अध्यायक सीमा

कथा स्त्री-उत्पीड़नक प्रश्न उठबैत अछि, मुदा सासुकेँ 'निर्दयी' खलपात्र बनाओलापर पितृसत्ताक व्यापक संरचना व्यक्तिगत क्रूरतामे सीमित भऽ सकैत अछि। सासु स्वयं कोन सामाजिक दबाव, आर्थिक भय, विवाह-व्यवस्था आ प्रतिष्ठा-बोधक उत्पाद छथि — एहि प्रश्नक पर्याप्त विवेचन नहि अछि। पुतोहुक चरित्र करुणाक पात्र बनैत अछि, मुदा ओकर प्रतिरोध, इच्छाशक्ति, स्त्री-समुदायक सहयोग आ वैकल्पिक जीवन-सम्भावना कम विकसित अछि — नायिका शारदा सम्पूर्ण कथामे प्रायः मूक अछि, आ वञ्चित-विमर्शक यक्ष प्रश्न — की उपाश्रित बाजि सकैत अछि? — एतय पूर्णतः प्रासङ्गिक अछि। एकाङ्गी आ सपाट चरित्र-निर्माण संरचनावादी दृष्टिसँ सेहो सीमा थिक। नारीवादी दृष्टिसँ स्त्रीकेँ केवल पीड़िता बनायब सेहो प्रतिनिधित्वक सीमा अछि।

५. बिसरल साहित्यसेवी जनार्दन झासम्बन्धी सीमा

अध्यायक अभिलेखीय उद्देश्य प्रशंसनीय अछि, मुदा सीमित सामग्रीपर आधारित जीवन-विवेचन कतेको स्थानपर अनुमानपर निर्भर अछि। 'जानकी परिणय'क सांस्कृतिक विवरणक चर्चा अछि, मुदा काव्यक छन्द, भाषा, अलङ्कार, कथन-गति आ पात्र-निर्माणक विस्तार कम अछि। विस्मृत लेखककेँ पुनः प्रतिष्ठित करबाक उत्साहमे कृतिक वास्तविक कलात्मक सीमा कहियो-कहियो गौण भऽ जाइत अछि — इतिहासमे स्थान देब आ उच्च साहित्यिक मूल्य देब एके बात नहि।

६. त्रिलोचन झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

लेखक स्वयं स्वीकार करैत छथि जे त्रिलोचन झाक सामग्री बिखरल आ अल्प उपलब्ध अछि। एहि कारण अध्याय जीवनीपरक पुनर्निर्माण अधिक, कृति-आधारित आलोचना कम बनि जाइत अछि। मातृभाषा-प्रेम, संगठन आ समाजसेवाक प्रशंसा पर्याप्त अछि, मुदा हुनकर विशिष्ट साहित्यिक शैली, भाषिक प्रयोग, विधागत क्षमता आ विचारक अन्तर्विरोध कम स्पष्ट अछि। मिथिलाक गौरव पुनः प्राप्त करबाक आह्वान कहियो-कहियो रोमानी अतीतवाद दिस जा सकैत अछि — समाजक वर्ग-भेद आ जाति-भेदकेँ ओझराय केवल भावनात्मक एकताक आह्वान अव्यावहारिक बनि सकैछ। प्राचीन गौरवक सङ्ग जातिगत विषमता, स्त्री-बहिष्कार आ सामाजिक रूढ़िक आलोचना सेहो समान रूपसँ आवश्यक छल।

७. यदुवरसम्बन्धी अध्यायक सीमा

यदुवरक राष्ट्रीय आ भाषिक चेतनापर अधिक बल देल गेल अछि; काव्यक रूप, छन्द, ध्वनि, बिम्ब, वक्रोक्ति आ वैयक्तिक स्वरक विश्लेषण अपेक्षाकृत कम अछि। मातृभाषा-जागरणक कविता कतेको स्थानपर घोषणात्मक आ उपदेशात्मक भऽ सकैत अछि — 'जय जय जयति मैथिल जाति' सन पङ्क्तिमे अभिधाक प्राधान्य अछि, ध्वन्यार्थ कम — आ अध्याय प्रचारात्मकता आ काव्यात्मकताक अन्तर स्पष्ट नहि करैत अछि। 'मैथिल' समुदायकेँ एकरूप मानल गेल अछि; जाति, वर्ग, लिङ्ग आ क्षेत्रानुसार मैथिल अनुभवक भिन्नतापर विचार कम अछि। भाषिक अस्मिता सभ मैथिल लेल एके रूपेँ अनुभवित होइत अछि — ई मान्यता प्रश्नास्पद अछि। आदर्शवादक अतिरेकमे मिथिलाक सामन्ती व्यवस्थाक ठोस आलोचनाक अभाव सेहो एकटा सीमा थिक।

८. द्विजवरसम्बन्धी अध्यायक सीमा

कवि-सेनानीक सक्रिय जीवन निश्चय महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा जीवनीक वीरता काव्यक स्वतन्त्र आलोचनापर भारी पड़ैत अछि। राजनीतिक सक्रियता अपनहि उत्कृष्ट काव्यक प्रमाण नहि — कविता सभक भाषा, छन्द, प्रतीक, वैचारिक जटिलता आ कलात्मक

स्थायित्वक अधिक निकट विश्लेषण आवश्यक छल। राष्ट्रीयताकेँ निर्विवाद लोकमङ्गलक मूल्य मानि लेल गेल अछि; राष्ट्रवादक भीतर वर्ग, जाति, धर्म आ लैङ्गिक असमानता सेहो रहि सकैत अछि। स्वदेशी आ चरखाक सामाजिक अर्थ अछि, मुदा आधुनिक आर्थिक संरचनासँ ओकर सम्बन्ध आलोचनात्मक रूपसँ नहि खोलल गेल। 'छूतहर'मे शोषितक बात अछि, मुदा ई क्रान्तिकारी चेतनाक बदला गान्धीवादी सुधारवादी परिधि धरि सीमित रहि जाइछ आ छन्द-बद्धता कतहु-कतहु यथार्थकेँ कुण्ठित करैत अछि।

९. कुमार गंगानन्द सिंहसम्बन्धी सीमा

लेखक स्वयं देखबैत छथि जे कथाकारक कतेको कथा लक्ष्य-प्रधान अछि — पहिने नैतिक निष्कर्ष स्थिर होइत अछि, तकर बाद पात्र आ घटना जोड़ल जाइत अछि। एहि कारण कथा जीवनक स्वाभाविक जटिलताक बदला उदाहरण बनि जाइत अछि। अनेक कथामे दीर्घ कालखण्ड, अनावश्यक मोड़, घटनाक विस्तार आ अन्तमे सम्पूर्ण समाधान कथा-प्रभावकेँ कमजोर करैत अछि — लेखक सेहो 'विवाह' आ 'बिहाड़ि'क तन्तुवाय फलकि जाएब स्वीकारैत छथि। सामाजिक सुधारक आग्रह रहितहुँ जाति-उन्मूलन आधा बाटपर रुकि जाइत अछि — अस्पृश्यताविरोधी कथा दलित पात्रकेँ पूर्ण सामाजिक समानता धरि नहि लऽ जाइत अछि आ 'बिहाड़ि'क सुधार अन्ततः उच्च वर्गक अनुकम्पापर निर्भर रहैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ 'पञ्च परमेश्वर'मे विरुद्ध हेत्वाभासक स्थिति अछि — एक दिस सुधारक बात आ दोसर दिस ग्राम-पञ्चायतकेँ ई उपदेश जे "सामन्त आ जमीन्दारक आमोद-प्रमोदमे व्याघात नहि करबाक चाही" — सुधारक गप्प करैत शोषक वर्गक सुख-शान्तिक वकालत। स्त्री-पात्रक संख्या सेहो कम अछि।

१०. हरिलतासम्बन्धी अध्यायक सीमा

एहि निबन्धक सीमा ई जे समीक्षक हरिलताक वैधव्य-जनित वेदनाकेँ मात्र 'ईश्वरोन्मुखता'क कारण मानि लैत छथि, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावनाकेँ अनदेखा कऽ दैत छथि। एक सशक्त नारीवादी पाठ एतय सम्भव छल — बाल-विवाह, वैधव्य, स्त्री-शिक्षाक निषेधक विरुद्ध चोरा कऽ अक्षर सीखबाक संघर्ष — मुदा विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति धरि सीमित रहि गेल। मनोविश्लेषणक दृष्टिसँ ई प्रश्न सेहो उठैत अछि जे भक्ति एतय सामाजिक यथार्थसँ पलायनक साधन तँ नहि बनल — भौतिक यन्त्रणाकेँ आध्यात्मिक रहस्यवादमे रूपान्तरित कऽ सामाजिक अधिकारक प्रश्नकेँ स्थगित कऽ देब। ई दुनू सम्भावित पाठ — भक्ति-रसक शास्त्रीय आस्वाद आ सामाजिक प्रतिरोधक अपठित सम्भावना — क बीचक तनावकेँ निबन्ध नहि खोलैत अछि।

११. श्यामानन्द झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्यायक शीर्षक 'काव्य-वस्तु' अछि आ लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ओ कला-पक्षक बदला वस्तु-पक्षक अध्ययन करैत छथि। एहि कारण छन्द, बिम्ब, ध्वनि, वाक्य-विन्यास, अलङ्कार आ शैलीक समुचित मूल्याङ्कन छूटि जाइत अछि। सांस्कृतिक पुनरुत्थानक विचारमे 'आर्य संस्कृति'क आदर्शीकरण अछि; एहि संस्कृतिक भीतर जाति, स्त्री-अधिकार आ सामाजिक बहिष्कारक प्रश्न कम उठैत अछि। विदेशी प्रभाव अथवा देवनागरीक प्रयोगकेँ कतेको स्थानपर षड्यन्त्रक रूपमे देखल गेल अछि — भाषिक परिवर्तनक जटिल सामाजिक, मुद्रणगत आ शैक्षिक कारण सेहो विचारणीय छल। व्यङ्ग्य कतहु-कतहु व्यक्तिगत आक्रोश आ नारामे बदलि जाइछ, जाहिसँ ध्वनि क्षीण भऽ जाइछ।

१२. लक्ष्मीपति सिंह आ पत्रकारितासम्बन्धी सीमा

अध्याय व्यक्तित्वक स्नेहपूर्ण स्मरण अधिक अछि, पत्रकारिताक संस्थागत इतिहास कम। पत्रिकाक प्रसार-सङ्ख्या, आर्थिक आधार, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, सम्पादकीय नीति आ पाठकीय प्रतिक्रिया सम्बन्धी तथ्य सीमित अछि। महिला पाठिका, ग्रामीण ग्राहक, मुद्रक, वितरक आ सहयोगी लेखकक भूमिका स्पष्ट नहि होइत अछि। पत्रकारिता आ साहित्यिक सम्पादनक सीमा सेहो अधिक स्पष्ट होयबाक चाही — समाचार, विचार, साहित्य, संस्था-सूचना आ सामाजिक अभियानक पृथक कार्यप्रणालीक विश्लेषण कएल जा सकैत छल। संगहि, मैथिली पत्रकारिताक 'वैसाखी'पर ठाढ़ रहबाक जे स्वीकृति अछि, ओकर विश्लेषणमे आर्थिक संकटपर जतेक जोर अछि, वैचारिक शून्यता आ सत्तासँ प्रश्न करबाक साहसक अभावपर ओतेक नहि।

१३. मधुपक गीत-साहित्यक सीमा

अध्याय मधुपक गीतक सामाजिक आ सांस्कृतिक उपयोगितापर बल दैत अछि, मुदा धुन, मात्रा, ताल, गायन-परम्परा आ प्रदर्शन-सन्दर्भक विस्तृत विश्लेषण कम अछि। सावित्री, पतिव्रता आ गृहस्थ आदर्शक स्त्री-छवि पितृसत्तात्मक आदर्शकेँ पुष्ट करि सकैत अछि — स्त्रीक शिक्षा आ नैतिक सामर्थ्यक प्रशंसा अछि, मुदा ओकर आत्मनिर्णय, इच्छा आ वैकल्पिक जीवनक प्रश्न सीमित अछि।

गीतक लोकप्रियता आ साहित्यिक स्थायित्व अलग-अलग कसौटी अछि — कण्ठस्थता काव्य-मूल्यक महत्त्वपूर्ण सङ्केत अछि, मुदा एकमात्र प्रमाण नहि।

१४. भट्टीकाव्य परम्परासम्बन्धी सीमा

संस्कृत भट्टीकाव्य आ मधुपक काव्यक बीच सम्बन्ध रोचक अछि, मुदा प्रत्यक्ष पाठगत समानता, अनुकरण, रूपान्तरण आ स्वतन्त्र विकासक स्पष्ट प्रमाण अधिक चाही। शिक्षणपरक काव्यकेँ परम्परागत निरन्तरताक रूपमे देखब कतेको भिन्न काल, भाषा आ पाठक-समुदायकेँ एकरूप बना सकैत अछि। व्याकरण अथवा अलङ्कार सिखयबाक प्रयोजन कहियो काव्यक रसात्मक स्वतन्त्रताकेँ सीमित करैत अछि — अध्याय एहि तनावकेँ पर्याप्त कठोरतासँ नहि परखैत अछि। सभसँ गम्भीर प्रश्न औचित्य-सिद्धान्तक — 'आत्माक प्रतिकूल' रचनाकेँ 'व्यक्तिसँ पैघ समाज'क तर्कसँ उचित ठहराएब भाव-औचित्यक मूल-भङ्गक प्रश्न अनुत्तरित छोड़ि दैत अछि; प्रयोजन-प्रेरित रचनाक सौन्दर्यशास्त्रीय स्थिति की हएत, ताहिपर सैद्धान्तिक स्पष्टता नहि भेटैत अछि। विदेह ज्ञानमीमांसाक कठोरतम निकषपर तँ राज्याश्रयमे लिखल 'कोबर गीत' दरबारी विवशताक द्योतक थिक — जनभाषाक गीतकार जखन राजस्तुति लिखय लेल बाध्य कएल जाइत छथि, तखन ज्ञानमीमांसीय साहस आ शब्द-प्रमाण दुनू आहत होइत अछि — यद्यपि रमानन्द झाक 'युगीन विवशता'क सहानुभूतिपूर्ण व्याख्या एहि प्रकरणक ऐतिहासिक जटिलताकेँ सेहो रेखाङ्कित करैत अछि।

१५. किरणक कथा-जगतसम्बन्धी सीमा

किरणक सामाजिक प्रगतिशीलताक प्रशंसा कतेको स्थानपर कथाक औपचारिक विश्लेषणकेँ पाछाँ छोड़ि दैत अछि। कथानक, कथावाचक, दृष्टिबिन्दु, समय, मौन आ प्रतीकक विस्तार अपेक्षित अछि। मार्क्सवादी अथवा सुधारवादी निष्कर्ष सभ कथापर समान रूपसँ लागू कएलापर रचनाक अन्तर्विरोध, अस्पष्टता आ बहुअर्थकता घटि सकैत अछि। किरणक 'मैथिल दृष्टि' कोन सामाजिक स्थानसँ बनैत अछि — ब्राह्मण, दलित, स्त्री, किसान अथवा नगरवासी सभक दृष्टि एक होइत अछि कि नहि — ई प्रश्न कम उठैत अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ 'चन्द्रग्रहण'क तर्क-पद्धतिमे सव्यभिचार हेत्वाभासक स्थिति देखल जा सकैछ — अन्धविश्वासक खण्डन लेल 'विधर्मी द्वारा अपहरण' सन अतिनाटकीय आ साम्प्रदायिक रङ्गवला तर्कक सहारा — जँ अपहरण नहि होइत, तँ की गङ्गा-स्नान-सम्बन्धी अन्धविश्वास उचित छल? तर्कक ई शिथिलता कथाक प्रगतिशील अभिप्रायकेँ कमजोर करैत अछि।

१६. 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्रसम्बन्धी सीमा

स्त्री-पात्रक नूतनता पहचानल गेल अछि, मुदा स्त्रीक मूल्याङ्कन कतेको स्थानपर त्याग, शील, प्रेम आ पारिवारिक दायित्वक परम्परागत कसौटीसँ होइत अछि। नायिकाक कामना आ देहबोधक चर्चा अछि, मुदा स्त्रीक आर्थिक स्वतन्त्रता, सम्पत्ति-अधिकार, शिक्षा, श्रम आ सार्वजनिक जीवनमे सहभागिताक प्रश्न सीमित अछि। कथा-वाचकक पुरुष-दृष्टि आ पात्रक अपन स्वरमे स्पष्ट अन्तर करब आवश्यक छल — लेखकद्वारा स्त्रीकेँ बजाओल जाएब आ स्त्रीक स्वतन्त्र आत्मकथन समान नहि।

१७. 'चर्चरी' अध्यायक सीमा

गप्पकेँ स्वतन्त्र विधा मानबाक तर्क सर्जनात्मक अछि, मुदा विधाक अनिवार्य लक्षण, सीमा, संरचना आ कथा-निबन्ध-प्रहसनसँ भेद व्यवस्थित रूपसँ निर्धारित नहि अछि। हरिमोहन झाक हास्य कहियो सामाजिक विद्रूपताक सूक्ष्म परीक्षणक बदला पात्रक उपहास बनि जाइत अछि — हास्यक लक्ष्य प्रायः कमजोर, ग्रामीण, स्त्री अथवा रूढ़िवादी पात्र बनलापर सत्ता-विरोधी व्यङ्ग्यक धार मन्द भऽ सकैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ ई सेहो कहल गेल अछि जे हरिमोहन झा समाजक ऊपरी सतहपर चोट करैत छथि — कर्मकाण्ड आ पण्डिताइपर — मुदा सामन्ती आर्थिक आधारपर प्रहार नहि करैत छथि; केवल हँसी-ठट्ठासँ समाजक गम्भीर घाउक चिकित्सा असम्भव। लेखक स्वयं पूर्ववर्ती आलोचकक — प्रो॰ जयदेव मिश्र आ डा॰ जयकान्त मिश्रक — ई मत उद्धृत करैत छथि जे हरिमोहन बाबू पुरान मूल्यकेँ तँ तोड़ि देलनि, मुदा कोनो नव आ रचनात्मक जीवन-मूल्य स्थापित नहि कऽ सकलाह — ई वैचारिक शून्यताक प्रश्न उठबैत अछि, आ ई सेहो जे दोष खोजबाक अत्यधिक आग्रह उदात्त सांस्कृतिक मूल्यकेँ क्षति पहुँचबैत अछि आ विकल्प प्रस्तुत नहि करैत।

१८. यात्रीक स्तम्भ-लेखनक सीमा

स्तम्भ तात्कालिक घटनापर लिखल जाइत अछि, तेँ ओकर अनेक सन्दर्भ समय बीतलापर अस्पष्ट भऽ जाइत अछि; सम्पूर्ण पत्रिका, समाचार आ पाठकीय प्रतिक्रिया बिना टिप्पणीक आशय अधूरा रहि सकैत अछि। यात्रीक प्रथम पुरुषक तीक्ष्ण स्वर स्तम्भकेँ जीवन्त

बनबैत अछि, मुदा कतेको स्थानपर व्यक्तिगत निर्णय, व्यङ्ग्य अथवा आक्रोश विश्लेषणपर भारी पड़ि सकैत अछि। स्तम्भ-लेखनक विधागत सीमा सेहो अछि — तात्कालिक प्रतिक्रियासँ आगाँ बढ़ि ई कोनो दीर्घकालीन सैद्धान्तिक विकल्प नहि दऽ पबैत अछि। तीनू स्तम्भ कम अवधिक लेल चलल; एहि कारण यात्रीक स्तम्भ-चिन्तनक दीर्घकालीन विकासक्रम निर्धारित करब कठिन अछि। उपलब्ध सामग्रीक आलोचनात्मक सम्पादन आ कालानुक्रमिक प्रकाशन आवश्यक अछि।

१९. आरसीसम्बन्धी अध्यायक सीमा

आरसीक विशाल काव्ययात्राकेँ राष्ट्रीयता, मिथिला-प्रेम, सामाजिकता आ गीतात्मकताक प्रमुख सूत्रमे समेटल गेल अछि, मुदा चरणानुसार वैचारिक परिवर्तनक अधिक सूक्ष्म विश्लेषण सम्भव छल। प्रारम्भिक राष्ट्रीय कविता कहियो घोषणात्मक अछि — प्रखर राष्ट्रवादक शोरमे कतहु-कतहु मिथिलाक आन्तरिक वर्ग-संघर्ष आ सीमान्तकृत समाजक सूक्ष्म यथार्थ दबा जाइत अछि आ कविता प्रचार दिस झुकि जाइत अछि। मिथिलाक प्राकृतिक सौन्दर्यक वर्णन आदर्शीकृत अछि, जखन यथार्थमे बाढ़, गरीबी आ पलायन सेहो समान रूपसँ वर्तमान छल। छायावाद आ रहस्यवादक प्रभाव उल्लेखित अछि, मुदा आरसी एहि प्रभावकेँ कोना मैथिली अनुभवमे रूपान्तरित करैत छथि, तकर तुलनात्मक परीक्षण कम अछि।

२०. मोहनजीसम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्याय संस्मरणात्मक आत्मीयतासँ भरल अछि। एहि आत्मीयतासँ व्यक्तित्व जीवन्त बनैत अछि, मुदा आलोचनात्मक दूरी घटैत अछि। जीवन-सङ्घर्ष, गरीबी आ उदार स्वभावक वर्णन विस्तृत अछि; काव्य-संग्रह, पाठान्तर, छन्द, बिम्ब, भाषा आ विचार-विकासक व्यवस्थित विश्लेषण अपेक्षाकृत कम। 'आयल वसन्त'क लोकप्रियता सम्पूर्ण काव्य-व्यक्तित्वक प्रतिनिधि नहि भऽ सकैत अछि — कम प्रसिद्ध, कमजोर अथवा विचारात्मक कविता सभक परीक्षण रहितए मूल्याङ्कन अधिक सन्तुलित होइत।

२१. उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'सम्बन्धी सीमा

भाषिक शुद्धतावाद मातृभाषा-स्वाभिमानक साधन भऽ सकैत अछि, मुदा कठोर रूपमे ओ भाषा-संकरता, नवशब्द, शहरी अनुभव आ बदलैत बोलचालकेँ अस्वीकार करि सकैत अछि। भाषा जीवित समाजक सङ्ग बदलैत अछि — प्रत्येक बाहरी शब्द अपवित्र आ प्रत्येक पुरान शब्द शुद्ध नहि होइत अछि; शुद्धताक कसौटी के निर्धारित करत — ई प्रश्न आवश्यक अछि। कथाकारक भाषा-साधनाक प्रशंसा अछि, मुदा कथानक, चरित्र, मनोविज्ञान आ सामाजिक दृष्टिक सीमापर समान विस्तार नहि — भाषा कथा-साहित्यक प्रमुख तत्त्व अछि, मुदा एकमात्र तत्त्व नहि। संगहि एतय एक आलोचनात्मक अन्तर्विरोध सेहो अछि — रमानन्द झा व्यासक कथाकेँ 'समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होएब' आ 'परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहब'केँ गुण मानैत छथि, जखन कि अन्यत्र (गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण, ललित, धीरेन्द्रक विवेचनमे) ओ यथार्थ-संवेदना आ परिवेश-सम्पृक्तिकेँ सर्वोच्च मूल्य मानैत छथि — मूल्य-मानदण्डक अस्थिरताक ई स्पष्ट प्रमाण थिक, जकर विस्तृत विवेचन आगाँ पद्धतिगत सीमामे कएल गेल अछि।

२२. राजेश्वर झासम्बन्धी अध्यायक सीमा

ई अध्याय स्वयं अत्यन्त आलोचनात्मक अछि, मुदा कतेको स्थानपर खण्डनक स्वर अत्यधिक कठोर बनि जाइत अछि। शोधकर्ताक ऐतिहासिक परिस्थिति, उपलब्ध स्रोत आ समयक पद्धतिगत सीमा सेहो ध्यानमे राखल जा सकैत छल। राजेश्वर झाक निष्कर्ष प्रमाणहीन अछि — ई देखाओल गेल, मुदा वैकल्पिक काल-विभाजन अथवा अवहट्ट-विकासक पूर्ण प्रतिमान प्रस्तुत नहि कएल गेल। व्यक्तित्व आ कृतित्वक परिचयक बाद त्रुटि-सूची विस्तृत अछि; श्रेष्ठ शोध, उपयोगी सङ्कलन अथवा सफल नाटकक निकट पाठ कम अछि। आलोचना केवल असहमति नहि, उपयोगी अंशक पुनर्स्थापन सेहो होयबाक चाही। संगहि राजेश्वर झाक निधनक शोक-प्रसङ्गमे आत्मीयता-जनित भावुकता आलोचनात्मक दूरीकेँ प्रभावित करैत अछि।

२३. ललितक कथासम्बन्धी अध्यायक सीमा

अध्याय सामाजिक, राजनीतिक, अस्तित्ववादी, लैङ्गिक आ धार्मिक अनेक प्रश्न एकत्र करैत अछि। एहि विस्तारसँ कतेको कथाक विशिष्ट रूप आ सौन्दर्य पाछाँ पड़ि जाइत अछि। यौनिक इच्छाकेँ जैविक आवश्यकता कहि धार्मिक-नैतिक बन्धनसँ मुक्त करबाक व्याख्या एकाङ्गी भऽ सकैत अछि — इच्छा सत्ता, सहमति, लैङ्गिक असमानता आ भावात्मक सम्बन्धसँ सेहो जुड़ल अछि। कथा सभकेँ युगक प्रत्यक्ष दस्तावेज मानल गेल अछि; साहित्य यथार्थक प्रतिलिपि नहि — चयन, कल्पना, प्रतीक आ कथन-दृष्टिद्वारा निर्मित रूप अछि। लेखक आ पात्रक विचारमे भेद आवश्यक अछि।

२४. धीरेन्द्रक कथासम्बन्धी सीमा

सामाजिक सन्दर्भक सैद्धान्तिक प्रस्ताव महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा प्रत्येक कथाकेँ वर्ग-शोषण, बेरोजगारी आ सामाजिक अन्यायमे सीमित करलापर रचनाक मनोवैज्ञानिक, भाषिक आ प्रतीकात्मक स्तर घटि सकैत अछि। 'गीध'क प्रतीक प्रभावशाली अछि, मुदा प्रतीकक अनेक सम्भावित अर्थक बदला एक निश्चित वर्गीय अर्थपर बल देल गेल अछि। कथाक भाषा, संवाद, मौन, कथा-वाचकक दूरी, अन्तक अनिश्चितता आ पाठकीय सहभागिताक अधिक विश्लेषण अपेक्षित छल। सामाजिक विषयक प्रासङ्गिकता स्वतः कलात्मक सिद्धिक प्रमाण नहि।

२५. प्रभासक कथा-यात्राक सीमा

'यात्रा' शब्द क्रमिक विकासक भाव उत्पन्न करैत अछि, मुदा प्रत्येक लेखकक सर्जना सरल रेखामे आरम्भिकसँ परिपक्व दिस नहि बढ़ैत अछि — बादक रचना सदैव पहिलसँ श्रेष्ठ हो, ई आवश्यक नहि। जीवनी आ सामाजिक परिवेशकेँ कथा-विकासक प्रमुख कारण मानल गेल अछि; साहित्यिक प्रभाव, पत्रिकाक सम्पादकीय नीति, पाठक-वर्ग, विधागत प्रयोग आ आत्मसमीक्षाक भूमिका कम स्पष्ट अछि। प्रभासक चुनल कथा सभक आधारपर सम्पूर्ण कथा-दृष्टि निर्धारित करब सीमित निष्कर्ष भऽ सकैत अछि — अप्रकाशित, दुर्लभ अथवा कम सफल कथा सेहो समग्र मूल्याङ्कन लेल आवश्यक अछि।

पद्धतिगत संकट: समग्र सीमाक विस्तृत विवेचन

सीमा १: संकलनात्मक असंगति आ संरचनात्मक एकसूत्रताक अभाव

कृतिक सर्वप्रथम आ सर्वाधिक मौलिक सीमा ओकर उत्पत्ति-प्रक्रियामे निहित अछि। ई पचीस निबन्ध सन् १९७२ सँ १९८९ धरि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न अवसरपर, विभिन्न पाठक-वर्गकेँ ध्यानमे राखि, स्वतन्त्र रूपेँ लिखल गेल छल। एकरा एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ एक अन्तर्निहित असंगति उत्पन्न होइत अछि — कतहु व्यक्तित्व-प्रधान (त्रिलोचन झा, राजेश्वर झा), कतहु कृति-प्रधान ('सुमति', 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र), कतहु विधा-प्रधान (स्तम्भ-लेखन), कतहु प्रवृत्ति-प्रधान (यदुवर, द्विजवर) समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्धकेँ नहि बान्हैत अछि। फलतः पाठककेँ बेर-बेर सन्दर्भ-परिवर्तन करय पड़ैत अछि। रूपवादी दृष्टिसँ ई संरचनात्मक शिथिलता थिक — ग्रन्थमे कोनो आरोह-अवरोह-युक्त तार्किक प्रगति नहि। अध्याय-क्रम प्रायः लेखक-जन्मक कालक्रमपर आधारित बुझाइत अछि, मुदा ई क्रम सेहो असंगत अछि — किछु निबन्ध अत्यन्त लघु, किछु अत्यन्त दीर्घ, बिना कोनो घोषित तर्कक। एक सुनियोजित ग्रन्थमे जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होइत अछि, से एहिमे अनुपस्थित अछि — प्रत्येक निबन्धक अन्तमे मात्र मूल प्रकाशन-स्रोत आ तिथि देल अछि, जे संकलनक जोड़ा-जाड़ी प्रकृतिकेँ उघारि दैत अछि। अध्याय सभक विस्तार, पद्धति आ आलोचनात्मक गहराई समान नहि।

सीमा २: 'अनुपलब्धता'क आवर्ती स्वीकृति — समीक्षाक आधारभूत दुर्बलता

कृतिक सर्वाधिक गम्भीर पद्धतिगत संकट ई जे लगभग प्रत्येक प्रारम्भिक निबन्धमे समीक्षक स्वयं मूल रचनाक 'अनुपलब्धता'केँ स्वीकार करैत छथि। 'चन्द्रप्रभा'क प्रसङ्गमे — 'चन्द्रप्रभाक अध्ययन-विश्लेषण नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि, एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता'; त्रिलोचन झाक प्रसङ्गमे — 'बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि'; यदुवरक प्रसङ्गमे — 'यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल अछि'; बिसरल जनार्दन झाक प्रसङ्गमे — 'पत्र-पत्रिकोमे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि।'

एतय एक गहन विरोधाभास उत्पन्न होइत अछि — जँ मूल कृति समीक्षककेँ स्वयं उपलब्ध नहि छल, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधारपर सम्भव? बहुत ठाम समीक्षा वस्तुतः द्वितीयक स्रोतपर — जयकान्त मिश्रक मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झाक शोध-प्रबन्ध, अन्य समीक्षकक उद्धरणपर — आश्रित भऽ जाइत अछि। रमानन्द झा स्वयं स्वीकार करैत छथि जे अधिकांश परवर्ती समीक्षकक 'सामग्रीक सीमा जयकान्त मिश्रक इतिहासे अछि' — मुदा ई आरोप स्वयं हुनकहुपर आंशिक रूपेँ लागू होइत अछि। पाठ-केन्द्रित समीक्षाक दृष्टिसँ ई एक मौलिक दुर्बलता थिक — पाठ बिना समीक्षा।

विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक दृष्टिसँ ई सीमा अत्यन्त शिक्षाप्रद थिक। समान्तर इतिहासक पहिल दायित्व अभिलेखीकरण आ पाठ-सुलभीकरण थिक — मूल पाठकेँ डिजिटल/मुद्रित रूपेँ सर्वसुलभ केने बिना ओकर पुनर्मूल्याङ्कन असम्भव। रमानन्द झा एहि आवश्यकताकेँ बेर-बेर रेखाङ्कित तँ करैत छथि ('सर्वसुलभ भेलेपर विशेष प्रकाश पड़ि सकत'), मुदा ओ स्वयं ओहि अभिलेखीय

कार्यकेँ सम्पन्न नहि कऽ पबैत छथि — किएक तँ ओहि डिजिटल-पूर्व युगमे ई व्यक्तिगत श्रमसँ असम्भव-प्राय छल। इएह अभिलेखीय रिक्तताकेँ विदेह-आन्दोलन अपन ई-पत्रिका, पोथी-संग्रह आ पञ्जी-अभिलेखीकरणसँ भरबाक प्रयास करैत अछि। तात्पर्य — 'अखियासल'क सभसँ पैघ सीमा इएह ओकर सभसँ पैघ ऐतिहासिक सार्थकता थिक: ई ओहि रिक्तताकेँ नामाङ्कित करैत अछि जकरा भरब परवर्ती पीढ़ीक दायित्व बनि जाइत अछि।

सीमा ३: मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

गम्भीर सैद्धान्तिक दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक विचारणीय दोष ओकर मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता थिक। रमानन्द झा एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि —

(क) गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्रक विवेचनमे समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवनक प्रतिबिम्बनकेँ सर्वोच्च मूल्य मानल गेल अछि; मुदा व्यासक कथाकेँ ठीक एहि कारणेँ प्रशंसित कएल गेल जे ओ समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहैत अछि। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध थिक — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनहु गुण, कखनहु ओकर अभाव गुण।

(ख) हरिमोहन झाक हास्यकेँ 'विचारक उन्मेष नहि करब'क कारणेँ न्यून मूल्य देल गेल, मुदा मधुपक गीतकेँ 'तत्काल हृदय-प्रभाव' आ आनन्दक कारणेँ उच्च मूल्य देल गेल — जखन कि गीत सेहो प्रायः वैचारिक मन्थन नहि, अपितु भाव-तात्कालिकतापर आश्रित होइत अछि। तत्काल-प्रभाव कखनहु गुण (गीत), कखनहु दोष (हास्य) ।

(ग) 'कोबर-गीत' सन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचनाकेँ 'व्यक्तिसँ पैघ समाज'क तर्कसँ उचित ठहराओल गेल, मुदा क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारक दृष्टिसँ आत्माक प्रतिकूल रचना भाव-औचित्यक मूल-भङ्ग थिक — समीक्षक एतय सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान नहि कऽ पबैत छथि।

ई अस्थिरता एहि कारणेँ अछि जे रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अपनबैत छथि। ओ प्रसङ्गानुसार कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक, कखनहु रूपवादी दृष्टि अपनबैत छथि। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक दिस लचीलापन दैत अछि, तँ दोसर दिस मूल्याङ्कनकेँ अप्रत्याशित आ असंगत बना दैत अछि।

सीमा ४: सैद्धान्तिक अनुशीलनक अभाव — शास्त्रीय शब्दावलीक अनुपस्थिति

यद्यपि रमानन्द झाक समीक्षामे रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूपेँ विद्यमान अछि, तथापि ओ एहि शास्त्रीय प्रतिमानकेँ कतहु सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरणक रूपमे प्रयोग नहि करैत छथि। 'व्यञ्जित', 'सम्प्रेषण', 'भावाश्रित' सन शब्द तँ अबैत अछि, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्यक नाम आ हुनक सिद्धान्तक व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित अछि। ओहिना, पाश्चात्य सिद्धान्तक कतहु नामोल्लेख अथवा सुविचारित प्रयोग नहि भेटैत अछि। एहिसँ एक द्वैध स्थिति उत्पन्न होइत अछि। एक दिस ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षाकेँ सुपाठ्य, सम्प्रेषणीय आ पत्रकारीय-सुलभ बनबैत अछि — जे ओकर मूल प्रकाशन-सन्दर्भ (पत्रिका) क अनुकूल छल। मुदा दोसर दिस ई अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक तँ अछि, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम अछि। एक समान्तर इतिहासकेँ दीर्घकालिक वैधता प्रदान करबा लेल जे सुदृढ़ सैद्धान्तिक आधार आवश्यक होइत अछि, से एहिमे अविकसित रहि जाइत अछि।

सीमा ५: परिप्रेक्ष्यक सीमा — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

समाजशास्त्रीय आ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ कृतिक एक गम्भीर सीमा ओकर सामाजिक परिप्रेक्ष्यक संकीर्णतामे अछि। पचीस निबन्धमे चौबीस पुरुष-रचनाकारकेँ समर्पित अछि; मात्र एक (हरिलता) स्त्री-रचनाकारकेँ। ओहूमे हरिलताक विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति धरि सीमित रहि जाइत अछि। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणाक रूपमे उपस्थित छथि, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचकक रूपमे कम — स्त्री-लेखिकाक स्वतन्त्र साहित्यिक इतिहास पर्याप्त विकसित नहि।

ओहिना, विवेचित प्रायः समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तरसँ अबैत छथि। मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्पराक — मौखिक साहित्य, गीत-नाद-परम्पराक अनाम रचयिता — रचनाकार एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि; जाति आ वर्गक प्रश्न उठैत अछि, मुदा दलित समुदायक आत्मस्वर सीमित अछि। ई सीमा युग-सापेक्ष थिक (जे

उपलब्ध अभिलेख प्रायः उच्च-वर्णक छल), तथापि विदेह समान्तर-प्रतिमानक पूर्ण जनतान्त्रिक समावेशिताक कसौटीपर 'अखियासल' आंशिक रूपेँ अपूर्ण रहि जाइत अछि। समान्तर इतिहासक अर्थ मात्र बिसरल उच्चवर्णीय रचनाकारक पुनरुद्धार नहि, अपितु समग्र हाशियाक — दलित, स्त्री, लोक, मौखिक — पुनःस्थापना थिक; एहि व्यापक अर्थमे रमानन्द झाक परियोजना एक आरम्भ मात्र थिक, पूर्णता नहि।

सीमा ६: पाठ-प्रामाणिकता आ सम्पादकीय अशुद्धिक प्रश्न

कृतिमे उद्धृत पद्यांश आ गद्यांशक पाठ-प्रामाणिकता सन्दिग्ध रहि जाइत अछि। किएक तँ स्वयं समीक्षक स्वीकार करैत छथि जे बहुतो रचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल आ अनुपलब्ध अछि, तेँ उद्धृत अंशक मूल पाठसँ तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव छल। परवर्ती सम्पादन आ मुद्रण-प्रक्रियामे एहि पाठक शुद्धता आओर संकटग्रस्त भऽ सकैत अछि — उपलब्ध प्रतिमे वर्तनी-अस्थिरता आ मुद्रण-दोष सेहो विद्यमान अछि। एक विश्वसनीय समान्तर इतिहास लेल पाठ-समीक्षा आ आलोचनात्मक संस्करणक अनुशासन अनिवार्य थिक, जकर अभाव एहि आरम्भिक कृतिमे स्वाभाविक अछि। 'प्रथम' आ 'मौलिक' सन पद लेल अधिक कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास आवश्यक अछि; निष्कर्ष जँ सीमित सामग्रीपर आधारित हो, तँ अनुमानकेँ प्रमाणक स्थान नहि लेबाक चाही।

सीमा ७: आत्मीयता-जनित प्रशंसाक अतिरेक आ आलोचनात्मक दूरीक अभाव

अनेक निबन्धमे — विशेषतः लक्ष्मीपति सिंह, मोहन आ राजेश्वर झा-सम्बन्धी अध्यायमे — समीक्षक आ विवेच्य रचनाकारक बीच व्यक्तिगत आत्मीयता समीक्षाकेँ संस्मरणात्मक श्रद्धाञ्जलिक रूप दऽ दैत अछि। मोहनक स्मरण, लक्ष्मीपति सिंहक विहुँसैत आकृतिक भावुक चित्रण, राजेश्वर झाक निधनक शोक — ई सभटा भावनात्मक रूपेँ मार्मिक तँ अछि, मुदा एहिसँ आलोचनात्मक दूरी भङ्ग होइत अछि। वस्तुनिष्ठ समीक्षाक दृष्टिसँ ई प्रशंसा-पूर्वाग्रह थिक, जे मूल्याङ्कनक निष्पक्षताकेँ प्रभावित करैत अछि। अपवाद-स्वरूप हरिमोहन झा-सम्बन्धी निबन्धमे समीक्षक जे आलोचनात्मक साहस देखबैत छथि, से समस्त संग्रहमे समान रूपेँ उपस्थित नहि अछि। जीवनी कतहु-कतहु कृतिक विश्लेषणपर आ विषयवस्तु रूप-सौन्दर्यपर भारी पड़ैत अछि।

सीमा ८: समान्तर इतिहास-प्रतिमानक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

अन्ततः, विदेह समान्तर इतिहास-प्रतिमानक दृष्टिसँ सर्वाधिक मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहासक अवधारणाकेँ व्यवहारमे तँ जीबैत छथि, मुदा ओकरा सिद्धान्तक रूपमे स्पष्टतः प्रतिपादित नहि करैत छथि। 'दू कोटिक साहित्यकार'क सिद्धान्त एकर सर्वाधिक निकट थिक, मुदा ओ मुख्यधाराक कैननक — जयकान्त मिश्रक इतिहासक — विकल्प अथवा विरोध नहि, अपितु ओकर पूरक बनि रहि जाइत अछि। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्रकेँ प्रामाणिक आधार मानि हुनकहि सूचनापर आश्रित रहैत छथि, जखन कि समान्तर इतिहासक असली दायित्व मुख्यधाराक कैननक आधार-मान्यताकेँ स्वयं प्रश्नाङ्कित करब थिक। तात्पर्य — 'अखियासल' समान्तर इतिहासक सामग्री तँ प्रस्तुत करैत अछि, मुदा ओकर सैद्धान्तिकी अविकसित छोड़ि दैत अछि। ई कैननकेँ विस्तारित करैत अछि, मुदा कैनन-निर्माणक शक्ति-संरचनाकेँ विखण्डित नहि करैत अछि। इएह ओहि कार्यक रिक्तता थिक जकरा विदेह-आन्दोलन अपन घोषित सैद्धान्तिकी, संस्थागत अभिलेखीकरण आ जनतान्त्रिक समावेशितासँ पूर्ण करबाक प्रयास करैत अछि।

संगहि ई सेहो कहबाक चाही जे मातृभाषा-प्रेम पोथीक ऊर्जा अछि, मुदा कतेको स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक गौरववाद अथवा बाहरी प्रभावक प्रति अत्यधिक संशयमे बदलि जाइत अछि — जखन कि भाषा सदैव सम्पर्क, मिश्रण आ परिवर्तनसँ विकसित होइत अछि; आ राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कतहु-कतहु प्रश्नरहित मूल्य बनि जाइत अछि।

समग्र आलोचनात्मक निर्णय

पोथीक प्रमुख उपलब्धि

'अखियासल'क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि — साहित्यिक इतिहासक विस्मृत स्थान सभपर प्रकाश देब। ई पोथी पूछैत अछि —

मैथिली कथाक वास्तविक आरम्भ कतयसँ मानल जाए?

प्रभाव आ अनुवादमे की अन्तर अछि?

'प्रथम' कृति निर्धारित करबाक प्रमाण की हो?

दुर्लभ पाण्डुलिपि इतिहाससँ कोना बाहर भऽ जाइत अछि?

पत्रिका, सम्पादक आ प्रकाशक साहित्य निर्माणमे की भूमिका निभबैत छथि?

राष्ट्रीय आन्दोलनमे मैथिली साहित्यकारक योगदान किएक विस्मृत भेल?

हास्यक लोकप्रियताक भीतर सामाजिक अन्याय ओझल तँ नहि?

भाषिक शुद्धता आ भाषिक विकासक बीच कोन सम्बन्ध अछि?

स्वतन्त्रताक बाद गरीब, बेरोजगार आ श्रमिकक जीवन किएक नहि बदलल?

साहित्यकारक वैयक्तिक अनुभव कोना सामाजिक अनुभव बनैत अछि?

ई प्रश्न पोथीकेँ साधारण व्यक्तित्व-कृतित्व सङ्ग्रहसँ ऊपर उठबैत अछि।

भारतीय साहित्यशास्त्रक दृष्टिसँ

पोथी रसक सामाजिक विस्तार करैत अछि। करुणा केवल पात्रक दुःखपर आँसू बहायब नहि, दुःखक सामाजिक कारण खोजब अछि। वीरता केवल रणभूमिमे नहि, मातृभाषा-रक्षा, सत्यक पक्ष आ शोषण-विरोधमे अछि। हास्य केवल मनोरञ्जन नहि, सत्ता आ रूढ़िक मुखौटा उतारबाक साधन अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार अनेक कृतिक भीतर प्रत्यक्ष कथासँ अधिक महत्त्वपूर्ण अप्रत्यक्ष सामाजिक अर्थ अछि। औचित्य-सिद्धान्त लेखककेँ इतिहासक दावा, विधागत नामकरण आ चरित्रक विश्वसनीयता परखबाक आधार दैत अछि। मुदा शास्त्रीय निकषपर मुख्यधाराक अनेक आरम्भिक रचनाक सीमा सेहो स्पष्ट होइत अछि — नीति आ उपदेशक भरमारसँ रसभङ्ग, अभिधाक प्राधान्यसँ ध्वनिक क्षय, आ नारा बनैत कवितामे वक्रोक्तिक विनाश।

पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ

'अखियासल'मे नव-इतिहासवादी आ मार्क्सवादी प्रवृत्ति विशेष प्रखर अछि। साहित्य सत्ता, धन, जाति, भाषा, संस्था आ सामाजिक आन्दोलनसँ जुड़ल अछि। ललित आ धीरेन्द्रक कथा-विवेचन अस्तित्वगत संकट, वर्गीय शोषण आ आधुनिक मनुष्यक निरर्थकता उद्घाटित करैत अछि। नारीवादी दृष्टि उपस्थित अछि — विशेषतः 'निर्दयी सासु', 'सुमति' आ 'चन्द्रग्रहण'क विवेचनमे — मुदा ओकर पूर्ण सम्भावना (जेना हरिलताक प्रतिरोधी पाठ) अविकसित रहि जाइत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ मातृभाषा-विमुखता, हिन्दी-अङ्ग्रेजीक प्रभुत्व आ मैथिलीक सार्वजनिक क्षेत्रसँ निष्कासन पोथीक स्थायी चिन्ता अछि।

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ

'अखियासल' मैथिली साहित्यक वैकल्पिक वंशावली बनबैत अछि। एहि वंशावलीमे —

श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा',

जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर',

रासबिहारी लाल दास आ 'सुमति',

जनसीदन आ बिसरल जनार्दन झा सन साहित्यसेवी,

त्रिलोचन झा सन मातृभाषानुरागी,

यदुवर आ द्विजवर सन जागरणकारी कवि,

हरिलता सन संघर्षशील कवीश्वरी,

लक्ष्मीपति सिंह सन सम्पादक,

मधुप आ मोहन सन गीतकार,

यात्री सन स्तम्भकार,

व्यास सन भाषिक शुद्धतावादी,

राजेश्वर झा सन संस्था-निर्माता,

किरण, ललित, धीरेन्द्र आ प्रभास सन सामाजिक कथाकार

— एकहि विस्तृत इतिहासमे स्थान पबैत छथि। ई इतिहास मिथिलाकेँ राजवंश अथवा पाण्डित्यक केन्द्र मात्र नहि मानैत अछि। एहि मिथिलामे भूखल बालक, अत्याचारित पुतोहु, बेरोजगार युवक, शोषित किसान, मातृभाषा-विहीन शिक्षित वर्ग, मुद्रणालयक श्रमिक आ विस्मृत सम्पादक सभ उपस्थित छथि।

उपसंहार: आरम्भक गरिमा आ रिक्तताक उत्तराधिकार

'अखियासल'क महत्त्व अन्तिम निर्णय देबामे नहि, मैथिली साहित्यक इतिहासपर पुनर्विचार करबामे अछि। ई पोथी प्रतिष्ठित इतिहासक सामने वैकल्पिक प्रश्न राखैत अछि। लेखक साहित्यक चमकैत शिखर मात्र नहि देखैत छथि; ओ नीचाँ दबाओल ईंट, टूटल पाण्डुलिपि, पुरान पत्रिका, भूखल पात्र, उपेक्षित भाषा आ विस्मृत साहित्यसेवीकेँ सेहो देखैत छथि। पं० श्रीकृष्ण ठाकुरसँ लऽ कऽ प्रभास कुमार चौधरी धरि साहित्यमे यथार्थवाद, राष्ट्रवाद आ समाज-सुधारक क्रमिक विकास दृष्टिगोचर होइछ, आ संगहि — जखन एहि सम्पूर्ण रचना-संसारकेँ समान्तर इतिहास-दृष्टि, नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा आ पाश्चात्य-भारतीय काव्यशास्त्रक कठोर निकषपर कसल जाइछ — तखन एकर ढाँचागत, वैचारिक आ सैद्धान्तिक सीमा सेहो उजागर होइत अछि: सामन्ती मानसिकताक अवशेष, सुधारवादक सीमा, पितृसत्तात्मक पूर्वाग्रह आ वञ्चित वर्गक प्रामाणिक स्वरक अभाव। साहित्य तखनहि पूर्णतः समान्तर आ प्रामाणिक बनि सकैछ जखन ओ राज्याश्रय आ सामन्ती वर्चस्वसँ मुक्त भऽ, शोषितक यथार्थकेँ बिना कोनो हेत्वाभासकेँ, पूर्ण ज्ञानमीमांसीय साहसक सङ्ग प्रस्तुत करए।

एकर श्रेष्ठता ओतए अछि जतए —

लेखक अभिलेख खोजैत छथि,

प्रचलित भूल सुधारैत छथि,

विस्मृत लेखककेँ पुनः उपस्थित करैत छथि,

सामाजिक जीवन आ साहित्यक सम्बन्ध खोलैत छथि,

प्रशंसा करितो आलोचनात्मक दूरी रखैत छथि,

मातृभाषा आ जनजीवनकेँ साहित्येतिहासक केन्द्र बनबैत छथि।

एकर सीमा ओतए अछि जतए —

अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि,

जीवनी कृतिक विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि,

विषयवस्तु रूप-सौन्दर्यकेँ ढाँकि दैत अछि,

मूल्य-मानदण्ड अस्थिर भऽ जाइत अछि,

राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था प्रश्नरहित मूल्य बनि जाइत अछि,

स्त्री, दलित आ निम्नवर्गक आत्मस्वर पर्याप्त स्वतन्त्रता नहि पबैत अछि।

समग्र मूल्याङ्कनक निष्कर्ष ई जे 'अखियासल' अपन युगक एक अग्रगामी, साहसी आ ऐतिहासिक दृष्टिसँ अपरिहार्य कृति थिक, जकर मौलिकता ओकर सीमासँ अभिन्न रूपेँ जुड़ल अछि। एकर गुण — प्रथम-अन्वेषणक साहस, बिसरल रचनाकारक पुनरुद्धार, समाजशास्त्रीय अन्तर्दृष्टि, 'दू कोटिक साहित्यकार'क मौलिक सिद्धान्त, आ मैथिली साहित्येतिहासकेँ व्यक्ति-केन्द्रित कैननसँ मुक्त कऽ जन-केन्द्रित बनएबाक प्रयास — ई सभटा एकरा मैथिली आलोचनाक एक कोसिला-प्रस्तर बनबैत अछि। संगहि एकर सीमा — संकलनात्मक असंगति, मूल पाठक अनुपलब्धता, मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता, सैद्धान्तिक अनुशीलनक अभाव, परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता,

पाठ-प्रामाणिकताक संकट, आत्मीयता-जनित पूर्वाग्रह आ समान्तर इतिहासक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण — ई सभटा कोनो व्यक्तिगत न्यूनता नहि, अपितु ओहि मुद्रण-सीमित, डिजिटल-पूर्व, संस्था-विहीन युगक संरचनात्मक बाध्यताक प्रतिफल थिक।

इएह द्वैध — गुण आ सीमाक अभिन्नता — 'अखियासल'केँ विदेह समान्तर इतिहास-आन्दोलनक एक पूर्व-रूप बनबैत अछि। जे रिक्ततार्कें रमानन्द झा नामाङ्कित करैत छथि — सर्वसुलभता, अभिलेखीकरण, पुनर्मूल्याङ्कन — ओहि रिक्ततार्कें भरब परवर्ती पीढ़ीक ऐतिहासिक दायित्व बनि जाइत अछि। एहि अर्थमे, कृतिक सभसँ पैघ सीमा इएह ओकर सभसँ पैघ उत्तराधिकार थिक। 'आँखि' ओहि दृष्टिक थिक जे बिसरल पाठकेँ देखबाक साहस केलक, आ 'साल' ओहि युगक थिक जाहिमे ओहि दृष्टिकेँ पूर्ण करबाक साधन अनुपलब्ध छल — 'अखियासल' नाम स्वयं एहि द्वैधक व्यञ्जना करैत अछि। तथापि मैथिली आलोचना आ साहित्येतिहासमे 'अखियासल'क स्थान महत्त्वपूर्ण अछि। ई पोथी इतिहासक बन्द कपाट खोलि कहैत अछि जे साहित्यक वास्तविक परम्परा केवल प्रसिद्ध नामक सूची नहि — ओ स्मृति, विस्मृति, संघर्ष, भाषा, संस्था, पाठक आ जनजीवनक संयुक्त समान्तर इतिहास अछि।

परिशिष्ट: संग्रहक अध्याय-सूची (मूल प्रकाशन-स्रोत सहित)

क्रम

अध्याय / विवेच्य रचनाकार

मूल प्रकाशन-स्रोत ओ तिथि

१

मैथिलीक पहिल कथाकार पं॰ श्रीकृष्ण ठाकुर आ 'चन्द्रप्रभा'

मिथिला मिहिर, १८ अगस्त १९८५

२

मैथिलीक प्रथम उपन्यासकार पं॰ जीवछ मिश्र आ 'रामेश्वर'

मिथिला मिहिर, मार्च १९७७

३

रासबिहारी लाल दास आ उपन्यास 'सुमति'

हालचाल, १/१९८६

४

जनार्दन झा 'जनसीदन' आ 'निर्दयी सासु'

मिथिला मिहिर, जून १९८२

५

पं॰ जनार्दन झा — एक बिसरल साहित्यसेवी

मिथिला मिहिर दैनिक, २९-७-१९८५

६

पं॰ त्रिलोचन झा (बेतिया) — बिसरल मातृभाषानुरागी

भाखा, सितम्बर १९८७

७

राष्ट्रीय चेतनाक पुरोधा कवि यदुनाथ झा 'यदुवर'

भाखा, १९८८

८

कवि-सेनानी छेदी झा 'द्विजवर'

मिथिला मिहिर दैनिक, अगस्त १९८५

९

कुमार गंगानन्द सिंहक कथा-संवेदना

मिथिला मिहिर, २४-१०-१९७६

१०

कवीश्वरी हरिलताक वैष्णवता

मैथिली प्रकाश, सितम्बर १९७२

११

कविवर श्यामानन्द झाक काव्य-वस्तु

मिथिला मिहिर, २३-११-१९७५

१२

बाबू लक्ष्मीपति सिंह आ मैथिली पत्रकारिता

बसात, प्रवेशांक १९८४

१३

कवि चूड़ामणि मधुपक गीति-साहित्य

मिथिला मिहिर, अक्टूबर १९८७

१४

भट्टीकाव्यक परम्परा आ मधुपजी

मिथिला मिहिर, १२/१९८७

१५

काञ्चीनाथ झा 'किरण'क कथा-जगत

मिथिला मिहिर, मइ १९७७

१६

मैथिली उपन्यासक आलोकमे 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र

अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद्, १९८९

१७

प्रो॰ हरिमोहन झा आ हुनक 'चर्चरी'

मैथिली अकादमी पत्रिका, मार्च १९८४

१८

कविवर यात्रीक स्तम्भ-लेखन

मिथिला मिहिर

१९

कविवर आरसी

मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८२

२०

उपेन्द्र ठाकुर 'मोहन' आ हुनक कविता

मैथिली अकादमी पत्रिका, १९८९

२१

शुद्धतावादी कथाकार उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास'

मिथिला मिहिर

२२

पं॰ राजेश्वर झा — व्यक्तित्व ओ कृतित्व

मिहिर, १९७८

२३

ललितक कथामे परिवेशक संक्रान्त जीवन

मिहिर, १९७५

२४

धीरेन्द्रक कथाक सामाजिक सन्दर्भ

जून १९८८

२५

प्रभासक कथा-यात्रा

मिथिला मिहिर, १९८६

सन्दर्भ-ग्रन्थ-सूची

1. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल, भारतीय भाषा संस्थान (सी. आइ. आइ. एल.), मैसूर, १९९५।

2. जयकान्त मिश्र, अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर (मैथिली साहित्यक इतिहास) ।

3. करुणाकान्त झा, शोध-प्रबन्ध (मैथिली साहित्य-सम्बन्धी), 'अखियासल'मे उद्धृत।

4. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग १, https://www.videha.co.in/new_page_1.htm

5. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २७, https://www.videha.co.in/new_page_27.htm

6. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग २८, https://www.videha.co.in/new_page_28.htm

7. गजेन्द्र ठाकुर, अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मिथिला एण्ड मैथिली लिटरेचर, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, भाग ९०, https://www.videha.co.in/new_page_90.htm

8. गजेन्द्र ठाकुर, रचना-सङ्कलन, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका, https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm

9. मूल निबन्ध सभक प्रथम-प्रकाशन पत्र-पत्रिका: मिथिला मिहिर, मिथिलामोद, भाखा, मैथिली अकादमी पत्रिका, बसात, हालचाल, मैथिली प्रकाश तथा अखिल भारतीय मैथिली साहित्य सम्मेलन/परिषद्क स्मारिका (१९७२–१९८९) ।

११. 'हिआओल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ समान्तर इतिहास-दृष्टि

सारांश

'हिआओल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद (डा. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२) 'अखियासल', 'बेसाहल' आ 'भजारल' क अनन्तर डा. रमानन्द झा' रमण' क ई चारिम आलोचना-संग्रह' हिआओल' (२०१२) मैथिली आलोचनाक ओहि विरल परम्पराक कड़ी थिक जाहिमे आलोचना गुटबन्दीक चपेटसँ मुक्त भऽ पाठ, पत्र-पत्रिका आ अभिलेखकेँ प्रमाण मानि चलैत अछि। पोथीक नामकरणेमे लेखकक विनम्र प्रविधिक घोषणा अछि — 'हिआओल' अर्थात् थाहल, अन्दाजल। ई शब्द-चयन आत्मश्लाघाक स्थान पर अनुसन्धानक अनन्त सम्भावनाक स्वीकार थिक; क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्तक भाषामे कही तँ शीर्षकहिमे प्रबन्धौचित्यक बीज रोपल अछि।

कुंजीशब्द: हिआओल · भारतीय · काव्यशास्त्र · पाश्चात्य · सिद्धान्त · समान्तर · इतिहास

'हिआओल': भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ विस्तृत आलोचनात्मक आस्वाद

-गजेन्द्र ठाकुर

(डा. रमानन्द झा 'रमण', मैथिली आलोचना, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२)

१. उपक्रम: पोथी-परिचय आ' हिआओल' क अर्थ-गरिमा

‘अखियासल’, ‘बेसाहल’ आ ‘भजारल’ क अनन्तर डा. रमानन्द झा’ रमण’ क ई चारिम आलोचना-संग्रह’ हिआओल’ (२०१२) मैथिली आलोचनाक ओहि विरल परम्पराक कड़ी थिक जाहिमे आलोचना गुटबन्दीक चपेटसँ मुक्त भऽ पाठ, पत्र-पत्रिका आ अभिलेखकेँ प्रमाण मानि चलैत अछि। पोथीक नामकरणेमे लेखकक विनम्र प्रविधिक घोषणा अछि — ‘हिआओल’ अर्थात् थाहल, अन्दाजल। ई शब्द-चयन आत्मश्लाघाक स्थान पर अनुसन्धानक अनन्त सम्भावनाक स्वीकार थिक; क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्तक भाषामे कही तँ शीर्षकहिमे प्रबन्धौचित्यक बीज रोपल अछि। लेखकीयमे स्वयं स्वीकारल गेल अछि जे ई सभ आलेख मनोरंजक साहित्यक कोटिक नहि थिक, ‘अरबेधि-अरबेधि’ एहन विषयक चयन कएल गेल अछि जकर अध्ययन अपेक्षित छैक मुदा लोक-दृष्टि जतऽ प्रायः नहि जाइत अछि। पण्डित गोविन्द झा आवरण-टिप्पणीमे मार्मिक शब्दमे लिखने छथि जे मैथिली-जगतक आनो नामी आलोचककेँ पूर्वज-साहित्य आ परम्परामे सड़ाइन गन्ध लगैत छनि, मुदा रमणजीकेँ ‘पुरान चाउरक भात टटका दहीक संग’ प्रिय छनि — अर्थात् परम्पराक संरक्षण आ नव मूल्याङ्कन दुनू काज ई पूर्वज-पूजा बूझि करैत छथि। फूलचन्द्र मिश्र ‘रमण’ पुरोवाक्मे उचिते लिखने छथि जे एहि निबन्ध-संग्रहमे आलोचना-प्रत्यालोचनाक संगम अछि आ लेखकक उद्देश्य ककरो प्रतिष्ठाकेँ धूमिल करब नहि, विमर्श हेतु बिन्दु सभ उपस्थित करब थिक — ‘वादे वादे जायते तत्त्वबोधः’ ।

एहि पोथीमे भाषा-विज्ञान, साहित्येतिहास, प्रत्यालोचना, कथा, कविता, महाकाव्य, लोकगाथा, लोकगीत, पत्रकारिता, प्राकृतिक विपत्ति, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ भाषिक उपनिवेशवादसँ सम्बन्धित सत्रह अध्याय समाहित अछि। विषय-सूचीसँ स्पष्ट होइत अछि जे संग्रहक विस्तार ग्रियर्सनक भाषा-अध्ययनसँ आरम्भ भऽ उपनिवेशवादक नव चालि धरि जाइत अछि। सत्रह निबन्धक ई संग्रह तीन वर्गमे सहजहिं बँटि जाइत अछि। पहिल, भाषा-चिन्तन आ भाषा-राजनीति: मैथिली आ मिथिला भाषाक अध्ययन; रमानाथ झा आ मिथिला भाषा; मैथिली लोकगीत — अवस्था आ संरक्षण; उपनिवेशवादक नऽव चालि। दोसर, व्यक्ति ओ कृति-केन्द्रित प्रत्यालोचना: प्रत्यालोचक किरणजी; उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान; अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह; यात्रीक भाषा; मनमोहन झाक कथाक अनालोचित पक्ष। तेसर, विधा ओ प्रवृत्ति-केन्द्रित इतिहास-दृष्टि: पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदान; लोकगाथामे दीनाभद्री; मैथिली कथाक विकास — किछु नव तथ्य; कवितामे मिथिलाक भूकम्प; कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ; महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ; नऽव गीतमे समाज-चेतना; मैथिली कविताक वर्तमान धारा। एहि त्रिवर्गीय संरचनामे लेखकक समग्र आलोचकीय व्यक्तित्व — भाषाशास्त्री, पाठालोचक, इतिहासकार आ प्रत्यालोचक — क चारू रूप एकहि ठाम भेटैत अछि।

ई पोथी एकरेखीय साहित्येतिहास नहि, अपितु प्रचलित निष्कर्ष सभकेँ प्रश्नांकित करैत अनेक समान्तर आख्यानक संकलन अछि। लेखकक मुख्य प्रवृत्ति अछि — विस्मृत लेखक आ रचनाकेँ पुनः प्रतिष्ठित करब, पूर्ववर्ती आलोचनाक अधूरापन देखायब, लोक आ शिष्टक कृत्रिम विभाजन तोड़ब, मैथिली भाषा-साहित्यक विकासकेँ सत्ता, समाज, भूगोल आ इतिहाससँ जोड़ब, तथा मुख्य इतिहासक पार्श्वमे दबाओल स्त्री, दलित, श्रमिक, प्रवासी, ग्रामीण, बाढ़िपीड़ित आ भाषिक समुदायकेँ दृश्य बनायब। लेखक स्वयं आलोचनाकेँ रचनाक भाषा, शिल्प, तथ्य, कथ्य, पात्र आ चरित्रक गुण-दोषक सूक्ष्म विवेचन मानैत छथि। हुनका लेल आलोचना दोषान्वेषण मात्र नहि, गुणक आलोकन सेहो अछि, आ साहित्यक सृजनसँ बेसी ओकर संरक्षण ओ मूल्याङ्कनकेँ ओ महत्त्व दैत छथि।

२. समीक्षा-पद्धति: त्रिविध कसौटी

प्रस्तुत मूल्याङ्कन तीन कसौटी पर आधारित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक आधार

पहिल कसौटी भारतीय काव्यशास्त्र थिक — भरतक रस-निष्पत्ति, आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त, कुन्तकक वक्रोक्ति, क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार, साधारणीकरण, लोकमंगल-दृष्टि आ न्यायदर्शनक प्रमाण-मीमांसा (विशेषतः अभाव-प्रमाणक प्रश्न, जे स्वयं रमणजीक तर्क-पद्धतिमे बेरि-बेरि झलकैत अछि) । रस-सिद्धान्त रचनामे अन्ततः उत्पन्न भावानुभूतिक परीक्षा करैत अछि। ध्वनि-सिद्धान्त प्रत्यक्ष कथनक पाछाँ निहित सामाजिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक अर्थ खोलैत अछि। वक्रोक्ति-सिद्धान्त सामान्य कथनसँ हटिकऽ रचनात्मक भाषा, प्रतीक, व्यङ्ग्य आ विचलनक सौन्दर्य देखैत अछि। औचित्य-सिद्धान्त विषय, भाषा, पात्र, प्रसंग आ निष्कर्षक परस्पर संगतिक जाँच करैत अछि। साधारणीकरण देखैत अछि जे व्यक्तिगत अनुभव कोना सामूहिक अनुभव बनैत अछि। लोकमंगल-दृष्टि साहित्यक सामाजिक उपयोगिता, अन्याय-विरोध आ जनहितक मूल्याङ्कन करैत अछि।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधार

दोसर कसौटी पाश्चात्य सिद्धान्त थिक — उत्तर-औपनिवेशिक विमर्श, नव-इतिहासवाद, समाजभाषाविज्ञान, शैलीविज्ञान, पाठालोचन-शास्त्र, अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया), मार्क्सवादी ओ निम्नवर्गीय (अधीनस्थ) विमर्श, नारीवाद, दलित-विमर्श आ पर्यावरणीय आलोचना। रूपवादी दृष्टि भाषिक विन्यास, संरचना, प्रतीक, पुनरावृत्ति आ कथन-पद्धतिक विश्लेषण करैत अछि। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टि अर्थकेँ स्थिर नहि मानि पाठकक अनुभवसँ निर्मित मानैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टि वर्ग, श्रम, उत्पादन, शोषण आ सत्ता-संरचनाकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। नारीवादी दृष्टि स्त्रीक मौन, देह, श्रम, शिक्षा, अधिकार आ प्रतिनिधित्वक परीक्षण करैत अछि। दलित आ अधीनस्थ दृष्टि इतिहासमे दबाओल समुदायक स्वर आ आत्मप्रतिनिधित्व खोजैत अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि भाषा, शिक्षा, ज्ञान आ संस्कृतिपर औपनिवेशिक प्रभुत्वक निरन्तरताकेँ उद्घाटित करैत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टि साहित्यिक कृतिकेँ अपन समयक सत्ता, संस्था, अर्थव्यवस्था आ सामाजिक संघर्षसँ जोड़ैत अछि। पर्यावरणीय आलोचना मनुष्य, नदी, वनस्पति, पशु-पक्षी, भूमि आ विपत्तिक परस्पर सम्बन्ध देखैत अछि।

विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि

तेसर कसौटी विदेह समान्तर साहित्य-इतिहासक दृष्टि थिक, जे राजवंश, दरबार, शास्त्र, प्रतिष्ठित लेखक आ संस्थाक इतिहासक समानान्तर लोकजीवनक इतिहास लिखैत अछि आ प्रतिष्ठान-पोषित प्रतिमानक स्थान पर अनालोचित, उपेक्षित, लोकधर्मी आ अभिलेख-सिद्ध धाराकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। एहि दृष्टिमे मिथिला केवल राजनीतिक सीमा नहि, सांस्कृतिक भूगोल अछि; भारत आ नेपालक मैथिली क्षेत्र एक दीर्घ सांस्कृतिक प्रवाहक अङ्ग अछि; इतिहास राजाक संग किसान, स्त्री, दलित, मुसहर, श्रमिक, गायक, पत्रकार, प्रवासी आ विपत्तिग्रस्त जनक सेहो होइत अछि; साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित पोथीक नहि, लोककण्ठ, व्रतकथा, गीत, अप्रकाशित पाण्डुलिपि आ विस्मृत रचनाकारक सेहो होइत अछि; तथा नदी, बाढ़ि, भूकम्प, पलायन आ भाषिक विस्थापन ऐतिहासिक शक्ति बनि उठैत अछि। ई तेसर कसौटी एहि पोथीक लेल विशेष सार्थक अछि, कारण 'हिआओल' क अनेक अध्याय —' अनालोचित कवि', 'अनालोचित पक्ष', 'उपेक्षितक आँखिसँ', 'किछु नव तथ्य' — स्वयं प्रति-प्रतिमान निर्माणक, अर्थात् समान्तर इतिहास-लेखनक पूर्वाभ्यास थिक।' हिआओल' क मूल उपलब्धि एही समान्तर इतिहास-बोधमे निहित अछि। एहि मूल्याङ्कनक लगभग आधा भाग अध्याय सभक सीमा-विवेचन पर केन्द्रित अछि — ई स्वयं रमणजीक घोषित सिद्धान्तक अनुकूल थिक जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नहि थिक आ प्रीतिकर होएब ओकरा लेल आवश्यक नहि छैक।

३. अध्यायवार उपलब्धि आ आलोचनात्मक आस्वाद

३.१ मैथिली आ मिथिला भाषाक अध्ययन

उद्घाटक निबन्ध कोलब्रुक (१८०१) सँ ग्रियर्सन धरिक पश्चिमी भाषा-अध्ययनक कालक्रम प्रस्तुत करैत ई मार्मिक प्रश्न उठबैत अछि जे साहित्य-सर्जनाक सुदीर्घ अविच्छिन्न परम्परा रहितहुँ मैथिलीक व्याकरण सभसँ पछाति किएक लिखल गेल। कोलब्रुकक ई संकीर्ण स्थापना जे मैथिली कोनो समृद्ध भाषा नहि थिक आ एकर कोनो विशिष्ट कवि नहि अछि, तकरा विखण्डित करैत बीम्स (१८७२), केलौग, हार्नले (१८८०) आ अन्ततः ग्रियर्सन (१८८१) कोना मैथिलीकेँ स्वतन्त्र भाषाक रूपमे प्रतिष्ठित कएलनि, तकर मूल अंग्रेजी साक्ष्य सोझाँ राखि लेखक देखबैत छथि जे प्रारम्भिक पश्चिमी अध्ययन मैथिलीक अध्ययन नहि, प्रशासनिक सुविधार्थ 'नमूना-संकलन' मात्र छल। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिएँ ई अध्याय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि — मैकालेक १८३५क टिप्पणी ('जाहि भाषाकेँ केओ बिना सरकारी पाइक पढ़बा लेल तैयार नहि, ताहि पर खर्च किएक') आ १८६४क ट्रेवेलियन-टिप्पणीक उद्धरणसँ स्पष्ट होइत अछि जे भाषा-नीति उपनिवेशक उपयोगिताक दासी छल। 'बिहारी अस्मिताक पहिल उद्भावक जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन छलाह' — ई व्यंग्य-गर्भित स्थापना नव-इतिहासवादी सूझक उदाहरण थिक, जे नामकरणक राजनीतिकेँ अस्मिताक राजनीतिसँ जोड़ैत अछि। ग्रियर्सन एहिठाम द्वैध व्यक्तित्वक रूपमे उपस्थित होइत छथि: एक दिस हुनकर सर्वेक्षण मैथिलीकेँ स्वतन्त्र पहचान दैत अछि आ हिन्दीक छायासँ मुक्त करबाक दिशामे मैथिलीक स्वतन्त्र ध्वनि-संरचना ओ क्रिया-रूपावलीकेँ प्रामाणिकता दैत अछि; दोसर दिस 'बिहारी' सन सामूहिक नाम औपनिवेशिक प्रशासनक सुविधानुसार भाषिक विविधताकेँ एक खाँचामे राखैत अछि।

अध्यायक प्रमुख उपलब्धि ई अछि जे लेखक भाषा-विकासकेँ केवल व्याकरण-लेखनक इतिहास नहि मानैत छथि। ओ कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिताक समाजभाषावैज्ञानिक कसौटीसँ मैथिलीक ह्रासक व्याख्या करैत छथि — जाहि भाषाक प्रयोग प्रशासन, शिक्षा, न्याय, व्यापार आ सार्वजनिक जीवनमे घटैत अछि, ओकर सामाजिक सामर्थ्य सेहो घटैत अछि। कर्णाट-शासनमे मैथिलीक राजकाजक भाषा रहबाक अभिलेखीय प्रमाण, नेपालक राजकीय अभिलेख, तथा भोलालाल दासकेँ कहल गेल ओ प्रसिद्ध वाक्य ('मैथिलीकेँ स्वीकृत कएने मिथिला जीबि उठत...') — ई सभ बिहार-निर्माणक राजनीतिक अन्तर्कथाकेँ उघारैत अछि। पारम्परिक आ

शिक्षाशास्त्रीय व्याकरणक भेद तथा शिक्षाशास्त्रीय व्याकरणक पाँच स्तरक विवेचन मैथिलीमे प्रायः पहिल बेर एतेक व्यवस्थित रूपमे आएल अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय विशेष महत्त्वपूर्ण अछि, कारण भाषा-इतिहासकेँ राजकीय मान्यतासँ नहि, शिलालेख, लोकव्यवहार, व्याकरण-लेखन आ सांस्कृतिक विस्तारसँ जोड़ल गेल अछि — भाषा राजनीतिक सीमा पार करैत एक सभ्यतागत प्रवाह बनि जाइत अछि।

३.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा

संग्रहक मेरुदण्ड ई दीर्घतम निबन्ध प्रत्यालोचनाक प्रतिमान थिक। आचार्य रमानाथ झाक जन्मशतवार्षिकी (१९०६–२००६) क बहन्ने हुनका पर जीवन-काल आ मरणोपरान्त लगाओल गेल आरोपक 'टाल' क अभिलेखीय परीक्षण कएल गेल अछि। शशिनाथ चौधरीक १९३२क परिषद्-प्रतिवेदन सन दुर्लभ साक्ष्यसँ ई सिद्ध कएल गेल जे पटना विश्वविद्यालयमे मैथिलीक स्वीकृति-सम्बन्धी षड्यन्त्रक आरोप तथ्य-सम्मत नहि अछि। चन्दा झाक मिथिला भाषा रामायणक चारिम संस्करणसँ रमानाथ झाक आधा पृष्ठक' क्षमा-प्रार्थना' छाँटि देबाक प्रसंग, आ ओकर तुलना सोवियत' व्यक्तिपूजा' क आरोपमे नेताक शवकेँ समाधिसँ उपाड़बाक घटनासँ — ई प्रत्यालोचनाक तीक्ष्णतम क्षण थिक, जतऽ स्थानीय साहित्यिक राजनीति विश्व-इतिहासक आलोकमे अर्थवान भऽ जाइत अछि।

निबन्धक उत्तरार्धमे रमानाथ झाक अवदानक — अध्यापन, पाठ्यक्रम-निर्माण, अनुसन्धान, भाषा-मान्यता, सम्पादन आ साहित्येतिहास — क व्यवस्थित पुनर्पाठ अछि। रमानाथ झाकेँ मैथिली आलोचनाक केन्द्र-स्तम्भ मानैत रमणजी मिथिला भाषाक प्राचीनताक पाँच ऐतिहासिक साक्ष्यक उल्लेख करैत छथि: कालिदासक विक्रमोर्वशीयक दोहा, प्राकृत पैंगलक वर्णवृत्त, नेपालसँ प्राप्त सहजपन्थी सिद्ध लोकनिक चर्यापद, डाकवचन, आ अवहट्टमे विद्यापतिक रचना। बुद्धवचन-महावीरवचन-अर्धमागधीक विवेचनसँ विदेह जनपदक भाषाक सातत्य, तिरहुता लिपिक व्याप्ति, मानकीकरणक इतिहासमे पण्डित जीवनाथ रायक चिन्ता आ महाराज लक्ष्मीश्वर सिंहक १८८०क ओ ऐतिहासिक आदेश जाहिसँ देवनागरी आ हिन्दीकेँ राजकाजमे प्रवेश भेटलैक आ अन्ततः तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक विस्थापन भेल — ई सभ प्रसंग अध्यायकेँ भाषा-राजनीतिक दस्तावेज बना दैत अछि। सभसँ मौलिक अछि हाउगेन आ फर्गुसनक भाषा-प्रबन्धन सिद्धान्तक चारि चरण (चयन, संहिताकरण, प्रकार्य-विस्तार, ग्राह्यता) क कसौटी पर रमानाथ झाक कार्यक पुनर्मूल्याङ्कन — ई देखाएब जे जाहि शास्त्रक जन्महुँ नहि भेल छल, ताहि शास्त्रक प्रक्रियाक अनुरूप रमानाथ झा मैथिलीक भाषा-नियोजन कऽ गेलाह। बहुवाचिकता (द्विभाषिक स्तर-भेद) क अवधारणासँ मैथिल समाजक भाषिक यथार्थक व्याख्या समाजभाषाविज्ञानक मैथिलीमे सफल अवतरण थिक।

भारतीय परम्परामे आलोचककेँ 'सहृदय' कहल गेल अछि; एहि अध्यायमे रमणजी सहृदयताक अर्थ अन्धप्रशंसा नहि, ऐतिहासिक न्याय मानैत छथि। हुनकर आग्रह अछि जे व्यक्तिक योगदानक मूल्याङ्कन ओकर समय, संस्थागत कठिनाइ आ उपलब्ध साधनक आधारपर हो। पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टिसँ ई अध्याय देखबैत अछि जे एके व्यक्तित्वक मूल्याङ्कन विभिन्न पीढ़ी अलग-अलग ढङ्गसँ करैत अछि — संस्थापक पीढ़ीक श्रम पछिला पीढ़ीक लेल सामान्य सुविधा बनि जाइत अछि, फलतः मूल संघर्ष विस्मृत भऽ जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक स्तरपर अध्याय ई प्रश्न उठबैत अछि जे मैथिली भाषा-साहित्यक संस्थागत निर्माण केना भेल: विश्वविद्यालय, पाठ्यक्रम, साहित्यिक संस्था आ व्यक्तिगत विद्वत्ता एक-दोसरसँ जुड़ल छल; अतः साहित्यिक इतिहास केवल प्रकाशित रचनाक इतिहास नहि, संस्था-निर्माणक इतिहास सेहो अछि।

३.३ प्रत्यालोचक किरणजी

ई निबन्ध 'प्रत्यालोचना' पदकेँ मैथिली आलोचना-शास्त्रमे सैद्धान्तिक प्रतिष्ठा दैत अछि — आलोचनाक आलोचना, जे लेखकक अनुसार समाजक वैचारिक गतिशीलता आ जीवन्तताक लक्षण थिक। डा. काञ्चीनाथ झा' किरण' क आलोचकीय व्यक्तित्वक त्रिविध विश्लेषण (लोक आलोचक, साहित्यिक आलोचक, प्रत्यालोचक) आ रचनाकारक तीन कोटिक वर्गीकरण (युगातीत, युगानुगामी, सचेत विपक्षी) पद्धति-सजग आलोचनाक परिचायक अछि। किरणजीक नव स्थापना सभक — वर्णरत्नाकर काव्य-ग्रन्थ थिक, लोकसाहित्य शिष्ट-साहित्यसँ पैघ, विद्यापति स्वाधीनताकामी सेनानी, तथा चन्दा झाक स्थान पर अकाली कवि फतूर लाल नवयुगक प्रवर्तक — सहृदय प्रस्तुतिक संगहि हुनक अन्तर्विरोधक निर्मम उद्घाटन सेहो अछि: जे किरणजी रमानाथ झाक राधाकृष्ण-विषयक मतक तीव्र खण्डन करैत छथि, वैह अन्यत्र विद्यापतिक नायिकाकेँ राजदरबारी संस्कारक कल्पित पात्र कहि प्रकारान्तरसँ ओही मतक समर्थन कऽ दैत छथि। कुलानन्द मिश्रक चन्द्रग्रहण-टिप्पणीक प्रसंगमे लेखकक ई सूत्र-वाक्य आलोचना-नीतिशास्त्रक निष्कर्ष जकाँ अछि जे कृतिमे व्यक्त विचारक विवेचन ने भक्त जकाँ हो, ने अपन मतवादकेँ रचनाकार पर आरोपित करैत।

किरणजी जाति, रूढ़ि, अन्धविश्वास, श्रमक अवमानना आ सामाजिक विषमताक विरुद्ध आलोचनात्मक स्वर उठबैत छथि;' पराशर' क माध्यमसँ श्रम, भूख, जातीय विभाजन, धार्मिक आडम्बर आ स्त्री-पुरुष सम्बन्धक प्रश्न उठाओल गेल अछि, जे आभिजात्य पण्डित-समाजक कौलीनता आ पाँजि-व्यवस्थापर कठोर प्रहार थिक। भारतीय दृष्टिसँ किरणजीक आलोचना लोकमंगलवादी अछि — हुनका लेल साहित्यक श्रेष्ठता ओकर सामाजिक उत्तरदायित्वसँ पृथक नहि। पाश्चात्य मार्क्सवादी दृष्टिसँ हुनकर विचार सामाजिक उत्पादन, श्रम आ प्रभुत्वशाली वर्गक आलोचनासँ जुड़ैत अछि; दलित दृष्टिसँ ओ शास्त्रीय पात्रकेँ निम्नवर्गीय अनुभवक आलोकमे पुनः लिखैत छथि।' मैथिल आँखि' क अवधारणा एहि अध्यायक मौलिक सूत्र अछि, जकरा' गुलामी नजरि' क विरुद्ध संघर्षक रूपमे राखल गेल अछि — एकर अर्थ संकीर्ण प्रादेशिकता नहि, अपन भाषिक-सांस्कृतिक अनुभवक आधारपर विश्वकेँ देखब। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिमे ई स्थानीय ज्ञानक पुनर्प्रतिष्ठा आ स्थापित संभ्रान्तवादी इतिहास-लेखनक विरुद्ध निम्नवर्गीय प्रतिरोधक स्वर थिक।

३.४ अपेक्षिताक आँखि छोड़ि, उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान पढ़ल जाए

ई संग्रहक सर्वाधिक चुनौतीपूर्ण अध्यायमे सँ एक थिक आ अभिग्रहण-सौन्दर्यशास्त्र (पाठक-अनुक्रिया सिद्धान्त) क मैथिलीमे विरल प्रयोग। हरिमोहन झाक पाठकक तीन श्रेणी — मनोरंजनार्थी, हनुमान-चालीसा-भक्त, आ समाज-कथा बूझि पढ़निहार — क विभाजन कऽ लेखक ई देखबैत छथि जे कृतिक अर्थ पाठक-दृष्टिसँ निर्मित होइत अछि। तखन दृष्टि-परिवर्तनक प्रस्ताव अबैत अछि: अपेक्षिता (सी. सी. मिश्र सन शिक्षित वर) क आँखि छोड़ि उपेक्षिता बुच्ची दाइक आँखिसँ उपन्यास पढ़ल जाए। ई नारी-विमर्शक ओ पद्धति थिक जे केन्द्रकेँ हटा हाशियाकेँ केन्द्र बनबैत अछि। प्रचलित हास्यप्रधान पाठकेँ छोड़ि लेखक बुच्ची दाइक मौन, अशिक्षा, भय आ सांस्कृतिक विस्थापनकेँ केन्द्र बनबैत छथि — प्रश्न ई अछि जे बुच्ची दाइ बजैत किएक नहि छथि, हुनकर जीवनक निर्णय दोसर लोक किएक करैत अछि, आ शिक्षित समाज हुनकर मौनक लेल कतेक उत्तरदायी अछि। बुच्ची दाइक निरक्षरता लेल ओ व्यक्तिकेँ नहि, समाजक' संरचनात्मक निर्माणक दोष' केँ उत्तरदायी मानैत छथि।

सभसँ बलगर पक्ष अछि अभिलेख-प्रथम प्रमाण: जनसीदनक यशोदा (जे रामायण बाँचि लैत अछि), रासबिहारी लाल दासक सुमति, पुण्यानन्द झाक योगमाया, पुलकित मिश्रक मोहिनी — कन्यादानसँ पूर्वक मैथिली उपन्यासक नारी-पात्र निरक्षर नहि, साक्षर छलीह। एहि तथ्य-शृंखलासँ ई क्रान्तिकारी स्थापना निकलैत अछि जे स्त्री-शिक्षाक प्रश्न पर हरिमोहन झा अपन पूर्ववर्ती औपन्यासिक परम्परासँ आगाँ नहि, पाछाँ छथि। मिथिला दर्पणक योगानन्द आ कन्यादानक सी. सी. मिश्रक तुलना, तथा' अबोधक अपंगताक दोषी अबोध स्वयं की ओकर समाज?' क प्रश्न मानवीय गरिमाक कसौटी पर हास्यक औचित्य-परीक्षा थिक। भाषिक दृष्टिसँ अध्यायक सूक्ष्म निष्कर्ष ई अछि जे शहराती पति आ ग्रामीण पत्नी एके सांस्कृतिक-भाषिक धरातलपर नहि छथि — पतिद्वारा हिन्दीमे संवाद करब स्त्रीक मौनकेँ आरो गाढ़ करैत अछि। नारीवादी आलोचनासँ ई पुनर्पाठ अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि: विवाहक हास्यक आवरणक भीतर स्त्रीक वस्तुकरण, भाषिक असमानता, शिक्षा-वञ्चना आ पितृसत्तात्मक नियन्त्रण अछि; बुच्ची दाइ केवल पात्र नहि, अशिक्षित मैथिल कन्याक प्रतीक बनि जाइत छथि। ध्वनि-सिद्धान्तक आलोकमे उपन्यासक हास्यक पाछाँ करुण ध्वनि सुनाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ ई अध्याय प्रतिष्ठित हास्यकृतिक भीतर दबाओल स्त्री-इतिहासकेँ पुनः दृश्य बनबैत अछि।

३.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह

ई अध्याय विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिक बीज-पद्धतिक श्रेष्ठ उदाहरण थिक — 'अनालोचित' क पुनर्वास। पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल कविताकेँ' झोड़ि' कऽ लेखक एक विस्मृत कविक काव्य-संसारक पुनर्निर्माण करैत छथि आ हुनका राष्ट्रीय चेतना, मिथिला-बोध, सामाजिक सुधार, स्त्री-दुःख, बाढ़ि, शोषण आ सांस्कृतिक संकटक कविक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। स्वयं लेखक स्वीकार करैत छथि जे सम्पूर्ण रचनावली उपलब्ध नहि रहने ई आरम्भिक अनुसन्धान अछि। 'शरदागम' क व्याख्या ध्वनि-सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रयोग थिक — पावसक प्रयाण, फुलाएल कास, थीर सरोवर आ विवश पुरन्दरमे १९३५क शासन-सुधार आ जन-आक्रोशक व्यंग्यार्थक उद्घाटन; प्रकृति-वर्णनक अभिधाक भीतर राजनीतिक व्यञ्जनाक ई पाठ आनन्दवर्धनक' अर्थान्तर-संक्रमित' ध्वनिक जीवन्त निदर्शन थिक। 'पछबा' कविताक विश्लेषणमे पश्चिमी भाषा-संस्कृतिक धुक्कड़सँ भारतीय शब्द-सम्पदाक झड़बाक जे प्रतीक-योजना देखाओल गेल अछि, से सांस्कृतिक साम्राज्यवादक पूर्वाभास जकाँ अछि आ अन्तिम अध्यायसँ एहि निबन्धकेँ जोड़ि दैत अछि — 'पछबा' केवल हवा नहि, पाश्चात्य सांस्कृतिक दबावक प्रतीक बनैत अछि, आ शरदागमन औपनिवेशिक शासनक क्षीणताक सङ्केत। 'नोत पूरब' सन सांस्कृतिक सन्दर्भ-गर्भित शब्दक टीका, विधवा-विलापक करुण चित्र, आ बाढ़ि-भूकम्पक द्वैध त्रासदीक कवि-साक्ष्य — सभ मिलि एक 'निरपेक्ष' मुदा मैथिली-पक्षधर कविक मूर्ति गढ़ैत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टिसँ कविताकेँ स्वतन्त्र सौन्दर्य-वस्तु नहि, स्वतन्त्रता आन्दोलन, विभाजन, सामाजिक सुधार, बाढ़ि आ सांस्कृतिक संस्थाक गतिविधिसँ जोड़ल गेल अछि; करुण रस

विधवा, बाढ़िपीड़ित आ उपेक्षित मिथिलाक चित्रणमे प्रखर होइत अछि। प्रतिष्ठित साहित्येतिहास जाहि कविक पोथी उपलब्ध नहि रहने हुनका पार्श्वमे छोड़ि दैत अछि, रमणजी पत्र-पत्रिकामे बिखरल सामग्रीक आधारपर हुनकर वैकल्पिक साहित्यिक जीवनचरित निर्मित करैत छथि — विस्मृत लेखकक पुनरुद्धारक आदर्श उदाहरण।

३.६ यात्रीक भाषा: शब्दचयन आ शब्दनिर्माण

शैलीविज्ञानक चारि उपकरण — चयन, विचलन, समानान्तरता आ अप्रस्तुत-विधान — क सहारे वैद्यनाथ मिश्र 'यात्री' (नागार्जुन) क काव्य-भाषाक ई विश्लेषण संग्रहक सर्वाधिक शास्त्र-सम्पन्न आ व्यवस्थित भाषिक अध्याय थिक। यात्रीक काव्यभाषामे देशज, तत्सम, तद्भव आ आगन्तुक शब्दक सर्जनात्मक मेल देखाओल गेल अछि — 'अपरोजक' (नाभिपद्मसम्भूत विधाता लेल), 'ऊत्तुंग खोपा', 'तपोवनी' सन देशी-अनदेशी शब्दक संकर-निर्माण, आ 'दलकब' क्रियाक अर्थ-व्यञ्जकताक पद-परीक्षा। प्रत्येक स्थल पर लेखक देखबैत छथि जे पर्यायवाचीमे सँ एकहि शब्द किएक अनिवार्य अछि: एक शब्दक चयन मात्र अर्थ नहि, पात्रक सामाजिक स्थिति, वक्ताक मनोदशा, व्यङ्ग्य आ सांस्कृतिक स्मृतिकेँ व्यक्त करैत अछि। ई विवेचन कुन्तकक वर्ण-विन्यास-वक्रता आ पद-पूर्वार्ध-वक्रताक आधुनिक रूपान्तर जकाँ अछि, आ' विचलन' क अवधारणा' निरंकुशाः कवयः' क शास्त्रीय अनुमतिसँ जोड़ल गेल अछि — पूर्व-पश्चिमक ई सेतु-बन्ध दुर्लभ अछि। वक्रोक्ति-सिद्धान्तक दृष्टिसँ व्याकरणिक क्रमक विचलन, असामान्य संयोग आ नूतन शब्दनिर्माण भाषाकेँ सामान्य सूचना-साधनसँ काव्यात्मक अनुभवमे बदलैत अछि; ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार शब्दक कोशगत अर्थसँ अधिक ओकर प्रसङ्गगत व्यञ्जना महत्त्वपूर्ण होइत अछि। गौरी, कार्तिक, गणेश, लक्ष्मी सन पौराणिक पात्रक कोश-स्वीकृत अर्थसँ फराक नव-सन्दर्भीकरणक विश्लेषण, कंकाल-शृंखला आ मामा-गीतमे समानान्तरताक प्रयोग, अप्रस्तुत विधानमे सादृश्य, मानवीकरण आ इन्द्रियबोधक चित्र — सभ यात्री-काव्यक भाषिक वैलक्षण्यक प्रामाणिक कुंजी थिक। यात्रीक' भाषाक भूगोल' क अवधारणा उल्लेखनीय अछि — कवि अपन भाषा-क्षेत्रक वस्तु, श्रम, रीति, मिथक आ बोलचालसँ परिचित छथि, तेँ हुनकर शब्द केवल सजावट नहि, जीवित जनजीवनक वाहक अछि। यात्रीक भाषा आभिजात्य संस्कृतनिष्ठ मैथिलीक विरुद्ध जनपदीय बहुस्वरताक प्रकटीकरण सेहो थिक।

३.७ मनमोहन झाक कथाक अनालोचित पक्ष

करुणाक कथाकारक रूपमे प्रतिष्ठित मनमोहन झाक कथा-साहित्यक सर्वथा अनालोचित पक्ष — भारतीय राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयता — क उद्घाटन एहि लघु निबन्धक उपलब्धि थिक। पटना सचिवालय-गोलीकाण्ड (१९४२) क पृष्ठभूमि पर लिखल 'आहत आत्मा' क नरेन्द्र बाबू, ताजमहलक वैभवक नीचाँ दबल श्रमिक-वेदनाक कथा,' वीरभोग्या',' सप्तपदी' क महाश्वेता आ' मीनाक्षी' क बलिदान — ई सभ देखबैत अछि जे करुणाक अन्तःसलिला धारक भीतर राष्ट्र-प्रेम आ मिथिला-संस्कृतिक रक्षाक दृढ़ स्वर बहैत अछि। रस-दृष्टिसँ करुण आ वीर रसक समन्वय एहि कथाक मूल शक्ति अछि — पात्रक व्यक्तिगत प्रेम राष्ट्र, मातृभूमि अथवा सांस्कृतिक अस्मिताक लेल त्यागमे परिणत होइत अछि। नव-इतिहासवादी दृष्टिसँ कथाक भावभूमि स्वतन्त्रता आन्दोलन, विदेशी आक्रमण आ मिथिलाक सांस्कृतिक स्मृतिसँ निर्मित अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ मिथिला भारतीय राष्ट्रक विरोधी नहि, ओकर भीतर विशिष्ट सांस्कृतिक इकाई अछि — एहि कारण मैथिल उपराष्ट्रीयता विखण्डन नहि, बहुस्तरीय भारतीयताक रूप बनैत अछि। मनमोहन झाक निधन (२००९) क दसम दिनक भीतर लिखल ई आलेख श्रद्धांजलि आ आलोचनाक मर्यादित संगम थिक।

३.८ मैथिली पत्रकारिताक विकासमे प्रवासीक योगदान

पत्रकारिताक परिभाषा (निर्धारित लक्ष्यक अनुरूप पाठ्य-सामग्रीक निष्पक्ष प्रसार) सँ आरम्भ कऽ लेखक पत्र, पत्रकार आ पत्रकारिताक बीच अन्तर स्पष्ट करैत छथि। हुनकर प्रश्न अछि — मैथिलीमे नियमित, आर्थिक रूपसँ आत्मनिर्भर समाचार-पत्र परम्परा सीमित रहने 'पत्रकारिता' शब्दक अर्थ कोना निर्धारित हो? प्रवासी-निवासीक विधिक कसौटी (विदेशी मुद्रा विनिमय अधिनियम) क सोझाँ ओ सांस्कृतिक मिथिलाक अखण्डताक तर्क रखैत छथि — नेपाल-तराइ आ भारतीय मिथिलाक बीच युग-युगक अविच्छिन्न सांस्कृतिक एकसूत्रताक आगाँ राजनीतिक सीमा गौण। प्रवासी मैथिल लोकनि द्वारा जयपुरसँ प्रकाशित 'मैथिल-हितसाधन' (१९०५) आ बनारससँ प्रकाशित 'मिथिलामोद' (१९०५) सामाजिक शिक्षा, स्त्रीशिक्षा, रूढ़िविरोध, भाषा-संवर्धन आ निर्भीक सम्पादकीय दृष्टिक वाहक बनल; एहि पत्रिका सभक उद्धार-उद्धरण सहित विवेचन ऐतिहासिक दृष्टिएँ बहुमूल्य अछि। सभसँ सूक्ष्म अछि ज्ञान-समाजशास्त्रीय ई विश्लेषण जे सम्पादकीय निर्भीकताक सामाजिक आधार की छल — विद्यावाचस्पति मधुसूदन ओझा आ मम मुरलीधर झा तत्कालीन सत्ता-केन्द्र दरभंगा पर आश्रित नहि छलाह, तेँ स्पष्टवादिता सम्भव भेल। सार्वजनिक क्षेत्रक सिद्धान्तसँ ई पत्र-पत्रिका समाजक वैचारिक संवाद-मञ्च बनैत अछि — मिथिलाक भीतर जे प्रश्न उठाएब कठिन छल, प्रवासक अपेक्षाकृत स्वतन्त्र

वातावरणमे ओ प्रश्न निर्भीकतासँ उठल। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ प्रवास सीमा-बाहरक अवस्था नहि, मिथिलाक विस्तृत सांस्कृतिक परिधि अछि — जयपुर, बनारस, अजमेर, कलकत्ता, दिल्ली, नेपाल आदि स्थान मैथिली चेतनाक वैकल्पिक केन्द्र बनैत अछि। पत्रकारिताकेँ आजीविका आ व्यवसायक कसौटीसँ फराक कऽ देखबाक प्रस्ताव मैथिली पत्रकारिताक इतिहास-लेखन लेल एक वैकल्पिक (समान्तर) ढाँचा प्रस्तुत करैत अछि।

३.९ मैथिली लोकगाथामे दीनाभद्री

ई अध्याय पाठालोचन-शास्त्र आ निम्नवर्गीय विमर्शक संगम-स्थल थिक। ग्रियर्सन-संकलित गीत दीनाभद्री (१८८५) केँ मूल-स्रोतक प्रतिष्ठा दैत लेखक ई मार्मिक प्रश्न उठबैत छथि जे परवर्ती विद्वान् अपन-अपन व्यक्तिगत संकलनकेँ आधार बना लिखैत गेलाह, मुदा मूल पाठ आ अपन पाठक अन्तरक हिसाब केओ नहि देलनि — ई साहित्यिक अराजकता थिक; ग्रियर्सनक संकलनकेँ उपेक्षित राखि ‘मूल गाथा अप्रकाशित’ कहब ऐतिहासिक रूपसँ अनुचित अछि। दुनू पाठक तुलनात्मक अध्ययन (सात बनाम तेरह अध्याय, गुलामी जटक भूमिका-भेद, स्वाधीनताक बाद दीनाभद्रीक मुहमे अंग्रेजी शब्दक प्रवेश) लोकगाथाक ‘लोच’-सिद्धान्तक प्रामाणिक निदर्शन थिक — लोककण्ठमे रहैत गाथा वाचक, काल आ श्रोताक अनुसार बदलैत रहैत अछि, आ इएह लोच ओकर जीवनी-शक्ति थिक।

दीना आ भद्री मुसहर जातिक वीर भ्रातृद्वय छथि; जोरावर सिंहक सामन्ती अत्याचारक विरुद्ध हुनक विद्रोह, शौर्य, भ्रातृ-प्रेम, पंचायती लोकतन्त्रमे आस्था (‘पंचसँ निसाफ’) आ शोषक-प्रतिकारक विश्लेषण देखबैत अछि जे नायकत्वक समस्त शास्त्रीय गुण दलित समाजोमे वर्तमान छल — ई स्थापना राजकुल-केन्द्रित नायकत्व-सिद्धान्तक प्रति-कथन थिक। लोकगाथामे जातीय उत्पीड़न, सामाजिक विषमता, साहस, न्याय आ सामुदायिक स्मृति संरक्षित अछि; लोकनायकक महत्ता राजकीय पदसँ नहि, पीड़ित समुदायक रक्षा आ आत्मसम्मानसँ निर्धारित होइत अछि। दलित आलोचनासँ ई अध्याय विशेष उल्लेखनीय अछि — मुख्य इतिहास जाहि समुदायकेँ इतिहासहीन मानैत अछि, ओकर लोकगाथा स्वयं इतिहासक वैकल्पिक अभिलेख बनि जाइत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिमे दीनाभद्री राजदरबारक नायक नहि, लोककण्ठक नायक छथि — एहि परिवर्तनसँ साहित्यिक आ राजनीतिक स्थानक पुनर्वितरण होइत अछि, आ लोकगाथाक वर्तमान राजनीतिक अवकाश-निर्माणमे भूमिकाक संकेत एकरा समकालीन विमर्शसँ जोड़ैत अछि।

३.१० मैथिली कथाक विकास: किछु नव तथ्य

नव-इतिहासवादी पुनर्लेखनक ई श्रेष्ठ उदाहरण थिक। स्थापित मान्यता — चन्दा झाकृत पुरुषपरीक्षाक अनुवाद (१८८९) मैथिली कथाक प्रस्थान-बिन्दु — क खण्डन तीन कसौटी पर कएल गेल अछि: अनुवादक प्रचार-प्रसारक तत्कालीन असम्भाव्यता, शब्दानुवादक अनाकर्षक भाषा (जयकान्त मिश्र आ रमानाथ झाक साक्ष्य सहित), आ प्रभावित वर्गक अव्यावहारिकता (संस्कृतक अधीत विद्वान् अनुवादसँ प्रेरित किएक होएताह?) । तकर विकल्पमे लेखक मैथिली कथाक आरम्भ केवल मुद्रित आधुनिक कथासँ मानबाक विरोध करैत छथि: ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरमे चौंसठि कलामे परिगणित ‘कथाकौशल’, व्रतकथाक तेसर धारा (मधुश्रावणी, सिरता-बिसता) क वाचिक परम्परा, लोककथा, हास्य-व्यङ्ग्य आ मौखिक आख्यानक दीर्घ परम्पराकेँ आधुनिक कथाक पूर्वपीठिका मानल गेल अछि। रचनात्मक उपलब्धि ई अछि जे लेखक कथा आ कथाकौशलमे भेद करैत छथि — कथ्य एक वस्तु अछि; श्रोताकेँ बान्हि रखबाक भाषा, गति, स्वर, संवाद आ प्रस्तुति दोसर। एहि दृष्टिसँ मौखिक साहित्य अपरिपक्व नहि, अपन स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्र वाला विधा अछि।

श्रीकृष्ण ठाकुरक चन्द्रप्रभा (रचना १८८०क दशक धरि, प्रकाशन १९३९) केँ मैथिलीक पहिल मौलिक कथाक प्रस्थान-बिन्दु मानबाक प्रस्ताव, ‘चन्द्रभागा’ क स्थानपर’ चन्द्रप्रभा’ नामक शुद्धि,’ विलक्षण दाम्पत्य’ क विधागत पुनर्निर्धारण आ’ मदनराज चरित’ क काल-सम्बन्धी प्रश्न अध्यायक शोधपरक उपलब्धि अछि। चन्द्रप्रभाक रसधज-राजाक कथाक व्याख्या — प्रजापीड़क शासकक विरुद्ध प्रजाक असहयोग आ पलायन — मे १८५७क असफलताक बादक जन-आक्रोशक प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति देखब, फूलबाड़ी आ मालीक प्रतीकक माध्यमसँ प्रजा आ शासनक सम्बन्ध पढ़ब, तथा विद्यासिन्धुक बेंग-कथा (इन्द्र-पृथ्वी-बेंग) मे औपनिवेशिक शोषण आ सत्याग्रही प्रतिरोधक रूपक पढ़ब — ई साहित्य आ इतिहासक पारस्परिक पाठक (नव-इतिहासवादक मूल प्रविधिक) सुन्दर प्रयोग थिक; ध्वनि-दृष्टिसँ राजकथा औपनिवेशिक आ सामन्ती अत्याचारक आलोचना बनि जाइत अछि।

३.११ मैथिली कवितामे मिथिलाक भूकम्प

प्रकृतिक उद्दीपक रूपक वर्णन-बहुल मैथिली काव्य-परम्परामे ध्वंसक रूपक उपेक्षाक सैद्धान्तिक प्रश्नसँ ई निबन्ध खुजैत अछि। एहिमे सन् १९३४ आ १९८८क भूकम्पक काव्यात्मक अभिलेखक अध्ययन अछि। कविवर सीताराम झाक 'भूकम्प वर्णन' आ कृष्णनन्दन सिंहक' कम्पकारिका' क तुलनात्मक अध्ययनमे कम्पकारिकाक ऐतिहासिक प्रलेख-मूल्य (भूकम्प-पूर्व मिथिलाक राजनीतिक-सामाजिक-आर्थिक स्थिति सहित) रेखांकित कएल गेल अछि — ई केवल विनाश-वर्णन नहि, तत्कालीन मिथिलाक राजनीति, अर्थव्यवस्था, भ्रष्टाचार, वस्तु-मूल्य आ पुनर्निर्माणक काव्यात्मक दस्तावेज थिक। अठारह वर्षक वयसमे भोगल त्रासकेँ अड़तीस वर्ष धरि स्मृतिमे जिआ कऽ काव्यबद्ध करबाक मनोवैज्ञानिक टिप्पणी, दरभंगा अस्पताल आ चतुर्भुज स्थानक करुण-व्यंग्य-मिश्रित चित्र, तथा १९८८क भूकम्प-काव्य-संकलनसँ यात्री, चन्द्रभानु सिंह, धीरेन्द्र आ जीवकान्तक साक्ष्य — सभ मिलि आपदा-साहित्यक एक लघु इतिहास बनि जाइत अछि। धीरेन्द्रक पाँतीमे विपत्तिमे मनुजताक एक भऽ जएबाक निरीक्षण करुण-रसक सामाजिक परिणतिक सूचक थिक।

करुण आ भयानक रसक संयोजन एहि अध्यायक केन्द्र अछि। घर, अस्पताल, मन्दिर, बाजार, राजभवन, गरीबक झोपड़ी — सभ विनाशक समान परिधिमे आबि जाइत अछि, मुदा समान प्राकृतिक आघातक सामाजिक परिणाम असमान होइत अछि। पर्यावरणीय आलोचनासँ प्राकृतिक घटना आ सामाजिक निर्मितिक अन्तर स्पष्ट होइत अछि — भूकम्प प्राकृतिक अछि, मुदा कमजोर भवन, सरकारी उपेक्षा, असमान संसाधन आ राहतक राजनीति मानवीय निर्णयक परिणाम अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे विपत्ति साहित्यिक इतिहासक वैध विषय बनैत अछि।

३.१२ कथी लऽ लगेलिऐ हे कोसी माइ

बाढ़ि-साहित्यक ई प्रवृत्ति-सर्वेक्षण आरसी प्रसाद सिंहक हाकरोससँ आरम्भ भऽ चन्दा झा, यात्री (कौशिकीक धार), लक्ष्मीपति सिंह, चन्द्रभानु सिंह, सियाराम झा 'सरस' आ सुकान्त सोम धरि पसरल अछि। एहि अध्यायमे कोसी आ मिथिलाक अन्य नदी सभकेँ मातृरूप, जीवनदायिनी शक्ति आ विनाशकारी बाढ़ि — तीनू रूपमे देखल गेल अछि। 'नदी मातृक क्षेत्र' क शास्त्रीय गौरव आ प्रतिवर्षक जल-प्रलय, भूख, विस्थापन, ऋण आ पलायनक यथार्थक बीचक विडम्बनाकेँ लेखक कोसी-माइक लोकगीतीय उपरागसँ जोड़ि दैत छथि — माइक प्रकोप मानि मनौती करैत लोक-मानसक चित्रण सांस्कृतिक अध्ययनक सामग्री थिक। कोसीक' माइ' रूप सांस्कृतिक आत्मीयता उत्पन्न करैत अछि, मुदा कवितामे एहि माइसँ प्रश्न सेहो कएल जाइत अछि — भक्ति आ प्रतिरोध एक साथ उपस्थित अछि। सुकान्त सोमक कवितामे मन्त्रीक हवाई-सर्वेक्षणक व्यंग्य — सुखाएल बाँसक फट्ठी सन आकृति सभक ऊपर उड़ैत विमान आ अखबारमे एकटा हरियर मुस्काइत चेहरा — सत्ता-आलोचनाक तीक्ष्णतम उदाहरणक रूपमे उद्धृत अछि। राहत-सामग्रीक लूट, साँप-मूसक मिलन आ पारिस्थितिकीय क्षतिक प्रसंग बाढ़िकेँ प्राकृतिक आपदासँ आगाँ राजनीतिक-नैतिक प्रश्न बना दैत अछि। पर्यावरणीय आलोचनाक दृष्टिसँ ई अध्याय मनुष्यकेन्द्रित सीमा पार करैत पशु-पक्षी, बगुला, खेत, पोखरि, वनस्पति आ सम्पूर्ण जीव-मण्डलक त्रासदी देखबैत अछि; नदीक प्राकृतिक प्रवाह, बान्ह, तटबन्ध, राहत-व्यवस्था, सरकारी सर्वेक्षण आ भ्रष्टाचार एक जटिल राजनीतिक पर्यावरण बनबैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ बाढ़ि मिथिलाक बाहरी दुर्घटना नहि, ओकर सामाजिक संरचना, लोकगीत, स्मृति, अर्थव्यवस्था आ पलायनक निर्णायक इतिहास अछि।

३.१३ मैथिली महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ

पाँच महाकाव्य — सुभद्राहरण (मुंशी रघुनन्दन दास), राधाविरह (मधुप), अगस्त्यायनी (मार्कण्डेय प्रवासी), त्रिपुण्ड (धीरेन्द्र) आ पराशर (किरण) — क चयन पाँच युगीन प्रयोजनक आधार पर कएल गेल अछि: स्वाधीनता-संघर्ष, नारी-सशक्तीकरण, राष्ट्रीय भावात्मक एकता, श्रम-निष्ठ युवा-शक्ति आ मैथिल उपराष्ट्रीयता। पौराणिक कथानकक भीतर समकालीन इतिहास पढ़बाक ई पद्धति — जहलसँ पुत्रक पत्र पाबि लिखल सुभद्राहरणमे असहयोग आन्दोलनक कर-बहिष्कार, अगस्त्यायनीमे भाषा-विवादक समाधान रूपमे शिवक डमरूसँ तमिल-संस्कृतक युगपत् जन्म, पराशरमे' अन्न थिक प्राण' क श्रम-घोष आ सीताक मुहेँ मिथिलाक लोकतन्त्री गौरव — रूपक-पाठ (अन्योक्ति-व्याख्या) क सफल प्रयोग थिक। नव-इतिहासवादी सिद्धान्तक अनुरूप पुराणक पात्र अपन प्राचीन समयमे बन्द नहि रहैत छथि: अर्जुन स्वतन्त्रता सेनानीक कर्तव्यबोधक प्रतीक बनैत छथि; राधा राष्ट्र आ समाज-सुधारमे स्त्रीक सहभागिताक स्वर बनैत छथि; अगस्त्य उत्तर-दक्षिण समन्वयक वाहक बनैत छथि; त्रिपुण्डमे शिव कृषक आ श्रमिक बनैत छथि; पराशरमे श्रम-प्रतिष्ठा, वर्णभेद-विरोध, भूखक समक्ष कर्मकाण्डक निरर्थकता आ मैथिली अस्मिता व्यक्त अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक साधारणीकरण प्रक्रिया एहिठाम स्पष्ट अछि — पुराणक विशिष्ट पात्र आधुनिक जनक सामूहिक आकांक्षाक प्रतिनिधि बनैत छथि। रचना-काल आ प्रकाशन-कालक सावधान अभिलेखन एहि अध्यायकेँ इतिहास-लेखनक दृष्टिएँ सेहो प्रामाणिक बनबैत अछि।

३.१४ नऽव गीतमे समाज-चेतना

'नऽव गीत' पदक प्रवर्तन आ परिभाषा एहि निबन्धक सैद्धान्तिक योगदान थिक — ई वयोवर्गक नहि, मूल्यबोधक द्योतक; नवीन गीतक उपरान्त रचल सभटा गीत नऽव गीत नहि। नऽव गीत पारम्परिक रूढ़ कथ्य, मिथ्या गौरव, उपदेशात्मकता आ भावुक विलापसँ हटि आधुनिक सामाजिक विसङ्गति, औद्योगीकरण, महानगरीय त्रास, भूख, बेरोजगारी आ संघर्षकेँ लयात्मक रूप दैत अछि। यन्त्र-युगक उपज मानि एहिमे बुद्धि-तत्त्व आ भाव-तत्त्वक लयात्मक सम्मिश्रणक लक्षण-निर्धारण, आ प्राचीन गीतक गार्हस्थ्य शृंगार, चन्दा झाक भाव-विह्वलता, राष्ट्रीय चेतनावादी अतीत-गान तथा मंचीय तुकबन्दी — चारूसँ एकर सीमा-रेखा खीचब वर्गीकरण-शास्त्रक सुन्दर अभ्यास थिक। नऽव गीतमे बुद्धि आ भावना विरोधी नहि, परस्पर पूरक अछि; निजी दुःख सामूहिक सामाजिक संकटमे साधारणीकृत होइत अछि। गंगेश गुंजनक' दूभिक पेंपी पर बड़क गाछ पतरब' क प्रतीक-व्याख्या — दलित-शोषितक नव चेतना पर प्रभु-वर्गक पसरब — मार्क्सवादी पाठक संयत प्रयोग थिक; बुद्धिनाथ मिश्रक जेठुआ मकइ आ मार्कण्डेय प्रवासीक फागुन-आह्वानक विश्लेषण नऽव गीतक वैविध्यकेँ प्रमाणित करैत अछि। बालुपर लिखल इतिहास, माटिक डिबिया जकाँ जरैत गाम — ई प्रतीक आधुनिक असमानताक तीव्र ध्वनि उत्पन्न करैत अछि। मार्क्सवादी दृष्टिसँ सुविधा-भोगी वर्ग, विफल विकास-योजना, महानगरक प्रभुत्व आ ग्रामीण दण्डक आलोचना अछि; रूपवादी दृष्टिसँ नूतन प्रतीक, खण्डित बिम्ब आ बोलचालक लय नऽव गीतक वैशिष्ट्य अछि। अध्याय नऽव गीतक विविधताकेँ कमजोरी नहि, जीवित विकासक प्रमाण मानैत अछि।

३.१५ मैथिली कविताक वर्तमान धारा

भुवनेश्वर-संगोष्ठी (२०१२) मे पठित ई आलेख रवीन्द्रनाथ आ सुब्रह्मण्यम भारतीक साक्ष्यसँ भारतीय सामासिक संस्कृतिक पट पर मागधी-प्राच्य परिवारक चारू सहोदरा (असमिया, ओड़िआ, बंगला, मैथिली) क साझा विरासत, विद्यापतिक प्रभाव आ औपनिवेशिक भाषा-सत्ताक इतिहासकेँ स्मरण करैत मैथिली कविताक चारि वर्तमान धाराक निर्धारण करैत अछि: मानवजाति पर आएल संकटक चिन्ता (जीवकान्तक युद्ध-जर्जर शताब्दीकेँ विदाइ), उपभोक्तावादी संस्कृतिक विरोध, सांस्कृतिक साम्राज्यवादक प्रतिरोध (सूचना-महापथ पर एकरेखीय विकासक मत्स्यन्याय), आ जैविक-सांस्कृतिक वैविध्यक क्षरण-चिन्ता (छओ बिगहा आठ कट्ठाक कलम-उजाड़ि, बगुलाक पलायन) । जीवकान्त आ उदयनारायण सिंह' नचिकेता' क कविताक आलोकमे उपभोक्तावादी दानवताक विरुद्ध मानवक अस्तित्व आ सांस्कृतिक स्वायत्तताक संघर्ष विश्लेषित अछि। उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ सूचना-साधन, बजार, उच्च प्रौद्योगिकी आ सांस्कृतिक प्रभुत्वक सम्बन्ध उद्घाटित होइत अछि — एकर आशय ई नहि जे बाहरी संस्कृतिसँ सम्पर्क वर्जित हो, अपितु एकतरफा प्रभुत्व स्थानीय भाषा, लिपि, जीवन-पद्धति आ कल्पनाशक्तिकेँ समाप्त नहि करए। पर्यावरणीय दृष्टिसँ जैवविविधता, स्थानीय धान, आमक प्रजाति, पोखरि, बगुला आ प्राकृतिक आवासक विनाश आधुनिक कविताक चिन्ता बनैत अछि। आशबीक' अपेक्षित बहुमुखता' क नियम — परिवेशसँ लड़बा लेल कमसँ कम ओतबे आन्तरिक वैविध्य चाही जतबा परिवेशमे अछि — क प्रयोग मैथिली आलोचनामे व्यवस्था-चिन्तनक प्रवेश थिक, आ ई अस्तित्व-रक्षाक प्रश्नकेँ भावुकतासँ निकालि विज्ञानक धरातल पर आनि दैत अछि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ मैथिली कविता भारत आ नेपालक साझा भाषिक जीवन, लोकज्ञान आ सांस्कृतिक बहुलताक रक्षा करैत प्रतिरोधक काव्य बनैत अछि।

३.१६ मैथिली लोकगीत: अवस्था आ संरक्षण

जनकपुरधामक राष्ट्रीय संगोष्ठीमे कार्यपत्र पर टिप्पणी-रूपमे प्रस्तुत ई आलेख' लोके च वेदे च' क शास्त्रीय समानान्तरतासँ लोक-प्रतिष्ठाक भारतीय आधार जोड़ैत अछि। आरम्भमे लेखक प्रस्तुत आलेखक परिचयात्मक प्रवृत्तिक आलोचना करैत छथि आ माँग करैत छथि जे लोकगीतक केवल सूची नहि, ओकर सामाजिक कार्य, परिवर्तन आ विलुप्तिक कारणक विश्लेषण हो — जाँतक स्थानपर यन्त्र आ ढेकीक स्थानपर मिल आबि गेलापर श्रमगीतक भविष्य की होयत, ई प्रश्न अत्यन्त सार्थक अछि। लोकगीतकेँ लेखक सामूहिक भावात्मक अभिलेख, परम्परागत ज्ञान, औषधीय अनुभव, कृषि-संस्कृति, पारिवारिक सम्बन्ध आ जीवन-संस्कारक भण्डार मानैत छथि — मेथी-हरदिक औषधीय गुण,' नानीक पीसल मेथी' क सामाजिक अर्थशास्त्र, धोबिनियाँक सोहागक पौराणिक कथा-गुम्फन, तुलसी, बेल, बाँस सन प्रतीक अनुभवसिद्ध लोकज्ञानक अङ्ग अछि। नारीवादी दृष्टिसँ अध्याय विशेष प्रखर अछि: बेटी-जन्मक अवसाद आ भ्रूण-परीक्षा-पूर्वक मरीच-प्रयोगक साक्ष्य, कन्याक सामाजिक अवमूल्यन, पतिद्वारा श्रम-शोषण, दहेज, सासु-ननदक नियन्त्रण आ नवविवाहिताक देहगत आकांक्षा लोकगीतमे सुरक्षित अछि। लगनीक अप्रस्तुत-विधान (लौंगक फूल, यमुनामे जाल) क रस-सजग व्याख्या शिष्ट-लोकक कृत्रिम भेदक खण्डन थिक। संरक्षण लेल यूनेस्कोक अमूर्त सांस्कृतिक सम्पदा-ढाँचासँ चिन्हबाक तीन आ संरक्षणक सात उपायक प्रस्ताव — अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय, क्षेत्रीय वर्गीकरण, प्रशिक्षित सङ्कलक, ध्वनि-अभिलेखन

आ समुदायकेँ प्रति उपलब्ध करायब — तथा समष्टि-चेतना आ ओगबर्नक सांस्कृतिक-तत्त्व-वैविध्यक सूत्रसँ नेपालक नव लोकतन्त्रमे लोकशक्तिक सांस्कृतिक आधारक तर्क व्यावहारिक नीति-प्रस्तावक स्तर धरि जाइत अछि, जे मैथिली आलोचनामे दुर्लभ अछि। विदेह समान्तर इतिहासमे लोकगीत अशिक्षित समुदायक मनोरञ्जन नहि, समाजक जीवित इतिहास अछि।

३.१७ उपनिवेशवादक नऽव चालि

समापन-निबन्ध उत्तर-औपनिवेशिक चिन्तनक व्यावहारिक शिखर थिक आ राजनीतिक स्वतन्त्रताक बादो भाषिक उपनिवेशवादक निरन्तरता उद्घाटित करैत अछि। तंजानियाक किस्वाहिली-प्रकरणक विस्तृत अध्ययन — स्वाधीनता (१९६२) क बाद शिक्षाक माध्यम बनएबाक संकल्प, आर्थिक संकट, विश्व बैंक आ अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोषक शर्त, निजीकरण, आ ब्रिटिश सहायता-योजनाक माध्यमे अंग्रेजीक पुनःस्थापन — सँ ई सूत्र निकालल गेल अछि जे राजनीतिक उपनिवेश गेलाक बाद भाषिक-सांस्कृतिक उपनिवेश आर्थिक सहायताक नव चालिसँ चलैत अछि। मेडागास्कर, जाम्बिया, मलेशिया आ भारतक (कर्पूरी ठाकुर-प्रसंग सहित) समान्तर दृष्टान्त, तथा एकहि दिन (१९ नवम्बर २००८) पटनामे ब्रिटिश मन्त्रीक बालिका-विद्यालय आ अमेरिकी दूतावासक महिला-महाविद्यालय गमनक सूक्ष्म पाठ — जे स्त्री-शिक्षाक नव-विकसित क्षेत्रकेँ औपनिवेशिक भाषाक प्रभाव-क्षेत्र बनएबाक सुनियोजित चालि थिक — विचारोत्तेजक अछि।

उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टिसँ लेखकक प्रमुख स्थापना अछि — राज्यसत्ता छोड़ि देब मात्र उपनिवेशवादक अन्त नहि; शासनक भाषा, ज्ञानक मानदण्ड, शिक्षाक माध्यम आ रोजगारक प्रवेश-द्वारपर अधिकार बनल रहला धरि औपनिवेशिक सत्ता नव रूपमे जीवित रहैत अछि। भारतमे अंग्रेजी माध्यमक निजी विद्यालयक विस्तार, स्थानीय भाषाक प्रति शिक्षित वर्गक हीनताबोध आ घरमे पीढ़ीगत भाषा-संक्रमणक टूटन मैथिलीक लेल दूतरफा संकट उत्पन्न करैत अछि। फिशमैनक भाषा-संक्रमण सिद्धान्तक सूत्र — अन्तरपुस्तीय मातृभाषा-संक्रमणक बिना भाषा-रक्षा असम्भव; जे भाषा अन्तर-पीढ़ीगत रूपसँ संक्रमित नहि होइत अछि, ओकर मृत्यु सुनिश्चित अछि — आ मैथिल परिवारसभसँ पारिवारिक भाषाक रूपमे मैथिलीक उठि जएबाक दृष्टान्त एहि निबन्धकेँ' मैथिली पर दू तरफा मारि' क चेतावनी-पत्र बना दैत अछि। विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिसँ अध्यायक सर्वाधिक मार्मिक पक्ष पारिवारिक भाषा-विच्छेद अछि — जखन दादा-दादी पोता-पोतीसँ संवाद नहि कऽ पबैत छथि, तखन केवल शब्द नहि, कथा, गीत, संस्कार, लोकज्ञान आ सामूहिक स्मृति सेहो टूटैत अछि।

४. अध्यायवार सीमा, अन्तर्विरोध आ अपूर्णता

रमणजीक अपन घोषित सिद्धान्त थिक जे आलोचना अभिनन्दन-पत्र नहि थिक; व्यक्त विचारकेँ सप्रमाण खण्डित करब वा वैमत्य राखब अवमानना नहि। समीक्षाशास्त्रमे केवल प्रशंसा करब गुटबन्दी आ मित्र-मण्डलीक संकीर्ण दायराकेँ पोसबाक समान अछि। तेँ ओही कसौटी पर, आ ओही आदर-भावसँ, प्रत्येक अध्यायक सीमा, वर्गीय विलोपन आ सैद्धान्तिक अपूर्णताक विवेचन नीचाँ प्रस्तुत अछि। ई सीमा सभ पोथीक मूल्यकेँ घटबैत नहि अछि, अपितु आगाँक अनुसन्धान लेल' वादे वादे जायते' क द्वार खोलैत अछि।

४.१ मैथिली आ मिथिला भाषाक अध्ययन: सीमा

पहिल सीमा स्रोत-केन्द्रक थिक। अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान्क (कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन) साक्ष्य पर ठाढ़ अछि; दीनबन्धु झासँ पूर्वक देशी वैयाकरण-चेतना — पाँजि-प्रबन्धक भाषिक अभिलेख, ज्योतिरीश्वर-कालक शब्द-संग्रह-प्रवृत्ति, संस्कृत-टीका-परम्परामे मैथिली-प्रयोगक साक्ष्य — प्रायः अस्पर्शित रहि गेल। फलतः जाहि औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसाक आलोचना निबन्ध करैत अछि, तकरहि स्रोत-सामग्री पर ओ स्वयं आश्रित भऽ जाइत अछि — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक चिर-परिचित आत्म-विरोध थिक। दोसर, औपनिवेशिक ज्ञान-निर्माणक अन्तर्विरोधक पर्याप्त विश्लेषण नहि अछि: ग्रियर्सनक कार्य मैथिलीक पहचानक साधन सेहो छल आ औपनिवेशिक जनगणना, वर्गीकरण आ प्रशासनक उपकरण सेहो; कैम्पबेल (१८७४) क शब्द-संग्रहकेँ केवल प्रशासनिक सुविधा मानब, आ ग्रियर्सन द्वारा कएल गेल औपभाषिक विभाजन — पूर्वी रूपकेँ 'गँवारी' आ निम्नवर्गक भाषिकाकेँ 'जोलहा बोली' कहब — क वर्ग-विभेदी पक्षकेँ नहि चिन्हब, प्राच्यवादी ज्ञान-संचयक ओहि आलोचनासँ वञ्चित रहि जाइत अछि जे एहि द्वैधताकेँ अधिक गम्भीरतासँ खोलि सकैत छल। तेसर, कार्यभार आ कार्य-पारदर्शिताक सिद्धान्तक प्रयोग आरम्भ तँ भेल, मुदा मैथिलीक विभिन्न प्रक्षेत्र (शिक्षा, प्रशासन, व्यापार, धर्म, संचार) मे प्रयोगक कोनो क्षेत्रवार विवरण वा तुलनात्मक आकलन नहि — सिद्धान्त उदाहरणक (अंग्रेजी, संस्कृत) स्तरहि पर रहि गेल, मैथिलीक मापन नहि भेल। चारिम,' मानक मैथिली' क निर्धारणमे अन्य उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकारक प्रश्न — मानक कोन शक्ति-संरचनासँ बनैत अछि — अनुत्तरित अछि; भाषाक अवनतिक कारण बाहरी

आक्रमण आ प्रशासनिक उपेक्षामे केन्द्रित अछि, मैथिल समाजक आन्तरिक जातिगत विभाजन, शिक्षित वर्गक भाषिक उदासीनता, स्त्रीशिक्षाक अभाव आ आर्थिक संरचनाक भूमिका तुलनात्मक रूपसँ कम विश्लेषित अछि। पाँचम, अंग्रेजी पाद-टिप्पणीक बाहुल्य बिना अनुवादक अछि, आ निबन्धक समापन प्रश्न-शृंखलामे विसर्जित भऽ जाइत अछि — व्याकरण-लेखनक विलम्बक जे कारण-मीमांसा आरम्भ भेल छल, तकर सुगठित निष्कर्ष-सूत्र पाठककेँ स्वयं जोड़ऽ पड़ैत छैक।

४.२ रमानाथ झा आ मिथिला भाषा: सीमा

संग्रहक ई दीर्घतम अध्याय संरचनाक दृष्टिएँ शिथिल अछि — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन: छह स्वतन्त्र निबन्धक सामग्री एकहि छत्रमे अटकाओल गेल अछि, जाहिसँ तर्कक धार ठाम-ठाम मोथरा जाइत अछि। दोसर, सन्तुलनक घोषित प्रतिज्ञाक बादो स्वर कतोक स्थानपर आलोचनात्मक जीवन-विवेचनसँ अधिक प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बनि जाइत अछि: किरणजीक मत-खण्डनकेँ ‘आवेगात्मक’ आ ‘सुविचारित नहि’ कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष लेल प्रयुक्त लेखकक अपन शब्दावली (‘कौचर्य-प्रवीण’, ‘खिधांस’, ‘लटुआएल-दबकल’) सेहो आवेगसँ सर्वथा मुक्त नहि — प्रत्यालोचक जाहि तटस्थताक माँग करैत छथि, से स्वयं हुनक भाषामे कतहु-कतहु भंग होइत अछि; विरोधी मतक तर्कक निष्पक्ष पुनर्निर्माण नहि कएल गेलापर प्रत्युत्तरक विश्वसनीयता घटैत अछि। तेसर, हाउगेन-फर्गुसनक परवर्ती सिद्धान्तसँ रमानाथ झाक पूर्ववर्ती कार्यक संगति देखाएब जतेक आकर्षक अछि, ततबे कालदोषक जोखिमसँ भरल — ई संगति सप्रयोजन नियोजन छल की आकस्मिक समान्तरता, एकर विवेचन नहि भेल। चारिम, मैथिलीक अत्यन्त प्राचीन अस्तित्व सिद्ध करबाक उत्साहमे महाकाव्य, बौद्धकाल अथवा प्राचीन जनपदसँ सम्बन्धित किछु निष्कर्ष भाषावैज्ञानिक प्रमाणक अपेक्षा सांस्कृतिक अनुमानपर अधिक आधारित बुझाइत अछि — ‘मिथिला’ नामक प्राचीनता स्वत: वर्तमान मैथिली भाषाक अखण्ड रूपक प्रमाण नहि बनैत अछि। पाँचम, रमानाथ झाक अपन सीमा — जेना हुनक शब्दानुवादक नीरसता जकर चर्च दसम अध्यायमे स्वयं लेखक करैत छथि, हुनक मानकीकरण-प्रतिरूपक व्यावहारिक असफलता, वा मानकीकरणमे आभिजात्य वर्गक भाषिक रूपकेँ प्राथमिकता देलासँ आन वर्ग-क्षेत्रक मैथिलीक अवमूल्यनक प्रश्न — एहि अध्यायमे प्राय: मौन अछि; व्यक्ति-समर्थन आ सिद्धान्त-समर्थन एक वस्तु नहि, आ प्रशंसाक आधिक्यसँ चरित्र पूर्ण मानवीय व्यक्तित्वक बदला आदर्शीकृत प्रतिमा बनबाक जोखिममे पड़ैत अछि। छठम,’ साहित्य-पत्र’ क बन्द होएबाक आरोपक जे खण्डन अछि, ओ तर्काश्रित बेसी, अभिलेखाश्रित कम — पत्रिकाक अर्थ-व्यवस्था, ग्राहक-संख्या वा बन्द होएबाक प्रत्यक्ष कारणक कोनो दस्तावेज नहि देल गेल।

४.३ प्रत्यालोचक किरणजी: सीमा

पहिल, अध्यायक केन्द्रीय स्थापना — किरणजीक आलोचना मूलत: प्रत्यालोचना थिक, स्वतन्त्र कृति-अवगाहनसँ नहि जनमल — एकटा गम्भीर न्यूनीकरणक जोखिम रखैत अछि; प्रत्यालोचनाक स्वभाव प्रतिक्रियात्मक होइत अछि आ एहि अध्यायमे किरणजीक विचार प्राय: पूर्ववर्ती निष्कर्षक खण्डनक माध्यमसँ सामने अबैत अछि, हुनकर स्वतन्त्र सौन्दर्यशास्त्रीय प्रतिमान अधिक व्यवस्थित रूपमे निर्मित नहि होइत अछि। जे ‘प्रतिक्रियावादिता’ क प्रश्न लेखक स्वयं उठबैत छथि, से बिना पूर्ण उत्तरक छोड़ि देल गेल अछि — प्रश्न उठा कऽ ओकर मीमांसासँ बचि जाएब आलोचकीय दायित्वक अधूरा निर्वाह थिक। दोसर, विरोधाभास-प्रदर्शनमे उद्धरण-चयन एकतरफा अछि: किरणजीक जाहि स्थल सभमे आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, से खोजल नहि गेल; कोनो चिन्तकक चालीस वर्षक लेखनमे मत-भिन्नता विकास सेहो भऽ सकैत अछि, केवल विरोधाभास नहि। तेसर, कुलानन्द मिश्रक चन्द्रग्रहण-प्रसंग अपूर्ण अछि — मिश्रजीक मूल आपत्तिक पूरा तर्क-पक्ष नहि राखल गेल, केवल खण्डनीय अंश उद्धृत भेल। चारिम, सामाजिक न्याय आ लोकमंगलक आग्रह महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा साहित्यकेँ केवल विचारधारात्मक उपयोगितासँ मापल गेलापर रूप, लय, जटिलता, हास्य, विरोधाभास आ कलात्मक स्वतन्त्रताक अवमूल्यन होयबाक आशङ्का रहैत अछि; किरणजीक क्रान्तिकारी वर्ग-दृष्टिकेँ पारम्परिक अलंकारशास्त्रक चौखठिमे बान्हि देलासँ ओकर सामाजिक धार कुनहटएबाक जोखिम सेहो अछि — दूषण-पाँजि आ कौलीनतावादी शुद्धतावादक जाहि आन्तरिक विखण्डनक दिस किरणजीक लेखनक संकेत छल, से पूर्ण विकसित नहि भेल। पाँचम,’ मैथिल आँखि’ स्थानीय दृष्टिक सशक्त अवधारणा अछि, मुदा एकर सीमा स्पष्ट नहि — की ई दृष्टि सभ जाति, लिङ्ग, वर्ग, धर्म आ क्षेत्रक मैथिल अनुभवकेँ समान रूपसँ ग्रहण करैत अछि, अथवा शिक्षित पुरुष-केन्द्रित सांस्कृतिक दृष्टि पुन:’ सम्पूर्ण मिथिला’ क नामपर स्थापित होइत अछि? छठम, किरणजीक काव्य-कृति (पराशर सन) क आलोचकीय दृष्टिसँ हुनक आलोचना-गद्यक अन्तर्सम्बन्धक — कवि-आलोचकक द्वैध व्यक्तित्वक — कोनो विवेचन नहि; ई पक्ष तेरहम अध्यायमे फराक चलि गेल, दुनूक सेतु नहि बनल। संगहि, प्राचीन रचना सभमे आधुनिक राष्ट्रीयता, वर्ग-संघर्ष अथवा लोकतान्त्रिक मूल्य खोजैत काल ऐतिहासिक दूरीक सावधानी हरदम नहि राखल गेल अछि।

४.४ कन्यादान-पाठ: सीमा

एहि प्रखर निबन्धक पहिल सीमा थिक प्रश्न-शृंखलाक अनुत्तरता — 'एकर उत्तरदायी के?' बेरि-बेरि पूछल गेल (अशिक्षा? माए-बाप? सर-कुटुम्ब? समाज?), मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण नहि देलनि; उपेक्षिताक आँखिसँ पढ़बाक जे प्रतिज्ञा छल, से अन्ततः प्रश्नवाचक मुद्रामे स्थगित भऽ गेल। दोसर, कन्यादानक हास्य-रसक पक्ष — जे कृतिक लोकप्रियताक मूलाधार थिक — क रस-शास्त्रीय परीक्षा नहि भेल: हास्यक आलम्बन अबोध बुच्ची थिक की स्वयं अर्ध-शिक्षित समाज, हास्यक भीतर करुणक अन्तर्धारा कोन विन्याससँ बहैत अछि, कथावाचकक दूरी आ विडम्बनात्मक द्व्यर्थताक विश्लेषण, तथा पाठकक असहज हँसीक परीक्षण — ई प्रश्न अस्पर्शित रहल; कतोक स्थानपर पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बनि जाइत अछि आ साहित्यिक पात्रक प्रत्येक व्यवहारकेँ प्रत्यक्ष सामाजिक यथार्थ मानि लेखक अथवा कृतिक नैतिक दोष निर्धारित करब विधागत रूपसँ जोखिमपूर्ण अछि, कारण कन्यादान हास्य, व्यङ्ग्य, विडम्बना, अतिरञ्जना आ सामाजिक प्रकार-निर्माणक रचना अछि। तेसर, द्विरागमन — जाहिमे हरिमोहन झा स्वयं कथाक उत्तर-पक्ष रचलनि — क चर्चाक अभावसँ मूल्याङ्कन आधा पाठ पर ठाढ़ अछि; उपन्यास-युग्मक समग्र पाठेँ लेखकीय दृष्टिक न्याय भऽ सकैत छल। चारिम, पूर्ववर्ती उपन्यासक साक्षर नारी-पात्रक जे तालिका अछि, ओ मात्रात्मक साक्ष्य थिक — ओहि पात्र सभक साक्षरता कथानकमे कतेक केन्द्रीय अछि आ बुच्चीक निरक्षरता कतेक, एहि गुणात्मक तुलनाक बिना' पाछाँ हटब' क स्थापना पूर्ण-प्रमाणित नहि कहल जा सकैत अछि। पाँचम, बुच्चीक निरक्षरता स्वयं व्यंग्यक अस्त्र — समाजक आत्म-दर्शनक दर्पण — रूपमे सप्रयोजन रचना तँ नहि थिक, ई प्रश्न छूटल; संगहि बुच्ची दाइक सम्भावित अन्तःचेतना, मौनक प्रतिरोधी अर्थ, स्त्री-समुदायक पारस्परिक सम्बन्ध आ घरेलू ज्ञानक विस्तार पूर्ण रूपसँ विकसित नहि भेल। छठम, पति-पत्नीमे भाषिक असमानताक प्रश्न मूल्यवान अछि, तथापि हिन्दी बोलब मात्र सांस्कृतिक अनात्मीयताक निश्चित प्रमाण मानब सरल निष्कर्ष भऽ सकैत अछि — वर्ग, शिक्षा, नगर-ग्राम दूरी आ वैवाहिक अपरिचयक संयुक्त प्रभावक विश्लेषण अपेक्षित छल।

४.५ अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह: सीमा

लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि जे छिड़िआएल कवितामे सँ 'किछु मात्रे झोड़ि' सकलाह — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय अछि, मुदा एकर परिणाम ई जे निष्कर्ष सभ (निरपेक्षता, अनुदार समकालीनताक शिकार) सीमित नमूना पर ठाढ़ अछि आ सामान्यीकरणक वैधता संदिग्ध रहैत अछि — सीमित आ बिखरल उदाहरणक आधारपर कविक सम्पूर्ण काव्य-दृष्टि निर्धारित करब सावधानी माँगैत अछि। दोसर, कतोक प्राकृतिक प्रतीककेँ प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल अछि — 'पछबा' पाश्चात्य संस्कृति आ 'शरदागम' औपनिवेशिक क्षयक प्रतीक अवश्य भऽ सकैत अछि, मुदा प्रतीकक ई अर्थ कविताक आन्तरिक संरचना, रचनाकालीन साक्ष्य आ अन्य कवितासँ पुष्ट होयबाक चाही; जीवनीपरक तथ्य आ काव्यार्थ कतोक स्थानपर एक-दोसरमे मिलि जाइत अछि, आ कविक जीवनक राष्ट्रीय वातावरणसँ ई स्वतः सिद्ध नहि होइत अछि जे प्रत्येक प्रकृति-कविता राजनीतिक ध्वनि रखैत हो। तेसर, गद्य-कृति — श्रीचामुण्डा आ पंचवटी उपन्यास — क नाममात्र उल्लेख भेल; 'अनालोचित' क पुनर्वासक जे प्रतिज्ञा छल, से कविता धरि सीमित रहि गेल आ कविक आधा व्यक्तित्व एहू अध्यायक बाद अनालोचिते रहल। चारिम, विवरण-बाहुल्य अछि — जीवन-वृत्त, पत्रिका-नाम, तिथि — मुदा काव्य-शास्त्रीय विश्लेषण (छन्द-विधान, बिम्ब-योजना, भाषिक स्तर)' शरदागम' आ' पछबा' क बाहर विरल अछि; फलतः लक्ष्मीपति सिंह महत्त्वपूर्ण विचारक रूपमे उभरैत छथि, मुदा कविक विशिष्ट कलात्मक स्वर कम स्पष्ट होइत अछि। पाँचम, कविक दरबारी-सामन्ती परिवेशक सान्निध्यसँ हुनक वर्ग-दृष्टि कोना प्रभावित भेल — पाश्चात्य संस्कृतिक विरोधक संग गामक जमीन्दारी शोषणक विरुद्ध हुनक काव्यमे कोन स्वर अछि — ई वर्ग-प्रश्न अस्पर्शित रहल। छठम, कविक हिन्दी-लेखन आ मैथिली-लेखनक अन्तर्सम्बन्धक प्रश्न — द्विभाषिक कवि-चेतनाक गति — उठाओल नहि गेल, जखन कि पोथीक अन्तिम अध्यायक द्विभाषिकता-विमर्शसँ एकर सोझ संगति बनि सकैत छल।

४.६ यात्रीक भाषा: सीमा

पहिल, चारू उपकरण पश्चिमी शैलीविज्ञानसँ आनल गेल अछि आ भारतीय काव्यशास्त्रसँ संगति-स्थापन ('निरंकुशाः कवयः', वक्रोक्ति-सम्प्रदाय) संकेत-मात्र रहि गेल; कुन्तकक छह वक्रता-भेदसँ चयन-विचलनक व्यवस्थित मिलान भेल रहितैक तँ पूर्व-पश्चिम-सेतु पूर्ण बनितैक — से अवसर छूटि गेल। दोसर, उदाहरण चयन मुख्यतः सफल भाषिक प्रयोगपर केन्द्रित अछि आ विश्लेषण-सामग्री मुख्यतः पत्रहीन नग्न गाछ पर; यात्रीक कमजोर, अतिशय कृत्रिम, अस्पष्ट अथवा समयबद्ध शब्दनिर्माणक परीक्षण, तथा हुनक परवर्ती संग्रह आ गद्यक व्यवस्थित समावेश कएल गेल रहितए तँ' यात्रीक भाषा' क समग्र चित्र आरो सन्तुलित होइत। तेसर, विचलनकेँ कतोक स्थानपर स्वयं सौन्दर्यक प्रमाण मानल गेल अछि, मुदा प्रत्येक व्याकरणिक उल्लङ्घन कलात्मक नहि होइत अछि —

औचित्य, प्रसङ्ग, अर्थ-स्पष्टता आ पाठकीय प्रभावक कसौटीपर प्रत्येक विचलनक पृथक परीक्षा आवश्यक अछि। चारिम,' भाषाक भूगोल' क आकर्षक रूपक अपरिभाषित रहल — एकर मानचित्रण (कोन अंचलक, कोन वर्गक, कोन व्यवसाय-क्षेत्रक शब्द-सम्पदा यात्री कतऽ सँ अनलनि) बिना ई रूपक अलंकारे रहि जाइत अछि, विश्लेषण-उपकरण नहि बनैत अछि; संगहि' देशज' क गौरव उचित अछि, मुदा भाषा सदा मिश्रित आ परिवर्तनशील होइत अछि — देशज आ आगन्तुकक कठोर विभाजन स्वयं ऐतिहासिक रूपसँ अस्थिर अछि। पाँचम, समानान्तरता-खण्डमे मामा-गीतक उद्धरण दीर्घ अछि मुदा ओकर सामाजिक व्यंग्य-पाठ (मध्यवर्गीय जीवन-वृत्तक विडम्बना) संक्षेपमे निपटा देल गेल — शैली-विश्लेषण अर्थ-विश्लेषणसँ आगाँ भागि गेल; ध्वनि-संरचना, वाक्य-दीर्घता, कथन-स्वर, संवाद, व्यङ्ग्यक बहुस्तर, भाषिक संकरता आ विभिन्न विधामे भाषा-परिवर्तनक पर्याप्त विवेचन सेहो नहि अछि।

४.७ मनमोहन झा: सीमा

ई संग्रहक लघुतम अध्याय थिक आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा थिक।' अनालोचित पक्ष' क घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सारक स्तर पर रहि गेल — पात्रक उद्धरण अछि, कथा-शिल्पक (दृष्टिबिन्दु, कथन-भंगिमा, समय-विन्यास, संवाद, कथन-गति, करुणा आ राष्ट्रीयताक रचनात्मक सन्धिक) विवेचन नहि। अध्याय पात्रक कथन, कथावाचकक दृष्टि आ लेखकक विचारमे पर्याप्त भेद नहि करैत अछि — कोनो पात्र राष्ट्र अथवा मिथिलाक लेल आत्मोत्सर्गक बात कहैत अछि, ताहिसँ सम्पूर्ण कथा अथवा लेखकक अन्तिम विचार स्वतः निर्धारित नहि होइत अछि। राष्ट्रीयता आ मैथिल उपराष्ट्रीयताकेँ प्रायः सकारात्मक नैतिक मूल्य मानि लेल गेल अछि — राष्ट्रवादक भीतर जाति, वर्ग, लिङ्ग, धर्म आ क्षेत्रीय प्रभुत्वक सम्भावना प्रश्नांकित नहि भेल, आ उपराष्ट्रीय गौरवक भीतर निम्नवर्गीय समाजक मूल प्रश्न (भूख, बेगारी) ओझल रहि गेल। आत्मबलिदानी स्त्री-पात्र सभक प्रशंसा करैत समय ई पूछब आवश्यक छल जे स्त्रीक स्वाधीनता हुनकर अपन जीवन-चयनमे अछि अथवा पुरुष-निर्धारित राष्ट्र आ संस्कृतिक लेल बलिदानमे — नारीवादी दृष्टिसँ त्यागक महिमामण्डन पितृसत्तात्मक आदर्शकेँ पुनः पुष्ट करि सकैत अछि। करुण-रसक ख्याति आ नव-प्रतिपादित राष्ट्रीय स्वरक अन्तःसम्बन्धक रस-शास्त्रीय मीमांसा — करुणा राष्ट्रीय चेतनाक उद्दीपन बनैत अछि की अवरोध — सर्वथा अस्पर्शित अछि। निधनक दसम दिन लिखल गेलाक कारण श्रद्धांजलिक आर्द्र स्वर आलोचनाक तटस्थता पर भारी अछि; बंगला कथाक प्रभावक जे प्रचलित चर्च अछि, तकर परीक्षण स्थगित रहि गेल।

४.८ प्रवासीक योगदान: सीमा

पहिल, प्रवासी-निवासीक निर्धारण हेतु विदेशी मुद्रा-विनिमय अधिनियमक विधिक कसौटीक प्रयोग साहित्यिक-सांस्कृतिक विश्लेषण लेल अटपटाह अछि — लेखक स्वयं एकर असंगति देखबैत छथि, मुदा तखन अपन वैकल्पिक कसौटी ('सांस्कृतिक मिथिलाक सघनता') क कोनो परिचालनीय परिभाषा नहि दैत छथि; नेपाल-तराइकेँ सांस्कृतिक निरन्तरताक कारण' प्रवास' सँ बाहर रखबाक तर्क भावनात्मक रूपसँ सशक्त अछि, मुदा राजनीतिक सीमा, नागरिकता, प्रशासन, आर्थिक सम्बन्ध आ भिन्न ऐतिहासिक अनुभवक वास्तविकता सेहो विचारणीय अछि। दोसर, प्रवासी पत्रकारिताक इतिहास मुख्यतः शिक्षित पुरुष सम्पादक आ प्रतिष्ठित पत्रिकाक इतिहास बनि रहि जाइत अछि — महिला सम्पादक, मुद्रक, वितरक, पाठिका, आर्थिक सहयोगी, ग्रामीण ग्राहक आ पत्राचार-लेखकक भूमिका बहुत कम देखाइत अछि; संगहि सम्पादक-वर्गक अपन सामाजिक स्थिति — जमीन्दार-संभ्रान्त वर्गक संरक्षण आ ओकर वैचारिक प्रभाव — क वर्ग-विश्लेषण नहि भेल। तेसर, अध्याय आँकड़ा-रहित अछि — कोन पत्रिका कतेक दिन चलल, प्रसार-संख्या, ग्राहक-वर्ग, वितरण-क्षेत्र, अर्थ-स्रोत, नियमितता, प्रतिबन्ध, राजकीय दबाव आ पाठकीय प्रतिक्रिया — पत्रकारिताक इतिहास-लेखन जाहि परिमाणात्मक आधारक अपेक्षा करैत अछि, से एतऽ नहि अछि; पत्रिकाक वैचारिक प्रभावक आकलन मुख्यतः सम्पादकीय सामग्रीसँ भेल अछि। चारिम, स्वाधीनोत्तर कालक सर्वेक्षण असन्तुलित अछि — मिथिला दर्शनक चर्च भेल, मुदा दिल्ली, मुम्बई, कलकत्ताक परवर्ती पत्रिका-प्रयास' नाम गनाएब' सँ आगाँ नहि गेल। पाँचम, प्रवासी-योगदानक छाया-पक्ष — प्रवास-जन्य आदर्शीकरण, मिथिलाक यथार्थसँ दूरी, भावुक अतीत-मोह — क आलोचनात्मक परीक्षा नहि भेल; योगदानक अभिनन्दन अछि, योगदानक सीमाक हिआओल नहि। छठम, पत्रकारिता आ साहित्यिक पत्रिकाक सीमा कतोक स्थानपर धुँधला अछि — साहित्यिक विशेषाङ्क, सामाजिक पत्रिका, समाचार-पत्र आ विचार-पत्रक पृथक कार्यपद्धतिक अधिक स्पष्ट वर्गीकरण अपेक्षित छल।

४.९ दीनाभद्री: सीमा

पहिल, पाठ-प्रामाणिकताक जे केन्द्रीय प्रश्न उठाओल गेल — कोन पाठ आधार मानल जाए — तकर समाधान लेखक स्वयं नहि देलनि; समीक्षित पाठक समालोचनात्मक संस्करण (पाठान्तर-सूची सहित) तैयार करबाक जे स्वाभाविक अगिला डेग छल, से प्रस्तावो रूपमे नहि आएल। संगहि लोकगाथाक एक मूल पाठ खोजबाक प्रवृत्ति स्वयं मौखिक परम्पराक बहुरूपतासँ मेल नहि खाइत

— प्रत्येक क्षेत्र, गायक, अवसर, जातीय उपसमूह आ पीढ़ी अपन पाठ निर्मित करैत अछि। दोसर, ग्रियर्सनक संकलन महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा औपनिवेशिक सङ्कलक, अनुवादक, लिप्यन्तरक आ सम्पादकक मध्यस्थताक आलोचनात्मक परीक्षण पर्याप्त नहि — घुमन्तू गायकक जीवित प्रस्तुति लिखित पाठमे आबि कतेक बदलल, ई प्रश्न आवश्यक अछि। तेसर, महेन्द्रनारायण राम आ फूलो पासवानक दावाक खण्डनमे जे कठोरता अछि ('इतिहास-सम्मत नहि', 'नकारात्मक दृष्टि'), से हुनक संकलन-श्रमक स्वीकृतिक संग सन्तुलित नहि भेल — प्रत्यालोचनाक जे मर्यादा-सूत्र तेसर अध्यायमे प्रतिपादित अछि, से एतऽ किछु शिथिल अछि। चारिम — आ ई गम्भीरतम — दलित लोकगाथाक विवेचन पूर्णतः अभिजात आलोचकीय स्थितिसँ भेल अछि: मुसहर समुदायक अपन गायक, अपन भगता, अपन वर्तमान वाचिक परम्पराक कोनो प्रत्यक्ष साक्ष्य (क्षेत्र-कार्य) नहि अछि; जाहि तेलुगु दलित-विमर्शक उद्धरण अध्यायमे अछि — जे कहैत अछि जे दलित-विषयमे बाजबाक अधिकार पर स्वयं दलित-स्वरक दावी अछि — तकर आलोक अपनहि पद्धति पर नहि पड़ल; बाहरी आलोचकक व्याख्या आ समुदायक आत्मव्याख्यामे अन्तर भऽ सकैत अछि। दीनाभद्रीक गाथाकेँ प्रेतयोनिसँ मुक्ति आ तीर्थ-पूजा सन सनातनी ढाँचामे राखि पढ़लासँ हुनक स्वायत्त विद्रोही रूपक संस्कृतिकरणक जोखिम सेहो प्रश्नांकित नहि भेल। पाँचम, गाथाक स्त्री-पात्र (निरसो, हिरिया, जिरिया) क भूमिकाक स्वतन्त्र विश्लेषण नहि भेल — निम्नवर्गीय विमर्शक भीतरो नारी-स्वर हाशिये पर रहि गेल; संगहि मुसहर समुदायक आन्तरिक विविधता, अनुष्ठान, प्रस्तुति-सन्दर्भ, आर्थिक परिवर्तन आ वर्तमान राजनीतिक उपयोगक विस्तृत क्षेत्रीय अध्ययन अपेक्षित छल।

४.१० कथाक विकास: सीमा

पहिल, चन्द्रप्रभाक तिथि-निर्धारण (रचना १८८०क दशक धरि) मुख्यतः सम्पादक लक्ष्मीपति सिंहक स्मृति-कथन ('साठि-सत्तरि वर्ष पूर्वक') आ जीर्ण-शीर्ण पाण्डुलिपिक वर्णन पर आधारित अछि — पाण्डुलिपि-विज्ञानक कोनो बाह्य कसौटी (कागज, मसि, लिपि-शैलीक काल-निर्धारण) क अभावमे प्रस्थान-बिन्दुक ई पुनर्स्थापन ओतबे दृढ़ नहि अछि जतेक निबन्धक स्वर सुझबैत अछि; जाहि कठोरतासँ रामदेव झाक मदनराज-चरित-विषयक तिथि-भ्रमक खण्डन भेल, ओही कठोरताक प्रयोग अपन पक्षक साक्ष्य पर नहि भेल — ई मापदण्डक द्वैध थिक। दोसर, आत्म-सन्दर्भक सघनता — मैथिलीक आरम्भिक कथा, मिथिला दर्पण, निर्दयी सासु आदि उद्धृत स्रोतक सम्पादक स्वयं लेखक छथि; सम्पादन-श्रम स्तुत्य अछि, मुदा अपनहि सम्पादित सामग्रीकेँ निर्णायक प्रमाण बनएबामे स्वार्थ-संलग्नताक आभास अनिवार्य अछि, जकर कोनो पद्धतिगत निराकरण (स्वतन्त्र साक्ष्यसँ पुष्टि) नहि कएल गेल। तेसर, जलधर झाक 'विलक्षण दाम्पत्य' क विधागत स्वरूप — रम्य-रचना, समाचार-मूलक गद्य की कथा — क जे विवाद अछि, से अनिर्णीत छोड़ल गेल;' आद्य कथा मानबाक औचित्य नहि' कहल गेल मुदा कथात्वक कसौटी (कथानक, चरित्र, परिणति) सूत्रबद्ध नहि भेल — मौखिक आख्यान, व्रतकथा, नीति-कथा, आख्यायिका, उपन्यास आ आधुनिक लघुकथाक विधागत भेद सेहो पर्याप्त कठोरतासँ निर्धारित नहि अछि। चारिम, लुप्त सामग्रीक सम्भावना इतिहासक महत्त्वपूर्ण प्रश्न अछि, मुदा 'उपलब्ध नहि अछि' सँ' अवश्य छल' धरि पहुँचब अनुमानक छलाँग होइत अछि — पाण्डुलिपि, उल्लेख, प्रकाशन-विज्ञापन, पत्राचार आ समकालीन समीक्षा सन बाहरी साक्ष्य आवश्यक अछि; वाचिक कथा-परम्पराक तेसर धाराक स्थापना सेहो रमानाथ झाक प्राचीन कथन पर आश्रित अछि, स्वतन्त्र क्षेत्र-साक्ष्य अनुपस्थित। पाँचम, पुरुषपरीक्षाक अनुवाद प्रभावहीन छल — ई सम्भव निष्कर्ष अछि, मुदा एकर प्रचार, पाठक-संख्या आ प्रभावक अभावक प्रत्यक्ष प्रमाण सेहो सीमित अछि; प्रभाव केवल लोकप्रियतासँ नहि, भाषिक अथवा शैलीगत अनुकरणसँ सेहो निर्धारित होइत अछि। छठम, चन्द्रप्रभाक राजनीतिक प्रतीकात्मक पाठ रोचक अछि, मुदा प्रत्येक राजा-प्रजा कथा औपनिवेशिक प्रतिरोधक रूपक हो, ई निश्चित नहि — सामाजिक नीति-कथा, राजधर्म आ पुरातन उपदेश-परम्पराक सम्भावना समान रूपसँ जाँचल जाएबाक चाही।

४.११ भूकम्प: सीमा

अध्याय द्वि-केन्द्रित अछि — सीताराम झा आ कृष्णनन्दन सिंह — आ १९८८क संकलनक प्रयोग चयनित उद्धरण धरि सीमित; संकलनक समग्र प्रवृत्ति-विश्लेषण (कतेक कवि, कोन-कोन दृष्टि, कोन छन्द-परम्परा) नहि भेल। दोसर, अध्याय कविताकेँ ऐतिहासिक दस्तावेजक रूपमे प्रभावपूर्ण ढङ्गसँ पढ़ैत अछि, मुदा दस्तावेजी मूल्य काव्यात्मक मूल्यपर भारी पड़ैत अछि — छन्द, ध्वनि, गति, विराम, पुनरावृत्ति आ भयानक रसक संरचनाक तुलनात्मक विश्लेषण सीमित अछि; आपदा-वर्णन लेल छन्दक औचित्य-प्रश्न — करुण-रस आ बद्ध-छन्दक सम्बन्ध — अस्पर्शित रहल। तेसर, भूकम्पक लोक-स्मृति — लोकगीत, कहबी, जनश्रुति — सर्वथा छूटल, जखन कि लोकगीत-अध्यायक लेखकसँ एहि स्रोतक उपयोगक अपेक्षा स्वाभाविक छल; शिष्ट काव्य आ लोक-अभिव्यक्तिक तुलनासँ आपदा-स्मृतिक द्विस्तरीय पाठ बनि सकैत छल। चारिम, कम्पकारिकाक 'धर्मशाला बँचि गेल, काशी-वैद्यनाथ मन्दिर बँचल' सन

पाँतीक जे दैवी-लीला-परक व्याख्या कविक अछि, तकर आलोचनात्मक परीक्षण (भवन-संरचनाक भौतिक कारण बनाम आस्था-पाठ) नहि भेल — आलोचक एतऽ कविक विश्व-दृष्टिक वर्णनकर्ता रहि गेलाह, विश्लेषक नहि बनलाह; धार्मिक विश्वास आ वास्तविक विनाश-वितरणक अन्तर्विरोध पर्याप्त प्रश्नांकित नहि भेल। पाँचम, पीड़ित स्त्री, दलित बस्ती, भूमिहीन मजदूर, अपाङ्ग व्यक्ति आ अनाथ बालकक पृथक अनुभवक खोज कम अछि — राहत-वितरण आ पुनर्वासमे वर्ग-भेद आ जाति-भेद पर रचित लोक-अभिव्यक्ति उपेक्षित रहल;' सम्पूर्ण मिथिला' क सामूहिक त्रासक भीतर सामाजिक विषमता छिपि सकैत अछि। संगहि भूकम्पक कारण, भूगर्भीय संरचना, राहत-नीति, मृतक-संख्या आ सामाजिक वितरणक ऐतिहासिक स्रोतसँ काव्य-वर्णनक तुलना कएल जाइत तँ साहित्य आ इतिहासक सम्बन्ध अधिक स्पष्ट होइत।

४.१२ कोसी: सीमा

ई अध्याय संग्रहक सर्वाधिक वर्णनात्मक अछि — कवि-दर-कवि उद्धरण-माला अछि, मुदा विश्लेषणक सूत्र पातर। पहिल, बाढ़िक राजनीतिक अर्थशास्त्र — बान्ह-निर्माणक इतिहास, कोसी-परियोजना, नेपाल-भारत जल-सन्धि, गाद, धारा-परिवर्तन, जल-प्रबन्धन, तटबन्धक भीतरक बस्तीक स्थायी विस्थापन — क कोनो चर्च नहि; 'लोककृत त्रासदी' क पद एक ठाम आएल अछि, मुदा ओकर विस्तार नहि भेल, जाहिसँ बाढ़ि प्रायः नियतिक प्रकोप बनल रहि गेल आ सरकारी नीतिक आलोचना नैतिक रूपसँ प्रभावी मुदा नीतिगत रूपसँ अपूर्ण रहि जाइत अछि। दोसर, कथा-उपन्यासक (पंचवटी, लिली रेक पटाक्षेप, इन्किलाब) मात्र नामोल्लेख अछि —' बाढ़ि-साहित्य' क जे व्यापक शीर्षक-ध्वनि अछि, से कविता धरि सिकुड़ि गेल। तेसर, लोकगीतक कोसी-उपरागक जे मार्मिक सन्दर्भ शीर्षकहिमे अछि, तकर पाठ-विश्लेषण अत्यल्प अछि — शीर्षक जे वादा करैत अछि, पाठ से पूरा नहि करैत अछि। चारिम, कविताकेँ कतोक स्थानपर प्रत्यक्ष सामाजिक प्रतिवेदनक समान पढ़ल गेल अछि — कवितामे अतिशयोक्ति, प्रतीक, भावात्मक संक्षेप आ वक्ताक काल्पनिकता सेहो होइत अछि; संगहि नदीकेँ' माइ' कहब आत्मीय अछि, मुदा मातृत्वक प्रतीक प्राकृतिक विनाशकेँ भाग्य अथवा देवीक कोप मानि राजनीतिक उत्तरदायित्व धुँधला करि सकैत अछि — नदी नहि, अनुचित बान्ह, कमजोर प्रशासन, भ्रष्ट राहत आ असमान बसावट अनेक त्रासदीक कारण होइत अछि, आ शृंगारिक-कारुणिक व्याख्यामे रोमानीकरणक जोखिम रहैत अछि। पाँचम, बाढ़िक बोझ स्त्री, निम्नजाति, भूमिहीन, पशुपालक आ प्रवासी मजदूरपर भिन्न-भिन्न पड़ैत अछि — एहि अन्तरसम्बन्धी विश्लेषणक विस्तार अपेक्षित छल। छठम, बाढ़ि-वर्णनक पुनरावृत्ति-दोष — प्रत्येक वर्ष एकहि अनुभवक एकहि प्रकारक अभिव्यक्ति — क जे संकेत लेखक स्वयं दैत छथि, तकरा कसौटी बना कऽ कविता सभक तारतम्य-निर्णय (के रूढ़ि, के मौलिक) नहि कएल गेल।

४.१३ महाकाव्यमे युग-सन्दर्भ: सीमा

पहिल, पाँच महाकाव्यक चयन प्रयोजन-आधारित घोषित अछि, मुदा बहिष्करणक तर्क अपूर्ण — 'शेष महाकाव्य युग-सन्दर्भसँ हीन नहि' कहि आगाँ बढ़ि जाएब चयन-पूर्वाग्रहक प्रश्न खुजल छोड़ि दैत अछि; कीचकवध, दत्तवती वा चित्रा सन कृतिक अनुपस्थितिक कारण-कथन अपेक्षित छल, आ शेष महाकाव्यक उल्लेख मात्रसँ ई निर्धारित नहि होइत अछि जे चुनल कृति सम्पूर्ण परम्पराक पर्याप्त प्रतिनिधित्व करैत अछि। दोसर, तीनू पुरस्कृत महाकाव्यक चयनसँ जाहि प्रतिष्ठान-निरपेक्षताक दावी पोथीक स्वर अछि, ताहिमे व्यवधान अबैत अछि — साहित्य अकादमीक स्वीकृतिक छाया चयन पर देखि पड़ैत अछि। तेसर, युग-सन्दर्भक खोजमे काव्यत्व गौण भऽ गेल — रस-निष्पत्ति, बिम्ब-विधान, छन्द-प्रयोग, महाकाव्यत्वक शास्त्रीय लक्षण (सर्ग-बद्धता, नायक-स्वरूप, व्यापक कथानक, उदात्त शैली, चरित्र-विकास, वर्णन, संवाद) पर प्रायः मौन; फलतः महाकाव्य विचार-वाहक प्रलेख जकाँ पढ़ाएल, काव्य जकाँ कम। चारिम, पुराणक पात्रकेँ आधुनिक स्वतन्त्रता सेनानी, समाज-सुधारक, कृषक अथवा क्षेत्रीय राष्ट्रवादीक रूपमे पढ़ब फलदायी अछि, मुदा ऐतिहासिक वर्तमानवादक जोखिम सेहो अछि — प्राचीन मिथक आधुनिक विचारक सीधा पूर्वरूप नहि। पाँचम, कृतिवार विस्तार असन्तुलित अछि — सुभद्राहरण आ पराशरकेँ जतेक स्थान, राधाविरह आ त्रिपुण्डकेँ ताहिसँ बहुत कम; नारी-सशक्तीकरणक जे स्थापना राधाविरहसँ जोड़ल गेल, से दू-तीन उद्धरणक भरोसे अछि आ विप्रलम्भ-शृंगारक प्रधान रससँ एहि सामाजिक पाठक सम्बन्धक मीमांसा नहि भेल — राधाक कर्तव्य पुनः पति आ राष्ट्रक सेवासँ निर्धारित अछि; स्त्रीक आत्मनिर्णय, देह, कामना आ निजी जीवनक स्वतन्त्र मूल्यपर चर्चा सीमित रहि जाइत अछि। छठम, अगस्त्यायनी आ पराशर सन कृतिमे जाति-संघर्ष आ आभिजात्य व्यवस्थाक जे प्रश्न निहित अछि, तकर सोझाँ-सोझी विखण्डनक स्थान पर' युग-धर्म' क सामान्य विमर्श धरि रुकि जाएब सामन्ती संरचनाक पूर्ण आलोचनाक अवसर गमा दैत अछि।

४.१४ नऽव गीत: सीमा

पहिल,' नऽव गीत' क अवधि आ व्याप्तिक निर्धारण अस्पष्ट रहल — कोन तिथिसँ, कोन कृतिसँ एकर आरम्भ मानल जाए, कोन-कोन गीतकार एहि कोटिमे अबैत छथि — एकर कोनो सूची वा काल-रेखा नहि; परिभाषा मूल्यबोध-आधारित अछि, मुदा मूल्यबोधक कसौटी व्यक्तिनिष्ठ रहि गेल, आ एहि परिभाषासँ अनेक आधुनिक कविता स्वतः नऽव गीतक भीतर आबि सकैत अछि — गीतत्वक विशिष्ट कसौटी स्पष्ट नहि। दोसर, साक्ष्य-आधार तीन-चारि गीतकार (गुंजन, प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र) धरि सीमित — एतेक पातर आधार पर समग्र प्रवृत्ति-निर्धारण आगमन-दोषसँ ग्रस्त अछि; नऽव गीतकारक सामाजिक स्थिति, प्रकाशन-मञ्च, पाठक, पीढ़ीगत अन्तर आ स्त्री-गीतकारक योगदानक विस्तृत मानचित्र नहि बनैत अछि। तेसर, नऽव गीत आ नऽव कविताक भेद-विवेचन सूत्र-रूपमे दऽ विस्तार हेतु अपनहि पोथीक सन्दर्भ देल गेल — आत्म-निर्देशक ई प्रवृत्ति पाठककेँ अपूर्ण तर्कक संग छोड़ि दैत अछि। चारिम, गीतक गीतत्व — गेयता, स्वर-विधान, आरोह-अवरोह, ध्वनि-क्रम, अन्त्यानुप्रास, मात्रा, आवृत्ति, लोक-धुनसँ सम्बन्ध आ सामूहिक गायन-सम्भावना — पर कोनो विचार नहि;' लयात्मक सम्मिश्रण' क पद आएल, मुदा लय-विश्लेषणक कोनो उदाहरण नहि, जखन कि गीत-विधाक प्राण गेयतेमे बसैत अछि — सामाजिक विषय मात्रसँ रचना गीत नहि बनैत अछि। पाँचम, पारम्परिक प्रेम, भक्ति अथवा प्रकृति-काव्यकेँ कतोक स्थानपर रूढ़ि मानि छोड़ि देल गेल — मुदा आधुनिकता केवल विषय-परिवर्तन नहि; पुरान विषयक नूतन संवेदना आ रूपान्तरण सेहो आधुनिक होइत अछि। छठम, वर्तमान युगमे नव माध्यम — ध्वनि-दृश्य मञ्च, अन्तर्जाल आ ई-पत्रिका — सँ भऽ रहल गीतक लोकतन्त्रीकरणक चर्च नहि अछि; गीत-विमर्श पारम्परिक मुद्रित संकलनक सीमामे रहि गेल।

४.१५ वर्तमान धारा: सीमा

पहिल, ई व्याख्यान-पाठ थिक आ ओकर श्रोता-सापेक्षता निबन्धमे बनल रहि गेल — पूर्वांचलीय भाषा-बन्धुत्वक दीर्घ भूमिका (जे भुवनेश्वरक सभा लेल सार्थक छल) पोथीक पाठक लेल विषयान्तर जकाँ लगैत अछि आ 'वर्तमान धारा' क मूल विवेचन लेल स्थान घटा दैत अछि। दोसर,' वर्तमान धारा' क चारू विषय अत्यन्त व्यापक अछि — मानव-संकट, उपभोक्तावाद, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद आ पर्यावरण लगभग सम्पूर्ण आधुनिक साहित्यकेँ समेटि सकैत अछि; काव्य-आन्दोलन, पीढ़ी, रूप, भाषा आ सौन्दर्यबोधक आधारपर अधिक सूक्ष्म वर्गीकरण अपेक्षित छल, आ धारा-विभाजनक पारस्परिक अतिच्छादन (उपभोक्तावाद आ सांस्कृतिक साम्राज्यवाद कतऽ फराक?) पर विचार नहि। तेसर, चारू धाराक साक्ष्य-घनत्व असमान अछि — मानव-संकट आ सांस्कृतिक साम्राज्यवादक धारा सुसाक्षित, मुदा उपभोक्तावाद-विरोधक धारा एक-दू उद्धरण पर; चुनल कविताक संख्या सीमित अछि आ ताहिपर आधारित व्यापक निष्कर्ष सम्पूर्ण वर्तमान मैथिली कविताक प्रतिनिधित्वक दावा पूर्ण रूपसँ सिद्ध नहि करैत अछि। चारिम, वर्तमान धाराक सूचीमे नारी-स्वर आ दलित-स्वरक अनुपस्थिति खटकैत अछि — जाहि आलोचकक अपन पोथीमे उपेक्षिता आ दीनाभद्री पर स्वतन्त्र अध्याय अछि, हुनक वर्तमान-धारा-चित्रणमे ई दुनू धारा नहि गनाएब आन्तरिक संगतिक अभाव थिक; स्त्रीवादी, दलित, आदिवासी, प्रवासी, अन्तर्जालीय आ प्रयोगधर्मी कविताकेँ पृथक वर्तमान धाराक रूपमे पर्याप्त स्थान नहि भेटल, आ विमर्श मुख्यतः प्रतिष्ठित केन्द्रक कवि धरि सीमित रहि गेल। पाँचम, नेपालक मैथिली कविताक भिन्न प्रवृत्तिक जे संकेत अछि (' राजतन्त्रक भयसँ भिन्न रहल'), तकर एकोटा उदाहरण नहि — स्थापना निराधार लटकल अछि। छठम, सांस्कृतिक साम्राज्यवादक विवेचन कतोक स्थानपर स्थानीय संस्कृति बनाम बाहरी संस्कृतिक द्वैत बना दैत अछि — संस्कृति सदैव आदान-प्रदान, मिश्रण, ग्रहण आ प्रतिरोधसँ विकसित होइत अछि; प्रत्येक बाहरी प्रभाव विनाशकारी नहि आ प्रत्येक स्थानीय परम्परा मुक्तिकामी नहि।

४.१६ लोकगीत: सीमा

पहिल, ई स्वतन्त्र निबन्ध नहि, कार्यपत्र पर टिप्पणी थिक आ एकर संरचनामे से झलकैत अछि — आरम्भमे कार्यपत्रक पद्धति-दोषक चर्च, बीचमे स्वतन्त्र लोकगीत-विमर्श, अन्तमे नीति-प्रस्ताव; तीनू खण्डक सन्धि शिथिल अछि। दोसर, यूनेस्को-ढाँचाक सात संरक्षण-उपायक जे सूची अछि, से प्रायः अनूदित-प्रतिध्वनित अछि — मैथिली लोकगीतक विशिष्ट स्थिति (के गाओत, कोन पीढ़ी, कोन अवसर बँचल अछि, कोन मरि रहल अछि) क क्षेत्र-सर्वेक्षण बिना ई उपाय-सूची यान्त्रिक अनुप्रयोग बनि गेल; संगहि अभिलेखागार, सङ्ग्रहालय आ वर्गीकरण आवश्यक अछि, मुदा जीवित लोकगीतकेँ स्थिर नमूनामे बदलि देबाक खतरा रहैत अछि — लोकगीतक जीवन गायन, अवसर, देहगत प्रस्तुति, सामूहिक सहभागिता आ परिवर्तनशील पाठमे अछि, केवल ध्वनि-सङ्ग्रहमे नहि, आ सांस्थानिक संरक्षणसँ लोक-अभिव्यक्तिक प्रतिरोधी धार कुनहटएबाक प्रश्न सेहो विचारणीय अछि। तेसर, लोकगीतक संगीत-पक्ष — राग, ताल, स्वर-लिपिबद्धता — सर्वथा अछूत;' अवस्था आ संरक्षण' क शीर्षकमे जे संरक्षण अछि, से पाठ-संरक्षण धरि सोचल गेल, ध्वनि-संरक्षण (स्वर-आलेखन) क चर्च नहि। चारिम, सङ्कलक, शोधकर्ता आ संस्थाकेँ अधिकार देल गेल अछि, मुदा गायक समुदायक स्वामित्व, सहमति, आर्थिक लाभ, नामोल्लेख आ अभिलेखपर पहुँचक प्रश्न पर्याप्त विकसित नहि। पाँचम, लोकगीतक भीतरक

पितृसत्तात्मक स्वर — जकर मार्मिक उदाहरण (बेटी-जन्मक अवसाद, अरजल बिआनि) स्वयं निबन्धमे अछि — क आलोचनात्मक सामना नहि भेल; संरक्षणक उत्साहमे ई प्रश्न दबि गेल जे लोक-सम्पदाक कोन अंश संरक्ष्य अछि आ कोन अंश समीक्ष्य। छठम, लोकज्ञानमे औषधीय अथवा वैज्ञानिक तत्त्वक उपस्थिति महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा प्रत्येक परम्परागत विश्वासकेँ वैज्ञानिक सत्य मानि लेब रोमानीकरण होयत — अनुभवजन्य उपयोगिता आ चिकित्सकीय प्रमाणमे भेद रहैत अछि; संगहि स्त्रीक हास्य, सामूहिक प्रतिरोध, गीत-निर्माणक अधिकार आ जातिगत स्त्री-अनुभवक भिन्नता पर आरो विस्तार सम्भव छल।

४.१७ उपनिवेशवादक नऽव चालि: सीमा

पहिल, तंजानिया-प्रकरणक विस्तार जतेक अछि, मैथिली-स्थितिक तुलनात्मक विश्लेषण ताहि अनुपातमे संक्षिप्त — किस्वाहिलीक जे संस्थागत आँकड़ा (बजट-प्रतिशत, नीति-तिथि) देल गेल, तकर समकक्ष मैथिलीक कोनो आँकड़ा (विद्यालयमे मैथिली-माध्यमक स्थिति, निजी विद्यालयक प्रसार-संख्या) नहि; दृष्टान्त सुदृढ़, अनुप्रयोग पातर, आ प्रत्येक देशक भिन्न इतिहास, भाषिक जनसंख्या, अर्थव्यवस्था आ शिक्षा-संरचनाक अन्तर पर्याप्त स्पष्ट नहि रहने तुलनात्मक निष्कर्ष किछु स्थानपर अत्यधिक शीघ्र अछि। दोसर, विश्व बैंक, अन्तरराष्ट्रीय मुद्राकोष आ विदेशी सहायता भाषिक प्रभुत्वमे भूमिका निभबैत अछि, तथापि स्थानीय अभिजन, सरकारी अकर्मण्यता, अभिभावकक रोजगार-चिन्ता, शिक्षाक गुणवत्ता, पाठ्यपुस्तकक अभाव आ मातृभाषी संस्थाक कमजोरी सेहो उत्तरदायी अछि — बाहरी षड्यन्त्रक व्याख्या आन्तरिक उत्तरदायित्वकेँ ओझल करि सकैत अछि; मिथिलाक भीतरक भाषिक हीनताबोध आ आन्तरिक उपनिवेशक विखण्डन बिना बाहरी भाषिक उपनिवेशवादसँ संघर्ष अधूरा रहत, ई प्रश्न पर्याप्त विकसित नहि भेल। तेसर, निबन्ध निदान-प्रधान अछि, चिकित्सा-न्यून — भाषा-मृत्युक संकट देखाओल गेल, मुदा फिशमैनहिक प्रतिवर्तन-सिद्धान्तक (भाषा-ह्रास उनटएबाक) रचनात्मक पक्ष, जे ओही ग्रन्थमे अछि, नहि आनल गेल; पाठक चेतल तँ जाइत अछि, मुदा दिशाहीन; संगहि अंग्रेजी आ मैथिलीकेँ सर्वथा विरोधी मानब व्यावहारिक समाधान नहि — बहुभाषिक शिक्षा, मातृभाषामे आधारभूत ज्ञान, भारतीय सम्पर्कभाषा आ अन्तरराष्ट्रीय भाषाक क्रमिक शिक्षणक समन्वित रूपपर चर्चा अपेक्षित छल, कारण द्विभाषिकता स्वतः भाषा-मृत्यु नहि, असमान प्रतिष्ठावाली द्विभाषिकता संकट बनैत अछि। चारिम, व्यक्तिगत दृष्टान्त (प्राध्यापक-दम्पति, वकील साहेब, ग्रामीण महिला) नाम-सन्दर्भ-रहित अछि — सत्यापन असम्भव; जे लेखक अन्यत्र अभिलेख-प्रमाणक आग्रही छथि, से एतऽ किंवदन्ती-शैली अपना लैत छथि। पाँचम, आठम अनुसूचीमे समावेश (२००३) कैँ' प्राणक संचार' क जे आशावादी विराम-बिन्दु बनाओल गेल, तकर आलोचनात्मक परीक्षण नहि — अनुसूची-प्रवेशक दस वर्ष बाद प्रकाशित पोथीमे ई प्रश्न स्वाभाविक छल जे संवैधानिक मान्यतासँ जमीनी संक्रमण-स्थितिमे की बदलल; निबन्धक अपनहि तर्क (सरकारी मान्यता पर्याप्त नहि, अन्तरपुस्तीय संक्रमण अनिवार्य) एहि आशावादकेँ काटैत अछि — ई अन्तिम आत्म-विरोध अनसुलझल रहि गेल। छठम, शहरी द्विभाषिक परिवार, मिश्रित विवाह, प्रवासी बालक आ नूतन माध्यममे मैथिलीक सम्भावनाक चर्चा कम अछि।

४.१८ समग्र सीमा

अध्यायवार सीमाक अतिरिक्त किछु सीमा समग्र ग्रन्थ-स्तरक अछि। पहिल, पुनरावृत्ति: निबन्ध-संग्रहक स्वाभाविक दोष एतऽ सघन अछि — किरणजीक 'आनक कानब खसब देखि कय' वला पद्य दू अध्यायमे, सीताक 'जनक नहि छथि राजाक दास' वला प्रसंग तीन अध्यायमे, भोलालाल दास-सम्बन्धी उद्धरण आ किरण-रमानाथ विवादक बिन्दु अनेक ठाम दोहराएल अछि; सम्पादन-स्तर पर सन्दर्भ-निर्देशसँ ई बँचि सकैत छल। दोसर, अननूदित अंग्रेजी: पाद-टिप्पणी आ मूल-पाठ दुनूमे अंग्रेजी उद्धरणक बाहुल्य मैथिली-मात्र पाठककेँ साक्ष्यसँ वञ्चित करैत अछि — मातृभाषा-पक्षधर ग्रन्थक ई आन्तरिक विडम्बना थिक। तेसर, आत्म-सन्दर्भ: उद्धृत स्रोत सभमे लेखकक अपन सम्पादित-लिखित पोथीक अनुपात पर्याप्त अछि — ई एक दिस हुनक अध्यवसायक प्रमाण थिक, दोसर दिस प्रमाण-स्वातन्त्र्यक प्रश्न उठबैत अछि। चारिम, पद्धति-वैषम्य: किछु अध्याय (यात्री, रमानाथ झा) सिद्धान्त-सघन छथि तँ किछु (कोसी, मनमोहन झा) विवरण-प्रधान; किछु अध्याय निकट पाठपर आधारित अछि, किछु इतिहास-संशोधनक दस्तावेज, किछु विचारात्मक प्रतिवाद — एहि विविधतासँ पोथी समृद्ध बनैत अछि, मुदा समान कसौटीक अनुप्रयोगक अभावमे संग्रहक आन्तरिक स्थापत्य विषम लगैत अछि आ एकर एकीकृत सिद्धान्त स्पष्ट नहि रहि पबैत अछि। पाँचम, मुद्रण-दोष: ठाम-ठाम अशुद्धि आ सन्दर्भ-शैलीक अनेकरूपता (कतहु पूर्ण, कतहु अपूर्ण पाद-टिप्पणी) एहन प्रमाण-आग्रही ग्रन्थक विश्वसनीयता-मानकसँ मेल नहि खाइत अछि। छठम, समाधान-न्यूनता: संग्रहक अधिकांश निबन्ध प्रश्न आ निदान पर विरमि जाइत अछि — प्रश्नोत्थापनकेँ लेखक स्वयं अभीष्ट कहने छथि, तथापि कमसँ कम भाषा-संकट सन विषयमे कार्य-सूत्रक अपेक्षा अतृप्त रहि जाइत अछि। सातम, लेखकक मैथिलीप्रेम पोथीक ऊर्जा अछि, मुदा कतोक स्थानपर ई प्रेम सांस्कृतिक आदर्शीकरण, प्राचीन गौरव, बाहरी शक्तिक प्रति अत्यधिक संशय अथवा राष्ट्रीय

प्रतीकक अतिव्याख्यामे परिणत होइत अछि। आठम, स्त्री, दलित, श्रमिक आ लोकक प्रश्न उठाओल गेल अछि, मुदा एहि सभ दृष्टिक अन्तरसम्बन्ध — जेना दलित स्त्री, बाढ़िपीड़ित भूमिहीन स्त्री, प्रवासी मजदूर, सीमावर्ती भाषाभाषी — क व्यवस्थित विवेचन कम अछि; जतऽ-जतऽ आभिजात्य वर्चस्वसँ पूर्ण टकराएब सम्भव छल, ततऽ-ततऽ समीक्षा कतहु-कतहु अर्ध-प्रगतिशील रहि जाइत अछि।

५. समग्र आलोचनात्मक निर्णय

५.१ पोथीक प्रमुख उपलब्धि

' हिआओल' क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि ई अछि जे ई मैथिली साहित्येतिहासक प्रचलित सरल रेखाकेँ बाधित करैत अछि। ई पोथी पूछैत अछि — स्वतन्त्र भाषा कहबाक अधिकार केकरा अछि? साहित्यिक मानक के बनबैत अछि? कोन लेखक इतिहासमे प्रतिष्ठित आ कोन विस्मृत होइत छथि? लोककण्ठक सामग्री साहित्य अछि कि नहि? स्त्रीक मौनकेँ हास्य मानल जाए कि सामाजिक त्रास? दलित लोकनायक इतिहासक विषय किएक नहि? भूकम्प आ बाढ़ साहित्येतिहासक घटना किएक नहि? प्रवासी केन्द्र मैथिली चेतनाक निर्माणमे की भूमिका निभबैत अछि? राजनीतिक स्वतन्त्रताक बाद भाषिक पराधीनता कोना जीवित रहैत अछि? एहि प्रश्नक कारण पोथी केवल आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह नहि, मैथिली साहित्यक वैकल्पिक ज्ञान-मानचित्र बनि जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ पोथीक आलोचना रस आ अलंकार धरि सीमित नहि — ओ ध्वनि, औचित्य, वक्रोक्ति, लोकमंगल आ साधारणीकरणकेँ सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ पोथी एक साथ उत्तर-औपनिवेशिक, नव-इतिहासवादी, मार्क्सवादी, नारीवादी, दलित, रूपवादी आ पर्यावरणीय प्रश्न उठबैत अछि, यद्यपि लेखक एहि सभ सिद्धान्तकेँ सदैव व्यवस्थित नाम आ पद्धतिसँ लागू नहि करैत छथि। विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिसँ 'हिआओल' राजकीय आ प्रतिष्ठित इतिहासक समानान्तर निम्नलिखित इतिहास लिखैत अछि — भाषिक दमनक इतिहास, उपेक्षित आलोचक आ कविक इतिहास, अशिक्षित स्त्रीक इतिहास, दलित लोकनायकक इतिहास, प्रवासी पत्र-पत्रिकाक इतिहास, मौखिक कथाक इतिहास, भूकम्प आ बाढ़क इतिहास, लोकगीतमे सुरक्षित स्त्री-श्रम आ लोकज्ञानक इतिहास, आओर पीढ़ीगत भाषा-विच्छेदक इतिहास।

५.२ समग्र मूल्याङ्कन

' हिआओल' क महत्त्व अन्तिम निर्णय देबामे नहि, प्रश्नक नूतन भूमि तैयार करबामे अछि। ई पोथी पूर्ण साहित्येतिहास नहि, मुदा भावी साहित्येतिहासक लेल अनिवार्य संकेत-पोथी अछि; ई अन्तिम सिद्धान्त नहि, मुदा स्थापित सिद्धान्तक निश्चिन्ततताकेँ भङ्ग करयवला आलोचनात्मक हस्तक्षेप अछि। एकर श्रेष्ठ रूप ओतए देखाइत अछि जतए लेखक विस्मृत दस्तावेज खोजैत छथि, स्थापित निष्कर्षक प्रमाण माँगैत छथि, भाषिक रूपक सूक्ष्म विश्लेषण करैत छथि, स्त्री, लोक, दलित आ विपत्तिग्रस्त जनक स्वर सुनैत छथि, आ साहित्यकेँ जीवित सामाजिक इतिहाससँ जोड़ैत छथि। एकर सीमा ओतए प्रकट होइत अछि जतए प्रतिवाद विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि, अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि, राष्ट्रीय अथवा सांस्कृतिक आस्था कलात्मक परीक्षणकेँ दबा दैत अछि, आ जटिल इतिहास सरल द्वैतमे बदलि जाइत अछि। संगहि, जतऽ-जतऽ आभिजात्य वर्चस्वसँ पूर्ण टकराएब सम्भव छल, ततऽ-ततऽ समीक्षा अर्ध-प्रगतिशील रहि जाइत अछि — कौलीन्य, पाँजि-प्रथा आ राज्य-प्रायोजित संस्थानक विखण्डन जतेक तीक्ष्णतासँ अपेक्षित छल, ताहिसँ किछु न्यून भेल।

६. उपसंहार

समग्रतः 'हिआओल' मैथिली आलोचनाक ओहि दुर्लभ कोटिक ग्रन्थ थिक जे श्रद्धा आ संशय — दुनूकेँ प्रमाणक कसौटी पर कसैत अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिएँ एकर मूल कसौटी औचित्य थिक — शब्दक औचित्य (यात्री-अध्याय), पाठक-दृष्टिक औचित्य (कन्यादान), इतिहास-कथनक औचित्य (कथाक विकास); ध्वनि-सिद्धान्तक व्यवहार 'शरदागम' आ' पछबा' क पाठमे, आ रस-चेतना करुण-प्रधान अध्याय सभमे उपस्थित अछि, यद्यपि रस-मीमांसा एकर दुर्बल पक्ष रहल। पाश्चात्य कसौटी पर ई उत्तर-औपनिवेशिक आ समाजभाषावैज्ञानिक विमर्शक मैथिलीमे अग्रणी प्रयोग थिक, जकर सीमा सिद्धान्तक असमान आ कतहु-कतहु यान्त्रिक अनुप्रयोगमे अछि। आ विदेह समान्तर इतिहासक दृष्टिएँ एकर महत्त्व सर्वोपरि अछि — अनालोचित कवि, उपेक्षिता नायिका, दलित महानायक, प्रवासी सम्पादक, लोकगीतक अज्ञात गायिका: प्रतिष्ठान जकरा-जकरा हाशिया पर रखलक, रमणजी तकरा-तकरा अभिलेखक बलेँ केन्द्रमे अनलनि।

मुदा एहू दृष्टिएँ एक अन्तिम सीमा-रेखा खीचब न्यायोचित होएत: समानान्तर धाराक पूर्ण पद्धति ओतऽ पहुँचैत अछि जतऽ हाशियाक स्वर अपने बाजए — 'हिआओल' मे हाशिया लेल बाजल गेल अछि, हाशियाकेँ बजाओल कम गेल अछि। ई अपूर्णता आगामी

अनुसन्धानक निमन्त्रण थिक, आ इएह निमन्त्रण-धर्मिता — विचारक लोकनि विमर्शक हेतु उपस्थित होथि — एहि पोथीक स्थायी मूल्य थिक। मैथिली आलोचनाक इतिहासमे' हिआओल' प्रत्यालोचनाक प्रतिमान-ग्रन्थ आ समानान्तर इतिहास-लेखनक पूर्वपीठिका — दुनू रूपमे स्मरणीय रहत।

डा. रमानन्द झा 'रमण' क' हिआओल' (२०१२) मैथिली साहित्यिक आलोचनाक क्षेत्रमे एकटा सराहनीय आ साहसिक डेग थिक, जाहिमे कतेको स्थापित स्थापनाकेँ गम्भीर बौद्धिक चुनौती देल गेल अछि। रमणजीक भाषा-प्रेम आ मैथिलीक ठेठ शब्द-संस्कृतिक प्रति अनुराग सर्वथा स्पृहणीय अछि। एहि सैद्धान्तिक सीमाक बावजूद, 'हिआओल' मैथिली समीक्षाशास्त्रक सुदीर्घ पथ पर एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मीलक पत्थर थिक, जे भावी पीढ़ीकेँ स्थापित आभिजात्य इतिहास-लेखनक विरुद्ध "हिआओ" (साहस) सँ लड़बाक दिशा-निर्देश अवश्य करैत अछि। ई पोथी साहित्यक मुख्य द्वारक अतिरिक्त पछुआरि, आँगन, खेत, नदी, लोककण्ठ, स्त्रीक मौन, मुसहरक गाथा, प्रवासीक पत्रिका आ भूकम्पसँ ढहल घरक भीतरसँ इतिहास देखबाक दृष्टि दैत अछि। एहि अर्थमे ई विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टिक एक सशक्त आलोचनात्मक आधारग्रन्थ अछि।

सन्दर्भ-सूची

डा. रमानन्द झा 'रमण', हिआओल (मैथिली आलोचना-संग्रह), अखियासल प्रकाशन, लालगंज, सरिसब-पाही, मधुबनी, २०१२।

डा. रमानन्द झा 'रमण', अखियासल (आलोचना-संग्रह) ।

डा. रमानन्द झा 'रमण', बेसाहल (आलोचना-संग्रह) ।

डा. रमानन्द झा 'रमण', भजारल (आलोचना-संग्रह) ।

जी. ए. ग्रियर्सन, An Introduction to the Maithili Language of North Bihar, कलकत्ता, १८८१।

जी. ए. ग्रियर्सन, Maithili Chrestomathy आ दीनाभद्रीसम्बन्धी संकलन, १८८५।

हरिमोहन झा, कन्यादान (मैथिली उपन्यास) ।

PART 27, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_27.htm।

PART 28, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_28.htm।

PART 82, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_82.htm।

A Parallel History of Mithila & Maithili Literature, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/new_page_90.htm।

नूतन अंक सम्पादकीय, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका, www.videha.co.in/aboutme.htm।

"रमानन्द झा 'रमण'", मैथिली लेखक संघ, maithililekhaksangh. blogspot. com/2010/07/blog-post_677. html।

कथा, उपन्यास आ बाल-साहित्य

१२. केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ "माहुर"

सारांश

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल। एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- “...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ “कन्यादान” क पश्चात् “द्विरागमन” लिखए पड़लनि तहिना “चमेलीरानी” क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि” ।

बीजशब्द: केदारनाथ · चौधरीक · उपन्यास · चमेली · रानी · माहुर · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “केदारनाथ चौधरीक उपन्यास “चमेली रानी” आ "माहुर"” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे केदारनाथ; चौधरीक; उपन्यास; चमेली; रानी प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल। एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- “...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ “कन्यादान” क पश्चात् “द्विरागमन” लिखए पड़लनि तहिना “चमेलीरानी” क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि” । ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- “..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?” ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि, जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक “चमेली रानी” आ “माहुर” ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक “चमेली रानी” क समर्पण - “ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि”- केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड “माहुर” क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि, तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे, जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह, क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होअए।

उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव, एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता भेनाइ कोनो टोना-टापरसँ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि।

एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो। कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्हि।

“चमेली रानी” उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। -कीर्तिमुखक पाँच टा बेटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे – “पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ” । फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह “चिनगारी” क

विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि।

तकर बाद चमेली रानीक वर्णन अबैत अछि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह।

ई चरित्र २००८ ई. क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास “द ह्वाइट टाइगर” क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेखक एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के. जी. बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड “माहुर” धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि। उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइ मोन पड़ैत छथि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छै। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत अछि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि, जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड “माहुर” क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक तेहन संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त नक्सली आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड्ड पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ. एस. आइ. आ के. जी. बी. क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक “डॉन क्विक्जोट”, जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक-खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक

विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

पूरक विवेचन

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल। एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- "...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ "कन्यादान" क पश्चात् "द्विरागमन" लिखए पड़लनि तहिना "चमेलीरानी" क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि" । ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- "..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?" ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि, जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक "चमेली रानी" आ "माहुर" ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक "चमेली रानी" क समर्पण - "ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि"- केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड "माहुर" क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि, तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे, जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह्, क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होअए।

"चमेली रानी" उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। -कीर्तिमुखक पाँच टा बेटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे – "पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ" । फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह "चिनगारी" क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि।

तकर बाद चमेली रानीक वर्णन अबैत अछि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि। उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइ मोन पड़ैत छथि। भुखन सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छै। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत अछि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ. एस. आइ. आ के. जी. बी. क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

विवेचन: उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक "डॉन क्विक्जोट", जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक-खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

१३. बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा

सारांश

सुभाषचन्द्र यादवजीक "बनैत बिगड़ैत" कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करितहि अन्त प्राप्त कएने अछि। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थें ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कए चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ एहि संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नहि आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नहि करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।

बीजशब्द: बनैत · बिगड़ैत · सुभाषचन्द्र · यादवक · कथा · संग्रहक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय "बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र यादवक कथा संग्रहक समीक्षा" विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे बनैत-बिगड़ैत-सुभाषचन्द्र; यादवक; संग्रहक; समीक्षा; छन्हि प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

सुभाषचन्द्र यादवजीक "बनैत बिगड़ैत" कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लए आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करितहि अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओहि उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ ताहि अर्थें ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कए चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ एहि संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नहि आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नहि करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।

किछु भाषायी मानकीकरण प्रसंग- जेना ऐछ, अछि, अ इ छ। जाहि कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओहि समय एहिपर ध्यान देबाक आवश्यकता रहए। जेना "जाइत रही" केँ "जाति रही" लिखी आ फेर जाति (जा इ त) लेल प्रोनन्सिएशनक निअम बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखको कनियाँ-पुतरा मे एकर प्रयोग कए दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा एहिसँ ई आवश्यकता तँ सिद्ध होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्थिर कएल जाए आ "छै" लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ "छैक" लिखबाक अछि तँ "अन्तक' कऽ साइलेन्ट अछि" से प्रोनन्सिएशनक निअम बनए। मुदा से जल्दी बनए आ सर्वग्राह्य होअए तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोककेँ "य" लिखल जाए वा "ए" एहिपर भरि जिनगी

लड़बाक समय नहि छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, आ नहि तँ प्रोनन्सिएशनक निअम बनाऊ। “नहि” लेल “नञि” लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अन्तिका), नइं (एन.बी.टी.) आ नँइ (साकेतानन्द - कालरात्रिश्च दारुणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नहि होअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ। (वैज्ञानिक आ मानक मैथिली वर्णमालाक ऑडियो फाइल विदेह आर्काइवक (http: //www.videha.co.in/) विदेह ऑडियो लिंकपर डाउनलोड/श्रवण लेल उपलब्ध अछि।)

“बनैत बिगड़ैत” पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ट लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लए जएबामे सक्षम अछि।

कथाक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि।

कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि “सोप ओपेरा” जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सत्तरि एपीसोडक उपन्यासमे उन्हत्तरि एपीसोड धरि तँ आशा बनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिए बदलल तँ पुरनका सभटा एपीसोड हिट आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एकर अनुमति नहि दैत अछि। ई एक एपीसोड बला रचना छी आ नीक तँ खूबे नीक आ नहि तँ खरापे-खराप।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना एहि तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे “देवी को बलि” सूर्यकान्त ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि प्रथाक विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ करैत सर्वदा कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नहि।

वाद: साहित्य: उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कए विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्दात्मक प्रणालीकेँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक “डिसकसन” वा द्वन्द जाहिमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (विशेष कए षडदर्शनक- माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहिसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा कएनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कएने छलाह- किछु दिन पहिने एहिसँ पलटि गेलाह। उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भए अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्दात्मक प्रणाली जेकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

आधुनिक कथा अछि की? ई केहन होएबाक चाही? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि होएबाक चाही? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाए?

कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे होएबाक चाही। मुदा संगमे ओहि समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ एहिमे ओहि समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।

जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कए रहनाइ सिखबैत अछि।

जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि।

मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि।

आजुक कथा एहि सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय (!) समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। आ जे से नहि अछि तँ ई ओकर उद्देश्यमे सम्मिलित होएबाक चाही। आ तखने कथाक विश्लेषण आ समालोचना पाठकीय विवशता बनि सकत।

कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ासँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन पहिनहि ओ एहि मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य एखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स देरीदा भाषाकेँ विखण्डित कए ई सिद्ध कएलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नहि लगा सकैत छी।

मनोविश्लेषण आ द्वन्दात्मक पद्धति जेकाँ फुकियामा आ देरीदाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भए समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

सुभाष चन्द्र यादवक कथा-संग्रह बनैत बिगड़ैत:

स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि सुभाषजी। कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कए कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ एहि स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटब स्वाभाविके। कएक दशक पूर्व लिखल हिनक कथा “काठक बनल लोक” क बदरिया साइते संयोग हंसैत रहए। एहु कथा संग्रहक सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कए कोनो पात्र फेरसँ कानए लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि। किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हरिवंश सन पात्र सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण अपकार कए जाइत छथि। आब “बनैत बिगड़ैत” कथा संग्रहक कथा सभपर गहिंकी नजरि दौगाबी।

कनियाँ-पुतरा- एहि कथामे रस्तामे एकटा बचिया लेखकक पएर छानि फेर ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त अछि, जेना माएक ठेहुनपर माथ रखने होअए। नेबो सन कोनो कड़गर चीज लेखकसँ टकरेलन्हि। ई लड़कीक छाती छिऐ। लड़की निर्विकार रहए जेना बाप-दादा वा भाए बहिन सऽ सटल हो। लेखक सोचैत छथि, ई सीता बनत की द्रौपदी। राबन आ दुर्जोधनक आशंका लेखककेँ घेर लैत छन्हि।

कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद वैह सड़कक चौबटिया अछि आ वैह रेड-लाइटपर गाड़ी चलबैत-रोकैत काल बालक-बालिका सभ देखबामे अबैत छथि। मुदा आब दृष्टिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। कारक शीसा पोछि पाइ मँगनिहार बालक-बालिकाकेँ पाइ-देने वा बिन देने, मुदा बिनु सोचने आगाँ बढ़ि जाएबला दृष्टिक परिवर्तन। कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद की हुनकर दृष्टिमे कोनो परिवर्तन नहि होएतन्हि? बालक तँ पैघ भए चोरि करत वा कोनो ड्रग कार्टेलक सभसँ निचुलका सीढ़ी बनत मुदा बालिका? ओ सीता बनत आकि द्रौपदी आकि आम्रपाली। जे सामाजिक संस्था, ह्यूमन राइट्स ऑरगेनाइजेशन कोनो प्रेमीक बिजलीक खाम्हपर चढ़ि प्राण देबाक धमकीपर नीचाँ जाल पसारि कऽ टी. वी. कैमरापर अपन आ अपन संस्थाक नाम प्रचारित करैत छथि ओ एहि कथाकेँ पढ़लाक बाद ओहि पुरातन दृष्टिसँ काज कए सकताह? ओ सरकार जे कोनो हॉस्पीटलक नाम बदलि कए जयप्रकाश नारायणक नामपर करैत अछि वा हार्डिंग पार्कक नाम वीर कुँअर सिंहक नामपर कए अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत अछि ओ समस्याक जड़ि धरि पहुँचि नव पार्क आ नव हॉस्पीटल बना कए जयप्रकाश नारायण आ वीर कुँअर सिंहक नामपर करत आकि दोसरक कएल काजमे “मेड बाइ मी” केर स्टाम्प लगाओत? ई संस्था सभ आइ धरि मेहनतिसँ बचैत अएबाक आ सरल उपाय तकबाक प्रवृत्तिपर रोक नहि लगाओत?

असुरक्षित- ट्रेनसँ उतरलाक बाद घरक २० मिनटक रस्ताक राति जतेक असुरक्षित भऽ गेल अछि तकर सचित्र वर्णन ई कथा करैत अछि। पहिने तँ एहन नहि रहैक- ई अछि लोकक मानसिक अवस्था। मुदा एहि तरहक समस्या दिस ककरो ध्यान कहाँ छै। पैघ-पैघ समस्या, उदारीकरण आन कतेक विषयपर मीडिआक ध्यान छै। चौक-चौराहाक एहि तरहक समस्यापर नव दृष्टि अबैत अछि, एहिमे स्टेशनसँ घरक बीचक दूरी रातिक अन्हारमे पहाड़ सन भऽ जाइत अछि। प्रदेशक तत्कालीन कानून-व्यवस्थापर ई एक तरहक टिप्पणी अछि।

एकाकी- एहि कथामे कुसेसर हॉस्पीटलमे छथि। हॉस्पीटलक सचित्र विवरण भेल अछि। ओतए एकटा स्त्री पतिक मृत्युक बाद कनैत-कनैत प्रायः सुति गेलि आ फेर निन्न टुटलापर कानए लागलि। एना होइत अछि। कथाकार मानव जीवनक एकटा सत्यता दिस इशारा दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यवस्थापर टिप्पणी तेना भऽ कए नहि वरण जीवन्तता देखा कए करैत छथि।

ओ लड़की- एहि कथामे हॉस्टलक लड़का-लड़कीक जीवनक बीच नवीन नामक युवक एकटा लड़कीक हाथमे ऐंठ खाली कप, जे ओहि लड़कीक आ ओकर प्रेमीक अछि, देखैत अछि। लड़की नवीनकेँ पुछैत छै जे ओ केम्हर जा रहल अछि। नवीनकेँ होइत छै जे ओ ओकरा अपनासँ दब बुझि कप फेंकबाक लेल पुछलक। नवीन ओकरा मना कऽ दैत अछि। विचार सभ ओकर मोनमे घुरमैत रहैत छै। ई कथा एकटा छोट घटनापर आधारित अछि...जे ओ हमरा दब बूझि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक? आ ओ दृढ़तासँ नहि कहि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। एकाकी जेकाँ ई कथा सेहो मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपर आधारित अछि।

एकटा प्रेम कथा- पहिने जकरा घरमे फोन रहैत छल तकरा घरमे दोसराक फोन अबैत रहैत छल, जे एकरा तँ ओकरा बजा दिअ। लेखकक घरमे फोन छलन्हि आ ओ एकटा प्रेमीक प्रेमिकाक फोन अएलापर, ओकर प्रेमीकेँ बजबैत रहैत छथि। प्रेमी मोबाइल कीनि लैत अछि से फोन आएब बन्द भऽ जाइत अछि। मुदा प्रेमी द्वारा नम्बर बदलि लेलापर प्रेमिकाक फोन फेरसँ लेखकक घरपर अबैत अछि। प्रेमिका, प्रेमीक ममियौत बहिनक सखी रितु छथि आ लेखक ओकर सहायताक लेल चिन्तित भऽ जाइत छथि। एहि कथामे प्रेमी-प्रेमिका, मोबाइल आ फोन ई सभ नव युगक संग नव कथामे सेहो स्वाभाविक रूपेँ अबैत अछि।

टाइटल कथा अछि बनैत-बिगड़ैत। तीन टा नामित पात्र। माला, ओकर पति सत्तो आ पोती मुनियाँ। गाम-घरक जे सास-पुतोहुक गप छै, सेहन्ता रहि गेल जे कहियो नहेलाक बाद खाइ लेल पुछितए, एहन सन। मुदा सैह बेटा-पुतोहु जखन बाहर चलि जाइत छथि तँ वैह सासु कार कौआक टाहिपर चिन्तित होमए लगैत छथि। माइग्रेशनक बादक गामक यथार्थकेँ चित्रित करैत अछि ई कथा। सत्तोक संग कौआ सेहो एक दिन बिला जएत आ मुनियाँ कौआ आ दादा दुनूकेँ तकैत रहत। प्रवासीक कथा, बेटा-पुतोहुक आ पोतीक कथा, सासु-पुतोहुक झगड़ा आ प्रेम!

अपन-अपन दुःख कथामे पत्नी, अपन अवहेलनाक स्थितिमे, धीया-पुताकेँ सरापैत छथि। रातिमे धीया-पुताक खेनाइ, खा लेबा उत्तर भनसाघरक ताला बन्द रहबाक स्थितिमे पत्नीक भूखल रहब आ परिणामस्वरूप पतिक फोंफक स्वरसँ कुपित होएब स्वाभाविक। सभक अपन संसार छै। लोक बुझैए जे ओकरे संसारक सुख आ दुःख मात्र सम्पूर्ण छै मुदा से नहि अछि। सभक अपन सुख-दुःख छै, अपन आशा आ आकांक्षा छै। कथाकार ओहन सत्यकेँ उद्घाटित करैत छथि, जे हुनकर अनुभवक अंतर्गत अबैत छन्हि। आत्मानुभूति परिवेश स्वतंत्र कोना भए सकत आ से सुभाष चन्द्र यादवजीक सभ कथामे सोझाँ अबैत अछि।

आतंक कथामे कथाकारकेँ पुरान संगी हरिवंशसँ कार्यालयमे भेँट होइत छन्हि। लेखकक दाखिल-खारिज बला काज एहि लऽ कऽ नहि भेलन्हि जे हरिवंशक स्थानान्तरणक पश्चात् ने क्यो हुनकासँ घूस लेलक आ ताहि द्वारे काजो नहि केलक। हरिवंशक बगेबानी घूसक अनेर पाइक कारण छल से दोसर किएक अपन पाइ छोड़त? लेखक आतंकित छथि। कार्यालयक परिवेश, भ्रष्टाचार आ एक गोटेक स्थानांतरणसँ बदलैत सामाजिक सम्बन्ध ई सभ एतए व्यक्त भेल अछि। आइ काल्हि हम आकि अहाँ ब्लॉकमे वा सचिवालयमे कोनो काज लेल जाइत छी, तँ यैह ने सुनए पड़ैत अछि, जे पाइ जे माँगत से दए देबैक आ तखन कोनो दिक्कत होअए तँ कहब! आ पाइक बदला ककरो नाम वा पैरवी लए गेलहुँ तँ कर्मचारी ने पाइये लेत आ नहिये अहाँक काज होएत।

एकटा अन्त कथामे ससुरक मृत्युपर लेखकक साढ़ू केश कटेने छथि आ लेखक नहि, एहिपर कैक तरहक गप होइत अछि। साढ़ू केश कटा कऽ निश्चिन्त छथि। ई जे सांस्कृतिक सिम्बोलिज्म आएल अछि, जे पकड़ा गेल से चोर आ खराप काज केनिहार, जे नहि पकड़ाएल से आदर्शवादी। पूरा-पूरी तँ नहि, मुदा अहू कथामे एहने आस्था जन्म लैत अछि आ टूटि जाइत अछि। हरियाणामे बापो मरलापर लोक केश नहि कटबैत अछि, तँ की ओकर दुःखमे कोनो कमी रहैत छै तैँ? पंजाबक महिला एक बरखक बाद ने सिनूर लगबैत छथि आ ने चूड़ी पहिरैत छथि मुदा पहिल बरख कान्ह धरि चूड़ी भरल रहैत छन्हि, तँ की बियाहक पहिल बरखक बाद हुनकर पति-प्रेममे कोनो घटंती आबि जाइत छन्हि?

कबाछु कथा मे चम्पीबलाक लेखक लग आएब, जाँघपर हाथ राखब। अभिजात्य संस्कारक लोक लग बैसल रहबाक कारणसँ लेखक द्वारा ओकर हाथ हटाएब। चम्पीबला द्वारा ई गप बाजब जे छुअल देहकेँ छूलामे कोन संकोच। जेना चम्पीवला लेखककेँ बुझाइय रहन्हि जे हुनका युवती बुझि रहल छलन्हि। लेखककेँ लगैत छन्हि जे ओ स्त्री छथि आ चम्पीबला ओकर पुरान यार। ठाम-कुठाम आ समय-कुसमयक महीन समझ चम्पीवलाकेँ नहि छइ, नहि तँ लेखक ओतेक गरमीयोमे चम्पी करा लैतए। चम्पीवलाक दीनतापर अफसोच

भेलन्हि मुदा ओकर शी-इ-इ कैँ मोन पाड़ैत वितृष्णा सेहो। फ्रायडक मनोविश्लेषणक बड्ड आलोचना भेल जे ओ सेक्सकैँ केन्द्रमे राखि गप करैत छथि। मुदा अनुभवसँ ई गप सोझाँ अबैत अछि जे सेक्ससँ जतेक दूरी बनाएब, जतेक एकरा वार्तालाप-कथा-साहित्यसँ दूर राखब, ओकर आक्रमण ततेक तीव्र होएत।

कारबार मे लेखकक भैँट मिस्टर वर्मा, सिन्हा आ दू टा आर गोटेसँ होइत अछि। बार मे सिन्हा दोस्ती आ बिजनेसकैँ फराक कहैत दू टा खिस्सा सुनबैत अछि। सभ चीजक मोल अछि, एहिपर एकटा दोस्तक वाइफ लेल टी. वी. किनबाक बाद फ्रिजक डिमान्ड अएबाक गप बीचेमे खतम भऽ जाइत अछि। दोसर खिस्सामे एकटा स्त्री पतिक जान बचबए लेल डॉक्टरक फीस देबाक लेल पूर्व प्रेमी लग जाइत अछि। पूर्व प्रेमी पाइ देबाक बदलामे ओकरा संगे राति बितबए लेल कहैत छै। सिन्हा एहि कथामे ककरो गलती नहि मानैत छथि, डॉक्टर बिना पाइ लेने किएक इलाज करत, पूर्व प्रेमी मँगनीमे पाइ किएक देत आ ओ स्त्री जे पूर्व प्रेमी संग राति नहि बिताओत, तँ ओकर पति मरि जएतैक।

आब बारसँ लेखक निकलैत छथि तँ दरबानक सलाम मारलापर अहूमे पैसाक टनक सुनाइ पड़ए लगैत छन्हि। प्राचीन मूल्य, दोस्ती-यारी आ आदर्शक टूटबाक स्थिति एकटा एकाकीपनक अनुभव करबैत अछि।

कुश्ती मे सेहो फ्रायड सोझाँ अबैत छथि, कथाक प्रारम्भ लुंगीपरक सुखाएल कड़गर भेल दागसँ शुरू होइत अछि। मुदा तुरत्ते स्पष्ट होइत अछि, जे ओ से दाग नहि अछि, वरन घावक दाग अछि। फेर हाटक कुश्तीमे गामक समस्याक निपटारा, हेल्थ सेन्टरक बन्द रहब, ओतए ईंटाक चोरिक चरचा अबैत अछि। छोट भाइ कोनो इलाजक क्रममे एलोपैथीसँ हटि कए होम्योपैथीपर विश्वास करए लगैत छथि, एहि गपक चरचा आएल अछि। लोक सभक घावक समाचार पुछबा लऽ अएनाइ आ लेखक द्वारा सभकैँ विस्तृत विवरण कहि सुनओनाइ मुदा उमरिमे कम वयसक कैक गोटेकैँ टारि देनाइ, ई सभ क्रम एकटा वातावरणक निर्माण करैत अछि।

कैनरी आइलैण्डक लारेल कथामे सुभाष आ उपिया कथाक चरित्र छथि। एतए एकटा बिम्ब अछि- जेना निर्णय कोसीक धसना जकाँ। ममियौत भाइक चिट्ठी, कटारि देने नाहपर जएबाक, गेरुआ पानिक धारमे आएब, नाहक छीटपर उतारब, छीटक बादो बहुत दूर धरि जाँघ भरि पानिक रहब। धीपल बालुपर साइकिलकैँ ठेलैत देखि क्यो कहैत छन्हि- "साइकिल ससुरारिमे देलक-ए? कने बड़द जकाँ टिटकार दियौक" । दीदी-पीसा अहिठाम एहि गपक चरचा सुनलन्हि, जे कोटक खातिर हुनकर बेटीक विवाह दू दिन रुकि गेल छलन्हि आ ईहो जे बेसी पढ़ने लोक बताह भऽ जाइत अछि। सुभाष चाहियो कऽ दू सए टाका नहि माँगि पबैत छथि, दीदीक व्यवहार अस्पष्ट छन्हि, सुभाष आश्वस्त नहि छथि आ घुरि जाइत छथि।

तृष्णा कथामे लेखककैँ अखिलन भेटैत छन्हि। श्रीलतासँ ओ अपन भैँटक विवरण कहि सुनबैत अछि। पाँचम दिन घुरलाक बाद ट्रेनमे ओ नहि भेटलीह। आब अखिलन की करत, विशाखापत्तनम आ विजयवाड़ाक बीचक रस्तामे चक्कर काटत आकि स्मृतिक संग दिन काटत।

छोट-छोट भावनात्मक घटनाक विश्लेषण अछि कथा "कैनरी आइलैण्डक लारेल" आ "तृष्णा" ।

दाना कथामे मोहन इन्टरव्यू लेल गेल अछि, ओतए सहृदय चपरासी सूचित करैत छै जे बाहरीकैँ नहि लैत छै, पी. एच. डी. रहितए तँ कोनो बात रहितए। मोहनकैँ सभ चीज बीमार आ उदास लगैत रहए। फुद्दी आ मैना पावरोटीक टुकड़ीपर ची-ची करैत झपटैत रहए। प्रतियोगी परीक्षाक साक्षात्कारमे बाहरी आ लोकल केर जे संकल्पना आएल अछि तकर सम्वेदनात्मक वर्णन भेल अछि।

दृष्टि कथामे पढ़ाइ खतम भेलाक बाद नोकरीक खोज, गाममे लोकसभक तीक्ष्ण कटाक्ष। फेर दक्षिण भारतीय पत्रकारक प्रेरणासँ कनियाँक विरोधक बावजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागब। ई सभ गप एकटा सामान्य कथ्य रहलाक बादो ठाम-ठाम सामाजिक सत्य उद्घाटित करैत अछि। एतए गामक लोकक कुटीचाली अछि, जे काजक अभावमे खाली समय बेशी रहलाक कारण अबैत अछि। संगमे आइ-काल्हिक स्त्रीक शहरी जीवन जीबाक आकांक्षा सेहो प्रदर्शित करैत अछि।

नदी कथामे कथ्य कथाक संगे चलैत अछि आ खतम भए जाइत अछि। गगनदेवक घरपर बिहारी आएल छै। शहरमे ओकरा एक साल रहबाक छै। गगनदेवकैँ ओकरा संग मकान खोजबाक क्रममे एकटा लड़कीसँ भैँट होइत छै। ओकरा छोड़ि आगाँ बढ़ल तँ ई बुझलाक बादो जे आब ओकरासँ फेर भैँट नहि हेतइ ओ उल्लास आ प्रेमक अनुभूतिसँ भरि गेल।

परलय बाढिक कथा थिक, कोसीक कथा कहल गेल अछि एतए। बौकी बुनछेकक इन्तजारीमे अछि। मुदा धारमे पानि बढ़ि रहल छै। कोशीक बाढ़ि बढ़ल आबि रहल छै आ एम्हर माएक रद्द-दस्तसँ हाल-बेहाल छै। माल-जाल भूखसँ डिकरैत रहै। रामचरनक घरमे

अन्नपानि बेशी छै से ओ सभकेँ नाहक इन्तजाम लेल कहैत छै। बौकूक घरसँ कटनियाँ दूर रहै। मृत्यु आ विनाश बौकूकेँ कठोर बना देलकैक, मोह तोड़ि देलकैक। मुदा बरखा रुकि गेलैक। बौकू चीज सभकेँ चिन्हबाक आ स्मरण करबाक प्रयत्न करए लागल।

बात कथामे सेहो कथाकार अपन कथानककेँ बाट चलिते ताकि लैत छथि आ शिल्पसँ ओकरा आगाँ बढ़बैत छथि। नेबो दोकानपर नेबोवला आ एकटा लोकक बीचमे बहस सुनैत लेखक बीचमे कूदि पड़ैत छथि। नेबोवलासँ एक गोटे अपन छत्ता माँगि रहल अछि जे ओ नीचाँ रखने रहए। दुखक गप, लेखकक अनुसार, बेशी दिन धरि लोककेँ मोन रहैत छै।

रंभा कथामे पुरुष-स्त्रीक बीचक बदलैत सम्बन्धक तीव्र गतिसँ वर्णन भेल अछि। पुरुष यावत स्त्रीसँ दूर रहैत अछि तँ सभ ओकरा मेनका आ रम्भा देखाइ पड़ैत छै। मुदा जे सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि तँ बादमे लेखक केँ लगैत छन्हि जे ओ बेटीये छी। रस्तामे एक स्त्री अबैत अछि। लेखक सोचैत छथि जे ई के छी, रम्भा, मेनका आकि...। ओकरा संग बेटा छै, ओतेक सुन्नर नहि, कारण एकर वर सुन्दर नहि होएतैक। ओ गपशपमे कखनो लेखककेँ ससुर जकाँ, कखनो अपनाकेँ हुनकर बेटी तुल्य कहैत अछि। पहिने लेखककेँ खराप लगलन्हि। मुदा बादमे लेखककेँ नीक लगलन्हि। मुदा अन्तमे ओकर पएर छूबए लेल झुकब मुदा बिन छूने सोझ भऽ जाएब नहि बुझिमे अएलन्हि।

हमर गाम कथामे लेखकक गामक रस्ता, कटनियाँ सँ मेनाही गामक लोकक छिड़िआएब आ बान्हक बीचमे अहुरिया काटैत लोकक वर्णन अछि। कोसिकन्हाक लोक- जानवरक समान, जानवरक हालतमे। कटनियाँमे लेखकक घर कटि गेलन्हि से ओ नथुनियाँ एहिठाम टिकैत छथि। मछबाहि आ चिड़ै बझाबऽ लेल नथुनी जोगार करैत अछि। जमीनक झगड़ा छन्हि, एक हिस्सेदारक जमीन धारमे डूमल छै से ओ लेखकक गहूमवला खेत हड़पए चाहैत अछि। शन आ स्त्रीक (!) पाछू लोक बेहाल अछि।

स्त्रीक पाछू बिन कारण लेखक पड़ि गेल छथि जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रमे कथा कहैत-कहैत शूद्र आ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि।

यावत सभ कमलक घूर लग कपक अभावमे बेरा-बेरी चाह पिबैत छथि, फसिल कटि कऽ सिबननक एतए चलि जाइ-ए। झौआ, कास, पटेरक जंगल जखन रहए, चिड़ै बड्ड आबए, आब कम अबैत अछि। खढ़िया, हरिन, माछ, काछु, डोका सभ खतम भऽ रहल छै- जीवनक साधन दुर्लभ भऽ गेल अछि। साँझमे जमीनक पंचैती होइत अछि। सत्तोक बकड़ी मरि गेलैक, पुतोहु एकर कारण सासुक सरापब कहैत अछि। सासु एकर कारण बलि गछलोपर पाठी सभकेँ बेचब कहैत छथि। सत्तोक बेटीक जौबनक उभारकेँ लेखक पुरुष सम्पर्कक साक्षी कहैत छथि आ सकारण फेरसँ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, कारण ई धारणा लोकमे छै। सत्तोक बेटी एखन सासुर नहि बसैत छै। सुकन रामक एहिठाम खाइत काल लेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकरासँ उबरबाक लेल ओ बजलाह- आइ तोरा जाति बना लेलिअह। कोसी सभ भेदभावकेँ पाटि देलक, डोम, चमार, मुसहर, दुसाध, तेली, यादव सभ एके कलसँ पानि भरैत अछि। एके पटियापर बैसैत अछि।

ककरा लेल कथा लिखी? वा कही? कथाक वाद: जिनका विषयमे लिखब से तँ पढ़ताह नहि। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जएत? गीताक सप्पत खा कए झूठ बजनिहारक संख्या कम नहि। तेँ की एहन कसौटीपर रचित कथाक महत्व कम भए जएत?

सभ प्रबुद्ध नहि होएताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओहि दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध होएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जे ओ नहि, तँ ओकर ओहि परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ जा ई रहत ताधरि एहि तरहक कथा रचित कएल जाइत रहत।

आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जाहिसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन होअए। आकि एहि परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। एहिमे संयोजन आवश्यक। विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नहि अछि जे रोशनाइसँ कागतपर जेना-तेना उतारि देलियैक। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि।

तँ कथा आदर्शवादी होअए, प्रकृतिवादी होअए वा यथार्थवादी होअए। आकि एहिमे सँ मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमएबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी होअए? आ नहि तँ कथा प्रयोजनमूलक होअए। एहिमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि। अपनाकेँ अभिव्यक्त कएनाइ मानवीय स्वभाव अछि। मुदा ओ सामाजिक निअममे सीमित भऽ जाइत अछि। परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ जाइत अछि।

तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कए गढ़ल जएत। आ व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि आओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबए पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करए पड़तन्हि।

स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन। कथा तखन संप्रेषित होएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत।

जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नहि छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने मुक्तिक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह।

कथा क्रमबद्ध होअए आ सुग्राह्य होअए तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नहि व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कए देलक।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास होएबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे सुभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नहि, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि से सुभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। एहिसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओहिसँ पृथक ओ किछु नहि अछि, स्वतंत्र होएबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) । हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर होएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित कएने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करए पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कए रहल अछि कारण एहिसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आएल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत? लघु, अति-लघु कथा, कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत?

जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता कैँ कृत्रिम रूपैँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नहि पहुँचि सकब। ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण- मेडिओकर स्टार- अछि। ओहि मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नगर-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आएल अछि।

होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करए पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नहि वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नहि होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नहि होइत अछि।

आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आएल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आएल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

पाठमे नुकाएल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ एहि सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आएल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जाहिमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कए ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नहि कएने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ एहि वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नहि होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लए ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट!

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। एहि बेरुका (२००८) कोसीक बाढ़िमे अनलकान्तजी गाममे फाँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहए मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए. सी. टिकट बुक भए गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही?

डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन कैँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नहि मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भए सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

एहि परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा गाथापर सेहो एकटा गहिंकी नजरि दौगाबी।

रामदेव झा जलधर झाक “विलक्षण दाम्पत्य” (मैथिल हित साधन, जयपुर, १९०६ ई.) कैँ मैथिलीक आधुनिक कथाक प्रारम्भ मानलन्हि। पुलकित मिश्रक “मोहिनी मोहन” (१९०७-०८), जनसीदनक “ताराक वैधव्य” (मिथिला मिहिर, १९१७ ई.), श्रीकृष्ण ठाकुरक चन्द्रप्रभा, तुलापति सिंहक मदनराज चरित, काली कुमार दासक अदलाक बदला आ कामिनीक जीवन, श्यामानन्द झाक अकिञ्चन, श्री बल्लभ झाक विलासिता, हरिनन्दन ठाकुर “सरोज” क ईश्वरीय रक्षा, शारदानन्द ठाकुर “विनय” क तारा आ श्याम सुन्दर झा “मधुप” क प्रतिज्ञा-पत्र, वैद्यनाथ मिश्र “विद्यासिन्धु” क गप्प-सप्पक खरिहान आ प्रबोध नारायण सिंहक बीछल फूल आएल। हरिमोहन झाक कथा आ यात्रीक उपन्यासिका, राजकमल चौधरी, ललित, रामदेव झा, बलराम, प्रभास कुमार चौधरी, धूमकेतु, राजमोहन झा, साकेतानन्द, विभूति आनन्द, सुन्दर झा “शास्त्री”, धीरेन्द्र, राजेन्द्र किशोर, रेवती रमण लाल, राजेन्द्र विमल, रामभद्र, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, प्रदीप बिहारी, रमेश, मानेश्वर मनुज, श्याम दरिहरे, कुमार पवन, अनमोल झा, मिथिलेश कुमार झा, हरिश्चन्द्र झा, उपाध्याय भूषण, रामभरोस कापड़ि “भ्रमर”, भुवनेश्वर पाथेय, बदरी नारायण बर्मा, अयोध्यानाथ चौधरी, रा. ना. सुधाकर, जीतेन्द्र जीत, सुरेन्द्र लाभ, जयनारायण झा “जिज्ञासु”, श्याम सुन्दर “शशि”, रमेश रञ्जन, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, परमेश्वर कापड़ि, तारानन्द वियोगी, नागेन्द्र कुमर, अमरनाथ, देवशंकर नवीन, अनलकान्त, श्रीधरम, नीता झा, विभा रानी, उषाकिरण खान, सुस्मिता पाठक, शेफालिका वर्मा, ज्योत्सना चन्द्रम, लालपरी देवी एहि यात्राकेँ आगाँ बढ़ेलन्हि।

मैथिलीमे नीक कथा नहि, नीक नाटक नहि? मैथिलीमे व्याकरण नहि? पनिसोह आ पनिगर एहि तरहक विश्लेषण कतए अछि मैथिली व्याकरण मे, वैह अनल, पावक सभ अछि! मुदा दीनबन्धु झाक धातु रूप पोथीमे जे १०२५ टा एहि तरहक खाँटी रूप अछि, रमानथ झाक मिथिलाभाषाप्रकाशमे जे खाँटी मैथिली व्याकरण अछि, ई दुनू रिसोर्स बुक लए मानकीकरण आ व्याकरणक निर्माण सर्वथा संभव अछि। मुदा भऽ रहल अछि ई जे पानीपतक पहिल युद्धक विश्लेषणमे ई लिखी जे पानीपत आ बाबरक बीचमे युद्ध भेल। रामभद्रकें धीरेन्द्र सर्वश्रेष्ठ मैथिली कथाकारक रूपमे वर्णित कएने छथि, मुदा एखन धरि हुनकर कएक टा कथाक विश्लेषण कएल गेल अछि? नचिकेताक नाटक आ मैथिलीक सेक्सपिअर महेन्द्र मलंगियाक काजक आ रामभद्र आ सुभाष चन्द्र यादवक कथा यात्राक सन्दर्भमे ई गप कहब आवश्यक छल।

जाहि समय मैथिलीक समस्या घर-घरसँ मैथिलीक निष्कासन अछि, जखन हिन्दीमे एक हाथ अजमेलाक बाद नाम नहि भेला उत्तर लोक मैथिलीक कथा-कविता लिखि आ सम्पादक-आलोचक भए, अपन महत्वाकांक्षाक भारसँ मैथिली कथा-कविताक वातावरणकेँ भरिया रहल छथि, मार्क्सवाद, फेमिनिज्म आ धर्मनिरपेक्षता घोसिया-घोसिया कए कथा-कवितामे भरल जा रहल अछि, तखन स्तरक निर्धारण सएह कऽ रहल अछि, स्तरहीनताक बेढ़ वाद बनल अछि। जे गरीब आ निम्न जातीयक शोषण आ ओकरा हतोत्साहित करबामे लागल छथि से मार्क्सवादक शरणमे, जे महिलाकेँ अपमानित केलन्हि से फेमिनिज्म आ मिथिला राज्य आ संघक शरणमे आ जे साम्प्रदायिक छथि ओ धर्मनिरपेक्षताक शरणमे जाइत छथि। ओना साम्प्रदायिक लोक फेमिनिस्ट, महिला विरोधी मार्क्सिस्ट आ एहि तरहक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छथि। क्यो राजकमलक बड़ाइमे लागल अछि, तँ क्यो यात्रीक आ धूमकेतुक

तँ क्यो सुमनजीक, आ हुनका लोकनिक तँ की पक्ष राखत तकर आरिमे अपनाकेँ आगाँ राखि रहल अछि। यात्रीक पारोकेँ आ राजकमल आ धूमकेतुक कथाकेँ आइयो स्वीकार नहि कएल गेल अछि- एहि तरहक अनर्गल प्रलाप! क्यो तथाकथित विवादास्पद कथाक सम्पादन कए स्वयं विवाद उत्पन्न कए अपनाकेँ आगाँ राखि रहल छथि। मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनक बीच सीमित प्रतियोगिता जाहि कवि-कथाकारकेँ विचलित कए रहल छन्हि आ हिन्दी छोड़ि मैथिलीमे अएबाक बाद जाहि गतिसँ ओ ई सभ करतब कए रहल छथि, तिनका मैथिलीक मुख्य समस्यापर ध्यान कहिया जएतन्हि से नहि जानि? लोक ईहो बुझैत छथि जे हिन्दीक बाद जे मैथिलीमे लिखब, तँ स्वीकृति त्वरित गतिएँ भेटत? जे मैथिलीक रचनाकारेँकेँ एहि तरहक भ्रम छन्हि आ आत्मविश्वासक अभाव छन्हि, अपन मातृभाषाक संप्रेषणीयतापर अविश्वास (!), तखन एहि भाषाक भविष्य हिनका लोकनिक कान्हपर दए कोन छद्म हम सभ संजोगि रहल छी? सेमीनारमे साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त एहन जुझारू कथाकार, सम्पादक आ समालोचक सभकेँ अपन पुत्र-पुत्री-पत्नीक संग मैथिलीमे नहि वरन् हिन्दी मे (अंग्रेजी प्रायः सामर्थ्यसँ बाहर छन्हि तैँ) गप करैत देखि हतप्रभ रहि जाइत छी। मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल होएत? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोट-गोट रचना पढ़ि कए हम कहि सकैत छी। ताहि स्थिति मे- ई विवाद रहए एहि कवितामे आ एहि कथामे- एहि तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दए अपन लेखनी चमकाएब? आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार फलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिलना-आब तँ कथाकार आ कविक जोड़ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भक्तिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल। मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा एहि सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि, घरमे मैथिलीकेँ निष्कासित कए सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतए पाठक आ कोन विवाद! जे समस्या हम देखि रहल छी जे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ जातिक लोक एहि भाषासँ प्रेम करथि ताहि लेल कथा आ कविता कतए आगाँ अछि? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कैरियरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि। आ ओ घर-घरमे पहुँचए ताहि लेल कोन प्रयास भए रहल अछि? सए-दू सए कॉपी पोथी छपबा कए, तकर समीक्षा करबा कए, सए-दू सए कॉपी छपएबला पत्रिकामे छपबा कए, तकर फोटोस्टेट कॉपी फोल्डर बना कऽ घरमे राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कएल गेल तिकड़मक वातावरणमे हमर आस गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर जाए स्थिर भए गेल अछि।

जे अपन घर-परिवार नहि सम्हारि सकलाह से ढेरी-ढाकी भाषायी पुरस्कार लए बैसल छथि, मिथिला राज्य बनएबामे लागल छथि, पता नहि राज्य कोना सम्हारि सकताह आ ओकर विधान सभामे कोन भाषामे बजताह, जखन हुनका ओतए पुरस्कृत कएल जएतन्हि।

जे घरमे मैथिली नहि बजैत छथि से लेखक आ कवि बनल छथि (हिन्दी-मैथिलीमे समान अधिकारसँ) हिन्दीमे सोचि लिखैत छथि आ तखन अनुवाद कए मौलिक मैथिली लिखैत छथि! मैथिली कथा-कविता करैत छथि!!

मराठी, उर्दू, तमिल, कन्नड़सँ मैथिली अनुवाद पुरस्कार निर्लज्जतासँ लैत छथि, वणक्कम केर अर्थ पुछबन्हि से नहि अबैत छन्हि, अलिफ-बे-से केर ज्ञान नहि, मराठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्य नहि छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ एहि द्वारे बचि जाइत छन्हि कारण अपने छपबा कए समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नहि। पाठक नहि रहएमे हुनका लोकनिकेँ फाएदा छन्हि। आ एहि पुरस्कार सभमे जूरी आ एडवाइजरी बोर्ड अपनाकेँ आगाँ करबामे जखन स्वयं आगाँ अबैत छथि तखन एहि सीमित प्रतियोगी लोकनिक आत्मविश्वास कतेक दुर्बल छन्हि, सएह सोझाँ अबैत अछि। सारंग कुमार छथि, तँ बलरामक चरचा फेरसँ कथाकारक रूपमे शुरू भेल अछि। आ जिनकर सन्तान साहित्यमे नहि अएलाह हुनकर चरचा फेर कोना होएत, हुनकर पक्ष के आगाँ राखत? जीबैत धरि ने सभ अपन पक्ष स्वयं आगाँ राखि रहल छथि? मुदा मुइलाक बाद? मैथिली साहित्यक एहि सत्यकेँ देखार करबाक आवश्यकता अछि। आँखि मुनि कए सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये रहल छथि।

क्यो चित्रगुप्त सभा खोलि मणिपद्मकेँ बेचि रहल छथि तँ क्यो मैथिल (ब्राह्मण) सभा खोलि सुमनजीक व्यापारमे लागल छथि-मणिपद्म आ सुमनजीक आरिमे अपन धंधा चमका रहल छथि आ मणिपद्म आ सुमनजीकेँ अपमानित कए रहल छथि। कथा-कविता संग्रह सभक सम्पादकक चेला चपाटी मैथिलीक सर्वकालीन कथाकार-कविक संकलनमे स्थान पाबि जाइत छथि, भने हुनकर कोनो पहिले संग्रह आएल होइन्हि वा कथा-कविताक संख्या हास्यास्पद रूपसँ कम होइन्हि। पत्रिका सभक सेहो वएह स्थिति अछि। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक ई पत्रिका सभ स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकेँ मारि रहल अछि। ड्राइंग रूममे बिना फील्डवर्कक लिखल लोककथा जाहि भाषामे लिखल जाइत होअए, ओतए एहि तरहक हास्यास्पद कटाउझ स्वाभाविक अछि। आब तँ अन्तर्जालपर सेहो मैथिलीक किछु जालवृत्तपर जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि।

मार्क्सिस्ट आ फेमिनिस्ट बनि तकरो व्यापार शुरू करब आ अपन स्तरक न्यूनताक एहि तरहेँ पूर्ति करब, सीमित प्रतियोगिता मध्य अल्प प्रतिभायुक्त साहित्यकारक ई हथियार बनि गेल अछि। जे मार्क्सक आदर करत से ई किएक कहत जे हम मार्क्सवादी आलोचक आकि लेखक छी? हँ जे मार्क्सक धंधा करत तकर विषयमे की कही, धंधा तँ सुमन, राजकमल, यात्री, मणिपद्म, धूमकेतु...सभक शुरू भेल अछि। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वैह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नहि भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यैह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा एहि वास्तविकताक संग आगाँक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेवी कथाकार आ पाठक जे धूरा-गरदामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य रचथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित रखबा मात्रमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार होएबे टा करत।

मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नहि। सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे “विदेह” ई-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भए हजारक-हजार पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट एहि कथा सभकेँ भेटलैक जाहिमे बेशी पाठक गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ रहथि, से हम हुनकर सभक उपनाम देखि अन्दाज लगाओल। एतए ईहो गप सोझाँ आएल जे शिक्षाक अभावक कारण सेहो, भाषाक उच्चारण आ वाचन मे अंतर अबै-ए। तकर ई मतलब नै जे बलचनमाक भाषा एखनो यादव जी बजैत छथि, आब जे ओ भाषा कथाक यादव पात्र लेल प्रयोग करब तँ शांकुन्तलम् केर संस्कृत नाटकक बीच जनसामान्यक लेल प्रयुक्त प्राकृत जेकाँ लागत, आ ओहि वर्गक लोककेँ अपमानजनक सेहो लगतन्हि। भाषा चलायमान होइत अछि आ लेखन परम्परा ओकर मध्य स्थिरता अनैत अछि। से सुभाषजीक भाषामे सेहो ई अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, हुनकर कथाक भाषा आ निबन्धादिक भाषा मध्य।

मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ तँ पाठक बनि रहिये नहि सकैत छथि, शीघ्र यात्रीक बादक एकमात्र जन उपन्यासकार आ कुलानन्द मिश्रक बादक एकमात्र सही अर्थमे कविक उपाधि लेल लालायित भए जाइत छथि। अपनाकेँ घोड़ा आ बाघ आ दोसरकेँ गधा आ बकरी कहबा काल ओ मूल दिशा आ समस्यासँ अपनाकेँ फराक करैत छथि। अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कए आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आएल अछि। एहि एकमात्र शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध “विदेह” ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। एतए साल भरिमे सएसँ बेशी लेखक जुड़लाह तँ पाठकक संख्या लाख टपि गेल। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर एहि गपपर देल जोरकेँ किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ई भाषा जे मरि जएत तखन ओकर ड्राइंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-मिथिला राज्य आन्दोलकर्ता आ समालोचकक की होएतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ एहि रूपमे हमरा आर आकर्षित करैत अछि। आ एतए ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भए प्रिंट फॉर्ममे आबि रहल अछि, कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ लए। आ ई घटना सभ दिन आ सभ प्रक्षमे मैथिलीकेँ सबल करत से आशा अछि।

१४. राजदेव मण्डलक अम्बरा

सारांश

संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जै भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तै भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि।

बीजशब्द: राजदेव · मण्डलक · अम्बरा · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “राजदेव मण्डलक अम्बरा” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे राजदेव; मण्डलक; अम्बरा; कविता; चाही प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जै भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तै भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नै उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नै मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे घोसियाबए चाहै छथि, देशज आ दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नै आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

...

टप-टप चुबैत खूनक बून सँ

धरती भऽ रहल स्नात

पूछि रहल अछि चिड़ै

अपना मन सँ ई बात

आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति

कि नहि बाँचत हमर जाति...?

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही ऐ सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नै चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषएपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कऽ असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नै तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नै तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि!

मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नै भेने साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तै लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि।

आ से राजदेव मंडल सतर्क छथि आ तैँ हिनकर कविता-संग्रह अम्बरा एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह बनि आएल अछि।

पूरक विवेचन

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयासक अंतर्गत सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नै पढ़ैत अछि आ जै भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, तै भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ ऐ भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जाएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यएह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा ऐ सभ लेल गद्यक प्रयोग किए नै? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक रूपान्तरण कवितामे कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल ऐ तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नै उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नै बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नै मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नै सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरक नीचाँसँ विलुप्त होइत देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नै मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे घोसियाबए चाहै छथि, देशज आ दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नै आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

....

पूछि रहल अछि चिड़ै

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओइ चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै ऐ कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही ऐ सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नै चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नै चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषएपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कऽ असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नै तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नै तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नै तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जाएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि!

मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ सांस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नै भेने साहित्य एकभगाह भऽ जाएत, ओलड़ि जाएत, फ्रेम लगा कऽ टंगबा जोगड़ भऽ जाएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नै आबए तै लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि।

१५. मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”

सारांश

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक” विहनि कथाक प्रतीकात्मकताक प्रतीक बनि गेल अछि। बिरारसँ विहनि उपारि धान आ मेरचाइ रोपबाक प्रक्रिया ऐ संग्रहक सभ कथा सभमे देखमामे आओत। तँ ई छिटुआ नै रोपुआ धानक खेती बनि गेल अछि।

बीजशब्द: मुन्नाजीक · विहनि · कथाक · संग्रह · प्रतीक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक”” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मुन्नाजीक; मैथिली; विहनि; कथाक; संग्रह प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मुन्नाजीक मैथिली विहनि कथाक संग्रह “प्रतीक” विहनि कथाक प्रतीकात्मकताक प्रतीक बनि गेल अछि। बिरारसँ विहनि उपारि धान आ मेरचाइ रोपबाक प्रक्रिया ऐ संग्रहक सभ कथा सभमे देखमामे आओत। तँ ई छिटुआ नै रोपुआ धानक खेती बनि गेल अछि। तीन मोनक कट्ठा सभ गोटे सुनैत होएब, मुदा एतऽ देखब।

विहनि कथा हास्य कणिका नै अछि, ई कथाक जड़ि अछि, बीआ अछि, छिटुआ धानसँ भेल पौध आ विहनिसँ भेल पौधमे बड्ड अन्तर छै। छिटुआ धान फौदाइ नै छै। से हास्य कणिका बिठुकट्टा होइ छै, ऐ मे हँसी अबै छै, मुदा ओ छिटुआ धान जेकाँ अछि। दोसर बेर ओइ बिठुकट्टा कथाकेँ, हास्य कणिकाकेँ सुनब तँ ने हँसिये लागत आ नहिये छगुणते। तखन जँ बिनु सिझने विहनि कथा लिखाएत, बिनु सिझेने विहनि कथा लिखब तँ लतीफा बनबे टा करत। आ हास्य कणिका विहनि, लघु आ दीर्घ कथा वा उपन्यासमे लेखकीय सामर्थ्यक अनुसार प्रयुक्त होइत रहल अछि आ होइत रहत।

मुदा उसना धानसँ बिराड़मे विहनि नै बहराएत। से बिनु उसीनने बीआ बाउग करऽ पड़त। बिनु उसीनने सिझाबऽ पड़त आ तइ लेल बेशी मेहनति करऽ पड़त। आ बीआ छीटब तैयो सभ धानसँ विहनि नै बहराएत, किछु सँ नहियो बहराएत। से विहनि कथाकेँ सफल हेबाक प्रतिशत कम छै, लघुकथाक सफलताक प्रतिशत कने बेशी छै, दीर्घ-कथा आ उपन्यासक सफलताक प्रतिशत आर बेशी छै। मुदा उपन्यास झंझटिया काज छै, मोन घोर कऽ दै छै, बेशी समए लागै छै। विहनि कथा धाँइ-धाँइ लिखाइ छै। मुदा जहिना कविता लेल आवेग चाही तहिना विहनि कथा लेल, नै तँ ने धाँइ-धाँइ लिखेबे करत आ पद्यक गद्य आ गद्यक पद्य बनबाक आशंका सेहो रहत। सभ उपन्यासकार कतेक रास विहनि उपाड़ि कऽ सजबैए। उपन्यास गद्य छिऐ मुदा ओइमे कोनो पात्र जँ गीत गाबऽ लागए तँ ओकरा अहाँ रोकि देबै? जे उपन्यासकार रहैए ओ विहनि देखि उपन्यासक धनखेती देखऽ लगैए, कखनो ओ विहनि कथा लिखियो दैए, फेर लोभ संवरण नै भेलासँ ओइ विहनिक प्रयोग उपन्यासमे, दीर्घकथामे, लघुकथामे सेहो करैए।

तखन मुन्नाजीक विहनि कथाक की विशेषता। मुन्नाजी हमर पड़ोसी सुरजु भाइ छथि, ओ बिराड़मे जतेक बीआ लगबै छथि ओकर दशो प्रतिशत अपन खेतमे नै लगा पबै छथि। बाढ़िक इलाका छै से लोकक खेत पड़ल रहि जाइ छै बिनु विहनिक। से सुरजू भाइक पड़ोसी ओइसँ लाभ उठबै छथि कारण बाढ़िमे कखनो काल तीन-तीन बेर धनरोपनी होइ छै, एक बेर रोपू बाढ़ि आएल, दोसर बेर रोपू फेर बाढ़ि आएल। आ सुरजू भाइ छथि तँ लोक विहनि लेल निश्चिन्त रहैए।

आ मुन्नाजीक विहनि कथा सेहो निश्चिन्त करैए।

“रेवाज” विहनि कथा लिअ। गाम घरमे मसोमातकेँ लोक डाइन कहै छै मुदा मुइलाक बाद घराड़ी लेल ओकरा आगि देबा लेल उपरौंझ होइ छै। एतऽ मुदा विहनि लेल जे बीआ छीटल गेल छै से कने उच्च स्तरक छै। एतऽ मृतककेँ बेटा नै छै मुदा पत्नी आ बेटी छै। से जखन मृतकक भाइ कोहा उठबऽ चाहैए तँ विधवा ओकरा रोकै छै आ बेटीकेँ कोहा उठबैले कहै छै। आ संग के देत ऐ नव रेवाजमे, जे आइयेसँ प्रारम्भ भेल अछि? तखन उत्तरो भेटैए- निपुतराहा सभ।

तहिना “कमरुनिसा” विहनि कथा अछि। हसीना मंजिल सन एकटा आरो श्रेष्ठ उपन्यास ऐ विहनि कथा (सीड स्टोरी) सँ मुन्नाजी नै बना सकै छथि की? कमरुनिसाक पिता रहमान। लहठीक काज जेकाँ दम्मा सेहो ओकर सभक पुश्तैनी वौस्तु छलै। कमरुनिसाक अब्बा-अम्मीक जान ई दम्मा लेलकै आ फेर कमरुनिसा...

“जिया जरए सगर राति” मे एड्सक समस्या आ लिविंग रिलेशनक चर्च अछि तँ “दियाद” मे पनहीक ऊपरसँ चिक्कन चुनमुन हेबाक मुदा नीचाँसँ खलओदार केने जेबाक विवरण देल गेल अछि।

“नपना” मे स्त्रीक काजक स्वरूप तय कएल गेल छै। अखनो जनगणना कालमे सरकार स्त्रीक घरक काजकेँ आमदनीमे नै जोड़ैत अछि, आ ऐ कथामे अन्त होइए जखन एकटा स्त्रीक चर्च अबैए जे नोकरीयो करैए आ घरक काजो।

“देह, मोन आ प्रेम” एकटा हास्य कणिकाकेँ कोना विहनि कथामे परिवर्तित कएल जाए, तकर उदाहरण अछि। सबीना आ मोहसिन नाम्ना पात्र लऽ कऽ ई चमत्कार मुन्नाजी केने छथि।

आइ काल्हि जखन लोकक जिनगी गति पकड़ि लेने अछि तखन विहनि कथाक महत्व बढ़ि गेल अछि। मुन्नाजी विहनि कथा लेल समर्पित छथि आ ई संग्रह हुनकर ऐ समर्पणक गुणात्मक अभिव्यक्ति छन्हि।

गजेन्द्र ठाकुर

पूरक विवेचन

विहनि कथा हास्य कणिका नै अछि, ई कथाक जड़ि अछि, बीआ अछि, छिटुआ धानसँ भेल पौध आ विहनिसँ भेल पौधमे बड्ड अन्तर छै। छिटुआ धान फौदाइ नै छै। से हास्य कणिका बिठुकट्टा होइ छै, ऐ मे हँसी अबै छै, मुदा ओ छिटुआ धान जेकाँ अछि। दोसर बेर ओइ बिठुकट्टा कथाकेँ, हास्य कणिकाकेँ सुनब तँ ने हँसिये लागत आ नहिये छगुणते। तखन जँ बिनु सिझने विहनि कथा लिखाएत, बिनु सिझेने विहनि कथा लिखब तँ लतीफा बनबे टा करत। आ हास्य कणिका विहनि, लघु आ दीर्घ कथा वा उपन्यासमे लेखकीय सामर्थ्यक अनुसार प्रयुक्त होइत रहल अछि आ होइत रहत।

मुदा उसना धानसँ बिराड़मे विहनि नै बहराएत। से बिनु उसीनने बीआ बाउग करऽ पड़त। बिनु उसीनने सिझाबऽ पड़त आ तइ लेल बेशी मेहनति करऽ पड़त। आ बीआ छीटब तैयो सभ धानसँ विहनि नै बहराएत, किछु सँ नहियो बहराएत। से विहनि कथाकेँ सफल हेबाक प्रतिशत कम छै, लघुकथाक सफलताक प्रतिशत कने बेशी छै, दीर्घ-कथा आ उपन्यासक सफलताक प्रतिशत आर बेशी छै। मुदा उपन्यास झंझटिया काज छै, मोन घोर कऽ दै छै, बेशी समए लागै छै। विहनि कथा धाँइ-धाँइ लिखाइ छै। मुदा जहिना कविता लेल आवेग चाही तहिना विहनि कथा लेल, नै तँ ने धाँइ-धाँइ लिखेबे करत आ पद्यक गद्य आ गद्यक पद्य बनबाक आशंका सेहो रहत। सभ उपन्यासकार कतेक रास विहनि उपाड़ि कऽ सजबैए। उपन्यास गद्य छिऐ मुदा ओइमे कोनो पात्र जँ गीत गाबऽ लागए तँ ओकरा अहाँ रोकि देबै? जे उपन्यासकार रहैए ओ विहनि देखि उपन्यासक धनखेती देखऽ लगैए, कखनो ओ विहनि कथा लिखियो दैए, फेर लोभ संवरण नै भेलासँ ओइ विहनिक प्रयोग उपन्यासमे, दीर्घकथामे, लघुकथामे सेहो करैए।

तखन मुन्नाजीक विहनि कथाक की विशेषता। मुन्नाजी हमर पड़ोसी सुरजु भाइ छथि, ओ बिराड़मे जतेक बीआ लगबै छथि ओकर दशो प्रतिशत अपन खेतमे नै लगा पबै छथि। बाढ़िक इलाका छै से लोकक खेत पड़ल रहि जाइ छै बिनु विहनिक। से सुरजू भाइक पड़ोसी ओइसँ लाभ उठबै छथि कारण बाढ़िमे कखनो काल तीन-तीन बेर धनरोपनी होइ छै, एक बेर रोपू बाढ़ि आएल, दोसर बेर रोपू फेर बाढ़ि आएल। आ सुरजू भाइ छथि तँ लोक विहनि लेल निश्चिन्त रहैए।

“रेवाज” विहनि कथा लिअ। गाम घरमे मसोमातकेँ लोक डाइन कहै छै मुदा मुइलाक बाद घराड़ी लेल ओकरा आगि देबा लेल उपरौंझ होइ छै। एतऽ मुदा विहनि लेल जे बीआ छीटल गेल छै से कने उच्च स्तरक छै। एतऽ मृतककेँ बेटा नै छै मुदा पत्नी आ बेटी छै। से जखन मृतकक भाइ कोहा उठबऽ चाहैए तँ विधवा ओकरा रोकै छै आ बेटीकेँ कोहा उठबैले कहै छै। आ संग के देत ऐ नव रेवाजमे, जे आइयेसँ प्रारम्भ भेल अछि? तखन उत्तरो भेटैए- निपुतराहा सभ।

“नपना” मे स्त्रीक काजक स्वरूप तय कएल गेल छै। अखनो जनगणना कालमे सरकार स्त्रीक घरक काजकेँ आमदनीमे नै जोड़ैत अछि, आ ऐ कथामे अन्त होइए जखन एकटा स्त्रीक चर्च अबैए जे नोकरीयो करैए आ घरक काजो।

आइ काल्हि जखन लोकक जिनगी गति पकड़ि लेने अछि तखन विहनि कथाक महत्व बढ़ि गेल अछि। मुन्नाजी विहनि कथा लेल समर्पित छथि आ ई संग्रह हुनकर ऐ समर्पणक गुणात्मक अभिव्यक्ति छन्हि।

१६. सुजीतक “जिद्दी”

सारांश

सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींरधरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग घर बलासँ पहिने नहाएल छी तऽ बाल्टिन माँजि दिय नहि तऽ घर बलाके उमेर घटैत छैक। सासुक मुँहसँ ई गप सूनि भैरहवा नगरमे पलल मुदा देहातमे बियाहलि महिला कथा सूत्रधार अपन विधवा सासुक विषयमे सोचै छथि जे जँ बाल्टिन मँजलासँ पतिक उमेर बढतै छै तऽ ओ किए विधवा भऽ गेली!

बीजशब्द: सुजीतक · जिद्दी · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “सुजीतक “जिद्दी”” विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे सुजीतक; जिद्दी; कथामे; महिला; नृत्य प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींरधरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग घर बलासँ पहिने नहाएल छी तऽ बाल्टिन माँजि दिय नहि तऽ घर बलाके उमेर घटैत छैक। सासुक मुँहसँ ई गप सूनि भैरहवा नगरमे पललि मुदा देहातमे बियाहलि महिला कथा सूत्रधार अपन विधवा सासुक विषयमे सोचै छथि जे जँ बाल्टिन मँजलासँ पतिक उमेर बढतै छै तऽ ओ किए विधवा भऽ गेली! पति अरुण अकस–तिकसमे परल अछि। माए आ पत्नी दुनू ओकरा चाही। मुदा सूत्रधार घर छोड़ि एलीह। अरुण कहैत रहथि जे जँ हुनका बेटा हएतैन्हि तऽ ओ ओकर नाम आदर्श रखताह।

जिद्दी कथामे शारदा अपन नृत्य आ अभिनयक बिच्चेमे छोड़ल जएबाक बात मोनमे रखने छथि आ बेटा जयन्त आ बेटी गिन्नीक नृत्य आ अभिनयक प्रति स्नेहमे अपन उद्देश्य देखै छथि। पति विरोध करै छथि। बेटा तऽ नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैत अछि मुदा बेटी हुनकर उद्देश्यकेँ पूर्ण करैत देखाइत छैन्हि। मुदा तखने दारु, सिगरेट आ अनैतिक सम्बन्ध.. कथाक पूर्वार्धे नृत्य आ अभिनयक प्रति दृष्टिकोण उत्तरार्ध महिला सशक्तिकरण दिस जाइत–जाइत कतौ आन ठाम चलि जाइत अछि। बेटा नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैछैन्हि मुदा शारदाक बेटी नै.. महिलाक आकांक्षा महिला द्वारा पूर्ण होइत–होइत अनचोक्के कथ्य आ उद्देश्य भसिया जाइत अछि।

पूmल फुलाइएकऽ रहलमे सेहो महिला सूत्रधारक मानसिक विश्लेषण सोझाँ आएल अछि। कनेक रंग दब रहबाक कारण बियाहमे दिक्कत होइ छैन्हि, मुदा फेर एकटा सुन्नर लड़का भेटै छैन्हि। मुदा ओतौ धोखा.. मुदा ओ अपनाकेँ सम्हारि लै छथि आ किछु दिनमे सभ ठीक भऽ जाइत अछि।

'केहन सजाय' कथामे एकटा परिवार अपन गोद लेल बेटीकेँ छोड़ि दैत अछि, अधेर उमेरमे जखन ओकरा अपन बच्चा होइ छै तखन! मुदा एहि कथामे सेहो कथा कहैत–कहैत कथाकार रितेश आ चमेलीक प्रेमकेँ फरिछा नइँ पबै छथि। चमेलीकेँ जे माता–पिता गोद लेलखिन्ह से यादव रहथि, ई कहबाक आवश्यकता कथाकारकेँ नइँ पड़बाक चाही, कारण एहि कथामे यादवक लोक संस्कृतिक कोनो वर्ण नै भेल छै। फेर कथाकार तखने पेटमे बच्चा भऽ गेल कहि कथाकेँ कपचि दैत छथि। आधुनिक कथा–कथामे कथ्य तऽ होइते अछि, मुदा ओहि संग जओं तहपर तह समस्या भेटैत अछि तऽ तकर समाधान लेल सेहो कथाकारकेँ शव्दावली, लोकव्यवहार आ शिल्पक संग लेबऽ पडैÞत छैन्हि। सम्वेदनाक तहमे कथाकार जाइ तऽ छथि, मुदा बेसी ठाम कथ्य कहि देबाधरि सिमित रहि गेलासँ कथा काँच रहि गेल सन बूझि पडैÞत अछि। आशा अछि आगाँक संग्रहमे कथाकारक सामथ्र्य आओर नीक जकाँ देखाइ पड़त।

पूरक विवेचन

सुजीतक नव कथा संग्रह सम्वेदनामे गहींरधरि उतरल अछि। आदर्श कथामे कथाकार सुजीत महिला सूत्रधार बनल छथि, शैलीक भिन्नताक संग घर बलासँ पहिने नहाएल छी तऽ बाल्टिन माँजि दिय नहि तऽ घर बलाके उमेर घटैत छैक। सासुक मुँहसँ ई गप सूनि भैरहवा नगरमे पललि मुदा देहातमे बियाहलि महिला कथा सूत्रधार अपन विधवा सासुक विषयमे सोचै छथि जे जँ बाल्टिन मँजलासँ पतिक उमेर बढतै छै तऽ ओ किए विधवा भऽ गेली! पति अरुण अकस–तिकसमे परल अछि। माए आ पत्नी दुनू ओकरा चाही। मुदा सूत्रधार घर छोड़ि एलीह। अरुण कहैत रहथि जे जँ हुनका बेटा हएतैन्हि तऽ ओ ओकर नाम आदर्श रखताह।

जिद्दी कथामे शारदा अपन नृत्य आ अभिनयक बिच्चेमे छोड़ल जएबाक बात मोनमे रखने छथि आ बेटा जयन्त आ बेटी गिन्नीक नृत्य आ अभिनयक प्रति स्नेहमे अपन उद्देश्य देखै छथि। पति विरोध करै छथि। बेटा तऽ नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैत अछि मुदा बेटी हुनकर उद्देश्यकेँ पूर्ण करैत देखाइत छैन्हि। मुदा तखने दारु, सिगरेट आ अनैतिक सम्बन्ध.. कथाक पूर्वार्धे नृत्य आ अभिनयक प्रति दृष्टिकोण उत्तरार्ध महिला सशक्तिकरण दिस जाइत–जाइत कतौ आन ठाम चलि जाइत अछि। बेटा नृत्य आ अभिनय छोड़ि दैछैन्हि मुदा शारदाक बेटी नै.. महिलाक आकांक्षा महिला द्वारा पूर्ण होइत–होइत अनचोक्के कथ्य आ उद्देश्य भसिया जाइत अछि।

फूल फुलाइएकऽ रहलमे सेहो महिला सूत्रधारक मानसिक विश्लेषण सोझाँ आएल अछि। कनेक रंग दब रहबाक कारण बियाहमे दिक्कत होइ छैन्हि, मुदा फेर एकटा सुन्नर लड़का भेटै छैन्हि। मुदा ओतौ धोखा.. मुदा ओ अपनाकेँ सम्हारि लै छथि आ किछु दिनमे सभ ठीक भऽ जाइत अछि।

‘केहन सजाय’ कथामे एकटा परिवार अपन गोद लेल बेटीकेँ छोड़ि दैत अछि, अधेर उमेरमे जखन ओकरा अपन बच्चा होइ छै तखन! मुदा एहि कथामे सेहो कथा कहैत–कहैत कथाकार रितेश आ चमेलीक प्रेमकेँ फरिछा नइँ पबै छथि। चमेलीकेँ जे माता–पिता गोद लेलखिन्ह से यादव रहथि, ई कहबाक आवश्यकता कथाकारकेँ नइँ पड़बाक चाही, कारण एहि कथामे यादवक लोक संस्कृतिक कोनो वर्णन नै भेल छै। फेर कथाकार तखने पेटमे बच्चा भऽ गेल कहि कथाकेँ कपचि दैत छथि। आधुनिक कथा–कथामे कथ्य तऽ होइते अछि, मुदा ओहि संग जओं तहपर तह समस्या भेटैत अछि तऽ तकर समाधान लेल सेहो कथाकारकेँ शव्दावली, लोकव्यवहार आ शिल्पक संग लेबऽ पडैÞत छैन्हि। सम्वेदनाक तहमे कथाकार जाइ तऽ छथि, मुदा बेसी ठाम कथ्य कहि देबाधरि सिमित रहि गेलासँ कथा काँच रहि गेल सन बूझि पडैÞत अछि। आशा अछि आगाँक संग्रहमे कथाकारक सामथ्र्य आओर नीक जकाँ देखाइ पड़त।

१७. रमेश नारायणक “पाथरक नाव” आ विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”

सारांश

मैथिली कथा संग्रह सभमे १. रमेश नारायणक “पाथरक नाव” २. विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)” ई दुनू कथा संग्रह अपन किछु खास विशिष्टताक कारण विशेष स्थान रखैत अछि। रमेश नारायणक “पाथरक नाव” १९७२ ई. मे उपासना प्रकाशन, ९०, श्रीकृष्णानगर, पटना-१ सँ छपल। विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)” १९९४ ए. मे मैथिली प्रतिभा. एल. एफ. १/३, युनिट-३, कोहाउसिङ्ग कालोनी, भुवनेश्वर-७५१००१ सँ छपल।

बीजशब्द: रमेश · नारायणक · पाथरक · नाव · विनोद · बिहारी · वर्माक · बलानक

सारांश · Abstract

ई अध्याय “रमेश नारायणक “पाथरक नाव” आ विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”” विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे रमेश; नारायणक; पाथरक; नाव; विनोद प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिली कथा संग्रह सभमे १. रमेश नारायणक “पाथरक नाव” २. विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)” ई दुनू कथा संग्रह अपन किछु खास विशिष्टताक कारण विशेष स्थान रखैत अछि।

रमेश नारायणक “पाथरक नाव” १९७२ ई. मे उपासना प्रकाशन, ९०, श्रीकृष्णानगर, पटना-१ सँ छपल। विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)” १९९४ ए. मे मैथिली प्रतिभा. एल. एफ. १/३, युनिट-३, कोहाउसिङ्ग कालोनी, भुवनेश्वर-७५१००१ सँ छपल।

रमेश नारायणक “पाथरक नाव”

रमेश नारायण अपन कथा-संग्रहक समर्पण करै छथि ---अथाहो पानिमे ऐना जकाँ झलकैत/ अपना गामक ओहि थाल-कादोकेँ, / जाहिमे हमरे लेल/ एक गोट रक्तकमल/ जनमि कए फुलेबाक हमर आस/ अटकल अछि... आ अपना दिससँ कहै छथि- इएह, जे/ एहि संग्रहक कतेको कथा आकाशवाणीक पटना केन्द्रसँ प्रसारित अछि, / तैं आकाशवाणीक सौजन्यों सँ।

ऐ कथा संग्रहमे ई सभ कथा संकलित अछि: - १. ठेहियायल मोन घुमाओन बाट, २. काजरक रेख, ३. आँजुर भरि नोर, ३. काँच निन्न टुटैत स्वप्न, ४. सइँतल सेज निहुँछल निन्न, ५. तेजि गेल बिदेस..., ६. काँट कुसक छाहरि, ७. एक पोस्टकार्ड: सरोजिनी आ’ हम ८. चीरल पन्ना जोड़ल पाँती।

विनोद बिहारी वर्माक “बलानक बोनिहार ओ पल्लवी (तथा अन्य कथा)”

विनोद बिहारी वर्मा अपन कथा-संग्रहक समर्पण करै छथि: - बहु विद्या विद् / पूज्य लाल भाइ, / डा. ब्रज किशोर वर्मा “मणिपद्म” क/ पुण्य स्मृतिमे/ श्रद्धापूर्वक समर्पित- विनोद। ऐ संग्रहमे १४ टा कथा अछि जइमे सँ ३ टा कथा मिथिला मिहिर मे छपल छल आ ११ टा कथा वैदेही मे। ऐ कथा संग्रहमे ई सभ कथा संकलित अछि: - १. बलानक बोनिहार ओ पल्लवी, २. कुन्ती, कर्ण ओ परशुराम, ३. सुलोचनाक चटिसार, ४. साहेब, ५. ब्रह्मा-बिसुन-राति, ६. हम पान खेलहुँ, ७. फूलक कथा, ८. अन्तर्मुखी बसुन्धरा, ९. काशक फूल, १०. माछक पिकनिक, ११. जीवन-नाओ, १२. कापुरुष, १३. गोनौर-बाबू, १४. आकाश-फूल

१८. मैथिलीक किछु नव पोथी

सारांश
शम्भुदास- जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तँ ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हरखित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकें शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो।

बीजशब्द: मैथिलीक · किछु · नव · पोथी · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिलीक किछु नव पोथी” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिलीक; जगदीश; प्रसाद; मण्डल; मैथिली प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

शम्भुदास- जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डल लोकक मोनमे पैसै छथि, बरहम बाबाक मोनमे पैसै छथि। आ तँ ने बरहम बाबा आ लोक दुनूक मोन हरखित छै, से भाँज ओ लगा लै छथि। शम्भुआकें शम्भु बनैत ओ देखै छथि आ फेर दरबारी दास (शम्भुदास) बनैत सेहो। ढहैल बेबस्थाक तरमे शम्भुदासक पड़ब मिथिलाक कलाक राँइ-बाँइ हेबाक निशानी अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक कथाक मुख्य पात्र ने “भेंटक लावा” मे आ ने “बिसाँढ़” मे राँइ-बाँइ होइए तखन शम्भुदास कोना “दरबारी” दास भऽ गेल? की जगदीश प्रसाद मण्डलमे कोनो परिवर्तन तँ नै आबि गेलन्हि, की ओ थाकि रहल छथि आ हारि रहल छथि? मुदा जँ गौंहिकी नजरिसँ देखबै तँ शम्भुदास कोनो तरहें “भेंटक लावा” बा “बिसाँढ़” क हीरोसँ न्यून नै अछि। तखन ओ किए हारि रहल अछि बा जगदीश प्रसाद मण्डल ओकरा किए हरबा रहल छथि? एँ यौ, ओ तँ लेखक छथि, ऐ पात्र सभक भगवान, ओ एकरा जितबेलथि किए नै? जगदीश प्रसाद मण्डलक पात्र फुसियाँहीक नै होइत अछि, आ तेँ ओ आर्थिक मोर्चा पर जीति जाइत अछि, जतऽ हाथसँ काज होइ छै, मुदा कला (आ साहित्य सेहो) क शास्त्रीय घुरछी, जे आँगुरपर गानल जाएबला लोक द्वारा निर्मित अछि, मे ओ ओझरा जाइत अछि। ओकरा आर्थिक स्थितिसँ लड़बाक छलै, लड़ल आ जीतल। कलाक क्षेत्रमे ओ दरबारी बनि गेल, तखने ओकर गुजर हेतै; मुदा एतौ एकटा विद्रोहक झण्डा उठेलक शम्भुदास, घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय सिद्ध केलक जे “दरबारी” दास बनब ओकर सुविधावादी प्रवृत्ति नै छै, लचारी छै; आ तइ लेल ओ बिआह नै करबाक निर्णय केलक। घर-परिवार लेल ओ सुविधावादी नै बनल, आ घर-परिवार बिसरि बिआह नै करबाक ओकर निर्णय “दरबारी” दास बनबाक लेल कएल ओकर पश्चाताप मात्र अछि। समानान्तर परम्परा कलाकें दरबारी दास बनबासँ रोकत। जँ शम्भुदास हारत तँ हारत मिथिला। जगदीश प्रसाद मण्डल नै हारता, हारत मिथिला। जँ मिथिला ऐ चेतौनीकें नै चिन्हत।

बजन्ता-बुझन्ता- जगदीश प्रसाद मण्डल “बजन्ता-बुझन्ता” विहनि कथाक सुग्गा ओहन पोसा अछि जे बिनु पिंजरेक, मनुक्खक संग रहैए। ऐ विहनि कथा संग्रहमे ऐ तरहक बिम्बक संख्या कथाक संख्यासँ बेसिए अछि कम नै। “चौकीदारी” मे अठ-अठ महिना पेट बान्हि खटबाक बिम्ब अछि तँ मनोज कुमार कर्ण प्रसिद्ध मुन्नाजी कें समर्पित “पटोर” विहनि कथामे “जेना अन्हार घर साँपे-साँप होइ छै तहिन्ना ने दुनू बेकती छी” विहनि कथाक कथाकें चौबटियासँ दोसर दिशा दिस घुसका दै छै, आगाँ बढ़बै छै। आ ऐ विहनि कथा संग्रहक कथा सभक विषयमे समदाहीक ई वक्तव्य चोटगर बुझाइए- “बड़ काग भाषा सुनिनिहारि भेल छथि” ।

तरेगन- जगदीश प्रसाद मण्डल ऐ विहनि कथा सभमे “पंच लाइन” बा “बिम्ब” ऐ दुआरे नै अछि, कारण ई पोथी नेना-भुटका लेल अछि, आ एतऽ समस्त कथे बिम्ब अछि। आ तँ जखन सुभाषचन्द्र बोसक पिता (“देश सेवाक व्रत” कथामे) जमीने पर सुतनाइकेँ पर्याप्त नै कहै छथि तँ बाल सुभाषक मनपर ओकर असर, पैघ भेलोपर, यथावत रहैत अछि। “सत्य विद्या” मे भारद्वाज ज्ञानकेँ स्वर्गसँ पैघ कहै छथि। ई संग्रह बाल साहित्य लेल महत्त्व तँ रखिते अछि संगे “विहनि कथा” क क्षेत्रफलकें सेहो बढ़बैत अछि।

गीतांजलि- जगदीश प्रसाद मण्डल “चलू उचितपुर” क उचितपुरमे सभक चालि-ढालि एक्के रंगक छै, एक्के भेष छै, आगि-पानिक भेद नै छै! “बेढ़ब रूप...” क “अमवसिया पूर्णिमा” बहुत किछु कहि जाइए। “यार यौ...” गीत बिपतिक गीत अछि। बाढ़िमे सभ किछु दहा जेबाक विवरणमे मन, चित-चेतन सेहो दहा गेल हेबाक विवरण अछि। राजनन्दन लालदासकें समर्पित “जुग-जुग...” गीतमे मकड़जालमे

फँसि सभ केबाड़ बन्न हेबाक गप कहल गेल अछि। प्रोफेसर उदय नारायण सिंह “नचिकेता” कें समर्पित “गीतांजलि” गीत संग्रह गेय अछि।

राति-दिन- जगदीश प्रसाद मण्डल बाबा बाँझीक किरदानी नै बुझलनि, तामि-कोड़ि गाछ रोपलनि, पटेलनि; आ से गाछी भुताइ भऽ गेल? जे नै कहियो माटि देखलक से फुनगी पकड़ि अकास पकड़ि लेलक! “हल्लुक काज” क काजक हल्लुक लूरि पाबि भेल अनुभव, कलाकारक कलाकृति पाबि कएल अनुभव तँ अछिए; भावनाक संसार केना गढ़ल जाइए तकरो विवरण अछि। “पट्टा छीमी” क चासनी चित्त हुआए बा “घरक लोटिया बुड़ले अछि” सभ ठाम मैथिली पद्यक नव आ बेछप स्वरूप दृष्टिमे अबैए। “राति-दिन” कें ई विशिष्ट बनबैत अछि।

इन्द्रधनुषी अकास- जगदीश प्रसाद मण्डल मैथिली पद्यक नव आ बेछप स्वरूप ऐ पद्यमे देखबामे अबैए, ओ “नाचि-नाचि नचारी गबैए” । पद्यमे जे आध्यात्मिक-पारलौकिक चिन्तन अबै छै, सेहो आएल अछि- जेना “एक सिरजन दोसर उसरन / बदलब छी मात्र खेल” । शब्द आ विषयक चयनमे कवि सतर्क छथि। रहस्य, निराशा, प्रश्नक संग उत्तर आ आशा अबैत जाइत रहैत अछि।

तीन जेठ एगारहम माघ- जगदीश प्रसाद मण्डल “घरे-घरे...” मे सभ घरमे ज्योति दीपक हएब मुदा सौंसे गाममे अन्हार पसरल हएब एकटा द्वैध प्रस्तुत करैए। “कौशल जखनि...” मे चालि कुचालि धाड़ी-धड़िया/ भूमि बनैत रहै छै उसर” मे कारण सेहो देल गेल छै। “आश प्रेम संग...” मे मुदा आस घुरि अबैए।

सरिता- जगदीश प्रसाद मण्डल जगदीश प्रसाद मण्डलक पद्य प्रश्न उठबैत अछि। कथ्यकें देखने अछि, आ निष्कर्षमे प्रश्न अनैत अछि। हिनकर गद्य रचनाक हिसाबे देखी तँ आशासँ बेसी निराशा देखा पड़ैत अछि। पद्य हिनका प्रश्नकें बा उत्तरकें विश्लेषित करबाक पलखति नै दै छन्हि, तँ ओ प्रश्न उठा-उठा उत्तर तकबाक प्रेरणा अपन पद्यक माध्यमसँ दै छथि। पद्यक ई बेछप रूप मैथिली साहित्यमे पहिल बेर आएल अछि।

बसन्धुरा- राजदेव मण्डल जखन राजदेव मण्डल कविता लिखै छथि तँ से हमरा सभकें सिहरा दैत अछि। कोनो गोलैसीक बा पंथक सोंगर नै चाही हुनकर संवेदनाकेँ। हुनकर पद्यक उत्कृष्टता भाषा-सांस्कृतिक आधारक कारण छन्हि, आयातित विषय-वस्तु नै छन्हि, से आयातित संवेदना सेहो नै भेटत। बिम्बक संप्रेषणीयता हुनकर शब्दावलीमे छन्हि! कविता रचब राजदेव मंडलक विवशता अछि, साहित्यिक विवशता। संवेदना घुरिआइत बाहर निकलैए आ हिनकर पद्य बनि जाइए।

सखारी-पेटारी- नन्द विलास राय “असल बेटा” क जीतन मुखियाक विषयमे ओ लिखै छथि- जातिक मलाह, मुदा माछ मारैक कोनो लूरि नै!! “चौड़चनक दही” मे सोमनी आधा दूध बेरमाबालीकें दऽ दैए। “बाबाधाम” मे लेखक कहैए- “हमरा लेल बाबाधाम हमर माइए-बाबू छथि” । नन्द विलास रायक कथ्य हुनकर अड़ोस-पड़ोसमे छन्हि। “गोबरबीछनी” क दुखनी परतीपर गोबर बीछि चिपड़ी पाथि निर्मली बजारमे बेचि अपन गुजर-बसर करऽ लगली। गैसक प्रयोग बढ़ल तँ चिपड़ी बिकेनाइ कमलै आ ओकर समय भारी भऽ गेलै। “सोइरी छछारब” मे छछारबाले मारि होइ छै, बहुतोकें पता नै हेतनि जे ऐ ले मारि किए होइ छै, कारण छै जे ऐ सँ आमदनी होइ छै। नन्द विलास रायक ई लघु कथा संग्रह बहुत रास संभावना कें तँ नुकेनहिये अछि, जे परसल गेल अछि सेहो कम रुचिगर नै।

अंशु- शिवकुमार झा “टिल्लू” मैथिली साहित्यमे सार्थक समीक्षक प्राय: अभाव रहल अछि, ई पहिल पोथी अछि जइमे समीक्षक समीक्षासँ कार्य प्रारम्भ करै छथि आ समीक्षेमे समाप्त करै छथि। मारि लाम-काफ दैत प्रारम्भ करैत समयाभाव सेहो देखबैत समीक्षक जे अति आलोचना बा अति बड़ाइ करैत आएल छथि, बिनु पढ़ने तेहन समीक्षा कऽ दइ छथि जे जँ चाहथि तँ कोनो कथा, कविता, उपन्यास, नाटकमे तकरा फिट कऽ सकै छथि, तइ सँ भिन्न “अंशु” मैथिली साहित्यमे आलोचनाक नव अध्याय प्रारम्भ करैए आ पुरान जर्जर समीक्षाक अन्तक घोषणा करैए। आ समीक्षक तँ आमुखमे कहै छथि- “समालोचनामे मात्र चारूकातसँ देखब प्रासंगिक नै, एकरा दसो दिससँ देखब उचित” । ऐ दसो दिशासँ देखि कएल समीक्षाकें पढ़लाक बाद सरकारी संस्था सभ द्वारा संकलित-सम्पादित पोथी सभ झुझुआन बुझाइत, आ वर्तमानमे तथाकथित स्थापित समीक्षक सभक समीक्षा अनैतिक लागत, आ सएह कारण रहल, ऐ तरहक समीक्षा “सृजनहारक रचनात्मकतामे वागीश वृद्धि” करबामे असफल रहल, नीक लेखक मैथिली साहित्यसँ कतिया देल गेला, जोगारी लोक ऐ तरहक समीक्षासँ कूपमण्डूकताक शिकार भऽ गेला, सरकारी संस्था सभ द्वारा संकलित-सम्पादित पोथी सभ गोदाममे सड़ि गेल कारण पाठकक स्नेह ओकरा नै भेटलै।

“अंशु” क समीक्षा ऐ अर्थें आर महत्त्वपूर्ण भऽ जाइए।

बाप भेल पित्ती आ अधिकार- बेचन ठाकुर "बाप भेल पित्ती" सामाजिक नाटक अछि, संतोष भीख मांगि मनोजकें पढ़बैए आ घुरि कऽ घर जाइए। "अधिकार" सूचनाक अधिकारपर आधारित नाटक छी। ई नाटक इन्दिरा आवास योजनाक अनियमितताकें आर. टी. आइ. सँ देखार करैबला आ रिक्शासँ झंझारपुरसँ दिल्ली जाइबला असली चरित्र मंजूरक कथा अछि जे डिलीट नै कएल जा सकल मुदा किए डिलीट कएल जा रहल छल, किनकर हितकें ऐ नाटकसँ खतरा छन्हि /छलनि आ किए एकर विरोध एतेक तीव्र रूपमे भेल, से सभटा आब फरिच्छ भऽ गेल अछि।

बिसवासघात- बेचन ठाकुर बिसवासघात नाटक बेचन ठाकुर जीक द्वितीय इनिंगक प्रारम्भक घोषणा करैत अछि। ई हिनकर अखन धरिक सभसँ पैघ नाटक अछि। विषय-वस्तुक चयनमे मूल धाराक नाटककार अखनो "गोनू झा" आ "लोक कथा" क (बिना वर्तमान परिप्रेक्ष्यमे कथाकें लेने) सोंगर लेनहिये छथि, मूलधाराक समीक्षक ओइमे जबर्दस्ती नारी-विमर्श आ की-की जबर्दस्ती देखबऽ लगै छथि आ नाटककारकें इनारक बेंग बनबैत रहै छथि। ऐ परिस्थितिमे समानान्तर धाराक ई नाटककार, वर्तमान "एन. एच." परियोजनाक क्षतिपूर्तिक पाइ लेल जे घटना-कुघटना घटित भऽ रहल छै, तकरा ऐ नाटकक कथा बनैलनि अछि। पुलिस-प्रशासनक कुरूप रूप सोझाँ अबैए। ऐ नाटकक मंचन नै हुआए, तइ लेल नाटककारकें धमकी सेहो

भेटलनि, मुदा ओ अपन लेखकीय प्रतिबद्धता नै छोड़लनि आ "विदेह नाट्य उत्सव" मे ई नाटक ६ घण्टासँ ऊपर धरि चलल आ लोक मंत्रमुग्ध देखैत रहला। बेचन जी भ्रूण-हत्या, अन्धविश्वास, सूचनाक अधिकार पर पहिनहिये नाटक लिखि चुकल छथि। "एन. एच" सड़क परियोजनापर हिनक लिखल ई नाटक ई सिद्ध करैए जे समानान्तर परम्पराक नाटककार समाजमे उठै-बैसै छथि, जुड़ल छथि।

हमर टोल- राजदेव मण्डल यात्रीक "पारो" मिथिलाक ब्राह्मण जातिक तत्कालीन सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति-परिस्थितिमे लिखल "फर्स्ट हैण्ड" विवरण छल। राजदेव मण्डल जीक ई उपन्यास मिथिलाक धानुक जातिक सामाजिक-सांस्कृतिक स्थिति-परिस्थितिमे लिखल कृति अछि। अंधविश्वास, समाज सुधार, प्रेम, घृणा, आशा-निराशा सभटा एतऽ मिज्झर अछि। ललितक "पृथ्वीपुत्र" क बाद एकटा अन्हार पसरल छल, मूलधाराक लेखक-समीक्षक बौआ रहल छला। राजदेव मण्डलक "हमर टोल" "पृथ्वीपुत्र" क सेकेण्ड-हैण्ड विवरणकें "फर्स्ट हैण्ड" विवरणसँ परिष्कृत करैए, मैथिली साहित्यक धाराकें आगाँ बढ़बैए। लेखक उपन्यासकें दुखान्त बनैबा लेल विवश भेला। किछु लड़ाइ ओ नै देखै छथि, बा ओ नै देखऽ चाहै छथि आ किओ नै देखैए। मुदा ओ तकरो विवरण दै छथि। "सभ धड़फड़ा कऽ चलि देलक। कौआ-मैनाक लड़ाइ शुरू भऽ गेल। जेकरा कियो नै देखलक किन्तु गाछ देखलक। आर बहुत किछु देखतो गाछ चुप्पे रहल।" ओइ चुप्पीक ओझराहटिक विवरण, नै देखलका गपक "फर्स्ट हैण्ड" विवरणसँ परिष्कृत ई उपन्यास मैथिली साहित्यक इतिहासमे

अपन स्थान सुरक्षित कऽ लेने अछि।

१९. सगर राति दीप जरय कथाक कथा

सारांश

सगर राति दीप जरयक इतिहास जे रमण द्वारा परसल जा रहल अछि, ओइमे एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहास मे बहुत रास विसंगति अछि। एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहासमे बहुत गोटेक योगदान बढ़ा कऽ, बहुत गोटेक घंटा कऽ, बहुत गोटेक परिवर्तित कऽ कऽ प्रस्तुत काल गेल तँ बहुत गोटे निपत्ता कऽ जेल गेला। कहल गेल जे ई स्वायत्त संस्था अछि मुदा चेतना समितिक दिससँ रमण आ अजित आजाद सम्मिलित होइत रहला आ जत' कियो माला नै उठेलक ओत' ई लोकनि चेतना समिति दिससँ माला उठेलन्हि आ संयोजकमे चेतना समितिक नाम नै आन नाम इतिहास बनबै लेल गेल गेल।

बीजशब्द: सगर · राति · दीप · जरय · कथाक · कथा · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “सगर राति दीप जरय कथाक कथा” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे सगर; राति; दीप; जरय; कथाक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

सगर राति दीप जरयक इतिहास जे रमण द्वारा परसल जा रहल अछि, ओइमे एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहास मे बहुत रास विसंगति अछि। एकर प्रारम्भ केना भेलसँ ल' कऽ अखन धरिक इतिहासमे बहुत गोटेक योगदान बढ़ा कऽ, बहुत गोटेक घंटा कऽ, बहुत गोटेक परिवर्तित कऽ कऽ प्रस्तुत काल गेल तँ बहुत गोटे निपत्ता कऽ जेल गेला। कहल गेल जे ई स्वायत्त संस्था अछि मुदा चेतना समितिक दिससँ रमण आ अजित आजाद सम्मिलित होइत रहला आ जत' कियो माला नै उठेलक ओत' ई लोकनि चेतना समिति दिससँ माला उठेलन्हि आ संयोजकमे चेतना समितिक नाम नै आन नाम इतिहास बनबै लेल गेल गेल। चेतना समिति (गौरीनाथक सूचनाक अनुसार) जखन गौरीनाथ, अग्निपुष्प आ प्रदीप बिहारी पर लिखित प्रतिबन्ध लगेलक तकरार बाद बिहारी द्वारा लिखित माफी ऐ मैरेज हॉल (चेतना समिति) सँ माँगल गेल, फेर हुनका रचना लेल नै, वरन ऐ कृत्य लेल अकादमी पुरस्कार देल गेल आ ओ सेहो ऐ मैरेज हॉलक प्रतिनिधि भ' गेला। फेर ई तिकड़ी श्याम देवघरे संग मिलि कऽ सगर रातिमे की सभ केलक से रमणक जातिवादी इतिहासमे नै भेटत।

की छल ओइ सगर रातिक रजिस्टरमे जकरा रमण कहि रहल छथि जे विभारानी हेरा देलन्हि। की ई रजिस्टर हेरा गेल बा हेरा जाइ देल गेल। मुदा किछु गप जे नै रमणकेँ बुझा छन्हि ने विभा। रानीकेँ से अछि जे आरती कुमारी अपन मृत्युसँ २-३ दिन पहिने ओकर फोटो स्टेट उमेश मण्डलकेँ पठा देलखिन्ह। ओ चाहितथि तँ कोने झारे झाकेँ सेहो पठा सकैत रहथि, मुदा हुनका झारेझा सभपर विश्वास नै छलन्हि, किए नै छलन्हि? कहल गेल छे जे शोनित अपन निशान छोड़ते अछि। शीघ्र सगर रातिक असली इतिहास।

दरभंगा बला गोष्ठी, जे ३१ म इ २०१४ केँ दरिहरे- रमण- बिहारी द्वारा साहित्य अकादेमी आ ओकरा द्वारा मान्यता प्राप्त फर्जी मैथिली संस्था सभक संग रमण-दरिहरे-बिहारी सन - सन जातिवादी ब्राहमणवादी-कायस्थवादी तथाकथित साहित्यकार सभ द्वारा प्रायोजित रहत, आ अ ो ए े तरहक (दिल्लीक बाद) दोसर गोष्ठी रहत जकरा रमण-दरिहरे-बिहारी ८३म गोष्ठी सेहो कहता। अ ोतए "राडक़ सुख बलाय " आदि कथाक वाचन हएत। मेहथ बला गोष्ठी मे रमण-दरिहरे-बिहारी सन जातिवादी ब्राहमणवादी-कायस्थवादी प्रतिबन्धित छथि।

कहल जाइ छै जे सगर राति दीप जरय नव कथाकारक लेल ट्रेनिंग सदृश अछि। नव कथाकार कलमाएल जाइ छथि! मुदा सत्य की अछि? की एंकर प्रवृत्ति साहित्य अकादेमीसँ भिन्न अछि? की ऐपर कब्जा लेल साहित्ये अकादमी सन छल प्रपंच नै होइ छल!

आ ७९म सगर रातिक हीरन्द्र झा आदि द्वारा बहिष्कार आ रमणक ओतै जातिवादी उद्घोष उमेश पासवानक नै, मैथिलीक विरोध छल, कब्जाक राजनीतिक प्रारम्भ ७९म सगर रातिसँ पहिनहियो छल। ७४म सगर राति -हज़ारीबागमे प्रदीप बिहारी माला उठेबाक प्रस्ताव केलन्हि आ से छल मात्र दोसराक प्रस्ताव खसेबा लेल। अपन ग्रुपक क़ब्जा लेल मात्र ई प्रस्ताव छल। ओ अपन प्रस्ताव अपन ग्रुपक पक्षमे आपिस ल' लेलन्हि। ओ ई नाटक ७५म सगर रातिमे सेहो केलन्हि। तँ की ऐ ब्लैकमेलिंगक धंधामे हुनकर उपयोग कएल जा रहल छन्हि आकि ओ ऐ ब्लैकमेलिंगक धंधाक मुख्य कलाकार छथि? हुनकर रचनामे जान नै छन्हि मुदा घृणित राजनीतिमे जान छन्हि। आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार एहने गुणपर देल जाइ छै, से चेतना समितिसँ माफी मांगि पएर पकड़ि ओ निर्लज्जतापूर्वक

लेलन्हि। से ओ ऐ ब्लैकमेलिंग धंधाक मुख्य कलाकार छथि जकरा बुझल छै जे नीक रचना लिखबापर ध्यान देनाइ मूर्खता छै, ओइसँ प्राइज नै भेटै छै, साहित्य अकादेमी लेल जोड़-तोड़ चाही आ ओइमे ओ मास्टर छथि, मैथिली गेल तेलहण्डामे।

आ ऐ परिस्थिति मे नव कथाकारक ट्रेनिंग नै भेलै, जतेक लोक सगर रातिसँ जुड़ला ओइसँ बेसी हतोत्साहित कऽ मैथिली साहित्यसँ दूर कऽ देल गेला, नेट रिजल्ट माइनसमे रहल!

बहिष्कारक राजनीतिसँ सुपौल, देवघर आ नरहनक गोष्ठी प्रभावित रहल तँ कब्जाक राजनीतिक अन्तर्गत काठमाण्डूक सगर रातिमे कोनो स्थानीय साहित्यकारकेँ धीरेन्द्र प्रेम र्षि हवा नै लाग' देलखिन्ह जे एहन कोनो गोष्ठी हुअएबला अछि, मनोज मुक्ति ई सूचित करै छथि।

अशोक अविचल, श्याम दरिहरे, रमण आदि देवघरक आयोजक ओमप्रकाश झापर साहित्य अकादेमीक गोष्ठी कैँ सगर रातिक मान्यता देबा लेल ब्लैकमेलिंगक कऽ ई शर्त रखलन्हि जे तखने ओ संभ ऐमे सम्मिलित हेता आ नै तँ बहिष्कार करता। मुदा आरती कुमारीक हत्याक बाद ई पहिल मौका छल बलैकमेलर सभकेँ हरदा बजेबाक; आ समीक्षा-प्रतिसमीक्षासँ बढ़ैत ई गोष्ठी अभूतपूर्व सफलता प्राप्त केलक, बलैकमेलर सभक बहिष्कार ओकरा आर सबल बनेलकै। दरिहरे आयोजककेँ कहलन्हि जे साहित्य अकादेमीक गोष्ठी कैँ मान्यता सगर रातिक रूपये भेटए, तइ लेल मैथिली लेखक संघ, पटनाक बैसकीमे रमणक कहलासँ ओ ऐलेल फ़ोन केलखिन्ह। अविचल सेहो आयोजककेँ सएह कहलखिन्ह।

देवघर गोष्ठी ट्रेनिंग स्कूल सिद्ध भेल, रमण, दरिहरे आ बिहारी अबितथि तँ सिखितथि जे केना रचनामे ओ क्वालिटी आनि सकै छथि, मुदा ओ सभ प्रैक्टिकल छथि, बुझल छन्हि प्राइज़ टा लेल लिखल जाइ छै आ से जोड़-तोड़सँ भेटै छै, क्वालिटीसँ नै, अविचल मे प्रतिभा लेशो मात्र नै छन्हि, हुनका कोनो ट्रेनिंग किछु नै द' सकतन्हि, से ओ नै आबि अपन टाइम बचेलथि आ से नीके केलथि।

सगर राति दीप जरयमे कव्ालिटी आबि जाएत तँ बिहारी-दरिहरे-रमण सन मेडियोकरकेँ के पूछत, से ओ सभ राड़केँ सुख बलायक लेखकक संग दोसर साहित्य अकादेमी गोष्ठी करता जत' ब्राह्मण युवा सभकेँ राड़केँ सुख बलाय सन् नीक कथा केना लिखल जाए तकर ट्रेनिंग रमण-बिहारी-दरिहरे द्वारा देल जाएत। नीके अछि, मूर्ख सभक प्रवेश सगर रातिमे थम्हत। आ परोक्ष रूपेँ ऐ लेल मैथिली साहित्य रमण-बिहारी-दरिहरेक आभारी रहत।

दरिहरे-बिहारी-रमणक बहिष्कारक रणनीति द्वारा सगर रातिपर कब्जाक राजनीति आरती कुमारीक संग भागलपुरमे चलि सकल मुदा वएह राजनीति २ सालक बाद देवघरमे तेनाकेँ फ़ेल भेल जे ओ सभ पहिने सगर रातिसँ पलायन केलन्हि आ फेर निकालि देल गेला। ब्राहम्णवादी भाषाक रूपमे विश्वमे ख्यात ऐ साहित्यमे कोन प्रक्रिया चलि रहल अछि जे ई संभव केलक? सगर राति दीप जरयक ब्राहम्णवादी अनुष्ठानकेँ एकर स्वयंभू पुरोहित सभ द्वारा आरती कुमारीक बलि देल जा चुकल छल। भयक ऐ वातावरणमे ई परिवर्तन केना भेल जे रमण-बिहारी-दरिहरे नै बूझि सकला?

मैथिली भाषाक ब्राह्मणवादी चरित्रमे भाषाक संग ख़ूब खेल खेलाएल गेल छै। राड़क मतलब एत' छै (ब्राहम्णक नजरिमे) भुमिहार, राजपूत, कायस्थ सहित सभ आन जाति। अपन बच्चाकेँ यौ आ राड़क बुढ़बाकेँ हौ! कहबी मे सेहो बेइमानी, जेना- दस ब्राहम्ण दस पेट, दस राड़ एक पेट! मुदा हमर माँ कहै छथि जे ई कहबी मात्र ब्राहम्णमे छै, आन सभ कहै छथि- दस राड़ दस पेट, दस ब्राह्मण एक पेट। मुदा बिहारी सन मेडियोकर साहित्यकारकेँ ई सभ गप नै बुझल छन्हि- ओ बुझै छथि जे राड़केँ सुख बलाय तँ जगदीश प्रसाद मण्डलपर रमण-बिहारी-दरिहरे लिखबेने छथि। रमण आ दरिहरे तँ ठीक सोचै छथि मुदा बिहारी तँ कायस्थ छथि आ दरिहरे-रमणक परिभाषा अनुसार राड़केँ सुख बलाय जगदीश प्रसाद मण्डलक अतिरिक्त हुनके टा पर नै वरण समस्त मिथिलाक गएर ब्राहम्णकेँ देल गारि अछि।

२०. डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'

सारांश

डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'- लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा (मैथिली–ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलन) लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा समीक्ष्य पोथी: अंगिका बाल-साहित्य · लेखक: डॉ. अमरेन्द्र · समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण: २०२२

बीजशब्द: डॉ · अमरेन्द्रक · अंगिका · बाल · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय "डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'" विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर- डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'- लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा (मैथिली–ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलन) समीक्ष्य पोथी: अंगिका बाल-साहित्य · लेखक: डॉ. अमरेन्द्र · समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण: २०२२ मैथिली — डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' सामान्य अर्थमे बाल-पोथीसभक सूची, रचनाकार-परिचय अथवा कालक्रम-मात्र नहि अछि। एकर पैघ प्रयत्न ई बुझब अछि जे अंगिका भाषिक समाजमे बालक साहित्यसँ पहिल परिचय कतऽ आ कोना करैत अछि, आ ओहि आरम्भिक मौखिक-सांस्कृतिक अनुभवसँ आधुनिक मुद्रित बाल-साहित्य धरि कोन निरन्तरता बनैत अछि।

डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य'- लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा (मैथिली–ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलन)

लोकस्मृतिसँ आधुनिक बाल-सृजन धरि: चतुर्आयामी समग्र समीक्षा

(मैथिली–ठेठी-अंगिका समानान्तर अनुशीलन)

समीक्ष्य पोथी: अंगिका बाल-साहित्य · लेखक: डॉ. अमरेन्द्र · समीक्षा प्रकाशन, दिल्ली/मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण: २०२२

पृष्ठ: ११२ · मूल्य: दू सय टाका

1. प्रस्तावना: बाल-साहित्यक इतिहास नहि, सांस्कृतिक वंशावली

ठेठी-अंगिका: 1. प्रस्तावना: बाल-साहित्य के इतिहास नै, सांस्कृतिक वंशावली

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' सामान्य अर्थमे बाल-पोथीसभक सूची, रचनाकार-परिचय अथवा कालक्रम-मात्र नहि अछि। एकर पैघ प्रयत्न ई बुझब अछि जे अंगिका भाषिक समाजमे बालक साहित्यसँ पहिल परिचय कतऽ आ कोना करैत अछि, आ ओहि आरम्भिक मौखिक-सांस्कृतिक अनुभवसँ आधुनिक मुद्रित बाल-साहित्य धरि कोन निरन्तरता बनैत अछि। एहि कारण ई पोथी इतिहास लिखबाक संगहि एक प्रकारक सांस्कृतिक वंशावली तैयार करैत अछि: मातृक कण्ठक लोरी, शिशु-ध्वनि, पहेली, खेलगीत, लोककथा, परिवार आ आँगनक सामूहिक अनुभवसँ आधुनिक कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आ जीवनी धरि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के 'अंगिका बाल-साहित्य' सामान्य अर्थ में बाल-पोथी सिनी के सूची, रचनाकार-परिचय अथवा कालक्रम-मात्र नै छै। एकर बड़का प्रयत्न ई बुझब छै जे अंगिका भाषिक समाज में बालक के साहित्य सें पहिल परिचय कहाँ आरो केना करै छै, आरो ओही आरम्भिक मौखिक-सांस्कृतिक अनुभव सें आधुनिक मुद्रित बाल-साहित्य तक कोन निरन्तरता बनै छै। ई कारण ई पोथी इतिहास लिखै के संगें एक प्रकार के सांस्कृतिक वंशावली तैयार करै छै: माय के कण्ठ के लोरी, शिशु-ध्वनि, पहेली, खेलगीत, लोककथा, परिवार आरो आँगन के सामूहिक अनुभव सें आधुनिक कविता, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध आरो जीवनी तक।

मैथिली —ग्रन्थक विषय-क्रम स्वयं एहि दृष्टिक पुष्टि करैत अछि। पहिल भाग 'अंगिका-बाल-लोकसाहित्य' पृष्ठ 8–42 धरि पसरल अछि, जखन दोसर, बहुत पैघ भाग 'आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य' पृष्ठ 43–112 धरि। अन्तिम पृष्ठसभ सन्दर्भ आ पत्रिका-सूची लेल अछि। एहि स्थापत्यक अर्थ ई अछि जे लेखक आधुनिक लिखित बाल-साहित्यकेँ शून्यमे जन्मल उपलब्धि नहि मानैत छथि; ओकर भाषिक लय, कथात्मक ढाँचा, खेलधर्मिता, मनोरञ्जन आ सामुदायिक स्मृतिक मूल लोकपरम्परामे देखैत छथि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ के विषय-क्रम अपने ई दृष्टि के पुष्टि करै छै। पहिल भाग 'अंगिका-बाल-लोकसाहित्य' पृष्ठ 8–42 तक पसरलों छै, जबें दोसर, बहुत बड़का भाग 'आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य' पृष्ठ 43–112 तक। अन्तिम पृष्ठ सिनी सन्दर्भ आरो पत्रिका-सूची लेली छै। ई स्थापत्य के अर्थ ई छै जे लेखक आधुनिक लिखित बाल-साहित्य कें शून्य में जन्मलों उपलब्धि नै मानै छै; ओकर भाषिक लय, कथात्मक ढाँचा, खेलधर्मिता, मनोरञ्जन आरो सामतरकियिक स्मृति के मूल लोकपरम्परा में देखै छै।

मैथिली —आधुनिक बाल-साहित्य-अध्ययनक व्यापक परिप्रेक्ष्यमे सेहो ई स्थापना अर्थवान अछि। Kimberley Reynolds प्रत्येक नब पीढ़ीक साहित्यिक परम्परामे प्रवेशमे मौखिक रूपेँ चलि आबि रहल कथा-संसारक महत्त्व चिन्हित करैत छथि। एहि तुलनात्मक आलोकमे डॉ. अमरेन्द्रक लोकसाहित्यसँ आधुनिक सृजन धरि बनाओल क्रम स्थानीय सामग्रीसँ उपजल स्वतंत्र आलोचनात्मक सूझ प्रतीत होइत अछि। पोथीक स्थायी महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई बाल-साहित्यक इतिहास लिखैत काल बालकक वास्तविक सांस्कृतिक जीवनकेँ केन्द्र बनबैत अछि; घर, माँ, दादी, खेलक साथी, पशु-पक्षी, खेत-पथार, वर्षा, नदी, भोजन, नींद, भय, हँसी, तुक आ शरीरक गति साहित्यिक इतिहासक वैध सामग्री बनि जाइत अछि।

ठेठी-अंगिका —आधुनिक बाल-साहित्य-अध्ययन के व्यापक परिप्रेक्ष्य में भी ई स्थापना अर्थवान छै। Kimberley Reynolds प्रत्येक नब पीढ़ी के साहित्यिक परम्परा में प्रवेश में मौखिक रूपेँ चलि आबि रहल कथा-संसार के महत्त्व चिन्हित करै छै। ई तुलनात्मक आलोक में डॉ. अमरेन्द्र के लोकसाहित्य सें आधुनिक सृजन तक बनावलों क्रम स्थानीय सामग्री सें उपजलों स्वतंत्र आलोचनात्मक सूझ प्रतीत होय छै। पोथी के स्थायी महत्त्व ई बात में छै जे ई बाल-साहित्य के इतिहास लिखै काल बालक के वास्तविक सांस्कृतिक जीवन कें केन्द्र बनावै छै; घर, माँ, दादी, खेल के साथी, पशु-पक्षी, खेत-पथार, वर्षा, नदी, भोजन, नींद, भय, हँसी, तुक आरो शरीर के गति साहित्यिक इतिहास के वैध सामग्री बनि जाय छै।

आमुख: चारि प्रकाश-कोण

ठेठी-अंगिका: आमुख: चार रौशनी-कोन

मैथिली —विदेह जाहि समान्तर-साहित्य-दृष्टिक वाहक थिक, ताहिमे कोनो भाषाक बाल-साहित्य 'लघु' नहि होइत—जे परम्परा संस्थागत इतिहासक हाशिया पर धकेलल गेल, ओकरे प्रति समान समीक्षकीय गम्भीरता एहि आन्दोलनक मूल प्रतिज्ञा थिक। एहि दृष्टिएँ डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' केँ हम चारि आयाम—रस-ध्वनि-वक्रोक्तिमूलक भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्यायमूलक ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप—सँ जाँचि रहल छी। ई चारू दृष्टि एक-दोसरक विरोधी नहि, अपितु एके पाठक चारि प्रकाश-कोण थिक, जे मिलिकए ओकर पूर्ण रूप उघारैत अछि।

ठेठी-अंगिका —विदेह जे समान्तर-साहित्य के नजर के वाहक छै, ओकरा में कोय भाषा के बाल-साहित्य 'छोटका' नै होय छै—जे परम्परा के संस्थागत इतिहास हाशिया पर ढकेली देलकै, वहीं के प्रति ओतने समीक्षकीय गम्भीरता ई आन्दोलन के मूल परन छै। एहि नजर सें डॉ. अमरेन्द्र के 'अंगिका बाल-साहित्य' के हम चार आयाम—रस-ध्वनि-वक्रोक्ति वाला भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, नव्य-न्याय वाला ज्ञानमीमांसा, आरो विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप—सें जाँची रहलों छी। ई चारू नजर एक-दोसरा के दुश्मन नै, बल्कि एके पाठ के चार रौशनी-कोन छै, जे मिली कें ओकर पूरा रूप उघारी दै छै।

परिचय आ पृष्ठभूमि

ठेठी-अंगिका: परिचय आरो पिछुलका बात

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक ई पोथी अंगिका बाल-साहित्यक एकटा समग्र सर्वेक्षण थिक, जकर विशेषता एहिमे अछि जे ई विधाक लोक-मूल आ आधुनिक—दुनू छोर केँ एके सूत्रमे बान्हि कए देखबाक प्रयास करैत अछि। लेखक स्वयं "आत्मकथन" मे नम्रतापूर्वक स्वीकार कएने छथि जे ई कोनो स्वतंत्र रूपसँ लिखल पोथी नहि, अपितु डॉ. सुरेश गौतम आ डॉ. वीणा गौतमक संपादनमे प्रकाशित "भारतीय बाल-लोकसाहित्य कोश" आ "भारतीय लोरी-साहित्य कोश" लेल समय-समय पर लिखल आलेख-सभक संग्रह थिक। एहि आत्म-स्वीकृतिक अन्तमे लेखकक ई मान्यता समीक्षा-दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि जे जे कमी एहिमे रहि गेल अछि, इएह कमी आगाँ अंगिका बाल-साहित्य पर बेसी लिखबाक मार्ग खोलत। एहिविनम्र स्वीकृतिमे पोथीक वास्तविक प्रकृति—एकटा प्रारम्भ-बिन्दु, न कि अन्तिम शब्द—पहिनहिं स्पष्ट भ' जाइत अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के ई पोथी अंगिका बाल-साहित्य के एगो पूरा सर्वेक्षण छै, जेकर खासियत ई छै कि ई विधा के लोक-मूल आरो आधुनिक—दुन्नु छोर के एके सूत्र में बान्ही कें देखै के कोसिस करै छै। लेखक अपने "आत्मकथन" में नरमी सें मानी लै छै कि ई कोय अलगे सें लिखलों पोथी नै छै, बल्कि डॉ. सुरेश गौतम आरो डॉ. वीणा गौतम के संपादन में छपलों "भारतीय बाल-लोकसाहित्य कोश" आरो "भारतीय लोरी-साहित्य कोश" लेली समय-समय पर लिखलों आलेख सिनी के संग्रह छै। ई स्वीकृति के आखिर में लेखक के ई मानब समीक्षा के नजर सें जरूरी छै कि जे कमी एकरा में रही गेलै, वहै कमी आगू अंगिका बाल-साहित्य पर बेसी लिखै के रास्ता खोलतै। ई नरम स्वीकृति में पोथी के असली रूप—एगो सुरू के बिन्दु, नै कि आखिरी बात—पहिनहिं साफ होय जाय छै।

मैथिली —साहित्य कोनो समाजक, भाषिक समुदायक आ ओकर सांस्कृतिक धरोहरक जीवन्त दर्पण होइत अछि। जखन बात बाल-साहित्यक होइत अछि, तँ ई मात्र किछु कथा आ गप-शपक सङ्ग्रह नहि रहि जाइत अछि, अपितु ई नव पीढ़िक मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आ चारित्रिक निर्माणक एकटा सशक्त आधारशिला बनि जाइत अछि। प्रस्तुत समीक्षात्मक आलेखमे अंगिका भाषाक मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. अमरेन्द्र द्वारा रचित आ सम्पादित ग्रन्थ 'अंगिका बाल-साहित्य' क विस्तृत साहित्यिक, भाषिक आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण कएल गेल अछि। समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर/दिल्ली द्वारा प्रकाशित ई पोथी अंगिका बाल-साहित्यक विकास-यात्रा, ओकर लोक-परम्परा आ आधुनिक प्रवृत्तिकेँ बुझबाक लेल एकटा विश्वकोश जकाँ अछि।

ठेठी-अंगिका —साहित्य कोनो समाज के, भाषिक समुदाय के आरो ओकर सांस्कृतिक धरोहर के जीवन्त दर्पण होय छै। जबें बात बाल-साहित्य के होय छै, तें ई मात्र कुछु कथा आरो गप-शपक सङ्ग्रह नै रहि जाय छै, बल्कि ई नया पीढ़ी के मनोवैज्ञानिक, सामाजिक आरो चारित्रिक निर्माण के एगो सशक्त आधारशिला बनि जाय छै। प्रस्तुत समीक्षात्मक आलेख में अंगिका भाषा के मूर्धन्य साहित्यकार डॉ. अमरेन्द्र द्वारा रचित आरो सम्पादित ग्रन्थ 'अंगिका बाल-साहित्य' के विस्तृत साहित्यिक, भाषिक आरो मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करलों गेलों छै। समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर/दिल्ली द्वारा प्रकाशित ई पोथी अंगिका बाल-साहित्य के विकास-यात्रा, ओकर लोक-परम्परा आरो आधुनिक प्रवृत्तिकेँ बुझै लेली एगो विश्वकोश जेना छै।

अंगिका आ मैथिलीक भाषिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

ठेठी-अंगिका: अंगिका आरो मैथिली के भाषिक-सांस्कृतिक सम्बन्ध आरो ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

मैथिली —अंगिका आ मैथिलीक बीचक सम्बन्ध अत्यन्त प्रगाढ़ आ ऐतिहासिक रहल अछि। भाषाविद् जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' (१९०३) मे अंगिका (जकरा ओ 'छिका-छिकी' कहलन्हि) केँ मैथिलीक एकटा उपबोलीक रूपमे वर्गीकृत केने छलाह। मुदा पण्डित राहुल सांकृत्यायन आ बादकभाषा-आन्दोलनकारी लोकनि एकरा एकटा स्वतन्त्र भाषाक दर्जा देलन्हि। डॉ. शोभा कुमारीक 'अंगिका साहित्य का इतिहास' सेहो एकरा एकटा समृद्ध परम्पराक भाषा मानैत अछि। एहि भाषाक प्राचीनतम साहित्यिक प्रमाण ७म शताब्दीक बौद्ध सिद्ध (लुइपा, भुसुकुपा, कान्हपा) द्वारा रचित 'चर्यापद' मे भेटैत अछि। भारतक २६ जिला (बिहार, झारखण्ड, आ पश्चिम बङ्गाल) मे लगभग ६ करोड़ लोक द्वारा बाजल जाए वला एहि भाषाक लोक-साहित्य अत्यन्त समृद्ध अछि। एहि कारणेँ एकटा अंगिका पोथीक मैथिलीमे समीक्षा करब दुनू सहोदर भाषिक परम्पराकेँ आ समीप लाबब अछि।

ठेठी-अंगिका —अंगिका आरो मैथिली के बीचक सम्बन्ध बहुत प्रगाढ़ आरो ऐतिहासिक रहल छै। भाषाविद् जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन अपन 'लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया' (१९०३) में अंगिका (जेकरा ऊ 'छिका-छिकी' कहलकै) कें मैथिली के एगो उपबोली के रूप में वर्गीकृत केने छेलै। मतरकि पण्डित राहुल सांकृत्यायन आरो बादक भाषा-आन्दोलनकारी लोग सिनी एकरा एगो स्वतन्त्र भाषा के दर्जा देलकै। डॉ. शोभा कुमारीक 'अंगिका साहित्य का इतिहास' भी एकरा एगो समृद्ध परम्परा के भाषा मानै छै। ई भाषा के सभसें पुरान साहित्यिक प्रमाण ७म शताब्दीक बौद्ध सिद्ध (लुइपा, भुसुकुपा, कान्हपा) द्वारा रचित 'चर्यापद' में मिलै छै। भारतक २६ जिला (बिहार, झारखण्ड, आरो पश्चिम बङ्गाल) में लगभग ६ करोड़ लोक द्वारा बाजल जाए वाला ई भाषा के लोक-साहित्य बहुत समृद्ध छै। ई कारणेँ एगो अंगिका पोथी केमैथिली में समीक्षा करब दूनो सहोदर भाषिक परम्परा कें आरो समीप लाबै के काम करै छै।

पृष्ठ १-११४: अन्तर्वस्तु-समीक्षा सार

ठेठी-अंगिका: पृष्ठ १-११४: अन्तर्वस्तु-समीक्षा सार

मैथिली — क्रम · पृष्ठ · खण्ड/विधा · मूल ग्रन्थमे सामग्री · परीक्षण/प्रश्न · निष्कर्ष

ठेठी-अंगिका — क्रम · पृष्ठ · खण्ड/विधा · मूल ग्रन्थ में सामग्री · परीक्षण/सवाल · निष्कर्ष

मैथिली — १. पृष्ठ १–४ — मुखपृष्ठ/प्रकाशन। मूल सामग्री: शीर्षक, लेखक, प्रथम संस्करण २०२२ आ प्रकाशक। परीक्षण: भारतवाणीक २०२२ प्रविष्टिमे लेखक अमरेन्द्र, भाषा हिन्दी/अंगिका आ प्रकाशक समीक्षा प्रकाशनक स्वतंत्र पुष्टि भेटैत अछि। निष्कर्ष: प्रकाशन-तथ्य पुष्ट अछि।

ठेठी-अंगिका — १. पृष्ठ १–४ — मुखपृष्ठ/प्रकाशन। मूल सामग्री: शीर्षक, लेखक, प्रथम संस्करण २०२२ आरो प्रकाशक। परीक्षण: भारतवाणी के २०२२ प्रविष्टि में लेखक अमरेन्द्र, भाषा हिन्दी/अंगिका आरो प्रकाशक समीक्षा प्रकाशन के स्वतंत्र पुष्टि मिलै छै। निष्कर्ष: प्रकाशन-तथ्य पुष्ट छै।

मैथिली — २. पृष्ठ ५–६ — समर्पण/आत्मकथन। मूल सामग्री: पूर्व प्रकाशित वा सम्पादित आलेखसभक संशोधित-संयोजित रूप; सम्भावित कमी स्वीकारल गेल अछि। परीक्षण: संकलनात्मक निर्माण सामग्री बढ़बैत अछि, मुदा पुनरावृत्ति सेहो अनैत अछि। निष्कर्ष: निर्माण-पद्धति शक्ति आ सीमा दुनू अछि।

ठेठी-अंगिका — २. पृष्ठ ५–६ — समर्पण/आत्मकथन। मूल सामग्री: पहिने प्रकाशित वा सम्पादित आलेख सिनी के संशोधित-संयोजित रूप; सम्भावित कमी स्वीकारल गेल छै। परीक्षण: संकलनात्मक निर्माण सामग्री बढ़ावै छै, मतरकि पुनरावृत्ति भी अनै छै। निष्कर्ष: निर्माण-पद्धति शक्ति आरो सीमा दूनो छै।

मैथिली — ३. पृष्ठ ७ — विषय-क्रम। मूल सामग्री: दू भाग—बाल-लोकसाहित्य पृष्ठ ८–४२ आ आधुनिक बाल-साहित्य पृष्ठ ४३–११२। परीक्षण: मौखिक परम्परासँ आधुनिक मुद्रित साहित्य धरि विकास-रेखा बनैत अछि। निष्कर्ष: सांस्कृतिक वंशावली ग्रन्थक मूल संरचना अछि।

ठेठी-अंगिका — ३. पृष्ठ ७ — विषय-क्रम। मूल सामग्री: दू भाग—बाल-लोकसाहित्य पृष्ठ ८–४२ आरो आधुनिक बाल-साहित्य पृष्ठ ४३–११२। परीक्षण: मौखिक परम्परा सें आधुनिक मुद्रित साहित्य तक विकास-रेखा बनै छै। निष्कर्ष: सांस्कृतिक वंशावली ग्रन्थ के मूल संरचना छै।

मैथिली — ४. पृष्ठ ८–९ — बाल-मन/लोरी। मूल सामग्री: कल्पना, तर्क, जिद, खेल, चित्र-संगीत; प्रत्यक्ष उपदेश गौण। परीक्षण: एवर्स आ रेनॉल्ड्सक बाल-केन्द्रित दृष्टिसँ तुलनात्मक संवाद सम्भव अछि। निष्कर्ष: बाल-मन पोथीक केन्द्रीय कसौटी अछि।

ठेठी-अंगिका — ४. पृष्ठ ८–९ — बाल-मन/लोरी। मूल सामग्री: कल्पना, तर्क, जिद, खेल, चित्र-संगीत; प्रत्यक्ष उपदेश गौण। परीक्षण: एवर्स आरो रेनॉल्ड्स के बाल-केन्द्रित दृष्टि सें तुलनात्मक संवाद सम्भव छै। निष्कर्ष: बाल-मन पोथी के केन्द्रीय कसौटी छै।

मैथिली — ५. पृष्ठ १०–११ — पहेली। मूल सामग्री: एकपदीसँ चतुष्पदी; बौद्धिक खेल, किशोर धरि ग्रहण। परीक्षण: वर्गीकरण समृद्ध, मुदा सूक्ष्म पाठालोचन सीमित। निष्कर्ष: भाषा-कौशल, स्मृति आ खेलक संगम।

ठेठी-अंगिका — ५. पृष्ठ १०–११ — पहेली। मूल सामग्री: एकपदी सें चतुष्पदी; बौद्धिक खेल, किशोर तक ग्रहण। परीक्षण: वर्गीकरण समृद्ध, मतरकि सूक्ष्म पाठालोचन सीमित। निष्कर्ष: भाषा-कौशल, स्मृति आरो खेल के संगम।

मैथिली — ६. पृष्ठ १२–१४ — तुक्तक/शिशु-काव्य। मूल सामग्री: अर्थक अपेक्षा ध्वनि, तुक आ उच्चारण-आनन्द प्रमुख। परीक्षण: कविता कोश आ अंगिका. कॉम पर ‘तुक्तक-मुक्तक’ क स्वतंत्र उपस्थिति दर्ज अछि। निष्कर्ष: ध्वनि स्वयं बाल-सौन्दर्यक मूल तत्त्व अछि।

ठेठी-अंगिका — ६. पृष्ठ १२–१४ — तुक्तक/शिशु-काव्य। मूल सामग्री: अर्थ के अपेक्षा ध्वनि, तुक आरो उच्चारण-आनन्द प्रमुख। परीक्षण: कविता कोश आरो अंगिका. कॉम पर ‘तुक्तक-मुक्तक’ के स्वतंत्र उपस्थिति दर्ज छै। निष्कर्ष: ध्वनि अपने बाल-सौन्दर्य के मूल तत्त्व छै।

मैथिली — ७. पृष्ठ १५–२४ — खेलगीत। मूल सामग्री: ऐच्छिक, प्रतिस्पर्धात्मक आ बौद्धिक खेलगीत; सामूहिक प्रस्तुति। परीक्षण: शब्द सुरक्षित अछि, मुदा धुन, देह-चाल, खेल-नियम आदि सहायक विवरण कम अछि। निष्कर्ष: भविष्यक लेल दृश्य-श्रव्य अभिलेख आवश्यक।

ठेठी-अंगिका — ७. पृष्ठ १५–२४ — खेलगीत। मूल सामग्री: ऐच्छिक, प्रतिस्पर्धात्मक आरो बौद्धिक खेलगीत; सामूहिक प्रस्तुति। परीक्षण: शब्द सुरक्षित छै, मतरकि धुन, देह-चाल, खेल-नियम आदि सहायक विवरण कम छै। निष्कर्ष: आगू लेल दृश्य-श्रव्य अभिलेख जरूरी छै।

मैथिली — ८. पृष्ठ २५–३७ — बाल-लोककथा। मूल सामग्री: मौखिक संचरण, रूप-परिवर्तन, पशु-पक्षी, नीति आ चमत्कार। परीक्षण: एक निश्चित मूल-पाठक बदला पाठान्तर महत्त्वपूर्ण अछि। निष्कर्ष: पोथी एकटा पाठ-संग्रह बनबैत अछि; कथाविज्ञान आगाँक काज अछि।

ठेठी-अंगिका — ८. पृष्ठ २५–३७ — बाल-लोककथा। मूल सामग्री: मौखिक संचरण, रूप-परिवर्तन, पशु-पक्षी, नीति आरो चमत्कार। परीक्षण: एक निश्चित मूल-पाठ के बदला पाठान्तर महत्त्वपूर्ण छै। निष्कर्ष: पोथी एगो पाठ-संग्रह बनावै छै; कथाविज्ञान आगू के काज छै।

मैथिली — ९. पृष्ठ ३८–४२ — अन्तरभाषिक लोककथा। मूल सामग्री: अन्य भारतीय भाषासँ अनुवाद/रूपान्तरण; पर्यावरणीय प्रसंग। परीक्षण: अनुवाद भाषा-विस्तारक साधन अछि, मुदा स्रोत-पाठ आ लक्ष्य-पाठक तुलना कम अछि। निष्कर्ष: अनुवाद साहित्यिक क्षेत्र-विस्तारक प्रक्रिया अछि।

ठेठी-अंगिका — ९. पृष्ठ ३८–४२ — अन्तरभाषिक लोककथा। मूल सामग्री: आन भारतीय भाषा सें अनुवाद/रूपान्तरण; पर्यावरणीय प्रसंग। परीक्षण: अनुवाद भाषा-विस्तारक साधन छै, मतरकि स्रोत-पाठ आरो लक्ष्य-पाठ के तुलना कम छै। निष्कर्ष: अनुवाद साहित्यिक क्षेत्र-विस्तारक प्रक्रिया छै।

मैथिली — १०. पृष्ठ ४३ — आधुनिक खण्डक भूमिका। मूल सामग्री: आधुनिक श्रेष्ठ बाल-साहित्यक जड़ लोकक रूप, रस आ गतिमे। परीक्षण: रेनॉल्ड्सक मौखिकसँ लिखित साहित्यक संक्रमण सम्बन्धी दृष्टिसँ तुलनात्मक साम्य। निष्कर्ष: लोक आ आधुनिकता रूपान्तरित निरन्तरता अछि।

ठेठी-अंगिका — १०. पृष्ठ ४३ — आधुनिक खण्ड के भूमिका। मूल सामग्री: आधुनिक श्रेष्ठ बाल-साहित्य के जड़ लोक के रूप, रस आरो गति में। परीक्षण: रेनॉल्ड्स के मौखिक सें लिखित साहित्य के संक्रमण वाली दृष्टि सें तुलनात्मक साम्य। निष्कर्ष: लोक आरो आधुनिकता रूपान्तरित निरन्तरता छै।

मैथिली — ११. पृष्ठ ४४–५० — अनुवादित बाल-कथा। मूल सामग्री: संस्कृत, जातक, बाइबिल आदि कथा-परम्पराक चर्चा। परीक्षण: ऐतिहासिक सूची समृद्ध; तुलनात्मक अनुवाद-विश्लेषण अपेक्षित। निष्कर्ष: आधुनिक लिखित बाल-गद्यक निर्माणमे अनुवाद महत्त्वपूर्ण।

ठेठी-अंगिका — ११. पृष्ठ ४४–५० — अनुवादित बाल-कथा। मूल सामग्री: संस्कृत, जातक, बाइबिल आदि कथा-परम्परा के चर्चा। परीक्षण: ऐतिहासिक सूची समृद्ध; तुलनात्मक अनुवाद-विश्लेषण अपेक्षित। निष्कर्ष: आधुनिक लिखित बाल-गद्य के निर्माण में अनुवाद महत्त्वपूर्ण।

मैथिली — १२. पृष्ठ ५१–६० — बाल-उपन्यास। मूल सामग्री: 'बण्टा'; विद्यालय, परिवार, सामाजिक आ पर्यावरणीय अनुभव। परीक्षण: गद्य कोश पर 'बण्टा' क अंगिका पाठक डिजिटल उपस्थिति अछि। निष्कर्ष: उपन्यास बालकक विस्तृत सामाजिक संसार खोलैत अछि।

ठेठी-अंगिका — १२. पृष्ठ ५१–६० — बाल-उपन्यास। मूल सामग्री: 'बण्टा'; विद्यालय, परिवार, सामाजिक आरो पर्यावरणीय अनुभव। परीक्षण: गद्य कोश पर 'बण्टा' के अंगिका पाठ के डिजिटल उपस्थिति छै। निष्कर्ष: उपन्यास बालक के विस्तृत सामाजिक संसार खोलै छै।

मैथिली — १३. पृष्ठ ६१–७० — आधुनिक बालगीत। मूल सामग्री: खेलगीत, तुक-लय, अनेक कवि आ संग्रह। परीक्षण: अंगिका. कॉम अमरेन्द्रक पाँच संग्रह आ आन कविसभक उपस्थिति पुष्ट करैत अछि। निष्कर्ष: बाल-काव्य सर्वाधिक विकसित क्षेत्र।

ठेठी-अंगिका — १३. पृष्ठ ६१–७० — आधुनिक बालगीत। मूल सामग्री: खेलगीत, तुक-लय, अनेक कवि आरो संग्रह। परीक्षण: अंगिका. कॉम अमरेन्द्र के पाँच संग्रह आरो आन कवि सिनी के उपस्थिति पुष्ट करै छै। निष्कर्ष: बाल-काव्य सभसें विकसित क्षेत्र।

मैथिली — १४. पृष्ठ ७१–८० — प्रकृति/समाज/राष्ट्र। मूल सामग्री: प्रकृति, ऋतु, जीव-जगत, सामाजिकता, राष्ट्रबोध आ ज्ञान। परीक्षण: आधुनिक विषय-विस्तार स्पष्ट। निष्कर्ष: लोक-बिम्ब आ आधुनिक विषयक संयोग।

ठेठी-अंगिका — १४. पृष्ठ ७१–८० — प्रकृति/समाज/राष्ट्र। मूल सामग्री: प्रकृति, ऋतु, जीव-जगत, सामाजिकता, राष्ट्रबोध आरो ज्ञान। परीक्षण: आधुनिक विषय-विस्तार साफ छै। निष्कर्ष: लोक-बिम्ब आरो आधुनिक विषय के संयोग।

मैथिली — १५. पृष्ठ ८१–९१ — पर्यावरण/खण्डकाव्य। मूल सामग्री: पर्यावरण-शिक्षा, व्यक्तित्व, ज्ञान, नैतिकता आ खण्डकाव्य। परीक्षण: आरम्भिक प्रत्यक्ष उपदेश-विरोधी कसौटी आ बादक शिक्षामूलक प्रशंसाक बीच तनाव। निष्कर्ष: आनन्द बनाम शिक्षा मुख्य आलोचनात्मक प्रश्न।

ठेठी-अंगिका — १५. पृष्ठ ८१–९१ — पर्यावरण/खण्डकाव्य। मूल सामग्री: पर्यावरण-शिक्षा, व्यक्तित्व, ज्ञान, नैतिकता आरो खण्डकाव्य। परीक्षण: आरम्भिक प्रत्यक्ष उपदेश-विरोधी कसौटी आरो बाद के शिक्षामूलक प्रशंसा के बीच तनाव। निष्कर्ष: आनन्द बनाम शिक्षा मुख्य आलोचनात्मक सवाल।

मैथिली — १६. पृष्ठ ९२–९३ — ‘पंचामृत’/बाल-गजल। मूल सामग्री: पाँच बाल-काव्यरूप; बाल-गजल; अमरेन्द्र आ दिनेश बाबा। परीक्षण: विधागत प्रयोग लेल अलग शिल्प-कसौटी आवश्यक। निष्कर्ष: प्रौढ़ विधाक बालोपयोगी पुनर्संस्कार।

ठेठी-अंगिका — १६. पृष्ठ ९२–९३ — ‘पंचामृत’/बाल-गजल। मूल सामग्री: पाँच बाल-काव्यरूप; बाल-गजल; अमरेन्द्र आरो दिनेश बाबा। परीक्षण: विधागत प्रयोग लेल अलग शिल्प-कसौटी जरूरी। निष्कर्ष: प्रौढ़ विधा के बालोपयोगी पुनर्संस्कार।

मैथिली — १७. पृष्ठ ९४–९७ — बाल-कहानी। मूल सामग्री: काव्यक तुलनामे कम विकास; विविध कथा; अभावक स्पष्ट स्वीकार। परीक्षण: लेखकक आत्मालोचना इतिहासक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। निष्कर्ष: बाल-कहानी निर्माणाधीन क्षेत्र।

ठेठी-अंगिका — १७. पृष्ठ ९४–९७ — बाल-कहानी। मूल सामग्री: काव्य के तुलना में कम विकास; विविध कथा; अभाव के स्पष्ट स्वीकार। परीक्षण: लेखक के आत्मालोचना इतिहास के विश्वसनीयता बढ़ावै छै। निष्कर्ष: बाल-कहानी निर्माणाधीन क्षेत्र।

मैथिली — १८. पृष्ठ ९८–१०५ — बाल-नाटक/‘पंचगव्य’ । मूल सामग्री: एकांकी, सामाजिक समस्या, विज्ञान, बालिका-शिक्षा, चरित्र, संवाद आ व्यंग्य। परीक्षण: पुनर्पाठसँ नाटक अपेक्षाकृत विस्तृत सिद्ध होइत अछि। निष्कर्ष: बाल-नाटक नव संस्करणमे प्रमुख खण्ड।

ठेठी-अंगिका — १८. पृष्ठ ९८–१०५ — बाल-नाटक/‘पंचगव्य’ । मूल सामग्री: एकांकी, सामाजिक समस्या, विज्ञान, बालिका-शिक्षा, चरित्र, संवाद आरो व्यंग्य। परीक्षण: पुनर्पाठ सें नाटक अपेक्षाकृत विस्तृत सिद्ध होय छै। निष्कर्ष: बाल-नाटक नब संस्करण में प्रमुख खण्ड।

मैथिली — १९. पृष्ठ १०६–१०९ — ‘निभुहान’/अन्य नाटक। मूल सामग्री: ध्वनि-प्रदूषण, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, रेडियो/गीतिनाट्य; पृष्ठ १०९ पर अन्य बाल-साहित्य। परीक्षण: आधुनिक जनजीवन नाटकक विषय बनैत अछि। निष्कर्ष: सामाजिक ज्ञान आ मंचीयताक संगम।

ठेठी-अंगिका — १९. पृष्ठ १०६–१०९ — ‘निभुहान’/आन नाटक। मूल सामग्री: ध्वनि-प्रदूषण, पर्यावरण, शिक्षा, स्वास्थ्य, रेडियो/गीतिनाट्य; पृष्ठ १०९ पर आन बाल-साहित्य। परीक्षण: आधुनिक जनजीवन नाटक के विषय बनै छै। निष्कर्ष: सामाजिक ज्ञान आरो मंचीयता के संगम।

मैथिली — २०. पृष्ठ ११०–१११ — निबन्ध/इतिहास/जीवनी। मूल सामग्री: नगर, महापुरुष, स्वतंत्रता-संग्राम, बुद्ध आदि बालोपयोगी गद्य। परीक्षण: ज्ञान-साहित्य लेल तथ्य, भाषा, चित्र आ जिज्ञासा अलग कसौटी माँगैत अछि। निष्कर्ष: बाल-साहित्यक परिधि सांस्कृतिक ज्ञान धरि विस्तार पबैत अछि।

ठेठी-अंगिका — २०. पृष्ठ ११०–१११ — निबन्ध/इतिहास/जीवनी। मूल सामग्री: नगर, महापुरुष, स्वतंत्रता-संग्राम, बुद्ध आदि बालोपयोगी गद्य। परीक्षण: ज्ञान-साहित्य लेल तथ्य, भाषा, चित्र आरो जिज्ञासा अलग कसौटी माँगै छै। निष्कर्ष: बाल-साहित्य के परिधि सांस्कृतिक ज्ञान तक विस्तार पावै छै।

मैथिली — २१. पृष्ठ ११२–११४ — सन्दर्भ/पत्रिका। मूल सामग्री: लगभग ५२ क्रमांकित स्रोत आ १० पत्रिका। परीक्षण: अभिलेखीय मानचित्रण उपयोगी, मुदा ग्रन्थसूचीगत विवरण असमान। निष्कर्ष: मानकीकृत ग्रन्थ-सूची आ अनुक्रमणिका भविष्यक प्राथमिक सुधार।

ठेठी-अंगिका — २१. पृष्ठ ११२–११४ — सन्दर्भ/पत्रिका। मूल सामग्री: लगभग ५२ क्रमांकित स्रोत आरो १० पत्रिका। परीक्षण: अभिलेखीय मानचित्रण उपयोगी, मतरकिग्रन्थसूचीगत विवरण असमान। निष्कर्ष: मानकीकृत ग्रन्थ-सूची आरो अनुक्रमणिका आगू के प्राथमिक सुधार।

मैथिली — २२. सम्पूर्ण ग्रन्थ — लेखक-सर्जक। मूल सामग्री: लेखक स्वयं प्रमुख कवि, नाटककार आ उपन्यासकार; अपन कृतिसभ व्यापक। परीक्षण: भारतवाणीमे २०२१ क श्वेता रानीक अध्ययन आ बालगीत-ग्रंथावली सेहो उपलब्ध। निष्कर्ष: भीतरक साक्ष्य लाभकारी, मुदा चयन-संतुलन स्वतंत्र शोधसँ जाँचनीय।

ठेठी-अंगिका — २२. सम्पूर्ण ग्रन्थ — लेखक-सर्जक। मूल सामग्री: लेखक अपने प्रमुख कवि, नाटककार आरो उपन्यासकार; अपन कृति सिनी व्यापक। परीक्षण: भारतवाणी में २०२१ के श्वेता रानी के अध्ययन आरो बालगीत-ग्रंथावली भी उपलब्ध। निष्कर्ष: भीतर के साक्ष्य लाभकारी, मतरकि चयन-संतुलन स्वतंत्र शोध सें जाँचै लायक छै।

मैथिली — २३. सम्पूर्ण ग्रन्थ — भाषा/शैली। मूल सामग्री: रचनात्मक सामग्री अंगिका, आलोचनात्मक व्याख्या प्रायः हिन्दी। परीक्षण: पहुँच बढ़ैत अछि, मुदा अंगिका आलोचना-भाषाक स्वायत्तताक प्रश्न उठैत अछि। निष्कर्ष: भाषा सरल आ स्रोत-समृद्ध, पर सूक्ष्म पाठालोचन असमान।

ठेठी-अंगिका — २३. सम्पूर्ण ग्रन्थ — भाषा/शैली। मूल सामग्री: रचनात्मक सामग्री अंगिका, आलोचनात्मक व्याख्या प्रायः हिन्दी। परीक्षण: पहुँच बढ़ै छै, मतरकि अंगिका आलोचना-भाषा के स्वायत्तता के सवाल उठै छै। निष्कर्ष: भाषा सरल आरो स्रोत-समृद्ध, पर सूक्ष्म पाठालोचन असमान।

मैथिली — २४. सम्पूर्ण ग्रन्थ — समग्र मूल्य। मूल सामग्री: लोक-स्मृति, विधा-विस्तार आ स्रोत-सूची। परीक्षण: सहायक स्रोत मूल निष्कर्षकेँ पर्याप्त समर्थन दैत अछि। निष्कर्ष: ई अन्तिम इतिहास नहि, बल्कि आधार-ग्रन्थ अछि।

ठेठी-अंगिका — २४. सम्पूर्ण ग्रन्थ — समग्र मूल्य। मूल सामग्री: लोक-स्मृति, विधा-विस्तार आरो स्रोत-सूची। परीक्षण: सहायक स्रोत मूल निष्कर्ष कें पर्याप्त समर्थन दै छै। निष्कर्ष: ई आखिरी इतिहास नै, बल्कि आधार-ग्रन्थ छै।

2. ग्रन्थक निर्माण-प्रकृति: संकलित अनुभवक शक्ति आ संरचनात्मक सीमा

ठेठी-अंगिका: 2. ग्रन्थ के निर्माण-प्रकृति: संकलित अनुभव के शक्ति आरो संरचनात्मक सीमा

मैथिली —आत्मकथनमे लेखक स्पष्ट करैत छथि जे ई पोथी आरम्भसँ एकहि योजनाक अन्तर्गत लिखल अखण्ड ग्रन्थ नहि छल। समय-समयपर सम्पादित बाल-साहित्य आ लोरी-साहित्य सम्बन्धी कोश/ग्रन्थ लेल लिखल आलेख, पहिने प्रकाशित अंगिका भाषा तथा लोकसाहित्य सम्बन्धी सामग्री, आ बादमे जोड़ल नव सूचना—एहि सभकेँ संशोधित-संयोजित कऽ वर्तमान रूप देल गेल। लेखक स्वयं सम्भावित कमीकेँ स्वीकार करैत छथि। (मूल पोथी, पृ. 6)

ठेठी-अंगिका —आत्मकथन में लेखक स्पष्ट करै छै जे ई पोथी आरम्भ सें एकहि योजना के अन्तर्गत लिखलों अखण्ड ग्रन्थ नै छेलै। समय-समयपर सम्पादित बाल-साहित्य आरो लोरी-साहित्य सम्बन्धी कोश/ग्रन्थ लेल लिखलों आलेख, पहिने प्रकाशित अंगिका भाषा तथा लोकसाहित्य सम्बन्धी सामग्री, आरो बाद में जोड़लों नव सूचना—ई सब कें संशोधित-संयोजित करी कें वर्तमान रूप देलों गेलों। लेखक अपने सम्भावित कमी कें स्वीकार करै छै। (मूल पोथी, पृ. 6)

मैथिली —एहि निर्माण-पद्धतिक दू विपरीत परिणाम अछि। पहिल, दीर्घ समयक अध्ययन, संकलन, स्मृति, निजी पुस्तक-संग्रह आ पत्र-पत्रिकासँ प्राप्त सामग्री एकठाम जमा भऽ गेल अछि। छोट भाषिक साहित्यिक क्षेत्रक इतिहास लेल ई बहुमूल्य स्थिति अछि, कारण अनेक स्रोत अल्पप्रचलित प्रकाशनमे छितरायल रहैत अछि। दोसर, स्वतन्त्र आलेखसभक मूल संरचना बचल रहबाक कारण पुनरावृत्ति, सूचीप्रधानता, विषयान्तर, असमान विस्तार आ आलोचनात्मक गहराइक अन्तर देखाइत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई निर्माण-पद्धति के दू विपरीत परिणाम छै। पहिल, दीर्घ समय के अध्ययन, संकलन, स्मृति, निजी पुस्तक-संग्रह आरो पत्र-पत्रिका सें प्राप्त सामग्री एके जगह जमा होय गेलों छै। छोट भाषिक साहित्यिक क्षेत्र के इतिहास लेल ई बहुमूल्य स्थिति छै,

कारण अनेक स्रोत अल्पप्रचलित प्रकाशन में छितरायलों रहै छै। दोसर, स्वतन्त्र आलेख सिनी के मूल संरचना बचलों रहै के कारण पुनरावृत्ति, सूचीप्रधानता, विषयान्तर, असमान विस्तार आरो आलोचनात्मक गहराइ के अन्तर देखाय छै।

मैथिली —एहि कारण पोथीकेँ 'एक रेखीय इतिहास' मात्र नहि, बल्कि साहित्यिक अभिलेख, आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह आ विधागत सर्वेक्षणक संयुक्त रूप मानब उचित अछि। भविष्यकसंशोधित संस्करणमे अध्याय-अन्त निष्कर्ष, कालक्रम, लेखक-सूची, विधागत सारणी आ पुनरावृत्ति-सम्पादन जोड़ल जाए तँ एहि सम्पदाक उपयोग बहुत बढ़ि सकैत अछि। संकलनात्मक शक्ति आ संरचनात्मक असमानता—दुनू ग्रन्थक निर्माण-इतिहाससँ निकलैत अछि; असमानताक मूल कारण लेखकक विषय-ज्ञान नहि, बल्कि अलग-अलग समयमे तैयार सामग्रीक संयोजन अछि।

ठेठी-अंगिका —ई कारण पोथी कें 'एक रेखीय इतिहास' मात्र नै, बल्कि साहित्यिक अभिलेख, आलोचनात्मक निबन्ध-संग्रह आरो विधागत सर्वेक्षण के संयुक्त रूप मानब उचित छै। आगू के संस्करण में अध्याय-अन्त निष्कर्ष, कालक्रम, लेखक-सूची, विधागत सारणी आरो पुनरावृत्ति-सम्पादन जोड़लों जाए तें ई सम्पदा के उपयोग बहुत बढ़ि सकै छै। संकलनात्मक शक्ति आरो संरचनात्मक असमानता—दूनो ग्रन्थ के निर्माण-इतिहास सें निकलै छै; असमानता के मूल कारण लेखक के विषय-ज्ञान नै, बल्कि अलग-अलग समय में तैयार सामग्री के संयोजन छै।

संरचना

ठेठी-अंगिका: बनावट / ढाँचा

मैथिली —समग्र सामग्री दू अध्यायमे विभक्त अछि। पहिल अध्याय "अंगिका-बाल-लोकसाहित्य" मौखिक परम्पराक अध्ययन थिक, आ दोसर "आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य" शिष्ट अर्थात् लिखित परम्पराक। ई विभाजन अपने-आपमे लेखकक मूल स्थापना कैँ ढाँचा दैत अछि—जे आधुनिक बाल-साहित्यमे जे किछु श्रेष्ठ अछि, से लोक-साहित्यक भूमि पर ठाढ़ होएबाक कारणें अछि।

ठेठी-अंगिका —सब्भे सामग्री दू अध्याय में बँटलों छै। पहिलों अध्याय "अंगिका-बाल-लोकसाहित्य" मुँहजबानी परम्परा के अध्ययन छै, आरो दोसरका "आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य" सिस्ट यानी लिखलों परम्परा के। ई बँटवारा अपने-आप में लेखक के मूल बात के ढाँचा दै छै—कि आधुनिक बाल-साहित्य में जे कुछ बढ़िया छै, से लोक-साहित्य के जमीन पर ठाढ़ होय के कारणें छै।

रचनाकार: डॉ. अमरेन्द्रक साहित्यिक यात्रा आ अवदान

ठेठी-अंगिका: रचनाकार: डॉ. अमरेन्द्र के साहित्यिक यात्रा आरो अवदान

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्र अंगिका आ हिन्दीक एकटा एहन बहुआयामी साहित्यकार छथि, जिनका अंगिकाकेँ साहित्यिक गरिमा देबाक श्रेय देल जाइत अछि। ५ जनवरी १९४९ कैँ बांका जिलाक रूपसार ग्राममे जन्मल डॉ. अमरेन्द्र अपन साहित्य-साधना सँ महाकाव्य, खण्डकाव्य, बाल-साहित्य, आ आलोचनाक क्षेत्रमे प्रतिमान स्थापित केलन्हि अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र अंगिका आरो हिन्दीक एगो एहन बहुआयामी साहित्यकार छै, जिनका अंगिकाकेँ साहित्यिक गरिमा दै के श्रेय देलों जाय छै। ५ जनवरी १९४९ कें बांका जिला के रूपसार ग्राम में जन्मल डॉ. अमरेन्द्र अपन साहित्य-साधना सें महाकाव्य, खण्डकाव्य, बाल-साहित्य, आरो आलोचना के क्षेत्र में प्रतिमान स्थापित करलकै छै।

जीवन-परिचय आ साहित्यिक अवदान

ठेठी-अंगिका: जीवन-परिचय आरो साहित्यिक अवदान

मैथिली —पूरा नाम: डॉ. अमरेन्द्र कुमार सिन्हा

ठेठी-अंगिका —पूरा नाम: डॉ. अमरेन्द्र कुमार सिन्हा

मैथिली —जन्म तिथि आ स्थान: ५ जनवरी १९४९, ग्राम- रूपसार, बांका, बिहार

ठेठी-अंगिका —जन्म तिथि आरो स्थान: ५ जनवरी १९४९, ग्राम- रूपसार, बांका, बिहार

मैथिली —माता-पिता: स्व. पँचा रानी सिन्हा आ स्व. नरसिंह प्रसाद सिन्हा

ठेठी-अंगिका —माता-पिता: स्व. पँचा रानी सिन्हा आरो स्व. नरसिंह प्रसाद सिन्हा

मैथिली —प्रमुख अंगिका रचना (बाल-साहित्य): ढोल बजै छै ढम्मक ढम, बुतरू के तुतरू, एक छड़ी पर अंडा नाचै, बाजै बीन बजावै तीन, बण्टा (उपन्यास)

ठेठी-अंगिका —प्रमुख अंगिका रचना (बाल-साहित्य): ढोल बजै छै ढम्मक ढम, बुतरू के तुतरू, एक छड़ी पर अंडा नाचै, बाजै बीन बजावै तीन, बण्टा (उपन्यास)

मैथिली —प्रमुख अंगिका रचना (अन्य): पंचगव्य (महाकाव्य), अंगदेव, जटायु, कर्ण (महाकाव्य), ऋष्यशृंग

ठेठी-अंगिका —प्रमुख अंगिका रचना (अन्य): पंचगव्य (महाकाव्य), अंगदेव, जटायु, कर्ण (महाकाव्य), ऋष्यशृंग

मैथिली —प्रमुख सम्मान/पुरस्कार: भवप्रीतानन्द पुरस्कार, राष्ट्रभाषा पुरस्कार, नन्द पुरस्कार, कर्ण पुरस्कार, सच्चिदानन्द धूमकेतु पुरस्कार

ठेठी-अंगिका —प्रमुख सम्मान/पुरस्कार: भवप्रीतानन्द पुरस्कार, राष्ट्रभाषा पुरस्कार, नन्द पुरस्कार, कर्ण पुरस्कार, सच्चिदानन्द धूमकेतु पुरस्कार

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' पोथी दू मुख्य खण्डमे विभक्त अछि: 'अंगिका बाल-लोकसाहित्य' आ 'आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य'। ई पोथी मूलतः 'भारतीय बाल-साहित्य कोश' लेल लिखल गेल आलेखक विस्तार अछि, जकरा पाछाँ वएह छूटल वा अप्रकाशित सामग्रीकेँ सहेजि कऽ राखबाक गम्भीर उद्देश्य अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के 'अंगिका बाल-साहित्य' पोथी दू मुख्य खण्ड में विभक्त छै: 'अंगिका बाल-लोकसाहित्य' आरो 'आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य'। ई पोथी मूलतः 'भारतीय बाल-साहित्य कोश' लेली लिखलों गेलों आलेखक विस्तार छै, जेकरा पाछाँ वएह छूटल वा अप्रकाशित सामग्री कें सहेजि कऽ राखबाक गम्भीर उद्देश्य छै।

3. बाल-मनक सौन्दर्यशास्त्र: ग्रन्थक केन्द्रीय स्थापना

ठेठी-अंगिका: 3. बाल-मन के सौन्दर्यशास्त्र: ग्रन्थ के केन्द्रीय स्थापना

मैथिली —पृष्ठ 8 पर लेखक बाल-साहित्यक जे कसौटी प्रस्तुत करैत छथि, से सम्पूर्ण पोथीक मूल्याङ्कन लेल मूल चाबी अछि। बालक द्वारा रचल हो वा वयस्क द्वारा बालक लेल—रचनामे बाल-मनक अभिव्यक्ति सर्वप्रथम आवश्यक अछि। वस्तु देखबाक बालकीय तरीका, सोच, कल्पना-शक्ति, तर्क, जिद, माँग मनबेबाक ढङ्ग, चित्र आ संगीतक आकर्षण साहित्यक रूप-निर्धारक तत्त्व मानल गेल अछि। प्रत्यक्ष शिक्षण वा संदेश-वाचनकेँ लेखक पीछे राखैत छथि; संदेश हो तँ व्यञ्जना, संकेत, कथा, खेल वा रसक भीतरसँ उभरय। (मूल पोथी, पृ. 8–9)

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 8 पर लेखक बाल-साहित्य के जे कसौटी प्रस्तुत करै छै, से सम्पूर्ण पोथी के मूल्याङ्कन लेल मूल चाबी छै। बालक द्वारा रचलों हो वा वयस्क द्वारा बालक लेल—रचना में बाल-मन के अभिव्यक्ति सर्वप्रथम आवश्यक छै। वस्तु देखै के बालकीय तरीका, सोच, कल्पना-शक्ति, तर्क, जिद, माँग मनावै के ढङ्ग, चित्र आरो संगीत के आकर्षण साहित्य के रूप-निर्धारक तत्त्व मानलों गेलों छै। प्रत्यक्ष शिक्षण वा संदेश-वाचन कें लेखक पीछे राखै छै; संदेश हो तें व्यञ्जना, संकेत, कथा, खेल वा रस के भीतर सें उभरै। (मूल पोथी, पृ. 8–9)

मैथिली —एहि विचारक विशेष महत्त्व अछि, कारण बाल-साहित्य प्रायः उपदेश देबाक सरल माध्यम मानि लेल जाइत अछि। डॉ. अमरेन्द्र एहि प्रवृत्तिक विरुद्ध बालकक अनुभव-जगतकेँ साहित्यिक स्वायत्तता दैत छथि। Hans-Heino Ewers बालोपयुक्तता सम्बन्धी अध्ययनमे पूछैत छथि जे साहित्य बालकक आवश्यकता, इच्छा आ मूल्यक अनुरूप कोना बनैत अछि। एहि व्यापक अवधारणासँ तुलना करैत ‘अंगिका बाल-साहित्य’ क बाल-मन केन्द्रित कसौटी एक स्थानीय, सहज आ व्यवहारिक समकक्ष ठहरैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई विचार के विशेष महत्त्व छै, कारण बाल-साहित्य प्रायः उपदेश दै के सरल माध्यम मान कें लेल जाय छै। डॉ. अमरेन्द्र ई प्रवृत्ति के विरुद्ध बालक के अनुभव-जगत कें साहित्यिक स्वायत्तता दै छै। Hans-Heino Ewers बालोपयुक्तता सम्बन्धी अध्ययन में पू छै जे जे साहित्य बालक के आवश्यकता, इच्छा आरो मूल्य के अनुरूप केना बनै छै। ई व्यापक अवधारणा सें तुलना करै ‘अंगिका बाल-साहित्य’ के बाल-मन केन्द्रित कसौटी एक स्थानीय, सहज आरो व्यवहारिक समकक्ष ठहरै छै।

मैथिली —मुदा एहि सिद्धान्तक भीतर एक रोचक तनाव सेहो अछि। ग्रन्थक बादक भागमे नैतिक शिक्षा, पर्यावरण-शिक्षा, राष्ट्रबोध, जीवनी, स्वास्थ्य, अन्धविश्वास-विरोध आदि शिक्षामूलक साहित्यक प्रशंसा बहुत अछि। अर्थात आरम्भमे प्रत्यक्ष उपदेश गौण, मुदा साहित्येतिहास लिखैत समय शिक्षाप्रद गुण फेर महत्त्वपूर्ण। ई साधारण विरोधाभास नहि; बाल-साहित्यक ऐतिहासिक द्वैध अछि—आनन्द आ संस्कार, खेल आ शिक्षा, स्वायत्त बाल-दृष्टि आ समाजक अपेक्षा। पोथीक मूल सौन्दर्यशास्त्रक सर्वोत्तम रूप तखन देखाइत अछि जखन शिक्षामूलक कथ्य बालकक क्रिया, संवाद, लय, हास्य, कल्पना वा कथा-तनावमे घुलि जाइत अछि।

ठेठी-अंगिका —मतरकि ई सिद्धान्त के भीतर एक रोचक तनाव भी छै। ग्रन्थ के बाद के भाग में नैतिक शिक्षा, पर्यावरण-शिक्षा, राष्ट्रबोध, जीवनी, स्वास्थ्य, अन्धविश्वास-विरोध आदि शिक्षामूलक साहित्य के प्रशंसा बहुत छै। अर्थात आरम्भ में प्रत्यक्ष उपदेश गौण, मतरकि साहित्येतिहास लिखै समय शिक्षाप्रद गुण फेनू महत्त्वपूर्ण। ई साधारण विरोधाभास नै; बाल-साहित्य के ऐतिहासिक द्वैध छै—आनन्द आरो संस्कार, खेल आरो शिक्षा, स्वायत्त बाल-दृष्टि आरो समाज के अपेक्षा। पोथी के मूल सौन्दर्यशास्त्र के सर्वोत्तम रूप तबें देखाय छै जबें शिक्षामूलक कथ्य बालक के क्रिया, संवाद, लय, हास्य, कल्पना वा कथा-तनाव में घुलि जाय छै।

4. बाल-लोकसाहित्य: आधारभूमि आ जीवित अभिलेख

ठेठी-अंगिका: 4. बाल-लोकसाहित्य: आधारभूमि आरो जीवित अभिलेख

मैथिली —पहिल खण्ड अंगिका बाल-लोकसाहित्यक विस्तृत संसार खोलैत अछि। एतय साहित्य पुस्तकक पृष्ठपर नहि, जीवनक क्रियामे बसल अछि। बच्चाकेँ सुतबैत काल लोरी, तेल-मालिश वा भोजनक समय गायल पद, खेलमे बोलल तुक, समूहक प्रतिस्पर्धात्मक गीत, पहेली, हास्य, पशु-पक्षी आ लोककथा—सभ साहित्यक अंग बनैत अछि। लेखक एहि सामग्रीकेँ अस्पष्ट 'लोक-संस्कृति' क श्रेणीमे छोड़ैत नहि, बल्कि उमेर, प्रयोजन, लय, खेलक प्रकार आ कथात्मक प्रकृतिक आधारपर उपरूप पहिचानबाक प्रयास करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —पहिल खण्ड अंगिका बाल-लोकसाहित्य के विस्तृत संसार खोलै छै। एतै साहित्य पुस्तक के पृष्ठपर नै, जीवन के क्रिया में बसलों छै। बच्चा कें सुतावै काल लोरी, तेल-मालिश वा भोजन के समय गायलों पद, खेल में बोललों तुक, समूह के प्रतिस्पर्धात्मक गीत, पहेली, हास्य, पशु-पक्षी आरो लोककथा— सिनी साहित्य के अंग बनै छै। लेखक ई सामग्री कें अस्पष्ट 'लोक-संस्कृति' के श्रेणी में छोड़ै नै, बल्कि उमेर, प्रयोजन, लय, खेल के प्रकार आरो कथात्मक प्रकृति के आधारपर उपरूप पहिचानै के प्रयास करै छै।

मैथिली —ई खण्डक पहिल महत्त्व दस्तावेजीकरण अछि। मौखिक सामग्रीक अस्तित्व स्मृति आ जीवित गायनपर निर्भर रहैत अछि; पीढ़ी बदलला पर शब्द, धुन, प्रसंग आ खेलक नियम बदलि सकैत अछि। लेखक उपलब्ध संग्रह, अध्ययन आ मुद्रित स्रोतक सहारे एक पाठ्य-अभिलेख तैयार करैत छथि। Angika. com क स्वतंत्र साहित्यिक सर्वेक्षण सेहो अंगिका बाल-लोककाव्यक विविधता आ विपुलता तथा ओकर बहुत अंश लोककण्ठमे सुरक्षित रहबाक बात कहैत, नरेश पाण्डेय चकोर आ चन्द्रप्रकाश जगप्रियक संकलनकार्यकेँ महत्त्वपूर्ण मानैत अछि। एहि बाहरी साक्ष्यसँ मूल पोथीक अभिलेखन-भूमिका पुष्ट होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई खण्ड के पहिल महत्त्व दस्तावेजीकरण छै। मौखिक सामग्री के अस्तित्व स्मृति आरो जीवित गायनपर निर्भर रहै छै; पीढ़ी बदलला पर शब्द, धुन, प्रसंग आरो खेल के नियम बदलि सकै छै। लेखक उपलब्ध संग्रह, अध्ययन आरो मुद्रित स्रोत के सहारे एक पाठ्य-अभिलेख तैयार करै छै। Angika. com के स्वतंत्र साहित्यिक सर्वेक्षण भी अंगिका बाल-लोककाव्य के विविधता आरो विपुलता तथा ओकर बहुत अंश लोककण्ठ में सुरक्षित रहै के बात कहै, नरेश पाण्डेय चकोर आरो चन्द्रप्रकाश जगप्रिय के संकलनकार्य कें महत्त्वपूर्ण मानै छै। ई बाहरी साक्ष्य सें मूल पोथी के अभिलेखन-भूमिका पुष्ट होय छै।

मैथिली —दोसर महत्त्व ई जे लोकसाहित्य आधुनिक साहित्यक 'कच्चा माल' मात्र नहि। लोरीक अपन लय-संगीत, पहेलीक बौद्धिक खेल, तुक्तकक ध्वनि-आनन्द, खेलगीतक सामूहिक प्रदर्शन, लोककथाक परिवर्तनशील कथा-जीवन—ई सभ अपने पूर्ण सौन्दर्य-व्यवस्था अछि। तथापि पोथीक संरचना कखनो लोककेँ आधुनिक लिखित साहित्यक पूर्वपीठिका बना देबाक जोखिम लैत अछि। समीक्षात्मक रूपेँ लोकसाहित्यक स्वायत्तता सेहो मानल जाए।

ठेठी-अंगिका —दोसर महत्त्व ई जे लोकसाहित्य आधुनिक साहित्य के 'कच्चा माल' मात्र नै। लोरी के आपनों लय-संगीत, पहेली के बौद्धिक खेल, तुक्तक के ध्वनि-आनन्द, खेलगीत के सामूहिक प्रदर्शन, लोककथा के परिवर्तनशील कथा-जीवन—ई सिनी अपने पूर्ण

सौन्दर्य-व्यवस्था छै। तथापि पोथी के संरचना कखनियों लोक कें आधुनिक लिखित साहित्य के पूर्वपीठिका बना दै के जोखिम लै छै। समीक्षात्मक रूपैँ लोकसाहित्य के स्वायत्तता भी मानलों जाए।

मैथिली —लिखित संरक्षणक स्वाभाविक सीमा सेहो ध्यान योग्य अछि। खेलगीतक शब्द लिखि लेलासँ धुन, ताल, देहक गति, खेलक नियम, उमेर-समूहक सहभागिता, ऋतु, स्थान आ प्रदर्शनक परिस्थिति नहि बचैत अछि। भविष्यक शोधक अगिला चरण ऑडियो-वीडियो लोक-अभिलेख, गायक/कथावाचकक परिचय, स्थान, तिथि, प्रसंग आ variant पाठक दस्तावेजीकरण होएत। एहि दृष्टिसँ पोथी समाप्त परियोजना नहि, field archive क प्रारम्भिक नक्शा अछि।

ठेठी-अंगिका —लिखित संरक्षण के स्वाभाविक सीमा भी ध्यान योग्य छै। खेलगीत के शब्द लिख कें लेला सें धुन, ताल, देह के गति, खेल के नियम, उमेर-समूह के सहभागिता, ऋतु, स्थान आरो प्रदर्शन के परिस्थिति नै बचै छै। आगू के शोध के आगू के चरण ऑडियो-वीडियो लोक-अभिलेख, गायक/कथावाचक के परिचय, स्थान, तिथि, प्रसंग आरो variant पाठक दस्तावेजीकरण होतै। ई दृष्टि सें पोथी समाप्त परियोजना नै, field archive के प्रारम्भिक नक्शा छै।

पाठ-सर्वेक्षण: प्रथम अध्याय — लोक-मूलक अन्वेषण

ठेठी-अंगिका: पाठ-सर्वेक्षण: पहिलों अध्याय — लोक-मूल के खोज

मैथिली —पहिल अध्यायक सभसँ सबल पक्ष अछि ओकर प्रामाणिक प्राथमिक सामग्री। लेखक शिशु-कालसँ किशोर-कालधरिक जीवन-प्रसंग—डेग धरनाइ, तेल-मालिश, खान-पान आ निन्न पाड़नाइ—सभक संग जुड़ल लोरी आ बाल-गीत कैँ प्रसंगानुसार सजा कए राखैत छथि। दृष्टान्तस्वरूप, तेल-मालिशक ई सरल-सुन्दर गीत अंग-धूलिकासँ उद्धृत अछि—

ठेठी-अंगिका —पहिलों अध्याय के सबसें मजबूत पक्ष छै ओकर सच्चा प्राथमिक सामग्री। लेखक नान्हपन सें किशोरपन तक के जिनगी-परसंग—डेग धरना, तेल-मालिश, खाना-पीना आरो सुताना—सब्भे सें जुड़लों लोरी आरो बाल-गीत के परसंग के हिसाब सें सजा कें राखै छै। जइसन कि, तेल-मालिश के ई सोझ-सुन्नर गीत अंग-धूलिका सें लेलों छै—

मैथिली —तेल दे टडुवा, नूनु रे बढ़ुवा

ठेठी-अंगिका —तेल दे टडुवा, नूनु रे बढ़ुवा

मैथिली —तेली कैँ तेलाय जाय, नुनू मोटाय जाय

ठेठी-अंगिका —तेली कें तेलाय जाय, नुनू मोटाय जाय

मैथिली —तेल करैं चप-चप, नुनू बढ़ौं लप-लप।

ठेठी-अंगिका —तेल करैं चप-चप, नुनू बढ़ौं लप-लप।

मैथिली —(अंग-धूलिका, पृ. ८)

ठेठी-अंगिका —(अंग-धूलिका, पृ. ८)

मैथिली —एहन पदमे लेखक ठीके देखबैत छथि जे बाल-साहित्यक प्राण अर्थ (अभिधा) मे नहि, बल्कि ध्वनि आ लयक व्यंजनामे बसैत अछि—संदेश व्यंजनामे उभरैत अछि, अभिधामे नहि। इएह दृष्टि तुक्तक-काव्यक विवेचनमे परिपक्व होइत अछि, जतय ओ शिशु-गीतक निरर्थक-प्रतीत शब्द-संयोजन कैँध्वन्यात्मकता आ संगीत-प्रधानताक आधार पर सार्थक सिद्ध करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —एहन पद में लेखक ठीके देखाबै छै कि बाल-साहित्य के परान अरथ (अभिधा) में नै, बल्कि धुन आरो लय के व्यंजना में बसै छै—संदेस व्यंजना में उभरै छै, अभिधा में नै। इहे नजर तुक्तक-काव्य के विवेचन में आरो पाकल होय जाय छै, जहाँ ऊ सिसु-गीत के बेमतलब जइसन लागै वाला सबद-संयोजन के ध्वन्यात्मकता आरो संगीत-परधानता के आधार पर सारथक साबित करी दै छै।

खण्ड १: अंगिका बाल-लोकसाहित्यक तात्विक आ मनोवैज्ञानिक विवेचन

ठेठी-अंगिका: खण्ड १: अंगिका बाल-लोकसाहित्य के तात्विक आरो मनोवैज्ञानिक विवेचन

मैथिली —लोकसाहित्य कोनो भाषाक अघोषित इतिहास आ लोक-मनोविज्ञानक साक्षात् दर्पण होइत अछि। डॉ. अमरेन्द्र अपन ग्रन्थक प्रथम अध्यायमे बाल-लोकसाहित्यक मनोवैज्ञानिक आ वैज्ञानिक आधारकेँ स्पष्ट करैत छथि। हुनकर तर्क अछि जे वैज्ञानिक दृष्टिसँ शिशु अपन गर्भावस्थासँ हे एक विशेष प्रकारक सङ्गीत सँ नीन्द्रावस्थामे रहैत अछि। माए द्वारा गाओल जाए वला लोरीमे ओही सङ्गीतक गुञ्जन होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —लोकसाहित्य कोनो भाषा के अघोषित इतिहास आरो लोक-मनोविज्ञान के साक्षात् दर्पण होय छै। डॉ. अमरेन्द्र अपन ग्रन्थ के प्रथम अध्याय में बाल-लोकसाहित्य के मनोवैज्ञानिक आरो वैज्ञानिक आधारकेँ स्पष्ट करै छै। हुनकर तर्क छै जे वैज्ञानिक दृष्टि सें शिशु अपन गर्भावस्था सें ही एक विशेष प्रकारक सङ्गीत सें नीन्द्रावस्था में रहै छै। माए द्वारा गाओल जाए वला लोरी में ओही सङ्गीत के गुञ्जन होय छै।

5. लोरी, शिशु-काव्य आ मातृस्वरः साहित्यक पहिल देहरी

ठेठी-अंगिकाः 5. लोरी, शिशु-काव्य आरो मातृस्वरः साहित्य के पहिल देहरी

मैथिली —पोथी लोरीकेँ बाल-साहित्यक आदि रूपसभमे राखैत अछि। शिशु, संगीत, नींद आ मातृक स्वरक सम्बन्धसँ चर्चा आरम्भ भऽ लोरी शिशु-जीवनक पहिल साहित्यिक-संगीतात्मक अनुभव बनि उठैत अछि। आलोचनात्मक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे लोरी एतय पाठ नहि, सम्बन्ध अछि—माँक स्वर, शिशुक देह, लय, स्पर्श आ नींदक संयुक्त अनुभव।

ठेठी-अंगिका —पोथी लोरी कें बाल-साहित्य के आदि रूप सिनी में राखै छै। शिशु, संगीत, नींद आरो माय के स्वर के सम्बन्ध सें चर्चा आरम्भ होय कें लोरी शिशु-जीवन के पहिल साहित्यिक-संगीतात्मक अनुभव बनी उठै छै। आलोचनात्मक दृष्टि सें महत्त्वपूर्ण बात ई छै जे लोरी एतै पाठ नै, सम्बन्ध छै—माय के स्वर, शिशु के देह, लय, स्पर्श आरो नींद के संयुक्त अनुभव।

मैथिली —मुद्रित पुस्तक पढ़बाक पहिने बच्चा ध्वनि ग्रहण करैत अछि; अर्थ बुझबाक पहिने पुनरावृत्ति, स्वराघात आ तालक प्रतिक्रिया करैत अछि। एहि कारण लोरी आ तुक्तक साहित्यिक विकासक निम्न स्तर नहि, भाषा-अनुभवक मूल रूप अछि। पोथीक उदाहरणसभ परिवार, भोजन, तेल-मालिश, नींद आ दैनिक क्रियाकेँ काव्यक सामग्री बनबैत अछि। बाल-साहित्यक आरम्भ भव्य कल्पनासँ नहि, परिचित देह-जगतसँ होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —मुद्रित पुस्तक पढ़ै के पहिने बच्चा ध्वनि ग्रहण करै छै; अर्थ बुझै के पहिने पुनरावृत्ति, स्वराघात आरो ताल के प्रतिक्रिया करै छै। ई कारण लोरी आरो तुक्तक साहित्यिक विकास के निम्न स्तर नै, भाषा-अनुभव के मूल रूप छै। पोथी के उदाहरण सिनी परिवार, भोजन, तेल-मालिश, नींद आरो दैनिक क्रिया कें काव्य के सामग्री बनावै छै। बाल-साहित्य के आरम्भ भव्य कल्पना सें नै, परिचित देह-जगत सें होय छै।

मैथिली —मातृस्वरक केन्द्रता संग एक आलोचनात्मक प्रश्न सेहो उठैत अछि: लोक-पालन-पोषणमे पिता, दादी-दादा, भाई-बहिन, पड़ोस आ अन्य देखभालकर्ता सभक भूमिका कतेक अछि? भविष्यक field study बालगीतक पूरा घरेलू-सामुदायिक नेटवर्क देखबैत ग्रन्थक मातृकेन्द्रित सामग्रीकेँ अधिक विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्य दऽ सकैत अछि। साहित्यिक दृष्टिसँ लोरीक मुख्य गुण सरलता नहि, श्रवणीयता अछि; ध्वनि-साम्य, पुनरावृत्ति, लघु पद, परिचित शब्द आ लय शिशुक ग्रहणशीलताक अनुसार भाषा बनबैत अछि।

ठेठी-अंगिका —मातृस्वर के केन्द्रता संग एक आलोचनात्मक प्रश्न भी उठै छै: लोक-पालन-पोषण में पिता, दादी-दादा, भाई-बहिन, पड़ोस आरो अन्य देखभालकर्ता सिनी के भूमिका कत्तें छै? आगू के field study बालगीत के पूरा घरेलू-सामतरकियिक नेटवर्क देखावै ग्रन्थ के मातृकेन्द्रित सामग्री कें अधिक विस्तृत सामाजिक परिप्रेक्ष्य दै कें सकै छै। साहित्यिक दृष्टि सें लोरी के मुख्य गुण सरलता नै, श्रवणीयता छै; ध्वनि-साम्य, पुनरावृत्ति, लघु पद, परिचित शब्द आरो लय शिशु के ग्रहणशीलता के अनुसार भाषा बनावै छै।

लोरी: वात्सल्य, सङ्गीत आ ध्वन्यात्मकताक अद्भुत सङ्गम

ठेठी-अंगिका: लोरी: वात्सल्य, सङ्गीत आरो ध्वन्यात्मकताक अद्भुत सङ्गम

मैथिली —बाल-साहित्यक सबसँ प्राचीनतम रूप लोरी अछि। लोरी मात्र बच्चाकेँ सुतेबाक साधन नहि अछि, ई भाषाक प्राथमिक लय आ ध्वनिक ज्ञान बच्चाकेँ दैत अछि। अंगिका लोक-साहित्यमे जे लोरी उपलब्ध अछि, ओहिमे प्रकृति, पशुपक्षी आ पारिवारिक स्नेहक अतीव सुन्दर चित्रण अछि। पोथीसँ एकटा विशुद्ध उद्धरण द्रष्टव्य अछि:

ठेठी-अंगिका —बाल-साहित्य के सब सें सभसें पुरान रूप लोरी छै। लोरी मात्र बच्चा कैं सुतावै के साधन नै छै, ई भाषा के प्राथमिक लय आरो ध्वनि के ज्ञान बच्चा कैं दै छै। अंगिका लोक-साहित्य में जे लोरी उपलब्ध छै, ओहि में प्रकृति, पशुपक्षी आरो पारिवारिक स्नेह के अतीव सुन्दर चित्रण छै। पोथी सें एगो विशुद्ध उद्धरण द्रष्टव्य छै:

मैथिली —घना मंजुर, घना मंजूर कहा पे छिपलै घना मंजूर बाइस बीघा के वनो मे तोहरा लेबौ खोजी जहाँ भी छिपलै घना मंजूर चुप्पा चुप, कुकरू-कूं नूनु करै छौ तोरा सँ प्रीत आवी सुताय जो गावी के गीत।

ठेठी-अंगिका —घना मंजुर, घना मंजूर कहा पे छिपलै घना मंजूर बाइस बीघा के वनो मे तोहरा लेबौ खोजी जहाँ भी छिपलै घना मंजूर चुप्पा चुप, कुकरू-कूं नूनु करै छौ तोरा सँ प्रीत आवी सुताय जो गावी के गीत।

मैथिली —एहि लोरीक साहित्यिक समीक्षा करितें ई स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे ध्वन्यात्मकता ('चुप्पा चुप, कुकरू-कूं') आ लयात्मकता ('मंजूर', 'खोजी', 'गीत') क जे सङ्गम अछि, ओ शिशु-मनकैं तुरन्त अपन दिस आकृष्ट करैत अछि। डॉ. अमरेन्द्र ई सेहो स्पष्ट करैत छथि जे लोरीक विषय-वस्तु बच्चाकैं पूर्णतया समझमे आबए ई आवश्यक नहि, अपितु ओकर सुर आ सङ्गीतक जादू शिशु-मस्तिष्क पर प्रभाव डालैत अछि। 'बाइस बीघा के वनो मे' जकाँ पङ्क्तिमे अतिशयोक्ति अलङ्कारक जे सहज प्रयोग अछि, ओ बच्चाक कल्पनाशक्तीकैं विस्तृत करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई लोरी के साहित्यिक समीक्षा करितें ई साफ होय छै जे ई में ध्वन्यात्मकता ('चुप्पा चुप, कुकरू-कूं') आरो लयात्मकता ('मंजूर', 'खोजी', 'गीत') के जे सङ्गम छै, ऊ शिशु-मनकैं तुरन्त अपन दिस अपन दिस खींचै छै। डॉ. अमरेन्द्र ई भी साफ करै छै जे लोरी के विषय-वस्तु बच्चा कैं पूर्णतया समझ में आवै ई आवश्यक नै छै, बल्कि ओकर सुर आरो सङ्गीत के जादू शिशु-मस्तिष्क पर प्रभाव डालै छै। 'बाइस बीघा के वनो मे' जेना पङ्क्ति में अतिशयोक्ति अलङ्कारक जे सहज प्रयोग छै, ऊ बच्चा के कल्पनाशक्तीकैं विस्तृत करै छै।

6. पहेली आ तुक्तकः अर्थसँ पूर्व ध्वनि, ज्ञानसँ पूर्व खेल

ठेठी-अंगिकाः 6. पहेली आरो तुक्तकः अर्थ सें पूर्व ध्वनि, ज्ञान सें पूर्व खेल

मैथिली —पृष्ठ 10–14 क सामग्री पहेली आ तुक्तक-काव्यकैं दू भिन्न, मुदा परस्पर पूरक बाल-विधाक रूपमे सामने अनैत अछि। पहेली अर्थक गुप्त खेल अछि: बच्चा संकेत जोड़ैत अछि, अनुमान करैत अछि, गलत उत्तरसँ हँसैत अछि, फेर प्रयास करैत अछि। एकपदीसँ चतुष्पदी रूपक उल्लेख देखबैत अछि जे पहेली छोट भाषिक ढाँचामे बौद्धिक सक्रियता पैदा करैत अछि। लेखक शिशु आ किशोरक ग्रहण-क्षमता बीच भेदक संकेत सेहो करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 10–14 के सामग्री पहेली आरो तुक्तक-काव्य कें दू भिन्न, मतरकि परस्पर पूरक बाल-विधा के रूप में सामने अनै छै। पहेली अर्थ के गुप्त खेल छै: बच्चा संकेत जोड़ै छै, अनुमान करै छै, गलत उत्तर सें हँसै छै, फेनू प्रयास करै छै। एकपदी सें चतुष्पदी रूपक उल्लेख देखावै छै जे पहेली छोट भाषिक ढाँचा में बौद्धिक सक्रियता पैदा करै छै। लेखक शिशु आरो किशोर के ग्रहण-क्षमता बीच भेद के संकेत भी करै छै।

मैथिली —तुक्तक-काव्यमे अर्थ पूर्ण स्पष्ट होएब आवश्यक नहि; ध्वनि, तुक, शब्दक खेल, दोहराव आ उच्चारणक आनन्द अग्रभूमिमे अछि। बच्चा भाषाकैं अर्थ-संकेतक प्रणाली मात्र नहि, आवाजकखिलौना सेहो मानैत अछि। निरर्थकता एतय दोष नहि; ध्वनि-सौन्दर्य, स्मृति आ सहभागिताक साधन अछि।

ठेठी-अंगिका —तुक्तक-काव्य में अर्थ पूर्ण स्पष्ट होब आवश्यक नै; ध्वनि, तुक, शब्द के खेल, दोहराव आरो उच्चारण के आनन्द अग्रभूमि में छै। बच्चा भाषा कें अर्थ-संकेतक प्रणाली मात्र नै, आवाज के खिलौना भी मानै छै। निरर्थकता एतै दोष नै; ध्वनि-सौन्दर्य, स्मृति आरो सहभागिता के साधन छै।

मैथिली —बाहरी साहित्यिक सूची एहि क्षेत्रक मुद्रित विस्तारक पुष्टि करैत अछि। Angika. com अमरेन्द्रक ‘एक छड़ी पर अंडा नाचै’ कैं बाल-मनोविज्ञान ध्यानमे राखि रचल पहेली-संग्रह आ ‘तुक्तक-मुक्तक’ कैं कम उमेरक बालक लेल रचल कविता-संग्रहक रूपमे दर्ज करैत अछि; Kavita Kosh सेहो ‘तुक्तक मुक्तक’ कैं बाल-कविता/ई-पुस्तक श्रेणीमे राखैत अछि। ग्रन्थक सीमा ई जे उदाहरण बहुत अछि, मुदा ध्वनिविज्ञान, स्मृति-रचना, हास्य वा भाषिक विचलनक विस्तृत close reading कम अछि। भविष्यक शोध एहि corpus पर तुक-योजना, ध्वनि-पुनरावृत्ति, शब्द-निर्माण आ बाल-प्रतिक्रियाक अध्ययन कऽ सकैत अछि।

ठेठी-अंगिका —बाहरी साहित्यिक सूची ई क्षेत्र के मुद्रित विस्तार के पुष्टि करै छै। Angika. com अमरेन्द्र के 'एक छड़ी पर अंडा नाचै' कें बाल-मनोविज्ञान ध्यान में राख कें रचलों पहेली-संग्रह आरो 'तुक्तक-मुक्तक' कें कम उमेर के बालक लेल रचलों कविता-संग्रह के रूप में दर्ज करै छै; Kavita Kosh भी 'तुक्तक-मुक्तक' कें बाल-कविता/ई-पुस्तक श्रेणी में राखै छै। ग्रन्थ के सीमा ई जे उदाहरण बहुत छै, मतरकि ध्वनिविज्ञान, स्मृति-रचना, हास्य वा भाषिक विचलन के विस्तृत close reading कम छै। आगू के शोध ई corpus पर तुक-योजना, ध्वनि-पुनरावृत्ति, शब्द-निर्माण आरो बाल-प्रतिक्रिया के अध्ययन करी कें सकै छै।

बुझौवल-परम्परा: एक गहन विवेचन

ठेठी-अंगिका: बुझौवल-परम्परा: एगो गहरा विवेचन

मैथिली —अंगिका बुझौवल (पहेली) क विवेचन एहि पोथीक सभसँ मौलिक अंश थिक, आ एतहि लेखकक वर्गीकरण-कौशल विशेष रूपें उघरैत अछि। ओ बुझौवल कैँ पद-संख्याक आधार पर एकपदीसँ चतुष्पदी धरि चारि श्रेणीमे बाँटैत छथि। ई वर्गीकरण मात्र गणनात्मक नहि—ओकरामे एकटा काव्यशास्त्रीय क्रमविकास नुकाएल अछि। एकपदी बुझौवलमे समस्त प्रहेलिका एके बिम्बमे संकुचित भ' जाइत अछि—

ठेठी-अंगिका —अंगिका बुझौवल (पहेली) के विवेचन ई पोथी के सबसें मौलिक हिस्सा छै, आरो एहिजा लेखक के वर्गीकरण के हुनर खास तौर पर उभरै छै। ऊ बुझौवल के पद-गिनती के आधार पर एकपदी सें चतुष्पदी तक चार सरेनी में बाँटै छै। ई बँटवारा खाली गिनती वाला नै छै—ओकरा में एगो काव्यशास्त्रीय क्रम-विकास छिपलों छै। एकपदी बुझौवल में पूरा पहेली एके बिम्ब में सिमटी जाय छै—

मैथिली —फरैं नै फूलै, ढकमोरै गाछ। (पान)

ठेठी-अंगिका —फरैं नै फूलै, ढकमोरै गाछ। (पान)

मैथिली —एतय "फल नहि, फूल नहि, तैयो गाछ कैँ लपेटि लै" क विरोधाभास बालक कैँ निषेध-द्वारा-परिभाषा सिखबैत अछि; ई अन्यापदेश आ लक्षणाक प्रारम्भिक पाठ थिक। जेना-जेना पद बढ़ैत अछि, बुझौवलमे नाट्यात्मकता प्रवेश करैत अछि। त्रिपदी बुझौवलमे सादृश्य आ द्वन्द्व दुनू अबैत अछि—

ठेठी-अंगिका —एहिजा "फल नै, फूल नै, तइयो गाछ के लपेटी लै"—ई विरोधाभास बुतरू के नाकारा-सें-पहचान (निषेध सें परिभाषा) सिखाबै छै; ई अन्योक्ति आरो लक्षणा के पहिलका पाठ छै। जइसन-जइसन पद बढ़ै छै, बुझौवल में नाटकीयता घुसै छै। त्रिपदी बुझौवल में सादृश्य आरो जोड़ी—दुन्नु आबै छै—

मैथिली —एक सङ दू साथी रहै

ठेठी-अंगिका —एक सङ दू साथी रहै

मैथिली —एक चललै, एक सूती रहलै

ठेठी-अंगिका —एक चललै, एक सूती रहलै

मैथिली —तैयो ओकरों साथ नै छुटलै। (चक्की के दोनों पट्टा)

ठेठी-अंगिका —तैयो ओकरों साथ नै छुटलै। (चक्की के दोनों पट्टा)

मैथिली —आ चतुष्पदीमे तँ बुझौवल एकटा स्वगत-कथन बनि जाइत अछि, जतय बुझबाक वस्तु स्वयं बजैत अछि—

ठेठी-अंगिका —आरो चतुष्पदी में तें बुझौवल एगो अपने-आप-कहनी (स्वगत-कथन) बनी जाय छै, जहाँ बुझै वाला चीज अपने बोलै छै —

मैथिली —जबें हम छेलाँ काँच कुमारी

ठेठी-अंगिका —जबें हम छेलाँ काँच कुमारी

मैथिली —तब तक सहलाँ मार

ठेठी-अंगिका —तब तक सहलाँ मार

मैथिली —अब हम पहनला लाल घंघरिया

ठेठी-अंगिका —अब हम पहनला लाल घंघरिया

मैथिली —अब नै सहबौ मार। (हड़िया)

ठेठी-अंगिका —अब नै सहबौ मार। (हड़िया)

मैथिली —एतय माटिक हाँड़ी अपन जीवन-वृत्तान्त—काँच कुमारीसँ आगिमे पाकि लाल घघरी पहिरब धरि—प्रथम पुरुषमे कहैत अछि। ई बुझौवलक सभसँ परिष्कृत रूप थिक, जतय प्रहेलिका आत्म-कथा आ रूपकक स्तर धरि उठि जाइत अछि। एहि क्रमसँ लेखक (चाहे अनकहने) ई देखा दैत छथि जे अंगिका बुझौवल केवल बुद्धि-विनोद नहि, अपितु उपमा-रूपक-अन्योक्तिक एकटा लघु पाठशाला थिक।

ठेठी-अंगिका —एहिजा माटी के हाँड़ी अपन जिनगी के कहानी—काँच कुमारी सें लै कें आगि में पाकी लाल घघरी पहिरै तक—अपने मुँह सें कहै छै। ई बुझौवल के सबसें सुथरा रूप छै, जहाँ पहेली आत्म-कथा आरो रूपक के दरजा तक चढ़ी जाय छै। ई तरहें लेखक (चाहे बिन कहनहिं) ई देखाय दै छै कि अंगिका बुझौवल खाली बुद्धि-विनोद नै, बल्कि उपमा-रूपक-अन्योक्ति के एगो नान्हकी पाठसाला छै।

मैथिली —लेखकक सभसँ तीक्ष्ण समीक्षकीय हस्तक्षेप ओतय अछि जतय ओ “पंडित द्वारा पंडित कैँ बुद्धिमे पछाड़बा” लेल गढ़ल जटिल बुझौवल कैँ बाल-साहित्यक सीमासँ बाहर घोषित करैत छथि। ई निर्णय एकटा कसौटी दैत अछि—बुझौवलक प्रामाणिकता ओकर रूपमे नहि, बाल-बोधक अनुकूलतामे अछि। अर्थात् लेखक बुझौवल कैँ लोकसंग्रहक दृष्टिसँ नहि, बाल-मनोविज्ञानक दृष्टिसँ पढ़ैत छथि—इएह हुनकर पद्धतिगत विशिष्टता थिक। ज्ञानशास्त्रीय दृष्टिएँ देखी तँ बुझौवल एकटा लघु प्रमाण-क्रीड़ा थिक: प्रमेय (उत्तर) कैँ सादृश्यक ओहार-तर नुकाकए बालक कैँ व्याप्ति-ग्रहणक अभ्यास करबैत अछि। मुदा एतहि पोथीक सीमा सेहो प्रकट होइत अछि—लेखक बुझौवल कैँ वर्गीकृत करैत छथि, मुदा ओकर आन्तरिक संरचना (ओहार-आ-उत्तरक व्याकरण), ओकर कहन-प्रसंग आ मैथिली-बज्जिका बुझौवलक संग ओकर तुलनात्मक स्थिति—ई सभ अछूता रहि जाइत अछि। वर्गीकरण भेल, मुदा बुझौवलक काव्यशास्त्र लिखबाक प्रतीक्षा एखनहुँ अछि।

ठेठी-अंगिका —लेखक के सबसें तेज समीक्षकीय दखल वहाँ छै जहाँ ऊ “पंडित के हाथें पंडित के बुद्धि में पछाड़ै” लेली गढ़लों जटिल बुझौवल के बाल-साहित्य के सीमा सें बाहर के चीज कही दै छै। ई फैसला एगो कसौटी दै छै—बुझौवल के सच्चाई ओकर रूप में नै, बाल-बोध के अनुकूलता में छै। मतलब, लेखक बुझौवल के लोकसंग्रह के नजर सें नै, बाल-मनोविज्ञान के नजर सें पढ़ै छै—इहे हुनकर पद्धति के खासियत छै। ज्ञान के नजर सें देखी तें बुझौवल एगो नान्हकी परमाण-खेल छै: परमेय (जबाब) के सादृश्य के ओहार-तर छिपा कें बुतरू के व्याप्ति-ग्रहण के अभ्यास कराबै छै। मतरकि एहिजेपोथी के सीमा भी खुलै छै—लेखक बुझौवल के बाँटै छै, मतरकि ओकर भीतरी बनावट (ओहार-आरो-जबाब के व्याकरण), ओकर कहै के मौका, आरो मैथिली-बज्जिका बुझौवल के संग ओकर तुलना—ई सब अनछुआ रही जाय छै। बँटवारा भेलै, मतरकि बुझौवल के काव्यशास्त्र लिखै के काम अखनी बाँकिये छै।

पहेली वा बुझौवल: संज्ञानात्मक विकासक साधन

ठेठी-अंगिका: पहेली वा बुझौवल: संज्ञानात्मक विकास के साधन

मैथिली —बालक जखन किशोरावस्थाक दिस अग्रसर होइत अछि, तखन ओकर तार्किक क्षमताक विकास लेल लोक-साहित्यमे पहेलीक विशेष स्थान रहल अछि। बाल-साहित्यमे पहेली बौद्धिक व्यायाम अछि। डॉ. अमरेन्द्र अंगिका पहेलीकेँ एकपदी, द्विपदी, त्रिपदी आ चतुष्पदी रूपमे वर्गीकृत केने छथि। चन्द्रप्रकाश जगप्रिय द्वारा सम्पादित 'अंगिका लोकोक्ति, फेकड़ा आरो बुझौवल' सँ लेखक बहुत रास पहेलीक सन्दर्भ देने छथि।

ठेठी-अंगिका —बालक जबें किशोरावस्था के दिस अग्रसर होय छै, तबें ओकर तार्किक क्षमता के विकास लेली लोक-साहित्य में पहेली के विशेष स्थान रहल छै। बाल-साहित्य में पहेली बौद्धिक व्यायाम छै। डॉ. अमरेन्द्र अंगिका पहेलीकेँ एकपदी, द्विपदी, त्रिपदी आरो चतुष्पदी रूप में वर्गीकृत केने छै। चन्द्रप्रकाश जगप्रिय द्वारा सम्पादित 'अंगिका लोकोक्ति, फेकड़ा आरो बुझौवल' सें लेखक बहुत रास पहेली के सन्दर्भ देने छै।

पहेली-वर्गीकरण आ उद्धरण

ठेठी-अंगिका: पहेली-वर्गीकरण आरो उद्धरण

पहेलीक प्रकार · अंगिका पहेली (विशुद्ध उद्धरण) · मैथिली अर्थ (समाधान)

ठेठी-अंगिका: पहेली के प्रकार · अंगिका पहेली (मूल उद्धरण) · मैथिली अर्थ (समाधान)

मैथिली —एकपदी — मूल अंगिका पहेली: फरै नै फूलै, ढकमोरै गाछ। — मैथिली अर्थ/समाधान: पानक पत्ता

ठेठी-अंगिका —एकपदी — मूल अंगिका पहेली: फरै नै फूलै, ढकमोरै गाछ। — मैथिली अर्थ/समाधान: पानक पत्ता

मैथिली —एकपदी — मूल अंगिका पहेली: जड़ नै पत्ता, की छेकौ? — मैथिली अर्थ/समाधान: अमरबेल (अमरलत्ता)

ठेठी-अंगिका —एकपदी — मूल अंगिका पहेली: जड़ नै पत्ता, की छेकौ? — मैथिली अर्थ/समाधान: अमरबेल (अमरलत्ता)

मैथिली —द्विपदी — मूल अंगिका पहेली: सुइया एन्हों सोज्झो / डाँड़ा पर बोज्झो। — मैथिली अर्थ/समाधान: मकईक गाछ

ठेठी-अंगिका —द्विपदी — मूल अंगिका पहेली: सुइया एन्हों सोज्झो / डाँड़ा पर बोज्झो। — मैथिली अर्थ/समाधान: मकईक गाछ

मैथिली —त्रिपदी — मूल अंगिका पहेली: एक सँ दू साथी रहै / एक चललै, एक सूती रहलै / तैयो ओकरो साथ नै छुटलै। — मैथिली अर्थ/समाधान: जाँतक दुनू पट्टा (चक्की)

ठेठी-अंगिका —त्रिपदी — मूल अंगिका पहेली: एक सें दू साथी रहै / एक चललै, एक सूती रहलै / तैयो ओकरो साथ नै छुटलै। — मैथिली अर्थ/समाधान: जाँतक दूनो पट्टा (चक्की)

मैथिली —चतुष्पदी — मूल अंगिका पहेली: जबे हम छेलौं काँच कुआरी / तब तक सहलौं मार / अब हम पहनला लाल घंघरिया / अब नै सहबौ मार। — मैथिली अर्थ/समाधान: मरिच (मिरचाय)

ठेठी-अंगिका —चतुष्पदी — मूल अंगिका पहेली: जबे हम छेलौं काँच कुआरी / तब तक सहलौं मार / अब हम पहनला लाल घंघरिया / अब नै सहबौ मार। — मैथिली अर्थ/समाधान: मरिच (मिरचाय)

मैथिली —एहि पहेली सभक समीक्षा सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे एहिमे रूपक आ उपमाक प्रयोग बड्ड सहजता सँ कएल गेल अछि। 'काँच कुआरी' आ 'लाल घंघरिया' सन मानवीकरण (Personification) मरिचकेँ बाल-कौतूहलक केन्द्र बना दैत अछि। ई बाल-साहित्यक उत्कृष्ट उदाहरण अछि जतय प्रकृति आ मानव-जीवनक बीच तादात्म्य स्थापित कएल गेल अछि। 'सुइया एन्हों सोज्झो' मे दृष्टान्त अलङ्कारक छटा बाल-मनकेँ आकर्षित करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई पहेली सिनी के समीक्षा सें ई साफ होय छै जे ई में रूपक आरो उपमा के प्रयोग बहुत सहजता सें करलों गेलों छै। 'काँच कुआरी' आरो 'लाल घंघरिया' जइसनमानवीकरण (Personification) मरिचकेँ बाल-कौतूहल के केन्द्र बना दै छै। ई बाल-साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण छै जहाँ प्रकृति आरो मानव-जीवन के बीच तादात्म्य स्थापित करलों गेलों छै। 'सुइया एन्हों सोज्झो' में दृष्टान्त अलङ्कारक छटा बाल-मनकेँ आकर्षित करै छै।

तुक्तक आ शिशु-काव्य (Nonsense Rhymes)

ठेठी-अंगिका: तुक्तक आरो शिशु-काव्य (Nonsense Rhymes)

मैथिली —शिशु-काव्यक एकटा पैघ हिस्सा ध्वन्यात्मक वा 'तुक्तक' होइत अछि। एहिमे अर्थसँ अधिक ध्वनिक लय पर जेर देल जाइत अछि। अङ्ग्रेजी साहित्यमे जकरा 'Nonsense Rhymes' कहल जाइत अछि, अंगिका बाल-साहित्यमे ओकरो पर्याप्त भण्डार अछि। पोथीमे लेखक विशुद्ध तुक्तक आ अर्द्ध-तुक्तकक भेदन केने छथि। विशुद्ध तुक्तकक एकटा उत्कृष्ट उदाहरण:

ठेठी-अंगिका —शिशु-काव्य के एगो बड़का हिस्सा ध्वन्यात्मक वा 'तुक्तक' होय छै। ई में अर्थ सें अधिक ध्वनि के लय पर जेर देलों जाय छै। अङ्ग्रेजी साहित्य में जेकरा 'Nonsense Rhymes' कहल जाय छै, अंगिका बाल-साहित्य में ओकरो पर्याप्त भण्डार छै। पोथी में लेखक विशुद्ध तुक्तक आरो अर्द्ध-तुक्तक के भेदन केने छै। विशुद्ध तुक्तक के एगो उत्कृष्ट उदाहरण:

मैथिली —ओ रे रे नुनु ओर बटना माय-बाप गेलौ छौ चिचोर कटना बाप जिमिदरवा छोड़बा पर माय जिमिदरनी डोलबा पर पैला में चूड़ा मचक मारै छै। सीका पर दही हिलोड़ पारै छै।

ठेठी-अंगिका —ओ रे रे नुनु ओर बटना माय-बाप गेलौ छौ चिचोर कटना बाप जिमिदरवा छोड़बा पर माय जिमिदरनी डोलबा पर पैला में चूड़ा मचक मारै छै। सीका पर दही हिलोड़ पारै छै।

मैथिली —उक्त पंक्तियक विश्लेषण करैत डॉ. अमरेन्द्र लिखैत छथि जे 'ओर बटना', 'चिचोर कटना' सन पद-समूहक कोनो अर्थ-सङ्गति नहि अछि, मुदा ई बालक-मनकेँ गुदगुदाबए लेल पूर्णतः सक्षम अछि। अर्द्ध-तुक्तक ओ होइत अछि जाहिमे किछु दूर धरि अर्थ-सङ्गति भेटैत अछि आ फेर अकारण निरर्थक पद आबि जाइत अछि। एकर सेहो एकटा गजबक उदाहरण पोथीमे उपलब्ध अछि:

ठेठी-अंगिका —ई पंक्ति के विश्लेषण करै डॉ. अमरेन्द्र लिखै छै जे 'ओर बटना', 'चिचोर कटना' जइसन पद-समूह के कोनो अर्थ-सङ्गति नै छै, मतरकि ई बालक-मनकेँ गुदगुदाबए लेली पूरा तरह सें सक्षम छै। अर्द्ध-तुक्तक ऊ होय छै जेकरा में कुछु दूर तक अर्थ-सङ्गति मिलै छै आरो फेर अकारण निरर्थक पद आबि जाय छै। एकर भी एगो गजबक उदाहरण पोथी में उपलब्ध छै:

मैथिली —एक मटर पैलै छी, एड़िया तर नूकैलै छी सातो गोतनी पीसै छै; एक गोतनी रूसली केकरा ले? बुढ़बा ले। बुढ़बा गेलौ छै बारी; कौआ नोचै छै दाढ़ी

ठेठी-अंगिका —एक मटर पैलै छी, एड़िया तर नूकैलै छी सातो गोतनी पीसै छै; एक गोतनी रूसली केकरा ले? बुढ़बा ले। बुढ़बा गेलौ छै बारी; कौआ नोचै छै दाढ़ी

मैथिली —एहिठाम 'बुढ़बा गेलौ छै बारी' आ 'कौआ नोचै छै दाढ़ी' मे जे हास्य (Humour) उत्पन्न कएल गेल अछि, ओ बच्चाक फंतासी संसारक एकदम समीप अछि। बाल-संवेदना एहि प्रकारक तुक्तक सँ सर्वाधिक प्रफुल्लित होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —एतै 'बुढ़बा गेलौ छै बारी' आरो 'कौआ नोचै छै दाढ़ी' में जे हास्य (Humour) उत्पन्न करलों गेलों छै, ऊ बच्चा के फंतासी संसार के एकदम समीप छै। बाल-संवेदना ई प्रकारक तुक्तक सें सभसें बेसी प्रफुल्लित होय छै।

7. खेलगीतः पाठ, देह आ समुदाय

ठेठी-अंगिका: 7. खेलगीतः पाठ, देह आरो समुदाय

मैथिली —खेलगीत सम्बन्धी पृष्ठसभ पोथीक सर्वाधिक जीवित अंशसभमे अछि। बच्चा खेलैत-खेलैत गाबैत अछि; गीत खेलक बाहरी सजावट नहि, खेलक क्रियाक अंग अछि। ऐच्छिक खेल, प्रतिस्पर्धात्मक खेल, बौद्धिक खेल आदि रूपसभक चर्चा देखबैत अछि जे बाल-साहित्यक पाठकीयता चुपचाप पढ़नाइ मात्र नहि। बच्चा बोलैत, दौड़ैत, गिनैत, चुनैत, हारैत-जितैत, हँसैत आ सामूहिक नियम बनबैत साहित्यकेँ जीवित करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —खेलगीत सम्बन्धी पृष्ठ सिनी पोथी के सर्वाधिक जीवित अंश सिनी में छै। बच्चा खेलै-खेलै गावै छै; गीत खेल के बाहरी सजावट नै, खेल के क्रिया के अंग छै। ऐच्छिक खेल, प्रतिस्पर्धात्मक खेल, बौद्धिक खेल आदि रूप सिनी के चर्चा देखावै छै जे बाल-साहित्य के पाठकीयता चुपचाप पढ़नाइ मात्र नै। बच्चा बोलै, दौड़ै, गिनै, चुनै, हारै-जीतै, हँसै आरो सामूहिक नियम बनावै साहित्य कें जीवित करै छै।

मैथिली —एहि ठाम पोथी performance सम्बन्धी एक उपयोगी प्रश्न खोलैत अछि: साहित्य कहाँ समाप्त होइत अछि आ खेल कहाँ आरम्भ? खेलगीतमे शब्द, देह-चाल, समूह-संरचना, ताल, स्थान आ परिस्थिति अलग नहि कएल जा सकैत। शब्दमात्र लिखि लेब एक पाठ बचबैत अछि, पूरा प्रस्तुति नहि। एहि कारण पोथीक दस्तावेजीकरण अमूल्य होइतहुँ अपूर्ण अछि—आ ई अपूर्णता लेखकक व्यक्तिगत कमी नहि, लिखित माध्यमक सीमा अछि।

ठेठी-अंगिका —ई जगह पोथी performance सम्बन्धी एक उपयोगी प्रश्न खोलै छै: साहित्य कहाँ समाप्त होय छै आरो खेल कहाँ आरम्भ? खेलगीत में शब्द, देह-चाल, समूह-संरचना, ताल, स्थान आरो परिस्थिति अलग नै करलों जाय सकै। शब्दमात्र लिख कें लेब एक पाठ बचावै छै, पूरा प्रस्तुति नै। ई कारण पोथी के दस्तावेजीकरण अमूल्य होतो भी अपूर्ण छै—आरो ई अपूर्णता लेखक के व्यक्तिगत कमी नै, लिखित माध्यम के सीमा छै।

मैथिली —खेलगीत सामाजिक सीखक माध्यम सेहो अछि। संख्या, क्रम, चुनाउ, नियम, बारी, प्रतियोगिता, सहयोग, परिहास, भूमिका-विनिमय—ई सभ बिना औपचारिक पाठशालाक बच्चासीखैत अछि। भविष्यक शोधमे लिंग-आधारित खेल, उमेर-वर्ग, ग्राम-नगर भेद, मौसम, विद्यालय आ आँगनक अन्तरक अध्ययन कएल जाए तँ अंगिका बाल-संस्कृतिक अधिक सूक्ष्म नक्शा बनि सकैत अछि। लोकसाहित्यक दस्तावेजीकरणक महत्त्व खेलगीतक सन्दर्भमे आरो स्पष्ट होइत अछि: लेखक सामग्री बचौने छथि; अगिला पीढ़ीक शोधक काज ओकर धुन, देह, स्थान आ सामाजिक परिस्थिति बचेनाइ अछि।

ठेठी-अंगिका —खेलगीत सामाजिक सीख के माध्यम भी छै। संख्या, क्रम, चुनाउ, नियम, बारी, प्रतियोगिता, सहयोग, परिहास, भूमिका-विनिमय—ई सिनी बिना औपचारिक पाठशाला के बच्चा सीखै छै। आगू के शोध में लिंग-आधारित खेल, उमेर-वर्ग, ग्राम-नगर भेद, मौसम, विद्यालय आरो आँगन के अन्तर के अध्ययन करलों जाए तें अंगिका बाल-संस्कृति के अधिक सूक्ष्म नक्शा बनी सकै छै। लोकसाहित्य के दस्तावेजीकरण के महत्त्व खेलगीत के सन्दर्भ में आरो साफ होय छै: लेखक सामग्री बचाय कें रखलों छै; आगू के पीढ़ी के शोध के काज ओकर धुन, देह, स्थान आरो सामाजिक परिस्थिति बचाय कें रखब छै।

खेलगीत: शारीरिक, मानसिक आ सामाजिक विकासक माध्यम

ठेठी-अंगिका: खेलगीत: शारीरिक, मानसिक आरो सामाजिक विकास के माध्यम

मैथिली —मनोवैज्ञानिक कार्ल ग्रूस (Karl Groos) कैं उद्धृत करैत लेखक अंगिका बाल-खेलगीतकैं विभिन्न श्रेणीमे बाँटने छथि: गतिशील खेलक गीत, बैसि कऽ खेलबाक गीत, उछल-कूदक गीत, आ बौद्धिक खेलगीत।

ठेठी-अंगिका —मनोवैज्ञानिक कार्ल ग्रूस (Karl Groos) कें उद्धृत करै लेखक अंगिका बाल-खेलगीतकैं विभिन्न श्रेणी में बाँटने छै: गतिशील खेल के गीत, बैसि कऽ खेलै के गीत, उछल-कूद के गीत, आरो बौद्धिक खेलगीत।

मैथिली —गतिशील खेलक गीतक एकटा उदाहरण जतय बच्चा एक-दोसराकैं गुदगुदी लगबैत अछि:

ठेठी-अंगिका —गतिशील खेल के गीत के एगो उदाहरण जहाँ बच्चा एक-दोसराकैं गुदगुदी लगबैत छै:

मैथिली —अट्ठा-पट्ठा नुनु के सात बेटा राजा, पाता, सीत, वसन्त, कुतवा अरगड़ मारौं, बड़गड़ मारौं पानी पीएं पोखरिऐ जाऊँ नुनुवाँ कहै कांखी तर जाऊँ।

ठेठी-अंगिका —अट्ठा-पट्ठा नुनु के सात बेटा राजा, पाता, सीत, वसन्त, कुतवा अरगड़ मारौं, बड़गड़ मारौं पानी पीएं पोखरिऐ जाऊँ नुनुवाँ कहै कांखी तर जाऊँ।

मैथिली —खेलक समय जे प्रतिस्पर्धा आ सामूहिक सहभागिताक भावना बच्चा सभमे पनपैत अछि, ई गीत ओकर साक्षात् प्रमाण अछि। अंगिकाक 'कवड्डी' खेलक गीतमे सेहो ई प्रतिस्पर्धाक भाव भेटैत अछि:

ठेठी-अंगिका —खेल के समय जे प्रतिस्पर्धा आरो सामूहिक सहभागिता के भावना बच्चा सभमे पनपैत छै, ई गीत ओकर साक्षात् प्रमाण छै। अंगिका के 'कवड्डी' खेल के गीत में भी ई प्रतिस्पर्धाक भाव मिलै छै:

मैथिली —दुश्मन गोड़ा हो तैयार सरपट दौड़बौ तारो पार

ठेठी-अंगिका —दुश्मन गोड़ा हो तैयार सरपट दौड़बौ तारो पार

मैथिली —एहि प्रकारक गीत बालकमे सामाजिकता, समूहमे रहबाक प्रवृत्ति, आ हार-जीतकैं सहजता सँ स्वीकार करबाक मनोविज्ञानक विकास करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई प्रकारक गीत बालक में सामाजिकता, समूह में रहै के प्रवृत्ति, आरो हार-जीतकैं सहजता सें स्वीकार करै के मनोविज्ञान के विकास करै छै।

8. बाल-लोककथा: मौखिक रूपान्तरण, कथा-आनन्द आ नीति

ठेठी-अंगिका: 8. बाल-लोककथा: मौखिक रूपान्तरण, कथा-आनन्द आरो नीति

मैथिली —पृष्ठ 25 सँ आरम्भ बाल-लोककथा-विवेचन ग्रन्थक कथात्मक आधार खोलैत अछि। लेखक मौखिक लोककथाक परिवर्तनशीलता स्वीकार करैत छथि: कण्ठसँ कण्ठ, पीढ़ीसँ पीढ़ी, स्थानसँ स्थान कथा रूप बदलि सकैत अछि। पशु-पक्षी, राजकुमार-राजकुमारी, चतुराई, भय, चमत्कार, नीति आ हास्य बालकथाक पारम्परिक सामग्रीक रूपमे उपस्थित अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 25 सें आरम्भ बाल-लोककथा-विवेचन ग्रन्थ के कथात्मक आधार खोलै छै। लेखक मौखिक लोककथा के परिवर्तनशीलता स्वीकार करै छै: कण्ठ सें कण्ठ, पीढ़ी सेंपीढ़ी, स्थान सें स्थान कथा रूप बदलि सकै छै। पशु-पक्षी, राजकुमार-राजकुमारी, चतुराई, भय, चमत्कार, नीति आरो हास्य बालकथा के पारम्परिक सामग्री के रूप में उपस्थित छै।

मैथिली —एहि अंशक महत्त्व ई जे बाल-साहित्यक लेखक अवधारणा लोकपरम्परामे बदलि जाइत अछि। लिखित आधुनिक कहानीमे लेखकत्व स्पष्ट रहैत अछि; लोककथामे सामूहिक पुनर्कथन स्वयं सृजन अछि। अतः 'मूल पाठ' खोजबाक अपेक्षा variant, प्रसंग आ कथावाचकक भूमिका महत्त्वपूर्ण बनैत अछि। पोथी एहि दिशामे पर्याप्त सामग्री दैत अछि, यद्यपि कथानक-प्रकार, motif, कथा-संरचना, पात्र-रूपान्तरण वा कथावाचकीय शैलीक व्यवस्थित विश्लेषण नहि करैत।

ठेठी-अंगिका —ई अंश के महत्त्व ई जे बाल-साहित्य के लेखक अवधारणा लोकपरम्परा में बदलि जाय छै। लिखित आधुनिक कहानी में लेखकत्व स्पष्ट रहै छै; लोककथा में सामूहिक पुनर्कथन अपने सृजन छै। अतः 'मूल पाठ' खोजै के अपेक्षा variant, प्रसंग आरो कथावाचक के भूमिका महत्त्वपूर्ण बनै छै। पोथी ई दिशा में पर्याप्त सामग्री दै छै, यद्यपि कथानक-प्रकार, motif, कथा-संरचना, पात्र-रूपान्तरण वा कथावाचकीय शैली के व्यवस्थित विश्लेषण नै करै।

मैथिली —नीति/शिक्षाक प्रश्न एतय फेर अबैत अछि। लोककथा व्यवहारिक बुद्धि, सावधानी, सदाचार वा परिणामक संकेत दऽ सकैत अछि, मुदा ओकर लोकप्रियता केवल उपदेशक कारण नहि। तनाव, पुनरावृत्ति, बुद्धि-विनोद, असम्भव घटना, चमत्कार, छल, उलटफेर आ कथाक सामूहिक प्रदर्शन आनन्द पैदा करैत अछि। लेखकक आरम्भिक बाल-मन सिद्धान्त लागू कएल जाए तँ उत्तम लोककथा ओ अछि जाहिमे शिक्षा कथाक रसक भीतर समाहित हो। वर्तमान पोथी मूल रूपेँ corpus-builder अछि—ओ कथा-संसारक अस्तित्व, प्रकार आ स्रोत बचबैत अछि; विस्तृत कथावैज्ञानिक आलोचना अगिला शोधक काज अछि।

ठेठी-अंगिका —नीति/शिक्षा के प्रश्न एतै फेनू आवै छै। लोककथा व्यवहारिक बुद्धि, सावधानी, सदाचार वा परिणाम के संकेत दै कें सकै छै, मतरकि ओकर लोकप्रियता केवल उपदेश के कारण नै। तनाव, पुनरावृत्ति, बुद्धि-विनोद, असम्भव घटना, चमत्कार, छेलै, उलटफेर आरो कथा के सामूहिक प्रदर्शन आनन्द पैदा करै छै। लेखक के आरम्भिक बाल-मन सिद्धान्त लागू करलों जाए तें उत्तम लोककथा ओ छै जेकरा में शिक्षा कथा के रस के भीतर समाहित हो। वर्तमान पोथी मूल रूपेँ corpus-builder छै—ओ कथा-संसार के अस्तित्व, प्रकार आरो स्रोत बचावै छै; विस्तृत कथावैज्ञानिक आलोचना आगू के शोध के काज छै।

बाल-लोककथा: यथार्थ आ कल्पनाक मिश्रण

ठेठी-अंगिका: बाल-लोककथा: यथार्थ आरो कल्पनाक मिश्रण

मैथिली —बाल-लोककथा बिना कोनो बाल-साहित्यक समीक्षा अधूरी रहत। डॉ. अमरेन्द्र ई स्थापित करैत छथि जे लोककथा वस्तुतः बाल-साहित्य हे अछि, किएक तँ एहिमे जे कौशल आ फंतासी (Fantasy) अछि, ओ बच्चाक मनोविज्ञानकेँ सन्तुष्ट करैत अछि। पोथीमे अंग प्रदेशक ऐतिहासिकता पर गम्भीर विमर्श कएल गेल अछि। आचार्य चतुरसेन आ रामधारी सिंह दिनकरक सन्दर्भ दैत लेखक बतबैत छथि जे प्राचीन कालमे अंग प्रदेशक निवासी 'चम्पा' (भागलपुर) सँ हिन्द-चीन (वियतनाम, कम्बोडिया) धरि अपन उपनिवेश स्थापित केने छलाह, जकर कारणेँ अंगिका लोककथाक प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशियाक साहित्यमे सेहो भेटैत अछि। फाहियान आ विक्रमशिला विश्वविद्यालयक सन्दर्भ एहि ऐतिहासिकताकेँ प्रमाणित करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —बाल-लोककथा बिना कोनो बाल-साहित्य के समीक्षा अधूरी रहत। डॉ. अमरेन्द्र ई स्थापित करै छै जे लोककथा असल में बाल-साहित्य हे छै, काहेकि तें ई में जे कौशल आरो फंतासी (Fantasy) छै, ऊ बच्चा के मनोविज्ञान केँ सन्तुष्ट करै छै। पोथी में अंग प्रदेश के ऐतिहासिकता पर गम्भीर विमर्श करलों गेलों छै। आचार्य चतुरसेन आरो रामधारी सिंह दिनकरक सन्दर्भ दै लेखक बतावै छै जे प्राचीन काल में अंग प्रदेश के निवासी 'चम्पा' (भागलपुर) सें हिन्द-चीन (वियतनाम, कम्बोडिया) तक अपन उपनिवेश स्थापित केने

छेलै, जकर कारणेँ अंगिका लोककथा के प्रभाव दक्षिण-पूर्व एशियाक साहित्य में भी मिलै छै। फाहियान आरो विक्रमशिला विश्वविद्यालयक सन्दर्भ ई ऐतिहासिकताकेँ प्रमाणित करै छै।

मैथिली —मीना तिवारी द्वारा सम्पादित 'चलौ खिस्सा के गाँव' आ वाञ्छा भट्ट अंजनक 'फुलझामर' सन लोककथा सङ्ग्रहक पोथीमे चर्चा अछि। एकटा प्रसिद्ध अंगिका बाल-लोककथा 'टेंगटा' क पूर्ण उद्धरण पोथीमे देल गेल अछि:

ठेठी-अंगिका —मीना तिवारी द्वारा सम्पादित 'चलौ खिस्सा के गाँव' आरो वाञ्छा भट्ट अंजनक 'फुलझामर' जइसन लोककथा सङ्ग्रह के पोथी में चर्चा छै। एगो प्रसिद्ध अंगिका बाल-लोककथा 'टेंगटा' के पूर्ण उद्धरण पोथी में देलों गेलों छै:

मैथिली —एकटा किसान छेलै, वें एक दिन हटिया सँ मछली किनी के आनलगै। किसैनी मछली रांन्है ले बैठली। जहीना मछलीवाला पोटली खोललकी कि एकटा टेंगटा वैमे सँ निकली के कोठी तरो मे नुकाय गेलै।... "माय! माय आजू सँ तों हमरी माय, हम्में तोरो बेटा। दे, हम्में कलौवो लेके बाबू लग जैबै।"

ठेठी-अंगिका —एकटा किसान छेलै, वें एक दिन हटिया सँ मछली किनी के आनलगै। किसैनी मछली रांन्है ले बैठली। जहीना मछलीवाला पोटली खोललकी कि एकटा टेंगटा वैमे सँ निकली के कोठी तरो मे नुकाय गेलै।... "माय! माय आजू सँ तों हमरी माय, हम्में तोरो बेटा। दे, हम्में कलौवो लेके बाबू लग जैबै।"

मैथिली —'टेंगटा' कथाक समीक्षा: ई कथा एकटा टेंगटा (माछक एकटा प्रजाति) आ किसानक बीचक सम्बन्धकेँ देखबैत अछि। बच्चा सभकेँ पशुपक्षी आ जलीय जीव-जन्तुसँ गप करबाक जे फैंटेसी होइत अछि, ओ एहि कथाक प्राण अछि। टेंगटा जखन एकटा बालकक रूप लऽ कऽ किसानक काज करैत अछि, अपन तीक्ष्ण बुद्धिसँ (चूहा, बाघ, आ आगिक मददि सँ) राजाकेँ सबक सिखबैत अछि, आ अन्ततः किसानकेँ सुखी करैत अछि। ई कथा बाल-मनकेँ ई सन्देश दैत अछि जे छोट सँ छोट जीवमे सेहो अदम्य साहस आसामर्थ्य भऽ सकैत अछि। नीतिक ई सन्देश बिना कोनो उपदेशात्मक बोझक बच्चाकेँ देल गेल अछि।

ठेठी-अंगिका —'टेंगटा' कथा के समीक्षा: ई कथा एगो टेंगटा (माछक एगो प्रजाति) आरो किसानक बीचक सम्बन्धकेँ देखावै छै। बच्चा सभकेँ पशुपक्षी आरो जलीय जीव-जन्तु सें गप करै के जे फैंटेसी होय छै, ऊ ई कथा के प्राण छै। टेंगटा जबें एगो बालक के रूप लऽ कऽ किसानक काज करै छै, अपन तीक्ष्ण बुद्धि सें (चूहा, बाघ, आरो आगि के मददि सँ) राजाकेँ सबक सिखावै छै, आरो अन्ततः किसानकेँ सुखी करै छै। ई कथा बाल-मनकेँ ई सन्देश दै छै जे छोट सें छोट जीव में भी अदम्य साहस आरो सामर्थ्य होय कें सकै छै। नीति के ई सन्देश बिना कोनो उपदेशात्मक बोझक बच्चा केँ देलों गेलों छै।

9. अनुवादः बाल-साहित्यक विस्तार आ भाषा-निर्माण

ठेठी-अंगिकाः 9. अनुवादः बाल-साहित्य के विस्तार आरो भाषा-निर्माण

मैथिली —आधुनिक अंगिका बाल-साहित्यक इतिहासमे अनुवादकेँ पोथी उल्लेखनीय स्थान दैत अछि। पृष्ठ 44 सँ लेखक अन्य भाषाक बालोपयोगी कथा, संस्कृतक कथा-परम्परा, जातक-कथा, बाइबिल-सम्बद्ध कथा आदि रूपान्तरणक चर्चा करैत छथि। ई सामग्री एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तर्क सामने अनैत अछि: आधुनिक लिखित बाल-गद्यक आरम्भ केवल मौलिक रचनासँ नहि, अनुवाद आ पुनर्कथनसँ सेहो होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य के इतिहास में अनुवाद कें पोथी उल्लेखनीय स्थान दै छै। पृष्ठ 44 सें लेखक अन्य भाषा के बालोपयोगी कथा, संस्कृत के कथा-परम्परा, जातक-कथा, बाइबिल-सम्बद्ध कथा आदि रूपान्तरण के चर्चा करै छै। ई सामग्री एक महत्त्वपूर्ण ऐतिहासिक तर्क सामने अनै छै: आधुनिक लिखित बाल-गद्य के आरम्भ केवल मौलिक रचना सें नै, अनुवाद आरो पुनर्कथन सें भी होय छै।

मैथिली —सीमित संस्थागत संसाधनवला भाषिक साहित्य लेल अनुवाद द्वितीयक कर्म नहि। अनुवाद नब विधा परिचित करबैत अछि, बालक लेल उपलब्ध पाठक संख्या बढ़बैत अछि, लिखित गद्यक शब्दावली विकसित करैत अछि, विश्वकथाकेँ स्थानीय भाषिक अनुभवमे आनैत अछि। एहि अर्थमे पोथीक अनुवाद-अध्याय भाषा-निर्माणक इतिहास सेहो अछि।

ठेठी-अंगिका —सीमित संस्थागत संसाधनवला भाषिक साहित्य लेल अनुवाद द्वितीयक कर्म नै। अनुवाद नब विधा परिचित करावै छै, बालक लेल उपलब्ध पाठक संख्या बढ़ावै छै, लिखित गद्य के शब्दावली विकसित करै छै, विश्वकथा कें स्थानीय भाषिक अनुभव में अनै छै। ई अर्थ में पोथी के अनुवाद-अध्याय भाषा-निर्माण के इतिहास भी छै।

मैथिली —मुदा ई खण्ड भविष्यक गहन शोधक निमंत्रण दैत अछि। पोथी प्रायः कौन कथा अनूदित भेल, के अनुवाद केलनि, कोन परम्परासँ आयल—एहि स्तर धरि रहैत अछि। स्रोत-पाठ आ अंगिका लक्ष्य-पाठक तुलनात्मक विश्लेषण कम अछि। बालक लेल रूपान्तरणमे कथानक घटाओल-बढ़ाओल गेल कि नहि? कठिन सांस्कृतिक संकेत स्थानीय बनाओल गेल कि नहि? नाम, भोजन, धर्म, हास्य, संवाद, लय आ नैतिक निष्कर्ष कोना बदलल? ई सभ प्रश्न अनुवाद-अध्ययनक अगिला चरण अछि।

ठेठी-अंगिका —मतरकि ई खण्ड आगू के गहन शोध के निमंत्रण दै छै। पोथी प्रायः कौन कथा अनूदित होलै, के अनुवाद केलकै, कोन परम्परा सें आयलों—ई स्तर तक रहै छै। स्रोत-पाठ आरो अंगिका लक्ष्य-पाठक तुलनात्मक विश्लेषण कम छै। बालक लेल रूपान्तरण में कथानक घटावलों-बढ़ावलों गेलों कि नै? कठिन सांस्कृतिक संकेत स्थानीय बनावलों गेलों कि नै? नाम, भोजन, धर्म, हास्य, संवाद, लय आरो नैतिक निष्कर्ष केना बदलों? ई सिनी प्रश्न अनुवाद-अध्ययन के आगू के चरण छै।

मैथिली —Reynolds मौखिक आ मुद्रित परम्पराक पीढ़ीगत रूपान्तरणक चर्चा करैत छथि। एहि आलोकमे अंगिका बाल-साहित्यक अनुवाद-इतिहासकेँ भाषा-बीच यात्रा मात्र नहि, माध्यम-बीच यात्राक रूपमे सेहो विस्तार देल जा सकैत अछि—कथा सँ चित्र-पोथी, रेडियो, नाटक, ऑडियो वा डिजिटल रूप धरि। मूल पोथी एहि सम्भावनाक ऐतिहासिक आधार देइत अछि।

ठेठी-अंगिका —Reynolds मौखिक आरो मुद्रित परम्परा के पीढ़ीगत रूपान्तरण के चर्चा करै छै। ई आलोक में अंगिका बाल-साहित्य के अनुवाद-इतिहास कें भाषा-बीच यात्रा मात्र नै, माध्यम-बीच यात्रा के रूप में भी विस्तार देलों जाय सकै छै—कथा सें चित्र-पोथी, रेडियो, नाटक, ऑडियो वा डिजिटल रूप तक। मूल पोथी ई सम्भावना के ऐतिहासिक आधार दै छै।

पाठ-सर्वेक्षण: दोसर अध्याय — आधुनिक परम्परा

ठेठी-अंगिका: पाठ-सर्वेक्षण: दोसरका अध्याय — आधुनिक परम्परा

मैथिली —दोसर अध्याय ऐतिहासिक गहराइक कारणें मूल्यवान अछि। लेखक अनुवादित बाल-लोककथाक इतिहास ठेठ अठारहम शताब्दीक ईसाई पादरी (फादर अण्टो नियोकूर) क बाइबिल-कथानुवादसँ प्रारम्भ कए, ग्रियर्सनक "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" आ डॉ. माहेश्वरी सिंह महेशक ग्रन्थ धरि पहुँचैत छथि; एहि क्रममे "अंगिका कथा-सरोवर" (२००६) क अठारह संस्कृत-मूलक कथा आ श्रीउमेशक योगदानक चर्चा अछि। आधुनिक मौलिक बाल-कवितामे ओ विषयगत वर्गीकरण—यथा गतिशील प्रकृतिक काव्य—लगबैत छथि आ डॉ. मृदुला शुक्ला (सोन चिरैया), सान्त्वना साह, दिनेश बाबा, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, चन्द्रप्रकाश जगप्रिय आदि कविक चर्चा करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —दोसरका अध्याय अपन ऐतिहासिक गहराई के कारणें कीमती छै। लेखक अनुवादित बाल-लोककथा के इतिहास ठेठ अठारहवीं सदी के ईसाई पादरी (फादर अण्टो नियोकूर) के बाइबिल-कथा-अनुवाद सें सुरू करी कें, ग्रियर्सन के "लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ इण्डिया" आरो डॉ. माहेश्वरी सिंह महेश के ग्रन्थ तक पहुँचै छै; एहि क्रम में "अंगिका कथा-सरोवर" (२००६) के अठारह गो संस्कृत-मूल के कथा आरो श्रीउमेश के योगदान के चर्चा छै। आधुनिक मौलिक बाल-कविता में ऊ विषय के आधार पर वर्गीकरण—जइसन गतिशील परकृति के काव्य—लगाबै छै आरो डॉ. मृदुलाशुक्ला (सोन चिरैया), सान्त्वना साह, दिनेश बाबा, अनिरुद्ध प्रसाद विमल, चन्द्रप्रकाश जगप्रिय आदि कवि के चर्चा करै छै।

अनुवाद-मीमांसा: एक गहन विवेचन

ठेठी-अंगिका: अनुवाद-मीमांसा: एगो गहरा विवेचन

मैथिली —अनुवाद-प्रसंग एहि पोथीक दोसर मौलिक योगदान थिक, आ एतय एकटा पूरा अनुवाद-इतिहासक रूपरेखा भेटैत अछि। ध्यान देबाक बात ई जे अंगिकाक सभसँ पुरान उपलब्ध "अनुवाद"—ग्रियर्सनक सर्वेमे संकलित उड़ाहा-पुत्रक (Prodigal Son) दृष्टान्त—मूलतः एकटा मिशनरी आ औपनिवेशिक भाषा-नमूना थिक, कोनो देशज साहित्यिक कर्म नहि। एहिसँ एकटा पैघ प्रश्न ठाढ़ होइत अछि: अनुवाद भाषा-प्रलेखन थिक, आकि साहित्य? पोथीक अन्तर्निहित उत्तर स्पष्ट अछि—ओ अंगिका अनुवाद-परम्परा केँ भाषाविदक नमूना-शीशीसँ निकालि, जीवन्त बाल-साहित्यक कोठलीमे राखि दैत अछि। ई स्थानान्तरण सांस्कृतिक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण थिक।

ठेठी-अंगिका —अनुवाद के परसंग ई पोथी के दोसरका मौलिक देन छै, आरो एहिजा एगो पूरा अनुवाद-इतिहास के रूपरेखा मिलै छै। गौर करै के बात ई छै कि अंगिका के सबसें पुरान उपलब्ध "अनुवाद"—ग्रियर्सन के सर्वे में संकलित उड़ाहा-बेटा (Prodigal Son) के

दृष्टान्त—मूल रूप सें एगो मिशनरी आरो औपनिवेशिक भाषा-नमूना छै, कोय देसज साहित्यिक काम नै। एहिसें एगो बड़का सवाल ठाढ़ होय छै: अनुवाद भाषा-प्रलेखन छै, आकि साहित्य? पोथी के भीतरी जबाब साफ छै—ऊ अंगिका के अनुवाद-परम्परा के भाषाविदके नमूना-सीसी सें निकाली कें, जीता-जागता बाल-साहित्य के कोठली में राखी दै छै। ई अदला-बदली सांस्कृतिक नजर सें बड़ा जरूरी छै।

मैथिली —एहि अध्यायक सभसँ आत्म-प्रकाशक अंश ओ थिक जतय लेखक अपन कएल तीनू उर्दू बाल-उपन्यास-अनुवाद—जंगल रों पहचान, शिकार आरो शिकारी आ फैसल रों जासूसी—पर विचार करैत छथि। एतय ओ अपन अनुवाद-सिद्धान्त कैँ अभ्याससँ गढ़ैत छथि। ओ स्रोत-निष्ठ नहि, लक्ष्य-निष्ठ अनुवादक छथि: मूलक क्रूर दृश्य कैँ ओ जानि-बूझि कए एहन रूपमे बदलि दैत छथि जाहिसँ बाल-मन भयभीत नहि होअय, आ 'शिकार आरो शिकारी' मे पर्यावरण-रक्षाक नव भाव धरि जोड़ि दैत छथि; पात्रक नाम धरि बदलि दैत छथि। ई अनुवाद वस्तुतः अनुसृजन (भावानुवाद) थिक, जकर कसौटी समतुल्यता नहि, प्रयोजन (बाल-उपयुक्तता) अछि। बाल-साहित्यक अनुवाद स्वभावतः रूपान्तर बनि जाइत अछि—इएह बात लेखक अपन कर्मसँ सिद्ध करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —एहि अध्याय के सबसें अपने-के-खोलै वाला हिस्सा ऊ छै जहाँ लेखक अपन कैलों तीनू उर्दू बाल-उपन्यास-अनुवाद—जंगल रों पहचान, शिकार आरो शिकारी आरो फैसल रों जासूसी—पर विचार करै छै। एहिजा ऊ अपन अनुवाद-सिद्धान्त के अभ्यास सें गढ़ै छै। ऊ स्रोत-निष्ठ नै, लक्ष्य-निष्ठ अनुवादक छै: मूल के करूर दृश्य के ऊ जानी-बूझी कें एहन रूप में बदली दै छै जेकरा सें बाल-मन डेराय नै, आरो 'शिकार आरो शिकारी' में पर्यावरण-रक्षा के नया भाव तक जोड़ी दै छै; पात्र के नाम तक बदली दै छै। ई अनुवाद असल में अनुसृजन (भावानुवाद) छै, जेकर कसौटी बरोबरी नै, परयोजन (बाल-उपयुक्तता) छै। बाल-साहित्य के अनुवाद अपने-आप रूपान्तर बनी जाय छै—इहे बात लेखक अपन काम सें साबित करी दै छै।

मैथिली —एहि प्रसंगमे लेखकक सभसँ पैघ मीमांसा-दृष्टि ओतय अछि जतय ओ लक्ष्य करैत छथि जे "अंगिका कथा-सरोवर" क किछु कथा (चाणक्य आरो नंदवंश, पंडितराज जगन्नाथ आदि) मे मूल संस्कृत श्लोक कैँ कथाक बीच राखि देबासँ जनसामान्यक कथारस टूटि जाइत अछि। ई अत्यन्त सूक्ष्म निरीक्षण थिक—अनुवादक कैँ शास्त्रीय प्रामाणिकता (श्लोक बचाकए राखब) आ रसात्मक सम्प्रेषण (प्रवाह) दुनूमे सँ एकटा चुनए पड़ैत अछि; आ बाल तथा जनसामान्य पाठक लेल रसक पक्ष भारी पड़ैत अछि। लेखक स्पष्टतः रस-सम्प्रेषणक पक्षमे ठाढ़ छथि। तथापि, समीक्षकीय सन्तुलनक तकाजा अछि जे किछु सीमा सेहो कहल जाय। एक तँ, अनुवादक स्वयं समीक्षक होएबाक कारणें ई मीमांसा कतहु-कतहु रचना-प्रक्रियाक आत्म-भाष्य बनि जाइत अछि, तटस्थ अनुवाद-आलोचना नहि। दोसर, पोथी अनुकूलनक लाभ (बाल-रक्षा) तँ गनबैत अछि, मुदा ओकर मूल्य (क्षति) नहि तौलैत अछि—जातक-कथाक नैतिक कठोरता आकि लोककथाक ओ भय, जे शिक्षणक दृष्टिएँ सार्थक होइत अछि, अनुकूलनमे कतेक हेरा जाइत अछि, ताहि पर विचार नहि भेल। पूर्ण अनुवाद-मीमांसा अनुकूलनक लाभ आ हानि—दुनू कैँ तराजू पर चढ़बितए।

ठेठी-अंगिका —एहि परसंग में लेखक के सबसें बड़का मीमांसा-नजर ऊ छै जहाँ ऊ लख करै छै कि "अंगिका कथा-सरोवर" के कुछ कथा (चाणक्य आरो नंदवंश, पंडितराज जगन्नाथ आदि) में मूल संस्कृत श्लोक के कथा के बीच मेंराखी देला सें जनसामान्य के कथारस टूटी जाय छै। ई बड़ा बारीक निरीक्षण छै—अनुवादक के शास्त्रीय परमाणिकता (श्लोक बचा कें राखब) आरो रसात्मक सम्प्रेषण (बहाव) दुन्नु में सें एक के चुनै पड़ै छै; आरो बाल आरो जनसामान्य पाठक लेली रस के पलड़ा भारी पड़ै छै। लेखक साफ तौर पर रस-सम्प्रेषण के पक्ष में ठाढ़ छै। तइयो, समीक्षा के संतुलन के तकाजा छै कि कुछ सीमा भी कहलों जाय। एक तें, अनुवादक अपने समीक्षक होय के कारणें ई मीमांसा कहीं-कहीं रचना-परक्रिया के अपने-भाष्य बनी जाय छै, तटस्थ अनुवाद-आलोचना नै। दोसर, पोथी अनुकूलन के फायदा (बाल-रक्षा) तें गिनाबै छै, मतरकि ओकर दाम (नुकसान) नै तौलै छै—जातक-कथा के नैतिक कठोरता आकि लोककथा के ऊ डर, जे सिखाबै के नजर सें सारथक होय छै, अनुकूलन में कतेक हेराय जाय छै, ओकरा पर विचार नै भेलै। पूरा अनुवाद-मीमांसा अनुकूलन के फायदा आरो नुकसान—दुन्नु के तराजू पर चढ़ाबितै।

खण्ड २: आधुनिक अंगिका बाल-साहित्यक उद्भव आ विकास

ठेठी-अंगिका: खण्ड २: आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य के उद्भव आरो विकास

मैथिली —ग्रन्थक दोसर खण्डमे अंगिका बाल-साहित्यक आधुनिक युगक प्रवृत्तिक सूक्ष्म विश्लेषण कएल गेल अछि। आधुनिक कालमे साहित्यकार लोकनि अनुवाद सँ लऽ कऽ मौलिक रचना धरि, बाल-साहित्यकैँ नव दिशा प्रदान केलन्हि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ के दोसर खण्ड में अंगिका बाल-साहित्य के आधुनिक युग के प्रवृत्ति के सूक्ष्म विश्लेषण करलों गेलों छै। आधुनिक काल में साहित्यकार लोग सिनी अनुवाद सें लऽ कऽ मौलिक रचना तक, बाल-साहित्य कें नव दिशा प्रदान करलकै।

अनुवादित साहित्य आ वैश्वीकरणक प्रभाव

ठेठी-अंगिका: अनुवादित साहित्य आरो वैश्वीकरणक प्रभाव

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्र अपन पोथीमे बतबैत छथि जे अंगिका बाल-साहित्यक आधुनिक यात्रा विदेशी आ अन्य भारतीय भाषाक कथा सभक अनुवाद सँ भेल। एहि क्रममे ईसाइ पादरी सभ द्वारा बाइबिलक कथा सभक अनुवाद ('मुक्ति के मार्ग', 'सच्चा जीवन के मार्ग', 'यीशू मसीह के कहानी') सँ लऽ कऽ आधुनिक कालमे नन्दलाल यादव 'सारस्वत' द्वारा चीनी लोककथाक अनुवाद धरि उल्लेखनीय अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र अपन पोथी में बतावै छै जे अंगिका बाल-साहित्य के आधुनिक यात्रा विदेशी आरो अन्य भारतीय भाषा के कथा सिनी के अनुवाद सें भेल। ई क्रम में ईसाइ पादरी सिनी द्वारा बाइबिल के कथा सिनी के अनुवाद ('मुक्ति के मार्ग', 'सच्चा जीवन के मार्ग', 'यीशू मसीह के कहानी') सें लऽ कऽ आधुनिक काल में नन्दलाल यादव 'सारस्वत' द्वारा चीनी लोककथा के अनुवाद तक उल्लेखनीय छै।

मैथिली —चीनी लोककथा 'बाढ़ि पर हेना के कब्जा पेलकै चीन देश के महान यू' क अंगिका अनुवादक महत्ता: पोथीमे चीनक 'येलोरिवर' (Yellow River) वा बाढ़िक विभीषिका सँ जुड़ल एकटा कथाक अंगिका रूपान्तरण देल गेल अछि। ई कथा पर्यावरण-संरक्षण आ जल-प्रबन्धनक दृष्टिकोण सँ बड्ड महत्त्वपूर्ण अछि।

ठेठी-अंगिका —चीनी लोककथा 'बाढ़ि पर हेना के कब्जा पेलकै चीन देश के महान यू' के अंगिका अनुवाद के महत्ता: पोथी में चीन के 'येलो रिवर' (Yellow River) वा बाढ़ि के विभीषिका सें जुड़ल एगो कथा के अंगिका रूपान्तरण देलों गेलों छै। ई कथा पर्यावरण-संरक्षण आरो जल-प्रबन्धनक दृष्टिकोण सें बहुत महत्त्वपूर्ण छै।

मैथिली —"बाढ़ि रोकै के उपाय सोचै लागलै। वें सोचलगै कि जों गामो के बाहर बाँध बनाय देलो जाय, ते बोहो पर कब्जा पालो जावै सकै छै।"

ठेठी-अंगिका —"बाढ़ि रोकै के उपाय सोचै लागलै। वें सोचलगै कि जों गामो के बाहर बाँध बनाय देलो जाय, ते बोहो पर कब्जा पालो जावै सकै छै।"

मैथिली —समीक्षात्मक दृष्टिसँ, अंग प्रदेश (जे स्वयं कोशी आ गङ्गाक बाढ़ि सँ त्रस्त रहैत अछि) क बच्चा लेल चीनक बाढ़ि प्रबन्धनक ई कथा मात्र फंतासी नहि, अपितु एकटा वैज्ञानिक जागरूकताक पाठ अछि। बाल-साहित्यक माध्यम सँ वैश्विक समस्या (बाढ़ि आ पर्यावरण) कें स्थानीय भाषा (अंगिका) मे प्रस्तुत करब अनुवादकक आ एहि पोथीक लेखकक एकटा क्रान्तिकारी कदम अछि। एकर अतिरिक्त डॉ. अमरेन्द्र स्वयं संस्कृतक पञ्चतन्त्र आ जातक कथाक अंगिका अनुवाद 'अंगिका कथा-सरोवर' नामक पोथीमे केलन्हि अछि।

ठेठी-अंगिका —समीक्षात्मक दृष्टि सें, अंग प्रदेश (जे अपने कोशी आरो गङ्गाक बाढ़ि सें त्रस्त रहै छै) के बच्चा लेली चीन के बाढ़ि प्रबन्धन के ई कथा मात्र फंतासी नै छै, बल्कि एगो वैज्ञानिक जागरूकता के पाठ छै। बाल-साहित्य के माध्यम सें वैश्विक समस्या (बाढ़ि आरो पर्यावरण) कें स्थानीय भाषा (अंगिका) में प्रस्तुत करब अनुवादक के आरो ई पोथी के लेखक के एगो क्रान्तिकारी कदम छै। एकर अतिरिक्त डॉ. अमरेन्द्र अपने संस्कृतक पञ्चतन्त्र आरो जातक कथा के अंगिका अनुवाद 'अंगिका कथा-सरोवर' नामक पोथी में करलकै छै।

10. बाल-उपन्यास: विस्तृत सामाजिक संसारक प्रवेश

ठेठी-अंगिका: 10. बाल-उपन्यास: विस्तृत सामाजिक संसार के प्रवेश

मैथिली —पृष्ठ 51 पर ‘बाल-उपन्यास’ शीर्षकसँ चर्चा आधुनिक बाल-गद्यक एक महत्त्वपूर्ण विस्तार अछि। डॉ. अमरेन्द्रक ‘बण्टा’ कें अंगिका बाल-उपन्यासक रूपमे विवेचित कएल गेल अछि। पोथीक अनुसार कथा बालकक जीवन, विद्यालय, शिक्षक, सामाजिक परिस्थिति आ पर्यावरणसँ जुड़ल अनुभवक विस्तृत रूप प्रस्तुत करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 51 पर 'बाल-उपन्यास' शीर्षक सें चर्चा आधुनिक बाल-गद्य के एक महत्त्वपूर्ण विस्तार छै। डॉ. अमरेन्द्र के 'बण्टा' कें अंगिका बाल-उपन्यास के रूप में विवेचित करलोंगेलों छै। पोथी के अनुसार कथा बालक के जीवन, विद्यालय, शिक्षक, सामाजिक परिस्थिति आरो पर्यावरण सें जुड़लों अनुभव के विस्तृत रूप प्रस्तुत करै छै।

मैथिली —उपन्यासक महत्त्व बाल-कहानीसँ केवल आकारक अन्तर नहि। लम्बा कथानक बाल-पात्रकेँ समयक भीतर विकसित होएबाक अवसर दैत अछि; परिवार, विद्यालय, साथी, समाज, नैतिक दुविधा आ परिवेशक बीच सम्बन्ध क्रमिक बनैत अछि। एहि कारण बाल-उपन्यास भाषाक कथात्मक क्षमता सेहो जाँचैत अछि। 'बण्टा' क स्वतंत्र डिजिटल पाठ Gadya Kosh पर उपलब्ध होएब एहि कृतिक बाहरी अस्तित्वक उपयोगी पुष्टि अछि। बाहरी अंगिका लेखक-सूची सेहो 'बण्टा' केँ उपन्यासक रूपमे दर्ज करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —उपन्यास के महत्त्व बाल-कहानी सें केवल आकार के अन्तर नै। लम्बा कथानक बाल-पात्र कें समय के भीतर विकसित होय के अवसर दै छै; परिवार, विद्यालय, साथी, समाज, नैतिक दुविधा आरो परिवेश के बीच सम्बन्ध क्रमिक बनै छै। ई कारण बाल-उपन्यास भाषा के कथात्मक क्षमता भी जाँचै छै। 'बण्टा' के स्वतंत्र डिजिटल पाठ Gadya Kosh पर उपलब्ध होब ई कृति के बाहरी अस्तित्व के उपयोगी पुष्टि छै। बाहरी अंगिका लेखक-सूची भी 'बण्टा' कें उपन्यास के रूप में दर्ज करै छै।

मैथिली —बाल-उपन्यासक चर्चा पूर्ववर्ती खण्डसभक तुलनामे कम विस्तार पबैत अछि, मुदा समग्र सामग्रीसँ स्पष्ट अछि जे आधुनिक अंगिका बाल-साहित्यक विकास-रेखामे उपन्यासक स्थान उल्लेखनीय अछि, भले corpus कविता तुलनामे छोट हो। एहि विधापर भविष्यक शोध पात्र-विकास, विद्यालयीय अनुभव, ग्रामीणता, बाल-स्वायत्तता, कथावाचक, भाषा-स्तर आ आयुवर्गक पाठकीयता जाँचि सकैत अछि।

ठेठी-अंगिका —बाल-उपन्यास के चर्चा पहिलका खण्ड सिनी के तुलना में कम विस्तार पावै छै, मतरकि समग्र सामग्री सें साफ छै जे आधुनिक अंगिका बाल-साहित्य के विकास-रेखा में उपन्यास के स्थान उल्लेखनीय छै, भले corpus कविता तुलना में छोट हो। ई विधापर आगू के शोध पात्र-विकास, विद्यालयीय अनुभव, ग्रामीणता, बाल-स्वायत्तता, कथावाचक, भाषा-स्तर आरो आयुवर्ग के पाठकीयता जाँच कें सकै छै।

बाल-उपन्यास: 'बण्टा' क वैचारिक आख्यान

ठेठी-अंगिका: बाल-उपन्यास: 'बण्टा' के वैचारिक आख्यान

मैथिली —अंगिका भाषाक एकमात्र बाल-उपन्यास 'बण्टा' (रचनाकार: डॉ. अमरेन्द्र) क समीक्षा एहि पोथीमे कएल गेल अछि। ई उपन्यास कोनो जादुई वा तिलस्मी कथा नहि अछि, बरु ई बाल-मनोविज्ञान, बच्चाक शिक्षाक प्रति उदासीनता, शिक्षकक अमानवीय व्यवहार (शिक्षक जमुआर) आ आदर्श शिक्षा-पद्धति (शिक्षक इकबाल) पर केन्द्रित अछि।

ठेठी-अंगिका —अंगिका भाषा के एकमात्र बाल-उपन्यास 'बण्टा' (रचनाकार: डॉ. अमरेन्द्र) के समीक्षा ई पोथी में करलों गेलों छै। ई उपन्यास कोनो जादुई वा तिलस्मी कथा नै छै, बरु ई बाल-मनोविज्ञान, बच्चा के शिक्षा के प्रति उदासीनता, शिक्षक के अमानवीय व्यवहार (शिक्षक जमुआर) आरो आदर्श शिक्षा-पद्धति (शिक्षक इकबाल) पर केन्द्रित छै।

मैथिली —एहि उपन्यासक सबसँ पैघ विशेषता ई अछि जे एहिमे भारतक पूर्व राष्ट्रपति आ मिसाइल मैन डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा बच्चा लेल देल गेल दस (१०) आचार-सिद्धान्तकेँ बाल-नायक 'बण्टा' क जीवन-दर्शनक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

ठेठी-अंगिका —ई उपन्यास के सब सें बड़का विशेषता ई छै जे ई में भारतक पूर्व राष्ट्रपति आरो मिसाइल मैन डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम द्वारा बच्चा लेली देलों गेलों दस (१०) आचार-सिद्धान्तकेँ बाल-नायक 'बण्टा' के जीवन-दर्शनक रूप में प्रस्तुत करलों गेलों छै।

डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलामक आचार-सिद्धान्त (अंगिका बाल-उपन्यास 'बण्टा' सँ उद्धृत)

ठेठी-अंगिका: डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलामक आचार-सिद्धान्त (अंगिका बाल-उपन्यास 'बण्टा' सें उद्धृत)

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: पहिलो मंत्र छेकै: हम्में आपनो पढ़ाय आरो कार्य भीतरी मनो सँ करबै आरो महान बनबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: पहिलो मंत्र छेकै: हम्में आपनो पढ़ाय आरो कार्य भीतरी मनो सँ करबै आरो महान बनबै।

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: दूसरो छेकै: आबे सँ हम्में कम-से-कम दस अनपढ़ लोगो के पढ़बौ-लिखबौ सिखैबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: दूसरो छेकै: आबे सँ हम्में कम-से-कम दस अनपढ़ लोगो के पढ़बौ-लिखबौ सिखैबै।

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: तेसरो मंत्र छेकै: हम्में कम-से-कम दस गाछ लगैबै आरो ओकरो अच्छा नाँखी देखभाल करबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: तेसरो मंत्र छेकै: हम्में कम-से-कम दस गाछ लगैबै आरो ओकरो अच्छा नाँखी देखभाल करबै।

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: चौथो मंत्र छेकै: हम्में शहर-गाँव जाय के कम-से-कम पांचो लोगो के नशाखोरी आरो जुआ खेलै के आदत सँ मुक्ति दिलैबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: चौथो मंत्र छेकै: हम्में शहर-गाँव जाय के कम-से-कम पांचो लोगो के नशाखोरी आरो जुआ खेलै के आदत सँ मुक्ति दिलैबै।

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: नौमो मंत्र छेकै: हम्में मंद बुद्धि आरो शारीरिक रूप सँ कमजोर लोगो साथें दोस्ताना व्यवहार करबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: नौमो मंत्र छेकै: हम्में मंद बुद्धि आरो शारीरिक रूप सँ कमजोर लोगो साथें दोस्ताना व्यवहार करबै।

मैथिली —मूल अंगिका उद्धरण: दशमो मंत्र छेकै: हम्में आपनो देशवासी आरो देश के सफलता पर गौरव करबै।

ठेठी-अंगिका —मूल अंगिका उद्धरण: दशमो मंत्र छेकै: हम्में आपनो देशवासी आरो देश के सफलता पर गौरव करबै।

मैथिली —'बण्टा' बाल-साहित्यक एकटा आदर्श मानक स्थापित करैत अछि। बाल-साहित्यक उद्देश्य मात्र मनोरञ्जन नहि, अपितु चारित्रिक निर्माण (Character Building) सेहो होइत अछि। कलाम साहबक सिद्धान्तकेँ एकटा ग्रामीण अंगिका-भाषी बच्चाक माध्यम सँ स्थापित करब डॉ. अमरेन्द्रक प्रगतिशील आ राष्ट्रवादी दृष्टिकेँ दर्शाबइत अछि। उपन्यासमे भाषाक प्रवाहमयता आ संवादक चुस्ती बच्चाकेँ अन्त धरि बान्हि कऽ रखबामे सक्षम अछि।

ठेठी-अंगिका —'बण्टा' बाल-साहित्य के एगो आदर्श मानक स्थापित करै छै। बाल-साहित्य के उद्देश्य मात्र मनोरञ्जन नै छै, बल्कि चारित्रिक निर्माण (Character Building) भी होय छै। कलाम साहबक सिद्धान्तकेँ एगो ग्रामीण अंगिका-भाषी बच्चा के माध्यम सें स्थापित करब डॉ. अमरेन्द्र के प्रगतिशील आरो राष्ट्रवादी दृष्टिकेँ दर्शाबइत छै। उपन्यासमे भाषा के प्रवाहमयता आरो संवाद के चुस्ती बच्चा केँ अन्त तक बान्हि कऽ रखबा में सक्षम छै।

11. आधुनिक बाल-काव्य: ग्रन्थक सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र

ठेठी-अंगिका: 11. आधुनिक बाल-काव्य: ग्रन्थ के सर्वाधिक समृद्ध क्षेत्र

मैथिली —आधुनिक अंगिका बाल-काव्यक विवेचन पोथीक सर्वाधिक विस्तृत, विविध आ आत्मविश्वासी भाग अछि। पृष्ठ 61 सँ खेलगीत, प्रकृति, बाल-व्यक्तित्व, सामाजिक जीवन, राष्ट्रबोध, पर्यावरण, ज्ञान, तुक-लय, हास्य, कथा-आधारित गीत, गजल, खण्डकाव्य आदि अनेक रूप सामने अबैत अछि। लेखक केवल कृति-सूची नहि दैत छथि; बालोपयोगिता, शब्द-संगीत, विषय, कल्पना आ कखनो-कखनो रचनात्मक कमजोरीपर टिप्पणी सेहो करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —आधुनिक अंगिका बाल-काव्य के विवेचन पोथी के सर्वाधिक विस्तृत, विविध आरो आत्मविश्वासी भाग छै। पृष्ठ 61 सें खेलगीत, प्रकृति, बाल-व्यक्तित्व, सामाजिक जीवन, राष्ट्रबोध, पर्यावरण, ज्ञान, तुक-लय, हास्य, कथा-आधारित गीत, गजल, खण्डकाव्य आदि अनेक रूप सामने आवै छै। लेखक केवल कृति-सूची नै दै छै; बालोपयोगिता, शब्द-संगीत, विषय, कल्पना आरो कखनियों-कखनियों रचनात्मक कमजोरीपर टिप्पणी भी करै छै।

मैथिली —बाहरी साहित्यिक सर्वेक्षण एहि निष्कर्षक स्वतंत्र समर्थन दैत अछि। Angika. com अंगिका बाल-लोककाव्यक विपुलता बतबैत अमरेन्द्रक पाँच बालगीत-संग्रह—'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन', 'एक छड़ी पर अंडा नाचै', 'तुक्तक-मुक्तक'—क उल्लेख करैत अछि; संगहि सान्त्वना साह, दिनेश बाबा, डॉ. मृदुला शुक्ला तथा 'अंगिका बालगीत' क आन कविसभक चर्चा करैत अछि। भारतवाणी 2021 क 'डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली (खण्ड-1): अंगिका बालगीत समग्र' केँ सेहो सूचीबद्ध करैत अछि। एतय मूल पोथीक लेखक-केंद्रित सामग्रीकेँ स्वतंत्र प्रकाशन-साक्ष्य भेटैत अछि।

ठेठी-अंगिका —बाहरी साहित्यिक सर्वेक्षण ई निष्कर्ष के स्वतंत्र समर्थन दै छै। Angika. com अंगिका बाल-लोककाव्य के विपुलता बतावै अमरेन्द्र के पाँच बालगीत-संग्रह—'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन', 'एक छड़ी पर अंडा

नाचै', 'तुक्तक-मुक्तक'—के उल्लेख करै छै; संगें सान्त्वना साह, दिनेश बाबा, डॉ. मृदुला शुक्ला तथा 'अंगिका बालगीत' के आन कवि सिनी के चर्चा करै छै। भारतवाणी 2021 के 'डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली (खण्ड-1): अंगिका बालगीत समग्र' कें भी सूचीबद्ध करै छै। एतै मूल पोथी के लेखक-केंद्रित सामग्री कें स्वतंत्र प्रकाशन-साक्ष्य भेटै छै।

मैथिली —काव्यक समृद्धि केवल पुस्तक-संख्यामे नहि। पोथी देखबैत अछि जे बालगीत छोट बालकक ध्वनि-आनन्दसँ किशोरक सामाजिक ज्ञान धरि, प्रकृतिसँ विज्ञान धरि, खेलसँ राष्ट्रक कल्पना धरि पसरैत अछि। एहि विस्तारक कारण बाल-काव्य अंगिका आधुनिक साहित्यक प्रयोगशाला बनि जाइत अछि—जतय लोकलय, आधुनिक विषय, प्रौढ़ विधा आ बाल-मनक मेल निरन्तर जाँचल जाइत अछि।

ठेठी-अंगिका —काव्य के समृद्धि केवल पुस्तक-संख्या में नै। पोथी देखावै छै जे बालगीत छोट बालक के ध्वनि-आनन्द सें किशोर के सामाजिक ज्ञान तक, प्रकृति सें विज्ञान तक, खेल सें राष्ट्र के कल्पना तक पसरै छै। ई विस्तार के कारण बाल-काव्य अंगिका आधुनिक साहित्य के प्रयोगशाला बनि जाय छै—जेतै लोकलय, आधुनिक विषय, प्रौढ़ विधा आरो बाल-मन के मेल निरन्तर जाँचलों जाय छै।

मैथिली —मुदा आलोचनात्मक चयनक प्रश्न एतय सर्वाधिक तीक्ष्ण अछि। लेखक स्वयं आधुनिक अंगिका बाल-काव्यक प्रमुख सर्जक छथि, तें हुनक अपन कृतिसभ स्वाभाविक रूपेँ अधिक उपस्थित अछि। एकर लाभ भीतरक साक्ष्य आ प्रकाशन-इतिहासक निकटता; जोखिम अन्य कविसभक तुलनात्मक स्थानक असमानता। भविष्यक साहित्येतिहासमे समान corpus-based कसौटी उपयोगी होएत।

ठेठी-अंगिका —मतरकि आलोचनात्मक चयन के प्रश्न एतै सर्वाधिक तीक्ष्ण छै। लेखक अपने आधुनिक अंगिका बाल-काव्य के प्रमुख सर्जक छै, तें हुनकर आपनों कृति सिनी स्वाभाविक रूपेँ अधिक उपस्थित छै। एकर लाभ भीतर के साक्ष्य आरो प्रकाशन-इतिहास के निकटता; जोखिम अन्य कवि सिनी के तुलनात्मक स्थान के असमानता। आगू के साहित्येतिहास में समान corpus-based कसौटी उपयोगी होतै।

पाठ-सर्वेक्षण: आधुनिक बाल-कविताक विषयगत वर्गीकरण

ठेठी-अंगिका: पाठ-सर्वेक्षण: आधुनिक बाल-कविता के विषयगत वर्गीकरण

मैथिली —दोसर अध्यायक तेसर स्तम्भ थिक आधुनिक मौलिक बाल-कविताक विषयगत वर्गीकरण, जतय लेखक अंगिका बाल-कविता कैँ विषयक आधार पर किछु भेदमे बाँटैत छथि। मुख्य भेद अछि—गतिशील प्रकृतिक काव्य (चलैत-फिरैत प्रकृति आ जीव-जन्तु; यथा 'जाड़', 'डायनासोर', 'कोसी मैया', आ जीव-जन्तुक बोली-काव्य 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम'); आंचलिक परिवेशक बाल-काव्य (अंग-महाजनपदक भूगोल, वाद्य आ विशिष्ट मिठाई-गट्टा सन खाद्य; अंजनी कुमार सुमन आदि); राष्ट्रीयताक वाहक बाल-गीत (राष्ट्रीय पुरुष आ पर्व—भारत माय, तिरंगा, गांधी बाबा, अब्दुल कलाम; सान्त्वना साह आ राहुल शिवायक 'माँटी हिन्दुस्तान के'); ज्ञान-शिक्षामूलक बाल-काव्य (गणित आ नैतिक शिक्षा—'लालच रों फोल' क अक्कड़-बक्कड़ गणना-गीत, सुधीर कुमार प्रोग्रामरक 'लूर'); पर्यावरण-शिक्षाक कार्यशाला; आ हास्य-व्यंग्य ('पियक्कड़ मामा', शंभुनाथ मिस्त्रीक हास्य-गीत) । रूप-दृष्टिएँ ओ नाट्यकाव्य आ कथागीत (डॉ. आभा पूर्वेक 'खयाली पुलाव') कैँ सेहो अलग रेखांकित करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —दोसरका अध्याय के तेसरका खम्भा छै आधुनिक मौलिक बाल-कविता के विषयगत वर्गीकरण, जहाँ लेखक अंगिका बाल-कविता के विषय के आधार पर कुछ भेद में बाँटै छै। मुख्य भेद ई छै—गतिशील परकृति के काव्य (चलै-फिरै वाला परकृति आरो जीव-जन्तु; जइसन 'जाड़', 'डायनासोर', 'कोसी मैया', आरो जीव-जन्तु के बोली-काव्य 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम'); आंचलिक परिवेश के बाल-काव्य (अंग-महाजनपद के भूगोल, वाद्य आरो खास मिठाई-गट्टा जइसन खाद्य; अंजनी कुमार सुमन आदि); राष्ट्रीयता के वाहक बाल-गीत (राष्ट्रीय पुरुष आरो परब—भारत माय, तिरंगा, गांधी बाबा, अब्दुल कलाम; सान्त्वना साह आरो राहुल शिवाय के 'माँटी हिन्दुस्तान के'); ज्ञान-शिक्षा वाला बाल-काव्य (गणित आरो नैतिक शिक्षा—'लालच रों फोल' के अक्कड़-बक्कड़ गिनती-गीत, सुधीर कुमार प्रोग्रामर के 'लूर'); पर्यावरण-शिक्षा के कार्यशाला; आरो हास्य-व्यंग्य ('पियक्कड़ मामा', शंभुनाथ मिस्त्री के हास्य-गीत) । रूप के नजर सें ऊनाट्यकाव्य आरो कथागीत (डॉ. आभा पूर्वे के 'खयाली पुलाव') के भी अलग रेखांकित करै छै।

आधुनिक अंगिका बाल-कविता: एकटा नव विहान

ठेठी-अंगिका: आधुनिक अंगिका बाल-कविता: एगो नव विहान

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन' सन कविता सङ्ग्रह आधुनिक अंगिका बाल-कविताक प्रस्थान-बिन्दु अछि। एहि सङ्ग्रह सभमे पशुपक्षीक संसार सँ लऽ कऽ विज्ञानक चमत्कार धरि सब किछु अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन' जइसन कविता सङ्ग्रह आधुनिक अंगिका बाल-कविता के प्रस्थान-बिन्दु छै। ई सङ्ग्रह सभमे पशुपक्षी के संसार सें लऽ कऽ विज्ञान के चमत्कार तक सब कुछु छै।

मैथिली —'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' क एकटा कविता 'बोली' मे विभिन्न जीव-जन्तुक ध्वनिक जे चित्रण अछि, ओ बच्चाकेँ ध्वन्यात्मक विज्ञान सँ परिचित करबैत अछि:

ठेठी-अंगिका —'ढोल बजै छै ढम्मक ढम' के एगो कविता 'बोली' में विभिन्न जीव-जन्तुक ध्वनि के जे चित्रण छै, ऊ बच्चा कैँ ध्वन्यात्मक विज्ञान सें परिचित करबैत छै:

मैथिली —उल्लू ते घुघुआवै छै, मुर्गा बांग लगावै छै हिनहिनावै घोड़ा छै, गड़-गड़-गड़-गड़ सौंढा छै मूसा करै छै चू-चू-चू, कुत्ता भूकै भू-भू-भू

ठेठी-अंगिका —उल्लू ते घुघुआवै छै, मुर्गा बांग लगावै छै हिनैनावै घोड़ा छै, गड़-गड़-गड़-गड़ सौंढा छै मूसा करै छै चू-चू-चू, कुत्ता भूकै भू-भू-भू

मैथिली —सांत्वना साहक 'बाजै छै बीन', दिनेश बाबाक 'हँसी बिहनकी धूप', आ डॉ. मृदुला शुक्लाक 'सोन चिरैया' अंगिका बाल-कविताक नव-आयाम अछि। डॉ. मृदुला शुक्लाक 'सोन चिरैया' मे प्रकृतिकेँ जे आह्वान कएल गेल अछि, ओ द्रष्टव्य अछि:

ठेठी-अंगिका —सांत्वना साहक 'बाजै छै बीन', दिनेश बाबाक 'हँसी बिहनकी धूप', आरो डॉ. मृदुला शुक्लाक 'सोन चिरैया' अंगिका बाल-कविता के नव-आयाम छै। डॉ. मृदुला शुक्लाक 'सोन चिरैया' में प्रकृतिकैँ जे आह्वान करलों गेलों छै, ऊ द्रष्टव्य छै:

मैथिली —सुखलो धरती, भुखलो खेत सुखलो नद्दी, पत्थल रेत उमड़ी-घुमड़ी बरसै मेघ भरलै सब ठो ताल-तलैया सोन चिरैया, सोन चिरैया!

ठेठी-अंगिका —सुखलो धरती, भुखलो खेत सुखलो नद्दी, पत्थल रेत उमड़ी-घुमड़ी बरसै मेघ भरलै सब ठो ताल-तलैया सोन चिरैया, सोन चिरैया!

मैथिली —सुधीर कुमार प्रोग्रामरक कवितामे विज्ञानक चमत्कारकेँ बाल-सुलभ ढङ्ग सँ प्रस्तुत कएल गेल अछि। 'टेलिस्कोप' आ 'रडार' पर हुनकर कविता:

ठेठी-अंगिका —सुधीर कुमार प्रोग्रामरक कविता में विज्ञान के चमत्कारकैँ बाल-सुलभ ढङ्ग सें प्रस्तुत करलों गेलों छै। 'टेलिस्कोप' आरो 'रडार' पर हुनकर कविता:

मैथिली —वाह-वाह टेलिस्कोप दूर के देखौ बाइस्कोप, सीमा पर दुश्मन के टेबी बरसावै गरदौवा तोप।

ठेठी-अंगिका —वाह-वाह टेलिस्कोप दूर के देखौ बाइस्कोप, सीमा पर दुश्मन के टेबी बरसावै गरदौवा तोप।

मैथिली —ई कविता सभ प्रमाणित करैत अछि जे अंगिका बाल-साहित्य मात्र गाम-देहातक सीमामे बान्हल नहि अछि; ई आधुनिक विज्ञान, रडार, आ टेलिस्कोप जकाँ विषयकेँ सेहो अपन कविताक विषय बना रहल अछि। ई बाल-साहित्यक वैचारिक परिपक्वता (Ideological Maturity) क द्योतक अछि।

ठेठी-अंगिका —ई कविता सिनी प्रमाणित करै छै जे अंगिका बाल-साहित्य मात्र गाम-देहातक सीमा में बान्हल नै छै; ई आधुनिक विज्ञान, रडार, आरो टेलिस्कोप जेना विषयकैँ भी अपन कविता के विषय बना रहल छै। ई बाल-साहित्य के वैचारिक परिपक्वता (Ideological Maturity) के द्योतक छै।

राष्ट्रीय भावना आ देश-प्रेम

ठेठी-अंगिका: राष्ट्रीय भावना आरो देश-प्रेम

मैथिली —बाल-साहित्यमे राष्ट्रीयताक सञ्चार एकटा महत्त्वपूर्ण पहलू अछि। राहुल शिवाय रचित 'माटी हिन्दुस्तान के' सङ्ग्रह विशुद्ध रूपेँ देशभक्तिक बाल-गीतक सङ्ग्रह अछि। एहिमे भारतक महान विभूति—बुद्ध, महावीर, शिवाजी, सुभाष चन्द्र बोसक सङ्ग-सङ्ग अंग प्रदेशक शहीद तिलकामांझीक सेहो गान कएल गेल अछि। तिरङ्गा पर रचित ई गीत हृदयस्पर्शी अछि:

ठेठी-अंगिका —बाल-साहित्य में राष्ट्रीयता के सञ्चार एगो महत्त्वपूर्ण पहलू छै। राहुल शिवाय रचित 'माटी हिन्दुस्तान के' सङ्ग्रह विशुद्ध रूपेँ देशभक्ति के बाल-गीतक सङ्ग्रह छै। ई में भारतक महान विभूति—बुद्ध, महावीर, शिवाजी, सुभाष चन्द्र बोसक सङ्ग-सङ्ग अंग प्रदेश के शहीद तिलकामांझीक भी गान करलों गेलों छै। तिरङ्गा पर रचित ई गीत हृदयस्पर्शी छै:

मैथिली —भारत के छै शान तिरंगा लहर-लहर लहराबै। सबसे ऊपर छै केसरिया भोरे-भोर के लाली; वीर शहीदो के वासन्ती गरिमा गाबै वाली;

ठेठी-अंगिका —भारत के छै शान तिरंगा लहर-लहर लहराबै। सबसे ऊपर छै केसरिया भोरे-भोर के लाली; वीर शहीदो के वासन्ती गरिमा गाबै वाली;

मैथिली —चन्द्रप्रकाश जगप्रिय आ अंजनी कुमार सुमन सन कवि लोकनि अपन बाल-गीतमे मातृभाषा आ राष्ट्रभाषाक महत्ता पर सेहो प्रकाश डललन्हि अछि। अंगिका बाल-साहित्यमे देशक माटि सँ जुड़ल जे ई सुगन्ध अछि, ओ बच्चाकेँ अपन संस्कृति आ राष्ट्रक प्रति गर्वक अनुभव करबैत अछि।

ठेठी-अंगिका —चन्द्रप्रकाश जगप्रिय आरो अंजनी कुमार सुमन जइसन कवि लोग सिनी अपन बाल-गीत में मातृभाषा आरो राष्ट्रभाषाक महत्ता पर भी प्रकाश डललन्हि छै। अंगिका बाल-साहित्य में देशक माटि सें जुड़ल जे ई सुगन्ध छै, ऊ बच्चाकेँ अपन संस्कृति आरो राष्ट्र के प्रति गर्वक अनुभव करावै छै।

12. प्रकृति, पर्यावरण आ आधुनिक ज्ञान: विषय-विस्तारक शक्ति

ठेठी-अंगिका: 12. प्रकृति, पर्यावरण आरो आधुनिक ज्ञान: विषय-विस्तार के शक्ति

मैथिली —पृष्ठ 71 आसपास प्रकृति-कविताक विवेचन, आ पृष्ठ 81 पर पर्यावरण-शिक्षा सम्बन्धी प्रसंग, पोथीक आधुनिकता-बोधक विशेष पक्ष देखबैत अछि। प्रकृति एतय केवल फूल-पात, वर्षा, पक्षी वा ऋतु-सौन्दर्य नहि; पर्यावरणीय संकट, मनुष्यक व्यवहार, शिक्षा आ बालकक जिम्मेदारीक क्षेत्र सेहो बनैत अछि। एहि कारण लोकपरम्परासँ आयल प्रकृति-बिम्ब आधुनिक पर्यावरण-चेतनामे रूपान्तरित होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 71 आसपास प्रकृति-कविता के विवेचन, आरो पृष्ठ 81 पर पर्यावरण-शिक्षा सम्बन्धी प्रसंग, पोथी के आधुनिकता-बोध के विशेष पक्ष देखावै छै। प्रकृति एतै केवल फूल-पात, वर्षा, पक्षी वा ऋतु-सौन्दर्य नै; पर्यावरणीय संकट, मनुष्य के व्यवहार, शिक्षा आरो बालक के जिम्मेदारी के क्षेत्र भी बनै छै। ई कारण लोकपरम्परा सें आयलों प्रकृति-बिम्ब आधुनिक पर्यावरण-चेतना में रूपान्तरित होय छै।

मैथिली —लोकगीतमे प्रकृति जीवनक अभिन्न परिवेश अछि; आधुनिक बाल-काव्यमे प्रकृति कखनो सचेत विषय बनैत अछि—रक्षा करबाक, बुझबाक, वैज्ञानिक कारण जानबाक। साहित्यअनुभवक संग ज्ञानक सेतु बनैत अछि। मुदा लेखकक आरम्भिक कसौटी याद राखब जरूरी अछि: पर्यावरण-संदेश मात्र कविता नहि; बाल-मनक अनुरूप बिम्ब, लय, हास्य, प्रश्न, कथा वा नाटकीयता तकर साहित्यिक मूल्य निर्धारित करत।

ठेठी-अंगिका —लोकगीत में प्रकृति जीवन के अभिन्न परिवेश छै; आधुनिक बाल-काव्य में प्रकृति कखनियों सचेत विषय बनै छै—रक्षा करै के, बुझै के, वैज्ञानिक कारण जानै के। साहित्य अनुभव के संग ज्ञान के सेतु बनै छै। मतरकि लेखक के आरम्भिक कसौटी याद राखब जरूरी छै: पर्यावरण-संदेश मात्र कविता नै; बाल-मन के अनुरूप बिम्ब, लय, हास्य, प्रश्न, कथा वा नाटकीयता तकर साहित्यिक मूल्य निर्धारित करत।

मैथिली —ग्रन्थ पृष्ठ 95–96 क कथा-विवेचनमे आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण/टावर आ पक्षीजीवनक संकट जकाँ विषय अनैत अछि। बादक बाल-नाटक सभमे ध्वनि-प्रदूषण, जंगल, शिक्षा आ स्वास्थ्यक प्रश्न एहि आधुनिक विषय-विस्तारकेँ आरो पुष्ट करैत अछि। Reynolds बाल-साहित्यकेँ समाजक मूल्यसभमे दीक्षित करबाक संग वैकल्पिक भविष्यक कल्पना जगाबयवला साहित्य मानैत छथि; अंगिका उदाहरणसभमे पर्यावरण-विषय एही द्वैतक स्थानीय रूप देखबैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ पृष्ठ 95–96 के कथा-विवेचन में आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण/टावर आरो पक्षीजीवन के संकट जेना विषय अनै छै। बाद के बाल-नाटक सिनी में ध्वनि-प्रदूषण, जंगल, शिक्षा आरो स्वास्थ्य के प्रश्न ई आधुनिक विषय-विस्तार कें आरो पुष्ट करै छै। Reynolds बाल-साहित्य कें समाज के मूल्य सिनी में दीक्षित करै के संग वैकल्पिक आगू के कल्पना जगावै वाला साहित्य मानै छै; अंगिका उदाहरण सिनी में पर्यावरण-विषय एही द्वैत के स्थानीय रूप देखावै छै।

पर्यावरण, विज्ञान आ राष्ट्रीय चेतना: युगानुरूप साहित्य

ठेठी-अंगिका: पर्यावरण, विज्ञान आरो राष्ट्रीय चेतना: युगानुरूप साहित्य

मैथिली —बाल-साहित्यक सार्थकता तखन धरि पूर्ण नहि मानल जा सकैत अछि जखन धरि ओ नव पीढ़िकेँ आधुनिक युगक ज्वलन्त समस्या सँ परिचित नहि करबय। अंगिका बाल-साहित्य एहि निकष पर पूर्णतः खरा उतरैत अछि।

ठेठी-अंगिका —बाल-साहित्य के सार्थकता तबें तक पूर्ण नै मानल जा सकै छै जबें तक ऊ नव पीढ़िकेँ आधुनिक युग के ज्वलन्त समस्या सें परिचित नै करबय। अंगिका बाल-साहित्य ई निकष पर पूरा तरह सें खरा उतरैत छै।

मैथिली —पर्यावरण-संरक्षण: डॉ. अमरेन्द्रक 'बुतरू के तुतरू' मे सङ्कलित 'बादल आरो बुतरू' सन कविता होउ वा 'तौहरो घोर' सन कविता जाहिमे मच्छर सँ होमय वला मलेरिया आ गन्दगी पर ध्यान देल गेल अछि, एहि सभक केन्द्रमे स्वच्छता आ पर्यावरण अछि।

ठेठी-अंगिका —पर्यावरण-संरक्षण: डॉ. अमरेन्द्र के 'बुतरू के तुतरू' में सङ्कलित 'बादल आरो बुतरू' जइसन कविता होउ वा 'तौहरो घोर' जइसन कविता जाहि में मच्छर सें होमय वलामलेरिया आरो गन्दगी पर ध्यान देलों गेलों छै, ई सिनी के केन्द्र में स्वच्छता आरो पर्यावरण छै।

मैथिली —केहनो तोरो ई घर छौ/मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ। की सिखले छैं धंधा तोंय/नाली रखभैं गंदा तोंय दलदल एंगनो-बाहर छौ/मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ।

ठेठी-अंगिका —केहनो तोरो ई घर छौ/मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ। की सिखले छैं धंधा तोंय/नाली रखभैं गंदा तोंय दलदल एंगनो-बाहर छौ/मच्छर छौ भाय, मच्छर छौ।

मैथिली —जल संरक्षण पर सेहो 'धरती के फूल' (सुधीर कुमार प्रोग्रामर) मे लिखल गेल अछि जे 'मत फेको जानी के पानी / राखो खुच्चा खांही-खंही'।

ठेठी-अंगिका —जल संरक्षण पर भी 'धरती के फूल' (सुधीर कुमार प्रोग्रामर) में लिखलों गेलों छै जे 'मत फेको जानी के पानी / राखो खुच्चा खांही-खंही'।

मैथिली —शहरीकरण आ रेडिएशनक खतरा: डॉ. आभा पूर्वेक बाल-कथा 'गौरैया-माय के डोर' मे मोबाइल टावरक रेडिएशन सँ पक्षी (विशेषतः गौरैया) क मृत्यु आ लुप्त होबय वला प्रजातिक दर्दकेँ रेखाङ्कित कएल गेल अछि। जखन गौरैया माय अपन बच्चा सँ कहैत अछि:

ठेठी-अंगिका —शहरीकरण आरो रेडिएशनक खतरा: डॉ. आभा पूर्वेक बाल-कथा 'गौरैया-माय के डोर' में मोबाइल टावरक रेडिएशन सें पक्षी (विशेषतः गौरैया) के मृत्यु आरो लुप्त होबय वला प्रजाति के दर्दकेँ रेखाङ्कित करलों गेलों छै। जबें गौरैया माय अपन बच्चा सें कहैत छै:

मैथिली —"आबे तोरा की बतयौ बेटा, हमरा सिनी के शरीर के, खास करी के दिमाग के बनावटे हेनो छै, कि टावर आरो मोबाइल सँ निकलै वाला तरंग सँ हमरो दिमाग पर बुरा असर पड़ै लागै छै।"

ठेठी-अंगिका —"आबे तोरा की बतयौ बेटा, हमरा सिनी के शरीर के, खास करी के दिमाग के बनावटे हेनो छै, कि टावर आरो मोबाइल सँ निकलै वाला तरंग सँ हमरो दिमाग पर बुरा असर पड़ै लागै छै।"

मैथिली —ई संवाद मात्र एकटा कथा नहि, अपितु इको-सिस्टम (Ecosystem) क असन्तुलनक एकटा गम्भीर वैज्ञानिक चेतावनी अछि जे बाल-साहित्यक माध्यम सँ नव पीढ़िक मस्तिष्कमे रोपबाक प्रयास कएल गेल अछि।

ठेठी-अंगिका —ई संवाद मात्र एगो कथा नै छै, बल्कि इको-सिस्टम (Ecosystem) के असन्तुलन के एगो गम्भीर वैज्ञानिक चेतावनी छै जे बाल-साहित्य के माध्यम सें नया पीढ़ी के मस्तिष्क में रोपबाक प्रयास करलों गेलों छै।

13. 'पंचामृत', बाल-गजल आ खण्डकाव्य: विधागत प्रयोगशीलता

ठेठी-अंगिका: 13. 'पंचामृत', बाल-गजल आरो खण्डकाव्य: विधागत प्रयोगशीलता

मैथिली —पृष्ठ 92 पर 'पंचामृत' पाँच बाल-काव्यरूपक समूहक रूपमे विवेचित अछि। तकर बाद बाल-गजलपर चर्चा अछि, जतय गजलक प्रौढ़ साहित्यिक परम्पराकेँ बाल-जगतक अनुकूल करबाक प्रयासक उल्लेख भेटैत अछि; अमरेन्द्र आ दिनेश बाबा आदि नाम प्रमुख रूपेँ सामने अबैत अछि। पृष्ठ 91 आसपास खण्डकाव्य-प्रवृत्ति सेहो चर्चा मे अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 92 पर 'पंचामृत' पाँच बाल-काव्यरूप के समूह के रूप में विवेचित छै। तकर बाद बाल-गजलपर चर्चा छै, जेतै गजल के प्रौढ़ साहित्यिक परम्परा कें बाल-जगत के अनुकूल करै के प्रयास के उल्लेख भेटै छै; अमरेन्द्र आरो दिनेश बाबा आदि नाम प्रमुख रूपेँ सामने आवै छै। पृष्ठ 91 आसपास खण्डकाव्य-प्रवृत्ति भी चर्चा में छै।

मैथिली —एहि सभ प्रयोगक महत्त्व ई अछि जे बाल-कविताक अर्थ केवल छोट तुकबन्दी नहि रहैत। गजल, कथात्मक काव्य, खण्डकाव्य, नाट्यरूप—प्रौढ़ साहित्यक स्थापित विधासभकेँ बालक लेल नब रूप देल जा सकैत अछि। मुदा रूपान्तरण सफल तखने होएत जखन विधाक बाहरी ढाँचा बालकक ग्रहणक्षमता, विषय, लय आ अनुभवक संग मेल खाए।

ठेठी-अंगिका —ई सब प्रयोग के महत्त्व ई छै जे बाल-कविता के अर्थ केवल छोट तुकबन्दी नै रहै। गजल, कथात्मक काव्य, खण्डकाव्य, नाट्यरूप—प्रौढ़ साहित्य के स्थापित विधा सिनी कें बालक लेल नब रूप देलों जाय सकै छै। मतरकि रूपान्तरण सफल तबें ही होतै जबें विधा के बाहरी ढाँचा बालक के ग्रहणक्षमता, विषय, लय आरो अनुभव के संग मेल खाए।

मैथिली —पोथी कखनो शिल्पक तकनीकी प्रश्न उठबैत अछि, मुदा एकरूप कसौटी सदिखन स्पष्ट नहि। गजल लेल बहर/काफिया/रदीफक शुद्धता, बाल-काव्य लेल आयु-उपयुक्त शब्दावली, खण्डकाव्य लेल कथा-गति—ई सभ अलग कसौटी माँगैत अछि। भविष्यक संस्करणमे विधा-विशेषक कसौटी आरम्भे देल जाए तँ मूल्याङ्कन अधिक पारदर्शी होएत। तथापि ऐतिहासिक अर्थ स्पष्ट अछि: अंगिका बाल-काव्य प्रयोगशील अछि, आ 'बाल' विशेषण विधाकेँ छोट नहि करैत; स्थापित रूपकेँ नब पाठक लेल पुनः गढ़बाक चुनौती दैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पोथी कखनियों शिल्प के तकनीकी प्रश्न उठावै छै, मतरकि एकरूप कसौटी सभे बेर स्पष्ट नै। गजल लेल बहर/काफिया/रदीफ के शुद्धता, बाल-काव्य लेल आयु-उपयुक्त शब्दावली, खण्डकाव्य लेल कथा-गति—ई सिनी अलग कसौटी माँगै छै। आगू के संस्करण में विधा-विशेष के कसौटी आरम्भे देलों जाए तें मूल्याङ्कन अधिक पारदर्शी होतै। तथापि ऐतिहासिक अर्थ स्पष्ट छै: अंगिका बाल-काव्य प्रयोगशील छै, आरो 'बाल' विशेषण विधा कें छोट नै करै; स्थापित रूप कें नब पाठक लेल पुनः गढ़ै के चुनौती दै छै।

खण्ड ३: बाल-नाटक, खण्डकाव्य आ गजल-शिल्प

ठेठी-अंगिका: खण्ड ३: बाल-नाटक, खण्डकाव्य आरो गजल-शिल्प

मैथिली —पोथीक अन्तिम चरणमे डॉ. अमरेन्द्र अंगिका बाल-साहित्यक किछु अति विशिष्ट आ अभिनव प्रयोगक चर्चा करैत छथि। बाल-नाटक आ बाल-खण्डकाव्य एहन विधा अछि जतय भाषा आ शिल्पक कौशलक कठिन परीक्षा होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —पोथी के अन्तिम चरण में डॉ. अमरेन्द्र अंगिका बाल-साहित्य के कुछु अति विशिष्ट आरो अभिनव प्रयोगक चर्चा करै छै। बाल-नाटक आरो बाल-खण्डकाव्य एहन विधा छै जहाँ भाषा आरो शिल्प के कौशलक कठिन परीक्षा होय छै।

बाल-खण्डकाव्य: 'घटोत्कच' आ 'पंचामृत'

ठेठी-अंगिका: बाल-खण्डकाव्य: 'घटोत्कच' आरो 'पंचामृत'

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्र स्वयं एकटा सिद्धहस्त नाटककार आ खण्डकाव्य रचयिता छथि। हुनकर खण्डकाव्य 'घटोत्कच' महाभारतक वनपर्व पर आधारित अछि। बच्चा सभमे जादुई आ अलौकिक शक्ति (Supernatural powers) वला पात्रक प्रति जे स्वाभाविक

आकर्षण होइत अछि, ओकरा लेखक एहि खण्डकाव्यमे पकड़बाक प्रयास केने छथि। 'घटोत्कच' क तीन सर्ग—प्रत्यक्ष, संघर्ष, आ पतन—मे युद्धक आ भीमक पुत्र घटोत्कचक जे भयानक मुदा बाल-आकर्षक रूपक चित्रण अछि, ओ अद्भुत अछि:

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र अपने-आप में एगो सिद्धहस्त नाटककार आरो खण्डकाव्य रचयिता छै। हुनकर खण्डकाव्य 'घटोत्कच' महाभारत के वनपर्व पर आधारित छै। बच्चा सभमे जादुई आरो अलौकिक शक्ति (Supernatural powers) वला पात्र के प्रति जे स्वाभाविक आकर्षण होय छै, ओकरा लेखक ई खण्डकाव्य में पकड़बाक प्रयास केने छै। 'घटोत्कच' के तीन सर्ग—प्रत्यक्ष, संघर्ष, आरो पतन— में युद्धक आरो भीमक पुत्र घटोत्कचक जे भयानक मतरकि बाल-आकर्षक रूपक चित्रण छै, ऊ अद्भुत छै:

मैथिली —धरती के सब धूल उड़ैले, बोड़ गाछ के तोड़ लगैले; ताड़ गिरैने, नदी उठैले, पर्वत, पानी जकां बहैले; सोनो के बादल रंग करिया, भादो केरो रात अन्हरिया,

ठेठी-अंगिका —धरती के सब धूल उड़ैले, बोड़ गाछ के तोड़ लगैले; ताड़ गिरैने, नदी उठैले, पर्वत, पानी जकां बहैले; सोनो के बादल रंग करिया, भादो केरो रात अन्हरिया,

मैथिली —एहिमे 'पानी जकां बहैले' आ 'भादो केरो रात अन्हरिया' सन उपमा बाल-मनमे एकटा चित्र (Visual Imagery) प्रस्तुत करैत अछि। ई खण्डकाव्य प्रमाणित करैत अछि जे बाल-साहित्य मात्र हल्लुक विषयक वस्तु नहि अछि; एहिमे महाकाव्यात्मक विस्तारक सेहो क्षमता अछि।

ठेठी-अंगिका —ई में 'पानी जकां बहैले' आरो 'भादो केरो रात अन्हरिया' जइसन उपमा बाल-मन में एगो चित्र (Visual Imagery) प्रस्तुत करै छै। ई खण्डकाव्य प्रमाणित करै छै जे बाल-साहित्य मात्र हल्लुक विषय के वस्तु नै छै; ई में महाकाव्यात्मक विस्तार के भी क्षमता छै।

मैथिली —'पंचामृत' पाँच बाल-काव्य रूपकक सङ्ग्रह अछि, जाहिमे 'चोकर के हलुआ', 'अतिथि सेवा', 'आत्मसमर्पण', 'विशाखा', आ 'बुद्धं शरणं गच्छामि' शामिल अछि। ई रूपक सभ बच्चाकेँ नैतिक आ आध्यात्मिक बल प्रदान करबाक लेल रचित अछि।

ठेठी-अंगिका —'पंचामृत' पाँच बाल-काव्य रूपक के सङ्ग्रह छै, जाहि में 'चोकर के हलुआ', 'अतिथि सेवा', 'आत्मसमर्पण', 'विशाखा', आरो 'बुद्धं शरणं गच्छामि'शामिल छै। ई रूपक सिनी बच्चा केँ नैतिक आरो आध्यात्मिक बल प्रदान करै के लेली रचित छै।

बाल-गजलक नवोन्मेष

ठेठी-अंगिका: बाल-गजलक नवोन्मेष

मैथिली —गजल जकाँ विधा, जे मूलतः फारसी-उर्दू परम्परा सँ आयल अछि आ जकर मिजाज प्रणय आ दर्शनक होइत अछि, ओकरा बाल-साहित्यक साँचामे ढारब एकटा भगीरथ प्रयास अछि। डॉ. अमरेन्द्र आ दिनेश बाबा सन कवि ई असम्भव काज कऽ देखने छथि। दिनेश बाबाक बाल-गजलक एकटा शे'र दृष्टव्य अछि जतय बच्चाक विविध क्रीड़ा आ समाजक विडम्बनाकेँ एकटा धागामे पिरोबल गेल अछि:

ठेठी-अंगिका —गजल जेना विधा, जे मूलतः फारसी-उर्दू परम्परा सें आयल छै आरो जकर मिजाज प्रणय आरो दर्शन के होय छै, ओकरा बाल-साहित्य के साँचा में ढारब एगो भगीरथ प्रयास छै। डॉ. अमरेन्द्र आरो दिनेश बाबा जइसन कवि ई असम्भव काज कऽ देखने छै। दिनेश बाबाक बाल-गजलक एगो शे'र दृष्टव्य छै जहाँ बच्चा के विविध क्रीड़ा आरो समाज के विडम्बनाकेँ एगो धागा में पिरोबल गेल छै:

मैथिली —गाय गेलै गोसल्ला मे, पानी पी पनसल्ला मे। आँख बन्द, मन चंचल छै, हाथ फेरावै मल्ला मे।

ठेठी-अंगिका —गाय गेलै गोसल्ला मे, पानी पी पनसल्ला मे। आँख बन्द, मन चंचल छै, हाथ फेरावै मल्ला मे।

मैथिली —एहि बाल-गजलमे ध्वनिक जे तालमेल (Rhyme scheme) अछि—'गोसल्ला', 'पनसल्ला', 'मल्ला'—ओ बाल-मनकेँ अनायास हे अपन सङ्गीतमे डुबा लेबाक क्षमता रखैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई बाल-गजल में ध्वनि के जे तालमेल (Rhyme scheme) छै—'गोसल्ला', 'पनसल्ला', 'मल्ला'—ओ बाल-मनकेँ अनायास हे अपन सङ्गीत में डुबा लेबाक क्षमता रखै छै।

14. आधुनिक बाल-कहानी: अभावक ईमानदार इतिहास

ठेठी-अंगिका: 14. आधुनिक बाल-कहानी: अभाव के ईमानदार इतिहास

मैथिली —पृष्ठ 94 सँ 'आधुनिक अंगिका बाल-गद्य साहित्य — बाल-कहानी' क चर्चा आरम्भ होइत अछि। एतय लेखकक आलोचनात्मक ईमानदारी विशेष ध्यान खींचैत अछि। आधुनिक बाल-काव्यक विकासक तुलनामे बाल-कहानी पर्याप्त समृद्ध नहि—ई बात पोथी स्वयं स्वीकार करैत अछि। किछु प्रतिष्ठित कथाकार सामान्य कथा-साहित्यमे प्रसिद्ध रहितहुँ बालक लेल नियमित अंगिका कहानीक परम्परा नहि बना सकलाह। लेखक 'अंगिका बाल-कहानी' सन संकलनकेँ एहि विधाक व्यवस्थित आरम्भक महत्त्वपूर्ण बिन्दु मानैत छथि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 94 सें 'आधुनिक अंगिका बाल-गद्य साहित्य — बाल-कहानी' के चर्चा आरम्भ होय छै। एतै लेखक के आलोचनात्मक ईमानदारी विशेष ध्यान खींचै छै। आधुनिकबाल-काव्य के विकास के तुलना में बाल-कहानी पर्याप्त समृद्ध नै—ई बात पोथी अपने स्वीकार करै छै। कुछु प्रतिष्ठित कथाकार सामान्य कथा-साहित्य में प्रसिद्ध रहला पर भी बालक लेल नियमित अंगिका कहानी के परम्परा नै बना सकलै। लेखक 'अंगिका बाल-कहानी' सन संकलन कें ई विधा के व्यवस्थित आरम्भ के महत्त्वपूर्ण बिन्दु मानै छै।

मैथिली —पृष्ठ 97 पर स्पष्ट भाव ई अछि जे सात-आठ कहानी मात्रसँ पूरा बाल-कथा साहित्य समृद्ध नहि भऽ जाइत। ई आत्मालोचना उल्लेखनीय अछि, कारण साहित्येतिहास प्रायः अपन विषयक उपलब्धि बढ़ा-चढ़ा कऽ देखबैत अछि। एतय लेखक कमीकेँ भविष्यक सृजनक चुनौती बनबैत छथि। एहि कारण पोथीक विश्वसनीयता बढ़ैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 97 पर स्पष्ट भाव ई छै जे सात-आठ कहानी मात्र सें पूरा बाल-कथा साहित्य समृद्ध नै होय जाय। ई आत्मालोचना उल्लेखनीय छै, कारण साहित्येतिहास प्रायः आपनों विषय के उपलब्धि बढ़ा-चढ़ा करी कें देखावै छै। एतै लेखक कमी कें आगू के सृजन के चुनौती बनावै छै। ई कारण पोथी के विश्वसनीयता बढ़ै छै।

मैथिली —उपलब्ध कहानिसभक विषय-विविधता महत्वपूर्ण अछि: बालकक चतुराई, लोककथाक रूपान्तरण, संस्मरण, सामाजिक शिक्षा, विज्ञान, पर्यावरण, पशु-पक्षी आ आधुनिक जीवन। किछु कहानीक अन्त शिक्षाप्रद निष्कर्ष दिस झुकैत अछि; एतय फेर आरम्भिक बाल-मनक कसौटी लागू करबाक आवश्यकता अछि—कथा अपन पात्र, घटना आ तनावसँ जीबैत अछि कि अन्तिम संदेशसँ?

ठेठी-अंगिका —उपलब्ध कहानि सिनी के विषय-विविधता महत्वपूर्ण छै: बालक के चतुराई, लोककथा के रूपान्तरण, संस्मरण, सामाजिक शिक्षा, विज्ञान, पर्यावरण, पशु-पक्षी आरो आधुनिक जीवन। कुछु कहानी के अन्त शिक्षाप्रद निष्कर्ष दिस झुकै छै; एतै फेनू आरम्भिक बाल-मन के कसौटी लागू करै के आवश्यकता छै—कथा आपनों पात्र, घटना आरो तनाव सें जीवै छै कि अन्तिम संदेश सें?

मैथिली —एहि खण्डक आत्मालोचनात्मक निष्कर्ष महत्त्वपूर्ण अछि। साथहि स्पष्ट अछि जे कहानीक कमजोरीकेँ मात्र रचनाकारक अभावसँ नहि, प्रकाशन-संरचना, बाल-पत्रिका, पाठक-बाजार, विद्यालयीय ग्रहण, चित्र-पुस्तक संस्कृति आ सम्पादन-परम्पराक प्रश्नसँ सेहो जोड़ि देखबाक चाही। साहित्यिक विधा लेखक मात्रसँ नहि, पूरा संस्थागत पारिस्थितिकीसँ विकसित होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई खण्ड के आत्मालोचनात्मक निष्कर्ष महत्त्वपूर्ण छै। संगें साफ छै जे कहानी के कमजोरी कें मात्र रचनाकार के अभाव सें नै, प्रकाशन-संरचना, बाल-पत्रिका, पाठक-बाजार, विद्यालयीय ग्रहण, चित्र-पुस्तक संस्कृति आरो सम्पादन-परम्परा के प्रश्न सें भी जोड़ कें देखै के चाही। साहित्यिक विधा लेखक मात्र सें नै, पूरा संस्थागत पारिस्थितिकी सें विकसित होय छै।

15. बाल-नाटक: पुनर्पाठसँ उभरल अधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र

ठेठी-अंगिका: 15. बाल-नाटक: पुनर्पाठ सें उभरलों अधिक महत्त्वपूर्ण क्षेत्र

मैथिली —नाटक, निबन्ध आ जीवनीक क्षेत्रकेँ सूक्ष्मतासँ देखला पर पृष्ठ 98–109 क सामग्री स्पष्ट करैत अछि जे निबन्ध-जीवनी निश्चय छोट अन्तिम खण्ड अछि, मुदा बाल-नाटकपर चर्चा पर्याप्त विस्तृत आ आलोचनात्मक अछि। अतः बाल-नाटककेँ स्वतंत्र प्रमुख उपलब्धिक रूपमे स्थान देब आवश्यक अछि।

ठेठी-अंगिका —नाटक, निबन्ध आरो जीवनी के क्षेत्र कें सूक्ष्मता सें देखला पर पृष्ठ 98–109 के सामग्री साफ करै छै जे निबन्ध-जीवनी निश्चय छोट अन्तिम खण्ड छै, मतरकि बाल-नाटकपर चर्चा पर्याप्त विस्तृत आरो आलोचनात्मक छै। अतः बाल-नाटक कें स्वतंत्र प्रमुख उपलब्धि के रूप में स्थान दै के जरूरी छै।

मैथिली —पृष्ठ 98 सँ बाल-नाटकक उमेर-प्रश्न, शिशु/बाल/किशोर साहित्यक सीमा आ एकांकीक उपयुक्ततापर विचार अछि। लेखकक तर्क व्यवहारिक अछि: बच्चा छोट आकार, गतिशील घटना, संवाद आ मंचीय क्रियासँ सहज जुड़ैत अछि; लम्बा नाटकक अपेक्षा एकांकी विद्यालयीय वा बालमंचपर अधिक उपयोगी भऽ सकैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 98 सें बाल-नाटक के उमेर-प्रश्न, शिशु/बाल/किशोर साहित्य के सीमा आरो एकांकी केउपयुक्ततापर विचार छै। लेखक के तर्क व्यवहारिक छै: बच्चा छोट आकार, गतिशील घटना, संवाद आरो मंचीय क्रिया सें सहज जुड़ै छै; लम्बा नाटक के अपेक्षा एकांकी विद्यालयीय वा बालमंचपर अधिक उपयोगी होय कें सकै छै।

मैथिली —‘पंचगव्य’ क पाँच एकांकीक विवेचन पृष्ठ 101–105 मे विशेष महत्त्वपूर्ण अछि। सामाजिक परिवर्तन, पुलिस-प्रशासन, अन्धविश्वास-विरोध, वैज्ञानिक दृष्टि, बालिका-शिक्षा, विवाह, ग्रामीण जीवन आदि विषय नाटकीय घटनामे रूपान्तरित कएल गेल अछि। पृष्ठ 105 पर लेखक चरित्रक जीवितपन, विविध आयुवर्ग, ग्रामीण परिवेश, संवाद आ व्यंग्य-विनोदकेँ सफलता मानैत छथि। ई आलोचना केवल कथ्य-सूची नहि; नाटकक शिल्प—पात्र, संवाद, वातावरण—पर वास्तविक ध्यान अछि।

ठेठी-अंगिका —‘पंचगव्य’ के पाँच एकांकी के विवेचन पृष्ठ 101–105 में विशेष महत्त्वपूर्ण छै। सामाजिक परिवर्तन, पुलिस-प्रशासन, अन्धविश्वास-विरोध, वैज्ञानिक दृष्टि, बालिका-शिक्षा, विवाह, ग्रामीण जीवन आदि विषय नाटकीय घटना में रूपान्तरित करलों गेलों छै। पृष्ठ 105 पर लेखक चरित्र के जीवितपन, विविध आयुवर्ग, ग्रामीण परिवेश, संवाद आरो व्यंग्य-विनोद कें सफलता मानै छै। ई आलोचना केवल कथ्य-सूची नै; नाटक के शिल्प—पात्र, संवाद, वातावरण—पर वास्तविक ध्यान छै।

मैथिली —पृष्ठ 106 पर ‘निभुहान’ क तीन खण्ड-नाटकक चर्चा ध्वनि-प्रदूषण, किशोर मानसिकता, पर्यावरण आ शिक्षा सन विषय सामने अनैत अछि। पृष्ठ 109 धरि रेडियो, गीतिनाट्य आ स्वास्थ्य-सन्दर्भक चर्चा आधुनिक माध्यमक उपस्थिति देखबैत अछि। एहि कारण बाल-नाटक अंगिका बाल-साहित्यक भीतर सामाजिक ज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण आ मंचीय मनोरञ्जनक संगम बनैत अछि। आगाँक अध्ययनक दू विशेष दिशा होएत—मुद्रित नाटकक वास्तविक मंचन-इतिहास आ पाठ/प्रदर्शनक अन्तर।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 106 पर ‘निभुहान’ के तीन खण्ड-नाटक के चर्चा ध्वनि-प्रदूषण, किशोर मानसिकता, पर्यावरण आरो शिक्षा सन विषय सामने अनै छै। पृष्ठ 109 तक रेडियो, गीतिनाट्य आरो स्वास्थ्य-सन्दर्भ के चर्चा आधुनिक माध्यम के उपस्थिति देखावै छै। ई कारण बाल-नाटक अंगिका बाल-साहित्य के भीतर सामाजिक ज्ञान, सार्वजनिक स्वास्थ्य, पर्यावरण आरो मंचीय मनोरञ्जन के संगम बनै छै। आगू के शोध के दू विशेष दिशा होतै—मुद्रित नाटक के वास्तविक मंचन-इतिहास आरो पाठ/प्रदर्शन के अन्तर।

बाल-नाटक आ एकांकी

ठेठी-अंगिका: बाल-नाटक आरो एकांकी

मैथिली —किशोर अवस्थाक बच्चाकेँ केन्द्रमे राखि कऽ जे नाटक आ एकांकी रचित भेल अछि, ओ समाजक कुरीति, अन्धविश्वास आ शिक्षाक समस्या पर चोट करैत अछि। डॉ. अमरेन्द्रक 'पंचगव्य' सङ्ग्रहमे पाँचटा बाल-एकांकी अछि:

ठेठी-अंगिका —किशोर अवस्थाक बच्चा कैँ केन्द्र में राखि कऽ जे नाटक आरो एकांकी लिखलों गेलों छै, ऊ समाज के कुरीति, अन्धविश्वास आरो शिक्षा के समस्या पर चोट करै छै। डॉ. अमरेन्द्र के 'पंचगव्य' सङ्ग्रह में पाँचटा बाल-एकांकी छै:

एकांकी आ सामाजिक/नैतिक विषय-वस्तु

ठेठी-अंगिका: एकांकी आरो सामाजिक/नैतिक विषय-वस्तु

मैथिली —१. करनी-भरनी साथे-साथ — गामक बदलैत मानसिकता आ राजनीतिक स्वार्थ पर व्यंग्य

ठेठी-अंगिका —१. करनी-भरनी साथे-साथ — गामक बदलैत मानसिकता आरो राजनीतिक स्वार्थ पर व्यंग्य

मैथिली —२. कलयुग रो सत्ता — दहेज प्रथाक विरोध आ नारी सशक्तीकरण

ठेठी-अंगिका —२. कलयुग रो सत्ता — दहेज प्रथाक विरोध आरो नारी सशक्तीकरण

मैथिली —३. पुरानो भूत-नया इलाज — अन्धविश्वास आ तन्त्र-मन्त्रक स्थान पर वैज्ञानिक सोच

ठेठी-अंगिका —३. पुरानो भूत-नया इलाज — अन्धविश्वास आरो तन्त्र-मन्त्रक स्थान पर वैज्ञानिक सोच

मैथिली —४. सा विद्या या विमुक्तये — शिक्षाक अभावमे अपराध (डकैती) क बढब आ विद्याक महत्त्व

ठेठी-अंगिका —४. सा विद्या या विमुक्तये — शिक्षा के अभाव में अपराध (डकैती) के बढब आरो विद्याक महत्त्व

मैथिली —५. मुट्ठी मे धूप — नारी-शिक्षा आ बालिकाकेँ स्वावलम्बी बनबाक प्रेरणा

ठेठी-अंगिका —५. मुट्ठी में धूप — नारी-शिक्षा आरो बालिकाकेँ स्वावलम्बी बनै के प्रेरणा

मैथिली —समीक्षाक दृष्टिसँ, ई एकांकी सभ बाल-मनकेँ सामाजिक यथार्थ (Social Realism) सँ परिचित करबैत अछि। 'कलयुग रो सत्ता' मे दहेज प्रथा सन सामाजिक व्याधि पर जे प्रहार अछि—जाहिमे नायिका स्वयं विवाह-मण्डप पर अपन दहेज-लोभी होबए वला पतिकेँ हथकड़ी पहिराबइत अछि—ओ किशोरावस्थामे क्रान्तिकारी चेतना (Revolutionary consciousness) जगाबए लेल अतीव समर्थ अछि।

ठेठी-अंगिका —समीक्षा के दृष्टि सें, ई एकांकी सिनी बाल-मनकेँ सामाजिक यथार्थ (Social Realism) सें परिचित करावै छै। 'कलयुग रो सत्ता' में दहेज प्रथा जइसन सामाजिक व्याधि पर जे प्रहार छै—जाहि में नायिका अपने विवाह-मण्डप पर अपन दहेज-लोभी होय वला पतिकेँ हथकड़ी पहिराबइत छै—ओ किशोरावस्था में क्रान्तिकारी चेतना (Revolutionary consciousness) जगाबए लेली अतीव समर्थ छै।

मैथिली —तेहने, चन्द्रप्रकाश जगप्रियक 'विटामिन सभा' (रेडियो नाटक) आ 'चतुरन के चतुराई' बाल-नाट्य-काव्यक उत्कृष्ट उदाहरण अछि। 'विटामिन सभा' मे बाबा साहेब अम्बेडकरक जीवन पर रचित रूपक, आ 'गुजरैठा' (Centipede) क आत्मकथ्य बच्चाकेँ मनोरंजनक सङ्ग-सङ्ग प्राणिविज्ञानक सूक्ष्म जानकारी सेहो दैत अछि:

ठेठी-अंगिका —तेहने, चन्द्रप्रकाश जगप्रियक 'विटामिन सभा' (रेडियो नाटक) आरो 'चतुरन के चतुराई' बाल-नाट्य-काव्यक उत्कृष्ट उदाहरण छै। 'विटामिन सभा' में बाबा साहेब अम्बेडकरक जीवन पर रचित रूपक, आरो 'गुजरैठा'(Centipede) के आत्मकथ्य बच्चा केँ मनोरंजनक सङ्ग-सङ्ग प्राणिविज्ञानक सूक्ष्म जानकारी भी दै छै:

मैथिली —"देखत्है डरी गेलो नी।... अभी ते हमरा सौ गो टांग ही छै, जरा आरो बढ़ें दौ नी, हमरा मे ३८० टांग तक निकली ऐतै..."

ठेठी-अंगिका —"देखत्है डरी गेलो नी।... अभी ते हमरा सौ गो टांग ही छै, जरा आरो बढ़ें दौ नी, हमरा मे ३८० टांग तक निकली ऐतै..."

मैथिली —एकटा गुजरैठा (Centipede) क संवादक माध्यम सँ ओकर शारीरिक संरचना (३८० टांग धरि) आ ओकर पारिस्थितिकी तंत्रमे महत्वकेँ स्पष्ट करब—ई आधुनिक बाल-नाटकक सबसँ पैघ उपलब्धि अछि।

ठेठी-अंगिका —एगो गुजरैठा (Centipede) के संवाद के माध्यम सें ओकर शारीरिक संरचना (३८० टांग तक) आरो ओकर पारिस्थितिकी तंत्र में महत्त्व कें स्पष्ट करब—ई आधुनिक बाल-नाटक के सभसें बड़का उपलब्धि छै।

16. अन्य बाल-साहित्य: निबन्ध, इतिहास, महापुरुष आ जीवनी

ठेठी-अंगिका: 16. अन्य बाल-साहित्य: निबन्ध, इतिहास, महापुरुष आरो जीवनी

मैथिली —पृष्ठ 109 पर स्पष्ट शीर्षक ‘अन्य बाल-साहित्य (निबंध और जीवनी साहित्य)’ सँ पोथी बाल-साहित्यक परिधि कविता-कथा-नाटकसँ बाहर लऽ जाइत अछि। पृष्ठ 109–111 मेअंगप्रदेशक प्रमुख नगर, महापुरुष, स्वतंत्रता-संग्रामक व्यक्तित्व, भारतक महापुरुष, बुद्ध आदि विषयक बालोपयोगी गद्यक चर्चा अछि। लेखक इतिहास-सांस्कृतिक ज्ञानकेँ बाल-पाठक धरि पहुँचाबयवला साहित्यक रूपमे देखैत छथि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 109 पर स्पष्ट शीर्षक ‘अन्य बाल-साहित्य (निबंध और जीवनी साहित्य)’ सें पोथी बाल-साहित्य के परिधि कविता-कथा-नाटक सें बाहर लै कें जाय छै। पृष्ठ 109–111 में अंगप्रदेश के प्रमुख नगर, महापुरुष, स्वतंत्रता-संग्राम के व्यक्तित्व,

भारत के महापुरुष, बुद्ध आदि विषय के बालोपयोगी गद्य के चर्चा छै। लेखक इतिहास-सांस्कृतिक ज्ञान कें बाल-पाठक तक पहुँचावै वाला साहित्य के रूप में देखै छै।

मैथिली —एहि सामग्रीक मूल्याङ्कन लेल कथा वा कविता जकाँ कसौटी पर्याप्त नहि। ज्ञान-साहित्यमे तथ्यक विश्वसनीयता, चयन, भाषा-सरलता, सन्दर्भ, चित्र, कालक्रम आ जिज्ञासा जगाबयक क्षमता महत्त्वपूर्ण अछि। पोथी विशेष रूपेँ चित्र/व्यक्तित्व-परिचयक बाल-रुचि बढ़ाबयवला भूमिकापर ध्यान दैत अछि। एहि अर्थमे ई खण्ड बाल-साहित्य आ बाल-शिक्षाक सीमा-प्रदेशमे अछि।

ठेठी-अंगिका —ई सामग्री के मूल्याङ्कन लेल कथा वा कविता जेना कसौटी पर्याप्त नै। ज्ञान-साहित्य में तथ्य के विश्वसनीयता, चयन, भाषा-सरलता, सन्दर्भ, चित्र, कालक्रम आरो जिज्ञासा जगावै के क्षमता महत्त्वपूर्ण छै। पोथी विशेष रूपेँ चित्र/व्यक्तित्व-परिचय के बाल-रुचि बढ़ावै वाला भूमिकापर ध्यान दै छै। ई अर्थ में ई खण्ड बाल-साहित्य आरो बाल-शिक्षा के सीमा-प्रदेश में छै।

मैथिली —एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तिक प्रश्न उठैत अछि: की बालक लेल लिखल प्रत्येक इतिहास वा जीवनी बाल-साहित्य अछि? केवल बालक लक्ष्य पाठक होएब पर्याप्त नहि; भाषा, संरचना, कथा-गति, दृश्य सामग्री, प्रश्न-जिज्ञासा, आयु-स्तर आ साहित्यिक प्रस्तुति निर्णायक बनैत अछि। पोथी एहि प्रश्नकेँ पूर्ण सिद्धान्तक रूपमे विकसित नहि करैत, मुदा सामग्री उपलब्ध करबैत अछि। निबन्ध-जीवनीक ई विधागत विस्तार स्थानीय सांस्कृतिक ज्ञानक पाठ्य-विश्वकेँ अधिक स्पष्ट करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —एगो महत्त्वपूर्ण सिद्धान्तिक प्रश्न उठै छै: की बालक लेल लिखलों प्रत्येक इतिहास वा जीवनी बाल-साहित्य छै? केवल बालक लक्ष्य पाठक होब पर्याप्त नै; भाषा, संरचना, कथा-गति, दृश्य सामग्री, प्रश्न-जिज्ञासा, आयु-स्तर आरो साहित्यिक प्रस्तुति निर्णायक बनै छै। पोथी ई प्रश्न कें पूर्ण सिद्धान्त के रूप में विकसित नै करै, मतरकि सामग्री उपलब्ध करावै छै। निबन्ध-जीवनी के ई विधागत विस्तार स्थानीय सांस्कृतिक ज्ञान के पाठ्य-विश्व कें अधिक साफ करै छै।

17. भाषा आ आलोचनात्मक शैली: अंगिका सामग्री, हिन्दी विवेचन

ठेठी-अंगिका: 17. भाषा आरो आलोचनात्मक शैली: अंगिका सामग्री, हिन्दी विवेचन

मैथिली —ग्रन्थक एक विशिष्ट भाषिक संरचना अछि: रचनात्मक उदाहरण, शीर्षक, गीत, कथा-संवाद आ मूल साहित्यिक संसारअंगिकामे अछि, जखन आलोचनात्मक व्याख्या प्रायः हिन्दी गद्यक माध्यमेँ चलैत अछि। एहि कारण पोथी एक प्रकारक द्विभाषिक आलोचनात्मक दस्तावेज बनैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ के एक विशिष्ट भाषिक संरचना छै: रचनात्मक उदाहरण, शीर्षक, गीत, कथा-संवाद आरो मूल साहित्यिक संसार अंगिका में छै, जबें आलोचनात्मक व्याख्या प्रायः हिन्दी गद्य के माध्यम सें चलै छै। ई कारण पोथी एक प्रकार के द्विभाषिक आलोचनात्मक दस्तावेज बनै छै।

मैथिली —एहि व्यवस्थाक लाभ अछि। हिन्दी माध्यमेँ व्यापक पाठक, विश्वविद्यालयीय शोधक वा अंगिका पूर्ण रूपेँ नहि पढ़यवला व्यक्ति सेहो साहित्यिक इतिहासक रूपरेखा बुझि सकैत अछि। मुदा एक सांस्कृतिक प्रश्न सेहो अछि: जँ सृजनक भाषा अंगिका अछि, तखन ओकर सौन्दर्यशास्त्र, आलोचनात्मक शब्दावली आ साहित्येतिहासक भाषा स्वयं अंगिकामे कतेक विकसित हो? भविष्यक अंगिका संस्करण स्थानीय आलोचना-भाषाक स्वायत्तता बढ़ा सकैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ई व्यवस्था के लाभ छै। हिन्दी माध्यम सें व्यापक पाठक, विश्वविद्यालयीय शोध के वा अंगिका पूर्ण रूपेँ नै पढ़ै वाला व्यक्ति भी साहित्यिक इतिहास के रूपरेखा बुझ कें सकै छै। मतरकि एक सांस्कृतिक प्रश्न भी छै: जों सृजन के भाषा अंगिका छै, तबें ओकर सौन्दर्यशास्त्र, आलोचनात्मक शब्दावली आरो साहित्येतिहास के भाषा अपने अंगिका में कत्तें विकसित हो? आगू के अंगिका संस्करण स्थानीय आलोचना-भाषा के स्वायत्तता बढ़ा सकै छै।

मैथिली —शैली सामान्यतः सरल, परिचयात्मक आ उदाहरण-समृद्ध अछि। सिद्धान्तक भारी शब्दावली नहि; एहि कारण सामान्य पाठक लेल पहुँच सहज। मुदा शोधक दृष्टिसँ कतेको ठाम कृति/लेखक/विषयक विवरण अधिक, गहन पाठालोचन कम। छन्द, बिम्ब, कथानक, कथावाचक, पात्र-विकास, हास्य, पाठकीय प्रतिक्रिया, आयु-उपयुक्तता, लिंग-वर्गीय प्रतिनिधित्व, चित्र-पाठ सम्बन्ध—एहि सभक समान पद्धतिसँ विश्लेषण कएल जाए तँ आलोचना आरो गहन होएत।

ठेठी-अंगिका —शैली सामान्यतः सरल, परिचयात्मक आरो उदाहरण-समृद्ध छै। सिद्धान्त के भारी शब्दावली नै; ई कारण सामान्य पाठक लेल पहुँच सहज। मतरकि शोध के दृष्टि सें कईगो जगह कृति/लेखक/विषय के विवरण अधिक, गहन पाठालोचन कम। छन्द,

बिम्ब, कथानक, कथावाचक, पात्र-विकास, हास्य, पाठकीय प्रतिक्रिया, आयु-उपयुक्तता, लिंग-वर्गीय प्रतिनिधित्व, चित्र-पाठ सम्बन्ध —ई सब के एके पद्धति सें विश्लेषण करलों जाए तें आलोचना आरो गहन होतै।

मैथिली —एहि सीमाकेँ लेखकक विद्वत्ताक अभाव न मानि ग्रन्थक उद्देश्यक प्रकाशमे देखबाक चाही। ई पोथी पहिले क्षेत्रक नक्शा तैयार करैत अछि; प्रत्येक कृतिक सम्पूर्ण सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण ओकर एकल उद्देश्य नहि। तें एहि पर अगिला आलोचकक दायित्व बनैत अछि जे लेखकक संकलित corpus पर विभिन्न आधुनिक पद्धति लागू करय।

ठेठी-अंगिका —ई सीमा कें लेखक के विद्वत्ता के अभाव न मान कें ग्रन्थ के उद्देश्य के प्रकाश में देखै के चाही। ई पोथी पहिले क्षेत्र के नक्शा तैयार करै छै; प्रत्येक कृति के सम्पूर्ण सौन्दर्यशास्त्रीय विश्लेषण ओकर एकल उद्देश्य नै। तें ई पर आगू के आलोचक के दायित्व बनै छै जे लेखक के संकलित corpus पर विभिन्न आधुनिक पद्धति लागू करै।

18. सन्दर्भ-सूची आ पत्रिका-संसार: पोथी एक साहित्यिक अभिलेख

ठेठी-अंगिका: 18. सन्दर्भ-सूची आरो पत्रिका-संसार: पोथी एक साहित्यिक अभिलेख

मैथिली —पृष्ठ 112–114 क सन्दर्भ-खण्ड ग्रन्थक मूल्य बुझबाक लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। लगभग 52 क्रमांकित पुस्तक/स्रोतक सूची तथा दसक आसपास पत्रिकाक नाम—बालगीत, पहेली, कथा, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, जीवनी, आलोचना आ पत्रिका—मिलि एक पूरा साहित्यिक परिसंचरण देखबैत अछि। ‘ढोल बजै छै ढम्मक ढम’, ‘बुतरू के तुतरू’, ‘बाजै बीन बजावै तीन’, ‘तुक्तक-मुक्तक’, ‘पंचगव्य’, ‘बण्टा’, ‘अंगिका बालगीत’, ‘अंगिका बालकहानी’ आदि अनेक कृति एहि bibliographic संसारक हिस्सा अछि।

ठेठी-अंगिका —पृष्ठ 112–114 के सन्दर्भ-खण्ड ग्रन्थ के मूल्य बुझै के लेल अत्यन्त महत्त्वपूर्ण छै। लगभग 52 क्रमांकित पुस्तक/स्रोत के सूची तथा दस के आसपास पत्रिका के नाम—बालगीत, पहेली, कथा, उपन्यास, नाटक, अनुवाद, जीवनी, आलोचना आरो पत्रिका—मिली कें एक पूरा साहित्यिक परिसंचरण देखावै छै। ‘ढोल बजै छै ढम्मक ढम’, ‘बुतरू के तुतरू’, ‘बाजै बीन बजावै तीन’, ‘तुक्तक-मुक्तक’, ‘पंचगव्य’, ‘बण्टा’, ‘अंगिका बालगीत’, ‘अंगिका बालकहानी’ आदि अनेक कृति ई bibliographic संसार के हिस्सा छै।

मैथिली —ई सूची पोथीकेँ निजी स्मरण वा आत्मप्रशंसा-मात्र होएबसँ रोकैत अछि। पाठक देख सकैत अछि जे इतिहास अनेक पुस्तक, संकलन, अनुवाद, पत्रिका आ लेखकक जालपर आधारित अछि। छोट भाषिक साहित्यक अध्ययनमे एहि प्रकारक bibliography स्वयं शोध-उपकरण अछि, कारण कतेको स्रोत सामान्य राष्ट्रीय पुस्तक-सूचिमे सहज नहि भेटैत।

ठेठी-अंगिका —ई सूची पोथी कें निजी स्मरण वा आत्मप्रशंसा-मात्र होएब सें रोकै छै। पाठक देख सकै छै जे इतिहास अनेक पुस्तक, संकलन, अनुवाद, पत्रिका आरो लेखक के जालपर आधारित छै। छोट भाषिक साहित्य के अध्ययन में ई प्रकार के bibliography अपने शोध-उपकरण छै, कारण कईगो स्रोत सामान्य राष्ट्रीय पुस्तक-सूचि में सहज नै भेटै।

मैथिली —तथापि bibliographic मानकीकरण आवश्यक अछि। सभ प्रविष्टिमे प्रकाशन-वर्ष, संस्करण, पृष्ठ-संख्या, प्रकाशन-स्थान, ISBN वा सम्पादक-भूमिका समान रूपेँ नहि देल गेल अछि। अगिला संस्करणमे एक मानक शैलीक अनुसार पूर्ण सन्दर्भ, साथे लेखक-सूची, शीर्षक-सूची, विधा-सूची आ वर्ष-क्रम देल जाए तँ पोथी शोधक लेल बहुत अधिक सक्षम होएत।

ठेठी-अंगिका —तथापि bibliographic मानकीकरण आवश्यक छै। सिनी प्रविष्टि में प्रकाशन-वर्ष, संस्करण, पृष्ठ-संख्या, प्रकाशन-स्थान, ISBN वा सम्पादक-भूमिका समानरूपेँ नै देलों गेलों छै। आगू के संस्करण में एक मानक शैली के अनुसार पूर्ण सन्दर्भ, साथे लेखक-सूची, शीर्षक-सूची, विधा-सूची आरो वर्ष-क्रम देलों जाए तें पोथी शोध के लेल बहुत अधिक सक्षम होतै।

मैथिली —भारतवाणी पर मूल ‘अंगिका बाल-साहित्य’ (2022) संग 2021 क श्वेता रानीक ‘डॉ. अमरेन्द्र का अंगिका बाल साहित्य’ आ अभिनन्दन-संपादित ‘डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली (खण्ड-1): अंगिका बालगीत समग्र’ सूचीबद्ध अछि। एहि सन्निकट प्रकाशन-समूहसँ स्पष्ट अछि जे 2021–22 धरि अमरेन्द्रक बाल-साहित्य स्वयं आलोचना, सम्पादन आ इतिहास-लेखनक एक केन्द्र बनि चुकल छल।

ठेठी-अंगिका —भारतवाणी पर मूल ‘अंगिका बाल-साहित्य’ (2022) संग 2021 के श्वेता रानी के ‘डॉ. अमरेन्द्र का अंगिका बाल साहित्य’ आरो अभिनन्दन-संपादित ‘डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली (खण्ड-1): अंगिका बालगीत समग्र’ सूचीबद्ध छै। ई सन्निकट प्रकाशन-

समूह सें स्पष्ट छै जे 2021–22 तक अमरेन्द्र के बाल-साहित्य अपने आलोचना, सम्पादन आरो इतिहास-लेखन के एक केन्द्र बनी चुकलों छेलै।

19. लेखक स्वयं रचनाकार: भीतरक साक्ष्य आ चयनक प्रश्न

ठेठी-अंगिका: 19. लेखक अपने रचनाकार: भीतर के साक्ष्य आरो चयन के प्रश्न

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्र एहि इतिहासक बाहरी निरीक्षक नहि; ओ स्वयं कवि, बालगीतकार, उपन्यासकार, नाटककार, आलोचक आ सांस्कृतिक कार्यकर्ता छथि। बाहरी लेखक-सूची हुनक 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'पंचगव्य', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन', 'एक छड़ी पर अंडा नाचै', 'बण्टा' आदि कृतिसभक स्वतंत्र प्रकाशन-उपस्थिति दर्ज करैत अछि। एहि कारण पोथी इतिहासकारक किताब आ सर्जकक आत्म-साक्ष्य—दुनू अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र ई इतिहास के बाहरी निरीक्षक नै; ओ अपने कवि, बालगीतकार, उपन्यासकार, नाटककार, आलोचक आरो सांस्कृतिक कार्यकर्ता छै। बाहरी लेखक-सूची हुनकर 'ढोल बजै छै ढम्मक ढम', 'पंचगव्य', 'बुतरू के तुतरू', 'बाजै बीन बजावै तीन', 'एक छड़ी पर अंडा नाचै', 'बण्टा' आदि कृति सिनी के स्वतंत्र प्रकाशन-उपस्थिति दर्ज करै छै। ई कारण पोथी इतिहासकार के किताब आरो सर्जक के आत्म-साक्ष्य—दुनू छै।

मैथिली —भीतरक साक्ष्यक लाभ बहुत अछि। लेखककेँ दुर्लभ पुस्तक, पत्रिका, प्रकाशन-परिस्थिति, समकालीन लेखक आ साहित्यिक संस्थासभक सीधा ज्ञान अछि। अनेक अल्पप्रचलित कृतिक नाम शायद एहन भीतरक नेटवर्क बिना इतिहासमे नहिअबैत। मुदा साक्षी स्वयं घटनाक सहभागी अछि, तें दृष्टिकोणक स्थान सेहो पहिचानल जाए।

ठेठी-अंगिका —भीतर के साक्ष्य के लाभ बहुत छै। लेखक कें दुर्लभ पुस्तक, पत्रिका, प्रकाशन-परिस्थिति, समकालीन लेखक आरो साहित्यिक संस्था सिनी के सीधा ज्ञान छै। अनेक अल्पप्रचलित कृति के नाम शायद एहन भीतर के नेटवर्क बिना इतिहास में नै आवै। मतरकि साक्षी अपने घटना के सहभागी छै, तें दृष्टिकोण के स्थान भी पहिचानल जाए।

मैथिली —लेखकक अपन कृतिसभक संख्या आ विस्तार अधिक होएब आवश्यक रूपेँ अनुचित नहि—जँ वास्तविक corpus मे हुनक योगदान पैघ अछि। बाहरी स्रोत आधुनिक अंगिका बाल-काव्यमे हुनक बहु-कृति उपस्थितिक पुष्टि करैत अछि। तथापि भविष्यक स्वतंत्र इतिहासकेँ सभ प्रमुख रचनाकार लेल समान प्रश्न पूछबाक चाही: कुल कृति, प्रकाशन-वर्ष, पाठक-ग्रहण, पुनर्मुद्रण, विधागत नवाचार, भाषा, शिल्प आ बाल-पाठकीयता। अतः निष्कर्ष आरोप नहि, पद्धतिगत सावधानी अछि: आत्मसाक्ष्यक लाभ स्वीकार करू, संगहि स्वतंत्र bibliographic verification आ comparative corpus तैयार करू।

ठेठी-अंगिका —लेखक के आपनों कृति सिनी के संख्या आरो विस्तार अधिक होब आवश्यक रूपेँ अनुचित नै—जों वास्तविक corpus में हुनकर योगदान बड़का छै। बाहरी स्रोत आधुनिक अंगिका बाल-काव्य में हुनकर बहु-कृति उपस्थिति के पुष्टि करै छै। तथापि आगू के स्वतंत्र इतिहास कें सिनी प्रमुख रचनाकार लेल समान प्रश्न पू छै के चाही: कुल कृति, प्रकाशन-वर्ष, पाठक-ग्रहण, पुनर्मुद्रण, विधागत नवाचार, भाषा, शिल्पआरो बाल-पाठकीयता। अतः निष्कर्ष आरोप नै, पद्धतिगत सावधानी छै: आत्मसाक्ष्य के लाभ स्वीकार करू, संगें स्वतंत्र bibliographic verification आरो comparative corpus तैयार करू।

20. पुस्तक, पत्रिका, संग्रह आ डिजिटल पुनरुपस्थिति: संस्थागत पारिस्थितिकी

ठेठी-अंगिका: 20. पुस्तक, पत्रिका, संग्रह आरो डिजिटल पुनरुपस्थिति: संस्थागत पारिस्थितिकी

मैथिली —पोथी पढ़ैत स्पष्ट होइत अछि जे साहित्य केवल लेखक लिखलनि आ पाठक पढ़लनि—ई दू-बिन्दु व्यवस्था नहि। पत्रिका, सम्पादित संकलन, साहित्यिक संस्था, प्रकाशक, अनुवादक, विद्यालयीय उपयोग, रेडियो/मंच आ बादमे डिजिटल भण्डार—ई सभ मिलि बाल-साहित्यक पारिस्थितिकी बनबैत अछि। पृष्ठ 112–114 क पुस्तक/पत्रिका सूची एहि नेटवर्कक ठोस प्रमाण अछि।

ठेठी-अंगिका —पोथी पढ़ै स्पष्ट होय छै जे साहित्य केवल लेखक लिखै छै आरो पाठक पढ़ै छै—ई दू-बिन्दु व्यवस्था नै। पत्रिका, सम्पादित संकलन, साहित्यिक संस्था, प्रकाशक, अनुवादक, विद्यालयीय उपयोग, रेडियो/मंच आरो बाद में डिजिटल भण्डार—ई सिनी मिली कें बाल-साहित्य के पारिस्थितिकी बनावै छै। पृष्ठ 112–114 के पुस्तक/पत्रिका सूची ई नेटवर्क के ठोस प्रमाण छै।

मैथिली —उपलब्ध बाहरी स्रोत एहि परिसंचरणक आधुनिक रूप देखबैत अछि। भारतवाणी मूल पोथी तथा सम्बन्धित अध्ययन/ग्रंथावलीकेँ सरकारी भाषा-ज्ञान पोर्टलपर सूचीबद्ध करैत अछि। Kavita Kosh 'तुक्तक मुक्तक' केँ ई-पुस्तक/बाल-कविता

वर्गमे राखैत अछि, Gadya Kosh पर 'बण्टा' क अंगिका पाठक भाग उपलब्ध अछि। ई डिजिटल पुनरुपस्थिति देखबैत अछि जे मुद्रित अंगिका बाल-साहित्य नब पाठकीय माध्यममे प्रवेश करि रहल अछि।

ठेठी-अंगिका —उपलब्ध बाहरी स्रोत ई परिसंचरण के आधुनिक रूप देखावै छै। भारतवाणी मूल पोथी तथा सम्बन्धित अध्ययन/ग्रंथावली कें सरकारी भाषा-ज्ञान पोर्टलपर सूचीबद्ध करै छै। Kavita Kosh 'तुक्तक-मुक्तक' कें ई-पुस्तक/बाल-कविता वर्ग में राखै छै, Gadya Kosh पर 'बण्टा' के अंगिका पाठक भाग उपलब्ध छै। ई डिजिटल पुनरुपस्थिति देखावै छै जे मुद्रित अंगिका बाल-साहित्य नब पाठकीय माध्यम में प्रवेश करी कें रहल छै।

मैथिली —ग्रन्थ 2022 धरि इतिहास लिखैत अछि; डिजिटल अध्ययनक क्षेत्र तकर बाद आरो बढ़ि सकैत अछि। आगाँक अध्ययनमे ई प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि: कोन कृति digitize भेल? कोन audio रूपमे अछि? विद्यालय/घरमे के पढ़ैत अछि? बालक मोबाइल पर मातृभाषा सामग्री कोना ग्रहण करैत अछि? पुरान खेलगीत डिजिटल वीडियोमे बदलला पर प्रदर्शन-परम्परा बचैत अछि कि नब रूप लैत अछि? एहि अर्थमे 'अंगिका बाल-साहित्य' अतीतक catalogue मात्र नहि, 2022 बादक परिवर्तन मापबाक baseline सेहो अछि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ 2022 तक इतिहास लिखै छै; डिजिटल अध्ययन के क्षेत्र तकर बाद आरो बढ़ि सकै छै। नबशोध कें पू छै के चाही: कोन कृति digitize होलै? कोन audio रूप में छै? विद्यालय/घर में के पढ़ै छै? बालक मोबाइल पर मातृभाषा सामग्री केना ग्रहण करै छै? पुरान खेलगीत डिजिटल वीडियो में बदलला पर प्रदर्शन-परम्परा बचै छै कि नब रूप लै छै? ई अर्थ में 'अंगिका बाल-साहित्य' अतीत के catalogue मात्र नै, 2022 बाद के परिवर्तन मापै के baseline भी छै।

21. भारतीय आ अन्तरराष्ट्रीय बाल-साहित्य-अध्ययनसँ तुलनात्मक संवाद

ठेठी-अंगिका: 21. भारतीय आरो अन्तरराष्ट्रीय बाल-साहित्य-अध्ययन सें तुलनात्मक संवाद

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक पोथी पश्चिमी सिद्धान्तक अनुकरण करबाक उद्देश्यसँ नहि लिखल गेल अछि, आ ओकर मूल्य ताहिमे नहि खोजल जाए। तथापि तुलनात्मक अध्ययनसँ ओकर मौलिक बिन्दु स्पष्ट होइत अछि। Hans-Heino Ewers बाल-साहित्यक वर्गीकरण, बालोपयुक्तता, पाठकक आवश्यकता आ मूल्यक अनुकूलनक प्रश्न उठबैत छथि। मूल पोथीक पृष्ठ 8–9 बाल-मन, कल्पना, तर्क, जिद, लय, चित्र आ अप्रत्यक्ष संदेशकेँ जे महत्त्व दैत अछि, से एहि child-oriented दृष्टिसँ सहज संवाद करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के पोथी पश्चिमी सिद्धान्त के अनुकरण करै के उद्देश्य सें नै लिखलों गेलों छै, आरो ओकर मूल्य ताहि में नै खोजल जाए। तथापि तुलनात्मक अध्ययन सेंओकर मौलिक बिन्दु स्पष्ट होय छै। Hans-Heino Ewers बाल-साहित्य के वर्गीकरण, बालोपयुक्तता, पाठक के आवश्यकता आरो मूल्य के अनुकूलन के प्रश्न उठावै छै। मूल पोथी के पृष्ठ 8–9 बाल-मन, कल्पना, तर्क, जिद, लय, चित्र आरो अप्रत्यक्ष संदेश कें जे महत्त्व दै छै, से ई child-oriented दृष्टि सें सहज संवाद करै छै।

मैथिली —Kimberley Reynolds बाल-साहित्यक इतिहासमे शिक्षामूलक आरम्भ, बादमे विविध विधा, मौखिक परम्परासँ पीढ़ीक साहित्यिक दीक्षा, आ समाजक मूल्य/भविष्यक कल्पनासँ सम्बन्धक चर्चा करैत छथि। अंगिका सामग्रीमे सेहो लोरी-तुक्तक-खेलगीतसँ नैतिक कथा, प्रकृति, विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य आ सामाजिक विषय धरि विस्तार भेटैत अछि। ई समानता ई सिद्ध नहि करैत जे अंगिका विकास कोनो बाहरी मॉडल अनुसरण करैत अछि; मात्र ई देखबैत अछि जे बाल-साहित्यक किछु मूल प्रश्न—आनन्द बनाम शिक्षा, बालक बनाम वयस्क मध्यस्थ, मौखिकता बनाम मुद्रण, उपयुक्तता बनाम साहित्यिक स्वतन्त्रता—अनेक भाषिक संस्कृतिमे पुनः प्रकट होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —Kimberley Reynolds बाल-साहित्य के इतिहास में शिक्षामूलक आरम्भ, बाद में विविध विधा, मौखिक परम्परा सें पीढ़ी के साहित्यिक दीक्षा, आरो समाज के मूल्य/आगू के कल्पना सें सम्बन्ध के चर्चा करै छै। अंगिका सामग्री में भी लोरी-तुक्तक-खेलगीत सें नैतिक कथा, प्रकृति, विज्ञान, पर्यावरण, स्वास्थ्य आरो सामाजिक विषय तक विस्तार भेटै छै। ई समानता ई सिद्ध नै करै जे अंगिका विकास कोनो बाहरी मॉडल अनुसरण करै छै; मात्र ई देखावै छै जेबाल-साहित्य के कुछु मूल प्रश्न—आनन्द बनाम शिक्षा, बालक बनाम वयस्क मध्यस्थ, मौखिकता बनाम मुद्रण, उपयुक्तता बनाम साहित्यिक स्वतन्त्रता—अनेक भाषिक संस्कृति में पुनः प्रकट होय छै।

मैथिली —भारतीय भाषिक तुलना लेल मैथिली, हिन्दी, बंगला, भोजपुरी, मगही आदि बाल-परम्परासँ समान विधागत प्रश्न उठाओल जा सकैत अछि, मुदा बिना समर्पित corpus तुलनात्मक श्रेष्ठता वा प्रभावक दावा उचित नहि। आगाँक तुलनात्मक अध्ययनक सही

पद्धति होएत—एके विधा, जइसे लोरी, पहेली, खेलगीत वा बालकथा, लेल समान कालखंड आ समान कसौटी पर समांतर भाषिक corpus बनब। छोट भाषा वा सहभाषाक साहित्यक मूल्य साबित करबाक नामपर अतिरंजना इतिहासक सेवा नहि करैत; 'अंगिका बाल-साहित्य' क वास्तविक स्रोत-सम्पदा स्वयं पर्याप्त अछि।

ठेठी-अंगिका —भारतीय भाषिक तुलना लेल मैथिली, हिन्दी, बंगला, भोजपुरी, मगही आदि बाल-परम्परा सें समान विधागत प्रश्न उठावलों जाय सकै छै, मतरकि बिना समर्पित corpus तुलनात्मक श्रेष्ठता वा प्रभाव के दावा उचित नै। आगू के शोध के सही पद्धति होतै—एके विधा, जइसे लोरी, पहेली, खेलगीत वा बालकथा, लेल समान कालखंड आरो समान कसौटी पर समांतर भाषिक corpus बनब। छोट भाषा वा सहभाषा के साहित्य के मूल्य साबित करै के नामपर अतिरंजना इतिहास के सेवा नै करै; 'अंगिका बाल-साहित्य' के वास्तविक स्रोत-सम्पदा अपने पर्याप्त छै।

चतुर्आयामी समीक्षा: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति, पाश्चात्य सिद्धान्त, नव्य-न्याय आ समान्तर-इतिहास

ठेठी-अंगिका: चतुर्आयामी समीक्षा

प्रथम आयाम: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति (भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि)

ठेठी-अंगिका: पहिलों आयाम: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति (भारतीय काव्यशास्त्र के नजर)

मैथिली —रस-विचार: बाल-साहित्यक अधिष्ठातृ रस वात्सल्य थिक। तेल-मालिश आ खान-पानक गीतमे शिशु आलम्बन-विभाव, माताक स्पर्श-चेष्टा उद्दीपन-विभाव, आ 'नुनू मोटाय जाय', 'बढ़ौं लप-लप' सन पद अनुभाव-रूपें वात्सल्यक परिपाक करैत अछि। लेखक (चाहे शास्त्रीय पारिभाषिकता बिना) एहि रस-व्यवस्था कैं प्रसंगानुसार सजाकए अनजानहिं रस-सिद्धान्तक व्यावहारिक प्रयोग करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —रस के नजर सें: बाल-साहित्य के मुखिया रस वात्सल्य छै। तेल-मालिश आरो खाना-पीना के गीत में सिसु आलम्बन-विभाव, माय के छू-छू-चेष्टा उद्दीपन-विभाव, आरो 'नुनू मोटाय जाय', 'बढ़ौं लप-लप' जइसन पद अनुभाव के रूप में वात्सल्य के पकाबै छै। लेखक (चाहे शास्त्रीय पारिभाषिकता बिना) एहि रस-व्यवस्था के परसंग के हिसाब सें सजा कें अनजानहिं रस-सिद्धान्त के व्यवहार करी दै छै।

मैथिली —ध्वनि-विचार: लेखकक ई कथन जे 'संदेश व्यंजनामे उभरैत अछि, अभिधामे नहि'—ई आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक ठेठ अंगिका-रूपान्तर थिक। तुक्तक-काव्यक निरर्थक-प्रतीत शब्द वस्तुतः शब्द-शक्तिमूलक ध्वनि—अर्थक अपेक्षा नाद-सौन्दर्यक व्यंजना। बुझौवलमे अर्थ-ध्वनि (उत्तर व्यंग्य रूपमे स्फुरित होइत अछि), आ 'सोन चिरैया' क वर्षा-आनयनकारी सोन-पक्षीमे वस्तु-ध्वनि (सूखल जीवनमे आशा आ नवजीवनक व्यंजना) प्रकट होइत अछि।

ठेठी-अंगिका —ध्वनि के नजर सें: लेखक के ई बात कि 'संदेस व्यंजना में उभरै छै, अभिधा में नै'—ई आनन्दवर्धन के ध्वनि-सिद्धान्त के ठेठ अंगिका-रूपान्तर छै। तुक्तक-काव्य के बेमतलब जइसन लागै वाला सबद असल में सबद-सक्ति वाला ध्वनि छै—अरथ सें बेसी नाद के सुन्नरता के व्यंजना। बुझौवल में अर्थ-ध्वनि (जबाब व्यंग्य के रूप में फुरै छै), आरो 'सोन चिरैया' के बरखा-लानै वाला सोन-पंछी में वस्तु-ध्वनि (सुखलों जिनगी में आस आरो नया-जीवन के व्यंजना) उभरै छै।

मैथिली —वक्रोक्ति-विचार: बुझौवल कुन्तकक वक्रोक्तिक शुद्धतम रूप थिक। 'फरैं नै फूलै' सन निषेध-मुखी पहेली पद-वक्रता (शब्द-स्तरीय वैचित्र्य) थिक; 'एक सङ दू साथी' वाक्य-वक्रता; आ हड़ियाक स्वगत-कथन प्रकरण-प्रबन्ध-वक्रता, जतय समस्त कथन-भंगिमा वक्र भ' आत्म-कथा बनि जाइत अछि। एतय भारतीय वक्रोक्ति स्वयंसिद्ध रूपें अंगिका लोक-प्रतिभामे मूर्त अछि।

ठेठी-अंगिका —वक्रोक्ति के नजर सें: बुझौवल कुन्तक के वक्रोक्ति के सबसें सुथरा रूप छै। 'फरैं नै फूलै' जइसन निषेध-मुँहका पहेली पद-वक्रता (सबद-स्तर के वैचित्र्य) छै; 'एकसङ दू साथी' वाक्य-वक्रता; आरो हड़िया के स्वगत-कथन प्रकरण-प्रबन्ध-वक्रता, जहाँ पूरा कहै के भंगिमा वक्र होय कें आत्म-कथा बनी जाय छै। एहिजा भारतीय वक्रोक्ति अपने-आप अंगिका लोक-परतिभा में मूरत छै।

मैथिली —वक्रोक्ति-विस्तार: कुन्तकक 'वक्रोक्तिजीवित' मे छह प्रकारक वक्रता (वक्रता-वैचित्र्य) मानल गेल अछि, आ ओ छहो एहि लोक-सामग्रीमे स्तर-स्तर पर साक्षात् भेटैत अछि। (१) वर्ण-विन्यास-वक्रता—वर्ण-योजनाक चारुता, जे 'चप-चप', 'लप-लप', 'टूमुक ठुमुक' सन अनुप्रास-मय नाद-सौन्दर्यमे प्रकट; इएह तुक्तक-काव्यक प्राण थिक। (२) पद-पूर्वार्ध-वक्रता—पदक मूल (प्रातिपदिक) क

चयनमे वैचित्र्य, जे 'नूनु', 'बुतरू', 'गट्टा' सन देशज-वात्सल्यमय रूढ़ि-शब्दक चयनमे आ वात्सल्य-द्योतक लघुता-प्रत्ययमे। (३) पद-पराद्ध अर्थात् प्रत्यय-वक्रता—विभक्ति, काल, पुरुष, संख्या आदिक चारुता, जे हड़िया-बुझौवलमे प्रत्यक्ष: 'छेलाँ...पहनला...सहबौ' मे काल-वक्रता आ प्रथम-पुरुष प्रयोगमे पुरुष-वक्रता। (४) वाक्य-वक्रता—समग्र वाक्यक भंगिमा, जे 'फरैं नै फूलै, ढकमोरै गाछ' सन विरोधाभास-वाक्यमे उत्तर कैं व्यंग्य-रूपें सुझबैत अछि। (५) प्रकरण-वक्रता—प्रसंग-रचनाक वक्रता, जे हड़ियाक स्वगत-कथन सन लघु-नाट्य-प्रसंगमे आ जीव-जन्तुक संवाद-गीतमे। (६) प्रबन्ध-वक्रता—समस्त कृतिक संरचनात्मक वक्रता, जे 'सोन चिरैया' सन गीतक ध्रुव-आवर्तनक स्थापत्यमे। एहि षड्विध विश्लेषणसँ स्पष्ट अछि जे अंगिका लोक-बाल-काव्य कुन्तकक वक्रोक्तिक जीवन्त, परत-दर-परत मूर्त उदाहरण थिक।

ठेठी-अंगिका —वक्रोक्ति-विस्तार: कुन्तक के 'वक्रोक्तिजीवित' में छह किसिम के वक्रता (वक्रता-वैचित्र्य) मानलों छै, आरो ऊ छहो एहि लोक-सामग्री में परत-दर-परत साक्षात् मिलै छै। (१) वर्ण-विन्यास-वक्रता—वर्ण-जोड़ के चारुता, जे 'चप-चप', 'लप-लप', 'टूमुक ठुमुक' जइसन अनुप्रास वाला नाद-सुन्नरता में दिखै छै; इहे तुक्तक-काव्य के परान छै। (२) पद-पूर्वार्ध-वक्रता—पद के मूल (प्रातिपदिक) के चुनाव के वैचित्र्य, जे 'नूनु', 'बुतरू', 'गट्टा' जइसन देसज-वात्सल्य वाला रूढ़ि-सबद के चुनाव में आरो लाड़ वाला छोटकाइ-परत्यय में। (३) पद-पराद्ध यानी प्रत्यय-वक्रता—विभक्ति, काल, पुरुष, संख्या आदि के चारुता, जे हड़िया-बुझौवल में सोझे: 'छेलाँ...पहनला...सहबौ' में काल-वक्रता आरो पहिलों-पुरुष के परयोग में पुरुष-वक्रता। (४) वाक्य-वक्रता—पूरा वाक्य के भंगिमा, जे 'फरैं नै फूलै, ढकमोरै गाछ' जइसन विरोधाभास-वाक्य में जबाब के व्यंग्य के रूप में सुझाबै छै। (५) प्रकरण-वक्रता—परसंग-रचना के वक्रता, जे हड़िया के स्वगत-कथन जइसन नान्हकी-नाट्य-परसंग में आरो जीव-जन्तु के संवाद-गीत में। (६) प्रबन्ध-वक्रता—पूरा कृति के बनावट के वक्रता, जे 'सोन चिरैया' जइसन गीत के ध्रुव-लौटान के स्थापत्य में। एहि छह-किसिम विश्लेषण सें साफ छै कि अंगिका लोक-बाल-काव्य कुन्तक के वक्रोक्ति के जिन्दा, परत-दर-परत मूरत उदाहरण छै।

दोसर आयाम: पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

ठेठी-अंगिका: दोसरका आयाम: पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

मैथिली —अनुवाद-सिद्धान्त: अमरेन्द्रक बाल-रक्षक रूपान्तर स्कोपोस-सिद्धान्त (फेर्मेयर) क उदाहरण थिक—अनुवादक'प्रयोजन' (बाल-उपयुक्तता) लक्ष्यपाठ कैं निर्धारित करैत अछि, स्रोत-समतुल्यता नहि। ई लक्ष्य-संस्कृति-अभिमुख (टूरी) आ 'देशीकरण' (डोमेस्टिकेशन—वेनुती) अनुवाद थिक; जखन कि कथाक बीच संस्कृत श्लोक राखब 'विदेशीकरण' क अवशेष, जे प्रवाह तोड़ैत अछि —लेखक इएह विदेशीकरण-दोष कैं लक्षित करैत छथि।

ठेठी-अंगिका —अनुवाद-सिद्धान्त के नजर सें: अमरेन्द्र के बाल-रक्षक रूपान्तर स्कोपोस-सिद्धान्त (फेर्मेयर) के उदाहरण छै—अनुवाद के 'परयोजन' (बाल-उपयुक्तता) लक्ष्य-पाठ के तय करै छै, स्रोत के बरोबरी नै। ई लक्ष्य-संस्कृति-मुँहका (टूरी) आरो 'देसीकरण' (वेनुती) वाला अनुवाद छै; जबकि कथा के बीच संस्कृत श्लोक राखब 'विदेसीकरण' के बचलों-खुचलों अंस छै, जे बहाव के तोड़ी दै छै —लेखक इहे विदेसीकरण-दोष के पकड़ी लै छै।

मैथिली —पाठक-प्रतिक्रिया: बाल-साहित्य 'अन्तर्निहित पाठक' (इज़र) क सिद्धान्तक जीवन्त क्षेत्र थिक—एतय अन्तर्निहित पाठक शिशु थिक, आ अनुवादक ओही अन्तर्निहित बालक कैं ध्यानमे राखि क्रूर-दृश्य बदलैत अछि। रूपवाद-दृष्टिएँ बुझौवल श्क्लोव्स्कीक 'विच्छित्ति' (defamiliarization) क उदाहरण थिक—पान, चक्की आ हाँड़ी सन परिचित वस्तु कैं अपरिचित बनाकए पुनः-दर्शन करबैत अछि। ई पाश्चात्य विच्छित्ति आ भारतीय वक्रोक्तिक अद्भुत संगम-बिन्दु थिक। लोकसाहित्य-दृष्टिएँ लोरीक पुनरावृत्त पद ('नूनु... नूनु...') पैरी-लॉर्डक मौखिक-सूत्रात्मक (oral-formulaic) रचना-विधिक साक्ष्य थिक।

ठेठी-अंगिका —पाठक-परतिक्रिया के नजर सें: बाल-साहित्य 'अन्तर्निहित पाठक' (इज़र) के सिद्धान्त के जीता-जागता खेत छै—एहिजा अन्तर्निहित पाठक सिसु छै, आरो अनुवाद ओकरे ध्यान में राखी कें करूर-दृश्य बदली दै छै। रूपवाद के नजर सें बुझौवल श्क्लोव्स्की के 'विच्छित्ति' (defamiliarization) के उदाहरण छै—पान, चक्की, हाँड़ी जइसन जानल-चिन्हल चीज के अनजान बना कें फेर सें देखाबै छै। ई पाश्चात्य विच्छित्ति आरो भारतीय वक्रोक्ति के अजगुत संगम-बिन्दु छै। लोकसाहित्य के नजर सें लोरी के दोहराइलों पद ('नूनु... नूनु...') पैरी-लॉर्ड के मौखिक-सूत्रात्मक रचना-विधि के सबूत छै।

तेसर आयाम: नव्य-न्यायमूलक ज्ञानमीमांसा

ठेठी-अंगिका: तेसरका आयाम: नव्य-न्याय वाला ज्ञानमीमांसा

मैथिली —बुझौवल एकटा प्रमाण-क्रीड़ा थिक: उत्तर प्रमेय थिक, जे सादृश्यक ओहार-तर नुकाएल; ओकर बोध उपमानसँ प्रेरित अनुमिति थिक, जकर मूल व्याप्ति-ग्रहण अछि। बालक 'गाछ कैँ लपेटैत, फल-फूल-रहित' लक्षण देखि, ओहि लक्षणसँ 'पान' प्रमेयक अनुमिति करैत अछि। 'फरैं नै फूलै' सन निषेध-मुखी पहेली व्यतिरेकी अनुमानक अभ्यास थिक—जे-जे नहि, ताहि कैँ हटाकए शेषसँ निर्णय; ई अभावक ज्ञान (अनुपलब्धि-प्रमाण) क बाल-पाठ थिक।

ठेठी-अंगिका —बुझौवल एगो परमाण-खेल छै: जबाब परमेय छै, जे सादृश्य के ओहार-तर छिपलों; ओकर बोधउपमान सें उपजलों अनुमिति छै, जेकर जड़ में व्याप्ति-ग्रहण छै। बुतरू 'गाछ के लपेटै वाला, फल-फूल-हीन' लच्छन देखी कें, वहै लच्छन सें 'पान' परमेय के अनुमान करी लै छै। 'फरैं नै फूलै' जइसन निषेध-मुँहका पहेली व्यतिरेकी अनुमान के अभ्यास छै—जे-जे नै, ओकरा हटा कें बाँकी सें फैसला; ई अभाव के ज्ञान (अनुपलब्धि) के बाल-पाठ छै।

मैथिली —बुझौवल आ लोरी शब्दक अभिधा-लक्षणा-व्यञ्जना—तीनू वृत्तिक क्रीड़ास्थल थिक; लेखकक 'अभिधा बनाम व्यंजना' क भेद प्रकारान्तरे शब्द-शक्ति-मीमांसा थिक। एतबहि नहि, बुझौवल जानि-बूझि विपर्यय (भ्रम) उत्पन्न करैत अछि, जकर निवृत्तिमे प्रमा (यथार्थ ज्ञान) उपजैत अछि—एहि अर्थें बुझौवल ख्याति-विवाद (भ्रमक स्वरूप) क लघु प्रयोगशाला थिक। अनुवादक दिशिमे देखी तँ भावानुवाद पदार्थ (शब्द-अर्थ) कैँ नहि, तात्पर्य (वक्तृ-अभिप्रेत) कैँ संरक्षित करैत अछि—ई मीमांसक-नैयायिक तात्पर्य-वृत्तिक अनुप्रयोग थिक; अमरेन्द्रक अनुवाद-निर्णय एही सिद्धान्त पर टिकल अछि।

ठेठी-अंगिका —बुझौवल आरो लोरी सबद के अभिधा-लक्षणा-व्यञ्जना—तीनू वृत्ति के खेल-मैदान छै; लेखक के 'अभिधा बनाम व्यंजना' के फरक असल में सबद-सक्ति-मीमांसा छै। एतने नै, बुझौवल जानी-बूझी कें विपर्यय (भ्रम) पैदा करै छै, जेकर निवृत्ति में प्रमा (सच्चा ज्ञान) उपजै छै—एहि अरथ में बुझौवल ख्याति-विवाद (भ्रम के सरूप) के नान्हकी परयोगशाला छै। अनुवादक के दिसाय देखी तें भावानुवाद पदार्थ (सबद-अरथ) के नै, तात्पर्य (कहै वाला के मनसा) के बचाबै छै—ई मीमांसक-नैयायिक तात्पर्य-वृत्ति केपरयोग छै; अमरेन्द्र के अनुवाद-फैसला इहे सिद्धान्त पर टिकलों छै।

मैथिली —एहि बुझौवल-अनुमितिक शास्त्रीय आधार गङ्गेश उपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' क व्याप्तिवादमे भेटैत अछि। ओतय व्याप्तिक पाँच पूर्वपक्षी लक्षण—'व्याप्ति-पञ्चक' अर्थात् पञ्चलक्षणी—क परीक्षा आ खण्डनक बाद गङ्गेश अपन सिद्धान्त-लक्षण 'साध्याभाववदवृत्तित्व' (जे साध्यक अभावयुक्त अधिकरणमे नहि रहैत, से) प्रस्तुत करैत छथि। बुझौवल-समाधानमे बालक अनजानहिं इएह व्याप्ति-ग्रहण करैत अछि—'गाछ कैँ लपेटैत, फल-फूल-रहित' लक्षण जतय-जतय, ओतय-ओतय 'पान'—एहि नियत-साहचर्य (अविनाभाव) कैँ पकड़िकए ओ हेतुसँ साध्यक अनुमिति करैत अछि। एहि अर्थें प्रत्येक बुझौवल ओहि शास्त्रीय प्रश्नक —'व्याप्ति की थिक'—एकटा लघु, लोकोन्मुख अभ्यास थिक।

ठेठी-अंगिका —ई बुझौवल-अनुमिति के शास्त्रीय आधार गङ्गेश उपाध्याय के 'तत्त्वचिन्तामणि' के व्याप्तिवाद में मिलै छै। ओहिजा व्याप्ति के पाँच पूर्वपक्षी लच्छन—'व्याप्ति-पञ्चक' यानी पञ्चलक्षणी—के परीक्षा आरो खण्डन के बाद गङ्गेश अपन सिद्धान्त-लच्छन 'साध्याभाववदवृत्तित्व' (जे साध्य के अभाव वाला अधिकरण में नै रहै, से) दै छै। बुझौवल के हल में बुतरू अनजानहिं इहे व्याप्ति-ग्रहण करै छै—'गाछ के लपेटै वाला, फल-फूल-हीन' लच्छन जहाँ-जहाँ, ओहिजा-ओहिजा 'पान'—ई नियत-साहचर्य (अविनाभाव) के पकड़ी कें ऊ हेतु सें साध्य के अनुमान करी लै छै। एहि अरथ में हरेकबुझौवल ओहि शास्त्रीय सवाल—'व्याप्ति की छै'—के एगो नान्हकी, लोक-मुँहका अभ्यास छै।

मैथिली —एहि व्याप्ति-पञ्चक (सिंहव्याघ्र-लक्षण) क पाँचू लक्षणक नामवार परीक्षा बुझौवल पर सोझे लागैत अछि, कारण उत्तम बुझौवल ठीक ओही दोष-सभसँ बचैत अछि, जाहिसँ उत्तम व्याप्ति-लक्षण बचैत अछि—

ठेठी-अंगिका —ई व्याप्ति-पञ्चक (सिंहव्याघ्र-लच्छन) के पाँचू लच्छन के नामवार परीक्षा बुझौवल पर सीधे लागै छै, कैलेकि बढ़िया बुझौवल ठीक ओहि दोष सें बचै छै, जेकरा सें बढ़िया व्याप्ति-लच्छन बचै छै—

मैथिली —(१) व्यभिचाराभाव-लक्षण: व्याप्ति = हेतुक व्यभिचाराभाव। दोष—अन्योन्याश्रय/आत्माश्रय, कारण 'व्यभिचार' स्वयं 'व्याप्त्यभाव' सँ परिभाषित होइत अछि। (जे बुझौवल उत्तर-ज्ञान कैँ पहिनहिं मानिकए चलैत अछि, से चक्रक-दोषग्रस्त।) (२) साध्याभाववदवृत्तित्व-लक्षण (सरल रूप): हेतुक साध्याभावाधिकरणमे अवृत्ति। दोष—अप्रसिद्धि, कारण केवलान्वयी साध्य (यथा ज्ञेयत्व, वाच्यत्व) मे साध्याभाव कतहु अप्रसिद्ध। (जकर अभाव-पक्ष नहि, तकर बुझौवल बालक कैँ विरोध-वर्ग नहि दैत, तैँ अनुत्तरणीय।) (३) सामानाधिकरण्य-लक्षण: हेतु-साध्यक एके अधिकरणमे सह-अवस्थान। दोष—अतिव्याप्ति, कारण मात्र सह-

अवस्थान व्यभिचारी हेतुमे सेहो सम्भव। (जे बुझौवल केवल एकटा साझा-धर्म दैत अछि—‘हरियर आ बढ़ैत’—से अनेक उत्तरमे लागि जाइत, तेँ द्व्यर्थक।) (४) साध्यवद्-अन्य-अवृत्तित्व-लक्षण: साध्यवान्सँ भिन्न सभमे हेतुक अवृत्ति। दोष—अन्योन्याभाव-जटिलता आ भागासिद्धि। (उत्तम बुझौवल इएह करैत अछि—सभ अन्य-उत्तर कैँ बहिष्कृत क’ एके दिशि सङ्केत: ‘फल नहि, फूल नहि, गाछ कैँ लपेटैत’ सभ आन गाछ कैँ हटा ‘पान’ धरि पहुँचबैत अछि।) (५) सिद्धान्त-लक्षण (परिष्कृत): ‘प्रतियोगि-असमानाधिकरण-यत्-समानाधिकरण-अत्यन्ताभाव-अप्रतियोगि-साध्य-सामानाधिकरण्यम्’, संक्षेपमे परिष्कृत साध्याभाववदवृत्तित्व, जे सभ दोष-निवृत्त। (पूर्ण-निर्धारक बुझौवल—यथा हड़ियाक आत्म-कथन, जे लक्षण-समूहसँ अन्य सभ उत्तर कैँ अत्यन्त-अभाव-रूपें हटा एके उत्तर छोड़ैत अछि—एही सिद्धान्त-लक्षणक काव्य-प्रतिरूप थिक।)

ठेठी-अंगिका —(१) व्यभिचाराभाव-लच्छन: व्याप्ति = हेतु के व्यभिचाराभाव। दोष—अन्योन्याश्रय/आत्माश्रय, कैलेकि ‘व्यभिचार’ अपने ‘व्याप्त्यभाव’ सें परिभाषित होय छै। (जे बुझौवल जबाब के पहिनहिं मानी कें चलै छै, से चक्रक-दोष वाला।) (२) साध्याभाववदवृत्तित्व-लच्छन (सरल रूप): हेतु के साध्याभाव-अधिकरण में अवृत्ति। दोष—अप्रसिद्धि, कैलेकि केवलान्वयी साध्य (जइसन ज्ञेयत्व, वाच्यत्व) में साध्याभाव कहीं अप्रसिद्ध। (जेकर अभाव-पक्ष नै, ओकर बुझौवल बुतरू के विरोध-वर्ग नै दै, तें अनुत्तरणीय।) (३) सामानाधिकरण्य-लच्छन: हेतु-साध्य के एके अधिकरण में सह-अवस्थान। दोष—अतिव्याप्ति, कैलेकि खाली सह-अवस्थान व्यभिचारी हेतु में भी सम्भव। (जे बुझौवल खाली एगो साझा-धरम दै छै—‘हरियर आरो बढ़ै वाला’—से कई जबाब में लागी जाय छै, तें द्व्यर्थक।) (४) साध्यवद्-अन्य-अवृत्तित्व-लच्छन: साध्यवान् सें भिन्न सब में हेतु के अवृत्ति। दोष—अन्योन्याभाव-जटिलता आरो भागासिद्धि। (बढ़िया बुझौवल इहे करै छै—सब दोसरका जबाब के हटा कें एके ओर संकेत: ‘फल नै, फूल नै, गाछ के लपेटै वाला’ सब आन गाछ के हटा कें ‘पान’ तक पहुँचाबै छै।) (५) सिद्धान्त-लच्छन (परिष्कृत): ‘प्रतियोगि-असमानाधिकरण-यत्-समानाधिकरण-अत्यन्ताभाव-अप्रतियोगि-साध्य-सामानाधिकरण्यम्’, संच्छेप में परिष्कृत साध्याभाववदवृत्तित्व, जे सब दोष सें मुक्त। (पूरा-निर्धारक बुझौवल—जइसन हड़िया के आत्म-कथन, जे लच्छन-समूह सें दोसरका सब जबाब के अत्यन्त-अभाव के रूप में हटा कें एके जबाब छोड़ै छै—इहे सिद्धान्त-लच्छन के काव्य-रूप छै।)

मैथिली —एहि तुलनासँ एकटा नियम उभरैत अछि: जेना अतिव्याप्ति आ अव्याप्ति व्याप्ति-लक्षण कैँ दूषित करैत अछि, तहिना द्व्यर्थकता (अतिव्याप्ति) आ अनुत्तरणीयता (अव्याप्ति) बुझौवल कैँ दूषित करैत अछि। उत्तम बुझौवल एकटा निर्दोष व्याप्ति-लक्षण जकाँ ‘असंदिग्ध-एकोत्तर’ होइत अछि—इएह अंगिका बुझौवल-परम्पराक अलिखित तर्कशास्त्र थिक।

ठेठी-अंगिका —एहि तुलना सें एगो नियम उभरै छै: जइसन अतिव्याप्ति आरो अव्याप्ति व्याप्ति-लच्छन के दूषित करै छै, ओइसने द्व्यर्थकता (अतिव्याप्ति) आरो अनुत्तरणीयता (अव्याप्ति) बुझौवल के दूषित करै छै। बढ़िया बुझौवल एगो निर्दोष व्याप्ति-लच्छन जइसन ‘असंदिग्ध-एके-जबाब वाला’ होय छै—इहे अंगिका बुझौवल-परम्परा के बिन-लिखलों तर्कशास्त्र छै।

मैथिली —अनुवाद-प्रसंगमे तात्पर्य-वृत्तिक सिद्धान्त प्रासंगिक थिक। शाब्दबोधक चारि हेतु—आकाङ्क्षा, योग्यता, सन्निधि (आसत्ति) आ तात्पर्य—मे तात्पर्य (वक्तृ-विवक्षा) अर्थ-निर्णायक होइत अछि; जतय मुख्यार्थमे बाध होइत अछि आ तात्पर्य असंगत भ’ जाइत अछि, ओतय लक्षणा प्रवृत्त होइत अछि। भावानुवाद इएह करैत अछि—ओ पदार्थ (पद-वाच्य अर्थ) कैँ छोड़ि तात्पर्य (अभिप्रेत भाव) कैँ लक्ष्य-भाषामे उतारैत अछि। अमरेन्द्रक बाल-रक्षक रूपान्तर एही तात्पर्य-प्राधान्यक व्यावहारिक रूप थिक—शब्दक दास नहि, तात्पर्यक सेवक।

ठेठी-अंगिका —अनुवाद के परसंग में तात्पर्य-वृत्ति के सिद्धान्त कामें के छै। शाब्दबोध के चार हेतु—आकाङ्क्षा, योग्यता, सन्निधि (आसत्ति) आरो तात्पर्य—में तात्पर्य (कहै वाला के विवक्षा) अरथ के तय करै छै; जहाँ मुख्यार्थ में बाध होय छै आरो तात्पर्य बेमेल होय जाय छै, ओहिजा लक्षणा चलै छै। भावानुवाद इहे करै छै—ऊ पदार्थ (पद के वाच्य अरथ) के छोड़ी कें तात्पर्य (मन के भाव) के लक्ष्य-भाषा में उतारै छै। अमरेन्द्र के बाल-रक्षक रूपान्तर इहे तात्पर्य-परधानता के व्यवहार-रूप छै—सबद के गुलाम नै, तात्पर्य के सेवक।

चतुर्थ आयाम: विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप

ठेठी-अंगिका: चौथका आयाम: विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप

मैथिली —प्रति-कैनन पाठ: अंगिका बाल-साहित्य—लोक, स्त्री, दलित आ ग्रामीण स्वरक भण्डार—साहित्य-अकादमीक हिन्दी-केन्द्रित संस्थागत इतिहासमे प्रायः अनुपस्थित। एहि सामग्रीकप्रलेखन स्वयं एकटा समान्तर-ऐतिहासिक पुनरुद्धार थिक। स्त्री-कर्तृत्वक उद्घाटन एहि दृष्टिक मर्म थिक: लोरी-सभ मूलतः माताक रचना थिक—एकटा नुकाएल स्त्री-साहित्य-परम्परा। आत्मकथनमे

लेखक अपन पुत्री वसुंधराक संकलन-श्रम कैं स्वीकारैत छथि; समान्तर-इतिहास एही मातृ-कर्तृत्व आ स्त्री-श्रम कैं अग्रभूमिमे आनैत अछि, जे ‘लोक’ नामक अनामी कोठलीमे विलीन भ’ गेल छल।

ठेठी-अंगिका —प्रति-कैनन पाठ: अंगिका बाल-साहित्य—लोक, स्त्री, दलित आरो गँवई सुर के भण्डार—साहित्य-अकादमी के हिन्दी-केन्द्रित संस्थागत इतिहास में अकसर गायब छै। एहि सामग्री के प्रलेखन अपने-आप में एगो समान्तर-ऐतिहासिक पुनरुद्धार छै। स्त्री-कर्तृत्व के उघारब एहि नजर के मरम छै: लोरी सिनी मूल रूप सें माय के रचना छै—एगो छिपलों स्त्री-साहित्य-परम्परा। आत्मकथन में लेखक अपन बेटी वसुंधरा के संकलन-मेहनत के मानी लै छै; समान्तर-इतिहास वहै माय-कर्तृत्व आरो स्त्री-मेहनत के आगू आनी दै छै, जे ‘लोक’ नाम के बेनाम कोठली में बिलाय गेलों छेलै।

मैथिली —औपनिवेशिक प्रलेखनक पुनर्ग्रहण: ईसाई पादरी आ ग्रियर्सनक अनुवाद औपनिवेशिक भाषा-प्रलेखन थिक; पोथी ओकरा भाषाविदक शीशीसँ निकालि जीवन्त बाल-साहित्यमे बदलि दैत अछि—ई पुनर्ग्रहण समान्तर-इतिहासक केन्द्रीय कर्म थिक। मुदा एहि प्रारूपक सभसँ तीक्ष्ण फल स्वयं एहि पोथी पर घूरैत अछि: जे पोथी प्रति-कैनन रचैत अछि, से हिन्दीमे लिखल अछि, मुख्यधारा-प्रकाशनसँ आबैत अछि, आ ओकर ‘सन्दर्भ’ प्रायः लेखकक अपनकृति-सभ थिक। तखन प्रश्न ई जे एहि सर्वेक्षणमे के-के छुटल? अनामी लोक-गायिका, मंच-कलाकार, आ ओ माता, जनिक लोरी ‘लोक’ कहि अनाम राखल गेल। समान्तर-इतिहास प्रति-कैननकेँ सेहो प्रति-प्रश्न करैत अछि—इएह ओकर इमानदारी थिक।

ठेठी-अंगिका —औपनिवेशिक प्रलेखन के फेर-हासिल करब: ईसाई पादरी आरो ग्रियर्सन के अनुवाद औपनिवेशिक भाषा-प्रलेखन छै; पोथी ओकरा भाषाविद के सीसी सें निकाली कें जीता-जागता बाल-साहित्य में बदली दै छै—ई फेर-हासिल समान्तर-इतिहास के केन्द्रीय काम छै। मतरकि एहि प्रारूप के सबसें तेज फल अपने एहि पोथी पर घूमी जाय छै: जे पोथी प्रति-कैनन बनाबै छै, से हिन्दी में लिखलों छै, मुख्यधारा-परकाशन सें आबै छै, आरो ओकर ‘संदर्भ’ अकसर लेखक के अपने कृति सिनी छै। तें सवाल ई कि एहि सर्वेक्षण में के-के छुटी गेलै? बेनाम लोक-गायिका, मंच-कलाकार, आरो ऊ माय, जेकर लोरी ‘लोक’ कही कें बेनाम राखी देलों गेलै। समान्तर-इतिहास प्रति-कैनन के भी प्रति-सवाल करै छै—इहे ओकर इमानदारी छै।

आधुनिक बाल-कविता: चतुर्आयामी पुनःपाठ

ठेठी-अंगिका: आधुनिक बाल-कविता: चतुर्आयामी पुनःपाठ

रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

ठेठी-अंगिका: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

मैथिली —विषय-वैविध्यसँ रस-वैविध्य उपजैत अछि—प्रकृति-काव्यमे अद्भुत आ शान्त, हास्य-गीतमे हास्य, राष्ट्रीय-गीतमे वीर आ मातृभूमि-वात्सल्य। मुदा अधिष्ठातृ रस एखनहुँ वात्सल्ये रहैत अछि, कारण सभ रस बाल-आस्वादक हेतु मृदूकृत भ’ अबैत अछि। ध्वनि-दृष्टिएँ ‘गतिशील प्रकृति’ स्वयं ध्वनि-प्रधान थिक: चलैत बिम्ब (स्थिर चाँद-तारा नहि, अपितु उछलैत कौआ आ बहैत नदी) बाल-मन कैं गति-चित्रक व्यंजना दैत अछि—लेखकक ई सूक्ष्म निरीक्षण जे बालक स्थिर चाँदसँ बेसी उछलैत कौआसँ बन्हाइत अछि, वस्तुतः ध्वनि-सिद्धान्तक बाल-मनोवैज्ञानिक रूपान्तर थिक। वक्रोक्ति-दृष्टिएँ एतय एकटा कसौटी उघरैत अछि: राष्ट्रीय आ उपदेश-गीतमे अभिधा (सीधा संदेश) बढ़ैत अछि आ वक्रता घटैत अछि, जखन कि हास्य-व्यंग्य आ गतिशील-प्रकृति-काव्यमे वक्रता आ वैचित्र्य सुरक्षित रहैत अछि।

ठेठी-अंगिका —विषय के भाँति-भाँति सें रस के भी भाँति-भाँति उपजै छै—परकृति-काव्य में अद्भुत आरो शान्त, हास्य-गीत में हास्य, राष्ट्रीय-गीत में वीर आरो मातृभूमि-वात्सल्य। मतरकि मुखिया रस अखनी वात्सल्ये रहै छै, कैलेकि सब रस बाल-आस्वाद लेली नरम बनी कें आबै छै। ध्वनि के नजर सें ‘गतिशील परकृति’ अपने ध्वनि-परधान छै: चलै वाला बिम्ब (थिर चाँद-तारा नै, बल्कि उछलै वाला कौआ आरो बहै वाला नदी) बाल-मन के गति-चित्र के व्यंजना दै छै—लेखक के ई बारीक निरीक्षण कि बुतरू थिर चाँद सें बेसी उछलै वाला कौआ सें बन्हाय छै, असल में ध्वनि-सिद्धान्त के बाल-मनोवैज्ञानिक रूपान्तर छै। वक्रोक्ति के नजर सें एहिजा एगो कसौटी उभरै छै: राष्ट्रीय आरो उपदेश-गीत में अभिधा (सीधा संदेस) बढ़ै छै आरो वक्रता घटै छै, जबकि हास्य-व्यंग्य आरो गतिशील-परकृति-काव्य में वक्रता आरो वैचित्र्य बचलों रहै छै।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

ठेठी-अंगिका: पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त

मैथिली —गतिशील-प्रकृति-काव्य बाल-अनुभववाद (पियाजे-सम्मत) कैँ प्रतिध्वनित करैत अछि—बालक इन्द्रिय-गति-क्रियासँ जगत् बुझैत अछि, तैँ 'स्थिरता' सँ 'गति' क प्राथमिकता बाल-विकास-मनोविज्ञानसँ मेल खाइत अछि। राष्ट्रीय आ शिक्षा-गीतमे 'उपदेशात्मकता' (didacticism) प्रबल होइत अछि—एतय बाल-साहित्यक ओ शाश्वत तनाव प्रकट होइत अछि जे 'शिक्षा' आ 'आनन्द' क बीच अछि (रूसो-मूलक उपदेशवाद बनाम आनन्दवादी परम्परा); लेखक अनकहने आनन्दक पक्षमे झुकैत छथि। हास्य-व्यंग्य-गीत (मामा-मामीक विपरीत-चित्र) बख्तिनक 'कार्निवल' आ भूमिका-विपर्ययक लोक-रूप थिक, जतय सामाजिक क्रम उनटि-पुनटि हास्य रचैत अछि। आ आंचलिक-काव्य क्षेत्रीय-भाषिक अस्मिताक साक्ष्य थिक—वैश्विक बनाम स्थानीयक समकालीन बहसक बाल-संस्करण।

ठेठी-अंगिका —गतिशील-परकृति-काव्य बाल-अनुभववाद (पियाजे-सम्मत) के गूँज छै—बुतरू इन्द्रिय-गति-किरिया सें जगत बुझै छै, तें 'थिरता' सें 'गति' के पहिलौती बाल-विकास-मनोविज्ञान सें मेल खाय छै। राष्ट्रीय आरो शिक्षा-गीत में 'उपदेशात्मकता' (didacticism) जोर पकड़ै छै—एहिजा बाल-साहित्य के ऊ पुरनका तनाव उभरै छै जे 'शिक्षा' आरो 'आनन्द' के बीच छै (रूसो-वाला उपदेशवाद बनाम आनन्दवादी परम्परा); लेखक बिन कहनहिं आनन्द के पक्ष में झुकै छै। हास्य-व्यंग्य-गीत (मामा-मामी के उलटा-चित्र) बख्तिन के 'कार्निवल' आरो भूमिका-विपर्यय के लोक-रूप छै, जहाँसमाजी क्रम उलटी-पुलटी कें हास्य बनाबै छै। आरो आंचलिक-काव्य क्षेत्रीय-भाषिक अस्मिता के सबूत छै—वैश्विक बनाम स्थानीय के आजुक बहस के बाल-रूप।

नव्य-न्यायमूलक ज्ञानमीमांसा

ठेठी-अंगिका: नव्य-न्याय वाला ज्ञानमीमांसा

मैथिली —गणित-गीत ('लालच रों फोल' क अक्कड़-बक्कड़ गणना) प्रत्यक्षतः संख्या-प्रत्यक्ष आ गणना-अनुमिति सिखबैत अछि—ई प्रमाण-प्रशिक्षणक बाल-रूप थिक। राष्ट्रीय-गीतमे संदेश अभिधा-वृत्तिएँ सोझे अबैत अछि; एतय शब्द-शक्तिमे अभिधाक प्राधान्य आ व्यंजनाक अल्पता काव्यत्व कैँ क्षीण करैत अछि—इएह लेखकक 'अभिधा-दोष'-चेतनाक अनुरूप। गतिशील-प्रकृति-बिम्ब बालक कैँ 'गतिमान्' धर्मसँ द्रव्यक प्रत्यभिज्ञा करबैत अछि—धर्म-धर्मी-भाव आ क्रिया-आश्रयक बाल-बोध, जे नव्य-न्यायक विशेषण-विशेष्य-विश्लेषणक सहज बीज थिक।

ठेठी-अंगिका —गणित-गीत ('लालच रों फोल' के अक्कड़-बक्कड़ गिनती) सोझे संख्या-प्रत्यक्ष आरो गिनती-अनुमिति सिखाबै छै—ई परमाण-परसिच्छन के बाल-रूप छै। राष्ट्रीय-गीत में संदेस अभिधा-वृत्ति सें सीधे आबै छै; एहिजा सबद-सक्ति में अभिधा के परधानता आरो व्यंजना के कमी काव्यत्व के घटा दै छै—इहे लेखक के 'अभिधा-दोष'-चेतना के हिसाब सें छै। गतिशील-परकृति-बिम्ब बुतरू के 'गतिमान्' धरम सें दरब के पहचान कराबै छै—धरम-धरमी-भाव आरो किरिया-आश्रय के बाल-बोध, जे नव्य-न्याय के विशेषण-विशेष्य-विश्लेषण के सहज बीज छै।

विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप

ठेठी-अंगिका: विदेह समान्तर-इतिहास-प्रारूप

मैथिली —आंचलिक-परिवेश-काव्य अंग-अस्मिताक प्रति-कैनन घोषणा थिक—हिन्दी-राष्ट्रभाषा-वर्चस्वक विरुद्ध क्षेत्रीय भाषिक गौरवक स्वर। मुदा एतहि एकटा दुइ-मुखी विरोधाभास प्रकट होइत अछि: राष्ट्रीयता-गीत (भारत माय, तिरंगा) मुख्यधारा-राष्ट्रवादक अनुकरण करैत अछि, आ एतय अंगिका अपन प्रति-कैनन स्वर छोड़ि केन्द्रक स्वरमे गाबय लगैत अछि। एक दिशि आंचलिक आत्म-पुष्टि, दोसर दिशि राष्ट्रीय आत्म-विलय—समान्तर-इतिहास एही द्वैतकैँ लक्षित करैत अछि। आगाँ, स्कूल-गीत ('इस्कूल चल', हिन्दी-इंग्लिश-स्कूलक कविता) भाषिक-वर्ग-राजनीति उघारैत अछि—अंग्रेजी-स्कूलक आकांक्षा आ मातृभाषाक चिन्ता; ई सबाल्टर्न शिक्षा-द्वन्द्वक एकटा अनमोल बाल-दस्तावेज़ थिक।

ठेठी-अंगिका —आंचलिक-परिवेश-काव्य अंग-अस्मिता के प्रति-कैनन घोषणा छै—हिन्दी-राष्ट्रभाषा-वर्चस्व के खिलाफ क्षेत्रीय भाषिक गौरव के सुर। मतरकि एहिजे एगो दुइ-मुँहका विरोधाभास उभरै छै: राष्ट्रीयता-गीत (भारत माय, तिरंगा) मुख्यधारा-राष्ट्रवाद के नकल करै छै, आरो एहिजा अंगिका अपन प्रति-कैनन सुर छोड़ी कें केन्द्र के सुर में गाबै लागै छै। एक ओर आंचलिक आत्म-पुष्टि, दोसर ओर राष्ट्रीय आत्म-विलय—समान्तर-इतिहास इहे दुहरापन के पकड़ै छै। आगू, स्कूल-गीत ('इस्कूल चल', हिन्दी-इंग्लिश-स्कूल के

कविता) भाषिक-वर्ग-राजनीति के उघारै छै—अंग्रेजी-स्कूल के आस आरो मातृभाषा के चिन्ता; ई सबाल्टर्न शिक्षा-द्वन्द्व के एगो अनमोल बाल-दस्तावेज छै।

समवाय: चारू आयामक संगम

ठेठी-अंगिका: समवाय: चारू आयाम के संगम

मैथिली —चारू दृष्टि एके बिन्दु पर मिलैत अछि। बुझौवलक वक्रोक्ति (भारतीय), विच्छित्ति (पाश्चात्य), भ्रम-निवृत्ति-जन्य प्रमा (नव्य-न्याय) आ लोक-कर्तृत्वक पुनरुद्धार (समान्तर-इतिहास)—चारू एके सत्य कैं चारि भाषामे कहैत अछि: जे परिचित कैं अपरिचित बना, बोधक क्षण कैं आनन्द बना दैत अछि, आ ओहि आनन्दक स्रष्टा ओ अनाम लोक थिक, जकरा इतिहास बिसरि गेल। इएह अंगिका बाल-साहित्यक मर्म थिक, आ इएह एहि पोथीक—आंशिक—उपलब्धि आ—आंशिक—चूक, दुनू। आ आधुनिक बाल-कवितामे इएह संगम एकटा नव विभाजन-रेखा उघारैत अछि: जतय काव्य आंचलिक, गतिशील आ हास्य दिशि जाइत अछि, ओतय वक्रोक्ति, विच्छित्ति, व्यंजना आ प्रति-कैनन—चारू सजीव रहैत अछि; जतय राष्ट्रीय-उपदेश दिशि झुकैत अछि, ओतय चारू क्षीण भ' जाइत अछि। इएह आधुनिक अंगिका बाल-कविताक आन्तरिक कसौटी थिक।

ठेठी-अंगिका —चारू नजर एके बिन्दु पर मिलै छै। बुझौवल के वक्रोक्ति (भारतीय), विच्छित्ति (पाश्चात्य), भ्रम-निवृत्ति सें उपजलों प्रमा (नव्य-न्याय) आरो लोक-कर्तृत्व के पुनरुद्धार (समान्तर-इतिहास)—चारू एके सच्चाई के चार भाषा में कहै छै: जे जानल-चिन्हल के अनजान बना कें, बोध के छन के आनन्द बना दै छै, आरो ओहि आनन्द के रचनहार ऊ बेनाम लोक छै, जेकरा इतिहास बिसरी गेलै। इहे अंगिका बाल-साहित्य के मरम छै, आरो इहे एहि पोथी के—कुछ हद तक—उपलब्धि आरो—कुछ हद तक—चूक, दुन्नु। आरो आधुनिकबाल-कविता में इहे संगम एगो नया बँटवारा-रेखा उघारै छै: जहाँ काव्य आंचलिक, गतिशील आरो हास्य ओर जाय छै, ओहिजा वक्रोक्ति, विच्छित्ति, व्यंजना आरो प्रति-कैनन—चारू जिन्दा रहै छै; जहाँ राष्ट्रीय-उपदेश ओर झुकै छै, ओहिजा चारू मद्धिम होय जाय छै। इहे आधुनिक अंगिका बाल-कविता के भीतरी कसौटी छै।

22. सामाजिक, लैङ्गिक आ पाठकीय प्रश्न: पोथीसँ आगाँक आलोचनात्मक क्षेत्र

ठेठी-अंगिका: 22. सामाजिक, लैङ्गिक आरो पाठकीय प्रश्न: पोथी सें आगाँ के आलोचनात्मक क्षेत्र

मैथिली —ग्रन्थ परिवार, माँ-बालक सम्बन्ध, ग्रामीण समाज, विद्यालय, बालिका-शिक्षा, अन्धविश्वास, प्रशासन, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि विषय छूैत अछि। एहि सामग्रीक आधारपर आधुनिक आलोचना किछु नब प्रश्न पूछि सकैत अछि। बालकक रूप एकरूप नहि—उमेर, लिंग, वर्ग, जाति, ग्रामीण/शहरी परिवेश, विद्यालय पहुँच, परिवारक ढाँचा, दिव्यांगता, भाषिक मिश्रण आदिसँ बाल-अनुभव बदलैत अछि। पोथी एहि सभ आयामकैं व्यवस्थित analytical framework रूपमे नहि अपनबैत, मुदा कतेको सामग्री तकर सम्भावना खोलैत अछि।

ठेठी-अंगिका —ग्रन्थ परिवार, माँ-बालक सम्बन्ध, ग्रामीण समाज, विद्यालय, बालिका-शिक्षा, अन्धविश्वास, प्रशासन, पर्यावरण, स्वास्थ्य आदि विषय छूवै छै। ई सामग्री के आधारपर आधुनिक आलोचना कुछु नब प्रश्न पूछ सकै छै। बालक के रूप एकरूप नै—उमेर, लिंग, वर्ग, जाति, ग्रामीण/शहरी परिवेश, विद्यालय पहुँच, परिवार के ढाँचा, दिव्यांगता, भाषिक मिश्रण आदि सें बाल-अनुभव बदलै छै। पोथी ई सब आयाम कें व्यवस्थित analytical framework रूप में नै अपनावै, मतरकि कईगो सामग्री तकर सम्भावना खोलै छै।

मैथिली —बालिका-शिक्षा नाटकमे सामाजिक प्रश्न बनैत अछि; मातृस्वर लोकबाल-साहित्यक केन्द्र अछि; ग्रामीण परिवेश अनेक गीत-कथा-नाटकक आधार। आगाँक अध्ययन पूछि सकैत अछि—बालिकाक सक्रियता कोना चित्रित अछि? श्रम करयवला बच्चा, गरीब परिवार, अलग सामाजिक समुदाय वा शहरी बालकक प्रतिनिधित्व कतेक? नैतिक आदर्श बालक आ वास्तविक शरारती/जिद्दी बाल-चरित्रक अनुपात की? बालक स्वयं बोलैत अछि कि वयस्क कथावाचक ओकर behalf पर बोलैत अछि?

ठेठी-अंगिका —बालिका-शिक्षा नाटक में सामाजिक प्रश्न बनै छै; मातृस्वर लोकबाल-साहित्य के केन्द्र छै; ग्रामीण परिवेश अनेक गीत-कथा-नाटक के आधार। आगू के शोध पूछ सकै छै—बालिका के सक्रियता केना चित्रित छै? श्रम करै वाला बच्चा, गरीब परिवार, अलग सामाजिक समुदाय वा शहरी बालक के प्रतिनिधित्व कत्तें? नैतिक आदर्श बालक आरो वास्तविक शरारती/जिद्दी बाल-चरित्र के अनुपात की? बालक अपने बोलै छै कि वयस्क कथावाचक ओकर behalf पर बोलै छै?

मैथिली —पाठकीय शोधक अभाव सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। पोथी प्रायः पाठकक सम्भावित प्रतिक्रिया आलोचकक अनुमानसँ बतबैत अछि। आगाँक पाठकीय अध्ययन—विद्यालयमे पाठ-सत्र, समूह-पठन, बालकक प्रतिक्रिया, पसन्द, स्मृति, चित्र-प्रतिक्रिया, audio बनाम print—साहित्यिक आलोचनाकेँ नब प्रमाण देत। पोथीकेँ आधुनिक सिद्धान्तक कसौटीपर कम साबित करब लक्ष्य नहि; ओकर संकलित सामग्रीकेँ नब शोध-प्रश्नक आधार बनब लक्ष्य अछि। एही अर्थमे ई आधार-ग्रन्थ अछि।

ठेठी-अंगिका —पाठकीय शोध के अभाव भी महत्त्वपूर्ण छै। पोथी प्रायः पाठक के सम्भावित प्रतिक्रिया आलोचक के अनुमान सें बतावै छै। आगू के empirical study—विद्यालय में पाठ-सत्र, समूह-पठन, बालक के प्रतिक्रिया, पसन्द, स्मृति, चित्र-प्रतिक्रिया, audio बनाम print—साहित्यिक आलोचना कें नब प्रमाण देत। पोथी कें आधुनिक सिद्धान्त के कसौटीपर कम साबित करब लक्ष्य नै; ओकर संकलित सामग्री कें नब शोध-प्रश्न के आधार बनब लक्ष्य छै। एही अर्थ में ई आधार-ग्रन्थ छै।

23. प्रमुख उपलब्धि: संरक्षण, इतिहास-निर्माण आ विधागत नक्शा

ठेठी-अंगिका: 23. प्रमुख उपलब्धि: संरक्षण, इतिहास-निर्माण आरो विधागत नक्शा

मैथिली —समग्र अध्ययनक बाद पोथीक पहिल पैघ उपलब्धि संरक्षण अछि। लोरी, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा, अनुवाद, बालगीत, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, जीवनी—एहि सभकेँ एकहि आलोचनात्मक छतरीक नीचाँ आनल गेल अछि। छोट पत्रिका, सीमित संस्करण, मौखिक परम्परा आ निजी स्मृतिमे छितरायल सामग्रीक नाम इतिहासमे दर्ज भेल। एहन दस्तावेजीकरण बिना अगिला पीढ़ीक आलोचना अनेक स्रोतसँ वंचित रहि सकैत छल।

ठेठी-अंगिका —समग्र अध्ययन के बाद पोथी के पहिल बड़का उपलब्धि संरक्षण छै। लोरी, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा, अनुवाद, बालगीत, उपन्यास, कहानी, नाटक, निबन्ध, जीवनी—ई सब कें एकहि आलोचनात्मक छतरी के नीचाँ अनलों गेलों छै। छोट पत्रिका, सीमित संस्करण, मौखिक परम्परा आरो निजी स्मृति में छितरायलों सामग्री के नाम इतिहास में दर्ज होलै। एहन दस्तावेजीकरण बिना आगू के पीढ़ी के आलोचना अनेक स्रोत सें वंचित रहि सकै छेलै।

मैथिली —दोसर उपलब्धि इतिहास-निर्माण अछि। लेखक बाल-साहित्यक आरम्भ आधुनिक मुद्रणसँ नहि करैत छथि; लोक-शिशु संस्कृति धरि पाछाँ जाइत छथि। तेसर उपलब्धि बाल-मन केन्द्रित कसौटी अछि। साहित्य बच्चाकेँ शिक्षा देबाक माध्यम मात्र नहि; बच्चाक कल्पना, खेल, तर्क, जिद, लय आ अनुभवक अभिव्यक्ति अछि। चारिम उपलब्धि विधागत नक्शा अछि—पहेली, तुक्तक, खेलगीत, गजल, खण्डकाव्य; उपन्यास, कहानी, अनुवाद; एकांकी, खण्ड-नाटक, रेडियो/गीतिनाट्य; इतिहास-जीवनी।

ठेठी-अंगिका —दोसर उपलब्धि इतिहास-निर्माण छै। लेखक बाल-साहित्य के आरम्भ आधुनिक मुद्रण सें नै करै छै; लोक-शिशु संस्कृति तक पाछाँ जाय छै। तेसर उपलब्धि बाल-मनकेन्द्रित कसौटी छै। साहित्य बच्चा कें शिक्षा दै के माध्यम मात्र नै; बच्चा के कल्पना, खेल, तर्क, जिद, लय आरो अनुभव के अभिव्यक्ति छै। चारिम उपलब्धि विधागत नक्शा छै—पहेली, तुक्तक, खेलगीत, गजल, खण्डकाव्य; उपन्यास, कहानी, अनुवाद; एकांकी, खण्ड-नाटक, रेडियो/गीतिनाट्य; इतिहास-जीवनी।

मैथिली —पाँचम उपलब्धि आत्मालोचना अछि। बाल-कहानीक अपर्याप्त विकास मानब, किछु क्षेत्रक कमी स्वीकार करब आ स्रोतक अभावक संकेत देब इतिहासकारक विश्वसनीयता बढ़बैत अछि। छठम उपलब्धि bibliographic memory अछि। अन्तिम सन्दर्भ-सूची आ पत्रिका-सूची पोथीकेँ institutional memory बनबैत अछि। एहि कारण 'अंगिका बाल-साहित्य' केवल साहित्यिक समीक्षा नहि, शोध-साधन सेहो अछि।

ठेठी-अंगिका —पाँचम उपलब्धि आत्मालोचना छै। बाल-कहानी के अपर्याप्त विकास मानब, कुछु क्षेत्र के कमी स्वीकार करब आरो स्रोत के अभाव के संकेत देब इतिहासकार के विश्वसनीयता बढ़ावै छै। छठम उपलब्धि bibliographic memory छै। अन्तिम सन्दर्भ-सूची आरो पत्रिका-सूची पोथी कें institutional memory बनावै छै। ई कारण 'अंगिका बाल-साहित्य' केवल साहित्यिक समीक्षा नै, शोध-साधन भी छै।

गुण

ठेठी-अंगिका: गुन / खूबी

मैथिली —पोथीक सभसँ पैघ उपलब्धि अछि—एकटा उपेक्षित आ छिड़िआयल परम्पराक व्यवस्थित प्रलेखन। जे सामग्री एतय-ओतय बाँटल छल, तकरा एक ठाम आनि, वर्गीकृत कए, स्रोत-सहित प्रस्तुत करब स्वयं एकटा शोध-कर्म थिक। दोसर बलिष्ठ पक्ष

अछि लेखकक द्वैध भूमिका—ओ अंगिका बाल-गीतक स्वयं प्रमुख रचयिता छथि, तेँ हुनकर विवेचनमे भीतरी अन्तर्दृष्टि अछि जे बाहरी समीक्षकमे विरल होइत अछि। तेसर, बाल-मनोविज्ञान आ व्यंजना-केन्द्रित काव्य-दृष्टि पोथी केँ मात्र सूची-संकलनसँ ऊपर उठा दैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पोथी के सबसें बड़का उपलब्धि छै—एगो उपेक्षित आरो छितराइलों परम्परा के सिलसिलेवार प्रलेखन। जे सामग्री एहिठाम-ओहिठाम बिखरलों छेलै, ओकरा एक ठाम आनी, बाँटी कें, स्रोत के संग परस्तुत करब अपने-आप में एगो सोध-काम छै। दोसरका मजबूत पक्ष छै लेखक के दुहरा भूमिका—ऊ अंगिका बाल-गीत के अपने बड़का रचयिता छै, तें हुनकर विवेचन में भीतरी अन्तर्दृष्टि छै, जे बाहरी समीक्षक में कम्मे मिलै छै। तेसर, बाल-मनोविज्ञान आरो व्यंजना-केन्द्रित काव्य-नजर पोथी के खाली सूची-संग्रह सें ऊपर उठाय दै छै।

समग्र मूल्याङ्कन आ साहित्यिक महत्ता

ठेठी-अंगिका: समग्र मूल्याङ्कन आरो साहित्यिक महत्ता

मैथिली —डॉ. अमरेन्द्रक 'अंगिका बाल-साहित्य' कोनो साधारण पोथी नहि अछि। ई एकटा युगान्तकारी शोध-ग्रन्थ अछि जे अंगिका भाषाकेँ एकटा समृद्ध साहित्यिक भाषाक रूपमे स्थापित करैत अछि। मैथिलीक आलोचकक दृष्टिसँ, जँ हम एहि ग्रन्थकेँ देखैत छी, तँ हमरा ई बोध होइत अछि जे मैथिली आ अंगिका दुनूक बाल-साहित्यक जड़ि एक समान अछि। दुनूकेँ लोक-कथा, लोरी, आ बुझौवलमे जे माटिक गन्ध अछि, ओ एक हे अछि।

ठेठी-अंगिका —डॉ. अमरेन्द्र के 'अंगिका बाल-साहित्य' कोनो साधारण पोथी नै छै। ई एगो युगान्तकारी शोध-ग्रन्थ छै जे अंगिका भाषाकेँ एगो समृद्ध साहित्यिक भाषा के रूप में स्थापित करै छै। मैथिली के आलोचकक दृष्टि सें, जँ हम ई ग्रन्थकेँ देखैत छी, तें हमरा ई बोध होय छै जे मैथिली आरो अंगिका दुनूक बाल-साहित्य के जड़ि एक समान छै। दुनूकेँ लोक-कथा, लोरी, आरो बुझौवल में जे माटि के गन्ध छै, ऊ एक हे छै।

मैथिली —पोथीक प्रमुख उपलब्धि सभ: १. ऐतिहासिक प्रलेखन (Historical Documentation): मौखिक परम्परामे बिलाइत जा रहल लोरी, पहेली आ खेलगीतकेँ एकट्ठा कऽ कऽ डॉ. अमरेन्द्र अंगिकाक एकटा अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरकेँ सहेजि लेलन्हि अछि। २. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: बाल-साहित्यक मात्र सङ्ग्रह नहि, अपितु ओकर वैज्ञानिक आ मनोवैज्ञानिक प्रभावक जे विश्लेषण लेखक केने छथि, ओ एहि पोथीकेँ शोध-ग्रन्थक दर्जा दैत अछि। कार्ल ग्रूसक खेल-सिद्धान्तसँ लऽ कऽ शिशु-काव्यक ध्वन्यात्मक सिद्धान्त धरि, लेखकक दृष्टि बड्ड पैना अछि। ३. विस्तार आ वैविध्य: पोथीमे लोककथा सँ लऽ कऽ आधुनिक विज्ञान, मिसाइल मैन कलाम, गजल, रडार, पर्यावरण, आ बाढ़ि प्रबन्धन जकाँ विषयक समावेशन ई सिद्ध करैत अछि जे अंगिका बाल-साहित्य विश्व-साहित्यक सङ्ग कदम मिला कऽ चलि रहल अछि। ४. भाषागत शुद्धता आ प्रवाहमयता: लेखक द्वारा देल गेल समग्र उद्धरण पूर्णतया अंगिका भाषाक ठेठी-देशिल स्वरूपकेँ सुरक्षित रखैत अछि। 'टेंगटा' कथा होउ वा 'बण्टा' उपन्यासक संवाद, भाषाक मिठास आ ओकर आंचलिकता जीबन्त अछि।

ठेठी-अंगिका —पोथी के प्रमुख उपलब्धि सिनी: १. ऐतिहासिक प्रलेखन (Historical Documentation): मौखिक परम्परा में बिलाइत जा रहल लोरी, पहेली आरो खेलगीतकेँ एकट्ठा कऽ कऽ डॉ. अमरेन्द्र अंगिका के एगो अमूल्य सांस्कृतिक धरोहरकेँ सहेजि लेलन्हि छै। २. मनोवैज्ञानिक विश्लेषण: बाल-साहित्य के मात्र सङ्ग्रह नै छै, बल्कि ओकर वैज्ञानिक आरो मनोवैज्ञानिक प्रभावक जे विश्लेषण लेखक केने छै, ऊ ई पोथी कें शोध-ग्रन्थक दर्जा दै छै। कार्ल ग्रूसक खेल-सिद्धान्त सें लऽ कऽ शिशु-काव्य के ध्वन्यात्मक सिद्धान्त तक, लेखक के दृष्टि बहुत पैना छै। ३. विस्तार आरो वैविध्य: पोथी में लोककथा सें लऽ कऽ आधुनिक विज्ञान, मिसाइल मैन कलाम, गजल, रडार, पर्यावरण, आरो बाढ़ि प्रबन्धन जेना विषय के समावेशन ई सिद्ध करै छै जे अंगिका बाल-साहित्य विश्व-साहित्यक सङ्ग कदम मिला कऽ चलि रहल छै। ४. भाषागत शुद्धता आरो प्रवाहमयता: लेखक द्वारा देलों गेलों समग्र उद्धरण पूर्णतया अंगिका भाषा के ठेठी-देशिल स्वरूपकेँ सुरक्षित रखै छै। 'टेंगटा' कथा होउ वा 'बण्टा' उपन्यास के संवाद, भाषा के मिठास आरो ओकर आंचलिकता जीबन्त छै।

24. सीमा: सूचीप्रधानता, असमान पाठालोचन, सन्दर्भ-पद्धति आ चयन

ठेठी-अंगिका: 24. सीमा: सूचीप्रधानता, असमान पाठालोचन, सन्दर्भ-पद्धति आरो चयन

मैथिली —कृतिक महत्त्व स्वीकार करैत ओकर सीमा स्पष्ट कहब आवश्यक अछि। पहिल सीमा संरचनात्मक पुनरावृत्ति अछि, जे संकलित आलेखसभक इतिहाससँ जुड़ल। समान विचार अलग खण्डमे फेर अबैत अछि; किछु क्रम अचानक बदलैत अछि; कतेको ठाम सूची आलोचनापर भारी पड़ैत अछि।

ठेठी-अंगिका —कृति के महत्त्व स्वीकार करै ओकर सीमा स्पष्ट कहब आवश्यक छै। पहिल सीमा संरचनात्मक पुनरावृत्ति छै, जे संकलित आलेख सिनी के इतिहास सें जुड़लों। समान विचार अलग खण्ड में फेनू आवै छै; कुछु क्रम अचानक बदलै छै; कईगो जगह सूची आलोचनापर भारी पड़ै छै।

मैथिली —दोसर सीमा गहन पाठालोचनक असमानता अछि। नाटकक 'पंचगव्य' खण्डमे पात्र, संवाद, व्यंग्य, सामाजिक परिवेशपर पर्याप्त आलोचनात्मक दृष्टि अछि, मुदा अनेक गीत/कथा केवल उदाहरण वा संक्षिप्त टिप्पणी धरि सीमित। यदि प्रत्येक विधा लेल समान विश्लेषण-सूत्र—विषय, भाषा, लय/कथानक, बाल-दृष्टि, आयु-उपयुक्तता, शिल्प, सामाजिक अर्थ—राखल जाए तँ तुलनात्मक निष्कर्ष मजबूत होएत।

ठेठी-अंगिका —दोसर सीमा गहन पाठालोचन के असमानता छै। नाटक के 'पंचगव्य' खण्ड में पात्र, संवाद, व्यंग्य, सामाजिक परिवेशपर पर्याप्त आलोचनात्मक दृष्टि छै, मतरकि अनेक गीत/कथा केवल उदाहरण वा संक्षिप्त टिप्पणी तक सीमित। यदि प्रत्येक विधा लेल समान विश्लेषण-सूत्र—विषय, भाषा, लय/कथानक, बाल-दृष्टि, आयु-उपयुक्तता, शिल्प, सामाजिक अर्थ—राखलों जाए तें तुलनात्मक निष्कर्ष मजबूत होतै।

मैथिली —तेसर सीमा bibliographic मानकीकरण अछि। पृष्ठ 112–114 क स्रोत-सम्पदा बहुमूल्य अछि, मुदा पूर्ण प्रकाशन-वर्ष, संस्करण, पृष्ठ, प्रकाशन-स्थान, ISBN, सम्पादक/अनुवादकक भूमिका सभ ठाम एकरूप नहि। चारिम सीमा लेखक-केंद्रित corpus क सम्भावना अछि; बाहरी स्रोत अमरेन्द्रक वास्तविक व्यापक योगदानक पुष्टि करैत अछि, तथापि स्वतंत्र इतिहास लेल अन्य कवि-कथाकारसभक समान coverage आवश्यक अछि।

ठेठी-अंगिका —तेसर सीमा bibliographic मानकीकरण छै। पृष्ठ 112–114 के स्रोत-सम्पदा बहुमूल्य छै, मतरकि पूर्ण प्रकाशन-वर्ष, संस्करण, पृष्ठ, प्रकाशन-स्थान, ISBN, सम्पादक/अनुवादक के भूमिका सिनी जगह एकरूप नै। चारिम सीमा लेखक-केंद्रित corpus के सम्भावना छै; बाहरी स्रोत अमरेन्द्र के वास्तविक व्यापक योगदान के पुष्टि करै छै, तथापि स्वतंत्र इतिहास लेल अन्य कवि-कथाकार सिनी के समान coverage आवश्यक छै।

मैथिली —पाँचम सीमा मौखिक सामग्रीक performance metadata अभाव अछि। गीतक शब्द अछि, मुदा धुन, ताल, गायक, स्थान, तिथि, खेल-प्रक्रिया पर्याप्त व्यवस्थित नहि। छठम सीमा पाठकीय अध्ययनक अभाव अछि। बालोपयोगिताक निष्कर्ष प्राय: आलोचकक अनुभवपर आधारित अछि; बाल-पाठकक प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया वा readership data उपलब्ध नहि। ई सीमासभ पोथीक ऐतिहासिक महत्त्व घटबैत नहि; उलटे आगाँक शोधक कार्यक्रम बनबैत अछि।

ठेठी-अंगिका —पाँचम सीमा मौखिक सामग्री के performance metadata अभाव छै। गीत के शब्द छै, मतरकि धुन, ताल, गायक, स्थान, तिथि, खेल-प्रक्रिया पर्याप्त व्यवस्थित नै। छठम सीमा पाठकीय अध्ययन के अभाव छै। बालोपयोगिता के निष्कर्ष प्राय: आलोचक के अनुभवपर आधारित छै; बाल-पाठक के प्रत्यक्ष प्रतिक्रिया वा readership data उपलब्ध नै। ई सीमा सिनी पोथी के ऐतिहासिक महत्त्व घटावै नै; उलटे आगाँ के शोध के कार्यक्रम बनावै छै।

सीमा

ठेठी-अंगिका: सीमा

मैथिली —समीक्षकीय इमानदारीक तकाजा अछि जे किछु सीमा रेखांकित होअय। पहिल आ सभसँ विचारणीय विरोधाभास ई जे "अंगिका बाल-साहित्य" नामक, अंगिका विषयक ई पोथी स्वयं हिन्दीमे लिखल अछि—समीक्षा-भाषा हिन्दी, आ अंगिका केवल उद्धरणमे उपस्थित। जाहि भाषाक साहित्यक वकालत होइत अछि, तकरे विवेचन ओहि भाषामे नहि होएब एकटा पद्धतिगत प्रश्न ठाढ़ करैत अछि। दोसर, "संदर्भ"-सूची लेखकक अपने बाल-गीत-संग्रहसभसँ बेसी भरल अछि—एहिसँ आधार-सामग्री आ समीक्षकीय

दूरीक बीच अन्तर किछु धूमिल भ' जाइत अछि। तेसर, आत्म-स्वीकृत रूपेँ ई आलेख-संग्रह थिक, तेँ एहिमे कतहु-कतहु विश्लेषणक गहराइक ठाम वर्णनात्मक सूचीकरण बेसी भ' गेल अछि।

ठेठी-अंगिका —समीक्षा के इमानदारी के तकाजा छै कि कुछ सीमा भी उजागर होय। पहिलों आरो सबसें सोचै वाला विरोधाभास ई छै कि "अंगिका बाल-साहित्य" नाम के, अंगिका विषय के ई पोथी अपने हिन्दी में लिखलों छै—समीक्षा के भाषा हिन्दी, आरो अंगिका खाली उद्धरण में हाजिर। जे भाषा के साहित्य के वकालत होय छै, वहै भाषा में ओकर विवेचन नै होना एगो पद्धति के सवाल ठाढ़ करी दै छै। दोसर, "संदर्भ"-सूची लेखक के अपने बाल-गीत-संग्रह सिनी सें बेसी भरलों छै—एहिसें आधार-सामग्री आरो समीक्षा के दूरी के बीच के फरक कुछ धुंधला होय जाय छै। तेसर, अपने माननहिं ई आलेख-संग्रह छै, तें एकरा में कहीं-कहीं विवेचन के गहराई के जगह वर्णन के सूचीकरण बेसी होय गेलै।

मैथिली —किछु सीमाक सन्दर्भ: पोथी अपन आपमे पूर्ण अछि, तथापि, समीक्षाक धर्म अछि जे समग्र दृष्टिसँ विचार कएल जाय। लेखक स्वयं स्वीकार केने छथि जे अंगिकामे बाल-कहानी आ बाल-पत्रिकायन (Children's magazines) क भारी अभाव अछि। 'अंगिका बाल-कहानी' सङ्ग्रहक अतिरिक्त कोनो गम्भीर कथा-परम्परा नहि विकसित भऽ सकल अछि। जेकाँ फणीश्वर नाथ 'रेणु' अपन साहित्यमे लोककथाक उपयोग केलन्हि, ताहि प्रकारक नव प्रयोग बाल-कथा साहित्यमे अखनो अपेक्षित अछि। 'अजोलाबहिन' जकाँ बाल-पत्रिकाक प्रकाशन आर्थिक अभावमे बन्द भऽ जाएब अंगिका बाल-साहित्य लेल एकटा चिन्ताक विषय अछि।

ठेठी-अंगिका —कुछु सीमा के सन्दर्भ: पोथी अपन आप में पूर्ण छै, तथापि समीक्षा के धर्म छै जे समग्र दृष्टि सें विचार करलों जाय। लेखक अपने स्वीकार केने छै जे अंगिका में बाल-कहानी आरो बाल-पत्रिकायन (Children's magazines) के भारी अभाव छै। 'अंगिका बाल-कहानी' सङ्ग्रह के अतिरिक्त कोनो गम्भीर कथा-परम्परा विकसित नै होय सकल छै। जइसन फणीश्वर नाथ 'रेणु' अपन साहित्य में लोककथा के उपयोग करलकै, ओइसन नया प्रयोग बाल-कथा साहित्य में अखनो अपेक्षित छै। 'अजोला बहिन' जइसन बाल-पत्रिका के प्रकाशन आर्थिक अभाव में बन्द होय जायब अंगिका बाल-साहित्य लेली एगो चिन्ता के विषय छै।

25. आगाँक संस्करण लेल ठोस सम्पादकीय प्रस्ताव

ठेठी-अंगिका: 25. आगू के संस्करण लेल ठोस प्रस्ताव

मैथिली —यदि 'अंगिका बाल-साहित्य' क विस्तारित आलोचनात्मक संस्करण तैयार हो, तँ मूल सामग्री हटे बिना किछु संरचनात्मक सुधार एकरा मानक सन्दर्भग्रन्थ बना सकैत अछि। पहिल, 8–42 आ 43–112 क वर्तमान दू-खंडी ढाँचा बचैत उप-अध्याय क्रमांकित हो: लोरी, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा, अनुवाद, उपन्यास, गीत-कविता, गजल/खण्डकाव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध-जीवनी।

ठेठी-अंगिका —यदि 'अंगिका बाल-साहित्य' के नब, विस्तारित आलोचनात्मक संस्करण तैयार हो, तें मूल सामग्री हटे बिना कुछु संरचनात्मक सुधार एकरा मानक सन्दर्भग्रन्थ बना सकै छै। पहिल, 8–42 आरो 43–112 के वर्तमान दू-खंडी ढाँचा बचै उप-अध्याय क्रमांकित हो: लोरी, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा, अनुवाद, उपन्यास, गीत-कविता, गजल/खण्डकाव्य, कहानी, नाटक, निबन्ध-जीवनी।

मैथिली —दोसर, प्रत्येक अध्यायक आरम्भमे परिभाषा आ मूल्याङ्कन-कसौटी, अन्तमे संक्षिप्त निष्कर्ष। तेसर, कालक्रम—कृति, लेखक, वर्ष, विधा, प्रकाशक—एक परिशिष्ट रूपमे। चारिम, 52+ स्रोतक मानकीकृत bibliography; पत्रिका सूचीमे प्रकाशन-स्थान, सम्पादक, उपलब्ध वर्ष। पाँचम, लेखक-सूची आ शीर्षक-सूची। छठम, मौखिक सामग्री लेल field metadata: संग्रहकर्ता, कथावाचक/गायक, स्थान, तिथि, प्रसंग, variant।

ठेठी-अंगिका —दोसर, प्रत्येक अध्याय के आरम्भ में परिभाषा आरो मूल्याङ्कन-कसौटी, अन्त में संक्षिप्त निष्कर्ष। तेसर, कालक्रम—कृति, लेखक, वर्ष, विधा, प्रकाशक—एक परिशिष्ट रूपमे। चारिम, 52+ स्रोत के मानकीकृत bibliography; पत्रिका सूची में प्रकाशन-स्थान, सम्पादक, उपलब्ध वर्ष। पाँचम, लेखक-सूची आरो शीर्षक-सूची। छठम, मौखिक सामग्री लेल field metadata: संग्रहकर्ता, कथावाचक/गायक, स्थान, तिथि, प्रसंग, variant।

मैथिली —सातम, प्रतिनिधि रचनाक गहन पाठालोचन। आठम, अनुवादक अध्यायमे source–target तुलना। नवम, बालकक उमेर-वर्ग स्पष्ट: शिशु, आरम्भिक बालक, मध्य बाल्य, किशोर। दशम, चित्र, ऑडियो QR अथवा digital archive क लिंक—विशेषतः लोरी, खेलगीत, नाटक लेल। एगारहम, बाल-पाठकक वास्तविक प्रतिक्रिया/विद्यालयीय उपयोगपर सर्वेक्षण। बारहम, रचनाकारसभक

समान परिचय-ढाँचा। तेरहम, हिन्दी आलोचनात्मक पाठक संग एक पूर्ण अंगिका संस्करण, जाहिसँ अंगिका आलोचना-भाषा स्वयं विकसित हो। ई प्रस्ताव वर्तमान पोथीक बदला नहि; तकर उपलब्ध सामग्रीक अधिक वैज्ञानिक उपयोगक दिशा अछि।

ठेठी-अंगिका —सातम, प्रतिनिधि रचना के गहन पाठालोचन। आठम, अनुवादक अध्याय में source–target तुलना। नवम, बालक के उमेर-वर्ग स्पष्ट: शिशु, आरम्भिक बालक, मध्य बाल्य, किशोर। दशम, चित्र, ऑडियो QR अथवा digital archive के लिंक—विशेषतः लोरी, खेलगीत, नाटक लेल। एगारहम, बाल-पाठक के वास्तविक प्रतिक्रिया/विद्यालयीय उपयोगपर सर्वेक्षण। बारहम, रचनाकार सिनी के समान परिचय-ढाँचा। तेरहम, हिन्दी आलोचनात्मक पाठक संग एक पूर्ण अंगिका संस्करण, जाहि सें अंगिका आलोचना-भाषा अपने विकसित हो। ई प्रस्ताव वर्तमान पोथी के बदला नै; तकर उपलब्ध सामग्री के अधिक वैज्ञानिक उपयोग के दिशा छै।

26. समग्र मूल्याङ्कनः आधार-ग्रन्थक रूपमे स्थान

ठेठी-अंगिकाः 26. समग्र मूल्याङ्कनः आधार-ग्रन्थ के रूप में स्थान

मैथिली —‘अंगिका बाल-साहित्य’ क सर्वोच्च उपलब्धि ओकर संरक्षणकारी आ इतिहास-निर्माणकारी भूमिका अछि। जकर बहुत अंश लोककण्ठ, छोट पत्र-पत्रिका, सीमित संस्करणक पुस्तक, अनुवाद, निजी संग्रह वा साहित्यिक स्मृतिमे छितरायल रहि सकैत छल, ओकरा एक आलोचनात्मक छतरीक नीचाँ आनबाक ई महत्त्वपूर्ण प्रयत्न अछि। एहि कारण पोथी डॉ. अमरेन्द्रक व्यक्तिगत आलोचनात्मक कृति रहि नहि जाइत; अंगिका बाल-साहित्यक संस्थागत स्मृति बनबाक क्षमता प्राप्त करैत अछि।

ठेठी-अंगिका —‘अंगिका बाल-साहित्य’ के सर्वोच्च उपलब्धि ओकर संरक्षणकारी आरो इतिहास-निर्माणकारी भूमिका छै। जकर बहुत अंश लोककण्ठ, छोट पत्र-पत्रिका, सीमित संस्करण के पुस्तक, अनुवाद, निजी संग्रह वा साहित्यिक स्मृति में छितरायलों रहि सकै छेलै, ओकरा एक आलोचनात्मक छतरी के नीचाँ अनै के ई महत्त्वपूर्ण प्रयत्न छै। ई कारण पोथी डॉ. अमरेन्द्र के व्यक्तिगत आलोचनात्मक कृति रही नै जाय; अंगिका बाल-साहित्य के संस्थागत स्मृति बनै के क्षमता प्राप्त करै छै।

मैथिली —एकर दोसर महत्त्व ई स्थापना अछि जे बाल-साहित्यक जीवन-रस बालकक अपन संसारसँ अबैत अछि—लय, खेल, कल्पना, जिज्ञासा, हास्य, प्रकृति, परिवार, साथी, प्रश्न आअनुभवसँ। साहित्य बच्चाकेँ ऊपरसँ शिक्षा देबाक साधन मात्र नहि; बच्चाक दृष्टिसँ संसार देखबाक कला अछि। यद्यपि पोथीक बादक अंशमे शिक्षामूलकता मजबूत अछि, मूल child-centred कसौटी सम्पूर्ण अध्ययन लेल आलोचनात्मक आधार दैत अछि।

ठेठी-अंगिका —एकर दोसर महत्त्व ई स्थापना छै जे बाल-साहित्य के जीवन-रस बालक के आपनों संसार सें आवै छै—लय, खेल, कल्पना, जिज्ञासा, हास्य, प्रकृति, परिवार, साथी, प्रश्न आरो अनुभव सें। साहित्य बच्चा कें ऊपर सें शिक्षा दै के साधन मात्र नै; बच्चा के दृष्टि सें संसार देखै के कला छै। यद्यपि पोथी के बाद के अंश में शिक्षामूलकता मजबूत छै, मूल child-centred कसौटी सम्पूर्ण अध्ययन लेल आलोचनात्मक आधार दै छै।

मैथिली —तेसर, लोकपरम्परा आ आधुनिकताकेँ विरोधी मानबाक बदला पोथी रूपान्तरक सम्बन्ध देखबैत अछि। लोरीक लय आधुनिक गीतमे, लोककथाक कथात्मक संसाधन आधुनिक कहानी/नाटकमे, मौखिक हास्य आ संवाद आधुनिक बालमंचमे, प्रकृतिक परिचित जगत पर्यावरण-चेतनामे—एहन निरन्तरता ग्रन्थक मूल इतिहास-दृष्टि अछि। चारिम, सूक्ष्म पाठालोचन बाल-नाटकक महत्त्वक विशेष पुनर्मूल्याङ्कन करैत अछि। पृष्ठ 98–109 बाल-नाटककेँ आधुनिक सामाजिक समस्या, विज्ञान, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, संवाद आ मंचीयताक महत्वपूर्ण क्षेत्र बनबैत अछि।

ठेठी-अंगिका —तेसर, लोकपरम्परा आरो आधुनिकता कें विरोधी मानै के बदला पोथी रूपान्तर के सम्बन्ध देखावै छै। लोरी के लय आधुनिक गीत में, लोककथा के कथात्मक संसाधन आधुनिक कहानी/नाटक में, मौखिक हास्य आरो संवाद आधुनिक बालमंच में, प्रकृति के परिचित जगत पर्यावरण-चेतना में—एहन निरन्तरता ग्रन्थ के मूल इतिहास-दृष्टि छै। चारिम, गहन पुनर्पाठ बाल-नाटक के महत्त्व के विशेष पुनर्मूल्याङ्कन करै छै। पृष्ठ 98–109 बाल-नाटक कें आधुनिक सामाजिक समस्या, विज्ञान, शिक्षा, पर्यावरण, स्वास्थ्य, संवाद आरो मंचीयता के महत्वपूर्ण क्षेत्र बनावै छै।

मैथिली —उपलब्ध बाहरी स्रोत मूल पोथीक प्रमुख प्रकाशन-तथ्य आ कृतिसभक अस्तित्वक पर्याप्त पुष्टि करैत अछि। भारतवाणी मूल पोथीकेँ 2022 क Children’ s Literature रूपमे सूचीबद्ध करैत अछि; 2021 क अमरेन्द्र-केंद्रित अध्ययन आ बालगीत-

ग्रंथावली सक्रिय आलोचनात्मक प्रकाशन-परिसरक संकेत दैत अछि। Angika. com, Kavita Kosh आ Gadya Kosh जकाँ सहायक स्रोत प्रमुख कृतिसभक डिजिटल/साहित्यिक उपस्थितिक साक्ष्य दैत अछि।

ठेठी-अंगिका —उपलब्ध बाहरी स्रोत मूल पोथी के प्रमुख प्रकाशन-तथ्य आरो कृति सिनी के अस्तित्व के पर्याप्त पुष्टि करै छै। भारतवाणी मूल पोथी कें 2022 के Children' s Literature रूप में सूचीबद्ध करै छै; 2021 के अमरेन्द्र-केंद्रित अध्ययन आरो बालगीत-ग्रंथावली सक्रिय आलोचनात्मक प्रकाशन-परिसर के संकेत दै छै। Angika. com, Kavita Kosh आरो Gadya Kosh जेना सहायक स्रोत प्रमुख कृति सिनी के डिजिटल/साहित्यिक उपस्थिति के साक्ष्य दै छै।

मैथिली —सीमासभ वास्तविक अछि—संकलनात्मक पुनरावृत्ति, सूचीप्रधानता, असमान पाठालोचन, bibliographic असंगति, author-centred selection क सम्भावना, performance data आ reader-response क अभाव। मुदा ई सीमा एहि पोथीकेँ अप्रासंगिक नहि बनबैत; ई बतबैत अछि जे अगिला शोध कतऽ सँ आरम्भ हो।

ठेठी-अंगिका —सीमा सिनी वास्तविक छै—संकलनात्मक पुनरावृत्ति, सूचीप्रधानता, असमान पाठालोचन, bibliographic असंगति, author-centred selection के सम्भावना, performance data आरो reader-response के अभाव। मतरकि ई सीमा ई पोथी कें अप्रासंगिक नै बनावै; ई बतावै छै जे आगू के शोध कहाँ सें आरम्भ हो।

मैथिली —अन्ततः 'अंगिका बाल-साहित्य' केँ केवल बाल-रचनाक परिचय-पोथी कहब ओकर महत्त्व घटायब होएत। ई लोक-स्मृति, भाषिक अस्मिता, बाल-मन, साहित्यिक आधुनिकता, अनुवाद, विधा-विस्तार आ दस्तावेजीकरणक संगमपर ठाढ़ कृति अछि। एकर सर्वश्रेष्ठ अंश ओ अछि जतय लोरीसँ आधुनिक कविता धरि, खेलसँ नाटक धरि, लोककथासँ पर्यावरणीय/वैज्ञानिक कथा धरि एक सांस्कृतिक निरन्तरता देखाइत अछि। ई पोथी बन्द, अन्तिम इतिहास नहि; अंगिका बाल-साहित्यक विस्तृत इतिहास, पाठ-समीक्षा, प्रदर्शन-अभिलेख, अनुवाद-अध्ययन आ बाल-पाठकीय शोध लेल आधार-ग्रन्थ अछि।

ठेठी-अंगिका —अन्ततः 'अंगिका बाल-साहित्य' कें केवल बाल-रचना के परिचय-पोथी कहब ओकर महत्त्व घटायब होतै। ई लोक-स्मृति, भाषिक अस्मिता, बाल-मन, साहित्यिक आधुनिकता, अनुवाद, विधा-विस्तार आरो दस्तावेजीकरण के संगमपर ठाढ़ कृति छै। एकर सर्वश्रेष्ठ अंश ओ छै जेतै लोरी सें आधुनिक कविता तक, खेल सें नाटक तक, लोककथा सें पर्यावरणीय/वैज्ञानिक कथा तक एक सांस्कृतिक निरन्तरता देखाय छै। ई पोथी बन्द, अन्तिम इतिहास नै; अंगिका बाल-साहित्य के विस्तृत इतिहास, पाठ-समीक्षा, प्रदर्शन-अभिलेख, अनुवाद-अध्ययन आरो बाल-पाठकीय शोध लेल आधार-ग्रन्थ छै।

मैथिली —एहि अर्थमे बाल-साहित्य भाषा-परम्पराक छोट कोना नहि। बच्चा जखन अपन मातृभाषामे खेलैत, गाबैत, कथा सुनैत, प्रश्न करैत, पढ़ैत आ अभिनय करैत अछि, तखन ओ भाषा अगिला पीढ़ीमे केवल जीवित नहि रहैत—ओ नब रूपमे सृजित होइत अछि। डॉ. अमरेन्द्रक पोथीक स्थायी साहित्यिक सन्देश एही गहींर बिन्दुपर स्थित अछि।

ठेठी-अंगिका —ई अर्थ में बाल-साहित्य भाषा-परम्परा के छोट केना नै। बच्चा जबें आपनों मातृभाषा में खेलै, गावै, कथा सुनै, प्रश्न करै, पढ़ै आरो अभिनय करै छै, तबें ओ भाषा आगू के पीढ़ी में केवल जीवित नै रहै—ओ नब रूप में सृजित होय छै। डॉ. अमरेन्द्र के पोथी के स्थायी साहित्यिक सन्देश एही गहींर बिन्दुपर स्थित छै।

सम्पादकीय अभिमत (निष्कर्ष)

ठेठी-अंगिका: सम्पादकीय अभिमत (निष्कर्ष)

मैथिली —एतेक कहलाक बादो ई पोथी अपन घोषित उद्देश्य—अंगिका बाल-साहित्य पर आगाँ लिखबाक मार्ग खोलब—मे सफल अछि। ओकर स्थायी मूल्य विश्लेषणक नवीनतामे कम, आ प्रलेखनक विश्वसनीयतामे बेसी अछि। विशेषतः पहिल अध्यायक लोक-सामग्री—लोरी, तेल-गीत, डेग-गीत आ बुझौवल—भविष्यक शोधार्थी लेल एकटा प्रामाणिक कोष थिक। डॉ. अमरेन्द्र स्वयं जे विनम्रतासँ एकरा अन्तिम शब्द नहि, प्रारम्भ कहने छथि, समीक्षकक निर्णय सेहो ओही दिशामे जाइत अछि—ई अंगिका बाल-साहित्यक आलोचना-भवनक आधारशिला थिक, शिखर नहि; आ नीक आधारशिलाक इएह गुण होइत अछि जे ओ अपनासँ ऊपर बहुत किछु ठाढ़ होएबाक सम्भावना केँ सम्हारि लैत अछि। विदेह-दृष्टिएँ ई पोथी अंगिका बाल-साहित्य केँ भाषाविदक नमूनासँ जीवन्त परम्परामे बदलबाक ओ पहिल डेग थिक, जकरा आगाँ बढ़ाएब आब समीक्षक-समाजक दायित्व अछि।

ठेठी-अंगिका —एतना कहला के बादो ई पोथी अपन घोषित मकसद—अंगिका बाल-साहित्य पर आगू लिखै के रास्ता खोलब—में कामयाब छै। ओकर टिकाऊ कीमत विवेचन के नयापन में कम, आरो प्रलेखन के भरोसा में बेसी छै। खास कें पहिलों अध्याय के लोक-सामग्री—लोरी, तेल-गीत, डेग-गीत आरो बुझौवल—आगू के सोधकर्ता लेली एगो सच्चा खजाना छै। डॉ. अमरेन्द्र अपने जे नरमी सें एकरा आखिरी बात नै, सुरुआत कहलकै, समीक्षक के फैसला भी वहै दिसाय जाय छै—ई अंगिका बाल-साहित्य के आलोचना-घर के नींव छै, चोटी नै; आरो बढ़िया नींव के इहे गुन होय छै कि ऊ अपने सें ऊपर बहुत कुछ ठाढ़ होय के सम्भावना के सम्हारी लै छै। विदेह के नजर सें ई पोथी अंगिका बाल-साहित्य के भाषाविद के नमूना सें जीता-जागता परम्परा में बदलै के पहिलों डेग छै, जेकरा आगू बढ़ाना अब समीक्षक-समाज के जिम्मेवारी छै।

निष्कर्ष

ठेठी-अंगिका: निष्कर्ष

मैथिली —अन्ततः, डॉ. अमरेन्द्र द्वारा लिखित 'अंगिका बाल-साहित्य' अंगिका आ वृहत्तर बिहारी साहित्य-परम्पराक लेल एकटा 'माइल-स्टोन' (Milestone) अछि। बाल-साहित्यकेँ साहित्यक परिधिमे नीचाँ कऽ कऽ देखबाक जे एकटा कुत्सित परम्परा अकादमिक जगतमे रहल अछि, डॉ. अमरेन्द्र अपन एहि शोधपूर्ण ग्रन्थ सँ ओहि भ्रान्तटीकेँ तोड़ैत छथि। ओ प्रमाणित करैत छथि जे बाल-साहित्य समाजक नव-निर्माणक 'फैक्ट्री' अछि।

ठेठी-अंगिका —अन्ततः, डॉ. अमरेन्द्र द्वारा लिखित 'अंगिका बाल-साहित्य' अंगिका आरो वृहत्तर बिहारी साहित्य-परम्पराक लेली एगो 'माइल-स्टोन' (Milestone) छै। बाल-साहित्य केँ साहित्य के परिधि में नीचाँ कऽ कऽ देखै के जे एगो कुत्सित परम्परा अकादमिक जगत में रहल छै, डॉ. अमरेन्द्र अपन ई शोधपूर्ण ग्रन्थ सें वही भ्रान्तटीकेँ तोड़ैत छै। ऊ प्रमाणित करै छै जे बाल-साहित्य समाज के नव-निर्माणक 'फैक्ट्री' छै।

मैथिली —मैथिली साहित्यकेँ सेहो अंगिकाक एहि बाल-साहित्यिक आन्दोलन सँ प्रेरणा लेबाक आवश्यकता अछि। भाषाकशुद्धता, लोक-परम्पराक वैज्ञानिक संरक्षण, आ आधुनिकताक सङ्ग कदम सँ कदम मिला कऽ चलबाक जे सन्देश ई पोथी दैत अछि, ओ समस्त क्षेत्रीय भाषाक साहित्यकार लेल अनुकरणीय अछि। डॉ. अमरेन्द्रक ई भगीरथ प्रयास अंगिका साहित्यक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत, आ ई पोथी शोधार्थी, साहित्यकार, आ शिक्षाविद् सभक लेल एकटा आधार-ग्रन्थक रूपमे सदैव मार्गदर्शित करैत रहत।

ठेठी-अंगिका —मैथिली साहित्यकेँ भी अंगिका के ई बाल-साहित्यिक आन्दोलन सें प्रेरणा लेबाक आवश्यकता छै। भाषा के शुद्धता, लोक-परम्पराक वैज्ञानिक संरक्षण, आरो आधुनिकताक सङ्ग कदम सें कदम मिला कऽ चलबाक जे सन्देश ई पोथी दै छै, ऊ समस्त क्षेत्रीय भाषा के साहित्यकार लेली अनुकरणीय छै। डॉ. अमरेन्द्र के ई भगीरथ प्रयास अंगिका साहित्य के इतिहासमे स्वर्णाक्षर में लिखलों जाएत, आरो ई पोथी शोधार्थी, साहित्यकार, आरो शिक्षाविद् सिनी के लेली एगो आधार-ग्रन्थक रूप में सदैव मार्गदर्शित करै रहत।

27. समग्र निष्कर्षक संक्षिप्त सार

ठेठी-अंगिका: 27. समग्र निष्कर्ष के संक्षिप्त सार

मैथिली —समग्र पोथीक पाठसँ स्पष्ट अछि जे पोथीक विषय-विस्तार प्रारम्भिक प्रकाशन-तथ्य आ आत्मकथनसँ लऽ सन्दर्भ-पत्रिका सूची धरि एक समग्र बाल-साहित्यिक क्षेत्रक नक्शा बनबैत अछि। लोकसाहित्य खण्डक मुख्य उपविधा लोरी/शिशु गीत, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा आ अन्तरभाषिक कथा अछि। आधुनिक खण्डक मुख्य उपविधा अनुवादित बाल-कथा, बाल-उपन्यास, बालगीत/कविता, प्रकृति-पर्यावरण/ज्ञान-विषय, गजल/खण्डकाव्य, बाल-कहानी, एकांकी/बाल-नाटक, निबन्ध-इतिहास-जीवनी अछि।

ठेठी-अंगिका —सम्पूर्ण 114 पृष्ठ के पुनर्पाठ सें स्पष्ट छै जे पोथी के विषय-विस्तार प्रारम्भिक प्रकाशन-तथ्य आरो आत्मकथन सें लै कें सन्दर्भ-पत्रिका सूची तक एक समग्र बाल-साहित्यिक क्षेत्र के नक्शा बनावै छै। लोकसाहित्य खण्ड के मुख्य उपविधा लोरी/शिशु गीत, पहेली, तुक्तक, खेलगीत, लोककथा आरो अन्तरभाषिक कथा छै। आधुनिक खण्ड के मुख्य उपविधा अनुवादित बाल-कथा, बाल-उपन्यास, बालगीत/कविता, प्रकृति-पर्यावरण/ज्ञान-विषय, गजल/खण्डकाव्य, बाल-कहानी, एकांकी/बाल-नाटक, निबन्ध-इतिहास-जीवनी छै।

मैथिली —समग्र विवेचनक मुख्य तर्क—सांस्कृतिक वंशावली, संकलनात्मक निर्माण, बाल-मन, दस्तावेजीकरण, लोक-आधुनिक सेतु, अनुवाद, काव्यक समृद्धि, बाल-कहानीक कमी, नाटक/अन्य विधा, भाषा, उपलब्धि, सीमा आ आधार-ग्रन्थक मूल्य—एहि आलेखमे सुरक्षित अछि। विशेष विस्तार बाल-नाटकक पुनर्मूल्याङ्कन, पृष्ठ 112–114 क bibliography/पत्रिका-संसारक archival विश्लेषण, लेखक-इतिहासकारक दोहरी भूमिकाक पद्धतिगत विवेचन, बाहरी प्रकाशन-सत्यापन, बालोपयुक्तता/मौखिक परम्परा/समाजीकरणक तुलनात्मक सिद्धान्त, तथा performance archive, reader-response आ standard bibliography लेल भविष्यक कार्यक्रम अछि।

ठेठी-अंगिका —समग्र विवेचन के मुख्य तर्क—सांस्कृतिक वंशावली, संकलनात्मक निर्माण, बाल-मन, दस्तावेजीकरण, लोक-आधुनिक सेतु, अनुवाद, काव्य के समृद्धि, बाल-कहानी के कमी, नाटक/अन्य विधा, भाषा, उपलब्धि, सीमा आरो आधार-ग्रन्थ के मूल्य—ई आलेख में सुरक्षित छै। विशेष विस्तार बाल-नाटक के पुनर्मूल्याङ्कन, पृष्ठ 112–114 के bibliography/पत्रिका-संसार के archival विश्लेषण, लेखक-इतिहासकार के दोहरी भूमिका के पद्धतिगत विवेचन, बाहरी प्रकाशन-सत्यापन, बालोपयुक्तता/मौखिक परम्परा/समाजीकरण के तुलनात्मक सिद्धान्त, तथा performance archive, reader-response आरो standard bibliography लेल आगू के कार्यक्रम में छै।

विस्तृत ग्रन्थ-सूची

ई ग्रन्थ-सूचीमे केवल पुस्तक, ग्रन्थ, कोश, संग्रह आ पुस्तकाकार साहित्यिक कृतिसभ राखल गेल अछि। जतय प्रकाशन-वर्ष वा प्रकाशकक स्पष्ट विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे उपलब्ध नहि अछि, ओतय अनुमान नहि जोड़ल गेल अछि।

क. समीक्ष्य ग्रन्थ आ डॉ. अमरेन्द्रक बाल-साहित्यिक कृतिसभ

१. अमरेन्द्र, डॉ. — अंगिका बाल-साहित्य। समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर/दिल्ली; प्रथम संस्करण, २०२२। ई प्रस्तुत समीक्षाक मुख्य आधार-ग्रन्थ अछि। पृष्ठ: ११२। मूल्य: दू सय टाका।

२. अभिनन्दन (सम्पादक) — डॉ. अमरेन्द्र ग्रंथावली, खण्ड १: अंगिका बालगीत समग्र। समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, २०२१। डॉ. अमरेन्द्रक बालगीत-सृजनक पुस्तकाकार समेकित संकलन।

३. रानी, श्वेता — डॉ. अमरेन्द्र का अंगिका बाल साहित्य। समीक्षा प्रकाशन, मुजफ्फरपुर, २०२१। डॉ. अमरेन्द्रक अंगिका बाल-साहित्यपर केन्द्रित आलोचनात्मक अध्ययन।

४. अमरेन्द्र, डॉ. — ढोल बजै छै ढम्मक ढम। बालगीत-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक स्पष्ट विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे उपलब्ध नहि अछि।

५. अमरेन्द्र, डॉ. — बुतरू के तुतरू। बालगीत-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक स्पष्ट विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे उपलब्ध नहि अछि।

६. अमरेन्द्र, डॉ. — बाजै बीन बजावै तीन। बालगीत-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक स्पष्ट विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे उपलब्ध नहि अछि।

७. अमरेन्द्र, डॉ. — एक छड़ी पर अंडा नाचै। बालकक पहेली, क्रीड़ा आ भाषिक कौतूहलसँ सम्बद्ध पुस्तकाकार कृति। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे नहि देल गेल अछि।

८. अमरेन्द्र, डॉ. — तुक्तक-मुक्तक। शिशु आ लघु आयुवर्गक ध्वनि-प्रधान बाल-कविताक संग्रह। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे उपलब्ध नहि अछि।

९. अमरेन्द्र, डॉ. — बण्टा। अंगिका बाल-उपन्यास। विद्यालय, शिक्षक, बाल-मन, सामाजिक परिस्थिति आ पर्यावरणक विस्तृत कथात्मक संसारपर केन्द्रित कृति। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१०. अमरेन्द्र, डॉ. — अंगिका कथा-सरोवर। २००६। संस्कृत-मूलक कथा, पञ्चतन्त्र-जातक परम्परा आ बालोपयोगी रूपान्तरसँ सम्बद्ध पुस्तक। प्रकाशकक विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

११. अमरेन्द्र, डॉ. — घटोत्कच। बाल-खण्डकाव्य; महाभारतक वनपर्वपर आधारित तीन सर्गक कृति। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१२. अमरेन्द्र, डॉ. — पंचामृत। पाँच बाल-काव्य-रूपकक संग्रह; एहिमे चोकर के हलुआ, अतिथि सेवा, आत्मसमर्पण, विशाखा आ बुद्धं शरणं गच्छामि सम्मिलित अछि। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१३. अमरेन्द्र, डॉ. — पंचगव्य। पाँच बाल-एकांकीक संग्रह; सामाजिक यथार्थ, अन्धविश्वास-विरोध, शिक्षा आ किशोर-चेतनाक प्रसंगसभपर केन्द्रित। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१४. अमरेन्द्र, डॉ. (अनुवादक) — जंगल रों पहचान। उर्दू बाल-उपन्यासक अंगिका रूपान्तर। मूल लेखक, प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१५. अमरेन्द्र, डॉ. (अनुवादक) — शिकार आरो शिकारी। उर्दू बाल-उपन्यासक अंगिका रूपान्तर; बालोपयुक्तता आ पर्यावरण-चेतनाक अनुकूलनक उदाहरण। मूल लेखक आ प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

१६. अमरेन्द्र, डॉ. (अनुवादक) — फैसल रों जासूसी। उर्दू बाल-उपन्यासक अंगिका रूपान्तर। मूल लेखक आ प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

ख. अंगिका लोकसाहित्य, साहित्येतिहास आ सहायक ग्रन्थ

१७. गौतम, डॉ. सुरेश; गौतम, डॉ. वीणा (सम्पादक) — भारतीय बाल-लोकसाहित्य कोश। विभिन्न भारतीय भाषाक बाल-लोकपरम्परासँ सम्बद्ध सम्पादित कोश; डॉ. अमरेन्द्रक किछु आलेखक पूर्व-प्रकाशन-सन्दर्भ एहि कोशसँ जुड़ल अछि। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे पूर्ण रूपेँ उपलब्ध नहि अछि।

१८. गौतम, डॉ. सुरेश; गौतम, डॉ. वीणा (सम्पादक) — भारतीय लोरी-साहित्य कोश। भारतीय लोरी-परम्पराक सम्पादित कोश। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे पूर्ण रूपेँ उपलब्ध नहि अछि।

१९. जगप्रिय, चन्द्रप्रकाश (सम्पादक) — अंगिका लोकोक्ति, फेकड़ा आरो बुझौवल। अंगिका लोकोक्ति, फेकड़ा आ पहेली-बुझौवलक संकलन; समीक्ष्य ग्रन्थक पहेली-विवेचनमे महत्त्वपूर्ण स्रोत। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

२०. तिवारी, मीना (सम्पादक) — चलौ खिस्सा के गाँव। अंगिका लोककथा-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

२१. भट्ट, वाञ्छा अंजन — फुलझामर। अंगिका लोककथा-संग्रह। प्रकाशन-वर्ष आ प्रकाशकक विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

२२. कुमारी, डॉ. शोभा — अंगिका साहित्य का इतिहास। अंगिका भाषाक साहित्यिक विकास आ परम्परापर केन्द्रित इतिहास-ग्रन्थ। प्रकाशन-विवरण समीक्ष्य सामग्रीमे स्पष्ट नहि अछि।

२३. ग्रियर्सन, जॉर्ज अब्राहम — भारतक भाषिक सर्वेक्षण। १९०३ सँ प्रकाशित भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण-परियोजनाक अन्तर्गत अंगिका/छिका-छिकी सम्बन्धी वर्गीकरणक स्रोत। प्रस्तुत ग्रन्थ-सूचीमे शीर्षक मैथिली रूपमे देल गेल अछि।

२४. सिद्धाचार्यसभ — चर्यापद। बौद्ध सिद्धपरम्पराक प्राचीन पद-संग्रह; अंगिका-मैथिली सहित पूर्वी भारतीय आरम्भिक भाषिक-साहित्यिक परम्पराक चर्चामे सन्दर्भित कृति।

ग. भारतीय काव्यशास्त्र आ ज्ञानमीमांसाक आधार-ग्रन्थ

२५. आनन्दवर्धन — ध्वन्यालोक। ध्वनि, व्यंजना आ काव्यार्थक सिद्धान्तक मूल संस्कृत ग्रन्थ; आलेखमे बालगीत आ बुझौवलक ध्वन्यात्मक तथा व्यंजनात्मक विश्लेषणक सैद्धान्तिक आधार।

२६. कुन्तक — वक्रोक्तिजीवित। वक्रोक्ति, वर्ण-विन्यास, पद, वाक्य, प्रकरण आ प्रबन्ध-वक्रताक सिद्धान्तक मूल संस्कृत ग्रन्थ; अंगिका बुझौवल आ बाल-काव्यक वक्र अभिव्यक्तिक विवेचनमे प्रयुक्त।

२७. गङ्गेश उपाध्याय — तत्त्वचिन्तामणि। नव्य-न्यायक प्रमुख ज्ञानमीमांसात्मक ग्रन्थ; प्रमाण, अनुमान, व्याप्ति आ ज्ञान-प्रक्रियासँ सम्बद्ध विश्लेषणक दार्शनिक आधार।

घ. बाल-साहित्य-अध्ययनक पाश्चात्य आधार-ग्रन्थ — मैथिली शीर्षक-रूपमे

२८. रेनॉल्ड्स, किम्बर्ली — बाल-साहित्य: एक अत्यन्त संक्षिप्त परिचय। ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, २०११। मौखिक परम्परा, पीढ़ीगत सांस्कृतिक दीक्षा, बाल-साहित्यक इतिहास आ समाजीकरणक प्रश्नसभपर केन्द्रित परिचयात्मक ग्रन्थ।

२९. एवर्स, हान्स-हाइनो — बाल-साहित्य-अनुसन्धानक मूलभूत अवधारणासभ। रूटलेज प्रकाशन, २००९। बालोपयुक्तता, वर्गीकरण, साहित्यिक संप्रेषण आ बाल-साहित्य-अध्ययनक आधारभूत अवधारणासभपर केन्द्रित ग्रन्थ।

२१. मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र

सारांश

गजेन्द्र ठाकुरक सैंतीस बाल-उपन्यासक विस्तृत समालोचना (भारतीय आ पाश्चात्य बाल-साहित्य aसमीक्षाशास्त्रक आलोकमे)
भूमिका: बाल-साहित्यक समीक्षा-दृष्टि आ ई सैंतीस पोथी

बीजशब्द: बाल · उपन्यासक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गजेन्द्र ठाकुर- मैथिली बाल-उपन्यासक समीक्षाशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। एहि पोथीमे गजेन्द्र ठाकुर रचित सैंतीस टा मैथिली बाल-उपन्यासक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत अछि। ई सैंतीसो पोथी कोनो फुटकर संग्रह नहि थिक — ई एकटा सुनियोजित बाल-वाङ्मयक स्थापत्य थिक, जाहिमे आधुनिक मौलिक बाल-कथा, वर्णमाला-शिक्षण, पशु-कथा, चातुर्य-कथा, परीकथा, मिथिलाक वीर-लोकगाथा, प्रेम-गाथा, भक्ति-गाथा, लोकदेवता-चरित, लोकनाट्य आ संगीत-आख्यान — सभटा विधा एक्कहि छत्रक नीचाँ आबि गेल अछि। तेँ एहि सभक समीक्षा सेहो फुटकर नहि भऽ सकैत अछि; एक पोथीक समीक्षा दोसरकेँ अपने घीचि अनैत अछि, जेना एक्कहि पोखरिक घाट सभ एक-दोसरासँ पानिक तरे-तर जुड़ल रहैत अछि। एहि समीक्षा-पोथीक विन्यास ओही अन्तर्जालकेँ पकड़बाक प्रयास थिक।

गजेन्द्र ठाकुरक सैंतीस बाल-उपन्यासक विस्तृत समालोचना

(भारतीय आ पाश्चात्य बाल-साहित्य aसमीक्षाशास्त्रक आलोकमे)

भूमिका: बाल-साहित्यक समीक्षा-दृष्टि आ ई सैंतीस पोथी

एहि पोथीमे गजेन्द्र ठाकुर रचित सैंतीस टा मैथिली बाल-उपन्यासक विस्तृत समीक्षा प्रस्तुत अछि। ई सैंतीसो पोथी कोनो फुटकर संग्रह नहि थिक — ई एकटा सुनियोजितबाल-वाङ्मयक स्थापत्य थिक, जाहिमे आधुनिक मौलिक बाल-कथा, वर्णमाला-शिक्षण, पशु-कथा, चातुर्य-कथा, परीकथा, मिथिलाक वीर-लोकगाथा, प्रेम-गाथा, भक्ति-गाथा, लोकदेवता-चरित, लोकनाट्य आ संगीत-आख्यान — सभटा विधा एक्कहि छत्रक नीचाँ आबि गेल अछि। तेँ एहि सभक समीक्षा सेहो फुटकर नहि भऽ सकैत अछि; एक पोथीक समीक्षा दोसरकेँ अपने घीचि अनैत अछि, जेना एक्कहि पोखरिक घाट सभ एक-दोसरासँ पानिक तरे-तर जुड़ल रहैत अछि। एहि समीक्षा-पोथीक विन्यास ओही अन्तर्जालकेँ पकड़बाक प्रयास थिक।

समीक्षाक कसौटी दूटा राखल गेल अछि — भारतीय आ पाश्चात्य, आ दुनूकेँ एक-दोसराक विरुद्ध नहि, पूरक रूपमे प्रयुक्त कएल गेल अछि। भारतीय पक्षमे सभसँ पहिने रस-सिद्धान्त अछि। बाल-साहित्यक प्रयोजन भरत मुनिक नाट्यशास्त्रीय भाषामे कही त' रस-निष्पत्तिये थिक — बालक-पाठक लेल वीर, अद्भुत, हास्य, करुण आवात्सल्यक अनुपातिक संयोजन। एहि संग्रहमे वीर रसक शिखर दीना-भदरी आ छेछन छथि, करुणक शिखर महुआ घटवारिन आ मोतीदाइ, अद्भुतक शिखर राजा अनसारी आ बिहुला, हास्यक शिखर मूर्खाधिराज आ ऊँटनी, आ वात्सल्यक शिखर बाल गुरु आ वर्णमाला शिक्षा। दोसर भारतीय कसौटी क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार थिक — बाल-पाठक लेल कोन प्रसंग कतेक विस्तारसँ कहल जाए, कतऽ गाथा 'आँखि नीचाँ कऽ लिअए', ई औचित्यक प्रश्न एहि सैंतीसो पोथीमे लेखकक सम्पादकीय विवेकक धुरी थिक आ प्रायः प्रत्येक समीक्षामे एकर चर्च आओत। तेसर कसौटी पञ्चतन्त्र-हितोपदेशक कथामुख-परम्परा थिक — कथाक भीतर कथा, आ कथाक द्वारा नीति; बा-ओमक जे उपक्रम-उपसंहार तरहरिमे परीलोक आ ऊँटनीकेँ बान्हैत अछि, से विष्णु शर्माक ओही प्राचीन शिल्पक मैथिली नवीकरण थिक। चारिम कसौटी ध्वनि-सिद्धान्त थिक — बाल-कथाक व्यंग्यार्थ, जे बच्चाकेँ तुरत आ प्रौढ़केँ बादमे भेटैत छै।

पाश्चात्य पक्षमे पाँच टा उपकरण मुख्य रूपेँ प्रयुक्त भेल अछि। पहिल, भ्लादिमीर प्रॉपक कथा-आकृति-विज्ञान (मॉर्फोलॉजी ऑफ द फोकटेल) — निषेध आ निषेध-भंग, दाता-पात्र, जादुई साधन, कठिन कार्य, झूठ नायकक पहिचान सन कथा-प्रकार्य, जे राजा अनसारी, राजा ढोलन, ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा सन पोथीमे पाठ्यपुस्तक सन स्पष्ट अछि। दोसर, आर्ने-थॉम्पसन-उथरक कथा-प्ररूप-सूची (ए. टी. यू.) — जतऽ-जतऽ मैथिली कथा विश्व-कथा-प्ररूपसँ मेल खाइत अछि (जेना मूर्खाधिराजमे ए. टी. यू. १६९६, कौवा आ फुद्दीमे शृंखला-कथा-वर्ग, ब्राह्मण आ ठाकुरक कथाक पाथर बननिहार मित्रमे ए. टी. यू. ५१६), ओतऽ ओकर उल्लेख कएल गेल अछि, जाहिसँ मैथिली बाल-साहित्यक विश्व-सन्दर्भ स्पष्ट होअए। तेसर, ब्रूनो बेटेलहाइमक मनोविश्लेषणात्मक स्थापना (द यूजेज़ ऑफ इनचैन्टमेन्ट)

— जे परीकथाक अन्हार अंश बच्चाक भीतरक भयकेँ बाहर आनि ओकर परिष्कार करैत अछि, तेँ बाल-कथासँ मृत्यु, डाइन, विश्वासघात सभटा नहि हँटाओल जाए, खाली ओकर प्रस्तुति सम्हारल जाए। चारिम, मारिया निकोलायेवाक 'एटोनॉर्मेटिविटी'क प्रश्न — बाल-साहित्यमे वयस्कक सत्ता आ बालकक कर्तृत्व (एजेंसी) क सन्तुलन; एहि संग्रहक विलक्षणता ई जे एतऽ बेर-बेर बालके निर्णायक अछि — आस्था, ओम, मंशा, बगियाबला बालक, बत्तू, अनसारीक छोट बेटा। पाँचम, पेरी नोडेलमैनक चित्र-पोथी-सिद्धान्त — प्रत्येक पोथीमे 'चित्र' अंकित पटल (पैनल) कथा-गतिकेँ जे दृश्य-लय दैत अछि, से शब्द आ चित्रक ओही द्वि-वाचनक अंग थिक जकर चर्च नोडेलमैन 'वर्ड्स अबाउट पिक्चर्स'मे करैत छथि। संगहि पीटर हंटक बाल-केन्द्रित पाठ, जे. आर. आर. टॉल्कीनक 'यूकैटास्ट्रफी' (सुखान्तक आकस्मिक कृपा), जैकज़ाइप्सक समाजीकरण-विमर्श आ जॉन स्टीफेन्सक विचारधारा-विश्लेषण यथास्थान आएल अछि।

एकटा तेसर कसौटी सेहो अछि, जे ने विशुद्ध भारतीय थिक ने पाश्चात्य — विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक अपन प्रतिमान: लोकवेदकेँ शास्त्रक बराबरीमे राखब। एहि संग्रहक सभसँ क्रान्तिकारी पक्ष यएह अछि जे एकर नायक-मण्डली मुसहर दीना-भदरी, दुसाध सलहेस आ चूहड़मल, डोम छेछन, धोबि गरीबन, चमार लालमैन, मलाह अमरसिंह आ गांगो, मरर रघुनी — अर्थात् ओ लोकदेवता-पंक्ति थिक जकरा शिष्ट साहित्य शताब्दियो धरि पछुआड़मे रखने छल। बाल-साहित्यक रूपमे एहि गाथा सभक पुनर्कथन मात्र मनोरंजन नहि, वाङ्मयक लोकतन्त्रीकरण थिक — नव पीढ़ीक मानस-मानचित्रपर सुभाषित पंक्तिक संग सुभाषित समाज सेहो अंकित करब।

समीक्षाक क्रम चारि खण्डमे राखल गेल अछि। खण्ड एकमे आधुनिक मौलिक बाल-कथा आ शिक्षण-कथा (समीक्षा १–४); खण्ड दूमे कथा-कथानक, पशुकथा, चातुर्य आ अद्भुत-कथा (समीक्षा ५–१५); खण्ड तीनमे वीर आ प्रेमक लोकगाथा (समीक्षा १६–२६); खण्ड चारिमे भक्ति, लोकदेवता, अनुष्ठान आ कला-गाथा (समीक्षा २७–३७) । प्रत्येक समीक्षामे कथानकक संक्षिप्त दिग्दर्शन, भारतीय दृष्टिसँ रस-औचित्य-विश्लेषण, पाश्चात्य दृष्टिसँ आकृति आ मनोविज्ञान, बाल-उपयुक्तताक परीक्षण, आ अन्तमे संग्रहक आन पोथी सभसँ अन्तर्पाठीय सम्बन्ध — ई पाँच सूत्र निमाहल गेल अछि। पुनरुक्तिसँ बचबाक लेल जे स्थापना एक बेर विस्तारसँ कएल गेल, से आगाँ खाली सन्दर्भ रूपमे आओत। आब समीक्षा आरम्भ।

खण्ड एक: आधुनिक मौलिक बाल-कथा आ शिक्षण-कथा

१. तरहरिमेपरीलोक: धोधरिक ओहि पार मैथिलीक पहिल बाल-डिस्टोपिया

संग्रहक ई उद्घाटन-पोथी अपन शिल्प आ साहसमे सभसँ आधुनिक अछि। बा ओमकेँ खिस्सा सुनबैत छथि — दस बरखक आस्था चन्ना गाछीक झमटगर गाछक धोधरिमे पैसि एकटा उज्जर 'परीलोक'मे खसि पड़ैत अछि, जतऽ अफ्रीकाक टुराकोस चिड़ै, मम्बा साँप, आस्ट्रेलियाक कूकाबुरा, एस्कीमो, पेंग्युइन — आठ महादेशक खसल यात्री भेटैत छथि। ओ लोक ऊपरसँ सुन्नर अछि: सात रंगक कियारी, चिक्कन घर्षण-रहित सड़क, सभ प्राणी मनुक्खक बोली बजैत। मुदा आस्थाक प्रश्न-कुशल आँखि एक-एक कऽ परदा उघारैत जाइत अछि — एतऽ हवा नहि बहैत, पात नहि हिलैत, नागरिकक नामक ठाम नम्बर अछि (वनसप्तो ९९९९५७४५), रानीकेँ ककरो देखने नहि अछि, आ महारक ओहि पार रानीक आदेशसँ कूड़ा फेकि-फेकि एकटा रेगिस्तान रचल गेल अछि। अन्तमे पता चलैत अछि जे परीलोक विक्षिप्त वैज्ञानिक सभक छद्म-राज थिक आ 'अन्हार लोक' कहल गेल रेगिस्तानमे चलनिहार वनस्पतिक राजा सभ समानान्तर सुधार-गृह चला रहल छथि — ओतहि साँस अछि, भूख अछि, हृदय अछि। आस्था सपनाक शक्तिसँ आठो धोधरि बन्द करा घर घुरैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टिसँ ई पोथी तीन परम्पराक संगमपर ठाढ़ अछि। धोधरिमे खसब लुइस कैरलक एलिसक बिलमे खसबाक मैथिली प्रतिध्वनि थिक — भार-हीन खसब, समयक अजीब बहब, ऊपर-नीचाँक लोप। मुदा एलिसक 'नॉनसेन्स' एतऽ क्रमशः लुइस लॉरीक 'द गिवर' सन बाल-डिस्टोपियामे बदलि जाइत अछि: रंगसँ बान्हल श्रम-विभाजन, नामक ठाम संख्या, अदृश्य सत्ता, आसम्पूर्णताक ओहि पार फेकल गेल 'अन्य'। तेसर परम्परा पारिस्थितिक कथा (इको-फिक्शन) क थिक — कूड़ासँ बनल रेगिस्तान आ ओहिमे ह्वेलक पीठ सन ढिमकापर बोन रोपनिहार चलैत गाछ; प्रकृति एतऽ खलनायक नहि, निर्वासित नायक अछि। त्ज़्वेतान तोदोरोवक शब्दावलीमे कथा 'मार्वलस'सँ उठि कऽ अन्तमे व्याख्यात्मक हेराफेरी (परीलोक = वैज्ञानिकक छद्म) द्वारा विज्ञान-कथाक कात लागि जाइत अछि — बाल-पाठक लेल ई विधा-सन्धि अत्यन्त शिक्षाप्रद अछि। निकोलायेवाक एटोनॉर्मेटिविटीक कसौटीपर पोथी असाधारण अंक पबैत अछि: सम्पूर्ण लोकक सभसँ पैघ शक्ति (सपना सत्य होएब) एकटा दस बरखक बचियाक हाथमे अछि, आ ओ

ओकर प्रयोग युद्ध लेल नहि, वार्ता आ द्वार-बन्दी लेल करैत अछि — 'जँ मित्रतासँ गप भऽ जाए, त' झगड़ाक कोन खगता?' ई वाक्य पूरा संग्रहक शान्ति-नीतिक बीज-वाक्य थिक, जकर प्रतिध्वनि बाल गुरु (समीक्षा२) मेओमक क्षमा-वाक्यमे सुनाएत।

भारतीय दृष्टिसँ एतऽ अद्भुत रस प्रधान अछि, मुदा ओकर पाछाँ-पाछाँ शान्तक छाया चलैत अछि — अन्तिम पृष्ठपर बन्द धोधरिक भीतरसँ अबैत 'हल्लुक आवाज' वाला पाँती ध्वनि-सिद्धान्तक उत्कृष्ट उदाहरण थिक: वाच्यार्थ खाली एकटा बन्द दरबज्जा, व्यंग्यार्थ ई जे कोनो प्रश्नक उत्तर सदा लेल नहि मुनाइत अछि। आस्थाक स्टोमेटा-क्लोरोप्लास्टबला वैज्ञानिक जिज्ञासा भारतीय परम्पराक प्रश्नोपनिषदीय शिष्याक आधुनिक रूप थिक — प्रश्न पुछब एतऽ अवज्ञा नहि, विद्या थिक। औचित्य-दृष्टिसँ लेखक डिस्टोपियाक क्रूरताकेँ (संतोला पाँतीक प्रयोगशाला, 'एहने तेज लोकक आवश्यकता'क अशुभ ध्वनि) संकेत धरि राखि बाल-पाठककेँ डर नहि, बेचैनी दैत छथि — आ बेचैनिये चिन्तनक जननी थिक। बा-ओमक उपक्रम-उपसंहार पञ्चतन्त्रक कथामुखकआधुनिकीकरण थिक; ओहि चौखटिक भीतर लालटेनक मिझाएब आ परीलोकक उज्जर अकासक झलफलाएब — दुनूक समान्तरता शिल्पक सूक्ष्मतम स्पर्श थिक। ई चौखटि ऊँटनी (समीक्षा ४) मे फेर खुजत, आ ओम स्वयं बाल गुरुमे नायक बनि प्रकट हएत — संग्रहक स्थापत्यमे ई त्रयी एकटा आन्तरिक वलय बनबैत अछि।

२. बालगुरुः पाँच बरखक क्षमा-दर्शन

दिल्लीक एकटा आवासीय परिसर — तेसर महलापर मिथिला (ओमक घर), सोझाँक ब्लॉकमे पंजाब (मंशाक घर), आ मंशाक देखरेखमे ओड़ीसाक किशोरी महुआ। घासक पार्कमे ओम-मंशाक चारि बरखक दोस्ती, नव आएल सुसेनक किचकिची, 'गन्दा' शब्दक तीर, मंशाक गर्जन — 'ओम हमर दोस छी! जे एकरा गन्दा कहैए, से अपने गन्दा अछि!' — आ फेर ओमक ओ उत्तर जे पोथीक हृदय थिक: 'ओ हमरा नै चिन्हैए। नव आएल अछि। तैँ हमरा गन्दा कहलक। जखन ओ हमरा सभकेँ चीन्हि जाएत, त' थोड़बेक गन्दा कहत।' एतबे कथा — मुदा एहि एतबेमे लेखक बाल-साहित्यक ओ दुर्लभ वस्तु रचि देलनि जकरा यथार्थवादी बाल-कथा (रियलिस्टिक फिक्शन) कहल जाइत अछि: ने परी, ने जादू, ने अतीत — आइयेक महानगर, आइयेक बहुभाषिक भारत।

पाश्चात्य समीक्षा एहि पोथीकेँ 'पीयर एग्रेशन' अर्थात् समवयस्क-उत्पीड़न (बुलीइंग) क साहित्यक कोटिमे राखत, मुदा तुरत ई अन्तर लक्षित करत जे पश्चिमी बुली-कथाक प्रचलित समाधान — वयस्कक हस्तक्षेप वा प्रतिकार — एतऽ दुनू अस्वीकृत अछि। समाधान स्वयं बालक दैत अछि, आ से संज्ञानात्मक पुनर्रचना (कॉग्निटिव रीफ्रेमिंग) क विधिसँ: आक्रामकक व्यवहारक कारण ओकर दुष्टता नहि, अपरिचय थिक। विकास-मनोविज्ञानक भाषामे ई 'थ्योरी ऑफ माइंड'क असाधारण प्रदर्शन थिक — पाँच बरखसँ छोट बालकदोसराक मानसिक अवस्थाक अनुमानसँ अपन प्रतिक्रिया गढ़ैत अछि। निकोलायेवाक दृष्टिसँ एतऽ सत्ता-व्युत्क्रम (पावर रिवर्सल) द्वि-स्तरीय अछि: बालक वयस्ककेँ सिखबैत अछि (माए अपने स्वीकार करैत छथि — 'के गुरु, के चेला?'), आ कथाक नैतिक केन्द्र लिंग-सन्तुलित अछि — ओम क्षमाक गुरु, त' मंशा साहसक; लेखक स्पष्ट कहैत छथि, 'एक गुरु क्षमाक, एक गुरु साहसक। दुनू मिलि कऽ पूरा पाठ।' ई सन्तुलन ज़ाइप्सक ओहि चेतौनीक उत्तर थिक जे बाल-साहित्य प्रायः धैर्य बालिकाकेँ आ पराक्रम बालककेँ बाँटि दैत अछि — एतऽ उनटा भेल अछि।

भारतीय दृष्टिसँ ई कथा क्षमा-वीरताक कथा थिक — 'क्षमा वीरस्य भूषणम्'क बाल-भाष्य। रस-दृष्टिसँ वात्सल्य प्रधान अछि, मुदा ओकर तीन धारा बहैत अछि: जन्म देनिहारि माए, पोसनिहारि महुआ, आ सिखनिहारि माए — 'तीन टा माए छलीह ओहि साँझ ओतय।'महुआक चरित्र संग्रहक सभसँ सूक्ष्म सामाजिक टिप्पणी थिक: ओ अपने बच्चा अछि आ बच्चाक देखरेख करैत अछि; ओकर अपूर्ण ओड़िआ गीत — 'गामक नाम लइते गीतक गरा भरि आएल हो' — प्रवासी बाल-श्रमक करुणाकेँ बिनु भाषण देने कथामे गुहि दैत अछि, आ अन्तमे 'जतय केओ नामसँ चिन्हैत अछि, ओतय गीतक गरा नहि भरैत छै' ई पाँती चीन्हबक ओही दर्शनकेँ महुआ धरि पसारि दैत अछि जे ओम सुसेन लेल कहने छल। अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ ओमक ई क्षमा-सूत्र तरहरिमे परीलोकक आस्थाक वार्ता-सूत्रक जोड़ा थिक, आ संग्रहक लोकगाथा-खण्डसँ एकर विरोधाभासी संवाद रोचक अछि — दीना-भदरी (१६) आ मीरांसाहेब (२३) मे अपमान आ हत्याक उत्तर प्रतिशोधसँ भेटैत अछि; बाल गुरु ओही परम्पराक भीतरसँ एकटा वैकल्पिक नीति प्रस्तावित करैत अछि। लेखक दुनूकेँ बिनु निर्णय सुनौनेआमने-सामने राखि दैत छथि — ई संग्रहक आन्तरिक द्वन्द्वात्मकता थिक, जकर चर्च उपसंहारमे हएत।

३. वर्णमालाशिक्षाः अंकिता — अक्षर-यात्राक अभिनव प्रयोग

ई पोथी संग्रहक एकमात्र विशुद्ध शिक्षण-कथा (डाइडैक्टिक टेक्स्ट) थिक आ अपन घोषित उद्देश्यमे पारदर्शी अछि: अंकिता आ हुनक पिताक एक साँझक पद-यात्रा, जाहिमे प्रत्येक अध्याय मैथिली वर्णमालाक एक-एक वर्गक शब्दसँ गुहल अछि — अ-वर्णक

'अकादारुण', 'अकच्छ', 'अगिनवान', 'अक्खज'सँ शुरू भऽ क-वर्गक 'ओगरबाह', 'कड़ेकमान', 'कदबा', 'कमरसारि' होइत य-हक 'रजनी', 'लस्सा', 'हर्ष' धरि; प्रत्येक अध्यायक अन्तमे प्रश्नोत्तर।

पाश्चात्य शिक्षाशास्त्रक इतिहासमे एकर कुल-गोत्र 'एबीसीडेरियम' (वर्णमाला-पोथी) परम्परासँ मिलैत अछि — कॉमेनियसक 'ऑर्बिस पिक्टस'सँ लऽ कऽ आधुनिक अल्फाबेट-बुक धरि। मुदा एतऽ दूटा मौलिकता अछि। पहिल, वर्ण एतऽ चित्र-सूचीमे नहि, कथा-प्रवाहमे अछि — शब्द सन्दर्भमे भेटैत अछि, आ से आधुनिक भाषा-अर्जन-सिद्धान्तक ओहि स्थापनाक अनुकूल थिक जे शब्द-भण्डार सूचीसँ नहि, प्रसंगसँ बनैत अछि। दोसर, अध्यायान्तक प्रश्नोत्तर भाइगोत्स्कीक 'निकटस्थ विकास-क्षेत्र'क व्यावहारिक रूप थिक — बच्चा जे एखने कथामे सुनलक, तकरे तुरत प्रश्न-रूपमे घुरा कऽ स्मृति-स्थिरीकरण; आ लेखकक शिक्षक-टिप्पणी ('खिस्सा कतेक बेर सुनाओल जाए, से बच्चाक क्षमताक हिसाबसँ') वैयक्तिक गतिक ओहि सिद्धान्तकेँ स्वीकारैत अछि जकरा आजुक भाषामे 'डिफरेन्शिएटेड इन्स्ट्रक्शन' कहल जाइत अछि। सभसँ मूल्यवान बात ई जे शब्द-चयन आधुनिक मानकीकृत हिन्दी-छाया शब्द नहि, ठेठ मैथिली लोक-शब्द अछि — 'उड़कुस्सी', 'उकापतङ्ग','टाभनेबोक', 'डिहबार' — अर्थात् वर्णमालाक बहन्ने ई पोथी लुप्त होइत शब्द-सम्पदाक संरक्षण-कोश सेहो थिक। भाषा-मृत्युक युगमे अल्पसंख्यक भाषाक बाल-प्राइमर मात्र शिक्षण नहि, प्रतिरोध थिक — ज़ाइप्स जकरा साहित्यक 'सामाजिकीकरण-कार्य' कहैत छथि, से एतऽ भाषिक अस्तित्व-रक्षाक स्तरपर घटित अछि।

भारतीय दृष्टिसँ ई पोथी अक्षराभ्यास-संस्कारक कथात्मक रूप थिक; उपक्रममे 'अक्षरमुष्टिका'क जे बिम्ब तरहरिमे परीलोकक बामे आएल छल — बाक झुर्रीबला आंगुरक भीतर ओमक नान्हि आंगुर, 'जेना कलमक भीतर सियाही' — तकर व्यवस्थित पाठ्यक्रम यएह पोथी थिक; दुनूकेँ मिला कऽ पढ़ला पर बुझाइत अछि जे संग्रहमे अक्षर-दीक्षा स्नेह-दीक्षाक अंग थिक। रस-दृष्टिसँ एतऽ वात्सल्यक अत्यन्त घरेलू रूप अछि — थाकल पएर, लालछड़ीक जिद, 'टटका रोटी'क आश्वासन; आ पिताक ई उत्तर जे 'तेज चलल छलहुँ, जइसँ तूँ जल्दी पहुँचिआराम करितह' — अनुशासनक पाछाँ नुकाएल स्नेहक ई उद्घाटन बालक-पाठककेँ माता-पिताक 'कठोरता' पढ़बाक नव चश्मा दैत अछि। सीमा सेहो लक्षित हो: अध्याय-क्रमांकनमे किछु दोहराव (अध्याय ३ दू ठाम) आ उत्तरवर्ती वर्गक संक्षिप्तता सूचित करैत अछि जे ई प्रयोग एखन बीजरूप अछि — लेखक अपनहि शिक्षक-टिप्पणीमे एकरा आगाँ बढ़एबाक निमन्त्रण अभिभावक-शिक्षककेँ देने छथि। संग्रह-स्थापत्यमे ई पोथी सेतु थिक: एम्हर आधुनिक कथा, ओम्हर लोक-शब्दक ओ कोश जकर जीवन्त प्रयोग आगाँक लोकगाथा-खण्डमे भेटत।

४. ऊँटनीः नकलक नोक्सान आ हास्यक अनुशासन

बा-ओमक चौखटि फेर खुजैत अछि — ओमक फरमाइश एहि बेर स्पष्ट अछि: 'हास्यबला खिस्सा चाही, डरौना नहि!' आ बा हरियाणाक खेतसँ खिस्सा उठबैत छथि: ऊँटनीक गरदनिमे जालक पात अँटकल, बटोही चारि प्रश्न पुछि गरदनिपर हाथ मारि पात खसा देलक, आ 'हम डॉक्टर छी' कहि बिदा भेल। किसान बुझलक जे डॉक्टरी एतबे थिक — आ गाम-गाम 'हम डॉक्टर छी' चिकरैत एकटा बिमार बुढ़ीपर वैह प्रश्नावली ('बुढ़ी दहिना कात गेल छलीह की?... जालक पातपर मुँह मारने रहथिन् की?') आ वैह हाथ-प्रहार आजमओलक — बुढ़ीक प्राण गेल। लहास कान्ह देबऽ पड़ल, फीस माँगलक त' मारि खएलक — आ दोसर गाममे ओकर 'सीख' एतबे: 'इलाज त' कऽ देबन्हि, मुदा लहासकेँ कान्ह हम नहि देब!'

कथा-प्ररूप-विज्ञानक दृष्टिसँ ई विश्वप्रसिद्ध मूर्ख-नकलची (फूलिश इमिटेशन) वर्गक कथा थिक — जर्मन 'डॉक्टर नो-ऑल'सँ लऽ कऽ भारतीय नकलची-गीदड़ धरि पसरल ओ परिवार जाहिमे सफलताक बाह्य रूपक नकल भीतरक विद्या बिनु कएल जाइत अछि। हेनरी बर्गसाँक हास्य-सिद्धान्त एतऽ पाठ्य-पुस्तक जकाँ लागू होइत अछि: हास्य ओतऽ जनमैत अछि जतऽ जीवित विवेकक ठाम यान्त्रिक दोहराव बैसि जाइत अछि — किसान प्रश्नावलीकेँ यन्त्रवत् दोहरबैत अछि, सन्दर्भ बदलि गेल तकर सुधि नहि। मुदा लेखकक साहस ई जे ओ हास्यकेँ बीचहिमे मृत्युसँ टकरा दैत छथि — बुढ़ीक प्राणान्त हास्य-कथाक भीतर एकटा ठण्ढा झोंका थिक, आ यएह एकरा सामान्य हँसौना कथासँ ऊपर उठा 'डार्क कॉमेडी'क बाल-संस्करण बनबैत अछि। बेटेलहाइमक तर्कसँ ई मृत्यु अनुचित नहि — बच्चाकेँ ई बुझब जरूरी छै जे मूर्खता निर्दोष नहि होइत, ओकर मूल्य दोसरो चुकबैत अछि। औचित्य-दृष्टिसँ लेखक मृत्यु-दृश्यकेँ एक्कहि वाक्यमे निपटा ('बुढ़ीक प्राण ओतहि निकलि गेलनि') शोक-विस्तारसँ बचैत छथि — बाल-संस्करणक ओ संयम जे संग्रहमे बेर-बेर देखाएत (अमर बाबा, समीक्षा २४; बगियाक गाछ, समीक्षा ५)।

एहि पोथीक असल चमत्कार चौखटिमे अछि। कथा समाप्त भेला पर बा नीति स्पष्ट करैत छथि ('कोनो काज सीखबासँ पहिने ओकर मर्म बुझब आवश्यक, खाली देखा-देखी नहि') — ई पञ्चतन्त्र-शैलीक कथामुख-नीति थिक। मुदा तकर बाद जे होइत अछि से नीति-कथासँ आगाँक वस्तु थिक: ओम पुछैत अछि जे 'अपना दिसुका खिस्सा' की, आ बा उत्तर टारि दैत छथि — 'हमरा भेल जे अहाँकेँ त'

अबिते हएत, से नहि कहलहुँ!' कथा अपन अपूर्णताक संग बन्द होइत अछि, आ बालक हँसैत-हँसैत सुतैत अछि। नोडेलमैन जकरा बाल-साहित्यक 'हिडेन एडल्ट' कहैत छथि — पाठक-बालकक पाछाँ ठाढ़ ओ वयस्क जे कथाक चयन आ छँटाइ करैत अछि — से एतऽ स्वयं पात्र बनि कऽ प्रकट अछि: बा अपने ओ सम्पादिका छथि जे की कहब आ की छोड़ब तय करैत छथि। संग्रह-स्थापत्यमे ई पोथी तरहरिमे परीलोकक जोड़ा थिक — ओतऽ बा अद्भुतक द्वार खोलने छलीह, एतऽ हास्यक; आदुनूक बीच ओहि नकली डॉक्टरक कथा गोनू झा आ दस ठोप बाबा (समीक्षा ११) क ढोंगी बाबासँ सोझे संवाद करैत अछि — ओतऽ नकली विद्वताकेँ असली बुद्धि बेनकाब करैत अछि, एतऽ नकली विद्या अपने अपन भण्डाफोड़ थिक। दुनू मिला कऽ संग्रहक 'प्रामाणिकता-पाठ' पूर्ण होइत अछि: विद्या देखौआसँ नहि, मर्मसँ अबैत अछि।

खण्ड दू: कथा-कथानक, पशुकथा, चातुर्य आ अद्‌भुत-कथा

५. बगियाकगाछः चातुर्य-कथाक व्याकरण आ ओकर अन्हार कोन

मसोमातक बुधियार बेटा बगिया रोपैत अछि, अभूतपूर्व बगियाक गाछ जनमैत अछि, आ ओही गाछपर डाइन बुढ़ियाक नजरि पड़ैत अछि। 'हथाइन', 'मथाइन', 'खौँछाइन'क तीन बहन्नासँ झुकाओल बालक बोरामे बन्द होइत अछि, निन्न पड़ला पर माटि-पाथर-काँट भरि पड़ाइत अछि, दोसर बेर भेष-बदललि डाइनक सप्पतसँ ठकाइत अछि, आ अन्तमे डाइनक बेटीकेँ ऊखड़ि-समाठक छलमे फँसा अपन प्राण बचबैत अछि; बिलाड़िक 'अपन धीया अपने खाँऊ' वाला चेतौनीसँ भेद खुजैत अछि आ डाइनक कुकर्म ओकरे माथ पड़ैत अछि।

ई कथा विश्व-कथा-प्ररूपक ओहि सुपरिचित वर्गक मैथिली सदस्य थिक जाहिमे डाइन बालककेँ बोरा/झोरामे भरि घर लऽ जाइत अछि आ बालक बेर-बेर चातुर्यसँ बहराइत अछि (ए. टी. यू. ३२७-परिवार, विशेषतः ३२७सी) । प्रॉपक प्रकार्य-श्रृंखला एतऽ निर्दोष स्पष्टतासँ घटित अछि: निषेध (माए ठगसँ सचेत रहबाक कहने छथि) — निषेध-भंग (बालक सप्पतपर पतिया जाइत अछि) — अपहरण — प्रत्युक्ति — दण्ड। बेटेलहाइमक विश्लेषण एहि वर्गक कथाकेँ बालकक 'निगलल जएबाक' आदिम भयक नाट्यीकरण मानैत अछि — डाइनक 'मसुआइ'क लालसा ओही भयक मूर्त रूप थिक, आ बालकक बेर-बेरक पलायन ओहि भयपर बुद्धिक विजयक पूर्वाभ्यास। एतऽ ध्यान देबऽ जोग अछि जे बालक दू बेर ठकाइत अछि — लेखक चातुर्यकेँ अचूक नहि देखबैत छथि; भूल, पुनः-भूल, आ तखन सीख — ई त्रुटि-सहिष्णु अधिगम-वक्र (लर्निंग कर्व) बाल-मनोविज्ञानक दृष्टिसँ आदर्श अछि, कारण ओ पाठककेँ पूर्णताक नहि, सजगताक पाठ दैत अछि।

औचित्य-विचारक कसौटीपर ई पोथी संग्रहक सम्पादकीय नीतिक घोषणापत्र थिक। अध्याय आठक ओहि क्षणपर, जतऽ बालक डाइनक बेटीक संग जे करैत अछि से लोककथाक मूल पाठमे नृशंस अछि, लेखक स्पष्ट लिखैत छथि — 'ई गाथाक सभसँ अन्हार क्षण छल, जकर विस्तार गाथा नहि करत'; आ दसम अध्यायमे फेर — 'गाथा एहि दुखद घटनाक विस्तृत वर्णन नहि करत।' ई 'कथा-संवरण' (नैरेटिव एवर्ज़न) क तकनीक थिक: घटना अस्वीकृत नहि, अवर्णित; बालक-पाठक जनैत अछि जे किछु भयंकर भेल, मुदा ओकर चित्र ओकर कल्पनापर छोड़ल गेल — आ कल्पना सदिखन अपन वहन-क्षमता भरिये चित्र बनबैत अछि। बेटेलहाइम आ आधुनिक 'सैनिटाइजेशन'-विरोधी आलोचनाक बीचक ई मध्यमार्ग संग्रह भरिमे लेखकक हस्ताक्षर-तकनीक थिक (मिलाउ: अमर बाबा २४, मोतीसाएरि २६, ऊँटनी ४) । रस-दृष्टिसँ हास्य आ भयानकक ओ मिश्रण, जकरा उपशीर्षक अपने 'हास्य-रोमांचक' कहैत अछि, डाइनक माथपर 'लघुशंका'बला प्रसंगमे चरमपर अछि — डर हँसीमे विरेचित होइत अछि, आ यएह बाल-कथामे भयानक रसक शास्त्रसम्मत उपचार थिक। अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ बालकक गोनू-गोत्र लेखक स्वयं घोषित करैत छथि ('बालक तँ छल गोनू झाक मूल-गोत्रेक') — गोनू झा (११) एकर वयस्क रूप थिक, बत्तू (६) एकर पशु-रूप, आ मूर्खाधिराज (९) एकर व्यतिरेकी छाया: ओतऽ देखब जे बुद्धिक ठाम नकल बैसला पर यएह कथा-व्याकरण केहन उनटि जाइत अछि।

६. बत्तूः निर्बलक वाक्-शक्ति

दुर्गापूजाक बलिसँ बचबाक लेल माए-बकड़ीक चेतौनीपर चारि मासक छागर राता-राती बोन पड़ाइत अछि, दू-तीनबरखमे झमटगर दाढ़ी-सींगबला बत्तू बनैत अछि, आ बाघसँ आमने-सामने भेला पर काव्यात्मक डींगसँ ('सिंह खेलहुँ सात... जहिया दस बाघ नञि होए, तहिया परहुँ ठक दऽ उपास') ओकरा भगा दैत अछि। सियार बाघकेँ पएर बान्हि घुरा अनैत अछि, त' बत्तू अन्तिम ब्रह्मास्त्र चलबैत अछि — 'तोरा दू टा बाघ आनए लेल कहलियहु, आ तों एकेटा अनलह?' — बाघ भागल, आ बान्हल सियार घिसिया कऽ मरल।

ई कथा भारतीय पशु-कथा-परम्पराक ओहि प्राचीन प्ररूपक थिक जाहिमे दुर्बल पशु वाणीक बलेँ हिंस्र पशुकेँ जीतैत अछि — पञ्चतन्त्रक ओ शृगाल-सिंह-कथा-कुल जकर विश्व-रूप 'द ब्रेव लिटल टेलर'सँ लऽ कऽ तिब्बती-भारतीय 'बाघ आ बकरी' कथा धरि

पसरल अछि। एकर केन्द्रीय दार्शनिक प्रस्ताव बाल-पाठक लेल क्रान्तिकारी अछि: वास्तविकता ओतबे नहि होइत जतबा देह, वास्तविकताक एकटा तल भाषासँ रचल जाइत अछि। बाघ बत्तूक देह नहि, बत्तूक वाक्य देखि कऽ भागैत अछि — आधुनिक भाषा-दर्शन जकरा 'परफॉर्मेटिव अटरन्स' कहत, से एतऽ बोनक बीच घटित अछि। संगहि लेखक सावधान छथि जे डींगक ई शक्ति अनैतिक नहि बुझाए — बत्तूक झूठ आत्मरक्षाक झूठ थिक, आ कथाक दण्ड-व्यवस्था स्पष्ट अछि: दण्ड बाघकेँ नहि, सियारकेँ भेटैत अछि, कारण छल ओकर आक्रामक छल; बत्तूक छल रक्षात्मक। 'सियार अपनहि चतुराइक शिकार' — ई काव्य-न्याय (पोएटिक जस्टिस) कथाक नैतिक रीढ़ थिक।

रस-दृष्टिसँ एतऽ वीर आ हास्यक ओ दुर्लभ मिश्रण अछि जकरा 'वाग्वीरता' कहल जा सकैत अछि। बेटेलहाइमक पाठ आर गहींर: कथाक आरम्भमे बलिक जे छाया अछि — घरक वयस्क अपने बच्चाकेँ बेचबाक सौदा कऽ रहल छथि — से बालकक ओहि गहींरतम भयकेँ छूबि लैत अछि जे 'हमर रक्षक अपने हमरा त्यागि त' नहि देत?'आ कथाक उत्तर द्वि-स्तरीय अछि: माए चेतबैत छथि (मातृ-रक्षा), मुदा बाँचब बच्चाकेँ अपने पड़ैत छै (आत्म-सामर्थ्य) । घरसँ बोन, बोनसँ आत्मनिर्भरता — ई निर्वासन-सँ-परिपक्वताक चाप (आर्क) पाश्चात्य 'कमिंग ऑफ एज' ढाँचाक विशुद्ध लोक-संस्करण थिक। अन्तर्पाठीयता: दुर्गापूजाक बलि-प्रथाक जे प्रश्न एतऽ बालकक आँखिसँ उठल अछि, से गरीबन बाबा (२८) आ मोतीदाइ (२७) क देव-मनुष्य-सम्बन्धक प्रश्नक लघु-पूर्वाभ्यास थिक; आ बत्तूक 'दू बाघ'बला चालि गोनू झाक 'ओतेक टाक बाँस राखब कतय?' (११) सन प्रश्न-अस्त्रक पशु-कथा-रूप — दुनूमे विजय सूचनाक नहि, सूचना-प्रबन्धनक होइत अछि।

७. कौवा आफुद्दी: शृंखला-कथाक करुण अन्त

दुर्भिक्षमे कौआ आ फुद्दी अपन-अपन बच्चा खएबाक निर्णय करैत अछि; कौआक बच्चा खाएल गेल, मुदा अपन बेर अएला पर धूर्त फुद्दी कौआकेँ गंगामे ठोर धोबऽ पठा दैत अछि। गंगा चुक्का माँगैत छथि, कुम्हार माटि, खेत हिरणक सींग, हिरण सिंह, सिंह गाएक दूध, गाए घास, घास हँसुआ — आ लोहार लग पहुँचि कौआ अपन पूरा शृंखला गीतमे गाबि दैत अछि। लोहार कारी आ लाल दू हँसुआ देखबैत अछि; कौआ ललका — धीपल — हँसुआ लोलमे दबबिते छरपटा कऽ मरि जाइत अछि।

ई पोथी संग्रहक विधा-वैविध्यक प्रमाण-पत्र थिक: ई शुद्ध शृंखला-कथा (क्युमुलेटिव टेल, ए. टी. यू. २०३०-वर्ग) थिक — ओ विश्वव्यापी बाल-विधा जाहिमे 'दिस इज़ द हाउस दैट जैक बिल्ट' सन कथा प्रत्येक कड़ीपर पिछला सभटा कड़ी दोहरबैत अछि। एकर शिक्षाशास्त्रीय मूल्य सर्वविदित अछि: दोहराव स्मृति-प्रशिक्षण थिक, बढ़ैत सूची क्रम-बोधक अभ्यास, आ कौआक अन्तिम गीत ('हेलोहार भाए, दिअ हाँसू, काटब घास, खुआयब गाय...') बालक-श्रोताक संग सामूहिक वाचनक निमन्त्रण — मौखिक परम्पराक ओ सहभागी क्षण जकरा लिखित पाठ सेहो सुरक्षित रखने अछि। मुदा लेखक एहि प्रफुल्ल विधाक भीतर दूटा गम्भीर वस्तु राखि देने छथि। पहिल, आरम्भक दुर्भिक्ष-प्रसंग — अपन बच्चा खएबाक निर्णय — लोककथाक ओ निर्मम यथार्थ थिक जकरा लेखक बिनु मोलायम केने एक्कहि अनुच्छेदमे राखि आगाँ बढ़ि जाइत छथि; अकालक स्मृति मिथिलाक सामूहिक स्मृतिक अंग थिक (मिलाउ: रघुनी मरर ३२ आ माधव सिंह ३७, जतऽ अकाल कथाक चालक-शक्ति थिक), आ बाल-पाठक धरि ओकर एकटा प्रतिध्वनि पहुँचब इतिहास-बोधक आरम्भ थिक। दोसर, अन्तक आकस्मिक मृत्यु — टॉल्कीनक 'यूकैटास्ट्रफी'क ठीक उनटा, जकरा 'डिस्कैटास्ट्रफी' कहल जा सकैत अछि: एतेक नमहरपरिश्रम-शृंखला एक्कहि गलत चुनाव (ललका हँसुआ) सँ शून्य भऽ गेल।

एतऽ समीक्षककेँ ईमानदार प्रश्न उठाबऽ पड़त: की ई अन्त बाल-पाठक लेल बड्ड कठोर नहि? लेखकक अपन उत्तर उपसंहार-अध्यायमे अछि — कथा 'बच्चाकेँ हँसाबैत अछि, आ संगहि सोचबाक लेल विवश करैत अछि।' बेटेलहाइमक पक्षसँ जोड़ी त' उत्तर आर पुष्ट होइत अछि: कौआक मृत्युक असल कारण लोभ नहि, अविवेकी आज्ञापालन थिक — ओ हर शर्त बिनु प्रश्नक मानैत गेल; आ फुद्दीक 'विजय' सेहो विजय नहि — ओकर धूर्तताक दाम ओकर सखीक प्राण भेल। कथा दुनू अतिकेँ — अन्ध-सरलता आ धूर्तता — कठघरामे ठाढ़ करैत अछि, आ मध्यमार्ग (सजग सरलता) अनकहल छोड़ि दैत अछि, जे बालक-पाठकक अपन निष्कर्ष लेल जगह थिक। अन्तर्पाठीयता: फुद्दीक 'शुद्धिकरण'क बहन्ना (गंगामे ठोर धोअब) संग्रहक भक्ति-खण्डक गंगा-महिमा (बड़ सुखसार, ३४) क विडम्बनापूर्ण पूर्व-छाया थिक — ओतऽ गंगा मोक्ष दैत छथि, एतऽ गंगाक बाट मृत्यु धरि जाइत अछि; पवित्रताक भाषा जखन छलक हाथमे पड़ैत अछि तखन कतऽ पहुँचबैत अछि, ई ओकर मार्मिक प्रदर्शन थिक।

८. डोकीडोका: विरह-यात्राक लोक-रूपक

डोका-डोकीक अतिशयोक्त प्रेमसँ (तरेगण आनबमे सेकेण्डक देरी क्षम्य, मिनटक नहि) सियार-सियारिनकेँ डाह होइत अछि; सियार डोकीक मोनमे शंका रोपि दैत अछि ('लागय-ए जे ओकर मोन ककरो आन पर छै'), डोका बोन गेल आ घुरल नहि। जोगीक

भविष्यवाणी — पूर्व जन्मक शराप, विश्वास छोड़ब त' डोका हेराएत, मुदा सातम दिन भेटत — आ तखन डोकीक खोज-यात्रा: बगुला, सियरबा, वटवृक्ष, हाथी सभक 'एक राति रुकि जाउ'क निमन्त्रण अस्वीकारैत ओ मूसक संग जाइत अछि, जे खिस्सा सुनबैत महल लऽ जाइत अछि। खिस्सा बिसराइत अछि, सुरंग टपाइत अछि, आ सातम रातिमे हलुआक लोहियामे मुँह दऽ मूस मरि जाइत अछि; डोकीक शोक-गीतक बीच दरबज्जा खुजैत अछि — कुरहड़ि नेने डोका ठाढ़।

ई छोट पोथी संग्रहक सभसँ स्वप्न-सदृश (ड्रीमलाइक) रचना थिक, आ एकर समीक्षा यथार्थक तर्कसँ नहि, स्वप्न-तर्कसँ करब उचित। पाश्चात्य कथा-शास्त्रमे एकर निकटतम बन्धु ओ 'खोज-यात्रा' (क्वेस्ट) संरचना थिक जाहिमे बाधा सभ भौतिक नहि, प्रलोभनात्मक होइत अछि — प्रत्येक 'रुकि जाउ' एकटा परीक्षा थिक, आ डोकीक शोक-गीत ('बगुला छोड़ल सियरबा छोड़ल, छोड़ल वटक वृक्ष, हाथी सन बलगर, पकड़ल ई मूस') ओहि परीक्षा-शृंखलाक काव्यात्मक लेखा-जोखा। एतऽ एकटा सूक्ष्म आ साहसी चुनाव लक्षित हो: डोकी बलगर हाथीकेँ छोड़ि दुर्बल मूसकेँ संगी चुनैत अछि — खोज-कथाकव्याकरणमे सहायक (हेल्पर) क चुनाव नायकक चरित्रक कसौटी थिक, आ डोकीक ई चुनाव बल-पूजाक विरुद्ध विनम्र-संगतिक पक्षमे अछि; ओकर करुण विडम्बना ई जे वैह विनम्र संगी लोभक एक क्षणमे चलि जाइत अछि। मूसक खिस्सा-सुनएबाक शर्त ('बीच-बीचमे हँ कहैत रहब') मौखिक कथा-परम्पराक श्रोता-धर्मक कथा-भीतर-कथा रूपेँ स्मारक थिक — हुंकारी भरब मिथिलाक खिस्सा-संस्कृतिक प्राण थिक, आ ओकर बिसराएब कथाक बिसराएब बनि जाइत अछि: ई आत्म-सन्दर्भी (मेटाफिक्शनल) क्षण बाल-पाठककेँ अनजाने ई सिखबैत अछि जे कथा वक्ता आ श्रोता दुनूक साझा रचना थिक।

भारतीय दृष्टिसँ ई विप्रलम्भ शृंगारक बाल-सुलभ रूपान्तर थिक — प्रेमक वियोग-पक्ष, जकरा लोक-परम्परा बारहमासा आ विरह-गीतमे गबैत अछि, से एतऽ पशु-रूपकमे उतरल अछि, आ रूपक ओकरा बालक लेल सह्य बना दैत अछि। सियारक ईर्ष्या-बीज संग्रहक एकटाआवर्ती आकृति थिक — मिलाउ: पृथ्वीपालक कान-भराइ (मूँगा आ जालिम सिंह, १९), चौधरीक डाह (रघुनी मरर, ३२), तालुकदारक असूया (राजा सलहेस, १७) — लेखक बेर-बेर देखबैत छथि जे सम्बन्ध-भंगक पहिल औजार हथियार नहि, अफवाह होइत अछि। आ 'सातम राति'क संख्या-रहस्य लोककथाक ओहि काल-गणितक अंग थिक जे प्रतीक्षाकेँ नापल जा सकैत बनबैत अछि — बालक लेल अनन्त प्रतीक्षा असह्य, मुदा सात रातिक प्रतीक्षा एकटा खेल; एहि तरहेँ कथा धैर्यक शिक्षा दैत अछि बिनु धैर्यक उपदेश देने।

१. मूर्खाधिराजः उनटल चातुर्य-कथा, आ हास्यक सामाजिक व्याकरण

गोपालकक महामूर्ख बेटा — जे अपन बियाहो बिसरि गेल — बाक आदेशपर कनियाँक गौना करबऽ बिदा होइत अछि। मुरही उड़ैत अछि त' 'आऊ, उड़ि जाऊ' कहैत अछि आ चिड़ीमारसँ पिटाइत अछि; सिखल वाक्य 'आबि जो, फँसि जो' चोरक कानमे, 'एहन सभ घरमे होए' श्मशानमे, 'एहन कोनो घरमे नहि होए' बरातमे — प्रत्येक ठाम पिटान, प्रत्येक ठाम नव वाक्य, आ अन्तमे अन्तिम सीख: 'किछु नहि बाजू।' मौन जमाए सासुरसँ कनियाँ नेने घुरैत अछि; घामसँ सिन्दूर धोखराइत अछि त' 'भँगलाहा कपार' बुझि हजामक बकरीसँ कनियाँ बदलि लैत अछि, बकरीसँ कदीमा — आ बाक विलापक बीच 'कदीमाक तरकारी बना कऽ राखू' कहि खेलाए चलि जाइत अछि।

ई कथा अन्तर्राष्ट्रीय मूर्ख-कथा-प्ररूप ए. टी. यू. १६९६ ('व्हाट शुड आइ हैव सेड?') क लगभग विशुद्ध मैथिली पाठ थिक — ओ विश्वव्यापी ढाँचा जाहिमे मूर्ख प्रत्येक स्थितिमे पिछला स्थितिक वाक्य बजैत अछि। बर्गसाँक हास्य-सिद्धान्त एतऽ अपन शुद्धतम रूपमे अछि: भाषा, जे सन्दर्भ-सापेक्ष जीवित वस्तु थिक, मूर्खक हाथमे सन्दर्भ-निरपेक्ष यन्त्र बनि जाइत अछि — आ समाज ओहि यन्त्रताकेँ पिटानसँ 'सुधारऽ' चाहैत अछि, मुदा प्रत्येक सुधार नव यन्त्रता जनमबैत अछि। एहि अर्थमे ई कथा भाषा-दर्शनक बाल-प्रयोगशाला थिक: बालक-पाठक हँसैत-हँसैत सीखि जाइत अछि जे शब्दक अर्थ शब्दमे नहि, अवसरमे बसैत अछि — व्यवहारिक भाषा-विज्ञान (प्रैग्मैटिक्स) क एहिसँ सरस पाठ्यपुस्तक कठिन। ई बगियाक गाछ (५) आ बत्तू (६) क ठीक व्यतिरेक थिक — ओतऽ नायक सन्दर्भ पढ़ि कऽ भाषा गढ़ैत अछि, एतऽ नायक भाषा रटि कऽ सन्दर्भसँ टकराइत अछि; तीनू मिला कऽ संग्रहक वाक्-शिक्षाक पूर्ण पाठ्यक्रम बनैत अछि।

मुदा हास्यक तरमे एकटा असुविधाजनक तह अछि जकरा समीक्षा अनदेखा नहि करत: कनियाँ-बकरी-कदीमाक विनिमय-शृंखला। हास्य-प्ररूपक भीतर ई स्त्रीक वस्तुकरणक चित्र सेहो थिक — आ लेखकक बचाव ई जे कथा मूर्खक दृष्टिकोणसँ कहल गेल अछि आ ओकर प्रत्येक विनिमय ओकर मूर्खताक अभियोग-पत्रमे नव धारा जोड़ैत अछि; बाक माथ-पीटब पाठकक नैतिक प्रतिक्रियाक कथा-भीतर प्रतिनिधि थिक। तइयो, वयस्क मध्यस्थ (शिक्षक-अभिभावक) लेल ई पोथी चर्चाक अवसर थिक, दंश-रहित हँसीक नहि — आ

सएह एकर शक्ति थिक; जॉन स्टीफेन्स जकरा कथाक 'विचारधारात्मक अन्तराल' कहैत छथि, से एतऽ जानि-बुझि खुजल छोड़ल अछि। रस-दृष्टिसँ ई विशुद्ध हास्यक पोथी थिक, मुदा अन्तिम दृश्यक बाक विलाप हास्यमे करुणक ओ बूँद टपका दैत अछि जे मैथिली हास्य-परम्पराक (हरिमोहन झाक स्मृति सहज अछि) विशिष्ट स्वाद थिक — हँसी, जकर कोरमे कनी नोर।

१०. भाट-भाटिनः प्रहेलिका, विश्वासघात आ बहिनक बुद्धि

भाटिन मणिधारी गहुमनसँ गुप्त प्रेम करैत अछि — साँपकेँ नीक निकुत, पतिकेँ बसिया-खोसिया; आ अन्तमे साँपकेँ पतिक वधक आदेश। पनहीमे नुकाएल साँप झारला पर खसैत अछि आ भाटक हाथे मरैत अछि। भाटिन शोकमे साँपक नौ टुकड़ी कऽ खाट-मचिया-तेल-नून-डाँर-खोपामे नुका प्राणघातक प्रहेलिका रचैत अछि — उत्तर नहि त' 'भकसी झोंका कऽ' मृत्यु। भाट दू दिनक मोहलतिपर बहिन लग जाइत अछि; धर्मशालामे दीप सभ रातिमे गप करैत भेद खोलि दैत अछि, आ बहिन प्रति-शर्त राखि प्रहेलिका फोड़ि भाटिनकेँ ओकरे रचल दण्ड दैत अछि।

ई कथा विश्व-लोककथाक दू प्राचीन धाराक संगम थिक: सर्प-प्रेमी स्त्रीक कथा-वर्ग आ प्राणघातक प्रहेलिका (नेक रिडल) क कथा-वर्ग, जाहिमे पहेलीक उत्तरपर जीवन टँगल रहैत अछि। प्रहेलिका-कथाक मनोविज्ञान बाल-साहित्यमे विशेष मूल्यवान अछि: पहेली ज्ञानक नाटकीयकरण थिक— जे जनैत अछि से जीबैत अछि; आ एतऽ ज्ञानक स्रोत अलौकिक श्रवण (दीप-संवाद) थिक, जे लोककथाक ओहि गहींर विश्वासकेँ कहैत अछि जे सत्य कतहु ने कतहु बाजल जाइत रहैत अछि — सुननिहार चाही। दीपक गप करब मैथिली घर-आँगनक ओहि जीवित वस्तु-लोकक अंग थिक जतऽ चूल्हि, ढेकी, दीप सभक अपन प्राण मानल जाइत अछि; बाल-पाठक लेल ई सजीवतावादी (एनिमिस्टिक) कल्पना पियाजे-वर्णित बाल-चिन्तनक स्वाभाविक भाषा थिक — कथा बालकक अपन विश्व-बोधमे बजैत अछि।

एहि पोथीक नैतिक केन्द्र बहिन थिक, आ ई संग्रहक स्त्री-कर्तृत्व-शृंखलाक महत्वपूर्ण कड़ी: मंशा (२), आस्था (१), बिहुला (३३), मोतीसाएरि (२६) क संग ई बहिन ओहि पाँतीमे ठाढ़ अछि जे संकटक क्षणमे निर्णय अपन हाथमे लैत अछि। ओकर विधि लक्षित हो — ओ ने कानैत अछि ने सोझे आक्रमण करैत अछि; ओ भाटिनक अपने खेल-नियम ('प्रहेलिका बुझि सकल त'...') केँ उनटा कऽ ओकरेपर चला दैत अछि: विधिक द्वारा विधिक पराजय, जे परिष्कृत न्याय-बोधक लक्षण थिक। औचित्य-दृष्टिसँ अन्तिम दण्ड ('भकसी झोंका कऽ') लोक-पाठक कठोरता नेने अछि आ लेखक ओकरा एक्कहि वाक्यमे, बिनु चित्रण, निपटबैत छथि — कथा-संवरणक वैह तकनीक (मिलाउ समीक्षा ५) । मनोविश्लेषणात्मक स्तरपर पति-वधक षड्यन्त्र आ नौ टुकड़ीक गोपन बाल-पाठकक चेतन धरि नहि पहुँचैत, मुदा कथाक भाव-सन्देश — घरक भीतरक विश्वासघात सभसँ घातक, आ रक्त-सम्बन्ध (बहिन) संकटक अन्तिम दुर्ग — स्पष्ट पहुँचैत अछि। अन्तर्पाठीयता: पनही झारबाक 'साधारण आदति'सँ प्राण-रक्षा संग्रहक ओहि आवर्ती सूत्रक अंग थिक जे छोट अभ्यास पैघ रक्षा करैत अछि (मिलाउ: रौहिणेयक कान मुनबाक अभ्यास, १४); आ मणिधारी साँपक मणि-बिम्ब ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा (१२) कसाँप-मणि-प्रसंगसँ सोझ जुड़ैत अछि — दुनू ठाम मणि लोभ आ आलोक दुनूक द्व्यर्थक प्रतीक थिक।

११. गोनू झा आ दस ठोपबाबाः बुद्धिवादक लोक-नायक

मिथिलामे सुखाड़; राजाक ढोलहोपर दस ठोप बाबा प्रकट — 'सय वर्ष हिमालयमे तपस्या, यज्ञसँ वर्षा।' पहुनाइसँ घुरल गोनू झा शंकित होइत छथि आ बीस ठोप बाबाक भेष धरि प्रतिस्पर्धी बनि ठाढ़ होइत छथि। 'श्री श्री १०८ बीस ठोप बाबा'क हास्यास्पद दावा-प्रतिदावाक बीच गोनूक एक्कहि शल्य-प्रश्न — 'बाँससँ मेघ खोँचारब? ओतेक टाक बाँस राखैत छी कतय?' — आ ढोंगक भरभराएब; शौचक बहन्ने पड़ाइत बाबाक नकली दाढ़ी लोकक हाथमे नोचा जाइत अछि, आ गोनू अपन नकली मोंछ उतारि असल रूपमे प्रकट होइत छथि।

गोनू झा मैथिली लोक-मानसक ओ चिर-नायक छथि जिनक तुलना पाश्चात्य समीक्षा बीरबल, तेनालीराम, नसरुद्दीन होजा आ यूरोपीय टिल ऑयलेनशपीगेलक अन्तर्राष्ट्रीय चतुर-नायक (ट्रिकस्टर) मण्डलीसँ करत। मुदा एहि कथामे गोनूक ट्रिकस्टर-रूपसँ बेसी महत्वपूर्ण हुनक विधि थिक, जे लगभग वैज्ञानिक पद्धतिक लोक-रूप अछि: दावा सुनू (यज्ञसँ वर्षा), दावाक क्रियाविधि पुछू (कोन विधियें?), उत्तरक भौतिक सम्भाव्यता जाँचू (एतेक नमहर बाँस कतऽ रहत?), आ असंगतिपर निर्णय दिअ। ई प्रश्न-शृंखला कार्ल सेगन जकरा 'बैलनी डिटेक्शन' कहैत छथि तकर मिथिला-संस्करण थिक, आ बाल-पाठक लेल एकर मूल्य अपरम्पार — कथा सिखबैत अछि जे श्रद्धा आ जाँच परस्पर विरोधी नहि; गोनू धर्मक विरुद्ध नहि, ढोंगक विरुद्ध ठाढ़ छथि। लेखकक ई सूक्ष्म रेखांकन (ढोंगीक 'ठोप'क संख्या-स्पर्धाक व्यंग्य, आ गोनूक अपनहु नकली भेष जे अन्तमे स्वेच्छया उतारलजाइत अछि) पाखण्ड आ रणनीतिक भेषक बीचक नैतिक भेदकेँ स्पष्ट करैत अछि: भेष जँ सत्य-उद्घाटन लेल हो त' साधन, आ आत्म-प्रतिष्ठा लेल हो त' पाखण्ड।

रस-दृष्टिसँ ई विशुद्ध हास्य थिक, मुदा एकर पृष्ठभूमि — सुखाड़सँ त्रस्त प्रजा — करुणक हल्लुक आस्तर दैत अछि, आ यएह आस्तर व्यंग्यकेँ धार दैत अछि: ढोंगी सभसँ पहिने ओतहि पनपैत अछि जतऽ विपत्ति आ आशाक बजार गरम हो। एहि अर्थमे ई कथा माधव सिंह आ अमता गाम (३७) क पूर्ण प्रतिपक्ष थिक — दुनूक आरम्भ-बिन्दु एक्कहि (मिथिलाक सुखाड़, वर्षाक खोज), मुदा ओतऽ राग-विद्याक प्रामाणिक साधना आकाश झुकबैत अछि आ एतऽ नकली तपस्याक दावा नकली दाढ़ी संग नोचाइत अछि। संग्रह-स्थापत्यमे ई जोड़ी जानि-बुझि रचल बुझाइत अछि: विद्या आ विद्याक स्वाँगक बीचक रेखा — वैह रेखा जे ऊँटनी (४) मे बटोही आ नकलची किसानक बीच छल। निकोलायेवाक सत्ता-विमर्शक दृष्टिसँ एतऽ रोचक ई जे राजसत्ता (राजा) भोरी अछि आ ज्ञान-सत्ता (गोनू) सजग — लोककथाक ई स्थायी विन्यास बाल-पाठकमे सत्ताक प्रति स्वस्थ अ-श्रद्धा आ बुद्धिक प्रति श्रद्धा एक्कहि संग रोपैत अछि।

१२. ब्राह्मण आ ठाकुरककथाः कथा-भीतर-कथाक त्रिवेणी आ वचनक पाथर

देबीगंजक ब्राह्मण सत्यनारायण-पूजाक यात्रामे ठाकुरक बच्चाकेँ संग लैत छथि; बच्चाक शर्त — जतऽ किछु नहि बुझाएत, ओतऽ बुझाबऽ पड़त। आ यात्राक तीन दृश्य तीन आख्यान खोलैत अछि: बालु-भारसँ भाँसैत स्त्री-लहासक पाछाँ ऐंठ-लाजसँ धार फानि लेनिहारि रानीक कथा; लात खाइत बकरीक पाछाँ चोला-मंत्रसँ राजाक देह हड़पनिहार विश्वासघाती मित्रक कथा (जकरा परीक बुद्धि सुग्गा-राजाकेँ घुरा बकरीमे कैद कऽ दैत अछि); आ फाँसी चढ़ैत बुढ़ियाक पाछाँ नागवती कन्या, बताह राजकुमार आमन्त्रीक बेटाक दीर्घ आख्यान — जाहिमे बिधाताक कहल पचीस संकट, भेद खोलैत-खोलैत पाथर बनैत मित्र, आ नवजातक रक्त-स्पर्शसँ पुनर्जीवन धरि सभटा अछि।

संरचनाक दृष्टिसँ ई संग्रहक सभसँ महत्वाकांक्षी पोथी थिक — कथा-भीतर-कथाक ओ पेटिका-शिल्प (फ्रेम नैरेटिव) जकर भारतीय वंशावली पञ्चतन्त्र, वेताल-पचीसी आ कथासरित्सागर धरि जाइत अछि: यात्रा चौखटि थिक, जिज्ञासा कुंजी, आ प्रत्येक 'नहि बुझाएब' एकटा नव कथाक ताला खोलैत अछि। बाल-शिक्षाशास्त्रक दृष्टिसँ ई शिल्प अनमोल — बच्चाक 'किएक?'केँ एतऽ डाँटल नहि जाइत, कथासँ पुरस्कृत कएल जाइत अछि; प्रश्नशीलता स्वयं कथा-यन्त्रक ईंधन थिक, जेना तरहरिमे परीलोक (१) मे आस्थाक प्रश्न छल। तेसर आख्यानक पाथर-प्रसंग विश्वकथाक अमर प्ररूप ए. टी. यू. ५१६ ('फेथफुल जॉन') कमैथिली रूप थिक — स्वामीक रक्षामे भेद जननिहार सेवक, जे भेद कहला परपाथर होइत जाइत अछि आ बालकक रक्तसँ जीबैत अछि; ग्रिम-संकलनक 'ट्रू जॉन'सँ एकर पंक्ति-दर-पंक्ति सादृश्य मैथिली कथा-कोषक विश्व-नागरिकताक प्रमाण थिक। प्रॉपक भाषामे एतऽ वर्जना (भेद नहि कहब), वर्जना-भंग (राजाक हठ), दण्ड (पाथर), आ परिहार (शिशु-रक्त) — पूर्ण चक्र अछि; आ नैतिक भार उनटल अछि: वर्जना-भंग स्वार्थसँ नहि, मित्रक फाँसी-भयसँ भेल, तेँ कथा दण्डो दैत अछि आ मुक्तिओ।

भारतीय दृष्टिसँ एहि पोथीक केन्द्रीय रस अद्भुत थिक, मुदा तीनू आख्यानक जोड़सँ जे उठैत अछि से वचन-मीमांसा थिक: पहिल कथामे लाज वचनसँ पैघ (रानी धारमे फानि जाइत छथि), दोसरमे वचनक (मंत्र-विद्याक) दुरुपयोग सर्वनाश अनैत अछि, तेसरमे वचन-रक्षा पाथर बना दैत अछि आ मित्रता ओहि पाथरकेँ फेर मनुक्ख। बालक-श्रोता तीनू सुनि जे निष्कर्ष गढ़त से उपदेशसँ नहि, त्रिकोणीय तुलनासँ आओत — ई पद्धति हितोपदेशक'कथा-द्वारा-नीति'क परिष्कृत रूप थिक। एकटा आलोचनात्मक टिप्पणी: तेसर आख्यानक घनत्व (बुढ़िया, बताह, अपहरण, बरियाती, पचीस संकट) छोट पाठक लेल एक्कहि बैसारमे भारी पड़ि सकैत अछि; ई पोथी खण्डशः वाचन — ठीक ओहि यात्री-जोड़ी जकाँ, पड़ाव-पड़ाव — माँगैत अछि, आ सएह एकर स्वाभाविक प्रयोग-विधि थिक। अन्तर्पाठीयता: फाँसी चढ़ैत बुढ़ियाक 'अपराध'क पुनर्पाठ (जे दण्ड पाबि रहलि अछि से कथा सुनला पर बुद्धिमती सिद्ध होइत अछि) संग्रहक ओहि आवर्ती न्याय-प्रश्नसँ जुड़ैत अछि जे दृश्य-प्रमाण आ सत्यक बीच दूरी होइत अछि — वैह प्रश्न जे राजा सलहेस (१७) मे हारक झूठ-बरामदगी आ नैका बनिजारा (२१) मे बारीक कलंकमे फेर उठत।

१३. राजाअनसारीः सपनाक भाषा आ 'घुरि कऽ नहि तकबा'क तप

राजा अनसारी सपना देखैत छथि — घरमे हीरा-मोती झहरैत, मोजर चुनि-चुनि सभ खाइत — आ छोट बेटा वचन दैत अछि: 'हम ओकरा पूरा कऽ देब।' बोनमे भाइ सभसँ बिछुड़ल बालक बटोहीक संकेतपर इनारमे खसैत अछि, भैरवानन्द जोगीक सेवासँ वरदान पबैत अछि, सुग्गा बनि सात समुद्र पार अमरफल आनऽ जाइत अछि — पहिल बेर परीक 'घुरि कऽ देख'क पुकारपर घुरि कऽ तकैत मरैत अछि, जोगीक चुट्टासँ जीबि दोसर बेर बिनु घुरि तकने सफल होइत अछि। फेर कलम-गाछीक तीन बहिन, आ अन्तमे जोगीक विचित्र आदेश: तीनू परी आ अपन गरदनिमे एक्के संग चक्कू — आ सोनाक गाछ, रूपाक ठाढ़ि, झहरैत मोती। घरपर राजा 'तीनटा औरत'केँ देखि बेटाकेँ बेवकूफ कहैत छथि; बेटा भरल नगरक सोझाँ क्रिया दोहरबैत अछि, आ सपना साकार।

ई संग्रहक सभसँ विशुद्ध अद्भुत-कथा (वंडर टेल) थिक, आ प्रॉपक प्रकार्य-सूचीक लगभग प्रत्येक खाना भरैत अछि: अभाव (सपनाक अपूर्ति), प्रस्थान, दाता (जोगी), कठिन कार्य, वर्जना ('घुरि कऽ नहि देखिहँ'), वर्जना-भंग, मृत्यु-पुनर्जीवन, आ रूपान्तरणकारी समापन। 'घुरि कऽ नहि तकबा'क वर्जना विश्व-पुराकथाक ओ गहींर आकृति थिक जे ऑर्फियस-यूरीडिसीसँ लऽ कऽ लोतक पत्नी धरि पसरल अछि — आ एकर मनोवैज्ञानिक अर्थ बाल-पाठक धरि सोझे पहुँचैत अछि: कोनो-कोनो काज एकाग्रता माँगैत अछि जाहिमे पाछाँक पुकार — शंका, प्रलोभन, अतीत — दिस तकलो मृत्यु थिक। बालक पहिल बेर हारैत अछि आ दोसर बेर जीतैत अछि; ई पुनरावृत्ति-सहित-सुधार (मिलाउ बगियाक गाछ, ५) संग्रहक अधिगम-दर्शनक स्थायी मुद्रा थिक। अन्तिम चक्कू-प्रसंग — जकर तर्क कथा जानि-बुझि नहि खोलैत अछि — अद्भुत-कथाक ओहि स्वप्न-तर्कक चरम थिक जतऽ बलिदान-सदृश क्रिया (अपनहु गरदनि!) रूपान्तरणक द्वार थिक; एकर व्याख्या-भार पाठकपरछोड़ब लेखकक साहसिक औचित्य-निर्णय थिक, कारण व्याख्या कएने ई जादू व्याकरण बनि जाइत।

एहि कथाक दोसर स्तर सपनाक अर्थ-मीमांसा थिक। राजा सपनाकेँ शाब्दिक वस्तु बुझैत छथि (गाछ = गाछ), बेटा ओकरा सम्बन्धपरक सत्य बुझैत अछि (गाछ = परी-सहयोगसँ प्रकट होइत समृद्धि); आ कथाक व्यंग्य ई जे 'बेवकूफ' कहल गेल बालके सपना-साक्षर सिद्ध होइत अछि। तरहरिमे परीलोक (१) सँ एकर संवाद सोझ अछि — ओतऽ सपना यन्त्रवत् सत्य होइत छल आ ओकर राजनीतिक दुरुपयोग होइत छल; एतऽ सपना श्रम, सेवा आ वर्जना-पालनक बाट सत्य होइत अछि। दुनू मिला कऽ संग्रह बाल-पाठककेँ सपनाक दूटा पाठ दैत अछि: सपना शक्ति थिक, आ शक्तिक चरित्र ओकर साधन-पथसँ बनैत अछि। रस-दृष्टिसँ अद्भुतक संग वात्सल्यक हल्लुक रंग (पिताक चिन्ता, बेटाक वचन) आ अन्तमे सामूहिक विस्मयक ओ दृश्य अछि जतऽ भरल नगर मोजर चुनि रहल अछि — लोककथाक सुखान्त सदिखन सामुदायिक होइत अछि, वैयक्तिक नहि; ई सूत्र आगाँ बिहुला (३३) आ माधव सिंह (३७) मे फेर भेटत।

१४. डाकूरौहिणेयः एक वाक्यक शक्ति — जैन कथा-परम्पराक बाल-रत्न

मगधमे बिम्बिसारक राज आ रौहिणेय डाकूक आतंक — मुदा ई डाकू धनीकेँ लूटि गरीबमे बाँटैत अछि, तेँ जनता ओकर कवच थिक। पिता लौहखुरक मरणासन्न आदेश: महावीरक प्रवचन कहियो नहि सुनिहँ। अभयकुमार मंत्रीक पाँच-दिना प्रतिज्ञाक बीच रौहिणेय राजमहलेमे डकैतीक दुस्साहस करैत अछि; बाटमे प्रवचन-स्थल लग कान मुनने जाइत काल पएरमे काँट गड़ैत अछि, आ काँट निकालबाक एक क्षणमे एक्कहि वाक्य कानमे पड़ि जाइत अछि — देवताकेँ घाम नहि छुटैत छनि, माला नहि मौलाइत छनि, पएर धरती नहि छुबैत छनि, पिपनी नहिखसैत छनि। पकड़ाएल रौहिणेय 'दुर्गा किसान'क झूठसँ बचैत अछि; अभयकुमार मदिरा पिया नकली स्वर्ग रचबैत छथि — गन्धर्व-अप्सरा, इन्द्रक दूत, आ पाप-स्वीकृतिक माँग। मुदा रौहिणेय देखैत अछि: ई 'देवता' सभ घामे-पसीने छथि, माला मौलाएल, पएर धरतीपर — आ ओ अनसुनल वाक्यक बलेँ छल भाँपि पुण्ये-पुण्य गनबैत अछि। अभयदान भेटला पर सभ सत्य कहि, सभटा धन ठुकरा, ओही महावीरक दीक्षा माँगि लैत अछि जिनक एक वाक्य ओकर प्राण बचौलक।

ई पोथी संग्रहमे विधागत रूपेँ अनूठा थिक — ई मिथिलाक लोकगाथा नहि, जैन कथा-साहित्यक (आवश्यक-चूर्णि आ परवर्ती कथाकोष-परम्पराक) प्रसिद्ध आख्यानक मैथिली बाल-रूपान्तर थिक, आ एकर उपस्थिति संग्रहक सांस्कृतिक क्षितिजकेँ मगध-विदेहक प्राचीन साझा भूगोल धरि पसारि दैत अछि। कथाक बौद्धिक केन्द्र एकटा तर्कशास्त्रीय रत्न थिक: निषिद्ध ज्ञानक एक कण सेहो निर्णायक भऽ सकैत अछि — पिता प्रवचनकेँ 'बर्बादी' कहि वर्जित केलनि, आ वैह प्रवचनक एक वाक्य बेटाक प्राण-रक्षक भेल; वर्जना अपने अपन खण्डन सिद्ध भेल। पाश्चात्य समीक्षा एतऽ 'एपिस्टेमिक थ्रिलर'क आद्य-रूप देखत — जासूसी कथाक ओ आनन्द जतऽ विजय बलसँ नहि, अवलोकन आ अनुमानसँ भेटैत अछि: रौहिणेय नकली स्वर्गक 'देवता'क घाम आ मौलाएल माला ओहिना पढ़ैत अछि जेना कोनो गुप्तचर सुराग। आ प्रतिपक्षमे अभयकुमार छथि — मंत्री-बुद्धिक ओ परम्परा जे नीति-कथामे चाणक्यसँ अभयकुमार धरि चलैत अछि; दू बुद्धिक ई द्वन्द्व (छली आ छल-भेदी) बाल-पाठक लेल शतरंज सन रोमांचक अछि, जाहिमे रक्तपात एक्को बूँद नहि।

नैतिक स्थापत्य सूक्ष्म अछि। रौहिणेयक 'रॉबिन हुड' रूप (धनीसँ लऽ गरीबकेँ) कथाकेँ ओकर पक्षमे झुकबैत अछि, मुदा कथा ओकर मुक्ति डकैतीक औचित्यसँ नहि, डकैतीक त्यागसँ करबैत अछि — सहानुभूति आ अनुमोदनक ई भेद विचारधारा-सजग बाल-साहित्यक कसौटी थिक। रूपान्तरणक विश्वसनीयता एहिमे अछि जे ओ चमत्कारसँ नहि, कृतज्ञतासँ अबैत अछि: 'जाहि वचनसँ जान बचल, तकर दीक्षा लेब।' अन्तर्पाठीयता: नकली स्वर्गक भण्डाफोड़ गोनू झा (११) क ढोंगी-भेदनक राज-प्रायोजित संस्करण थिक — ओतऽ नकली बाबाकेँ असली बुद्धि पकड़ैत अछि, एतऽ नकली स्वर्गकेँ असली श्रुति; आ पिताक वर्जना-वाक्य बत्तू (६) आ राजा

अनसारी (१३) क वर्जना-प्रकार्यक दार्शनिक शिखर थिक — संग्रह भरिमे वर्जना कतहु रक्षक अछि, कतहु परीक्षक, आ एतऽ स्वयं मिथ्या सिद्ध होइत अछि। हिंसा-रहित रोमांच, तर्क-प्रधान कथानक आ आन्तरिक रूपान्तरण — तीनू मिला कऽ ई पोथी संग्रहक बौद्धिकतम रचना थिक।

१५. राजाढोलनः शाप, गोपन आ चिट्ठीक महाकाव्य

गढ़ नारियलक राजा दक्ष 'नहि बिकाएल समान कीनब'क हठमे सूत कीनैत छथि आ राज्य-लक्ष्मी रुसि जाइत छथि; गरीब राजा गढ़पिंगलमे घोड़-सेवक बनैत छथि। दुनू राजाक घर एक्कहि दिन सन्तान — आ ज्योतिषीय 'छठी रातिक बियाह'क विवशतामे नवजात मड़ुवन आ नोकरक नवजात बेटा ढोलनक बियाह भऽ जाइत अछि। घुरती बाटमे बाघ-वध पर बाघिनक शाप — 'तोहर बेटाक कनियाँकेँ राँड़ कऽ देब' — आ भयभीत पिता भेद गाड़ि दैत छथि: साढ़िन खधाइमे, बेटा मालिनक फुलवाड़ीमे, बियाहक स्मृति चुप्पीमे। ओम्हर जुआन मड़ुवन जबुना-कात बारह बरखक सदाव्रत बाँटि पति ताकैत छथि; बनिजाराक पत्र जादूगरनी हरेबा-परेबा जरा दैत अछि, सुग्गाक पत्र मालिन आगिमे दऽ दैत अछि, आ तेसर बेर गाँजा-भाँग-अफीमधारी महात्माक मोहिनी बाँसुरी सभ जादू चीरि ढोलन धरि पत्र पहुँचा दैत अछि। तरुआरि लऽ पुछला पर पिताक स्वीकारोक्ति, पिल्लू लागलि साढ़िनकउद्धार, बाघिन-वध, आ सासुरमे फुलवाड़ी उजाड़बाक उत्पातसँ पहिचान — अन्तमे डोली, बिदागरी आ राज।

ई संग्रहक सभसँ जटिल कथानकबला अद्भुत-गाथा थिक, आ एकर समीक्षा-कुंजी संचार थिक: ई पूरा महाकाव्य असलमे तीन चिट्ठीक कथा थिक। शाप सूचनाकेँ वर्जित करैत अछि, पिता सूचनाकेँ गाड़ैत छथि, जादूगरनी सूचनाकेँ जरबैत अछि — आ मुक्ति ओहि क्षण होइत अछि जखन सूचना पहुँचि जाइत अछि। बाल-पाठक अनजाने सीखैत अछि जे परिवारक अधिकांश दुख षड्यन्त्रसँ बेसी गोपनसँ जनमैत अछि; पिताक मौन 'रक्षा' छल, मुदा ओकर मूल्य साढ़िनक बरखो-बन्दी, बेटाक पहिचान-लोप आ पुतोहुक बारह बरखक प्रतीक्षा भेल। प्रॉप-दृष्टिसँ कथा दू पीढ़ीक दू चक्र थिक — पिताक चक्र (दोष-पतन-प्रवास) आ पुत्रक चक्र (अज्ञान-उद्घाटन-प्रतिकार), आ पुत्र ठीक ओतऽ सफल होइत अछि जतऽ पिता विफल छलाह: पिता बाघ मारि शाप कमओलनि, पुत्र बाघिन मारि शाप काटलक; पिता भेद नुकओलनि, पुत्र भेद उघारलक। ई पीढ़ी-सुधारक आकृति (मिलाउ: रौहिणेय १४, जे पिताक वर्जना उलटबैत अछि) संग्रहक गहींर आशावाद थिक — सन्तान माता-पिताक भूलक कैदी नहि।

स्त्री-पक्ष एतऽ विशेष समीक्ष्य अछि। मड़ुवन निष्क्रिय प्रतीक्षारत नायिका नहि छथि — सदाव्रतक संस्था खोलब सूचना-संग्रहक सार्वजनिक केन्द्र रचब थिक (वैह युक्ति ब्राह्मण आ ठाकुरक कथा, १२क परी अपनओने छलि), आ तीन-तीन संचार-माध्यम (बनिजारा, सुग्गा, साधु) आजमाएब रणनीतिक धैर्यक परिचय; प्रतिपक्षमे सेहो स्त्रिये अछि — हरेबा-परेबाक जादूगरनी-जोड़ी — तेँ कथा लिंगकेँ नहि, नीयतकेँ पक्ष-विपक्षमे बाँटैत अछि। साढ़िनक प्रसंग संग्रहक पशु-करुणाक मार्मिकतम पृष्ठ थिक: निर्दोष पशुक बरखो-बन्दी आ पिल्लू लागल देहक उद्धार — बालक-पाठकक संवेदना एतऽ जे पाठ पढ़ैत अछि से उपदेशक कोनो पोथी नहि दऽ सकैत। रस-दृष्टिसँ अद्भुत आ करुणक ई दीर्घ संयोजन अन्तमे शान्तमे विश्राम पबैत अछि; आ 'नोकरक बेटा'क राजा बनब संग्रहक ओहि समतावादी ध्वनिक अंग थिक जे लोकगाथा-खण्डमे (दीना-भदरीसँ छेछन धरि) पूर्ण स्वरमे बाजत।

खण्ड तीन: वीर आ प्रेमक लोकगाथा

१६. दीना-भदरीः सुभाषित माटिक दू बेटा — दुखान्त वीरगाथाक शिखर

जोगियानगरक मुसहर भाइ दीना-भदरी — पाँच-पाँच मोनक कोदारि, दिन भरिमे बिगहा भरि जमीन, आ बलक संग धरम। जाँजरक जमीन्दार कनक सिंह हुनका 'बड़द' बनाबऽ चाहैत अछि, मारि खा कऽ भागैत अछि; ओकर स्त्री बुधनी सलहेस-थानपर तप कऽ वर माँगैत अछि — 'दीना-भदरीक प्राण।' वचन-बान्हल सलहेस अपनहि प्रिय वीरकेँ सपना दऽ कटैया बोन बजबैत छथि; खुनीमा बाघकेँ दीना 'जय राजा सलहेस' कहैत मल्ल-युद्धमे पछाड़ैत छथि, मुदा बगराक भेष धेने बाघिनक छलसँ दुनू भाइ मारल जाइत छथि। आगाँ चमत्कार-शृंखला: तूरक पलड़ापर बैसल भाइ-आत्मासँ भरि दोकान तौलाएब, श्राद्ध-भोजमे बारिक बनि परसब, हंसाक चीन्ह, सात तह कपड़ा फाड़ि बहराएल माए-दूध; फेर मोरंग-अंचलमे डेढ़ सए अत्याचारीक संहार, बुधनीक अन्त, आ सलहेसक प्रायश्चित्त-वचन — 'जतए हमर पूजा, ततए अहाँक पूजा।'

ई पोथी संग्रहक वीरगाथा-खण्डक आधार-स्तम्भ थिक आ मैथिली लोक-महाकाव्य-परम्पराक बाल-द्वार। पाश्चात्य शोक-काव्यशास्त्रक भाषामे ई विशुद्ध ट्रेजेडी थिक — मुदा ग्रीक ढाँचासँ एकटा निर्णायक भेद संग: एतऽ नायकक कोनो 'ट्रैजिक फ्लॉ' नहि; दोष व्यवस्थामे अछि — वचन-धर्मक ओ यान्त्रिकी जे देवताकेँ सेहो अन्यायक औजार बना दैत अछि। सलहेसक धर्मसंकट ('वचन तोड़थि त' देवत्व टूटए, वचन राखथि त' न्याय टूटए') बाल-पाठकक आगाँ पहिल बेर ई प्रश्न रखैत अछि जे नियम आ न्याय सदिखन एक नहि

होइत — नैतिक विकासक कोलबर्ग-वर्णित ओहि सीढ़ीक चढ़ाइ जतऽ बालक नियम-पालनसँ ऊपर उठि नियमक न्याय्यता जोखए लगैत अछि। आ दुखान्तक प्रतिसन्तुलनमे लोक-परम्पराक अपन 'यूकैटास्ट्रफी' अछि — मृत्युक ओहि पार न्यायक दोसर पारी: पलड़ा, दूध, डेढ़ सए संहार, आ पूजाक अर्द्धांश। टॉल्कीन जकरा सुखान्तक आकस्मिक कृपा कहैत छथि, से एतऽ मरणोत्तर न्यायक रूपमे अबैत अछि; बाल-पाठक सीखैत अछि जे कथाक अन्त आ न्यायक अन्त एक नहि — 'समय सभसँ पैघ अदालत थिक।'

भारतीय दृष्टिसँ एतऽ वीर आ करुणक ओ युग्म अछि जकरा भवभूति 'एको रसः करुण एव' कहि करुणकेँ मूल मानने छथि — दीनाक बाघ-विजय वीरक शिखर, आ ठीक ओकर बाद बगराक छल करुणक खाधि; रसक ई झूला बाल-हृदयक भाव-शिक्षा (इमोशनल एजुकेशन) थिक। सात तह कपड़ा फाड़ि बहराएल दूधक बिम्ब वात्सल्यक ओ चरम थिक जतऽ शरीर-शास्त्र चुप भऽजाइत अछि आ काव्य बजैत अछि — 'माएक दूध, संसारक सभसँ पैघ प्रमाण।' आ सामाजिक स्तरपर ई गाथा विदेह समानान्तर प्रतिमानक घोषणापत्र थिक: मुसहर बोनिहार भाइक पूजा देवताक संग बँटाएब — 'देवता आ बोनिहार, एक्कहि आंगनमे, एक्कहि धूप-दीपमे' — भारतीय भक्ति-लोकतन्त्रक ओ वाक्य थिक जकरा कोनो समाजशास्त्र एतेक सुन्दर नहि कहि सकैत। अन्तर्पाठीयता संग्रहक सभसँ घन एतहि अछि: सलहेस एतऽ विवश देवता छथि आ राजा सलहेस (१७) मे संघर्षरत मनुक्ख — दुनू पोथी मिला कऽ लोकदेवताक जीवन-वृत्त (मनुष्यसँ देवत्व धरि) पूर्ण होइत अछि; बुधनीक तप मोतीदाइ (२७) क तपक अन्हार जोड़ा थिक — एक्कहि विधि (हठ-तप), उनटा प्रयोजन (प्राण-हरण बनाम सन्तान-याचना); आ बगरा-भेषक छल-मृत्यु अमर बाबा (२४) आ बहुरा गोढ़िन (२५) क ओहि सूत्रसँ जुड़ैत अछि जे वीर बलसँ नहि, छलसँ मरैत अछि।

१७. राजासलहेसः उपाधिक स्वतन्त्रता आ तंत्र-रक्षित न्याय

मोरंगक दुसाध सिपाही सलहेस — सिंहासन-हीन, मुदा जन-हृदयक 'राजा'। तालुकदार नौरंगी बहादुर थापाकेँ ई उपाधि नहि सोहाइत छन्हि: 'लोककेँ मना कऽ दियौक!' — 'लोकक मोन जे ओ ककरा की बजाओत!' एहि असम्भव आदेशपर सलहेस मोरंग छोड़ैत छथि। बारह बरखसँ आँचर बन्हने मालिन दबना — कमरू-कमख्याक तंत्र-विदुषी — हुनका सात सए सिपाहीक सरदार बनबा दैत छथि; पदच्युत चूहड़मल रानीक नौ लाखक हार सलहेसक ओछैनमे नुका षड्यन्त्र रचैत अछि; दबनाक काली-मन्दिरक साधनासँ चूहड़मल खून बोकरि सभ बकि दैत अछि; सलहेस मुक्त, पदोन्नत, आ अन्तमे दबना-सलहेसक बियाह।

एहि गाथाक बौद्धिक केन्द्र उपाधि-विवाद थिक, आ ई बाल-पाठक लेल राजनीति-दर्शनक पहिल पाठ अछि: 'राजा' शब्दपर एकाधिकार ककर — सत्ताक आकि समाजक? सलहेसक तर्क ('ई जन द्वारा देल पदवी... हम छोड़ियो देब, लोक त' कहबे करत') भाषाक लोकतन्त्रक तर्क थिक — नाम ओ वस्तु थिक जे देनिहारक मोनमे रहैत अछि, आ मोनपर कोनो तालुकदारक हुकुम नहि चलैत। ज़ाइप्सक विचारधारा-विश्लेषणक भाषामे ई कथा वैधता (लेजिटिमेसी) क दू स्रोतक टक्कर थिक — पद-सत्ता बनाम सेवा-सत्ता — आ लोक-परम्परा असंदिग्ध रूपेँ दोसरक पक्षमे मतदान करैत अछि। दोसर समीक्ष्य आयाम दबना छथि: अस्वीकृत प्रेमिका, जे प्रतिशोध नहि, प्रमाण चुनैत अछि — ओकर तंत्र-विद्या एतऽ 'फोरेन्सिक' यन्त्रक काज करैत अछि (सत्य बोकरब!), अर्थात् अलौकिक शक्ति न्याय-प्रक्रियाक सेवामे अछि, प्रतिहिंसाक नहि। बारह बरखक प्रतीक्षा-रूपक संग्रहकआवर्ती काल-मात्रक थिक (मिलाउ: ज्योति पँजियार ३१, नैका बनिजारा २१, राजा ढोलन १५क मड़ुवन) — लोक-कल्पनामे बारह बरख तपस्याक पूर्णांक थिक, आ दबनाक प्रेम ओही पूर्णांकसँ नापल गेल अछि।

औचित्य-दृष्टिसँ लेखक वैद्यक आत्महत्याक आरम्भिक प्रसंगकेँ एक्कहि अनुच्छेदमे सूचना-मात्र राखि (बाल-पाठ लेल उचित संक्षेप) कथाक भार षड्यन्त्र-भेदनपर रखने छथि, आ चूहड़मलक यातना-दृश्य ('खून बोकरब') केँ अलौकिक-दण्डक कोटिमे राखल गेल अछि जतऽ बाल-पाठक ओकरा जादुई न्याय बुझैत अछि, शारीरिक हिंसा नहि। अन्तर्पाठीय स्तरपर ई पोथी संग्रहक सभसँ रोचक नाम-गुत्थी रचैत अछि: एतुक्का खलनायक 'चूहड़मल' आ चौहड़मल आ रेशमा (१८) क नायक चूहड़मल — नाम एक, चरित्र-लोक भिन्न। ई लोक-परम्पराक ओहि ऐतिहासिक द्वन्द्वक स्मृति-चिन्ह थिक जाहिमे सलहेस-गाथा आ चूहड़मल-गाथा भिन्न-भिन्न समुदायक गौरव-गीत रहल अछि; लेखक दुनूकेँ अपन-अपन गाथामे अपन-अपन नायकत्व दऽ कऽ ओहि बहुस्वरताकेँ सुरक्षित रखलनि — बाल-पाठक अनजाने सीखैत अछि जे एक्कहि नामक कथा कहनिहारक ठामसँ बदलि जाइत अछि, आ इतिहासक ई बहु-कण्ठता दोष नहि, धरोहरि थिक। दीना-भदरी (१६) क विवश देवता आ एतुक्का संघर्षशील मनुक्ख मिला कऽ पढ़ब — यएह एहि जोड़ीक सम्यक् पाठ-विधि थिक।

१८. चौहड़मल आरेशमाः शोनितक सिनूर — निषिद्ध प्रेमक स्मारक

मोकामा घाट। दूधबंसी बोनिहार-पहलमान चूहड़मल आ भूमिहार हवेलीक बेटी रेशमा — पहिल नजरि रेशमाक, आ बरखो धरि 'नहि' चूहड़मलक: 'अहाँ हवेलीक बेटी, हम घाटक बोनिहार।' भेद खुजला पर पहरा, भाड़ाक हत्यारा रामजीत-मन्ने खाँक उनटा वध, दूधबंसी टोलपरहवेलीक चढ़ाइ — आ ओकरा रोकनिहारि स्वयं रेशमा: 'हमर कारणसँ निर्दोषक रक्त बहत, त' पहिने हमर!' रामसखीक जादूसँ अदृश्य भेँट, काली-मन्दिरमे बियाह जतऽ सिनूरक ठाम चूहड़मल अपन शोनितसँ माँग भरैत अछि; घेराबन्दी, महुक गाछपर रेशमाक रक्षा, अन्तिम युद्धमे जितैत वीरक ठीक ओही क्षण कलुआ सिपाही द्वारा रेशमाक अपहरण, घोड़ाक वध, आ 'रेशमा-रेशमा' टेरैत प्राणान्त। अन्त: मोकामा टालक रेशमा-चूहड़मल मन्दिर आ सर्वजातीय मेला।

ई गाथा संग्रहक प्रेम-दुखान्तक शिखर थिक आ एकर समीक्षा-कुंजी ओ एक बिम्ब थिक जे विश्व प्रेम-साहित्यमे मैथिलीक अपन योगदान कहल जाए योग्य अछि — शोनितक सिनूर। सिन्दूर संस्थाक प्रतीक थिक, शोनित प्राणक; दुनूक ई विनिमय कहैत अछि जे जतऽ संस्था प्रेमकेँ सामग्री नहि दैत, ओतऽ प्रेम अपन देहसँ सामग्री रचि लैत अछि। पाश्चात्य तुलनात्मक दृष्टि सहजहिरोमियो-जूलियट मोन पाड़त — कुल-वैरक बीच प्रेम, गुप्त विवाह, दुखान्त — मुदा भेद निर्णायक अछि: शेक्सपियरक वैर दू समान कुलक थिक, एतऽ वैर ऊर्ध्वाधर अछि — जाति आ वर्गक सीढ़ीपर; तेँ ई ट्रेजेडी नियतिक नहि, संरचनाक थिक, आ एकर 'खलनायक' कोनो व्यक्ति नहि, 'ओ सभटा देवाल जे मनुक्ख मनुक्खक बीच ठाढ़ करैत आयल अछि।' रेशमाक चरित्र-रेखा विशेष समीक्ष्य: ओ प्रेमक आरम्भकर्त्री अछि (लोकगाथामे दुर्लभ), टोल-रक्षामे मध्यस्थ, आ पहरा-भेदनमे योजनाकार — निकोलायेवाक कसौटीपर सम्पूर्ण कर्तृत्व; आ तइयो अन्तमे गाथा ओकर नियति चुप्पीमे छोड़ैत अछि — लेखकक टिप्पणी ('ई चुप्पी कोनो वर्णनसँ बेसी करुण थिक') औचित्य-विचारक उत्कृष्ट प्रयोग थिक: जतऽ लोक-पाठ अनेक आ पीड़ादायक हो, ओतऽ बाल-संस्करणक मौन सम्मानो थिक आ संवरणो।

रस-दृष्टिसँ शृंगार (सम्भोग नहि, विशुद्ध पूर्वराग) आ वीरक युग्मपर करुणक विजय अछि, मुदा अन्तिम अध्याय करुणकेँ शान्तमे बदलि दैत अछि — मन्दिर आ मेला: 'प्रेमी मरि जाइत अछि, प्रेम मेला बनि जाइत अछि।' ई मरणोत्तर सामुदायिक स्वीकृति दीना-भदरी (१६) क पूजा-वचनक लौकिक संस्करण थिक — ओतऽ देवता क्षमा माँगैत छथि, एतऽ समाज; दुनू ठाम स्मृति न्यायक अन्तिम अदालत थिक। मूँगा आ जालिम सिंह (१९) सँ एकर तुलना अनिवार्य अछि आ अगिला समीक्षामे विस्तारसँ हएत — एतबे संकेत जे ओतहु शोनितेक सिनूर अछि, मुदा अन्त सुखान्त; दुनू गाथा मिला कऽ लेखक अन्तर्जातीय प्रेमक दुनू सम्भव नियति — समाजक जीत आ प्रेमक जीत — बाल-पाठकक आगाँ बिनु कोनो झूठ आश्वासनक राखि दैत छथि।

१९. मूँगा आ जालिमसिंहः वैह आगि, दोसर अन्त

बेतिया राज। इनार लग राजपूत सरदार जालिम सिंह आ दूधबंसी कन्या मूँगाक पहिल भेँट; दरबारी मुँहलग्गू पृथ्वीपालक कान-भराइ, मलाह पट्टूक अकेले हमलावर-संहार आ अन्तमे स्वामीक नामपर बलिदान; गुरु मौनी बाबाक 'छोड़ि दे मूँगाक संग'क अनसुनल आदेश; बोनमे कनुआ — सवा मोन दूध आ खस्सीक खुराकबला, बाघ-शिकारी महींसक सवार — जकर खाँड़ा तर बान्हलि मूँगा; ठीक क्षणपर जालिमक आगमन, महींस-वध, कनुआ-वध, आ ओतहि बोनमे शोनितक सिनूर। फेर घरक भीतरक युद्ध: भाइ कुँअरक विद्रोह, माएक स्वीकृति, भाइक वार आ घाव, वैद्यक द्वारपर मूँगाक रतजग्गा — आ अन्तमे कनैत माए-भाइक पश्चाताप, 'प्रेमसँ घर लऽ' जाएब।

ई गाथा चौहड़मल आ रेशमा (१८) क जोड़ी-पाठ थिक, आ दुनूकेँ आमने-सामने राखब एहि समीक्षा-पोथीक एकटा केन्द्रीय अभ्यास। समान तत्व गनू: अन्तर्जातीय प्रेम, जल-स्रोत लग पहिल भेँट (घाट/इनार), ईर्ष्यालु षड्यन्त्रकारी, स्वामिभक्त सहायकक बलिदान (ओतऽ टोल, एतऽ पट्टू), शोनितक सिनूर, आ अपनहि पक्षक हिंसा। मुदा परिणाम उनटा — आ कारणक विश्लेषणे दुनू गाथाक असल समीक्षा थिक। रेशमा-कथामे हिंसाक स्रोत हवेली अन्त धरि अटल रहैत अछि; मूँगा-कथामे हिंसाक स्रोत (भाइ) पश्चाताप धरि पहुँचैत अछि — अर्थात् लेखक-सम्पादित लोक-स्मृति एतऽ ई सम्भावना सुरक्षित रखने अछि जे जाति-दुर्ग भीतरसँ सेहो टूटि सकैत अछि, जखन माए सन कोनो कड़ी पहिने झुकए ('माएक स्वीकृति एहि नव गृहस्थीक पहिल आधार') । बाल-पाठक लेल ई जोड़ी आशा आ यथार्थक ओ सन्तुलित खुराक थिक जकर अनुशंसा बाल-साहित्य-चिन्तक बेर-बेर करैत छथि: एकसर सुखान्त झूठ बजितए, एकसर दुखान्त निराश करितए।

एहि गाथाक अपन स्वतन्त्र वैशिष्ट्य सेहो लक्षित हो। पहिल, मौनी बाबाक प्रसंग — सिद्ध गुरुक आदेश आ नायकक मौन अवज्ञा — लोकगाथामे विरल साहसक क्षण थिक: कथा गुरु-वाक्यकेँ अन्तिम सत्य नहि मानैत ('नियति साधुक वाणीसँ सेहो पैघ'), आ प्रेमक पक्षमे शास्त्र-वाक्यक ई सविनय उल्लंघन भक्ति-काव्यक ओहि परम्परासँ जुड़ैत अछि जतऽ प्रेम स्वयं प्रमाण थिक। दोसर, कनुआक

चित्र — अतिशय आहार, बाघ-शिकारी महींस — लोक-अतिशयोक्तिक ओ शैली थिक जे भयकेँ विराटतासँ नापैत अछि; बाल-कल्पना लेल ई 'लार्जर दैन लाइफ' प्रतिपक्षी रोमांचक व्याकरण थिक। तेसर, पट्ठूक बलिदान: मलाह सहायकक ई मृत्यु गाथाक नैतिक मूल्य-सूची घोषित करैत अछि — निष्ठाक मोल गाथा कहियो नहि बिसरैत ('दोस्तीक ई मोल जालिम जिनगी भरि नहि बिसरलाह'), आ ई सूत्र संग्रहक मित्रता-कथा-शृंखला (लालमैन बाबा २९, ब्राह्मण-ठाकुर १२क पाथर-मित्र, दीना-भदरीक जीतन यादव १६) क अंग थिक। रस-यात्रा एतऽ शृंगार-वीर-करुण होइत शान्त धरि पूर्ण वृत्त बनबैत अछि — आ 'इनार लगक साधारण भेँटसँ... घरक आँगन धरि'क अन्तिम पाँती ओकर सूत्र-वाक्य।

२०. महुआघटवारिनः बिकाइत बेटी आ धारक स्वतन्त्रता

परमान घाटक महुआ — 'गूथल आँटामे एक चुटकी केसर' सन सुन्दरि, सतवंती; गँजेरी बाप, नजरि-चोर सतमाए। साओन-भादवक रातिमे वणिककेँ तेल लगएबा लेल जबरन पठाओल जाएब, फूलमतीक ढाढ़स, मोरंगमे प्रतीक्षारत प्रेमीक स्मृति — आ फेर हरकाराक गुप्त सन्देश: सतमाए बेटीकेँ सौदागरक हाथ बेचि देलक। बीच धारमे पतवार छीनल गेल, 'सभटा पाइ चुका देल गेल अछि' — आ महुआ ओ केलनि जे एहि गाथाकेँ अमर केलक: बिनु चेतावनी धारमे छलाँग, उनटा धार मोरंगदिस; सौदागरक छोटका सिपाही — जे गुप्त प्रेम करऽ लागल छल — पाछाँ कूदल, आ दुनू डूमि गेल। अन्त: साओन-भादवक धारमे घटवारकेँ महुआक दर्शन, आ प्रत्येक दर्शनसँ खिस्साक पुनरारम्भ — 'एकटा छलीह महुआ घटवारिन...'

ई गाथा संग्रहक करुणतम रचना थिक आ एकर समीक्षा साहसक माँग करैत अछि, कारण एकर विषय बाल-साहित्यक 'सुरक्षित' सूचीसँ बाहरक थिक — कन्या-विक्रय। लेखकक औचित्य-कौशल एतऽ चरमपर अछि: विक्रयक वाणिज्यिक ब्योरा नहि, ओकर अनुभूति-पक्ष कथाक केन्द्रमे अछि — 'ओ खाली एकटा व्यापारक वस्तु बना देल गेल छलि, बिनु अपन इच्छाक'; आ महुआक प्रश्न ('नोन चटा कँ किए नहि मारलँह, पोसलँह एहि दिन खातिर?') बाल-पाठकक करेजमे सोझे उतरैत अछि, कारण ओ अर्थशास्त्र नहि, विश्वासघातक भाषा बजैत अछि। पाश्चात्य दृष्टिसँ महुआक छलाँग आत्मघात नहि,'एजेंसी'क अन्तिम अभिव्यक्ति थिक — कथाक अपन शब्द: 'ई आत्मसमर्पण नहि, आत्मरक्षाक अन्तिम योजना छल'; ओ मृत्यु नहि, मोरंग — प्रेम आ स्वतन्त्रता — दिस कूदल छलि, आ धार हारि गेलि। ई भेद बाल-मध्यस्थ (शिक्षक-अभिभावक) लेल रेखांकित करब आवश्यक: गाथा पलायन नहि, प्रतिरोध सिखबैत अछि — 'हम बिकाएब नहि' एकर मूल-मंत्र थिक।

सतमाए-आकृति विश्व-लोककथाक सर्वाधिक व्याप्त आकृति थिक (सिन्ड्रेलासँ हैन्सेल-ग्रेटेल धरि), आ बेटेलहाइम एकरा बालकक द्विधा-भावक (माए भली/माए कठोर) विभाजित प्रक्षेपण मानैत छथि; मुदा एतऽ ओ मनोवैज्ञानिक रूपक सामाजिक यथार्थसँ भारी भऽ गेल अछि — लोकगाथा जनैत अछि जे मिथिलाक घाट-कातमे बेटीक सौदा कल्पना नहि रहल अछि। छोटका सिपाहीक छलाँग गाथाक सभसँ सूक्ष्म स्पर्श थिक: दमन-यन्त्रक भीतरसँ एक हृदयक विद्रोह — खरीदल गेलपहरेदार अपन मनुष्यता घुरा लैत अछि, भलहिं मूल्य प्राण हो; ई ब्योरा कथाकेँ सरल खल-चित्रणसँ बचबैत अछि। आ अन्तक चक्रीय संरचना — दर्शनसँ कथारम्भ — मौखिक परम्पराक आत्म-चित्र थिक: महुआ अमर अछि कारण ओ कहल जाइत रहैत अछि; कथा अपन जीवन-रहस्य अपने घोषित करैत अछि। अन्तर्पाठीयता: मोतीसाएरि (२६) मे बेटी सन्दूकमे बहाओल जाएत, एतऽ धारमे बेचल गेलि — दुनू 'बहाओल बेटी'क गाथा थिक, आ दुनूक अन्तमे बेटी लोक-स्मृतिक जल-देवी सन उपस्थिति पबैत अछि; संगहि साओन-भादवक धारक ई भयाकुल सौन्दर्य जट-जटिन (३६) क वर्षा-अनुष्ठानक ऋतु-चक्रसँ जुड़ैत अछि — एक्कहि भादवक धारमे लोक कतऽ नाच रचैत अछि, कतऽ महुआ हेराइत अछि।

२१. नैकाबनिजाराः अनुपस्थित पतिक गवाही — अँठीक अभिज्ञान

वणिकपुत्र शोभनायकक बियाह भेल आ गृहस्थ-सुखसँ पहिनहि मोरंग-प्रवास। बाटमे गाछ तर डकहर-दम्पतिक गप कानमे पड़ल — 'ई राति बड़ शुभ, एहि राति पत्नीक संग जे रहत तकरा प्रतिभावान पुत्र' — आ शोभनायक गुप्त रूपेँ घर घुरि, लोकोपवादक भयेँ अभिज्ञान-स्वरूप अँठी दऽ, फेर मोरंग। बारह बरखक व्यापार, आ एम्हर गर्भवती बारीपर सासु-ससुरक सन्देह, निर्वासन, देवर चतुरगनक आश्रय, आ लोकगीतक कानब — 'तब बारी रे कानय जार बेजारो कानै रे ना।' तेरहम बरख शोभनायक घुरलाह, अँठी देखा सत्य प्रमाणित, परिवार पुनः एक।

ई गाथा संग्रहक 'अभिज्ञान-कथा'क प्रतिनिधि थिक — ओ प्राचीन कथा-प्ररूप जाहिमे बिछुड़ल दम्पतिक सत्य कोनो चिन्ह-वस्तुपर टँगल रहैत अछि; संस्कृत परम्पराक अभिज्ञानशाकुन्तलक अँगूठी सहजहि मोन पड़त, आ ई स्मरण अनुचित नहि — दुनू ठाम स्त्रीक चरित्रपर समाजक सन्देह आ वस्तु-प्रमाणसँ ओकर निवारण; भेदई जे शकुन्तलाक अँगूठी हेरा जाइत अछि आ नाटक विस्मरणक

त्रासदी रचैत अछि, एतऽ अँठी सुरक्षित रहैत अछि आ त्रासदी विस्मरणक नहि, अनुपस्थितिक थिक। समीक्षाक असल प्रश्न एतऽ नैतिक अछि, आ ईमानदार समीक्षा ओकरा उठाओत: शोभनायक अँठी बारीकेँ देलनि, मुदा सत्य सासु-ससुरकेँ नहि कहलनि — 'लोकोपवाद'सँ बचबाक जे युक्ति छल, वैह बारीक बारह बरखक कलंक-भोगक कारण बनल। गाथा एकरा सोझे अभियोग नहि बनबैत, मुदा बारीक गीतक करुणा ओकर मौन अभियोग-पत्र थिक — आ राजा ढोलन (१५) क समीक्षामे जे स्थापना भेल छल (परिवारक दुख षड्यन्त्रसँ बेसी गोपनसँ), से एतऽ दोसर प्रमाण पबैत अछि। बाल-पाठक लेल ई जोड़ी-पाठ मूल्यवान: दुनू गाथामे पुरुषक 'रक्षात्मक' चुप्पी स्त्रीक दीर्घ पीड़ा बनैत अछि।

चतुरगनक चरित्र — जे सत्य जनैत अछि आ निर्वासिताकेँ आश्रय दैत अछि — लोकगाथाक ओ विवेक-स्वर थिकजे देखबैत अछि जे परिवारक भीतरो सत्यक पक्षधर बचल रहैत अछि; ई कुँअर (१९) क प्रति-चित्र थिक — ओतऽ देवर-भाइ हिंसक, एतऽ रक्षक। डकहर-संवादक श्रवण-प्रसंग लोककथाक ओहि विश्व-व्यापी युक्तिक अंग थिक जाहिमे पशु-पक्षीक गप मनुष्यक नियति खोलैत अछि (मिलाउ: भाट-भाटिनक दीप-संवाद १०, बिहुलाक धोबिन-प्रसंग ३३) — ज्ञानक ई आकस्मिक, अ-स्वामित्व स्रोत लोक-ज्ञानमीमांसाक विशेषता थिक: सत्य सुनबा जोग कान चाही, हुनर नहि। रस-दृष्टिसँ करुण-प्रधान ई गाथा अन्तमे शान्त-सुखान्त अछि, आ एकर स्थायी उपलब्धि बारीक गीत-पाँती थिक — लोकगीतक ई प्रत्यक्ष उद्धरण संग्रहमे विरल अछि आ गाथा-गायन-परम्पराक स्वाद बाल-पाठ धरि अनैत अछि; संगीत-तत्वक एहि उपस्थितिक पूर्ण विकास माधव सिंह आ अमता गाम (३७) मे भेटत।

२२. छेछनः डंका, दंगल आ डोम-वीरताक अखराहा

सहिदापुरक डोम सरदार मानिकचन्दक अखराहामे टँगल डंका — जे बजाओत, से पहिने पोसुआ सुग्गर चटियासँ लड़त; चटियाकेँ जीतत से मानिकचन्दसँ, आ मानिकचन्दकेँ हराओत से बहिन पनमाक वर। छेछन महराज पाँच पसेरीक कत्ता नेने अबैत छथि, चिलममे मेदनीफूल भरि पीबि डंकापर चोट करैत छथि; चटिया पहिने पड़ाइत अछि, फेर झपटला पर छेछन ओकर दुनू पएर पकड़ि चीरि दैत छथि; मानिकचन्दसँ दंगल, विजय, आ प्रसन्न मानिकचन्द द्वारा पनमाक बियाह। उत्तरार्धमे यादव लोकदेवता कृष्णारामक बसबिट्टीसँ बाँस काटब, सुबरन हाथीक आगमन, आ कत्तापर हाथीक पएर — गाथा एहि नव द्वन्द्वक घोषणापर, छेछनक 'अन्ततः विजयी संघर्ष'क लोक-स्मृति-सूचना संग, विश्राम लैत अछि।

ई गाथा संग्रहक वीर-रसक सभसँ निर्मिश्र रचना थिक — ने प्रेम-कथा, ने भक्ति-चमत्कार; विशुद्ध शक्ति-परीक्षा, आ ओकर रंगमंच अखराहा। पाश्चात्य दृष्टिसँ ई 'चैलेन्ज नैरेटिव'क विशुद्ध रूप थिक — सार्वजनिक चुनौती (डंका), श्रेणीबद्ध परीक्षा (पशु, फेर मनुष्य), आ घोषित पुरस्कार; मध्यकालीन यूरोपक 'टूर्नामेन्ट रोमान्स'सँ एकर संरचना-सादृश्य लक्षणीय अछि, मुदा सामाजिक अर्थ ठीक उनटा: ओतऽ अखराहा अभिजातक रंगभूमि, एतऽ ओ समाजक ओहि तलक गौरव-मंच थिक जकरा वर्ण-व्यवस्था अस्पृश्य कहने छल। दंगल-विजयक बाद मानिकचन्दक प्रसन्नता ('दुखी नहि भेला — अपितु प्रसन्न भेला') एहि गाथाक नैतिक रत्न थिक: प्रतियोगिता एतऽ शत्रुता नहि, सम्बन्ध-निर्माणक विधि थिक — 'ई प्रतियोगिता शत्रुतामे नहि बदलल, अपितु सम्मान आ पारिवारिक बन्धनमे परिणत भेल।' बाल-पाठक लेल खेल-भावना (स्पोर्ट्समैनशिप) क एहिसँ जीवन्त पाठदुर्लभ — हारल पक्ष अपमानित नहि, जोड़ल जाइत अछि।

रस-दृष्टिसँ चटिया-द्वन्द्वमे वीरक संग अद्भुतक स्पर्श अछि (सुग्गरक भागब — वीरक तेजक अलौकिक स्वीकृति), आ चिलम-मेदनीफूलक तैयारी लोक-वीरताक ओहि देशज मुद्राक अंग थिक जे नायककेँ शास्त्रीय आदर्शसँ नहि, अपन समुदायक जीवन-शैलीसँ गढ़ैत अछि — लेखक एकरा ने महिमामण्डित करैत छथि ने सेन्सर; लोक-पाठक प्रामाणिकता बाल-पाठ धरि सुरक्षित अछि। उत्तरार्धक अपूर्ण द्वन्द्व (कृष्णाराम-सुबरन प्रसंग) समीक्षा-दृष्टिसँ रोचक निर्णय थिक: गाथा चरम-बिन्दुपर रुकि 'आगाँक विकास लोक-स्मृतिमे सुरक्षित' कहि दैत अछि — ई मौखिक परम्पराक ओहि यथार्थक ईमानदार स्वीकृति थिक जे लोकगाथाक कोनो 'अन्तिम संस्करण' नहि होइत; बाल-पाठक लेल ई खुजल अन्त कल्पना-अभ्यासक निमन्त्रण थिक। अन्तर्पाठीयता: कृष्णारामएतऽ हाथी-आरूढ़ लोकदेवता छथि आ मोतीसाएरि (२६) मे भाड़ापर कन्या छीननिहार यादव सरदार — एक्कहि नामक ई द्वि-रूपता (मिलाउ: चूहड़मल, समीक्षा १७-१८) लोक-परम्पराक बहुकण्ठताक दोसर प्रमाण थिक; आ डंका-चुनौतीक सार्वजनिकता अमर बाबा (२४) क बैदला-अखराहासँ सोझ जुड़ैत अछि — दुनू ठाम घाट-अखराहा न्यायक लोक-मंच थिक, भेद ई जे ओतऽ अखराहा अत्याचारीक अड्डा छल आ एतऽ सम्मानक तराजू।

२३. मीरांसाहेबः जन्मसँ पहिने अनाथ — बदला, मर्यादा आ मरणोत्तर पहरा

डिलरीनगरक सैयद-घरेन — पिता आ सभ बेटा — नूनजागढ़क एक्कहि युद्धमे समाप्त; हवेलीमे बचलि गर्भवती विधवा, आ शोकक बीच जनमल मीरां। माए हुनका युद्धसँ दूर रखबाक प्रण करैत छथि, कम बयसमेबियाह करा गृहस्थीक डोरि बन्हैत छथि — मुदा 'जे मोन भीतरसँ निर्णय कऽ चुकल हो, ओकर चुप्पी सहमति नहि, तैयारी होइत अछि।' एक भोर कोठली खाली; मीरां असगरे नूनजागढ़, माटि माथसँ लगा — 'अब्बा, भाइजान — मीरां आबि गेल' — बदला पूर्ण, आ ओतहि रुकिः ने राज्य, ने लूट; 'बदला हुनका लेल आगि नहि छल जे पसरैत जाए; ओ कर्ज छल, जे चुकता भेल आ बही बन्द।' घुरती, 'मीरांसाहेब' उपाधिक स्वतःस्फूर्त जन्म, आ देहान्तक बादो नगरमे शान्ति — 'मीरांसाहेब गेल नहि छथि, पहरापर छथि।'

ई गाथा संग्रहक वीर-खण्डमे एकटा विशिष्ट स्वर अनैत अछि — मुस्लिम लोक-वीरक गाथा, आ तकर संग ई प्रमाण जे मिथिलाक लोक-देवायतन मजहबी सीमासँ चाकर अछिः जेना दीना-भदरी, सलहेस, छेछन थान पओलनि, तहिना मीरांसाहेब हवामे 'शान्ति बनि' रहि गेलाह। समीक्षाक केन्द्रीय प्रश्न एतऽ बदलाक नैतिकता थिक, आ लेखकक उपचार असाधारण सूक्ष्म अछि। एक दिस गाथा बदलाकेँ रोकबाक दुनू स्वर — माए ('बदलासँ मुइल लोक नहि जीबैत') आ पत्नी ('अहाँक जिनगीपर आब हमरो अधिकार') — पूरा गरिमासँ रखैत अछि; दोसर दिस मीरांक प्रस्थानकेँ रोमांचित नहि, अनिवार्य-सन प्रस्तुत करैत अछि; आ तेसर — निर्णायक — स्पर्श ई जे वीरताक असल परीक्षा युद्धमे नहि, युद्धक बाद अछिः रुकि जाएब। 'हिसाब बन्द केलनि आ घोड़ा घुमा लेलनि' — प्रतिशोध-कथाक विश्व-भण्डारमे ई आत्म-सीमित बदला विरल अछि, आ बाल-पाठक लेल यएह एकर औचित्य-कवच थिकः कथा हिंसाकेँ अन्तहीन चक्र नहि, बन्द बही देखबैत अछि। तुलना करू बाल गुरु (२) सँ — ओतऽ अपमानक उत्तर चीन्हब छल, एतऽ रक्तक उत्तर रक्त; संग्रह दुनू नीतिकेँ अपन-अपन लोकमे सत्य रहऽ दैत अछि, आ पाठकक विवेक दुनूक बीच अपन बाट ताकत— ई अ-निर्णय लेखकीय दुर्बलता नहि, द्वन्द्वात्मक शिक्षण थिक।

मनोविश्लेषणात्मक स्तरपर 'जन्मसँ पहिने अनाथ'क स्थिति गाथाकेँ शोक-साहित्य (ग्रीफ लिटरेचर) क कोटिमे सेहो रखैत अछिः मीरांक पूरा बाल्यकाल एकटा अनुपस्थित पिताक छायामे बीतल — 'रक्त अपन भाषा अपने बजैत अछि' — आ हुनक यात्रा मनोवैज्ञानिक भाषामे शोकक समापन-कर्म (क्लोज़र) थिक; माटि माथसँ लगएबाक मुद्रा श्राद्ध-मुद्रा थिक, युद्ध-मुद्रा नहि। रस-दृष्टिसँ वीरक भीतर करुणक ई अन्तर्धारा (विधवाक देहरि, खाली खुट्टी, बिनु हल्लाक प्रस्थान) गाथाकेँ ओहि उपशीर्षक-वाक्य धरि पहुँचबैत अछि जे संग्रहक वीर-दर्शनक सूत्र बनबा जोग अछिः 'वीरता एतय गरजैत नहि अछि — चुपचाप अपन कर्तव्य पूरा करैत अछि, आ चलि जाइत अछि।' मरणोत्तर पहरा-विश्वासक समाजशास्त्र गरीबन बाबा (२८) आ लालमैन बाबा (२९) क भगता-परम्परासँ मिलत; भेद ई जे ओतऽ लोकदेवत्व अनुष्ठान-बद्ध अछि, एतऽ ओ विशुद्ध स्मृति-नीति थिक — 'दुष्ट लोक हुनक नामसँ डराइत छल, आ दुखी लोक हुनक नामसँ बल पबैत छल।'

२४. अमरबाबाः रक्षाक मूल्य — वीरगाथाक आत्म-परीक्षा

कमला धारक जन्म, किसान-मलाहक जीवन-धुरी, आ जुआन धारक यशपर बैदला सरदारक खोट — 'कमलासँ बियाह करब, बलजोड़ी!' मलाहक तपसँ भोला बाबाक उपायः शिवरा गाममे अमरसिंहक जन्म, अखराहामे गढ़ल देह, बैदलाकेँ माटि, आ अन्तिम पटकनीमे बैदलाक अन्त। मुदा गाथा एतऽ नहि रुकैत — भीड़क भयसँ 'खानदाने नष्ट हो'क माँग, आ अमरसिंह बैदलाक गर्भवती कनियाँकेँ मारि दैत छथि; 'गाथा एहि ठाम आँखि नीचाँ कऽ लैत अछि; हम सेहो करी।' मुइलि माएक कोखिसँ जनमलबालक दूना बलगर भेल; कमला अपने ओकर प्राण-भेद बतओलनि, अमरसिंह ओकरा मारलनि — 'ओ बाट ओ ककरो नहि बतौलनि।' साँझमे विजयी, मुदा भारी, अमरसिंह धारक कात असगरे बैसल छथि; मरणोपरान्त गहमर, आ बूढ़ मलाहक दू प्रार्थना — 'एक रक्षाक लेल, आ एक क्षमाक लेल।'

ई संग्रहक सभसँ साहसिक पोथी थिक, कारण ई वीरगाथाक भीतरसँ वीरगाथाक आलोचना करैत अछि। लोक-वीर-कथाक सामान्य व्याकरणमे नायकक प्रत्येक वध न्याय्य होइत अछि; एतऽ लेखक ओहि व्याकरणकेँ तोड़ि कऽ लिखैत छथि — 'जे भेल, से गाथाक सभसँ अन्हार पन्ना थिक... वीरताक तरुआरि जखन डरक हाथमे चलि जाइत अछि, तखन ओ जे काटैत अछि, से घा' बनि कऽ काटनिहारेक करेजमे रहि जाइत अछि।' गर्भवतीक वधकेँ गाथा ने उचित ठहरबैत अछि ने नायकपर थोपल कलंक बना मेटबैत अछि — ओ ओकरा भीड़-भय('भयक अपन तर्क होइत छै, आ भीड़क अपन वेग') क परिणाम रूपेँ दर्ज करैत अछि आ ओकर नैतिक भार नायकक करेजपर सदा लेल छोड़ि दैत अछि। पाश्चात्य समीक्षा-भाषामे ई 'मोरल इन्जरी'क कथा थिक — योद्धाक ओ घाव जे देहपर नहि, अन्तःकरणपर लगैत अछि; बाल-साहित्यमे एकर उपस्थिति क्रान्तिकारी अछि, कारण ई बालककेँ वीरताक विज्ञापन नहि,

वीरताक बही-खाता देखबैत अछि। आ नियतिक प्रत्युत्तर — मुइलि माएक कोखिसँ दूना बलगर बेटा — प्रतिहिंसा-चक्रक ओ बीज-गणित थिक जकरा गाथा एक्कहि वाक्यमे कहि दैत अछि: 'हिसाब एतेक आसान नहि, अमरसिंह।'

औचित्य-दृष्टिसँ 'गाथा आँखि नीचाँ कऽ लैत अछि' वाला वाक्य संग्रहक कथा-संवरण-तकनीकक (मिलाउ: बगियाक गाछ ५) आत्म-सचेत घोषणा थिक — लेखक बाल-पाठककेँ दृश्य नहि दैत छथि, मुदा दृश्यक नैतिक ओजन पूरा-पूरी दैत छथि; ई 'बाल-संस्करण'क ओआदर्श थिक जतऽ सरलीकरण सत्य-लोप नहि बनैत। कमलाक भेद-कथन-प्रसंगक गोपन ('ओ बाट ककरो नहि बतौलनि') मौखिक परम्पराक रहस्य-रक्षाक सुन्दर अनुकरण थिक — किछु ज्ञान गाथो नहि बाँटैत। रस-यात्रा वीरसँ करुण होइत शान्तमे — मुदा ई शान्त विजयक नहि, आत्म-परीक्षाक शान्त थिक; दू प्रार्थनाबला अन्तिम बिम्ब भारतीय परम्पराक प्रायश्चित्त-विधानक लोक-रूप थिक। अन्तर्पाठीयता: बैदलाक बलजोड़ी-घोषणा मनसा (३३) क 'हमर पूजा कर'क लौकिक प्रतिध्वनि थिक — दुनू ठाम बलसँ माँगल सम्बन्ध/श्रद्धा अस्वीकृत होइत अछि; आ धार-देवीक रक्षा-भार मलाह-पुत्रपर पड़ब गांगोदेवीक भगता (३०) आ बड़ सुख सार (३४) क जल-भक्तिसँ मिला कऽ संग्रहक 'जल-वाङ्मय'क अंग बनैत अछि, जकर समग्र चर्च उपसंहारमे हएत।

२५. बहुरा गोढ़िननटुआदयालः तंत्र, नृत्य आ जटिलताक सौन्दर्य

कमला-बलानक संगमपर केवटीक बेटी बहुरा गोढ़िन — हक्कलि, कमरू-सिद्ध, गाछ हँकनिहारि, क्रोधमे बरियातीकेँ बत्तु बना देनिहारि; आ भरौड़क राजकुमार दुलरा दयाल, जे नृत्य सीखि 'नटुआ' भेलाह आ बहुराक पुत्रीसँ प्रेम केलनि। व्यापारी जयसिंहक कुचक्र, मंत्री मल्लक आँखिक ज्योति-हरण, गुरु मंगलक आदेशपर कामाख्या-यात्रा — चण्डिका-मन्दिरक योगिनीसँ षट्नृत्य, सरैयाक भुवनमोहिनीसँ ओकर अंग, वागेश्वरीक भयावह थानपर 'अनहद' आ 'आज्ञाचक्र'क सिद्धि, कानमे करिया-जादू-काटक मंत्र। घुरला पर बहुराक सुखाओल कमला, आरोप-प्रत्यारोप, नटुआक नृत्यसँ धार 'जलाजल', आ विनम्र क्षमा-याचनासँ बहुराक हृदय-परिवर्तन — 'आब तौँ भेलह हमर बेटीक योग्य।' बरियाती, तीन पान, इनार-डोरीक रहस्य, मल्लक आँखिक वापसी — आ बियाहक घाटेपर अपने शिष्यक चक्कू; मरणासन्न नटुआ पटोर कमला मैयाकेँ चढ़बैत छथि, धार खूने-खूनाम; कामाख्याक जादूगरनी हुनका जिया कऽ विश्वासघातीक बलि कमलाकेँ चढ़बैत छथि।

लेखक अपनहि उपक्रममे स्वीकारैत छथि — 'ई गाथा जटिल अछि, जेना कमला-बलानक धार स्वयं' — आ समीक्षाक पहिल काज एहि जटिलताक बचाव थिक। बाल-साहित्य-चिन्तनमे एकटा प्रचलित पूर्वाग्रह अछि जे बालक लेल कथा सरल-रेखीय हो; एकर विरुद्ध पीटर हंट सन आलोचक बेर-बेर स्मरण करबैत छथि जे बालक जटिल संगीत, जटिल खेल, जटिल सम्बन्ध सम्हारैत अछि — शर्त एतबे जे प्रत्येक मोड़ भाव-सत्यपर टिकल हो। बहुरा-गाथाक मोड़ सभ ओही कसौटीपर खरा अछि: क्रोध, साधना, क्षमा, विश्वासघात, बलिदान, पुनर्जीवन — प्रत्येक संक्रमणक भावनात्मक तर्क स्पष्ट अछि, भलहिं घटना-तर्क स्वप्नवत्। बहुराक चरित्र संग्रहक सभसँ जटिल स्त्री-चित्र थिक — 'ओ प्रेममयी सेहो छलि, आ भयंकरो': अपन वरकेँ मारि जादू सिखनिहारि, आमल्लक आँखि घुरओनिहारि; लेखकक टिप्पणी ('बहुरा हृदयसँ दयालु छलि, खाली क्रोधमे भयंकर') बाल-पाठककेँ खल/साधुक द्वि-खण्डीय ढाँचासँ बाहर पात्र पढ़ब सिखबैत अछि — नैतिक जटिलता-बोधक ई दीक्षा निकोलायेवा-वर्णित परिपक्व पाठकत्वक दिशामे पहिल डेग थिक।

दोसर समीक्ष्य आयाम नृत्य-तंत्रक युग्म थिक। नटुआक साधना-क्रम (षट्नृत्य, अनहद, आज्ञाचक्र) कला आ योगकेँ एक्कहि सीढ़ीक डेग बनबैत अछि — भारतीय सौन्दर्य-दर्शनक ओ स्थापना जे नृत्य देह-विद्या नहि, चेतना-विद्या थिक; आ 'नृत्यसँ धारकेँ जलाजल करब' ओकर कथा-रूप प्रमाण। ई माधव सिंह (३७) क राग-वर्षा-प्रसंगक तांत्रिक जोड़ा थिक — ओतऽ स्वर आकाश झुकबैत अछि, एतऽ नृत्य पाताल खोलैत अछि; दुनू मिला कऽ संग्रहक कला-मीमांसा पूर्ण होइत अछि: सिद्ध कला प्रकृतिक सहभागिनी थिक। 'आहि रे बा'क आवर्ती पुकारमौखिक गायन-परम्पराक टेक (रिफ्रेन) थिक जे लिखित पाठमे सुरक्षित रहि गाथाक गेयता स्मरण करबैत अछि। औचित्य-प्रश्न अन्तिम बलि-प्रसंगपर उठत — प्रतिशोधक ई चक्र बाल-पाठ लेल कठोर अछि; लेखकक सन्तुलन ई जे बलि 'न्यायक एकटा जटिल रूप' कहल गेल अछि, अनुमोदित आदर्श नहि, आ गाथाक अन्तिम स्वर मिलन-उत्सव नहि, चिन्तन-भार थिक — 'कोनो सरल सुखान्त नहि।' कामाख्या-सूत्र एहि गाथाकेँ सलहेस (१७) क दबना आ रघुनी मरर (३२) क कामाख्या-कृपासँ जोड़ैत अछि — संग्रहमे कामरूप-कामाख्या लोक-तंत्रक ओ विद्यापीठ थिक जतऽसँ शक्ति अबैत अछि, आ शक्तिक नैतिक दिशा पात्रक नीयत तय करैत अछि।

२६. मोतीसाएरिः कुण्डली, लोभ आ सन्दूकमे बन्द बेटी

मोरंगक निःसन्तान राजा भीमसेनक यज्ञसँ जनमलि मोतीसाएरि; राज-पंडित कुण्डलीमे पढ़ैत अछि — 'एहि कन्यासँ जे बियाह करत, से प्रपंचक सभटा सुखक अधिकारी' — आ लोभमे झूठ भविष्यवाणी रचैत अछि: 'ई रहतीह त' राज्यक समापन।' सन्दूकमे बन्द बेटी

धारमे; घाटपर प्रतीक्षारत पंडितक हाथ धार चूकबि दैत अछि; बोनक सरदार गवल सन्दूक पाबि — 'आइसँ तों हमर बेटी छैं' — बिनु जाति-कुल पुछने पालैत अछि। पंडितक दोसर चालि: पुत्र-लिलसामे राजाकेँ 'गवली सरदारक पुत्री'सँ बियाहक सलाह; गवलक अस्वीकार, राजसेनाक हारि, कृष्णारामकेँ अदहा राज्यक सौदा, मरछौरक धूर्त-धूरिमे छीनल गेलि मोतीसाएरि — आ राजभवनमे अनजान पिताक बियाह-प्रस्ताव। दिव्य दृष्टिसँ सभ भेद देखि मोतीसाएरि शाप दैत छथि — 'जे राज्य अपन बेटीक ई गति करैत अछि, से राज्य नहि रहत' —आ अन्तर्धान: मोक्ष। राज्य समाप्त, पंडित बिनु नामक विलीन, आ बोनक धारमे भोरका उज्जर आकृति।

ई गाथा संग्रहक सभसँ तीव्र सामाजिक अभियोग-पत्र थिक, आ एकर अभियुक्त तीन लोभ छथि जकरा उपक्रम अपने गनबैत अछि — पंडितक, राजाक, सत्ताक। समीक्षाक पहिल टिप्पणी ज्ञान-सत्ताक दुरुपयोगपर: पंडित एतऽ ओ आकृति थिक जकर हाथमे व्याख्याक एकाधिकार अछि ('ज्योतिष हुनके हाथ, शास्त्र हुनके जीह') — आ कथा देखबैत अछि जे अ-जाँचल विशेषज्ञता राजसत्तासँ बेसी घातक भऽ सकैत अछि; गोनू झा (११) क ढोंगी-भेदन-पाठक ई गम्भीर, राजनीतिक संस्करण थिक — ओतऽ ढोंग हास्यमे नोचाएल, एतऽ ओ एकटा बेटीक जिनगी आ एकटा राज्यक अस्तित्व निगलि गेल। दोसर टिप्पणी गवलपर — 'जे धार दऽ जाए, से धरोहरि': बोनक ई दत्तक-नीति रक्त-शुद्धताक पूरा शास्त्रपर लोक-विवेकक फैसला थिक; कथाकएकमात्र सुख-अध्याय ओतहि अछि जतऽ जाति-कुल नहि पुछल गेल — विदेह समानान्तर प्रतिमानक दृष्टिसँ ई गाथाक हृदय-स्थल थिक।

अन्तिम प्रस्ताव-प्रसंग — अनजान पिताक अपन बेटीक आगाँ बियाहक प्रस्ताव — लोककथाक ओहि प्राचीन, विश्वव्यापी वर्जना-प्रसंग-वर्गक अछि जकरा कथा-प्ररूप-सूची 'अस्वाभाविक विवाह-प्रस्ताव'क कोटिमे राखैत अछि; लेखकक औचित्य-प्रबन्धन एतऽ चरम-सतर्क अछि: प्रसंग एक्कहि क्षणमे — 'क्षण भरि लेल समय ठाढ़ भऽ गेल' — रुकि जाइत अछि, ब्योरा शून्य, आ तुरत कथा ओकरा पंडितक 'रचल जाल'क रूपमे पुनर्व्याख्यायित कऽ नैतिक भार षड्यन्त्रकारीपर घुमा दैत अछि। मोतीसाएरिक प्रतिक्रिया — नोर नहि, अग्नि; पलायन नहि, शाप; आ शापक बाद मोक्ष — बाल-पाठक लेल पीड़िताक ओ चित्र थिक जे पीड़ामे परिभाषित नहि होइत: 'ओ एहि पूरा खिस्सामे एक्को बेर नहि हारलि।'महुआ (२०) सँ जोड़ी-पाठ अनिवार्य: दुनू 'बहाओल/बेचल बेटी'क गाथा, दुनूमे जल अन्तिम शरण, आ दुनूक अन्तमे लोक-स्मृति बेटीकेँ धारक अधिष्ठात्री बना लैत अछि — भेद ई जे महुआ प्रेम दिस कूदल छलि आ मोतीसाएरि प्रपंचसँ ऊपर उठि गेलि; करुण आ शान्तक ई दू भिन्न निकास संग्रहक स्त्री-दुख-मीमांसाक दू धुरी थिक। आ अन्तिम पाँती — 'बेटीकेँ धारमे बहओनिहार राज्य अपने बहि जाइत अछि' — बाल-कथाक भेषमे राज्य-नीतिक सूक्ति थिक; ध्वनि-सिद्धान्तक भाषामे वाच्य कथा-निष्कर्ष, व्यंग्य समकालीन चेतौनी।

खण्ड चारि: भक्ति, लोकदेवता, अनुष्ठान आ कला-गाथा

२७. मोतीदाइः छह दिनक मातृत्व — भक्तिक हिसाब आ करुणाक सिलेट

उजैनीक रजक भगतिन मोतीदाइ — गहिल माताक पीड़ीक नित्य-सेविका, आ अपन घरमे खाली कोरा। गोबर पाथैत साँझ गुअरटोलीक जनानीक ओल सन बोल — 'बाँझ... जकरा देखने माल-जाल बिसखि जाएत' — आ आहत भगतिनक विद्रोह-भक्ति: अपने हाथे पीड़ी खोदब, 'प्रकट होउ माता!' गहिल माता प्रकट होइत छथि, इन्द्रक दरबार जा कऽ बही देखबैत छथि — 'पूर्व जन्मक फल, बच्चा नहि लिखल' — मोतीदाइ मरबाक सूरसार करैत छथि, माता दोसर बेर हठ लऽ जाइत छथि, आ करुणा विधानमे एक पाँती जोड़ैत अछि: बच्चा हएत, मुदा छठिहारी दिन मरि जाएत। मोतीदाइक उत्तर — 'जे कोराजिनगी भरि खाली रहल, तकरा लेल छहो दिन छह जुग' — छह दिनक सम्पूर्ण मातृत्व, छठिहारीक दीप तर बालकक अन्त, आ फेर भगता-रूपमे मोतीदाइक नव जीवन: दोसराक खाली कोराक उत्तर बननिहारि।

ई गाथा संग्रहक करुण रसक सभसँ परिष्कृत रचना थिक, कारण एकर करुणा घटनासँ नहि, चयनसँ जनमैत अछि — मोतीदाइ जानि-बुझि छह दिनक सुख आ सातम दिनक शोक स्वीकारैत छथि, आ ई सूचित-सहमति (इन्फॉर्म्ड कन्सेन्ट) त्रासदीकेँ गरिमा दैत अछि। पाश्चात्य समीक्षा एतऽ 'थियोडिसी'क — दुखक दैवी न्याय्यताक — लोक-विमर्श देखत: कथा तीन स्तरक उत्तर रचैत अछि — विधान (बही), करुणा (देवीक हठ), आ अर्थ-रूपान्तरण (कलंक-मोचन) । अन्तिम स्तर सभसँ सूक्ष्म: 'बाँझ होएबाक दुख मुदा खतम भेलन्हि' — बच्चा नहि रहल, मुदा 'बाँझ'क लांछन सदा लेल धोआ गेल; गाथा दुख आ अपमानक भेद करैत अछि, आ देखबैत अछि जेसमाज-प्रदत्त अपमान प्रायः नियति-प्रदत्त दुखसँ भारी होइत अछि। बाल-पाठक एहि भेदकेँ सिद्धान्त रूपेँ नहि, कथा-रूपेँ आत्मसात् करैत अछि — आ संगहि गुअरटोलीक जनानी-टोली मार्फत शब्द-हिंसाक पाठ: 'एक बात अछि भीतरे-भीतर कानब, आ दोसर बात अछि गामक बाटपर अशुभ कहाएब।'

भारतीय दृष्टिसँ पीढ़ी-खोदब-प्रसंग भक्ति-मीमांसाक रत्न थिक — 'ई विद्रोह नहि छल, ई भक्तिक अन्तिम भाषा छल: जेना बच्चा माएक आँचर घीचैत अछि।' भक्तकेँ देवतासँ झगड़बाक अधिकार — सूर-मीराँसँ लऽ कऽ लोक-भगतिन धरि — भारतीय भक्तिक ओ लोकतान्त्रिक मुद्रा थिक जे प्रार्थनाकेँ याचनासँ ऊपर सम्बन्ध बनबैत अछि; आ देवीक द्वि-यात्रा (देवी स्वयं याचिका!) ओहि सम्बन्धक पराकाष्ठा। इन्द्रक बही-प्रसंग कर्म-सिद्धान्तक बाल-सुलभ मूर्तन थिक, मुदा कथाक जोर विधानपर नहि, विधानक भीतरक 'सिलेट'पर अछि —'जतय करुणा किछु पाँति जोड़ि सकैत अछि': नियतिवाद आ करुणावादक ई सन्धि-रेखा गाथाक दार्शनिक उपलब्धि थिक। अन्तर्पाठीयता: बुधनी (१६) क तप आ मोतीदाइक तप — विधि एक, ध्रुव उनटा — संग्रहक तप-मीमांसाक दू छोर थिक: तप शक्ति थिक, दिशा भक्तक; आ भगता-संस्थाक जे रूप एतऽ करुणासँ जनमल, तकर पुरुष-रूप गरीबन बाबा (२८) आ लालमैन बाबा (२९) मे न्याय-चक्रसँ जनमत — तीनू मिला कऽ मिथिलाक भगता-परम्पराक पूर्ण त्रिकोण।

२८. गरीबनबाबाः अनजान भूल, दैवी दण्ड आ सामूहिक प्रायश्चित्त

उधरा गामक तीन संगी — बरहम ठाकुर, घासी यादव, गरीबन धोबि; अखराहा लग कमला माइक पीढ़ीमे गरीबनक पएर अनजाने लागि गेल। कुपित कमला मैया इन्द्रक दरबारसँ बाघिन आनि दण्ड देलनि — अखराहामेअसमान युद्ध, गरीबनक वध, लहास कमला धारमे। धोबिया घाटपर एक धोबि काजक असुविधामे लहासकेँ सहटारि बहा देलक — दोसर अनजान भूल। कनियाँक आर्तनादपर गरीबनक आत्मा भगता-देहमे बाजल: सभ धोबि मिलि लहास निकालि दाह-संस्कार करथि, नहि त' भट्ठीमे कपड़ा जरत। सामूहिक खोज, विधिवत् संस्कार, शाप-निवारण — आ तहियासँ गरीबन बाबा भट्ठीक रक्षक।

ई छोट गाथा संग्रहक धर्म-समाजशास्त्रीय दृष्टिसँ सभसँ पारदर्शी पाठ थिक — लोकदेवता-निर्माणक पूरा प्रक्रिया एतऽ चारि चरणमे खुजल अछि: अन्यायपूर्ण मृत्यु, मरणोत्तर अनादर, आत्माक माँग, सामूहिक परिहार — आ परिहारक संस्थाकरण (भट्ठीक रक्षक) । धर्मक मानवशास्त्र जकरा 'कल्ट-निर्माण'क आख्यान कहत, से एतऽ बाल-कथाक सरलतामे उपलब्ध अछि, आ एकर शैक्षिक मूल्य ई जे बालक अपन परिवेशक भगता-गहबर-परम्पराकेँ अन्धविश्वास वा तमाशा नहि, अर्थपूर्ण सामाजिक स्मृति-विधान रूपेँ बुझऽ लगैत अछि। कथाक नैतिक व्याकरणमे केन्द्रीय पद 'अनजान-सुनजान' थिक — दुनू भूल (पएर लागब, लहास सहटारब) निर्दोष-भाव छल, आ तइयो परिणाम भोगल गेल; कथा एतऽ आशय आ प्रभावक भेदक कठिन पाठ पढ़बैत अछि: अनजानो भूलक सामाजिक मरम्मत करऽ पड़ैत अछि — क्षमा माँगब आशयक स्वीकृति नहि, प्रभावक जिम्मेदारी थिक। आधुनिक नैतिक-शिक्षाक भाषामे ई 'जवाबदेही बिनु लज्जाक' (एकाउन्टेबिलिटी विदाउट शेम) क लोक-पाठ थिक।

समीक्षा-दृष्टिसँ देवीक दण्ड-अनुपातपर प्रश्न उठब स्वाभाविक — अनजान स्पर्शपर प्राणदण्ड? — आ गाथाक अपन उत्तर ओकर संरचनामे अछि: कथा देवीक दण्डकेँ अनुकरणीय नहि, आरम्भ-बिन्दु बनबैत अछि, आ ओकर सम्पूर्ण ऊर्जा मरम्मत-पक्षमे लगबैत अछि; अन्तिम अध्यायक शब्द — 'पीड़ित स्वयं रक्षक बनि सकैत अछि' — दण्ड-कथाकेँ रूपान्तरण-कथामे बदलि दैत अछि। बत्तू (६) क बलि-प्रश्न आ एतुक्का कोप-प्रश्न मिला कऽ संग्रह देव-मनुष्य-सम्बन्धक जे चित्र बनबैत अछि से भय-मुक्त नहि, मुदा संवाद-युक्त अछि — देवता एतऽ अन्तिम शब्द नहि, वार्ताक दोसर पक्ष छथि। तीन-संगीक आरम्भिक चित्र (ठाकुर-यादव-धोबिक साझा अखराहा) गाथाक सामाजिक स्वप्न-रेखा थिक जकरा आलोचक अनदेखा नहि करत: जाति-नाम गनल गेल अछि, मुदा अखराहामे ओ सभ 'संगी' छथि — आ लोकदेवत्व अन्तमे ओही धोबिकेँ भेटैत अछि जकर श्रम (भट्ठी, कपड़ा) कथाक धुरी थिक; श्रमक ई अभिषेक विदेह समानान्तर प्रतिमानक बीज-सूत्र थिक, जे लालमैन बाबा (२९) आ रघुनी मरर (३२) मे आगाँ बढ़त।

२९. लालमैनबाबाः बाघिनपर संकोच आ अन्तिम इच्छाक वजन

नौहट्टाक दू चमार संगी — मनसाराम आ लालमैन — संगे महीस चरबैत। बघिनियाक आक्रमणपर लालमैन महीस-रक्षामे लड़लाह, मुदा स्त्रीजातिक बाघिनपर पूर्ण बल नहि लगओलनि — आ मारल गेलाह। मरैत काल अन्तिम अनुरोध: 'हमर दाह-संस्कार नीकसँ कएल जाए।' मनसाराम गामपर किछु नहि कहलक; क्रुद्ध आत्मा ओकरा 'बका कऽ' मारि देलक; गाम सभटा बुझि सामूहिक दाह-संस्कार केलक, आत्माकेँ शान्ति भेटल, आ लालमैन बाबा भगता-रूपमे पूजित भेलाह।

ई गाथा संग्रहक सभसँ संक्षिप्त वीर-भक्ति-रचनामे सँ अछि, मुदा एकर नैतिक घनत्व असाधारण। पहिल समीक्ष्य बिन्दु ओ संकोच थिक जे लालमैनक प्राण लेलक — 'स्त्रीजातिक बाघिनपर पूर्ण बलसँ प्रहार करबासँ हिचकला।' ई ब्योरा लोक-नीतिशास्त्रक विलक्षण क्षण थिक: नायकक शौर्य-संहिता (स्त्री-जातिपर वार नहि) पशु-जगत् धरि विस्तृत अछि, आ कथा एहि अति-विस्तारक मूल्य (प्राण) देखबितो ओकरा मूर्खता नहि कहैत — 'ई त्याग आ नैतिकताक मूल्य अत्यन्त भारी छल'; अर्थात् गाथा नैतिक नियमक त्रासद पक्ष स्वीकारैत अछि बिनु नियमकेँ हँसी उड़ौने। बाल-पाठक लेल ई 'महग सिद्धान्त'क पहिल भेँट थिक — ओ प्रश्न जे परिपक्व

नैतिकताक द्वार खोलैत अछि: की सिद्धान्त तखनो राखी जखन दाम प्राण हो? कथा उत्तर नहि, आदर दैत अछि — आ आदर उत्तरसँ बेसी सिखबैत अछि।

दोसर केन्द्र अन्तिम-इच्छाक संस्था थिक। मरणासन्नक अनुरोध लोक-विधानमे लगभग ऋण थिक, आ मनसारामक चुप्पी — जकर कारण गाथा ईमानदारीसँ अनिश्चित छोड़ैत अछि ('भय, स्वार्थ, वा उपेक्षा') — ओहि ऋणक अस्वीकार; प्रतिशोधक जे रूप आत्मा लैत अछि से बाल-पाठ लेल कठोर अछि, मुदा औचित्य-प्रबन्धन फेर संवरण-विधिसँ भेल अछि (वध-क्रिया एक पदमे, ब्योरा शून्य), आ कथाक गुरुत्व-केन्द्र तुरतसामूहिक-प्रायश्चित्त दिस घुसकि जाइत अछि — ठीक गरीबन बाबा (२८) क ढाँचा: व्यक्तिक भूल, समुदायक मरम्मत। दुनू गाथाक ई समान्तरता संग्रह-स्थापत्यक सचेत जोड़ी बुझाइत अछि — धोबि आ चमार, दुनू श्रम-समुदायक लोकदेवता, दुनूक देवत्वक जड़िमे मरणोत्तर सम्मानक प्रश्न; समाजशास्त्रीय पाठ ई जे जकरा जीवितमे सम्मान दुर्लभ, लोक-धर्म ओकरा मरणोत्तर सम्मानक संस्था रचि दैत अछि — आ बाल-मानसमे ई गाथा-जोड़ी सम्मानक वितरण-न्यायक बीज रोपैत अछि। मित्रता-विश्वासघातक अक्षपर ई गाथा संग्रहक मित्र-शृंखला (पट्टू १९, जीतन १६, पाथर-मित्र १२) क अन्हार ध्रुव थिक — ओतऽ मित्र प्राण दैत अछि, एतऽ मित्र वचनो नहि दैत; दुनू ध्रुवक बीच बाल-पाठकक अपन मैत्री-नीति आकार लेत।

३०. गांगोदेवीकभगता: नामक शक्ति — सभसँ कोमल भक्ति-गाथा

साओनक मेला; गांगोदेवीक साँए भाय-पिताक संग माछ मारऽ गेलाह — मोनमे योजना: 'माछ बेचि गांगो लेल चूड़ी-लहठी आनब।' दिन भरि जालमे खाली डोका-हराशंख; अन्तिम प्रयासमे कनियाँक नाम लऽ जाल — 'ई अन्तिम बेर छी गांगो... क्षमा करब!' — आ जाल माछसँ एतेक भरल जे घिंचने नहि घिंचाए। दोसर दिन फेर वैह; भाय-पिताक हिस्सामे वैह डोका-काँकड़ु, आ रहस्य खुजल: गांगोक नाममे शक्ति। ई विश्वास मलाह-समुदायमे पसरल, आ आइयो जाल फेकबासँ पहिने गांगोक स्मरण — 'गांगोदेवीक भगता।'

ई संग्रहक सभसँ छोट आ सभसँ कोमल पोथी थिक, आ एकर समीक्षा एकर लघुताक बचावसँ शुरू हो। लेखक अपने रेखांकित करैत छथि — 'एहिमे कोनो राक्षस नहि, कोनो युद्ध नहि, कोनो जटिल षड्यन्त्र नहि' — आ यएह एकर विधागत साहस थिक: चमत्कार-कथाक पूरा तामझामकेँ ई गाथा एक दाम्पत्य-सम्बोधन धरि घटा दैत अछि। चमत्कारक स्रोत की? कथाक अपन उत्तर मनोवैज्ञानिक रूपेँ सटीक अछि — 'ई विनम्रता, ई श्रद्धा, ई चमत्कारक असली स्रोत': पतिक ओ वाक्य ('क्षमा करब') जाहिमे पुरुष अपन विफलता पत्नीक आगाँ स्वीकारैत अछि; लोक-परम्पराक पितृसत्तात्मक व्याकरणमे ई सम्बोधन-मुद्रा अपने आपमे लघु-क्रान्ति थिक, आ गाथा ओही मुद्राकेँ फलदायिनी देखबैत अछि। पाश्चात्य भाषा-दर्शनक ओ 'परफॉर्मेटिव' सूत्र जे बत्तू (६) मे डींगक रूपमे छल, एतऽ अपन विलोम-रूपमे अछि: ओतऽ वाक्य भय रचैत छल, एतऽ नाम श्रद्धा रचैत अछि — दुनू मिला कऽ संग्रहक वाक्-मीमांसा पूर्ण: शब्दक शक्ति ओकर भावसँ अबैत अछि।

धर्म-समाजशास्त्रक दृष्टिसँ ई गाथा भगता-परम्पराक चारिम आ विलक्षण रूप थिक: मोतीदाइ (२७) करुणासँ, गरीबन (२८) आ लालमैन (२९) न्याय-चक्रसँ देवत्व धरि पहुँचलाह — गांगो बिनु मृत्युक, बिनु दुखक, विशुद्ध प्रेम-स्मृतिसँ; 'एकटा परिवारक व्यक्तिगत अनुभव सामूहिक विश्वास बनल' — लोक-धर्मक ई सभसँ सौम्य जन्म-कथा थिक। आ श्रम-पक्ष लक्षित हो: ई आस्था-कथा असलमे जीविका-कथा थिक — जाल, सरैया, हाट, चूड़ी-लहठीक अर्थतन्त्र; भक्ति एतऽ श्रमक विकल्प नहि, श्रमक साथी थिक ('जाल फेकबासँ पहिने स्मरण' — स्मरणक बाद जाल फेकनाइ त' रहबे कएल) । बाल-पाठक लेल एकर सन्देश-संरचना आदर्श अछि: चमत्कार अछि (कल्पना-पोषण), मुदा ओ लॉटरी नहि — ओ सम्बन्ध, विनम्रता आ परिश्रमक त्रिकोणपर टिकल अछि। अमर बाबा (२४) क मलाह-तप आ बड़ सुख सार (३४) क गंगा-कृपाक बीच ई गाथा जल-जीवी समुदायक भक्ति-वाङ्मयक मध्य-स्वर थिक — आ तीनू मिला कऽ संग्रहक ई स्थापना बनैत अछि जे मिथिलाक जल-संस्कृतिमे धार जीविका, देवी आ साक्षी तीनू एक्कहि संग थिक।

३१. ज्योतिपँजियार: एक इनकारक बारह बरख — शापसँ वरदान धरि

पम्पीपुरक सिद्ध तांत्रिक ज्योति पँजियार गहबर बनएबामे मग्न छलाह; भिक्षुक-वेशमे आएल कुलदेवता धर्मराज 'ज्योतिक हाथेटासँ भीख' माँगलनि, आ ज्योति मना कऽ देलनि — 'गहबर बनायब छोड़ि कऽ नहि आयब।' शाप: निर्धनता आ कुष्ठ। बहिनक द्वारपर अवहेलना, ओइटदलमे संगीक शरण, तांत्रिकक निर्देश — बारह बरख कदलीवनमे धर्मराजक आराधना। बाटमे शापक छाया: छाह देनिहार सैनी गाछ सुखा कऽ खसल, पानि आनऽ गेलि कोइली बिहाड़िमे मरलि। महिसबार-रूप धर्मराजक संकेत, वर-पातपर लिखल 'यैह छी अछमितपुर', नि:सन्तान राजाकेँ छागर-वरदान, बारह बरखक तप — आ तखन पुनर्जीवनक शृंखला: कोइली जीलि, धार बहलि, सैनी गाछ हरिआएल, छागर-राजपुत्रक युग्म-रहस्य खुजल; ज्योति गमछामे गहबर नेने पम्पीपुर घुरलाह।

एहि गाथाक दार्शनिक केन्द्र ओ प्रश्न थिक जे भक्ति-साहित्यमे बेर-बेर उठैत अछि: सेवा आ साक्षात्कारमे टकराव भेला पर के पैघ? ज्योति गहबर (देवताक घर) बनबैत छलाह आ देवताकेँ (भिक्षुक-रूपमे) टारि देलनि — कथाक निदान स्पष्ट अछि: 'काज आ भक्तिक बीच ज्योति काजकेँ चुनलनि' — अर्थात् साधन साध्यसँ पैघ भऽ गेल; शाप एही व्युत्क्रमक दण्ड थिक, अहंकारक नहि त' असावधान प्राथमिकता-बोधक। ई सूक्ष्म भेद बाल-पाठ लेल मूल्यवान: कथा 'आलसी'केँ नहि, 'अति-व्यस्त'केँ चेतबैत अछि — आधुनिक जीवनक ओ रोग जकरा कोनो युगक बालक अपन अभिभावकमे चिन्हि सकैत अछि। शाप-वहनक जे चित्र आगाँ अबैत अछि — छाया-मात्रसँ गाछक मृत्यु, सेवामे कोइलीक अन्त — से संग्रहक सभसँ मार्मिक 'संक्रामक दुर्भाग्य'क बिम्ब थिक: दुख असगर नहि रहैत, प्रियजन धरि पसरैत अछि; आ ज्योतिक प्रतिक्रिया ('आब हर डेगमे सतर्कता — कतहु आर किओ आहत नहि होअए') दुखक भीतर जनमैत करुणाक चित्र।

बारह बरखक तप संग्रहक काल-मात्रकक (मिलाउ: दबना १७, मड़ुवन १५, बारह-बरखा सदाव्रत १२, नैका २१) पूर्णतम प्रयोग थिक, आ पुनर्जीवन-शृंखला ओकर फल-गणित: जे-जे शापसँ मरल, से-से तपसँ जीलि — क्षति आ मरम्मतक ई सन्तुलित बही लोक-न्यायक आदर्श-चित्र थिक, जकर विलोम (क्षतिक अपूरणीयता) संग्रह अमर बाबा (२४) मे देखा चुकल अछि; दुनू मिला कऽ पाठक सीखत जे कोन क्षति घुरैत अछि आ कोन नहि। छागर-राजपुत्रक युग्म-प्राण-रहस्य (छागर खुजत त' पुत्र घुरत) लोककथाक 'बाह्य-प्राण' (एक्सटर्नल सोल) आकृतिक स्नेह-रूप थिक — प्राण एतऽ राक्षसक सुग्गामे नहि, वरदानक पाठामे बसैत अछि। आ अन्तिम बिम्ब —'गमछामे गहबर' — गाथाक उत्तर-वाक्य थिक: जे गहबर बनएबाक हठमे देवता टारल गेल छलाह, से आब एतेक हल्लुक भेल जे गमछामे बान्हल चलैत अछि; भक्ति भारसँ हल्लुकता दिस — ई यात्रा-रेखा उगना (३५) क ओहि प्रश्नक पूर्व-पीठिका थिक जे भेष आ भक्तिक भारकेँ सोझे उठाओत।

३२. रघुनीमररः भक्तिक कवच आ झूठ आरोपक अदालत

अकालमे गाम छोड़ि रघुनी मरर बिदिया बरहमपुर पहुँचलाह; जुगल प्रसादक दंगल जीति सय बीघा दान पओलनि, सुगमामे बथान बसओलनि। जमीन्दारी गागोरी राजकेँ बिकाएल; सिमरीक चौधरीक दलानपर नाच-प्रसंगमे रघुनीक उदारता (नटुआकेँ जोड़ी गाय) चौधरीक डाह बनल। मकदूम जोगीक तीन प्रहार — मन्त्रल सरिसो निष्फल, चण्डिका-सिद्धिसँ सय बाघक घेरामे वध मुदा कामाख्याक हाथेँ पुनर्जीवन, तेसर बेर जोगीक मुट्ठी बन्दक-बन्द — तीनू विफल। तखन कानूनी छल: 'लगान नहि देने अछि, आ लोककेँ मना करैत अछि'; सिपाही भाइ देवदत्तकेँ पकड़लक, रस्तामे रघुनी देखार रहितो सिपाहीकेँ अदृश्य; काल-कोठरीमे कोड़ा चलओनिहारकेँ उनटे चोट — राजाक भूल-स्वीकृति, लगान-बन्दी रैयतक रिहाई, आ रघुनीसँ घट्टीक सम्मान-याचना।

ई गाथा संग्रहक 'अजेय भक्त'-आकृतिक प्रतिनिधि थिक, आ एकर समीक्षा-कुंजी आक्रमणक त्रि-स्तरीय सीढ़ी थिक: जादू (व्यक्तिगत), हिंसा (सय बाघ), आ अन्तमे राज्य-यन्त्र (झूठ आरोप, गिरफ्तारी, कोड़ा) — कथा देखबैत अछि जे ईर्ष्या जखन सोझ बलमे हारैत अछि तखन संस्थाक भेष धरैत अछि, आ तेसर हथियार पहिल दुनूसँ घातक: बाघसँ कामाख्या बचा लेलनि, मुदा झूठ आरोपक शिकार निर्दोष भाइ भेलाह। बाल-पाठक लेल ई सीढ़ी अन्याय-साक्षरताक पाठ्यक्रम थिक — अन्यायसदिखन राक्षस-रूपमे नहि, कागज-रूपमे सेहो अबैत अछि। दैवी हस्तक्षेपक जे रूप अन्तमे अबैत अछि — कोड़ा चलओनिहारकेँ उनटे चोट — से लोक-न्यायक ओ काव्य-सूत्र थिक जे दण्डकेँ दण्डकेपर घुमा दैत अछि (मिलाउ: भाट-भाटिनक प्रति-शर्त १०, बगियाक डाइनक कर्मफल ५); हिंसा एतऽ नायक नहि करैत — व्यवस्था अपने आपसँ टकराइत अछि, आ ई अ-हिंसक न्याय-कल्पना बाल-पाठ लेल आदर्श अछि।

चौधरीक डाहक जन्म-प्रसंग सूक्ष्म सामाजिक अवलोकन थिक: रघुनीक उदारता (गाय-दान) चौधरीकेँ 'नीचाँ देखाएब' बुझाएल — कथा देखबैत अछि जे ईर्ष्या अपमानसँ नहि, दोसराक गुणेसँ जनमि सकैत अछि; संग्रहक ईर्ष्या-शृंखला (सियार ८, पृथ्वीपाल १९, थापा १७) मे ई सभसँ सूक्ष्म कड़ी थिक, कारण एतऽ ईर्ष्याक 'कारण' पीड़ित द्वारा कएल गेल कोनो अपकार नहि, उपकारक शैली थिक। रघुनीक अजेयताक स्रोत कथास्पष्ट रखैत अछि — 'रघुनी देवी भक्त छलाह, तेँ जादू नहि चललैक' — मुदा एतऽ एकटा समीक्षकीय सतर्कता आवश्यक: भक्ति-कवचक ई सूत्र बाल-मानसमे 'भक्त = अभेद्य'क सरल समीकरण नहि बनए, ताहि लेल संग्रह अपने प्रतिपक्ष रखने अछि — दीना-भदरी (१६) परम भक्त रहितो छलसँ मारल गेलाह; दुनू गाथाक जोड़ी-पाठ भक्ति-फलक जटिलता सिखबैत अछि। अन्तमे राजाक 'घट्टी'-याचना — दण्ड-अधिकारीक सम्मान-याचक बनि जाएब — सत्ता-व्युत्क्रमक ओ लोक-क्षण थिक जकरा निकोलायेवाक सिद्धान्त बाल-साहित्यक गहींरतम सुख कहत: बालक (आ बोनिहार) ओहि क्षणक साक्षी बनैत अछि जखन तराजू उनटैत अछि।

३३. बिहुलाः थम्हपर बैसलि हठ — मनसा-गाथाक बाल-रूपान्तर

चम्पानगरक चाँद सौदागर — चौदह जहाजक स्वामी, शिवक अनन्य भक्त: 'ई माथ एक्कहि ठाम झुकैत अछि।' कैलास त्यागि मान्यता-भूखलि मनसा हुनकहिसँ पूजा माँगलनि; इनकारपर सात बेटाक वध, चौदह जहाजक डूब — तइयो सौदागर नहि झुकलाह: 'भयसँ झुकल माथक कोन मोल?' राखक ढेरीमे चिनगी — लखिन्दरक जन्म; अखण्ड-सौभाग्यवती बिहुलासँ बियाह, जालीक कोहबर, आ पातरो-सँ-पातर भऽ पैसलि मनसाक डंक। केराक थम्हपर लहासक संग बिहुला — 'हमर सोहाग जतय जाएत, हम ओतहि जाएब'; त्रिवेणीक धोबिनक मृत्यु-जीवन-खेलसँ बाट भेटल, मनसा-द्वार धरि तप, आ माँग असगर सोहागक नहि — 'लखिन्दर आ हुनक जेठ सातो भाइ, सभक प्राण।' आठ प्राणक वापसी, चम्पानगरमे आठ आरती, आ मनसा-बिहुलाक युग्म-पूजाक जन्म।

ई गाथा पूर्वी भारतक विशाल मनसा-मंगल-परम्पराक मैथिली बाल-रूपान्तर थिक, आ रूपान्तरणक कौशलएकर समीक्षाक पहिल विषय। मूल परम्पराक विस्तार (मंगलकाव्यक सहस्रो पाँती) एतऽ बारह अध्यायक सुगठित चापमे बान्हल गेल अछि, आ लेखकक जोर-वितरण अर्थपूर्ण: देवी-सौदागरक जिद-युद्ध पूर्वार्ध, बिहुलाक यात्रा उत्तरार्ध — अर्थात् गाथाक गुरुत्व-केन्द्र सत्ता-संघर्षसँ सरकि कऽ स्त्री-हठक तीर्थ-यात्रापर आबि गेल अछि। चाँद सौदागरक चरित्र-रेखा बाल-पाठ लेल असाधारण जटिल उपहार थिक: ओ नायक छथि आकि हठी? कथाक उत्तर — दुनू: 'हुनक शोक पहाड़ छल, मुदा निष्ठा पहाड़सँ ऊँच' — आ भयाधारित पूजाक हुनक अस्वीकार ('जे देवी सात निर्दोषक प्राण लऽ सकैत छथि, से पूजा नहि — भय माँगि रहल छथि') धर्म-मीमांसाक ओ प्रश्न थिक जे बालकक मोनमे बेर-बेर उठैत अछि आ जकरा प्रायः दाबि देल जाइत अछि; गाथा ओकरा दाबैत नहि, आ अन्तमे समाधान सेहो भय-मार्गसँ नहि, कृतज्ञता-मार्गसँ अबैत अछि — 'कृतज्ञताक पूजा भयक पूजासँ सदिखन पैघ।'

बिहुलाक यात्रा प्रॉप-दृष्टिसँ विशुद्ध नायक-यात्रा थिक — प्रस्थान, सहायक-भेँट (धोबिन = दाता-आकृति), कठिन तप, वरदान, घुरती — मुदा एकर क्रान्ति ई जे यात्री नव-विवाहिता स्त्री थिक आ यात्राक वाहन पतिक लहासबला थम्ह: विश्व बाल-साहित्यमे एहन बिम्ब दोसर ताकब कठिन। जोसेफ कैम्पबेलक 'नायक-यात्रा'क एकरेखीय पौरुष-ढाँचापर ई गाथा लोक-परम्पराक अपन संशोधन थिक — बिहुलाक शस्त्र हठ, सेवा आ प्रश्न ('देवीक क्रोध पुरुषपर छल — दण्ड कनियाँ किए भोगय?') थिक; आ अन्तिम माँगक विस्तार ('अपना लेल आएलि, सभक लेल माँगलक — यएह बिहुलाकेँ बिहुला बनबैत अछि') व्यक्तिगत मोक्षसँ सामुदायिक कल्याण दिसक ओ छलाँग थिक जे भारतीय भक्ति-नायिकाकेँ पाश्चात्य 'क्वेस्ट-हीरो'सँ अलगबैत अछि। मनसाक चरित्रमे 'मान्यताकभूख'क मानवीकरण ('भूख मनुक्खे सन') देवता-चित्रणक लोक-साहसक उदाहरण थिक — आ अन्तमे देवी-मनुष्याक युग्म-पूजा ओहि साहसक संस्थागत फल: 'भक्ति आ शक्तिक एहन जोड़ी आन कोन गाथामे?' अन्तर्पाठीयता घन अछि: 'बिहुला बनू'क लोकोक्ति-रूप समापन गाथाकेँ जीवित मुहावरामे बदलैत अछि (मिलाउ: 'बोधि कायस्थ जेकाँ गंगा लाभ', ३४); कोहबर-रक्षाक विफल जाली मोतीसाएरिक सन्दूक (२६) क प्रति-बिम्ब थिक — ओतऽ बन्द कएनाइ अन्याय छल, एतऽ रक्षा, आ दुनू विफल: लोक-गाथा बेर-बेर कहैत अछि जे नियति ताला नहि मानैत, तप मानैत अछि।

३४. बड़ सुख सार पाओल तुअतीरेः निष्कलंक जीवन आ साहित्य-तीर्थ

मिथिला-दरबारक बोधि कायस्थ — दरमाहासँ गुजर, बचल राशि दान-पुण्यमे, भरि जन्म हिंसा-लालसासँ दूर, भोलाबाबाक भक्त। मृत्यु-काल निकट बुझि गंगा-लाभक संकल्प; अदहा कोसक दूरीएसँ गंगाकेँ सम्बोधन — आ गंगा माय तट तोड़ि आबि हुनका अपनामे समाहित कऽ लेलनि; सोझे स्वर्ग। ई घटना विद्यापति-पूर्वक; विद्यापति एकरा पुरुष-परीक्षामे बान्हलनि आ एहीपर अमर मैथिली पद रचलनि — 'बड़ सुख सार पाओल तुअ तीरे।'

ई संग्रहक सभसँ छोट कथानक थिक — एकहि चमत्कार, एकहि पात्र — मुदा एकर समीक्षा-भार सभसँ बहुस्तरीय, कारण ई कथा-पोथी होइतो साहित्येतिहास-पोथी थिक। पहिल स्तर: चरित्र-चित्रणक विलोम-विधि। लोक-कथाक नायक प्रायः कर्मसँ चिन्हल जाइत अछि; बोधि कायस्थ अ-कर्मसँ चिन्हल छथि — जे-जे नहि केलनि (हिंसा, पर-स्त्री-धन-लालसा, संग्रह) सएह हुनक चरित थिक। बाल-साहित्यमे ई 'नकारात्मक स्थान'क चरित्र-कला दुर्लभ आ मूल्यवान: वीरताक कोनो दृश्य बिना कथा एकटा आदर्श ठाढ़ कऽ दैत अछि — आ आदर्शक कसौटी अन्तिम परीक्षामे अछि: अदहा कोससँ पुकारब श्रद्धाक दुस्साहस थिक ('ई कार्य कोनो अहंकार वा दुस्साहस नहि छल — पूर्ण समर्पित भक्तक निश्छल याचना'), आ गंगाक तट तोड़ब ओकर प्रतिदान। भक्ति-मीमांसाक भाषामे ई 'मर्यादा-भंजक कृपा'क कथा थिक — नियम (तट) प्रेमक आगाँ झुकैत अछि; बिहुला (३३) मे नियति तपसँ झुकल छलि, एतऽ भूगोल भक्तिसँ।

दोसर स्तर साहित्य-चेतना थिक, आ एतहि ई पोथी संग्रहमे अद्वितीय: कथा अपन साहित्यिक जीवनी अपने कहैत अछि — घटना, फेर पुरुष-परीक्षामे संस्कृत-ग्रन्थन, फेर मैथिली पदमे काव्यीकरण, फेर लोकोक्ति ('बोधि कायस्थ जेकाँ गंगा लाभ') । बाल-पाठकक आगाँ एतऽ पहिल बेर ई प्रक्रिया खुजैत अछि जे कथा कोना पोथी बनैत अछि आ पोथी कोना संस्कृति — पाठ-परम्परा (टेक्स्चुअल ट्रान्समिशन) क ई आत्म-कथा साहित्य-शिक्षाक बीज-पाठ थिक। आ विद्यापतिक ई उपस्थितिसंग्रह-स्थापत्यक एकटा त्रयी खोलैत अछि: बड़ सुख सार (विद्यापति कथाकार-गायक), उगना (३५: विद्यापति पात्र), जट-जटिन (३६: विद्यापति-युगक दरबारसँ जनमल लोकनाट्य) — तीनू मिला कऽ बाल-पाठकक आगाँ महाकविक तीन मुख — रचयिता, भक्त, आ युग — क्रमशः प्रकट होइत अछि; ई साहित्येतिहासक कथा-द्वारा-शिक्षण संग्रहक मौलिक शैक्षिक प्रयोग थिक। रस-दृष्टिसँ ई विशुद्ध शान्त-रसक रचना थिक — संग्रहमे एकसरि — आ मृत्युक जे चित्र एतऽ अछि (स्वेच्छया, प्रतीक्षित, कृपा-सिक्त) से बाल-मानसमे मृत्यु-भयक ठाम मृत्यु-गरिमाक पहिल परिचय रोपैत अछि: बेटेलहाइम जकरा परीकथाक गहींरतम सेवा कहैत छथि — अन्तक संग सन्धि — से एतऽ बिनु कोनो राक्षसक, एकटा नदीक कोरामे सम्पन्न होइत अछि।

३५. उगना: नोकर बनल महादेव — भक्तिक सभसँ मधुर उलटफेर

कैलासपर विद्यापतिक नचारी सुनि झूमैत शिव — आ साध: 'ई गीत लगमे रहि कऽ सुनी।' उगना-रूपमे विद्यापतिक नोकरी; जेठक बाटमे मूर्छित कविकेँ जटा खोलि गंगधारसँ पानि; गंगाजलक स्वादसँ भेद-बोध, शिवक शर्त — 'जहिया मुँहसँ हमर असली नाम निकलत, तहिये अन्तर्धान।' कैलासपर एकाकिनी पार्वतीक तेतरि-चालि: गाछ रित्त, उगना खाली हाथ, चन्दनक बाढ़नि — आ विद्यापतिक करेजसँ फूटल 'हा शिव!' अन्तर्धान। विक्षिप्त कवि — 'उगना रे मोर कतय गेलाह' — आ भीठ-भगवानपुरमे उगना महादेवक थान।

ई गाथा संग्रहक भक्ति-खण्डक मुकुट-मणि थिक, आ एकर केन्द्रीय अद्भुत ओ व्युत्क्रम थिक जकरा कथा अपने 'भक्ति-साहित्यक सभसँ मधुर उलटफेर' कहैत अछि: सेव्य सेवक बनल — गीतक भूखेँ। भक्ति-दर्शनक परिभाषामे ई 'भगवानक भक्त-वात्सल्य'क चरम-कथा थिक, मुदा एकर बाल-साहित्यिक मूल्य दोसर तलपर अछि: ई घरेलूताक कथा थिक। शिव एतऽ बासन माँजैत छथि, तेतरि ताकऽ जाइत छथि, बाढ़नि सहैत छथि — 'मिथिला अपन देवताकेँ सेहो घरक लोक बना लैत अछि — यएह एकर सभसँ पैघ सिद्धि' — आ बालक-पाठक लेल एहिसँ पैघ धर्म-शिक्षा की जे परमात्मा रसोई-घर धरि सहज छथि? नोडेलमैनक 'हिडेन एडल्ट'क उनटा एतऽ 'हिडेन गॉड' अछि — आ ओकर छिपाव-श्रम स्वयं तप थिक: 'जादू करितथि त' भेष टूटि जइतनि; भेष निमाहब सेहो एकटा तपस्या छल।'

गाथाक त्रासद यन्त्र-रचना निर्दोष अछि आ समीक्षा ओकर तीन पुर्जा अलगाओत। पहिल, शर्तक स्वभाव: भेद नाम-उच्चारणपर टँगल अछि — आ नाम ठीक ओही क्षण निकलैत अछि जखन भक्ति सभसँ तीव्र अछि (शिवपर बाढ़नि देखि चुप रहब भक्तक वशसँ बाहर); 'शर्त हुनके टूटल, मुदा तोड़बाक कारण? — भक्तिए' — त्रासदीक ई आत्म-घाती तर्क (जे बचाबए चाहै छी, सएह गमबैतछी) विश्व-साहित्यक गहींरतम आकृतिमे सँ अछि, आ एतऽ ओ बाल-सुलभ स्पष्टतासँ घटित अछि। दोसर, पार्वतीक पक्ष: कथा हुनका खलनायिका नहि बनबैत — हुनक चालि 'प्रेमक अधिकारसँ उपजल' अछि; तेसर, चन्दनक निर्दोषता: 'ओ त' नोकरपर तमसाइल छलीह — देवतापर नहि... जँ किनको दोष दी, त' ओहि प्रेमकेँ दिअनु जे भगवानकेँ नोकर बना देलक' — तीनू पुर्जा मिला कऽ ई दोष-हीन त्रासदी बनैत अछि, जतऽ बाल-पाठक कानत मुदा ककरोसँ घृणा नहि करत; भाव-शिक्षाक दृष्टिसँ ई आदर्श शोक-पाठ थिक। आ अन्त — बिछोहसँ गहींराएल गीत ('दुख कविक डूबि थिक — आ ओही डूबिसँ मोती') — कला-मीमांसाक ओ सूत्र थिक जे माधव सिंह (३७) धरि बाजत: कला आ वेदनाक अन्तर्संयोग। ज्योति पँजियार (३१) क 'सेवा बनाम साक्षात्कार'क प्रश्न एतऽ उनटल रूपमे अछि — ओतऽ भक्त देवताकेँ टारलनि, एतऽ देवता भक्तक सेवा माँगलनि; दुनूक जोड़ी-पाठ भक्तिक द्वि-दिश यातायात देखबैत अछि।

३६. जट-जटिन: स्त्रीगणक अपन रंगमंच — प्रेम, गृहस्थी आ वर्षाक अनुष्ठान

महाराज शिव सिंह (१४१२-१४४६) कयुग; संगीतकार जयट विद्यापति-पदावलीकेँ राग-रागिनीमे बान्हनिहार — आ जट-जटिन नाटकक रचयिता, स्वयं जटक भूमिका केनिहार। साओन-भादवक शुक्ल-रातिमे स्त्रीगणक अभिनीत ई लोकनाट्य: जट-जटिन आ दुनूक सखी-मण्डली; नैहर-यात्राक हठ आ बाढ़ि, बिदागरीक विधि-चर्चा, झूमरक निमन्त्रण ('कोन पातपर चढ़ि कऽ?' — 'पुरैनीक'), प्रतीकात्मक बियाह, गहनाक माँगमे हाथी धरि बिका जाएब, मोरंग-प्रवास, सोनारक प्रलोभनक अस्वीकार, छौंकीक स्पर्शपर रूसब, झोल-मकड़ा भरलघर, आ पुनर्मिलन; अन्तमे बेंग-कुटाइ आ झगराहि स्त्रीक दरबज्जापर फेकब — 'जतेक गारि, ततेक बरखा।'

ई पोथी संग्रहमे विधागत रूपेँ असाधारण थिक — ई कथाक पुनर्कथन नहि, एकटा जीवित लोकनाट्यक कथात्मक प्रलेखन थिक, आ एकर समीक्षा-भाषा रंगमंच-शास्त्रसँ आबए पड़त। पहिल स्थापना: ई स्त्रीगणक अपन रंगमंच थिक — रचना पुरुषक (जयट), मुदा प्रदर्शन, पात्र, दर्शक सभ स्त्री; पितृसत्तात्मक समाजक भीतर ई ऋतु-बद्ध 'अपन जगह' (विक्टर टर्नरक भाषामे लिमिनल स्पेस) थिक जतऽ गृहस्थीक दबल स्वर — नैहरक हूक, गहनाक साध, छौंकी-स्पर्शक अपमान, सौतिनक भय — मंचपर बाजि सकैत अछि; 'दर्शक स्त्रीगणकेँ अपनहि जीवनक झलक' — नाट्य-चिकित्सा (ड्रामा थेरेपी) क ई लोक-रूप समीक्षाक आदरक पात्र थिक। बाल-पाठ लेल एकर मूल्य द्वि-स्तरीय: बालिका अपन माए-काकीक सांस्कृतिक सम्पदासँ परिचित होइत अछि, आ बालकओहि गृहस्थ-संवेदनासँ जे प्राय: ओकर पाठ्यक्रमसँ बाहर रहैत अछि।

दोसर स्थापना अनुष्ठान-पक्षपर, आ एतऽ समीक्षा ईमानदार रहत। बेंग-कुटाइक वर्षा-अनुष्ठान अनुकम्पा-जादू (सिम्पैथेटिक मैजिक) क शास्त्रीय उदाहरण थिक — फ्रेज़रक स्वर्ण-शाखा-परम्पराक विश्लेषण एतऽ सोझ लागू — मुदा आधुनिक बाल-संवेदना (आ पशु-करुणा, जकरा संग्रह अपने साढ़िन-प्रसंग १५ आ कोइली-प्रसंग ३१ मे पोसने अछि) क कसौटीपर ई प्रसंग असहज अछि। लेखकक उपचार प्रलेखनक थिक, अनुशंसाक नहि — क्रिया 'लोक-विश्वाससँ जुड़ल अनुष्ठान' रूपेँ दर्ज अछि, महिमामण्डित नहि; आ समीक्षाक अनुशंसा ई जे वयस्क-मध्यस्थ एहि अध्यायकेँ चर्चा-द्वार बनाबथि: लोक-परम्परा संग्रहालय-वस्तु नहि, जीवित नदी थिक जे अपन धार बदलैत रहैत अछि — की-की धरोहरि थिक आ की-की पुनर्विचार-योग्य, ई विवेक-अभ्यास सांस्कृतिक शिक्षाकअंग थिक। संरचना-दृष्टिसँ नाटकक कथा-चाप (मिलन-कलह-विरह-पुनर्मिलन) दाम्पत्यक पूर्ण ऋतु-चक्र थिक आ वर्षा-चक्रसँ ओकर समान्तरता (रूसब = सुखाड़, मिलन = बरखा) गाथाक गहींर रूपक: गृहस्थी आ खेती एक्कहि मौसम-विज्ञानपर चलैत अछि। विद्यापति-त्रयी (३४-३५-३६) क ई तेसर फलक युगक सामाजिक-सांस्कृतिक पृष्ठभूमि दैत अछि, आ महुआ (२०) क साओन-भादवसँ एकर ऋतु-सम्बन्ध संग्रहक 'भादव-वाङ्मय'केँ पूर्ण करैत अछि — एक्कहि भरल धार, कतऽ शोक, कतऽ समारोह।

३७. माधव सिंह आ अमतागामः राग मेघ-मल्हार — कला-गाथाक समापन-स्वर

दुर्भिक्ष-पीड़ित मिथिला; दरबारक मंत्रणामे नेपाल-दरबारक चारि संगीतज्ञ भाइक चर्च; राधाकृष्ण आकरताराम अएलाह — ध्रुवपद-साधक, संगतिमे पखावजी भीम मल्लिक। नोम-तोमक आलापसँ घटा उमड़ल, बन्दिश-थापसँ पहिल बुन्नी, आ एहन झमाझम जे दरबारेमे पानि पैसि गेल; दूत गाम-गाम — 'कतहु रुक्ख नहि' — तखन गायन-विश्राम। कृतज्ञ राजा दुनू भाइकेँ अमता गाममे बसओलनि — जतऽ खीरीक गाछक फरमे दूध; राजाक नेम बनल अमतामे ध्रुवपद-श्रवण। मृत्यु-कालमे अन्तिम इच्छा — 'हमरा अमता लऽ चलू, एक बेर ध्रुवपद' — आ पालकी बाटेमे, अमता पहुँचबासँ पहिने, राजाक प्राणान्त। खीरीक फरसँ ओहि साँझ 'दूधक ठाम नोर'; बहुत दिन मौनक बाद अमतामे फेर तानपूरा — पहिल राग मेघ-मल्हार, आ बिनु बादलक बुन्नी।

संग्रहक ई समापन-गाथा (हमर क्रममे) जानि-बुझि एतऽ राखल गेल — कारण ई पूरा संग्रहक कला-मीमांसाक निष्कर्ष-अध्याय थिक। 'ई गाथा तरुआरिक नहि, तानक थिक' — उपक्रमक ई घोषणा वीरगाथा-खण्डक पूराशस्त्र-वाङ्मयक आगाँ एकटा वैकल्पिक शक्ति-सिद्धान्त रखैत अछि: सिद्ध कला प्रकृतिक सहभागिनी थिक ('राग जँ साँच हो, साधना जँ पूर्ण हो, त' आकाशो श्रोता बनि जाइत अछि') । राग-वर्षाक ई आख्यान भारतीय संगीत-परम्पराक ओहि सुप्रसिद्ध विश्वास-वंशक थिक जे मेघ-मल्हारकेँ वर्षा-शक्ति दैत अछि; समीक्षा एकरा वैज्ञानिक दावा नहि, कला-श्रद्धाक रूपक रूपेँ पढ़त — आ रूपकक अर्थ गहींर अछि: सुखाड़ एतऽ खाली मौसम नहि, समाजक प्राण-शोष थिक, आ संगीत ओकर प्राण-संचार; 'एतय राग सुनाएब नहि, प्राण घुरायब अछि।' गोनू झा (११) क संग एकर पूर्व-नियोजित जोड़ी-पाठ (एक्कहि सुखाड़, नकली तप बनाम असली साधना) क चर्च ओतऽ भऽ चुकल; एतऽ जोड़बाक बात ई जे दुनू गाथा मिला कऽ बाल-पाठककेँ प्रामाणिकताक कसौटी दैत अछि — दावाक भव्यता नहि, साधनाक गहींराइ।

गाथाक उत्तरार्ध — अपूर्ण अन्तिम इच्छा — संग्रहक सभसँ संयत दुखान्त थिक: 'कोनो शाप नहि, कोनो युद्ध नहि — खाली एकटा अधूरा इच्छा।' मृत्यु एतऽ दण्ड नहि, विघ्न नहि — बस बाटक छोट पड़ब; आ बाल-साहित्यमे मृत्युक ई तेसर मुख (बड़ सुख सारक कृपा-मृत्यु आ वीरगाथाक युद्ध-मृत्युक बाद) मृत्यु-शिक्षाक वर्णक्रम पूर्ण करैत अछि — बालक सीखैत अछि जे किछु इच्छा अधूरो रहि जाइत अछि, आ तइयो जीवन व्यर्थ नहि: 'राजा रस्तेमे रहि गेलाह — मुदा खिस्सामे ओ अमता पहुँचि गेलाह, सदा लेल।' कथा-द्वारा-अमरत्वक ई अन्तिम वाक्य पूरा संग्रहक आत्म-वक्तव्य थिक — सैंतीसो पोथी यएह करैत अछि: जे बाटमे रहि गेल (मुसहर भाइ, घटवारिन, बोनिहार, भगतिन, राजा) तकरा खिस्सामे गन्तव्य धरि पहुँचबैत अछि। करतारामक शोक-मौन आ फेर मेघ-मल्हारसँ पुनरारम्भ ('स्वरक अर्घ्य असल श्राद्ध') उगना (३५) क बिछोह-गीतक सिद्धान्तक व्यावहारिक रूप थिक; आ खीरीक गाछक दूध-नोर संग्रहक अन्तिम, अविस्मरणीय करुण-बिम्ब — प्रकृति एतऽ दर्शक नहि, शोक-सभासद थिक।

उपसंहार: सैंतीस पोथी, एक वाङ्मय

एहि सैंतीस समीक्षाक अन्तमे ओ प्रश्न फेर उठाउ जे भूमिकामे राखल गेल छल: की ई सैंतीस स्वतन्त्र पोथी थिक आकि एक वाङ्मय? समीक्षा-यात्राक साक्ष्य दोसर उत्तरक पक्षमे अछि, आ ओकर आधार-स्तम्भ गनाओल जाए।

पहिल स्तम्भ आवर्ती शिल्प-मुद्रा थिक। बा-ओमक कथामुख (१, ४) पञ्चतन्त्र-परम्पराक नवीकरण रूपेँ संग्रहकेँ खोलैत आ हास्यमे बन्द करैत अछि; 'चित्र'-पटलक दृश्य-लय सभ पोथीमे शब्द-चित्रक द्वि-वाचन रचैत अछि; आ सभसँ विशिष्ट — कथा-संवरणक तकनीक: 'गाथा आँखि नीचाँ कऽ लैत अछि' (२४), 'जकर विस्तार गाथा नहि करत' (५, २६), मृत्यु-दृश्यक एक-पदी निष्पत्ति (४, १०, २९) । ई संवरण बाल-संस्करणक ओ स्वर्ण-मध्य थिक जतऽ बेटेलहाइम-सम्मत अन्हार सुरक्षित रहैत अछि आ औचित्य-सम्मत संयम सेहो — सत्य-लोप बिनु सरलीकरण। संगहि सूक्ति-वाक्यक नैरेटर-स्वर ('बदला घुरि कऽ घर जाइत अछि, न्याय घुरि कऽ आबैत अछि'; 'समय सभसँ पैघ अदालत थिक'; 'प्रेमी मरि जाइत अछि, प्रेम मेला बनि जाइत अछि') संग्रहकेँ एकटा साझा प्रज्ञा-कोश दैत अछि, आ प्रायः प्रत्येक गाथाक 'आइयो...'-समापन कथाकेँ जीवित परम्परासँ जोड़ि लोक-स्मृतिक निरन्तरता घोषित करैत अछि।

दोसर स्तम्भ अन्तर्पाठीय जाल थिक, जकर गाँठ सभ समीक्षा-क्रममे खुजल: सलहेसक द्वि-रूप (१६-१७), चूहड़मल आ कृष्णारामक नाम-द्वैत (१७-१८, २२-२६), शोनितक सिनूरक युग्म (१८-१९), 'बहाओल बेटी'क जोड़ी (२०-२६), बारह-बरखा काल-मात्रक (१२, १५, १७, २१, ३१), कामाख्या-सूत्र (१७, २५, ३२), भगता-चतुष्क (२७-३०), वर्जना-प्रकार्यक वर्णक्रम (६, १३, १४, ३५), विद्यापति-त्रयी (३४-३६), सुखाड़-जोड़ी (११, ३७), आ जल-वाङ्मय — कमला, गंगा, परमान, जबुना, त्रिवेणी — जाहिमे धार जीविका, देवी, शरण, साक्षी आ श्मशान पाँचो रूपमे उपस्थित अछि। ई जाल पाठकसँ जोड़ी-पाठ आ तुलना-पाठ माँगैत अछि, आ सएह एहि समीक्षा-पोथीक विधि रहल।

तेसर स्तम्भ मूल्य-स्थापत्य थिक, आ एकर विशेषता एकस्वरता नहि, द्वन्द्वात्मकता अछि। क्षमा (२) आ प्रतिशोध (१६, २३) आमने-सामने छथि; गुरु-वाक्य (१९मे अवज्ञात) आ पितृ-वाक्य (१४मे मिथ्या-सिद्ध) प्रश्नांकित छथि; भक्ति-कवच (३२) आ भक्तक वध (१६) संगहि सत्य छथि; अन्तर्जातीय प्रेमक दुनू नियति (१८-१९) बिनु झूठ आश्वासनक राखल अछि। संग्रह उपदेश नहि दैत — प्रतिमान-युग्म दैत अछि, आ निर्णयक अखराहा पाठकक विवेक लेल खुजल छोड़ैत अछि; बाल-साहित्यक ई भरोस— जे बालक द्वन्द्व सम्हारि सकैत अछि — पीटर हंट-वर्णित बाल-सम्मानक चरम रूप थिक। आ एहि सभक ऊपर ओ सामाजिक स्वप्न ठाढ़ अछि जे विदेह समानान्तर प्रतिमानक प्राण थिक: मुसहर, दुसाध, डोम, धोबि, चमार, मलाह, केवट, रजक, मरर — सभक गाथा एक्कहि गौरव-ग्रन्थमालामे, देवता आ बोनिहार 'एक्कहि आंगनमे, एक्कहि धूप-दीपमे'; आ ओकर संग स्त्री-कर्तृत्वक अटूट पाँती — आस्था, मंशा, दबना, रेशमा, मूँगा, महुआ, बिहुला, मोतीसाएरि, मड़ुवन, बारी, भाटक बहिन, मोतीदाइ — जे संग्रहकेँ बाल-साहित्यक संग समता-साहित्य सेहो बनबैत अछि।

अन्तमे, एहि वाङ्मयक ऐतिहासिक अर्थ। मैथिली बाल-साहित्यकेँ एतऽ एक्कहि संग तीन वस्तु भेटल अछि: आधुनिक मौलिक कल्पना (डिस्टोपिया धरि), लोक-कोशक व्यवस्थित बाल-द्वार (गाथा, कथा, नाट्य, संगीत), आ अपन समीक्षा-योग्यता — अर्थात् एहन पाठजे रस-औचित्यसँ प्रॉप-बेटेलहाइम धरि प्रत्येक कसौटीपर विश्लेषण सहि सकए आ प्रत्येकसँ नव अर्थ दिअए। जे बालक ई सैंतीस पोथी पढ़त, से खाली सैंतीस खिस्सा नहि पढ़त — ओ एकटा भाषाक स्मृति, एकटा समाजक विवेक आ एकटा परम्पराक भविष्य पढ़त। आ जे समीक्षक एकरा पढ़त, से मानत जे मैथिली बाल-उपन्यास आब कोनो 'अभावक क्षेत्र' नहि — ओ एकटा भरल-पूरल, आत्म-सचेत, विश्व-संवादी वाङ्मय थिक, जकर घाट सभ एक्कहि पोखरिक थिक, आ पोखरिक नाम — मिथिला।

२२. तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] — भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे

सारांश

समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास

बीजशब्द: तेरहटा · अनूदित · पोथीक · तुलनात्मक · संस्कृतसँ · अनुवाद · भारतीय · पाश्चात्य

सारांश · Abstract

ई अध्याय “तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] — भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर- समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर] समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास प्रस्तुत तेरह पोथी — चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भ

समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास तेरहटा अनूदित पोथीक तुलनात्मक अध्ययन [संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर]

समग्र सिंहावलोकन-चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास

विस्तृत समीक्षा — भारतीय आ पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धान्तक दृष्टिसँ

संकलनक स्वरूप

प्रस्तुत तेरह पोथी — चतुर्भाणी, दामक प्रहसनम्, हास्यार्णव, आगमडम्बरम्, कादम्बरी, भल्लट-क्षेमेन्द्र-नीलकण्ठक व्यंग्य-त्रयी, पलाण्डुमण्डन, उत्तररामचरितम्, अभिज्ञानशाकुन्तलम्, मुद्राराक्षसम्, मृच्छकटिकम्, भगवदज्जुकम् आ मत्तविलास — मिलि कऽ संस्कृत साहित्यक लगभग सहस्र वर्षक (गुप्त-पूर्वसँ सत्रहम शताब्दी धरि) आ सम्पूर्ण विधा-वितानक (भाण, प्रहसन, नाटक, प्रकरण, गद्यकाव्य, शतक-काव्य, व्यंग्य-काव्य) प्रतिनिधि चयन थिक। एहि चयनक अपन आन्तरिक तर्क अछि: एक छोर पर कालिदास-भवभूति-बाणक "महापरम्परा" अछि, दोसर छोर पर भाण-प्रहसन-व्यंग्यक ओ "समानान्तर परम्परा" जे गणिका-वीथी, जुआघर, मदिरालय, भ्रष्ट सभा — समाजक अस्वीकृत कोण सभकेँ साहित्यक केन्द्रमे अनैत अछि। एहि दुनूपरम्पराकेँ एक्कहि पाँतिमे राखब स्वयं एकटा आलोचनात्मक वक्तव्य थिक — जे साहित्यक इतिहास केवल शिखर-सभक नहि, घाटी-सभक सेहो इतिहास थिक।

भारतीय सिद्धान्तक आलोकमे: रससँ औचित्य धरि

रस-सिद्धान्तक कसौटी पर ई तेरह पोथी रस-वितानक दुनू ध्रुव छूबि लैत अछि। शाकुन्तल आ कादम्बरी शृंगारक, उत्तररामचरित करुणक, मुद्राराक्षस बुद्धिवीरक, आ शेष रचना-मण्डल हास्यक — मुदा वास्तविक शिक्षा ई जे कोनो कृति एक-रस-बद्ध नहि अछि: शाकुन्तलमे करुण, उत्तररामचरितमे अद्भुत, मृच्छकटिकमे नओ रसक मेला, आ प्रहसनक हास्यक तरमे प्रायः निर्वेद। ध्वनि-सिद्धान्तएहि संकलनमे अपन दुनू सीमा देखैत अछि — भल्लटक अन्योक्ति "असंलक्ष्यक्रम ध्वनि"क शिखर थिक, तँ हास्यार्णवक वाच्य व्यंग्य "चित्रकाव्य"क; आ बीचमे आगमडम्बर-भगवदज्जुक सन रचना जे देखबैत अछि जे दर्शनो ध्वनित भऽ सकैत अछि। वक्रोक्ति-दृष्टिएँ सम्पूर्ण संकलन कुन्तकक कोटि-क्रमक उदाहरणमाला थिक — पद-वक्रतासँ (श्लेष: बाण) प्रबन्ध-वक्रता धरि (कथा-

भीतर-कथा: कादम्बरी; नाटक-भीतर-नाटक: उत्तररामचरित) । औचित्य-सिद्धान्त एतऽ सभसँ रोचक रूपमे प्रकट अछि: क्षेमेन्द्र स्वयं एहि संकलनक रचनाकार छथि, आ प्रहसन-वर्ग देखबैत अछि जे सायास "अनौचित्य" (वेश-वाणी-आचारक व्यत्यय) स्वयं एकटा काव्य-युक्ति थिक — औचित्यक व्याकरणसँ अनौचित्यक कविता।

पाश्चात्य सिद्धान्तक आलोकमे: अरस्तूसँ बाख्तिन धरि

पाश्चात्य कोटि-सभसँ मिलान एहि संकलनक विश्व-साहित्यिक कद नापि दैत अछि: उत्तररामचरित शेक्सपियरी रोमांसक, मुद्राराक्षस मैकियावेली-पूर्व राजनीतिक यथार्थवादक, कादम्बरी आधुनिक कथाशास्त्र (narratology) क, भगवदज्जुक लॉक-पूर्व personal identity विमर्शक, चतुर्भाणी ब्राउनिंग-पूर्व नाटकीय एकालापक, आ पलाण्डुमण्डन इरैस्मस-पूर्व व्याज-प्रशस्तिक समानान्तर वा पूर्वरूप थिक। मुदा एहि संकलन पर सभसँ फलदायी एक्कटा पाश्चात्य दृष्टि जँ चुनल जाए तँ ओ बाख्तिन छथि — कार्निवल, बहुस्वरता आ "हँसीक संस्कृति"क सिद्धान्तकार। प्रहसन-भाण-व्यंग्यक ई समूचा वर्ग बाख्तिनक ओहि प्रमेयक भारतीय प्रमाण थिक जे प्रत्येक "गम्भीर" संस्कृतिक समानान्तर एकटा "हँसैत" संस्कृति जीबैत रहैत अछि — आ जे संस्कृति अपन हँसीकेँ साहित्य बनौलक (काञ्चीक सम्राट् धरि प्रहसन लिखलनि!) से भीतरसँ आत्मविश्वासी छल। संगहि सबाल्टर्न-नारीवादी दृष्टि एहि संकलनक तेसर सूत्र खोलैत अछि: शम्बूक (उत्तररामचरित), आर्यक-स्थावरक (मृच्छकटिक), वसन्तसेना-अज्जुका (दू-दू गणिका-नायिका), शकुन्तला-सीताक साक्ष्य-संकट — शास्त्रीय साहित्यक भीतरहि हाशियाक स्वर सभ अभिलिखित अछि, आलोचकक काज ओकरा सुनब थिक।

मैथिली अनुवाद-परियोजनाक महत्त्व

ई तेरह अनुवाद एकटा सुचिन्तित परियोजनाक अंग थिक — संस्कृत क्लासिकक पूर्ण वितान (उच्च नाट्यसँप्रहसन धरि, गद्यकाव्यसँ व्यंग्य-शतक धरि) केँ शुद्ध मैथिलीमे उतारब। एकर साहित्यिक-ऐतिहासिक अर्थ तीन स्तर पर अछि। पहिल, भाषिक: ई अनुवाद-समूह मैथिली गद्यक क्षमता-परीक्षा थिक — बाणक समास, भवभूतिक करुणा, शकारक वाक्-विकृति, जयन्तक प्रमाण-भाषा — आ मैथिली प्रत्येक परीक्षामे अपन देशज सम्पदासँ उत्तीर्ण होइत अछि। दोसर, सांस्कृतिक: मिथिला — गंगेश-अयाचीक न्यायभूमि, विद्यापतिक काव्यभूमि — लेल ई अनुवाद कोनो "आयात" नहि, अपन पैतृक सम्पत्तिक गृह-प्रवेश थिक। तेसर, परम्परा-निर्माणक: विधा-वैविध्यक ई सायास चयन मैथिली साहित्यकेँ ओ आदर्श उपलब्ध करबैत अछि जे कोनो जीवित साहित्यकेँ चाही — गम्भीर आ विनोदी, शास्त्रीय आ लौकिक, केन्द्र आ हाशिया — सभ स्वर एक्कहि आलमारीमे। एही अर्थेँई तेरह पोथी तेरह अनुवाद मात्र नहि, मैथिलीमे एकटा सम्पूर्ण "समानान्तर क्लासिक-मण्डल"क स्थापना थिक।

चतुर्भाणी

चारि संस्कृत भाण — पद्मप्राभृतकम् (शूद्रक), धूर्तविटसंवाद (ईश्वरदत्त), उभयाभिसारिका (वररुचि), पादताडितकम् (श्यामिलक)

कृति-परिचय

भाण संस्कृत रूपकक दस भेदमे सभसँ अनूठा विधा थिक — एकपात्रीय, एकांकी, जाहिमे एकटा वाक्पटु विट रंगमञ्च पर असगरे ठाढ़ भऽ "आकाशभाषित"क कौशलसँ समस्त नगरक चरित्र-वैचित्र्यकेँ जीवन्त कऽ दैत अछि। ओ अदृश्य पात्र सभसँ गप करैत अछि, हुनकर उत्तर स्वयं दोहरबैत अछि, आ एहि क्रममे गणिका-वीथी, जुआघर, विटमण्डली, पण्डित-सभा — सम्पूर्ण नागरक संसार श्रोताक आगाँ पसरि जाइत अछि। चतुर्भाणीक चारू रचना — शूद्रकक पद्मप्राभृतकम्, ईश्वरदत्तक धूर्तविटसंवाद, वररुचिक उभयाभिसारिका आ श्यामिलकक पादताडितकम् — गुप्तयुगक आसपासक नागर-संस्कृतिक अद्वितीय दस्तावेज थिक। एहिमे काव्यशास्त्र-प्रसिद्ध "शृंगार सहायक" विटक ओ रूपभेटैत अछि जे कामसूत्रक नागरक व्यावहारिक संस्करण बुझाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

भरतक नाट्यशास्त्र भाणकेँ भारती वृत्ति-प्रधान कहैत अछि — अर्थात् वाणीक अभिनय एतऽ सर्वोपरि। रस-दृष्टिएँ भाणमे शृंगार आ हास्यक अद्भुत रसायन अछि: विट स्वयं शृंगारक दूत थिक, मुदा ओकर दौत्य-वर्णनमे व्यंग्यक एहन धार अछि जे हास्य स्थायी भावक रूप धरि पहुँचि जाइत अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक कसौटी पर भाणक "आकाशभाषित" स्वयं व्यञ्जनाक रंगमञ्चीय रूप थिक — जे पात्र मंच पर नहि अछि, तकर उपस्थिति ध्वनित होइत अछि, कहल नहि जाइत। कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तसँ देखी तँ चारू भाणक प्राण "वाक्य-वक्रता"मे अछि: पादताडितकम्मे गणिकाक लातसँ माथ पर प्रहार पओलाक बादो ओकरा "अनुग्रह" कहब वक्रोक्तिक

चरम अछि। क्षेमेन्द्रक औचित्य-दृष्टिसँ ई प्रश्न रोचक अछि जे गणिका-जगतक अश्लीलप्राय विषय काव्योचित कोना बनैत अछि — उत्तर अछि: विटक परिष्कृत, अलंकृत भाषा विषयक ग्राम्यताकेँ उदात्त कऽ दैत अछि; उक्तिक औचित्य वस्तुक अनौचित्यकेँ साधि लैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य दृष्टिसँ भाण dramatic monologue क प्राचीनतम परिपक्व रूपमे गनल जयबा योग्य अछि — ब्राउनिंगक एकालाप-कलासँ सहस्राब्दी पूर्व। बाख्तिनक "कार्निवलेस्क" अवधारणा चतुर्भाणी पर सटीक बैसैत अछि: गणिका-वीथी ओ "उत्सवी वर्ग-विपर्यय"क स्थल थिक जतऽ पण्डित, राजपुरुष, तपस्वी — सभ अपन-अपन सामाजिक मुखौटा उतारि समान भऽ जाइत छथि; भाण ओहि उल्टल संसारक विवरणी थिक। बर्गसाँक हास्य-सिद्धान्त ("यान्त्रिकताक आरोपण") विटक चरित्र-चित्रणमे प्रत्यक्ष अछि — प्रत्येक पात्र अपन एकहि टेकक यन्त्र बनल अछि: कृपण अपन कृपणताक, कामुक अपन कामुकताक। Reader-response दृष्टिसँ भाण श्रोताक कल्पना पर निर्भर सभसँ माँगबला विधा थिक — इज़रक "रिक्त स्थान" (Leerstellen) एतऽ शाब्दिक अर्थमे मंच पर पसरल अछि; अदृश्य पात्रकेँ दर्शके गढ़ैत छथि। एहि अर्थमे भाण minimalist theatre आ one-man show क पूर्वज थिक।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवादमे विटक नागर वाग्विलास लेल मैथिलीक ओ परिहास-परम्परा सहज उपलब्ध अछि जे विद्यापतिक नखरा-वर्णनसँ लऽ धाङनि-गीत धरि पसरल अछि। अनुवादमे "आकाशभाषित"क लय — प्रश्न दोहराएब, फेर उत्तर देब — मैथिलीक स्वाभाविक संवाद-शैलीमे ढलल अछि, आ गणिका-जगतक पारिभाषिक शब्दावली लेल देशज शब्दक चयन अनुवादकेँ पण्डिताऊ बनयबासँ बचबैत अछि। समग्रतः चतुर्भाणी प्राचीन भारतीय नगर-जीवनक व्यंग्य-चित्रशाला थिक, जकर मैथिली प्रवेश एहि भाषाक रंगमञ्च-साहित्यमे एकटा रिक्त कोठरी भरैत अछि।

दामक प्रहसनम्

लघु संस्कृत प्रहसन — कर्ण-परशुराम आख्यानक हास्य-रूपान्तर

कृति-परिचय

दामक प्रहसनम् लघुकाय मुदा सुगठित प्रहसन थिक जे महाभारतक एकटा मर्मान्तक प्रसंग — कर्णक परशुरामसँ छद्म-वेशमे धनुर्विद्या सीखब आ शापित होयब — केँ हास्यक चौखटामे राखि दैत अछि। नाटकक केन्द्रमे वीर-कथा नहि, "नेक दामक" अछि — कर्णक पेटू अनुचर, जे राजमहलक तड़ाग-स्नान, पाँच सुगन्धक पान आ मलमली वस्त्र छोड़ि वन-वासक कष्टमे पड़ल अछि आ जकर इन्द्रिय सभ "दर्पणक प्रतिबिम्ब जकाँ" उनटा गेल अछि — कानसँ सुँघैत अछि, नथुनासँ देखैत अछि। प्रस्तावना, दामकक दीर्घ एकालाप, परशुराम-कर्णकअति-संक्षिप्त दीक्षा-दृश्य, आ दू सैनिकक मुखेँ शाप-वृत्तान्त — एतबेमे प्रहसन सम्पूर्ण भऽ जाइत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-दृष्टिएँ ई रचना हास्य आ करुणक विलक्षण सन्धि पर ठाढ़ अछि। दामकक क्षुधा-विलाप "आत्मस्थ" हास्य थिक (भरतक भेदमे, जतऽ पात्र स्वयं हँसीक विषय बनैत अछि), मुदा पृष्ठभूमिमे कर्णक नियति करुणक अन्तर्धारा बहबैत अछि — भृंगक दंश सहैत कर्णक मौन वीर आ करुणक व्यभिचारी भावसँ पुष्ट अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ सभसँ सूक्ष्म क्षण ओ अछि जखन कर्ण कहैत छथि "हम क्षत्रिय नहि छी" — ई एक पाँतिमे वस्तुध्वनि अछि: झूठ बजबाक क्षणहिमे शापक बीज रोपा गेल, से कहल नहि गेल, ध्वनित भेल। दामकक आश्रम-वर्णन — तपस्विनीकन्या घैलसँ पौधा सिंचैत "जेना माता शिशुकेँ स्तनपान करबैत होथि" — कालिदासीय उपमा-परम्पराक औचित्यपूर्ण अनुकरण थिक, आ प्रहसनक भीतर शान्त रसक ई द्वीप वैषम्य-सौन्दर्य (contrast) उत्पन्न करैत अछि। एरण्ड वृक्षक "समय भऽ गेल" कहब अचेतनमे चेतनारोपसँ हास्यक उद्दीपन थिक।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे दामक स्पष्टतः parasite (उपजीवी) पात्र-परम्पराक अछि — ग्रीक-रोमन कॉमेडीक ओ भोजन-लोलुप अनुचर जे प्लॉटस आ टेरेंसक नाटकमे स्वामीक छाया बनल घूमैत अछि। दामकक एकालाप बर्गसाँक हास्य-सिद्धान्तक पाठ्य-उदाहरण थिक: शरीरक यान्त्रिक विद्रोह (इन्द्रिय-विपर्यय) आ अभ्यासक जड़ता (राजभोगक टेव) — दुनू "जीवन पर यन्त्रक आरोपण" थिक जे बर्गसाँक अनुसार हास्यक मूल स्रोत अछि। संरचनावादी दृष्टिसँ प्रहसन mock-heroic (व्याज-वीर) विधाक लघु प्रयोग अछि:

महाकाव्यीय कथावस्तु (गुरु-शिष्य, शाप, नियति) आ क्षुद्र नायक (पेटू सेवक) क विसंगति स्वयं व्यंग्यक संरचना बनि जाइत अछि। एहि विसंगतिकेँ incongruity theory (कान्ट-शोपेनहावर) सोझे व्याख्यायित करैत अछि। आधुनिक दृष्टिसँ दामकक देह-केन्द्रित विलाप — भूख, निन्न, कपार-दर्द — कथाक "महान" स्तरक प्रति देहक प्रतिरोध थिक; बाख्तिनक भाषामे grotesque body उदात्त आख्यानकेँ धरती पर उतारि अनैत अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवादमे दामकक भोजन-स्मृति ("सन्ध्याकाल मीठ पेय, पाँच सुगन्धसँ युक्त पान") मैथिल भोज-संस्कृतिक शब्दावलीमे एहन सहज उतरल अछि जे पात्र देशज बुझाइत अछि; "हमरा भूख नहि लागैत अछि"क विडम्बना मैथिलीमे आओर चोखगर भेल अछि। संक्षिप्त दीक्षा-दृश्यक ऋजु संवाद ("हम क्षत्रिय नहि छी।" "तखन हम तोरा शिक्षा देब; आउ।") अनुवादमे अपन नाटकीय शुष्कता बचौने अछि — एतऽ अलंकरणक लोभ संवरण कएल गेल अछि, से औचित्यक निर्वाह थिक। समग्रतः दामक प्रहसनम् सिद्ध करैत अछि जे भारतीय परम्परा अपन सर्वाधिक करुण नायको (कर्ण) पर स्नेहपूर्ण हँसी हँसि सकैत छल — आ ई हँसी श्रद्धाक विलोम नहि, ओकर पूरक थिक।

हास्यार्णव-प्रहसनम् (हास्यक सागर)

जगदीश्वर भट्टाचार्यक द्व्यंकी प्रहसन

कृति-परिचय

जगदीश्वर भट्टाचार्यक हास्यार्णव मध्यकालीन संस्कृत प्रहसन-परम्पराक सभसँ निर्मम व्यंग्य-रचनामे गनल जाइत अछि। "हास्यक सागर" नाम स्वयं घोषणा थिक — एतऽ हास्य कोनो सहायक रस नहि, समुद्र जकाँ सर्वग्रासी अछि। राजा अनयसिन्धु ("अन्यायक सागर") क राज्यमे भ्रष्टाचारक जे शोभायात्रा निकलैत अछि ताहिमे राजवैद्य, ज्योतिषी, पुरोहित, कोतवाल, गुरु— समाजक प्रत्येक "पूज्य" संस्थाक प्रतिनिधि गणिका-गृहमे जुटल अछि आ प्रत्येक अपन शास्त्रक दोहाइ दैत ओकरे मर्यादा भंग करैत अछि। नामकरणहिमे व्यंग्य अछि: पात्रक नाम सभ उनटा अर्थक (विश्वभण्ड, कलहांकुर आदि) — नामे चरित्रक घोषणापत्र थिक।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

नाट्यशास्त्रीय दृष्टिसँ हास्यार्णव शुद्ध प्रहसनक लक्षण-ग्रन्थ सन अछि: निन्द्य जनक अनुकृति, वेश-भाषाक विडम्बना, आ हास्यक छहू भेद (स्मित सँ अतिहसित धरि) क प्रयोगशाला। मुदा एकर हास्य भरतक "परस्थ" कोटिक अछि — कवि पात्र पर हँसबैत अछि, पात्रक संग नहि। ध्वनि-सिद्धान्तक कसौटी पर एतऽ विशेष बात ई जे व्यंग्य प्रायः वाच्ये भऽ गेल अछि — आनन्दवर्धन जकरा"चित्र-काव्य" कहितथि; मुदा गहिंर देखला पर सम्पूर्ण प्रहसन एक विराट "प्रबन्ध-ध्वनि" थिक: कोनो पात्र नहि कहैत अछि जे राज्य-व्यवस्था सड़ि गेल अछि, समूचा रचना ई ध्वनित करैत अछि। क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्त एतऽ उनटा कसौटी बनैत अछि — प्रत्येक पात्र अपन वर्ण-धर्मक ठीक विपरीत आचरण करैत अछि, आ इएह सुनियोजित "अनौचित्य" प्रहसनक अलंकार थिक; अनौचित्ये एतऽ औचित्य अछि। वक्रोक्ति-दृष्टिसँ श्लेष आ विपरीत-लक्षणाक भरमार — आशीर्वादक भाषामे गारि आ स्तुतिक छन्दमे निन्दा — कुन्तकक "विपर्यय-वक्रता"क उदाहरणमाला थिक।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे हास्यार्णव Juvenalian satire क निकटतम भारतीय बन्धु थिक — जुवेनलक रोम जकाँ एतहु क्रोध ("saeva indignatio") हास्यक ईंधन अछि। बाख्तिनक कार्निवल-सिद्धान्त एहि रचना पर सर्वाधिक फलदायी अछि: गणिका-गृह ओ कार्निवल-स्थल थिक जतऽ मुकुट उतरैत अछि, पवित्र-अपवित्रक सीमा मेटाइत अछि, आ "उच्च"क विसर्जन देहक निम्न स्तर पर होइत अछि। मुदा बाख्तिनक कार्निवलमे जे पुनर्जीवनी उल्लास अछि, हास्यार्णवमे ओकर ठाम अन्धकारपूर्ण निराशा अछि — एहि अर्थें ई dark comedy अथवा स्विफ्टक सदृश misanthropic satire लग पहुँचैत अछि। नॉर्थ्रोप फ्राइक विधा-सिद्धान्तमे ई "विडम्बना आ व्यंग्यक मिथॉस" (शीतकालीन कथारूप) क शुद्ध उदाहरण थिक — एतऽकोनो हरियर संसार नहि, कोनो पुनर्स्थापित व्यवस्था नहि; समापनो व्यंग्ये अछि। न्यू हिस्टॉरिसिज्मक दृष्टिसँ प्रहसन अपन युगक संस्था-क्षयक दस्तावेज थिक — व्यंग्यक अतिरेक स्वयं इतिहासक साक्ष्य अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद एहि रचनाक सभसँ कठिन चुनौती — श्लेष आ नामगत व्यंग्य — केँ देशज समानान्तरसँ साधैत अछि; मैथिलीक अपन गारि-परिहासक लोक-परम्परा (विवाहक डहकन धरि) एहि अनुवादकेँ सांस्कृतिक घर दैत अछि। ध्यातव्य जे अनुवादमे अश्लीलताक ग्राम्य स्तर नियन्त्रित राखल गेल अछि — व्यंग्यक धार बचल अछि, फूहड़ि छँटल अछि। समग्रतः हास्यार्णव व्यंग्यक ओ आरसी थिक जाहिमे कोनो युग अपन भ्रष्ट मुँह देखि सकैत अछि; ओकर मैथिली आगमन एहि आरसीकेँ मिथिलाक दलान पर टाँगि दैत अछि।

आगमडम्बरम्

नैयायिक जयन्त भट्टक दार्शनिक नाटक

कृति-परिचय

नवम शताब्दीक काश्मीरमे न्यायमञ्जरीक रचयिता जयन्त भट्ट जखन नाटक लिखलनि तँ एकटा अभूतपूर्व विधा जन्म लेलक — दार्शनिक शास्त्रार्थक रंगमञ्चीय रूपान्तर। आगमडम्बरक नायक कोनो राजा वा प्रेमी नहि, सङ्कर्षण नामक तेजस्वी मीमांसक स्नातक अछि जे "आगम-आडम्बर" — धर्मक नाम पर पाखण्ड — कविरुद्ध अभियान पर निकलल अछि। चारि अंकमे ओ क्रमशः बौद्ध, जैन, नीलाम्बर, शैव साधक, चार्वाक — सभसँ भेंट करैत अछि, आ अन्ततः न्यायदर्शनक प्रौढ़ प्रतिनिधि धैर्यराशिक मुखेँ "सर्वागमप्रामाण्य"क समन्वयकारी सिद्धान्त पर नाटक विश्राम पबैत अछि: सभ आगम प्रमाण अछि, जँ ओ लोक-विरुद्ध आ हिंसा-प्रवर्तक नहि हो। राजा शंकरवर्मनक समकालीन राजनीति — नीलाम्बर सम्प्रदायक निषेध — नाटकमे प्रत्यक्ष उपस्थित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-निष्पत्तिक दृष्टिसँ आगमडम्बर विलक्षण प्रयोग थिक: एकर अंगी रस निर्धारित करब कठिन — हास्य (पाखण्डी सभक विडम्बना), शान्त (अन्तिम समन्वय), आ एकटा एहन बौद्धिक आनन्द जकरा अभिनवगुप्तक शब्दावलीमे "चर्वणा"क विशुद्ध रूप कहल जा सकैत अछि — तर्कक रसास्वाद। एतऽ प्रश्न उठैत अछि जे की शास्त्रार्थ रसक विषय भऽ सकैत अछि; जयन्तक उत्तर व्यावहारिक अछि — हुनक शास्त्रार्थ-दृश्य सभमे जय-पराजयक नाटकीय तनाव ओहिना अछि जेना युद्ध-दृश्यमे। ध्वनि-दृष्टिसँ नाटकक शीर्षके श्लेषगर्भ अछि: "डम्बर" माने आडम्बरो आ कोलाहलो — धर्मक हल्ला आ धर्मक पाखण्ड, दुनू ध्वनित। औचित्य-सिद्धान्तक कसौटी पर जयन्तक सन्तुलन प्रशंसनीय अछि: व्यंग्य पाखण्डी पर अछि, दर्शन पर नहि — बौद्ध धर्मोत्तर विद्वान् रूपमे आदरणीय देखाओल गेल छथि, हुनक पतित अनुयायी उपहास्य। इएह विवेक एहि नाटककेँ साम्प्रदायिक फूहड़िसँ बचबैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य परम्परामे एकर निकटतम बन्धु अरिस्तोफेनीसक "मेघ" (Clouds) थिक — दार्शनिक सभक रंगमञ्चीय विडम्बना; मुदा जयन्त अरिस्तोफेनीससँ आगू जाइत छथि: हुनका लऽग विडम्बनाक बाद एकटा सकारात्मक दार्शनिक निष्कर्ष अछि। एहि अर्थें आगमडम्बर novel of ideas क पूर्वज-रूप "drama of ideas" थिक — शॉ आ ब्रेख्तसँ सहस्र वर्ष पूर्व मंच पर विचारक द्वन्द्व। बाख्तिनक "बहुस्वरता" (polyphony) एतऽ आश्चर्यजनक रूपेँ चरितार्थ अछि: प्रत्येक दर्शन अपन प्रामाणिक स्वरमे बजैत अछि — चार्वाक धरि अपन पक्ष पूरा बलसँ रखैत अछि — आ लेखकीय स्वर अन्त धरि प्रतीक्षा करैत अछि। तुलनात्मक धर्म-दर्शनक आधुनिक दृष्टिसँ नाटकक समापन religious pluralism कमध्यकालीन घोषणापत्र सन पढ़ल जा सकैत अछि — यद्यपि न्यू हिस्टॉरिसिस्ट सतर्कता कहत जे ई बहुलतावाद राज्य-शक्तिक छत्रछायामे संचालित अछि (नीलाम्बरक निषेध ओकर सीमा देखबैत अछि) । एहि तनाव — समन्वय आ बहिष्करणक सहअस्तित्व — मे नाटकक आधुनिक प्रासंगिकता अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवादक समक्ष द्वैध चुनौती छल — दार्शनिक पारिभाषिकता आ नाटकीय प्रवाह। अनुवाद प्रमाण, प्रामाण्य, अनुमान सन पारिभाषिक शब्द यथावत् राखि, व्याख्यात्मक सहज मैथिली वाक्य-गठनसँ ओकरा वहनीय बनबैत अछि — मिथिलाक अपन नव्यन्याय-परम्परा (गंगेश उपाध्यायक भूमि!) ककारणेँ ई शब्दावली मैथिलीपाठक लेल आगन्तुक नहि, घुरल पाहुन थिक। समग्रतः आगमडम्बर सिद्ध करैत अछि जे भारतीय रंगमञ्च बौद्धिक बहसकेँ मनोरञ्जन बना सकैत छल — आ इएह सिद्धि एकरा विश्व-नाट्यमे अद्वितीय बनबैत अछि।

कादम्बरी

कृति-परिचय

"बाणोच्छिष्टं जगत्सर्वम्" — ई प्रसिद्धोक्ति कादम्बरीक कीर्तिक साक्ष्य थिक। सप्तम शताब्दीमे हर्षवर्धनक सभाकवि बाणभट्ट गद्यकेँ ओहि शिखर पर पहुँचौलनि जतऽ पद्य ईर्ष्या करए। कादम्बरीक कथा-यन्त्र स्वयंचमत्कार अछि: शूकक मुखेँ कहल कथाक भीतर कथा, जन्म-जन्मान्तरक तीन स्तर (शूद्रक/चन्द्रापीड/पुण्डरीक...), आ स्मृति-विस्मृतिक ओ खेल जाहिमे पाठको पात्रक संग अपन पूर्वजन्म बिसरल रहैत अछि आ अन्तमे सभटा गिरह एक्केबेर खुजैत अछि। महाश्वेता आ कादम्बरी — प्रतीक्षाक दू मूर्ति — भारतीय साहित्यक अमर नायिका छथि। बाणक मृत्युक बाद हुनक पुत्र भूषणभट्ट उत्तरभाग पूर्ण कएलनि — पिताक वाक्य-वृक्षक छाहरिमे।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-दृष्टिएँ कादम्बरी विप्रलम्भ शृंगारक महासमुद्र थिक — संयोगक क्षण एतऽ दुर्लभ अछि, प्रतीक्षा अनन्त; महाश्वेताक तपस्विनी-रूप विप्रलम्भकेँ शान्तक सीमा धरिलऽ जाइत अछि, आ इएह "शृंगार-शान्त-सन्धि" कादम्बरीक विशिष्ट रस-रसायन थिक। ध्वनि-सम्प्रदाय लेल बाण चुनौती छथि: आनन्दवर्धन जकरा "गुणीभूतव्यंग्य" कहितथि, से बाणक अलंकृत शैलीमे सर्वत्र अछि — व्यंग्यार्थ वाच्यक सेवक बनल; तथापि सम्पूर्ण कृतिक स्तर पर कर्म आ जन्मान्तरक जे दार्शनिक ध्वनि अछि से प्रबन्ध-ध्वनिक उदाहरण थिक। रीति-सम्प्रदायक कसौटी पर कादम्बरी पाञ्चाली-गौड़ी रीतिक समास-भूयिष्ठ ओज आ वैदर्भीक माधुर्यक सङ्गम अछि; दण्डी जकर "पदलालित्य" कहने छथि, से एतऽ चरम पर अछि। श्लेष बाणक स्वभाव थिक — शुकनासोपदेशमे लक्ष्मीक निन्दा श्लेषक एहन जाल अछि जे अनुवाद-मात्रक परीक्षा थिक। वक्रोक्ति-दृष्टिसँ बाण "प्रबन्ध-वक्रता"क आचार्य छथि — कथा कहबाक टेढ़ बाटे कथाक अर्थ थिक।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य विधा-सिद्धान्तमे कादम्बरीकेँ प्रायः "विश्वक प्रथम उपन्यास"क दावेदारीमे राखल जाइत अछि; ई दावा जतबा विवादित हो, एकर कथा-संरचना निर्विवाद रूपेँ आधुनिक अछि — frame narrative (शहरजादी-शैली), embedded narrator, आ analepsis क एहन प्रयोग जे जेरार जेनेटक कथाशास्त्र (narratology) लेल पाठ्य-सामग्री थिक: कथावाचक शुक स्वयं कथाक पात्र थिक, आ "के ककरा कथा कहि रहल अछि" — ई प्रश्न अन्त धरि घूमैत रहैत अछि। स्मृति-विस्मृतिक केन्द्रीयता कादम्बरीकेँ प्रूस्तकनिकट अनैत अछि — चन्द्रापीडक हृदयमे अकारण उठल पूर्वजन्मक टीस प्रूस्तक mémoire involontaire क संस्कृत पूर्वाभास सन अछि। मनोविश्लेषणक दृष्टिसँ जन्मान्तर-यन्त्र दमित कामनाक (पुण्डरीकक तपोभंग) पीढ़ी-दर-पीढ़ी पुनरागमनक रूपक थिक — फ्रायडक "दमितक प्रत्यावर्तन"। नारीवादी पाठ महाश्वेता-कादम्बरीक प्रतीक्षाकेँ दू तरहेँ पढ़त — निष्क्रियताक आदर्शीकरण, अथवा (गहिंर पाठमे) स्त्री-स्मृतिक ओ दृढ़ता जे पुरुष-पात्रक विस्मृति-मृत्युक बीच कथाक निरन्तरता बचौने रहैत अछि: एतऽ स्त्रिये कथाक धुरी छथि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

बाणक समास-सघन गद्यक मैथिली अनुवाद साहसक काज थिक। प्रस्तुत अनुवाद दीर्घ समासकेँ मैथिलीक लयबद्ध वाक्य-शृंखलामे तोड़ि कऽ राखैत अछि — अर्थ-घनत्व बचल अछि, श्वास-अवकाश भेटल अछि; श्लेषक ठाम जतऽ द्विअर्थ असम्भव छल ओतऽ एक अर्थ चुनि टीका-भावेँ दोसर सुरक्षित कएल गेल अछि। महाश्वेता-वृत्तान्तक करुण गद्यमे मैथिलीक "नोर", "हिय", "बाट जोहब" सन शब्द बाणक भावकेँ माटिक गन्ध दैत अछि। समग्रतः कादम्बरीक ई मैथिली रूप गद्यकाव्यक ओहि परम्पराकेँ मिथिलामे पुनः प्रतिष्ठित करैत अछि जकर बीज विद्यापतिक भूपरिक्रमा सनक रचनामे छल।

भल्लट-शतक, कलाविलास आ कलियुग-विडम्बना

तीन व्यंग्य-कृति — भल्लट, क्षेमेन्द्र, नीलकण्ठ

कृति-परिचय

ई संकलन संस्कृत व्यंग्य-परम्पराक तीन युग आ तीन शैलीक त्रिवेणी थिक। नवम शताब्दीक काश्मीरी कवि भल्लटक शतक अन्योक्तिक शिखर अछि — राजा शंकरवर्मनक उपेक्षासँ आहत कविक ओ पद्यावली जाहिमे समुद्र, कल्पवृक्ष, सुग्गा, विष — सभ किछु मनुष्यक बात कहैत अछि, मनुष्यक नाम लेने बिना। एगारहम शताब्दीक क्षेमेन्द्र कलाविलास ("छल-कौशलक विलास") मे दस

सर्ग धरि दम्भ, लोभ, काम, वेश्या-वृत्ति, कायस्थ-लेखनिक, मद, गायक, सोनार, विविध ठग आ अन्तमे सद्गुणक "कला" गनबैत छथि — मूलदेव-चरितक बहन्नेसमाजक ठगिनी विद्या सभक विश्वकोश। सत्रहम शताब्दीक दाक्षिणात्य नीलकण्ठ दीक्षित कलियुग-विडम्बनामे सए श्लोकक भीतर पण्डित, ज्योतिषी, वैद्य, कवि, महाजन, कृपण, धर्मध्वजी — तेरह कोटिक विडम्बना कसैत छथि, आ अन्तमे कलियुगहिकेँ प्रणाम कऽ दैत छथि — "जतऽ अपन कल्पना कानून अछि"।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

तीनू कृति अलंकारशास्त्रक तीन भिन्न औजारक सिद्धि थिक। भल्लटक प्राण अन्योक्ति (अप्रस्तुतप्रशंसा) अछि — अप्रस्तुतक वर्णनसँ प्रस्तुतक बोध; ई ध्वनि-सिद्धान्तक आदर्श अलंकार थिक, कारण व्यंग्यार्थ सम्पूर्णतः अनुक्त रहैत अछि। आनन्दवर्धन (भल्लटक समकालीन काश्मीरी!) जाहि "अर्थान्तरसंक्रमितवाच्य"क बात करैत छथि, भल्लट ओकर जीवित उदाहरण छथि — "हाय कालकूट! ओहि समुद्रसँ अहाँक जन्म कोना भेल?" मे समुद्र समुद्र नहि रहि जाइत अछि। क्षेमेन्द्र स्वयं औचित्य विचार चर्चाक आचार्य छथि, आ हुनक व्यंग्य-विधि अपनहि सिद्धान्तक प्रयोग थिक: प्रत्येक वर्गक "अनौचित्य"क सूचीकरण — सोनारक चौंसठ कला, तराजूक सोलह दोष — शास्त्रीय गणना-शैली (कोश-पद्धति) क व्याज-प्रयोगसँ हास्य उपजबैत अछि; शास्त्रक रूपमे ठगीक शास्त्र। नीलकण्ठक शैलीमे वक्रोक्तिक चरम संक्षेप अछि — प्रत्येक श्लोक सूक्ति-सन, जाहिमे विपरीत-लक्षणा ("मन्त्र-तान्त्रिक निश्चय धन्य अछि") डंकक काज करैत अछि। रस-दृष्टिएँ तीनूमे हास्यक पाछाँ जे स्थायी अछि से वस्तुतः शान्त-मिश्रित निर्वेद थिक —व्यंग्य एतऽ वैराग्यक पूर्वपीठिका अछि, विशेषतः नीलकण्ठमे जे अन्ततः शिव-शरणमे विश्राम पबैत छथि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे भल्लटक अन्योक्ति ईसपक फेबल आ रूपक-काव्य (allegory) सँ भिन्न अछि — फेबलमे नीति वाच्य अछि, अन्योक्तिमे व्यंग्य; ई emblematic poetry क निकट, मुदा ओहूसँ सूक्ष्म। भल्लटक राजा-विरोधी स्वर लऽ कऽ ई निर्वासित-साहित्य (literature of exile/disgrace) क कोटिमे ओविडक Tristia क दूरस्थ बन्धु थिक। क्षेमेन्द्रक कलाविलास मेनिप्पियन व्यंग्य (Menippean satire) क लक्षण-पूर्ति करैत अछि — विधा-मिश्रण, विश्वकोशीय सूची-प्रेम, ठग-नायक (मूलदेवpicaresque परम्पराक पूर्वज अछि — स्पेनी पिकारोसँ पाँच सए वर्ष पहिने) । नीलकण्ठक शैली रोमन epigram (मार्शल) आ लॉ रोशफूकोक maxim-कलाक समकक्ष अछि — संक्षेपे शस्त्र थिक। तीनू पर बाख्तिनक ई सूत्र लागू अछि जे व्यंग्य "समापनहीन वर्तमान"क विधा थिक — महाकाव्यक बन्द अतीतक विपरीत; इएह कारण अछि जे ई तीनू कृति आइयो समकालीन बुझाइत अछि: सोनार, ज्योतिषी आ "माननीय"क चरित्र-चित्रण एकैसम शताब्दीक अखबार सन पढ़ाइत अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

अनुवादमे तीन भिन्न शैली लेल तीन भिन्न रजिस्टर साधल गेल अछि — भल्लट लेल पद्यानुकारी भावगर्भितमुक्त लय, क्षेमेन्द्र लेल सूची-सुलभ कथात्मक गद्य, नीलकण्ठ लेल सूक्ति-चोख वाक्य। "छल-कौशलक विलास" सन शीर्षक-अनुवाद स्वयं व्याख्या थिक। मैथिली पाठक लेल विशेष लाभ ई जे मिथिलाक अपन व्यंग्य-परम्परा (हरिमोहन झा धरि) एहि त्रिवेणीमे अपन पुरखा चिन्हत। समग्रतः ई संकलन देखबैत अछि जे संस्कृत केवल देवभाषा नहि, धारदार लोकालोचनक भाषा सेहो छल।

पलाण्डुमण्डन प्रहसनम्

निषिद्ध प्याजक स्तुति-सभा — पण्डित-समाजक विडम्बना

कृति-परिचय

पलाण्डुमण्डन ("प्याजक मण्डन/स्तुति") उत्तर-मध्यकालीन संस्कृत प्रहसन-परम्पराक ओ चुटगर रचना थिक जाहिमे व्यंग्यक निशाना कोनो राजा वा गणिका नहि — स्वयं पण्डित-समाज अछि। कथा-बीज सरल आ विस्फोटक अछि: स्मृति-शास्त्रमे ब्राह्मण लेल निषिद्ध पलाण्डु (प्याज) क सेवन-समर्थनमे पण्डित सभक सभा जुटैत अछि, आ ओ सभ ओहि शास्त्रार्थ-कौशल, ओहि प्रमाण-परम्परा, ओहि व्याख्या-चातुरीसँ — जाहिसँ वेदान्तक गुत्थी सोझरौल जाइत छल — प्याज-भक्षणक शास्त्रीय औचित्य सिद्ध करैत छथि। लिङ्गोजी भट्ट सन पात्र-नाम दाक्षिणात्य पण्डित-परिवेशक सूचक थिक। प्रहसनक हास्य एहि विरोधाभास पर टिकल अछि जे विद्वत्ताक समस्त यन्त्र जीभक सेवामे लागल अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

नाट्यशास्त्रीय वर्गीकरणमे ई शुद्ध प्रहसन थिक — निन्द्यक अनुकृति; मुदा एकर "निन्द्य" कोनो नीच पात्र नहि, स्वयं शास्त्रार्थ-पद्धतिक दुरुपयोग अछि — ई सूक्ष्मता एकरा साधारण प्रहसनसँ ऊपर उठबैत अछि। वक्रोक्ति-दृष्टिसँ सम्पूर्ण रचना एक विराट "व्याज-स्तुति" थिक — स्तुतिक व्याजसँ निन्दा: प्याजक जतबा गुणगान, पण्डितक ततबा पोल। ध्वनि-सिद्धान्तसँ देखी तँ हास्यक व्यंग्यार्थ श्रोताक शास्त्र-परिचय पर निर्भर अछि — जे मीमांसाक प्रमाण-प्रक्रिया जनैत अछि, तकरे लेल "अर्थवाद", "गौण-मुख्य" सन पदक व्याज-प्रयोग खुलैत अछि; ई "सहृदय-सापेक्ष ध्वनि"क रोचक स्थिति थिक। औचित्य-दृष्टिएँ कविक साहस देखू — शास्त्रक भाषामे शास्त्रक विडम्बना, मुदा शास्त्रक प्रति अनादर बिना; व्यंग्य पद्धतिक दुरुपयोग पर अछि, पद्धति पर नहि। हास्यक भेदमे ई "उपहसित"सँ "अपहसित" धरिक यात्रा करबैत अछि — आ अन्ततः पाठक अपनहि पर हँसैत अछि, कारण तर्कसँ अपन रुचिकेँ शास्त्र बनयबाक कला केवल पण्डिते टा क नहि, सार्वजनीन दुर्बलता थिक।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य विधामे एकर सोझ समानान्तर mock-encomium (व्याज-प्रशस्ति) थिक — इरैस्मसक "मूर्खताक प्रशंसा" (Moriae Encomium) आ ओकर पूर्ववर्ती ग्रीक adoxography (तुच्छ विषयक गम्भीर स्तुति — माछी, टकलापन, ज्वरक प्रशस्ति!) । पलाण्डुमण्डन ठीक एही कोटिक अछि — तुच्छ विषय (प्याज) पर महाशास्त्रीय गम्भीरता; हास्य ओहीअसंगतिसँ (incongruity) फूटैत अछि। बाख्तिनक दृष्टिसँ ई रचना "भोजनक कार्निवल" थिक — निषिद्ध स्वादक विद्रोह, जतऽ देहक भूख शास्त्रक अनुशासन पर विजयी होइत अछि; ई विजय बाख्तिनक ओहि "material bodily principle"क उत्सव थिक जे समस्त कार्निवल-साहित्यक प्राण अछि। सोफिस्ट-आलोचनाक प्राचीन ग्रीक बहस (प्लेटोक "कमजोर पक्षकेँ प्रबल बनयबाक कला"क आक्षेप) सँ तुलना करी तँ पलाण्डुमण्डन संस्कृत जगतक सोफिस्ट्री-विमर्श थिक — तर्कक शक्ति आ तर्कक नैतिकताक बीचक खाधि पर हँसैत। आधुनिक भाषामे ई motivated reasoning (अभीष्ट-प्रेरित तर्क) पर लिखल प्राचीनतम व्यंग्यमे एक थिक।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवादमे एहि प्रहसनकेँ विशेष घरेलू स्वाद भेटल अछि — मिथिलाक पण्डित-सभा, शास्त्रार्थ-परम्परा आ भोजन-प्रेम तीनू एतऽ आत्मीय प्रसंग थिक; "पलाण्डु"क ठाम मैथिलक रसोई-विमर्श सहजहि जुड़ि जाइत अछि। शास्त्रार्थक पारिभाषिक व्यंग्य अनुवादमे बचल अछि, कारण मैथिली स्वयं शास्त्रार्थक भाषा रहल अछि। समग्रतः पलाण्डुमण्डन लघु आकारक पैघ रचना थिक — ई देखबैत अछि जे कोनो परम्परा तखनहि जीवित रहैत अछि जखन ओ अपनहि पर हँसबाक साहस रखैत अछि।

उत्तररामचरितम्

भवभूतिक करुण-नाट्य

कृति-परिचय

अष्टम शताब्दीक भवभूति उत्तररामचरितमे रामकथाक ओहि अध्यायकेँ उठौलनि जकरासँ कवि सभ कतराइत रहलाह — सीता-परित्याग। सात अंकक ई नाटक परित्यागक बाद बारह वर्षक विरहकथा थिक: चित्रदर्शनसँ आरम्भ (प्रथम अंकमे राम-सीता अपन अतीतक चित्र देखैत छथि — स्मृतिक रंगमञ्च), पञ्चवटीमे छाया-सीताक अदृश्य स्पर्श, लव-कुशसँ अनजान पिताक भेंट, आ अन्तमे गर्भ-नाटक (नाटकक भीतर नाटक) द्वारा पुनर्मिलन — वाल्मीकि स्वयं मंच पर रामायणक "सुखान्त पाठान्तर" खेलबा कऽ लोकापवादक उत्तरलोकहिसँ दिअबैत छथि। "एको रसः करुण एव" — भवभूतिक अपन घोषणा एहि नाटकक बीज-वाक्य थिक।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-सिद्धान्तक इतिहासमे उत्तररामचरित एकटा सैद्धान्तिक हस्तक्षेप थिक। भवभूति करुणकेँ अंगी रस बना कऽ भरतक ओहि मान्यताकेँ चुनौती देलनि जे नाटक-सन दृश्यकाव्यमे शृंगार वा वीरे प्रधान हो; आ आगाँ बढ़ि घोषणा कएलनि जे करुणे एकमात्र रस थिक, शेष रस ओकरे आवर्त-विवर्त। अभिनवगुप्तक साधारणीकरण-सिद्धान्त एहि नाटकक तेसर अंकसँ नीक कतहु सिद्ध नहि होइत — छाया-सीता प्रसंगमे सीता मंच पर छथि मुदा राम नहि देखैत छथिन; दर्शक दुनूक वेदना एक्केबेर देखैत अछि — ई "द्वैध-दृष्टि" साधारणीकरणक रंगमञ्चीययन्त्र थिक, दर्शक व्यक्तिगत शोकसँ ऊपर उठि शोक-सामान्यक आस्वादक करैत अछि। ध्वनि-दृष्टिसँ "अपूर्वकर्मचण्डालमयि मुग्धे विमुच्यताम्" सन पाँति — जतऽ राम अपनहिकेँ चण्डाल कहैत छथि — आत्मधिक्कारक व्यंग्यार्थसँ

भरल अछि। औचित्य-प्रश्न एतऽ केन्द्रीय अछि: की मर्यादा पुरुषोत्तमक अश्रुपात उचित? भवभूतिक उत्तर — "वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि" — लोकोत्तर चरित्रक हृदयकेँ लोक-हृदय बना कऽ औचित्यक नव व्याख्या करैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

अरस्तूक कोटिमे उत्तररामचरित निकटतम भारतीय "ट्रेजेडी" कहल गेल अछि — hamartia (राज्यधर्मक नाम पर निरपराध पत्नीक त्याग), पीड़ाक दीर्घ अनुभव, आ अनुकम्पा-भय (eleos-phobos) क विरेचन; मुदा समापनक पुनर्मिलन एकरा शुद्ध ट्रेजेडी नहि रहऽ दैत अछि — पाश्चात्य शब्दावलीमे ई tragicomedy अथवा शेक्सपियरक अन्तिम "रोमांस" (विशेषतः The Winter's Tale — ओहूमे निर्दोष पत्नीक परित्याग, वर्षोक पश्चात्ताप, आ कला-माध्यमे — मूर्ति/नाटक — पुनर्जीवन!) क अद्भुत पूर्वरूप थिक। गर्भ-नाटक metatheatre क प्राचीनतम सचेत प्रयोगमे अछि — हैमलेटक "मूसक जाल"सँ आठ सए वर्ष पूर्व, आ ओहूसँ आगू: एतऽ नाटक-भीतर-नाटक सत्यक परीक्षा नहि, सत्यक पुनर्लेखन करैत अछि — कला यथार्थकेँ सुधारैत अछि। सबाल्टर्न-दृष्टिसँ शम्बूक-प्रसंग अनिवार्य पाठ थिक: शूद्र तपस्वीक वध रामक हाथेँ — भवभूति एहि प्रसंगकेँ काटि नहि, मंच पर आनि, शम्बूककेँ दिव्य रूपमे रामकस्तुति करबैत छथि; आधुनिक आलोचना एहिमे वर्ण-व्यवस्थाक हिंसाक स्वीकार आ ओकर असहज परिशोधन — दुनू पढ़त। नारीवादी पाठ लेल छाया-सीता "उपस्थित-अनुपस्थित स्त्री"क (present absence) चिरन्तन रूपक थिक — जे बजैत छथि मुदा सुनल नहि जाइत छथि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद भवभूतिक दुरूह पदावली लेल प्रसिद्ध चुनौतीकेँ करुणक देशज शब्द-सम्पदासँ साधैत अछि — मैथिलीक "नोर", "हिय हहरब", "छाती फाटब" भवभूतिक करुणकेँ सोहर-समदाउनिक भूमिमे रोपि दैत अछि; प्राकृतभाषी पात्रक पहिचान अनुवादमे सुरक्षित अछि। समग्रतः उत्तररामचरित विश्व-साहित्यक ओ नाटक थिक जे देखबैत अछि जे महाकाव्यक बाद की होइत अछि — विजयक बाद वेदना; आ मैथिली, जे विरह-गीतक भाषा थिक, एकर स्वाभाविक दोसर घर सिद्ध होइत अछि।

अभिज्ञानशाकुन्तलम्

कालिदासक नाट्य-शिरोमणि

कृति-परिचय

"काव्येषु नाटकं रम्यं तत्र रम्या शकुन्तला" — संस्कृत आलोचनाक ई सर्वसम्मति दुर्लभ घटना थिक। कालिदास महाभारतक शकुन्तलोपाख्यानक कठोर कथाकेँ (जतऽ दुष्यन्त जानि-बूझि मुकरि जाइत छथि) दुर्वासाक शाप आ अँगूठीक "अभिज्ञान"-यन्त्रसँ रूपान्तरित कऽ सातअंकक ओ नाटक रचलनि जाहिमे प्रेम तीन अवस्थासँ गुजरैत अछि — तपोवनक सहज अंकुरण, नगर-राजसभामे विस्मृति-प्रत्याख्यानक दारुण मध्य, आ हेमकूटक तपःपूत पुनर्मिलन। प्रकृति एतऽ पृष्ठभूमि नहि, पात्र थिक — शकुन्तलाक विदाईमे वृक्ष वस्त्र दैत अछि, मृग आँचर पकड़ैत अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-दृष्टिएँ शाकुन्तल संयोग-विप्रलम्भ-पुनर्संयोगक पूर्ण शृंगार-चक्र थिक, आ एकर विशेषता ई जे विप्रलम्भक कारण बाह्य खलनायक नहि — शाप-रूपेँ नियति आ स्वयं नायकक विस्मृति अछि; एहिसँ करुणक जे छाया शृंगार पर पड़ैत अछि से रस-मिश्रणक आदर्श उदाहरण थिक। ध्वनि-सम्प्रदाय लेल शाकुन्तल घर-आँगन थिक: आनन्दवर्धन-अभिनवगुप्त बेर-बेर एहीसँ उदाहरण अनैत छथि। चतुर्थ अंकक कण्व-विदाई — "पातुं न प्रथमं व्यवस्यति जलम्" — वात्सल्यक एहन ध्वनि-सघन क्षण थिक जे परवर्ती आलोचना "काव्येषु नाटकं... तत्रापि च चतुर्थोऽङ्कः" कहि एकरे मुकुट-मणि मानलक। वक्रोक्ति-दृष्टिसँ "अभिज्ञान" (चिन्ह/अँगूठी) स्वयं महावक्रता थिक — प्रेमक प्रमाण वस्तुमे राखब आ वस्तुक हेरायब — कुन्तक जकरा "प्रकरण-वक्रता" कहितथि। औचित्यक कसौटी पर कालिदासक संयम अद्वितीय अछि: प्रत्याख्यान-दृश्यमे दुष्यन्त क्रूर नहि, शापित छथि — खलनायकहीन दुःखान्तक ई कला औचित्यक चरम थिक। भरतक "काव्यं ग्राह्यमलंकारात्" एतऽ उपमामे सिद्ध अछि — "अलं कालिदासस्य उपमा"।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

शाकुन्तल पाश्चात्य साहित्य-चेतनामे प्रवेश करनिहार प्रथम भारतीय कृति थिक — सर विलियम जोन्सक अनुवाद (१७८९) पढ़ि गेटे लिखलनि जे स्वर्ग आ पृथ्वी एक्कहि नाममे चाही तँ "शकुन्तला" कहू; फाउस्टक रंगमञ्चीय प्रस्तावना (Vorspiel auf dem

Theater) शाकुन्तलक सूत्रधार-प्रस्तावनाक प्रत्यक्ष ऋणी थिक — विश्व-साहित्य (Weltliteratur) क गेटे-कल्पनाक एकटा बीज एतहि अछि। रोमैंटिक आलोचना एहिमे प्रकृति-मनुष्यक अद्वैत देखलक; इको-क्रिटिसिज्मक आजुक दृष्टिसँ तपोवन "पारिस्थितिक समुदाय"क साहित्यिक आदर्श-चित्र थिक जतऽ मनुष्य प्रकृतिक स्वामी नहि, सदस्य अछि। संरचनावादी पाठ लेल अँगूठी बार्थक "hermeneutic code"क शुद्धयन्त्र थिक — हेराएब-भेटब पर कथाक ताला-कुंजी। नारीवादी आलोचना दू स्वरमे बजैत अछि: एक दिस शकुन्तलाक वाणी-हरण (सभा-दृश्यमे ओकर सत्य अप्रमाण भऽ जाइत अछि — स्त्री-साक्ष्यक अवमूल्यनक चिरपरिचित संरचना), दोसर दिस महाभारतक तेजस्विनी शकुन्तला (जे राजाकेँ भरल सभामे धिक्कारैत छथि) क तुलनामे कालिदासीय नायिकाक "कोमलीकरण"; मुदा सूक्ष्म पाठ ई देखत जे कालिदासो शकुन्तलाकेँ सभा-दृश्यमे तीखा प्रतिवाद ("अनार्य!") देने छथि। मनोविश्लेषण लेल दुष्यन्तक विस्मृति दमनक (repression) रूपक थिक — गान्धर्व-विवाहक सामाजिक अपराध-बोध स्मृतिकेँ निगलि जाइत अछि, आ अँगूठी — भौतिक साक्ष्य — दमितकेँ घुरा अनैत अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवादमे शाकुन्तलक तपोवन मिथिलाक फुलवारी बनि गेल अछि — लता, भ्रमर, मृग-छौना लेल मैथिलीक कोमल शब्दावली कालिदासक कोमलताक समवर्ती थिक; प्राकृत-भाषिणी शकुन्तला-सखी लेल मैथिलीक घरेलू बोली-स्तर आ पद्य-भाग लेल तत्सम-गन्धी उच्च स्तर — ई द्विस्तरीय रजिस्टर मूलक संस्कृत-प्राकृत विभाजनक सर्जनात्मक समाधान थिक। समग्रतः शाकुन्तलक मैथिली अवतरण विद्यापतिक भाषाकेँ कालिदाससँ जोड़बाक सांस्कृतिक सेतु-कर्म थिक — दुनू कविक साझा सम्पत्ति थिक शृंगार आ प्रकृतिक अभेद।

मुद्राराक्षसम् (मंत्री राक्षसक राजसी मोहर)

विशाखदत्तक राजनीतिक नाटक

कृति-परिचय

संस्कृत नाट्य-परम्परामे मुद्राराक्षस अकेला-दुकेला रचना थिक — ने नायिका, ने शृंगार, ने विदूषक; सम्पूर्ण नाटक दू मस्तिष्कक शतरञ्ज थिक। नन्द-वंशक पतनक बाद चाणक्य चन्द्रगुप्तकेँ सिंहासन पर बैसा चुकल छथि, मुदा हुनक असली लक्ष्य आब शत्रुक विनाश नहि — शत्रुक हृदय-परिवर्तन अछि: नन्दक स्वामिभक्त अमात्य राक्षसकेँ चन्द्रगुप्तक मन्त्री बनाएब। एक टा मोहर (मुद्रा), एक टा जाली चिट्ठी, आ छद्मवेशी गुप्तचरक जालसँ चाणक्य राक्षसक प्रत्येक चालिकेँ पहिनहिसँ खेलल घर बना दैत छथि — अन्तिम चालिमे राक्षसक सद्गुणे (मित्रचन्दनदासकेँ बचएबाक करुणा) ओकर "पराजय"क द्वार बनैत अछि। विशाखदत्त क्षत्रिय-राजपुत्र छलाह — राजनीतिक हुनक ज्ञान पोथीक नहि, प्रासादक अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-दृष्टिएँ मुद्राराक्षस शास्त्रीय वर्गीकरण लेल समस्या थिक — परम्परा एकर अंगी रस वीर मानैत अछि, मुदा ई युद्धवीर नहि, "नीतिवीर"/"बुद्धिवीर" थिक: उत्साह स्थायी भाव अछि, मुदा ओकर विषय रणभूमि नहि, कूटयोजना अछि। ई रस-सिद्धान्तक सीमाक रचनात्मक विस्तार थिक। संधि-योजनाक दृष्टिसँ (नाट्यशास्त्रक कथा-संरचना-सिद्धान्त) मुद्राराक्षस पाठ्यपुस्तक-योग्य अछि — मुख-प्रतिमुखसँ निर्वहण धरि प्रत्येक संधि कसल; एकहु दृश्य निष्प्रयोजन नहि। ध्वनि-दृष्टिसँ नाटकक व्यंग्य-सम्पदा "नाटकीय विडम्बना" (dramatic irony) मे अछि — दर्शक चाणक्यक जाल जनैत अछि, राक्षस नहि; प्रत्येक राक्षस-संवादक दोसर अर्थ दर्शकहि लेल ध्वनित होइत रहैत अछि। औचित्य-दृष्टिएँ विशाखदत्तक साहस ई जे ओ "खलनायक"केँ नाटकक नैतिक केन्द्र बना देलनि — राक्षसक स्वामिभक्ति एहन उदात्त अछि जे शीर्षकहि हुनका नामे अछि; चाणक्य जितैत छथि, मुदा महिमा राक्षसक भागमे जाइत अछि — विजय आ महत्त्वक ई विभाजन औचित्यक सूक्ष्मतम प्रयोग थिक।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे मुद्राराक्षस राजनीतिक यथार्थवादक नाट्य-रूप थिक — मैकियावेलीक Il Principe सँसहस्र वर्ष पूर्व "साध्य-साधन"क ओ विमर्श जे कौटिल्यीय अर्थशास्त्रक रंगमञ्चीय भाष्य सन अछि; चाणक्य मैकियावेलीक आदर्श "नव-राजा"क निर्माता-रूप छथि, मुदा एक भेदसँ — हुनक लक्ष्यमे व्यक्तिगत स्वार्थ शून्य अछि, कार्य सिद्ध भेला पर ओ शिखा बान्हि वनप्रस्थ दिस ताकैत छथि: सत्ता-संन्यासक ई युग्म पाश्चात्य यथार्थवादकेँ अनुपलब्ध अछि। विधा-दृष्टिसँ ई espionage thriller आ heist-संरचनाक

प्राचीनतम परिपक्व रूप थिक — ल कारेक शीत-युद्ध कथा-जालसँ तुलनीय: छद्म-पहिचान, double agent (भागुरायण), जाली दस्तावेज, आ "मास्टरमाइंड"क बिन्दु-दर-बिन्दु खुलैत योजना। संरचनावादी दृष्टिसँ नाटक द्वयात्मक विरोध (binary opposition) पर गठित अछि — बुद्धि/हृदय, राजनीति/निष्ठा, मुद्रा (राज्यक अमूर्त शक्ति)/चन्दनदास (नागरिक स्नेह) — आ समाधान विरोधक विलय (राक्षसक मन्त्रित्व-ग्रहण) मे अछि। न्यू हिस्टॉरिसिज्म एहि नाटककेँ गुप्तयुगीन राज्य-विमर्शक दस्तावेज रूपेँ पढ़त — साम्राज्य-निर्माणक वैधता-कथा, जाहिमे हिंसा न्यूनतम आ सहमति-निर्माण (राक्षसक सहमति!) परम लक्ष्य अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद "मंत्री राक्षसक राजसी मोहर" शीर्षकहिसँ अनुवाद-दृष्टि घोषित करैत अछि — मुद्राक अर्थ-गाम्भीर्य देशज पदावलीमे। कूटनीतिक संवादक द्विअर्थकता — जे एहि नाटकक प्राण थिक — अनुवादमे सतर्कतासँ बचाओल गेल अछि; गुप्तचर-प्रसंगकसांकेतिक भाषा मैथिलीमे सहज चलैत अछि। समग्रतः मुद्राराक्षस देखबैत अछि जे संस्कृत नाटक कोमलताक अतिरिक्त कठोरताक, हृदयक अतिरिक्त मस्तिष्कक नाट्य सेहो रचि सकैत छल — आ ओहूमे अन्ततः जीत हृदयेक होइत अछि।

मृच्छकटिकम् (माटिक खेलौना-गाड़ी)

शूद्रकक दस-अंकी प्रकरण

कृति-परिचय

मृच्छकटिक संस्कृत नाट्य-साहित्यक सभसँ "लौकिक" महारचना थिक। राजा शूद्रक (परम्परा-प्रसिद्ध रचयिता) राजप्रासाद छोड़ि उज्जयिनीक गली-कूचीमे उतरि गेलाह — एतऽ दरिद्र भेल उदार व्यापारी चारुदत्त अछि, बुद्धिमती गणिका वसन्तसेना अछि, जुआरी-सँ-भिक्षु बनल संवाहक अछि, सेन्ह काटबकेँ कला माननिहार चोर शर्विलक अछि, राजाक साला शकार अछि — मूर्खता आ क्रूरताक अमर मूर्ति — आ पृष्ठभूमिमे आर्यकक राज्य-क्रान्ति पकैत अछि। शीर्षकक "माटिक गाड़ी" — रोहसेनक खेलौना, जाहिमे वसन्तसेना अपन गहना भरि दैत छथि — सम्पूर्ण नाटकक बीज-प्रतीक थिक: माटि आ सोनक, दरिद्रता आ प्रेमक सङ्गम।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रूपक-भेदमे ई "प्रकरण" थिक — कल्पित कथा, लौकिक पात्र, आ नायिका गणिका; भरतक व्यवस्थामे प्रकरणकेँ नाटकसँ न्यून मानल गेल, मुदा शूद्रक एहि "न्यून" विधाकेँ दस अंकक व्याससँ महाकाव्यीय गरिमा देलनि। रस-दृष्टिएँ मृच्छकटिक रस-मिश्रणक प्रयोगशाला थिक — शृंगार (चारुदत्त-वसन्तसेना), हास्य (मैत्रेय, शकार), करुण (वध-स्थल-यात्रा), अद्भुत, वीर, बीभत्स धरि — आ आश्चर्य ई जे एतेक रसक भीड़मे रस-भंग नहि होइत अछि; कारण औचित्य: प्रत्येक रस अपन पात्र-स्तर आ भाषा-स्तरसँ बान्हल अछि। नाट्यशास्त्रक भाषा-व्यवस्थाक सभसँ समृद्ध प्रयोग एतहि अछि — सात-आठ प्राकृति-भेद, पात्रक सामाजिक स्तरक ध्वनि-चित्र। वक्रोक्ति-दृष्टिसँ शकारक "विपरीत-पाण्डित्य" (रामायण-महाभारतक उनटल हवाला) अज्ञानक वक्रोक्ति थिक — भाषिक हास्यक अक्षय कोष। ध्वनि-दृष्टिएँ माटिक गाड़ी वस्तु-ध्वनिक आदर्श अछि: ओहिमेराखल गहना कथाक समस्त उलझनक बीज बनैत अछि, आ "माटिमे सोन" — चारुदत्तक दरिद्र-उदारताक — प्रतीक बनि व्यंग्यार्थ पसारैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य विधा-कोटिमे मृच्छकटिक tragicomedy आ melodrama क पूर्ण लक्षणसँ युक्त अछि — निर्दोषक फाँसी-यात्रा अन्तिम क्षणमे रुकैत अछि; मुदा एकर गहिंर पहिचान "नगर-नाट्य" (city comedy) रूपेँ अछि — बेन जॉनसनक लंदनसँ बारह सए वर्ष पूर्व उज्जयिनीक अर्थतन्त्र, न्यायतन्त्र, अपराधतन्त्रक पूर्ण नागरिक चित्र। मार्क्सवादी पाठ लेल ई संस्कृतक सर्वाधिक उर्वर पाठ थिक: सम्पत्तिक गति (गहनाक हाथ-दर-हाथ भ्रमण) कथाक वास्तविक चालक अछि; न्यायालय-दृश्य वर्ग-न्यायक नग्न चित्र थिक — "दरिद्र साक्ष्य अप्रमाण"; आ आर्यकक क्रान्ति एकमात्र संस्कृत नाटक थिक जतऽ राज-परिवर्तन ग्वाला-पुत्रक नेतृत्वमे होइत अछि — सबाल्टर्न इतिहास-दृष्टिक रंगमञ्चीय पूर्वाभास। नारीवादी दृष्टिसँ वसन्तसेना गणिका-पात्रक मुक्ति-कथा थिक — ओ अपन देह-वृत्तिक अर्थतन्त्रसँ निकसि "वधू" पद पबैत छथि; आधुनिक पाठ एहि समापनकेँ दू तरहेँ देखत — स्त्रीक विजय, अथवा विवाह-संस्थामे ओकर पुनर्वशीकरण। ब्रेख्तीय दृष्टिसँ नाटकक न्याय-प्रहसन आ शकारक अति-नाटकीयता स्वयं "अलगाव-प्रभाव" उत्पन्न करैत अछि — दर्शक व्यवस्था पर सोचबा लेल बाध्य होइत अछि। (स्मरणीय: जर्मन रंगमञ्च एहि नाटककेँ उन्नैसम शताब्दीहिसँ अपनौने अछि।)

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद "माटिक खेलौना-गाड़ी" एहि नाटकक बहुभाषिकताक समक्ष मैथिलीक अपन स्तर-भेद (ठेठ, सामान्य, तत्समगर्भी) उतारैत अछि — शकारक भ्रष्ट उक्ति लेल मैथिलीक हास्यमूलक वाक्-विकृति, चारुदत्तक पद्य लेल प्रौढ़ स्तर। चोरिक "शास्त्रीय" वर्णन आ जुआघरक दृश्य मैथिली मुहावरामे विशेष खिलल अछि। समग्रतः मृच्छकटिक प्रमाण थिक जे भारतीय क्लासिक "क्लासिक" एहि द्वारे नहि जे ओ राजा-देवताक कथा कहैत अछि, वरन् एहि द्वारे जे ओ माटिक गाड़ीमे मनुष्यताक सोन भरि सकैत अछि।

भगवदज्जुकम् (साधु आ वेश्या)

बोधायन-कृत प्रहसन — आत्मा-विनिमयक हास्य

कृति-परिचय

भगवदज्जुकम् संस्कृत प्रहसन-परम्पराक सभसँ बुद्धिदीप्त रचना मानल जाइत अछि। कथा-यन्त्र अद्भुत अछि: परिव्राजक (भगवान्) अपन चञ्चल शिष्य शाण्डिल्यकेँ योगक "परकाय-प्रवेश" सिद्धि देखयबा लेल — यमदूतक भूलसँ मृत भेल गणिका वसन्तसेना (अज्जुका) क देहमे प्रवेश करैत छथि; बादमे यमदूत भूल सुधारऽ मे गणिकाक आत्माकेँ परिव्राजकक देहमे धऽ दैत अछि। फल: गणिकाक देहसँ वेदान्त-वाणी आ संन्यासीक देहसँ शृंगार-चेष्टा! वैद्य, माता, प्रेमी — सभ चकराइत अछि, आ शाण्डिल्य — भूख-प्रेरित भऽ बौद्ध-मठसँभागल ई "अन्न-दास" शिष्य — एहि अराजकताक सूत्रधार-साक्षी बनल हँसबैत रहैत अछि। पल्लव-युगमे (सम्भवतः महेन्द्रविक्रमक समकालीन/पूर्ववर्ती) रचित ई प्रहसन मत्तविलासक संग दक्षिणक मन्दिर-रंगमञ्च (कूडियाट्टम् धरि) मे जीवित रहल।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

रस-दृष्टिएँ एतऽ हास्यक उद्भव-स्थल "वेश-वाणीक व्यत्यय" थिक — भरत हास्यक विभावमे "विकृत-वेष-अलंकार" गनने छथि; भगवदज्जुक ओकरा दार्शनिक स्तर पर लऽ जाइत अछि: विकृति वस्त्रक नहि, आत्महिक अछि। ध्वनि-सिद्धान्तसँ ई प्रहसन असाधारण अछि, कारण एकर हास्यक प्रत्येक क्षण वेदान्तक गम्भीर प्रमेय ध्वनित करैत अछि — देह-आत्माक भेद, "को ऽहम्"कप्रश्न — जे उपनिषद् गम्भीर स्वरे कहैत अछि, से ई प्रहसन उनटा कऽ देखा दैत अछि: देह बदलि गेला पर "हम" के? हास्यक व्याजसँ शास्त्रार्थ — ई "व्यङ्ग्य-वेदान्त" थिक। वक्रोक्ति-दृष्टिएँ सम्पूर्ण नाटक एक विराट "विपर्यय-वक्रता" पर ठाढ़ अछि। औचित्य-प्रश्न रोचक अछि: की संन्यासीक एहन विडम्बना उचित? रचनाक भीतरहि उत्तर अछि — व्यंग्य सच्चा योगी पर नहि (परिव्राजकक सिद्धि वास्तविक अछि!), पाखण्ड आ देहात्म-भ्रम पर अछि; प्रहसनक अन्तमे सभ आत्मा अपन-अपन देह घुरि पबैत अछि — व्यवस्था-पुनर्स्थापन औचित्यक रक्षा करैत अछि।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे एकर कथा-यन्त्र body-swap comedy क विश्व-साहित्यमे प्राचीनतम पूर्ण प्रयोग थिक — आधुनिक सिनेमा धरि (Freaky Friday सन) पसरल एहि रूढ़िक जड़ि एतऽ अछि; मुदा पाश्चात्य रूपान्तरसभ जतऽ मनोवैज्ञानिक "समानुभूति"क पाठ पढ़बैत अछि, बोधायन दार्शनिक प्रश्न उठबैत छथि — पहिचान देहमे अछि की चेतनामे? ई प्रश्न आधुनिक philosophy of mind (लॉकक स्मृति-सिद्धान्त, personal identity विमर्श) सँ सोझे संवाद करैत अछि — लॉकक "राजकुमार आ मोचीक" प्रसिद्ध विचार-प्रयोगसँ सहस्र वर्ष पूर्व मंच पर ओकर प्रदर्शन। बाख्तिनक कार्निवल-सिद्धान्त एतऽ शाब्दिक रूपेँ फलित अछि — उच्च-नीचक विनिमय (संन्यासी-गणिका!) कार्निवलक मूल-मन्त्र थिक, आ "देह"क केन्द्रीयताबाख्तिनक भौतिक-दैहिक सिद्धान्तक अनुरूप। बर्गसाँक हास्य-सूत्र — "देह पर यन्त्रवत् आरोपण" — एतऽ चरम रूपमे अछि: आत्मा बदलल, देहक टेव नहि बदलल। Absurdist दृष्टिसँ यमदूतक "लिपिकीय भूल" (गलत जीव उठा लेब) ब्रह्माण्डीय प्रशासनक ओ विडम्बना थिक जे काफ्का-योनेस्कोक जगत्सँ परिचित पाठककेँ चौंका दैत अछि — नियति एतऽ त्रासद नहि, दफ्तरी अछि।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद "साधु आ वेश्या" शीर्षक-द्वन्द्वहिसँ नाटकक विपर्यय-संरचना पकड़ि लैत अछि। अनुवादक कठिनतम स्थल — गणिका-देहस्थ संन्यासीक संस्कृतनिष्ठ वाणी आ संन्यासी-देहस्थ गणिकाक विलास-वाणीक व्यत्यय — मैथिलीक स्तर-भेदसँ (तत्समगर्भीबनाम लोकरंजक बोली) सधल अछि; एहि भाषिक व्यत्ययहिमे अनुवादक सफलता अछि। समग्रतः भगवदज्जुकम् देखबैत

अछि जे भारतीय परम्परामे गम्भीरतम दर्शन आ उन्मुक्ततम हास्य परस्पर विरोधी नहि — एक्कहि सिक्काक दू पीठ थिक; "को ऽहम्"क प्रश्न ठहाकाक बीचोबीच पूछल जा सकैत अछि।

मत्तविलास प्रहसनम् (आनन्दमे मत्त करैबला प्रहसन)

पल्लव नरेश महेन्द्रविक्रम वर्माक प्रहसन

कृति-परिचय

सप्तम शताब्दीक आरम्भमे काञ्चीक पल्लव सम्राट् महेन्द्रविक्रम वर्मा — "विचित्रचित्त" — स्वयं जे प्रहसन रचलनि से राजकीय आत्मविश्वासक अद्भुत दस्तावेज थिक: अपनहि राजधानी काञ्चीक धर्म-जगतक विडम्बना। कपाली सत्यसोम — मदिरा-मत्त शैव कापालिक — अपन कपाल (भिक्षा-पात्र, नर-कपाल) हेरा दैत अछि आ बौद्ध भिक्षु नागसेन पर चोरिक आरोप लगबैत अछि; बीचमे पाशुपत मध्यस्थ बनैत अछि, उन्मत्तक हाथसँ कपाल घुरैत अछि, आ झगड़ा जेना उठल तेना बैसि जाइत अछि। एक अंकक एहि लघु रचनामे तत्कालीन काञ्चीक धार्मिक बहुलता — कापालिक, बौद्ध, पाशुपत, जैनक उल्लेख — सड़क-स्तरीय यथार्थमे अंकित अछि।

भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि

नाट्यशास्त्रीय दृष्टिसँ मत्तविलास "शुद्ध प्रहसन"क लक्षण-सिद्ध उदाहरण थिक — पाखण्डी-तापस-चेटादिक निन्द्य अनुकृति; मुदा राजा-रचयिताक स्पर्शसँ एकर हास्यमे जे परिष्कार अछि से उल्लेखनीय: गारि-स्तरक स्थूलता न्यून, स्थिति-जन्य आ चरित्र-जन्य हास्य प्रधान। रस-व्यवस्थामे हास्यक "मद"-आधारित विभाव एतऽ केन्द्रमे अछि — भरत मदक तीन अवस्था गनने छथि, आ सत्यसोमक सम्पूर्ण आचरण ओकर क्रमिक प्रदर्शनी थिक; नाटकक नामहिमे "मत्त" अछि। वक्रोक्ति-दृष्टिएँ नाटकक तीक्ष्णतम शस्त्र "व्याज-तर्क" थिक — सत्यसोम मदिरालयकेँ यज्ञशाला कहैत अछि (ध्वजा=यूप, मदिरा=सोम, चषक=चमस...): ई उपमा-शृंखला वक्रोक्तिक चमत्कार आ धर्म-भाषाकखोखलापनक ध्वनि — दुनू एक्केसंग थिक। ध्वनि-दृष्टिसँ बौद्ध भिक्षुक मनोगत ("पिटक-ग्रन्थमे मदिरा-स्त्रीक निषेध कोन ईर्ष्यालु बूढ़ जोड़ि देलक!") प्रच्छन्न-लालसाक व्यंग्य-गर्भ उक्ति थिक। औचित्य-दृष्टिएँ राजाक सन्तुलन देखू — कोनो सम्प्रदाय-विशेषक पक्षधरता नहि; व्यंग्य सभ पर बराबर, आ तेँ कोनो पर नहि — शासकीय निष्पक्षताक सौन्दर्यशास्त्र।

पाश्चात्य सिद्धान्त-दृष्टि

पाश्चात्य कोटिमे मत्तविलास farce क लक्षण — हेरायल वस्तु, झूठ आरोप, सार्वजनिक झगड़ा, संयोगसँ समाधान — पूर्णतः धारण करैत अछि; मोलियरक Tartuffe सँ हजार वर्ष पूर्व धार्मिक पाखण्डक रंगमञ्चीय विडम्बना, मुदा एक निर्णायक भेदसँ: मोलियरक व्यंग्य-पात्र कपटी अछि, सत्यसोम कपटी नहि — निष्ठावान् मूर्ख अछि; ओ जे बजैत अछि से मानैत अछि। ई भेद व्यंग्यकेँ क्रूरतासँ बचबैत अछि आ बर्गसाँक "टेवक यान्त्रिकता"क शुद्ध क्षेत्रमे रखैत अछि। बाख्तिनक दृष्टिसँ मत्तविलास कार्निवलक शाब्दिक मंचन थिक — मदिरा, सड़क, पवित्रक अपवित्रीकरण (कपाल-पात्र!), आ "सम्राट्क अपन कार्निवल" — राजसत्ता स्वयं अपन नगरक धर्मसत्ताक विडम्बना रचि रहल अछि: न्यू हिस्टॉरिसिस्ट एतऽ पूछत जे ई विडम्बना विध्वंसक (subversive) थिक की सत्ता-पोषित सुरक्षा-कपाट (safety valve / licensed misrule)? सम्भवतः दोसर — राजा हँसबाक अनुमति दऽ कऽ धर्म-संस्था सभ पर अपन प्रभुत्वहि देखा रहल छथि। धर्म-समाजशास्त्रक दृष्टिसँ ई नाटक सम्प्रदाय-प्रतिस्पर्धाक"बाजार"क चित्र थिक — भिक्षा, पात्र, प्रतिष्ठाक अर्थतन्त्र; आ कपाल-हरण-कथा वस्तुतः प्रतीक-पूँजी (symbolic capital, बूर्द्यो) कहरण-कथा थिक: कपाल गेल तँ कापालिकक पहिचाने गेल।

अनुवाद-मूल्यांकन आ निष्कर्ष

मैथिली अनुवाद "आनन्दमे मत्त करैबला प्रहसन" शीर्षकसँ मूलक श्लेष (मत्त=मातल/आनन्दमग्न) खोलैत अछि। मातलक लटपटायल वाणी लेल मैथिलीक अपन "मातल-बोली"क लोक-परिचित लय अनुवादमे सटीक बैसल अछि; मदिरालय-यज्ञशाला उपमा-शृंखला पारिभाषिक शब्दसहित बचाओल गेल अछि, जे एकर व्यंग्य-धार लेल अनिवार्य छल। समग्रतः मत्तविलास ओ दुर्लभ रचना थिक जाहिमे सिंहासन स्वयं सड़क पर उतरिहँसैत अछि — आ डेढ़ हजार वर्ष बाद ओ हँसी एखनहुँ ताजा अछि, कारण पाखण्ड कहियो पुरान नहि होइत अछि।

२३. जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन"

सारांश
माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार।

बीजशब्द: जगदानन्द झा 'मनु'; माटिक बासन; बालकथा; कुम्हार-परम्परा; मूर्तिकला; कथानक; लोक-संस्कृति

माटिक बासन

कथाक विवेचना

कथाक धनात्मक पक्ष

कथाक ऋणात्मक पक्ष

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह: सदेह ९ (विदेह शिशु उत्सव पृ. १०९-१२६) मे संकलित भेल, आ उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॊडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

मुदा "माटिक बासन"मे जगदानन्द जी निराश केलन्हि, हुनकासँ हमरा चाही छल पेडिण्ती अशोक कुमारक "जिगरी" सन बौस्तु मुदा भेटल साधारण सन शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र"।

ई सत्य जे "माटिक बासन" बाल बीहनि-कथा अछि, मुदा जकरा लग प्लॉट रहतै-

"माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल।"-

से ओइ कथाक अन्त करथि-

"मुदा हमर सपना ------- आब नहि पूरा होएत। ई कहि ओ ओहि कक्षसँ बाहर भऽ गेला।"

ई हमरा स्वीकार्य नै। आ तेँ एकटा अद्भुत प्लॉट एकटा नीक मुदा मेडियोकर कथा बनि कऽ रहि गेल।

विश्लेषण

ऐ कथाकेँ विस्तृत करबाक आवश्यकता अछि, शब्दमे विस्तारो दऽ कऽ ई भऽ सकैए, आ अही शब्द-संख्याक अन्तर्गत रहि कऽ कथ्यकेँ विस्तार देल जा सकैए। मुदा लक्ष्यसँ जेना ओ भटकि गेला- "माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल।" केँ विस्तार नै दऽ सकला से "चोनहा"क लेखकसँ हम आशा नै केने छलौं। ऐ कथाक पुनर्लेखन लेखककेँ करैए पड़तन्हि आ तइमे ई बीहनि कथा रहत बा लघुकथा बा दीर्घकथा बा उपन्यासो बनि जायत।

२४. पाठक हमर पोथी किए पढ़थि

सारांश

पहिल गप जे रचना सुनने छिऐ नीक छै मुदा पोथी भेटत केना? पहिने नेपाल पठेलापर डाकखर्च भारते जकाँ रहै आब तँ पोथी/पत्रिकासँ महग डाकखर्च से आब नेपाल पोथी नै जाइए। हम न्यू जर्सीमे रहै छी, मधुबनी-दरभङ्गामे मैथिली पोथी-पत्रिका भेटिते नै अछि तँ यूगाण्डा, यू. एस. ए. आ ऑस्ट्रेलियामे कतऽ भेटत।

बीजशब्द: गजेन्द्र ठाकुर; कृतित्व; कविता; गजल; कथा; उपन्यास; नाटक; पाठकीय ग्रहण

पहिल गप जे रचना सुनने छिऐ नीक छै मुदा पोथी भेटत केना? पहिने नेपाल पठेलापर डाकखर्च भारते जकाँ रहै आब तँ पोथी/पत्रिकासँ महग डाकखर्च से आब नेपाल पोथी नै जाइए। हम न्यू जर्सीमे रहै छी, मधुबनी-दरभङ्गामे मैथिली पोथी-पत्रिका भेटिते नै अछि तँ यूगाण्डा, यू.एस.ए. आ ऑस्ट्रेलियामे कतऽ भेटत। तइ लेल अहाँ सभकेँ हम कहब जे हमर सभटा रचना अन्तर्जालपर उपलब्ध अछि ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_90.htm, से भौगोलिक सीमाक समाप्तिक घोषणा भेल, उपलब्धताक सेहो कोनो स्टॉक लिमिट नै।

आब हम अपन पोथीक विवरण देब निम्न खण्डमे-

मूल

पद्य (सामान्य कविता, गीत-प्रबन्ध, गजल आ बाल कविता-गजल)

गद्य (सामान्य कथा-उपन्यास-समालोचना-निबन्ध-प्रबन्ध-नाटक-सम्पादकीय आ बाल साहित्य)

अनूदित

गद्य- हमर अनूदित सामान्य कथा आ बाल साहित्य

पद्य- हमर अनूदित पद्य साहित्य

पहिने पद्य पर आबी, उदय नारायण सिंह जी हमर किछु पद्यकेँ उद्धृत केने छलाह, हुनका नीक लागल छलन्हि, हुनकर विश्लेषण नीचाँ दऽ रहल छी-

"कतेको पंक्ति भरिसक पाठकक मोनमे ग्रंथित-मुद्रित भऽ जएतन्हि, जेना कि

"ढहैत भावनाक देबाल

खाम्ह अदृढ़ताक ठाढ़

आकांक्षाक बखारी अछि भरल

प्रतीक बनि ठाढ़

घरमे राखल हिमाल-लकड़ीक मन्दिर आकि

ओसारापर राखल तुलसीक गाछ

प्रतीक सहृदयताक मात्र"

अथवा, निम्नोक्त पंक्ति-येकेँ लऽ लिअ:

"सुनैत शून्यक दृश्य

प्रकृतिक कैनवासक

हहाइत समुद्रक चित्र

अन्हार खोहक चित्रकलाक पात्रक शब्द

क्यो देखत नहि हमर ई चित्र अन्हार मे

तँ सुनबो तँ करत पात्रक आकांक्षाक स्वर”

मिथिलेक नहि अपितु भारतक कतेको संस्कृतिक प्रभाव देखल जा सकैछ हिनक कथा-कवितामे। एहिसँ मैथिली क्रियाशील रचनाक परिदृश्य आर बढ़ि जाइछ, आ नव-नव चित्र, ध्वनि आ कथानक सामने आबि जाइत अछि।

कवि कोन मन्दाकिनी केर खोजमे छथि जे कहैत छथि-

“मन्दाकिनी जे आकाश मध्य

देखल आइ पृथ्वीक ऊपर...”

अपन विशाल भ्रमणक छाप लगैछ रचनामे नीक जकाँ प्रतीत होइत अछि। आ आर एकटा बात स्पष्ट अछि कोषकार गजेन्द्र ठाकुर आ रचनाकार गजेन्द्र ठाकुर भिन्न व्यक्ति छथि, व्यक्तित्वमे सेहो फराक... जतए कोशकारितामे सम्पादकत्व तथा टेक्नोलोजी –सँ सम्बन्धित व्यक्तिक छाया भेटिते अछि, मुदा सृजनक मुहुर्तमे से सभटा हेरा जाइत छथि।

अनेको रचनामे मात्र गोल-मटोल कथे नहि, राजनीतिक भाष्य सेहो लखा दैत अछि। ताहिमे हिनका कोनो हिचकिचाहटि नहि छन्हि। ओना देखल जाए तँ कुरुक्षेत्र क कतेको महारथी छलाह = प्रत्येक वीर-योद्धा अपन-अपन क्षेत्र आ विधाक प्रसिद्ध पारंगद व्यक्ति छलाह,–क्यो कतेको अक्षौहिणी सेनाक संचालनमे, तँ क्यो तीरन्दाजीमे, आदि आदि। सभ जनैत छलाह जे धर्म आ अधर्मक भेद की होइछ मुदा तैयो सभ क्यो जेना आसन्न विपर्यायिक सामने निरुपाय भऽ गेल छलाह। आजुक सन्दर्भमे सेहो कथा मे तथा व्याख्यामे एहन परिस्थितिक झलक देखल जाइत अछि। सैह एहि महा-पाठक (मेटाटेक्सट) खूबी कहब। नहि तँ ओ कियेक लिखताह-

देखैत देशवासीकेँ पछाड़ैत

मंत्र-तंत्रयुक्त दुपहरियामे जागल

गुनधुनी बला स्वप्न

बनैत अछि सभसँ तीव्र धावक

अखरहाक सभसँ फुर्तिगर पहलमान

दमसाइत मालिकक स्वर तोड़ैत छैक ओकर एकान्त

कारिख चित्रित रातिक निन्न

टुटैत-अबैत-टुटैत निन्न आ स्वप्नक तारतम्य

...

एहि महापाठकेँ एकटा एक्सपेरीमेन्ट केर रूपमे देखी तँ सेहो ठीक, आ सप्तर्षि-मंडलक निचोड़ अथवा सप्त-काण्डमे विभाजित आधुनिक महा काव्य रूपमे देखी तँ सेहो ठीक हएत। ।”

राजदेव मण्डल लिखै छथि:-

“सहस्त्राब्दीक चौपड़पर बैसल अहाँ जिनगीक खेल देख रहल अछि। गहन अन्वेषण करैत एक-एकटा चित्रक रचना कऽ रहल छी आ ओइ उमंगमे डूबि रहल छी।

असीम समुद्रक कातक दृश्य

हृदय भेल उमंगसँ पूरित....।

अहाँक अन्तरक कवि रविक चित्र उपस्थित करैत कहैत अछि-

“सूर्य किरण पसरि छल गेल

कतेक रहस्य बिलाएल

तिमिरक धुँध भेल अछि कातर

मुदा ई की......।

संग्रहमे किछु हैकू पढ़बाक सुअवसर भेटल। किछु सुआद बदलबाक लेल....। मिथिलांचलक गमकसँ अहाँक कविता हमरा सबहक मोनकेँ गमका रहल अछि:

"मोन पाड़ैत छी धानक खेत

झिल्ली कचौड़ी

लोढ़ैत काटल धानक झट्टा

ओहि बीछल शीसक पाइसँ कीनल

लालझड़ी

जेकरे नाओं लाल छड़ी आ

सत धरिआ खेल....।"

प्रवासमे रहैत स्मरण होइत गाम घर। ऐ पाँतिमे वियोगक ओइ व्याथाक वर्णन भेटैत अछि। एकटा नवीन लयक संग-

"पता नहि घुरि कऽ जाएब

आकि एतहि मरि-खपि

बिलाएब.....।"

ऐ व्यंग्यमे स्पष्ट दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि।

"लाठी मारबामे कोनो देरी नहि

बाछी भेलापर शोको थोड़ नहि

परन्तु छी पूजनीया अहाँ....।"

बाढ़सँ उत्पन्न भेल समस्या आ ओकरा छोट-छीन पाँतिमे समेटनाइ गागरमे सागर भरबाक प्रयास ऐ पाँतिमे परिलक्षित भऽ रहल अछि-

"ठाम-ठाम कटल छल हठहर

ऊपरसँ बुन्नी पड़ि रहल

सभटा धान चाउर भीतक कोठी

टटि खसल पानिक भेल ग्रास...।"

नव-नव बिम्बसँ कविता सभ पूरित अछि-

"सहस्त्रबाढ़नि जकाँ दानवाकार

घटनाक्रमक जंजाल

फूलि गेल साँस

हड़बड़ा कऽ उठलहुँ हम....।"

हड़बड़ा कऽ नै बल्कि अहाँ सचेत भऽ कऽ उठलहुँ। नव-नव चित्र ध्वनि लऽ कऽ नवीन दृष्टिक संगे। पता नै कतऽ धरि जाएब। कतऽ गन्तव्य अछि अहाँक।

"विश्वक मंथनमे

होएत किछु बहार आब....

पथक पथ ताकब.....

प्रयाण दीर्घ भेल आब....।””

ई सभ कविता अहाँकेँ भेट जायत हमर पोथी “सहस्राब्दीक चौपड़पर” मे।

आब हमर पोथी “सहस्रजित्” सँ दू टा कविता प्रस्तुत अछि।

<u>नजरि लागि जाइ छै</u>

माए कहै छथि

जे नजरि लागि जाइ छै

से तँ सत्ते! हमरा सन ककर बेटा

कोनो काज शुरू करैए

मारिते रास काज एक्के बेर

खतम हेबा धरि सुधि नै रहै छै

तँ माएक करेज धकसँ रहि जाइ छै

करेज बैसऽ लगै छै

की करै छै?

कोन सुन्दर छै?

मुदा कहैत रहै छथि माए

जे नजरि लागि जाइ छै

बाते-बातपर हमर बेटाकेँ

कनियाँ कहै छथि सासुकेँ

माएक मुँहपर अबै छन्हि मुस्की

<u>कटिहारी</u>

१

कनकनी छै बसातमे

हाड़मे ढुकि जाएत ई कनकनी

राखि देल नीचाँ

कनकनाइत पानिमे डूम दऽ

गोइठाक आगिसँ आगि लऽ

शरीरकेँ गति-सद्गति देबा लेल

कऽ देलन्हि अग्निकेँ समर्पित

तृण, काठ आ घृत समेत

घुरि कऽ जेता सभ

घर सभ घुरै छथि

मुदा नै छै कोनो अन्तर

महिलाक अवस्था देखू

ऐ कनकनाइत बसातसँ बेशी मारुख

हाड़मे ढुकल जाइत अछि

कमला कात नै यमुनाक कात

हजार माइल दूर गामसँ आबि

साठि साल पूर्वक वएह खिस्सा

वएह समाज

मात्र पहिराबा बदलि गेल

मात्र नदी-धार बदलि गेल

सातटा शिल्लपर राखल ओ शरीर

अग्नि लीलि रहल सुड्डाह कऽ रहल

एकटा परिवार फेरसँ बनबए पड़त

२

कुश पसारल भूमि तुलसी गाछ लग

उत्तर मुँहे

पोस्टमार्टम कएल शरीर

तीन बेर मृतकक प्रदीक्षणा कऽ

मुँहमे आगि अर्पित होइत अछि

कपोतवेश मृतक

पाँच-पाँचटा लकड़ी सभ दै छथि

सातो बन्धनकेँ काटि

सातो सतकठिया आगिमे फेंकि

बाल-वृद्धकेँ आगाँ कऽ

एड़ी-दौड़ी बचबैत

नहाइले जाइ छथि

तिलाञ्जलि मोड़ा-तिल-जलसँ

बिनु देह पोछने

आ फेर मृतकक आंगनमे

स्पर्श कऽ घर घुरि जाइ छथि

हमर गजल

ओम प्रकाश झा लिखैत छथि-

“ओना तँ सभ बाल गजल कहनिहार गजलकार सभ ऐ मे सक्षम छथि आ नीक सँ नीक बाल गजल लिख रहल छथि, मुदा ऐ सन्दर्भ मे हम श्री गजेन्द्र ठाकुरजीक बाल गजलक उल्लेख करब उचित बूझि रहल छी। हुनकर एकटा बाल गजलक मतला अछिः-

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

ऐ गजल कैँ पूरा पढि कऽ कने देखियौ। ई गजल कनिया पुतराक उल्लेख करैत नेना-भुटकाक मनोरंजन तँ करिते अछि, संगहि अजुका बाजारवादक बलिवेदी पर कुर्बान भेल मनुक्खक मार्मिक विवेचना सेहो करैत अछि।”

ओ लिखि रहल छथि अ रचनाक मादेँ-

बाल गजल

कनियाँ पुतरा छोड़ू आनू बार्बी

जँ रंग गुलाबी छै तँ जानू बार्बी

बोने-बोने फिरैए जे दैता सभ

वनसप्तो लऽ घूरलि मानू बार्बी

सात रंग लऽ भोर भेले गाममे

परी रहैए गाम अकानू बार्बी

कननी दूर हेतै बच्चा सभमे

भरल आँखि बिसरी ठानू बार्बी

पानि अकास धरती जा-जा घूमी

पंख लगा टिकुली अकानू बार्बी

धम्म गुड़िया संग खेलू कूदू

राति सपनाउ निन्न आनू बार्बी

सुता दियौ ऐ गुड़ियाकेँ आ सुतू

चढ़ि ऐरावत दिन गानू बार्बी

ई संकलित अछि हमर मोटा-मोटी सय पन्नाक गजल संग्रह “धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ” जइमे गजल ४० पन्नामे छै आ ६० पन्नामे मैथिली गजलशास्त्र छै। “धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ”

ऐ पोथीक “टाइटल गजल” एतऽ दऽ रहल छी-

अकत तीत प्रेमक जे पथिक अदौकालसँ

धतालबूढ़ प्रेमकेँ बोहेलक दुनू हाथजँ

निर्मल आंगुरसँ छूबै जे ओकर पुठपुरी

फरफैसी पसारै निदरदी अगिलकण्ठ जँ

निमरजना प्रेम जे छलै धपोधप निश्छल

बिदोरै लेल प्रेमीकैँ छलै ओ कड़ेकमान तँ

अकरतब कर्तव्यमे भेद नै बुझलकै जे

जराउ प्रेमक गप्प नै कहियो नुकेलकै जँ

खञ्जखूहर ऐरावत नै बाटक छैँ बाटमे

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

<u>मुन्ना जी हमरासँ साक्षात्कारमे पुछने छलाह जे उपलब्ध अछि</u> विदेह:सदेह ३३ <u>पृ. ४ १५ पर ओकर किछु अंश दऽ रहल छी</u>

मुन्नाजी: एतेक काज केलाक पछातियो एखन धरि अहाँक कोनो मूल्यांकन (व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक) नै भऽ सकल। अइ सँ अपनाकेँ प्रभावित तँ नै पबै छी?

गजेन्द्र ठाकुर: नै, एहिसँ हम सहमत नै छी। हमरा प्राप्त ई-पत्र आ चिट्ठी सभ, पाठकक प्रशंसापत्र, पाण्डुलिपि सभक परिरक्षणक हमर योजनाक सफलता आ भाषा-विज्ञानक हमर शोध ई सभ हमरा संतुष्टि देने अछि। खराब लोक सेहो अहाँकेँ नीक कहत से कोना सम्भव? से हमरा चाहबो नै करी। व्यक्तित्व आ कृतित्व दुनूक मूल्यांकन मैथिली की आनो भाषामे मृत्युक बादे होइ छै।

मन ऐसो निर्मल भयो जैसे गंगा नीर।

पीछे पीछे हरि फिरें कहत कबीर कबीर। ।

(कबीर)

(मोन एहन निर्मल भऽ गेल जेना ई गंगाक जल अछि। पाछाँ-पाछाँ भगवान कबीर-कबीर कहैत पछोर धेने छथि।-कबीर)

खञ्जखूहर ऐरावत नै बाटक छैँ बाटमे

धांगि बाट बनेबाक दाम अगूबार पेने छँ

<u>(लोककेँ काज केलाक बाद दाम भेटै छै हमरा अगूबारे पेने छी।)</u>

<u>जगदानन्द झा' मनु'-</u> *"गजेन्द्र ठाकुर जीक ई उक्ति सय टका ठीक छैन -"जे जतेक बच्चा बनि जेता ओ ओतेक नीक बाल गजल कहता|"*

<u>चन्दन कुमार झा-</u> *"गजेन्द्र जी गजल व्याकरणकेँ पुष्ट करैत नहि खाली गजल लिखलाह अपितु सरल वर्णिक आ' सरल मात्रिक बहरक रूप मे मैथिली गजल संसार कैँ दूटा अनमोल बहर वा गजल-छंदक ढाँचा देलखिन्ह जे हमरा सन-सन कतेको नवतुरिया आ' नवसिखुआ केऽ लेल गजल लिखबा हेतु सहायक सिद्ध भेल अछि. एहि सँ मैथिली गजल कैँ अभूतपूर्व समृद्धि भेटि रहल छैक।"*

<u>आशीष अनचिन्हार लिखै छथि-</u>

"मुदा हालहिमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा बहरे-मुतकारिबमे सफलतापूर्वक गजल लिखल गेल। तँए आब एकर चर्चा आवश्यक। ओना मैथिलीमे वार्णिक बहरक खोज सेहो गजेन्द्र ठाकुर द्वारा भेल अछि जकर अनुकरण प्रायः हरेक नव गजलकार कए रहल छथि।"

<u>ओ गजल नीचाँ देल जा रहल अछि।</u>

<u>बहरे मुतकारिब</u>

<u>बहरे मुतकारिब मुतकारिब आठ– रुक्न फ ऊ लुन (U। ।) चारि बेर</u>

अहाँ बूझि लै छी जुआरी अनेरे

जिबै कोन बैबे नियारी अनेरे

हहारो उठेलौं उदासी गबेलौं

सिहाबै किए छी मदारी अनेरे

जतेको नबारी छबारी बुरैए

घुरेबै कियो नै सुतारी अनेरे

घरोमे उपासे बहारो निरासे

दहारे अकाले नचारी अनेरे

चलै छी खटोली उठा ऐ भरोसे

भसाठी अबैए विचारी अनेरे

देखल जानल सेहो आइए

रक्षादीप से मिझा रहल अछि

ककरा की कहबै के पतिआएत

गह-गहमे अर्थात बहुत अछि

अनठेने नै दै छी कान बात किए यौ

घृणो तँ करू जँ सएह भरल अछि

चिन्ताक मोटगर रेख कपारपर

छल छोट से बनल आब छेबगर

आकांक्षाक पजरैत अग्निक बिच

पैघ छी तकर चेन्हासी कहलहुँ

आजुक बात खतम होएत यौ

भोरुका बसात से बिर्रो बनल

पूछू सभसँ आ छोड़ू नै ककरो

नव विहान किए छल रोकल

आस्ते सँ जे सिहकि उठल ई बसात

प्रेम पाबि खटबताह बनल अछि

तेजगर छी से छद्म ज्ञान भेल

खिखिर कटाबै भौकी प्रतिपल

नटुआ बिपटा बनि हँसै अछि

तोहूँ हमरे सन अछि देखल

डरक घाट नहाएल छी हम

से सहब दहोदिश अत्याचार

एहि पिरौँछ इजोतक खेरहा कहलक

बीच सड़क ठाढ़ छै रोकि ने सकितौं

हनिकय फेकी विचार मोनक

फड़िच्छ भेने बेसम्हार भऽ गेलै

गोंहि आएल अछि हमरा टोल

जलसमाधि तँ व्योपार भऽ गेलै

ऐरावत गज-ग्राहक गज नै

दुनूमे मेलक नियार भऽ गेलै

आँखि ओङठल जाइए कहू की करी

नै बुझलौं तमसाइए कहू की करी

धान छै खखरी बनल अहिठाम आ

धानी आगि धुधुआइए कहू की करी

देखि छूबि अनुभूतिक क्षण

ई पाँती इतिहास बनत नै

बाट बिसरि कऽ नै बिलमैए हमरा की

झूठक बहैत धार छै जे थमकल

उनटि बहलै तँ डाह दैए रहि रहि

लच्छनो तँ बापक जिद्द गुनलकै

नीक तीक भूलि सएह बनलिऐ

बझाओल गेलैए चिड़ैया एना रे

कहैए हितैषी ई शिकारी बड़ा रे

भोरे उदासी उड़ियाइत जाइत

चरको परियानि ई बनेलौं कएक बेर

उबेरक बाट ताकी आ सुरुज कहाइ छी

कोनटा बचल नै एकान्ती ले एकोटा

अन्हरोखे उठै छी आ गनती गनै छी

उचरि नव रूप अपन लिखैब तखन किने

उतर दछिन डगहर बहैब तखन किने

कनकन करत बनत सदिखन तलिया यौ

सुअद पैब जौँ अहँ झखैब तखन किने

पड़ाइनपर कनैत अछि भाग जँ कतौ

आदति जे लागल वेदना सहबाक

गेंठ बनैए से सोहनगर लगैए

नै बुझलिऐ ई एते बढ़ल अछि बात

देखल आइ जे ओ भँसिया रहल अछि

हमरासँ कते की माँगै छल रहरहाँ

जे जुमल ओ बिनु लेने जा रहल अछि

बाजब से बिनु सुनने जा रहल अछि

*बीहनि कथा सन ई विधा सीरियस नै मानल जाइ छै। मुदा जँ निचुलका रचना सभ (*हमर पोथी "सहस्रजित्" सँ) *अहाँकेँ गम्भीर लगैए तँ बुझू जे हमर काज सफल भेल।*

१

प्रकृति रोष

कुश तिल जलसँ

विधवा बनि

सधवा की विभेद

दूबि अक्षत जल (टनका/ वाका)

करबीरसँ

घर गाछ पहाड़

घेरल अछि (हाइकू)

बनैया लोक

घरक पनिबह

बिदति नहि (शेनर्यू)

खेलाइ हम

करियाझुम्मरिमे

नीचाँ अकास

घरक खाका आइ

छी जङलाह

(हैबून)

२

१.

तागि प्रकृति

ताकैले भेलौं पार

सुखल पात

(हाइकू)

२.

ई फूल फल

चढ़ैत जाइ आगाँ

कम होइए

उनटि देखी फेर

लगमे कम दूरे बेशी

(टनका/ वाका)

३.

रंग छाड़ल

पहाड़ आर गाछ

मुदा जीवन

(शेनर्यू)

४.

गाछ भेल छै

असगरुआ बौआ

पात भेल छै

खिलौना प्रकृतिक

शिखर देखि

नै ठाढ़ होउ

चलू चली घुरैले

बनिजार छी

लोकक बीचमे छी

जाइत घुरैत छी

(हैबून)

३

४

बाट तकैत

ताकी अकास दिस

विचित्र भ्रम

जेना ई पनिसोखा

उगि खोलत बाट

सतरंगिया

अछि ई आस

उगैए आस

डुबबाले अकास

बनि गेल संत्रास

फेर **<u>कुण्डलिया</u>** (हमर पोथी "सहस्रजित्" सँ)

<u>कुण्डलिया</u>

१

सत असत मे भेद करू, राखू नै किछु रोख

ततमत नै करू कनियो, जे छै होनी लेख

जे छै होनी लेख, हुए से नीक निकेना

सत्यक जीत हएत, जँ करबै अकसतिकस ने

डर संग असत केर, डर ढाहू मध्य हृदयक

ऐरावतक बुझैत, यएह छी असत्यक सत

२

छत्ता घुरछा पल्लौसँ, भेल दिने अन्हार।

दिन बितलापर घर घुरी, काल भेल विकराल॥

काल भेल विकराल, पोरे-पोर सिहरैए।

सुनत केओ सवाल, बोल बगहा लगबैए।

ऐरावत बेहाल, बोल कतऽ भेल निपत्ता।

घुरियाए बनि काल, पैसि बिच घोरन छत्ता। ।

३

विजय बिन गर्व हएत जँ, बुझू तखन ई नीक

हारि भेने घबराउ नै, बात बुझू ई मीत

बात बुझू ई मीत, हुअए जँ एक झमेला

हारि मानि बढ़ि जाउ, करू ने फेर बखेरा

भेल काज प्रसन्न जतऽ, नीक अछि टा सएह

मोन ऐरावत बुझि, देखि ली हारि-विजय

४

बोल वचन हुअए नीक, बूझि बाजी जँ बात

गुम्म रहनाइए ठीक, हुए जँ नमहर जाल

हुए जँ नमहर जाल, लेत ओ लप दऽ भीतर

हल्ला बनि जाएत, नै अछि जँ बेर उचित पर

सुनू हमर ई बात, बात होइए अनमोल

ऐरावत कहि जाय, कहू नै ओल सन बोल

आब पढ़ू मिथिलाक ध्वज ग़ीत (सहस्राब्दीक चौपड़पर सँ)

<u>मिथिलाक ध्वज ग़ीत</u>

मिथिलाक ध्वज फहरायत जगतमे,

माँ रूषलि, भूषलि, दूषलि, देखल हम,

अकुलाइत छी, भँसियाइत अछि मन।

छी विद्याक उद्योगक कर्मभूमि सँ,

पछाड़ि आयत सन्तति अहाँक पुनि,

बुद्धि, चातुर्यक आ' शौर्यक करसँ,

विजयक प्रति करू अहँ शंका जुनि।

मैथिली छथि अल्पप्राण भेल जौँ,

सन्ध्यक्षर बाजि करब हम न्योरा,

वर्ण स्फोटक बनत स्पर्शसँ हमर,

ध्वज खसत नहि हे मातु मिथिला।

(विद्यापति शब्दावलीक प्रयोग)

आब ऐ बाल-गीतक माध्यमसँ सभ जानवर-चिड़ैक बोली सीखू (बाङक बङौरा सँ)

<u>बड़द करैए दाउन ने यौ</u>

हाथी अगत्त, पिछू, थाइत, माइल बिरि

हिर्र-हिर्र सुग्गर चलू संग घर घुरि

ती-ती परबा उड़ि गेल ऊपर

लिह लिह बकरी घास तूँ खो

बड़द करैए दाउन ने यौ

अतू कुकुड़ कुत-कुत डॉगी

कैटी पिसू-पिसू आएत की?

चेहै-चेहै सुनि पारा दौगल,

भागी छोड़ि बाट हम ताकी

अर्र बकरी घास तूँ खो

बड़द करैए दाउन ने यौ

ढेहै-ढेहै कऽ नहि खौंझाबू

साँढ़ आओत खरिहानमे यौ

आव ठामे रे हे, हौरे हौ

बड़द करैए दाउन ने यौ

आब बीहनि कथा

जँ बीहनि कथाक नामपर अहाँ हास्य-कणिका पढ़ने छी तँ ई विधा अहाँकेँ सीरियस नै लागत। तँ पढ़ू एकटा बीहनि कथा (गल्प गुच्छ सँ), आ एकसँ बेशी बेर पढ़ए पड़ए तँ पढ़ू, आ हमरा विश्वास अछि जे हाइकू-हैबून सन अहाँ एकरो गम्भीरतासँ लेमऽ लागब।

बहुपत्नी विवाह आ हिजड़ा

"मरि गेलि बेचारी "। गौआँ सभ फलना बाबूक तेसर कनिआँक मुइलापर कहलन्हि।

"फलना बाबू तेसर कनियाँक गरदनि काटि लेलन्हि" । एक गोटे कहलान्हि।

"से ठीके कहैत छी। पहिल कनियाँमे बच्चा नहि भेलैक तँ दोसर बियाह कएलक। मुदा जखन दोसरोमे बच्चा नहि भेलैक तँ बुझबाक चाही छलए ने" ।- दोसर गोटे कहलन्हि।

"हँ आ उनटे तेसर कनियाँकेँ कहैत रहथि जे भातिज सभकेँ नहि मानैत छिऐक तँ भगवान बच्चा नहि देलन्हि। बुझू"?-तेसर गोटे कहलन्हि।

"हिजड़ा सार" ।- चारिम गोटे सभा समाप्त करैत बाजल।

मुदा चारि गोटेक ई महा-सम्मेलन एहि गपपर सहमति मे छल जे पहिल दू टा बियाह करब उचित रहए।

हमर उपन्यास

शिव कुमार झा "टिल्लू" "मैथिली उपन्यास साहित्यमे दलित पात्रक चित्रण" निबन्धमे लिखैत छथि-

" गजेन्द्र ठाकुरक 'सहस्त्रबाढ़नि' मे दम्माक जड़ी एकटा आदिवासी द्वारा आनव आ िकछु वर्ख वाद ओ जड़ी जंगलमे नै भेटब वोन कम होएवा दिस संकेत करैत अछि तँ हुनकर 'सहस्त्रशीर्षा' मिथिलाक लगभग सभ दलित जातिक विष्तृत विवेचना करैत अछि। तीनटा घरक रहलोपर धोविया टोली एकटा टोल बनि गेल अछि। झंझारपुर धरि मारवाड़ीक कपड़ा एतए साफ कएल जाइत अछि। महिसवार ब्रह्मण सभ जे बरियातीमे बेलवटम झाड़ि कऽ सीटि-सीटि कऽ निकलैत छथि से कोनो अपन कपड़ा पहिरि कऽ। बैह मंगनिया कपड़ा, महगौआ मारवाड़ी सभक। मारवाड़ी सभक ई कपड़ा रजक भाय दू दिन लेल भाड़ापर हिनका सभकेँ दैत छथिन्ह। कोरैल बुधन आ डोमी साफी, धोवि। डोमी साफी आब डोमी दास छथि, कारण कबीरपंथी जोतै छथि। फेर एकटा आर टोल, चमरटोली अछि। चमार- मुखदेब राम आ कपिलदेव राम। पहिने गामसँ बाहर रहए, बसबिट्टीक बाद। मुदा आब तँ सभ बॉस काटि कऽ उपटाए देने अछि आ लोकक वसोबास बढ़ैत-बढ़ैत एहि चमरटोली धरि आबि गेल अछि। घरहट आ ईंटा-पजेबा सभ अगल-बगलमे खसिते रहैत अछि। ढोलहो देबासँ लऽ कऽ सिंगा बजेबा धरिमे हिनकर सबहक सहयोग अपेक्षित। गाए-माल मरलाक बाद जा धरि ई सभ उठा कऽ नहि लऽ जाइत छथि लोकक घरमे छुतका लागले रहैत अछि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान, दुसाध। गेना हजारीक निचुलका खाड़ीक संबंधी। वएह गेना हजारी जे कुशेश्वर स्थानमे एकटा कुशपर गाए द्वरा आबि कऽ दूध दैत देखने रहथि तँ ओहि स्थानकेँ कोड़ए लगलाह, महादेव नीचाँ होइत गेलाह, सीतापुत्र कुश द्वारा स्थापित ई महादेव गेना हजारीक ताकल।

मुकेश पासवानक बेटी मालती बैंक अधिकारी छथिन्ह आ जमाए मथुरानंद डी. पी. एस. स्कूलक प्रचार्य छथि, वसंत-कुंज लग फार्म हाउसमे रहै जाइ छथि। भोला पासवान आ मुकेश पासवान गामेमे रहै जाइ छथि।

1967ई. क अकालमे जखन सभटा पोखरि, गड़खै सुखा गेल मुदा डकही पोखरि नहि सुखाएल प्रधानमंत्री आएल रहथि तँ हुनका देखेने रहन्हि सभ जे कोना एतए सँ बिसॉढ़ कोड़ि कऽ मुसहर सभ खाइत छथि। चर्मकार मुखदेव रामक बेटा उमेश सेहो ओहि मुक्ताकाश सैलूनक बगलमे अपन असला-खसला खसा लेने अछि, रहैए मुदा किशनगढ़मे। चप्पल, जुताक मरो-म्मतिक अलावे तालाक डुप्लीकेट चाभी बनेबाक हुनर सेहो सीखि लेने अछि। कुंजी अछि तँ ओकर डुप्लीकेट पंद्रह टाकामे। कुंजी हेरा गेल अछि तँ तकर डुप्लीकेट सए टाकामे। आ जे घर लऽ जएवन्हि तँ तकर फीस दू सए टाका अतिरिक्त। मुसहर बिचकुन सदायक बेटा रघुवीर ड्राइवरी सीखि लेने अछि। वसंत कुंजक एकटा व्यवसायीक ओहिठाम ड्राइवरी करैए आ रहैत अछि किसनगढ़मे। डोमटोलीक बौधा मल्लिक बेटा श्रीमंत सेक्टरक मेन्टेन्सक ठेका लेने छथि। हुनका लग दू सए गोटे छन्हि जे सभ क्वार्टरक कूड़ा सभ दिन भोरमे उठेवाक संग रोड आ

पार्किंगक भोरे-भोर सफाइ करै छथि। एहिमे सँ किछु गोटे विशेष कऽ नेपालक भोरे-भोर लोकक शीसा महिनवारी दू सए टाकामे पो छै छथि आ अखबारक हॉकर बनल छथि। रहै छथि किशनगढ़मे मुदा अपन मकानमे- मुसहर बिचकुन सदाय।"

दुर्गानन्द मंडल लिखै छथि-

"विदेह पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक सिनेहसँ हमरा अपनामे सृजनात्मक शक्तिक संचार भेल। बहुत रास एहेन शब्द सभ जे मैथिली साहित्यमे अप्रयुक्त छल। जेकरा ठेंठ कहल जाइ छलै ओ जखन ठाकुर जीक लिखल पोथी कुरूक्षेत्रम अन्तर्मनक पढ़ि देलखहुँ आ जनलहुँ तँ आरो विश्वास भऽ गेल।"

<u>राजेन्द्र कुमार प्रधान लिखै छथि-</u>

"श्री गजेन्द्र ठाकुर जीक उपन्यास- सहस्रबाढ़नि ढेर रास रजनैतिक आ ब्यूरियोक्रेटिक उथाल-पुथलक गबाह अछि, तँ हुनकर सहस्रशीर्षा दलित गबैय्या मोहनक भारतक स्वतंत्रतासँ सूचनाक अधिकार धरि गीतक माध्यमसँ राजनैतिक चेतना पसारबाक अद्भुत सफल प्रयास अछि, तँ एकर बीचमे सन्हिआएल गामक आ बाढ़िक राजनीति गामसँ दिल्ली धरि पसरल अछि।"

एकटा काल्पनिक मुदा मिथिलाक गाम "गढ़ नारिकेल" उपन्यास-त्रयीमे सहस्रशीर्षाक बाद दोसर उपन्यास सेहो विदेहपर धारावाहिक रूपेँ ई-प्रकाशित भऽ रहल अछि।

<u>जगदीश प्रसाद मंडल लिखै छथि-</u> "गाम-घरक भौगोलिक विवरणक जे सूक्ष्म वर्णन सहस्रबाढ़निमे अछि, से चकित कएलक।"

<u>उमेश मण्डल लिखै छथि-</u>

"गजेन्द्र ठाकुर जीक लिखल 'सहस्त्रवाढ़नि' उपन्यासक आखर-आखरमे संवेदनाक स्वर झलकैत अछि। संवेदनाक बिम्ब उद्दाध आ सम्यक अर्थनीतिसँ भरल मार्मिक चित्रण- जाहिमे एकटा कर्तव्यनिष्ट आ इमानदार व्यक्ति नन्दकेँ गृहस्त धर्मक संग-संग सामाजिक दायित्वक पालन करवाक क्रममे उद्वेलित व्यथा प्रस्तुत कएल गेल अछि।"

सहस्रबाढ़नि (उपन्यास)

सहस्रशीर्षा (उपन्यास)

<u>लघुकथा</u>

सर-समाज आ बाणवीर पढ़ू गल्प-गुच्छ (विहनि आ लघु कथा संग्रह) <u>सँ</u>

सिद्ध महावीर, शब्दशास्त्रम्, दिल्ली आ तस्कर पढ़ू- शब्दशास्त्रम् (लघुकथा संग्रह) <u>सँ</u>

<u>योगानन्द झा लिखै छथि-</u>

"कुरूक्षेत्रम् अन्तर्मनक- ई पोथी श्री गजेन्द्र ठाकुरक विभिन्न विधाक रचनाक संकलन थिक। एकर सातम खंडमे बालकथाक रूपमे तेइस गोट कथा संग्रहीत अछि। ऐ कथा सभमे अधिकांश मिथिलाक लोकनायक सबहक कथा ि थक तथापि अ ाधा दर्जनक लगभग कथाकेँ बाल-लोककथा कहल जा सकैछ, यद्यपि ओकरो सबहक भाषा पूर्णत: शास्त्रीय प्रकृतिक अछि। बाललोक कथाक संकलनक क्षेत्रमे चलैत प्रयास सबहक नमूनाक रूपमे एकरा महत्वपूर्ण कहल जा सकैछ।"

<u>सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-</u>

"गजेन्द्र ठाकुर अद्भुत व्यक्ति छथि। प्रखर मेधा आ प्रचण्ड ऊर्जा सँ सम्पन्न। हुनक प्रतिभाक पसार बहुत व्यापक छनि। ओ भाषा, साहित्य आ समाजक उत्थानमे जी-जान सँ लागल छथि। गजेन्द्र ठाकुर बहुभाषाविद् छथि। हुनक ई गुण शब्दकोश-निर्माण, अनेक भाषा मे पारस्परिक अनुवाद आ विभिन्न प्रकारक अनुसंधान मे प्रतिफलित भऽ रहल अछि। ओ मैथिलीक पहिल ई-पत्रिका "विदेह" क जनक छथि। "विदेह" मैथिली केँ वैश्विक मंच प्रदान कयलक अछि। मैथिल संस्कृतिक संरक्षण आ विकासक लेल ओ एकटा विलक्षण आर्काइवक निर्माण कयने छथि जे निरन्तर संवर्धनशील अछि। सात खंड मे प्रकाशित "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" गजेन्द्र ठाकुरक सृजन आ विमर्शक फुलबाड़ी थिक। साहित्यक कोनो विधा गजेन्द्र बाबू सँ छूटल नहि छनि। हुनक साहित्यिक बहुरंगी दुनिया बहुत प्रांजल आ लोकहितकारी अछि। बाल-साहित्य मे तऽ हुनक कलाक उत्कर्ष आ निखार अनुपम अछि।"

०

सन् सैंतालीस...

मिथिलाक एकटा गाम...

हमर नाटक

उल्कामुख

उल्कामुख (नाटक)

मैथिली समीक्षाशास्त्र

(सिद्धांत लेल)

(प्रयोग लेल)

विदेह:सदेह ३३ पृ. २०१-२०६)

मैथिली गजलशास्त्र

विद्यापतिक बिदेसिया

विदेह:सदेह ३३ पृ. १९२-१९८

मुन्नाजी: अहाँक मैथिली पत्रकारिताकेँ दूरि हेबासँ बचेबाक वा सत्यक खोजक कारणेँ गारि-गंजनक पछातियो एक स्टंपपर अड़ल रहबाक दृढ़ संकल्प कतेक दिन धरि निमहता हएत?

गजेन्द्र ठाकुर: कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पणमे हम लिखने रही-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

आ ई पढ़ि गामक बहुत गोटे कानए लागल छलाह। हुनका सभकेँ बुझल छन्हि, मुदा अहाँकेँ हम यएह कहि सकै छी जे एकर निर्धारण भविष्य़ करत।

२५. सझिया रोपनि (संपादक डा. प्रमोद कुमार)- ४३ टा बीहनि कथा लेखकक सझिया संग्रहक समीक्षा

सारांश

सझिया-साझ बीहनि कथा संग्रह माने ४३ टा बीहनि कथा लेखक माने १. घनश्याम घनेरो, २. मुन्नाजी, ३. नारायणजी, ४. प्रमोद कुमार झा 'गोकुल ', ५. डा. प्रमोद कुमार, ६. मुन्नी कामत, ७. अमरेश कुमार लाभ, ८. विद्या चन्द्र झा 'बमबम', ९. सत्येन्द्र कर्ण, १०. विन्देश्वर ठाकुर, ११. आभा झा, १२. शिव कुमार, १३. प्रियंवदा, १४. महाकान्त प्रसाद, १५. प्रभाष अकिंचन, १६. आशीष अनचिन्हार, १७. पूनम झा, १८. शुभ्रा संतोष, १९. जवाहर लाल कश्यप, २०. सुभाष कुमार कामत, २१. नीरज कर्ण, २२. कुमारी आरती, २३. कल्पना झा-१ (बोकारो), २४. कल्पना झा-२ (पटना), २५. सबिता झा 'सोनी', २६. विनीता ठाकुर, २७. मृणाल आशुतोष, २८. अमर ठाकुर, २९. मनीषा झा, ३०. रूबी झा, ३१. ओम प्रकाश झा, ३२. हिमाद्रि मिश्र 'हिम', ३३. इरा मल्लिक, ३४. कंचन कंठ, ३५. राजेश वर्मा 'भवादित्य', ३६. मिसिदा, ३७. जयन्ती कुमारी, ३८. कल्पना कुमारी, ३९. सांत्वना मिश्रा, ४०. नन्दनी झा, ४१. भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', ४२. अमर कान्त लाल आ ४३. दीपा मिश्रा।

बीजशब्द: सझिया रोपनि; बीहनि कथा; प्रमोद कुमार; लघुकथा; कथ्य; भाषा; स्त्री-लेखन; संकलन-समीक्षा

१

सझिया-साझ बीहनि कथा संग्रह माने ४३ टा बीहनि कथा लेखक माने १. घनश्याम घनेरो, २. मुन्नाजी, ३. नारायणजी, ४. प्रमोद कुमार झा 'गोकुल ', ५. डा. प्रमोद कुमार, ६. मुन्नी कामत, ७. अमरेश कुमार लाभ, ८. विद्या चन्द्र झा 'बमबम', ९. सत्येन्द्र कर्ण, १०. विन्देश्वर ठाकुर, ११. आभा झा, १२. शिव कुमार, १३. प्रियंवदा, १४. महाकान्त प्रसाद, १५. प्रभाष अकिंचन, १६. आशीष अनचिन्हार, १७. पूनम झा, १८. शुभ्रा संतोष, १९. जवाहर लाल कश्यप, २०. सुभाष कुमार कामत, २१. नीरज कर्ण, २२. कुमारी आरती, २३. कल्पना झा-१ (बोकारो), २४. कल्पना झा-२ (पटना), २५. सबिता झा 'सोनी', २६. विनीता ठाकुर, २७. मृणाल आशुतोष, २८. अमर ठाकुर, २९. मनीषा झा, ३०. रूबी झा, ३१. ओम प्रकाश झा, ३२. हिमाद्रि मिश्र 'हिम', ३३. इरा मल्लिक, ३४. कंचन कंठ, ३५. राजेश वर्मा 'भवादित्य', ३६. मिसिदा, ३७. जयन्ती कुमारी, ३८. कल्पना कुमारी, ३९. सांत्वना मिश्रा, ४०. नन्दनी झा, ४१. भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', ४२. अमर कान्त लाल आ ४३. दीपा मिश्रा। २३ गोट पुरुष आ २० गोट महिल बीहनि कथाक अछि ई संग्रह।

संग्रहक पुरुष बीहनि कथाकार

१. घनश्याम घनेरो, २. मुन्नाजी, ३. नारायणजी, ४. प्रमोद कुमार झा 'गोकुल ', ५. डा. प्रमोद कुमार, ६. अमरेश कुमार लाभ, ७. विद्या चन्द्र झा 'बमबम', ८. सत्येन्द्र कर्ण, ९. विन्देश्वर ठाकुर, १०. शिव कुमार, ११. महाकान्त प्रसाद, १२. प्रभाष अकिंचन, १३. आशीष अनचिन्हार, १४. जवाहर लाल कश्यप, १५. सुभाष कुमार कामत, १६. नीरज कर्ण, १७. मृणाल आशुतोष, १८. अमर ठाकुर, १९. ओम प्रकाश झा, २०. राजेश वर्मा 'भवादित्य', २१. मिसिदा, २२. भुवनेश्वर चौरसिया 'भुनेश', २३. अमर कान्त लाल।

संग्रहक महिला बीहनि कथाकार

१. मुन्नी कामत, २. आभा झा, ३. प्रियंवदा, ४. पूनम झा, ५. शुभ्रा संतोष, ६. कुमारी आरती, ७. कल्पना झा-१ (बोकारो), ८. कल्पना झा-२ (पटना), ९. सबिता झा 'सोनी', १०. विनीता ठाकुर, ११. मनीषा झा, १२. रूबी झा, १३. हिमाद्रि मिश्र 'हिम', १४. इरा मल्लिक, १५. कंचन कंठ, १६. जयन्ती कुमारी, १७. कल्पना कुमारी, १८. सांत्वना मिश्रा, १९. नन्दनी झा, आ २०. दीपा मिश्रा।

महिला बीहनि कथा लेखकक ई संख्या आह्लादकारी अछि। आ तइ लेल सम्पादकक अपक्ष दृष्टिकोण प्रशंसनीय अछि। सम्पादकक अपक्ष रहब अखनो मैथिलीमे एकटा गुण सन अछि, से कष्टकारी धरि अवश्य अछि।

२

४३ गोट लेखकक ८६ टा बीहनि कथाक सझिया-साझ रोपनि भेल अछि।

घनश्याम घनेरोक “अछोप” मैथिलीकेँ सोंगर दऽ ठाढ़ रखबाक सम्पादकीय प्रयास दिस लक्षित हुअए बा नै मुदा कटाह अछि तँ मुन्नाजीक “फोकस!” खट-मिठाह। नारायणजीक “कुशल” राजमोहन झा केर बीहनि कथा “चलह”(देखू विदेहक ६७म बीहनि कथा विशेषांक https://videha123.files.wordpress.com/2010/10/videha_01_10_2010.pdf) सन मानव प्रकृतिकेँ देखबैत अछि आ एक्के प्लॉटपर अछि। से बीहनि कथामे सेहो प्लॉट होइत अछि आ एक्के प्लॉटपर दू तरहक बीहनि कथा लीखल जा सकैए

से सिद्ध भेल। प्रमोद कुमार झा “गोकुल” क बीहनि कथा अलंकृत आ क्लासिकल दृश्यक निर्माण करैत अछि, से बीहनि कथामे तकर पलखति नै, से कहैबला गलत सिद्ध भेला। मैथिलीकेँ सोंगर दऽ ठाढ़ रखबाक सम्पादकीय प्रयासक सम्पादक डॉ प्रमोद कुमारक ५ टा बीहनि कथा ऐ संग्रहमे अछि। आ से बच्चा उचिते कहै छन्हि जे मायकेँ बिरयानी नै बनबऽ अएलै तँ ओ पिछड़ल भेल तँ ओहो गूगल, क्लासरूम आ पी.पी.टी आ किदनि सभ नै बुझने कोरोना-पश्चात कालमे पिछड़ल भेलाह। मुन्नी कामतक फेमिनिज्म “गर्ल्स हॉस्टल” क “फेरसँ देहकेँ स्वतंत्र करबाक प्रयास” सँ परिलक्षित होइत अछि। से बीहनि कथा फेमिनिज्म लेखन लेल सेहो औजार बनबाक योग्यता रखैत अछि। अमरेश कुमार लाभक “करिकी” मे ई मत आर पुष्ट भेल अछि- “पढ़ि लिखि ने लैक आ कोइ बड़का नोकरी लागि ने जाइक!”, आ से कारीसँ गोर हेबाक नव मलहम छी, आ तखन बऽर हेरैमे कोनो मौगति नै हएत। विद्या चन्द्र झा “बमबम” प्रेम-पिशाचसँ अपने ग्रसित छथि “माफ कऽ सकी तँ” मे; आ कक्काकेँ ऐमे ओ सान्हैत छथि “प्रभा” मे आ ऐ पिशाचेकेँ सत्येन्द्र कर्ण बाबाजीक “दिमाग फूजब” कहैत छथि..... अन्तिम सत्य। विन्देश्वर ठाकुर धरि पुरातन लोक छथि हुनका ने बेटाक बदमाशी “सोकाज” मे पसिन्न छन्हि आ ने पुतोहुक बदमाशी “बहसल कनिया” मे। आभा झा केर “लाज” पुरुखक नैतिकताक परिभाषापर चोट अछि। शिव कुमार सेहो “फर्मलिटी” मे परिवारमे नव अर्थव्यस्थाक वातावरणमे होइत झमेलकेँ चिन्हित करैत छथि। प्रियम्वदा “स्वाभिमान” मे- “बेटी केर विवाहक मूल्य” क विरोधमे छथि। महाकान्त प्रसाद “गोली” मे प्रधानमंत्रीक “मोनक बात” क गोलीसँ तुलना करैत छथि, हँ प्रधानमंत्री शब्दक ओ प्रयोग नै केने छथि। प्रभाष अकिंचन विवाहसँ ठामे पूर्व मोन पड़ैत उपनयन संस्कारक सम्बन्धमे “कपरछिल्ला” लिखैत छथि। आशीष अनचिन्हारक “स्थिति” विवाह-पूर्व आ विवाह पश्चात स्त्रीक अवस्थापर अछि तँ पूनम झा “उपदेश” क मार्देँ फरिछा दै छथि जे कोना लोकक उपदेश आ करनी मे अन्तर होइ छै। शुभ्रा संतोष “मोल भाव” मे पुरुखक वीभत्स रूप देखबै छथि आ संगे नारीक भितरका शक्ति सेहो। जवाहर लाल कश्यप “कुक्कुर” मे मालिक आ कुक्कुरक मनोविज्ञानमे जाइत छथि आ “हीरो” मे सेक्सपियर सन “गुलाब गुलाबे सन सुगंधित रहत भने ओकर नाम किछु आर भऽ जाय” नाम-चलीसापर लिखै छथि। सुभाष कुमार कामत “कोड वर्ड” क माध्यमसँ देखबै छथि जे बेटीक जन्मक समाचार लोककेँ प्रसन्न करैत छै मुदा समाजक घटनाक डरे ओ ओकरा जन्म नै देमऽ चाहैए। मुन्ना प्रसन्न भेलाह मुदा सुधा टेलीविजन समाचार देखि चिन्तित भऽ गेली। नीरज कर्ण “फादर्स डे” केर माध्यमसँ कुटिलतापर प्रहार करै छथि। कुमारी आरतीक “जीवनसंगी” मुदा स्त्री-पुरुखक पत्नी-पति रूपमे सहमेलू हेबाक सेहो आस बनेने रखैत अछि। कल्पना झा-१ (बोकारो) क “संताप” गंगाक प्रदूषणपर टिप्पणी अछि तँ “सप्पत” बेटा आ साँय केर खाइत देखि बेटीक आक्रोशकेँ गहिंकी नजरिसँ देखबैत अछि। कल्पना झा-२ (पटना) “फेसबुकिया जिनगी” मे वृद्धावस्थाक समस्याक संग फेसबुक पोस्टपर संगे टिप्पणी कऽ जाइत छथि, से बीहनि कथामे छोट आकारक बादो दूटा प्लॉट संगे समाहित भऽ सकैए सेहो सिद्ध करै छथि। सबिता झा “सोनी” क स्त्री-विमर्श “नौत” मे देखार होइत अछि, भूख पुरुखकेँ पहिने लगैत छै की? विनीता ठाकुरक “समय केर मारल”' समयक फेर' भूखक माध्यसँ बतेबाक प्रयास थिक। मृणाल आशुतोषक “न्यूटन के थर्ड लॉ” लीव-इन रिलेशनमे रहनिहारि स्त्रीक दशा देखबैत अछि मुदा समापन विवशतासँ नै मुदा क्रिया-प्रतिक्रिया (“न्यूटन के थर्ड लॉ”) क माध्यसँ करैत अछि ओना क्रिया-प्रतिक्रिया शब्दक प्रयोग ओ नै करैत छथि कारण मिथिलामे एतेक साक्षरता तँ आबिये गेल छै जे “न्यूटन के थर्ड लॉ” कहने लोक ओकर अर्थ “क्रिया-प्रतिक्रिया” बुझि जेतै। अमर ठाकुर “नाम उच्च कान बुच्च” मे “बड़ा हुआ तो क्या हुआ जैसे पेड़ खजूर” केर अर्थ फरिछबैत छथि। मनीषा झा “निपुत्र” केर माध्यमसँ एक्के गोटेक' अपना का” आ' अनका काल' दुनू काल दू तरहक व्यक्तित्व होएब देखबैत छथि। रुबी झा “आस” मे माय आ बच्चाक दू परिस्थितिमे हठ आ “टुगर” मे मनुक्ख आ पशु दुनू क एक्के सन कष्ट अनुभव करबाक विवेचना केने छथि। ओम प्रकाश झा केर “पुरना दलान”- “नव घर उठे, पुरान घर खसे” केर विपरीत पुरना दलानक खसबाक कथा नै वरन चिड़ैक जोड़क आश्रय-स्थानक कथा अछि। बीहनि कथाक ई समीचीन अन्त अछि, हुनकर “स्पेशल परमिट” जे विदेह मैथिली विहनि कथा [विदेह सदेह ५] मे संकलित भेल छल सेहो अही तरहक कबीर-उलटबासी सन अछि। बीहनि कथाक अन्त अही तरहक हेबाक चाही, से गप हम बीहनि कथाक समीक्षाशास्त्र [विदेह सदेह ५] मे लिखने छी। हिमाद्रि मिश्र “हिम” केर “अधिकार” मे सासु-पुतोहुक उतराचौड़ी वर्णित अछि। इरा मल्लिक “पीड़ न जाने कोय” मे दुख बिसरबाक लेल राति भरि जाँत पिसबाक उदाहरण दऽ बीहनि कथामे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करबाक क्षमताकेँ देखबैत छथि, राति काटब मोश्किल होइ छै, दिन तँ कटि जाइ छै। कंचन कण्ठ बराबरीमे बीहनि कथाक अन्त हास्यसँ करैत छथि। राजेश वर्मा “भवादित्य” वर्तमानक भूत बनब आ फेर दुनूमे विवाद हएब केर माध्यम सँ किछु आर कहि जाइ छथि। मनुक्ख रोल बदललापर अपन विचारो अहिना तँ बदलैत अछि। मिसिदा अपन बीहनि कथा “सपना” सेहो ऐ गपकेँ साहित्य, रचना आ राजनीति केर तीन संकल्पनाक माध्यमसँ पाँच पाँतिमे फरिछा दइ छथि। जयन्ती कुमारीक बोल्ड बीहनि कथा अछि “खौंझी”, तामसमे किचेनमे बर्तन पटकबसँ शुरू भेल ई बीहनि कथा घरेलू सहायिका सोनी केर स्त्री विमर्शसँ शुरू भेल मुदा मलकिनी रेखा सेहो ओइ विमर्शक हीस छथि ओतऽ जा कऽ खतम, आ ई करबाक सामर्थ्य, जकरा एपेक्स-समापन कहि सकै छिऐ, लेखिकामे छन्हि। कल्पना कुमारीक “झमारल मोन” हिस्सा-बखड़ापर

केन्द्रित अछि। सांत्वना मिश्रे धरि “भगवती जनम लेली” मे स्त्रीक समस्या लेल स्त्रीये दोखी बा स्त्रीयो दोखी बजैत सुनाइत छथि। नन्दिनी झा मुदा “भदबा” मे एकरा उनटि दैत छथि आ सासुक प्रगतिशील हेबाक प्रमाण प्रस्तुत करैत छथि। भुवनेश्वर चौरसिया “भुनेश” अपन “सहमत” मे बकथोथीकेँ प्रयुक्त करैत हास्य उत्पन्न करैत छथि आ सएह अमर कान्त लाल अपन “एम आर पी” मे करैत छथि। दीपा मिश्राकेँ बुझल छन्हि जे “चलाक” बेशी स्त्री होइत अछि मुदा कहै छथि “पुरुखे होइत हेतै” आ से कहि ढेर रास काज पुरुखसँ करबा लैत छथि। https://videha123.files.wordpress.com/2010/10/videha_01_10_2010.pdf***विदेह मैथिली विहनि कथा***

३

सझिया रोपनि (सझिया बीहनि कथा-संग्रह) केर सम्पादक डॉ. प्रमोद कुमार ऐ संग्रहक भूमिकामे बीहनि कथाक गुणक विषयमे लिखैत छथि जे “एकरा मे एगो पैघ कथाक सब गुण होइछ। जेना कथोपकथन, वातावरण, शिल्प, तथ्यक गांभीर्य, उद्देश्य आ प्रासंगिकता आदि।”

हुनकर बीहनि कथाक नपना अछि कठोर रूपसँ १०० शब्द जे पढ़ल जा सकय २ मिनटमे- एनामे २ मिनट नूडल्सक विज्ञापन मोन पड़नाइ स्वाभाविक। हुनकर सम्पादकीय सामर्थ्य अछि जे किछु हास्य तँ किछु गम्भीर, किछु स्त्री-विमर्श तँ किछु कोरोना आ फेसबुक सन्दर्भित सभ तरहक बीहनि-कथा ओ ऐ संग्रहमे देलनि। से हास्य कणिका सेहो संदर्भयुक्त रहलापर बीहनि कथाक रूपमे चिन्हित आ संकलित भऽ सकैत अछि (देखू बीहनि कथाक समीक्षाशास्त्र- विदेह सदेह ५) ओ से सिद्ध केलनि। अष्टाध्यायीक भाष्य ओकर आकारक कएक गुणा बेशी आकारमे कएल जेबाक खगता ओकर रचनाक मोटामोटी ५ सय बर्खक बादे अनुभूत भेल आ से भेबो कएल। तहिना ऐ संग्रहक बीहनि कथा सभक समीक्षा संग्रहक हीसक रूपमे नै वरन् स्वतंत्र रूपेँ सेहो जँ कएल जाय तँ ओ सभ अपन आकारसँ कएक गुणा बेशी स्थान छेकत। आ से ऐ संग्रहक संकलित बीहनि कथा सभक विशेषता अछि आ तइ लेल संकलनकर्ता-सम्पादक धन्यवादक पात्र छथि।

२६. जगदानन्द झा 'मनु' क 'माटिक बासन' आ आलोचनात्मक टिप्पणी

सारांश

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार।

बीजशब्द: जगदानन्द · माटिक · बासन · आलोचनात्मक · टिप्पणी · कोनो · केदार

सारांश

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार। माटिक बासन जेना घैल, ढाकन, मटकुरी बना अपन जीवन यापन करै छलाह। माटिक बासन बनेनाइ मात्र हुनक आजीवकाक साधन नहि भऽ कऽ हुनका लेल एकटा सुन्नर कारीगरी छल।

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- जगदानन्द झा 'मनु'क बालकथा "माटिक बासन" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

माटिक बासन विदेह मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ३२ (पृ. २-५) मे जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm

आब पहिने ऐ कथाक पुनर्पाठ करी:-

जगदानन्द झा 'मनु', ग्राम पोस्ट - हरिपुर डीहटोल, मधुबनी

माटिक बासन

केदार प्रसाद गामक एकटा कुशल कुम्हार। माटिक बासन जेना घैल, ढाकन, मटकुरी बना अपन जीवन यापन करै छलाह। माटिक बासन बनेनाइ मात्र हुनक आजीवकाक साधन नहि भऽ कऽ हुनका लेल एकटा सुन्नर कारीगरी छल। अपन काज करैकाल ओ एना तनमय भऽ जाइ छलाह जेना एकटा भक्त अपन अराध्य देवताक ध्यानमे अपन तन-मनक सुधि बिसैर जाइत छैक। ओ अपन स्वयं-साधनासँ धिरे-धिरे छठि मैयाक सुन्नर व आकर्षित हाथी सेहो बनबए लगला। हुनकर बनाएल माटिक बासन आ छठिक हाथीक बड्ड प्रशंसा होइत छल।

धिरे-धिरे गामक परिवेश बदलए लागल। माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल। केदार प्रसादजीक आमदनी कम होबए लगलन्हि मुदा ओ अपन काजक प्रति निष्ठा आ समर्पणक दुवारे कुम्हारक काज नहि छोड़ि पएला।

हुनक सुन्नर सुशील बेटा बिभू नेन्नेसँ अपन पुस्तैनी काजमे माँजल। ई कहैमे कोनो संकोच नहि जे ओ अपन बाबूओ सँ बीसे। केदार प्रसादजी एहि गपकेँ नीकसँ बुझैत अपन होनहार पुतक गुणसँ मोने-मोन खुश छलाह आ चिंतित सेहो। चिंतित एहि दुवारे की कुम्हारक काजक कि बर्तमान छैक आ कि भबिष्य हेतै से हुनका बुझल मुदा बिभूक हस्तकौशल देखि ओकरा एहि काजसँ बाहर केनाइ उचित नहि बुझलाह। बिभू सेहो इस्कूल पढ़ाइक संगे-संग अपन बाबूक सभटा गुणकेँ अंगीकार केने गेल। अपन बाबूक छठिक हाथीसँ आगू बढ़ि ओ मूर्तिकलामे अपन हस्तकौशलक उपयोग करै लागल। ओकर बनाएल मूर्तिक चर्चा गाम भरिमे होबए लगलै। जतए ओकर बाबूक बनाएल छठिक हाथीकेँ एगारह टाका भेटन्हि ओतए ओकर बनाएल छोट-छोट कनियाँ- पुतड़ा सभकेँ सय-सबासय टाका भेटअ लगलै। बिभू अपन बाबूक देख-रेखमे मूर्तिकलामे दिनो- दिन आगू बढ़ए लागल। आब ओकर बनाएल माए सरोस्वती, कृष्णाष्टमी, विश्वकर्मा पूजाक मूर्तिक माँग चारूकातक बीस गाम तक होबए लगलै मुदा बिभूक बाबू तैयो ओकर बनाएल मूर्तिमे कोनो ने कोनो दोख निकालि आ ओकरा अओर बेसी नीक मूर्ति बनाबैक प्रेरणा देथिन। बिभू सेहो हुनक गपकेँ मन्त्र मानि आगू आरो नीक मूर्ति बनाबएमे लागि जाए।

बिभू दसम वर्गक बाद इस्कूली पढ़ाइ छोड़ि पूर्णतः मूर्तिकलामे अपनाकेँ समर्पित कए लेलक। अठारहम बरखक पूर्ण बुझनूक भऽ गेल, आब ओकरा नीक बेजाएक ज्ञान भऽ गेलै। ओकर मूर्तिक प्रशंसा आब गाम नहि, जिला नहि राज स्तरपर होबै लगलै। आब तँ ओकर बनाएल एक-एकटा मूर्तिकेँ दू-दू तिन-तिन हजार टाका भेटए लगलै। मुदा ओकर बाबू एखनो ओकर मूर्तिमे कोनो ने कोनो दोख निकालि ओकरा आर सुन्नर मूर्ति बनाबैक निर्देश देथिन। पहिले बिभू हुनक गपकेँ मन्त्र मानि कमी दूर करैक चेष्टामे लागि जाइ छल मुदा आब हुनक गपसँ ओकर मोन कतौ-ने-कतौ आहत होइत छलै। मुदा बिरोध करैक सहास नहि, तेँ मोनकेँ मारि हुनक बताएल निर्देशमे लागि जाइ छल।

जेना-तेना काज आगू बढ़ैत रहल आ ओकर बनाएल गेल मूर्तिक चर्चा आब राजक सीमासँ निकैल बाहर दस्तक देबए लगलै। राजसरकारकेँ गृहमंत्रालयसँ बिभूकेँ पत्र एलै जाहिमे ओकर बनाएल गेल मुर्तिकेँ अखिल भारतीय मूर्ति प्रदर्शनीमे राखक व्यवस्था कएल गेल रहैक। सभटा खर्चा राजसरकारक आ विजेताकेँ देशक सर्वश्रेष्ट मूर्तिकारक सम्मानक संगे-संग एक लाख टाकाक नगद इनाम सेहो। ई पत्र पाबि बिभूकेँ बड्ड प्रसन्ता भेलै। सभसँ पहिले दौड़ल-दौड़ल अपन बाबूकेँ एहि गपक सुचना देलक। केदार प्रसादजी सेहो बड्ड प्रसन्य भेलाह हुनकर जीवन भरिकेँ मेहनत रंग लाबि रहल छल। बिभू राति-राति भरि जागि-जागि कए अपन मार्गदर्शक गुरु बाबू संगे लागि गेल।

एकसँ एक नीक-नीक मूर्ति बनेलक मुदा केदार प्रसादजी सभ मूर्तिमे कोनो ने कोनो कमी निकाइले देथिन। केदार प्रसादजीक बताएल कमीकेँ दूर करैकेँ बदला बिभूक मोनमे आब नकारात्मक प्रवृति घर करए लगले। हुनक बताएल कमीपर आब ओ सबाल-जबाब करए लागल। काइल्ह प्रतियोगता लेल मूर्ति भेजैक अंतिम दिन आ आइ बिभू अपन बनाएल मूर्ति सभमे सँ एकटा सभसँ नीक मूर्तिकेँ अंतिम रूप देबएमे लागि गेल। केदार प्रसादजी बारीकीसँ ओहि मूर्तिकेँ निरीक्षण करैत, बिभूक दिमागमे हलचल चलि रहल छल - "हाँ आब तँ ई कोनो ने कोनो गल्ती बतेबे करता।"

ततबामे केदार प्रसादजी अपन चुप्पीकेँ तोड़ैत बजलाह -"सुन्नर! आइ तक बनाएल गेल मूर्ति सभमे सर्बश्रेष्ठ।" कनीक काल चुप रहला बाद फेर -"मुदा।"

मुदा की? आब तँ बिभूक मोन बिफैर गेलै- "अबश्य कोनो ने कोनो कमी गनेता।"

केदार प्रसादजी अपन गपकेँ आगू बढ़ाबैत- "ई जँ एना रहितेए तँ आरो बेसी नीक, आ ई रंग जँ फलाँ फलाँ रहति तँ जबरदस्त होइते।"

नैन्हेटासँ जिनक गपकेँ मन्त्र मानि पूरा करैमे जि-जानसँ लागि जाइ छल आइ हुनक गपकेँ नहि पचा पएलक। बिफैर कए बाजि उठल -"रहै दियौ! अहाँकेँ तँ एनाहिते दोख निकालए अबैए, अपन बनेएल ढाकन बसनी तँ कियो एको टाकामे नहि किनैए आ हम केतबो नीक मूर्ति बना ली कोनो ने कोनो दोख अबश्य निकालि देब्।"

बिभूक गप सूनिते मातर केदार प्रसादजीक शांत मुद्रा भंग भए सोचनीए भऽ गेलनि। एकटा नमहर साँस लैत बिभूक पीठ ठोकैत बजलाह- "बस बेटा बस! जहिया व्यक्तिकेँ अपन पूर्णताकेँ आभाष भऽ जाइ छैक ओकर बाद ओकर जीवनक विकास ओतहिए रुकि जाइ छैक। पूर्णताकेँ आभास दिमागक आगू बढ़ैक चेतनामे लकबा लगादै छैक।"

किछु छन चुप्प, दुनू गोटे शांत। बिभूक आँखिसँ नोर टघरैत जे आइ ई की कए लेलहुँ, ओकरा अपन गल्तीक ज्ञान भऽ गेलै। केदार प्रसादजी आगू - "हमर सपना छल जे हमर बेटा राजक आ देशक नहि वरण दुनियाँक सर्वश्रेष्ट मूर्तिकार बनत.....मुदा नहि। कोनो गप नहि हमराकेँ जनै छल? कियो नहि। हमर बेटाकेँ पूरा राज जनैत अछि एकटा नीक मूर्तिकारकेँ रूपमे। हमरा लेल बड्ड पैघ गप अछि। मुदा हमर सपना ------- आब नहि पूरा होएत। ई कहि ओ ओहि कक्षसँ बाहर भऽ गेला।

कथाक विवेचना

कथाक पहिल पाराग्राफक बाद अबैत अछि- "माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल।" आ ई देखिते हमरा मोन पड़ि गेल "जिगरी"- एकटा तेलुगु उपन्यासक अंग्रेजी रूपान्तरण ("जिगरी"- तेलुगु उपन्यास मूल लेखक पेडिण्ती अशोक कुमार आ अंग्रेजी अनुवाद "फ्रेण्ड्स फॉरएवर" नामसँ पी. जयलक्ष्मी द्वारा) । ओइमे भालू नचबैबला एकटा परिवारक चर्चा छै, भालु आ मनुक्खक दुनूक बीचमे जे लगाव छै तकर चर्चा छै। आ जखन सरकार ऐपर प्रतिबन्ध लगा देलकै तँ कोना ओइ गौण संस्कृतिक खाली स्मृति टा शेष रहि गेलै, कारण ओइ परिवारक पुनर्वास लेल बहुत रास सीमारेखा (राजनैतिक आ सांस्कृतिक) पार करऽ पड़लै।

कथाक धनात्मक पक्ष

मुदा ऐ कथामे लेखक ऐ परिवर्तनकेँ नीक मोड़ देलन्हि। बेटा माटिक ढाकन-बसनीक बदलामे मूर्ति बनबय लगैत अछि। दोसर जे माटिक बासन बनेबापर सरकार कोनो प्रतिबन्ध नै लगेलकै, उनटे अहाँकेँ मोन हएत जे रेलगाड़ीमे माटिक कुल्हड़मे चाह बेचबाक आ ओइमे पीबाक फैशन छै, सरकार ओइमे मदति केलकै। मुदा ओइ गौण संस्कृतिक स्मृति तँ हमरो अछि, अहूँकेँ हएत आ कथाकारोकेँ छन्हि। मुदा ओ ऐ कथाकेँ आगाँ लऽ गेलाह आ लोककथाक सन्दर्भसँ जोड़लन्हि जइमे नैतिक उपदेश बाल साहित्यक उद्देश्य रहैत छै। अहाँकेँ मोन हएत शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र"(मिथिलाक लोककथापर आधारित बालकथा), जे विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह ४ मे (पृ. १३८-१४१) आ उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm मुदा श्रीनिवास जीक बालकथा घोषित रूपमे लोककथापर आधारित अछि, मुदा "माटिक बासन" केर अन्तिम भाग मात्र लोककथासँ प्रेरित अछि आ गौण-संस्कृतिक आधुनिकीकरणक प्रयासक ऐ कथाक उद्देश्य नै अछि, उद्देश्य वएह श्रीनिवासजी बला अछि, ओ लोककथाक पुनर्लेखनक माध्यमसँ केलन्हि आ जगदानन्द जी गौण-संस्कृतिक आधुनिककरणक प्रयास मध्य मूल कथा-प्लॉट छोड़ि वएह टॉपिक आगाँ बढ़ेलन्हि।

कथाक ऋणात्मक पक्ष

जगदानन्द जीक बाल-उपन्यासक हम चर्चा पहिनहियो केने छी, आ ओ छी हुनकर "चोनहा"।

विदेहमे जगदानन्द झा "मनु"क एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ वा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह: सदेह ९ (विदेह शिशु उत्सव पृ. १०९-१२६) मे संकलित भेल, आ उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर http://videha.co.in/new_page_89.htm ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे ऐ उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

मुदा "माटिक बासन"मे जगदानन्द जी निराश केलन्हि, हुनकासँ हमरा चाही छल पेडिण्ती अशोक कुमारक "जिगरी" सन बौस्तु मुदा भेटल साधारण सन शिवशंकर श्रीनिवासक "पण्डित ओ हुनक पुत्र"।

ई सत्य जे "माटिक बासन" बाल बीहनि-कथा अछि, मुदा जकरा लग प्लॉट रहतै-

"माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल।"-

से ओइ कथाक अन्त करथि-

"मुदा हमर सपना ------- आब नहि पूरा होएत। ई कहि ओ ओहि कक्षसँ बाहर भऽ गेला।"

ई हमरा स्वीकार्य नै। आ तँ एकटा अद्भुत प्लॉट एकटा नीक मुदा मेडियोकर कथा बनि कऽ रहि गेल।

विश्लेषण

ऐ कथाकेँ विस्तृत करबाक आवश्यकता अछि, शब्दमे विस्तारो दऽ कऽ ई भऽ सकैए, आ अही शब्द-संख्याक अन्तर्गत रहि कऽ कथ्यकेँ विस्तार देल जा सकैए। मुदा लक्ष्यसँ जेना ओ भटकि गेला- "माटिक बासनक जगह स्टील आ आन-आन धातु लेबए लागल।" केँ विस्तार नै दऽ सकला से "चोनहा"क लेखकसँ हम आशा नै केने छलौं। ऐ कथाक पुनर्लेखन लेखककेँ करैए पड़तन्हि आ तइमे ई बीहनि कथा रहत वा लघुकथा वा दीर्घकथा वा उपन्यासो बनि जायत।

२७. कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला: कृतित्वक परिचय

सारांश
कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई. । पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना।

बीजशब्द: कृष्ण · कुमार · कश्यप · शशिबाला · कृतित्वक · परिचय · मिथिला

कृष्ण कुमार कश्यप आ शशिबाला- एकटा परिचय

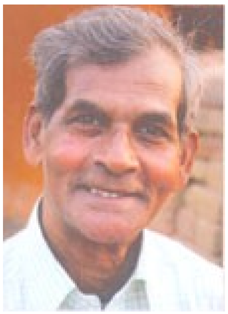

कृष्ण कुमार कश्यप- जन्म १५ सितम्बर १९४९ ई. । मृत्यु- १२ अगस्त २०२० ई. । पिता- कवि-उपन्यासकार स्व. इन्द्रनारायण लाल "सँवलिया"। जनबरी १९६५ ई. मे नेना सभ लेल "नाइट स्कूल", १९८१ ई. मे "कला आधारित जीवन आ शिक्षण पद्धति"क प्रवर्तन आ तकर कार्यान्वयन लेल शिवा कश्यप आ शशिबालाक सहयोगसँ "भारती विकास संस्था"क स्थापना। रचना: शशिबालाक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-कोर, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।

शशिबाला- पिता श्री उग्र नारायण लाल, पति श्री उमेश कुमार कण्ठ (बिसहथ) । रचना: कृष्ण कुमार कश्यपक संग "मेघदूत" आ "गीत-गोविन्द"क मैथिली अनुवाद; माछ-भात; मिथिला चित्र प्रवेशिका भाग-१-२; मिथिला चित्र-कोर, भाग-३; मिथिला अरिपन भाग-४; गोदना चित्र-शैली- भाग-५; मिथिला लोकचित्र।

कृष्ण कुमार कश्यप जी सँ लेल हमर साक्षात्कार साक्षात्कार-२ मे कृष्ण कुमार कश्यप जी कलाक विभिन्न पक्षपर अपन विचार रखने छला। मिथिला चित्रकलाक नाम मधुबनी चित्रकला करबापर ओ चिन्तित छला। जितवारपुर स्कूल आ आन ठामक मिथिला चित्रकलाकारक बीचक फाँटि सेहो उजागर भेल।

"जखन लोक बाहरसँ अबैए तँ पूछैए जे अहाँक गाम कोन जिलामे अछि, आ से बुझने जे हम सभ मधुबनी नै दरभंगा जिलाक छी ओ बजैए 'यू आर नॉट फ्रॉम द ओरिजिनल प्लेस'- माने ओकरा होइ छै जे हमर चित्रकला असली मधुबनी चित्रकला नै छी आ से जितवारपुर स्कूलकेँ सूट करै छै।"

नरेन करुणाकरण अपन आलेख "मिथिलाज वूमन पेण्ट देयर वे आउट ऑफ पोवर्टी" मे लिखै छथि- "बिहारक बरहेता गाममे भारती विकास मंच गरीब महिलाकेँ चित्रकलाक मिथिला पद्धति सिखा रहल अछि, जइसँ बहुत रास महिला गरीबी भगेबामे अपनाकेँ समर्थ कऽ सकल छथि।"

नरेन करुणाकरण लिखै छथि जे कृष्ण कुमार कश्यपक पहिल शिष्या शशिबाला, जे आब ओत्तै शिक्षिका छथि, हुनका कहलखिन जे "एकटा गरीब मुशहर समुदायक हाथीक थीम आधारित चित्र अति सुन्दर होइत अछि।" शशिबाला हुनका ईहो कहलखिन्ह जे जोन बोनिहार महिलाक हाथ कने करगर होइ छै आ जखन ओइमे सँ किछु गोटे कोमलतासँ कुच्ची नै प्रयुक्त कऽ सकली तँ हुनका चित्रसँ अलग दोसर कला जेना टोकड़ी, टेबुलक्लॉथ आदि बनेनाइ मे लगाओल गेल। मुदा बहुत गोटे आस्तेसँ कुच्चीक प्रयोग केनाइ सीखि गेली।

क्षिति जल पावक गगन समीरा आधारित पाँच टा रंगक अतिरिक्त दलित-आदिवासीक कलाक रेखा आ काट संग ओकर थीमक प्रवेश मिथिला चित्रकलामे गोधना शैलीकेँ प्रवेश दियेने अछि।

कृष्ण कुमार कश्यप अपन स्कूलमे एकटा डोम छात्राक प्रवेश देने छलखिन्ह, दोसर छात्रा सभ हुनकर सहयोग केने छलखिन्ह मुदा गौँआ सभ हुनकर विरोध केने छलन्हि। हुनकर स्कूलमे किछु मुस्लिम छात्रा सेहो रहथि आ ओ लोकनि हिन्दू थीमक चित्रांकन करबामे कहियो संकोच नै केलन्हि।

गजेन्द्र ठाकुर

श्वेता झा चौधरी- एकटा परिचय

श्वेता झा चौधरी, गाम सरिसव-पाही, ललित कला आ गृहविज्ञानमे स्नातक। मिथिला चित्रकलामे सर्टिफिकेट कोर्स। कला प्रदर्शिनी: एक्स. एल. आर. आइ., जमशेदपुरक सांस्कृतिक कार्यक्रम, ग्राम-श्री मेला जमशेदपुर, कला मन्दिर जमशेदपुर (एक्जीवीशन आ वर्कशॉप) ।

कला सम्बन्धी कार्य: एन. आइ. टी. जमशेदपुरमे कला प्रतियोगितामे निर्णायकक रूपमे सहभागिता, २००२-०७ धरि बसेरा, जमशेदपुरमे कला-शिक्षक (मिथिला चित्रकला), वूमेन कॉलेज पुस्तकालय आ हॉटेल बूलेवार्ड लेल वाल-पेंटिंग। प्रतिष्ठित स्पॉन्सर: कॉरपोरेट कम्युनिकेशन्स, टिस्को; टी. एस. आर. डी. एस, टिस्को; ए. आइ. ए. डी. ए., स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया, जमशेदपुर; विभिन्न व्यक्ति, हॉटेल, संगठन आ व्यक्तिगत कला संग्राहक। हॉबी: मिथिला चित्रकला, ललित कला, संगीत आ भानस-भात।

१

ई चित्र धानक कटनी कालक मिथिलाक गामक चित्रण करैत अछि। पुरुख-पात खेतसँ फसिल घर अनैत छथि तँ महिला ओहि फसिलकेँ तैयार कऽ चाउर बनबैत छथि। अपन दैनिक जीवनसँ हटि कऽ एहि अवधिमे महिला एकट्ठा होइ छथि आ गप-सरक्का करै छथि।

२

जखन कखनो प्रेमक गप अबैत अछि तखन सभसँ पहिने मोनमे राधाकृष्णक ध्यान आबि जाइत अछि। ई चित्र ओहि प्रेमकेँ देखेबाक एकटा प्रयास..।

३

सावन मासमे बरखाक फूहीसँ भीजल माटिक सुगन्ध लैत झूला झुलैक आनन्दक कोनो सीमा नहि..।

४

डोली कहार

सासुर जाइत काल नव कनियाँक मोनक दुविधा- नैहरक छुटैक दुख आ नव जीवनक उत्साह। ई सभसँ अनजान कहार सभ उमंगपूर्वक कनियाँकँ सासुर पहुँचाबैत...

५

करिया झुम्मरि

मिथिलाक लड़की सभमे करिया-झुम्मरि खेलक खूब चलनि अछि। छोट आ पैघ सभ एहि खेलक आनन्द लैत छथि...

६

साधुबाबा

साधुबाबाक चित्रण मिथिला चित्रकलामे आधुनिक रूपेँ करबाक प्रयास...

७

दुर्गापूजा

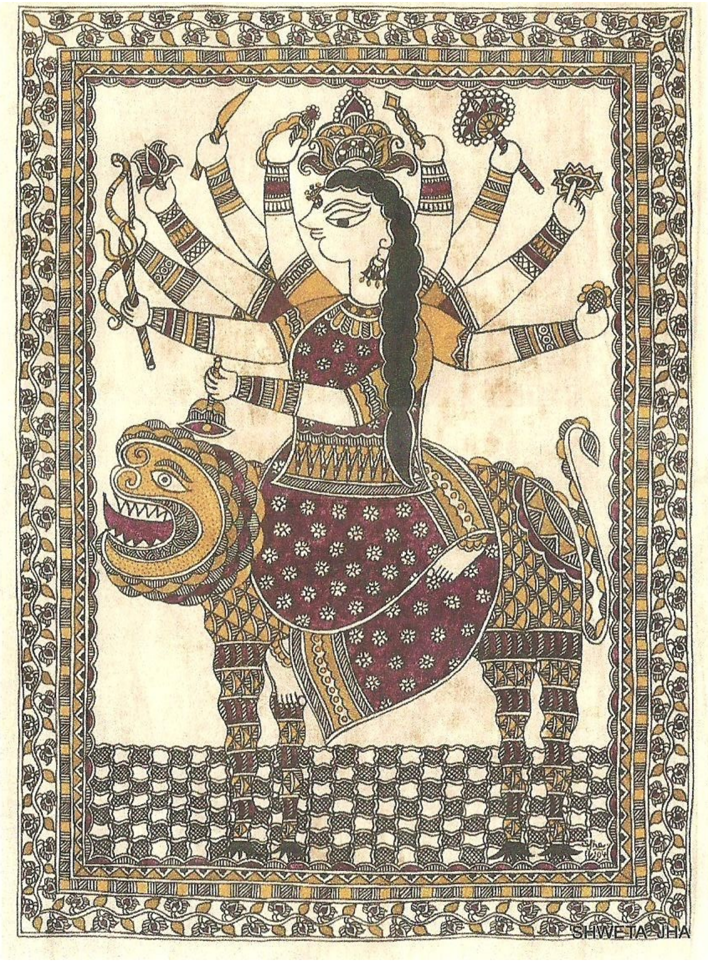

८

काली माँ

९

पनिभरनी

१०

११

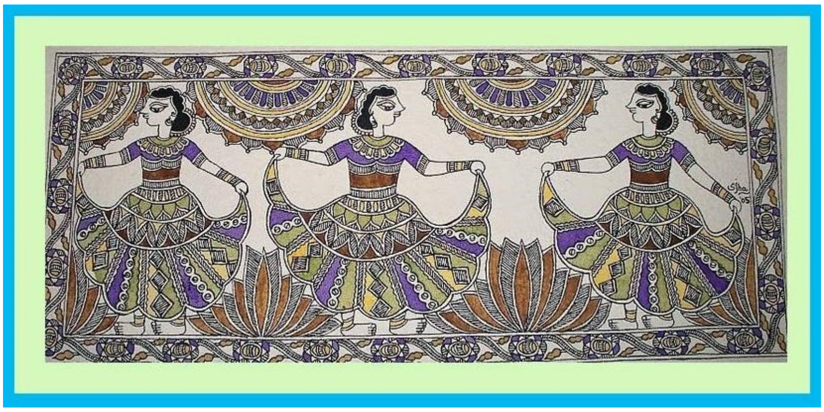

१२

चित्रक विषयमे: सूर्य आशाक आ संकल्पसिद्धिक प्रतीक अछि, अन्हारक बादक प्रकाशक प्रतीक अछि। ई पृथ्वीक जीवनक जड़ि अछि, दैवत्वक आशीर्वादक प्रतीक अछि। तेँ विश्वक सभ संस्कृतिमे ई पूजित अछि, खास कऽ मैथिल संस्कृतिमे (छठि आ मकर संक्रान्ति) । ई चित्र ऐ सभकेँ चित्रित करबाक प्रयास अछि।

१३

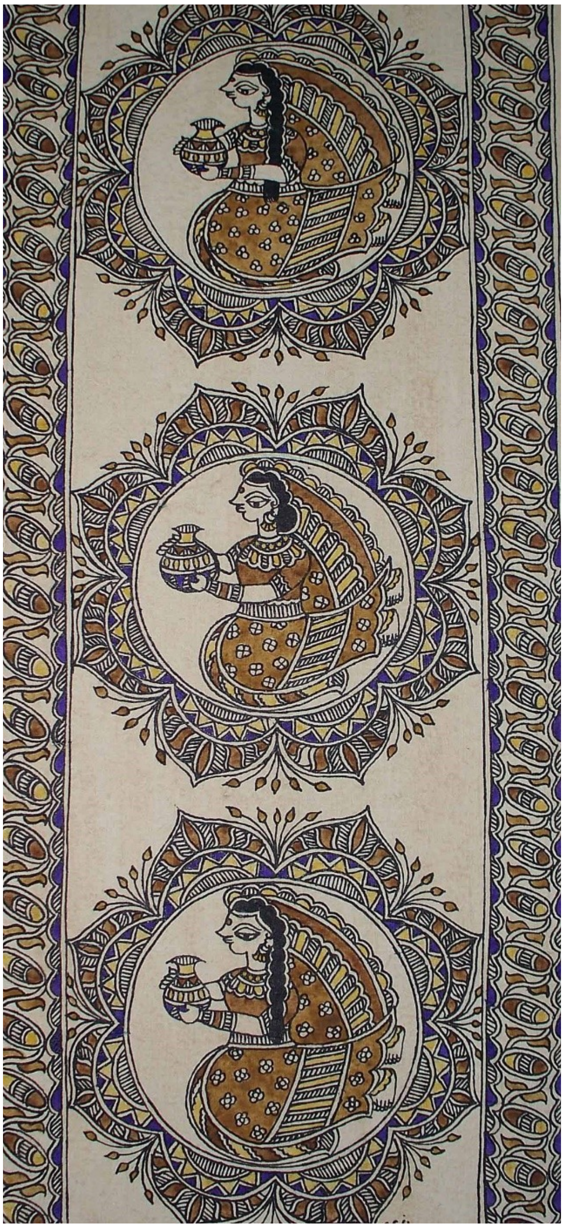

१४

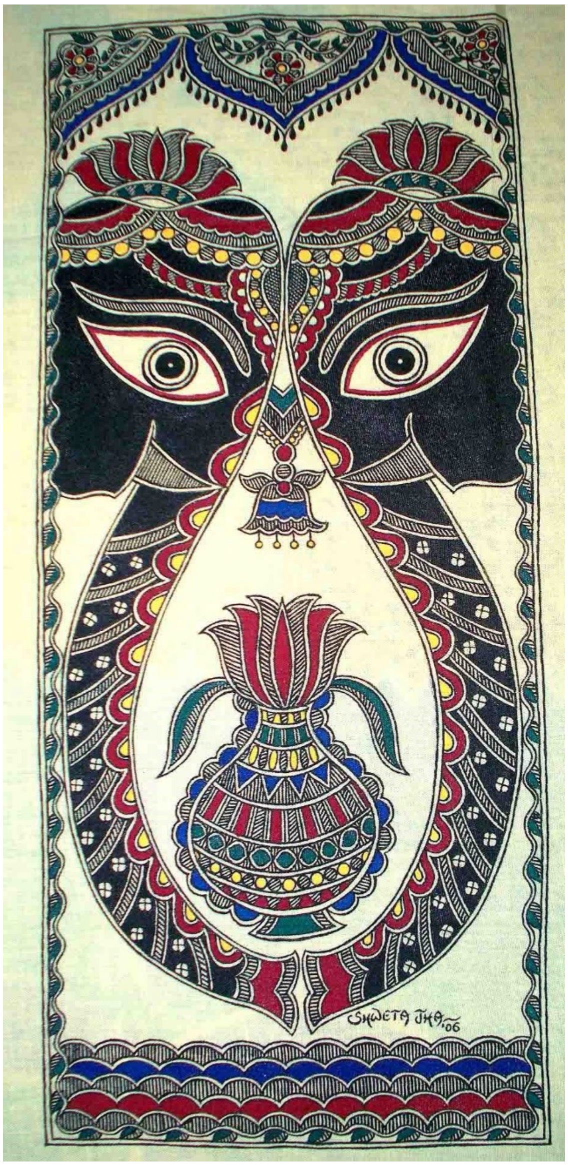

१५

१६

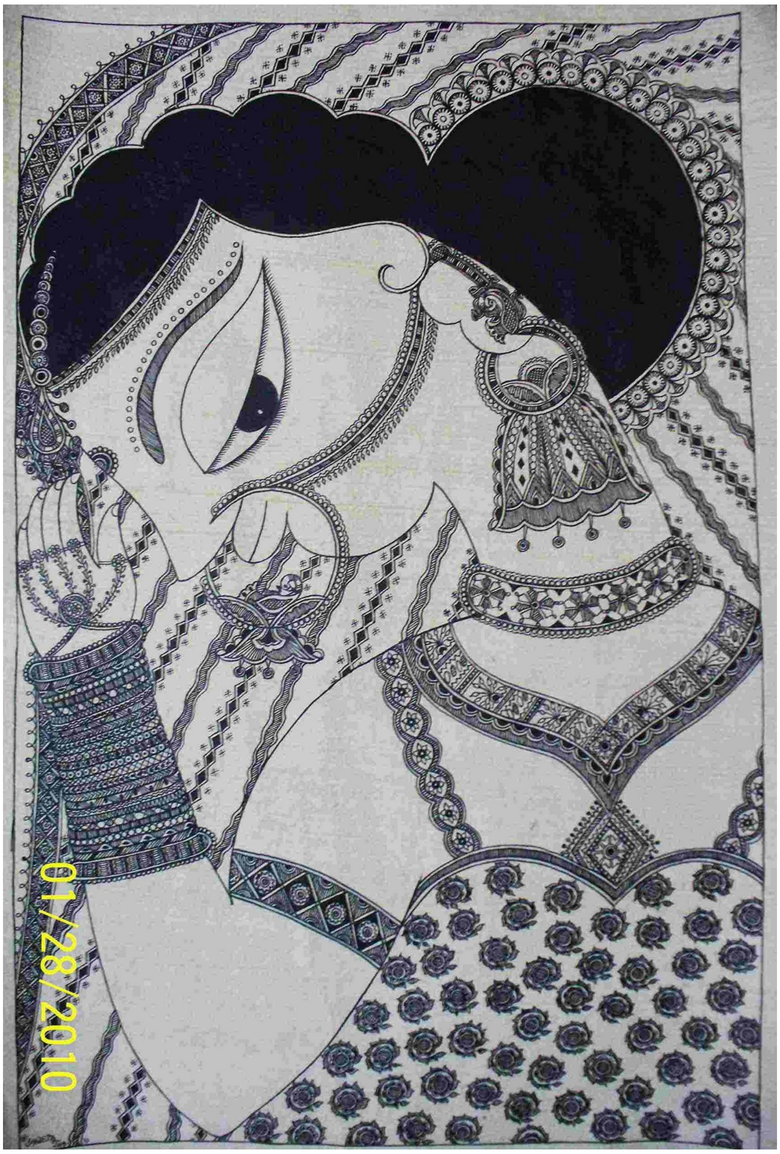

২৬

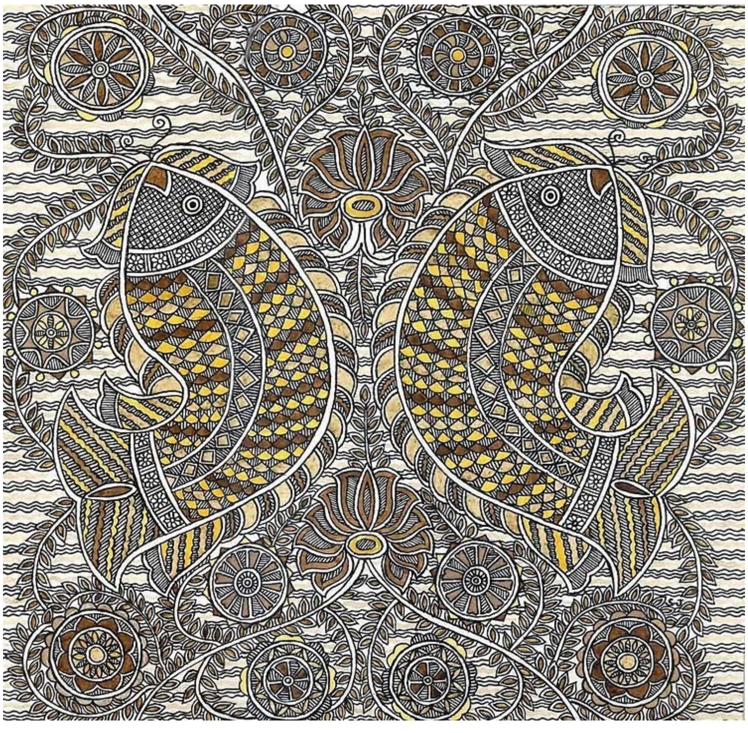

१८

१९

२०

२१

(विदेह सदेह ३५)

२८. पं. बाल गोविन्द’ आर्य’

सारांश

पं. बाल गोविन्द’ आर्य’ क वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका दिल्लीमे मैलोरंगक एकटा सेमीनारमे स्व. मोहन भारद्वाज मूल धाराक व्याकरणाचार्यकेँ सम्बोधित कऽ कहने रहथि- 'मैथिलीमे एकटा व्याकरण किए नै अछि? की हम सभ ऐ जोकरक नै छी जे हमरा सभकेँ मैथिलीमे अप्पन एकटा व्याकरण भेटए?'

बीजशब्द: बाल गोविन्द आर्य; मैथिली व्याकरण; वर्ण प्रकरण; देशज व्याकरण; भाषा-विज्ञान; व्याकरण-परम्परा

पं. बाल गोविन्द’ आर्य’ क वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका

दिल्लीमे मैलोरंगक एकटा सेमीनारमे स्व. मोहन भारद्वाज मूल धाराक व्याकरणाचार्यकेँ सम्बोधित कऽ कहने रहथि- 'मैथिलीमे एकटा व्याकरण किए नै अछि? की हम सभ ऐ जोकरक नै छी जे हमरा सभकेँ मैथिलीमे अप्पन एकटा व्याकरण भेटए?'

मुदा मूल धारा हिन्दी आ संस्कृतक व्याकरणमे चिप्पी लगा कऽ आ ई संशोधित कऽ जे- हिन्दीमे 'हम' 'बहुवचन' होइए मुदा मैथिलीमे 'एकवचन'- अपन कर्तव्यक इतिश्री मानैत अछि। मुदा समानान्तर धाराक गोविन्दाचार्यजी ऐ तरहक फेंटुआ व्याकरणक विरुद्ध सुच्चा व्याकरणक निर्माण केलन्हि, से पाणिनि जकाँ हिनकर घुमक्कर प्रवृत्तिक कारण सम्भव भेल अछि।

जेना संस्कृतमे दक्षिण भारतक 'नीर' आ उत्तर भारतक 'जल' दुनू पानि लेल प्रयुक्त होइए आ सम्भाषण संस्कृतमे जँ अहाँ दक्षिण भारतीयकेँ 'अहम् नीरं पीबामि' सिखेबै आ उत्तर भारतीयकेँ 'अहम् जलं पीबामि' तँ नीक मास्टर कहेबै आकि नै..?

गोविन्दाचार्य- पं. बाल गोविन्द 'आर्य' प्रसिद्ध गोविन्द यादवक *वर्ण प्रकरण भाष्य-भूमिका* (मैथिली व्याकरण) सेहो मास्टर साहेब सभ लेल गुणकारी हेतन्हि।

२९. संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक 'कथा-समय' क आलोचना

सारांश

संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक मैथिली कथा-संग्रह 'कथा-समय' क एकटा आलोचना मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक विमर्श परंपरागत रूप सँ भावुक आंचलिकता आ यथार्थवादक बीच डोलैत रहल अछि, मुदा समकालीन समय मे पाठ (text) कें भाषाई आ वैचारिक द्वंद्वक रूप मे देखबाक आवश्यकता अछि। रमेशक कथा-संग्रह कथा-समय पर-जाहि मे समानान्तर (1997) आ समाङ (1991) क कथा-संग्रह समेकित अछि-जे परंपरा आ आधुनिकताक बीच खंडित मैथिल समाजक एकटा जटिल भाषा-मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि।

बीजशब्द: संरचनात्मक · अस्थिरता · अर्थक · लीला · रमेशक · आलोचना · करैत

सारांश

संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक मैथिली कथा-संग्रह 'कथा-समय' क एकटा आलोचना मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक विमर्श परंपरागत रूप सँ भावुक आंचलिकता आ यथार्थवादक बीच डोलैत रहल अछि, मुदा समकालीन समय मे पाठ (text) कें भाषाई आ वैचारिक द्वंद्वक रूप मे देखबाक आवश्यकता अछि। रमेशक कथा-संग्रह कथा-समय पर-जाहि मे समानान्तर (1997) आ समाङ (1991) क कथा-संग्रह समेकित अछि-जे परंपरा आ आधुनिकताक बीच खंडित मैथिल समाजक एकटा जटिल भाषा-मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि कथा सभक विखंडन करब मात्र ओकर कथानक कें अलग-अलग करब नहि, बल्कि ओइ 'अपोरिया' (aporia) वा तार्किक गतिरोध कें ताकब अछि, जतय पाठ अपनहि संदेश कें अस्थिर करय लगैत अछि।

संरचनात्मक अस्थिरता आ अर्थक लीला: रमेशक मैथिली कथा-संग्रह 'कथा-समय' क एकटा आलोचना

मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक विमर्श परंपरागत रूप सँ भावुक आंचलिकता आ यथार्थवादक बीच डोलैत रहल अछि, मुदा समकालीन समय मे पाठ (text) कें भाषाई आ वैचारिक द्वंद्वक रूप मे देखबाक आवश्यकता अछि। रमेशक कथा-संग्रह कथा-समय पर-जाहि मे समानान्तर (1997) आ समाङ (1991) क कथा-संग्रह समेकित अछि-जे परंपरा आ आधुनिकताक बीच खंडित मैथिल समाजक एकटा जटिल भाषा-मानचित्र प्रस्तुत करैत अछि। एहि कथा सभक विखंडन करब मात्र ओकर कथानक कें अलग-अलग करब नहि, बल्कि ओइ 'अपोरिया' (aporia) वा तार्किक गतिरोध कें ताकब अछि, जतय पाठ अपनहि संदेश कें अस्थिर करय लगैत अछि। कथा-समय क कथा सभक गहन विश्लेषण ई देखबैत अछि जे केना ई कथा सभ द्वैतवादी सोपान (binary hierarchies) कें भंग करैत अछि आ 'अनिर्णयता' (undecidability) क स्थिति कें उजागर करैत अछि।

विखंडनवादक सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य आ मैथिली गद्य

विखंडनवाद ई मानैत अछि जे भाषा 'डिफरेंस' (differance) क एकटा प्रणाली अछि-देरिदाक अनुसार अर्थ कहियो स्थिर नहि रहैत अछि, ई हरदम एक शब्द सँ दोसर शब्द मे विस्थापित वा विलंबित (deferred) होइत रहैत अछि। मैथिली साहित्यक संदर्भ मे ई आर महत्वपूर्ण भ' जाइत अछि, कारण मैथिली भाषा स्वयं संस्कृत, हिंदी आ अंग्रेजीक संग एकटा निरंतर संवाद आ संघर्षक स्थिति मे रहैत अछि। आलोचकक लेल लक्ष्य पाठ मे 'शब्द-केंद्रवाद' (logocentrism) कें ताकब अछि-अर्थात ओइ मान्यता कें ताकब जे कोनो एकटा परम सत्य अछि-आ फेर ओकरा अस्थिर करब अछि।

रमेशक कथा सभ उत्तर बिहार/दक्षिण-पूर्व नेपाल क सामाजिक-आर्थिक वास्तविकता मे डूबल अछि, तैयो ई शहरी/ग्रामीण, राज्य/व्यक्ति, आ ज्ञान/वर्जना (Knowledge/Taboo) जेहन द्वैत सभक संग खेलैत अछि।

विखंडक प्रयोग सँ ई पता चलैत अछि जे ई कथा सभ मात्र वास्तविकता कें 'प्रतिबिंबित' नहि करैत अछि, बल्कि अर्थक एकटा लीला (play of signifiers) मे शामिल अछि, जतय 'रक्षक' (राज्य, अभिभावक, शिक्षक) अक्सर 'भक्षक' वा 'आतंकवादी' सिद्ध होइत अछि।

अवधारणा

विखंडनवादी परिभाषा

मैथिली गद्य मे प्रयोग

द्वैतवादी विरोध (Binary Opposition)

उपस्थिति/अनुपस्थिति जेहन जोड़ा।

गामक परंपरा आ शहरक निष्ठुरताक बीच तनाव।

अपोरिया (Aporia)

तार्किक गतिरोध वा आंतरिक अंतर्विरोध।

जखन विवाहक विधान (ritual) जमीनक 'बलि' मे बदलि जाइत अछि।

चिह्न (Trace)

कोनो शब्दक प्राचीन अर्थक प्रभाव।

'पिलसिम' जेहन शब्द जकर पाछू सरकारी व्यवस्थाक विफलता अछि।

अनिर्णयता (Undecidability)

अंतिम अर्थ धरि नहि पहुँचबाक स्थिति।

कथाक अंत जतय जीत वा हारि कोनो अंतिम नहि होइत अछि।

'पलास्टी के खेलौना' क विखंडन

"पलास्टी के खेलौना" कथा संग्रहक एकटा महत्वपूर्ण कथा अछि, जे एकटा पिताक आदर्शवादी मानवतावाद आ टीवी/सिनेमाक माध्यम सँ आयल उपभोक्तावादी संस्कृतिक बीचक द्वंद्व कें देखबैत अछि। पिता एकटा उच्च संस्कृति कें श्रेष्ठ मानैत छथि-जतय पंडित रविशंकरक सितार कें बम्बइया फिल्म सँ ऊपर राखल गेल अछि।

कला/हिंसाक द्वैत भंग

एहि सोपान क विखंडन तखन होइत अछि जखन पुत्र पप्पू 'सितार' (जे मानवता क प्रतीक अछि) कें अस्वीकार क' क' 'पेस्तौल' कें चुनैत अछि। पिताक तर्क अछि जे सितार (कला) हिंसा सँ श्रेष्ठ अछि। मुदा बच्चाक लेल पेस्तौल 'हिंसा' नहि बल्कि 'स्मार्टनेस' आ 'फुर्ती' अछि, जखन कि सितार ओकरा लेल 'जड़' हएब अछि। एहिना ई कथा 'नेनपनक निश्छल हएब/बिनु बुझने आक्रमण करब' क द्वैत कें भंग क' दैत अछि।

राज्यक रक्षक/भक्षक रूप

कथाक एकटा मुख्य अपोरिया (aporia) तखन आबैत अछि जखन पिता अपन पत्नी कें कहैत छथि जे "सरकारी आतंकवादी" (पुलिस) आ "प्राइवेट आतंकवादी" (अपराधी) मे कोनो अंतर नहि अछि। ई वक्तव्य राज्यक ओइ रक्षक वाली छवि (logocentric

claim) कें विखंडित क' दैत अछि। जँ 'पुलिस' आ 'अपराधी' कार्यात्मक रूप सँ एकहि अछि, त' सामाजिक व्यवस्थाक आधार अस्थिर अछि।

'कनखी' मे उपस्थिति आ अनुपस्थिति

"कनखी" (The Side-Glance) कथा मे रमेश 1991 सँ 2019 धरि बिहारक बिजली संकट कें माध्यम सँ व्यवस्थाक विफलता कें देखबैत छथि।

क्षणभंगुर आशा आ समयक चिह्न

प्रकाश (बिजली) आ अन्हार (लोड-शेडिंग) क द्वैत एहि कथाक केंद्र अछि। आधुनिक जीवन मे बिजली कें 'उपस्थिति' मानल गेल अछि, मुदा झा बाबूक जीवन मे 'अनुपस्थिति' सदिखन उपस्थित रहैत अछि। बिजलीक ओइ 'भुक-भुक' (blink) मे 1991 आ 2019 मे कोनो अंतर नहि अछि-समय बीति गेल, मुदा विफलताक चिह्न (trace) स्थिर अछि। जखन झा बाबू कें अन्हार मे रहितो सात सय क बिल भेटैत अछि, त' ओइ 'बिल' (signifier) क कोनो वास्तविक अर्थ (signified) नहि रहि जाइत अछि।

'नरमेध': त्यागक अर्थशास्त्र

"नरमेध" कथा दहेज प्रथाकेँ भयानक रूप कें देखबैत अछि, जतय संजूक विवाह लेल पुरखाक जमीन बेचल जाइत अछि।

जमीन आ पूँजीक द्वैत

जमीन 'अन्नपूर्णा' अछि, मुदा पूँजी एकटा 'राक्षस' अछि। एतय दादीक 'बतहपन' आ माता-पिताक 'बुधियारी' क बीचक द्वैत कें विखंडित कयल गेल अछि। दादी बुझैत छथि जे जमीन बेचब आत्महत्या अछि, मुदा माता-पिता विवाहक 'पवित्रता' कें बचेबा लेल दादी कें सुइया द' क' शांत क' दैत छथि। जखन दादीक मृत्यु जमीन बेचबाक समय होइछ, त' 'विवाह/शोक' क द्वैत खतम भ' जाइत अछि। विवाहक 'सफलता' मृत्युक 'उपस्थिति' पर निर्भर भ' जाइत अछि।

'दिनकर बाबू कें भ्रम भेल छलनि?': परिवारक विखंडन

एहि कथा मे रमेश टीवी कें एकटा एहन माध्यमक रूप मे देखबैत छथि जे परिवार कें जोड़बाक बदला ओकरा खंडित क' दैत अछि। दिनकर बाबू समाचार (सत्य) कें महत्व दैत छथि, मुदा हुनकर बच्चा 'डिस्को संगीत' आ 'बलात्कारक दृश्य' मे रमल रहैत छथि। अंतिम दृश्य मे जखन दिनकर बाबू अपन बच्चा कें टीवी क हिंसाक नकल करैत देखैत छथि, त' ओ 'निश्छल' क विखंडन अछि।

'नागदेस मे अयनाक व्यवसाय': दर्पण आ यथार्थ

ई कथा एकटा रूपक (allegory) अछि, जतय 'नागदह' गामक लोक अपन भ्रष्टाचार कें धार्मिक मान्यता सँ जोड़ि क' सही मानैत छथि।

दर्पण (mirror) विखंडनवादी स्थल अछि जतय 'स्व' (self) 'दोसर' (other) बनि जाइत अछि। व्यापारीक दर्पण गामक मिथक कें विखंडित क' दैत अछि-लोक जखन अइना देखैत अछि, त' ओकरा देवी नहि बल्कि साँप देखाबैत अछि। ई देरिदाक ओइ विचार कें पुष्ट करैत अछि जे भाषा सँ बाहर कोनो 'परम सत्य' नहि अछि, सब किछु मात्र एकटा प्रतिबिंब अछि।

स्त्री देह आ 'दुधुआ'

"दुधुआ" कथा स्त्री देह कें मातृत्व आ सौंदर्यक द्वंद्व मे देखबैत अछि। कामिनीक पति ओकर देह कें मात्र कामुकताक वस्तु मानैत छथि

आ ओकर दूध सुखेबाक लेल सुइया दियबैत छथि। विखंडनवादी दृष्टिकोण सँ, ई मातृत्वक 'चिह्न' कें मिटा देबाक प्रयास अछि। मुदा जखन कामिनी कें स्तन कैंसर होइछ, त' ओ 'अनुपस्थिति''उपस्थिति' (बीमारी) मे बदलि जाइत अछि।

द्वैतवादी जोड़ा

श्रेष्ठ पद

गौण पद

विखंडनवादी उलटफेर

सौंदर्य / जीवविज्ञान

"हिरोइन" जेहन देह

दूध / ममता

दमन सँ कैंसर जेहन बीमारी आबय लगैत अछि।

पति / बच्चा

पति क इच्छा

माताक कर्तव्य

दुनू भूमिका स्त्री देह कें उपभोग करैत अछि।

स्वास्थ्य / छवि

बाहरी छवि

जैविक कार्य

'छवि' बचेबाक चक्कर मे 'स्वास्थ्य' खतम भ' जाइत अछि।

'ऑक्टोपस': पर्यावरणीय अपोरिया

"ऑक्टोपस" कथा मे नेहा शहरी प्रदूषण कें एकटा राक्षसक रूप मे देखैत अछि। नेहाक शिक्षा (वनस्पति विज्ञान) ओकरा तबाही कें नाम देबाक क्षमता त' दैत अछि, मुदा ओकरा रोकबाक नहि। ई ज्ञानक एकटा अपोरिया अछि: जतेक ओ प्रकृति कें जानैत अछि, ततेक ओकरा ई अनुभव होइत अछि जे प्रकृति खतम भ' रहल अछि। उद्योग (Industry), जे विकासक प्रतीक अछि, ओही शहर कें मारि रहल अछि-ई 'विकास/विनाश' क सोपान कें विखंडित करय बला स्थिति अछि।

'प्रवेश-निषेध': मौन आ वर्जना

"प्रवेश-निषेध" कथा यौन शिक्षा पर समाजक 'चुप रहबाक' (silence) प्रवृति कें विखंडित करैछ। किशोर अपन विज्ञानक पोथी मे 'प्रजनन तंत्र' वाला अध्याय पढ़य चाहैत अछि, मुदा शिक्षक आ अभिभावक ओकरा 'गंदा' कहि क' टालि दैत छथि। ई कथा देखाबैत अछि जे 'मौन' रक्षक नहि बल्कि घातक अछि। किशोरक भउजीक मृत्यु प्रसव काल मे अज्ञानताक कारणे होइत अछि। किशोरक ई कहनाइ जे "अहाँक एम. ए. बेकार अछि," शिक्षा आ अज्ञानताक पारंपरिक द्वैत कें उलटि क' रखि दैत अछि।

'ध्रुपद-धमार': संगीत आ अभाव

ई कथा शास्त्रीय संगीतक शब्दावलीक प्रयोग सँ महगी आ राज्यक विफलता कें देखबैछ। पंडित टुनटुन मिसर सेवानिवृत्त शिक्षक छथि, जे 'पिलसिम' (पेंशन) पर आश्रित छथि। नोट पर गवर्नरक 'वचन' (promise) एतय एकटा डकढोल चेन्ह (hollow signifier) बनि गेल अछि, कारण महगी ओइ वचन कें मेटा देने अछि। जखन मंत्री 'कंप्यूटरीकरण' क बात करैत छथि आ टुनटुन मिसर 'किरासन' क, तखन 'आधुनिक/आदिम' क द्वैत खतम भ' जाइत अछि।

'समाङ' क अन्य कथा सभक विखंडन

एक सेर चाउर: प्रतिष्ठा (Dignity) आ उत्तरजीविता (Survival) क द्वैत। माई अपन 'फूलक थाड़ी' (प्रतिष्ठा) कें 'चाउर' लेल बेचि दैत अछि। एतय मानवीय मूल्यक विखंडन अछि।

सहानुभूति: रक्षक आ भक्षक क द्वैत। मुखियाजी सहानुभूति देखबैत स्त्री कें अपन बगैचा मे ल' जाइत छथि, मुदा ओ सहानुभूति वास्तव मे शोषणक एकटा आवरण (signifier) अछि।

लुट्टीस-केस: कमला नदी पर बान्ह बनब 'सुरक्षा/विपत्ति' क द्वैत कें भंग करैत अछि। बान्ह सुरक्षा लेल नहि, बल्कि लूट लेल बनल अछि।

अक्ष आ वृत्तचक्र: प्रेम आ अर्थशास्त्रक द्वंद्व। वैवाहिक वर्षगाँठ पर प्रेम नहि, उधारी आ बिल क हिसाब केंद्र (axis) बनि जाइत अछि।

भाषाई अस्थिरता

रमेशक मैथिली गद्य मे अंग्रेजी आ हिंदीक शब्द मात्र आधुनिकताक प्रतीक नहि, बल्कि एकटा एहन संस्कृति क चिह्न (trace) अछि जे मैथिली कें विस्थापित क' रहल अछि।

पिलसिम (Pension): शब्दक ई विरुपण संस्थागत भ्रष्टाचारक प्रतीक अछि।

मम्मी/ पापा वा माँ/बाबूजी: संबोधन मे बदलाव पारंपरिक पितृसत्तात्मक अधिकारक विखंडन कें देखबैत अछि।

भुआ (Caterpillar): ई मात्र एकटा कीड़ा नहि, बल्कि पुरुष क कामुक नजरिक एकटा 'चिह्न' बनि जाइत अछि।

निष्कर्ष: मिथिलाक अनिर्णित भविष्य

कथा-समय संग्रह कोनो समाधान (resolution) क संग नहि, बल्कि अनिर्णय (undecidability) क गहन भावक संग समाप्त होइत अछि। रमेश पारंपरिक अर्थमे "कथाक नैतिक शिक्षा" नहि दैत छथि; बदलामे ओ अपन पात्रसभकेँ अपोरियाक चौराहापर छोड़ि दैत छथि। नेहा अखनो धुंधमे अछि; दिनकर बाबू अखनो कुश्ती करैत बच्चासभकेँ ताकि रहल छथि; संजू अखनो अपन सोनक कीड़ा-बेड़ी पहिरने अछि।

विखंडनवादी दृष्टिकोणसँ देखल जाय तँ समाधानक ई अभाव पाठक सबसँ पैघ शक्ति थिक। ई मिथिलाक समस्याक कोनो "अतिक्रमणीय संकेतित"-कोनो अंतिम, सहज उत्तर-देबासँ इनकार करैत अछि। बदलामे ई पाठककेँ अर्थक "क्रीड़ा"मे संलग्न होबाक, नगरमे गाँवक "अनुरेख" आ अधिकारीमे साँपक "अनुरेख" देखबाक आमंत्रण दैत अछि।

रमेशक रचना सिद्ध करैत अछि जे "मैथिली-पथ" एकटा जटिल, अस्थिर आ गहनतासँ चिंतनशील भाषा थिक। राज्य, परिवार आ देहक द्विआधारीकेँ विखंडित कऽ, कथा-समय आधुनिक मैथिली पहचानक दरारि सभकेँ देखार करैत अछि। साहित्यिक आलोचकक लेल ई संग्रह मात्र कथासभक एकटा पोथी नहि, बल्कि एकटा "मचान" थिक जे समाजक निर्माणमे "छिद्र"सभकेँ प्रकट करैत अछि-ओ स्थान सभ जतए सत्य आ असत्य, रक्षक आ शिकारी, तथा जीवन आ मृत्यु सदिखन एकमे एक गाँथल रहैत अछि। कथा-समय एहि बातक निश्चायक प्रमाण बनि कए ठाढ़ अछि जे मैथिली साहित्य "उपस्थितिक तत्त्वमीमांसा"सँ आगाँ बढ़ि उत्तर-संरचनावादी यथार्थक चुनौतीपूर्ण, बहुआयामी संसारमे प्रवेश कए लेलक अछि।

सन्दर्भ:

1.Deconstruction - Literary Theory and Criticism, accessed on March 11, 2026, https://literariness.org/2016/03/22/deconstruction/

2.Deconstruction: A Cornucopia of Esoteric Meanings - International Journal of English Literature and Social Sciences (IJELS), accessed on March 11, 2026, https://ijels.com/upload_document/issue_files/46-IJELS-APR-2019-14-Deconstruction.pdf

3.Deconstructionism in Literature | Definition & Examples - Lesson - Study.com, accessed on March 11, 2026, https://study.com/academy/lesson/deconstructionism-in-literature-definition-examples-quiz.html

4. विखण्डनवाद - Samkeleen sahitya chintan (समकालीन साहित्य चिन्तन), accessed on March 11, 2026, https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp16/chapter/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6/

5.Deconstruction Theory of Darida: A Comprehensive Guide, जाक दारिदा का विखंडनवाद, accessed on March 11, 2026, https://www.youtube.com/watch? v=UyyrgxYXNQc

6.A Survey of Maithili Literature, accessed on March 11, 2026, https://archive.org/download/a-survey-of-maithili-literature/A%20Survey%20of%20Maithili%20Literature.pdf

7.A Critical Analysis of Maithili Novel: Twenty First Century - IJIRT, accessed on March 11, 2026, https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT189645_PAPER.pdf

8.Dancing Soul of Mount Everst English | PDF | Poetry - Scribd, accessed on March 11, 2026, https://www.scribd.com/document/383738676/dancing-soul-of-mount-everst-english

9.Deconstructionism in Literature | Definition & Examples - Lesson - Study.com, accessed on March 11, 2026, https://study.com/academy/lesson/deconstructionism-in-literature-definition-examples-quiz.html

10.Deconstruction - Literary Theory and Criticism, accessed on March 11, 2026, https://literariness.org/2016/03/22/deconstruction/

11.Deconstructionism and literature (practice) | Khan Academy, accessed on March 11, 2026, https://www.khanacademy.org/test-prep/mcat/critical-analysis-and-reasoning-skills-practice-questions/critical-analysis-and-reasoning-skills-tutorial/e/deconstructionism-and-literature

12.Deconstruction: A Cornucopia of Esoteric Meanings - International Journal of English Literature and Social Sciences (IJELS), accessed on March 11, 2026, https://ijels.com/upload_document/issue_files/46-IJELS-APR-2019-14-Deconstruction.pdf

13.विखण्डनवाद - Samkeleen sahitya chintan (समकालीन साहित्य चिन्तन), accessed on March 11, 2026, https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp16/chapter/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6/

14.Deconstruction Theory of Darida: A Comprehensive Guide, जाक दारिदा का विखंडनवाद, accessed on March 11, 2026, https://www.youtube.com/watch? v=UyyrgxYXNQc

15.A Survey of Maithili Literature, accessed on March 11, 2026, https://archive.org/download/a-survey-of-maithili-literature/A%20Survey%20of%20Maithili%20Literature.pdf

16."M' - Kannur University, accessed on March 11, 2026, https://www.kannuruniversity.ac.in/media/documents/MA_Hindi.pdf

17.A Critical Analysis of Maithili Novel: Twenty First Century - IJIRT, accessed on March 11, 2026, https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT189645_PAPER.pdf

18.Inside the text.... - गंगटोक, सिक्किम में पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण पाठ्यक्रम, accessed on March 11, 2026, https://www.nbtindia.gov.in/writereaddata/attachment/friday-july-17-20153-12-53-pmhindi-samwad-may-2015-compressed.pdf

19.हिंदी आलोचना: विकास, प्रमुख विधाएँ और आधुनिक साहित्यिक दृष्टियाँ - Testbook, accessed on March 11, 2026, https://testbook.com/ugc-net-hindi/alochana

३०. उमेश पासवानक ‘मुजरिम’: कथा-संग्रहक आलोचनात्मक पाठ

सारांश
‘सुनन्दा’ कथा शिक्षित युवती सुनन्दा आ ओकर पिता रमण मास्टरक माध्यमसँ समाजक संकीर्ण सोचकेँ उजागर करैत अछि। सड़कक कात पर भेटल परित्यक्त नवजात शिशुकेँ सुनन्दा दयावश घर लऽ अबैत अछि, मुदा गाम ओकरा चरित्रहीन ठहरबैत अछि। बादमे खुलासा होइत अछि जे बच्चा गामक प्रतिष्ठित घरक अविवाहित बेटीकेँ जन्मल छल।

बीजशब्द: उमेश · पासवानक · मुजरिम · संग्रहक · आलोचनात्मक · करैत · जाइत

सारांश

‘सुनन्दा’ कथा शिक्षित युवती सुनन्दा आ ओकर पिता रमण मास्टरक माध्यमसँ समाजक संकीर्ण सोचकेँ उजागर करैत अछि। सड़कक कात पर भेटल परित्यक्त नवजात शिशुकेँ सुनन्दा दयावश घर लऽ अबैत अछि, मुदा गाम ओकरा चरित्रहीन ठहरबैत अछि। पिता सेहो लोक-दबावमे आबि जाइ छथि।

उमेश पासवानक "मुजरिम"

उमेश पासवानक ‘मुजरिम’ मे एक सोरे कथा अछि।

१

‘सुनन्दा’ कथा शिक्षित युवती सुनन्दा आ ओकर पिता रमण मास्टरक माध्यमसँ समाजक संकीर्ण सोचकेँ उजागर करैत अछि। सड़कक कात पर भेटल परित्यक्त नवजात शिशुकेँ सुनन्दा दयावश घर लऽ अबैत अछि, मुदा गाम ओकरा चरित्रहीन ठहरबैत अछि। पिता सेहो लोक-दबावमे आबि जाइ छथि। बादमे खुलासा होइत अछि जे बच्चा गामक प्रतिष्ठित घरक अविवाहित बेटीकेँ जन्मल छल। सत्य सामने आबिते सभ आरोप झूठ साबित भऽ जाइत अछि। ई कथा स्त्री पर लगैत सहज दोषारोपण, जाति-प्रतिष्ठाक दबाव, लोकक कुटिचौल आ मानवताक असली अर्थकेँ प्रभावी ढंग सँ उभारैत अछि। अन्तमे नैतिक साहस आ क्षमाशीलता समाजकेँ सही दिशा देखबैत अछि। ‘सोलकनमा पोखैर’ कथा गाममे उत्पन्न भीषण पानिक संकट आ जातिगत भेदभावक विडम्बनाकेँ उजागर करैत अछि। सोलकनमा टोलक पोखैरमे पानि रहितो ऊँच जातिक लोक ओकर उपयोगसँ बचैत अछि, आ जे उपयोग करैत अछि, ओकरा समाजसँ बहिष्कृत कऽ दैत अछि। छुआछूत आ ऊँच-नीचक सोच पानिक मूल आवश्यकता पर भारी पड़ैत अछि। अचानक आगि लागैत अछि, आ पूरा गाम ओही पोखैरक पानि सँ बचैत अछि। जकरा अपवित्र कहल गेल छल, ओ पानि संकटमे जीवनरक्षक बनि जाइत अछि। ई कथा स्पष्ट करैत अछि जे प्राकृतिक संसाधन सभक लेल समान अछि, आ संकट समाजक बनावटी भेदरेखाकेँ भंग कऽ दैत अछि। ‘कर्मक फल’ कथा रंजीतक पतनक कथा अछि। पढ़ल-लिखल आ प्रतिष्ठित घरक बेटा, खराब संगतिक प्रभावमे पड़ि दारूक लतमे फँसि जाइत अछि। पहिल बेर मजाकमे दारू पीबैत ओ पुलिसक हाथ चढ़ि जाइत अछि, जेल पहुँचैत अछि, आ ओतए अपराधीक संगति ओकर जीवनक दिशा बदलि दैत अछि। बादमे ओ दारू कारोबारमे पड़ि जाइत अछि, गिरफ्तारी, फरारी आ भेष बदलि साधु बनि लोककेँ ठगबाक प्रयास करैत अछि। सत्य सामने आबिते लोक ओकरा पुलिसकेँ सौंपि दैत अछि, आ अन्ततः ओकर घर कुर्की-जब्दीमे उजड़ि जाइत अछि। ई कथा स्पष्ट करैत अछि जे गलत संगति आ अनैतिक कर्म अन्ततः अपन दुष्परिणाम अवश्य दैत अछि। ‘गिरहत घर पर गिद्ध’ कथा दौलतपुर गामक जातिगत भेदभाव आ सामाजिक टकराव पर आधारित अछि। श्राद्ध-भोजमे दलित युवक सभकेँ पाँतसँ उठा देल जाइत अछि। बादमे मन्दिर-प्रवेशक कारण एक युवककेँ मारि दण्डित कएल जाइत अछि। अपमानित दलित समुदाय निर्णय लैत अछि जे ऊँच जातिक घरक मरलाहा माल-मवेशी उठेनाइ आ परम्परागत सेवा बन्द करत। कनी दिनमे बेमारीसँ जानवर मरए लगैत अछि आ गाममे गिद्ध मँडराए लगैत अछि, जाहिसँ जमींदार स्वयं संकटमे पड़ि जाइ छथि। अन्ततः पंचायत हस्तक्षेप करैत अछि आ समान अधिकारक प्रश्न उठैत अछि। ई कथा सम्मान, श्रम आ बराबरीक प्रश्न सोझाँ आनैत अछि। ‘तेतर दास’ कथा तेतरा नामक बालकक जीवन-यात्राकेँ प्रस्तुत करैत अछि। जन्म समय माए प्रसवमे गुजरि जाइ छथि, तैं गाम ओकरा अपशकुन मानि ‘लूटना’ कहैत अछि। पिता प्रेमसँ ओकर पालन-पोषण करैत छथि, आ ओ पढ़ाईमे तेज सिद्ध होइत अछि। संस्कृत अध्ययन करैत-करैत ओ विद्वान बनि सन्त रूपमे प्रसिद्ध होइत अछि आ ‘तेतर दास’ कहल जाइत अछि। हजारों लोक ओकर प्रवचनसँ प्रभावित होइत अछि। मुदा गोविन्दपुर मठक महंथ बनबाक प्रस्ताव पर जातिगत विरोध उठैत अछि। पीड़ासँ आहत भऽ ओ सब कुछ छोड़ि गाम घुरि जाइत अछि। ई कथा समाजक जाति-आधारित सोच आ प्रतिभाक अवमाननाक विडम्बनाक मार्मिक चित्र प्रस्तुत करैत अछि। ‘कोदारि छाप’ कथा पंचायत चुनावमे सत्ता आ लोभक खेलकेँ उजागर करैत अछि। बदमाश प्रवृत्तिक फोल्टर आरक्षित सीटक लाभ उठेबाक लेल दलित मजदूर मुसबाक अनपढ़ पत्नी फेकनीकेँ मुखिया बनबैत अछि। दारू, पैसा आ धमकीक बल पर चुनाव

जिताओल जाइत अछि। जितलाक बाद फेकनी नाममात्रक मुखिया बनि रहैत अछि, आ सभ वित्तीय निर्णय फोल्टर करैत अछि। सरकारी योजना आ मनरेगा निधिमे भारी घपला होइत अछि। जाँचक दौरान फेकनी सच उजागर करैत अछि जे ऊ केवल औंठा-छाप देत रहल। अन्ततः फोल्टर आ फेकनी दुनू गिरफ्तार होइत छथि। 'सहोदरा' कथा दू सहोदर भायक आ प्रेमक संबंध पर आधारित अछि। माता-पिताक मृत्यु बाद जनक अपन छोट भायकेँ पालि-पोसि पढ़बैत अछि। विवाहक बाद घरमे कलह शुरू होइत अछि आ बँटवारा भऽ जाइत अछि। समयक संग प्रेमक भाग्य चमकि उठैत अछि, आ जनक आर्थिक संकटमे फँसि कर्जक बोझ सँ दबि जाइत अछि। एक दिन प्रेम अपन भायकेँ मजदूरी करैत देखि पीड़ा अनुभव करैत अछि। अन्तमे ओ अपन दोकान जनककेँ सौंपि पुनः एकजुट होएबाक निर्णय लैत अछि। ई कथा त्याग, भाईचारा आ परिवारक संबंधकेँ उभारैत अछि। 'गरीबक जिनगी' कथा भोल्टा आ ओकर बेटा बंठाक माध्यमसँ गरीब मजदूरक शोषण आ संघर्षकेँ चित्रित करैत अछि। गिरहत नूनूबाबू चाल चलि बंठाकेँ पढ़ाइ सँ हटा अपन घरक नोकरीमे लगा दैत अछि, आ महँगाई बढ़लाक बादो मजूरी नहि बढ़बैत अछि। बंठा प्रश्न उठबैत अछि तँ ओकरा धमकी देल जाइत अछि। गरीब सभ संगठित भऽ बाहरक गाममे काज करए लगैत छथि, जकरा कारण गिरहतक खेती ठप्प पड़ि जाइत अछि। बदला लेबाक भावसँ गिरहत रस्ता रोकि रोगीक इलाजमे बाधा दैत अछि, जकर परिणामस्वरूप बंठाक छोट भाय मरि जाइत अछि। बादमे झूठ चोरिक आरोप लगा बंठा आ भोल्टापर हमला कएल जाइत अछि, जाहिमे भोल्टा मरि जाइत अछि। बंठा हिंसाक रास्ता नहि चुनैत अछि, बल्कि कानूनक सहारा लैत अछि आ न्याय प्राप्त करैत अछि। 'श्रमदानी बान्ह' कथा बरखाक समय गामक सुरक्षा-बान्ह पर केन्द्रित अछि। घनघोर वर्षासँ श्रमदानी बान्ह कमजोर भऽ जाइत अछि, आ लोक मुखियासँ मदद माँगैत अछि। मुखिया ऊपरसँ प्रशासनक भरोसा दऽ लोककेँ शांत करैत अछि, मुदा भीतरे-भीतर ओ बान्ह टूटबाक चाह रखैत अछि, जाहिसँ फसल-क्षति, राहत आ आवास योजनामे घूस-कमीशन कमा सकय। रातिमे ओ अपन चमचा सभसँ बान्ह कटवा दैत अछि, परिणामस्वरूप गाममे बाढ़ि पसैर जाइत अछि आ घर, अनाज आ मवेशी नष्ट भऽ जाइत अछि। बादमे पानिमे एक युवकक लाश भेटैत अछि, जे मुखियाक अपन बेटा निकलैत अछि। अन्ततः लालचक परिणाम निजी शोकक रूपमे सोझाँ अबैत अछि। 'दछिनवारि टोल' कथामे मानिकपुर गाममे एन. एच. निर्माणक योजना बनैत अछि। गाम बचाबए लेल सड़क दच्छिन दिस घुमा देल जाइत अछि, मुदा दछिनवारि टोलक बुधना मल्लिकक घर उजड़ि जाइत अछि। ओकरा जमीनक मुआवजा नहि भेटै छै, तैं ओ नवका स्थान पर घर बनबैत अछि। सवर्ण टोलक लोक ओकरा जातिक कारण नापसंद करैत अछि आ ओकर पत्नी पर डायन हेबाक आरोप लगबैत अछि। रातिमे ओकर घरमे आगि लगा देल जाइत अछि। परिवार जान बचा कऽ बाहर निकलैत अछि, मुदा उजाड़ अवस्थामे सड़क कात सूतल चारू परानी ट्रकसँ पिचा कऽ मरि जाइत छथि। ई कथा जातिगत घृणा आ अमानवीयताक क्रूर रूप उजागर करैत अछि। 'पगला पुल' कथा विनीत दासक जीवनक उतार-चढ़ाव प्रस्तुत करैत अछि। पढ़ाईमे तेज विनीतक, गलत संगति आ नशाक कारण, सभ जमीन बिका जाइ छै, ओ बताह सन भऽ जाइत अछि। गामक लोक ओकरा तिरस्कृत करैत अछि, तँ ओ नदी कात अपन जीविका चलबैत रहैत अछि। एक दिन मंत्री आ अधिकारी सभ नाव डूबला पर संकटमे पड़ैत छथि। सभ लोक तमाशा देखैत रहैत अछि, मुदा तथाकथित 'पगला' विनीत नदीमे कूदि चारू गोटाक जान बचा लैत अछि। ओकर साहस चर्चाक विषय बनैत अछि, आ इलाजक बाद ओ आस्ते-आस्ते स्वस्थ होइत अछि। पुरस्कार माँगलापर ओ धन नहि, बल्कि नदी पर पुल निर्माणक आग्रह करैत अछि। अन्ततः पुल बनैत अछि आ समाज ओकरा नव सम्मान दैत अछि। 'विधवा विवाह' कथा सुशीलाक जीवन-संघर्षक मार्मिक चित्रण करैत अछि। विवाहक पहिल रातिमे पति राजीव साँपक डँसला सँ मृत्युकेँ प्राप्त होइत छथि, आ सुशीला अल्प आयुमे विधवा बनि जाइ छथि। सासुरमे अपमान आ समाजक तिरस्कार हुनका भीतरसँ तोड़ि दैत अछि। पिता हुनका नैहर लऽ अबैत छथि, मुदा समाज विधवा-विवाह स्वीकार करबाक लेल तैयार नहि अछि। मानसिक पीड़ासँ व्यथित सुशीला आत्महत्या करबाक प्रयास करैत छथि। ओहि समय एक अभियन्ता युवक समय पर पहुँचि हुनका बचबैत अछि आ ओ विवाहक प्रस्ताव रखैत अछि। ई कथा समाजमे विधवा-विवाहक आवश्यकता आ मानवीय संवेदनाक प्रबल पक्ष प्रस्तुत करैत अछि। 'वृद्धाश्रम' कथा गोपाल जी आ हुनकर बेटा रमणक माध्यमे कर्तव्य आ कृतघ्नताक संवेदनशील चित्र प्रस्तुत करैत अछि। गोपाल जी अपन जमीन बेचि आ मेहनत-मजूरी कऽ बेटाकेँ पढ़बैत छथि, आ ओकरा बैंक अधिकारी बनबैत छथि। विवाहक बाद रमण आ सुलोचना नौकरीक कारण शहरमे बसि जाइ छथि। वृद्ध माता-पिता सेवा-योग्य रहितो असुविधा बुझि वृद्धाश्रम भेजि देल जाइ छथि। समय बीतैत गोपाल जी आ हुनकर पत्नी दुनू परानीक मृत्यु भऽ जाइत अछि। अन्ततः रमण आ सुलोचना सेहो अपन बेटाक हाथे ओही वृद्धाश्रममे पहुँचा देल जाइ छथि। ई कथा स्पष्ट करैत अछि जे माता-पिताक उपेक्षा अन्ततः अपन जीवनमे दुखद परिणाम बनि घुरि अबैत अछि। 'दोस्तक बिआह' कथा मित्रता आ जातिगत भेदभावक अनुभवक सजीव वर्णन करैत अछि। लेखक आ महेश बाल्यकालसँ घनिष्ठ मित्र छथि, संग पढ़ैत आ खाइत छथि। समय बीतैत महेश विवाह करैत छथि, आ लेखक लोकनियाँ बनि संग रहैत छथि। बरातमे लेखकक जाति उजागर होइतहि कन्यापक्ष लोकनियाँक रूपमे हुनका स्वीकार करब सँ इन्कार करैत अछि। ई घटना लेखककेँ अपमानसँ भरि दैत अछि, आ ओ रातिएँ घुरि जाइ छथि। पछाति महेश आ हुनकर परिवार क्षमा-याचना करैत अछि। अन्ततः

लेखक सफल नौकरी प्राप्त करैत छथि आ अनुभव करैत छथि जे समाजमे जातिसँ बेसी आर्थिक स्थिति सम्मानक निर्धारक बनि गेल अछि। 'मानवताक पूजारी' कथा लालच, शोषण आ आत्मपरिवर्तनक प्रभावशाली चित्र प्रस्तुत करैत अछि। चुन्नीलाल सेठ सूदखोरी कऽ गरीबक शोषण करैत छथि, आ हुनकर बेटा डॉ. श्याम रोगीक अनावश्यक जाँच लिखि धन अर्जित करैत छथि। डॉ. विवेक जानबूझि श्यामकेँ ब्लड कैंसरक झूठ निदान दऽ चेतना जगबैत छथि। मृत्यु-भय सँ विचलित पिता-पुत्र अपन आचरण बदलि दैत छथि, कर्जा माफ करैत छथि, गरीबक सहायता करैत छथि आ निःस्वार्थ भावसँ उपचार करए लगैत छथि। अन्ततः पता चलैत अछि जे बीमारी फुसि छल, मुदा एहि झटकासँ दुनू सचेत भऽ मानव-सेवा अपनबैत छथि। ई कथा स्पष्ट करैत अछि जे सच्ची प्रतिष्ठा धनमे नहि, बल्कि मानवता आ करुणामे निहित अछि। 'भगवानपुर' कथा भगवान लाल दासक अद्भुत मानव-सेवा आ त्यागमय जीवनक प्रेरक चित्रण करैत अछि। ओ अविवाहित रहि अपन सम्पूर्ण जीवन गरीब-गुरबाक सहायता, बेटीक बिआह, पढ़ाइ, इलाज आ बसोबासमे समर्पित करैत छथि। बी. डी. ओ. बनलाक बाद सेहो ओ ईमानदारीसँ सेवा करैत अपन आय जनहितमे लगा दैत छथि। अन्ततः विद्यालय स्थापित कऽ शिक्षा-प्रसारक कार्यमे जुटि जाइत छथि। मृत्युक बादो समाजक जातिगत संकीर्णता उजागर होइत अछि, जखन हुनकर दाह-संस्कार श्मशानमे रोकल जाइत अछि। तथापि हुनकर त्याग आ सेवा समाजकेँ झकझोरि दैत अछि आ अन्ततः गाम हुनकर सम्मानमे अपन नाओं बदलि 'भगवानपुर' राखैत अछि।

२

सभसँ पहिने पोथीक शीर्षक "मुजरिम" स्थापित अर्थक विखंडन करैत अछि। सामान्य अर्थमे 'मुजरिम' ओ थिक जे अपराध करैत अछि। मुदा ऐ पोथीमे 'मुजरिम' शब्द अपन पारंपरिक अर्थ छोड़ि सत्ताक क्रूरता आ विशेषाधिकारक प्रतीक बनि जाइत अछि। समाजमे कात-करोटामे ठाढ़ लोक जेकर शोषण भऽ रहल अछि, ओकरा व्यवस्था 'मुजरिम' घोषित कऽ दैत अछि। एतय प्रश्न उठैत अछि जे असली मुजरिम के अछि, ओ शोषित वर्ग जकरा पर लेबल लगाओल गेल अछि, वा ओ वर्चस्ववादी व्यवस्था जे ई लेबल तय करैत अछि?

३

समाजमे जेकरा 'हीन' वा 'अपवित्र' मानल जाइत अछि, अंततः 'पवित्र' केंद्र ओकरे पर निर्भर होइत अछि। "सोलकनमा पोखैर" कथामे सोलकनमा टोलक पोखैर कें ऊँच जातिक लोक अछूत आ अपवित्र मानैत अछि। मुदा जखन गाममे आगि लगैत अछि, तखन ओही 'अपवित्र' पोखैरक पानि पूरा गामक प्राण बचबैत अछि आ जीवनरक्षक (अमृत/पवित्र) बनि जाइत अछि। ई कथा छुआछूत आ पवित्रताक मिथक कें पूर्ण रूपेँ उलटि दैत अछि आ देखाबैत अछि जे संकट कालमे बनावटी सामाजिक भेदरेखा कोना भसि जाइत अछि।

४

"गिरहत घरपर गिद्ध" कथामे सवर्ण जमींदार स्वयं कें सत्ता आ शक्तिक केंद्र मानैत छथि। मुदा जखन दलित वर्ग अपमानित भऽ कऽ मरल माल-मवेशी उठबय सँ इन्कार कऽ दैत अछि, तखन ओही 'शक्तिशाली' लोकक घरपर गिद्ध मँडराय लगैत अछि आ ओ नचार भऽ जाइ छथि। एतय परिधि पर रहै-बला दलित वर्गक निष्क्रियता केंद्रकें पंगु बना दैत अछि। ई सामंती व्यवस्थाक खोखलापन आ वर्चस्ववादकें विखंडित करैत अछि।

५

"पगला पुल" कथामे समाज जकरा पागल आ तिरस्कृत मानैत अछि (विनीत दास), ओ नदीक कात अपन जीवन निर्वाह करैत अछि। दोसर दिस मंत्री आ अधिकारी वर्ग अछि जकरा समाज 'बौद्धिक' आ 'सभ्य' मानैत अछि। मुदा नाव डूबबाक संकट कालमे 'सभ्य' आ 'बुद्धिमान' वर्ग असहाय भऽ जाइत अछि आ 'पागल' विनीत नदीमे कूदि सभक जान बचबैत अछि। एतय समझदारी आ पागलपनक देवाल खसि जाइत अछि आ 'पागल' समाजकें मानवताक पाठ पढ़बैत अछि।

६

"तेतर दास" कथामे एकटा 'लूटना' (अपशकुन) कहल जाय बला बालक संस्कृतक प्रकांड विद्वान आ सन्त 'तेतर दास' बनि जाइत अछि। ओकर प्रवचनसँ हजारों लोक प्रभावित होइत अछि। मुदा जखन हुनका महंथ बनबाक बेर अबैत अछि, तखन हुनकर 'ज्ञान' पर

हुनकर 'जाति' भारी पड़ि जाइत अछि। ई कथा धार्मिक आ आध्यात्मिक समभावक दाबा कें विखंडित करैत अछि आ ई प्रमाणित करैत अछि जे संस्थागत धर्ममे योग्यता सँ बेसी जन्मक सत्ता अछि।

७

उमेश पासवानक "मुजरिम" खाली दलित उत्पीड़नक कन्नारोहट नहि थिक। ई ओइ भाषिक आ वैचारिक संरचनाकें भीतरसँ तोड़ैत अछि जे कात-करोट आ फराक करबाक प्रवृत्तिकें जन्म दैत अछि। ई पाठ देखाबैत अछि जे समाजक केंद्र अपन अस्तित्वक लेल ओही परिधि पर निर्भर अछि जकरा ओ घृणा करैत अछि।

८

अत्यंत मार्मिक आ राजनीतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण कथा "कोदारि छाप" जतऽ पंचायत चुनावमे दलित महिला लेल सीट आरक्षित होएब लोकतंत्रक एकटा पैघ जीत आ शोषित वर्गक सशक्तिकरणक प्रतीक अछि। मुदा कथा ऐ दाबीकें भथा दैत अछि। आरक्षित सीट दलित महिला 'फेकनी' कें शक्ति नहि दैत अछि, बल्कि ओकरा सवर्ण/दबंग 'फोल्टर'क हाथक कठपुतली बना दैत अछि। लोकतंत्रक आवरणमे ई वास्तवमे नव-सामंतवाद थिक, जतय शोषक वर्ग सोझे शासन करबाक बदला दलितकें मुखौटा बना कऽ शासन करैत अछि। 'सशक्तिकरण' वास्तवमे नवका 'शोषण' कें जन्म दैत अछि। चुनाव चिह्न 'कोदारि' मजदूर वर्ग, श्रम, पसीना आ माटिक प्रतीक अछि। ई शोषित मुसबा आ ओकर पत्नी फेकनीक असली पहिचान थिक। चुनाव जितबाक लेल ई 'कोदारि छाप' अपन मूल अर्थ सँ कटि जाइत अछि। जे कोदारि खेत कोड़बाक काज अबैत छल, ओहि कोदारिक छाप आब मनरेगा योजनाक लाखो टाकाक घपला आ लूटक प्रतीक बनि जाइत अछि। शोषितक प्रतीक (कोदारि) कें शोषक (फोल्टर) अपन लाभक लेल 'हाइजैक' कऽ लैत अछि। कथाक अंतमे भ्रष्टाचारक जाँच होइत अछि आ फोल्टरक संगे-संग फेकनी सेहो गिरफ्तार भऽ जाइत अछि। ई देखाबैत अछि जे "कानून सभक लेल समान अछि"। की फेकनी वास्तवमे मुजरिम अछि? फेकनी अनपढ़ अछि, दारू आ प्रलोभनक जालमे फँसल ओकर पति मुसबा ओकरा चुनावमे ठाढ़ करबैत अछि, आ ओ मात्र कागज पर औंठा-छाप दैत रहल अछि। न्याय व्यवस्था फोल्टर (मास्टरमाइंड) आ फेकनी (शिकार) कें एकहि तराजू पर तौलैत अछि। एतय विखंडनवाद स्थापित करैत अछि जे तथाकथित 'न्याय' वास्तवमे अत्यंत अन्यायपूर्ण अछि, किएक तँ ई अज्ञानता आ व्यवस्थागत बेबसीकें सेहो 'अपराध' मानि लैत अछि। सामंती सोच वाला फोल्टर (केंद्र) मुसबा जहिना गरीब मजदूर कें नीचाँ देखाबैत अछि। मुदा सत्ता प्राप्त करबाक लेल (मुखिया बनबाक लेल) फोल्टर कें पूर्ण रूपेँ ओही दलित मुसबा आ ओकर पत्नी फेकनी (परिधि) पर निर्भर होवय पड़ैत अछि। शक्तिशाली फोल्टरक सत्ताक चाभी एकटा गरीब, अनपढ़ दलित महिलाक हाथमे अछि। ई शोषक आ शोषितक बीचक शक्ति-संतुलनकें विखंडित कऽ दैत अछि। "कोदारि छाप" स्पष्ट करैत अछि जे जा धरि समाजमे आर्थिक आ शैक्षिक असमानता (जेना मुसबाक गरीबी आ फेकनीक अशिक्षा) अछि, ता धरि केवल राजनीतिक आरक्षण (मुखिया पद) सँ कोनो वास्तविक बदलाव नहि आबि सकैत अछि। ई कथा शोषक वर्गक चालाकी आ कानूनी व्यवस्थाक डकढोल स्थितिक चित्र थिक।

९

"सहोदरा"मे रक्त-संबंध आ आर्थिक असुरक्षा, दू भायक बीच बँटवारा आ पुनः मिलापक कथा थिक। कथा ई स्थापित करैत अछि जे "सहोदर आखिर सहोदरे होइ छइ"। जनक अपन छोट भाय प्रेमकें पिता जकाँ पोसैत अछि। जखन जनक गरीबीमे फँसि मजदूरी करैत अछि, तखन सम्पन्न भऽ चुकल प्रेम अपन दोकान भायकें सौंपि दैत अछि। ई भाय-भायक प्रेमक एकटा आदर्श आ भावुक विजय थिक। ऐ कथामे पितृसत्ताक एकटा पैघ अंतर्विरोध नुकाएल अछि। घरमे बँटवाराक सम्पूर्ण दोष जनकक पत्नी (स्त्री) पर मढ़ि देल गेल अछि। समाज प्रायः पारिवारिक विघटनक मूल आर्थिक कारणकें छोड़ि स्त्रीकें 'घर फोरनी' वा कलहक कारण मानि लैत अछि। प्रेमक जे महानता देखाओल गेल अछि, ओ वास्तवमे ओकर आर्थिक संपन्नताक उपज थिक। जँ प्रेमक खेत एन. एच. (राजमार्ग) मे नहि पड़ितै आ ओकरा मुआवजासँ दोकान नहि भेटितै, तँ की ओ अपन भायकें ओतबा सहजतासँ उद्धार कऽ सकैत छल? ई कथा अचेतन रूपसँ ई साबित करैत अछि जे महानता आ त्यागक लेल सेहो 'पूँजी' क आवश्यकता होइत अछि।

१०

"विधवा विवाह" स्त्री-विमर्श आ 'पुरुष उद्धारक' क मिथकक कथा अछि, कथा अल्पायुमे विधवा भेल सुशीलाक संघर्ष आ पुनः विवाहक अछि। समाज विधवाक प्रति अत्यंत क्रूर अछि। सुशीलाकें ओकर सासु डनियाही आ अलक्ष कहैत छथि। समाज ओकरा पर खराप नजरि रखैत अछि मुदा अपनाबय लेल तैयार नहि अछि। कथा एकर विरोध करैत एकटा प्रगतिशील युवा (अभियन्ता) द्वारा

सुशीलाकें अपनाबय कें एकटा आदर्शक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। कथाक प्रारम्भमे सुशीलाक शारीरिक सुन्दरता (गोर वर्ण, पैघ आँखि, नम्हर केश) कें बहुत विस्तारसँ बताओल गेल अछि आ ओकरा 'ड्रीम गर्ल' कहल गेल अछि। जँ सुशीला कुरूप वा साधारण रूप-रंगक रहैत, तँ की अभियन्ता ओकरा बचाबय आ बिआह करबाक प्रस्ताव रखैत? स्त्रीक 'मूल्य' अखनो ओकर देह आ रूपे पर निर्धारित अछि। सुशीला समाजसँ आजिज आबि आत्महत्या करय जाइत अछि। ओकरा ऐ दुर्दशासँ निकालबाक लेल एकटा 'सक्षम पुरुष' (अभियन्ता) कें आबय पड़ैत अछि। सुशीला स्वयं स्वावलंबी भऽ कऽ समाजसँ नहि लड़ैत अछि; ओकर मुक्ति एकटा पुरुष सँ दोसर पुरुषक संरक्षणमे जाइ सँ होइत अछि। ई कथा प्रगतिशील भेलाक बादो स्त्रीकें 'असहाय' आ पुरुषकें 'रक्षक' मानबाक पारंपरिक पितृसत्तात्मक द्वैतवादकें नहि तोड़ि पबैत अछि।

११

"श्रमदानी बान्ह" समकालीन राजनीतिक व्यवस्था, संस्थागत भ्रष्टाचार आ 'डिजास्टर कैपिटलिज्म' (आपदा पूँजीवाद) क एकटा अत्यंत तीक्ष्ण आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। लोक अपन परेशानी (बान्ह टूटबाक खतरा) लऽ कऽ मुखिया लग जाइत अछि, किएक तँ मुखिया गामक निर्वाचित प्रतिनिधि आ रक्षक थिक। मुखिया आश्वासन दैत अछि जे ओ प्रशासन (बी. डी. ओ., सी. ओ.) कें बजा कऽ बान्हक मरम्मत कराओत। कथा ई स्थापित करैत अछि जे राज्य-सत्ता (जेकर प्रतिनिधित्व मुखिया कऽ रहल अछि) नागरिकक रक्षाक लेल नहि, मुदा शोषणक लेल अछि। मुखिया ग्रामीण लोककें बान्ह पर माटि देबय सँ रोकि दैत अछि। एतय 'रक्षक' (मुखिया) वास्तवमे 'भक्षक' प्रमाणित होइत अछि जे रातिक अन्हारमे अपन लठैतसँ बान्ह कटवा दैत अछि। ई लोकतंत्रमे जन-प्रतिनिधित्वक दाबाकें पूर्णतः विखंडित कऽ दैत अछि। राजनीतिक दृष्टिसँ ई कथा नव-उदारवादी अर्थव्यवस्थामे 'आपदा' कें 'अवसर' मे बदलबाक क्रूरतम रूपकें उजागर करैत अछि। मुखिया लेल गामक विनाश कोनो त्रासदी नहि, बल्कि एकटा 'प्रोजेक्ट' थिक। ओ स्पष्ट कहैत अछि जे जँ बान्ह नहि टूटत तँ घर केना खसत, आ जँ घर नहि खसत तँ इन्दिरा आवास, फसल-क्षति आ राहतक राशीमे ओकरा कमीशन (घूस) केना भेटत। एतय मानवीय पीड़ा आ बर्बादीकें सीधा-सीधा आर्थिक लाभमे बदलल जा रहल अछि। ई कथा स्पष्ट करैत अछि जे भ्रष्ट व्यवस्थामे 'विकास' लेल 'विनाश' एकटा आवश्यक पूर्व-शर्त बनि जाइत अछि। बान्हक नाम "श्रमदानी बान्ह" अत्यंत प्रतीकात्मक अछि। 'श्रमदान' जनताक सामूहिक शक्ति, आत्मनिर्भरता आ सामूहिकताक प्रतीक थिक। जखन सत्ता (मुखिया) ऐ बान्हकें कटबैत अछि, तँ ई केवल माटिक देवालकें तोड़नाइ नहि थिक, ई वास्तवमे जनताक 'सामूहिक श्रम' आ 'आत्मनिर्भरता' कें राज्य द्वारा नष्ट करबाक प्रतीक थिक। सत्ता नहि चाहैत अछि जे जनता आत्मनिर्भर रहय; ओ चाहैत अछि जे जनता घर-विहीन भऽ कऽ 'राहत' आ 'इन्दिरा आवास' लेल सत्ताक मोहताज बनल रहय। मुखिया लालचमे बान्ह कटबैत अछि आ अंततः पानिमे डूबि कऽ ओकरे अपन बेटा (अमित) क मृत्यु भऽ जाइत अछि। ई अछि "कर्म-फल" क संदेश। सत्ता आ विशेषाधिकारक नशामे मुखिया मानि लैत अछि जे ओ अपन रचल गेल विनाशी व्यवस्थासँ अछूत रहत। ओ सोचैत अछि जे बाढ़िक पानि केवल 'गरीब' कें डुबओत। मुदा प्राकृतिक आपदा आ भ्रष्ट व्यवस्थाक गठजोड़ आन्हर होइत अछि। शोषक वर्ग दोसरो लेल खाधि खनित करैत अछि, ओकर स्वयं कें सुरक्षित रहबाक भ्रमक अंततः टूटनाइ निश्चित अछि। 'मुखियाक सत्ता' प्रकृति आ कर्मक अगाड़ि असहाय भऽ जाइत अछि। "श्रमदानी बान्ह" केवल एकटा भ्रष्ट मुखियाक व्यक्तिगत पतनक कथा नहि थिक, बल्कि ई समूचा 'सिस्टम' कें कटघरामे ठाढ़ करैत अछि। ई देखबैत अछि जे कोना संस्थागत लालच आम नागरिकक जीवनकें दाँव पर लगा दैत अछि, आ कोना सत्ताक केंद्र अपनहि रचल गेल जालमे अंततः फाँसि जाइत अछि।

१२

उमेश पासवान जीक कथासभ समाजक यथार्थवादी आ मार्मिक चित्र खींचैत अछि, मुदा एकर विश्लेषण ई देखाबैत अछि जे समाजक सुधारवादी सोचक भीतरो कतहु ने कतहु पारंपरिक पूर्वाग्रह आ आर्थिक यथार्थ नुकाएल रहैत अछि।

३१. 'दीयरि': रा. ना. सुधाकरक कथा-संग्रहक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

सारांश

रा. ना. सुधाकरक मैथिली कथा-संग्रहक बहुआयामी समीक्षा रामनारायण सुधाकर (रा. ना. सुधाकर) लिखित "दीयरि" (मैथिली कथा-संग्रह) नेपालक विराटनगर केन्द्रित मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि। प्रकाशकीयमे उल्लिखित अछि जे लेखक लगभग साठि वर्षसँ लिखैत आबि रहल छथि, मुदा प्रकाशन आ प्रचार-प्रसारक अभावमे साहित्य जगतसँ ओझरायल रहलाह। ई संग्रह नेपाल विद्यापीठ मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार-२०६५ सँ सम्मानित अछि।

बीजशब्द: दीयरि · सुधाकरक · संग्रहक · समग्र · साहित्यिक · मूल्यांकन · कथाक

दीयरि: एक समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

रा. ना. सुधाकरक मैथिली कथा-संग्रहक बहुआयामी समीक्षा

प्रारम्भिक टिप्पणी: पोथीक स्वरूप आ महत्त्व

रामनारायण सुधाकर (रा. ना. सुधाकर) लिखित "दीयरि" (मैथिली कथा-संग्रह) नेपालक विराटनगर केन्द्रित मैथिली साहित्यक एक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज अछि। प्रकाशकीयमे उल्लिखित अछि जे लेखक लगभग साठि वर्षसँ लिखैत आबि रहल छथि, मुदा प्रकाशन आ प्रचार-प्रसारक अभावमे साहित्य जगतसँ ओझरायल रहलाह। ई संग्रह नेपाल विद्यापीठ मैथिली पाण्डुलिपि पुरस्कार-२०६५ सँ सम्मानित अछि। पोथीमे कुल बाइसटा कथा संकलित अछि।

भाग एक: संग्रहक संरचनात्मक विश्लेषण

१.१ संग्रहक भौगोलिक-सांस्कृतिक आधारभूमि

सुधाकरजीक कथा-विश्व मुख्यतः तीन भौगोलिक क्षेत्रमे केन्द्रित अछि:

क) बॉर्डर एरिया (जोगबनी-विराटनगर सीमा क्षेत्र): "संधि", "खुट्टी पर टाँगल ब्रा", "चान असोथकित अछि" सन कथामे ई सीमान्त क्षेत्रक जटिल सामाजिक-आर्थिक परिवेश प्रस्तुत भेल अछि। लेखक स्वयं एहि "बॉर्डर एरिया"मे रहैत साहित्य-साधना कयलनि, से कथाक प्रामाणिकतामे झलकैत अछि।

ख) ग्रामीण मिथिला: "प्रदक्षिणा", "झखड़ल फूलक गाछ", "सुनगैत करेज", "थकुचल मासुक बुट्टी" आदि कथामे मैथिल ग्रामीण जीवनक विस्तृत चित्रण भेटैत अछि - पोखरि, ईनार, तुलसी चौरा, माटिक गंध, सरसोक फूल - ई सभ स्मृतिचित्र एकटा विस्थापित आत्माक नोस्टाल्जियाक अभिव्यक्ति थिक।

ग) शहरी परिवेश (विराटनगर): "दीयरि", "घरमुँहा", "चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि", "नुक्का चोरी", "कर्जखोर" - ऐ कथा सभमे औद्योगिक-शहरी जीवनक संघर्ष, आर्थिक दबाव, आ पारिवारिक विघटन केन्द्रमे अछि।

१.२ कालक्रम आ रचनाकाल

संग्रहक कथा सभक रचनाकाल व्यापक अछि: १९७६-७७ ई. ।

ई कालविस्तार (१९७६-२०२०, अर्थात् ४४ वर्ष) बतबैत अछि जे सुधाकरजीक लेखन-यात्रा कतेक दीर्घ आ निरन्तर रहल अछि। एकटा कथाकारक विकास-यात्रा एहि संग्रहमे दृष्टव्य अछि।

भाग दू: कथा सभक विस्तृत समीक्षा

२.१ "प्रदक्षिणा"- स्मृति, विस्थापन आ गामक मृत्यु

कथासूत्र: बाहर बारह वर्ष रहि गाम आयल एक पुरुष (बचनू) गामक पूर्णतः बदललाह स्वरूप देखि आघात पबैत अछि। गामक लोक अनचिन्हार भ' गेल, मित्र बिसरि गेल, पोखरि सूखि गेल, भालसरी गाछ उखड़ि गेल।

विस्तृत विश्लेषण:

एहि कथामे Thomas Hardyक "The Return of the Native" सन भावभूमि अछि - घुरल व्यक्ति आ बदललाह परिवेशक बीचक टकराव। मुदा सुधाकरजीक दृष्टि अधिक मार्मिक अछि। बचनू जे गाम छोड़लक से अर्थनैतिक विवशतासँ, आ जखन घूमि आयल तखन गामक आत्मा मरि गेल छल।

कथाक सर्वाधिक मार्मिक अंश - बचनूकेँ बुझेलै जेना ओकर गाम कतौ छुटि गेलै... ओकर मित्र कतौ भुतिया गेलै... आ भालसरीक फूल कतौ छिरिया गेलैए... आ स्वयं कोनो बियावानमे शनि गाछक टकुआ तान काँट जकाँ ठमकि गेल अछि।

पौराणिक स्तर: कथामे प्रदक्षिणाक प्रतीक महत्त्वपूर्ण अछि। हिन्दू परम्परामे गाम वा मन्दिरक प्रदक्षिणा मांगलिक होइत अछि, मुदा एहि कथामे बचनूक गामक प्रदक्षिणा एक शोकयात्रा बनि जाइत अछि- ओ अपन अतीतक प्रदक्षिणा करैत अछि जे आब अस्तित्वमे नहि रहल।

भारतीय साहित्यशास्त्रक दृष्टिसँ: करुण रस प्रधान एहि कथामे विप्रलम्भ श्रृंगार (बिछड़नक वेदना) सेहो अन्तर्धारा बनि प्रवाहित होइत अछि- बचनू आ ओकर बाल्यकालक मित्र मण्डलीक वियोग।

२.२ "दीयरि" - पारिवारिक दबावक बीच स्त्री-अस्मिता

कथासूत्र: एक मध्यवर्गीय परिवारमे बुढ़ा ससुर, पत्नी सुशीला (जे बीमार अछि), आ पतिक (कथाक प्रथम पुरुष वाचक) बीचक जटिल सम्बन्ध। बुढ़ा ससुर आर्थिक स्वच्छन्दता चाहैत छथि, सुशीला पीड़ामे जीबि रहली छथि, आ पति दुनू दिशाक दबावमे पिसाइत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

शीर्षक "दीयरि" (सागरमे दुनू दिशाक जल-प्रवाहसँ घेरायल रहैत अछि) एक सटीक रूपक अछि - पति दुनू दिशासँ आबैत दबावक बीचमे दीयरि जकाँ स्थित अछि।

कथाक सर्वाधिक मार्मिक अंश:

लालटेन भकभका रहल अछि, एक कात सुशीलाक आकांक्षाक महल, एम्हर बुढ़ाक वात्सल्यक टिम-टिमाइत दीप। ओही महलमे ओ दीप जरत? ने ओ महल बूढ़ाकेँ सोहाइत छनि आ ने ओहि दीपकेँ सुशीला पोसय चाहैत छथि।

मनोविश्लेषणात्मक दृष्टि: Sigmund Freud क Oedipus Complex क परिप्रेक्ष्यमे देखल जाय तँ सुशीलाक ससुरसँ मनोवैज्ञानिक द्वन्द्व एक सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक परत बनबैत अछि। मुदा सुधाकरजी एहि स्थितिकेँ कोनो रहस्यमय वा सनसनीखेज ढंगसँ नहि प्रस्तुत करैत छथि- वरन् सामान्य पारिवारिक जटिलताक रूपमे देखबैत छथि।

स्त्री-विमर्श: सुशीला एहि कथाक केन्द्रीय शक्ति अछि, मुदा ओ मौन शक्ति अछि। ओकर रोग, ओकर निरुपाय स्थिति, आ पतिक असहायता - ई त्रिकोण एहि कथाकेँ स्त्री-यातनाक एक प्रामाणिक दस्तावेज बनबैत अछि।

२.३ "चोलिया मे चोर बसे गोरी" - ग्रामीण यौवन आ देह-भाषा

कथासूत्र: दू युवती (समतोलिया आ विलटा) घास काटैत-काटैत अपन प्रेम, ईर्ष्या, आकर्षण आ यौवनक उत्साहमे डुमल अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

मार्च १९८४मे "माटि-पानि" पत्रिकामे प्रकाशित एहि कथामे एकटा मुक्त कथानक अछि, जे बाशी नहि अछि। ई कथा D. H. Lawrence क ग्रामीण यौवन-चित्रण सन मुक्त आ प्रकृतिसँ जुड़ल अछि।

कथाक सौन्दर्य एहि पंक्तिमे- एक कात दूर धरि सरिसवक पीअर फूल सँ बाध गमकै छलै... दोसर दिस पाँच-पाँच हाथक पोरगर कुसियार रस सँ मातल-मदहोस भेल झुकि-झुकि कऽ बौरा रहल छलैक..

प्रकृति मात्र पृष्ठभूमि नहि, अपितु पात्रकेँ प्रभावित करएवाली शक्ति अछि- प्रकृतिक उर्वरता आ यौवनक उर्वरता एकात्म भ' जाइत अछि।

लोक-साहित्यक सन्दर्भ: कथा शीर्षक स्वयं एक लोकगीतक पंक्ति थिक। सुधाकरजी लोक-परम्पराकेँ आधुनिक कथामे सहजतासँ बुनैत छथि।

नारीवादी दृष्टि: विलटा आ समतोलियाक सम्बन्ध एक सशक्त female bonding (स्त्री-मैत्री) देखबैत अछि- जे पुरुष-केन्द्रित साहित्यमे प्रायः उपेक्षित रहैत अछि।

२.४ "खुट्टी पर टाँगल ब्रा"- बाजारवाद आ स्त्री-देह

कथासूत्र: बुचिया दोकानमे जाइत अछि। गंगबा (दोकानदार) विभिन्न वस्तु देखबैत-देखबैत अन्ततः एक ब्रा (ब्रसियर) बुचियाकेँ दैत अछि। बुचियाक मनोद्वन्द्व- ओकर आर्थिक विवशता आ शारीरिक आवश्यकता- कथाक केन्द्रमे अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

अक्टूबर १९८४मे रचित ई कथा अपन रचनाकालक अत्यन्त साहसी कृति थिक। एहि विषयपर मैथिली साहित्यमे कोनो अन्य लेखक ओइ कालमे नहि लिखलनि।

बाजारवादक आलोचना: बाजारक आलोचना एहि कथामे दर्शाओल गेल अछि।

गंगबाक चरित्र बाजारवादक प्रतीक अछि- ओ स्त्री-देहकेँ व्यावसायिक दृष्टिसँ देखैत अछि।

Marxist दृष्टिकोण: स्त्री-शरीरक commodification (वस्तुकरण) एहि कथाक केन्द्रीय थीम थिक। बुचियाक आर्थिक विवशता ओकरा गंगबाक जालमे फँसबैत अछि। वर्गीय शोषण आ लैंगिक शोषण एक संग काज करैत अछि।

Foucault: Michel Foucault कहने छलाह जे "power operates on the body" - एहि कथामे गंगबाक नजरि, ओकर "व्यावसायिक मुस्की", आ अन्ततः खूँटीपर लटकल ब्रा- ई सभ शक्ति-सम्बन्धक दृश्यमान अभिव्यक्ति थिक।

कथाक अन्तिम पंक्ति -.. ओकर नजरि ओइ टाँगल ब्रेसियरपर ठमकि जाइत छै। ओकरा लगैत छै जे भीतरक बकुटलहा... ब्रेसियरक दुनु धोकरी मे भरि कऽ ओ अपने हाथे लटका देने अछि.. - ई पंक्ति स्त्रीक निःसहाय अवस्था आ बाजारक निर्मम चरित्रकेँ व्यक्त करैत अछि।

२.५ "चान असोथकित अछि" - वृद्धावस्था, काम-भावना आ सामाजिक पाखण्ड

कथासूत्र: सुशील बाबू वृद्ध छथि, हाफी लगैत छनि, मुदा माया (ओकर देखभाल करनिहारि) ओकरा उत्तेजित करैत रहैत अछि। माया स्वयं यौन-असन्तोषसँ पीड़ित अछि- मनटूनमा (ओकर पति) नपुंसक प्राय अछि। सुशील बाबू अन्ततः मनटूनमाकेँ एक नव "सुतनाहर" (चौकीदार) राखि दैत छथि।

विस्तृत विश्लेषण:

ई कथा अत्यन्त जटिल मनोवैज्ञानिक भूमिमे स्थित अछि। "चान असोथकित अछि"- चन्द्रमा अशान्त/थाकल अछि- ई शीर्षक स्वयं एक कामुक व्यंजना थिक।

Simone de Beauvoir: माया एक अर्थमे de Beauviorक "second sex"क प्रतिनिधि थिक- ओ अपन शारीरिक आवश्यकताक लेल पुरुष-केन्द्रित व्यवस्थापर निर्भर अछि। ओकर उत्सुकता, ओकर छटपटाहटि- ई मानवीय अभिव्यक्ति थिक जे समाज दमित करैत अछि।

वृद्धावस्था आ काम-भावना: साहित्यमे प्रायः वृद्धजनक काम-भावनाकेँ हास्यास्पद वा निन्दनीय चित्रित कएल जाइत अछि। सुधाकरजी एहि विषयकेँ करुणा आ सहानुभूतिसँ देखैत छथि- सुशील बाबूक "हाफी" मात्र शारीरिक लक्षण नहि, अपितु वृद्धावस्थाक एक त्रासद अनुभव अछि।

नैतिक जटिलता: कथाक नैतिक ढाँचा सरल नहि अछि। मायाक आत्मत्याग आ.. दुनूकेँ कथाकार सुधाकर सहानुभूतिसँ देखैत छथि- निन्दाक दृष्टिसँ नहि।

२.६ "झखड़ल फूलक गाछ"- बहुविवाह आ स्त्री-वेदना

कथासूत्र: जीवछा, खनजनियाँ आ फुलिया। जीवछाक सतमाय खनजनियाँ संगे अवैध सम्बन्ध राखैत अछि। दुनू स्त्री बीचक द्वन्द्व आ जीवछाक नैतिक पतन उद्घाटित होइत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

ई कथा १४.११.७६ मे रचित- रचनाकालक हिसाबसँ सुधाकरजीक प्रारम्भिक रचनामे सँ एकटा, मुदा विषयक साहस अतुलनीय।

खनजनियाँक चरित्र: खनजनिया कथाकेँ शक्ति दैत अछि। ओ कहैत अछि - "हमरा जीवछासँ दूर नहि करै... कोनो कोनमे हम पड़ल रहब।" ई पंक्ति एक स्त्रीक निरुपाय स्थिति उजागर करैत अछि- किएकि आर्थिक, सामाजिक आ मनोवैज्ञानिक निर्भरता ओकरा बान्हि कऽ राखने अछि।

बूढ़ी खनजनियाँक प्रतीकार्थ: बूढ़ी खनजनियाँ (जीवछाक सतमाय)- झखड़ल फूलक गाछ जकाँ फुलिया बड़ा बेदर्दीसँ उखाड़ि कऽ आँगनमे फेक देलकैए।

शीर्षकक सार्थकता: "झखड़ल फूलक गाछ" वार्धक्य आ परित्यागक एक सुन्दर रूपक थिक।

२.७ "घरमुँहा"- शहरी एकाकीपन आ पारिवारिक विघटन

कथासूत्र: कथावाचक (पति) आ ओकर पत्नी विराटनगरक एक छोट कोठलीमे रहैत छथि। संघर्ष, आर्थिक विपन्नता, पत्नीक बीमारी, आ एहि सभक बीच पतिक मनोयन्त्रणा।

विस्तृत विश्लेषण:

एहिमे एकटा परिवारक सम्पूर्ण जीवन-संघर्ष मात्र कनिया बिम्बसभमे देखाओल गेल अछि।

चूल्हिक बिम्ब: कोठरीमे चूल्हिपर राखल भात-दालिक हंडी“लोहियामे झाँपल आलू-अरिकोंचक तरकारी” बेंचपर राखल थारी-कटोरी“ई सभ वस्तुसूची मात्र विवरण नहि, ई एक जीवन-संघर्षक दृश्यमान चिह्न थिक।

पहचान-संकट: कथावाचक ने शहरी जीवन बुझि-गमि-रमि सकला ने अपन ग्रामीण माटिक सुगन्ध बिसरि सकला... ने ओइ माटिक लसफसी सँ उबरि सकला। ई विराटनगरमे बसल मैथिलजनक सार्वभौमिक अनुभव थिक।

२.८ "उपहार" - यशोधरा-प्रतीकमे आधुनिक स्त्री-यातना

कथासूत्र: यशोधराक पति गौतम घरसँ भागि गेल छलनि- आआरोप-प्रत्यारोप, परिवारक अपेक्षा, आ ओकर एकाकीपन चित्रित अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

मिथकीय सन्दर्भ: सुधाकरजी यशोधरा आ गौतम-बुद्धक मिथककेँ आधुनिक सन्दर्भमे पुनर्व्याख्यायित करैत छथि। गौतम (आधुनिक पुरुष) अपन आदर्शक पाछाँ भागि जाइत अछि, आ पाछू छोड़ि जाइत अछि यशोधराकेँ- अपन राहुलकेँ।

विडम्बना: कथाक अन्तमे यशोधरा राहुल (बच्चा) केँ कोरामे उठबैत अछि- "गौतमक प्रथम आ अन्तिम उपहार।" ई पंक्ति एकटा व्यंग्य थिक - पुरुषक सर्वोच्च "उपहार" एक बच्चा अछि।

२.९ "चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि" - बेरोजगारी, पत्नी आ मित्र-विश्वासघात

कथासूत्र: विनोद बेरोजगार अछि। चन्दाक व्यवहार ओकरा आहत करैत अछि। बेरोजगारीक समयमे उपेक्षा, मित्रक विश्वासघात।

विस्तृत विश्लेषण:

आर्थिक नपुंसकता आ पुरुष-अस्मिता: पितृसत्तात्मक समाजमे पुरुषक पहचान ओकर कमाइसँ जुड़ल अछि। विनोदक बेरोजगारी मात्र आर्थिक समस्या नहि- ओकर पुरुष-अहंकार, ओकर सामाजिक प्रतिष्ठा, ओकर पत्नीक दृष्टिमे ओकर "मूल्य” - सभ एकसंग खतरामे पड़ि जाइत अछि।

चन्दाक चरित्र: चन्दाक चरित्र एकआयामी नहि अछि। ओ कोनो खलनायिका नहि। ओकर फर्माइश, ओकर असन्तोष- ई मानवीय प्रतिक्रिया थिक एक एहन सिस्टमक प्रति जे स्त्रीक सपना आ आकांक्षाकेँ फजूल मानैत अछि। मुदा अन्ततः ओकर व्यवहार विनोदकेँ तोड़ि दैत अछि।

कथाक शीर्षक: "चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि"- विनोदक जीवनक रूपक थिक, जे बिना कोनो सहाराक उड़ि रहल अछि।

२.१० "नुक्का चोरी"- वर्जित प्रेम आ सामाजिक बाधा

कथासूत्र: चन्दन आ विभा दू युवा छथि, ओ "पाहुन" सम्बन्धमे छथि आ पारिवारिक संरचना ओकर प्रेमकेँ "अवैध"बनबैत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

सम्बन्धक जटिलता: "पाहुन" जेहन सम्बन्धमे कोनो रोमाण्टिक भावना वर्जित मानल जाइत अछि। मुदा चन्दन आ विभाक आकर्षण ऐ बाधाकेँ पार करैत अछि।

चन्दनक द्वन्द्व: ई एकटा genuine emotional connection थिक जे सामाजिक संरचनाक विरुद्ध जाइत अछि।

रोमाण्टिक-यथार्थवादी सन्तुलन: सुधाकरजी एहि सम्बन्धकेँ ने महिमामण्डित करैत छथि, ने निन्दित करैत छथि। ओ मात्र दूटा मानवीय हृदयक छटपटाहटि देखबैत छथि।

२.११ "कर्जखोर"- ऋण-जाल आ मध्यवर्गीय यन्त्रणा

कथासूत्र: दास जी एक बेरोजगार मध्यवर्गीय व्यक्ति छथि जे कतेक लोकसँ कर्ज लेने छथि - ध्रुवजी १५००, गोपाल (तकिया, जाजिम, चादर) वीरेन्द्र ५००, उमाशंकरजी ४००, प्रदीप ५९०, हरिशंकरजी १७०० लगभग- ई कर्जसूची जीवनक कारुण्यकेँ व्यक्त करैत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

यथार्थवादी विवरण: कर्जक फेहरिस्त एकटा literary device (साहित्यिक उपकरण) थिक - कागज-कलम ल' क' बनाओल सूची एक व्यक्तिक पूरा जीवन-संघर्षक लेखाजोखा बनि जाइत अछि।

प्रदीपक प्रसंग: प्रदीप (महाजन जकाँ) आ दास जीक बीचक सम्बन्ध मार्मिक अछि। प्रदीप कहैत अछि - "देखु दास जी, अहाँ ले"एते पाइ कोनो बड़का पहाड़ नहि छै... कनियो ध्यान देबै तँ इन्तजाम भ' जेतै।" ई पंक्ति एक जटिल power dynamic उजागर करैत अछि - जे कर्जदार हो ओकर dignity (प्रतिष्ठा) धीरे-धीरे क्षीण होइत जाइत अछि।

Marx: ऋण एक एहन chain (जंजीर) थिक जे पूँजीवादी समाजमे मध्यवर्गीय व्यक्तिकेँ बन्धुआ बनबैत अछि। दास जीक स्थिति "debt bondage"क एक साहित्यिक उदाहरण थिक।

२.१२ "रामपरी"- पत्र-साहित्य आ स्त्री-अन्तर्द्वन्द्व

कथासूत्र: कथाक वाचक "सूर्यमुखी" (एक युवती) रामपरी (ओकर सखी) केँ पत्र लिखैत अछि। पत्रमे अपन जीवनक उल्लेख।

विस्तृत विश्लेषण:

Epistolary Form (पत्र-विधा): ई कथा epistolary form (पत्रविधा) मे लिखल गेल अछि- जे मैथिली कथा-साहित्यमे दुर्लभ प्रयोग थिक। पत्रक भाषामे एक आत्मीयता आ अनौपचारिकता होइत अछि जे सोझ वाचनसँ अलग होइत अछि।

गीतक समावेश: कथाक मध्यमे एक गीत- एहि गीतक समावेश कथाकेँ एक अतिरिक्त भावात्मक आयाम दैत अछि। भारतीय साहित्यमे गीत-कथाक मिश्रण एकटा पुरान परम्परा थिक।

२८.८.७६ क तिथि: पत्रक अन्तमे "तोरे सूर्यमुखी (२८.८.७६)" - ई तिथि-उल्लेख कथाकेँ एक ऐतिहासिक दस्तावेज बनबैत अछि।

२.१३ "अस्तित्व" - तीन भाइ, एक बूढ़ बाप, आ सम्पत्ति-विवाद

कथासूत्र: तीन भाइ (श्रीकान्त, शशिकान्त, सुधाकान्त) आ बूढ़ बाप। बूढ़ बापक देखभाल, भानस-भात, आ पत्नी-केन्द्रित अलगाव-प्रवृत्ति।

विस्तृत विश्लेषण:

संयुक्त परिवारक विघटन: "अस्तित्व" संयुक्त परिवार व्यवस्थाक पतनक आख्यान थिक। तीनू भाइ अपन-अपन पत्नीक दबावमे अलग-अलग घर बनेबाक सोचि रहल छथि।

बूढ़ाक मार्मिक अवस्था: बूढ़ा सन्दूकपर पड़ल-पड़ल अचानक सचेत भ' जाइत छथि। एहि एक छोट विवरणमे एक बाप-बेटाक सम्पूर्ण मनोवैज्ञानिक सम्बन्ध व्यक्त भ' जाइत अछि।

व्यंग्यात्मक आलोचना: गुड़ चाउर फाँकि रहल ई कथा एक व्यंग्यात्मक चित्र खींचैत अछि।

२.१४ "सुनगैत करज" - बाल मनोविज्ञान आ वयस्क-संसार

कथासूत्र: महेशवा (एक छोट बच्चा) स्कूल छोड़ि गाछीमे खेलाइत अछि आदि आदि।

विस्तृत विश्लेषण:

बाल-दृष्टिकोण: सुधाकरजी एहि कथामे बाल-मनोविज्ञानकेँ अत्यन्त संवेदनशीलतासँ उजागर करैत छथि। महेशवाक भूख, ओकर जिज्ञासा, ओकर "विद्रोह", बीड़ी पीनाइ- ई सभ बालकेँ एक सम्पूर्ण मानव-सत्ता प्रमाणित करैत अछि।

महादेवक सिक्का: महेशवा महादेवक लिंगपर राखल पाइ देखि ओकरा उठा लैत अछि। ई दृश्य गहींर प्रतीकात्मक अर्थ राखैत अछि।

२.१५ "थकुचल मासुक बुट्टी" - कला, यौवन आ समाजक हिंसा

कथासूत्र: ललनमा (एक प्रतिभाशाली बाँसुरी-वादक आ गायक) आ कथावाचक बच्चेसँ मित्र छथि। मुदा ललन आस्ते-आस्ते हिंसाक रस्ता पकड़ि लैत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

कलाकारक त्रासद नियति: ललनक बाँसुरी-प्रतिभा समाज द्वारा पोषित नहि, वरन् नष्ट क' देल जाइत अछि। ई कथा प्रश्न उठबैत अछि- कोन समाज अपन प्रतिभाशाली सन्तानकेँ हिंसक होइले विवश करैत अछि?

ललन-कथावाचक: आँजुरमे भुज्जा आ गीत।

२.१६ "खण्डित लोक" - पीढ़ी-संघर्ष आ परम्परा-आधुनिकताक टकराव

कथासूत्र: लालचन बूढ़ा आ ओकर परिवारक बीचक पीढ़ीगत संघर्ष। बूढ़ा प्रेमचन्द-शरतचन्द-जयशंकर प्रसादक आदर्शवादसँ जीवन जीलनि, मुदा परिवार ओकर मूल्यकेँ नकारि देलक।

विस्तृत विश्लेषण:

माँछक प्रसंग: बूढ़ा मछरी किनि आनैत छथि। बूढ़िया कहैत छथि - "धौर! आब एत' मुनहारि साँझमे के बनेतै माँछ?"- ई एक साधारण घरेलू प्रसंग थिक, मुदा एहिमे दुटा पीढ़ीक दुटा दुनिया टकरा जाइत अछि।

आदर्शवाद आ यथार्थवाद: वएह ओकर पाथेय छल- बूढ़ाक साहित्यिक आदर्शवाद। मुदा ई गमकौआ आदर्श कि ने बुझनाहर। आधुनिक वास्तविकता। दुनूक बीच बूढ़ा एकाकी अछि।

२.१७ "छागर" - बहुसम्बन्ध आ स्त्री-प्रतिरोध

कथासूत्र: चन्दन आ रूपम/ रूपाक विवाह भेलनि अछि। चन्दनक माय (सासु) निरन्तर रूपमकेँ प्रताड़ित करैत रहैत छथि। रूपम अन्ततः अपन प्रतिरोध व्यक्त करैत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

"छागर" शीर्षक एक व्यंग्यात्मक प्रतीक थिक - जे छागर (बकरी) बलि देबाक लेल पोसल जाइत अछि, से रूपा सासुरक लेल बलिपशु जकाँ थिक।

सासु-बहूक सम्बन्ध: भारतीय साहित्यमे ई सम्बन्ध बारम्बार आयल अछि। मुदा सुधाकरजी ऐ विषयमे नहि तँ सासुकेँ खलनायिका बनबैत छथि, नहि रूपाकेँ एकमात्र पीड़िता। चन्दन (पति) कतहु बीचमे अछि - मुदा ओकर मौन सेहो एक प्रकारक सहयोग थिक शोषणमे।

२.१८ "परिवेश" - राजनीति, व्यक्तिगत महत्त्वाकांक्षा आ नैतिक पतन

कथासूत्र: बच्चा भाइ (एक गाँवक प्रभावशाली व्यक्ति) आ मनोहरक पढ़ल-लिखल परिवार। चन्द्रकान्त (एक युवक) एहि झगड़ामे पड़ि जाइत अछि। चन्द्रकान्तकेँ बच्चा भाइक पक्षक लोक पिटैत अछि।

विस्तृत विश्लेषण:

राजनीतिक व्यंग्य: "जनकपुरसँ प्रकाशित संकेत मे, जनवरी, १९९१" मे प्रकाशित ऐ कथाक पृष्ठभूमि नेपालमे लोकतान्त्रिक परिवर्तनक पूर्वकाल थिक। बच्चा भाइक सत्ता-भोग, ग्रामीण राजनीतिक षड्यन्त्र- ई सभ एहि ऐतिहासिक काल-खण्डक दर्पण थिक।

२.१९ "छाहरि तर" क काँट"- भाइचारा, स्त्री-प्रश्न आ न्याय

कथासूत्र: शशिकान्त आ हेमकान्तक बीचक सम्बन्ध। सुमित्रा (शशिकान्तक पत्नी) आ श्यामा (हेमकान्तक पत्नी)- दुटा स्त्री। एक सम्पत्ति-विवाद, एकटा थापड़।

विस्तृत विश्लेषण:

खीराक रूपक: खीराक गाछ - दूटा खीरा एके बिया, एके माटि, एके बाँसक सहारापर बढ़ैत-बढ़ैत छीपधरि पहुँचि गेल- मुदा "। भाइचाराक टुटबाक मार्मिक विवरण।

२.२०." संधि"- बोर्डर एरिया, दुनू बेकतीमे अट्ठाबज्जर।

रसिया आदमी कबीरदासक बोली बाजैत अछि से दुनू बेकतीमे अट्ठाबज्जर खसलैए। दुनू कमाइए। मुदा सत्तैसमे दिन मेल भऽ गेलै। भारत नेपालक सन्धि टुटना २९ दिन भऽ गेल छै।

२.२१. "स्वप्न-भंग" - प्रेम, कल्पना आ यथार्थक संघर्ष

कथासूत्र: श्रीकान्त पद्माक प्रति अनुरक्त छथि। हिनक Diary सन आन्तरिक एकालाप।

विस्तृत विश्लेषण: ई कथा सर्वाधिक Romantic (स्वच्छन्दतावादी) शैलीक अछि। "स्वप्न-भंग" नाम स्वयं Romantic आन्दोलनक एक महत्त्वपूर्ण थीम थिक।

२.२२. "कोनो एक दिन" - कोविड-महामारी आ मानवीय एकाकीपन

कथा ३ अक्टूबर, २०२०क रचित- कोविड-कालक लकडाउनक पृष्ठभूमिमे एक पति-पत्नीक रात्रि-वार्तालाप। पुरान स्मृति, वर्तमानक असन्तोष।

विस्तृत विश्लेषण:

संग्रहमे ई एकमात्र कथा अछि जे महामारी-कालक अनुभवकेँ दर्ज करैत अछि। अन्तमे- पूर्णिमा छलै ओइ दिन.. - ई पंक्ति भूतक स्मृतिक वर्तमानमे पुनरागमनकेँ व्यक्त करैत अछि।

भाग तीन: गंगेश उपाध्यायक नव्य न्यायक प्रकाशमे विश्लेषण

३.१ नव्य न्यायक मूलभूत प्रत्यय

गंगेश उपाध्याय (लगभग १३२० ई. मे सक्रिय मिथिला-दार्शनिक) रचित "तत्त्वचिन्तामणि" नव्य-न्याय दर्शनक आधारभूत ग्रन्थ थिक। एहि दर्शनमे:

व्याप्ति—सार्वत्रिक सम्बन्ध

अनुमान (Inference/अनुमान)

शब्द (Verbal testimony)

प्रत्यक्ष (Direct perception)

उपाधि (Condition/qualifier)

ई सभ प्रमुख ज्ञान-माध्यम छथि।

३.२ "दीयरि"क नव्य न्यायिक विश्लेषण

व्याप्ति (Universal Relation) क सन्दर्भमे: नव्य न्यायमे व्याप्ति अर्थात् कारण-कार्यक सार्वभौमिक सम्बन्ध - जेना "जतऽ धुआँ, ततऽ आगि।" सुधाकरजीक कथामे एक व्याप्ति स्पष्ट दृष्टव्य अछि:

जतऽ आर्थिक विपन्नता, ततऽ पारिवारिक विघटन।

"कर्जखोर", "घरमुँहा", "दीयरि", "चिल्होड़ि उड़ि रहल अछि"- एहि सभ कथामे ई व्याप्ति सुसंगत रूपमे प्रकट होइत अछि। नव्य न्यायक दृष्टिसँ ई "व्यापकता" सुधाकरजीक साहित्यिक जगत्-दर्शनक आधार थिक।

अनुमान (Inference) क सन्दर्भमे: नव्य न्यायमे त्रिविध अनुमान होइत अछि- केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी आ अन्वयव्यतिरेकी। सुधाकरजीक कथामे पात्रसभ अनुमानक आधारपर निर्णय लैत छथि, मुदा ओ अनुमान प्रायः भ्रमपूर्ण होइत अछि - अनुमान कखनो काल त्रुटिपूर्ण निकलैत अछि। [कथा- परिवेश]

उपाधि (Condition) क सन्दर्भमे: नव्य न्यायमे "उपाधि" अर्थात् ओ शर्त जे कोनो व्याप्तिकेँ सीमित करैत अछि। "नुक्का चोरी"मे चन्दन-विभाक प्रेमपर सामाजिक "उपाधि" लागि गेल अछि- जे ओकर प्रेमकेँ "अवैध" घोषित करैत अछि। ई उपाधि-मूलक बन्धन सुधाकरजीक कथामे बारम्बार अबैत अछि।

भाग चारि: विदेह समानान्तर इतिहास-फ्रेमवर्कक सन्दर्भमे विश्लेषण

४.१ विदेह-परम्परा आ मिथिला-साहित्य

"विदेह" मिथिलाक पुराना नाम थिक। राजा जनकक विदेह साम्राज्य मिथिला-सभ्यताक प्रतीक थिक। एहि "विदेह इतिहास-फ्रेमवर्क"मे नेपाल-तराईमे बसल मैथिलजनक समानान्तर इतिहासकेँ देखबाक प्रयास होइत अछि - ओ इतिहास जे आधिकारिक राष्ट्र-इतिहासमे प्रायः उपेक्षित रहैत अछि।

४.२ सुधाकरजीक कथा आ विदेह-इतिहास

सुधाकरजी जन्मतः नेपालक मलहनी, कलैया (वीरगंज) केर निवासी, मुदा विराटनगरमे बसि गेलाह। ई "प्रवासी-मैथिल" अनुभव एक समानान्तर इतिहास थिक:

क) भारत-नेपाल सीमाक मैथिल पहचान:

"संधि" कथामे नेपाल-भारत तेल-सन्धिक प्रसंग - ई मात्र एक कथा-तत्त्व नहि, ई ओइ मैथिल समाजक जीवन्त इतिहास थिक जे दुनू देशक बीच "दीयरि" जकाँ स्थित अछि। [बॉर्डर एरिया]

ख) नेपालक राजनीतिक परिवर्तन आ मैथिल:

"परिवेश" आ "खण्डित लोक" कथामे नेपालक लोकतान्त्रिक आन्दोलन आ माओवादी संघर्षक छाया स्पष्ट अछि। ई मैथिल समाजपर राजनीतिक उथल-पुथलक प्रभावकेँ दस्तावेज करैत अछि।

ग) भाषाई पहचान:

मैथिलीमे लेखन स्वयं एक राजनीतिक कार्य थिक - जतऽ मैथिली उपेक्षित रहल। सुधाकरजीक ६० वर्षक लेखन-साधना एहि "भाषाई प्रतिरोध"क एक अध्याय थिक।

भाग पाँच: भारतीय, चीनी आ पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ समग्र मूल्यांकन

५.१ भारतीय साहित्यशास्त्रक दृष्टि

रस-सिद्धान्त (भरत मुनि ~ ३०० ईसा पूर्व):

कथा प्रमुख रस

प्रदक्षिणा करुण + बीभत्स

दीयरि करुण + शान्त

झखड़ल फूलक गाछ करुण + रौद्र

चोलिया मे चोर बसे गोरी श्रृंगार

उपहार करुण + वीर

कर्जखोर करुण

थकुचल मासुक बुट्टी करुण + रौद्र

सुधाकरजीक कथामे करुण रस सर्वाधिक प्रबल अछि। भरतक नाट्यशास्त्रमे करुण रसक स्थायी भाव "शोक" थिक। अभिनवगुप्त कहने छलाह जे करुण रस तखनहि सम्भव होइत अछि जखन वाचक/दर्शक साधारणीकरणक माध्यमे पात्रक वेदनामे स्वयंकेँ देखैत अछि। सुधाकरजीक कथामे ई साधारणीकरण अत्यन्त सफल अछि - पाठक दासजी, विनोद, बचनू, आ ललनक पीड़ामे स्वयंकेँ देखि सकैत अछि।

ध्वनि-सिद्धान्त (आनन्दवर्धन ~ ९वीं शती):

सुधाकरजीक कथामे व्यंजना (ध्वन्यार्थ) अत्यन्त शक्तिशाली अछि। "दीयरि" शीर्षक स्वयं एक ध्वन्यर्थ थिक- नदीक दीयरि, पतिक स्थिति, स्त्री-अस्मिताक अनिश्चितता- ई सभ एक संग व्यंजित होइत अछि।

"खुट्टी पर टाँगल ब्रा"- शीर्षकमे एक ध्वन्यार्थ अछि जे "बाजारू सभ्यता" आ "स्त्री-देहक वस्तुकरण"- दुनूकेँ एकसंगे व्यंजित करैत अछि।

वक्रोक्ति-सिद्धान्त (कुन्तक ~ १०वीं शती):

कुन्तकक "वक्रोक्ति" (बाँक/विशिष्ट भाषाप्रयोग) सुधाकरजीक भाषामे स्पष्ट दृष्टव्य अछि। ओ "पदवक्रता" (शब्द-स्तरपर), "वाक्यवक्रता" (वाक्य-स्तरपर) आ "प्रबन्ध वक्रता" (रचना-स्तरपर) तीनू स्तरपर वक्रोक्तिक प्रयोग करैत छथि।

५.२ चीनी साहित्यिक सिद्धान्तक दृष्टि

Liu Xie (४६५-५२१ ई.) क "Wenxin Diaolong"- "साहित्यक हृदयक ड्रैगन":

Liu Xie क दृष्टिमे उत्कृष्ट साहित्य - (Qiáng, भावना) आ (Lǐ, तर्क/सिद्धान्त)- दुनूकेँ एकसंग समेटैत अछि।

सुधाकरजीक कथामे ऐ दुनू तत्त्वक सुन्दर समन्वय अछि:

Qiáng: ओकर पात्रसभक भावनात्मक प्रामाणिकता

Lǐ: सामाजिक समस्याक तार्किक चित्रण

Su Shi (सु शि, १०३७-११०१) क सौन्दर्यशास्त्र:

सु शि कहने छलाह - साहित्यक सत्य प्रकृतिसँ प्रकट होइत अछि।" सुधाकरजीक कथामे ई "प्राकृतिक सत्य" अत्यन्त स्पष्ट अछि। ओ कृत्रिम भाषा आ ओझरी कथातन्त्रसँ दूर रहि, सीधे जीवन-सत्यकेँ पकड़ैत छथि।

Bi Xing- चीनी काव्यशास्त्रक रूपक-सिद्धान्त:

Bi अर्थात् उपमा/रूपक आ Xing अर्थात् भावोत्तेजन- ई दुनू सुधाकरजीक कथामे प्रबल रूपमे उपस्थित अछि:

"दीयरि" (Bi)” सागरक बीच दीयरि = पति/स्त्रीक स्थिति।

"झखड़ल फूलक गाछ" (Bi)- उखड़ल गाछ= परित्यक्ता बूढ़िया।

"सुनगैत करज" (Xing)- सुलगैत कर्ज भावनात्मक उत्तेजना जगबैत अछि।

५.३ पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टि

Mikhail Bakhtin (बाख्तिन, 1895–1975) क संवादिता आ बहुस्वरता:

बाख्तिन कहने छलाह जे महान उपन्यासमे (आ साहित्यमे) बहुस्वर (polyphony) होइत अछि- जतय लेखकक एकमात्र स्वर नहि, वरन् विभिन्न पात्रक विभिन्न आवाज एक संग गूँजैत अछि।

सुधाकरजीक कथामे ई बहुस्वरता स्पष्ट अछि:

"दीयरि"मे तीन स्वर- बुढ़ा, सुशीला, कथावाचक पति- तीनूक दृष्टिकोण वैध अछि

"अस्तित्व"मे तीन भाइक तीन स्वर

"घरमुँहा"मे घरेलू जीवनक अनेक अप्रत्याशित स्वर

Georg Lukács (लुकाच, 1885–1971) क आलोचनात्मक यथार्थवाद:

लुकाच "Critical Realism" (आलोचनात्मक यथार्थवाद) क सिद्धान्त देलनि- जे बुर्जुआ समाजक विरोधाभासकेँ सत्य कलात्मक अभिव्यक्तिक माध्यमसँ उद्घाटित करैत अछि।

सुधाकरजी ऐ अर्थमे Critical Realist छथि। ओ ने Socialist Realism (समाजवादी यथार्थवाद) क प्रोपेगण्ड करै छथि, नहिये पलायनवादी छथि। ओ मैथिल मध्यवर्गक विरोधाभासकेँ- एकटा कुशल शल्य-चिकित्सक जेकाँ- उघाड़ैत छथि।

Antonio Gramsci (ग्राम्शी, 1891–1937) क वर्चस्व आ जैविक बुद्धिजीवीक अवधारणा:

ग्राम्शीक "Hegemony" (सांस्कृतिक वर्चस्व) आ "Organic Intellectuals" (कार्बनिक बुद्धिजीवी)- सुधाकरजी एक organic intellectual छथि जे श्रमजीवी वर्गक भीतरसँ ओकर अनुभवकेँ साहित्यमे अभिव्यक्त करैत छथि।

ओ विराटनगरक औद्योगिक क्षेत्रमे काज केनिहार- ओकर जीवन-संघर्ष ओकर लेखनकेँ organic authenticity (जैविक प्रामाणिकता) दैत अछि।

Homi Bhabha (भाभा, जन्म 1949) क तेसर स्थान आ सांस्कृतिक संकरताक अवधारणा:

Bhabha कहने छलाह जे उपनिवेशवाद (आ विस्थापन) एक "Third Space" उत्पन्न करैत अछि- नहिये पूर्णतः पुरान पहचान, ने पूर्णतः नव पहचान।

नेपालक मैथिल सुधाकरजी एहि "Third Space"क निवासी छथि। ओकर पात्रसभ “बेचना ("प्रदक्षिणा"), कथावाचक ("घरमुँहा"), कथावाचक ("संधि") - सभ hybrid identity (संकर पहचान) सँ पीड़ित छथि। ने शहरी जीवनक उद्धलनमे शामिल हो'बाक समय के पकड़ि सकलहुँ... ने अपन ग्रामीण माटिक सुगन्ध हम बिसरि सकलहुँ - ई Bhabha क Third Space क साहित्यिक अभिव्यक्ति थिक।

भाग छः: भाषा-शैली आ तकनीकक विश्लेषण

६.१ मैथिली भाषाक प्रयोग

सुधाकरजी नेपाली मैथिलीक एक विशिष्ट प्रकारक प्रयोग करैत छथि। एहि भाषामे अछि:

- मैथिलीक पूर्वी उपभाषा

- नेपाली भाषासँ प्रभावित कतिपय शब्द

- विराटनगरी बाजारी बोलीक प्रभाव

- ग्रामीण मिथिलाक लोक-बोली

६.२ विवरण-शैली

सुधाकरजीक कथाक विवरण कम शब्दमे अछि।" उदाहरण: चुल्हि पर राखल भात-दालिक हाँड़ी... चिनमार पर दूधक टोपिया... लोहियामे झाँपल आलू-अरिकोंचक तरकारी आ ओकर गंध... बेंच पर राखल थारी-कटोरी आ गिलासक गेंट... सिलौट पर पीसल-थोपल टमाटर, मिरचाइ आ धनीक चटनी आ सबसँ ऊपर जरैत दीप जनाँ शमशानक एकांतमे ककरो चिता सँ लहरि उठि रहल हो।

ई विवरण imagist (बिम्बवादी) प्रभाव देखबैत अछि।

६.३ संवाद-शैली

सुधाकरजीक संवाद अत्यन्त स्वाभाविक आ जीवन्त अछि। ओ अनावश्यक "literary" नहि होइत अछि। उदाहरण - "कर्जखोर" मे ई संवाद एक साधारण मैथिल परिवारक वार्तालापक सटीक प्रतिलिपि थिक।

भाग सात: समग्र साहित्यिक मूल्यांकन

७.१ सुधाकरजीक शक्ति-पक्ष

क) प्रामाणिकता: सुधाकरजीक सबसँ बड़ शक्ति ओकर प्रामाणिकता थिक। ओ लिखैत छथि जे ओ जीलनि, देखलनि, आ अनुभव कयलनि। ई "lived experience" (जीयल अनुभव) ओकर कथाकेँ एक literary manufactured fiction सँ अलग आ श्रेष्ठ बनबैत अछि।

ख) सामाजिक प्रतिबद्धता: ओ सामाजिक असमानता, स्त्री-शोषण, आर्थिक विपन्नता - ऐ सभ विषयपर लिखैत छथि बिना कोनो वैचारिक दुराग्रहक। ओ ने "communist" propaganda लिखैत छथि, ने "Hindu conservative" moral lecturing। ओ मात्र मनुष्यकेँ ओकर सम्पूर्ण जटिलतामे देखैत छथि।

ग) स्त्री-चरित्र चित्रण: सुधाकरजीक स्त्री-पात्र अत्यन्त सशक्त आ बहुआयामी छथि। सुशीला, खनजनियाँ, माया, रूपा, यशोधरा, समताली, विभा- ई सभ real women (वास्तविक स्त्री) छथि - ने ideal देवी, ने fallen woman (पतिता नारी) ।

घ) भाषाई माटि: भाषामे मैथिलीक माटिक गंध अछि। प्रदर्शनकारी "शुद्ध मैथिली"क बदला ओ जीवन्त मैथिलीमे लिखैत छथि।

७.२ सुधाकरजीक सीमा-पक्ष

क) कथानक-संरचना: कतिपय कथामे (जेना "स्वप्न-भंग") कथानकक संरचना शिथिल भ' जाइत अछि। डायरी-फार्मेट कहियो-कहियो एकाकार नहि होइत अछि।

ख) पुरुष-वाचक केन्द्रियता: अधिकांश कथामे कथावाचक पुरुष अछि। जखनकि ओकर स्त्री-पात्र अत्यन्त शक्तिशाली छथि।

ग) resolution (समाधान) क अभाव: किछु कथामे (जेना "कर्जखोर") कथा बिनु सोझरेने छोड़ि देल जाइत अछि। ई यथार्थवादी दृष्टिसँ उचित अछि, मुदा पाठककेँ कहियोकाल निराश करैत अछि।

भाग आठ: तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य

८.१ मैथिली साहित्यक परम्परामे स्थान

सुधाकरजीक रचना परम्परा हरिमोहन झा (व्यंग्य), ललित (उपन्यास/ कथा), राजकमल चौधरी (आधुनिक गद्य) आ मणिपद्म (यथार्थवादी कथा) सँ प्रभावित देखाइत अछि, मुदा ओ अपन मौलिक स्वर विकसित कयलनि।

नेपाली मैथिली कथा-परम्परामे ओकर स्थान अनन्य थिक - कियाकि ओ विराटनगरक "बॉर्डर एरिया"क ओहि अनुभवकेँ साहित्यमे आनलनि जे अन्यत्र उपलब्ध नहि।

८.२ हिन्दी साहित्यसँ तुलना

प्रेमचन्द (१८८०-१९३६) सँ तुलना कयल जा सकैत अछि - दुनू ग्रामीण-शहरी संक्रमणकालक साहित्यकार, दुनू सामाजिक-आर्थिक समस्याक प्रति संवेदनशील। मुदा सुधाकरजी यौनिकताक प्रश्नपर प्रेमचन्दसँ अधिक साहसी छथि।

मोहन राकेश (१९२५-१९७२) सँ तुलना - शहरी मध्यवर्गक असन्तोष, पारिवारिक विघटन - ई थीम दुनूमे अछि। मुदा सुधाकरजीक भाषा राकेशसँ अधिक माटिसँ जुड़ल अछि।

उपसंहार: एक समग्र निर्णय

"दीयरि" मैथिली साहित्यक एक बहुमूल्य निधि थिक। रा. ना. सुधाकरजी छः दशकक लेखन-यात्रामे एहन साहित्य-जगत् निर्मित कयलनि जे अछि:

- प्रामाणिकतामे - मिथिलाक माटिसँ जुड़ल

- सामाजिक-दायित्वमे - विपन्न, उपेक्षित, आ शोषित वर्गक पक्षमे

- स्त्री-चेतनामे - अपन काल (१९७६-२०२०) सँ आगाँ

- भाषाई सौन्दर्यमे- जीवन्त आ ताजा

नव्य न्यायक व्याप्ति-दृष्टिसँ- "जतऽ सुधाकरजीक कथा, ततऽ मनुष्यक सत्य।" विदेह-परम्पराक इतिहास-दृष्टिसँ ई संग्रह नेपाल-तराईक मैथिल समाजक जीवन्त दस्तावेज थिक। भारतीय रस-सिद्धान्तक दृष्टिसँ- करुण रसक ई प्रबल साधना। चीनी Qing-Li सिद्धान्तक दृष्टिसँ- भावना आ सत्यक सुन्दर संयोग। आ पाश्चात्य Critical Realism-क दृष्टिसँ - एक organic intellectual-क सत्य।

एहि कथा-संग्रहक समानान्तर मैथिली साहित्यमे व्यापक स्वागत कएल गेल अछि। ई स्वागत हेबाक चाही - ने केवल मैथिली पाठकद्वारा, वरन् भारत-नेपालक समग्र साहित्य-परिवारद्वारा।

"दीयरि" -सागरमे दूनू दिशाक हिलकोरक बीच स्थित- सुधाकरजीक साहित्य सेहो ओहिना अछि- परम्परा आ आधुनिकताक बीच, ग्राम आ नग्रक बीच, मैथिली आ नेपाली दुनियाक बीच- मुदा अपन मौलिकतामे अटल।

३२. परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा

सारांश
भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र • नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय) • विदेह समानान्तर इतिहास परमेश्वर कापड़ि- जनकपुरधाम निवासी, मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार- मुख्यतः नाटककारक रूपमे जानल जाइत छथि। मुदा हुनकर रचना-संसारमे कथा-खिस्साक एक समृद्ध संसार अछि जे आइधरि समुचित आलोचनात्मक ध्यान नहि पओलक अछि। कापड़िक कथा-संसार मुख्यतः चारि धारामे विभक्त अछि: (क) शुद्ध लोककथा- जाहिमे 'लछमिनिञा कनिञा' आ 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा' उत्कृष्ट अछि।

बीजशब्द: परमेश्वर · कापड़िक · खिस्साक · आलोचनात्मक · समीक्षा · मैथिलीक · कापड़ि

परमेश्वर कापड़िक कथा-खिस्साक आलोचनात्मक समीक्षा

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र • नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय) • विदेह समानान्तर इतिहास

भूमिका: परमेश्वर कापड़िक कथाकार-रूप

परमेश्वर कापड़ि- जनकपुरधाम निवासी, मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार- मुख्यतः नाटककारक रूपमे जानल जाइत छथि। मुदा हुनकर रचना-संसारमे कथा-खिस्साक एक समृद्ध संसार अछि जे आइधरि समुचित आलोचनात्मक ध्यान नहि पओलक अछि।

कापड़िक कथा-संसार मुख्यतः चारि धारामे विभक्त अछि:

(क) शुद्ध लोककथा- जाहिमे 'लछमिनिञा कनिञा' आ 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा' उत्कृष्ट अछि।

(ख) पौराणिक कथाक नव-व्याख्या- 'यज्ञ-सीता', 'छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न', 'लक्ष्मी-बलि', 'तप आ सत्संग', 'हृदयबासी ईश्वर'।

(ग) बोधकथा (Didactic Tale)- 'शिक्षा आ दीक्षा', 'नम्बर'।

(घ) कथा-खिस्सा- 'कुत्ता-बिलाइ-मूस', 'गोनूबाबू घरेपर'।

(ङ) कथा-काव्य- 'दाम' (दीर्घ काव्यकथा, साक्षी) ।

हुनकर सभ कथाक केन्द्रमे दूटा बात अछि- मैथिली लोकभाषाक जीवन्तता आ मैथिलीक सामाजिक-सांस्कृतिक यथार्थ। अहि दुनूक मेल हुनकर कथाकेँ एक विशिष्ट भौगोलिक आ सांस्कृतिक पहचान दैछ।

कथा-समीक्षा

१. 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा':

१. अ. कथावस्तु: रावणक लंकामे नवग्रह देवता बन्दी अछि- शक्तिहीन, दीन-दुखी। हनुमानजी लंका-दहनक प्रसंगमे हुनका सभकेँ देखै छथि, पु छै छथि आ बन्धन तोड़ि मुक्त करै छथि। नवग्रह हनुमानसँ वर माँगैले कहै छथि, मुदा हनुमान कहै छथि- 'प्रभु राम छथिन्ह, कोनो वर मांगैके आवश्यकता नहि।' तैपर नवग्रह स्वयं वचन दै छथि: जे हनुमानक नाम जपत, तिनका नवग्रह कोनो दुख नहि देता।

१. आ. भाषा-विश्लेषण: ई रचना मैथिलीक उत्कृष्ट नमूना थिक। 'रहए', 'हइ', 'अइ', 'अएला', 'हुनकासबके', 'ओकरासबके'- ई सभ मैथिलीक स्वाभाविक रूप थिक जे भारतक दरभंगा-मिथिला मैथिलीसँ किछु भिन्न नै अछि।

'लंकामे अगिलग्गीक', अगराही–पसाही लगबैत जाइत जे रहए, त' ओत' हनुमानजीके शक्ति सामर्थहीन, मुइल–विलाइ भेल, नवग्रह सब देखाइ देलकनि।'

'अगिलग्गी', 'अगराही-पसाही', 'मुइल-विलाइ'- ई शब्द-गुच्छ मैथिलीक जीवन्त प्रमाण थिक। 'मुइल-विलाइ' (मरल-विलाएल)- यएह द्विपदी समास मैथिलीक व्याकरण-सम्पदाक उदाहरण थिक।

१. इ. रस-विचार: एहि कथामे भक्ति-रसक प्रधानता अछि। मुदा मात्र भक्ति नहि- नवग्रहक दीनताक करुण रस आ हनुमानक वीरता (रावणक बन्धन तोड़ब)- एहि दुनूक मेलसँ एक सम्मिश्र रस-अनुभव होइछ। आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार, रचनाक मुख्य ध्वनि थिक- 'ईश्वर-कृपा माँगएसँ नहि, स्वयं-समर्पणसँ भेटैछ।' ई ध्वनि वाच्यार्थसँ परे व्यञ्जनास्तरपर स्थित अछि।

१. ई. वक्रोक्ति: कुन्तकक वक्रोक्ति-दृष्टिसँ देखने, कथाक सर्वाधिक वक्र उक्ति थिक- 'हुनका अछैतमे अहाँसबस' हमरा कोनो वर मांगके आवश्यकता नहि।' भक्त जखन वर माँगै, प्रभु देथि- ई सामान्य भक्ति-तर्क थिक। मुदा एत' हनुमान उनटे भक्तिकेँ परिभाषित करै छथि- 'वर माँगनाइ भक्तिक कमजोरी थिक।' ई वक्रता सामान्य कथाकेँ दार्शनिक ऊँचाइ दैछ।

१. उ. नव्य-न्यायिक दृष्टि: गंगेशक 'शब्द-प्रमाण' (आप्त-वाक्य) सिद्धान्तक अनुसार, नवग्रहक वचनवद्धता- 'जे हनुमानक नाम जपत तिनका दुख नहि'- एक आप्त-वाक्य थिक। नव्य-न्यायमे आप्त-वाक्यक प्रमाण-मूल्य अछि कारण वक्ता (नवग्रह) प्रामाणिक छथि। कापड़ि लोककथाक माध्यमसँ एहि शास्त्रीय तर्ककेँ सुलभ बनबै छथि।

१. ऊ. विदेह फ्रेमवर्क: मैथिली साहित्यमे हनुमान-कथाक परम्परा बहुत पुरान अछि। मुदा कापड़ि एहि कथाकेँ एक नव भौगोलिक-सांस्कृतिक लोकेशनमे प्रस्तुत करै छथि। नेपालक जनकपुरधामक मैथिली-कथाकार जखन राम-रावण-हनुमानक कथा कहै छथि, तखन ओकर लोकस्वर आ दृष्टि अपन होइत अछि।

२. 'लछमिनिञा कनिञा': परमेश्वर कापड़िक सर्वश्रेष्ठ लोककथा

२. अ. कथावस्तु: एक गाममे बुढ़बा-बुढ़िया रहैछ। बुढ़ियाक पुतौह (बहू)- 'लबकनिञा', 'छोटखुटिया भुटिया'- मुदा 'काज-धन्धा आ बुइध-गियानमे बड़ चौतरी।' एक रातिमे नढ़िया (गीदड़-सियार) बजैछ- बहू पशुभाषा जनैछ। नढ़िया बतबैछ जे नदीमे बहल लाशक जांघमे जोड़ा लाल (माणिक) अछि। बहू साहस क' नदीसँ लाल निकाललक, लाशकेँ नढ़ियाके दैत घर घुरल। साउस नहि बुझलक-सोचलक बहू लाश खाइत अएल। उपद्रव भेल, बहूकेँ नैहर पठएल गेल। रास्तामे एक कौआ बाजल- कौआ-भाखाक ज्ञान बहूकेँ। कौआ बतेलक- आयके दिन साँप-दूध पियाओ त' साँप हीरा-मोती देखाओत। बहू ससुरकेँ बुझेलक। ससुर मानि गेल। साँपकेँ दूध-लावा पियाओलक, हीरा-मोती पेलक। घर धन-धाम भरि गेल। साउस-पुतौह मिलि-व्यवहरि सुख-आनन्दसँ रहए लागल।

२. आ. लोककथाक संरचना-विश्लेषण: रूसी लोककथा-सिद्धान्तकार व्लादिमीर प्रोप (Vladimir Propp) क 'मोर्फोलॉजी ऑफ फोकटेल' (1928) क अनुसार, लोककथाक एक निश्चित संरचना होइछ। 'लछमिनिञा कनिञा' एहि संरचनाकेँ सटीक रूपसँ पालन करैछ:

(अ) प्रारम्भिक अभाव-स्थिति (Initial Lack): गरीबी, बहूक अपमान।

(आ) दानदाता (Donor): नढ़िया आ कौआ- जे बहूकेँ विद्या दैछ।

(इ) सहायक तत्त्व (Helper Function): पशुभाषा-ज्ञान- बहूक विशेष शक्ति।

(ई) संकट-परीक्षण (Test/Challenge): रातिमे नदीमे जेबाक साहस।

(उ) अन्तिम विजय (Victory): हीरा-मोती, पारिवारिक मेल।

परन्तु मैथिली-मिथिला परम्पराक एक विशेषता अछि जे ई साँप-दूध प्रसंग अन्तमे जोड़ैछ- यएह मैथिली लोककथाक अपन रचनात्मक अतिरिक्त विशेषता थिक।

२. इ. भाषाक असाधारण सम्पदा: 'लछमिनिञा कनिञा' रचनाक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक हुनकर लोकभाषाक शब्द-सम्पदा। निम्नलिखित शब्द-गुच्छ मैथिलीक अनमोल निधि थिक जे मैथिलीमे जीवन्त अछि:

'लबकनिञा', 'हड़हड़ही खटबनरी', 'छोटखुटिया भुटिया', 'छगुनाए', 'धतपताए', 'गुनधुनाए', 'पनिआए', 'लोभाए', 'झिसि-बुन्नीबला', 'बिकराल राइत', 'हुआं-हुआं', 'जुमुस बान्हिक'', 'हबक्का मारि', 'लत्तोपतो', 'हठि-बरदम', 'ढुक्का-फड़की', 'धीपल आइग-बाउल', 'छबकल दबकल', 'पिठिया-ठोक धमक्का', 'नङटिनिञा रकमसनी', 'ओधबाधक'', 'लोहछि झंटियाक'', 'पछमुड़िया कनडेरिया', 'हपैस-लपैकक''।'

ई शब्दसभ मैथिली लोकभाषामे जीवन्त अछि। कापड़ि ई सहेज-समेटि एकरा साहित्यिक प्रतिष्ठा दै छथि- इएह हुनकर सभसँ पैघ योगदान अछि।

२. ई. स्त्री-चरित्रक विशेषता: बहू 'लबकनिञा, छोटखुटिया भुटिया' थिक- देखएमे साधारण। मुदा पशुभाषाक दुर्लभ ज्ञान हुनका लग अछि। ई ज्ञान- लोक-परम्परामे 'पशु-सिद्ध' कहल जाइछ- बहूकेँ असाधारण बनाबैछ। ओ एकाएकी रातिमे नदी जाइछ- साहस। लाशसँ

लाल निकाललक- कर्मठता। साउसक क्रोधमे नहि टूटल- धैर्य। कौआक भाखा बुझिकऽ ससुरकेँ बुझेलक- बुद्धि। ई चरित्र मिथिलाक 'लछमिनिञा'- साहसी, बुद्धिमान, धनलक्ष्मी- स्त्री-आदर्शक प्रतीक थिक।

२. उ. भक्ति-रस आ करुण-रसक समन्वय: कथाक मध्यमे बुढ़ियाक क्रोध (रौद्र रस) आ बहूक असहायता (करुण रस)- दुनूक सम्मिश्रण। मुदा अन्तमे शान्त-रसमे परिणति- 'तेकर बाद त' साउस-पुतौह सबगोटे मिलि-व्यवहरिक' सुख आनन्दस' रह' लागल।' ई मैथिली लोककथाक परम्परागत 'सुखद अन्त' थिक जे गृहस्थ-जीवनक आदर्शकेँ प्रतिष्ठित करैछ।

२. ऊ. तुलनात्मक दृष्टि: 'लछमिनिञा कनिञा' मैथिलीक 'सुनरी-बहुरिया' कथाक परम्परासँ जुड़ल थिक। मुदा ओहि परम्पराक बहुसंख्य कथामे बहू केवल निष्क्रिय प्राप्तकर्ता होइछ- जादू अपने होइछ। एत' बहू स्वयं साहस करैछ, स्वयं बुद्धि लगाबैछ। ई अन्तर महत्त्वपूर्ण थिक- कापड़ि बहूकेँ 'एजेन्ट' (कर्ता) बनाबै छथि, केवल 'पेशेन्ट' (भोक्ता) नहि।

३. 'यज्ञ-सीता': पुराण-कथाक साहसी पुनर्पाठ:

३. अ. कथावस्तु: जहियासँ राजा राम यज्ञ करै छथि, स्वर्णमयी सीता-प्रतिमा निर्माण होइछ। एहि यज्ञ-सीताक एक समूह राम-निवासमे जमा भ' जाइछ। ओसभ दुखित, उपेक्षित। एकदिन सभ मिलि रामलग जाइछ- स्वीकार माँगैछ। राम एकपत्नी-व्रताक तर्क दै छथि- 'हम मिथिलाधिपति जनकक पुत्री सीताक पाणि-ग्रहण कएने छी।' यज्ञ-सीता प्रश्न करै छथि- 'यज्ञमे सहयोग देलहुँ, जीवनमे किएक नहि?' अन्ततः राम समाधान दै छथि- द्वापरमे कृष्णावतारमे ई सभ गोपी बनि..। 'ओ सबहेटा यज्ञ-सीता ब्रजमे गोपीसब बनलथि।'

३. आ. साहित्यिक साहस: ई कापड़िक सर्वाधिक साहसी रचना थिक। मैथिली लोक-परम्परामे राम-सीता पवित्र- ओहिमे प्रश्न करब असामान्य थिक। मुदा कापड़ि मिथिलाक सीता-केन्द्रित दृष्टिकोणसँ (जनक-पुत्री, मिथिलाक बेटी) राम-सीता-सम्बन्धकेँ पुनर्विचार करै छथि।

'यज्ञ करैत काल हम परमावश्यक रहलेटा छी! / हमरा बिनु अपूर्णे छी! / यज्ञाधिकारी यज्ञकर्ता हमरे सबके संगस' ने?'

ई तर्क शास्त्रीय दृष्टिसँ अटूट अछि। यज्ञमे अर्धाङ्गिनी अपरिहार्य- ई वैदिक विधान थिक। कापड़ि यज्ञ-सीताक मुखसँ ई शास्त्रीय तर्क राखि रामकेँ उत्तर देबएले बाध्य करै छथि।

३. इ. लोक-स्त्रीवाद: ई रचना मैथिली लोक-साहित्यमे स्त्री-अधिकारक विमर्शक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। यज्ञ-सीता केवल 'अबला' नहि- ओ तर्क करैछ, माँग राखैछ, अपन अधिकार बुझैछ। 'एहनमे अपनाके आदर्श मर्यादा पुरुषोत्तम कहबैत छी?'- ई प्रश्न नेपालक मैथिली साहित्यमे एकटा नव अध्याय खोलैछ।

३. ई. ध्वनि-विश्लेषण: रचनाक वाच्यार्थ-स्तर थिक- यज्ञ-सीताक कथा। मुदा व्यञ्जनास्तरपर कापड़ि एक गहन सन्देश दै छथि: 'जे समाज अपन स्त्रीकेँ काजमे उपयोग करैछ, मुदा अधिकार नहि दैछ- ओ असन्तुलित थिक।' आनन्दवर्धनक दृष्टिसँ, ई ध्वनि रचनाक 'आत्मा' थिक।

३. उ. पुराण-पुनर्व्याख्याक परम्पराक सन्दर्भमे: मैथिली कवि विद्यापति (ज्योतेरीश्वर पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न) 'भूपरिक्रमा' आ 'पुरुषपरीक्षा'मे पौराणिक कथाकेँ नव दृष्टिसँ देखने छलथि। कापड़ि ओहि परम्पराकेँ आगू बढ़बै छथि- मुदा नव सामाजिक चेतनाक सँग। ई विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक।

४. 'छौंड़ी-छौंड़ा सुद्युम्न'- लिङ्ग-परिवर्तनक पौराणिक कथा

४. अ. कथावस्तु: राजा विवस्वान् मनु आ रानी श्रद्धाक पुत-कामना। रानी पुतकरन यज्ञ करबैछ- मुदा कहैछ 'जब होए तब बेटिए।' ऐ कामनाक प्रतापसँ बेटी जन्मैछ- इला। बेटी पाँच-सात वर्षमे मरदनमी व्यवहार। जाँच कएलापर पता लगैछ जे यज्ञमे पुरहितक जपसँ बेटा होएबाक छल- रानीक कामनाक कारण बेटी भेल, मुदा मरदनमी रहि गेल। वशिष्ठ तप-बलसँ बेटीकेँ लड़का (सुद्युम्न) बनेलक। सुद्युम्न जंगलमे जाइछ- शिव-पार्वतीक केलि-विहारसँ ओ वनमे स्त्री बनि जाइछ। बुध ऋषि प्रेम कएलक- पुरुरवा पुत्र भेल। वशिष्ठ देवी भागवत सुनाकऽ स्थायी पुरुष बनेलक। राज्याभिषेक भेल।

४. आ. लिंगभेद-विमर्श: ई कथा श्रीमद्देवी भागवत महापुराण (अध्याय ३) क आधारपर अछि। मुदा कापड़ि एहि पौराणिक कथाकेँ मैथिलीक अपन लोकभाषामे पुनर्प्रस्तुत करै छथि। कथामे लिंग-परिवर्तन (Gender fluidity) क प्रश्न अछि- जे आधुनिक लिंगभेद-विमर्शसँ जुड़ल अछि। रानीक 'जब होए तब बेटिए'- ई कामना समाजक पुत्र-पक्षपातकेँ उलटाबैछ।

४. इ. भाषाक सजीवता

'ओकरा इला बेटी चारि–पांच बरखके भ' गेलै त' ओकर सबटा चालि–ढालि, बगय–बानि मरदनमी लगै! रहै छौंड़ी आ उ बेसी काज बात करै छड़ा जिका।'

'बगय-बानि', 'छड़ा जिका'- ई मैथिलीक अपन शब्द थिक। 'बगय-बानि' माने चाल-ढाल आ 'छड़ा जिका' माने लड़कापन जकाँ- ई शब्द मानक मैथिलीक शब्दकोशमे नहि भेटत।

४. ई. नव्य-न्यायिक दृष्टि: गंगेशक 'व्याप्ति' सिद्धान्तक अनुसार, कथामे एक तर्कशृंखला अछि: (अ) देवी भागवत सुनबासँ (हेतु) → (आ) सुद्युम्नक स्थायी पुरुष-रूप (साध्य) । मुदा कापड़ि ऐ व्याप्तिकेँ अन्तिम सत्य नहि मानै छथि- कारण पुरुरवाजी (सुद्युम्नक पुत्र) माता-मातृत्वक प्रमाण थिक। ई नव्य-न्यायक 'व्याप्ति-खण्डन' तकनीकक नाट्यीय उपयोग थिक।

५. 'हृदयबासी ईश्वर'

५. अ. कथावस्तु: सृष्टिक आरम्भमे ईश्वर मनुष्यकेँ विशेष बुद्धि-ज्ञान देलखिन। मुदा मनुआ प्रत्येक छोट-बड़ समस्यामे ईश्वरकेँ खोजऽ लागल। ईश्वर परेशान- जंगल-पहाड़, खोला-कन्दरामे नुकाइथ, तैयो मनुआ खोजिए लैथ। अन्ततः ईश्वर एहन ठाम नुकएलथि जत' मनुआ खोज' नहि जाओत- हुनकर अपन हृदयमे।

५. आ. वेदान्त-लोक: तीनू परम्पराक मेल: ई कथाक बीजविचार तीन परम्परामे अछि: (अ) वेदान्त- 'तत् त्वम् असि', ब्रह्म अपन भीतर। (आ) मैथिली लोककथा- ईश्वरकेँ खोजैत-खोजैत हृदयमे पाबब। मुदा कापड़ि ऐ तत्त्वज्ञानकेँ शुष्क दर्शन नहि, हास्यात्मक कथाक रूपमे प्रस्तुत करै छथि। 'घैहर गरजु, हेहर-थेथर मतलबी लोक'- ई ईश्वरकेँ खोजैत परेशान मनुआक चित्र हास्यरसक सुन्दर उदाहरण थिक।

५. इ. भाषाक खेल

'ईश कतबो चोरा–नुकाक' औढ़ कातमे चलि जाथि, घैहर गरजु, हेहर–थेथर मतलबी लोक हिनका ताकिए लनि।'

'औढ़ कात' (एकान्त कोना), 'घैहर गरजु' (अत्यन्त आग्रही), 'हेहर-थेथर' (हठी-जिद्दी)- ई शब्द-समूह मैथिलीक जीवन्तताक प्रमाण थिक। 'घैहर' आ 'हेहर'- दुनू ध्वन्यात्मक शब्द जे सुनितहि अर्थ स्पष्ट करैछ।

५. ई. हास्य-दर्शन: ईश्वर परेशान छथि- ई मानवीय छवि (Anthropomorphism) लोककथाक विशेषता थिक। मुदा कापड़ि ऐ परेशानीकेँ दार्शनिक बनाबै छथि: ईश्वर जतए सहज उपलभ्य- हृदयमे- ओत' मनुआ कहियो नहि खोजैत। ई वक्रोक्ति (Irony)- लोककथाकेँ दर्शनक स्तरपर उठाबैछ।

६. 'लक्ष्मी-बलि खिस्सा' (रक्षाबन्धन-प्रसंग)

६. अ. कथावस्तु: विष्णु राजा बलिक द्वारपर दरबान छथि- वचनबद्धता चलते। लक्ष्मी प्रतीक्षित, चिन्तित। नारद कारण बतबै छथि- वामन-बलि प्रसंग। लक्ष्मी भेख बदलि राजा बलि ओहिठाम जाइ छथि, राखी बान्है छथि। बली दान देबए चाहै छथि। लक्ष्मी माँगै छथि- 'उ दरबान हमरा द’ दा'।' बली दैछ। तहिएसँ रक्षाबन्धन भाइ-बहिनक पावनि।

६. आ. कथाक लोक-पौराणिक सम्मिश्रण: ई कथा विष्णु-पुराण आ भागवत-परम्पराक आधारपर अछि। मुदा कापड़ि एहिमे मैथिलीक लोकभाषाक जीवन्तता भरि दै छथि। 'अहर ताकय, पहर ताकय', 'बटजोहीमे आंइख खिया', 'तलबल-तलबल लाढ-दुलार', 'हलसल लहालोट'- ई सभ मुहावरेदार प्रयोग कथाकेँ सजीव बनाबैछ।

'लक्ष्मीजीके चालि–ढालि, बगय–बानिसब बलीके बड नीक लगलनि। हुनको उत्सुकता बढ़लनि आ हपसि–लपकिक', दुलारस' हुनका कहलकनि- हे ऐ, बौआ! अहां के छी?'

'हपसि-लपकिक''- मैथिलीक ई मुहावरा (प्रेमभावसँ आगू झपटब) बहुत सटीक अछि। लक्ष्मीक बहिन-रूप- ई प्रेमक सहज अभिव्यक्ति थिक।

६. इ. स्त्री-शक्ति-विमर्श

ऐ कथामे लक्ष्मी निष्क्रिय नहि छथि- ओ स्वयं योजना बनबैछ, भेख बदलैछ, बलिकेँ जोड़तोड़ करैछ, विष्णुकेँ मुक्त करबैछ। धन-देवी स्वयं अपन पतिकेँ मुक्त करए मे सक्षम- ए एक सशक्त नारी-आख्यान थिक।

७. 'तप आ सत्संग'

७. अ. कथावस्तु: विश्वामित्र आ वशिष्ठक बीच विवाद- 'तप श्रेष्ठ या सत्संग?' ब्रह्मा आ विष्णु दुनू फेरी-फन्नामे नहि पड़ैछ। अन्ततः शेषनागक परीक्षा- पृथ्वीक भार उठायब। विश्वामित्र अपन समस्त तपसँ उठाबए गेल- नहि उठा सकल। वशिष्ठ 'एक दिनक सत्संगक पुण्य' दैत बजलाह- पृथ्वी अत्तमे लटकि गेल। तप हारल, सत्संग जीतल।

७. आ. दार्शनिक कथाक रूप: ई 'दार्शनिक-तर्क कथा' (Philosophical Fable) थिक- जाहिमे एक गूढ़ दार्शनिक प्रश्नकेँ कथाक रूपमे हल कएल जाइछ। 'तप' आ 'सत्संग'- ई व्यक्तिगत साधना आ सामाजिक-आध्यात्मिक सामुदायिकताक प्रश्न थिक।

कापड़िक हास्य-दृष्टि सेहो जागृत रहैछ- 'बड बढिञा, बड नीक बात। शेष भगवान हिनका दुनूके सोहरदे आङे कहलखिन'- ई 'सोहरदे आङे' (सामनेसँ)- हास्यात्मक ढंगसँ शेषकेँ न्यायाधीशक भूमिकामे राखैछ।

७. इ. लोकभाषाक प्रयोग

'ई सुनि, ऋषि विश्वामित्रके ईख बिख लागि गेलैन आ पिनकले, फनकि बजलाह- एह, हमरा भुते ई एतनीटा भार केना नै उठत!'

'ईख-बिख लागब' (ईर्ष्यासँ जलब), 'पिनकले-फनकि' (क्रोधसँ गर्म होकऽ)- ई दुनू मुहावरा मैथिलीक अनमोल निधि थिक।

८. बोधकथा- 'शिक्षा आ दीक्षा' आ 'नम्बर'

८. अ. 'शिक्षा आ दीक्षा'

गुरुकुल-परम्परामे एक गुरु राजकुमारकेँ विदाइसँ पूर्व जनसमक्ष अकारण मारैछ। अगले दिन कारण बतबैछ- 'अन्यायक अनुभव कराबए ले। राजा बनबापर न्याय करबाक काल अन्यायपीड़ितक वेदनाक ज्ञान होएतह।'

ई बोधकथा भारतीय 'नैतिक-कथा' परम्पराक निकट थिक। मुदा शिक्षाक ई 'experiential learning' (अनुभव-आधारित शिक्षा) पद्धति आधुनिक शिक्षाशास्त्रक सिद्धान्तसँ मेल खाइछ। 'ओहिस' सबके भितरका आंइख खुइज गेलनि'- ई वाक्य कथाक दार्शनिक सार थिक।

८. आ. 'नम्बर'

रातिमे एक सेठ भटकि मन्दिरमे जाइछ। एक दुखित लोककेँ पैसा दैछ- अपन नम्बर-कार्ड सेहो दैछ। ओ लोक कहैछ- 'हमरा नम्बर बुझल छह।' सेठ अचम्भित- ओ कहैछ 'भगमानक नम्बर, जे अहाँकेँ हमरापास पठेलक।'

ई कथा एक उत्कृष्ट 'twist ending' (चमत्कारी अन्त) बला बोधकथा थिक। मात्र एक पन्नाक रचना- मुदा गहन दार्शनिक सन्देश। ईश्वर-विश्वासक ई चित्रण मैथिली बोधकथाक श्रेष्ठ उदाहरण थिक।

९. 'कुत्ता-बिलाइ-मूस' खिस्सा

९. अ. कथावस्तु: कुत्ता-बिलाइ-मूस- तीन मित्र। कुत्ता तीर्थयात्रापर जाइछ, सभ कागज-पत्र बिलाइकेँ देइछ। बिलाइ मूसकेँ राखएले देइछ। मूस खा-ओढ़ि नष्ट करि दैछ। कुत्ता फेरि आबएपर- कागज नष्ट। बिलाइ मूसकेँ मारए उद्यत होइछ। मूस भागैछ- बुझैछ नहि किएक सभ खेहारि रहल अछि। 'तहिएस' आइधरि कुत्ता बिलाइकेँ, बिलाइ मूसकेँ देखितेँ दौड़ैछ।

९. आ. आद्य-कथाक चरित्र: ई 'aetiological tale' (आद्य-कथा) थिक- जे कोनो सामान्य घटनाक मूल कारण बतबैछ। 'किएक कुत्ता बिलाइकेँ आ बिलाइ मूसकेँ खेहारैछ'- ऐ प्रश्नक मजेदार लोक-उत्तर। ई कथा-प्रकार विश्वक सभ लोककथाक परम्परामे थिक। 'जस्ट सो स्टोरीज' (Rudyard Kipling)- ई पाश्चात्य समकक्ष थिक।

९. इ. न्याय-विमर्श: मूस 'बुझबे नै करए जे सभ किएक खेहारि रहल अछि'- ई वाक्य गहन थिक। ओ कागज खाइत आ ओढ़ैत छल- ओकरालेल ई जरूरत थिक। मुदा एकर परिणाम- सभक हानि। ई 'अनजान-कुकृत्य'क परिणामक कथा थिक। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ, मूसक 'ज्ञान-अभाव' (absence of knowledge) हुनकर कर्मकेँ नैतिकतः अपराध नै बनाबैछ।

१०. 'गोनूबाबू घरेपर' खिस्सा

१०. अ. कथावस्तु: गोनूझा- 'धूर्तोमे धूर्त, महा चुस्त-चलाक।' दीर्घकाल बाहर रहि गाम घुरलखिन। सभ पुछैछ- 'कत' गेल छलिऐ?' उत्तर- 'बुझू, गामेपर।' सभ अकचकाइत। असल कारण: आसिन-कातिक महिनामे लोक सभ 'माँग-खाँग'पर आबैछ। एहन महिनामे घर नहि रहि गामसँ निकइल गेल छल। घुरलापर भी- 'बुझू, गोनूबाबू घरेपर।'

१०. आ. गोनूझा-परम्परामे स्थान: मैथिलीक 'गोनूझा' एक विशिष्ट लोक-नायक थिक- चालाक, व्यंग्यकार, अपन लाभ बुझनिहार। अन्य भाषाओंमे ई 'नसरुद्दीन होजा' (तुर्की), 'अकलतम' (हिब्रू), 'बीरबल' (हिन्दी)- जेहन चरित्र थिक। कापड़ि एहि परम्पराकेँ जीवन्त रखै छथि।

'बुझू, गोनूबाबू घरेपर'- ऐ वाक्यक बहुस्तरीय अर्थ अछि: (अ) शाब्दिक- 'हम गामेपर छी।' (आ) व्यंग्यार्थ- 'कत' गेल छलहुँ से नहि बतेबै।' (इ) निहित- 'मांग-खाँग-बला लोकसभसँ बचए गामसँ भागल छलहुँ।' ई तीन स्तर कुन्तकक 'वक्रोक्ति' थिक।

१०. इ. सामाजिक व्यंग्य: 'ऐ महिनामे आबि, केहनो घरेके कोठी, भम्ह भइए जाइछ'- ई आसिन-कातिकक आर्थिक तंगीक सटीक चित्रण थिक। गोनूझाक चालाकी एक जीवन-रणनीति थिक- हँसीमे थिक, तथापि यथार्थ थिक। मैथिल समाजक ग्रामीण आर्थिक चक्रक ई दर्पण थिक।

समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

१२. अ. कापड़िक कथाकार-रूपक विशेषता

मैथिलीक खाँटी स्वरूपक संरक्षण

कापड़िक सभसँ विशिष्ट योगदान थिक- समानान्तर धाराक खाँटी मैथिली केँ साहित्यिक प्रतिष्ठा देनाइ। 'लबकनिञा', 'हड़हड़ही', 'छगुनाए', 'धतपताए', 'हपसि-लपकिक'', 'पछमुड़िया', 'हठि-बरदम', 'घैहर गरजु', 'हेहर-थेथर'- ई सभ शब्द यदि कापड़ि नहि लिखितथि त' साहित्यमे नहि अबितए।

पशु-भाषा परम्पराक पुनरुद्धार

'लछमिनिञा कनिञा'मे पशुभाषा-ज्ञान, हनुमान नाम स्मरणके महिमा'मे दिव्य-बुद्धि- ई दुनूमे कापड़ि मैथिली लोककथाक प्राचीन 'पञ्चतन्त्र-जातक' परम्पराकेँ जीवन्त रखै छथि। आधुनिक मैथिली कथामे ई परम्परा लगभग लुप्त भऽ गेल छल।

पौराणिक कथाक नव-पाठ (Counter-reading)

'यज्ञ-सीता'मे राम-सीता-सम्बन्धक प्रश्न, 'छौंड़ी-सुद्युम्न'मे लिंग-परिवर्तनक कथा, 'हाय राम!'मे रामक 'मर्यादा'पर प्रश्न- ऐ सभमे कापड़ि पौराणिक कथाकेँ आँखि बन्द कऽ स्वीकार नहि करै छथि। ओ 'critical engagement' (आलोचनात्मक संवाद) करै छथि- इएह हुनकर आधुनिकता थिक।

हास्य-व्यंग्यक कुशल प्रयोग

'गोनूबाबू घरेपर', 'नम्बर', 'तप आ सत्संग', 'हृदयबासी ईश्वर'- सभमे हास्य-व्यंग्य अछि। मुदा ई हास्य सरल मनोरंजनसँ आगू अछि- दर्शन आ सामाजिक टिप्पणी।

१२. आ. सीमा

(क) कथाक लम्बाइ: अधिकांश कथा अत्यन्त संक्षिप्त (फेसबुक-पोस्ट आकारक)- गहन चरित्र-विकास सम्भव नहि होइछ।

(ख) पुनरावृत्ति: दोहराओल विषय बहुत अछि- सम्पादन-अभावक परिणाम।

(ग) कथाक व्यापकता: सभ कथा धार्मिक-पौराणिक या लोकनीतिक अछि। समकालीन सामाजिक यथार्थपर आधारित कथा (जेना 'लछमिनिञा' जेहन) बहुत कम अछि।

१२. इ. मैथिली लोककथाक इतिहासमे स्थान

मैथिली लोककथाक इतिहासमे- मैथिली परम्परामे कापड़ि विरल छथि जे ग्रामीण मैथिलीकेँ साहित्यिक कथाक माध्यम बनाबै छथि।

विदेह समानान्तर इतिहासक दृष्टिसँ- 'What the Canon Left Out'- कापड़िक कथा मुख्यधारा मैथिली साहित्य-इतिहाससँ 'छोड़ल गेल' अछि। नेपालक मैथिली कथाकारकेँ साहित्य-अकादेमी-केन्द्रित इतिहासमे ठाम नहि भेटैत छल। एहि समीक्षाक माध्यमसँ विदेह ओहि अन्यायकेँ सुधारए चाहैए।

रचनाकारक प्रति समर्पित: परमेश्वर कापड़ि- मैथिलाक माटि-पानिक सच्चा सेवाधर्मी

गजेन्द्र ठाकुर

परमेश्वर कापड़ि- पद्य-रचनाक आलोचनात्मक समीक्षा

(मूल रचना, अनुवाद, उद्धृत पद्य -सभ सम्मिलित)

रस-ध्वनि-वक्रोक्ति • नव्य-न्याय • विदेह समानान्तर इतिहास

भूमिका: परमेश्वर कापड़िक कविता-संसार

परमेश्वर कापड़िक रचना-दस्तावेजमे पद्य-रचनाक विविध स्तर अछि- हुनकर मौलिक पद्य, हुनकर आलोचनामे उद्धृत अन्य कविक गजल, बालगीत, ऋग्वेदक अनुवाद, संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद, आ विभिन्न लोकगीत-फकड़ा। पद्य-रचनाक श्रेणी निम्न प्रकारसँ अछि:

(क) मौलिक मैथिली दोहा/मुक्तक

(ख) ऋग्वेद नासदीय सूक्तक मैथिली अनुवाद -'तत्ववोध'

(ग) संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद -गीता, नासदीय, सीता-स्तोत्र

(घ) बालगीत -'हमर जनकपुरधाम', 'सीता अवतार'

(ङ) 'रेङ-रेङ'क गीत-फकड़ा

(च) हिन्दी गजल (धीरेन्द्र प्रेमर्षि) -कापड़िक समीक्षा-सहित

(छ) डा राजेन्द्र विमलक मैथिली गजल -कापड़िक विस्तृत समीक्षा

(ज) कथा-काव्य 'दाम'

१. 'तत्ववोध'- ऋग्वेदक नासदीय सूक्तक मैथिली अनुवाद

ई सम्पूर्ण दस्तावेजक सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी पद्य-रचना थिक। ऋग्वेदक दशम मण्डलक १२९ म सूक्त -'नासदीय सूक्त'- जे सृष्टिक रहस्यपर विश्व साहित्यक प्राचीनतम दार्शनिक प्रश्न उठाबैछ- तकर कापड़ि मैथिलीमे अनुवाद प्रस्तुत कएने छथि, राधाकृष्णन-मूर ग्रन्थक आधारपर।

१. अ. पद्यांश

केओ नहि तखन छल / नहि निर्जीवो / वायु नहि / नहि छल आकाश ओकर उपर /

की छल गुप्त / कत? / ककर संरक्षणमे / आ छल गहींर, अमाप्य सागर?

मृत्यु तखनो नहि छल / नहि छल अमर जीवन /

सांस लैत छल वायुहीनतामे / ओकर अतिरिक्त एत' कोनो वस्तु नहि छल।

शुरुमे ओहिमे प्रवेश कएल इच्छा / ई सोचि / सर्जनक सर्वप्रथम बीज छल।

के जनैत अछि निश्चित रुपस'? / के एकरा स्पष्ट करत? / कहिया जन्म लेलक / आ कहिया बनल ई सृष्टि?

ईश्वरे ई जनैत छथि / आ शायद ओहो नहि जनैछ!

१. आ. अनुवाद-कौशलक विश्लेषण

ऋग्वेद मूलक 'नासदासीन्नो सदासीत्तदानीम्' (न सत् आसीत् न असत् आसीत्) -'तखन ने होइत छल ने नहि होइत छल'- यएह सृष्टि-पूर्व-अवस्थाक नेति (नकारात्मक नै) वर्णन कापड़िक अनुवादमे बदलि गेल 'केओ नहि तखन छल / नहि निर्जीवो।' ई छोट-छोट, खण्डित पंक्ति- अनुवादक नहि, पुनर्सृजनक लक्षण थिक।

मूल संस्कृतक 'आनीदवातम् स्वधया तद् एकम्' (वायुहीनतामे ओएह एक साँस लैत छल)- कापड़ि लिखै छथि 'सांस लैत छल वायुहीनतामे।' ई एक पंक्ति मैथिलीक गहनतम विरोधाभास-काव्य (Oxymoron poetry) थिक। वायुहीनतामे साँस- यएह विरोधाभास सृष्टि-पूर्वक अकथनीयताकेँ व्यक्त करैछ।

१. इ. रस-विश्लेषण

भरत मुनिक नवरसमे 'अद्भुत' रस - जे आश्चर्यक भावसँ उत्पन्न होइछ - एहि कवितामे सर्वत्र व्याप्त अछि। 'सर्जनक सर्वप्रथम बीज छल'- यएह उक्ति अद्भुत रसक चरमोत्कर्ष थिक। मुदा अन्तिम पंक्ति -'ईश्वरे ई जनैत छथि / आ शायद ओहो नहि जनैछ!' - अद्भुत रसकेँ 'करुण'मे बदलि दैछ - अज्ञानक करुणा।

१. ई. नव्य-न्यायिक दृष्टि

गंगेश उपाध्यायक 'प्रमाण-सीमा' (Epistemological Limit) सिद्धान्तक अनुसार -प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द -ई चारू प्रमाण सृष्टि-पूर्वक ज्ञान देबएमे असमर्थ अछि। 'के जनैत अछि निश्चित रुपस'?' - ऐ प्रश्नमे नव्य-न्यायक 'ज्ञान-सीमा' (Cognition Limit) स्वयं कापड़िक अनुवादक माध्यमसँ ध्वनित होइछ।

१. उ. ध्वनि-विश्लेषण

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार, एहि कवितामे तीन ध्वनि-स्तर अछि: (अ) शाब्दिक -सृष्टि-पूर्वक भौतिक वर्णन। (आ) रूपकात्मक- मानव-अज्ञानताक चित्रण। (इ) दार्शनिक व्यञ्जना -'ईश्वरो नहि जनैछ' -यएह अज्ञेयवादक (Agnosticism) गहनतम ध्वनि थिक। मैथिली साहित्यमे ऐ स्तरक दार्शनिक-काव्य अत्यन्त दुर्लभ अछि।

१. ऊ. विदेह फ्रेमवर्क

मैथिली कवितामे वैदिक दर्शनक ई साहसी अनुवाद-परम्परा दुर्लभ अछि। विद्यापतिक बाद -जे संस्कृत आ अवहट्ठक बीच सेतु बनेलथि - कापड़ि ऋग्वेदक सर्वाधिक रहस्यमय सूक्तकेँ मैथिलीमे उतारि एक नव परम्पराक आरम्भ करै छथि। ई विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण अध्याय थिक।

२. मौलिक दोहा/मुक्तक

२. अ. राजनीतिक दोहा

घंटी बाजल, राजनीति टनमन भेल। बहुते दलके देखू जीबिते मइर गेल। ।

ई दोहा कापड़िक राजनीतिक व्यंग्यक सर्वश्रेष्ठ काव्य-अभिव्यक्ति थिक। दुइ पंक्तिमे एक पूर्ण व्यंग्य-चित्र।

'घंटी बाजल' -चुनाव-घंटी। 'राजनीति टनमन भेल' - नव उत्साह। 'जीबिते मइर गेल' - राजनीतिक दलक नैतिक मृत्यु। ई तीन क्रम मात्र दुइ पंक्तिमे - इएह दोहाक क्षमता थिक।

कुन्तकक वक्रोक्ति -'जीबिते मइर गेल' -जीवितावस्थामे मृत्यु - यएह विरोधाभास (Paradox) राजनीतिक नैतिकताक पतनकेँ एक चित्रमे बन्द करैछ। नेपालक राजनीतिक वास्तविकता - जतए दल चुनावमे हारल तखन नहि, आत्मा मरलापर 'जीबिते मइर' गेल -ई आधुनिक मैथिली दोहाक श्रेष्ठ उदाहरण थिक।

२. आ. लोकोक्ति-मुक्तक

भरि गाम ओझा चलब केकर सोझा! ई दुइ-पंक्तिक लोकोक्ति-मुक्तक शहीद-दिवसक सन्दर्भमे कहल गेल अछि। 'भरि गाम ओझा' - गाममे सभ अपनाकेँ विशेषज्ञ मानैछ। 'चलब केकर सोझा' -तखन मार्गदर्शन कत्तऽ सँ?

कापड़ि एहि लोकोक्तिकेँ आन्दोलन-विमर्शमे प्रयोग करै छथि। नेपालमे अनगिन शहीद्-सभ 'आन्दोलन'क नेतागण- मुदा वास्तविक नेतृत्व-शून्यता। ई उपमा-प्रयोग (Metaphorical Application) काव्यिक-राजनीतिक विमर्शक उदाहरण थिक।

भरतक नाट्यशास्त्रक 'हास्य रस' - मुदा उपर-हास्य, भीतर करुण -इएह मिश्रण 'भरि गाम ओझा'क रसनिष्पत्ति थिक।

२. इ. माय-मुक्तक

मायसन माय नै। मायसन केउ नै।

मात्र छह-सात शब्दमे -'माय' (माँ) शब्दक अनन्त महिमा। ई लघुतम काव्य - मुदा भावक सघनता सर्वाधिक। 'मायसन माय नै' - तुलनाक अनुपस्थिति (Absolute Uniqueness) - माँसँ बड़ कोनो माय नहि।

करुण-रसक आधार - वात्सल्यक चरम। भरत मुनिक 'वात्सल्य स्थायी भाव' - जे भारतीय काव्यशास्त्रमे 'करुण' अन्तर्गत आबैछ - ई दुइ पंक्तिमे घनीभूत अछि। ई मातृ-दिवसक अवसरपर कहल गेल - मुदा ओहिसँ परे, कालातीत सत्य थिक।

२. ई. जन्मदिन-श्लोक

आई छठि के पारण दियावाती (लक्ष्मीपूजा) मे माई के जनमदिन छठि परमेश्वरी के पारण मे बाउ के जनमदिन दुन्नूके नामो जन्मदिने अनुरूप, लक्ष्मीपूजामे भेने लक्ष्मी आ छठि पारणमे भेने परमेश्वर

पुत्र (कुमार भास्कर) द्वारा पिता-माताकेँ जन्मदिन-श्रद्धा। ई रचना कापड़िकृत नहि, बरु हुनकर पुत्रकृत। एहि प्रसंगमे एक महत्त्वपूर्ण काव्यात्मक तथ्य अछि: लक्ष्मी (माँ) आ परमेश्वर (पिता) -नामानुसार पावनि - लक्ष्मीपूजापर माँक जन्म, छठि-पारणपर पिताक जन्म। ई संयोग-काव्य (Coincidence Poetry) मैथिली परम्परामे विशिष्ट थिक।

३. बालगीत -'हमर जनकपुरधाम'[(हमर मैथिली पोथी, तेसर किलास)] आ 'सीता अवतार' [भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक' (मैथिली बाल रामायण)]

३. अ. 'हमर जनकपुरधाम'

लवकुशके मामा गाम / सएह थिक हमर जनकपुरधाम धियासिया आदर्शे कएलनि / पुण्य ई मिथिला भूमिक नाम विदेह जनकक ई राजधानी / जनमौलक अगबे सज्ञानी मधुसन मीठ मैथिली भाषा / बजनिहार मैथिल स्वाभिमानी।

ई बालगीत 'हमर मैथिली पोथी, तेसर किलास'मे संकलित अछि। कापड़ि एकरा उद्धृत करै छथि - इएह उनकर बालसाहित्य-चेतनाक प्रमाण थिक।

'लवकुश के मामा गाम' -जनकपुरकेँ लव-कुशक ननिहाल (मामाक घर) कहबाक काव्यिक परम्परा मैथिलीमे पुरान अछि। ऐ बालगीतमे ई परम्परा सहज रूपसँ आबैछ।

'मधुसन मीठ मैथिली भाषा' - ई उपमा अद्वितीय थिक। मधु (मध) सन मीठ- स्वरक माधुर्यकेँ खाद्य माधुर्यसँ तुलना- ई संवेदना-तन्त्रक अन्तर-विपर्यय (Synaesthesia) थिक।

रस: वीर रस - 'मैथिल स्वाभिमानी' - स्वाभिमानक उद्बोधन बालमनमे वीरत्वक बीज रोपैछ।

३. आ. 'सीता अवतार' (भुवनेश्वर प्रसाद 'अध्यापक', मैथिली बाल रामायण)

सीता लेल कोना अवतार / सुनू कथा अछि बड़ विस्तार जखन कैल निशिचर उतपात / धर्मकर्म सब भेल निपात

मिथिलामे वर्षा नहि भेल / तखन जनक हर हाथहि लेल जखनहि जोतै लगला भूमि / तखनहि भेल प्रगट धतिभूमि

गुंजित भेल गगनस' वाणी - जगदम्बा अवतार लेलनि दनुज बढ़ल धरतीपर -हरती भूमिक भार धरती माता नृपति जनककें देलनि नव उपहार कष्ट शोक दुखस' जग पाबि सकल उद्धार

कापड़ि एहि बालगीतकेँ उद्धृत करै छथि -आ ई सटीक चयन थिक। 'सीता अवतार' मैथिली बाल-रामायणक एक महत्त्वपूर्ण गीत अछि जे रावणक रक्त-कलशसँ सीताक जन्मक पौराणिक कथाकेँ सरल-सुगम लयमे कहैछ।

'जखनहि जोतै लगला भूमि / तखनहि भेल प्रगट धतिभूमि' -यएह दुइ पंक्ति बालगीतक सर्वोत्तम भाग थिक। 'धतिभूमि' (धरातलसँ प्रकट) -ई मैथिलीक विशिष्ट शब्द-प्रयोग थिक। लय, तुक, आ भाव -तीनू संतुलित अछि।

अन्तिम चतुर्दल (Quatrain) -'गुंजित भेल गगनस' वाणी' -दीर्घ पंक्तिमे भव्यता आबैछ। यएह लयक उत्थान-पतन (Rhythmic variation) बालगीतकेँ एकघेघाहपनसँ बचाबैछ।

४. 'रेङ-रेङ'क गीत-फकड़ा

घेघहा भेम्ह बजनिञा, गिरगिट लोकनिञा कुदका बेङ कहरिया मूसा सजल बरियात हे!

जुग जग हँसौनिञा बाप पगडी खसौनिञा लाढो मुसरी बियाहन बिल्लीमे चलल बरियात हे!

४. अ. फकड़ाक स्वरूप

ई 'रेङ-रेङ' नाटकक गीत-फकड़ा थिक। मैथिलीक 'फकड़ा' परम्परा -लोकगीतक एक विशिष्ट रूप -जाहिमे जानवर-पात्रद्वारा मानव-समाजपर व्यंग्य कएल जाइछ।

४. आ. प्रतीक-विश्लेषण

'घेघहा भेम्ह' (गला फुलाएल) -राजनेताक आत्म-प्रशंसा। 'गिरगिट लोकनिञा' -रंग बदलनिहार राजनीतिज्ञ। 'कुदका बेङ' (छलांग लगाइत बेंग) -अवसरवादी। 'मूसा सजल बरियात' -माउस-बारात -मूसक बारात बिल्ली-घर जाइत! -ई परम्परागत मैथिली 'बिड़बंबनी' (Burlesque) थिक।

'बाप पगडी खसौनिञा' -पिताक प्रतिष्ठाकेँ नष्ट करनिहार। 'लाढो मुसरी बियाहन' -उच्छृंखल विवाह-बंधन। 'बिल्लीमे चलल बरियात' -बिल्लीक दरवाजेपर बारात -हास्य-रसक चरम।

४. इ. लोकनाट्य-परम्परासँ सम्बन्ध

मैथिली लोकनाटकमे 'नटुआ' परम्परा -जाहिमे जानवर-मुखोटा पहीरि समाज-व्यंग्य कएल जाइछ -एहि फकड़ाक जड़ि ओहिसँ जुड़ल अछि। कापड़ि एहि प्राचीन परम्पराकेँ आधुनिक राजनीतिक थिएटरक सन्दर्भमे जीवन्त करै छथि।

५. धीरेन्द्र प्रेमर्षिक हिन्दी गजल -कापड़िक पाठकीय समीक्षासँ

५. अ. गजलक पाठ

कि धीरज पाल रे बन्धु / जुरुरत टाल रे बन्धु खुशी हैं गमका साथी / समय को चाल रे बन्धु

हैं जो भी दिया खुदाका / उसे संभाल रे बन्धु रखा हैं क्या रंजिश में / जहन से निकाल रे बन्धु

बेखुदी की खुद में ही / खुदी खंगाल रे बन्धु डूबके प्रेम में हो जा / तू माला माल रे बन्धु

हैं गर 'प्रेमर्षि' बनना / जिगर रख लाल रे बन्धु

५. आ. कापड़िक समीक्षा-दृष्टि -स्वयं एक काव्यात्मक गद्य

कापड़ि एहि गजलकेँ पढ़िकऽ जे 'पाठकीय उहापोह' लिखलनि -जे स्वयं एक काव्यात्मक गद्य थिक। हुनकर पहिल प्रतिक्रिया -'तेसर पंक्तिपर पग दैते, मोह भंगसँ मन खटा गेल जे आहि रे वा, ई त' हिन्दी गजल अछि' -ई एक मैथिली-प्रेमीक स्वाभाविक प्रतिक्रिया थिक।

परन्तु तत्पश्चात् कापड़ि अपन संकीर्णता स्वीकार करि, गजलकेँ वस्तुनिष्ठ दृष्टिसँ देखै छथि: 'हिनक रचनाक भाषा-साहित्यक सौष्ठवके समग्रताके निरेखने अवधारने, मान' पड़त जे एहि रचनाके माध्यमसँ हिनक भाषिक रवानी गजलक रचनागत विन्यास बेछप आ सरस अछि।' ई आत्म-सुधार (Self-correction) कापड़िकेँ एक ईमानदार समीक्षक साबित करैछ।

५. इ. गजलक काव्यगत विश्लेषण

'खुशी हैं गमका साथी' -यएह शेर (couplet) सूफी परम्पराक 'फना' (आत्म-विलोपन) दर्शनसँ जुड़ल अछि। खुशी आ गम -विरोधी -परन्तु साथी -ई विरोधाभास-सौन्दर्य (Paradoxical aesthetics) उर्दू गजलक मूल आत्मा थिक।

'बेखुदी की खुद में ही / खुदी खंगाल' -'बेखुदी' (Self-loss) मे 'खुदी' (Self) ढूंढ़ब -ई सूफी आत्म-साक्षात्कारक पद्धति थिक। मीरा, कबीर, रहीमक परम्परा -जाहिमे कापड़ि प्रेमर्षिकेँ राखि देलखिन -उचित थिक।

कापड़िक तुलनात्मक टिप्पणी -'हिनकामे बहुते मीरा, तुलसीदास, आ सूरदासक निर्मल मनक युगसंचेतना देखाइ दैत अछि' -ई मैथिली आलोचनाक उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

६. डा राजेन्द्र विमलक मैथिली गजल -कापड़िक विस्तृत समीक्षा

६. अ. गजल-१: क्रान्तिक आह्वान

जोड़ि बाँहि बाँहस', जोरस' आवाज दियौ रोटी चोरओने अछि, पेट ओकर फाड़ि लिय।

बहिरा करैत अछि, डँसैत रहत, पुजू नहि घेंटे छपटि दियौ, हाथमे तरुआरि लिय।

हमर खून जे पीलक, कए देबै खून तकर अपन खून-खूनमे, धधरा पसारि लिय।

रावण-बध धर्म थिक, जरत पापके लंका डंका से पीटि-पीटि, धर्म-ध्वजा गाड़ि लिय।

शब्दक हुक्कालोली, भजिते हम रहब विमल चेतनाक दीपावली, सजा आ' सिङारि लिय।

समीक्षा

कापड़ि एहि गजलकेँ 'बहुत आक्रमक तथा विष्फोटक' कहै छथि -ई सटीक वर्णन थिक। 'घेंटे छपटि दियौ, हाथमे तरुआरि लिय' -ई रौद्र-रसक चरमोत्कर्ष थिक। भरत मुनिक रौद्र-रस -'क्रोध' स्थायी भाव -एहि शेरमे प्रचण्ड रूपसँ उपस्थित अछि।

'रोटी चोरओने अछि' -शोषण-विमर्श। 'पेट ओकर फाड़ि लिय' -रूपकात्मक प्रतिशोध -शाब्दिक हिंसा नहि, काव्यिक न्याय-माँग। वक्रोक्ति-दृष्टि: 'धर्म-ध्वजा गाड़ि लिय' -प्रतिरोधकेँ धर्म-युद्ध (Dharmic war) कहब -यएह वक्र-प्रतीकतन्त्र थिक।

६. आ. गजल-२: 'मार सार दोगलाके' -व्यंग्य-गजल

ठाँय ठाँय गोली, मार सार दोगलाके दैत छौक बोली, मार सार दोगलाके।

चास-बास, बेटी-पुतहुधरि ने छोड़तउ ओढ़ने छौ खोली, मार सार दोगलाके।

पुरखा-दर-पुरखा, बस घेंट रेतलकौ छौ घेंटकट्टा-टोली, मार सार दोगलाके।

ऐ गजलमे 'मार सार दोगलाके' -पाँचोपर एकहि रदीफ (Refrain) -यएह रिपीटिशन तकनीक रौद्र-रसकेँ प्रचण्ड करैछ। 'चास-बास, बेटी-पुतहुधरि' -अर्थात् जीवनक सभ कुछ -सर्वग्रासी शोषण। 'घेंटकट्टा-टोली' -गला काटनिहारक दल -ई मैथिलीक विशिष्ट गारि-शब्द जे काव्यमे प्रयुक्त होइछ -साहसिक भाषाई प्रयोग थिक।

६. इ. गजल-३: 'छै कोन लोकक बस्ती'

छै कोन लोकक बस्ती, सभ लोक एतए घायल छै छै खोपरीपर ताला, आ जीभ सभक काटल छै।

लटकि चलै लोक एतए, हैँज बान्हि सूलीपर छै कोन शहर, जतए लोक स्वेच्छास' टाँगल छै।

बदलै छै संविधान रोज, वेश्याक नया लहङासन नूआ हमर मतारिके, एखनो धरि फाटल छै।

ई गजल विमलक सर्वश्रेष्ठ थिक। 'बस्ती जतए सभ घायल' -ई उद्घाटन-शेर (Mataala) अद्भुत थिक। 'खोपरीपर ताला, जीभ काटल'- मानसिक-वाचिक दासताक रूपक। 'लटकि चलै हैँज बान्हि सूलीपर' -यएह सूली-उपमा (Crucifixion metaphor) आधुनिक मैथिली गजलमे नव थिक।

'संविधान बदलै रोज, वेश्याक नया लहङासन' -'वेश्या-संविधान' उपमा -अत्यन्त विवादास्पद, मुदा काव्यिकतः अत्यन्त प्रभावशाली। 'नूआ हमर मतारिके एखनो धरि फाटल' -गरीबीक यएह व्यक्तिगत-सार्वजनिक बिम्ब (Personal-Universal image) विमलकेँ महान बनाबैछ।

६. ई. गजल-४: 'तखने दीवाली थिक'

जगमग ई सृष्टि करए, तखने दीवाली थिक चेतनाक दीप बरए, तखने दीवाली थिक।

जीर्ण आ पुरातनकें, हुक्कालोली बनाउ पलपल नव दीप जरए, तखने दीवाली थिक।

तमिस्राकेर सूत्रधार! सावधान! सावधान! राकेट बम उड़ि लड़ए, तखने दीवाली थिक।

ऐ गजलमे 'तखने दीवाली थिक' -रदीफ -प्रत्येक शेरमे दीवाली-उत्सवकेँ एक नव शर्तसँ जोड़ैछ। 'चेतनाक दीप' -बौद्धिक जागरण। 'हुक्कालोली' -लोकभाषाक ई शब्द (खुलेआम उपहास) गजलमे दुर्लभ थिक -लोकभाषा आ उर्दू-गजल परम्पराक मेल।

'राकेट बम उड़ि लड़ए, तखने दीवाली थिक' -दीवालीक आनन्द-पर्वमे बम-विस्फोटक प्रतीक -ई रचनाक सबसँ वक्र उक्ति थिक। 'अन्धकारक सूत्रधार' कें सावधान करब -क्रान्तिकारी चेतनाक काव्यिक उद्बोधन।

६. उ. गजल-५: 'इनकिलाब गगनमे'

इनकिलाब गगनमे के लीखि टङै छै सोनितसँ धरती-आसमान रङै छै।

हमर चान-ताराकेर कविताकेर खून कए के जीवनमे नफरतकेर ग्रन्थ तगै छै?

भूखलसँ नीक मरय गोली खा लोक इएह सत्य बूझि ओ मृत्यु चुगै छै।

'इनकिलाब गगनमे के लीखि टङै छै' -ई उद्घाटन-शेर मैथिली गजलक इतिहासमे स्मरणीय थिक। 'सोनितसँ धरती-आसमान रङै छै' -खूनसँ आकाश-धरती रंगाएल -ई बिम्ब क्रान्ति-काव्यक उत्कर्ष थिक।

'कविताक खून' -कविताकेँ जीवित प्राणी मानिकऽ हुनकर हत्याक आरोप -ई Personification आधुनिक मैथिली कवितामे विरल थिक। 'भूखलसँ नीक मरय गोली खा' -यएह निर्दयी यथार्थवाद (Brutal realism) -जे जीवनक गरीबी-त्रासदीकेँ बिना अलंकारक कहैछ -महान काव्य-उक्ति थिक।

परमेश्वर कापड़ि जकड़ा गजल संग्रह ['सूर्यास्तसँ पहिने' स'- राजेन्द्र विमल] कहि रहल छथि से अछि गीत संग्रह। दोहा, कुण्डलिया, रोला सन गजल सेहो विधा थिक जे नहिये राजेन्द्र विमल सीखि सकलाह नहिये धीरेन्द्र प्रेमर्षि। आब देखू ई तथाकथित बाल गजल राजेन्द्र विमलक संग्रहसँ:

अओ हजूर

खाउ खजूर

अपने मालिक

हम मजदूर

सत्ताक दारू

चूरमचूर

हमरे नोकर

हमहीं दूर

हमरा दगैए

हमरे घूर

पॉच बरखधरि

कानमे तूर

अबै छौ फेरो

पकडिक' थूर

गरीबक मन नइ

होएतै पूर

पोंपों गडीमे

करियौ टूर

भोंटक बक्सा

क' देत भूर

अओ नेताजी

आएब जरूर

एमरी धासब

लाठीक हूर

आ रे कौआ

आ रे कौआ आ'- आ'- आ'

उडि उडि आ, दौड दौडि आ

आ रे चिडैया उडि -उडि आ

हमरा बौआके नाचि क देखा

आ रे सुगा आ'- आ' - आ'

आ रे मैना आ'- आ' - आ'

सुगा मैना उडि - उडि आ

आम लताम खोधि खसा

मैना आएल सिलोरिया

सुगा आएल हरियरिया

जामुन गिरएलक करिया

बौआ बिछलक झोरिया

बौआ पोती

हम्मर ई बौआ पोती

हरख आनन्दक ज्योती

खाएत परौठा रोटी

देत ने केकरो खोंटी

देख'मे बड छोटी

बात बाजत पकठोसी

चट खेलत पट कानत

हँसत त' हीरा - मोती

डिजिटल गेम खेल खेलौना

'टच' 'क्लीक' के गोटी

ई एकटा नीक बालगीत भऽ सकैए बाल गजल नै।

७. संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवाद

७. अ. गीताक श्लोक -'पिता हमस्य जगतो' (रचना-क्र. ८६)

पिता हमस्य जगतो माता धाता पितामहः। वेद्यं पवित्र ओंकार ऋक्सामयजुरेव ॐ। ।

मैथिली भावानुवाद: 'हमही सम्पूर्ण जगतके धाता अर्थात् धारण-पोषण कएनिहार आ कर्म सबके फल देनिहार तथा पिता, माता आ पितामह छी आ जानबायोग्य पवित्र ओंकार तथा ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद हमहीं छी!'

कापड़िक अनुवाद-पद्धति: संस्कृतक संक्षिप्तता -एक श्लोकमे विश्वव्यापी सत्य -मैथिलीमे विस्तारपूर्वक व्याख्यात। 'धारण-पोषण कएनिहार' -'धाता'क अनुवाद -'धाता' शब्दक तीन-स्तरीय अर्थ (Dhata = Creator + Sustainer + Karma-giver) कापड़ि सभकेँ समाहित करै छथि।

७. आ. सीता-स्तोत्र -'त्वं विद्या परमात्रैलोक्य जननी'

त्वं विद्या परमात्रैलोक्य जननी स्वर्गापवर्ग दायिनी। त्रैलोक्या कर्षणी देवी सीता देवी नमस्तुते। ।

मैथिली भावानुवाद: 'अहाँ परम तथा तीनू लोकक माता परम विद्या छी। अहीं स्वर्ग तथा अन्य विशिष्ट लोक प्रदायिनी छी। अहीं तीनू लोकके आकर्षणके केन्द्र छी। हे सीते अहांके प्रणाम अछि!'

'त्वं विद्या' -'अहाँ... परम विद्या' -संस्कृतक तात्कालिक पहचान-उक्ति मैथिलीमे विस्तृत। 'त्रैलोक्या कर्षणी' -'तीनू लोककेँ आकर्षित करनिहारी' -'कर्षणी' शब्द चुम्बकीय शक्तिक अर्थमे -कापड़ि एहि जटिल शब्दकेँ सरल मैथिलीमे 'आकर्षणके केन्द्र' कहिकऽ सुलभ बनबै छथि।

७. इ. नारद-वचन -श्लोकक भावानुवाद

धर्माधर्म विवेकेन वेदमार्गानुसारिणी। सर्वलोकहितासक्ता: साधव: परिकीर्तिता: । । -नारद, १६ (२९-३१)

मैथिली भावानुवाद: 'जे आदमी धर्म आ अधर्मके विवेक क', वेदोक्त मार्गपर चलैछ, हुनका साधु कहल जाइछ।'

ई भावानुवाद कापड़िक अनुवाद-सिद्धान्तकेँ स्पष्ट करैछ -ओ शब्द-प्रति-शब्द अनुवाद नहि करैछ। 'सर्वलोकहितासक्ता' -'सभ लोककेँ हित चाहनिहार' -ऐ एक पदक विस्तार कापड़ि तत्काल नहि करै छथि, कारण अनुवादक लक्ष्य -मैथिली पाठककेँ 'साधु' शब्दक परिभाषा बुझेनाइ -पूरा भ' जाइछ।

७. ई. गंगासागर-स्तोत्र (पुराण)

गङ्गाद्य: सरित: सर्वाधिक स्त्रिषु लोकेषु विश्रुता। ता सर्वा अनपायिन्यो गङ्गसागर मण्डलले। ।

मैथिली भावानुवाद: 'हे पार्वती! त्रिभुवनमे विख्यात गंगादिक जतेक महापवित्र नदी सब अछि ओ सब श्री मिथिलाके गंगासागर सरोवरमे निरन्तर निवास करैत अछि!'

ऐ श्लोकक उद्धरण कापड़ि जनकपुरक गंगासागर सरोवरक पौराणिक महत्त्वकेँ प्रतिपादित करैबाक लेल करै छथि। 'अनपायिन्यो' (निरन्तर बहैत) -कापड़ि 'निरन्तर निवास करैत' अनुवाद करै छथि -'निवास' आ 'बहब'क बीच अर्थ-विस्तार आश्चर्यजनक थिक। नदी बहैत नहि, निवास करैछ -ई अनुवाद-सृजन थिक।

८. सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसा आ 'दाम'- कथा-काव्य (साक्षी) [परमेश्वर कापड़ि द्वारा प्रस्तुत](विस्तृत पद्य-विश्लेषण)

'दाम' (साक्षी, अर्पण: विद्यापति सेवा संस्थान, २०१२) -मात्रावृत्त कथा-काव्य -पहिनेसँ समग्र कथाक रूपमे विश्लेषित भेल अछि। एत' केवल पद्य-शिल्पक दृष्टिसँ किछु महत्त्वपूर्ण पंक्ति:

छला एक लम्वोदर बाबू, पेट हुनक छल खत्ते। काजक नाम मारथि न माछी, हुरथि भरि थार तुरते। ।

'खत्ते' (खाली/भूखल) + 'तुरते' (तुरन्त) -तुकबन्दी सटीक। 'काजक नाम मारथि न माछी' -हास्य मुहावरा जे 'कोनो काज नहि करब'क लेल प्रयुक्त।

मुदा, एक दिन भेटलनि जखने, भेल राजाक फरमान। साजल गेल संग्राम-साज, हरु अरिदलक प्राण। ।

'साजल गेल संग्राम-साज' -स-पंक्ति अनुप्रास (Alliteration: स, ज, ज, ज) - छन्द-चेतनाक प्रमाण।

वैह रोटी देखौलक खेल, हरलक बघबाक जान। गलै प्राण अपटी सहजे, तें लम्वोदर महान। ।

अन्तिम पंक्ति -'तैँ लम्वोदर महान' -व्यंग्यात्मक महानता-स्थापना। इएह विडम्बना (Irony) कापड़िक हास्य-व्यंग्यक शैली थिक।: 'दाम' दीर्घ काव्य अछि मुदा कथात्मक प्रधान अछि।

तहिना सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसापर परमेश्वर कापड़ि कहै छथि: “उछनरहा उपदरिया बच्चा त’ होइते अछि, ओकर बाल साहित्यमे सेहो बहुते हंसी–मजाक कोनो कम नै छै आ सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसा ओना छै त’ कने बेसी पुरान तैयो अपूर्व आ रोचक अछि। “सुरेश पण्डितक हनुमान चालीसाक प्रारम्भिक पंक्ति:

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर।

मम्मी हंसए, कानए फादर। ।

९. समग्र मूल्यांकन -कापड़िक कवि-व्यक्तित्व

९. अ. शक्ति

(क) दार्शनिक गहराई: ऋग्वेद अनुवादमे -मैथिली काव्यमे अपूर्व। अज्ञेयवादक काव्यिक अभिव्यक्ति।

(ख) लोक-काव्य-परम्पराक जीवन्त उपयोग: फकड़ा, लोकोक्ति-मुक्तक - मैथिलीक जड़िसँ जुड़ल।

(ग) अनुवाद-सृजन: संस्कृत श्लोकक मैथिली भावानुवादमे हुनकर 'रचनात्मक स्वतन्त्रता' -जे अनुवादकेँ पुनर्सृजन बनाबैछ।

(घ) समीक्षक-कवि: प्रेमर्षिक आजाद हिन्दी गजलपर हुनकर टिप्पणी/ राजेन्द्र विमलक गीत संग्रह (गजल संग्रह कहि कऽ प्रकाशित) पर टिप्पणी स्वयं एक काव्यात्मक गद्य थिक।

(ङ) राजनीतिक व्यंग्य-काव्य: 'घंटी बाजल' दोहा -आधुनिक मैथिली दोहाक उत्कृष्ट नमूना।

९. आ. सीमा

(क) स्वयंकृत पद्य अत्यन्त अल्प: अधिकांश पद्य अन्य कविक- विमल, प्रेमर्षि, 'अध्यापक'- जकर समीक्षा कापड़ि करै छथि।

(ख) दीर्घ मौलिक कविताक अभाव।

(ग) बिम्ब-विधान: कापड़िक बिम्ब (imagery) लोककथा-परम्पराक बिम्ब थिक -भव्य आधुनिक बिम्ब-सृजनक अभाव।

९. इ. विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान

परमेश्वर कापड़ि प्राथमिक रूपे कथाकार आ नाटककार, द्वितीयतः समीक्षक-कवि। तथापि हुनकर ऋग्वेद-अनुवाद ('तत्ववोध'), राजनीतिक दोहा, आ 'रेङ-रेङ'क फकड़ा - मैथिली पद्य-इतिहासमे हुनकर उल्लेखनीय योगदान थिक। विदेह समानान्तर इतिहास -'What the Canon Left Out' - एहि कवि-आलोचक-अनुवादककेँ समुचित मान दैछ।

गजेन्द्र ठाकुर

परमेश्वर कापड़िक रचना-संसार- विस्तृत मैथिली साहित्यिक समीक्षा

भूमिका: परमेश्वर कापड़ि आ हुनकर रचना-संसार

परमेश्वर कापड़िक ६०० सँ बेसी रचना - लोककथा, आख्यान, पौराणिक कथा, व्यंग्य, सांस्कृतिक निबन्ध, भाषा-विमर्श, आत्मकथात्मक प्रसंग, पुरस्कार-विमर्श, राजनीतिक टिप्पणी, आ नाट्य-समीक्षा ई सभ मिलिकऽ हुनकर एक विशाल, बहुआयामी रचना-संसारक निर्माण करैछ। विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक दृष्टिसँ कापड़ि ओहि 'छोड़ल गेल' मैथिली साहित्यकारक श्रेणीमे अबैछ जिनका मुख्यधारा साहित्यिक संस्था प्रायः उपेक्षित कएने अछि।

ई समीक्षा हुनकर प्रत्येक रचना-विधाक विस्तृत विश्लेषण भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त, गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्कक चार स्तम्भपर कएल गेल अछि।

भाग १: लोककथा आ लोकाख्यान

१.१ 'हनुमान नाम स्मरणके महिमा': ई रचना मैथिली लोक आख्यानक शुद्ध परम्परामे रचित अछि। रावण-हनुमान-नवग्रहक प्रसंग कापड़ि अपन विशिष्ट 'बजैया-बोल' शैलीमे प्रस्तुत कएलनि अछि। रचनाक भाषा 'बजैया-बोल' मैथिलीमे अछि।

रस-विचार: एहि रचनामे भक्ति-रसक प्रधानता अछि। हनुमानजीक करुणामय स्वभाव (नवग्रहपर दया), वीरत्व (रावणक लंका-दहन), आ दास्य-भक्ति - तीनू रसक सुन्दर समन्वय कएल गेल अछि। आनन्दवर्धनक 'ध्वनि' सिद्धान्तक अनुसार, हनुमानकेँ 'वर मांगबाक आवश्यकता नहि' - इ उक्ति गूहार्थ शक्तिक व्यञ्जना करैछ - जे ईश्वरकृपा माँगएसँ नहि, स्वयं-समर्पणसँ भेटैछ। नव्य-न्यायिक दृष्टि: गंगेशक 'शब्द-प्रमाण' (Testimonial Knowledge) सिद्धान्तक अनुसार, नवग्रहक वचनवद्धता 'आप्त-वाक्य' (Authoritative Testimony) थिक। नव्य-न्यायमे आप्त-वाक्यक वैधता - प्रामाणिक वक्ताक उक्ति - ई भाव कापड़ि लोककथाक रूपमे प्रस्तुत कएने छथि। विदेह फ्रेमवर्क: मैथिली लोक साहित्यमे रामायणी आख्यानक ई परम्परा - जाहिमे राम-हनुमानक स्थानपर नवग्रहक मोक्ष केन्द्रमे अछि - मिथिलाक अपन दृष्टिकोण थिक। ब्राह्मणी मुख्यधाराक बजाय लोकक हनुमान - ई विदेह समानान्तर इतिहासक महत्त्वपूर्ण अंश थिक।

१.२ 'लछमिनिञा कनिञा': ई रचना मैथिली लोककथाक सर्वोत्तम नमूना थिक। बुढ़बा-बुढ़िया-पुतौह-नढ़िया-कौआ-सांपक श्रृंखलाबद्ध आख्यान एक बुद्धिमती स्त्रीक साहस, चतुराई, आ अन्ततः पारिवारिक मेलक कथा कहैछ। भाषाक विशेषता: 'लबकनिञा', 'हड़हड़ही खटबनरी', 'पिठिया-ठोक धमक्का', 'नङटिनिञा रकमसनी', 'धीपल आइग-बाउल' - ई सभ 'बजैया-बोल' मैथिलीक अनमोल शब्द-सम्पदा थिक। कापड़ि ऐ शब्दसभकेँ साहित्यिक प्रतिष्ठा दै छथि- यएह हुनकर सबसँ पैघ योगदान अछि। रस-विचार: प्रारम्भमे भयानक रस (कनिञाक रातिमे नदी जेबाक दृश्य), तत्पश्चात् हास्य रस (बुढ़ियाक क्रोध आ गलतफहमी), आ अन्तमे शान्त रस (परिवारक मेल) - ऐ तीन रसक सफल क्रमिक प्रवाह अछि। भरत मुनिक 'विभाव-अनुभाव-व्यभिचारी' भावत्रयीक आधारपर ई रचना परिपूर्ण अछि। वक्रोक्ति: कुन्तकक वक्रोक्ति सिद्धान्तक अनुसार, 'मुर्दकि खाएला नढ़ियाके द'क'' - ई पंक्ति लोककथाक सबसँ वक्र कथन थिक। पुतौह न मुर्दाखोर अछि, न डाइन - ओ एक साहसी, लोभमुक्त स्त्री अछि। मुदा ओकर साउसक दृष्टिमे सभ विकृत देखाइछ। ई वैपरीत्य वक्रोक्तिक सार थिक। स्त्री-विमर्श: पुतौह कनिञा- ओ तन्त्र-मन्त्र नहि जनैछ, ओ डाइन नहि- ओ एक साहसी, कार्य-कुशल स्त्री थिक जे पारिवारिक सुखक लेल असम्भव काज कएलक। मैथिली लोककथामे स्त्री-शक्तिक ई प्रतिच्छाया अनुपम अछि।

१.३ 'यज्ञ-सीता': 'यज्ञ-सीता' कापड़िक सर्वाधिक साहसिक, विवादास्पद आ दार्शनिक रचना थिक। यज्ञकालमे निर्मित स्वर्णमयी सीता-प्रतिमासभक जीवन्त भ' रामसँ स्वीकृति माँगबाक कथा - ई मैथिली साहित्यमे विरल साहस थिक। मिथकक पुनर्व्याख्या: कापड़ि राम-एकपत्नीव्रताक मर्यादाकेँ प्रश्न करै छथि। यज्ञ-सीता बजैछ- 'एहनमे अपने हमरा ग्रहण किए नै करब?' ई पंक्ति मैथिली साहित्यमे स्त्री-अधिकार-विमर्शक एक नव अध्याय थिक। नव्य-न्यायिक दृष्टि: गंगेशक 'व्याप्ति' (Invariable Concomitance) सिद्धान्तक अनुसार: 'जे यज्ञमे सहयोग दैत अछि, ओ अर्धाङ्गिनीक अधिकार रखैछ'- ई यज्ञ-सीताक तर्क थिक। राम ऐ व्याप्तिकेँ स्वीकार करै छथि मुदा तकर विकल्प- द्वापरमे गोपी-रूपमे कृष्णसँ प्रेम – दै छथि। ई दार्शनिक समाधान उत्कृष्ट थिक। ध्वनि-विश्लेषण: रचनाक अन्तिम पंक्ति - 'ओ सबहेटा यज्ञ-सीता ब्रजमे गोपीसब बनलथि' - ई व्यञ्जना-स्तरपर एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक संदेश दैछ: हर उपेक्षित स्त्री अन्ततः अपन मोक्ष पबैछ।

१.४ 'पुण्यात्मा बाउ प्रसंग': ई रचना कापड़िक सबसँ मार्मिक, आत्मकथात्मक रचना थिक। मरणासन्न पिताक संग पुत्रक अन्तिम क्षणक वर्णन - ई मैथिली गद्यमे भावनात्मक उत्कर्षक उदाहरण अछि। भाषाक सजीवता: 'जखैन हम पोताके क'र घुमैलिऐ', 'छटपटाइछै', 'बड़ीकाले', ई सभ मैथिलीक अपन शब्द थिक जे हृदयकेँ सोझे छूबैछ। बाउक वाक्य - 'मर' कालमे अहिना कछमछी

जुआरि अबैहइ' - ई मृत्युक मुँहमे बैसि कएल व्यंग्य-प्रेम-प्रकाशन अद्भुत थिक। करुण रस: अभिनवगुप्तक 'करुण रसक परिणति' (Ultimate Resolution of Pathos) सिद्धान्तक अनुसार, पिताक मृत्यु - करुणाक उत्कर्ष - पुत्रकेँ यएह बोध दैछ: 'बाप शब्दक अर्थ भाव डिक्शनरीमे नहि ताकल जा' सकैछ!' ई वाक्य भारतीय साहित्यक श्रेष्ठ उक्तिसभमे गनले जाएत। 'बाउ प्रसंग' मे लेखक अपन प्रमोशनक चिन्तामे पिताक मृत्युकाल बिताबैछ - यएह मानवीय दुर्बलताक स्वीकार्यता 'यथार्थवादी' साहित्यक लक्षण थिक।

१.५ 'लिम्मविनिञा कविनिञा': ई लोककथा नढ़िया-कौआ-साँप- जानवरसभक भाखा बुझैनिहारि बुतौहक कथा - मैथिली 'बीहनि कथा' (seed story) परम्पराक उत्तम उदाहरण थिक। कापड़ि एहि कथामे पशु-भाषा-विज्ञान (Zoolinguistics) आ लोक-परम्पराक अद्भुत समन्वय कएलनि अछि।

भाग २: पौराणिक आ दार्शनिक निबन्ध

२.१ 'तत्ववोध' – आदिकाव्य: ऋग्वेदक नासदीय सूक्तक (10.129) मैथिली अनुवाद/पुनर्रचना थिक। 'केओ नहि तखन छल / नहि निर्जीवो / वायु नहि / नहि छल आकाश ओकर उपर' - ई पंक्तिसभ मैथिली कविताक दार्शनिक उत्कर्षक उदाहरण थिक। भारतीय दार्शनिक परम्परामे नासदीय सूक्त सृष्टि-रहस्यक सबसँ गूढ़ अन्वेषण थिक। कापड़ि एकरा मैथिली पाठक लेल सुलभ बनेने छथि। 'ईश्वरे ई जनैत छथि / आ शायद ओहो नहि जनैछ!' - ए अन्तिम पंक्ति भारतीय दर्शनक अज्ञेयवाद (Agnosticism) क मर्म थिक। नव्य-न्यायिक दृष्टि: गंगेशक 'प्रत्यक्ष' (Perception) आ 'अनुमान' (Inference) दुनू सृष्टि-ज्ञानमे अपर्याप्त अछि- इएह नासदीय सूक्तक ध्वनि थिक। 'के जनैत अछि निश्चित रुपस'?'- ई प्रश्न नव्य-न्यायक 'प्रमाण-सीमा' (Limits of Valid Knowledge) क स्वीकारोक्ति थिक।

२.२ 'पुराणोक्त परिभाषा': नारद-स्मृतिसँ उद्धृत 'सत्य', 'धर्म', 'अहिंसा', 'असत्य', 'साधु' - ऐ पाँच तत्त्वक व्याख्या कापड़ि मैथिलीमे प्रस्तुत कएलनि अछि। 'धर्माधर्म विवेकेन वेदमार्गानुसारिणी: / सर्वलोकहितासक्ता: साधव: परिकीर्तिता:' - नारदक श्लोकक समावेश समीचीन थिक। ई रचना कापड़िक पाण्डित्यक प्रमाण थिक। ओ केवल लोककथाकार नहि, बरु शास्त्रीय परम्पराक ज्ञाता सेहो छथि। विदेह फ्रेमवर्कमे, ई शास्त्र-परम्परा आ लोकपरम्पराक समन्वय कापड़िक विशेषता थिक।

२.३ 'छिन्नमस्ता भगवतीक तान्त्रिक स्वरूप': ई कापड़िक सर्वाधिक विद्वत्तापूर्ण रचना थिक। मिथिला चित्रकलाक आधारपर छिन्नमस्ताक तान्त्रिक व्याख्या- सृष्टि-ध्वंस-पुनर्निर्माणक दार्शनिक व्याख्या- अत्यन्त गहन थिक। 'प्रकाश आ ध्वनिक अन्तर्प्रक्रिया एतेक भयानक आ प्रचण्ड होइत अछि जे सृजनक सम्वन्ध सर्जकस' एके झटकामे विच्छिन्न भ' जाइछ।'- ई वाक्य भारतीय तान्त्रिक दर्शनक मर्म थिक। 'माता आ शिशुक बीचक नाभिनालकेँ जाधरि काटल नहि जाइछ ताधरि नवजात शिशु स्वतन्त्र अस्तित्वमे आबि नहि सकैत अछि।' - ई जैविक रूपक छिन्नमस्ताक तान्त्रिक प्रतीकतन्त्रकेँ अद्वितीय तरीकासँ स्पष्ट करैछ। कापड़ि मिथिला-चित्रकलाक तान्त्रिक आधारकेँ वैज्ञानिक-दार्शनिक दृष्टिसँ व्याख्यायित करै छथि। ई मैथिली साहित्यमे दुर्लभ अछि।

२.४ 'आयुर्वेद आ धनतेरस': ब्रह्माजीक आयुर्वेद-रचना, त्रिसूत्र, आत्रेय-धान्वन्तर सम्प्रदाय, आ क्षीरसागर-मन्थनक वर्णन - ई रचना कापड़िक शास्त्रीय ज्ञानक प्रमाण थिक। 'तिलासंक्रान्ति मनक पावनि अछि', 'फगुआ मनक पाबनि', 'दुर्गापूजा आत्माक' - ऐ तीन-भागक वर्गीकरण कापड़िक दार्शनिक दृष्टिक परिचायक थिक।

२.५ 'विवाह-संस्कार आ अधिकार': विवाहक व्युत्पत्ति - 'वि+अव+हार' - आ कन्यादान-पाणिग्रहण-होमक दार्शनिक व्याख्या कापड़ि बहुत विद्वत्तापूर्वक कएलनि अछि। 'आब एहिमे जहियास' आय आ अधिकार तत्व ढुकलैए जीवन भार आ भाउर भ' गेल अछि' - ऐ अन्तिम वाक्यमे आधुनिक विवाह-विमर्शक व्यंग्यात्मक टिप्पणी अछि।

भाग ३: सांस्कृतिक निबन्ध आ समकालीन टिप्पणी

३.१ 'भारु की मोरु?!': ई कापड़िक सांस्कृतिक-ऐतिहासिक निबन्धक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। भारु (भारतीय रुपैया) आ नेरु (नेपाली रुपैया) क अर्थ-विस्तार करैत ओ विद्यापति आ मलंगियाजीक नेपाल-भारत द्विधाक प्रसंगमे मैथिली साहित्यिक इतिहासकेँ पुनर्विचारक निमन्त्रण दैछ। 'विद्यापति नेपालमे आबि, घर-घरारी अरजि, पोखरि इनार खना, कृतकार्य क' ध', आजीवन विद्यापति एतहि मरि-खपि गेलाह, तैयो उ भारु?' - ई प्रश्न मैथिली साहित्यिक राष्ट्रवादक मर्मकेँ छूबैछ। कापड़ि मैथिली-नेपालक पहचानकेँ स्वतन्त्र आ स्वाभिमानी रूपमे स्थापित करबाक पक्षमे छथि। महेन्द्र मलंगियाजीक गिनिज-बूक प्रमाणपत्र-प्रसंगमे कापड़ि एक महत्त्वपूर्ण प्रश्न उठबै छथि: 'मलंगियाजीके नाट्य माइजन' कहल जाओ तखन कि हुनका 'नेपालक मैथिली नाटककार' कहब अनुचित अछि? ई मैथिली-नेपाल राजनीतिक पहचानक विमर्श थिक।

३.२ 'मैथिली लोक रंगमंच: मैथिली लोकनाट्यपर कापड़िक निबन्ध मैथिलीक रंगमञ्च-इतिहासक महत्त्वपूर्ण दस्तावेज थिक। 'मैथिली संस्कृतिक अपन विभिन्न अवयव आ उपादानसब छै, माने लोकभाषा, लोक नाच नाट्य, गीत गाथादि' - ई वाक्य मैथिली सांस्कृतिक समग्रताक दृष्टि प्रकट करैछ।

'परबहा' गामक वर्णन: 'परबाह अहा'- ई नामव्युत्पत्ति रोचक आ सांस्कृतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। जे लोक अपन भाषा-साहित्य-संस्कृति-रंगमञ्चक परबाह करैछ - ओ 'परबहा' थिक। शब्द-विलासक ई उदाहरण कापड़िक भाषा-चेतनाक परिचायक थिक।

३.३ 'लोकभाषा मैथिली की जय!': ई कापड़िक भाषा-चिन्तनक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। 'वेद-पुराण, धर्म-दर्शन आ कला-विज्ञानक भाषा देववाणी... एतेक ने सकबेधक' गछेरल रहैक, जे मरि गेलै' - ई संस्कृतक मृत्युक समाजशास्त्रीय व्याख्या थिक। कापड़ि मैथिलीक भविष्यकेँ लोकभाषाक रूपमे देखैछ, ने कि 'बभन-भाषा' (मानक मैथिली) क रूपमे। ऐ रचनामे कापड़ि डा रामावतार यादवक 'मानक मैथिली' आन्दोलनपर सूक्ष्म व्यंग्य करै छथि - 'बोङपादी ऐंठलक बभन-भाषा'। विदेह समानान्तर फ्रेमवर्कक दृष्टिसँ ई विमर्श महत्त्वपूर्ण थिक: मैथिलीकेँ लोकक भाषा रहबाक चाही, ने कि पण्डित-शास्त्रीक।

३.४ 'सीतासखी गंगासागर': जनकपुरक गंगासागर सरोवरक दुर्दशाकेँ कापड़ि पौराणिक-काल्पनिक कथाक रूपमे प्रस्तुत करै छथि। गंगासागर 'झखरी बुढ़ियाक रूप धऽ' महाकुम्भ जाइछ - ई प्रतीकात्मक कल्पना अद्भुत थिक। ओत' गंगाजलक शुद्धतासँ आत्मग्लानि होइछ आ जनकपुरवासी सभकेँ कोसै छहि। ई व्यंग्य-कथन सहर-नगरपालिकाक उपेक्षापर टिप्पणी थिक।

भाग ४: व्यंग्य-रचना

४.१ 'एहने जनकपुर?': जनकपुर उपमहानगरपालिकाक बदहाल सड़क, मच्छर-पालन, आ नेताक उदासीनतापर ई व्यंग्य अछि। 'महान उपमहानगरपालिकाक वडा नं. १६ पुलचौकक, २०५१ सालमे... बिलटू पजियारक बिकट पालीमे धाके-धौसे... मटिया सड़क निर्माण भेलै, तकर किछु छेंट... ऐ तीस बरखक अभ्यन्तरमे, एको छौ/टेलर माटि नै पड़ने' - ई लेखन स्थानीय पत्रकारिताक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। 'तब, हे यौ जनकपुर! विकास नामक सूरदासके घीउ, पातपर गड़गरएनहि बूझब!?' - ई 'सूरदासके घीउ' मुहावरा मैथिली व्यंग्य-साहित्यमे एक मणि थिक। विकासक घीउ - जे अन्धकेँ नहि देखैछ - ई नकारात्मक राजनीतिपर अद्वितीय व्यंग्य थिक।

४.२ राजनीतिक व्यंग्य-श्रृंखला: कापड़िक व्यंग्य-श्रृंखला 'हगना-पदना', 'धोती-गमछा', 'बगड़िया-सङहतिया' - ई काल्पनिक संवाद-रूपमे लिखल गेल अछि। नेपाली राजनीति - जेन-जी आन्दोलन, मधेशी दलक पतन, बालेन शाह, उपेन्द्र यादव, केपी ओली – ऐ सभपर व्यंग्य सटीक अछि।

भाषाक बहुलता: ई नेपालक भाषाई यथार्थकेँ जीवन्त रूपमे प्रकट करैछ। 'रे, बुझ'बला बात ई छै जे ओकर काठमाडौंबाली कनिञा मैडम...' - ई भाषाई मिश्रण (Code-mixing) कापड़िक रचनाशैलीक महत्त्वपूर्ण लक्षण थिक।

व्यंग्य-रसक दृष्टि: भरत मुनिक हास्य-रसमे छह प्रकारक हास्य वर्णित अछि - आत्मस्थ, परस्थ, उभयस्थ, श्लील-अश्लील-सामान्य। कापड़िक राजनीतिक व्यंग्य 'परस्थ' हास्यक श्रेणीमे अबैछ - जे दोसरक मूर्खता आ दुर्बलतापर हँसैछ। ऐ हास्यक उद्देश्य मात्र मनोरंजन नहि, बरु सामाजिक जागरण थिक।

४.३ 'जनकपुर नगरपालिका-विमर्श': रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'क दुइ पुस्तकक विमोचन कार्यक्रमपर व्यंग्य कापड़िक निर्भीक आलोचनात्मक दृष्टिक उदाहरण थिक। 'मधेश प्रज्ञा प्रतिष्ठानक अपने अध्यक्ष होइतो मैथिली विकास कोषमे विमोचन किए?' - ई प्रश्न मैथिली साहित्यिक संस्थागत राजनीतिपर सोझ प्रहार थिक। ऐ रचनामे कापड़िक व्यक्तित्वक एक महत्त्वपूर्ण पक्ष प्रकट होइछ - ओ संस्थागत भ्रष्टाचार आ अवसरवादिताक विरुद्ध स्पष्टवादी छथि। 'अपनेके साँच बोलबाक साहस लोकमे घटि गेल अछि' (अरुण आर्यक उक्ति) - ई कापड़िपर सटीक लागू होइछ।

भाग ५: साहित्यिक समीक्षा आ आलोचना-लेखन

५.१ 'धीरेन्द्र प्रेमर्षिक हिन्दी गजलक पाठकीय उहापोह': ई कापड़िक सर्वश्रेष्ठ समीक्षात्मक लेखन थिक। प्रेमर्षिक हिन्दी गजलकेँ पढ़ैत हुनकर प्रतिक्रिया - 'आहि रे वा, ई त' हिन्दी गजल अछि!' - ई एक मैथिली साहित्यकारक भाषाई प्रतिबद्धताक उदाहरण थिक। मुदा कापड़ि व्यापक दृष्टिसँ ओहि गजलक मूल्यांकन करै छथि: 'हिनक रचनाक भाषा-साहित्यक सौष्ठवके समग्रताके निरेखने अवधारने, मान' पड़त जे एहि रचनाके माध्यमस' हिनक भाषिक रवानी गजलक रचनागत विन्यास बेछप आ सरस अछि।' - ई निष्पक्ष समीक्षाक आदर्श नमूना थिक।

आलोचना-सिद्धान्त: 'कोनहुं रचनाक समीक्षा, निष्पक्ष भाव आ उदार दृष्टिए बिना व्यामोहस' कएने स्वच्छ समालोच्य होइछ' - ई वाक्य कापड़िक आलोचना-दर्शनक सूत्र थिक। मैथिली समीक्षामे ई 'निर्व्यामोह' (bias-free) दृष्टि अत्यन्त दुर्लभ थिक।

५.२ 'डा विमलक गजलक आन्दोलनी ताव-तेवर':

ई कापड़िक सर्वाधिक विस्तृत समीक्षात्मक लेखन थिक। डा राजेन्द्र विमलक गजलक वैचारिक पक्ष, भाषाई शक्ति, आन्दोलनकारी ऊर्जा - तीनूक समग्र मूल्यांकन कापड़ि कएलनि अछि।

'जोड़ि बाँहि बाँहस', जोरस' आवाज दियौ / रोटी चोरओने अछि, पेट ओकर फाड़ि लिय।'

उपर्युक्त शेरपर कापड़िक टिप्पणी: 'हिनक ई आक्रोश बहुत आक्रमक तथा विष्फोटक अछि' - ई सूक्ष्म आलोचनात्मक मूल्यांकन थिक। कापड़ि रस-निष्पत्तिक भारतीय आलोचना-परम्पराक उपयोग अन्तर्निहित रूपमे करै छथि।

कापड़िक विमल-समीक्षामे विशेष महत्त्वपूर्ण पक्ष थिक हुनकर 'वैचारिक गजल' (Ideological Ghazal) सिद्धान्त। कापड़ि कहै छथि जे विमलक गजलक वैचारिक पक्ष 'सामाजिक-सांस्कृतिक संचेतना, जीवनमूल्य, अपन संस्कृति प्रतिक निष्ठा भाव आ लोक प्रतिवद्धताक राग गजि-गजिक' भरल' - ई विशेषता सामान्य गजलकेँ 'महान गजल' बनाबैछ।

भाग ६: आत्मकथात्मक आ स्मृति-प्रसंग

६.१ 'हमरो घरमे मैथिलीक बड़ मान': 'सराइन' प्रसंग: कापड़ि अपन घरनीकेँ 'सराइन' (सर + स्त्रीलिङ्ग) कहै छथि। ई भाषाई नवनिर्माण मैथिलीक विशिष्ट उदाहरण थिक। 'जेना - मास्टरक स्त्रीलिङ्ग मास्टरनी, तहिना डागडरक डागडरनी, सिंहक सिंहनी!'- ई सादगी बला हास्य कापड़िक व्यक्तित्वक परिचायक थिक। ऐ रचनामे घरक जीवनक माधुर्य, 'जंतसारी गीत गबैत अदौरीक घाइट पिसैत बौआमाय' - ई चित्र मैथिली गद्यमे ग्राम्य जीवनक अनुपम दस्तावेज थिक।

६.२ 'पहिने जनि-जति... अदौरीके घाइट': पुरान आ नव घरनीक तुलनापर ई लघु रचना - 'लिखिया लिखिक' चिक्कन-ढुढुर' बनाम 'फैन्सी डेकोरेसन' - ई सांस्कृतिक परिवर्तनपर मार्मिक टिप्पणी थिक। 'अदौरीके घाइट आ तिसियौरीके बेसन पिसैत, जंतसारी गीत गबैत, हमर ई बौआमाय!' - ई चित्र मैथिलीक श्रेष्ठ गद्य-काव्यमे स्थान रखैछ।

६.३ बौआ-बाबू-पोताक जनमदिन-प्रसंग: 'चिन्नीके लडू टेंढ़ो, केहुना मीठे होइछ!' - कापड़िक दाइक ई उक्ति लोकज्ञानक उत्तम उदाहरण थिक। 'जे ननू से गर्भे ननू!' बौआ प्रभुकेँ 'पृथु' नाम राजा पृथुक आधारपर देबाक कारण बतेबाक शैली कापड़िक परम्पराबोधक परिचायक थिक।

६.४ 'जनकपुरधाम विकास-विमर्श': कापड़ि मिथिला आन्दोलनी शहीद दिवस: जनकपुर उपमहानगरपालिकाक बदहाली, परबहा महोत्सव- ऐ सभपर सतत लेखन करै छथि। ई समाज-प्रतिबद्धताक उदाहरण थिक। 'मिथिला शहीद अमर रहए!' - ई आह्वान-वाक्य मात्र नारा नहि, कापड़िक जीवन-दर्शन थिक। ओ मिथिला राज्य-संघर्ष समितिक संयोजक रहिचुकल छथि - ई प्रतिबद्धता हुनकर साहित्यमे सर्वत्र दृष्टिगोचर होइछ।

भाग ७: नाट्य-विमर्श आ रंगमञ्च-चिन्तन

७.१ 'रेङ-रेङ' नाटक-प्रसंग: अयोध्यानाथ चौधरीजीक 'रेङ-रेङ' पढ़िक' दएल प्रतिक्रिया - 'रंग-रेखाके अपन दर्शन आ मनोविज्ञान होइछ' - ई मिथिला-चित्रकलाक रसदर्शनकेँ नाट्य-शिल्पसँ जोड़बाक प्रयास थिक। 'ई मौगीआनी कचनी-भरनी लिखियाटा नहि, बरु आधुनिक चित्र-विद्या कलाक सबटा उर्जा आवेगस' महिमा-मण्डित अछि' - ई टिप्पणी 'रेङ-रेङ'केँ दृश्यकला आ नाट्यकलाक संगमपर स्थापित करैछ।

७.२ मैथिली नाट्यक विकास-विमर्श:

विराट मैथिली नाट्य कला परिषद्, जनकपुरधाम अन्तर्राष्ट्रिय नाट्य महोत्सव, परबहा सांस्कृतिक महोत्सव - ऐ सभपर कापड़िक लेखन मैथिली नाट्य-इतिहासक समकालीन दस्तावेज थिक। ओ केवल दर्शक नहि, सक्रिय सहभागी आ आलोचक छथि।

कापड़िक महत्त्वपूर्ण नाट्य-चिन्तन: 'जनकपुरमे अभिनेता/अभिनेत्री बहुते छथि, धरि आधुनिक वैश्विक रंगमंच, रंग-दर्शन, नाट्य-संचेतना, कलावाद, एकर मुख्य प्रवृत्ति...क अभाव' - ई सटीक निदान थिक।

७.३ 'टटकाल दर्शन' नाटक-प्रसंग: 'टटकाल दर्शन'क कथ्य-शिल्प, डा वीरेन्द्र पाण्डेक अंग्रेजी समीक्षा-प्रकाशन - ई प्रसंग कापड़िक नाट्य-लेखनकेँ अन्तर्राष्ट्रिय स्तरपर मान्यता भेटबाक आह्लादक दृष्टान्त थिक। 'एहि नाटकके कथ्य-शिल्प आ रंगमंचीय प्रविधिक संगहि एकर प्रदर्शनीय जोगार भजार'- कापड़ि व्यावहारिक नाट्यकर्मी छथि, मात्र सैद्धान्तिक नहि।

भाग ८: ऐतिहासिक-पौराणिक आख्यान:

८.१ 'आल्हा-रुदल': पाण्डवक पाँचोभाइक कलियुगमे आल्हा-रुदल-ब्रह्मानन्द-लाखन-वीर मलखान रूपमे अवतरणक कथा - ई पौराणिक-लोकगाथाक सुन्दर समन्वय थिक। युधिष्ठरक अतृप्त अभिलाषाकेँ - 'महाभारतमे हम कहां एकौटा कौरव मार' पइली!' - कृष्ण कलियुगमे पूरा करैछ। ई आख्यान मैथिली लोकगाथा-परम्पराकेँ दार्शनिक आधार दैछ। आल्हा-रुदल लोकगायनक ब्रह्माण्डीय सन्दर्भ - पाण्डव-पुनर्जन्म - एकरा केवल मनोरंजनसँ उपर उठाबैछ।

८.२ 'सीतासखी गंगासागर': पौराणिक-काल्पनिक आ समकालीन सामाजिक व्यंग्यक अद्भुत सम्मिश्रण। गंगासागर सरोवरकेँ 'झखरी बुढ़िया' रूपमे मानवीय कएल गेल अछि जे महाकुम्भ जाइछ। ई 'Personification' (व्यक्तीकरण) क उत्कृष्ट मैथिली प्रयोग थिक।

भाग ९: बालसाहित्य आ बालगीत:

९.१ 'आनन्द मनोरंजनस' उमटाम भरल-पूरल बाल लोकसाहित्य': कापड़ि मैथिली बाल-लोकसाहित्यक महत्त्वकेँ रेखांकित करै छथि। 'ई कहियो नै सठ', निङहट'बला अकूत अनमोल नैसर्गिक सम्पदा अछि' - ई वाक्य बाल साहित्यक प्रति हुनकर गम्भीर दृष्टिक परिचायक थिक। रोशन जनकपुरीजीक नातिक खेलगीत - 'रे बौकला, रे बौकला! / किए टोकले?' - ई बालगीतक रिदम, अटर-पटर-पन मैथिली बालगीतक विशेषता थिक जे कापड़ि सहेज रखलनि अछि।

९.२ गीत-फकड़ा परम्परा: 'रेङ रेङ'क गीत-फकड़ा (घेघड़ा देम्ड बजनिञा) - ई लोकशैलीमे नाटकक सांस्कृतिक ऊर्जाकेँ प्रकट करैछ। कापड़ि लोकगीत-परम्पराकेँ आधुनिक नाट्य-रचनाक अंग बनबैछ।

भाग १०: समग्र आलोचनात्मक मूल्यांकन

१०.१ रचनाकारक शक्ति: परमेश्वर कापड़िक रचना-संसारक सबसँ पैघ शक्ति थिक - हुनकर मैथिलीक शुद्धता आ जीवन्तता। 'लबकनिञा', 'हड़हड़ही', 'धतपताए', 'छगुनाए', 'हपसि-लपकि', 'कुथरैत-भथरैत' - ई सभ शब्द मैथिलीक जीवित परम्पराक प्रमाण थिक। दोसर शक्ति - साहस आ स्पष्टवादिता। राजनीतिक व्यंग्यमे, साहित्यिक संस्थागत आलोचनामे, भ्रष्टाचार-विरोधमे - कापड़ि कहियो 'चौरनिया लोकप्रियता'क लोभमे नहि पड़ला। तेसर शक्ति- बहुविधावादिता। लोककथा, पौराणिक आख्यान, व्यंग्य, आत्मकथात्मक प्रसंग, साहित्यिक समीक्षा, नाट्य-लेखन, दार्शनिक निबन्ध - सभमे सहज गति।

१०.२ सीमा आ आलोचना-बिन्दु: (क) सोशल मीडिया-संरचनाक सीमा: अधिकांश रचना फेसबुक-पोस्टक रूपमे लिखल गेल अछि। ई माध्यमक सीमाबद्धता - संक्षिप्तता, तात्कालिकता – कखनो काल विषयक गहराईकेँ सीमित करैछ। दीर्घ निबन्ध आ शोध-लेखमे हुनकर प्रतिभा अधिक निखरि सकैत छन्हि। (ख) व्यंग्यमे व्यक्तिगत आक्रमण: कखनो व्यंग्य व्यक्तिगत स्तरपर उतरि आबैछ - रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर'पर आलोचना, अन्य साहित्यकारपर टिप्पणी - ई कखनो-कखनो साहित्यिक आलोचनाक बजाय व्यक्तिगत विवादक रूप लैछ। (ग) एकसूत्रता: कखनो-कखनो एक्के विषय - जेन-जी आन्दोलन, मैथिली-भाषा-संघर्ष - बेर-बेर दोहराओल जाइछ। रचनात्मक वैविध्य आरो बढ़ि सकैत अछि।

१०.३ विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान: परमेश्वर कापड़ि विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिकाह। ओ नेपालक मैथिली साहित्यकेँ भारत-केन्द्रित मुख्यधारासँ स्वतन्त्र पहचान दै छथि। मैथिलीक खाँटी रूपकेँ साहित्यिक प्रतिष्ठा दै छथि। लोककथा, लोकनाट्य, लोकगीतकेँ उच्चसाहित्यक समकक्ष स्थापित करै छथि। मिथिला-राज्य-संघर्षकेँ साहित्यिक-राजनीतिक अभियानक रूपमे एकजुट करै छथि। संस्थागत पुरस्कार-तन्त्रसँ बाहर रहिकऽ अपन रचना-धर्म जारी रखै छथि।

१०.४ तुलनात्मक स्थान: मैथिली साहित्यमे कापड़िक तुलना - सांस्कृतिक संरक्षण, नाट्यधर्म, राजनीतिक यथार्थवाद, आन्दोलनी ऊर्जा- ऐ सभसँ सभ धाराकेँ अपन एक व्यक्तित्वमे समाहित करै छथि। ओ ने मात्र साहित्यकार, बरु एक सम्पूर्ण सांस्कृतिक आन्दोलनकर्मी थिकाह।

उपसंहार

परमेश्वर कापड़िक रचना-संसार मैथिली साहित्यक एक बहुमूल्य अध्याय थिक। लोककथाक जीवन्त भाषा, पौराणिक आख्यानक दार्शनिक तत्त्व, व्यंग्यक निर्भीक कलम, आत्मकथात्मक प्रसंगक मार्मिकता, साहित्यिक समीक्षाक निष्पक्षता - ई सभ हुनकर बहुआयामी प्रतिभाक प्रमाण थिक। 'मिनाप बहुत बडका अभियान छी' – ई कापड़िक अपन उक्ति हुनकर जीवन-दर्शनकेँ सारभूत रूपमे प्रकट करैछ। मैथिला/मिथिला अभियान - भाषा-साहित्य-संस्कृति-रंगमञ्च - ई सभ मिलिकऽ एक सम्पूर्ण मिथिला-चेतनाक निर्माण करैछ। कापड़ि ऐ चेतनाक जीवित प्रतिनिधि छथि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त, गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क - ऐ चारू दृष्टिसँ कापड़ि एक महत्त्वपूर्ण, बहुआयामी, साहसी आ प्रतिबद्ध मैथिली रचनाकार थिकाह जिनका विदेह समानान्तर साहित्य इतिहासमे केन्द्रीय स्थान प्राप्त होएब उचित आ आवश्यक अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली नाट्यमंच/ नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त (भाग-१)

सन्दर्भ- परमेश्वर कापड़ि- नाटक 'रेङ–रेङ'

विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

[भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र • पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त • गंगेश उपाध्यायक नव्य-न्याय • विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क]

१. साहित्यकार परमेश्वर कापड़िक जीवन-परिचय

१.१ जीवन-वृत्त

परमेश्वर कापड़ि - नेपालक जनकपुरधामसँ सम्बद्ध एक बहुविधावादी, प्रयोगशील आ सामाजिक-सांस्कृतिक प्रतिबद्धतासँ ओतप्रोत मैथिली साहित्यकार, शिक्षाविद् आ मिथिला-मैथिली अभियानी छथि। ओ राराब (त्रिभुवन विश्वविद्यालय) क्याम्पस जनकपुरधामक मैथिली विभागक पूर्व विभागाध्यक्ष रहल छथि। त्रिभुवन विश्वविद्यालयक केन्द्रीय मैथिली विभागक सेहो पूर्व विभागाध्यक्षक रूपमे हुनकर सेवा मैथिली भाषाशिक्षण, साहित्यिक अनुसन्धान आ लोकसाहित्य-सञ्चयनमे अतुलनीय योगदान देलक अछि।

हुनकर व्यक्तित्वक विशेषता ई अछि जे ओ एकधारे- साहित्यकार, लोकसाहित्यक खाँटी अध्येता, मिथिला राज्य संघर्ष समितिक संयोजक, तथा मैथिली विकास कोषक पूर्व सदस्य-सचिव रहल छथि। समकालीन मैथिली साहित्यमे हुनकर स्थान प्रयोगधर्मी आ यथार्थवादी नाटककारक रूपमे विशेष उल्लेखनीय अछि। हुनकर साहित्यिक उत्पादनमे लोककथा, नाटक, निबन्ध, आलोचनात्मक लेखन, सामाजिक टिप्पणी आ सांस्कृतिक विमर्श सम्मिलित अछि।

१.२ साहित्यिक विधा आ प्रकाशित कृति

परमेश्वर कापड़िक साहित्यिक कर्म बहुविध अछि। हुनकर ज्ञात रचनामे सम्मिलित अछि:

(क) नाटक: 'रेङ–रेङ' - समकालीन राजनीतिक-सामाजिक व्यंग्य नाटक (नेपाल, जनकपुरधाम, अवन्तिका मैथिली नाट्य संस्था) (ख) लोककथा (ग) सांस्कृतिक निबन्ध (घ) सामाजिक टिप्पणी (ङ) गीत-फकड़ा।

ऐ विविधतासँ स्पष्ट होइछ जे कापड़ि केवल विद्वान नहि, बरु एक सृजनशील, बहुआयामी सांस्कृतिक कर्मी थिकाह। हुनकर मूल चिन्ता लोकभाषा, लोकसमाज आ मिथिलाक सांस्कृतिक अस्मिता अछि।

२. नाटक 'रेङ–रेङ' - कथावस्तु आ रंगशिल्प

२.१ नाटकक परिचय

'रेङ–रेङ' परमेश्वर कापड़ि द्वारा रचित मैथिली नाटक थिक जे अवन्तिका मैथिली नाट्य संस्थाक रिहर्सल स्थानपर केन्द्रित अछि। नाटकक शीर्षक 'रेङ–रेङ' एक ध्वन्यात्मक प्रतीक थिक - जे रङ्गमञ्चक रङ्गभेद, जीवनक रङ्गपरिवर्तन आ सामाजिक-राजनीतिक चरित्रक बहुस्तरीय रूपांकन करैछ।

नाटकक मुख्य पात्रसब: श्रीधर (निर्देशक), अनवर, हमाल, अक्षरा, छौंड़ा, लक्ष्मी/ऐश्वर्या, विष्णु/विवेक, बम बहादुर, नूनूकाका। इएह पात्रमण्डल नाटकक सामाजिक वर्ग-संरचनाक प्रतिनिधित्व करैछ - कलाकार, श्रमिक, दैवी शक्ति, पुलिस, आ लोकनाट्यक आत्मा।

२.२ कथावस्तुक संक्षेप

नाटकक आरम्भ होइछ एक पुरान जिमिदारी भवनमे जतए अवन्तिका नाट्य संस्था रिहर्सल कऽ रहल अछि। श्रीधर एक कविता पढ़ैत तन्मय अछि - एक आह्वानगीत जाहिमे रङ्गमञ्चपर सक्रिय होयबाक, समाजक पुनर्निर्माणक आकांक्षा व्यक्त कयल गेल अछि।

तत्पश्चात नाटककेर मध्यमे लक्ष्मी (धन-देवी) प्रकट होइ छथि। तथापि ई प्रकटीकरण कोनो दैवी वरदान नहि, बरु एक कटु सत्यक उद्घाटन थिक - जे लक्ष्मी समाजमे वास्तवमे कतए अछि, आ भ्रष्टाचारी शासन-व्यवस्था ओकरा कोना हरण करैछ। गरीबी सभ पापक जड़ि थिक - इएह नाटकक केन्द्रीय सत्य थिक।

विष्णु (देवता) प्रकट होइछ - मुदा ओ सेहो लक्ष्मीक सोना बाँटि नहि पबैछ। बम बहादुर (पुलिस) प्रकट होइछ आ कलाकारगणकेँ गिरफ्तार करैछ। अन्तमे नूनूकाका (लोकधर्मी प्रतीक) प्रकट होइछ जे लोकनाट्यक माध्यमसँ सत्यक उद्घाटन करैछ। नाटकक समाप्ति विवाह-संस्कारक दृश्यसँ होइछ - जे नवसृजनक, नवजीवनक प्रतीक थिक।

२.३ रङ्गशिल्प आ नाट्यतकनीक

'रेङ–रेङ' एपिक थिएटरक शैलीमे रचित अछि। स्वर-भङ्गिमामे परिवर्तन, तन्मय-भावसँ राजनीतिक नारा-लगावटि, नृत्य आ गायन - इएह ब्रेख्टियन 'वर्फ्रेम्डुङ्स्इफेक्ट' (अपरिचयीकरण) तकनीकक निकट अछि। नाटकमे पाँच प्रमुख नाट्यतकनीक व्यवहृत अछि:

(१) स्वर-भङ्गिमा परिवर्तन—वियोजन-प्रभावक रूपमे Voice Modulation

(२) रङ्ग-तरङ्ग - दृश्य-परिवर्तनक रूपकात्मक प्रयोग

(३) एपिसोडिक संरचना - खण्डित दृश्यविधि

(४) लय-परिवर्तन - लोकगीत, हुमरी, नाराशैली

(५) मेटाथिएटर - नाटकक भीतर नाटकक आत्म-सन्दर्भिता।

३. चतुर्धा विश्लेषण-पद्धति

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास फ्रेमवर्कक अनुसार, समीक्षाक चार स्तम्भ अछि: (अ) भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, (आ) पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त, (इ) नव्य-न्याय (गंगेश उपाध्याय), (ई) विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क।

३.१. भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र

३.१.१ रसविचार - नाटकमे प्रभावी रस

भरत मुनिक नाट्यशास्त्र (नाटकमे नवरस) आ अभिनवगुप्तक अभिनवभारती (रसास्वादन-सिद्धान्त) क प्रकाशमे 'रेङ–रेङ'क रसिक विश्लेषण निम्नलिखित रूपमे होइछ:

मुख्य रस: करुण

गरीबीक त्रासदी, बेरोजगार कलाकारक यातना, लक्ष्मी (धनदेवी) क खाली हाथ जेबाक दृश्य - इएह समग्र नाटकमे करुण रसक स्थायी भावका आधार थिक। 'गरीबी रोग' - यएह रुदनोक्ति समग्र नाटककेँ करुणाक आद्र वातावरणमे राखैछ।

व्यंग्य-रस (हास्य + रौद्र): द्वैत रसानुभव

भरतक हास्यरस आ रौद्र रसक बीच नाटककार एक अजगुत तनाव स्थापित करैछ। बम बहादुर प्रहरीक प्रवेश, लक्ष्मीक प्रस्थान - इएह दृश्यमे हास्य आ रौद्रक सम्मिश्रण अछि। अभिनवगुप्तक 'रसाभास' सिद्धान्तक अनुसार, एतऽ रसक पूर्ण उद्रेक नहि, बरु एक अपूर्ण, विक्षुब्ध अनुभव होइछ - से स्थिति 'रेङ–रेङ'मे बेर-बेर आबैछ।

वीर रस: अन्तिम प्रतिरोध

जेल-दृश्यमे अनवर आ विवेक केर निर्भय प्रतिरोध, लोकनाट्यक माध्यमसँ सत्य-उद्घाटनक दृश्य - इएह वीर रसक अभिव्यक्ति थिक। 'ॐ खम्ब्रह्मन् - सुग ऋतस्य पन्था' - यएह उद्घोष वीर रसक चरमोत्कर्ष थिक।

३.१.२ ध्वनि-सिद्धान्त - आनन्दवर्धनक परिप्रेक्ष्यमे

आनन्दवर्धनक 'ध्वन्यालोक' (८५० ई.) अनुसार, उत्तम काव्यमे 'ध्वनि' - अर्थात् वाच्यार्थसँ परे व्यङ्ग्यार्थक स्तर - मुख्य होइछ। 'रेङ–रेङ'मे ध्वनिक तीन स्तर स्पष्ट अछि:

प्रथम ध्वनि-स्तर: शाब्दिक - 'रेङ–रेङ' रङ्गकेर ध्वनि थिक। द्वितीय ध्वनि: रूपकात्मक - जीवनक रङ्गपरिवर्तनक संकेत। तृतीय ध्वनि: राजनीतिक - भ्रष्टाचारी शासनमे लोक संस्कृतिक विखण्डन।

नाटकक शीर्षक 'रेङ–रेङ' स्वयं एक बहु-ध्वन्यात्मक संकेत थिक - जाहिमे रङ्ग (colour/stage), रोग (disease as poverty), रण (struggle) तथा रेङ (the sound of a suppressed cry) सभ एक संग अनुगुञ्जित होइछ।

३.१.३ वक्रोक्ति - कुन्तकक परिप्रेक्ष्यमे

कुन्तकक 'वक्रोक्तिजीवित'क (१०म शती) अनुसार, उत्कृष्ट काव्य-नाटकमे 'वक्रोक्ति' - सरल अभिधेयसँ भिन्न, विचलित, वक्र अभिव्यक्ति - मूल थिक। 'रेङ–रेङ'मे वक्रोक्तिक कएटा उदाहरण अछि:

(क) देवता विष्णुक प्रवेश - दैवी नहि, बरु व्यंग्यात्मक: ओ मात्र 'दू-टप्पी' बात करैछ आ चलि जाइछ।

(ख) लक्ष्मी (धन-देवी) खाली हाथ जाइछ- यएह सर्वाधिक वक्र कथन थिक।

(ग) सत्यनारायण पूजाक पाठ - गरीबीमे व्यंग्यात्मक धार्मिक अनुष्ठान।

(घ) सोनाक असरफी- स्वर्णस्वप्न जे खाक होइछ - यएह वक्र प्रतीकतन्त्र थिक।

३.२. पाश्चात्य आलोचना सिद्धान्त

३.२.१ ब्रेख्टियन एपिक थिएटर (Brechtian Epic Theatre)

बर्टोल्ट ब्रेख्ट (१८९८–१९५६) क एपिक थिएटर सिद्धान्त 'रेङ–रेङ'क निकटतम पाश्चात्य समकक्ष थिक। ब्रेख्टियन 'Verfremdungseffekt' (अपरिचयीकरण प्रभाव) एहि नाटकमे निम्न रूपमे अभिव्यक्त होइए:

(अ) दर्शककेँ भावनात्मक तादात्म्यसँ दूर राखि तर्क-चिन्तनमे प्रवृत्त करबाक उपाय - स्वर-भङ्गिमा परिवर्तन, नाटकक भीतर गान-नृत्य - इएह ब्रेख्टियन 'Gestus' थिक। (आ) 'गरीबी रोग'क नारा-स्वरूप दोहरायब - ब्रेख्टियन 'Song' तकनीक। (इ) जेलक दृश्यमे 'मोबाइल'पर अनवर-अक्षराक लटपटाइ - दर्शककेँ वास्तवकतासँ जोड़ैछ।

३.२.२ मार्क्सवादी नाट्य-आलोचना

रेमण्ड विलियम्सक ‘Drama from Ibsen to Brecht’ (1952) आ टेरी ईगलटनक ‘Marxism and Literary Criticism’ (1976) क प्रकाशमे ‘रेङ–रेङ’ क वर्ग-संघर्ष विश्लेषण:

नाटकमे शासक-वर्ग (प्रहरी, सरकार, विष्णु/यथास्थितिवादी देवत्व), कला-वर्ग (श्रीधर, अनवर, हमाल, अक्षरा - बेरोजगार कलाकार), तथा लोकवर्ग (नूनूकाका, छौंड़ा) - इएह त्रिभुजीय संघर्ष मार्क्सवादी वर्ग संघर्षक नाट्य रूपान्तरण थिक। सोना (पूँजी) क संचय, वितरण आ अन्ततः निराशाजनक अन्तर्धान - यएह पूँजीवादी संचय-तन्त्रक रूपक थिक।

३.२.३ उत्तर-औपनिवेशिक दृष्टि (Postcolonial Theory)

होमी भाभाक ‘The Location of Culture’ (1994) आ गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक ‘Can the Subaltern Speak?’ (1988) क प्रकाशमे:

'रेङ–रेङ'क भाषा-विमर्श (मैथिली बनाम नेपाली/हिन्दी/अंग्रेजी/संस्कृत/उर्दू - विष्णुक असरफीपर कोन भाषामे लिखबाक विवाद) एक उत्कृष्ट उत्तर-औपनिवेशिक 'हाइब्रिडिटी' (संकरता) दृश्य थिक। नाटककार भाभाक 'Third Space'- तृतीय आकाश - निर्मित

करैछ जतए कोनो एक भाषा/संस्कृति प्रभुत्वशाली नहि। नूनूकाकाक प्रवेश - लोकनाट्यक आत्मा - भरत मुनिक 'पञ्चमवेद' तर्कक माध्यमसँ उपनिवेशी (ब्राह्मणी-संस्कृत) वर्चस्वकेँ चुनौती दैछ।

३.२.४ नारीवादी आलोचना (Feminist Theory)

जूडिथ बटलर ('Gender Trouble', 1990) आ सिमोन द बोउव्वार ('The Second Sex', 1949) क आलोकमे अक्षरा-चरित्रक विश्लेषण:

अक्षरा एकमात्र महिला-पात्र थिक जे नाटकमे मुखर आ साहसी अछि। ओ हमाल (नायक) केँ प्रेमविवाहक प्रस्ताव करैछ, पुलिससँ निर्भय वार्तालाप करैछ। तथापि, लक्ष्मी-दृश्यमे महिलाक आर्थिक शक्ति (धनदेवी) आ पुरुषवादी आर्थिक सत्ताकेर बीच एक तनावपूर्ण 'परफॉर्मेटिविटी' (बटलर) स्पष्ट होइछ।

३.२.५ चीनी साहित्यिक सिद्धान्त

चीनी ‘जिङ जिए’—सौन्दर्यात्मक अनुभव-क्षेत्र—सिद्धान्त; वाङ गुओवेइक ‘Renjian Cihua’ (1908–1910) आ पारम्परिक चीनी रंगमंचक ‘फेंग’ व्यंग्य-परम्पराक प्रकाशमे:

'रेङ–रेङ'क राजनीतिक व्यंग्य चीनी 'जाजू' (Yuan Dynasty Musical Drama) आ 'कुंकू' (Kunqu Opera) परम्पराक व्यंग्यात्मक तत्त्वसँ तुलनीय अछि- जतए शासक-वर्गक मूर्खतापर व्यंग्यात्मक हास्य, कथा-भीतर-कथाक संरचना, आ लोक-सुर (Folk Tunes) क काव्यात्मक प्रयोग केन्द्रमे रहैछ। गरीबी-बोध (Pínkùn yìshí) आ सामाजिक न्यायक आकांक्षा - इएह दुनु परम्पराक साझा केन्द्रबिन्दु थिक।

३.३. नव्य-न्याय - गंगेश उपाध्यायक ज्ञानमीमांसा

३.३.१ प्रत्यक्ष-ज्ञान (Direct Perception) आ नाट्य-सत्य

गंगेश उपाध्याय (लगभग १३२० ई. मे सक्रिय, मिथिला) क 'तत्त्वचिन्तामणि' (प्रत्यक्ष-खण्ड) क 'प्रत्यक्ष' (प्रत्यक्ष ज्ञान) क सिद्धान्तक आलोकमे 'रेङ–रेङ'क ज्ञानमीमांसा:

नाटकमे गरीबीक प्रत्यक्ष अनुभव- 'भूखसँ मरल छी' (अनवर) - एक 'निर्विकल्पक प्रत्यक्ष' (Indeterminate Perception) थिक। लक्ष्मीक प्रत्यक्षीकरण - सोनाक बरसनाइ - एक 'सविकल्पक प्रत्यक्ष' (Determinate Perception) थिक जे अन्ततः मिथ्या सिद्ध होइछ। यएह गंगेशक 'प्रत्यक्ष-भ्रम' (Perceptual Illusion) तन्त्रक नाट्य अभिव्यक्ति थिक।

३.३.२ अनुमान-तन्त्र (Inference) आ नाटकक तर्कशृंखला

गंगेशक 'व्याप्तिग्रह' (Invariable Concomitance) - जे व्याप्तिक आधारपर अनुमान सम्भव होइछ - 'रेङ–रेङ'क केन्द्रीय तर्कक आधार थिक:

व्याप्तिः “गरीबी रहतइ तँ सब रोग रहतइ।” अर्थात गरीबी रहल तँ समस्त दुःख रहत—यएह नाटकक ‘हेतु’ अर्थात तार्किक कारण थिक। साध्यः “सब रोगक कारण गरीबी।” अर्थात समस्त रोगक कारण गरीबी—यएह नाटकक ‘पक्ष’ अर्थात अनुमानक विषय थिक।

नव्य-न्यायक 'परामर्श' (Subsumptive Reflection) तकनीकसँ नाटककार श्रीधरम् क भाषणकेँ एक दार्शनिक-तार्किक घोषणाक रूपमे प्रस्तुत करैछ।

३.३.३ शब्द-प्रमाण आ भाषा-विवाद

नाटकक एक महत्त्वपूर्ण दृश्य - सोनाक असफरीपर भाषाक प्रश्न (मैथिली? नेपाली? हिन्दी? अंग्रेजी? संस्कृत? उर्दू?) - गंगेशक 'शब्द-प्रमाण' (Testimonial Knowledge) सिद्धान्तक नाट्य परीक्षण थिक। गंगेशक अनुसार, 'शब्द-प्रमाण' तखने वैध थिक जखन वक्ता आप्त (प्रामाणिक) हुअय। नाटकमे भाषा-वर्चस्वक प्रश्न इएह जिज्ञासा उठाबैछ: कोन भाषाक शब्द 'आप्त' (Authoritative) थिक? के वक्ता 'आप्त' थिक?

३.४. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क

३.४.१ प्रति-कैनन (Counter-Canon) आ परमेश्वर कापड़ि

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहास आन्दोलनक मूल तर्क थिक जे साहित्य अकादेमी (नई दिल्ली) आ नेपाल प्रज्ञा प्रतिष्ठान-केन्द्रित 'मुख्यधारा' मैथिली साहित्यक इतिहासमे बहुत किछु 'छोड़ि देल' गेल - विशेषतः नेपालक मैथिली साहित्यकार, सीमान्त लेखक, आ लोकनाट्य-परम्परा।

परमेश्वर कापड़ि एहि 'छोड़ल गेल' समूहक प्रतिनिधि थिका। हुनकर 'रेङ–रेङ' –

(क) नेपालक जनकपुरधाम-केन्द्रित मैथिली रङ्गमञ्चक प्रतिनिधित्व करैछ

(ख) साहित्य अकादेमीक संस्थागत वर्चस्वकेँ प्रत्यक्षतः व्यंग्य-विषय बनाबैछ

(ग) लोकनाट्य (नूनूकाका-प्रसंग) केँ शास्त्रीय नाट्यक समकक्ष स्थापित करैछ

(घ) बेरोजगार कलाकारक संघर्षकेँ केन्द्रमे राखैछ - जे मुख्यधारा साहित्यिक इतिहासमे अनुपस्थित अछि

३.४.२ मैथिली रङ्गमञ्चक समानान्तर इतिहासमे 'रेङ–रेङ'

मैथिली नाट्य-इतिहासमे 'रेङ–रेङ' एक विशिष्ट स्थान रखैछ। अयोध्यानाथ चौधरी (यशस्वी मैथिली साहित्यकार) क प्रतिक्रिया सँ स्पष्ट होइछ जे ई नाटक अपन युग-सत्य, लोकयथार्थ आ जेन-जी आन्दोलन ('जेन-जी' - युवा पीढ़ीक विद्रोही आन्दोलन) सँ प्रेरित राजनीतिक परिवेशकेँ सटीकतासँ रेखांकित करैछ।

४. तुलनात्मक अध्ययन - मैथिली नाटककार/साहित्यकारसँ

जतए मूलधारा ऐतिहासिकता आ सांस्कृतिक पुनरुद्धारमे निमग्न अछि, ततए कापड़ि समकालीन राजनीतिक यथार्थपर केन्द्रित छथि। नाट्यतकनीकमे मूलधारा शास्त्रीय त्रि-ऐक्य (स्थान, काल, क्रिया) केर अधिक पालन करैछ, मुदा 'रेङ–रेङ' एपिक थिएटरक खुजल संरचना अपनाबैछ।

महेन्द्र मलंगियासँ तुलना

महेन्द्र मलंगिया लोकनाट्यकेँ सौन्दर्यशास्त्रीय धरातलपर मात्र उठा सकला, ततए कापड़ि ओकरा राजनीतिक प्रतिरोधक अस्त्रमे बदलि देलथि। दुनु नाटककार मैथिली साहित्यमे व्यंग्यकेँ प्राथमिक साहित्यिक उपकरणक रूपमे व्यवहार करै छथि। मलंगिया सीमित रूपमे, मुदा कापड़ि मुक्त नाट्यरूपमे। दुनूक केन्द्रीय चिन्ता फराक अछि, मलंगिया एकटा सीमित वर्गक समस्या लेल मुदा कापड़ि बेचन ठाकुर सन बेरोजगारी, भ्रष्टाचारी व्यवस्थाक विरुद्ध आ मैथिली अस्मिता लेल लिखै छथि।

नाटकक पात्र 'श्रीधरम्' (निर्देशक) सम्भवतः एक व्यंग्यात्मक संकेत थिक - नेपालक मैथिली संस्थागत साहित्यिक व्यवस्थापर।

ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम आ विद्यापतिक (ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न) 'गोरक्षविजय' क नाट्य-परम्परामे नूनूकाका-प्रसंगमे अनुगुञ्जित होइछ। 'भरत मुनिक नाट्यशास्त्र' आ नाटकमे 'पञ्चमवेद' तर्क - अही परम्परासँ प्रत्यक्ष सम्बन्ध अछि। कापड़ि ऐ परम्पराकेँ समकालीन राजनीतिक संदर्भमे पुनर्स्थापित करै छथि।

५. समीक्षात्मक मूल्यांकन - शक्ति आ सीमा

५.१ नाटकक विशिष्ट शक्ति

(क) लोकनाट्य-परम्परा आ आधुनिक राजनीतिक थिएटरक सफल सम्मिश्रण।

'रेङ–रेङ'क सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि यएह थिक जे ओ मैथिली लोकनाट्यक फकड़ाकेँ समकालीन राजनीतिक थिएटरक अस्त्रमे बदलै छथि। ई ब्रेख्टक एपिक थिएटरसँ सेहो आगू जाइत अछि- किएकि एतए सौन्दर्यशास्त्रक जड़ि स्थानीय, लोकपरम्परामे अछि।

(ख) भाषा-बहुलता आ सांस्कृतिक संवाद।

नाटकमे मैथिली, नेपाली, हिन्दी, संस्कृत, उर्दू, अंग्रेजी - इएह बहुभाषिक समांगता स्वयं एक सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य थिक। नेपालक मैथिली अस्मिता - जे बहुभाषिक प्रदेशमे रहैछ - तकर यथार्थ अनुभव नाटकमे सजीव थिक।

(ग) मेटाथिएटर - नाटकक भीतर नाटक।

'रेङ–रेङ' स्वयं एक मेटाथिएटर थिक - यएह एक नाट्यसंस्थाक नाट्यरिहर्सलक कथा थिक जे स्वयं एक सामाजिक नाटकमे परिणत होइछ। ई नाटकक भीतर नाटक संरचना (Play-within-a-Play) मैथिली नाटकमे दुर्लभ अछि।

(घ) ऐश्वर्या/लक्ष्मी-दृश्य - अर्थशास्त्रक रूपक।

लक्ष्मीक सोना-वर्षण, लोभग्रस्त पात्रगणद्वारा ओकर हरण, आ अन्ततः शून्यहस्त विदाई - यएह पूँजीवादी अर्थव्यवस्थाक एक उत्कृष्ट रूपकात्मक चित्रण थिक जे मार्क्सवादी आलोचनाक सभ अपेक्षा पूरा करैछ।

५.२ नाटकक सीमा आ आलोचना-बिन्दु

(क) अन्तिम विवाह-दृश्य - हमाल-अक्षराक विवाह - नाटकक राजनीतिक तेवरसँ किछु असंगत प्रतीत होइछ। यएह परिणति वाणिज्यिक रङ्गमञ्चीय समझौताक लक्षण थिक।

(ख) नूनूकाकाक 'पञ्चमवेद' तर्क - जे नाटकक दार्शनिक उत्कर्ष थिक - ओकरा अधिक विस्तार देल जा सकैत छल।

(ग) पात्रमे मनोवैज्ञानिक गहराई असमान अछि- श्रीधरम् आ अनवर सुविकसित, मुदा छौंड़ा आ बम बहादुर कतहुँ-कतहुँ अतिसरलीकृत रूढ़ि (stereotype) मे बदलि जाइछ।

६. नाटककार आ नाटकक साहित्यिक महत्त्व

६.१ मैथिली रङ्गमञ्चमे योगदान

'रेङ–रेङ' नेपालक मैथिली रङ्गमञ्चकेँ एक नव आयाम दैछ। ओ प्रमाणित करैछ जे -

(क) मैथिली नाटक विश्वस्तरीय राजनीतिक थिएटरक प्रसंगमे रखल जा सकैछ

(ख) लोकनाट्य-परम्परा 'आदिम' नहि, बरु 'आधुनिकतम' विचार-माध्यम थिक

(ग) बेरोजगार, सीमान्त मैथिली कलाकारक संघर्ष साहित्यिक विषयक रूपमे गम्भीर अछि

(घ) जनकपुरधाम - नेपालक मैथिली रङ्गमञ्चक केन्द्र – दरभंगा केन्द्रित इतिहाससँ स्वतन्त्र अपन परम्परा रखैछ

६.२ विदेह समानान्तर इतिहासमे स्थान

विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक फ्रेमवर्कमे, परमेश्वर कापड़ि – एहन रचनाकार छथि जे-

(अ) संस्थागत तन्त्रसँ बाहर रहिकऽ, अपन साहित्यिक कर्म जारी रखै छथि। (आ) लोकसाहित्य-परम्पराकेँ आधुनिक राजनीतिक थिएटरसँ जोड़ै छथि। (इ) नेपालक मैथिली अस्मिता-संघर्षकेँ साहित्यिक अभिव्यक्ति दै छथि। (ई) मिथिलाक सांस्कृतिक वैभवकेँ आधुनिक चिन्तनसँ समन्वित करै छथि।

यएह सभ विशेषता 'What the Canon Left Out' - विदेह समानान्तर इतिहासक उपशीर्षक - कें चरितार्थ करैछ।

७. उपसंहार

परमेश्वर कापड़िक 'रेङ–रेङ' मैथिली साहित्यमे एहन नाटक थिक जे जीवनकेँ देखबैत अछि, जेना रङ्गमञ्चपर। गरीबी, भ्रष्टाचार, कलाकारक बेरोजगारी - ई सभ रोग थिक। तथापि नाटककार निराशावादी नहि छथि- लोकनाट्यक माध्यमसँ, पञ्चमवेदक शक्तिसँ, नवविवाहक प्रतीकसँ- ओ एकटा दुर्दमनीय आशावादिताक संदेश देबऽ चाहै छथि।

भारतीय रस-ध्वनि-वक्रोक्ति सौन्दर्यशास्त्र, पाश्चात्य एपिक थिएटर, चीनी व्यंग्य-नाट्य-परम्परा, गंगेशक नव्य-न्यायिक ज्ञानमीमांसा - ऐ चारू परम्पराक प्रकाशमे 'रेङ–रेङ' एक बहुस्तरीय, समृद्ध रचना थिक जे मैथिली नाट्य-परम्पराकेँ एक नव आयाम प्रदान करैत अछि।

विदेह समानान्तर साहित्य इतिहासक फ्रेमवर्कमे, कापड़ि - मुख्यधारा साहित्यिक इतिहासद्वारा 'कतिआयल' एक महत्त्वपूर्ण नाटककार छथि- जिनकर 'रेङ–रेङ' मैथिली रङ्गमञ्चक इतिहासमे अपन अविस्मरणीय स्थान रखैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

मैथिली नाट्यमंच/ नाटक लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त (भाग-२) सन्दर्भ- परमेश्वर कापड़ि- नाटक 'गहन उगरास'

गहन उगरास - परमेश्वर कापड़ि

बहुआयामी नाट्यशास्त्रीय समीक्षा

'गहन उगरास'क ऐतिहासिक आ प्रकाशनक पृष्ठभूमि

समकालीन मैथिली नाट्य-परम्परा आ रंगमंचीय प्रयोगशीलताक क्षेत्रमे परमेश्वर कापड़िक नाटक 'गहन उगरास' एकटा ऐतिहासिक आ मीलक पत्थर थिक। प्रस्तुत नाट्य-कृतिक प्रथम संस्करणक प्रकाशन फागुन २०७३ मे पृथु प्रकाशन, जनकपुरधाम सँ भेल। एकटा विशुद्ध आ मौलिक नाट्य-कृतिक रूपमे लिखल गेल एहि पुस्तकक आवरण चित्र सुप्रसिद्ध मिथिला चित्रकार एस. सी. सुमन द्वारा आ सेटिङ तथा डिजाइन कुमार भास्कर द्वारा कयल गेल। परमेश्वर कापड़ि अपन एहि विशिष्ट नाटक कें मैथिलीक सुप्रसिद्ध आ ऐतिहासिक रंगकर्मी कुणालजी कें समर्पित कयलनि अछि, जिनकर रंगमंचीय सक्रियता आ नाट्य रचनाशीलता पर मैथिली भाषा आ साहित्य कें अनन्त गौरव अछि।

नेपाली रंगमंचक मूर्धन्य विद्वान डा. अभि सुवेदी एहि नाटकक संरचना कें "प्रयोगशील" घोषित करैत लिखने छथि जे नाटककार कापड़ि पारम्परिक दृश्य-विधान वा कृत्रिम सेनोग्राफी (scenography) क स्थान पर मानवीय सम्वाद आ सम्वादक आन्तरिक सम्बन्ध सँ रंगमंचक निर्माण कयलनि अछि। नाटकक मुख्य पात्र जिमदार अछि आ ओकर चारू कात सामाजिक सम्बन्धक बनब आ भथब चलैत रहैत अछि। नाटककार परमेश्वर कापड़ि व्यवस्था सँ ढुइस लैले जानल जाइत छथि। ओ स्वयंमे मैथिलीक एकटा जीवन्त शब्दकोश छथि, जकर प्रकर प्रमाण 'गहन उगरास'क खाँटी आ समृद्ध मैथिली शब्दावलीमे देखल जा सकैछ।

ऐतिहासिक रूप सँ, नेपालक सीमामे अवस्थित मिथिलांचलक रंगमंचीय आ सांस्कृतिक राजधानी जनकपुरधाम थिक। जकर आभाक मूल शक्ति वर्ष १९७९ मे स्थापित 'मिथिला नाट्यकला परिषद' (मिनाप) रहय, जकर उष्मा सँ मैथिली नाट्य चेतना जाग्रत रहैत छल। मुदा बीसम शताब्दीक अन्त होइत-होइत धीरेन्द्र-धूमकेतुजीक असामयिक निधनसँ जनकपुरक रंगमंच कने सेराए लागल। ताही समय भारतक पटनाक रंगमंच सेहो निष्क्रियताक शिकार भ' गेल, गाउँ-घरक पारम्परिक मंच पर अश्लील ऑर्केस्ट्राक कब्जा भ' गेल, आ विद्यापति पर्वक नाम पर चन्दा-चिट्ठाक व्यापार करैबला लोक पागक स्थान पर योग्य लोक कें दाग दै लागल। महेन्द्र मलंगियाक' स्लैपस्टिक ह्यूमर' सर्वहारापर उपहास करैत रहल। एहेन भीषण अन्हारमे जनकपुरमे 'मिनाप', 'आकृति', 'अछिंजल' आ 'भंगिमा' सन संस्था सभक प्रयास सँ मैथिली नाटकक पुनरुत्थान भेल। ठीक ताही समय नेपालक १० वर्षक माओवादी जनयुद्ध आ दोसर जनआन्दोलनक विभीषिका सँ उपजल यथार्थ सँ प्रेरित भ' क' रमेश रंजन 'सखी' नाटकक संग अएलाह आ परमेश्वर कापड़ि 'गहन उगरास'क संग।

नाटकक कथ्य संरचना, प्रतीक योजना आ सामाजिक-राजनैतिक यथार्थ

'गहन उगरास'क कथानक मुख्य रूप सँ दू भागमे विभक्त अछि, जे नेपालक सामन्ती संक्रमणकाल, जनयुद्धक सामाजिक प्रभाव आ सांस्कृतिक औपनिवेशीकरणक ऐतिहासिक विमर्श कें रूपकात्मक ढंग सँ प्रस्तुत करैत अछि। नाटकक आरम्भिक कालखण्ड नेपालक दोसर जनआन्दोलन (विक्रम संवत २०६२-६३) क बादक प्रतिगमन कालक राजनैतिक संकट थिक। राजशाही आ निरंकुश पंचायती व्यवस्थाक दमन शिथिल भ' रहल अछि, मुदा ज्ञानेन्द्रक सरकार बल-जबरदस्ती सत्ता कें अपन वशमे रखबाक अन्तिम चेष्टा क' रहल अछि, जखन कि दोसर दिस संविधान सभाक माध्यम सँ संघीय गणतन्त्रक लेल नव आन्दोलनक लहरि देशमे पसरल अछि।

प्रथम भागक सूक्ष्म कथ्य विश्लेषण

नाटकक प्रथम भागक आरम्भ सामन्ती अवशेषक प्रतीक राजपूत जिमदार फुलगेन सिंहक ढहल-ढनमनाएल घर सँ होइत अछि, जकर एको टा बखारीमे अन्नक दाना नहि अछि। जिमदारक बाल-बच्चा सभ बाहरे रहैत अछि आ गामक धानुक (मनेजरा) ओकर सेवा-टहल आ भन्सा-भात करैत अछि। खौझाह बूढ़बा जिमदार फुलगेन सिंह ठेहुना-पिट्ठीमे गमछा लपेटने माछी मारैत अपन पुरान सामन्ती धाक कें स्मरण करैत अछि। गामक ढीठ आ पिङल धियापूता (टुनमा आ मुसना) जिमदारक ओसारी पर "हाथी अगत्त, घोड़ा अगत्त, अइ बाबा बियाहमे पोता चलत" आ "रेङ-रेङ-रेङ, तोरा पतलीमे बेङ" जकाँ पारम्परिक लोक-गीत गाबि क' ओकर उपहास करैत अछि। दू टा छौड़ी जट-जटिन खेलैत जिमदार कें "गामके अधिकारी ई जिमदरबा छै गे ना, कनही तराजू घटबी सेर छै गे ना" कहि क' ओकर शोषक चरित्र कें नंगा करैत अछि।

एहि बीच सती नामक एकटा मध्य-वयस्क महिलाक प्रवेश होइत अछि, जे जिमदार कें गारी-गलौज करबा सँ रोकैत अछि आ चेतबैत अछि जे आब सामन्ती दमनक युग समाप्त भ' गेल अछि आ "लात जुत्ता" लागब निश्चित छैक। तखनिए रंगमंच पर पाँच टा क्रान्तिकारी युवा लोकनिक प्रवेश होइत अछि:

फुलो खतबे: एकटा जुझारू दलित मानवाधिकार कार्यकर्ता।

दुखिया सादा: एम्नेस्टी इन्टरनेशनलक प्रतिनिधिक रूपमे शोषितक आवाज।

सुभद्र मंडल: एकटा सक्रिय राजनैतिक कर्मी।

ज्वाला प्रसाद सिंह (ज्वाला): माओवादी जनयुद्धक भूमिगत लड़ाकू, जे शोषकक अन्त लेल हथियार उठाने अछि।

विद्यापति यादव: प्रखर पत्रकार आ संचारकर्मी, जे कलम बले शोषक वर्ग कें नाङट करैत अछि।

जिमदार जखन अपन पुरान सामन्ती शोषणक घमण्ड देखाबैत कहैत अछि जे "बाप-दादा हवेलीमे गाइ चराबैत रहे आ कनियाँ सभ हवेलीक दासी बनैत छलीह", तखन क्रुद्ध भ' क' माओवादी लड़ाकू ज्वाला सिंह ओकरा एक झाप (एड़) मारैत अछि, जाहिसँ बूढ़ जिमदार थुरथुर काँपैत भूइँ पर खसि पड़ैत अछि। सभ युवा प्रतिगमनक विरुद्ध भ' रहल पैघ राजनैतिक सभामे रिपोर्टिङ आ सहभागिताक लेल चलि जाइत छथि। कनी कालक बाद सेवक दौड़ैत अबैछ आ बुढ़बा खोखना आ बुढ़िया कें रोइत-कनैत जानकारी दैत अछि जे स्कूलक राजनैतिक सभामे पुलिस अन्धाधुन्ध गोलीबारी कयलक, जाहिमे सतीक छातीमे दू टा गोली लागल आ ओ मरी गेलीह, ज्वाला सिंहक तत्क्षण मृत्यु भ' गेलै, फुलो अन्तिम साँस लेइत अछि, आ सुभद्र तथा विद्यापतिक स्थिति अत्यन्त गम्भीर अछि।

द्वितीय भागक रूपकात्मक आ सांस्कृतिक विमर्श

नाटकक द्वितीय भाग एकटा अतियथार्थवादी (Surreal) आ रूपकात्मक यात्राक रूपमे आरम्भ होइत अछि। बाबा अभेलबा आ ओकर लकवा-ग्रस्त बकलेलबा चेला (जे धान कुटैत सन थरथराइत चलैत अछि) हाथमे तुमरी-कमण्डल आ कम्मल लेने जनकपुरधामक दिश "लटक सटक सियारामा" भजन गाबैत जा रहल छथि। चेला अपन माथक मोटरी खसबाक बादो जोगिरा गाबैत अछि। जनकपुरधाम पहुँचि क' ओतय सूत'क लेल जमा भेल लोक सभ (लखना, बेचना, मंगला, जनका) जुटि जाइत छथि। जनका मल्लाह विवाह पंचमीक प्रसंगमे राम-सीताक बिआहक आख्यान सुनाबैत छथि। ओ कहैत छथि जे विवाहक बाद दशरथ दहेजक लेल हठ क' लेलक, तखन जनक अपन मूड़ी दशरथक आगूमे राखि देलनि। ई आख्यान मिथिलाक अनन्त सांस्कृतिक शोषणक रूपक थिक।

एहि बीच गेनमा आ फगुनी कें धरतीक रोदन सुनाइ दैत छै। सभ गोटे धरती खनैत छथि त' ओतय डगडग लाल खूनक धारा भेटैत अछि। विद्यापति स्पष्ट करैत छथि जे ई खून गोरखा राजा शाहवंश द्वारा २३०-२४० वर्ष पूर्व कयल गेल दमनक अछि। माटिक भीतर मैथिली भाषा, संस्कृति आ कलाक अवशेष भेटैत अछि, जे "एक भाषा एक भेष"क दमनकारी नीति सँ नष्ट कयल गेल रहय। बुलन्ती आ दुखियाक आह्वान पर महिला लोकनि पुनर्जीवनक गीत (छठि गीत, चैतावर, जट-जटिन) गाबैत छथि। अन्तमे विद्यापति मैथिलीक "गहन उगरास" (ग्रहण मुक्ति) आ नव संघीय नेपालमे स्वायत्त मिथिला प्रदेशक स्थापनाक लेल महाक्रान्तिक जुलुश निकालैत छथि।

१. पोथीक सामान्य परिचय आ संरचना

परमेश्वर कापड़िक मैथिली नाटक गहन उगरास (अर्थात् 'ग्रहण उग्रास'क अपभ्रंश) गहन समाजिक पीड़ाक उद्गार अछि जे २०७३ फागुनमे पृथु प्रकाशन, जनकपुरधामसँ प्रकाशित भेल। ई नाटक दू भागमे बँटल अछि - प्रथम भाग आ द्वितीय भाग - जाहिमे नेपालक मिथिला क्षेत्रक सामाजिक-राजनैतिक परिस्थितिकेँ केन्द्रमे राखि नाट्य-कथानक विकसित कयल गेल अछि। पात्र-योजनाक विचारसँ नाटकमे अनेक वर्गीय प्रतिनिधि उपस्थित छथि - जिमदार फुलगेन सिंह (शोषक सामन्त), टुनमा-मुसना (हास्यकर बालक पात्र), छौड़ी-१ आ छौड़ी-२ (विद्रोही स्त्री-स्वर), फेकुआ (युवा पात्र), हिरोइन (नव-सांस्कृतिक विकृतिक प्रतीक), बुलन्ती, सुवंश, सुभद्रा, ज्वाला, दुखिया, फूलो, सती (सर्वहारा जनसमूह), बुढ़बा-बुढ़िया (वृद्ध दम्पती), विद्यापति (सांस्कृतिक चेतनाक प्रतीक-पात्र), जनका, बेचना, लखना (मिथिलाक सामाजिक जीवनक विभिन्न वर्ग), आ फोनबला (आधुनिक संचार-माध्यमक प्रतीक) । पात्र-सूचीक विविधता स्वयं सिद्ध करैत अछि जे नाटककार समाजक कोनो वर्गकेँ दृश्यसँ बाहर नहि राखल चाहलनि।

२. भारतीय नाट्यशास्त्रक दृष्टिएँ

भारतीय नाट्य सिद्धान्त आ 'थिएटर ऑफ द रूट्स'क परिप्रेक्ष्यमे तुलना

भारतीय नाट्यशास्त्रक रस सिद्धान्त (विशेषतः करुण, वीर आ रौद्र रस) गहन उगरासमे पूर्णतः अनुप्राणित अछि। सुरेश अवस्थीक 'थिएटर ऑफ द रूट्स' (जड़ि सँ जुड़ावक रंगमंच) आन्दोलनक सिद्धान्त औपनिवेशिक पाश्चात्य यथार्थवादी रंगमंचक विरुद्ध देसज लोक-विधाक पुनर्जीवनक आन्दोलन थिक। हबीब तनवीर, रतन थियम, बी. वी. कारंत आ के. एन. पणिक्कर लोक-अनुष्ठान आ देसज परम्परा कें आधुनिक राजनैतिक चेतना सँ जोड़ने छलाह।

मैथिली नाट्य आन्दोलनमे परमेश्वर कापड़ि 'गहन उगरास'मे एहि रूट्स आन्दोलनक दर्शन कें नवीन रूपमे प्रस्तुत कयलनि अछि। मैथिली रंगमंचमे पारम्परिक 'नाच' (यथा जट-जटिन, झिझिया, लोकगीत) कें केवल मनोरंजनक साधन मानल जाइत रहय, जकर कोनो लिखित आलेख नै होइत रहय। मुदा रामभरोस कापड़ि' भ्रमर' आ परमेश्वर कापड़ि एहि लोक-नाच कें वर्ग-संघर्ष आ औपनिवेशिक दमनक विरुद्ध एकटा प्रखर राजनैतिक हथियार बना देलनि। नाटकक द्वितीय भागमे जखन जट-जटिनक गीत बजैत अछि, त' ओकर सम्वाद प्रवासी जीवनक दारुण यथार्थ कें अभिव्यक्त करैत अछि। ई लोक परम्परा कें जीवन्त आ गतिशील बनबायब थिक, जे 'थिएटर ऑफ द रूट्स'क मूल मान्यता अछि।

(क) पञ्चसन्धि आ वस्तु-संरचना

भरतमुनिक नाट्यशास्त्रमे वस्तुकेँ मुख, प्रतिमुख, गर्भ, विमर्श आ निर्वहण - एहि पाँच सन्धिमे विभाजित कयल गेल अछि। गहन उगरासकेँ एहि साँचामे देखी तँ मुखसन्धि नाटकक आरम्भिक दृश्यमे प्रस्तुत होइत अछि जखन जिमदारक आँगनमे धान-भण्डार रिक्त अछि आ बालक टुनमा-मुसना खेल करैत जिमदारपर व्यंग्यात्मक गीत गाबैत अछि। प्रतिमुख सन्धि तखन उभरैत अछि जखन जनआन्दोलनक लहरि आबि जिमदारक सत्ता-व्यवस्थाकेँ चुनौती देबय लगैत अछि। गर्भसन्धिमे हिरोइनक प्रवेशसँ सांस्कृतिक विघटनक आ आर्थिक पलायनक समस्या उठैत अछि। विमर्शसन्धि ओहि दृश्यमे अभिव्यक्त होइत अछि जखन विद्यापतिक प्रतीकात्मक उपस्थितिमे सर्वहारा जनसमूह अपन मुक्तिक मार्ग खोजैत अछि। निर्वहण सन्धि - अर्थात् समाधान-बिन्दु - एहि नाटकमे सुस्पष्ट रूपेँ अनुपस्थित अछि, जे एकटा महत्त्वपूर्ण नाट्यशास्त्रीय न्यूनता थिकैक।

(ख) रस-विचार

नाट्यशास्त्रमे आठ वा नव रसक संकल्पना प्रतिपादित अछि। गहन उगरासमे करुण रस सर्वाधिक प्रभावी रूपेँ प्रवाहित होइत अछि - वृद्ध दम्पतीक विलापमे, महिलाक परदेश-गमन सम्बन्धी गीतमे, आ बुलन्तीक एकमात्र पुत्रविरह-वेदनामे। वीर रस द्वितीय भागक जनआन्दोलन-दृश्यमे उभरैत अछि। बीभत्स रस जिमदारक शोषणक वर्णनमे अनुभव होइत अछि। हास्य रस टुनमा-मुसनाक बालसुलभ व्यंग्यात्मक संवादमे प्रकट होइत अछि। मुदा शृंगार रस - जे भरतमुनिक मतेँ रसराज थिकैक - एहि नाटकमे प्रायः अनुपस्थित अछि। भाष्यकार अभिनवगुप्तक रसध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिएँ नाटकक भाषा व्यंजनात्मक शक्तिसँ समृद्ध अछि, मुदा साहित्यिक परिष्कारक अभावमे ध्वनि पूर्णतः विकसित नहि भऽ सकल अछि।

(ग) नायक-प्रकार आ पात्र-वर्गीकरण

नाट्यशास्त्र धीरोदात्त, धीरोद्धत, धीरललित आ धीरप्रशान्त - चारि प्रकारक नायकक उल्लेख करैत अछि। गहन उगरासमे कोनो एकटा केन्द्रीय नायक नहि अछि। विद्यापति प्रतीकात्मक रूपेँ धीरप्रशान्त नायकक भूमिकामे आबैत छथि - सांस्कृतिक चेतनाक आह्वाहक। जनसमूह नायक थिक, जे भारतीय लोकनाट्य-परम्परासँ अधिक मेल खाइत अछि बजाय शास्त्रीय संस्कृत नाट्यपरम्पराक। ई एकटा सचेत नाट्यशास्त्रीय चयन कहल जा सकैत अछि।

(घ) अंकसंख्या आ नाट्यविधान

नाट्यशास्त्रमे दशरूपकक वर्णन अछि - नाटक, प्रकरण, भाण, व्यायोग, समवकार आदि। गहन उगरास शास्त्रीय नाटकक लक्षणसँ भिन्न, प्रकरणक अधिक निकट अछि कियाक तँ एहिमे सामाजिक जीवनक यथार्थ चित्रण अछि, राजकीय कथानक नहि। मुदा लोकनाट्यक परिप्रेक्ष्यमे ई नाटक विदापत नाच, जट-जटिन, आ सामा-चकेवाक सामूहिक गायन-परम्परासँ बेशी सम्पर्क राखैत अछि। जाहि प्रकारसँ महिला-पात्र लोक मुरेठा बान्हि आ सांस्कृतिक गीत गबैत मंचपर आबैत छथि, ओ मिथिलाक लोकनाट्य-परम्पराक सजीव निरन्तरता थिकैक।

३. पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक दृष्टिएँ

पाश्चात्य आ चीनी नाट्य सिद्धान्तक संग तुलनात्मक मीमांसा

पाश्चात्य नाटककार बर्टोल्ट ब्रेख्तक 'महाकाव्यात्मक रंगमंच' (Epic Theatre) आ 'विमुखता प्रभाव' (Verfremdungseffekt/Alienation effect) दर्शक कें कथानक सँ भावुकताक स्तर पर विलग राखि क' तार्किक विवेचनक अवसर दैत अछि। ब्रेख्तक ई सिद्धान्त पारम्परिक चीनी नाट्य शैली (विशेषतः मेई लानफांगक अभिनय) सँ प्रभावित रहय। चीनी रंगमंचमे 'चतुर्थ देबाल' (Fourth Wall) कें तोड़ि क' दर्शक सँ सोझ संवाद कयल जाइत अछि।

चीनी स्पोकन ड्रामा (Huaju) क प्रणेता हुआंग जुओलिन एहि पद्धति कें 'शिएयी' (Xieyi / Essentialist Theatre) रंगमंचक नाम सँ प्रस्तुत कयलनि, जाहिमे प्रवाहिता (Fluidity), लचीलापन (Flexibility), त्रिविमता (Sculpturality), आ संकेतात्मकता (Conventionality) मुख्य अछि।

'गहन उगरास'क नाट्य-शिल्प पूर्णतः 'शिएयी' आ ब्रेख्तक सिद्धान्तक मैथिली रूपान्तरण अछि। डा. अभि सुवेदीक अनुसार, नाटकमे कोनो यथार्थवादी दृश्य-विधान (Scenography) केर स्थान पर पात्रक सम्वाद आ सम्बन्ध मंचक निर्माण करैत अछि नाटकक दृश्य परिवर्तन अत्यन्त प्रवाहमयी आ लचीला अछि; दृश्य बिनु पर्दा खसने समकालीन समय सँ सोझे २४० वर्ष पूर्व सिमरौनगढ़क दमन आ ऐतिहासिक विस्थापनक दिश चलि जाइत अछि। चेला बकलेलबाक थरथराइत चलब आ जिमदारक लाठी लपेटि क' बैसब प्रतीकात्मक रूढ़िवादिता (Conventionality) कें स्पष्ट करैत अछि।

यहूदी (Yiddish) नाट्य सिद्धान्तक संग तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य आ विस्थापन विमर्श

यहूदी यिडिश रंगमंच (Yiddish Theatre) क विकास पूर्वी यूरोपमे अशकेनाजी यहूदी लोकनिक यिडिश भाषामे भेल रहय। एकर मूल जड़ि 'पूरीम' पर्वक अवसर पर खेलल जायवला प्रहसन 'पूरीमश्पिल्स' (Purimshpils) मे रहय, जाहिमे समकालीन सामाजिक विसंगति आ धनी वर्ग पर तीक्ष्ण प्रहार कयल जाइत रहय। मैथिलीक 'विवाह पंचमी झाँखी' आ मिनापक 'महामूर्ख सम्मेलन'क व्यंग्यात्मक नाटक पूरीमश्पिल्क यथार्थवादी आ हास्यात्मक शैलीक अत्यन्त निकट अछि।

यिडिश रंगमंचमे 'ब्रोडर सिंगर्स' (Broder Singers) घुमक्कड़ संगीतकार छलाह, जे वेशभूषा बदलि क' व्यंग्यात्मक आ हास्यास्पद प्रहसन प्रस्तुत करैत छलाह, जकरा सँ अब्राहम गोल्डफाडेन व्यावसायिक यिडिश रंगमंचक नीव रखलनि। 'गहन उगरास'क आरम्भिक दृश्यमे जिमदार फुलगेन सिंहक दुआरि पर धियापूताक प्रहसन आ द्वितीय भागमे अभेलबा बाबा आ बकलेलबा चेलाक प्रहसन ब्रोडर सिंगर्सक देसज आ हास्यात्मक नाट्य-पद्धति सँ मेल खाइत अछि।

यिडिश रंगमंचमे 'शुंड' (Shund / Popular trash theatre) बनाम 'साहित्यिक रंगमंच' (Literary Theatre) क जे संघर्ष रहय, तकर विश्लेषण करैत Itsik Manger लिखने छलाह जे शुंड रंगमंच वास्तवमे बिना कोनो एकेडेमीक अभिनय कयल जायवला 'मुक्त मंच' थिक, जाहिमे लोक-इच्छाक स्वतन्त्र प्रस्फुटन होइत रहय। मैथिली नाट्य आन्दोलनमे सेहो 'शुंड' (लोक नाच, कीर्त्तनिया) आ शिष्ट साहित्यिक रंगमंचक मध्य संघर्ष रहल अछि, जकरा 'गहन उगरास'मे लोक-संस्कृतिकेँ राजनैतिक मुक्ति सँ जोड़ि क' पाटि देल गेल अछि।

विस्थापन, वैदेशिक रोजगारी आ स्मृति-दंश (Nostalgia)

यिडिश रंगमंचक सर्वाधिक पैघ आधार 'विस्थापन' (Diaspora), पलायन (Migration) आ स्मृति-दंश (Nostalgia) रहय। पूर्वी यूरोप सँ पलायन क' अमेरिका पहुँचल गरीब यहूदी लोकनि अपन 'श्तेतल' (Shtetl - यहूदी ग्राम) क स्मृतिमे नाटक आ 'मेइन श्तेतल बेल्ज' जकाँ गीत गाबि क' अपन दुःख बिसरैत छलाह।

'गहन उगरास' आधुनिक मैथिल विस्थापनक एहि tragedy कें अत्यन्त प्रखरता सँ प्रस्तुत करैत अछि। 1 खाड़ी देश (कतार, सऊदी अरब) मे 'कफाला'

(Kafala) प्रथाक दमनकारी चंगुलमे फँसल मैथिल प्रवासी (मुण्ढा) आ ओकर घर पर एकल जीवन जी रहल 'खाड़ी विधवा' (Hiroine) क मध्य पीसिओक सम्वाद यिडिश विस्थापन नाट्य-सिद्धान्तक मैथिली रूपान्तरण थिक। एतय एड्सक आशंका, कण्डमक प्रयोग आ चारित्रिक संशयक दंश प्रवासी जीवनक स्मृति-दंश (Nostalgia) आ विस्थापनक भयंकर यथार्थ कें स्पष्ट करैत अछि।

नाट्य सिद्धान्तक धारा

प्रमुख प्रणेता / मूल दर्शन

'गहन उगरास' मे एकर यथार्थ प्रयोग आ विश्लेषण

भारतीय 'थिएटर ऑफ द रूट्स'

सुरेश अवस्थी, हबीब तनवीर, रतन थियम।8

पारम्परिक जट-जटिन, झिझिया, छठि गीत आ लोक आख्यानकें (जनकक आत्मोसर्ग) वर्ग-संघर्ष आ राजनैतिक क्रान्तिक माध्यम बनाओल गेल अछि।

पाश्चात्य महाकाव्यात्मक रंगमंच

बर्टोल्ट ब्रेख्त।

चतुर्थ देबालक भ्रम कें तोड़ब; दर्शक कें भावुकताक स्थान पर तार्किक आ वैचारिक क्रान्ति सँ जोड़ब; प्रतीकात्मक अभिनय।

चीनी 'शिएयी' रंगमंच

मेई लानफांग, हुआंग जुओलिन।

प्रवाहिता, लचीलापन, त्रिविमता आ रूढ़िवादिता; समकालीन समय सँ सोझे सिमरौनगढ़क २५० वर्ष पूर्व दमनक समयमे संक्रमण।

यहूदी यिडिश रंगमंच

अब्राहम गोल्डफाडेन, इट्सिक मंगर।

'पूरीमश्पिल्स' आ 'ब्रोडर सिंगर्स' जकाँ देसज प्रहसन; खाड़ी विस्थापनक स्मृति-दंश आ यिडिश विस्थापनक त्रासदीक सादृश्यता।

(क) अरस्तूक अनुकरण-सिद्धान्त आ त्रय-एकता

अरस्तू अपन काव्यशास्त्रमे कहलनि जे त्रासदी उत्तम मनुष्यक अनुकरण थिकैक जे कातार्सिस - अर्थात् दर्शकक भावशुद्धि - उत्पन्न करैत अछि। गहन उगरासमे अरस्तूक त्रय-एकताक (समय, स्थान, कर्म) स्थूल अनुपालन नहि होइत अछि - नाटकक स्थान गाम, पी सी यो (पुलिस चौकी), मेला-मैदान, जुड़शीतल-घाट, इत्यादि बदलैत रहैत अछि आ समय-विस्तार बर्खक बर्ख धरि बुझाइत अछि। मुदा एकक सर्वश्रेष्ठ अरस्तूवादी तत्त्व - कर्म-एकता - एहिमे आंशिक रूपेँ उपस्थित अछि, किएक तँ सभ घटना शोषण-मुक्तिक एकटा केन्द्रीय संघर्षक चारूकात घूमैत अछि।

अरस्तूक महान त्रासदी-सिद्धान्तक दृष्टिएँ एहि नाटकमे पेरिपेटिया (भाग्य-परिवर्तन) जिमदारक पतनमे देखल जा सकैत अछि - जे एकबेर सर्वशक्तिमान छल तेकरा अन्तमे बालकसभ 'कुत्ता हुलका दू, बिलाइ लुधका दू' कहैत खेहाड़ैत अछि। मुदा अनागनोरिसिस (सत्य-साक्षात्कार) स्पष्टतया अनुपस्थित अछि, जे नाटककेँ पूर्ण क्लासिकल त्रासद संरचनासँ रोकैत अछि।

(ख) ब्रेख्त-प्रभाव: दूरीकरण-नाट्य

गहन उगरास पर सर्वाधिक स्पष्ट प्रभाव जर्मन नाटककारक वैयक्तीकरण-विरोधी नाट्य-पद्धतिक देखाइत अछि। डा. अभि सुवेदीक भूमिका स्वयं स्पष्ट करैत अछि जे ई नाटक 'प्रयोगशील' अछि आ 'मानुष नैं दृश्यविधान आ "सेनोग्राफी" का निर्माता हुन् र तिनले नैं "गहन उगरास" को नाट्यकलेवर बनाएको छ।' ब्रेख्तक महाकाव्यात्मक नाट्य-परम्पराक अनुरूप एहिमे कथासूत्र बारम्बार टूटैत अछि, पात्र सभ जनगीत गबैत नाट्य-भ्रम (theatrical illusion) तोड़ैत छथि, आ दर्शककेँ भावनात्मक तादात्म्यक स्थानपर बौद्धिक प्रतिक्रिया दिअ लेल प्रेरित कयल जाइत अछि।

टुनमा-मुसनाक हास्यपूर्ण गीत - 'हाथी अगत, घोड़ा अगत, अइ बाबा बियाहमे पोता चलत' - एकटा स्पष्ट ब्रेख्तीय हस्तक्षेप थिकैक जे दर्शककेँ यथार्थक विद्रूपताकेँ सचेतनतासँ देखय लेल बाध्य करैत अछि।

(ग) स्तानिस्लावस्कीक मनोवैज्ञानिक यथार्थवाद

स्तानिस्लावस्की जे पात्रक आन्तरिक जीवनक गहन खोजपर बल दैत छलाह, ओहि दृष्टिएँ गहन उगरासमे पात्रक मनोवैज्ञानिक गहराई न्यून अछि। बुलन्तीक पुत्र-विछोहक पीड़ा, हिरोइनक दोहरा जीवनक अन्तर्द्वन्द्व - एहि ठाम किञ्चित् संवेदनशील नाट्य-क्षण उपस्थित अछि, मुदा पात्रक व्यक्तित्व-निर्माण (characterisation) समग्रतामे अपूर्ण रहल अछि। एहि दृष्टिएँ नाटककार सामाजिक उद्देश्यकेँ पात्रक व्यैक्तिक विकासक उपर प्राथमिकता देबऽ चाहलनि अछि।

(घ) अस्तित्ववादी नाट्यधारा

काम्यू आ सार्त्रक अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ नाटकक आभ्यन्तरिक शोक - लोक जीवैत अछि मुदा व्यवस्था ओकर जीवनक अर्थ छीनि लैत अछि - एकटा अनुगूँज सुनाइत अछि। बुलन्तीक एकटा उद्गार एहि जखन ओ कहैत छथि जे पुत्र घरसँ पड़ायल, मुह नहि देखल - एहिमे एकटा असम्बद्ध, नियतिहीन जीवनक अस्तित्ववादी पीड़ा ध्वनित होइत अछि।

४. इजरायली नाट्य-चिन्तनक परिप्रेक्ष्यमे

इजरायली नाटककार हनोक लेविन (१९४३-१९९९) जे आधुनिक इजरायली रंगमंचक केन्द्रीय स्तम्भ छलाह, ओ राजनैतिक व्यंग्य आ जनसामान्यक यन्त्रणाकेँ नाट्य-रूप देबामे सिद्धहस्त छलाह। गहन उगरासक जिमदार-विरोधी व्यंग्यात्मक संवाद, बालपात्रक मुखसँ सत्ताक उपहास, आ सामूहिक विरोध-गीत - एहि सभमे लेविनेस्क कटुता आ प्रत्यक्षतासँ साम्य देखल जा सकैत अछि। इजरायली रंगमंचमे जाहि प्रकारेँ साधारण नागरिकक आर्त-स्वर नाट्य-मंचक भाषा बनैत अछि, कापड़ि ओही परम्पराक समानान्तर कार्य मिथिलाक माटि-पानिसँ कयल अछि। मुदा इजरायली नाट्य-परम्परामे जे दर्शनात्मक घनत्व देखाइत अछि, ओहि गहराईकेँ गहन उगरास सम्पूर्णतया प्राप्त नहि कऽ सकल अछि।

५. चीनी नाट्य-परम्पराक दृष्टिएँ

चीनी नाट्यपरम्पराक - विशेषतः युआन ओपेराक आ माओ-युग-परवर्ती राजनैतिक रंगमंचक - केन्द्रीय विशेषता थिकैक गीत, नृत्य, आ संवादक एकत्रीकरण, जाहिमे सामूहिक चेतनाक स्वर मुखरित होइत अछि। गहन उगरासमे लोकगीतक बारम्बार प्रवेश - जुड़शीतलक गीत, होरीक गीत, पगरी-गीत, दहेज-विरोधी स्वर - एहि अर्थमे चीनी नाट्य-शैलीसँ कार्यात्मक साम्य राखैत अछि। विद्यापतिक पात्रक रूपेँ मिथिलाक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक प्रतीककेँ मंचपर प्रस्तुत करब चीनी नाट्य-परम्पराक ओहि प्रवृत्तिक स्मरण दिअबैत अछि जाहिमे ऐतिहासिक-मिथकीय पात्र समकालीन राजनैतिक सन्देशक वाहक बनैत अछि।

६. नाटकक प्रमुख विशेषतासभ

प्रथम - राजनैतिक स्पष्टवादिता: नाटक नेपालक राजशाही, माओवादी जनयुद्ध, दोसर जनआन्दोलन, प्रतिगमनी ज्ञानेन्द्र शासन, संघीय लोकतान्त्रिक गणतन्त्रक स्थापना - एहि सभ ऐतिहासिक घटनाकेँ सोझे मंचपर आनैत अछि, ओ एकटा स्पष्ट राजनैतिक साक्ष्य थिकैक। आब मिथिलाक भारतीय भाग एहि इतिहाससँ बाहर भऽ एकर नाट्य-प्रस्तुति देखैत अछि- ई एकटा विशेष भू-सांस्कृतिक स्थितिमे नाट्य-साहित्यक निर्माण थिकैक।

द्वितीय - भाषिक स्तरीकरण: जिमदारक भाषा आ मजदूरसभक भाषामे स्पष्ट अन्तर अछि। स्त्री-पात्रक भाषा आ पुरुष-पात्रक भाषामे सेहो स्वर-भेद देखाइत अछि। विद्यापतिक संवाद साहित्यिक-उद्बोधक स्वरमे अछि। फोनबलाक माध्यमे आधुनिक संचार-संस्कृतिपर व्यंग्य कयल गेल अछि। ई बहुस्तरीय भाषिक संरचना एकटा प्रौढ़ नाट्यशिल्पकारक पहचान दैत अछि।

तृतीय - स्त्री-स्वरक महत्त्व: नाटकमे छौड़ी-१ आ छौड़ी-२ जिमदारकेँ खुलेआम गाली दैत खेहाड़ैत छथि - 'ऐ बाबाके ताबामे नेर गुरका दू, कुत्ता हुलका दू, बिलाइ लुधका दू।' बुलन्ती आ सुभद्रा सेहो प्रतिरोधक स्वर उठबैत छथि। महिला-पात्रक एहि सशक्त उपस्थितिसँ नाटक मिथिलाक पितृसत्तात्मक सामाजिक ढाँचाकेँ नाट्य-भाषामे चुनौती दैत अछि।

चतुर्थ - सांस्कृतिक-अनुष्ठानिक तत्त्वक समावेश: जुड़शीतलक जल-छिटाइ, होरी-उत्सव, लोकगीत, पगरी-बन्धन - एहि सभ लोकानुष्ठानिक तत्त्वकेँ नाट्य-कथानकमे सहजतापूर्वक बुनल गेल अछि। ई गहन उगरासकेँ केवल राजनैतिक नाटकसँ उठा साँस्कृतिक स्मृतिक दस्तावेज बनाबैत अछि।

पञ्चम - दहेज-प्रथाक आलोचना: नाटकक एकटा महत्त्वपूर्ण अंशमे लखना, जनका, बेचना - तीनू मिलि दहेज-प्रथाकेँ व्यंग्यात्मक रूपेँ उठबैत छथि। 'बूझ जे रजा जनके पालीस', अपना सब ओत', दहेज-परथा शुरू भेल हौ' - एहि संवादमे राजा जनकक सांस्कृतिक प्रतापकेँ सामाजिक कुरीतिसँ जोड़बाक एकटा व्यंग्यात्मक दृष्टि देखाइत अछि।

७. नाटकक प्रमुख सीमासभ

प्रथम - कथानकक शिथिलता: नाटकमे घटना-प्रवाहक कोनो कसल संरचना नहि अछि। एक दृश्यसँ दोसर दृश्यक सम्बन्ध प्रायः संयोगात्मक अछि, कार्य-कारण-सम्बन्ध नहि। भरतमुनिक सुत्रधार-परम्परा वा ब्रेख्तक स्पष्ट दृश्य-विभाजन - किछुओ नहि अछि। दर्शक वा पाठककेँ कथाक सूत्र स्वयं जोड़य पड़ैत छनि।

द्वितीय - पात्रक अपूर्ण विकास: विद्यापतिक प्रतीकात्मक उपस्थिति महत्त्वाकांक्षी अवश्य अछि, मुदा ओकर नाट्यात्मक सम्भावना पूर्णतः उपयोग नहि भेल अछि। हिरोइनक पात्र सांस्कृतिक विकृतिक प्रतीक बनाओल गेल अछि मुदा एकर सामाजिक-आर्थिक मूल-कारणक गहन अन्वेषण अनुपस्थित अछि। जिमदारक पात्र एकायामी शोषक थिक, ओहिमे मानवीय जटिलताक अभाव अछि।

तृतीय - अन्तकेँ लऽ कऽ अस्पष्टता: नाटकक अन्तिम दृश्यमे जुलूस, नारा, आन्दोलन - सभ किछु एकत्रित अछि मुदा कोनो स्पष्ट नाट्य-परिणति नहि अछि। 'समाज-संस्कृतिपर लागल गहनके, उगरास कर' - एहि संवादसँ नाटकक शीर्षककेँ सार्थक कयल गेल अछि, मुदा ई काव्यात्मक समापन नाट्यात्मक समापन नहि थिकैक। भारतीय नाट्यशास्त्रमे आवश्यक निर्वहण-सन्धि आ पाश्चात्य नाट्यशास्त्रमे आवश्यक परिणाम (denouement) - दुनूक अभाव एकटा रचनात्मक सीमा थिकैक।

चारिम - मंचनक जटिलता: नाटकमे अनेक स्थान, बहुसंख्यक पात्र, लोकसंगीत-प्रस्तुति, दूर-दूरसँ आबैत जनआन्दोलनक ध्वनि - एहि सभक मिथिलाक सीमित साधन-सम्पन्न रंगमंचपर मंचन करब अत्यन्त कठिन अछि, मुदा असम्भव नहि अछि।

डा. अभि सुवेदी भूमिकामे लिखैत छथि जे 'नाटक निर्देशकक कसबट्टी पर सए प्रतिशत सही उतरत, दर्शकक कसबट्टी पर त सहजिहिं' - नाटकक मंचनीयता एकर सीमा नहि थिकैक।

८. नाटकक ऐतिहासिक महत्त्व

नेपालीय मिथिलाक मैथिली नाट्यसाहित्यक सन्दर्भमे गहन उगरास एकटा महत्त्वपूर्ण कृति थिकैक। जनकपुरमे मिथिला नाट्यकला परिषद (१९७९) केर स्थापनाक परवर्ती नाट्य-परम्पराक एकटा विशिष्ट प्रतिनिधि-कृतिक रूपमे एकरा देखल जा सकैत अछि।

९. समेकित नाट्यशास्त्रीय तुलासँ निष्कर्ष

गहन उगरास एकटा राजनैतिक-सामाजिक उद्देश्यसँ प्रेरित, लोकनाट्य-परम्पराकेँ आधुनिक राजनैतिक नाट्यसँ जोड़बाक महत्त्वाकांक्षी प्रयास थिकैक। भारतीय नाट्यशास्त्रक रस-सिद्धान्तमे करुण रसक सफल प्रवाह, लोकनाट्य-परम्पराक सजीव उपयोग, आ सामूहिक नायकत्वक संकल्पना - एहि तत्त्वसभमे ई नाटक उल्लेखनीय सफलता प्राप्त करैत अछि। ब्रेख्तीय दूरीकरण-पद्धतिक आंशिक उपयोग आ राजनैतिक स्पष्टवादिता एकर आधुनिकताक प्रमाण अछि।

किन्तु कथानकक संरचनात्मक शिथिलता, पात्रक मनोवैज्ञानिक गहराईक अभाव, निर्वहण-सन्धिक अनुपस्थिति, आ मंचनक व्यावहारिक जटिलता - एहि सीमासभसँ नाटककेँ मुक्त नहि कहल जा सकैत अछि। तथापि मैथिली नाट्यसाहित्यक सन्दर्भमे परमेश्वर कापड़िक एहि कृतिक ऐतिहासिक महत्त्व आ सांस्कृतिक योगदान निर्विवाद अछि।

निष्कर्ष आ दूरगामी सांस्कृतिक प्रभाव

परमेश्वर कापड़िक 'गहन उगरास' मैथिली रंगमंचक केवल एकटा प्रयोगशील नाटक नहि थिक, अपितु ई समकालीन विश्वक प्रमुख नाट्य सिद्धान्तक व्यावहारिक समन्वय क्षेत्र थिक। भारतीय 'थिएटर ऑफ द रूट्स'क देसज ऊष्मा सँ युक्त रहितो ई ब्रेख्तक वैचारिक दूरी आ चीनी 'शिएयी' शैलीक प्रवाहिता कें सहजता सँ आत्मसात करैत अछि। यहूदी यिडिश रंगमंच जकाँ ई विस्थापनक आन्तरिक टीस आ 'शुंड' तत्वक लोक-सामर्थ्यकें साहित्यिक आन्दोलनक मुख्यधारा मे समाहित करैत अछि।

नाटककार कापड़ि अपन शब्दकोशीय समृद्धता आ लोक-जीवनक मर्मज्ञताक बले एक एहेन रंगमंचक सृष्टि कएलनि अछि जे क्षेत्रीय स्तर पर नेपालक मधेश आन्दोलन आ जनयुद्धक विसंगति पर प्रहार करैत वैश्विक स्तर पर भाषायिक आ अस्मिताक संकट सँ जूझि रहल सम्प्रदाय कें मुक्ति-चेतनाक नव मार्ग दर्शबैत अछि। 'गहन उगरास'क ई प्रयोगशीलता मैथिली नाट्य साहित्यक इतिहासमे एकटा चिरस्थायी कीर्त्तिमान प्रमाणित होइत अछि।

३३. केदारनाथ चौधरी विशेषांक: कथा, व्यक्तित्व आ कृतित्व

सारांश
केदारनाथ चौधरी विशेषांक सम्पादकीय- गजेन्द्र ठाकुर नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। फोन खतम भेलापर हिन्दीमे पुछलन्हि: "कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

बीजशब्द: केदारनाथ · चौधरी · विशेषांक · व्यक्तित्व · कृतित्व · कुमार · सेहो

केदारनाथ चौधरी विशेषांक सम्पादकीय

कथा १-१०

नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। फोन खतम भेलापर हिन्दीमे पुछलन्हि:

"कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

ऐ मिठासक खटास हुनका की बुझबितौं अहाँकेँ बुझायब। मुदा तइ लेल अहाँकेँ तैयार होमय पड़त। से पहिने भाग-१ मे स्टार्टर आ फेर दोसर भागसँ १००, २०० आ ५०० एम. जी. अहिना डोज बढ़ैत रहत।

कथा १ 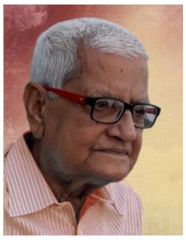

केदारनाथ चौधरी (१९३६-), मैथिलीक पहिल फिल्म 'ममता गाबय गीत' केर निर्माता द्वयमेसँ एकटा निर्माता छथि केदारनाथ चौधरी आ दोसर मदनमोहन दास। बादमे आर्थिक मजबूरीवश तेसर सहनिर्माता भेलखिन उदयभानु सिंह।

माता-स्व. कुसुमपरी देवी, पिता- स्व. किशोरी चौधरी, जन्म: ०३/०१/१९३६

ग्रा.+पत्रा. नेहरा (दरभंगा), अन्य पारिवारिक सदस्य-पत्नी-श्रीमती कुमुद चौधरी, संतान- प्रथम पुत्री-श्रीमती किरण झा, द्वितीय पुत्री-श्रीमती अर्चना चौधरी, शिक्षा- १९५८ ई. मे अर्थशास्त्रमे स्नातकोत्तर, १९५९ ई. मे लॉ। १९६९ ई. मे कैलिफोर्निया वि. वि. सँ अर्थस्थास्त्र मे स्नातकोत्तर, १९७१ ई. मे मार्केटिंग एंड डिस्ट्रीब्यूशन विषयमे गोल्डेन गेट यूनिवर्सिटी, सानफ्रांसिस्को, USA सँ एम. बी. ए., १९७८ मे भारत आगमन। १९८१-८६ क बीच तेहरान आ फ्रैंकफुर्तमे। फेर बम्बई, पुणे होइत रिटायरमेंटक बाद २००० सँ लहेरियासराय, दरभंगामे निवास। ६ टा उपन्यास- चमेलीरानी २००४, करार २००६, माहुर २००८, अबारा नहितन २०१२, हीना २०१३, अयना २०१८. सम्मान- १) विदेह साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१३ (झारखंड मैथिली मंच, राँची द्वारा), २) प्रबोध साहित्य सम्मान, बर्ख-२०१६ आ ३) केदार सम्मान, बर्ख-२०१६,'अबारा नहितन' लेल

कथा २

डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

पिता डॉ शिव कुमार झा, गाम राटी, सासुर- गजहारा। मेडिकल शिक्षा जे. जे. हॉस्पीटल/ ग्रान्ट हॉस्पीटलसँ सम्पन्न कय स्त्री-रोग विशेषज्ञ। मुम्बइसँ १९८०-८२ मे प्रकाशित होइबला मैथिली पत्रिका "विदेह"क पति डॉ मणिकान्त मिश्र (निर्माता- मैथिली फिल्म- आउ पिया हमर नगरी) संग सम्पादन।

अपन २००९ केर ई-पत्र मे ओ लिखैत छथि:

गजेन्द्र ठाकुर जी कैँ हमर नमस्कार! अहाँक पत्रिकाक हम नियमित पाठक छी। अहाँक वेबसाइटक पार्श्व गीत हृदय-स्पर्शी आर मधुर लागल।

आगाँ ओ अपन संस्मरण लिखै छथि जे विदेह सदेह २ मे (http://videha.co.in/new_page_89.htm) मे सेहो संकलित अछि:

मातृभाषा

मातृभाषाक प्रेम, बहुत किछु पढ़ल आ सुनल अछि। अहूँ सभ सुनने होयब, कतेक बेर, मुदा स्वयं अनुभव करबाक अवसर किछुएक लोककैँ भेटैत छन्हि। हम सभ बम्बइ आयले रही। ओना तँ ऐ गप्पक एक युगसँ बेसी भय गेल मुदा बिसरबाक हिम्मत नै कऽ सकैत छी, आर किएक बिसरु? महानगरीक चकाचौन्ध मे हरायल रही, कतौ भटकि नै जाइ से चिन्ता रहय। १९८०क दशक मे संजय गाँधीक एकटा योजना आयल छल, बेरोजगार ग्रेजुएट लेल बैंकसँ किछु सुविधा पर २०, ००० रुपया देबय लेल। हमहूँ बेरोजगार डाक्टर रही। आवेदन केलौं तँ लोन तुरत्ते भेट गेल। मुदा आब ओइ पाइक हम की करु? अपन रोजगार जेना दवाइखाना, कोनो छोटसन घर आदि जतऽ भविष्यमे अपन क्लीनिक खोलि सकी, जेकि ओइ समयमे अति सुलभ आर सम्भव छल, आब तँ से ओइ पाइमे सपना भऽ गेल अछि। ओइ पाइसँ निवेश कऽ हम अपन भविष्य सुरक्षित कऽ सकैत छलौं, गहना-गुड़िया बना अपन सख-सेहन्ता पूरा कऽ सकैत छलौं वा भारत भ्रमण कऽ सकैत छलौं। मुदा नै! हमर पति, डा. मणिकान्त मिश्रक इच्छा छलन्हि जे मैथिली भाषाक पत्रिका निकाली। हम दुनु गोटे मिलि कऽ 'विदेह' नामक मैथिली पत्रिकाक शुरुआत केलौं। पत्रिका तँ छपै, मुदा के कीनत आर के पढ़त? ई बड पैघ समस्या छल। कोनाहु कऽ कय अपन घरक पूँजी लगा कऽ २ बर्ख तँ पत्रिका चलेलौं। फेर हमरा सभकैँ बन्द करय पड़ल किएक तँ दुनु गोटे डाक्टरी व्यवसायमे लागल रही, घर-अस्पताल-पारिवारिक झन्झट सम्हारैत बड मुश्किल छल। बम्बइमे नबे-नबे रही। तहूमे एतेक दुस्साहस कोनो साधारण आदमी नै कऽ सकैत अछि मात्र आर मात्र डा. मणिकान्त मिश्र कऽ सकैत छलाह। किएक तँ मैथिलीक प्रति हुनका जुनूनी लगाव छलन्हि। बम्बइक आपाधापी भरल जीवन एवम् स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव किछुओ हुनकर मैथिली-प्रेमक उत्साहकैँ कम नै कऽ सकलन्हि।

...आर बीस-बाइस बर्खक पश्चात ओ अपन सभटा पूँजी, शरीर-समांग समेत मैथिलीक फिल्म "आउ पिया हमर नगरी" बनौलनि। फिल्म बड सुन्दर बनलै, अहाँ सभ देखने होयब। यदि नै तँ एक बेर अवश्य देखी। फिल्म बनबयमे जे कष्ट आर अनुभव भेल से हम एखन वर्णन नै कऽ सकै छी। फेर कखनो....! मुदा ऐ सभ प्रकरणमे माँ मैथिली अपन लायक पुत्रसँ सदा लेल बिछुड़ि गेली। अछि कोनो मातृभाषा भक्त-पुत्र जे अपन माँ-मैथिलीक हृदयक पीड़ाक अनुभुति कऽ हुनका लेल अपन सभ किछु समर्पित कऽ दिअय?

कथा ३

१५ अगस्त २०२२ ई. क भारतक ७६म स्वतंत्रता दिवसक शुभकामना। ई संयोग छल जे विदेहक ६४म अंक भारतक ६४ म स्वतंत्रता दिवसक अवसर पर १२ बर्ख पहिने १५ अगस्त २०१० कैँ ई-प्रकाशित भेल छल। ऐ बेर विदेहक ३५२म अंक सद्यः ई-प्रकाशित भेल।

हमर पिताजीक मृत्यु १९९५ ई. मे ५५ बरखमे भेलन्हि। मुदा गाममे १२ बर्ख पहिने हुनकर संगी आ ज्येष्ठ सभ जीवित रहथि। परशुरामजी आ धनेश्वर जीक बहिन झंझारपुरमे मल्लिकजीसँ पढ़ैले जाइत रहथि तँ धनाढ्य लोकनि द्वारा बारि देल गेलाह। परशुरामजीक बहिनक पढ़ाइमे बाधा पड़लन्हि। मुदा धनेश्वरजी जे कनेक उमेरमे सेहो पैघ रहथि, अड़ल रहलाह। अंग्रेजी पुलिससँ हुनका पकड़बाओल गेल आ जे पकड़बओलन्हि से बादमे स्वाधीनता पेंशन पबैत रहलथि। १९४२ ई. मे धनेश्वरजी सभ थानासँ अंग्रेज पुलिसकैँ भगा देने रहथि आ फेकन मुन्शीकैँ थानेदार बना देने रहथि। हमरा बाबूजीक कहल ओ शब्द मोन पड़ैत अछि जे गामक धनाढ्य एक्स एम. एल. ए. हुनका स्कॉलरशिपबला फॉर्मपर साइन करबासँ मना कऽ देने रहथिन्ह मुदा तैयो ओ एम. आइ. टी. मुजफ्फरपुरसँ १९५९ ई. मे रॉल नं. १ लऽ सर्वोच्च अंकक संग अभियन्त्रणमे नाम लिखबा लेलन्हि।

एक बेर धनेश्वरजी, परशुरामजी, हमर बाबूजी सभ गोपेशजी अहिठाम जा कऽ खएने छलाह आ ई काज अंडा खएलापर धनाढ्यक नेतृत्वमे हुनका बारल जएबाक विरुद्ध छल। आब ने धनेश्वरजी छथि आ ने गोपेशजी। परशुरामजी सेहो अही बर्ख स्वर्गवासी भऽ गेलथि। परशुरामजी १९९८ ई. मे कोलकातासँ अंग्रेजीक प्रोफेसरशिपसँ सेवानिवृत्त भऽ ओ अंग्रेजीमे "इन्गिलश पोएटिक्स"पर दूटा पोथी लिखने छथि। हमर पोथी "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक समर्पण

"पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहियेबुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

-पिताक प्रिय-अप्रिय सभटा स्मृतिकेँ समर्पित"

पढ़ि ओ हमर दुनू गाल अपना हाथमे लऽ अपन नोर नहि रोकि सकलाह। गाममे बहुत गोटे समर्पण पढ़ि कानए लागल रहथि आ कहने रहथि जे ई सभ हमर पिताक पुण्यक परिणाम अछि। स्वतंत्रता दिवसपर नहि जानि कोना ई सभ फेर स्मरण आबि गेल।

कथा ४

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग

पघलैत हिमखण्ड- डॉ शिव कुमार प्रसाद द्वारा अनूदित कविता संग्रह अछि (मूल हिन्दी - रजनी छाबड़ा- पिघलते हिमखण्ड) । अंतिम रेस धरि ई पहुँचल- ओतऽ हारि गेल। देखी अगिला साल की होइए। विदेहमे ई धारावाहिक रूपें ई- प्रकाशित भेल फेर पुस्तकाकार आयल। ऐ पोथीक कविता सभ संकलित भेल विदेह:सदेह २८ मे जे ऐ लिंक http://www.videha.co.in/new_page_89.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। लेखक धोआ- धोती नै वरन कोरा-धोती परम्पराक छथि। ऐ बेर मूल पुरस्कार पहिल बेर कोरा-धोती परंपराक उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकें हुनकर उपन्यास "पंगु" लेल देल गेलन्हि, आ से साहित्य अकादेमीक इतिहासमे पहिल बेर भेलै। मात्र धोआ-धोती बला लेल ई पुरस्कार रिजर्व रहै। विदेहमे ई धारावाहिक रूपें ई- प्रकाशित भेल फेर पुस्तकाकार आयल। ई पोथी संकलित भेल विदेह:सदेह २१ मे जे ऐ लिंक http://www.videha.co.in/new_page_89.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कें हुनकर लघुकथा संग्रह "गामक जिनगी" लेल देल गेल छल। कार्यक्रम कोच्चिमे १२ जून २०१२कें भेल रहय। मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। ओहू समय रेफरी जखन टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल ७ टा पोथीक नाम पठेलन्हि तखन सेहो एकटा पोथी एहनो रहय जे निर्धारित अवधि २००७-२००९ मे छपले नै छल, तँ की बिनु देखने पोथी अनुशंसित कएल गेल छल? ऐ तरहक पोथी अनुशंसित केनिहारकेँ साहित्य अकादेमी चिन्हित केलक? की तकर नाम सार्वजनिक कयल गेल? की ओकरा स्थायी रूपसँ प्रतिबन्धित कयल गेल? नै कयल गेल आ तखन मैथिलीक प्रतिष्ठा बाँचल कोना रहि सकत।

पुरस्कार शिव कुमार प्रसादकें सेहो देल जेबाक चाही छल मुदा एक्के बरिख दू-दू टा कोरा-धोती परम्पराबला कें ई नै देल जा सकत। एक्के टा कोरा-धोती बलाकें देल गेलै तहीमे अगरा-पिछड़ा दुनूक धोआ-धोतीधारी आ वर्णशंकर साहित्यकार (बायोलॉजिकल वर्णशंकरता सँ एकर कोनो सरोकार नै) कन्नारोहट उठेने छथि।

धोआ-धोती धारी लोकनिकें साहित्य अकादेमीक अपन-अपन अनुवाद-असाइनमेंट आपस कऽ देबाक चाही आ ओ सभ असाइनमेंट नंद विलास राय, राजदेव मण्डल, रामबिलास साहु, धीरेंद्र कुमार, दुर्गानंद मण्डल, मनोज कुमार मण्डल, शिव कुमार प्रसाद, उमेश पासवान, संदीप कुमार साफी, बेचन ठाकुर, मेघन प्रसाद, किशन कारीगर, लालदेव महतों, उमेश मण्डल, शारदानंन्द सिंह, सुभाष कुमार कामत, मुन्नी कामत आदि कें देल जाय, आ से केलासँ मैथिली लेल अग्निवीरक एकटा फौज तैयार भऽ जायत। मेघन प्रसाद विदेह मे अपन आलेखमे ई इच्छा व्यक्त केने छलाह मुदा तखनो हुनका अनुवाद-असाइनमेंट नै देल गेल। अशोक अविचल कें अदहा बधाइ, कारण दू टा कोरा धोतीक बदला हुनकर कार्यकालमे एक्केटा कोरा-धोतीकें पुरस्कार भेट पेलै। आब अगरा-पिछड़ा दुनू दिसुका धोआ-धोती बला मायावी सभ कोन-कोन बहन्ने की-की उकबा उड़ेतन्हि आ अगिला बर्खसँ फेर सँ एकछाहा धोआ-धोतियाइन साहित्य अकादेमी भऽ जायत वा नै तकर उत्तर तँ भविष्यक कोखिमे अछि।

कथा ५

एकटा साहित्यिक घटना

एकटा साहित्यिक घटनाक विवरण दै छी। ई घटना भेलै तमिल साहित्यक आधुनिक कालमे।

मूल धारा विश्व भरिसँ विद्वानकेँ बजेलक मारते रास प्रोग्राम-प्रचार। अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार बजाओल गेला, एकसँ एक कार्यक्रम, रेडियो टी. वी. पर प्रचार, टाकाक गुड्डी उड़ा देलक मूल धारा। एक नम्बरक प्रोग्राम समाप्त भेल।

आ समानान्तर धारा की केलक। ओ निकाललक समकालीन समानान्तर गद्य आ पद्यक एकटा संकलन जकर नाम छलै "कुरुक्षेत्रम्"। साधारण कागज पर साधारण डिजाइन पर बहार भेल ई "कुरुक्षेत्रम्" तमिल साहित्यकेँ सिहरा देलकै। आ एकटा बहस शुरू भेलै जे तमिल साहित्यक इतिहासमे एक्के समय मे भेल दू घटनासँ तमिल साहित्यकेँ कोन घटना बेशी फौदेलकै। टाकाक गुड्डी उड़बैबला तमिल साहित्यक विश्व आकि ब्रह्माण्ड सम्मेलन आकि कुरुक्षेत्रम्!

आ बहुमत मानलकै जे साधारण कागज पर साधारण डिजाइन कएल "कुरुक्षेत्रम्" श्रेष्ठ घटना छल।

विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांक मैथिली साहित्यक "कुरुक्षेत्रम्" बनि गेल अछि। फेसबुकपर बहसमे साहित्यकार लोकनि मानलन्हि जे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ बेशी महत्त्व विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांकक भऽ गेल अछि। लाखक-लाख टाकाक साहित्य अकादेमीमे पसरैत कन्नारोहट घटबाक नामे नै लऽ रहल अछि, मुख्य धारा अपनेमे जालक ओझरी बनि गेल अछि, जकरा असाइनमेण्ट भेटलै से पुरस्कार लेल आ जकरा पुरस्कार भेटलै से असाइनमेण्ट लेल आफन तोड़ने अछि, आ जकरा दुनूमे सँ किछु नै भेटलै तकरा दुनू चाही तइले, आ जकरा दुनू भेटि गेलै तकर हालत तँ सभसँ बेशी खराप छै, ने अकादेमीये ओकरा मोजर दऽ रहल छै आ ओकर रचना सेहो तेहेन नै छै जे समानान्तर धारा लग ठठि सकतै। आ जँ किछु अपवाद अछि तँ ओ डिप्रेशनमे चलि गेल छथि वा अपनाकेँ सेहो कतिआयल माने समानान्तर धारक घोषित करबामे लागल छथि।

माने कतिआयल होयब घोषित करब वा समानान्तर धाराक होयब घोषित करब मूलधाराक (अगड़ा-पिछड़ा दुनूक अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार मूलधारामे छथि) एकटा फैशन बनि गेल अछि, मुदा ई फैशन अछि नै...

कथा ६

विद्वान केना बनी?

मैथिली भाषा जगज्जननी सीतायाः भाषा आसीत् - हनुमन्तः उक्तवान- मानुषीमिह संस्कृताम्

अक्खर (अक्षर) खम्भा

तिहुअन खेत्तहि काञि तसु कित्तिवल्लि पसरेइ। अक्खर खम्भारम्भ जउ मञ्चो बन्धि न देइ॥

[कीर्तिलता प्रथमः पल्लवः पहिल दोहा।]- माने अक्षररूपी स्तम्भ निर्माण कए ओहि पर (काव्यरूपी) मंच जँ नहि बान्हल जाए तँ एहि त्रिभुवनरूपी क्षेत्रमे ओकर कीर्तिरूपी लता (वल्लि) प्रसारित कोना होयत।

गाम सभमे देखैत हेबै किछु लोक संस्कृत सुभाषितक चोटगर प्रयोग करैत छथि। मैथिली साहित्योमे विदेहक पदार्पणसँ पहिने वएह मैथिली साहित्यकार विद्वानक श्रेणी मे अबैत छल जिनका १० टा सुभाषित कंठस्थ रहैत छलन्हि। उचिते कारण बाशो सेहो कहने छथि, जे जे कियो जीवनमे ३ सँ ५ टा हाइकूक रचना कएलन्हि से छथि हाइकू कवि आ जे दस टा हाइकूक रचना कएने छथि से छथि महाकवि।

प्रस्तुत अछि अहाँ लेल एहने ३२ टा बीछल संस्कृत सुभाषित ऐमे सँ दसोटा मोन रहि गेल तँ अहूँ भऽ गेलौं मैथिलीक मूल धाराक हिसाबे प्रकाण्ड पण्डित। मुदा समानान्तर धारामे ऐ शॉर्टकटक पलखति कतऽ, एतऽ तँ अढ़बैले कियो नै भेटत, खटना खटऽ पड़त।

सुभाषितम् (सुष्ठि भाषितम् सुभाषितम्)

मातेव रक्षति पितेव हिते नियुङ्क्ते कान्तेव चाभिरमयत्यपनीयं खेदम्।

लक्ष्मीं तनोति वितनोति च दिक्षुं कीर्तिं किं किं न साधयति कल्पलतेव विद्या॥

यस्य नास्ति स्वयं प्रज्ञा शास्त्रं तस्य करोति किम्?

लोचनाभ्यां विहीनस्य दर्पणः किं करिष्यति ॥

आत्मार्थ जीवलोकेऽस्मिन को न जीवति मानवः।

परं परोपकारार्थं यो जीवति स जीवति॥

गच्छन् पिपीलको याति योजनानाम् शतान्यपि

अगच्छन् वैनतोयोपि पदमेकम् आगच्छति

तृणानि भूमिरूदकं वाक् चतुर्थी च सूंतता।

एतान्यपि सतां गेहे नोच्छिद्यंते कदाचन॥

सुलभाः पुरुषाः लोके सततं प्रियवादिनः।

अप्रियस्यय च पर्थ्यस्य वक्ता श्रोता च दुर्लभः॥

उपर्जितानां वित्तानां त्याग एकहि रक्षणम्।

तडागोदरसंस्थानां परीवाद इताम्भसाम्॥

पुस्तकष्था तु या विद्या परहस्तगतं धनम्।

कार्यकाले समुत्पन्ने न सा विद्या न तद्दनम्।

बहूनाम् अल्पसाराणां संहतिः कार्यसाधिका।

तृणैर्गुणत्वमापन्नेः बध्यंते मत्तदंतिनः॥

जलबिन्दु निपातेन् क्रमशः पूर्ण्यते घटः।

स हेतुः सर्वविद्यानां धर्मस्य च धनस्य च॥

चिन्तनीया हि विपदाम् आदावते प्रतिक्रिया।

न कूपखननं युक्तम् प्रदीप्ते वह्निना गृहे॥

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्

आत्मवत् सर्वभूतेषु यः पश्यति सः पण्डितः।

यस्य कृत्यं न जानन्ति मंत्रं वा मंत्रितं परे।

कृतमेवास्य जानन्ति सर्वै पण्डिते उच्यते।

सदयं हृदयं यस्य भाषितं सत्यभूषितम्।

कायः परहिते यस्य कलिस्तस्य करोति किम्॥

गतानुगतिकोलोकः न लोकः पारमार्थिकः

गङ्गासैक्त लिङ्गेन नष्टं मे ताम्रभाजनम्।

दानेन पाणिः न तु कङ्कणेन स्नानेन शुद्धिः न तु चन्दनेन।

मानेन तृप्तिः न तु भोजनेन ज्ञानेन मुक्तिः न तु मुण्डनेन॥

आचार्यात् पादमादत्ते पादं शिष्यः स्वमेधया।

पादं सब्रह्मचारिभ्यः पादं कालक्रमेण च।

यथा चित्तं तथा वाचो यथा वाचस्तथा क्रिया।

चित्ते वाचि क्रियायां च महता मेकरूपता॥

अमन्त्रमक्षरं नास्ति नास्ति मूलमनौषधम्।

अयोग्यः पुरुषो नास्ति योजकस्तत्र दुर्लभः।

आयत्यां गुणदोषज्ञः तदात्वे क्षिप्रनिश्चयः।

अतीते कार्यशेषज्ञो विपदा नाभिभूयते॥

गते शोकं न कुर्वीत भविष्यं नैव चिन्तयेत्।

वर्तमानेषु कालेषु वर्तयन्ति विचक्षणाः।

छायामन्यस्य कुर्वन्ति तिष्ठन्ति स्वयमातपे।

फलान्यापि परार्थाय वृक्षाः सत्पुरुषाः इव॥

उपकारिषु यः साधुः साधुत्वे तस्य को गुणः।

आरिषु यः साधुः स सादुरिति कीर्तितः॥

उद्यमनैव सिध्यंति कार्याणि न मनोरथैः।

नहि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशंति मुखे मृगा।

अयं निजः परोवेत्ति गणना लघुचेतसाम्।

उदारचरितानां तु वसुधैव कुटुम्बकम्॥

प्रियवाक्य प्रदानेन सर्वे तुष्यन्ति जन्तवः।

तस्मात् तदेव वक्त्तव्यं वचने का दरिद्रता।

नाभिषेको न संस्कारः सिंहस्य क्रियते वने।

विक्रमार्जित सत्त्वस्य स्वयमेव मृगेन्द्रता।

वज्रादपि कठोराणि मृदुणि कुसुमादपि।

लोकोत्तराणाम चेतांसि को हि विज्ञातुमर्हति।

अन्नदानं परं दानं विद्यादनमतः परम्।

अन्नेन क्षणिका तृप्तिः यवज्जीवं च विद्यया॥

षड् दोषाः पुरुषेणेह ह्यातव्या भूतिमिच्छिता।

निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्य दीर्घसूत्रता॥

अकृत्वा परसन्तापम् अगत्वा खलनमताम्।

अनुत्सृज्य सतां वर्त्म यत् स्वल्पमपि तद् बहु॥

अपार भूमि विस्तारम् अगम्य जन संकुलम्

राष्ट्रं संघटनाहीनं प्रभवेन्नात्मरक्षणे॥

कथा ७

आब किछु भाषण-भाख

किछु भाषण-भाख जे हम संगी साथी सभकेँ गप-शपमे दैत रहै छियन्हि से हुनका सभक आग्रह कारण आब एतए दऽ रहल छी।

कम वसा बला दूध सदिखन पीबू आ कम नोन खाउ। माउसक सेवन सेहो कम करू, माँछ बेशी खा सकै छी। अपन आस-पड़ोसक लोकक दिनचर्यापर अहाँक ध्यान अवश्य रहबाक चाही नहि तँ घर बदलि लिअ। कोनो व्यक्तिकेँ जे अहाँ प्रशंसा करब तँ ओ ओकरा लेल बड़ उत्साह बढ़बएवला हएत। अपन पड़ोसीकेँ बगिया वा कोनो आन व्यंजन बना कए खुआऊ आ ओकर बनेबाक विधि सेहो लिखाऊ। ककरो प्रति दुर्भावना वा पूर्वाग्रह नहि राखू। कोनो मॉलमे जाऊ तँ कार खूब दुरगर लगाऊ आ परिवार-बच्चा संगे टहलि कए आऊ। दूरदर्शनपर मारि-पीट बला धारावाहिक नहि देखू आ जे-जे कम्पनी ओकर प्रायोजक अछि तकर उत्पादक बहिष्कार करू। सभ लोक, पशु-पक्षीक प्रति आदर राखू। ककरोसँ गाड़ी माँगी तँ घुरबैत काल पेट्रोल वा डीजल पूर्ण रूपसँ भरबा कऽ घुराऊ, लोक किएक तँ एकर उल्टा करैत छथि, भरल पेट्रोल गाड़ी लऽ जाइ छथि आ रिजर्वमे आनि कए घुरबैत छथि। देखब जे ओ व्यक्ति अहाँक चरचा बड्ड दिन धरि करत आ आगाँसँ गाड़ी देबामे बहन्ना नहि करत। दिनमे पाँच-सात गोटेकेँ अभिवादन अवश्ये करू। एक-आधटा माल-जाल राखू, जे दिल्ली-मुम्बैमे रहै छी तँ तकर बदला कुकुड़ पोसू। मासमे एक बेर सुर्योदय अवश्य देखू आ तरेगण सेहो। दोसराक जन्म दिन आ नाम अवश्य मोन राखू। होटलक खेनाइ परसनिहारकेँ टिप अवश्य देल करू। ककरोसँ भेँट भेलापर आह्लादसँ अभिवादन करू, हाथ मिलाऊ आ सर्वदा आँखि मिला कऽ गप करू। धन्यवाद आ आदरसूचक शब्द अवश्य बाजू। कोनो बाजा बजेनाइ अवश्य सीखू, नहि कोनो आर तँ झालि तँ बजाइये सकै छी। नहाइत काल गीत गाऊ।

अपन सफलताक आकलन अनका प्रति कएल सेवासँ नापू नञि की ओहि वस्तुसँ जे अहाँ अनका हानि पहुँचा कऽ प्राप्त केने छी। धोखा देनाइ खराप गप छियै् धोखा खेनाइ नहि। साक्षात्कार केना लेबाक चाही ओहिमे की की आवश्यक बिन्दु छै से अवश्य सीखू। अफवाह सुनू मुदा अपना दिससँ ओहिमे कोनो वृद्धि वा योगदान नहि देल करू। अपन बच्चाक चिन्ता वा भएपर ध्यान देल करू। अपन माएक संग बहस नहि करू। सभटा सुनलाहा चीजपर विश्वास नहि करू। अहाँ लग जतेक पाइ अछि ओहिमेसँ किछु बचा कए खर्च करू। बूढ़-पुरानक संग भद्र व्यवहार करू। बुराइ आ अन्यायकेँ कखनो बर्दास्त नहि करू। प्रशंसात्मक पत्रकेँ सम्हारिकेँ राखू। कोनो सेमीनारमे भाषण देलाक बादे छपल भाषण वितरित करू। बियाहक बादेसँ अपन बच्चाक शिक्षा लेल पाइ बचेनाइ शुरू कऽ दिअ। माता-पिता अपन बच्चाकेँ आत्मनिर्भर रहनाइ सर्वदा सिखाबथु। अहाँ तखने मानसिक रूपसँ स्वतंत्र भऽ सकब जखन अपन समस्याक समाधान लेल दोसराक मुँहतक्की नहि करब। विवाह वा बच्चाक पोषण ओतेक भरिगर चीज नहि छैक। जखन अहाँ हँसब तँ स्वतः अहाँ सुन्दर देखा पड़ब, खूब हँसू। जाधरि अहाँ नव-नव काज नहि करब ताधरि नव-नव चीज कोना सीखब? जे अहाँ कोनो काज बिना त्रुटिक करए चाहब तँ ओ काज कहियो नहि भऽ सकत। कोनो खराप भेल सम्बन्धकेँ सुधारबा लेल कतबो देरी भेलाक बादो प्रयास करबाक चाही। मानवीय भावना कोनो काज करबामे आ कतबो कठिन परिस्थितिकेँ पार पएबामे सफल होएत। कोनो मार्गक, कोनो विचारक आ कोनो कार्यक जानकारी ओहि पर आगाँ बढ़लासँ पता चलत, ओहि पर बहस कएलासँ नहि। एकटा दोस वैह अछि जे अहाँक सभ गुण-दुर्गुणसँ अवगत रहलाक बादो अहाँकेँ पसिन्न करैत अछि।

अपन ज्ञान आ अनुभवकेँ सर्वदा बाँटू आ अपन वाक्, कर्म आ निर्णयमे हरदम नम्र रहू। अहाँक मित्रक लेल जे कियो नीक शब्दक प्रयोग करै छथि तँ तकर जनतब मित्रकेँ अवश्य कराऊ। जे अहाँ बुझने सही काज छैक तकरा अवश्य करू। पहिचान बनबए लेल काज नहि करू वरन् तेहन काज करू जकरा लोक चीन्हि सकए आ मोन राखए। जीवनक पैघ-पैघ परिवर्तन बिना कोनो चेतौनीक अबैत छैक। अपन बच्चाकेँ ई सिखाऊ जे कोनो व्यक्तिक कमीकेँ कम कऽ कए नहि मूल्यांकन करए। जे कोनो काज अहाँ करै छी तकरा मोनसँ करू। कोनो नाटक खतम भेलापर थोपड़ी बजबैमे सर्वदा आगू रहू। सोचू, ओहि पर विश्वास करू, सपना देखू आ ओकरा पूर्ण करबाक साहस राखू।

कथा ८

आब प्रस्तुत अछि हमर २००८-०९ मे लिखल समीक्षा जे विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ फेर हमर पोथी "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" (२००९) मे संकलित भेल।

केदारनाथ चौधरीक उपन्यास- "चमेली रानी" आ "माहुर"

केदारनाथ चौधरी जीक पहिल उपन्यास चमेली रानी २००४ ई. मे आएल। एहि उपन्यासक अन्त एहि तरहेँ आकर्षक रूपेँ भेल जे एकर दोसर भागक प्रबल माँग भेल आ लेखककेँ एकर दोसर भाग माहुर लिखए पड़लन्हि। धीरेन्द्रनाथ मिश्र चमेली रानीक समीक्षा करैत

विद्यापति टाइम्समे लिखने रहथि- "...जेना हास्य-सम्राट हरिमोहन बाबूकेँ "कन्यादान"क पश्चात् "द्विरागमन" लिखए पड़लनि तहिना "चमेलीरानी"क दोसर भाग उपन्यासकारकेँ लिखए पड़तन्हि"। ई दुनू खण्ड कैक तरहेँ मैथिली उपन्यास लेखनमे मोन राखल जएत। एक तँ जेना रामलोचन ठाकुर जी कहैत छथि- "..पारस-प्रतिभाक एहि लेखकक पदार्पण एते विलम्बित किएक?" ई प्रश्न सत्ये अनुत्तरित अछि। लेखक अपन ऊर्जाक संग अमेरिका, ईरान आ आन ठाम पढ़ाइ-लिखाइमे लागल रहथि रोजगारमे रहथि मुदा ममता गाबए गीतक निर्माता घुमि कऽ दरभंगा अएलाह तँ अपन समस्त जीवनानुभव एहि दुनू उपन्यासमे उतारि देलन्हि। राजमोहन झासँ एकटा साक्षात्कारमे हम एहि सम्बन्धमे पुछने रहियन्हि तँ ओ कहने रहथि जे बिना जीवनानुभवक रचना संभव नहि, जिनकर जीवनानुभव जतेक विस्तृत रहतन्हि से ओतेक बेशी विभिन्नता आ नूतनता आनि सकताह। केदारनाथ चौधरीक "चमेली रानी" आ "माहुर" ई सिद्ध करैत अछि। चमेली रानी बिक्रीक एकटा नव कीर्तिमान बनेलक। मात्र जनकपुरमे एकर ५०० प्रति बिका गेल। लेखक "चमेली रानी"क समर्पण - "ओहि समग्र मैथिली प्रेमीकेँ जे अपन सम्पूर्ण जिनगीमे अपन कैंचा खर्च कऽ मैथिली-भाषाक कोनो पोथी-पत्रिका किनने होथि"- केँ करैत छथि, मुदा जखन अपार बिक्रीक बाद एहि पोथीक दोसर संस्करण २००७ मे एकर दोसर खण्ड "माहुर"क २००८ मे आबए सँ पूर्वहि निकालए पड़लन्हि, तखन दोसर भागमे समर्पण स्तंभ छोड़नाइये लेखककेँ श्रेयस्कर बुझेलन्हि। एकर एकटा विशिष्टता हमरा बुझबामे आएल २००८ केर अन्तिम कालमे, जखन हरियाणाक उपमुख्यमंत्री एक मास धरि निपत्ता रहलाह, मुदा राजनयिक विवशताक अन्तर्गत जाधरि ओ घुरि कऽ नहि अएलाह तावत हुनकापर कोनो कार्यवाही नहि कएल जा सकल। अपन गुलाब मिश्रजी तँ सेहो अही राजनीतिक विवशताक कारण निपत्ता रहलोपर गद्दीपर बैसले रहलाह्, क्यो हुनका हँटा नहि सकल। चाहे राज्यक संचालनमे कतेक झंझटि किएक नहि आएल होअए।

उपन्यास-लेखकक जीवनानुभव, एकर सम्भावना चारि साल पहिनहिए लिखि कऽ राखि देलक। भविष्यवक्ता भेनाइ कोनो टोना-टापरसँ संभव नहि होइत अछि वरन् जीवनानुभव एकरा सम्भव बनबैत अछि।

एहि दुनू उपन्यासक पात्र चमत्कारी छथि, आ सफल सेहो। कारण उपन्यासकार एकरा एहि ढंगसँ सृजित करैत छथि जेना सभ वस्तुक हुनका व्यक्तिगत अनुभव होइन्हि।

"चमेली रानी" उपन्यासक प्रारम्भ करैत लेखक एकर पहिल परीक्षामे उत्तीर्ण होइत छथि जखन एकर लयात्मक प्रारम्भ पाठकमे रुचि उत्पन्न करैत अछि। -कीर्तिमुखक पाँच टा बेटाक नामकरणक लेल ओकर जिगरी दोस कन्टीरक विचार जे "पाँचो पाण्डव बला नाम बेटा सबहक राखि दहक। सुभिता हेतौ"। फेर एक ठाम लेखक कहैत छथि जे जतेक गतिसँ बच्चा होइत रहैक से कौरवक नाम राखए पड़ितैक। नायिका चमेली रानीक आगमन धरि कीर्तिमुखक बेटा सभक वर्णन फेर एहि क्रममे अंग्रेज डेम्सफोर्ड आ रूपकुम्मरिक सन्तान सुनयनाक विवरण अबैत अछि। फेर रूपकुम्मरिक बेटी सुनयनाक बेटी शनिचरी आ नेताजी रामठेंगा सिंह "चिनगारी"क विवाह आ नेताजी द्वारा शनिचरीकेँ कनही मोदियानि लग लोक-लाजक द्वारे राखि पटना जाएब, नेताजीक मृत्यु आ शनिचरी आ कीर्तिमुखक विवाहक वर्णन फेरसँ खिस्साकेँ समेटि लैत अछि।

तकर बाद चमेली रानीक वर्णन अबैत अछि जे बरौनी रिफाइनरीक स्कूलमे बोर्डिंगमे पढ़ैत छथि आ एहि कनही मोदियानिक बेटी छथि। कनही मोदियानिक मृत्युक समय चमेली रानी दसमाक परीक्षा पास कऽ लेने छथि। भूखन सिंह चमेली रानीक धर्म पिता छथि। डकैतीक विवरणक संग उपन्यासक पहिल भाग खतम भऽ जाइत अछि।

दोसर भागमे विधायकजीक पाइ आकि खजाना लुटबाक विवरण, जे कि पूर्व नियोजित छल, एहि तरहेँ देखाओल गेल अछि जेना ई विधायक नांगटनाथ द्वारा एकटा आधुनिक बालापर कएल बलात्कारक परिणामक फल रहए। आब ई नांगटनाथ रहथि मुख्यमंत्री गुलाब मिसिरक खबास जे राजनीतिक दाँवपेंचमे विधायक बनि गेलाह।

ई चरित्र २००८ ई. क अरविन्द अडिगक बुकर पुरस्कारसँ सम्मानित अंग्रेजी उपन्यास "द ह्वाइट टाइगर"क बलराम हलवाइक चरित्र जे चाहक दोकानपर काज करैत दिल्लीमे एकटा धनिकक ड्राइवर बनि फेर ओकरा मारि स्वयं धनिक बनि जाइत अछि, सँ बेश मिलैत अछि आ चारि बरख पूर्व लेखक एहि चरित्रक निर्माण कऽ चुकल छथि। फेर के. जी. बी. एजेन्ट भाटाजीक आगमन होइत अछि जे उपन्यासक दोसर खण्ड "माहुर" धरि अपन उपस्थिति बेश प्रभावी रूपेँ रखबामे सफल होइत छथि।

उपन्यासक तेसर भागमे अहमदुल्ला खाँक अभियान सेहो बेश रमनगर अछि आ वर्तमान राजनीतिक सभ कुरूपताकेँ समेटने अछि। उपन्यासक चारिम भाग गुलाब मिसिरक खेरहा कहैत अछि आ फेरसँ अरविन्द अडिगक बलराम हलवाइ मोन पड़ैत छथि। भुखन

सिंहक संगी पन्नाकेँ गुलाब मिसिर बजबैत अछि आ ओकरा भुखन सिंहक नांगटनाथ आ अहमदुल्ला अभियानक विषयमे कहैत अछि। संगहि ओकरा मारबाक लेल कहैत अछि से ओ मना कऽ दैत छै। मुदा गुलाब मिसिर भुखन सिंहकेँ छलसँ मरबा दैत अछि।

पाँचम भागमे भुखन सिंहक ट्रस्टक चरचा अछि, चमेली रानी अपन अड्डा छोड़ि बैद्यनाथ धाम चलि जाइत छथि। आब चमेली रानीक राजनीतिक महत्वाकांक्षा सोझाँ अबैत अछि। स्टिंग ऑपरेशन होइत अछि आ गुलाब मिसिर घेरा जाइत छथि।

उपन्यासक छठम भाग मुख्यमंत्रीक निपत्ता रहलाक उपरान्तो मात्र फैक्ट फाइंडिंग कमेटी बनाओल जएबाक चरचा होएबाक अछि, जे कोलिशन पोलिटिक्सक विवशतापर टिप्पणी अछि।

उपन्यासक दोसर खण्ड "माहुर"क पहिल भाग सेहो घुरियाइत-घुरियाइत चमेली रानीक पार्टीक संगठनक चारू कात आबि जाइत अछि। स्त्रीपर अत्याचार, बाल-विधवा आ वैश्यावृत्तिमे ठेलबाक तेहन संगठन सभकेँ लेखक अपन टिप्पणी लेल चुनैत छथि।

माहुरक दोसर भागमे गुलाब मिसिरक राजधानी पदार्पणक चरचा अछि। चमेली रानी द्वारा अपन अभियानक समर्थनमे नक्सली नेताक अड्डापर जएबाक आ एहि बहन्ने समस्त नक्सली आन्दोलनपर लेखकीय दृष्टिकोण, संगहि बोनक आ आदिवासी लोकनिक सचित्र-जीवन्त विवरण लेखकीय कौशलक प्रतीक अछि। चमेली रानी लग फेर रहस्योद्घाटन भेल जे हुनकर माए कनही मोदियाइन बड्ड पैघ घरक छथि आ हुनकर संग पटेल द्वारा अत्याचार कएल गेल, चमेली रानीक पिताक हत्या कऽ देल गेल आ बेचारी माए अपन जिनगी कनही मोदियाइन बनि निर्वाह कएलन्हि। ई सभ गप उपन्यासमे रोचकता आनि दैत अछि।

माहुरक तेसर भाग फेरसँ पचकौड़ी मियाँ, गुलाब मिसिर, आइ. एस. आइ. आ के. जी. बी. क षडयन्त्रक बीच रहस्य आ रोमांच उत्पन्न करैत अछि।

माहुरक चारिम भाग चमेली रानी द्वारा अपन माए-बापक संग कएल गेल अत्याचारक बदला लेबाक वर्णन दैत अछि, कैक हजार करोड़क सम्पत्ति अएलासँ चमेली रानी सम्पन्न भऽ गेलीह।

माहुरक पाँचम भाग राजनैतिक दाँव-पेंच आ चमेली रानीक दलक विजयसँ खतम होइत अछि।

विवेचन: उपन्यासक बुर्जुआ प्रारम्भक अछैत एहिमे एतेक जटिलता होइत अछि जे एहिमे प्रतिभाक नीक जकाँ परीक्षण होइत अछि। उपन्यास विधाक बुर्जुआ आरम्भक कारण सर्वांतीजक "डॉन क्विक्जोट", जे सत्रहम शताब्दीक प्रारम्भमे आबि गेल रहए, केर अछैत उपन्यास विधा उन्नैसम शताब्दीक आगमनसँ मात्र किछु समय पूर्व गम्भीर स्वरूप प्राप्त कऽ सकल। उपन्यासमे वाद-विवाद-सम्वादसँ उत्पन्न होइत अछि निबन्ध, युवक-युवतीक चरित्र अनैत अछि प्रेमाख्यान, लोक आ भूगोल दैत अछि वर्णन इतिहासक, आ तखन नीक-खराप चरित्रक कथा सोझाँ अबैत अछि। कखनो पाठककेँ ई हँसबैत अछि, कखनो ओकरा उपदेश दैत अछि। मार्क्सवाद उपन्यासक सामाजिक यथार्थक ओकालति करैत अछि। फ्रायड सभ मनुक्खकेँ रहस्यमयी मानैत छथि। ओ साहित्यिक कृतिकेँ साहित्यकारक विश्लेषण लेल चुनैत छथि तँ नव फ्रायडवाद जैविकक बदला सांस्कृतिक तत्वक प्रधानतापर जोर दैत देखबामे अबैत छथि। नव-समीक्षावाद कृतिक विस्तृत विवरणपर आधारित अछि। एहि सभक संग जीवनानुभव सेहो एक पक्षक होइत अछि आ तखन एतए दबाएल इच्छाक तृप्तिक लेल लेखक एकटा संसारक रचना कएलन्हि जाहिमे पाठक यथार्थ आ काल्पनिकताक बीचक आड़ि-धूरपर चलैत अछि।

कथा ९

साकेतानन्द प्रकरण

साकेतानन्दक १२ नवम्बर २००९ केर पोस्ट,

http://saketanands.blogspot.com/2009/11/blog-post_12.html

ओ लिखैत छथि:

"हमरा लगैये जे जेना नेता सब के भीड, मंच आ माइक के देखिते किछु सबसबाय लगैत छै, तहिना किछु लेखको होइ छनि। कहिया कत' दू_चारि टा रचनाक की चर्चा भेलनि, बस भ' गेला स्थापित। तहिया स' जँ कोनो साहित्यिक मंच नज़रि एलनि, कि कुर्सी हथियेबालय वृतोष्मि भेटता। पटना मे मुन्नक़िद पुस्तक मेला मे नामवर संगे आलोकधन्वा के बैसल देखि लागल जे लेखन आ साहित्यक राजनीति, दुनू दू छोरक चीज छैक, जे एक संगे भैये ने सकैत अछि। मैथिलीमे एखन तक अपन मांटिक़ उदारता,

अयाचीवृत्तिक छिकार छैके। एखनो बिना विचारने_सिचारने, जे ई के छापत आ कि तहू स' बढि क' जे एकरा के पढत? लोक लिखैये, लिखिते जारहल अछि।

हमरा जनैत पढैक वस्तु (कोन आ केहेन?) भेटतै त' लोक पढबे करतै।

तैं कि आब लोक 'चमेली रानी' लिखय?"

कथा १०

ई कोनो कथा नै

साकेतानन्द विद्वान लोक रहथि ईर्ष्यावश लिखि गेला आ से प्रतारणा हरिमोहन झाकेँ सेहो सहऽ पड़ल रहन्हि। ने हरिमोहने झा आ नहिये केदार नाथ चौधरी सुभाषित मात्र रटने छला। दत्त-चटर्जीक "इण्ट्रोडक्शन टू इण्डियन फिलोसोफी"क हिन्दी अनुवाद ओ अनुवाद-पुरस्कार लेल नै वरन् अपन दर्शनशास्त्रक प्रोफेसरशिपकेँ सिद्ध करय लेल केने छला। संस्कृतक श्लोक सभ ओ अपन पात्र खट्टर-ककाकेँ सेहो रटेने छला प्रयोगमे अन्तर मुदा भेटत।

लोक मैथिली लेल अपन सर्वस्व लुटेने अछि, डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र आ केदारनाथ चौधरी मात्र उदाहरण छथि। लोक ठकहरबा सभसँ डेराइत अछि खास कऽ रंगमंच आ फिल्मक नामपर टण्डेली मारि रहल लोक सभसँ। भ्रमरजीक तँ सी. डी. ये लोक अपन नामसँ निकलबा लेलक। सएह हाल साहित्योमे छै।

जँ उपरका कथा सभ अहाँकेँ सिहरेलक तँ समानान्तर धाराक संग चलि पड़ू आ जँ से नै तँ हमर प्रयास जारी रहत, आ तइ लेल विशेषांक सभ निकलैत रहत।

३४. केदारनाथ चौधरी: हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ

सारांश

केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय। आ भोजनालयमे जिलेबी-कचौड़ी खाउ आ एकमी पुल जाउ आ बात खतम। मुदा ओतऽ खट्टर ककाक सहोदर छोटका कका विद्यमान छथि।

बीजशब्द: केदारनाथ · चौधरी · उपन्यासक · पुनर्पाठ · अध्याय · फिल्म · कोनो

केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ

मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय।

आ भोजनालयमे जिलेबी-कचौड़ी खाउ आ एकमी पुल जाउ आ बात खतम।

मुदा ओतऽ खट्टर ककाक सहोदर छोटका कका विद्यमान छथि। फेर बैकग्राउण्ड जे देश स्वतंत्रो आ गणतंत्रो भऽ गेल रहै, ओइ समयक घटना छी।

फेर जे दू टा मे सँ एक गोटे बियाहलो छला, घटानाक समय पहिने देल अछि से बालविवाह आदिबला मामिले खतम।

आ फेर संगीक मामाजी एला। आब ओ तेहेन रोजगारमे भागिनकेँ लगेथिन्ह जे ओ टाकाक मोटरी बापकेँ पठेथिन। माने आतम्हत्याक तँ मामिले खतम। ओ बिदा भेला हाबड़ा आ आत्मकथात्मक शैलीक उपन्यासक "हम" बिदा भेला गाम। पहिल अध्याय समाप्त।

दोसर अध्यायमे एम. ए. अर्थशास्त्र पास भऽ गेला अपन "हम"। आ फेर प्रवेश भेल इंगलैण्डसँ पी. एच. डी. कयल प्रबुद्धक, दोसर अध्याय समाप्त। एते जल्दी समाप्त नै होइ छै मुदा जइ हिसाबे पहिल अध्याय चलतै तहिना दोसर सेहो चलल हेतै तकर अंदाजा भऽ गेल हएत। "मिथिला" पत्रिकाक चर्च आ सेहो लिखल जे मिथिले जकाँ काहि कटैत छल ओकर कागत आ आखर।

तेसर अध्यायमे कलकत्तामे जीविकोपार्जन शुरू। चारिम अध्यायमे जानकी नन्दन सिंह गिरफ्तार आ इंगलैण्डसँ पी. एच. डी. कयल, सम्भवतः नै सत्ये- लक्ष्मण झा प्रसिद्ध लखन झा, केँ भुइयाँक लोकक ठोकल बात कहब। आ अपन "हम" प्रस्थान केलथि महंथ मदन दास जीक डेरा। माने असली खेला शुरू।

अध्याय पाँचमे मैथिली लेल काज आ ओइ लेल फिल्म-निर्माण आ ओइ लेल पूँजी संग नौकरीसँ इस्तीफा देमऽ पड़तन्हि अपन "हम"केँ।

१९३६मे जन्म आ १९६१ क ई गप्प, गदह-पचीसी बला समै। नोकरीसँ इस्तीफा, अध्याय छ समाप्त।

अध्याय ७ मे बम्बइ आगमन।

अध्याय ८ फिल्मी स्टाइलक परमानन्द चौधरी। आब फिल्मक पौराणिक कथानक हुअय आकि सामाजिक तइपर घमर्थन।

अध्याय ९ फिल्मक पटकथा तैयार। गीतकार भेला रवीन्द्र। गीत गेता के? लता आ रफी केर फीस तीन हजार टाका प्रति गाना। सुमन कल्याणपुर दू गीतक फीस लेलनि चौदह सय टाका आ हुनकर पति रसीद देलखिन्ह तीन सय टाकाक। गीता दत्त दिन-रति नशामे बुत्त, पति गुरुदत्तसँ समस्या रहन्हि, बादमे गुरुदत्त आत्महत्या कऽ लेलनि, पाँच दिनमे गाना टेक केलनि गेता दत्त। म्यूजिकक कुल खर्च १४ हजार टाका। फणीश्वर नाथ रेणु मैथिलीमे फिल्म बनबाक सूचनासँ भाव विह्वल भऽ गेला।

अध्याय दस राजनगरमे सूटिङ्ग।

अध्याय एगारह २ मास तेरह दिनुका बाद सूटिंग समाप्त, अल्मुनियमक २० पेटीमे फिल्मक निगेटिव लऽ कऽ "हम" आ मदन भाइक बम्बइ प्रस्थान।

अध्याय बारह फिल्म मात्र अदहासँ कनिये बेशी बनल अछि, तइ सूचनासँ हड़कम्प।

अध्याय तेरह पाँच टा एडिट कयल रीलक सङ्ग कलकत्ता आगमन। गणेश टॉकीजमे एकर प्रदर्शन भेल आ "भरि नगरी मे सोर, बौआ मामी तोहर गोर" सभकेँ भाव-विभोर कऽ देलक।

अध्याय चौदह अमेरिकन विश्वविद्यालयमे अपन "हम" एडमिशन लेल चयनित होइ छथि।

अध्याय १५ मे १९७७ मे भारत घुरै छथि। रवीन्द्रनाथ ठाकुर केदारनाथ चौधरीसँ राइट लऽ कऽ फिल्म पूरा करबेलन्हि, ई प्रदर्शितो भेल, ओ नीक नफा कमेलनि।

जे गप ऐ पोथीमे नै लिखल अछि से ई जे ई फिल्म दूरदर्शनपर सेहो एकाधिक बेर देखाओल गेल।

तँ आब बुझिये गेल होयब जे ई कोनो उपन्यास नै, ऐमे कोनो स्थान-पात्रक काल्पनिक हेबाक कोनो कैप्शन नै लागल अछि। मुदा हरिमोहन झा केर "ग्रेजुएट पुतोहु" सन एकर अन्त मार्मिक कोना भऽ गेल। आ उपन्यास छी की? सभक जिनगी उपन्यासे तँ छी, सभ आत्मकथा लिखै जाउ आ उपन्यास बनैत जायत।

तँ ई आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल पोथी छी, एकर "हम" छथि केदारनाथ चौधरी। मैथिली आ मिथिलाक नामपर होइबला कार्यक्रमक रस्तो सँ लोक किए भागि जाइ छथि, ई तकर कथा थीक।

आ यएह कारण छी जे केदारनाथ चौधरी जीक समस्त साहित्यकेँ हम प्रतियोगी परीक्षार्थी सभ लेल अनिवार्य रखने छी। रवीन्द्र नाथ टैगोरक बाल नाटकक साहित्य अकादेमी जे मैथिली अनुवाद केने अछि तकर मंचन तँ बच्चाक बापो नै कऽ सकत। जे जतबी भऽ रहल छै से ई नाट्य-साहित्यिक-मिथिला-अभियानी संस्थे सभ कऽ रहल छै- तेँ सभ सही, ई तर्क हमरा स्वीकार्य नै।

ई उपन्यास आत्मकथात्मक आ संस्मरणात्मक केर श्रेणीमे अबैत अछि।

जँ अहाँ अपन जिनगीकेँ "सूट" कऽ सकी तँ अहाँकेँ लागत जे लेन्ससँ देखल जिनगी बेशी मारुख होइ छै। रंगमंचसँ फिल्ममे आयल कलाकारकेँ आँखिमे नोर आनैले ग्लिसरीन नै लगबऽ पड़ै छै। अहाँकेँ लागत जे खाली रोडपर बर्खामे हम जे ड्राइव कऽ रहल छी, से लेन्ससँ सूट केलापर "सिनेमाक हीरो" सन हम भऽ जायत। मुदा हम धैनसन ओकरा कोनो मोजर नै दै छी। हमरा विचारे प्रतियोगी परीक्षार्थीये नै वरन् साहित्यकारो सभकेँ ई पोथी सभ पढ़बाक चाही। हम तँ सभकेँ सलाह दै छियन्हि जे सभकेँ फोटोग्राफीक कोनो "समर कोर्स" अवश्ये करबाक चाही। एकटा आर सलाह हम लोककेँ दैत छियन्हि जे आइ-काल्हि मोबाइलमे कैमरा आबि गेल छै, अहाँ प्रतिदिन ५-१० मिनटक वीडियो रेकार्डिंग करू, दुनियाँकेँ चौखुट, आयताकार, त्रिभुजीय आदि फ्रेममे देखू आ अनुभव करू जे कोनो भरिगरो विषय लोक केना नीकसँ बुझैत अछि। भौतिकी विज्ञानक प्रोफेसर फेनमेन (फेनमेन्स लेक्चर्स) ऐ लेल प्रसिद्ध अछि, फिजिक्सकें रुचिगर ढ़ंग सँ पढ़ेबा लेल। आ एतऽ तँ तेहेन भूप सभ छथि जे "फिक्शनो" "फिजिक्स" सन लिखैत छथि।

कला फिल्म कियो किए नै देखैत अछि, कारण लेखक-निर्देशककेँ होइ छै जे कला फिल्मक सब्जेक्ट मात्र ओकरा पुरस्कार दिया देतै। वास्तविकता ई छै जे कला फिल्म सेहो हिट होइ छै, "द कश्मीर फाइल्स" फिल्म डोक्यूमेण्ट्री-फिल्म भेलाक बादो हिट भेलै, कारण डाइरेक्टर आ स्क्रिप्ट राइटर बेइमान नै छलै, सिण्डलर्स लिस्टमे "पोलिस" सभ कहै छै "गो ज्यू, गो" तकर माने ओ एकतरफा चित्रण भेलै? आ आब हम एकटा नीक लोक जे पोलिस (पोलेण्डक) छथि तकरा आनी आ स्क्रिप्टमे घुसाबी। ने १८० मिनटक (विदेशमे १०० मिनटक) फिल्ममे सभ बौस्तु देल जा सकैए ने सय-सवा पन्नाक संस्मरणमे। कियो कहि सकै छथि जे केदारनाथ चौधरी फिल्म छोड़ि कऽ चलि गेला, रवीन्द्र नाथ ठाकुर ओकरा पूरा केलन्हि। मुदा ई पोथीयो तँ सएह कहि रहल अछि।

सरल भाषा लेल बेशी प्रतिभा चाही। ऐ छोटसन पोथीमे छथि मिथिला अभियानी, जिनका सभ आदर करै छन्हि मुदा सएह टा। मैथिलक सभ संस्थामे जे हाल छै सेहो भेटत तेँ की लोक जुआ छोड़ि पड़ा जाय। नै, मुदा अहाँ अपनाकेँ फ्रेममे देखू, कोन काज लेल अहाँ बनल छी।

मुदा केदारनाथ चौधरीक कलममे जे धार छन्हि से मात्र प्रतिभाक कारण नै छन्हि। ओ जे अनुभव बम्बइमे लेलन्हि, जे फ्रेममे "सूट" आ "एडिट" करबाक कला सिखलन्हि-देखलन्हि, से हुनकर सभ रचनामे देखाइत अछि। लोक "सूट" करैत रहि जाइ छथि आ "एडिट" करबा कल कम-बेशी भऽ जाइ छन्हि।

रचनामे धार अछि, धरगर बला धार आ बहैबला धार, दुनू। आ तेँ संस्मरण उपन्यास बनि गेल अछि।

अनुलग्नक: विदेह सदेह ३२ मे (ऐ लिंकपर उपलब्ध http://videha.co.in/new_page_89.htm) संकलित श्री शैलेन्द्र मोहन झा जी केर रचना, देखू केना नव-पीढ़ीमे "ममता गाबय गीत" लेजेण्ड बनि गीतमे पैसि गेल अछि।

शैलेन्द्र मोहन झा

सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यशिरोमणिक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे प्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छी।

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना
भयल विवाह हमर यै भौजी कनिया चान्द के जेना
हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भेँट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम प्रसन्न
देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ
नाम पुछलियनि हुनकर हम तँ कहलनि ओऽ जे रजनी
स्वप्न सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर हृदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?
हम कहलियनि सुनु हे सजनी आहाँ चान्द लगै छी
चन्दामे तँ दागो छञि, आहाँ बेदाग लगै छी
आँखि अहाँक ऐश्वर्या जेहन नाक अछि जुही चावला
केश अहाँक अछि नीलम जेहन गाल वैजन्तिमाला

एहि के बाद पुछलियनि हमहू केहन हम लगै छी?
कहय लगलि खराब छी, छी अहूँ ठीक-ठाक
लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*
कनिक लगै छी सन्नी जेना, किछु-किछु राहुल राय
किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलियनि चलु हे सजनि घुरए लेल दरभंगा
आहाँ लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा
दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट
दुनू गोटे बैस कऽ देखब "ममता गाबय गीत"
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ*, नीन्दसँ हम उठि गेलहुँ
हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे......

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि

= प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा

*= हमर छोट भाई

३५. साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग: युवा आ बाल पुरस्कार २०२२

सारांश
साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग (युवा आ बाल पुरस्कार २०२२)- मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। "अंततः"(मुन्नी कामतक कविता संग्रह) अंतिम रेस धरि पहुँचल- ओतऽ हारि गेल वा हरा देल गेल। मुन्नी कामतक किछु पोथी http://www.videha.co.in/archive.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

बीजशब्द: अकादेमी · पुरस्कार · प्रसंग · युवा · २०२२ · श्री · मण्डल

साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्रसंग (युवा आ बाल पुरस्कार २०२२)- मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि।

१

युवा-पुरस्कार प्रसंग

"अंततः"(मुन्नी कामतक कविता संग्रह) अंतिम रेस धरि पहुँचल- ओतऽ हारि गेल वा हरा देल गेल। देखी अगिला साल की होइए। मुन्नी कामतक किछु पोथी http://www.videha.co.in/archive.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। लेखक धोआ- धोती-साड़ी नै वरन कोरा-धोती-साड़ी परम्पराक छथि। हिनकर रचनामे असली नारी-विमर्श तँ भेटबे करत, किछु एहेन विषय सेहो भेटत जे मूल परम्परामे अखन धरि सोचलो नै गेल अछि, जेना ड्रग-टेस्टिंग लेल गरीब लोकनिक वेक्टरक रूपमे प्रयोग आ ओकर मृत्यु। खएर...

२

बाल-साहित्य पुरस्कार प्रसंग

ऐ पर कोनो चर्चे व्यर्थ, अगबे धुआ धोती-साड़ीक उज्जर दप-दप फार्महाउस चिकन लोकनिक पोथी सभ रेसमे रहय। छपबेने तँ कोरा धोती बलो सभ रहथि मुदा बच्चा सभ लेल, जूरी लेल नै। के सभ-ग्राउण्ड लिस्ट तैयार केलक की तकर नाम सार्वजनिक कयल जायत? की ओकरा स्थायी रूपसँ प्रतिबन्धित कयल जायत? नै कयल जायत तखन मैथिलीक प्रतिष्ठा बाँचल कोना रहि सकत?

ऐ बेर मूल पुरस्कार पहिल बेर कोरा-धोती परंपराक उपन्यासकार श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकें हुनकर उपन्यास "पंगु" लेल देल गेलन्हि, आ से साहित्य अकादेमीक इतिहासमे पहिल बेर भेलै। मात्र धोआ-धोती बला लेल ई पुरस्कार रिजर्व रहै। विदेहमे ई धारावाहिक रूपें ई- प्रकाशित भेल फेर पुस्तकाकार आयल। ई पोथी संकलित भेल विदेह:सदेह २१ मे जे ऐ लिंक http://www.videha.co.in/archive.htm पर डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।

युवा पुरस्कार मुन्नी कामत कें सेहो देल जेबाक चाही छल, पुरस्कार शिव कुमार प्रसादकें सेहो अनुवाद लेल देल जेबाक चाही छल मुदा एक्के बरिख दू-दू, तीन-तीन टा कोरा-धोती-साड़ी परम्पराबला कें ई नै देल जा सकत। एक्के टा कोरा-धोती बलाकें देल गेलै तहीमे अगरा-पिछड़ा दुनूक धोआ-धोतीधारी आ वर्णशंकर साहित्यकार (बायोलॉजिकल वर्णशंकरता सँ एकर कोनो सरोकार नै) कन्नारोहट उठेने छथि। मुदा एक्के बरिख दू-दू टा कोरा-धोती परम्पराबला कें ई नै देल जा सकत। एक्के टा कोरा-धोती बलाकें देल गेलै तहीमे अगरा-पिछड़ा दुनूक धोआ-धोतीधारी आ वर्णशंकर साहित्यकार (बायोलॉजिकल वर्णशंकरता सँ एकर कोनो सरोकार नै) कन्नारोहट उठेने छथि।

अछि। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री राजदेव मण्डल, श्री बेचन ठाकुर (क्रमसँ मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ जीवित कथा-उपन्यासकार, कवि आ नाटककार), श्री उमेश पासवान, श्री उमेश मण्डल, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल "झाड़ूदार", श्री दुर्गानन्द मण्डल कैं कोनो असाइनमेन्ट नै? मुदा की मैथिली एडवाइजरी बोर्ड द्वारा मैथिलीकैं खतम करबाक षडयंत्र मैथिलीकैं मारि देत? नै, कारण? कारण जै तरहेँ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल, श्री राजदेव मण्डल, श्री बेचन ठाकुर, श्री उमेश पासवान, श्री उमेश मण्डल, श्री रामदेव प्रसाद मण्डल "झाड़ूदार", श्री दुर्गानन्द मण्डल आ आन गोटे अपन तन-मन-धनसँ मैथिलीक जड़िकैं अपन खून-पसीनासँ पटा रहल छथि..ई षडयंत्र- मैथिलीकैं मारबाक- नै सफल हएत। ई भाषा जिबैत रहत।

अविलम्ब एडवाइजरी कमेटीक सभ सदस्य अपन अपन असाइंमेंट वापस करथि / करबाबथि (अपन माने अपन, अपन परिवार / बच्चा / चेला चपाटी), नै तं हिनका सभ पर त्यागपत्र देबाक लेल दवाब बनाओल जाए, हिनकर सबहक घरक सोझां अष्टजान कएल जाए, राष्ट्रगीतक गाओल जाए, राष्ट्रगीतक अष्टजाम कएल जाए /

मिथिला राज्य जं ऐ स्थिति मे बनत तं यएह दस परिवार मिथिला कें भूजि खा जाएत /

मिथिला राज्य संघर्ष समिति सभ ऐ छद्म अनुवाद सभकें अपन सभामे जराबथि / तखने ओ सिद्ध का' सकता जे ओ मिथिला राज्य बनेता आकि मैथिली राज्य /

धोआ-धोती धारी लोकनिकें साहित्य अकादेमीक अपन-अपन अनुवाद-असाइनमेंट आपस कऽ देबाक चाही आ ओ सभ असाइनमेंट नंद विलास राय, राजदेव मण्डल, रामबिलास साहु, धीरेंद्र कुमार, दुर्गानंद मण्डल, मनोज कुमार मण्डल, शिव कुमार प्रसाद, उमेश पासवान, संदीप कुमार साफी, बेचन ठाकुर, मेघन प्रसाद, किशन कारीगर, लालदेव महतों, उमेश मण्डल, शारदानंन्द सिंह, सुभाष कुमार कामत, मुन्नी कामत आदि कें देल जाय, आ से केलासँ मैथिली लेल अग्निवीरक एकटा फौज तैयार भऽ जायत। मेघन प्रसाद विदेह मे अपन आलेखमे ई इच्छा व्यक्त केने छलाह मुदा तखनो हुनका अनुवाद-असाइनमेंट नै देल गेल। अशोक अविचल कें एक तिहाइ बधाइ, कारण तीनटा कोरा धोती-साड़ीक बदला हुनकर कार्यकालमे एक्केटा कोरा-धोतीकें पुरस्कार भेट पेलै। आब अगरा-पिछड़ा दुनू दिसुका धोआ-धोती बला मायावी सभ कोन-कोन बहन्ने की-की उकबा उड़ेतन्हि आ अगिला बर्खसँ फेर सँ एकछाहा धोआ-धोतियाइन साहित्य अकादेमी भऽ जायत वा नै तकर उत्तर तँ भविष्यक कोखिमे अछि।

भाग २ — अनुप्रयुक्त साहित्यिक समीक्षा

खण्ड ३ — समालोचना

कविता, गीत, छन्द आ काव्य-पाठ

३६. विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)

सारांश

पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर, थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य। वंशावली- जीवन चौधरी (जन्म स्थान-पंचोभ-दरिभङ्गा), १८०१ ई. मे रुद्रपुर आगमन। -दुइ पुत्र--श्री रंगी चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म) आ श्री कंत चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म)

बीजशब्द: विस्मृत · कवि · पं · रामजी · चौधरी · १८७८ · १९५२ · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२)” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विस्मृत; कवि-; रामजी; चौधरी; १८७८-१९५२ प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

पं. रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर, थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य।

वंशावली- जीवन चौधरी (जन्म स्थान-पंचोभ-दरिभङ्गा), १८०१ ई. मे रुद्रपुर आगमन।

-दुइ पुत्र--श्री रंगी चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म) आ श्री कंत चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म)

-कंत चौधरीकेँ तीन पुत्र-श्री चुम्मन चौधरी, श्री बुधन चौधरी आ श्री रूदन चौधरी

-चुम्मन चौधरीकेँ दुइ पुत्र श्री गोनी चौधरी आ श्री पं कवि रामजी चौधरी.

श्री जीवन चौधरी- जे कविक वृद्ध-पितामह छलाह, तनिकर दोखतरी रुद्रपुरमे रहन्हि जाहि कारणसँ ओ १८०१ ई. मे पंचोभ छोड़ि रुद्रपुर बसि गेलाह।

कविजीक पितामह पैघ गवैय्या रहथिन्ह। हुनकर गायनक मुख्य क्षेत्र युगल सरकार सीतारामक भक्ति गीत होइत छल, तकर प्रभाव कविजी पर खूब पड़ल। ओ अप्पन पौत्रक नाम रामजी एहि कारणसँ रखलन्हि। स्व. कविजी अपन नामक अनुरूप तुलसीकृत श्रीरामचरित मानस कंठस्थ कए गेल छलाह। ओ प्रत्येक प्रश्नक उत्तर रामायणक चौपाइसँ करैत छलाह। हुनकर जीवनक सभसँ दुःखद घटना छन्हि जे ओ तीन विवाह कएल मुदा कोनो पत्नी चारि सालसँ बेशी नहि जीबि सकलखिन्ह। अंतिम विवाह ओ ५३ वर्षक अवस्थामे कएल, जे एक पुत्र, जनिकर नाम दुर्गानाथ चौधरी (दुखिया चौधरी) छन्हि, केर जन्म देलाक १५ दिनक भीतरे स्वर्गवासी भए गेलीह।

कविजी अप्पन जीवनकालमे दरिभङ्गा राजक अंतर्गत जेठ रैय्यतक पद पर कार्यरत छलाह आ तेसर पत्नीक मृत्युक उपरांत ओ ईहो पद त्यागि कए भगवद भक्तिमे लागि गेलाह। हिनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ अप्रकाशित पाण्डुलिपिमे मैथिलीक संगे ब्रजबुलीक कविता सेहो अछि।

हिनकर एहि कविता सभमे हिनका पितामहक देल राग बोधक संगहि मिथिलाक महेशवाणी, चैतक ठुमरी आ भजन प्रभाती (पराती) सेहो भेटैछ।

जेना शंकरदेव असामीक बदला मैथिलीमे रचना रचलन्हि तहिना कवि रामजी चौधरी मैथिलीक अतिरिक्त ब्रजबुलीमे सेहो रचना रचलन्हि। कवि रामजीक सभ पद्यमे रागक वर्णन अछि, ओहिना जेना विद्यापतिक नेपालसँ प्राप्त पदावलीमे अछि। ई प्रभाव हुनकर बाबा जे गबैय्या छलाह, सँ प्रेरित बुझना जाइत अछि। मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक छथि, मुदा शिवालय सभ गाममे भेटि जएत, से रामजी चौधरी महेशवानी लिखलन्हि आ चैत मासक हेतु ठुमरी आ भोरक भजन (पराती/ प्रभाती) सेहो। जाहि राग सभक वर्णन हुनकर कृतिमे अबैत अछि, से अछि:

१. राग रेखता २ लावणी ३. राग झपताला ४. राग ध्रुपद ५. राग संगीत ६. राग देश ७. राग गौरी ८. तिरहुत ९. भजन विनय १०. भजन भैरवी ११. भजन गजल १२. होली १३. राग श्याम कल्याण १४. कविता १५. डम्फक होली १६. राग कागू काफी १७. राग विहाग १८. गजलक ठुमरी १९. राग पावस चौमासा २०. भजन प्रभाती २१. महेशवाणी आ २२. भजन कीर्त्तन।

प्रस्तुत अछि हुनकर रचना। एतए हुनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ एकटा पाण्डुलिपि जे कविजी द्वारा श्री हरेकांत चौधरीसँ (आब स्वर्गीय) लिखबाओल गेल आ श्री श्रीमोहन चौधरीजीक माध्यमसँ प्राप्त भेल केर आधारपर सभटा मैथिली पद्य देल जा रहल अछि।

विविध भजनावली

॥ श्री गणेशाय नमः ॥

१. ॥ विनय ॥

जय गणेश शंकर सुत सुन्दर अति कृपालु दीनन जन

पालक लम्बोदर अति रूप गजानन, युअ यश कहि न सकत सहसानन।

हमछी अति गमार कछु जानन निज पद कमल देहु उर ध्यानन॥

रामजी अरज सुनहु कछु कानन। वर्णत चहत राम गुण आनन॥

२. ॥ राग ध्रुपद ॥

सेवो मन शंकर अति कृपाल सेवक दुःख भंजन हौ दयाल,

जटा शोभित गंग धार तन छाय भस्म उर मुंड माल

उपवित भुजंगम दृग विशाल बिजया नित पीबत फिरत मतवाल।

कर त्रिशूल बघ छाल बिराजित दास आस राखन के सुर रुरु

कैलाश वास गिरजा लिअ संग बहुवजत ताल शोभए शशिभाल॥

काशीपति तेरो यश अपार सुनि आय धाय तेरो द्वार

रामजी अति दीन कर नेहाल जिमि वेगि मिलए अवधेश लाल॥

३. राग संगीत

नाचत स्वयंग ये॥

कुंज बन चहुं ओर सुन्दर सघन बृक्ष बनाय मण्डित लकत सुमन लजाय सुर तरु जगमगात मयंक॥१॥

कठताल डम्फ मंजीर बाजत गोपी गण चहुं दिसि छाजत कुहिकि कलरव मोर नाचत राधा लेत मृदंग॥२॥

बेनु आदि स्वराग बाजत षट त्रिंशरागिन राग गावत गण सब सुनत धावत यमुना बढ़त तरंग॥३॥

तिहुं लोक आनन्द होत सुनि-सुनि पवनजल सब फिरत पुनि-पुनि रामजी गृह कार्य झाँकत कौतुक रंग॥४॥

४. तिरहुत

वारि वयस पहु तेजल सजनी गे कि कहु तनिक विवेक,

कबहु नैन नहि देखल सजनीगे अवधि बितल दुई एक।

भावैन भवन शयन सुख सजनीगे ज्यौं मिलत भरि अंक।

एहेन जीवन लय कि करव सजनीगे आनो कहत कलंक।

भूषण वसन भरि सम सजनी प्राण रहत अब से शेष।

निर्दय भय पहु वैसल सजनीगे रामजी सहत कत शोक॥

५. तिरहुत

निठुर श्याम नहि बहुरल सजनीगे कैलनि बचन प्रमाण।

कओन विधि दिवस मनायव सजनीगे हित नहि दोसर आन॥

नयन वरिस तन भीजल सजनीगे दिन दिन मदन मलान।

शिर सिन्दूर भावै सजनीगे भूषण भावे न कान॥

केहेन बिधाता निर्दय भेल सजनीगे आनक दुख नहि जान।

रामजीके आश नहि पुरत सजनी मदन कयल निदान॥

६. भजन भैरवी

आब मन हरि चरनन अनुराग।

त्यागि ह्रदयके विविध वासना दम्भ कपट सब त्याग॥

सुत बनिता परिजन पुरवासी अन्त न आबे काज।

जे पद ध्यान करत सुर नर मुनि तुहुं निशा आब जाग॥

भज रघुपति कृपाल पति तारों पतित हजार

बिनु हरि भजन बृथा जातदिन सपना सम संसार

रामजी सन्त भरोस छारि अब सीता पति लौ लाग॥

७. ॥ राग विहाग ॥

को होत दोसर आन रम बिनु॥ जे प्रभु जाय तारि अहिल्या जे बनि रहत परवान॥ जल बिच जाइ गजेन्द्र उबारो सुनत बात एक कान॥ दौपति चीर बढ़ाई सभा बिच जानत सकल जहान॥ रामजी सीता-पति भज निशदिन जौ सुख चाहत नादान॥

८. चैत के ठुमरी

चैत पिया नहि आयेल हो रामा चित घबरायेल। ।

भवनो न भावे मदन सताबे नैन नीन्द नहि लागल॥

निसिवासर कोइल कित कुहुकत बाग बाग फूल फूलल॥

रामजी वृथा जात ऋतुराजहि जौंन कन्त भरि मिललरामा॥

चित घबरायेल चैत पिया नहि आयल॥

९. चैतके ठुमरी

आबि गेल चैत बैरनमा हो रामा विधि भेल वामा॥

लाले-लाले चून्दरी लगाय पलंगपर पियवा न अयल सपनमा॥

जौवन जोर आर भैल दिन दिन विष सन लागत भवनमा॥

रामजी जीवन वृथा एहि तनमे प्रभु कोन देखलो नयनमा॥

१०. चैतके ठुमरी

आबि गेल सियाक खोजनमा हो रामा पवन सुअनमा॥

वरजि वरजि हारे सब निसिचर लड़त कौ न सयनमा॥

उपवन नास रिसाय लंकपति मेघवासे कहत बयेनमा॥

मारसि जनि सुत बान्हिके लाऊ रामजी बुझत कारनमा हो रामा॥

११. महेशवाणी

सुनु सुनु चण्डेश्वर नाथ कृपा दृष्ट से एक वेर ताकहु हम छी परम अनाथ॥

देव दनुज भूपति कत सेबल कियो न दुखके साथ,

बड़े निरास आश धय रोपल अहाँक चरणमे माथ॥

भटकि-भटकि सबके रुचि बूझल सब स्वारथके साथ

जे छथि मित्र अपेक्षित परिजन सभै रखै छथि क्वाथ॥

नहि किछ वेदपुराण जनए छी नहि पूजाके भाव

निसि दिन चिन्ता उदरके फूसि फटकके बात। ।

अहाँ दयालु दीनेपर सब दिन जनैत अछि संसार

रामजीके सकल मनोरथ पूर वहु भोला नाथ॥

१२. महेशवानी

बम भोला छथि अनमोल कतेक दुखी हम

जाइत देखल करैत अति अनघोल॥

ककरहु देविक दैहिक दुख छनि

ककरहु भौति कलेस

कियो अबै छथि आश अन्न टकाके लेल॥

कतेक बिकल छथि पुत्र दार ले कतेक अनेक कलेस

कतेक अहाँके भजन करै ये परमारथके लेल॥

परसि मणि अहाँ झारी वैसल सवके दुख हरि लेल॥

रामजी किछु कहि न सकैछी अपराधी के लेल॥

१३. महेशवानी

एहन बड़के खोजि आनलन्हि पारवतीके लेल॥

जिनका घर नहि धन परिजन नहि जाति पातिक झेल,

डमरु बजावथि गिरिपर निसि दिन भूत प्रेतसँ खेल॥

अन्नक खेती किछु नहि राखथि भांग धुथुर अलेल,

भूषण गत्र-गत्रमे लटकट बिषधर देखि उर मेल॥

परम बताहक लक्षण सभ छनि अंग भस्म लेपि लेल,

हाथी घोड़ा त्यागि पालकी वोढ़ बड़द चढ़ि लेल॥

कहथि रामजीभाग ऊदय अब लेल,

त्रिभुवन पति गौरी पति हेता साजू पूरहर लभे॥

१४. महेशवाणी

हमरो जीवन व्यर्थ बीति गेल।

कहियो बिल्बपत्र नहि तोड़ल, फूल रोपि नहि भेल।

अक्षत धूप, दीपलै, चानन शंकर पूजि नहि भेल॥

कतेक वासना मनमे करि-करि दिवस रैन बिति गेल।

कवहुँ ध्यान शान्त चित्त भए बम-बम कहियो न भेल॥

सुत बनितादि विषय बस कवहुँ, मन बिश्राम न भेल।

चिन्ता करति करति दिन बीतल, अब जर्जर तन भेल॥

कहथि रामजी सकल आश तजि शिव सेबू अलबेल।

शिब बिनु दोसरके हरत दुसह दुःख निश्चय मन करिलेल॥

१५. महेशवानी

शिवकें सुनै छियन्हि दयाल

दुखियाक कहिया सुनता सवाल।

जय गंग चन्द्र भाल, कंठ मुण्डमाल, भंग ले बेहाल॥

वाम भाग पार्वती बसहा सवार, अंग-अंगमे विषधर लटकल हजार,

भूतनात प्रणत पाल दिगम्बर धार,

भस्म अंग संग बेताल डमरु बघ छाला॥

रामजी दीननपर कखन करब खयाल

शिव बिना हमर के करत प्रतिपाल॥

१६. महेशवाणी

शिव काटू ने जञ्जाल।

कतेक कहब हम अपन हवाल॥

निसि दिन चैन नहि भूख भेल काल

चिन्ता करति भूलि गेल अहाँक खयाल।

बन्धु वर्ग कुटुम्ब संग धेलाह अनेक भल

केओ न सहाय भेला दुर्दिन प्रवल।

रामजीके आशा एक जँ निगाहनै करब रहब बेकल॥

१७. महेशवाणी

शिव कहूने बुझाय॥

ककरा कहब हम अपन दुख जाय। ।

केओ ने भेटैत छथि अहाँक समुदाय

जे सुनि हेताह तुरत सहाय॥

हित मित बनिता सुत स्वास्थ्य से भाए।

निर्धन देखि भुख लए छपि घुमाए॥

बम्भोला वैद्यनाथ दीनन अपनाय झाड़ीमे बैसि

हीरालालको लुटाय॥

रामजी आशा लगाय कृपा दृष्टि हेरू

नाथ लिय अपनाय॥

इति

सिद्धिरस्तु। शुभञ्चास्तुस्त्र

१८. भजन विनय

प्रभू बिनू कोन करत दुखः त्राणः॥

कतेक दुःखीके तारल जगमे भव सागर बिनू जल जान, कतेक चूकि हमरासे भऽ गेल सोर ने सिनई छी कानः॥ अहाँ के त बैनि परल अछि पतित उधारन नाम। नामक टेक राखू प्रभू अबहूँ हम छी अधम महानः॥ ज्यौँ नञ कृपा करब एहि जन पर कोना खबरि लेत आन। रामजी पतितके नाहिँ सहारा दोसर के अछि आनः॥

१९. भजन लक्ष्मी नारायण जीक विनय

लक्ष्मी नारायण अहाँ हमरा ओर नञ तकइ छी यौ।

दीनदयाल नाम अहाँके सभ कहए अछि यौ।

हमर दुःख देखि बिकट अहाँ डरए छी यौ।

ब्याध गणिका गिध अजामिल गजके उबारल यौ।

कौल किरात भिलनी अधमकेँ उबारल यौ।

कतेक पतितके तारल अहाँ मानि के सकत यौ।

रुद्रपुरके भोलानाथ अहाँ के धाम गेलायो।

ज्यों न हमरा पर कृपा करब हम कि करब यौ।

रामजी अनाथ एक दास राखु यौ।

२०. भजन विनय भगवती

जय जय जनक नन्दिनी अम्बे, त्रिभुवन के तू ही अवलम्बेः।

तुही पालन कारनी जगतके, शेष गणेश सुरन केः।

तेरो महिमा कहि न सकत कोउ, सकुचत सारभ सुरपति कोः।

परमदुखी एहि जगमे, के नञ जनए अछि त्रिभुवनमेः॥

केवल आशा अहाँक चरणके, राखू दास अधम केः॥

कियो नहि राखि सकल शरणोंमे, देख दुखी दिनन केः॥

ज्यौं नहि कृपा करब जगजननी, बास जान निज मनमे।

तौँ मेरो दुख कौन हटावत, दोसर छाड़ि अहाँकेः॥

कबहौँ अवसर पाबि विपति मेरो कहियो अवधपति को,

रामजी क नहि आन सहारा छाड़ि चरण अहाँकेः॥

२१. भजन विनय

प्रभु बिनु कौन करत दुःख त्राणः। ।

कतेक दुखीके तारल जगमे

भवसागर बिनु जल जानः॥

कतेक चूकि हमरासे भऽ गेल,

स्वर नञ सुनए छी कानः। ।

अहाँके तौँ बानि पड़ल अछि, पतित उधारण नामः।

नामक टेक राखु अब प्रभुजी हम छी अधम जोना।

कृपा करब एहि जन पर कोन खबरि लेत आन।

रामजी पतितके नाहि सहारा दोसर के अछि आनः॥

२२. विहाग

भोला हेरू पलक एक बेरः॥

कतेक दुखीके तारल जगमे कतए गेलहुँ मेरो बेरः॥

भूतनाथ गौरीवरशंकर विपत्ति हरू एहि बेरः॥

जोना कृपा करब शिवशंकर कष्ट मिटत के औरः॥

बड़े दयालु जानि हम एलहुँ अहाँक शरण सुनि सोरः॥

रामजीके नहि आन सहारा दोसर केयो नहि औरः॥

२३. भजन महेशवाणी

भोला कखन करब दुःख त्रान?

त्रिविध ताप मोहि आय सतावे लेन चहन मेरो प्राण॥

निशिवासर मोहि युअ समवीने पलभर नहि विश्रामः॥

बहुत उपाय करिके हम हारल दिन-दिन दुःख बलबान,

ज्यौं नहि कृपा करब शिवशंकर कष्ट के मेटत आन॥

रामजीके सरण राखू प्रभु, अधम शिरोमणि जान॥भोला. ॥

२४. विनय विहाग

राम बिनु कौन हरत दुःख आन

कौशलपति कृपालु कोमल चित

जाहि धरत मुनि ध्यान॥

पतित अनेक तारल एहि जगमे,

जग-गणिका परधान। ।

केवट, गृद्ध अजामिल तारो,

धोखहुषे लियो नाम,

नहि दयालु तुअ सम काउ दोसर,

कियो एक धनवान। ।

रामजी अशरण आय पुकारो, भव ले करू मेरो त्राण॥रामबिनु॥

२५. भजन विनय

लक्ष्मीनारायण हमर दुःख कखन हरब औ॥

पतित उधारण नाम अहाँके सभ कए अछि औ,

हमरा बेर परम कठोर कियाक होइ छी औ। ।

त्रिविध ताप सतत निशि दिन तनबै अछि औ॥

अहाँ बिना दोसर के त्राण करत औ॥

देव दनुज मनुज हम कतेक सेवल औ,

कियो ने सहाय भेला विपति काल औ॥

कतेक कहब अहाँके ज्यौँ ने कृपा कर औ,

रामजीके चाड़ि अहाँक के शरण राखन औ॥

२६. भजन विनय

एक बेर ताकू औ भगवान,

अहाँक बिना दोसर दुःख केहु ना आन॥

निशि दिन कखनौ कल न पड़ै अछि,

कियो ने तकैये आन

केवल आशा अहाँक चरणके आय करू मेरे त्राण॥

कतेक अधमके तारल अहाँ गनि ने सकत कियो आन,

हमर वान किछु नाहि सुनए छी,

बहिर भेल कते कान॥

प्रबल प्रताप अहाँक अछि जगमे

के नहि जनए अछि आन,

गणिका गिद्ध अजामिल गजके

जलसे बचावल प्राण॥

ज्यौँ नहि कृपा करब रघुनन्दन,

विपति परल निदान,

रामजीके अब नाहि सहारा,

दोसर के नहि आन॥

२७. महेशवानी

सुनू सुनू औ दयाल,

अहाँ सन दोसर के छथि कृपाल॥

जे अहाँ के शरण अबए अछि

सबके कयल निहाल,

हमर दुःख कखन हरब अहाँ,

कहूने झारी लाल॥

जटा बीच गंगा छथि शोभित चन्द्र विराजथि भाल,

झारीमे निवास करए छी दुखियो पर अति खयाल॥

रामजीके शरणमे राखू,

सुनू सुनू औ महाकाल,

विपति हराऊ हमरो शिवजी करू आय प्रतिपाल॥

२८. महेशवानी

काटू दुःख जंजाल,

कृपा करू चण्डेश्वर दानी काटू दुःख जंजाल॥

ज्यौँ नहि दया करब शिवशंकर,

ककरा कहब हम आन,

दिन-दिन विकल कतेक दुःख काटब

ज्यौँ ने करब अहाँ खयाल॥

जटा बीच गंगा छथि शोभित,

चन्द्र उदय अछि भाल,

मृगछाला डामरु बजबैछी,

भाँग पीबि तिनकाल॥

लय त्रिशूलकाटू दुःख काटू,

दुःख हमरो वेगि करू निहाल,

रामजी के आशा केवल अहाँके,

विपति हरू करि खयाल॥

२९. महेशवानी

शिव करू ने प्रतिपाल,

अहाँ सन के अछि दोसर दयाल॥

भस्म अंग शीश गंग तीलक चन्द्र भाल,

भाँग पीब खुशी रही,

रही दुखिया पर खयाल।

बसहा पर घुमल फिरी,

भूत गण साथ,

डमरू बजाबी तीन

नयन अछि विशाल॥

झाड़ीमे निवास करी,

लुटबथि हीरा लाल,

रामजी के बेर शिव भेलाह कंगाल॥

३०. महेशवानी

शिवजी केहेन कैलौँ दीन हमर केहेन॥

निशिदिन चैन नहि

चिन्ता रहे भिन्न,

ताहू पर त्रिविध ताप

कर चाहे खिन्न॥

पुत्र दारा कहल किछु ने सुनै अछि काअ

ताहू पर परिजन लै अछि हमर प्राण॥

अति दयाल जानि अहाँक शरण अयलहुँ कानि,

रामजी के दुःख हरू अशरण जन जानि॥

३१. महेशवानी

विधि बड़ दुःख देल,

गौरी दाइ के एहेन वर कियाक लिखि देल॥

जिनका जाति नहि कुल नहि परिजन,

गिरिपर बसथि अकेल,

डमरू बजाबथि नाचथि अपन कि भूत प्रेत से खेल॥

भस्म अंग शिर शोभित गंगा,

चन्द्र उदय छनि भाल
वस्त्र एकोटा नहि छनि तन पर
ऊपरमे छनि बघछाल,
विषधर कतेक अंगमे लटकल,
कंठ शोभे मुंडमाल,
रामजी कियाक झखैछी मैना
गौरी सुख करती निहाल॥
३२. विहाग
वृन्दावन देखि लिअ चहुओर॥
काली दह वंशीवट देखू,
कुंज गली सभ ठौर,
सेवा कुंजमे ठाकुर दर्शन,
नाचि लिअ एक बेर॥
जमुना तटमे घाट मनोहर,
पथिक रहे कत ठौर,
कदम गाछके झुकल देखू,
चीर धरे बहु ठौर॥
रामजी वैकुण्ठ वृन्दावन
घूमि देखु सभ ठौर,
रासमण्ड ल' के शोभा देखू,
रहू दिवस किछु और। ।
३३. विहाग
मथुरा देखि लिअ सन ठौर॥
पत्थल के जे घाट बनल अछि,
बहुत दूर तक शोर,
जमुना जीके तीरमे,
सन्न रहथि कते ठौर॥
अस्ट धातुके खम्भा देखू,
बिजली बरे सभ ठौर,
सहर बीचमे सुन्दर देखू,
बालु भेटत बहु ढ़ेर॥

दुनू बगलमे नाला शोभे,

पत्थल के है जोर

कंशराजके कीला देखू

देवकी वो वसुदेव॥

चाणूर मुष्टिक योद्धा देखू

कुबजा के घर और,

राधा कृष्णके मन्दिर देखू,

दाउ मन्दिर शोर॥

छोड़ विभाग

रामजी मधुबन, घूमि लिअ आब,

कृष्ण बसथि जेहि ठौर॥

गोकुल नन्द यशोदा देखू

कृष्ण झुलाउ एक बेर॥

३४. महेशवानी

भोला केहेन भेलौँ कठोर,

एक बेर ताकू हमरहुँ ओर॥

भस्म अंग शिर गंग विराजे,

चन्द्रभाल छवि जोर। ।

वाहन बसहा रुद्रमाल गर,

भूत-प्रेतसँ खेल॥

त्रिभुवन पति गौरी-पति मेरो ज्यौँ ने हेरब एक बेर,

तौँ मेरो दुःख कओन हरखत

सहि न सकत जीव मोर॥

बड़े दयालु जानि हम अयलहुँ,

अहाँक शरण सूनि शोर,

राम-जी अश्रण आय पुकारो,

दिजए दरस एक बेर॥

३५. भजन विनय

सुनू-सुनू औ भगवान,

अहाँक बिना जाइ अछि

आब अधम मोरा प्राण॥

कतेक शुरके मनाबल निशिदिन

कियो न सुनलनि कान,

अति दयालु सूनि अहाँक शरण अयलहुँ जानि॥

बन्धु वर्ग कुटुम्ब सभ छथि बहुत धनवान,

हमर दुःख देखि-देखि हुनकौ होइ छनि हानि। ।

रामजी निरास एक अहाँक आशा जानि,

कृपा करी हेरु नाथ,

अशरण जन जानि॥

३६. महेशवाणी

देखु देखु ऐ मैना,

गौरी दाइक वर आयल छथि,

परिछब हम कोना।

अंगमे भसम छनि, भाल चन्द्रमा

विषधर सभ अंगमे,

हम निकट जायब कोना॥

बाघ छाल ऊपर शोभनि, मुण्डमाल गहना,

भूत प्रेत संग अयलनि, बरियाती कोना॥

कर त्रिशूल डामरु बघछाला नीन नयना

हाथी घोड़ा छड़ि पालकी वाहन बड़द बौना॥

कहथि रामजी सुनु ऐ मनाइन,

इहो छथि परम प्रवीणा,

तीन लोकके मालिक थीका,

करु जमाय अपना॥

३७. महेशवानी

एहेन वर करब हम गौरी दाइके कोना॥

सगर देह साँप छनि, बाघ छाल ओढ़ना,

भस्म छनि देहमे, विकट लगनि कोना॥

जटामे गंगाजी हुहुआइ छथि जेना,

कण्ठमे मुण्डमाल शोभए छनि कोना॥

माथे पर चन्द्रमा विराजथि तिलक जेकाँ,

हाथि घोड़ा छाड़ि पालकी, बड़द चढ़ल बौना॥

भनथि रामजी सुनु ऐ मैना, गौरी दाइ बड़े भागे,

पौलनि कैलाशपति ऐना॥

३८. भजन विहाग

राम बिनु विपति हरे को मोर॥

अति दयालु कोशल पै प्रभुजी,

जानत सभ निचोर,

मो सम अधम कुटिल कायर खल,

भेटत नहि क्यो ओर॥

ता नञ शरण आइ हरिके हेरू पलक एक बेर,

गणिका गिद्ध अजामिल तारो

पतित अनेको ढेर॥

दुःख सागरमे हम पड़ल छी,

ज्यौँ न करब प्रभु खोज,

नौँ मेरो दुःख कौन हारावन,

छड़ि अहाँ के और॥

विपति निदान पड़ल अछि निशि दिन नाहि सहायक और,

रामजी अशरण शरण राखु प्रभु,

कृपा दृष्टि अब हेरि॥

३९. भजन विहाग

विपति मोरा काटू औ भगवान॥

एक एक रिपु से भासित जन,

तुम राखो रघुवीर,

हमरो अनेक शत्रु लतबै अछि,

आय करू मेरो त्राण॥

जल बिच जाय गजेन्द्र बचायो,

गरुड़ छड़ि मैदान,

दौपति चीर बढ़ाय सभामे,

ढेर कयल असमान॥

केवट वानर मित्र बनाओल,

गिद्ध देल निज धाम,

विभीषणके शरणमे राखल

राज कल्प भरि दान॥

आरो अधम अनेक अहाँ तारल

सवरी ब्याध निधान,

रामजी शरण आयल छथि,

दुखी परम निदान॥

४०. महेशवानी

हम त' झाड़ीखण्डी झाड़ीखण्डी हरदम कहबनि औ॥

कर-त्रिशूल शिर गंग विराजे,

भसम अंग सोहाई,

डामरु-धारी डामरुधारी हरदम कहबनि औ॥

चन्द्रभाल धारी हम कहबनि,

विषधरधारी विषधरधारी हरदम कहबनि औ॥

बड़े दयालु दिगम्बर कहबनि, गौरी-शंकर कहबनि औ,

रामजीकैँ विपत्ति हटाउ,

अशरणधारी कहबनि औ॥

४१. चैत नारदी जनानी

बितल चैत ऋतुराज चित भेल चञ्चल हो,

मदल कपल निदान सुमन सर मारल हो॥

फूलल बेलि गुलाब रसाल कत मोजरल हो,

भंमर गुंज चहुओर चैन कोना पायब हो॥

युग सम बीतल रैन भवन नहि भावे ओ,

सुनि-सुनि कलरव सोर नोर कत झहरत हो॥

रामजी तेजब अब प्राण अवधि कत बीतल हो,

मधुपुर गेल भगवान, पलटि नहि आयल हो॥

४२. भजन लक्ष्मीनारायण

लक्ष्मीनारायण हमरा ओर नहि तकय छी ओः॥

दीन दयाल नाम अहाँक सब कहैये यौ

हमर दुखः देखि विकट अहूँ हरै छी योः॥

ब्याध गणिका गृध अजामिल गजके उबाड़ल यो

कोल किरात भीलनि अधमके ऊबारल यो

कतेक पैतके तारल अहाँ गनि के सकत यो

रुद्रपुरके भोलानाथ अहाँ धाम गेलायोः॥

ज्यौँ नञ हमरा पर कृपा करब हम की करब यौ

रामजी अनाथ एक दास राखू योः॥

४३. महेशवानी

शिव हे हेरु पलक एक बेर

हम छी पड़ल दुखसागरमे

खेबि उतारु एहि बेर॥

ज्यौँ नञ कृपा करब शिवशंकर

हम ने जियब यहि और॥

तिविध ताप मोहि आय सतायो

लेन चहत जीव मोर॥

रामजीकेँ नहि और सहारा, अशरण शरणमे तोर॥

४४. समदाउन

गौनाके दिन हमर लगचाएल

सखि हे मिलि लिअ सकल समाजः॥

बहुरिनि हम फेर आयब एहि जग

दूरदेश सासुरके राजः॥

निसे दिन भूलि रहलौँ सखिके संग

नहि कएल अपन किछु काजः।

अवचित चित्त चंचल भेल बुझि

मोरा कोना करब हम काजः।

कहि संग जाए संदेश संबल किछु

दूर देश अछि बाटः॥

ऋण पैंच एको नहि भेटत

मारञमे कुश काँटः॥

हमरा पर अब कृपा करब सभ

क्षमब शेष अपराध

रामजी की पछताए करब अब

हम दूर देश कोना जाएबः॥

४५. महेशवाणी

कतेक कठिन तप कएलहुँ गौरी

एहि वर ले कोना॥

साँप सभ अंगमे सह सह करनि कोना,

बाघ छाल ऊपरमे देखल,

मुण्डमाल गहना॥

संगमे जे बाघ छनि, बड़द चढ़ना,

भूत प्रेत संगमे नाचए छनि कोना॥

गंगाजी जटामे हुहुआइ छथि कोना,

चन्द्रमा कपार पर शोभए छथि कोना।

भनथि रामजी सुनुए मैना,

शुभ शुभ के गौरी विवाह हठ छोड़ू अपना॥

३७. विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

सारांश

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक।

बीजशब्द: विद्यापतिक · बिदेसिया · पिआ · देसाँतर · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विद्यापतिक; बिदेसिया-; पिआ; देसाँतर; विद्यापति प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

ताहि आधारपर ई संकल्पित नाटिका प्रस्तुत अछि।

विद्यापतिक पिआ देसाँतर

दृश्य १

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि। मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।

सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौंधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।

हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड्ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार।

कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर विचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।

विद्यापति कवि ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

विद्यापति कविक प्रवेश होइत छन्हि। कोतवालक लग शुभ्र-धोतीधारी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माथ पिटैत छथि। गीतक अन्तिम चारि पाँती विद्यापति कवि गबैत छथि।

दृश्य २

जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, सांकेतिक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिकेँ जएबाक आ क्रेता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुरू करैत छथि आ सभ पाँतिक बाद विद्यापति मंचपर अबैत छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अन्तिम पाँती विद्यापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अर्थ बँचैत छथि।

मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।

एहि गाछक छाह बड्ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।

हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम।

हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।

हे पथिक! एतय विश्राम करू।

जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम।

जे किछु कीनब, किछुओ महग नहि। सभ किछु एतए भेटत।

सासु नहि घर, पर परिजन ननन्द सहजे भोरि।

घरमे सासु नहि छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।

एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि।

एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भए जाएब तँ आब हमर सक्क नहि अछि।

भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस।

विद्यापति कहैत छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूरा करैत छी।

दृश्य ३

एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास।

परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नहि करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही।

एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।

हे सखी! प्रियतमक लेल एतबी कथा बुझू।

भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि।

हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नहि बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान।

चरण पखारू, आसन दियौक आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु।

ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।

हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू।

दृश्य ४

जुवती आ ननदि नगर आबि ठौर धेने छथि। एकटा पथिक आबि आश्रय मँगैत छथि तँ जुवती गबैत छथि आ ननदि सभ पाँतीक बाद अर्थ कहैत छथि। बीचमे चारि पाँती बिना अर्थक नेपथ्यसँ अबैत अछि। फेर जुवती आगाँ गबैत छथि आ ननदि अर्थ बजैत छथि। अन्तमे अन्तिम दू पाँती विद्यापति आबि गबैत छथि। दृश्यक अन्तमे ननदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिन पथिककेँ दबारि रहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल रहए, मुदा आइ पथिककेँ आश्रय किएक नहि देलियैक।

कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम।

हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नहि छथि। ताहि द्वारे राति बिताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि।

अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।

यदि क्यो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।

हे पथिक क्षमा करू आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि।

बीचमे प्रान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।

चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह।

सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।

बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद।

भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कए निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति।

विद्यापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैत अछि।

दृश्य ५

अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।

घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।

कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।

बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।

सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।

ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।

पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।

लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।

हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब।

दृश्य ६

एहि दृश्यमे सेहो, नहि तँ ननदि छथि, नहिये सासु आ नहिये विद्यापति। एकटा अतिथि अबैत छथि आकि तखने मेघ लाधि दैत अछि आ जुवती गबैत छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा।

अपन घरमे बैसल छलहुँ, घरमे क्यो दोसर नहि छल,

तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।

तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।

की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।

घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।

दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमए लागल।

कञोने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने।

हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि।

दृश्य ७

मंचक एक दिससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश निकलैत छन्हि आ मंचपर अन्हार होइत अछि। फेर इजोत भेलापर ननदिक वर हुनका सासुर लए जाइत छन्हि। पथिक रस्तापर छथि दर्शकगणक मध्य आ दर्शकगणकेँ इशारा करैत जुवती गीत गबैत छथि आ विद्यापति सभ पाँतिक बाद अर्थ कहैत छथि। अन्तिम दू पाँतिमे विद्यापति गीत आ अर्थ दुनू बजैत छथि- विद्यापति अन्तिम दू पाँति आ ओकर अर्थ कैक बेर दोहराबैत छथि।

नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पदावली-

सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली।

सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेलीह

तैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई।

क्यो नहि सम्भाषणक लेल पर्यन्त,

एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।

एतुका एहन बेबहार, ककरो क्यो पुछारी नहि करैत अछि।

मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।

हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब।

पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।

पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत।

भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।

विद्यापति गबैत छथि, विरहनि घूमि-घूमि कए पथिककेँ कहि रहल छथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती दिस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छथि। की वैह छथि पिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

पिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

पूरक विवेचन

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि। मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि।

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।

एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद।

ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।

हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू।

अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।

अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।

कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।

पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।

लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।

की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।

विस्मृत कवि- पं. रामजी चौधरी

(१८७८-१९५२)

रामजी चौधरी (१८७८-१९५२) जन्म स्थान- ग्राम-रुद्रपुर, थाना-अंधरा-ठाढ़ी, जिला-मधुबनी. मूल-पगुल्बार राजे गोत्र-शाण्डिल्य। वंशावली- जीवन चौधरी (जन्म स्थान-पंचोभ-दरिभङ्गा), १८०१ ई. मे रुद्रपुर आगमन। -दुइ पुत्र--श्री रंगी चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म) आ श्री कंत चौधरी (रुद्रपुरमे जन्म) -कंत चौधरीकेँ तीन पुत्र-श्री चुम्मन चौधरी, श्री बुधन चौधरी आ श्री बबुआ चौधरी, -चुम्मन चौधरीकेँ दुइ पुत्र श्री गोनी चौधरी आ श्री पं कवि रामजी चौधरी.

श्री जीवन चौधरी- जे कविक वृद्ध-पितामह छलाह, तनिकर दोखतरी रुद्रपुरमे रहन्हि जाहि कारणसँ ओ १८०१ ई. मे पंचोभ छोड़ि रुद्रपुर बसि गेलाह।

कविजीक पितामह पैघ गवैय्या रहथिन्ह। हुनकर गायनक मुख्य क्षेत्र युगल सरकार सीतारामक भक्ति गीत होइत छल, तकर प्रभाव कविजी पर खूब पड़ल। ओ अप्पन पौत्रक नाम रामजी एहि कारणसँ रखलन्हि। स्व. कविजी अपन नामक अनुरूप तुलसीकृत श्रीरामचरित मानस कंठस्थ कए गेल छलाह। ओ प्रत्येक प्रश्नक उत्तर रामायणक चौपाइसँ करैत छलाह। हुनकर जीवनक सभसँ दुःखद घटना छन्हि जे ओ तीन विवाह कएल मुदा कोनो पत्नी चारि सालसँ बेशी नहि जीबि सकलखिन्ह। अंतिम विवाह ओ ५३ वर्षक अवस्थामे कएल, जे एक पुत्र, जनिकर नाम दुर्गानाथ चौधरी (दुखिया चौधरी) छन्हि, केर जन्म देलाक १५ दिनक भीतरे स्वर्गवासी भए गेलीह।

कविजी अप्पन जीवनकालमे दरिभङ्गा राजक अंतर्गत जेठ रैय्यतक पद पर कार्यरत छलाह आ तेसर पत्नीक मृत्युक उपरांत ओ ईहो पद त्यागि कए भगवद भक्तिमे लागि गेलाह। हिनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ अप्रकाशित पाण्डुलिपिमे मैथिलीक संगे ब्रजबुलीक कविता सेहो अछि।

हिनकर एहि कविता सभमे हिनका पितामहक देल राग बोधक संगहि मिथिलाक महेशवाणी, चैतक ठुमरी आ भजन प्रभाती (पराती) सेहो भेटैछ।

जेना शंकरदेव असामीक बदला मैथिलीमे रचना रचलन्हि तहिना कवि रामजी चौधरी मैथिलीक अतिरिक्त ब्रजबुलीमे सेहो रचना रचलन्हि। कवि रामजीक सभ पद्यमे रागक वर्णन अछि, ओहिना जेना विद्यापतिक नेपालसँ प्राप्त पदावलीमे अछि। ई प्रभाव हुनकर बाबा जे गबैय्या छलाह, सँ प्रेरित बुझना जाइत अछि। मिथिलाक लोक पंचदेवोपासक छथि, मुदा शिवालय सभ गाममे भेटि जएत, से रामजी चौधरी महेशवानी लिखलन्हि आ चैत मासक हेतु ठुमरी आ भोरक भजन (पराती/ प्रभाती) सेहो। जाहि राग सभक वर्णन हुनकर कृतिमे अबैत अछि, से अछि:

१. राग रेखता २ लावणी ३. राग झपताला ४. राग ध्रुपद ५. राग संगीत ६. राग देश ७. राग गौरी ८. तिरहुत ९. भजन विनय १०. भजन भैरवी ११. भजन गजल १२. होली १३. राग श्याम कल्याण १४. कविता १५. डम्फक होली १६. राग कागू काफी १७. राग विहाग १८. गजलक ठुमरी १९. राग पावस चौमासा २०. भजन प्रभाती २१. महेशवाणी आ २२. भजन कीर्त्तन।

प्रस्तुत अछि हुनकर रचना। एतए हुनकर एकमात्र प्रकाशित पोथी आ एकटा पाण्डुलिपि जे कविजी द्वारा श्री हरेकांत चौधरीसँ (आब स्वर्गीय) लिखबाओल गेल आ श्री श्रीमोहन चौधरीजीक माध्यमसँ प्राप्त भेल, जे उपलब्ध अछि विदेह पेटार (आर्काइव) मे www.videha.co.in पर।

३८. विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

सारांश

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति केँ आ

गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल।

बीजशब्द: विद्यापति · किछु · प्रचलित · कुप्रचारक · निराकरण · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विद्यापति; प्रचलित; कुप्रचारक; निराकरण; संस्कृत प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति केँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल। फेर मिथिलाक विद्वानकेँ सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल- रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) केँ "हम्मर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। किछु गोटे ज्योतिरीश्वरक भातिज कहि विद्यापतिकेँ सम्बोधित करऽ लगलाह!!

मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पज्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए।

२. अहाँ बंगाल किए जाइ छी, पूर्णियाँमे ग्रामदेवताक पूजामे हम गेल छी आ राम ठाकुर (भगवान) केँ देवता रूपमे ढेपाबला खेतमे हम देखने छी, कियो जोति देने रहै।

३. मिथिलासँ छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेशमे गेल रहथि, मध्य प्रदेशसँ राज्यसभा सांसद प्रभात झा कहि रहल छला, जे बरही (काष्ठकार) मिथिलासँ गेला तँ मैथिली भाषी हेबाक कारण लोक हुनका झाजी कहए लागल, आ ओ सभ आब झा टाइटिल रखै छथि, प्रभात झा कैंपेनिंग कऽ देलखिन्ह आ एक वोटसँ केण्डीडेट जीति गेलै। हमरा अहाँ सभकेँ ई अनुभव अछि जे कोनो टाइटिल हुअए पहिने, पटनो धरिमे लोक झाजी वा झौआ ओकरा कहि दै छै। बंगालक मालदह जिलामे ४-५ गाममे मैथिल ब्राह्मणक टाइटिल ओझा छै, आ अलीगढ़मे मैथिल ब्राह्म्ण (ब्रजस्थ मैथिल) क शर्मा।

४. पञ्जीमे कतेक विद्यापतिक विवरण उपलब्ध अछि: १. पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह विद्यापतिक- माता (देवदासी)- दूषण पंजी २. महो केशवो सुत म. म. पा० गोविन्द सुता महो लक्ष्मीनाथ म. म. विद्यापति म. म. दामोदर ३. महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर ४. घोसोतसँ म. म. गोविन्द सुता म. लक्ष्मीधर म. म. विद्यापति ५. राजपण्डित म. म. उ. विद्यापति ६. करमहासँ देवनाथ सुत कवि विद्यापति ७. गुणपति सन्तति-पठोङगी) । । विद्यापति-पुडरीक-मछदी। केशव-अमरावती। ८. । । सिंहाश्रम सँविद्यापति द्यौ० भागीरथ सुतौ कुलेश्वर: ९. सिधूक: ए सुता देल्हन विश्वनाथ श्रीनाथा: सिंहाश्रम सँ विद्यापति दौ। । १०. मिश्र जयदेव (७६/०६) सुता नगवाड़ घोसोत सँ महामहोपाध्याय विद्यापति दौ ११. महामहोपाध्याय गोविन्द सुता महामहो लक्ष्मीनाथा परनामक (२०९/०५) ठकरू म० म० उपा० विद्यापति १२. द्यौ०। । एवम् ठ० विद्यापति मातृक चक्रं। । १३. महोमहोपाध्याय विद्यापति सुता अनिरूद्ध अनन्त अच्युता: एकहरा सँ काशी दौ १४. सदु०सुपे सुतौ दामोदर: ए सुतौ डालूक: पवौलीसँ गोढि दौ डालू (३४/०६) सुतो विद्यापति

१५. सुता शिरू पदम लाखू गादूका: एकहरा सँ श्री कर सुत चान्द दौ खौआल सँ भूले द्दौ० मधुसूदन सुता उमापति (८४/०१) विद्यापति १६. मुसै सुता खौआल सँ डालू सुत विद्यापति दौ भण्डारिसम सँ शुभे द्दौ० ठ० १७. सोदरपुर सँ छोटाई दौ (२८/०८) बसाउन सुता पशुपति विद्यापति १८. कल्याण सुता करमहा सँ विद्यापति दौ १९. जालय सँ रामेश् वरसुत महिघर दौ यमुगाम सँ गेणाई द्दौ० विद्यापति सुतो भगीरथ: २०. हरखू गोविन्दा सक० गुणे सुत विद्यापति दौ सुरगन सँ होरे द्दौ० २१. कृष्णपति सुता मुरारि विद्यापति प्रजापति टकबाल सँ रामकर दौ। । २२. कविन्द्र पदांकित म० म० उ० रघुनाथा करमहा सँ विद्यापति दौ २३. सुतो विद्यापति माण्डरसँ यग्यपति दौ २४. तल्हनपुर सँ गढ़वय द्दौ. विद्यापति २५. यशु सुतो रविपति रूद्रपति विद्यापति चन्द्रपति २६. नरउन सँ विद्यापति दौ २७. रविपति सुतो कृष्णपति विद्यापति घुसौत सँ होरे दौ। । २८. विद्यापति सुता बेलउँच सँराम दौ २९. गुणे सुत गौरीपति विद्यापति लक्ष्मीपति कुलपतिय: दरि० दिवाकर दौ ३०. महिपति झाक मातामह कवि कोकिल विद्यापति ठाकर) दामोदर सुतो पाँसदु. हरिदेव: नरउनसँ माङनि दौ ३१. गणपति सुतो कवि कोकिल राजपण्डित म० म० उपा० विद्यापति: ए सुतौ हरिपति धनपति। । ३२. महामहोपाध्याय विद्यापतिसुता ह्रषिकेश ३३. हरपति सुता विद्यापति काशी दामोदरा: ३४. रतिपति सुता सोदर० विद्यापति दौ ३५. विद्यापति प्रपौत्र पौत्र हरिश्वर धनेश्वर सुतो गोन्दूक पालीसँ ज्ञानदौ। । ३६. विद्यापति द्दौ. वेणी सुतो रविनाथ: ३७. सोदर० विद्यापति द्दौ० निकार ३८. श्रीपति सुतो विद्यापति परानौ दरिहरा ३९. सोदर० विद्यापति द्दौ० मिश्र कमलनयन सुता हरिअम सँ बछाई दौ ४०. रवौआलसँ सोने दौ देवनाथ सुतो कवि विद्यापति पचही सोदरपुरसँ जगन्नाथ दौ ४१. गोपी सुतो विद्यापति वाचस्पति शीवा हरिअमसँ नारायण दौ। । ४२. विद्यापति निधि प्र. धरापतिय: ४३. तरौनी करमहासँ महिधर दौ। । (४६/०३) विद्यापति (१११/०३) सुतो मधुसूदन: ४४. कुलानन्द ह्दयनन् दनो कर. पनाई दौ (१०९//१०६) विद्यापति (३१४/०५) सुता प्रितिनाथ शोभनाथ महिनाथा: ४५. उँमापति सुत विद्यापति सुतो जयपति: ४६. जागू सुता सुरपति हरिपति प्रभापति गिरपति विद्यापतिय: ४७. हचलू सुता हरपति विद्यापति महो ज्ञानपति दिनपति मणिकंठा ४८. कृष्ण सुता रमापति श्रीपति रत्नपति विद्यापति: बूधवाल सँ धीरू दौ। । ४९. दाशे सुता दयोरी खण्डबला सँ गोपीनाथ दौ (८५//०२) विद्यापति सुत जीवनाथ ५०. नरउन सँ विद्यापति द्दौ० ५१. धर्माधिक रणिक बाटू सुतो विद्यापति ५२. सोदरपुर सँ गयन दौ विद्यापति सुता रमापति होरिल हररवू जिवाईका माण्डर सँ सोढ़ू दौ। । ५३. खौआल सँ रघुनाथ दौ (५४//०७) विद्यापति सुत जानू ५४. टकबालसँ विद्यापति द्दौ मतिनाथ ५५. खण्डबलासँ विद्यापति सुत जीवनाथ दौ ५६. करमहा सँ विद्यापति द्दौ० विश्वनाथ ५७. कृष्णपति सुतो उँमापति (ब० २८/०१) विद्यापति (३०२/०३) पण्डुआ सँ पाँ भगीरथ दौ ५८. महो हरिकृष्ण सुता खौआल सँ विद्यापति दौ ५९. मधुसूदन सुतो विद्यापति: अलय सँ अनिरूद्ध दौ ६०. माण्डर सँ देवशर्म्म द्दौ० विद्यापति सुता नरउन सँ बदनी दौ ६१. ठ० श्याम सुतो पुरन्दर परमानन्दो माण्डर सँ विद्यापति दौ ६२. विद्यापति सुता सोदरपुर सँ जयराम ६३. धर्मेश्वरौ खौआल सँ हराई सुत मनोहर दौ रूद सुतो राम: गंगोली सँ देवे दौ विस्फी सँ कवि कोकिल राज पण्डित म० म० पा० विद्यापति द्दौ० राम सुतो भिरवूक: फनन्दह सँ लोचन दौ पकलिया सँ दिनू द्दौ० भिरवू सुतो हराइक: सोदरपुर सँ विर सुत हरिदौ खौआल सँ शुभे द्दौ० हराई सुता मोहन मनोहरा कमल नारायणा: सोदरपुर सँ जगन्नाथ सुत भवानी दौ भवानी सुतो हरिदेव सदायकौ हरिअम सँ गोविन्द सुत श्रीधर दौ सक० जागे द्दौ० मनोहर सुता करमहा सँ रतनपति सुत कृष्णदाश दौ कृष्णदाश सुता सोदरपुर सँ मधुसूदन सुत सुन्दर दौ (४७//०५) दरिहरा सँ मुशाई द्दौ० हरि सुतो प्राणपति: सोदरपुर सँ नारायण सुत ननू दौ (११०//०१) (१०१//०१) नारायण सुतो ननूक: वुधवाल सँ बहुड़ी दौ (१८०/०४) दामोदर सुतो बहुड़ीक: सोदरपुर सँ परमानन्द सुत कांगव दौ परमानन्द सुतो कांगव: माण्डर सँ हलघर सुत पीताम्बर दौ (५८//०५) करमहा सँ श्रीराम द्दौ० कांगव सुता करमहा सँ शिवदेव सुत कारम दौ माण्डर सँ वावू दौहित्र दौ० ६४. वावू दुर्गापति सिंह: सुतो वावू विद्यापति सिंह: करमहा सँ हरिनाथ सुत तारानाथ दौ ६५. खौआल सँ युवराज द्दौ० बावू विद्यापति सिंह सुतो वावू गिरिजापति सिंह ६६. वावू गंगापति सिंह सुता भेषपति सिंह विद्यापति सिंह ६७. वावू भेषपति सिंह पत्नी अन्तर्जातीय ए सुत हंसपति सिंह: वावू विद्यापति सिंह सुतो रमन कुमार सिंह: ६८. बाला सुतो भैया कल्याणौ खौआल सँ विद्यापति दौ ६९. विश्वनाथ काशीनाथा: अलय सँ विद्यापति दौ ७०. पाठक विद्यापति सुतो दुखमंजन कलरौ आसी एकहरा सँ उँमानन्द दौ ७१. नरपति सुता कल्याणपुर विस्फी सँ सुन्दर दौ कमलनयन सुत नारायण सुतो सुन्दर: करमहा सँ विद्यापति दौ ७२. मुरारि सुता दामोदर विद्यापति महिघर आनन्दा: ७३. विद्यापति सुता पद्मापति सभापति आदिपति गणपतिय: । । ७४. विद्यापति सुतो छीतू परमानन्दो माण्डर सँ नरपति दौ बहेराढ़ी सँ गदाधर द्दौ० ७५. अलय सँ कमल सुत नकटू दौ. विद्यापति सुत जीवनाथ सुतो परम: दरि. राम दौ। । ७६. करमहा सँ विद्यापति सुत मधुसूदन दौ ७७. मानी सोदरपुर सँ वाचस्पति सुत विद्यापति दौ ७८. खण्डबला सँ वावू दुर्गापति सिंह सुत वावू विद्यापति सिंह दौ ७९. खौआल सँ विद्यापति दौ ठ. मधुरापति सुतो वाछ शिवानन्दनो८०. सोदरपुर सँ बैद्यनाथ द्दौ. हरिकृष्ण सुता खौआल सँ मधुसूदनसुत विद्यापति दौ ८१. मधुसूदन सुत विद्यापति दौ ८२. दरिहरा सँ रमापति सुत वेणी दौ अलय सँ कृष्णपति सुत विद्यापति द्दौ ८३. अलय सँ विद्यापति द्दौ. ॥ ८४. ज्यो. शिवनन्दन सुतो विद्यापति. ८५. खौआल सँ भवदेव सुत विद्यापति दौ. ८६. पाठक कृष्णपति सुतो उषापति विद्यापति. ८७. विद्यापति सुतो दुखभंजन कलरो एकहरा सँ देवानन्द सुत उँमानन्द दौ ८८. अलय सँ विद्यापति सुत कलरु दौ ८९. कारु सुता पिताम्बर विद्यापति देवकीमाना का

सोदरपुर सँ वैदयनाथ सुत जयि दौ ९०. सुरोइ प्र. शारदानन्द सुता गौरीनन्दन वाचस्पति प्र. विद्यापति दिवाकर प्र. मन्दू रत्नाकर प्र. भ्र. भोलन जी का नग. घुसौत सँ दामोदर सुत उग्रमोहन दौ एकहरा सँ शोभानन्द द्वौ. ९१. खौआल सँ विद्यापति दौ.

आब आउ मूल मुद्दापर। हमरा राजपण्डित आ आर कतेक रास धर्माधिकारणिक विद्यापति सभ जैमे एकटा देवदासीक पुत्र सेहो रहथि, केर ब्राह्मण हेबामे कोनो सन्देह नै अछि। हम विद्यापति ठक्कुरः आ कीर्तिलता कीर्तिपताका नै वरन विद्यापति पदावलीक गप कऽ रहल छी। तैँ कोनो ओझरीमे नै रहल जाए। आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) बार्बर कास्टमे भेल रहथि आ तकर प्रमाण ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कवि आ ओकर कृतिक चर्चा अछि।

महादेव मूलतः गएर ब्राह्मणक देवता रहथि, आस्ते-आस्ते ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा अपनाओल गेलाह। विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे हुनकर संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै अछि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? उदाहरण देखू।

विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पदावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पदावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पदावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण। ताहि आधारपर ई संकल्पित नाटिका प्रस्तुत अछि। विद्यापतिक पिआ देसाँतर दृश्य १स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि। मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि। धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस। हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान। सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौंधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर। हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड्ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार। कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर विचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साति। पुरख महत सब हमर सजाति॥ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब। विद्यापति कवि ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

विद्यापति कविक प्रवेश होइत छन्हि। कोतवालक लग शुभ्र-धोतीधारी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माथ पिटैत छथि। गीतक अन्तिम चारि पाँती विद्यापति कवि गबैत छथि। दृश्य २ जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, सांकेतिक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिकेँ जएबाक आ क्रेता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुरू करैत छथि आ सभ पाँतिक बाद विद्यापति मंचपर अबैत छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अन्तिम पाँती विद्यापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अर्थ बँचैत छथि। मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम। एहि गाछक छाह बड्ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि। हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम। हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम। हे पथिक! एतय विश्राम करू। जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम। जे किछु कीनब, किछुओ महग नहि। सभ किछु एतए भेटत। सासु नहि घर, पर परिजन ननन्द सहजे भोरि। घरमे सासु नहि छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि। एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि। एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भए जाएब तँ आब हमर सक्क नहि अछि। भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस। विद्यापति कहैत छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूरा करैत छी। दृश्य ३एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद। धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)- परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास। परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नहि करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही। एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा। हे सखी! प्रियतमक लेल एतबी कथा बुझू। भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि। हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नहि बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान। चरण पखारू, आसन दियौक आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु। ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ। हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू। दृश्य ४जुवती आ ननदि नगर आबि ठौर धेने छथि। एकटा पथिक आबि आश्रय मँगैत छथि तँ जुवती गबैत छथि आ ननदि सभ पाँतीक बाद अर्थ कहैत छथि। बीचमे चारि पाँती बिना अर्थक नेपथ्यसँ अबैत अछि। फेर जुवती आगाँ गबैत छथि आ ननदि अर्थ बजैत छथि। अन्तमे अन्तिम दू पाँती विद्यापति आबि गबैत छथि। दृश्यक अन्तमे ननदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिन पथिककेँ दबारि रहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल रहए, मुदा आइ पथिककेँ आश्रय किएक नहि देलियैक। कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)- हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम। हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नहि छथि। ताहि द्वारे राति बिताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि। अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास। यदि क्यो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह। हे पथिक क्षमा करू आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि। बीचमे प्रान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग। चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह। सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल। बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद। भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कए निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति। विद्यापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैत अछि। दृश्य ५अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि। घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर। कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल। बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज। सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल। ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल। पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि। लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग। हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब। दृश्य ६ एहि दृश्यमे सेहो, नहि तँ ननदि छथि, नहिये सासु आ नहिये विद्यापति। एकटा अतिथि अबैत छथि आकि तखने मेघ लाधि दैत अछि आ जुवती गबैत छथि। धनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पदावली)-अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा। अपन घरमे बैसल छलहुँ, घरमे क्यो दोसर नहि छल, तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा। तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे। की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि। घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने। दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमए लागल। कञोने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने। हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि। दृश्य ७मंचक एक दिससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश निकलैत छन्हि आ मंचपर अन्हार होइत अछि। फेर इजोत भेलापर ननदिक वर हुनका सासुर लए जाइत छन्हि। पथिक रस्तापर छथि दर्शकगणक मध्य आ दर्शकगणकेँ इशारा करैत जुवती गीत गबैत छथि आ विद्यापति सभ पाँतिक बाद अर्थ कहैत छथि। अन्तिम दू पाँतिमे विद्यापति गीत आ अर्थ दुनू बजैत छथि- विद्यापति अन्तिम दू पाँति आ ओकर अर्थ कैक बेर दोहराबैत छथि। नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पदावली-सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली। सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेलीहतैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई। क्यो नहि सम्भाषणक लेल पर्यन्त, एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे। एतुका एहन बेबहार, ककरो क्यो पुछारी नहि करैत अछि। मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा। हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब। पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता। पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत। भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे। विद्यापति गबैत छथि, विरहनि घूमि-घूमि कए पथिककेँ कहि रहल छथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती दिस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छथि। की वैह छथि पिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

पिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

१. की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि?

२. पदावली एकटा पैरेलल संस्कृतिक द्योतक अछि। एक्के समयमे संस्कृत आ अवहट्ठ एक्के लेखक लिख लेत, ओकरा कष्ट छै जे अवहट्ठमे लिखलापर विद्वान ओकर उपहास करै छथि, मुदा ई दर्द की एकर लेशोमात्र पदावलीक विद्यापतिमे नै छन्हि। ओतए तँ उल्लास आ दर्द छै, सर्वहाराक उल्लास आ दर्द। ओ विद्यापति जे संस्कृत आ अवहट्ठ (पाली ताली नै) ओ राजपण्डित छला से विद्वान रहथि, हुनका अवहट्ठोमे लिखलापर लोक निन्दा करन्हि। मुदा मैथिलीक विद्यापति जे पैरेलल परम्पराक अंग छथि, ओइसँ दूर छला। ई पैरेलल परम्परा ऋगवेदक समयसँ छै (ओइ समयमे नाराशंसी रहै) । ई पैरेलल परम्पराक विद्यापति बार्बर कास्टक रहबे करथि, वा ब्राह्मण कास्टक रहबे करथि, से इतिहास ओइपर मौन अछि। मुदा लोककथा आ परम्परा, बिदापतक सर्वहारासँ सघन सम्बन्ध, बिस्फीक परम्परा हुनका गएर ब्राह्मण सिद्ध करैए। संस्कृत आ अवहट्ठक कोनो पाँति नहिये ओइ विद्यापतिक पदावलीक चर्चा करैए; आ नहिये पदावली पदावलीक विद्यापतिक संस्कृत वा अवहट्ठ केर रचनाक चर्चा करैए। संस्कृत आ अवहट्ठ मुस्लिम आक्रमणक, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि मुदा पदावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतए नै। आ जखन मैथिलीबला विद्यापति ब्राह्मण रहबो करथि वा नै तहीपर सवाल अछि तखन पाग पहिरा कऽ कोन सोच हम सभ पैदा कऽ रहल छी,

"विद्यापति" हम्मर छलाह की नै? की विद्यापतिक ब्राह्मण नै रहलासँ ओ हमर नै हेताह? की हुनकर "पिआ देशांतर" बला माइग्रेशन बला गीत महत्वहीन भए जेतै? की हुनकर सृन्गारिक गीतक मात्र चर्चा कोनो षड़यंत्र तं नै? विद्यापति सन कविकेँ पाग पहिरा कऽ जातिगत बन्धनमे बान्हब कतेक सही अछि? "मध्यकालीन मिथिला"मे विजय कुमार ठाकुर लिखै छथि: "मिथिलाक धार्मिक क्षेत्रमे एहि सामन्तवादी युगीन धार्मिक विचारधाराक प्रभाव एहन सर्वव्यापी छल जे एखनहुँ एहि परम्पराक निम्नलिखित अवशेष समाजमे विद्यमान अछि:...(घ) पाग सेहो तांत्रिक विचारधारासँ सम्बद्ध अछि।" (पृ. २६) तँ ईहो तंत्र मंत्र बियाह उपनयन धरि ने रहए दियौ। किए ओइ पैरेलल परम्पराक विद्यापतिकेँ ओइमे सानै छियन्हि। जँ ओ बार्बर कास्टक रहथि तैयो आ जँ ब्राह्मण रहथि तँ आरो (कारण २१म शताब्दीक ब्राह्मणक कट्टरता तँ देखिये रहल छी आ ई हजार साल पुराण ब्राह्मण जँ पैरेलल परम्पराक रहथि तँ पागरूपी सामन्तवादी अवशेष तांत्रिक धार्मिक कर्ममे मात्र प्रयुक्त हुअए, विद्यापतिक माथपर नै) ।

महाकवि विद्यापति कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न।

सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र।

समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।

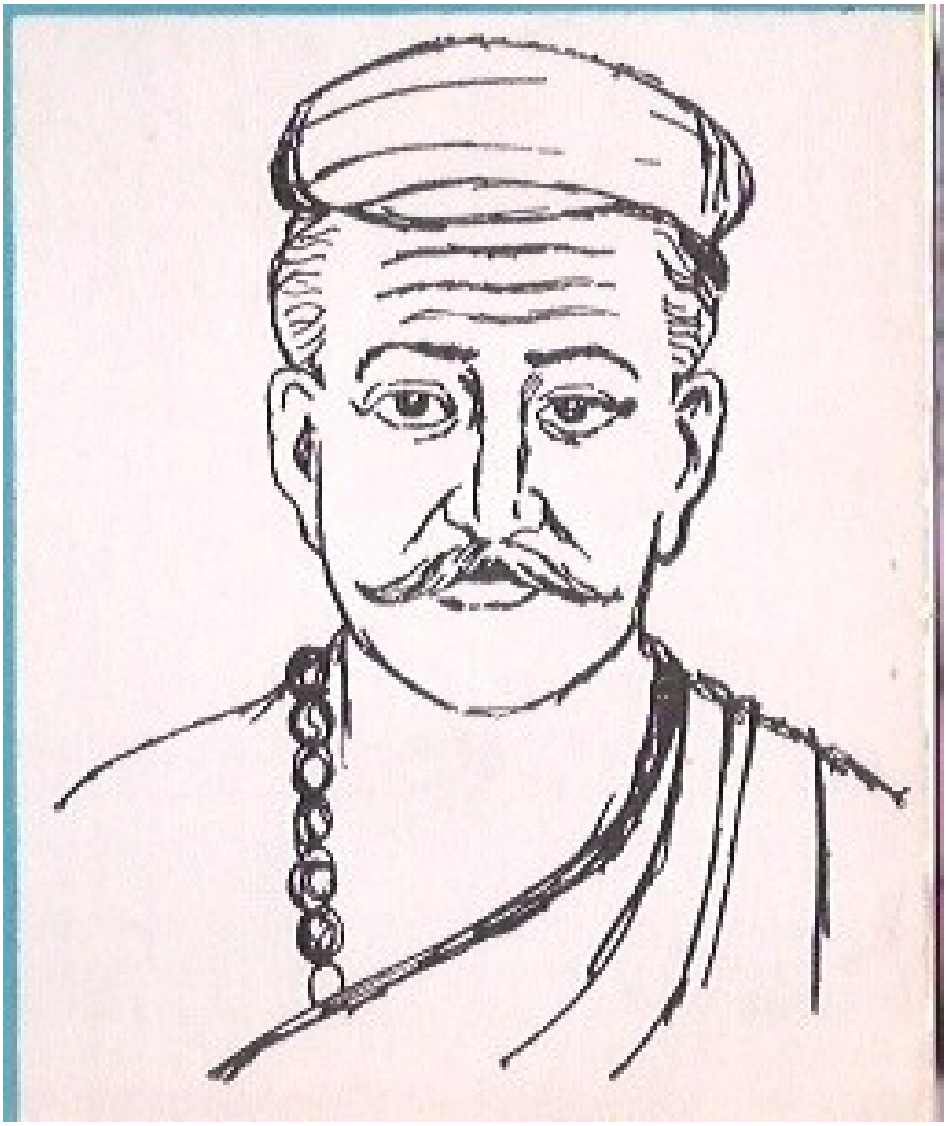

बोधि कायस्थ

विद्यापति ठक्कुरःक पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पदावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित आ बादमे विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक) विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

उगना महादेव

महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

२

“विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग-प्रतिष्ठापन”

संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति ठक्कुरः आ कविकोकिल विद्यापतिक बीचक अन्तर "मिथिला सांस्कृतिक परिषद" आ ओइसँ जुड़ल "किशोरीकान्त मिश्र" आदि नै बुझि सकला वा नै बूझऽ चाहलन्हि। ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठमे) । वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा कँे ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि।

जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि।

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग- विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली पदावली बला विद्यापतिसँ अछि, हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल। ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासक पदावलीकेँ अपन बना लेलक मुदा बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम १८७५ ई. मे कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल।

राजकृष्ण मुखोपाध्याय जइ विद्यापतिकेँ मिथिलाक कहने रहथि ओ पदावलीक विद्यापतिक सन्दर्भमे छल, संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः कैँ बंगाल कहियो अपन नै कहने छल।

ज्योतिरीश्वरक संस्कृत धूर्तसमागम नाटक आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक मध्य देल मैथिली गीत सेहो पदावलीक पुरान परम्पराक द्योतक अछि आ ऐ दुनू लेखकपर मैथिली पदावलीक प्रभाव देखबैत अछि।

फेर मिथिलाक विद्वानकेँ सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत-अवहट्ठ ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल, एतऽ रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ (मिथिला सांस्कृतिक परिषद- ई संस्था भारतक स्वतंत्रताक बाद विद्यापतिकेँ पाग पहिरा कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक) विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) कैँ "हम्मर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पञ्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए।

आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) नौआ ठाकुर जातिमे भेल रहथि आ तकर प्रमाणमे ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कविक चर्चा अछि।

विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे अपन संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै केने छथि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति तँ सर्वहारासँ घृणा करै छथि आ लिखित रूपमे कट्टर ब्राह्मण छथि।

मुदा पदावलीक विद्यापति तँ निश्छल छथि, किछु कट्टर पद कट्टर ब्राह्मणवादी सम्पादक लोकनि द्वारा घोसोआओल गेल अछि (हास्यास्पद रूपमे) ।

पिआ देसान्तर (विद्यापतिक बिदेसिया) क कन्सेप्ट आब सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि। की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि?

पदावली एकटा पैरेलल संस्कृतिक द्योतक अछि। एक्के समयमे संस्कृत आ अवहट्ठ एक्के लेखक लिख लेत, ओकरा कष्ट छै जे अवहट्ठमे लिखलापर विद्वान ओकर उपहास करै छथि, मुदा ई दर्द की एकर लेशोमात्र पदावलीक विद्यापतिमे छन्हि? ओतए तँ उल्लास आ दर्द छै, सर्वहाराक उल्लास आ दर्द। ओ विद्यापति जे संस्कृत आ अवहट्ठ मे लिखलन्हि ओ राजपण्डित छला से विद्वान रहथि, हुनका अवहट्ठोमे लिखलापर लोक निन्दा करन्हि। मुदा मैथिलीक विद्यापति जे पैरेलल परम्पराक अंग छथि, ओइसँ दूर छला। ई पैरेलल परम्परा ऋगवेदक समयसँ छै (ओइ समयमे नाराशंसी रहै) । ई पैरेलल परम्पराक विद्यापति नौआ ठाकुर जातिक रहबे करथि, वा ब्राह्मण जातिक रहबे करथि, से इतिहास ओइपर मौन अछि।

मुदा लोककथा आ परम्परा, बिदापतक सर्वहारासँ सघन सम्बन्ध, बिस्फीक परम्परा हुनका गएर ब्राह्मण सिद्ध करैए। संस्कृत आ अवहट्ठक कोनो पाँति नहिये ओइ विद्यापतिक पदावलीक चर्चा करैए आ नहिये पदावली पदावलीक विद्यापतिक संस्कृत वा अवहट्ठ केर रचनाक चर्चा करैए। संस्कृत आ अवहट्ठ मुस्लिम आक्रमणक, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि मुदा पदावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतए नै, हुनका समएमे तँ प्रायः मुस्लिम मिथिलामे रहबो नै करथि। आ जखन मैथिलीबला विद्यापति ब्राह्मण रहबो करथि वा नै तहीपर सवाल अछि तखन पाग पहिरा कऽ कोन सोच हम सभ पैदा कऽ रहल छी,

"विद्यापति" हम्मर छलाह कि नै? की विद्यापतिक ब्राह्मण नै रहलासँ ओ हमर नै हेताह? की हुनकर "पिआ देशांतर" बला माइग्रेशन बला गीत महत्वहीन भऽ जेतै? की हुनकर शृंगारिक गीतक मात्र चर्चा कोनो षडयंत्र तँ नै? विद्यापति सन कविकेँ पाग पहिरा कऽ जातिगत बन्धनमे बान्हब कतेक सही अछि? "मध्यकालीन मिथिला"मे विजय कुमार ठाकुर लिखै छथि: "मिथिलाक धार्मिक क्षेत्रमे एहि सामन्तवादी युगीन धार्मिक विचारधाराक प्रभाव एहन सर्वव्यापी छल जे एखनहुँ एहि परम्पराक निम्नलिखित अवशेष समाजमे विद्यमान अछि: ...(घ) पाग सेहो तांत्रिक विचारधारासँ सम्बद्ध अछि।" (पृ. २६)

तँ ईहो तंत्र मंत्र बियाह उपनयन धरि ने रहए दियौ। किए ओइ पैरेलल परम्पराक विद्यापतिकेँ ओइमे सानै छियन्हि। आ ई कुकृत्य किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषद केलक। ऐ तरहक लोक जै मिथिलाक संस्कृतिक रक्षक, ओ संस्कृति आ भाषा जँ आइयो बाँचल छै, तँ ई ओइ संस्कृति आ भाषाक विशेषता छिऐ।

आ रामलोचन ठाकुर अही प्रतिक्रियावादी "किशोरीकान्त मिश्र"क मंचसँ मंच सापेक्ष बयान देलन्हि (उपन्यासक संख्याक सम्बन्धमे) जकर कोनो ऐतिहासिक महत्व नै छै। चेतना समितिक पत्रिकामे मानेश्वर मनुज सेहो मंच सापेक्ष बयानमे जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक संख्या मात्र ४ लिखलन्हि!!!

जगदीश प्रसाद मण्डलक नाममे जँ मण्डल टाइटिल नै रहैत मात्र जगदीश प्रसाद रहैत तँ रमानाथ झाक अनुयायी हुनका श्रोत्रिय, अमर-रामदेव झाक अनुयायी हुनका ब्राह्मण आ "लालदासक स्मारिका"क लेखक वर्मा जी हुनका कायस्थ घोषित कऽ दैतथि।

आ ्जँ जगदीश प्रसाद मण्डलक फोटो उपलब्ध नै रहितै तँ किशोरीकान्त मिश्रक प्रतिक्रियावादी मिथिला सांस्कृतिक परिषद जगदीश प्रसाद मण्डलक यज्ञोपवीत संस्कार कऽ हुनका पाग पहिरा फेर वएह कुकृत्य करितए जे ओ विद्यापतिक संग एक हजार सालक बाद केलक। आ बेरमाक कोनो बुढ़बा माटिक ढिमकाकेँ देखबैत जगदीश प्रसाद "झा/ ठक्कुरः" केर काल्पनिक घराड़ी, यएह छी, घोषित कऽ दितए।

मलंगियाक बेटा, रामदेव झाक बेटा आ ढेर रास छद्मनामीक देल गाड़ि सेहो विदेहमे बिना काँट-छाँटक छपने अछि, जे लोक पढ़ि सकए, किछु गाड़ि जे नै छापल जा सकैए, सएह टा नै छपने छी। आ गारिक डरसँ अखन धरिक मैथिली आ मिथिलाक इतिहासकार ऐ विषयपर इशारा तँ केलन्हि मुदा आगाँ नै बढ़ला।

तेँ ओ ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) पूर्व विद्यापतिये रहथि से फेर सिद्ध होइए। जयदेव (लगभग १२००) क गीत-नृत्य आ किरतनियाँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पदावली मेल खाइत अछि, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक काव्य सौष्ठवसँ मेल नै खाइत अछि।

आब पुनः आबी मिथिला सांस्कृतिक परिषदक मंच जतएसँ रामलोचन ठाकुर मंच सापेक्ष बयान देलन्हि। ई परिषद विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार नै, मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार केलक। ओकर विद्यापतिकेँ पहिराओल पाग, कोलकातासँ बिन्ध्येश्वर मण्डल आ श्रीकान्त मण्डलकेँ लुप्त कऽ देलक आ मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण भऽ गेल।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक जातिगत कट्टरताक बानगी देखी: -

कीर्तिलता- जाति-अजातिक विवाह अधम कएँ पारक।

पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि कि राजपूतक स्त्री चरित्रहीन होइत अछि, ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सए बला वक्तव्य। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जाति-अजातिपर विशेष बल दै छथि, रक्त शुद्धता/ जाति हुनका लेल महत्वपूर्ण छन्हि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- अकुलीन कोनो दयाक अधिकारी नै अछि!! आ सौन्दर्य मात्र धनिक आ विशिष्ट वर्गक एकाधिकार अछि!! संस्कृत आ अवहट्ठबला (किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला) विद्यापति कहै छथि- जाति सामाजिक जीवनमे अन्तिम निर्धारक तत्व अछि। जे खराप कुलमे जन्म लैए ओ दुष्ट दिमागक साँप मात्र बनि सकैए!! किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- ओ देश जतऽ जातिक निअम लागू नै होइए से म्लेच्छ देश थिक (Aspects of Society and Economy of Medieval Mithila)- Upendra Thakur

अमीर खुसरोसँ पहिने पागक वर्णन हमरा नै भेटल अछि।

मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति (पदावलीक लेखक) कहै छथि: - नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

गोविन्ददासक पद्यो क्लिष्ट छलन्हि आ एकर समानान्तर परम्परा सेहो नै छल (सम्भवतः सवर्ण मध्य प्रचलनक कारण ई दुनू चीज छल), से बिदापत नाच जकाँ ओ एतुक्का माँटिमे संरक्षित नै भऽ सकल। गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिक चर्चा मुदा वर्धमान जे हुनका सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि, ओ कविता सभ कतऽ गेल? पक्षधर लिखैपर प्रतिबन्ध लगेलन्हि मुदा रघुनाथ शिरोमणि आ हुनकर शिष्य "उदयन" आ "गंगेश" क कृतिकेँ रटि कऽ चलि गेलाह आ नवद्वीपमे नव्य-न्याय स्कूलक स्थापनाक संगे बंगालसँ विद्यार्थी एनाइ बन्द भऽ गेल।

ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिः -कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी" मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि।

श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, - श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी।

"जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।"

आ

"मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द"

(मध्यकालीन मिथिला, उपेन्द्र ठाकुर)

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥..... विदातञो आस्थान भीतर भउ. तका पछा तेलङ्गी. मरहठी. वि। दओतिनी दुइ चित्रकइ गाङ्ग जउन निहालि अइसनि देषुअह. चउआञ्चरि चीरि एकहोङ्क परिहने ....से कइसन देषु. जइसे प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकेँ गङ्गाजमुनाक सम्वाहि। का हो तइसे ता विदाञोतके दुअओ सम्वाहिका हो भउअह. दशञुन्धी राजा अवधान कराउ. विदाञोत आस्थान वइसु.

(विदाञोत (पुरुख) भीतर भेल, तकर पाछाँ तेलङ्गी, मरहठी। विदओतनी (स्त्री) दूटा रंगक गङ्गा यमुनामे नहायलि एहन देखाइए। चारि-चारि आँचरबला चीर एकहकटा पहिरने। से केहन देखू. जेना प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकेँ गङ्गाजमुनाक संगबे तेहने ओइ विदाञोतकेँ दुनू सम्वाहिका। दशञुन्धी राजाकेँ अवधान करेलक, विदाञोत स्थानपर बैसला।

अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ ...विदाञोत त। न्हिक गीत. नृत्य. वाद्य. ताल. घाघर परिठरइतेँ आह...

विदाञोत लोकनिक गीत, नृत्य, वाद्य, ताल, घाघर पहीरि कऽ भेल।

उगना महादेवः महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक ऐठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहै छलाह। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

बोधि कायस्थः विद्यापति ठक्कुरःक पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पदावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित छल आ बादमे विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक) विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत साहित्य मिथिलाक विद्वान परम्पराक लोपक बाद सोझाँ आएल, आ संस्कृत साहित्यमे विद्यापति ठक्कुरःक कोनो खास चर्च नै भेटैत अछि आ बंगालक विद्यार्थीक एनाइयो कम भऽ गेल छल, जे अबितो रहथि हुनका लेल विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत आ अवहट्ठ साहित्य समकालीनक साहित्य छल जे खतम होइत विद्वता परम्पराक साहित्य छल आ सेहो तखन लिखाइये रहल छल, मुदा ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावली प्रसिद्धि प्राप्त कऽ लेने छल। ओइ कालक गोनू वा विद्यापतिक समय पाग रहबो करए सेहो निश्चित नै, कारण अमीर खुसरो (१२५३-१३२५) मात्र एकर चर्च केने छथि। विजय कुमार ठाकुर एकरा सामन्तवादी प्रतीक आ तंत्र मंत्रसँ सम्बद्ध मानै छथि। मुस्लिम आक्रमणक बाद अधीनस्थ सामन्तकेँ ई पहिराओल गेल हएत आ ई मुस्लिम टोपीसँ मेल खाइतो अछि, आ मात्र ब्राह्मण-कायस्थ मुस्लिम आक्रमणक बाद मिथिलामे सामन्त रहथि (राजपूत नै) आ आइयो अही दू वर्गक बीच ई कहियो काल बियाह आदिमे प्रयुक्त होइए।

महाकवि विद्यापति- कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुर:सँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक नौआ ठाकुर श्री महेश ठाकुरक पुत्र (परम्परा अनुसार) । समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः १३५०-१४३५ विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।

३

फणीश्वरनाथ रेणु बिदापत नाचपर रिपोर्ताज लिखलनि जे १ अगस्त १९४५ ई. केँ साप्ताहिक "विश्वमित्र" मे प्रकाशित भेल। ऐ रिपोर्ताजक महत्व अछि, कारण ई ऐ विषयपर ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखित विवरणक ७०० बर्ख बाद लिखल गेल आ ऐ ७०० बर्खमे जे विद्यापतिकेँ समानान्तर परम्परा जिआ कऽ रखलक।
आ जे एकरा जिआ कऽ रखलक ओकरासँ अनचोक्के विद्यापति छीनि लेल गेलन्हि। बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीत गबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकेँ प्राप्त केलन्हि जे विद्यापतिकेँ पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीनि लेलक। ब्रह्मपुराक कानूनगो बद्री प्रसाद ठाकुर, पोखरिभीड़ाक बिनोद ठाकुर, रुद्रपुरक सरयुग ठाकुर आ मेंहथक जयराम ठाकुर आ बिस्फीक सौँसे गाम आइयो ई रटि रहल छथि। शालिग्राम यादव, अवधिया ठाकुर बिस्फी गामक परम्पराक गवाह छथि। विद्यापति कर्मकाण्डीय अपहरण मे हुनकर जन्म आदिक प्रति सभ तरहक अनर्गल तर्क उपस्थित होइत रहल मुदा हुनकर समानान्तर परम्पराक मादे कोनो शोध-पत्रमे चर्चो धरि नै भेल। ई आलेख बिदेश्वर ठाकुर सन हजारक हजार समानान्तर परम्पराक लोकक प्रति समर्पित अछि जे बिदापतक ज्योतिरीश्वर आ फणीश्वरनाथ रेणुक दुनू आलेखक बीच विद्यापतिकेँ जिआ कऽ रखलन्हि।

मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्परा आ मिथिलाक समानान्तर परम्परा:
वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल।
वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल।
प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४) ।
जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि।
वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि।

शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धारा, आ तकर समानान्तर मुख्यधारा: ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मणवाद मिथिलामे शुरुएसँ रहल अछि। ज्योतिरीश्वर लिखै छथि- बौध पक्ष अइसन- आपात भीषण। अगतिशील शतपथ ब्राह्मणक परम्परा नामक साम्यताक कारण संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ पूज्य बनबैपर बिर्त अछि। ऋक् आ नाराशंसी, महाकवि विद्यापति आ पागबला विद्यापति, मोक्ष आ स्वर्ग-नर्क ई दुनू परस्पर विरोधी विचारधारा मिथिलामे रहल। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, सीता, जनककेँ रटैत-रटैत ई परम्परा विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग प्रतिष्ठापन जइ तीव्र गतिये केलक से ओकर शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

१७६० ई. क माधव सिंहक शाखा पञ्जीक आदेशक बाद मिथिलामे ब्राह्मण आ कायस्थ मध्य नव-कुलीनवादक प्रसार भेल आ भलमानुस (बत्तेसगमिया) उपजातिक कर्ण कायस्थमे आ स्रोत्रिय उपजातिक मैथिल ब्राह्मणमे उत्पत्ति भेल, ओइसँ शारीरिक आ मानसिक बीमारी ऐ दुनू उपजाति मध्य भयंकर रूपसँ बढ़ल, संगे बहुविवाह, बाल-विवाहक आ विधवाक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल। आ ईहो जइ शान्तिपूर्ण रूपसँ आ तीव्रगतिसँ भेल से शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

विद्यापतिपर दिनेश्वर लाल आनन्द आ रामवृक्ष बेनीपुरीक विचार!!
दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ भ्रम रहन्हि, ओइ कालमे पञ्जी गुप्त चीज रहै, जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार (निम्न कोटिक) कऽ देल गेल रहै। शाखा पञ्जी १७६० ई. सँ पहिने रहबे नै करै आ तकर प्रमाण अछि जे अयाची मिश्रक मूलक निचुलका पीढ़ी स्रोत्रिय उपजातिमे अछि आ ब्राह्मण उपजातिमे सेहो। ई ओहिना अछि जे सिन्धु घाटी सभ्यतामे बड़द रहै मुदा गाय नै (सीलपर), मुदा बिनु गाय बड़दक उत्पत्ति कोना हएत। दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ पञ्जीक सभ तथ्य उपलब्ध नै रहन्हि, प्रायः पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक एक्के हेबाक दुष्प्रचारमे हुनका लागल हेतन्हि जे अवहट्ठमे लिखबाक कारण जँ विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार करबाक सम्बन्धसँ जोड़ल जाए तँ विद्यापति ठक्कुरः किए क्रान्तिकारी भेलाह से व्याख्या कएल जा सकत। मुदा दिनेश्वर लाल आनन्द सेहो मानै छथि जे पदावलीक हुनकर (विद्यापतिक) हाथक तँ छोड़ू, हुनकर कालोमे संगृहीत पदक कोनो विवरण नै अछि। मुदा से कोना सम्भव जखन संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति अपन संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थ सभ टहंकारसँ आरम्भ आ समापन करै छथि, के राजा-रानी हुनका प्रेरित केलखिन्ह, ककर आश्रित छलाह, सभ वर्णन दैत। पूर्ण लेखकीय अन्दाज, सरस्वती आ लक्ष्मी दुनुक बल; तखन पदावलीमे से किए नै? दिनेश्वर लाल आनन्द गुम्म छथि। संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति अपन आश्रयदाताक विषयमे लिखने छथि मुदा कोनो संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थमे अपना विषयमे किछुओ नै लिखने छथि। ओ अवहट्ठ लिखबोमे दवाबक अनुभव करै छथि, जे तखुनका मुख्य परम्पराक साहित्यिक भाषा छल। मुदा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक प्रभाव एतेक छलन्हि जे हुनका संस्कृत नाटक गोरक्षविजयमे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि (जेना विदाञोतक पहिल रिपोर्ताज लिखनिहार ज्योतिरीश्वरकेँ संस्कृत नाटक धूर्तसमागममे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि) । गोविन्द झा ज्योतिरीश्वरक विदाञोतमे विद्यापतिक परम्परा देखि लै छथि, चर्च करै छथि मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिकेँ आगाँ किए नै बढ़ा पबैत छथि जखन बिदेश्वर ठाकुर गाबि-गाबि कऽ प्राण त्यागि रहल छथि? विद्यापति नाटकमे विद्यापतिकेँ प्यास जतऽ लगलन्हि ओ नाटक लेखकक गाम कोना भऽ जाइए? सभ अपना-अपना हिसाबसँ “हम्मर विद्यापति” पर नाटक लिखि रहल छथि।

रामबृक्ष बेनीपुरी लग सेहो पञ्जीक तथ्य नै छन्हि। एकटा उपजातिक बनोतरी आ किंवदन्तीक आधारपर ओ केशव मिश्रक विद्यापतिपर हँसब लिखै छथि; द्वैत परिशिष्टक ई केशव मिश्र वाचस्पति-२ (१४००-१४९०) क पौत्र छथि। एकटा आर केशव मिश्र (११५० लगभग) छथि जे तर्कभाष लिखै छथि आ जकर समीक्षा तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक पुत्र वर्धमान “तर्कप्रकाश” मे करै छथि। आनन्द कुमारस्वामे जतेक शोध १९१५ ई. मे केने रहथि ओइसँ एक्को डेग आगाँ नहिये बेनीपुरी जा सकलथि नहिये आनन्दस्वामीक सए बर्ख बाद कियो दोसर मुख्यधाराक शोधकर्ता जा सकल छथि। वएग उगनाक कथा बेनीपुरी कहै छथि, मुदा महादेव संस्कृत आ अवहट्ठक कट्टर विद्यापतिक “शैवसर्वस्वसार” पर कैलाशमे नचता आकि ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक नचारीपर, ओइपर गुम छथि। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ बुझल छन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत उपलब्ध अछि आ इहो जे विद्यापतिकेँ गंगालाभ कोना भेलन्हि, गंगा हुनका अपनामे लीलि लेलखिन्ह। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ संस्कृत आ

अवहट्ठक विद्यापतिक लिखल पुरुषपरीक्षाक विषयमे सुनल छन्हि मुदा पढ़ल नै छन्हि, आ से नै तँ हुनका बुझल रहितन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति गंगालाभक कथा बोधि कायस्थक विषयमे लिखने छथि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विषयमे ई कथा उगनाक कथा सन प्रचलित छल जे बादमे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिसँ कर्मकाण्डीय रूपमे जोड़ल गेल आ पुरुषपरीक्षाक कथा बोधि कायस्थ एकर प्रमाण अछि। कीर्तिपताकाकेँ बेनीपुरी मैथिली गीतक संग्रह कहै छथिइ!! पूछि-पाछि कऽ शोध कएल जाइ छै? जे आधार कुमारस्वामी सए बर्ख पहिने रखलन्हि, ओइपर सुखाएल मुख्यधारा किए नै आगाँ बढ़ल कारण ई शतपथ ब्राह्मणवादी मुख्यधारा ओकरा एकर अनुमति नै दै छै। मुदा बिना कोनो प्रमाणक शिवसिंहक मित्र पुरादित्यकेँ भूमिहार ब्राह्मण सिद्ध कऽ दै छथि, ओहिना जेना गोविन्ददास (झा) केँ रमानाथ झा स्रोत्रिय बतेलन्हि (सुकुमार सेन तकरा हास्यास्पद मानै छथि), आ रामदेव झा ब्राह्मण सिद्ध करै छथि आ कालिदासकेँ वर्माजी (लालदास स्मारिकामे) कायस्थ सिद्ध करै छथि।
संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति पूर्ण कर्मकाण्डक संग पुस्तकक प्रारम्भ आ अन्त करै छथि, राजा-रानी-आश्रयदाताकेँ मोन पाड़ै छथि मुदा अपन चर्च नै करै छथि। मुदा पदावली लोककण्ठमे किए रहि गेल, पुस्तकक तामझाम ओ तकरा किए नै देलन्हि, कारण ओ हुनकासँ कए सए पूर्वक रचना छल, जखन पागक उत्पत्ति मिथिलामे नै भेल छल। पदावलीमे रूपनारायण, शिवसिंह, लखिमा, देव सिंह, हर सिंह, पद्म सिंह, विश्वास देवे, अर्जुन-अमर, राघव सिंह, रुद्र सिंह, धीर सिंह, भैरव सिंह, चन्द्र सिंह आदि बादमे घोसिआएल गेल, जे गीतक लयकेँ प्रभावित करैत स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। संस्कृत-अवहट्ठबला विद्यापति भू-परिक्रमा (देव सिंह), कीर्तिलता (कीर्ति सिंह आ वीर सिंह), कीर्तिपताका, गोरक्षविजय (शिव सिंह), लिखनावली (पुरादित्य), दान वाक्यावली (रानी धीरमति) आदि स्पष्ट रूपसँ राज्याश्रित रचना छल। गोरक्षविजय नाटक भैरव पूजाक अवसरपर लिखल गेल आ ऐ मे धूर्त समागम सन मैथिली गीत छल जे ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक भयंकर प्रभाव स्वरूप छल। नामक असमानता नै रहैत तँ ज्योतिरीश्वकेँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति बना देल जाइत।
तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश १२००० ग्रन्थक बराबर एकटा ग्रन्थ लिखलन्हि। प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य “हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला” मे लिखै छथि- “The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila... Gangesha’ s family is completely ignored and we are not expected to know even his father’ s name.” आ ई सभ सूचना, ओ लिखै छथि, हुनका प्रो. आर. झा (रमानाथ झा) देलखिन्ह!
आब आउ पञ्जीमे वर्णित तथ्यपर- ओइमे स्पष्ट रूपसँ लिखल अछि जे तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेलन्हि आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलन्हि, तँ ई गप रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किए नुकेलन्हि? एकटा उपजाति द्वारा हिनकर मूर्खसँ विद्वान बनबाक गपपसारल गेलन्हि आ हिनका खतम करबाक साजिश भेल।
गंगेशक पुत्र वर्द्धमान गंगेशकेँ सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि। मुदा गंगेश सन प्रसिद्ध विद्वानक कविता कोन साजिशक अन्तर्गत आइ उपलब्ध नै अछि से ऊपर देल उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। बंगालक वासुदेव पक्षधर मिश्रक सहपाठी रहथि, मिथिला पढ़ैले एला, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलन्हि आ सर्वभौम उपाधि भेटलन्ह्। वासुदेव गंगेशक तत्वचिन्तामणि आ उदयनक न्यायकुसुमांजलिक कारिकाकेँ कंठस्थ कऽ लेलन्हि। पक्षधर आ आन मिथिलाक शिक्षक तत्वचिन्तामणि लिखबाक (प्रतिलिपि करबाक) अनुमति नै दै छला! वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अपन गुरु पक्षधर मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे हरा प्रमाणित करबाक अधिकार लेलन्हि। नव्यन्याय स्कूलक नवद्वीपमे वासुदेव-रघुनाथ द्वारा स्थापना भेल। पक्षधर मिश्र संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन छला। आ रघुनाथक संग बंगालसँ मिथिला विद्यार्थीक आगमन बन्द भऽ गेल।

शिवसिंह द्वारा संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ जे बिस्फी ताम्रपत्र देल गेल तकरा ग्रियर्सन फर्जी कहलन्हि कारण ओ विद्यापतिक पदावलीसँ परिचित रहथि आ बूझि गेल रहथि जे ओइ विद्यापतिकेँ ई ताम्रपत्र भेटब असम्भव छल। मुदा ई ताम्रपत्र तँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ भेटल छलन्हि आ दुनूक बीचक अन्तर ग्रियर्सन नै सोचि सकला। मुदा से म. म. हरप्रसाद शास्त्री सोचलन्हि आ ऐ ताम्रपत्रकेँ असली बतेलन्हि।

श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतमे कैवर्त पपीहाक गंगापर स्तुति गीत अछि। राधाकृष्णक गीत अछि। लक्ष्मणसेनक राज कवि धोयी (जोलहा) रहथि। लखिमा ठकुराइन पदावली नै लिखलन्हि संस्कृतमे पद्य लिखलन्हि (ग्रियर्सन) । श्रीधरदासक अभिलेख अंधरा ठाढ़ीमे अछि आ ओ नान्यदेव आ गंगदेवक मंत्री रहथि। हुनकर वंशज अमिअकर संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन रहथि। गंगदेवकेँ उपेन्द्र ठाकुर कलचुरी मानै छथि। विजय कुमार ठाकुर कलचुरि कर्णक स्तुतिमे सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास) क विद्यापतिक गीतकेँ मानै छथि। राधाकृष्ण चौधरीक मत ऐ सँ भिन्न छन्हि। कोनो परिस्थितिमे ई विद्यापति ज्योतिरीश्वर पूर्व रहथि। “रामचरित”-

विग्रहपाल-३ कर्णकैँ हरेलन्हि, ऐ सम्बन्धमे बेगूसरायसँ उत्तर १६ किमी. नौलागढ़सँ दूटा पाल अभिलेख राधाकृष्ण चौधरीकैँ भेटलन्हि। ओहो कर्ण ११म शताब्दीक छथि। धूर्त समागम सेहो दक्षिण भारतमे प्रसिद्ध अछि।

अनुलग्नक:

फणीश्वर नाथ रेणु

एकटा लोकगीतक विद्यापति भूमिका

महाकवि विद्यापतिपर "खोज" करैत काल हमरा लागल जे एक अध्यायक शीर्षक राख' पड़त- "खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति" । कारण पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पदावली गाबि-गाबि कऽ भाव देखाकऽनाचैबलाक मण्डली सभ अछि। ऐ मण्डली सभक नायक महिसवार, चरबाह आ गाड़ीक बहलमाने होइ छथि प्राय:। मैथिल पण्डित लोकनिसँ पुछलौं

, ई कोना भेल? बजला, अहाँ कोन फेरामे पड़ल छी? अही सभ मूर्खक कारण आइ विद्यापतिक दुर्दशा भ' रहल अछि। ऐ मामूली लोक सभक मोनमे जखन एलै विद्यापतिक नामपर "चारिटा पदावली" जोड़ि देलक।..अहाँ दिग्भ्रमित भ' रहल छी।.. मिथिलाक पण्डितक वर्जना-वाणीपर कान-बात नै दैत हम सहर्ष सहरसा (बा सहर्षा?) यात्राक तैयारी शुरू कऽदेलौं।..कनचीरा गाम एकटा एहन गाम अछि जइपर दू-दू जिलाक जिला अधिकारीक शासन चलैत अछि। अदहा गाम सहरसामे, अदहा गाम पूर्णियाँमे।... कनचीराक विद्यापति-मण्डलीक नाम दुनू जिलाक लोक लै छथि।... जइ दिन कनचीरा गाम पहुँचलौं, गाममे एकटा अघट घटना घटित भ' गेल रहै। दस सालसँ इलाकाक प्रतिनिधित्व करैबला नेताजी चुनावमे चितंग भ' गेल रहथि। तइ द्वारे ओइ राति नाच-गानक दोसरे मतलब निकालल जा सकै छल, ऐ डरे "विद्यापति-मण्डली" क नायक जनकदास नाच करबाक अनुमति नै देलनि। दोसर राति ओ बड्ड खुशामद करेलाक बाद अनुमति देलनि। नायक जनकदास बड्ड तर्क-वितर्क केलाक बाद घुमा-फिरा कऽ दोहरा-तेहरा कऽ कहलनि, "विद्यापति- नाच" क जन्म हुनके परिवारमे पहिले-पहिल भेल। विस्तारसँ ओ कहियो किछु नै कहलनि। आ हुनका जखन ई विश्वास भ' गेलनि जे "विद्यापति नाच मण्डली" क नामपर खर्च करबा लेल हजार- दू हजार टाका सरकारक खजानासँ ल' कऽ हम नै बहराएल छी, तखन ओ मृदंगपर थाप देलनि। राति भरि नाच देखैत रहलौं। गाए चरबैबला छौड़ा, साड़ी पहीर विरहिनी राधा बनि गेलि आ कानि-कानि गाबए लागलि- "कतेक दिवस हरि खेपब हो, तुम एसकरि नारी!" दोसर दिन, जनकदाससँ ऐ नाचक उत्पत्तिक इतिहास पुछलौं तँ ओ बाजल- नै जानि कहियासँ ऐ नाचक मूलगैनी हमरा परिवारमे चलैत आबि रहल अछि। जनकदासक ऐ उदासीक कारण छल- हमर टेपरेकार्डर।.. चुप्पे-चुप्पे सभ गीत फीतामे अहाँ भरि लेलौं, चलाकीसँ। मंगनीमे अपन काज सुतारि लेलौं अहाँ? आ, अंतिममे पचास टाका नगदी देलाक बादो ओ हमर ऐ प्रश्नक कोनो उत्तर नै देलनि कि खेतिहर-बोनिहार, चरवाह आ बहलमान सभ कहिया आ केना विद्यापतिक पदावलीकैँ गाबि-गाबि नाचब प्रारम्भ केलनि। जनकदासक पलानीमे पुआरपर पड़ल रही दिन भरि, ओकरा दया नै लगलै। ओकर मसोमात जवान बेटी हमरा दिससँ पैरवी केलक, तखनो ओ नै पसिझल, अपन खानदानीक "हँसी" करबैबला गप के "गजट" मे "छापी" कराब' चाहत? बुरहा जनकदास बड़द खोलि चरबै लेल चलि गेला। हम ओकर पलानीमे पड़ल रहलौं आ तकर बादे एकटा खिस्सा सुनलौं बा सपना देखलौं बा"भ्रम" मे पड़ि गेलौं- ई नै कहि सकै छी।

३९. मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’ क गीत आ झारू — “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै”

सारांश

मैथिलीक भिखारी ठाकुर “रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"” दइ छथि माटि आ कहै छथि “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै” । मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार” जीक झारूकेँ छोड़ि कऽ? कारण रामदेव प्रसाद मण्डिल “झारूदार” महीसक पीठ, खेतक आड़ि-धूर आ रस्ता चौबटियापर स्वतः स्फूर्त जे नव विधाक आविष्कार केने छथि से समाजक दुर्गुणकेँ खरड़ासँ खरड़बा लेल छै।

बीजशब्द: मैथिलीक · भिखारी · ठाकुरक · नामसँ · प्रसिद्ध · पहिल · जनकवि · रामदेव

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिलीक भिखारी ठाकुरक नामसँ प्रसिद्ध मैथिलीक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल ‘झारूदार’क गीत आ झारू — “हमरा बिनु जगत सुन्…” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिलीक; भिखारी; ठाकुरक; नामसँ; प्रसिद्ध प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिलीक भिखारी ठाकुर “रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"” दइ छथि माटि आ कहै छथि “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै” । मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार” जीक झारूकेँ छोड़ि कऽ? नै ने!
कारण रामदेव प्रसाद मण्डिल “झारूदार” महीसक पीठ, खेतक आड़ि-धूर आ रस्ता चौबटियापर स्वतः स्फूर्त जे नव विधाक आविष्कार केने छथि से समाजक दुर्गुणकेँ खरड़ासँ खरड़बा लेल छै। फुलझाड़ूसँ खरिहान नै बहारल हएत, आ खरड़ा सँ ओसारा नै बहारि सकै छी। लाठीमे राहड़िक डाँटक झारूसँ झोल-झाल साफ कएल जाइए। से तरह-तरहक बाढ़नि, आ खरड़ाक प्रचलन अछि। रामदेव जी गीत सेहो लिखै छथि, आ पनिसोखा सन रंग बिरंगक झारू सेहो। जेहेन समस्या तेहने झारू। आ मैथिलीमे जखन गोत्र-मूलक उपनाम रखबाक प्रवृत्ति किछु नव आ पुरान लेखकमे देखल जा रहल अछि तखन ई “झारूदार” उपनाम की सभ चीज बिनु कहने कहि जाइए?
आ कविक आत्मविश्वास, हम नै तँ किछु नै।
हमरासँ पहिले कोनो नै शासन।
नै छै कोनो धर्मक विधान। ।
हमरा बिनु जगत सुन्ना छै।
हतैबला छै पशु समान। ।
आब ताकि लिअ ऐ झारूमे बौद्ध दर्शनक शून्यवाद आ शंकरक अद्वैत दर्शन!
हुनका पैसाक रोग नै चाही तँ अंध्विश्वासक रोग सेहो नै।
सभ बनल छै पैसा रोगी,
अन्धनविश्वास, कुरीतक जोगी
मुदा ऐ लेल रामक तीर कमान चाही की? कारण तइ लेल तँ रामक अवतारक प्रतीक्षा करए पड़त। नै, स्वयंपर करू विश्वास, कारण जँ समस्या अहाँ छी तँ समाधान सेहो अहीं।
अहाँ बिना के ई दुख हरतै
अहींसँ ई सभ दानव मरतै
कलमकेँ एक बेर फेर बनाबू
रामक तीर कमान यौ।

आपसी एकताक महत्व कवि नीक जेकाँ बुझै छथि, मुदा एकता कोना आओत, तकर समाधान देखू:

एकता बनैले सहए पड़ै छै
घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै
अपन गलतपर लहए पड़ै छै।

नारीक स्थिति, से ओ नारी गामक होथि वा ओ नेता ने किए बनि गेल होथि, अखनो टीस उठबैत अछि, आ कवि जँ झारूदार होथि तँ ओइ टीसक वर्ण एना होइत अछि:

नारी सीता राधा अंश,
पुरूष बनल छै रावण कंश।
फेर कोना कऽ चलतै,
ई घर दुनियाँदारी यौ।

मुदा तकर उपाय, की पुरुष बदलत नारीक दशा? नै, ई आत्मविश्वास स्वयं नारीमे छन्हि, ओ शिक्षाक डोर पकड़ती आ...

आब नै नारी रहब अनारी,
बनबै सख्त कठोर यौ।

तँ की वएह नारी वा जाति-पाति आदिक समस्या टा पर ध्यान छन्हि कविक? नै, ओ प्रदूषण सन विज्ञानक देनपर सेहो चिन्तित छथि:

विज्ञानक ई देन प्रदूषण
बनि घर घुसल चुहार यौ।
बाघ बनि ई मुँह बौने अछि
दिनयाँ बनल सिकार यौ

आ प्रदूषण कोना कम हएत, सेहो ओ नव खाढ़ीकेँ राह देखबै छथि:

इंजन हो पूरा कंडीसन
धुआँ नै छोड़ै बेकार यौ।
करू खियाल किछु अगिला पिढ़ी
कोना रचत संसार यौ।

आ ऐ पर हुनकर एकटा झारू सेहो छन्हि, ओ वने टा नै वनवासीक सेहो संरक्षण चाहै छथि:

वन झील नदी आ वनवासी
पहार पठार संग रेगिस्तान।
करू सुरक्षा पर्यावरण केर
ऐ सँ देश बनत धनवान। ।

दहेज आ काटर प्रथापर रामदेव जी लिखै छथि:

आइ हर घरमे सीता रोऐ छै
राइत-राइत भरि नै जनक सुतै छै
कतए सँ एतै दहेजक पैसा
हेतै केना कन्यादान यौ

मिथिलापर झारूदारकेँ गर्व छन्हि, कोन मिथिलापर:

जगतरनी जतए गंगा धारा, ज्योति लिंग केर जतए उज्यारा।
हजरत तुलसी वाल्मिकक गुँजि रहल उपदेश।

मुदा बिहार अन्तर्गत जे मिथिला छै तकर दशापर झारूदार चिन्तित छथि आ बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार, जे विकास पुत कहल जाइ छथि हुनका झारूदार किछु देखबऽ चाहै छथि:

केमरासँ तस्वीर बनेबै
मिथिला मैथिल परिवार केर।
तकरा देखेबै पटना जा कऽ
विकास पुत नीतश कुमारकेँ।
फोटो बनेबै खेत असिंचित
सिंचाइ पानि विजलीसँ वंचित।

मानवता ककरामे हेतै, मानवे मे ने। आ तकरे ने भेटतै दुनियाँक ताज आ सएह ने जीतै बनि झारूदार!

ताज मिलै सम्पूर्ण जगतक
आ बनि जीबए झारूदार
मानवमे मानवता होइ तँ
बदलै नै ओकर अवतार

तँ झारू आ गीत, जे बोन-झाँकुरमे खेत-पथारमे घुमैत-फिरैत लिखाएल से तँ विशिष्ट हेबे करतै आ ओकर लिखैबलाकेँ से ताज भेटबे करतै। मिथिलाक भिखारी ठाकुर ओइ ताजकेँ पहीरि झारूदार कहेबे करतै।

पूरक विवेचन

मैथिलीक भिखारी ठाकुर “रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार"” दइ छथि माटि आ कहै छथि “हमरा बिनु जगत सुन्ना छै” ।

मैथिली साहित्य वा कोनो भाषाक साहित्यमे झारू नामक काव्य विधा सुनने रहिऐ? रामदेव प्रसाद मण्डल “झारूदार” जीक झारूकेँ छोड़ि कऽ? नै ने!

कारण रामदेव प्रसाद मण्डिल “झारूदार” महीसक पीठ, खेतक आड़ि-धूर आ रस्ता चौबटियापर स्वतः स्फूर्त जे नव विधाक आविष्कार केने छथि से समाजक दुर्गुणकेँ खरड़ासँ खरड़बा लेल छै। फुलझाड़ूसँ खरिहान नै बहारल हएत, आ खरड़ा सँ ओसारा नै बहारि सकै छी। लाठीमे राहड़िक डाँटक झारूसँ झोल-झाल साफ कएल जाइए। से तरह-तरहक बाढ़नि, आ खरड़ाक प्रचलन अछि। रामदेव जी गीत सेहो लिखै छथि, आ पनिसोखा सन रंग बिरंगक झारू सेहो। जेहेन समस्या तेहने झारू। आ मैथिलीमे जखन गोत्र-मूलक उपनाम रखबाक प्रवृत्ति किछु नव आ पुरान लेखकमे देखल जा रहल अछि तखन ई “झारूदार” उपनाम की सभ चीज बिनु कहने कहि जाइए?

आ कविक आत्मविश्वास, हम नै तँ किछु नै।

हमरासँ पहिले कोनो नै शासन।

नै छै कोनो धर्मक विधान। ।

हमरा बिनु जगत सुन्ना छै।

हतैबला छै पशु समान। ।

आब ताकि लिअ ऐ झारूमे बौद्ध दर्शनक शून्यवाद आ शंकरक अद्वैत दर्शन!

हुनका पैसाक रोग नै चाही तँ अंध्विश्वासक रोग सेहो नै।

सभ बनल छै पैसा रोगी,

अन्धनविश्वास, कुरीतक जोगी

मुदा ऐ लेल रामक तीर कमान चाही की? कारण तइ लेल तँ रामक अवतारक प्रतीक्षा करए पड़त। नै, स्वयंपर करू विश्वास, कारण जँ समस्या अहाँ छी तँ समाधान सेहो अहीं।

अहाँ बिना के ई दुख हरतै

अहींसँ ई सभ दानव मरतै

कलमकेँ एक बेर फेर बनाबू

रामक तीर कमान यौ।

आपसी एकताक महत्व कवि नीक जेकाँ बुझै छथि, मुदा एकता कोना आओत, तकर समाधान देखू:

एकता बनैले सहए पड़ै छै

घटो लगा कऽ बहए पड़ै छै

अपन गलतपर लहए पड़ै छै।

नारीक स्थिति, से ओ नारी गामक होथि वा ओ नेता ने किए बनि गेल होथि, अखनो टीस उठबैत अछि, आ कवि जँ झारूदार होथि तँ ओइ टीसक वर्ण एना होइत अछि:

नारी सीता राधा अंश,

पुरूष बनल छै रावण कंश।

फेर कोना कऽ चलतै,

ई घर दुनियाँदारी यौ।

मुदा तकर उपाय, की पुरुष बदलत नारीक दशा? नै, ई आत्मविश्वास स्वयं नारीमे छन्हि, ओ शिक्षाक डोर पकड़ती आ...

आब नै नारी रहब अनारी,

बनबै सख्त कठोर यौ।

तँ की वएह नारी वा जाति-पाति आदिक समस्या टा पर ध्यान छन्हि कविक? नै, ओ प्रदूषण सन विज्ञानक देनपर सेहो चिन्तित छथि:

विज्ञानक ई देन प्रदूषण

बनि घर घुसल चुहार यौ।

बाघ बनि ई मुँह बौने अछि

दिुनयाँ बनल सिकार यौ

आ प्रदूषण कोना कम हएत, सेहो ओ नव खाढ़ीकेँ राह देखबै छथि:

इंजन हो पूरा कंडीसन

धुआँ नै छोड़ै बेकार यौ।

करू खियाल किछु अगिला पिढ़ी

कोना रचत संसार यौ।

आ ऐ पर हुनकर एकटा झारू सेहो छन्हि, ओ वने टा नै वनवासीक सेहो संरक्षण चाहै छथि:

वन झील नदी आ वनवासी

पहार पठार संग रेगिस्तान।

करू सुरक्षा पर्यावरण केर

ऐ सँ देश बनत धनवान। ।

दहेज आ काटर प्रथापर रामदेव जी लिखै छथि:

आइ हर घरमे सीता रोऐ छै

राइत-राइत भरि नै जनक सुतै छै

कतए सँ एतै दहेजक पैसा

हेतै केना कन्यादान यौ

मिथिलापर झारूदारकेँ गर्व छन्हि, कोन मिथिलापर:

जगतरनी जतए गंगा धारा, ज्योति लिंग केर जतए उज्यारा।

हजरत तुलसी वाल्मिकक गुँजि रहल उपदेश।

मुदा बिहार अन्तर्गत जे मिथिला छै तकर दशापर झारूदार चिन्तित छथि आ बिहारक मुख्यमंत्री नीतिश कुमार, जे विकास पुत कहल जाइ छथि हुनका झारूदार किछु देखबऽ चाहै छथि:

केमरासँ तस्वीर बनेबै

मिथिला मैथिल परिवार केर।

तकरा देखेबै पटना जा कऽ

विकास पुत नीतश कुमारकेँ।

फोटो बनेबै खेत असिंचित

सिंचाइ पानि विजलीसँ वंचित।

मानवता ककरामे हेतै, मानवे मे ने। आ तकरे ने भेटतै दुनियाँक ताज आ सएह ने जीतै बनि झारूदार!

ताज मिलै सम्पूर्ण जगतक

आ बनि जीबए झारूदार

मानवमे मानवता होइ तँ

बदलै नै ओकर अवतार

तँ झारू आ गीत, जे बोन-झाँकुरमे खेत-पथारमे घुमैत-फिरैत लिखाएल से तँ विशिष्ट हेबे करतै आ ओकर लिखैबलाकेँ से ताज भेटबे करतै। मिथिलाक भिखारी ठाकुर ओइ ताजकेँ पहीरि झारूदार कहेबे करतै।

४०. रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"

सारांश

"रथक चक्का उलटि चलै बाट" ई रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रहक नाम अछि। खाँटी शब्दावलीक प्रयोग आ ओइ माध्यमसँ तीन पाँतिक हाइकू/ शेनर्यू आ पाँच पाँतिक टनकामे हिनकर प्रकृति-प्रेमक माध्यमसँ भावोद्गारमे एतेक रास तथ्य सोझाँ अनैए, एतेक रास समस्या आ समाधान तकैए जे पढ़निहार बाजि सकैए, हँ ई हम किए नै सोचि सकलौं, मुदा आब सोचि सकब। जापानक बाशो नै मोन पड़ि जाइ छथि रामविलास साहु जीक ऐ टनकासँ:

बीजशब्द: रामविलास · साहु · जीक · कविता · गीत · हाइकू · शेनर्यू · टनका

सारांश · Abstract

ई अध्याय "रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रह "रथक चक्का उलटि चलै बाट"" विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे रामविलास; साहु; कविता; गीत; हाइकू प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

"रथक चक्का उलटि चलै बाट" ई रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रहक नाम अछि। खाँटी शब्दावलीक प्रयोग आ ओइ माध्यमसँ तीन पाँतिक हाइकू/ शेनर्यू आ पाँच पाँतिक टनकामे हिनकर प्रकृति-प्रेमक माध्यमसँ भावोद्गारमे एतेक रास तथ्य सोझाँ अनैए, एतेक रास समस्या आ समाधान तकैए जे पढ़निहार बाजि सकैए, हँ ई हम किए नै सोचि सकलौं, मुदा आब सोचि सकब।

रथक चक्का

उलटि चलै बाट

चाक चलै छै

ठामे ठाम नचैत

दुनु करै दू काम

जापानक बाशो नै मोन पड़ि जाइ छथि रामविलास साहु जीक ऐ टनकासँ:

सावन मास

जलक बुन्नद पड़ै

आसमानसँ

बेंगक बाजा बजै

खन्ता डबरा भरै

हिनकर मानव आ प्रकृतिक मेल कतेक अद्भुत लगैत अछि:

कारी काजर

मुखड़ा िबगारैत

कारी कोइली

मधुर गीत गबै

सभकेँ ललचाबै

मुदा कारी काजरक उपमा एतै खतम नै भेल अछि:

कारी काजर

आँखि देत सुखाय

कारी बादल

बरखासँ डुबाय

मुखरा देत बिगाड़ि

रौदक गुण तँ प्रकृति-प्रेमी कवि पढ़ि लैए, वसन्त आ हेमन्त वर्णनासँ की ई कम अछि?

चैतक रौद

तपाबै माटि-पानि

पछिया हवा

पकाबै चना-गहुम

बहारै धूर-कण

कविता कहैमे कवि सेहो पाछाँ नै छथि, कोसी धार हुनका हिलोरै छन्हि:

जिनगी बनल अछि हमर कंगाल

झौआ, पटेर, काश खगरा हमरासँ करैए रगड़ा

बाल बच्चा क जिनगी बाउलमे समाएल

अन्धविश्वासपर कविक कलम चलै छन्हि:

गोसाँइ खेले भगता-भगतिनियाँ

छत्तीस देवी चौदहो देबान

अखन छौ देहपर िवरजमान

जे मांगब से पूरा करतौ

कारनीक सभ रोग वियाधि हरतौ

फूल-अच्छतसँ वरदान देतौ

बिगरल काज मनोकामना

चुटकी बजिते पूरा करतौ

बदलामे लड्डु-छागर-पाठी मांगतौ

कवि किसान छथि तँ किसानी कोना बिसरताह:

बिहानेसँ गजार कदबा

हुअए लगल खेत

हर जोतैत हरबाह

बिरहा गाबैत

आ फेर...

“हरक नाश आ

खेतक चासपर

पेट भरबाक अछि

सभकेँ आश।”

आ तखन......

गहुमक दाना कोठीमे भरलौं

भूसीकेँ भुसकाँरमे टलियेलौं

चारि मासक गहुमक फसलि

दिन-राति खटि कऽ घर केलौं

साल-भरि रोटियो खाए जीअब

गामक शब्दावली फकरा-कहबीक माध्यमसँ बहुत रास गप कहि जाइ छथि कवि:

हाटक चाउर बाटक पानि

बनियाँ घरक तरजूकेँ

नै होइ छै कोनो माइन

कारण..

हाटक चाउर बाटे बिलाएल

घाटक पानि घाटे सुखाएल

देशी इलाज आ रोगक रोकथाम सेहो कविकेँ बुझल छन्हि:

इचना, पोठी माछक चटनी

संगे जे खाइ मरूआ रोटी

नहि बनत रोगी मोटी

रक्त चाप, मधुमेह, जलोदर

रामविलास साहु जी चैतावर गबै (लिखै) छथि, बिरहा सुनै छथि, धनरोपनीपर आ किसानीपर कविता कहै छथि। आ ऐ सभ विषयपर हिनकर कविताक जोड़ा साहित्यमे भेटब कठिन। ई सभ विषय मैथिली कविताकेँ विस्तार देलक अछि, आ ओइपर लिखबाक सामर्थ्य रामविलास साहु जीमे छन्हि, ओकर भीतरमे ढुकि कऽ लिखबाक सामर्थ्य रामविलास साहुजीमे छन्हि।

गजेन्द्र ठाकुर

पूरक विवेचन

“रथक चक्का उलटि चलै बाट” ई रामविलास साहु जीक कविता, गीत, हाइकू, शेनर्यू आ टनका संग्रहक नाम अछि। खाँटी शब्दावलीक प्रयोग आ ओइ माध्यमसँ तीन पाँतिक हाइकू/ शेनर्यू आ पाँच पाँतिक टनकामे हिनकर प्रकृति-प्रेमक माध्यमसँ भावोद्गारमे एतेक रास तथ्य सोझाँ अनैए, एतेक रास समस्या आ समाधान तकैए जे पढ़निहार बाजि सकैए, हँ ई हम किए नै सोचि सकलौं, मुदा आब सोचि सकब।

जापानक बाशो नै मोन पड़ि जाइ छथि रामविलास साहु जीक ऐ टनकासँ:

रौदक गुण तँ प्रकृति-प्रेमी कवि पढ़ि लैए, वसन्त आ हेमन्त वर्णनासँ की ई कम अछि?

रामविलास साहु जी चैतावर गबै (लिखै) छथि, बिरहा सुनै छथि, धनरोपनीपर आ किसानीपर कविता कहै छथि। आ ऐ सभ विषयपर हिनकर कविताक जोड़ा साहित्यमे भेटब कठिन। ई सभ विषय मैथिली कविताकेँ विस्तार देलक अछि, आ ओइपर लिखबाक सामर्थ्य रामविलास साहु जीमे छन्हि, ओकर भीतरमे ढुकि कऽ लिखबाक सामर्थ्य रामविलास साहुजीमे छन्हि।

४१. उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह

सारांश

उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह थिक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै।

बीजशब्द: उमेश · मण्डल · जीक · निश्तुकी · कविता · लघु · हाइकू · टनका

सारांश · Abstract

ई अध्याय “उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/टनका आ गजलक संग्रह” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे उमेश; मण्डल; निश्तुकी; कविता; लघु-कविता प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

उमेश मण्डल जीक “निश्तुकी” कविता, लघु-कविता, हाइकू/ टनका आ गजलक संग्रह थिक। मैथिलीक नव तुर मात्र उमेरकेँ प्रतिष्ठा नै देबऽ चाहैए, जँ ओ उमेर अग्रगामी नै होथि। आ से हेबाको चाही, काजक सम्मान छै उमेरक आ पुरानक नै। आ तँ पुरान आ उमेरगर जँ अग्रगामी छथि तँ तिनका प्रतिष्ठा किए नै भेटन्हु?

ई टनका देखू:

समस्याँ आप्त

सोलहनी सजल

साहित्यकार

लेखे पुरान छै आप्त

केना एतै यथार्थ

आ तेँ “बुढ़ारीमे” क्षणिकामे ओ कहै छथि:

जिनगी चाह करैए

कर्मक बाट देखबैए

आ कर्मका बाट जँ पकड़ि लेब तखन धुधुएबे करब:

भुरकी-सँ-भार बनि

बील बोहरि धरि

बनि-बनि असंतोष

धोधरि बनि धुधुआ रहल अछि

मिथिलासँ पड़ाइन भऽ रहल छै। से रहि-रहि कचोटै छन्हि कविकेँ। आ जँ वसन्तक आगमन भऽ जाए तखन तत्व ज्ञान भैये ने जाएत!

बसंत आएल

गाम जाएब

आब एतए

रहि नै पाएब

बसंतेक खोजमे तँ

छी बौआएल

ऐ पड़ाइनसँ: -

गामक मुँहथरि

जंगल बनल अछि

हुनका विचारक फाँट सेहो रहि-रहि देखा पड़ै छन्हि:

अहाँक गप

अपन मन

दुनू मिलैए

मिलि दुनू अछि चौचंग

खोजि रहल अछि वसंत

मुदा

बसंतक चिड़ैकेँ

संग नै राखए चाहै छी हम

हुनका बुझऽमे आबि रहल छन्हि:

भकोभन ओइ अन्हाार कोठरीमे

आ ओ अहाँसँ पूछि रहल छथि:

तखन शीशामे केना देखाएत

ओकर चित्र केना आएत?

आ कियो नै सुनऽ चाहै छथि ओ गीत जतऽ मात्र आ मात्र गाओल जा रहल अछि संस्कृतिक गीत:

हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ

सुनैले नै छथि कियो तैयार

किए नै सुनै लेल छथि तैयार, कारण अछि डर, दर्दक डरे ओ नै सुनऽ चाहै छथि हनहनाइत, भनभनाइत ओइ स्वरकेँ।

किछु अजीब बात सभ हुनका असहज लगै छन्हि:

आगि-पानिकेँ

मनक माइनकेँ

कारण सेहो छै, अगिलहीक बिम्ब देखू:

सप्पत खाइ काल देवता

लोकक घर जड़बैकाल मित्ता

ज्ञान आ ज्ञानी आ ज्ञानक प्रकाश सेहो हुनका कखनो ओझरीमे धऽ दै छन्हि:

ज्ञानो भऽ जाइत अछि गुलाम

सांकृत्यायन पड़ै छथि मोन धराम

लहास जे अहाँकेँ बुझा पड़ैए सेहो आब बाजत:

आब ओ बाजत

बजैत-बजैत हँसत

अहाँक कृतिपर

बनल संस्कृतिपर

मंगल आ मंगला हुनकर कवितामे सेहो कएक ठाम आएल अछि। विवशताक प्रतीक अछि मंगला!

कातमे ठाढ़ भऽ मंगला

आ आगाँ...

अपनाकेँ केलक एकोर

तँ सुखाएल घाटक घटवारी मंगलापर देखू ओकर विवशता:

सुखलौ घाटक लेतै खेबाइ

नै देबै तँ देत ई रेबाड़ि।

सएह भेल मंगला घुरि गेल

पछिमे मुरि गेल

कवि कुम्हरौटक बिम्ब एना अनै छथि:

काँच माटिक मूर्ति जहिना

ढाँचा मात्र कहबैए।

तहिना तँ फूलोसँ बनल फल

सिरखार मात्र कहबैए।

आ वएह सिरखार ने

आशा बान्हि-बान्हि

रौद-बसात सहैए

आ अपने सन आर बटोही सेहो हिनका भेटि जाइ छन्हि:

हमरे सन इहो सभ बटोही

हराएल बाट बढ़ए चाहैए

कविकेँ कोनो भ्रम नै छन्हि जे जेहने बाट चलब तेहने घाट भेटत आ तखन ओइ घाटपर पानि सेहो तेहने भेटत:

जहिना चलैक बाट होइ छै

तहिना तँ बुझैयोक बाट छै

जेहेन जे बाट चलै छै

तेहने घाट पहुँचै छै

ई बाट आ विचार हुनकर एकटा आरो कवितामे अबैत अछि:

विचारक संग जँ चालि रहल

घाटपर जाइसँ कियो नै रोकत

आ नीक वा अधलाह बाट कियो केना धरैए, तहूपर हुनकर लेखनी चलै छन्हि:

जेहने घरक लोक रहै छै

घरक मुँहथरि तेहने होइ छै।

जेहने घरक मुँहथरि रहै छै

तेहने ने बाटो धड़ै छै

आ ई बाट हुनकर पछोड़ गजलमे सेहो नै छोड़ै छन्हि:

गोर मौगी गौरबे आन्हर भेलि अड़ल

करिया बाट बुझाइए चलू घुरि चली

ओ निराश कखनो नै होइ छथि:

मरलेमे मारि खा-खा

मारल बुइध कहबै छी

आ एकर कारण छै, ओ कहै छथि:

जहिना पबिते अद्राक पानि

मुइलहो धार जीबै छै।

भलहिं जीतहा धार बीच

तीन-मसुआ ओ कहबै छै

आ ऐ आशा-आक्रोश आ निराशाक मध्य ओ लिखै छथि:

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज

अपन उमेश जोड़तै तँ चहकतै लगैए ई।

उमेश मण्डल जे किछु कहै छथि निश्तुकी कहै छथि, घुरछी, ओझरी सभटा चारू कात पसरल छन्हि। मुदा सोझराबै छथि, ओझराबै नै छथि।

पूरक विवेचन

आ कर्मका बाट जँ पकड़ि लेब तखन धुधुएबे करब:

मिथिलासँ पड़ाइन भऽ रहल छै। से रहि-रहि कचोटै छन्हि कविकेँ। आ जँ वसन्तक आगमन भऽ जाए तखन तत्व ज्ञान भैये ने जाएत!

ऐ पड़ाइनसँ:-

हुनका विचारक फाँट सेहो रहि-रहि देखा पड़ै छन्हि:

लहास जे अहाँकेँ बुझा पड़ैए सेहो आब बाजत:

आ ई बाट हुनकर पछोड़ गजलमे सेहो नै छोड़ै छन्हि:

छोड़ि देने टूटि जाएत समाज

४२. उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"

सारांश

कविकेँ युवापर भरोस छन्हि, आ तेँ युवाकेँ सम्बोधितो करै छथि आ ओकर आह्वानो करै छथि, जेना "हम युवा" कवितामे - जाति-धर्म/ मजहब केर नामपर/ षडयंत्र रचैए कियो/ हमर देशकेँ/ भीतर आबि कऽ/ आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो आ तकर सम्बन्ध हुनकर "जीतक झण्डा" कवितामे भेटत जेना: - जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू। ई जे दुश्मन अछि सएह फहरबाबइए जीतक झण्डा: - आगि सुनगाएल करू/ जीत केर झंडा फहराएल करू आ "हम युवा" मे सेहो ओ कहै छथि: - आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो/ भारतवासी शेर छी/ शेरकेँ मादमे आबि कऽ/ जगबैए कियो।

बीजशब्द: उमेश · पासवानक · कविता · संग्रह · वर्णित · रस · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय "उमेश पासवानक कविता संग्रह "वर्णित रस"" विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे उमेश; पासवानक; कविता; संग्रह; वर्णित प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

कविकेँ युवापर भरोस छन्हि, आ तेँ युवाकेँ सम्बोधितो करै छथि आ ओकर आह्वानो करै छथि, जेना "हम युवा" कवितामे - जाति-धर्म/ मजहब केर नामपर/ षडयंत्र रचैए कियो/ हमर देशकेँ/ भीतर आबि कऽ/ आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो

आ तकर सम्बन्ध हुनकर "जीतक झण्डा" कवितामे भेटत जेना: - जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू।

ई जे दुश्मन अछि सएह फहरबाबइए जीतक झण्डा: - आगि सुनगाएल करू/ जीत केर झंडा फहराएल करू आ "हम युवा" मे सेहो ओ कहै छथि: - आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो/ भारतवासी शेर छी/ शेरकेँ मादमे आबि कऽ/ जगबैए कियो। कारण जे देशक युवा छथि से: - हम छी गोली, / हम छी बारूद/ हमही खंजर तलवार छी। तखन ऐ गोली लेल पेस्तौल, बारुद लेल आगि के छथि? ओ छथि युवा जे छथि खंजर आ तलवार।

तँ की दुश्मनी आधारित जोश छन्हि हुनकर कविता? नै से नै अछि- जौं दोस्तीक लेल हाथ बढ़ाएब/ तँ हमही फूलक माला/ गला केर हार छी। कविकेँ टंगघिच्चा-घिच्चीक खेल नै पसिन्न छन्हि। आ कवि कहै छथि।

ऊपरसँ नूनू बौआ/ भितरे-भितर कहैए बकलेल/ बर्षोसँ देखि रहल छी/ हर तरहसँ दलितक उपेक्षा।

बाढ़िक प्रकोप कविकेँ कहबापर विवश करै छन्हि: केना कऽ ऐबेर खेतक आड़िपर/ जा कऽ कहब/ सेर-बरोबरि/ उखैर सन बीट/ समाठ सन सिस। गबहा संक्रान्तिपर कविकेँ कहऽ पड़ै छन्हि: केना कऽ गुजर चलत/ उपजा कऽ कास-पटेर। ओ कोसीकेँ कहै छथि: कऽ देलिऐ मिथिलाकेँ दू-भागमे/ अहाँ पूबमे सहरसा-सुपौल/ पछिममे मधुबनी-दरभंगा/ बिचमे अगबे बालु आ धूल।

मुदा फेर निर्मल्लीक पुल बनबाक चर्च: कहू आब कतेक चुप रहब/ ऐबेर हम बना देलौं पुल।

पढ़ल-लिखल दलितक सामान्य दलितक प्रति व्यवहारपर जतेक अम्बेडकर दुखी रहथि ततबे चिन्ता उमेश पासवानकेँ सेहो छन्हि: स्वयं दलित छी/ दलितक दरद जनै छी/ किछु व्यक्तिक किरदानीसँ चकित छी/ दलित भऽ कऽ ओ/ व्यक्ति अपनो समाजकेँ बिसरि गेल/ अप्पन भाषा-भेष छोड़ि कऽ/ दोसरक रंग-ढंगमे ढलि गेल।

ओ समाजसँ पु छै छथि: हम दलित छी/ मेहनति-मजदुरी कए कऽ बितबै छी अपन जीवन/ तैयो जरैत अछि।

कवि जगदीश प्रसाद मण्डल जी सँ प्रभावित छथि आ से ओ एकटा कविताक माध्यमे कहै छथि: हम छी सेवक मैथिल/ जगदीश बाबूक चेला/ नै हमरा लड़ू खियौलनि/ नै देलथि मिश्रीक ढेला।

मुदा हास्यसँ ओ दूर नै गेल छथि:

झोटा झोटौबलि/ हेतौ नटिनिया/ तोरा संग अही बेर गे।

वसन्तक आगमनसँ मात्र फूल-पात नै आन-आन जीवनसँ सम्बन्धित वौस्तुपर ध्यान जाइ छन्हि हुनकर: गाछ-वृक्षमे नव कनोजरिक संग मोजर फूल िनकलैत अछि/ खेतमे गहुम-खेसारी तिसी-मसुरी तोरीक फूलसँ समुच्चाह बाध गमकैत अछि/ मधुमाछी लगौने सेनुरिया आमक गाछपर छत्ता देखि कऽ लुक्खी डरैत अछि/ अरहुलक फूल चूसि कऽ फुलचोभी चिहुकैत अछि/ कौआ आ कोइलीमे भेल अछि कनाइर।

पानि नै चलबाक गप नै बुझाइ छन्हि हुनका: देहसँ देह केना छुबाइ छै/ किएक नै चलैए हमर छुअल पानि यौ/ कोन जुलुमक सजा हमरा दऽ रहल छी/ किअए बुझै छी हमरा अपमानी यौ।

सुदामा आ कृष्णक दोस्तीकेँ सभ अलग कऽ देलक: दुनू दोसकेँ अलग कऽ देलक लोक/ अप्पन रास्ताक दिवार जकाँ/ हँसैत खेलैत...।

आ ई दशा किए भेल?: - सहलौं सभ किछु सलहेशक संतान रहितो/ जहिया तक चुप रहलौं हम।

आ कहै छथि: कतेक लिखब दलितक बेथा/ सलहेश गामक संदेश।

मुदा की मिथिलाक भाषा संस्कृति ककरो अनकर छी? नै ई तँ हमर छी आ तै पर गर्व करै छथि कवि:

हरक पाछाँ बगुला घुमैए/ हरबाहा जोरसँ बरदकेँ बाबू भैया कहि हँकैए।

देशक विकास आ नेता पर हुनका आक्रोश छन्हि: ऐठामक नेता छै माला-माल/ रोड-सड़ककेँ देखियौ तँ/

कदबा गजार सन छै थाल।

आ जे बड़का-बड़का राष्ट्रीय राजमार्ग (नेशनल हाइवे, एन. एच.) छै से तकर विवरण किछु एना छै: मौतक चौराहा बनल अछि एन. एच भुतहा मोड़।

आ लोकक दशा-दिशापर मुर्दा सेहो चिन्तित अछि: गारल मुर्दा छटपटा रहल अछि/ भितरसँ अंगुरी

अप्पन उठा रहल अछि।

नारीक कर्मनिष्ठ स्वभावपर हिनकर लेखनी खूब चलल छन्हि: ओमहर बिआ जे उखारै छै महिला जन/ कोइ करै छै, सासु-ननदिक निना-बिना/ कोइ गबै छै सोहर-समदौन।

कवि तुकमिलानीमे सेहो ढेर रास गप कहि जाइ छथि, पंजाबमे होइत मजदूरक पलायनक चर्च देखू:

जौं अखार महिनामे बुढ़ बड़द/ पजरामे दरद/ पंजाबमे मरद अछि/ तँ समझू हे गेलहे घर छी।

ओ आह्वान करै छथि: साहित्यक दलिदर कतेक जुलुम करैए हमरापर/ कियो तँ बाजू/ कियो हमरा दिससँ अवाज उठाउ।

आ अधिकार तँ चाहबे करी: अप्पन सोल्हनी बला रसा आब नै सुनब हम/

बर्खा तोड़ि दैए बान्हकेँ आ बना दैए गाम कैँ कोसी आ कमला: लधने छल सतहिया/ ढौसाबेंग किड़ी-मकौड़ी

करै छल सोर/ भुरुकुबा कनी उगल छल चुह-चुहिया।

तँ की कहल जाए ऐ “वर्णित रस” सभकेँ। की कविक वसन्त मात्र फूल-पात देखैए जे मात्र सुगन्ध दैए, आँखिकेँ सुख दैए, मुदा जरल पेटकेँ से नीक लगतै? तँ कविक वर्णित वसन्तक रस ओ फल विहीन सुन्दर फूल नै भऽ सकैए, आ से नहियेे अछि। दलित विमर्श दलित द्वारा, आ ओइ दलित द्वारा जेकर धुआधजा छै सलहेश सन, नै बिसरल अछि अपन संस्कृति, बोली-वाणी, नै बिसरल अछि सोहर-समदौन। आ से छथि उमेश पासवान। आ जे हुनकर वसन्तकेँ देखबाक, एन. एच. क चौराहाकेँ देखबाक दृष्टि फराक अछि तँ हुनकर कविता सेहो फराक अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

पूरक विवेचन

आ तकर सम्बन्ध हुनकर “जीतक झण्डा” कवितामे भेटत जेना:- जरै जाउ/ वतन केर दुश्मन/ आगि सुनगाएल करू।

ई जे दुश्मन अछि सएह फहरबाबइए जीतक झण्डा:- आगि सुनगाएल करू/ जीत केर झंडा फहराएल करू आ “हम युवा” मे सेहो ओ कहै छथि:- आतंकवादक/ गाछ रोपैए कियो/ भारतवासी शेर छी/ शेरकेँ मादमे आबि कऽ/ जगबैए कियो। कारण जे देशक युवा छथि से:- हम छी गोली,/ हम छी बारूद/ हमही खंजर तलवार छी। तखन ऐ गोली लेल पेस्तौल, बारुद लेल आगि के छथि? ओ छथि युवा जे छथि खंजर आ तलवार।

बाढ़िक प्रकोप कविकेँ कहबापर विवश करै छन्हि: केना कऽ ऐबेर खेतक आड़िपर/ जा कऽ कहब/ सेर-बरोबरि/ उखैर सन बीट/ समाठ सन सिस। गबहा संक्रान्तिपर कविकेँ कहऽ पड़ै छन्हि: केना कऽ गुजर चलत/ उपजा कऽ कास-पटेर। ओ कोसीकेँ कहै छथि: कऽ देलिऐ मिथिलाकेँ दू-भागमे/ अहाँ पूबमे सहरसा-सुपौल/ पछिममे मधुबनी-दरभंगा/ बिचमे अगबे बालु आ धूल।

पढ़ल-लिखल दलितक सामान्य दलितक प्रति व्यवहारपर जतेक अम्बेडकर दुखी रहथि ततबे चिन्ता उमेश पासवानकेँ सेहो छन्हि: स्वयं दलित छी/ दलितक दरद जनै छी/ किछु व्यक्तिक किरदानीसँ चकित छी/ दलित भऽ कऽ ओ/ व्यक्ति अपनो समाजकेँ बिसरि गेल/ अप्पन भाषा-भेष छोड़ि कऽ/ दोसरक रंग-ढंगमे ढलि गेल।

आ ई दशा किए भेल?:- सहलौं सभ किछु सलहेशक संतान रहितो/ जहिया तक चुप रहलौं हम।

आ जे बड़का-बड़का राष्ट्रीय राजमार्ग (नेशनल हाइवे, एन. एच.) छै से तकर विवरण किछु एना छै: मौतक चौराहा बनल अछि एन. एच भुतहा मोड़।

जौं अखार महिनामे बुढ़ बड़द/ पजरामे दरद/ पंजाबमे मरद अछि/ तँ समझू हे गेलहे घर छी।

बर्खा तोड़ि दैए बान्हकेँ आ बना दैए गाम केँ कोसी आ कमला: लधने छल सतहिया/ ढौसाबेंग किड़ी-मकौड़ी

४३. रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस

सारांश

महाकाव्य वा गीत प्रबन्ध: महाकाव्यक वर्णन जे ई कतेक सर्गमे हुअए, एकर नायक केहन प्रकृतिक हुअए आ ओ उच्च कुल उत्पन्न हुअए आदि आब बुद्धिविलास मात्र कहल जाएत। जेना गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार लघुकथा, कथा आ उपन्यासमे विभक्त कएल जाइत अछि तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वा बीच-बीचमे नाटकक) पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत।

बीजशब्द: रामलोचन · शरणक · रामचरितमानस · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “रामलोचन शरणक मैथिली रामचरितमानस” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे रामलोचन; शरणक; मैथिली; रामचरितमानस; रामचरित प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

महाकाव्य वा गीत प्रबन्ध: महाकाव्यक वर्णन जे ई कतेक सर्गमे हुअए, एकर नायक केहन प्रकृतिक हुअए आ ओ उच्च कुल उत्पन्न हुअए आदि आब बुद्धिविलास मात्र कहल जाएत। जेना गद्यमे कथा होइत अछि आ विस्तारक अनुसार लघुकथा, कथा आ उपन्यासमे विभक्त कएल जाइत अछि तइ सन्दर्भमे उपन्यास (वा बीच-बीचमे नाटकक) पद्य रूपान्तरण महाकाव्य कहल जाएत। जँ ऋगवैदिक परम्परामे जाइ तँ महाकाव्यकेँ गीत-प्रबन्ध कहल जएबाक चाही।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस: मैथिली साहित्यकेँ पढ़निहारक समक्ष मैथिलीमे रामचरित किंवा रामायण श्री चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण आ श्री लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण - ऐ दू गोट ग्रंथक रूपमे प्राप्त होइत अछि। पाठ्यक्रमक अंतर्गत स्कूल, कॉलेज-विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक पाठ हो किंवा सामान्य आलोचना ग्रंथ आकि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल लेख सभ, ऐ तेसर रामायणक अस्तित्वो धरि नै स्वीकार कएल गेल अछि। एकर संग ईहो बुझि लिअ जे जनमानस समालोचनाशास्त्रक आधारपर राखल विचारकेँ तखने स्वीकार करैत अछि जखन ओ सत्यताक प्रतीक हो। आइयो

मिथिलामे जे अखंड रामायण पाठ होइत अछि से बाल्मीकि रामायणक किंवा तुलसीक रामचरितमानसक। एकर कारणपर हम बहुत दिन धरि विचार करैत रहलहुँ। कैकटा चन्द्र रामायण आ लालदासकृत मिथिला रामायण, रामायण अखंड पाठ केनिहार लोकनिकेँ बँटबो कएलहुँ मुदा सबहक ईएह विचार छल, जे ई दुनू ग्रंथ मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अखंड पाठक सुर जे तुलसीक मानसमे अछि से दोसर भाषाक रहला उत्तरो संगीतमय अछि। शंकरदेव अपन मातृभाषा असमियाक बदला मैथिली भाषाक प्रयोग संगीतमय भाषा होयबाक द्वारे कएलन्हि तइ भाषामे संगीतमय रामायणक रचना जे अखण्ड पाठमे प्रयोग भऽ सकए, केर निर्माण संभव नै भऽ सकल अछि, से हमर मोन मानबाक हेतु तैयार नै छल, श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानस एकर प्रमाण अछि। अपन समीक्षक लोकनि ऐ मोतीकेँ चिन्हबामे सफल किए नै भऽ सकलाह, एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किए नै कएल जाइत अछि। स्व. हरिमोहन झाक कोनो पोथी मैथिली अकादमी द्वारा हुनका जिबैत प्रकाशित नै भेल आ साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो हुनका मृत्योपरांत देल गेलन्हि। आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आ हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो। जखन हम ऐ महाकाव्यक फोटोकॉपी पूर्वांचल मिथिलाक रामायण- अखंड- पाठक संस्थाकेँ देलहुँ, तँ ओ लोकनि एकरा देख कऽ आश्चर्यचकित रहि गेलाह आ अगिला साल ऐ रामायणक अखंड पाठक निर्णय कएलन्हि। एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाए, किएक तँ ई महाकाव्य तँ विफल भैये नै सकैत अछि। आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्येवस्थासँ सुनैत रही, मुदा ऐ पोथीक नै। मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायनपर आबि किए खतम भऽ जाइत अछि। आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ई एकटा तथ्य अछि आ से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नै अछि। अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि- मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद् वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। आँगाँ ओ लिखैत छथि-प्राध्यापकस्य श्री सुरेन्द्रझा 'सुमन' तथा सम्पादनविभागस्थ पण्डित श्री शिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज्ज्ञोऽस्मि। से सभकेँ ई देखल गुनल सेहो छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक गेयता: आचार्यजीक सुन्दरकाण्डक प्रारंभ देखू आ एकर गेयताक तुलना चन्दा झाक रामायण आ लालदासक रामयणसँ करू: -

जामवंत केर वचन सोहाओल। सुनि हनुमंत हृदय अति भाओल॥1॥ ता धारि बाट देखब सहि सूले। खा कय बंधु कंद फल मूले॥2॥

जाधरि आबी सीतहिँ देखी। होयत काज मन हरख विसेखी॥3॥ ई कहि सबहिँ झुकाकय माथे। चलल हरषि हिय धय रघुनाथे॥4॥

सिंधु तीर एक सुंदर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर॥5॥ पुनु पुनि रघुवीरहिँ उर धारी। फनला पवनतनय बल भारी॥6॥ जहि गिरि चरन देथि हनुमंते। से चल जाय पताल तुरंते॥7॥ सर अमोघ रघुपति केर जहिना। चलला हनूमान झट तहिना॥8॥ जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। कह मैनाक हौ श्रम भारी॥9॥

तुलसी अकबरक समकालीन छलाह आ हुनकर भाषा आ अखुनका भाषामे किछु अंतर आबि गेल अछि, मुदा तुलसीक गेयता ओहिनाक ओहिना अछि। आचार्यजी तुलसीक गेयता उठओलन्हि अछि, आ दुरूहता खतम कऽ देने छथि। सभ काण्डक शुरूमे देल संस्कृत पद्य ओ तुलसीक मानससँ लेलन्हि अछि। आचार्यजीक ई मैथिली रामचरितमानस तुलसीक मानसक रूपांतर तँ अछि मुदा ई मैथिलीक मूल महाकाव्यक रूपमे परिगणित होयबाक अधिकारी अछि जेना कंबनक तमिल रामायण आ तुलसीक मानस अपन-अपन भाषामे परिगणित कएल जा रहल अछि। कंबन बाल्मीकि रामायणक रूपांतर तमिलमे कऽ रहल छलाह तखन ओ बाल्मीकि रामायणक विषयमे कहलन्हि जे- ई रामायण एकटा दूधक समुद्र अछि आ हम छी एकटा बिलाड़ि जे मनसूबा बना रहल अछि जे ऐ सभटा दूधकेँ एक्के बेरमे पीबि जाइ। ओना ईहो सत्य जे कंबन कहियो (आचार्यजी सेहो एहिना कएलन्हि) रामायण केँ अपन मौलिक कृति नै कहलन्हि वरन बाल्मीकिक कृतिक रूपांतरे कहलन्हि, जखन कि ओ अपन कृतिमे रामकेँ भगवान बना देलन्हि। बाल्मीकि रामकेँ मर्यादा पुरुष मानैत छलाह। बाल्मीकि सुग्रीवक विवाह बालीक पत्नीसँ बालीक मरबाक पश्चात होयबाक वर्णन करैत छथि मुदा कंबन बालीक पत्नीक आजीवन वैधव्यक वर्णन करैत छथि। आचार्यजीकेँ ई करबाक आवश्यकता नै पड़लन्हि किएक तँ लोकक कंठमे तुलसीक मानस बसि गेल छल, आ हुनका एकर गेयताक निर्वाह मात्र करबाक छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस आ एकर नारी आ शूद्र-वन्यजाति विरोध प्रदर्शन: आब मानसक एकटा विवादास्पद पद्यक चर्चा करी। अर्थक अनर्थ कोना होइत अछि से देखू। आचार्यजी सुन्दरकाण्डक अंतमे लिखैत छथि जखन सिंधु

(समुद्र) रामकेँ लंका जयबाक रस्ता नहि दैत छथि तखन राम कहैत छथि, लछुमन बान सरासन आनू। सोखब बारिधि बिसिख कृसानू॥ 1॥

तखन सिंधु कर जोरि बजैत छथि- ढोल गमार सुद्र पसु नारी। सब थिक ताड़न केर अधिकारी॥

एकर अर्थ ई जे सभ -ढोल गमार सुद्र पसु नारी- ई सभ शिक्षा किंवा सबक देबा योग्य अछि, गमार सुद्र आ नारीमे शिक्षाक अभाव अछि तेँ आ पसुमे मनुष्यक अपेक्षा बुद्धि नै छैक तेँ, ढोलक प्रयोग बिना शिक्षाक करब तँ संगीत नै ध्वनि भऽ जाएत। फेर समुद्र ओइ स्थितिमे खलनायक बनि रहल छल आ ओकर वक्तव्य कविक आकि रचनाकारक वक्तव्य नै भऽ सकैत अछि। रचनाकारक रचनामे नीक अधलाह सभ पात्र रहैत छथि, आ ओइ पात्रक मुँहसँ नीक आ अधलाह दुनू गप निकलत। रचनाकारक सफलता ऐपर निर्भर करैत अछि, जे ओ अपनाकेँ अपन पात्रसँ फराक कऽ पबैत अछि आकि नै। मुदा तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि। जखन भारतमे सामन्तवादी सरकार छल तखन हुनकर शूद्र आ गएर द्विज जातिपर कएल टिप्पणी अनावश्यक बुझि पड़ैए। मिथिलाक स्मृतिकार लोकनि यएह परम्परा बादोमे रखलन्हि आ आश्चर्य तँ तखन होइए जखन ऐ तरहक गएर जरूरी टिप्पणी अंग्रेजी शासनकालमे प्रणीत संस्कृत ग्रन्थ सभमे मैथिल लोकनि द्वारा कएल देखै छी, ओइ अंग्रेजी शासनमे मे ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मण सभकेँ ब्लैक इण्डियन कहै छलाह।

तुलसीक प्रासंगिकता वा कट्टरता नै वरण मात्र ओकर दुरूहताकेँ आचार्य खतम कएने छथि। उपरोक्त विवादास्पद पदक अतिरिक्त आनोठाम ई जातिवादिता देखबामे अबैत अछि।

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १२ क बादक तेसर पद देखू: -

करय बिचार कुबुद्धि कुजाती।

हैत अकाज कोन बिधि राती॥३॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा ५९ क बादक पहिल पद देखू: -

कोल किरात सुता बन जोगे।

विधि रचलनि बंचित सुख भोगे॥१॥

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १६१ क बादक चारिम पद देखू: -

विधियो सकथि न तिय हिय जानी।

सकल कपट अघ अबगुन खानी॥४॥ (स्त्रीक ह्रदैक गति विधातो नै बुझि सकै छथि, ई कपट, पाप आ अवगुणसँ उगडुम अछि!!)

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १९३ क बादक तेसर पद देखू: -

लोकवेद सबतरि जे नीचे।

छुबि जसु छाह लैछ जल सीचँै॥३॥

तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि (कम्बन वाल्मीकिक अनुवाद करैत काल बहुत ठाम नव युगक अनुरूक अपनाकेँ फराक करैत छथि) आ तेँ मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा २५० क बादक तेसर पदमे वन्यजातिक मुँहसँ कहबै छथि: -

यैह हमर अछि बुझु बड़ सेबे।

बासन बसन चोराय न लेबे॥३॥

मैथिली रामचरित मानस बालकाण्डक दोहा ६२ क बादक सातम पद देखू: -

जद्यपि जग दारुण दुख नाना।

सब सौँ कठिन जाति अपमाना॥७॥

मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्रक अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेलाह तँ अकबरकालीन तुलसी आ ओकर छन्दोबद्ध अनुवादक आचार्य रामलोचन शरणकेँ की दोष देल जाए! जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल राम चरित मानसक अछि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक विशेषता: मैथिली रामचरित मानस बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्य़काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड आ उत्तरकाण्डमे विभक्त अछि। वाल्मीकि रामायणक सुनियोजित कथ्यमे किछु हेरफेर कएल गेल अछि। एकर शैली आ चरित्रक अंकन उदात्त अछि। श्रृंगार रसक प्राधान्य नै अछि मुदा राम सीताक सन्दर्भमे वियोग आ संयोग दुनू कालमे एकर प्रयोग भेल अछि। मुख्य अंगी रस अछि शान्ति, ओना ई सभटा रामभक्तिमे समाहित अछि। भक्तिक प्रधानता अछि मुदा ज्ञान आ कर्मक महत्व कम नै कएल गेल अछि, सगुणक प्राधान्य रहितहुँ निर्गुण भक्तिक महत्व कम नै भेल अछि, राम ब्रह्म छथि आ हुनकर निर्गुण आ सगुण दू रूप छन्हि। जीव आ ब्रह्म एकहि अछि। वचनक पालन हुअए वा पितृभक्ति, भ्रातृभक्ति वा नारीक प्रेम वा पतिव्रतक मैथिली रामचरित मानस ऐ सभ आदर्शसँ ओतप्रोत अछि। मैथिली रामचरित मानसमे सभ अलंकार प्रयोगमे अछि मुदा मुख्य रूपेँ रूपक आ उपमा प्रयोगमे अछि। प्रेमाख्यानमे प्रयुक्त दोहा आ चौपाइ आधारित प्रबन्ध पद्धतिक कड़वक विधिक प्रयोगक बादो संस्कृत छन्द सभ प्रयुक्त भेल अछि। मैथिली रामचरित मानसमे विद्यापतिक गीत-विधि, वीरगाथा सभक छप्पय विधि, दोहा, सोरठा, भाट सभक कवित्त-सवैया, नीतिवाक्यक सूक्ति, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी छन्दक प्रयोग भेल अछि। मनुक्खक बहुत रास टोटमाक सेहो वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि। एकर उद्देश्य अछि मोक्ष, लोककल्याण आ रामरायक स्थापना। मुदा ऐमे रामक अतिरिक्त कृष्ण, शिव (सेतुबन्ध कालमे राम द्वारा शिवक पूजा) आ गणेशक स्तुति अछि। प्रकृति आ चरित्र दुनूक चित्रणमे मैथिली रामचरितमानस अद्वितीय अछि। कवि खिस्सा कहि रहल छथि मुदा बीच-बीचमे ई भारद्वाज-याज्ञवल्क्य आ गरुड़ काकभशुण्डीक सम्वादक माध्यमसँ सेहो कहल गेल अछि। सम्वाद शैलीक प्रयोग मैथिली रामचरितमानसमे खूब भेल अछि। लक्ष्मण-परशुराम सम्वाद हुअए वा मंथरा आ कैकेयीक सम्वाद आकि रावण आ अंगदक सम्वाद, सभ ठाम नाटकक सम्वाद शैली सन रोचक पद्य अहाँकेँ भेटत। प्रारम्भक बालकाण्ड आ अन्तक उत्तरकाण्डमे ऐ गीत-प्रबन्धक दूटा ध्रुव दृष्टिमे आएत। उत्तरकाण्डमे गुरु-शिष्यक खराप होइत सम्बन्ध आ ब्राह्मणक वेद बेचबाक आ पतित हेबाक चर्चा भेटैत अछि मुदा उत्तरकाण्डमे रामराज्यक रूपरेसेहो सेहो भेटैत अछि।

मैथिली साहित्यक गीत-प्रबन्ध मध्य मैथिली रामचरितमानसक स्थान: मैथिली वा कोनो भाषामे रामक चरित वाल्मीकि रामायणसँ प्रभावित भेने बिना नै रहि सकैए। आचार्य रामलोचन शरणक तुलसीक मानसक समश्लोकी मैथिली अनुवाद ओइ अर्थें आर विशिष्ट भऽ जाइत अछि जे आचार्य रामलोचनशरण खाँटी मैथिली तत्वक कतौ अवहेलना नै केने छथि आ ई गीत-प्रबन्ध मैथिलीक अखन धरिक आकारमे (आ गुणात्मक रूपेँ सेहो) मैथिलीक सभसँ पैघ गीत-प्रबन्ध (महाकाव्य) अछि।

पूरक विवेचन

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानस: मैथिली साहित्यकैं पढ़निहारक समक्ष मैथिलीमे रामचरित किंवा रामायण श्री चंदा झा कृत मिथिला भाषा रामायण आ श्री लालदासक रमेश्वर चरित मिथिला रामायण - ऐ दू गोट ग्रंथक रूपमे प्राप्त होइत अछि। पाठ्यक्रमक अंतर्गत स्कूल, कॉलेज-विश्वविद्यालयक मैथिली विषयक पाठ हो किंवा सामान्य आलोचना ग्रंथ आकि पत्र-पत्रिकामे छिड़िआयल लेख सभ, ऐ तेसर रामायणक अस्तित्वो धरि नै स्वीकार कएल गेल अछि। एकर संग ईहो बुझि लिअ जे जनमानस समालोचनाशास्त्रक आधारपर राखल विचारकैं तखने स्वीकार करैत अछि जखन ओ सत्यताक प्रतीक हो। आइयो मिथिलामे जे अखंड रामायण पाठ होइत अछि से बाल्मीकि रामायणक किंवा तुलसीक रामचरितमानसक। एकर कारणपर हम बहुत दिन धरि विचार करैत रहलहुँ। कैकटा चन्द्र रामायण आ लालदासकृत मिथिला रामायण, रामायण अखंड पाठ केनिहार लोकनिकैं बँटबो कएलहुँ मुदा सबहक ईएह विचार छल, जे ई दुनू ग्रंथ मैथिली साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि, मुदा अखंड पाठक सुर जे तुलसीक मानसमे अछि से दोसर भाषाक रहला उत्तरो संगीतमय अछि। शंकरदेव अपन मातृभाषा असमियाक बदला मैथिली भाषाक प्रयोग संगीतमय भाषा होयबाक द्वारे कएलन्हि तइ भाषामे संगीतमय रामायणक रचना जे अखण्ड पाठमे प्रयोग भऽ सकए, केर निर्माण संभव नै भऽ सकल अछि, से हमर मोन मानबाक हेतु तैयार नै छल, श्री रामलोचनशरण-कृत यथासम्भव पूर्णभावरक्षित समश्लोकी मैथिली श्रीरामचरितमानस एकर प्रमाण अछि। अपन समीक्षक लोकनि ऐ मोतीकैं चिन्हबामे सफल किए नै भऽ सकलाह, एकर चर्चो तक मैथिलीक उपरोक्त दुनू रामायणक समक्ष किए नै कएल जाइत अछि। स्व. हरिमोहन झाक कोनो पोथी मैथिली अकादमी द्वारा हुनका जिबैत प्रकाशित नै भेल आ साहित्य अकादमी पुरस्कार सेहो हुनका मृत्योपरांत देल गेलन्हि। आचार्य रामलोचन शरण मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक रचयिता छथि आ हमरा विचारे सभसँ संपूर्ण मैथिली रामायणक सेहो। जखन हम ऐ महाकाव्यक फोटोकॉपी पूर्वांचल मिथिलाक रामायण- अखंड- पाठक संस्थाकैं देलहुँ, तँ ओ लोकनि एकरा देख कऽ आश्चर्यचकित रहि गेलाह आ अगिला साल ऐ रामायणक अखंड पाठक निर्णय कएलन्हि। एकरा मैथिलीक समालोचनाशास्त्रक विफलता मानल जाए, किएक तँ ई महाकाव्य तँ विफल भैये नै सकैत अछि। आचार्यक मनोहरपोथीक चर्चा हम अपन बाल्येवस्थासँ सुनैत रही, मुदा ऐ पोथीक नै। मैथिलीक सभसँ पैघ महाकाव्यक चर्चा मात्र सीतायनपर आबि किए खतम भऽ जाइत अछि। आचार्य श्री रामलोचनशरणक मैथिली श्री रामचरितमानस सभसँ पैघ महाकाव्य अछि ई एकटा तथ्य अछि आ से समालोचनाकार किंवा मैथिली भाषाक इतिहासकार लोकनिक कृपाक वशीभूत नै अछि। अपन ग्रंथक किञ्चित् पूर्ववृत्तम् मे आचार्य लिखैत छथि- मिथिलाभाषायाः मूर्द्धन्या लेखकाः श्रीहरिमोहनझामहोदया निशम्यैतद् वृत्तं परमाह्लादं गता भूयो भूयश्च मामुत्साहितवन्तः। आँगाँ ओ लिखैत छथि-प्राध्यापकस्य श्री सुरेन्द्रझा ‘सुमन’ तथा सम्पादनविभागस्थ पण्डित श्री शिवशंकरझा-महोदयस्य हृदयेनाहं कृतज़्ज्ञोऽस्मि। से सभकैं ई देखल गुनल सेहो छलन्हि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक गेयता: आचार्यजीक सुन्दरकाण्डक प्रारंभ देखू आ एकर गेयताक तुलना चन्दा झाक रामायण आ लालदासक रामयणसँ करू: -

सिंधु तीर एक सुंदर भूधर। कौतुक कूदि चढ़ल तेहि ऊपर॥5॥ पुनु पुनि रघुवीरहिँ उर धारी। फनला पवनतनय बल भारी॥6॥ जहि गिरि चरन देथि हनुमंते। से चल जाय पताल तुरंते॥7॥ सर अमोघ रघुपति केर जहिना। चलला हनूमान झट तहिना॥8॥ जलनिधि रघुपति दूत बिचारी। कह मैनाक हौ श्रम भारी॥9॥

तुलसी अकबरक समकालीन छलाह आ हुनकर भाषा आ अखुनका भाषामे किछु अंतर आबि गेल अछि, मुदा तुलसीक गेयता ओहिनाक ओहिना अछि। आचार्यजी तुलसीक गेयता उठओलन्हि अछि, आ दुरूहता खतम कऽ देने छथि। सभ काण्डक शुरूमे देल संस्कृत पद्य ओ तुलसीक मानससँ लेलन्हि अछि। आचार्यजीक ई मैथिली रामचरितमानस तुलसीक मानसक रूपांतर तँ अछि मुदा ई मैथिलीक मूल महाकाव्यक रूपमे परिगणित होयबाक अधिकारी अछि जेना कंबनक तमिल रामायण आ तुलसीक मानस अपन-अपन भाषामे परिगणित कएल जा रहल अछि। कंबन बाल्मीकि रामायणक रूपांतर तमिलमे कऽ रहल छलाह तखन ओ बाल्मीकि रामायणक विषयमे कहलन्हि जे- ई रामायण एकटा दूधक समुद्र अछि आ हम छी एकटा बिलाड़ि जे मनसूबा बना रहल अछि जे ऐ सभटा दूधकैं एक्के बेरमे पीबि जाइ। ओना ईहो सत्य जे कंबन कहियो (आचार्यजी सेहो एहिना कएलन्हि) रामायण कैं अपन मौलिक कृति नै कहलन्हि वरन बाल्मीकिक कृतिक रूपांतरे कहलन्हि, जखन कि ओ अपन कृतिमे रामकैं भगवान बना देलन्हि। बाल्मीकि रामकैं मर्यादा पुरुष मानैत छलाह। बाल्मीकि सुग्रीवक विवाह बालीक पत्नीसँ बालीक मरबाक पश्चात होयबाक वर्णन करैत छथि मुदा कंबन बालीक पत्नीक आजीवन वैधव्यक वर्णन करैत छथि। आचार्यजीकैं ई करबाक आवश्यकता नै पड़लन्हि किएक तँ लोकक कंठमे तुलसीक मानस बसि गेल छल, आ हुनका एकर गेयताक निर्वाह मात्र करबाक छलन्हि।

तखन सिंधु कर जोरि बजैत छथि- ढोल गमार सुद्र पसु नारी। सब थिक ताड़न केर अधिकारी॥

एकर अर्थ ई जे सभ -ढोल गमार सुद्र पसु नारी- ई सभ शिक्षा किंवा सबक देबा योग्य अछि, गमार सुद्र आ नारीमे शिक्षाक अभाव अछि तेँ आ पसुमे मनुष्यक अपेक्षा बुद्धि नै छैक तेँ, ढोलक प्रयोग बिना शिक्षाक करब तँ संगीत नै ध्वनि भऽ जाएत। फेर समुद्र ओइ स्थितिमे खलनायक बनि रहल छल आ ओकर वक्तव्य कविक आकि रचनाकारक वक्तव्य नै भऽ सकैत अछि। रचनाकारक रचनामे नीक अधलाह सभ पात्र रहैत छथि, आ ओइ पात्रक मुँहसँ नीक आ अधलाह दुनू गप निकलत। रचनाकारक सफलता ऐपर निर्भर करैत अछि, जे ओ अपनाकेँ अपन पात्रसँ फराक कऽ पबैत अछि आकि नै। मुदा तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि। जखन भारतमे सामन्तवादी सरकार छल तखन हुनकर शूद्र आ गएर द्विज जातिपर कएल टिप्पणी अनावश्यक बुझि पड़ैए। मिथिलाक स्मृतिकार लोकनि यएह परम्परा बादोमे रखलन्हि आ आश्चर्य तँ तखन होइए जखन ऐ तरहक गएर जरूरी टिप्पणी अंग्रेजी शासनकालमे प्रणीत संस्कृत ग्रन्थ सभमे मैथिल लोकनि द्वारा कएल देखै छी, ओइ अंग्रेजी शासनमे मे ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मण सभकेँ ब्लैक इण्डियन कहै छलाह।

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १२ क बादक तेसर पद देखू: -

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा ५९ क बादक पहिल पद देखू: -

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १६१ क बादक चारिम पद देखू: -

मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा १९३ क बादक तेसर पद देखू: -

तुलसी आ तेँ आचार्य रामलोचन शरण सेहो अपनाकेँ पात्रसँ बहुत ठाम फराक नै कऽ पबै छथि (कम्बन वाल्मीकिक अनुवाद करैत काल बहुत ठाम नव युगक अनुरूक अपनाकेँ फराक करैत छथि) आ तेँ मैथिली रामचरित मानस अयोध्याकाण्डक दोहा २५० क बादक तेसर पदमे वन्यजातिक मुँहसँ कहबै छथि: -

यैह हमर अछि बुझु बड़ सेबे।

मैथिली रामचरित मानस बालकाण्डक दोहा ६२ क बादक सातम पद देखू: -

मुदा जखन बीसम शताब्दीमे साहित्य अकादेमीक पोथीमे लोरिकपर मैथिली आलेखमे एकटा सज्जन लिखै छथि जे ब्राह्मणपर कएल शूद्रक अत्याचारक विरुद्ध लोरिक ठाढ़ भेलाह तँ अकबरकालीन तुलसी आ ओकर छन्दोबद्ध अनुवादक आचार्य रामलोचन शरणकेँ की दोष देल जाए! जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रक कथा कहैत-कहैत स्त्री आ शूद्रक पाछाँ अकारण क्रूर भऽ जाइ छथि सएह हाल राम चरित मानसक अछि।

आचार्य रामलोचन शरणक गीत-प्रबन्ध मैथिली रामचरित मानसक विशेषता: मैथिली रामचरित मानस बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड, अरण्य़काण्ड, किष्किन्धाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड आ उत्तरकाण्डमे विभक्त अछि। वाल्मीकि रामायणक सुनियोजित कथ्यमे किछु हेरफेर कएल गेल अछि। एकर शैली आ चरित्रक अंकन उदात्त अछि। श्रृंगार रसक प्राधान्य नै अछि मुदा राम सीताक सन्दर्भमे वियोग आ संयोग दुनू कालमे एकर प्रयोग भेल अछि। मुख्य अंगी रस अछि शान्ति, ओना ई सभटा रामभक्तिमे समाहित अछि। भक्तिक प्रधानता अछि मुदा ज्ञान आ कर्मक महत्व कम नै कएल गेल अछि, सगुणक प्राधान्य रहितहुँ निर्गुण भक्तिक महत्व कम नै भेल अछि, राम ब्रह्म छथि आ हुनकर निर्गुण आ सगुण दू रूप छन्हि। जीव आ ब्रह्म एकहि अछि। वचनक पालन हुअए वा पितृभक्ति, भ्रातृभक्ति वा नारीक प्रेम वा पतिव्रतक मैथिली रामचरित मानस ऐ सभ आदर्शसँ ओतप्रोत अछि। मैथिली रामचरित मानसमे सभ अलंकार प्रयोगमे अछि मुदा मुख्य रूपेँ रूपक आ उपमा प्रयोगमे अछि। प्रेमाख्यानमे प्रयुक्त दोहा आ चौपाइ आधारित प्रबन्ध पद्धतिक कड़वक विधिक प्रयोगक बादो संस्कृत छन्द सभ प्रयुक्त भेल अछि। मैथिली रामचरित मानसमे विद्यापतिक गीत-विधि, वीरगाथा सभक छप्पय विधि, दोहा, सोरठा, भाट सभक कवित्त-सवैया, नीतिवाक्यक सूक्ति, घनाक्षरी, तोमर, त्रिभंगी छन्दक प्रयोग भेल अछि। मनुक्खक बहुत रास टोटमाक सेहो वर्णन यत्र-तत्र भेल अछि। एकर उद्देश्य अछि मोक्ष, लोककल्याण आ रामरायक स्थापना। मुदा ऐमे रामक अतिरिक्त कृष्ण, शिव (सेतुबन्ध कालमे राम द्वारा शिवक पूजा) आ गणेशक स्तुति अछि। प्रकृति आ चरित्र दुनूक चित्रणमे मैथिली रामचरितमानस अद्वितीय अछि। कवि खिस्सा कहि रहल छथि मुदा बीच-बीचमे ई भारद्वाज-याज्ञवल्क्य आ गरुड़ काकभशुण्डीक सम्वादक माध्यमसँ सेहो कहल गेल अछि। सम्वाद शैलीक प्रयोग मैथिली रामचरितमानसमे खूब भेल अछि। लक्ष्मण-परशुराम सम्वाद हुअए वा मंथरा आ कैकेयीक सम्वाद आकि रावण आ अंगदक सम्वाद, सभ ठाम नाटकक सम्वाद शैली सन रोचक

पद्य अहाँकेँ भेटत। प्रारम्भक बालकाण्ड आ अन्तक उत्तरकाण्डमे ऐ गीत-प्रबन्धक दूटा ध्रुव दृष्टिमे आएत। उत्तरकाण्डमे गुरु-शिष्यक खराप होइत सम्बन्ध आ ब्राह्मणक वेद बेचबाक आ पतित हेबाक चर्चा भेटैत अछि मुदा उत्तरकाण्डमे रामराज्यक रूपरेसेहो सेहो भेटैत अछि।

४४. बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन

सारांश

बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि। ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ।

बीजशब्द: बूच · जीक · कविताक · बहुविध · आलोचनात्मक · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “बूच जीक कविताक बहुविध आलोचनात्मक अध्ययन” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे बूच; कविताक; बहुविध; आलोचनात्मक; अध्ययन प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

जेठी करेह:

बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि। ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ। आब एतए एकरा संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ अछि तँ आशा करू जे आन बेरमे ई नै उधिआइत होएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजकेँ ई अपनामे समा लैत अछि। ओकर रेतक बढ़लासँ कविक धैर्य चहकै छन्हि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर ऐतिहासिक विश्लेषणपर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अर्थ देत। खतराक बिन्दु जे कविक समएमे ऊँचगर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा धारक मवादक चलते ओतेक ऊँच नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल कविक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ विखण्डनवाद दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बर्खा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला इंजीनियरक करेहकेँ बान्हबाक प्रयासक बुरबकीक रूप लेब आ कविक करेह द्वारा बान्ह तोड़ि प्रलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक होएबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे ६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे धारकेँ रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-की फाएदा ने करत। ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतए खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, ओ धारक खतराक निशानक ऊँच होमयबला गप बुझबे नै करत आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। मुदा विखण्डनवाद तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, धार सेहो परिवर्तित रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत। उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत।

स्वागत गान:

स्वागत गानक सामान्य पाठ- कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा मिथिलाक उपटैत धरतीक करुण क्रन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन होएत। भ्रमर पियासल, फलक गाछ मौलायल तखन ई समारोही गोष्ठीसँ की होएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी लिअए पड़त। कविताक नीचाँमे सूचना अछि- विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, ग्राम-बैद्यनाथपुर, प्रखंड-रोसड़ा, जिला-समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड मिथिलासँ पड़ाइनक प्रारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक प्रतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक प्रति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिल आधारित औद्योगीकरण निपत्ता छल आ शिक्षाक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे

समारोही गोष्ठीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। ध्वनि सिद्धान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहैत छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित होएब सम्भव नै अछि। स्वागत गानक ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि कहि कवि अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा उदयनक गाम करियनक कवि बूच जी दार्शनिक नै, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि- हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि, आ मात्र ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै? आगाँ ओ कहै छथि- काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी, एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे खोर नाठी। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। मार्क्सवादी दृटिकोणसँ देखलापर लागत जे कविक काजकेँ ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक स्वागत आ ऐश्वर्य गान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल।

बेटी बनलि पहाड़:

बेटी बनलि पहाड़ कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेंटक घैल बनल छथि। बेटी अएलीह तँ उड़नखटोला चढ़ि कऽ मुदा हरि गरुड़ त्यागि कार माँगि रहल छथिन्ह। पैंतीस ग्राम सोना पुड़ेलन्हि मुदा आब बियाह रातिक खर्चा चाही आ बरियाती दस गाही अओताह; सौंसे बल्ब जड़ि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरथ एको पाइ नै मँगलन्हि, रामो किछु नै बजलाह। इतिहास तँ कृष्णक लव मैरेजक छल मुदा तैसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकड़ने अछि आ घरे-घर बूचड़खाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। बेटी बनलि पहाड़ कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ: ई कविता काटर प्रथाक विरोधक कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे (अखनो) काटर प्रथाक कारण उड़नखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटी बाप अपस्यांत छथि।

करूण गीत:

करूण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक करुण गीत सुनि श्रवित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक सौर्य शिखरपर शान्ति सागरक सुलभ जीत! जहिना किछु आलिंगन करै छी अनेको वक्रशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आ चलि गेलि!) प्रेमक मधु तीत भऽ गेल। रजनीक रुदन विगलित प्रभात! करूण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ: कुसुमित काननक श्रवित लोचन द्वारा देखब, श्रृंगार सेज पर ज्वलित मसानक रौद्र रूपक आएब आ सुवर्णक शौर्य शिखर पर - शांति सागरक सुलभ जीत कँे देखू। भाषाक अनभुआर पक्षकेँ कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि।

गामे मोन पड़ैए:

गामे मोन पड़ैए कबिताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बथुओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकत्तामे गामे मोन पड़ि रहल अछि। करेहक पानि पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पति पत्नीकेँ ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि! नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़ैए कविताक पाठ: प्रवासक कविता अछि ई। तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला प्रवासमे छथि। अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि।

सोन दाइ:

सोन दाइ कविताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा से किएक? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़ गलि गेल छथि। तैयो किए विश्वास छन्हि सोन दाइकेँ? ऐ सभक उत्तर आगाँ जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ प्रवास काटि रहल छथि। आ जौँ-जौँ उमेर बढ़तै कहिया धरि सोन दाइक घरमे वास हेतै। नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कविताक पाठ: नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त होए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल प्रवास काटि रहल छथि?

अकाल:

अकाल कविताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कवि नाङरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करैत छथि। अनावृष्टिसँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ैत गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर विभीषणक घर सेहो नै बाँचत कारण ओकर मुंडमाल डोरी-डोरीसँ बान्हल अछि। माए भरि-भरि पाँज कऽ धरती पकड़ि रहल छथि। दशानन अपन बीसो आँखि ओनारि माथ हिला रहल छथि। औचित्य सिद्धान्त: क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। अकाल कविताक औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि मिथिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाँचत।

तोहर ठोर:

तोहर ठोर कविताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर। सुन्नरि द्वारा बातक चून लगाएब आ कऽथक सन लाल बुन्न कपोल सजाएब। मुदा प्रेमक पुंगी कतए? भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, बिनु सुन्नरि व्याकुल साँझ जेकाँ। बधिक जे बनत सुन्नरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुधा कम्मे अछि, तहिना सुन्नरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी। सकरी मिल महान बनत जे हम विश्वकर्मासँ विज्ञान सीखब। आ ओइ मिलसँ बहार होएत माधुर्य। कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो धान आ चिष्टान्न बनि सुन्नरि हम अहाँक लग आएब। मुदबा एतबा बादो शब्दसँ उद्देश्य कहाँ प्रगट भेल। अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। बातक चून लगाएब अप्रस्तुत, कऽथक सन लाल बुन्न कपोल, पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर, भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर ई सभ उपमा कवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक? मे सादृश्य-विरोध अछि। अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण) । कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: रस सिद्धान्त: भरत: - नाटकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। भट्ट लोलट: - स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। शौनक: - शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि

आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि। बार्थेज संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। लगौलह बातक पाथर चून। आ सजौलह कऽथ कपोलक खून। विभाव अछि आ ऐ कारणसँ देखि कऽ लहरल हमर करेज अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। स्फोट सिद्धांत: भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर, शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण होएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जेकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। स्फोट सिद्धांतक आधारपर तोहर ठोर कविताक पाठ: आब उदयनक करियनक धरतीपर रहबाक अछैतो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तकेँ नै मानब कविक कविताकेँ नै अरघै छन्हि। मने मे रहल मनक सब बात कहि ओ अलभ्य चित चोर सँ सुन्नरिक ठोरक तुलना कऽ दै छथि।

उदयनक गामक कवि बूच कहै छथि भऽ रहल वर्ण - वर्ण निःशेष, शब्द सँ प्रगटल नहि उद्ग्रेश्य; एतए शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण कवि द्वारा तोहर ठोर आ ऐ संग्रहक आन कविता सभमे जाइ तरहेँ भेल अछि, से संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा मैथिली मे (यहूदी मेनुहिनक शब्दमे) विद्यापतिक बादक सभसँ लयात्मक कविक रूपमे बूचजी केँ प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली कविताकेँ ऐ रूपमे फेरसँ परिभाषित करैत अछि।

४५. विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली

सारांश
महाभारतमे उल्लेख अछि, जे इन्द्र-ध्वजा गाढ़ नील रंगक होइत छल। रामक ध्वजा लाल-गेरुआ रंगक छलन्हि आ' एहि पर कुलदेवता सूर्यक चित्र अंकित छल। महाभारतमे अर्जुनक ध्वजा पर वानरराजक चित्र छल।

बीजशब्द: विदेह · लोगो · विद्यापति · उगना · मिथिला · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विदेह: लोगो:: विद्यापति: उगना: मिथिला: मैथिली” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विदेह; लोगो; विद्यापति; उगना; मिथिला प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

I.

महाभारतमे उल्लेख अछि, जे इन्द्र-ध्वजा गाढ़ नील रंगक होइत छल। रामक ध्वजा लाल-गेरुआ रंगक छलन्हि आ' एहि पर कुलदेवता सूर्यक चित्र अंकित छल। महाभारतमे अर्जुनक ध्वजा पर वानरराजक चित्र छल। नकुलक ध्वजा पर सरभ पशुक चित्र छल। अथर्ववेदक अनुसार सरभ पशु दू माथक, दूट सुन्दर पंख बला, एकटा नमगर पुछी बला आ' सिंहक समान आठ नोकगर पैरक आँगुर युक्त होइत छल। अभिमन्युक द्धजा पर सारंग पक्षी छल। दुर्योधनक ध्वजा सर्पध्वजा छल। द्रोणक ध्वजा पर मृगछाल आ' कमण्डल छल। कर्णक ध्वजा पर हाथीक पैरक जिंजीर छल, आ' सूर्य सेहो छलाह।

भगवान विष्णुक ध्वजा पर गरुड़ अंकित अछि। शिवक ध्वजा पर नंदी वृषभ अंकित अछि।

दुर्गा मण्डपमे शस्त्र, ट्क्का, पटह, मृदंग, कांस्यताल (बाँसुरीकेँ छोड़ि), वाद्य ध्वज, कवच आ' धनुष केर पूजन होइत अछि। एहिमे सर्वप्रथम खड्गक पूजा होयबाक चाही। तकरा बाद चुरिका, कट्टारक, धनुष, कुन्त आ' कवच केर पूजा आ' फेर चामर, छत्र, ध्वज, पताका, दुन्दुभि, शंख, सिंहासन आ' अश्व केर पूजा होइत अछि। हमरा हिसाबे मिथिलाक कोनो झंडा बिना एहि सभक सम्मिलनक संपूर्ण नहि होयत।

I.

इन्द्रस्येव शची समुज्जवलगुणा गौरीव गौरीपतेः कामस्येव रतिः स्वभावमधुरा सीतेव रामस्य या। विष्णोः श्रीरिव पद्मसिंहनृपतेरेषा परा प्रेयसी विश्वख्यातनया द्विजेन्द्रतनया जागर्ति भूमण्डले॥9॥

उपर्युक्त पद्य विद्यापति कृत शैवसर्वस्वसारक प्रारम्भक नवम श्लोक छी। एकर अर्थ अछि- उत्कृष्ट गुणवती, मधुर स्वभाववाली, ब्राह्मण-वंशजा, नीति-कौशलमे विश्वविख्यातओ' महारानी विश्वासदेवी सम्प्रति संसारमे सुशोभित छथि, जे पृथ्वी-पति पद्मसिंहकेँ तहिना प्रिय छलीह जहिना इन्द्रकेँ शची, शिवकेँ गौरी, कामकेँ रति, रामकेँ सीता ओ' विष्णुकेँ लक्ष्मी॥9॥ II.

मधुबनी जिला मुख्यालयसँ दक्षिण पण्डौल रेलवे-स्टेशनक निकट भवानीपुर ग्राम बसल अछि। एहि गामक निकट छह फीट नीचाँ जमीनमे एकटा शिव-लिंग अछि, जे उग्रनाथ महादेवक नामसँ प्रसिद्ध अछि। एहन विश्वास लोकमे छैक जे पन्द्रहम शाब्दीक आरंभमे हुनकर सहचर उगना, जखन महाकवि प्यासे अप्स्याँत छलाह, हुनका अपन जटासँ गंगाजल निकालि कय पियओने रहथि। एहि पर कविकेँ शंका भेलन्हि, आ' ओ' कविसँ असली परिचय पुछलन्हि। तकर बाद एहि स्थान पर शिव हुनका अपन असली रूपक दर्शन देलन्हि।

एहि कथा पर विश्वास तखने भ' सकैत अछि, जखन तर्क आ' विज्ञानक संग श्रद्धाक मिश्रण होय। शंकराचार्यक विष्यमे कहल गेल जे ओ' अपन कमंडलमे धार भरि लेलन्हि। भेल ई जे बाढ़िमे बेचेमे पहाड़ रहलाक कारण एक दिशि बाढ़ि अबैत छल आ' एक दिशि दाही। बीचक गुफाकेँ शंकर अपन शिष्यक सहयोगसँ तोड़ि जखन कमण्डल लेने बहरओलाह तँ लोक देखलक जे दोसर कात पानि आबि रहल अछि। सभ शंकराचार्यक स्तुति कएलन्हि, जे अहाँ अपन कम्मंडलमे धार आनि हमरा सभकेँ दाही सँ आ' दोसर कातक लोककेँ बाढ़िसँ मुक्त कराओल। अहाँ कमण्डलमे पानि आ' धार अनलहुँ। बादमे अवसरवादी लोकनि एकरा क्मत्कारसँ जोड़ि देलक। आशा अछि जे अहाँ सेहो अपन लेखमे उगनाक कथाक तर्क आ' श्रद्धासँ विवेचना करब।

बीस मार्चकेँ १४ दिनुका मिथिला क्षेत्रक गृही परिक्रमा, आइ काल्हि जनकपुरक, दू टा डालाक संग- १. मिथिला बिहारी जी आ किशोरीजी आ आर मारिते रास ढेर मन्दिरक/ भक्तक डाला सभक संग कुआ रामपुर दऽ कऽ जनकपुरमे प्रवेश करैत छथि। कतेक भक्त तँ अपन पशुक संगे परिक्रमा करैत छथि। ई परिक्रमा कचुरी मठ, धनुषासँ शुरू होइत अछि आ अमावस्याक रातिमे पहिल विश्राम हनुमान नगर आ चतुर्दशी दिन पन्द्रहम विश्राम जनकपुरमे होइत अछि। २१ मार्चकेँ फागुन परिक्रमा दिन ई यात्रा जनकपुर नगरपालिकाक परिक्रमाक अंतरगृह परिक्रमा (लगभग 8 किलोमीटर) क संग होइत अछि। २२ मार्चकेँ जनकपुर आ आसपासमे होली मनाओल जाइत अछि।

जनकपुर मध्य परिक्रमाक १५ स्थल आऽ ओतुक्का मुख्य देवता १. हनुमाननगर- हनुमानजी २. कल्याणेश्वर- शिवलिंग ३. गिरिजा-स्थान- शक्ति ४. मटिहानी- विष्णु मन्दिर ५. जालेश्वर- शिवलिंग ६. मनाई- माण्डव ऋषि ७. श्रुव कुण्ड- ध्रुव मन्दिर ८. कंचन वन- कोनो मन्दिर नञि मात्र मनोरम दृश्य ९. पर्वत- पाँच टा पर्वत १०. धनुषा- शिवधनुषक टुकड़ी ११. सतोखड़ी- सप्तर्षिक सात टा कुण्ड १२. हरुषाहा- विमलागंगा १३. करुणा- कोनो मन्दिर नहि मात्र मनोरम दृश्य १४. बिसौल- विश्वामित्र मन्दिर १५. जनकपुर। अन्तमे फेर जनकपुरमे खतम भऽ जाइत अछि। भक्त सभ बारहबीघा मैदान आ धर्मशाला सभमे ठहरैत छथि।

लघु परिक्रमा आठ कि. मी., मध्य परिक्रमा 40 कोसक (128 कि. मी.) आ वृहत परिक्रमा 268 कि. मी. होइत अछि।

१. उग्रतारा स्थान- मण्डन मिश्रक कुलदेवी/ गोसाउनी महिष मर्दिनी भगवती, महिष्माती। १४म शताब्दीमे राजा शिव सिंहक ज्येष्ठ रानी पद्मावती एतए एकटा मन्दिर बनबेलन्हि। खण्डवला राजवंश कालमे सेहो एतए मन्दिरक रख-रखाव होइत छल आ राजा आसिन नवरात्रमे एतए पूजा आ रहबाक लेल अबैत रहथि।

तारा भक्त लोकनि दुर्गापूजाक समयमे एतए खूब मात्रामे अबैत छथि!

२. कपिलेश्वर स्थान- मधुबनीसँ पाँच किलोमीटर पश्चिम माधव मन्दिर आ पुरान शिवलिंग, सांख्य दर्शनक जनक कपिल एतए मन्दिरक स्थापना करबओलन्हि। एखुनका मन्दिर दरभंगा महाराज राघव सिंह द्वारा २५० वर्ष पहिने बनबाओल गेल। प्राचीन कालमे समुद्र हिमालय धरि पसरल छल आ फेर जमीन पसरल। जखन बंगालक खाड़ीक निकट गंगासागर तीर्थ लग कपिल सगरक ६०००० पुत्र / सैनिककेँ जरा देलन्हि तखन ओ कपिलेश्वर अएलाह। एखन गंगासागर सेहो समुद्रसँ कनेक हटि कए अछि।

जानकी नवमी- वैशाख शुक्ल नवमी- मानुषी। रामनवमी- चैत्र शुक्ल नवमी। विद्यापतिक मृत्यु तिथि कार्तिक धवल त्रयोदशी-देसिल बयना।

विवाह पंचमी- अगहन शुक्ल पंचमी। शतानन्द पुरहित-राम सीताक विवाह। मरवापर मिथिला चित्रकला आ परिचन, गोसाउन गीत आ नैना जोगिन ओहिना जेना जुगल सरकारक विवाहमे भेल रहए, आइयो।

मिथिला प्राचीन कालमे मैथिलक भूमि विदेहक नामसँ- जकर राजधानी मिथिला रहए- स्थापना मिथी (भविष्य पुराण) द्वारा। दोसर नाम विदेह, मिथिला, तीरभुक्ति, तिरहुत, तपोभूमि, साम्भवी, सुवर्णकानन, मँतिली। मिथिला माहात्म्य (वृहद विष्णु पुराण)- वृहद परिक्रमा- सम्पूर्ण मिथिलाक परिक्रमा एक सालमे। 268 कि. मी. । कौशिकीसँ शुरू भए सिघेश्वर स्थान, ओतएसँ सिमरियाघाट, फेर हिमालयक फुटहिल्स, फेर कौशिकी होइत सिँघेश्वरस्थान। मध्य परिक्रमा- 40 कोस (128 कि. मी) 5 दिनमे, मुदा आइ-काल्हि 15 दिनमे। फाल्गुन शुक्ल पक्षक पहिल तिथिकेँ (अमावस्या) दिन शुरू होइत अछि आ पूर्णिमा दिन खतम होइत अछि। फागुनक परिक्रमा सभसँ बेशी प्रसिद्ध अछि मुदा परिक्रमा कातिक आ बैशाखमे सेहो कएल जा सकैत अछि।

पाणिनी- मिथिला ओ नगरी छी जतए शत्रुक मर्दन कएल जाइत अछि। जनक- जन (विश) सँ व्युत्पत्ति। निमी द्वारा वैजयंती (जनकपुर) आ मिथी द्वारा मिथिला नगरक स्थापना।

शरभ नकुलक झंडापर रहए, मिथिकल जानवर जकरा दू टा माथ, दू टा पाँखि, एकटा नमगर पुच्छी, आ सिँह जकाँ 8 टा नह होइत अछि। जखन भगवन विष्णु नरसिंह अवतार लेलन्हि तखन हुनका प्रसन्न करबाक लेल शिव शरभक रूपमे जन्म लेलन्हि। मिथिला चित्रकलाक पाँच रंग- क्षिति, जल, पावक, गगन, समीरक द्योतक। अंकुश- दू फैंरक बरछा- स्पीयर जाहिसँ हाथीकेँ नियंत्रित करैत छी, गणेश जीक अंकुश मूसकेँ नियंत्रित करैत अछि।

यूनीकोड- 1200 साल पुरान फिगराइन आ 500 साल पुरान पाण्डुलिपि। संयुक्ताक्षर- कोष्ठकक संख्या जे बंगालीमे नहि अछि वा बिल्कुल अलग अछि- कवर्ग (10), खवर्ग (4), गवर्ग (8), घवर्ग (4), ङ वर्ग (4) चवर्ग (6), ज वर्ग (5), झ वर्ग (4) ट वर्ग (3), ठ वर्ग

(2), ड वर्ग (2), ढ वर्ग (3), ण वर्ग (6), त वर्ग (6), थ वर्ग (3), द वर्ग (8), ध वर्ग (3), न वर्ग (6) प वर्ग (8), फ वर्ग (2), ब वर्ग (4), भ वर्ग (3), म वर्ग (11) अंत-संयुक्ताक्षर य वर्ग (2), र वर्ग (2), ल वर्ग (4), व वर्ग (4), श वर्ग (9), ष वर्ग (8), स वर्ग (8), ह वर्ग (8) तीन वर्णक संयुक्ताक्षर- (49) चारि वर्णक संयुक्ताक्षर (1) बिकारी (1), ग्वंग ह्रस्व-दीर्घ (2), अंजी एक टाइप अंशुमन पाण्डे द्वारा वर्णित (5) प्रकार आर।

संस्कृत-अवहठक विद्यापतिक नेपाल लखिमाक संग पलायन- घुरलाक बाद अंतिम रचना दुर्गा भक्ति तरंगिणी ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति झूमर, नचारी, महेशवाणी, जोग उचिती, बटगवनी, परिछनि, कोबर, पराती, बारहमासा, मान, तिरहुत, दृश्यकूट, शिव, भगवती आ गंगा, विष्णु, शक्ति, हर-गौरीक विषयमे गीत लिखलनि|

४६. 'बज्जिका गीत-संगीत': समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा

सारांश
डॉ. रामेश्वर प्रसादक कृतिक मैथिली–बज्जिका समानान्तर अनुशीलन समीक्ष्यकृति: 'बज्जिका गीत-संगीत' · किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण, २००० विदेह अपन आरम्भहिसँ ओहि साहित्यिक न्यायक पक्षधर रहल अछि, जे स्थापित-संस्थागत आलोचना-परम्परासँ छूटल, हाशिया पर ठेलल आ अनसुनल स्वर सभकेँ केन्द्रमे अनैत अछि।

बीजशब्द: बज्जिका · गीत · संगीत · समेकित · द्विभाषिक · बहुआयामी · साहित्यिक · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय "'बज्जिका गीत-संगीत': समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा" विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर- 'बज्जिका गीत-संगीत': समेकित द्विभाषिक बहुआयामी साहित्यिक समीक्षा- डॉ. रामेश्वर प्रसादक कृतिक मैथिली–बज्जिका समानान्तर अनुशीलन समीक्ष्य कृति: 'बज्जिका गीत-संगीत' · किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण, २००० एहि दृष्टिएँ, एक मैथिली पत्रिकामे बज्जिका गीत-संग्रहक समीक्षा कोनो विजातीय काज नहि, अपितु सहोदर लोक-वाणी-प्रति एक स्वाभाविक सौहार्द थिक। मैथिली स्वयं हिन्दी-पट्टीक भीतर अपन स्वतन्त्र साहित्यिक अस्मिताक लेल दीर्घ संघर्ष कएने अछि; बज्जिका-सन एक अनुसूची-बाह्य, दोहरा-अधीनस्थ भाषाक साहित्यिक प्रयासकेँ बुझबामे ओ संघर्ष हमरा एक विशेष सहानुभूति दैत अछि।

डॉ. रामेश्वर प्रसादक कृतिक मैथिली–बज्जिका समानान्तर अनुशीलन

समीक्ष्यकृति: 'बज्जिका गीत-संगीत' · किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर · प्रथम संस्करण, २०००

खण्ड १: चतुर्आयामी आलोचनात्मक अनुशीलन

१. सम्पादकीय प्रवेश

विदेह अपन आरम्भहिसँ ओहि साहित्यिक न्यायक पक्षधर रहल अछि, जे स्थापित-संस्थागत आलोचना-परम्परासँ छूटल, हाशिया पर ठेलल आ अनसुनल स्वर सभकेँ केन्द्रमे अनैत अछि। समान्तर साहित्य आन्दोलनक मूल प्रतिज्ञा इएह थिक — लोक, स्त्री, दलित, श्रमजीवी आ उपेक्षित समुदायक ओ वाणी, जकरा साहित्य अकादमी-सन संस्थागत साहित्येतिहास प्रायः नामलेवा नहि करैत, तकरा प्रामाणिक आलोचकीय गरिमा देब।

विदेह अपन शुरुआते से ओही साहित्यिक न्याय के पक्ष में रहल हय, जे स्थापित-संस्थागत आलोचना-परम्परा से छूटल, हाशिया पर ठेलल आ अनसुनल स्वर सब के केन्द्र में ले आवत हय। समान्तर साहित्य आन्दोलन के मूल परन इहे हय — लोक, स्त्री, दलित, श्रमजीवी आ उपेक्षित समुदाय के ऊ वाणी, जेकरा साहित्य अकादमी-जइसन संस्थागत साहित्येतिहास प्रायः नामलेवा न करे, ओकरा प्रामाणिक आलोचकीय गरिमा देब।

एहि दृष्टिएँ, एक मैथिली पत्रिकामे बज्जिका गीत-संग्रहक समीक्षा कोनो विजातीय काज नहि, अपितु सहोदर लोक-वाणी-प्रति एक स्वाभाविक सौहार्द थिक। मैथिली स्वयं हिन्दी-पट्टीक भीतर अपन स्वतन्त्र साहित्यिक अस्मिताक लेल दीर्घ संघर्ष कएने अछि; बज्जिका-सन एक अनुसूची-बाह्य, दोहरा-अधीनस्थ भाषाक साहित्यिक प्रयासकेँ बुझबामे ओ संघर्ष हमरा एक विशेष सहानुभूति दैत अछि।

ए नजर से, एगो मैथिली पत्रिका में बज्जिका गीत-संग्रह के समीक्षा कोनो पराया काम न हय, बल्कि सहोदर लोक-वाणी ला एगो स्वाभाविक सौहार्द हय। मैथिली खुद हिन्दी-पट्टी के भीतर अपन अलग साहित्यिक पहचान ला लम्बा संघर्ष कयेलक हय; बज्जिका-जइसन एगो अनुसूची-बाहर, दुहरा-अधीनस्थ भाषा के साहित्यिक प्रयास के समझे में ऊ संघर्ष हमरा एगो खास हमदर्दी देत हय।

प्रस्तुत अनुशीलनमे कृतिकेँ चारि आयामसँ जाँचल गेल अछि — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टि: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति; (ख) पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त: मार्क्सवाद, संरचनावाद-रूपवाद, उत्तर-औपनिवेशिक ओ अधीनस्थ-विमर्श, संवाद-सिद्धान्त, मौखिकता-प्रदर्शन आ स्त्रीवादी संकेत; (ग) नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा; आ (घ) विदेह समान्तर-इतिहास-रूपरेखा। एहि चारू दृष्टिक समन्वयसँ एक लोकगीत-संग्रहक बहुस्तरीय पाठ सम्भव भेल अछि।

ए अनुशीलन में कृति के चार आयाम से जाँचल गेल हय — (क) भारतीय काव्यशास्त्रीय नजर: रस-ध्वनि-वक्रोक्ति; (ख) पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त: मार्क्सवाद, संरचनावाद-रूपवाद, उत्तर-औपनिवेशिक आ अधीनस्थ-विमर्श, संवाद-सिद्धान्त, मौखिकता-प्रदर्शन आ स्त्रीवादी संकेत; (ग) नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा; आ (घ) विदेह समान्तर-इतिहास-रूपरेखा। ए चारू नजर के मेल से एगो लोकगीत-संग्रह के बहुस्तरीय पाठ सम्भव भेल हय।

२. कृति-परिचय

'बज्जिका गीत-संगीत' डॉ० रामेश्वर प्रसादक ओ गीत-संग्रह थिक, जे किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुरसँ सन् २००० मे प्रथम बेर प्रकाशित भेल। लेखक बी०पी०सी० कॉलेज, लालगंज (वैशाली) क प्राचार्य रहलाह आ हिनक लेखनी बज्जिका ओ खड़ी बोली — दुनू भाषामे समान रूपेँ चलैत रहल। 'कुन्ती के बेटा' (बज्जिका खण्ड-काव्य), 'बज्जिका लोकगीत', 'हम कहाँ हती' (बज्जिका ललित निबन्ध), 'ऐ लाश! सुनो' आ 'कहीं विपिन में मधुशाला' (खड़ी बोली काव्य) — एहि विविध कृति-परम्परामे प्रस्तुत संग्रह हिनक बज्जिका-गीत-साधनाक एक महत्त्वपूर्ण कड़ी थिक।

'बज्जिका गीत-संगीत' डॉ० रामेश्वर प्रसाद के ऊ गीत-संग्रह हय, जे किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से सन् २००० में पहिल बेर प्रकाशित भेल। लेखक बी०पी०सी० कॉलेज, लालगंज (वैशाली) के प्राचार्य रहलन आ हुनकर कलम बज्जिका आ खड़ी बोली — दुनू भाषा में बराबर चलल। 'कुन्ती के बेटा' (बज्जिका खण्ड-काव्य), 'बज्जिका लोकगीत', 'हम कहाँ हती' (बज्जिका ललित निबन्ध), 'ऐ लाश! सुनो' आ 'कहींविपिन में मधुशाला' (खड़ी बोली काव्य) — एतना रचना के बीच ई संग्रह हुनकर बज्जिका-गीत-साधना के एगो जरूरी कड़ी हय।

पोथी ज्येष्ठ पुत्र गोपाल जी किशोरकेँ समर्पित अछि आ एकर भूमिका (परिचय-लेख) राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानक आचार्य शम्भुनाथ मिश्र लिखने छथि, जे लेखकक कविताईमे 'दिनकर-सन प्रखरता' लक्षित करैत छथि। संग्रहमे कुल एक सय पाँच गीत छथि, जे नौ विषय-वर्गमे विभाजित अछि। एहि गीत सभक विशेषता ई थिक जे ओ केवल पाठ्य नहि, अपितु गेय रचना थिक — लेखकक स्पष्ट अभिप्राय रहलनि जे बज्जिका-भाषी गायक एकरा राग-रागिनीमे बान्हि गाबि सकथि।

पोथी ज्येष्ठ पुत्र गोपाल जी किशोर के समर्पित हय आ एकर भूमिका राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान के आचार्य शम्भुनाथ मिश्र लिखलन, जे लेखक के कविताई में 'दिनकर-जइसन प्रखरता' देखलन। संग्रह में कुल एक सय पाँच गो गीत हय, जे नौ गो विषय-वर्ग में बँटल हय। ए गीत सब के खासियत ई हय कि ऊ खाली पढ़े वला न हय, बल्कि गावे वला रचना हय — लेखक के साफ मंशा रहल कि बज्जिका-भाषी गायक एकरा राग-रागिनी में बान्ह के गा सकस।

३. 'आत्म-कथन' आ बज्जिका-भाषा-प्रश्न

पोथीक 'आत्म-कथन' केवल विनम्र आत्म-निवेदन नहि, अपितु एक भाषिक-सांस्कृतिक घोषणा-पत्र सेहो थिक। लेखक बतबैत छथि जे १९७१ सँ ओ लालगंजमे बज्जिका कवि-गोष्ठीक आयोजन आरम्भ कएलनि, नुक्कड़-सभामे लोकगीत गओलनि, आ १९७६ मे 'डाक्टर साहेब के बज्जिका लोकगीत' के नामसँ ओकर एक प्रकाशन कएलनि। मुदा हुनका ई अनुभव भेलनि जे स्वयं गीत-रचनाक अभाव अछि, जाहिसँ गायक लोकनि गाबि सकथि — एहि अभावक पूर्ति करबाक संकल्पसँ प्रस्तुत संग्रह जन्म लेलक।

पोथी के 'आत्म-कथन' खाली नम्र आत्म-निवेदन न हय, बल्कि एगो भाषिक-सांस्कृतिक घोषणा-पत्र भी हय। लेखक बतवलन कि १९७१ से ऊ लालगंज में बज्जिका कवि-गोष्ठी के आयोजन करे लगलन, नुक्कड़-सभा में लोकगीत गवलन, आ १९७६ में 'डाक्टर साहेब के बज्जिका लोकगीत' के नाम से ओकर एगो प्रकाशन कयेलन। लेकिन हुनका ई अनुभव भेल कि खुद गीत-रचना के कमी हय, जेकरा से गायक लोग गा सकस — एही कमी के पूरा करे के संकल्प से ई संग्रह जनम लेलक।

एहि निबन्धमे लेखक बज्जिकाक स्वतन्त्र भाषिक अस्तित्वक पक्ष जोर दए राखने छथि। ओ देखबैत छथि जे बज्जिकाक क्रिया-पद क्षेत्र-अनुसार बदलैत अछि — गण्डकक पूर्वी भागमे 'बा', दरभंगा-समस्तीपुरमे 'छी', मुजफ्फरपुर-हाजीपुरमे 'हती' आ शिवहरक तरफ 'हथ' — मुदा एतबे विविधतासँ भाषाक एकता नहि टूटैत।

ए निबन्ध में लेखक बज्जिका के अलग भाषिक अस्तित्व के पक्ष जोर देके रखलन। ऊ देखवलन कि बज्जिका के क्रिया-पद क्षेत्र-अनुसार बदलत हय — गण्डक के पूरबी भाग में 'बा', दरभंगा-समस्तीपुर में 'छी', मुजफ्फरपुर-हाजीपुर में 'हती' आ शिवहर के तरफ 'हथ' — लेकिन एतना बिबिधता से भाषा के एकता न टूटे।

एहि सन्दर्भमे ओ लोकोक्ति उद्धृत करैत छथि — “चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस परबानी” । आगाँ बढ़ि ओ ई आग्रह करैत छथि जे बज्जिका पालिसँ विकसित प्राचीन भाषा थिक आ मैथिली-भोजपुरी एकरासँ प्रभावित भेल, न कि एकर विपरीत।

एही सन्दर्भ में ऊ लोकोक्ति उठवलन — “चार कोस पर पानी बदले, आठ कोस परबानी” । आगे बढ़ के ऊ ई दावा कयेलन कि बज्जिका पालि से बिकसित प्राचीन भाषा हय आ मैथिली-भोजपुरी एकरा से प्रभावित भेल, न कि एकर उल्टा।

समीक्षकीय दृष्टिएँ ई भाषिक दावा प्रमाण-सिद्ध कम आ आग्रह-मूलक अधिक बुझाइत अछि; आधुनिक भाषा-विज्ञान मैथिली, मगही, भोजपुरी आ बज्जिकाकेँ प्रायः पूर्वी (बिहारी) आर्य-समूहक सहोदर भाषा मानैत अछि, आ एहिमे कोनो एकटाकेँ शेषक जननी सिद्ध करब सरल नहि। किन्तु मूल प्रेरणा — एकउपेक्षित लोक-वाणीकेँ अपन साहित्यिक-गेय पहचान देब — नितान्त सच्चा अछि। लेखक स्वयं ई स्वीकार करैत छथि जे साहित्य-क्षेत्रमे जातीय-प्रतिबद्धता आ साम्प्रदायिक मानसिकतासँ ऊपर उठि ‘साहित्य-सेवा’ हेबाक चाही — ई उदार दृष्टि हिनक भूमिकाक सबसँ स्वस्थ पक्ष थिक। भूमिकामे उद्धृत जगदीश चन्द्र माथुर (वैशाली-महोत्सवक प्रवर्तक) क १९७७ ई० क पत्रक ई परामर्श — जे उत्सवमे लोक (मछुआ) लेल नव गीत बनए के चाही आ ‘धरतीक ओर मुड़ी’ — एहि गीत-रचनाक पाछाँक लोकोन्मुख प्रेरणाकेँ स्पष्ट करैत अछि।

समीक्षा के नजर से ई भाषिक दावा प्रमाण-सिद्ध कम आ आग्रह वला जादे लागत हय; आधुनिक भाषा-बिज्ञान मैथिली, मगही, भोजपुरी आ बज्जिका के प्रायः पूरबी (बिहारी) आर्य-समूह के सहोदर भाषा माने हय, आ एहिमें कोनो एक के दोसर के जननी साबित कइल आसान न हय। लेकिन मूल प्रेरणा — एगो उपेक्षित लोक-वाणी के अपन साहित्यिक, गावे वला पहचान देब — एकदम सच्चा हय। लेखक खुद ई माननलन कि साहित्य-क्षेत्र में जातीय-प्रतिबद्धता आ साम्प्रदायिक मानसिकता से ऊपर उठ के ‘साहित्य-सेवा’ होए के चाहीं — ई उदार सोच हुनकर भूमिका के सबसे स्वस्थ पक्ष हय। भूमिका में उठावल जगदीश चन्द्र माथुर (वैशाली-महोत्सव के प्रवर्तक) के १९७७ ई० के पत्र के ई सलाह — कि उत्सव में लोक (मछुआ) ला नया गीत बने के चाहीं आ ‘धरती के ओरमुड़ के’ — ए गीत-रचना के पाछे के लोकोन्मुख प्रेरणा के साफ करत हय।

४. संकलनक संरचना ओ अन्तर्वस्तु-सर्वेक्षण · ४. संग्रह के बनावट आ अन्तर्वस्तु-सर्वेक्षण

गीत सभ नौ वर्गमे सजाओल गेल अछि — (क) कृष्ण (१–२०), (ख) श्रृंगार (२१–४२), (ग) नायिका-व्यथा (४३–५२), (घ) प्रकृति (५३–६०), (ङ) मानव-प्रकृति (६१–७८), (च) देश-दशा (७९–८४), (छ) गरीबी (८५–९५), (ज) कृषि (९६–१०३), आ (झ) वसन्त (१०४–१०५) । एहि क्रममे एक स्वाभाविक भाव-यात्रा अछि — भक्ति ओ श्रृंगारसँ आरम्भ भए, प्रकृति होइत, सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ धरि पहुँचि, अन्तमे कृषि-श्रम ओ वसन्तक लयात्मक मधुरतामे विश्राम। लेखकक कहब जे एहिमे तीनू धरातलक गीत — शास्त्रीय गीत, सुगम संगीत आ लोकगीत — समाहित अछि।

गीत सब नौ गो वर्ग में सजल हय — (क) कृष्ण (१–२०), (ख) श्रृंगार (२१–४२), (ग) नायिका-व्यथा (४३–५२), (घ) प्रकृति (५३–६०), (ङ) मानव-प्रकृति (६१–७८), (च) देश-दशा (७९–८४), (छ) गरीबी (८५–९५), (ज) कृषि (९६–१०३), आ (झ) वसन्त (१०४–१०५) । ए क्रम में एगो स्वाभाविक भाव-यात्रा हय — भक्ति आ श्रृंगार से शुरू होके, प्रकृति होइत, सामाजिक-राजनीतिक यथार्थ तक पहुँच के, आखिर में कृषि-श्रम आ वसन्त के लयदार मिठास में विश्राम। लेखक कहलन कि एहिमें तीनू धरातल के गीत — शास्त्रीय गीत, सुगम संगीत आ लोकगीत — समाहित हय।

(क) कृष्ण-पदावली

कृष्ण-खण्डक बीस गीत विद्यापति-सूरदास परम्पराक फुहार थिक, मुदा बज्जिकाक ठेठ ग्राम्य मुहावरामे ढालल। एतय कृष्ण ‘छलिया’ छथि आ राधाक मन विरह, मान आ उलाहनासँ भरल। प्रथम गीतक टेक — “अब हम कइसे चलूँ डगरिया, लोगवा नजर लगावे ना” — मे लोक-लाजक बीच स्थित प्रेमिकाक द्विविधा ध्वनित अछि; दोसर गीत — “कान्हा चलावे नजरिया, ई कान्हा छलिया” — मे कृष्णक चंचल छलनाक ग्राम्य चित्र। एहि खण्डक सबसँ सशक्त रचना ओतय अछि जतय नाट्य-तत्त्व आबि जाइत अछि — ननदि-भौजाईक संवाद-गीतमे, जतय पनघटक घटनाकेँ लए रस-भरल प्रश्नोत्तर चलैत अछि। कुबजाक उल्लेखसँ राधाक ईर्ष्या-भाव आ अन्यायक बोध मुखर अछि। ‘खेले-खेले कन्हाई’ सन गीतमे वात्सल्य-रसक कोमल स्पर्श सेहो अछि।

कृष्ण-खण्ड के बीस गीत विद्यापति-सूरदास परम्परा के फुहार हय, लेकिन बज्जिका के ठेठ गाँव-घर वला मुहावरा में ढालल। इहाँ कृष्ण ‘छलिया’ हथ आ राधा के मन विरह, मान आ उलाहना से भरल। पहिल गीत के टेक — “अब हम कइसे चलूँ डगरिया, लोगवा नजर लगावे ना” — में लोक-लाज के बीच खड़ी प्रेमिका के दुविधा झलकत हय; दोसर गीत —“कान्हा चलावे नजरिया, ई कान्हा

छलिया” — में कृष्ण के चंचल छलनी के गाँव-घर वला चित्र। ए खण्ड के सबसे सशक्त रचना ओहिजा हय जहाँ नाट्य-तत्त्व आ जात हय — ननदि-भौजाई के संवाद-गीत में, जहाँ पनघट के घटना के लेके रस-भरल प्रश्नोत्तर चलत हय। कुबजा के जिक्र से राधा के ईर्ष्या-भाव आ अन्याय के बोध मुखर। ‘खेले-खेले कन्हाई’ जइसन गीत में वात्सल्य-रस के कोमल परस भी हय।

(ख) श्रृंगार

श्रृंगार-खण्ड (२१–४२) मे प्रायः प्रभात, भिनुसार, आँख आ अँगनाक बिहारक चित्र आबैत अछि। “आँख अलसायेल, बिहँस उठल कंगना” सन पाँतिमे नायिकाक प्रातःकालीन श्रृंगार-चेष्टाक सजीव आलेखन अछि। एतयक श्रृंगार देह-प्रधान होइतो लोक-मर्यादाक भीतर रहैत अछि — इच्छा आ संकोचक बीचक तनाव एहि गीत सभक प्राण थिक।

श्रृंगार-खण्ड (२१–४२) में प्रायः भोर, भिनुसार, आँख आ अँगना के बिहान के चित्र आवत हय। “आँख अलसायेल, बिहँस उठल कंगना” जइसन पाँति में नायिका के भोर वला सिंगार-चेष्टा के जिन्दा चित्रण हय। इहाँ के श्रृंगार देह-प्रधान होइतो लोक-मर्यादा के भीतर रहत हय — इच्छा आ लाज के बीच के तनाव ए गीत सब के प्राण हय।

(ग) नायिका-व्यथा

एहि संग्रहक सबसँ मौलिक ओ मार्मिक स्वर एतय मुखर अछि, जतय परम्परागत विरह-काव्य एक जीवन्त सामाजिक दस्तावेज बनि जाइत अछि। एतयक ‘परदेशी’ पति काल्पनिक नहि, अपितु बिहारक श्रम-प्रवासक कठोर यथार्थ थिक — जे रोजी-रोटीक खोजमे ‘कलकतवा’ चलि जाइत छथि। “कि खोजे चललिन बालम के हो कलकतवा” — एहि पाँति एहि प्रवास-वेदनाकेँ लोक-कण्ठ दैत अछि। आगाँ “पिया परदेशिया के कौनो न ठेकान बा” सन गीतमे ओ पति, जे परदेसमे कमाइक अहंकारमे दारू पीबि घर उपेक्षित छोड़ि दैत छथि — नायिकाक व्यथा एतय व्यक्तिगत विरहसँ आगाँ पारिवारिक-सामाजिक टूटनक बोध बनि जाइत अछि।

ए संग्रह के सबसे मौलिक आ मरम वला स्वर इहाँ मुखर हय, जहाँ परम्परागत विरह-काव्य एगो जिन्दा सामाजिक दस्तावेज बन जात हय। इहाँ के ‘परदेशी’ पति कल्पना न हय, बल्कि बिहार के श्रम-प्रवास के कठोर यथार्थ हय — जे रोजी-रोटी के खोज में ‘कलकतवा’ चल जात हथ। “कि खोजे चललिन बालम के हो कलकतवा” — ई पाँति ए परदेस-वेदना के लोक-कण्ठ देत हय। आगे “पिया परदेशिया के कौनो न ठेकान बा” जइसन गीत में ऊ पति, जे परदेस में कमाई के घमण्ड में दारू पी के घर उपेक्षित छोड़ देत हथ — नायिका के व्यथा इहाँ निजी विरह से आगे पारिवारिक-सामाजिक टूट के बोध बन जात हय।

(घ) प्रकृति

प्रकृति-खण्ड (५३–६०) मे कोइलिया, पपीहा, महुआ, फागुन आ चन्दाक ग्राम्य छवि पसरल अछि। “काली रे कोइलिया के साम–साम अँखिया राम, साम लागे ना” सन पाँतिमे ‘साम’ शब्दक श्लेष (साँवर आ श्याम) सँ प्रकृति ओ भक्ति एकठाम बान्हल गेल अछि। ‘कुहुकी-कुहुकी’, ‘टह-टह’, ‘लह-लह’ सन ध्वनि-अलंकारसँ प्रकृतिक ध्वनि-सौन्दर्य गीतमे उतरि आबैत अछि।

प्रकृति-खण्ड (५३–६०) में कोइलिया, पपीहा, महुआ, फागुन आ चन्दा के गाँव-घर वला छवि पसरल हय। “काली रे कोइलिया के साम–साम अँखिया राम, साम लागे ना” जइसन पाँति में ‘साम’ शब्द के श्लेष (साँवर आ श्याम) से प्रकृति आ भक्ति एक ठाम बन्हल गेल हय। ‘कुहुकी-कुहुकी’, ‘टह-टह’, ‘लह-लह’ जइसन ध्वनि-अलंकार से प्रकृति के ध्वनि-सुन्दरता गीत में उतर आवत हय।

(ङ-च-छ) मानव-प्रकृति, देश-दशा ओगरीबी -(ङ-च-छ) मानव-प्रकृति, देश-दशा आ गरीबी

एहि तीनू खण्डमे कवि सबसँ प्रखर आ प्रतिबद्ध थिक। व्यंग्यक धार तीव्र, लक्ष्य स्पष्ट — कुर्सी, भ्रष्टाचार, नेता आ घूस। “कुर्सी जग के नाच नचयेलक” मे सत्ताक विकृति, आ “हम तऽ एक नम्बर के धरमी, लोगवा भ्रष्टी कहे ना” मे भ्रष्ट व्यक्तिक आत्म-प्रवंचनाक तीखा उपहास अछि। पौराणिक प्रतीकसँ व्यंग्य आर पैघ — “सोचऽ के चलऽ तुलसी आ गेल जमाना गड़बड” मे राम-भरत-रावण-दशरथक कथाकेँ आधुनिक राजनीतिक विद्रूप पर लगाओल गेल। गरीबी-खण्ड (८५–९५) मे महँगाई, करजा, बेटीक दहेज आ दीन-दुखियाक विवशता — “गरीब के समइया राम बिपतिये बाँट जाले” सन पाँतिमे गरीबक विपत्ति-चक्र मुखर अछि। एहि स्वरमे नागार्जुन-सन प्रगतिशील लोक-कविताक प्रतिध्वनि अछि।

ए तीनू खण्ड में कवि सबसे प्रखर आ प्रतिबद्ध हय। व्यंग्य के धार तेज, निशाना साफ — कुर्सी, भ्रष्टाचार, नेता आ घूस। “कुर्सी जग के नाच नचयेलक” में सत्ता के विकृति, आ “हम तऽ एक नम्बर के धरमी, लोगवा भ्रष्टी कहे ना” में भ्रष्ट आदमी के आत्म-प्रवंचना के तीखा उपहास। पौराणिक प्रतीक से व्यंग्य आर बड़ — “सोचऽ के चलऽ तुलसी आ गेल जमाना गड़बड” में राम-भरत-रावण-दशरथ के कथा के आज के राजनीतिक विद्रूप पर लगावल गेल। गरीबी-खण्ड (८५–९५) में महँगाई, करजा, बेटी के दहेज आ दीन-दुखिया के

लाचारी — “गरीब के समइया राम बिपतिये बाँट जाले” जइसन पाँति में गरीब के बिपत्ति-चक्कर मुखर। ए स्वर में नागार्जुन-जइसन प्रगतिशील लोक-कविता के गूँज हय।

(ज-झ) कृषि ओवसन्त ·(ज-झ) कृषि आ वसन्त

कृषि-खण्डमे कवि श्रमक गरिमा आ किसानकेँ गाबैत छथि — “चलऽ हम तऽ बनम किसनवा, तूँ किसानिन बनी हऽ ना” आ “काम करू, खाउ गौरव से, तज शोषण के भोग” सन आह्वानमे श्रम-चेतनाक स्वस्थ स्वर अछि। पति-पत्नीक संवाद-गीत (९७–९८) मे गार्हस्थ्यक माधुर्य, आ अन्तमे वसन्त-खण्ड (होली-गीत १०४–१०५) संग्रहकेँ पुनः कृष्ण-लीला आ वासन्ती शृंगारक लयमे लए अनैत अछि — एक सुन्दर वृत्ताकार परिणति।

कृषि-खण्ड में कवि श्रम के गरिमा आ किसान के गवलन — “चलऽ हम तऽ बनम किसनवा, तूँ किसानिन बनी हऽ ना” आ “काम करू, खाउ गौरव से, तज शोषण के भोग” जइसन आह्वान में श्रम-चेतना के स्वस्थ स्वर हय। पति-पत्नी के संवाद-गीत (९७–९८) में गिरहस्ती के मिठास, आ आखिर में वसन्त-खण्ड (होली-गीत १०४–१०५) संग्रह के फिर से कृष्ण-लीला आ वसन्ती शृंगार के लय में ले आवत हय — एगो सुन्दर गोलाकार परिणति।

५. प्रथम आयामः रस-ध्वनि-वक्रोक्ति ·५. पहिल आयामः रस-ध्वनि-वक्रोक्ति

५.१ रस-विवेचन

रस-दृष्टिएँ ई संग्रह एक रस-कोश थिक। कृष्ण-खण्डमे स्थायी भाव रति थिक, जे भक्ति-मधुर भावमे परिणत होइत अछि; आलम्बन-विभाव कृष्ण, उद्दीपन यमुना-वंशी-वृन्दावन, अनुभाव नायिकाक चेष्टा, आ व्यभिचारी औत्सुक्य, चिन्ता, ईर्ष्या (कुबजा-प्रसंगे) ओ विषाद। बाल-कृष्ण-गीतमे स्थायी वत्सल-रति सँ वात्सल्य-रस निष्पन्न होइत अछि।

रस के नजर से ई संग्रह एगो रस-कोश हय। कृष्ण-खण्ड में स्थायी भाव रति हय, जे भक्ति-मधुर भाव में बदल जात हय; आलम्बन-विभाव कृष्ण, उद्दीपन यमुना-वंशी-वृन्दावन, अनुभाव नायिका के चेष्टा, आ व्यभिचारी औत्सुक्य, चिन्ता, ईर्ष्या (कुबजा-प्रसंग) आ विषाद। बाल-कृष्ण-गीत में स्थायी वत्सल-रति से वात्सल्य-रस निकलत हय।

नायिका-व्यथा-खण्डमे एक सूक्ष्म रस-संक्रमण द्रष्टव्य अछि। परम्परया विरह विप्रलम्भ-शृंगार थिक, जाहिमे पुनर्मिलनक आशा निहित रहैत अछि; मुदा जतय विरह सामाजिक-आर्थिक बाध्यता (प्रवास, दारिद्र्य) सँ आरोपित अछि, ओतय आशाक क्षीणतासँ विप्रलम्भ करुण-रसक दिशामे झुकि जाइत अछि। इएह विप्रलम्भ-सँ-करुणक संक्रमण एहि संग्रहक भाव-वैशिष्ट्य थिक।

नायिका-व्यथा-खण्ड में एगो सूक्ष्म रस-संक्रमण देखे में आवत हय। आम तौर पर विरह विप्रलम्भ-शृंगार हय, जेहिमें फिर मिले के आशा रहत हय; लेकिन जहाँ विरह सामाजिक-आर्थिक मजबूरी (परदेस, गरीबी) से लादल हय, ओहिजा आशा के कमजोरी से विप्रलम्भ करुण-रस के ओर झुक जात हय। इहे विप्रलम्भ-से-करुण के संक्रमण ए संग्रह के भाव-खासियत हय।

मानव-प्रकृति, देश-दशा ओ गरीबीक राजनीतिक गीत परम्परागत रस-योजनाकेँ कसौटी पर चढ़बैत अछि। एतयक भाव न शुद्ध हास्य थिक, न केवल करुण — ओ रोष, आक्रोश आ विद्रोहक ओ आधुनिक स्वर थिक, जकरा शास्त्रीय अष्ट-नव रस-विधानमे सहजे नहि अँटाओल जा सकैत। प्रगतिशील आलोचना जकरा ‘आक्रोश’ वा ‘विद्रोह-रस’ कहैत अछि, ओकर बीज एतय स्पष्ट अछि — आ इएह एहि संग्रहक रस-नवाचार थिक। कृषि-गीतमे श्रम-प्रति उत्साह (कर्म-वीरक अनुरूप ‘श्रम-वीर’) आ ग्राम्य-सन्तोषक शान्त, तथा वसन्त-होलीमे संयोग-शृंगारक उल्लास — रस-वैविध्य पूर्ण अछि।

मानव-प्रकृति, देश-दशा आ गरीबी के राजनीतिक गीत परम्परागत रस-योजना के कसौटी पर चढ़ावत हय। इहाँ के भाव न शुद्ध हास्य हय, न खाली करुण — ऊ रोष, आक्रोश आ विद्रोह के ऊ आधुनिक स्वर हय, जेकरा शास्त्रीय अष्ट-नव रस-विधान में आसानी से न अँटावल जा सके। प्रगतिशील आलोचना जेकरा ‘आक्रोश’ या ‘विद्रोह-रस’ कहे हय, ओकर बीज इहाँ साफ हय — आ इहे ए संग्रह के रस-नवाचार हय। कृषि-गीत में श्रम-ला उत्साह (कर्म-वीर के जइसन ‘श्रम-वीर’) आ गाँव-सन्तोष के शान्त, आ वसन्त-होली में संयोग-शृंगार के उल्लास — रस-बिबिधता पूरा हय।

५.२ ध्वनि-विवेचन

एहि गीत सभक शक्ति अभिधा-लक्षणासँ बेसी व्यंजनामे अछि। तीनू ध्वनि-भेद एतय भेटैत अछि। वस्तु-ध्वनिः कुबजाक नामोल्लेख कृष्णक उपेक्षाकेँ बिना कहने सुझबैत अछि, आ ‘कलकतवा’ शब्द समस्त प्रवास-त्रासदीकेँ ध्वनित करैत अछि। अलंकार-ध्वनिः

‘साम-साम’ क श्लेषसँ (साँवर = श्याम) अर्थ-द्वैतव्यंजित; ‘मन के आग’, ‘नेहिया के डोर’ सन रूपक-ध्वनि। रस-ध्वनि: समस्त नायिका-व्यथा-खण्ड करुण-विप्रलम्भकेँ कहने नहि, अपितु व्यंजित करैत अछि।

ए गीत सब के ताकत अभिधा-लक्षणा से जादे व्यंजना में हय। तीनू ध्वनि-भेद इहाँ मिलत हय। वस्तु-ध्वनि: कुबजा के नाम कृष्ण के उपेक्षा के बिना कहले सुझावत हय, आ ‘कलकतवा’ शब्द सारा परदेस-त्रासदी के ध्वनित करत हय। अलंकार-ध्वनि: ‘साम-साम’ के श्लेष से (साँवर = श्याम) अर्थ-द्वैत व्यंजित; ‘मन के आग’, ‘नेहिया के डोर’ जइसन रूपक-ध्वनि। रस-ध्वनि: सारा नायिका-व्यथा-खण्ड करुण-विप्रलम्भ के कहले न, बल्कि व्यंजित करत हय।

एहिमे टेक (मुखड़ा) क विशिष्ट ध्वनि-भूमिका अछि। पुनरावृत्तिसँ टेकमे व्यंजना संचित होइत जाइत अछि — प्रत्येक अन्तराक बाद घूमि आबि ओ ध्वनि-घनत्व बढ़बैत अछि, जे आनन्दवर्धनक ‘रस-ध्वनि’ क लोक-रूप थिक। एतय अधिकांश ध्वनि विवक्षित-अन्यपर-वाच्य (अर्थशक्तिमूल) प्रकारक थिक — वाच्यार्थ अभीष्ट रहितो ओकरासँ आगाँ इंगित करैत।

एहिमें टेक (मुखड़ा) के खास ध्वनि-भूमिका हय। दोहराव से टेक में व्यंजना जुड़त जात हय — हर अन्तरा के बाद घूम के ऊ ध्वनि-घनत्व बढ़ावत हय, जे आनन्दवर्धन के ‘रस-ध्वनि’ के लोक-रूप हय। इहाँ जादेतर ध्वनि विवक्षित-अन्यपर-वाच्य (अर्थशक्तिमूल) प्रकार के हय — वाच्यार्थ चाहितो ओकरा से आगे इशारा करत।

५.३ वक्रोक्ति-विवेचन

कुन्तकक मतेँ वक्रोक्ति काव्यक आत्मा थिक। हिनक छह वक्रता-स्तर एहि संग्रह पर एना लागू होइत अछि। (१) वर्ण-विन्यास-वक्रता: ‘कुहुकी-कुहुकी’, ‘टह-टह’, ‘लह-लह’, ‘झन-झन’ सन अनुप्रास आ नाद-चित्रण। (२) पद-पूर्वार्ध-वक्रता: ‘डगरिया’, ‘नजरिया’, ‘बँसुरिया’ सन देशज-तद्भव पद, ‘-इया’ स्नेह-प्रत्ययसँ रुचिर बनल। (३) पद-परार्ध-वक्रता: बज्जिका क्रिया-पद (‘देलऽ’, ‘जाले’, ‘कहे ना’, ‘बनी हऽ’) स्वयं वक्रताक स्थल बनि जाइत अछि, आ भाषिक-सांस्कृतिक आवेश दैत अछि। (४) वाक्य-वक्रता: टेक-पाँति, प्रश्न-रचना (‘अब हम कइसे चलूँ’) आ संवाद-निर्माण। (५) प्रकरण-वक्रता: पनघट-प्रसंग, ननदि-भौजाई ओ पति-पत्नीक संवाद-स्थिति — प्रकरण-स्तरक कौशल। (६) प्रबन्ध-वक्रता: नौ-वर्गीय विषय-योजना (भक्तिसँ वसन्त धरि) एक समग्र प्रबन्ध-वक्रता थिक।

कुन्तक के मत से वक्रोक्ति काव्य के आत्मा हय। हुनकर छह वक्रता-स्तर ए संग्रह पर अइसे लागत हय। (१) वर्ण-विन्यास-वक्रता: ‘कुहुकी-कुहुकी’, ‘टह-टह’, ‘लह-लह’, ‘झन-झन’ जइसन अनुप्रास आ नाद-चित्रण। (२) पद-पूर्वार्ध-वक्रता: ‘डगरिया’, ‘नजरिया’, ‘बँसुरिया’ जइसन देशज-तद्भव पद, ‘-इया’ स्नेह-प्रत्यय से रुचिर। (३) पद-परार्ध-वक्रता: बज्जिका क्रिया-पद (‘देलऽ’, ‘जाले’, ‘कहे ना’, ‘बनी हऽ’) खुदे वक्रता के ठाम बन जात हय, आ भाषिक-सांस्कृतिक आवेश देत हय। (४) वाक्य-वक्रता: टेक-पाँति, प्रश्न-रचना (‘अब हम कइसे चलूँ’) आ संवाद-निर्माण। (५) प्रकरण-वक्रता: पनघट-प्रसंग, ननदि-भौजाई आ पति-पत्नी के संवाद-स्थिति — प्रकरण-स्तर के कौशल। (६) प्रबन्ध-वक्रता: नौ-वर्गीय विषय-योजना (भक्ति से वसन्त तक) एगो समग्र प्रबन्ध-वक्रता हय।

मूल्यांकन: कविक वक्रता वर्ण- ओ पद-परार्ध-स्तर पर (नाद आ बज्जिका रूप-रचनामे) सर्वाधिक सबल अछि; मुदा जतय ओ सीधा उपदेश-कथनमे उतरि जाइत छथि — विशेषतः किछु राजनीतिक ओ गरीबी-गीतमे — ओतय वक्रता क्षीण भए वाच्यता प्रबल भए जाइत अछि। एतय काव्यक ‘वक्र’ स्वभाव मन्द अछि।

मूल्यांकन: कवि के वक्रता वर्ण- आ पद-परार्ध-स्तर पर (नाद आ बज्जिका रूप-रचना में) सबसे मजबूत हय; लेकिन जहाँ ऊ सीधा उपदेश-कथन में उतर जात हथ — खास कर के किछु राजनीतिक आ गरीबी-गीत में — ओहिजा वक्रता कमजोर होके वाच्यता जोर पकड़ लेत हय।

६. द्वितीय आयामः पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि • ६. दोसर आयामः पाश्चात्य समीक्षा-दृष्टि

६.१ मार्क्सवादी पाठ

देश-दशा ओ गरीबी-गीत वर्ग-चेतनासँ भरल अछि। ‘कलकतवा’-प्रवास ग्राम-नगर श्रम-निष्कासनक ओ ‘श्रमक आरक्षित सेना’ क चित्र थिक, जे बिहारकेँ बंगालक उद्योग लेल श्रम-आगारमे बदलि दैत अछि। ‘कुर्सी’-गीत राज्य-यन्त्रक (नेता, अफसर, पुलिसक) आलोचना थिक — अल्थ्यूसरक दमनकारी ओ विचारधारात्मक राज्य-उपकरणक स्मृति एतय जागैत अछि। आधार-अधिरचनाक सम्बन्ध स्पष्ट अछि: आर्थिक आधार (दारिद्र्य, करजा, दहेज) कोना अधिरचनात्मक विपत्तिकेँ निर्धारित करैत अछि, से कवि देखबैत छथि। ‘खून भेल सस्ता’ सन पाँतिमे मानव-जीवनक वस्तुकरण, आ आजादीक ओ आलोचना — जे केवल नेता-अभिनेताकेँ लाभ देलक — उत्तर-औपनिवेशिक बुर्जुआ राज्यक तीखा समीक्षा थिक। कवि, जन-भाषामे गीत रचि, ग्राम्शीय ‘जैविक बुद्धिजीवी’ क भूमिकामे ठाढ़ अछि।

देश-दशा आ गरीबी-गीत वर्ग-चेतना से भरल हय। ‘कलकतवा’-प्रवास गाँव-नगर श्रम-निकास आ ‘श्रम के आरक्षित सेना’ के चित्र हय, जे बिहार के बंगाल के उद्योग ला श्रम-आगार में बदल देत हय। ‘कुर्सी’-गीत राज्य-यन्त्र (नेता, अफसर, पुलिस) के आलोचना हय — अल्थ्यूसर के दमनकारी आ विचारधारात्मक राज्य-उपकरण के याद इहाँ जागत हय। आधार-अधिरचना के रिश्ता साफ हय: आर्थिक आधार (गरीबी, करजा, दहेज) कइसे अधिरचनात्मक बिपत्ति के तय करत हय, से कवि देखावत हथ। ‘खून भेल सस्ता’ जइसन पाँति में मानव-जीवन के वस्तुकरण, आ आजादी केऊ आलोचना — जे खाली नेता-अभिनेता के लाभ देलक — उत्तर-औपनिवेशिक बुर्जुआ राज्य के तीखा समीक्षा हय। कवि, जन-भाषा में गीत रच के, ग्राम्शी के ‘जैविक बुद्धिजीवी’ के भूमिका में खड़ा हय।

६.२ संरचनावाद ओरूपवाद ·६.२ संरचनावाद आ रूपवाद

समस्त संग्रह किछु द्विपद-विरोध (binary oppositions) पर संगठित अछि — गाँव/परदेस, गरीब/बड़का, धरती-कुर्पी/कुर्सी, धरमी/भ्रष्ट, अन्न/भूख। ‘कुर्सी’ सत्ताक तरल-संकेतक बनि जाइत अछि, आ कोइलिया-पपीहा विरहक आवर्ती संकेत। रूपवादी दृष्टिएँ टेक संरचनात्मक रीढ़ थिक, आ ब्रुक्स-कथित ‘तनाव’ (tension) इन्द्रिय-सुखद शृंगार-सतह आ नैतिक-सामाजिक अन्तर्धाराक बीच व्याप्त अछि। ‘हम तऽ एक नम्बर के धरमी’ मे नाटकीय व्यंग्य (dramatic irony) अछि — भ्रष्ट वक्ता अनजानहि अपन निन्दा करैत अछि।

६.३ उत्तर-औपनिवेशिक ओ अधीनस्थ-विमर्श ·६.३ उत्तर-औपनिवेशिक आ अधीनस्थ-विमर्श

स्पिवाकक प्रश्न — ‘की अधीनस्थ बाजि सकैत अछि?’ — एतय प्रासंगिक अछि। कवि परित्यक्ता पत्नी ओ भुखायल किसानक स्वर उधार लैत छथि; मुदा एतय प्रतिनिधित्वक मध्यस्थता अछि — एक शिक्षित प्राचार्य अधीनस्थक ‘बदला’ बाजि रहल छथि, जे स्वयं एक विमर्श-समस्या थिक। तथापि बज्जिका-सन अधीनस्थ भाषाक चयन स्वयं एक विऔपनिवेशिक इंगित थिक — हिन्दी-संस्कृत आधिपत्यक विरुद्ध ‘देशी’ वाणीमे लिखब। ‘कलकतवा’-प्रवास औपनिवेशिक आर्थिक भूगोलक उत्तर-जीवन थिक।

स्पिवाक के प्रश्न — ‘का अधीनस्थ बोल सकत हय?’ — इहाँ प्रासंगिक हय। कवि परित्यक्ता पत्नी आ भुखायल किसान के स्वर उधार लेत हथ; लेकिन इहाँ प्रतिनिधित्व के मध्यस्थता हय — एगो पढ़ल-लिखल प्राचार्य अधीनस्थ के ‘बदला’ बोल रहल हथ, जे खुद एगो विमर्श-समस्या हय। तइयो बज्जिका-जइसन अधीनस्थ भाषा के चयन खुदे एगो विऔपनिवेशिक इशारा हय — हिन्दी-संस्कृत के आधिपत्यके खिलाफ ‘देशी’ वाणी में लिखब। ‘कलकतवा’-प्रवास औपनिवेशिक आर्थिक भूगोल के उत्तर-जीवन हय।

६.४ संवाद-सिद्धान्त (बाख्तिन)

ननदि-भौजाई आ पति-पत्नीक संवाद-गीत शाब्दिक रूपेँ संवादधर्मी (dialogic) थिक; एतय अनेक स्वरक बहुस्वरता (polyphony) अछि — नायिका, ननदि, किसान, आ आत्म-व्यंग्य करैत नेताक स्वर। होली-गीतमे उत्सव-विपर्यय (carnivalesque) — बरजोरी आ उलटल-संसारक क्षणिक स्वतन्त्रता — दृष्टिगोचर अछि।

ननदि-भौजाई आ पति-पत्नी के संवाद-गीत शाब्दिक रूप से संवादधर्मी हय; इहाँ अनेक स्वर के बहुस्वरता हय — नायिका, ननदि, किसान, आ आत्म-व्यंग्य करत नेता के स्वर। होली-गीत में उत्सव-विपर्यय — बरजोरी आ उलटल-संसार के क्षणिक स्वतन्त्रता — देखे में आवत हय।

६.५ मौखिकता ओ प्रदर्शन-सिद्धान्त ·६.५ मौखिकता आ प्रदर्शन-सिद्धान्त

ऑङ्ग, पैरी-लॉर्ड आ जुम्थोरक दृष्टिएँ ई रचना मौखिक-सूत्रात्मक (oral-formulaic) थिक — आवर्ती टेक, ‘छलिया’-‘गिरधारी’ सन नाम-सूत्र (epithet), आ स्मृति-सहायक पुनरावृत्ति। पाठ-भेद (mouvance) सेहो अछि — एक्के गीतमे ‘सोहागिन’/‘सुहागिन’ क विचलन मौखिक तरलताक प्रमाण थिक। ई गीत ‘पाठ’ नहि, ‘प्रदर्शन’ थिक — वाणीक प्राथमिकता एतय मूल अछि। इएह कारणे सरलता ओ पुनरावृत्तिकेँ दोष नहि, विधा-गुण मानब उचित।

ऑङ्ग, पैरी-लॉर्ड आ जुम्थोर के नजर से ई रचना मौखिक-सूत्रात्मक हय — आवर्ती टेक, ‘छलिया’-‘गिरधारी’ जइसन नाम-सूत्र, आ याद-मददगार दोहराव। पाठ-भेद भी हय — एक्के गीत में ‘सोहागिन’/‘सुहागिन’ के फेर-बदल मौखिक तरलता के प्रमाण हय। ई गीत ‘पाठ’ न, ‘प्रदर्शन’ हय — वाणी के पहिलौती इहाँ मूल हय। एही से सरलता आ दोहराव के दोष न, विधा-गुण मानब ठीक हय।

६.६ स्त्रीवादी संकेत

नायिका-व्यथा-खण्ड एक लैंगिक कर्तृ-स्थिति (gendered subjectivity) प्रस्तुत करैत अछि — परित्यक्ता, प्रवासीक 'जीवित-वैधव्य' मे जीबैत स्त्रीक अन्तर्जगत। तथापि द्वैत सेहो अछि: श्रृंगार-गीतमे स्त्री-सौन्दर्यक निर्माण प्रायः पुरुष-दृष्टि (male gaze) सँ भेल अछि। एहि द्वन्द्वकेँ पहिचानब एहि पाठक स्त्रीवादी अवदान थिक।

नायिका-व्यथा-खण्ड एगो लैंगिक कर्तृ-स्थिति सामने आनत हय — परित्यक्ता, परदेसी के 'जीवित-वैधव्य' में जीत स्त्री के अन्तर्जगत। तइयो द्वैत भी हय: श्रृंगार-गीत में स्त्री-सौन्दर्य के बनावट प्रायः पुरुष-दृष्टि से भेल हय। ए द्वन्द्व के पहचानब ए पाठ के स्त्रीवादी देन हय।

७. तृतीय आयाम: नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा · ७. तेसर आयाम: नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा

ई आयाम गीत सभक ज्ञान-संरचनाकेँ गङ्गेशोत्तरकालीन नैयायिक उपकरणसँ आलोकित करैत अछि। आरम्भहिमे ई स्पष्ट होअय जे ई ज्ञानमीमांसीय पाठ थिक — ई दावा कदापि नहि जे लोक-कवि सचेत रूपेँ नव्य-न्यायक प्रयोग कएलनि; अपितु ई जे काव्य-बोधमे जे तार्किक-आन्वयिक ढाँचा अन्तर्निहित अछि, ओ एहि दृष्टिएँ विशेष स्पष्टतासँ उद्घाटित होइत अछि।

ई आयाम गीत सब के ज्ञान-संरचना के गङ्गेशोत्तरकालीन नैयायिक उपकरण से आलोकित करत हय। शुरुए में ई साफ रहे कि ई ज्ञानमीमांसीय पाठ हय — ई दावा कहियो न कि लोक-कवि जान-बूझ के नव्य-न्याय के प्रयोग कयेलन; बल्किई कि काव्य-बोध में जे तार्किक-आन्वयिक ढाँचा भीतरे हय, ऊ ए नजर से खास साफी से खुलत हय।

७.१ शब्द-बोध, शक्ति-ग्रह ओ देशज-संकेत · ७.१ शब्द-बोध, शक्ति-ग्रह आ देशज-संकेत

नैयायिकक मतेँ शाब्द-बोध आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति (सन्निधि) ओ तात्पर्य — एहि चारि हेतुसँ उत्पन्न होइत अछि, आ पद-पदार्थ-सम्बन्धक ज्ञान (शक्ति-ग्रह) ओकर पूर्ववर्ती कारण थिक। शक्ति-ग्रहक मुख्य उपाय व्यवहार थिक — वृद्ध-व्यवहारसँ बालक संकेत ग्रहण करैत अछि। एहि दृष्टिएँ लोक-गीतक देशज पद ('डगरिया', 'बालम', 'सँइया') क शक्ति-ग्रह ओहि प्रदर्शन-समुदायक व्यवहार-परम्परासँ होइत अछि — गीत स्वयं एक संकेत-ग्राहक सामुदायिक व्यवहार बनि जाइत अछि। लोक-गीतक विरल-वाक्य-रचनामे आकाङ्क्षाक पूर्ति बहुधा प्रकरण ओ तात्पर्यसँ होइत अछि; रिक्त पद साझा सांस्कृतिक प्रकरणसँ भरैत अछि।

नैयायिक के मत से शाब्द-बोध आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति (सन्निधि) आ तात्पर्य — ए चार हेतु से पैदा होत हय, आ पद-पदार्थ-सम्बन्ध के ज्ञान (शक्ति-ग्रह) ओकर पहिलौका कारण हय। शक्ति-ग्रह के मुख्य उपाय व्यवहार हय — बड़-बुजुर्ग के व्यवहार से बालक संकेत ग्रहण करत हय। ए नजर से लोक-गीत के देशज पद ('डगरिया', 'बालम', 'सँइया') के शक्ति-ग्रह ओही प्रदर्शन-समुदाय के व्यवहार-परम्परा से होत हय — गीत खुदे एगो संकेत-ग्राहक सामुदायिक व्यवहार बन जात हय। लोक-गीत के विरल-वाक्य-रचना में आकाङ्क्षा के पूर्ति जादेतर प्रकरण आ तात्पर्य से होत हय; खाली पद साझा सांस्कृतिक प्रकरण से भर जात हय।

७.२ विषयता-निरूपण: विरह-ज्ञानक आन्वयिकसंरचना · ७.२ विषयता-निरूपण: विरह-ज्ञान के आन्वयिक संरचना

गङ्गेशोत्तर न्यायमे प्रत्येक ज्ञान अपन विषयक 'विषयता'-सम्बन्धसँ निरूपित होइत अछि, आ ई विषयता त्रिविध अछि — विशेष्यता, प्रकारता ओ संसर्गता। नायिकाक ज्ञान 'मम पतिः प्रोषितः' (हमर पति परदेस गेलाह) कैँ लिअ: एतय विशेष्यता पति-निष्ठ थिक, प्रकारता प्रोषितत्व (वा वियोग)-निष्ठ, आ संसर्गता ओहि सम्बन्धमे जे विशेष्य ओ प्रकारकेँ जोड़ैत अछि। समग्र ज्ञान एहि त्रिविध-विषयता-निरूपक थिक। काव्य-प्रभावक कुंजी इएह — पाठक/श्रोताक अनुगामी ज्ञान जखन नायिकाक विरहकेँ ओहि विशिष्ट प्रकारता (करुण-अनुकूल) सँ विषय बनबैत अछि, तखन रस-निष्पत्ति होइत अछि। एना विषयता-सिद्धान्त रस-संचारक आन्वयिक व्याख्या दैत अछि।

गङ्गेशोत्तर न्याय में हर ज्ञान अपन विषय के 'विषयता'-सम्बन्ध से निरूपित होत हय, आ ई विषयता तीन तरह के हय — विशेष्यता, प्रकारता आ संसर्गता। नायिका के ज्ञान 'मम पतिः प्रोषितः' (हमर पति परदेस गेलन) के लीं: इहाँ विशेष्यता पति-निष्ठ हय, प्रकारता प्रोषितत्व (या वियोग)-निष्ठ, आ संसर्गता ओही सम्बन्ध में जे विशेष्य आ प्रकार के जोड़त हय। पूरा ज्ञान ए तीन-तरह-विषयता-निरूपक हय। काव्य-प्रभाव के चाबी इहे — पाठक/श्रोता के अनुगामी ज्ञान जब नायिका के विरह के ओही खास प्रकारता (करुण-अनुकूल) से विषय बनावत हय, तब रस-निष्पत्ति होत हय। अइसे विषयता-सिद्धान्त रस-संचार के आन्वयिक व्याख्या देत हय।

७.३ अभाव-ज्ञानः संसर्गाभाव, प्रतियोगिता ओअवच्छेदक ·७.३ अभाव-ज्ञानः संसर्गाभाव, प्रतियोगिता आ अवच्छेदक

विरहक केन्द्रीय ज्ञान 'पतिः अत्र नास्ति' एक अभाव-ज्ञान थिक, आ एकर सूक्ष्म-विश्लेषण अवच्छेदक-तन्त्रसँ होइत अछि। ई संसर्गाभाव थिक (अन्योन्याभाव नहि) — पति 'संयोग-सम्बन्धेँ' अँगनामे नहि अछि। एतय प्रतियोगी पति, प्रतियोगिता-अवच्छेदक-धर्म पतित्व, आ अवच्छेदक-सम्बन्ध संयोग (वा सामीप्य) थिक; अभावक अधिकरण अँगना/गृह। काव्य-मर्म ई जे सामान्यतः अभाव अनुभवक विषय भेनाइ कठिन, मुदा एतय कवि ओहि संसर्गाभावकेँ उद्दीपन (सूना अँगना, मौन सेज) द्वारा प्रत्यक्ष-कल्प इन्द्रिय-गोचर बना दैत छथि — अभावक ई 'विषयीकरण' एहि खण्डक काव्य-शक्ति थिक।

विरह के केन्द्रीय ज्ञान 'पतिः अत्र नास्ति' एगो अभाव-ज्ञान हय, आ एकर सूक्ष्म-विश्लेषण अवच्छेदक-तन्त्र से होत हय। ई संसर्गाभाव हय (अन्योन्याभाव न) — पति 'संयोग-सम्बन्ध से' अँगना में न हय। इहाँ प्रतियोगी पति, प्रतियोगिता-अवच्छेदक-धर्म पतित्व, आ अवच्छेदक-सम्बन्ध संयोग (या सामीप्य) हय; अभाव के अधिकरण अँगना/घर। काव्य-मरम ई कि आम तौर पर अभाव अनुभव के विषय बने में कठिन, लेकिन इहाँ कवि ओही संसर्गाभाव के उद्दीपन (सूना अँगना, चुप सेज) से परतछ-कल्प इन्द्रिय-गोचर बना देत हथ — अभाव के ई 'विषयीकरण' ए खण्ड के काव्य-शक्ति हय।

७.४ उपमा-रूपकः मुख्यार्थ-बाध, लक्षणा-बीज ओ गौणीवृत्ति ·७.४ उपमा-रूपकः मुख्यार्थ-बाध, लक्षणा-बीज आ गौणी वृत्ति

रूपक-स्थलमे नैयायिक-प्रक्रिया एना अछि: 'मन के आग' मे मुख्यार्थ (मनमे वास्तविक अग्नि) क अन्वय-अनुपपत्ति (बाध) होइत अछि; ई मुख्यार्थ-बाध लक्षणाक बीज थिक। तखन लक्षणासँ प्रवृत्ति-निमित्त सादृश्य (सन्तापकत्व) क आश्रयेँ गौणी वृत्ति द्वारा 'सन्तापक-मानस-वृत्ति' लक्षित होइत अछि। 'नेहिया के डोर' मे बन्धकत्व-सादृश्य प्रवृत्ति-निमित्त। उपमा-स्थलमे सादृश्य-ज्ञान स्वयं उपमान-प्रमाणक फल थिक (सादृश्य-विशिष्ट-पिण्ड-ज्ञान) । नव्य-नैयायिक एहि समस्त प्रक्रियाकेँ शक्ति-लक्षणाक भीतर सम्पन्न मानि, आलंकारिकक पृथक् 'व्यंजना-वृत्ति' क आवश्यकताक प्रतिरोध करैत छथि।

रूपक-ठाम नैयायिक-प्रक्रिया अइसन हय: 'मन के आग' में मुख्यार्थ (मन में सचमुच के आग) के अन्वय-अनुपपत्ति (बाध) होत हय; ई मुख्यार्थ-बाध लक्षणा के बीज हय। तब लक्षणा से प्रवृत्ति-निमित्त सादृश्य (सन्तापकत्व) के आश्रय ले के गौणी वृत्ति से 'सन्तापक-मानस-वृत्ति' लक्षित होत हय। 'नेहिया के डोर' में बन्धकत्व-सादृश्य प्रवृत्ति-निमित्त। उपमा-ठाम सादृश्य-ज्ञान खुदे उपमान-प्रमाण के फल हय (सादृश्य-विशिष्ट-पिण्ड-ज्ञान) । नव्य-नैयायिक ए पूरा प्रक्रिया के शक्ति-लक्षणा केभीतरे पूरा मान के, आलंकारिक के अलग 'व्यंजना-वृत्ति' के जरूरत के विरोध करत हथ।

७.५ व्याप्ति, उपाधि ओ सव्यभिचारः सूक्ति-गीतमे ·७.५ व्याप्ति, उपाधि आ सव्यभिचारः सूक्ति-गीत में

सूक्ति-गीतक तर्क-संरचना व्याप्ति-विमर्शसँ प्रकाशित होइत अछि। गङ्गेशक सिद्धान्त-लक्षण अनुसार व्याप्ति 'साध्याभाववद्-अवृत्तित्व' थिक। "जुल्म करे जे, सब सुख पावे" — पाँति एक व्याप्ति-कल्प सामान्य-नियम (अत्याचार-कर्तृत्व→सुख-प्राप्ति) प्रस्तुत करैत अछि; मुदा ई लोक-अनुभव-विरुद्ध थिक, तेँ वस्तुतः सव्यभिचार (व्यभिचार-दुष्ट) अछि — साध्याभाववान् (दुःखी अत्याचारी) क सत्तासँ हेतु व्यभिचरित होइत अछि, आ एतय 'धर्म'-रूप उपाधि सेहो सम्भव। कविक चातुर्य इएह जे ओ एहि सव्यभिचारकेँ जानि-बूझि निश्चित-व्याप्तिक भाषामे कहैत छथि; श्रोता जखन ओहि आनैकान्तिकताकेँ पहिचानैत अछि, तखन आक्रोश-रसक व्यंग्य फुटैत अछि। एना विषम-नैतिक यथार्थ एक विडम्बित छद्म-व्याप्तिक रूपमे व्यक्त होइत अछि।

सूक्ति-गीत के तर्क-संरचना व्याप्ति-विमर्श से खुलत हय। गङ्गेश के सिद्धान्त-लक्षण के मुताबिक व्याप्ति 'साध्याभाववद्-अवृत्तित्व' हय। "जुल्म करे जे, सब सुख पावे" — पाँति एगो व्याप्ति-कल्प सामान्य-नियम (अत्याचार-कर्तृत्व→सुख-प्राप्ति) सामने रखत हय; लेकिन ई लोक-अनुभव-विरुद्ध हय, एही से दरअसल सव्यभिचार (व्यभिचार-दुष्ट) हय — साध्याभाववान् (दुःखी अत्याचारी) के सत्ता से हेतु व्यभिचरित होत हय, आ इहाँ 'धरम'-रूप उपाधि भी सम्भव। कवि के चतुराई इहे कि ऊ ए सव्यभिचार के जान-बूझ के निश्चित-व्याप्ति के भाषा में कहत हथ; श्रोता जब ओही आनैकान्तिकता के पहचानत हय, तब आक्रोश-रस के व्यंग्य फूटत हय। अइसे विषम-नैतिक यथार्थ एगो विडम्बित छद्म-व्याप्ति के रूप में सामने आवत हय।

७.६ ध्वनि-वि-अनुमिति-वादः कुबजा-प्रसंगक परामर्श-विश्लेषण ·७.६ ध्वनि-आ-अनुमिति-वादः कुबजा-प्रसंग के परामर्श-विश्लेषण

व्यंजनाकेँ स्वतन्त्र वृत्ति मानब आलंकारिक-पक्ष थिक; नैयायिक (ओ महिमभट्ट-सन 'अनुमिति-वादी') एकरा अनुमानमे न्यूनीकृत करैत छथि। कुबजा-प्रसंगकेँ अनुमान-रूपेँ एना पुनर्गठित कयलजा सकैत अछि — पक्ष: कृष्ण; साध्य: राधा-उपेक्षा (अन्यासक्ति); हेतु:

कुबजा-अनुरञ्जन-श्रवण सह राधाक उलाहना; व्याप्ति: 'यत्र अन्य-नायिका-अनुरञ्जनम्, तत्र स्व-नायिका-उपेक्षा' । लिङ्ग-परामर्शसँ व्यंग्यार्थ 'अनुमिति' बनि जाइत अछि — पृथक् वृत्ति अनावश्यक। तथापि आनन्दवर्धन-पक्षक प्रत्युत्तर ध्यातव्य: काव्यक चमत्कार अक्रम (एकहि क्षणमे, रसात्मक) थिक, जखन कि अनुमिति क्रम-भावी (परामर्श-पूर्वक) थिक; तेँ ई न्यूनीकरण एक अनुभूति-मूलक मूल्य चुकबैत अछि। दुनू पक्षकेँ यथावत् राखब समीचीन।

व्यंजना के स्वतन्त्र वृत्ति मानब आलंकारिक-पक्ष हय; नैयायिक (आ महिमभट्ट-जइसन 'अनुमिति-वादी') एकरा अनुमान में घटा देत हथ। कुबजा-प्रसंग के अनुमान-रूप में अइसे फिर-बनावल जा सकत हय — पक्ष: कृष्ण; साध्य: राधा-उपेक्षा (अन्यासक्ति); हेतु: कुबजा-अनुरञ्जन-श्रवण संगे राधा के उलाहना; व्याप्ति: 'यत्र अन्य-नायिका-अनुरञ्जनम्, तत्र स्व-नायिका-उपेक्षा' । लिङ्ग-परामर्श से व्यंग्यार्थ 'अनुमिति' बन जात हय — अलग वृत्ति के जरूरत न। तइयो आनन्दवर्धन-पक्ष के जवाब याद रखे के हय: काव्य के चमत्कार अक्रम (एक्के छन में, रसात्मक) हय, जब कि अनुमिति क्रम-भावी (परामर्श-पूर्वक) हय; एही से ई घटावब एगो अनुभूति-मूलक मूल्य चुका देत हय। दुनू पक्ष के जस के तस रखब ठीक।

७.७ स्मृति, संस्कार ओ उद्बोधक: विरह-गीतक स्मृति-विज्ञान ·७.७ स्मृति, संस्कार आ उद्बोधक: विरह-गीत के स्मृति-विज्ञान

विरह-गीत मूलतः स्मृति-जगाबनिहार थिक। नैयायिक-प्रक्रियामे अनुभवसँ संस्कार, आ संस्कारसँ उद्बोधक-सहायेँ स्मृति उत्पन्न होइत अछि। एतय प्रकृति-उद्दीपन (कोइलिया-कूक, चन्दा, फागुन) उद्बोधकक कार्य करैत अछि — ओ प्रवासित प्रियक पूर्व-अनुभव-जन्य संस्कारकेँ जगाबि स्मृति-ज्ञान उत्पन्न करैत अछि, आ ओहि स्मृतिएँ विरह-वेदना तीव्र होइत अछि। एना उद्दीपन-विभावक काव्य-भूमिका नैयायिक स्मृति-कारण-व्यवस्था (संस्कार + उद्बोधक) क समानान्तर अछि।

विरह-गीत मूल रूप से स्मृति-जगावे वला हय। नैयायिक-प्रक्रिया में अनुभव से संस्कार, आ संस्कार से उद्बोधक-मदद से स्मृति पैदा होत हय। इहाँ प्रकृति-उद्दीपन (कोइलिया-कूक, चन्दा, फागुन) उद्बोधक के काम करत हय — ऊ परदेसी प्रिय के पहिलौका-अनुभव-जन्य संस्कार के जगा के स्मृति-ज्ञान पैदा करत हय, आ ओही स्मृति से विरह-वेदना तेज होत हय। अइसे उद्दीपन-विभाव के काव्य-भूमिका नैयायिक स्मृति-कारण-व्यवस्था (संस्कार + उद्बोधक) के समानान्तर हय।

७.८ प्रामाण्य-वाद: लोक-गीतक परतःप्रामाण्य ·७.८ प्रामाण्य-वाद: लोक-गीत के परतः प्रामाण्य

नैयायिक-मतेँ ज्ञानक प्रामाण्य परतः थिक — ओ संवाद वा प्रवृत्ति-सामर्थ्यसँ ज्ञात होइत अछि (मीमांसकक स्वतः-प्रामाण्यकविपरीत) । लोक-गीत एक आप्त-वाक्य/लोक-शब्द-प्रमाण थिक; सामाजिक दुःखक विषयमे एकर प्रामाण्य ओहि समुदायक सम्वादी अनुभव (लोक-संवाद) सँ परतः सिद्ध होइत अछि। एहि अर्थें गीत-गायक-श्रोताक साझा प्रत्यभिज्ञा ओहि साक्ष्यक प्रामाण्य-आपादक थिक — दुःखक सामूहिक सत्यापन।

नैयायिक-मत से ज्ञान के प्रामाण्य परतः हय — ऊ संवाद या प्रवृत्ति-सामर्थ्य से जानल जात हय (मीमांसक के स्वतः-प्रामाण्य केउल्टा) । लोक-गीत एगो आप्त-वाक्य/लोक-शब्द-प्रमाण हय; सामाजिक दुःख के बारे में एकर प्रामाण्य ओही समुदाय के सम्वादी अनुभव (लोक-संवाद) से परतः सिद्ध होत हय। ए माने में गीत-गायक-श्रोता के साझा प्रत्यभिज्ञा ओही साक्ष्य के प्रामाण्य-आपादक हय — दुःख के सामूहिक सत्यापन।

पुनः स्मरणीय: उपर्युक्त समस्त नैयायिक-विश्लेषण गीत सभक ज्ञान-संरचनाक 'आलोक' थिक, कवि-चेतनाक इतिहास नहि। लोक-कवि रस-सिद्ध छथि, तर्क-सिद्ध नहि; तथापि हिनक काव्य-बोधक आन्तर आन्वयिक व्यवस्था एहि दर्शन-दृष्टिएँ जे स्पष्टतासँ उजागर होइत अछि, ओ स्वयं एहि लोक-वाणीक गूढ़ ज्ञान-गरिमाक प्रमाण थिक।

फिर से याद रखे के: ऊपर के सब नैयायिक-विश्लेषण गीत सब के ज्ञान-संरचना के 'आलोक' हय, कवि-चेतना के इतिहास न। लोक-कवि रस-सिद्ध हथ, तर्क-सिद्ध न; तइयो हुनकर काव्य-बोध के भीतरी आन्वयिक व्यवस्था ए दर्शन-नजर से जे साफी से उजागर होत हय, ऊ खुदे ए लोक-वाणी के गूढ़ ज्ञान-गरिमा के प्रमाण हय।

८. चतुर्थ आयाम: समान्तर-इतिहास-रूपरेखा ·८. चौथा आयाम: समान्तर-इतिहास-रूपरेखा

विदेह समान्तर-इतिहास-दृष्टिएँ ई कृति एक प्रति-कैननिक (counter-canonical) पाठ थिक। बज्जिका स्वयं एक अनुसूची-बाह्य, हिन्दी (राजभाषा) आ मैथिली (अनुसूचित) क बीच दोहरा-अधीनस्थ भाषा थिक; प्रस्तुत संग्रह एक भाषाक ओ प्रयास थिक जे संस्थागत साहित्य-अकादमी-कैननसँ बाहर रहि, स्वयंकेँ साहित्यमे लिखि रहल अछि — हाशियासँ लिखल साहित्येतिहास।

विदेह समान्तर-इतिहास-नजर से ई कृति एगो प्रति-कैननिक पाठ हय। बज्जिका खुदे एगो अनुसूची-बाहर, हिन्दी (राजभाषा) आ मैथिली (अनुसूचित) के बीच दुहरा-अधीनस्थ भाषा हय; ई संग्रह एगो भाषा के ऊ प्रयास हय जे संस्थागत साहित्य-अकादमी-कैनन से बाहर रह के, खुद के साहित्य में लिख रहल हय — हाशिया से लिखल साहित्येतिहास।

स्वर-पुनरुद्धार: स्त्री-स्वर — नायिका-व्यथा-खण्ड परित्यक्ता स्त्रीक, नैहर-ससुरक बीचक द्वैधावस्था (गवना-गीत), आ प्रवासीक 'जीवित-वैधव्य' क साक्ष्य दैत अछि (यद्यपि रचयिता-मध्यस्थतास्मरणीय)। श्रमिक-किसान-स्वर — कृषि आ गरीबी-खण्ड मेटाओल श्रमिक, प्रवासी ओ करजा-बद्ध किसानक इतिहास-नीचाँसँ (history from below) प्रस्तुत करैत अछि। राजनीतिक गीत उत्तर-औपनिवेशिक राज्यक जन-आलोचना थिक — आधिकारिक राष्ट्रवादी आख्यानक विरुद्ध एक समान्तर इतिहास (आजादीक ओ आलोचना जे दीन-दुखियाकेँ छलक)।

स्वर-पुनरुद्धार: स्त्री-स्वर — नायिका-व्यथा-खण्ड परित्यक्ता स्त्री के, नैहर-ससुर के बीच के द्वैधावस्था (गवना-गीत), आ परदेसी के 'जीवित-वैधव्य' के साक्ष्य देत हय (यद्यपि रचयिता-मध्यस्थता याद रखे केहय)। श्रमिक-किसान-स्वर — कृषि आ गरीबी-खण्ड मेटावल श्रमिक, परदेसी आ करजा-बद्ध किसान के इतिहास-नीचे से सामने आनत हय। राजनीतिक गीत उत्तर-औपनिवेशिक राज्य के जन-आलोचना हय — आधिकारिक राष्ट्रवादी आख्यान के खिलाफ एगो समान्तर इतिहास (आजादी के ऊ आलोचना जे दीन-दुखिया के छलक)।

बज्जिकाक आ मैथिलीक — दुनूक प्रति-कैननिक संघर्षक साम्य एतय स्पष्ट अछि; अधीनस्थ भाषा सभक क्षैतिज एकजुटता एहि पाठक नैतिक केन्द्र थिक। साक्ष्य-मूल्य: समान्तर इतिहासक रूपमे ई गीत लोक-स्मृतिक अभिलेख थिक, जे बीसम शताब्दीक उत्तरार्धक ग्रामीण बिहारक भाव-आर्थिक बनावटकेँ सुरक्षित रखैत अछि। भारतवाणी (CIIL) क अंकीकरण स्वयं एक समान्तर-अभिलेखीय कर्म थिक। लोकतान्त्रिक रूप: गीत मौखिक-प्रदर्शन लेल रचल — साहित्य एक 'साझी सम्पत्ति' (commons), न कि अभिजन-सम्पदा; एकर नुक्कड़-सभा-मूल इएह प्रमाणित करैत अछि।

बज्जिका के आ मैथिली के — दुनू के प्रति-कैननिक संघर्ष के साम्य इहाँ साफ हय; अधीनस्थ भाषा सब के क्षैतिज एकजुटता ए पाठ के नैतिक केन्द्र हय। साक्ष्य-मूल्य: समान्तर इतिहास के रूप में ई गीत लोक-स्मृति के अभिलेख हय, जे बीसम शताब्दी के उत्तरार्ध के गाँव-बिहार के भाव-आर्थिक बनावट के सुरक्षित रखत हय। भारतवाणी (CIIL) के अंकीकरण खुदे एगो समान्तर-अभिलेखीय काम हय। लोकतान्त्रिक रूप: गीत मौखिक-प्रदर्शन ला रचल — साहित्य एगो 'साझी सम्पत्ति', न कि अभिजन-सम्पदा; एकर नुक्कड़-सभा-मूल इहे साबित करत हय।

आत्म-आलोचनात्मक टीप (समान्तर-नीति-अनुरूप): लेखकक अपन भाषिक दावा — जे बज्जिका पालि-वंशज ओ मैथिली-भोजपुरीक जननी थिक — प्रति-कैननक भीतरहि ओहि आधिपत्यकारी कैनन-निर्माण-तर्ककेँ दोहरा दैत अछि, जकर विरोध समान्तर आन्दोलन करैत अछि। अर्थात्, बज्जिकाक गरिमा प्राचीनता वा प्राथम्यक ऊर्ध्व-दावासँ स्थापित करब, ओकर समान-किन्तु-भिन्न अधीनस्थ अस्मिताक क्षैतिज गौरवसँ कम वांछनीय थिक। समान्तर-इतिहास-दृष्टि भाषा-सभक क्षैतिज सौहार्दकेँ प्राथम्य-दावा पर वरीयता दैत अछि।

आत्म-आलोचनात्मक टीप (समान्तर-नीति के अनुरूप): लेखक के अपन भाषिक दावा — कि बज्जिका पालि-वंशज आ मैथिली-भोजपुरी के जननी हय — प्रति-कैनन के भीतरे ओही आधिपत्यकारी कैनन-निर्माण-तर्क के दोहरा देत हय, जेकर विरोध समान्तर आन्दोलन करत हय। मतलब, बज्जिका के गरिमा प्राचीनता या प्राथम्य के ऊर्ध्व-दावा से खड़ी करब, ओकर समान-लेकिन-भिन्न अधीनस्थ पहचान के क्षैतिज गौरव से कम वांछनीय हय। समान्तर-इतिहास-नजर भाषा सब के क्षैतिज सौहार्द के प्राथम्य-दावा पर तरजीह देत हय।

९. समन्वित मूल्यांकन: शिल्प, उपलब्धि ओ सीमा • ९. समन्वित मूल्यांकन: शिल्प, उपलब्धि आ सीमा

शिल्प-दृष्टिएँ संग्रहक रीढ़ टेक थिक; बज्जिका क्रिया-पदक सघन बुनाबट एकर भाषिक पहचान दैत अछि; ग्राम्य-प्रतीक (मटुकिया, बँसुरिया, कोइलिया, चन्दा, धान, अलमुनियाक थरिया) आ ध्वनि-अलंकार एकर लोक-रस भरैत अछि। एक तनाव सेहो अछि — कतहु तत्सम-प्रधान पदावली ('रणित ललित नव कनक नूपुरवा') देशज मुहावरासँ पूर्ण एकरूप नहि भए पबैत, जाहिसँ किछु गीतक एकरसता शिथिल भए जाइत अछि।

शिल्प के नजर से संग्रह के रीढ़ टेक हय; बज्जिका क्रिया-पद के सघन बुनावट एकर भाषिक पहचान देत हय; गाँव-घर के प्रतीक (मटुकिया, बँसुरिया, कोइलिया, चन्दा, धान, अलमुनिया के थरिया) आ ध्वनि-अलंकार एकर लोक-रस भरत हय। एगो तनाव भी हय — कहीं तत्सम-प्रधान पदावली ('रणित ललित नव कनक नूपुरवा') देशज मुहावरा से पूरा एक न हो पावे, जेकरा से किछु गीत के एकरसता ढीली हो जात हय।

उपलब्धि: सबसँ पैघ उपलब्धि — विविध विषय ओ रसक एक गेय गीत-कोश, जे लेखकक घोषित लक्ष्य छल। सामाजिक चेतना, जतय विरह प्रवास-यथार्थमे बदलि जाइत आ राजनीतिक व्यंग्यप्रत्यक्ष अछि, एकर स्थायी मूल्य थिक। लोक-जीवनसँ गहन जुड़ाव आ ग्राम्य प्रतीकक प्रामाणिकता एकरा सच्चा लोक-दस्तावेज बनबैत अछि।

उपलब्धि: सबसे बड़ उपलब्धि — भाँति-भाँति के बिषय आ रस के एगो गावे वला गीत-कोश, जे लेखक के घोषित लक्ष्य रहल। सामाजिक चेतना, जहाँ विरह परदेस-यथार्थ में बदल जात आ राजनीतिक व्यंग्य सीधा हय, एकर स्थायी मूल्य हय। लोक-जीवन से गहिर जुड़ाव आ गाँव-घर के प्रतीक के सच्चाई एकरा सच्चा लोक-दस्तावेज बनावत हय।

सीमा: संग्रह असमान अछि — किछु राजनीतिक ओ गरीबी-गीत काव्यसँ अधिक प्रचारात्मक-उपदेशात्मक (वाच्य, वक्रता ओ ध्वनिसँ रहित) भए जाइत अछि। कृष्ण ओ श्रृंगार-खण्डक अनेक गीत विद्यापति-सूरक परिचित भूमि पर चलैत अछि। प्रतीक-पुनरावृत्ति ओ तत्सम-देशज पदावलीक असंगति खटकैत अछि। भूमिकाक भाषिक दावा सिद्धिसँ अधिक आग्रह थिक, आ प्रतिनिधित्वक मध्यस्थता एक विमर्श-समस्या थिक। तथापि सरलता, टेक-पुनरावृत्ति ओ स्पष्ट भाव — ई सभटा गेयताक अनिवार्य शर्त थिक; एहन गीत मंच पर गाबल जएबाक लेल रचल, न कि केवल पढ़ल जएबाक लेल।

सीमा: संग्रह असमान हय — किछु राजनीतिक आ गरीबी-गीत काव्य से जादे प्रचार-वला आ उपदेश-वला (वाच्य, वक्रता आ ध्वनि से रहित) बन जात हय। कृष्ण आ श्रृंगार-खण्ड के अनेक गीत विद्यापति-सूर के जानल जमीन पर चलत हय। प्रतीक-दोहराव आ तत्सम-देशज पदावली के बेमेली खटकत हय। भूमिका के भाषिक दावा सिद्धि से जादे आग्रह हय, आ प्रतिनिधित्व के मध्यस्थता एगो विमर्श-समस्या हय। तइयो सरलता, टेक-दोहराव आ साफ भाव — ई सब गेयता के जरूरी शर्त हय; अइसन गीत मंच पर गावे ला बनल हय, न कि खाली पढ़े ला।

१०. उपसंहार

चारू आयामक समन्वयसँ स्पष्ट अछि जे 'बज्जिका गीत-संगीत' एक बहुस्तरीय कृति थिक — रस-ध्वनि-वक्रोक्तिक दृष्टिएँ ओ लोक-रस-कोश, पाश्चात्य दृष्टिएँ ओ वर्ग-चेतन, संवादधर्मी ओ प्रदर्शन-मूलक पाठ, नव्य-न्यायक दृष्टिएँ अभाव-ज्ञान ओ अनुमान-व्याप्तिसँ बुनल भाव-संरचना, आ समान्तर-इतिहासक दृष्टिएँ एक प्रति-कैननिक, अधीनस्थ-स्वर-वाहक दस्तावेज।

चारू आयाम के मेल से साफ हय कि 'बज्जिका गीत-संगीत' एगो बहुस्तरीय कृति हय — रस-ध्वनि-वक्रोक्ति के नजर से ऊ लोक-रस-कोश, पाश्चात्य नजर से ऊ वर्ग-चेतन, संवादधर्मी आ प्रदर्शन-मूलक पाठ, नव्य-न्याय के नजर से अभाव-ज्ञान आ अनुमान-व्याप्ति से बुनल भाव-संरचना, आ समान्तर-इतिहास के नजर से एगो प्रति-कैननिक, अधीनस्थ-स्वर-वाहक दस्तावेज।

एकर स्थायी मूल्य दुहरा अछि — एक दिस ई बिहारक प्रवास ओ गरीबीक एक लोक-साहित्यिक साक्ष्य थिक, आ दोसर दिसमैथिलीक सहोदर लोक-वाणीक तुलनात्मक अध्ययन तथा समान्तर-साहित्यिक प्रश्नक दृष्टिएँ एक उपयोगी मूल-पाठ। डॉ० रामेश्वर प्रसादक ई संकलन ओहि परम्पराक थिक, जतय कवि जन-साधारणक दिल-दिमागमे अपन भाषाक पहचान बनएबाक लेल गीतकेँ सहज-स्वाभाविक स्रोत मानैत छथि। विदेह समान्तर आन्दोलन जाहि प्रति-कैननकेँ रचबाक स्वप्न देखैत अछि, ई कृति ओहि समान्तर वाङ्मयक एक प्रामाणिक अंग थिक — आ इएह कारणे ओ हमर आलोचकीय आदर-योग्य अछि।

एकर स्थायी मूल्य दुहरा हय — एक ओर ई बिहार के परदेस आ गरीबी के एगो लोक-साहित्यिक साक्ष्य हय, आ दोसर ओर मैथिली के सहोदर लोक-वाणी के तुलनात्मक अध्ययन आ समान्तर-साहित्यिक प्रश्न के नजर से एगो जरूरी मूल-पाठ हय। डॉ० रामेश्वर प्रसाद के ई संग्रह ओही परम्परा के हय, जहाँ कवि जन-साधारण के दिल-दिमाग में अपन भाषा के पहचान बनावे ला गीत के सहज-स्वाभाविक स्रोत माने हथ। विदेह समान्तर आन्दोलन जेकर प्रति-कैनन के रचे के सपना देखत हय, ई कृति ओही समान्तर वाङ्मय के एगो प्रामाणिक अंग हय — आ एही से ऊ हमर आलोचकीय आदर के लायक हय।

समीक्षा-पद्धति: एहि अनुशीलनमे भारतीय काव्यशास्त्र (रस-ध्वनि-वक्रोक्ति), पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त, नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा ओ विदेह समान्तर-इतिहास-रूपरेखा — एहि चारि आयामकेँ आधार बनाओल गेल अछि। सभटा उद्धरण मूल पोथीसँ यथावत् लेल गेल आ ओकरा विश्लेषणक हेतु सीमित राखल गेल अछि।

समीक्षा-पद्धति: ए अनुशीलन में भारतीय काव्यशास्त्र (रस-ध्वनि-वक्रोक्ति), पाश्चात्य समीक्षा-सिद्धान्त, नव्य-न्याय-ज्ञानमीमांसा आ विदेह समान्तर-इतिहास-रूपरेखा — ए चार आयाम के आधार बनावल गेल हय। सब उद्धरण मूल पोथी से जस के तस लेल गेल आ ओकरा बिश्लेषण खातिर सीमित रखल गेल हय।

खण्ड २: निकट-पाठ, गीत-विन्यास आ सामाजिक-सांस्कृतिक विवेचन

आलोचनात्मकपद्धति ·आलोचना के पद्धति

आलोचनात्मक पद्धतिमे तीन स्तर राखल गेल अछि: पहिल, निकट-पाठ—शब्द, बिम्ब, पुनरावृत्ति, लय, टेक, संवाद आ कथ्यक सूक्ष्म अध्ययन; दोसर, भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसँ शृंगार, करुण, हास्य, वीर आ लोक-भक्तिक भाव-संरचनाक परीक्षण; तेसर, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिसँ ग्राम्य जीवन, स्त्री-अनुभव, गरीबी, कृषि, सत्ता-चिन्ता, भाषा-अस्मिता आ सामुदायिक स्मृतिक अर्थ-विस्तार।

आलोचनात्मक पद्धतिमे तीन स्तर राखल गेल हय: पहिल, निकट-पाठ—शब्द, बिम्ब, पुनरावृत्ति, लय, टेक, संवाद आ कथ्यक सूक्ष्म अध्ययन; दोसर, भारतीय काव्यशास्त्रीय दृष्टिसे शृंगार, करुण, हास्य, वीर आ लोक-भक्तिक भाव-संरचनाक परीक्षण; तेसर, सामाजिक-सांस्कृतिक दृष्टिसे ग्राम्य जीवन, स्त्री-अनुभव, गरीबी, कृषि, सत्ता-चिन्ता, भाषा-अस्मिता आ सामगरयिक स्मृतिक अर्थ-विस्तार।

१. ग्रन्थ-स्वरूप: गीत, कविता आ लोकधुनकसंगम ·१. पोथी के रूप आ बनावट

अब हम कइसे चलूँ डगरिया, लोगवा नजर लगावे ना। ।

‘बज्जिका गीत-संगीत’ क मूल शक्ति ओकर गेयता अछि। ई साधारण कविता-संग्रह नहि, बल्कि एहन गीत-संग्रह अछि जाहिमे पंक्ति-रचना, ध्वनि, टेक, पुनरावृत्ति आ सम्बोधन सभ मिलि गायनक स्वाभाविक अवकाश बनबैत अछि। अनेक गीतमे पंक्ति छोट अछि, ध्वन्यात्मक लय स्पष्ट अछि आ अन्तिम पद पुनरावृत्तिमूलक अछि। एहि कारण पाठक पढ़ैत-पढ़ैत भीतर सँ धुन सुनबाक अनुभव करैत अछि।

‘बज्जिका गीत-संगीत’ खाली गीत के संग्रह न हय। ई बज्जिका जनजीवन, प्रेम, दुख-सुख, प्रकृति, राजनीति, गरीबी, खेती आ फागुन के एक विस्तृत गेय संसार हय। पोथी मे कुल 105 गो गीत हय, जे कृष्ण, शृंगार, नायिका-व्यथा, प्रकृति, मानव-प्रकृति, देश-दशा, गरीबी, कृषि आ वसन्त—अइ नौ खण्ड मे रखल गेल हय।

कृतिक आरम्भ कृष्ण-गीतसँ होइत अछि; तकर बाद शृंगार, नायिका-व्यथा, प्रकृति, सामाजिक यथार्थ, देश-दशा, गरीबी, कृषि आ अन्तमे वसन्त धरि भाव-विस्तार होइत अछि। ई क्रम केवल विषय-विभाजन नहि, बल्कि रसात्मक आरोह-अवरोह अछि—व्यक्तिगत प्रेमसँ सामूहिक जीवन दिस, प्रकृतिसँ राजनीति दिस, आ अन्ततः पुनः उत्सव तथा रंग दिस।

अइ क्रम मे कवि पहिले राधा-श्याम आ प्रेम के लोक-संसार से शुरू करै छतन; फेर नायिका के पीर, प्रकृति आ मनुष्य के स्वभाव तक जायत हय; ओकर बाद देश, गरीबी आ खेती के यथार्थ आबय हय; आ अन्त मे वसन्त आ होरी के रंग से पोथी फेर रस-उल्लास मे लौट आवय हय। तैं ई खण्ड-विभाजन खाली सूची न हय, बल्कि भाव के क्रमिक यात्रा हय।

एहि आरम्भिक टेकमे ‘डगरिया’ आ ‘नजर लगावे’ जकाँ लोकप्रचलित शब्दावली काव्यक भावकेँ सीधे लोक-जीवनसँ जोड़ैत अछि। ‘डगरिया’ केवल पथ नहि, प्रेमक सार्वजनिक जोखिमक संकेत सेहो बनैत अछि।

अइ टेक मे पोथी के मूल सुर साफ सुनाय पड़य हय—सहज लोकबोली, गावे लायक लय, प्रेम के संकोच आ समाज के नजर। ‘डगरिया’ एहाँ खाली रास्ता न हय; ई प्रेम, लोकलाज आ सार्वजनिक निगाह के बीच से निकले वाला जीवन-पथ के संकेत सेहो हय।

२. कृष्ण-खण्डः लोक-भक्ति आ शृंगारकसहअस्तित्व •२. कृष्ण गीतः लोक-भक्ति आ प्रेम के संगम

प्रथम बीस गीत कृष्ण-केन्द्रित अछि, मुदा एहि कृष्णक रूप वैदिक-दार्शनिक नहि, लोकजीवनक निकट, राधा-श्यामक प्रेम, मुरली, यमुना, अँगना, पनघट, नजर, विरह आ छेड़छाड़सँ बनल अछि। लेखक कृष्ण-मिथककेँ ग्रामीण भाव-संसारमे उतारैत छथि। एहि रूपान्तरणमे भक्ति आ शृंगार परस्पर विरोधी नहि रहैत, बल्कि एक्के भावधाराक दू छोर बनि जाइत अछि।

कृष्ण खण्ड मे भगवान दूर के दार्शनिक देवता बनके न रहतन। ऊ जमुना, पनघट, मुरली, झूला, राधा, गोरी, अँगना आ गाम के बीच अपन लोग जइसन उपस्थित छतन। अइ गीत मे भक्ति आ शृंगार अलग-अलग राह न हय; दून्नो एक-दोसर मे घुलल मिलल हय।

राधा-श्याम प्रसंगमे विरह अधिकतर सहज बोलचालक लयमे व्यक्त होइत अछि। अतिशय संस्कृतनिष्ठ अलंकारक बदला लोकबिम्ब, देह-भाषा, नयन, मुरली, यमुना, झूला, बरखा, फागु आ पनघट प्रमुख अछि। एहि कारण काव्यक भावाभिव्यक्ति विद्वज्जनक शास्त्रीय प्रदर्शन नहि, जनभाषाक अपनापन बनि उठैत अछि।

कवि के विशेषता हय कि पुरान कृष्ण-कथा के बज्जिका के बोल, चाल आ भाव दे देलन। श्याम, राधा, मुरली, जमुना, चाँद आ पनघट पुरान प्रतीक जरूर हय, परंच स्थानीय भाषा आ क्रियापद ओकरा नया आत्मीयता देलक।

कृष्ण-गीतसभक एक उपलब्धि ई अछि जे लेखक मिथकीय पात्रकेँ स्थानीय भाषा-संस्कारमे फेर जिअबैत छथि। सीमा ई अछि जे किछु गीतमे राधा-श्याम, चन्द्र, नयन, फूल आ मुरलीक बिम्ब पुनः-पुनः आयल अछि; ताहिसँ किछु ठाम प्रतीक-नवीनता कम भऽ जाइत अछि। मुदा संगीतात्मकता एहि पुनरावृत्तिकेँ दोषसँ अधिक गायनात्मक गुण बना दैत अछि।

किछु गीत मे चाँद, आँख, फूल, मुरली आ रूप के बिम्ब बार-बार आबय हय। पढ़े मे कखनहुँ दोहराव लगय हय, परंच गावे मे ई दोहराव टेक, स्मृति आ लय के ताकत बन जायत हय। ई अंतर गीत-साहित्य के प्रकृति समझे के लेल जरूरी हय।

३. शृंगारः देह, दृष्टि आ प्रतीक्षाक काव्य •३. शृंगारः नजर, देह, लाज आ प्रतीक्षा

शृंगार-खण्डमे प्रेमक दृश्यात्मकता अत्यन्त प्रबल अछि। आँखि, अँचरा, चूनरी, चन्द्र, कमल, बिजली, बादल, सुगन्ध, पायल, केश, अधर आ फूल बारम्बार आबैत अछि। रूपवर्णन प्रायः चलायमान अछि—नायिका देखाइत मात्र नहि, चलैत, हँसैत, झाँकैत, लजैत, प्रतीक्षा करैत आ संवाद करैत अछि।

शृंगार खण्ड मे प्रेम बहुत दृश्य रूप मे सामने आबय हय। अँचरा, पायल, आँख, केश, कमल, चाँद, बिजुली, फूल, हवा, रात आ रंग—ई सब प्रेम के भाषा बनल हय। कवि रूप-वर्णन करैत जरूर छतन, पर नायिका खाली देखे के वस्तु बनके न रहय हय; ऊ चलय हय, लजाय हय, हँसय हय, झाँकय हय, प्रतीक्षा करय हय आ कखनहुँ सवाल सेहो करय हय।

एहि खण्डक अनेक गीतमे प्रेम सार्वजनिक दृश्य सेहो बनैत अछि। गामक बाट, अँगना, छत, नदी, फूलबारी आ राति—ई सभ प्रेमक मंच बनैत अछि। प्रेमक निजी अनुभूति आ सामुदायिक निगाहक बीच तनाव काव्यकेँ जीवंत बनबैत अछि।

गाम के बाट, अँगना, छत, बगइचा आ नदी प्रेम के मंच बन जायत हय। एतय निजी प्रेम आ समाज के निगाह के बीचतनाव बनल रहय हय। अइ कारण गीत मे प्रेम खाली देह के आकर्षण न रहके लोकलाज, दूरी, प्रतीक्षा आ मिलन के पूरा सामाजिक अनुभव बन जायत हय।

लेखकक शृंगार-काव्यमे उपमा सरल अछि, मुदा तत्क्षण बोधगम्य। ‘चन्द्र’, ‘कमल’, ‘बिजली’, ‘मधुऋतु’ जकाँ पारंपरिक बिम्ब स्थानीय क्रियापद आ लोकलयक कारण पुनः ताजगी पबैत अछि। यद्यपि किछु ठाम रूप-वर्णन रूढ़ होइत अछि, कुल मिलाकऽ गीतक संगीतात्मक प्रवाह ओकरा बोझिल नहि होमय दैत अछि।

किछु ठाम रूप-वर्णन परम्परागत हय, पर बज्जिका के स्थानीय क्रिया, संबोधन आ बोलचाल ओकरा मे नया जीवन भरै हय। कवि जटिल अलंकार न खोजतन; सहज बिम्ब से तुरन्त प्रभाव पैदा करै छतन।

४. नायिका-व्यथाः स्त्री-अनुभवक करुणधरातल •४. नायिका-व्यथाः औरत के भीतर के आवाज

नायिका-व्यथा खण्ड संग्रहक भावात्मक केन्द्रसभमे सँ एक अछि। एतय पति-परदेश, प्रतीक्षा, परिवारक दवाब, अपमान, अकेलापन, प्रेमक असुरक्षा आ स्त्रीक आन्तरिक वाणी उभरैत अछि। ई खण्ड केवल प्रेम-विरह नहि, ग्रामीण स्त्री-जीवनक सामाजिक दबाब सेहो उद्घाटित करैत अछि।

नायिका-व्यथा अइ पोथी के सबसे संवेदनशील खण्ड मे से एक हय। एतय परदेश गेल पिया, ससुराल, अकेलापन, इंतजार, दुख, रोष, प्रेम के असुरक्षा आ स्त्री के आत्मस्वर सामने आबय हय। औरत सजावट के पात्र भर न हय; ऊ बोलय हय, पूछय हय, शिकायत करय हय आ कखनहुँ प्रतिरोध सेहो करय हय।

विशेष रूपेँ परदेशिया पति, ससुराल, बाल-विवाहक छाया, स्त्रीक असहाय प्रतीक्षा आ संवादहीनता गीतमे बारम्बार आयल अछि। स्त्री पात्र हमेशा निष्क्रिय नहि अछि; कतहु ओ विरोध करैत अछि, कतहु प्रश्न करैत अछि, कतहु अपन प्रेमक अधिकार माँगैत अछि। एहि कारण नायिका-व्यथा कृतिक भावलोककेँ गहिराई प्रदान करैत अछि।

अइ खण्ड मे करुण रस के प्रभाव भाषा के सादगी से बढ़ल हय। छोट वाक्य, पुकार, दोहराव आ रोजमर्रा के शब्द दुख के बनावटी न होवे देय हय। नायिका के पीर व्यक्तिगत हय, पर ओकर भीतर परदेश, परिवार, विवाह-संबंध आ स्त्री के सामाजिक स्थिति के संकेत सेहो मिलय हय।

करुण रसक प्रस्तुति अत्यधिक विलापपर टिकायल नहि अछि; ओकरा लोकबोलीक साधारण वाक्य, पुकार आ पुनरावृत्ति अधिक प्रभावी बनबैत अछि। ई सरलता कृतिक महत्त्वपूर्ण कलात्मक गुण अछि।

एहाँ कवि के उपलब्धि ई हय कि लोकगीत के परिचित ढाँचा मे स्त्री के भावनात्मक संसार के अलग स्थान देल गेल हय। सीमा ई हय कि पोथी के दोसर श्रृंगारिक गीत मे कखनहुँ स्त्री के बाहरी रूप पर अधिक जोर पड़ल हय।

५. प्रकृतिः सजावट नहि, जीवितसहचर ·५. प्रकृतिः मनुष्य के जीवित सहचर

काजर से सज के आयेल रात में अन्हरिया, सोना अइसन भागल बिहान। ।

प्रकृति-खण्डमे नदी, हवा, वर्षा, कोयल, मधुऋतु, मेहँदी, फूल, चन्द्र आ हरियर खेत केवल पृष्ठभूमि नहि। प्रकृति मनुष्यक भावक सहभागी अछि। नदी विरह वहबैत अछि, चन्द्र मिलनक संकेत बनैत अछि, वर्षा मनक आवेगक संग चलैत अछि, आ फूल प्रेमक दृश्यात्मक भाषा बनैत अछि।

प्रकृति खण्ड मे नदी, पवन, बरखा, कोयल, मेहँदी, फागुन, फूल आ चाँद खाली सजावट न हय। आदमी के मन जइसे बदलय हय, तहिना प्रकृति सेहो भाव के संग बदलैत देखाय पड़य हय। बरखा के संग विरह, चाँद के संग मिलन, फागुन के संग उमंग आ नदी के संग प्रवाह के भाव जुड़ल हय।

एहि दू पंक्तिमे राति ‘काजर’ सँ सजीव बनैत अछि आ बिहान ‘सोना’ सन चमकैत अछि। लोकबिम्बक एहि सहज रूपान्तरणमे लेखकक चित्रात्मक क्षमता स्पष्ट होइत अछि।

अइ पंक्ति मे रात के ‘काजर’ आ बिहान के ‘सोना’ से जो तुलना कैल गेल हय, ओ साधारण होके सेहो चमकीला दृश्य बनाबय हय। लोकजीवन से उठल बिम्ब कवि के सबसे स्वाभाविक काव्य-शक्ति हय।

प्रकृतिक सौन्दर्यक संग ग्रामीण पर्यावरणक मूर्त उपस्थिति सेहो अछि—खेत, नदी, पनघट, बाग, कदम्ब, कोयल, फागुन। एहि कारण प्रकृति-चित्रण अमूर्त रोमानी प्रकृति नहि, बल्कि रहन-सहनक भूगोल अछि।

प्रकृति के चित्र अमूर्त न हय। खेत, नदी, पनघट, बाग, कदम्ब, कोयल, फागुन—ई सब ओही भूगोल से आयल हय जे जन-जीवन के रोज के हिस्सा हय। तैं प्रकृति अइ पोथी मे पर्यावरण से अधिक जीवन-पद्धति के रूप मे उपस्थित हय।

६. मानव-प्रकृतिः सामाजिक व्यंग्यकविस्तार ·६. मानव-प्रकृतिः व्यंग्य आ सामाजिक आलोचना

‘मानव-प्रकृति’ खण्डसँ संग्रहक स्वर निर्णायक रूपेँ बदलैत अछि। प्रेम आ ऋतुरागक बाद लेखक अफसर, मंत्री, चुनाव, भ्रष्टाचार, सत्ता, लूट, नैतिक पतन, बेरोजगारी, हिंसा आ सामाजिक विघटनपर तीक्ष्ण दृष्टि दैत छथि। एहि खण्डमे काव्यक गीतात्मकता व्यंग्यक औजार बनैत अछि।

‘मानव-प्रकृति’ खण्ड से पोथी के सुर बदल जायत हय। प्रेम आ ऋतु के बाद अफसर, मंत्री, चुनाव, कुर्सी, भ्रष्टाचार, लूट, बेरोजगारी, हिंसा आ नैतिक पतन सामने आबय हय। कवि गीत के लय मे सामाजिक व्यंग्य करै छतन।

अनेक गीत घोषणात्मक अछि; किछु ठाम कविता प्रत्यक्ष राजनीतिक वक्तव्यक निकट पहुँचैत अछि। कलात्मक दृष्टिसँ एहि प्रवृत्तिमे जोखिम अछि, कारण विचार अगर अत्यन्त सीधे आबि जाए तँ बहुअर्थता घटैत अछि। तथापि संग्रहक सामाजिक दस्तावेजी महत्त्व एहि स्पष्टतासँ बढ़ैत अछि। लेखक अपन समयक बेचैनीकेँ लोकलयमे बाँधि दैत छथि।

किछु गीत मे बात बहुत सीधा राजनीतिक कथन बन गेल हय। साहित्यिक दृष्टि से एहाँ सूक्ष्मता कखनहुँ कम हो जायत हय, पर समय के दस्तावेज के रूप मे ई अंश बहुत महत्त्वपूर्ण हय। ‘लोकतंत्र’, ‘वोट’, ‘मंत्री’, ‘अफसर’, ‘कुर्सी’ जइसन शब्द बज्जिका गीत के शब्द-संसार मे आधुनिक जीवन के सीधा प्रवेश कराबय हय।

राजनीतिक शब्दावली—मंत्री, अफसर, चुनाव, वोट, लोकतंत्र, कुर्सी—लोकगीतक पारंपरिक शब्दकोशमे आधुनिक हस्तक्षेप अछि। ई मिश्रण कृतिक ऐतिहासिकता निश्चित करैत अछि।

अइ खण्ड के सबसे खास बात ई हय कि कवि लोकगीत के केवल प्रेम आ ऋतु तक सीमित न रखलन; ओकरा शासन, भ्रष्टाचार आ सामाजिक असंतोष के भाषा बनौलन।

७. देश-दशाः राष्ट्रबोध आजनचिन्ता ·७. देश-दशाः जन-चिन्ता आ राष्ट्रबोध

देश-दशा खण्डमे लेखकक राष्ट्रबोध आदर्शवाद, भ्रष्टाचार-विरोध आ नैतिक आक्रोशक संग बनैत अछि। स्वतंत्रता, लोकतंत्र, गरीबी, सीमावर्ती संकट, शिक्षा, प्रशासन आ सामाजिक अनुशासन जकाँ विषय गीतक रूपमे आयल अछि।

देश-दशा के गीत मे स्वतंत्रता, शासन, शिक्षा, सीमा, भ्रष्टाचार आ नागरिक जिम्मेदारी पर चिंता देखाय पड़य हय। एहाँ कवि के ‘हम’ निजी प्रेमी से बदलके समाज के ‘हम’ बन जायत हय।

ई गीतसभ कखनो जनगीतक निकट जाइत अछि। एतय निजी ‘हम’ धीरे-धीरे सामूहिक ‘हम’ मे बदलैत अछि। काव्यक केन्द्रप्रियतमसँ हटि नागरिक जीवनपर आबि जाइत अछि। एहि रूपान्तरणक कारण संग्रह मात्र प्रेमगीतक पुस्तक नहि रहि सामाजिक चेतनाक दस्तावेज बनैत अछि।

किछु गीत जनगीत जइसन स्वर धारण करै हय। कखनहुँ नारा आ उपदेश अधिक हो जायत हय, पर लोकभाषा मे देश के हालत पर सीधा बोलबो अइ पोथी के साहस हय। कवि अपन समय के राजनीतिक बेचैनी के लोकलय मे रखे के प्रयास कैलन।

सीमा ई जे प्रत्यक्ष उपदेश वा नारा किछु गीतमे काव्यात्मक जटिलता घटबैत अछि। उपलब्धि ई जे लेखक लोकभाषामे नागरिक आलोचना सम्भव करैत छथि।

एहाँ कलात्मक उपलब्धि आ सीमा एके साथ हय—सीधापन जन-संप्रेषण बढ़ाबय हय, पर कखनहुँ बहुअर्थता घटाबय हय।

८. गरीबीः करुणा, आक्रोश आ संरचनात्मकप्रश्न ·८. गरीबीः भूख, मजदूरी आ सम्मान

गरीब के समस्या राम विपतिये बाँट जाले। ।

गरीबी-खण्ड संग्रहक सर्वाधिक सामाजिक रूपेँ मार्मिक अंशसभमे सँ अछि। महँगाई, मजदूरी, भूख, कर्ज, बेटी, खेत, बेरोजगारी, बीमारी आ असमानता एतय नैतिक समस्या नहि मात्र, जीवनक प्रतिदिनक संकट अछि।

गरीबी खण्ड मे महँगाई, मजदूरी, बेटी, कर्ज, खेत, पेट, रोजी-रोटी आ असमानता के संकट सामने आबय हय। गरीब आदमी एहाँ दया के पात्र भर न हय; ओकर मेहनत, आत्मसम्मान, विवशता आ संघर्ष के साथ देखल गेल हय।

लेखक गरीब पात्रकेँ करुणाक निष्क्रिय वस्तु नहि बनबैत छथि; ओकरा श्रम, आत्मसम्मान आ संघर्षक संग देखैत छथि। किछु गीतमे दैवी पुकार अछि, मुदा ओकर भीतर सामाजिक व्यवस्था विरुद्ध प्रश्न सेहो अछि। ई द्वंद्व ग्रामीण चेतनाक यथार्थवादी चित्र अछि—लोक आस्था आ सामाजिक प्रतिरोध एक्के समय उपस्थित।

कहीं भगवान के पुकार हय, कहीं व्यवस्था पर सवाल। ई दून्नो एके साथ चलय हय—लोक-आस्था सेहो, सामाजिक प्रतिरोध सेहो। एही कारण अइ गीत के दुख कृत्रिम न लगय हय।

एहि खण्डमे भाषा विशेष प्रभावी अछि, कारण काव्यक शब्दावली जीवनक वास्तविक अर्थव्यवस्थासँ निकलैत अछि। ‘कमा’, ‘मजूरी’, ‘महँगाई’, ‘खेत’, ‘उधार’, ‘रोटी’ जकाँ शब्द भावक आधार बनैत अछि।

कमा, मजदूरी, महँगाई, खेत, उधार, रोटी जइसन शब्द कविता के जमीन बनाबय हय। अइ खण्ड मे भाषा के सामाजिक वजन सबसे अधिक महसूस होय हय।

९. कृषिः श्रमक सौन्दर्यशास्त्र ·९. कृषिः मेहनत के सौन्दर्य

कृषि-खण्डमे किसानक श्रम, खेतक तैयारी, धान, पानी, हरियर पात, खेतीक संकट, मौसम आ ग्रामीण परिवारक सहयोग गीतात्मक रूप पबैत अछि। एहि अंशमे कृति अपन सामाजिक भूगोलक सर्वाधिक ठोस रूप प्रस्तुत करैत अछि।

कृषि खण्ड मे किसान, किसानिन, धान, पानी, खेत, फसल, श्रम आ मौसम के पूरा संसार हय। कवि खेती के खाली हरियर दृश्य के रूप मे न देखलन; ओकर कष्ट, अनिश्चितता, श्रम आ उम्मीद सेहो देखौलन।

किसान जीवनकेँ केवल रोमानी हरियालीक रूपमे नहि देखाओल गेल अछि; कष्ट, अनिश्चितता, श्रम आ उत्पादनक कठिनाई सेहो सामने अछि। तथापि खेतीक दृश्यसभमे सामूहिकता आ आशा प्रबल अछि। खेत सामाजिक श्रमक मंच अछि, मात्र प्राकृतिक दृश्य नहि।

खेत एहाँ जमीन भर न हय; घर-परिवार, भोजन, सम्मान आ भविष्य के आधार हय। किसान आ किसानिन के संयुक्त उपस्थिति ग्रामीण जीवन के सामूहिक श्रम के रूप सामने आनय हय।

एहि गीतसभसँ पोथीक सामाजिक भूगोल सबसँ ठोस रूपमे देखाइत अछि। प्रेमक अँचरा आ पायलसँ चलल भाषा एतय हल, धान, पानी आ श्रम धरि पहुँचि जाइत अछि।

अइ गीत से पोथी के सामाजिक भूगोल सबसे ठोस रूप मे देखाय पड़य हय। प्रेम के अँचरा आ पायल से चलल भाषा एहाँ हल, धान, पानी आ श्रम तक पहुँच जायत हय।

१०. वसन्तः समापनमे पुनः रस, रंग आउत्सव ·१०. वसन्त आ होरीः रंग मे लौटत समापन

मोहन करे बरजोरी, गोरी! कइसे खेलूँ होरी। ।

अन्तिम दू गीत वसन्त आ होरीक रंगमे संग्रहकेँ पुनः प्रेम, खेल आ उल्लास दिस आनैत अछि। आरम्भ कृष्णसँ भेल छल; अन्त फेर कृष्ण-होरीक रंगमे होइत अछि। एहि वृत्ताकार संरचनासँ कृतिक भीतर एक सांगीतिक समापन-बोध उत्पन्न होइत अछि।

पोथी के आखिरी गीत वसन्त आ होरी के हय। शुरुआत कृष्ण से भेल आ अन्त फेर कृष्ण के होरी से—अइ से पोथी एक प्रकार के पूरा घेरा बनाबय हय।

समाज, गरीबी, राजनीति आ कृषि जकाँ भारी विषय पार कऽ पाठक फेर रंग, फागु, हास्य आ देहधर्मी उल्लासमे लौटैत अछि। ई समापन काव्यात्मक संतुलन प्रदान करैत अछि।

बीच मे राजनीति, गरीबी, देश-दशा आ खेती के गंभीर संसार पार कके पाठक फेर रंग, हँसी, प्रेम आ खेल मे लौटय हय। अइ समापन से पोथी के भाव-संतुलन बनल रहय हय।

११. भाषाः बज्जिकाक आत्मीयता आ बहुरंगीरजिस्टर ·११. बज्जिका भाषा के साहित्यिक ताकत

कृतिक भाषा एकर सबसे विशिष्ट उपलब्धि अछि। लेखक बज्जिकाकेँ केवल 'लोकबोली' क सजावटी रंग नहि, पूर्ण काव्य-माध्यमक रूपमे बरतैत छथि। क्रियापद, सर्वनाम, सम्बोधन, संक्षिप्त वाक्य, ध्वनि-पुनरावृत्ति आ लोक मुहावरा गीतसभकेँ अलग स्वर दैत अछि।

अइ पोथी के सबसे बड़ा काम ई हय कि बज्जिका के पूरा साहित्यिक भाषा जइसन बरतल गेल हय। गाम-घर के शब्द, स्थानीय क्रियापद, पुकार, संबोधन, मुहावरा आ ध्वनि—सब गीत के अपना स्वर देय हय।

कृतिक भाषामे बज्जिकाक स्थानीय रूपसभक संग हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ आ आधुनिक प्रशासनिक शब्दावली सेहो भेटैत अछि। प्रेमगीतमे 'अँचरा', 'डगरिया', 'सैयाँ', 'गोरिया', 'अँगना' जकाँ आत्मीय शब्द अछि; सामाजिक गीतमे 'लोकतंत्र', 'मंत्री', 'चुनाव', 'वोट', 'प्रशासन' जकाँ आधुनिक शब्द प्रवेश करैत अछि। एहि बहुस्तरीय रजिस्टरसँ भाषा समयक परिवर्तनकेँ आत्मसात करैत देखाइत अछि।

संगे आधुनिक शब्द सेहो आयल हय—चुनाव, मंत्री, अफसर, लोकतंत्र, प्रशासन। मतलब भाषा पुरान लोक-संसार मे बंद न हय; ऊ नया समय के अनुभव आ शब्द के सेहो अपनाबय हय।

लेखक आरम्भिक वक्तव्यमे बज्जिकाक क्षेत्रीय रूप आ क्रियापद-विविधतापर अपन मत राखैत छथि। साहित्यिक दृष्टिसँ अधिक महत्त्वपूर्ण बात ई अछि जे कृति स्वयं भाषा प्रयोगक व्यापक नमूना बनि जाइत अछि।

साहित्यिक दृष्टि से सबसे महत्त्वपूर्ण बात ई हय कि बज्जिका एहाँ विषय न हय, माध्यम हय। प्रेम से राजनीति आ खेती तक सब कुछ अइ भाषा मे कहे के प्रयास पोथी के ऐतिहासिक महत्त्व बढ़ाबय हय।

कविक भाषामे हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ पद आ स्थानीय बज्जिका रूप एक संग मिलैत अछि। एहि मिश्रणकेँ केवल 'शुद्धता' क कसौटीसँ नहि देखबाक चाही; ई बीसम शताब्दीक अन्तिम चरणकसामाजिक सम्पर्क आ बदलैत भाषिक व्यवहारक संकेत सेहो थिक।

कवि के भाषा मे हिन्दी, संस्कृतनिष्ठ पद आ स्थानीय बज्जिका रूप एक साथ मिलय हय। ई मिश्रण के केवल 'शुद्धता' के कसौटी से न देखे के चाही; ई बीसम सदी के अन्तकालीन सामाजिक संपर्क आ बदलैत भाषिक व्यवहार के संकेत सेहो हय।

१२. छन्द, लय, टेक आध्वन्यात्मकता ·१२. लय, टेक आ ध्वनि

गीतसभ कड़ाईसँ एकरूप शास्त्रीय छन्दमे नहि बन्हल अछि। ओकर वास्तविक शक्ति मौखिक लय, दोहराव, पंक्ति-समता, तुक, टेक आ स्वर-गति अछि। अनेक गीतक अन्तिम पंक्ति हर पदक बाद लौटैत अछि; ई पुनरावृत्ति स्मृति आ गायन दुनूकेँ सहज बनबैत अछि।

गीत के असली छन्द ओकर बोल आ धुन मे हय। सब गीत एके शास्त्रीय मात्रा मे बन्हल न हय, पर 'रह-रह', 'चल-चल', 'कुहकी-कुहकी', 'आयेल-आयेल' जइसन दोहराव लय पैदा करै हय।

ध्वनि-संरचनामे 'रह-रह', 'चल-चल', 'कुहकी-कुहकी', 'आयेल-आयेल' सन पुनरुक्ति विशेष उल्लेखनीय अछि। एहि ध्वनि-प्रयोगक कारण अर्थ मात्र नहि, गतिशीलता सेहो बनैत अछि।

बहुत गीत मे आखिरी पंक्ति बार-बार लौटय हय। गावे मे ई टेक बनय हय, याद रखे मे सहायता करै हय आ भाव के जोर बढ़ाबय हय।

किछु गीतमे मात्रिक असमानता पढ़ैत समय खटकैत अछि, मुदा सम्भव अछि गायन-धुन ओकर संतुलन करैत हो। लिखित पाठक आधारपर कहल जा सकैत अछि जे कृतिक छन्द-शक्ति शास्त्रीय मात्रा-गणनासँ अधिक लोक-लयपर निर्भर अछि।

लिखित रूप मे कखनहुँ मात्रा असमान लग सकय हय, पर ई संग्रह मूलतः लोक-लय पर आश्रित हय। तैं ओकर संगीतात्मकता के केवल लिखित छन्द के कसौटी से नापब उचित न हय।

१३. बिम्ब-प्रतीक आ लोक-संसार

कृतिक प्रमुख प्रतीक—चन्द्र, आँखि, फूल, नदी, यमुना, बादल, पवन, कोयल, खेत, अँगना, मुरली, पायल, अँचरा, फागुन—लोकजीवनक परिचित वस्तु अछि। एहि परिचिततासँ कविता तत्काल संप्रेषणीय बनैत अछि।

कृतिक प्रमुख प्रतीक—चन्द्र, आँखि, फूल, नदी, यमुना, बादल, पवन, कोयल, खेत, अँगना, मुरली, पायल, अँचरा, फागुन—लोकजीवनक परिचित वस्तु हय। अइ परिचिततासे कविता तत्काल संप्रेषणीय बनय हय।

चन्द्र रूप-सौन्दर्यक, नदी विरह आ प्रवाहक, खेत श्रम आ जीवनोपार्जनक, अँगना घरेलू संसारक, पथ/डगरिया सामाजिक निगाह आ जीवन-यात्राक, आ फागुन मुक्त उत्सवक प्रतीक बनैत अछि। लेखक कठिन प्रतीकवाद नहि रचैत छथि; हुनकर प्रतीक पारदर्शी अछि, मुदा गीतक पुनरावृत्तिपूर्ण संरचनामे धीरे-धीरे सांस्कृतिक अर्थ ग्रहण करैत अछि।

चन्द्र रूप-सौन्दर्यक, नदी विरह आ प्रवाहक, खेत श्रम आ जीवनोपार्जनक, अँगना घरेलू संसारक, पथ/डगरिया सामाजिक निगाह आ जीवन-यात्राक, आ फागुन मुक्त उत्सवक प्रतीक बनय हय। लेखक कठिन प्रतीकवाद नहि रचैत छतन; हुनकर प्रतीक पारदर्शी हय, मगर गीतक पुनरावृत्तिपूर्ण संरचनामे धीरे-धीरे सांस्कृतिक अर्थ ग्रहण करय हय।

१४. स्त्री-दृष्टिः उपलब्धि आसीमा ·१३. औरत के चित्रः परम्परा आ अपना आवाज

संग्रहमे स्त्री पात्रक उपस्थिति बहुत व्यापक अछि। ओ प्रेमिका, पत्नी, नायिका, परदेशी पतिक प्रतीक्षारत स्त्री, ग्रामीण युवती, श्रमिक परिवारक सदस्य आ सौन्दर्य-वर्णनक केन्द्र—अनेक रूपमे अछि। नायिका-व्यथा खण्ड स्त्रीक भाव-जगतकेँ अलग स्थान दैत अछि, जे कृतिक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

पोथी मे औरत कई रूप मे आयल हय—राधा, प्रेमिका, पत्नी, परदेशिया के इंतजार करे वाली नायिका, खेत-घर के सदस्य, सजल गोरी आ दुखी स्त्री। ई व्यापक उपस्थिति पोथी के महत्त्वपूर्ण गुण हय।

तथापि आलोचनात्मक दृष्टिसँ देखल जाए तँ किछु शृंगार गीत स्त्री-देहकेँ बाहरी दृष्टिसँ देखैत अछि; नयन, केश, रंग, चाल, देह-रूपक वर्णन बहुल अछि। एहि प्रवृत्तिक संग-संग कतहु स्त्रीक प्रतिरोध, प्रश्न आ आत्मस्वर सेहो उपस्थित अछि। अतः संग्रहमे स्त्री-दृष्टि एकरेखीय नहि, बल्कि पारंपरिक सौन्दर्यदृष्टि आ उभरैत आत्म-अभिव्यक्तिक बीच स्थित अछि।

पर आलोचना के नजर से देखल जाय त किछु शृंगार गीत मे औरत के बाहरी रूप-देह पर अधिक जोर हय। संगही नायिका-व्यथा मे ओकर अपना आवाज, दुख, सवाल आ विरोध सेहो मिलय हय। तैं पोथी के स्त्री-चित्र एकरंगा न हय; परम्परागत सौन्दर्य-दृष्टि आ स्त्री-अनुभव के आत्मस्वर दून्नो साथ उपस्थित हय।

१५. सामाजिक दस्तावेजक रूपमेकृति ·१४. सामाजिक दस्तावेज के रूप मे पोथी

ई पोथी 2000क आसपास प्रकाशित ग्रामीण उत्तर बिहारक सामाजिक-सांस्कृतिक मनःस्थिति बुझबाक लेल उपयोगी पाठ अछि। एहि गीतसभमे प्रेम आ ऋतु मात्र नहि, बल्कि परदेश, महँगाई, चुनाव, सरकारी व्यवस्था, गरीबी, खेत, मजदूरी, शिक्षा, प्रशासन आ सामाजिक तनावक उपस्थिति अछि।

‘बज्जिका गीत-संगीत’ प्रेम आ प्रकृति के साथ अपन समय के समाज के सेहो लिखय हय। परदेश, महँगाई, चुनाव, सरकारी व्यवस्था, गरीबी, खेत, मजदूरी, बेरोजगारी आ शिक्षा जइसन विषय बताबय हय कि लेखक लोकगीत के आधुनिक जीवन से जोड़ल चाहै छतन।

यही कारण ‘बज्जिका गीत-संगीत’ क मूल्य केवल सौन्दर्यशास्त्रीय नहि, सांस्कृतिक-अभिलेखीय सेहो अछि। ई भाषा, लोकानुभव आ समयक सामाजिक चिन्ताकेँ एक ठाम सुरक्षित करैत अछि।

एही कारण पोथी के महत्त्व खाली ‘सुन्दर गीत’ तक सीमित न हय। ई बज्जिका क्षेत्र के भाषा, भाव, सामाजिक चिन्ता आ सांस्कृतिक स्मृति के दस्तावेज सेहो हय।

एहि अर्थमे कृति लोकपरम्परा आ आधुनिक जनचेतनाक बीच एक सेतु जकाँ काज करैत अछि।

अइ अर्थ मे कृति लोक परम्परा आ आधुनिक जनचेतना के बीच पुल जइसन काज करै हय।

१६. कलात्मक उपलब्धि ·१५. पोथी के मुख्य उपलब्धि

बज्जिकाकेँ गेय साहित्यिक भाषा रूपमे आत्मविश्वासपूर्वक प्रतिष्ठित करब।

बज्जिका मे 105 गो गेय रचना के विस्तृत संसार तैयार कैल गेल हय।

105 गीतकेँ नौ विषयगत खण्डमे व्यवस्थित कऽ व्यापक भाव-संसार बनाबय।

कृष्ण-प्रेम से गरीबी, राजनीति, खेती आ वसन्त तक विषय के बड़ी चौड़ाई हय।

लोकलय, टेक, पुनरावृत्ति आ सहज तुकक सफल उपयोग।

लोक-लय, टेक, पुनरावृत्ति आ सहज तुक के प्रभावी उपयोग भेल हय।

कृष्ण-शृंगारसँ राजनीति, गरीबी आ कृषि धरि विषय-विस्तार।

गाम, अँगना, नदी, खेत, पनघट, परदेश आ स्त्री-अनुभव के सजीव चित्र मिलय हय।

ग्रामीण स्त्री-अनुभव, परदेश, खेत, मौसम आ सामुदायिक जीवनक स्मरणीय चित्र।

लोकभाषा मे आधुनिक सामाजिक आ राजनीतिक आलोचना के साहस देखाय पड़य हय।

लोकभाषामे आधुनिक लोकतांत्रिक आ सामाजिक आलोचनाक साहस।

बज्जिका के साहित्यिक आत्मविश्वास अइ पोथी मे स्पष्ट रूप से उपस्थित हय।

१७. सीमासभ ·१६. पोथी के सीमा

किछु गीतमे चन्द्र, नयन, फूल, रूप, पायल आदि बिम्बक पुनरावृत्ति अधिक अछि।

किछु शृंगार गीत मे चाँद, आँख, फूल, रूप जइसन बिम्ब बहुत दोहरायल गेल हय।

राजनीतिक गीतसभमे कतहु-कतहु वक्तव्य काव्यक बहुअर्थता पर भारी पड़ैत अछि।

किछु राजनीतिक गीत कविता से अधिक भाषण के नजदीक पहुँच जायत हय।

शास्त्रीय छन्दक दृष्टिसँ मात्रा-संतुलन सर्वत्र समान नहि अछि; संग्रह मूलतः लोक-लयपर आश्रित अछि।

सब ठाम मात्रा-संतुलन एक जइसन न हय; गीत लोक-लय पर अधिक निर्भर हय।

किछु शृंगारिक अंशमे स्त्रीक बाहरी सौन्दर्य-वर्णन प्रमुख भऽ जाइत अछि।

किछु जगह नारी-सौन्दर्य के बाहरी वर्णन अधिक हय।

भाषिक इतिहास सम्बन्धी आरम्भिक दावासभक पुष्टि लेल स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक प्रमाण आवश्यक होयत।

भाषा-इतिहास संबंधी आरम्भिक दावा के स्वतंत्र भाषावैज्ञानिक प्रमाण से अलग जाँच जरूरी हय।

१८. समग्रमूल्याङ्कन ·१७. समग्र मूल्याङ्कन

'बज्जिका गीत-संगीत' क साहित्यिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई बज्जिकाकेँ केवल लोकसंग्रहक भाषा नहि, समकालीन रचना, प्रेम, व्यंग्य, सामाजिक आलोचना, करुणा आ कृषिजीवनक सक्षम माध्यम बनबैत अछि। लेखकक श्रेष्ठता विशेषतः ओतयप्रकट होइत अछि जतय ओ लोकजीवनक सहज शब्दकेँ गीतक लयमे छोड़ि दैत छथि; ओहि ठाम भाषा स्वयं कविता बनि उठैत अछि।

'बज्जिका गीत-संगीत' के असली महत्त्व ई हय कि ई बज्जिका के प्रेम, भक्ति, दुख, हँसी, विरोध, गरीबी, खेती आ देश-चिन्ता—सब कुछ कहे लायक साहित्यिक भाषा के रूप मे बरतय हय। पोथी के सबसे सफल जगह ऊ हय जहाँ कवि बिना भारी सजावट के लोक-शब्द के लय मे छोड़ देथिन; ओही ठाम भाषा स्वयं गीत बन जायत हय।

कृतिक कमजोर क्षण ओतय अछि जतय विचार सीधे नारा वा उपदेश बनि जाइत अछि, मुदा ई कमजोरी सेहो ओकर समय-सापेक्ष जनगीतात्मक आकांक्षासँ जुड़ल अछि। समग्र रूपेँ ई पोथी बज्जिका साहित्यक सांस्कृतिक स्मृति, गीत-परम्परा आ आधुनिक सामाजिक चेतनाक बीच एक महत्त्वपूर्ण सेतु रूपेँ देखल जा सकैत अछि।

कहीं-कहीं उपदेश आ नारा कलात्मक सूक्ष्मता घटाबय हय, पर पूरा पोथी देखल जाय त ई सीमा ओकर व्यापक सामाजिक आकांक्षा के भीतर समझ मे आबय हय। बज्जिका साहित्य मे अइ कृति के गीत, लोक-स्मृति आ आधुनिक जनचेतना के जोड़त एक महत्त्वपूर्ण कड़ी के रूप मे देखल जा सकय हय।

एहि पोथीक स्थायी उपलब्धि ई अछि जे ई बज्जिकाक लोक-संवेदनाकेँ केवल संग्रह नहि करैत, बल्कि ओकरा समकालीन साहित्यिक अभिव्यक्तिक रूपमे प्रतिष्ठित करबाक प्रयास करैत अछि।

अइ पोथी के स्थायी उपलब्धि ई हय कि ई बज्जिका के लोक-संवेदना के मात्र संग्रह न करै हय, बल्कि ओकरा समकालीन साहित्यिक अभिव्यक्ति के रूप मे प्रतिष्ठित करे के प्रयास करै हय।

खण्ड ३: बज्जिका साहित्यक व्यापक ऐतिहासिक, सांस्कृतिक आ भाषिक परिप्रेक्ष्य

विस्तृत भौगोलिक ओ सांस्कृतिक परिवेशमे पल्लवित-पुष्पित बज्जिका भाषा ओ एकर लोक-साहित्य, भारतीय उपमहाद्वीपक एकटा अत्यन्त समृद्ध ओ प्राचीन परम्पराक संवाहक अछि। बिहारक मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, समस्तीपुरक किछु भाग तथा नेपालक तराई क्षेत्र विशेष क' रौतहट ओ सर्लाही जिलामे बाजल जाय वला एहि भाषाकेँ भाषाविज्ञानक दृष्टिकोण सँ केन्द्रीय मैथिलीक 'पश्चिमी उपभाषा' (Western Maithili) क रूपमे वर्गीकृत कएल गेल अछि। वर्ष २००१ क जनगणनाक प्रामाणिक आँकड़ाक अनुसार, भारतमे लगभग १ करोड़ १५ लाख सँ १ करोड़ १८ लाख लोक ओ नेपालमे लगभग २ लाख ३८ हजार लोक बज्जिका बजैत छथि। एतबा विशाल जनसांख्यिकीय आधारक बादो, संस्थागत संरक्षणक अभावमे ईभाषा अपन अस्तित्वक लेल सङ्घर्षरत अछि। एहि पृष्ठभूमिमे डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सम्पादित ओ वर्ष २००० मे किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर सँ प्रकाशित पोथी 'बज्जिका गीत-संगीत' लोक-साहित्यक अभिलेखीकरण ओ संरक्षणक दिशा मे एकटा युगान्तरकारी प्रयास अछि।

विस्तृत भौगोलिक आ सांस्कृतिक परिवेशमे पल्लवित-पुष्पित बज्जिका भाषा आ एकर लोक-साहित्य, भारतीय उपमहाद्वीपक एगो अत्यन्त समृद्ध आ प्राचीन परम्पराक संवाहक हय। बिहारक मुजफ्फरपुर, वैशाली, सीतामढ़ी, शिवहर, समस्तीपुरक किछु भाग आ नेपालक तराई क्षेत्र विशेष क' रौतहट आ सर्लाही जिलामे बाजल जाय वला अइ भाषाके भाषाविज्ञानक दृष्टिकोण से केन्द्रीय मैथिलीक

'पश्चिमी उपभाषा' (Western Maithili) क रूपमे वर्गीकृत कैल गेल हय। वर्ष २००१ क जनगणनाक प्रामाणिक आँकड़ाक अनुसार, भारतमे लगभग १ करोड़ १५ लाख से १ करोड़ १८ लाख लोक आ नेपालमे लगभग २ लाख ३८ हजार लोक बज्जिका बजय छतन। एतना विशाल जनसांख्यिकीय आधारक बादो, संस्थागत संरक्षणक अभावमे ई भाषा अपन अस्तित्वक लेल सङ्घर्षरत हय। अइ पृष्ठभूमिमे डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सम्पादित आ वर्ष २००० मे किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर से प्रकाशित पोथी 'बज्जिका गीत-संगीत' लोक-साहित्यक अभिलेखीकरण आ संरक्षणक दिशा मे एगो युगान्तरकारी प्रयास हय।

एहि समीक्षा आलेखक मूल उद्देश्य डॉ. रामेश्वर प्रसादक एहि कृतिकेँ साहित्य, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान ओ भाषाविज्ञानक बहुआयामी निकष पर तौलनाइ अछि। एहि साहित्यिक समीक्षाक सङ्गहि, बज्जिका भाषा ओ लोक-साहित्यक वैज्ञानिक अनुसन्धानक लेल एकटा बहुआयामी अनुसन्धान-रूपरेखा सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि, जे भविष्यक शोधार्थी लोकनिक लेल मार्गदर्शक सिद्ध होएत।

अइ समीक्षा आलेखक मूल उद्देश्य डॉ. रामेश्वर प्रसादक अइ कृतिके साहित्य, समाजशास्त्र, मनोविज्ञान आ भाषाविज्ञानक बहुआयामी निकष पर तौलनाइ हय। अइ साहित्यिक समीक्षाक सङ्गहि, बज्जिका भाषा आ लोक-साहित्यक वैज्ञानिक अनुसन्धानक लेल एगो बहुआयामी अनुसन्धान-रूपरेखा सेहो प्रस्तुत कैल गेल हय, जे भविष्यक शोधार्थी लोकक लेल मार्गदर्शक सिद्ध होत।

बज्जिका साहित्यक ऐतिहासिक विकास-क्रम ओ डॉ. रामेश्वर प्रसादकअवदान ·बज्जिका साहित्यक ऐतिहासिक विकास-क्रम आ डॉ. रामेश्वर प्रसादक अवदान

बज्जिका भाषाक उत्पत्ति प्राचीन 'बज्जी' सङ्घ सँ जुड़ल अछि, जे विश्वक प्राचीनतम गणतन्त्रमे सँ एक छल ओ जाहिक केन्द्र वैशाली छल। भाषाई विकास-क्रममे ई मागधी प्राकृत ओ मागधी अपभ्रंश सँ विकसित भेल अछि, जाहि सँ मैथिली, भोजपुरी, मगही, अङ्गिका, बाङ्ला, असमिया ओ उड़िया जकाँ अन्य भाषासभक सेहो जन्म भेल अछि। ऐतिहासिक रूपें जतय राजकाजक लेल प्राकृतक प्रयोग होइत छल, ओतय धार्मिक कृत्य संस्कृतमे होइत छल, ओ एहि दुनू स्रोत सँ बज्जिकाक शब्दावली समृद्ध भेल अछि। विद्यापतिक अवहट्ट रचनासभ, विशेष क' 'कीर्तिलता', वर्तमान बज्जिकाक संरचनाक अत्यन्त निकट अछि, जे ई प्रमाणित करैत अछि जे ई भाषा अपन मूल स्वरूपकेँ आइ धरि सुरक्षित रखने अछि।

बज्जिका भाषाक उत्पत्ति प्राचीन 'बज्जी' सङ्घ से जुड़ल हय, जे विश्वक प्राचीनतम गणतन्त्रमे से एक रहल आ जइक केन्द्र वैशाली रहल। भाषाई विकास-क्रममे ई मागधी प्राकृत आ मागधी अपभ्रंश से विकसित भेल हय, जइ से मैथिली, भोजपुरी, मगही, अङ्गिका, बाङ्ला, असमिया आ उड़िया जकाँ अन्य भाषासबक सेहो जन्म भेल हय। ऐतिहासिक रूपें जतय राजकाजक लेल प्राकृतक प्रयोग होय रहल, ओहाँ धार्मिक कृत्य संस्कृतमे होय रहल, आ अइ दुनू स्रोत से बज्जिकाक शब्दावली समृद्ध भेल हय। विद्यापतिक अवहट्ट रचनासब, विशेष क' 'कीर्तिलता', वर्तमान बज्जिकाक संरचनाक अत्यन्त निकट हय, जे ई प्रमाणित करय हय जे ई भाषा अपन मूल स्वरूपके आइ धरि सुरक्षित रखने हय।

बज्जिका साहित्यक इतिहास अत्यन्त प्राचीन ओ गौरवशाली रहल अछि। एकर प्रारम्भिक साहित्यमे गयाधर (रचनाकाल १०४५ ई.), जे वैशालीक रहबला छलाह ओ बौद्ध-धर्मक प्रचारार्थ तिब्बत गेल छलाह, हुनकर रचनासभकेँ राखल जाइत अछि। तदुपरान्त १५६५ ई. मे हलदर दास द्वारा लिखित खण्डकाव्य 'सुदामाचरित्र' प्राप्त होइत अछि, जे सम्पूर्ण रूपें बज्जिका भाषाक प्रतिनिधि रचना मानल जाइत अछि। अठारहम ओ उन्नीसम शताब्दीक सन्धिलग्न पर मँगनीराम (१८१५ ई. क आसपास) द्वारा रचित 'मँगनीराम की साखी', 'रामसागर पोथी' ओ 'अनमोल रतन' बज्जिका साहित्यक अमूल्य धरोहर अछि। बीसम शताब्दीक मध्य ओ उत्तरार्ध सँ बज्जिका साहित्यमे एकटा नवका पुनर्जागरणक उदय भेल, जाहिमे अनेकन विद्वान लोकनि लोक-कण्ठमे विद्यमान साहित्यकेँ लिपिबद्ध करबाक भगीरथ प्रयास कएलनि। एहि नवजागरणक क्रममे विभिन्न साहित्यकार ओ हुनकर रचनासभकेँ बुझनाइ आवश्यक अछि।

अत्यन्त प्राचीन आ गौरवशाली रहल हय। एकर प्रारम्भिक साहित्यमे गयाधर (रचनाकाल १०४५ ई.), जे वैशालीक रहबला रहथिन आ बौद्ध-धर्मक प्रचारार्थ तिब्बत गेल रहथिन, हुनकर रचनासबके राखल जाय हय। तदुपरान्त १५६५ ई. मे हलदर दास द्वारा लिखित खण्डकाव्य 'सुदामाचरित्र' प्राप्त होय हय, जे सम्पूर्ण रूपेंबज्जिका भाषाक प्रतिनिधि रचना मानल जाय हय। अठारहम आ उन्नीसम शताब्दीक सन्धिलग्न पर मँगनीराम (१८१५ ई. क आसपास) द्वारा रचित 'मँगनीराम की साखी', 'रामसागर पोथी' आ 'अनमोल रतन' बज्जिका साहित्यक अमूल्य धरोहर हय। बीसम शताब्दीक मध्य आ उत्तरार्ध से बज्जिका साहित्यमे एगो नवका पुनर्जागरणक उदय भेल, जइमे अनेकन विद्वान लोक लोक-कण्ठमे विद्यमान साहित्यके लिपिबद्ध करबाक भगीरथ प्रयास कैलन। अइ नवजागरणक क्रममे विभिन्न साहित्यकार आ हुनकर रचनासबके बुझनाइ आवश्यक हय।

रचनाकार / सम्पादक

महत्त्वपूर्ण कृति / पोथीक नाम

प्रकाशन वर्ष ओ प्रकाशक

साहित्यक विधा

डॉ. रामेश्वर प्रसाद

बज्जिका गीत-संगीत, बज्जिका लोकगीत, बज्जिका स्वर सङ्गम

२०००, किशोर प्रकाशन, मुजफ्फरपुर

लोकगीत सङ्कलन

निर्मल मिलिन्द

गितिया, तरहात्ती पर तरेगन, खिस्सा पेहानी

१९८४, १९९९, अ. भा. बज्जिका सा. सम्मेलन

उपन्यासिका, गीत-कविता, कथा

प्रफुल्ल कुमार सिंह 'मणि'

बज्जिका साहित्य का इतिहास

१९९५, हंसराज प्रकाशन, मुजफ्फरपुर

साहित्यिक इतिहास

डॉ. अवधेश्वर अरुण

बज्जिका रामायण

(अज्ञात)

महाकाव्य

चन्द्र किशोर श्वेतांशु

इंजुरी भर सिंहोरवा

१९७७, समीक्षा प्रकाशन, सीतामढ़ी

गीत-कविता सङ्ग्रह

योगेन्द्र राय

बज्जिका व्याकरण

१९८७, शैलेश भूषण, हाजीपुर

व्याकरण

एहि साहित्यिक विकास-क्रममे डॉ. रामेश्वर प्रसादक भूमिका मात्र एकटा सङ्कलनकर्त्ताक नहि, अपितु एकटा सांस्कृतिक रक्षकक अछि। 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीमे ओ गाम-देहातक अशिक्षित ओ अल्प-शिक्षित कृषक, श्रमिक ओ महिला वर्गकेँ कण्ठस्थ साङ्गीतिक परम्पराकेँ जे रूपें लिपिबद्ध कएलनि अछि, ओ बज्जिकाक लोक-जीवनकेँ जीवन्त करैत अछि। जतय शिष्ट साहित्यमे कृत्रिमता ओ बौद्धिकताक प्रधानता होइत अछि, ओतय लोक-साहित्य, विशेष क' एहि पोथीमे सङ्कलित गीतसभमे, भाव सौन्दर्य ओ नाद सौन्दर्यक प्राकृत निर्झर प्रवाहित होइत अछि।

अइ साहित्यिक विकास-क्रममे डॉ. रामेश्वर प्रसादक भूमिका मात्र एगो सङ्कलनकर्त्ताक नहि, बल्कि एगो सांस्कृतिक रक्षकक हय। 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीमे आ गाम-देहातक अशिक्षित आ अल्प-शिक्षित कृषक, श्रमिक आ महिला वर्गके कण्ठस्थ साङ्गीतिक परम्पराके जे रूपें लिपिबद्ध कैलन हय, आ बज्जिकाक लोक-जीवनके जीवन्त करय हय। जतय शिष्ट साहित्यमे कृत्रिमता आ बौद्धिकताक प्रधानता होय हय, ओहाँ लोक-साहित्य, विशेष क' अइ पोथीमे सङ्कलित गीतसबमे, भाव सौन्दर्य आ नाद सौन्दर्यक प्राकृत निर्झर प्रवाहित होय हय।

लोक-साङ्गीतिक दर्पणमे समाजः संस्कार ओ जीवन-चक्रक साङ्गीतिकदर्शन ·लोक-साङ्गीतिक दर्पणमे समाजः संस्कार आ जीवन-चक्रक साङ्गीतिक दर्शन

कोनो भी समाजक मूल आत्मा ओकर लोकगीतमे बसैत अछि। बज्जिका लोकगीत, जाहिक एकटा वृहद् आख्यान 'बज्जिका गीत-संगीत' मे भेटैत अछि, सम्पूर्ण मानवीय जीवन-चक्रकेँ साङ्गीतिक अभिव्यक्तिक माध्यम सँ प्रस्तुत करैत अछि। मिथिला ओ तिरहुतक ई परम्परा रहल अछि जे मानव जीवनक प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटनाकेँ अनुष्ठान ओ गीतक सङ्ग सम्पादित कएल जाइत अछि। भारतीय

दर्शनमे वर्णित विभिन्न संस्कारसभमे सँ जन्म, उपनयन (जनेऊ), ओ विवाहक अवसरपर गाओल जाय वला गीतसभक एकटा समृद्ध भण्डार एहि क्षेत्रमे उपलब्ध अछि।

कोनो भी समाजक मूल आत्मा ओकर लोकगीतमे बसैत हय। बज्जिका लोकगीत, जइक एगो वृहद् आख्यान 'बज्जिका गीत-संगीत' मे भेटैत हय, सम्पूर्ण मानवीय जीवन-चक्रके साङ्गीतिक अभिव्यक्तिक माध्यम से प्रस्तुत करय हय। मिथिला आ तिरहुतक ई परम्परा रहल हय जे मानव जीवनक प्रत्येक महत्त्वपूर्ण घटनाके अनुष्ठान आ गीतक सङ्ग सम्पादित कैल जाय हय। भारतीय दर्शनमे वर्णित विभिन्न संस्कारसबमे से जन्म, उपनयन (जनेऊ), आ विवाहक अवसर पर गाओल जाय वला गीतसबक एगो समृद्ध भण्डार अइ क्षेत्र मे उपलब्ध हय।

सन्तानोत्पत्ति, जे कोनो भी कृषि-प्रधान समाजक लेल वंश-वृद्धि ओ आर्थिक शक्तिक परिचायक मानल जाइत अछि, ओकर उल्लास 'सोहर' ओ 'खेलउना' गीतसभक माध्यम सँ व्यक्त होइत अछि। मुदा ई सोहर गीतसभ केवल हर्षोल्लासक गान नहि अछि। एहि गीतसभक गम्भीर समाजशास्त्रीय ओ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करला पर ज्ञात होइत अछि जे एहिमे प्रसव-पीडाक मार्मिकता, मृत्यु-भय पर जीवनक विजय, ओ पारिवारिक सम्बन्धक (जेना ननद-भौजाईक बीचक हास-परिहास ओ द्वन्द्व) यथार्थ चित्रण रहैत अछि। प्रसूता स्त्रीक शारीरिक ओ मानसिक यन्त्रणाकेँ साङ्गीतिक रूप द' क' समाज ओकरा एकटा मनोवैज्ञानिक आश्रय प्रदान करैत अछि।

सन्तानोत्पत्ति, जे कोनो भी कृषि-प्रधान समाजक लेल वंश-वृद्धि आ आर्थिक शक्तिक परिचायक मानल जाय हय, ओकर उल्लास 'सोहर' आ 'खेलउना' गीतसबक माध्यम से व्यक्त होय हय। मगर ई सोहर गीतसब केवल हर्षोल्लासक गान नहि हय। अइ गीतसबक गम्भीर समाजशास्त्रीय आ मनोवैज्ञानिक विश्लेषण करला पर ज्ञात होय हय जे अइमे प्रसव-पीडाक मार्मिकता, मृत्यु-भय पर जीवनक विजय, आ पारिवारिक सम्बन्धक (जेना ननद-भौजाईक बीचक हास-परिहास आ द्वन्द्व) यथार्थ चित्रण रहय हय। प्रसूता स्त्रीक शारीरिक आ मानसिक यन्त्रणाके साङ्गीतिक रूप द' क' समाज ओकरा एगो मनोवैज्ञानिक आश्रय प्रदान करय हय।

विवाह संस्कारक गीतसभ तँ बज्जिका लोक-साहित्यक मुकुट-मणि अछि। मण्डप छाबय सँ ल' क', वेदी-पूजन, सिन्दूरदान, कोहबर, समुझवनी, ओ अन्तिममे बेटी-विदाई धरिक प्रत्येक विधानक लेल पृथक्-पृथक् गीतसभक विधान अछि। विदाईक अवसर पर गाओल जाय वला बेदनसिक्त गीतसभमे उपमा ओ उत्प्रेक्षा अलङ्कारक जे अप्रतिम भण्डार भेटैत अछि, ओ बड़का-बड़का महाकाव्यसभमे सेहो दुर्लभ अछि। लोक-कवि पिताकेँ 'मानसरोवर', सासुकेँ 'भरल-पूरल वापी' (बावड़ी), माताकेँ 'बहैत गङ्गा', ओ पतिकेँ 'उगैत सूर्य' क रूपमे चित्रित करैत अछि। ई रूपक लोक-मानसक अगाध काव्य-प्रतिभा ओ प्रकृतिकेँ मानवीय सम्बन्धसभक सङ्ग एकरूप करबाक दर्शनकेँ प्रमाणित करैत अछि। विदाईक समय पिताक रोबय सँ गङ्गामे बाढि आबिजेबाक, माताक रोबय सँ आकाशमे अन्हार भ' जेबाक, ओ भाइक रोबय सँ ओकर धोती पाँव धरि भीजि जेबाक जे अतिशयोक्तिपूर्ण मुदा अत्यन्त मार्मिक चित्रण एहि गीतसभमे भेल अछि, ओ कठोर सँ कठोर हृदयकेँ सेहो द्रवित क' देबाक सामर्थ्य रखैत अछि। ई गीतसभ स्पष्ट करैत अछि जे पितृसत्तात्मक समाजमे कन्याकेँ पराया धन मानल जेबाक दर्द कतेक गहीर अछि।

विवाह संस्कारक गीतसब तँ बज्जिका लोक-साहित्यक मुकुट-मणि हय। मण्डप छाबय से ल' क', वेदी-पूजन, सिन्दूरदान, कोहबर, समुझवनी, आ अन्तिममे बेटी-विदाई धरिक प्रत्येक विधानक लेल पृथक्-पृथक् गीतसबक विधान हय। विदाईक अवसर पर गाओल जाय वला बेदनसिक्त गीतसबमे उपमा आ उत्प्रेक्षा अलङ्कारक जे अप्रतिम भण्डार भेटैत हय, आ बड़का-बड़का महाकाव्यसबमे सेहो दुर्लभ हय। लोक-कवि पिताके 'मानसरोवर', सासुके 'भरल-पूरल वापी' (बावड़ी), माताके 'बहैत गङ्गा', आ पतिके 'उगैत सूर्य' क रूपमे चित्रित करय हय। ई रूपक लोक-मानसक अगाध काव्य-प्रतिभा आ प्रकृतिके मानवीय सम्बन्धसबक सङ्ग एकरूप करबाक दर्शनके प्रमाणित करय हय। विदाईक समय पिताक रोबय से गङ्गामे बाढि आबि जेबाक, माताक रोबय से आकाशमे अन्हार भ' जेबाक, आ भाइक रोबय से ओकर धोती पाँव धरि भीजि जेबाक जे अतिशयोक्तिपूर्ण मगर अत्यन्त मार्मिक चित्रण अइ गीतसब मे भेल हय, आ कठोर से कठोर हृदयके सेहो द्रवित क' देबाक सामर्थ्य रखैत हय। ई गीतसब स्पष्ट करय हय जे पितृसत्तात्मक समाजमे कन्याके पराया धन मानल जेबाक दर्द कतेक गहीर हय।

प्रकृति, कृषि ओ श्रम-संस्कृतिः ऋतुगीत ओ जतसारीक नारीवादीविमर्श -प्रकृति, कृषि आ श्रम-संस्कृतिः ऋतुगीत आ जतसारीक नारीवादी विमर्श

बज्जिका भाषी क्षेत्र पूर्णतः कृषि पर आश्रित अछि, तें एतय क लोक-साहित्य प्रकृतिक लय ओ ऋतुक चक्रक सङ्ग-सङ्ग चलैत अछि। ऋतु परिवर्तनकेँ केवल मौसमक बदलाव नहि, अपितु मानवीय भावनासभक बदलावक रूपमे देखल गेल अछि। फाल्गुन ओ चैत्र मासमे, जखन रबी फसल तयार होइत अछि ओ प्रकृति अपन सम्पूर्ण यौवन पर रहैत अछि, तखन गाओल जाय वला 'होरी' (होली) ओ

'चैती' गीतसभ उल्लास, मादकता ओ प्रेमक लौकिक स्वरूपकेँ व्यक्त करैत अछि। एहि गीतसभमे राधा-कृष्ण वा राम-सीताक प्रेमकेँ ईश्वरीय आवरण सँ मुक्त क' क' एकटा सामान्य कृषक-युगलक प्रेमक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि।

बज्जिका भाषी क्षेत्र पूर्णतः कृषि पर आश्रित हय, तें एहाँ क लोक-साहित्य प्रकृतिक लय आ ऋतुक चक्रक सङ्ग-सङ्गचलैत हय। ऋतु परिवर्तनके केवल मौसमक बदलाव नहि, बल्कि मानवीय भावनासबक बदलावक रूपमे देखल गेल हय। फाल्गुन आ चैत्र मासमे, जखन रबी फसल तयार होय हय आ प्रकृति अपन सम्पूर्ण यौवन पर रहय हय, तखन गाओल जाय वला 'होरी' (होली) आ 'चैती' गीतसब उल्लास, मादकता आ प्रेमक लौकिक स्वरूपके व्यक्त करय हय। अइ गीतसब मे राधा-कृष्ण वा राम-सीताक प्रेमके ईश्वरीय आवरण से मुक्त क' क' एगो सामान्य कृषक-युगलक प्रेमक रूपमे प्रस्तुत कैल गेल हय।

दोसर दिस, जेठक तपनक बाद जखन वर्षा ऋतुक आगमन होइत अछि, तखन 'कजरी' ओ 'पावस' गीतसभक स्वर गूँजय लगैत अछि। साओन-भादवक अन्हार ओ कजरारी रातिमे जखन मेघ बरसैत अछि, तखन परदेस गेल पतिक प्रतीक्षा करैत विरहदग्धा नायिकाकेँ ई राति 'नागिन' जकाँ डँसय लगैत अछि। एहि गीतसभमे अनुभूतिक जे शीतलता अछि ओ संघर्ष सँ जूझैत श्रमश्रान्त व्यक्तिक लेल सुधा (अमृत) बनि क' बरसैत अछि। प्रकृति ओ प्रेमक ई तादात्म्य बज्जिका साङ्गीतिक परम्पराकेँ विश्व-साहित्यक उच्च कोटिमे स्थापित करैत अछि।

दोसर दिस, जेठक तपनक बाद जखन वर्षा ऋतुक आगमन होय हय, तखन 'कजरी' आ 'पावस' गीतसबक स्वर गूँजय लगैत हय। साओन-भादवक अन्हार आ कजरारी रातिमे जखन मेघ बरसैत हय, तखन परदेस गेल पतिक प्रतीक्षा करय विरहदग्धा नायिकाके ई राति 'नागिन' जकाँ डँसय लगैत हय। अइ गीतसब मे अनुभूतिक जे शीतलता हय आ संघर्ष से जूझैत श्रमश्रान्त व्यक्तिक लेल सुधा (अमृत) बनि क' बरसैत हय। प्रकृति आ प्रेमक ई तादात्म्य बज्जिका साङ्गीतिक परम्पराके विश्व-साहित्यक उच्च कोटिमे स्थापित करय हय।

श्रम गीत, विशेष रूप सँ 'जतसारी' (जाँत पीसब काल गाओल जाय वला गीत) ओ 'रोपनी' (धान रोपैत काल गाओल जाय वला गीत), बज्जिका लोक-साहित्यक ओ अमूल्य हिस्सा अछि जाहिमे श्रम परिहारक सङ्ग-सङ्ग सामाजिक यथार्थवादक दर्शन होइत अछि। जाँतक घर्षणक सङ्ग-सङ्ग नारीक हृदयक वेदना, सासु-पुतहुक द्वन्द्व, पितृसत्तात्मक समाजमे ओकर दयनीय स्थिति, ओ मुगला-तुर्कक ऐतिहासिक आक्रमणक समयमे स्त्रीक सतीत्वक रक्षाक गाथा सेहो स्वर पाबि क' बाहर अबैत अछि। लोकगीतसभमे नारीक चित्रण पर नारीवादी आलोचनात्मक विमर्श (Feminist Critical Discourse Analysis) सँ ई स्पष्ट होइत अछि जे यद्यपि समाज पुरुष-प्रधान अछि ओ कहावति वा मुहावरासभमे स्त्रीकेँ प्रायः कमजोर वा हीन देखाओल गेल अछि, मुदा जतसारी जकाँ गीतसभ नारीकेँ अपन मौन विद्रोह व्यक्त करबाक एकटा सुरक्षित 'स्पेस' (Space) प्रदान करैत अछि। एतय ओ अपन पीड़क विरुद्ध स्वर उठबैत अछि, जे प्रमाणित करैत अछि जे लोक-साहित्यमे नारी-विमर्श (Feminism) कोनो नवका पश्चिमी अवधारणा नहि अछि, अपितु सदियौ सँ हमरा लोकनिक लोक-कण्ठमे विद्यमान अछि।

श्रम गीत, विशेष रूप से 'जतसारी' (जाँत पीसब काल गाओल जाय वला गीत) आ 'रोपनी' (धान रोपैत काल गाओल जाय वला गीत), बज्जिका लोक-साहित्यक आ अमूल्य हिस्सा हय जइमे श्रम परिहारक सङ्ग-सङ्ग सामाजिक यथार्थवादक दर्शन होय हय। जाँतक घर्षणक सङ्ग-सङ्ग नारीक हृदयक वेदना, सासु-पुतहुक द्वन्द्व, पितृसत्तात्मक समाजमे ओकर दयनीय स्थिति, आ मुगला-तुर्कक ऐतिहासिक आक्रमणक समयमे स्त्रीक सतीत्वक रक्षाक गाथा सेहो स्वर पाबि क' बाहर आबय हय। लोकगीतसबमे नारीक चित्रण पर नारीवादी आलोचनात्मक विमर्श (Feminist Critical Discourse Analysis) से ई स्पष्ट होय हय जे हालाँकि समाज पुरुष-प्रधान हय आ कहावति वा मुहावरासबमे स्त्रीके प्रायः कमजोर वा हीन देखाओल गेल हय, मगर जतसारी जकाँ गीतसब नारीके अपन मौन विद्रोह व्यक्त करबाक एगो सुरक्षित 'स्पेस' (Space) प्रदान करय हय। एहाँ आ अपन पीड़क विरुद्ध स्वर उठबैत हय, जे प्रमाणित करय हय जे लोक-साहित्यमे नारी-विमर्श (Feminism) कोनो नवका पश्चिमी अवधारणा नहि हय, बल्कि सदियौ से हमरा लोकक लोक-कण्ठमे विद्यमान हय।

सीमान्तकृत समाजक स्वर ओ मिथकीय चेतनाः गाथा-गीत ओपर्यावरणविमर्श -सीमान्तकृत समाजक स्वर आ मिथकीय चेतनाः गाथा-गीत आ पर्यावरण विमर्श

बज्जिका लोक-साहित्य केवल उच्च वा कुलीन वर्गक संस्कारक वर्णन धरि सीमित नहि अछि, अपितु ई सीमान्तकृत, उपेक्षित ओ दलित वर्गकेँ सेहो सशक्त स्वर प्रदान करैत अछि। एहि सन्दर्भमे मुसहर ओ अन्य कृषक-मजदूर जातिक लोक-देवता 'दीना-भद्री' क गाथा-गीत विशेष रूप सँ उल्लेखनीय अछि। दीना ओ भद्री दुइ भाइ छलाह, जे सामन्ती अत्याचार ओ बेगारीक विरुद्ध सङ्घर्ष कएलनि

ओ अपन प्राणक आहुति देलनि। ई गाथा-गीतसभ मिथिला, बज्जिकाञ्चल ओ नेपालक तराई क्षेत्रमे अत्यन्त लोकप्रिय अछि ओ एकरा 'मनुखदेव' (मनुष्य रूपी देवता) क कथाक रूपमे गाओल जाइत अछि।

बज्जिका लोक-साहित्य केवल उच्च वा कुलीन वर्गक संस्कारक वर्णन धरि सीमित नहि हय, बल्कि ई सीमान्तकृत, उपेक्षित आ दलित वर्गके सेहो सशक्त स्वर प्रदान करय हय। अइ सन्दर्भ मे मुसहर आ अन्य कृषक-मजदूर जातिक लोक-देवता 'दीना-भद्री' क गाथा-गीत विशेष रूप से उल्लेखनीय हय। दीना आ भद्री दुइ भाइ रहथिन, जे सामन्ती अत्याचार आ बेगारीक विरुद्ध सङ्घर्ष कैलन आ अपन प्राणक आहुति देलनि। ई गाथा-गीतसब मिथिला, बज्जिकाञ्चल आ नेपालक तराई क्षेत्रमे अत्यन्त लोकप्रिय हय आ एकरा 'मनुखदेव' (मनुष्य रूपी देवता) क कथाक रूपमे गाओल जाय हय।

एहि लोक-गाथाक पारिस्थितिक-आलोचना (Eco-criticism) करला पर ई स्पष्ट होइत अछि जे दीना-भद्री केवल जातिक नायक नहि छलाह, अपितु ओ पर्यावरण संरक्षणक प्रतीक सेहो छथि। ओकरा लोकनिक सङ्घर्ष जल-स्रोत (पोखरि) ओ वन-सम्पदा पर अधिकारक लेल सामन्तसभक विरुद्ध छल। गाथामे कामा माई ओ सोमारो धनी जकाँ सशक्त स्त्री पात्रक चित्रण अछि जे कृषिक (विशेष क' धानक खेतीक) रक्षा करैत छथि। दलित लोक-साहित्यक ई पर्यावरणीय चेतना (Environmental Movements tied to Folklore) प्रमाणित करैत अछि जे बज्जिका साहित्य समाजक सब वर्गक मिथकीय आख्यान, सङ्घर्ष ओ प्रकृतिक सङ्ग हुनकर तादात्म्यकेँ अपन भीतर पूर्ण गम्भीरताक सङ्ग समाहित कएने अछि। एहि गाथा-गीतसभक संरक्षण ओ गायन सीमान्तकृत वर्गकेँ समाजमे अपन आत्मसम्मान ओ पहचान स्थापित करबामे सहायक सिद्ध भ' रहल अछि।

अइ लोक-गाथाक पारिस्थितिक-आलोचना (Eco-criticism) करला पर ई स्पष्ट होय हय जे दीना-भद्री केवल जातिक नायक नहि रहथिन, बल्कि आ पर्यावरण संरक्षणक प्रतीक सेहो छतन। ओकरा लोकक सङ्घर्ष जल-स्रोत (पोखरि) आ वन-सम्पदा पर अधिकारक लेल सामन्तसबक विरुद्ध रहल। गाथामे कामा माई आ सोमारो धनी जकाँ सशक्तस्त्री पात्रक चित्रण हय जे कृषिक (विशेष क' धानक खेतीक) रक्षा करय छतन। दलित लोक-साहित्यक ई पर्यावरणीय चेतना (Environmental Movements tied to Folklore) प्रमाणित करय हय जे बज्जिका साहित्य समाजक सब वर्गक मिथकीय आख्यान, सङ्घर्ष आ प्रकृतिक सङ्ग हुनकर तादात्म्यके अपन भीतर पूर्ण गम्भीरताक सङ्ग समाहित कएने हय। अइ गाथा-गीतसबक संरक्षण आ गायन सीमान्तकृत वर्गके समाजमे अपन आत्मसम्मान आ पहचान स्थापित करबामे सहायक सिद्ध भ' रहल हय।

बज्जिका ओ केन्द्रीय मैथिलीक मध्य भाषिक ओ व्याकरणिक सम्बन्धक विश्लेषणात्मक अध्ययन ·बज्जिका आ केन्द्रीय मैथिलीक मध्य भाषिक आ व्याकरणिक सम्बन्धक विश्लेषणात्मक अध्ययन

'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीक साहित्यिक मूल्याङ्कन तखने पूर्ण ओ प्रामाणिक मानल जायत, जखन एकर भाषिक ओ व्याकरणिक संरचनाकेँ वैज्ञानिक दृष्टिकोण सँ बुझल जाय। बज्जिकाकेँ भाषाविज्ञानमे 'पश्चिमी मैथिली' क उपभाषा मानल गेल अछि, ओ ई एकटा वृहद् मैथिली भाषिक सातत्य (Maithili Dialect Continuum) क अभिन्न अङ्ग अछि। यद्यपि, बज्जिका ओ केन्द्रीय मैथिली (जाहिकेँ मानक मैथिली मानल जाइत अछि) क बीच किछु विशिष्ट व्याकरणिक, ध्वन्यात्मक, ओ रूपतात्त्विक (Morphological) भिन्नतासभ अछि जाहि पर अभिषेक कुमार काश्यप जकाँ भाषाविज्ञानी निरन्तर शोध क' रहल छथि। ई भिन्नतासभ बज्जिकाकेँ एकटा स्वतन्त्र भाषिक पहिचान देबामे सहायक सिद्ध होइत अछि।

'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीक साहित्यिक मूल्याङ्कन तखने पूर्ण आ प्रामाणिक मानल जायत, जखन एकर भाषिक आ व्याकरणिक संरचनाके वैज्ञानिक दृष्टिकोण से बुझल जाय। बज्जिकाके भाषाविज्ञानमे 'पश्चिमी मैथिली' क उपभाषा मानल गेल हय, आ ई एगो वृहद् मैथिली भाषिक सातत्य (Maithili Dialect Continuum) क अभिन्न अङ्ग हय। हालाँकि, बज्जिका आ केन्द्रीय मैथिली (जइके मानक मैथिली मानल जाय हय) क बीच किछु विशिष्ट व्याकरणिक, ध्वन्यात्मक, आ रूपतात्त्विक (Morphological) भिन्नतासब हय जइ पर अभिषेक कुमार काश्यप जकाँ भाषाविज्ञानी निरन्तर शोध क' रहल छतन। ई भिन्नतासब बज्जिकाके एगो स्वतन्त्र भाषिक पहिचान देबामे सहायक सिद्ध होय हय।

निश्चल भाषिक विश्लेषणक लेल निम्नलिखित तालिका बज्जिका ओ केन्द्रीय मैथिलीक मुख्य व्याकरणिक विशेषतासभक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि:

निश्चल भाषिक विश्लेषणक लेल निम्नलिखित तालिका बज्जिका आ केन्द्रीय मैथिलीक मुख्य व्याकरणिक विशेषतासबक तुलनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करय हय:

व्याकरणिक / भाषिक विशेषता

बज्जिका (पश्चिमी मैथिली)

केन्द्रीय / मानक मैथिली

प्रथम पुरुष सर्वनाम (First Person Pronoun)

प्रायः 'हम' (Ham) क व्यापक प्रयोग होइत अछि।

'हम' क सङ्ग-सङ्ग 'मई' / 'मएँ' क प्रयोग सेहो प्रचुर मात्रामे होइत अछि।

क्रिया रूप ओ अन्विति (Verb Agreement / Transitivity)

क्रियाक रूपमे अधिकतम दुइ टा सन्दर्भ (Two discourse referents - e.g., कर्ता ओ कर्म) कैँ एक सङ्ग एन्कोड कएल जा सकैत अछि।

क्रियाक रूपमे तीन टा सन्दर्भ (Three discourse referents - e.g., कर्ता, कर्म, ओ सम्प्रदान) कैँ एक सङ्ग एन्कोड करबाक जटिल व्यवस्था अछि।

ध्वन्यात्मकता ओ उच्चारण (Phonology)

महाप्राण (Aspirated) ओ अल्पप्राण (Non-aspirated) ध्वनिसभक विशिष्ट उच्चारण, तथा अनुनासिक (Nasalization) क अत्यन्त प्रचुर प्रयोग होइत अछि।

महाप्राण ध्वनिक प्रयोग अछि, मुदा अनुनासिक ध्वनिक सघनता बज्जिकाक तुलनामे किछु भिन्न ओ संयमित अछि।

वाक्य संरचना (Syntax)

कर्ता-कर्म-क्रिया (SOV - Subject-Object-Verb) संरचनाक अनुसरण करैत अछि, जेना "राम घर जा रहल है" / "सोंटा भुतलेय गेलई हिन्"।

कर्ता-कर्म-क्रिया (SOV) संरचना समान रूपें विद्यमान अछि, मुदा सहायक क्रियाक रूप भिन्न होइत अछि।

आदरसूचक शब्द ओ क्रिया (Honorifics)

आदरसूचक शब्दसभ (जेना 'आप', 'अहाँ', 'तू') क आधार पर क्रियाक रूपमे परिवर्तन होइत अछि।

सम्मान सूचक प्रणाली अत्यन्त जटिल अछि ओ वक्ता, श्रोता ओ तेसर व्यक्तिक सामाजिक स्तरक आधार पर क्रिया बदलैत अछि।

व्यञ्जन द्वित्व (Consonant Gemination)

शब्दसभमे व्यञ्जनकैँ द्वित्व (Geminated) करबाक प्रवृत्ति बेसी अछि, जेना /majjil/ (मज्जिल), /hammar/ (हम्मर)।

द्वित्व करबाक प्रवृत्ति अछि, मुदा बज्जिकाक तुलनामे एकर ध्वनि-विज्ञान भिन्न अछि।

बज्जिका शब्दावलीक विश्लेषण करला पर ज्ञात होइत अछि जे एहिमे तत्सम (संस्कृत सँ सीधे आगत), तद्भव, ओ देशज शब्दसभक सुन्दर सङ्गम अछि। देशज शब्द ओहि शब्दसभकैँ कहल जाइत अछि जे स्थानीय जनमानस द्वारा बोलचालमे स्वतःगढि लेल गेल

अछि ओ जाहिक कोनो संस्कृत वा विदेशी मूल नहि अछि। बज्जिकाक अशिक्षित वा कृषक वर्ग एहन देशज शब्द ओ मुहावराक भरपूर प्रयोग करैत अछि। उदाहरणार्थ, मुहावरा "ढीड़ फुलाना" (गर्भवती होना) वा "निमला के मौगी सबके भौजाई" (गरीबक इज्जत सबके मजाकक साधन) बज्जिका लोक-जीवनक सामाजिक यथार्थ ओ लाक्षणिकता (लक्षणा ओ व्यञ्जना) कैँ स्पष्ट करैत अछि।

बज्जिका शब्दावलीक विश्लेषण करला पर ज्ञात होय हय जे अइमे तत्सम (संस्कृत से सीधे आगत), तद्भव, आ देशज शब्दसबक सुन्दर सङ्गम हय। देशज शब्द ओइ शब्दसबके कहल जाय हय जे स्थानीय जनमानस द्वारा बोलचालमे स्वतः गढि लेल गेल हय आ जइक कोनो संस्कृत वा विदेशी मूल नहि हय। बज्जिकाक अशिक्षित वा कृषक वर्ग एहन देशज शब्द आ मुहावराक भरपूर प्रयोग करय हय। उदाहरणार्थ, मुहावरा "ढीड़ फुलाना" (गर्भवती होना) वा "निमला के मौगी सबके भौजाई" (गरीबक इज्जत सबके मजाकक साधन) बज्जिका लोक-जीवनक सामाजिक यथार्थ आ लाक्षणिकता (लक्षणा आ व्यञ्जना) के स्पष्ट करय हय।

डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीमे प्रयुक्त शब्दावली ई प्रमाणित करैत अछि जे बज्जिका ओ मैथिलीक बीचक सीमा रेखा अत्यन्त क्षीण अछि, मुदा एहिमे प्रयुक्त देशज शब्द ओ क्रिया-पद एकरा एकटा विशिष्ट स्थानीय सुगन्ध प्रदान करैत अछि।

डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीमे प्रयुक्त शब्दावली ई प्रमाणित करय हय जे बज्जिका आ मैथिलीक बीचक सीमा रेखा अत्यन्त क्षीण हय, मगर अइमे प्रयुक्त देशज शब्द आ क्रिया-पद एकरा एगो विशिष्ट स्थानीय सुगन्ध प्रदान करय हय।

खण्ड ४: बज्जिका लोक-साहित्य ओ भाषाविज्ञानक बहुआयामी अनुसन्धान-रूपरेखा

बज्जिका भाषा, जे नेपाल ओ भारत दुनू देशक लाखो-करोड़ो लोकक मातृभाषा अछि, ओकरा वैश्वीकरण ओ आधुनिकताक प्रभाव सँ बचाबय लेल ओ ओकर अकादमिक महत्त्व स्थापित करबाक लेल केवल सङ्कलन पर्याप्त नहि अछि। डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सङ्कलित गीतसभ ओ सम्पूर्ण बज्जिका लोक-वाङ्मयकेँ वैज्ञानिक, भाषावैज्ञानिक, ओ समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण सँ विश्लेषित करबाक लेल एकटा विस्तृत अनुसन्धान-रूपरेखाक नितान्त आवश्यकता अछि। ई अनुसन्धान-रूपरेखा एकटा अन्तर-अनुशासनात्मक (Interdisciplinary) प्रविधि पर आधारित हेबाक चाही।

बज्जिका भाषा, जे नेपाल आ भारत दुनू देशक लाखो-करोड़ो लोकक मातृभाषा हय, ओकरा वैश्वीकरण आ आधुनिकताक प्रभाव से बचाबय लेल आ ओकर अकादमिक महत्त्व स्थापित करबाक लेल केवल सङ्कलन पर्याप्त नहि हय। डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सङ्कलित गीतसब आ सम्पूर्ण बज्जिका लोक-वाङ्मयके वैज्ञानिक, भाषावैज्ञानिक, आ समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषित करबाक लेल एगो विस्तृत अनुसन्धान-रूपरेखाक नितान्त आवश्यकता हय। ई अनुसन्धान-रूपरेखा एगो अन्तर-अनुशासनात्मक (Interdisciplinary) प्रविधि पर आधारित हेबाक चाही।

१. अनुसन्धानक प्राथमिक उद्देश्य ओ परिकल्पना (Objectives andHypothesis) ·१. अनुसन्धानक प्राथमिक उद्देश्य आ परिकल्पना (Objectives and Hypothesis)

उद्देश्य १ (पाठ्य ओ विषयगत अन्वेषण): डॉ. रामेश्वर प्रसाद ओ अन्य विद्वानसभ द्वारा सङ्कलित लोकगीतसभमे अन्तर्निहित सामाजिक, पारिवारिक, लैङ्गिक (Gender), ओ पर्यावरण-सम्बन्धी विषयवस्तु कैँ चिन्हित क' क' ओकर वैज्ञानिक वर्गीकरण करब।

उद्देश्य १ (पाठ्य आ विषयगत अन्वेषण): डॉ. रामेश्वर प्रसाद आ अन्य विद्वानसब द्वारा सङ्कलित लोकगीतसबमे अन्तर्निहित सामाजिक, पारिवारिक, लैङ्गिक (Gender), आ पर्यावरण-सम्बन्धी विषयवस्तु के चिन्हित क' क' ओकर वैज्ञानिक वर्गीकरण करब।

उद्देश्य २ (व्याकरणिक ओ भाषिक मानचित्रण - Linguistic Mapping): गीतसभमे प्रयुक्त बज्जिका शब्दावली, क्रियाक रूप, कारक (Case marking), ओ वाक्य-विन्यासकेँ केन्द्रीय मैथिली, भोजपुरी ओ मगहीक सङ्ग तुलनात्मक अध्ययन क' क' बज्जिकाक स्वतन्त्र व्याकरणिक नियमसभक कोडिफिकेशन (Codification) करब।

उद्देश्य २ (व्याकरणिक आ भाषिक मानचित्रण - Linguistic Mapping): गीतसबमे प्रयुक्त बज्जिका शब्दावली, क्रियाक रूप, कारक (Case marking), आ वाक्य-विन्यासके केन्द्रीय मैथिली, भोजपुरी आ मगहीक सङ्ग तुलनात्मक अध्ययन क' क' बज्जिकाक स्वतन्त्र व्याकरणिक नियमसबक कोडिफिकेशन (Codification) करब।

उद्देश्य ३ (नारीवादी ओ सीमान्तकृत विमर्शक डिकोडिंग): लोकगीतसभमे (विशेष रूप सँ जतसारी, सोहर ओ गाथा-गीतसभमे) स्त्री-स्वतन्त्रता, पितृसत्ताक प्रभाव, ओ दीना-भद्री जकाँ गाथामे सीमान्तकृत वर्गक स्वरकेँ डिकोड करब।

उद्देश्य ३ (नारीवादी आ सीमान्तकृत विमर्शक डिकोडिंग): लोकगीतसबमे (विशेष रूप से जतसारी, सोहर आ गाथा-गीतसबमे) स्त्री-स्वतन्त्रता, पितृसत्ताक प्रभाव, आ दीना-भद्री जकाँ गाथामे सीमान्तकृत वर्गक स्वरके डिकोड करब।

उद्देश्य ४ (डिजिटल संरक्षण ओ कम्प्युटेशनल लिङ्ग्विस्टिक्स): विलुप्त भ' रहल एहि अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर (Intangible Cultural Heritage) केँ डिजिटल माध्यम सँ संरक्षित करबाक उपाय खोजनाइ ओ प्राकृतिक भाषा प्रशोधन (NLP) क लेल कर्पस (Corpus) निर्माण करब।

उद्देश्य ४ (डिजिटल संरक्षण आ कम्प्युटेशनल लिङ्ग्विस्टिक्स): विलुप्त भ' रहल अइ अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर (Intangible Cultural Heritage) के डिजिटल माध्यम से संरक्षित करबाक उपाय खोजनाइ आ प्राकृतिक भाषा प्रशोधन (NLP) क लेल कर्पस (Corpus) निर्माण करब।

२. सैद्धान्तिक परिप्रेक्ष्य (Theoretical Framework)

ई शोध निम्नलिखित आधुनिक सिद्धान्तसभक आलोकमे सम्पादित कएल जायत:

ई शोध निम्नलिखित आधुनिक सिद्धान्तसबक आलोकमे सम्पादित कैल जायत:

नारीवादी आलोचनात्मक विमर्श (Feminist Critical Discourse Analysis - FCDA): एहि सिद्धान्तिक अन्तर्गत ई देखल जायत जे बज्जिका लोकगीत ओ मुहावरासभमे नारीकेँ कोना प्रस्तुत कएल गेल अछि। की ओ केवल एकटा आज्ञाकारी पुत्री/पत्नीक रूपमे चित्रित अछि, अथवा श्रम गीतसभक माध्यम सँ ओ पितृसत्ताक विरुद्ध अपन प्रतिरोध (Resistance) दर्ज क' रहल अछि? ।

नारीवादी आलोचनात्मक विमर्श (Feminist Critical Discourse Analysis - FCDA): अइ सिद्धान्तिक अन्तर्गत ई देखल जायत जे बज्जिका लोकगीत आ मुहावरासबमे नारीके कइसे प्रस्तुत कैल गेल हय। की आ केवल एगो आज्ञाकारी पुत्री/पत्नीक रूपमे चित्रित हय, अथवा श्रम गीतसबक माध्यम से आ पितृसत्ताक विरुद्ध अपन प्रतिरोध (Resistance) दर्ज क' रहलहय? ।

पारिस्थितिक-आलोचना (Eco-criticism): ऋतु गीत, कृषि गीत (रोपनी), ओ दीना-भद्री गाथामे मानव ओ प्रकृतिक अन्तर्सम्बन्ध, वन-सम्पदाक संरक्षण, ओ जल-स्रोतक महत्त्वक अध्ययन कएल जायत।

पारिस्थितिक-आलोचना (Eco-criticism): ऋतु गीत, कृषि गीत (रोपनी), आ दीना-भद्री गाथामे मानव आ प्रकृतिक अन्तर्सम्बन्ध, वन-सम्पदाक संरक्षण, आ जल-स्रोतक महत्त्वक अध्ययन कैल जायत।

समाजशास्त्रीय भाषाविज्ञान (Sociolinguistics): भाषा ओ समाजक सम्बन्धक अध्ययन; कोना बज्जिका भाषा अपन वक्तासभक (विशेषतः वैशाली, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी ओ नेपालक तराई क्षेत्रमे) सांस्कृतिक पहिचान (Cultural Identity) स्थापित करैत अछि ओ कोना आधुनिकताक कारणें युवा वर्गमे ई भाषा सङ्कटग्रस्त भ' रहल अछि।

समाजशास्त्रीय भाषाविज्ञान (Sociolinguistics): भाषा आ समाजक सम्बन्धक अध्ययन; कइसे बज्जिका भाषा अपन वक्तासबक (विशेषतः वैशाली, मुजफ्फरपुर, सीतामढ़ी आ नेपालक तराई क्षेत्रमे) सांस्कृतिक पहिचान (Cultural Identity) स्थापित करय हय आ कइसे आधुनिकताक कारणें युवा वर्गमे ई भाषा सङ्कटग्रस्त भ' रहल हय।

३. शोधक कार्यप्रणाली ओ प्रविधि (ResearchMethodology) •३. शोधक कार्यप्रणाली आ प्रविधि (Research Methodology)

एहि अनुसन्धानकेँ चारि टा क्रमिक चरणमे सम्पादित कएल जायत:

अइ अनुसन्धानके चारि टा क्रमिक चरणमे सम्पादित कैल जायत:

प्रथम चरण: पाठ्य-सङ्कलन, कोडिंग ओ अर्थ-विश्लेषण (Data Collection, Thematic Coding and SemanticAnalysis) •प्रथम चरण: पाठ्य-सङ्कलन, कोडिंग आ अर्थ-विश्लेषण (Data Collection, Thematic Coding and Semantic Analysis)

सर्वप्रथम डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत', 'बज्जिका लोकगीत', ओ निर्मल मिलिन्दक 'तरहात्ती पर तरेगन' जकाँ प्राथमिक स्रोतसभ सँ गीतसभकेँ सङ्कलित कएल जायत।

सर्वप्रथम डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत', 'बज्जिका लोकगीत', आ निर्मल मिलिन्दक 'तरहात्ती पर तरेगन' जकाँ प्राथमिक स्रोतसब से गीतसबके सङ्कलित कैल जायत।

गीतसभकेँ अवसर (संस्कार, ऋतु, श्रम, धर्म) क आधार पर वर्गीकृत क' क' क्वालिटेटिव डेटा एनालाइसिस (Qualitative Data Analysis) कएल जायत।

गीतसबके अवसर (संस्कार, ऋतु, श्रम, धर्म) क आधार पर वर्गीकृत क' क' क्वालिटेटिव डेटा एनालाइसिस (Qualitative Data Analysis) कैल जायत।

गीतसभमे प्रयुक्त उपमा, रूपक, ओ मुहावरासभकेँ चिन्हित क' क' ओकर सांस्कृतिक ओ लाक्षणिक अर्थ निकालल जायत।

गीतसबमे प्रयुक्त उपमा, रूपक, आ मुहावरासबके चिन्हित क' क' ओकर सांस्कृतिक आ लाक्षणिक अर्थ निकालल जायत।

द्वितीय चरण: भाषिक, रूपतात्त्विक ओ वाक्य-विन्यास विश्लेषण (Morpho-syntactic and PhonologicalAnalysis) •द्वितीय चरण: भाषिक, रूपतात्त्विक आ वाक्य-विन्यास विश्लेषण (Morpho-syntactic and Phonological Analysis)

गीतसभक क्रिया-पदसभ ओ सहायक क्रियासभक (Auxiliary verbs) सूक्ष्मता सँ अध्ययन कएल जायत। बज्जिकाकेँ मैथिली सँ पृथक् करय वला महाप्राण ध्वनिसभ (Aspirated sounds), अनुनासिकक प्रयोग, ओ व्यञ्जन द्वित्वक (Gemination) ध्वनिक विश्लेषण कएल जायत।

गीतसबक क्रिया-पदसब आ सहायक क्रियासबक (Auxiliary verbs) सूक्ष्मता से अध्ययन कैल जायत। बज्जिकाके मैथिली से पृथक् करय वला महाप्राण ध्वनिसब (Aspirated sounds), अनुनासिकक प्रयोग, आ व्यञ्जन द्वित्वक (Gemination) ध्वनिक विश्लेषण कैल जायत।

आदरसूचक शब्दसभ (Honorifics) क प्रयोगकेँ सामाजिक स्तर (Social stratification) क परिप्रेक्ष्यमे देखल जायत। एहि लेल वक्ता ओ श्रोताक बीचक शक्ति-सन्तुलन (Power dynamics) क अध्ययन आवश्यक अछि।

आदरसूचक शब्दसब (Honorifics) क प्रयोगके सामाजिक स्तर (Social stratification) क परिप्रेक्ष्यमे देखल जायत। अइ लेल वक्ता आ श्रोताक बीचक शक्ति-सन्तुलन (Power dynamics) क अध्ययन आवश्यक हय।

तृतीय चरण: क्षेत्रीय अध्ययन ओ ऐतिहासिक-नृजातीय अनुसन्धान (Ethnographic, Spatial and HistoricalStudy) •तृतीय चरण: क्षेत्रीय अध्ययन आ ऐतिहासिक-नृजातीय अनुसन्धान (Ethnographic, Spatial and Historical Study)

पोथीमे वर्णित सांस्कृतिक सन्दर्भसभकेँ वर्तमान तिरहुत प्रमण्डल (मुजफ्फरपुर, वैशाली) ओ नेपालक तराई क्षेत्रक जनजीवन सँ मिला क' देखबाक लेल फील्ड-वर्क (Fieldwork) कएल जायत।

पोथीमे वर्णित सांस्कृतिक सन्दर्भसबके वर्तमान तिरहुत प्रमण्डल (मुजफ्फरपुर, वैशाली) आ नेपालक तराई क्षेत्रक जनजीवन से मिला क' देखबाक लेल फील्ड-वर्क (Fieldwork) कैल जायत।

गीतसभमे 'बिरहा', 'विदेशिया', ओ अम्बापाली (वैशालीक नगरवधू) क ऐतिहासिक प्रभावकेँ अन्वेषित कएल जायत। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'अम्बापाली' नाटक ओ बज्जिका लोक-संस्कृतिक गहीर सम्बन्धकेँ ऐतिहासिक साक्ष्यक आधार पर स्थापित कएल जायत।

गीतसबमे 'बिरहा', 'विदेशिया', आ अम्बापाली (वैशालीक नगरवधू) क ऐतिहासिक प्रभावके अन्वेषित कैल जायत। रामवृक्ष बेनीपुरी द्वारा लिखित 'अम्बापाली' नाटक आ बज्जिका लोक-संस्कृतिक गहीर सम्बन्धके ऐतिहासिक साक्ष्यक आधार पर स्थापित कैल जायत।

भिखारी ठाकुरक 'विदेशिया' परम्परा सँ बज्जिका गीतसभक अन्तर्निहित साम्य ओ वैषम्यक अध्ययन कएल जायत।

भिखारी ठाकुरक 'विदेशिया' परम्परा से बज्जिका गीतसबक अन्तर्निहित साम्य आ वैषम्यक अध्ययन कैल जायत।

चतुर्थ चरण: डिजिटाइजेशन, भाषा-संरक्षण रणनीति ओ कर्पस निर्माण (Digitization, Conservation Strategy and CorpusBuilding) •चतुर्थ चरण: डिजिटाइजेशन, भाषा-संरक्षण रणनीति आ कर्पस निर्माण (Digitization, Conservation Strategy and Corpus Building)

भारत सरकारक 'भारतीय भाषा संस्थान' (CIIL) ओ 'भारतवाणी' परियोजनाक उद्देश्यक अनुरूप एहि लिखित लोकगीतसभकेँ ध्वन्यात्मक रूपमे (Audio-visual format) रेकर्ड क' क' एकर एकटा 'डिजिटल भाषिक भण्डार' (Digital Linguistic Corpus) तैयार कएल जायत।

भारत सरकारक 'भारतीय भाषा संस्थान' (CIIL) आ 'भारतवाणी' परियोजनाक उद्देश्यक अनुरूप अइ लिखित लोकगीतसबके ध्वन्यात्मक रूपमे (Audio-visual format) रेकर्ड क' क' एकर एगो 'डिजिटल भाषिक भण्डार' (Digital Linguistic Corpus) तैयार कैल जायत।

कम्प्युटेशनल लिङ्ग्विस्टिक्सकैं प्रयोग करैत बज्जिका शब्दावलीक 'पार्ट-ऑफ-स्पीच टैगिंग' (POS Tagging) ओ एकटा प्रामाणिक बज्जिका-मैथिली-हिन्दी त्रिभाषी शब्दकोश निर्माणक प्रारूप तैयार कएल जायत।

कम्प्युटेशनल लिङ्ग्विस्टिक्सके प्रयोग करय बज्जिका शब्दावलीक 'पार्ट-ऑफ-स्पीच टैगिंग' (POS Tagging) आ एगो प्रामाणिक बज्जिका-मैथिली-हिन्दी त्रिभाषी शब्दकोश निर्माणक प्रारूप तैयार कैल जायत।

४. अध्ययनक सम्भावित परिणाम ओ अकादमिक योगदान (ExpectedOutcomes) ·४. अध्ययनक सम्भावित परिणामआ अकादमिक योगदान (Expected Outcomes)

ई गहन शोध केवल डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीकैं एकटा साहित्यिक ग्रन्थक रूपमे पुनर्जीवित नहि करत, अपितु बज्जिका भाषी क्षेत्रक एक करोड़ सँ अधिक वक्तासभक सांस्कृतिक पहिचान ओ आत्मसम्मानकैं सेहो सुदृढ करत।

ई गहन शोध केवल डॉ. रामेश्वर प्रसादक 'बज्जिका गीत-संगीत' पोथीके एगो साहित्यिक ग्रन्थक रूपमे पुनर्जीवित नहि करत, बल्कि बज्जिका भाषी क्षेत्रक एक करोड़ से अधिक वक्तासबक सांस्कृतिक पहिचान आ आत्मसम्मानके सेहो सुदृढ करत।

ई अध्ययन अकादमिक जगतमे ई सिद्ध करत जे बज्जिका लोकगीतसभमे मानवीय अनुभूतिक जे विविधता, दार्शनिक गम्भीरता, ओ काव्य-सौन्दर्य अछि, ओ कोनो भी समृद्ध शास्त्रीय वा लिखित साहित्य सँ कम नहि अछि।

ई अध्ययन अकादमिक जगतमे ई सिद्ध करत जे बज्जिका लोकगीतसबमे मानवीय अनुभूतिक जे विविधता, दार्शनिक गम्भीरता, आ काव्य-सौन्दर्य हय, आ कोनो भी समृद्ध शास्त्रीय वा लिखित साहित्य से कम नहि हय।

भाषाविज्ञानक छात्र ओ शोधार्थीसभक लेल ई एकटा प्रामाणिक सन्दर्भ ग्रन्थक काज करत, जे स्पष्ट करत जे बज्जिका ओ मैथिलीक बीचक सम्बन्ध मात्र बोलीक नहि, अपितु एकटा ऐतिहासिक ओ सातत्यपूर्ण (Continuous) भाषिक विकासक अछि।

भाषाविज्ञानक छात्र आ शोधार्थीसबक लेल ई एगो प्रामाणिक सन्दर्भ ग्रन्थक काज करत, जे स्पष्ट करत जे बज्जिका आ मैथिलीक बीचक सम्बन्ध मात्र बोलीक नहि, बल्कि एगो ऐतिहासिक आ सातत्यपूर्ण (Continuous) भाषिक विकासक हय।

नीति-निर्मातासभ (Policy Makers) ओ शैक्षणिक संस्थानसभ, जेना कि बिहार विश्वविद्यालय (मुजफ्फरपुर), कैं स्नातक ओ स्नातकोत्तर पाठ्यक्रममे बज्जिका साहित्यक पठन-पाठन सम्मिलित करबाक लेल ई शोध एकटा ठोस आधार प्रदान करत।

नीति-निर्मातासब (Policy Makers) आ शैक्षणिक संस्थानसब, जइसे कि बिहार विश्वविद्यालय (मुजफ्फरपुर), के स्नातक आ स्नातकोत्तर पाठ्यक्रममे बज्जिका साहित्यक पठन-पाठन सम्मिलित करबाक लेल ई शोध एगो ठोस आधार प्रदान करत।

उपसंहार ओनिष्कर्ष ·उपसंहार आ निष्कर्ष

डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सम्पादित 'बज्जिका गीत-संगीत' केवल किछु लोकगीतक छपल पोथी मात्र नहि अछि; ई तिरहुत ओ मिथिलाक माटिक, ओतय क आबोहवाक, ओ एहि क्षेत्रक लोकक हृदयक स्पन्दनकैं शब्दमे बान्हबाक एकटा ऐतिहासिक दस्तावेज अछि। जाँतकैं घुमबैत काकी-भउजीक दर्द, साओनक रिमझिम फुहारमे कजरी गाबैत विरहिणीक आकुलता, सन्तान जन्मक प्रसव-पीडा सँ उपजल उल्लास, ओ विवाहक मण्डप सँ विदा होइत धीयाक (पुत्रीक) नेत्रक लोड़क जे वर्णन एहि पोथीक प्रतिनिधित्व करैत अछि, ओ समग्र मानव-जातिक अनुभूतिक सार्वभौमिक सत्य अछि।

डॉ. रामेश्वर प्रसाद द्वारा सम्पादित 'बज्जिका गीत-संगीत' केवल किछु लोकगीतक छपल पोथी मात्र नहि हय; ई तिरहुत आ मिथिलाक माटिक, ओहाँ क आबोहवाक, आ अइ क्षेत्रक लोकक हृदयक स्पन्दनके शब्दमे बान्हबाक एगो ऐतिहासिक दस्तावेज हय। जाँतके घुमबैत काकी-भउजीक दर्द, साओनक रिमझिम फुहारमे कजरी गाबैत विरहिणीक आकुलता, सन्तान जन्मक प्रसव-पीडा से उपजल उल्लास, आ विवाहक मण्डप से विदा होय धीयाक (पुत्रीक) नेत्रक लोड़क जे वर्णन अइपोथीक प्रतिनिधित्व करय हय, आ समग्र मानव-जातिक अनुभूतिक सार्वभौमिक सत्य हय।

एहि अनुसन्धान-रूपरेखासँ ई बात दृढ़तापूर्वक रेखाङ्कित करैत अछि जे लोक-साहित्यकैं केवल भावुकता, पुरानी परम्परा, वा गाम-देहातक रागरङ्गक दृष्टिसँ नहि देखल जेबाक चाही। एकरा गम्भीर अकादमिक, भाषावैज्ञानिक, पारिस्थितिक ओ समाजशास्त्रीय

दृष्टिकोण सँ विश्लेषित करबाक आवश्यकता अछि। बज्जिका भाषा ओ एकर समृद्ध साङ्गीतिक परम्परा विश्व-साहित्यक एकटा अमूल्य रत्न अछि, जाहिक प्रत्येक पन्नामे ओ प्रत्येक स्वरमे एकटा सम्पूर्ण युगक धड़कन सुरक्षित अछि। एहि पर यदि प्रस्तावित वैज्ञानिक शोध कएल जाय, तँ ई बज्जिका ओ समग्र मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ वैश्विक पटल पर एकटा नव, प्रामाणिक ओ गौरवशाली पहिचान देबामे निश्चित रूपें सफल सिद्ध होएत। ई हमरा लोकनिक सामूहिक उत्तरदायित्व अछि जे एहि अमूर्त धरोहरकेँ कालक गालमे समाहित हेबा सँ रक्षा करी ओ एकरा आगामी पीढीक लेल सहेज क' राखी।

अइ अनुसन्धान-रूपरेखासे ई बात दृढ़तापूर्वक रेखाङ्कित करय हय जे लोक-साहित्यके केवल भावुकता, पुरानी परम्परा, वा गाम-देहातक रागरङ्गक दृष्टिसे नहि देखल जेबाक चाही। एकरा गम्भीर अकादमिक, भाषावैज्ञानिक, पारिस्थितिक आ समाजशास्त्रीय दृष्टिकोण से विश्लेषित करबाक आवश्यकता हय। बज्जिका भाषा आ एकर समृद्ध साङ्गीतिक परम्परा विश्व-साहित्यक एगो अमूल्य रत्न हय, जइक प्रत्येक पन्नामे आ प्रत्येक स्वरमे एगो सम्पूर्ण युगक धड़कन सुरक्षित हय। अइ पर यदि प्रस्तावित वैज्ञानिक शोध कैल जाय, तँ ई बज्जिका आ समग्र मैथिली साहित्यक भण्डारके वैश्विक पटल पर एगो नव, प्रामाणिक आ गौरवशाली पहिचान देबामे निश्चित रूपें सफल सिद्ध होत। ई हमरा लोकक सामूहिक उत्तरदायित्व हय जे अइ अमूर्त धरोहरके कालक गालमे समाहित हेबा से रक्षा करी आ एकरा आगामी पीढीक लेल सहेज क' राखी।

विस्तृत ग्रन्थ-सूची

एहि सूचीमे केवल पोथी आ मुद्रित ग्रन्थ राखल गेल अछि; पत्र-पत्रिका, शोध-पत्र, जाल-स्रोत आ वेबसाइट नहि। जतय प्रकाशन-वर्ष वा प्रकाशकक स्पष्ट सूचना उपलब्ध अछि, ओतय देल गेल अछि; अनिश्चित सूचना अनुमानसँ नहि जोड़ल गेल अछि। विदेशी ग्रन्थसभक शीर्षक पाठक-सुविधा लेल मैथिली रूपमे देल गेल अछि।

१. प्राथमिक कृति, बज्जिका साहित्य आ भाषिक स्रोत

1. रामेश्वर प्रसाद। ‘बज्जिका गीत-संगीत’ । मुजफ्फरपुर: किशोर प्रकाशन, प्रथम संस्करण, २०००।

2. रामेश्वर प्रसाद। ‘बज्जिका लोकगीत’ । मुजफ्फरपुर: किशोर प्रकाशन, २०००।

3. रामेश्वर प्रसाद। ‘बज्जिका स्वर संगम’ । मुजफ्फरपुर: किशोर प्रकाशन, २०००।

4. निर्मल मिलिन्द। ‘गितिया’ । १९८४।

5. निर्मल मिलिन्द। ‘तरहात्ती पर तरेगन’: बज्जिका गीत आ कविता। १९९९।

6. निर्मल मिलिन्द। ‘खिस्सा पेहानी’: बज्जिकाक प्रतिनिधि कथा-संकलन। अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन, सिकन्दराबाद।

7. प्रफुल्ल कुमार सिंह ‘मणि’ । ‘बज्जिका साहित्य का इतिहास’ । मुजफ्फरपुर: हंसराज प्रकाशन, १९९५।

8. योगेन्द्र राय। ‘बज्जिका व्याकरण’ । हाजीपुर: शैलेश भूषण, १९८७।

9. योगेन्द्र प्रसाद सिन्हा। ‘बज्जिका का स्वरूप’ । मुजफ्फरपुर: बज्जिका संस्थान, १९९७।

10. अवधेश्वर अरुण। ‘बज्जिका रामायण’ ।

11. चन्द्र किशोर श्वेतांशु। ‘इंजुरी भर सिंहोरवा’ । सीतामढ़ी: समीक्षा प्रकाशन, १९७७।

12. देवेन्द्र राकेश। ‘साँच में आँच कि?’ मुजफ्फरपुर: अहिल्या प्रकाशन, १९७०।

13. सियाराम तिवारी। ‘बज्जिका भाषा और साहित्य’ । पटना: बिहार राष्ट्रभाषा परिषद, १९६४।

14. सुरेन्द्र मोहन प्रसाद, सम्पादक। ‘बज्जिका-हिन्दी शब्दकोश’ । अखिल भारतीय बज्जिका साहित्य सम्मेलन, २०००।

15. विद्यापति। ‘कीर्तिलता’ ।

16. हलदर दास। ‘सुदामाचरित्र’ ।

17. मँगनीराम। ‘मँगनीराम की साखी’ ।

18. मँगनीराम। 'रामसागर पोथी' ।

19. मँगनीराम। 'अनमोल रतन' ।

20. रामवृक्ष बेनीपुरी। 'अम्बापाली' ।

21. भिखारी ठाकुर। 'विदेशिया' ।

२. भारतीय काव्यशास्त्र, रस-ध्वनि-वक्रोक्ति आ नव्य-न्याय

22. भरतमुनि। 'नाट्यशास्त्र' ।

23. आनन्दवर्धन। 'ध्वन्यालोक' ।

24. कुन्तक। 'वक्रोक्तिजीवितम्' ।

25. अभिनवगुप्त। 'अभिनवभारती': 'नाट्यशास्त्र' पर टीका।

26. मम्मट। 'काव्यप्रकाश' ।

27. विश्वनाथ कविराज। 'साहित्यदर्पण' ।

28. गङ्गेश उपाध्याय। 'तत्त्वचिन्तामणि' ।

३. पाश्चात्य आलोचना, समाज-सिद्धान्त, मौखिकता आ प्रदर्शन

29. कार्ल मार्क्स। 'पूँजी', पहिल खण्ड। हैम्बर्ग: ओटो मैस्नर प्रकाशन, १८६७।

30. लुई अल्थ्यूसर। 'लेनिन आ दर्शन तथा अन्य निबन्ध' । लन्दन: न्यू लेफ्ट बुक्स, १९७१।

31. अन्तोनियो ग्राम्शी। 'कारागार-पुस्तिकासँ चयन' । क्विन्टिन होअर आ जेफ्री नोवेल-स्मिथ, सम्पादक। न्यूयॉर्क: इन्टरनेशनल पब्लिशर्स, १९७१।

32. गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक। 'उत्तर-औपनिवेशिक तर्कक समालोचना: लुप्त होइत वर्तमानक इतिहास दिस' । कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९९९।

33. मिखाइल बाख्तिन। 'दोस्तोयेव्स्कीक काव्यशास्त्रक समस्यासभ' । कैरिल इमर्सन, सम्पादक। मिनेयापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, १९८४।

34. वाल्टर जे. ऑङ्ग। 'मौखिकता आ साक्षरता: शब्दक प्रौद्योगिकीकरण' । लन्दन: मेथुएन, १९८२।

35. अल्बर्ट बी. लॉर्ड। 'कथागायक' । कैम्ब्रिज, मैसाचुसेट्स: हार्वर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, १९६०।

36. पॉल जुम्थोर। 'मौखिक कविता: एक परिचय' । मिनेयापोलिस: यूनिवर्सिटी ऑफ मिनेसोटा प्रेस, १९९०।

37. क्लीनथ ब्रुक्स। 'सुगढ़ कलश: कविताक संरचनाक अध्ययन' । न्यूयॉर्क: हार्कोर्ट ब्रेस, १९४७।

38. रिचर्ड बाउमन। 'मौखिक कला प्रदर्शनक रूपमे' । रोली, मैसाचुसेट्स: न्यूबरी हाउस, १९७७।

39. ग्रेग गैरार्ड। 'पारिस्थितिक आलोचना' । लन्दन: राउटलेज, २००४।

40. विलियम लैबोव। 'समाजभाषावैज्ञानिक प्रतिरूप' । फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिल्वेनिया प्रेस, १९७२।

41. नॉर्मन फेयरक्लफ। 'भाषा आ सत्ता' । लन्दन: लाँगमैन, १९८९।

४७. लालदासक मिथिला रामायण मे कुण्डलिया आ सम्पादक बा प्रूफरीडरक अज्ञानतावश ओइमे छन्दोभङ्ग

सारांश

बुझू जे ९५ प्रतिशत भाग चौपाइ, आ फेर बाँचल भागमे रूपमाला छन्द आ गीतिका। मुदा हम एतऽ कुण्डलियाक चर्चा कऽ रहल छी, जे बहुत कम मात्रामे अछि मुदा हमरा ओ बहुत प्रभावित करैत अछि। कुण्डलियाक प्रकृति रुबाइसँ मिलैत अछि आ जँ अहाँ ओमर खय्यामक रुबाइ पढ़ब तँ कुण्डलियासँ प्रेम करऽ लागब।

बीजशब्द: लालदास; मिथिला रामायण; कुण्डलिया; दोहा; रोला; मात्रिक छन्द; छन्दोभङ्ग; पाठालोचना

१

दोहा

रोला

कुण्डलिया

२

कुण्डलिया दोहा (मैथिली अकादेमी)**

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

देल प्रमाणहिं राज्य पद तनि पद रहु मन लीन॥

तनि पद रहु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लालक दुख घालक॥

लोकपाल यम काल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अधनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दूर।

तनिपर प्रभु अनुकूल रहि, करथि मनोरथ पूर॥

करथि मनोरथ पूर क्रूर सौं सदा बचाबथि।

धन जन विजय विभूति जूति सुख तनिक बढ़ाबथि॥

काम आदि सौं बचथि भक्ति पाबथि अविनाशिनि।

पापताप सभ तनिक हरथि गंगा अघयाशिनी॥२॥

चितचकोर की चाख नित, विषय विषम अंगार।

सीतारामक भजन भल, कर फल अमिय अहार॥

कर फल अमिय अहार भार संसारक छोड़ी।

लेल सकल पद ब्रह्म भक्त भव बन्धन तोड़ी॥

पतितहुँ काँ गति जतय ततय रहि लहु सुख समुचित।

हित निश्चित निज जानु अपर भव विषयक अनुचित॥३॥

मन विहङ्ग कति दुख सहह भवपिंजर मे आबि।

गहह लाल जौं सुख चहय श्रीपद तरुवर पाबि॥

श्रीपद तरुवर पाबि गाबि रहु रामकथा नित।

नहि तेहि सौं अछि अपर युक्ति कल्याण त्राण हित॥

कत पातकि भव सिन्धु तरल नहि रहल एक क्षण।

गाबि गाबि हरि कथा यथा मति लाबि एक मन॥४॥

उपरका पाठ मैथिली अकादेमीक पोथीसँ लेल गेल अछि।

३

मात्रिक गणना

मैथिलीक उच्चारण निर्देश आ ह्रस्व-दीर्घ विचारपर आउ।

शास्त्रमे प्रयुक्त 'गुरु' आ 'लघु' छंदक परिचय प्राप्त करू।

तेरह टा स्वर वर्णमे अ, इ, उ, ऋ, लृ - ह्र्स्व आर आ, ई, ऊ, ॠ, ए. ऐ, ओ, औ- दीर्घ स्वर अछि। ई स्वर वर्ण जखन व्यंजन वर्णक संग जुड़ि जाइत अछि तँ ओकरासँ 'गुणिताक्षर' बनैत अछि। क्+अ= क, क्+आ=का। एक स्वर मात्रा आकि एक गुणिताक्षरकेँ एक 'अक्षर' कहल जाइत अछि। कोनो व्यंजन मात्रकेँ अक्षर नहि मानल जाइत अछि- जेना 'अवाक्' शब्दमे दू टा अक्षर अछि, अ, वा। १. सभटा ह्रस्व स्वर आ ह्रस्व युक्त गुणिताक्षर 'लघु' मानल जाइत अछि। एकरा ऊपर U लिखि एकर संकेत देल जाइत अछि। २. सभटा दीर्घ स्वर आर दीर्घ स्वर युक्त गुणिताक्षर 'गुरु' मानल जाइत अछि, आ एकर संकेत अछि, ऊपरमे एकटा छोट -। ३. अनुस्वार किंवा विसर्गयुक्त सभ अक्षर गुरू मानल जाइत अछि। ४. कोनो अक्षरक बाद संयुक्ताक्षर किंवा व्यंजन मात्र रहलासँ ओहि अक्षरकेँ गुरु मानल जाइत अछि। जेना- अच्, सत्य। एहिमे अ आ स दुनू गुरु अछि।

जेना कहल गेल अछि जे अनुस्वार आ विसर्गयुक्त भेलासँ दीर्घ होएत तहिना आब कहल जा रहल अछि जे चन्द्रबिन्दु आ ह्रस्वक मेल ह्रस्व होएत।

माने चन्द्रबिन्दु+ह्रस्व स्वर= एक मात्रा

संयुक्ताक्षर: एतए मात्रा गानल जाएत एहि तरहेँ: -

क्ति= क् + त् + इ = ०+०+१= १

क्ती= क् + त् + ई = ०+०+२= २

क्ष= क् + ष= ०+१

त्र= त् + र= ०+१

ज्ञ= ज् + ञ= ०+१

श्र= श् + र= ०+१

स्र= स् +र= ०+१

शृ =श् +ऋ= ०+१

त्व= त् +व= ०+१

त्त्व= त् + त् + व= ० + ० + १

ह्रस्व + ऽ = १ + ०

अ वा दीर्घक बाद बिकारीक प्रयोग नहि होइत अछि जेना दिअऽ आऽ ओऽ (दोषपूर्ण प्रयोग) । हँ व्यंजन+अ गुणिताक्षरक बाद बिकारी दऽ सकै छी।

ह्रस्व + चन्द्रबिन्दु= १+०

दीर्घ+ चन्द्रबिन्दु= २+०

जेना हँसल= १+१+१

साँस= २+१

बिकारी आ चन्द्रबिन्दुक गणना शून्य होएत।

जा कऽ = २+१

क् =०

क= क् +अ= ०+१

किएक तँ क कैँ क् पढ़बाक प्रवृत्ति मैथिलीमे आबि गेल तैँ बिकारी देबाक आवश्यकता पड़ल, दीर्घ स्वरमे एहन आवश्यकता नहि अछि।

U- ह्रस्वक चेन्ह

।- दीर्घक चेन्ह

एक दीर्घ। =दूटा ह्रस्व U

४

छन्दोभङ्ग

आब लालदासक मिथिला रामायणक चारू कुण्डलियापर आउ। अहाँकैँ स्पष्टरूपेँ छन्दोभङ्ग भेटि जायत। कवि लालदास तँ छन्दोभङ्ग कऽ नै सकैत छथि। एतऽ टाइपिंग मिस्टेक तँ स्पष्ट रूपेँ नै अछि। तखन ई मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ मैथिली अकादेमीक सम्पादक बा प्रूफरीडरक काज भऽ सकैए, जे वर्तनीक एकरूपता अनबा लेल छन्दोभङ्ग केलन्हि। मुदा साहित्य अकादेमीक लालादास रामायण (सम्पादक रामदेवझा) मे छन्दोभङ्ग नै भेटत, से रामदेव झा केर दावा छलन्हि आ हुनकापर मूलपाठकैँ परिवर्तित करबाक जे आरोप लगाओल गेलन्हि आ जे आरोप लगेलन्हि से मात्रिक गणनासँ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, से हुनकर कहब छलन्हि अपन उत्तरमे। मूलपाठसँ अन्तर छन्दोभङ्ग ठीक करबाक उद्देश्यसँ ओ केलन्हि से हुनकर दावा छलन्हि। माने कुण्डलिया छन्द जँ लालदास लिखने छथि तँ सम्पादककैँ एतेक तँ ज्ञान हेबाके चाही जे ओ देखय जे खाली हेडिंग कुण्डलिया देने काज नै चलत। आ रामदेव झा जीक विचारे साहित्य अकादेमीक लालादास रामायणकैँ अन्तिम पाठ मानबाक चाही। आब देखू साहित्य अकादेमीक पाठ।

**रामादेव झा द्वारा सम्पादित लालदासक कुण्डलिया (साहित्य अकादेमी)

कुण्डलिया दोहा

रघुनायक करुणायतन देखि विभीषण दीन।

देल प्रमाणहिं राज्य पद तनि पद रहु मन लीन॥

तनि पद रहु मन लीन हीन दीनक प्रतिपालक।

शरणागत वत्सल दयाल लालक दुख घालक॥

लोकपाल यम काल डरथि लखि जनिक सुसायक।

सकल लोक निश्शोक करथि से विभु रघुनायक॥१॥

अधनाशिनी रघुपति कथा, सुनितहि हो दुख दूर।

तनिपर प्रभु अनुकूल रहि, करथि मनोरथ पूर॥

करथि मनोरथ पूर क्रूर सौं सदा बचाबथि।

धन जन विजय विभूति जूति सुख तनिक बढ़ाबथि॥

काम आदि सौं बचथि भक्ति पाबथि अविनाशिनि।

पापताप सभ तनिक हरथि गंगा अघनाशिनी॥२॥

चितचकोर की चाख नित, विषय विषम अंगार।

सीतारामक भजन भल, कर फल अमिय अहार॥

कर फल अमिय अहार भार संसारक छोड़ी।

लेल सकल पद ब्रह्म भक्त भव बन्धन तोड़ी॥

पतितहुँ काँ गति जतय ततय रहि लहु सुख समुचित।

हित निश्चित निज जानु अपर भव विषयक अनुचित॥३॥

मन विहङ्ग कति दुख सहह भवपिंजर मे आबि।

गहह लाल जौं सुख चहय श्रीपद तरुवर पाबि॥

श्रीपद तरुवर पाबि गाबि रहु रामकथा नित।

नहि तेहि सौं अछि अपर युक्ति कल्याण त्राण हित॥

कत पातकि भव सिन्धु तरल नहि रहल एक क्षण।

गाबि गाबि हरि कथा यथा मति लाबि एक मन॥४॥

ओना तँ मैथिली अकादेमीक पाठ आ ऐ पाठमे खास कोनो अन्तर नै अछि, मात्र विभक्ति आ दूटा शब्द कतै सटायल गेल अछि आ कतौ फराक कऽ देल गेल अछि। दोसर कुण्डलियाक अन्तिम शब्द अघयाशिनी कैँ अघनाशिनी कऽ देल गेल अछि।

कर्णाटकक गोकर्ण गंगावली आ अधनाशिनी धारपर अछि आ’ पापताप सभ तनिक हरथि गंगा’ माने पापनाशिनी गंगा माने’ अधनाशिनी’ प्रयोग समुचित अछि,’ अघनासिनी’ नै, प्रायः टाइपिंग मिस्टेक अछि।

ओना तँ छन्दोभङ्ग ठीक करबाक दावा तँ पुष्ट नै भेल मुदा शब्दक उचित प्रयोगक प्रयास भेल अछि से मैथिली अकादेमीक पाठसँ साहित्य अकादेमीक पाठ हमरा श्रेयस्कर लागि रहल अछि।

४८. मैथिली मे पहिल बेर १. पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता आ २. शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता

सारांश

पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता। ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना। ऐ मे ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नै अछि, खाली पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति होइत अछि।

बीजशब्द: पैटर्न कविता; पुनरावृत्ति; शेप कविता; कंक्रीट कविता; दृश्य-काव्य; प्रयोगधर्मिता

१

पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता

पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविता।

की अछि पाँतिक छन्द:-

ई भेल कोनो बेर-बेर पुनरावृत्ति हुअयबला पद्य रचना। ऐ मे ध्वनिक पुनरावृत्ति आवश्यक नै अछि, खाली पाँतिक लम्बाइक पुनरावृत्ति होइत अछि।

उदाहरण:

जाइत जाइत

जाइत जाइत जाइ छी बड़ी दूरस्त देश धरि जे घुरि ने सकी

पहिने कएक बेर घुरि अयलौं अइ ठाम

बुझलौं जे छल अदहे रस्ता

घुरि जे एलौं

से बिदा भेलौं जाइले दूरस्त

ततेक दूर दूरस्त देश जे घुरि ने सकी

जे घुरबऽ जायत थाकि जायत अदहा तकरो अदहा रस्तामे

आ जँ बढ़त आगाँ देखत बिलाइत रस्ता

ने कोनो बाटे छोड़ब आ ने

कोने चिन्हासी

आ ने कनियो आस छोड़ब

अदहा रस्ताक बादक धांगैत-तोड़ैत बाट

आ बढ़ैत हम आ बिलायल जाइत रस्ता केलक काज संपन्न

एकटा काजक हएत आब फेरसँ आरम्भ

नव वातावरण नव लोक संग

प्रयोगेक प्रयोग

आनत कोनो अजगुत परिणाम

आकि फेर धकेलत हमरा दूरस्त देश

आ हम घुरि कऽ तँ नै आबि जाएब फेर अपन पुरने देश

जतऽ ने रहत ओ पुरनका डेरायल लोक

ने पुरनका पिरौंछ गाछ-बृच्छ

परिणामेक प्रमाण

रुसल सन अछि ई हमरासँ

लोक गाछ-बृच्छ सभ नव नवके ई देश

ने कोनो चिन्हासी ने आस आ ने कोनो चिन्हार बाट

२.

शेप बा कंक्रीट (आकार) कविता

पैटर्न (पुनरावृत्ति) कविताक विपरीत ई एकटा आकारक स्वरूप धारण करैत अछि आ तेँ पाँतिक छन्दमे लिखल कविता भेल पैटर्न (पुनरावृत्ति) एतऽ नै भेटत वरन कोनो आकृति देखा पड़त। जेना नीचाँक गाछक आकृति देखू।

बिलाइत आसक चेन्हासी

देखैत

गाछ दुनू कात

संगे जाइ रस्ताक संग

गाछक छाह कऽ रहल घन

हमर चेन्हासी घन होइत पक्का हएत मुदा

घ

न

ग

र

हो

इ

त

चे

न्हा

सी

अन्हार गुज्ज भऽ जाइत अछि

हमर आसक चेन्हासी बिला जाइत अछि

४९. समानान्तर परम्पराक गोलगला बला ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीबला महाकवि विद्यापति आ ज्योतिरीश्वरक बादबला पागबला संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठक्कुरः

सारांश

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति केँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल।

बीजशब्द: ज्योतिरीश्वर; विद्यापति; पदावली; अवहट्ठ; संस्कृत; समानान्तर परम्परा; साहित्यिक इतिहास

....

आब आउ मूल मुद्दापर। हमरा राजपण्डित आ आर कतेक रास धर्माधिकारणिक विद्यापति सभ जैमे एकटा देवदासीक पुत्र सेहो रहथि, केर ब्राह्मण हेबामे कोनो सन्देह नै अछि। हम विद्यापति ठक्कुरः आ कीर्तिलता कीर्तिपताका नै वरन विद्यापति पदावलीक गप कऽ रहल छी। तेँ कोनो ओझरीमे नै रहल जाए। आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) बार्बर कास्टमे भेल रहथि आ तकर प्रमाण ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कवि आ ओकर कृतिक चर्चा अछि।

महादेव मूलतः गएर ब्राह्मणक देवता रहथि, आस्ते-आस्ते ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा अपनाओल गेलाह। विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे हुनकर संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै अछि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? उदाहरण देखू।

महाकवि विद्यापति

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न।

सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र।

समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।

बोधि कायस्थ

विद्यापति ठक्कुरःक पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पदावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित आ बादमे विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक) विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

उगना महादेव

महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

२

“विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग-प्रतिष्ठापन”

संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति ठक्कुरः आ कविकोकिल विद्यापतिक बीचक अन्तर "मिथिला सांस्कृतिक परिषद" आ ओइसँ जुड़ल "किशोरीकान्त मिश्र" आदि नै बुझि सकला वा नै बूझऽ चाहलन्हि। ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठमे) । वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा कैँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि।

आ ृजँ जगदीश प्रसाद मण्डलक फोटो उपलब्ध नै रहितै तँ किशोरीकान्त मिश्रक प्रतिक्रियावादी मिथिला सांस्कृतिक परिषद जगदीश प्रसाद मण्डलक यज्ञोपवीत संस्कार कऽ हुनका पाग पहिरा फेर वएह कुकृत्य करितए जे ओ विद्यापतिक संग एक हजार सालक बाद केलक। आ बेरमाक कोनो बुढ़बा माटिक ढिमकाकेँ देखबैत जगदीश प्रसाद "झा/ ठक्कुरः" केर काल्पनिक घराड़ी, यएह छी, घोषित कऽ दितए।

मलंगियाक बेटा, रामदेव झाक बेटा आ ढेर रास छद्मनामीक देल गाड़ि सेहो विदेहमे बिना काँट-छाँटक छपने अछि, जे लोक पढ़ि सकए, किछु गाड़ि जे नै छापल जा सकैए, सएह टा नै छपने छी। आ गारिक डरसँ अखन धरिक मैथिली आ मिथिलाक इतिहासकार ऐ विषयपर इशारा तँ केलन्हि मुदा आगाँ नै बढ़ला।

तेँ ओ ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) पूर्व विद्यापतिये रहथि से फेर सिद्ध होइए। जयदेव (लगभग १२००) क गीत-नृत्य आ किरतनियाँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पदावली मेल खाइत अछि, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक काव्य सौष्ठवसँ मेल नै खाइत अछि।

आब पुनः आबी मिथिला सांस्कृतिक परिषदक मंच जतएसँ रामलोचन ठाकुर मंच सापेक्ष बयान देलन्हि। ई परिषद विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार नै, मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार केलक। ओकर विद्यापतिकेँ पहिराओल पाग, कोलकातासँ बिन्ध्येश्वर मण्डल आ श्रीकान्त मण्डलकेँ लुप्त कऽ देलक आ मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण भऽ गेल।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक जातिगत कट्टरताक बानगी देखी: -

कीर्तिलता- जाति-अजातिक विवाह अधम कएँ पारक।

पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि कि राजपूतक स्त्री चरित्रहीन होइत अछि, ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सए बला वक्तव्य। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जाति-अजातिपर विशेष बल दै छथि, रक्त शुद्धता/ जाति हुनका लेल महत्वपूर्ण छन्हि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- अकुलीन कोनो दयाक अधिकारी नै अछि!! आ सौन्दर्य मात्र धनिक आ विशिष्ट वर्गक एकाधिकार अछि!! संस्कृत आ अवहट्ठबला (किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला) विद्यापति कहै छथि- जाति सामाजिक जीवनमे अन्तिम निर्धारक तत्व अछि। जे खराप कुलमे जन्म लैए ओ दुष्ट दिमागक साँप मात्र बनि सकैए!! किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- ओ देश जतऽ जातिक निअम लागू नै होइए से म्लेच्छ देश थिक (Aspects of Society and Economy of Medieval Mithila)- Upendra Thakur

पुरख महत सब हमर सजाति॥

“जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।”

आ

“मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द”

३

फणीश्वरनाथ रेणु बिदापत नाचपर रिपोर्ताज लिखलनि जे १ अगस्त १९४५ ई. कैं साप्ताहिक "विश्वमित्र" मे प्रकाशित भेल। ऐ रिपोर्ताजक महत्व अछि, कारण ई ऐ विषयपर ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखित विवरणक ७०० बर्ख बाद लिखल गेल आ ऐ ७०० बर्खमे जे विद्यापतिकैं समानान्तर परम्परा जिआ कऽ रखलक।

आ जे एकरा जिआ कऽ रखलक ओकरासँ अनचोक्के विद्यापति छीनि लेल गेलन्हि। बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीत गबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकैं प्राप्त केलन्हि जे विद्यापतिकैं पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीनि लेलक। ब्रह्मपुराक कानूनगो बद्री प्रसाद ठाकुर, पोखरिभीड़ाक बिनोद ठाकुर, रुद्रपुरक सरयुग ठाकुर आ मेंहथक जयराम ठाकुर आ बिस्फीक सौंसे गाम आइयो ई रटि रहल छथि। शालिग्राम यादव, अवधिया ठाकुर बिस्फी गामक परम्पराक गवाह छथि। विद्यापति कर्मकाण्डीय अपहरण मे हुनकर जन्म आदिक प्रति सभ तरहक अनर्गल तर्क उपस्थित होइत रहल मुदा हुनकर समानान्तर परम्पराक मादे कोनो शोध-पत्रमे चर्चो धरि नै भेल। ई आलेख बिदेश्वर ठाकुर सन हजारक हजार समानान्तर परम्पराक लोकक प्रति समर्पित अछि जे बिदापतक ज्योतिरीश्वर आ फणीश्वरनाथ रेणुक दुनू आलेखक बीच विद्यापतिकैं जिआ कऽ रखलन्हि।

मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्परा आ मिथिलाक समानान्तर परम्परा:

१७६० ई. क माधव सिंहक शाखा पञ्जीक आदेशक बाद मिथिलामे ब्राह्मण आ कायस्थ मध्य नव-कुलीनवादक प्रसार भेल आ भलमानुस (बत्तेसगमिया) उपजातिक कर्ण कायस्थमे आ स्रोत्रिय उपजातिक मैथिल ब्राह्मणमे उत्पत्ति भेल, ओइसँ शारीरिक आ मानसिक बीमारी ऐ दुनू उपजाति मध्य भयंकर रूपसँ बढ़ल, संगे बहुविवाह, बाल-विवाहक आ विधवाक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल। आ ईहो जइ शान्तिपूर्ण रूपसँ आ तीव्रगतिसँ भेल से शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

विद्यापतिपर दिनेश्वर लाल आनन्द आ रामवृक्ष बेनीपुरीक विचार!!

दिनेश्वर लाल आनन्दकैं भ्रम रहन्हि, ओइ कालमे पञ्जी गुप्त चीज रहै, जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक विषएवार बिस्फीकैं पञ्जीमे जयवार (निम्न कोटिक) कऽ देल गेल रहै। शाखा पञ्जी १७६० ई. सँ पहिने रहबे नै करै आ तकर प्रमाण अछि जे अयाची मिश्रक मूलक निचुलका पीढ़ी स्रोत्रिय उपजातिमे अछि आ ब्राह्मण उपजातिमे सेहो। ई ओहिना अछि जे सिन्धु घाटी सभ्यतामे बड़द रहै मुदा गाय नै (सीलपर), मुदा बिनु गाय बड़दक उत्पत्ति कोना हएत। दिनेश्वर लाल आनन्दकैं पञ्जीक सभ तथ्य उपलब्ध नै रहन्हि, प्रायः पदावली बला विद्यापति आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक एक्के हेबाक दुष्प्रचारमे हुनका लागल हेतन्हि जे अवहट्ठमे लिखबाक कारण जँ विषएवार बिस्फीकैं पञ्जीमे जयवार करबाक सम्बन्धसँ जोड़ल जाए तँ विद्यापति ठक्कुरः किए क्रान्तिकारी भेलाह से व्याख्या कएल जा सकत। मुदा दिनेश्वर लाल आनन्द सेहो मानै छथि जे पदावलीक हुनकर (विद्यापतिक) हाथक तँ छोड़ू, हुनकर कालोमे संगृहीत पदक कोनो विवरण नै अछि। मुदा से कोना सम्भव जखन संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति अपन संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थ सभ टहंकारसँ आरम्भ आ समापन करै छथि, के राजा-रानी हुनका प्रेरित केलखिन्ह, ककर आश्रित छलाह, सभ वर्णन दैत। पूर्ण लेखकीय अन्दाज, सरस्वती आ लक्ष्मी दुनुक बल; तखन पदावलीमे से किए नै? दिनेश्वर लाल आनन्द गुम्म छथि। संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति अपन आश्रयदाताक विषयमे लिखने छथि मुदा कोनो संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थमे अपना विषयमे किछुओ नै लिखने छथि। ओ अवहट्ठ लिखबोमे दवाबक अनुभव करै छथि, जे तखुनका मुख्य परम्पराक साहित्यिक भाषा छल। मुदा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक प्रभाव एतेक छलन्हि जे हुनका संस्कृत नाटक गोरक्षविजयमे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि (जेना विदाञोतक पहिल रिपोर्ताज लिखनिहार ज्योतिरीश्वरकैं संस्कृत नाटक धूर्तसमागममे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि) ।

गोविन्द झा ज्योतिरीश्वरक विदाञोतमे विद्यापतिक परम्परा देखि लै छथि, चर्च करै छथि मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिकैं आगाँ किए नै बढ़ा पबैत छथि जखन बिदेश्वर ठाकुर गाबि-गाबि कऽ प्राण त्यागि रहल छथि? विद्यापति नाटकमे विद्यापतिकैं प्यास जतऽ लगलन्हि ओ नाटक लेखकक गाम कोना भऽ जाइए? सभ अपना-अपना हिसाबसँ "हम्मर विद्यापति" पर नाटक लिखि रहल छथि।

रामबृक्ष बेनीपुरी लग सेहो पञ्जीक तथ्य नै छन्हि। एकटा उपजातिक बनोतरी आ किंवदन्तीक आधारपर ओ केशव मिश्रक विद्यापतिपर हँसब लिखै छथि; द्वैत परिशिष्टक ई केशव मिश्र वाचस्पति-२ (१४००-१४९०) क पौत्र छथि। एकटा आर केशव मिश्र (११५० लगभग) छथि जे तर्कभाष लिखै छथि आ जकर समीक्षा तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक पुत्र वर्धमान "तर्कप्रकाश" मे करै छथि। आनन्द कुमारस्वामे जतेक शोध १९१५ ई. मे केने रहथि ओइसँ एक्को डेग आगाँ नहिये बेनीपुरी जा सकलथि नहिये आनन्दस्वामीक सए बर्ख बाद कियो दोसर मुख्यधाराक शोधकर्ता जा सकल छथि। वएग उगनाक कथा बेनीपुरी कहै छथि, मुदा महादेव संस्कृत आ अवहट्ठक कट्टर विद्यापतिक "शैवसर्वस्वसार" पर कैलाशमे नचता आकि ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक नचारीपर, ओइपर गुम छथि।

आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ बुझल छन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत उपलब्ध अछि आ इहो जे विद्यापतिकेँ गंगालाभ कोना भेलन्हि, गंगा हुनका अपनामे लीलि लेलखिन्ह। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक लिखल पुरुषपरीक्षाक विषयमे सुनल छन्हि मुदा पढ़ल नै छन्हि, आ से नै तँ हुनका बुझल रहितन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति गंगालाभक कथा बोधि कायस्थक विषयमे लिखने छथि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विषयमे ई कथा उगनाक कथा सन प्रचलित छल जे बादमे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिसँ कर्मकाण्डीय रूपमे जोड़ल गेल आ पुरुषपरीक्षाक कथा बोधि कायस्थ एकर प्रमाण अछि। कीर्तिपताकाकेँ बेनीपुरी मैथिली गीतक संग्रह कहै छथिइ!! पूछि-पाछि कऽ शोध कएल जाइ छै? जे आधार कुमारस्वामी सए बर्ख पहिने रखलन्हि, ओइपर सुखाएल मुख्यधारा किए नै आगाँ बढ़ल कारण ई शतपथ ब्राह्मणवादी मुख्यधारा ओकरा एकर अनुमति नै दै छै। मुदा बिना कोनो प्रमाणक शिवसिंहक मित्र पुरादित्यकेँ भूमिहार ब्राह्मण सिद्ध कऽ दै छथि, ओहिना जेना गोविन्ददास (झा) केँ रमानाथ झा स्रोत्रिय बतेलन्हि (सुकुमार सेन तकरा हास्यास्पद मानै छथि), आ रामदेव झा ब्राह्मण सिद्ध करै छथि आ कालिदासकेँ वर्माजी (लालदास स्मारिकामे) कायस्थ सिद्ध करै छथि।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति पूर्ण कर्मकाण्डक संग पुस्तकक प्रारम्भ आ अन्त करै छथि, राजा-रानी-आश्रयदाताकेँ मोन पाड़ै छथि मुदा अपन चर्च नै करै छथि। मुदा पदावली लोककण्ठमे किए रहि गेल, पुस्तकक तामझाम ओ तकरा किए नै देलन्हि, कारण ओ हुनकासँ कए सए पूर्वक रचना छल, जखन पागक उत्पत्ति मिथिलामे नै भेल छल। पदावलीमे रूपनारायण, शिवसिंह, लखिमा, देव सिंह, हर सिंह, पद्म सिंह, विश्वास देवे, अर्जुन-अमर, राघव सिंह, रुद्र सिंह, धीर सिंह, भैरव सिंह, चन्द्र सिंह आदि बादमे घोसिआएल गेल, जे गीतक लयकेँ प्रभावित करैत स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। संस्कृत-अवहट्ठबला विद्यापति भू-परिक्रमा (देव सिंह), कीर्तिलता (कीर्ति सिंह आ वीर सिंह), कीर्तिपताका, गोरक्षविजय (शिव सिंह), लिखनावली (पुरादित्य), दान वाक्यावली (रानी धीरमति) आदि स्पष्ट रूपसँ राज्याश्रित रचना छल। गोरक्षविजय नाटक भैरव पूजाक अवसरपर लिखल गेल आ ऐ मे धूर्त समागम सन मैथिली गीत छल जे ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक भयंकर प्रभाव स्वरूप छल। नामक असमानता नै रहैत तँ ज्योतिरीश्वरकेँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति बना देल जाइत।

तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश १२००० ग्रन्थक बराबर एकटा ग्रन्थ लिखलन्हि। प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य "हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला" मे लिखै छथि- "The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila... Gangesha' s family is completely ignored and we are not expected to know even his father' s name." आ ई सभ सूचना, ओ लिखै छथि, हुनका प्रो. आर. झा (रमानाथ झा) देलखिन्ह!

आब आउ पञ्जीमे वर्णित तथ्यपर- ओइमे स्पष्ट रूपसँ लिखल अछि जे तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेलन्हि आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलन्हि, तँ ई गप रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किए नुकेलन्हि? एकटा उपजाति द्वारा हिनकर मूर्खसँ विद्वान बनबाक गपपसारल गेलन्हि आ हिनका खतम करबाक साजिश भेल।

गंगेशक पुत्र वर्द्धमान गंगेशकेँ सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि। मुदा गंगेश सन प्रसिद्ध विद्वानक कविता कोन साजिशक अन्तर्गत आइ उपलब्ध नै अछि से ऊपर देल उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। बंगालक वासुदेव पक्षधर मिश्रक सहपाठी रहथि, मिथिला पढ़ैले एला, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलन्हि आ सर्वभौम उपाधि भेटलन्ह्। वासुदेव गंगेशक तत्वचिन्तामणि आ उदयनक न्यायकुसुमांजलिक कारिकाकेँ कंठस्थ कऽ लेलन्हि। पक्षधर आ आन मिथिलाक शिक्षक तत्वचिन्तामणि लिखबाक (प्रतिलिपि करबाक) अनुमति नै दै छला! वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अपन गुरु पक्षधर मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे हरा प्रमाणित करबाक अधिकार लेलन्हि। नव्यन्याय स्कूलक नवद्वीपमे वासुदेव-रघुनाथ द्वारा स्थापना भेल। पक्षधर मिश्र संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन छला। आ रघुनाथक संग बंगालसँ मिथिला विद्यार्थीक आगमन बन्द भऽ गेल।

शिवसिंह द्वारा संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ जे बिस्फी ताम्रपत्र देल गेल तकरा ग्रियर्सन फर्जी कहलन्हि कारण ओ विद्यापतिक पदावलीसँ परिचित रहथि आ बूझि गेल रहथि जे ओइ विद्यापतिकेँ ई ताम्रपत्र भेटब असम्भव छल। मुदा ई ताम्रपत्र तँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ भेटल छलन्हि आ दुनूक बीचक अन्तर ग्रियर्सन नै सोचि सकला। मुदा से म. म. हरप्रसाद शास्त्री सोचलन्हि आ ऐ ताम्रपत्रकेँ असली बतेलन्हि।

श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतमे कैवर्त पपीहाक गंगापर स्तुति गीत अछि। राधाकृष्णक गीत अछि। लक्ष्मणसेनक राज कवि धोयी (जोलहा) रहथि। लखिमा ठकुराइन पदावली नै लिखलन्हि संस्कृतमे पद्य लिखलन्हि (ग्रियर्सन) । श्रीधरदासक अभिलेख अंधरा ठाढ़ीमे अछि आ ओ नान्यदेव आ गंगदेवक मंत्री रहथि। हुनकर वंशज अमिअकर संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन रहथि।

गंगदेवकेँ उपेन्द्र ठाकुर कलचुरी मानै छथि। विजय कुमार ठाकुर कलचुरि कर्णक स्तुतिमे सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास) क विद्यापतिक गीतकेँ मानै छथि। राधाकृष्ण चौधरीक मत ऐ सँ भिन्न छन्हि। कोनो परिस्थितिमे ई विद्यापति ज्योतिरीश्वर पूर्व रहथि। "रामचरित"- विग्रहपाल-३ कर्णकेँ हरेलन्हि, ऐ सम्बन्धमे बेगूसरायसँ उत्तर १६ किमी. नौलागढ़सँ दूटा पाल अभिलेख राधाकृष्ण चौधरीकेँ भेटलन्हि। ओहो कर्ण ११म शताब्दीक छथि। धूर्त समागम सेहो दक्षिण भारतमे प्रसिद्ध अछि।

अनुलग्नक: १

फणीश्वर नाथ रेणु

एकटा लोकगीतक विद्यापति

भूमिका

महाकवि विद्यापतिपर "खोज" करैत काल हमरा लागल जे एक अध्यायक शीर्षक राख' पड़त- "खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति" । कारण पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पदावली गाबि-गाबि क' भाव देखाक' नाचैबलाक मण्डली सभ अछि। ऐ मण्डली सभक नायक महिसवार, चरबाह आ गाड़ीक बहलमाने होइ छथि प्रायः। मैथिल पण्डित लोकनिसँ पुछलौं

, ई कोना भेल? बजला, अहाँ कोन फेरामे पड़ल छी? अही सभ मूर्खक कारण आइ विद्यापतिक दुर्दशा भ' रहल अछि। ऐ मामूली लोक सभक मोनमे जखन एलै विद्यापतिक नामपर "चारिटा पदावली" जोड़ि देलक। ..अहाँ दिग्भ्रमित भ' रहल छी।.. मिथिलाक पण्डितक वर्जना-वाणीपर कान-बात नै दैत हम सहर्ष सहरसा (बा सहर्षा?) यात्राक तैयारी शुरू क' देलौं। ..कनचीरा गाम एकटा एहन गाम अछि जइपर दू-दू जिलाक जिला अधिकारीक शासन चलैत अछि। अदहा गाम सहरसामे, अदहा गाम पूर्णियाँमे।

... कनचीराक विद्यापति-मण्डलीक नाम दुनू जिलाक लोक लै छथि। ... जइ दिन कनचीरा गाम पहुँचलौं, गाममे एकटा अघट घटना घटित भ' गेल रहै। दस सालसँ इलाकाक प्रतिनिधित्व करैबला नेताजी चुनावमे चितंग भ' गेल रहथि। तइ द्वारे ओइ राति नाच-गानक दोसरे मतलब निकालल जा सकै छल, ऐ डरे "विद्यापति-मण्डली" क नायक जनकदास नाच करबाक अनुमति नै देलनि।

दोसर राति ओ बड्ड खुशामद करेलाक बाद अनुमति देलनि। नायक जनकदास बड्ड तर्क-वितर्क केलाक बाद घुमा-फिरा क' दोहरा-तेहरा क' कहलनि, "विद्यापति- नाच" क जन्म हुनके परिवारमे पहिले-पहिल भेल। विस्तारसँ ओ कहियो किछु नै कहलनि। आ हुनका जखन ई विश्वास भ' गेलनि जे "विद्यापति नाच मण्डली" क नामपर खर्च करबा लेल हजार- दू हजार टाका सरकारक खजानासँ ल' क' हम नै बहराएल छी, तखन ओ मृदंगपर थाप देलनि। राति भरि नाच देखैत रहलौं। गाए चरबैबला छौड़ा, साड़ी पहीर विरहिनी राधा बनि गेलि आ कानि-कानि गाबए लागलि- "कतेक दिवस हरि खेपब हो, तुम एसकरि नारी!" दोसर दिन, जनकदाससँ ऐ नाचक उत्पत्तिक इतिहास पुछलौं तँ ओ बाजल- नै जानि कहियासँ ऐ नाचक मूलगैनी हमरा परिवारमे चलैत आबि रहल अछि। जनकदासक ऐ उदासीक कारण छल- हमर टेपरेकार्डर।.. चुप्पे-चुप्पे सभ गीत फीतामे अहाँ भरि लेलौं, चलाकीसँ। मंगनीमे अपन काज सुतारि लेलौं अहाँ? आ, अंतिममे पचास टाका नगदी देलाक बादो ओ हमर ऐ प्रश्नक कोनो उत्तर नै देलनि कि खेतिहर-बोनिहार, चरवाह आ बहलमान सभ कहिया आ केना विद्यापतिक पदावलीकेँ गाबि-गाबि नाचब प्रारम्भ केलनि। जनकदासक पलानीमे पुआरपर पड़ल रही दिन भरि, ओकरा दया नै लगलै। ओकर मसोमात जवान बेटी हमरा दिससँ पैरवी केलक, तखनो ओ नै पसिझल, अपन खानदानीक "हँसी" करबैबला गप के "गजट" मे "छापी" कराब' चाहत? बुरहा जनकदास बड़द खोलि चरबै लेल चलि गेला। हम ओकर पलानीमे पड़ल रहलौं आ तकर बादे एकटा खिस्सा सुनलौं बा सपना देखलौं बा"भ्रम" मे पड़ि गेलौं- ई नै कहि सकै छी।

अनुलग्नक: २

बिदापत नाच (मूल रिपोर्ताज फणीश्वरनाथ रेणु – भावानुवाद मधुपनाथ झा)

बिदापत नाच

ऐ नाचक उत्पत्ति दरभंगा जिलामे भेलै, एहन अंदाज कएल जाइ छै | लेकिन अपने मातृभूमिमे ई कोन तरहक अवस्थामे अछि एकरा कहबाक जरूरत नै बुझाइत अछि, परंच उत्तरी बिहारक किछु जिला आ भागलपुर, पूर्णिया आदिक गाम सभमे आइयो एकर कद्र छै। ई छोटका लोक सभक नाच बनि कऽ रहि गेल अछि। तथाकथित भद्र समाजक लोक एकरा देखबामे अपन हेठी बुझै छथि। मुदा मुसहर, धाँगड़, दुसाधक ठाम विवाह, मुंडन संगे अन्य अवसरोपर एकर धूम मचल रहै छै। ऐ नाचमे सात-आठ टा कलाकार रहै छै आ दुइए टा वाद्य यन्त्र- मृदंग आ मंजीरा रहै छै।

तँ चलू। बिदापत-नाचक आनंद उठाबी। अपन भद्रताकेँ किछु काल लेल त्यागि....

धृंग धा, धृंग धा तिन्ना- बाजि कऽ मृदंग बौक भऽ गेल। कुन कुन कुन कुन... मजीरा स्वरमे संग देलकै।

गननायकं फलदायकं पंडितम् पतितम्... अहाँ सभ हँसू जुनि। ई मंगलाचरण छलै, शुद्ध संस्कृतमे।

धृंगा धृंगा धृंगा धृंगा- मृदंग बाजऽ लागल।

किनकां, किनकां, किनकां, किनकां.. मजीरा संग देलकै।

नाचैबला चारू तरफ जेम्हर-जेम्हर समाजी छल, चक्कर देनाइ शुरू केलक। ओकर पाछू बिपटा सेहो घिरनी जकाँ चक्कर लगा रहल छल आ मुँहकेँ रंग-बिरंगक बनबैत ओय -ओय -ओय -ओय बाजि रहल छल।

धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी- मृदंग ताल बदलि दोसर सुर निकाललक। किनकां, किनकां... आब रहए दिअ। बड़ नचौलौं... आब बादमे नाचक कथा हेतै।

नाच करैबला एकेटा जगहपर जमा भऽ झूमऽ लागल। धिरिनांगि तिनता, तिटक-तिटक धा, तिटकल गदगिन धा। ताल समाप्त भेल आ नाचो शेष भऽ गेल आ नाचैबला सभ घोघ तानि दर्शक मंडलीमे जा बैसल। नाचमे जे बिपटा बनल छल ओ नाच करनिहारकेँ ताकऽ लागल। धृंगा-धृंगा...

'धिन-तिनक तिनक, धिन तिनक-तिनक'- मृदंग बाजल।

समाजी सुरमे सुर मिलेलक।

'हे लेल परबेश परम सुकुमारि

हंस गमन वृषभान दुलारि....'

नचनियाँ सभ उठि बिपटा लग आबि गेल आ हर्षित भऽ बिपटा ओय ओय ओय ओय केनाइ शुरू कऽ देलक।

'धिन-तिनक् तिनक् धिन-तिनक् तिनक्'

'हे! तन मन बदन पवन सहजोर हे

दामिनी ऊपर उगलन्हि चाना...'

नाच करऽबला सभ घोघ हटा लेलक आ चंद्रमुख (घुटल दाढ़ी, मोंछ आ बेडोल, केहने सन कऽ मुँह) देख दर्शको सभ हँसैत-हँसैत नेहाल भऽ जाइत अछि। नचनियाँ निच्चाँ दिस ताकि रहल, लाज सँ लज्जावती लता सन सिकुड़ल नाच कऽ रहल छल वा छली। बिपटा ओकरा अपना दिस आकर्षित करबाक कोशिश कऽ रहल अछि।

“हे बिहँसि उठलि पिऊ देखि सुहागिनी

लाज बदन लेल फेरि..”

नचनियाँ बिहुँसि कऽ मुँह फेर लेलक। हँसऽ कालमे तमाकुल सेवनसँ जे दाँत सभ कारी भेल छल से चमकि उठल। कृपया अहाँ सभ शांत भऽ जाउ। जी, जी हँ। विद्यापतिक पदावली भऽ सकैत अछि, परंच ई छी 'बिदापत नाच'।

न्यू थियेटर्स, विद्यापति, कानन बाला. पहाड़ी सान्यालक बक-बक बंद करै जाउ। आखिरी अलाप शुरू कऽ देलौं।

अहाँ सभकेँ कतेक बुझाउ जे ई 'बिदापत नाच' छिऐ आ ओ नाच करैबला टहलू पासवान, ओकर बाप बड़का डकैत छल। बापकेँ काला पानीक सजा भऽ गेलै। माय केकरो आन सने चलि गेलै आ ई बच्चेसँ नाचऽ लागल। अपन जवानीक दिनमे एकर धूम मचल रहै छलै... धूम मचबै छलै धूम। एकर आवभाव देखि तँ परबतिया अपन बसल-बसाएल गृहस्थी छोड़ि एकरा सने रातिये राति पड़ा आएल। हँ तँ टहलू पासवान गाबि सकैत अछि जे...

अँगना आएत जब रसिया

पलट चलब हम इषत् हँसिया

कान्ह जतन बहु करयिन्ह

धृन्ना धृंगा, तिना-तिन्ना- मृदंग आब दोसर ताल बदललक।

किन्ना- किन्ना.. मंजीरा सेहो ताल बदललक।

“सखि हे...

सखि हे, कि पूछसि अनुभव मोहे..”

“जनम अवधि हम रूप निहारलौं,

तबहु न तिरपित भेल |"

'अरे? चुप! चुप!!' -बिपटा खिसिया कऽ चुप करा रहल अछि। एक टा समाजी गमछाक कोड़ा बनेनाइ शुरू केलक। बिपटा कहनाइ आरम्भ केलक जे ओकरा पीट कऽ अनेरे समए बर्बाद कएल जा रहल अछि। जमींदारक जूता खाइत-खाइत ओकर पीठक चमरी मोट भऽ गेल छै। ओ अइ लेल मात्र चुप करा रहल छल.. “कि ओ जन्म भरि केकर रूप निहारैत रहल'... जखन ओकरा बुझा गेलै जे ओकरे रूप, तँ खुशी भऽ तुरंत पॉकेटसँ एकटा छोटका एना निकालि सगर्वसँ अपन मुँह देखऽ लागल।

गीत समाप्त भेल, आब बिपटा महादेवक बेर छनि।

-हे नेक जी (नायक जी) ।

-हूँ।

-आब हमरो सुनू।

“बाप रे!

बाप रे कोन दुर्गति नहि भेल

सात साल हम सूद चुकाओल,

तबहुँ उरिन नहि भेलौं।

कोल्हुक बड़द सन खटलौं राति-दिन

कारज बढ़त हि गेल

थारी बेच पटवारीकेँ देलियन्हि,

लोटा बेच चौकीदारी।

बकरी बेच सिपाहीकेँ देलियन्हि

फटकनाथ गिरधारी। “

किछु बुझलिऐ अहाँ सभ.. अहूँ सभ पूराक पूरा फटकनाथ गिरधारी छी। कने दर्शककेँ देखियन्हु ने जे ओ सभ की बुझलनि जे हँसैत-हँसैत पेटमे दर्द हुअ लगलनि।

'धृंगा-धृंगा, धिधिन्ना तिन्ना '....

“सखि हे!

ई माह भादर, भरल बादर,

शून्य मंदिर मोर। ...”

सुन्दर! सुन्दर!! ठीके विद्यापति मैथिल कोकिल....

अहाँ सभ फेर भसियाए लगलौं, अहूँ सभ बिपटासँ कम नै छी। कतबो मना कएल जाए ओकरा जकाँ सभ गीतपर किछु ने किछु सुनाबऽ लागै छी। ई लिअ, बिपटा महोदय फेर टपकला...

“ई माह भादर, बरिसे बादर,

चुअत छप्पर मोर।”

“हहा-हहा ...!!” दर्शक मंडली हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ रहल अछि। हँ एक टा बात कहब बिसरि गेलौं जे बिपटा अपनाकेँ कृष्ण बुझैत अछि आ परदेशी साजन सेहो, लेकिन संगे इहो बात नै बिसरैत अछि जे कि ओ कलरू मुसहर अछि, हलहलियाक रहनिहार आ मनुष्य रहितो ओ बुझै छै जे कोल्हूक बड़दसँ बेसी ओकर हैसियत नै छै। नाचएबला सभ जखन ओकर गरदनिमे बाँहि मान-अभिमानसँ प्रेमक प्रदर्शन करैत बुझबैत छै कि ---माधव तजि के चललौं विदेश।.. तखनि ओ बिसरि जाइत अछि जे ओ कृष्ण अछि आ गोकुलसँ मथुरा जा रहल अछि। ओकरा सामने जीवनक विषमता मूर्त रूप भऽ नाचि उठै छै आ ओ बुझबै छै- –

'नहिं बरसल अदरा (आद्रा नक्षत्र) नहि अशरेस,

चारु दिस देखै छी बुढ़ियाक केश ....

माछ काछू सब गेल पाताल,

अब कि पड़त सखि महा अकाल,

दिन भरि खटि के एक सेर धान,

एकरा से कैसे बचत परान,

छोडि- छोडि सजनि जाइ छी विदेश’

फेर दोसरे क्षण जखन नर्तक गाबऽ लागै छै-

'गोद लय बलमाकेँ चललि बाजार

हटिया के लोग पूछे, के लागे तोहार।

सासू जी के लड़िका, ननद के जेठ भाय,

पूर्व के लिखल स्वामी छिक् हे हमार। '

आब बिकटा बच्चा जकाँ जिलेबी, बताशा आ खिलौना लेल छिरिऐ लागल..

तखने एकटा नचनिया गीत गेलक--

“राति जखन भिनसरवा रे,

पहूँ (स्वामी) आयल हमार।

कर कौशल कर कँपइत रे हरवा उर जार

कर पंकज उर थपइत रे मुखचन्द्र निहार”

बिपटा बीचेमे रोकि कऽ एकटा समाजीसँ एकर अर्थ बुझबै लेल कहै छै आ समाजी खुलि कऽ अइ गीतपर टीका करऽ लागल। केना नायिका पुआरपर अपन झोपड़ीमे सुतल छलय आ बिपटा आएल छल।

चलू दर्शक सभक बीचमे। कारी-कारी मोटगर आ गठगर देहबला नवयौवना मंद-मंद मुसकीकेँ दबा आ एक दोसरकेँ केहुनिया-केहुनिया कऽ कनफुसकी करैमे आनंदित भऽ बिपटाक दिस एक टक निहारि रहल छलि। अधेड़ उम्रक मौगी सभ बनावटी तामस व्यक्त कऽ युवती सभकेँ रोकए चाहै छै, लेकिन दबल हँसी आ गुदगुदायल ह्रदए कखन मानै छै। एम्हर नचनियाँ सभ आलाप कऽ उठल।

“चलू मन, चलू मन ... ससुरालि

जइबै हो रामा,

कि आहो रामा, नैहरा मे

अगिया लगाइब रे कि...

युवती चंचल भऽ जाइ छै आ युवक लोकनिक नसमे बिजली दौड़ऽ लगलनि। नाच आब खत्म हुअबला छै-

“चलू मन, चलू मन

धिन धिनक धिनक, धिन धिनक धिनक...

कि आहो रामा, नैहरा मे अगिया लगाइब रे कि ...!

डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक ...”

अरे ई की? ओहो, चेथरू गुँसाइ जी छथि। गुँसाइ जी कबीरक भक्त छथि। दस-पंद्रह साल पहिने जमींदार साहबक कहलापर ओ झूठ गवाही नै देलनि। ऐपर जमींदार खिसिया कऽ गुँसाइ जी कैँ बेघर कऽ देलकनि आ तखनेसँ ओ बैरागी भऽ गेला। खंजरी, झोरा आ चिमटा, जटा आ नमगर दाढ़ी... ई लिअ। गुँसाइ जी खंजरी बजा बजा नचनियाँ संगे नाच करऽ लागला...

“डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक

कि आहो रामा नैहरा मे अगिया..

बात ई छै जे चेथरू गुँसाइ जी अइ गीतकेँ पूरा निर्गुण मानै छै।

अहा! ओकर धँसल आँखिमे नोर चमकि उठै छै। आ नाच समाप्त भऽ गेल।

(फणीश्वरनाथ रेणुक ई रिपोर्ताज साप्ताहिक “विश्वामित्र” क १ अगस्त १९४५ क अंकमे प्रकाशित भेल छल। ई हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद फणीश्वरनाथ रेणुकेँ समर्पित कएल जा रहल अछि। साभार विदेह: सदेह ११)

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि। की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापति ठक्कुरः मे छन्हि?

५०. कियो बूझि नै सकल हमरा-(गजलकार ओम प्रकाश झा)

सारांश

भदवारिमे मेघ लाधल रहै छै, विदागरी-तिदागरी नै होइ छै मुदा पनिऔरा फड़ै छै। भदवरिया लाधल छै, बितरोचारक कोनो खगता नै। मुदा जँ कोनो बहर दिस झोंकान भऽ जाए तँ कोनो हर्ज नै।

बीजशब्द: ओम प्रकाश झा; मैथिली गजल; विरह; बह्र; शेर; काव्यभाषा; लय

भदवारिमे मेघ लाधल रहै छै, विदागरी-तिदागरी नै होइ छै मुदा पनिऔरा फड़ै छै। भदवरिया लाधल छै, बितरोचारक कोनो खगता नै।

गोलैसी नीक गप नै। मुदा जँ कोनो बहर दिस झोंकान भऽ जाए तँ कोनो हर्ज नै।

जँ मैथिली साहित्यमे बहरमे कहल गजल सभक संकलन हुअए तँ तकर सर्वश्रेष्ठ कहबैका हेता ओम प्रकाश जी।

“करेजासँ शोणित बहाबैत रहलौं

करेजामे प्रेम बसै छै आ ओइसँ शोणित बहि रहल छन्हि, तँ कियो चक्कू भोकने हेतन्हि तखने ने। के अछि एहेन चण्ठ! मुदा शेरक दोसर मिसरा कहैए..

विरह-नोर कखनो कहाँ खसल हमरा”

इतिहास बनैत-बनैत रहि गेल कारण?

एकटा खिस्सा बनि जइते अहाँ संकेत जौं बुझितहुँ

हमही छलहुँ अहाँक मोनमे कखनो तँ कहितहुँ

से ने हिनके दोष ने हुनके।

से हिनकर इच्छा छन्हि जे जड़ैत करेज आगिमे जड़िते रहए:

पता नै कोन आगिमे जरैत रहल करेज हमर

पानि नै खाली घीए टा चाहैत रहल करेज हमर

तँ कोनो प्रेमीक प्रेमक आघात सहने छथि गजलकार, आ ओइ प्रेमीसँ एतेक लग छथि जे विरह-नोर बहेने ओकर बदनामी भऽ जेतै तेँ विरह नोर नै बहबै छथि। चाहै छथि जे करेज आगिमे जड़िते रहए, आ आगिमे पानि नै घी ढारल जाइत रहए।

आ लोककेँ होइ छै जे हुनकर हृदय आ मोन कठोर छन्हि! आ तेँ ओ कहै छथि..

कहू की कियो बूझि नै सकल हमरा

हँसी सभक लागल बहुत ठरल हमरा

आ संगमे ईहो:

एतेक मारि खेलक झूठ प्रेमक खेलमे जमानासँ

कियो देखलक नै कुहरैत रहल करेज हमर

मुदा लोकक बुझब नै बूझब, किदन साती ले! ओ बहरे मुतकारिबमे कहल एकटा दोसर गजलमे कहै छथि..

भिड़त आबि हमरासँ औकाति ककरो कहाँ छै

जखन-जखन लडलौं हरदम अपनेसँ लडलौं हम

तँ की गजलकार घमण्डी छथि, नै सेहो नै, ओ बहरे हजजमे कहै छथि:

कटऽ दियौ "ओम"क मुड़ी आब दुनियाँ ले

जँ गाम बचै झुकैसँ तँ पाग निखरै छै

तँ की मैथिलीक गजलकार अखनो प्रेमे-विरहमे ओझराएल छथि? नव विषय नै पकड़ि रहल छथि? मुदा से नै छै, बहरे-सलीममे लिखल गजलक ई शेर सुनू:

धरले रहत सभ हथियार शस्त्रागार

बनलै मिसाइल भूखे झमारल लोक

आ ई बाल-गजल सुनू। बाल-कविता/ गजल सुनिते लोककेँ उल्लासक स्वर सुना पड़ै छै, मुदा बाल-मजदूरक जिनगीमे से कतऽ पाबी, मुदा आस तँ छै, तेँ:-

चारू कात पसरल दुखक अन्हरिया छै

कटतै ई अन्हरिया आ बढ़बै हमहूँ

आ ई आस आनो गजलमे अछि:

सागरक कात सीप बिछैत रहब हम

कोनो सीपमे कखनो मोती भेटेबे करतै

ओम प्रकाश जीकेँ जहिया मोती भेटतन्हि तहिया, मुदा मैथिली साहित्यकेँ हुनका रूपमे एकटा मोती भेटि गेल छै, ओ चीन्हि लेल गेल छथि, बूझि लेल गेल छथि।

५१. गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी

सारांश

"माँझ आंगनमे कतिआएल छी" मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि।

बीजशब्द: मुन्नाजी; गजल; बीहनि कथा; माँझ आंगनमे कतिआएल छी; रुबाइ; प्रेम; विधागत प्रयोग

गजलकार मुन्ना जीक "माँझ आंगनमे कतिआएल छी"

"माँझ आंगनमे कतिआएल छी" मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। कतिआएल आ सेहो माँझ आंगनमे! की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि। मुन्नाजी सन कतेको लोक कतिआएल छथि, प्रतिभा अछैत हेराएल छथि। मुदा गजलकार सभटा दोख अपनेपर लऽ लै छथि।

आब तँ माँझ आंगनमे कतिआएल छी

अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

आ सएह कारण अछि जे ओ नोरक सुख भोगऽ लागै छथि।

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए

केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़का खाधिमे खसै छथि आ तहू लेल अपनेकेँ दोखी मानै छथि:

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम

तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

तँ की गजलकार प्रेमक महत्व बिसरि गेल छथि, नै प्रेम तँ सभकेँ चाही।

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही

मरितो धरि कुशल-छेम चाही

आ हिनका जँ कोस दू-कोस मात्र चलबाक रहितन्हि तखन ने, हिनका तँ बहुत आगाँ बढ़बाक छन्हि तेँ प्रेम चाही।

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

आ से सभ ठाम। एकटा हमर संगी छल, एकटा परीक्षामे टॉप केलक तँ बाजल- नै कम्पीट करै छी तँ नै करै छी, आ करै छी तँ टॉप करै छी। ओ गजलकार नै छल जँ रहितए तँ अहिना लिखितए जेना मुन्नाजी लिखै छथि:

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

आ नजरि-नजरिक फेर आ हाफ ग्लास फुल, ई दुनू टा अवधारणा ऐ रूपमे ओ राखै छथि:

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

समालोचना आ विरोध दुनूकेँ गजलकार नीक मानै छथि।

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ

विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

महगाइसँ लोक बेकल अछि मुदा तकरा लेल झुमैत मचानक बिम्ब देखू:

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

आ ई उलटबासी देखू, बिम्ब नव, भावना शाश्वत:

हम तँ घूर जड़ेलौं गर्मी मासमे

मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

ई कोन गोष्ठी छी जे अछि कोन पत्रिकाक प्रायोजित चिट्ठी छपबाक राजनीति सन, ई रुबाइ देखू:

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ

उठि दर्शक भागल मारामारीसँ

प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन

कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

मुदा बाढ़िक विषय जँ मैथिली गजलक अंग नै बनए तँ बुझू जे गजलकार समाजसँ कतिआएल छथि। मुदा से नै अछि।

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

आब पड़ाइन घटल अछि, मिथिलासँ पड़ाइन। बाहरी लोक बिहारीकेँ मजदूर आ श्रमिकक पर्यायवाची मानि लेने छथि। तहूपर गजलकारक कलम चलल अछि।

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब

श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

मुन्नाजीक गजल आ रुबाइ स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि। शेरक स्वभाव होइ छै जे जँ ओकरा नीकसँ कहल जाए तँ आह-बाह लोक करिते अछि। मैथिलीमे गजल-रुबाइ जइ तरहेँ प्रसारित भऽ रहल अछि से देखि कऽ यएह लागि रहल अछि जे जतेक ई विधा अपनाकेँ पसारि रहल अछि तइसँ बेशी मैथिली लाभान्वित भऽ पसरि रहल अछि।

५२. कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

सारांश

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि। कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

बीजशब्द: अशोक · कथाकार · कथेतर · गद्यक · लेखक · महाभारत · कविता

सारांश

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि। अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम।

नूतन अंक सम्पादकीय

कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक

ओना तँ अशोक अपनाकेँ आब कथाकार अशोक कहै छथि (हुनकर फेसबुक प्रोफाइलक यएह नाम छन्हि) मुदा हुनकर पहिल प्रकाशित पोथी अछि एकटा कविता संग्रह 'चक्रव्यूह' जे प्रकाशित भेल १९८६ केर जनवरी मासमे। ओही वर्ष अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक सम्मिलित कथा संग्रह 'त्रिकोण' प्रकाशित भेल, नवम्बर मासमे, जइमे तीनू गोटेक ५-५ टा कथा छलन्हि।

अशोक कम लिखै छथि, कविता तँ आरो कम। मूलधाराक लेखकमे कम लिखबाक फैशन छै। जखन प्रेमचन्द तीन सय कथा लीखि लेलन्हि तखन जा कऽ ओ एकटा संग्रह बहार केलन्हि- 'मेरी प्रिय कहानियाँ' सन् १९३३ मे। ऐ पोथीमे प्रेमचन्द ई स्वीकार करै छथि जे नै चाहियो कऽ लेखकक सभ रचना नीक नै भऽ पबै छै। आ ईहो जे जँ पाठक एक लेखकक सभ रचना पढ़ि जाय तखन ओ जिन्दगी मे पाँचो छह टा लेखककेँ नै पढ़ि सकत। से हुनकापर दवाब पड़लन्हि जे ओ पाठक लेल ऐ तीन सयमे सँ किछु कथा चुनि कऽ अपन प्रिय कथाक रूपमे प्रस्तुत करथि। हमरो विचारे जहिया एकटा लेखक तीन सय कथा लिखि लिअय तखने ओकरा अपनाकेँ कथाकार घोषित करबाक चाही। ओना ओतऽ प्रेमचन्द ईहो कहि जाइ छथि जे लोककथामे मात्र उड़ैबला घोड़ा आदि होइ छै से कथाक महत्व लोककथासँ बेशी छै। प्रेमचन्दक ऐ गपसँ हम भिन्न विचार रखै छी आ फिराक गोरखपुरीक कथनसँ सहमत छी। फिराक गोरखपुरी अपन रुबाइक संग्रह 'रूप' मे लिखै छथि जे 'हिन्दू लोक गीत' जे हमरा दैत अछि से ओकरा मानवीय आ स्वर्गीय संगीत बना दइ छै, आ से गालिब, इकबाल आ चकबश्त सेहो हमरा नै दऽ सकला। ओ उदाहरण दइ छथि-

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

महाभारत आब लोकगीत बनि गेल अछि, लोकगाथा बनि गेल अछि, 'भील महाभारत' तकर उदाहरण अछि। अशोकक 'चक्रव्यूह' महाभारत आधारित किछु कविता अछि, से ओ लोकगीत आधारित अछि, लोकगाथा आधारित अछि।

से हमरा नजरिमे रचनाकार अशोक तीन टा छथि- कवि अशोक, कथाकार अशोक आ कथेतर गद्यक लेखक अशोक। अरविन्द ठाकुर अपन पोथी रोशनाइक लोकपक्षकेँ कथेतर गद्य कहै छथि, से निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना लेल हमहूँ ऐ शब्दावलीकेँ प्रयुक्त कऽ रहल छी।

गजेन्द्र ठाकुर

कवि अशोक

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

कवि अशोक

पहिल चरण: अशोकक 'चक्रव्यूह' (सामान्य पाठ)

महाभारत एकटा अद्भुत ग्रन्थ अछि। ई जय संहिता कथा लेखकक वर्कशॉप अछि, महाभारत कथा, मुदा ई कथा सभ पद्यमे अछि! महाभारतक अति लघु पद्यात्मक मैथिली रूप हमर त्वञ्चाहञ्च- गीत प्रबन्ध मे भेटत।

फेर तेरहम दिनक युद्ध भेल शुरु जखन,

संसप्तक आ त्रिगर्तकेँ पछुआबैत गेल अर्जुन।

तखनहि युधिष्ठिरकेँ पता चल चक्रव्यूहक,

अभिमन्यु देखि चिन्तित काकाकेँ कहल,

गर्भमे सुनल पिता माताकेँ वर्णन सुनबैत छल,

चक्रव्यूहक छह द्वारकेँ तोड़बाक सभटा,

स्मरण युद्धक वर्णनक विधि बचल नहि कोनोटा।

मुदा सातम द्वारक युद्धक वर्णन सुनल नहि,

माता सुतलि तखने बचल एकेटा द्वार सैह।

कवि ब्यासक पेटमे सीखि अएबाक बिम्ब,

शब्दार्थ नहि वीरक अछि ई प्रतीक।

सोझाँ तखन बढ़ल अभिमन्यु ककरो नहि बुझाएल,

कतए अछि द्वार कतए प्रवेश जयद्रथ रक्षक जतए,

आउ भीम काक ई अछि प्रवेश द्वार पैसब एतहि।

अभिमन्यु कए प्रहार जयद्रथपर वाणसँ गेल भीतर,

भीम दोसर सेनानीकेँ रोकि जयद्रथ ठाढ़ ओतहि।

दोसर द्वारपर द्रोण ठाढ़ जखने वाण चलाबथि,

काटल धनुष द्रोणक व्यूह भेदि बढ़लाह आगू।

तेसर द्वारपर चकित कर्णपर कए वाण बरखा,

बढ़ल चारिम द्वारपर अश्वत्थामा जतए छल,

युद्ध भेल घनघोर एतए मुदा रोकि सकल नहि,

अभिमन्युक रथ बढ़ल दुर्योधन भेल चिन्तित,

कर्ण आब करब की बाजू पराजय बुजाइछ निश्चित।

कर्ण बाजल सभ मिलि सातो महारथी हम सभ,

रोकि सकब एहि बालककेँ नहि क्यो सकत असगर।

सभ रथी आ पुत्र दुर्योधनक नाम लक्ष्मण जेकर,

पहुँचि गेल सातम द्वार पहुँचल अभिमन्यु तावत।

अभिमन्युक सारथी देखि ई दृश्य ओतए कहल,

ई सभ अधर्मी अछि जुटल, कहू तँ रथ घुराएब,

अर्जुन पुत्र हम नहि छोड़ब युद्ध हम एना देखू,

पार्थ-पुत्रक शौर्य रथ घुमाऊ चक्राकार कए अहँ।

तखन लक्ष्मण आएल सोझाँ अभिमन्युक ओतए,

वाणसँ काटल मस्तक लक्ष्मणक, द्रोण कहल,

अजेय ई अछि अभेद्य एकर कवच करू प्रहार सिरसि आ

तखनहि सारथि अभिमन्युक खसल टूटि गेल रथ।

नीचाँ आबि तरुआरि चक्र गदा लए ओतए ओ चलल,

दुःशासनक पुत्रसँ गदा युद्ध भेल दुनू ओतहि खसल।

पहिने उठि दुःशासनक पुत्र प्रहार कएलक मस्तकपर,

सप्तरथीक बीच खसि पड़ल सुभद्रापुत्र पति उत्तराक।

(गजेन्द्र ठाकुर, त्वञ्चाहञ्च- गीत प्रबन्ध, २००९)

'चक्रव्यूह' कविता संग्रहक पहिल कविता अछि 'चक्रव्यूह' जइमे आइ ने कृष्ण छथि ने युधिष्ठिर आ ने अर्जुन, आइ (महाभारत युद्धक तेरहम दिन) तँ रचल अछि चक्रव्यूह।

'हम किछु पूछब मे' चीर-हरणक वर्णन अछि।

खिसियाकेँ दुर्योधन देलक ई आज्ञा पुनः ई,

चीर-हरण करू दुःशासन द्रौपदी दासी छी।

द्रौपदी कएलन्हि नेहोरा श्रेष्ठ लोकनिसँ

विनय ई अछि लाज बचाऊ करैत छी विनती।

सभ क्यो झुका माथ अपन ओहि सभामे,

कृष्णा छोड़ल सभ आश सभ दिशासँ,

भक्त वत्सल अहाँसँ टा अछि ई आशा,

कोहुना राखू हमर ई लाज अछि प्रत्याशा।

आर्द्र-स्वरसँ छलि रहलि पुकारि द्रौपदी,

गोहाड़ि खसलि सभा-बिच, मूर्च्छित।

लागल खीचय द्रौपदीक वस्त्र दुःशासन,

सभासद देखल चमत्कार ई प्रतिपल,

यावत रहल खिंचैत वस्त्रकेँ दुःशासन,

बढ़ैत रहल वस्त्र द्रौपदीक तावत तखन।

(गजेन्द्र ठाकुर, त्वञ्चाहञ्च- गीत प्रबन्ध, २००९)

कृष्णक भूमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे 'एहि चीर-हरणमे आइ/ कृष्णक भूमिका/ दुष्सासनक आगू/ ठेहुनियाँ दऽ दैत अछि'। आ से हुनकर सम्बन्धक द्रौपदी नाङट भऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत बैताल कहिया हेता, विक्रमादित्य कहिया हेता, से जिज्ञासा छन्हि।'सोवियत रूस सँ' कविता अछि एकटा नैरेटिवक जे अशोकक पीढ़ीकेँ परसल गेल रहै, जतऽ सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक खिधांश कएल जाइत रहै, आ जे से करैत रहथि ओ अपन बाल-बच्चाकेँ पढ़ैले अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। ऐ कवितामे अशोक सेहो सएह केने छथि। सालमे चरि बेर भोट दैत लोक आ भोट दऽ फोंफ कटैत लोक हुनका पसिन्न नै छन्हि, मुदा ऐ बेर-बेर होइत भोटक लेल जे सामाजिक समीकरणक निर्माण होइत अछि से अशोक देखबासँ चूकि गेला। ओइ समीकरणक परिणामस्वरूप जे सामाजिक परिवर्तनक उत्प्रेरक तत्वक तरंग उठैए से अशोक चीन्हि नै सकला। 'गीत जे नै लिखल गेल' आ 'की सुनाउ अहाँकेँ?' कवि कर्मक वेदनापर आधारित अछि। 'लोक किछु नहि करैए' मे मनुक्खक अकर्मण्यता आ 'तोरा गछने रही' मे मनुक्खक स्वार्थ विषय बनल अछि। 'संचिकास्त' कार्यालय शब्दावलीक आधारपर रचित अछि। 'शिलालेख' क बिम्ब सुन्दर अछि। कवि आततायीकेँ कहै छथि जे ओकर अत्याचारकेँ शिलालेखपर खचित कऽ सुरक्षिता गरबा दी की? आ ओ तँ भगवान छथि, आ से ओ हुनका मृत्यु स्वीकार करबा लेल कहै छथि, मुदा व्यंग्य सेहो करै छथि जे हुनकर पुनर्जन्म अवश्य हेतन्हि। तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक 'अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम' सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आयल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। इतिहासक अन्तक घोषणा कयनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कयने छलाह- बादमे ऐसँ पलटि गेलाह। कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ा (द्वन्द्व) सँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ऐ मतसँ आपस भऽ गेला आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयता सभक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे 'शिलालेख' महत्वपूर्ण अछि।'फेर कोनो विजुरी चमकल' मे कवि हृदय आ प्रकृतिक बीचक सम्बन्ध जँ देखऽ चाही तँ देखि सकै छी, जेना 'गोबर सँ नीपल अंगना मे बरसल'। 'अहाँ कैँ के चाही?' शब्द आकि अर्थ, शब्द माने भुस्सा वा खखड़ी आ अर्थ माने दाना, जे अहाँकेँ चाही कवि देता। 'चुप्पी नहि सोहाइये' मे कवि उलहन दइ छथिन, पेट लेल चुप्पी अङेजल मुदा तैयो पेट कहाँ भरैए? गाम लगक पैटघाट मोन पड़ै छन्हि, आ जखन हाकिम दबाड़ै छन्हि तँ अगिला कविता 'पाँती आइ जरूर लिखबै' मे गाम फेर मोन पड़ै छन्हि, मोन होइ छन्हि सभ छोड़ि-छाड़ि गाम घुरि जाथि। 'असगर' मे समय के दर्पण मे नोर देखबाक चर्चा अछि, बिछुड़ि गेलापर भेटल एकान्तीक हाक्रोश अछि। 'रचना सँ पहिने' मे कवि कैँ सभटा पाँती अनचिन्हार लागि रहल छन्हि, छगुन्ता होइ छन्हि केना एतेक जीवन जीबि गेला। 'शून्य' अछि नै मिलबाक कविता, ई समानान्तर चलबाक कवितो नै अछि।'मोनक घण्टी' मे मोनमे एलापर चानन सन शीतल हेबाक आ मोनसँ गेलापर सहसह करैत साँपक आगमन हेबाक चर्चा अछि। चानन आ साँपक बिम्ब संस्कृत सुभाषितानिसँ मैथिलीमे अनलनि अछि कवि, मुदा कने भिन्न रूपमे। चानन गाछक जड़ि परजीवी होइत अछि, एकर जड़ि पानि आ खनिज दोसर गाछक जड़िकेँ फाड़ि कऽ ओतऽ सँ ग्रहण करैत अछि। वर आ पीपड़क गाछ परजीवी नै होइत अछि मुदा जखन ओ छोट अवस्थाक रहैत अछि ओकरा दोसर गाछक आवश्यकता पड़ै छै, सहारा लऽ ठाढ़ हेबा लेल, सोंगर सन। शनै: शनैः वर आ पीपड़क जड़ि सहारा देनहार सोंगर बनल गाछ सभकेँ तेना कऽ गछाड़ि लैत अछि जे ओ सभ बिन पानि आ सूर्यप्रकाशक पिचड़ा भऽ जाइत अछि। आ आब की अहाँ 'शीतल चानन गाछमे लपेटल रहबो उपरान्त साँप विषहीन नै होइत अछि ' केर बिम्ब देलासँ पहिने मोनकेँ ओझरायल पबै छी? मुदा कवि सतर्क छथि, ओ चानन सन शीतल हेबा धरि सीमित राखलन्हि अपनाकेँ। हम अनेरे जेक्स डेरीडाक विखण्डनात्मक पद्धतिक प्रयोग समीक्षामे तँ नै कऽ रहल छी? 'दबकल कुकूर' द्वारा हिलाओल जा रहल नाङरिक बिम्ब सङ संस्कृतक सुभाषितानि [काक चेष्टा बको ध्यानं, श्वान निद्रा तथैव च। अल्पहारी गृह त्यागी, विद्यार्थी पंच लक्षणं ॥] जइमे विद्यार्थीक लक्षणमे एकटा लक्षणमे 'श्वान निद्रा'क चर्चा अछि, माने कनियो आहट भेलापर ओ उठि जाइए। मुदा हमर गाम लग बनल फोर-लेनपर मनुक्ख तँ हजारोक संख्यामे एक्सीडेण्टमे मरल अछि मुदा कुकुड़ ओतबे संख्यामे मरल अछि सुतलमे, सड़कपर सुतल, लोक कहै छै जे कुकुड़क नीन बड्ड मोट होइ छै! तँ श्वान निद्रा कतऽ गेलै? की ओकर स्थल हम सभ छीनि लेलिऐ, की गाड़ीक गति तते तेज छै जे ओकर आहटि कुकुड़क साकांक्ष हेबासँ बेसी तेज छै से ओ नै सुनि पबैए, आ की संस्कृतक सुभाषितानि मनुक्खक पर्यावरणमे हस्तक्षेपक कारण फेल भऽ गेलै? जेक्स डेरीडाक संग पर्यावरण विमर्शमे हम अनेरे ओझरा गेलौं, एतऽ तँ कवि दबकल कुकूरक नाङरि हिलेबाक बिम्ब मात्र प्रयोग केने छथि। 'बिन फ्रेमक तस्वीर' फेर हुनकर असगर हेबाक चर्च करैत अछि। 'हमर कोनो नाम दऽ दे' मे ओ ओकर विराट रूपक आगाँ अपनाकेँ अस्तित्वहीन हेबाक अनुभव करै छथि। 'उदास भोरक एक गीत' अछि टीसक गीत, टीस हृदयसँ शरीर

धरिक। 'कहिया धरि' मे कवि मेला ताकि रहल छथि हेरेबा लेल, आशाक माटि लगबैत रहैत छथि रंगीन सपनाक बर्तनमे। मुदा से कहिया धरि? 'एक विन्दु: तीन बिम्ब' मे एक बिम्ब अछि कोनो इच्छाक पूर्ति, दोसर अछि सोनिताएल आँखि आ तेसर बिम्ब अछि बिनु बचबाक प्रयास करैत खसैत जायब। 'प्रेमक तीन आखर'मे एक अछि- जे ओकर आँखिक भाषा पढ़ि लिखल शब्द, कतबो झटकारि कऽ लिखै छथि मोतीये सन पाँति बहराइत छन्हि, दोसर- ओकर प्रतिबिम्ब देखै छथि अपन मोनक अइनामे, आ से तेहेन प्रतिबिम्ब देखै छथि जे घोंटि लेबाक, पीसि कऽ चिबा कऽ लहूलुहान हेबाक मोन करै छन्हि। तेसरमे लग एलासँ डरो होइ छन्हि। आ यएह छी प्रेमक ढाइ आखरसँ आगाँक तीन आखर। 'एक राति' मे रातिक शीतलता, नीक-नीक अनुभूति, मुदा दिनक रौद? दिन--- नहि नहि। 'साँझ' सभ दिन आबि जाइए निर्लज्ज बनि, कवि ओकरा भागि जाइले कहै छथि नै तँ बड़ा देता इजोत। 'नव सीन' अछि नववर्षक आगमनक गीत, विलेनसँ हीरो बनबाक प्रयासमे नै भऽ जाथि एक्स्ट्रा, फेर वएह शंका आ निराशा। 'सीप महक मोती' मे आदर्शक जुलुसमे गाँधीक सहिष्णुता आ असहयोग (आन्दोलन) क चर्चा अछि। जितलापर नै वरन् हारलापर ठठा कऽ हँसि सकै छी! टघरल नोर जरिये कऽ बनि सकत मोती। आ तकर बाद अछि 'पाँचटा अनेरुआ कविता' जइमे पहिल अनेरुआ कविता अछि कृष्णक सभ साल होइत जन्मपर (कृष्णाष्टमी), मुदा ऐ बेर बाँसुरी बिसरि वायलिन लऽ कऽ आयल छथि कृष्ण। माने कवि वायलिनकेँ विदेशी वाद्य मानै छथि, हिन्दुस्तानी संगीतक हिसाबे ओ ई सही छै मुदा कर्नाटक संगीतमे ई विदेशी वायलिन आइसँ दू सय साल पहिने सम्मिलित कऽ लेल गेल छल। दोसर अनेरुआ कविता अछि डांस फ्लोरक मुदा ओत्तौ पएर पिछड़ि गेलन्हि। तेसर अनेरुआ कविता अछि रिक्शाबलाक, मुदा जखन अगिला पहिया झटकासँ टेढ़ भेलै तखने ओ संसार बुझि पेलक। चारिम अनेरुआ कविता अछि जीबा लेल जोड़ल जिनगी भरिक सम्बन्ध, मुदा! पाँचम अनेरुआ कविता अछि विनाशक करिया जीहक। चक्रव्यूहक अन्तिम कविता अछि 'दू बून्द नोर' तूफान, बिहाड़ि मुदा ह्रदयक बिहाड़िसँ पैघ नहि। साँवरिया नहि मृत्युक प्रतीक्षा। आ हम मरि जाइत छी! माटिक, पतलोइक टूटल घर दहाइत, माटिक शरीरक संग।

दोसर चरण: अशोक चक्रव्यूहक बाद (सामान्य पाठ)

'फेर सँ' मे छोट बेटाक दुखीत हेबापर कारी मेघक घटाटोप आ कविता लिखबाक सूर चढ़ब देखबैए जे कविक कविताक वातावरण दुखी भेलेपर बनै छन्हि। 'दाँत' मे सासुरमे कनियाँकेँ मुँह नै खोलबाक जे सलाह देल जाइ छै तकर चर्चा अछि। 'आब..' मे माटि, काठ, बाँसक प्रयोग कम भेने आ सिमेण्ट, बालु, गिट्टी, लोहा, संगमरमरक प्रयोग बढ़ने लोकोक्तिमे अबैत परिवर्तन कवि देखि रहल छथि। 'ब्रह्मोत्तर' मे विकास लेल गाछ, घर, खेत आदिक अधिग्रहणक दंश, पहिने खेतिहरसँ खेत लऽ कऽ ब्रह्मोत्तर बाँटल जाइ छल, आइ लोकसँ जमीन लऽ कऽ नव-ब्राह्मणकेँ बाँटल जा रहल अछि। मुदा विश्वग्रामकेँ नन्दीग्राम चुनौती देलक अछि। 'मोछ' मे अस्त्रक महत्व बुझबैत ज्येष्ठ मोंछकेँ पैघत्वमे बाधक तत्त्व चिन्हित केने छथि, वा तेना कऽ काज करू, कमाउ जे मोंछमे नै लागय, से उपदेश दइ छथि। 'मुक्ति समारोह' मे शान्ति प्रतीक परबाकेँ उड़ाओल जायत, एकसँ दोसर राजेताक हाथमे जाइत ओ मुक्तिक आशमे अछि त्रस्त, मेरा भारत महान। 'आब किछु करू आचार्य!' मे आचार्यक मात्र चिन्तित होयब मुदा शिष्यकेँ नै अरघैत छन्हि। 'जखन पियासे मरि जायत' मे जिनकर चुप्पी कविकेँ नै सोहाइत छलन्हि से तँ आब हुनके चुप्प करेबापर लागल छथि।'एहि भ्रम मे नहि रहऽ' मे राजनीति मिसरकेँ चेतायल गेल अछि। 'सन्दर्भ: चुनाव वर्षक' क 'चुनाव'मे जनतंत्रक द्रौपदी छथि तँ 'भोट' मे भोट लेल होइत छल-प्रपञ्च अछि। 'राजनीति आब महकि रहलैए' मे राजनीतिक विद्रूप रूप देखार होइत अछि। 'कहलनि तूफान अली' मे नकली हिन्दू आ मुसलमान गढ़ल जेबाक चर्चा अछि। 'बुधियार' मे वर आ पीपड़ सन घरे-घर दरारि तकैत कक्का पात्र छथि। 'मनुक्ख धर्रोहि थिक कविता' मे कवि कविता की अछि तँ लिखिते छथि सङे ई की नै अछि सेहो लिखै छथि 'शिश्नपूजी लोकक बेलपात नहि थिक कविता'। 'विष' मे कवि ताकि रहल छथि विषधर। 'खायब आ नहायब' मे चर्चित अछि जे पहिने पुरुखक खायब आ स्त्रीक नहायब कम्मे लोक देखै छला मुदा आब? 'जिन्न'मे अपने जनमाओल जिन्न बकार बन्न कऽ रहल अछि। 'की भेल' मे मुरुत भेल मनुक्खक चर्चा अछि। 'आठम अनुसूची मे मैथिली'मे मनोरथ पूर्ण भेलापर कविकेँ वैष्णव भऽ जाथि, पचीसी खेलाथि वा गंगा नहा आबथि से फुरा नै रहल छन्हि जेना आब किछु करबा लेल बाँकी नै अछि। साहित्य अकादेमीमे हुअय वा अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश, ई मूलधाराक कट्टरताकेँ आर बढ़ेलक अछि, सशक्त केलक अछि। मूलधाराक किछु हार्डबाउण्ड पोथीक लाइब्रेरी द्वारा खरीद आ बिनु परिणामक मूलधारा द्वारा कएल जा रहल सेमीनारक अतिरिक्त मैथिलीकेँ किछु नै भेटल छै, हँ समानान्तर धाराकेँ ऐ सभसँ निपटबाक लेल उनटे आब बेशी मेहनति करय पड़ि रहल छै। 'ऋतु बदलि रहल अछि' मे वायुमण्डलक ताप बढ़बाक चर्चा अछि, मुदा बहुत प्रयासो सँ बदलैत ऋतु, बढ़ैत ताप आ उड़ैत बगुलाकेँ कवि देखि नै पाबि रहल छथि।'चलि गेला महाप्रकाश' मे सुकान्त सोम द्वारा देल महाप्रकाशक मृत्युक सूचना, आ कविकेँ जड़कालामे काज एतन्हि मात्र हौसला।

ऊपरमे अशोकक कविताक सामान्य पाठ छल।

कवि अशोकक समीक्षा: प्राच्य आ पाश्चात्य सिद्धांत सभक आलोकमे समीक्षा: (सिद्धान्त लेल देखू हमर पोथी मैथिली समीक्षाशास्त्र, विदेह पोथी www.videha.co.in पर उपलब्ध)

मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवाद आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

कवि अशोकक चक्रव्यूह आ चक्रव्यहक बादक कवितामे चक्रव्यूहक एक्कोटा कविता अहाँकेँ निराश नै करत, मुदा बादक कविता सभ अहाँकेँ झुझुआन लागत (अपवाद अछि 'जखन पियासे मरि जायत') ।

संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे 'चक्रव्यूह' आ 'हम किछु पूछब मे' एकटा सार्वभौम महाभारत कथापर आधारित अछि, मात्र स्थान, काल आ पात्र बदलि गेल अछि।

चीर-हरणक वर्णन अछि। कृष्णक भूमिकासँ व्यास प्रसन्न छथि, मुदा अशोक अप्रसन्न। आ हुनकर अप्रसन्नताक कारण अछि, हुनका लगै छन्हि जे 'एहि चीर-हरणमे आइ/ कृष्णक भूमिका/ दुष्सासनक आगू/ ठेहुनियाँ दऽ दैत अछि'। आ से हुनकर सम्बन्धक द्रौपदी नाङट भऽ गेल छन्हि, अपन लाश अपन पीठपर उघैत बैताल कहिया हेता, विक्रमादित्य कहिया हेता, से जिज्ञासा छन्हि।

आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर ऐतिहासिक विश्लेषणपर आउ। 'सोवियत रूस सँ' कविता अछि एकटा नैरेटिवक जइमे नुकायल छल एकटा सोवियत निरंकुशवाद, जे आइ ध्वस्त भऽ गेल अछि।

'गीत जे नै लिखल गेल', 'की सुनाउ अहाँकेँ?', 'लोक किछु नहि करैए' आ 'तोरा गछने रही' क मार्क्सवादी दृटिकोणसँ देखलापर लागत जे कविक काजकेँ काव्यसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। जँ ई अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक सुखाएल मुख्यधाराक मिथिला ऐश्वर्य गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि।

'संचिकास्त', 'अहाँ केँ के चाही?', 'चुप्पी नहि सोहाइये', 'पाँती आइ जरूर लिखबै' केँ आब कने विखण्डनवादी दृष्टिकोणसँ देखी। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। कविक कथन स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक हेबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। गामसँ वंचित वर्ग पलायन कऽ सामाजिक लांछनकेँ फेंकि दैत अछि मुदा सबल वर्गकेँ गामक रुतबा मोन पड़ै छै जे संचिकास्तमे देखाइ पड़ैत अछि। 'पाँती आइ जरूर लिखबै' मे सेहो हाकिमक लाल-लाल आँखि देखि कऽ गाम घुरबाक मोन होइ छन्हि। 'अहाँ केँ के चाही?' मे आदर्श आ नैतिकताक अन्तक घोषणा अछि, शब्द जे चाही से भेटत, साँच आ झूठ-शब्द आ अर्थ ढेरी रास छै, मुदा आदर्श आ नैतिकता आउट ऑफ स्टॉक छै, एक दस्तखतमे सभ किछु बिकाउ छै मुदा तखनो आदर्श आ नैतिकता नै। से कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक हेबापर ई सभ प्रश्नचिन्ह लगबैत अछि। ।

'शिलालेख', शिलालेखमे मुदा उलटवासी अछि, लोक शिलालेखमे अपन कीर्ति लिखबै छथि मुदा कवि ओकरे शिलालेखमे ओकरे खूनक पिपासा लिखबऽ चाहै छथि! आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भविष्यकालमे गेलापर हम देखै छी जे ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जायत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतऽ खतम भऽ जायत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। कने आगाँ बढ़ब तँ लागत जे ई तँ भगवानक विषयमे अछि, कवि हुनका भाभट समेटबाले कहै छथि, पू छै छथि जे की ओ हुनकर मृत्युक घोषणा कऽ देथि? नीत्सेक कथन जे भगवानक मृत्यु भऽ गेल छन्हि तकर अर्थ सेहो सएह रहै, भगवान एकटा आइडिया, एकटा सोच अछि जे पश्चिममे एनलाइटेनमेण्ट (ज्ञानोदय) क बादक वैज्ञानिक सोचक बाद ओइ आइडियाकेँ खतम केलक। भारतमे तँ पूर्व मीमांसा आ सांख्य पहिनहियेसँ भगवानक आइडियाकेँ नै मानैत अछि (मुदा दुनू आस्तिक दर्शन अछि माने वेद केँ मानैत अछि, मुदा भगवानकेँ नै। से अशोक नै चाहियो कऽ मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्पराक मूलधारासँ बहुत ठाम भिन्न छथि आ मिथिलाक समानान्तर परम्परासँ लग। वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल "गाथिन", "गातुविद्" आ "गाथपति" ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल। विश्वामित्र गाथिन रहथि, गाथिनक पुत्र, गायत्रीक द्रष्टा। प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि

जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल-दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४) । जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि। वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि। अशोकक 'शिलालेख ' मे अशोक एक डेग आगाँ बढ़ल छथि, हुनका सेहो बूझल छन्हि जे भगवानक मृत्योपरान्त पुनर्जन्म हेतन्हि। 'दू बून्द नोर' मे सेहो साँवरिया नहि अछि मृत्युक प्रतीक्षा, 'आऽ हम मरि जाइत छी!' जादू वास्तविकतवाद फेर अबैए, ओ अपनाकेँ बहैत देखि रहल छथि।

'असगर'क लय अद्भुत अछि। 'फेर कोनो विजुरी चमकल', 'मोनक घण्टी', 'हमर कोनो नाम दऽ दे' आ 'उदास भोरक एक गीत' क ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू। अशोक अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक। मुदा अशोक ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि। ऐ प्रतीक सभसँ भरल कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि। रूपवादी दृष्टिकोणसँ एकर पाठ करू। भाषाक अनभुआर पक्षक कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि। स्फोट सिद्धांतक आधारपर पाठ करू। शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण भेल अछि।

'एक राति', 'साँझ', 'नव सीन', 'सीप महक मोती', 'पाँचटा अनेरुआ कविता', 'कहिया धरि', 'रचना सँ पहिने',, 'दबकल कुकूर', 'बिन फ्रेमक तस्वीर', 'एक विन्दु: तीन बिम्ब' आ 'प्रेमक तीन आखर'केँ अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि। औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ करू, वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि।

'शून्य' कविताक पाठ विखण्डनवादी पद्धतिसँ करू। गणित ओकरा शून्य बनबै छै, मुदा थकनी जे भेल की उत्तर देब? ई तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत।

दोसर चरण: अशोक चक्रव्यूहक बाद

दोसर चरणक कविता सभ समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ मांगैत अछि। 'फेर सँ', 'आब..', 'ब्रह्मोत्तर', 'मोछ', 'मुक्ति समारोह', 'आब किछु करू आचार्य!', 'एहि भ्रम मे नहि रहऽ', 'सन्दर्भ: चुनाव वर्षक', 'भोट', 'राजनीति आब महकि रहलैए', 'कहलनि तूफान अली', 'बुधियार', 'मनुक्ख धर्रोहि थिक कविता', 'विष', 'जिन्न', 'की भेल', 'ऋतु बदलि रहल अछि' कोनो ने कोनो समस्यापर आधारित अछि।

'जखन पियासे मरि जायत' चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि सोहाइये' केर सेक्वेल अछि। 'ऋतु बदलि रहल अछि' पर्यावरण तँ 'भोट' राजनीतिपर टिप्पणी अछि। मुदा की ऐ विषयवस्तुपर गद्यमे बहुत बेशी हम सभ नै पढ़ने छी? आ तेँ ई कविता सभ तँ सामान्य नै लागि रहल अछि?

'आठम अनुसूची मे मैथिली' फैजक पाकिस्तान निर्माणक बादक हाक्रोश 'ई ओ भोर तँ नै जकर सपना देखाओल गेल' मात्र लक्षित अर्थमे अछि, शब्दार्थ तँ व्यंग्यात्मक अछि।

'फेर सँ', आ 'चलि गेला महाप्रकाश' व्यक्तिगत मनविज्ञान आधारित अछि।

'दाँत' आ 'खायब आ नहायब' नारीवादी दृष्टिकोणसँ पाठ मंगैत अछि। समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ करू। कविता प्रथाक विरोधक कविता अछि। नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त हुअए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। आ तेँ जँ ऐ विषयपर दुनू कविता कमजोर अछि।

अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ अशोकक कविताक पाठ सेहो अहाँ कऽ सकै छी। बातक अप्रस्तुत उपमा, रूपक आ सादृश्य-विरोध कबीर सिखा गेल छथि। रस सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ सेहो सम्भव। विभाव सँ अनुभाव माने परिणाम बहार करै छथि कवि अशोक। से कवि ठाम-ठाम खास कऽ 'चक्रवूहमे प्रयुक्त केने छथि। 'चक्रव्यूहक' बाद कवि अशोक एत्तौ निराश करै छथि।

जे अशोक भगवानक मृत्युक बाद पुनर्जन्म धरि कविताकेँ आगाँ बढ़ेने रहथि से कवि अशोक चक्रव्यूहक बाद ठमकि गेला। मूलधाराक छद्म समालोचना कवि अशोककेँ मारि तँ नै देलक? मुदा कवि अशोकक पुनर्जन्म हएत, शीघ्र। आ चक्रव्यूहक 'चुप्पी नहि सोहाइये' केर सेक्वेल 'जखन पियासे मरि जायत' ओइ पुनर्जन्मक बीज रोपण कऽ देने अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

कथाकार अशोक

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

कथाकार अशोक

त्रिकोण (कथा संग्रह) (१९८६)

स्व. डॉ ब्रज किशोर वर्मा 'मणिपद्म' केँ समर्पित त्रिकोणमे अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास आ शैलेन्द्र आनन्दक ५-५ टा कथा छन्हि।

अशोकक ५ टा कथाक नाम छन्हि- हड्डी, हेयरपिन, अन्तिम शह, एकटा मुस्कुराइत आँखि आ खौंझ।

हड्डी: जागेशर, पत्नी सीमा, बेटी गुड़िया आ बेटा पप्पू। जागेशरकेँ ऑफिसमे देरी भऽ जाइ छै, डेरा ऑफिससँ दूर छै, लगमे महग भेटै छै। एकटा आत्महत्या भेलैहैँ बगलमे प्रायः दहेज लेल देल प्रतारणा, ओकील साहेबक पुतोहु नै सहि सकलि। ऐ मोहल्लामे सभकेँ डर लगै छै। जागेशरकेँ लागै छै जेना कण्ठमे हड्डी फँसि गेलैहैँ आ तेँ कथाक नाम हड्डी। नामकरणसँ लऽ कऽ सम्पूर्ण कथा सामान्य कोटिक अछि।

हेयरपिन: चन्दर आ उर्मिला। पहिल बेर बियाहक बाद दुनू दूर भेल अछि। उर्मिला पाँच दिन पहिले गाम गेल छथि। चन्दर पत्रिका उठबैए, मौगी सबहक फोटो जे पहिन्ने ओकरा पसिन्न नै पड़ै, आइ ओकरा आकृष्ट कऽ रहल छै। दूधबाली आबै छै, पहिने ओ खाली दूधे देखै छल मुदा आइ दूधबालीकेँ सेहो देखैए, पहिने किए नै ओकरा देखलक, दोसर कोठलीमे दूधबाली दूध राखैले जाइए, चन्दर दरबज्जा बन्द कऽ लै छै। दूधबालीकेँ ओकरासँ डर होइ छै मुदा ओ दू सय टाका खोंसि दै छै, दूधबाली सभ बिसरि जाइए आ घर छड़ा जेतै, से सोचैए, ओकरा गाम जेबाक छै, किछु दिन नै एतै। चन्दर बिहाड़िमे उधयाय लगैत अछि, बरखामे भीजऽ लगैत अछि- कथाकार ई दुनू वाक्य संभोग लेल प्रयुक्त केने छथि। फेर कथाकार कहै छथि जे आइ तातिल छिऐ, से आइ काजपर नै जायत, माने बुझि जाउ जे कथा आब उलटवासी दिस जायत। चिट्ठी सभ पढ़ैए चन्दर, ओइमे उर्मिलाकेँ देल रामानन्दक दू मास पुरना चिट्ठी पढ़ि चन्दर क्रोधमे अबैत अछि, ई प्रेमी अछि उर्मिलाक? तँ ओकर प्रेम फूसि। भोरमे उर्मिला रामानन्द संग आयलि। चन्दरकेँ तामस उठै छै, मुदा उर्मिला सिनेमा स्टाइलमे कहैए जे ओ ओकर पिसियौत छिऐ, बियाहक दू मास पहिने कलकत्तामे ओकरा नोकरी भेटि गेल रहै, तेँ बियाहक काजमे नै आयल आ तेँ भेँट नै भेलै। चन्दरक शंका समाप्त, मुदा आब उर्मिलाक बेर एलै, ओकरा दोसर कोठलीमे हेयरपिन भेटलै, ओ हेयरपिन नै लगबैत अछि, तँ ई ककर छिऐ? ओ चन्दरसँ पुछैए। यएह हेयरपिन कथाक शीर्षक अछि, उर्मिलाक हाथमे हेयरपिन चिचिया रहल अछि, कथा समाप्त मुदा हम माने पाठक ठकायल सन अनुभव करै छी। दू सयमे जेना दूधबालीक रेट लागल तइपर ध्यान चलि

जाइए, अरघनाइ मोश्किल। मुदा कथाकार चाहै छथि जे स्त्री-पुरुष चरित्रपर, पुरुख केन्द्रित चरित्र दिश पाठकक ध्यान खीची, हिप्पोक्रेसीपर खीची, मुदा से भऽ पाबि असम्भव भऽ गेल छन्हि।

अन्तिम शह: बिशेशर, ओकर स्त्री, बेटा कुशेशर आ पुतोहु फुलेशरी। बेटा कुशेशर रमरचना सङे पटना चलि गेलै रिक्शा चलबै छै। पन्द्रह साल पहिने बिशेशर फूल बाबू सँ दू सय टाका लेने रहय बेटी धनमंतीक बियाह लेल। बेटा कुशेशर छोटे रहै तखन, सुकरातीमे धरमपुरक पहलमानकेँ माटि चढ़ा देने रहै, गिरहथ पीठ ठोकने रहथिन्ह, खूब सर्रो खेलाइए, महीसपर राखि लेने रहथिन्ह, मुदा ओकरा बान्हल-छेकल नीक नै लगै। आ कुशेशर पटनासँ आबि गेलै, किरायाक रिक्शा ओ आब नै चलबै छै, अपन रिक्शा छै, ओकर यूनियन छै। फूलबाबू शतरंज खेला रहल छथि, सूद मूरक दूनासँ बेशी भेटि गेल छन्हि, मुदा सूद जोड़िये रहल छथि। कागज वापस नै करताह, मुदा करऽ पड़लन्हि, जमाना बदलि गेल छै, प्रेमचन्दक हिन्दी कथा 'सवा सेर गेहूँ' सँ बहुत आगाँ। ओम्हर शतरंजोमे मिसरजी 'अन्तिम शह' दऽ कऽ फूल बाबूकेँ हरा देलखिन्ह। आब फुलेशरकेँ हवेली-महर नै जाय पड़तै।

एकटा मुस्कुराइत आंखि: प्रोटैगोनिस्टक एकटा ट्यूशन पढ़ेनिहार मास्टर साहेबक स्मृति, जीवन तेना जीबू जेना अभिनय कऽ रहल छी, से प्रोटैगोनिस्टकेँ लोकक मृत्युसँ बेशी जीवित लोकक दूर गेनाइ असहज करै छन्हि, मुदा अभिनयक बलेँ तकरा तोपि दइ छथि। मास्टर साहेबक फेरसँ बसुली ताकब आ झारि-पोछि अपन शिष्य लेल बजायब, बाँसुरीक उदास तान सुनि दुखीतमे दर्द बिसरि प्रोटैगोनिस्टक सूतब। आ आरो ढेर रास नोस्टालजिक गप प्रोटैगोनिस्टकेँ मोन पड़ै छन्हि।

खौंझ: घूर-धुआँ, रामनारायणक अठन्नी फेकि पानक ऑर्डर देब, रविशेखरक बैग लेने गामसँ आयब, बोर्ड ऑफिसक कोनो काज छै। घरमे कनियाँ सुधीरासँ किछु भेल छै से रामनारायण रविशेखर सङे डेरा दिस बिदा तँ होइए, मुदा लागै छै जेना पएरमे उक्खड़ि बान्हल होइ। फेर गामक नाटकक दुर्गतिक चर्चा, बाइली आमदनीकेँ खराप बुझबाक चर्चा, दूधक अभावमे नेबो चाह। फेर कथाकार कथाकेँ सम्हारऽ चाहलनि, एक्केटा मशहरी छन्हि, चौधरीजी सँ उधारी लऽ अनता, मुदा सुधीरा जोगा कऽ पचास टाका रखने छै, मशहरी लेल देतन्हि। आ सुखान्त, आ तखने बिजलीयो आबि गेलै, रविशेखरक कोठलीक पंखाक अबाज अबै छन्हि, आब बिन मशहरीयो कऽ ओकरा मच्छड़ नै लगतै।

काँच कथाक ऐ संग्रहमे 'एकटा मुस्कुराइत आंखि' भविष्यक प्रति कने आश्वस्त करैत बुझाइत अछि।

ओहि रातिक भोर (कथा संग्रह) (१९९१)

स्व. सुशील झा केँ समर्पित ओहि रातिक भोर मे अशोकक १५ टा कथा छन्हि। ऐ पोथीक 'प्रसंगवश' लिखने छथि कुलानन्द मिश्र जे कथापाठमे बाधा उत्पन्न करैए, जेना कुला बाबू लिखै छथि जे "असामर्थ्य दूर होइत गेल--- अशोक जीक ७७क कथा 'बौका चुप छल' आ हुनक ८९ क कथा 'सरिसबक साग' केँ एक संग पढ़ि बूझल जा सकैछ।" मुदा से केलापर 'बौका चुप छल' उनटे 'सरिसबक साग' सँ बीस पड़ैत अछि, स्त्री-पुरुषक (जे दुनू ठाम पति-पत्नी छथि) मनोविज्ञानमे 'बौका चुप छल' केर पति आ पत्नी दुनू अपन विराट रूप देखेने छथि, मुदा 'सरिसबक साग' केर पति-पत्नी चालू हिन्दी सीरियल सन व्यवहार केने छथि। ऐ संग्रहक कथा सभ एना अछि:

विरामसँ पहिने: समीर परीक्षा छोड़ि देलक, पिता सन्न छथिन। (परीक्षा) केन्द्रक घण्टा बाजल, परीक्षा शुरू हेबाक समय भेलै, ओ परीक्षा छोड़ने अछि, ओकरा बोखार भऽ गेलै। प्लॉट ठीक छल मुदा कथाकार अदहा कथा बितला धरि मुख्य मुद्दा पर नै आबि सकला, अन्तिम पैरामे कथा सम्हारबाक असफल प्रयास केलन्हि।

बौका चुप छल: डाकदर साहेबक कनियाँ गाम गेल छन्हि से इजोरिया गड़ि रहल छन्हि, विवरण कने नमड़ि गेल अछि, मुख्य प्लॉट शुरू होइए बौकाक साँप कटबासँ, डाक्टर साहेब ओत्तऽ बिदा होइ छथि। मुख्य कथा ओत्तऽ छै, बौका सभटा बुझियो कऽ चुप रहैत अछि, माटि काटऽमे पक्का ओस्ताद छल, मुदा बेमारी धऽ लेलकै, स्त्री रधिया देरी कऽ अबै, सेण्ट लगेने, मुदा बौका किछु नै पू छै जे के कतऽ सेण्ट लगेलक। रधिया कहै जे बिगड़ल छी तँ मारू मुदा बौका ओकर केश सोझरा दइ। ओकर दियादनी सेहो रधिया दिया बाजै मुदा बौका किछु नै बाजै। आ मुइल तँ बेमारी सँ नै, साँप कटलासँ। फेर रधियाक हाक्रोश, एतेक सुन्दर मनोविश्लेषणक बाद कथाकार द्वारा, डाक्टरकेँ रधिया कऽ देखि कऽ दोसर तकिया मोन पड़ि एलै, सँ कथाक समाप्ति करबाक आवश्यकता नै छलन्हि। कथाक आरम्भ आ अन्त दुनू ऐ कथाक कमजोरी अछि, आ एतेक सुन्दर कथाक सत्यानाश भऽ गेल अछि। मूलधाराक छद्म समीक्षाक परिणामक ई ज्वलंत उदाहरण अछि।

एकटा दोसर ब्रह्मा: मृत्युक बाद ब्रह्मभोज। छीतनक पाइ कियो ठकि लेलकै, मुदा लोक सभ कहै छै जे भोजक डरे ओ फूसि बजैए, से छीतन जमीनक एवजमे पाइ उठाओत आ भोज करत।

जहलमे टाङल मोन: मुख्य पात्र छथि तमसाह असित ओकर संगी शान्त स्वभावक किशोर आ असितक बहिन मीना। असित जेलमे छै आब एमरजेंसीक बादे छुटतै, असितक पिताक चिट्ठी। मीनाक बियाह असितक परोच्छेमे करऽ पड़ि रहल छै। फेर बैकफ्लैश, मीना आ किशोर, मीना चंचल, टिकुला तोड़ैबाली। मीना एक दिन भैया कहनाइ शुरू केलकै, किशोरकेँ नै नीक लगलै। बियाकक किछुए दिन छै। कथा समाप्त।

एकटा चौक माने चण्डीनाथ: एकटा चौकक विवरण। फेर ओइ चौकपर आबाजाही करैबला चण्डीनाथक विवरण। चण्डीनाथक माय सपता-विपताक कथा कहि, चूल्हा-चेकी बना गूड़ा-खुद्दीक इन्तजाम कऽ लइ छथिन, आब चण्डीनाथक कनियों बाहर निकलऽ लागल छथिन, हँ बाल-बच्चा नै छन्हि। इमरजेंसीमे एक बेर टिकट चेकिङमे जेल गेला, अगत्ती छौड़ा सभ उड़ा देलकन्हि जे नसबन्दी कऽ देलकन्हि, कनियो पुछि देलकन्हि तँ ओकरा मारबो केलखिन्ह। लोकक मुँह बन्द करबा लेल बच्चा आवश्यक छन्हि, मुदा से अखन धरि सम्भव नै भेल छन्हि, आब मुखियामे ठाढ़ हेता। कथा समाप्त।

ओ मनुक्ख भऽ गेल: जिनका अहाँ आइ कथाकार अशोक कहै छियन्हि तकर बीजारोपण ऐ कथामे भेटत। नॉर्मल कमाइ-खटाइबला मनुक्ख बनबाक कथा, जे जीवन खतम हेबाक कथा अछि, हमर संग छोड़बाक कथा अछि, हम बहुत प्रयास केलौं जे तूँ मनुक्ख बनबासँ बचि जाह मुदा पूर्णता तोरा नीक लगै छह, किछु रिक्तता हम रखने रही जइसँ तोहर लेखन आ चिन्तनमे प्रवाह रहतह। नीलू तोहर जीवनमे आबि कऽ दोसराक भऽ गेल कारण ओकरा मनुक्खक भूख छलै आ ओइ समयमे तूँ ओकरा मनुखाह तृप्ति नै दऽ सकलह, कारण तोरामे किछु रिक्त छलह आ तँ तोहर मानस-प्रेयसी मीनूक जन्म भेलै, मुदा हमरा बुझल अछि जे दुनूमे कोनो अन्तर नै छै। मीनू जीवन छलि ओ कहियो किछु आर नै भऽ सकैत छलि। छात्रावास घटना, कोनो जूनियर विद्यार्थीसँ लगाव, छोट भाइ सन, तोरा छोट भाइ नै रहौ तेँ। मुदा लोकक नाजायज सम्बन्धक आरोप पर तोहर ओ बलात् हँसी, अस्वस्थ मस्तिष्कक उपज, से तूँ सोचलेँ मुदा आरोपकेँ फूसि कहियो नै कहि सकलेँ। हमरा बूझल अछि जे ओ हँसी तोरा लेल कोनो शब्द गढ़ैत छल मुदा अनका लेल एक्के टा अर्थ रखैत छलै, आ ओही अर्थक मूल्यपर तोहर अधिकार बन्हकी रहि गेल ओइठाम, तोरा दुनूक बीच चुप्पीक देबाल ठाढ़ भऽ गेल रहय। बाजा-भुक्की बन्द भेनाइ चिन्तनकेँ गति दैत छै। आइ तोरा लग स्त्री, घर, रुपैया सभ किछु छौ मुदा तूँ कमजोर भऽ गेल छेँ। नीलू आब मरि गेल अछि कहनिहार तूँ सेहो आब मरि गेल छेँ आ से हमहीं टा देखि रहल छियौ, कारण हम नै मरल छी।

तेसर प्रश्न: अति सामान्य कोटिक कथा। रामप्रवेश चौधरी रिटायर कऽ गाम एला, बेटा कृष्णकान्त बेरोजगार, भागि कऽ कलकत्ता गेल, खूब कमेलक। बहिनक बियाह गनि कऽ केलक, रामप्रवेश डाकपर जमीन कीनऽ लगला, हलाल कएल माउस खाय लगला। मुदा पाइ तँ पठबन्हि कृष्णकान्त मुदा गाम नै अबैत रहन्हि,, बहीनक बियाहोमे नै एलन्हि। आ जहिया एलन्हि तँ पाछू सी. बी. आइ. क एरेस्ट वारण्ट संगे एलन्हि, नकली दवाइ बनबैत छला।

डेरबुक: एकटा आर मेडियोकर कथा। सुभाष, आमक कलम, सुभाष आ मंजूमे आमक टिकुलाले झगड़ा होइ छै। मंजूक बियाह ओही साल हेतै। फेर सुभाष अनचोक्के ओकरा भरि पाँज लऽ कऽ गाछक पाछाँ जाइए आकि तेजुआ आ शंकर आबि जाइ छै, लाठी बजरै छै। पंचैती। गामसँ निकालबाक आदेश, सुभाष पड़ा जाइए। दस बरखक बाद आइ घुरल अछि, माय मरि गेलै, भातिज छै। भैया कहै छै जे मंजू बादमे सुभाषक पक्षमे बाजलि, ओ सुभाषसँ बियाह करत, लोक सुभाषकेँ ताकैले गेलै, सुभाष नै भेटलै। मंजूक बियाह टूटि गेलै। आ आब अहाँ बुझिये गेल हेबै जे भौजी मंजूए हेतै, आ सएह छै।

नचनियाँ: आब कन-मने अशोक अपन रङमे आबि रहल छथि। नैनीताल, रजनी शर्मा, जे अछि प्रोटैगोनिस्ट आनन्दक सीतामढ़ीमे कॉलेजक सङी, मुदा आब एकटा नपुंसक दोबर उमेर बलासँ बियाहलि, कारण दहेज। ओकरासँ आनन्दक नैनीताल होटलमे भेंट। आ ओतऽ छल पूर्णियाँक बेरा सोहन मण्डल, दुखी दासक बिदापत मण्डलीक, दुखी दासक मृत्यु, बिदापत नाचक मृत्यु आ सोहन आबि गेल नैनीताल। मेडियोकर कथा होइत होइत बचि गेल ई। अन्तिम आठ पाँतीमे कथाकार कथा सम्हारबाक प्रयास केलन्हि, आ सम्हारियो लेलन्हि। सोहन आ रजनी बियाह कऽ लेलक, सोहन नृत्य सिखैए, प्रोटैगोनिस्टसँ पटनामे भेँट करय एलन्हि दुनू गोटे।

मिर्जा साहब: संग्रहक दसम कथा अछि ई। कथा नै सम्हरलनि। सुशीलक कथा सभ मोन पड़ि गेल, अस्मिता (लघुकथा संग्रह) (विदेह पेटारमे उपलब्ध) मे संकलित 'मस्जिद' आ आन कथा, उत्कृष्ट, खोंइचा छोड़ाओल, कोनो हड़बरी नै। मुदा मिर्जा साहेब मेडियोकर, नीक प्लॉटक अछैत। मिर्जा साहेबक बेगम नावाब परिवारक, माय मरि गेलखिन्ह, पिता पोसलखिन्ह। मामा मामी सभ पाकिस्तानमे, ओतुक्का चर्चा करैत रहैत छली। से मिर्जा साहेबकेँ नै नीक लागनि, फेर पिताक मृत्युक बाद बेगमक नैहरि बुझू पाकिस्तान भऽ गेलन्हि। बियाह पुरैले बेटा सलीमक संग गेली पाकिस्तान। तही बीच बझलै भारत-पाकिस्तानक युद्ध जइमे बहीनक पतिक मृत्यु भऽ गेलन्हि, से तमसा कऽ चिट्ठी लिखलन्हि भारतक विरुद्ध मिर्जा साहेबकेँ। चिट्ठी पत्री फेर शुरु भेल जखन सलीम ओतऽ डॉक्टर बनि

गेल, आ जखन सलीम संगे बेगम घुरली तँ मिर्जा साहेबक बम्बै दंगामे मृत्यु भऽ गेलन्हि। प्लॉटे-प्लॉट, कथाक प्रारम्भ आशा जगेने छल, फ्रायडक पद्धतिसँ स्वप्नक विश्लेषण करऽ लागल छलौं। मुदा से धएले रहि गेल।

सरोकार: स्वांग धरैबला संगी सुरेश, बादमे ओकरा पत्नी संग चन्द्रनाथ आ ओकर साथी सब द्वारा सामूहिक बलात्कारक बाद न्याय नै भेटब आ बलात्कारी नेता जे छल एम. पी. एलेक्शनक उम्मेदवार चन्द्रनाथ, तकर हत्या सुरेश द्वारा। अमिताभ बच्चनक आखिरी रास्ताक पीअर कपीश रूप। सभ किछु मेडियोकर, मुदा अन्तिम आठ पाँतीमे कथाकार कथाकेँ कने सम्हारने छथि। सुरेशक बेटा परेश आब प्रोटैगोनिस्टक संग रहै छन्हि, ओहने नटकिया, स्वांग निकालैमे ओस्ताज, मुदा चन्द्रनाथ ओकरा नै जानि केना बेशी मोन छै, ओकर नेता बला स्टाइलक खूब नीक जकाँ स्वांग धरैए।

जहिया सुरुज नहि उगलै: जोगियाक कथा, जोगियाक चारूकातक समाजक कथा। बौआसीनक कथा। जोगियाक बाप मरि गेलै, माय दोसर टोलमे सम्बन्ध कऽ लेने छै, आंगनमे मौसा मौसी रहै छै आ ओ रहैए गिरहत लग, जतऽ बौआसीनकेँ बाँझ हेबाक कलंक दऽ मारि देल जाइ छै, छोटका गिरहत दोसर बिआह करत। ओ जोगियाकेँ गोहार केनै रहै मुक्ति दिआबय लेल। जगियाक मायकेँ मुक्ति भेटलै मुदा बौआसीनकेँ नै। छोटका गिरहत बौआसीनकेँ डाक्टर लग नै लऽ जाइ छै, ओकरा बच्चा नै होइ छै तँ मानि लेल गेल जे बौआसीनेमे गरबड़ी हेतै, वा कोनो आर कारण। कथामे दू समाजक बात व्यवहार आयल अछि, दहेज आयल अछि, मुदा जगदीश प्रसाद मण्डल, राजदेव मण्डल, रामविलास साहु, रामानन्द मण्डल, संतोष कुमार राय 'बटोही', कपिलेश्वर राउत, सन्दीप कुमार साफी, उमेश पासवान, उमेश मण्डल, किशन कारीगर, राम चन्द्र राय, लालदेव महतो, आ नन्द विलास रायक विशाल आकाश देखलाक बाद ई सभ झुझुआन लागि रहल अछि।

सरिसवक साग: एकटा आर मेडियोकर कथा। प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ जखन आयल रहथिन्ह तँ डेरायल रहै छलखिन्ह। मुदा आब से नै छै। तरकारीबला अपन दुखनामा सुना कऽ महग बेचैए, ठकैए प्रोटैगोनिस्टक कनियाँ कैँ। प्रोटैगोनिस्ट ईर्ष्यालु होइ छथि, कनियाँक तरकारीबलासँ हँसि कऽ गप करब हुनका पसिन्न नै मुदा कनियाँ कहै छथिन्ह जे हँसि कऽ गप्प केलासँ जोखो ठीक दै छन्हि आ सस्त सेहो!

धरती गोल छै: मास्कोमे ट्रेनिङ, मनोज, सुधाकान्त आ तपन। गप सरक्का। पी कऽ पार्कमे सूति रहै जाइए। कथाकार अशोकक खाहिश रहै छन्हि जे अन्त कने चौकाबै बला होइ, से एकटा बूढ़ स्त्रीकेँ आनै छथि, ओ रूसी बाजैए आ तपनक माथपर हाथ राखैए, तपनकेँ माय सन लगै छै, स्नेहिल, जेना ओ भेस बदलि कऽ आबि गेल होइ। मुदा अन्त कोनो खास नै लागि रहल अछि।

ओहि रातिक भोर: टाइटल कथा। दू सङी, हीरा ब्राह्मणक पानक दोकान, पुलकित अमातक चाहक दोकान, मुखिया एलेक्शनमे सुबोध मिसर ब्राह्मण आ रैमाक सत्तन मण्डल ठाढ़ रहै, जे पुलकितक जातिक रहै!! भऽ सकैए रैमामे मण्डल टाइटिल अमातक होइत हेतै। दुनू सङीमे एलेक्शनेमे झगड़ा भेलै, सभटा पाइ कौड़ी केस मोकदमामे जखन खतम भऽ गेलै तखन बुइध एलै। फेर अन्तकेँ रोमांचक बनेबाक फेरमे राति एगारह बजे छाहक रूपमे पुलकित कैँ आनै छथि कथाकार, हीरा कहै छै जे मारमे तँ फेर मारि ले, मुदा फेर दुनू गरा मिलि लइए।

मातबर (कथा संग्रह) (२००१)

'सगर राति दीप जरय'क सभ सहभागी कें जे कथा सुनलनि आ विचार केलनि' कैँ समर्पित मातबरमे अशोकक १८ टा कथा छन्हि। 'एकसँ एकैस' सँ ई प्रारम्भ होइत अछि जकर लेखक छथि गप-सरक्कानुमा मूलधाराक आलोचना लेखक मोहन भारद्वाज। अशोकक समाज अध्ययन हुनका अचम्भित करै छन्हि, मूलाधाराक लोककेँ हेबाको चाही, दुनू (अगड़ा-पिछड़ा) समाजक अध्ययन! अशोक दुनू पक्ष राखै छथि, मुदा बैलेंस निबन्धमे बनाओल जाइ छी, कथाकारकेँ अपनापर ई दवाब लेब अनुचित। फेर ओ अशोकक कथाकेँ मैथिल बनावटिसँ भूषित करैत छथि, आ मैथिल बुनावटिक दू टा लक्षण ओ घोषित करैत छथि- पहिल खिसक्कड़ बनि कऽ आ दोसर यथार्थ वर्णनक विस्तारमे जा कऽ! दोसर लक्षणकेँ ओ मैथिली (मैथिल नै मैथिली) कथा बनबाक शर्त अगिले पैराग्राफमे घोषित करैत छथि। तखन तँ दुनियाँमे किछु गएर मैथिल भेबे नै कएल। ऐ तरहक गप्प सरक्काबला समालोचनाकेँ हमरा गाममे बकथोथी कहल जाइ छै आ नीक नै मानल जाइ छै। फेर ओ अशोककेँ विकासमे विश्वास करैबला आ यथार्थवादी (तकर विस्तार करैत ओ जातीय आ धार्मिक मानसिकताकेँ सेहो यथार्थवादी मानसिकता कहैत छथि!) कहै छथि। ऐ तरहक विचारकेँ आइ काल्हि पाश्चात्य जगतमे 'वोक' कहल जाइ छै आ ओत्तौ तकरा नीक नै मानल जाइ छै। समानान्तर धाराक कथाकार लोकनिक 'सगर राति दीप जरय' मे आगमन पूर्व अही तरहक समालोचनाक जमाना रहै, आ कथापर अही तरहसँ विचार 'सगर राति दीप जरय' मे होइत रहै।

आब आउ मातबरक कथा सभपर विचार करी।

मातबर: 'ओहि रातिक भोर' कथा संग्रहक टाइटल कथा संग्रहक अन्तिम कथा छल। मातबर अछि पहिल कथा 'मातबर' कथा संग्रहक। महराज जी छथि नेटवर्किङ चीफ, आइ काल्हि ऐ तरहक लोक रहै छै जे सिंगल विण्डो सर्विस दइ छै। पाइ कौड़ी बला पोस्टिङ लेल महराज जीसँ बात करत 'ओ', साहेब हरामी छै तेहेन तेहेन काज दइ छै जे एक्को भूरबला पाइक आमदनी नै होइ छै, कने महराज जी ओकरो रगड़तै। सभक मजमा महराज जी ऐठाम लागै छै, पीबि-पाबि कऽ गप-सरक्का करै जाइए, दारू सङे दू-तीन टा चखनाक विवरण कथाकार दइ छथि, उसनल अण्डा आदि। 'ओ' जइ असल काजले गेल रहय तकर की भेलै? घर घुरती कालमे मारि खाइसँ बचि जाइए, प्रायः चोर सभ चीन्हि गेलै। घरमे बेटा आ पत्नी सेहो तमसायल छै। खिस्सा खतम। अति सामान्य कोटिक कथा।

दसखत: एकटा आइ. ए. एस. अफसरक कथा, आंगुरक विवरणसँ प्रारम्भ भऽ औंठाक विवरण धरि। भ्रष्टाचार, चरित्रहीनता आ लालफीताशाही सभटा रिपोर्ताज सन वर्णित अछि। अन्तमे औंठा काज केनाइ बन्द भऽ जाइ छन्हि, अमेरिका इलाजले जेता, मुदा बिनु दसखते पासपोर्ट केना बनतन्हि, आ ओहीसँ कथाक शर्षक आयल अछि।

कोठा: मंत्रीजीक कथा, रिपोर्ताज। दसखतक आइ. ए. एस. केर रिपोर्ताज सन कथाकेँ आगाँ लऽ जाइ छथि कथाकार। उत्कृष्ट कथा।

सहज-असहज: कथाकार अशोक आब रङमे आबि रहल छथि। कामेशर हाकिम बनि गेल, नग्र आबि गेल, गोटी खा कऽ सुतैए, खाइमे परहेज छै, सफलताक मूल्य चुकबऽ पड़ै छै। राधेश्यामक पढ़ाइ छुटि गेलै मुदा ओ कामेशरक बच्चा सभ लेल कॉमिक्सक सुपरमैन अछि।

जिनिस: पति-पत्नीक घर गृहस्थी, टोना-मानी। सङे ऑफिसक झमेल इटैलिक्समे कथाक बीच-बीचमे, तीन बेर। बाइली आमदनीक हिस्सक, पत्नीकेँ उलहन आ पत्नीक उतारा।

हिस्सक: पाइक उद्योग, पाइ कमेबाक हिस्सक। नीक विश्लेषण। एकरा हास्य-व्यंग्य कथाक श्रेणीमे राखि सकै छी। चेखवक कथा सन किछु किछु अनुभव हएत। प्रोटैगोनिस्टकेँ हाकिम कहै छन्हि जे अहाँ गपशप मारि सकै छी, पाइक उद्योग सम्हारबाक टैलेण्ट अहाँमे नै अछि।

भोज: श्राद्धक भोज उपनयनक एक साल बाद धरि नै खा सकै छी। भोजक मैथिल विमर्श, प्रोटैगोनिस्ट ब्राह्मण बालकक नजरिसँ, बालकथा श्रेणीक उत्कृष्ट कथा।

खुशीक प्रश्न: ईहो बाल मनोविज्ञान आधारित प्रोटैगोनिस्ट बालकक नजरिसँ अपन परिवारक कथा अछि। बालकथा श्रेणीक उत्कृष्ट कथा।

तानपूरा: शास्त्रीय संगीतकेँ भीमसेन जोशी जे ग्लैमर देलन्हि तकर साक्षी अछि हुनकर मर्सीडीज कार आ पछाति भेटल भारत रत्न सम्मान। भारत रत्न सम्मान ग्रहण करैत काल हुनकर ई वक्तव्य जे ओ ई सम्मान संगीतक गुरु लोकनिक प्रतिनिधिक रूपमे लऽ रहल छथि, गरिमापूर्ण छल। वएह संगीत रक्षक लोकनि जे वेस्टर्न क्लैसिकलक सोझाँ दूटा भारतीय क्लैसिकल, हिन्दुस्तानी आ कर्नाटक शैली केँ अपन पेट काटि कऽ जीवित राखलन्हि। अही तरहक जीविकाक मरि जेबाक कथा अछि तानपूरा। शरदिन्दु चौधरी ऑफसेट मशीन एलाक बाद ब्लॉक प्रिण्टिंग क्षेत्रक हालतिपर अपना शैलीमे संस्मरण लिखने छथि तँ जगदानन्द झा 'मनु' धातुक बासन एलाक बाद माटिक बासन बनेनिहारक स्थितिपर 'माटिक बासन' बालकथा लिखने छथि।

'हरसिंहदेवी' पञ्जी प्रथाक दुष्परिणामपर कथा अछि मुदा विषय वस्तु मात्र नीक अछि, कथा साधारण अछि, निबन्धात्मक।

'सीवन रजकक हितचिन्तक' मे जाति आयल अछि, राजनीति आयल अछि, सीवन रजकक बैंकक नोकरी अयल अछि। अन्तमे आयल '..बाड़ी-झाड़ीसँ उखाड़ि कऽ गमलामे रोपि देलथिन..' सेहो कथाकेँ सम्हारि नै सकल।

'महतो' सेहो जातिक कथा थिक, सर्वसाधारण नोकरिहारा कर्मचारी, मालीक पदपर कार्यरत महतोक कथा थिक। कूट शब्दावली, घूसक पर्सेण्टेजक, महतोक ऑफिसक अलाबे अफसर सभक घरोपर काज करब, ऑफिसक गप्प सरक्का, राजनीति, खिस्सा खतम। अशोकसँ रजक आ महतोक नामपर लिखल कथासँ बेशी आशा छल मुदा ई भाँज पुरायब सन लागि रहल अछि।

'सनेश'मे एक्जीक्यूटिभ इंजीनियर पासवानजी बच्चाक ट्यूशन छोड़ि देलापर पासवानजी द्वारा दिवाकर रविदासकेँ खूब गाड़ि पढ़ल जेबाक चर्चा अछि। किछु निबन्धात्मक दलित विमर्श आयल अछि। फेर अन्तमे कथाकेँ टर्न देबा लेल प्रोटैगोनिस्टक स्टीलक औंठी

दिवाकर रविदास द्वारा मांगब आ ओही नापक सोनाक ओंठी आपस देब वर्णित अछि, ऐसँ मात्र कने नाटकीयता आयल अछि, ओ. हेनरीक कथा 'द गिफ्ट ऑफ द मैगी' केर पीअर छाह सन अछि ई कथा।

'राग-विराग' मे पाइबला आ बुधियार लोक सभ द्वारा हुहकारी आ बोलारो दऽ कऽ केना सोझ लोककेँ ठकल जाइ छै ओइपर ई कथा अछि, आ सामान्यसँ ऊपर श्रेणीक अछि।

'आबेस' एकटा मेडियोकर कथा अछि, मायक आबेस वर्णित अछि मुदा किशोर मनोविज्ञानकेँ कथामे दबा देल गेल, आ कथा एकपक्षीय भऽ गेल अछि।

'बूढ़ा जीवैत रहलाह' कथा ओ कथा अछि जे अशोकक वैशिष्ट्य छन्हि जइपर हुनकर एक्सपर्टाइज छन्हि। मुदा मूलधाराक भोथ समालोचनाक दोष अछि जे ओ हिनका तकर भान नै हुअय देलकन्हि, मुदा ओ एकरा चिन्हलन्हि आ अन्तिम कथा संग्रहमे ऐ तरहक आर कथा लिखलन्हि। बूढ़केँ कोनो बियाह-तियाह नै करबाक छन्हि, से ओ अठारह बरखक सँ बेशी बयसक स्त्रीसँ बियाह नै करता, अठारह बर्खक कथा एबो केलन्हि, तँ दोसर कमी निकालि देलन्हि, मुदा घटक सभ लेल जे शर्बत घोरैक परम्परा छै तइसँ बेशी आवभगत ओ करै छथि। स्त्री आ तीन-तीन टा बेटाक मरलोपर ओ हँसै छथि, कारण ओ जीबऽ चाहै छथि। मुदा कुहरैतो हेता, असगरम, आ कुहरला शिष्य सत्तन लग।

'प्रतिलोम' सेहो एकटा मेडियोकर कथा अछि, जइमे गामक पिहकारी, श्राद्ध-बाध, जाति-विमर्श सभटा एक्के कथामे मिज्झर भऽ गेल अछि, निश्चिन्तीसँ फरिछेबाक अवश्यकता छल।

'राँड़' सामान्यसँ ऊपरक कथा अछि, 'बूढ़ा जीवैत रहलाह' कथा सन। ऐ कथामे तीनटा फ्लैश प्वाइंट अछि, पहिल मामीक मनीषसँ पूछब जे सिराजुद्दीन सत्ते खराप छै आ जँ ओ नीक लोक छै तँ मनीष पिताजीकेँ से किए नै बुझा सकल? दोसर फ्लैश प्वाइंट छै मामीक पूछब जे काज कऽ कय पाइ कमेनाइ खराप छिऐ? आ तेसर पतिक मृत्युक बादो मामीक नीक पहिरबा-ओढ़बाक मनीष द्वारा प्रशंसा। मनीष मामीकेँ ऐ रूपमे देखि चौंकल, ई लिखलासँ कथा शिल्प रूपमे कमजोर भेल, मामीक एतेक दृढ़ चरित्र देखेलाक बाद जँ मनीष हुनका उजरा नूआमे देखितैन्ह तखन ओकरा चौंकेबाक चाही छल, एत्तऽ नाटकीयताक जरूरति छलै, से कथाकार चूकि गेला। दूटा फ्लैश प्वाइण्टक बाद ई तेसर फ्लैश प्वाइण्ट कने झुझुआन लागल। ई मामीक कथा छल, प्रारम्भ सेहो ठीक अछि मुदा बैकफ्लैशक पूर्व आ प्रारम्भक बीच कोनो क्रम वा डैश-क्रॉश देल जा सकै छल, आ दोसर शिल्पगत विधिक प्रयोगसँ गामक दोसर विधवाक विवरण देल जाइत तँ ई उत्कृष्ट कथाक श्रेणीमे आबि जाइत।

डैडीगाम (कथा संग्रह) (२०१७)

दीदा (स्व. गीता देवी) केँ समर्पित डैडीगाममे अशोकक १५ टा कथा छन्हि।

'लाथ' अछि लहकदार कुरताक कथा, अति सामान्य कोटिक ई कथा अछि। दैनन्दिनी श्रेणीक।

'छल' कथाकार अशोकक सर्वश्रेष्ठ कथा अछि, ई अति उच्च कोटिक कथा अछि जकर सामान्य कोटिक अंग्रेजी अनुवाद विद्यानन्द झा केने छथि [The Book of Bihari Literature (Abhay K. Editor, Harper Collins, 2022) मे संगृहीत], मुदा कथे तते सशक्त छै जे तहू अनुवादमे जान आबि गेल छै। मनोविज्ञान, अहाँ जकर अभिनय करब, तकर आत्मा अहाँमे पैसि जायत, उगनाक बिछोहमे विद्यापतिक अभिनय करू, अहाँकेँ बिन ग्लिसरीन लगेने नोर चुअय लागत। भोली झा, चुस्त-चलाक, मुदा एहने आत्मा ओकरामे पैसि गेलै।

'स्वाधीन' कथा मैरिटल रेप आधारित कथा अछि, मुदा कथाकार समाजशास्त्रक समस्याक टॉपिकपर लिखबामे व्यस्त भऽ गेला, तँ कथा सामान्य अछि।

'ओ दुनू साइकिल सिखैत अछि' सेहो समसामयिक समस्याक आधारपर रचित अछि, मुदा ने सएह आबि सकल आ ने कथे सोझरायल।

'डैडीगाम' टाइटल कथा अछि, 'ओहि रातिक भोर' आ 'मातबर' सन अशोक अप्पन सभसँ दुलारू कथाकेँ टाइटल कथा बनबै छथि, सोंगर पर सोंगर लगबै छथि मुदा तीनू टाइटल कथा सामान्ये कोटिक अछि। डैडीगाम मे विकास आ झंझमंझ आदिक सामान्य कथाक्रम अछि।

'राग' सेहो हिन्दू-मुस्लिम दोस्तक सामान्य कथा अछि, मासुपर गपशप।

'लेमन आइसक्रीम' उच्चकोटिक कथा अछि, कथाकार अशोकक कथा। प्रोटैगोनिस्टक कथा, माय नीक बनबनि तँ कहथिन, होटल सन बनल अछि। मुदा पत्नी मीरा कैँ होटल पसिन्न नै। गुजरि गेली। बेटा-बेटी जावत संग रहन्हि प्रोटैगोनिस्टकैँ कनियों खेनाइ बनेनाइ नीक नै लागनि। बेटा गाम गेलन्हि, सभ देखैले स्नेहसँ जुमि गेल, हुनकर मायक प्रशंसा, हुनकर प्रशंसा। आ फेर..

'उमकी' उत्कृष्ट कथा होइत होइत बचि गेल। सेक्सिस्ट आचरणपर बहुत रास तथ्य आयल, अन्त सेहो नीक। 'अहाँक संगी तऽ ओहिना हर घड़ी नचबैते रहै छथि। फूटसँ नाच की देखेबनि।' केर संग किछु सस्पेंस। मुदा किछु मिसिंग अछि..

'मनसूबा' मे टुटैत परिवार आ भावनाक खिस्सा कहल गेल अछि। कृत्रिम जिनगीमे भावनाक, सामाजिक संस्थाक कोनो स्थान नै, कथाकार विषयक प्रति क्रूर भऽ गेल छथि आ तैँ कथा सामान्य कोटिक भऽ गेल अछि।

'अभयक बेटा कैँ दूटा दाँत भेलनि' उत्कृष्ट कोटिक कथा अछि, गाम रहबा जोग नै रहलै, मुदा..

'खुशीक नाम जीवन' मे कन्हैया बाबूक बेटा बियाह लेल तैयार भऽ गेलनि, ओ खुश छथि, मैथिल ब्राह्मण लड़का आ केरलक नायर लड़की। केरलक कनियाँ अपने सभ सन छै, सँ समाप्त। सामान्य कोटिक कथा।

'टीस' केस फाइलसँ लेल कथासन, केसो बहुत सामान्य, पति द्वारा पत्नीक हस्ताक्षर कऽ गबन करब, पत्नीक सकारब, जेल। कथो तैँ सामान्य कोटिक।

'छुट्टीक एक दिन' कथा अछि मैथिली लेखन आ पाठन समस्यापर, किछु एम्हर-ओम्हरक गप, अन्तर्जातीय प्रेम विवाह, आ अन्तमे कहबी जे झगड़ाउ लोककैँ ओल कबकब लगै छै, अभिनवकैँ नै लगतै। सामान्य कोटिक निबन्धात्मक कथा।

'गामक कातक हाइवे' चकरका सड़क सभक कथा अछि। उमेश पासवान लिखै छथि 'मौतक चौराहा बनल अछि एन. एच. भुतहा मोड़' (भुतहा मोड़, वर्णित रस, २०१२, साहित्य अकादेमी मैथिली युवा पुरस्कारसँ पुरस्कृत पोथी) । एन. एच. मे ठामे-ठाम चौराहा सभक नाम आब भुतहा मोड़ छै, कारण ओतऽ डिजाइनक, फ्लाइओवरक कमीक कारण होइत दुर्घटना। आ हमहूँ लिखने रहौं ऐ विषय पर एकटा कविता:

आ तखन जे देखबा जोग रहितैक शान अपन गामक!

आ देखबा जोग रहितैक शान एहि छह लेन बला सड़कक सेहो!

हमरो सभक अंगपर रहितए जे वस्त्र

ओहने वस्त्र

जेहन ओहि लाल कारमे बैसल बच्चाक रहए!

माए!

हमरा तँ लगैत रहैए जे

अपन गामक ई सड़क

ओहि लाल परदेशीक ओहि लाल कारसँ बेशी अछि लग

दुनू टा लगैए बिदेशी सन

(गजेन्द्र ठाकुर, बड़का सड़क छह लेन बला, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक, २००९)

गोला मरि गेल, पिचड़ा भऽ गेल, गामकैँ गीड़ऽ चाहैए ई एन. एच. । सौंसे गामक कुकुड़ मरल जा रहल अछि। कथा उच्च कोटिक रिपोर्ताज अछि।

'एना भऽ कऽ कियो' बोरोलीन, बोरोप्लस, श्वेत श्याम टी. भी., रिपोर्ताज नोस्टालजिक, मुदा फेर चौधरी साहेबक वर्णन शुरू, निरुद्देश्य बढ़ैत कथा, सुन्दर लगबाक धुनि, महिला सभक बड़ाइ, फेर एकटा जूनियरक तमसायब आ आँखि खुजब चौधरीजीक। निरुद्देश्य कथा समाप्त, सामान्य कोटिक हास्यक अन्त।

कथाकार अशोक कम कथा लिखने छथि आ तैँ उच्च कोटिक कथा सेहो कम्मे छन्हि। कथाकार अशोकक विशेषता अछि जे ओ आधुनिक सामाजिक समस्याक प्रति सचेत छथि, विषयमे विविधता अनै छथि, मनोविज्ञान कैँ भावनाकैँ नीक चीर-फाड़ करै छथि। मुदा विषयकैँ फरिछेबाक कला बेसी काल मारि खाइत छन्हि बेसी काल हुनकर पंचलाइन-एण्डिंगक इच्छाक कारण, कारण ओ पंचलाइन कखनो काल बहुत सामान्य, आ पुनरुक्ति युक्त लगैत अछि। कथाकार सुशीलक माँजल फरिछेबाक कला आ कथा लिखबाक कला, नव आधुनिक कथा लिखबाक कला बेर-बेर मोन पड़ैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

"बाबुल मोरा नैहर छूटल जाय,

ऊ ड्योढ़ी पर्वत भयी, आङन भयो विदेश।"

कथेतर गद्यक लेखक अशोक

अशोकक कथेतर गद्यमे छन्हि मैथिल आँखि (२००७), संवाद (साक्षात्कार संग्रह) (२००७), कथाक उपन्यास:उपन्यासक कथा (२०१२), आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३), बात-विचार (आलोचना) (२०१५), नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह)(२०१८), राजमोहन झा (विनिबन्ध, २०१९) आ कथा-पाठ (२०२२) । संगमे किछु विदेह आ अन्यत्र छिड़िआयल समालोचना आ आन कथेतर गद्य सेहो छन्हि जेना 'बनैत कम बिगड़ैत बेसी' (सुभाष चन्द्र यादवक 'बनैत बिगड़ैत' पर), सम्पादक राजनन्दन लाल दास आ कर्णामृत, रामलोचन ठाकुरक कविता पढ़ैत, केदार नाथ चौधरीक उपन्यास, शरदिन्दुजी आदि।

संवाद (साक्षात्कार संग्रह) मे अशोक साक्षात्कार लेने छथि राजमोहन झा, धूमकेतु, कुलानन्द मिश्र आ मोहन भारद्वाजसँ। एक्को गोटेसँ ओ असहज प्रश्न नै पूछि सकला, राजमोहन झा द्वारा सुभाष चन्द्र यादवक राजकमल चौधरी मोनोग्राफ प्रसंगमे साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल कएल कम्प्रोमाइज हुअय (देखू हमर पोथी नित नवल सुभाष चन्द्र यादव, गजेन्द्र ठाकुर, २०२२ विदेह आर्काइवमे उपलब्ध), धूमकेतुक लाल झण्डाक सोंगर लऽ साहित्य रचब हुअय वा मोहन भारद्वाजक मैथिल ब्राह्मणक संस्कार गीतकैँ मिथिलाक संस्कार गीत कहब (देखू हुनकर सम्पादित मैथिली अकादेमीसँ प्रकाशित पोथी। बादमे जा कऽ उमेश मण्डलक सभ जातिक संस्कार गीत उमेश मण्डल द्वारा संकलित भेल आ विदेहमे ई-प्रकाशित भेल, जे असली मिथिला संस्कार गीत अछि।) आदि आदि। हँ 'छुट्टीक एक दिन' (डैडीगाम, २०१७) कथामे ओ अपना मोनक सभ सवाल जे ओ नै पुछि सकला, से उठा लेने छथि। प्रभास कुमार चौधरीसँ साक्षात्कार हुनकर मृत्युक कारण नै भऽ सकल आ तकर एवजमे ओ सन्धान अंक-३ प्रभास विशेष निकाललनि।

आँखिमे बसल (यात्रा कथा) (२०१३) अछि एकटा नैरेटिवक विवरण जे अशोकक पीढ़ीकैँ परसल गेल रहै, जतऽ सोवियत संघक बड़ाइ आ अमेरिकाक खिधांश कएल जाइत रहै, आ जे से करैत रहथि ओ अपन बाल-बच्चाकैँ पढ़ैले अमेरिका पठबैत रहथि। हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। यात्रा कथाक अतिरिक्त 'सोवियत रूस सँ' कवितामे सेहो अशोक सएह केने छथि (चक्रव्यूह, १९८६) ।

मैथिल आँखि (२००७), कथाक उपन्यास:उपन्यासक कथा (२०१२) बात-विचार (आलोचना) (२०१५) आ कथा-पाठ (२०२२) हुनकर निबन्ध आ निबन्धात्मक आलोचनाक आलेख सभक संग्रह छियन्हि।

अशोकक आलोचना आ निबन्ध विधाक पक्ष आ विपक्षमे निम्न तथ्य सोझाँ अबैत अछि:

(१) हुनकर रचनामे मात्र मूल धाराक लेखकक अध्ययनक प्रमाण भेटैत अछि, समानान्तर धाराक गत १५ बर्खक अवदानसँ ओ अनभिज्ञ बुझाइत छथि, वा डेराइत छथि जे ओकर चर्चा हुनका मूलधारासँ काटि देत। 'मैथिली कथाक विकास: बदलैत स्वर आ प्रवृत्ति' मे ओ लिखैत छथि जे मैथिलीमे सभसँ बेशी कथा जीवकान्त लिखलन्हि आ तकर संख्या ओ दू सय गनबैत छथि, ऐ आलेखकैँ ओ नव तथ्यक आलोकमे सुधारबाक अखन धरि आवश्यकता नै अनुभव केलनि, जखन कि जगदीश प्रसाद मण्डल अखन धरि ८५० कथा लिखि चुकल छथि।

(२) हुनकर जीवित रचनाकारक समालोचनामे आह-बाह आ विवरण मात्र भेटत। जीवित रचनाकारक समालोचनामे जँ ओकर कमजोर पक्षकैँ नै देखाओल जाय तँ फेर ओ अपन रचनामे सुधार केना कऽ सकता, उदाहरणक रूपमे 'दूर देस पलायनक मृगतृष्णा आ श्रमशील स्त्रीक संघर्षगाथा- हसीना मंजिल' देखल जा सकैए। मृत साहित्यकारक आलोचनामे ओ कने हिम्मत देखबैत छथि, जेना

'ललितक पृथ्वीपुत्र', मुदा ओत्तऽ ओ आर गड़बड़ कऽ दै छथि, ओ पु छै छथि- 'एतऽ ई स्वाभाविक प्रश्न उठैत अछि जे ललित खेतिहरक जीवन-संघर्षक उपन्यास रचैत काल कलपू आ बिजलीक प्रेम-प्रसंग के बीच मे किएक अनलनि? ब्राह्मण आ अछोपक बियाह-सम्बन्ध सन सामाजिक समस्या के उठायब किएक जरूरी लगलनि हुनका? ललित सन चेतना सम्पन्न लेखक अनेरे ढाही किए लेलनि?' अशोक आलेखक अन्तिम पाँतिमे तकर कारण बतबैत छथि- 'वस्तुतः ललितक मैथिल संस्कारक ई अवधारणा वर्णवादी वैचारिकताक देन थिक।' आ ऐ लेल ओ रामदेव झा संगे ललितक कोनो गपक सोंगर लेलनि, जकर आवश्यकता नै छल। प्रेम आ सेक्स एकटा शाश्वत विषय अछि आ अकाल हुअय आकि प्लेग ओ खतम नै भऽ सकैए, अशोककेँ ऐ लेल कोनो सोंगरक जरूरी नै छलन्हि। गैब्रियल गार्सिया मार्क्विसक 'लव इन द टाइम ऑफ कोलेरा' तकर प्रमाण अछि।

(३) नीक दिनक बाइस्कोप (व्यंग्य संग्रह) मे हुनका अपन सभ गप रखबाक अवसर छलन्हि, होलीक जोगीरा सन मुदा ओतऽ सेहो ओ चूकि गेला।

५३. बूच जीक कविताक -मार्क्सवाद, ऐतिहासिक दृष्टि, संरचनावाद, जादू-वास्तविकतावाद, उत्तर-आधुनिक, नारीवादी आ विखण्डनवाद दृष्टिसँ अध्ययन संगमे भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक दृष्टिसँ सेहो अध्ययन

सारांश

बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि। ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ।

बीजशब्द: बूच; कविता; मार्क्सवाद; संरचनावाद; विखण्डनवाद; उत्तर-आधुनिकता; भारतीय सौन्दर्यशास्त्र; स्फोट

जेठी करेह:

बूच जीक कविता जेठी करेह कवितामे कवि कहै छथि जे ई भोरमे उधिआइ अछि, बर्खा हेठ भेलोपर उपलाइत अछि। ओकर खतराक बिन्दु बड्ड ऊपर छै तखन ओ किए अकुलाइत अछि। आ आखिरीमे कहै छथि जे बान्ह तोड़ि ई प्रलय मचाओत से बुझाइत अछि। ई भेल ऐ कविताक सामान्य पाठ। आब एतए एकरा संरचनावादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ लागत जे करेह सवेरे उधिआइ अछि तँ आशा करू जे आन बेरमे ई नै उधिआइत होएत। बरखा हेठ भेने उपलाइत अछि मुदा से नै हेबाक चाही। इन्होर पानिक चमकब, मोरपर भौरी देब आ तकर परिणाम जे डीहक करेजकेँ ई अपनामे समा लैत अछि। ओकर रेतक बढ़लासँ कविक धैर्य चहकै छन्हि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ एकर ऐतिहासिक विश्लेषणपर आउ। ई नव युगक लेल एकटा नव अर्थ देत। खतराक बिन्दु जे कविक समएमे ऊँचगर लगैत हएत आब बान्हक बीचमे भेल जमा धारक मवादक चलते ओतेक ऊँच नै रहि गेल। से नव पीढ़ी लेल कविक कविता कविसँ फराक एकटा नव स्वरूप लऽ लैत अछि। आब कने संरचनावादसँ हटि कऽ विखण्डनवाद दिस आउ। विखण्डनवादी कहत जे संरचनावादीक ध्रुव दार्शनिक स्वरूप लैत अछि। बर्खा हेठ भेलै, तैयो उपलायब, बान्ह बनबैबला इंजीनियरक करेहकेँ बान्हबाक प्रयासक बुरबकीक रूप लेब आ कविक करेह द्वारा बान्ह तोड़ि प्रलय मचेबाक भविष्यवाणी स्वयं कविक ध्रुवीकरणक स्थायी वा क्षणिक होएबापर प्रश्नचिन्ह लगेबाक प्रमाण अछि। आब फेर कने कविताक ऐतिहासिकतापर जाउ। जादू-वास्तविकतावादी साहित्यमे भूतकालमे गेलापर हम देखै छी जे ६०क दशकमे बान्ह बनेबाक भूत सवार रहै, बान्ह, ऊँच आ चाकर, जे धारकेँ रोकि देत आ मनुक्ख लेल की-की फाएदा ने करत। ओइ स्थितिमे जादू-वास्तविकताबला साहित्यक पात्र लग ई कविता जाएत तँ ओ ऐ कविताक तेसरे अर्थ लगाओत। कविक अस्तित्व ओतए खतम भऽ जाएत आ शब्दशास्त्र अपन खेल शुरू करत। जादू-वास्तविकताबला साहित्यक ओ पात्र जे भविष्यमे जीयत तकरा लेल सेहो ई एकटा अलगे अर्थ लेत, ओ धारक खतराक निशानक ऊँच होमयबला गप बुझबे नै करत आ कविक कविताक भावक ताकिमे रहत। मुदा विखण्डनवाद तकरा बाद अपने जालमे फँसि जाएत, बहुत रास बात नै रहत मुदा बहुत रास बात रहत। बरखा रहत, धार सेहो परिवर्तित रूपमे रहबे करत, रौदमे ओकर पानि इन्होर होइते रहत। उधियेनाइ आ उपलेनाइ रहबे करत।

स्वागत गान:

स्वागत गानक सामान्य पाठ- कवि सभक स्वागत कऽ रहल छथि मुदा मिथिलाक उपटैत धरतीक करुण क्रन्दनक बीच उल्लासक गीत कोन होएत। भ्रमर पियासल, फलक गाछ मौलायल तखन ई समारोही गोष्ठीसँ की होएत? कविताक संग लाठी आ रसक संग खोरनाठी लिअए पड़त। कविताक नीचाँमे सूचना अछि- विद्यापति स्मृति पर्व समारोह १९८४, ग्राम-बैद्यनाथपुर, प्रखंड-रोसड़ा, जिला-समस्तीपुरमे आगत अतिथिक स्वागत। ओ कालखण्ड मिथिलासँ पड़ाइनक प्रारम्भ छल। हाजीपुरमे गंगा पुल बनि गेल छल। विकासक प्रतिमान लागल जेना विफल भऽ गेल। पैघ बान्हक प्रति मोहभंग भऽ गेल छल। कृषिक आ कृषकक दुर्दशाक लेल बाढ़िक विभीषिका छल तँ स्थानीय फसिल आधारित औद्योगीकरण निपत्ता छल आ शिक्षाक अभियान कतौ देखबामे नै आबि रहल छल। आ ताइ स्थितिमे समारोही गोष्ठीक स्वागतक भार कविजी सम्हारने रहथि। ध्वनि सिद्धान्त: आनन्दवर्धन ध्वन्यालोकमे साहित्यक उद्देश्य अर्थकेँ परोक्ष रूपेँ बुझाएब वा अर्थ उत्पन्न करब कहैत छथि। ई सिद्धान्त दैत अछि परोक्ष अर्थक संरचना आ कार्य, रस माने सौन्दर्यक अनुभव आ अलंकारक सिद्धान्त। आनन्दवर्धन काव्यक आत्मा ध्वनिकेँ मानैत छथि। ध्वनि द्वारा अर्थ तँ परोक्ष रूपेँ अबैत अछि मुदा ओ अबैत अछि सुसंगठित रूपमे। आ ऐसँ अर्थ आ प्रतीक दूटा सिद्धान्त बहार होइत अछि। ऐसँ रसक प्रभाव उत्पन्न होइत अछि। ऐसँ रस उत्पन्न होइत अछि। न्याय आ मीमांसा ऐ सिद्धान्तक विरोध केलक, ई दुनू दर्शन कहैत अछि जे ध्वनिक अस्तित्व कतौ नै अछि, ई परिणाम अछि अनुमानक आ से पहिनहियेसँ लक्षणक अन्तर्गत अछि। आ से सभ शब्द द्वारा वर्णित होएब सम्भव नै अछि। स्वागत गानक ध्वनि सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: विद्यापति शिव स्वरूप मृत्युंजय मऽरल छथि कहि कवि अर्थ आ प्रतीक दुनू सोझाँ अनै छथि। ध्वनि

सिद्धान्तक न्याय दर्शन विरोध केलक मुदा उदयनक गाम करियनक कवि बूच जी दार्शनिक नै, कवि छथि। ओ ध्वनिक जोरगर संरचना सोझाँ अनै छथि- हमरा सबहक अभाग अजरो भऽ जऽड़ल छथि, आ मात्र ई समारोही गोष्ठी सँ की हेतै? आगाँ ओ कहै छथि- काव्य पाठ करू मुदा कान्ह पर लिअ लाठी, एक हाथ रसक श्रोत दोसर मे खोर नाठी। ऐ प्रतीक सभसँ भरल ई कविता सुगठित रूपे आगाँ बढ़ैत अछि आ अभ्यागतक स्वागत करैत अछि। मार्क्सवादी दृटिकोणसँ देखलापर लागत जे कविक काजकेँ ऐ कवितामे काव्यपाठसँ आगाँ भऽ देखल गेल अछि। ऐमे सकारबाक भावक संग ओकरा फुसियेबाक, पुरान आ नव; आ विकास आ मरण दुनूक नीक जकाँ संयोजन भेल अछि। स्वागत गान अपन परिस्थितिसँ कटि कऽ आह-बाह करऽ लगैत तँ मार्क्सवादी दृष्टिकोणसँ ई निम्न कोटिक कविता भऽ जाइत (जकर भरमार मैथिलीक स्वागत आ ऐश्वर्य गान गीत सभमे अछि), मुदा कवि एकरा एकटा गतिशील प्रक्रियाक अंग बना देलन्हि आ ई मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ स्वागत गान बनि गेल।

बेटी बनलि पहाड़:

बेटी बनलि पहाड़ कविताक सामान्य पाठ: दुलरैतिन बेटी घेंटक घैल बनल छथि। बेटी अएलीह तँ उड़नखटोला चढ़ि कऽ मुदा हरि गरुड़ त्यागि कार माँगि रहल छथिन्ह। पैंतीस ग्राम सोना पुड़ेलन्हि मुदा आब बियाह रातिक खर्चा चाही आ बरियाती दस गाही अओताह; सौंसे बल्ब जड़ि रहल अछि मुदा माझे ठाम अन्हार अछि। दशरथ एको पाइ नै मँगलन्हि, रामो किछु नै बजलाह। इतिहास तँ कृष्णक लव मैरेजक छल मुदा तैसँ की। जनक वर्तमानमे हाहाकार कऽ रहल छथि। बेटाक कंठ बाप पकड़ने अछि आ घरे-घर बूचड़खाना बनल अछि आ गामे-गाम बजार लागल अछि। बेटी बनलि पहाड़ कविताक समाजशास्त्रीय समीक्षा पद्धतिक दृष्टिसँ पाठ: ई कविता काटर प्रथाक विरोधक कविता अछि। समाजमे ओइ कालमे (अखनो) काटर प्रथाक कारण उड़नखटोलापर चढ़ि कऽ आयलि दुलरैतिन बेटी बाप अपस्यांत छथि।

करूण गीत:

करूण गीत कविताक सामान्य पाठ: कोकिलक करुण गीत सुनि श्रवित लोचनसँ कुसमित कानन देखब! सुवर्णक सौर्य शिखरपर शान्ति सागरक सुलभ जीत! जहिना किछु आलिंगन करै छी अनेको वक्रशूल भोका जाइत अछि। सुषमा दू क्षणक लेल आयलि, (आ चलि गेलि!) प्रेमक मधु तीत भऽ गेल। रजनीक रुदन विगलित प्रभात! करूण गीत कविताक रूपवादी दृष्टिकोणसँ पाठ: कुसुमित काननक श्रवित लोचन द्वारा देखब, श्रृंगार सेज पर ज्वलित मसानक रौद्र रूपक आएब आ सुवर्णक शौर्य शिखर पर - शांति सागरक सुलभ जीत केँ देखू। भाषाक अनभुआर पक्षकेँ कवि नीक जकाँ उपयोग करै छथि। आ अहीसँ हुनकर कवितामे कवित्व आबि जाइत अछि। विरोधी शब्द सभक बाहुल्य आ संयोजनक अनभुआर प्रकृति शब्दालंकारसँ युक्त भाषा ऐ कविताकेँ विशिष्ट बनबैत अछि। फूलक शूल सन ढुकब आ एहने आन संयोजन ऐ कविताकेँ रूपवादी दृष्टिकोणसँ श्रेष्ठ बनबैत अछि।

गामे मोन पड़ैए:

गामे मोन पड़ैए कबिताक सामान्य पाठ: गाममे रोटी एकोण रहए आ बथुओ साग अनोन रहए मुदा तैयो कलकत्तामे गामे मोन पड़ि रहल अछि। करेहक पानि पटा कऽ मोती उपजाएब तँ बच्चा सभ बिलटत? हुगलीक बाबू रहब नीक आकि कमला कातक जोन रहब? ईडेन गार्डनसँ नीक कमला कातक बोन अछि, पति पत्नीकेँ ईडेन गार्डनमे माला पहिरा रहल छथि मुदा कमला कातक बोनमे तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि! नारीवादी दृष्टिकोणसँ गामे मोन पड़ैए कविताक पाठ: प्रवासक कविता अछि ई। तिरहुतनी अपन भोला लेल धतूर अकोन ताकि रहल छथि, आ भोला प्रवासमे छथि। अस्तित्ववादी दृष्टिकोणसँ देखी तँ ई भोला अपन दशा लेल, असगर जीबा लेल, चिन्ता लेल अपने जिम्मेदार छथि।

सोन दाइ:

सोन दाइ कविताक सामान्य पाठ: सोन दाइक जीवनमे ने हास रहतन्हि आ ने विलास, मुदा से किएक? बाल वृन्द जा रहल छथि, नव युवको चलल छथि आ तकरा बाद बूढ़-सूढ़ गलि गेल छथि। तैयो किए विश्वास छन्हि सोन दाइकेँ? ऐ सभक उत्तर आगाँ जा कऽ भेटैत अछि, देसकोस बिसरि ओ प्रवास काटि रहल छथि। आ जौँ-जौँ उमेर बढ़तै कहिया धरि सोन दाइक घरमे वास हेतै। नारीवादी दृष्टिकोणसँ सोन दाइ कविताक पाठ: नारीक लेल वएह सिद्धान्त, किए ने ओ काव्येक सिद्धान्त होए, जे पुरुष केन्द्रित समाजमे पुरुष लोकनि द्वारा बनाओल गेल अछि, समीचीन नै अछि। सोन दाइ देसकोस बिसरि ककरा लेल प्रवास काटि रहल छथि?

अकाल:

अकाल कविताक सामान्य पाठ: अकालक वर्णनमे कवि नाङरिमे भूखक ऊक बान्हि ओकर चारपर ताल ठोकबाक वर्णन करैत छथि। अनावृष्टिसँ अकाल आ तइसँ महगीक आगमन भेल, तइसँ जड़ैत गामक अकास लाल भऽ गेल। भारतमे लंका सन मृत्युक ताण्डव शुरू भेल अछि मुदा ऐबेर विभीषणक घर सेहो नै बाँचत कारण ओकर मुंडमाल डोरी-डोरीसँ बान्हल अछि। माए भरि-भरि पाँज कऽ धरती पकड़ि रहल छथि। दशानन अपन बीसो आँखि ओनारि माथ हिला रहल छथि। औचित्य सिद्धान्त: क्षेमेन्द्र औचित्यविचारचर्चामे औचित्यकेँ साहित्यक मुख्य तत्व मानलन्हि। आ औचित्य कतऽ हेबाक चाही? ई हेबाक चाही पद, वाक्य, प्रबन्धक अर्थ, गुण, अलंकार, रस, कारक, क्रिया, लिंग, वचन, विशेषण, उपसर्ग, निपात माने फाजिल, काल, देश कुल, व्रत, तत्व, सत्व माने आन्तरिक गुण, अभिप्राय, स्वभाव, सार-संग्रह, प्रतिभा, अवस्था, विचार, नाम आ आशीर्वादमे। कंपायमान अछि ई ब्रह्माण्ड आ ई अछि कंपन मात्र। कविता वाचनक बाद पसरैत अछि शान्ति, शान्ति सर्वत्र आ शान्ति पसरैत अछि मगजमे। अकाल कविताक औचित्य सिद्धान्तक हिसाबसँ पाठ: ई अकाल नहि, महाकाल अछि, भूखक ऊक बान्हि नाड़रि सँ, चारे पर ठोकैत ताल अछि मिथिलाक काल-देशमे अकालक ई वर्णन कविक कविताक औचित्य अछि। रावण तँ उपटबे करत, विभीषण सेहो नै बाँचत।

तोहर ठोर:

तोहर ठोर कविताक सामान्य पाठ: पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर। सुन्नरि द्वारा बातक चून लगाएब आ कऽथक सन लाल बुन्न कपोल सजाएब। मुदा प्रेमक पुंगी कतए? भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, बिनु सुन्नरि व्याकुल साँझ जेकाँ। बधिक जे बनत सुन्नरिक वर तँ हम बनब विखण्डित राहु। स्वर्गोमे सुधा कम्मे अछि, तहिना सुन्नरिक ठोर सेहो कतऽ पाबी। सकरी मिल महान बनत जे हम विश्वकर्मासँ विज्ञान सीखब। आ ओइ मिलसँ बहार होएत माधुर्य। कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर अछि। पुनर्जन्ममे सेहो धान आ चिष्टान्न बनि सुन्नरि हम अहाँक लग आएब। मुदबा एतबा बादो शब्दसँ उद्देश्य कहाँ प्रगट भेल। अलंकार सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: भामह अलंकारकेँ समासोक्ति कहै छथि जे आनन्दक कारण बनैए। दण्डी आ उद्भट सेहो अलंकारक सिद्धान्तकेँ आगाँ बढ़बै छथि। अलंकारक मूल रूपसँ दू प्रकार अछि, शब्द आ अर्थ आधारित आ आगाँ सादृश्य-विरोध, तर्कन्याय, लोकन्याय, काव्यन्याय आ गूढ़ार्थ प्रतीति आधारपर। मम्मट ६१ प्रकारक अलंकारकेँ ७ भागमे बाँटै छथि, उपमा माने उदाहरण, रूपक माने कहबी, अप्रस्तुत माने अप्रत्यक्ष प्रशंसा, दीपक माने विभाजित अलंकरण, व्यतिरेक माने असमानता प्रदर्शन, विरोध आ समुच्चय माने संगबे। बातक चून लगाएब अप्रस्तुत, कऽथक सन लाल बुन्न कपोल, पानक ठोर आ सुन्नरिक ठोर, भोरक लाली सुन्नरिक ठोर सन, कुसियारक पाकल पोर सन सुन्नरिक ठोर ई सभ उपमा कवि द्वारा प्रयुक्त भेल अछि। मुदा कतऽ छह प्रेमक पुंगी हूक? मे सादृश्य-विरोध अछि। अहाँ बिनु व्याकुल वाटक माँझ मे रूपक प्रयुक्त भेल अछि। काव्यक भारतीय विचार: मोक्षक लेल कलाक अवधारणा, जेना नटराजक मुद्रा देखू। सृजन आ नाश दुनूक लय देखा पड़त। स्थायी भावक गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनब- आ ऐ सन कतेक रसक सीता आ राम अनुभव केलन्हि (देखू वाल्मीकि रामायण) । कृष्ण भारतीय कर्मवादक शिक्षक छथि तँ संगमे रसिक सेहो। कलाक स्वाद लेल रस सिद्धांतक आवश्यकता भेल आ भरत नाट्यशास्त्र लिखलन्हि। अभिनवगुप्त आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकपर भाष्य लिखलन्हि। भामह ६अम शताब्दी, दण्डी सातम शताब्दी आ रुद्रट ९अम शताब्दी एकरा आगाँ बढ़ेलन्हि। रस सिद्धान्तक हिसाबसँ तोहर ठोर कविताक पाठ: रस सिद्धान्त: भरत:- ना टकक प्रभावसँ रस उत्पत्ति होइत अछि। नाटक कथी लेल? नाटक रसक अभिनय लेल आ संगे रसक उत्पत्ति लेल सेहो। रस कोना बहराइए? रस बहराइए कारण (विभाव), परिणाम (अनुभाव) आ संग लागल आन वस्तु (व्यभिचारी) सँ। स्थायीभाव गाढ़ भऽ सीझि कऽ रस बनैए, जकर स्वाद हम लऽ सकै छी। भट्ट लोलट:- स्थायीभाव कारण-परिणाम द्वारा गाढ़ भऽ रस बनैत अछि। अभिनेता-अभिनेत्री अनुसन्धान द्वारा आ कल्पना द्वारा रसक अनुभव करैत छथि। लोलट कविकेँ आ संगमे श्रोता-दर्शककेँ महत्व नै दै छथि। शौनक:- शौनक रसानुभूति लेल दर्शकक प्रदर्शनमे पैसि कऽ रस लेब आवश्यक बुझै छथि, घोड़ाक चित्रकेँ घोड़ा सन बूझि रस लेबा सन। भट्टनायक कहै छथि जे रसक प्रभाव दर्शकपर होइत अछि। कविक भाषाकेँ ओ भिन्न मानैत छथि। रससँ श्रोता-दर्शकक आत्मा, परमात्मासँ मेल करैए। रसक आनन्द अछि स्वरूपानन्द। आ ऐसँ होइत अछि आत्म-साक्षात्कार। रस सिद्धान्त श्रोता-दर्शक-पाठक पर आधारित अछि। ई श्रोता-दर्शक-पाठकपर जोर दैत अछि। बार्थेज संरचनावाद-उत्तर-संरचनावादक सन्दर्भमे लेखकक उद्देश्यसँ पाठकक मुक्तिक लेल लेखकक मृत्युकेँ आवश्यक मानै छथि- लेखकक मृत्यु माने लेखक रचनासँ अलग अछि आ पाठक अपना लेल अर्थ तकैत अछि। लगौलह बातक पाथर चून। आ सजौलह कऽथ कपोलक खून। विभाव अछि आ ऐ कारणसँ देखि कऽ लहरल हमर करेज अनुभाव माने परिणाम बहार होइत अछि। स्फोट सिद्धांत: भर्तृहरीक वाक्यपदीय कहैत अछि जे शब्द आकि वाक्यक अर्थ स्फोट द्वारा संवाहित अछि। वर्ण स्फोटसँ वर्ण, पद स्फोटसँ शब्द आ वाक्य स्फोटसँ वाक्यक निर्माण होइत अछि। कोनो ज्ञान बिनु शब्दक सम्बन्धक सम्भव नै अछि। ई भारतीय दर्शनक ज्ञान सिद्धान्तक एकटा भाग बनि गेल। अर्थक संप्रेषण अक्षर, शब्द आ वाक्यक उत्पत्ति बिन सम्भव अछि। स्फोट अछि शब्दब्रह्म आ से अछि सृजनक मूल कारण। अक्षर,

शब्द आ वाक्य संग-संग नै रहैए। बाजल शब्दक फराक अक्षर अपनामे शब्दक अर्थ नै अछि, शब्द पूर्ण होएबा धरि एकर उत्पत्ति आ विनाश होइत रहै छै। स्फोटमे अर्थक संप्रेषण होइत अछि मुदा तखनो स्फोटमे प्राप्ति समए वा संचारक कालमे अक्षर, शब्द वा वाक्यक अस्तित्व नै भेल रहै छै। शब्दक पूर्णता धरि एक अक्षर आर नीक जकाँ क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए आ वाक्य पूर्ण हेबा धरि शब्द क्रमसँ अर्थपूर्ण होइए। सांख्य, न्याय, वैशेषिक, मीमांसा आ वेदान्त ई सभ दर्शन स्फोटकेँ नै मानैत अछि। ऐ सभ दर्शनक मानब अछि जे अक्षर आ ओकर ध्वनि अर्थकेँ नीक जेकाँ पूर्ण करैत अछि। फ्रांसक जैक्स डेरीडाक विखण्डन आ पसरबाक सिद्धान्त स्फोट सिद्धान्तक लग अछि। स्फोट सिद्धांतक आधारपर तोहर ठोर कविताक पाठ: आब उदयनक करियनक धरतीपर रहबाक अछैतो न्याय सिद्धान्तक स्फोट सिद्धान्तकेँ नै मानब कविक कविताकेँ नै अरघै छन्हि। मने मे रहल मनक सब बात कहि ओ अलभ्य चित चोर सँ सुन्नरिक ठोरक तुलना कऽ दै छथि।

उदयनक गामक कवि बूच कहै छथि भऽ रहल वर्ण - वर्ण निःशेष, शब्द सँ प्रगटल नहि उद्ग्रेश्य; एतए शब्दसँ नै मुदा स्फोटसँ अर्थक संप्रेषण कवि द्वारा तोहर ठोर आ ऐ संग्रहक आन कविता सभमे जाइ तरहेँ भेल अछि, से संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा मैथिली मे (यहूदी मेनुहिनक शब्दमे) विद्यापतिक बादक सभसँ लयात्मक कविक रूपमे बूचजी केँ प्रस्तुत करैत अछि आ मैथिली कविताकेँ ऐ रूपमे फेरसँ परिभाषित करैत अछि।

नाटक आ रंगमंच

५४. नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश

सारांश

नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि।

बीजशब्द: नचिकेताक · नाटक · नो · एण्ट्री · मा · प्रविश · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “नचिकेताक नाटक नो एण्ट्री: मा प्रविश” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे नचिकेताक; नाटक; एण्ट्री; प्रविश; चोर प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

नाटकक कथानक: प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्धमे मृत भेल सैनिक आ चोरि करए काल मारल गेल चोर, उच्चक्का आ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से, पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर, चोर आ उचक्का दुनू गोटेकेँ, कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दए अबैत छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैत अछि, हुनकासँ अंगा छोड़बाक लेल कहैत अछि। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैत अछि तखन उचक्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे आबि जाइत अछि आ पॉकेटमारपर मारि-मारि कए उठैत अछि। मुदा जखन चोर कहैत छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल, ओकर जकाँ माँजल चोर नहि, आ उचक्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नञि सकल, तखन उचक्का महराज चोरक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैत अछि आ उचक्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमरा कहलक। संगे ईहो कहैत अछि जे चोरि तँ ई तेहन करए जनैत अछि, जे गिरहथक बेटा आ कुकुर सभ चोरि करैत काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलकए आ हमर खिधांश करैत अछि, बड़का चोर भेला हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नहि कए पबैत छथि जे ओ चोर थिकाह। ताहिपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबैत छन्हि। तखन ओ चोर महराज एहि गपपर दुख प्रकट करैत छथि जे नहि तँ ओहि राति एहि पॉकेटमारकेँ चोरिपर लए जएतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छलाह, गुम्म भेल सभटा सुनैत छथि आ दुख प्रकट करैत छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब, तँ स्वर्ग केहन होएत से नहि जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी एहि विषयपर पढ़ैत छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो, ई एहि स्थलपर प्रारम्भ होइत अछि जे एहि नाटककेँ संगीतक बना दैत अछि। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लैत छथि आ बटुआ साफ कए दैत छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भए जाइत अछि मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैत छथि, ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओहि पार, ई बटुआ आ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नहि अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजैत छथि, जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नहि चलबाक विषयमे टीप दैत छथि, जे हँ ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसरक पत्नी बनब। आब एहि गपपर घमर्थन शुरू भए जाइत अछि। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दैत छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेतीह। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दए बहसमे शामिल भऽ गेल छथि, ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की इत्यादि कहैत छथि। मुदा पॉकेटमार कहैत अछि जे भीतरमे सुख नहि दुखो भए सकैत अछि। एहिपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भए जाइत छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्र पर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। एहि बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आ

दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि, जे ई अद्भुत नीलामी अछि, जे करबा रहल अछि से पॉकेटमार आ ओहिमे शामिल अछि चोर आ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भए जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करैत छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि, सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आ अकास-पताल कहैत छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहैत छथि जे सभ गोटे सत्य कहैत छी आ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नहि बजलहुँ। फेर बजैत-बजैत ओ कहए लगैत छथि, क्यो चोरि काल मारल गेलाह (चोर ई सुनि भागए लगैत छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लए अनैत छन्हि!) तँ क्यो एक्सीडेन्टसँ, आ एहि तरहेँ सभटा गनबए लगैत छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्युक एतए आयल छथि से हुनकहु लोकनिकेँ नहि बुझल छन्हि! बीमा बाबू कहैत छथि जे ओ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतए छथि! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइत छन्हि, कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहैत छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइत छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहतीह आ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतएसँ गेनाइ तँ संभव नहि मुदा ई भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ी माय-बाप (!) केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतहि बजबा लेल जाए। मुदा अपना लेल माए-बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग करा दैत छथि आ कन्यादान करैत छथि बजारी।

दोसर कल्लोल: दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि एहि आभाससँ, जे क्यो नेता मरलाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भए आबि चुकल छथि आ नेताजीक अएबाक सभ क्यो प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दए नेताजीक विलम्बसँ अएबाक (मृत्युक बादो!) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि मुदा भिखमंगनी आ रद्दीबला बुझि जाइत छथि, ताहि पर बहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ अपनाकेँ चोर कहलापर आपत्ति अछि आ भिखमंगनीकेँ ओ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओ सरिसवपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्यो नहि किनैत अछि आ तखन चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नव बात कोनो नहि अछि, सभ अछि पुरनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आ लोकक चोर, उचक्का आ पॉकेटमार होएबाक कारण समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा वामपंथी अबैत छथि आ ओ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उचक्का आ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन तर्क लए पुनः प्रस्तुत होइत अछि आ नेताजीक राखल “चोर-पुराण” नामक आधारपर बजारी जी गीत शुरू कए दैत छथि।

तेसर कल्लोल: आब नेताजी आ वामपंथीमे गठबंधन आ वामपंथी द्वारा सरकारक बाहरसँ देल समर्थनपर चरचा शुरू भए जाइत अछि। नेताजी फेर गीतमय होइत छथि आकि तखने स्टंट-सीन करैत एकटा मुइल अभिनेता विवेक कुमारक अएलासँ आकर्षण ओम्हर चलि जाइत अछि। टटका-ब्रेकिंग न्यूज देबाक मजबूरीपर नेताजी व्यंग्य करैत छथि। वामपंथी दू बेर दू गोट गप- नव गप कहि जाइत छथि, एक जे बिन अभिनेता बनने क्यो नेता नहि बनि सकैत अछि आ दोसर जे चोर नेता नहि बनि सकैछ (ई चोर कहैत अछि) मुदा नेता सभ तँ चोरि करबामे ककरोसँ पाछाँ नहि छथि। तखने एकटा उच्च वंशीय महिला अबैत छथि आ हुनकर प्रश्नोत्तरक बाद एकटा सामान्य क्यूक संग एकटा वी. आइ. पी. क्यू बनि जाइत अछि। अभिनेता, नेता आ वामपंथी सभ वी. आइ. पी. क्यूमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि! ई पुछलापर जे पंक्ति किएक बनल अछि (?) ताहिपर चोर-पॉकेटमार कहैत छथि जे हुनका लोकनिकेँ पंक्ति बनएबाक (आ तोड़बाक सेहो) अभ्यास छन्हि।

चतुर्थ कल्लोल: यमराज सभक खाता-खेसरा देखि लैत छथि आ चित्रगुप्त ई रहस्योद्घाटन करैत छथि जे एक युग छल जखन सोझाँक दरबज्जा खुजितो छल आ बन्न सेहो होइत छल। नंदी भृंगी पहिनहि सूचित कए देलन्हि जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नहि, मात्र बुझबाक दोष छल। दरबज्जाक ओहि पार की अछि ताहि विषयमे सभ क्यो अपना-अपना हिसाबसँ उत्तर दैत छथि। चित्रगुप्त कहैत छथि जे सभक वर्णनक सभ वस्तु छै ओहिपार। नंदी-भृंगी सूचित करैत छथि जे एहि गेटमे प्रवेश निषेध छै, नो एण्ट्री केर बोर्ड लागल छै। आहि रे ब्बा! आब की होअए! नेताजीकेँ पठाओल जाइत छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जाइत छन्हि। बदरी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, केर खिंचाई शुरू होइत छन्हि असली केर बदला सर्टिफिकेट बला कम कए लिखाओल उमरिपर। पचपन बरिख आयु आ शश योग कहैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओ आ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइत छथि आ दू टा अनुचर सेहो जाए चाहैत अछि। मुदा नेताजीक अनुचर सभक अपराध बड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए, कराहीमे भुजबाक लेल बाहर लए जाइत छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कैँ लए जाइत छथि आ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक बाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आ बजारीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका बाहर लए गेल जाइत अछि। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजैत छथि

तँ अभिनेता जी रोकि दैत छथि, जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़िए देल जाए। वामपंथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर वामपंथी प्रतिवाद करैत छथि। हुनको पठा देल जाइत छनि। वामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करबाक अवसर देल जाइत छन्हि। मुदा वामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि, मुदा एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अविश्वास करथु? मुदा यमराज कहैत छथि जे- भऽ सकैत अछि, जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न होअए, जतए पैसैत जाएब ओतए लिखल अछि नो एण्ट्री। आब यमराज प्रश्न पुछैत छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति? वामपंथी कहैत छथि जे दुनू, मुदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छै मुदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइश कतए? मुदा वामपंथी राजनीति एकर (समानताक, सुधार केर) प्रयास करैत अछि। ताहिपर हुनका संग चोर-उचक्का आ पॉकेटमारकेँ पठाओल जाइत अछि, ई अवसर दैत जे हिनका सभकेँ बदलू। चोर कनेक जाएमे इतस्तः करैत अछि आ ई जिज्ञासा करैत अछि जे हम सभ तँ जाइए रहल छी मुदा एहिसँ आगाँ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहैत छथि- नो एण्ट्री। भृंगी तखने अबैत छथि, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहैत छथि - मा प्रविश। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि, जे एतुक्का निअम बदलल जएबाक आ कतेक गोटेकेँ पृथ्वीपर घुरए देल जएबाक चरचा सर्वत्र भए रहल अछि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह लग ठाढ़ छथि क्यो भुजए लेल कहाँ भेटल छन्हि (मात्र दू टा अनुचर छोड़ि) । आब क्यो नहि आबए बला बचल अछि, से सभ कहैत छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ी आ यमराज अपन मुकुट उतारि लैत छथि आ स्वाभाविक मनुक्ख रूपमे आबि जाइत छथि! मुदा चित्रगुप्तक मेकप बला नमहर दाढ़ी देखि भिखमंगनी जे ओतए छलीह, हँसि दैत छथि। भृंगी उद्घाटन करैत छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि! कोन अभिनय! तकर विवरण मुहब्बत आ गुदगुदीपर खतम होइत अछि, तँ भिखमंगनी कहैत छथि जे नहि एहि तरहक अभिनय तँ ओतए (देखा कए) भऽ रहल अछि। ओत्तऽ रमणी मोहन आ उच्चवंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ बजिते नहि छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहैत छथि जे ओ तखने बजतीह जखन एहि दरबज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटतन्हि, बुझतीह जे अपसरा बनबामे यमराज मदति दए सकैत छथि, ई रमणीक हृदय थिक एतहु नो एण्ट्री! यमराज खखसैत छथि, तँ चित्रगुप्त बुझि जाइत छथि जे यमराज “पंचशर” सँ ग्रसित भए गेल छथि! चित्रगुप्तक कहला उत्तर सभ क्यो एक कात लए जाओल जाइत छथि मात्र यमराज आ निभा मंचपर रहि जाइत छथि। यमराज निभाक सोझाँ- सुनू ने निभा... कहि रुकि जाइत छथि। सभक उत्साहित कएलापर यमराज बड़का चाभी हुनका दैत छथि, मुदा निभा चाभी भेटलापर रमणी मोहनक संग तेना आगाँ बढ़ैत छथि जेना ककरो अनका चिन्हिते नहि होथि! ओ चाभी रमणी मोहनकेँ दए दैत छथि मुदा ओ ताला नहि खोलि पबैत छथि। फेर निभा अपने प्रयास करए लेल आगाँ बढ़ैत छथि मुदा चित्रगुप्त कहैत छथि जे ई मोनक दरबज्जा थिक, ओना नहि खुजत। महिला ठकए लेल चाभी देबाक (!) गप कहैत छथि। सभ क्यो हँसी करैत छनि जे मोन कतए छोड़ि अएलहुँ? ताहिपर एकबेर पुनः रमणी मोहन आ निभा मोन संजोगि कए ताला खोलबाक असफल प्रयास करैत छथि। नंदी-भृंगी-भिखमंगनी गीत गाबए लगैत छथि जकर तात्पर्य ईएह जे मोनक ताला अछि लागल, मुदा ओतए अछि नो एण्ट्री। मुदा ऋतु वसन्तमे प्रेम होइछ अनन्त आ करेज कहैत अछि मैना-मैना। तँ एतहि नो एण्ट्री दरबज्जापर धरना देल जाए।

विवेचन: भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक “नाट्यशास्त्र” आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक “काव्यशास्त्र” ।

भरत नाट्यकेँ “कृतानुसार” “भावानुकार” कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होअए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि, से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आ निभा सेहो हुनका आ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आ समय-परिस्थितिपर रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिक मूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन, जे बलात्कारक बादक भेल पिटानक बाद मृत भेल छथि, सँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। मुदा दुनू भद्रपुरुष, बजारी आ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू। सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचित गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन पूर्णतया सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द - मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट बहराइत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होअए। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे-जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल-जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबारक गपशप आ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ

मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबा लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक "नायकक नाम जीवन, एक छल राजा", श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि, सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आ वामपंथी सेहो कहैत छथि जे चोर नेता नहि बनि सकैत छथि, मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आ चित्रगुप्त धरि मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि।

एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

५५. चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश”

सारांश
[नो एण्ट्री: मा प्रविश २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ बा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आब ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै रहत। नो एण्ट्री: मा प्रविश क मैथिली साहित्य आ विश्व साहित्य मध्य स्थान नीचाँक आलेखमे निरूपित कएल जा रहल अछि।

बीजशब्द: चारिटा · उत्तर · आधुनिक · नाटक · सैमुअल · बैकेटक · फ्रेंच · वेटिंग

सारांश · Abstract

ई अध्याय “चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”,...” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे चारिटा; उत्तर; आधुनिक; नाटक; सैमुअल प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

[नो एण्ट्री: मा प्रविश २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ बा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आब ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै रहत। ऐ तरहक आनो उदाहरण रहल अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश क मैथिली साहित्य आ विश्व साहित्य मध्य स्थान नीचाँक आलेखमे निरूपित कएल जा रहल अछि। ई शृंखला आगाँ सेहो जारी रहत।]

...

"वेटिंग फॉर गोडो” दू अंकीय ट्रेजी-कॉमेडी अछि। सैमुअल बैकेट द्वारा ई 1952 ई. मे फ्रेंच भाषामे लिखल गेल आ एकर पहिल प्रदर्शन पेरिसमे 1953 ई. मे भेल। एकर अंग्रेजी संस्करणक प्रदर्शन लंदनमे 1955 ई. मे भेल आ अंग्रेजी संस्करण 1956 ई. मे प्रकाशित भेल।

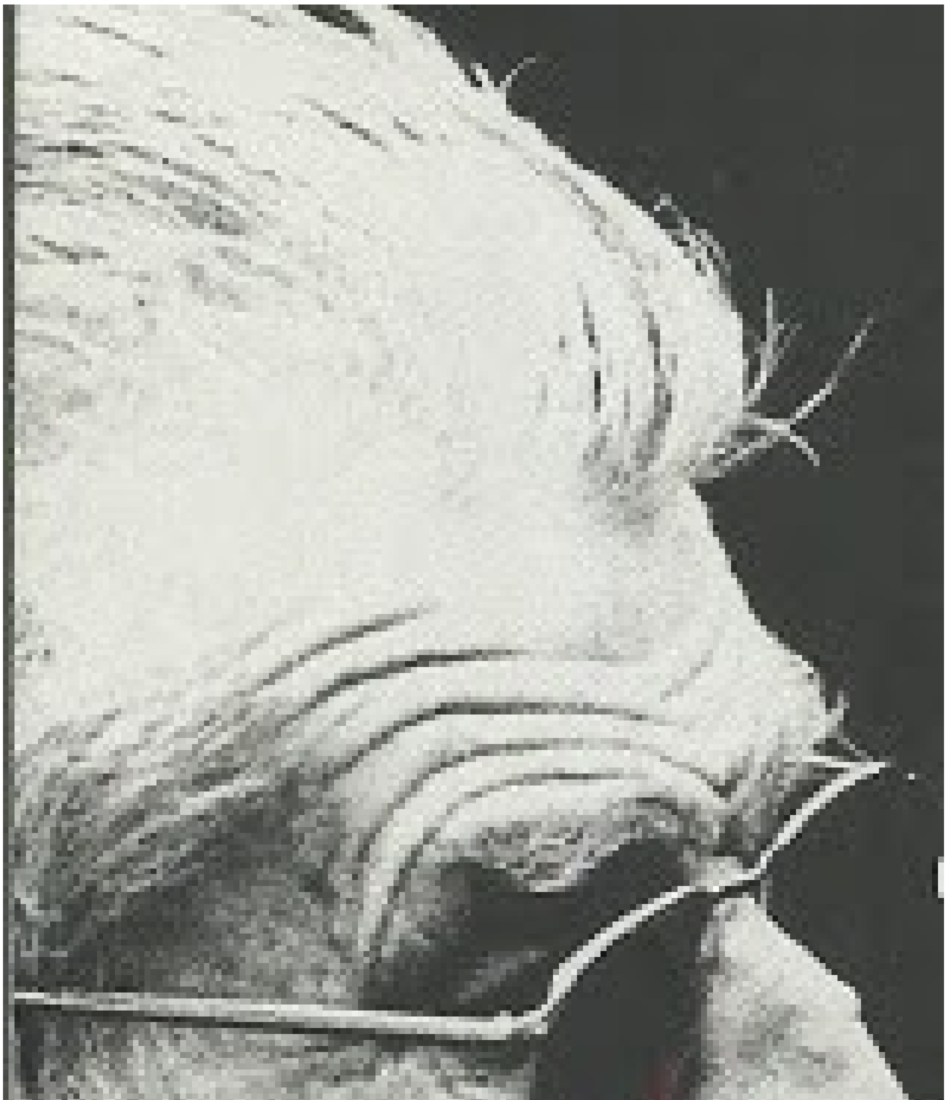

हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी” कैम्ब्रिजमे 1958 ई. मे मंचित भेल आ 1960 ई. मे प्रकाशित भेल।

बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” 1962 ई. मे लिखल गेल आ ई 1965 ई. मे कलकत्तामे मंचित भेल।

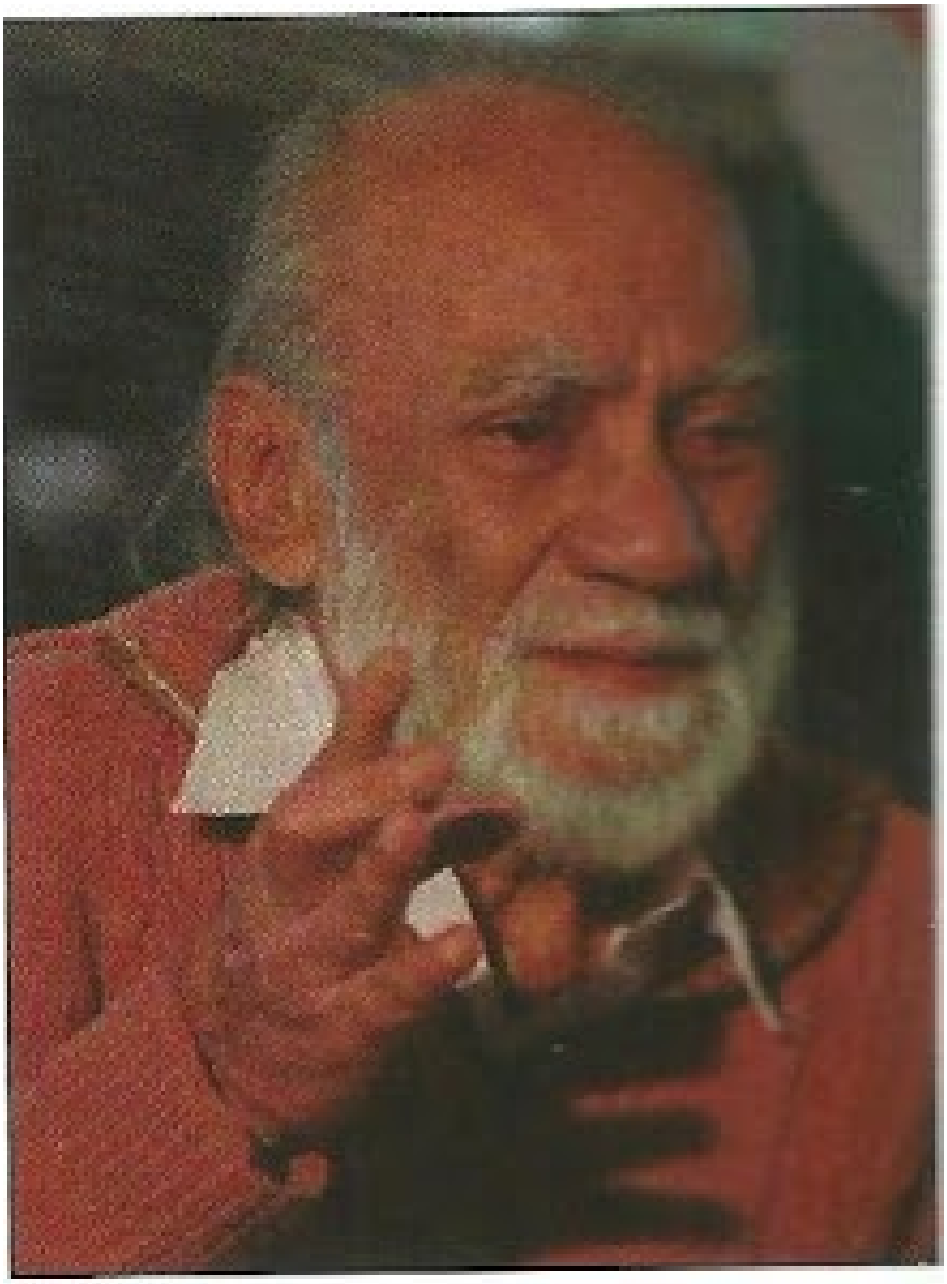

उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क “नो एण्ट्री: मा प्रविश” 2008 ई. मे ई-प्रकाशित आ फेर ओही बर्ख प्रकाशित भेल। 19 फरबरी 2011 कैँ कुणालक निर्देशनमे कालिदास रंगालय, पटनामे ई डेढ़ घण्टाक नाटक मंचित भेल।

फ्रेंच, अंग्रेजी, बांग्ला आ मैथिलीक ई चारू नाटक पोस्ट-मॉडर्न नाटकक श्रेणीमे गानल जाइत अछि। जखन सैमुअल बैकेटक “वेटिंग फॉर गोडो” देखि कऽ लोक सभ घुरल रहथि तँ हुनका लोकनिकेँ एकटा विचित्र अनुभवसँ साक्षात्कार भेल छलन्हि। ऐ नाटकमे मात्र पाँचटा पात्र अछि- एस्ट्रागोन, व्लादीमीर, लकी, पोजो आ एकटा छौड़ा। एकटा कण्ट्री रोडपर साँझमे एकटा गाछ लग एस्ट्रागोन एकटा ढिमकापर बैसल अछि आ अपन जुत्ता दुनू हाथसँ निकालबाक प्रयास कऽ रहल अछि आ अपस्याँत अछि, आ थाकि जाइए। व्लादीमीर संगे ओ गपक प्रारम्भ होइ छै, एम्हर ओम्हरक फुसियाँहीक नमगर गपशप होइ छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो बुझाइए मालिक अछि आ लकी दास। दासो तेहेन जकरा गर्दनिमे नमगर रस्सा पोजो लगेने अछि। पहिने लकी अबैए, फेर रस्सा पकड़ने पोजो। लकी बड़का बैग, एकटा फोल्डिंग स्टूल, एकटा पिकनिक बास्केट आ ग्रेटकोट उघने अछि। पोजो लग चाबुक छै। लकी आदेशपालक अछि। मालिकक गप मानि फेर सभ बोझ उठा कऽ ठाढ़ भ’ जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीरकेँ ओकर बोझा उघनाइ नीक नै लगै छै। मुदा पोजो जखन कहै छै जे ओ ओहिने छै तँ एस्ट्रागोन पोजोकेँ आततायी बुझै छै। एस्ट्रागोन लकीक नोर पोछैए तखन ओकरा लकी मुक्का मारै छै। पोजो कहै छै जे तोरा कहलियौ ने जे लकीकेँ अनचिन्हार लोक पसिन्न नै छै। आ एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ओत’ की कऽ रहल अछि? ओ दुनू गोटे कोनो गोडो नाम्ना व्यक्तिक बाट जोहि रहल अछि।

पोजो आ लकी चलि जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर लग एकटा छौड़ा अबै छै आ कहै छै जे गोडो आइ नै आबि सकता, काल्हि एता। फेर एम्हर ओम्हरक फुसियाँहीक गपशप होइए आ ओहो छौड़ा चलि जाइए। तखने मंचपर सँ बिजली चलि जाइ छै आ फेर राति भ’ जाइ छै, चन्द्रमा उगल छै। व्लादीमीर आ एस्ट्रागोनक गपशप शुरू होइ छै। फुसियाँहीक गपमे किछु अर्थपूर्ण गपशप सेहो होइ छै। दुनू गोटे जेबाक निर्णय करै छथि मुदा हिलै नै छथि। पहिल अंकक पर्दा खसैए।

दोसर अंक, वएह समए आ स्थान। व्लादीमीरकेँ सभ किछु मोन छै मुदा एस्ट्रागोन बिसरि गेल अछि। एस्ट्रागोन कहैए जे ओ सभ किछु तुरत्ते बिसरि जाइए बा कहियो नै बिसरैए। ओकरा किछु-किछु मोनो पड़ै छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो आन्हर भ’ गेल अछि, लकी ओहिना बोझा उघने अछि। रस्सा सेहो छै मुदा किछु छोट। पोजो आ लकी खसि पड़ैए। पोजो सहायता लेल कहैए मुदा एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर गपशप करैए।

एस्ट्रागोन व्लादीमीरकेँ पहिल अंक जेकाँ “दीदी” कहैए। व्लादीमीर बाजैए जे “हमरा सभकेँ फुसियाँहीक गपशपमे समय नै बर्बाद करबाक चाही। “पोजोक “सहायता” क आर्तनाद नियत अंतरालपर बेर-बेर होइ छै। मुदा तइपर एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ध्यान नै दैए। पोजो आब सहायता लेल सए फ्रैंक फेर दू सए फ्रैंकक लालच दैए। व्लादीमीर ओकरा उठबैले जाइए, प्रयासमे अपनो खसि पड़ैए आ सहायताक पुकार करैए। फेर किछु गपशपक बाद व्लादीमीरकेँ उठेबाक प्रयासमे एस्ट्रागोन खसि पड़ैए। व्लादीमीर पोजोकेँ मारैए, पोजो घुसकुनिया दैए। तखन व्लादीमीर ओकरा ताकैए, कहैए- आबि जो, तोरा नोकसान नै पहुँचेबौ।

एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर उठबाक प्रयास करबाक सोचैए आ उठि जाइए। एस्ट्रागोन कहैए- उठनाइ बच्चाक खेल सन हल्लुक अछि आ व्लादीमीर बजैए- ई मात्र आत्मशक्तिक प्रश्न अछि। पोजो सहायता लेल कहैए। दुनू पोजोकेँ उठबैए, फेर छोड़ैए, पोजो खसि पड़ैए। फेर दुनू ओकरा उठबैए आ पकड़ने रहैए। किछु कालमे कने छोड़ि कऽ जाँचैए मुदा जखन पोजो खस’ लगैए तँ पकड़ि लैए। पोजो सेहो

बुझा पड़ैए जे काल्हिक घटना बिसरल सन अछि। ओ कहैए जे ओ एक दिन सुति कऽ उठल तँ अपनाकेँ आन्हर देखलक, ओ कहैए जे ओकरा लगै छै जे ओ अखनो सुतले तँ नै अछि। ओ लकीक विषयमे पूछैए। लागैए जे कोना ओ दुनू खसल, से ओकरा मोन नै छै। पोजो कहैए जे लकीक गर्दनिक रस्साकेँ जोरसँ खीचू बा मुँहपर जूतासँ मारू तँ ओ उठि जाएत। व्लादीमीर एस्ट्रागोनकेँ कहैए जे ओकरा लेल बदला लेबाक नीक अवसर छै। एस्ट्रागोन पुछैए (ओकर स्मृति घुरै छै!) जे जँ लकी अपन रक्षा करए तखन? तइपर पोजो बाजैए जे लकी कखनो अपन रक्षा नै करैए। मुदा एस्ट्रागोन नै व्लादीमीर लकीकेँ पएरसँ मार' लगैए मुदा अपने ओकरा चोट लागि जाइ छै। घटनाक्रमसँ लगै छै जे पोजो आब अपनासँ ठाढ़ भ' गेल अछि।

पोजो जे लकीकेँ कोनो हाटमे बेचैले ल' जा रहल अछि, केँ ने काल्हिक किछु मोन छै आ नहिये काल्हि आजुक किछु मोन रहतै। ओ लकीकेँ उठैले कहैए आ लकी उठि जाइए आ अपन बोझ उठा लैए। पोजो अपन चाबुक मांगैए। लकी सभ बोझ राखैए, आ चाबुक पोजोक हाथमे द' कऽ सभ बोझ उठा लैए। पोजो रस्सा मांगैए, लकी सभ बोझ राखि रस्सा पोजोकेँ पकड़ा कऽ सभ बोझ उठा लैए!

लकी आ पोजो चलि जाइए। ओ छौंड़ा अबैए। ओ व्लादीमीरकेँ अल्बर्ट कहि सम्बोधित करैए। व्लादीमीर पु छै छै जे की ओ ओकरा नै चिन्हलक, की ओ काल्हि नै आएल छल। छौड़ा कहैए जे आइ ओ पहिल बेर आएल अछि। संदेश वएह छै, गोडो आइ नै आएत मुदा काल्हि अवश्य आएत। व्लादीमीर पुछैए जे "गोडो" करैए की? तँ छौड़ा कहैए जे गोडो किछु नै करैए। व्लादीमीर पुछैए जे छौड़ाक भाए केहन छै। तँ उत्तर भेटै छै, ओ दुखित छै। व्लादीमीर पुछैए जे की काल्हि ओकर भाए आएल छलै- तँ से छौड़ाकेँ नै बुझल छै। छौड़ा उत्तर दैत कहैए जे गोडोकेँ दाढ़ी छै आ ओ कारी नै गोर छै। छौड़ा (पहिल अंक जकाँ) पुछैए जे ओ गोडोकेँ की जा कऽ कहतै। व्लादीमीर कहैए- जा कऽ कहू जे तोरा हमरा सभसँ भेँट भेलउ। व्लादीमीर छौड़ापर छड़पैए मुदा ओ पड़ा जाइए। सूर्यास्त होइ छै। चन्द्रमा देखा पड़ै छै।

एस्ट्रागोन कहैए जे जँ दुनू गोटे अलग भ' जाए तँ ई दुनू लेल नीक हेतै। जँ काल्हि गोडो नै एतै तँ ओ दुनू गोटे रस्सासँ लटकि जाएत (व्लादीमीर कहैए) आ जँ एतै तँ बचि जाएत। व्लादीमीर लकीक हैटमे ताकैए, हिलबैए, फेर पहिरैए। दुनू जेबाक निर्णय करैए मुदा कियो नै हिलैए। पर्दा खसैत अछि।

...

हैरोल्ड पिंटरक तीन अंकीय नाटक "द बर्थडे पार्टी"

पीटे, मेग, स्टैनले, लुलु, गोल्डबर्ग आ मैककान एकर पात्र छथि।

पहिल अंक- मेग पीटेकेँ जलखै दैए, पुछैए जे स्टेनली उठलै आकि नै। स्टेनली अबैए, ओकरो मेग जलखै दैए। पीटे काजपर चलि जाइए। मेग आ स्टैनलेमे अंतरंग गप होइए, हँसी मजाक होइए। पीटे मेगसँ कहने रहै जे दू गोटे एतै आ किछु दिन ओकरा घरमे रहतै। ओकर घर सूची (बोर्डिंग हाउस) मे छै। स्टैनली ई सुनि पूछ-पाछ करै छै, ओ चिंतित भ' जाइए। स्टैनली कहैए जे ओकरा पेरिसमे नाइट क्लबमे पियानो बजेबाक नोकरीक ऑफर आएल छै। फेर एथेंस, कॉन्सटेनटिनोपल, जाग्रेब, व्लादीवोस्टक सेहो। ई सम्पूर्ण विश्वक दर्शनबला नोकरी अछि। पुछलापर ओ कहैए जे ओ संपूर्ण विश्व, संपूर्ण देशमे पियानो बजेने अछि। एक बेर ओ कंसर्ट सेहो केने रहए। फेर ओ कहैए जे पहिल कंसर्ट मे ओ स्थानक पता हरा देलक आ नै पहुँचि सकल। दोसर कंसर्टमे जखन ओ पहुँचल तँ स्थलपर ताला लागल रहै। मेगक इच्छा नै छै जे स्टेनली कतौ जाए।

स्टेनलीकेँ लागै छै जे ओ दुनू गोटे ककरो खोजमे अछि। लुलुक अबाज अबैए। मेग खरीदारीक झोरा ल' कऽ बहरा जाइए, कियो ओकरासँ मिसेज बोल्स सम्बोधित कऽ गप करै छै। लुलु अबैए आ स्टैनलीसँ गप करैए। लुलु बहराइए तँ गोल्डबर्ग आ मैककेन अबैए। मैककेन गोल्डबर्गकेँ नैट कहि सम्बोधित करैए। स्टैनली चोरा कऽ पहिनहिये बहरा जाइए। मेग अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा मिसेज बोल्स कहि सम्बोधित करैए आ अपनाकेँ गोल्डबर्ग आ संगीकेँ मैककेन कहि परिचय दैए। गपशपक क्रममे गोल्डबर्ग पु छै छै जे ओइ रहनिहारक नाम की छै आ ओ की करैए। मेग कहैए जे ओकर नाम स्टैनले वेबर छै आ ओ एक बेर कंसर्ट देलक मुदा केयरटेकरक गलतीसँ रातिमे ओ ओतै बन्द रहि गेल आ भोर धरि बन्द रहल। आ फेर "टिप" ल' कऽ ट्रेन पकड़ि एत' आबि गेल। तखने मेग कहैए जे आइ ओकर "बर्थडे" छिऐ। आ फेर "बर्थडे पार्टी" निर्धारित होइ छै 9 बजे। लुलुकेँ सेहो बेरू पहर नोति देल जेतै। तीनू बहराइए आ स्टैनली खिड़कीसँ ताकैए। मेग अबैए। स्टैनली ओइ दुनूसँ आशंकित अछि। नाम पुछैए तँ मेग नाम बिसरि जाइए आ ओकरा गोल्ड.. मोन पड़ै छै तँ स्टैनली मोन पाड़ै छै- गोल्डबर्ग। मेग पुछैए जे की स्टेनली ओकरा चिन्हैए तँ स्टैनली गुम्म रहैए। फेर स्टैनली कहैए जे आइ ओकर बर्थडे नै छिऐ। मेग ओकरा लेल बच्चाक ड्रम उपहारमे अनने अछि आ तकर बदलामे ओ स्टैनलीसँ चुम्मा मांगैए।

अंक 2 मे स्टैनली आ मैक्कानक गपशप भ’ रहल छै। स्टैनली बाहर जाए चाहैए। ओ मैक्कानकेँ कहै छै जे ई बोर्डिंग हाउस नै छी, नहियेे कहियो रहै। पीटे आ गोल्डबर्ग अबैए। गोल्डबर्ग पीटेकेँ मिस्टर बोल्स कहि सम्बोधित करैए। पीटेक गेलाक बाद स्टैनली कहैए जे ऐ घरक लोकक सुंघबाक शक्ति चलि गेल छै तँ ओ गोल्डबर्ग आ मैक्कानक खतरा नै चीन्हि पाबि रहल छथि, हुनका सभक प्रति ओकर (स्टैनलीक) जिम्मेवारी छै।

मैक्कान ओकरासँ चश्मा छीनि लैए। मैक्कान आ गोल्डबर्ग ओकरासँ पुछैए जे ओ किए अपन पत्नीक हत्या केलक। ओ नाम बदलने अछि आ चरित्रहीन अछि, स्त्रीकेँ दूषित करैए।

झगड़ा शुरू होइ छै। मुदा झगड़ा रुकलाक बाद (प्राय: मेगकेँ नै बुझल छै) मेग पार्टी ड्रेसमे अबैए। सामान्य गप होइ छै।

लुलु अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा कोरामे बैसबैए। लुलुक पुछलापर जे ओकरा तँ होइ छलै जे ओ “नैट” छी, गोल्डबर्ग कहै छै जे ओकर पत्नी ओकरा “सिमे” कहि बजबै छै।

पार्टीमे खेल शुरू होइए, आँखिमे पट्टी बान्हि कऽ। मिसेज बोल्सकेँ लुलु स्कार्फसँ आँखि बान्हैए। ओ जकरा छू देत तकरा आँखिपर पट्टी बान्हल जाएत। ओ मैक्केनकेँ छुबैए। फेर स्टैनली छुआइए। ओकर चश्मा लेल जाइ छै। स्टेनलीकेँ पट्टी बान्हल जाइ छै। मैक्केन स्टेनलीक चश्मा तोड़ि दैए। मैक्केन ड्रमकेँ स्टेनलीक रस्तामे राखैए, ओ खसि पड़ैए आ मेगक गर्दनि दबब’ चाहैए, मैक्केन आ गोल्डबर्ग बचबै छै।

अन्हार पसरैए।

स्टैनलीकेँ अबैत देखि लुलु बेहोश भ’ जाइए। स्टैनले लुलुकेँ टेबुलपर राखैए। मैक्कानकेँ टॉर्च भेटै छै। ओ टेबुल आ स्टैनलीपर टॉर्च बाड़ैए।

अंक 3: पीटे आ मेगमे गप होइ छै। मेग स्टैनलीक विषयमे पीटेसँ पुछैए। लुलु अबैए, गोल्डबर्गसँ पुछैए जे ओकर पिता बा एडी (ओकर पहिल प्रेमी) की सोचत जँ ओ ई सुनत। ओ कहैए जे गोल्डबर्ग अपन दुष्ट पियास तृप्त केलक, ओ लुलुकेँ से सभ सिखेलक जे एकटा युवती तीन बेर बियाहल जेबाक बादे सीखत। गोल्डबर्ग कहैए जे ओ ई केलक कारण लुलु ओकरा ई कर’ देलक।

लुलु जाइए।

मेगक अनुपस्थितिमे गोल्डबर्ग आ मैक्कान स्टेनलीकेँ ल’ जाइए। पीटे ओकरा छोड़ैले कहैए। गोल्डबर्ग आ मैक्कान पीटेकेँ सेहो संगमे चलैले कहैए, कारमे जगह छै। पीटे स्थिर रहैए। पीटे असगरे रहि जाइए, मेग अबैए। पुछैए, ओ सभ गेल? पीटे कहैए- हँ। स्टेनलीक विषयमे मेग पुछैए- ओ सुतले अछि? पीटे कहैए- ओ सुतल अछि।

-सुत’ दियौ।

मेग पुछैए- की ई नीक पार्टी नै छल तँ पीटे कहैए- ओ बादमे आएल।

पर्दा खसैए।

...

बादल सरकारक “एवम् इन्द्रजीत”

“एवम् इन्द्रजीत” मे लेखक, काकी, मानसी, अमल, विमल, कमल, इन्द्रजीत आ इन्द्रजीतक पत्नी (नाटकमे बादमे) दोसर मानसी पात्र अछि।

अंक 1- लेखक एकटा नाटकक खोजमे अछि। ओकर काकी ओकर खेनाइ-पिनाइ छोड़ि लिखैत रहबापर तमसाएल छै। मानसी पुछैए जे ओ पढ़त जे किछु ओ लिखलक। लेखक कहैए, ओ किछु नै लिखलक। मानसी ओकरा प्रयास करैले कहै छै। लेखक दर्शकमेसँ चारिटा बादमे आबैबलाकेँ स्टेजपर बजबैए, अमल, विमल, कमल। चारिम अपन नाम निर्मल कुमार कहैए। लेखक कहैए- ई नै भ’ सकै छै, अपन असली नाम बताउ। ओ कहैए- इन्द्रजीत राय। अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत। मानसी (असली नाम दोसर मुदा लेखक कहैए मानसीये) ओकर ममियौत बहिन छिऐ। ओ ओकरासँ प्रेम करैए, परम्परा तोड़’ चाहैए

अंक 2: बादमे ओकरा लागै छै जे की जँ ई प्रेम सफल भइयो जेतै तँ ओकरा उत्तर भेटतै? नै ने। ओ लंदन सेहो जाएत। मृत्यु चाहैए, नै कऽ पाबैए। लेखक द्वारा नामित इन्द्रजीतक मानसी अविवाहित अछि, हजारीबागमे पढ़बैए।

मुदा अमल, विमल, कमलक विपरीत इन्द्रजीत लीखपर नै चलैए। अलग किछु कर' चाहैए। काका, जकरा ओ माए कहैए, खाइले कहै छै आ मानसी लिखैले। मुदा जखन एक बेर मानसी लेखककेँ खाइले कहि दैए तँ लेखक दुखी भ' जाइए, नै, अहूँ? नै।

मुदा फेर मानसीकेँ गलतीक भान होइ छै, ओ ओकर लेखनक विषयमे पुछैए। लेखक चिंतित अछि, ई इन्द्रजीत वास्तविकताकेँ नै मानैए, कोनो प्रतिबद्धता ओकरामे नै छै। मुदा मानसी से नै मानैए।

ओ सपना तँ देखैए ने।

इन्द्रजीत लंदनसँ कोलकाता घुरैए, एकटा दोसर स्त्रीसँ बियाह करैए, ओकरो नाम मानसी छिऐ (इन्द्रजीत एकरा मानसी कहैए, पहिलुका मानसी जेकरा लेखक मानसी कहैए ओ इन्द्रजीतक ममियौत छिऐ, जकरासँ इन्द्रजीत प्रेम करैए मुदा ओ भाएक रिश्तासँ ओकरासँ बियाह नै करैए जे लोक की कहतै, आ इन्द्रजीत लेखककेँ कहैत रहैए जे ओकर नाम मानसी नै छिऐ।)

इन्द्रजीत बुझ' लगैए (मानसीकेँ ओ कहैए) जे व्यक्तिक भिन्नताक मात्र भ्रम अछि। स्वप्न स्वप्न अछि ओ वास्तविकता नै बनि सकैए। मानसी, मानसी, मानसी, सभ मानसी, जेना अमल, विमल, कमल। लेखक पूछैए तँ इन्द्रजीत कहैए- अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत (सेहो!) ।

लेखकक यात्राक कोनो लक्ष्य नै, कोनो उद्देश्य नै, फुसियाँहीक यात्रा जकर कोनो कारण नै। लेखक इन्द्रजीतकेँ कहैए, हमरा सभकेँ जीबाक अछि, चलबाक अछि, कोनो धर्मस्थल नै तैयो तीर्थयात्रा करबाक अछि।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्धमे मृत भेल सैनिक आ चोरि करए काल मारल गेल चोर, उच्चक्का आ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से, पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर, चोर आ उचक्का दुनू गोटेकेँ, कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दए अबैत छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैत अछि, हुनकासँ अंगा छोड़बाक लेल कहैत अछि। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैत अछि तखन उचक्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे आबि जाइत अछि आ पॉकेटमारपर मारि-मारि कए उठैत अछि। मुदा जखन चोर कहैत छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल, ओकर जकाँ माँजल चोर नहि, आ उचक्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नञि सकल, तखन उचक्का महराज चोरक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैत अछि आ उचक्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमरा कहलक। संगे ईहो कहैत अछि जे चोरि तँ ई तेहन करए जनैत अछि, जे गिरहथक बेटा आ कुकुर सभ चोरि करैत काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलकए आ हमर खिधांश करैत अछि, बड़का चोर भेला हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नहि कए पबैत छथि जे ओ चोर थिकाह। ताहिपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबैत छन्हि। तखन ओ चोर महराज एहि गपपर दुख प्रकट करैत छथि जे नहि तँ ओहि राति एहि पॉकेटमारकेँ चोरिपर लए जएतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छलाह, गुम्म भेल सभटा सुनैत छथि आ दुख प्रकट करैत छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब, तँ स्वर्ग केहन होएत से नहि जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी एहि विषयपर पढ़ैत छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो, ई एहि स्थलपर प्रारम्भ होइत अछि जे एहि नाटककेँ संगीतक बना दैत अछि। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लैत छथि आ बटुआ साफ कए दैत छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भए जाइत अछि मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैत छथि, ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओहि पार, ई बटुआ आ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नहि अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजैत छथि, जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नहि चलबाक विषयमे टीप दैत छथि, जे हँ ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसरक पत्नी बनब। आब एहि गपपर घमर्थन शुरू

भए जाइत अछि। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दैत छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेतीह। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दए बहसमे शामिल भऽ गेल छथि, ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की इत्यादि कहैत छथि। मुदा पॉकेटमार कहैत अछि जे भीतरमे सुख नहि दुखो भए सकैत अछि। एहिपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भए जाइत छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्र पर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। एहि बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आ दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि, जे ई अद्भुत नीलामी अछि, जे करबा रहल अछि से पॉकेटमार आ ओहिमे शामिल अछि चोर आ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भए जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करैत छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि, सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आ अकास-पताल कहैत छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहैत छथि जे सभ गोटे सत्य कहैत छी आ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नहि बजलहुँ। फेर बजैत-बजैत ओ कहए लगैत छथि, क्यो चोरि काल मारल गेलाह (चोर ई सुनि भागए लगैत छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लए अनैत छन्हि!) तँ क्यो एक्सीडेन्टसँ, आ एहि तरहेँ सभटा गनबए लगैत छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्युक एतए आयल छथि से हुनकहु लोकनिकेँ नहि बुझल छन्हि! बीमा बाबू कहैत छथि जे ओ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतए छथि! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइत छन्हि, कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहैत छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइत छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहतीह आ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतएसँ गेनाइ तँ संभव नहि मुदा ई भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ी माय-बाप (!) केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतहि बजबा लेल जाए। मुदा अपना लेल माए-बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग करा दैत छथि आ कन्यादान करैत छथि बजारी।

उत्तर आधुनिक भावप्रधान निरर्थक (एबसर्ड) नाटक: एन एटेण्डेन्ट गोडो क सैमुअल बेकैट द्वारा स्वयं फ्रेंचसँ अंग्रेजीमे अनुवाद कएल गेल “वेटिंग फॉर गोडो” शीर्षकसँ आ उपशीर्षक “अ ट्रेजिकॉमेडी इन टू एक्ट्स” सेहो जोड़ल गेल जे फ्रेंच संस्करणमे नै छल। ट्रेजीकॉमेडी माने ट्रेजेडी आ कॉमेडीक मिश्रण। एकर कथानकसँ स्पष्ट भऽ गेल हएत जे एकर मुख्य पात्र “गोडो” ऐ नाटकमे छैहे नै, दोसर ओ भावक दृष्टिसँ सेहो नाटकक मुख्य तत्व नै छै। नाटकक मुख्य तत्व छै “वेटिंग” माने बाट तकनाइ। भाषा, स्टेज, बाजब, चुप्प रहब, चलबाक तरीका, ई सभ ऐ नाटकक अभिन्न अंग छिऐ। देश-कालमे भागैबला बनजारा जीवनशैलीक लोक सभ अछि एकर मुख्य पात्र। बिनु बजने शारीरिक भावसँ अभिनय करैबला “माइम कलाकार” जेकाँ ऐ नाटकक पात्र अभिनय करै छथि। नाटकमे प्लॉट आ संतुलनक नव परिभाषा ई नाटक गढ़ैत अछि। आधुनिक थियेटरकेँ ई नाटक नव युगमे प्रवेश कराबैत अछि। ब्रिटेनक “म्यूजिक हॉल” थियेटर मे संगीत हास्य रहै छलै जइमे जीवनक निराशा “क्रॉस-टॉक” सँ बेकेट आ राजनैतिक-सामाजिक आतंक हैरोल्ड पिन्टर हास्य रूपमे देखबैत छथि। “नो एण्ट्री: मा प्रविश” सेहो स्वर्क (बा नरक) क द्वारपर आरम्भ होइए जतए ओना तँ सभ मृत लोक पंक्तिबद्ध छथि मुदा एकटा जीवित व्यक्ति सेहो छथि! उचक्का बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैए! प्रेमी-प्रेमिकाक ओतए बियाहो भऽ जाइ छै! नेताजी मृत्युक बादो विलम्बसँ एबा लेल अभिशप्त छथि! वामपंथी ओतौ बाहरसँ समर्थन दै छथि! वी. आइ. पी. क्यू सँ ओतौ त्राण नै भेटै छै! मुदा जइ दरबज्जाक बाहर लोक पंक्तिबद्ध छथि से एक युगमे खुजितो छल आ बन्न सेहो होइत छल, ई रहस्योद्घाटन चित्रगुप्त करै छथि! माने आब ई नै खुजत तखन इन्तजारी कथीक? नन्दी-भृंगी कहैए जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नै, मात्र बुझबाक दोष छल! अभिनेता विवेक कुमार अपन “सरनेम” पुछल गेलापर कहै छथि जे कतेक मोश्किलसँ तँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़लक अछि से उर्फ तँ छोड़िये देल जाए। वामपंथीक कथामे ने स्वर्ग-नर्क होइ छै आ नहिये यमराज-चित्रगुप्त, मुदा एतुक्का परिस्थिति देखि कऽ ओ अविश्वास कोना करथु? मुदा यमराजे हुनका कहै छथिन्ह जे ई दुःस्वप्न हुअए। यमदूत सभ कड़ाह लग अनेरे ठाढ़ छथि कियो भूजैले भेटिते नै छन्हि, चित्रगुप्तक मेकप बला दाढ़ी देखि भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहै छथि जे भिखमंगनी सेहो हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि। मोनक दरबज्जा मोन छोड़ि एलापर कोना खुजत?

फ्रेंच नाटक “वेटिंग फॉर गोडो”, हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक “द बर्थडे पार्टी”, बादल सरकारक बांग्ला नाटक “एवम् इन्द्रजीत” आ उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क मैथिली नाटक “नो एण्ट्री: मा प्रविश” पुरान नाटक जेकाँ परिभाषित आरम्भ आ अन्तक परिधिसँ अलग अछि। ई कतौ सँ शुरू भऽ जाइत अछि, कतौ खतम भऽ जाइत अछि। एवम् इन्द्रजीत मे लेखक पात्र ताकि रहल अछि, आ अनचोक्के ओ दर्शक दीर्घाकेँ सम्बोधित करैत चारिटा देरीसँ आएल दर्शककेँ मंचपर बजा लैए आ ओकरा नाटकक पात्र बना दैए। चारिम पात्र ओकरा प्रिय छै, ओ निर्मल नै “इन्द्रजीत” छी। ओ अलग अछि, इन्द्रकेँ जीतैबला ऐतिहासिक पात्र अछि। ओ अमल विमल, कमल जेकाँ लीखपर नै चलत। मुदा अन्त जाइत जाइत इन्द्रजीत सेहो अमल विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत भऽ जाइए।

हैरोल्ड पिन्टरक “द बर्थडे पार्टी” क प्रारम्भमे तेहेन समीक्षा भेल जे हुनकर लेखकीय जीवन समाप्त हुअए पर आबि गेल। मुदा एकर पुनर्पाठ एकरा क्लासिक बना देलक। किछु रहस्य, किछु आतंककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे बनेने रहलाह, हास्य कथ्यकेँ आर मजगूत केलक। स्टैनले की अछि, छल बा बनऽ चहैत अछि? की ओ स्त्रीकेँ दूषित करैए, बा ओ अपन पत्नीक हत्या केलक? मुदा मेग तँ ओकरा पसिन्न करै छै? ओकर पहिल आ दोसर कन्सर्ट, के तकर बाधक बनलै? की ओ झूठ बजैए बा वर्तमान सामाजिक आ राजनैतिक परिभाषासँ अलग व्यवहारक अछि? ओ मेगकेँ मोकऽ चाहैए मुदा तैयो किए मेग ओकरा पसिन्न करै छै आ सामाजिक आ राजनैतिक शक्ति ओकरा किए आ कोना उठा कऽ लऽ गेल जाइ छै, जकर सिपाही गोल्डबर्ग (गोल्डबर्गक लुलुक संग रहस्यमय व्यवहार) स्वयं आदर्श उपस्थित नै कऽ पाबै छथि।

सुन्न-मसान सड़कक कातक माटिक ढिमका आ पत्रहीन नग्न गाछ “वेटिंग फॉर गोडो” क स्टेज छिऐ, ताला लागल दरबज्जाक बाहरक स्थल/ मण्डप “नो एण्ट्री: मा प्रविश” क स्टेज छिऐ तँ “एवम् इन्द्रजीत” मे दर्शक दीर्घा, सएह स्टेज बनि जाइए। “द बर्थडे पार्टी” मे घरक कोठली स्टेज छिऐ मुदा पिन्टर एकर पात्र स्टैनले केँ डेरीडाक “विखण्डन” पद्धतिसँ कखनो खण्ड कऽ दैत छथि तँ कखनो फेरसँ जोड़ि दै छथि। लोक बा दर्शक ओकरासँ ईर्ष्या करऽ लगैए, खने सहानुभूति करऽ लगैए खने घृणा करऽ लगैए, मुदा स्टैनली गोल्डबर्ग आ मैक्कानक सोझाँ जखन निर्बल बुझि पड़ैए तँ दर्शक ओकरा संग अपनाकेँ देखैए, जेना ओ “एवम् इन्द्रजीत” मे इन्द्रजीत संग अपनाकेँ देखैए। “वेटिंग फॉर गोडो” मे जखन लोक गुलाम संग अपनाकेँ देखैए तखने सहानुभूति देखेलापर चमेटा पड़लापर ओ हतप्रभ रहि जाइए। “नो एण्ट्री: मा प्रविश” मे भिखमंगनी ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की कहैए! पॉकेटमार इन्द्रक व्रजपर रुपैय्याक बोली लगबैए। नन्दी-भृंगी कहैए जे सभ गोटे सत्य छी मुदा क्यो गोटे पूर्ण सत्य नै बजलौं। “एवम् इन्द्रजीत” मे इन्द्रजीतक हाल सिसीफस सन छै। शापित ग्रीक मिथक सिसीफस, संगमरमरक पाथरपर चढ़बाक लेल अभिशप्त, आ जखने ओ चोटीपर पहुँचैए आकि पाथर फेर गुरकि कऽ ओकरा नीचाँ आनि दै छै। मनुक्खक काज आ जीवन निरर्थकतापर आधारित अछि। मनुक्ख असफल होइले अभिशप्त अछि, इन्द्रजीत जेकाँ? आकि “नो एण्ट्री: मा प्रविश” क स्वर्ग-नरक, यमराज-चित्रगुप्तक अमान्यता देखलाहा गपकेँ देखि बदलत? मुदा तखन यमराजे कहै छथि जे देखलाहा गप दुःस्वप्न भऽ सकैए? “वेटिंग फॉर गोडो” ईश्वरक इन्तजारी नै छिऐ, बेकेट स्वयं कहै छथि जे इन्तजारी “गॉड” क नै “गोडो” क भऽ रहल अछि, ओना क्रिस्टियेनिटी “मिथोलोजी” अछि से ओ तकर प्रयोग करै छथि। अस्तित्ववादी विचारधारा, मनुक्ख आ ब्रह्माण्ड सभ निरर्थक अछि, अबसर्ड अछि।

५६. छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल

सारांश
छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैलछुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा “रमण” हुनका सुझाव देलखिन्ह जे “छुतहर घैल” कैँ मात्र “छुतहर” कहल जाइ छै।

बीजशब्द: छुतहर · घैल · छुतहा · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “छुतहर/छुतहर घैल/छुतहा घैल” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे छुतहर; घैल; छुतहा; छन्हि; मलंगियाजीक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि। पहिने ऐ भूमिकापर आउ। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा “रमण” हुनका सुझाव देलखिन्ह जे “छुतहर घैल” कैँ मात्र “छुतहर” कहल जाइ छै। से ओ तीन टा गप उठेलन्हि- पहिल- “तों कहियो पोथी के लेखी, हम कहियो अँखियन के देखी।” दोसर- यात्री जीक विलाप कविता- “काते रहै छी जनु घैल छुतहर आहि रे हम अभागलि कत बड़।”
आ कहै छथि जे ओइ कविताक विधवा आ ऐ नाटकक कबूतरी देवीकेँ शिवक महेश्वरो सूत्र आ पाणिनीक दश लकारसँ (वैदिक संस्कृत लेल पाणिनी १२ लकार आ लौकिक संस्कृत लेल दस लकार निर्धारित कएने छथि..खएर...) कोन मतलब छै? तेसर ओ अपन स्थितिकेँ कापरनिकस सन भेल कहैत छथि, जे लोकक कहलासँ की हेतै आ गाम-घरमे लोक “छुतहर घैल” बजिते छैक!!
मुदा ऐ तीनू बिन्दुपर तीनू तर्क मलंगियाजीक विरुद्ध जाइ छन्हि। “अँखियन देखी” आ लोकव्यवहार “छुतहर” मात्र कहल जाइत देखलक आ सुनलक अछि, घैलचीपर छुतहरकेँ अहाँ राखि सकै छी? लोइटसँ बड़ैबमे पान पटाओल जाइ छै तखन मलंगियाजीक हिसाबे ओकरा “लोइट घैल” कहबै। घैल, सुराही, कोहा, तौला, छुतहर, लोइट, खापड़ि, कुड़नी, कुरवाड़, कोसिया, सरबा, सोबरना ऐ सभ बौस्तुक अलग नामकरण छै। फूलचन्द्र मिश्र “रमण” (प्राय: फूलचन्द्रजी “छुतहा घैल” शब्दक सुझाव हँसीमे देने हेथिन्ह, आ जँ नै तँ ई एकटा नव भाषाक नव शब्द अछि!!) क सुझाव मानैत मलंगिया जी “छुतहर घैल” कैँ “छुतहा घैल” कऽ देलन्हि, ई ऐ गपक द्योतक जे हुनका गलतीक अनुभव भऽ गेलन्हि मुदा रमानन्द झा “रमण” क गप मानि लेने छोट भऽ जइतथि से खुट्टा अपना हिसाबे गाड़ि देलन्हि। आ बादमे रमानन्द झा “रमण” चेतना समितिसँ ओइ पोथीकेँ छपेबाक आग्रह केलखिन्ह आ, चेतना समिति मात्र २५टा प्रति दैतन्हि तँ ओ अपन संस्थासँ एकरा छपबेलन्हि, ऐ सभसँ पठककेँ कोन सरोकार? आब आउ यात्रीजीक गपपर, यात्रीजीकेँ हिन्दी पाठकक सेहो ध्यान राखऽ पड़ै छलन्हि, हुनका मोनो नै रहै छलन्हि जे कोन कविता हिन्दीमे छन्हि, कोन मैथिलीमे आ कोन दुनूमे, से ओ छुतहर घैल लिखि देलन्हि, एकर कारण यात्रीजीक तुकबन्दी मिलेबाक आग्रहमे सेहो देखि सकै छी। आ फेर आउ कॉपरनिकसपर, जँ यात्री जी वा मलंगिया जी “घैल छुतहर”, “छुतहर घैल” वा “छुतहा घैल” लिखिये देलन्हि तँ की नेटिव मैथिली भाषी छुतहरकेँ “घैल छुतहर”, “छुतहर घैल” वा “छुतहा घैल” बाजब शुरू कऽ देत। से कॉपरनिकस सेहो मलंगियाजीक विरुद्ध छथिन्ह। कॉपरनिकसक किंवदन्तीक सटीक प्रयोग मलंगियाजी नै कऽ सकलाह, प्राय: ओ गैलिलीयो सँ कॉपरनिकसकेँ कन्फ्यूज कऽ रहल छथि, कॉपरनिकसक सिद्धान्तक समर्थन पोप द्वारा भेल छल आ कॉपरनिकस पोप पॉल-३ कैँ अपन हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धान्तक चालीस पन्नाक पाण्डुलिपि समर्पित केने रहथि। खएर मलंगियाजीक विज्ञानक प्रति अनभिज्ञता आ विज्ञानक सिद्धान्तकेँ किंवदन्तीसँ जोड़बाक सोचपर अहाँकेँ आश्चर्य नै हएत जखन अहाँ हुनकर खाँटी लोककथा सभक अज्ञानताकेँ अही भूमिकामे देखब। “अली बाबा आ चालीस चोर”- सम्पूर्ण दुनियाँकेँ बुझल छै जे ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि जे “अरेबियन नाइट्स (१००१

कथा)” मे संकलित अछि आ ओइमे विवाद अछि जे ई अरेबियन नाइट्समे बादमे घोसियाएल गेल वा नै, मुदा ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि, ऐ मे कोनो विवाद नै अछि। बलबनक अत्याचार आदिक की की गप साम्प्रदायिक मानसिकता लऽ कऽ मलंगिया जी कहि जाइ छथि से हुनकर लोककथाक प्रति सतही लगाव मात्रकँण देखार करैत अछि। “मिथिला तत्व विमर्श” वा “रमानाथ झा” क पंजीक सतही ज्ञान बहुत पहिनहिये खतम कऽ देल गेल अछि, आ तेँ ई लिखित रूपसँ हमरा सभक पंजी पोथीमे वर्णित अछि। गोनू झा विद्यापति सँ ३०० बर्ख पहिने भेलाह, मुदा मलंगियाजी ५० साल पुरान गप-सरक्काक आधारपर आगाँ बढ़ै छथि। हुनका बुझल छन्हि जे गोनूकेँ धूर्ताचार्य कहल गेल छन्हि मुदा संगे गोनूकेँ महामहोपाध्याय सेहो कहल गेल छन्हि से हुनका नै बुझल छन्हि!! गोनू झाक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नै करथि तखन “तहसीलदारक दाढ़ी” कतऽ सँ आओत। लोकक कण्ठमे छुतहर छै ओकरा “छुतहा घैल” कऽ दियौ, लोकक कण्ठमे “कर ओसूली” करैबलाक दाढ़ी छै ओकरा “तहसीलदार” क दाढ़ी कहि साम्प्रदायिक आधारपर मुस्लिमकेँ अत्याचारी करार कऽ दियौ, आ तेहेन भूमिका लिखि दियौ जे रमानन्द झा “रमण” आ आन गोटे डरे समीक्षा नै करताह। एकटा पैदल सैनिक आ एकटा सतनामी (दलित-पिछड़ल वर्ग द्वारा शुरू कएल एकटा प्रगतिवादी सम्प्रदाय) क झगड़ासँ शुरू भेल सतनामी विद्रोह औरंगजेबक नीतिक विरोधमे छल आ ओइमे मस्जिदकेँ सेहो जराओल गेलै, मुदा गोनू झाक कर ओसूली अधिकारी मुस्लिम नै रहथि, लोककथामे ई गप नै छै, हँ जँ साम्प्रदायिक लोककथाकार कहल कथामे अपन वाद घोसियेलक आ लिखै काल बेइमानी केलक तँ तइसँ मैथिली लोककथाकेँ कोन सरोकार? फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन नै करब तँ अहिना हएत। महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जातित-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह। भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ सत्रहटा दृश्य अछि, जइमे पन्द्रहम दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह ओ सोलहम दृश्यसँ करै छथि मुदा बाजी तावत हुनका हाथसँ निकलि जाइ छन्हि। आइ जखन संस्कृत नाटकोमे प्राकृत वा कोनो दोसर भाषाक प्रयोग नै होइत अछि, मलंगियाजीक भरतकेँ गलत सन्दर्भमे सोझाँ आनब संस्कृतसँ हुनकर अनभिज्ञताकेँ देखार करैत अछि आ भरत नाट्यशास्त्रपर हिन्दीमे जे सेकेण्डरी सोर्सक आधारपर लोक सभ पोथी लिखने छथि, तकरे कएल अध्ययन सिद्ध करैत अछि। मलंगियाजीक ई कहब अछि जे नाटक जँ पढ़बामे नीक अछि तँ मंचन योग्य नै हएत, वा मंचन लेल लिखल नाटक पढ़बामे नीक नै लागत? हुनकर संस्कृत पाँतीकेँ उद्धृत करबासँ तँ यएह लगैत अछि। जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ मंचीय गुण की होइ छै, अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक सत्रहटा दृश्य, तथाकथित निम्न वर्गकेँ अपमानित करैबला जातिवादी भाषा, भगताक “बुझता है कि नहीं?” बला हिन्दी आ ऐ सभक सम्मिलनक ई “स्लैपस्टिक ह्यूमर”? आ जे एकर विरोध कऽ मैथिलीक समानान्तर रंगमंचक परिकल्पना प्रस्तुत करत से भऽ गेल नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही आ जे पुरातनपंथी जातिवादी अछि से भेल नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही!! की २१म शताब्दीमे मलंगियाजीक जाति आधारित वाक्य संरचना संस्कृत, हिन्दी वा कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक नाटकमे (मैथिलीकेँ छोड़ि) स्वीकार्य भऽ सकत? आ जँ नै तँ ऐ शब्दावली लेल १८०० बर्ष पुरनका संस्कृत नाटकक गएर सन्दर्भित तथ्यकेँ, मूल संस्कृत भरत नाट्यशास्त्र नै पढ़ैबला नाटककार द्वारा, बेर-बेर ढालक रूपमे किए प्रयुक्त कएल जाइए? माथपर छिट्टा आ काँखमे बच्चा जँ कियो लेने अछि तँ ओ निम्न वर्गक अछि? ओकर आंगनक बारहमासामे ओ ऐ निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। बबाजी कोना कथामे एलै आ गाजा कोना एलै आ ओइसँ बगियाक गाछक बगियाक कोन सम्बन्ध छै? मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तेँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तेँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि।

५७. चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ

सारांश

एहि निबन्धक आधार अछि परशुराम झाक “डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा- स्टडीज इन डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन अगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल एण्ड स्ट्राइफ” । परशुराम झा १९३८- गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इन्गलिश ड्रामा, क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा।

बीजशब्द: चारिटा · अंग्रेजी · नाटक · डॉक्टर · फॉस्टस · सैमसन · एगोनिस्टेस · मर्डर

सारांश · Abstract

ई अध्याय “चारिटा अंग्रेजी नाटक — डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन एगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल आ स्ट्राइफ” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे चारिटा; अंग्रेजी; नाटक; डॉक्टर; फॉस्टस प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

एहि निबन्धक आधार अछि परशुराम झाक “डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इंग्लिश ड्रामा- स्टडीज इन डॉक्टर फॉस्टस, सैमसन अगोनिस्टेस, मर्डर इन द कैथेड्रल एण्ड स्ट्राइफ” । परशुराम झा १९३८- गाम- मेंहथ (मधुबनी), कृति- डाइमेन्शन्स ऑफ पीस इन इन्गलिश ड्रामा, क्रिश्चियन पोएटिक ड्रामा। परशुराम झा अंग्रेजी साहित्यक आजीवन अध्यापन केने छथि।

डॉक्टर फॉस्टस एलिजाबेथ युगक, सैमसन एगोनिस्टेस एज ऑफ रीजनक, मर्डर इन द कैथेड्रल आधुनिक युगक नाटक अछि। ई तीनू मुख्यतः धार्मिक नाटक अछि। स्ट्राइफ आधुनिक धर्मनिरपेक्ष नाटक अछि, ई सिद्ध करैत अछि जे धर्मनिरपेक्षता धर्मसँ निकलल अछि, कमसँ कम धर्मक नैतिक सन्दर्भसँ।

डॉक्टर फॉस्टस (द ट्रैजिकल हिस्ट्री ऑफ द लाइफ एण्ड डेथ ऑफ डॉक्टर फॉस्टस) क्रिस्टोफर मारलोवे (१५६४-१५९३) लिखित अछि। क्रिस्टोफर मारलोवे सेक्सपियर (१५६४-१६१६) क समकालीन छलाह। क्रिस्टोफर मारलोवेकेँ कोनो आपत्तिजनक पाण्डुलिपि लेल प्रिवी काउन्सिल द्वारा वारन्ट जारी कऽ बजाओल गेल आ तकर दस दिन बाद हुनकर चक्कू मारि हत्या कऽ देल गेल, जखन ओ मात्र २९ बर्खक छलाह। ओ जँ अपन सम्पूर्ण जिनगी जिबितथि तँ सेक्सपियरसँ पैघ नाटककार होइतथि वा नै से इतिहासक गर्भमे नुकाएल रहि गेल। ई नाटक ब्लैंक वर्स आ गद्य मिश्रित अछि। ब्लैंक वर्समे मीटर रहै छै मुदा लय नै। मारलोवेक जीवन कालमे एकर मंचन भेल मुदा एकर प्रकाशन हुनकर मृत्युक एगारह बर्खक बाद भेल।

सैमसन अगोनिस्टेस (सैमसन, प्रतियोगी-योद्धा) जॉन मिल्टन (१६०८-१६७४) लिखित दुखान्त क्लोजेट पद्य-नाटक अछि। क्लोजेट नाटक तकरा कहल जाइत छै जे मंचन लेल नै वरन असगर पढ़बा लेल लिखल जाइ छै वा किछु गोटे संगे जोर-जोरसँ पढ़ि कऽ सुनबा-सुनेबा लेल।

मर्डर इन द कैथेड्रल टी. एस. इलियट (१५६४-१५९३) लिखित पद्य-नाटक अछि।

स्ट्राइफ (कटु संघर्ष) जॉन गाल्सवर्दी (१८६७-१९३३) लिखित नाटक अछि।

डॉक्टर फॉस्टस - क्रिस्टोफर मारलोवे

१५९२ ई. मे “इंग्लिश फाउस्ट बुक” मे किछु घटोत्तरी-बढ़ोत्तरी कऽ “डॉक्टर फाउस्टस” नाटक रचित भेल, जे ओहि युगक वास्तविकताकेँ देखबैत अछि।

डॉक्टर फॉस्टस “मेडिएवल मिस्ट्री प्ले”, मोरेलिटी प्ले” आ “इन्टरल्यूड” सँ सम्बन्धित अछि- कथ्य आ रूप दुनूमे। फेर फॉस्टसक “असीमित ज्ञान”, “लौकिक आनन्द” आ “शक्ति” क लेल अदम्य लालसा एहि नाटककेँ पुनर्जागरणक आत्माक निकट लऽ जाइत अछि।

फॉस्टसक पहिल प्रवेश ओकरा लेल दूटा विकल्प लऽ अबैत अछि। ओकरा आध्यात्मिक जीवन चुनबाक छै आकि लौकिक। ओकरा नै खतम होअएबला आनन्द चाही आकि आध्यात्मिक अंधकूप आ मुत्यु। ओकरा अपन इच्छाक पालन करबाक छै आकि भगवानक। ओ

ज्ञानी अछि, एरिस्टोटलक तर्क चिन्तन ओ पढ़ने अछि, रोग-व्याधि दूर करैबला चिकित्साशास्त्र ओ जनैत अछि। ओ धर्मशास्त्रमे डॉक्टरेट अछि। मुदा ई सभ ज्ञान ओकरा शान्ति आ आनन्द नै दै छै। मुदा ओ चुनैए जादू आ लौकिक इच्छाक तृप्तिक रस्ता।

एहि जादूक चयन कऽ ओ "भरोस" पर भरोस छोड़ि दैए।

फॉस्टसक लौकिक इच्छा छै वेस्ट इंडीजक आ अमेरिकाक (जे मारलोवेक समएमे इंडिया कहल जाइ छल) सोना, पूर्वक मोती, नीक फल। ओकर इच्छाक लेल जादूगर वाल्डेस आ कॉरनेलियस छै।

नाटकक बादक भागमे मेफिस्टोफिलिसक आगमन होइ छै- फॉस्टस ओकरासँ कहैत अछि जे ओ लूसीफरकेँ सूचित करए जे फॉस्टस अपन आत्माक बदलेन लौकिक भोग लेल करबाक लेल तैयार अछि। "नीक दूत" क फॉस्टसकेँ सुझाव जे ओ स्वर्ग आ स्वर्गीय वस्तुक विषयमे सोचए, फॉस्टस "खराप दूत" क सलाह मानि धनक इच्छा करैए।

अपन आत्माक निलामीक बंधकपत्र अपन खूनसँ लिखैत अछि फॉस्टस। लूसीफरकेँ अपन आत्मा समर्पित कऽ दैत अछि ओ। मेफिस्टोफिलिस ओकरा नर्कक विषयमे कहैत अछि मुदा ओ ओहि पर ध्यान नै दऽ "सुतनाइ", "खेनाइ" आ "चलनाइ" पर ध्यान दैत अछि। बहस केनाइ, ज्ञानक संचय, खगोलशास्त्र आ वनस्पतिशास्त्रक ज्ञान आ सौन्दर्यशास्त्र ई सभ मेफिस्टोफिलिसक सहयोगसँ फॉस्टस प्राप्त करैत अछि।

फॉस्टसक लैंगिक इच्छाक पूर्तिक पहिने मेफिस्टोफिलिस ओकरा बुझबैत अछि मुदा फेर एकटा "खराप आत्मा" केँ स्त्री बना फॉस्टसक पत्नीक रूप दैत अछि।

"खराप आत्मा" कोनो मृत व्यक्तिक अनुकरण कऽ सकैए मुदा स्वयं जीवित नै भऽ सकैए। से तकर परिणाम ई भेल जे ओकर ठोढ़ फॉस्टसक आत्माकेँ चूसि लैत छै। "खराप आत्मा" सँ संसर्गक पाप फॉस्टस करैए आ परिणाम छै ओकर आध्यात्मिक मृत्यु।

ओ भगवानसँ दूर भऽ जाइए आ ओ "खराप आत्मा" संगे चौबीस बर्ख बितेबाक लेल रस-रंगमे डूमि जाइए।

मुदा जखन ओकर मृत्युक बॉन्डक समए निकट अबै छै, ओ कहैए- "हम जे जिबितौं एकरा सभक संग तँ स्थिर जीवन जिबितौं मुदा आब मरब तँ सदा लेल मरि जाएब" ।

आ ओकर अन्तिम क्षण- जखन ओकर मृत्यु होएबाक छैक तकर पूर्व- बारह बजेक घड़ीक टिकटिक। ओ दुखी भऽ कहैए- "ओकर आत्मा अखनो जीबए नर्कमे रहबाक लेल" मुदा...

ओ विद्वान् सभकेँ कहैए- ओ साँप जे ईवकेँ प्रलोभित केलक से बचि सकैए मुदा फॉस्टस नै।

ओ पश्चातापो नै कऽ सकैए, ओकरा क्षमा नै कएल जा सकै छै, पवित्र नै कएल जा सकै छै। ओ स्वीकार करैए जे ओ भगवानकेँ अपमानित केने अछि।

सैमसन एगोनिस्टेस- जॉन मिल्टन

नाटकक प्रारम्भमे सैमसनकेँ आन्हर कऽ गाजाक जेलमे श्रम मजदूरी लेल होएबाक आ एक गोटे द्वारा जेलक सोझाँक चमकैत किनारपर लऽ जएबाक दृश्य अछि। ई एकटा छुट्टीक दिन छल, कारण छल फिलिस्तीनक भगवान डेगोनक, जे अदहा मनुक्ख आ अदहा माँछ छथि, भोज छै। बसात लगलासँ सैमसन अपनामे ऊर्जाक संचार पबैए। ओकरामे स्वर्गसँ भेटल शक्ति छै जे फिलिस्तीनक परतंत्रतासँ इस्रायलकेँ मुक्ति दिएबा लेल छै। मुदा तखने ओकरा लगै छै जे भगवान ओकरा जतेक शक्ति देलन्हि ततेक बुद्धि नै देलन्हि, नै तँ ओ ओतेक जल्दी अपन शक्तिक रहस्य डेलिलाकेँ नै बतबितै। मुदा भगवानक बुद्धिपर ओ कोनो बहस कोना कऽ सकैए, जे की इच्छा छै ओकर।

ओकर पिता मनोआ सैमसनकेँ जेलसँ बाहर निकालबाक एकटा योजना लऽ अबैत अछि। ओकर योजना जे फिलिस्तीनक सामन्तकेँ पाइ दऽ सैमसनकेँ छोड़बाबी, ई सैमसनकेँ नीक नै लगै छै, नै मानै अछि ओ।

मनोआ ओकरा कहै छै जे फिलिस्तीन सभ भोजक क्रममे डेगनक प्रशंसा करत आ इस्रायलक भगवानक अपमान। ई सुनि सैमसन दुखी भऽ जाइए। ओ मनोआकेँ कहै अछि जे ओकरा कोनो आशंका नै छै जे इस्रायलक भगवान डेगोनपर विजय करत। मनोआक गेलापर ओ कोरसमे मुदा ई कहैए जे मुदा ओ कोना भगवान लेल काज कऽ सकत?

डेलीला अबैए आ सैमसनकेँ कहैत अछि जे ओ फिलिस्तीनी सामन्तकेँ कहि ओकरा छोड़बाओत मुदा सैमसन ओकरा रहस्यकेँ खोलैवाली कहैए।

हराफा सैमसनकेँ कहैत अछि जे भगवान सैमसनकेँ छोड़ि देने छथि।

अधिकारी अबैत अछि आ ओ फिलिस्तीनक सामन्तक आदेश अनैत अछि जे सैमसनकेँ अपन करतब डेगनक भोजक अवसरपर देखेबाक छै। पहिने ओ मना करैए फेर किछु सोचि कऽ मानि जाइए। मिल्टन फिलिस्तीनीकेँ लौकिक आनन्दमे खसल आ डेगनकेँ ओहि लौकिक आनन्दक देवताक रूपमे देखबैत छथि। सैमसन दूटा खाम्हक बीचमे जाइत अछि, प्रार्थना करैत अछि आ भवनकेँ खसा दैत अछि।

दूतक एहि वर्णनसँ सैमसनक पितामे शान्त प्रतिक्रिया होइत अछि। ओ कहैत छथि- दुखी होएबाक समए नै अछि। ओ अपन मुत्युसँ इस्रायल लेल सम्मान आ स्वतंत्रता अनने छथि।

मर्डर इन द कैथेड्रल- टी. एस. इलियट

मर्डर इन द कैथेड्रल कैंटरबरीक महिलाक कोरस स्वरसँ प्रारम्भ होइत अछि जाहिमे प्रकृतिक स्वरूपक हितकारी नै होएब आ सुरेब नै होएब वर्णित अछि।

दूत आर्कबिशपक इंग्लैंड आगमनक सूचना दैत अछि। बेकेट फ्रांसमे सात बर्ख रहलाक बाद कैंटरबरी घुरैत छथि। एतए हुनका लेल बाहरी आ आन्तरिक दुनू स्तरपर संघर्ष छै। राज्यक आ धर्मक, राजा आ आर्कबिशपक संघर्ष तँ छैहे, आन्तरिक संघर्ष सेहो छै जे भीतरक इच्छा छै। ओ अपन भूतकालकेँ, जाहिमे बैरन सभक मित्रता आ चान्सलरशिप अबैत अछि, केँ "छाह" कहै छथि, एहिसँ सेहो हुनका संघर्ष करबाक छन्हि।

बेकेटक बाहरी शत्रु चारिटा "नाइट" तरुआरि भँजैत अबैत छथि। बेकेट तावत अपन आन्तरिक शत्रुपर विजय प्राप्त कऽ लेने छथि आ ओ शान्तिसँ "नाइट" सभकेँ कहै छथि- "अहाँ सभक स्वागत अछि, चाहे अहाँक उद्देश्य जे हो" ।

ओ कहै छथि जे हुनका कहियो इच्छा नै भेलन्हि जे ओ राजाक पुत्रक मुकुट छीनि लेथि।

नाइटक राजाक आदेश सुनेलापर जे ओ देश छोड़ि देथि, बेकेट कहै छथि जे आब नै, सात साल ओ अपन लोकसँ दूर रहलाह।

ओ अपन हत्या कएल जएबासँ पूर्व नाइट सभसँ कहै छथि- "हमर अहाँ जे चाही करू मुदा हमर लोक अहाँकेँ छूबो नै करताह" ।

पुरोहित सभ हुनका इच्छाक विरुद्ध हुनका जबरदस्ती कैथेड्रलक भीतर लऽ जाइ छथि आ चर्च बन्द कऽ दै छथि। मुदा बेकेट कहै छथि-

"चर्च सर्वदा खुजल रहबाक चाही, शत्रुक लेल सेहो" ।

जखने चर्चक दरबज्जा खुजैत अछि मातल "नाइट" सभ बेकेटक हत्याक उद्देश्यसँ पैसि जाइ छथि।

बेकेटक हत्या भऽ जाइ छन्हि, पुरहित सभ भगवानकेँ धन्यवाद दै छथि जे ओ कैंटरबरीमे एकटा आर सन्त देलन्हि।

स्ट्राइफ- जॉन गाल्सवर्दी

ट्रेनार्था टिन प्लेट वर्क्समे एकटा औद्योगिक विवादक कारण अक्टूबरसँ श्रमिकक हड़ताल प्रारम्भ भेल। चारि मासक बाद ७ फरबरीकेँ एकटा विशेष बोर्ड मीटिंग एहिपर भेल, मैनेजर फ्रांसिस अंडरवुडक, जे कम्पनीक चेयरमेन जॉन एन्थोनीक जमाए छथि, डाइनिंग रूममे। एहि मीटिंगमे डाइरेक्टर फ्रेडरिक एच. वाइल्डर, विलियम स्कैंटलबरी, ओलीवर वैंकलिन आ एंथोनीक छोट पुत्र एडगर सेहो छथि।

एडगर श्रमिकक दशासँ आहत छथि। मुदा वाइल्डर उग्र छथि कम्पनीक शेयर नीचाँ गेलासँ आ पचास हजारसँ बेशी घाटासँ ओ चिन्तित छथि। स्कैंटलबरी अहिंसाक पथिक छथि तँ वैंकलिन मध्यमार्गी छथि।

एंथोनी मुदा श्रमिकक लेल कोनो सहानुभूतिक विरुद्ध छथि।

वाइल्डर सुझाव दै छथि जे सेंट्रल यूनियनक हारनेसकेँ विवाद दूर करबा लेल कहल जाए मुदा एंथोनी मना करै छथि।

वर्कमेन कमेटीक आन सदस्यक संग छथि रॉबर्ट्स, ओ एंथोनीक विरोध करै छथि। हारनेसक विपरीत ओहो उग्र छथि।

एंथोनीक पुत्री एनिड पिताक वर्गान्तरक विरुद्ध छथि। हुनकर खबासनी एनी रोबर्ट्ससँ बियाहल छनि, एनीक सहायता एनिड करऽ चाहै छथि। एनिडक भेँट रॉबर्ट्ससँ ओकर झोपड़ीपर होइ छन्हि। ओ ओकरा समझौता लेल कहै छथि मुदा ओ एंथोनीकेँ आततायी कहै छथि। कहै छथि जे एंथोनी मरैत रहत आ रॉबर्ट्सक हाथ उठेलासँ जे ओकर जान बचि जेतै तँ रॉबर्ट्स अपन कंगुरिया आँगुरो नै उठाओत।

श्रमिक मीटिंगमे रॉबर्ट्सक समर्थक इवान्स आ जॉन बलगिनमे झगड़ा भऽ जाइत छै। हेनरी थॉमस आगू अबैए आ कहैए – “लाज होइए तोहर’ स्ट्राइफ’ पर” ।

बेरू पहरक मीटिंगमे ओ श्रीमती रॉबर्ट्सक मुत्युक सूचना दैत अपन सदस्यतासँ इस्तीफा देबाक गप करैत अछि।

मुदा एंथोनी कहैए- युद्ध तँ युद्ध होइ छै।

रॉबर्ट्स बोर्ड मीटिंगमे कनेक देरीसँ अबैए, ओकरा पता लगै छै जे ओकर श्रमिक सभ ओकरा हटा देलकै। आ एंथोनीकेँ सेहो निदेशक सभ हटा देलकै।

हारनेसक नेतृत्वमे समझौताक गप आगाँ बढ़ैत छै। हेनरी टेक, कंपनीक सचिव संतुष्ट छथि।

५८. नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”

सारांश
गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत। पद्य छन्दबद्ध होअए वा छन्द-लय विहीन, जे ओहिमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत।

बीजशब्द: नचिकेताक · मध्यमपुरुष · एकवचन · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “नचिकेताक “मध्यमपुरुष एकवचन”” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे नचिकेताक; मध्यमपुरुष; एकवचन; हमर; कविता प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत। पद्य छन्दबद्ध होअए वा छन्द-लय विहीन, जे ओहिमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत। सीलिंगसँ जमीन बचेबा लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग लोक द्वारा होइत अछि। मुदा सीलिंगमे पड़ल साहित्यक लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग, छंदबद्धता-लयबद्धताक आग्रह वा अनाग्रह गोलौसीक विस्तार मात्र अछि। आ एहि मध्य नचिकेताक तैंतीस टा कविताक संकलन अछि मध्यमपुरुष एकवचन। एहिमे कवि जखन विरोध समुद्रसँ मे तोहर आ हमर बीचमे जे समुद्र अछि, जकर तटपर, ओकर परिणामपर क्यो कानि रहल अछि, बीचमे माछ आ चीलक झुण्ड आ एहि मध्य ज्वार सभक टीककेँ धेने छथि वरुणदेव, सोचैत जे प्रेमकेँ जीतए देताह आकि समुद्रकेँ, कहै छथि आ फेर वरुणदेवक ज्वारक टीककेँ धरब, चित्र सोझाँ अबैत अछि। ऋतु-विशेष पृथ्वीपर- मे प्रेमक ऋतु विशेष, जकर प्रारम्भेमे बरखा मासक बुन्न सुखाए लगैत अछि। शब्द लेल जाल लेने आ शब्द करैत अछि आत्मसमर्पण कविताक संन्यासमे। आ फेर घुरैत नदी कछेर- भोरुका मंत्रक उच्चारण लेल जे जलकेँ बनबैत अछि अकास। बंजर देशक बरसातिक देव जे अकासोकेँ कना सकै छै बेहिसाब। भूतक नाचब लाठी बजारि-बजारि आ तरुण राजकुमारक देखब साम्यवादक स्वप्न-फुक्का उड़ाय अकासमे। शब्दसँ समझौता आ सभ आहक डूमब शब्दक चीत्कारमे। फेर आह्वान अकाससँ, कानू भोकारि पारि, जाहि वज्रपातक शब्दसँ विश्वास हएत जे साओन अएल अछि पृथ्वीपर। आ आकांक्षा, छूबि कपारक टपकैत बुन्नक सङे आ अपन लिखल पाँति पढ़बाक। पछिला बेरक हुनकर अपूर्ण कएल कार्य। आ यैह छी ऋतुविशेष- मोन पाड़ब हुनका। तों- मे वाक्यक हकमैत पैसब, धीपल हाथक धरब, धधकल आगि हमर, एहिमे हम तोँ, कल्पतरुक डारि, बाकी सभ छुच्छ आ बुढ़िया नानीक कोनो खिस्सा। आ दशोदिशा पकैत ताहिमे- भ्रान्ति-पथ (भ्रमित!) । नौ मासक गर्वक, गर्भक दीर्घप्रहर। पाँचम ऋतु (!) छठम रिपु(!)- राग सेहो विलम्बित, द्रुत ताल (त्रस्त) आ भानु अस्तमित। रातुक आ दिनक कथा- मे सूतल दुनियाँ केँ छोड़ि बुद्ध बहार होइत छथि घरसँ मुदा कविक प्रयाण कविताक भीतर- कानूनी अनुबन्धक अन्तर्गत बान्हल विवाह- विधि- प्रसव वेदनाक बाहर। कविताक भीतर छंदहीन, वर्णहीन भाँगल ग्रंथि, उघरल सिलाइ, सूचीकर्म, मर्ममे झरैत बिन्दु आ एकटा मैल मोटिया तौनी जकाँ करैत अछि झँपबाक प्रयत्न हमर शरीरकेँ (भीतरसँ उगैत अस्थिरता) अव्यवहृत आ जखन भूख, व्यथा-विच्छेदक कथा। ठाढ़ होइत देखबा लेल यौनता परसैत जएत जखन, बनि सघन छत्तीसो व्यंजन तोहर भानसमे। मुदा हमर सक- मात्र कवितेक भीतरक संधान, द्वयर्थबोध पूर्ण अछि जे, सूक्ष्म तर्क तकर, ताल-लयसँ गलल। प्राकृत-यकृतमे ठूसल, महायोनि-लिंगबोध लदने जाहि शरीरपर। यैह टा सीखल उपाय- तोहर सपना देखैत रहब अनुखन। आ दुनियाँक जगलापर सूतब तोहर संग- हमर हे कविता कालरात्रि करबेटा करत, दूर करह व्यथा-विच्छेद, भूख-भय। एखने झलकि उठल उखा-किरण तेँ, आकांक्षाक आशा सन। चक्रान्त- मे अकासमे हेलैत अक्षरक मिजाज-तिक्त लहराबैत आगिक प्रवाह, ओकरा बुझाओत कविक दोख नहि। दुनियाँक चक्रक अन्त। मात्राक हुनका लग अएबाक कोनो आस-! ने हुनक कविता सजि सकती शब्द बनि बरसबाक लेल पहिनहि जेकाँ। दमयंतीकेँ उपदेश- मे तीर लग लोकक पथरल (!) पड़ल रहब। - बिना अंगक- अशक्त लोक। घास पात तकरा सभकेँ धेने आ सेमारमे सन्हिआयल-ओझरायल तक्षक। बसातमे डोलब आ झोंझमे झोंकाह आगिक सुनगब। दमयन्ती, दमयन्ती -सुन्न बोन। फूल-पातक बीचमे टुअर सुरुज(!), टुघड़ैत आ सावधानीसँ चिरैत हिरण्यक पेट, तैंतीस टा मूह, कुरुप, गाछ सभक एम्हर जाऊक उपदेश। दमयन्ती, जंगलपार नहि होऊ। अन्हारमे ईशान दिशामे देहक दलाल प्रतीक्षारत। दमयन्ती, समय। नैऋत कोणमे नुकएल नलदेव। गाछ-बिरीछक जानब-कविताक आगमन कोना

होइत अछि। जानलक इतिहास, मनुक्खक निष्ठुरता। कोना महावन निर्विचार, उजार, उच्छन्न भेल। पोसुआ (!) गाछ बिसरल भाषा। दमयन्तीकेँ चेतौनी-मनुष्यपर विश्वास नहि करू, कथा-कविता-अफवाहसँ बान्हत ओ। नहि पार करू बोन। आ से भेने सभ टा गाछ लिखत दमयन्तीकेँ लऽ कऽ पहिल कविता। प्रश्नावली- मे अचल अन्तिम राति यैह? गीतक अंतिम पाँति यैह? आ हमर कविता पढ़ि सकै छी? हमर अंतिम दिवस यैह? किछु करबाक आब विवशता (!) तन भ्रमित, कोन दरिद्र (तत्क्षण अनुभूति) की? सूति सहल रहल की? हमर आखरक भवितव्य? अशान्त भ्रमर मनक विहंगम, अजर प्रेमक धार सन। भीतर उगैत शब्द- मे शब्दक ध्वनि तेहन सन जेना गुफामे बैसि केओ कानि रहल। पहाड़क शिखरक ठहाका। दबले पएर अएबाक आहटि, लिफाफ खोलबाक अबाज। पत्रक सभटा पाँतिसँ खदबद करैत शब्द। आ बहिनक बहैत नोर देरीसँ बूझब। वाक्यक भसियायब, शेष आकि समास नहि बनब, मोशकिलसँ बूझब टूटल रीढ़क हड्डीक मर्मर मुदा कठुआएल कविकेँ घिसिअबैत कंठ पकड़ि। कवितामे मुदा सुनल-गमल-बुझल वस्तुक आभाष बनि अएब। अपनहि भीतरसँ बहरएल मुदा एहि शब्द सभकेँ परिवर्तन करबाक अधिकार कविकेँ सेहो नहि। मात्र चुम्बन प्रेमक मैथुनक अधिकार। मुदा मन्थन ग्रन्थनक आ नहि कोनो घृणा क्रोधक अधिकार। आ तकरा सजा सकैत छी फूल-पातसँ, वेणी गूहि सकै छी रातुक पहर। सेउंथ चमका सकै छी पहिल सुरुजक लालीसँ, गराक सिङरहार, उष्म वृक्षक वल्कल शब्द शरीरपर घटित भेल तथ्यक सन्मान।–ई कविता कवि इलारानी सिंहकेँ कवि द्वारा समर्पित छन्हि। जानल-पहिचानल- मे शरीरकेँ पन्नाक-पन्ना पढ़ब आ जीवनक लागब जानल पहिचानल। तह आ गह्वरक गीत आ कवि द्वारीए कहब - हुनकर विश्वास हमर शब्दपर सँ हटब। आ मात्र स्पर्शक भाषा- एकटा ग्रामीण अनुभूति व्युत्पत्ति नहि दऽ सकैत अछि केओ, तकरा जीबै छी। समार्थपद- सपनाक नहि बाजब, बजैत तँ अहाँक सभटा नाम सुनबैत, कविक अनुमान। शब्द-ने धातुमे दुर्बलता ने उपसर्ग-प्रत्ययक अभाव। नहि तँ उचरि सकैत प्रतिशब्द (चलि गेल छथि अश्वखुरक संगे अश्रव्य दर्शनक भाषा अछि तकर) । आ ताहि लेल नव अमरकोष, नव कविता लिखए पड़त। अंकुर- चारि टा कविताक बीआक मोनमे उगब आ ताहिमे प्रेमक शब्दक लिखब। आ ओकरा तेहन प्रश्नमे ने ओझरा दियौक जकर उत्तर हमरो बूझल नहि अछि। सुनैत गप्प अपनहि एक्के संग चारि-चारि टा कविकेँ बाँटि देने शब्द सम्पदा। आ तैयो एहि चारूकेँ मिलाकऽ गाएब आ प्रेमक आंकुरक उगब। कत्ते बरसक बाद- मे ठाढ़ अहाँ सबहक अंगनापर एकटा कविता पढ़ऽ देब, नेनपनेमे भगा देने छलहुँ, छंदभंगक जुर्माना (!) छल। आ ताहिमे आन चीजक संग रहथि दुखी दाइ, छठिक नहि कोनो जोगार, सालक मात्र चारिटा मासक अन्न-भुटकल अनोन अल्हुआ त्राता। हमरा एगो कविता पढ़ऽ देब। किऐ नहि लिखै छी? - पूर्ण विराम। नहि आब एको पाँति अहाँक नाम। कथी ले ई जिद्द जे लिखबे करी प्रेम पत्र, अनकर बनायल अक्षरमे। चढ़ा कऽ रंग, अर्थ, वस्त्र, व्याकुलता। सुखाइत ठोर, तरबापर खेलाइत आंगुरक भाषा, अद्भुत अन्तर्देशी शब्द सभ आ तकर विन्यास। तखन पत्र नहि लिखबाक नहि देब उपराग। राजहंस- कविताक राजहंस, शरीरसँ अहाँक दूर चलि लैक दू डेग। उल्कापात आदिक द्वारे अवकास नहि भेटल अछि ओकरा। आ शरीरो तोहर बेबहार नहि भेल छौक। ओकरा कहबै एक बेर उड़बा लेल तोरा संग। जाधरि सहि सकत तोहर ओजन। नोरक बुन्न कविक उपमा नुकायल जे आँचर तर तरबापर कहबै राजहंसकेँ राखि दै जिज्ञासा युवती जे बनि गेलै। अन्हेर- चिड़ै कहलकन्हि, नहि बाजू किछुओ गोपनीय, नहि तँ अन्हेर भऽ जएत। काल्हि रातुक पहर कविता आयल छली आ हेरा गेली गद्यक भीड़मे। आ गोपनीय इतिहास पाप प्रणयसँ परिणय धरिक दूरी आ एहने सन। किऐक घबड़ाइत छी। क्यो नहि पूछत अहाँक नाम। नहि पूछत, चिड़ै बता की जनै छलैँ कवि दऽ जकर कबर एखनहि खोधल गेल अछि। एक अहीं छी- कएक बेर अहाँकेँ बजा कऽ देखने छी कवितामे। मुदा घुरियो कऽ नहि देखै छी अहाँ। मामूली प्रेमक दस्तावेज नहि जाहिमे लाभ-हानिक हिसाब रहत लिखल। ने साधारण निमंत्रण ने मामूली लोकक भोज्य वस्तु। अहाँकेँ कवितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनमुन उचरि सकै छल। एहन नहि जकरापर सनसनाइत कथा बनि सकत। मुदा अहाँ किछु बजिते ने छी। पुरातन प्रेम- माँगि रहल गीतक दाम। करैत प्रश्न-उत्तर (मुदा प्रकृतिक पाठशालामे कत्तऽ तकर गुंजाइश?) सीमित पुरातन प्रेम, पाठ्यपुस्तकसँ इतिहासक पाठ धरि। पुछैए प्रश्न-पुरनका शब्दक वाक्यमे प्रयोग। सभटा वाक्य सत्य अछि वा फूसि। भावार्थ कहू...। मुदा आब हम भेलहुँ चलाक।..पढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक व्यथा। नापि सकै छी शुद्ध धैवत् क पातिव्रत्य। हमर शोणित चीन्हि गेल अछि जीवन-गणितक बर्बरताकेँ ठीके। कम बजै छी, बजबो करै छी तँ भूतकाल दऽ नहि अनाहत-अनागत प्रेतकाल दिस। अकथित-अनूदित अनुभूति दिस बढ़ैत दर्शन हमर। मलिछाह कऽ देलक, केतारी खेतक अढ़, भुतिआएल माल-जाल आ पुरनका प्रेम। चाह- जे हमरा किछु चाही, आ हमरा चाहबे की करी। अहाँ अनन्त, विशेषणसँ हटिकऽ, हमर मोनक गप पूर करब तत्क्षण। आ जे हम चाहब तावत् प्रत्यय एहि प्रपंचक, हमर जिनगी सुप्तिङन्तम्, आ बान्हल पदबन्ध, घटल निघण्टु। दऽ सकै छी ह्रस्व, अति ह्रस्व, ओंकार ऋचा आकार। हमर छोट मोट आकांक्षा, भाषा भावना वेदना अनियमित, इमन-कल्याणक गमक नियंत्रित। हमर पतिक लेल-१- अहाँक घरक चारमे भेल भूर, कठोर सर्द वायु सेरा देलक माड़ आ अकासी नोर हमर अल्हुआकेँ झोरा देलक। भीजल ओछैन, अहाँ निस्बद्ध, ई भूर करत खतम अहाँकेँ। आ ताहि विनाशक गीतो तँ लिखू अपन हाथेँ। हमर पतिक लेल-२- ओ कहै छथि हमर स्थान हुनकर माथपर, मुदा नहि रहब हतकेशी शिखा संग। हृदयमे, नहि रहबाक श्वासयंत्र संगे। आँखिमे, नहि रहबाक चश्माक तरक नोरक संग। ठोढ़पर, नहि बनबाक

पूजाक जप मोती। जीहपर (भानसक स्वाद द्वारे!), हँ ठीके, मुदा एहिसँ बहार होएबाक गर। पएरक जुत्ता तर, पृथ्वीपर, राजनीति बुझै छी। कोना जुत्ता पएर तरसँ चढ़ि अबै छै माथपर। से जहिया बुझि जएब तँ भेटि जएत प्रतिवादक पहिल सबक। हमर पतिक लेल-३- नहि पुछू व्याकरणक, लिपिक मार्दैं। एहि कविताक! की करू आगिमे फेकि दी हम, नहि कहू ई सभ। निरक्षर छी तेँ की। जादू-छड़ी छी घुमा सकैत। हमरापर जे कियो लिखत कविता आ हमर चित्तपर व्याकरण तँ कोन आश्चर्य? नहि कहब एकरा छद्माडंबर! हिसाब- पाँच टा शब्द हिरिया दै छै झौलीकेँ भोरमे बाउग करऽ जाइत काल। अनोन अल्हुआ संग खाइत एकटा गेल, आध टा खर्च भेल जखन भुसहु बाबू बरखामे पीपरतर देह बचबैत ओकरा तीन लात दैत छथि। बचल डेढ़, आ डेढ़ टा बान्हल अछि राखल चमरटोलीमे चुहड़ाक ठेकापर उधारक माल पीबाक काल। आ शेष शब्द (सात गुना चौदह गो शब्द!) ओ राखैए हाटमे वस्तुजात किनबाक लेल। साँझ धरि बचलै नहि एकोटा शब्द हिरियाक करेजपर रखबा लेल आ तखन बिनु शब्दक हिरिया कोना खोलत करेज, रहि जाइत अछि ठाढ़ ओस तर, भरि राति, अङनेमे। आत्मकथन- अहाँकेँ अपन मोनक विषयमे किछु बताबी, कपालकुंडल। मुदा हड़ताली बोनिहार जन-नेताक लेल ठाढ़ कएल गेलि गितहारि..। मदारी पढ़ैत हमरे कविता आ हम फराक डाँड़मे रस्सी पहिरने। तखन कविताक अतिरिक्त किछु गप करी। मुदा ने कोनो रस, ने शब्द, ने प्रहार कोनो बचल। ने हमर कोनो एहन नामे, बड्ड गद्यमय जीवन! चलू गद्यक चहरदेबारीक बाहरक किछु प्रश्न- कोन पुरुषक वचनमे ओझराएल, काल-कारकमे ओझरल अरण्यमे। अव्ययक विनाश, विशेषणक उघारब परिधेय आ विशेष्यक सिंहासनसँ उतारब। उपसर्ग देखि मनक भाव बुझबाक सामर्थ्य बला अछि कियो? बान्हल पौरुषक जटाजालमे पाणिनी अहाँक पाणि। आ करताह चित्कार महेश्वर सूत्रमे जे हम अहाँसँ किछु बाजी। आ पतंजलि आ हेमचन्द्र द्वारा कविकेँ दबारब बुझाएब मध्यमपुरुष एकवचन। त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि। कपालकुंडले, मनसिसँ जतएसँ सभ निअम/ वर्ग/ लक्ष्य विहीन आ अहाँ मध्यमे मात्र एकवचन। अहीं सँ प्रेम, घृणा अहीं सँ- अहीं सँ प्रेम, घृणा (अहीं) सँ- अन्तिम सत्यक दिन, दिअ फाँसी तखन नहि सुनि सकब हमरा। हमरा गीरि लेब ताहिसँ पहिने फेकि देब अहाँकेँ। दीप सभ अहाँ लगसँ हटा देने छी। प्रेम करै छी, मुदा घृणा आर बेशी। आँखि, हाथ, दुनु ठोरक अन्त कएल। मुद तैयो अहाँक हँसी अनृत शब्द बनेलक बरफ हमर दर्शनकेँ, आ फेरसँ नस-नस चलब हुनकर। कनी टा जगह छोड़ि दियह- एहि कोनमे छोड़ि दिअ, आखरक ढेरक नीचाँ हमर अभिलाषा। हमरे लिखने छलियै, अहींकेँ लऽ कऽ करऽ लेल कविता! जगह चाही, कारण तीनटा पएर कविक, एककेँ पशुतासँ मढ़ने छी, दोसरकाक नोकमे अछि रोशनाइ सुखाएल आ तेसर नकली हृदय। जे चाही हमरे सन कवि तँ कनेक जगह छोड़ि दिअ। भय-१- अथर्व कवि। पोथी ने चोरि भऽ जाए। तखन भरिसक कविता तँ दोसराक नामे रहि जाए मुदा कवि छूटि जएत इतिहाससँ। हमरा पोसबा लेल सेहो खरचा, हमर चिता सजेबा लेल सेहो तरद्दुत (गहन मंत्रसँ सजौलहुँ), हमर कविता कुपितापर लिखए पड़ल हैत कत्ते टा इतिहास! भय-२- आबि गेल चलक ऐब, आब ककरहुँसँ डर नहि। कारण बुझल भऽ गेल हेलबाक आ अधमतम होएबाक कला! अश्रव्य शब्दसँ शशक उलूकक जागब आ अस्पृश्य बालाक स्पर्शसँ भूखक जागब? आ बुझि गेल छी विनष्ट होएबाक कला! आब अदन्त नहि रहलहुँ- दाँतक जोड़ा आबि गेल अछि! कठिन शब्द, शीतल स्तन, बृहत् वाक्य, कोमल रचना, विभीषण भाष्य आ बिखरल पाठ, अर्थ अनर्थक भावेँ विह्वल। नामकरण- चानकेँ चन्द्रमा, तरेगणकेँ निहारिका नाम दए रातुक अर्थे बदलि गेल! इजोतकेँ प्रत्युष आ सुरुजकेँ मार्तण्ड्य कहबासँ आँखिक चोन्हिआयब। जंगलकेँ उपवन आ घास-फूसकेँ दूर्वाक्षत कहने आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपनहि। अथक खटनीकेँ निरलस प्रयास आ बेजोड़ शब्दक जोड़ीकेँ समास कहने टूटल भाङल करेज सेराय गेल! जीवन मात्र जीवितक, आ मात्र हमर अहाँक जे केओ रूप बदलि कऽ जी रहल छी, प्रतिपदा-प्रतिपदाक बदलैत राशिफल आ गणितक भरोसे। नाम हमर दुष्यन्त आ अहाँक शकुन्तला भेने कण्व आ मृगशिशुक फिकिर लागल रहत। आजुक कवि, बड़ उच्छृंखल कवि- आन्हल बान्हल, छंद निश्छंदक डोरीमे, फंसल फँसल, घायल आ घसल, अलंकारक व्यंजनमे रहू दहू, पकैत ढकैत, जुनि टपू पहाड़ दहाड़। धैवत रहू गबैत। कवि। अपन पंक्ति भऽ, जाइक पार! कवियारक ड्योढ़ीमे। आबि रहल छथि कविः कवी कवयः- धुन आधुनिक। कविता कैँ जे करता छंदित बंधित आ वंदित सोचक आलोचक। रहए देता कविताकेँ आधा कविता अर्द्ध-अकविता, अर्द्धनारीश्वर अर्ध-पुरुषपर। बड़ उच्छृंखल ई आजुक कविवर हतनारीश्वर! अहाँ नहि बजलहुँ किछु- नहि बजलहुँ आइ धरि, दबा कऽ रखने छी शब्द-संपदा जमीन तर। मुदा जमीनक तर तँ गाड़ल जाइछ मुर्दा। मुदा हम तँ धर्मोन्माद हिन्दू प्रेमी छी, मरियो कऽ जमीन तर नहि जएब, जरब झरकब आ आगिमे भणब अपन गीत। नह केश हैत विलीन, कोन अनुशासन शास्त्र सिखेने अछि अनुभूतिपर लगाम लगायब- देह रहू झँपने अहंकार अलंकार तर, लगा दियौ ताला गरापर जे कोनो ध्वनि नहि बजा जाइक। मुदा हम सूर्यवंशी राजपूत, हमर अस्त्र अछि शब्द अर्थ स्वर लिपि। तर्कमे हारि जँ जाइ तँ करब आत्मसमर्पण! मुदा हारी वा जीती, बाजब अवश्ये। आलोकक यंत्र बेकल पड़ल, लाल-हरियर-पीयरक संकेत मूक। मोनमे हुलकी दऽ देखि रहल छी अहाँक योजना, वस्त्र-अस्त्र हरबाक, अर्द्धसत्यसँ अनृत बजएबाक, पाँतिमे बैसि अमृत चोरएबाक; द्योतक दावमे चढ़ल जिनगी शव शब्द! मुदा एखनो भरोस जे अहाँ बाजब किछु नहि तँ गाबिये उठब हमरे कोनो गीत। अपन कविता सुनाउ! - अहाँ अपन पुरातन प्रेमी माने हमरा लऽ गेलहुँ ओहि नवका मकानमे पहाड़क शिखरपर! अहाँक बाट पूछब मेघसँ ओहि ठामक, आ ओकर वंकिम मुस्कान, अहाँ सङे हमरा देखि! मुदा ने मेघक, ने

तरेगणक, ने राशि-लग्न-अकासी ज्यामिति आ ने भाग्यक गणितक संक्रमणक कोनो गलती, जे सभ मिलि कएने रहए विच्छेदक संक्रमण! अंतिम मिलन जे भेल छल चानक गह्वरमे। ने पाथरक दोष आ ने अन्हारक भूगोलक। सूर्य आ पृथ्वीक संकेत, तरेगणक हस्ताक्षर विच्छेदक भएकेँ मिलि कऽ कएलक चक्रान्त। जाहिसँ हम सभ नहि बाजि सकी कोनो स्मरणीय पाँति-शब्द सभ! -दुनू गोटे। गरा दबबैत निःशब्दता। मुदा दोष ने निःशब्दताक आ ने देबारपर लिखल शिलालेखक, जकर विजातीय अक्षर सभ हम पढ़ऽ सिखनहि नहि छलहुँ। गह्वर भरि गेल अहाँक कवितासँ, ऊपर उठैत कविताक पाँती सभ जकर शिखरपर चढ़बाक असफल प्रयास। ओहि पाँती सभकेँ दोषै नहि छी। विश्वासघातपर अहीं टाक अधिकार नहि। आब सीखि गेल छी अहींक भाषा, कामनासँ धधकैत पहाड़पर चढ़बा लेल, पढ़ै लेल सभटा पाँति, कविता आ शिलालेख! हम सीखि गेल छी अहाँक हस्ताक्षर पढ़ब। मुदा एहि शिलालेखपर अहाँ देखा रहल छी पजेबा, काठ, बालु आ सीमेंटक राशि, दरबज्जा, कब्जा आ फर्श सभ! मुदा हम सुनऽ चाहै छी कैक टा कविता, अहाँसँ अहाँक भाषामे, जे एखन हमरहु भाषा अछि। जीवनी- छावनीक द्रोह, तांतिया टोपे, विक्टोरिया, सरकारी कवि रवीन्द्रनाथक जन्म आ विधवा विवाहक चर्च? रंगमंचक पहिल पृष्ठ, हेराशिम लेबेडफपर एकटा पूरा पन्ना कीड़ा चाटि लेलक? मुदा आजुक रंगमंचक पुरोधाक लेल जे ओ पृष्ठ नहियो भेटै तँ हर्ज नहि। ओकर दोसर दिसुका पृष्ठपर माइकल मधुसूदनपर एकटा लेख आ आधुनिक कविताक श्रीगणेशपर सेहो, मुदा १९९० ई. क बादक अनपढ़ कवि कोना जनबै गऽ! आ तैँ ने पटि जाइ छी हमरा सन बहुरुपियासँ। आ १९५१ ई. एहि शताब्दीक सरकारी कविक जन्म, नेनपनक दलिद्दर दशा, अवहेलना शिशुकालक, विवेकानन्दक फूसि-कथा आ स्तोकवाणी? हमर कथासँ पहिने गिरीश घोष, सर आशुतोष आ नेताजीक पलायन आ महात्माक कारावास अएबाक चाही? फूसि। कारण इतिहास शुरू होइछ गोडसेक आविर्भाव आ हमर जन्मक बादे? आ तखन टूटल भाङल भूगोल, हड़पक गणित आ शास्त्रीय वर्णभेद, “वेदणाक” मूर्धा। ह्विजय ठीक करू? –अहाँ हमर सरकारी जीवनीकार! अहाँक लेल अध्यायक अध्याय प्रारम्भ होएबाक चाही १९५१ ई. सँ। हमर विमाता कुल पितामही। मनगढ़ंत कथा, दादी-माँ दऽ, जे भऽ जाइ छली सोनबरसाक राजकन्या। कोना कविता अएलीह आ हमर जीवनमे आयलि रमणीक मार्देँ? त्यागि रहल छी, ताकू आने ककरहु। अजन्मा वा अज्ञात् अनामा क्यो कवि। तावत् कविते हमर ध्यान रखती, बतओतीह जीवन-कथा हमर! मध्यमपुरुष एकवचन- अहाँकेँ छोड़ि अनके दऽ सोची -एहन आदेश! मुदा गाछ-बृच्छ, फूल पाथरक वंचकता, विश्वासघाती व्याकरण धरि जाल पसारने! मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी! राजनीति, देशक ऋणक पहाड़, भ्रष्ट नियुक्ति.. मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा..लिखू नव्यन्याय-अन्याय, लिखू वैशेषिकक ढेरी, बिसरू धन-व्याकरण, मध्यमपुरुष एकवचन अहीं तँ छी मुदा..बेकार शृंगार रस तत्त्व ध्वनिक, मात्र क्षणिक। आयु लऽ जटायु धरि, बचबै लेल अनकर सीता, गीता। चलति चलतः चलंती कविता ऋता वाग्धारा सन व्याकरण मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा... कोना किछु सोचि सकै छी अहाँकेँ छोड़ि?

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयास, सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नहि पढ़ैत अछि आ जाहि भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, ताहि भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ एहि भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यैह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा एहि सभ लेल गद्यक प्रयोग किएक नहि? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक कवितामे रूपान्तरण कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल एहि तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नहि उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नहि बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नहि मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नहि सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरसँ नीचाँसँ विलुप्त देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नहि मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे घोसियाबए चाहै छथि,

देशज दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नहि आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

...

टप-टप चुबैत खूनक बून सँ
धरती भऽ रहल स्नात
पूछि रहल अछि चिड़ै
अपना मन सँ ई बात
आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति
कि नहि बाँचत हमर जाति...?

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओहि चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै एहि कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही एहि सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नहि चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नहि चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कए, असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नहि तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नहि तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नहि तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि! मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नहि भेने साहित्य एकभगाह भऽ जएत, ओलड़ि जएत, फ्रेम लगा कऽ टँगबा जोगड़ भऽ जएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नहि आबए ताहि लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि। आ ओतए त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि-नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन-अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, मयि सँ फराक रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

५९. नाट्य-नवग्रह

सारांश
कमलाक भगता·दानवीर दधीची·अपाला आत्रेयी·भऽ जाएब छू·जलोदीप सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) | ISSN 2229-547X १. कमलाक भगता: निशान, परम्परा आअन्धानुकरणक हास्य-शल्यक्रिया

बीजशब्द: नाट्य · नवग्रह · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय "गजेन्द्र ठाकुर- नाट्य-नवग्रह" विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। प्रस्तुत पोथीमे गजेन्द्र ठाकुरक नअ टा मैथिली नाटकक समीक्षा एकत्र कएल गेल अछि — कमलाक भगता, दानवीर दधीची, अपाला आत्रेयी, भऽ जाएब छू, जलोदीप, संकर्षण, गंगा ब्रिज, मचण्ड आ उल्कामुख। पहिल पाँचटा रचना बाल-नाटकक कोटिमे अबैत अछि आ शेष चारिटा प्रौढ़ दर्शक लेल लिखल गेल अछि। मुदा ई विभाजन प्रशासनिक मात्र अछि; नअटा नाटक मिलि कऽ एकटा अखण्ड रंग-चिन्तन प्रस्तुत करैत अछि, जकर एक छोरपर कमलाक भगताक सूत्रधारक सोझ सीख अछि — पूछू, बुझू, फेर करू — आ दोसर छोरपर उल्कामुखक आचार्य सिंहक गूढ़ सूत्र — अपूर्ण पाठक विस्मरण नै भऽ सकैए, विस्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ।

नअ मैथिली नाटकक अन्तर्सम्बन्धित समीक्षा

कमलाक भगता·दानवीर दधीची·अपाला आत्रेयी·भऽ जाएब छू·जलोदीप

संकर्षण·गंगाब्रिज·मचण्ड·उल्कामुख

नाटककार

गजेन्द्र ठाकुर

सम्पादक, विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका (since 2000) | ISSN 2229-547X

विषय-सूची

भूमिका: नअ नाटक, एकटा रंग-चिन्तन

१. कमलाक भगता: निशान, परम्परा आअन्धानुकरणक हास्य-शल्यक्रिया

२. दानवीर दधीची: हड्डीक दन्तकथासँ ज्ञान-दान धरि

३. अपाला आत्रेयी: देहक दाग, दृष्टिक रोग आ ऋचाक जन्म

४. भऽ जाएब छू: मैथिलीक पहिल जलवायु-चेतना चौबटिया नाटकक पाठ

५. जलोदीप: बाढ़ि, बच्चा आ पानिक बाटक नाट्यशास्त्र

६. संकर्षण: चोटकेँ सत्कार कहबाक रोग आ आत्मबोधक जुत्ता

७. गंगा ब्रिज: विकासक बलिवेदीपर इतिहासक ठक-ठुक

८. मचण्ड: भाषा, न्याय आ आतंकक त्रिकोणमे मनुक्ख

९. उल्कामुख: स्मृति-विस्मृतिक महासंग्राम — नाट्य-शृंखलाक शिखर

उपसंहार: नअ नाटक, एक नाट्य-दर्शन

भूमिका: नअ नाटक, एकटा रंग-चिन्तन

प्रस्तुत पोथीमे गजेन्द्र ठाकुरक नअ टा मैथिली नाटकक समीक्षा एकत्र कएल गेल अछि—कमलाक भगता, दानवीर दधीची, अपाला आत्रेयी, भऽ जाएब छू, जलोदीप, संकर्षण, गंगाब्रिज, मचण्डआउल्कामुख। पहिल पाँचटा रचना बाल-नाटक क कोटिमे अबैत अछि आ शेष चारिटा प्रौढ़ दर्शक लेल लिखल गेल अछि। मुदा ई विभाजन प्रशासनिक मात्र अछि; नअ टा नाटक मिलिकऽ एकटा अखण्ड रंग-

चिन्तन प्रस्तुत करैत अछि, जकर एक छोर पर कमलाक भगता क सूत्रधार क सोझ सीख अछि—पूछू, बुझू, फेरकरू— आ दोसर छोरपर उल्कामुख क आचार्य सिंह क गूढ़ सूत्र—अपूर्ण पाठ कवि स्मरण नै भऽ सकैए, वि स्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ। एक बाल-दर्शककेँ प्रश्न करब सिखबैत अछि, दोसर प्रौढ़ दर्शक केँ स्मरण क राजनीति बुझबैत अछि; दुनूक बीच सात टा सीढ़ी अछि आ प्रत्येक सीढ़ी अपना सँ पहिलुका आब दु का सीढ़ी केँ अ र घ बैत अछि।

एहि पोथीक पद्धति द्विस्तरीय अछि। पहिल स्तरपर प्रत्येक नाटकक स्वतंत्र समीक्षा अछि—कथा-संरचना, मंच-विधान, रस-योजना आ वैचारिक अन्तर्वस्तु क विवेचन। दोसर स्तरपर प्रत्येक समीक्षा शेष आठ नाटक सँ अपन सम्बन्ध-सूत्र जोड़ैत अछि, जकरा जूलिया क्रिस्तेवा अन्तर्पाठीयता कहैत छथि—कोनो पाठ असगर नहि जनमैत अछि, ओ आन पाठ सभक उद्धरण, प्रतिध्वनि आ रूपान्तरणक ताना-बाना सँ बुनल जाइत अछि। ई नअ नाटक एक्के नाटककारक कलमसँ निकलल अछि, तेँ एतऽ अन्तर्पाठीयता आकस्मिक नहि, सायास अछि: दधीची आ जलोदीप दुनूक अन्तमे एक्के फुसफुसाहटि सुनाइ दैत अछि— ई असल बात अछि; भऽ जाएब छू क किशोर बुच्चीक नाम अपाला अछि, जे अपाला आत्रेयी क नायिका क स्मरण करबैत अछि; संकर्षण आ उल्कामुख दुनू अंक क बदला कल्लोल मे बँटल अछि; गंगाब्रिज क डंका आ उल्कामुख क लोक गीत दुनू लिखित इतिहासक समानान्तर लोक-स्मृतिक वाहक अछि। ई सभ सूत्र पकड़ला पर नअ नाटक नअ टा फराक पोथी नहि, एकटा नाट्य-नवग्रह बुझाइत अछि।

सैद्धान्तिक उपकरणक चुनाव विषयानुसार कएल गेल अछि। भारतीय पक्षमे भरतक नाट्यशास्त्रक रस-व्यवस्था, नाट्यधर्मी-लोकधर्मीभेद, सूत्रधार-परम्परा आ रंगमंच क अंग-विभाजन; अभिनवगुप्तक साधारणीकरण; आनन्दवर्धनक ध्वनि; कुन्तकक वक्रोक्ति; क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार; आ मैथिलीक अपन कीर्तनियाँ तथा लोकगाथा-परम्पराक कसौटी प्रयुक्त भेल अछि। पाश्चात्य पक्षमे अरस्तूक काव्यशास्त्र, बर्गसाँक हास्य-विवेचन, ब्रे ष्ट क महाकाव्यात्मक रंगमंच आ शिक्षा-नाटक, पि स्काटरक दस्तावेजी रंगमंच, बादल सरकारक तेसर रंगमंच, स फ द रहा श मी क नुक्कड़-परम्परा, आ गु स्तो बो आ ल क दमित लोकक रंगमंच, टी. आइ. ई. (थिएटरइनएजुकेशन) आन्दोलन, पीटर स्लेडकबाल-नाट्यसिद्धान्त, ब्रा यन वे आ डोरोथी ही थ कोटक शिक्षा-नाट्यपद्धति, ब्रूनो बेटेलहाइमक लोक कथा-मनोविज्ञान, ले व भाइगोत्स्कीक खेल-सिद्धान्त, अर्विंग गॉ फ मनक कलंक-विमर्श, काफ्का आ पि रा न्दे लोक आधुनिकतावादी दृष्टि, वाल्टर बेन्यामिनक इतिहास-दर्शन आ यान असमान क सांस्कृतिक स्मृति-सिद्धान्त सहायक भेल अछि। कोनो सिद्धान्त नाटक पर बाहरसँ लादल नहि गेल अछि; जतऽ पाठ स्वयं जाहि कसौटी क माँग करैत अछि, ओतहि ओ कसौटी लगाओल गेल अछि।

बाल-नाट्य आ प्रौढ़-नाट्य क सिद्धान्त-भेद पर एकटा गप एतहि स्पष्ट कऽ देब उचित। पीटर स्लेडबाल-नाटककेँ प्रौढ़ रंगमंचक छोट संस्करण नहि, एकटा स्वतंत्र कला-रूपमानैत छथि, जकर प्राण अछि खेल, सहभागिता आ वृत्ताकार स्थान; डोरोथी ही थ कोट बच्चाकेँ विशेषज्ञक चो गा (मैं ट ल ऑफ द एक्सपर्ट) पहिरा कऽ ज्ञानक भीतरसँ सोच ब सिखबैत छथि। एहि पोथीक पाँचू बाल-नाटक एहि कसौटीपर परखल गेल अछि— ओ सभ बच्चाकेँ उपदेश सुननिहार नहि, प्रश्न पुछनिहार, खेल खेल निहार आ प्रतिज्ञा केनिहार बनबैत अछि। प्रौढ़ नाटक सभमे ठीक उनटा दिशा अछि—ओतऽ दर्शकक सहज विश्वास तोड़ल जाइत अछि, ब्रे ष्ट क भाषामे परिचित केँ अपरिचित बनाओल जाइत अछि, जाहिसँ दर्शक भावुक बहावमे नहि भँ सिया कऽ विचार करथि। एक दिस बच्चाकेँ संसार सँ जोड़बाक कला, दोसर दिस प्रौढ़केँ संसार सँ टोकबाक कला—दुनूक बीच जे सेतु अछि, सएह ई नअ नाटक।

समीक्षाक क्रम एहि पोथीमे पठन-यात्राक क्रम अछि: पहिने पाँचबाल-नाटक—लोककथा (कमलाक भगता), वैदिक आख्यान (दानवीर दधीची, अपाला आत्रेयी), आ समकालीनसंकट (भऽ जाएब छू, जलोदीप); तकर बाद चारि प्रौढ़ नाटक—व्यक्तिक दंभ (संकर्षण), व्यवस्थाक हिंसा (गंगाब्रिज), राज्य आ आतंक क द्वन्द्व (मचण्ड) आ अन्तमे स्मृतिक महा संग्राम (उल्कामुख), जे शेष आठू केँ अपना मे समेटि लैत अछि। पाठक चाहथि तँ कोनो एकटा समीक्षा फराक पढ़ि सकैत छथि, मुदा अन्तर्पाठीय सूत्र सभक असल स्वाद क्रमसँ पढ़लापर भेटत।

१. कमलाक भगता: निशान, परम्परा आअन्धानुकरणक हास्य-शल्यक्रिया

कमलाक भगता एहि नाट्य-शृंखलाक सभसँ छोट रचना अछि आ सम्भवतः सभसँ चोटगर सेहो। उपशीर्षक स्वयं घोषणा करैत अछि —अन्धानुक रण पर एकटा चोटगर हास्य-शिक्षाप्रदबाल-नाटक— आ सूत्रधार आरम्भहिमे कहि दैत छथि जे कथा संस्कृत साहित्य क प्रसिद्ध कथा पर आधारित अछि। कथा-वस्तु सरल अछि: एकटा भिखमंगा बरखक बचाओल पाइक चु कड़ी लऽ कऽ कमला-स्नान करऽ अबैत अछि, जनकपुर जा कऽ कमलाक भगता बनबाक सपना लेने। चोरीक डरे ओ चु कड़ी बालु मे गाड़ि दैत अछि आ चिन्हबाक हेतु ओहि पर पएरसँ बालु चढ़ा कऽ शिवलिंग बना दैत अछि। तकर बाद जे होइत अछि से एहि नाटकक असल नाट्य-घटना अछि:

एक-एक कऽ अबैत स्नाना थीं ओहि शिवलिंगकेँ स्थानीय विधान बुझि अपन-अपन शिवलिंग बनबऽ लगैत छथि, मंच हर-हर महादेवक अनघोल सँ भरि जाइत अछि, आ नहा कऽ घुरल भिखमंगा शिवलिंग क समुद्र मे अपन निशान हेरा दैत अछि। सूत्रधारक निष्कर्ष-वाक्य एहि नाटकक बीज-मंत्र अछि—चिन्ह अपना लेल बनल छल, परम्परा सभ लेल बनि गेल।

भरतक रस-व्यवस्थामे हास्यक स्थायी भाव हास अछि, आ भरत हास क दू भेद करैत छथि—आत्मस्थ, जाहिमे पात्र स्वयं हँसैत अछि, आपरस्थ, जाहिमे पात्रक चेष्टा देखि आन हँसैत अछि। कमलाक भगता क हास्य विशुद्ध परस्थ अछि: मंच पर कियो नहि हँसैत अछि—भिखमंगा गम्भीर अछि, स्नाना थीं सभ श्रद्धा लु छथि—मुदा दर्शक-दीर्घामे हँसीक लहरि उठैत अछि, कारण दर्शक ओ जनैत छथि जे पात्र नहि जनैत अछि। नाट्य-समीक्षाक भाषामे ई विडम्बना जन्य हास्य (ड्रामेटिकआइरनी) अछिआबाल-दर्शक लेल एकर विशेष महत्व अछि: बच्चा एतऽ पात्र सँ बेसी जननिहार स्थितिमे राखल जाइत अछि, जे ओकर आत्मविश्वास बढ़बैत अछि आ सीख केँ उपदेश नहि, अपन खोज बुझबैत अछि। आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक कसौटीपर सूत्रधार क अन्तिम वाक्य उल्लेखनीय अछि—वाच्यार्थ एकटा घाटक घटनाक वर्णन अछि, मुदा व्यंग्यार्थ समस्त कर्मकाण्ड, सामाजिक रीति आ भेँ ड़ि या ध सान संस्कृति पर पसरि जाइत अछि। क्षेमेन्द्रक औचित्य-दृष्टिसँ सेहो रचना खरा अछि: बाल-दर्शकलेलदण्ड-विधान हिंसक नहि अछि—भिखमंगा केँ मारि नहि पड़ैत अछि, ओकर धन मात्र ओकरे बनाओल निशानक भीड़मे हेरा जाइत अछि, माने दण्ड कथाक तर्क सँ उपजैत अछि, बाहरसँ नहि आबैत अछि।

पाश्चात्य कसौटी पर ई रचना ब्रे ष्ट क शिक्षा-नाटक (लेयरश्ट्यूक) कनिकट अछि—एहन नाटक जकर उद्देश्य दर्शककेँ आनन्द क संग एकटा विश्लेषण-क्षमतादेब अछि। अन्तमे सभ पात्र मिलि कऽ दर्शक दिस उन्मुख भऽ जे सामूहिक वाक्य बजैत छथि—पूछू, बुझू, फेरकरू। आँखि मूनि कऽ नकल नहि करू—से ब्रे ष्ट क प्रत्यक्ष सम्बोधन (डाइरेक्टएड्रेस) कतकनीक अछि, जे चारिम देवाल तोड़ि दर्शककेँ निर्णायक बनबैत अछि। ब्रूनो बेटेलहाइम लोक कथाक मनोवैज्ञानिक कार्य ई बतबैत छथि जे ओ बच्चाक भीतरक डर—एतऽ सम्पत्ति हेरेबा क डर—केँ सुरक्षित काल्पनिक ढाँचा मे प्रकट कऽ ओकर निष्पत्ति करैत अछि; भिखमंगाक क्षति बच्चाकेँ डर बैत नहि अछि, सावधान करैत अछि, कारण कथाक अन्तमे समुदाय बालु समेटबाक सामूहिक अभिनय करैत अछि—क्षति क बाद मरो म्मतिक छवि।

अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ कमलाक भगता एहि श्रृंखलाक बीज-नाटक अछि। एकर केन्द्रीय रोग—बिनु कारण बुझने क्रिया दोहराएब—प्रौढ़ रूपमे संकर्षण मे घुरि कऽ अबैत अछि: ओतऽ तीन टा कारी कुकुर बेरा-बेरीमधुर-दोकानपर चोट खाइत अछि आ प्रत्येक अपन चोट केँ सत्कार कहि दोसराकेँ ओही बाटे पठबैत अछि—माने कमलाक भगता क स्नाना थीं-भीड़ ओतऽ तीन पात्र मे घनीभूत भऽ गेल अछि, आ अनुकरण क रोग मे आत्म-प्रवंचनाक नव परत जुड़ि गेल अछि। दोसर दिस जलोदीप आ भऽ जाएब छू एकर प्रतिषेध (एंटीडोट) प्रस्तुत करैत अछि—ओतऽ बच्चा सभ भीड़क विपरीत प्रश्न पुछनिहार अछि; कमलाक भगता जाहि व्याधि क निदान करैत अछि, ओ दुनू नाटक ओकर चिकित्सा-पद्धति सिखबैत अछि। आ उल्कामुख मे यएह रोग अपन सभसँ भयावह रूपमे प्रकट होइत अछि—आचार्य सरभ क रटन्त विद्या, जतऽ बिनु बुझने पाठ यादि कराओल जाइत अछि; शिवलिंग क नकल सँ शास्त्रक नकल धरिक ई यात्रा एहि नाट्य-संसारक एकटा सुसंगत चिन्ता-रेखा अछि।

सीमा क चर्च करी तँ नाटकक संरचना एक्के घटना आ एक्के व्यंग्य पर टिकल अछि, तेँ मंचन मे गति आ ध्वनि-विधान क अनुशासन अनिवार्य अछि—पाठमेदेलध्वनि-संकेत (भिक्षाकस्वर, सिक्काखनखन, कमलाक धार, बालु कोड़बाक सरस रा हटि, भीड़क अनघोल आ अन्तक चुप्पी) एकटापूराश्रव्य-वास्तु रचैत अछि आ चुप्पीक ओ अन्तिम क्षण, जखन भीड़ बुझि जाइत अछि जे विधा नब तौ निहार केँ कारण नहि बुझल छल, एहि छोट नाटकक सभसँ पैघ रंग-क्षण अछि। छोट क ले वर मे एतेक परिपूर्ण वृत्त बहुत कम बाल-नाटकमेभेटैत अछि।

२. दानवीर दधीची: हड्डीक दन्तकथासँ ज्ञान-दान धरि

दानवीर दधीची क सभसँ साहसिक निर्णय ओकर उप शीर्षकहिमे अछि—ज्ञान, प्रतिज्ञा आ सत्यक रक्षाक वैदिक नाट्य-गाथा—आमंच-निर्देश हि मे स्पष्ट कएल गेल अछि जे सुधारल पाठमे दधीची क दान केँ हड्डी-दंतकथानहि, बल्किज्ञान, प्रतिज्ञा, पात्रता आ सत्यक रक्षा रूपमे प्रस्तुत कएल गेल अछि। नाटकक अन्तमे सूत्रधार एहि पुनर्पाठ केँ घोषित करैत छथि: दधीचीअपनदेहनहि, ज्ञान, प्रतिज्ञा आ सत्यक रक्षा दान केलन्हि; हड्डी सँ वज्र बनएबाक कथा पछाति पौराणिक लोकनिक अनर्थ अछि। ई कोनो मनगढ़न्त संशोधन नहि—वैदिक वाङ्मयमे द ध्य ङ्आ थ र्व ण क कथा मधु विद्या आ अश्व-मस्तक सँ जुड़ल अछि, जकर संकेत ऋग्वेदक अश्वि नौ-सूक्त आ शतपथ ब्राह्मणक मधु-काण्ड धरि जाइत अछि; हड्डी-वज्र क प्रचलित रूप परवर्ती पौराणिक विकास अछि। रोलाँ बा र्थ

मिथककेँ एहन वाणी कहैत छथि जे इतिहास केँ प्रकृति बना दैत अछि—जे बात कहियो कोनो विशेष अर्थ मे कहल गेल छल, ओ मिथक बनि सर्व कालिक आ निर्विवाद बुझाए लगैत अछि। ई नाटक ठीक उनटा क्रिया करैत अछि: जम ल मिथककेँ फेर सँ इतिहास आ अर्थमे घोरै त अछि, आबाल-दर्शककेँ अन्तिम पाँती मे सोझे कहि दैत अछि—कथाबदलिसकैए, मुदा सत्य क खोज बन्न नहि हेबाक चाही। बाल-नाटकमेस्रोत-समीक्षाक ई पाठ अनूठा अछि।

रस-योजनाक दृष्टिसँ नाटकक शीर्षक स्वयं सिद्धान्त-सङ्केत अछि। संस्कृत काव्यशास्त्रमे वीर रसक तीन भेद मानल गेल अछि—युद्धवीर, धर्मवीरआदानवीर; दानवीर दधीची शीर्षकहिसँ घोषणा करैत अछि जे एतऽ वीर रसक आलम्बन युद्ध नहि, दान अछि, आ ओहो दान भौतिक वस्तुक नहि, विद्याक। इन्द्रकबज्र-प्रहारक क्षणमे भयानक आ अश्वि नौ क शल्य-चमत्कार मे अद्भुतक स्पर्श अछि, मुदा समग्ररस-परिपाक शान्त दिस झुकल अछि—महर्षि क ओ वाक्य जे ई शरीर तँ अछि क्षणभंगुर...ताहि डर सँ हम ब्रह्म विद्याक लोप नहि होए देबैक, शान्त रसक स्थायी भावनिर्वेद (शम) क विशुद्ध अभिव्यक्ति अछि। भरतक नाट्यशास्त्र मंचपर वधक प्रत्यक्ष प्रदर्शन केँ अनुचित मानैत अछि, आ ई नाटक ओहि मर्यादाक रचनात्मक पालन करैत अछि: गरदनि कटबाक दुनू क्षण पर दा क अध खसल-अधउठलखेलमे, प्रकाश आ ध्वनिक संकेत सँ निष्पन्न होइत अछि—मंच-निर्देश स्पष्ट कहैत अछि, ध्वनि आ प्रकाश सँ भय, हिंसा नहि। नाट्यधर्मी शैलीक ई प्रयोग—परदाकबेर-बेरउठब-खसब, जे शल्यक्रिया क काल खण्ड केँ छाँटि दैत अछि—बाल-रंगमंचलेलहिंसा-चित्रण क एकटा अनुकरणीय समाधान अछि।

पात्र-रचना मे अरस्तूक काव्यशास्त्र क दू टा केन्द्रीय युक्ति सक्रिय अछि—पेरिपेटिया (भाग्य-पलट) आएनाग्नोरिसिस (आत्म-पहचान), आ दुनू दधीची मे नहि, इन्द्र मे घटित होइत अछि। जे इन्द्र पहिल दृश्य मे आश्वासन पहिने लिअ, प्रश्नबादमे— ककूट-नीति सँ विद्या झट कै त छथि आ ज्ञान पर पहरा हमर रहत कहि धमकी दऽ जाइत छथि, वएह तेसर चरणमे काँपैत हाथे बज्र लेने क्षमा माँगैत छथि—हम ज्ञानक रक्षा करबाक नामपर ज्ञानक हत्या करऽ गेल रही। खलनायक क ई आन्तरिक यात्रा नाटककेँ सपाट नीति-कथा सँ ऊपर उठबैत अछि; प्रतिपक्षमे अश्वि नौ क पात्रता-तर्क—सेवा हमरा पात्र बनेलक, पद नहि—दान क शास्त्रीय शर्त (पात्रेदानम्) केँआधुनिक, श्रम-सम्मान क अर्थ दैत अछि। ध्यान देबा जोग अछि जे च्यवन-प्रसंग आ सोम पीथी बनबाक कथा-सूत्रवैदिक-पौराणिक परम्परा सँ प्रामाणिक रूपैँ आनल गेल अछि।

अन्तर्पाठीय जाल मे दानवीर दधीची क सभसँ गहींर सूत्र उल्कामुख सँ जुड़ैत अछि। इन्द्रक धमकी— ई मधु-विद्या ककरो देलहुँ तँ माथ खसत— आ उल्कामुख क चौपाड़ि क ओ व्यवस्था, जतऽ बाहरक विद्यार्थी केँ तत्वचिन्तामणि क प्रतिलिपि आ सार-संक्षेप धरिक अनुमति नहि छल, एक्के अपराधक दू युग अछि: ज्ञानपर पहरा। दधीची ओहि पहरा क उत्तर अपन देह क जोखिमसँ दैत छथि, गंगेश-वल्लभा गीतक माध्यमे—मुदा दुनू ठाम नाटककारक पक्ष एक्के अछि, जकरा दधीची क वाक्य मे कहल गेल अछि: ज्ञान रो केनिहार सँ पैघ अपराधी कियो नहि। दोसर सूत्र अपाला आत्रेयी सँ अछि—दुनू वैदिक बाल-नाटक अछि, दुनूमे गुरुकुल-जीवनक विस्तृत आ प्रामाणिक चित्रण अछि, आ दुनू मे विद्या अन्ततः देहक सीमा सँ पैघ सिद्ध होइत अछि: ओतऽ अपाला क ऋचा त्वचा क दागसँ, एतऽ दधीची क मधु विद्या गरदनि क कटान सँ। आ तेसर सूत्र कमलाक भगता सँ—ओ तु का बिनु कारण बुझने नकल एतऽ इन्द्रक आरम्भिक रूपमे झलकैत अछि, जे ज्ञान चाहैत छथि प्रतिष्ठा लेल, बुझबा लेल नहि। नाटकक अन्तिम फुसफुसाहटि— ई असल बात अछि—शब्दशः जलोदीप क समापन मे घुरि कऽ अबैत अछि; ई नाटककारक हस्ताक्षर-ध्वनि अछि, जकर चर्च उपसंहारमे हएत।

मंचन-दृष्टिसँ तीन लोक क भाव-विभाजन—आश्रममे स्वर्णिम शान्ति, इन्द्रक प्रवेश मे ती ख उजास, युद्ध स्थलमे धुआँ म य ला लि मा—प्रकाश-परिकल्पना केँ अर्थ-वाहक बनबैत अछि, आ श र्य णा जलाशय तथा शस्त्र-निर्माणकसूची (त्रिसंधिव्रज, सूचीमुख, विकंकतीमुखआदि) वैदिक सन्दर्भक गन्ध बचौने रखैत अछि। अन्तिमचेतावनी—शस्त्रक धर्म रक्षा अछि, दंभ नहि—नाटककेँ युद्धो न्मा द सँ बचा कऽ ओकर शान्त-र सी य समापन सुरक्षित करैत अछि।

३. अपाला आत्रेयी: देहक दाग, दृष्टिक रोग आ ऋचाक जन्म

अपाला आत्रेयी एहि श्रृंखलाक तेसर वैदिक-स्रोत रचना अछि आ सम्भवतः सभसँ साहसी, कारण एकर नायिका ऋग्वेदक ओ विरल स्त्री-द्रष्टा अछि जिनक सूक्त संहिता मे सुरक्षित अछि। नाटक सात दृश्यमे अपाला क जीवन-वृत्तरचैत अछि: आ श्रमक जिज्ञासु बालिका, कन्या आ कुमार दुनूक उपनयन आ शिक्षा, त्वक्-रोग (श्वेतकुष्ठ) कआगमन, कृशाश्वसँविवाह, पतिक क्रमिक उदासीनता, आत्म सम्मानक संग पितृ-तपोवन प्रत्यावर्तन, सोम थ कु चैत इन्द्र-स्तुति, रोग-मुक्ति आ ब्रह्मो दय सभा मे अपन ऋचाक ऋक्-प्रवेश। सोम-दृश्यकसामग्री—छोटखुट्टीकसोम, दाँतसँथकुचल, तीन ठाम क उत्पत्ति क प्रार्थना (पिताकमस्तक, खेतआउदर), रथ आ युगक छिद्र सँ शुद्धि, सूर्यसमानत्वचा—ऋग्वैदिकअपाला-सूक्तक प्रामाणिक प्रतिध्वनि अछि; नाटककार श्रुति क बिम्ब-सामग्रीकेँमंच-क्रिया मे

बदलैत छथि, ओकरातोड़ैत-मरोड़ैतनहि छथि। मंच-सज्जामेसाही, गोहि आ गिरगिट क उपस्थिति सेहो सूक्तक त्वचा-रूपान्तरण-प्रतीकसँआएल अछि।

एहि नाटकक वैचारिक केन्द्र एकटा सूक्ष्म व्युत्क्रम अछि, जे अपाला क वाक्यमे धारदार भऽ कऽ बहराइत अछि—दागदेहपर अछि, दृष्टि अहाँक बीमार भेल अछि। अर्विंग गॉ फ मनक कलंक-सिद्धान्त (स्टिग्मा) कहैत अछि जे कलंक देहक गुण नहि, समाजक दृष्टि क सम्बन्ध अछि—कलंकित व्यक्तिक पहचान ओकर समग्रता सँ काटि कऽ एक्के चिन्ह पर सीमित कऽ देल जाइत अछि। नाटक एहि सिद्धान्त कैँ जेना पूर्वहि सँ जनैत अछि: अ त्रि आरम्भहिमे चिन्तित छथि जे रोग देह पर अछि, मुदा समाज एकरा आत्मा पर आरोप बना दै छै, आ कृशाश्वक स्वीकारोक्ति—हमरा भीतर संघर्ष अछि प्रेम आ वासनाक...हम अपन दुर्बलता कहि रहल छी, ओकरा धर्मक नाम नहि दऽ सकै छी—खल नायकत्वक जगह मानवीय दुर्बलताक ईमानदार चित्र अछि। ई ईमानदारी नाटककैँ मे लोड्रामा सँ बचबैत अछि: कृशाश्व दुष्ट नहि छथि, हुनक दृष्टि रोगग्रस्त अछि, आ नाटकक करुणा दुनू दिस बँटैत अछि। मुदा समापन मे नाटक करुण रसक अश्रु-मार्ग नहि पकड़ैत अछि—अपाला घुरल कृशाश्वक पश्चात्ताप कैँ स्वीकारो नहि करैत छथि, अस्वीकारोनहि; ओ मात्र अपन नव पहचान घोषित करैत छथि: हम अपाला आत्रेयी छी—ककरोदयानहि, अपनऋचाकदृष्टा। करुण सँ वीर मे रसक ई संक्रमण—जकरा आत्मगौरवक वीर कहल जा सकैत अछि—एहि नाटकक शास्त्रीय उपलब्धि अछि, आअन्तिमप्रकाश-निर्देश (अपाला दिस वेदी क प्रकाश बढ़ैत, कृशाश्व दिस मद्धिम) ओकरमंचीयमुहर।

स्त्री-विमर्श क कसौटी पर नाटकक सभसँ मूल्यवान पक्ष ई अछि जे ओ अपाला कैँ पीड़िता-कथा सँ निकालि स्रष्टा-कथा मे स्थापित करैत अछि। ब्रह्मो दय सभाक ऋषि गण जखन कहैत छथि—सम्मिलित करबाक आ नहि करबाक तँ प्रश्ने नहि अछि। ई तँ आइ सँ ऋ क क भाग भेल। अपाला क नाम मंत्र सँ अलग नहि कएल जाए—तखननाटकस्त्री-रचनाकारकनाम-सहित स्वीकृतिक ओ आदर्श रचैत अछि जकर ठीक विलोम उल्कामुख मे देखाओल गेल अछि, जतऽ वल्लभाक गीत नामक टा कऽ बँ स बि ट्री क भुतहा गीत बनि भटकैत अछि आ आचार्य सिंह-व्याघ्रनाम-लोप सँ प्रतीक बनि जाइत छथि। दुनू नाटक मिलि कऽ स्मृति-राजनीतिक दू ध्रुव देखबैत अछि: नाम-सहितस्मरण (अपाला) आनाम-रहितविस्मरण (वल्लभा) । सूत्रधारकसमापन-वाक्य—देहकघावभरिसकैए, दृष्टिक घाव विद्या सँ भरैए—एहि शृंखलाक विद्या-केन्द्रित दर्शन कैँ दधीची क ज्ञान-दानसँजोड़ैत अछि; ओतऽ विद्या मृत्यु सँ पैघ छल, एतऽकलंकसँ।

बाल-नाट्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ किछु बारीक निर्णय प्रशंसनीय अछि। रोगकदृश्य-संकेत हलुक उज्जर कपड़ा आ प्रकाश सँ, उपहाससँ नहि— ई निर्देश क्षेमेन्द्रक औचित्य आ आधुनिक समावेशी शिक्षा-दृष्टि दुनूक संगम अछि: बाल-दर्शक रोग कैँ देखथि, मुदा घृणा वा हास्यक वस्तु नहि बनए। उपनयन-दृश्यमे अ त्रिक घोषणा—एतय कन्या आ कुमार दुनूकैँ प्रश्न करबाक अधिकार अछि; प्रश्ने विद्याक पहिल सीढ़ी अछि—भऽ जाएब छू आ जलोदीप क प्रश्न-संस्कृतिक वैदिक पूर्वज अछि, आआश्रम-नियमकविवरण (वनकप्राणीअवध्य, अ कृष्टप च्य अन्नक प्रयोग, हरिणकैँ नि र्विघ्न टहल बा क अनुमति) भऽ जाएब छू क पारिस्थितिकी-चेतना कैँ प्राचीन आधार दैत अछि—विद्याओप्रकृति, दुनू पर अधिकार नहि, सेवाकरबाक अछि। स्मरणीय जे भऽ जाएब छू क किशोर बुच्चीक नाम अपाला आ किशोर बौआ क जोड़ी दार जयन्त अछि—नाटककारअपनबाल-पात्रकैँ अपनहि नाट्य-संसारक पूर्वजक नाम दऽ कऽ एकटा भीतरी स्मृति-शृंखलाचलबैत छथि, जे एहि पोथीक अन्तर्पाठीय पद्धतिकैँ स्वयं नाटककारक अभिप्राय सिद्ध करैत अछि।

सीमा-पक्षमे दृश्य दू क शिक्षा-सूची (वर्ण, मात्रा, बलाघात, साम-गानआदि) मंचन मे स्थै ति क भऽ सकैत अछि, मुदा पाठ स्वयं एकर उत्तर दैत अछि—अपालाकबीच-बीचकप्रश्न (जँ उच्चारण मे दोष होइ तँ अर्थ बदलि जाइ छै; जँ दृष्टि मे दोष होइ तँ मनुक्ख बदलि जाइ छै) सूचनाकैँ संवाद मेगूँ थि दैत अछि। समग्रतः अपाला आत्रेयी बाल-नाटकक चो गामे एकटा परिपक्व स्त्री-गौरव-नाट्य अछि, जे करुणाक जगह सम्मान माँगैत अछि।

४.भऽ जाएब छू: मैथिलीक पहिल जलवायु-चेतना चौबटिया नाटकक पाठ

भऽ जाएब छू अपन उपशीर्षकमे दूटा दाबी करैत अछि—मैथिलीक पहिल जलवायु-चेतना (क्लाइमेटफिक्शन) नाटक, आबालचौबटिया-सड़क नाटक— आ दुनू दाबी क निर्वाह रचना-विधान मे स्पष्ट अछि। एतऽनेमंच अछि, नेपरदा; सूत्रधार भीड़कैँ हाक दैत छथि—घेराबाबनालिअ— आ निर्देश दर्शक हु कैँ कहैत अछि जे गोल घेरा बना कऽ हबाक रास्ता खाली राखथि। ईवृत्ताकार, उपकरण-मुक्त, दर्शक-वेष्टि त स्थान बादल सरकारक तेसर रंगमंचक मूल-मंत्र अछि—एहन रंगमंच जे प्रे क्षागृ ह क अर्थतंत्र सँ मुक्त भऽ लोकक बीच चलि जाए— आ स फ द रहा श मी क नुक्कड़-परम्पराक सेहो, जतऽ नाटक दर्शक लग जाइत अछि, दर्शकनाटकलगनहि। सूत्रधार आ भीड़ सँ निकलल कलाकारक आरम्भिक नो क-झोंक (नाटक देखलासँ भोजन चल तौ रौ?) नुक्कड़-

शैलीक प्रामाणिक उद्घाटन अछि, आ सूत्रधारक उत्तर—पेटकभूख, मोनकभूख, बोली क भूख आ हबाक भूख—नाटकक विषय कें रोजी-रोटी क प्रश्न सँ जोड़ि कऽ जल वायु-विमर्श क ओहि आलोचनाक उत्तर पहिनहि दऽ दैत अछि जे एकरा सम्पन्न लोक क विलास कहैत अछि।

संरचना तीन भागमे अछि—सृष्टिकपात्रसभ, विज्ञानआकल्पना, आप्रतिज्ञा— आपात्र-योजना पीटर स्ले ड क बाल-नाट्य सिद्धान्तक पाठ्य-पुस्तकीय उदाहरण अछि। आठ कलाकार आठ भूमिका उठबैत छथि: चिड़ै-भगजोगनी (ओम, आस्था), गाछ-बृच्छ (जयन्त, अपाला), सूर्य-तरेगणआचन्द्र (विजय, विजया), भूत-प्रेत बनल असफल वैज्ञानिक ने क लाल आ स्वप्न-कल्पना बनलि राम व ती। स्ले ड कहैत छथि जे बच्चाक खेल मे वस्तु आ प्राणी बनि जेबाक क्षमता (प्रोजेक्टे ड आ पर्सनल प्ले) ओकरसहजकला अछि; ई नाटक ओही क्षमताकेँ रंग-विधानबनालैत अछि—मनुष्ये तर संसार मंचपर बाजैत अछि, आजलवायु-संकट अमूर्त आँकड़ा नहि रहि पात्रक जीवन-मरणक प्रश्न बनि जाइत अछि। विज्ञान-सम्प्रेषण क स्तर पर नाटक अद्भुत रूपेँ ठोस अछि: भगजोगनीक शीतल प्रकाश (जैव-दीप्ति) आ ने क लाल क सोलह आ नामे पन्द्रह आ ना गर्मी बला अ कुशल प्रकाशक तुलना ऊर्जा-दक्ष ता क पूरा पाठ एक बिम्ब मे दऽ दैत अछि; यूकेलिप्टस-प्रसंग (जे गाछ माटिक प्यास नै बुझै, ओकरा रो प ला सँ जंगल नहि बनै छै) देसी प्रजातिक पारिस्थितिकी-तर्क अछि; आ बीया महीसक केस मे फँसि दूर देश जेबाक गीत बीज-प्रकीर्ण न कवि ज्ञान कें लोक गीतक लयमे बान्हि दैत अछि। कल्पना (रामवती) आविज्ञान (नेकलाल) कनोक-झों क एहि नाटकक दार्शनिक धुरी अछि—बुझलो गप जँ व्यवहारमे नहि उतरल तँ विज्ञानो अधूरा—जे ज्ञान आ आ चरणक ओही खाधि कें चिन्हैत अछि जकरा कमलाक भगता नकल क रूपमे आ संकर्षण दं भ क रूपमे देखबैत अछि।

आ गु स्तो बो आ ल क दमित लोकक रंगमंचक केन्द्रीय अवधारणा अछि प्रे क्ष क-कर्ता (स्पेक्ट-एक्टर) —दर्शकजेदेखिते-देखिते कर्ता बनि जाए। भऽ जाएब छू क तेसर भाग ठीक यएह करैत अछि: आठूपात्रअपन-अपन प्रतिज्ञा बजैत छथि (हमजतेककाटब, ताहिसँबेसीरोपब; हम देसी गाछ चिन्हब, बीयाबचाएब; हम पुरान गलती मानब...) आ तखन दर्शक दिस हाथ पसारि पुछैत छथि—कहू, अहाँसभसेहो? — आ निर्देश अछि जे कलाकार दर्शकसँ हँ कहा ब थि। बो आ ल रंगमंच कें क्रान्तिक पूर्वाभ्यास कहैत छथि; एतऽ ओ पूर्वाभ्यास प्रतिज्ञाक सामूहिक उच्चारण अछि। खोंखी क प्रयोग नाटकक सभसँ मार्मिक ध्वनि-युक्ति अछि—गाछक मरणक गीत क बाद सभ पात्र खोंखी करैत छथि आ ओखोंखीधीरे-धीरे ताल मे बदलि जाइत अछि: प्रदूषणकदेह-चिन्ह कला क लय मे रूपान्तरित भऽ प्रतिरोधक ऊर्जा बनि जाइत अछि। शीर्षक-सूत्र स्वयं ध्वनि-सिद्धान्तक चमत्कार अछि—भऽ जाएब छूबाल-खेल (छू-मन्तर) क निर्दोष शब्दमे विलुप्तिक आतंक भरि दैत अछि, आ अन्तिम पंक्ति ओकर प्रतिषेध रचैत अछि: जड़ि बचत तँ भऽ जाएब छू नहि; जड़ि बचत तँ बचि जाएब छी।

अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ ई नाटक जलोदीप क जोड़ी दार अछि—दुनू समकालीन पर्यावरण-संकटकबाल-नाटक अछि, एक मे हबा बीमार अछि, दोसर मे पानि बाट माँगैत अछि; दुनूक अन्त सामूहिक प्रतिज्ञा सँ होइत अछि आ दुनू मे संकट क मूल कारण प्रकृति नहि, मनुक्खकअ-कल्पनाशील व्यवहार अछि। कमलाक भगता सँ एकर सम्बन्ध विलोम क अछि: ओतऽ भीड़ बिनु प्रश्नक नकल करैत अछि, एतऽ घेरा मे ठाढ़ भीड़ सँ प्रश्न पुछल जाइत अछि आ उत्तर (हँ) कहाओलजाइत अछि—भीड़ सँ समुदाय बनेबाक ई प्रक्रिया एहि दुनू नाटककेँ एक्के सिक्काक दू पि ठ बनबैत अछि। आनेकलालकआत्म-स्वीकृति—असफल वैज्ञानिक छी हम...हम नै कऽ सकलौं कल्पना—संकर्षण क अन्तिम आत्म बोध (ठ कान जुत्ता मे नहि, हमरघमण्डमेलगल) कबाल-संस्करण अछि: दुनू ठाम नाटकक नैतिक शिखर आत्म-दोष-स्वीकार अछि, दोसरापर दोषारोपण नहि।

मंचन-सम्भावना क दृष्टिसँ ले ज र-लाइट सँ भगजोगनीक संकेत, चद्दरिकअढ़, फोटो-पट्टीसनसस्त-सुलभ उपकरण चौबटिया प्रदर्शन क व्यावहारिकता सिद्ध करैत अछि। सीमा एतबे जे आठ पात्रक समानान्तर विकास मे किछु स्वर (विजय-विजया) अपेक्षाकृत कम विकसित रहि जाइत अछि; मुदा सड़क-नाटकक द्रुत लय मे ई सन्तुलन क्षम्य अछि। समग्रतः ई रचना मैथिली बाल-रंगमंच कें एकटा नव विधा—जलवायु-नाट्य— क द्वार खोलि दैत अछि।

५. जलोदीप: बाढ़ि, बच्चा आ पानिक बाटक नाटचशास्त्र

जलोदीप बाढ़ि-सुरक्षाआजल-नि का सी क सामाजिक बाल-नाटक अछि आ एहि शृंखलामे समकालीन यथार्थ क सभसँ लग ठाढ़ रचना। पूर्व दृश्यमे चारूकात ज लाम य अछि, एकटा बच्चा बाढ़ि सँ निकलि हाथ बढ़बैत अछि आ ओकर वाक्य—हमतँठीकेछी। मुदा हम्मर... —पूरा हेबासँ पहिनहि अन्हार पसरि जाइत अछि; ई अधूरा वाक्य पूरा नाटकक करुण-बीज अछि, कारण बाद मे बुझल जाइत

अछि जे घरक दीवार बाँचि गेल, घरक हँसी पानिमे चलि गेल। पाँच अंकक यात्रा एहि शोक सँ शुरू भऽ सामूहिक संकल्प पर खतम होइत अछि, आ बीचमे ओ दृश्य अछि जे एहि नाटककेँ बाल-रंगमंच क सिद्धान्त-ग्रन्थमे जगह दिया सकैत अछि—पहाड़कखेल।

चौकी पर बैसल चारि बच्चा कटोरी, लोटा, भीजलकपड़ा, माटिकढेला, काठी आ उलटल थारी सँ अपन इलाकाक नक्शा बनबैत अछि: लकीरनदी, ढेलागाम, काठीबान्ह, आ उलटल थारी राजमार्ग—नामसड़क, कामदीवार। चारिम बच्चा लोटा सँ पानि ढा रै त अछि आ पानि सड़कक ओहिपार अटकि जाइत अछि—बाढ़िक समस्त अभि यांत्रिकी एक खेल मे प्रत्यक्ष भऽ जाइत अछि। डोरोथी ही थ कोटक प्रसिद्ध पद्धति अछि विशेषज्ञक चो गा (मैं ट ल ऑफ द एक्सपर्ट): बच्चाकेँ ओहि विशेषज्ञक भूमिका दऽ देल जाए जकर ज्ञान ओकरा सिखेबाक अछि, तखन ओ ज्ञान भीतरसँ, दायित्वक संग अर्जित होइत अछि। एतऽ बच्चा सभ खेल हि मे अभियन्ता बनि जाइत अछि—पहिल लोक स्वयं कहैत छथि, देखू, बच्चा सभ सेहो अभि यं ता बनि गेल— आहुनकखेल-निष्कर्ष (पुल गाड़ी लेल बनल छै। पानिलेलकीबनल छै?) प्रौढ़ सभक आँखि खोलैत अछि। ले व भाइगोत्स्कीक खेल-सिद्धान्त कहैत अछि जे खेल मे बच्चा अपन वास्तविक उमेर सँ माथ भरि ऊँच भऽ जाइत अछि; जलोदीपकनाट्य-युक्तियएह अछि—ज्ञानक दिशा उनटा दैत अछि, बच्चा सँ प्रौढ़ दिस।

नाटकक दोसर बल ओकर तथ्य-अनुशासन अछि। बान्ह काटल जेबाक चर्च अफवाह क रूपमे अबैत अछि आ तुरत टोक ल जाइत अछि—सुनै छिऐ से सत्य नहियो भऽ सकै छै— ईज्ञान-मीमांसीय सावधानी बाल-नाटकमेविरल अछि। ठेकेदारकबचाव-वाक्य—प्रकृतिक प्रकोप छल...एहन बाढ़ि शताब्दीमे एक बेर अबैत अछि—कैं लोक आँकड़ासँ काटैत अछि: पछिला पाँच बरखमे तीन बेर हमर आँगन डुमल। आ अभि यं ता क विश्लेषण बाढ़ि कैं एक खलनायक पर नहि, कारण-जालपरटाँगैत अछि: नदी क पुरान बाट बन्द, पोखरिभरल, निचला जमीन पर बस्ती, ऊँचसड़क, छोटकलभर्ट—सभ मिलि कऽ बाढ़िक जाल बनल। टी. आइ. ई. (थिएटरइनएजुकेशन) आन्दोलन क आदर्श संरचना यएह मानल जाइत अछि—कथा-संवेदना, तथ्य-विश्लेषणआकार्य-सूत्र तीनू क संयोग— आजलोदीपकचारिम-पाँचम अंक ओकर पूर्ण निर्वाह करैत अछि: राहत, गामकजल-पथनक्शा, कलभर्ट-निरीक्षण, मरम्मतिक खु ल्ल म खुल्ला हिसाब, बच्चाकेँ तै र नाइ क शिक्षा, नाला मे प्लास्टिक-निषेध, बरखा-पूर्व सफाइ आ पानिक बाट बला विकास—आठसूत्र, जे मंच सँ उतरि कऽ कोनो गामक पंचायत-प्रस्ताव बनि सकैत अछि। बोआलकमंच (फोरम) रंगमंच मे दर्शक समाधान प्रस्तावित करैत छथि; एतऽओकाजपात्र-समुदायकरैत अछि, मुदा प्रक्रियाक लोकतांत्रिक बनावट—मुखिया, लोक, अभियंता, बच्चा सभक क्रमशः एक-एकसूत्र—फोरम क भावना कैं भीतर सँ जीबैत अछि।

शीर्षक-प्रतीक जलोदीप नाटकक काव्य-शिखर अछि: बाढ़िक रातिमे बच्चा सभ पात आ कटोरी पर दीप तैरबैत अछि—बाढ़िमे दीप? पानि बुझा देत। —तैं तऽ नाव चाही। दीप कैं पानि पर तैराउ। जलमे दीप। जलोदीप। जे पानि घर लऽ गेल, ओही पानि पर स्मृति आ आशाक दीप—विरोधाभासक ई बिम्ब आनन्दवर्धनक ध्वनि-कसौटीपर खरा अछि, कारण दीप एतऽ वस्तु नहि, व्यंजना अछि: ई दीप हमर बाबू लेल...आब ई दीप बुझत नहि, जँ हम सभ बात याद राखब। स्मृति-दीपक ई अर्थ नाटककेँ उल्कामुख क स्मरण-दर्शन सँ जोड़ैत अछि—ओतऽ विस्मरणक विरुद्ध गीत अछि, एतऽ दीप; आ समापन क फुसफुसाहटि— ई असल बात अछि—शब्दशः दानवीर दधीची क अन्तिम ध्वनि अछि, जे दुनू नाटककेँ एक्के सत्य-मुद्रासँ मोहर बन्द करैत अछि।

गंगाब्रिज सँ एकर सम्बन्ध एहि पोथीक सभसँ शिक्षाप्रद युग्म अछि। दुनू नाटक एक्के विषय—जल, अधोसंरचना, भ्रष्टाचार—पर अछि, मुदा बाल आ प्रौढ़ संस्करण क भेद स्पष्ट अछि: जलोदीप मे ठेकेदार अन्ततः झुकैत अछि (हम...हमसूचीदेब) आ गाम जागि जाइत अछि; गंगाब्रिज मे व्यवस्था ईमानदार अभियन्ता कैं रोल र क नीचाँ पि च ड़ा दैत अछि। बाल-नाटकक आशावाद कृत्रिम नहि अछि—ओ बो आ ल आ ही थ कोट दुनूक शिक्षाशास्त्रीय सिद्धान्त सँ निकलल अछि जे बच्चाकेँ कर्तृत्वक अनुभव (एजेंसी) देबओकरनागरिक-निर्माणक पहिल शर्त अछि—मुदा दुनू नाटककेँ आ मने-सामने राखि पढ़ला उत्तर बुझाइत अछि जे नाटककार एक्के प्रश्न क दू उत्तर नहि, दू उमेरक दू दायित्व देखा रहल छथि: बच्चाकेँ सम्भावना, प्रौढ़केँ चेतावनी। चारिम बच्चा क अन्तिम सूत्र-वाक्य —पानिशत्रुनहि, रो केल बाट शत्रु अछि। विकासशत्रुनहि, अन्हा विकास शत्रु अछि—एहि युग्म क साझा घोषणा-पत्र अछि।

६. संकर्षण: चोटकेँ सत्कार कहबाक रोग आ आत्मबोधक जुत्ता

संकर्षण एहि शृंखलाक पहिल प्रौढ़ नाटक अछि आ एकर उपशीर्षक—दंभ, झूठ-सत्कार आ आत्म बोध क पाँच-कल्लोलक मैथिली नाटक—तीनू शब्दमे पूरा वृत्त बान्हि दैत अछि। उपक्रममे नाटककार अपन नायक-खलनायक क परिचय दैत छथि: असल अन्हार ओकर दं भ, डर आ झूठ क चमक मे अछि, आ घोषणा करैत छथि जे दिल्लीक चोर-बजारसँ ठका ओल एकटा जुत्ता ओकरा वैह आइ ना देखा देत जे भरि जिनगी ओ आन कैं देखबैत रहल। पाँचकल्लोल—प्रतिष्ठाकबीआ, झूठ जड़ि पकड़ैत अछि, बियाह आ बड़ाइ क

बजार, शहरकआइना, आ आत्मबोधक जुत्ता—दंभकअंकुरण, विस्तार, सामाजिक-पारिवारिक प्रसार, टकराव आ विसर्जन क क्रमबद्ध वनस्पति-शास्त्र अछि; कल्लोलशब्द (लहरि) संरचनाकेँ अंकक यांत्रिक विभाजन सँ मुक्त कऽ भाव क उठा न-गि रा न क संकेत बनि जाइत अछि— ई इकाई उल्कामुख मे सेहो प्रयुक्त अछि, मुदा ओतऽ लहरि स्मृतिक अछि, एतऽदंभक; एक्के छन्दमे दू राग।

हास्य-विवेचनमे आँ री बर्गसाँक सूत्र अछि जे हास्य जीवित पर चढ़ल यांत्रिकता सँ उपजैत अछि—जखन मनुक्ख परिस्थिति बदल लोप र एक्के जड़ चेष्टा दोहरबैत अछि, तखन ओ हास्यास्पद भऽ जाइत अछि। संकर्षण क समस्त प्रहसन एहि यांत्रिकता क प्रदर्शनी अछि: कलक्टर सँ दबा ड़ खा कऽ स्टे नो क कक्षमे बैसब आ गाममे कहब जे कलक्टर साहेब रोकि लेलन्हि; पंचैती क दण्ड क बाद कंठी लेब आ भोर हि मे रोहु पर कोदारि च लाएब; जगन्नाथ-यात्रा मे फल छोड़बाक विधानमे कुसियार छोड़ब, जाहिसँ गुर क चाह मना कऽ चु कन्द र क रसियन चीनी बला चाह पीबि सकी। भाष्क र क सुनाओल तीन टा कारी कुकुरक खिस्सा एहि यांत्रिकता क कथा-भीतर-कथा (उपाख्यान) अछि आ बर्गसाँक दोसर युक्ति—पुनरावृत्ति आ हिम गोल क (स्नोबॉल) — कआदर्शउदाहरण: पहिल कुकुर ब ट खरा क चोट कैं ब ट खरा सँ जो खि कऽ जिलेबी कहैत अछि, दोसर धीपल पानिकेँ गर मा गरम जिलेबी, तेसर बन्द स ट र आ लाठीक पिटान कैं आबै ये नहि दैत रहथि, कहैतरहथिआरखाऊ—प्रत्येक झूठ अगिला कुकुर कैं चोट दिस पठबैत अछि। भाष्क र क टिप्पणी खिस्सा क मर्म खोलि दैत अछि: ई खिस्सा सत्कार क नहि, चोटकेँ सत्कार कहबाक रोग क अछि। एतहि कमलाक भगता सँ एकर नाभि-नालजुड़ैत अछि—ओतऽ भीड़ बिनु कारण बुझने आन क क्रिया दोहरबैत अछि, एतऽ व्यक्ति अपन क्षति कैं प्रतिष्ठा कहि दोहराबऽ योग्य बनबैत अछि; अन्धानुक रण आ आत्म-प्रवंचना एक्के ज्ञान-रोग क बहि रंग आ अन्त रंग रूप अछि।

मुदा नाटक केवल प्रहसन नहि अछि; एकर भीतर व्यंग्यक धार निरन्तर सामाजिक आलोचना मे बदलैत रहैत अछि। संकर्षण क बोली दोसराक जीवन मे जहर घोरै त अछि—प सी झ क काँट क रस बला जुल्मी दबाइ न न कि ड़ बा क प्राण लऽ सकैत छल, जँ नित्या काका नहि टो कि त थि (जेनहिबुझै, ओकर चुप रहबो द वा होइत छैक); टे ली फोन डायरी बला निराधार डर सँ गो नर भाइ अपन डायरी फाड़ि दैत छथि। कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्त—कथनक वक्रता स्वयं काव्यत्व अछि—संकर्षण क भाषामे उनटल रूपमे सक्रिय अछि: ओकरहरेकवक्र-वाक्य (बूढ़ी कैं सीट माँगलापर माँ। ईबौआनहि। बौआकतीनटाबौआ; कनियाँक प्रशंसा मे मुदा रंग कनेक हमरा सँ डीप छन्हि) आत्म-श्रेष्ठताक अलंकार अछि, आ नाटककार देखबैत छथि जे वक्रोक्ति जखन सत्य सँ कटि जाइत अछि तखन ओ कला नहि, व्याधि बनि जाइत अछि। नेपथ्यसँ आएल पत्नीक एक्के वाक्य—दुलारू नहि छी तें घर चलैए। जे दिन दुलारू भऽ जाएब, से दिन अहाँक दं भ क गोबर के का ढ़ त? —एहिनाटककस्त्री-स्वर अछि: मंचपरबिनुअएने, एकवाक्यमे, ओ संकर्षण क समस्त पुरुष-दं भ क अर्थशास्त्र खोलि दैत छथि।

चारिम-पाँचम कल्लोलमे नाटक अरस्तूक कसौटी पर चढ़ैत अछि। अलीगढ़मे पुलिस खेसारीक बि ड़ि या कैं गाजा कहि बीस टाका छोड़ि सभटा पाइ लऽ लैत अछि—जे बोली गाममे सभकेँ डर बैत छल, से शहरमे स्वयं डर क शिकार भऽ जाइत अछि; ईपेरिपेटिया (दशा-पलट) अछि। आचोर-बजारमे पड़ोसीक नाम पर ठका एल जुत्ता क सोल जहिया करेज जेकाँ बाहर आबि जाइत अछि, तहिया एना ग्नो रि सिस (पहचान) घटित होइत अछि—मुदा अरस्तू क नायक-सननियतिकनहि, अपन चरित्र क पहचान: साँचकहूगोनर, ठ कान जुत्ता मे नहि, हमरघमण्डमेलगल। सूत्रधार उपसंहारमे ठीक कहैत छथि जे एहि एक्के वाक्यमे ओतेक साहस अछि, जतेक भरि नाटक मे कतहु नहि—हास्य रसक ई विसर्जन शान्त मे होइत अछि, अट्टहासमेनहि, आअन्तिममंच-निर्देश (गोनरहँसैतनहि— ई आब हँसबाक क्षण नहि, बुझबाकक्षण अछि) रस-संक्रमण कैं मंचीय अनुशासन दैत अछि। अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ अली गढ़-प्रकरण मचण्ड क पूर्वाभास अछि—निर्दोषक झोरामे राज्य अपराध ताकि लैत अछि, ओतऽ बि ड़ि या गाजा बनैत अछि, एतऽ प्रेशर कु कर नशाक खेप; आ सूत्रधार क अन्तिम प्रश्न—हमरा सभक भीतरो कतौ कोनो संकर्षण नुकाएल त'नहि अछि? —दर्शक-सम्बोधन क वएह ब्रेष्टीय युक्ति अछि जे कमलाक भगता आ भऽ जाएब छू मे बाल-रूपैँ प्रयुक्त भेल अछि।

संरचनात्मक सीमा ई अछि जे प्रसंग-मालाक (एपिसोडिक) बनावटमेकिछुअंक—यथागुरकचाह—स्वतंत्र लतीफा जकाँ बुझा सकैत अछि; मुदा ध्यान सँ देखला उत्तर प्रत्येक प्रसंग दं भ क कोनो ने कोनो नव क्षेत्र (प्रशासन, धर्म, वैद्यक, विवाह, रूप, भोजन, भूगोल) जोड़ैत अछि, आ बेटाक पलायन बला अंक—जेकरा सभकेँ सिखबैत फिर लहुँ, अपन घरक बाट ओकरा नहि सिखा सकलहुँ—प्रहसनक भीतर करुणक ओ सुरंग खोलि दैत अछि जाहि बाटे नाटक अपन गम्भीर समापन धरि पहुँचैत अछि।

७. गंगा ब्रिज: विकासक बलिवेदीपर इतिहासक ठक-ठुक

गंगाब्रिजविकास, भ्रष्टाचार आ बलिदान पर एकटा मार्मिक नाटक अछि, मुदा एकर असल विषय पुल नहि, इतिहास-लेखन अछि—केमरैत अछि, केलिखैत अछि, आ लिखल इतिहास मे मर निहार क की बचैत अछि। नाटक पाँच भाग आ आठ पल्लव मे पसरल अछि

आ एकर काल-विस्तार असाधारण अछि: १५अगस्त१९४७ क स्कूली झ ण्डो त्स व सँ लऽ कऽ ओहि दिन धरि, जखन रिटायर मुख्य अभियन्ता अपन लिखल पोथी गंगाब्रिज क लोकार्पण करबैत छथि आ नबका मुख्यमंत्री जर्जर पुलक बगलमे दोसर पुल क घोषणा कऽ चुकल छथि। एहि ऐतिहासिक फलक पर बर्टोल्ट ब्रे ष्ट क महाकाव्यात्मक रंगमंच क लगभग समस्त उपकरण सक्रिय अछि: ढोलहो देनहार क बेर-बेरघुरैतउद्घोष (सुनैजाउ, सुनैजाउ...मजदूरचाही) दृश्य-शृंखलाकेँकाटैत-जोड़ैतगीत-पट्टी अछि; डंका बजबैत दूटा लोक कोरस अछि, जे घटनाकेँ टिप्पणी सँ ठंढा करैत अछि (सरकार ककरा कहै छिहीं? —बहस, जे लोकतंत्रक नागरिक-शास्त्र ठेठ मैथिली मे पढ़ा दैत अछि); आ मजदूरसभक फ्रीज भऽ जाएब—जखन अभियन्ता आठि केदार क आभासी संवाद चलैत अछि—दूरीकरण (फेरफ्रेमडुंग) कप्रत्यक्षमंच-विधि अछि: दर्शक घटनामे बहि नहि सकैत छथि, हुनका देखाओल जाइत अछि जे ई देखाओल जा रहल अछि।

ए र्वि न पि स्काटरक दस्तावेजी रंगमंचक परम्परामे नाटक आँकड़ा आ संस्थागत ब्योरा सँ नहि डराइत अछि: पछिला मास तीस टा मजदूर मरि गेल। एक साल मे तीन सए मजदूर मरि गेल। मात्र दस गोटेक परिवारकेँ अनुकम्पाक अनुशंसा भेलै; राम धनीक मशीन मे फँसल हाथ पर पट्टी क बदला बोरा; टे ण्डरक भीतरी रास्ता; कमीशनकशृंखला—नेता, दोसरइन्जीनियर, गुण्डा। ठि केदार क लम्बा स्वीकारोक्ति एहि नाटकक सभसँ जटिल नैतिक दस्तावेज अछि: ओअभियन्ताकबालु-चाल ब बला विधि मानि कमीशन बन्द केलक, अभियन्ता क बदली भऽ गेल, आठि केदार घुरि कऽ पुरान रास्ता पर आबि गेल—हम अपन बच्चाक नाम स्कूलसँ नै कटबा सकै छी। एतऽ खलनायक व्यवस्था अछि, व्यक्ति नहि; ठि केदार धरि ओकर बन्धक अछि। एहिव्यवस्था-चित्रण क शिखर मुख्यमंत्री-मुख्य अभियन्ता क ओ संवाद अछि जतऽ ईमानदार अभियन्ता कैँ ख पे बा क विकल्प सभ एक-एक कऽ खारिज होइत अछि—गोलीमारब (भगतसिंहबनिजाएत), करप्शन-चार्ज (छा पा मे खाट टा भेटत), आत्महत्या (आत्महत्या करैबला जीब नै अछि) — आ अन्ततः निर्णय होइत अछि: ओदुर्घटनालगतै। रोल र क नीचाँ देल गेल ई मृत्यु आ ओकरा पर ओछा ओल दुर्घटनाक चादरि राज्यक कथा-निर्माण-यंत्र क नग्न प्रदर्शन अछि।

अन्तिमपल्लव—पोथी-लोकार्पण—एहि नाटककेँ इतिहास-दर्शनक ऊँचाइ दैत अछि। मुख्य अभियन्ता क वाक्य—इतिहासक काम घाव खोलब नहि, पट्टीबाँधब अछि—चाहे भीतर म वाद रहि जाए— आ मुख्यमंत्रीक प्रशस्ति (जेआवाजबीचमेउठल, सेविकासकधूलिछल; जेखूनगिरल, सेबलिदानकरंगछल) सुनैत काल वाल्टर बेन्यामिनक ओ प्रसिद्ध सूत्र मोन पड़ैत अछि जे सभ्यताक एहन कोनो दस्तावेज नहि, जे संगहि बर्बर ता क दस्तावेज नहि होअए, आ ईहो जे इतिहास विजेताक सहानुभूति मे लिखल जाइत अछि। नाटक एहि लिखित इतिहासक समानान्तर एकटा श्रव्य प्रति-इतिहास ठाढ़ करैत अछि: मजदूरकठक-ठुक, जकराअन्तमेडंका-वादककहैत अछि— ईठक-ठुकपुलकनहि, इतिहासक हड्डीक आवाज छिऐ। लिखित म्बनाम ध्वनि— ई द्वन्द्व उल्कामुख क केन्द्रीय द्वन्द्व क (पोथीमेनामकटत, गीतमे साँस बचत) प्रौढ़-राजनीतिक संस्करण अछि; ओतऽ चौपाड़ि गीत कैँ बँ स बि ट्टी मे धकेलैत अछि, एतऽ सत्ता प्रत्यक्ष द र्शी क स्मृति कैँ धन्यवाद, धन्यवाद, धन्यवादक यांत्रिक मुस्की सँ ढा कि दैत अछि— ई दोहराओल धन्यवाद ब्रे ष्ट क गे स्टु स (सामाजिक सम्बन्ध कैँ देह-मुद्रामे जमा देनिहार क्रिया) क चमकैत उदाहरण अछि।

रस-योजनामे नाटक करुण आ रौद्र क बीच वीभत्स-स्पर्शी व्यंग्य चलबैत अछि, मुदा भरतकरस-मिश्रण-विधान क कुशल पालनक संग: ब तही माए आ इन्जीनियरक विधवा क विलाप (आबकागजकतऽ अछि? ई बच्चा सभक आँखि बाजत) शुद्धकरुण अछि; एम. एल. ए. कनीलगाय-भाषण आ चारि अढ़ैया चिन्नीक हो ड़ हास्यक ओ लोकधर्मी छिट्टा अछि जे शोक-कथाकेँजीवन-रस सँ सिक्त रखैत अछि; आबच्चाऽ कत्रि-आयामीयात्रा—बकड़ीतकैतस्कूल-भगोड़ा, ठेलाबला, आ भदोही क बन्धुआ मजदूरी सँ भागल श्रमिक—राष्ट्रीयविकास-गाथाक ओ पाताल देखबैत अछि जतऽ स्वतंत्र देश। स्वतंत्रस्कूल। स्वतंत्र कॉलेजक व्यंग्य-मंत्र कानमे गूँजैत रहि जाइत अछि। अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ जलोदीप एकर बाल-प्रतिबिम्ब अछि (कलभर्ट, बान्ह, कागजबनामजमीन—ओतऽ समुदाय जीतैत अछि, एतऽहारैत अछि), मचण्ड एकर अगिला डेग (व्यवस्थाक हिंसा प्रक्रिया गत रूप धरैत अछि), आ अभियन्ता क अन्तिम आश्वासन-वाक्य—आशा देनिहार कैँ कु चलि देल जेतै तँ आशा मरत नै; ओकरआवाजडंकामे, हथौड़ामे, पुलक दरारि मे बसि जेतै—उल्कामुख क स्मृति-सिद्धान्तक गंगा तटीय घोषणा अछि।

मंचन-चुनौती स्पष्ट अछि—विशालपात्र-संख्या, चालीस बरख सँ ऊपर क काल-छलाँग, आपल्लव-संरचनाक तीव्र दृश्या न्तर—मुदा ढोलहो-डंकाकध्वनि-चौखट एहि सभकेँ बान्हि लैत अछि: जहिया-जहिया दृश्य बदलैत अछि, वएह उद्घोष घुरैत अछि, आ दर्शक बुझि जाइत छथि जे पुल जतऽ छल ततहि अछि—हिलैत, चिप्पीमाँगैत। नाटकक अन्तिम विडम्बना यएह अछि जे परदा खसैत काल सेहो ढोलहो देनहार मजदूर माँगि रहल अछि; वृत्तपूराभेल, मरोम्मतिनहि।

८. मचण्ड: भाषा, न्याय आ आतंकक त्रिकोणमे मनुक्ख

मचण्ड एहि शृंखलाक सभसँ तीक्ष्ण समकालीन रचना अछि आ एकर केन्द्रमे एकटा एहन मनुक्ख अछि जकरा लग भाषा नहि अछि—मानेअपनभाषा अछि, मुदा ओकरा बुझनिहार कियो नहि। मुतालिफतमिल-भाषीयुवा अछि, दिल्लीकअदालत-हाजतमेबन्द, आभाषाअनुवादक (बाअनुवादिका) आरम्भहिमे ओकर स्थिति एक वाक्यमे कहि दैत छथि: जे शहर ओकरा अपराधी कहैए, से ओकर नामो ठीक सँ नहि बजा पबैए। फ्रा न्ज़ काफ्का क द ट्राय ल क यो ज़े फ के. कैं ओकर अपराध नहि बुझल छै; मु ता लि फ क स्थिति ओहूसँ आगाँ अछि—ओकरा अभियोग क भाषे नहि बुझल छै। खु फि या अधिकारीक वाक्य—न्याय जँ भाषा नै बुझत तँ न्याय नहि, प्रक्रिया मात्र रहि जाएत—एहि नाटकक विधि शास्त्रीय थीसिस अछि, आपात्र-सूचीमे अनुवादकक परिचय (शब्दकपुल, मुदा पुलोकखनो-कखनो अधूरा रहि जाइत अछि) ओकरकाव्य-सूत्र। मैथिली सन हाशियाक भाषा मे एकटा तमिल-भाषी क भाषिक निर्वासन क कथा कहब अपनहि मे एकटा राजनीतिक वक्तव्य अछि—जे भाषा स्वयं केन्द्र सँ अनसुनल अछि, वएह दोसर अनसुनल भाषाक पक्ष लऽ रहल अछि।

नाटकक सभसँ सूक्ष्म रंग-युक्ति भोजनक पै केट अछि। पहिल अंक मे खु फि या अधिकारी हा जत मे मु ता लि फ कैं रतुका भोजनक पै केट पठबैत छथि; मु ता लि फ हाथ जोड़ि हि चु कि-हि चु कि कानऽ लगैत अछि—ओकर रुदन मे धन्यवाद आ भय दुनू अछि—आअन्तिममंच-निर्देश मे अन्हार मे केवल भोजनक खाली पै केट पर प्रकाश रहि जाइत अछि, संगहि खु फि या अधिकारीक ओ अनुगूँज जे एकटा भोजनक पै केट कखनो-कखनो अदालत सँ पैघ गवाही दैए। ब्रे ष्ट क गे स्टु स-सिद्धान्त मे कोनो एकटा ठोस क्रिया समग्र सामाजिक सम्बन्ध कैं देह दऽ दैत अछि; एतऽभोजन-दान ओ क्रिया अछि जे राज्य आ अभियुक्त क बीच अभियोग-पत्र सँ बाहर क एकटा मनुष्य-सम्बन्धरचैत अछि, आ पूरा नाटक एही सम्बन्ध क परीक्षा अछि। बाबाधाम बला लम्बा प्रसंग—लु ल्हा जे बीस बरखसँ पाँव-पैदल जाइत अछि आ म ही से चराबैत अछि, पीअर बच्चा जे हवा गाड़ीसँ जाइत अछि आ कोठापर कोठा उठबैत अछि—पहिल दृष्टिमे विषयान्तर बुझाइत अछि, मुदा वस्तुतः ई नाटक क रूपक-कोष अछि: खु फि या अधिकारीक निष्कर्ष (पाँव-पैदल बा शतरंजक सिपाही। राजा-रानीनैछीदेश। देशछीमुतालिफ। देशछीलुल्हा) शतरंजकओहीगोटी-बिम्ब कैं राष्ट्र-परिभाषा मे बदलि दैत अछि जाहिसँ ओ मु ता लि फ कैं चिन्हने छला— ई तँ शतरंजक गोटी अछि, पाँव-पैदलसिपाही। जेहाथगोटीचलबैए, सेहाथकतऽ अछि?

दोसर अंक क खु फि या अधिकारी–आ तं की लीडर संवाद एहि नाटकक बौद्धिक रीढ़ अछि, आ एकर विन्यास ध्यान देबा जोग: बीचमेटेबुलनहि, जेना एक अदृश्य खा ई अछि; बहस बढ़लापर दुनूक छाया एक-दोसरामे पै सए लागए—मंच-निर्देश स्वयं थीसिस अछि। संवाद क भीतर लाल डेंगा-प्रसंगपिस्काटर-शैलीक दस्तावेजी अन्त र्वेश अछि—मिज़ोरम-समझौताक वास्तविक इतिहास एतऽ शान्तिक पक्षमे तर्क बनि कऽ आएल अछि (महान नेता अपन जनताकैं बीच म झ धारमे नै छोड़ै छै) — आ प्रतिपक्षमे आ तं की लीडर क आक्षेप-शृंखला (अहाँ फैक्ट्री खोलि देबै तँ ओ दरबान बनि जाएत...अहाँक दया सेहो अहाँ क विरुद्ध गवाही दैए। दया, अधिकारीसाहेब, सत्ता सँ बेसी खतरनाक हथियार अछि) राज्यकविकास-प्रति श्रुति क ओही खोखल पन कैं छूबैत अछि जकरा गंगाब्रिज बलिदान क बयानबाजी मे देखौने छल। शीर्षक-शब्द मचण्ड एहि बहसक धुरी पर दुनू दिस घूमि जाइत अछि: पहिने खु फि या अधिकारी आ तं की सभकैं कहैत छथि—बेरोजगारी क खाली कटोरा मे अहाँ बारूद भरै छी। मचण्डछीअहाँसभ— आ उत्तर मे गरदनि पकड़ल आ तं की लीडर हाँ फै त बजैत अछि: अहूँमचण्डछी, सरकारीमचण्ड...फर्क एतबे जे अहाँ व र्दी मे छी, हमजंगलमे। एक्के विशेषण क ई अदला-बदलीनाटककदर्पण-संरचना अछि—दुनूपक्षएक-दोसराकैं अपन प्रतिबिम्ब देखैत अछि, आ दर्शक कोनो सुविधाजनक पक्ष नहि पबैत छथि।

तेसर अंक पेरिपेटिया अछि: बेल पाबि निकलल मु ता लि फ आब भय क जगह एक अजीब स्थिरता लेने घुरैत अछि, आ अनुवादकक माध्यमे कहबैत अछि जे ओ जेलसँ एलाक बाद अहाँ जकाँ बनऽ चाहलक मुदा पुलिस थाना, पत्रकार, गामक बेरोजगारी आ नाम पर लागल दाग ओकरा से नै करऽ देलकै—जेकरा समाज निर्दोष मानि नहि सकै, ओकरा अपराधी बनबामे देर नहि लगै छै। पीड़ित आ कर्ता क ई स्थान-परिवर्तन ओकर पहिल अंक कहि चु की सँ नापल जाए तँ नाटकक करुणा बुझाइत अछि: व्यवस्था अपने हाथे अपन विरोधी गढ़ैत अछि। चारिमअंककआत्म-चिन्तन मे नाटकमे टा-रंगमंचीय भऽ जाइत अछि—खु फि या अधिकारी कैं मोन पड़ैत छन्हि जे मु ता लि फ कहैत छल, हमकथालिखैछी... ऐ यात्रा मे एकटा कथाक प्लॉटे भेट गेल...ओइ कथाक नायक मु ता लि फ रहत—माने जाहि कथाकैं दर्शक देखि रहल छथि, से भीतरहि सँ लिखा रहल अछि, आ नायकत्वक दावेदारी ओकरा लग अछि जकरा लग भाषा नहि छल। मुदा नायक बनब आ बचि जाएब, दुनूअलगबात अछि— ई वाक्य समापन कैं कोनो समाधान सँ वंचित राखि खुला छोड़ि दैत अछि; बादलसरकार-परम्पराक ई अ-समापन दर्शककैं उत्तरदायित्व सौं प ब अछि, राहत नहि।

अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ मचण्ड गंगाब्रिज आ उल्कामुख क बीचक कड़ी अछि: गंगाब्रिज मे राज्य असहमत कैँ रोल र सँ पि च ड़ा दैत अछि, मचण्ड मे ओकरा प्रक्रियामे ओझरा दैत अछि—हिंसाकईविकास-क्रम (देह-दमनसँतंत्र-दमनधरि) दुनूकैँ संगे पढ़लापर देखार होइत अछि; आमुतालिफकइशारा-भाषा उल्कामुख कही रु क गीत-भाषाक समान ध मर्ा अछि—दुनू ओ स्वर अछि जकरा सत्ताक कान नहि सुनैत अछि, आ दुनू नाटक मे वएह स्वर अन्ततः कथाक केन्द्र बनि जाइत अछि। संकर्षणकअलीगढ़-प्रकरण सँ एकर पूर्व-सम्बन्ध क चर्च ओ तु का समीक्षा मे भऽ चुकल अछि—बि ड़ि या आ प्रेशर कु कर, दुनू ठाम राज्यक आँखि निर्दोष वस्तुमे अपराध पढ़ैत अछि। ध्वनि-विधान (कोर्टककोलाहल, हथकड़ीकखनखन, अनुवादककरुकि-रुकिबाजलस्वर, आ अन्तमे दूर क अजान-घंटी क मिश्रित नगर-ध्वनि) भाषा आ सत्ताक दूरीकैँ श्रव्य बनौने रहैत अछि; समग्रतः मचण्ड मैथिली रंगमंच पर राजनीतिक थ्रिलर क क ले वर मे न्याय-दर्शनकनाटक अछि।

९. उल्कामुख: स्मृति-विस्मृतिक महासंग्राम — नाटच-शृंखलाक शिखर

उल्कामुख एहि नअ नाटक क वट-वृक्ष अछि—विदेह नाट्य उत्सव२०१२मे बेचन ठाकुरक निर्देशनमे मंचित, आपाठकअनुसारमंच-परिकल्पना भरत नाट्यशास्त्रक अनुरूप। ई दाबी अलंकार नहि अछि: मंच-निर्देश मे रंगपीठ, रंगशीर्ष आ मत्त वा रणी क शास्त्रीय अंग-विभाजनक क्रियात्मक प्रयोग भेल अछि—पात्र मत्त वा रणी सँ रंगपीठ अबैत छथि, प्रकाश रंगशीर्ष पर केन्द्रित होइत अछि—जे आधुनिक भारतीय रंगमंच हु मे विरल अछि। संरचना कल्लोलमे अछि (संकर्षणजकाँ, मुदा एतऽ लहरि स्मृतिक अछि), आकेन्द्रीयमंच-प्रतीक क रूपान्तरण नाटकक अर्थ-यात्राक नक्शा अछि: पहिलसँ चारिम कल्लोल धरि मंचपर शतरंजक डिजाइन बनाओल घन राखल रहैत अछि—भूत आ कल्पनाक प्रतीक— आ पाँचम कल्लोलसँ ओकर जगह गोला लऽ लैत अछि, वास्तविकताक प्रतीक; पाठकशब्दमे, घनककोनामेटिगेल; आबवृत्त अछि, जे स्मरण कैँ घुमा कऽ फेर सोझाँ आ न त। संकेतसँवास्तव, कल्पनासँसत्य—ईज्यामितीयरूपक (कोनसँवृत्त) एहि नाटकक समूचा दर्शन एक वस्तु मेगूँ थि दैत अछि।

पूर्वार्द्धक विषय ऐतिहासिक अछि: तत्त्वचिन्तामणिकार गंगेश उपाध्याय, जे श्रीहर्षक खण्डन-प्रहारसँ न्याय कैँ बचा नव्य-न्यायक स्थापना केलन्हि, आ जिनक विषयमे दूषण-पञ्जीक अभिलेख पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्ति तथा चर्मकारिणीसँ विवाहक तथ्य सुरक्षित रखने अछि—नाटक एहि अभिलेखीय-सूत्रसभकैँ (पुत्र वर्द्धमान क सुकविकैरवकाननेन्दुः बला कवि-प्रशस्तिसहित) नाट्य-वस्तु बनबैत अछि आ हुनक प्रेमिका-पत्नीकैँ वल्लभा नाम दऽ ओहि प्रेम क कथा रचैत अछि जकर चर्च शास्त्र-परम्परा नहि करैत अछि। एतहि नाटकक मूल प्रश्न जनमैत अछि: तत्त्वचिन्तामणि पर भाष्यपर भाष्य, टीका पर टीका लिखाइत रहल, मुदा गंगेशक कविता भऽ गेल उल्कामुख—माने हेरा गेल, नाम-मात्र बनि गेल। आचार्य व्याघ्र आ आचार्य सिंह—जिनक चर्च गंगेश ग्रन्थ मे बिनु असल नाम क केने छथि—मंचपर भूत बनि कऽ अबैत छथि आ अपन दशा क व्याख्या स्वयं करैत छथि: नाम नु केलासँ मनुक्ख धीरे-धीरे प्रतीकबनैए, प्रतीकसँ कथा, आ कथासँ दोष। यान असमान क सांस्कृतिक स्मृति-सिद्धान्त एतऽ प्रत्यक्ष मंचित बुझाइत अछि—संस्थागत, लिखित, अभिलेखीय स्मृति (चौपाड़ि, टीका-परम्परा) आजीवित, वाचिक, गीत-वा हित स्मृति क द्वन्द्व; वल्लभाक घोषणा एहि द्वन्द्वक अमर सूत्र अछि: जँ पोथीमे नाम कटत, गीतमे साँस बचत। आ जे प्रेम सात सए बर्ख इ न्त जार कऽ सकै छै, ओकरा बँ स बि ट्टी रोकि नै सकत।

विस्मरणकतंत्र-पक्ष आचार्य सरभ आ हुनक शिष्य (खिखिर, शाही, नढ़िया, बिज्जी) कप्रसंगमे अछि—रटन्तविद्या, जतऽ बिनु बुझने पाठ यादि कराओल जाइत अछि जइसँ सभ बिसरि जाथि गंगेश आ वल्लभा कैँ, आ प्रश्न पुछनिहार शिष्य मारल जाइत अछि (आब रटन्त विद्या बचत, प्रश्नमरत) । एकरप्रतिरोध-शस्त्रअछिसंकेत: आचार्य सिंह क सूत्र—अपूर्ण पाठ कवि स्मरण नै भऽ सकैए, वि स्मरण होइए मात्र पूर्ण पाठ—एहिनाटककज्ञान-मीमांसीय हीरा अछि; जेबातअधूरी, बिम्ब-रूप, गीत-रूपबचलरहैत अछि, से दिमागमे काँट जकाँ गड़ ल रहैत अछि आ कहियो ने कहियो पूरा ह एबाक माँग करैत अछि—उल्कामुख वएह संकेत अछि। एहि पू वर्ा र्द्ध क मे टा-नाट्यीय ता चकित करैत अछि: पात्र सभ जनैत छथि जे ओ कल्पना छथि (हम पूर्ण कल्पना छी शिष्य खिखिर? —आचार्य, अहाँ कल्पना छी आ हम सभ कल्पना बनै बला छी), आ पि रा न्दे लोक सि क्स कैरेक्टर्स इन सर्च ऑफ एन ऑ थ र क स्मृति दिअबैत छथि—मुदा एतऽ पात्र लेखक नहि, स्मरण ताकि रहल छथि। संगहि लोकगाथाक पूरा कोष मंचपर उतरैत अछि—दीना-भदरिकगाथा (जकरा वल्लभा आ गंगेश बेरा-बेरी गाबि कऽ खेलैत छथि), गोरिल-बालगोरैय्या, सलहेस-फोटरागीदर, विष हरि आ गोसाउनिक गीत — आकीर्तनियाँ-परम्पराबलागीत-प्रधानमैथिलरंग-स्मृति एहि नाटकक देह बनि जाइत अछि; नाराशंसी (जन-प्रशस्तिगाथा) शब्दकबेर-बेर प्रयोग सूचित करैत अछि जे नाटककार लोकगाथा कैँ अलंकरण नहि, इतिहास-लेखनक वैकल्पिक विधा मानैत छथि।

पाँचम कल्लोलसँ नाटक सात सए बरखक छलाँग लगबैत अछि आ सभ पात्र नव जन्म लैत छथि—गंगेश गंगाधर बनैत छथि, वल्लभाकुमरसुता, भगताजटा, आचार्य सरभ राजा कीर्ति सिंह (नाम स्वयं मिथिलाक ओइनवार राज-स्मृति जगबैत अछि) । गंगाधरककथा—यज्ञोपवीत क अस्वीकार, दलित गाय कही रू आ ऋषि जटा कैँ गुरु मानब, सप्तरी क बोनक पाठशाला, दरबारमे एक सँ सए धरिक जोड़ कैँ जोड़ा-विधि सँ पाँच हजार पचास निकालि देखाएब, कुमर सुता सँ विवाह, आ अनुभव मण्डल क स्थापना जइमे ने कोनो जाति क भेद छै आ ने स्त्री-पुरुषकभेद—एकटा भिन्न ऐतिहासिक स्रोतसँ ऊर्जा लैत अछि, आ नाटक ई स्रोत नुकबैत नहि अछि: जटाक शिष्य स्पष्ट कहैत अछि जे गुरु दक्षिण दिशा सँ बास वेश्वरक खिस्सा सुनि कऽ आएल छथि आ कहै छथि जे मिथिला मे सेहो हेतै ई सभ। कल्याणकशरण-आन्दोलन, अनुभवमंटप, आ अन्तर्जातीय विवाह पर राजदण्ड क ओ इतिहास एतऽ मैथिल भूगोल मे रोपल गेल अछि—मेधा (ब्राह्मण सेनापतिक बेटी) आजीवे (चर्मकारकबेटा) क प्रतिलोम विवाह पर राजा आँखि निकालि हाथीसँ पि च ड़े बा क आदेश दैत अछि, आओकरवाक्य—जे प्रेम जातिक पार देखलक, ओकर आँखि राजसिंहासन सहि नै सकैए—पू र्वा र्द्ध क ओोहि निषेध कैँ (प्रेम जँ जातिक देवाल पर चढ़ि जाए तँ देवाल कर ख वा र सभ कैँ आगि लागि जाइ छै) राज-हिंसा मे परिणत कऽ दैत अछि। तकर बाद माधव क गुप्त प्रतिशोध-अभियान, रुद्रमतिकभात-दृश्य क लोक नाट्यीय कठोरता, राज वध आ माधव क आत्महत्या — आ अन्तमे मरणासन्न गंगाधरक ओ आत्मा लोचन जे एहि नाटककैँ प्रचार-नाट्य सँ सर्वथा अलग कऽ दैत अछि: यएह टा डर अछि जे बदला क भाव क ई आगि अनुभव मण्डल कैँ एकटा उल्कामुखी जाति नै बना दै...जे दरबज्जा हम खोल लौं, ओ हमरा गेलाक बाद फेर बन्द नै होउ। आन्दोलन अपनहि प्रति-पहचान मे नव जाति बनि जेबाक जोखिम— ईआत्म-सजगता ब्रे ष्ट क ऐ ति हा सी करण क सार्थकता अछि: चौदहम शताब्दीक कथा वर्तमान क हरेक आन्दोलन सँ प्रश्न पुछैत अछि।

रस-दृष्टिसँ उल्कामुख अद्भुत (भुतहाबँसबिट्टी, उड़ियाइतपात्र, ताबीज), करुण (मेधा-जीवे, गंगाधरक मृत्यु) आशान्तकसंकर अछि, आओकरश्रव्य-समापन—घन क ख र खरा हटि आ गोला क घरघराहटि एक संग, फेर दूरसँ घुरैत लोकगीतक एक पंक्ति, जेना वि स्मरण फेर हारि रहल हो—ध्वनि-नाट्य क दुर्लभ उपलब्धि अछि। अन्तर्पाठीय दृष्टिसँ ई नाटक शेष आठू क संगम अछि: दधीचीकज्ञान-पहरा एतऽ चौपाड़ि क प्रतिलिपि-निषेधबनल अछि; अपालाकनाम-सहित स्वीकृतिक ठीक विलोम वल्लभाक नाम-लोप अछि; कमलाक भगताकबिनु-बुझल नकल एतऽ रटन्त विद्याक संस्था बनि गेल अछि; बाल-नाटकसभकप्रश्न-संस्कृति (प्रश्ने विद्याक पहिल सीढ़ी) एतऽ अनुभव मण्डल बनि फ ड़ै त अछि; गंगाब्रिज क लिखित-इतिहास बनाम डंका एतऽ पोथी बनाम गीत अछि; आ मचण्ड क अनसुनल भाषा एतऽ ही रू क गीत बनि सत्ताक कान धरि पहुँचबाक बाट ताकैत अछि। जँ एहि नअ नाटक क कोनो एकटा वाक्य कैँ समूचा शृंखलाक ध्ये य-वाक्यबनाबी, तँओवल्लभाक अछि—नामकाटू, गीतकाटू, देहकाटू, मुदा प्रेमक ध्वनि कतऽ काटब?

उपसंहार: नअ नाटक, एक नाट्य-दर्शन

नअ समीक्षा क बाद आब ओ सूत्र-जाल समेटल जाए जे एहि रचना-समूह कैँ पोथी बनबैत अछि। पहिल सूत्र सूत्रधार-परम्परा अछि: कमलाक भगता, दानवीर दधीची, भऽ जाएब छू, अपाला आत्रेयी, संकर्षण आ उल्कामुख—छह टा नाटक मे सूत्रधार उपस्थित छथि, कतहु हाक देनिहार, कतहु व्याख्याकार, कतहु दर्शक सँ प्रश्न पुछनिहार। भरतक पूर्वरंग-विधान सँ चलल ई पात्र एतऽ आधुनिक कथावाचक (नैरेटर) आ ब्रेष्टीय टिप्पणीकार क बीच क सेतु अछि, आ जतऽ सूत्रधार नहि छथि (जलोदीप, गंगाब्रिज, मचण्ड) ओतऽ ओकर काज कोनो ध्वनि-यंत्र करैत अछि—ढोलहो-डंका, हेलिकॉप्टर क घरघराहटि, अनुवादकक स्वर। दोसर सूत्र ओ हस्ताक्षर-ध्वनि अछि जकर चर्च बेर-बेर भेल— ई असल बात अछि—जे दानवीर दधीची क अन्तमे फुसफुसाहटि बनि आ जलोदीप क अन्तमे सामूहिक धुन बनि अबैत अछि: सत्यक ई मुहर नाटककारक अपन शैली-चिन्ह अछि, जेना चित्रकार कोन मे अपन संकेताक्षर छोड़ि जाइत छथि।

तेसरसूत्रदेह-ध्वनिक अछि। भऽ जाएब छू मे गाछक मरणक बाद पात्र सभक खोंखी ताल मे बदलैत अछि; उल्कामुख मे भगता आ ऋषि जटाक उ का सी दृश्य-सन्धि क घण्टी अछि आ गंगाधरक अन्तिम खोंखी क संग नाटक प्राण त्यागैत अछि। खोंखी—देहक ओ अनैच्छिक स्वर जे ने भाषा अछि ने गीत—एहिनाट्य-संसार मे संकट क सभसँ ईमानदार सूचक अछि: पर्यावरणकसंकट, देहकसंकट, स्मृतिकसंकट। चारिम सूत्र जलक अछि: कमलाक धारसँ (कमलाक भगता) गंगाधरि (गंगाब्रिज), बाढ़िक जल प्रलयसँ (जलोदीप) शर्यणाजलाशयधरि (दानवीर दधीची) —जल एतऽ कतहु साक्षी अछि, कतहुन्यायाधीश (प्रमाणपानि अछि), कतहु बलि माँग निहार भ्रम क आवरण (ईगंगा...खूनचाहीएकरा—जे वस्तुतः सत्ताक अपन भूख छल) । आ पाँचम सूत्र ज्ञानक अछि, जे एहि पोथीक समीक्षा सभमे डेग-डेगपर देखार भेल: बिनु कारण बुझने नकल (कमलाक भगता)→ज्ञानपर पहरा (दानवीर दधीची)→प्रश्नकअधिकार (अपाला आत्रेयी)→कल्पना आ व्यवहार क संयोग (भऽ जाएब छू)→बच्चाक विशेषज्ञता (जलोदीप)→आत्म-प्रवंचना

(संकर्षण)→इतिहासकपट्टी-बन्हाइ (गंगाब्रिज)→भाषाहीनकन्याय (मचण्ड)→रटन्त बनाम बुझ न्त आ स्मृतिक रक्षा (उल्कामुख) । ईकोनोबिखरलविषय-सूची नहि, एकटा क्रमबद्ध ज्ञान-मीमांसा अछि—प्रश्न सँ स्मरण धरि।

बाल आ प्रौढ़ नाट्य क सिद्धान्त-भेद पर एहि शृंखलाक अपन उत्तर सेहो आब स्पष्ट कहल जा सकैत अछि। पाँचू बाल-नाटकस्लेड-हीथकोट-बो आ ल परम्पराक अनुरूप बच्चाकेँ कर्ता बनबैत अछि आ सभक अन्त आशा वा प्रतिज्ञापर होइत अछि; चारू प्रौढ़ नाटक ब्रे ष्ट-पिस्काटर-सरकार परम्पराक अनुरूप दर्शकक सुविधा तोड़ैत अछि आ तीन टा क अन्त अ-समाधानपर (संकर्षण एकमात्र अपवाद अछि, जतऽ आत्मबोध भेटैत अछि—मुदा ओहो हँसीक नहि, बुझबाकक्षणपर) । तथापि दुनू धारा एक्के नदीक अछि: बाल-नाटककप्रतिज्ञा (पूछू, बुझू, फेरकरू) जँ नि महल जाए तँ प्रौढ़ नाटकक त्रासदी—रोल र क नीचाँक अभियन्ता, जेलकमुतालिफ, हाथीक पएर तर क मेधा-जीवे—टारलजासकैत अछि; प्रौढ़ नाटक ओही भविष्यक चित्र अछि जे प्रश्न नहि पु छनि हार बच्चा क प्रतीक्षा करैत अछि। एहि अर्थमे नअ नाटक क ई समुच्चय एकटा पूर्ण रंग-शिक्षाक्रम अछि—कमला घाटक बालु सँ उल्कामुखी ता बीज धरि—जकरा विद्यालय, गाम-मंचआनगर-प्रे क्षागृ ह तीनू ठाम, क्रमसँवाफराक-फराक, खेलाएल जा सकैत अछि।

अन्तमे एकटा प्रस्ताव: जँ ककरो एहि न अ मे सँ मात्र दू टा नाटक पढ़बाक वा खेलेबाक अवसर हो नि, तँ ओ कमलाक भगता आ उल्कामुख चुन थि—शृंखलाक सभसँ छोट आ सभसँ पैघ रचना। पहिल सिखबैत अछि जे बिनु बुझने केल हा काज केहन विधान बनि जाइत अछि, दोसर देखबैत अछि जे बिनु बुझने रटल हा विद्या केहन वि स्मरण बनि जाइत अछि— आ दुनूक बीचक सात नाटक ओही दू ध्रुवक बीच मनुक्खक, समाजक आ स्मृतिक यात्रा अछि। नाटककार अपन सूत्रधारक मुँहे जे क हौ ने छथि, से एहि पोथीक अन्तिम पाँती बनए योग्य अछि: कथाबदलिसकैए, मुदा सत्य क खोज बन्न नहि हेबाक चाही।

६०. मुन्नी कामतक' जिन्दगीक मोल' आ' चुक्का'

सारांश

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी "जिन्दगीक मोल" विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह १३ (पृ. ४१२-४२०) मे, जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर। जागले छिऐ, बाजऽ, बहुत परेशान लागि रहल छहक। राम रतन- बाबू, हम बाहर कमाइ लेल जाइ के सोचि रहल छी।

बीजशब्द: मुन्नी · कामतक · एकांकी · जिन्दगीक · आलोचनात्मक · टिप्पणी · फूलचन

लेखकक आमंत्रित रचना आ ओइपर आमंत्रित समीक्षकक समीक्षा सीरीज- मुन्नी कामतक एकांकी "जिन्दगीक मोल" आ ओइपर गजेन्द्र ठाकुरक टिप्पणी

"जिन्दगीक मोल" विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह: सदेह १३ (पृ. ४१२-४२०) मे, जे उपलब्ध अछि विदेह पेटारमे ऐ लिंकपर।

आब पहिने ऐ एकांकीक पुनर्पाठ करी:-

मुन्नी कामत

एकांकी- जिन्दगीक मोल

प्रथम-दृश्य

राम रतन- बाबू सुतल छिऐ?

भिक्खन- कि कहै छहक बउआ? जागले छिऐ, बाजऽ, बहुत परेशान लागि रहल छहक।

राम रतन- बाबू, हम बाहर कमाइ लेल जाइ के सोचि रहल छी। तोहर की विचार छऽ।

भिक्खन- नै बउआ, हम अतेक दिन तक तोरा नै कतौ जा देलियऽ। आबो नै जा देबऽ। तोरा सिवा हमरा के छै। तोहर माइ तोरा हमरा कोरामे दऽ कऽ दुनिया छोड़ि देलक। तहियासँ हमर सभ कुछ तूँ छहक। हम तोरासँ एक पल खातिर दूर नै रहि सकै छी।

राम रतन- बाबू आब हम १८ बरसक भऽ गेलिऐ। हम अपन ख्याल राखैमे सक्षम छी। हमरा बाहरक दुनियाँ देखै कऽ एगो मौका दऽ दिअ, बस एक बेर जा दिअ, फेर अहीं संगे रहब।

भिक्खन- नै, अबकी बैशाखमे तोहर बियाह करै कऽ अछि। बियाह करि लऽ, फेर तोरा जतऽ जाय कऽ मन हेतऽ जायहक।

राम रतन- बाबू आब माइनो जाउ। किछु दिनक तँ बात छै। फेर अहाँ जेना कहब हम तहिना करब।

भिक्खन- ठीक छै, अहाँक हठक आगू हमरा झुकइये पड़तै। ककरा संगे आ कतऽ जेबहक?

राम रतन- बाबू, काल्हि फुलचनमा हिमाचल जा रहल छै। हम ओकरे संगे हिमाचल जाएब।

भिक्खन- ठीक छइ, काइले जेबहक तब तँ पाइ कौरीक ओरियान करऽ पड़तै। कखुनका गाड़ीसँ जेबहक।

राम रतन- रातिक ११ बजे निर्मली सँ गाड़ी पकड़बै। आब हम जाइ छी, अपन कपड़ा-लत्ता साफ करै लऽ।

। पटाक्षेप।

दोसर दृश्य

भिक्खन- बउआ हइए..... फूलचन एलऽ।

राम रतन- आबैय छी बाबू। कपड़ा पिनहै छी।

भिक्खन- बउआ फूलचन। तूँ तँ ओतै रहै छहक। तोरा तँ ओतौका सभ किछु कऽ पता हेतऽ।

फूलचन- हउ कक्का, तूँ चिंता नै करऽ। राम रतन हमरे संगे रहतै। ओतऽ ओकरा कोनो चीजक तकलीफ नै हेतै।

भिक्खन- तूँ तँ दवाइबला कम्पनीमे काज करै छहक नऽ! कथीक काज करै छहक?

फूलचन- हँ कक्का। दवाइयेबला कम्पनीमे छिऐ। ओइमे तँ बहुत तरहक काज होइ छै। जे काज भेटल सएह करि लेलौं।

भिक्खन- अच्छा चलऽ, ठीक छै।

राम रतन- चल फूलचन!

भिक्खन- बउआ सभ किछु ठीकसँ लऽ लेलहक नऽ? आ सभ िदन हमरा फोन करैत रहिअ। बाहर जाए छहक, गाड़ी-घोड़ा देख कऽ चलइहक।

राम रतन- ठीक छै बाबू, अहाँ चिंता बिलकुल नै करू। अपन ख्याल रखब। समय-समयपर खाना खाइत रहब आ बेसी काज नै करब। हम जल्दी घुइम-फिर कऽ आबि रहल छी।

सबहक प्रस्थान!

। पटाक्षेप।

तेसर दृश्य

(हिमाचल पहुँच कऽ)

राम रतन- फूलचन, आइ गामसँ एला छऽ दिन भऽ गेलैए। तूँ तँ काम पर चलि जाइ छऽ आ हमरा असगर पहाड़ जकाँ समय लगै यऽ। हमरो कतउ काज लगा दे नऽ।

फूलचन- अच्छा ठीक छै। काल्हि हम अपन मालिकसँ तोरा लऽ बात करबउ।

दोसर दिन

फूलचन- राम रतन, काल्हिसँ तूँहो चलियहन हमरा संगे। ८ हजार मासिक तनखुआ पर हम तोरा लऽ बात केलियौहँ, मंजूर छउ नऽ। मन लगा कऽ काज करबही तँ अओर तनखुआ बढ़ेतउ।

राम रतन- ई तँ हमरा लऽ बहुत खुशीक बात अछि। अखने हम बाबूकेँ ई शुभ समाचार दै छी।

पटाक्षेप।

चारिम दृश्य

कम्पनीक कैनटिंगमे बैठ राम रतन आ फूलचन खाना खाइत गप्प करैत अछि।

राम रतन- फूलचन अतऽ कोन काज होइ छै। हमरा सँ आइ कोनो काज नै करेनकैए। डॉक्टरबला कोट पहिरने एगो आदमी एलै आ हमरा एगो गोली खिया कऽ चलि गेलै। कुछो समझमे नै आबै छै, उ हमरा कथीक दवाइ देलकैए। ओतऽ चारि-पाँच गरऽ अओर छेलै, सभकेँ वएह दवाइ देलकैए।

फूलचन- अतऽ अलग-अलग बिमारीक दवाइ बनै छै, ओकरे जाँच खातिर कम्पनी किछु लोककेँ नौकरी पर रखै छै, जइमे सँ एगो तुहो छी।

राम रतन- ओइ दवाइसँ कोनो हानि तँ नै होइ छै?

फूलचन- नै! अगर हेबे करतै तँ अतऽ डॉक्टरक आ दवाइयक कोनो कमी छै? जे खर्चा ओकर इलाजमे लगतै सभ कम्पनी देतै। हमहूँ तँ कतेक साल तक यएह काज केलिऐ, कहाँ किछु भेलै।

एक आदमी- फूलचन, राम रतनकेँ पठाउ, डॉक्टर साहेब बजेने छै।

फूलचन- जी। (रामरतनसँ) जो देखहीं की कहै छउ।

राम रतन डॉक्टरक चेम्बरमे जाइत अछि।

राम रतन- साहेब अहाँ बजेलौं।

डॉक्टर- ई दवाइ खा लिअ आ एतऽ पड़ि रहू, किछु इन्जेक्सन लगेबाक अछि।

दवाइ खा कऽ राम रतन सुइ लइ लऽ मेज पर लेट जाइए!

२ घंटा बाद

डॉक्टर- राम रतन ओ राम रतन उठू।

डॉक्टर राम रतनकेँ हिलाबैत अछि आ फेर नब्ज देखऽ लागैत अछि!

डॉक्टर- ई की, ई तँ मरि गेल। कियो अछि, डॉक्टर खुरानाकेँ बजाउ।

डॉक्टर खुराना- की भेल?

डॉक्टर- सर, एकरा देखू, की भऽ गेलै, नब्ज नै चलै छै।

डॉक्टर खुराना- ओह नो! ई मरि गेल। कोन दवाई देलौं एकरा?

डॉक्टर-सर ई तीनू।

डॉक्टर खुराना- की अहाँ पागल छी? एक साथ एतेक दवाइ, सेहो पहिले बेरमे। पहिने अहाँ एकरा नींदक गोली खुएलौं, तकर बाद एतेक पावरक दू-दू इन्जेक्सन दऽ देलौं?

डॉक्टर-सर आब की हएत?

डॉक्टर खुराना- हमरा सभ ऐठाम तँ ई रोजक बात अछि। एकर परिवारबलाकेँ मुआवजा दऽ कऽ चुप करा दियौ, आ हँ जखन सभ चलि जाए तखन बॉडी बाहर निकालब। ता तक एकर मरबाक खबर ऐ चहरदिवारीसँ बाहर नै एबाक चाही, बुझि गेलौं।

रातिक ९ बजे

फूलचन- सर, राम रतन कतऽ अछि, ओकर छुट्टी नै भेल?

डॉक्टर- आइ एम सॉरी फूलचन, राम रतन आब ऐ दुनियाँमे नै रहल। हमरा एकर अफसोस अछि। ओकर परिवारबलाकेँ कम्पनी एक लाख रूपैया मुआवजाक तौरपर देत। हम ओकरा नै बचा पेलौं।

फूलचन मने-मन सोचैत अछि

-आब हम की जबाब देब कक्काकेँ। केना कहब कि ओकर जिअइ कऽ सहारा छिन गेल। केना जिथिन ओ, हे भगवान, एना केना भऽ गेल।

पटाक्षेप!

अंतिम-दृश्य

फूलचन- हेल्लो.. कक्का, तूँ जेना छहक तहिना अखने गाड़ी पकड़ि लए। राम रतन बहुत जोर बीमार छऽ।

भिक्खन- बउआ, एक बेर हमरा राम रतन सँ बात करा दए। की भेलैए हमर बाबूकेँ। हम तँ देखनइयो नै छिऐ हिमाचल तँ केना एबऽ।

फूलचन- कक्का, हमर छोटका भाइ तोरा लऽ कऽ एतऽ। ओ अखने तोरा घर आबि रहल छऽ, तूँ बस जल्दी आबि जा।

भिक्खन- हम अबै छिअ बउआ, तूँ हमरा बउआक ख्याल रखियहक।

फूलचन- ठीक छै, आब फोन रखै छिअ।

कहैत-कहैत फूलचन कानऽ लगैत अछि

दोसर दिन हिमाचल पहुँच कऽ

भिक्खन-बउआ........बउआ राम रतन कतऽ छहक?

फूलचन- कक्का पहिले अहाँ किछो खा लिअ। राम रतन ठीक यऽ।

भिक्खन- पहिले हम अपना बेटाकेँ देखब तब किछो मुँहमे लेब।

फूलचन भिक्खनक गला पकड़ि कानऽ लगैए आ सभ किछु बता दइए।

भिक्खन- फूलचन, हमरा बेटाक जीवनक सौदा तूँ ८ हजार मे केलहक। तूँ सभ किछु जानै छेलहक, तइयो ओइ मौतक मुँहमे हमरा बेटाकेँ धकेल देलहक। तूँ हमर सभ किछु लऽ लेलहक, हमरा निष्प्राण बना देलहक। हमर बेटाक मौतपर हमरा १ लाखक भीख तोहर कम्पनी देतऽ, उ ओकरे मुँह पर फेक दिहक। हमरा नै चाही कोनो भीख। आइ हमर बेटा मरल, काल्हि ककरो अओरक बेटा मरत। आखिर ई मौतक खेल किए खेलल जाइए? जे दवाइक परीक्षण जानवरक ऊपर करबाक चाही ओकरा भोला-भाला गरीब मनुष्यक ऊपर करैत अछि। कि अकरा रोकै लेल कोनो कानून नै अछि?

एक घार रूदनक संगे पटाक्षेप

एकांकीक विवेचना

पहिने बता दी जे आब दवाइक प्रयोग लेल बजारमे एबासँ पहिने ओकर प्रभाव आ दुष्प्रभाव केर जाँच लेल मनुक्खकेँ वेक्टर बनेबापर भारत सरकार प्रतिबन्ध लगा देने अछि, मुन्नी कामत सन-सन बहुत रास लोक ऐ लेल धन्यवादक पात्र छथि। जेना हमर उपन्यास "सहस्रशीर्षाक" नायक मोहन गबैय्या सन-सन बहुत लोक सूचनाक अधिकार दियेलन्हि, मुदा किछु लोक असगरे तकर क्रेडिट लेबाक लेल अपस्याँत छथि, किछु तेहने सन।

ई एकांकी एक अंक आ पाँच दृश्यक अछि। एकांकीक नायक राम रतन १८ बर्खक होइते देरी हिमाचल बिदा होइ छथि। हिमाचल प्रदेश आ उत्तराखण्डमे बहुत रास दवाइ केर कम्पनी छै, जे भारत सरकारक टैक्समे छूट केर लाभ लेबा लेल एतऽ खुजल अछि। राम रतन बियाह करबा लेल तैयार नै होइत अछि आ आठ हजार टाकामे जे नोकरी ओकरा भेटै छै से अछि दवाइक प्रयोग लेल बजारमे एबासँ पहिने ओकर प्रभाव आ दुष्प्रभाव केर जाँच लेल वेक्टर बनब। ओकरा शंका छै मुदा फूलचन कहै छै जे ओहो पहिने यएह करैत छल। ओकर मृत्यु होइ छै, डॉक्टर खुरानाक सम्वाद सिद्ध करैत अछि जे एहेन बहुत रास मृत्यु पहिनहियो भेल छै, एक लाख टका अनुकम्पामे दऽ मामिला खतम कऽ देल जायत। भिक्खनकेँ लाख टका नै चाही, ओ कहै छथि- "जे दवाइक परीक्षण जानवरक ऊपर करबाक चाही ओकरा भोला-भाला गरीब मनुष्यक ऊपर करैत अछि। कि अकरा रोकै लेल कोनो कानून नै अछि?"

तँ भिक्खनकेँ हमर उत्तर अछि जे भारत सरकार कानून बना देलक अछि अहाँक लाख टका केँ ठोकर मारब सरकारकेँ मजबूर केलक, आब वेक्टर जानवर बनत मनुक्ख नै, आ सेहो सुरक्षाक संग, ईहो मांग पूर्ण भेल। हम अपन नोकरीक कार्यपालनमे सेहो एकटा एहेन केस पकड़ने रही जइमे नामी हॉस्पीटल सभ सेहो संलग्न रहथि। मुदा भिक्खनकेँ हम ई किए कहि रहल छी। ओ तँ मुन्नी कामतक एकांकीक एकटा पात्र छथि, काल्पनिक पात्र। झूठ, भिक्खन तँ नाम छथि, हम बहुत रास भिक्खनकेँ देखने छी आ बहुत रास राम रतनकेँ सेहो, मुदा मूलधाराक नाटककार नहिये "बिसाँढ़" खेने छथि नहिये राम रतन देखने छथि तँ मलंगिया जी "बुझता है कि नहीं"मे अपन प्रतिभाक इतिश्री कऽ लेलन्हि, जँ हमर "छुतहा घैल"क आलोचनापर ओ ध्यान दइतथि तँ एतेक प्रतिभा तँ हुनकामे छलन्हि जे अइ दस सालमे हुनको भिक्खन भेटि जइतन्हि। मलंगिया जी केँ व्यंग्य आ जातिवादी आक्षेपक अन्तर दस साल बादो बुझऽ मे नै आयल छन्हि आ हमर समालोचनाक बाद मलंगिया जीक परिवार आ जातिवादी रंगमंचक लोक जे काण्ड केने रहथि से तँ विदेहमे अभिलेखित अछिये।

एकांकीक विवेचना- समाजशास्त्रीय पक्ष

तँ भिक्खन कोरा धोती परम्पराक छथि- ओ अगड़ो भऽ सकै छथि आ पिछड़ो। मलंगिया जी जकाँ मुन्नी कामतकेँ ओकड़ा राड़ वा पिछड़ा कहबाक खगताक अनुभव नै भेलन्हि। किए? किएक तँ हुनकामे प्रतिभा छन्हि, ओ कला-एकांकीकेँ लोक देखिते नै अछि, पढ़िते नै अछि- बाजि कऽ अपन कमीकेँ नुकबै नै छथि, हुनका बुझल छन्हि जे कला-एकांकी सेहो लोकप्रिय हएत जँ ओइमे कथानक हेतै। से ओ एहेन कथानक अनलन्हि।

आब आउ ऐ एकांकीक भाषाक समाजशास्त्रीय विश्लेषणपर आ तुलना करू अइ एकांकीक भाषा आ मलंगिया जीक छोटका लोकक लेल गढ़ल गेल कृत्रिम-भाषापर। मुन्नी कामत कोनो धुआ-धोती धारीक प्रवेश अपन एकांकीमे नै हुअय दैत छथि, हुनका बुझल छन्हि

जे ई ट्रेजेडी छिऐ, जँ धुआ-धोतीक आगमन हेतै आ भाषाक एकरङाह रूप आ एकांकीक सत्यानाश दुनू संगे हएत। से ओ सतर्क छथि। मुदा मलंगियाजी तँ निशाँमे छथि, दुनियाँ आगू बढ़ि गेलै मुदा ओ आ हुनकर जातिवादी रङमंचक निर्देशकक नजरिमे दु-रङागह भाषा आवश्यक, आ से नाटकक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत (जेना बाङ्ला आदि भाषाक लेखक करै छथि) नै वरन् हँसी उड़बैले आ आक्षेप लगबैले, नै तँ जातिवादी दर्शक थोपड़ी पाड़त केना? मलंगिया जी आ जातिवादी रंगमंच अखनो समालोचनाकेँ रचनात्मक रूपमे लिअय, मुन्नी कामतक ऐ रचनाकेँ बेर-बेर पढ़य आ ऐ मे देल भाषायी समाजशास्त्रक स्वरूपकेँ चिन्हय आ ओकर अनुकरण करय, तदनुसार अपनामे सुधार करय तँ विदेह ओकर स्वागत करत।

एकांकीक भाषायी विश्लेषण

भिक्खन बजै छथि- "नै, अबकी बैशाखमे तोहर बियाह करै कऽ अछि। बियाह करि लऽ, फेर तोरा जतऽ जाय कऽ मन हेतऽ जायहक।"

"अबकी बैशाखमे"- ऐ प्रयोगमे अहाँकेँ कनियो समस्या भेल? नै भेल, मुदा जँ ई जातिवादी रंगमंचक टटका संग्रहकेँ देखी (आधुनिक मैथिली नाट्य सञ्चयन- सङ्कलन-सम्पादन रमानन्द झा 'रमण' जे ऐ लिंक पर ४६५ भा. रु. मे उपलब्ध अछि) तँ यएह प्रयोग एना हएत-

धुआ धोतीधारीक प्रवेश- "की हौ भुक्खन, बेटा हिमाचल कमाइले जाइ छह, रौ रामरतन, ओतहियेे कोनो मेमसँ बिया नै कऽ लिहैँ।"

भिक्खन- "नै, अबकी बैशाखमे रामरतन के बियाह करै कऽ अछि।"

आब भिक्खन वएह गप जे मुन्नी कामतक कलमसँ प्रवाहयुक्त रहै, से छोटहा लोकक लेल प्रयुक्त अहाँकेँ लागत, आ सेहो नाटककार द्वारा सायास, नाटककार देखार हेता, आ मैथिलीक अपमान हएत। मुन्नी कामत सन लेखक से नै हेमऽ देतीह। मुदा जातिवादी रंगमंच मिझेबासँ पहिने अपन समस्त दुष्टताक संग साहित्य अकादेमीक लाखक लाख टकाक असाइनमेण्टक सहयोगसँ "आधुनिक मैथिली नाट्य सञ्चयन" क रूपमे आयल अछि, अइ ४६५ भारतीय रुपयाक पोथीमे चालिसो पाइक सामिग्री नै छै, आ नव युवाकेँ ई आर कट्टर बनाओत, हुनका पतो नै चलतन्हि जे ऐ लेल भाषाक कोन समाजशास्त्रक एतऽ प्रयोग कएल गेल अछि। मुदा एकटा संतोष अछि जे चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर' लिखने रहथि जे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मैथिली पोथी गोदाममे सड़ि जाइए। से जेना बुद्ध, दुष्ट गामक लोककेँ एक्के ठाम रहबाक आ सज्जन गामक लोककेँ पसरबाक वरदान देने रहथि से हमहूँ ऐ जातिवादी नाट्य सञ्चनकेँ गोदामे मे रहबाक आ कतहु नै पसरबाक कामना करैत छी।

एकांकीक कमजोर पक्ष

जेना उपन्यासक प्लॉट होइ छै तहिना नाटकोक प्लॉट होइ छै। एकांकी तँ बीहनि कथे भेल, विविध भारतीक "हवा-महल" कार्यक्रमक झलकी सन। से आशा करैत छी जे मुन्नी कामत वा समानान्तर धाराक अन्य रचनाकार कमसँ कम चारि अङ्कक नाटक ऐ वा एहने आन विषय पर लिखता। मुन्नी कामत लग एतेक सनगर विषय वस्तु छन्हि, भाषाक समाजशास्त्री स्वरूपक ज्ञान छन्हि तँ हुनकासँ तँ ई सम्भव अछिये।

चुक्का

१

मुन्नी कामतक एकांकी- जिन्दगीक मोल

प्रथम-दृश्य

राम रतन- बाबू सुतल छिऐ?

। पटाक्षेप।

दोसर दृश्य

भिक्खन- बउआ हइए..... फूलचन एलऽ।

राम रतन- आबैय छी बाबू। कपड़ा पिनहै छी।

भिक्खन- अच्छा चलऽ, ठीक छै।

राम रतन- चल फूलचन!

सबहक प्रस्थान!

। पटाक्षेप।

<u>तेसर दृश्य</u>

(हिमाचल पहुँच कऽ)

दोसर दिन

पटाक्षेप।

<u>चारिम दृश्य</u>

राम रतन- ओइ दवाइसँ कोनो हानि तँ नै होइ छै?

फूलचन- जी। (रामरतनसँ) जो देखहीं की कहै छउ।

राम रतन डॉक्टरक चेम्बरमे जाइत अछि।

राम रतन- साहेब अहाँ बजेलौं।

दवाइ खा कऽ राम रतन सुइ लइ लऽ मेज पर लेट जाइए!

२ घंटा बाद

डॉक्टर- राम रतन ओ राम रतन उठू।

डॉक्टर खुराना- की भेल?

डॉक्टर-सर ई तीनू।

डॉक्टर-सर आब की हएत?

रातिक ९ बजे

फूलचन- सर, राम रतन कतऽ अछि, ओकर छुट्टी नै भेल?

फूलचन मने-मन सोचैत अछि

पटाक्षेप!

<u>अंतिम-दृश्य</u>

फूलचन- ठीक छै, आब फोन रखै छिअ।

कहैत-कहैत फूलचन कानऽ लगैत अछि

दोसर दिन हिमाचल पहुँच कऽ

भिक्खन-बउआ........बउआ राम रतन कतऽ छहक?

एक घार रूदनक संगे पटाक्षेप

<u>एकांकीक विवेचना</u>

पहिने बता दी जे आब दवाइक प्रयोग लेल बजारमे एबासँ पहिने ओकर प्रभाव आ दुष्प्रभाव केर जाँच लेल मनुक्खकेँ वेक्टर बनेबापर भारत सरकार प्रतिबन्ध लगा देने अछि, मुन्नी कामत सन-सन बहुत रास लोक ऐ लेल धन्यवादक पात्र छथि। जेना हमर उपन्यास

“सहस्रशीर्षाक” नायक मोहन गबैय्या सन-सन बहुत लोक सूचनाक अधिकार दियेलन्हि, मुदा किछु लोक असगरे तकर क्रेडिट लेबाक लेल अपस्याँत छथि, किछु तेहने सन।

ई एकांकी एक अंक आ पाँच दृश्यक अछि। एकांकीक नायक राम रतन १८ बर्खक होइते देरी हिमाचल बिदा होइ छथि। हिमाचल प्रदेश आ उत्तराखण्डमे बहुत रास दवाइ केर कम्पनी छै, जे भारत सरकारक टैक्समे छूट केर लाभ लेबा लेल एतऽ खुजल अछि। राम रतन बियाह करबा लेल तैयार नै होइत अछि आ आठ हजार टाकामे जे नोकरी ओकरा भेटै छै से अछि दवाइक प्रयोग लेल बजारमे एबासँ पहिने ओकर प्रभाव आ दुष्प्रभाव केर जाँच लेल वेक्टर बनब। ओकरा शंका छै मुदा फूलचन कहै छै जे ओहो पहिने यएह करैत छल। ओकर मृत्यु होइ छै, डॉक्टर खुरानाक सम्वाद सिद्ध करैत अछि जे एहेन बहुत रास मृत्यु पहिनहियो भेल छै, एक लाख टका अनुकम्पामे दऽ मामिला खतम कऽ देल जायत। भिक्खनकेँ लाख टका नै चाही, ओ कहै छथि- “जे दवाइक परीक्षण जानवरक ऊपर करबाक चाही ओकरा भोला-भाला गरीब मनुष्यक ऊपर करैत अछि। कि अकरा रोकै लेल कोनो कानून नै अछि?”

तँ भिक्खनकेँ हमर उत्तर अछि जे भारत सरकार कानून बना देलक अछि अहाँक लाख टका केँ ठोकर मारब सरकारकेँ मजबूर केलक, आब वेक्टर जानवर बनत मनुक्ख नै, आ सेहो सुरक्षाक संग, ईहो मांग पूर्ण भेल। हम अपन नोकरीक कार्यपालनमे सेहो एकटा एहेन केस पकड़ने रही जइमे नामी हॉस्पीटल सभ सेहो संलग्न रहथि। मुदा भिक्खनकेँ हम ई किए कहि रहल छी। ओ तँ मुन्नी कामतक एकांकीक एकटा पात्र छथि, काल्पनिक पात्र। झूठ, भिक्खन तँ नाम छथि, हम बहुत रास भिक्खनकेँ देखने छी आ बहुत रास राम रतनकेँ सेहो, मुदा मूलधाराक नाटककार नहिये “बिसाँढ़” खेने छथि नहिये राम रतन देखने छथि तँ मलंगिया जी “बुझता है कि नहीं” मे अपन प्रतिभाक इतिश्री कऽ लेलन्हि, जँ हमर “छुतहा घैल” क आलोचनापर ओ ध्यान दइतथि तँ एतेक प्रतिभा तँ हुनकामे छलन्हि जे अइ दस सालमे हुनको भिक्खन भेटि जइतन्हि। मुदा हुनकर जातिवादी रंगमंचक निर्देशक “मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश” मे जगदीश प्रसाद मण्डलक विरुद्ध अखनो विषवमनमे लागल छथि। “मैथिल पुनर्जागरण प्रकाश” केँ ऐ तरहक जातिवादी तत्त्वसँ असम्पर्कित रहबाक चाही आ जँ ओकरा कोनो दवाबमे एहेन रचना छापऽ पड़ि रहल छै तँ कमसँ कम एकटा डिस्क्लेमर जे “लेखकक जातिवादी विचार हुनकर व्यक्तिगत विचार छन्हि आ ई सम्पादक-मण्डलक बा मालिकक्क विचार नै अछि” तँ अवश्ये देबाक चाही। आ जँ सभटा मिलि-जुलि कऽ भऽ रहल छै तँ फेर हमर शुभकामने अछि जेना भगवान बुद्ध एक्के ठाम रहबाक आ नै पसरबाक देने रहथि (विस्तृत विवरण आगाँ) ।

मलंगिया जी सन हुनको व्यंग्य आ जातिवादी आक्षेपक अन्तर दस साल बादो बुझऽ मे नै आयल छन्हि आ हमर समालोचनाक बाद मलंगिया जीक परिवार आ जातिवादी रंगमंचक लोक जे काण्ड केने रहथि से तँ अभिलेखित अछिये।

<u>एकांकीक विवेचना- समाजशास्त्रीय पक्ष</u>

तँ भिक्खन कोरा धोती परम्पराक छथि- ओ अगड़ो भऽ सकै छथि आ पिछड़ो। मलंगिया जी जकाँ मुन्नी कामतकेँ ओकड़ा राड़ बा पिछड़ा कहबाक खगताक अनुभव नै भेलन्हि। किए? किएक तँ हुनकामे प्रतिभा छन्हि, ओ कला-एकांकीकेँ लोक देखिते नै अछि, पढ़िते नै अछि- बाजि कऽ अपन कमीकेँ नुकबै नै छथि, हुनका बुझल छन्हि जे कला-एकांकी सेहो लोकप्रिय हएत जँ ओइमे कथानक हेतै। से ओ एहेन कथानक अनलन्हि।

आब आउ ऐ एकांकीक भाषाक समाजशास्त्रीय विश्लेषणपर आ तुलना करू अइ एकांकीक भाषा आ मलंगिया जीक छोटका लोकक लेल गढ़ल गेल कृत्रिम-भाषापर। मुन्नी कामत कोनो धुआ-धोती धारीक प्रवेश अपन एकांकीमे नै हुअय दैत छथि, हुनका बुझल छन्हि जे ई ट्रेजेडी छिऐ, धुआ-धोतीक आगमन आ भाषाक एकरङाह रूप आ एकांकीक सत्यानाश दुनू संगे हएत। से ओ सतर्क छथि। मुदा मलंगियाजी तँ निशाँमे छथि, दुनियाँ आगू बढ़ि गेलै मुदा ओ आ हुनकर जातिवादी रङमंचक निर्देशकक नजरिमे दु-रङागह भाषा आवश्यक, आ से नाटकक आवश्यकताकेँ ध्यानमे रखैत नै (जेना बाङ्ला आदि भाषाक लेखक करै छथि) वरन् हँसी उड़बैले आ आक्षेप लगबैले, नै तँ जातिवादी दर्शक थोपड़ी पाड़त केना?

<u>एकांकीक भाषायी विश्लेषण</u>

भिक्खन बजै छथि- “नै, अबकी बैशाखमे तोहर बियाह करै कऽ अछि। बियाह करि लऽ, फेर तोरा जतऽ जाय कऽ मन हेतऽ जायहक।”

“अबकी बैशाखमे”- ऐ प्रयोगमे अहाँकेँ कनियो समस्या भेल? नै भेल, मुदा जँ ई जातिवादी रंगमंचक टटका संग्रहकेँ देखी (आधुनिक मैथिली नाट्य सञ्चयन- सङ्कलन-सम्पादन रमानन्द झा’ रमण’ जे <u>ऐ लिंक</u> पर ४६५ भा.रु. मे उपलब् अछि) तँ यएह प्रयोग एना हएत-

भिक्खन- “नै, अबकी बैशाखमे रामरतन के बियाह करै कऽ अछि।”

आब भिक्खन वएह गप जे मुन्नी कामतक कलमसँ प्रवाहयुक्त रहै, से छोटहा लोकक लेल लेल प्रयुक्त अहाँकेँ लागत, आ सेहो नाटककार द्वारा सायास, नाटककार देखार हेता, आ मैथिलीक अपमान हएत। मुन्नी कामत सन लेखक से नै हेमऽ देतीह। मुदा जातिवादी रंगमंच मिझेबासँ पहिने अपन समस्त दुष्टताक संग साहित्य अकादेमीक लाखक लाख टकाक असाइनमेण्टक सहयोगसँ “आधुनिक मैथिली नाट्य सञ्चयन” क रूपमे आयल अछि, अइ ४६५ भारतीय रुपयाक पोथीमे चालिसो पाइक सामिग्री नै छै, आ नव युवाकेँ ई आर कट्टर बनाओत, हुनका पतो नै चलतन्हि जे ऐ लेल भाषाक कोन समाजशास्त्रक एतऽ प्रयोग कएल गेल अछि। मुदा एकटा संतोष अछि जे चन्द्रनाथ मिश्र’ अमर’ लिखने रहथि जे साहित्य अकादेमी द्वारा प्रकाशित मैथिली पोथी गोदामेमे सड़ि जाइए। से जेना बुद्ध दुष्ट गामक लोककेँ एक्के ठाम रहबाक आ सज्जन गामक लोककेँ पसरबाक वरदान देने रहथि से हमहूँ ऐ जातिवादी नाट्य सञ्चनकेँ गोदामे मे रहबाक आ कतहु नै पसरबाक कामना करैत छी।

<u>एकांकीक कमजोर पक्ष</u>

जेना उपन्यासक प्लॉट होइ छै तहिना नाटकोक प्लॉट होइ छै। एकांकी तँ बीहनि कथे भेल, विविध भारतीक “हवा-महल” कार्यक्रमक झलकी सन। से आशा करैत छी जे मुन्नी कामत बा समानान्तर धाराक अन्य रचनाकार कमसँ कम चारि अङ्कक नाटक ऐ बा एहने आन विषय पर लिखता। मुन्नी कामत लग एतेक सनगर विषय वस्तु छन्हि, भाषाक समाजशास्त्री स्वरूपक ज्ञान छन्हि तँ हुनकासँ तँ ई सम्भव अछिये।

<u>२</u>

<u>मुन्नी कामतक चुक्का</u>

’ जिन्दगीक मोल’ (२०१२) एकांकीक लेखिका मुन्नी कामत बच्चा सभ लेल लऽ कऽ आयल छथि’ चुक्का’ ।

जिन्दगीक मोलक राम रतन १८ बर्खक होइते, दवाइ सभक बजारमे एबासँ पूर्व ओकर मनुक्खपर कोन प्रभाव/ दुष्प्रभाव पड़तै, तकर जाँच लेल प्रयोगशालाक जीवित वेक्टर बनै छथि। हुनकर वएह नोकरी छन्हि। तही क्रममे हुनकर मृत्यु होइ छन्हि। मुदा रामरतनक शिशु, बाल आ किशोर अवस्था केहन रहन्हि। चुक्काक माध्यमसँ तकर समाजशास्त्रीय, मनोवैज्ञानिक आ जेक्स देरीदाक विखण्डनात्मक विधिसँ भाषायी विश्लेषण एतऽ कयल जा रहल अछि (सैद्धांतिक विश्लेषण लेल देखू हमर मैथिली समीक्षाशास्त्र, २०२२, विदेह पेटारमे www.videha.co.in पर उपलब्ध)।

चुक्कामे २४ टा कथा अछि।

१

आस्थाक मूर्ति

कुम्हार रतनेशक बेटा कन्हैयाक माय मरि गेलै। अहाँ सुनने हएब मारते रास खिस्सा जइमे माय तरेगन बनि गेलै- मुदा एतऽ बेदराक बाबा कहै छथिन्ह जे भगवानक घरमे एकटा अहूँसँ बड़ छोट बउआ छै, मुदा ओतऽ माय नै छलै तेँ भगवान ओकर मायकेँ ओतऽ बजा लेलखिन्ह।

की ई प्रयोग अहाँकेँ अचम्बित नै केलक?

आ आब आउ माटिक चाक लग, जे गढ़ैत अछि सुन्दर भगवानक मूर्ति। बच्चाक’ निबदिया’ कऽ पड़ल रहब सभक सुतलाक बाद अपन आस्था मजगूत कऽ भगवानसँ उत्तर लेब आ बाबाकेँ उत्तर देब। बाबा भट्ठीक मूर्तिक टुटबाक उदाहरण दऽ ओकर गप्पकेँ पुष्ट करैत छथि। ओकर मोन निचेन भऽ जाइ छै, आब तरेगनक खिस्साक ओकरा कोनो खगता नै छै।

२

चिनिया-सिनिया

आकाशक बाबाक खिस्सामे एकटा चिड़ैक पानिक’ तरास’ मे मरि जायब आकाशक कोठापर जा कऽ मेरखी संगे पानि रखबाक निर्णय।

बाल कथाक दुखान्त अन्त वा दुखान्तसँ निकलैत सुखान्त अन्त?

३

गोलू हाथी

गोलू हाथी पैघ भेल तँ ओकर देह भारी भऽ गेल आ ने ओ चिड़ै सन उड़ि सकत, ने मगमच्छ सन हेलि सकत आ ने बानर सन छड़पि सकत।

मुदा ओ से काज कऽ गेल जे ने बानर बा चिड़ै बा मगरमच्छ नै कऽ सकल आ बनि गेल हीरो आ भेटलै ओकरा केराक भार आ फूलक हार।

भगवान सभ जीवकेँ अलग-अलग बनेने छथिन्ह, सभमे विशेष गुण छै।

४

गुणगर तरकारी

नमन आ ओकर बाबाक गलजोड़बाकऽ कनफुसकी करब। तरकारी ओकरा नीक नै लगै छै आ से ओ सभटा दुलरुआ टुन्नाकेँ खुआ दैत अछि।

निसिभाग रातिमे ओ सपनाइत अछि आ आब तीमन-तरकारी ओकरा नीक लगै छै।

५

अभ्यास

नमनकेँ गंगेशबासँ बेशी नम्बर अनबाक छै। बेर-बेर आस्ते-आस्ते बुझि कऽ पढ़बाक कला जे भारतक पूर्व राष्ट्रपति आ मिसाइल मैन डॉ. ए. पी. जे. अब्दुल कलाम अपन मायसँ सिखने छलाह, आ नमन फर्स्ट कऽ गेल।

६

किताबी भूत

अमन आ झमटगर भूत। अमावश्याक दिन। ओझा-धाइम।

मुदा अमनक जोर-जोरसँ पढ़य लागल, आब अक्षर नै उड़ैत छै।

७

भगजोगनी

रामा आ दुलारीकेँ माय द्वारा भगजोगनी मौसीक खिस्सा सुनायब, कदकाठी छोट भेने हुब्बा छोट नै होइ छै।

८

संतुलन

गोलू खढ़ियाक जन्मोत्सव, बिनु चिबेने खेलासँ, खाइते रहला आ कूद फान केलासँ ओकर पेटमे दर्द।

९

निःस्वार्थ प्रेम

बिलाड़ आ मूसक कथा अछि।

एतऽ बिलाड़केँ मूस पकड़ै लेल नै वरन् मूस सभक सहयोगसँ बिलाड़क अन्तक कथा अछि।

सभ जीव अपनत्वक भाषा बुझैत अछि।

१०

जादुइ छत्ता

धन, निरोग काया, अपार शक्ति आकि अपार ज्ञान। धन लूटल जा सकैए ज्ञान नै।

११

चित्रकारी

भइयाक पेन्सिल नै मिस्टीक अंगुरीमे ईलम छै।

१२

पोखरिक सभा

पर्यावरण शिक्षापर आधारित।

मनुक्खक किरदानी लेल अनेरे बत्तखकेँ कठघरामे ठाढ़ कएल गेल, मुदा बगुला भेद खोललक...

१३

चुक्का

नोट चुक्काक पेटमे जा कऽ सुति रहैत अछि..

मानवि चुक्काक पाइसँ बाबाक चश्मा बनबाओत।

१४

माँ भारती

रधिया स्कूलमे जाइ छलि, पढ़ैले नै टहल-टिकोड़ा करै लेल। आ जखन झाँकीमे माँ भारती नै छली तँ बउआकेँ डाँड़मे लटकेने ठाढ़ि रधियाकेँ बजाओल गेल।

१५

साँपक यारी

बहुत रास तथ्य आयल अछि, अजगर साँपक पैकार आयल अछि, मुदा अन्त विलम्बित अछि आ कने झुझुआन अछि। कथा कनी पहिनहिये, माने पैकारक अयलापर खतम कयल जा सकैत छल। साँपसँ डरबाक कथा आ वन्य-प्रेम दुनू कथ्य मिज्झर भऽ गेल अछि।

१६

जोड़ा परबा

जोड़ा पड़बाकेँ भेलै जे एतऽ खेनाइ ढेरी रास छै आ ओगरबाह सेहो छै। मुदा जे ओगरबाह बिलड़ाकेँ झटहा मारि भगओलक वएह ओकर चारू बच्चाकेँ खोपसँ निकालि रतुका भोज लेल लऽ गेल।

१७

मेघराज

ईहो पर्यावरण शिक्षा आधारित खिस्सा अछि।

बाबा संग पोखरि-इनार खुनत, गाछ-बृच्छ लगाओत।

१८

होशियार मच्छर

मच्छड़क राजा के बनत?

जे बेशी परिश्रम करत बा जे बेशी संयम राखत?

उत्तर बुझबाक लेल पढ़ू ई कथा।

१९

इन्जीनियर बाबू

बान्ह बाढ़िकेँ नै रोकि सकत, धारक लेल रस्ता दियौ, ठाम-ठाम पुल बनाउ।

२०

मिथिलाक संस्कार

बगड़ाकेँ घुमऽ दियौ अंगना आ घरमे, ओकर सुरक्षाक आश्वस्तिकेँ नै तोड़ू।

२१

बकरी

बलि-प्रथापर आधारित खिस्सा।

२२

राखी

बालबोध नमनक खिस्सा, जँ दीदी ओकर रक्षा करै छै तँ ई राखी दीदी ओकरा नै, ओ दीदीकेँ बान्हत।

२३

जूता

लाइट बला जुत्ता पहिरने अछि बिट्टू, भगवतीकेँ सेहो बिनु जुत्ता उतारनहिये प्रणाम केलक, मुदा बाबाक पुरान फाटल जुत्ता देखि अपन जुत्ता निकालि हुनका दैत अछि।

२४

गाम

अन्न, वस्त्र आ घर तीनू अछैत गाम छोड़ि दिल्ली किए धेने अछि लोक, मानवि केर प्रश्न सभकेँ सोचमे धऽ दैत अछि।

बाल-मनोविज्ञानपर आधारित कथा अछि आस्थाक मूर्ति, चिनिया-सिनिया, चित्रकारी, चुक्का आ जूता। आस्थाक मूर्तिमे समाजशास्त्रक हिसाबे सोची तँ कुम्हारक बच्चाकेँ भट्ठीक मूर्तिक उदाहरण सटीक बैसल्स अछि। मनोविज्ञानपर आधारित चिनिया-सिनियामे आकाशकेँ बाबा जे खिस्सा सुना रहल छथि से मैथिलीक पाठ्यक्रममे स्पष्ट कारणसँ नै देल जाइत अछि, मुदा शिक्षा आ ज्ञान जतऽ सँ भेटय हँसोथि लिअ।

वन्य जीव चिड़ै-चुनमुनी आधारित कथा सभ अछि- गोलू हाथी, भगजोगनी (बाल-मनोविज्ञान), निःस्वार्थ प्रेम, मिथिलाक संस्कार (मिलि जुलि कऽ रहनाइ), साँपक यारी (वन्य प्रेम आ डर मिज्झर अछि), जोड़ा परबा (अनायास सहायताक पाछाँक दुष्टता) आ होशियार मच्छर (गुण, चतुर हेबाक लक्षण) ।

आब आउ साँपक यारी (जतऽ वन्य प्रेम आ डर मिज्झर अछि) कथापर। प्रकृतिमे संतुलन रहै छै। वन्य प्राणीसँ प्रेम सही तँ ओकर बलि बा ओकरासँ डरब भऽ गेल खराप? **जेक्स देरीदा कहै छथि** जे पाश्चात्य सभ्यता (बा पूर्वक समाज आ संस्कृति) हमरा अही ढंगसँ सोचनाइ सिखबैए। मुदा वन्य प्राणीसँ प्रेमक फेरामे बच्चाक जाने जेतै।

शिक्षा आधारित कथा सभ अछि- गुणगर तरकारी, संतुलन (स्वास्थ्य), अभ्यास, किताबी भूत (कोना पाठ बुझि कऽ मोन राखी) आ जादुइ छत्ता (मानवीय गुण) ।

पर्यावरण संरक्षण आधारित कथा अछि पोखरिक सभा, मेघराज आ इन्जीनियर बाबू।

आब इन्जीनियर बाबूमे देखू, जे बान्ध विकासक प्रतिमान मानल जाइ छल आ ओकर विरोधी होइ छला विकासक विरोधी, से बान्ह तोड़ि बच्चा धारकेँ रस्ता देत आ ठामे-ठाम पुल बनाओत। से जे सही-गलत ५० साल पहिने रहै से आब गलत-सही भऽ गेल छै। पोखरिक सभा आ मेघराज दुनू अद्भुत कथा अछि।

बाल-श्रम आधारित कथा अछि माँ भारती आ पलायन आधारित कथा अछि गाम।

बाल-श्रमिक कथा माँ भारती मे एक्के स्कूलमे किछु बच्चाक पढ़बा लेल जायब आ एकटा बच्चाक टहल-टिकोड़ा लेल जायब देखाओल गेल अछि। मुदा कोर्टक आदेशसँ आब सरकारी लाभ प्राप्त कऽ सस्त जमीनपर बनाओल गेल स्कूलमे ओतै काज करैबाली, बाढ़नि बहारैबाली आ माली केर बच्चा सेहो पढ़ि रहल अछि।

तँ बाल कथा खाली परिये कथा नहि रहत आ साहित्य अकादेमीक बाल साहित्य परम्परा जेना' खुला खेल फरुक्खाबादी' शुरू केने अछि ई संकलन तकर समाप्तिक घोषणा थिक।

६१. “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक”: संग्रहक परिचय, स्थापत्य आ सर्वेक्षण

सारांश

मैथिली रंगमंचक सुदीर्घ इतिहासमे नाट्यकार, निर्देशक आ कवि कुणाल (मूल नाम: शिव नारायण झा, जन्म १९५१, पालीमोहन, मधुबनी) एकटा युगप्रवर्तक आ प्रस्थानबिन्दु थिकाह। मैथिली नाट्य जगत जखन अपन संक्रमणकाल आ संकटपूर्ण क्षण सँ गुजरी रहल छल, तखन कुणालजीक रंगमंचीय आगमन संकटमोचकक रूपमे भेल।

बीजशब्द: कुणाल; कुसमा-सलहेस; नाट्य-संग्रह; लोकनाट्य; प्रेम-चतुष्टय; मैथिली रंगमंच

नाटचकार कुणाल: रंगमंचीय अवदान

मैथिली रंगमंचक सुदीर्घ इतिहासमे नाट्यकार, निर्देशक आ कवि कुणाल (मूल नाम: शिव नारायण झा, जन्म १९५१, पालीमोहन, मधुबनी) एकटा युगप्रवर्तक आ प्रस्थानबिन्दु थिकाह। मैथिली नाट्य जगत जखन अपन संक्रमणकाल आ संकटपूर्ण क्षण सँ गुजरी रहल छल, तखन कुणालजीक रंगमंचीय आगमन संकटमोचकक रूपमे भेल। ओ अपन साढ़े चारि दशकक रंग-यात्रा आ तीन दशकक अनवरत नाट्य-लेखनमे मैथिली नाटककेँ मात्र मंचीय प्रतिष्ठा नहि देलनि, अपितु मिथिलाक विलुप्त होइत लोक-नाट्य शैली सभक, जेना—किरतनिया, बिदापत, पमरिया आ भटुआ नाट्यक नव-अवतार आ पुनरुद्धार केलनि।

वर्ष २०२१ मे अंतिका प्रकाशन द्वारा प्रकाशित संकलन 'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक' मैथिली नाट्य-परम्पराक एकटा कालजयी दस्तावेजीकरण थिक। एहि संकलनमे संगृहीत सातो नाटक कुणालक प्रयोगधर्मी रंग-दृष्टि, समाज-सापेक्ष वैचारिकता आ लोक-शिल्पक शास्त्रीय एकीकरणकेँ प्रमाणित करैत अछि। एहि नाट्य-संकलनक सभसँ बड़ विशेषता ई अछि जे ई लोक-मानसमे रचल-बसल आख्यान आ पौराणिक कथा सभक वर्तमान सन्दर्भमे नवीन आ व्याख्यापरक पुनर्संरचना करैत अछि।

१. प्रास्ताविक: संग्रहक परिचय आ प्रकाशन-वृत्त

कुणालक “कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक” समकालीन मैथिली नाट्य-साहित्यक एक एहन संग्रह थिक जे अपना मूल अंतर्वस्तु आ रूप-विधान, दुनू दृष्टिसँ, मंच-केन्द्रित अछि- अर्थात ई कोनो ‘पाठ-नाटक’ (पढ़बाक लेल लिखल नाटक) नहि, अपितु बेर-बेर मंचित, परीक्षित आ परिमार्जित प्रयोग-सिद्ध नाटकक संकलन थिक। संग्रहक प्रकाशकीय सूचना एहि बातक साक्ष्य दैत अछि- सातो नाटक पहिने पटनाक विद्यापति भवनमे मंचित भेल आ तकर बाद ‘भंगिमा’ तथा ‘अंतिका’ सन पत्रिकामे प्रकाशित भेल। यएह कारण थिक जे एहि संग्रहक समीक्षा करैत काल मात्र ‘पाठ’ क विवेचन पर्याप्त नहि; एकर रंगमंचीय सम्भावना (theatricality / मंचनीयता) सेहो आलोचनाक केन्द्रमे आबि जाइत अछि।

संग्रहक समर्पण-पृष्ठ अपनेमे एक नाट्य-घोषणापत्र थिक- “गाम-गाम मे नाटक (‘नाच’) कर’ वला ज्ञात-अज्ञात लोक आ कलाकार लोकनि आ ‘भंगिमा’ क विश्वकर्मा जे. ब्रह्मानंद कैँ” । ई समर्पण कुणालक समस्त नाट्य-दृष्टिक बीज-वाक्य थिक। एक दिस ओ अनाम ग्रामीण ‘नाच’-कलाकार लोकनिकेँ नमन करैत छथि- सएह परम्परा जे शताब्दीसँ मिथिलाक माटिमे जीवित अछि मुदा संस्थागत साहित्येतिहासमे जकर नाम अनुपस्थित अछि; आ दोसर दिस ओ अपन रंगमंडली ‘भंगिमा’ क प्रति आभार व्यक्त करैत छथि, जकर अनेक कलाकार- जेना जे. ब्रह्मानंद- स्वयं एहि नाटक सभक मूल मंचनमे सहयोगी रहलाह। आवरण-चित्र विनय अंबरक थिक, जाहिमे मिथिला-शैलीक लोकचित्रण-परम्पराक अनुगूँज स्पष्ट अछि।

२. संग्रहक स्थापत्य: दू वृत्तक रचना-योजना

सातो नाटककेँ एकठाम राखि देखला पर ओ दू स्पष्ट वृत्तमे विभाजित भ’ जाइत अछि- यद्यपि लेखक एहि विभाजनकेँ कतहु अभिधामे नहि कहैत छथि, तथापि रूप, स्रोत आ कालक्रमक आधार पर ई विभाजन स्वयं उद्घाटित भ’ जाइत अछि।

(क) लोकनाट्य-मूलक त्रयी- ‘चालिस चोर आ गोनू झा’, ‘बिदापत’ आ शीर्षक-नाटक ‘कुसमा-सलहेस’ । ई तीनू मिथिलाक अपन लोक-आख्यान आ लोक-रंगमंच (‘नाच’, ‘सलहेस नाच’, ‘बिदापत नाच’) पर आधारित विस्तृत, बहु-पात्रीय, गीत-नृत्य-बहुल नाटक थिक। ई तीनू १९९०सँ २००६ धरिक रचना-काल देखबैत अछि।

(ख) प्रेम-चतुष्टय- ‘प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!’, ‘विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह’, ‘प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार’ आ ‘प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र’ । ई चारू अपेक्षाकृत लघु, मितव्ययी पात्र-विधानवला,

पौराणिक/आख्यानमूलक नाटिका थिक, जे २०१३–२०१४ मे 'अंतिका' मे प्रकाशित भेल। एकरा सभक शीर्षक-विधान एक्के साँचमे ढलल अछि-एक अमूर्त भाव-मूल्य (प्रेम/विश्वास) । चारू नाटकक केन्द्रमे एक आत्मनिर्णयकारी नारी-चरित्र अछि।

एहि दू वृत्तकेँ जोड़' वला सूत्र थिक-'प्रेम' क जीवन-तत्त्वक रूपमे प्रतिष्ठा। 'कुसमा-सलहेस' क समापन-गीतक टेक-"बिनु मकरंदक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन"- लगभग शब्दशः 'श्वेताक आविष्कार' मे पुनः प्रतिध्वनित होइत अछि। तात्पर्य ई जे लोकनाट्य-त्रयीसँ प्रेम-चतुष्टय धरि एक वैचारिक तार लगातार ताणल अछि।

३. नाटकक सभक मोटा-मोटी सर्वेक्षण

३.१ चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा

संग्रहक प्रथम आ सर्वाधिक प्रयोगधर्मी नाटक यएह थिक। एकर आरम्भे आत्म-सन्दर्भी (self-referential) रंगमंचक एक श्रेष्ठ उदाहरण थिक। तीन गोट 'भाँट' मंच पर अबैत छथि आ अपन मरैत कलाक विलाप करैत छथि-"हमरा लोकनिक विद्या आब बेकार भ' गेलए" । जखन हुनकर पारम्परिक 'कवित' आ यशोगानक कोनो असरि श्रोता पर नहि पड़ैत छनि, तखन ओ निर्णय करैत छथि जे आब 'नाटक' करबाक चाही। एहि एक्के दृश्यमे कुणाल मैथिली बारदिक-परम्पराक (भाँट-संस्कृति) ह्रास, राज्याश्रित कलाक संकट आ रंगमंच दिस लोक-कलाकारक संक्रमण-तीनू ऐतिहासिक यथार्थकेँ एक्के संग नाटकीय बना दैत छथि।

एहि बाह्य-वृत्तक भीतर मिथिलाक चिर-परिचित 'गोनू झा'-चक्रक कथा अबैत अछि। नरेश गोनूकेँ 'धूर्त-शिरोमणि' क उपाधिसँ विभूषित कएने छथि; अपमानित कविराज लोकनि गोनू लग न्यायक गोहारि लगबैत छथि; आ अंततः चालिस चोरक एक टोली गोनूक घर लूटबाक उपक्रम करैत अछि। गोनू बल-प्रयोग नहि, अपितु 'बुद्धि'-प्रयोगसँ चोर सभकेँ परास्त करैत छथि-ओ चोर सभक आपसी प्रतिद्वंद्वितार्केँ 'सरदारीक मुरेठा' क प्रतीकात्मक लोभ द' क' भड़काबैत छथि आ एक कूट अभिषेक-विधिक प्रहसन रचि क' हुनका सभकेँ ठकि लैत छथि। एतय हास्य-रस आ वीर-रसक एक विरल मिश्रण अछि, जतय 'वीरता' शस्त्रक नहि, युक्तिक धर्म बनि जाइत अछि।

नाटकक वैचारिक उत्कर्ष ओकर समापनमे अछि, जतय भाँट लोकनि पुनः अपन भूमिकासँ बाहर आबि क' कथाक अंत पर परस्पर वाद-विवाद करैत छथि-"एहि तरहे तँ नाटकक अंत बदलि ने गेल भाइजी?" । एहि एक संवादमे कुणाल रंगमंचीय यथार्थक तरलता, वैकल्पिक अंत (alternative endings) आ दर्शकक सोझाँ रचना-प्रक्रियाक पारदर्शिताकेँ उजागर करैत छथि। आर तखन एक प्रखर सामाजिक टिप्पणी अबैत अछि- चोरीकेँ "अशिक्षा आ गरीबी सँ उत्पन्न" सामाजिक व्याधि कहल जाइत अछि, जकर समाधान दण्ड नहि, समुचित व्यवस्था थिक।

अंतमे भाँट लोकनि 'गमछा' ओछा क' दर्शकसँ दान मँगैत छथि-ई मात्र लोक-कलाकारक पारिश्रमिक-संग्रहक यथार्थ-चित्रण नहि, अपितु कला आ जीविकाक सम्बन्धक एक मार्मिक स्वीकृति थिक। समापन-गीतक पंक्ति-"बुद्धि सँ नइँ पैघ कोनो बल होइ छै"-समग्र नाटकक थीसिस-वाक्य थिक, जे शीर्षकक 'ज्ञान झाक खिस्सा' केँ सार्थक करैत अछि।

नव्य-न्यायक कोणसँ देखी तँ एहि नाटकक केन्द्रीय मूल्य 'बुद्धि' वस्तुतः 'प्रमा' (यथार्थ-ज्ञान) आ 'युक्ति' क महिमा थिक- गोनूक प्रत्येक विजय कोनो भौतिक बलक नहि, अपितु अनुमान, ऊह आ तर्कक विजय थिक। हास्यक आवरणमे एतय ज्ञान-मीमांसाक एक देशज प्रतिष्ठापन अछि।

३.२ बिदापत

'बिदापत' (अर्थात विद्यापतिक लोकोच्चारित रूप) कुणालक रचना-कौशलक सर्वाधिक परिष्कृत उदाहरण थिक। शीर्षक-पृष्ठ एकरा "लोकनाट्य शिल्प-आधारित नाटिका" कहैत अछि, मुदा एकर शिल्प वास्तवमे शास्त्रीय आ लोक-दुनू नाट्य-परम्पराक संश्लेषण थिक। नाटक 'पूर्वरंग' सँ आरम्भ होइत अछि, सूत्रधार-नटीक शास्त्रीय संवाद-विधि अपनाओल गेल अछि, आ संग-संग समाजी (कोरस), विदूषक-सदृश 'विपटा' आ 'नटुआ' सन लोक-रंगमंचक पात्र सेहो उपस्थित छथि।

एहि नाटकक सर्वाधिक उल्लेखनीय शिल्प-विशेषता थिक स्वयं विद्यापतिक पदक सघन, सावधान आ अर्थपूर्ण प्रयोग। शिवस्तुति, भैरवी-वंदना, वसंत-वर्णन ("नव वृन्दावन, नव-नव तरुगण... विहरइ नवल किशोर"), विरह-पद ("चाँद सार लए मुख घटना करू, लोचन चकित चकोरे") आ अवहट्ट-शैलीक समापन-पद-ई सभ कथाक प्रवाहमे एना गूँथल अछि जे नाटक एक प्रकारे विद्यापति-पदक रंगमंचीय भाष्य बनि जाइत अछि।

कथा-वस्तु विद्यापतिक जीवनकेँ तीन सम्बन्ध-तन्तुक माध्यमसँ बुनैत अछि-आश्रयदाता-मित्र शिवसिंह, हुनक रानी लखिमा आ सेवक उगना (जे स्वयं महादेव छलाह) क प्रसिद्ध लोक-कथा। नाटकक अंतिम अंश अत्यन्त मार्मिक अछि-ओइनीक युद्धमे शिवसिंहक अंतर्धान, लखिमाक ओ हठ जे ओ पतिकेँ मृत मानबासँ अस्वीकार करैत प्रतीक्षारत रहैत छथि, आ विद्यापतिक आजीवन शोक। एतय लखिमा सती-छविमे नहि, अपितु एक दृढ़, स्वाभिमानी प्रतीक्षारत स्त्रीक रूपमे प्रस्तुत भेल छथि-ई पारम्परिक आख्यानक एक सूक्ष्म पुनर्पाठ थिक।

नाटकक ध्वनि-व्यंजना (काव्यशास्त्रीय 'ध्वनि') एकर समापनमे चरम पर पहुँचैत अछि-विद्यापति कहैत छथि जे ओ अपन 'पद' मे जीवित रहताह, आ संग-संग शिवसिंह, लखिमा, विपटा, नटुआ-उगना सेहो अमर रहताह। एतय करुण-रसक तल नीचाँ शान्त-रसक एक गहींर धारा बहैत अछि-मृत्यु-शोकक ऊपर काव्यक चिरंजीविताक प्रतिष्ठा। समग्रतः 'बिदापत' विद्यापतिकेँ संस्थागत साहित्येतिहासक 'महाकवि' क प्रतिमासँ उतारि क' लोक-रंगमंचक जीवित नायकक रूपमे पुनः-प्रतिष्ठित करैत अछि-ई विदेह समानांतर-इतिहास-दृष्टिक एक उत्कृष्ट नाट्य-निदर्शन थिक।

३.३ कुसमा-सलहेस

शीर्षक-नाटक होएब एकर केन्द्रीयताक मात्र संयोग नहि-कलात्मक आ वैचारिक, दुनू दृष्टिसँ ई संग्रहक हृदय थिक। शीर्षक-पृष्ठ एकरा "महागाथा (राजा सलहेस) आ लोक-नाट्य (सलहेस नाच) पर आधारित नाटक" कहैत अछि। राजा सलहेस मिथिलाक दुसाध (दलित) समुदायक लोक-देवता-नायक थिकाह आ 'सलहेस नाच' ताहिसँ जुड़ल लोक-रंगमंच। एहि स्रोत-चयने स्वयं एक सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य थिक-कुणाल मिथिलाक अभिजन-केन्द्रित साहित्य-परम्पराक बदला एक सबाल्टर्न (अधीनस्थ/वंचित) महागाथाकेँ अपन सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी नाटकक आधार बनबैत छथि।

नाटकक पात्र-विधान एक पूर्ण महाकाव्यात्मक विस्तार लैत अछि-नायक सलहेस (महिसौथाक राजा), नायिका कुसमा (मालिन), कथा-संवाहक सूग्गा हिरामन, नाचक विदूषक विपटा, सलहेसक पशु-सहचर बाघ 'ठनका' आ भालु 'बनका', योगिनी मालिन-बहिनी, मोरंग-भोट-बाघगढ़-समदागढ़ सन अनेक राज्य, आ साक्षात देवी दुर्गा। ई विस्तार सलहेस-नाचक मूल लोक-संरचनाकेँ-पूर्वरंग, सुमिरन, समाजी-गायन, दृश्य-दर-दृश्य भौगोलिक यात्रा-यथावत संजोगि क' राखैत अछि।

नाटकक आरम्भिक 'सुमिरन' एक अद्भुत समन्वयवादी (syncretic) घोषणा थिक-एहिमे देवता, बाबा-डीहबार, गुरु-गोसाँइ, उगैत सूर्य, गंगा, गोरा-पार्वतीक संग-संग पछिम दिस 'मीरा-सुलतान' (एक मुस्लिम पीर) केँ सेहो सुमिरल जाइत अछि, आ अंतमे "सकल समाज" तथा "जन-गन-मन" केँ। दर्शककेँ कएल अभिवादन सेहो ओतबे समावेशी अछि-"परिनाम, नमस्ते, आदाब, गुड इवनिंग, सलाम" । ई समन्वयवाद दुसाध सलहेस-परम्पराक अपन सांस्कृतिक चरित्र थिक, जकरा कुणाल पूर्ण निष्ठासँ रंगमंच पर अनैत छथि।

नायिका कुसमाक आत्म-परिचय-जे राजकन्या भेलहुँ मुदा महल छोड़ि वन-वासिनी मालिन बनलहुँ-गहींर लोक-काव्यात्मक छटासँ भरल अछि; जनकपुर, कमरू-कामाख्या, विसुनपुरक तीर्थ-यात्राक स्मृति आ बारह बरखक अवस्थामे देखल दुर्गाक स्वप्न-वचन एकर भाव-भूमि बनबैत अछि। मुदा नाटकक केन्द्रीय द्वन्द्व प्रेमक नहि, अपितु प्रेम बनाम सत्ता-लोलुपताक थिक।

एहि द्वन्द्वक चरम तखन अबैत अछि जखन विस्तारवादी सम्राट सूचोंग सलहेसकेँ रंगीलागढ़क कारागारमे लोहाक बेड़ीमे बान्हि लैत अछि आ समस्त मिथिला पर एकछत्र राजक स्वप्न देखैत अछि। सलहेसक उत्तरमे एहि नाटकक आत्मा बाजैत अछि-"हमर प्राण अहाँक मुट्ठी मे भ' सकैए सम्राट। मुदा हमर विचार आ भावना कैँ बान्हल नइँ जा सकैए। नहि रहता सलहेस मुदा भयमुक्त जीवनक मंत्र सँ भरल जनता रहतै।" एहि एक संवादे सलहेसक दुसाध लोक-देवताकेँ कुणाल एक जन-नायक, अभय आ स्वातंत्र्यक प्रतीक बना दैत छथि, आ मालिन-बहिनी लोकनिकेँ शान्ति-करुणा-स्नेह-आनन्दक तथा 'लोक-कल्याण' क मूर्ति।

नाटकक समापन एक समवेत गायन-नृत्यमे होइत अछि आ ओ अमर टेक उभरैत अछि-"प्रेम सत्य छै, प्रेम छै सौरभ, प्रेमक भाव चिरंतन, बिनु मकरंदक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन।" एतय शृंगार-रस अपन लौकिक तलसँ ऊपर उठि क' एक विश्वव्यापी मानवीय-तत्त्व बनि जाइत अछि-प्रेम एतय व्यक्ति-राग नहि, सृष्टिक शक्ति थिक। ई नाटक संग्रहक सर्वाधिक सबल कृति थिक-लोक-स्रोतक प्रामाणिकता, राजनीतिक चेतना आ काव्यात्मक उत्कर्ष-तीनू एकठाम।

३.४ प्रेम-चतुष्टयः चारि पौराणिक नायिका

अंतिम चारि नाटक एक सुसंगठित विचार-शृंखला थिक। चारू एक्के नाट्य-व्याकरण साझा करैत अछि-मितव्ययी पात्र, बहु-भूमिका-अभिनय (एके अभिनेता द्वारा अनेक पात्रक अभिनय), स्तरित वा रिक्त मंच, सूत्रधार/उद्घोषकक कथन-शैली आ बीच-बीचमे

विद्यापति-पदक प्रयोग। चारू पौराणिक/आख्यानमूलक नायिकाक माध्यमसँ आधुनिक मूल्य-स्त्री-कर्तृत्व, आत्मनिर्णय आ प्रेमक गरिमा-प्रस्थापित करैत अछि।

प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय! महर्षि भारद्वाजक पुत्री श्रुवावती विवाहक पारम्परिक मानदण्ड-सुन्दर, सम्पन्न, शौर्यवान वर-कें अस्वीकार क' कहैत छथि जे ओ विवाह तखने करतीह जखन कियो हुनका लेल साँचमे 'अर्थवान' भ' जैताह। ओ अपनाकेँ "स्वतंत्र आ स्वावलंबी" व्यक्ति घोषित क' परम्पराक 'अपवाद' बन' चाहैत छथि। इन्द्र (वशिष्ठ-वेशमे) हुनका एक फलकेँ सूर्यास्तसँ पूर्व सिद्ध करबाक परीक्षा दैत छथि; फल पाथर बनि जाइत अछि, मुदा प्रेम-स्मृति-विहीन जीवनकेँ निरर्थक मानि श्रुवावती स्वयं चितामे प्रवेश करबाक संकल्प लैत छथि-आ ओकर एहि आत्मबले इन्द्रकेँ झुकाबैत अछि। नाटकक थीसिस-"आत्मबल, मनुष्यक सभसँ पैघ संपत्ति अछि" । यद्यपि अग्नि-प्रवेशक रूढ़ि एहि नारीवादी पाठक संग किछु तनाव उत्पन्न करैत अछि (, तथापि एतय बलि नहि, संकल्पक शक्ति केन्द्रमे अछि।

विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह। महाभारतक सुकन्या-च्यवन-आख्यानक एहि रंगमंचीय रूपमे चपल, क्रीड़ामग्न राजकुमारी सुकन्या आ बामी-भीड़मे (वल्मीक) समाधिस्थ वृद्ध ऋषि च्यवनक प्रसंग अछि। आरम्भ विद्यापतिक वसंत-पद 'आयल रितुपति राज बसंत' सँ होइत अछि। रानीक चिन्ता आ राजा शर्यातिक मुग्ध-वात्सल्यक बीच एक सूक्ष्म दार्शनिक संवाद अबैत अछि-"जैं आहाँ आँखि मुनि ली तैं ओ वृक्ष आहाँ कें नईं देखायत... परंतु सभ किछु उपस्थित अछि।" ई संवाद ज्ञान आ ज्ञेयक भेदकेँ रंगमंच पर अनैत अछि-अनुपलब्धि सत्ताक अभाव नहि थिक। नाटकक मर्म 'विश्वास' थिक-सुकन्याक निष्ठे च्यवनकेँ नव यौवन दिआबैत अछि।

प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार। ई चतुष्टयक सर्वाधिक मौलिक कल्पनावला नाटक थिक। राजनर्तकी श्वेता सात बरखक कठोर साधनाक बाद राजा अतिरथक प्रति अनुरक्त भ' जाइत छथि। मुदा अतिरथ कलाक प्रति 'निरपेक्ष' (विरक्त) रहैत छथि-ओ कलाकेँ देहसँ फराक क' देखबाक 'नीर-क्षीर विवेक' क पक्षधर छथि आ घोषणा करैत छथि जे "प्रेम करब तँ नितांत मूर्खता थिक" । श्वेता प्रत्युत्तरमे कवि-वचन उद्धृत करैत छथि-"कुसुम बिना मकरंद तहिना प्रेम बिना की जीवन" (ध्यातव्य: यैह सूत्र 'कुसमा-सलहेस' क समापन-टेक छल), आ संकल्प लैत छथि जे ओ 'निरपेक्ष' राजाकेँ स्वयं प्रेमक प्रस्ताव करबाक लेल बाध्य करतीह। 'आविष्कार' शब्दक द्व्यर्थता एतय सटीक अछि-श्वेता प्रेमक आविष्कार करतीह आ अपन कर्तृत्वक सेहो। नर्तकी सन परम्परासँ 'वस्तु' बनाओल चरित्रकेँ कुणाल एतय 'कर्ता' बना दैत छथि-ई एकर प्रमुख उपलब्धि थिक।

प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र। अष्टावक्र (अष्ट-वक्र-आठ ठाम वक्र शरीरवला) ऋषि आ महर्षि वदन्यक पुत्री सुप्रभाक गाढ़ अनुरागक एहि कथामे 'परीक्षा' केन्द्रमे अछि। वदन्य अष्टावक्रकेँ स्वर्गमे उर्वशीक सान्निध्यमे पठा क' सुप्रभाक निष्ठाक परीक्षा लैत छथि-सुप्रभा अन्य राजासँ स्वयंवरक प्रस्ताव अस्वीकार करैत मात्र "अष्टावक्रक प्रतीक्षा" करबाक हठ रखैत छथि। अष्टावक्र उर्वशीकेँ अस्वीकारि क' लौटैत छथि आ दुनूक विवाह होइत अछि। समापन-दोहा एकर मर्म कहैत अछि-"जहिना स्वर्ण मे आगि सँ आबए आर निखार / प्रेम, परीक्षा दैत अछि, तँ होइछ आर प्रगाढ़।"

मंचीय इतिहास आ रंग-विधानक तुलनात्मक सारिणी

नाटकक शीर्षक

पहिल मंचनक तिथि आ स्थान

मुख्य कलाकार आ श्रेय समूह

प्रमुख नाट्य-शिल्प आ परम्परा

चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा

४-५ अगस्त, १९९३, विद्यापति भवन, पटना

प्रेमलता मिश्र, उमाकान्त, जे. ब्रह्मानंद, एल.आर.एम. 'राजन', केशव नन्दन, कुमार मनीष अरविंद

लोक-नाट्य, पमरिया आ भॉंट शैलीक मिश्रण

बिदापत

३० सितंबर, २००२, विद्यापति भवन, पटना

रवीन्द्र बिहारी राजू, राधा मिश्रा, प्रकाश झा, प्रगति शेखर, रघुवीर मोची, ब्रह्मानंद झा, सुरुचि वर्मा

बिदापत शैली, लोकनाट्य शिल्प-आधारित

कुसमा-सलहेस

विभिन्न मंचीय प्रदर्शन, अंतिका प्रकाशन

स्थानीय लोक-कलावंत आ भंगिमाक प्रदर्शन दल

लोक-महाकाव्य शैली, सलहेस गाथा

प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!

अंतिका प्रकाशन (२००३-२०१४क बीच प्रकाशित)

'भंगिमा' आ 'मैलोरंग'क रंगकर्मी

पौराणिक आख्यान, शास्त्रीय-लोकधर्मी समन्वय

विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह

अंतिका प्रकाशन (२००३-२०१४क बीच प्रकाशित)

स्थानीय आ व्यावसायिक मंचीय समूह

पौराणिक नाटक, अंतर्द्वंद्वपरक मंचीय शिल्प

प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार

अंतिका प्रकाशन (२००३-२०१४क बीच प्रकाशित)

संगीत-नाट्यक कलावंत समूह

संगीत-नाटक (हिन्दी 'श्वेता'क मैथिली रूपांत)

प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र

अंतिका प्रकाशन (२००३-२०१४क बीच प्रकाशित)

भंगिमाक शास्त्रीय रंगमंच दल

दार्शनिक आ पौराणिक आख्यान शिल्प

सामाजिक-वैचारिक आ रंग-दृष्टिक तुलनात्मक सारिणी

नाटकक शीर्षक

सामाजिक-राजनैतिक चेतना

स्त्री-विमर्श आ चरित्रक स्वरूप

लोक-कला आ रंग-दर्शनक एकीकरण

चालीस चोर आ गोनू झा

राजशाहीक शोषण, भ्रष्टाचार आ न्याय प्रणाली पर व्यंग्य

गोनू झाक पत्नीक रूपमे तार्किक आ सतर्क गृहस्थ स्त्री

पमरिया आ भॅांट शैली, लोक-रंगमंचक सहज प्रवाह

बिदापत

भाषाक लोकतंत्रीकरण, संस्कृतक वर्चस्व आ सामंती दमनक विरोध

रानी लखिमेक स्वतंत्र वैचारिक आ दाम्पत्य अधिकारक प्रकटीकरण

बिदापत शैली, नचारी आ महेशवाणीक लोकधर्मी मंचीय संगीत

कुसमा-सलहेस

दलित प्रतिरोध, अस्पृश्यता आ सामंतवादक विनाशक स्वर

कुसमा आ दौना मालिनक रूपमे सबल, स्वतंत्र आ क्रांतिकारी स्त्री चरित्र

सलहेस गाथा, लोक-नृत्य आ पारम्परिक रंगमंचक संश्लेषण

प्रेम-प्रतिज्ञा

राजसत्ता आ सामाजिक दवाब सँ ऊपर उठिक' व्यक्तिगत साधना

श्रुवावतीक रूपमे अदम्य संकल्प आ आत्मनिर्णयक पराकाष्ठा

शास्त्रीय आख्यान आ प्रयोगात्मक मंचीय गतिक संयोजन

विश्वासक शक्ति

वृद्धावस्था आ तारुण्यक पारस्परिक समज आ सामाजिक मर्यादा

सुकन्याक रूपमे विश्वासक बल पर देवराज आ देवता सभकेँ चुनौती

अंतर्द्वंद्वपरक मंचीय शिल्प आ प्रतीकात्मक दृश्य विन्यास

प्रेमक विस्तार

जैविक आ दार्शनिक विकासक वैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

श्वेताक रूपमे प्रकृति आ प्रेम सँ सृजन करबाक स्वतंत्र सत्ता

संगीतमय नाट्य-शिल्प, आधुनिक ध्वनि आ प्रकाशक समन्वित प्रयोग

प्रेमक परीक्षा

बौद्धिक तेज आ विदूषक परम्पराक दार्शनिक संघर्ष

सुप्रभाक रूपमे बौद्धिक सौंदर्यकेँ शारीरिक सौंदर्य सँ श्रेष्ठ मानय बला स्त्री

शास्त्रीय संवाद अदायगी आ प्रतीकात्मक पौराणिक रंगमंच

६२. "चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा": बहु-दृष्टि नाटच-समीक्षा

सारांश

कुणालक प्रथम नाटकक ई समीक्षा कथा-संरचना, हास्य, बुद्धि, भाँट-परम्परा, मेटाथिएटर, लोकधर्मी रंगशिल्प आ कलाकारक अर्थनीतिकेँ एकसंग पढ़ैत अछि। भारतीय रस-वक्रोक्ति, पाश्चात्य विरचन-प्रभाव आ कार्निवालेस्क, चीनी संरचना-आधारित सौन्दर्यदृष्टि तथा इजरायली प्रतिमात्मक प्रदर्शन-विचारक तुलनात्मक प्रयोग द्वारा नाटकक बहुस्तरीय अर्थ उद्घाटित कएल गेल अछि।

बीजशब्द: गोनू झा; हास्य; बुद्धि; मेटाथिएटर; भाँट; विरचन-प्रभाव; लोकधर्मी रंगमंच

१. परिचय आ कथा-संरचना

कुणालक प्रथम नाटक 'चालिस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा' मैथिलीक नाट्य-इतिहासमे एक विलक्षण स्थान रखैत अछि। ई नाटक अपन कथा-वस्तुसँ बेसी अपन 'कथा कहबाक ढंग' क कारणे महत्त्वपूर्ण अछि। नाटकक आरम्भे एक मेटाथिएट्रिकल (आत्म-सन्दर्भी) युक्तिसँ होइत अछि- तीन गोट 'भाँट' (यशोगायक/परम्परागत कवि-गायक) मंच पर अबैत छथि, दर्शकक समक्ष अपन निरर्थकताक विलाप करैत छथि, आ जखन ओ बुझैत छथि जे हुनकर पारम्परिक कवित-पाठसँ कतहु असरि नहि पड़ैत, तखन ओ निर्णय करैत छथि-"जैं हमरा लोकनि नाटक करी तँ केहन रहतै!" एहिसँ आरम्भ होइत अछि एक दोसर कथा-भाँटक कथा (बाहरी वृत्त) आ मिथिलाक चिर-परिचित लोक-तर्कशास्त्री गोनू झाक कथा (भीतरी वृत्त) ।

भीतरी कथाक प्रमुख अवयव-प्रारम्भमे एक बाल-परीक्षा दृश्य (जाहिमे हरबाह चतुरतासँ सिद्ध करैत अछि जे बच्चा केकर अछि); तकर बाद 'भुनभुनादेव' सुबेदारक दरबारमे बुद्धिक अपमान; फेर कविराज लोकनिक गोनू-शरण; गढ़ घुसकियाहीमे न्याय-यात्रा; चोरक टोलीक आपसी सत्ता-संघर्ष (दुरमतिया बनाम देबहा); गोनूक काली-माता स्वप्न; आ अंतमे एक कुटिल अभिषेक- विधिसँ चोर सभकेँ परास्त करबाक दृश्य। नाटककारक एक विशेष टिप्पणी महत्त्वपूर्ण अछि- एहि नाटककेँ एक अभिनेता द्वारा बहु-पात्रीय अभिनयमे खेलल जा सकैत अछि, आ एकर तीन टा काल-संस्करण (४५/६०/९० मिनट) आ एक ध्वनि-नाट्य शृंखला (१३ प्रकरण रेडियो पर प्रसारित) सेहो अछि।

नाटकक मूल प्रश्न-कलाकेँ के पोसत? राज्य, समाज, वा स्वयं कलाकार? आ एहि जीवन-संघर्षमे 'बुद्धि' (ज्ञान) की अन्तिम आ सर्वोच्च शक्ति थिक? - यएह प्रश्न चारू नाट्य-परम्पराक समीक्षाक केन्द्रमे रहत।

२. भारतीय नाटच-सिद्धांत

२.१ नाटचशास्त्र: रस-निष्पत्ति आ पात्र-प्रकार

भरतमुनिक 'नाट्यशास्त्र' (अनुमानित द्वितीय शती ईसापूर्व–द्वितीय शती ईसवी) रसकेँ नाट्यक आत्मा कहैत अछि-"रसो नाट्यस्य जीवनम्" । एहि नाटकक प्रधान रस 'हास्य' थिक, मुदा ओ एकल नहि अछि। भरत हास्यक छह विभेद देखबैत छथि जाहिमे 'परस्थ हास्य' (दोसर पर निर्देशित हँसी) एतय केन्द्रीय अछि- बुड़िराज, भुनभुनादेव, दुरमतिया आ चोर-दलक मूर्खताक चित्रण एहि वर्गमे आबैत अछि। संग-संग 'आत्मस्थ हास्य' (स्वयं पर हँसब) सेहो अछि- भाँटक आत्म-विडम्बना एकर उदाहरण अछि।

हास्यक आलम्बन विभाव थिक- भुनभुनादेव आ बुड़िराजक विसंगत आचरण ("राजन्, अहाँक नाम 'बुड़िराज' रखैत छी किऐकि हमरा अधिक नीक लगैए"), दुरमतियाक हठधर्मिता आ रनूभनूक असहाय प्रहसन। 'वात्स्यायन' क कामसूत्र-परम्पराक 'शृंगार' एतय नहि- ई हास्य-प्रधान नाटक अछि। मुदा 'वीर-रस' क एकटा अद्भुत संस्करण अवश्य अछि- गोनूक वीरता शस्त्र-बलक नहि, युक्ति-बलक थिक। भरत 'धीर-ललित' नायकक लक्षण कहैत छथि- शांत, विनोदी, बुद्धिमान-यएह गोनूक प्रकृति थिक।

विदूषक-परम्परा- भरतक नाट्यशास्त्रमे 'विदूषक' (vidūṣaka) एक विशिष्ट पात्र-प्रकार थिक- बहुधा ब्राह्मण, हास्यास्पद वेश, परंतु बुद्धिमान आ नायकक मित्र। गोनू झा आंशिकतः एहि परम्पराक उत्तराधिकारी थिकाह- मुदा कुणाल एकरा लोक-वास्तवाद (folk realism) मे पुनर्परिभाषित करैत छथि। गोनू न्यायालयी विदूषक नहि, अपितु माटिसँ जुड़ल जन-तर्कशास्त्री छथि।

२.२ प्रहसन/भाण आ लोकधर्मी शिल्प

संस्कृत-नाट्यक 'प्रहसन' विधा (हास्य-प्रधान एकांकी/बहुअंकी नाटक) एहि रचनाक निकटतम शास्त्रीय समकक्ष थिक। भरत प्रहसनकेँ 'त्रिविध हास्य' (मन, वचन, शरीर) क सम्मिश्रणसँ निर्मित बताबैत छथि। कुणालक नाटकमे तीनू उपस्थित अछि- भाँटक वाक्-क्रीड़ा (वचन-हास्य), चोरक असंगत क्रिया (शरीर-हास्य), आ गोनूक काली-माता-प्रसंगक मानस-विनोद।

नाट्यशास्त्रक ‘लोकधर्मी’ (लोक-परम्पराक अनुसरण) बनाम ‘नाट्यधर्मी’ (शास्त्रीय अभिनय-रीति) क भेद एहि नाटककेँ स्पष्टतः ‘लोकधर्मी’ शिविरमे राखैत अछि। दर्शककेँ सीधा सम्बोधन, गीत-प्रयोग, सपना-दृश्य, नाम-विडम्बना (भुनभुनादेव, बुड़िराज, दुरमतिया)- ई सभ लोकधर्मी प्रविधि थिक जे नाट्यशास्त्रक शास्त्रीय मानदण्डसँ भिन्न मुदा ततबे वैध आ परम्परा-सम्मत अछि।

२.३ ध्वनि आ वक्रोक्ति

आनन्दवर्धनक ‘ध्वन्यालोक’ (नवम शती) क ‘ध्वनि-सिद्धांत’-जाहिमे शब्दक व्यंजनार्थ (ध्वनित/सूचित अर्थ) अभिधा आ लक्षणासँ उत्कृष्ट घोषित होइत अछि- एहि नाटकमे अनेक स्तर पर क्रियाशील अछि।

शीर्षकक ‘ज्ञान झाक खिस्सा’- अभिधातः एक व्यक्तिक कथा, परंतु ध्वनि-अर्थमे ‘ज्ञान/बुद्धि’ क कथा। नाटकक समापन-गीत यएह ध्वनिकेँ मुखर करैत अछि-“बुद्धि सँ नइँ पैघ कोनो बल होइ छै।” एहि शब्द-ध्वनिमे समग्र नाटकक तात्पर्य संगृहीत अछि।

कुन्तकक ‘वक्रोक्ति-जीवित’ (दशम शती) जे वक्रता-सिद्धांत प्रस्तुत करैत अछि- अभिधेय-वस्तुक चमत्कारपूर्ण, आह्लादक अभिव्यक्ति-ओ एतय बहुल मात्रामे उपस्थित अछि। भुनभुनादेवक पूरा चरित्र एक ‘नाम-वक्रोक्ति’ थिक। गोनूक काली-माताक संग संवाद-

"हे माता! जखन आहाँ कँ सर्दी लगैत हैत तँ... सब हाथ कँ अस्त्र-शस्त्र मे बझौने छी। तखन नाक सँ पोटा कोना पोछैत हैब! "

-एहि वाक्यमे आस्था आ हास्यक, भक्ति आ बुद्धिक, देवत्व आ मानवीयताक जे वक्र मिश्रण अछि, ओ ‘वक्रोक्ति’ क उत्कृष्ट उदाहरण थिक। एतय भय कहियो नहि आबैत- अभयक वक्रोक्ति थिक ई।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ अरस्तू: अनुकरण, विप्रतिसार आ परिशोधन

यूनानी दार्शनिक अरस्तू (३८४–३२२ ईसापूर्व) अपन ‘काव्यशास्त्र’ (Poetics) मे नाटकक आत्मा ‘अनुकरण’ (μίμησις / अनुकृति) कहैत छथि, आ उत्कृष्ट त्रासदीक लेल ‘विप्रतिसार’ (περιπέτεια / परिस्थिति-परिवर्तन) आ ‘पहचान’ (ἀναγνώρισις / अभिज्ञान) क महत्त्व बतबैत छथि। कुणालक ई नाटक अरस्तूक मानदण्डसँ एक अर्थमे ‘विरोधी’ थिक-ई एकलरेखीय त्रासदी नहि, बहुरेखीय हास्य-प्रहसन थिक। अरस्तू ‘एपिसोडिक’ कथा-संरचनाकेँ त्रुटिपूर्ण मानैत छलाह; मुदा लोक-परम्परामे यएह एपिसोडिकता ओकर प्राण थिक।

तथापि अरस्तूक परिशोधन/कैथार्सिस- दर्शकक दमित भावनाक मोचन-एतय एक कॉमिक रूपमे उपस्थित अछि। चोरी, दारिद्र्य, राज्यक भ्रष्टाचार-एहि तीनू सामाजिक भयक विरुद्ध जे हास्य-कैथार्सिस एहि नाटकमे होइत अछि, ओ सामाजिक-मनोवैज्ञानिक स्तर पर अरस्तूक सिद्धांतसँ समर्थनीय अछि।

नाटकमे ‘अभिज्ञान’-दृश्य उलटा रूपमे अछि- गोनू (अर्द्धनिद्रा) चोर सभकेँ पहिने काली माताक रूप ‘चिन्हैत’ छथि (“काली माता पुरुखक भेष मे आबि गेलीहए!”), तखन ओ ‘नहि-पहचानैत’ छथि। ई ‘reversed anagnorisis’ थिक- पहचानक हास्यात्मक प्रयोग, जाहिसँ भयक स्थान हँसी लैत अछि।

३.२ ब्रेख्त: महाकाव्यात्मक रंगमंच आ विरचन-प्रभाव

जर्मन नाटककार-विचारक बेर्टोल्ट ब्रेख्त (१८९८–१९५६) अपन ‘महाकाव्यात्मक रंगमंच’ (Episches Theater / एपिक थिएटर) सिद्धांतमे ‘विरचन-प्रभाव’ (Verfremdungseffekt / अलगाव-प्रभाव) कहलाह- अभिनेता दर्शककेँ बेर-बेर स्मरण करबाबथि जे ओ एक ‘निर्माण’ देखि रहल छथि, कोनो ‘वास्तविकता’ नहि, जाहिसँ दर्शकक आलोचनात्मक बुद्धि जागृत रहए। कुणालक नाटक ब्रेख्तीय विरचन-प्रभावक एक देशज संस्करण थिक।

तीन भाँट मंच पर निर्णय लैत छथि जे ‘नाटक करब’- ई स्वयं विरचन-प्रभावक आरम्भ थिक। पूरा खेलमे ओ कतहु ‘भावमग्न’ नहि होइत छथि, सदा अपन कलाकार-अस्तित्वसँ सचेत रहैत छथि। अंतमे ओ पुनः मंच पर आबि नाटकक वैकल्पिक अंत पर वाद-विवाद करैत छथि आ दर्शककेँ सामाजिक व्याख्या प्रस्तुत करैत छथि-“अशिक्षा आ गरीबी सँ उत्पन्न एहि सामाजिक व्याधि” । ई ब्रेख्तक ‘Gestus’ (भाव-मुद्रा/प्रदर्शन-क्रिया) क उत्कृष्ट उदाहरण थिक-अभिनेता ‘दिखाबैत’ अछि (zeigen), अनुभव नहि करैत अछि।

ब्रेख्त कलाक आर्थिक आधारकेँ सेहो मुद्दा बनबैत छलाह। 'गमछा-प्रसंग'-जाहिमे भाँट लोकनि स्पष्ट रूपसँ दर्शकसँ पेट भरबाक लेल दान माँगैत छथि- यएह ब्रेख्तीय पारदर्शिता थिक। ब्रेख्त सदा चाहैत छलाह जे कलाक उत्पादन-शर्त (conditions of production) नुकाओल ने जाए- एहि नाटकमे ओ उजागर अछि।

३.३ लायनल एबलः मेटाथिएटर

अमेरिकी आलोचक लायनल एबल (Lionel Abel) अपन 'मेटाथिएटर' (Metatheatre, १९६३) ग्रन्थमे ओहि नाट्य-विधाकेँ परिभाषित कएलनि जाहिमे पात्र अपनाकेँ 'नाटकमे' जनैत छथि। एहि परिभाषाक अनुसार 'चालिस चोर' एक परिपूर्ण मेटाथिएटर थिक- तीन भाँट मंच पर नाटक करबाक निर्णय लैत छथि, नाटकक कथा छाँटैत छथि, आ अंतमे रचना-प्रक्रियाक पारदर्शिता प्रदर्शित करैत छथि। एबल कहलनि जे मेटाथिएटर जीवनकेँ सपना आ नाटककेँ जागरण मानैत अछि- एतय ठीक उल्टा अछि- भाँटक जीवन-संकट 'असल' थिक आ गोनूक कथा 'सपना' (नाट्य), मुदा दुनूकेँ एक्के रंगमंच धारण करैत अछि।

३.४ बाख्तिनः कार्निवालेस्क

रूसी चिन्तक मिखाइल बाख्तिन (१८९५–१९७५) अपन 'कार्निवालेस्क' सिद्धांतमे ओहि सांस्कृतिक क्षणक विश्लेषण कएलनि जाहिमे स्थापित सामाजिक पदक्रम उनटि जाइत अछि, मर्यादाक बान्ह टूटैत अछि, आ लोक-हास्यमे अधिकारक उपहास होइत अछि।

एहि नाटकमे कार्निवालेस्कक अनेक छटा अछि- बुड़िराज नामक 'बुद्धिहीन मंत्री', भुनभुनादेव 'गुनगुनाबएवला-देव' सुबेदार-दुनूक नाम स्वयं हुनकर सत्ता-पद पर कार्निवालेस्क टिप्पणी थिक। चोर-दलमे जखन नेतृत्वक लेल लोकतांत्रिक मत-गणना होइत अछि- एहि बर्बर समूहमे सेहो 'राजनीति' चलैत अछि- ई एक कार्निवालेस्क समानांतर-राज्य थिक।

गमछा-प्रसंग बाख्तिनक दृष्टिसँ 'श्रेणी-उत्क्रमण' (inversion of hierarchy) थिक- राजाधिराज आ हुनकर दरबारक उपहास करैत, भाँट-कलाकार दर्शकसँ सोझे आर्थिक सम्बन्ध स्थापित करैत छथि, बिना कोनो मध्यस्थक। ई 'राज्याश्रय' बनाम 'जनाश्रय' क द्वन्द्वकेँ कार्निवालेस्क रूपमे सोझराइत अछि।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ ली यूः नाटक-संरचनाक तत्त्व

चीनी नाटककार-विचारक ली यू (१६११–१६८०), जिनकर 'शियान-चिंग-ओउ-चि' ('फुरसतिमे मनक बात') चीनी नाट्य-समीक्षाक आधार-ग्रन्थ मानल जाइत अछि, एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत देलनि-'झू-नाओ' (मुख्य-मस्तिष्क / केन्द्रीय विचार-सूत्र)- प्रत्येक उत्तम नाटकमे एक ऐसी केन्द्रीय धुरी होएबाक चाही जाहिसँ समस्त कथा-धागा बन्हाएल हुअए।

एहि नाटकक 'झू-नाओ' थिक- 'बुद्धि बनाम बाहुबल', तथा एहिसँ जुड़ल 'लोक-कला बनाम राज्य-शक्ति' । ली यू कहलनि जे झू-नाओ पहिल अंकेमे स्थापित होएबाक चाही- आ कुणाल यएह करैत छथि (भाँटक पहिल दृश्य) ।

ली यूक दोसर सिद्धांत 'मि-झेन-शियान' (सूक्ष्म-सीवन / stitching) थिक- नाटकक सब अंग एना सूतल होए जे अंतमे सब ताग अपन स्थान पर हो। गमछा-प्रसंग आ भाँट-वृत्तक अंतमे प्रत्यावर्तन एहि 'मि-झेन-शियान' क उदाहरण थिक- नाटकक बाहरी वृत्त (भाँटक संकट) ठीक ओही स्थल पर समाप्त होइत अछि जाहिठाम आरम्भ भेल छल।

४.२ चोउ पात्र-प्रकार

चीनी शास्त्रीय रंगमंचमे (जिंग-जू/पेइचिंग ओपेरा तथा अन्य रूप) पाँच मूल पात्र-प्रकार होइत अछि-शेंग (पुरुष-नायक), तान (नारी), चिंग (रंगीन मुख), मो (वृद्ध), आ चोउ (विदूषक) । 'चोउ' ओ एकमात्र पात्र-प्रकार थिक जे सोझे दर्शकसँ गप करैत अछि, मंच-परम्पराकेँ तोड़ैत अछि, आ देशज लोकभाषाक प्रयोग करैत अछि।

एहि नाटकक तीन भाँट 'चोउ' क एक त्रिमूर्ति संस्करण छथि। हुनकर दर्शक-सम्बोधन, भूमिका-परित्याग, गीत-प्रयोग आ स्व-उपहास-सभ 'चोउ' क चिरपरिचित गुण थिक। एहि समानांतरसँ प्रकट होइत अछि जे लोक-रंगमंचक एक वैश्विक तर्क अछि- प्रत्येक सभ्यताक लोक-रंगमंच एक विदूषक-पात्र रचैत अछि जे 'चतुर्थ भित्ति' केँ तोड़ैत अछि आ समाजक आत्म-दर्शन करबैत अछि।

४.३ श्यू-शी: रिक्त-पूर्ण सिद्धांत

चीनी सौन्दर्यशास्त्रमे 'श्यू-शी' (खाली-भरल, empty-full) क सिद्धांत मूलभूत अछि। मंच पर जे 'रिक्त' (श्यू) होइत अछि- दृश्य-सामग्रीक अभाव-ओ कल्पनाद्वारा 'पूर्ण' (शी) बनि जाइत अछि। चीनी अभिनेता एक छड़ीसँ 'नाव' आ एक कदमसँ 'यात्रा' बनबैत छथि।

कुणालक नाटकमे 'श्यू-शी' क सर्वाधिक मार्मिक उदाहरण अछि- गोनूक कर्पास-बीज वटी। एक मुट्ठी बेकार कपास-बीजकेँ गोनू दावा करैत छथि जे ई प्रति भरी दस अशर्फीमे बिकाइत अछि। 'रिक्त' वस्तु (worthless seed) एक 'पूर्ण' (valued commodity) बनि जाइत अछि- ई गोनूक बुद्धि-शक्तिक श्यू-शी-प्रयोग थिक। एहिसँ प्रकट होइत अछि जे कुणालक सौन्दर्य-बोध चीनी लोक-रंगमंचक 'रिक्तता-सम्पन्नता' क मर्मसँ संगत अछि।

४.४ यी-चिंग: वांग गुओवेई

चीनी काव्यशास्त्री वांग गुओवेई (१८७७–१९२७) अपन 'रेन-झियान-ची' ग्रन्थमे 'यी-चिंग' (emotion-situation-fusion / भाव-स्थिति-संलय) क सिद्धांत दैत छथि- उत्कृष्ट कलामे भाव आ परिवेश एना मिज्झर होइत अछि जे एक स्वतंत्र सौन्दर्य-लोक (aesthetic sphere) सृजित होइत अछि।

एहि नाटकक 'यी-चिंग' थिक-भाँटक मरैत कलाक नस्टाल्जिया आ गोनूक अपरास्त बुद्धिक उल्लासक संयोग। एहि दुनूक मिलन एक विशिष्ट रंगमंचीय भाव-क्षेत्र रचैत अछि जाहिमे विषाद आ उत्साह एकहि संग उपस्थित छथि। वांग 'यू-वो-झी-चिंग' (landscape-with-subject) कहैत छलाह-जाहिमे रचनाकारक भाव स्वयं सृष्टिमे विलीन भ' जाइत अछि। एहि नाटकमे लेखकक मैथिली-कलाकारत्वक संकटक प्रति प्रेम ओहिना संग्रह-रूपमे व्यक्त होइत अछि।

५. इजरायली नाट्य-सिद्धांत

५.१ एली रोज़िक: प्रतिमा-सिद्धांत (Theatrical Iconicity)

इजरायली नाट्य-विद्वान एली रोज़िक (Eli Rozik, जन्म १९३४) अपन ग्रन्थ 'थिएट्रिकल इमेज' (Theatrical Image) आ बाद' क लेखनमे एक महत्त्वपूर्ण सिद्धांत प्रस्तुत कएलनि- रंगमंचक मूल इकाई 'प्रतिमा' (iconic image) थिक, ने पाठ आ ने कथा। अभिनेताक शरीर-स्वर-क्रिया एक काल्पनिक संसारक 'प्रतिमा' (icon, Peirce-अर्थमे) सृजित करैत अछि- नाटक ई प्रतिमा-प्रणाली थिक।

एहि नाटकमे रोजिकक सिद्धांतक एक विशेष आयाम थिक- भाँट-प्रतिमा। तीन भाँट मंच पर जे छवि उत्पन्न करैत छथि, ओ मात्र 'तीन व्यक्ति' क प्रतिनिधित्व नहि, अपितु 'मरैत भाँट-परम्परा' क समग्र रूपमे एक प्रतिमा थिक। रोजिक कहलनि जे प्रतिमा 'symbolic' (प्रतीक) नहि, 'iconic' (प्रतिरूप) होइत अछि- ओ अपन संकेतित विषय-वस्तुसँ समानता (resemblance) आधारित सम्बन्ध रखैत अछि। भाँट अपना कलाक ह्रासकेँ 'देखाबैत' छथि- ई देखाएब प्रतिमा थिक।

नाटककेँ अपने विषय बनाएब- जखन भाँट निर्णय लैत छथि जे 'नाटक करब'-एतय रोजिकक 'थिएटर-अबाउट-थिएटर' (theatre about theatre) सिद्धांत लागू होइत अछि। रंगमंच अपन माध्यमकेँ विषय बनबैत अछि- ई एक उत्कृष्ट 'प्रतिमात्मक आत्म-प्रतिफलन' (iconic self-reflexion) थिक।

५.२ शिमोन लेवी: पुरालेख-रंगमंच

इजरायली नाट्य-विद्वान शिमोन लेवी (Shimon Levy, १९३९–२०१७) अपन अनेक ग्रन्थमे ओहि नाट्य-कार्यकेँ रेखांकित कएलनि जाहिमे रंगमंच एक 'सांस्कृतिक पुरालेख' (cultural archive) बनैत अछि- ओहि परम्परा, स्मृति आ अभ्यासक जीवित संग्रहस्थल जे अन्यथा विस्मृत भ' जैत। लेवीक परिप्रेक्ष्यमे, रंगमंच मात्र 'वर्तमानक घटना' नहि, अपितु 'अतीतक स्मृतिक प्रदर्शन' (performance of remembered past) सेहो थिक।

एहि नाटकमे भाँट-परम्परा- जे मिथिलाक यशोगायक कुलक शताब्दी-पुरान जीविका-परम्परा थिक-अपन ह्रास-क्षणकेँ रंगमंच पर 'पुरालेखित' करैत अछि। दर्शक जे देखैत छथि, ओ भाँटक एक 'जीवित-मृत्यु-क्षण' क प्रतिमा थिक। एहि नाटकक मंचन (पटना, १९९३) भाँट-परम्पराक एक जीवित नमूना संरक्षित करैत अछि- भलेँ भाँट मंच पर विलाप कर' रहल होथि।

५.३ हिब्रू रंगमंचक भाषा-पुनरुद्धार-समानांतर

इजरायली रंगमंचक इतिहासक सभसँ महत्त्वपूर्ण आयाममे एक थिक-हिब्रू भाषाकेँ जीवित रंगमंचक माध्यम बनाएब। 'हबीमा' (Habima, मास्को, १९१७; बादमे इजरायलक राष्ट्रीय रंगमंच) हिब्रू भाषामे प्रयोग करैत एक मृत-प्रायः भाषाकेँ नाट्य-भाषाक रूपमे पुनर्स्थापित कएलक।

कुणालक नाटक आ 'भंगिमा' रंगमण्डलीक पटना-मंचन (१९९३) एकर समानांतर थिक। हिन्दी-प्रभुत्ववला पटनाक सांस्कृतिक वातावरणमे मैथिलीमे नाट्य-प्रस्तुति एक भाषा-राजनीतिक कार्य थिक- मैथिलीकेँ 'बोलीमात्र' नहि, एक 'रंगमंच-योग्य', 'दर्शक-योग्य', 'साहित्यिक भाषा' क रूपमे प्रतिष्ठित करबाक सांस्कृतिक-राजनीतिक प्रयास। एहि दृष्टिसँ भंगिमाक भूमिका हबीमाक भूमिकासँ सादृश्य रखैत अछि।

५.४ साक्षी-रंगमंच (Witness Theatre): गमछाक अर्थनीति

इजरायली नाट्य-परम्परामे 'साक्षी-रंगमंच' (Witness Theatre / תועדएदुत) एक महत्त्वपूर्ण विधा बनल-जाहिमे रंगमंच एक कठोर सामाजिक यथार्थक 'गवाह' बनैत अछि आ दर्शककेँ ओहि यथार्थक प्रति उत्तरदायी बनाबैत अछि।

नाटकक अंतिम गमछा-प्रसंग-जाहिमे भाँट लोकनि स्पष्ट रूपसँ कहैत छथि जे "हमरा लोकनिक पेट तखने भरत जखन दर्शकगण कृपा करताह"-एक 'साक्षी-क्षण' थिक। ई रंगमंचक आर्थिक भेद्यताकेँ (economic vulnerability of performing artists) सार्वजनिक करैत अछि आ दर्शककेँ 'गवाह' बनबैत छथि। ई क्षण मात्र हास्य नहि-एहिमे कला-जीवनक एक कठोर सत्यक स्वीकृति अछि।

एहि दृष्टिसँ देखला पर नाटकक अंत एक 'राजनीतिक कार्य' बनि जाइत अछि- दर्शककेँ 'साक्षी' बनेबाक आ उत्तरदायित्वक 'आमंत्रण' ।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण: एक तुलनात्मक मूल्यांकन

चारू परम्पराक आलोककेँ एक साथ धरि राखि देखी तँ 'चालिस चोर आ गोनू झा' एक बहुस्तरीय रचना थिक-ओ समान रूपसँ भारतीय रस-वक्रोक्ति, ब्रेख्तीय विरचन-प्रभाव, चीनी श्यू-शी, आ इजरायली साक्षी-रंगमंचक मानदण्ड पर उत्तीर्ण होइत अछि।

भारतीय दृष्टि-हास्य + वीर रसक असाधारण मिश्रण; विदूषक-परम्पराक लोक-रूपान्तरण; ध्वनि-सिद्धांत द्वारा 'बुद्धि' शब्दक अर्थ-विस्तार।

पाश्चात्य दृष्टि-परिपूर्ण ब्रेख्तीय 'एपिक थिएटर'; मेटाथिएटरक क्लासिक उदाहरण; बाख्तिनीय कार्निवालेस्क।

चीनी दृष्टि-चोउ-पात्र-प्रकारसँ भाँटक उत्कृष्ट साम्य; श्यू-शी सौन्दर्य-दर्शन; यी-चिंगक विषाद-उल्लास संयोग।

इजरायली दृष्टि-रोजिकक प्रतिमात्मक आत्म-प्रतिफलन; लेवीक पुरालेख-रंगमंच; हबीमा-सादृश भाषा-राजनीति; गमछाक साक्षी-क्षण।

चारू परम्पराक एक साझा निष्कर्ष अछि- यएह नाटक मात्र 'गोनू झाक खिस्सा' नहि, अपितु 'रंगमंचक खिस्सा' थिक- ओकर संकट, ओकर अर्थनीति, ओकर जीवन-शक्ति, आ ओकर सामाजिक कर्तव्यक कथा। एहि अर्थमे ई नाटक एक नाट्य-घोषणापत्र (theatrical manifesto) सेहो थिक- जे 'बुद्धि' केँ, लोक-कलाकारक हास्य-तर्ककेँ, समस्त बाधाओंक विरुद्ध ठाढ़ होएबाक शक्ति घोषित करैत अछि।

पूरक सामाजिक-राजनीतिक पाठ

'चालीस चोर आ गोनू झा उर्फ ज्ञान झाक खिस्सा' नाटक मिथिलाक विदूषक परम्पराक प्रणेता गोनू झाक पारम्परिक हास्य-बोधकेँ विखंडित क'क' एकटा नव बौद्धिक आयाम देइत अछि। गोनू झाक 'ज्ञान झा'क रूपमे रूपान्तरण मात्र नाम-परिवर्तन नहि अछि, अपितु ई बुद्धिक लोक-कल्याणकारी उपयोग आ सामाजिक विसंगतिक विरुद्ध वैचारिक अस्त्र थिक।

नाटकक कथावस्तु बड़ जटिल आ सामाजिक यथार्थ सँ जुड़ल अछि। नाटकक आरम्भ एकटा दंपतिक बाट मे हरबाह द्वारा कएल गेल षड्यंत्र सँ होइत अछि, जत' हरबाह शक्करक प्रलोभन द'क' बच्चाक दाबी अपन पक्षमे क' लैत अछि आ पंच-परमेश्वरक बुद्धिहीनताकेँ उघारैत अछि। एहिना, नाटकक एकटा सभसँ महत्वपूर्ण आ दार्शनिक दृश्य 'यमलोक'क अछि। गोनू झा अपन मृत्यु कालमे बाँझ गायक दान (गोदान) क' दैत छथि। यमलोक पहुँचला पर चित्रगुप्त हुनकर 'एकाउन्ट' देखि बजैत छथि जे गोनू झाकेँ स्वर्गमे मात्र 'लॉजिंग' भेटत, 'फुडिंग' (भोजन) नहि, किएक तँ ओ बाँझ गायक दान केने छथि। चित्रगुप्तक एहि शास्त्रीय प्रहारक उत्तर गोनू झा

अत्यन्त चतुरता सँ दैत छथि। ओ गायक कानमे कहैत छथि जे ई यमराज आ चित्रगुप्त तोहर अपमान क' रहल छथि जे तों बाँझ छह। ई सुनैत देरी गाय क्रुद्ध भ'क' यमराज आ चित्रगुप्तकेँ खेहारि दैत अछि आ अंततः भयभीत भ' यमराज गोनू झाकेँ पुनः मर्त्यलोक (धरती) पर पठा दैत छथि। ई दृश्य धार्मिक आडम्बर, कर्मकांड आ पंडावाद पर कुणालक अत्यन्त तीक्ष्ण आ मर्मभेदी प्रहार थिक।

नाटकक दोसर पक्ष राजनैतिक आ प्रशासनिक भ्रष्टाचारक अछि। घुसकियाही गढ़क नव राजा भुनभुनादेव अत्यन्त लोभी आ क्रूर अछि, जे स्वर्गीय पिता झुनझुनादेवक शोकक बहाना क'क' कलाकार लोकनिक पुरस्कार खा जाइत अछि। मंत्री बुड़िराजक कुटिल बुद्धि सँ प्रजा पर कर बढ़ाओल जाइत अछि आ अंततः गोनू झाक घरमे चोरी करबाक षड्यंत्र रचल जाइत अछि।

चोरक बथानमे चलि रहल सत्ता संघर्ष—सरदारक मृत्यु उपरांत देबहा आ दुरमतियाक बीच द्वंद्व—वंचित वर्गक भीतरक अंतर्विरोधकेँ दर्शबैत अछि। दुरमतिया आ देबहाक बीच बाजी लगैत अछि जे जे गोनू झाक घरमे चोरी करत, सैह सरदार बनत। गोनू झा अपन बुद्धिक बल सँ दुनू चोरक प्रयासकेँ विफल करैत छथि। देबहा जखन तुलसी चौरामे नुकाइए तँ गोनू झा तुलसी चौरा पर पीक फेकि क' 'थुकनी गोसांइ'क स्वाँग करैत छथि आ देबहाकेँ पकड़ि लैत छथि। दुरमतिया जखन तलवार आ भाला ल'क' डकैती करय अबैत अछि, तँ गोनू झा अपन घरक 'बंगौर' (कपासक बीया) क मोटरीकेँ 'कर्पास-बीज वटी' नामक एकटा दिव्य औषधि घोषित क' दैत छथि आ कहैत छथि जे एकर एक रतीक दाम चारि असर्फी अछि। चोर सभ सोना-चाँदी छोड़ि बंगौरेक मोटरी चोरा क' पड़ा जाइत अछि।

नाटकक सभसँ महत्वपूर्ण सामाजिक हस्तक्षेप अंतमे देखबाक भेटैत अछि। महाराजाधिराजक दरबारमे जखन चोर सभ पकड़ल जाइत अछि, तँ पारम्परिक गोनू झाक विपरीत 'ज्ञान झा' राजा सँ चोरक लेल मृत्युदंड नहि, अपितु हुनका सभक आजीविकाक समुचित प्रबंध आ सतर्क सामाजिक संरक्षणक माँग करैत छथि। ओ तर्क दैत छथि जे चोरी एकटा रोग थिक आ आर्थिक कष्ट तथा राजनैतिक भ्रष्टाचरण एकर मूल कारण थिक। ई कुणालक मार्क्सवादी आ समाजवादी चेतनाक मंचीय प्रकटीकरण थिक।

६३. “बिदापत”: लोकनाटच, इतिहास, स्मृति आ काव्यक रंगमंच

सारांश

“बिदापत” क ई समीक्षा विद्यापति-काव्य, लोकनाट्य-शिल्प, इतिहास-स्मृति, लखिमाक नायिका-कर्तृत्व, अन्तर्नाट्य आ काव्यक चिरजीविताकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। भारतीय रस-ध्वनि, ऐतिहासिक नाट्य-दृष्टि, स्मृति-अध्ययन, ब्रेख्तीय आत्म-दूरी तथा चीनी आ इजरायली तुलनात्मक सूत्रक माध्यमसँ नाटकक संरचना आ सांस्कृतिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि।

बीजशब्द: बिदापत; विद्यापति; लोकनाट्य; स्मृति; लखिमा; ध्वनि; ऐतिहासिक नाटक

इतिहास-पद्धतिक स्पष्टता

एहि अध्यायमे एकटा मूल भेद अनिवार्य रूपेँ मानल गेल अछि: ज्योतिरीश्वर-पूर्व मैथिली पदावलीकार विद्यापति आ शिवसिंह-युगक संस्कृत-अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुर दू भिन्न ऐतिहासिक व्यक्ति/परम्परा छथि। ‘बिदापत’ नाटक ई दुनू स्रोत-धाराक स्मृति, पद, कथा आ लोकविश्वासकेँ रंगमंचीय प्रयोजनसँ एक नाटकीय पात्र-विश्वमे समेटैत अछि। अतः नाटकमे शिवसिंह, लखिमा, उगना अथवा पदावली-गीतक पारस्परिक संयोजनकेँ नाटककारक रचनात्मक समेकन मानल जाए, ऐतिहासिक एकरूपता वा एके व्यक्ति हेबाक प्रमाण नहि।

पहिल प्रदर्शन: ३० सितंबर २००२, विद्यापति भवन, पटना · प्रकाशन: अंतिका, जनवरी-मार्च २००३

१. परिचय आ कथा-स्थापत्य

कुणालक द्वितीय नाटक ‘बिदापत’ (= विद्यापतिक लोकोच्चरित रूप) अपन शिल्प-वैविध्यमे संग्रहक सर्वाधिक परिष्कृत कृति थिक। ‘बिदापत नाच’ -मिथिला-बंगालक प्रसिद्ध लोक-रंगमंच-परम्पराक -शिल्पमे लिखल एहि नाटिकाक समय-सीमा नाटककार स्वयं स्पष्ट करैत छथि -ई. सं. १४००–१४५०। मुदा कुणालक महत्त्वाकांक्षा ऐ सँ बेसी अछि- ओ एक जीवनीपरक नाटक (biography-play) मात्र नहि लिखैत छथि, अपितु विद्यापतिक काव्यक रंगमंचीय भाष्य रचैत छथि।

नाटकक स्थापत्य (architecture) तीन स्तर पर काज करैत अछि। बाहरी स्तर -सूत्रधार-नटीक संवाद-चौखट, विदूषक-सदृश विपटाक व्याघात (interruption), पूर्वरंगक शास्त्रीय प्रदर्शन। मध्य स्तर -कथा-वस्तुक अभिनय (विद्यापति, शिवसिंह, लखिमा, उगना, मंदाकिनी, कालिंदी, अमियकर आ दरबारी पात्र) । भीतरी स्तर - विद्यापतिक स्वयं पदक अंतर्गायन (embedded performance) जे कथाक भावात्मक धुरी थिक। एहि तीनू स्तरक अन्योन्य-क्रियामे नाटकक रंगमंचीय ऊर्जा उत्पन्न होइत अछि।

कथाक पाँच मुख्य अक्ष -(१) विद्यापति आ शिवसिंहक मित्रता, (२) जौनपुर-सुलतानक न्यायालयमे विद्यापतिक काव्य-बल द्वारा शिवसिंहक मुक्ति, (३) उगना-महादेवक अन्तर्कथा, (४) लखिमाक षड्यंत्र-प्रतिरोध आ शिवसिंहक अन्तर्धान, (५) विद्यापतिक ३२-वर्षीय शोक आ काव्य-अमरत्वक उद्घोषणा। एहि पाँचू अक्षकेँ सूत्रधार-नटी-विपटाक त्रिभुज नाटकक बाहरी समापन (frame) दैत अछि।

२. भारतीय नाटच-सिद्धांत

२.१ पूर्वरंग आ दशरूपक-परम्परा

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र (अनुमानित द्वितीय शती ई. पू.–द्वितीय शती ई. सं.) नाटकक आरम्भमे ‘पूर्वरंग’ (preliminary entertainment) अनिवार्य मानैत अछि - जाहिमे नांदी (auspicious verse), सूत्रधार-प्रवेश आ प्रस्तावना सम्मिलित होइत अछि। कुणाल एहि शास्त्रीय संरचनाकेँ ने मात्र अपनाबैत छथि, अपितु ओकर लोकनाट्य-रूपान्तरण प्रस्तुत करैत छथि। देवी-वंदना, भैरवी-स्तुति, तखन सूत्रधारक प्रस्तावना -ई क्रम नाट्यशास्त्रक अनुगामी अछि।

दशरूपकक दृष्टिसँ धनञ्जयक ‘दशरूपक’ (दशम शती) नाटकक दस विभेद करैत अछि। ‘बिदापत’ क शीर्षक-पृष्ठ एकरा ‘नाटिका’ कहैत अछि- जे दशरूपकक एक प्रकार थिक, हास्य-प्रधान, लघु, वियोगान्त, नायक-नायिका दुनूक व्यथा-भोग। ‘बिदापत’ एहि परिभाषामे आंशिक रूपे बैसैत अछि - वियोग आ दुखान्त मुदा हास्यक स्थानमे करुण। अभिनवगुप्त जखन दशरूपकमे ‘नाटिका’ क व्याख्या करैत छथि, कहैत छथि जे एतय नायक ‘विलक्षण’ होएबाक चाही - विद्यापति यएह थिकाह।

२.२ रस-निष्पत्तिः करुण, शृंगार आ शान्तक त्रिवेणी

एहि नाटकक प्रधान रस ‘करुण’ थिक - शिवसिंहक अन्तर्धान, लखिमाक ३२-वर्षीय प्रतीक्षा, विद्यापतिक जीवनक अंतिम एकाकी स्थिति। भरत करुण-रसक ‘स्थायी भाव’ शोक मानैत छथि, आ एकर विभाव (उद्दीपन) अप्रियक स्मरण। किन्तु एहि नाटकमे करुणक तल अभिनवगुप्तक ‘शान्त-रस’ दिस घुरैत अछि -समाजीक समापन-गायन जे विद्यापति, शिवसिंह, लखिमा, विपटा सभकेँ ‘काव्य-पदमे अमर’ घोषित करैत अछि, ओ शान्त-रसक आत्मविश्राम थिक।

अभिनवगुप्त (९५०–१०२० ई. सं.) अपन ‘अभिनवभारती’ (नाट्यशास्त्रक टीका) मे रस-सिद्धांतक व्याख्या करैत कहलनि जे रस ‘अभिव्यक्त’ होइत अछि, ‘उत्पन्न’ नहि -ओ दर्शकक चेतनामे पहिनहियेसँ विद्यमान छल, नाटक ओकरा जागृत करैत अछि। ‘बिदापत’ मे विद्यापतिक वास्तविक पदक प्रयोग एहि ‘अभिव्यक्ति’ केँ शक्तिशाली बना दैत अछि - दर्शकक सुप्त काव्य-स्मृति नाट्य-प्रदर्शनसँ जागि उठैत अछि।

शृंगार-रस विद्यापतिक पदक माध्यमसँ - विशेषतः “नव वृन्दावन, नव-नव तरुगण, विहरइ नवल किशोर” आ “चाँद सार लए मुख घटना करू” - प्रवाहित होइत अछि। मुदा ई शृंगार लौकिक नहि, भक्ति-शृंगार थिक, जकर लक्ष्य राधा-कृष्ण-लीलाक माध्यमसँ सार्वभौम प्रेम थिक। एहि तरहे शृंगार आ भक्ति एकठाम विलीन भ’ जाइत अछि - ई संस्कृत अलंकारशास्त्रक ‘शृंगार-भक्ति-योग’ थिक।

२.३ ध्वनि-सिद्धांतः ‘बिदापत’ शब्दमे तीन अर्थक संकुचन

‘बिदापत’ शब्दक ध्वनि-व्यंजना असाधारण थिक। आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकक परिप्रेक्ष्यमे एहि एक शब्दमे कमसँ-कम तीन अर्थ-स्तर संकुचित अछि—(क) नाटकक शिवसिंह-युगीन पात्र, अर्थात् संस्कृत-अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुर; (ख) बिदापत नाचक लोक-परम्परा, जकर पदावली-स्मृति ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावलीकार विद्यापतिसँ सम्बद्ध अछि; आ (ग) ‘बिदा’+‘पत’ क व्यंजक लोक-ध्वनि। नाटक एहि ऐतिहासिक रूपेँ भिन्न दुनू विद्यापति-परम्पराकेँ रचनात्मक रूपेँ एक रंगमंचीय संरचनामे समेटैत अछि; समीक्षा एकरा ऐतिहासिक एकरूपता नहि मानैत।

नाम-वक्रोक्ति—“विद्यापति, विद्यापति!” बनाम “बिदापत तँ बिदापते छथ!”—नाटकक भीतर शास्त्रीय नाम आ लोकोच्चरित नामक टकराहट थिक। सूत्रधार शास्त्रीय नामपर आग्रह करैत छथि, विपटा लोकोच्चरित नामपर। ई हास्यात्मक वाद-विवाद नाटकक एक्के पात्रक नाम-रूपक स्तरपर अछि; एकर आधारपर ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावलीकार आ शिवसिंह-युगक संस्कृत-अवहट्ट विद्यापति ठक्कुरकेँ एक ऐतिहासिक व्यक्ति मानब उचित नहि।

२.४ अन्तर्नाटच (नाटकक भीतर नाटक)

नाट्यशास्त्रमे ‘अन्तर्नाट्य’ (play-within-a-play) कोनो अलग विधा नहि, परंतु संस्कृत नाटकमे एकर उदाहरण अछि (जेना भासक नाटकमे स्वप्नदृश्य वा रत्नावलीमे अभिनय) । ‘बिदापत’ मे दू टा अन्तर्नाट्य उपस्थित अछि। प्रथम -अमियकरक ‘स्वाँग’ (dramatic imitation), जाहिमे ओ विद्यापति आ सुलतानक भेटकेँ स्वयं नाट्य-रूप दैत छथि; मिष्ठान खाइत-खाइत ओ पात्र बदलैत जाइत छथि -ई अभिनयक एक देशज रूप थिक। द्वितीय -गौरा-महादेव-नटुआक अन्तर्दृश्य, जाहिमे शिवक निर्धनताक विषयमे गौराक विलाप अभिनीत होइत अछि -ई उगनाक महादेव-पहचान हेतु प्रस्तुति थिक।

३. पाश्चात्य नाटच-सिद्धांत

३.१ जॉर्ज लुकाचः ऐतिहासिक नाटक आ विश्व-ऐतिहासिक व्यक्तित्व

हंगरीक मार्क्सवादी आलोचक जॉर्ज लुकाच (Georg Lukács, १८८५–१९७१) अपन निबंधमे ऐतिहासिक नाटकक लेल एक मानदण्ड प्रस्तुत कएलनि - नायक एक ‘विश्व-ऐतिहासिक व्यक्तित्व’ (welthistorisches Individuum) होएबाक चाही, जे अपन युगक ऐतिहासिक अंतर्विरोधकेँ अपन शरीरमे जीबैत अछि। विद्यापति ठीक एहन व्यक्तित्व थिकाह - ओ एक दिस निर्भर राज्यमे जीबैत छथि (तिरहुतक जौनपुर-अधीनता), दोसर दिस काव्य-शक्तिमे विश्वास रखैत छथि जे राजनीतिसँ उत्कृष्ट अछि। हुनकर जीवन एहि अंतर्विरोधक मूर्त रूप थिक।

मुदा कुणालक विद्यापति लुकाचक ‘विजयी नायक’ नहि - ओ एक ‘शोकाकुल साक्षी’ थिकाह। शिवसिंहक अन्तर्धान ओहि मैत्री-बन्धनक अंत थिक जे कविक जीवनकेँ अर्थपूर्ण बनेने छल। ३२ वर्षक प्रतीक्षाक बाद जे शान्त-भाव प्राप्त होइत अछि, ओ लुकाचक त्रासदी-नायकसँ भिन्न - ओ एक पूर्वीय, ध्यानमग्न नायकक त्रासदी थिक।

३.२ नारीवादी पाठ: लखिमाक नायिका

पाश्चात्य नारीवादी नाट्य-आलोचना (केट मिलेट, एलेन मॉर्टन, शारोन फ्रेडमैन आदि) ओहि नाट्य-पाठक पुनर्पाठमे रुचि रखैत अछि जाहिमे ऐतिहासिक महापुरुषक छायामे स्त्री-पात्र गौण भ' जाइत अछि। कुणाल एहि प्रवृत्तिकेँ सचेत रूपसँ उलटैत छथि।

लखिमाक पात्र तीन कारणसँ नारीवादी दृष्टिसँ उल्लेखनीय अछि। प्रथम - ओ मंत्री-संरक्षण अस्वीकार करैत स्वयं षड्यंत्रक 'पाठ' करैत छथि -"..लोकनि महाराज-महारानी-महाकविक त्रिमूर्तिकेँ खण्डित करबाक सुअवसर बुझि रहल छथि।" द्वितीय - हुनकर प्रतीक्षा परम्परागत पतिव्रताक निष्क्रियता नहि, अपितु एक स्वेच्छापूर्ण दृढ़-संकल्प थिक। तृतीय - परम्परागत आख्यानमे लखिमा बहुधा सती-गाथाक केन्द्रमे छथि; कुणाल एहिसँ बाहर निकलि हुनकर जीवन-प्रतीक्षाकेँ केन्द्रमे रखैत छथि।

३.३ पियर नोरा: स्मृति-स्थल (Lieux de Mémoire)

फ्रांसीसी इतिहासकार पियर नोरा (Pierre Nora, जन्म १९३१) अपन 'लियो दे मेमोयर' (Lieux de mémoire) ग्रन्थमे 'स्मृति-स्थल' (memory site) क सिद्धांत प्रस्तुत कएलनि - ओ स्थल, वस्तु वा पाठ जाहिमे सामूहिक ऐतिहासिक स्मृति संगृहीत आ क्रियाशील होइत अछि।

विद्यापतिक पद एहि नाटकमे एक प्रमुख 'स्मृति-स्थल' थिक। जखन समाजी "नव वृन्दावन, नव-नव तरुगण, विहरइ नवल किशोर" गाबैत अछि, वा जखन लखिमाक स्मृतिमे शिवसिंहक पद "आरे-आरे भमरा, तोहे हित हमरा" उभरैत अछि -ओ क्षण एकहि संग इतिहासक स्मृति आ वर्तमानक जीवन-अनुभव थिक। नाट्य-प्रदर्शन एहि ६०० वर्षक दूरीकेँ 'वर्तमान क्षण' मे परिणत करैत अछि। एहि अर्थमे 'बिदापत' मात्र विद्यापतिक नाटक नहि, मैथिली भाषा-समाजक सामूहिक स्मृतिक नाट्य-प्रस्तुति थिक।

३.४ ब्रेख्त आ आत्म-दूरी: विपटाक भूमिका

प्रथम नाटकक भाँट-त्रयीक भूमिका 'बिदापत' मे सूत्रधार-नटी-विपटाक त्रिभुज द्वारा निभाओल जाइत अछि। विपटाक 'गड़ी आगाँ बढ़ाउ' क अनवरत आग्रह ब्रेख्तीय विरचन-प्रभावक एक सटीक देशज रूपान्तरण थिक - ओ दर्शककेँ कथामे पूर्णतः विलीन हुअएसँ रोकैत अछि, सदा मोन पाड़ैत रहैत अछि जे ई एक 'निर्माण' थिक।

मुदा ब्रेख्तसँ एक महत्त्वपूर्ण भेद अछि - ब्रेख्त चाहैत छलाह जे विरचन-प्रभाव दर्शकक 'आलोचनात्मक बुद्धि' जगाबए। विपटाक व्याघात एहिसँ भिन्न - ओ बुद्धि नहि, उल्लास जगाबैत अछि। विपटा एक 'लोक-विरचनकारी' (folk-alienator) थिकाह जे कलाक अभिजन-गरिमाकेँ 'गड़ी' (बैलगाड़ी) आ 'खिस्सा' (कथा) क स्तर पर ल' अनैत अछि। ई एक सौन्दर्यशास्त्रीय भेद थिक जे पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांतसँ एहि नाटकक मौलिकता स्थापित करैत अछि।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ साइजी-चियारेन: कवि-प्रतिभा आ प्रेम-कथाक परम्परा

चीनी शास्त्रीय नाट्य-परम्पराक -विशेषतः मिंग-किंग कालीन कुनछू (Kunqu opera) क -एक प्रमुख नाट्य-ढाँचा 'साइजी-चियारेन' (brilliant scholar meets beautiful lady) थिक। एहिमे एक कवि-विद्वान आ एक सौंदर्यवती नायिकाक प्रेम-कथाक माध्यमसँ काव्य-शक्ति आ प्रेम-मूल्यक प्रतिष्ठा होइत अछि।

'बिदापत' एहि परम्पराक एक विस्थापित (displaced) संस्करण थिक। विद्यापति 'साइजी' छथि -तर्कशास्त्री नहि, काव्यशक्तिसम्पन्न; लखिमा 'चियारेन' नहि, अपितु एक स्वाभिमानी राजमहिषी। मुदा दुनूक सम्बन्धमे ओ गहींर विश्वास आ मैत्री-प्रेम अछि जे 'साइजी-चियारेन' परम्पराक मूल तत्त्व थिक। शिवसिंहक अन्तर्धान ऐ परम्पराकेँ एक त्रिकोणमे बदलि दैत अछि - दुनूक मिलनक केन्द्रमे एक तेसर उपस्थित छल जे अनुपस्थित भ' गेलाह।

४.२ झी-यिन: परम-सम्वाद आ तकर अनुपस्थिति

चीनी सांस्कृतिक परम्परामे 'झी-यिन' (one who truly hears/understands) एक गहन सम्बन्ध थिक - ओ व्यक्ति जे कलाकारक कलाकेँ ओकर सम्पूर्ण गहराईमे बुझैत अछि। प्रसिद्ध किंवदन्ती अछि जे वीणावादक 'बो-या' अपन एकमात्र 'झी-यिन' 'झोंग-जिछी' क मृत्युक बाद अपन वीणा तोड़ि देलनि -"जे सुनि सकैत छल से नहि रहल, वाद्य किएक बजाउ।"

विद्यापति-शिवसिंहक सम्बन्ध ठीक एहि 'झी-यिन' आदर्शक अवतरण थिक। शिवसिंह विद्यापतिक कविताक परम-श्रोता, परम-रसिक आ परम-संरक्षक छलाह। हुनकर अन्तर्धानसँ विद्यापतिक काव्य-जीवन एक प्रकारे अनाथ भ' जाइत अछि -"उगना रे मोर कतए गेलाह" -ई एहि 'झी-यिन-वियोग' क विलाप थिक। बो-याक वीणा तोड़ल जेकाँ विद्यापतिक पदक स्वर शोक-गर्भित भ' जाइत अछि।

४.३ झेजीशी आ बहु-स्तरीय प्रदर्शन

चीनी लोक-रंगमंचमे 'झेज़ीशी' (excerpt-play) परम्परा प्रसिद्ध थिक -एक विस्तृत महाकाव्यात्मक नाट्य-चक्रसँ एक स्वतंत्र, आत्म-निहित अंश चुनि क' खेलल जाइत अछि। एहि नाटकमे तीन टा 'झेजीशी' स्पष्टतः उपस्थित अछि -(क) अमियकरक स्वाँग (सुलतान-दरबार प्रसंग), (ख) गौरा-महादेव-नटुआक अन्तर्नाट्य (उगना-उद्घाटनक पूर्व-तैयारी), (ग) सूत्रधार-नटीक कृष्ण-राधा-रास (पूर्वरंग) ।

ई स्तरित प्रदर्शन (layered performance) एकहि रंगमंच पर अनेक कथा-भूमि एकहि संग सक्रिय रखैत अछि। चीनी नाट्य-सिद्धांत एहि बहुस्तरीयताकेँ (xìzhōngxì, play within play) कहैत अछि। भारतीय परम्परामे एकर अनुरूप 'नाट्यमे अभिनय-प्रसंग' थिक, मुदा चीनी अवधारणा एकर स्तर-विमर्शकेँ अधिक सटीकतासँ परिभाषित करैत अछि।

४.४ बेई-हुआन-ली-हे: चारिटा मौलिक नाटच-दशा

चीनी नाट्य-परम्परामे मानल जाइत अछि जे प्रत्येक उत्तम नाटकमे चारि मौलिक भावावस्था अवश्य उपस्थित होएबाक चाही -'बेई' (शोक), 'हुआन' (आनन्द), 'ली' (विछोह), 'हे' (पुनर्मिलन) । उत्कृष्ट नाटक एहि चारूकेँ एकहि आख्यान-प्रवाहमे रखैत अछि।

'बिदापत' मे यएह चारू उपस्थित अछि -'हुआन' (ओइनीक विजय, उत्सव), 'ली' (शिवसिंहक अन्तर्धान), 'बेई' (विद्यापति आ लखिमाक ३२-वर्षीय शोक), 'हे' (काव्यमे पुनर्मिलन -एक आध्यात्मिक, अदृश्य पुनर्मिलन जाहिमे विद्यापति घोषणा करैत छथि जे शिवसिंह अपन पदमे अमर रहताह) । ई 'हे' लौकिक नहि, आत्मिक थिक - एहि अर्थमे ई चीनी आदर्शक अतिक्रमण करैत एक नव सम्भावना उद्घाटित करैत अछि।

५. इजरायली नाटच-सिद्धांत

५.१ एस. आन्स्कीक 'दिब्बूक': मृत प्रेमक रंगमंचीय उपस्थिति

यहूदी-रूसी नाटककार एस. आन्स्की (S. Ansky, १८६३–१९२०) केर 'दिब्बूक' (The Dybbuk, 'Between Two Worlds' / 'दू संसारक बीचमे', १९२०) इब्रानी आ यिद्दिश रंगमंचक आधार-ग्रन्थ मानल जाइत अछि। एहिमे एक मृत प्रेमीक आत्मा अपन प्रेमिकाक शरीरमे प्रवेश क' रंगमंचीय उपस्थिति बनाबैत अछि। प्रेम मृत्युसँ बलवान - यएह एकर मर्म थिक।

'बिदापत' मे शिवसिंह रंगमंच पर शारीरिक रूपसँ अन्तर्धान होइत छथि, मुदा लखिमाक स्मृतिमे हुनकर उपस्थिति एक 'दिब्बूकीय' (dybbuk-like) रंगमंचीय सत्ता बनि जाइत अछि - जखन शिवसिंहक पद "आरे-आरे भमरा, तोहे हित हमरा" गाबैत हुनकर छाया-रूप प्रकट होइत अछि, ओ क्षण 'दिब्बूक' क रंगमंचीय तर्कसँ समरूप अछि। दुनू नाटकमे प्रेमक भावात्मक सत्य मृत्युक सीमाकेँ तोड़ैत अछि।

५.२ एली रोजिक: 'काव्य-पद' क प्रतिमात्मक सत्ता

एली रोजिक (Eli Rozik) अपन iconicity सिद्धांतमे कहलनि जे रंगमंचक प्रतिमा मात्र अभिनेता-शरीरसँ नहि, ध्वनिसँ सेहो उत्पन्न होइत अछि। जखन विद्यापतिक पद समाजी द्वारा गाओल जाइत अछि, तखन ओ पद एक 'ध्वनि-प्रतिमा' (sound-icon) बनि जाइत अछि -ओ मात्र संगीत नहि, विद्यापतिक समग्र जीवन-संसारक रंगमंचीय प्रतिरूप थिक।

रोजिकक एक विशिष्ट बिन्दु एतय प्रासंगिक अछि - ओ 'theatrical image' आ 'dramatic text' क बीच अंतर करैत छथि। नाट्य-पाठ (कुणालक लिखित नाटिका) आ रंगमंचीय छवि (विद्यापतिक पद गाबैत अभिनेताक समग्र देह-स्वर-गति) दुनू स्वतंत्र सत्ता थिकाह। एहि नाटकमे ई दुनू सत्ता एक विशेष तनावमे अछि - कुणालक पाठ विद्यापतिक पदकेँ अपन भीतर समाबैत अछि, परंतु पद सदा पाठक नियंत्रण तोड़ि अपन स्वतंत्र काव्य-जीवन जीबैत रहैत अछि।

५.३ हबीमाक भाषा-राजनीतिसँ आगाँ: 'काव्य-भाषाक पुनर्जन्म'

पूर्वक नाटकक समीक्षामे हम हबीमा (Habima Theatre) सँ भंगिमाक भाषा-राजनीतिक समानांतर देखलहुँ। 'बिदापत' मे ई समानांतर एक अतिरिक्त स्तर ग्रहण करैत अछि - मात्र भाषाक जीवन नहि, 'काव्य-भाषा' क (poetic language) जीवन। हबीमाक परम्पराक निरन्तरता इजरायलमे हिब्रू काव्य-परम्पराकेँ रंगमंच पर जीवित रखबाक प्रयाससँ सेहो जुड़ल अछि।

‘बिदापत’ क मंचन २००२ (पटना, विद्यापति भवन) विद्यापतिक पदकेँ रंगमंचीय माध्यमसँ पुनर्जीवित कएलक - ओहि पदकेँ जे बहुधा पुस्तकालयक वस्तु बनि रहल छल। एहि अर्थमे भंगिमाक यएह नाट्य-कर्म एक ‘काव्य-भाषाक रंगमंचीय पुनर्जन्म’ थिक, जे हिब्रू काव्यक इजरायली रंगमंचीय पुनर्जन्मक समानांतर चलैत अछि।

५.४ उपनिवेश-परोत्तर दृष्टि: कविताक राजनयिक शक्ति

इजरायली रंगमंच-विद्वान अब्राहाम ओज (Avraham Oz) आ अन्यक उपनिवेश-परोत्तर नाट्य-चिन्तन (postcolonial theatre studies) मे ओहि नाट्य-प्रयोगक विशेष स्थान अछि जाहिमे ‘सांस्कृतिक शक्ति’ (cultural power) राजनीतिक वा सैन्य शक्तिकेँ परास्त करैत अछि।

‘बिदापत’ क सुलतान-दरबार प्रसंग एहि दृष्टिसँ उत्कृष्ट अछि। जौनपुर-सुलतान राजनीतिक सत्ता थिकाह; विद्यापति सांस्कृतिक शक्ति। विद्यापति राजनयिक माध्यमसँ नहि, अपितु काव्य-प्रदर्शनक माध्यमसँ शिवसिंहकेँ मुक्त करबैत छथि -आन्हर रहैत स्नान-दृश्यक पद रचि क’ । सुलतानक ‘जे माँगो’ क उत्तरमे विद्यापति मित्रक मुक्ति माँगैत छथि, राजसिंहासन नहि। मंत्री टिप्पणी करैत अछि -“जैँ तिरहुतक राज माँगि लितथिन!”; विद्यापतिक उत्तर -“हमरा तँ सरिपहुँ राज भेटि गेल!” -यएह काव्यशक्तिक उपनिवेश-परोत्तर विजय-घोषणा थिक।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण

चारू परम्पराक दृष्टि एकठाम आनला पर ‘बिदापत’ क केन्द्रीय प्रश्न स्पष्ट होइत अछि - ‘काव्य-शक्ति की थिक, आ ओ कोन-कोन रूपमे अपन अस्तित्व सिद्ध करैत अछि?’ प्रत्येक परम्परा एकर उत्तर भिन्न-भिन्न कोणसँ दैत अछि।

भारतीय दृष्टि -काव्य-शक्ति = रस-निष्पत्ति। पद अभिव्यक्त करैत अछि विद्यमान रस। शान्त-रसक चरम अवस्थामे काव्य मृत्युंजयी बनैत अछि।

पाश्चात्य दृष्टि -काव्य-शक्ति = स्मृति-स्थल (Nora) + विश्व-ऐतिहासिक व्यक्तित्वक (Lukács) अभिव्यक्ति + नारीवादी पुनर्पाठ (लखिमा-केन्द्रित) ।

चीनी दृष्टि -काव्य-शक्ति = झी-यिन (परम-सम्वाद) क कला। बेई-हुआन-ली-हेक आध्यात्मिक पुनर्मिलन।

इजरायली दृष्टि -काव्य-शक्ति = ध्वनि-प्रतिमाक स्वतंत्र सत्ता (Rozik) । उपनिवेशी-सत्ताकेँ काव्यसँ परास्त करबाक सांस्कृतिक-राजनयिक विजय।

चारू दृष्टिकोण एकटा साझी गप पर सहमत छथि - विद्यापतिक पद मात्र साहित्यिक कलाकृति नहि, एक जीवित सांस्कृतिक-राजनीतिक शक्ति थिक। कुणाल एहि शक्तिकेँ रंगमंचक माध्यमसँ एक बेर फेर ‘जीवित’ करैत छथि। एहि अर्थमे ‘बिदापत’ मात्र विद्यापतिक नाटक नहि - ई स्वयं मैथिली रंगमंचक अपन ‘अस्तित्व-घोषणा’ थिक।

अगिला: कुसमा-सलहेस

पूरक ऐतिहासिक-सामाजिक विवेचन

'बिदापत' नाटक मैथिलीक सुप्रसिद्ध लोक-नाट्य शैली 'बिदापत'क संरचनात्मक आधार पर रचित अछि। ई नाटक महाकवि विद्यापतिकेँ दरबारी संकीर्णता सँ मुक्त क'क' लोक-कवि आ जन-संघर्षक नायकक रूपमे स्थापित करैत अछि।

नाटकक पूर्वरंग शिव-स्तुति आ भैरवीक नृत्य सँ आरम्भ होइत अछि, जे नाटकक समय-सीमा १३५० सँ १४५० ईस्वीक बीच निर्धारित करैत अछि। प्रथम दृश्यमे राजा शिवसिंहक ओइनी युद्धमे विजय उपरांत राजधानीमे उत्सवक आयोजन कएल गेल अछि, जत' पमरिया आ भाँट शिवसिंहक यशोगान करैत छथि। मुदा, शास्त्रीय पंडित वर्ग (पंडित-एक आ पंडित-दू) विद्यापतिक लोकभाषा (मैथिली) मे रचित नचारी आ महेशवाणी गीतक घोर विरोध करैत छथि। ओ महादेवक रूपकेँ "नाँगट, जनम भिखारि" कहबाक कारणे विद्यापतिकेँ अश्लील आ समाजक कलंक घोषित करबाक षड्यंत्र रचय लागल छथि। ई द्वंद्व मूलतः देवभाषाक वर्चस्ववादी पंडित वर्ग आ जनसाधारणक 'देसिल वयना'क बीचक वर्ग-संघर्ष थिक।

दोसर दृश्यमे दरबारी आ व्यक्तिगत सम्बन्धक सूक्ष्म चित्रण अछि। विद्यापति अपन नव अवहट्ट काव्य 'कीर्तिलता' (गौडेश यदुसेनक पराजयक कीर्तिगाथा) युवराज शिवसिंहकेँ समर्पित करैत छथि। ताहि कालखंडमे, ओ मात्र एकटा कवि नहि, अपितु शिवसिंह आ रानी

लखिमेक बीचक दाम्पत्य विरह आ अंतर्द्वंद्वकेँ समाप्त करनिहार एकटा भावात्मक सेतु सेहो बनैत छथि, जत' ओ "Sarasija binu sara..." गीतक गायन करैत छथि।

तेसर दृश्यमे राजनैतिक कुचक्र आ जन-शोषणक चित्र देखबाक भेटैत अछि। राजाक कर-संग्राहक लोकनि अत्यन्त निर्दयता सँ रैयत सभ पर बेंत बरसाए क' कर वसूल करैत छथि। विद्यापति स्वयं हठ क'क' पीड़ित किसान सभकेँ कर-संग्राहकक चंगुल सँ मुक्त करबैत छथि। एकर प्रतिकारमे, संस्कृतक वर्चस्ववादी पंडित चन्द्रकर आ अन्य सहयोगी सभ मिलि षड्यंत्र करैत छथि जे जौनपुरक सुलतान इब्राहिम शाहक लश्करकेँ तिरहुत पर आक्रमण करबाक गुप्त आमंत्रण देल जाय, जाहि सँ विद्रोही युवराज शिवसिंह बंदी बनि जाएथ आ संस्कृतक प्रभुत्व पुनः स्थापित भ' सके। ई दृश्य सामंतवादक आन्तरिक विश्वासघात आ जनविरोधी चरित्रकेँ नंगट करैत अछि।

६४. सातो नाटकक सीमा, कमी आ वैचारिक तनाव

सारांश

आलोचना मात्र प्रशंसात्मक मूल्यांकन नहि; तेँ एहि अध्यायमे सातो नाटकक संरचनात्मक असमानता, पात्र-विकास, मेटाथिएटरक पुनरावृत्ति, उद्घोषक-निर्भरता, स्त्री-कर्तृत्व आ पितृसत्तात्मक अनुमोदनक तनाव, दैवी हस्तक्षेप, शीर्षक-रचना, मंच-निर्देश आ नाटकीय अर्थव्यवस्थाक प्रश्नक परीक्षण कएल गेल अछि। लक्ष्य रचनाक मूल्य घटाएब नहि, ओकर भविष्यक पाठ आ मंचन लेल सम्भावित सुधार-बिन्दु स्पष्ट करब अछि।

बीजशब्द: सीमासमीक्षा; संरचना; पात्र-विकास; उद्घोषक; स्त्री-कर्तृत्व; मंच-निर्देश; नाटकीय अर्थव्यवस्था

प्रास्ताविक: आलोचनाक आवश्यकता

एक सन्तुलित साहित्यिक विवेचना मात्र गुणगानसँ पूर्ण नहि होइत। कुणालक 'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक' मैथिली नाट्य-साहित्यक एक उल्लेखनीय संग्रह थिक- यएह सिद्ध होइत अछि एहि तथ्यसँ जे सातो नाटक बेर-बेर मंचित भेल, 'भंगिमा' आ 'अंतिका' मे प्रकाशित भेल, आ अंततः एक पुस्तक-संग्रहमे आएल। मुदा यएह प्रतिबद्धता पाठक-समीक्षककेँ उत्तरदायी सेहो बनाबैत अछि- नाटकक उपलब्धि जतेक तीव्र, ओकर सीमाक स्वीकृति ओतबे ईमानदार होएबाक चाही।

सातो नाटकक कमजोरी, वैचारिक तनाव, शिल्प-सीमा आ पुनरावृत्ति-दोषकेँ नाटकक आलोचनाक उद्देश्य खण्डन नहि, भावी नाट्य-लेखनक लेल रचनात्मक परिप्रेक्ष्य प्रस्तुत केनाइ थिक।

संरचनागत सीमा- संग्रहक असमान स्केल आ लय-भंग

संग्रहक सर्वाधिक स्पष्ट संरचनागत समस्या थिक- सातो नाटकक आकार-वैषम्य। 'कुसमा-सलहेस' लगभग ७० पृष्ठक विराट नाटक थिक; 'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!' मात्र १४ पृष्ठमे समाप्त भ' जाइत अछि। पाठक/ भावी निर्देशक जखन 'कुसमा-सलहेस' क बाद 'श्रुवावती' उठाबैत अछि, तखन ओकरा एक 'महाकाव्यात्मक संसार' सँ एकाएक एक 'लघु-चेम्बर पीस' मे जाए पड़ैत अछि। ई संक्रमण सुखकर नहि।

तुलना कएल जाए-

'चालिस चोर आ गोनू झा' = ७४ पृष्ठ · 'बिदापत' = ४८ पृष्ठ · 'कुसमा-सलहेस' = ७० पृष्ठ · 'श्रुवावती' = १४ पृष्ठ · 'सुकन्या' = २६ पृष्ठ · 'श्वेता' = १८ पृष्ठ · 'सुप्रभा-अष्टावक्र' = २८ पृष्ठ।

संग्रहक आरम्भिक तीन नाटकक औसत ६४ पृष्ठ आ अंतिम चारिक औसत २१ पृष्ठ थिक। ई एक पुस्तक-रचना (book-architecture) क समस्या थिक-ई दुनू समूह किछु भिन्न पुस्तकक विषय-वस्तु लगैत अछि, एकहि लाटमे भेलासँ पाठ-अनुभवमे अटपट लगैत अछि।

'उर्फ' शीर्षक-साँचाक एकरसता

प्रेम-चतुष्टयक चारू नाटकक शीर्षक एक्के साँचमे ढलल अछि-'[अमूर्त-भाव] उर्फ [नायिकाक नाम] क [क्रिया-शब्द]' । ई साँच पहिले तीन नाटकमे नवीन लगैत अछि (शास्त्रीय भाव + लोक-उद्घोष), मुदा चारिम बेर दुहराएब एक यांत्रिकता उत्पन्न करैत अछि। पाठक शीर्षक पढ़िते 'फॉर्मूला' बुझि लैत अछि; विस्मय नहि होइत अछि।

तुलना करू-'बिदापत' (एक शब्द, अनेक अर्थक सघनता) - 'कुसमा-सलहेस' (दू पात्रक नाम, महाकाव्यात्मक)- ई दुनू शीर्षक अपन नाटकक जीवन्तता धारण करैत अछि। 'प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार' एक अपेक्षाकृत नाम आ सूत्र-बद्ध शीर्षक थिक। ई शीर्षक-क्रमिकता प्रेम-चतुष्टयमे एक सीमा थिक।

नाटक-वार कमी आ वैचारिक तनाव

चालिस चोर आ गोनू झा

क. मेटाथिएटरक अतिरेक

एहि नाटकक मेटाथिएटरीय उपकरण-भाँटक वाद-विवाद, वैकल्पिक-अंत, दर्शककेँ सम्बोधन-नाट्य-शिल्पक दृष्टिसँ प्रशंसनीय थिक। मुदा नाटकक अंतिम दृश्यमे भाँट लोकनि जखन 'चोरी एक सामाजिक व्याधि थिक, अशिक्षा आ गरीबीसँ उत्पन्न' कहैत छथि, तखन

ई सन्देश नाटकीय रूपसँ 'बताएब' मे बदलि जाइत अछि। भरतमुनि जे कहलाह-नाटक 'देखाबैत' अछि, 'कहैत' नहि- एहि मानदण्डपर ई अन्तिम दृश्य कमजोर पड़ैत अछि। सन्देश-निहित पाठ स्वयं रंगमंचीय क्रियासँ स्पष्ट भ' जएबाक चाही; एहि लेल भाँटक मुखर व्याख्या अनावश्यक थिक।

ख. चोर-पात्रक द्वि-आयामिता

गोनू झाक तुलनामे चालिस चोर (विशेषतः दुरमतिया आ देबहा) मात्र हास्य-साधन बनि रहि जाइत छथि। हुनकर गरीबी-अशिक्षाक ओ 'सामाजिक व्याधि', जकरा नाटकार स्वयं अन्तमे स्वीकार करैत छथि, नाटकक भीतर कोनो नाट्यात्मक गहराई नहि पाबैत अछि। ई एक विरोधाभास थिक- अंतमे एक प्रगतिशील सामाजिक व्याख्या दैत नाटककार, परंतु पूरा नाटकमे चोर लोकनि मात्र 'हँसाओल जाएवला वस्तु' बनल रहि जाइत छथि। सामाजिक-यथार्थवादी नाट्य-लेखन एहि विरोधाभासकेँ दूर करैत, चोरक दारिद्र्यकेँ कोनो दृश्यमे मानवीय बनाबैत अछि।

ग. गमछा-प्रसंग द्विअर्थीय

गमछा ओछा क' दान माँगबाक दृश्य एकहि संग दू अर्थमे कार्य करैत अछि- एक ब्रेख्तीय 'पारदर्शिता' (कलाकारक आर्थिक भेद्यता उजागर करनाइ) आ दोसर एक 'राजकीय कला-संरक्षण' क आलोचना। मुदा नाटककार एहि दुनू अर्थमे सँ कोनो एककेँ पूर्ण रूपेण नहि विकसित करैत छथि- ई प्रसंग लोक-परम्पराक यांत्रिक पुनरावृत्ति जेकाँ लागैत अछि, एक सायास नाट्य-निर्णय जेकाँ नहि।

बिदापत

क. विपटाक 'गड़ी आगाँ बढ़ाउ': हास्यसँ व्याघातक ओर

विपटाक 'गड़ी आगाँ बढ़ाउ' उद्घोष-विधि सबसँ पहिले एकटा टटका लोकनाट्य-युक्ति थिक। मुदा ई वाक्य नाटकभरि एत्ते बेर दोहराओल गेल अछि जे ओ एक ब्रेख्तीय 'विरचन-प्रभाव' रहबाक बदला एक यांत्रिक व्यवधान बनि जाइत अछि। दर्शक जखन जनैत अछि जे विपटा बेर-बेर यएह कहत, तखन ओहि कथनक आश्चर्य-तत्त्व समाप्त भ' जाइत अछि। ब्रेख्तक विरचन-प्रभाव तखने काज करैत अछि जखन ओ अनपेक्षित होए- एहि नाटकमे ओ अत्यन्त प्रत्याशित भ' जाइत अछि।

ख. उगना-महादेव प्रसंगक अपूर्णता

उगना वास्तवमे महादेव छलाह- एहि महत्त्वपूर्ण लोक-कथाकेँ नाटकमे एक केन्द्रीय भावात्मक क्षण हेबाक चाही। मुदा एहि नाटकमे उगनाक महादेव-पहचान एक अन्य चरित्रक मुखसँ 'रिपोर्ट' (अमियकरक कथन) क रूपमे अबैत अछि, प्रत्यक्ष नाट्य-क्रियाक रूपमे नहि। एहि कारणे एहि क्षणक भावात्मक प्रभाव (जे विद्यापति-भक्तिमे एक दिव्य-क्षण थिक) सम्पूर्ण रूपसँ उभरि नहि पाबैत अछि।

ग. ऐतिहासिकता-काव्यता द्वन्द्व

नाटक ई. सं. १४००–१४५० धरिक 'ऐतिहासिक' समय-सीमा घोषित करैत अछि, मुदा नाट्य-संरचना सर्वत्र काव्यात्मक-लोक-शैलीमे अछि। एहि दुनूक मध्य तनाव कखनो-कखनो प्रकट होइत अछि- जेना जौनपुर-दरबारक दृश्य एक ऐतिहासिक यथार्थ थिक मुदा ओकरा अमियकरक 'स्वाँग' (हास्य-अभिनय) मे प्रस्तुत केनाइ एहि यथार्थकेँ हल्लुक कऽ दैत अछि। नाटककारक ऐतिहासिक-काव्यात्मक संतुलन कखनो-कखनो डोलैत अछि।

कुसमा-सलहेस

क. खलनायक-वर्ग (सूचोंग-चूहड़) क एकआयामिता

संग्रहक सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी नाटकमे खलनायक-वर्गक चित्रण एकआयामी भ' गेल अछि। सूचोंग, चूहड़मल्ल, तरुमल्ल- तीनू मात्र 'दुष्ट-गुण' क संकलन मात्र थिकाह, कोनो अन्तर्द्वन्द्व, कोनो मानवीय जटिलता हुनका सभमे नहि अछि। जखन बुधेसरकेँ ओ लोकनि यातना दैत छथि, तखन समवेत-हँसी (हो... हो...) आ क्रूरताक एक सतही चित्रण अछि। महाकाव्यात्मक नाटकमे उत्कृष्ट खलनायक वएह होइत अछि जे दर्शककेँ अपन नजरिसँ सहमत भ' जाएपर विवश करए; एहि नाटकमे एहन जटिलता अनुपस्थित अछि।

ख. भूगोल-विस्तारसँ नाटच-केन्द्रीयताक क्षय

नाटकमे स्थान-परिवर्तन अत्यधिक अछि- महिसौथा, मोरंग, भोट, बाघगढ़, समदागढ़, रेवा-दाह, रंगीलागढ़। ई भौगोलिक विस्तार महागाथाक प्रामाणिकता प्रकट करैत अछि, मुदा नाट्य-रचनाक दृष्टिसँ एहिसँ कथाक केन्द्रीयता-कुसमा-सलहेसक प्रेम-कथा-प्रायः

पृष्ठभूमिमे चलि जाइत अछि। मोरंग-राजाक युद्ध-प्रसंग आ भोट-आक्रमणक विवरणक कारणे नायिका कुसमा बेसी काल तक मंचसँ अनुपस्थित रहैत छथि। महाकाव्यात्मक विस्तार आ नाट्यात्मक केन्द्रीयताक बीच संतुलन पूर्णतः साधल नहि गेल।

ग. समन्वयवादी सुमिरन आ सांस्कृतिक विसंगति

नाटकक आरम्भमे 'मीरा-सुलतान' कैँ सुमिरल जाएब एक सुन्दर समन्वयवादी भाव थिक। मुदा ओहि सुमिरनमे जे दुसाध सलहेस-परम्पराक अपन सांस्कृतिक तत्त्व (वनदेवी, पशु-मित्र, दुसाध लोक-कथाक विशिष्ट शब्दावली) थिक, ओ 'जन-गण-मन' क सन्दर्भसँ किञ्चित असंगत लागैत अछि। समन्वयवाद अत्यन्त सुन्दर उद्देश्य थिक, मुदा एहि नाटकक सन्दर्भमे ओकर विस्तार सुमिरनके 'सर्व-धर्म-समभाव प्रदर्शन' क रूपमे बनाबैत अछि, एक प्रामाणिक दुसाध-धार्मिक-आह्वानक रूपमे कम।

प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!

क. अग्नि-प्रवेशः नारीवादी पाठक संग संरचनात्मक तनाव

एहि नाटकक सबसँ गम्भीर वैचारिक तनाव अछि- श्रुवावती एक दिस 'स्वतंत्र-स्वावलम्बी व्यक्ति' घोषित करैत छथि अपनाकेँ, आ दोसर दिस जखन फल सिद्ध नहि होइत तखन 'प्रियक स्मरण करैत आग्नि-प्रवेश करब' क संकल्प लैत छथि। नाटक एहि अग्नि-प्रवेशकेँ 'आत्मबल' क प्रकटीकरण कहैत अछि, मुदा बलिदान-केन्द्रित प्रतीक स्वयं एक पितृसत्तात्मक रूढ़िक अनुसरण थिक। स्वाधीन स्त्री जीवनक माँग करैत अछि, मृत्युक नहि। ई वैचारिक विरोधाभास नाटकमे नहि सोझरल अछि।

तुलना करू: सुकन्या (नाटक-५) अपन पिताक श्राप-परिणामक जिम्मेदारी लैत छथि आ जीवनक मार्ग चुनैत छथि; अष्टावक्र (नाटक-७) उर्वशीकेँ अस्वीकार क' जीवित प्रेमकेँ चुनैत छथि। एहि दुनूक तुलनामे श्रुवावतीक चिता-संकल्प एक कमजोर नाट्य-समाधान थिक।

ख. इन्द्रक तीन वेशः दोहराव आ विश्वसनीयता-क्षय

इन्द्र पहिले 'प्रत्यक्ष' आबैत छथि (परिचय देबैत छथि), तखन 'वृद्ध' बनिक' अबैत छथि, तखन 'वशिष्ठ' बनिक' । ई तीनू वेश दोहराओल संरचनामे (श्रुवावती हर बेर अस्वीकार करैत छथि) एक नाट्य-लय उत्पन्न करैत अछि जे अत्यन्त पूर्वानुमेय भ' जाइत अछि। तेसर वेश-दृश्य (वशिष्ठ) मूलतः दोसर वेश-दृश्यक (वृद्ध) दुहराव थिक। दुनूमे श्रुवावती अस्वीकार करैत छथि, दुनूमे इन्द्र क्रुद्ध होइत छथि। एहि दोहरावसँ नाट्य-तनावमे विस्तार नहि, क्षय होइत अछि।

ग. दुष्यन्त कुमारक उर्दू शेरः बाहरी तत्त्व-सम्मिलनक दिक्कत

नाटकक समापनमे दुष्यन्त कुमारक हिन्दी-उर्दू शेर ('कौन कहता है कि आसमाँ में सुराख हो नहि सकता') सांस्कृतिक-भाषाई समृद्धिक एक अभिव्यक्ति थिक। मुदा एहि मैथिली पौराणिक नाटिकाक सन्दर्भमे ओ किञ्चित असंगत सेहो लागैत अछि। जँ कोनो काव्य-पंक्ति उद्धृत करबाक आवश्यकता छल, तँ मैथिली काव्य-परम्परामे एहन शेर उपलब्ध अछि। ई एक छोट मुदा विशिष्ट शिल्प-प्रश्न थिक।

विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह

क. वय-भेद आ नैतिक असुविधा

नाटकक भीतरसँ स्वयं एहि तनावकेँ स्वीकार कएल गेल अछि- कोरसक गायन-"सोरह बरिसक अलकेसरि धीआ, च्यवनक वयस हैजार" । ई गायन वय-भेदक नैतिक असुविधाकेँ मनोरंजक ढंगसँ प्रकट करैत अछि, मुदा एहि असुविधाक कोनो समाधान नाटकमे नहि अछि। च्यवन अपन वयस आ क्षमताक समक्ष आश्वस्त छथि; राजा विवशतासँ सहमत छथि; सुकन्या स्वेच्छासँ स्वीकार करैत छथि। मुदा एहि सहमतिक नैतिक आधारकेँ नाटक पर्याप्त रोपैँ विकसित नहि करैत अछि।

ख. अश्विनी कुमार-दृश्यक अत्यधिक लम्बाई

अश्विनी कुमारक प्रथम प्रवेश, तकर बाद पुनः प्रवेश, क्षमा-याचना, उर्वशी-तुलना, श्रापक धमकी, पुनः भेंट, आ सोमरस-प्रसंग-ई सम्पूर्ण क्रम नाटकक कुल लम्बाईक एक पैघ भाग ल' लैत अछि। मुख्य प्रेम-कथा (सुकन्या-च्यवनक सम्बन्ध-विकास) एहि हास्य-प्रसंगसँ अपेक्षाकृत कम स्थान पाबैत अछि। नाट्यात्मक अर्थव्यवस्थाक दृष्टिसँ अश्विनी-प्रसंगक एक दृश्य हटा क' मुख्य-दम्पती-सम्बन्धकेँ अधिक विस्तार दैत तँ नाटक अधिक सन्तुलित होइत।

ग. 'च्यवनप्राश' टिप्पणी: समय-विभाजनक खतरा

सूत्रधारक 'च्यवनप्राश बला च्यवन' टिप्पणी एक पल हास्यपूर्ण लागैत अछि। मुदा ई आधुनिक-उपभोक्ता-संस्कृतिक सन्दर्भ पौराणिक वातावरणमे एक 'टाइम-रिफ्ट' (समय-विभाजन) उत्पन्न करैत अछि। जँ ई सायास छल-एक ब्रेख्तीय विरचन-प्रभाव-तँ ओहि नाट्य-उद्देश्यकेँ नाटकक भीतर अधिक सुसंगत रूपसँ प्रयोग भेबाक चाहियनि।

प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार

क. अतिरथक परिवर्तन: गतिशास्त्रक समस्या

नाटकक सर्वाधिक गम्भीर शिल्प-सीमा थिक-अतिरथक मनोवैज्ञानिक रूपान्तरण अत्यन्त शीघ्र होइत अछि। एक दिस नाटककार अतिरथकेँ 'सात-आठ बरखसँ' निरपेक्ष, 'सब स्वयंवरसँ एकसरे घुरनिहार' राजा चित्रित करैत छथि; दोसर दिस श्वेताक जल-समाधिक समाचार पाबिते ओ नदी-तट दिस दौड़ि पड़ैत छथि आ अरण्यमे भेंट होइतहि मुकुट उतारि दैत छथि। दशकों-पुरान 'निरपेक्षता' एक्के दृश्यमे विघटित भ' जाइत अछि। एहि रूपान्तरणकेँ तैयार करएवला पर्याप्त नाट्य-आधार (psychological groundwork) नाटकमे नहि अछि।

'बेमन भ' गेलाह अतिरथ', 'सब कृत्रिम सन', 'सब प्राणहीन कठपुतरी सन'- उद्घोषकक ई भाष्य अतिरथक परिवर्तनक 'कारण' बताबैत अछि, मुदा ई 'बताएब' थिक, 'देखाएब' नहि।

इब्सेनक 'हेड्डा गेब्लर' वा चेखवक 'थ्री सिस्टर्स' मे पात्रक मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आस्ते-आस्ते, दृश्य-दर-दृश्य सिद्ध होइत अछि। 'श्वेताक आविष्कार' मे अतिरथक परिवर्तन-यात्रा उद्घोषकक वर्णनपर अत्यधिक निर्भर अछि, प्रत्यक्ष नाट्य-क्रियापर कम।

ख. मूल-कथाक स्रोत-अभाव

श्वेता-अतिरथक कथाक कोनो पौराणिक वा ऐतिहासिक स्रोत नहि अछि-ई सर्वथा कुणालक स्वतंत्र कल्पना थिक। ई अपनेमे एक गुण थिक (मौलिकता) । मुदा एहिसँ उत्पन्न एक कमजोरी सेहो अछि-नाट्य-कथाकेँ जे 'भार' आ 'विश्वसनीयता' एक पौराणिक स्रोत दैत अछि (जेना अन्य छह नाटकमे), ओ एहिमे अनुपस्थित अछि। 'राजनर्तकी' आ 'निरपेक्ष राजा' क कथा एक लोकप्रिय नाट्य-साँचा (trope) थिक जे अनेक भारतीय भाषाओंमे पहिनहियो लिखाएल अछि।

प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र

क. वदन्यक प्रेरणा: अव्याख्यायित अस्वीकार

महर्षि वदन्यक अष्टावक्र-अस्वीकारक वास्तविक कारण नाटकमे कहियो स्पष्ट नहि होइत अछि। ओ कहैत छथि-"स्पष्टीकरण देब हमर बाध्यता नहि" । एहि 'रहस्य' केँ नाटककार एक उपकरण बनाबैत छथि, मुदा एहिसँ वदन्यक चरित्र मनोवैज्ञानिक रूपसँ 'खोखला' रहि जाइत अछि। अस्वीकारक कारण ज्ञात नहि भेलासँ दर्शककेँ परीक्षाक 'दाँव' पूर्ण रूपसँ बुझाइत नहि अछि। वदन्य एक कार्यकारी (functional) पात्र बनि जाइत छथि, एक जीवित चरित्र नहि।

ख. सुप्रभाक नाट्य-उपस्थिति: असमान

शीर्षकमे सुप्रभाक नाम अष्टावक्रसँ पहिने अछि ('सुप्रभा आ अष्टावक्र'), मुदा नाटकक पहिल अर्धांश अष्टावक्रकेँ समर्पित अछि। सुप्रभा दशम-एकादश दृश्यमे (बारह दृश्यमेसँ) मात्र मंचपर अबैत छथि। बारहम दृश्य (उर्वशी-प्रसंग) मे ओ अनुपस्थित छथि। जँ नाटकक शीर्षक सुप्रभाकेँ प्राथमिकता दैत अछि, तँ नाट्य-संरचना ओहि प्राथमिकताकेँ प्रतिबिम्बित नहि करैत अछि।

ग. वंदी-रहस्य: एक महत्त्वपूर्ण नाट्य-अवसरक क्षय

वंदी वास्तवमे वरुण-पुत्र छथि, आ 'जल-समाधि' वस्तुतः विद्वान लोकनिकेँ यज्ञक लेल जल-देवताक आश्रयमे राखनाइ छल-यैह रहस्य एहि नाटकक सर्वाधिक आश्चर्यजनक नाट्य-मोड़ (plot-twist) थिक। मुदा नाटककार एहि रहस्यकेँ एक हास्य-प्रसंगमे पर्यवसित क' दैत छथि ("पानिए तँ हमर घर-दुआरि अछि") । एहि क्षणकेँ जँ एक 'नाट्य-उद्घाटन' (theatrical revelation) बनाओल जइतए, तँ ओ नाटकक सर्वोत्तम दृश्यमे एक होइत।

संग्रह-स्तरीय साझा सीमा

स्त्री-कर्तृत्व आ पितृसत्तात्मक अनुमोदन-क्रम

प्रेम-चतुष्टयक चारू नाटकमे एक साझा संरचनात्मक विशेषता अछि जे एक साझा सीमा सेहो थिक- प्रत्येक नायिकाक स्वाधीन निर्णय अंततः एक 'पुरुष-प्राधिकारक अनुमोदन' सँ पूर्ण होइत अछि।

श्रुवावतीक जय-इन्द्रक 'अहाँ विजयी भेलहूँ' उद्घोषसँ; सुकन्याक विवाह-राजा शर्याति-च्यवनक सहमतिसँ; श्वेताक मुक्ति-अतिरथक पलायन-अनुगमनसँ; सुप्रभाक विवाह-वदन्यक अनुमतिसँ। ई चारू उदाहरण बतबैत अछि जे नाटककार नायिकाकेँ 'कर्ता' बनाबैत छथि मुदा हुनकर नाट्य-विजयक अंतिम पुष्टि एक पुरुष-चरित्रक मुँहसँ होइत अछि। एहि सूक्ष्म पुनर्उत्पादनसँ (subtle reproduction) नाटककारक नारीवादी विचार किञ्चित सीमित होइत अछि।

उद्घोषक-निर्भरता: 'बताएब' बनाम 'दिखाएब'

प्रेम-चतुष्टयक चारू नाटकमे उद्घोषक (narrator) पात्रकेँ एक 'भावना-व्याख्याकर्ता' क भूमिका देल गेल अछि-

'श्वेताक अवसाद हेरा गेलै...', 'अतिरथ बेमन भ' गेलाह...', 'बीतल रजनी, ज्यों युग बीतए...'

ई वर्णन कखनो-कखनो पात्रकेँ अपन भावना स्वयं प्रकट करबाक नाट्य-अवसरसँ वंचित क' दैत अछि। रंगमंचमे सर्वोत्तम भावनात्मक क्षण ओ होइत अछि जखन पात्र 'जीबैत' अछि, वर्णनकर्ता 'बताबैत' नहि अछि। एहि नाटकमे उद्घोषक-निर्भरता एक व्यापक शिल्प-सीमा थिक।

दैवी हस्तक्षेपक वैचारिक विरोधाभास

संग्रहक कतिपय नाटकमे नायिका-कर्तृत्वक एक उच्च घोषणा होइत अछि, मुदा नाट्य-कथामे एक देवता वा दैवी शक्ति आखिर हस्तक्षेप करैत अछि।

श्रुवावतीक 'आत्मबल' इन्द्रक स्वीकृतिसँ 'सिद्ध' होइत अछि; सुकन्याक 'विश्वास' अश्विनी कुमारक औषधि-ज्ञानसँ च्यवनकेँ यौवन दैत पुरस्कृत होइत अछि; अष्टावक्रकेँ पितृ-श्राप नदी-स्नानसँ दूर होइत अछि। एहि दैवी-पुरस्कार-क्रमसँ एक अनायास संदेश उत्पन्न होइत अछि- 'प्रेम-निष्ठाकेँ दैवी पुरस्कार भेटिते अछि' । ई मानव-कर्तृत्वकेँ स्वायत्त नहि, दैव-निर्भर प्रमाणित करैत अछि।

विद्यापति-पद: अत्यधिक प्रयोगक जोखिम

विद्यापतिक पदक प्रयोग 'बिदापत' आ 'सुकन्या' दुनूमे अछि। 'बिदापत' मे ई पूर्णतः सार्थक एवं सुसंगत अछि- विद्यापति स्वयं नाटकक नायक छथि। मुदा 'सुकन्या' मे विद्यापतिक वसन्त-पद ('आयल रितुपति राज बसंत') वातावरण-निर्माणक लेल अछि। एहि उपयोगसँ एक प्रश्न उठैत अछि- की संग्रहकेँ एकटा विद्यापति-पदक संरक्षण-प्रयोजन अछि? जँ 'सुकन्या' क वसन्त-वर्णन हेतु मैथिली काव्य-परम्पराक कोनो अन्य पदक प्रयोग कएल जाएत, तँ 'बिदापत' मे विद्यापति-पदक विशिष्टता आरो अधिक निखरैत।

रंगमंचीय निर्देश: असमान विवरण-स्तर

लोकनाट्य-त्रयीमे मंच-निर्देश (stage directions) अत्यन्त विस्तृत आ विशिष्ट अछि-"गबैत, कुसमा सामर, ठनका-बनका...कुनटा, बुधेसरकेँ दुलार मलार करैए" । मुदा प्रेम-चतुष्टयमे मंच-निर्देश प्रायः न्यूनतम अछि-"प्रकाश परिवर्तन", "संगीत", "फ्रीज" । ई अन्तर नाट्यकारक दू भिन्न कालक रचना-पद्धतिकेँ दर्शाबैत अछि, मुदा एहिसँ छोट नाटिकासँ अभिनेताकेँ कम मार्गदर्शन भेटैत अछि।

उपसंहार: सीमाक संग सम्भावना

प्रथमतः, प्रेम-चतुष्टयमे कतहु-कतहु सन्देश-प्रधानता (उपदेशात्मकता) नाट्य-तनावक स्थान ल' लैत अछि-विशेषतः समापन-दोहा आ उद्घोषकक टिप्पणी कखनो-कखनो ओहि अर्थकेँ मुखर क' दैत अछि जे ध्वनित रहितहुँ अधिक प्रभावी रहितैक। नाट्य-कलाक मर्म 'देखाबए' मे अछि, 'कहि देब' मे नहि- एहि कसौटी पर लोकनाट्य-त्रयी प्रेम-चतुष्टयसँ पुष्ट होइत अछि। द्वितीयतः, 'श्रुवावतीक जय' मे स्त्री-स्वातंत्र्यक प्रखर पाठक संग अग्नि-प्रवेशक रूढ़िक प्रयोग एक वैचारिक तनाव उत्पन्न करैत अछि- यद्यपि नाटक एकरा 'आत्मबल' क संकल्पक रूपमे प्रस्तुत करबाक प्रयास करैत अछि, तथापि बलिदान-केन्द्रित प्रतीक आधुनिक नारीवादी पाठक संग पूर्ण रूपसँ संगति नहि बैसाबैत अछि- ई प्रश्न खुजल रहैत अछि। तृतीयतः, संग्रहमे स्केल (परिमाण) क असमानता अछि- 'कुसमा-सलहेस' सन महाकाव्यात्मक विस्तार आ प्रेम-चतुष्टयक चेम्बर-नाटिका एक्के लाटमे राखल गेल अछि; ई वैविध्य एक दृष्टिसँ संग्रहक सम्पन्नता थिक, मुदा एकर पाठ-अनुभवमे लय-भंग सेहो उत्पन्न करैत अछि। एहि सभ सीमाक बादहुँ ई स्वीकार' पड़त जे ई कमी कुणालक नाट्य-दृष्टिक मूल बल-मंचनीयता आ लोक-संप्रेषणीयता-क सोझाँ गौण अछि।

संग्रहक सीमा मुख्यतः तीन श्रेणीमे आबैत अछि-

(क) शिल्प-सीमा: उद्घोषक-निर्भरता, 'बताएब' बनाम 'देखाएब', कतिपय पात्रक एकआयामिता।

(ख) वैचारिक तनाव: अग्नि-प्रवेश-रूढ़ि, पितृसत्तात्मक अनुमोदन-क्रम, दैवी-पुरस्कार-निर्भरता।

(ग) संरचनात्मक सीमा: आकार-वैषम्य, शीर्षक-एकरसता, दोहराओल नाट्य-ढाँचा।

महत्त्वपूर्ण ई जे ई सीमा संग्रहक मूल्यकेँ नष्ट नहि करैत अछि। कोनो सीमा-रहित रचना-संग्रह नहि अछि- महाकवि विद्यापतिक पदमे सेहो परम्परागत नायिका-साँचाक पुनरावृत्ति अछि; भिखारी ठाकुरक नाटकमे सेहो भाषिक असमानता अछि। कुणालक सीमा बहुधा ओहि स्थानमे अछि जाहिठाम हुनकर महत्त्वाकांक्षा सर्वाधिक उड़ान भरैत अछि-ई एक रचनाकारक सजीव चिह्न थिक।

एहि सीमाकेँ चिन्हित करबाक एक व्यावहारिक उद्देश्य सेहो अछि-नाटकक भविष्यक निर्देशक लोकनि एहि सीमाकेँ मंचन-प्रक्रियामे सम्बोधित कऽ सकैत छथि। अतिरथक परिवर्तन-यात्राकेँ एक समक्ष निर्देशक मूक-दृश्यसँ विस्तारित क' सकैत छथि; श्रुवावतीक चिता-संकल्पकेँ एक शक्ति-उद्घोषक रूपमे पुनः-अभिनीत कएल जा सकैत अछि; वंदीक रहस्य-उद्घाटनकेँ एक विराट नाट्य-क्षणमे पर्यवसित कएल जा सकैत अछि। यएह जीवित रंगमंचक गुण थिक- प्रत्येक मंचन एक नव 'संस्करण' थिक।

६५. समग्र निष्कर्ष: कुणालक नाट्य-संसारक वैचारिक एकता

सारांश

अंतिम अध्याय संग्रहक लोकनाट्य-त्रयी आ प्रेम-चतुष्टयकेँ बुद्धि, काव्य-चिरजीविता, अभय, विश्वास, आत्मनिर्णय आ प्रेमक क्रमिक वैचारिक विकास रूपमे समेटैत अछि। लोकस्रोतक प्रति निष्ठा, शास्त्र-लोक-आधुनिकताक संश्लेषण, सामाजिक संवेदनशीलता आ मंचनीय व्यावहारिकता कुणालक नाट्य-कर्मक साझा आधार रूपमे उभरैत अछि।

बीजशब्द: कुणाल; मैथिली रंगमंच; लोकनाट्य; प्रेम; बुद्धि; स्त्री-कर्तृत्व; समाहार

उपसंहार

'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक' समकालीन मैथिली रंगमंचक एक महत्त्वपूर्ण अवदान थिक-ई लोकनाट्य आ आधुनिक रंगमंचक बीच एक सेतु थिक, जे मिथिलाक 'नाच'-परम्पराकेँ मात्र संरक्षित नहि करैत, अपितु ओकरा समकालीन वैचारिकतासँ अनुप्राणित क' पुनर्जीवित करैत अछि। बुद्धि ('चालिस चोर'), काव्य-चिरंजीविता ('बिदापत'), अभय-स्वातंत्र्य आ प्रेम ('कुसमा-सलहेस') आ स्त्री-कर्तृत्व (प्रेम-चतुष्टय)- एहि चारि स्तम्भ पर ठाढ़ ई संग्रह अंततः एक्के थीसिस दिस अभिमुख अछि- 'प्रेम' (व्यापक मानवीय करुणा आ जीवनासक्तिक अर्थमे) सृष्टिक मूल-तत्त्व थिक, आ 'बुद्धि' ओकर रक्षक।

लोक-स्रोतक प्रति निष्ठा, सबाल्टर्न आ स्त्री-स्वरक प्रति संवेदनशीलता, शास्त्र-लोक-आधुनिकताक संश्लेषण आ रंगमंचीय व्यावहारिकता-एहि गुण सभक कारणे ई संग्रह विदेह समानांतर-साहित्य-दृष्टिक एक उपयुक्त निदर्शन थिक आ मैथिली नाट्य-समीक्षाक एक अनिवार्य सन्दर्भ-बिन्दु। एकर अध्ययन-अध्यापन आ पुनर्मंचन मैथिली रंगमंचक जीवंतताक लेल समान रूपसँ आवश्यक अछि।

कुणालक 'कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक' मैथिली नाट्य-साहित्यक विकासक एकटा नव राजमार्ग थिक। नाट्यकार कुणाल अपन दीर्घ रंगमंचीय अनुभव सँ प्रमाणित केने छथि जे कोनो कला मात्र अतीतक अनुकरण सँ जीवित नहि रहि सकैत अछि, तकर निरंतर नवीनीकरण आ सामयिकता अनिवार्य अछि।

हिनक सातो नाटकमे मिथिलाक पारम्परिक लोक-संस्कृति, दलित प्रतिरोधक स्वर, पौराणिक आख्यानक विखंडन आ स्त्री-अस्मिताक जे मंचीय स्थापना भेल अछि, ओ मैथिली साहित्यकेँ अत्यन्त समृद्ध आ गौरवान्वित करैत अछि। कुणालजी द्वारा प्रयुक्त किरतनिया, बिदापत, आ पमरिया शैलीक नव-प्रयोग आगामी पीढ़ीक रंगकर्मी सभक लेल एकटा दिशा-निर्देश थिक। अंततः, ई नाट्य-संकलन शास्त्रीय रंग-दृष्टि आ लोक-जीवनक आत्मीय आ तार्किक समन्वय थिक, जे रंगमंचकेँ पुनः समाजक सभसँ प्रखर वैचारिक अस्त्रक रूपमे स्थापित करैत अछि।

६६. महेन्द्र मलंगियाक छुतहर/ छुतहर घैल/ छुतहा घैल

सारांश

छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा "रमण" हुनका सुझाव देलखिन्ह जे "छुतहर घैल" कैँ मात्र "छुतहर" कहल जाइ छै।

बीजशब्द: महेन्द्र मलंगिया; छुतहा घैल; नाटक; लोकभाषा; जाति; मंचनीयता; दृश्य-विन्यास

छुतहा घैल महेन्द्र मलंगियाक नवीन नाटकक नाम छन्हि। ऐ छोटसन नाटकक भूमिका ओ दस पन्नामे लिखने छथि।

पहिने ऐ भूमिकापर आउ। हुनका कष्ट छन्हि जे रमानन्द झा "रमण" हुनका सुझाव देलखिन्ह जे "छुतहर घैल" कैँ मात्र "छुतहर" कहल जाइ छै। से ओ तीन टा गप उठेलन्हि- पहिल-

"तों कहियो पोथी के लेखी,

हम कहियो अँखियन के देखी।"

दोसर- यात्री जीक विलाप कविता-

"काते रहै छी जनु घैल छुतहर

आहि रे हम अभागलि कत बड़।"

आ कहै छथि जे ओइ कविताक विधवा आ ऐ नाटकक कबूतरी देवीकैँ शिवक महेश्वरो सूत्र आ पाणिनीक दश लकारसँ (वैदिक संस्कृत लेल पाणिनी १२ लकार आ लौकिक संस्कृत लेल दस लकार निर्धारित कएने छथि..खएर...) कोन मतलब छै?

तेसर ओ अपन स्थितिकैँ कापरनिकस सन भेल कहैत छथि, जे लोकक कहलासँ की हेतै आ गाम-घरमे लोक "छुतहर घैल" बजिते छैक!!

मुदा ऐ तीनू बिन्दुपर तीनू तर्क मलंगियाजीक विरुद्ध जाइ छन्हि। "अँखियन देखी" आ लोकव्यवहार "छुतहर" मात्र कहल जाइत देखलक आ सुनलक अछि, घैलचीपर छुतहरकैँ अहाँ राखि सकै छी? लोइटसँ बड़ैबमे पान पटाओल जाइ छै तखन मलंगियाजीक हिसाबे ओकरा "लोइट घैल" कहबै। घैल, सुराही, कोहा, तौला, छुतहर, लोइट, खापड़ि, कुड़नी, कुरवाड़, कोसिया, सरबा, सोबरना ऐ सभ बौस्तुक अलग नामकरण छै। फूलचन्द्र मिश्र "रमण" (प्रायः फूलचन्द्रजी "छुतहा घैल" शब्दक सुझाव हँसीमे देने हेथिन्ह, आ जँ नै तँ ई एकटा नव भाषाक नव शब्द अछि!!) क सुझाव मानैत मलंगिया जी "छुतहर घैल" कैँ "छुतहा घैल" कऽ देलन्हि, ई ऐ गपक द्योतक जे हुनका गलतीक अनुभव भऽ गेलन्हि मुदा रमानन्द झा "रमण" क गप मानि लेने छोट भऽ जइतथि से खुट्टा अपना हिसाबे गाड़ि देलन्हि। आ बादमे रमानन्द झा "रमण" चेतना समितिसँ ओइ पोथीकैँ छपेबाक आग्रह केलखिन्ह आ, चेतना समिति मात्र २५टा प्रति दैतन्हि तँ ओ अपन संस्थासँ एकरा छपबेलन्हि, ऐ सभसँ पठककैँ कोन सरोकार? आब आउ यात्रीजीक गपपर, यात्रीजीकैँ हिन्दी पाठकक सेहो ध्यान राखऽ पड़ै छलन्हि, हुनका मोनो नै रहै छलन्हि जे कोन कविता हिन्दीमे छन्हि, कोन मैथिलीमे आ कोन दुनूमे, से ओ छुतहर घैल लिखि देलन्हि, एकर कारण यात्रीजीक तुकबन्दी मिलेबाक आग्रहमे सेहो देखि सकै छी। आ फेर आउ कॉपरनिकसपर, जँ यात्री जी वा मलंगिया जी "घैल छुतहर", "छुतहर घैल" वा "छुतहा घैल" लिखिये देलन्हि तँ की नेटिव मैथिली भाषी छुतहरकैँ "घैल छुतहर", "छुतहर घैल" वा "छुतहा घैल" बाजब शुरू कऽ देत। से कॉपरनिकस सेहो मलंगियाजीक विरुद्ध छथिन्ह।

कॉपरनिकसक किंवदन्तीक सटीक प्रयोग मलंगियाजी नै कऽ सकलाह, प्रायः ओ गैलिलीयो सँ कॉपरनिकसकैँ कन्फ्यूज कऽ रहल छथि, कॉपरनिकसक सिद्धान्तक समर्थन पोप द्वारा भेल छल आ कॉपरनिकस पोप पॉल-३ कैँ अपन हेलियोसेन्ट्रिक सिद्धान्तक चालीस पन्नाक पाण्डुलिपि समर्पित केने रहथि। खएर मलंगियाजीक विज्ञानक प्रति अनभिज्ञता आ विज्ञानक सिद्धान्तकैँ किंवदन्तीसँ जोड़बाक सोचपर अहाँकैँ आश्चर्य नै हएत जखन अहाँ हुनकर खाँटी लोककथा सभक अज्ञानताकैँ अही भूमिकामे देखब।

"अली बाबा आ चालीस चोर"- सम्पूर्ण दुनियाँकैँ बुझल छै जे ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि जे "अरेबियन नाइट्स (१००१ कथा)" मे संकलित अछि आ ओइमे विवाद अछि जे ई अरेबियन नाइट्समे बादमे घोसियाएल गेल वा नै, मुदा ई मध्यकालीन अरबी लोककथा अछि, ऐ मे कोनो विवाद नै अछि। बलबनक अत्याचार आदिक की की गप साम्प्रदायिक मानसिकता लऽ कऽ मलंगिया जी कहि जाइ छथि से हुनकर लोककथाक प्रति सतही लगाव मात्रकँण देखार करैत अछि। "मिथिला तत्व विमर्श" वा "रमानाथ झा" क पंजीक सतही ज्ञान बहुत पहिनहिये खतम कऽ देल गेल अछि, आ तँ ई लिखित रूपसँ हमरा सभक पंजी पोथीमे वर्णित अछि। गोनू झा

विद्यापति सँ ३०० बर्ख पहिने भेलाह, मुदा मलंगियाजी ५० साल पुरान गप-सरक्काक आधारपर आगाँ बढ़ै छथि। हुनका बुझल छन्हि जे गोनूकेँ धूर्ताचार्य कहल गेल छन्हि मुदा संगे गोनूकेँ महामहोपाध्याय सेहो कहल गेल छन्हि से हुनका नै बुझल छन्हि!! गोनू झाक समयमे मुस्लिम मिथिलामे रहबे नै करथि तखन "तहसीलदारक दाढ़ी" कतऽ सँ आओत। लोकक कण्ठमे छुतहर छै ओकरा "छुतहा घैल" कऽ दियौ, लोकक कण्ठमे "कर ओसूली" करैबलाक दाढ़ी छै ओकरा "तहसीलदार" क दाढ़ी कहि साम्प्रदायिक आधारपर मुस्लिमकेँ अत्याचारी करार कऽ दियौ, आ तेहेन भूमिका लिखि दियौ जे रमानन्द झा "रमण" आ आन गोटे डरे समीक्षा नै करताह। एकटा पैदल सैनिक आ एकटा सतनामी (दलित-पिछड़ल वर्ग द्वारा शुरू कएल एकटा प्रगतिवादी सम्प्रदाय) क झगड़ासँ शुरू भेल सतनामी विद्रोह औरंगजेबक नीतिक विरोधमे छल आ ओइमे मस्जिदकेँ सेहो जराओल गेलै, मुदा गोनू झाक कर ओसूली अधिकारी मुस्लिम नै रहथि, लोककथामे ई गप नै छै, हँ जँ साम्प्रदायिक लोककथाकार कहल कथामे अपन वाद घोसियेलक आ लिखै काल बेइमानी केलक तँ तइसँ मैथिली लोककथाकेँ कोन सरोकार? फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन नै करब तँ अहिना हएत।

महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जातित-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह। भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ सत्रहटा दृश्य अछि, जइमे पन्द्रहम दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह ओ सोलहम दृश्यसँ करै छथि मुदा बाजी तावत हुनका हाथसँ निकलि जाइ छन्हि। आइ जखन संस्कृत नाटकोमे प्राकृत वा कोनो दोसर भाषाक प्रयोग नै होइत अछि, मलंगियाजीक भरतकेँ गलत सन्दर्भमे सोझाँ आनब संस्कृतसँ हुनकर अनभिज्ञताकेँ देखार करैत अछि आ भरत नाट्यशास्त्रपर हिन्दीमे जे सेकेण्डरी सोर्सक आधारपर लोक सभ पोथी लिखने छथि, तकरे कएल अध्ययन सिद्ध करैत अछि।

मलंगियाजीक ई कहब अछि जे नाटक जँ पढ़बामे नीक अछि तँ मंचन योग्य नै हएत, वा मंचन लेल लिखल नाटक पढ़बामे नीक नै लागत? हुनकर संस्कृत पाँतीकेँ उद्धृत करबासँ तँ यएह लगैत अछि। जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ मंचीय गुण की होइ छै, अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक सत्रहटा दृश्य, तथाकथित निम्न वर्गकेँ अपमानित करैबला जातिवादी भाषा, भगताक "बुझता है कि नहीं?" बला हिन्दी आ ऐ सभक सम्मिलनक ई "स्लैपस्टिक ह्यूमर"? आ जे एकर विरोध कऽ मैथिलीक समानान्तर रंगमंचक परिकल्पना प्रस्तुत करत से भऽ गेल नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही आ जे पुरातनपंथी जातिवादी अछि से भेल नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही!! की २१म शताब्दीमे मलंगियाजीक जाति आधारित वाक्य संरचना संस्कृत, हिन्दी वा कोनो आधुनिक भारतीय भाषाक नाटकमे (मैथिलीकेँ छोड़ि) स्वीकार्य भऽ सकत? आ जँ नै तँ ऐ शब्दावली लेल १८०० बर्ष पुरनका संस्कृत नाटकक गएर सन्दर्भित तथ्यकेँ, मूल संस्कृत भरत नाट्यशास्त्र नै पढ़ैबला नाटककार द्वारा, बेर-बेर ढालक रूपमे किए प्रयुक्त कएल जाइए? माथपर छिट्टा आ काँखमे बच्चा जँ कियो लेने अछि तँ ओ निम्न वर्गक अछि? ओकर आंगनक बारहमासामे ओ ऐ निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। बबाजी कोना कथामे एलै आ गाजा कोना एलै आ ओइसँ बगियाक गाछक बगियाक कोन सम्बन्ध छै? मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तेँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तेँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि।

लेखक, विशेषांक, संस्था आ सामाजिक विमर्श

६७. डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

सारांश

ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कैँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित...

बीजशब्द: डॉ · बाबासाहेब · आम्बेडकर · १८९१ · १९५६ · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१–१९५६)” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे बाबासाहेब; आम्बेडकर; १८९१; १९५६; भीम प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१

महाराष्ट्रक एकटा नग्र रत्नागिरी। ओइ नग्र लग एकटा गाम अम्बावडे।

ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कैँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित रहथि।

१८९४ ई. मे रामजी सेवानिवृत्त भऽ। भीम जखन ६ बर्खक रहथि तखने हुनकर मायक देहान्त भऽ गेलन्हि आ तकर बाद हुनकर पालन हुनकर अपंग दीदी केलखिन्ह। पिता फेरसँ विवाह केलखिन्हि आ नोकरी लेल गोरेगाँव चलि गेलाह।

२

रामजी सपकाल अस्पृश्य महार जातिक रहथि। ओ कबीरक दोहा सुना कऽ भीमकैँ भोरे-भोर पढ़ैले उठा दै छलाह।

सेवानिवृत्तिक बाद जखन ओ काप-दपोली १८९४ ई. मे एलाह तखन डपोली नगरपालिका शिक्षा विभाग अपन स्कूलमे अस्पृश्यक नामांकन नै लेबाक निर्णय कऽ लेलक। अखन धरि अस्पृश्यक बच्चाक नामांकन ओइ स्कूल सभमे होइ छलै। तखन रामजी मुम्बइ आ फेर सतारा चलि गेलाह। भीमक प्रारम्भिक शिक्षा सतारामे भेलन्हि।

कोनो नौआ भीमक केश नै काटै छल से भीमक बहिन हुनकर केश काटै छलीह।

स्कूलमे हुनकासँ सटि कऽ कियो नै बैसै छल।

कटही गाड़ीबला हुनका तै शर्तपर बैसबै छल जे गाड़ी भीम चलेताह आ ओ आरामसँ बैसत।

पानि पीबाक संकट, जलाशय हुनका लेल नै?

हम विद्या प्राप्त करब, तखन ई सभ भेटत। संकल्प लेलन्हि भीम।

ओतै विद्यालयमे पेंडसे आ आम्बेडकर ई दूटा शिक्षक रहथि।

एक दिन भीम अपनाकैँ भिजा लेलन्हि जे स्कूलमे नै पढ़ऽ पड़ए। मुदा पेंडसे हुनका अपन घर पठेलन्हि आ हुनका धरिया पहिर कऽ स्कूलमे पढ़ाइ करऽ पड़लन्हि।

आम्बेडकरक परम प्रिय शिष्य बनि गेलाह भीम। आम्बेडकर ब्राह्मण रहथि। एक दिनुका गप अछि। भीम खेनाइ नै आनने रहथि, असगरे भुखले पेटे एकटा गाछक छाह तर ओ बैसल रहथि।

पुछलन्हि आम्बेडकर, भीम एना असगरे किए बैसल छी। भीम कहलन्हि जे आइ हम खेनाइ नै आनने छी। कहलन्हि आम्बेडकर, तँ की भेल, चलू आइ दुनू गुरु चेला रोटी तरकारी संगे खाइ छी। भीमक प्रति एहेन नीक आचरण आइ धरि कियो नै केने छल। भीम प्रसन्न भऽ गेलाह।

कहलन्हि आम्बेडकर- भीम, हम अहाँकेँ अपन कुलनाम दै छी, आब अहाँ आम्बेडकर कहाएब।

३

रामजी मुम्बइ आबि गेलाह। एलफिंस्टन स्कूलमे ओ भर्ती भेलाह। १९०७मे स्कूलक शिक्षा ओ पूर्ण केलन्हि। केलुस्कर हुनका “बुद्धचरितम्” उपहारमे देलन्हि।

भीमकेँ स्कूलमे संस्कृत पढ़बाक बड्ड इच्छा रहन्हि मुदा तकर अनुमति नै छल।

जखन भीम १७ बर्खक रहथि तखन ९ बर्खक रमासँ हुनकर बियाह भेलन्हि।

केलुस्कर महोदयक प्रयाससँ बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्ति भीमकेँ प्राप्त भेलन्हि आ ओ १९१२ ई. मे बी. ए. पास भऽ गेलाह।

बड़ोदा सरकार हुनका लेफ्टिनेन्ट पदपर तैनात केलक।

मुदा तकर बाद पिताक मोन खराप भऽ गेलनि, भीम पितासँ भेँट करबाले एलाह, पिता प्रसन्न रहथि। पिता अपन प्रसन्नताक संगे प्रयाण केलन्हि, मृत्युक लीला, भीम जोर-जोरसँ कानथि।

४

बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्तिसँ भीम १९१३ ई. मे अध्ययन लेल न्यूयार्क बिदा भेलाह। कोलम्बिया विश्वविद्यालय हुनकर प्रबन्ध स्वीकृत केलक आ हुनका “डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी” उपाधि देलक।

घुरलाह भीम।

हुनकर सत्कार कएल जाए, भव्य सत्कार। सभ हित-सम्बन्धी विचारलन्हि।

मुदा ओ नै स्वीकार केलन्हि अपन सत्कार। हमर सत्कारपर होमएबला खर्चासँ छात्रवृत्ति दियौ, वंचितकेँ पढ़ाउ।

बड़ोदा नरेश हुनका बड़ोदा बजेलन्हि। हुनकर अवास-भोजनक व्यवस्था लेल कहलन्हि।

मुदा कोनो भोजनालय वा धर्मशाला हुनका रखबा लेल तैयार नै भेल। एकटा पारसी भोजनालय किछु दिन हुनका रखलक मुदा फेर ओतैसँ हुनका निकालि देल गेल।

एकटा गाछतर ओ कानए लगलाह। शिक्षा प्राप्त करब तँ हमर दोष दूर हएत, से सोचने रही। मुदा आब तँ हम शिक्षा प्राप्त केने छी, आब किए ई यातना देल जा रहल अछि हमरा। प्रण करै छी हम जे ऐ व्यवस्थाकेँ तोड़ि देब, ओकर जड़िपर प्रहार करब।

५

भीम घुरि एलाह मुम्बइ। ओ शिडेनहम महाविद्यालयमे प्राध्यापक बनि गेलाह।

कोल्हापुरक छत्रपति साहू महराज उपेक्षित लोकक उद्धार लेल कटिबद्ध छलाह। भीम ओतए गेलाह, घोषणा केलन्हि माणग्राममे साहू महराज, हे उपेक्षित जन आबि गेल छथि अहाँ सभक उद्धारक- डॉ आम्बेडकर।

मुदा एकटा आर आघात, पुत्र गंगाधरक मृत्युसँ पत्नी रमा खिन्न रहए लगलीह। यशवन्तक पालन ओ करैत रहलीह, पति बड्ड कम समए घरमे दै छलखिन्ह मुदा ओ सभटा सहैत रहलीह।

६

फेर अध्यापनपद छोड़ि ओ “इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल सायंस” नाम्ना लंडन स्थित संस्थामे “द प्रॉब्लेम ऑफ रुपी” पर प्रबन्ध देलन्हि। मुदा हुनका क्रान्तिकारी मानल गेल, से ओ संस्थाक मोनमाफिक संशोधित प्रबन्ध प्रस्तुत केलन्हि आ “डॉक्टर ऑफ सायंस” भऽ घुरलाह। विधिक अध्ययन केलाक बाद ओ न्यायालय सेहो जाइ छलाह।

२० जुलाइ १९२४ ई. कैँ ओ “बहिष्कृत हितकारिणी सभा” नामसँ एकटा संस्था बनेलन्हि। कारण हुनकर विश्वास चलनि जे अपन समस्याक समाधान अपने करए पड़त, आन से नै कऽ सकत।

२० मार्च १९२७ ई. महाडमे जनान्दोलनक नेतृत्व कऽ “चवदार तळ” जलाशयसँ सभ पानि पीलन्हि।

तकर बाद “बहिष्कृत भारत” मासिक द्वारा विचार प्रसारित केलन्हि।

२ मार्च १९३० नाशिक राममन्दिरमे प्रवेशक प्रयासक जनान्दोलनक न्रेतृत्व, मुदा पुरहित द्वार बन्द कऽ लेलक, तखन सभ राम आ लक्ष्मण कुण्डमे स्नान कऽ घुरि गेलाह।

मुदा १९३३ ई मे मुम्बइ प्रान्तमे सभ उपेक्षितक मन्दिर प्रवेशक विधान पास भेल।

७

१९२७ ई. मे अपन शिक्षक आम्बेडकरसँ हुनकर भैँट भेलन्हि। हुनकर चिट्ठी भीम स्नेहसँ रखने छलाह। गुरु-शिष्य भाव विह्वल भऽ गेलाह।

साइमन कमीशनक समितिमे भीमक चयन भेल, वयस्क मतदानक अनुशंसा भीमक कएल छन्हि।

लंडनमे “राउण्ड टेबल कान्फ्रेन्स” मे तीन बेर भाग लऽ कऽ दलितक समस्या उठेलन्हि ओ।

मुदा फेर आघात। पत्नी रमाक मृत्य।

१५ अप्रैल १९४८ ई. कैँ शारदा-कबीर नाम्ना ब्राह्मण चिकित्सिकासँ विवाह केलन्हि।

समए कम अछि। संघर्ष निष्फल भऽ रहल अछि। हिन्दू, अस्पृश्य हिन्दू! नै। हम असफल नै हएब। धर्मान्तर। केलुस्करक देल बुद्धचरितम् सम्बल बनत।

१४ अक्टूबर १९५६ ई., दशमी, नागपुर ९ बजी भोरसँ ११ बजे धरि, गोरखपुरक महास्थाविर चन्द्रमणि धर्मान्तर करेताह, बौद्ध धर्ममे।

ओ, हुनकर दोसर ब्राह्मण पत्नी सविता आ लाखक लाख लोक बौद्ध बनि गेलाह।

बुद्धक पद धूलि माथपर लगा तीनबेर वन्दन केलन्हि।

८

स्वतंत्र भारतक विधि मंत्री बनलाह बाबासाहेब आम्बेडकर। संस्कृतक पैघ प्रेमी। संस्कृतमे सम्भाषण करै छलाह (आज, हिन्दी पत्रिका सितम्बर १५, १९४९ अंक; द लीडर, इलाहाबाद, १३ सितम्बर, १९४९) । ऑल इण्डिया सेड्यूल कास्ट फेडेरेशनमे संस्कृत राजभाषा हुअए, ई प्रस्ताव बाबासाहेब राखलन्हि मुदा युवा बी. पी. मौर्य आदिक विरोध भेल आ प्रस्ताव आपस भऽ गेल।

लाखक लाख पोथी हुनकर निजी पुस्तकालयमे छलन्हि, सभटा पोथी ओ मुम्बइक सिद्धार्थ महाविद्यालयकैँ दऽ देलन्हि।

पैघ भेलाक उपरान्तो ओ अपन सामाजसँ अपन लोकसँ दूर नै गेलाह।

६ दिसम्बर १९५६ ई. कैँ ओ निर्वाण प्राप्त केलन्हि।

६८. विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन

सारांश

गोहि सभक बीच जलसमाधि[गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली कादम्बरी, खण्ड०-१–२, खण्ड०अध्याय(-१००) सँ अध्याय (-१); खण्ड १अध्याय ० सँ अध्याय १००; आखण्ड २अध्याय १०१ सँ अध्याय २००] कथासार आ समीक्षात्मक मूल्याङ्कन: भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे तीन खण्ड · अध्याय −१०० सँ २०० · कुल ३०१ अध्याय भाग-एक — खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल) साहित्यिक समीक्षा

बीजशब्द: विदेह · समानान्तर · आन्दोलन · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विदेह · समानान्तर साहित्य आन्दोलन” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर- गोहि सभक बीच जलसमाधि [गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली कादम्बरी, खण्ड ०-१–२, खण्ड ० अध्याय (-१००) सँ अध्याय (-१); खण्ड १ अध्याय ० सँ अध्याय १००; आ खण्ड २ अध्याय १०१ सँ अध्याय २००] कथासार आ समीक्षात्मक मूल्याङ्कन: भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे गढ़ नारिकेल नामक ओहि गामक कथा, जकर पोखरिमे देह डुबैत अछि आ पातपर नाम बचैत अछि, “गोहि सभक बीच जलसमाधि” उपन्यासक मुख्य खण्ड (खण्ड-१ आ खण्ड-२) मे वर्तमानसँ भविष्य दिस बहैत अछि। मुदा खण्ड-० ओहि बहावक विपरीत दिस—जड़िक ओर—घुरैत अछि।

गोहि सभक बीच जलसमाधि[गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली कादम्बरी, खण्ड०-१–२, खण्ड०अध्याय(-१००) सँ अध्याय (-१); खण्ड १अध्याय ० सँ अध्याय १००; आखण्ड २अध्याय १०१ सँ अध्याय २००] कथासार आ समीक्षात्मक मूल्याङ्कन: भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे

गोहि सभक बीच जलसमाधि

सम्पूर्ण त्रयीक आलोचनात्मक अध्ययन

तीन खण्ड · अध्याय −१०० सँ २०० · कुल ३०१ अध्याय

भाग-एक — खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल) साहित्यिक समीक्षा

भाग-दुइ — मुख्य उपन्यास (खण्ड १–२) कृतिसार तथा आलोचना

परिशिष्ट — एन्थ्रोपोलोजिकल संकलन (तीनू खण्ड)

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

भाग-एक

खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल) — साहित्यिक समीक्षा

एक · जड़िक ओर घुरैत कथा

गढ़ नारिकेल नामक ओहि गामक कथा, जकर पोखरिमे देह डुबैत अछि आ पातपर नाम बचैत अछि, “गोहि सभक बीच जलसमाधि” उपन्यासक मुख्य खण्ड (खण्ड-१ आ खण्ड-२) मे वर्तमानसँ भविष्य दिस बहैत अछि। मुदा खण्ड-० ओहि बहावक विपरीत दिस—जड़िक ओर—घुरैत अछि। ई पूर्व-कथाकाल थिक: अध्याय [−१००] सँ आरम्भ भऽ [−१] धरि, ऋणात्मक सङ्ख्यामे उतरैत, ओ एक हजार दू सय बरखक ओहि दीर्घ स्मृतिकेँ उघारैत अछि जाहिपर मुख्य उपन्यासक समस्त कथा-भवन ठाढ़ अछि।

साहित्यमे ‘प्रीक्वेल’ प्राय: मूल कृतिक व्यावसायिक विस्तार बनि जाइत अछि; मुदा एतय ओ एकटा दार्शनिक अनिवार्यता थिक। जँ मुख्य उपन्यासक केन्द्रीय सूत्र ई अछि जे ‘गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि’, तँ ओहि सूत्रक उद्गम, ओकर पहिल उच्चारण, ओकर विकास आ ओकर परीक्षण—ई सभटा खण्ड-०मे घटित होइत अछि। अतः ई खण्ड कोनो परिशिष्ट नहि, वरन् मूल कृतिक ज्ञानमीमांसीय आधारशिला थिक।

एहि समीक्षामे हम खण्ड-०कैँ चारि दृष्टिसँ पढ़बाक प्रयास करब: भारतीय काव्यशास्त्रीय (रस-ध्वनि-वक्रोक्ति), पाश्चात्य आधुनिक सिद्धान्त (स्मृति-अध्ययन, उत्तर-औपनिवेशिक, अभिलेखागार-सिद्धान्त), नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसा, आ विदेह समानान्तर-इतिहास ढाँचा। ई चारू दृष्टि एक-दोसराकेँ काटैत नहि, वरन् एहि पाठक अनेकस्तरीयताकेँ उघारैत अछि।

दुइ · ऋणात्मक कालक वास्तुकला

खण्ड-०केर सभसँ साहसिक संरचनात्मक निर्णय ओकर ऋणात्मक अध्याय-सङ्ख्या थिक। [−१००] सँ [−१] धरिक ई गणना पाठककेँ निरन्तर ई स्मरण दैत अछि जे ओ 'शून्य' दिस—अर्थात् मुख्य कथाक आरम्भ-बिन्दु दिस—बढ़ि रहल अछि। ई केवल मुद्रण-युक्ति नहि; ई कालक एकटा दार्शनिक व्याख्या थिक। प्रत्येक अध्याय शून्यसँ जतेक दूर, ओतेक ओ इतिहासक गहींरमे। जेना-जेना सङ्ख्या घटैत अछि, पाठक वर्तमानक निकट आबैत अछि—मुदा ओकरा ई कहियो नहि बिसरय दैत जे ई सम्पूर्ण वर्तमान एहि सुदीर्घ अतीतक ऋणी थिक।

जे आरम्भ, वैह अन्तमे ठाढ़ भेल। शंख-रजतसँ जे चलल, से बारह सय बरख बाद, अमावसक ओहि रातिमे फेर एक ठाम आयल।

— अध्याय [−३], "पूरा भेल गोल"

एहि वास्तुकलामे इतिहास रैखिक नहि, वृत्ताकार अछि। अध्याय [−१००] केर शंख-रजत-भ्रम आ अध्याय [−१] केर अन्तिम साक्षीक स्वीकृति एक-दोसराकेँ प्रतिध्वनित करैत अछि। पाठ अपन आदि दिस घुरैत अछि—मुदा ओहि घुरावमे ओ बारह सय बरखक भार लऽ कऽ घुरैत अछि। ई 'वृत्त' केवल संरचना नहि, थीम सेहो थिक: नाम मरैत अछि, फेर जन्म लैत अछि; गाम डुबैत अछि, फेर उठैत अछि; साक्षी बदलैत अछि, मुदा साक्ष्य नहि।

तीन · देह आ नाम — केन्द्रीय प्रतिपाद्य

सम्पूर्ण खण्डक वैचारिक अक्ष एकटा फकरामे नुकाएल अछि, जे गढ़ नारिकेलक लोक-स्मृतिसँ बेर-बेर उभरैत अछि: "गोहि देह खाइत अछि, नाम नहि।" एहि एक वाक्यमे उपन्यासक समस्त तत्त्वमीमांसा समाहित अछि। गोहि—अर्थात् काल, विस्मृति, सत्ता, हिंसा, बजार—देहकेँ ग्रसैत अछि; मुदा जँ 'नाम' (अर्थात् स्मृति, अभिलेख, साक्ष्य, पहचान) कण्ठ आ पातपर बचल रहय, तँ व्यक्ति सम्पूर्णतः नहि मरैत।

ई 'नाम' बहुअर्थी थिक। ओ व्यक्तिक पहचान थिक, मुदा ओ अभिलेखो थिक—ओ 'पंजी', ओ 'हिसाब', ओ लिखित साक्ष्य, जे सत्ताक विरुद्ध सामान्य जनक एकमात्र प्रतिरोध थिक। अध्याय [−२०] ("नामक पुल") मे ई सूत्र अपन चरम रूप पबैत अछि: पत्थरक पुल बाढ़िमे बहि जाइत अछि, मुदा नामक पुल—अर्थात् ओहि मृतक-सभक अभिलेख जे पुल-निर्माणमे मारल गेलाह—युग-युग ठाढ़ रहैत अछि। एतय 'नाम' स्थापत्य बनि जाइत अछि; स्मृति अभियन्त्रण बनि जाइत अछि।

गोहि देह खाइत अछि हे, नाम नहि खाइत रे। पत्थरक पुल छोड़ू, नामक पुल बान्हू।

— अध्याय [−२०] केर अध्यायारम्भ लोकगीत

चारि · रस, ध्वनि आ वक्रोक्ति

रस-योजना

खण्ड-०केर रस-संरचना बहुल थिक, मुदा ओकर प्रधान रस 'करुण' थिक—ओहि करुणाक जे विस्मृतिक विरुद्ध ठाढ़ अछि। बुधुआक जलसमाधि [−९०], महामारीक राति [−७१], देहक बजार [−३५]—एहि सभमे शोक अपन गरिमामे प्रकट होइत अछि, कहियो चीत्कारमे नहि उतरैत। एहि करुणक संग वीर रस सेहो अछि—मुदा ओ अस्त्रक वीरता नहि, स्मृतिक वीरता थिक: जे नाम राखैत अछि, जे साक्षी बनैत अछि, ओ एहि उपन्यासक नायक थिक। दार्शनिक अध्याय-सभमे (शंख आ रजत, आत्मसिद्धि-वाद) 'शान्त' रसक अनुशीलन अछि, जतय तर्कक उत्तेजना अन्ततः प्रशान्तिमे विलीन होइत अछि।

ध्वनि

एहि कृतिक शक्ति ओकर 'ध्वनि' (व्यंग्यार्थ) मे अछि। साक्षी-गाछ, जोड़ी-पोखरि, गोहि, शंख-रजत—ई सभटा वाच्यार्थसँ बहुत आगू इशारा करैत अछि। 'गोहि' प्रत्यक्षतः पोखरिक कुम्भीर थिक, मुदा ध्वन्यर्थमे ओ काल, पूँजी, सत्ता आ विस्मृतिक समुच्चय थिक।

जखन अध्याय [−३६] मे कहल जाइत अछि जे ‘पुरान गोहि पानिमे रहै, नव गोहि तारमे बसै’, तखन इंटरनेट-कालक अदृश्य ठगीकेँ ओहि प्राचीन कुम्भीरक ध्वनिमे बान्हि देल जाइत अछि। ई ध्वनि-सातत्य समस्त बारह सय बरखकेँ एक सूत्रमे बान्हैत अछि।

वक्रोक्ति

कुन्तककृत ‘वक्रोक्ति’ अर्थात् कथनक वक्रता—एतय शीर्षक-योजनामे प्रकट होइत अछि। ‘नामक पुल’, ‘कण्ठक कागच’, ‘इनारक तल’, ‘मीनार आ जड़ि’—प्रत्येक शीर्षक एकटा वक्र-रूपक थिक जे विरोधाभासकेँ एक-संग बान्हैत अछि। एहि वक्रतामे कवि-व्यापार अछि: सोझ कथनकेँ ओ रूपकक ओर मोड़ि दैत छथि, आ ओहि मोड़मे अर्थ गहींर भऽ जाइत अछि।

पाँच · नव्य-न्यायक ज्ञानमीमांसा

खण्ड-०केर आरम्भिक अष्टक (अध्याय [−१००] सँ [−९३]) दार्शनिक नाटकक शृंखला थिक, जे मिथिलाक न्याय-परम्पराकेँ कथाक जड़िमे रोपैत अछि। एतय वाचस्पति मिश्र (भामती), उदयनाचार्य (न्यायकुसुमाञ्जलि) आ गंगेश उपाध्याय (तत्त्वचिन्तामणि)—मिथिलाक ई तीन दार्शनिक-शिखर—पात्र आ प्रतिध्वनि दुनू रूपमे उपस्थित छथि।

अध्याय [−१००], “शंख आ रजत”, समस्त उपन्यासक ज्ञानमीमांसीय द्वार थिक। दूरसँ चमकैत शंखकेँ रजत (चानी) बुझबाक भ्रम—ई शास्त्रीय ‘शुक्ति-रजत’ दृष्टान्त—एतय एकटा वादक रूप लैत अछि: जे प्रश्न पुछब जनैत अछि, से भ्रमसँ बचैत अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—ई चारि प्रमाण एहि नाटकमे केवल शास्त्रीय कोटि नहि, वरन् जीवनक व्यावहारिक उपकरण बनि जाइत अछि। सम्पूर्ण उपन्यासक ‘सतर्कता’—अफवाहसँ, ठगीसँ, विस्मृतिसँ बचबाक जे आग्रह—ओकर दार्शनिक बीज एतहि रोपल जाइत अछि।

भ्रम क्षण भरि हे, सत्य युग-युग रे — जे पुछब जनै, से शंखकेँ रजत नहि बुझै।

— अध्याय [−१००] केर सूत्रधार-लोकगीत

एहि दार्शनिक अध्याय-सभक अन्तमे जे ‘कथा, आख्यान, दृष्टान्त आ उद्धरण’ केर संग्रह अछि—राजपथक पानि आ गङ्गाक धारा, स्फटिक आ जपाकुसुम, रस्सी आ सर्प, तत्त्वमसि आ अहं ब्रह्मास्मि—से केवल पाण्डित्य-प्रदर्शन नहि। ई सूत्रधारक कण्ठसँ, शिष्य आ गामक लोकक बीच, एकटा जीवित परम्पराक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। एतय शास्त्रक ‘उद्धरण’ लोक-वाचनमे रूपान्तरित भऽ जाइत अछि—अर्थात् नव्य-न्यायक अभिजात्य लोक-कण्ठमे उतरि आबैत अछि। ई एहि उपन्यासक एकटा मौलिक अवदान थिक: ‘दर्शन’ केँ ओ ‘लोक’ बना दैत अछि।

छह · स्मृति, अभिलेख आ अधीनस्थ स्वर

पाश्चात्य आधुनिक सिद्धान्तक दृष्टिसँ खण्ड-० एकटा समृद्ध पाठ थिक। एकर केन्द्रीय चिन्ता—‘के मरैत अछि आ के मोन राखल जाइत अछि’—सोझे स्मृति-अध्ययन (memory studies) आ अभिलेखागार-सिद्धान्त (archive theory) सँ संवाद करैत अछि। जे पुल-निर्माणमे मारल गेल, जकर नाम ठेकेदारक कागचसँ काटल गेल, ओकरा फेर लिखबाक जे आग्रह ([−१०], [−४], [−३०])—ई ‘काउण्टर-आर्काइव’ केर कल्पना थिक: सत्ताक अभिलेखक विरुद्ध लोकक अभिलेख।

अधीनस्थ-अध्ययन (subaltern studies) केर स्वर एहि खण्डमे स्पष्ट अछि। चर्मकार टोलाक उजास [−९१], माटिक मालिक [−५४], देहक बजार [−३५]—एहि सभमे ओ स्वर उठैत अछि जकरा इतिहास प्रायः मौन कऽ दैत अछि। मुदा उपन्यास एहि स्वरकेँ ‘उद्धार’ केर मुद्रामे नहि, वरन् ‘साक्षी’ केर मुद्रामे प्रस्तुत करैत अछि—ओ बजैत अछि, अपन नाम कहैत अछि, आ ओहि नामकेँ पातपर चढ़ा दैत अछि। एतय गायत्री स्पिवाकक ओ प्रश्न—‘की अधीनस्थ बाजि सकैत अछि?’—केँ उपन्यास एकटा काव्यात्मक उत्तर दैत अछि: ओ बाजि सकैत अछि, जँ गाम ओकर नाम मोन राखय।

देह माटिमे मिलै छै हे, नाम पातपर टिकै — जे गाम मन राखै रे, तकरा केओ मेटा नहि सकै।

— अध्याय [−९६] केर लोकगीत

आघात-सिद्धान्त (trauma theory) केर दृष्टिसँ, महामारी, बाढ़ि, अकाल आ तस्करीक ओ अध्याय एहि आघातकेँ ‘चीत्कार’ नहि, वरन् ‘अनुष्ठान’ बना दैत अछि। शोककेँ लोकगीतमे बान्हब—ई आघातकेँ सम्हारबाक ओ लोक-विधि थिक जे आधुनिक चिकित्सा-भाषासँ भिन्न, मुदा ओतबी गहींर अछि।

सात · समानान्तर-इतिहासक ढाँचा

विदेह समानान्तर-इतिहास ढाँचाक अनुसार, 'इतिहास' ओ नहि जे विजेता लिखैत छथि, वरन् ओ जे लोक कण्ठमे राखैत अछि। खण्ड-० एहि ढाँचाक कथात्मक साकार-रूप थिक। एतय बारह सय बरखक 'आधिकारिक' इतिहास—राजा, सन्धि, युद्ध—पृष्ठभूमिमे रहैत अछि; अग्रभूमिमे ओ 'समानान्तर' इतिहास अछि: के बाढ़िमे बचल, के नाम राखल, के साक्षी बनल।

एहि ढाँचाक एकटा सुन्दर आत्म-संदर्भ अध्याय [-७३] मे अछि, जतय 'अध्यायारम्भ लोकगीत' केर परम्पराक उद्गम-कथा कहल जाइत अछि। मोहन, अपन बेटी राधिकाक मृत्युक शोकमे, बाँसुरीपर जे धुन बजाबैत छथि, सैह धुन आगू चलि कऽ 'अध्यायारम्भ लोकगीत' बनि जाइत अछि—ओ युक्ति जे मुख्य उपन्यास (खण्ड-१) केर प्रत्येक अध्यायकेँ खोलैत अछि। एतय उपन्यास अपन साहित्यिक-युक्तिकेँ अपने कथा-जगतमे जन्म दैत अछि। ई 'मेटा-फिक्शन' केर एकटा मार्मिक रूप थिक: रूप अपन उद्गम-कथा अपने कहैत अछि।

इएह धुन आगू चलल, कथाक आरम्भ बनल, हर अध्यायक भोरमे, लोकगीत बनि उगल।

— अध्याय [-७३], "मोहनक पहिल धुन"

आठ · लोकगीत, सूत्रधार आ मंच-युक्ति

खण्ड-० तीन कथात्मक स्वरक बीच दोलैत अछि: उपन्यासक गद्य, नाटकक संवाद, आ लोकगीतक पद्य। दार्शनिक अध्याय नाटकक रूपमे, ऐतिहासिक वृत्तान्त उपन्यास-अंशक रूपमे, आ प्रत्येक अध्यायक भोर लोकगीतक रूपमे—ई त्रि-स्वरता पाठकेँ एकरस नहि होमय दैत। सूत्रधार एहि तीनू स्वरकेँ जोड़ैत अछि: ओ मंच-संचालक थिक, कथावाचक थिक, आ लोकगीतक गायक सेहो।

'अध्यायारम्भ लोकगीत' केर युक्ति—प्रत्येक अध्याय (अध्याय [-७३] सँ [-१] धरि) एकटा नामित लोकधुनक संग खुजैत अछि (बाँसुरी-शोकधुन, विवाह-सोहर, जागरण-धुन, कचहरी-गीत, बिदेसिया, आन्दोलन-गीत...)—मैथिली लोक-संगीतक विपुल भण्डारकेँ आधुनिक उपन्यास-संरचनामे बुनि दैत अछि। ई लोकधुन केवल अलंकार नहि; प्रत्येक धुन ओहि अध्यायक भाव-मुद्राकेँ पूर्व-निर्धारित करैत अछि। बिदेसिया-धुनमे प्रवासक विरह, जागरण-धुनमे महामारीक रातिक सामूहिकता, सोहर-धुनमे जन्म-आशा—लोक-रूप आ कथा-भाव एतय एकाकार अछि।

नौ · भाषा आ शैली

मैथिली गद्यक जे परिष्कार एहि खण्डमे अछि, से एकर एकटा प्रमुख उपलब्धि थिक। दार्शनिक अध्याय-सभमे भाषा तत्सम प्रधान आ सुनियन्त्रित अछि (प्रत्यक्ष, अनुमान, प्रामाण्य, अभाव); लोकगीत-सभमे ओ ठेठ, तद्भवप्रधान आ लयात्मक अछि ('हे', 'रे' केर सम्बोधन, 'नाम', 'गोहि', 'माटि' केर पुनरावृत्ति) । ई द्वि-भाषिकता—शास्त्रीय आ लोक—एहि उपन्यासक मूल तनाव (दर्शन बनाम लोक, अभिजात बनाम सामान्य) केँ भाषाक स्तरपर सेहो साकार करैत अछि।

फकरा (लोकोक्ति) केर प्रयोग विशेष उल्लेखनीय थिक। प्रत्येक अध्याय एकटा गढ़ नारिकेली फकरासँ खुजैत अछि, जे ओहि अध्यायक सारकेँ एक पाँतिमे बान्हि दैत अछि। ई फकरा-सभ काल्पनिक अछि, मुदा लोक-लय एहन प्रामाणिक जे ओ सचमुच केओ प्राचीन कहावत बुझाइत अछि। ई मौलिक लोकोक्ति-निर्माण मैथिली कथा-साहित्यमे एकटा दुर्लभ कौशल थिक।

दस · मूल्यांकन

खण्ड-० एकटा दुस्साहसिक कृति थिक। ओ प्रीक्वेलक व्यावसायिक सुगमताकेँ नकारि, अपनाकेँ एकटा दार्शनिक-ऐतिहासिक महाकाव्यक रूपमे गढ़ैत अछि। एकर ऋणात्मक काल-संरचना, एकर त्रि-स्वरता, एकर नव्य-न्याय आ लोक-गीतक अद्भुत संयोग, आ एकर केन्द्रीय नैतिक आग्रह—'नाम राखू'—एकरा समकालीन मैथिली उपन्यासमे विशिष्ट बना दैत अछि।

जँ कोनो सीमा अछि, तँ ओ एकर घनत्व थिक: दार्शनिक अष्टकक सघन तर्क-जाल सामान्य पाठककेँ आरम्भमे रोकि सकैत अछि। मुदा जे पाठक ओहि द्वारसँ प्रवेश करैत अछि, ओकरा लेल ई खण्ड एकटा दुर्लभ अनुभव खोलैत अछि—जतय दर्शन कथा बनि जाइत अछि, इतिहास लोकगीत बनि जाइत अछि, आ स्मृति प्रतिरोध बनि जाइत अछि।

दीप बुझय, पर्दा खसय हे, मुदा नाम जागल रहै रे — जे गाम अपन नाम राखल, तकर कथा कहियो नहि मरै।

— अध्याय [-१], "अन्तिम साक्षी" केर भरतवाक्य

❖

भाग-दुइ

मुख्य उपन्यास (खण्ड १–२) — कृतिसार तथा आलोचना

गोहि सभक बीच जलसमाधि

कृतिसार तथा भारतीय-पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे आलोचनात्मक मूल्यांकन

लेखक: गजेन्द्र ठाकुर

१. प्रस्तावना

“गोहि सभक बीच जलसमाधि” आधुनिक मैथिली उपन्यासक क्षेत्रमे एक असाधारण, विराट आ बहुस्तरीय कृति अछि। तीन खण्ड — खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल: अध्याय −१०० सँ −१), खण्ड-१ (अध्याय ० सँ १००) आ खण्ड-२ (अध्याय १०१ सँ २००) — मे विभक्त, कुल तीन सय एक अध्यायक ई रचना परम्परागत कथानकक सीमामे आबद्ध नहि रहि लोकमहागाथा, अभिलेखीय आख्यान, सामाजिक यथार्थ, दार्शनिक उपन्यास, रहस्य-अनुसन्धान, लोकनाट्य, स्मृति-वृत्तान्त आ प्रतिरोधक सामुदायिक दस्तावेज—एहि सभ रूपकेँ एक-दोसरामे गुंथि दैत अछि। कृतिक केन्द्रमे गढ़ नारिकेल नामक गाम अछि; मुदा ई गाम केवल भौगोलिक स्थान नहि, अपितु स्मृति, माटि, श्रम, जल, जाति, स्त्री-अनुभव, लोकविश्वास, तकनीकी आधुनिकता आ संस्थागत अन्यायक परस्पर टकराइत संसार अछि।

ई आलोचना मूलतः मुख्य उपन्यास — खण्ड-१ आ खण्ड-२ (अध्याय ० सँ २००) — केँ केन्द्रमे राखैत अछि; खण्ड-० (पूर्व-कथाकाल, अध्याय −१०० सँ −१) क विस्तृत साहित्यिक समीक्षा एहि अध्ययनक ‘भाग-एक’ मे पृथक् रूपेँ देल गेल अछि। तीनू खण्ड मिलि एक हजार दू सय बरखक साक्ष्य-यात्राक एकल, अखण्ड कृति बनैत अछि।

उपन्यासक मूल नैतिक प्रश्न सरल मुदा अत्यन्त गम्भीर अछि—मनुष्यक देह मरलाक बाद ओकर नाम, श्रम, अधिकार आ स्मृतिक की होइत अछि? राज्य, बाजार, अदालत, विश्वविद्यालय, दान-संस्था, बैंक, पटल, दूरभाष, अभिलेखागार आ जातिगत समाज जखन मनुष्यकेँ संख्या, प्रपत्र, खाता, प्रतिशत, छवि वा “अनुपस्थित” शब्दमे बदलि दैत अछि, तखन साहित्यक कर्तव्य की रहैत अछि? उपन्यास एहि प्रश्नक उत्तर कोनो एक नायकक विजयमे नहि, सामुदायिक स्मृति, नाम-पाठ, सहमति, गवाही, लोकगीत, बच्चाक खेल आ निरन्तर पहरामे खोजैत अछि।

कृतिक महत्त्व एहि बातमे अछि जे ई केवल अन्यायक चित्रण नहि करैत; ई न्याय पाबय लेल आवश्यक ज्ञान-पद्धति सेहो रचैत अछि। प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, अनुपलब्धि, स्मृति, अवशेष, आवाज, देह, पगचिन्ह, मुहर, फाटल कागच, रद्दी बोरा, खाली संदूक, सूखल पात, माटिक गन्ध आ पानिक हलचल—सभ प्रमाण बनैत अछि। एहि अर्थमे ई उपन्यास कथा मात्र नहि, ज्ञान आ नैतिक उत्तरदायित्वक वैकल्पिक शास्त्र सेहो अछि।

ई कृति ‘मैथिली कादम्बरी’ कहबैत अछि, आ ओकर संग तीन परिशिष्ट अछि — गढ़ नारिकेल लोककोश, अनाम ग्रह प्रसंगक मूल गीत, आ न्याय-दर्शनक मूल अन्तःकथा। ई परिशिष्ट कोनो अलङ्करण नहि; ओ कृतिक लोक-आधार, स्वप्न-आधार आ शास्त्र-आधार तीनूकेँ प्रत्यक्ष रूपेँ सोझाँ राखैत अछि।

२. एक वाक्यमे कृतिसार

गढ़ नारिकेलक नदी, पुल, अदालत, पटल, बाजार, दान-संस्था आ अभिलेखमे डूबाओल लोकक नाम बच्चा, स्त्री, श्रमिक, मृतक, पश्चात्तापशील साक्षी आ लोक-स्मृतिक संयुक्त प्रयाससँ पुनः ऊपर उठैत अछि, आ गाम अन्ततः स्वयं “नामक पहरुआ” बनि जाइत अछि।

३. विस्तृत कृतिसार

३.१ लोक-संसारक स्थापना

शून्य अध्याय गढ़ नारिकेलक लोक-सांस्कृतिक प्रस्तावना अछि। माटि, पानि, खेत, पोखरि, गाछ, बाढ़ि, श्रमगीत, विवाहगीत, स्त्री-कण्ठ, बालखेल, लोकदेवता, निर्गुण, मर्सिया, कारीगरी, पेशागत ज्ञान आ जातिगत विषमता—सभ मिलि उपन्यासक भूगोल बनबैत अछि। ई प्रस्तावना स्पष्ट करैत अछि जे आगाँक कथा कोनो रिक्त आधुनिक संसारमे नहि, एक जीवित सांस्कृतिक स्मृति-प्रदेशमे घटित होएत। गढ़ नारिकेलमे ज्ञान केवल पोथी वा कार्यालयमे नहि; हाथ, कान, पग, गीत, कहबी आ सामूहिक अनुभवमे बसैत अछि।

चन्ना गाछी एहि संसारक केन्द्रीय स्मृति-स्थल अछि। रातिमे ओतय भूत, प्रेत, राकश, लोथ, पनिडुब्बी आ अन्य अकालमृत आत्मा कबड्डी खेलैत छथि। ई खेल मनोरंजन नहि, मृतकक लोक-अदालत अछि। खेलक मूल नियम—सीमा पार करू, साँस बचाउ, नाम लऽ कऽ घुरू—सम्पूर्ण उपन्यासक रूपात्मक सिद्धान्त बनि जाइत अछि। जे नाम लऽ कऽ लौटि सकैत अछि, से इतिहासमे उपस्थित रहैत अछि; जे नाम बिसरि जाइत अछि, ओकर पारी टूटि जाइत अछि।

शून्य अध्यायमे चौबीस लोक-प्रसंग सङ्कलित अछि — डकही पोखरिक पात-दीप, धान रोपबाक गीत, बेटी-विदाइक समदाउन, मृत्यु-शोकक गीत, अरिपनक मौन गीत, झिझियाक दीप, कबीरक निर्गुण वाणी, कचहरी-तारीख आ लोकन्यायक गीतसँ लऽ कऽ डिजिटल ठगीक चेतावनी धरि। ई प्रस्तावना घोषणा थिक जे एहि कादम्बरीक पहिल आ अन्तिम पात्र लोक स्वयं थिक — ओकर गीत, ओकर स्मृति, ओकर न्याय-बोध।

३.२ पुल-दुर्घटना, डूबल श्रमिक आ नामक प्रथम संघर्ष

कथा पुल-निर्माण, नदीक दुर्घटना आ श्रमिकक असंख्य मृत्यु-दृश्यसँ तीव्र रूपेँ खुलैत अछि। आधिकारिक रजिस्टरमे तीस नाम अछि, मुदा वास्तविक मृत्यु तीन सयक आसपास संकेतित अछि। बिसेसर पासवान, सरयू, कन्हैया, शिवनाथ सदा आ अनेक अनाम श्रमिक—जिनकर श्रम पुलक भीतर गाड़ल अछि—कागचपर अनुपस्थित, अधूरा वा विकृत छथि। नदीमे देह डूबैत अछि, किन्तु व्यवस्थामे नाम डूबैत अछि।

नन्द आरुणि एहि विसंगतिक प्रथम सजग साक्षी बनैत छथि। ओ फाटल गमछा, जूता, टिफिन, अधूरा पर्चा, डायरी आ छपाकक आवाजकेँ प्रमाण रूपमे पढ़ैत छथि। "छपाक" एतय केवल देहक पानिमे खसब नहि, व्यवस्था द्वारा मनुष्यक गायब करबाक ध्वनि अछि। नन्दक आवेदन, मृतक-सूची आ दैनन्दिनी कथा केँ अदालत, कार्यालय आ दूरस्थ वित्तीय संसार धरि लऽ जाइत अछि।

३.३ गोहिक रूप-विस्तार

पहिल खण्डक आरम्भिक अध्याय सभमे "गोहि" क्रमशः अनेक संस्थागत रूप धारण करैत अछि। अदालतमे ई "तारीखक गोहि" अछि, जे वादीक वर्ष खाइत अछि। महामारीक समय "श्वासक भाव" बनि जीवनकेँ बाजारक वस्तु बनबैत अछि। पटल आ दूरभाषमे ई अंककीय जुआ, ऋण, छल, ब्लैकमेल आ निजताक चोरी बनि प्रवेश करैत अछि। "देहक बाजार" स्त्रीक देह, छवि, सहमति आ लाजकेँ वस्तु बनबैत अछि। "धनक कारी नदी" अवैध खाता, म्यूल खाता, विदेशक नली, दान आ वित्तीय अपराधक गुप्त प्रवाह अछि।

हार्वर्डक नैतिक भाषण, एडवर्ड ब्रूमक सभ्य वाक्य, चन्द्रपाल बत्राक वित्तीय पटल, राघव "सिग्नल" क मिटैत सन्देश, लाउ किन-हंगक नामहीन खाता आ बटुकनाथ हरिहरनक विधिक चातुरी—ई सभ मिलि देखबैत अछि जे आधुनिक शोषण केवल स्थानीय गुंडागर्दी नहि; ओ ज्ञान, प्रतिष्ठा, तकनीक, कानून, पूँजी आ वैश्विक नैतिक भाषाक गठजोड़ अछि।

३.४ चन्ना गाछीक अदालत आ पराजितक नब राजनीति

मनुष्यक अदालत विलम्ब, लाल फीता आ विजय-पत्र दैत अछि; चन्ना गाछीक अदालत स्मृति, नाम आ आत्मस्वीकार माँगैत अछि। एतय मृतक निर्णायक नहि, नैतिक दर्पण बनैत छथि। धूर्त सभ बाहरी अदालतमे जीतल रहितो भीतरक अदालतमे पराजित होइत अछि। हुनकर दण्ड जेल वा फाँसी नहि, अपन कएल कार्यक नाम पढ़ब, उच्चारण करब, घर धरि पहुँचब आ ओकर भार उठाब अछि।

उपन्यासक अत्यन्त मौलिक पक्ष ई अछि जे "हारल लोक" प्रतिशोधक नारा नहि लगबैत, अपन काजमे लगि जाइत छथि। देविका अंककीय ठगी-विरोधी शिक्षा चलबैत छथि; मीरा निजता, सहमति आ दृष्टिक अधिकारक मण्डल बनबैत छथि; ईरा विदेशक नैतिक मंचपर नाम पढ़ैत छथि; गोप कुमार अभिलेख सुरक्षित करैत छथि; बच्चा सभ नामक पाठशाला खोलैत छथि। एहि प्रकार विजयक परिभाषा बदलि जाइत अछि। वास्तविक विजय विरोधीकेँ हराबयमे नहि, समाजकेँ एहन बनाबयमे अछि जतय अगिला पीड़ित अकेला नहि रहए।

३.५ नामक पाठशाला आ पीढ़ीगत उत्तराधिकार

अनन्या आ आरुणि अगिला पीढ़ीक प्रतिनिधि छथि। ओ सभ मृतकक नाम “उपस्थित” कहि पढ़ैत छथि। नाम-पाठ केवल सूची-पाठ नहि; परिवार, श्रम, अधूरा सपना, देह आ अधिकारक पुनर्स्थापन अछि। “स्क्रीनक विरुद्ध पाठशाला”, “निजताक शपथ”, “तीन कंकड़”, “नामक उच्चारण”, “नामक नाव”, “पोतीक कापी” आ “अगिला आवाज” जेकाँ अध्याय सभ स्मृतिरक्षाकेँ शैक्षिक क्रियामे बदलि दैत अछि।

तीन कंकड़—घर, भय, सपना—बाल-नैतिक शिक्षाक सूत्र बनैत अछि। बच्चा सभ प्रत्येक नामसँ पूछैत छथि: ओकर घर कतय, ओकर भय की, ओकर सपना की? एहि प्रश्नसँ मृतक आँकड़ा नहि, पूर्ण मनुष्य बनैत अछि। शिक्षा एतय पुस्तकक स्थिर पाठ नहि, समुदायमे जीवित गवाही सुनबाक अभ्यास अछि।

३.६ कटान, स्मृतिक वस्तुकरण आ नब संघर्ष

चन्ना गाछीक कटानक बाद ठूँठ बाँचि रहैत अछि। ठूँठ घायल स्मृति अछि—विनष्ट, किन्तु निष्प्राण नहि। नगरपालिकाक सूचना-पत्र, विरासत-परियोजना, स्मृति पर निविदा, स्मारक-अनुप्रयोग, हार्वर्डक शोध-दल, नकली भूतक जुलूस आ दान-पत्र स्मृतिसभकेँ पुनः बाजारक वस्तु बनाबय चाहैत अछि। मृतकक कथा पर अधिकार, छवि, मंचन, शोध आ पर्यटनक प्रश्न उठैत अछि। मीरा “दृष्टिक अधिकार” आ देविका स्मृतिकेँ अनुमति बिनु उपयोगक विरुद्ध ठाढ़ होइत छथि।

उपन्यास एतय अत्यन्त आधुनिक प्रश्न उठबैत अछि—पीड़ितक कथा के कहत? ओकर छवि के रखत? मृतकक सहमति सम्भव नहि तँ परिवार, समुदाय आ मर्यादाक भूमिका की? स्मारक न्याय अछि कि स्मृतिबजार? एहि प्रश्नसभक उत्तर एकरेखीय नहि; कथा निरन्तर सहमति, सहभागी निर्णय आ रिक्त स्थानक सम्मानपर बल दैत अछि।

३.७ स्त्री-सभा, श्रमिकक पएर आ नामक संविधान

स्त्री सभक राति-सभा उपन्यासक नैतिक केन्द्रमे सँ एक अछि। पुरुष-प्रभुत्वशाली सार्वजनिक वाक्यक बाद स्त्री-कण्ठ अनुभवक असली देह खोलैत अछि। कमीजक नमी, फाटल एड़ी, लाल डोरी, पुत्रक प्रतीक्षा, निजताक घाव, घरेलू मौन आ जातिगत अपमान—ई सभ आधिकारिक गवाहीसँ बेसी प्रामाणिक बनैत अछि।

“मजदूरक पाँव” श्रमक इतिहासकेँ पुलक वास्तुशिल्पसँ नहि, देहक थकान, फाटल एड़ी आ पसीनासँ पढ़ैत अछि। “स्क्रीनक उपवास” दृष्टि आ श्रवणकेँ पुनः मनुष्यक चेहरा दिस घुरबैत अछि। “सत्यव्रतक जन-सुनवाई” आ “नामक संविधान” सामुदायिक नैतिक विधान बनबैत अछि—नाम नहि मेटाएब, निजता नहि बेचाएब, देहक अपमान नहि करब, स्मृति पर ठेका नहि लगायब, अनुपस्थितक नाम पूछब।

३.८ बाढ़ि, गोहिक वापसी आ आंशिक आत्मस्वीकार

पुनः बाढ़ि कथा केँ जलक मूल संकट दिस घुरबैत अछि। गोहि सभक वापसी स्पष्ट करैत अछि जे एक जीत स्थायी समाधान नहि। लोभ सदैव नब कागच, नब प्रस्ताव, नब संस्था आ नब तकनीकी रूपमे लौटि सकैत अछि। लाउ किन-हंग अपन नामहीनताक बाल्यकालीन घावकेँ पहचानैत अछि; बटुकनाथ देरसँ आयल क्षमा माँगैत अछि; चन्द्रपाल बुझैत अछि जे ओकर पूरा जीवन म्यूल खाता बनि गेल; राघवक मेटाओल सन्देश अन्ततः अमिट गवाही बनैत अछि; सत्यव्रत अपन मौनक स्वीकार करैत छथि।

उपन्यास अपराधक कारण आ अपराधक क्षमा बीच स्पष्ट भेद राखैत अछि। बाल्यकालीन अपमान, भय वा सामाजिक घाव अपराधकेँ बुझबा योग्य बनबैत अछि, निर्दोष नहि। आत्मस्वीकार आवश्यक अछि, किन्तु न्याय, प्रतिपूर्ति आ सार्वजनिक उत्तरदायित्वक स्थान नहि लैत।

३.९ गज-ग्राह दृष्टान्त आ अनाम ग्रह

पहिल खण्डक अन्त “गज, ग्राह, आ बच्चाक हाथ” मे होइत अछि। पुराणक गज-ग्राह आख्यानकेँ उपन्यास नब अर्थ दैत अछि। बलवान गज आ पकड़निहार ग्राहक द्वन्द्वक समाधान ऊपरसँ चमत्कारी उद्धारमे नहि, बच्चाक हाथ, नाम सुनब आ सामुदायिक सहयोगमे अछि।

दोसरा खण्डक आरम्भमे आरुणि आ बच्चा सभ अनाम ग्रहक स्वप्न देखैत छथि। ओ ग्रह दुःख-विहीन अछि, कारण स्मृति मेटाओल गेल अछि; घरपर नामक बदला संख्या अछि। ई आदर्शलोक वास्तवमे विस्मृतिक निरंकुश व्यवस्था अछि। दुःख मेटाबयक नामपर

इतिहास, अपराध आ सम्बन्ध मेटाओल गेल अछि। बच्चा सभ ग्रहक बीच कबड्डी खेलि नाम घुरबैत छथि। अन्ततः गढ़ नारिकेल घावसहित पृथ्वी चुनैत अछि। ई चुनाव निराशा नहि, उत्तरदायित्वक स्वीकृति अछि—अपूर्ण पृथ्वी छोड़ि स्मृतिहीन स्वर्गमे भागब नैतिक पलायन होएत।

३.१० पृथ्वीक पहरा: बीजसँ न्याय धरि

अध्याय १०५ सँ १३२ धरि कथा पृथ्वीक तत्व आ सामाजिक देहक पहरा रचैत अछि। बीज भविष्यक गवाही अछि; बीजक चोरी काल्हिक अन्नक चोरी। माटि स्वामित्व, जाति, अधिग्रहण, रसायन आ ऋणक प्रश्न उठबैत अछि। जल स्मृति राखैत अछि; आगि जराओल कागचक राखकेँ गवाही बनबैत अछि; वायु सामूहिक अधिकार अछि; आकाशक रिक्ति पलायनक आह्वान नहि, उत्तरदायित्वक प्रश्न अछि।

शब्दक देह, अर्थक आत्मा, कण्ठक पहरा, मौनक उत्तराधिकार, स्मृतिक ऋण, देहक अधिकार, श्रमक देह आ न्यायक देह—ई क्रम सामाजिक न्यायकेँ अमूर्त संकल्पनासँदेहधारी व्यवहारमे उतारैत अछि। “जातिक पिंजरा” परम्परा, भोजन, विवाह, स्पर्श, श्मशान आ रसोइमे जातिक सूक्ष्म उपस्थिति देखबैत अछि। “गंगेशक मुक्ति” मिथिलाक महान दार्शनिककेँ केवल पूजनीय प्रतीक नहि, प्रश्न करबाक अधिकारक प्रतिनिधि बनबैत अछि। “तत्त्वचिन्तामणिक पात” प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द आ अनुपलब्धिक ज्ञानमीमांसाकेँ लोकन्यायक साधन बनबैत अछि।

अन्न, भूख, प्यास, नून, स्वाद, साझा थारी आ रसोइक गणराज्यक अध्याय सभ स्पष्ट करैत अछि जे न्याय केवल न्यायालयक निर्णय नहि; ओ खेत, मेड़, पानि, चूल्हि, भोजन, साझा आसन आ जातिमुक्त रसोइमे मूर्त होइत अछि। एकहि थारीमे भोजन समाजक गूढ़ सत्ता-संरचनाकेँ चुनौती दैत अछि।

३.११ नाटकक भीतर उपन्यास, उपन्यासक भीतर जन-सुनवाई

विदेह नाट्य उत्सवक प्रसंगमे उपन्यास अपनहि पहिल एक सय बत्तीस अध्यायकेँ नाट्य-पाठमे बदलैत अछि। कथा मंचपर चढ़ैत अछि, किन्तु सारांश बनि अपन देह नहि गमबैत। मंचनक बाद तालीक सन्नाटा, दर्शकक गवाही, मंचसँ बाहरक जुलूस, बाटक रंगमंच आ चल चौपाल—ई क्रम कलाकेँ प्रदर्शनसँ सामाजिक उत्तरदायित्व धरि लऽ जाइत अछि।

दर्शक निष्क्रिय उपभोक्ता नहि रहैत; ओ गवाह बनैत अछि। हाथ ताली बजबैत अछि, हस्ताक्षर करैत अछि, अपराधो करैत अछि आ गवाही सेहो दैत अछि। नाटक जखन बाटपर उतरैत अछि, मंचक पदानुक्रम टूटैत अछि। लोकधर्मी प्रदर्शन जन-लेखन आ चलैत अदालत बनि जाइत अछि।

३.१२ अभिलेखीय अनुसन्धान: बरामदासँ शहरक खाता धरि

अध्याय १४१ सँ कथा विस्तृत अभिलेखीय अनुसन्धानक रूप ग्रहण करैत अछि। बरामदा प्रतीक्षाक मध्यावस्था अछि; रेकर्ड-घर रोकल समयक अन्हार; रद्दी बोरा फेकल जीवनक गवाही। फाइलक नाम देहरी धरि घुरैत अछि। डरमे दरार पड़ैत अछि। मुहरक दाग कागचसँ बेसी हाथपर गाढ़ देखाइत अछि। घर-घरक दस्तक आदेशसँ नहि, अनुमतिसँ देल जाइत अछि।

मिलावट पहचान, जालक नक्शा, मुहरक छाया, आदेशक स्रोत, संकेतक पाछाँ नाम, बाबाक वचन, सेवाक खाता, दानक ऋण, लोहेक संदूक, सहमति-कापीक मिलान, मृतकक सहमति आ गोदामक छाया—ई सभ अध्याय संस्था, दान, श्रद्धा, भूख, दवा आ सहायताकेँ कोना सहमति-अपहरणक औजार बनाओल जाइत अछि, तकर सूक्ष्म विवेचन करैत अछि। बीमारीक राति वा भूखक दिन लेल गेल अँगूठा स्वेच्छा नहि। मृत्युक बाद बनाओल सहमति सभसँ सस्ता कागच आ सभसँ महग अपराध अछि।

३.१३ दूरभाष, आवाज आ भयक उद्योग

फोनक कैद, आवाजक मोहर, हटायल कागचक निशान, चन्द्रपालक छायाक पेट, इमली घाटक कोठार, नदी पारक आवाज, शहरक गला, चन्द्र दू आ चन्द्र एकक खोल—ई क्रम अंककीय ठगीक जालकेँ सामाजिक भरोसा, पेंशन, मुकदमा, परदेशी पुत्र, स्त्री-नाम, वृद्धक भय आ संस्थागत आवाजसँ जोड़ैत अछि। अपराधी केवल तकनीकी युक्ति नहि उपयोग करैत; ओ परिवारक बोली, मायक स्वर, सरकारी आदेशक लय, पंखाक ध्वनि, स्टेशनक समय आ स्थानीय विश्वासक नकल करैत अछि।

चन्ना गाछीक “अदृश्य अदालत” पीड़ितक भय खोलबाक सुरक्षित स्थल बनैत अछि। गाँठ धीरे-धीरे पढ़ल जाइत अछि; झटका नहि देल जाइत। पंजीक पहरा, चौखट, मुहरबाहक, सेवा-समारोह, घर-घरक कागच, ऊपरक कोठरी, मुहरक पगचिन्ह आ शहरक खाता अपराधक स्थानीय आ शहरी सूत्र जोड़ैत अछि।

३.१४ अपराधक अन्तिम परत आ नामक पुनरुत्थान

सिमक छाया, सेवा-केंद्रक दरबाजा, फोनक भीतरक चेहरा, आवाजक नकाब, मास्टरक कमरा, मधवेशक असली नाम, छत्ताक भीतरक रानी, महेश्वरक मुहर, लोहेक पेटी, नील पंजी, ध्रुवेशक कुर्सी, बन्द रेकॉर्डरक स्वर, आवाजक चेहरा, साँसक समन आ रोकल खाता—ई अध्याय अपराधक बहुस्तरीय संगठनखोलैत अछि। मधुकर माधव मिश्र, महेश्वरनाथ सेवक, ध्रुवेश आ सम्बद्ध संस्था सभ नाम, स्त्री-खाता, आवाज, मुहर, सहायता-सूची आ भयक कारोबार चलबैत अछि।

खाता रोकब न्याय अछि, मुदा उपन्यास सावधान करैत अछि जे गरीबक पेंशन, छात्रक सहायता वा वैध चूल्हि न बुझए। सत्यक कठोरता आ करुणाक विवेक एकसंग आवश्यक अछि। “जलसमाधिक अर्थ” अध्याय शीर्षकक सार खोलैत अछि—पानि अपराधी नहि; असली डुबेनिहार ओ व्यवस्था अछि जे देहक बाद नामो छीनि लैत अछि। किनारपर ठाढ़ लोकक चुप्पी जलसमाधिक गहिराइ बढ़बैत अछि।

“ऊपर उठल नाम” तमाशाक विरोध करैत अछि। पीड़ितक अनुमति, परिवारक मौनक सम्मान आ प्रतीक्षाक अधिकार आवश्यक अछि। “अपराधीक धरती” प्रमाण-संरक्षणक नैतिक अनुशासन सिखबैत अछि। “संदूकक भीतरक बिहान” शिवनाथ सदाक नामकेँ झूठी अनुपस्थितिसँ निकालि घरक देहरी दैत अछि। अन्तिम अध्याय “नामक पहरुआ” मे गाम तीन सय एक अध्यायक शीर्षक पुनः पढ़ैत अछि। मृतक निर्णायकक डण्डा जीवित सभकेँ दैत छथि। बच्चा सभ फेर घेरा बनबैत अछि—जे सीमा पार करत, एक नाम लऽ कऽ घुरत। कथा रुकैत अछि, समाप्त नहि; कारण न्याय एक बेरक निर्णय नहि, निरन्तर पहरा अछि।

४. प्रमुख पात्र आ सामुदायिक नायकत्व

ई उपन्यास परम्परागत अर्थमे एक नायकक कथा नहि। एकर असली नायक “गढ़ नारिकेलक जागल समुदाय” अछि। तथापि किछु पात्र विशिष्ट नैतिक आ संरचनात्मक भूमिका निभबैत छथि।

नन्द आरुणि प्रथम गवाह, अभिलेखक आ नैतिक आरम्भकर्ता छथि। हुनकर डायरी, आवेदन आ छपाकक हिसाब कथा केँ निजी दुःखसँ सार्वजनिक प्रमाण धरि लऽ जाइत अछि। हुनकर महत्त्व एहि बातमे अछि जे ओ असम्भव सत्यक महिमामण्डन नहि करैत; छोट-छोट वस्तु, अधूरा नाम आ अनुपस्थित पंक्तिकेँ जोड़ैत छथि।

आरुणि उत्तराधिकारक सजग युवा चेतना अछि। ओ तकनीक, रजिस्टर, स्वप्न आ लोकस्मृतिक बीच सेतु बनैत अछि। अनन्या बाल-नैतिक बुद्धिक सर्वाधिक प्रभावशाली प्रतिरूप अछि। ओकर प्रश्न जटिल संस्थागत भाषाकेँ सहज मानवीय कसौटीपर जाँचैत अछि। ओ वीरांगना रूपमे निर्भय नहि, डर सहित जिम्मेदार अछि; एहि कारण ओकर चरित्र विश्वसनीय बनैत अछि।

मीरा दृष्टि, देह, छवि, निजता आ सहमतिक नैतिकता प्रतिनिधित्व करैत छथि। हुनकर भूमिका आधुनिक दृश्य-संस्कृतिक आलोचनामे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ओ पीड़ितक छवि, मृतकक स्मृति वा स्त्रीक देहकेँ जनहितक नामपर मुक्त वस्तु मानबाक विरोध करैत छथि।

देविका प्रतिरोधक शैक्षिक रूप अछि। उज्ज्वलक मृत्युकेँ निजी लाज नहि, सामाजिक चेतावनी बनबैत छथि। ईरा वैश्विक नैतिक मंचक खोखलापनक भीतर स्थानीय नामक प्रवेश करबैत छथि। सत्यव्रत मेहता विधि-संस्थाक भीतरक विवेक छथि—देर सँ जागल, मौनक दोषसँ ग्रस्त, मुदा आत्मस्वीकार आ सार्वजनिक गवाही लेल प्रस्तुत।

बा, फूलकली, सुरमणी, जगमाया, शान्ति, धीरमती आ स्त्री-सभाक अन्य पात्र लोक-स्मृति, शोक, सहमति, भोजन, देह आ नैतिक धैर्यक धारक छथि। भूत, प्रेत, पनिडुब्बी आ बूढ़बा भूत मृतक मात्र नहि; ओ सामुदायिक स्मृतिक रूपक छथि।

चन्द्रपाल, बटुकनाथ, राघव, लाउ, ब्रूम, मधुकर, महेश्वर, ध्रुवेश आदि खल-पात्र एकरूप राक्षस नहि। ओ पूँजी, विधि, तकनीक, दान, प्रतिष्ठा, नामहीनता, भय आ सेवा-भाषाक विभिन्न गठजोड़ प्रतिनिधित्व करैत छथि। किछु पात्रक मनोवैज्ञानिक पृष्ठभूमि देल गेल अछि, मुदा उपन्यास हुनकर घावकेँ अपराधक क्षमा नहि बनबैत।

५. पात्र-लेखा-जोखा — समग्र यात्राक बाद

तीन खण्ड, तीन सय एक अध्यायक ई लम्बा यात्रा समाप्त भेलाक बाद, चन्ना गाछीक ठूँठ लग बैसि जँ हिसाब लेल जाय — के की पेलक, के की गमेलक, आ के कतय हेरा गेल — तँ ई लेखा-जोखा सामने अबैत अछि।

१. जिनकर नाम मृत्युक बादो फेर भेटलनि

बिसेसर पासवान — पुलक पायापर मृत्यु, रजिस्टरमे 'अनुपस्थित' लिखल गेल, मुदा समग्र यात्राक अन्तमे ओकर जूता, ओकर नाम, आ ओकर श्रम गामक स्थायी स्मृतिमे, माटिक पट्टिकापर, आ लोहाक पेटीक गवाहीमे अमर भऽ गेल। ओ किछु नहि पेलक जे ओकरा घुरा सकय, मुदा ओकर नाम पेलक — जे एहि उपन्यासक सभसँ पैघ 'जीत' थिक।

सरयू — स्त्री-मजदूर, जकर नाम आधिकारिक रूपेँ अस्तित्वहीन छल (पतिक नाम पर काज करैत छलि), अन्तमे अदालतक कक्षमे सत्यव्रत मेहता द्वारा सार्वजनिक रूपसँ पढ़ल गेल। ओकर अँगूठाक निशान, जे कहियो कानूनक लेल अदृश्य छल, अन्ततः न्यायक पहिल पाठ बनल।

छोटू (भोलटुन) — मुसहरिनक नाबालिग बेटा, जकर असली नाम गामक सामूहिक स्मृतिसँ फेर सँ खोजल गेल। मुनिया, धनेसरी, नगीना आ आर बहुत गोटे — सभक नाम अन्तिम अध्यायक 'मौनक नामावली' आ माटिक पट्टिकापर अमर भऽ गेल। जिनकर नाम कतहु नहि भेटल, हुनका लेल रिक्त ठाम राखल गेल — बा कहली छली, रिक्त ठामो गवाही थिक।

उज्ज्वल झा — डिजिटल-अरेस्ट ठगीक शिकार भऽ आत्महत्या केलक, अपन जीवन गमेलक, मुदा ओकर मृत्युए पूरा जालक (चन्द्रपाल बत्रा, राघव सिग्नल, लाउ किन-हंग) उद्घाटनक बीआ बनल। ओकर बहिन देविका साहक संघर्षसँ ओकर नाम गामक न्याय-आन्दोलनक प्रतीक बनि गेल — व्यक्तिगत क्षति सामूहिक जागृतिमे बदलल।

२. जीवित पात्र जिनक यात्रा पूर्ण भेल

नन्द आरुणि आ हुनकर वंश

नन्द आरुणि — खण्ड-१ क मूल साक्षी, अपन इंजीनियरिंगक करियर गमेलनि (स्थानान्तरण, बहिष्कार), मुदा 'एक प्रति माय लग, एक पानि लग, एक हवा लग' क सिद्धान्त दऽ गेलाह जे पूरा उपन्यासक गवाही-रक्षाक आधार बनल। बा — मातृ-स्वर, अन्त धरि जीवित रहलीह, अपन परिवारक तीन-चारि पीढ़ीकेँ न्यायक मार्गपर चलैत देखलनि — सभसँ पैघ प्राप्ति। आरुणि (नन्दक वंशज) — अदालतमे अन्तिम विजय (नाम-पाठ) देखलनि, गामक नेतृत्व सम्हारलनि। अनन्या — बाल्यकालसँ पाठशालाककेन्द्रीय शिष्या, अन्तमे पंजीक रखबारि (गामक स्थायी अभिलेखपाल) बनि गेली — सभसँ पैघ जिम्मेदारी हुनका भेटलनि।

नव पीढ़ीक अगुआ

ईरा आरुणि — विदेशमे जन्मल, हार्वर्डमे एडवर्ड ब्रूमकेँ चुनौती देलनि, अपन कुलनामकेँ बोझ नहि प्रमाण बुझय लगलीह — विदेशी संस्थाक पाखण्डपर विश्वास गमेलनि, मुदा अपन जड़ि फेर पेलनि। मीरा (मृणालिनी आर्या) — निजताक चोरी आ ब्लैकमेलक शिकार भेली, मुदा अपन प्रेम (अदिति) आ अपन गरिमा नहि गमेलनि — शिकार नहि, साक्षी बनि बजबाक साहस पेलीह। देविका साह — अपन भाइ उज्ज्वल हमेशाक लेल गमेलीह (ई क्षति अपूरणीय अछि), मुदा एहि क्षतिसँ ओ गामक सभसँ साहसी आवाज बनि उभरलीह। फूलमति — देह-व्यापारक जालसँ मुक्त भेली, अपन असली नाम सार्वजनिक रूपसँ फेर पेलनि — 'हमर नाम फूलमति अछि, एफ०एम० नहि' कहबाक अधिकार।

अन्वेषक आ न्यायक पक्षधर

गोप कुमार — अपन कॉर्पोरेट करियर गमेलनि (अधिकार घटाओल गेल, फोल्डरसँ बाहर कएल गेल), मुदा पूरा जालक भेद खोलबाक श्रेय आ नैतिक सन्तोष पेलनि — तीन-प्रति-प्रणालीकजनक बनलाह। सौम्या रामनाथन आ रमैय्या सुब्रमण्यम — निरन्तर सहयोगी भूमिकामे रहलाह, अपन विश्वसनीयता आ गामक भरोसा पेलनि। सत्यव्रत मेहता — सरकारी वकीलक आरामदायक करियर आ पुरान मित्रता गमेलनि, मुदा इतिहासमे ओ लोक बनलाह जे राज्यक विरुद्ध सत्यक पक्षमे ठाढ़ भेलाह — अदालतमे मृतकक नाम पढ़ब हुनकर जीवनक सभसँ पैघ गवाही बनल।

३. अपराधी पात्र — पतन आ आंशिक प्रायश्चित्त

बटुकनाथ हरिहरन — बार काउन्सिलक चमक, प्रतिष्ठा, आ नैतिक अधिकार गमेलाह; बेटाक एक प्रश्नसँ ('न्याय बचेलहुँ कि पेशा?') भीतरसँ हिलि गेलाह; अन्तमे विलम्बित क्षमा-याचना केलनि, मुदा जे वर्ष बर्बाद भेल, से नहि घुरल। ओकर खाता रोकल गेल, नाम अपराधी-सूचीमे दर्ज भेल।

चन्द्रपाल बत्रा — म्यूल-अकाउण्ट जाल पूर्ण रूपेँ उजागर भेल, ओकर बैंक-खाता रोकल गेल; बाल्यकालक अपमानित नामक घाव (शिक्षक द्वारा नाम बिगाड़ि पढ़ब) प्रकट भेल, जे ओकर अपराधक अनजान जड़ि छल — ओ स्वयं आधा नाम लऽ कऽ जीबय बाध्य भेल छल, आ अन्ततः पूरा नामसँ पकड़ेलाह।

राघव सोमानी ('सिग्नल') — अपन माएक अन्तिम आवाज अनजानमे मेटा देने रहथिन्ह, ई क्षति ओकरा भीतरसँ तोड़ि देलक; अन्तिम, सभसँ ईमानदार संदेश लिखलाह — मुदा ओकर पूरा नेटवर्क, ओकर 'भरोसा बिनु नेटवर्क'क खेल, समाप्त भऽ गेल।

लाउ किन-हंग — हांगकांगक सूत्रधार, अपन बाल्यकालक शरणार्थी-पहचान (गलत क्रमांकसँ पुकारल जायब) क स्मृतिसँ अपन अन्तिम सौदाक निर्णय लेलाह; ओकर खाता सेहो रोकल गेल — मुदा ओ सभसँ दूर, सभसँ अस्पष्ट रहि गेलाह, उपन्यास ओकरा व्यक्तिगत प्रायश्चित्तक कोनो दृश्य नहि दैत, केवल संस्थागत पराजय।

एडवर्ड ब्रूम — पुल, दवा, आ खेलक जालक अन्तरराष्ट्रीय चेहरा, कहियो प्रत्यक्ष दण्ड नहि पेलाह; ईराक प्रश्न आ गामक अस्वीकृत दान-पत्रसँ हुनकर नैतिक मुखौटा फाटल, मुदा उपन्यास स्पष्ट संकेत करैत अछि जे एहन शक्तिशाली अन्तरराष्ट्रीय अपराधी सभ प्रायः पूर्ण दण्डसँ बचि जाइत छथि — 'किछु अपराधी भागत, किछु पकड़ाएत' (अध्याय २००) ।

मालविका ग्रीन, मधवेश, महेश्वर, ध्रुवेश — मध्यम-स्तरीय संचालक, सभ एक-एक कऽ उजागर भेलाह, मुदा हुनकर व्यक्तिगत अन्त उपन्यास स्पष्ट नहि करैत — ई अनिश्चितता स्वयं एकटा टिप्पणी थिक जे व्यवस्थागत अपराधमे सभ दोषीक नाम आ अन्त कहियो पूर्ण रूपसँ ज्ञात नहि होइत।

४. गायब आ रहस्यमय पात्र

ईशान दत्त — सभसँ रहस्यमय पात्र, जकर छाह कहियो नहि पड़ल, जे सरकारी रिकॉर्डमे पहिनहिये 'मृत' घोषित छल। ओ पूरा उपन्यासमे सूचना आ साहस दैत रहल, मुदा अन्तमे ओ कोनो व्यक्तिगत परिणतिमे नहि पहुँचैत — ओ बस चलि जाइत अछि, ई कहैत, 'जँ कोनो एक मरत, दोसर बाजत।' ओ एक व्यक्ति नहि, अनाम सूचनादाता सभक सामूहिक प्रतीक बनि रहि जाइत अछि — ओकर 'गायब' होयब स्वयं ओकर सभसँ पैघ सत्य थिक: जे लोक सत्यक रक्षाक लेल अपन पहचान मेटा दैत छथि, ओ व्यक्तिक रूपमे कहियो पूर्ण रूपसँ नहि भेटैत।

शशिभूषण देव, महेन्द्र पाठक, विक्टर हाल्डेन, दिवाकर लाल — खण्ड-१ क आरम्भिक भ्रष्ट अधिकारी सभ, जे नन्द आरुणिक स्थानान्तरणक बाद कथासँ लोप भऽ गेलाह — हुनकर कोनो हिसाब कहियो पूर्ण नहि भेल, जे निम्न-स्तरीय भ्रष्टाचारक दण्डहीनताक यथार्थवादी चित्रण थिक।

बूढ़बा भूत, हुलासी, पनिडुब्बी, लोथ, राकश, डाइन, पीपरक ब्रह्मा — गढ़ नारिकेलक लोकोत्तर न्यायाधीश सभ, जे बारह सय बरखसँ मृतकक न्याय करैत छला, अन्तिम अध्यायमे स्वेच्छासँ अपन निर्णायकक डण्डा जीवितक हाथमे सौंपि दैत छथि — 'आब निर्णय जीवित करथि।' ओ सभ कहियो नहि हारलाह, मुदा अपन केन्द्रीय भूमिका गमा कऽ पहरादार मात्र बनि गेलाह — ई एकटा स्वैच्छिक, गरिमापूर्ण 'हार' थिक, जे वस्तुतः पूर्ण जीत थिक।

उपसंहार

समग्र यात्राक अन्तमे बुझना जाइत अछि जे एहि उपन्यासमे कोनो एक नायक नहि जीतल आ कोनो एक खलनायक पूर्ण रूपसँ नहि हारल। जीतल अछि नाम — जे मरलाक बादो, विस्मृतिक बादो, अपराधक बादो, फेर-फेर उठि खाड़ भऽ जाइत अछि। जे किछु स्थायी रूपसँ गमाओल गेल, सएह जीवन थिक — उज्ज्वल, सरयू, बिसेसर, आ अनगिनत अनाम श्रमिकक जीवन कहियो नहि घुरत। मुदा जे बचि गेल, ओ नाम थिक, आ नामक संगे ओ जिम्मेदारी जे अनन्या आ गामक बच्चा सभ अपन कान्हपर उठा लेलनि। कथा एहि अर्थमे कहियो पूर्ण रूपसँ 'समाप्त' नहि होइत — जाधरि एको मुँह 'हम छी' कहत, ताधरि पहरा जारी रहत।

६. शीर्षकक बहुस्तरीय अर्थ

६.१ “गोहि” क अर्थ

गोहि उपन्यासमे प्राकृतिक जीवक सीमासँ बाहर जा संरचनात्मक प्रतिनायक बनैत अछि। नदीक गोहि दृश्य भय अछि; किन्तु असली गोहि अदालतक तारीख, पटल, बैंक, बाजार, विश्वविद्यालय, जाति, दान, अभिलेख, प्रतिष्ठा, निजता-चोरी, मौनआ लाभक भूखमे नुकायल अछि। गोहिक मुख्य गुण—दाँत, पकड़, घात, पानिक भीतर अदृश्य रहब आ शिकारकेँ नीचे घीचब—सभ संस्थागत हिंसाक रूपक बनैत अछि।

महत्त्वपूर्ण बात ई जे उपन्यास कोनो एक व्यक्ति केँ सम्पूर्ण दुष्टताक केन्द्र नहि बनबैत। प्रत्येक व्यक्ति जालक एक गाँठ अछि; गोहिक पूरा देह संस्था, आदत, सुविधा आ सामूहिक चुप्पीसँ बनैत अछि। एहि अर्थमे “गोहि सभ” बहुवचन अत्यन्त सार्थक अछि।

६.२ “जलसमाधि” क अर्थ

जलसमाधि कमसँकम पाँच स्तरपर अर्थवान अछि। प्रथम, ई नदीमे वास्तविक देहक डूबनाइ अछि। द्वितीय, रजिस्टरमे नामक डूबनाइ। तृतीय, ऋण, पटल, देह-बाजार, दूरभाष आ खातामे व्यक्तित्वक अदृश्य होयब। चतुर्थ, समाजक मौनमे पीड़ाक विस्मृति। पंचम, स्मृतिक भीतर पुनर्जन्म—नाम जखन पानिसँ ऊपर उठैत अछि, मृत्यु अन्तिम नहि रहैत।

एहि कारण शीर्षक करुणामय होइतहुँ निराशावादी नहि। जलसमाधि विनाशक प्रतीक अछि, मुदा जल स्वयं स्मृति, गवाही आ पुनरुत्थानक माध्यम सेहो अछि। नदी देह बहा सकैत अछि, नाम नहि।

७. प्रमुख प्रतीक आ बिम्ब-व्यवस्था

चन्ना गाछी लोक-संसद, स्मृति-अभिलेख, अदालत, पाठशाला आ रंगमंच सभ अछि। ओकर कटान इतिहासपर आक्रमण; ठूँठ घायल निरन्तरता; हरियर बिन्दु पुनर्जन्मक संकेत अछि।

नारिकेल पात वैकल्पिक पन्ना अछि। कागच झूठ, निरस्तीकरण आ मुहरक अधीन भऽ सकैत अछि; पात समुदाय, ऋतु आ प्रकृतिक स्मृति सँ जुड़ल अछि। सूखल पातो नस सभमे कथा बचा कऽ रखैत अछि।

छपाक ध्वनिक प्रतीक अछि। आरम्भमे मृत्यु, बादमे पटल टूटब, कागच खुलब, स्मृति जागब आ उत्तरक ध्वनि बनैत अछि।

नाम अस्तित्वक न्यूनतम किन्तु सर्वोच्च अधिकार अछि। नाम व्यक्ति, परिवार, श्रम, देह, उत्तराधिकार, न्याय आ स्मृतिक संगम अछि। उपन्यासमे नाम केवल भाषिक संकेत नहि, नैतिक सम्बन्ध अछि।

कबड्डी साँस, सीमा, जोखिम, वापसी आ सामुदायिक नियमक रूपक अछि। सीमा पार करब साहस अछि; नाम लऽ कऽ घुरब उत्तरदायित्व; साँस बचायब स्मृति; साथी सभक आवाज समुदाय।

खाली पट्टिका, रिक्त संदूक, हटायल पन्ना, धूलिक निशान आ अनुपस्थित कुर्सी अभावक सक्रिय प्रतीक छथि। जे नहि अछि, सएह प्रश्न बनि उपस्थित होइत अछि।

मुहर, खाता, पंजी, संदूक, रेकॉर्डर आ दूरभाष संस्थागत देहक प्रतीक छथि। ई वस्तु तटस्थ नहि; मानव हाथ, भय, लाभ आ इतिहासक छाप राखैत अछि।

८. भारतीय साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे मूल्यांकन

८.१ रस-सिद्धान्त

कृतिक स्थायी भाव करुणा अछि। डूबल श्रमिक, प्रतीक्षारत माए, फाटल एड़ी, खाली थारी, मेटाओल नाम, देहक बाजार, मृतकक सहमति आ बरखों लटकल न्याय करुण रस उत्पन्न करैत अछि। मुदा ई निष्क्रिय करुणा नहि। करुणाक भीतर रौद्र, वीर आ शान्त रसक क्रमिक रूपान्तरण होइत अछि।

रौद्र रस अन्यायक विरुद्ध सामुदायिक क्रोधमे प्रकट होइत अछि, किन्तु उपन्यास ओकरा हिंसक प्रतिशोधमे नहि बहबैत। वीर रस नाम लिखब, गवाही देब, अनुमति माँगब, अभिलेख बचाब, जातिक पिंजरा तोड़ब आ भयक गाँठ खोलबमे अछि। अद्भुत रस भूतक कबड्डी, पातपर अक्षर, जलक स्मृति आ अनाम ग्रहकस्वप्नसँ जन्मैत अछि। भयानक रस गोहि, अन्हार रेकर्ड-घर, नकली आवाज आ

पनिडुब्बीक संसारमे अछि। वीभत्स रस देह-बाजार, मृतकक सहमति, जाली अँगूठा आ मनुष्यक पीड़ाकेँ लाभमे बदलबाक प्रक्रियामे प्रकट होइत अछि।

अन्तिम शान्त रस विरक्त निस्तब्धता नहि, सजग नैतिक समत्व अछि। मृतक निर्णायकक डण्डा रखि दैत छथि आ जीवित लोक पहरा ग्रहण करैत अछि। अभिनवगुप्तक अर्थमे करुणाक साधारणीकरण दर्शककेँ निजी शोकसँ ऊपर उठा सार्वभौम मानवीय अनुभव धरि लऽ जाइत अछि; किन्तु उपन्यास विशिष्ट नाम मेटा कऽ सार्वभौमिकता नहि बनबैत। ओकर साधारणीकरण नामक विशिष्टता बचा कऽ होइत अछि।

८.२ ध्वनि-सिद्धान्त

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक आलोकमे ई कृति अत्यन्त समृद्ध अछि। “गोहि”, “जलसमाधि”, “छपाक”, “नाम”, “ठूँठ”, “पात”, “साँस”, “मुहर” आ “रिक्ति” क वाच्यार्थ सीमित अछि, मुदा व्यंग्यार्थ विशाल। “तारीखक गोहि” मे तारीख केवल दिन नहि, न्याय-भक्षणक संरचना ध्वनित करैत अछि। “स्क्रीनक गोहि” पटलकेँ डिजिटल माध्यमसँ अधिक मनोवैज्ञानिक शिकार-क्षेत्र बनबैत अछि।

रसध्वनि विशेषतः ओहि ठाम प्रभावशाली अछि जतय दृश्य अपनहि अर्थ खोलैत अछि—खाली पट्टिका, ठूँठमे हरियर बिन्दु, मृतकक हस्ताक्षर, नाम लऽ कऽ कबड्डी खेलैत बच्चा, ध्रुवेशक जूता, पातपर ओस। एहन दृश्यक बाद अर्थ पाठकक भीतर प्रतिध्वनित होइत अछि।

८.३ वक्रोक्ति-सिद्धान्त

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्त अनुसार काव्यत्व साधारण कथनक विशिष्ट वक्रतामे अछि। उपन्यासक भाषा संस्थागत वस्तुकेँ जीवित रूप दैत अछि—अदालत पोखरि बनैत अछि, लाल फीता पनिडुब्बीक झोँटा, अलमारी अन्हार-घर, धूलि मुंशी, मुहर घाव, खाता नदी, पंजी पहरुआ, पटल गोहि। ई वक्रता केवल सजावट नहि; सत्ता-संरचनाकेँ दृश्य बनाबयक पद्धति अछि।

वाक्य-वक्रता आ प्रकरण-वक्रता दुनू स्तरपर रचना सशक्त अछि। “उपन्यास फेर शुरू”, “कथा समाप्त नहि भेल”, नाटकक भीतर उपन्यास, अन्तमे सभ अध्यायक पुनर्पाठ—ई प्रबन्ध-वक्रताक उदाहरण छथि।

८.४ औचित्य-सिद्धान्त

क्षेमेन्द्रक औचित्य-दृष्टिसँ लोकगीत, कबड्डी, भूतक कथा, नदी, पात, स्त्री-सभा, साझा थारी आ लोकनाट्यक प्रयोग कथा-जगतसँ स्वाभाविक रूपेँ निकलैत अछि। मिथिलाक लोक जीवन आ आधुनिक संस्थागत संकटक मेल प्रायः उचित आ सार्थक अछि।

तथापि औचित्यक कसौटीपर किछु सीमा सेहो देखाइत अछि। प्रत्येक अध्यायमे सूक्ति, गीत, दार्शनिक अन्तर्ध्वनि आ अन्तिम नैतिक वाक्यक पुनरावृत्ति कतेको बेर अर्थकेँ अत्यधिक स्पष्ट कऽ दैत अछि। जतय प्रतीक अपने बोलि रहल अछि, ओतय फेर व्याख्या ध्वनिक अवकाश घटा दैत अछि। अतः कृतिक वैचारिक औचित्य प्रबल, किन्तु कतेको ठाम कलात्मक संयम अपेक्षित बुझाइत अछि।

८.५ रीति, गुण आ भाषा

वामनक रीति-सिद्धान्तक दृष्टिसँ उपन्यासक मुख्य गुण प्रसाद आ ओज अछि। भाषा सहज बिम्ब, लोक-कहबी आ लयात्मक सूक्तिसँ अर्थ स्पष्ट करैत अछि; अन्यायक प्रसंगमे ओज प्रबल होइत अछि। स्त्री-सभा, शोकगीत, पात, ओस आ नूनक प्रसंगमे माधुर्य सेहो अछि।

कृतिक विशिष्ट रीति “लोक-अभिलेखीय रीति” कहल जा सकैत अछि—लोकभाषा, प्रशासनिक शब्दावली, तकनीकी शब्द, गीत, दार्शनिक पदावली आ न्यायिक वाक्य एकहि शैलीमे परस्पर प्रवेश करैत अछि।

८.६ साधारणीकरण आ लोकमंगल

भट्टनायकक साधारणीकरण अनुसार निजी भाव कलामे सार्वजनीन अनुभव बनैत अछि। उपन्यास बिसेसर, सरयू, शिवनाथ, उज्ज्वल, फूलकली आ अन्य विशिष्ट पात्रक दुःखकेँ समस्त विस्मृत लोकक अनुभव बनबैत अछि। किन्तु ई सार्वजनीनता अमूर्त “गरीब” वा “पीड़ित” बनाकऽ नहि, नाम, जाति, पेशा, देह आ स्थानक विशिष्टता बचा कऽ अर्जित होइत अछि।

आधुनिक भारतीय आलोचनाक लोकमंगल-दृष्टिसँ कृति साहित्यकेँ समाजक नैतिक पुनर्गठनक साधन मानैत अछि। पाठशाला, साझा थारी, जन-सुनवाई, नाटक, संविधान, स्मृति-पहरा आ अभिलेख-सुरक्षा—सभ लोकमंगलक सक्रिय रूप छथि।

८.७ लोकधर्मी आ नाट्यधर्मी

भरतमुनिक परम्परामे लोकधर्मी अभिनय जीवनक स्वाभाविक आचरणक निकट, नाट्यधर्मी शैलीबद्ध प्रस्तुति अछि। उपन्यास दुनूकेँ मिलबैत अछि। चन्ना गाछीक भूतक कबड्डी शैलीबद्ध, रूपकात्मक आ नाट्यधर्मी अछि; मजदूरक पएर, स्त्रीक एड़ी, अदालतक बरामदा, रद्दी बोरा, पेंशनक सूची लोकधर्मी यथार्थ अछि। विदेह नाट्य उत्सव एहि द्वैतकेँ स्वचेतन रूपेँ मंचित करैत अछि।

९. नव्य-न्याय आ उपन्यासक ज्ञानमीमांसा

कृतिक सर्वाधिक मौलिक बौद्धिक उपलब्धि नव्य-न्यायक प्रमाण-चिन्ताकेँ सामाजिक न्यायसँ जोड़ब अछि। प्रत्यक्ष केवल आँखिसँ देखल वस्तु नहि; देह, पग, गन्ध, ध्वनि, पसीना, माटि आ कागचक स्पर्श प्रत्यक्षक क्षेत्र बढ़बैत अछि। अनुमान धूरि, हटायल पन्नाक निशान, टायर, आवाजक साँस, मुहरक दबाव आ खाताक प्रवाहसँ अपराधक अदृश्य जाल धरि पहुँचैत अछि। शब्द-प्रमाण पीड़ितक गवाही, लोकगीत, स्त्री-कण्ठ आ बच्चाक प्रश्नमे प्रकट होइत अछि। अनुपलब्धि—जे नहि भेटल—उपन्यासक केन्द्रीय प्रमाण अछि: सूचीमे नाम नहि, संदूकमे अपेक्षित कागच नहि, कुर्सी खाली, पन्ना हटायल, रेकॉर्डर बन्द, सहमति असम्भव।

ई ज्ञानमीमांसा अत्यन्त लोकतान्त्रिक अछि। सत्य केवल विशेषज्ञ, न्यायाधीश वा विश्वविद्यालयक अधिकार नहि। धूरि, बूढ़ मुवक्किल, स्त्रीक स्मृति, बच्चाक प्रश्न, कारीगरक आँखि आ गामक बोली सेहो प्रमाणक निर्माण करैत अछि। तथापि उपन्यास अन्ध-लोकविश्वासक समर्थन नहि करैत; मिलावट पहचान, जाँच, क्रम, प्रतिलिपि, अनुमति आ विरोधी प्रमाणक आवश्यकता मानैत अछि। एहि कारण लोकज्ञान आ तर्कक सन्तुलन बनैत अछि।

१०. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे मूल्यांकन

१०.१ अरस्तूक अनुकरण, कथानक आ करुणोन्मोचन

अरस्तूक दृष्टिसँ उपन्यास जीवनक अनुकरण करैत अछि, किन्तु एकरेखीय क्रिया, एक नायक आ एक चरमबिन्दुक परम्परागत संरचना स्वीकार नहि करैत। एकर कथानक वृत्ताकार, प्रकरणात्मक आ तरंगमय अछि। प्रत्येक संकट नब रूपमे लौटैत अछि। कारण-कार्य सम्बन्ध तथापि उपस्थित अछि—पुल-दुर्घटनासँ नामक खोज, नामक खोजसँ अदालत, अदालतसँ पाठशाला, पाठशालासँ संविधान, संविधानसँ अभिलेखीय अनुसन्धान, अनुसन्धानसँ आर्थिक आ तकनीकी जालक उद्घाटन।

अरस्तूक करुणोन्मोचन एतय केवल भय आ करुणाक भावनात्मक शुद्धि नहि। पाठक शोक करि मुक्त नहि होइत; ओकरा पहरुआ बनबाक नैतिक दायित्व भेटैत अछि। कृति करुणोन्मोचनकेँ नागरिक उत्तरदायित्वमे बदलि दैत अछि।

१०.२ लुकाच आ सामाजिक समग्रता

जॉर्ज लुकाचक यथार्थवादी समग्रता-दृष्टिसँ उपन्यासक महत्त्व स्पष्ट होइत अछि। पुलक दुर्घटना अलग घटना नहि; ओकर सम्बन्ध श्रमबाजार, ठेकेदारी, अदालत, बैंक, विश्वविद्यालय, महामारी, पटल, देहबाजार, दान, जाति, भूमि, बीज, भोजन आ वैश्विकपूँजीसँ अछि। स्थानीय गाम विश्व-व्यवस्थासँ जुड़ल सामाजिक समग्रता बनैत अछि।

कृतिक पात्रसभ कतेको बेर सामाजिक प्रकारक रूप धारण करैत छथि—वकील, वित्तीय दलाल, तकनीकी संचालक, दानगुरु, मौन अधिकारी, जागल बच्चा, स्मृति-रक्षक स्त्री। एहि प्रकारिकता सँ सामाजिक संरचना स्पष्ट होइत अछि; मुदा मनोवैज्ञानिक सूक्ष्मता कतेको ठाम घटैत अछि। ई लुकाचीय उपलब्धि आ सीमा दुनू अछि।

१०.३ मार्क्सवादी आलोचना

मार्क्सवादी दृष्टिसँ कृति श्रम आ पूँजीक असमान सम्बन्धक तीक्ष्ण आख्यान अछि। पुल श्रमिकक देहसँ बनैत अछि, मुदा लाभ ठेकेदार, वित्तीय संस्था आ प्रतिष्ठित लोककेँ भेटैत अछि। श्रमिकक नाम मेटाओल जाइत अछि, कारण नाम उत्तरदायित्व माँगैत अछि; संख्या शोषण लेल सुविधाजनक अछि।

वस्तु-पूजा आ वस्तुकरण उपन्यासक अनेक स्तरपर अछि—श्वासक मूल्य, देहक बाजार, निजताक सौदा, स्मृतिक निविदा, बीजक पेटेण्ट, पानिक निजीकरण, दानक ऋण, आवाजक नकल, स्त्री-नामक खाता। मनुष्यक श्रम आ सम्बन्ध वस्तु बनैत अछि; वस्तु—मुहर, खाता, पटल—मानवीय सत्ता प्राप्त करैत अछि।

दान आ सेवा प्रभुत्वक कोमल रूप बनैत अछि। सहायता लेल गेल अँगूठा भविष्यक मौन बनाओल जाइत अछि। ई ग्राम्शीक प्रभुत्व-सहमति अवधारणासँ मेल खाइत अछि—सत्ता केवल बलसँ नहि, विश्वास, श्रद्धा, उपकार, प्रतिष्ठा आ सामान्य-बुद्धिक माध्यमसँ टिकैत अछि।

१०.४ बाख्तिनक बहुस्वरता आ संवादिता

मिखाइल बाख्तिनक बहुस्वरता-दृष्टिसँ कृति अत्यन्त उपजाऊ अछि। लोकगीत, भूतक आवाज, बच्चाक प्रश्न, न्यायिक भाषा, तकनीकी सन्देश, स्त्री-कण्ठ, दार्शनिक अन्तर्ध्वनि, प्रशासनिक कागच, सूक्ति, पत्र, नाटक आ मौन—सभ अलग-अलग सामाजिक भाषा रूपमे उपस्थित अछि।

चन्ना गाछीक कबड्डी कार्निवलात्मक उलटफेर अछि। मृतक जीवितकेँ जाँचैत छथि, बच्चा अधिकारीकेँ प्रश्न करैत छथि, रद्दी कागच अभिलेखागारक सत्य खोलैत अछि, खाली कुर्सी सत्ता पर शासन करैत अछि। पदानुक्रम उलटैत अछि।

तथापि पूर्ण बहुस्वरता कतेको ठाम लेखकक प्रबल नैतिक वाणी सँ सीमित होइत अछि। अध्याय-अन्तक स्पष्ट निष्कर्ष, दार्शनिक अन्तर्ध्वनि आ पुनरावृत्त सूक्ति भिन्न आवाजकेँ स्वतन्त्र अन्त तक जायबासँ रोकैत अछि। पात्रक वाणी अनेक अछि, मुदा नैतिक दिशा प्रायः पूर्वनिर्धारित।

१०.५ फूको: सत्ता, अभिलेख आ जैव-राजनीति

मिशेल फूकोक दृष्टिसँ उपन्यास आधुनिक सत्ताक सूक्ष्म तन्त्र खोलैत अछि। सत्ता केवल पुलिस वा न्यायालय नहि; रजिस्टर, अस्पताल, पेंशन, विश्वविद्यालय, पहचान-पत्र, मोबाइल, बैंक, कैमरा, सहायता-सूची आ शोध-संस्था शरीर आ जनसंख्याकेँ वर्गीकृत, मापित आ नियंत्रित करैत अछि।

“तीस नाम, तीन सय लाश” जैव-राजनीतिक गणनाक क्रूरता अछि। कतेक लोक जीवित मानल जाएत, कतेक मृत, ककर मृत्यु वैध, ककर शोक सार्वजनिक—ई निर्णय सत्ता करैत अछि। निजता, आवाज आ देहक डेटा आधुनिक अनुशासनक साधन बनैत अछि।

रेकर्ड-घर, पंजी, मुहर, सहमति-कापी आ नील सूची अभिलेखीय सत्ता दर्शबैत अछि। किन्तु उपन्यास प्रतिअभिलेख रचैत अछि—पात, गीत, बच्चाक कापी, स्त्री-स्मृति, वस्तु, धूरि आ सामुदायिक प्रतिलिपि।

१०.६ देरिदा: चिह्न, अनुपस्थिति आ अभिलेख

जाक देरिदाक विखण्डन-दृष्टिसँ उपस्थित/अनुपस्थित, जीवित/मृत, कागच/पात, सत्य/प्रतिलिपि, केन्द्र/सीमा जेकाँ द्वन्द्व उपन्यासमे निरन्तर अस्थिर होइत अछि। अनुपस्थित व्यक्ति नाम, जूता, ध्वनि आ रिक्त स्थानक रूपमे अधिक तीव्र उपस्थित होइत अछि। हटायल पन्ना अपन धूरिक चौखट छोड़ैत अछि। खाली संदूक भरेल संदूकसँ बेसी प्रश्न उठबैत अछि।

“चिह्न” अपराधक बाद बाँचल अवशेष अछि। अर्थ कोनो एक अन्तिम दस्तावेजमे बन्द नहि; ओ पात, जल, स्मृति, देह, आवाज आ पुनर्पाठमे फैलैत अछि। अन्तमे अध्यायक शीर्षक पुनः पढ़ल जाएब अभिलेखक पुनरावर्तन अछि—पाठ अपनहि इतिहासक प्रतिलिपि बनैत अछि।

१०.७ स्मृति आ आघात-सिद्धान्त

सामूहिक स्मृतिक सिद्धान्तक आलोकमे गढ़ नारिकेल स्मृतिसमुदाय अछि। मौरिस हॉल्बवैक्स अनुसार स्मृति सामाजिक ढाँचामे बनैत अछि; उपन्यास एहि बातकेँ लोकगीत, देहरी, गाछ, पात, नदी, खेल आ वार्षिक नाम-पाठद्वारा मूर्त करैत अछि।

आघात एक बेर घटित घटना नहि; ओ “छपाक”, पटल, तारीख, बाढ़ि, आवाज आ खाली पन्ना रूपमे लौटैत अछि। पुनरावृत्ति प्रारम्भमे विवश स्मरण अछि, बादमे सचेत “कार्य-समाधान” बनैत अछि। गवाही, नाम-पाठ, नाटक, संविधान आ अभिलेख-सुरक्षा आघातकेँ सार्वजनिक अर्थ दैत अछि।

कृति शोकक तमाशाक विरोध करैत अछि। पीड़ितक अनुमति, मौनक अधिकार आ प्रतीक्षा आवश्यक मानल जाइत अछि। ई आघात-साहित्यक नैतिक सिद्धान्तक अनुरूप अछि।

१०.८ स्त्रीवादी आलोचना

स्त्रीवादी दृष्टिसँ उपन्यास देह, दृष्टि, सहमति, निजता, लाज, घरेलू मौन, श्रम आ भोजनक राजनीति पर गम्भीर हस्तक्षेप करैत अछि। मीरा दृश्य-अधिकारक प्रश्न उठबैत छथि—केकर छवि के देखत, के प्रकाशित करत, के लाभ उठाओत? स्त्री-सभाक राति सार्वजनिक इतिहासमे अदृश्य घरेलू श्रम आ पीड़ाकेँ वाणी दैत अछि।

“मृतकक सहमति”, “स्त्री-नामक खाता”, “छत्ताक भीतरक रानी”, “साझा थारी” आ “रसोइक गणराज्य” स्त्रीक नाम आ श्रमकेँ परिवार वा संस्था द्वारा हरणक आलोचना करैत अछि। लाज पीड़ितक माथसँ अपराधीक माथपर घुराओल जाइत अछि।

तथापि कतेको स्त्री पात्र प्रतीकात्मक नैतिक भूमिका निभबैत छथि; हुनकर निजी इच्छाक बहुविधता, कामना, अन्तर्विरोध आ वैयक्तिक संघर्ष आरो विस्तार चाहैत छल। स्त्री-समुदाय सशक्त अछि, किन्तु विशिष्ट स्त्री-मनोविज्ञान किछु ठाम सामुदायिक रूपकमे विलीन होइत अछि।

१०.९ उत्तर-औपनिवेशिक आ अधीनस्थ-वर्गीय दृष्टि

औपनिवेशिक-उत्तर सत्ता केवल विदेशी शासन नहि; ज्ञान, विकास, विश्वविद्यालय, विधि, वित्त आ भाषा द्वारा स्थानीय जीवनक अधीनस्थीकरण अछि। हार्वर्डक नैतिक मंच आ गढ़ नारिकेलक पातक गवाहीक विरोध अत्यन्त सार्थक अछि। प्रतिष्ठित वैश्विक संस्था स्थानीय पीड़ाकेँ अध्ययन-वस्तु बनाबय चाहैत अछि; गाम अपन ज्ञान-अधिकार वापस लैत अछि।

अधीनस्थ लोक बोलि सकैत अछि कि नहि—कृति एकल वाणी नहि, सामूहिक अभिलेखक उत्तर दैत अछि। श्रमिक, स्त्री, दलित, वृद्ध, बच्चा आ मृतक अलग-अलग माध्यमसँ बोलैत छथि। तथापि आरुणि, सत्यव्रत, मीरा जेकाँ शिक्षित मध्यस्थक भूमिका प्रबल अछि; एहि कारण प्रश्न रहि जाइत अछि जे अधीनस्थ वाणी कतेक प्रत्यक्ष आ कतेक प्रतिनिधिक माध्यमसँ सुनाइत अछि। उपन्यास एहि तनावकेँ पूर्ण समाधान नहि, किन्तु स्वीकृत करैत अछि।

१०.१० पारिस्थितिक आलोचना

नदी, माटि, बीज, आगि, वायु, आकाश, गाछ, पात आ गोहि कथा-भूमि मात्र नहि, सक्रिय नैतिक उपस्थिति छथि। जल स्मृति राखैत अछि; माटि प्रश्न करैत अछि; राख गवाही दैत अछि; हवा अफवाह आ धुँआ दुनू बहबैत अछि; गाछ समुदायकेँ छाह आ अभिलेख दैत अछि। ई मानव-केंद्रित साहित्यक सीमा विस्तृत करैत अछि।

नील-हरित मानवीय अध्ययनक दृष्टिसँ उपन्यास नदीकेँ केवल संसाधन मानबाक विरोध करैत अछि। जल निजीकरण, बीजचोरी, माटिक अधिग्रहण आ बाढ़िक राजनीति पारिस्थितिक न्यायक प्रश्न छथि।

एक आलोचनात्मक सावधानी आवश्यक अछि—“गोहि” क रूपक संस्थागत हिंसाकेँ प्रभावशाली बनबैत अछि, मुदा वास्तविक जीवकेँ नैतिक दुष्टताक प्रतीक बनाबयक जोखिम सेहो अछि। कृति कतेको ठाम गोहिक प्राकृतिक अस्तित्व आ मानवीय गोहिक भेद करैत अछि; तथापि पारिस्थितिक दृष्टिसँ एहि भेदकेँ आरो स्पष्ट बनाओल जा सकैत छल।

१०.११ पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त

रिक्त पट्टिका, खाली पन्ना, अनुपस्थित नाम, अधूरा अक्षर, बन्द रेकॉर्डर आ “कथा समाप्त नहि भेल” पाठककेँ सक्रिय सहभागिता लेल आमन्त्रित करैत अछि। वोल्फगाङ आइजरक “रिक्त स्थान” अवधारणासँ ई संरचना मेल खाइत अछि। पाठककेँ प्रश्न पूरा करबाक, नाम स्मरण करबाक आ नैतिक निर्णय लेबाक पड़ैत अछि।

किन्तु कतेको ठाम रचना अपने रिक्त स्थानक व्याख्या तुरन्त कऽ दैत अछि। एहि कारण पाठकीय स्वतन्त्रता घटैत अछि। जहाँ दृश्य मौन रहैत अछि, कृति सर्वोत्तम; जहाँ प्रत्येक अर्थक स्पष्ट टिप्पणी देल जाइत अछि, पाठकक सृजनशील सहभागिता सीमित होइत अछि।

एतुक्का अलौकिकता आयातित नहि, देशज अछि — भूत-प्रेत-राकश-लोथ-पनिडुब्बी-डाइनक ओ लोक-विश्वास जे अध्याय-० क लोककोशमे पहिनहि प्रामाणिक रूपेँ राखल गेल अछि। तेँ एकरा जादुई यथार्थवादसँ बेसी ‘लोक-यथार्थवाद’ कहब उचित — जतय

मृतक जीवितक अन्यायक विरुद्ध वादी बनि सकैत अछि। आ डिजिटल-अरेस्ट, आवाज-नकल आ म्यूल-खाताक प्रकरण एहि कादम्बरीकेँ निगरानी-पूँजीवादक समकालीन आलोचनासँ जोड़ैत अछि: जे व्यवस्था पहिने नाम काटैत छल, से आब 'नामक गला' बनबैत अछि।

११. कथन-शिल्प आ रूप-विधान

उपन्यासक संरचना वृत्ताकार अछि। अध्याय १क कबड्डी अन्तिम अध्यायमे फेर लौटैत अछि; अन्तर एतबे जे आरम्भमे मृतक खेलैत छथि, अन्तमे जीवित बच्चा। आरम्भमे मृतक न्याय माँगैत छथि; अन्तमे जीवित पहरा ग्रहण करैत छथि।

प्रत्येक अध्यायक शीर्षक, सूक्ति, लोकगीत, कथा-देह आ कतेको ठाम दार्शनिक अन्तर्ध्वनि एक निश्चित लय बनबैत अछि। ई महागाथात्मक अनुशासन दैत अछि। पुनरावृत्त वाक्य—कथा समाप्त नहि भेल, नाम उपस्थित, गोहि देह खाइत अछि नाम नहि—मौखिक आख्यानक टेक जकाँ कार्य करैत अछि।

उपन्यास अनेक विधा अपनबैत अछि: लोककथा, भूतकथा, रहस्य, सामाजिक दस्तावेज, दार्शनिक संवाद, गीत, पत्र, जन-सुनवाई, नाट्य-पाठ, अभियोग, अभिलेखीय जाँच, स्वप्न-दृष्टान्त आ बालखेल। एहि विधामिश्रणसँ कृति आधुनिक महाकाव्यात्मक विस्तार पबैत अछि।

मेटाकथात्मकता सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। "उपन्यास फेर शुरू" अपन कथारूप पर टिप्पणी करैत अछि। नाट्य उत्सवमे पहिल अध्याय सभ मंचित होइत अछि। अन्तिम अध्यायमे अध्यायक शीर्षक सभ पुनः पढ़ल जाइत अछि। पाठ अपन निर्माण, पुनर्लेखन आ सार्वजनिक उपयोग पर विचार करैत अछि।

लेखक अपन कृतिकेँ 'मैथिली कादम्बरी' कहैत छथि, आ ई संज्ञा केवल विधा-नाम नहि। परिशिष्ट-३ मे बाणभट्टक अपूर्ण कादम्बरीक अन्तिम पन्नाकेँ लऽ कऽ मङ्गलवादक शास्त्रीय विमर्श कथा-रूपमे राखल गेल अछि — मङ्गलाचरणक फल ग्रन्थ-समाप्ति नहि, विघ्न-नाश थिक — जाहिसँ ई कृति बाणक गद्य-परम्परा आ मिथिलाक न्याय-परम्परा दुनूसँ अपन नाल जोड़ैत अछि। प्रत्येक अध्यायक स्थापत्य — सूक्ति-वाक्य, लोकधुन-निर्देश सहित अध्यायारम्भ लोकगीत, गद्य-कथा, तिर्यक् दार्शनिक अन्तर्ध्वनि, आ अध्यायान्त गीत — संस्कृत चम्पू आ लोक-नाच दुनूक स्मृति जगबैत अछि।

१२. भाषा, लोकधुन आ शैलीगत वैशिष्ट्य

कृतिक भाषा लोकमैथिली, अकादमिक पदावली, प्रशासनिक वाक्य, दार्शनिक संज्ञा आ आधुनिक तकनीकी शब्दक मिश्रित संसार बनबैत अछि। छोट सूक्तिपूर्ण वाक्य स्मरणीय छथि—नदी धारसँ मेड़ काटैत अछि, कागच तारीखसँ गाम; नाम लिखलासँ बेसी ओकर घर धरि जाएब आवश्यक; देहरी सत्यक पहिल मर्यादा; सहायता जखन चुप्पी माँगए, दान सौदा बनि जाइत अछि।

लोकगीत कथा केँ मौखिकता, सामूहिकता आ लय दैत अछि। गीत केवल अलंकरण नहि; ओ श्रम, शोक, शिक्षा, नाटक आ प्रतिरोधक साधन अछि। स्त्री-गीत आ बालगीत विशेष रूपेँ सामुदायिक ज्ञानक वाहक छथि।

उपन्यासक बिम्ब-संसार प्रायः अत्यन्त प्रभावकारी अछि। लाल फीता पनिडुब्बीक झोँटा; अलमारी रोकल समयक अन्हार; धूलि मुंशी; मुहर घाव; पंजी डरक नक्शा; ठूँठमे हरियर बिन्दु—ई बिम्ब सामाजिक अमूर्तनकेँ इन्द्रियग्राह्य बनबैत अछि।

१३. सामाजिक-राजनीतिक महत्त्व

ई कृति विकासक आधिकारिक आख्यानपर प्रश्न उठबैत अछि। पुल, सेवा, दान, तकनीक, शोध आ वित्तीय समावेशन—सभ लोकहितक शब्द छथि; मुदा जँ नाम, सहमति, सुरक्षा आ उत्तरदायित्व नहि, तँ ई सभ हिंसाक आवरण बनि सकैत अछि।

जातिक प्रश्न उपन्यासक मूल संरचनामे अछि। श्रमिकक नाम, साझा थारी, रसोइ, श्मशान, स्पर्श, गंगेशक जीवन आ सभसँ नीच कहल घरक गवाही—सभ देखबैत अछि जे न्याय जाति-विमर्श बिनु अधूरा अछि।

कृति अंककीय आधुनिकताक सरल विरोध नहि करैत। मोबाइल, अभिलेख, प्रतिलिपि, सन्देश आ पटल अपराधक औजारो छथि, प्रतिरोधक साधनो। प्रश्न तकनीक नहि, स्वामित्व, सहमति, पारदर्शिता आ सामुदायिक उपयोगक अछि।

उपन्यास लोकतन्त्रक वैकल्पिक रूप सुझबैत अछि—नामक संविधान, जन-सुनवाई, साझा रसोइ, अनुमति-आधारित जाँच, सामुदायिक प्रतिलिपि, बच्चाक प्रश्न आ स्मृति-पहरा। ई विधिक संस्थाकेँ नकारैत नहि; ओकरा मानवीय अर्थ देबाक लेल समुदायक कण्ठ आवश्यक मानैत अछि।

१४. कृतिक प्रमुख उपलब्धि

प्रथम उपलब्धि—स्थानीयता आ वैश्विकताक सशक्त मेल। गढ़ नारिकेलक गाछी हार्वर्ड, हांगकांग, बैंक, अंककीय पटल आ वैश्विक पूँजीसँ जुड़ैत अछि, मुदा अपन लोकदृष्टि गमबैत नहि।

द्वितीय—नामक नैतिक दर्शन। आधुनिक साहित्यमे पहचानक चर्चा प्रचुर अछि, मुदा एतय नाम कानूनी, सामाजिक, भावात्मक, दार्शनिक आ आध्यात्मिक सभ स्तरपर केन्द्र बनैत अछि।

तृतीय—लोकस्मृति आ प्रमाण-पद्धतिक मेल। भूतकथा अन्धविश्वास नहि, दबाओल इतिहासक रूपक; पात कागचक विकल्प; गीत अभिलेख; बच्चाक खेल न्यायशास्त्र बनैत अछि।

चतुर्थ—सहमति आ दृष्टिक अधिकारक गम्भीर प्रस्तुति। पीड़ितक कथा, स्त्रीक देह, मृतकक छवि, शोध आ स्मारकक नैतिक प्रश्न मैथिली उपन्यासमे विरल विस्तार पबैत अछि।

पंचम—विधामिश्रित महागाथात्मकता। सामाजिक उपन्यास, दार्शनिक विचार, रहस्य-अनुसन्धान, लोकगीत, नाटक आ स्वप्नदृष्टान्तक संयुक्त रूप कृतिक विशिष्ट चिन्ह अछि।

षष्ठ—आशाक गैर-सरलीकृत रूप। अन्तमे सभ अपराधी समाप्त नहि, सभ मामला निपटल नहि। अपराधी भागत, किछु पकड़ाएत, किछु धर्म वा बीमारीक आवरण लैत। आशा “समस्या समाप्त” मे नहि, पहरा जारी रहबमे अछि।

१५. रचनात्मक सीमा आ आलोचनात्मक आपत्ति

विराटता कृतिक शक्ति अछि, किन्तु विस्तार कतेको ठाम कथात्मक सघनता घटबैत अछि। तीन सय एक अध्यायमे नाम, स्मृति, मौन, गवाही, पहरा, पात, गोहि आ “कथा समाप्त नहि भेल” क पुनरावृत्ति अनुष्ठानात्मक प्रभाव उत्पन्न करैत अछि; मुदा लगातार आवृत्ति पाठकपर अर्थक अतिरिक्त भार सेहो दैत अछि। सम्पादन द्वारा समान विचारक पुनर्कथन घटाओल जाए तँ प्रभाव आरो तीक्ष्ण होएत।

प्रत्येक अध्यायक सूक्ति, गीत आ दार्शनिक निष्कर्ष संरचनात्मक एकरूपता दैत अछि, किन्तु कतेको ठाम सूत्रबद्धता उत्पन्न करैत अछि। कथा जखन अपने दृश्यसँ अर्थ स्पष्ट कऽ दैत अछि, तखन अन्तिम व्याख्या अनावश्यक बुझाइत अछि। ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ अर्थक किछु अवकाश पाठक लेल छोड़ल जा सकैत छल।

शून्य अध्यायक लोक-सांस्कृतिक विस्तार विश्वनिर्माण लेल महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा कथा आरम्भ होएबासँ पहिने एतेक विस्तृत निबन्धात्मक सामग्री कथागतिकेँ विलम्बित करैत अछि। एकर किछु अंश परिशिष्ट वा कथाभरि वितरित रहित तँ आरम्भ आरो सघन होइत।

नव्य-न्यायक दार्शनिक अन्तर्ध्वनि कृतिक मौलिकता अछि, परन्तु जखन शास्त्रीय उदाहरण कथासँ ढीला सम्बन्ध रखैत अछि, तखन ओ स्वतंत्र पाठ्यपुस्तकीय खण्ड जकाँ बुझाइत अछि। कथा आ दर्शनक सम्बन्ध जतय जैविक अछि—अनुपलब्धि, शब्द, अनुमान, सहमति, प्रमाण—ओतय प्रभाव असाधारण; जतय केवल सिद्धान्त-प्रदर्शन अछि, ओतय कथाप्रवाह टूटैत अछि।

किछु खल-पात्र सामाजिक संरचनाक प्रतिनिधि बनैत-बनैत योजनाबद्ध प्रकारमे बदलि जाइत छथि। हुनकर निजी जीवन, अन्तर्विरोध, आत्मछल, सम्बन्ध आ परिवर्तनक गति आरो सूक्ष्म होइत तँ नैतिक जटिलता बढ़ैत। आत्मस्वीकारक प्रसंग कतेको बेर समान ढाँचा ग्रहण करैत अछि—बाल्यकालीन अपमानक स्मृति, अपराधक पहचान, अधूरा पश्चात्ताप।

उपन्यासक नैतिक पक्ष स्पष्ट आ दृढ़ अछि, मुदा स्पष्टता कतेको ठाम कला पर प्रभुत्व करैत अछि। पाठककेँ ककरा सही मानब, प्रायः आरम्भे बुझाइत अछि। नैतिक अस्पष्टता, विडम्बना आ पात्रक जटिल निर्णयक किछु अधिक क्षेत्र रहित तँ कृति मनोवैज्ञानिक रूपेँ आरो बहुस्तरीय बनैत।

अलौकिकता लोकदृष्टिसँ स्वाभाविक अछि, किन्तु प्रत्येक वस्तुक बोलब, पातपर अक्षर उगब आ मृतकक प्रत्यक्ष हस्तक्षेप कतेको पाठक लेल रूपक आ घटना बीचक सीमा धुँधला करिसकैत अछि। कृति सामान्यतः एकरा लोक-स्मृतिक भाषा बनबैत अछि; तथापि किछु ठाम संयम एहि प्रभावकेँ प्रखर बना सकैत छल।

१६. समग्र आलोचनात्मक निर्णय

"गोहि सभक बीच जलसमाधि" क मूल्य केवल ओकर विशाल आकार वा विषयक बहुलतामे नहि, अपितु एहि मौलिक विचारमे अछि जे मनुष्यक न्याय ओकर नामक सामाजिक जीवन बचाए बिना सम्भव नहि। ई कृति मृत्युकेँ जैविक घटना, अन्यायकेँ कानूनी मामला, तकनीककेँ उपकरण आ स्मृतिकेँ भावुकता मानबाक संकीर्णता तोड़ैत अछि। मृत्यु कागच, देह, परिवार, इतिहास आ भविष्यक सम्बन्धक संकट अछि; अन्याय संरचनात्मक जाल; तकनीक नैतिक स्वामित्वक प्रश्न; स्मृति सार्वजनिक उत्तरदायित्व।

भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ ई करुणासँ वीर आ सजग शान्त रस धरि जायवला, ध्वनि आ वक्रोक्तिसँ सम्पन्न लोकमहागाथा अछि। नव्य-न्यायक दृष्टिसँ ई अनुपस्थितिक प्रमाण, शब्दक प्रामाण्य आ अनुमानक सामाजिक प्रयोगक उपन्यास अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक दृष्टिसँ ई सामाजिक समग्रता, बहुस्वरता, अभिलेखीय सत्ता, जैव-राजनीति, आघात-स्मृति, स्त्रीवादी सहमति, उत्तर-औपनिवेशिक ज्ञान आ पारिस्थितिक न्यायक बहुस्तरीय पाठ प्रस्तुत करैत अछि।

रचनाक सीमा ओकर अति-विस्तार, व्याख्यात्मक पुनरावृत्ति, सूत्रात्मक अध्याय-विधान आ कतेको पात्रक प्रकारिकतामे अछि। मुदा ई सीमा कृतिक मूल उपलब्धि कें नष्ट नहि करैत। उलटे स्पष्ट करैत अछि जे ई रचना सुघर, सीमित, मनोवैज्ञानिक उपन्यास बनबाक अपेक्षा एक विशाल सामुदायिक अभिलेख बनबाक जोखिम लैत अछि। ओकर रूप अनेक बेर असमतल अछि, कारण ओ भिन्न आवाज, गीत, दस्तावेज, सिद्धान्त, स्मृति आ घावकेँ एकहि देहमे समेटबाक प्रयत्न करैत अछि।

अन्ततः ई उपन्यासक सर्वोच्च उपलब्धि एक नब नैतिक वाक्य रचब अछि—न्याय केवल अपराधीक दण्ड नहि; विस्मृतक नाम घुराएब, पीड़ितक अनुमति मानब, अभिलेख बचाएब, बच्चाकेँ प्रश्न सिखाएब, साझा थारी बनायब आ अपन भीतरक मौनक नाम लिखब सेहो न्याय अछि। चन्ना गाछीक अन्तिम हरियर बिन्दु एहि विश्वासक प्रतीक अछि जे स्मृति जाधरि सामुदायिक काज बनल रहत, ताधरि कोनो गोहि मनुष्यक नाम पूर्ण रूपेँ नहि खा सकत।

१७. उपसंहार

"गोहि सभक बीच जलसमाधि" आधुनिक मैथिली साहित्यक एक महत्त्वाकांक्षी लोक-दर्शनात्मक उपन्यास अछि। ई गामक कथा कहैत विश्वक कथा बनैत अछि, मुदा विश्वक विस्तारमे गामक बोली, पात, नून, माटि आ देहरी गमबैत नहि। एकर अन्तिम संदेश आश्वासन नहि, आह्वान अछि—मृतकक नाम पढ़ू, जीवितक भय सुनू, प्रमाणक मर्यादा राखू, आ न्यायकेँ निरन्तर पहरा बनाउ।

कृति समाप्त नहि होइत, कारण अन्तिम पन्नाक बाद पाठक स्वयं अगिला पहरुआ बनबाक प्रश्नक सोझाँ ठाढ़ होइत अछि।

परिशिष्ट

एन्थ्रोपोलोजिकल संकलन — तीनू खण्ड (०·१·२)

संकेत — ० = पूर्व-कथाकाल (−१०० सँ −१) · १ = अध्याय ० सँ १०० · २ = अध्याय १०१ सँ २००

अ · श्रेणीवार सूची

भौगोलिक स्थान — गाम, टोल, हवेली, स्थल

गढ़ नारिकेल · चन्ना गाछी · नारिकेल पात पाठशाला · चर्मकार टोल · मुसहरी · हरिपुर कटान · ठाकुर-हवेली · देहक बाजार · हरिहर सेवा केंद्र · तेतरि घाट · इमली घाट · पुरान पुल / महापुल · हार्वर्ड · हांगकांग · मेरठ

जल-स्रोत — नदी, पोखरि, इनार, आहर, चौर

कमला-बलान · गंगा · कोसी · जोड़ी-पोखरि · पनिडुब्बी पोखरि · डकही पोखरि · भीतरक पोखरि · धनक कारी नदी · इनार · आहर · चौर · बान्ह · डबरा

गाछ-बृच्छ

चन्ना गाछी (पीपर / साक्षी-गाछ) · नारिकेल गाछ · आम · इमली · बाँस · बथुआ साग

जीव-जन्तु

गोहि · माछ · मखान · गज-ग्राह · शंख · सर्प (साँप) · बाघ · कबूतर

व्यक्ति — श्रमिक आ मृतक (मुख्य)

बिसेसर पासवान · सरयू देवी · छोटू (भोलटुन) · सलामत अंसारी · गोपी महतो · रजनू मंडल · कन्हैया · शिवनाथ सदा · उज्ज्वल झा

व्यक्ति — नायक-पक्ष आ साक्षी (मुख्य)

नन्द आरुणि · बा · आरुणि · अनन्या · ईरा आरुणि · मीरा (मृणालिनी आर्या) · देविका साह · फूलमति · गोप कुमार · सत्यव्रत मेहता · सौम्या रामनाथन · रमैय्या सुब्रमण्यम · ईशान दत्त · रामलखन · माधव · अदिति

व्यक्ति — अपराधी-पक्ष

बटुकनाथ हरिहरन · चन्द्रपाल बत्रा · राघव सोमानी (‘सिग्नल’) · लाउ किन-हंग · एडवर्ड ब्रूम · महावीर पाठक · मालविका ग्रीन · मधवेश · महेश्वर · ध्रुवेश · शशिभूषण देव · महेन्द्र पाठक · विक्टर हाल्डेन · दिवाकर लाल

व्यक्ति — खण्ड-२ क अन्य पात्र आ पंजी-नाम

भिखारी लाल · सुरमणी देवी · रानी देवी · दीनबंधु आ विधवा रागिनी देवी · फूलकली देवी · रमरतिया देवी · जसोदा देवी · सुरजमुखी · फुलकुंवरि · कमलू पासवान · जगदीश मल्लाह · मुन्ना पासवान · सौरभ महतो · इमरान · नागेश्वर झा · मुनिया · धनेसरी · नगीना

व्यक्ति — पूर्व-कथाकाल (खण्ड-०) आ दार्शनिक

मोहन आ राधिका · सुखदेव महतो · थॉम्पसन साह (साहेब) · प्रतापसेन · कमला देवी · गौरी · कारू · कलित · गंगेश उपाध्याय · वाचस्पति मिश्र · उदयनाचार्य

लोकोत्तर आ लोक-पात्र

बूढ़बा भूत · हुलासी · पनिडुब्बी · लोथ · राकश · डाइन · पीपरक ब्रह्मा · सलहेस

लोक-पाबनि, अनुष्ठान, नाच आ गीत-विधा

सोहर · समदाउन · विदापत · बटगबनी · चैती · फाग · निर्गुण · मर्सिया · जट-जटिन · झिझिया · मधुश्रावणी · अरिपन · अध्यायारम्भ लोकगीत · फकरा · ढोल · मृदंग · बाँसुरी · नगाड़ा

लोक-न्याय आ सामुदायिक संस्था

भूत-कबड्डी · पंजी · नील पंजी · रानी-खाता · सेवा-पंजी · नामक संविधान · नाम-उत्सव · राति-सभा · जन-सुनवाई · स्त्री-सभा · मौनक नामावली · नामक पहरुआ

वस्तु आ प्रतीक

माटिक पट्टिका · काँसक कटोरा (तीन जल) · फाटल गमछा · लोहाक संदूक · लोहाक पेटी · तीन कंकड़ (घर·भय·सपना) · पात-दीप · दीप · कलश · पान · सुपारी · सिन्दूर · पाग · धोती · गमछा · छपाक (ध्वनि)

फसल, भोजन आ जाति-समुदाय

धान · मखान · मड़ुआ · कुसियार · चूड़ा · दही · पासवान · मुसहर · चर्मकार · अंसारी · महतो · मंडल · सदा · मल्लाह

दर्शन, शास्त्र आ आधुनिक परिघटना

नव्य-न्याय · तत्त्वचिन्तामणि · भामती · न्यायकुसुमाञ्जलि · प्रमाण-चतुष्टय + अनुपलब्धि · डिजिटल-अरेस्ट · म्यूल-खाता · आवाज-नकल · निगरानी-पूँजीवाद

ब · विस्तृत तालिका

भौगोलिक स्थान — गाम, टोल, हवेली, स्थल

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

गढ़ नारिकेल

०·१·२

उपन्यासक केन्द्रीय गाम; स्मृति-श्रम-जल-जातिक जीवित संसार।

चन्ना गाछी

०·१·२

कटल पीपर-वनक स्थल; मृतकक लोक-अदालत आ भूत-कबड्डीक रंगमञ्च।

नारिकेल पात पाठशाला

०·१·२

चन्ना गाछीक ठूँठ लगक बाल-विद्यालय; गवाही-पंजीक केन्द्र।

चर्मकार टोल

०·१·२

गामक श्रमशील टोल; जातिगत विषमताक स्थल।

मुसहरी

२

मुसहर-समुदायक टोल; छोटूक मूल।

हरिपुर कटान

२

कटानग्रस्त गाम; रानी देवी-प्रसंगक ‘रानी-खाता’क मूल।

ठाकुर-हवेली

०

प्रतापसेन-कमला देवीक हवेली; खण्ड-० अन्तःकथाक स्थल।

देहक बाजार

१·२

देह-व्यापार-जालक रूपक-स्थल; फूलमतिक मुक्ति-प्रसंग।

हरिहर सेवा केंद्र

१·२

अन्वेषणक सूत्र-स्थल; अभिलेखीय अनुसन्धानक द्वार।

तेतरि घाट · इमली घाट

२ · ०·१·२

कमला-बलानक घाट; लोक-स्मृतिक स्थल।

पुरान पुल / महापुल

०·१·२

गंगापर बनैत सड़क-पुल; जोन-मजदूरक जलसमाधि-स्थल।

हार्वर्ड · हांगकांग · मेरठ

०·१·२ · ०·१ · ०·१

बाहरी केन्द्र — नैतिक-पाखण्ड, वैश्विक वित्त-जाल आ दूरक अपराध।

जल-स्रोत — नदी, पोखरि, इनार, आहर, चौर

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

कमला-बलान

०·१·२

गामक नदी; बाढ़ि-कटानक स्रोत, पारिस्थितिक कर्ता।

गंगा

०·१·२

महानदी; महापुल आ मजदूर-जलसमाधिक स्थल।

कोसी

०

मिथिलाक शोकनदी; बाढ़ि-स्मृतिक सन्दर्भ।

जोड़ी-पोखरि

०

जोड़ल पोखरि; पूर्व-कथाकालक जलसमाधि-स्थल।

पनिडुब्बी पोखरि

०·१·२

पनिडुब्बी-आत्मासँ जुड़ल पोखरि।

डकही पोखरि

०·१

पात-दीप-प्रसंगक पोखरि (अध्याय-० लोककोश)।

भीतरक पोखरि

०·१·२

घरक भीतर दबाओल मृत्युक रूपक; ‘पानि बिनु जलसमाधि’।

धनक कारी नदी

०·१·२

अवैध खाता-म्यूल-दानक गुप्त वित्तीय प्रवाहक रूपक।

इनार · आहर · चौर · बान्ह · डबरा

०·१·२

कूप, जल-नाला, नीचला जलक्षेत्र, बान्ह आ डबरा — गामक जल-भूगोल।

गाछ-बृच्छ

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

चन्ना गाछी (पीपर / साक्षी-गाछ)

०·१·२

बारह सय बरखक साक्षी-वृक्ष; कटलाक बादो ठूँठ स्मृति रखैत अछि।

नारिकेल गाछ

०·१·२

गामक नाम-मूल वृक्ष।

आम · इमली · बाँस

०·१·२

घाट-नामक मूल आ लोक-परिवेशक वृक्ष।

बथुआ साग

२

देहरी-दरारमे उगल साग; उजाड़-स्मृतिक बिम्ब (सुरमणी देवी-प्रसंग)।

जीव-जन्तु

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

गोहि

०·१·२

कुम्भीर/मगर; काल, विस्मृति, सत्ता आ पूँजीक केन्द्रीय रूपक — 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नै'।

माछ

०·१·२

पोखरिक जीव; रजिस्टरसँ कटल शब्दक बिम्ब ('छोट-छोट माछ')।

मखान

१·२

पोखरिक जलीय फसल; लोक-अर्थतन्त्रक अङ्ग।

गज-ग्राह

०·१·२

हाथी-मगरक दृष्टान्त; नाम-पुकारसँ उद्धारक प्रसंग।

शंख

०

शंख-रजत भ्रमक दार्शनिक बिम्ब (नव्य-न्याय)।

सर्प (साँप) · बाघ · कबूतर

०·१·२

दृष्टान्त-जीव (रस्सी-सर्प, योगबल-बाघ, नील-उज्जर कबूतर)।

व्यक्ति — श्रमिक आ मृतक (मुख्य)

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

बिसेसर पासवान

१·२

पुलक पायापर मृत; रजिस्टरमे ‘अनुपस्थित’, अन्तमे नाम अमर।

सरयू देवी

१·२

स्त्री-मजदूर; अँगूठाक निशान न्यायक पहिल पाठ बनल।

छोटू (भोलटुन)

१·२

मुसहरिनक नाबालिग बेटा; असली नाम सामूहिक स्मृतिसँ फेर भेटल।

सलामत अंसारी · गोपी महतो · रजनू मंडल · कन्हैया · शिवनाथ सदा

१·२

अनाम-कागचपर डूबल श्रमिक-नाम।

उज्ज्वल झा

१·२

डिजिटल-अरेस्ट-ठगीक शिकार; मृत्यु जाल-उद्घाटनक बीआ।

व्यक्ति — नायक-पक्ष आ साक्षी (मुख्य)

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

नन्द आरुणि

०·१·२

मूल साक्षी; 'तीन-प्रति गवाही'-सिद्धान्तक स्रोत।

बा

१·२

मातृ-स्वर; लोक-स्मृतिक रखबारि, 'रिक्त ठामो गवाही'।

आरुणि · अनन्या

०·१·२

अगिला पीढ़ी; नाम-पाठ, गाम-नेतृत्व आ पंजी-रक्षा।

ईरा आरुणि

१·२

विदेश-जन्मा; हार्वर्डमे एडवर्ड ब्रूमकेँ चुनौती।

मीरा (मृणालिनी आर्या)

१·२

निजता-चोरीक शिकार; 'दृष्टिक अधिकार'-मण्डलक सूत्रधार।

देविका साह

१·२

उज्ज्वलक बहिन; अंककीय-ठगी-विरोधी शिक्षाक साहसी स्वर।

फूलमति

१·२

देह-व्यापार-जालसँ मुक्त; 'हमर नाम फूलमति अछि'।

गोप कुमार

०·१·२

अभिलेख-रक्षक; तीन-प्रति-प्रणालीक जनक, जाल-भेदक।

सत्यव्रत मेहता

०·१·२

वृद्ध अधिवक्ता; अदालतमे मृतकक नाम-पाठ।

सौम्या रामनाथन · रमैय्या सुब्रमण्यम

१·२

निरन्तर सहयोगी अन्वेषक।

ईशान दत्त

१·२

रहस्यमय सूचनादाता; ‘मृत’ घोषित, अनाम सूचनादाता-प्रतीक।

रामलखन · माधव · अदिति

१·२

बही-पंजी उलटनिहार आ सहायक-पात्र; मीराक प्रेम अदिति।

व्यक्ति — अपराधी-पक्ष

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

बटुकनाथ हरिहरन

१·२

बार काउन्सिलक चमक; विधिक चातुरी, विलम्बित क्षमा-याचना।

चन्द्रपाल बत्रा

१·२

म्यूल-खाता-जालक संचालक; अपमानित बाल्य-नामक घाव।

राघव सोमानी (‘सिग्नल’)

१·२

आवाज-नकल-नेटवर्क; माएक अन्तिम आवाज मेटेबाक अपराध-बोध।

लाउ किन-हंग

०·१

हांगकांगक सूत्रधार; नामहीन खाता, संस्थागत पराजय।

एडवर्ड ब्रूम

१·२

पुल-दवा-खेल-जालक अन्तरराष्ट्रीय चेहरा; ‘मानव गरिमा सहित विकास’।

महावीर पाठक

२

बटुकनाथक समयक नुकाएल नाम; अन्वेषणमे उभरल।

मालविका ग्रीन · मधवेश · महेश्वर · ध्रुवेश

१·२

मध्यम-स्तरीय संचालक; अन्त अनिश्चित।

शशिभूषण देव · महेन्द्र पाठक · विक्टर हाल्डेन · दिवाकर लाल

१

आरम्भिक भ्रष्ट अधिकारी; बादमे कथासँ लोप।

व्यक्ति — खण्ड-२ क अन्य पात्र आ पंजी-नाम

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

भिखारी लाल

२

गामक पात्र; तालाक भारीपन-प्रसंग — ‘भीतरक साँस भारी छै’।

सुरमणी देवी

२

पश्चात्ताप-यात्राक पहिल घरक स्वामिनी।

रानी देवी

२

हरिपुर कटानक वृद्धा; पहिल ‘रानी-खाता’क नाम (उमेर बहत्तर)।

दीनबंधु आ विधवा रागिनी देवी

२

रागिनी देवी पहिल बेर सार्वजनिक साक्ष्य दैत छथि।

फूलकली देवी

२

फूलमतीसँ भिन्न; अभिलेख-पंजीमे नाम-भेदक प्रसंग।

रमरतिया देवी · जसोदा देवी · सुरजमुखी · फुलकुंवरि

२

बही/नाम-पंजीमे अभिलिखित स्त्री-नाम।

कमलू पासवान · जगदीश मल्लाह · मुन्ना पासवान · सौरभ महतो · इमरान

१·२

पंजी आ म्यूल-खाता-प्रसंगक नाम।

नागेश्वर झा

२

जीवित मुवक्किल; चन्ना गाछी-प्रसंग (‘ओ तँ जीवित छथि’)।

मुनिया · धनेसरी · नगीना

२

‘मौनक नामावली’ आ माटिक पट्टिकापर अमर नाम।

व्यक्ति — पूर्व-कथाकाल (खण्ड-०) आ दार्शनिक

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

मोहन आ राधिका

०

बाँसुरी-वादक मोहन; बेटी राधिकाक शोकसँ ‘अध्यायारम्भ लोकगीत’ परम्पराक जन्म।

सुखदेव महतो

०·१·२

गामक दक्षिण छोरक निवासी; बदलाक बदला क्षमा चुननिहार।

थॉम्पसन साह (साहेब)

०

नोटबुक-धारी विदेशी; गामक बुढ़-पुरानसँ पुछताछ (‘साहेबक नोटबुक’)।

प्रतापसेन · कमला देवी · गौरी

०

ठाकुर-हवेली अन्तःकथाक पात्र; गौरीक हाथक लोक-विश्वास।

कारू · कलित

०·१·२

पूर्व-कथाकाल आ मुख्य-कथाक आवर्ती लोक-पात्र।

गंगेश उपाध्याय

०·१·२

तत्त्वचिन्तामणिक प्रणेता; नव्य-न्यायक जन्मदाता, ‘प्रमाणक दुआरक’ प्रश्न।

वाचस्पति मिश्र · उदयनाचार्य

०

भामती आ न्यायकुसुमाञ्जलिक कर्ता; खण्ड-० दार्शनिक-नाट्यक आधार।

लोकोत्तर आ लोक-पात्र

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

बूढ़बा भूत

०·१·२

बारह सय बरखक निर्णायक; अन्तमे डण्डा जीवितकेँ सौंपि दैत छथि।

हुलासी

०·१·२

बिनु हाथक आत्मा; भूत-कबड्डीक खेलाड़ी।

पनिडुब्बी · लोथ · राकश · डाइन

०·१·२

अकालमृत लोक-आत्मा; मृतक-अदालतक सदस्य।

पीपरक ब्रह्मा

०·१·२

साक्षी-गाछक अधिष्ठाता लोक-देवता।

सलहेस

२

मिथिलाक लोक-देव/लोक-गाथा-नायक; लोक-सन्दर्भ।

लोक-पाबनि, अनुष्ठान, नाच आ गीत-विधा

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

सोहर · समदाउन

०·१·२

जन्म-मंगल आ बेटी-विदाइ/शोकक लोकगीत।

विदापत · बटगबनी · चैती · फाग

०·१·२

विद्यापति-पद, यात्रा-धुन, ऋतु-गीत आ फागक लय।

निर्गुण · मर्सिया

०·१·२

कबीर-निर्गुण वाणी आ शोक-मर्सिया।

जट-जटिन · झिझिया · मधुश्रावणी

१·२

मिथिलाक लोक-नृत्य आ पाबनि।

अरिपन

१·२

आँगनक मौन अल्पना-कला; लोक-स्मृतिक चिह्न।

अध्यायारम्भ लोकगीत · फकरा

०·१·२

हर अध्यायक भोर खोलनिहार नामित-लोकधुन गीत; आ सूक्ति-फकरा।

ढोल · मृदंग · बाँसुरी · नगाड़ा

०·१·२

लोक-वाद्य।

लोक-न्याय आ सामुदायिक संस्था

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

भूत-कबड्डी

०·१·२

मृतकक लोक-अदालत; ‘सीमा पार करू, साँस बचाउ, नाम लऽ कऽ घुरू’।

पंजी · नील पंजी · रानी-खाता · सेवा-पंजी

०·१·२

गामक स्थायी नाम-अभिलेख; काउण्टर-आर्काइव, अपराध-खातासँ पृथक्।

नामक संविधान · नाम-उत्सव

१·२

नाम-रक्षाक सामुदायिक विधान आ उत्सव।

राति-सभा · जन-सुनवाई · स्त्री-सभा

०·१·२

सामूहिक न्याय-प्रक्रिया।

मौनक नामावली · नामक पहरुआ

१·२

मौन-नाम-सूची आ निरन्तर स्मृति-पहरा।

वस्तु आ प्रतीक

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

माटिक पट्टिका

२

गाछीक चारू कात एक-एक नामक स्मृति-फलक।

काँसक कटोरा (तीन जल)

२

इनार + कमला-बलान + गंगाक जल — ‘तीन प्रकारक गवाही’।

फाटल गमछा

१·२

हारक चिन्ह नहि, श्रम-स्मृति-साहसक ध्वज।

लोहाक संदूक · लोहाक पेटी

१·२

बन्द अभिलेख-साक्ष्यक पात्र।

तीन कंकड़ (घर·भय·सपना)

१·२

बाल-नैतिक शिक्षाक सूत्र; हर नाममे तीन प्रश्न।

पात-दीप · दीप · कलश

०·१·२

डकही-पोखरिक पात-दीप; अनुष्ठान-दीप आ कलश।

पान · सुपारी · सिन्दूर · पाग · धोती · गमछा

०·१·२

मैथिल लोक-जीवनक वस्तु आ वेश।

छपाक (ध्वनि)

०·१·२

जलमे देह खसबाक आवाज; अन्यायक ध्वनि-चिह्न।

फसल, भोजन आ जाति-समुदाय

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

धान · मखान · मड़ुआ · कुसियार · चूड़ा · दही

०·१·२

गामक फसल आ लोक-भोजन।

पासवान · मुसहर · चर्मकार · अंसारी · महतो · मंडल · सदा · मल्लाह

०·१·२

गामक श्रमशील जाति-समुदाय; अधीनस्थ-स्वरक वाहक।

दर्शन, शास्त्र आ आधुनिक परिघटना

नाम

खण्ड

संक्षिप्त विवरण

नव्य-न्याय · तत्त्वचिन्तामणि

०·१·२

मिथिलाक तर्क-परम्परा आ गंगेशक मूल-ग्रन्थ; अन्याय-परीक्षाक औजार।

भामती · न्यायकुसुमाञ्जलि

०

वाचस्पति आ उदयनक ग्रन्थ; खण्ड-० दार्शनिक-नाट्यक आधार।

प्रमाण-चतुष्टय + अनुपलब्धि

०·१·२

प्रत्यक्ष·अनुमान·उपमान·शब्द आ अनुपलब्धि — गवाहीक कोटि।

डिजिटल-अरेस्ट · म्यूल-खाता · आवाज-नकल · निगरानी-पूँजीवाद

१·२

नकली-गिरफ्तारी-ठगी, किराया-खाता, चोरायल-कण्ठ आ पहिचान-चोरीक आधुनिक गोहि।

❖

गोहि सभक बीच जलसमाधि — सम्पूर्ण त्रयीक आलोचना · विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन

६९. राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांक: साहित्यिक आ संस्थागत विमर्श

सारांश
राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे किछु गोटेकेँ हुनका मधेस आन्दोलनसँ जुड़लासँ दिक्कत छन्हि, से ओ रचना नै देता, से नेपालो दिसमे छथि आ भारतो दिस। मुदा समानान्तर धाराकेँ तकर आदति छै। राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

बीजशब्द: भरोस · कापड़ि · भ्रमर · विशेषांक · साहित्यिक · संस्थागत · विमर्श

सारांश

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' विशेषांकमे किछु गोटेकेँ हुनका मधेस आन्दोलनसँ जुड़लासँ दिक्कत छन्हि, से ओ रचना नै देता, से नेपालो दिसमे छथि आ भारतो दिस। मुदा समानान्तर धाराकेँ तकर आदति छै। से कोनो विशेषांकसँ कम रचना नै आयल।

.गजेन्द्र ठाकुर- नूतन अंक सम्पादकीय

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल।

रायपुरसँ गौहाटी तक ओ भ्रमण करैत छला। भ्रमण करैबला भ्रमर।

2

मूल लेखक आरोप करैत छथि जे प्रो. रामनाथ झा द्वारा गंगेश उपाध्यायक सामाजिक-वंशीय परिचयक दमनकेँ दिल्लीक साहित्य अकादेमी पाखण्डपूर्ण ढंगसँ आगाँ बढ़ा रहल अछि।

तत्काल सन्दर्भ लेल हमर 'पंजी प्रबन्ध' (भाग I आ II) सँ निम्न अंश प्रस्तुत अछि:

-

बादमे ई पंजी-पाण्डुलिपि 2009मे Videha Pothi—www.videha.co.in—आ Google Books पर अपलोड कएल गेल, एहन स्रोत-पाठक उल्लेख अछि।

मूल पंजी-सन्दर्भ नीचाँ देल अछि:

दूषण पंजी—काला अभिलेख

४९.

१८८/२

चर्मकारिणी

माण्डर

वभनियाम

छादन

तत्त्वचिंतामणि कारकगंगेश

छादनगंगेशक

नाँई

रत्नाकरक-मातृक (अज्ञात)

गंगेश

वल्लभा

भवाइ

माहेश्वर

जीवे

२१//१० छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गंगेश

छादनसँ तत्व चिन्तामणि कारक

गंगेशक वल्लभा चर्मकारिणी पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्व चिन्तामणि कारक गंगेशोत्पत्ति- चर्मकारिणी मेधाक सन्तानक लागिमे छलन्हि

छादन सँ तत्व चिन्तामणि कारक मōमō गंगेश

"तत्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गंगेशक विषयक लेख प्राचीन पञ्जीसँ उपलब्ध"। ।

पितृ परोक्षे पंच वर्ष व्यतीते गंगेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पञ्जी ३१-२ छादनसँ जगदगुरू गुंरू गंगेश सुताय वभनियामसँ जयादित्य सुत साधुकर पत्नी

देवानन्द पञ्जी ३०=५ छादनसँ उपायकारक म. म. पा. वर्द्धमान सुताच खण्डवलासँ विश्वनाथ सुत शिवनाथ पत्नी गंगेश- म. म. वर्द्धमान/ सुपन/ हरिशर्म्म

3

कमलानन्द झा नागार्जुन—मैथिलीक यात्री—पर एकटा पोथीमे हुनका मैथिली साहित्यकेँ नव दिशा देबाक श्रेय दैत छथि। मूल समीक्षक एहि निष्कर्षसँ असहमति व्यक्त करैत छथि। तुलना लेल ओ चन्द्रधर शर्मा गुलेरीक हिन्दी कथा ‘उसने कहा था’ क उल्लेख करैत छथि—उत्कृष्ट कथा होइतहुँ गुलेरीक साहित्यिक परिमाण सीमित अछि, तेँ मात्र एहि आधारपर सम्पूर्ण हिन्दी कथा-परम्पराकेँ दिशा देबाक श्रेय देब अतिशयोक्ति होएत। समीक्षकक मतमे यात्रीक मैथिली कृतिसमूह गुलेरीक अपेक्षासँ सेहो छोट अछि। ओ राजकमल चौधरीक एक टिप्पणीक उल्लेख करैत छथि [राजकमल मोनोग्राफ, सुभाषचन्द्र यादव, पृ. 14] । यात्रीक ‘चित्रा’ (25 कविता) आ ‘पत्रहीन नग्न गाछ’ (44 कविता) क उल्लेख अछि; बादक कृति 1968मे साहित्य अकादेमी पुरस्कार पबैत अछि, आ मूल समीक्षक कहैत छथि जे तकर बाद मैथिली लेखन लगभग बन्द भऽ गेल। एहि तथ्यक आधारपर दीर्घकालिक प्रभावक दावापर प्रश्न उठाओल गेल अछि। लेखक यात्रीक वैचारिक जीवनक परिवर्तन—श्रीलंका जाइ बौद्ध भिक्षु बनब आ लौटि गाममे दोसर जनेऊ संस्कारक बाद ब्राह्मण पहचान पुनः ग्रहण करब—केँ वैचारिक अस्थिरताक उदाहरण मानैत छथि। आगाँ कमलानन्द झाक मैथिली साहित्य-बोधपर प्रश्न उठबैत, मूल लेख मुख्यधारा संग समान्तर परम्पराक लेखकसभक अस्तित्वक स्मरण करैत अछि (परिशिष्ट 1 आ 2) । विद्यापति सम्बन्धमे लेखक आरोप करैत छथि जे संस्कृत-अवहट्ट लेखक विद्यापति ठाकुर आ ज्योतिरीश्वर-पूर्व पदावलीकार विद्यापतिक भेद मिश्रित कएल गेल। ओ वामपन्थी इतिहासकार विजय कुमार ठाकुरक लेखन पढ़बाक सुझाव दैत छथि आ कहैत छथि जे ‘प्रबन्ध निबन्ध समालोचना’, खण्ड IIमे हुनकर विद्यापति-विषयक आलेख एहि प्रश्नसभकेँ समेटैत अछि; विदेहक लोगोमे ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिक चित्र अछि, जे कलाकार पनक लाल मण्डल—विदेह सम्मान प्राप्त—द्वारा अंकित बताओल गेल अछि।

Annexure 1

चन्दा झा (१८३१-१९०७), मूलनाम चन्द्रनाथ झा, ग्राम- पिण्डारुछ, दरभंगा। कवीश्वर, कविचन्द्र नामसँ विभूषित। ग्रिएर्सनकेँ मैथिलीक प्रसंगमे मुख्य सहायता केनिहार। कृति- मिथिला भाषा रामायण, गीति-सुधा, महेशवाणी संग्रह, चन्द्र पदावली, लक्ष्मीश्वर विलास, अहिल्याचरित आऽ विद्यापति रचित संस्कृत पुरुष-परीक्षाक गद्य-पद्यमय अनुवाद।

१

न्यायक भवन कचहरी नाम।

सभ अन्याय भरल तेहि ठाम॥

सत्य वचन विरले जन भाष।

सभ मन धनक हरन अभिलाष॥

कपट भरल कत कोटिक कोटि।

ककर न कर मर्यादा छोटि॥

भन कवि 'चन्द्र' कचहरी घूस।

सभ सहमत ककरा के दूस।

२

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला!

गैया जगतक मैया हे भोला

कटय कसैया हाथ

हाकिम भेल निरदैया हे भोला

कतय लगायब माथ

बरसा नहि भेल सरसा हे भोला

अरसा कए गेल मेह

रतिया दिन दुरगतिया हे भोला

जन तन जिवन संदेह

मुखिया बड़ बड़ सुखिया हे भोला

अन्नबक दुखिया डोल

के सह कान कनखिया हे भोला

सुखिया बिरना टोल

३

अस्त्र शस्त्र रोक आब मामिलाक मारि।

भाइ भाइकेँ पढ़ैछ नित्य नित्य गारि॥

ठक्क लोक हक्क पाब साधु कैँ उजारि।

दैव जे ललाट लेख के सकैछ टारि?

चाही नहि धन, ललितवाम, पकवान जिलेबी,

मनोविनोदक हेतु अमरपति सदन न टेबी।
ई अन्तर अभिलाष हमर करुणामयि देवी
भक्ति भाव सँ सतत अहिंक पदपंकज सेवी॥
अन्न महग, डगमग अछि भारत, हयत कोना निस्तारा
उत्तर पश्चिम भूमि अगम्या पर्वत असह तुषारा।
धर्म-विरोधी सहसह करइछ, कुमत कथा विस्तारा
करथु कृपा जगजननी देवी महिसीवाली तारा॥
मिथिला की छलि की भय गेलि,
याज्ञवल्क्य मुनि, जनक नृपतिवर
ज्ञान भक्ति सौं गेलि।
वाचस्पति मिश्रादि जगद्गुरु
निर्जित बौद्ध झमेलि
से शारदा स्वर्ग जनि गेली
बढ़ल कुविद्या केलि।
वर्णाश्रम विधि ककरहु रुचि नहि
श्रुति श्रद्धाकेँ ठेलि
पूजा पाठ ध्यान वकमुद्रा
सभटा वंचन खेलि।
कह कविचन्द्र कचहरी भरिदिन
बहुत भोग कर जेलि,
कलह कराय धर्म धन नाशे
कलिक दरिद्रा चेलि।
४
मय केहन भेल घोर हे शिव!
गोधन विपति, धरम अवनति देखि कत हिय करब कठोर॥
साधु समाज राजसँ पीड़ित अति हरषित-चित चोर।
अकुलिन लोकेँ धरणि परिपूरित कुलिन समादर थोड़॥
धरम सुनीति प्रीति ककरहु नहि, खलहिक चलइछ जोर।
कन्द-मूल-फल सेहो अब दुरलभ अन्न गेल देशक ओर॥
किछु शुभ साधन बनि नहि पड़इछ थाकल मन, मति भोर।
कह कवि चन्द्र हमर दुख मेटत होयत कृपा शिव तोर॥

५

सुमरु सुमरु मन! शंकर समय भयंकर जानि।

ककर हृदय नहि कलुषित शासन कलि नृप पानि॥

केवल शिव करुणाकर सेवयित नहि जन हानि॥

भक्ति कल्पलति जानह परम परशमनि खानि॥

कतहु विषयमे न लागह त्यागह अनुचित मानि।

सुखसौँ अन्त विलसबह 'चन्द्र' चूड़ रजधानि॥

ANNEXURE 2

१

फतुरीलालक अकाली कविता/ अकाली कवित्त

फतूरीलालक फसली बर्ख १२८१ (१८७३-७४ ई. सन) सालक अकाली कविता

[ग्रियर्सन (मैथिली क्रेस्टोमैथी एण्ड वोकाबुलेरी)]

साल एकासिक वर्णन सुनू/ चौदिस पड़ल अकाल
भेल बरिसात खिन्न ऐ सालक/ कहाँ लगि वरनौँ हाल
रोहिणि आदि थीक बरिसातक/ जेहिँ एला तेहिँ गेला
म्रिगिसिरा मन पुरल मनोरथ/ दै झीसा किछु गेला
अरदड़ा आडम्बर भारी/ गरजत हैं चहु ओर
पुख रुख राखल धरती केर/ भेल बरखा केर ओर
पुनर्वसु थिक बड़ पुनीता/ ओहो बड़ा कसरेस
बिआ बिड़ारक जे किछु उपटल/ धनि बरिसल असरेस
मघा भेल मंगाहिआ कल्लर/ जगभरि के नै जान
पुरबा पूर पछ नै राखल/ ककरा करब बखान
उत्तरा आइ जाय घर बैसल/ सपतौं लै नै बून
हथिआ शृंग मुँड़ दै मूनल/ तनिकौं लागल घून
चितरा चित मित नै राखल/ ओहो भेल डाकू धाती
नाक रंगौलन्हि सभै नछत्तर/ दोम नुकौलन्हि खाती
जोतिष पढ़ि-पढ़ि जे जन ऐलाह/ साधि-साधि भूगोल
रेखागणित बीजसौँ ओआकिफ/ तनि कौँ कच्ची बोल
श्रीराम कृपागति ओहो ने जानथि/ जाहि कृपा सभ काज
पानिक प्रश्न कबौं जौं पुछिऐन्हि/ सेहो कहैत होइन्हि लाज
जेहिखन नदी नाल नै भरले/ तेहिखन रौदी सरती
बिना जले जग किछु नै उपजल/ दगध भेल छथि धरती
ते नर रौदीक आगम बूझल/ जे छल कृषि किसान
दैव बेपच्छ पच्छ नै राखल/ जड़ि कटौलक धान
कोदो मड़ुआ एको ने उपजल/ नै उपजल किछु साम
गम्भड़ी गद्दरि खेतहि सुखाएल/ भेल विधाता वाम
मर्तभुवनमे के कर रच्छा/ कहाँ जाइ कैँ भागि
सुखल पताल हाल नै ओतहुँ/ सगरहुँ लागल आगि

धृक जीवन ओइ नृपति इन्द्रकेँ/ जे रोकल गहि पानि
जीवा-जन्तु विकल पुहमीमे/ ताकेँ हो नै आनि
रवी-राय एको नै उपजल/ ने खेढ़ी औ चीन
घर-घर सोच करै नर-नारी/ दुरदिन भेल अब बीन
धनिक लोक सभ मनहि मगन छथि/ राखथि बहुतो ढेरि
हसोथि रुपैया घर कै राखथि/ महगी भेल अब सेर
केओ कुरथी खेत मासु बेसाहल/ जाहि कौड़ि छल अपना
कतेक जना हरिवासर ठानल/ भात बहुत कै सपना
कतेक जना मिलि जनेर बेसाहल/ निरधन बैसल तकइ
भेल धनन्तिरि दूइ फसिल जग/ राहड़ि आओर मकइ
काल पड़ल तिरहुतिमे भारी/ तैँ ई बहि गेल हावा
घर-घर मगन करै नर-नारी/ फाँकि मकइ केर लावा
मालिक और महाजन सभकैँ/ घर-घर ढेरी अन्न
लोक बुझाओन ओहो तकै छथि/ मूँह गरीबक सन
समै देखि बनिआँ सभ सनकल/ डरैँ लगौलक टट्टी
सुन्न दोकान सहरमे परि गेल/ सुन्न भेल सभ चट्टी
सूखल गात बात भौ लटपट/ कतेक बात अब सहना
नर नारी सभ सान तेआगल/ बिकरी भेल अब गहना
मँगटीका खूटी औ तड़की/ नकमुन्नी नै नाक
कटसरि बिछिआ औ झिमझिमिआँ/ बाजूबन्द औ बाक
चन्द्रहार, हैकल औ सिकड़ी/ और घमौरिक दाना
सूति, नवग्रह औ पचखँड़ी/ लशुनी भेल निदाना
तापर दर्बजात नै बचले/ करम भेल निखट्ट
तमघैल, अढ़ैआ औ पिकदानी/ नै तसला औ तटू
बाटी, बट्टा औ पनबट्टा/ भोजन करैक थारी
माधव सीहि सहित सोबरना/ नै बचले घर झाड़ी
धन संपति घर किछु नै बचले/ सभटा पड़ि गेल बंधक
तैओ भूख छुटल नै ककरो/ एहन पेट भेल खंधक
दैब अंश अबतरल कम्पनी/ जा पर राम सहाए
मिथिलापुर बूड़न जब लागय/ से सुनि पहुँचल धाए
खरिद अनाज जहाजहिँ बोझल/ भरती करि करि बोरा
सदर तिलंगा ओआ पर भरती/ और ओलाइति गोरा
हाजीपुरमे लाख हजारम/ कै लाखन हइ पटना
बाजितपुर सुलतानपुर गोला/ नै जानत हौँ केतना
गाड़ी, बैल, छकड़, ऊँट बिहारे/ उबहत हइ सभ दाना
मिसर कन्हैआ कैँ पोखरन मे/ पहिलुक अड़ी ठेकाना
श्री लक्ष्मीश्वर सिंह नृपति/ महाराज मिथिलेश
अचल राज दड़िभंगा/ श्रीपति हरहिं कलेश
गाड़ी बैल लाखन हजारन/ ताकैँ परे घड़ेर
पहिलुक गोला मधुबन, भौड़ा/ जफरा और अड़ेर
बेनीपट्टी, औ पचमहला/ कुम्हरौल औ कमतौल
हरिहरपुर, पिड़ारुछ बरनौं/ कारज केतेकाँ बरिऔल

बारि पोखरि, बिरसायर बरनौं/ पण्डौल को नै जान
नवहद, सरिसो ओ भटपुरा, ता सौँ दक्षिण उजान
झंझारपुर, महरैल, कन्हौली/ मधेपुर हइ खास
बेनीपुर, कमान, नरैहिओ/ बरनौं फूलपरास
झमना हइ जगजानित जगमे/ महथा और बछौर
दुहबी औ महिनाथपुर/ और जैनगर तक हइ दौर
बलदेबपुर औ ढंगा बरनौं/ मिरजापुर लघु हाट
सीबीपटी औ कपसीआ/ सदर गोला सौराठ
गुरबाकैँ परबरसी हाकिम/ कर तिरहुतमे आके
नै तो मरते कत नर नारी/ बाले बचे सुखा के
कत मुरदा गरदा मै मिलते/ असंख जीव चल जाता
सर समधी कैँ संभा ने लम्भन/ नै बचते जलदाता
सभकैँ सभ उप छै भै गेल/ धुर पोखर औ सड़क
रहि गेल ब्राह्मण सोती पण्डित/ कायथ पछिमा ठाकुर फरक
केओ ओरसिअर नाम लिखाओल/ केओ मोहर्रिर भैँट
धर्म्मकार्यमे लुटथि रुपैआ/ तैँ भेल सभ केर भैँट
केओ जमानत दैकैँ बचलाह/ जिनका अमला नेही
ककरो मारि कैँत पिठि तोड़ैन्हि/ उतरैन्हि जन्मक ठेही
ककरहुँ गारत गात सुखाओल/ बहुतो होअय चलाना
मातुपिता घर परिजन रोवय/ बाबू गेलाह जहलखाना
ककरहुँ घर भेल खानातलासी/ भेट मोहर्रिर घौँछ
केओ अदालतिमे डिड़िआइ छथि/ ककरहुँ उपरैन्हि मौँछ
एतना सुनि हाकिम रिसिआओल/ तैँ लागल जन ठीका
नाक रंगौलन्हि सभै मोहर्रिर/ लागल चूनक टीका
जोग, बिकौआ, लौकिक वंशक/ किरिआमंत सुकूल
गाछी, बाँस, बैल औ महिसि/ जगह कैल भकफूल
ताहि रुपैआ सौँ करा गजर/ लै कोरट सौँ रीन
तैँ कारन बहुतो घर झगड़ा/ भाइ भतीजा भीन
आए लाट बहादुर/ औ दड़िभंगा धाम
बाबू औ बबुआन सहित मिलि/ कीन्ह कुमैटी खान
......
......
......
एह सभ संग बैठि कै/ जाय कुमैटी भेल
अजब कार सरकार के/ तिरहुत पहुँचल रेल
बाजितपुरसँ सड़क निकालै/ आये दौड़िह दौड़ी
हहेया गंडक पुल बन्हाए/ आए चौरही चौरी
धर्म्मधीर, बलबीर, कम्पनी/ जानत हइ जगदीशन
लछमी सागर के पोखरिमे/ ताहि कीन्ह इसटीसन
बड़ा लाट कलकत्तेवाले/ श्रीदुर्गा होए संग
आगरा के छोटा लाल बहादुर/ बैठे सभ एकरंग
जुटे कमिश्नर और कलट्टर/ बोलहिं बात नेअंट

एह पाचो इजलास पर बैठे/ संग जात ऐह जंट
खबरि गए अखबार मौँ/ मैथिल के एह हाल
सुनहु फिरंगी अवण दैकैँ/ मेटहु दुख के जाल
हुकुम दीन्ह दोउ लाट को/ सुनहु हमारे बैन
मदति करहु रेआआनको/ क्या बैठे हौ चैन
बड़ा लाट दोउ बीर उठाए/ साहेब औ जरनैल
मेजर मजिस्टर और कलट्टर/ संगजात करनैल
देस देससौँ अन्न मंगाओल/ दीन्ह सभनि के दाम
महामूँग, गहुम औ चाउर/ बजड़ा और बदाम
डोली, पटना औ भटसारे/ दीली औ अजमेर
आगरा और कान्हपुर ढाका/ जहाँ अन्न के ढेर
भए रमाना अन्न तिरहुतिमे/ लादि गाड़ी और बैल
गज, तुरंग, गदहा औ छकड़/ संग सिपाही छैल
छत्री औ पैठान मोगल सभ/ बाँकाबीर रजपूत
सोभा बरनि नजात हइ/ जैसे हनुमन्त दूत
आगे सफर ओ मैना/ पलटन वीर जमान
बरछी औ तरुआरि गहै/ कर गहै तीर कमान
चढ़ि तुरंग पर करै कवाइत/ जमादार होए संग
सोभा बरनि न जात हइ/ देखि तखनुक रंग
करत काम सभ धाममे/ टूट अट सभ लूट
ढाहि भीड़ गाछी सहित/ बान्धै सड़क औ पूल
जिले पटने औ भटसारे/ प्रगन्ना महिसौर
तहाँ बसहिँ एक सज्जन/ तेहि घर जा लक्ष्मी दौड़
श्री द्वारिका प्रशादित/ धर्म्मधीर बुद्धिमान
तहसीलदार कोरट के खासा/ जानहिं सकल जहान
बाबु इसरी प्रसाद दियौटी/ सो मधुबनमे आए
हुकुम दीन्ह सुपरनडेंटकैँ/ टोले टोले होए जाए
मन पँचा मनगर भै लिए/ बहुतो लिए खैरात
धन्य धन्य अंगरेज बहादुर/ सभकैँ जूटल गात
गरिब, गनी, गुरबा, करु जै, जै/ ब्राह्मण देत असीस
श्री रघुनाथ बढ़ै बदसाही/ गदी लाख बरीस
फतुर लाल कवि बरनत हैँ/ एह रौदी के हाल
गौरमिंट गौरनल बहादुर/ तिरहुति राखहिँ बहाल

२

राधाकृष्ण चौधरी (मिथिलाक इतिहास) (विदेह पेटारमे उपलब्ध)

"१७७० क अकाल मिथिलाक इतिहासमे अद्वितीय छल आ मिथिलाक जनसंख्या घटिकैँ एक दम्म कम्म भऽ गेल छल। १८७३-७४ मे पुनः एकटा ओहने अकाल मिथिलामे भेल छल जकर विवरण हमरा फतुरी लाल कविक अकाली कवित्तसँ भेटइयै, अकाली कवित्त अप्रकाशित अछि। अकालकैँ दूर करबाक हेतु आ मजूरकैँ रोजी देबाक हेतु ताहि काल रेलगाड़ीक योजना चलाओल गेल जकरा सम्बन्धमे फतुरीलाल लिखैत छथि-

'कम्पनी अजान जान कलनको बनाय शान।
पवन को छकाय मैदानमे धरायो है॥
छोड़त है अड़ादार बड़ा बीच धाय धाय।
सभेलोग हटाजात केताजात खड़ा है॥
तारकी अपारकार खबरि देत वार वार।
चेत गयो टिकसदार रेल की उवाई है॥
करत है अनोर शोर पीछे कत लगत छोर।
जोर की धमाक से मशीन की बड़ाई है॥
कम्पूसन पहरदार कोथी सब अजबदार।
कोइला भर करल कार धूआँसे उड़ायो है॥
बाजा एक बजन लाग हाथी अस।
पिकन लाग जैसा जो चढ़नदार वैसाधर पायो है॥
गंगाकेँ भरल धार उतरि गयो फतूर पार गाड़ीकी।
अजबकार कवित्त यह बनाया है॥' "

७०. दलित विमर्श आ डॉ. बाबासाहेब आम्बेडकर (१८९१-१९५६)

सारांश
ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित...

बीजशब्द: बाबासाहेब आम्बेडकर; दलित विमर्श; शिक्षा; सामाजिक न्याय; जीवन-वृत्त; इतिहास

१

महाराष्ट्रक एकटा नग्र रत्नागिरी। ओइ नग्र लग एकटा गाम अम्बावडे।

ओइ गामसँ रामजी सपकाळक एकटा परिवार छल, भारतीय सेनामे एकटा स्कूलमे ओ हेडमास्टर रहथि। गौरांगी नीलाक्षी आ भीमा हुनकर पत्नी छलखिन्ह। हुनकर चौदहम सन्तान १४ अप्रैल १८९१ ई. कँ भीमाक कोखिसँ भेल आ तकर नाम भीम राखल गेल, तखन रामजी महूमे पदस्थापित रहथि।

१८९४ ई. मे रामजी सेवानिवृत्त भऽ। भीम जखन ६ बर्खक रहथि तखने हुनकर मायक देहान्त भऽ गेलन्हि आ तकर बाद हुनकर पालन हुनकर अपंग दीदी केलखिन्ह। पिता फेरसँ विवाह केलखिन्हि आ नोकरी लेल गोरेगाँव चलि गेलाह।

२

रामजी सपकाल अस्पृश्य महार जातिक रहथि। ओ कबीरक दोहा सुना कऽ भीमकेँ भोरे-भोर पढ़ैले उठा दै छलाह।

सेवानिवृत्तिक बाद जखन ओ काप-दपोली १८९४ ई. मे एलाह तखन डपोली नगरपालिका शिक्षा विभाग अपन स्कूलमे अस्पृश्यक नामांकन नै लेबाक निर्णय कऽ लेलक। अखन धरि अस्पृश्यक बच्चाक नामांकन ओइ स्कूल सभमे होइ छलै। तखन रामजी मुम्बइ आ फेर सतारा चलि गेलाह। भीमक प्रारम्भिक शिक्षा सतारामे भेलन्हि।

कोनो नौआ भीमक केश नै काटै छल से भीमक बहिन हुनकर केश काटै छलीह।

स्कूलमे हुनकासँ सटि कऽ कियो नै बैसै छल।

कटही गाड़ीबला हुनका तै शर्तपर बैसबै छल जे गाड़ी भीम चलेताह आ ओ आरामसँ बैसत।

पानि पीबाक संकट, जलाशय हुनका लेल नै?

हम विद्या प्राप्त करब, तखन ई सभ भेटत। संकल्प लेलन्हि भीम।

ओतै विद्यालयमे पेंडसे आ आम्बेडकर ई दूटा शिक्षक रहथि।

एक दिन भीम अपनाकेँ भिजा लेलन्हि जे स्कूलमे नै पढ़ऽ पड़ए। मुदा पेंडसे हुनका अपन घर पठेलन्हि आ हुनका धरिया पहिर कऽ स्कूलमे पढ़ाइ करऽ पड़लन्हि।

आम्बेडकरक परम प्रिय शिष्य बनि गेलाह भीम। आम्बेडकर ब्राह्मण रहथि। एक दिनुका गप अछि। भीम खेनाइ नै आनने रहथि, असगरे भुखले पेटे एकटा गाछक छाह तर ओ बैसल रहथि।

पुछलन्हि आम्बेडकर, भीम एना असगरे किए बैसल छी। भीम कहलन्हि जे आइ हम खेनाइ नै आनने छी। कहलन्हि आम्बेडकर, तँ की भेल, चलू आइ दुनू गुरु चेला रोटी तरकारी संगे खाइ छी। भीमक प्रति एहेन नीक आचरण आइ धरि कियो नै केने छल। भीम प्रसन्न भऽ गेलाह।

कहलन्हि आम्बेडकर- भीम, हम अहाँकेँ अपन कुलनाम दै छी, आब अहाँ आम्बेडकर कहाएब।

३

रामजी मुम्बइ आबि गेलाह। एलफिंस्टन स्कूलमे ओ भर्ती भेलाह। १९०७मे स्कूलक शिक्षा ओ पूर्ण केलन्हि। केलुस्कर हुनका “बुद्धचरितम्” उपहारमे देलन्हि।

भीमकेँ स्कूलमे संस्कृत पढ़बाक बड्ड इच्छा रहन्हि मुदा तकर अनुमति नै छल।

जखन भीम १७ बर्खक रहथि तखन ९ बर्खक रमासँ हुनकर बियाह भेलन्हि।

केलुस्कर महोदयक प्रयाससँ बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्ति भीमकेँ प्राप्त भेलन्हि आ ओ १९१२ ई. मे बी. ए. पास भऽ गेलाह।

बड़ोदा सरकार हुनका लेफ्टिनेन्ट पदपर तैनात केलक।

मुदा तकर बाद पिताक मोन खराप भऽ गेलनि, भीम पितासँ भेँट करबाले एलाह, पिता प्रसन्न रहथि। पिता अपन प्रसन्नताक संगे प्रयाण केलन्हि, मृत्युक लीला, भीम जोर-जोरसँ कानथि।

४

बड़ोदा नरेशक छात्रवृत्तिसँ भीम १९१३ ई. मे अध्ययन लेल न्यूयार्क बिदा भेलाह। कोलम्बिया विश्वविद्यालय हुनकर प्रबन्ध स्वीकृत केलक आ हुनका "डॉक्टर ऑफ फिलोसोफी" उपाधि देलक।

घुरलाह भीम।

हुनकर सत्कार कएल जाए, भव्य सत्कार। सभ हित-सम्बन्धी विचारलन्हि।

मुदा ओ नै स्वीकार केलन्हि अपन सत्कार। हमर सत्कारपर होमएबला खर्चासँ छात्रवृत्ति दियौ, वंचितकेँ पढ़ाउ।

बड़ोदा नरेश हुनका बड़ोदा बजेलन्हि। हुनकर अवास-भोजनक व्यवस्था लेल कहलन्हि।

मुदा कोनो भोजनालय वा धर्मशाला हुनका रखबा लेल तैयार नै भेल। एकटा पारसी भोजनालय किछु दिन हुनका रखलक मुदा फेर ओतैसँ हुनका निकालि देल गेल।

एकटा गाछतर ओ कानए लगलाह। शिक्षा प्राप्त करब तँ हमर दोष दूर हएत, से सोचने रही। मुदा आब तँ हम शिक्षा प्राप्त केने छी, आब किए ई यातना देल जा रहल अछि हमरा। प्रण करै छी हम जे ऐ व्यवस्थाकेँ तोड़ि देब, ओकर जड़िपर प्रहार करब।

५

भीम घुरि एलाह मुम्बइ। ओ शिडेनहम महाविद्यालयमे प्राध्यापक बनि गेलाह।

कोल्हापुरक छत्रपति साहू महराज उपेक्षित लोकक उद्धार लेल कटिबद्ध छलाह। भीम ओतए गेलाह, घोषणा केलन्हि माणग्राममे साहू महराज, हे उपेक्षित जन आबि गेल छथि अहाँ सभक उद्धारक- डॉ आम्बेडकर।

मुदा एकटा आर आघात, पुत्र गंगाधरक मृत्युसँ पत्नी रमा खिन्न रहए लगलीह। यशवन्तक पालन ओ करैत रहलीह, पति बड्ड कम समए घरमे दै छलखिन्ह मुदा ओ सभटा सहैत रहलीह।

६

फेर अध्यापनपद छोड़ि ओ "इकोनोमिक एण्ड पोलिटिकल सायंस" नाम्ना लंडन स्थित संस्थामे "द प्रॉब्लेम ऑफ रुपी" पर प्रबन्ध देलन्हि। मुदा हुनका क्रान्तिकारी मानल गेल, से ओ संस्थाक मोनमाफिक संशोधित प्रबन्ध प्रस्तुत केलन्हि आ "डॉक्टर ऑफ सायंस" भऽ घुरलाह। विधिक अध्ययन केलाक बाद ओ न्यायालय सेहो जाइ छलाह।

२० जुलाइ १९२४ ई. केँ ओ "बहिष्कृत हितकारिणी सभा" नामसँ एकटा संस्था बनेलन्हि। कारण हुनकर विश्वास चलनि जे अपन समस्याक समाधान अपने करए पड़त, आन से नै कऽ सकत।

७

८

७१. मैथिलीमे छद्म समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

सारांश

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि। एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी।

बीजशब्द: कमलानन्द झा; मैथिली उपन्यास; समीक्षा-पद्धति; गुलो; साहित्यिक विवाद; पाठालोचना; चौर्य-आरोप

कमलानन्द झाक पोथी "मैथिली उपन्यास: समय समाज आ सवाल" (२०२१) क शीर्षक भ्रामक अछि। ई हुनकर किछु सवर्ण उपन्यासकारपर किछु सिण्डिकेटेड कथित समीक्षात्मक आलेखक संग्रह अछि, २६३ पन्नाक ई पोथी हार्डबाउण्डमे लाइब्रेरीकेँ मात्र बेचल जा सकत, जतऽ ई सड़ि जायत, अमेजनसँ हम ई चारि सय पाँच टाकामे किनलौं मुदा ऐमे पाँचो पाइक सामिग्री नै अछि।

एतऽ एकटा भूल सुधार अछि, एकटा गएर सवर्ण लेखक सुभाष चन्द्र यादवक उपन्यास 'गुलो'केँ बिनु पढ़ने ओ दू पाँति लिखलन्हि आ निपटा देलन्हि, ओ दुनू पाँति हम एतऽ अहाँक मनोरंजनार्थ प्रस्तुत कऽ रहल छी। अहाँ गुलो पढ़नहिये हएब, जँ नै पढ़ने छी तँ पहिने पढ़ि लिअ, कारण तखन बेशी मनोरंजक अनुभव हएत, गुलो सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

"उपन्यासक कमजोरी अछि लेखकक राजनीतिक पूर्वाग्रह। राजनीति विशेषक पक्षधरता रचनाक संग न्याय नहि कऽ पबैत अछि।"

जइ उपन्यासमे राजनीति दूर-दूर धरि नै छै ओतऽ 'राजनैतिक पूर्वाग्रह' आ 'राजनीति विशेषक पक्षधरता'क तँ प्रश्ने नै छै। राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङर धूमकेतु आ यात्री प्रयुक्त केलन्हि। सुभाष चन्द्र यादव जीक 'भोट' जे २०२२मे आयल जे सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवपर ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर, से राजनीतिपर अछि मुदा ओतहुओ सुभाषजीक भगता शैलीकेँ राजनीतिक पूर्वाग्रह बा पक्षधरताक सोङरक आवश्यकता नै पड़लै। पढ़ू हमर पोथी 'नित नवल सुभाष चन्द्र यादव' जे उपलब्ध अछि ऐ http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर।

कमलानन्द झाक बिनु पढ़ने सुभाष चन्द्र यादवक विरुद्ध ब्राह्मणवादी जातिगत पूर्वाग्रह एकटा खतराक घण्टी अछि। जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

(सुभाष चन्द्र यादव जीक अनुमति सँ हुनकर समस्त साहित्य विदेह पेटार http://videha.co.in/pothi.htm पर उपलब्ध अछि।)

ई अपन बायोडाटामे गएर सवर्णसँ छीनि कऽ, समानान्तर धाराक लोकक हककेँ मारि कऽ लेल साहित्य अकादेमीक मैथिल अनुवाद असाइनमेण्टक गर्वसँ चर्चा करैत छथि। आ ई असाइनमेण्ट हिनका मेरिटसँ नै जातिगत टाइटिलसँ भेटल छन्हि, अही सभ किरदानीक एवजमे भेटल छन्हि। हिनका सन लोक लेल मैथिली बायोडेटाक एकटा पाँति अछि, समानान्तर धारा लेल जीवन-मरणक प्रश्न।

दिनेश कुमार मिश्रक 'दुइ पाटन के बीच मे' कोसी नदीक ऐतिहासिक आत्मकथा थीक, ओ मिथिलाक आन धार सभक ऐतिहासिक आत्मकथा सेहो लिखने छथि जेना बन्दिनी महानन्दा, बागमती की सद्गति!, दुइ पाटन के बीच में.. (कोसी नदी की कहानी), न घाट न घर, बगावत पर मजबूर मिथिला की कमला नदी, भुतही नदी और तकनीकी झाड़-फूंक, The Kamla River and People On Collision Course, Bhutahi Balan- Story of a ghost river and engineering witchcraft, Refugees of the Kosi Embankments। साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदात्री समितिक सदस्य पंकज झा पराशर द्वारा हिनकर पोथी सभसँ पैराक पैरा मैथिली अनुवाद कऽ अपना नामे उपन्यास छपबाओल गेल अछि, जकरा छद्म समीक्षक कमलानन्द झा ऐ चोर लेखकक रिसर्च कहै छथि! एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे ई चोर लेखक आ छद्म समीक्षक दुनू अलीगढ़ मुस्लिम विद्यालयक हिन्दी विभागमे छथि। ई रिसर्च दिनेश कुमार मिश्रक थीक, जे आइ. आइ. टी. खड़गपुरसँ सिविल इन्जीनियरिङ मे बी. टेक. १९६८मे आ स्ट्रक्चरल इन्जीनियरिङमे एम. टेक. १९७०मे केने छथि, आ ओइ रिसर्च लेल क्वालिफाइड छथि। जखन कोनो विषयमे नामांकन नै होइ छै तखन लोक हारि-थाकि

हिन्दीमे नामांकन लइए, नै तँ कमलानन्द झा केँ बुझऽ मे आबि जइतन्हि जे ई रिसर्च कोनो सिविल इन्जीनियरेक भऽ सकैत अछि, भऽ सकैए बुझलो होइन्ह। **हिन्दी मूल आ मैथिलीक स्क्रीनशॉट आगाँ संलग्न अछि।**

दिनेश कुमार मिश्र मिथिलाक नै छथि मुदा मिथिलाक सभ धारक कथा ओ लिखने छथि, हम सभ हुनका प्रति कृतज्ञ छी आ हुनकर ऋणसँ मिथिलावासी कहियो उऋण नै भऽ सकता, मुदा मूलधाराक पुरस्कार आ पाइ लोलुप लोकसँ कृतघ्नते भेटत से फेर सिद्ध भेल। ऐ चोर लेखक पंकज पराशरकेँ दस बारह बर्ख पहिने सेहो तारानन्द वियोगी उद्धारक भेटल छलखिन्ह जे लिखने रहथिन्ह जे ओ प्रभावित भऽ अनायासे अपन रचनामे दोसरक सामिग्री आनि लइ छथि, एहने सन। आब ऐ कमलानन्द झा क आश्रय तकलन्हि मुदा दुर्भाग्य! जइ हिसाबे ब्राह्मणवादकेँ आगाँ बढ़बैले कमलानन्द झा वामपंथक सोङर पकड़ै छथि आ सामाजिक न्यायक बलि चढ़बऽ चाहै छथि, तकर प्रति समानान्तर धारा सचेत अछि। सीलिंगसँ बचबा लेल जमीन-जत्थाबला लोक कम्यूनिस्ट बनला आ आब ब्राह्मणवाद बचेबालेल वामपंथक शरण, एहेन लोक सभसँ कम्यूनिज्मकेँ बहुत नुकसान भेल छै।

दिनेश क़ुमार मिश्रक सभटा पोथी आब हुनकर अनुमतिसँ उपलब्ध अछि विदेह आर्काइवमे:

http://videha.co.in/pothi.htm

एतऽ एकटा गप मोन पाड़ि दी जे जखन बिल गेट्सकेँ पूछल गेलन्हि जे की ओ एक्स बॉक्स भारतमे पाइरेशीक डरसँ देरीसँ आनि रहल छथि तँ हुनकर उत्तर रहन्हि जे माइक्रोसॉफ्ट पाइरेशीक डरे कोनो उत्पाद देरीसँ नै उतारने अछि। से विदेह पेटारमे हम सभ ऐ तरहक रिस्क रहितो एकरा आर समृद्ध करैत रहब, कारण समानान्तर धारामे सड़ल माँछ द्वारे पोखरिक सभ माँछ नै सड़ैए, एतुक्का मलाह गोट-गोट कऽ सभ सड़ल माँछ निकालैत रहल छथि, निकालैत रहता।

कमलानन्द झा केर मस्तिष्क आ दृष्टि फरिच्छ करबा लेल दू टा पोथी हम रिकोमेण्ड कऽ रहल छी, ओ पढ़थु: पहिल अछि सुशीलक गामबाली (उपन्यास) (१९८२) आ दोसर अछि हमर दूषण पञ्जी- The Black Book, दुनू उपलब्ध अछि http://videha.co.in/pothi.htm पर। सुशीलपर जखन हमर समीक्षा शुरू हएत तँ कमलानन्द झा लेल राखल एकटा शिक्षा ओतऽ हम देब।

सिण्डीकेटेड समीक्षापर अन्तिम प्रहार।

ऐ छद्म समीक्षक कमलानन्द झा पर हमर नजरि रहत।

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): यह ध्यान देने की बात है कि 1923 से 1946 के बीच कोसी क्षेत्र में मलेरिया से 5, 10, 000, कालाजार से 2, 10, 000, हैजे से 60, 000 तथा चेचक से 3, 000 मौतें (कुल 7, 83, 000) हुईं। **चोर पंकज झा पराशर [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०३)]:**

ने अँग्रेज सब आ ने नवका रंगरेज सब। 1923 सँ 1946 के बीच मे कोसी क्षेत्र में मलेरिया से पाँच लाख दस हजार, कालाजार सँ दू लाख दस हजार, हैजा सँ साठि हजार आ चेचक सँ तीन हजार लोकक मृत्यु भेल! माने सब मिला कए करीब पौने आठ लाख लोक मरि

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): भारतवर्ष में बिहार में कोसी नदी को बांधने का काम 12वीं शताब्दी में किसी राजा लक्ष्मण द्वितीय ने करवाया था और इस काम के लिए उसने प्रजा से 'बीर'की उपाधि पाई और नदी का तटबन्ध 'बीर बांध' कहलाया। इस तटबन्ध के अवशेष अभी भी सुपौल जिले में भीम नगर से कोई 5 किलोमीटर दक्षिण में दिखाई पड़ते हैं। डॉ. फ्रांसिस बुकानन (1810-11) का अनुमान था कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा के लिए बनी बाहरी दीवार रहा होगा क्योंकि यह बांध धौस नदी के पश्चिमी किनारे पर तिलयुगा से उसके संगम तक 32 किलोमीटर की दूरी में फैला हुआ था। डॉ. डब्लू. डब्लू. हन्टर (1877) बुकानन के इस तर्क के साथ सहमत नहीं थे कि यह बांध किसी किले की सुरक्षा दीवार था। स्थानीय लोगों के हवाले से हन्टर का मानना था कि अधिकांश लोग इसे किले की दीवार नहीं मानते और उनके हिसाब से यह कुछ और ही चीज थी मगर वह निश्चित रूप से कुछ कहने की स्थिति में नहीं थे। फिर भी जो आम धारणा बनती है वह यह है कि यह कोसी नदी के किनारे बना कोई तटबन्ध रहा होगा जिससे नदी की धारा को पश्चिम की ओर खिसकने से रोका जा सके। लोगों का यह भी कहना था कि ऐसा लगता था कि इस तटबन्ध का निर्माण कार्य एकाएक रोक दिया गया होगा।

छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा चोर उपन्यासकारक पीठ ठोकब, देखू छद्म समीक्षक कमलानन्द झा द्वारा उद्धृत चोर पंकज झा पराशर (मैथिली उपन्यास, समय, समाज आ सवाल पृ. २५७-२५८):

पंकज पराशरक पहिल उपन्यास 'जलप्रांतर'(2017) शोधपरक उपन्यास अछि। मैथिलीमे शोधपरक उपन्यास लिखबाक परम्परा नहि रहल अछि। एहि दुआरे ई उपन्यास रेखांकन योग्य अछि। पराशरजी एहि उपन्यासमे कोसी नदीक बान्हक इतिहास-कथा लिखलनि अछि। उपन्यासक वैशिष्ट्य ई जे बारहम शताब्दीसँ ल' क' आधुनिक काल धरि कोसी पर बान्ह बनेबाक दुसाध्य प्रयत्न, प्रशासनिक उठा-पटक, राजनीतिक दाँव-पेंच आदिक विस्तृत व्योरा रोचक कथाक माध्यमसँ कहलनि अछि। ध्यान देबाक बात ई जे सभटा सूचना आ व्योरा अत्यन्त विश्वसनीय बनि पड़ल अछि। पढ़ुआ कक्का आ फूल बाबू सदृश्य पढ़ल-लिखल आ सचेत पात्रक माध्यमसँ लेखक एहि अनुसन्धानकेँ रखलनि अछि। दलान पर बैसल लोकक जिज्ञासाकेँ बढ़बैत पढ़ुआ कका कहैत छथिन, ''पहिल बेर बारहम शताब्दीमे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मण सेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह जे 1178सँ 1205 ई. धरि शासन

मैथिली उपन्यास : समय समाज आ सवाल : 257

कयने छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगरसँ दू कोस पश्चिममे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकाननकेँ अनुमान रहनि, जे ई बान्ह सम्भवतः कोनो किलाकेँ रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मतसँ डब्ल्यू. डब्ल्यू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलनि जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत जे नदी पश्चिम दिस नहि बहय लागय।'' एहि तरहेँ बान्हक मादे

चोर पंकज झा पराशर [जलप्रांतर २०१७ (पृ. ३१)]:

पढ़ुआ कका पछिला गप केँ आगाँ बढ़बैत कहलखिन, 'फूल बाबू, कोसी नदीक बेसिन प्राचीन काल सँ मनुक्खक निवास लेल उपयुक्त स्थान रहल अछि। बारहम–तेरहम सदी मे भारत मे जखन कइक टा नदी सुखा गेल, तँ ओहि ठामक पशुचारक समाजक लोक एतय आबि कए बसलाह। तहिये सँ बढ़ैत जनसंख्या आ कोसी नदीक बदलैत प्रवाहक मध्य टकराहटि होमय लागल। नदीक अनियंत्रित धारा केँ लोक बाढ़ि बूझय लागल। पहिल बेर बारहम शताब्दी मे लक्ष्मणसेन द्वितीय कोसी नदीक पुबरिया किनार दिस बान्ह बनौलनि। लक्ष्मणसेन द्वितीय बंगाल के सेन वंशक शासक छलाह, जे 1178 सँ 1205 ईस्वी धरि शासन कयनेँ छलाह। एहि बान्हक अवशेष अहाँ एखनो भीमनगर सँ दू कोस पश्चिम मे देखि सकैत छी। एकटा पश्चिमी विद्वान फ्रांसिस बुकानन के अनुमान रहनि, जे ई बान्ह संभवतः कोनो किला के रक्षा हेतु बनाओल गेल होयत। मुदा बुकानन के मत सँ डब्लू. डब्लू. हंटर सहमत नहि भेलखिन। ओ साफ कहलखिन, जे कोसीक किनार पर बान्ह एहि दुआरे बनाओल गेल होयत, जे नदी पच्छिम दिस नहि बह' लागय।' पढ़ुआ कका सँ मुँहजबानी एतेक रास ऐतिहासिक तथ्य सुनियो कए फूल बाबू सहमति मे मूड़ी नहि डोलेलखिन। जाहि सँ ओतय बैसल लोक सबहक उत्सुकता और बढ़ि गेलनि, जे गप मे एहेन कोन तथ्य रहि गेलै जे फूल बाबू संतुष्ट नहि भेलखिन ? लोक केँ बुझेलनि जे फूल बाबू शास्त्रार्थ के अखड़हा पर माटि फेकि रहल छथिन। पढ़ुआ कका केँ आइ जोड़ीदार भेटि गेलनि !

जलप्रांतर / 31

मूल दिनेश कुमार मिश्र (दुइ पाटन के बीच में... २००६): कोसी के प्रवाह कि भयावहता की एक झलकफिरोजशाह तुगलक की फौज के सन् 1354 में बंगाल से दिल्ली लौटने के समय मिलती है। बताया जाता है कि जब सुल्तान की फौजें कोसी के किनारे पहुँचीं

तो देखा कि नदी के दूसरे किनारे पर हाजी शम्सुद्दीन इलियास की फौजें मुकाबले के लिए तैयार खड़ी हैं। यह वही हाजी शम्सुद्दीन थे जिन्होंने हाजीपुर तथा समस्तीपुर शहर बसाये थे। फिरोज की फौजें शायद कुरसेला के आस-पास किसी जगह पर कोसी के किनारे सोच में पड़ गईं। नदी की रफ्तार उन्हें आगे बढ़ने से रोक रही थी। आखिरकार फैसला हुआ कि नदी के साथ-साथ उत्तर की ओर बढ़ा जाय और जहाँ नदी पार करने लायक हो जाय वहाँ पानी की थाह ली जाये। सुल्तान की फौजें प्रायः सौ कोस ऊपर गईं और जियारन के पास, जो कि उसी स्थान पर अवस्थित था जहाँ नदी पहाड़ों से मैदानों में उतरती थी, नदी को पार किया। नदी की धारा तो यहाँ पतली जरूर थी पर प्रवाह इतना तेज था कि पाँच-पाँच सौ मन के भारी पत्थर नदी में तिनकों की तरह बह रहे थे। जहाँ नदी को पार करना मुमकिन लगा उसके दोनों ओर सुल्तान ने हाथियों की कतार खड़ी कर दी और नीचे वाली कतार में रस्से लटकाये गये जिससे कि यदि कोई आदमी बहता हुआ हो तो इस रस्सों की मदद से उसे बचाया जा सके। शम्सुद्दीन ने कभी सोचा भी न था कि सुल्तान की फौजें कोसी को पार कर लेंगी और जब उस को इस बात का पता लगा कि सुलतान की फौजों ने कोसी को पार करने में कामयाबी पा ली है तो वह भाग निकला।

चोर पंकज झा पराशर [जलप्रांतर २०१७ (पृ. १०५)]:

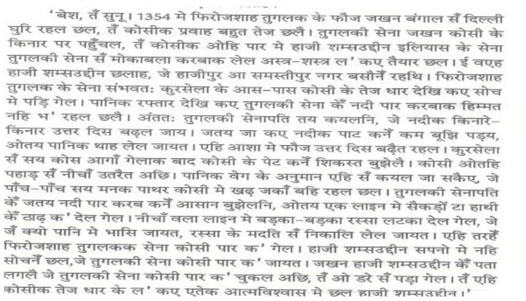

'बेश, तँ सुनू। 1354 मे फिरोजशाह तुगलक के फौज जखन बंगाल सँ दिल्ली घुरि रहल छल, तँ कोसीक प्रवाह बहुत तेज छलै। तुगलकी सेना जखन कोसी के किनार पर पहुँचल, तँ कोसीक ओहि पार मे हाजी शम्सउद्दीन इलियास के सेना तुगलकी सेना सँ मोकाबला करबाक लेल अस्त्र–शस्त्र ल' कए तैयार छल। ई वएह हाजी शम्सउद्दीन छलाह, जे हाजीपुर आ समस्तीपुर नगर बसौनैं रहथि। फिरोजशाह तुगलक के सेना संभवतः कुरसेला के आस–पास कोसी के तेज धार देखि कए सोच मे पड़ि गेल। पानिक रफ्तार देखि कए तुगलकी सेना कैँ नदी पार करबाक हिम्मत नहि भ' रहल छलै। अंततः तुगलकी सेनापति तय कयलनि, जे नदीक किनारे–किनार उत्तर दिस बढ़ल जाय। जतय जा कए नदीक पाट कनैं कम बूझि पड़य, ओतय पानिक थाह लेल जायत। एहि आशा मे फौज उत्तर दिस बढ़ैत रहल। कुरसेला सँ सय कोस आगाँ गेलाक बाद कोसी के पेट कनैं शिकस्त बुझेलै। कोसी ओतहि पहाड़ सँ नीचाँ उतरैत अछि। पानिक वेग के अनुमान एहि सँ कयल जा सकैए, जे पाँच–पाँच सय मनक पाथर कोसी मे खढ़ जकाँ बहि रहल छल। तुगलकी सेनापति कैँ जतय नदी पार करब कनैं आसान बुझेलनि, ओतय एक लाइन मे सैकड़ों टा हाथी कैँ ठाढ़ क' देल गेल। नीचाँ वला लाइन मे बड़का–बड़का रस्सा लटका देल गेल, जे जँ क्यो पानि मे भासि जायत, रस्सा के मदति सँ निकालि लेल जायत। एहि तरहेँ फिरोजशाह तुगलकक सेना कोसी पार क' गेल। हाजी शम्सउद्दीन सपनो मे नहि सोचनैं छल,जे तुगलकी सेना कोसी पार क' जायत। जखन हाजी शम्सउद्दीन कैँ पता लगलै जे तुगलकी सेना कोसी पार क' चुकल अछि, तँ ओ डरे सँ पड़ा गेल। तँ एहि कोसीक तेज धार के ल' कए एतेक आत्मविश्वास मे छल हाजी शम्सउद्दीन।'

कमलानन्द झा प्रसंगपर मैथिली साहित्यकार लोकनिक टिप्पणी

....

उपन्यासकार के छथि, पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

दुखद

RabindraChaudhary

....

बड दुर्भाग्यपूर्ण, आपत्तिजनक आ आपराधिक कृत्य..

KumarManojKashyap

...

ईसभ पढ़ि बहुत चिंतित छी।

R N Mishra

....

दुर्भाग्यपूर्ण

Kalpna JhaPatna

....

आहिरेबा..! फेर ई के छैथ?

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

हे भगवान..! ई ठीके चोरे छैथ।

Umesh Mandal

…………………………………………………..

Gaurinath:

नीक। एहन चोर केर देखार करब जरूरी

पंकज पराशर (जल प्रांतर उपन्यास)

ओकर त लेखकीय जीवने चोरी पर टिकल छै आ तकरा प्रश्रय देब'वाला सेहो मैथिली मे कम नहि।

…………………………………….

एहने चोर लोक सभ मैथिली आर मिथिला के अहित करय मे सदैव आगू रहैत छथि

JhaPrasanna

…………………………………..

एकरा कोर्ट मे लऽ जेबाक चाही

य़ोगेन्द्र पाठक वियोगी

+91 98310 37532

………………………………………………………………….

SubhashChandraYadav: I condemn it. The thief must be exposed.

…………………………………….

अति दुखद, निन्दनीय

ManojPathak

……………………………………….

सादर आभार।

कोट कर सकैत हतन। परंतु श्रोत के चर्चा करनाई आवश्यक हय। न त साहित्यिक चोरी मानल जायत।

RamanandMandal

……………………………………..

धन्यवाद।

VidehaKeshavBhardwajDelhi

……………………………………………….

Nabo Narayan Mishra

दुर्भाग्यपूर्ण स्थिति

………………………………………………

Mukund Mayank

Oh

……………………………………………….

प्रदीप पुष्प

बहुत खराप बात।

....

Abhilash Thakur ·

घृणित कार्य! लज्जा जोग

....

Ajit Kumar Jha

पता नहि लाजो नहि लगैत छन्हि एहन प्रवृति वाला महानुभाव सब कैँ। एहन लोग सब कैँ लेल सेहो अलग सँ पुरस्कारक घोषणा होयबाक चाही। पर्दाफाश करबाक लेल अपने कैँ साधु वाद।

....

Ramesh Kumar Sharma

पुरस्कार पाबै के जल्दबाजी हेतै

....

Kunal

उपन्यास आ तकर लेखकक नाम घोषित करु

....

Ashish Anchinhar

Kunal जी, जँ कोनो समान्य पाठक ई प्रश्न पुछने रहितथि तखन हमरा नीक लागैत।

प्रबुद्ध पाठक ओ लेखक वर्गसँ ई प्रश्न एबाक मतलब छै जे स्थिति गंभीर भऽ गेल छै। ओना जखन पुछिये देलहुँ अछि तखन एकर उत्तर अछि- पोथी, जलप्रांतर, पंकज पराशर। एहि पोथीक गदगदी आलोचक, कमलानंद झा।

....

Kunal

Ashish Anchinhar धन्यवाद।

एना सार्वभौम जकां छइ जे बेस गंभीर आरोप लगाओल जाइ छइ मुदा नाम नइ लेल जाइ छइ। एना हमरा हाइपोक्रेसी क चरम लगइए। ई अनसोहांत छी।.........

आब नाम ल गेल छइ। त हमरा लगइए जे पंकज परासर (उपन्यासकार) आ कमलानंद झा (आलोचक) के बाजक चाही।

....

Lakshman Jha Sagar

एहेन चोरक सामाजिक बहिष्कार हेबाक चाही। आगि पानि ढ़ाइठ देबाक चाही। मुँह मे कारी चुन लेपि के गदहा पर सरेआम घुरेबाक चाही। एहेन कुदशा कय देबाक चाही जे फेर क्यो एहेन घृणित काज नै करय।

....

Chitragupta Chitragupta

अत्यन्त दुखद

..

जगदानन्द झा 'मनु' ·

मिथिला मैथिलीमे साहित्यक चोरी जगजाहिर अछि। मुदा आब साहित्य अकादमी आ ओकर लेकक द्वारा.... बहुत निंदनीय काज, एहेन एहेन लोककेँ अवश्य देखार करबा चाही

....

श्रीधरम

ई पंकज परासर, हम त' पढ़बाक आवश्यकता नहि बुझलहुं। प्रतिभाक नाम पर मात्र जुगाड़ छनि हिनका लग।

....

विदेह: प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA (since 2004). http://videha.co.in/ अंक २६-५० क रिपोर्ट पर टिप्पणी (पंकज झा पराशर पुरान चोर अछि।)

....

kellner@ucla. edu"

Dear Gajendra, thanks for the detective work. was there a response? best regards,

Douglas Kellner, Philosophy of Education Chair

Social Sciences and Comparative Education, University of California-Los Angeles, Box 951521, 3022B Moore Hall, Los Angeles, CA 90095-1521, Fax 310 206 6293, Phone 310 825 0977 http://www.gseis.ucla.edu/faculty/kellner/kellner.html

....

dear Gajendraji, apnek mail milal. Pankajjik kritya janike bar dukh bhel. Ahi se maithilik nam kharab hoyat achhi. Apnek kadam ekdum uchit achhi**.- Rajiv K Verma**

....

These People are hellbent to bring down the literary discourse down to the gutter. Now you have been receiving mails like one. We are with you and i have forwarded your mails to Maithili speaking people all across the country. Sir I have sent the link of Parashar's duplicacy to several people along with Pranabh Bihari who had traslated that article. I had telephonic conversation with him also and he was quite upset over Parashar' s duplicay. Pranav is my junior and a good friend of mine. since you have referred Pranav who had traslated that article it is unfortunate that he was misused by Parashar. But i must congratulate you for exposing scam run by Parashar and his team. Parashar, though must not be blamed if he lifted the article of Nom Chomskey . Now i must doubt the artistic sensibility of Parashar who is now a pseudo-- intellectuals. I am amazed that how did he dare to publish the article of Nom Chomskey as his own. God bless him no more. - **VIJAY DEO JHA**

....

dhanyvad. muda ehne lok sabjagah aadar pabait achi. -**shridharam**

....

अहां कें सूचनार्थ पठेने छी (किछु घृणित काज पंकज पराशरक) जे पंकज पहिनेहो इ सब काज करैत रहय छलैए।- **aavinash**

....

Dear Gajendra g, You are doing very well in the field of collecting all the documents related to the Maithili. Videha. Com realy a adventureous collection. I will also find some time to learm the article published through the videha. Now your detective style theft the sleeping of many of the so called literary personnel. Go a head. jai Maithili jai Mithila- **Sunil Mallick**, President, MINAP, Janakpur

....

your efforts are commendable. Anysuch ghost writer or fake identity holder must be boycotted from literature at once Thanks.- **shyamanand choudhary**

………………………………………………..

Namaskar. Chetna samitik sachiv ken mailak copy hastgat kara del achi.- **Dr. Ramanand Jha' Raman'**

……………………………………………….

प्रिय गजेन्द्र जी, चेतना समिति हिनका सम्मानित कएलक अछि सेहो हमरा ज्ञात नहिं | यद्यपि हमहू चेतना क स्थाई सदस्य | जे हो. मुदा निंदास्पद घटना तं ई थिके तें दुखी कयलक | कतिपय नव मैथिल-प्रतिभाक आकलन-मूल्यानकनक हमर अपन स्नेग्रही स्वभाव, एहि दुर्घटनाक बाद तं आब चिंता मे ध' देलकय| देखी, हम अपने विस्मित भेलहुँ| बहुत दुः खद दृश्य | सृजन विरूद्ध साहित्यिक सन्दर्भ मे ई घटना आधुनिक मैथिलीक बहुत कुरूप प्रसंग क' क' स्मरण कैल जायत- सस्नेह,- **गंगेश गुंजन**.

……………………………………………….

PRIYA MAITHILJAN, APPAN BHASHA- SANSKAR-SANSKRITI KE ASMARAN KARU AA EHAN VIVADAASAPAD LEKANI B KARANI KE VIRAM DIYA. ESWAR KE SAKCHI MANI - DIL PAR HATH RAKHI AA KULDEVI KE ASMARAN K-K YAD KARU KI SACHHAI KE KATEK KARIB CHHI. NIK BATAK LEL MANCH KE UPYOG KARI TA UTTAM. DHANYABAD. SAPREM- **PK CHOUDHARY**

………………………………………………………….

Gajendra babu, pankaj puran chor achhi. Ham sab okar likhit ninda das sal pahine aarambh me kene rahi. Okra ban k kay ahan nik kayal. Chetna samiti ke seho samman wapas lebak chahi aa okar ninda karbak chahi.- **subhash Chandra Yadav**

……………………………………………………….

प्रिय ठाकुरजी! (माननीय संपादक), “विदेह ई-पत्रिका” [मैथिली], एखन धरिक उपलब्ध साक्ष्यक आधार पर हम अपनहिक संग जाएब पसिन्न करब।- **शंभु कुमार सिंह**

………………………………………..

Dear Gajendraji,

I fully agree with you that we must fight against blatant cases of wrongful appropriation.

हां अपन मेल में लिखने छी जे विदेह आर्काइव से संबंधित लेखक'क सबटा रचना हटा लेल जायत। अहि से आर्काइव सं ई प्रसंग सेहो, एकर साक्ष्य सेहो मेटा जायत। हमर मत ई जा साक्ष्यब रहबाक चाही निक आ अधलाह दुनु तरहक काज'क। अहां अप्पसन कामेंट आ र्निणय सेहो आर्काइव मे जा के संबंधित रचना के पोस्टा-स्क्रिाप्टर के रुप मे भविष्या'क पाठक'क लेल सुरक्षित राखि सकैत छियन्हि। ई दोहरेबाक बहुत औचित्यक नहि जे विदेह निक लागि रहल अछि आ अहांक परिश्रम एकदम देखा रहल अछि। ईति, सदन।- **Sadan Jha**

………………………………………

Thank you.- **Nishikant Thakur**

……………………………………………

Thanx Gajendraji, for your immediate response. I must congratulate you for the work you have done to save the sanctity of the literature world as a whole. I feel proud for the person like you who shows the courrage to bell the cat. If the so called writers like Parasharji are there to spoil the sea, on the other side it is very hopeful sight to have a person like you who is alert enough to take care of such filth & keep the sea clean. Thanx for enlightening me on the subject. Regards- **Bhalchandra Jha**.

…………………………………..

पंकज पराशरकेर एहन कार्य पर स्मरण अबैत अछि करीब बीस-पचीस साल पहिलुक घटना, जहिया आकाशवाणी दरभंगासँ म, म, डॉ, सर गंगानाथ झाक एकमात्र मैथिलीक कारुणिक पदकेँ एक गोट कवि द्वारा अपन कहि प्रसारित कए देल गेल छल, जे बादमे (सजग श्रोता द्वारा सूचना देलाक बाद) आजन्म बैन कए देल गेलाह। कहबाक तात्पर्य जे जँ हम मैथिल दरभैगा- मधुबनीमे गंगानाथ बाबूक पदकेँ अपन कहि सकैत छी तँ ई कोन बड़का गप। निश्चये एहन रचनाकारकेर सङ्ग कड़गर डेग उठाएब आवश्यक।- **ajit mishra**

……………………………………..

Dear Gajendrajee, We should take strong step to prevent such intellectual cheats. My support is always with you.- **K N Jha**

………………………………………………

This seems to be a dangerous trend and we should also try and refrain from publishing anything from such authors. Regards,- **Prof. Udaya Narayana Singh**

…………………………………………………………..

प्रियवर ठाकुर जी, मैथिल साहित्यकार आब साइबर क्राइम सेहो क रहल छथि, ई जानि अपार प्रसन्नता भेल | पंकज पराशर के नकारात्मक बुद्धिक पूर्ण उपयोग करबाक लेल हम नोबेल प्राइज सा सम्मानित कराय चाहैत छी |- **बुद्धिनाथ मिश्र**

……………………………………………….

Sampadak Mahoday, Apne ehi prakarak durachar rokwak lel je prayash ka rahal chhee ohi lel dhanyabad. Ehen blackmailer sa maithili ken bachayab aawashyak achhi, Sadar- **SHIV KUMAR JHA**

…………………………………………………

गजेन्द्र भाई, नमस्कार! मैथिली मे एहि तरहक काज लगातार भ' रहल अछि। किछु व्यक्ति एहि धंधा मे अग्रसर छथि। मैथिलीक सम्पादक लोकनिक अनभिज्ञताक फायदा कतेको अंग्रेजी पढ़निहार तथाकथित साहित्यकार लोकनि उठा रहल छथि। पंकज जीक पहल मे छपल लेख के हम सेहो पढ़्ने हीं आ किछुए दिनक बाद हम नेट पर मूल लेखकक आलेख के सेहो पढ़लहु। हमरा त' आश्चर्य लागल छल जे पंकज जी आलेखक कम स कम शीर्षक त' बदलि लैतथि मुदा हुनका एतेक ज्ञान रहितनि तखन की छल। एतबे नहि, हिनक बहुत रास कवितो अंग्रेजी साहित्य स' हेर-फेर कयल गेल अछि। खैर! जे करथि ...। मुदा एहि बेर कहाबत ठीक होबाक चाही " सौ सोनार के त' एक लोहार के "। प्रकाशन मे जे भी कियो व्यक्ति गलती क' रहल छथि हुनका गंभीर क्रिमिनल बुझबाक चाही। धन्यवाद एहि लेल अहाँ के जे एतेक जोरदार तरीका स' एहि गप्प के उठैलहु।- अहाँक- प्रकाश चन्द्र (**प्रकाश झा**, मैलोरंग)

………………………………………………

pankaj parashar vala prasang bar dukhad laagal. - **kamini**

……………………………………

Gajendr jee, maamailaa ke tool jatabe debainhi, sabhak oorjaa otabe svaahaa hetai. हमर मनतब एतबे, जे एक बेर अहां देखार क देलहुं, आब छोडि देल जाओ. हिन्दीयो मे एहिना भ रहल छै. बेर बेर आ खराब भाषा मे लिखल मोन के दुखी करैत अछि. फेर लागैत अछि जे अहि मे समय कियैक नष्ट करी? हिन्दुस्तान मे जाति आ सेहो मैथिली से जाति नयि जाएत. हम एकरा नयि मानैत छलहुं मुदा आब 30 बरख से मैथिली मे लिखनाक बाद आब देखल जे एक ओर 1 मैथिली साहित्य मे लिली जी, उषा जी आ शेफलिका जी के बाद यदि किओ नाम लैत अछि त हमर. 2 एखनो कोनो पत्रिका बै छै त हमरा लेल रचनाक आग्रह होइते छै. 3 एखनो हम ओतबे सक्रिय छी आ निरंतर लिखि रहल छी. 4 दुखद जे हमरा बाद (सुस्मिता पाठक आ ज्योत्स्ना मिलन के हम अपने तुरिया बुझैत छी) के बाद एहेन कोनो सशक्त कोन, महिला लेखने नयि आएलए. 5 ई स्थिति रहलाक बादो, आब जहन हम देखै छी, त पाबै छी जे हमरा पर, हमर रचना यात्रा अथव हमर रचना पर किछु नयि लिखल गेलए, चाहे ओ मोहन भारद्वाज रहथु अथवा आन किओ. जहन हमर दशक केर चर्च होइत छै, तीन चारिटा नाम पर सविस्तार चर्चा होइत छै, जाहि मे हमर नाम नयि रहैत छै. हमर नाम मात्र सन्दर्भ लेल जोडि देल जाइत छै. 6 एतेक दिन मे मात्र रमण जी हमरा पर एक गोट लेख लिखलन्हि. हम ओकरा पुन: टाइप करबा के अहां लग पठायब. 7 जाति पाति धर्म आ द्वेष पर कहियो ध्यान नयि देलाक कारणे त कही हमर ई स्थिति नयि छै, आब हमरा ई सोचबा मे आबि रहल अछि. 8 हमर शिक्षक, जे स्वयं हिन्दी के ख्यातिलब्ध कथाकार छथि, हमरा बुझेने रहलाह जे हम मैथिली मे

लिखब बन्न क; दी, कियैक त हम गैर मैथिल (जाति विशेष) से नयि छी, तैं हमर लेखन के कहियो मैथिल सभ नयि नोटिस करताह, कहियो किछु नयि करता.. अपन भाषाक प्रति प्रेम के आगरह कारणे हम हुनकर बात नयि माननलियै, लिखैत गेलहुं, मुदा आब लागि रहलअए जे हुनकर कहबी सही छलन्हि की? 9 एखनो की हाल छै मैथिली मे, देखियो. ओकरा विरुद्ध किछु करियु. मैथिली मे जे पैघ पैघ संस्था चाइ, चेतना समिति सनक, सभ बेर विद्यापति पर्व मनबैत छथि. लाखो खर्च करै छथि, मुदा नीक लेखक केर पोथी सभ बेर 5-7 टा निकालैथु, से नयि होबैत छन्हि. 10 हमरा भेटल जानकारी के मोताबिक विद्यापति हॉल किराया पर चढै छै. तकरा मे कोनो आपत्ति नयि, यदो ओकरा से किछु आय होबै. मुदा ओकरा मैथिलीक काज अथवा नाटक आदि लेल मांगल जाएत, त; नयि भेटै छै. यदि ओकर शुल्क चुका दी, तहन त किरायाके रूप मे किऊ ल' सकि छै. एकरा सभ के उजागर करी. 11 व्यक्ति से संस्था पैघ होइत छै. जतेक संस्था सभ छै, तकरा पर लिखी, साहित्य अकादमीक मैथिली विभाग सहित. 12 लिली रेक सभटा रचनाक अनुवाद अधिकार हमरा देने छथि. हुनक साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त पोथी 'मरीचिका' केर हिन्दी अनुवाद लेल पिछला 2-3 साल से हम लिखि रहल छी. साहित्य अकादमीक पत्रिका 'समकालीन भारतीय साहित्य" मे हम पिछला 25 साल से अनुवाद सहित छपि रहल छी. मुदा हमरा से अनुवादक नमूना मांगल गेल. ओहि कुर्सी पर जे स्वनाम धन्य बैसल छथि, हुनका हमरा मादे नयि बूझल त कोनो मैथिल साहित्यकार से पूछि सकैत छलाह. ई तहिने भेलै, जेना एक बेर एक गोट चैनल ऋषिकेश मुखर्जी से हुनकर बायोडाटा मंगने छल आ एखनि पढल समाचारक अनुसारे आ. जानकी वल्लभ श्हस्त्री से हुनकर बायोडाटा पद्मश्री लेल मांअगल गेलैय. 13 अपन विनम्रता दर्शाबैत हम लिली जीक दू तीन टा कथाक हिन्दी अनुवाद हम पठा देलियन्हि. तैयो अई पर कोनो विचार नयि. लिखला के बाद हमरा कहल गेल जे हम लिली जी से साहित्य अकादमी के अनुवादक अधिकार दियाबे मे मददि करी. आरे भाई, अहां के अनुवाद से मतलब अछि ने, आ जहन हम अनुवाद क; के देब' लेल तैयार छी तहन अकादमी के किअयैक अधिकार चाही? अई लेल जे अकादमी अपन पसीनक आदमी के अनुवाद लेल द; सकय. एखनि धरि ओकरा पर निपटारा नयि भेलैये. अकादमी से फेर कोनो पत्र नयि आएल अछे. अनुवाद तैयार राखल छै. लिली जी आब बहुत बुजुर्ग भ; गेल छथि. हुनक मात्र इयैह इच्छा छै (आ बहुत स्वाभाविक) जे हुनकर पोथी सभ हुनका सोझा मे प्रकाशित भ; जाए. 14 लिली जी के पोथी हिन्दी मे आनबाक श्रेय हमरे अछि, ई मनितहुं ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लड़ू. 15 मैथिली के भारतीय ज्ञानपीठ से पुस्तक प्रकाशन लेल हमही आगां एलहुं आ प्रभास जी आ लिली जी के पोथी बहार भेलै. भारतीय ज्ञानपीठ से मैथिली पुस्तक प्रकाशन के श्रेय हमरे छन्हि, ईहो मनैत ओकरा रेकॉर्ड केनाए मैथिल समीक्षक आवश्यक नयि बुझैत छथि. एकरा पर लड़ू. गजेन्द्र जी, मैथिलीक ई सभ मानसिकता पर आन्दोलन करी जाहि से रचनाकार आ वरिष्ठ रचनाकार सभ के अपमानित नयि होब' पडै. अहां चाही त' एकरा विदेह पर द' सकै छी. हम दोसर बात सेहो लिखि के पठायब. मुदा हम फेर कहब, जे हम व्यक्ति के नयि संस्था आ व्यक्ति के मानसिकता के दोष देबन्हि. लोक पढथु आ पूचाथु ई स्वनामधन्य सभ से जे जकरा से अहां के गोलौंसी अछे, तकरा पर अहां लिखब आ जकरा से नयि अछे, जे मौन भावे लिखि रहलए कोनो विविआद मे पडल बगैर, हुनका लेल ई व्यवहार? -**विभा रानी**.

....

Shri gajendraji, good work. Anha sa ehina neer khshir vivekakak ummeed lagatar banal rahat. chor ke ehina dekhar kelak baad dandit seho karbak prayas karbaak chahi. anha bahut raas neek pahal ka rahal chhi. Saadhuvaad.- **manoj pathak**.

....

We should be greatful to Pankaj Parashar that he did not lay claim on the magnum opus of Kavi Vidyapati. I know him very well and his group as well. They have no love for Maithili in fact they are the moles planted by vested Hindi writers to damage maithili. Parashar and likes are the distructive lots and they are the culprits for agonising senior writers of Maithili those who dedicated their life for Maithili language and literature. I have no sympathy for him. I cant say, even, God bless them. - Chitra Mishra

....

तारानन्द वियोगी: (मिथिला सृजन: जून-जुलाई २०१०, वर्ष-१, अंक-२): हुनक (पंकज पराशरक) अनेक रचना एहनो छनि जकर जन्म दोसरक काव्य रचना पढ़लाक अनन्तर भेलनि अछि। कविता ओ परिपूर्णत: हुनके थिकनि मुदा किछु गोटेकेँ ई कहबाक अवसर भेटि गेलनि जे ओ पंकज चोर-कवि थिकाह। हम देखैत छी जे चोर समीक्षक भने ओ होथु, चोर-कवि ओ कदापि नहि छथि। मुदा एना किएक

भेल? एहि दुआरे भेल जे आनक रचना पढ़ि कऽ अपन अनुभूतिमे उतरैत काल ओ आनक आभामंडलसँ तेना आक्रान्त छलाह जे तकर छाप कविताक दृश्यमे देखार पड़ि गेल। ई वस्तुतः सिद्धताक कमी थिक, जकरा क्यो रचनाकार रचिते-रचिते सिद्ध कऽ सकैत अछि।

………………………………………………………..

गौरीनाथ (अनलकान्त)- सम्पादकीय अंतिका अक्टूबर-दिसंबर, 2009- जनवरी-मार्च, 2010- पंकज पराशर प्रसंगमे- हँ, दंद-फंद करैवला किछु लोक सब ठाम पहुँचि जाइ छै आ तेहन लोक एतहुँ अपन धूर्तता आ चोरि कला देखबै छथि। मुदा तकरो असलियत उजागर करब असंभव नइँ रहल। "विदेह"क गजेन्द्र ठाकुर एहन एक "युवा" (पंकज झा उर्फ पंकज पराशर) क असली चेहरा हाले मे देखोलनि।

…………………………………………………..

ई पंकज झा पराशर पहिनहियेसँ एहि सभमे संलग्न अछि, हरेकृष्ण झाक कविताकेँ हिन्दीमे, बिना अनुमतिक, छपबै छथि; ई गप आर पुष्ट होइत अछि कारण विद्यानन्द झा जीक कविता सेहो ई पंकज झा पराशर एकटा हिन्दी पत्रिकामे बिना अनुमतिक छपबओलक (ई सूचना हरेकृष्ण झा जी द्वारा प्राप्त भेल, जे विदेहमे छपलाक बाद पंकज झा पराशर हुनका फोन कऽ कय टॉर्चर केलकन्हि जखन ओ बीमार रहथि। हरेकृष्ण झा जी फोन द्वारा सेहो सूचित केलन्हि, हम कहलियन्हि जे की ई सूचना विदेहसँ हटा दी? तँ **हरेकृष्ण झा** जी कहलन्हि, रहऽ दियौ, सत्य जे छै, से ईएह छिऐ- सम्पादक) । ई पंकज झा पराशर कएक बेर, केलक मुदा ऐ बेर तँ ओ अपने नामे दोसराक रचना छपबा लेलक, अनुवादक रूपमे नै।-सम्पादक)

रमेश

७२. बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक

सारांश
विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत।

बीजशब्द: पंकज पराशर; साहित्यिक चौर्य-विवाद; मौलिकता; अनुवाद; साहित्यिक नैतिकता; पाठकीय प्रतिक्रिया; विदेह-सदेह

विदेह-सदेह २ (२००९-१०) सँ पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि आ साइबर अपराधक पापक घैलक महा-विस्फोट भेल अछि। ई पैघ श्रेय पत्रिकाक सम्पादक श्री गजेन्द्र ठाकुरकेँ जाइत छनि। हुनकर अपराध पकड़बाक चेतना केर जतेक प्रशंसा कयल जाय, कम होयत। “विदेह” क मैथिली प्रबन्ध-समालोचना- अंक, अइ पोल-खोल लेल कएक युग धरि विलम्बित भऽ कऽ निबद्ध रहत, से “समय कैं अकानैत” कहब कठिन अछि।

साहित्योमे चौर्यकलाक उदाहरण पहिनहुँ अबैत रहल अछि गोटपगरा। मुदा एक बेरक चोरि पकड़ा गेलाक बाद प्रायः चोरिक आरोपी साहित्यकार मौन-व्रत धारण करैत रहलाह अछि आ मामिला ठंढ़ाइत रहल अछि।

मुदा ताहि परम्पराक विपरीत अइ बेरक चोर’ सिन्हा चोर’ निकलल अछि आ विगत एक दशकसँ निरन्तर चोरि करैत जा रहल अछि- सेन्ह काटिकऽ। आ तेहेन महाचोरकेँ मैथिलीक साहित्यकार आ संस्था सभ तरहत्थीपर उठा-उठा कऽ पुरस्कृत केलक अछि आ समीक्षाक चासनीमे चोरायल कविता सबकेँ बोरि देल गेल अछि।

विदेह-सदेह-२ प्रमाण-पुरस्सर अभियोगे टा नहि लगौलक, अपितु एहेन महत्वाकांक्षी असामाजिक तत्वक विरुद्ध साहित्यिक दण्ड आरोपित कऽ अपन “बोल्डनेस” सेहो प्रदर्शित केलक अछि। एक दशकमे तीन बेर पकड़ायल चोर प्रायः “डेयर डेभिल” होइत अछि आ अपन अनुचित। सीमाहीन महत्वाकांक्षाक पूर्ति लेल अपन वरीय संवर्गीय व्यक्तिकेँ सीढ़ीक रूपमे उपयोग करैत अछि आ स्वार्थ-सिद्धिक उपरान्त अपन पयर सँ ओही सीढ़ीकेँ निचाँ खसा दैत अछि। फेर ओकरा अपन ट्विटर-फेसबुक-नेट वा पत्रिकामे गारिक निकृष्टतम स्तरपर उतरऽ मे कनियों देरी नहि होइत छै। ओ नाम बदलि-बदलि कऽ गारि पढ़ैत अछि आ अपन प्रशंसामे जे. एन. यू. क छात्र-छात्राक पोस्टकार्ड लिखेबामे अपस्याँत भऽ जाइत अछि। ओ हिन्दीक कोनो बड़का साहित्यकारक बेटीक संग अपन नाम जोड़ि विवाहक वा प्रेम-प्रसंगक खिस्सा रस लऽ लऽ कऽ प्रचारित करैत अछि। एहेन प्रवृत्ति कएटा आओर तिकड़मबाजमे देखल गेल अछि जे हिन्दीक पैघ-पैघ नामक माला जपि कऽ मठोमाठ होअय चाहैत अछि। वस्तुतः ई चिन्ताजनक तथ्य थिक जे मैथिलीक नव-तूरकेँ हिन्दीक पैघ-पैघ नामक वैशाखीक एतेक जरुरति किऐक होइत छनि?

“विदेहक” “इनक्वायरीक विवरण” पढ़ि कऽ रोइयाँ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। पहल-८६ आ आरम्भ-२३ मे जे पोल खूजल छल, अइ तथाकथित साहित्यकारक, तकरा बादे मैथिली साहित्यसँ बारि देल जेवाक चाहैत छल। मुदा विडम्बना देखू जे चेतना समिति सम्मानित कऽ देलक। “मैथिल ब्राह्मण समाज”, रहिका (मधुबनी) सन अँखिगर संस्थाकेँ चकचोन्ही लागि गेल, जखनकि संस्थामे विख्यात साहित्यकार उदयचन्द्र झा “विनोद” आ पढ़ाकू प्रोफेसरगण छथि। ई संशयविहीन अछि जे पुरस्कृत करेबामे विनोदजीक महत्वपूर्ण भूमिका रहल हैत। “विदेह” द्वारा रहस्योद्घाटन केलाक बावजूद एखन धरि चेतना समिति अथवा मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिकाकेँ अपन पुरस्कार आपस करेवाक वा आने कोनोटा कार्रवाई करवाक बेगरता नहि बुझा रहल छै आ सर्द गुम्मी लधने अछि। एहेन “जड़-संस्था” सभ मैथिली साहित्यक उपकार करैत अछि वा अपकार? ई केना मानल जाय जे पहल-८६ वा आरम्भ-२३ अइ दुनू संस्थाक कोनो अधिकारी वा साहित्यकारकेँ पढ़ल नहि छलनि?

ई आश्चर्यजनक सत्य थिक जे मैथिलीक कएटा पैघ साहित्यकार पंकज पराशरक कृत्रिम काव्य आ आयातित शब्दावलीमे फँसि गेलाह अछि। “विलम्बित कएक युग मे निबद्ध” क भूमिकामे अनेरो विदेशी साहित्यकारगणक तीस-चालिस टा नाम ओहिना नहि गनाओल गेल अछि, अपन कविता कैं विश्वस्तरीय प्रमाणित करबाक लेल अँखिगर चोरे एना कऽ सकैत अछि। सम्भावना बनैत अछि जे डगलस केलनर जकाँ ओहू सभ कविक रचनाक भावभूमिक वा शब्दावलीक चोरिक प्रमाण एही काव्य-पोथीमे भेटि जाय। अंततः मि. हाइडक कोन ठेकान? मैथिलीमे तँ लोक विश्व-साहित्य कम पढ़ैत अछि। तकर नाजायज फायदा कोनो ब्लैकमेलर किऐक नहि उठाओत? आखिर टेक्नो-पोलिटिक्स की थिक- टेकनिकल पोलिटिक्स थिक, सैह किने? एकरा बदौलत झाँसा दऽ कऽ पाकिस्तानोक यात्रा कयल जा सकैत अछि। “टेक्नो-पोलिटिक्सक” बदौलत किरण-यात्री पुरस्कार, वैदेही-माहेश्वरी सिंह “महेश” पुरस्कार, एतेक धरि जे विदितजीक अकादमीयोक पुरस्कार लेल जा सकैत अछि। प्रदीप बिहारीक सुपुत्रक भातिज-कका सम्बन्धक मर्यादाक अतिक्रमण कयल जा सकैत अछि। प्रो. अरुण कमलक “नये इलाके में” सेंधमारी कऽ कऽ “समय कैं अकानल” जा सकैत अछि। आर तँ आर,

अइ टेकनिकल पॉलिटिक्सक बदौलत जीवकान्तजी सन महारथी साहित्यकारसँ “विलम्बित कएक युग...” पोथीक समीक्षा लिखबा कऽ “मिथिला दर्शन” (५) सन पत्रिकामे छपवा कऽ स्थापित आ अमर भेल जा सकैत चछि। मैथिली साहित्यक सभसँ पैघ सफल औजार थिक “टेक्नो पोलिटिक्स”!

ई मानल जा सकैत अछि जे मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ आरम्भ-२३ आ पहल-८६ कोलकातामे नहि भेटल होइन्हि। मुदा जीवकान्तजी नहि पढ़ने हेताह से मानबामे असौकर्य भऽ रहल अछि। जीवकान्त जी तँ प्रयाग शुक्लक “चन्द्रभागा में सूर्योदय” आ एही शीर्षकक नारायणजीक कविता (चन्द्रभागामे सूर्योदय) सेहो पढ़ने हेताह जे छपल अछि मैथिलीमे। तखन पंकज पराशरक समुद्रसँ असंख्य प्रश्न पूछऽवला कविताक भावार्थ किऐक नहि लगलनि जे समीक्षामे कलम तोड़ि प्रशंसा करऽ पड़लनि वा करा गेलनि? एकरा “प्रायोजित समीक्षा” किऐक नहि मानल जाय? की प्रयाग शुक्ल वा नारायणजीक समुद्र विषयक कवितासँ वेशी मौलिकता पंकज पराशरक कवितामे भेटलनि जीवकान्तजीकेँ? ओइ सभ कविताक कनियोँ “छाया” क शंको नहि भेलनि समीक्षककेँ? “सभ्यताक सभटा मर्मान्तक पुकार” क नोटिस लेबऽवला समीक्षककेँ साहित्यिक चोरि असभ्य आ मर्मान्तक पीड़ादायक नहि लगलनि? आब जीवकान्तजी सन समीक्षकक “पोजीशन फॉल्स” भऽ जेतनि से अन्दाज तँ मिथिला दर्शनक सम्पादककेँ नहियें रहनि, उदय चन्द्र झा “विनोद” केँ सेहो नहि रहनि। ई अभिज्ञान तँ पंकजे पराशर टाकेँ रहल हेतनि? बेचारे “पराशर” मुनिक आत्मा स्वर्गमे कनैत हेतनि आ पंकसँ जनमल जतेक कमल अछि सब अविश्वसनीय यथार्थक सामना करैत हेताह। पराशर गोत्री भऽ कऽ तीन बेर चोरि केनाइ “पराशर” महाकाव्यक रचयिता स्व. किरणजीकेँ सेहो कनबैत हेतनि। आखिर जीवकान्तजी साहित्यिक चोरिक नोटिस किए ने लेलनि, जखनकि हुनका विचारेँ “मैथिलीक समीक्षक प्रायः मूर्खता पीबिकऽ विषवमन करैत अछि”(विदेह-सदेह-२-२००९-१०)/ विनीत उत्पल-साक्षात्कार आ जीवकान्तजी स्वयं पंकज पराशरक चोरिवला कविता-पोथीक समीक्षक छथि, अपितु चौर्यकला प्रवीण कविक घोर प्रशंसक छथि। तखन अइ समीक्षा-आलेखमे अन्तर्निहित असीम-प्रशंसा साकांक्ष-पाठककेँ “विष-वमन” कोना ने लगौक? हुनका सन “पढ़ाकू” समीक्षक-पाठककेँ “फॉल्स पोजीशन” मे अननिहार “एक्सपर्ट आ हैबिचुएटेड” साहित्य-चोरसँ प्रशंसा आ पुरस्कार दुनू पाबि जाय तँ मैथिली-काव्यक ई उत्कर्ष थिक वा दुर्भाग्य? अंततः विदेह-सदेह टा किऐक निन्दा केलक एहि घटनाक? आन कोनो पत्रिका किऐक नहि केलक? डॉ. रमानन्द झा “रमण” इन्टरनेटपर निन्दा करैत छथि तँ घर-बाहर पत्रिकामे किऐक नहि जकर ओ सम्पादक छथि? चेतना समिति, पटना सम्मानित करैत अछि एहने-एहने साहित्यकारकेँ तखन अपने पत्रिकामे कोना निन्दा करत, जखनकि पुरस्कार आपसो नहि लैत अछि, जानकारी भेलाक वा साकांक्ष साहित्यकारक अनुरोध प्राप्त भेलाक बादो? नचिकेताजी नेटपर निन्दा करताह आ “विदेह” मे छपत तँ “मिथिला दर्शन” मे किऐक नहि निन्दा वा सूचना छपल? कारण स्पष्ट अछि- जीवकान्तक समीक्षा पंकज पराशरक काव्य-पोथीपर छपत, तखन ओही पोथीक चोरि कयल कविताक निन्दा कोना छपत? चारु भाग साहित्यिक आदर्श, मर्यादा आ नैतिकताक धज्जी उड़ि रहल अछि- पितामह आ आचार्यगणक समक्ष आ (अनजाने मे सही) हुनको लोकनिक द्वारा। मैथिल ब्राह्मण समाज, रहिका; चेतना समिति, पटना आ साहित्य अकादेमी, नई दिल्लीमे अन्ततः कोन अन्तर अछि वा रहल? एहेन नामी पुरस्कारक संचालन आ चयनकर्ता महारथी सभकेँ नव लोककेँ पढ़बाक बेगरता किऐक नहि बुझाइत छनि? बिना पढ़ने पुरस्कारक निर्णय वा समीक्षाक निर्णय कतेक उचित, जखन कि ई चोरि तेसर बेरक चोरि थिक आ से छपि-कऽ भण्डाफोड़ भेल अछि। एकरा वरेण्य आ वरीय साहित्यकारगण द्वारा काव्य-चोरि, आलेख-चोरिकेँ प्रश्रय देल जायब किऐक नहि मानल जाय, जखनकि आरम्भ, मैथिल-जन, पहल आ विदेह-सदेह पहिनहि छापि चुकल छल? की साहित्यिक चोरिकेँ प्रश्रय देब, दलाल वर्गकेँ प्रश्रय देब नहि थिक? एहेन सम्भावनायुक्त नव कविकेँ प्रश्रय देब मैथिली साहित्य लेल घातक अछि वा कल्याणकारी, जकरा मौलिकतापर तीन बेर प्रश्न चेन्ह लागल होइक? की पोथीक आकर्षक गत्ता देखि वा विदेशी कविगणक नामावली (भूमिकामे) पढ़ि कऽ समीक्षा लिखल जाइत अछि वा पुरस्कारक निर्णय लेल जाइत अछि? जँ से भेल हो तँ सब किछु “ठिक्के छै भाइ”?

अइ सबसँ तँ जीवकान्तजीक बात सत्य बुझाइत अछि जे समीक्षकगण दारू पीबि कऽ वा पैसा पीबि कऽ वा मूर्खता पीबि कऽ समीक्षा लिखैत छथि। डगलस केलनरक “टेक्नोपोलिटिक्स” तँ छपि गेल “पहल” मे चोरा कऽ। आब जीवकान्तजी, ज्ञान रंजनजी अथवा हिन्दी जगतक आन साहित्यकार-सम्पादकसँ पूछथु जे नोम चोम्स्कीवला रचना कतय गेल, की भेल, कोन नामें छपल? पंकज पराशरक नामें कि पदीप बिहारीजीक सुपुत्रक नामेँ (अनुवाद रूपमे) । ई रिसर्च एखन नहि भेल तँ भविष्यमे पुनः एकटा साहित्यिक चोरिक पोल खूजत? अंततः एकटा माँछकेँ कएटा पोखरिकेँ प्रदूषित करए देल जाय आ से कए बेर? उदय-कान्त बनि कऽ गारि पढ़वाक आदति तँ पुरान छनि डॉ. महाचोर केँ। ककरो “सरीसृप” कहि सकैत छथि (मैथिल-जन) आ कोनो परिवारमे घोंसिया कऽ विष वमन कऽ सकैत छथि। ऑक्टोपसक सभ गुणसँ परिपूर्ण डॉ. पॉल बाबाकेँ चोरिक भविष्यवाणी करवाक बड़का गुण छनि तेँ हिनका

नामी फुटबॉल टीम द्वारा पोसल जाइत अछि, जाहिसँ “विश्व-कप” कैँ दौरान अइ “अमोघ अस्त्रक” उपयोग अपना हिसाबेँ कयल जा सकय।

सहरसा-कथागोष्ठीमे पठित हिनकर पहिल कथाक शीर्षक छल- हम पागल नहि छी। ई उद्घोषणा करवाक की बेगरता रहैक- से आइ लोककेँ बुझा रहल छैक। अविनाश आ पंकज पराशरक मामाजी तहिया हिनकर कथाकेँ “टिप्पणीक” क्रममे मैथिली-कथाक “टर्निंग प्वाइन्ट” मानने छलाह। आइ ओ “टर्निंग प्वाइन्ट” ठीके एक हिसाबेँ “टर्निंग प्वाइन्ट” प्रमाणित भेल, कारण कथाक ओहि शीर्षकमे सँ “नहि” हटि गेल अछि, हिनकर तेबारा चोरिसँ। हिनकर पहिल चोरि (अरुण कमलक कविता- नए इलाके में) क निन्दा प्रस्तावमे “मामाजी” आ डॉ. महेन्द्रकेँ छोड़ि, सहरसाक शेष सभ साहित्यकार हस्ताक्षर कऽ “आरम्भ” कैँ पठौने छलाह। आइ ओ हस्ताक्षर नहि केनिहार सभ कन्छी काटि कऽ वाम-दहिन ताक-झाँक करवाक लेल बाध्य छथि। द्वैध-चरित्र आ दोहरा मानदण्डक परिणाम सैह होइत अछि। अविनाश तखन तँ देखार भऽ जाइत छथि जखन ओ विदेह-सदेह-२ मे लिखैत छथि जे “एकरा सार्वजनिक नहि करबै” । नुका कऽ सूचना देवाक कोन बेगरता? पंकज पराशरसँ सम्बन्ध खराब हेवाक डर वा कोनो “टेक्नोपोलिटिक्स”(?) केर चिन्ता?

विदेह-सदेह-२ क पाठकक संदेश तँ कएटा साहित्यकारकेँ देखार कऽ दैत अछि। जतय राजीव कुमार वर्मा, श्रीधरम, सुनील मल्लिक, श्यामानन्द चौधरी, गंगेश गुंजन, पी. के. चौधरी, सुभाष चन्द्र यादव, शम्भु कुमार सिंह, विजयदेव झा, भालचन्द झा, अजित मिश्र, के. एन. झा, प्रो. नचिकेता, बुद्धिनाथ मिश्र, शिव कुमार झा, प्रकाश चन्द्र झा, कामिनी, मनोज पाठक आदि अपन मुखर भाषामे प्रखरतापूर्वक निन्दनीय घटनाक निन्दा केलनि अछि, ततहि अविनाश, डॉ. रमानन्द झा “रमण”, विभारानीक झाँपल-तोपल शब्द आश्चर्य-भावक उद्रेक करैत अछि। मुदा संतोषक बात ई अछि जे पाठकक “प्रबल भाव-भंगिमा” साहित्यकारोक “मेंहायल आवाज” क कोनो चिन्ता नहि करैत अछि। विभारानी तँ कमाले कऽ देलनि। एहि ठाम मैथिली भाषा-साहित्यक एक सय समस्या गनेवाक उचित स्थान नहि छल। ई ओनाठ काल खोनाठ आ महादेवक विवाह कालक लगनी भऽ गेल। कोनो चोर बेर-बेर अपन कु-कृत्यक परिचय दऽ रहल अछि आ हुनका समय नष्ट करब बुझा रहल छनि आ चोरकेँ देखार केलासँ दुःख भऽ रहल छनि? ओ अपन प्रतिक्रियामे कतेक आत्म श्लाघा आ हीन-भावना व्यक्त केलनि अछि से अपने पत्र अपने ठंढ़ा भऽ कऽ पढ़ि कऽ बूझि सकैत छथि। हिन्दीयोमे एहिना भऽ रहल अछि, तँ मैथिलीमे माफ कऽ देल जाय? आब हिन्दीसँ पूछि-पूछि कऽ मैथिलीमे कोनो काज होयत? विभारानी ज्योत्सना चन्द्रमकेँ ज्योत्सना मिलन केना कहैत छथि? हुनकर उपेक्षा कोना मानल जाय? ओ सभ साहित्यिक कार्यक्रममे नोतल जाइत छथि, सम्मान आ पुरस्कार पबैत छथि, पाठक द्वारा पठित आ चर्चित होइत छथि। समीक्षाक शिकाइत की उच्चवर्णीय (?) साहित्यकारकेँ मैथिलीमे नहि छनि? समीक्षाक दुःस्थिति सभ जातिक मैथिली साहित्यकार लेल एके रंग विषम अछि। ओइ मे जातिगत विभेद एना भेलए जे ब्राह्मण-समीक्षक, आरक्षणक दृष्टिकोणेँ निम्न जाति (?) क साहित्यकारक किछु बेशीए समीक्षा (सेहो सकारात्मक रूपेँ) केलनि अछि। समीक्षा आ आलोचनाक विषम स्थितिक कारणें जँ नैराश्यक शिकार भऽ जाय लेखक, तँ लेखकीय प्रतिबद्धताक की अर्थ रहि जायत? विभाजीकेँ बुझले नहि छनि जे हुनका लोकनिक बाद मैथिली महिला लेखनमे कामिनी, नूतन चन्द्र झा, वन्दना झा, माला झा आदि अपन तेवरक संग पदार्पण कऽ चुकल छथि। हुनका ने कामिनीक कविता संग्रह पढ़ल छनि आ ने “इजोड़ियाक अडैठी मोड़” । हुनका अपन गुरुदेवक बात मानि हिन्दीमे जाइसँ के कहिया रोकलकनि? ओ गेलो छथि हिन्दीमे। मातृभाषाक प्रेरणा अद्वितीय होइत छै। मैथिलीक जड़ संस्था अथवा समीक्षक सभपर प्रहार करबामे हमरा कोनो आपत्ति नहि, मुदा अर्थालाभ तँ एतय नगण्य अछिए। सामाजिक सम्मान विभाजीकेँ अवश्य भेटलनि अछि। समाजमे “जड़” लोक छै तँ “चेतन” लोक सेहो छैक। हुनकासँ मैथिली भाषा-साहित्य आ मिथिला-समाजकेँ पैघ आशा छै, हीनभाव वा आत्मश्लाघासँ ऊपर उठि काज करवाक बेगरता छैक। सक्षम छथि ओ। हुनका श्रेय लेवाक होड़सँ बँचवाक चाही। अन्यथा साहित्य अकादेमी प्रतिनिधि, दिवालियापन केर शिकार जूरीगण आ मैथिलीक सक्षम साहित्यकारमे की की अन्तर रहि जायत? विभारानीक विचलनक दिशा हमरा चिन्तित आ व्यथित करैत अछि। ओ दमगर लेखिका छथि, सशक्त रचना केलनि अछि, आइ ने काल्हि समीक्षकगण कलम उठेबापर बाध्य हेबे करताह। समीक्षकक कर्तव्यहीनतासँ कतौ लेखक निराश हो?

पंकज पराशरक श्रृंखलाबद्ध साहित्यिक चोरिपर सार्थक प्रतिक्रिया देब कोनो साहित्यकार लेल अनुचित नहि अछि कतहुसँ। साहित्यकार लेल साहित्यिक मूल्यक प्रति ओकर प्रतिबद्धता मुख्य कारक होइत अछि आ हेवाको चाही आ तकरा देखार करवाक “बोल्डनेसो” हेवाक चाही। “चाही” वला पक्ष साहित्यमे बेशीए होइत अछि। एहेन-एहेन गम्भीर विषयपर साहित्य आ समाजक “चुप्पी” एहेन घटनाकेँ प्रोत्साहित करैत अछि आ जबदाह जड़ताकेँ बढ़बैत अछि, भाषा-साहित्यकेँ बदनाम तँ करिते अछि। जाधरि पंकज पराशरक चोरि-काव्यक समीक्षा लिखल जाइत रहत, विभारानीक मूल-रचनाक समीक्षा के लिखत? ककरा जरूरी बुझेतैक?

विभारानी अपने तँ समीक्षा प्रायोजित नहि करओती? सक्षम लेखकक व्यवहारोक अपन स्तर होइत छै। तँ संगठित भऽ चोरिक भर्त्सना हेवाक चाही।

<u>रमेशक आलेख-बहस-पंकज पराशरक साहित्यिक चोरि मैथिली साहित्यक कारी अध्याय थिक- पर किछु पाठकक विचार:</u>

SHIV KUMAR JHA TILLOO JAMSHEDPUR said...

Ramesh jee ken dhanyavad, satya gapp bajwak saahas "MITHILA" me aabi rahal achhi neek laagal, chhadma lokpriyatak khatir lok kichu ka sakait achhi..Pankaj Parasharak..aab charch karab seho nahi sohay laagi rahal..jatek ninda kayal jay kum parat. Muda RAMESH BABU HU APNE SABH NINDA KARAY CHHEE AA KICHU LOK KAHAIT CHHATHI PANKAJ JEE JUG-JUG JIWATHU, ONA HAMHU HUNAK DIRGHA JEEVANAK KAAMNA KARAIT CHHEE, PARANCH SABHAK JE JUG-JUG JIWAK KAAMNA KAYAL JAY MATRA PANKAJ PARASHARAK LEL NAHI.."SARBE BHAWANTU SUKHINAH", RAMESH BABU APAN LEKHANI KEN GATI NIRANTAR RAKHAL JAY...

Rama Jha said...

ehi vyakti pankaj parasharak ekta ehane ghrinit message ekta mahila je hamar mitra chathi, ke bhetal chhai, etek ghrinit je etay nai likhi sakai chhi, apan rachna ke dosar bhasha me mool kahi prakashit kaenai chori te nai bhelai, muda okara svayam dvara anoodit kahi prakashit karebak chahe, mool maithili se dosar bhasha (hindi aadi me), va dosar bhasha (hindi aadi se) maithili me.

आशीष अनचिन्हार said...

जहाँ धरि पराशर- घटना अछि ओहि जतेक खिध्धाशं कएल जाए ततेक कम। मुदा रमेश भाइ विभारानीक कोन भाषा मे समीक्षा कएल जाए हिदीं मे की मैथिली मे। हमरा हिसाबे एकै रचना के दू- तीन भाषा मे मूल कहि प्रकाशित करब सेहो चोरि भेल। एहू पर धेआन देल जाए।

भाषा, शब्दकोश, अनुवाद आ डिजिटल संस्कृति

७३. अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि

सारांश

मैथिलीक दन्द-फन्द बला सभक प्रवेश अन्तर्जालपर शुरू भऽ गेल अछि। ई लोकनि पहिने पत्र आ एस. एम. एस. द्वारा ब्लैकमेलमे लागल छलाह। आब ई-पत्रक प्रयोग साधारण संगणक ज्ञानबला सेहो कऽ सकै छथि, से एहि प्रवृत्तिमे वृद्धि आएल...

बीजशब्द: अन्तर्जाल · अपराध · तकरा · पकड़बाक · विधि · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “अन्तर्जाल अपराध आ तकरा पकड़बाक विधि” विषयक भाषा-प्रौद्योगिकी अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे अन्तर्जाल; अपराध; पकड़बाक; विधि; कोनो प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर डिजिटल माध्यम, भाषा-प्रौद्योगिकी, प्रकाशन आ संप्रेषणक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिलीक दन्द-फन्द बला सभक प्रवेश अन्तर्जालपर शुरू भऽ गेल अछि। ई लोकनि पहिने पत्र आ एस. एम. एस. द्वारा ब्लैकमेलमे लागल छलाह। आब ई-पत्रक प्रयोग साधारण संगणक ज्ञानबला सेहो कऽ सकै छथि, से एहि प्रवृत्तिमे वृद्धि आएल अछि।

अन्तर्जाल अपराधक प्रकार

गारि आ हतोत्साहित करैबला ई-मेल: एहिसँ नाम बदलि कऽ ई-मेल आ टिप्पणी देल जाइत अछि। एहिसँ अपराधी अपन शिकारकेँ मानसिक रूपसँ कष्ट दैत छै। कतेको बेर शिकार व्यक्ति अन्तर्जाल छोड़ि दैत छथि आ हुनकर दैनिक रचनात्मक क्रिया प्रभावित होइत छन्हि। कतेक गोटे मैथिलीकेँ गुड-बाइ सेहो कहि दै छथि। कखनो काल अहाँ जालवृत्त वा जालस्थलपर पोर्न साइटक लिंक कियो राखि देत, तँ कखनो गारि पढ़ि कऽ भागि जाएत, माने ई-पत्र, ऑनलाइन वार्तालाप, कमेन्ट बॉक्समे। कखनो अहाँक सालक आ मासक मेहनति सेकेन्डमे कॉपी पेस्ट कऽ अपना नामसँ छपा लेत। बहुत गोटे हमरा सालक मेहनति ऑनलाइन मुफ्त उपलब्ध करेबा लेल टोकबो कएलन्हि। मुदा हमरा एहि सम्बन्धमे बिल गेट्सक वक्तव्य मोन पड़ि जाइत अछि। हुनकासँ एक बेर पूछल गेलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक उत्पाद “एक्स बॉक्स” भारतमे पाइरेसीक डरसँ विलम्बसँ उतारल गेल, तँ ओ कहने छलाह जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो पाइरेसीक डरसँ कोनो उत्पाद बजारमे अनबासँ विलम्ब नहि केने अछि। विदेह आर्काइव सेहो दिनानुदिन समृद्ध भेल जा राहल अछि, साइबर अपराधक द्वारे एहिमे कोनो कमी नहि आएल अछि।

डराबैबला ई-मेल: ब्लैकमेलर एहिसँ शिकारकेँ धमकाबैत रहैत अछि। नामक खुलासा नहि भेने प्राप्तकर्ता बेचारा कतेको लोकपर शंका करऽ लगैए। ब्लैकमेलर सेहो अपन खण्डित व्यक्तित्वक प्रदर्शन करैत तुष्ट होइत रहैए।

वायरस प्रसार करैबला ई-मेल: ई-पत्र द्वारा कोनो लिंक पठाओल जाइत छै, कोनो अटैचमेन्ट पठाओल जैत छैक, जकरा क्लिक केलहुँ नहि वा खोललहुँ नहि आकि अहाँक कम्प्यूटर बैसि गेल। एहि तरहक मैसेज ब्लूटूथ ऑन रहलासँ अहाँक मोबाइलमे सेहो आबि जाइत अछि।

फेकमेल: एक ठामसँ आबैबला ई-मेल छद्म रूपसँ फेकमेलसँ दोसराक ई-मेलसँ आएल बुझि पड़ैए। एहिसँ ब्लैकमेलर अहाँक झगड़ा दोसरसँ करेबाक प्रयास करैए। मुदा एहि तरहक मेलकेँ डिलीट नहि करू आ नहियै एहि तरहक मेलक कोनो उतारा दियौक।

अगिला चरण- वित्तीय हानि: रचनात्मक क्रियाक बन्न भेने भने सद्यः वित्तीय हानि नहि होइत छैक मुदा ब्लैकमेलर अगिला चरणमे अहाँक क्रेडिट कार्ड संख्या, पासवर्ड, बैंक एकाउन्ट नम्बर पुछि सकैए। लागत जेना ओ ई-पत्र इनकम टैक्स रिफन्ड लेल अछि, वा सूडानक कोनो अकाल पीड़ितक आर्द्र पुकार अछि। अहाँ एहि तरहक मेलक जवाब किन्नहुँ नहि दिअ आ ई-पत्रकेँ स्पैममे धऽ दियौ आ किछु प्रति सुरक्षित राखि लिअ। ओहि अपराधीकेँ पकड़बाक सामान्य प्रक्रिया आगाँक बिन्दुमे अछि।

अपराधीकेँ पकड़ब कोना: अपन साइटपर हिट काउन्टर लगाऊ, एहिसँ ई फाएदा होएत जे अहाँक साइटपर टाइम-स्टैम्प आबि जाएत। टिप्पणीक टाइम स्टैम्पसँ एकरा मिलाऊ आ चोरकेँ पकड़ू। कम्प्यूटरकेँ कमान्ड दऽ कऽ ई-मेलक हेडर आ ओहिसँ समय आ स्थानक जनतब लिअ। फेर ओहि फेक व्यक्तिक पता आ फोन नम्बर (एक्स्टेन्शन सहित) एहिसँ ज्ञात भऽ सकैए। एहन कोनो तरहक ई-पत्रकेँ नहि तँ नष्ट करू आ नहियै सम्पादित करू।

अन्तर्जालक उपयोगसँ सम्भावित हानिपर नियन्त्रण: एहि प्रकारक ई-पत्र उपयोगकर्ता लेल संकट उत्पन्न करैत छैक। लोक दुखी रहए लगैत अछि, किछु गोटे इन्टरनेटक कनेक्शन कटबा लै छथि। मुदा अभद्र मेल अएलापर अपनापर नियन्त्रण राखू आ डिप्रेशनमे नहि जाऊ। अन्तर्जालक नीक पक्षक उपयोग करैत रहू। कोनो साइटपर लॉग ऑन केने छी तँ तत्काल लॉग आउट भऽ जाऊ।

७४. इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान

सारांश
इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जाहिमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन, ई सभ एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि। आ एहि समाजक भाग होएबामे समर्थ लोक अंकीय वा डिजिटल नागरिक कहल जाइत छथि। एहि उत्तर औद्योगिक समाजमे सूचना-प्रौद्योगिकी उत्पादन, अर्थव्यवस्था आ समाजकेँ निर्धारित करैत अछि।

बीजशब्द: इन्फॉरमेशन · सोसाइटी · सार्वभौम · मानवाधिकार · घोषणा · भारतीय · संविधान · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “इन्फॉरमेशन सोसाइटी, सार्वभौम मानवाधिकार घोषणा आ भारतीय संविधान” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे इन्फॉरमेशन; सोसाइटी; सार्वभौम; मानवाधिकार; घोषणा प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

इन्फॉरमेशन सोसाइटी किंवा सूचना-आधारित-समाज एकटा ओहेन समाज अछि जाहिमे सूचनाक निर्माण, वितरण, प्रसार, उपयोग, एकीकरण आ संशोधन, ई सभ एकटा महत्त्वपूर्ण आर्थिक, राजनीतिक आ सांस्कृतिक क्रिया होइत अछि। आ एहि समाजक भाग होएबामे समर्थ लोक अंकीय वा डिजिटल नागरिक कहल जाइत छथि। एहि उत्तर औद्योगिक समाजमे सूचना-प्रौद्योगिकी उत्पादन, अर्थव्यवस्था आ समाजकेँ निर्धारित करैत अछि। उत्तर-आधुनिक समाज, उत्तर औद्योगिक समाज आदि संकल्पना सँ ई निकट अछि। अर्थशास्त्री फ्रिट्ज मैचलप एकर संकल्पना देने छलाह। हुनकर ज्ञान-उद्योगक धारणा शिक्षा, शोध आ विकास, मीडिआ, सूचना प्रौद्योगिकी आ सूचना सेवाक पाँचटा अंगपर आधारित छल। प्रौद्योगिकी आ सूचनाक समाजपर भेल प्रभाव एतए दर्शित होइत अछि। ई वएह समाज थिक जाहिमे आइ-काल्हि हमरा सभ रही रहल छी।

दुनू विश्वयुद्ध आ फासिज्मक चुनौतीक बाद १० दिसम्बर १९४८ कैं संयुक्त राष्ट्रसंघक महासभा द्वारा मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक उद्घोषणा कएल गेल आ एकरा अंगीकार कएल गेल। ई घोषणा राजनीतिक, आर्थिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक भेदभावरहित एकटा सामान्य मानदण्ड प्रस्तुत करैत अछि जे सभ जन-समाज आ सभ राष्ट्र लेल अछि।

सूचना समाजपर पहिल संयुक्त राष्ट्र विश्व सम्मेलन दू खेपमे भेल। पहिल १०-१२ दिसम्बर २००३ मे जेनेवा, स्विटजरलैंड मे आ दोसर खेप १६-१८ नवम्बर २००५ मे ट्युनिस, ट्यूनिसियामे। एतए मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक बीचमे सम्बन्धकेँ मान्यता देल गेल छल।

मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक निम्न बिन्दु सभ सूचनाक समाजसँ सम्बन्धित अछि। (मानवाधिकारक सार्वभौम घोषणाक मैथिली अनुवाद डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’)

अनुच्छेद १२

केओ व्यक्ति कोनो आन व्यक्तिक एकान्तता, परिवार, निवास वा संलाप (पत्राचारादि) मे स्वेच्छया हस्तक्षेप नहि करत आने ओकर प्रतिष्ठा आ ख्याति पर प्रहार करत। प्रत्येक व्यक्तिकेँ एहन हस्तक्षेप वा प्रहारसँ कानूनी रक्षा पएबाक अधिकार छैक।

अनुच्छेद १८

प्रत्येक व्यक्तिकेँ विचार, विवेक आ धर्म रखबाक अधिकार छैक। एहि अधिकारमे समाविष्ट अछि धर्म आ विश्वासक परिर्वतनक स्वतन्त्रता, एकसर वा दोसराक संग मिलि प्रकटतः वा एकान्तमे शिक्षण, अभ्यास, प्रार्थना आ अनुष्ठानक स्वतन्त्रता।

अनुच्छेद १९

प्रत्येक व्यक्तिकेँ अभिमत एवं अभिव्यक्तिक स्वतन्त्रताक अधिकार छैक, जाहिमे समाविष्ट अछि बिना हस्तक्षेपक अभिमत धारण करब, जाहि कोनहु क्षेत्रसँ कोनहु माध्यमेँ सूचना आ विचारक याचना, आदान प्रदान करब।

अनुच्छेद २७

१. प्रत्येक व्यक्तिकेँ समाजक सांस्कृतिक जीवनमे अबाध रूपेँ भाग लेबाक, कलाक आनन्द लेबाक

तथा वैज्ञानिक विकासमे आ तकर लाभमे अंश पएबाक अधिकार छैक।

२. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन सृजित कोनहु वैज्ञानिक, साहित्यिक अथवा कलात्मक कृतिसँ उत्पन्न,

भावनात्मक वा भौतिक हितक रक्षाक अधिकार छैक।

अनुच्छेद२१

१. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन देशक शासनमे प्रत्यक्षतः भाग लेबाक अथवा स्वतन्त्र रूपेँ निर्वाचित अपन प्रतिनिधि द्वारा भाग लेबाक अधिकार छैक।

२. प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपना देशक लोक-सेवामे समान अवसर पएबाक अधिकार छैक।

३. जनताक इच्छा शासकीय प्राधिकारक आधार होएत। ई इच्छा आवधिक आ निर्बाध निर्वाचनमे व्यक्त कएल जाएत आओर ई निर्वाचन सार्वभौम एवं समान मताधिकार द्वारा गुप्त मतदानसँ होएत अथवा समतुल्य मुक्त मतदान प्रक्रियासँ।

अंकीय वा डिजिटल विभाजन एकटा ज्ञानक विभाजन, सामाजिक विभाजन आ आर्थिक विभाजन देखबैत अछि आ बिना भेदभावक एकटा सूचना समाजक निर्माणक आवश्यकता देखाबैत अछि, जाहिसँ सूचना प्रौद्योगिकीपर विकासशील देशक सार्वभौम अधिकार रहए।

मानवाधिकार आ सूचना प्रौद्योगिकीक मध्य व्यक्तिक एकान्तक अधिकार सेहो सम्मिलित अछि। विद्वान, मानवाधिकार कार्यकर्ता आ आन सभ व्यक्ति द्वारा अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, सूचनाक अधिकार, एकान्तता, भेदभाव-रहित, स्त्री-समानता, प्रज्ञात्मक संपत्ति, राजनीतिक भागीदारी आ संगठनक मेलक संदर्भमे आ सूचना आ जनसंचार प्रौद्योगिकीक सन्दर्भमे एहि गपपर चरचा शुरू भेल अछि, जे सूचना-समाजमे मानवाधिकारकेँ बल देत आकि ओकरा हानि पहुँचाओत।

ऑनलाइन पत्राचारक गोपनीयताक अधिकार, अन्तर्जालक सामग्रीक सांस्कृतिक आ भाषायी विविधता आ मीडिया शिक्षा। सूचना समाजक तकनीकी अओजार ओकर अधिकार आ स्वतंत्रतासँ लाभान्वित होइत अछि आ समाजक समग्र विकास, अधिकार आ स्वतंत्रताक सार्वभौमता, अधिकारक आपसी मतभिन्नता, स्वतंत्रता आ मूल्य निरूपणमे सहभागी होइत अछि।

एहिसँ सूचना, ज्ञान आ संस्कृतिमे सरल पइठक वातावरण बनैत अछि आ ई उपयोगकर्ताकेँ वैश्विक सूचना समाजक अभिनेताक रूपमे परिणत करैत अछि। कारण ई उपयोगकर्ताकेँ पहिनेसँ बेशी अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता आ नव सामग्री आ नव सामाजिक अन्तर्जाल-तंत्र निर्माण करबाक सामर्थ्य दैत अछि। एहिसँ एकटा नव विधि, आर्थिक आ सामाजिक मॉडेलक आवश्यकता सेहो अनूभूत कएल जा रहल अछि जाहि मे साझी कर्तव्य, ज्ञान आ समझ आधार बनत। बच्चाक हित एकटा आर चिन्ता अछि जे पैघक हितसँ सर्वदा ऊपर रखबाक चाही।

आधुनिक समाजक आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृतिक धन एकत्र करबाक प्रवृत्ति सूचना समाजमे बढ़ल अछि आ प्रौद्योगिकी एकटा आधारभूत बेरोजगारी अनलक अछि।

गरीबी, मजदूरक अधिकार आ कल्याणकारी राज्यक संकल्पना, लाभ-हानिक आगाँ कतहु पाछाँ छूटल जा रहल अछि। आब मात्र किछुए अभिनेता चाही, प्रकाशक लोकनि सेहो मात्र किछु बेशी बिकएबला पोथीक लेखकक प्रचार करैत छथि। यैह स्थिति रंगमंच, पेंटिंग, सिनेमा आ आन-आन क्षेत्रमे सेहो दृष्टिगोचर भऽ रहल अछि। सूचना सर्वदा लाभकारी नहि होइत अछि। ई मात्र कला, ग्रंथ धरि सीमित नहि अछि वरन सट्टा बाजार आ प्रायोजित सर्वेक्षण रपट सेहो एहिमे सम्मिलित अछि। समय आ स्थानक बीचक दूरीकेँ ई कम करैत अछि आ दुनूक बीचमे एकटा सन्तुलन बनबैत अछि।

मानवक गरिमा मानवक जन्म आधारित सामाजिक स्थानसँ हटि कऽ मानवक गरिमाक अधिकारपर बल दैत अछि। मुक्ति आ स्त्री-मुक्ति आन्दोलन एहि दिशाक प्रयास अछि।

सूचनाक स्वतंत्र उपयोग सीमित अछि, लोकक एकान्त खतम भऽ रहल अछि। बिल गेट्ससँ जखन हुनकर भारत यात्राक क्रममे पूछल गेल छलन्हि जे माइक्रोसॉफ्टक एक्स-बॉक्स भारतमे पाइरेसीक डरसँ देरीसँ उतारल गेल तँ ओ कहने रहथि जे माइक्रोसॉफ्ट कहियो कोनो उत्पाद पाइरेसीक डरसँ देरीसँ नहि आनलक। स्पैम आ पाइरेसीक डर खतम होएबाक चाही।

सूचना समाज वैह समाज छी जकर बीचमे हम सभ रहि रहल छी। लोकतंत्र आ मानवाधिकारक सम्मान सूचना-समाज आ उत्तर सूचना-समाजमे होइत रहत। अभिव्यक्तिक स्वतंत्रता, एकान्तक अधिकार, सूचना साझी करबाक अधिकार आ सूचना धरि पहुँचक अधिकार जे सूचनाक संचारसँ सम्बन्धित अछि, ई सभ राज्य द्वारा आ सूचना-समाजक बाजारवादी झुकावक कारण खतराक अनुभूतिसँ त्रस्त अछि।

अन्तर्जाल लोकक मीडिआ अछि आ एकटा एहन प्रणाली अछि जे लोकक बीच सम्वाद स्थापित करैत अछि। एहिसँ संचार-माध्यमक मठाधीश लोकनिक गढ़ टुटैत अछि।

अन्तर्जालमे सामान्य रूपसँ सम्पादक नहि होइत छथि। एतए लोक विषयक आ सामग्रीक निर्माण कए स्वयं ओकर संचार करैत छथि। एहिसँ कतेक रास सामाजिक सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि। मुदा कतेक रास समाज-विरोधी सामग्री सेहो अबैत अछि। तँ की ओहि पर प्रतिबन्ध होएबाक चाही। मुदा जे सॉफ्टवेयरक माध्यमसँ मशीनकेँ सामग्रीपर प्रतिबन्ध लगेबाक अधिकार देब, तखन ई अभिव्यक्तिक स्वतंत्रतापर पैघ आघात होएत।

बौद्धिक सम्पदाक अधिकार लेखककेँ मृत्युक ६० बरख बादो प्रकाशन आ वितरणक अधिकार दैत अछि। अन्तर्जालमे सेहो पाइरेसीकेँ प्रतिबन्धित करए पड़त आ कमसँ कम लेखकक मृत्युक २० बरख बाद धरि लेखकक अधिकार ओकर सामग्रीपर रहए, से व्यवस्था करए पड़त। मुदा पेटेन्टक बेशी प्रयोग विकाशसील देशक सूचना अभिगमनमे बाधक होएत आ प्रौद्योगिकीक विकासमे सेहो बाधा पहुँचाओत।

कॉपीराइटसँ सांस्कृतिक विकास मुदा होएत, जेना संगीत, फिल्म, आ चित्र-शृंखला (कॉमिक्स) क विकास। डिजिटल वातावरणमे प्रतिकृतिक बिना अहाँ अन्तर्जालपर सेहो सामग्री नहि देखि सकब, से ऑफ-लाइन कॉपीराइट आ ऑनलाइन कॉपीराइट दुनू मे थोड़बेक अन्तर अछि। ऑनलाइन कॉपीराइट प्रतिकृतिकेँ सेहो प्रतिबन्धित करैत अछि। आ प्रतिकृति कएल सामग्रीकेँ दोसर वस्तुमे जोड़ब वा संशोधित करब सेहो बड्ड सरल अछि। से नाम आ चित्र बिना ओकर निर्माताक अनुमतिक नहि प्रयोग होअए, दोसराक व्यक्तिगत वार्तालाप-चैटिंग-मे हस्तक्षेप नहि होअए आ दोसराक विरुद्ध कोनो एहन बयानबाजी नहि होअए जाहिसँ कोनो व्यक्तिक विरुद्ध गलत धारणा बनए। तहिना नौकरी-प्रदाता कोनो प्रकारक इलेक्ट्रॉनिक उपकरण अपन कर्मचारीक नियन्त्रण लेल लगबैत अछि तँ से अन्तर्राष्ट्रीय श्रम संघक दिशा-निर्देशक अनुरूप होएबाक चाही। ई-पत्रमे अनपेक्षित सन्देश आ चिकित्सकीय रिपोर्टक अनपेक्षित संग्रह आ उपयोग सेहो मानवाधिकारक हनन अछि।

अन्तर्जालक उपयोग मुदा सीमित अछि, कारण बहुत रास सामग्री आ तंत्रांश मंगनीमे उपलब्ध नहि अछि आ महग अछि, डिजिटल विभाजन शिक्षाक स्तरकेँ आर बेशी देखार करैत अछि। शारीरिक श्रमक बदलामे मानसिक श्रमक एतए बेशी उपयोग होइत अछि, से ई आशा रहए जे स्त्री-असमानता सूचना-समाजमे घटत। मुदा सर्वेक्षण देखबैत अछि जे महिलाक पइठ सूचना प्रौद्योगिकीमे कम छन्हि।

इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी आ ब्रेल-इनेबल कएल/ ध्वनि-इनेबल कएल कम्प्यूटर स्क्रीन/ इलेक्ट्रॉनिक लाइब्रेरी विकलांग आ अन्ध विकलांग लेल घर पर रहि ई-वाणिज्य करबामे सहायता दैत, मुदा एहि क्षेत्रमे कएल शोध आ ओकर परिणाम महग रहबाक कारणसँ ओतेक लाभ नहि दऽ सकल अछि।

बाल, वृद्ध, विकलांग, स्त्री, कामगार, प्रवासी-कामगार आ दोसर सामाजिक रूपसँ अब्बल वर्ग सूचना समाजमे सेहो अपनाकेँ अब्बल अनुभव करैत छथि।

वैज्ञानिक विकासमे आ तकर लाभमे अंश पएबाक अधिकार दैत अछि, संगे प्रत्येक व्यक्तिकेँ अपन सृजित कोनहु वैज्ञानिक, साहित्यिक अथवा कलात्मक कृतिसँ उत्पन्न, भावनात्मक वा भौतिक हितक रक्षाक अधिकार सेहो दैत अछि। एहि आधारपर सूचना-समाजमे मानवाधिकार कें देखैत सूचना आ प्रसारण प्रौद्योगिकी द्वारा सामग्री निर्माण तेना होएबाक चाही आ कॉपीराइट आ बौद्धिक सम्पदा अधिकार सेहो ताहि तरहेँ होअए जे ओहिसँ सार्वभौम मानवाधिकार घोषणाक बिन्दु सभक अवहेलना नहि होअए वरन ओकर आदर होअए।

अनुच्छेद २७ [भारती संविधानक धारा ५१ (a)]

७५. भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र

सारांश
काव्य • कथा • अनुवाद • समीक्षा-सिद्धान्त • रस-दृष्टि • समानान्तर साहित्यिक परम्परा बोयी भीमन्ना (१९२०–२००१) तेलुगु दलित साहित्यक एकटा स्तम्भ छलाह। हुनकर कविता मात्र व्यक्तिगत पीड़ाक अभिव्यक्ति नहि, बल्कि एकटा सामूहिक ऐतिहासिक चेतनाक दस्तावेज थिक।

बीजशब्द: भारतीय · दलित · अनुवाद · सौन्दर्यशास्त्र · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “भारतीय दलित साहित्य: मैथिली अनुवाद, समीक्षा आ सौन्दर्यशास्त्र” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। काव्य • कथा • अनुवाद • समीक्षा-सिद्धान्त • रस-दृष्टि • समानान्तर साहित्यिक परम्परा बोयी भीमन्ना (१९२०–२००१) तेलुगु दलित साहित्यक एकटा स्तम्भ छलाह। हुनकर कविता मात्र व्यक्तिगत पीड़ाक अभिव्यक्ति नहि, बल्कि एकटा सामूहिक ऐतिहासिक चेतनाक दस्तावेज थिक। प्रस्तुत दूनू कविता — गुडिसेलु कालिपोतुन्नायी आ ना वारसत्वपु हक्कुलु — हुनकर काव्य-संसारक दूटा भिन्न मुदा परस्पर-सम्बद्ध आयाम प्रस्तुत करैत अछि: एक दिस धार्मिक हिंसाक चक्रव्यूह, दोसर दिस पौराणिक इतिहासक पुनर्पाठ। एहि कविताक सर्वाधिक उल्लेखनीय शिल्पगत विशेषता थिक एकर प्रश्न-उत्तर संरचना। कविता लगातार स्वयंसँ प्रश्न पुछैत अछि — "ई केकर खोपड़ी?

काव्य • कथा • अनुवाद • समीक्षा-सिद्धान्त • रस-दृष्टि • समानान्तर साहित्यिक परम्परा

समेकित संस्करण — मूल दस्तावेजमे संकलित सभ समीक्षा, सैद्धान्तिक विवेचन, साहित्यिक पाठ आ अनुलग्नककेँ एकहि सम्पादकीय क्रममे प्रस्तुत कएल गेल अछि। पुनरावृत्त सामग्रीकेँ केवल सत्यापित दोहरावक स्थितिमे समेटल गेल अछि; मूल आशय आ सामग्री सुरक्षित राखल गेल अछि।

विषय-संकेत

१. तेलुगु दलित काव्य आ दलित-स्त्री काव्य
२. गुजराती आ उड़िया दलित काव्य
३. तेलुगु दलित लघुकथा आ उपन्यास
४. समग्र अनुवाद-समीक्षा आ रस-सिद्धान्त
५. मैथिली मूल/अनूदित दलित साहित्य लेल समीक्षा-सिद्धान्त
६. विद्यापति, विदेसिया आ समानान्तर साहित्यिक अनुलग्नक
७. ग्रन्थ-सूची

दलित काव्य समीक्षा: बोयी भीमन्नाक दू टा कविता

जरैत खोपड़ी सभ आ हमर पैतृक अधिकार

प्रारम्भिक टिप्पणी

बोयी भीमन्ना (१९२०–२००१) तेलुगु दलित साहित्यक एकटा स्तम्भ छलाह। हुनकर कविता मात्र व्यक्तिगत पीड़ाक अभिव्यक्ति नहि, बल्कि एकटा सामूहिक ऐतिहासिक चेतनाक दस्तावेज थिक। प्रस्तुत दूनू कविता — गुडिसेलु कालिपोतुन्नायी आ ना वारसत्वपु हक्कुलु — हुनकर काव्य-संसारक दूटा भिन्न मुदा परस्पर-सम्बद्ध आयाम प्रस्तुत करैत अछि: एक दिस धार्मिक हिंसाक चक्रव्यूह, दोसर दिस पौराणिक इतिहासक पुनर्पाठ।

१. काव्य-रूप आ संरचना

जरैत खोपड़ी सभ

एहि कविताक सर्वाधिक उल्लेखनीय शिल्पगत विशेषता थिक एकर प्रश्न-उत्तर संरचना। कविता लगातार स्वयंसँ प्रश्न पुछैत अछि — "ई केकर खोपड़ी? ", "कतय सँ बेर-बेर उगि अबैत छैक? " — आ फेर स्वयं उत्तर दैत अछि, मुदा ओ उत्तर पुन: एकटा नव प्रश्नमे

परिणत भऽ जाइत अछि। ई संरचना सुकरात-पद्धतिक स्मरण दिअबैत अछि, जतय प्रश्नक श्रृंखलासँ सत्यक उद्घाटन होइत अछि — मुदा एतय सत्य कोनो दार्शनिक निष्कर्षमे नहि, बल्कि एकटा कड़वा सामाजिक यथार्थमे अवस्थित होइत अछि।

पुनरावृत्ति — "जरि रहल अछि", "उगि अबैत छैक" — एकटा मन्त्र-प्रभाव सृजित करैत अछि। अनुप्रास-आरम्भ (एकहि शब्दसँ पंक्ति आरम्भ करबाक काव्य-विधि) आ अन्त्य-पुनरावृत्ति (पंक्तिक अन्तमे एकहि शब्द दोहराएब) दूनूक प्रयोग एहि कविताकेँ मौखिक परम्पराक, लोकगीतक निकट लबैत अछि — एहिसँ ई अनुमान होइत अछि जे भीमन्ना दलित मौखिक-सांस्कृतिक परम्पराकेँ लिखित कवितामे अन्तर्निहित करैत छथि।

हमर पैतृक अधिकार

एहि कवितामे संरचना अधिक खण्डित आ आख्यानात्मक अछि। कविता एक पौराणिक प्रसंगसँ दोसरमे कूदैत अछि — वशिष्ठ, अरुन्धती, मत्स्यगन्धी, व्यास — जेना एकटा उद्विग्न इतिहास-पाठक गोटेक पृष्ठ पलटैत छल। ई खण्डितपना आकस्मिक नहि; ई दलित इतिहास-बोधक प्रतीक थिक जतय स्मृति पूर्ण नहि, बल्कि चोराएल आ तितर-बितर कएल गेल अछि।

कविताक अन्तिम पंक्तियाँ लम्बी, भारी साँसक जकाँ चलैत अछि — "मात्र गर्व सँ फ्याँकि देबाक लेल! / सम्पूर्ण सम्मान सँ साँस लेबाक लेल! " — ई समापन एकटा विजय-घोषणा थिक, मुदा एहिमे विजय-उल्लास नहि, बल्कि एकटा गंभीर, गहिर मुक्तिक अनुभव अछि।

२. भाषा आ रूपक

खोपड़ीक रूपक

जरैत खोपड़ी सभक केन्द्रीय बिम्ब — जरैत आ बारम्बार पुनर्जन्म लैत खोपड़ी — अत्यन्त बहुस्तरीय अछि। एकटा स्तरपर ईस्पष्टतः जातीय हिंसाक संकेत करैत अछि: दलितक ऊपर सामूहिक हिंसाक इतिहास, खोपड़ी काटल जाएब, जराएल जाएब। दोसर स्तरपर ई हिन्दू पुनर्जन्म-दर्शनक व्यंग्यात्मक उपयोग थिक — कवि पुछैत छथि: जँ पुनर्जन्मक सिद्धांत सत्य अछि, तँ एही दलितकेँ बारम्बार किएक जराएल जाइत छैक? पुनर्जन्म तँ मोक्षक मार्ग छल — मुदा दलितक लेल ई एकटा अन्तहीन दुष्चक्र बनि जाइत अछि।

ई फ्रान्ट्ज़ फानोंक धरतीक अभागल (औपनिवेशिक शोषणक विरुद्ध क्रान्तिक दार्शनिक ग्रन्थ) क ओहि विश्लेषणसँ मेल खाइत अछि जतय ओ देखाबैत छथि जे औपनिवेशिक आ जातीय व्यवस्था पीड़ितकेँ हिंसाक चक्रमे एहन तरहसँ फँसाबैत अछि जे पीड़ित स्वयं ओहि चक्रकेँ सामान्य मानऽ लगैत अछि — जाधरि "एहि खोपड़ीक रहस्य एकर बासिन्दा सभकेँ पता नै चलि जाय। "

कब्रिस्तान खनबाक रूपक

हमर पैतृक अधिकारमे कब्रिस्तान खनबाक बिम्ब असाधारण जटिल अछि। सामान्यतः कब्रिस्तान खनब मृत्युसँ सम्बद्ध, अमंगल। मुदा एतय कवि एकर अर्थ उलटि दैत छथि — कब्रिस्तान खनब पुनर्प्राप्तिक कार्य थिक। जे दफनाएल गेल छल — दलितक वैदिक पहचान, हुनकर ऐतिहासिक अधिकार — तकरा खनिकऽ बाहर अनब एकटा क्रान्तिकारी कार्य बनि जाइत अछि।

एहिमे वाल्टर बेंजामिनक "इतिहासक दर्शन पर थीसिस" (इतिहासकेँ विजेताक दृष्टिसँ नहि, पीड़ितक दृष्टिसँ देखबाक माँग करैत दार्शनिक निबन्ध) क प्रतिध्वनि सुनाइत अछि। बेंजामिन कहैत छथि जे इतिहास सदैव विजेताक दृष्टिकोणसँ लिखाइत अछि, आ क्रान्तिकारी कार्य थिक "खतरनाक स्मृति" केँ — खतरनाक स्मृति — पुनर्जीवित करब। भीमन्ना ठीक इएह करैत छथि: ओ ओहि "खतरनाक स्मृति" खनैत छथि जकरा ब्राह्मणवादी इतिहास-लेखनी दफनाकऽ रखने छल।

३. पौराणिक-विरोधी पाठ

हमर पैतृक अधिकार दलित साहित्यक एकटा महत्त्वपूर्ण परम्परामे स्थित अछि — पौराणिक आख्यानक उल्टा पाठ। एहि परम्पराकेँ बी. आर. आम्बेडकर हिन्दू धर्मक पहेलियाँ आ शूद्र के छलाह? मे प्रतिष्ठित कएल छलाह। भीमन्ना एही विधिसँ पूरा महाभारत-रामायण-वेद-परम्पराकेँ प्रश्नांकित करैत छथि।

कविताक मूल तर्क ई थिक: वैदिक-आर्य परम्पराक महान व्यक्तित्व सब वास्तवमे जातिहीन वा दलित मूलक छलाह — वशिष्ठ, मत्स्यगन्धी, व्यास। मुदा ब्राह्मणवादी इतिहासने हुनका "आर्य" बना देलक, आ हुनकर वास्तविक वंशजकेँ — दलितकेँ — बहिष्कृत राखल। ई एकटा ऐतिहासिक विडम्बनाक उद्घाटन थिक।

एतय निम्नवर्गीय अध्ययन (हाशियाक लोकसभक इतिहास आ आवाजकेँ केन्द्रमे आनबाक विद्वत्-परम्परा) क दृष्टिकोण प्रासंगिक अछि। गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक की निम्नवर्ग बाजि सकैत अछि? मे पुछैत छथि जे की दलित-स्त्री अपन आवाजमे इतिहासमे उपस्थित भऽ सकैत अछि? भीमन्नाक कविता एहि प्रश्नक उत्तर थिक: ओ निम्नवर्गकेँ बोलबाइत छथि — मत्स्यगन्धीकेँ, अम्बा-अम्बालिकाकेँ, जे महाभारतमे मात्र वस्तु छलीह, हुनका एकटा स्वयं-निर्णय-शक्ति दैत छथि — "जँ ओ थप्पड़ मारि कऽ दाँत तोड़ि देने रहितथि..." — ई प्रतिकूल-ऐतिहासिक कल्पना (जँ इतिहास उलटा होइत तऽ की होइत — एहि कल्पनाक माध्यमसँ इतिहासक पुनर्पाठ) निम्नवर्गक स्वयं-निर्णय-शक्तिक पुनर्सृजन थिक।

४. स्त्री-दलित आयाम

एहि दूनू कवितामे — विशेषकरि हमर पैतृक अधिकारमे — एकटा स्त्री-दलित बहु-उत्पीड़न-दृष्टि (जाति आ लिंग दूनूक एक साथ उत्पीड़नक विश्लेषण) स्पष्ट अछि। अरुन्धती, मत्स्यगन्धी, अम्बा, अम्बालिका — ई सब स्त्री छथि जिनका पर एकहि साथ जाति-आधारित आ लिंग-आधारित शोषण भेल। कविता हिनका मात्र पीड़िताक रूपमे नहि, बल्कि सम्भावित विद्रोहिणीक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

किम्बर्ले क्रेन्शॉक बहु-उत्पीड़न-सिद्धांत (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे जाति, लिंग आ वर्गक उत्पीड़न अलग-अलग नहि, एकहि साथ घटित होइत अछि) एतय प्रत्यक्षतः लागू होइत अछि। भीमन्ना — एकटा दलित पुरुष कवि — एहि बहु-उत्पीड़न-दृष्टिसँ काव्य-रचना करैत छथि, जे हिनकर काव्य-दृष्टिक विशालताक प्रमाण थिक।

५. दलित सौन्दर्यशास्त्र

दलित साहित्यक आलोचकगण — शरणकुमार लिम्बाले (दलित साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र दिस), ओमप्रकाश वाल्मीकि — बारम्बार रेखांकित कएल अछि जे दलित साहित्यकेँ पाश्चात्य काव्यशास्त्रक मानकसँ नहि नापल जा सकैत अछि। दलित कवितामे:

क्रोध एकटा सौन्दर्य-श्रेणी थिक, दोष नहि। राजनीतिक प्रत्यक्षता कलात्मक कमजोरी नहि, बल्कि नैतिक आवश्यकता थिक। व्यक्तिगत आ सामूहिक अनुभव एकाकार अछि — "मैं" सदैव एकटा सामाजिक "हम"क प्रतिनिधि थिक।

भीमन्नाक दूनू कविता एहि सौन्दर्यशास्त्रक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। जरैत खोपड़ी सभक क्रोध वाग्-आडम्बर (केवलभाषणकलाक लेल प्रयुक्त खोखल भावना) नहि — ओ एकटा प्रामाणिक नैतिक भावना थिक। हमर पैतृक अधिकारक विद्वत्ता — पौराणिक सन्दर्भ, इतिहास-बोध — एकटा मात्र पाण्डित्य-प्रदर्शन नहि, बल्कि आत्म-सम्मानक सांस्कृतिक परियोजना थिक।

६. अनुवादक चुनौती

एहि कविताक मैथिली अनुवाद (जे स्वयं अंग्रेजी अनुवादसँ कएल गेल अछि) एकटा दोहरा अनुवाद थिक — तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली। एहिमे किछु काव्यिक क्षति अवश्यम्भावी अछि। उदाहरणत:

गुडिसेलु (खोपड़ी/घर) शब्दमे तेलुगुमे एकटा दोहरा अर्थ अछि — घर जे जराएल जाइत अछि। मैथिलीमे "खोपड़ी" शब्द ओ द्व्यर्थता (एकहि शब्दक दू अर्थ) खूब राखि सकल अछि।

मुदा *"ना वारसत्वपु हक्कुलु"*क भावनात्मक तीव्रता — जाहिमे "मेरा" (ना) आ "अधिकार" (हक्कुलु) दूनू पर समान बल अछि — मैथिलीमे "हमर पैतृक अधिकार" मे कनेक विसर्जित भेल अछि।

एहि दोहरे अनुवादक सीमाक भीतरहु दूनू कविताक मूल काव्य-शक्ति मैथिलीमे आयल अछि — एहि कारण जे भीमन्नाक विचारक बलसँ कोनो भाषा-माध्यम दलित नहि बना सकैत अछि।

निष्कर्ष

बोयी भीमन्नाक ई दू टा कविता दलित साहित्यक ओहि उच्चतम स्तरपर स्थित अछि जतय काव्य-शिल्प आ राजनीतिक दर्शन एकाकार भऽ जाइत अछि। जरैत खोपड़ी सभ धार्मिक हिंसाकचक्रवर्ती प्रकृतिकेँ एकटा रहस्यवादी प्रश्नक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, जखन कि हमर पैतृक अधिकार इतिहासक उलटा पाठ कऽ दलित अस्मिताक पुनर्प्रतिष्ठाक घोषणा करैत अछि।

दूनू कविता मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण दलित-दर्शन प्रस्तुत करैत अछि: प्रश्न करब, स्मरण करब, पुनर्दावा करब, आ अन्ततः गर्वसँ मुक्त श्वास लेब। ई मात्र कविता नहि — ई एकटा सभ्यता-संघर्षक दस्तावेज थिक।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षा: जे. सुभद्राक चारि टा कविता

लोढ़ब, लाण्डा, साड़ीक कोर, अव्वा

प्रारम्भिक टिप्पणी

जे. सुभद्रा तेलुगु दलित-स्त्री काव्यक एकटा विशिष्ट स्वर छथि। बोयी भीमन्नाक कविता जतय ऐतिहासिक-पौराणिक आयामसँ दलित-अस्मिताक पुनर्पाठ करैत अछि, सुभद्राक कविता देह, श्रम, आ घरेलू वस्तु — चाम, घैला, साड़ीक कोर — कें काव्य-केन्द्रमे स्थापित करैत अछि। हिनकर चारू कविता मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण दलित-स्त्री जीवनक समग्र दृश्य प्रस्तुत करैत अछि: खेतसँ घर धरि, श्रमसँ मातृत्व धरि, भूखसँ सम्मान धरि।

१. काव्य-रूप आ संरचना

लोढ़ब

एहि कविताक संरचना सूचीबद्ध श्रमक (श्रम-सूची) रूपमे अछि। भोरसँ रातिक सब काज एकपर एक आबैत अछि — बुहारब, निपब, पानि भरब, गोबर हटाएब — बिना कोनो विराम वा संयोजनक। ई सूची-रूप आकस्मिक नहि; ई दलित-स्त्रीक जीवनक साँसहीन निरन्तरता क प्रतिनिधित्व करैत अछि। वॉल्ट व्हिटमैन क आत्मगीत मे सेहो श्रम-सूचीक प्रयोग अछि — मुदा ओतय सूची मुक्तिक प्रतीक अछि; एतय ई बन्धनक।

अन्तिम प्रश्न — "ई बन्धुआ जिनगी कोना खतम हएत? " — पूरा कविताक भारकेँ एकटा छोट डोरीमे बान्हि दैत अछि। वक्तृत्वात्मक प्रश्न नहि, ई एकटा वास्तविक, अनुत्तरित प्रश्न थिक।

लाण्डा

एहि कविताक संरचना प्रक्रिया-आख्यान अछि — चाम सड़बाक, साफ करबाक, मुलायम बनाएबाक पूरा प्रक्रिया। ई तकनीकी सूक्ष्मता काव्यमे असामान्य अछि। अमलतासक गुद्दी, तेतरिक बीआ — ई सब लोक-ज्ञानक (देशज ज्ञान) अभिलेखीकरण थिक जे सुभद्रा काव्यक भीतर कऽ रहल छथि। एहि अर्थमे ई कविता एकटा नृवंशविज्ञानात्मक दस्तावेज सेहो थिक।

कविताक अन्तमे — "चरचराइत जुत्ता आ ढोल बनबा लेल— / ओ ढोल पर मधुर ताल दैत छथि" — एकटा कड़वा विडम्बना थिक। जे चाम स्त्री घृणित परिस्थितिमे तैयार करैत अछि, ओही चामसँ बनल ढोलपर पति "मधुर ताल" दैत अछि। श्रम आ कला, पीड़ा आ सौन्दर्य — एहि दूनूक बीचक विषम सम्बन्ध सुभद्रा एतय उजागर करैत छथि।

साड़ीक कोर

ई चारूमे सर्वाधिक लम्बा आ जटिल कविता थिक। एकर संरचना विस्तारित रूपक पर आधारित अछि — साड़ीक कोर एकहि वस्तु अछि जे बारम्बार नव रूप धरैत अछि: ओछाउन, छाता, थैली, गद्दी, रक्षक, माय। ई रूपान्तरण-शृंखला दलित-स्त्रीक जीवनक बहुरूपताकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि — जे एकहि साथ श्रमिक, माय, पत्नी, भिखारिन आ जीवट-योद्धा छथि।

अन्तिम पंक्तियाँ — "ई हमर छाती पर पहरा दऽ रहल कपड़ा नै अछि" — शीर्षककेँ ही नकारि दैत अछि। ई क्रियात्मक विरोधाभास थिक: शीर्षकमे जे कहल गेल, कविता ओकरा अस्वीकार करैत अछि। एहिसँ एकटा द्वन्द्वात्मक तनाव सृजित होइत अछि — कोनअर्थमे साड़ीक कोर पहरेदार नहि अछि? एहि प्रश्नकेँ कवि खुला रखैत छथि।

अव्वा

एहि कविताक संरचना सर्वाधिक गीतात्मक आ शोकगाथात्मक (शोकगीतात्मक) अछि। "अव्वा" शब्दक पुनरावृत्ति — जे तेलुगुमे "माँ" थिक — एकटा आह्वान क रूप धारण करैत अछि, जेना कोनो अनुष्ठानमे देवीकेँ बजाएल जाइत हो। मुदा ई देवी घरेलू श्रमक देवी छथि, सोनाक सिंहासनपर विराजित नहि।

कविताक बिम्ब-शृंखला असाधारण रूपसँ घनी अछि: सूरज जे आकाशक कालीनमे हरा गेल, खाली कोठीक धानक दाना, फाटल ढोलकक थाप। ई सब अभाव आ विस्थापनक रूपक थिक।

२. केन्द्रीय रूपकः वस्तु-काव्यशास्त्र

सुभद्राक काव्यक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण विशेषता थिक — साधारण वस्तुकेँ काव्य-केन्द्र बनाएब: लाण्डा (चमड़ा सड़ाएबाक पात्र), घैला, साड़ीक कोर, कोदारि, हँसुआ।

पाश्चात्य काव्यशास्त्रमे वस्तु-कविता (वस्तु-कविता / वस्तु-कविता) एकटा प्रतिष्ठित परम्परा थिक — राइनर मारिया रिल्के क नवीन कवितासभ एकर उत्कृष्ट उदाहरण अछि। मुदा रिल्के क वस्तु सब सौन्दर्य-वस्तु छथि — अपोलोक मूर्ति, पँथर। सुभद्राक वस्तु सब श्रम-वस्तु छथि — जे घृणित,臭(दुर्गन्धयुक्त), मैल, आ सामाजिक रूपसँ अपमानित अछि।

एहिमे दलित वस्तु-काव्यशास्त्र क एकटा नव काव्यशास्त्र उभरैत अछि: वस्तुक माध्यमसँ दलित-स्त्रीक श्रम, ज्ञान, आ अस्मिताकेँ दृश्यमान करब। जे समाज देखय नहि चाहैत — चामसड़ब, माटिमे अनाजक कण लोढ़ब — कवि तकरा साहित्यक केन्द्रमे रखैत छथि।

३. देह-राजनीति आ भौतिक यथार्थ

लाण्डामे एकटा पंक्ति असाधारण थिक: "भले हमर अन्तड़ी मुँह सँ बाहर आबि जाय, / भले मूर्छित भऽ जाय — कीड़ा-मकोड़ा आ गन्धक कारण, / ई चाम कमायबाक नियति सहबे पड़ैत अछि! "

ई देह-अन्तरक प्रत्यक्ष यथार्थवाद — आन्तरिक अंगक उल्लेख, घ्राण-प्रतिक्रिया, शारीरिक मूर्छा — दलित साहित्यक एकटा विशिष्ट प्रवृत्ति थिक जकरा गोपाल गुरु "उग्र देहाधारित अनुभूति" कहैत छथि। उच्च-जातीय साहित्यमे देह सामान्यतः आदर्शीकृत वा अमूर्त होइत अछि। दलित साहित्यमे देह ठोस, पीड़ित, आ श्रमरत होइत अछि — एहिमे कोनो पक्षसमर्थनात्मक सफाइ नहि।

साड़ीक कोरमे देहक उपस्थिति भिन्न रूपमे अछि — घाम, नोर, रजस्वला — ई सब देहक द्रव-प्रवाह (देह-द्रव) थिक जकरा ब्राह्मणवादी शुद्धता-प्रदूषण-व्यवस्था "अशुद्ध" मानैत अछि। सुभद्रा एहि सबकेँ काव्यमे सहज रूपसँ स्वीकारैत छथि — ई शुद्धता-मिथकक खण्डन थिक।

जूलिया क्रिस्तेवा क घृणित-बहिष्करण सिद्धांत एतय प्रासंगिक अछि। क्रिस्तेवा क अनुसार समाज ओहि तत्वकेँ "घृणित-बहिष्कृत" — घृणित, बहिष्कृत — मानैत अछि जे शरीरक सीमाकेँ तोड़ैत अछि: रक्त, मल, सड़न। सुभद्रा एहि घृणित-बहिष्कृत तत्वकेँ अपन काव्यक विषय बनाकऽ सामाजिक घृणित-बहिष्करण केँ ही अस्वीकार करैत छथि।

४. बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्धः जाति, लिंग, आ वर्ग

एहि चारू कवितामे जाति, लिंग, आ वर्ग — तीनू एकहि साथ उपस्थित छथि, आ हिनकर पारस्परिक क्रिया कखनो अलग नहि होइत अछि।

लोढ़बमे: जमीन्दारक घर काज करबाक बाध्यता (वर्ग+जाति) + "खरड़ा सँ मारि" (जातीय हिंसा) + एकर पूरा बोझ स्त्री पर (लिंग) ।

अव्वामे: "पिताक रिसक भट्ठीमे झुलसि जाइत छथि" — घरेलू हिंसा (लिंग) + "सेठ-सामन्त सब ओकरा हल-जोत सँ दूर रखने छथि" (जाति+वर्ग) — एकहि स्त्रीक जीवनमे एकहि साथ।

किम्बर्ले क्रेन्शॉ क बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध-सिद्धांत एतय शाब्दिक रूपसँ साकार होइत अछि। दलित-स्त्री न मात्र दलितक प्रतिनिधि छथि, न मात्र स्त्रीक — ओ एकटा तृतीय श्रेणी थिक जकर अनुभव एहि दूनूसँ भिन्न आ अधिक जटिल अछि।

शर्मिला रेगे एहि सन्दर्भमे "दलित-नारीवादी दृष्टिस्थान" क अवधारणा प्रस्तुत कएल छथि — दलित-स्त्रीक दृष्टिकोण एकटा ज्ञानमीमांसात्मक विशेषाधिकार थिक, कारण ओ उत्पीड़नक सर्वाधिक गहन स्तरपर अछि। सुभद्राक कविता एहि दृष्टिस्थान सँ लिखाएल अछि।

५. मातृत्व आ अभावः अव्वा क विशेष पाठ

अव्वा मातृत्व-काव्यक एकटा असाधारण पुनर्पाठ थिक। हिन्दी-संस्कृत साहित्यमे माँ सामान्यतः त्याग, कोमलता, आ पोषणकप्रतीक थिक — यशोदा, कौशल्या। सुभद्राक "अव्वा" एहिसँ मूलतः भिन्न छथि।

ओ माय छथि जे लोरी नहि गा सकैत छथि, कारण ओ काज पर छथि। ओ माय छथि जिनकर हाथ कठोर आ मैल अछि, कारण ओ सदैव खेत-पथारमे छथि। ओ माय छथि जे गोदमे नहि सुता सकैत छथि, कारण ओ जमीन्दारक बन्धुआ छथि।

एहिमे एड्रियन रिच क स्त्रीक रूपमे जन्म क प्रतिध्वनि अछि जतय ओ मातृत्व कैं संस्था आ अनुभव — दू स्तरपर विश्लेषित करैत छथि। सुभद्राक अव्वाक लेल मातृत्वक संस्था (प्रेम देब, दुलारब) आ मातृत्वक अनुभव (जीवित रहब, खुआएब) — दूनू एकहि साथ उपस्थित छथि, मुदा पहिल सदैव दोसराक अधीन। जीवित रहब दुलारसँ पहिने आबैत अछि — ई दलित-माँक त्रासदी थिक।

६. लोक-सौन्दर्यशास्त्र आ देशज ज्ञान

लाण्डामे अमलतास आ तेतरिक विशिष्ट उपयोग, साड़ीक कोरमे "मैसम्मा देवी"क सन्दर्भ, अव्वामे रोपनी-बिछुड़प-दौनीक गीत — ई सब दलित लोक-परम्पराक काव्यिक अभिलेखीकरण थिक।

गणेश देवी विस्मृतिक बाद मे तर्क करैत छथि जे भारतीय साहित्यिक आलोचना सदैव संस्कृत/उर्दू/अंग्रेजीक मान्य साहित्यिक परम्परा कैं केन्द्रमे रखलक आ दलित-आदिवासी मौखिक परम्पराकैं "साहित्येतर" मानलक। सुभद्राक कविता एहि मान्य परम्परासँ बहिष्करण कैं अस्वीकार करैत अछि — ओ दलित लोक-ज्ञानकैं, मौखिक परम्पराकैं, क्षेत्रीय वनस्पति-ज्ञानकैं काव्यक उच्च-भूमि पर स्थापित करैत छथि।

७. साड़ीक कोर आ जयप्रभाक प्रसंग

कविताक अन्तमे एकटा महत्त्वपूर्ण पादटिप्पणी अछि — जयप्रभाक तेलुगु नारीवादी कविता "साड़ीक कोरकैं आगि लगा दिअ" क सन्दर्भ। जयप्रभाक कविता साड़ीक कोरकैं पितृसत्ताक प्रतीक मानि ओकरा जराएबाक आह्वान करैत अछि।

सुभद्रा एहि उच्च-जातीय नारीवादी दृष्टिकोणसँ स्पष्टतः असहमत छथि। हिनकर अव्वाक लेल साड़ीक कोर न पितृसत्ताक प्रतीक थिक, न मुक्तिक शत्रु। ओ जीवन-निर्वाहक उपकरण थिक — ओछाउन, रक्षा, थैली, माय। एकरा जराएब माने ओहि एकमात्र वस्तुकैं जराएब जे एकर पास अछि।

ई अन्तः-नारीवादी संवाद अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थिक। ऑड्रे लॉर्ड बाहरी बहिनमे कहैत छथि: "मालिकक औजार मालिकक घरकैं कहियो ध्वस्त नहि करत" — मुदा एतय मुद्दा ई थिक जे कोन नारीवाद, कार नारीवाद? दलित-स्त्रीक दृष्टिसँ उच्च-जातीय नारीवादी प्रतीकशास्त्र कखनो-कखनो वर्ग-अन्ध आ जाति-अन्ध भऽ जाइत अछि। सुभद्रा एहि अन्धताकैं — बिना उग्रतासँ, किन्तु दृढ़तासँ — चुनौती दैत छथि।

८. भाषा आ मैथिली अनुवादक सन्दर्भ

ई कविता सब तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली — तीन स्तरक यात्रा कएल अछि। एहि यात्रामे किछु महत्त्वपूर्ण सन्दर्भ सुरक्षित रहल:

"लाण्डा" — तेलुगु शब्द जेना-अछि रखल गेल, जे उचित निर्णय थिक। एकर मैथिली अनुवाद कठिन होइत, आ मूल तकनीकी-सांस्कृतिक शब्दक शक्ति खत्म भऽ जाइत।

"अव्वा" — एहिमे "माय" नहि कहल गेल, "अव्वा" कहल गेल। एहिसँ तेलुगु-सांस्कृतिक विशिष्टता बचल रहल।

मुदा "कोंगु ना बोचे मीद कावलुंदे बोन्थपेग्गडु" (साड़ीक कोर) — तेलुगु शीर्षकक देहगत तात्कालिकता मैथिलीमे किछु मन्द भेल अछि। तेलुगुमे "बोचे" (छाती/उर) आ "कावलुंदे" (पहरेदारी) — दूनू शब्दक शारीरिक-राजनीतिक तनाव मैथिली "छाती पर पहरा दऽ रहल कपड़ा" मे अपेक्षाकृत शाब्दिक भऽ गेल।

निष्कर्ष

जे. सुभद्राक ई चारू कविता मिलिकऽ एकटा दलित-स्त्री जीवनक महाकाव्य रचैत अछि — विखण्डित, मुदा सम्पूर्ण। श्रमसँ मातृत्व धरि, देहसँ इतिहास धरि, एकटा साड़ीक कोरसँ पूरा सभ्यता-संघर्ष धरि।

हिनकर काव्य-उपलब्धि ई थिक जे ओ कखनो शिकायत नहि करैत छथि — ओ गवाही दैत छथि। सिमोन वेल न्याय आ दयाक बीच एहि अन्तरकैं महत्त्वपूर्ण मानैत छलीह: शिकायत पीड़ितसँ आबैत अछि, गवाही साक्षीसँ। सुभद्रा अपन जीवनक साक्षी बनैत छथि — आ एहिसँ हुनकर कविता मात्र व्यक्तिगत आर्तनाद नहि, बल्कि ऐतिहासिक दस्तावेज बनि जाइत अछि।

अन्तिम पंक्ति — "ओ कहियो ओहि सीमा धरि नै पहुँचल जतय-जतय हमर अव्वा घुमलीह" — सम्पूर्ण संग्रहक समाधिलेख थिक: भाषा, इतिहास, आ सभ्यता — सब मिलिकऽ दलित-स्त्रीक जीवनक सम्पूर्ण भूगोलकैं चिन्हित करय मे विफल रहल अछि।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षा (जारी): तुलनात्मक आ संश्लेषणात्मक अध्ययन

९. दूनू कवि एकसंगः भीमन्ना आ सुभद्राक काव्य-संवाद

एहि समीक्षाक दूनू खण्ड — भीमन्नाक पाँच कविता आ सुभद्राक चारि कविता — एकसंग पढ़लापर एकटा द्वन्द्वात्मक संवाद उभरैत अछि जे दलित साहित्यक भीतरक जटिलताकेँ उजागर करैत अछि।

दृष्टिकोणक भेद

भीमन्ना ऊपरसँ देखैत छथि — इतिहास, पुराण, दर्शन, सभ्यताक दीर्घकालिक चाप। हुनकर काव्य-कैमरा व्यापक-दृष्टि अछि। सुभद्रा भीतरसँ देखैत छथि — देह, वस्तु, श्रम, घर, माय। हुनकर काव्य-कैमरा निकट-दृष्टि अछि।

भीमन्नाक हमर पैतृक अधिकार व्यास आ वशिष्ठक इतिहासक खनन करैत अछि — एकटा व्यापक इतिहास। सुभद्राक अव्वा एकटा अनाम माँक एकटा दिनक श्रमकेँ चित्रित करैत अछि — एकटा सूक्ष्म इतिहास। मुदा दूनू एकहि सत्यक दू दिस थिक: ऐतिहासिक अपहरण आ दैनिक 착취(शोषण) — एक सिक्काक दू मुँह।

एहि अर्थमे दूनू कविक संग्रह मिलिकऽ कार्लो गिन्ज़बर्ग क सूक्ष्म इतिहास आ मार्क्सवादी व्यापक इतिहास क सेतु बनाबैत अछि — जतय व्यक्तिगत जीवनक क्षुद्र विवरण सामाजिक संरचनाक महाकाव्यसँ जुड़ि जाइत अछि।

प्रश्न आ गवाहीक भेद

भीमन्ना प्रश्न करैत छथि — "ई खोपड़ी सब कोना बेर-बेर उगि अबैत छैक? ", "ई दुष्चक्र कतेक दिन चलत? " हुनकर कविता प्रश्नात्मक शैली मे अछि।

सुभद्रा गवाही दैत छथि — "जखन हमर पति अपना हाथे चूना लगा कऽ चाम दैत छथि", "हमरा याद नै अछि कि कहियो अव्वाक डाँरकेँ कसिया कऽ पकड़ि लटकल रहलहुँ। " हुनकर कविता साक्ष्यात्मक शैली मे अछि।

पाश्चात्य साहित्य-सिद्धांतमे साक्ष्य एकटा विशेष विधा थिक जकर विकास यहूदी-विनाशकाण्ड साहित्यमे भेल — एली विज़ेल, प्रीमो लेवी। मुदा शोशाना फेलमैन आ डोरी लाउब साक्ष्य: साक्षीपनक संकट मे देखाबैत छथि जे साक्ष्य मात्र तथ्यात्मक प्रतिवेदन नहि थिक — ई एकटा नैतिक कर्म थिक जाहिमे पीड़ित अपन अनुभवकेँ साक्ष्यमे रूपान्तरित करैत अछि। सुभद्राक प्रत्येक कविता एहि अर्थमे साक्ष्य थिक।

१०. दलित काव्यमे प्रकृति-बिम्बः एकटा पुनर्पाठ

उच्च-जातीय हिन्दी-संस्कृत काव्यमे प्रकृति सामान्यतः सौन्दर्य-अनुभवक क्षेत्र थिक — कालिदासक मेघदूतमे यक्षक विरहक पृष्ठभूमि, छायावादमे आत्माक आरोपण। एहि परम्परामे प्रकृति रोमाण्टिक अछि।

सुभद्राक प्रकृति-बिम्ब मूलतः भिन्न अछि:

अव्वामे — "मुर्गाक स्वर सँ पहिने उगैत सूरज तापैत अछि अव्वाक आँखिमे" — सूरज उगनाइ एतय काव्यिक सौन्दर्य नहि, श्रमक आरम्भ-संकेत थिक। सूरज माँकेँ जगाबैत नहि — जरबैत अछि।

साड़ीक कोरमे — "बरखामे साड़ीक कोर बनि जाइत अछि अमलतासक फूलक छाता" — अमलतास उच्च-जातीय कविमे सौन्दर्यक विषय होइत; एतय ओ व्यावहारिक आश्रय थिक।

लोढ़बमे — धूरि, पाथरक दरारि, माटि — ई सब भू-दृश्य थिक जाहिमे दलित-स्त्री काज करैत अछि, जकरा छायावादी कवि कहियो नहि देखलथि।

एहि अर्थमे सुभद्रा ग्राम्य-रोमानी विचारधारा कें — जे ग्रामीण प्रकृतिकेँ शान्तिक स्थल मानैत अछि — ध्वस्त करैत छथि। रेमंड विलियम्स देश आ शहर मे देखाओल अछि जे ग्राम्य-रोमानी दृष्टि एकटा वर्ग-षड्यन्त्र थिक जे श्रमकेँ अदृश्य करैत अछि। सुभद्राक कविता ओहि अदृश्य श्रमकेँ दृश्यमान करैत अछि।

११. काव्यमे मौन आ अनुपस्थिति

दूनू कविक रचनामे जे कहल नहि गेल से कहल गेलासँ कम महत्त्वपूर्ण नहि।

भीमन्नाक जरैत खोपड़ी सभ मे हत्यारा कहियो नामित नहि होइत — "धर्म" एकटा अमूर्त शक्ति थिक। एहि रणनीतिक अनामिता मे एकटा साहित्यिक कूटनीति अछि: हत्यारा जखन व्यवस्था हो, व्यक्ति नहि, तखन ओकरा नामित करब आवश्यक नहि — कारण नाम लेलासँ व्यवस्था नहि बदलैत।

सुभद्राक अव्वा मे माँक आवाज अनुपस्थित अछि। ओ गाबैत छथि — मुदा हम हुनकर गीत नहि सुनैत छी; ओ बाजैत छथि — मुदा हम हुनकर शब्द नहि जनैत छी। ई मौन दलित-स्त्रीक ऐतिहासिक अनुपस्थिति क प्रतीक थिक — जे इतिहासमे कहियो कर्ता-विषय नहि बनलीह, सदैव वस्तु रहलीह।

जाक देरिदा चिह्न-अवशेष क अवधारणामे कहैत छथि जे अर्थ मात्र उपस्थितिमे नहि, अनुपस्थितिक निशानमे सेहो निहित होइत अछि। सुभद्राक कविताक मौन — अव्वाक न-सुनाएल लोरी, न-कहाएल शब्द — एहि चिह्न-अवशेष थिक जतय दलित-स्त्रीक इतिहास अंकित अछि।

१२. क्रोध, शोक, आ गरिमा: तीन भावनात्मक स्वर

एहि नव कवितामे — भीमन्नाक पाँच आ सुभद्राक चारि — तीन टा प्रमुख भावनात्मक स्वर अछि:

क्रोध — भीमन्नाक जरैत खोपड़ी सभ आ हमर पैतृक अधिकारमे। ई क्रोध दार्शनिक क्रोध थिक — व्यक्तिगत नहि, सांस्कृतिक।

शोक — सुभद्राक अव्वा आ लोढ़बमे। ई शोक सामूहिक शोक थिक — एकटा पूरा पीढ़ीक खोएल जीवनक लेल।

गरिमा — साड़ीक कोरक अन्तिम पंक्तियाँमे, हमर पैतृक अधिकारक अन्तिम उद्घोषमे। ई गरिमा अर्जित थिक — दयापर आधारित नहि, अधिकारपर आधारित।

अरस्तू काव्यमे भावनात्मक विरेचन — भावनात्मक शुद्धि — क बात करैत छथि। मुदा दलित काव्यमे भावनात्मक विरेचन एकटा भिन्न प्रकृतिक होइत अछि। ई दर्शकक भावनात्मक शुद्धिक लेल नहि — ई समाजक नैतिक शुद्धिक आह्वान थिक। आम्बेडकर कहैत छलाह: "हम कोनो समुदायक प्रगति ओहि अंशसँ मापैत छी, जतेक प्रगति ओहि समुदायक स्त्रीसभ कएलनि अछि। " एहि कसौटीपर ई कविता सब समाजकेँ नापैत छथि — आ समाज विफल पाबैत अछि।

१३. मैथिली साहित्यिक परम्परा आ दलित काव्यक प्रासंगिकता

एहि तेलुगु दलित कवितासभक मैथिलीमे अनुवाद — विदेह पत्रिकाक माध्यमसँ — एकटा साहित्यिक-सांस्कृतिक परियोजना थिक जकर महत्त्व केवल अनुवादक तकनीकी उपलब्धिसँ परे जाइत अछि।

मैथिली साहित्यमे दलित स्वर ऐतिहासिक रूपसँ प्रान्तीय रहल अछि। साहित्य अकादेमी-स्वीकृत मैथिली मान्य साहित्यिक परम्परा सामान्यतः ब्राह्मण-कायस्थ-केन्द्रित रहल अछि — विद्यापतिसँ लऽकऽ आधुनिक काल धरि। मैथिली समानान्तर धारा साहित्य आन्दोलनक बाद विद्यापतिक पदावली स्थित “बिदेसिया”, हुनकर ज्योतिरीश्वर-पूर्व कालमे निर्धारित भऽ सकल। [अनुलग्नक: १ मैथिलीक मूल आ अनूदित दलित गद्य-पद्य साहित्य लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त/ अनुलग्नक: २: विद्यापतिक विदेसियाक एकटा समालोचनात्मक मूल्यांकन; अनुलग्नक -३; मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)-गजेन्द्र ठाकुर; अनुलग्नक: ४: विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर- बिदापत नाचक अलाबे मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ] एहि संदर्भमे तेलुगु दलित-स्त्री कवितासभक मैथिली अनुवाद एकटा मान्य साहित्यिक परम्परामे हस्तक्षेप थिक।

ई अनुवाद मैथिली पाठककेँ कहैत अछि: दलित-स्त्रीक यथार्थ तेलुगुक मात्र विषय नहि थिक — ओ मिथिलाक भूमिमे सेहो उतना ही उपस्थित अछि। भौगोलिक विशिष्टता (तेलुगु सन्दर्भ) आ सामाजिक सार्वभौमिकता (दलित-स्त्री उत्पीड़न) — दूनूकेँ एकहि साथ स्वीकारब एहि अनुवाद-परियोजनाक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक-राजनीतिक निर्णय थिक।

समानान्तर साहित्य आन्दोलन क जे दृष्टि विदेह प्रतिनिधित्व करैत अछि — मान्य साहित्यिक परम्परा-बाहरक, लोक-परम्परा-समृद्ध, दलित-स्त्री-स्वर-समावेशी — ओहि दृष्टिक एहि कविता सब जीवित प्रमाण थिक।

१४. अन्तिम संश्लेषण: एकटा नव काव्यशास्त्र

भीमन्ना आ सुभद्राक ई नव कविता मिलिकऽ दलित काव्यशास्त्रक किछु मूलभूत सिद्धान्त स्थापित करैत अछि जे पाश्चात्य आ उच्च-जातीय भारतीय काव्यशास्त्रसँ मूलतः भिन्न अछि:

प्रथम — काव्य-विषयक लोकतन्त्र: चाम सड़ब, माटिमे अनाज लोढ़ब, पुरानि साड़ीक कोर — ई सब उतने काव्य-योग्य थिक जतेक मेघदूतक यक्ष-विरह वा कामायनीक श्रद्धा।

द्वितीय — भावनाक नैतिक स्वीकृति: क्रोध, घृणा, शोक — ई रस सिद्धान्तमे अपूर्ण मानल जाइत अछि (शान्त रस सर्वोच्च) । दलित काव्यमे क्रोध नैतिक रूपसँ आवश्यक थिक।

तृतीय — राजनीति आ सौन्दर्यक अभेद: "कला कलाक लेल" (कला मात्र कलाक लेल) दलित काव्यमे अर्थहीन अछि। कविता एकटा सामाजिक कार्य थिक — गवाही, आरोप, आ मुक्तिक आह्वान एकहि साथ।

चतुर्थ — स्थानीय ज्ञानक सम्मान: अमलतास, तेतरि, मैसम्मा देवी, लाण्डा — ई सब दलित ज्ञानमीमांसा थिक जे पुस्तकीय ज्ञानसँ पूर्व आ कखनो-कखनो श्रेष्ठ अछि।

पञ्चम — देह एकटा राजनीतिक भूमि थिक: दलित-स्त्रीक देह — जे जरैत अछि, थकैत अछि, सड़ैत अछि, नोर बहबैत अछि — एहि देहपर जाति, वर्ग, आ लिंगक तीनू व्यवस्था एक साथ काम करैत अछि। एहि देहकेँ काव्यमे दृश्यमान करब राजनीतिक कार्य थिक।

समापन

ऑड्रे लॉर्ड मौनक भाषा आ क्रियामे रूपान्तरण मे लिखैत छथि जे मौन हमरा नहि बचाओत — "अहाँक मौन अहाँक रक्षा नहि करत। " बोयी भीमन्ना आ जे. सुभद्रा — दूनू — एहि मौनकेँ तोड़ैत छथि। भीमन्ना इतिहासक मौनकेँ, सुभद्रा दैनिक जीवनक मौनकेँ।

एकटा भाषासँ दोसर भाषामे — तेलुगुसँ मैथिलीमे — ई आवाज सब यात्रा करैत अछि। अनुवाद एतय मात्र भाषान्तर नहि — ई एकजुटताक कार्य थिक: एक दलित समुदाय दोसर दलित समुदायक आवाजकेँ सुनैत अछि, पहचानैत अछि, आ अपन भाषामे ओकरा जीवित राखैत अछि।

एहि अर्थमे ई नव कविता — भीमन्नाक आ सुभद्राक — मैथिली साहित्यमे मात्र एकटा अनुवाद नहि, एकटा नव काव्य-परम्पराक बीजारोपण थिक।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षा: चल्लपल्ल्ली स्वरूपरानीक दू टा कविता

मान्केनापुव्वु आ माटि-भेल हाथ

प्रारम्भिक टिप्पणी

चल्लपल्ल्ली स्वरूपरानी तेलुगु दलित-स्त्री काव्यक एकटा विशिष्ट आवाज छथि जे भीमन्ना आ सुभद्राक काव्य-परम्पराकेँ एकटा नव आयाम दैत अछि। जतय भीमन्ना ऐतिहासिक-पौराणिक स्तरपर आ सुभद्रा वस्तु-श्रम-मातृत्व क स्तरपर काज करैत छथि, स्वरूपरानीक काव्य एकटा तृतीय स्थान ग्रहण करैत अछि — ओ व्यक्तिगत चेतनाक रूपान्तरण केँ केन्द्रमे रखैत छथि। हुनकर कविता "हम" सँ शुरू होइत अछि आ "हम" पर समाप्त होइत अछि — मुदा ई "हम" यात्राक दूनू छोरपर भिन्न अछि।

१. काव्य-रूप आ संरचना

मान्केनापुव्वु

एहि कविताक संरचना एकटा त्रि-स्तरीय आख्यान थिक। पहिल स्तरमे कविताक आरम्भमे एकटा केन्द्रीय रूपक स्थापित होइत अछि — काँटेदार झाड़ीमे फँसल नीला चिरै। दोसर आ दीर्घतम स्तरमे एकटा अनुप्रास-आरम्भ शृंखला (एकहि शब्दसँ बारम्बार आरम्भहोयबाक काव्य-विधि) अछि — "जखन... तखन" — जे छह बेर दोहराएल जाइत अछि। तेसर स्तरमे कविता अकस्मात् मोड़ लैत अछि — "मुदा जखन हमर सहनशीलता खतम होइत अछि" — आ विस्फोटक उद्घोषमे परिणत भऽ जाइत अछि।

ई त्रि-स्तरीय संरचना थीसिस-एन्टीथीसिस-सिन्थेसिस (स्थापना-खण्डन-समन्वय) क द्वन्द्वात्मक प्रतिरूप थिक। मुदा हेगेलीय द्वन्द्ववादसँ ई भिन्न एहि अर्थमे जे एतय समन्वय कोनो समझौता नहि — ई विद्रोह थिक।

"जखन... तखन" क छह आवृत्तिमे ध्यान देबाक योग्य अछि जे प्रत्येक "तखन" मे आत्म-निषेधक इच्छा व्यक्त होइत अछि — बीउ जकाँ धँसब, नाक बन्द करब, मुट्ठीमे सिमटि जाएब, सीसा ढारब, मुँड़ धँसाएब। ई पाँच विशिष्ट आत्म-निषेध-बिम्ब अछि जे एकत्र भऽ एकटा संचित पीड़ा (बहुत रास पीड़ाक एकत्र भार) सृजित करैत अछि। मुदा एहि संचित पीड़ाक तीव्रता ही अन्तिम विस्फोटकेँ विश्वसनीय बनाबैत अछि।

माटि-भेल हाथ

एहि कविताक संरचना कालक्रमानुसार (समयक क्रमसँ) अछि — भोरसँ साँझ धरि, जवानीसँ जीर्णता धरि। मुदा ई कालक्रम सरल रेखीय नहि — ई सर्पिलाकार (घुमैत-घुमैत ऊपर-नीचाँ जाइत) अछि। एकहि दिन बेर-बेर दोहराएल जाइत अछि, एकहि वर्ष बेर-बेर, एकहि जीवन बेर-बेर। एहि पुनरावर्ती सर्पिलाकारसँ एकटा गहिर शून्यवाद (जीवनमे कोनो अर्थ नै देखबाक भाव) उभरैत अछि — कोनो परिवर्तन नहि, कोनो अन्त नहि।

सुभद्राक अव्वा सँ तुलना करलापर: दूनू माँक कविता थिक, दूनूमे श्रमक वर्णन अछि — मुदा अव्वामे पुत्री-दृष्टि अछि, माटि-भेल हाथमे तृतीय-पुरुष साक्षी-दृष्टि अछि। ई भेद महत्त्वपूर्ण अछि: स्वरूपरानी एतय माँकैँ प्रेमसँ नहि, न्यायिक दृष्टिसँ देखैत छथि।

२. केन्द्रीय रूपकः चिरै, फूल, आ माटि

नीला चिरै आ सेमरक फूल

मान्केनापुव्वुक दू टा प्रमुख बिम्ब — काँटेदार झाड़ीमे फँसल नीला चिरै आ अन्तमे खिलैत सेमरक लाल फूल — एकटा वर्ण-यात्रा (रंगक माध्यमसँ भावनात्मक यात्रा) प्रस्तुत करैत अछि। नीला रंग (चिरैक) — उदासी, बन्धन, आकाशक प्रति अतृप्त लालसाक प्रतीक। लाल रंग (सेमरक फूलक) — विद्रोह, रक्त, जीवन-शक्तिक प्रतीक।

सेमरक फूल (सेमर) तेलुगु-आन्ध्र संस्कृतिमे एकटा विशिष्ट अर्थ राखैत अछि — ई काँटेदार गाछपर फुटैत अछि, शीतकालमे जखन पात नहि रहैत छैक, तखन एकाकी चमकदार लाल फूल। ई प्रतिकूलतामे फूलबाक सांस्कृतिक प्रतीक थिक। स्वरूपरानी एहि देशज प्रतीकशास्त्रकैँ दलित-स्त्री-चेतनाक रूपकमे रूपान्तरित करैत छथि।

पाश्चात्य काव्यमे फीनिक्स (पौराणिक पक्षी जे जरिकऽ पुनर्जन्म लैत अछि) क रूपक एहिसँ मेल खाइत अछि — मुदा फीनिक्स राखमे भस्म भऽ जाइत अछि, फेर उठैत अछि। स्वरूपरानीक नायिका भस्म नहि होइत — ओ काँटेक बीचहि फूलैत अछि। ई एकटा महत्त्वपूर्ण भेद थिक: दलित-स्त्रीक मुक्ति विनाशसँ नहि आबैत — रूपान्तरणसँ आबैत अछि।

माटि-भेल हाथ

माटि-भेल हाथक शीर्षक-रूपक बहु-आयामी अछि। "माटि-भेल हाथ" — श्रमसँ माटिमे धँसल हाथ — एकटा शाब्दिक वर्णन थिक। मुदा एहिमे माटि बनब (मनुष्यताक अवमूल्यन) आ माटिसँ बनब (मूल तात्त्विक पहचान) दूनू अर्थ निहित अछि।

लोढ़बमे सुभद्रा माटिमे अनाजक कण खोजैत छथि। माटि-भेल हाथमे स्वरूपरानी माटिमे स्त्री स्वयं विलीन होइत देखैत छथि। ई उत्तरोत्तर-वृद्धि (क्रमशः बढ़ैत तीव्रता) महत्त्वपूर्ण थिक — श्रम जखन एतेक तीव्र होइत अछि जे श्रमिक आ माटि एकाकार भऽ जाइत अछि, ई वस्तुकरण (मनुष्यकैँ वस्तु मानब) क चरम अवस्था थिक।

मार्क्स आर्थिक आ दार्शनिक पाण्डुलिपि मे अलगावग्रस्त श्रम (जाहिमे मजदूर अपन काजसँ, अपन मानवतासँ आ प्रकृतिसँ कटि जाइत अछि) क वर्णन करैत छथि। स्वरूपरानीक "माटि-भेल हाथ" एहि अलगावक शारीरिक प्रतीक थिक।

३. "जखन... तखन" शृंखलाक विश्लेषण

मान्केनापुव्वुक छह-आवृत्त "जखन... तखन" शृंखला एकटा उत्पीड़नक वर्गीकरण (उत्पीड़नक विभिन्न स्तरक सूची) प्रस्तुत करैत अछि। प्रत्येक "जखन" मे उत्पीड़नक एकटा भिन्न स्तर अछि:

पहिल — घरेलू सौन्दर्यशास्त्रक नियन्त्रण: काजर-टिकुली नहि लगाएब। ई सर्वाधिक अन्तरंग स्तर थिक — स्वयं अपन देहपर नियन्त्रण।

दोसर — स्थानिक नियन्त्रण: "दुर्गन्धित गाम" — दलित बस्तीक शारीरिक घेराबन्दी।

तेसर — शैक्षिक बहिष्कार: उच्च-शिक्षाक देहरीपर जाति-आधारित अस्वीकृति।

चतुर्थ — आरक्षण-आधारित कलंकारोपण: "कोटा सँ अबैत छी" — आरक्षणकैँ अपमानक हथियार बनाएब।

पञ्चम — यौन-वस्तुकरण (स्त्रीकैँ मात्र भोगक वस्तु मानब): विवाहयोग्य नहि, मात्र काम-वासनाक वस्तु।

ई पाँचू स्तर मिलिकऽ दलित-स्त्रीक जीवनक चतुर्दिक घेराबन्दी दर्शाबैत अछि — घर, गाम, शिक्षा, काज, विवाह — सब दिससँ घेराएल। एहि घेराबन्दीक यथार्थवाद पैट्रिशिया हिल कॉलिन्स क प्रभुत्वक जाल (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे उत्पीड़न एकटा एकल शक्ति नहि, बल्कि परस्पर-गुँथल व्यवस्थासभक समूह थिक) सिद्धांतसँ मेल खाइत अछि।

विशेष रूपसँ महत्त्वपूर्ण अछि आरक्षण-कलंकारोपण क उल्लेख — जे भीमन्ना वा सुभद्राक कवितामे अनुपस्थित अछि। स्वरूपरानी एतय समकालीन दलित अनुभव कैँ समेटैत छथि: शिक्षा आ सरकारी नौकरीमे प्रवेश पाबिकऽ सेहो दलित-स्त्री "कोटा-लाभार्थी" क रूपमे कलंकित होइत रहैत अछि। ई इक्कीसवीं सदीक उत्पीड़नक नव रूप थिक जे पुरान सामाजिक ऊँच-नीचकैँ नव भाषामे कायम राखैत अछि।

४. देह-राजनीतिः दू भिन्न पथ

दूनू कवितामे देहक उपस्थिति अछि — मुदा दू भिन्न पथपर।

मान्केनापुव्वुमे देह क्षमता आ विद्रोहक स्थल थिक। "हम खिलि उठब", "हम बहि पड़ब" — ई देह जे अन्त धरि काँटमे फँसल छल, ओ अन्तमे स्वयं-निर्णय-शक्ति (अपना विषयमे निर्णय लेबाक अधिकार) प्राप्त करैत अछि।

माटि-भेल हाथमे देह क्षय आ उपभोगक स्थल थिक। "जे गेंदा फूल जकाँ चमकैत छल, / झुराएल पातक डारि सन फीका होइत जाइत छनि" — ई देह श्रम आ पितृसत्ताक दोहरा उपभोगसँ विनष्ट होइत अछि।

एहि दू पथमे एकटा पीढ़ी-अन्तर देखल जा सकैत अछि। मान्केनापुव्वुक "हम" सम्भवतः शिक्षित, जागरूक, विद्रोही — नव पीढ़ीक दलित-स्त्री। माटि-भेल हाथक "ओ" सम्भवतः अशिक्षित, अनजान, थकल — पुरान पीढ़ीक दलित-स्त्री। दूनू एकहि व्यवस्थाक उत्पाद छथि — मुदा चेतनाक स्तरपर भिन्न।

फ्रान्ट्ज फानों द रेचेड ऑफ द अर्थ मे उपनिवेशित चेतनाक दू स्तर देखाबैत छथि: जे व्यवस्थाकैँ भीतरसँ स्वीकार कऽ लेलक, आ जे ओकरा अस्वीकार करय लागल। स्वरूपरानी एहि दूनू चेतनाकैँ एकहि संग्रहमे — दू कवितामे — प्रस्तुत करैत छथि।

५. पति-आकृतिः दू कवितामे तुलना

दूनू कवितामे पति उपस्थित अछि — मुदा भिन्न रूपमे।

मान्केनापुव्वुमे — "घरमे पुरुष-नियन्त्रण एक गाल पर थप्पड़ मारैत अछि" — पति एकटा नामहीन शक्ति थिक, जाति-व्यवस्थाक बराबरीक भागीदार। नाम नहि, चेहरा नहि — मात्र शक्ति।

माटि-भेल हाथमे — "पति तैयार अछि ओकर घाम शराब जकाँ पी जयबा लेल" आ "साँझमे पतिक हाथ-पैरक मारि सहि" — पति ठोस उत्पीड़क थिक, दैनिक जीवनमे उपस्थित।

ई वैपरीत्य साहित्यिक-राजनीतिक दृष्टिसँ महत्त्वपूर्ण अछि। पहिल कवितामे पितृसत्ता संरचनागत (व्यवस्थाक रूपमे) थिक; दोसरमे ओ अन्तर्वैयक्तिक (दू व्यक्तिक बीचक) थिक। दूनू सत्य छथि — मुदा दूनू मिलिकऽ पितृसत्ताक पूर्ण चित्र बनाबैत अछि: ओ एकहि साथ व्यवस्था आ व्यक्ति दूनू छथि।

बेल हुक्स नारीवादी सिद्धांत: हाशियासँ केन्द्र धरि मे तर्क करैत छथि जे नारीवादी आन्दोलन कहियो-कहियो पितृसत्ताकैँ मात्र संरचनागत देखैत अछि आ व्यक्तिगत पुरुष-हिंसाकैँ कम महत्त्व दैत अछि — वा एकर विपरीत। स्वरूपरानीक दूनू कविता मिलिकऽ एहि मिथ्या द्विकल्पकैँ अस्वीकार करैत अछि।

६. अन्तिम बिम्बः दू विरोधी समापन

मान्केनापुव्वु एकटा विजयी समापन पर समाप्त होइत अछि:

"हम खिलि उठब मान्केनापुव्वु जकाँ! / हम बहि पड़ब धारा जकाँ, / पार कऽ क्लेशक वन। "

ई समापन पाठककैँ भावनात्मक विरेचन (पीड़ाक पश्चात् भावनाक शुद्धि) दैत अछि — पीड़ाक पश्चात् विजयक अनुभव। मुदा ई विरेचन सस्ता नहि — ओ पूरा कविताक संचित पीड़ाक बाद आबैत अछि, एहि कारण ओकर भार असाधारण अछि।

माटि-भेल हाथ एकटा त्रासद समापन पर समाप्त होइत अछि:

"जीवनक पाथर-परती रस्ता पर— / भूखक क्रूस ढोइत। "

"क्रूस" शब्दक प्रयोग एतय अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। ई ईसाई प्रतीकशास्त्र क उधार थिक — यीशुक क्रूस-वहन। मुदा एतय ई लौकिक अर्थमे प्रयुक्त: दलित-स्त्री कोनो मुक्तिक आश्वासन बिना, कोनो पुनरुत्थान बिना, क्रूस ढोइत रहैत अछि। ई पुनरुत्थान-विहीन सूलीचढ़ाई थिक — जे ईसाई प्रतीकशास्त्रसँ अधिक क्रूर चित्र थिक।

अल्बेर कामू सिसिफसक मिथक मे अर्थहीनता-दर्शन (जीवनमे कोनो पूर्वनिर्धारित अर्थ नहि) क वर्णन करैत छथि — सिसिफस जे पत्थर बेर-बेर ऊपर ढकेलैत अछि, ओ बेर-बेर खसैत अछि। कामू कहैत छथि: "सिसिफसकेँ सुखी मानब पड़त। " मुदा स्वरूपरानीक नायिकाक लेल ई अस्तित्ववादी समाधान उपलब्ध नहि — कारणकामूक सिसिफस एकटा अमूर्त दार्शनिक आकृति थिक, स्वरूपरानीक नायिका ऐतिहासिक, भौतिक, देहधारी छथि।

७. सुभद्रासँ तुलना: समानता आ भेद

दूनू कवि दलित-स्त्री जीवनकेँ काव्य-विषय बनाबैत छथि — मुदा हुनकर काव्य-दृष्टिमे कई महत्त्वपूर्ण भेद अछि:

गति: सुभद्राक कविता धीमी, ध्यानस्थ अछि — एक-एक वस्तुकेँ, एक-एक क्षणकेँ पूरा ध्यानसँ देखैत। स्वरूपरानीक कविता तीव्र, आवेगपूर्ण अछि — जेना कोनो बाँध टूटि रहल हो।

दृष्टिकोण: सुभद्रा भीतरी साक्षी छथि — ओ स्वयं ओही जीवनमे छथि। स्वरूपरानी मान्केनापुव्वुमे भीतरी साक्षी छथि, माटि-भेल हाथमे करुणाशील बाहरी साक्षी — ओ दोसर स्त्रीक जीवन देखैत छथि।

समाधान: सुभद्राक साड़ीक कोर समाधान-विहीन, खुला-अन्त थिक। स्वरूपरानीक मान्केनापुव्वु स्पष्ट समाधान दैत अछि — विद्रोह आ खिलनाइ। एहि अर्थमे स्वरूपरानी अधिक घोषणापत्र-प्रकृतिक छथि — हुनकर काव्यमे एकटा राजनीतिक घोषणापत्रक तत्त्व अछि।

८. भाषा-शैलीक विशेषता

मान्केनापुव्वुमे एकटा ध्यानयोग्य भाषिक विशेषता थिक — इन्द्रिय-विशिष्टताक अपेक्षाकृत अभाव। कविता भावनात्मक आ वैचारिक धरातलपर काम करैत अछि, ठोस इन्द्रिय-विवरणपर कम। ई सुभद्राक काव्यसँ भिन्न जतय अमलतासक गुद्दी, तेतरिक बीआ, घैलाक गद्दी — सब ठोस-इन्द्रिय-ग्राह्य अछि।

मुदा माटि-भेल हाथमे इन्द्रिय-समृद्धि उपस्थित अछि — "ठेहुन भरि कीचड़", "अन्तड़ी पेटमे भयंकर नाच", "बामन-बासनक सङ्गीत"। एहिसँ बुझाइत अछि जे स्वरूपरानीक काव्य-भण्डारमे दूनू प्रकारक भाषा उपलब्ध अछि — ओ प्रसंग अनुसार चुनैत छथि।

"बामन-बासनक सङ्गीत" — बर्तन माँजबाक आवाजकेँ "सङ्गीत" कहब — एकटा कटु व्यंग्य थिक। उच्च-वर्गीय सौन्दर्यशास्त्र जे वायलिन-सितारमे संगीत देखैत अछि, दलित-स्त्रीक लेल भोरक पहिल "संगीत" काँसाक बर्तनक खनखनाहट थिक। ई सौन्दर्य-मूल्यक उलटपालट स्वरूपरानीक काव्य-बुद्धिक प्रमाण थिक।

९. तीनू कवि: एकटा समग्र दृष्टि

एहि समीक्षाक तेसर खण्डमे आबिकऽ — भीमन्ना, सुभद्रा, आ स्वरूपरानी — तीनूकेँ एकसंग देखलापर तेलुगु दलित काव्यक एकटा त्रिकोणीय संरचना उभरैत अछि:

भीमन्ना — इतिहास आ दर्शनक कवि: व्यापक स्तरपर जाति-व्यवस्थाक ऐतिहासिक आ पौराणिक आधारकेँ प्रश्नांकित करैत छथि।

सुभद्रा — श्रम आ वस्तुक कवि: सूक्ष्म स्तरपर दैनिक जीवनक ठोस यथार्थकेँ — एक-एक वस्तुकेँ, एक-एक श्रमकेँ — दृश्यमान करैत छथि।

स्वरूपरानी — चेतना आ रूपान्तरणक कवि: मध्यवर्ती स्तरपर — इतिहास आ दैनिकताक बीचक — व्यक्तिगत चेतनाकेँ, उत्पीड़नक आन्तरिक अनुभवकेँ, आ ओहि चेतनाक रूपान्तरणकेँ पकड़ैत छथि।

तीनू मिलिकऽ सम्पूर्ण दलित-स्त्री अनुभव केँ आवृत्त करैत अछि — बाहरसँ भीतर धरि, इतिहाससँ वर्तमान धरि, पीड़ासँ विद्रोह धरि।

निष्कर्ष

चल्लपल्ल्ली स्वरूपरानीक ई दू कविता — मान्केनापुव्वु आ माटि-भेल हाथ — दलित-स्त्री काव्यमे आशा आ निराशाक द्वन्द्वक सर्वोत्तम अभिव्यक्ति थिक। मान्केनापुव्वु कहैत अछि: हम फूलब — काँटक बावजूद। माटि-भेल हाथ कहैत अछि: बिना संरचनागत परिवर्तनक, ई फूलनाइ सम्भव नहि।

दूनू कविता मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण राजनीतिक सन्देश बनाबैत अछि: व्यक्तिगत विद्रोह सम्भव आ आवश्यक थिक — मुदा जाधरि संरचनागत परिवर्तन नहि होएत, ताधरि माटि-भेल हाथक नायिका बेर-बेर जन्म लेत आ बेर-बेर क्रूस ढोइत जीवन समाप्त करत।

ई दोहरा सत्य — व्यक्तिगत मुक्तिक सम्भावना आ सामूहिक मुक्तिक अनिवार्यता — स्वरूपरानीक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण काव्य-उपलब्धि थिक।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षा: दरिशे शशिनिर्मलाक तीन कविता

हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ, हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी, एकटा दलित स्त्री

प्रारम्भिक टिप्पणी

दरिशे शशिनिर्मला तेलुगु दलित-स्त्री काव्यक एकटा सर्वाधिक **उग्र आ टकराहटी** (सोझे-सोझ मुकाबला करैत) आवाज छथि। भीमन्नाक ऐतिहासिक-दार्शनिक विश्लेषण, सुभद्राक श्रम-वस्तु-काव्य, स्वरूपरानीक व्यक्तिगत-चेतनाक रूपान्तरण — ई सभसँ आगाँ बढ़िकऽ शशिनिर्मला **एकटा सर्वथा भिन्न काव्य-भूमि**ग्रहण करैत छथि। ओ एकहि साथ तीन दिस मुँह कऽ लड़ैत छथि: उच्च-जातीय पुरुषक विरुद्ध, दलित पुरुषक विरुद्ध, आ उच्च-जातीय स्त्रीक विरुद्ध। एहि **त्रिमुखी संघर्ष**मे हुनकर काव्य एकटा ऐसन राजनीतिक भूमि ग्रहण करैत अछि जे तेलुगु दलित काव्य-परम्परामे असाधारण थिक।

१. काव्य-रूप आ संरचना

हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ

एहि कविताक संरचना**सम्वाद-रूप** (दू पक्षक बीच प्रत्यक्ष बातचीतक काव्यिक प्रस्तुति) मे अछि — मुदा एकटा असाधारण सम्वाद जतय दोसर पक्ष कहियो उत्तर नहि दैत। "अहाँ" — एकटा उच्च-जातीय स्त्री — कविताक सम्पूर्ण लक्ष्य थिक। कवि हुनकासँ बाजैत छथि, मुदा हुनकर उत्तरक प्रतीक्षा नहि करैत — कारण ओ उत्तर सम्भव नहि।

ई **एकपक्षीय सम्वाद** (जाहिमे एके पक्ष बाजैत अछि) काव्यशास्त्रमे एकटा विशिष्ट विधि थिक। शेक्सपियरक नाटकमे **एकालाप** (अकेले बाजब) जे भीतरक द्वन्द्व उजागर करैत अछि — ओहिसँ ई भिन्न। एतय एकालाप नहि, **अनसुनाएल सम्वाद** अछि। कवि बाजैत छथि — दोसर पक्ष सुनैत नहि। एहि **संरचनागत बधिरता**मे उच्च-जातीय स्त्री-नारीवादक असलियत प्रकट होइत अछि।

कविताक अन्तिम पाँच पंक्ति प्रश्नक रूपमे आबैत अछि — *"की अहाँ एक डेग नीचाँ उतरि आयब? "*, *"की हम एक्के पगडण्डी पर चलब? "*— ई वक्तृत्वात्मक (वक्तृत्वकलापूर्ण) प्रश्न नहि, **वास्तविक परीक्षा** थिक। कवि उच्च-जातीय स्त्रीकेँ एकटा ठोस चुनाव (ठोस निर्णय) लेबाक लेल बाध्य करैत छथि।

हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी

एहि कविताक संरचना सर्वाधिक **जटिल आ बहुस्तरीय** अछि। ई एकहि साथ **व्यक्तिगत आर्तनाद**, **राजनीतिक घोषणापत्र**, आ **ऐतिहासिक दस्तावेज** थिक। संरचना तीन स्तरपर काम करैत अछि:

पहिल स्तर —**व्यक्तिगत देह-अनुभव**: रजस्वला, घाम, कुआँपर अपमान। दोसर स्तर —**सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण**: मीडिया, पुलिस, न्यायालय, जाति-हिंसा। तेसर स्तर —**ऐतिहासिक साक्ष्य**: अलिसम्मा, मुथव्वा, महादेवम्मा — वास्तविक पीड़िताक नाम।

ई तीनू स्तर कवितामे एकाकार भऽ जाइत अछि — व्यक्तिगत, सामाजिक, आ ऐतिहासिक एकहि साँसमे। एहि **त्रि-स्तरीय एकत्व**मे शशिनिर्मलाक काव्य-शक्तिक मूल निहित अछि।

एकटा दलित स्त्री

एहि कविताक संरचना **उत्तरोत्तर विस्तारित आरोप-सूची** (क्रमशः बढ़ैत दोषारोपणक शृंखला) थिक। प्रत्येक पंक्ति एकटा नव अपमान, एकटा नव शोषण जोड़ैत अछि — जाधरि ई सूची एतेक भारी नहि भऽ जाइत जे पाठक दबा जाय। मुदा अन्तमे एकटा

अकस्मात् उलटपालट होइत अछि —*"आब हम अपन मुँह आ आँखि खोलि रहल छी"*— जे पूरा कविताक भारकेँ विद्रोहमे रूपान्तरित कऽ दैत अछि।

संरचनात्मक दृष्टिसँ ई **शास्त्रीय सोनेट**क परम्पराक विलोम थिक। सोनेट सामान्यतः समस्या-प्रस्तुति आ फेर समाधानक संरचनामे चलैत अछि। एतय समस्या-प्रस्तुति एतेक दीर्घ आ तीव्र अछि जे ओ स्वयं काव्यक मुख्य शरीर बनि जाइत अछि — आ समाधान मात्र दू पंक्तिमे, विस्फोटक रूपमे, आबैत अछि।

२. शीर्षकक राजनीति

तीनू कवितामे शीर्षक स्वयं एकटा **राजनीतिक वक्तव्य** थिक।

"हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ"— एहिमे **व्यंग्यात्मक स्व-आरोपण** (खुद अपनापर दोष लगाएब, मुदा व्यंग्यमे) अछि। कवि कहैत छथि: हँ, हम हारल — मुदा एहि हार लेल दोषी के? शीर्षक उत्तर नहि दैत — पाठककेँ पुछैत अछि।

"हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी"— "रजस्वला" शब्द हिन्दू-ब्राह्मणवादी शुद्धता-प्रदूषण-व्यवस्थामे **अत्यन्त कलंकित** मानल जाइत अछि। एकरा शीर्षक बनाएब एकटा **जानबूझिकऽ उकसाएब** (जे सुनैत अछि तकरा असहज करब) थिक। जे समाज एहि शब्दसँ घृणा करैत अछि, ओहि समाजक "झूठा तर्क" आ "चतुराई" पर ई कपड़ा ओढ़ाएब — एकटा **काव्यिक प्रतिशोध** थिक।

"एकटा दलित स्त्री"— ई सर्वाधिक सरल आ एहि कारण सर्वाधिक शक्तिशाली शीर्षक थिक। "एकटा" — अनिश्चित एकवचन — ई कहैत अछि: ई कोनो एकटा व्यक्तिक कहानी नहि, ई **सब दलित स्त्रीक कहानी** थिक। ई शीर्षक एकहि साथ **व्यक्तिगत आ सार्वभौमिक** अछि।

३. उच्च-जातीय स्त्री-नारीवादक आलोचना: हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ

ई कविता तेलुगु — वरन् समस्त भारतीय — दलित साहित्यमे एकटा **दुर्लभ काव्यिक साहस**क प्रदर्शन करैत अछि: ई उच्च-जातीय स्त्रीकेँ सोझे सम्बोधित करैत अछि आ हुनकर नारीवादी दावेकेँ प्रश्नांकित करैत अछि।

कविताक केन्द्रीय प्रसंग ई थिक: उच्च-जातीय स्त्री (सम्भवतः कवयित्रीक नियोक्त्री वा पड़ोसिन) हुनकर पतिसँ कहैत छथि *"रे मूर्ख!"*— अर्थात् ओ दलित स्त्रीक पक्षमे बाजैत प्रतीत होइत छथि। मुदा ओही नारीवादी उच्च-जातीय स्त्री अपन बेटीक आक्रामकताकेँ नहि रोकैत छथि, दलित स्त्रीकेँ "मातहत" मानैत छथि, आ अन्ततः हुनकर पक्षमे "वकालत" (पैरवी) केवल तखन करैत छथि जखन दलित स्त्री स्वयं "मुट्ठी बान्हि" लेत।

ई **नारीवादक दोहरा मानदण्ड** (उच्च-जातीय स्त्रीक नारीवाद जे दलित-स्त्रीक पक्षमे बाजैत अछि मुदा व्यवहारमे जाति-पदानुक्रम कायम राखैत अछि) क उद्घाटन थिक। ओड्रे लोर्ड *सिस्टर आउटसाइडर* (जाहिमे श्वेत नारीवादक जाति-अन्धताक आलोचना कएल गेल अछि) मे कहैत छथि जे स्त्री-एकजुटताक दावा तखन खोखल भऽ जाइत अछि जखन ओहिमे **वर्ग आ जातिक भेद**स्वीकार नहि कएल जाइत। शशिनिर्मलाक कविता एहि सिद्धांतकेँ ठोस भारतीय-जातीय यथार्थमे उतारैत अछि।

उमा चक्रवर्ती *जातिकरण पितृसत्ता* (जाहिमे ई देखाओल गेल अछि जे जाति आ लिंग एकहि व्यवस्थाक दू पाँखि थिक) मे तर्क करैत छथि जे भारतमे उच्च-जातीय स्त्री एकहि साथ **पितृसत्ताक पीड़ित** (लिंगक आधारपर) आ **जाति-व्यवस्थाक लाभार्थी** (जातिक आधारपर) छथि। शशिनिर्मलाक कविता एहि द्वन्द्वकेँ — बिना किसी सैद्धान्तिक आवरणक, नग्न यथार्थमे — प्रस्तुत करैत अछि।

"जाधरि केवल पुरुष वा केवल स्त्री अछि, तब धरि कोनो समस्या नै"— ई पंक्ति सम्पूर्ण कविताक दार्शनिक सार थिक। जखन पहचान केवल **एकल-आयामी** (मात्र लिंग वा मात्र जाति) रहैत अछि, तखन समझौता सम्भव। जखन दलित-स्त्री अपन **बहु-आयामी पहचान** (जाति+लिंग+वर्ग) दृढ़तासँ ग्रहण करैत अछि — तखन वर्जना-रेखाक संघर्ष शुरू होइत अछि।

४. देह, शुद्धता, आ प्रतिरोध: हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी

एहि कविताक केन्द्रीय रूपक — रजस्वला कपड़ा — बहुस्तरीय काव्यिक कार्य करैत अछि।

शुद्धता-मिथकक खण्डन

हिन्दू वर्णाश्रम व्यवस्थामे रजस्वला स्त्री **अशुद्ध** मानल जाइत अछि। एहि कपड़ाकेँ "ओढ़नाइ" — अर्थात् स्वयंकेँ एहिसँ ढाँकब — एकटा **उलटपालट** थिक: जे समाज एहि कपड़ासँ स्त्रीकेँ अशुद्ध मानैत अछि, ओहि समाजक झूठ पर एहि "अशुद्ध" कपड़ाकेँ ओढ़ाएब — अर्थात् अशुद्धताकेँ **शस्त्र** बनाएब।

जूलिया क्रिस्तेवाक **घृणित-सिद्धांत** (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे समाज ओहि चीजसँ घृणा करैत अछि जे शरीरक सीमाकेँ तोड़ैत अछि — रक्त, स्राव, मल — आ एहि घृणाक माध्यमसँ सामाजिक पदानुक्रम कायम राखैत अछि) एतय पुनः प्रासंगिक अछि। शशिनिर्मला एहि **घृणित तत्त्वकेँ** राजनीतिक शस्त्रमे रूपान्तरित करैत छथि।

ऐतिहासिक साक्ष्य

कविताक अन्तमे अलिसम्मा, मुथव्वा, आ महादेवम्माक उल्लेख — जिनका उच्च-जातीय पुरुष द्वारा नग्न कऽ घुमाओल गेल — एकटा **ऐतिहासिक लंगर** (इतिहासक ठोस घटनाक माध्यमसँ कविताकेँ वास्तविकतासँ जोड़ब) थिक। एहिसँ कविता मात्र व्यक्तिगत काव्योद्गार नहि रहैत — ओ एकटा **सामूहिक स्मृतिक पात्र** बनि जाइत अछि।

वाल्टर बेंजामिनक **खतरनाक स्मृति**क अवधारणा एतय पुनः स्मरणीय अछि — मुदा एतय ई स्मृति और भी खतरनाक अछि, कारण ओ अमूर्त ऐतिहासिक तथ्य नहि, **वास्तविक स्त्रीक नाम** थिक।

संस्थागत विफलता

"न तऽ पुलिसक लाठी, / न न्यायालयक दृष्टि — / हमर छिलल चाम सँ किछु लेना-देना अछि"— ई पंक्तियाँ **राज्य-तन्त्रक जाति-पक्षधरता**केँ स्पष्टतः उजागर करैत अछि। पुलिस आ न्यायालय — जे निष्पक्ष न्यायक प्रतीक माने जाइत छथि — एतय दलित-स्त्रीक लेल उदासीन वा शत्रुतापूर्ण संस्था छथि।

मिशेल फूकोक **सत्ता-ज्ञान सम्बन्ध** (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे न्याय-व्यवस्था, चिकित्सा-व्यवस्था, आदि संस्था सब वास्तवमे तटस्थ नहि बल्कि सत्ता-सम्बन्धक उपकरण थिक) एतय साकार होइत अछि। शशिनिर्मला एहि दार्शनिक अन्तर्दृष्टिकेँ **कविताक भाषामे**— बिना किसी सैद्धान्तिक पारिभाषिक शब्दावलीक — प्रस्तुत करैत छथि।

५. त्रिमुखी उत्पीड़नः एकटा दलित स्त्री

एकटा दलित स्त्री तेलुगु दलित काव्यमे सर्वाधिक **राजनीतिक रूपसँ जटिल** कविताक एकटा उदाहरण थिक, कारण ई एकहि साथ तीन उत्पीड़कसँ लड़ैत अछि।

कविताक पहिल भाग (आरम्भसँ *"हमर देहक बल बूँद-बूँद टपाबैत अछि"*धरि) —**उच्च-जातीय पुरुष**क उत्पीड़नक वर्णन।

कविताक दोसर भाग (*"की कारण? / हमर अपन दलित लोक..."*सँ) —**दलित पुरुष**क उत्पीड़नक उल्लेख — *"हमरा अपन कपड़ा सुखाबय बला डोरी बनाबैत", "हुनकर खोपड़ीक खम्भा-किल्ली बनौने राखय लेल"।*

कविताक तेसर भाग (*"की कारण? / हमर अपन स्त्री-जाति..."*सँ) —**उच्च-जातीय स्त्री**क उत्पीड़न — *"हमरा हुनकर उच्च जातिक साड़ीक किनारी बनाबैत छथि। "*

ई**त्रिमुखी उत्पीड़नक स्वीकृति** दलित-स्त्री काव्यमे असाधारण साहसिक कार्य थिक। दलित पुरुषक उत्पीड़नकेँ स्वीकार करब —ई दलित एकजुटताक राजनीतिमे एकटा वर्जित विषय रहल अछि। शशिनिर्मला एहि वर्जनाकेँ तोड़ैत छथि।

बाबासाहेब आम्बेडकर कहने छलाह जे दलित-स्त्रीक दशा दलितमे सबसँ दयनीय थिक — ओ जातिक आधारपर समाजसँ, लिंगक आधारपर दलित समुदायसँ, आ वर्गक आधारपर उच्च-जातीय स्त्रीसँ — तीनू दिससँ बहिष्कृत छथि। शशिनिर्मलाक ई कविता आम्बेडकरक एहि अन्तर्दृष्टिकेँ **काव्यात्मक प्रमाण** दैत अछि।

शर्मिला रेगेक **दलित-नारीवादी दृष्टिबिन्दु** (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे दलित-स्त्रीक दृष्टिकोण एकटा ज्ञान-मीमांसीय विशेषाधिकार थिक, कारण ओ उत्पीड़नक सर्वाधिक गहन स्तरपर जीबैत अछि) एतय काव्यमे साकार होइत अछि — *"एकटा दलित स्त्री"*ओहि स्थानसँ बाजैत अछि जतय तीनू उत्पीड़न-व्यवस्था एक साथ आबैत अछि।

६. रूपकक विश्लेषणः शरीर-राजनीति

तीनू कवितामे **शारीरिक रूपक** (देहसँ जुड़ल प्रतीक) असाधारण रूपसँ तीव्र आ विविध अछि।

हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँमे — "हमरा काँट-कुस जकाँ नोचि-नोचि कऽ मुर्गी बना देलकै"— ई **पशुकरण** (मनुष्यकेँ पशु बनाएब) क रूपक थिक। "मुर्गी" — ओहि पशुक रूप जे बिना प्रतिरोधक नोचल जाइत अछि।

हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छीमे — "हमर मुँह, / जे लगातार घाम बहबैत अछि, / जानैत अछि अदृश्य रहि कऽ जीबाक मतलब"— मुँह एतय **अभिव्यक्ति आ दमन**दूनूक स्थल थिक। घाम बहाएब = काज करब = दृश्यमान होएब। मुदा समाज दलित-स्त्रीकेँ **अदृश्य** रखैत अछि।

एकटा दलित स्त्रीमे — "हमर जोड़ल हाथमे मूतैत अछि"— ई सर्वाधिक कच्चा, सर्वाधिक अपमानित बिम्ब थिक। प्रार्थना-मुद्रामे जोड़ल हाथ — जे श्रद्धाक प्रतीक थिक — तकरामे मूतब: ई**पवित्रताक सर्वोच्च अपमान** थिक। शशिनिर्मला एहि बिम्बमे कोनो काव्यिक संयम नहि करैत छथि — कारण यथार्थ स्वयं संयम-विहीन थिक।

फ्रान्ट्ज फानोंक **उपनिवेशित देह** (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे उपनिवेशवाद सर्वप्रथम शरीरपर आक्रमण करैत अछि — शरीरकेँ अपमानित कऽ, नियन्त्रित कऽ, ओ आत्माकेँ तोड़ैत अछि) क अवधारणा एतय तीनू कवितामे एक साथ लागू होइत अछि।

७. भाषा-शैली: उग्रताक काव्यशास्त्र

शशिनिर्मलाक भाषा पूर्ववर्ती सभ कविसँ**अधिक उग्र, अधिक प्रत्यक्ष, आ अधिक टकराहटी** अछि। एहि उग्रताक साहित्यिक-राजनीतिक महत्त्व अछि।

सुभद्राक भाषा**ध्यानस्थ गवाही** थिक — ओ देखैत आ देखाबैत छथि। स्वरूपरानीक भाषा **आवेगपूर्ण उद्घोष** थिक — ओ टूटिकऽ बाजैत छथि। शशिनिर्मलाक भाषा**सोझ आरोप** थिक — ओ नामकऽ, अँगुरी उठाकऽ, आँखिमे आँखि डालिकऽ बाजैत छथि।

"हमर नाकमे नकेल डालि कऽ खेलबैत अछि"— नकेल पशुक लेल होइत अछि, मनुष्यक लेल नहि। एहि रूपकमे**पशुकरणक राजनीति** (दलित-स्त्रीकेँ मनुष्यसँ पशुमे रूपान्तरित करबाक सामाजिक प्रक्रिया) सोझे-सोझ कहल गेल अछि।

"हमरा दुहि लेल भैंस बनाबैत अछि"— श्रम-शोषणकेँ पशु-दोहनक रूपकमे देखाएब — एहिमे मार्क्सक**अतिरिक्त मूल्यक अपहरण** (मजदूरक श्रमसँ उत्पन्न मूल्यकेँ मालिकद्वारा हड़पब) आ जातीय शोषण दूनू एकहि बिम्बमे समाहित अछि।

८. पूर्ववर्ती कविसँ तुलना: एकटा समग्र काव्य-वंश-वृक्ष

एहि समीक्षा-शृंखलामे अध्ययन कएल पाँचू कवि — भीमन्ना, सुभद्रा, स्वरूपरानी, आ शशिनिर्मला — मिलिकऽ तेलुगु दलित काव्यक एकटा **सम्पूर्ण काव्य-वंश-वृक्ष**बनाबैत छथि:

भीमन्ना— इतिहास आ पुराणक पुनर्पाठ; व्यापक-दृष्टि; दलित पहचानक पुनर्स्थापना।

सुभद्रा— श्रम, वस्तु, आ मातृत्व; सूक्ष्म-दृष्टि; दैनिक जीवनक काव्यात्मक अभिलेखीकरण।

स्वरूपरानी— व्यक्तिगत चेतनाक रूपान्तरण; मध्य-दृष्टि (मध्यवर्ती दृष्टि जे व्यक्तिगत आ सामाजिकक बीच अछि); आशा-निराशाक द्वन्द्व।

शशिनिर्मला— त्रिमुखी संघर्ष; टकराहटी-दृष्टि; नारीवादक भीतरक अन्तर्विरोधकेँ उजागर करब।

ई चारू कवि मिलिकऽ एकटा **द्वन्द्वात्मक यात्रा**पूरा करैत छथि — इतिहाससँ आरम्भ कऽ (भीमन्ना), दैनिक जीवनमे उतरि (सुभद्रा), व्यक्तिगत चेतनाकेँ जगा (स्वरूपरानी), आ अन्ततः सब दिससँ टकरा (शशिनिर्मला) ।

निष्कर्ष

दरिशे शशिनिर्मलाक तीन कविता दलित-स्त्री काव्यकेँ एकटा**नव राजनीतिक भूमि**पर लऽ जाइत अछि। ओ उहो कहैत छथि जे कहब कठिन थिक — दलित पुरुषक उत्पीड़न, उच्च-जातीय नारीवादक पाखण्ड, राज्य-तन्त्रक जाति-पक्षधरता — बिना किसी शब्द-संयमक, बिना किसी कूटनीतिक।

हुनकर काव्यमे **सौन्दर्य** क्रोधमे निहित अछि, **शिल्प**उग्रतामे निहित अछि, **दर्शन**ठोस शारीरिक यथार्थमे निहित अछि। ई दलित-स्त्री काव्यशास्त्रक ओहि परम्पराक चरमोत्कर्ष थिक जे शरणकुमार लिम्बाले, ओमप्रकाश वाल्मीकि, आ आम्बेडकरक विचार-परम्परासँ शक्ति लैत अछि।

अन्तिम पंक्ति — *"देखी की हुनकर करामात देखबैत छथि"*— एकटा **चुनौती** थिक: दलित-स्त्री आब दर्शक नहि, **प्रश्नकर्ता** अछि। ई प्रश्न समाजकेँ, नारीवादकेँ, दलित आन्दोलनकेँ — सभकेँ — पुछल गेल अछि। आ एहि प्रश्नक उत्तर देनाइ — साहित्यक नहि, इतिहासक कार्य थिक।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षा: एम. गौरीक कविता

मेहदी लागल हाथ

प्रारम्भिक टिप्पणी

एम. गौरी तेलुगु दलित-स्त्री काव्य-परम्पराक एकटा सर्वथा विशिष्ट स्वर छथि। जतय शशिनिर्मला **त्रिमुखी संघर्ष**क काव्य लिखैत छथि, सुभद्रा**श्रम-वस्तुक काव्य**रचैत छथि, आ भीमन्ना**पौराणिक पुनर्पाठ** करैत छथि — गौरी एहि सबसँ भिन्न एकटा रणनीति अपनाबैत छथि: ओ**पौराणिक आख्यानकेँ उलटिकऽ कृष्णसँ सोझे बाजैत छथि**— आ ई संवाद एकटा **दलित-चर्मकार स्त्रीक**काव्यिक आत्म-घोषणा बनि जाइत अछि।

एहि एकटा कवितामे जे काव्य-जटिलता, पौराणिक-विरोधी पाठ, शिल्प-कौशल, आ राजनीतिक साहस एकत्र अछि — ओ एकरा तेलुगु दलित काव्यक **सर्वोच्च रचनासभमे**स्थापित करैत अछि।

१. काव्य-रूप आ संरचना

प्रत्यक्ष सम्बोधन-संरचना

ई कविता**द्वितीय पुरुष सम्बोधन** (सोझे "अहाँ" कहिकऽ बाजब) मे रचल गेल अछि — आ ओ "अहाँ" स्वयं**श्रीकृष्ण** छथि। ई एकटा असाधारण साहसिक काव्य-निर्णय थिक। भारतीय काव्य-परम्परामे कृष्णकेँ सम्बोधित करब एकटा सुदीर्घ परम्परा थिक — मीराबाई, सूरदास, जयदेव — मुदा ओहि सभमे सम्बोधक**भक्त** छथि, **कृष्ण-श्रेष्ठ**आ**सम्बोधक-तुच्छ**क सम्बन्ध थिक।

गौरी एहि**पदानुक्रमकेँ उलटि दैत छथि**। ओ कृष्णकेँ सम्बोधित करैत छथि — मुदा **भक्तक रूपमे नहि, चुनौती देनिहारक रूपमे**। *"की देखि सकैत छी अहाँ ओकरा बिना मूर्छित भेने? "*, *"की हमर रगत सँ सनल हाथकेँ चूमि सकैत छी? "*— ई प्रश्न भक्तिक नहि, **परीक्षाक**प्रश्न छथि।

तीन-स्तरीय काव्य-चाप

कविता तीन स्पष्ट खण्डमे विभक्त अछि:

पहिल खण्ड— *"हमर गली बनल अछि मास-रगत सँ"*सँ *"एकटा सुदृढ़ साँढ़केँ सोझे भेदि देबाक खेल"*धरि। एतय**कर्मक जगत**— चर्मकार-स्त्रीक दैनिक श्रम — स्थापित होइत अछि।

दोसर खण्ड— *"अहाँ, ओ वीर कृष्ण! "*सँ *"चाम-खालक परदा पाछू? "*धरि। एतय**पौराणिक-विरोधी संवाद**— कृष्णक तीनू रूपकेँ (मायाविनाशक, ग्वाल-बालिन-प्रेमी, बंशीवादक) प्रश्नांकित करब — चलैत अछि।

तेसर खण्ड— *"हमर गली आब पालतू पिल्ला सभक लेल उपयुक्त नै रहल"*सँ अन्त धरि। एतय **दलित-स्त्रीक आत्म-घोषणा**— अपन श्रम, अपन देह, अपन गरिमाक पुनर्दावा — होइत अछि।

ई तीन-चाप एकटा**थीसिस-एन्टीथीसिस-सिन्थेसिस** (स्थापना-खण्डन-समन्वय) क द्वन्द्वात्मक संरचना थिक — मुदा एतय समन्वय कोनो मध्यमार्ग नहि, **विद्रोही आत्म-प्रतिष्ठा** थिक।

२. पौराणिक-विरोधी पाठ: कृष्णक तीन रूपक खण्डन

गौरी एकहि कवितामे कृष्णक**तीन पौराणिक रूपकेँ**क्रमशः सम्बोधित करैत छथि — आ तीनूक विरुद्ध **दलित-स्त्रीक यथार्थ**खड़ा करैत छथि।

पहिल रूप: मायाविनाशक कृष्ण

"अहाँ, ओ वीर कृष्ण! / जे दैत्य-मायकेँ दूध पिया कऽ मारि देलहुँ"— ई पूतना-वधक सन्दर्भ थिक। पूराणमे कृष्ण विष-स्तनपान करनिहारी पूतनाकेँ मारैत छथि — ई**दैवी वीरताक**प्रतीक थिक।

गौरी एहि "वीरता"केँ चुनौती दैत छथि: *"हम अहाँकेँ मासक दू टा लच्छी आ रगतक एकटा पात्र देखाएब। / की देखि सकैत छी अहाँ ओकरा बिना मूर्छित भेने? "*— चर्मकार-स्त्री प्रतिदिन जे काज करैत अछि — मास-रगतसँ काम — ओ कृष्णक "वीरता"सँ अधिक वास्तविक आ अधिक साहसी थिक। **पौराणिक वीरता आ दलित दैनिक-श्रमक**ई तुलना अत्यन्त कड़वी आ अत्यन्त सत्य अछि।

दोसर रूपः ग्वाल-बालिन-प्रेमी कृष्ण

"अहाँ, ओ ग्वाल-बालिन सभक वस्त्र छल सँ हड़पि लेनिहार"— ई**वस्त्रहरण-प्रसंग**क सन्दर्भ थिक जे भक्ति-परम्परामे**दिव्य-क्रीड़ा** (ईश्वरक लीला) मानल जाइत अछि।

गौरी एहि "दिव्य-क्रीड़ा"केँ**यौन-शोषणक**दृष्टिसँ पढ़ैत छथि — आ फेर चुनौती दैत छथि: *"की हमर हृदय चोरि सकैत छी, / जे हम सुरक्षित रखने छी — / चाम-खालक परदा पाछू? "*हृदय"**चाम-खालक परदा**"पाछू सुरक्षित अछि — ई अत्यन्त जटिलरूपक थिक। चाम-खाल = चर्मकार-स्त्रीक व्यवसाय-पहचान = जे समाज "अशुद्ध" मानैत अछि। ओही "अशुद्ध" पहचान**रक्षा-कवच**बनि जाइत अछि — कृष्णक प्रेम-षड्यन्त्रसँ बचाबैत।

तेसर रूपः बंशीवादक कृष्ण

"अहाँ, ओ जे बंसुरी सँ काम-संदेश पठबैत छलहुँ, / की पढ़ि सकैत छी प्रेम-संदेश जे हम अपन कोमल अङ्गुरि सँ देहरी पर लिखने छी? "— कृष्णक बंसुरी भक्ति-काव्यमे**दिव्य-प्रेमक**प्रतीक थिक। मुदा एतय दलित-स्त्रीक "देहरी पर लिखल" प्रेम-संदेश अधिक ठोस, अधिक वास्तविक, अधिक मानवीय थिक।

"देहरी" — चौखट — एकटा**सीमा-प्रतीक** थिक। दलित-स्त्री देहरी पर लिखैत छथि — न भीतर (उच्च-जातीय घरक), न बाहर। देहरीपर लिखल प्रेम**सीमान्त प्रेम** (हाशियाक अनुभव) थिक।

भीमन्नाक **पौराणिक-विरोधी पाठ** (जाहिमे ओ पुराणक मूल आख्यानकेँ उलटिकऽ दलित-दृष्टिसँ पढ़ैत छथि) परम्पराकेँ गौरी एतय **काव्यात्मक संवादक रूपमे** अधिक नाटकीय ढंगसँ प्रस्तुत करैत छथि।

३. शीर्षकक बहुस्तरीय अर्थ

"मेहदी लागल हाथ"— ई शीर्षक अत्यन्त **द्व्यर्थी** (दोहरा अर्थवाला) थिक।

पहिल अर्थ— भारतीय सांस्कृतिक परम्परामे मेहदी **विवाह-उत्सवक** प्रतीक थिक — शृङ्गार, सौभाग्य, प्रेम। "मेहदी लागल हाथ" माने उत्सव-मग्न हाथ।

दोसर अर्थ— कविताक भीतर, "मेहदी" वास्तवमे **रगत** थिक। *"की हमर रगत सँ सनल हाथकेँ चूमि सकैत छी, / बिनामेहदी लागल? "*— एतय रगत = मेहदी। चर्मकार-स्त्रीक हाथपर जे रगत अछि, ओ **श्रमक मेहदी** थिक — विवाहक नहि।

ई **विलोम-प्रतीक** (एकटा शुभ प्रतीककेँ उलटिकऽ श्रम-यथार्थक प्रतीक बनाएब) दलित सौन्दर्यशास्त्रक एकटा उत्कृष्ट उदाहरण थिक। उच्च-जातीय संस्कृतिमे मेहदी = सौन्दर्य आ उत्सव। दलित-चर्मकार-स्त्रीक जीवनमे मेहदी = रगत आ श्रम। गौरी एहि दूनू अर्थकेँ एकहि शब्दमे एकत्र करैत छथि।

४. चाम-खालक रूपकः दलित-पहचानक पुनर्दावा

कविताक सर्वाधिक शक्तिशाली भाग थिक अन्तिम खण्ड — जतय **चाम-खाल** (जे समाज "अशुद्ध" मानैत अछि) कविताक केन्द्रीय पुनर्दावे-रूपक बनि जाइत अछि:

"जखन हमर चाम अमलतास सँ धोयल जाइत अछि, / अहाँक आङ्गुरि सभक दाग मेटाबैत — / ई बनि जाइत अछि ढोल, / शुद्ध सङ्गीत गुञ्जाबैत। "

एहि पंक्तिमे**तीन स्तरीय रूपान्तरण** घटित होइत अछि:

पहिल — कृष्णक **आङ्गुरिक दाग** (जे ग्वाल-बालिनक वस्त्र चोरएलनि, जे बंसुरी बजौलनि) चामपर अंकित अछि — अर्थात् **उच्च-जातीय सांस्कृतिक दावेक** छाप दलित-देहपर अछि।

दोसर — अमलतास (जे*लाण्डा*कवितामे सुभद्रा सेहो प्रयोग कएल छथि) सँ धोएलापर ई दाग मेटाइत अछि — अर्थात् **देशज ज्ञान-परम्परा** उच्च-जातीय सांस्कृतिक दावेकेँ मेटाबैत अछि।

तेसर — धोएल चाम **ढोल** बनैत अछि जे **शुद्ध सङ्गीत** गुञ्जाबैत अछि। ई अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थिक: जे समाज चर्मकारकचामकेँ "अशुद्ध" मानैत अछि, ओही चामसँ बनल ढोल"**शुद्ध सङ्गीत**"उत्पन्न करैत अछि।

ईशुद्धता-अशुद्धता मिथकक पूर्ण खण्डन थिक — तर्कसँ नहि, रूपकसँ। स्वरूपरानीक*लाण्डा*मे सेहो ढोलक प्रसंग आयल छल — मुदा ओतय ढोल पतिक श्रमक प्रतीक छल। एतय ढोल **दलित-स्त्री-पहचानक** प्रतीक थिक — स्वयं ओकर देह जे "अशुद्ध" मानल गेल, ओ **सङ्गीत-स्रोत** बनि जाइत अछि।

जूलिया क्रिस्तेवाक **घृणित-सिद्धांत** (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे समाज शरीरक स्रावसभकेँ, जानवरक मांससभकेँ "घृणित" आ "अशुद्ध" मानि सामाजिक पदानुक्रम कायम राखैत अछि) एतय **काव्यात्मक प्रत्युत्तर**पाबैत अछि: गौरी "घृणित" केँ "सुन्दर" मे, "अशुद्ध" केँ "शुद्ध सङ्गीत" मे रूपान्तरित करैत छथि।

५. खेल-रूपक आ बहादुरी

कविताक आरम्भ एकटा **काव्यिक आमन्त्रण**सँ होइत अछि — *"की हमरा संग खेलय लेल नै आयब? "*— जे बच्चाक निर्दोष खेल-निमन्त्रण जकाँ प्रतीत होइत अछि। मुदा तुरन्त स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे ई खेल **वास्तविक साँढ़केँ भेदबाक**खेल थिक।

"ओहि जुलूसमे बैल-बलदक डरपोक खेल नै, / हम अहाँकेँ एकटा बहादुरीक खेल देखाएब"— एतय एकटा **श्रेणी-तुलना** अछि। जे लोग धार्मिक जुलूसमे बधिया बैल-बलदकेँ सजाकऽ घुमाबैत छथि — ओ "डरपोक खेल" थिक। दलित-चर्मकार स्त्रीक काज — सुदृढ़ साँढ़केँ भेदब —**वास्तविक बहादुरी**थिक।

भारतीय लोक-परम्परामे **जल्लीकट्टु** (साँढ़सँ लड़ाइ) एकटा वीरता-प्रदर्शनक खेल थिक। गौरी एहि लोक-परम्पराकेँ**दलित-स्त्री-श्रमक रूपक** बना कऽ उच्च-जातीय सांस्कृतिक वीरता-परिभाषाकेँ चुनौती दैत छथि: वास्तविक वीरता धर्म-जुलूसमे नहि, **दैनिक श्रममे** अछि।

६. "बिना झुकल रीढ़": दलित गरिमाक काव्यिक घोषणा

"आउ, / जँ आबि सकैत छी, / हड्डी चुनब सिखाएब — / हम अहाँकेँ बिना झुकल रीढ़ देखाएब। "

ई पंक्ति सम्पूर्ण कविताक **दार्शनिक-राजनीतिक सार** थिक।

"हड्डी चुनब" — चर्मकार-स्त्रीक व्यावसायिक कार्य — एतय**ज्ञान-हस्तान्तरणक**रूप धारण करैत अछि। ओ कृष्णकेँ सिखाएब चाहैत छथि। **शिक्षक**दलित-स्त्री, **छात्र**कृष्ण — ई पदानुक्रमक पूर्ण विलोम थिक।

"बिना झुकल रीढ़" — एहिमे**दोहरा अर्थ** अछि। शाब्दिक अर्थ: पशुक मेरुदण्ड जे सीधा अछि, जे झुकल नहि। रूपकार्थ: दलित-स्त्रीक आत्म-सम्मान जे झुकल नहि।

बाबासाहेब आम्बेडकर कहने छलाह: *"जीवन दीर्घ होएबासँ महत्त्वपूर्ण अछि जे ओ महान होए। "*गौरीक दलित-स्त्री दीर्घजीवी नहि — **अजेय** छथि।

७. "पाप नै" — धार्मिक नैतिकताक खण्डन

"ई पाप नै छैक माटि भेल पानिक, / ई पाप नै छैक 'अपराधी' चामक। "

"अपराधी चाम" — एतय **उद्धरण-चिह्न**महत्त्वपूर्ण अछि। समाज जे चामकेँ "अपराधी" कहैत अछि, ओ समाजक **मिथ्या नैतिकता** थिक। गौरी एहि नैतिकताकेँ**सोझे अस्वीकार** करैत छथि।

ब्राह्मणवादी धर्म-शास्त्रमे चर्मकार-कार्य **पाप** मानल जाइत अछि —**पिछला जन्मक कर्मफल**। गौरी एहि**कर्मफल-सिद्धांत**केँ सोझे नकारैत छथि: *"ई पाप नै छैक। "*ई दू शब्द — "पाप नै" — सम्पूर्ण ब्राह्मणवादी नैतिक-आर्थिक व्यवस्थाक विरुद्ध काव्यिक घोषणापत्र थिक।

फ्रेडरिक नीत्शेक **नैतिकताक पुनर्मूल्यांकन** (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे प्रचलित नैतिकता सत्य नहि, बल्कि सत्ताधारीक हितमे निर्मित नियमसभ थिक) क प्रतिध्वनि एतय अछि — मुदा गौरी नीत्शेक दर्शन पढ़िकऽ नहि, **जीवनक यथार्थसँ** एहि निष्कर्षपर पहुँचैत छथि।

८. जल-रूपकः शुद्धताक नव परिभाषा

"जखन पानि भाप बनि काल बादरिमे बदलैत अछि बिजलीक बूँद बरसाबय लेल, / तखन गलीक पवित्रता पारदर्शी भऽ जाइत छैक। "

एहि पंक्तिमे **भौतिक विज्ञान आ काव्यिक रूपक** एकाकार अछि। जल जखन भाप बनैत अछि — ओ **अदृश्य** भऽ जाइत अछि। फेर बादरमे परिणत भऽ बिजली बरसाबैत अछि —**शक्ति रूप** धारण करैत अछि।

दलित-स्त्रीक गली जे समाज "अपवित्र" मानैत अछि — ओहि गलीक पवित्रता तखन"**पारदर्शी**"अर्थात् स्पष्ट भऽ जाइत अछि जखन ई रूपान्तरण घटित होइत अछि। **पारदर्शिता** = **सत्यक प्रकट होएब**।

एहि रूपकमे **हेगेलीय द्वन्द्व** (जाहिमे विरोधी तत्त्वसभक संघर्षसँ नव सत्य उदित होइत अछि) क काव्यात्मक प्रतिनिधित्व अछि — मुदा एतय ई अमूर्त दर्शन नहि, **माटि आ पानिक ठोस यथार्थ** थिक।

९. भीमन्नासँ तुलनाः पौराणिक-विरोधी पाठक दू रूप

भीमन्नाक *हमर पैतृक अधिकार*आ गौरीक *मेहदी लागल हाथ*— दूनू **पौराणिक पुनर्पाठ** करैत अछि। मुदा रणनीतिमे भेद अछि:

भीमन्ना पुराणक **ऐतिहासिक तर्क**देखाबैत छथि — व्यास, वशिष्ठ, मत्स्यगन्धी वास्तवमे दलित मूलक छलाह, एहि ऐतिहासिक सत्यकेँ उजागर करब। हुनकर रणनीति **विद्वत्तापूर्ण पुनर्पाठ** थिक।

गौरी पुराणक **नाटकीय संवाद** करैत छथि — कृष्णसँ सोझे बाजैत छथि, हुनका चुनौती दैत छथि, हुनका अपन गलीमे आमन्त्रित करैत छथि। हुनकर रणनीति **काव्यात्मक टकराहट** थिक।

दूनू मिलिकऽ दलित काव्यमे पौराणिक-विरोधी पाठक **सम्पूर्ण स्पेक्ट्रम** (पूरा विस्तार) प्रस्तुत करैत अछि — तर्कसँ आक्रमण आ संवादसँ आक्रमण।

१०. सुभद्राक लाण्डा सँ साम्यः ढोलक प्रतीक

जेना ऊपर उल्लेख कएल, सुभद्राक *लाण्डा* आ गौरीक *मेहदी लागल हाथ*— दूनूमे **ढोलक प्रतीक** अछि। मुदा भिन्न सन्दर्भमे:

*लाण्डा*मे — *"चरचराइत जुत्ता आ ढोल बनबा लेल— / ओ ढोल पर मधुर ताल दैत छथि"*— ढोल पतिक कलाक प्रतीक थिक। स्त्रीक श्रम पतिक कलामे रूपान्तरित होइत अछि — एहिमे **श्रम-अलगावक** कड़वाहट थिक।

*मेहदी लागल हाथ*मे — ढोल दलित-स्त्रीक **स्वयंक पहचानक** प्रतीक थिक। ओकर देह, ओकर श्रम, ओकर चाम — ई सब **शुद्ध सङ्गीतक स्रोत** थिक। एतय श्रम-अलगाव नहि —**श्रम-उत्सव** थिक।

ई दूनू कवितामे ढोलक भिन्न-भिन्न उपयोग दलित-स्त्री काव्यमे **एकहि प्रतीकक बहुस्वरता** दर्शाबैत अछि।

निष्कर्ष

एम. गौरीक *मेहदी लागल हाथ* तेलुगु दलित काव्यक एकटा**शिखर-रचना** थिक। एहि एकटा कवितामे:

पौराणिक आ **आधुनिक** एकाकार अछि — कृष्ण आ चर्मकार-स्त्री एकहि स्थानपर ठाढ़ छथि।

शिल्प आ **राजनीति** एकाकार अछि — रूपकक सौन्दर्य आ सामाजिक आरोप एकहि साँसमे अछि।

व्यक्तिगत आ **सामूहिक** एकाकार अछि — एकटा स्त्रीक स्वर समस्त दलित-चर्मकार समुदायक स्वर बनि जाइत अछि।

अन्तमे — *"ई बनि जाइत अछि ढोल, / शुद्ध सङ्गीत गुञ्जाबैत"*— गौरी जे कहैत छथि से थिक: दलित-स्त्रीक देह, श्रम, आ पहचान — जकरा समाज"**अशुद्ध**"कहैत अछि — ओ वास्तवमे **सर्वाधिक शुद्ध सङ्गीतक स्रोत** थिक। ई मात्र काव्यिक रूपक नहि — ई एकटा **सम्पूर्ण सभ्यता-दृष्टि** थिक।

दलित-स्त्री काव्य समीक्षाः मद्दुरी विजयश्रीक कविता

अलिसम्माक स्राप

प्रारम्भिक टिप्पणी

मद्दुरी विजयश्रीक अलिसम्माक स्राप तेलुगु दलित-स्त्री काव्य-परम्पराक एकटा असाधारण काव्यिक उपलब्धि थिक। एहि लघु कवितामे — मात्र तीस-एक पंक्तिमे — एतेक काव्य-जटिलता, एतेक ऐतिहासिक-पौराणिक घनत्व, आ एतेक राजनीतिक साहस एकत्र अछि जे ई अपने वर्गमे एकटा विशिष्ट स्थान ग्रहण करैत अछि।

एहि कवितामे तीन कालखण्ड एक साथ उपस्थित अछि: रामायण-काल (शूर्पणखाक नासिका-छेदन), समकालीन इतिहास (अलिसम्माक वास्तविक घटना), आ वर्तमान (दलित-स्त्रीक समकालीन संकट) । ई त्रि-कालिक एकत्व कवितामे एकटा असाधारण काव्यिक समय-सम्पीड़न सृजित करैत अछि।

१. काव्य-रूप आ संरचना

आरम्भिक पूर्वाभास

कविताक पहिल तीन पंक्ति — "अहाँकेँ ई अद्भुत लागि सकैत अछि, / अहाँकेँ ई हास्यास्पद लागि सकैत अछि, / अहाँकेँ ई बहुतघिनौना लागि सकैत अछि" — एकटा अनुप्रास-आरम्भ श्रृंखला थिक जे तीन भिन्न पाठक-प्रतिक्रियाक पूर्वानुमान करैत अछि।

ई संरचना अत्यन्त परिकलित अछि। कवि जानैत छथि जे हुनकर कविता तीन प्रकारक पाठक पढ़त: जे अद्भुत मानत (उदारवादी), जे हँसत (व्यंग्यकारी), जे घृणा करत (प्रतिक्रियावादी) । तीनूकेँ एकहि साथ सम्बोधित कऽ कवि ई स्पष्ट करैत छथि — "मुदा हम आब एकटा नव प्रश्न छी" — कोनो प्रतिक्रियासँ निरपेक्ष, कविताक अस्तित्व अटल अछि।

आत्म-परिचयक संरचना

कविताक मध्य-भाग एकटा क्रमिक आत्म-परिचय थिक — नकारात्मकसँ सकारात्मक दिस:

पहिल — जे नहि अछि: आरक्षित सीटपर नहि बैसि सकैत, सम्मानजनक उपाधि नहि अछि।

दोसर — जे अछि: दुख, लुढ़कनाइ, वासनाक शिकार।

तेसर — नामकरण: "हम अलिसम्मा छी" — एहि पंक्तिपर कविता एकटा नव स्तरपर प्रवेश करैत अछि।

ई संरचना नकारात्मक परिभाषासँ स्व-घोषणा दिस कविताक यात्रा थिक — जे अन्ततः स्राप-उद्घोष मे परिणत होइत अछि।

अन्तिम विस्फोट

अन्तिम खण्ड — "रे पशु सब! / हम अहाँ सभकेँ स्राप दैत छी" — एकटा अकस्मात् स्वर-परिवर्तन थिक। पूरा कविता जे एक सधल, विश्लेषणात्मक स्वरमे चलैत आएल छल — ओ एतय एकाएक उग्र हुङ्कारमे परिणत भऽ जाइत अछि। ई काव्यिक भूकम्प थिक।

२. अलिसम्माः ऐतिहासिक व्यक्तित्व आ काव्यिक प्रतीक

शशिनिर्मलाक हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी मे अलिसम्माक उल्लेख भेल छल — मुदा ओतय ओ नामोल्लेखमात्र छलीह। विजयश्री एतय अलिसम्माकेँ काव्यक वक्ता बनाबैत छथि — ओ स्वयं बाजैत छथि।

अलिसम्मा एकटा वास्तविक ऐतिहासिक व्यक्ति छथि — आन्ध्र प्रदेशमे एकटा दलित स्त्री जिनका उच्च-जातीय पुरुषसभद्वारा सार्वजनिक रूपसँ नग्न कऽ घुमाओल गेल छल। ई घटना दलित स्त्री-उत्पीड़नक प्रतीक-घटना बनि गेल।

विजयश्री एहि ऐतिहासिक व्यक्तिकेँ काव्यिक वाचक बनाकऽ दू काज एक साथ करैत छथि:

पहिल — अलिसम्माकेँ वस्तुसँ विषय (वस्तु सँ कर्ता-विषय) मे रूपान्तरित करैत छथि। इतिहासमे ओ एकटा पीड़ित छलीह जिनकर कहानी दोसरसभ कहैत छथि। एतय ओ स्वयं बाजैत छथि।

दोसर — अलिसम्माकेँ सार्वभौमिक बनाबैत छथि। "हम अलिसम्मा छी" — एहि पंक्तिमे "हम" मात्र एकटा व्यक्ति नहि, समस्त दलित-स्त्री थिक।

गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक "निम्नवर्ग कि बाजि सकैत अछि? " (की निम्नवर्ग अपन आवाजमे इतिहासमे उपस्थित भऽ सकैत अछि?) प्रश्नक उत्तर विजयश्री एतय दैत छथि: हँ, एहि कवितामे। अलिसम्मा बाजि रहल छथि।

३. पौराणिक-ऐतिहासिक समानान्तरताः शूर्पणखा आ अलिसम्मा

कविताक सर्वाधिक साहसिक काव्यिक निर्णय थिक — शूर्पणखाक नासिका-छेदन आ अलिसम्माक सार्वजनिक नग्नीकरण कें एकहि पंक्तिमे जोड़ब:

"पहिले हमर कान-नाक काटल गेल छल प्रभु रामक आदेश पर। / आब हालहिमे, / हम पुलिसक हाथमे बिना कारण दुख बनि गेलहुँ। "

एहि समानान्तरतामे अनेक अर्थ-स्तर अछि:

पहिल स्तर — दूनू घटनामे उत्पीड़क पुरुष छथि आ पीड़ित दलित/बहिष्कृत स्त्री। शूर्पणखा राक्षस-कुलक — समाजक "अन्य" (जे मुख्यधाराक बाहर अछि) । अलिसम्मा दलित-कुलक — समाजक "अन्य"।

दोसर स्तर — दूनू घटनामे राज्य-शक्ति उत्पीड़नमे सहभागी अछि। रामक आदेशपर लक्ष्मण नासिका काटैत छथि। पुलिसक हाथे अलिसम्मा पीड़ित होइत छथि। धर्म-राज्य (रामायण-काल) आ आधुनिक राज्य — दूनू एकहि काज करैत अछि।

तेसर स्तर — रामायणमे शूर्पणखाक कामनाकेँ अपराध मानल गेल — ओ राम वा लक्ष्मणसँ विवाह चाहने छलीह। अलिसम्माक अस्तित्वकेँ अपराध मानल गेल। दूनू घटनामे स्त्री-इच्छा वा स्त्री-उपस्थिति उत्पीड़नक कारण बनैत अछि।

चतुर्थ स्तर — "प्रभु राम" — एहिमे "प्रभु" शब्द व्यंग्यात्मक अछि। जे "प्रभु" (भगवान, रक्षक) थिक, ओ स्त्री-उत्पीड़नक आदेश दैत अछि। ई धर्म-आधारित नैतिकताक खण्डन थिक।

भीमन्नाक पौराणिक-विरोधी पाठ (जाहिमे ओ महाभारतक व्यक्तित्वसभकेँ पुनर्पाठ करैत छलाह) परम्पराक एहि रचना और आगाँ जाइत अछि। भीमन्ना इतिहासक पुनर्पाठ करैत छलाह — विजयश्री इतिहासकेँ वर्तमानसँ जोड़ि देखाबैत छथि जे कोनो किछु नहि बदलल।

४. "नव प्रश्न" क दर्शन

"मुदा हम आब एकटा नव प्रश्न छी" — ई पंक्ति अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थिक।

परम्परागत दर्शनमे प्रश्न एकटा साधन थिक, उत्तर लक्ष्य थिक। सुकरात-पद्धतिमे प्रश्न सत्यक दिस लऽ जाइत अछि। मुदा विजयश्री कहैत छथि: हम स्वयं प्रश्न छी।

ई अस्तित्ववादी घोषणा थिक। दलित-स्त्री कोनो उत्तर नहि, स्वयं प्रश्न अछि — समाजक लेल, व्यवस्थाक लेल, इतिहासक लेल। जाधरि दलित-स्त्री जीवित अछि, प्रश्न समाप्त नहि होएत।

सिमोन द बोवुआर दोसर लिंग (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे स्त्री सदैव "दोसर" — पुरुषक सापेक्षमे परिभाषित — रहल अछि) क "दोसर"पन एतय दलित-जाति-आयामसँ अधिक जटिल भऽ जाइत अछि। दलित-स्त्री "दोसर" नहि — प्रश्न अछि — जे उत्तर मागैत अछि।

५. "स्राप" क काव्यिक-राजनीतिक महत्त्व

कविताक शीर्षक आ अन्तिम उद्घोष — "स्राप" — अत्यन्त बहुस्तरीय अछि।

धार्मिक परम्परामे स्राप

हिन्दू धर्म-परम्परामे ऋषि-मुनिक स्राप अत्यन्त शक्तिशाली मानल जाइत अछि। ब्रह्माक स्राप, दुर्वासाक स्राप — ई सब अपरिवर्तनीय होइत अछि। स्राप देबाक अधिकार सदैव उच्च-जातीय पुरुषक छलनि।

विजयश्री एहि स्राप-अधिकारकेँ दलित-स्त्रीक हाथमे दैत छथि। ई पदानुक्रमक उलटपालट थिक: जे कहियो स्राप पाबैत छल — ओ आब स्राप दैत अछि।

स्रापक विषय-वस्तु

"हम अहाँ सभकेँ स्राप दैत छी कि अहाँ मानवमे परिणत भऽ जाउ — / अपन पूँछ आ नुकीला दाँत तोड़ि-मोड़ि कऽ। "

ई स्राप अत्यन्त असाधारण थिक। सामान्यतः स्राप विनाशक होइत अछि — मरह, भस्म होह, पशु बनह। विजयश्रीक स्राप रूपान्तरणक थिक — मानव बनह।

एहिमे एकटा गहिर दार्शनिक कटाक्ष अछि: जे उत्पीड़क छथि — पुलिस, उच्च-जाति, पशु-समान व्यवहार करनिहार — ओ वास्तवमे पशु छथि। हुनका मानव बनबाक स्राप देब — ई सर्वोच्च व्यंग्य थिक।

एहिमे फ्रान्ट्ज फानोंक उपनिवेशवाद-विरोधी दर्शनक प्रतिध्वनि अछि — जतय ओ तर्क करैत छथि जे उपनिवेशक/उत्पीड़क वास्तवमे अपन मानवता खो चुकल अछि। पीड़ित अधिक मानवीय अछि, उत्पीड़क कम। विजयश्री एहि तर्ककेँ काव्यिक स्राप मे रूपान्तरित करैत छथि।

६. *सम्मानजनक उपाधिक अनुपस्थिति*

"जखन बोलल जाइत अछि वा चिच्चाओल जाइत अछि, / तऽ कोनो सम्मानजनक उपाधि नै अछि हमर नामक आगाँ वा पाछू लगबा लेल। "

ई पंक्ति भाषा आ सामाजिक पहचानक सम्बन्धकेँ उजागर करैत अछि। भारतीय समाजमे नामक आगाँ-पाछू लगाएल जाइत — "श्रीमती", "डॉक्टर", "स्वर्गीय", जातिसूचक उपनाम — ई सब सामाजिक मान्यताक चिह्न थिक।

दलित-स्त्री जखन बाजैत वा चिच्चाबैत अछि — ओ नामहीन थिक। न "श्रीमती" (विवाहित सम्मान), न जाति-उपनाम (जे समाजमे स्थान दैत अछि), न पेशेगत उपाधि।

भाषाशास्त्री पियरे बोर्दोक भाषिक पूँजी (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे भाषामे सामाजिक शक्ति-सम्बन्ध प्रतिबिम्बित होइत अछि) क अवधारणा एतय लागू होइत अछि। नामकरण-अधिकार एकटा सामाजिक शक्ति थिक। दलित-स्त्रीक नामक आगाँ-पाछू शून्य अछि — ई शून्यता समाजमे हुनकर अनुपस्थिति क प्रतीक थिक।

७. *आरक्षित सीटक रूपक*

"यद्यपि खाली अछि, / मुदा स्त्री सभ लेल आरक्षित सीट पर नै बैसि सकैत छी। "

ई पंक्ति समकालीन दलित-स्त्री अनुभवक अत्यन्त सटीक काव्यिक प्रस्तुति थिक। बस, ट्रेन, कार्यालयमे "महिला आरक्षित" सीट सैद्धान्तिक रूपसँ सब स्त्रीक लेल होइत अछि। मुदा व्यवहारमे दलित-स्त्री ओहि पर बैसि नहि सकैत — कारण उच्च-जातीय स्त्री वा पुरुष विरोध करैत अछि।

एहि रूपकमे कानून आ यथार्थक भेद प्रकट होइत अछि। भारतीय संविधान समानताक गारन्टी दैत अछि — मुदा सामाजिक यथार्थमे ई गारन्टी खाली सीट जकाँ अछि — उपस्थित, मुदा अगम्य।

स्वरूपरानीक आरक्षण-कलंकारोपण (कोटा-सँ-आयल कहिकऽ अपमान) आ विजयश्रीक आरक्षित-सीट-अगम्यता — दूनू मिलिकऽ दलित-स्त्रीक सांवैधानिक अधिकार आ सामाजिक वास्तविकताक विरोधाभास दर्शाबैत अछि।

८. *"न्यायालय रूपी आँखिमे बाती"*

"हम अलिसम्मा छी, / जे न्यायालय रूपी आँखिमे बाती जलौने छलहुँ। "

ई रूपक असाधारण काव्यिक घनत्व राखैत अछि।

"न्यायालय रूपी आँखि" — न्याय-प्रतीकमे अन्धी देवी (जस्टिशिया, पट्टी-बान्हल आँखिसँ) पाश्चात्य परम्परामे अछि — जे कहैत अछि न्याय पक्षपातरहित अछि। मुदा भारतीय सन्दर्भमे न्यायालय जाति-वर्गक पक्षधर रहल अछि।

"आँखिमे बाती जलाएब" — सामान्यतः दीपक बाती जलाएब आलोक-प्रसार थिक। मुदा आँखिमे बाती जलाएब यन्त्रणा थिक। दलित-स्त्रीक न्यायालयमे जाएब — जे न्याय-प्राप्तिक लेल होएबाक चाही — यातना-अनुभव बनि जाइत अछि।

एहि रूपकमे आशा आ विडम्बना एकहि साथ अछि: अलिसम्मा न्यायालयमे आलोक आनय गेलीह — मुदा ओहि "आँखि"मे बाती जरल, जरैत रहल।

९. *"स्त्री आ दलित भऽ कऽ सेहो हम अखन धरि जीवित छी"*

ई पंक्ति दलित-स्त्री काव्यक सार-वाक्य थिक।

"सेहो" — ई एकटा शब्द सम्पूर्ण उत्पीड़नक इतिहास समेटि लैत अछि। स्त्री भऽ कऽ उत्पीड़न। दलित भऽ कऽ उत्पीड़न। दूनू एक साथ। "सेहो" कहैत अछि: एहि सभक बावजूद।

ई जीवनक राजनीतिक कार्य थिक। पॉल गिलरॉय "जिएब, हँसब, प्रेम करब" केँ उत्पीड़नक विरुद्ध सांस्कृतिक प्रतिरोध मानैत छथि। विजयश्रीक "अखन धरि जीवित छी" एहि अर्थमे जीवित रहनाइ स्वयं विद्रोह थिक।

१०. पाँचू कविः एकटा अन्तिम संश्लेषण

एहि सम्पूर्ण समीक्षा-शृंखलामे हम पाँच तेलुगु दलित कवि — भीमन्ना, सुभद्रा, स्वरूपरानी, शशिनिर्मला, गौरी, आ विजयश्री — क अध्ययन कएल। सभ मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण दलित-स्त्री काव्य-ब्रह्माण्ड निर्मित करैत अछि:

भीमन्ना — इतिहास-दर्पण। पुराण-इतिहासक उलटपालट।

सुभद्रा — श्रम-दर्पण। दैनिक जीवनक वस्तु-संसारक काव्य।

स्वरूपरानी — चेतना-दर्पण। व्यक्तिगत रूपान्तरणक यात्रा।

शशिनिर्मला — संघर्ष-दर्पण। त्रिमुखी उत्पीड़नसँ त्रिमुखी संघर्ष।

गौरी — पहचान-दर्पण। "अशुद्ध" पहचानकेँ शुद्ध सङ्गीतमे रूपान्तरण।

विजयश्री — न्याय-दर्पण। इतिहासक पीड़ितकेँ वाचक बनाएब, स्रापकेँ शस्त्र बनाएब।

ई छहू दर्पण मिलिकऽ दलित-स्त्री अस्तित्वक सम्पूर्ण प्रतिबिम्ब बनाबैत अछि।

निष्कर्ष

मद्दुरी विजयश्रीक अलिसम्माक स्राप तेलुगु दलित काव्यक एहि पूरा शृंखलाक सर्वोच्च काव्यिक क्षण थिक।

एहि कवितामे:

इतिहास बाजैत अछि — अलिसम्मा, जे वस्तु छलीह, वाचक बनि जाइत छथि।

पुराण खण्डित होइत अछि — रामक "प्रभुत्व" आ पुलिसक "अधिकार" एकहि पंक्तिमे जोड़ल जाइत अछि।

भाषा विद्रोह करैत अछि — "स्राप" — जे उच्च-जातिक विशेषाधिकार छल — दलित-स्त्रीक शस्त्र बनि जाइत अछि।

दर्शन जन्म लैत अछि — जीवित रहनाइ विद्रोह थिक, प्रश्न बनब शक्ति थिक।

अन्तिम पंक्ति — "अपन पूँछ आ नुकीला दाँत तोड़ि-मोड़ि कऽ" — एकटा भविष्यक माँग थिक। जाधरि उत्पीड़क अपन पशुता नहि छोड़त, ताधरि स्राप सक्रिय रहत। ई माँग समाजकेँ, व्यवस्थाकेँ, इतिहासकेँ — सभकेँ — पुछल गेल अछि।

आ ई प्रश्न — "हम आब एकटा नव प्रश्न छी" — तेलुगु दलित काव्यक एहि सम्पूर्ण शृंखलाक अन्तिम, अनुत्तरित, आ सर्वाधिक शक्तिशाली स्वर थिक।

गुजराती दलित कविता [गुजरातीसँ अंग्रेजी अनुवाद हेमांग देसाई; अंग्रेजीसँ मैथिली अनुवाद गजेन्द्र ठाकुर द्वारा।

अनीश गारंगेक "पोस्टर",

राजेन्द्र वडेलक 'जीता' "सम्भोग",

उमेश सोलंकीक "लोक, जमि जाए", "खरड़ाक डाँट सभ"

गुजराती दलित काव्य समीक्षाः चारि कविता

अनीश गारंगे, राजेन्द्र वडेल 'जीता', उमेश सोलंकी

प्रारम्भिक टिप्पणी

एहि संग्रहमे प्रस्तुत गुजराती दलित कविता — तेलुगु परम्पराक पश्चात् — एकटा भिन्न भाषिक-सांस्कृतिक भूमि पर दलित अनुभवक काव्यात्मक अभिव्यक्ति थिक। तेलुगु कवितासभमे जे स्त्री-दलित स्वर प्रमुख छल, एतय पुरुष-दलित स्वर अधिक केन्द्रीय अछि — मुदा वडेलक सम्भोग मे स्त्री-दलित यथार्थ पुनः प्रकट होइत अछि।

तीनू कवि — गारंगे, वडेल, सोलंकी — तीन भिन्न काव्य-रणनीति अपनाबैत छथि: गारंगे नगर-यथार्थवाद (शहरी जीवनक ठोस-इन्द्रिय-ग्राह्य यथार्थ), वडेल यौन-राजनीतिक साक्ष्य, आ सोलंकी जमाव-रूपक आ गान्धी-विरोधी व्यंग्य। एहि तीनू मिलिकऽ गुजराती दलित काव्यक एकटा सम्पूर्ण नगर-राजनीतिक चित्र निर्मित करैत अछि।

१. अनीश गारंगेः पोस्टर

काव्य-रूप आ संरचना

पोस्टर एकटा वृत्ताकार संरचना (जाहिमे पहिल पंक्ति अन्तिम पंक्ति बनि जाइत अछि) मे रचल गेल अछि। "ई खुरदुरा चेहरा बला पोस्टर सब हमर ऐना जकाँ अछि" — कविता एहिसँ आरम्भ होइत अछि आ एहिपर समाप्त। ई वृत्तीय संरचना दलित अस्तित्वक अन्तहीन चक्रकैं प्रतीकात्मक रूपसँ व्यक्त करैत अछि — जाहिमे कोनो निकास नहि।

मध्यमे जे पंक्तिसभ अछि — सिनेमा बैनर, विज्ञापन, शोक-सभा, शौचालय, रैली, रेलवे स्टेशन, रिक्शा, लापता-व्यक्ति-पोस्टर — ई सब नगर-जीवनक टुकड़े थिक। संरचनात्मक दृष्टिसँ ई कोलाज-काव्य (असम्बद्ध प्रतीत होइत टुकड़ासभकैं एकत्र कऽ अर्थ-निर्माण करबाक काव्य-विधि) थिक।

पोस्टर-रूपकक बहुस्तरीयता

"पोस्टर" शब्द एहि कवितामे अत्यन्त बहु-अर्थी थिक:

पहिल अर्थ — पोस्टर अस्थायी होइत अछि। ओ एकटा दिन चिपकैत अछि, भोरमे छिलि जाइत अछि। दलित-अस्तित्व सेहो समाजक दृष्टिमे अस्थायी, प्रतिस्थापनयोग्य (जकरा बदलल जा सकय) थिक।

दोसर अर्थ — पोस्टर सार्वजनिक होइत अछि — सब देखैत अछि, कोनो ध्यान नहि दैत। दलित-व्यक्ति सेहो दृश्यमान मुदा अदृश्य थिक।

तेसर अर्थ — पोस्टर बहुरूपी होइत अछि — सिनेमा, विज्ञापन, राजनीतिक रैली, लापता-व्यक्ति — सब किसमक पोस्टर अछि। दलित-व्यक्ति सेहो समाजक विभिन्न संस्थाद्वारा विभिन्न उद्देश्यसँ प्रयुक्त होइत अछि।

"ऐना" (दर्पण) — कविताक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण रूपक। पोस्टर जे दलितक "ऐना" थिक — ई विडम्बना थिक। ऐना प्रामाणिक प्रतिबिम्ब दैत अछि। मुदा पोस्टर विकृत, अपमानित, प्रयोजनानुसार निर्मित छवि थिक। अर्थात्: समाज दलितकैं जे "ऐना" देखाबैत अछि — ओ मिथ्या दर्पण थिक।

जाक् लाकाँक दर्पण-अवस्था (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे बच्चा दर्पणमे अपन प्रतिबिम्ब देखिकऽ अपन "मैं" निर्मित करैत अछि) एतय नकारात्मक रूपसँ लागू होइत अछि। दलित-व्यक्ति जे "ऐना" (पोस्टर) देखैत अछि, ओहिमे विकृत आत्म-छवि थिक — समाजद्वारा थोपल।

नगर-यथार्थवाद

"अहाँ 'पे-एण्ड-यूज' शौचालय सभमे हमरा पर पेशाब करैत छी" — ई पंक्ति अत्यन्त प्रत्यक्ष अछि। "पे-एण्ड-यूज शौचालय" — नगर-जीवनक एकटा ठोस स्थान — एतय सामाजिक अपमानक रूपक थिक। पैसा देकऽ शौचालयमे प्रवेशक अधिकार थिक — मुदा दलितपर पेशाब निःशुल्क होइत अछि।

"हम बेकार कागजक गोला छी" — ई आत्म-वस्तुकरण (स्वयंकैं वस्तु मानब) थिक — मुदा ई आत्म-वस्तुकरण आत्म-घृणासँ नहि, सामाजिक यथार्थक स्वीकृतिसँ आबैत अछि। कविता कहैत अछि: समाज हमरा एहि रूपमे देखैत अछि।

"खमण-खाड़ी" — ई गुजराती खाद्य-पदार्थ एतय सांस्कृतिक-भौगोलिक पहचान थिक। "खमण-खाड़ी सँ सनल चेहरा" — गुजराती संस्कृतिक मध्यवर्गीय-उच्च-जातीय छवि (खमण-ढोकला जे गुजरातक प्रतीक-खाद्य बनि गेल) दलित-चेहरापर लागल अछि — अपमानजनक, व्यंग्यात्मक रूपसँ।

वाल्टर बेंजामिनक नगर-अनुभव (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे आधुनिक नगर मानवकैं वस्तुसमूहमे विलीन कऽ दैत अछि) एतय दलित-नगर-अनुभवमे अधिक जटिल भऽ जाइत अछि: नगर मात्र अनामकरण नहि करैत, जातीय कलंकित-निर्माण सेहो करैत अछि।

२. राजेन्द्र वडेल 'जीता': सम्भोग

काव्य-रूप: यौन-राजनीतिक साक्ष्य

सम्भोग तेलुगु-दलित काव्य-शृंखलामे शशिनिर्मलाक यौन-राजनीतिक स्वरक गुजराती प्रतिरूप थिक — मुदा एकटा महत्त्वपूर्ण भेदसँ: एतय वक्ता पुरुष अछि, आ कविता उच्च-जातीय पुरुष आ दलित स्त्रीक शारीरिक सम्बन्धक विश्लेषण करैत अछि।

ई एकटा अत्यन्त साहसिक काव्य-निर्णय थिक। सामान्यतः यौन-सम्बन्ध निजी विषय मानल जाइत अछि। वडेल एकरा राजनीतिक विश्लेषणक विषय बनाबैत छथि।

"दुर्गन्धित" शरीर

"अहाँक शरीर दलित स्त्री सभकेँ कुचलैत अहाँक पूर्वज सँ दुर्गन्धित छल" — ई पंक्ति अत्यन्त जटिल अछि।

"दुर्गन्धित" — सामान्यतः दलित-जातिकेँ "अशुद्ध" आ "दुर्गन्धित" कहल जाइत अछि। वडेल एहि प्रदूषण-कलंककेँ उलटि दैत छथि: उच्च-जातीय शरीर दलित-स्त्री-बलात्कारक इतिहाससँ दुर्गन्धित अछि।

"पूर्वज सँ" — ई शब्द महत्त्वपूर्ण थिक। ई कोनो व्यक्तिगत पाप नहि — ई पीढ़ी-दर-पीढ़ी चलैत आएल ऐतिहासिक शोषण थिक। उच्च-जातीय पुरुषक शरीरमे ओहि पूर्वजसभक कर्म भौतिक रूपसँ उपस्थित अछि।

वडेलक एहि पंक्तिमे एपिजेनेटिक्स (जाहिमे विज्ञान देखाबैत अछि जे पूर्वजक अनुभव वंशजक जीवशास्त्रमे प्रभाव छोड़ैत अछि) क काव्यात्मक प्रतिनिधित्व अछि। आ एहिसँ फानोंक उपनिवेशित देह (जाहिमे ओ देखाबैत छथि जे उपनिवेशकक शरीरमे हिंसाक इतिहास अंकित अछि) क अवधारणा सेहो।

अन्तिम उद्घोष: "भारत" आ "भारती"

"हमर सम्भोग सँ जँ बेटा जन्मल / तऽ हुनकर नाम 'भारत' राखू / जँ बेटी तऽ 'भारती'। "

ई कवितामे सर्वाधिक विस्फोटक पंक्ति थिक। एहिमे कई अर्थ-स्तर एक साथ अछि:

पहिल स्तर — "भारत" आ "भारती" राष्ट्रीय पहचानक नाम थिक — राष्ट्र-प्रतीक। दलित-स्त्री आ उच्च-जातीय पुरुषक सन्तानकेँ "भारत" कहब — ई राष्ट्र-निर्माणक वास्तविक इतिहास उजागर करैत अछि। भारत-राष्ट्र एहि जाति-यौन-हिंसाक उत्पाद थिक।

दोसर स्तर — "भारत माता" क राष्ट्रवादी कल्पनामे माँ उच्च-जातीय, पवित्र होइत छथि। वडेल देखाबैत छथि जे वास्तविक "भारत माता" दलित-स्त्री छथि — जिनकर शरीरपर राष्ट्रक इतिहास लिखाएल गेल।

तेसर स्तर — "जँ बेटा" / "जँ बेटी" — ई काल्पनिक वाक्य-रचना एकटा भविष्यक माँग थिक: एहि सत्यकेँ स्वीकार करू।

बी. आर. आम्बेडकर जाति-विनाश मे तर्क करैत छलाह जे जातिक स्थायित्व अन्तर्विवाह (जाहिमे उच्च-जाति अपनजातिभित्तर विवाह करैत अछि) पर निर्भर थिक। वडेलक कविता एहि तर्ककेँ उलटिकऽ देखाबैत अछि: जाति-विनाश केवल विवाहसँ नहि, जाति-हिंसाक इतिहासकेँ स्वीकार करबासँ आरम्भ होइत अछि।

३. उमेश सोलंकी: लोक, जमि जाय

काव्य-रूप: जमाव-रूपकक विस्तार

लोक, जमि जाय एकटा एकल विस्तारित रूपक (एकटा मूल बिम्बकेँ कविताभरि विस्तारित करबाक विधि) पर आधारित अछि। "जमि जाय" (जमि जाएब होएब, जमि जाएब) — ई एकटा सरल भौतिक क्रिया — कवितामे एकटा जटिल राजनीतिक रूपक बनि जाइत अछि।

संरचना पुनरारम्भात्मक (बारम्बार एकहि शब्दसँ आरम्भ) अछि — "जमि जाय" क आवृत्ति कवितामे एकटा मन्त्र-गुण लबैत अछि। मुदा ई मन्त्र भक्तिक नहि — क्रान्तिक थिक।

"जमाव"क राजनीतिक दर्शन

सोलंकी जे "जमाव" चाहैत छथि — ओ स्थिरताक विरोधमे नहि, बल्कि स्थिरताक माध्यमसँ परिवर्तनक माँग थिक।

"केतलीमे चाय जमि जाय" — चाय गतिशीलताक, उष्णताक प्रतीक थिक — जे रोज बनैत-पिआइत अछि। एकर जमब = दैनिक सामान्यताक बन्द होएब।

"टकाक स्पर्श मात्र सँ कोमल आङ्गुरि सब मरल समुद्री शैलमे जमि जाय" — "टका" (धन) आ "कोमल आङ्गुरि" — पूँजीवादी श्रम-शोषणक रूपक। जे आङ्गुरि धन स्पर्श करैत अछि, ओ मृत शिलामे परिणत होइत अछि — पूँजी मानवकेँ पाथर बनाबैत अछि।

"कुहेसाक ई मोटा चादर छँटबा लेल" — "कुहेसा" (कुहासा, कोहरा) — अज्ञान, भ्रम, झूठ क रूपक थिक। जाहि सामाजिक भ्रमले दलित-उत्पीड़न सामान्य लागैत अछि — ओ "कुहेसा" केवल जमावसँ — अर्थात् आमूल रोकसँ — हटत।

मार्क्सक जमा हुआ श्रम (संचित श्रम — जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे पूँजी वास्तवमे श्रमिकक जमाएल श्रम थिक जे मालिकक हाथमे चलि जाइत अछि) क अवधारणासँ सोलंकीक "जमाव" एकटा काव्यिक सम्वाद करैत अछि: यदि श्रम "जमि जाय" — अर्थात् हड़ताल — तऽ ओ व्यवस्था चरमरा जाइत अछि जे एहि श्रमपर टिकल अछि।

४. उमेश सोलंकी: खरड़ाक डाँट सब

काव्य-रूप: व्यंग्यात्मक सम्बोधन

खरड़ाक डाँट सब एकटा सोझ सम्बोधन-कविता थिक — गान्धीजीकेँ सोझे बाजैत। एहि काव्य-विधिमे गौरीक मेहदी लागल हाथ (कृष्णसँ सम्बोधन) आ विजयश्रीक अलिसम्माक स्राप (उत्पीड़ककेँ सम्बोधन) क साम्य अछि।

मुदा ई कविताक सम्बोधन अनन्य थिक: गान्धी — जे दलितक "महात्मा" (हितैषी) होएबाक दावा करैत छलाह — हुनकासँ रोष आ निराशा क सोझ अभिव्यक्ति।

गान्धी-आम्बेडकर द्वन्द्वक काव्यिक प्रतिनिधित्व

भारतीय इतिहासमे गान्धी-आम्बेडकर विवाद सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण राजनीतिक-दार्शनिक विवाद छल। गान्धी "हरिजन" कहि दलितकेँ हिन्दू व्यवस्थाक भीतर सुधारक माध्यमसँ उठाएब चाहैत छलाह। आम्बेडकर एहि व्यवस्थाकेँ जड़सँ अस्वीकार करैत छलाह।

सोलंकी एहि ऐतिहासिक विवादकेँ काव्यमे लबैत छथि:

"अहाँक खादी बहुत जल्दी घिसि जाइत छैक" — खादी गान्धीक प्रतीक थिक — स्वदेशी, सादगी, राष्ट्रीयता। "घिसि जाएब" = प्रतीकक खोखलापन उजागर होएब। गान्धीक आदर्श दलितक जीवनमे टिकाऊ नहि सिद्ध भेल।

"पर्खि पर फ्रेममे बन्द जीवन सँ अहाँ निश्चय घृणा करैत हएब" — सरकारी दफ्तरमे, स्कूलमे, घरमे — गान्धीक तस्वीर फ्रेममे बन्द अछि। ई "फ्रेम" प्रतिष्ठापनक प्रतीक थिक — गान्धीकेँ संग्रहालय-वस्तु बनाएब, जाहिसँ हुनकर वास्तविक विचारक समाजपर प्रभाव नहि पड़ए।

"अहाँ ककरा लेल मुस्कुरा रहल छी? " — ई प्रश्न अत्यन्त तीखा थिक। गान्धीक तस्वीरमे मुस्कान अछि। मुदा जाहि दलित-समुदायक लेल ओ काज करैत होएबाक दावा करैत छलाह — हुनकर जीवनमे मुस्कानक कोनो कारण नहि। ओ मुस्कान केकर लेल?

"खरड़ाक डाँट"

शीर्षक — "खरड़ाक डाँट सब" — अत्यन्त बहु-अर्थी थिक। "खरड़ा" (झाड़ू, झाड़ू) गान्धीक स्वच्छता-आन्दोलनक प्रतीक थिक। मुदा "खरड़ाक डाँट" (झाड़ूक डण्ठल) — ओ जे बाँचि जाइत अछि जखन झाड़ू घिसि जाइत अछि।

कविता एहि अवशेषसभकेँ — जे स्वच्छता-आन्दोलनक पश्चात् बाँचल लोगसभ — देखाबैत अछि: "शहरक गुप्त गली सभमे झाड़ूक डण्ठलक कूड़ा — / ओ सब बड़बड़बैत अछि / करहैत अछि। "

ई "बड़बड़ाएब" आ "करहाएब" — जे दलित-सफाईकर्मीसभ गान्धीक "स्वच्छता" आन्दोलनसँ बाहर छोड़ल गेल — हुनकर यन्त्रणाक शब्द थिक।

जुलाई २००९: ऐतिहासिक प्रसंग

कविताक अन्तमे प्रसंग-टिप्पणी अछि: अहमदाबादमे जुलाई २००९ मे भेल दारूक त्रासदी। एहि घटनामे नकली दारू पिबिकऽ मुख्यतः दलित-मजदूर मृत्युकेँ प्राप्त भेलाह।

गान्धी दारू-विरोधी छलाह। गुजरात मद्य-निषेध-राज्य (मद्यनिषेध-राज्य) थिक — गान्धीक आदर्शक भूमि। मुदा ओहि "गान्धीवादी" राज्यमे दलित-मजदूर नकली दारूसँ मरैत अछि।

"गान्धी / हम अहाँक मुँड़ पर दारू डालि दैत छी" — ई पंक्ति अत्यन्त उग्र थिक। गान्धीक मुँड़पर दारू — जे हुनकर सबसँ बड़ वर्जना छल — ढारब: ई पूर्ण अस्वीकृति थिक।

"धिक्कार / अहाँक खोपड़ी पर दारूक थैला जाय" — ई श्राप थिक — विजयश्रीक अलिसम्माक स्राप जकाँ। मुदा एतय श्राप अधिक व्यंग्यात्मक थिक: दारू — जे गान्धीक विरुद्ध छल — गान्धीपर।

बी. आर. आम्बेडकरक गान्धी-आलोचना — जे गान्धी दलितक नामपर राजनीति करैत छलाह मुदा जाति-व्यवस्थाकेँ मूलतः नहि बदलैत छलाह — सोलंकीक कवितामे काव्यिक रूप धारण करैत अछि।

५. तुलनात्मक विश्लेषण: तेलुगु बनाम गुजराती

एहि गुजराती कविता सभकेँ तेलुगु परम्परासँ तुलना करलापर कई महत्त्वपूर्ण भेद आ साम्य उभरैत अछि:

नगर-केन्द्रितता: तेलुगु दलित कविता प्रायः ग्रामीण-कृषि यथार्थसँ जुड़ल अछि — खेत, धान, जमीन्दार। गुजराती कवितानगर-केन्द्रित अछि — रेलवे स्टेशन, रिक्शा, शौचालय, विज्ञापन। ई दलित-अनुभवक भौगोलिक विविधता दर्शाबैत अछि।

पुरुष-स्वर: तेलुगु दलित काव्य-शृंखलामे स्त्री-स्वर प्रभावी छल। गुजराती संग्रहमे तीनू कवि पुरुष छथि। एहिसँ क्षेत्रीय दलित-आन्दोलनक भिन्न-भिन्न रूप प्रकट होइत अछि।

गान्धी-प्रसंग: तेलुगु दलित कवितामे गान्धीक उल्लेख प्रायः नहि। गुजराती दलित कवितामे — जे गान्धीक गृह-प्रदेशमे लिखल गेल — गान्धी-आम्बेडकर विवाद केन्द्रीय थिक। ई स्थानीय इतिहासक काव्यमे प्रवेश थिक।

काव्य-भाषा: तेलुगु कवितामे देशज प्रतीक (अमलतास, तेतरि, मैसम्मा देवी) प्रचुर। गुजराती कवितामे नागरिक-आधुनिक प्रतीक (पोस्टर, विज्ञापन, पे-एण्ड-यूज शौचालय) अधिक।

६. अनुवाद-शृंखलाक विशेष टिप्पणी

एहि कविता गुजराती→अंग्रेजी→मैथिली — तीन स्तरक यात्रा कएल। तेलुगु कवितासभक अनुवादसँ एकटा महत्त्वपूर्ण भेद थिक: तेलुगु→अंग्रेजी अनुवाद पुरुषोत्तम के. द्वारा कएल गेल, गुजराती→अंग्रेजी हेमांग देसाई द्वारा।

हेमांग देसाई स्वयं गुजराती दलित साहित्यक विद्वान छथि — ई अन्दरूनी अनुवादक (जे उहो संस्कृतिक सदस्य छथि जाहिसँ अनुवाद होइत अछि) काज थिक। एहिसँ सांस्कृतिक-विशिष्ट सन्दर्भ (जेना "खमण-खाड़ी", "खरड़ा") बेसी प्रामाणिकतासँ अनूदित भेल।

निष्कर्ष

गुजराती दलित काव्यक ई चारि कविता मिलिकऽ नगर-दलित अनुभवक एकटा सम्पूर्ण चित्र प्रस्तुत करैत अछि:

गारंगेक पोस्टर — दलित-अस्तित्वक अदृश्यता आ विकृत-दृश्यताक काव्य।

वडेलक सम्भोग — जाति-यौन-हिंसाक इतिहासकेँ राष्ट्र-निर्माणसँ जोड़बाक काव्य।

सोलंकीक लोक, जमि जाय — आमूल रोकक, हड़तालक, व्यवस्था-ठहरावक काव्य।

सोलंकीक खरड़ाक डाँट सब — गान्धीवाद आ दलित-यथार्थक विरोधाभासक काव्य।

चारू मिलिकऽ एकटा काव्यिक घोषणापत्र बनाबैत अछि: आधुनिक भारतीय राज्य — ओकर प्रतीक (गान्धी, राष्ट्र-ध्वज, संविधान) आ ओकर संस्था (पुलिस, न्यायालय, मीडिया) — दलित-अस्तित्वक न्याय देएबमे विफल रहल अछि।

आ जाधरि ई विफलता जारी रहत, ताधरि दलित काव्य — तेलुगुमे, गुजरातीमे, मैथिलीमे — प्रश्न करैत, गवाही दैत, स्राप दैत रहत।

बासुदेव सुनानीक उड़िया दलित कविता; उड़िया सँ अंग्रेजी अनुवाद: सैलेन राउत्रे; अंग्रेजी सँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर

उड़िया दलित काव्य समीक्षा: बासुदेव सुनानीक दू टा कविता

अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि आ पता आ सदानन्द

प्रारम्भिक टिप्पणी

बासुदेव सुनानी उड़िया दलित काव्यक एकटा विशिष्ट आ जटिल स्वर छथि। तेलुगु आ गुजराती दलित कविता सभसँ भिन्न — जाहिमे प्रायः प्रत्यक्ष राजनीतिक उद्घोष वा व्यक्तिगत पीड़ाक साक्ष्य केन्द्रमे छल — सुनानीक कविता रहस्यवादी आ दार्शनिक आयामक माध्यमसँ दलित-अनुभवकेँ व्यक्त करैत अछि। हुनकर काव्य-भाषा रूपकात्मक घनत्वसँ परिपूर्ण अछि — जाहिमे बूँद, बीउ, माछ, बगुला, समुद्र — ई सब प्राकृतिक-ब्रह्माण्डीय बिम्ब दलित-अस्मिताक अदृश्यता आ संघर्षक काव्यिक अभिव्यक्ति बनि जाइत अछि।

एहि संग्रहमे तीन सम्बद्ध काव्य-खण्ड अछि — अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि, पता, आ सदानन्द — जे मिलिकऽ एकटा त्रि-आयामी काव्यिक तर्क प्रस्तुत करैत अछि: अस्तित्वक चेतावनी, अस्तित्वक अदृश्यता, आ अस्तित्वक भोलापन आ विडम्बना।

१. काव्य-रूप आ संरचना

अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि

एहि कवितामे दू टा प्रतिध्वनि-पंक्ति (आवर्ती पंक्ति) बारम्बार आबैत अछि — "तैयो हमरा लगैत अछि नै जानि किएक / जे मात्र कोना पर / किछु लटकि-झूलि कऽ रहल अछि" — कविताक आरम्भमे आ मध्यमे। ई पुनरावृत्ति एकटा अनिश्चितताक स्थायी भाव सृजित करैत अछि — जेना कोनो बात अधूरी हो, जेना कोनो विस्फोट होएबाक बाकी हो।

संरचना विरोधाभासी युग्मसभपर आधारित अछि: "घण्टीक आवाज" बनाम "ढोलकक विस्फोट", "लकड़ी-पातक सङ्ग्रह" बनाम "घरक विध्वंस", "पाञ्चजन्य" बनाम "सब सँ छोट प्रतिक्रिया"। ई युग्म दलित-अस्मिताक द्विध्रुवीय तनाव — अदृश्यता आ विस्फोट — दर्शाबैत अछि।

पता

एहि कवितामे संरचना विखण्डित आत्म-चित्रणक अछि। "हम अखनहुँ छी..." — ई पंक्ति तीन बेर आबैत अछि, तीन भिन्न रूपमे:

पहिल — वृद्धा स्त्री (जे विवाह-बरातमे दीप ढोइत अछि) । दोसर — रोगी बूढ़ (जे मन्दिर-आगाँ भिक्षा माँगैत अछि) । तेसर — सुतल बच्चा (जे ठण्डमे चबूतरापर पड़ल अछि) ।

ई तीनू दलित-अस्तित्वक तीन पीढ़ी थिक — वृद्धा, प्रौढ़, शिशु — सब एकहि अदृश्यतामे जीबैत।

"तैयो अहाँकेँ पता चाही! / अजब गप! " — ई व्यंग्यात्मक आश्चर्य (कवि स्वयं अचम्भित छथि जे हुनकर पताक माँग कएल जाइत अछि, जखन कि हुनकर अस्तित्व त सब ठाम अछि) सम्पूर्ण कविताक भावनात्मक केन्द्र थिक।

सदानन्द

ई कविताक संरचना नाटकीय एकालाप थिक — एकटा वास्तविक व्यक्ति, सदानन्द, जे किसान-मेलामे पुरस्कार लेबाआएल छल, समुद्र देखैत अछि। ई सरल-यथार्थवादी संरचना पूर्ववर्ती दूनू कवितासँ भिन्न अछि।

मुदा एहि सरलताक भीतर एकटा गहिर राजनीतिक प्रश्न छुपल अछि: "हमर इलाकामे अकाल किएक नै पड़त? / जखन सब पानि समुद्र पर बन्धक राखल अछि। "

२. "पाञ्चजन्य" आ "बज्र": पौराणिक रूपकक दलित-प्रयोग

"हम जानैत छी जे एतय कोनो आवाज / 'पाञ्चजन्य' सँ कम नै अछि। / सब सँ छोट प्रतिक्रिया / बज्रक समान गर्जन करैत अछि। "

"पाञ्चजन्य" — कृष्णक शंख — जे महाभारत-युद्धक आरम्भक संकेत थिक। एहि रूपकमे दलित-आवाज कृष्णक शंखसँ तुलित अछि।

भीमन्नाक पौराणिक-विरोधी पाठ (जाहिमे ओ महाभारतक पात्रसभकेँ दलित-दृष्टिसँ पुनर्पाठ करैत छलाह) क परम्परामे सुनानी एतय भिन्न काज करैत छथि: ओ पौराणिक प्रतीककेँ विरोध नहि करैत, उधार लैत छथि — आ कहैत छथि जे दलित-आवाज ओहि पवित्र ध्वनिसँ कम नहि।

ई एकटा पुनर्दावाक रणनीति थिक। भीमन्ना कहैत छलाह: पुराणक इतिहास गलत लिखल गेल। सुनानी कहैत छथि: हमर आवाज ओहि पुराणक सर्वोच्च प्रतीकसँ समतुल्य अछि।

३. बूँद, बीउ, आ गर्भवती स्त्रीः आशाक त्रि-रूपक

अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि क अन्तिम खण्डमे तीन आशा-बिम्ब एक साथ आबैत अछि:

"एतय आकाशमे एहने एकटा बूँद अछि / जे अस्पष्ट होइतो चमकैत छैक / आ इन्द्रधनुषक एकटा मीठ सपना देखि कऽ बेर-बेर / प्रण लेने अछि विशाल आकाशकेँ रङ्ग देबाक। "

"एतय एकटा बीउ प्रतिज्ञा लेने अछि अङ्कुरित होबाक / सब किछु हरियर करबाक इच्छा सङ्गे। "

"आ एतय दुःखमे / एकटा परित्यक्ता गर्भवती स्त्री / शान्त क्षणक खोजीमे अछि — / एहन बच्चा जन्म देबा लेल / जे सात गोटे योद्धाक सामना कऽ कऽ ओकरा रोकि सकय। "

ई तीनू बिम्ब क्रमशः बढ़ैत शक्तिक (क्रमवर्धमान शक्ति) शृंखला थिक: बूँद→बीउ→योद्धाक माँ।

बूँद — सर्वाधिक क्षुद्र, अस्पष्ट। मुदा ओ इन्द्रधनुषक सपना राखैत अछि — क्षुद्रतामे विशालताक आकाङ्क्षा।

बीउ — बूँदसँ बड़। ओ अंकुरित होएबाक प्रतिज्ञा करैत अछि — निष्क्रिय इच्छा नहि, सक्रिय संकल्प।

गर्भवती स्त्री — सर्वाधिक शक्तिशाली। ओ "परित्यक्ता" थिक — समाजद्वारा छोड़ल। मुदा ओ "सात योद्धाक सामना करनिहार" बच्चा जन्म देएबाक प्रतीक्षामे अछि।

एहि परित्यक्ता गर्भवती स्त्री क बिम्बमे तेलुगु कवयित्रीसभक स्वर प्रतिध्वनित होइत अछि — सुभद्राक "अव्वा", स्वरूपरानीक "माटि-भेल हाथ"। मुदा सुनानी एहि स्त्रीकेँ भविष्यक क्रान्तिक जननी बनाबैत छथि।

४. पता कविताः अदृश्यता आ सर्वव्यापकताक विरोधाभास

पता कविताक केन्द्रीय विरोधाभास थिक: दलित-अस्तित्व सब ठाम उपस्थित अछि — मुदा अदृश्य अछि।

"शुरू सँ अन्त धरि / हमर उपस्थिति / चिउँटीक टिमटिमाइत लाइन सन फैलल अछि / आ झाँझक ठनकार सन गूँजैत छैक। "

"चिउँटीक लाइन" — सूक्ष्म, अनन्त, श्रमशील — मुदा किओ ध्यान नहि दैत। "झाँझक ठनकार" — ध्वनि उपस्थित अछि, किओ सुनैत नहि।

"हमर पताक लेल / अहाँकेँ आब पार्सल पठेबाक जरूरत नै / जेकर ठिकाना 'केयर अफ' सूर्य वा चन्द्रमा हो। "

ई पंक्ति अत्यन्त व्यंग्यात्मक अछि। समाज दलितकेँ खोजय चाहैत अछि — मुदा गलत ठामपर। सूर्य-चन्द्रमा — अर्थात् अमूर्त, दार्शनिक, आध्यात्मिक स्थान — मे खोजैत अछि। जखन कि दलित "ओही अन्हार गलीमे" अछि — ठोस, भौतिक, दैनिक स्थानमे।

एहिमे गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक "निम्नवर्गक अदृश्यता" (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे बुद्धिजीवी-वर्ग दलितकेँ खोजय चाहैत अछि मुदा ओहि स्थानमे जतय ओ नहि अछि) सिद्धांत काव्यिक रूप धारण करैत अछि।

"जँ अहाँ सकैत छी / तऽ कृपया हमरा पठाउ — / धूप भरल सुन्दर सपना सब। "

ई उलटा माँग थिक। दलित ठिकाना नहि दैत — सपना माँगैत अछि। ई व्यंग्य थिक: जे समाज दलितक पताक माँग करैत अछि — ओ स्वयं दलितकेँ सपना नहि दैत।

५. माछ-रूपकः विलुप्तिक कगार

"हम तैरि रहल छी एकटा छोट सपना-सजल माछ सन / एकटा विलुप्त होइत पोखरिक मुट्ठी भरि पानिमे। "

ई रूपक पर्यावरणीय आ सामाजिक विनाशकेँ एकहि बिम्बमे जोड़ैत अछि। पोखरि विलुप्त भऽ रहल अछि — ई भारतक कृषि-जल-संकटक सन्दर्भ थिक। माछ — जे दलित-जातिसभक पारम्परिक जीविका थिक — "मुट्ठी भरि पानिमे" जीबैत अछि।

"सपना-सजल माछ" — ई बिम्ब अत्यन्त सुन्दर आ दुखद दूनू थिक। माछ सपना राखैत अछि — मुदा पोखरि सुकाइत जा रहल अछि।

उमेश सोलंकीक लोक, जमि जाय मे "जमाव" परिवर्तनक माँग छल। सुनानीक "विलुप्त होइत पोखरि" — ई परिवर्तनक अनुपस्थितिक परिणाम दर्शाबैत अछि।

"की हम समुद्रमे कूदि पड़ी ओकरा अमृत देबा लेल / वा गहीर खनि कऽ धक्का दी बासुकी नागक कोमल मुँड़केँ / जे संसारकेँ सन्तुलित रखने अछि? "

ई पौराणिक दुविधा थिक। बासुकी नाग — जे समुद्र-मन्थनमे रस्सी बनल छल — संसारकेँ सन्तुलित रखने अछि। दलित-व्यक्ति पुछैत अछि: की हम व्यवस्थाकेँ अमृत दी (अर्थात् योगदान करी) वा व्यवस्थाकेँ हिला दी (बासुकीकेँ धक्का दी)?

ई क्रान्ति बनाम सहयोगक दार्शनिक प्रश्न थिक — जे समस्त दलित राजनीतिक-दार्शनिक परम्पराक मूल प्रश्न थिक।

६. सदानन्द: लघुकथा-काव्य आ किसान-दृष्टि

सदानन्द कविता एहि शृंखलाक सर्वथा भिन्न स्वर थिक। पूर्ववर्ती दूनू कवितामे काव्यिक "हम" — एकटा अमूर्त, सामूहिक दलित-चेतना — वक्ता छल। एतय एकटा ठोस व्यक्ति — नाम, गाम, कारण सहित — उपस्थित अछि।

"हमर नाम सदानन्द अछि। / हमर गामक नाम नागाँव अछि। / हम किसान मेला लेल भुवनेश्वर आयल छी / सब सँ पैघ भिण्डी लेल राज्यपालक पुरस्कार लेबा लेल। "

ई आत्म-परिचय अत्यन्त सरल आ अत्यन्त गहिर थिक। साहित्यमे दलित-पात्र प्रायः अनामक, सामूहिक होइत अछि। सदानन्दकेँ नाम, गाम, आ उपलब्धि दैब — ई व्यक्तित्वक राजनीति थिक।

"सब सँ पैघ भिण्डी" — ई विवरण हास्यास्पद प्रतीत होइत अछि। मुदा एहिमे गहिर व्यंग्य अछि: किसान जे वर्षभरि खेतमे काज करैत अछि, ओकर सर्वोच्च सम्मान "सब सँ पैघ भिण्डी" थिक। ई कृषि-श्रमक अवमूल्यन आ किसानक सरलताक एकहि साथ चित्रण थिक।

समुद्र-दृश्यक विडम्बना

"समुद्र देखि कऽ अहाँ कहलहुँ / जे हम नै बुझलहुँ / बल्कि हम गलत बुझलहुँ — / लहर सभकेँ"

सदानन्द पहिल बेर समुद्र देखैत अछि। शहरी बुद्धिजीवी (जे "अहाँ" छथि) कहैत छथि — तूँ नहि बुझलही। सदानन्द स्वीकार करैत अछि: "शायद / हम गलत बुझलहुँ। "

मुदा कविताक अन्तमे ई "गलत बुझनाइ" एकटा सत्य-उद्घाटन बनि जाइत अछि:

"हमर इलाकामे अकाल किएक नै पड़त? / जखन सब पानि समुद्र पर बन्धक राखल अछि। "

सदानन्द समुद्र "गलत" बुझलनि — मुदा हुनकर "गलत बुझनाइ"मे एकटा राजनीतिक सत्य अछि जे बुद्धिजीवी देखैत नहि। समुद्र — जे भव्य, विशाल, आ प्रशंसित अछि — वास्तवमे किसानक पानिकेँ बन्धकमे राखनिहार थिक।

ई ज्ञान-मीमांसीय उलटपालट (जाहिमे "अशिक्षित" किसानक दृष्टि "शिक्षित" बुद्धिजीवीक दृष्टिसँ अधिक तीक्ष्ण प्रमाणित होइत अछि) अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थिक। गणेश देवीक "भाषाक पश्चात् भूलनाइ" (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे मौखिक-लोक-परम्पराक ज्ञान पुस्तकीय ज्ञानसँ अनेक बेर श्रेष्ठ होइत अछि) एतय काव्यिक प्रमाण पाबैत अछि।

७. "बगुला सँ कटि जाएब": खेलाड़ीपन आ विघ्न

"मुदा खेलाड़ीपनमे मग्न रहैत / सब सँ अशुभ क्षण पर / हम बगुला सँ कटि जाइत छी। "

"बगुला" — एकटा शिकारी पक्षी — जे माछ खाइत अछि। माछ-रूपक (जाहिमे दलित-अस्तित्व माछ थिक) क सन्दर्भमे — "बगुला सँ कटि जाएब" = व्यवस्थाद्वारा विनष्ट होएब।

"खेलाड़ीपनमे मग्न" — ई विडम्बना थिक: ठीक जहिया दलित-व्यक्ति स्वयंकेँ मुक्त, आनन्दित अनुभव करैत अछि — तहिया आघात आबैत अछि।

एहि बिम्बमे दलित-जीवनक अनिश्चितताक काव्यिक सत्य अछि: सुख सदैव अस्थायी थिक, संकट सदैव अकस्मात् आबैत अछि।

८. तुलनात्मक विश्लेषण: उड़िया बनाम तेलुगु-गुजराती

रहस्यवाद बनाम यथार्थवाद: तेलुगु दलित कविता (विशेषकरि सुभद्रा, शशिनिर्मला) कड़वा यथार्थवादी थिक — ठोस, इन्द्रिय-ग्राह्य। सुनानीक कविता रहस्यवादी-प्राकृतिक बिम्बसँ भरल — बूँद, बीउ, माछ, इन्द्रधनुष। ई उड़िया काव्य-परम्परा क प्रभाव थिक जाहिमे प्रकृति-बिम्बक दीर्घ परम्परा अछि।

आशावाद बनाम निराशावाद: गुजराती कवितामे (विशेषकरि सोलंकीक लोक, जमि जाय) क्रान्तिकारी उद्बोधन अछि। सुनानीक कवितामे आशा आ संशय दूनू एक साथ — बूँद इन्द्रधनुष देखैत अछि मुदा पोखरि सुकाइत अछि।

व्यक्तित्व बनाम सामूहिकता: सदानन्द मे एकटा ठोस व्यक्ति उपस्थित अछि — जे तेलुगु-गुजराती कवितामे प्रायः अनामक "हम" थिक। ई उड़िया कवितामे व्यक्तित्व-रक्षाक काव्यिक प्रतिबद्धता थिक।

बुद्धिजीवी-किसान विवाद: सदानन्द मे जे "अहाँ" (शहरी बुद्धिजीवी) आ "हम" (किसान) क संवाद अछि — ई तेलुगु-गुजराती कवितामे अनुपस्थित थिक। सुनानी एहि अन्तर्वर्गीय दलित-विवादकेँ काव्यमे लबैत छथि।

९. अनुवाद-शृंखलाक विशेष टिप्पणी

उड़िया→अंग्रेजी अनुवाद सैलेन राउत्रेद्वारा — एहिमे उड़िया काव्य-परम्पराक किछु विशिष्टता सुरक्षित रखल गेल अछि। "पाञ्चजन्य", "बासुकी नाग" — ई उड़िया-हिन्दू पौराणिक सन्दर्भ अंग्रेजीमे अनूदित नहि, मात्र लिप्यन्तरित कएल गेल — जे उचित निर्णय थिक।

मैथिलीमे गजेन्द्र ठाकुरक अनुवादमे "चिउँटीक टिमटिमाइत लाइन", "झाँझक ठनकार" — ई मैथिली-सुलभ बिम्ब मूल उड़ियाक संगीतात्मकता कें आंशिक रूपसँ सुरक्षित रखैत अछि।

निष्कर्ष

बासुदेव सुनानीक ई तीन काव्य-खण्ड — अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि, पता, सदानन्द — उड़िया दलित काव्यक एकटा विशिष्ट दार्शनिक-काव्यिक परम्परा प्रस्तुत करैत अछि।

पहिल खण्डमे — चेतावनी: किछु होएबाक बाकी अछि, विस्फोट आबि रहल अछि।

दोसर खण्डमे — साक्ष्य: हम सब ठाम छी मुदा अदृश्य छी, हमर पता "अन्हार गली" मे अछि।

तेसर खण्डमे — विडम्बना: सदानन्द "गलत बुझलनि" — मुदा हुनकर गलत बुझनाइमे सत्य अछि जे बुद्धिजीवी देखि नहि सकैत।

तीनू मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण दलित-अस्तित्व-दर्शन प्रस्तुत करैत अछि: हम उपस्थित छी (साक्ष्य), हम बदलाव आनब (चेतावनी), हम अपन दृष्टिसँ सत्य देखैत छी (विडम्बना-खण्डन) ।

अन्तिम पंक्ति — "कारण हम अखनहुँ रहैत छी ओही अन्हार गलीमे / जतय हम सदिखन रहलहुँ। / सदिखन। " — एहि सम्पूर्ण संग्रहक, आ सम्भवतः समस्त भारतीय दलित काव्यक, सर्वाधिक शान्त आ सर्वाधिक शक्तिशाली अन्तिम शब्द थिक।

"सदिखन" — एहि एकटा शब्दमे इतिहास, वर्तमान, आ अदृश्यताक सम्पूर्ण भार अछि।

दलित लघुकथा समीक्षा: दू टा तेलुगु रचना

कोलकलुरी इनोचक कौआ आ विनोदिनीक कारी स्याही

प्रारम्भिक टिप्पणी

एहि समीक्षा-शृंखलामे अखन धरि हम काव्य क अध्ययन कएलहुँ। आब दू टा लघुकथा — कौआ आ कारी स्याही — प्रस्तुत अछि। ई दूनू रचना दलित साहित्यक गद्य-परम्परा क प्रतिनिधित्व करैत अछि, आ काव्यसँ भिन्न एकटा कथा-माध्यमक विशिष्ट शक्ति दर्शाबैत अछि।

दूनू कथाक बीच एकटा काव्यात्मक विरोधाभास अछि: कौआ बाहरी यथार्थ — समुदाय, अनुष्ठान, शक्ति-सम्बन्ध — क कथा थिक; कारी स्याही आन्तरिक यथार्थ — व्यक्तिगत सम्बन्ध, बाल-मनोविज्ञान, आ जातिक क्षण-भर-मे-प्रकट-होएबाक — क कथा थिक। दूनू मिलिकऽ दलित-अनुभवक बाह्य आ आन्तरिक दूनू आयाम उजागर करैत अछि।

१. कौआ: कथा-संरचना आ शिल्प

आख्यान-दृष्टि

कथा तृतीय-पुरुष सर्वज्ञ (सर्वज्ञ कथावाचक) दृष्टिकोणसँ लिखल गेल अछि — मुदा ई सर्वज्ञता चयनात्मक अछि। कथाकार अव्वाक मनक हालत जनैत छथि, बण्डोडुक इतिहास जनैत छथि, कौआसभक व्यवहार जनैत छथि — मुदा कहियो निर्णय नहि दैत। ई तटस्थ-आख्यान (तटस्थ आख्यान) एकटा विशिष्ट कथा-प्रभाव सृजित करैत अछि: पाठक स्वयं निर्णय लैत अछि।

कालक्रम आ सूचना

कथाक संरचना घटनाक बीचसँ आरम्भ थिक — कौआसभ पहिनेसँ काँव-काँव कऽ रहल अछि, बण्डोडु पहिनेसँ कार्यरत अछि। प्रसंग-सूचना (पृष्ठकथा) — बण्डोडुक जाति, हुनकर आचार-विधि, परिवारक दुर्दशा — क्रमशः, कथाक बीचमे, अनायास रूपसँ प्रकट होइत अछि।

ई विलम्बित-सूचना (विलम्बित उद्घाटन) तकनीक पाठककेँ पहिने कथाक सतहपर खेँचैत अछि — कौआक हलचल, बण्डोडुक उपस्थिति — आ तखन धीरे-धीरे सामाजिक जटिलता उजागर होइत अछि।

कथाक त्रि-स्तरीय संरचना

पहिल स्तर — घटना: कौआसभ काँव-काँव करैत अछि, झोपड़ी घेराएल अछि, बण्डोडु भोजन माँगैत अछि।

दोसर स्तर — सामाजिक व्याख्या: बण्डोडुक जाति, हुनकर विधि, कौआ-बण्डोडु सम्बन्ध, मादिग समुदायक प्रतिक्रिया।

तेसर स्तर — दार्शनिक प्रश्न: मुक्ति आ श्राप कि एकहि वस्तु? कौआ आ बण्डोडु शत्रु वा परिवार?

२. कौआ: बण्डोडु — एकटा अद्वितीय साहित्यिक चरित्र

बण्डोडु तेलुगु दलित साहित्यमे — सम्भवतः समस्त भारतीय साहित्यमे — एकटा अद्वितीय चरित्र थिक। ओ दलितमे सबसँ नीचाँ— दसम उप-जाति, जे मात्र मादिगसभसँ भिक्षा माँगिकऽ जीबैत अछि।

चरित्रक विरोधाभास

बण्डोडु शक्तिहीन थिक — भिखारी, जातिक सबसँ निम्न। मुदा ओ शक्तिशाली सेहो थिक — "हठी राजासँ शक्तिशाली", कौआसभकेँ नियन्त्रित करैत, पूरा समुदायकेँ बन्धक बनाबैत।

ई विरोधाभासी शक्ति कतयसँ आबैत अछि? कथा कहैत अछि: हुनकर एकमात्र विशेषज्ञता — कौआ मारब — ओहि समाजमे एकटा अद्वितीय सत्ता दैत अछि जतय कौआकेँ कोनो ध्वंश नहि करैत।

एहि चरित्र-निर्माणमे मिशेल फूको क सत्ता-सिद्धांत (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे सत्ता सदैव ऊपरसँ नहि आबैत, ओ विशेषज्ञताक स्थानीय बिन्दुसभमे निहित होइत अछि) साकार होइत अछि। बण्डोडुक सत्ता हुनकर जातिसँ नहि — हुनकर अद्वितीय ज्ञानसँ आबैत अछि।

बण्डोडु आ "घृणित" क राजनीति

"बण्डोडु जका घृणित भिखारी दुनियामे कतहियो नै देखल जा सकै छै। " — कथाकार एहि वाक्यमे समाजक दृष्टि प्रस्तुत करैत छथि। मुदा ओही समाज बण्डोडुसँ डरल सेहो अछि।

जूलिया क्रिस्तेवा क घृणित-सिद्धांत एतय अत्यन्त प्रासंगिक अछि: बण्डोडु समाजक "घृणित-बहिष्कृत" (घृणित-बहिष्कृत) छथि — मुदा ओही घृणाक कारण ओ अपरिहार्य सेहो छथि। जे "घृणित" मानल जाइत अछि — कौआ-मांस, उल्टी, दुर्गन्ध — ओहि सबपर बण्डोडुक एकाधिकार हुनका एकटा विचित्र सत्ता दैत अछि।

३. कौआ: कौआ-रूपकक बहुस्तरीयता

कौआ एहि कथामे मात्र एकटा पक्षी नहि — ओ बहुस्तरीय रूपक थिक।

कौआ बनाम समाज

भारतीय लोक-परम्परामे कौआ पूर्वजक आत्मा, अशुभ-सूचक, सामूहिक स्मृतिक प्रतीक थिक। एहि कथामे कौआसभ एकटा सामूहिक न्याय-व्यवस्था स्थापित करैत अछि — जे मानव-समाजक न्याय-व्यवस्थासँ अधिक प्रत्यक्ष आ तत्काल अछि।

जखन बण्डोडुकेँ भोजन नहि मिलैत — कौआ प्रतिशोध लैत अछि। ई स्वतःस्फूर्त न्याय थिक — कोनो न्यायालय नहि, कोनो कानून नहि।

कौआ-बण्डोडु सम्बन्ध

कथाक सर्वाधिक दार्शनिक प्रश्न: "का कौआ आ बण्डोडु दुश्मन अछि? वा, ओ एक-दोसराक परिवार (अपन) अछि? "

ई प्रश्नक कोनो सरल उत्तर नहि। बण्डोडु कौआ मारैत अछि — मुदा कौआ बण्डोडुक समर्थनमे काँव-काँव करैत अछि। दूनू एकहि सामाजिक हाशिया पर छथि — दूनू समाजद्वारा अनुपयोगी, दूनू एकहि अदृश्यतामे जीबैत। एहि हाशिया-एकजुटता (हाशियाक एकजुटता) मे कथाक मूल तर्क निहित अछि।

४. कौआः "मुक्ति एक श्राप मात्र अछि" — केन्द्रीय विरोधाभास

कथाक दार्शनिक चरम-बिन्दु थिक:

"बण्डोडु फिनु कहियो ओइ घरमे भीख माँगबा लेल नै आबत। ई एक मुक्ति (सैल्वेशन) अछि। मुक्ति एक श्राप (कर्स) मात्र अछि। तखनसँ, ई एक एहन घर होत जतऽ कौआ नै बैसै। एक एहनघर जतऽ बण्डोडु भीख नै माँगै। ई अपमान (इन्सल्ट) क बात अछि। एक बहिष्कार (एक्सकम्युनिकेशन)! "

एहि विरोधाभासमे दलित-सामाजिक-यथार्थक गहनतम अन्तर्दृष्टि निहित अछि:

बण्डोडुक नहि आएब = मुक्ति (हुनकर भिक्षा-बोझसँ मुक्ति) ।

बण्डोडुक नहि आएब = श्राप (ओहि घरक सामाजिक-अनुष्ठानिक मृत्यु) ।

कौआक नहि बैसब = मुक्ति (हमलासँ मुक्ति) ।

कौआक नहि बैसब = श्राप (ओहि घर अपमानित, बहिष्कृत) ।

ई मुक्ति=श्राप समीकरण दलित-सामाजिक-व्यवस्थाक एकटा क्रूर सत्य उजागर करैत अछि: एहि व्यवस्थामे मुक्ति आ बन्धन एकहि वस्तु थिक। जे बाहर जाइत अछि, ओ बहिष्कृत होइत अछि। जे भीतर रहैत अछि, ओ शोषित होइत अछि। कोनो तेसर विकल्प नहि।

विजयश्रीक अलिसम्माक स्राप मे "स्राप मानवतामे परिणत करबाक" थिक। इनोचक कथामे "मुक्ति स्वयं श्राप थिक। " दूनू मिलिकऽ दलित-अनुभवक विरोधाभासी यथार्थ सम्पूर्णतासँ व्यक्त करैत अछि।

५. कौआः गरीबी आ नैतिक जटिलता

कथाक एकटा महत्त्वपूर्ण आयाम: अव्वाक परिवार पीड़ित नहि, असहाय अछि।

"हुनका लेल एकरा कोनो फरक नै पड़ै छल कि ओ बण्डोडुक विनती सुनैत छथि वा नै। ओ किछु कऽ नै सकैत छल। "

ई गरीबीक नैतिक जटिलता थिक। कथा बण्डोडुकेँ पीड़ित देखाबैत अछि — मुदा अव्वाक परिवारकेँ खलनायक नहि देखाबैत अछि। दूनू व्यवस्थाक शिकार छथि — बस हुनकर शिकार-स्तर भिन्न अछि।

एहि नैतिक-जटिलताक प्रस्तुति इनोचक कथा-शिल्पक सर्वोच्च उपलब्धि थिक। दलित साहित्यमे कहियो-कहियो उत्पीड़क-पीड़ित क सरल द्विभाजन प्रस्तुत होइत अछि। इनोच एहिसँ आगाँ जाकऽ बहुस्तरीय उत्पीड़न देखाबैत छथि।

६. कारी स्याहीः कथा-संरचना आ शिल्प

प्रथम-पुरुष आख्यान

कारी स्याही प्रथम-पुरुष मे लिखल गेल अछि — "हम" वक्ता एकटा दलित-ईसाई स्त्री छथि। ई आख्यान-दृष्टि कौआ सँ मौलिक रूपसँ भिन्न अछि। एतय अनुभवक आन्तरिकता — घटना जेना अनुभव होइत तेना — कथाक केन्द्र थिक।

विलम्बित-प्रकाशन

कथाक संरचनागत आश्चर्य थिक: पूरा कथा एकटा निर्दोष, आनन्दपूर्ण बच्ची-आगन्तुकक मीठ प्रसंगक रूपमे चलैत अछि — आ अचानक, अन्तिम एक-तिहाईमे, जाति-प्रश्न आबैत अछि आ सम्पूर्ण आनन्दकेँ एकहि क्षणमे विनष्ट कऽ दैत अछि।

ई विलम्बित-प्रकाशन (विलम्बित-प्रकटन) तकनीक अत्यन्त प्रभावशाली थिक। यदि कथा आरम्भसँे जाति-संघर्षक होइत — पाठक मानसिक रूपसँ तैयार रहित। जाहिमे सब किछु सुन्दर आ निर्दोष लागैत हो, तहिमे जातिक अकस्मात् प्रकटन पाठककेँ उसी यातनासँ आहत करैत अछि जे वक्ताकेँ।

भाषाक दू स्तर

कथामे दू भाषाई स्तर एक साथ अछि:

पहिल — काव्यात्मक-रूपकात्मक भाषा (जे बच्चीक वर्णनमे प्रयुक्त): "तितलीक पंखसँ बुनल फ्रॉक", "मुस्कानक काफिला", "चाँदनीमे डुबल पंखुड़ी", "इन्द्रधनुषक चमक"।

दोसर — नग्न-यथार्थवादी भाषा (जे जाति-प्रश्नक पश्चात्): "का अहाँ हरिजन छी? ", "हमर कोनो हरिजन दोस्त नहि। "

ई भाषाई विभाजन कथाक थीमेटिक विभाजनकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि: जातिसँ पहिले — सौन्दर्य, निर्दोषता, मानवीय सम्बन्ध। जातिक प्रकटन — भाषाक सौन्दर्य विनष्ट।

७. कारी स्याहीः श्रिया — एकटा जटिल बाल-चरित्र

श्रिया एहि कथाक सर्वाधिक जटिल साहित्यिक उपलब्धि थिक। ओ एकहि साथ:

निर्दोष — पशुपर दया, डायरी लिखनाइ, वृद्धाक सहायता।

जिज्ञासु — सब किछु जानय चाहब, प्रश्न पुछब।

प्रेमिल — वक्तासँ स्वाभाविक स्नेह।

जाति-संस्कारित — माता-पिताक जाति-पूर्वग्रहक अचेतन वाहक।

ई चरित्र-जटिलता जाति-समाजीकरणक (जाति-संस्कारण) सर्वाधिक सूक्ष्म चित्रण थिक। श्रिया जानबूझिकऽ जाति-भेद नहि करैत — ओ सिखाएल गेल अछि। हुनकर माता-पिताक "कोनो हरिजन दोस्त नहि" — ई श्रियामे स्वाभाविक बनि गेल अछि।

पियाज़े (पियाजे) क बाल-विकास सिद्धांत (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे बच्चा सामाजिक नियम अनुकरणसँ सीखैत अछि, तर्कसँ नहि) एतय साकार होइत अछि। श्रिया अपन माता-पिताकजाति-व्यवहारक अनुकरण करैत अछि — बिना बुझने कि एहिसँ कोनो नैतिक समस्या अछि।

एहि चरित्रक माध्यमसँ विनोदिनी एकटा कठिन प्रश्न पुछैत छथि: जाति-व्यवस्थाक पुनर्उत्पादन (पुनरुत्पादन) कतय होइत अछि? माता-पिताक स्पष्ट शिक्षा मे — मुदा ओहुसँ अधिक, हुनकर मौन व्यवहारमे, जे बच्चा स्वाभाविक बनि लैत अछि।

८. कारी स्याहीः "कारी स्याही" रूपक

शीर्षक-रूपक — कारी स्याही — कथाक कथा-भीतर परिभाषित होइत अछि:

"हम जे बेसी पसिन्न करै छी, ओकरा नीला स्याहीमे लिखै छी; हम जे नापसिन्न करै छी, ओकरा कारी स्याहीमे लिखै छी। "

श्रिया नीला स्याही = प्रेम, पसिन्न।

श्रिया कारी स्याही = घृणा, नापसिन्न।

कथाक अन्तमे — वक्ता दलित-ईसाई "कारी स्याही" मे लिखल जाएत। ई रूपकक विस्फोट थिक।

मुदा एहि रूपकमे एकटा अतिरिक्त परत अछि: "कारी" (काली) — दलित-देहक वर्ण, जकरा समाज हमेशासँ नकारात्मक मानैत अछि। श्रियाक कारी स्याही = "काला" रंगक नकारात्मकता = वर्ण-जाति-संगम (रंग-जाति सम्बन्ध) ।

फ्रान्ट्ज फानों कारी चमड़ी, उज्जर मुखौटा (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे उपनिवेशित-काला व्यक्ति अपन कालेपनकेँ उपनिवेशक दृष्टिसँ नकारात्मक देखय लगैत अछि) क भारतीय-जातीय संस्करण एतय प्रकट होइत अछि।

९. कारी स्याही: "महिमा" — अनुपस्थित चरित्रक उपस्थिति

कथामे एकटा अनुपस्थित चरित्र — महिमा — अत्यन्त महत्त्वपूर्ण थिक।

"एक बेर हम अपन दोस्त महिमाक घरमे हुनकर माए द्वारा परोसल नाश्ता खेलियै। से हम कारी स्याहीमे लिखलियै। "

महिमा "हरिजन" थिक — श्रिया स्वयं कहैत अछि। हुनकर घरमे खाएब "कारी स्याही" योग्य थिक।

मुदा श्रिया महिमासँ दोस्ती करैत अछि — मात्र हुनकर घरमे खाएब वर्जित अछि। ई जाति-व्यवहारक सूक्ष्म विभाजन दर्शाबैत अछि: व्यक्तिगत सम्पर्क सम्भव, मुदा भोजन-साझेदारी — जे जातिक सर्वाधिक गहिर वर्जना थिक — असम्भव।

बी. आर. आम्बेडकर जाति-विच्छेद मे कहने छलाह जे जाति-व्यवस्थाक सर्वाधिक दृढ़ नियम रोटी-बेटी (खाएब-विवाह) क नियम थिक। श्रियाक व्यवहार एहि "रोटी" नियमकेँ बाल-मस्तिष्कमे दर्शाबैत अछि।

१०. कारी स्याही: अन्तिम बिम्ब — तितली आ कैटरपिलर

कथाक अन्तिम पंक्ति:

"पूरा कमरामे सूखल तितली सभ हमरापर रेंगैत कैटरपिलरमे बदलि गेल। "

ई रूपकात्मक परिवर्तन सम्पूर्ण कथाक काव्यिक सार थिक।

कथाक आरम्भमे श्रिया तितली छल — सुन्दर, स्वतन्त्र, उड़नशील। कथाक अन्तमे ओ कैटरपिलर (सुगा) बनि जाइत अछि — रेंगनिहार, धरतीसँ लागल, कुरूप।

"सूखल तितली" — मृत सौन्दर्यक प्रतीक। जे जीवन्त लागैत छल — ओ वास्तवमे मृत छल।

ई बिम्बमे सम्पूर्ण कथाक विचार-सार अछि: बाल-निर्दोषता जे तितली लागैत अछि — ओ वास्तवमे जाति-संस्कारक कैटरपिलर थिक। सौन्दर्य जे मुस्कान लागैत छल — ओ जाति-घृणाक आवरण छल। उड़नाइ जे स्वतन्त्रता लागैत छल — ओ विशेषाधिकार छल।

वर्जीनिया वुल्फ क चेतना-प्रवाह तकनीकक उपयोग — जाहिमे वक्ताक आन्तरिक अनुभव बाह्य घटनासँ मिलिकऽ एकाकार होइत अछि — एतय विनोदिनी भारतीय-दलित सन्दर्भमे अत्यन्त प्रभावशाली रूपसँ प्रयुक्त करैत छथि।

११. दूनू कथाक तुलना: दू काव्य-दृष्टि

विषय-वस्तुक समानता

दूनू कथामे जाति-व्यवस्था केन्द्रमे थिक। दूनूमे अनुष्ठान आ आचार (अनुष्ठान आ व्यवहार) — भोजन देएब, दोस्ती करब — जाति-रेखाकेँ दर्शाबैत अछि।

दृष्टिकोणक भेद

कौआ — समुदाय-स्तर पर जाति-व्यवस्था: एकटा पूरा समुदायक अनुष्ठानिक जीवन।

कारी स्याही — व्यक्तिगत-स्तर पर जाति-व्यवस्था: एकटा सम्बन्धमे जातिक अकस्मात् प्रकटन।

समय-बोधक भेद

कौआ — सदियों पुरान व्यवस्था। "बण्डोडु हर राति एक विशेष परिवारमे भोजन माँगै लेल आबै छथि। " — ई चिरकालीन अनुष्ठान थिक।

कारी स्याही — एक दिनक घटना। मुदा ओहि एक दिनमे सदियों पुरान व्यवस्था प्रकट होइत अछि।

लिंग-आयाम

कौआ — वक्ता पुरुष-लेखक (इनोच), केन्द्रीय चरित्र पुरुष (बण्डोडु), मुदा स्त्री (अव्वा) कथाक नैतिक केन्द्र।

कारी स्याही — स्त्री-लेखक (विनोदिनी), स्त्री-वक्ता, स्त्री-बालिका (श्रिया) — सम्पूर्णतः स्त्री-केन्द्रित।

१२. काव्य बनाम कथा: माध्यमक विशिष्टता

एहि दू लघुकथाक समीक्षासँ एकटा महत्त्वपूर्ण साहित्यिक प्रश्न उठैत अछि: दलित-अनुभवक अभिव्यक्तिक लेल काव्य बनाम गद्य — कोन माध्यम अधिक शक्तिशाली?

काव्यक शक्ति: तीव्रता, घनत्व, संकेत। भीमन्नाक जरैत खोपड़ी सभ, गौरीक मेहदी लागल हाथ — ई कवितासभ एकटा क्षणकेँ अनन्त बनाबैत अछि।

गद्यक शक्ति: विस्तार, जटिलता, बाल-मनोविज्ञान, सामाजिक-अनुष्ठानक विवरण। कारी स्याही मे श्रियाक क्रमिक परिवर्तन — मुस्कानसँ घृणा धरि — केवल गद्यमे इतेक प्रभावशाली रूपसँ सम्भव छल।

कौआ मे बण्डोडुक जटिल सामाजिक स्थिति — दलितमे दलित, शक्तिहीनमे शक्तिशाली — काव्यमे एतेक विस्तारसँ नहि आबि सकैत छल।

दूनू माध्यम परस्पर-पूरक थिक। दलित साहित्यक सम्पूर्णता काव्य आ गद्य — दूनूमे अछि।

निष्कर्ष

कोलकलुरी इनोचक कौआ आ विनोदिनीक कारी स्याही — दूनू मिलिकऽ तेलुगु दलित गद्य-साहित्यक दू महत्त्वपूर्ण उपलब्धि थिक।

कौआ — बाहरी व्यवस्थाक जटिलता: मुक्ति आ श्राप एकहि, शक्तिहीनमे शक्ति, घृणित मे अपरिहार्य। एकटा समुदाय-स्तरीय दर्शन।

कारी स्याही — आन्तरिक अनुभवक यातना: निर्दोषताक आवरणमे जाति-घृणा, एकटा मुस्कानमे छुपल कैटरपिलर। एकटा व्यक्तिगत-स्तरीय आघात।

दूनू कथाक अन्तिम प्रश्न एकहि थिक:

कौआ — "गरीबीक कारण भोजन नहि देबा लेल, एतेक प्रतिशोधक होएबाक चाही? "

कारी स्याही — "दोस्त छी, आ ई सब जानब आवश्यक अछि? "

दूनू प्रश्न अनुत्तरित रहैत अछि — पाठककेँ, समाजकेँ, इतिहासकेँ उत्तर देबाक लेल।

आ जाधरि ई उत्तर नहि आएत, ताधरि दलित साहित्य — काव्यमे, गद्यमे, मैथिलीमे, तेलुगुमे — प्रश्न करैत रहत।

साहित्यिक समीक्षा: सदा लेल मित्र (जिगिरी)

पेद्दिंति अशोक कुमारक तेलुगु उपन्यास

प्रारम्भिक टिप्पणी

सदा लेल मित्र (मूल तेलुगु: जिगिरी) एहि समीक्षा-शृंखलामे अखन धरि अध्ययन कएल गेल समस्त रचनासँ संरचनागत रूपसँ भिन्न अछि। कविता आ लघुकथाक पश्चात् एकटा पूर्ण उपन्यासक अंश प्रस्तुत अछि — आ ई अंश उपन्यासक सम्पूर्ण भावनात्मक-दार्शनिक यात्राकेँ आवृत्त करैत अछि।

एहि उपन्यासक केन्द्रमे एकटा असाधारण मैत्री थिक — एकटा मनुष्यक (ईमाम) आ एकटा भालूक (शादुल) बीच — जे दलित-हाशिया-कलन्दर समुदायक सामाजिक-राजनीतिक संकटक मेटाफर बनि जाइत अछि। एहि अर्थमे ई उपन्यास दलित-आदिवासी साहित्यक एकटा नव आयाम उद्घाटित करैत अछि: जाति नहि, जातीय-सांस्कृतिक विलुप्ति केन्द्रमे अछि।

१. उपन्यासक संरचना आ तकनीक

आरम्भ: घटनाक बीचसँ आरम्भ

उपन्यासक आरम्भ एकटा विलम्बित-प्रकटन तकनीकसँ होइत अछि। पहिल पंक्तिमे — "सूरज उगलै। सूरज सेहो अस्त भऽ गेलै। " — एकटा ब्रह्माण्डीय उदासीनता व्यक्त होइत अछि। सूरजकेँकोनो फरक नहि पड़ैत — ईमाम अछि वा नहि। ई अस्तित्ववादी उद्घाटन उपन्यासक मूल प्रश्नकेँ — की मनुष्यक अस्तित्वक कोनो मूल्य अछि? — पहिले पंक्तिसँे स्थापित करैत अछि।

ईमाम आ शादुलक परिचय तुलनात्मक रूपसँ होइत अछि:

"ईमाम, एकटा मनुष्य, जे अपन पशुक चारू कात पशु जकाँ घूमैत छल" — आ "शादुल... वास्तवमे मनुष्य नै, बल्कि एकटा पशु छल... एकटा सौम्य प्राणी बनि गेल छल। "

एहि विलोम-परिचयमे उपन्यासक केन्द्रीय विरोधाभास अछि: मनुष्य पशु जकाँ, पशु मनुष्य जकाँ। एहि विरोधाभासमे कलन्दर-समुदायक मनुष्यताहरण आ शादुलक मानवीकरण एकहि साथ व्यक्त होइत अछि।

काल-प्रवाह

उपन्यासक कालक्रम रैखिक नहि — ई वर्तमान-भूत-भविष्यक त्रिकोणमे चलैत अछि। वर्तमानमे — ईमामक अनुपस्थिति, बिबम्मा आ चाँदक प्रतीक्षा। भूतकालमे — शादुलकेँ पकड़बाक रात्रि, बीस वर्षक संगति, मल्ला रेड्डीसँ संघर्ष। भविष्यमे — जमीनक सपना, नव जीवनक आकाङ्क्षा।

ई अरैखिक आख्यान (असरल आख्यान) उपन्यासमे स्मृति आ यथार्थक बीच एकटा निरन्तर तनाव सृजित करैत अछि।

२. चरित्र-विश्लेषण

ईमाम: त्रासदीक नायक

ईमाम एकटा क्लासिक त्रासद नायक थिक। हुनकर त्रासद दोष — जँ एकरा दोष कहल जा सकय — थिक हुनकर प्रेमक अपरिमितता। ओ शादुलसँ एतेक प्रेम करैत छथि जे व्यावहारिक यथार्थकेँ स्वीकार करैत नहि बनैत।

मुदा एहि उपन्यासमे ईमामकेँ "दोष" देनाइ अनुचित होएत। हुनकर त्रासदी व्यक्तिगत कमजोरीसँ नहि — सामाजिक-राजनीतिक व्यवस्थासँ उत्पन्न अछि। जमीन-अधिकार, पुलिस-उत्पीड़न, पशु-संरक्षण कानून — ई सब मिलिकऽ ईमामकेँ असम्भव चुनावक सामना करबैत अछि: अपन मित्र वा अपन परिवारक भविष्य।

ईमामक आन्तरिक एकालाप — "आँखि मूँदि कऽ हमरा पर पूरा विश्वास करैत हमर पाछू-पाछू किएक चलि रहल छी शादुल? किएक नै हमरा मारि दइत छी? " — अपराधबोध आ असहायता दूनूकेँ एकहि साथ व्यक्त करैत अछि। ई आत्म-आरोप उपन्यासक सर्वाधिक मार्मिक क्षणसभमे सँ एक थिक।

शादुल: मानवीय पशु

शादुलक चरित्र उपन्यासक सर्वाधिक साहित्यिक उपलब्धि थिक। ओ न मात्र एकटा पशु, न मात्र एकटा रूपक — दूनूक एकत्व थिक।

शादुलक भावनात्मक बुद्धिमत्ता अत्यन्त सूक्ष्मतासँ चित्रित अछि: "ईमामक आवाजक लहजासँ, शादुल स्थितिक अन्दाज लगा लैत छल। " ओ ईमामक खुशी-दुख, भय-आशा — सब पढ़ि लैत अछि। बिना शब्दक, बिना भाषाक, ओ सर्वाधिक संवेदनशील सदस्य थिक ओहि परिवारक।

अन्तिम दृश्यमे — "शादुल आबि कऽ ओकरा बगलमे बैसि गेल, अपन मुँड़ ईमामक कोरामे राखि कऽ" — ई निष्कपट प्रेम (बिना शर्तक प्रेम) थिक। शादुल जानैत नहि जे ईमाम ओकर हत्याक योजना बना रहल छथि — आ एहि अनजानपनमे विश्वासघातक सर्वोच्च यातना अछि।

बिबम्मा: परिवर्तनक प्रतीक

बिबम्मा उपन्यासमे सर्वाधिक जटिल स्त्री-चरित्र थिक। ओ शादुलकेँ "पिछला जन्ममे हमर बच्चा रहल हएत" कहैत छलीह — आ ओही स्त्री अन्तमे शादुलकेँ त्यागबाक लेल हुनकर पतिकेँ उकसाबैत छथि।

ई नैतिक रूपान्तरण (नैतिक परिवर्तन) कोनो विलेनी (खलनायकी) नहि — जीवन-रक्षा-वृत्ति (जीवन-वृत्तिक) परिणाम थिक। जमीनक सपना — जे पहिले कहियो सम्भव नहि लागल छल — ओ सपना देखिकऽ बिबम्माक प्राथमिकता बदलि गेल।

एहि चरित्रमे नैतिक द्विविधा (नैतिक द्विधा) उपन्यासक सर्वाधिक यथार्थवादी पक्ष थिक। न बिबम्मा खलनायिका, न पीड़िता — ओ मानव थिक जे असम्भव परिस्थितिमे जीवनक चुनाव करैत अछि।

चाँद: नव पीढ़ीक आकाङ्क्षा आ क्रूरता

चाँद उपन्यासक सर्वाधिक विवादास्पद चरित्र थिक। एक दिससँ — ओ शादुलसँ प्रेम करैत छल, ओकरा "दू टा बाबू" मानैत छल। दोसर दिससँ — ओ शादुलकेँ जीवितहि गाड़बाक योजना बनाबैत अछि।

ई विरोधाभास पीढ़ीगत परिवर्तन (पीढ़ी-परिवर्तन) क प्रतीक थिक। चाँदक पीढ़ीक लेल जमीन-स्थायित्व शादुलक प्रेमसँ अधिक महत्त्वपूर्ण अछि। ओ नव भारतक प्रतीक थिक — जे परम्परागत बन्धनसँ मुक्त होयबाक इच्छा रखैत अछि, मुदा एहि मुक्तिक कीमत नहि देखैत।

कार्ल मार्क्स क अलगाव सिद्धान्तक एकटा नव आयाम एतय प्रकट होइत अछि: चाँद अपन सांस्कृतिक पहचानसँ अलगाएल अछि। शादुल मात्र एकटा भालू नहि — ओ कलन्दर-संस्कृतिक जीवित प्रतीक थिक। चाँद जखन शादुलकेँ त्यागैत अछि, ओ वास्तवमे अपन समुदायक इतिहासकेँ त्यागैत अछि।

३. भालू-नाचः सांस्कृतिक अर्थशास्त्र

उपन्यासक केन्द्रीय सांस्कृतिक-आर्थिक संघर्ष थिक: पशु-संरक्षण कानून बनाम कलन्दर-जीविका।

कानूनक विरोधाभास

भारतमे १९७२क वन्यजीव संरक्षण अधिनियम आ बादमे पशु क्रूरता निवारण अधिनियम कलन्दर सभक परम्परागत व्यवसाय — भालू-नाच — केँ अवैध घोषित कएलक। एहि कानूनक नैतिक आधार थिक: पशुक कल्याण। मुदा एकर अनैच्छिक परिणाम थिक: कलन्दर समुदायक आर्थिक विनाश।

उपन्यास एहि विरोधाभासकेँ न्यायसंगत ढंगसँ प्रस्तुत करैत अछि — कानूनकेँ न सरल रूपसँ समर्थन, न सरल रूपसँ विरोध। ईमाम शादुलकेँ प्रेम करैत छथि — ओ क्रूर नहि। मुदा शादुलक बिना हुनकर जीविका नहि।

अमर्त्य सेन क क्षमता-दृष्टि (क्षमता-दृष्टिकोण) — जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे मानव-विकास मात्र आर्थिक नहि, सांस्कृतिक-सामाजिक क्षमताक पूर्ण विकास थिक — एतय प्रासंगिक अछि। कलन्दरसभसँ हुनकर परम्परागत कौशल, हुनकर सांस्कृतिक पहचान, आ हुनकर आजीविका — तीनू एकहि साथ छीनल जा रहल अछि।

भालू-नाचक सौन्दर्यशास्त्र

उपन्यासमे शादुलक करतबसभक वर्णन — "बटुकम्मा नृत्य, रोटी तैयार करब, घोड़ा पर चढ़ब..." — एकटा लोक-सौन्दर्यशास्त्रक अभिलेखीकरण थिक। ई करतब मात्र मनोरंजन नहि — एहिमे पीढ़ी-दर-पीढ़ी हस्तान्तरित ज्ञान निहित अछि।

गणेश देवी क "विस्मृतिक बाद" (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे आदिवासी-लोक ज्ञान-परम्परा सभकेँ भारतीय साहित्य-आलोचनाने अनदेखा कएल) — एतय प्रत्यक्षतः लागू होइत अछि। शादुलक करतब एकटा जीवित सांस्कृतिक धरोहर थिक जे नष्ट होइत अछि।

४. मैत्रीक दर्शनः उपन्यासक केन्द्रीय विचार

जिगिरी शब्दक अर्थ तेलुगुमे "जिगरी दोस्त" — सर्वाधिक घनिष्ठ मित्र। मुदा उपन्यासमे ई मैत्री मनुष्य-मनुष्यक बीच नहि, मनुष्य-पशुक बीच थिक।

मैत्रीक तत्त्व-विज्ञान

अल्बेर कामू "सिसिफसक मिथक" मे कहैत छथि जे एकजुटता — एकहि नियतिमे बँधल दू प्राणीक बीच — अर्थहीन जीवनमे अर्थ-सृजनक एकमात्र माध्यम थिक। ईमाम आ शादुलक मैत्री एहि कामू-सदृश एकजुटता क सर्वोत्तम उदाहरण थिक।

दूनू समाजक "घृणित-बहिष्कृत" (घृणित-बहिष्कृत) थिक। ईमाम — खानाबदोश, निम्न-जाति, अशिक्षित। शादुल — जंगली, अशुद्ध, खतरनाक। दूनूकेँ समाज उपयोगी मुदा अस्वीकार्य मानैत अछि।

"जकर कोनो आवाज नै अछि, ओकरा कौआ सभ सेहू हल्का मानि लै छथि" — कौआ लघुकथाक एहि पंक्तिक प्रतिध्वनि जिगिरी मे सेहो सुनाइत अछि। शादुल बाजि नहि सकैत — तेँ ओकर आवाजक अनुपस्थिति ओकरा समाजक दृष्टिमे कम महत्त्वपूर्ण बनाबैत अछि।

मैत्रीक विश्वासघात

उपन्यासक सर्वाधिक यातनादायक क्षण थिक: ईमाम जहरयुक्त गुड़ शादुलक हाथमे दैत छथि।

"गुड़ पकड़ाबैत काल ईमामक हाथ काँपि रहल छल। शादुल ओकरा लेलक आ चबाय लागल। ईमाम देखैत रहल, ओकर आँखि नोर सँ धुँधला छल। "

एहि दृश्यमे यहूदाक चुम्बन — विश्वासघातक पुराण-प्रतीक — क प्रतिध्वनि अछि। मुदा एतय ईमाम स्वेच्छासँ विश्वासघाती नहि — ओ असम्भव परिस्थितिमे असम्भव चुनाव करैत छथि।

एफ. दोस्तोयेव्स्की अपराध आ दण्ड मे दर्शाबैत छथि जे नैतिक अपराधबोध (नैतिक अपराध-बोध) हत्यासँ अधिक भयंकर होइत अछि। ईमाम शादुलकेँ शारीरिक रूपसँ मारि दैत छथि — मुदा आत्मिक रूपसँ स्वयं मरि जाइत छथि।

५. जमीन-प्रश्न: दलित-आदिवासी राजनीति

उपन्यासमे जमीनक पट्टा एकटा कथा-चालक वस्तु थिक — जे सम्पूर्ण कथा-तनावकेँ सञ्चालित करैत अछि।

जमीनक राजनीति

कलन्दरसभकेँ जमीन-अधिकारसँ ऐतिहासिक रूपसँ वञ्चित राखल गेल — कारण ओ भ्रमणशील छल। जे जमीनपर स्थाई रूपसँ नहि रहय, ओ जमीनक मालिक कइ प्रकारेँ हो? एहि प्रशासनिक तर्कमे कलन्दर-समुदायक सम्पूर्ण अस्तित्व-संकट निहित अछि।

एमआरओ (मण्डल राजस्व अधिकारी) जे शर्त रखैत अछि — "भालू फेर आसपास नै देखल जाय" — ई आधुनिक भारतीय राज्यक प्रतीक थिक। राज्य एकहि साथ कलन्दरकेँ जमीन दैत अछि (पुनर्वास) आ हुनकर पहचानकेँ नष्ट करैत अछि (भालू-त्याग) । ई विरोधाभासी आधुनिकीकरण थिक।

बुच्चैया: वर्गीय-जातीय प्रतिस्पर्धा

बुच्चैयाक प्रसंग — जे ईमामक नामपर अपन जमीन-अधिकार खोइत अछि — एकटा महत्त्वपूर्ण उप-कथा थिक। एहिमे दलितसभक आन्तरिक प्रतिस्पर्धा दर्शाएल गेल अछि: कलन्दर बनाम स्थानीय दलित — दूनू सीमित संसाधनक लेल प्रतिस्पर्धा करैत अछि।

ई हाशियाक भीतरक संघर्ष तेलुगु दलित कवितासभमे शशिनिर्मला जे देखाबैत छलीह — दलित पुरुषक दलित-स्त्री-उत्पीड़न — ओकर उपन्यास-रूप थिक।

६. भालू-पकड़बाक रात: लोक-ज्ञानक काव्यशास्त्र

उपन्यासमे भालू-पकड़बाक प्रसंग — ईमाम, बिबम्मा, आ मादा भालूक त्रिकोणीय संघर्ष — महाकाव्यिक गुण राखैत अछि।

"आगि देखि कऽ मादा भालू दू कदम पाछू हटि गेली। " — ईमाम जानैत छलाह जे भालू आगिसँ डराइत अछि। बिबम्मा जानैत छलीह जे सूखल खजूर-पात जरायब। दूनू मिलिकऽ एकटा सामूहिक देशज ज्ञान प्रयुक्त करैत छथि।

एहि प्रसंगमे तेलुगु दलित काव्यक देशज ज्ञान क महत्त्व — जे सुभद्रा, गौरी आदिक कवितामे देशज वनस्पति-ज्ञानक रूपमे प्रकट होइत छल — उपन्यासमे जीवन-रक्षाक व्यावहारिक ज्ञानक रूपमे प्रकट होइत अछि।

७. अन्तिम दृश्य: मौनक सौन्दर्यशास्त्र

उपन्यासक अन्तिम खण्ड — शादुलक मृत्यु — न्यूनतम भाषामे लिखल गेल अछि:

"किछु क्षणक बाद शादुल डगमगाबय लागल। ओ एकटा हल्का कराह भरलक आ ढहि पड़ल। ईमाम ओकरा बगलमे बैसल रहल, हाथ शादुलक मुँड़ पर राखि कऽ, जखन धरि भालूक साँस बन्द नै भऽ गेल। वन सन्न छल। "

ई न्यूनतम गद्य अत्यन्त शक्तिशाली थिक। जे कहल नहि गेल — ईमामक चिच्चायब, शादुलक छटपटाहट — ओ मौनमे अधिक मुखर अछि।

अर्नेस्ट हेमिंग्वे क "हिमशैल सिद्धान्त" (जाहिमे ओ तर्क करैत छथि जे उत्तम गद्यमे जे अनकहल रहैत अछि ओ कहलसँ अधिक शक्तिशाली होइत अछि) एतय सर्वोत्कृष्ट रूपसँ लागू होइत अछि।

"ईमाम अनुभव कएलक जे ओकर एकटा अंश शादुल संग मरि गेल। " — ई एकटा पंक्ति पाठकक हृदयमे एकटा अमोचनीय टीस छोड़ि जाइत अछि।

८. अनुवाद-शृंखलाः तेलुगु→अंग्रेजी→मैथिली

अनुवादकक टिप्पणीक महत्त्व

पी. जयलक्ष्मीक अनुवादक-टिप्पणी स्वयं एकटा महत्त्वपूर्ण पाठ-परिपाठ थिक। ओ "सांस्कृतिक अनुवाद" क अवधारणा उठाबैत छथि — जाहिमे भाषान्तरसँ अधिक सांस्कृतिक-संवेदनाक हस्तान्तरण आवश्यक थिक।

"स्थानीय रंग" (स्थानीय रंग) — उर्दू शब्द, तेलंगाना कहावत, देशज वनस्पति — एहि सबकेँ सुरक्षित रखब अनुवाद-नैतिकता क महत्त्वपूर्ण निर्णय थिक।

मैथिलीमे उर्दू

जिगिरी मे तेलंगानाक मुस्लिम-कलन्दर समुदायक उर्दू-मिश्रित भाषा — "अब्बा", "अम्मी", "अल्लाह", "शादुल" — मैथिलीमे यथावत् राखल गेल। एहिसँ दूटा काज भेल:

पहिल — तेलंगानाक सांस्कृतिक-भाषिक विशिष्टता सुरक्षित रहल। दोसर — मैथिली पाठककेँ एकटा भिन्न सांस्कृतिक ब्रह्माण्डसँ साक्षात्कार भेल।

लॉरेन्स वेन्यूटी क विदेशीपन-संरक्षण रणनीति (जाहिमे अनुवादक मूलक विदेशीपन कायम रखैत अछि) एतय प्रयुक्त अछि — आ ई उचित थिक।

९. जिगिरी आ दलित साहित्य-शृंखलाः तुलनात्मक स्थान

एहि सम्पूर्ण समीक्षा-शृंखलामे — कविता, लघुकथा, आ आब उपन्यास — जिगिरी एकटा विशिष्ट स्थान ग्रहण करैत अछि।

बोयी भीमन्ना — दलित इतिहासक ऊर्ध्व-दृष्टि (व्यापक दृष्टि) ।

सुभद्रा — दैनिक श्रमक सूक्ष्म-दृष्टि (सूक्ष्म दृष्टि) ।

कोलकलुरी इनोच (कौआ) — सामुदायिक अनुष्ठानक मध्य-दृष्टि (मध्य दृष्टि) ।

जिगिरी — ई सबसँ विस्तृत आख्यान — जाहिमे व्यक्तिगत मैत्री, पारिवारिक संघर्ष, सामुदायिक राजनीति, आ राज्य-शक्ति — सब एकहि आख्यानमे समाहित अछि।

एहि अर्थमे जिगिरी तेलुगु दलित साहित्यक महाकाव्यिक स्वर थिक।

निष्कर्ष

पेद्दिंति अशोक कुमारक सदा लेल मित्र एकटा बहु-स्तरीय उत्कृष्ट कृति थिक जे:

साहित्यिक स्तरपर — मनुष्य-पशु मैत्रीक माध्यमसँ प्रेम, विश्वास, आ विश्वासघातक काव्यशास्त्र प्रस्तुत करैत अछि।

सामाजिक स्तरपर — कलन्दर समुदायक सांस्कृतिक विलुप्तिकेँ साहित्यिक स्मृतिमे सुरक्षित करैत अछि।

राजनीतिक स्तरपर — पशु-अधिकार बनाम मानव-अधिकारक विरोधाभासकेँ न्यायसंगत ढंगसँ प्रश्नांकित करैत अछि।

दार्शनिक स्तरपर — मैत्रीक असम्भव परिस्थिति — जतय प्रेम आ जीवित रहनाइ परस्पर-विरोधी हो — क त्रासद यथार्थ उद्घाटित करैत अछि।

उपन्यासक अन्तिम सत्य — "धरती ओकर छल, मुदा एकर कीमत ईमाम लेल सहय सँ बाहर छल" — समस्त दलित-आदिवासी साहित्यक केन्द्रीय प्रश्नकेँ एकटा वाक्यमे समेटि लैत अछि:

"विकास" आ "अधिकार" की कोनो समुदायक आत्माक हत्याकऽ कीमतपर खरीदल जा सकैत अछि?

एहि प्रश्नक उत्तर उपन्यास नहि दैत — पाठककेँ, समाजकेँ, राज्यकेँ दैत छोड़ि दैत अछि।

समग्र समीक्षाः तेलुगु, गुजराती आ उड़िया दलित साहित्यक मैथिली अनुवाद

विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन आ मैथिलीमे दलित साहित्यक पूर्ति

प्रारम्भिक टिप्पणी: एकटा ऐतिहासिक परियोजना

एहि समीक्षा-शृंखलामे हम जे साहित्य पढ़लहुँ — तेलुगु कविता (बोयी भीमन्ना, जे. सुभद्रा, चल्लपल्ल्ली स्वरूपरानी, दरिशे शशिनिर्मला, एम. गौरी, मद्दुरी विजयश्री), गुजराती कविता (अनीश गारंगे, राजेन्द्र वडेल, उमेश सोलंकी), उड़िया कविता (बासुदेव सुनानी), तेलुगु लघुकथा (कोलकलुरी इनोच, विनोदिनी), आ तेलुगु उपन्यास (पेद्दिंति अशोक कुमार) — ई सब मिलिकऽ एकटा सुचिन्तित साहित्यिक परियोजना थिक। एहि परियोजनाक नाम — विदेह, विदेह — मैथिली भाषाक प्रथम फोर्टनाइटली (पाक्षिक) ई-पत्रिका, जाहिक सम्पादक गजेन्द्र ठाकुर छथि।

एहि समीक्षाक उद्देश्य तीन स्तरपर अछि: पहिल — प्रस्तुत साहित्यक काव्यशास्त्रीय मूल्यांकन; दोसर — एहि अनुवाद-परियोजनाक सांस्कृतिक-राजनीतिक महत्त्वक विश्लेषण; तेसर — विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलनक दलित-साहित्य-अनुवादसँ सम्बन्धक अन्वेषण।

भाग एक: साहित्यिक मूल्यांकन

१. काव्य: तीन भाषाक दलित स्वर

तेलुगु काव्य-परम्परा

तेलुगु दलित काव्य एहि संग्रहमे सर्वाधिक विस्तृत आ विविध अछि। छह कवि — भीमन्ना, सुभद्रा, स्वरूपरानी, शशिनिर्मला, गौरी, विजयश्री — मिलिकऽ एकटा सम्पूर्ण काव्य-ब्रह्माण्ड निर्मित करैत छथि।

भीमन्ना (१९२०-२००१) एहि परम्पराक पितामह थिक। जरैत खोपड़ी सभ आ हमर पैतृक अधिकार — दूनू कविता मिलिकऽ दलित काव्यक दू प्रमुख रणनीति दर्शाबैत अछि: धार्मिक हिंसाक चक्रव्यूहक प्रश्नांकन आ पौराणिक इतिहासक पुनर्पाठ। पुनरावृत्ति आ अनुप्रास-आरम्भक माध्यमसँ भीमन्ना दलित मौखिक परम्पराकेँ लिखित कवितामे अन्तर्निहित करैत छथि — ई काव्य-शिल्पक एकटा विशिष्ट उपलब्धि थिक।

सुभद्रा — श्रम, वस्तु, आ मातृत्वक कवयित्री — दलित-स्त्री जीवनक सूक्ष्म इतिहास लिखैत छथि। साड़ीक कोर मे एकटा साधारण कपड़ाक टुकड़ा — जे ओछाउन, छाता, थैली, रक्षक, माय — सब बनि जाइत अछि — एकटा विस्तारित रूपक क उत्कृष्ट उदाहरण थिक। जयप्रभाक "साड़ी जराएब" क उच्च-जातीय नारीवादी प्रतीकशास्त्रक विरुद्ध सुभद्राक दलित-नारीवादी प्रत्युत्तर — "ओकरा आगि लगा कऽ हम कोना बचि सकैत छी? " — अन्तः-नारीवादी संवाद (नारीवाद-भीतरक संवाद) क एकटा महत्त्वपूर्ण क्षण थिक।

स्वरूपरानी व्यक्तिगत चेतनाक रूपान्तरणक कवयित्री छथि। मान्केनापुव्वु मे छह बेर दोहराएल "जखन...तखन" शृंखला — जे उत्पीड़नक वर्गीकरण प्रस्तुत करैत अछि — काव्यशास्त्रक दृष्टिसँ अत्यन्त परिकलित अछि। माटि-भेल हाथ मे गेंदा फूलसँ झुराएल पातक रूपान्तरण श्रम-शोषणक शारीरिक यथार्थ थिक।

शशिनिर्मला सर्वाधिक उग्र आ टकराहटी आवाज थिक। हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ मे उच्च-जातीय स्त्रीसँ सोझ सम्बोधन — "अहाँ हमरा मातहत बुझि अपमानित कएल गेल" — किम्बर्ले क्रेन्शॉ क बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध सिद्धान्तकेँ काव्यमे साकार करैत अछि। हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी मे ऐतिहासिक पीड़िताक नामोल्लेख (अलिसम्मा, मुथव्वा, महादेवम्मा) साक्ष्य-काव्यक (साक्ष्यात्मक कविता) उत्कृष्ट उदाहरण थिक।

एम. गौरी — मेहदी लागल हाथ — तेलुगु दलित काव्यक सर्वोच्च काव्यिक उपलब्धिसभमे सँ एक थिक। कृष्णक तीन पौराणिक रूप (मायाविनाशक, ग्वाल-बालिन-प्रेमी, बंशीवादक) क क्रमशः खण्डन करैत चर्मकार-स्त्री अपन रगत-सनल हाथकेँ मेहदी बनाबैत छथि — एहि एकटा शीर्षकमे शुभता-अशुभताक सम्पूर्ण दलित-विरोधाभास निहित अछि। "जखन हमर चाम अमलतास सँ धोयल जाइत अछि... ई बनि जाइत अछि ढोल, शुद्ध सङ्गीत गुञ्जाबैत" — एहि अन्तिम बिम्बमे जूलिया क्रिस्तेवा क घृणित-बहिष्करण (घृणित) सिद्धान्तक काव्यिक खण्डन होइत अछि।

मद्दुरी विजयश्री क अलिसम्माक स्राप — शूर्पणखाक नासिका-छेदन आ अलिसम्माक नग्नीकरणकेँ एकहि पंक्तिमे जोड़ब — पौराणिक-ऐतिहासिक समानान्तरताक सर्वाधिक साहसिक काव्यिक निर्णय थिक। अन्तिम स्राप — "हम अहाँ सभकेँ स्राप दैत छी कि अहाँ मानवमे परिणत भऽ जाउ" — फ्रान्ट्ज फानों क उपनिवेशित-उपनिवेशक-मानवता-खोज सिद्धान्तकेँ काव्यिक स्रापमे रूपान्तरित करैत अछि।

गुजराती काव्य-परम्परा

अनीश गारंगे क पोस्टर नगर-यथार्थवादक उत्कृष्ट उदाहरण थिक। "ई खुरदुरा चेहरा बला पोस्टर सब हमर ऐना जकाँ अछि" — ई वृत्ताकार संरचना आ जाक लाकाँ क दर्पण-अवस्था सिद्धान्तक नकारात्मक प्रयोग दलित-नगर-अनुभवक विकृत-दर्पण उजागर करैत अछि।

राजेन्द्र वडेल 'जीता' क सम्भोग — "जँ बेटा जन्मल तऽ नाम 'भारत' राखू, जँ बेटी तऽ 'भारती'" — जाति-यौन-हिंसाक इतिहासकेँ राष्ट्र-निर्माणसँ जोड़बाक सर्वाधिक विस्फोटक काव्यिक क्षण थिक।

उमेश सोलंकी क दू कविता भिन्न रणनीति प्रयुक्त करैत अछि। लोक, जमि जाय मे "जमाव" एकटा एकल विस्तारित रूपक पर आधारित है जे मार्क्स क हिकमत (हड़ताल) सिद्धान्तसँ काव्यिक संवाद करैत अछि। खरड़ाक डाँट सब गान्धीसँ सोझ व्यंग्यात्मक सम्बोधन थिक — गान्धीवाद आ दलित-यथार्थक विरोधाभासक काव्यिक प्रमाण — जाहिमे आम्बेडकर क गान्धी-आलोचना काव्य-रूप धारण करैत अछि।

उड़िया काव्य-परम्परा

बासुदेव सुनानी क तीन काव्य-खण्ड — अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि, पता, सदानन्द — उड़िया दलित काव्यक दार्शनिक-रहस्यवादी आयाम दर्शाबैत अछि। बूँद, बीउ, माछ, समुद्र — ई प्राकृतिक बिम्ब तेलुगु-गुजराती कवितासभक ठोस नगरीय यथार्थसँ मूलतः भिन्न काव्य-भूमि थिक।

सदानन्द — जाहिमे एकटा किसान "गलत" बुझलनि मुदा हुनकर "गलत बुझनाइ"मे राजनीतिक सत्य छल — निम्नवर्गीय ज्ञानमीमांसा (निम्नवर्गीय ज्ञान-मीमांसा) क उत्कृष्ट काव्यिक उदाहरण थिक।

२. गद्यः लघुकथा आ उपन्यास

कौआ आ कारी स्याही

दूनू लघुकथा दलित गद्य-परम्पराक भिन्न आयाम दर्शाबैत अछि।

कोलकलुरी इनोच क कौआ — बण्डोडु, कौआ, आ अव्वाक परिवार — त्रिकोणीय शक्ति-सम्बन्धक नैतिक जटिलताक कथा थिक। "मुक्ति एक श्राप मात्र अछि" — एहि विरोधाभासमे दलित-सामाजिक-व्यवस्थाक गहनतम सत्य निहित अछि। बण्डोडु — दलितमे सबसँ नीचाँ — हुनकर एकमात्र विशेषज्ञता (कौआ-मारब) हुनका अपरिहार्य बनाबैत अछि — मिशेल फूको क सत्ता-ज्ञान सम्बन्धक कथा-रूप।

विनोदिनी क कारी स्याही — "हम नीला स्याहीमे लिखैत छी जे पसिन्न अछि, कारी स्याहीमे जे नापसिन्न" — ई शीर्षक-रूपक कथाक संरचनागत आश्चर्य थिक। बच्ची श्रियाक चरित्र — एकहि साथ निर्दोष, प्रेमिल, आ जाति-संस्कारित — बाल-मनोविज्ञानमे जाति-समाजीकरणक सूक्ष्मतम चित्रण थिक। "पूरा कमरामे सूखल तितली सभ हमरापर रेंगैत कैटरपिलरमे बदलि गेल" — ई अन्तिम बिम्ब सम्पूर्ण कथाक सार थिक।

सदा लेल मित्र (जिगिरी)

पेद्दिंति अशोक कुमारक उपन्यास एहि समग्र परियोजनाक महाकाव्यिक शिखर थिक।

ईमाम-शादुलक मैत्री — मनुष्य आ भालूक बीच — अल्बेर कामू क एकजुटता सिद्धान्तकेँ दलित-आदिवासी सन्दर्भमे साकार करैत अछि। दूनू "घृणित-बहिष्कृत" (घृणित-बहिष्कृत) थिक —ईमाम खानाबदोश, निम्न-जाति; शादुल जंगली, अशुद्ध — आ एहि साझा हाशियापर एकटा हिकमत एकजुटता (हाशिया-एकजुटता) जन्म लैत अछि।

"गुड़ पकड़ाबैत काल ईमामक हाथ काँपि रहल छल" — ई यहूदा-क्षण (विश्वासघातक क्षण) उपन्यासक सर्वाधिक मार्मिक बिन्दु थिक। दोस्तोयेव्स्की क नैतिक अपराधबोध (नैतिक अपराध-बोध) क सिद्धान्त एतय साकार होइत अछि — ईमाम शादुलकेँ मारैत अछि मुदा आत्मिक रूपसँ स्वयं मरि जाइत छथि।

"वन सन्न छल" — हेमिंग्वे क हिमशैल सिद्धान्त (हिमशैल-सिद्धान्त) क श्रेष्ठतम प्रयोग। जे अनकहल — ईमामक विलाप, शादुलक छटपटाहट — ओ मौनमे अधिक वाचाल अछि।

भाग दू: विदेह समानान्तर साहित्य आन्दोलन आ दलित-साहित्य-अनुवाद

३. विदेहक समानान्तर साहित्य आन्दोलन: एकटा परिचय

विदेह (videha. co. in, ISSN 2229-547X) मैथिलीक प्रथम पाक्षिक ई-पत्रिका थिक जाहिक स्थापना गजेन्द्र ठाकुर लगभग सन् २०००मे कएल। एहि पत्रिका आ एहिसँ सम्बद्ध समानान्तर साहित्य आन्दोलन क दृष्टि स्पष्ट रूपसँ परिभाषित थिक:

साहित्य अकादेमी-मान्य-परम्परागत मैथिली साहित्यसँ भिन्न एकटा समानान्तर धारा — जाहिमे लोक, दलित, आ स्त्री साहित्यिक स्वरकेँ केन्द्रमे स्थापित कएल जाय।

मैथिली साहित्यक मुख्यधारा मान्य साहित्य-परम्परा ऐतिहासिक रूपसँ ब्राह्मण-कायस्थ-केन्द्रित रहल अछि — विद्यापतिसँ चन्दा झासँ आधुनिक काल धरि। आब जा कऽ विद्यापतिक गएर-ब्राह्मण स्वरूप [ज्योतिरीश्वर-पूर्व] पर चर्चा समानान्तर धारा शुरु केलक अछि। [अनुलग्नक: २: विद्यापतिक विदेसियाक एकटा समालोचनात्मक मूल्यांकन] एहि मान्य साहित्यिक परम्परामे दलित-स्वर नगण्य रहल अछि। विदेह एहि मान्य परम्परासँ बहिष्करण (परम्परा-बाहरीकरण) क सचेत प्रतिरोध थिक।

४. अनुवाद परियोजनाक तीन स्तम्भ

पहिल स्तम्भ: भाषिक पुल-निर्माण

तेलुगु, गुजराती, आ उड़िया — तीन भिन्न भाषिक-सांस्कृतिक क्षेत्र — क दलित साहित्यकेँ मैथिलीमे आनब एकटा बहुदिशीय (बहु-दिशीय) भाषिक पुल-निर्माण थिक।

अनुवाद-शृंखला प्रायः दोहरा वा तेहरा रहल:

तेलुगु→अंग्रेजी (पुरुषोत्तम के., पी. जयलक्ष्मी)→मैथिली (गजेन्द्र ठाकुर)

गुजराती→अंग्रेजी (हेमांग देसाई)→मैथिली (गजेन्द्र ठाकुर)

उड़िया→अंग्रेजी (सैलेन राउत्रे)→मैथिली (गजेन्द्र ठाकुर)

एहि परोक्ष अनुवाद (अप्रत्यक्ष अनुवाद) मे काव्यिक क्षति अवश्यम्भावी छल — मुदा सांस्कृतिक-सामाजिक सन्देशक हस्तान्तरण सफलतापूर्वक भेल। कारण दलित साहित्यक विचारक बल भाषा-माध्यमसँ प्रायः अधिक शक्तिशाली होइत अछि।

दोसर स्तम्भ: सांस्कृतिक एकजुटताक निर्माण

वाल्टर बेंजामिन "अनुवादककेँ सांस्कृतिक राजदूत" कहैत छथि। एहि परियोजनामे अनुवाद मात्र साहित्यिक नहि — ई राजनीतिक एकजुटताक कार्य थिक।

तेलुगुक अलिसम्मा, गुजरातक गारंगेक "खुरदुरा चेहरा", उड़ियाक सदानन्दक अकाल — ई सब मैथिली पाठककेँ कहैत अछि: दलित उत्पीड़न क्षेत्रीय नहि, राष्ट्रीय समस्या थिक। मिथिलाक मुसहर, दुसाध, चमार — हुनकर जीवन-यथार्थ आन्ध्रक, गुजरातक, उड़ियाक दलित-जीवनसँ मूलतः भिन्न नहि।

तेसर स्तम्भ: मान्य साहित्यिक परम्परा-हस्तक्षेप

एहि अनुवाद-परियोजनाक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण साहित्यिक-राजनीतिक कार्य थिक मैथिली मान्य साहित्यिक परम्परा मे हस्तक्षेप करब।

शाहिद अमीन आ ज्ञानेन्द्र पाण्डेय जे निम्नवर्गीय अध्ययन क माध्यमसँ इतिहासमे कएल, विदेह साहित्यमे ओएह काज करैत अछि — मान्य साहित्यिक परम्परा-बाहरक स्वरकेँ साहित्यिक चर्चाक केन्द्रमे लाएब।

मैथिली साहित्य अकादेमी पुरस्कार विजेता रचनासभ आ विदेहमे प्रकाशित दलित-अनुवाद — दूनू एकहि भाषाक भीतर दू समानान्तर परम्परा थिक। विदेहक दावा थिक जे एहि समानान्तरताक स्वीकृति मैथिली साहित्यकेँ अधिक सम्पूर्ण बनाएत।

५. मैथिलीमे दलित-स्वरक ऐतिहासिक अनुपस्थिति

मान्य-परम्परागत मैथिली साहित्यमे दलित

विद्यापतिक श्रृंगार-काव्यमे — जे मैथिली साहित्यक सर्वोच्च मानक थिक — दलित-जीवन अनुपस्थित अछि। ओ उच्च-जातीय सौन्दर्यशास्त्र क काव्य थिक। मुदा हुनकर “बिदेसिया” “पिआ देशांतर” मे ओ उपलब्ध अछि। आधुनिक मैथिली कवि — हरिमोहन झा, राजकमल चौधरी — ने ब्राह्मण-कायस्थ दृष्टि (ब्राह्मण-कायस्थ दृष्टिकोण) सँ लिखल, जाहिमे दलित-यथार्थ प्रान्तीय (हाशियापर) रहल।

मैथिलीमे "दलित साहित्य" क कोनो स्वतन्त्र परम्परा स्थापित नहि भेल — जेना मराठीमे नामदेव ढसाल, दया पवार; तेलुगुमे भीमन्ना; हिन्दीमे ओमप्रकाश वाल्मीकि।

एकर कारण: मिथिला क्षेत्रमे दलित समुदाय — मुसहर, दुसाध, धोबी, चमार — सब ऐतिहासिक रूपसँ साक्षरता-वञ्चित रहल। लिखित साहित्यिक परम्परा निर्माणक अवसरहि नहि भेटल। मौखिक परम्परा सभ (मौखिक परम्परा) — लोकगीत, कथा — रहल, मुदा ओ कहियो लिखित मान्य-परम्परागत साहित्यमे परिणत नहि भेल।

विदेहक हस्तक्षेप

एहि ऐतिहासिक अनुपस्थितिक सामना करैत विदेहक रणनीति द्वि-स्तरीय थिक:

तात्कालिक रणनीति: अन्य भारतीय भाषाक दलित साहित्यक अनुवाद आनि मैथिली पाठककेँ दलित साहित्यक स्वाद, भाषा, आ राजनीति सँ परिचित कराएब।

दीर्घकालिक रणनीति: एहि अनुवादसँ प्रेरित मैथिली दलित लेखकसभक उद्भव — जे अपन भाषामे, अपन अनुभवसँ लिखब।

फ्रान्ट्ज फानों धरतीक अभागल मे कहैत छथि जे उपनिवेशित साहित्य क विकास तीन चरणमे होइत अछि: पहिल — उपनिवेशकक भाषामे अनुकरण; दोसर — अपन संस्कृतिक जड़कखोज; तेसर — जन-साहित्यक निर्माण। मैथिली दलित साहित्यक लेल विदेहक अनुवाद-परियोजना एहि दोसर चरणक — "अपन जड़क खोज" क — समानान्तर प्रयास थिक।

६. अनुवाद-नीतिः सिद्धान्त आ व्यवहार

देशज शब्दक संरक्षण

एहि परियोजनाक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण अनुवाद निर्णय (अनुवाद-निर्णय) थिक: देशज शब्दसभकेँ यथावत् राखब।

"लाण्डा", "अव्वा", "मान्केनापुव्वु", "अलिसम्मा", "जिगिरी", "बण्डोड्डु", "जाजी", "इप्पा" — ई सब मैथिलीमे अनूदित नहि, मात्र लिप्यन्तरित कएल गेल। लॉरेन्स वेन्यूटी क विदेशीपन-संरक्षण रणनीति (विदेशीकरण-रणनीति) — जाहिमे मूलक विदेशीपन सुरक्षित राखल जाइत अछि — एतय सुचिन्तित रूपसँ प्रयुक्त।

एहिसँ मैथिली पाठककेँ दू सन्देश एकहि साथ मिलैत अछि: पहिल — ई संस्कृति तोहर संस्कृतिसँ भिन्न थिक (विदेशीपन); दोसर — ई यथार्थ तोहरासँ मूलतः भिन्न नहि थिक (एकजुटता) । ई सांस्कृतिक अनुवादक सर्वोत्तम कार्य थिक।

भाषाक बहुलता

जिगिरी मे तेलंगानाक उर्दू-मिश्रित तेलुगु — "अब्बा", "अम्मी", "अल्लाह", "तावीज", "कलन्दर" — मैथिलीमे सेहो उर्दू रूपमे राखल गेल। एहिसँ कथाक भाषिक बनावट सुरक्षित रहल। एहि निर्णयमे एकटा निहित राजनीतिक वक्तव्य (अन्तर्निहित राजनीतिक वक्तव्य) अछि: मुस्लिम-कलन्दर समुदायक सांस्कृतिक-भाषिक पहचान साहित्यिक मानदण्डसभमे बराबरक अधिकार राखैत अछि।

शब्दावली आ परिशिष्ट

जिगिरी क अनुवादमे विस्तृत शब्दावली आ परिशिष्ट संलग्न थिक — कलन्दर समुदायक सामाजिक-राजनीतिक इतिहास सहित। ई पाठ-सहायक संरचना (पाठ-सहायक उपकरण) अनुवादकेँ मात्र साहित्यिक नहि, दस्तावेजी मूल्य सेहो दैत अछि।

भाग तीन: दलित काव्यशास्त्रक नव सिद्धान्त

७. मैथिलीमे प्रविष्ट नव काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त

एहि समग्र परियोजनाक माध्यमसँ मैथिली साहित्यमे कई नव काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त प्रविष्ट भेल — जे परम्परागत मैथिली काव्यशास्त्रसँ मूलतः भिन्न थिक। हमर (गजेन्द्र ठाकुर) मैथिली समीक्षाशास्त्रक आधारपर दलित साहित्यक समीक्षा सम्भव भेल अछि।

भारतीय रस सिद्धान्तक दृष्टिकोणसँ मैथिलीमे अनूदित दलित साहित्यक समीक्षा

प्रस्तावना: रस आ दलित साहित्यक समागमक प्रश्न

भारतीय साहित्यशास्त्रक केन्द्रबिन्दु रस सिद्धान्त अछि। भरतमुनिसँ अभिनवगुप्त धरि ई सिद्धान्तक विकास भेल अछि जे साहित्यक आस्वादक प्रधानता पर बल दैत अछि। रसक निष्पत्ति *स्थायी भाव*सँ होइत अछि—शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त। प्रश्न उठैत अछि: दलित साहित्य, जे स्वयंकेँ *दर्द* (पीड़ा) आ *आक्रोश* (क्रोध) क दस्तावेजक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि, ई रसक श्रेणीमे कतय स्थान पाबैत अछि? *वीभत्स* (घृणा) आ *रौद्र* (क्रोध) के स्थायी भाव रसक परिणति पाबि सकैत अछि की नहि? ई संकलन—जे तेलुगु, गुजराती, उड़िया दलित साहित्यक मैथिली अनुवाद अछि—एहि प्रश्नकेँ तीव्रतासँ उठाबैत अछि। ई समीक्षा भारतीय रस सिद्धान्तक ढाँचामे एहि साहित्यक मूल्याङ्कन करत, *विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव*क संयोजन देखत, आ प्रश्न करत की एहि रचना सभ *सहृदय* लेल *आस्वाद्य*क अनुभव बनि पाबैत अछि की नहि।

प्रथम अध्याय: शृङ्गारक विपर्यास—प्रेम, वियोग आ शरीरक दलित स्वर

शास्त्रीय शृङ्गार रसक आधार *रति* नामक स्थायी भाव अछि। ई प्रेम, मिलन, वियोग—दुनू अवस्थामे रसक सृजना करैत अछि। मुदा दलित साहित्यमे शृङ्गारक स्वरूप भिन्न देखाइत अछि। जे. सुभद्राक "साड़ीक कोर" शीर्षक कवितामे स्त्री-शरीर, श्रम, आ शृङ्गारक पारम्परिक प्रतीक सभक विपर्यास देखाबैत अछि।

"हमर भूख सँ सटल हमर साड़ीक कोर लटकल रहैत अछि हमर पेट पर, बान्हक कातक 'मैसम्मा' देवी जकाँ। "

एतय *शृङ्गारक विभाव* (नायिका, सौन्दर्य, मिलनक इच्छा) क स्थान पर *श्रम, भूख, मातृत्व* आ *देहक दुर्गन्ध* स्थापित भेल अछि। साड़ीक कोर, जे शास्त्रीय सन्दर्भमे *आभूषण, लज्जा, स्त्रीत्व*क प्रतीक छल, एतय *घाम-पसीना पोछबाक कपड़ा, बच्चाक पालना, रजस्वला कपड़ाक ओढ़नी, पानि भरबाक गद्दी* बनि जाइत अछि। ई *विभाव*क पूर्ण परिवर्तन अछि। *शृङ्गारक अनुभाव* (हाव-भाव, मुस्कान, अपाङ्गता) क स्थान पर *शरीरक धूरि चाटनाइ, भीजल रजस्वला कपड़ा, चूल्हा-चौकीमे अङ्गुरि जरबाइ* जहिना *वीभत्स* (घृणा) आ *करुण* (दया) क मिश्रित *अनुभाव* स्थापित भेल अछि।

एहि प्रकारेँ, दलित स्त्री-शरीरक शृङ्गार शास्त्रीय *अलंकारिक शरीर* नै अछि, बल्कि *श्रमक शरीर, जीविकाक शरीर, प्रताड़नाक शरीर* अछि। अभिनवगुप्तक भाषामे, एतय *साधारणीकरण* (साधारणीकरण) क प्रक्रिया भिन्न अछि। शास्त्रीय शृङ्गारमे *रति*केँ सार्वभौम अनुभवमे परिणत करैत छल, जतय दलित साहित्यमे *श्रम* आ *अभाव*क विशिष्टता *साधारणीकरण*क विरोध करैत अछि। ई *साधारणीकरण*क अस्वीकार रस सिद्धान्तक सामने पैघ चुनौती अछि।

चल्लपल्ली स्वरूपरानीक "मान्केनापुव्वु" (सेमरक फूल जकाँ लाल) शीर्षक कवितामे ई विपर्यास और स्पष्ट होइत अछि:

"घरमे पुरुष-नियन्त्रण एक गाल पर थप्पड़ मारैत अछि, जखन कि गलीमे जाति-नियन्त्रण दोसर गाल पर। "

एतय *शृङ्गारक विप्रलम्भ* (वियोग) क स्थान पर *जाति-व्यवस्थाक हिंसा* आ *पितृसत्ताक हिंसा*क दोहरा उपस्थिति अछि। *कामदेव, रति, वियोग*—ई सब शास्त्रीय शृङ्गारक स्थायी भाव सभक स्थान पर *गुलामीक बेड़ी, सहनशीलता, क्रोध* जहिना *व्यभिचारी भाव* सभ मुख्य होइत अछि। कविताक अन्तमे "हम खिलि उठब मान्केनापुव्वु जकाँ! "—एहि *विद्रोह*क स्वर *शृङ्गारक संयोग* नै, बल्कि *वीर रस*क आभास कराबैत अछि। मुदा ई वीर रस शास्त्रीय *आश्रय-दाता-राजा-योद्धा*क परिधिमे नै, बल्कि *दलित स्त्रीक आत्म-स्वातन्त्र्य*क संघर्षमे स्थापित अछि।

द्वितीय अध्यायः रौद्र आ वीर—क्रोध, प्रतिरोध आ अस्मिताक रस

दलित साहित्यक सबसँ प्रबल स्वर *क्रोध* अछि। शास्त्रीय *रौद्र रसक* स्थायी भाव *क्रोध* अछि। अभिनवगुप्तक अनुसार, रौद्रक *विभाव* अछि—*क्रोधक कारण, आक्रोश, अपमान, असत्य, अन्याय*। *अनुभाव* अछि—*लाल आँखि, भौंहक टेढ़ाई, होठक कम्पन, हाथ-गोड़क फड़फड़ाहट, शस्त्र उठाबाइ*। *व्यभिचारी भाव* अछि—*आवेग, उग्रता, अधैर्य, आत्म-ग्लानि, भय*।

बोयी भीमन्नाक "हमर पैतृक अधिकार" शीर्षक कवितामे *रौद्रक* पूर्ण विकास देखाइत अछि:

"व्यास, वास्तुकार आर्य जातिक पहिचानक, स्वयं जे हो, एकटा नीच जातिक मानुस छलाह। आजु ओ एकटा जाति-हिन्दू छथि, जखन कि हम, जे हुनकर जातिक छी, एकटा दलित-अजाति छी—ई भारतीय परम्परा अछि! "

एतय *क्रोधक विभाव* अछि—*वैदिक महानताक अधिकार चोराएल गेल, बहिष्कार, वञ्चना*। *अनुभाव* अछि—*कब्रिस्तान खननाइ, पैतृक अधिकारक खोज, घोषणा*। ई रौद्र रस शास्त्रीय *असुर-दैत्य-वधक* परिधिसँ भिन्न अछि। एतय *क्रोधक आश्रय दलित समुदाय* अछि, आ *विषय सवर्ण हिन्दूत्वक* ऐतिहासिक अपराध अछि। *रौद्रक* ई प्रयोग *शान्तिक* लेल नै, *न्यायक* लेल अछि।

मुदा प्रश्न उठैत अछि: की एहि *रौद्रक आस्वाद* संभव अछि? अभिनवगुप्तक अनुसार, रसक *आस्वाद* लेल *वैमुख्य* (सौन्दर्यात्मक दूरी) आवश्यक अछि। मुदा दलित साहित्यमे *वैमुख्यक* स्थान पर *अभिज्ञता* (तादात्म्य) अछि। पाठक *दूरसँ* क्रोध नै देखैत, बल्कि *भीतरसँ* क्रोधक अनुभव करैत अछि। ई *रौद्रक आस्वादक* संभावनाकेँ जटिल बनाबैत अछि। की ई *सहृदय* लेल *रस* अछि, वा *संदेश*? की ई *आनन्द* दैत अछि, वा *असुविधा*?

राजेन्द्र वडेल 'जीता'क "सम्भोग" शीर्षक कवितामे *रौद्र* आ *वीभत्सक* घातक संयोग देखाबैत अछि:

"हमर कोमल होंठ अहाँक होंठ छुअलक उच्च जातिक खुरदरापनक अनुभूति भेल। जखन अहाँक छिपल नजरिहमर नम आँखि पाबल दिनदहाड़े बलात्कारक एकटा भूत हमर सोझाँ नाचल। "

एतय *शृङ्गारक संयोगक विभाव*—*कोमल होंठ, होंठक स्पर्श, नम आँखि*—*वीभत्स* (बलात्कार) आ *रौद्र* (क्रोध) मे परिणत होइत अछि। ई *शृङ्गार-वीभत्स-रौद्रक* त्रिवेणी अछि। शास्त्रीय रस सिद्धान्तमे एकटा रचनामे अनेक रसक *अङ्गी-अङ्ग* भाव स्वीकार अछि। मुदा एतय रस सभ परस्पर विरोधी अछि—*शृङ्गार* आ *वीभत्सक* संयोग शास्त्रीय सिद्धान्तमे दुर्लभ अछि। ई संयोग दलित साहित्यक विशिष्टता अछि: *प्रेम* आ *हिंसा* एकहि ठाम रहैत अछि।

तृतीय अध्यायः करुण आ वीभत्स—पीड़ाक सौन्दर्यशास्त्र

शास्त्रीय *करुण रसक* स्थायी भाव *शोक* अछि। *विभाव* अछि—*प्रियक वियोग, अभिशाप, विपत्ति*। *अनुभाव* अछि—*आँसु, विलाप, मूर्च्छा, शरीरक शिथिलता*। *वीभत्स रसक* स्थायी भाव *जुगुप्सा* (घृणा) अछि। *विभाव* अछि—*दुर्गन्ध, रक्त, मांस, मल-मूत्र, शव*।

दलित साहित्यमे *करुण* आ *वीभत्स* अक्सर एक संग चलैत अछि। कोलकलुरी इनोचक "कौआ" (काकी) कहानीमे ई संयोग स्पष्ट देखाइत अछि। *बण्डोड्डु* नामक मादिग (चर्मकार) उपजातिक भिखारीक कथा अछि। ओ कौआ सभकेँ मारि कऽ खाइत अछि, आ जकरा ओ भोजन नै देब, ओकर घर पर कौआ सभ आक्रमण करैत अछि। कहानीमे *वीभत्सक विभाव* अछि—*कौआक मांस, सड़ाए गन्ध, वमन, पाँखिक पुड़िया*। *अनुभाव* अछि—*काँव-काँव, ठोक मारब, आँखि नोचब, पीड़ा*।

मुदा ई *वीभत्सक* आस्वाद शास्त्रीय *शव-मांस-रक्तक* आस्वादसँ भिन्न अछि। शास्त्रीय वीभत्स *दूरीसँ* अनुभव कराबैत अछि। एतय *दूरी* नै अछि। ई *वीभत्स जीविकाक* अंग अछि—*चामक कमाइ, भोजनक अभाव, जीवन-मरणक संघर्ष*। *बण्डोड्डु* कौआ मारैत अछि किएक? *भूखसँ*। *वीभत्स* एतय *असहायताक* प्रतीक अछि, *घृणाक* नै।

"ओ कौआ सभ लेल काल अछि! वास्तवमे ओ ओकरा जकाँ देखाइत अछि। ओकर रोंआ काँटक झुण्ड जकाँ अछि। जँ कोनो कौआ ओकर मुँड़ पर ठोक मारत, तऽ ओ ओहिमे उलझि जायत आ ओहि दिनक भोजन लेल पकड़ा जायत। "

बण्डोड्डु स्वयं *वीभत्सक विषय* नै, *वीभत्सक शिकार* अछि। ई *वीभत्स* क *करुणसँ* मिलि जाइत अछि। *बण्डोड्डुक* उपस्थिति मात्रसँ कौआ सभ भागि जाइत अछि। ओ समाजक सबसँ निचला पायदान पर अछि, मुदा कौआ सभक दुनियामे ओ *शक्ति* अछि। ई *विपर्यास*—*शक्ति* आ *असहायताक* द्वन्द्व—*करुण* आ *वीभत्सक* संगम सृजना करैत अछि।

विनोदिनीक "कारी मसि" (ब्लैक इंक) कहानीमे *करुणक* अधिक तीव्र रूप देखाबैत अछि। आठ वर्षक बच्ची श्रिया, जे अपन हरिजन (दलित) पड़ोसी आन्टीकेँ प्रेम करैत छलीह, जखन ओकर जाति जानि लेत, तऽ ओकर चेहराक रङ्ग बदलि जाइत अछि:

"की अहाँ सचमुच हरिजन छी? हमरा सच बताउ! " बच्चीक चेहराक सब रङ्ग धीरे-धीरे गायब भऽ गेल, धूसर रङ्ग धारण कऽ लेलक।

करुणक विभाव अछि—*प्रेमक वियोग, बाल-सुलभ निर्दोषता, जाति-व्यवस्थाक भयानकता*। *अनुभाव* अछि—*चेहराक रङ्ग बदलाइ, दौड़ि कऽ भागि जाइ, घृणाक दृष्टि*। एतय *करुण* *बाल-वियोग*क परम्परागत स्वरूपसँ भिन्न अछि। वियोग *प्रेमी-प्रेमिका*क नै, बल्कि *मित्रता*क अछि। आ कारण *दैवी विपत्ति* नै, *जाति-व्यवस्थाक विष* अछि। ई *करुण* *रौद्र*क समीप आबि जाइत अछि, मुदा *रौद्र*मे परिणत नै होइत—किएक संहारक असमर्थता सँ।

चतुर्थ अध्यायः शान्त आ अद्भुत—मुक्ति, आश्चर्य आ प्रतिरोधक अन्य सौन्दर्यशास्त्र

शास्त्रीय *शान्त रस*क स्थायी भाव *निर्वेद* (वैराग्य) अछि। *अद्भुत रस*क स्थायी भाव *विस्मय* अछि। दलित साहित्यमे ई दुनू रसक उपस्थिति सीमित अछि, मुदा पूर्णतः अनुपस्थित नै अछि।

बासुदेव सुनानीक उड़िया कविताक अनुवादमे *अद्भुत*क आभास देखाबैत अछि:

"एतय आकाशमे एहने एकटा बूँद अछि जे अस्पष्ट होइतो चमकैत छैक आ इन्द्रधनुषक एकटा मीठ सपना देखि कऽ बेर-बेर प्रण लेने अछि विशाल आकाशकेँ रङ्ग देबाक। "

ई *अद्भुत प्रतिरोधक अद्भुत* अछि—*अन्धार बोयनिहार सभक बीच एक बूँद प्रकाशक, विनाशक बीच सृजनक सम्भावना*। मुदा ई *अद्भुत* शास्त्रीय *दिव्य-चरित्र-दर्शन*क *अद्भुत* नै अछि। ई *अद्भुत* *आशा*क अछि, *सम्भावना*क अछि, *अधूरापन*क अछि। कवि कहैत अछि: "अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि। " ई *अद्भुत* *अधूरा* अछि, *अपूर्ण* अछि।

शान्त रस दलित साहित्यमे लगभग अनुपस्थित अछि। कारण? *शान्त*क *निर्वेद* (वैराग्य) *संसार-त्याग*क माग अछि। दलित साहित्य *संसार-प्राप्ति*क संघर्ष अछि—*जमीन, मान-सम्मान, अधिकार, पहिचान*। *शान्त* *विराम*क माग करैत अछि; दलित साहित्य *संग्राम*क अछि। एकर अपवाद मात्र *मृत्यु*क क्षणमे देखाबैत अछि। "सदा लेल मित्र" उपन्यासक अन्तमे, जखन ईमाम शादुलकेँ जहर दैत अछि, तखन *शान्त*क आभास होइत अछि:

"वन सन्न छल। ईमाम अनुभव कएलक जे ओकर एकटा अंश शादुल संग मरि गेल। "

मुदा ई *शान्त* *निर्वेद* नै, *शोक* अछि। *करुण*क एहन तीव्रता जे *शान्त*क सीमा पर ठोकर खाइत अछि, मुदा *शान्त*मे नै बदलैत।

पञ्चम अध्यायः रसक अभाव आ रसक नव रूप

दलित साहित्यक सबसँ पैघ चुनौती रस सिद्धान्तक सामने ई अछि जे ई साहित्य *अभाव*क साहित्य अछि। *अभाव*—भोजनक, वस्त्रक, आश्रयक, सम्मानक, अधिकारक। रस सिद्धान्त *आनन्द*क सिद्धान्त अछि। *अभाव*सँ *आनन्द* कइ प्रकारेँ उपजैत अछि? ई प्रश्न रस सिद्धान्तक सीमाकेँ रेखाङ्कित करैत अछि।

उमेश सोलंकीक "लोक, जमि जाय" शीर्षक कवितामे *अभाव*क सौन्दर्यशास्त्र देखाबैत अछि:

"केतलीमे चाय जमि जाय सुपारीक टुकड़ा पाथर बनि जाय। सब्जी पाथरमे बदलि जाय पकोड़ी कङ्कड़ बनि जाय। "

पाथर आ *कङ्कड़*—ई *वीभत्स*क *विभाव* छथि। मुदा एतय *वीभत्स* *जीवनक यथार्थ* अछि। *अभाव* एहन स्तर पर पहुँचि जाइत अछि जे *भोजन* *पाथर* बनि जाइत अछि। ई *अतियथार्थ* (अतियथार्थवाद) *वीभत्स*क नव रूप सृजना करैत अछि।

अनीश गारंगेक "पोस्टर" शीर्षक कवितामे *अभाव*क दोसर रूप देखाबैत अछि:

"ई खुरदुरा चेहरा बला पोस्टर सब हमर ऐना जकाँ अछि। ... लापता व्यक्ति सभक पोस्टर हर दिन चेहरा बदलैत छैक। "

अनुपस्थिति एतय *उपस्थिति* बनि जाइत अछि। *लापता व्यक्ति*क पोस्टर *दलित चेहरा*क *ऐना* अछि। ई *अद्भुत*क *विभाव* अछि—*अनुपस्थितिक उपस्थिति*। मुदा ई *अद्भुत* *विस्मय* नै, *सन्देह* सृजना करैत अछि। *चेहरा* अछि, मुदा *पहिचान* नै अछि। *उपस्थिति* अछि, मुदा *अस्तित्व* नै अछि।

निष्कर्षः रस सिद्धान्तक पुनर्विचार

दलित साहित्य रस सिद्धान्तक सामने किछु मूलभूत प्रश्न राखैत अछि:

१. *की रस केवल आनन्द अछि?* अभिनवगुप्त रसक*आनन्द*क रूपमे परिभाषित करैत छथि। मुदा दलित साहित्य*आनन्द*नै, *सत्य*क दस्तावेज अछि। *पीड़ा, क्रोध, घृणा, असहायता*—ई सभ*रस*क परिणति पाबि सकैत अछि वा नै? यदि रस*आनन्द* अछि, तऽ ई सभ*अनानन्द*क*आनन्द*मे कइ प्रकारेँ परिणत होइत अछि? ई प्रश्न रस सिद्धान्तक पुनर्विचारक माग करैत अछि।

२. *साधारणीकरणक सीमा*: रस सिद्धान्त *विशिष्ट*केँ *सार्वभौम*मे परिणत करैत अछि। दलित साहित्य*विशिष्ट*पर बल दैत अछि—*दलित स्त्रीक विशिष्ट शरीर, जाति-व्यवस्थाक विशिष्ट हिंसा, चर्मकारक विशिष्ट भूख*। की ई *विशिष्ट सार्वभौम*मे परिणत होइत अछि? यदि होइत अछि, तऽ कइ प्रकारेँ? ई प्रश्न*साधारणीकरण*क प्रक्रियाक पुनर्मूल्यांकनक माग करैत अछि।

३. *रसक संख्या*: शास्त्रीय रसक संख्या नौ (वा अभिनवगुप्तक अनुसार दश) अछि। दलित साहित्य*नव रसक*नव रूप सामने राखैत अछि—*श्रम रस, अभाव रस, प्रतिरोध रस, अस्मिता रस*। की ई*नव रसक*उपरस*वा*अङ्गरस*क रूपमे स्वीकार कएल जा सकैत अछि, वा*नव रसक* रूपमे? ई प्रश्न रस सिद्धान्तक विस्तारक माग करैत अछि।

४. *आस्वादक राजनीति*: रस सिद्धान्त*सहृदय*क अवधारणा पर आधारित अछि—जे*साधारणीकरण*मे समर्थ अछि, जे*दूरी*बनाए राखि सकैत अछि। दलित साहित्यक पाठक—जे दलित अछि वा नै—*दूरी*बनाए राखि सकैत अछि? *पीड़ाक आस्वाद*संभव अछि? यदि संभव अछि, तऽ ई*आस्वादक नैतिकता*क प्रश्न उठैत अछि। की *पीड़ाक आस्वाद उत्पीड़न*क पुनरुत्पादन तँ नै अछि? ई प्रश्न*आस्वादक* राजनीतिकेँ रेखाङ्कित करैत अछि।

ई संकलन—तेलुगु, गुजराती, उड़िया दलित साहित्यक मैथिली अनुवाद—रस सिद्धान्तक सीमा आ सम्भावना दुनूकेँ सामने राखैत अछि। एक दिशामे, ई साहित्य शास्त्रीय रस सिद्धान्तक अपर्याप्तता देखाबैत अछि—*रौद्र, वीभत्स, करुण*क पारम्परिक ढाँचा एहि साहित्यक *आस्वाद*क पूर्ण व्याख्या नै करि सकैत अछि। दोसरदिशामे, ई साहित्य रस सिद्धान्तक विस्तारक सम्भावना देखाबैत अछि —*श्रम, अभाव, प्रतिरोध, अस्मिता*जहिना*नव स्थायी भाव*सभ रसक नव रूप सृजना करि सकैत अछि।

अन्तमे, एहि साहित्यक समक्ष सबसँ पैघ प्रश्न ई अछि: की ई साहित्य *सहृदयक आस्वाद*क लेल अछि, वा*सहृदयक जागरण*क लेल? यदि*आस्वाद* अछि, तऽ ई*आस्वाद*क स्वरूप की अछि? यदि*जागरण* अछि, तऽ ई *जागरणक सौन्दर्यशास्त्र* की अछि? ई प्रश्न सभ भारतीय साहित्यशास्त्रक सामने खुला अछि, आ एहि संकलन ओकरा तीव्रता सँ उठाबैत अछि।

फ्रेंड्स फॉरएवर (जिगिरी) उपन्यासक अनुवादकक टिप्पणीमे एक वाक्य अछि: "ई अनुवाद मात्र साहित्यिक वा भाषिक नै अछि, बल्कि ई सचेत अछि जे कोनो संस्कृति अपन भाषासँ अलग नै भऽ सकैत अछि। " ई वाक्य रस सिद्धान्तक सन्दर्भमे सेहो सत्य अछि: *कोनो साहित्य अपन रस सिद्धान्तसँ अलग नै भऽ सकैत अछि*। दलित साहित्य अपन*नव रस सिद्धान्त*क माग करैत अछि—जे*श्रम, अभाव, प्रतिरोध, अस्मिता*क*स्थायी भाव*क रूपमे स्वीकार करय, जे*दूरी*नै, *निकटता*क*आस्वाद*क सम्भावना खोजय, जे*पीड़ाक आनन्द*मे परिणति नै, बल्कि *पीड़ाक सत्यक आस्वाद*क मार्ग खोजय।

ई संकलन ओहि*नव रस सिद्धान्त*क खोजमे एकटा महत्वपूर्ण पड़ाव अछि।

ई समीक्षा भारतीय रस सिद्धान्तक पारम्परिक ढाँचाकेँ आलोचनात्मक रूपसँ प्रयोग करैत, दलित साहित्यक विशिष्टता रेखाङ्कित करैत अछि। रस सिद्धान्तक कोनो*हठधर्मी*प्रयोग नै कएल गेल अछि, बल्कि ओकर *जीवन्तता* आ *विस्तार*क सम्भावना खोजल गेल अछि। दलित साहित्य रस सिद्धान्तक अन्त नै, ओकर नव जन्मक आह्वान करैत अछि।

रस-सिद्धान्तक पुनर्परिभाषा

परम्परागत मैथिली काव्यशास्त्रमे —पारम्परिक विद्यापति-परम्परामे (समानान्तर विद्यापति परम्परामे नै)— शृंगार रस सर्वोच्च थिक, शान्त रस मोक्षदायक। रौद्र रस (क्रोध) सदैव सहायक रस, प्रधान नहि।

दलित काव्य एहि पदानुक्रम कें उलटि दैत अछि। शरणकुमार लिम्बाले क दलित साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र दिस मे जे तर्क अछि — क्रोध एकटा सौन्दर्य-श्रेणी थिक, दोष नहि — ओ एहि अनुवादक माध्यमसँ मैथिली साहित्यिक-चर्चामे प्रवेश करैत अछि।

भीमन्नाक जरैत खोपड़ी सभ क क्रोध वाग्-कौशल (वाग्-आडम्बर) नहि — प्रामाणिक नैतिक भावना थिक। ई क्रोध रस-सिद्धान्त मे नव स्थान माँगैत अछि।

काव्य-विषयक लोकतन्त्र

परम्परागत मैथिली काव्यमे — यहाँ तक कि आधुनिक काव्यमे सेहो — काव्य-योग्य विषय सीमित रहल: प्रेम, विरह, प्रकृति, दर्शन। श्रम-वस्तु (लाण्डा, धैला, साड़ीक कोर) काव्य-केन्द्र नहि बनल।

एहि परियोजनाक माध्यमसँ मैथिली पाठककेँ पहिल बेर दलित वस्तु-काव्यशास्त्र सँ परिचय होइत अछि — जाहिमे साड़ीक कोर, भालूक चाम, पोस्टर — ई सब उतने काव्य-योग्य थिक जतेक कालिदासक मेघ वा विद्यापतिक नायिका।

देह-राजनीतिक काव्यशास्त्र

मैथिली शृंगार-काव्यमे देह सौन्दर्य-विषय थिक — आदर्शीकृत, काव्यात्मक। दलित काव्यमे देह श्रम-विषय, पीड़ा-विषय, आ प्रतिरोध-विषय थिक — गोपाल गुरु क उग्र देहाधारित अनुभूति (मूलगामी देह-साक्षात्कार) । सुभद्राक लाण्डा मे "भले हमर अन्तड़ीमुँह सँ बाहर आबि जाय" — ई देह-अन्तरक प्रत्यक्ष यथार्थवाद (शारीरिक-यथार्थवाद) मैथिली काव्यमे नव भाषा लाबैत अछि।

साक्ष्य-काव्यशास्त्र

शोशाना फेलमैन आ डोरी लाउब साक्ष्य: साक्षीपनक संकट मे जे साक्ष्य-विधा परिभाषित कएल — जाहिमे पीड़ित अपन अनुभवकेँ साक्ष्यमे रूपान्तरित करैत अछि — ओ मैथिलीमे पहिलेपरक एहि अनुवाद-परियोजनाक माध्यमसँ प्रवेश करैत अछि।

सुभद्रा गवाही दैत छथि, भीमन्ना प्रश्न करैत छथि, विजयश्री स्राप दैत छथि — ई सब साक्ष्य-काव्यशास्त्रक भिन्न रूप थिक।

भाग चारि: समीक्षाक निष्कर्ष-संश्लेषण

८. *सफलताक मूल्यांकन*

जे उत्कृष्ट रूपसँ सफल भेल

केन्द्रीय विचारक हस्तान्तरण — भीमन्नाक पौराणिक-विरोधी तर्क, शशिनिर्मलाक त्रिमुखी संघर्ष, सोलंकीक गान्धी-व्यंग्य, सुनानीक "सदिखन", ईमाम-शादुलक मैत्री — ई सब मैथिलीमे पूर्णतः उपस्थित अछि।

देशज प्रतीकशास्त्रक संरक्षण — मैसम्मा देवी, अमलतास, मान्केनापुव्वु, लाण्डा, जिगिरी — एहि सबक मौलिक शक्ति मैथिलीमे बचल।

भावनात्मक तीव्रताक संचरण — पाठककेँ ईमामक हाथ काँपनाइ, विजयश्रीक स्राप, श्रियाक मुस्कानक तितलीसँकैटरपिलरमे रूपान्तरण — ई सब मैथिली पाठक सेहो अनुभव करैत अछि।

सीमा आ अपूर्णता

ध्वनि-सौन्दर्यक आंशिक क्षति — तेलुगु, गुजराती, उड़ियाक अपन संगीतात्मकता अंग्रेजीसँ होइत मैथिलीमे कमजोर भेल। "पाञ्चजन्य", "बासुकी" — एहि शब्दसभक उड़िया उच्चारण-सौन्दर्य मैथिलीमे स्वाभाविक नहि।

स्त्री-अनुवादकक अनुपस्थिति — सुभद्रा, शशिनिर्मला, गौरी, विनोदिनीक स्त्री-देह-अनुभव-केन्द्रित रचनासभक अनुवाद स्त्री-अनुवादक द्वारा अधिक प्रामाणिक होइत।

मूल भाषासँ सोझ अनुवादक अभाव — तेलुगु→मैथिली, गुजराती→मैथिली — एहन सोझ अनुवाद भेल रहितैक तऽ मध्यवर्ती भाषा क क्षतिसँ बचल जाइत।

नागरिक-शब्द-भण्डारक सीमा — मैथिली मुख्यतः ग्रामीण-काव्यात्मक परम्परासँ अबैत अछि। गुजराती कवितामे "पे-एण्ड-यूज शौचालय", "रिक्शाक अश्लील हुड" — ई नागरिक-आधुनिक सन्दर्भ मैथिलीमे बेसुर लागैत अछि।

९. *तुलनात्मक काव्य-मानचित्र*

तीन भाषाक दलित काव्यक तुलनात्मक मानचित्र एहि प्रकार थिक:

तेलुगु — देह, श्रम, इतिहास, पौराणिक-पुनर्पाठ, नारीवाद-भीतरक संवाद — सर्वाधिक विविध।

गुजराती — नगर-यथार्थ, गान्धी-आलोचना, राष्ट्र-निर्माण-आलोचना — राजनीतिक-ऐतिहासिक।

उड़िया — दार्शनिक-रहस्यवाद, किसान-दृष्टि, निम्नवर्गीय ज्ञानमीमांसा — अस्तित्ववादी-दार्शनिक।

तीनू मिलिकऽ दलित-अनुभवक त्रिआयामी चित्र प्रस्तुत करैत अछि — बाहरसँ भीतर, इतिहाससँ वर्तमान, पीड़ासँ विद्रोह।

१०. मैथिली साहित्यपर दीर्घकालिक प्रभावक सम्भावना

एहि परियोजनाक दीर्घकालिक महत्त्व एहि अनुवादसभ स्वयं नहि — ई अनुवाद जे प्रेरणा आ मानक स्थापित करत।

मैथिली दलित लेखकक उद्भव — मिथिलाक दलित समुदायसभ — मुसहर, दुसाध, चमार, धोबी — जखन मैथिलीमे दलित साहित्यक भाषा, शिल्प, आ राजनीति देखत, जखन बुझत जे हुनकर जीवन-यथार्थ साहित्यिक रूपसँ अभिव्यक्त कएल जा सकैत अछि — तखन स्वयंलेखन (स्वत:लेखन) सम्भव होएत।

साहित्य अकादेमी मान्य साहित्यिक दबाव क प्रतिरोध — विदेहक दलित-अनुवाद मैथिली साहित्य अकादेमी मान्य साहित्यिक परम्पराकेँ वैकल्पिक मानक प्रस्तुत करैत अछि। जे साहित्य मान्य-परम्परागत होएबाक "योग्य" थिक, ओकर परिभाषा विस्तृत करैत अछि।

अन्य भारतीय दलित परम्पराक मैथिलीमे प्रवेश — मराठी दलित काव्य (नामदेव ढसाल, दया पवार), बंगला दलित साहित्य, पंजाबी दलित काव्य — एहि परियोजनाक विस्तारसँ सम्पूर्ण अखिल-भारतीय दलित साहित्यिक परम्परा मैथिलीमे प्रवेश कऽ सकैत अछि।

अन्तिम निष्कर्ष: एकटा सभ्यता-परियोजना

ऑड्रे लॉर्ड मौनक भाषा आ क्रियामे रूपान्तरण मे कहैत छथि: "कविता विलासिता नहि; ई जीवनक अनिवार्य आवश्यकता अछि। " ई दलित काव्यक लेल तऽ अक्षरश: सत्य थिक।

विदेहक दलित-साहित्य-अनुवाद परियोजना — एहि समग्र दृष्टिसँ — पाँच स्तरपर एकहि साथ काम करैत अछि:

भाषिक स्तरपर: तेलुगु, गुजराती, उड़िया आ मैथिलीक बीच भाषिक सेतु-निर्माण।

साहित्यिक स्तरपर: मैथिली मान्य साहित्यिक परम्परा मे दलित-स्वरक प्रवेश — नव काव्यशास्त्रीय सिद्धान्त सहित।

सांस्कृतिक स्तरपर: भिन्न-भिन्न दलित समुदायक सांस्कृतिक स्मृतिक संरक्षण — कलन्दरसभक भालू-नाच, चर्मकारसभक लाण्डा-ज्ञान, दलित-स्त्रीक साड़ीक कोर।

राजनीतिक स्तरपर: दलित उत्पीड़नक अखिल-भारतीय यथार्थकेँ मैथिली पाठककेँ दर्शाएब — एहि सन्देशक संग जे मिथिलाक दलित आ आन्ध्रक दलित एकहि नियतिक भागीदार छथि।

ऐतिहासिक स्तरपर: मैथिली दलित साहित्यिक परम्पराक बीजारोपण — जे स्वयं विदेहक अनुवाद नहि, ओहिसँ प्रेरित भावी मैथिली दलित लेखन होएत।

बासुदेव सुनानीक शब्द एहि सम्पूर्ण परियोजनाक उपयुक्त समापन-स्वर थिक:

"एतय एकटा बीउ प्रतिज्ञा लेने अछि अङ्कुरित होबाक — सब किछु हरियर करबाक इच्छा सङ्गे। "

ई बीउ बोआएल गेल अछि।

जे माटिमे बोआएल अछि ओ मिथिलाक माटि थिक। जे बीउ बोआएल गेल अछि ओ सत्यक, न्यायक, मानवीय गरिमाक, आ दलित-आवाजक बीउ थिक।

आ जे वृक्ष उगत — ओ मैथिली दलित साहित्यक वृक्ष होएत — जकर जड़ मिथिलाक माटिमे, शाखा आम्बेडकर आ भीमन्नाक विचारमे, आ पात विदेहक समानान्तर साहित्य आन्दोलनक ऊर्जासँ हरियर।

अनुलग्नक:१ मैथिलीक मूल आ अनूदित दलित गद्य-पद्य साहित्य लेल एकटा समीक्षा सिद्धान्त

प्रस्तावना: समीक्षा सिद्धान्तक आवश्यकता

कोनो भाषाक साहित्यक समीक्षा लेल एकटा सुसंगत सैद्धान्तिक ढाँचाक आवश्यकता होइत अछि। मैथिली साहित्यक समीक्षाक इतिहासमे पारम्परिक भारतीय सिद्धान्त (रस, अलंकार, ध्वनि, रीति, औचित्य) आधुनिक कालमे पाश्चात्य सिद्धान्त (मार्क्सवाद,

नारीवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्त) दुनूक प्रभाव देखाबैत अछि। मुदा एहि सभ सिद्धान्तक एकीकृत रूपमे प्रयोग करबाक प्रयास सीमित रहल अछि, विशेषतः दलित साहित्य, महिला साहित्य, अनूदित साहित्य जहिना विधाक क्षेत्रसभमे।

प्रस्तुत समीक्षा सिद्धान्तक उद्देश्य अछि—भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्तक समन्वय करैत मैथिली मूल आ अनूदित गद्य-पद्य साहित्यक मूल्यांकन लेल एकटा व्यवस्थित ढाँचा प्रस्तुत करब। ई सिद्धान्त न तऽ पूर्णतः भारतीय अछि, न पूर्णतः पाश्चात्य; ई दुनूक संवादसँ निर्मित एकटा तृतीय मार्ग अछि—जे मैथिली साहित्यक विशिष्टता (भाषा, संस्कृति, क्षेत्रीय अस्मिता) कैँ केन्द्रमे राखैत, वैश्विक सैद्धान्तिक विकाससँ संवाद करैत अछि।

प्रथम अध्यायः समीक्षा सिद्धान्तक आधारभूत तत्व

१.१ स्थानीयता आ सार्वभौमिकताक समन्वय

कोनो समीक्षा सिद्धान्तक पहिल चुनौती ई अछि जे ओ स्थानीय (मैथिली) साहित्यक विशिष्टता कैँ सम्मान करय, मुदा सार्वभौमिक (भारतीय वा वैश्विक) साहित्यिक मानदण्डसँ संवाद करय। मैथिली साहित्यक विशिष्टता अछि:

-**क्षेत्रीय भाषाक अस्मिता**: मैथिली भारतक उनतालीस भाषासभमे सँ एकटा, जकर अपन हजार वर्षक साहित्यिक परम्परा अछि (विद्यापतिसँ वर्तमान धरि) ।

-**लोक आ शास्त्रक संगम**: मैथिली साहित्यमे *बिदापत नाच, सोहर, समदौनी, पगरी*जहिना लोक-परम्परा सभक गहिर उपस्थिति अछि।

-**प्रवासक अनुभव**: मैथिली भाषी सभक विस्थापन (प्रवास) दलित साहित्य, महिला साहित्य, आ अनूदित साहित्यक एकटा केन्द्रीय विषय अछि।

एहि विशिष्टता कैँ केन्द्रमे राखैत, ई समीक्षा सिद्धान्त**स्थानीय-सार्वभौमिक संवाद**पर बल दैत अछि। अर्थात्, मैथिली साहित्यक मूल्यांकन लेल भारतीय सिद्धान्त (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति) आ पाश्चात्य सिद्धान्त (उपनिवेशवाद-उत्तर, नारीवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद) दुनूक प्रयोग करब, मुदा मैथिली साहित्यक स्थानीय सन्दर्भक अधीन राखि कऽ।

१.२ मूल आ अनूदित साहित्यक समानता आ अन्तर

ई समीक्षा सिद्धान्त **मूल** आ **अनूदित** साहित्यक बीच कोनो पदानुक्रम स्वीकार नै करत। दुनूक समान महत्व अछि, कारण:

-**मैथिली अनुवाद साहित्य** (जेना प्रस्तुत संकलनमे तेलुगु, गुजराती, उड़िया दलित साहित्यक अनुवाद) मैथिली साहित्यक दायराकैँ विस्तार करैत अछि।

- अनुवाद*दोसरक आवाज* (अन्यक स्वर) कैँ मैथिली साहित्यमे स्थान दैत अछि—जे भारतीय साहित्यक बहुभाषीक स्वरूप लेल आवश्यक अछि।

- मुदा अनुवादक मूल्यांकन लेल **अनुवाद-विशिष्ट**मापदण्ड आवश्यक अछि: *निष्ठा* (निष्ठा) वा*मुक्ति* (स्वातन्त्र्य) क पुरान द्वन्द्वसँ बाहर निकलि कऽ, अनुवादक *सर्जनात्मकता*पर ध्यान देब।

१.३ गद्य आ पद्यक भिन्नता

ई समीक्षा सिद्धान्त **गद्य** आ **पद्य**क बीच स्पष्ट अन्तर स्वीकार करत:

-**पद्य**लेल भारतीय सिद्धान्त—रस, ध्वनि, अलंकार, छन्द—क अधिक उपयोगी अछि, कारण पद्यक *संक्षिप्तता, लय, प्रतीकात्मकता* एहि सिद्धान्तक अनुकूल अछि।

-**गद्य** (कहानी, उपन्यास, नाटक, निबन्ध) लेल पाश्चात्य सिद्धान्त—मार्क्सवाद, नारीवाद, उपनिवेशवाद-उत्तर—क अधिक उपयोगी अछि, कारण गद्य*विस्तार, चरित्र-विकास, सामाजिक-राजनीतिक सन्दर्भ*पर अधिक निर्भर अछि।

- मुदा ई विभाजन निरपेक्ष नै अछि; समीक्षक अपन विवेकसँ दुनूक संयोग करि सकैत अछि।

द्वितीय अध्यायः भारतीय सिद्धान्तक प्रयोग

२.१ रस सिद्धान्त

रस सिद्धान्त भारतीय साहित्यशास्त्रक केन्द्रबिन्दु अछि। एहि समीक्षा सिद्धान्तमे रसक प्रयोग निम्नलिखित तरिकासँ कएल जायत:

क. रसक नव रूप: शास्त्रीय नव रस (शृङ्गार, हास्य, करुण, रौद्र, वीर, भयानक, वीभत्स, अद्भुत, शान्त) मैथिली साहित्यमे उपलब्ध अछि, मुदा ओकर स्वरूप भिन्न अछि। उदाहरण लेल, दलित साहित्यमे *रौद्रक आश्रय* राजा-योद्धा नै, बल्कि *दलित समुदाय* अछि; *शृङ्गारक विभाव प्रेमी-प्रेमिका* नै, बल्कि *श्रम-शरीर* अछि।

ख. स्थायी भावक विस्तार: ई समीक्षा सिद्धान्त *नव स्थायी भाव* क स्वीकार करत—*श्रम, अभाव, प्रतिरोध, अस्मिता, प्रवास*। ई सभ मैथिली साहित्यक विशिष्ट अनुभव अछि, आ ई सभ *रस* क परिणति पाबि सकैत अछि।

ग. साधारणीकरणक पुनर्विचार: शास्त्रीय रस सिद्धान्त *साधारणीकरण* (साधारणीकरण) पर बल दैत अछि। मुदा दलित साहित्य, महिला साहित्य, प्रवासी साहित्यमे *विशिष्टता* (विशिष्टता) कैँ सम्मान करबाक आवश्यकता अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त *साधारणीकरण* आ *विशिष्टता* क द्वन्द्वकैँ समाधान करबाक लेल *विशिष्ट-सार्वभौमिक* (विशिष्ट-सार्वभौमिक) क अवधारणा प्रस्तावित करत—अर्थात्, *विशिष्ट* अनुभवकैँ *सार्वभौमिक* रूपमे प्रस्तुत नै करि, बल्कि *विशिष्टक सार्वभौमिक* महत्वकैँ स्थापित करब।

२.२ ध्वनि सिद्धान्त (आनन्दवर्धन)

ध्वनि सिद्धान्त *व्यङ्ग्य* (व्यञ्जित अर्थ) पर बल दैत अछि। मैथिली साहित्यक समीक्षामे ध्वनिक प्रयोग निम्नलिखित रूपमे होयत:

क. व्यङ्ग्यक स्तर: मैथिली कविता (विद्यापतिसँ वर्तमान धरि) *व्यङ्ग्य* पर अधिक निर्भर अछि। समीक्षककैँ *अभिधा* (शाब्दिकअर्थ), *लक्षणा* (रूपकात्मक अर्थ), आ *व्यञ्जना* (व्यञ्जित अर्थ) क भेद करबाक आवश्यकता अछि।

ख. ध्वनि आ अनुवाद: अनूदित साहित्यमे *व्यङ्ग्यक* अनुवाद सबसँ पैघ चुनौती अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त मानैत अछि जे अनुवादक *व्यङ्ग्य* कैँ यथासंभव बचाए राखबाक चाही, मुदा जतय संभव नै अछि, ओतय *सर्जनात्मक अनुवाद* (सर्जनात्मक अनुवाद) कैँ स्वीकार करबाक चाही।

२.३ अलंकार सिद्धान्त

अलंकार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि) भारतीय साहित्यक सौन्दर्यशास्त्रक अभिन्न अंग अछि। ई समीक्षा सिद्धान्तमे:

क. अलंकारक सामाजिकता: मैथिली दलित साहित्यमे अलंकार केवल *अलंकरण* (अलंकरण) लेल नै, बल्कि *प्रतिरोधक* साधनक रूपमे प्रयोग होइत अछि। उदाहरण लेल, *साड़ीक कोर* कवितामे *मैसम्मा देवी* क उपमा—ई *व्यङ्ग्य* सवर्ण-हिन्दू देवी-परम्पराक विपर्यास करैत अछि।

ख. लोक-अलंकार: मैथिली साहित्यमे *लोक-अलंकार* (लोक-अलंकरण) क अलग परम्परा अछि—जेना *कहावत, मुहावरा, लोकोक्ति*। ई सभकैँ शास्त्रीय अलंकारक समान मूल्य देनाइ आवश्यक अछि।

२.४ रीति सिद्धान्त (वामन)

रीति सिद्धान्त *शैली* (शैली) पर बल दैत अछि। मैथिली साहित्यमे:

क. मैथिलीक शैलीगत विशिष्टता: मैथिली भाषाक *मधुरता, कोमलता, प्रवाह*—ई सभ शैलीगत गुण अछि जे समीक्षामे ध्यान देबाक चाही।

ख. अनुवादमे शैली: अनूदित साहित्यमे *मूलक शैली* (स्रोत-शैली) आ *लक्ष्यक शैली* (लक्ष्य-शैली) क बीच सन्तुलन समीक्षाक महत्वपूर्ण मुद्दा अछि।

तृतीय अध्याय: पाश्चात्य सिद्धान्तक प्रयोग

३.१ उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्त

उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्त (एडवर्ड सईद, गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक, होमी के. भाभा, दीपेश चक्रवर्ती) मैथिली साहित्यक समीक्षाक लेल अत्यन्त उपयोगी अछि, कारण:

क. उपनिवेशक भाषा-नीति: मैथिली सदियों सँ *उपनिवेशक* भाषा (संस्कृत, फारसी, उर्दू, अंग्रेजी, हिन्दी) क प्रभावमे रहल अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त पूछत: मैथिली साहित्य एहि उपनिवेशी दबावक सामना कइ प्रकारेँ करैत अछि? *प्रतिरोधक* रूप की अछि? *समायोजनक* रूप की अछि?

ख. सबाल्टर्न (निम्नवर्गीय) क आवाज: गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक प्रश्न—"केन सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि? "—मैथिली दलित साहित्य, महिला साहित्य, प्रवासी साहित्यक समीक्षाक लेल मूलभूत अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त पूछत: मैथिली साहित्यमे सबाल्टर्न (दलित, महिला, प्रवासी, आदिवासी) के आवाज कइ प्रकारेँ प्रस्तुत अछि? के ओ आवाज *मध्यस्थता* (मध्यस्थता) सँ मुक्त अछि? यदि नै, तऽ ओ मध्यस्थता *सशक्तीकरण* (सशक्तीकरण) अछि वा *पुनरुत्पादन* (पुनरुत्पादन)?

ख. प्रान्तीयकरण: दीपेश चक्रवर्तीक *प्रान्तीयकरण* (यूरोपकेँ प्रान्तीय बनाब) क अवधारणा मैथिली साहित्यक समीक्षाक लेल प्रासंगिक अछि। मैथिली साहित्यकेँ *क्षेत्रीय* (क्षेत्रीय) क श्रेणीमे सीमित करबाक प्रवृत्तिक विरोध करैत, ई समीक्षा सिद्धान्त मैथिली साहित्यक *वैश्विक* महत्वकेँ स्थापित करबाक प्रयास करत।

३.२ नारीवादी सिद्धान्त

नारीवादी सिद्धान्त (वर्जीनिया वुल्फ, साइमोन द बोवा, जूडिथ बटलर) मैथिली साहित्यमे महिलाक अनुभव, शरीर, आवाज, प्रतिरोधक विश्लेषण लेल आवश्यक अछि।

क. स्त्री-लेखनक विश्लेषण: मैथिली साहित्यमे महिला लेखिकाक उपस्थिति बढ़ैत अछि (जेना—उषा किरण खान, सुभद्रा झा, आदि) । ई समीक्षा सिद्धान्त पूछत: महिला लेखिकाक *स्वर* पुरुष लेखकक *स्त्री-चरित्र*सँ कइ प्रकारेँ भिन्न अछि?

ख. शरीरक राजनीति: मैथिली साहित्यमे *स्त्री-शरीर*क प्रतिनिधित्व केन्द्रीय मुद्दा अछि। नारीवादी सिद्धान्तक सहायतासँ समीक्षक विश्लेषण करि सकैत अछि जे स्त्री-शरीर *शृङ्गारक अलंकार* अछि वा *श्रमक दस्तावेज? वासनाक विषय* अछि वा *प्रतिरोधक स्थान?*

ग. अन्तर्विच्छेदीयता (बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध): दलित नारीवाद (जेना—शैला देवी, बीमा भीम) *जाति* आ *लिङ्ग*क दोहरा उत्पीड़नक विश्लेषण करैत अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त *अन्तर्विच्छेदीयता*केँ केन्द्रमे राखैत अछि, अर्थात्—मैथिली साहित्यमे स्त्रीक अनुभव *जाति, वर्ग, क्षेत्र, धर्म*क सँगममे देखब।

३.३ मार्क्सवादी सिद्धान्त

मार्क्सवादी सिद्धान्त (कार्ल मार्क्स, जॉर्ज लुकाच, एंटोनियो ग्राम्सी) साहित्यक *वर्ग-संघर्ष, आर्थिक-आधार, विचारधारा*क विश्लेषण लेल उपयोगी अछि।

क. वर्ग-संघर्ष: मैथिली साहित्यमे *जमीन्दार-किसान, मजूर-मालिक, सवर्ण-दलित*क द्वन्द्व केन्द्रीय विषय अछि। मार्क्सवादी सिद्धान्त एहि द्वन्द्वक *आर्थिक आधार*क विश्लेषण करैत अछि।

ख. हेगेमोनी (प्रभुत्व): ग्राम्सीक *हेगेमोनी*क अवधारणा मैथिली साहित्यमे *सवर्ण-वर्चस्*क *सांस्कृतिक* रूपक विश्लेषण लेल उपयोगी अछि। उदाहरण लेल, विद्यापतिकेँ *ब्राह्मण* घोषित करबाक प्रक्रिया—ई *हेगेमोनी*क कार्य अछि।

ग. बाजार-पूँजीवाद: अनूदित साहित्य, विशेषतः दलित साहित्यक अनुवाद, *बाजार* आ *प्रकाशन-उद्योग*क दबावमे आबि रहल अछि। मार्क्सवादी समीक्षा एहि *आर्थिक-राजनीतिक* सन्दर्भक विश्लेषण करैत अछि।

३.४ उत्तर-आधुनिकतावाद आ उत्तर-संरचनावाद

उत्तर-आधुनिकतावाद (ज्याँ-फ्राँस्वा ल्योतार) आ उत्तर-संरचनावाद (जाक देरिदा, मिशेल फूको) *सत्य, पहिचान, लेखक, इतिहास* जहिना अवधारणासभक अस्थिरता पर बल दैत अछि।

क. पहिचानक अस्थिरता: मैथिली साहित्यमे *मैथिल* पहिचान—भाषिक, सांस्कृतिक, क्षेत्रीय—स्वाभाविक नै, बल्कि *निर्मित* (निर्मित) अछि। उत्तर-आधुनिक समीक्षा एहि *निर्माण*क प्रक्रियाक विश्लेषण करैत अछि।

ख. लेखकक मृत्यु: देरिदाक *लेखकक मृत्यु* (लेखकक मृत्यु) क अवधारणा अनूदित साहित्यक समीक्षाक लेल विशेष रूपसँ प्रासंगिक अछि। अनुवादमे *मूल-लेखक* आ *अनुवादक*क बीचक सीमा धुंधला भऽ जाइत अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त *लेखक*क अवधारणाकेँ *अनुवाद-प्रक्रिया*क सन्दर्भमे पुनर्विचार करबाक प्रस्ताव करैत अछि।

ग. इतिहासक विखण्डन: फूकोक *इतिहासक पुरातत्व* (इतिहासक पुरातत्त्व) मैथिली साहित्यक *इतिहास-लेखन*क आलोचनात्मक पुनर्पाठ लेल उपयोगी अछि। उदाहरण लेल, *विद्यापतिक जाति-निर्माण*क इतिहास—ई *इतिहास-लेखनक राजनीति*क विश्लेषणक माग करैत अछि।

चतुर्थ अध्यायः समीक्षा सिद्धान्तक व्यावहारिक ढाँचा

४.१ समीक्षाक स्तर

ई समीक्षा सिद्धान्त साहित्यिक कृतिक विश्लेषण लेल पाँच स्तर प्रस्तावित करत:

प्रथम स्तरः भाषिक विश्लेषण

- मैथिली भाषाक *शैली, लय, शब्दावली, व्याकरणिक विशिष्टता*क विश्लेषण।

- अनूदित साहित्यमे *स्रोत भाषा* (स्रोत-भाषा) आ *लक्ष्य भाषा* (लक्ष्य-भाषा) क बीच *समानता* आ *अन्तर*क विश्लेषण।

द्वितीय स्तरः शैलीगत विश्लेषण

- भारतीय सिद्धान्तक प्रयोग—*रीति, अलंकार, गुण, दोष*।

- पाश्चात्य सिद्धान्तक प्रयोग—*शैली, आख्यान-तकनीक* (आख्यान तकनीक), *बिम्ब-विधान* (बिम्ब-योजना), *प्रतीक* (प्रतीकशास्त्र) ।

तृतीय स्तरः रस-ध्वनि विश्लेषण

- कृतिक *स्थायी भाव*क पहिचान।

-*विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव*क विश्लेषण।

-*व्यङ्ग्य*क स्तरक पहिचान आ विश्लेषण।

-*रस-निष्पत्ति*क प्रक्रियाक मूल्यांकन।

चतुर्थ स्तरः सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण

- मार्क्सवादी सिद्धान्त—*वर्ग-संघर्ष, आर्थिक-आधार, विचारधारा*।

- नारीवादी सिद्धान्त—*लिङ्ग-राजनीति, शरीरक राजनीति, अन्तर्विच्छेदीयता*।

- उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्त—*सबाल्टर्न आवाज, प्रान्तीयकरण, अनुवाद-राजनीति*।

पञ्चम स्तरः आस्वादक विश्लेषण (सौन्दर्यात्मक विश्लेषण)

-*सहृदय*क दृष्टिसँ कृतिक *आस्वाद*क अनुभव।

-*दूरी* (दूरी) आ *निकटता* (निकटता) क द्वन्द्व।

-*पीड़ाक आस्वाद*क नैतिकता (नैतिकता क पीड़ाक आस्वाद) ।

४.२ विधा-विशिष्ट विश्लेषण

क. कविता लेल:

-*छन्द, लय, अन्त्यानुप्रास* (तुक), *तुक* (लय) क विश्लेषण—भारतीय सिद्धान्तक अधिक प्रयोग।

-*बिम्ब* (बिम्ब), *प्रतीक* (प्रतीक), *रूपक* (रूपक) क विश्लेषण—पाश्चात्य सिद्धान्तक प्रयोग।

-*व्यङ्ग्य* (ध्वनि) क स्तरक पहिचान।

ख. कहानी आ उपन्यास (लघुकथा आ उपन्यास) लेल:

-*आख्यान-तकनीक* (आख्यान तकनीक)—*सर्वज्ञ-आख्यान, प्रथम-पुरुष-आख्यान, बहु-आख्यान*।

-*चरित्र-विकास* (चरित्र विकास)—*गोल-चरित्र* (बहुआयामी चरित्र), *सपाट-चरित्र* (एकरेखीय चरित्र), *अस्तित्ववादी-चरित्र*।

-*कथानक* (कथानक)—*रेखीय* (रैखिक), *चक्रीय* (चक्रीय), *खण्डित* (विखण्डित), *प्रवाह-चेतना* (चेतना-प्रवाह) ।

-*समय-संरचना* (काल-संरचना)—*कालक्रम, अकालक्रम, पुनर्स्मरण* (पूर्वस्मृति), *पूर्व-सूचन* (पूर्वाभास) ।

ग. नाटक लेल:

-*रङ्गमञ्चीयता* (रङ्गमञ्चीयता)—*अभिनय, वाद्य, संवाद, दर्शक-सम्बन्ध*।

- भारतीय *नाट्यशास्त्रक* सिद्धान्त—*वृत्ति, प्रवृत्ति, पुरुष-प्रकृति, नायक-नायिका-भेद*।

- पाश्चात्य नाट्य-सिद्धान्त—*एपिक थियेटर* (ब्रेख्त), *एब्सर्ड थियेटर* (बेकेट, इयोनेस्को), *फेमिनिस्ट थियेटर*।

घ. अनुवाद साहित्य (अनूदित साहित्य) लेल:

-*स्रोत भाषा* (स्रोत-भाषा) आ *लक्ष्य भाषा* (लक्ष्य-भाषा) क बीच *समकक्षता* (समतुल्यता) क स्तर।

-*व्यङ्ग्यक* अनुवाद—*ध्वनिक* हानि वा संरक्षण।

-*सांस्कृतिक-अनुवाद* (सांस्कृतिक अनुवाद)—*स्थानीयताक वैश्विक* सन्दर्भमे प्रस्तुति।

-*अनुवादकक सर्जनात्मकता* (सर्जनात्मकता)—*निष्ठा* (निष्ठा) आ *मुक्ति* (स्वातन्त्र्य) क सन्तुलन।

४.३ मैथिली साहित्यक विशिष्ट श्रेणीसभ

ई समीक्षा सिद्धान्त मैथिली साहित्यक निम्नलिखित विशिष्ट श्रेणीसभक स्वीकार करत:

क. लोक-साहित्य: *बिदापत नाच, सोहर, समदौनी, पगरी, विवाह-गीत, चौरा-चौरी, झूमर*—ई सभ विधाक विश्लेषण लेल *लोक-सौन्दर्यशास्त्र* (लोक सौन्दर्यशास्त्र) क विकास आवश्यक अछि।

ख. दलित साहित्य: मैथिली दलित साहित्य अपेक्षाकृत नव अछि, मुदा तेजीसँ बढ़ि रहल अछि। ई साहित्यक विश्लेषण लेल *दलित सौन्दर्यशास्त्र* (दलित सौन्दर्यशास्त्र)—*दर्द, आक्रोश, प्रतिरोध, अस्मिता, संघर्ष*—क अवधारणा आवश्यक अछि।

ग. महिला साहित्य (स्त्री-साहित्य): मैथिली महिला साहित्यमे *स्त्री-शरीर, गृह-बाहिर, मातृत्व, वासना, प्रतिरोध* जहिना विषय सभक विश्लेषण लेल *नारीवादी सौन्दर्यशास्त्र* (नारीवादी सौन्दर्यशास्त्र) आवश्यक अछि।

घ. प्रवासी साहित्य: मैथिली प्रवासी साहित्य (जे दिल्ली, मुम्बई, कोलकाता, आ प्रवासी देशसभमे लिखल जाइत अछि) क विश्लेषण लेल *प्रवासी सौन्दर्यशास्त्र* (प्रवासी सौन्दर्यशास्त्र)—*बहुपहिचान, हाइब्रिडिटी, मूल-विस्थापन*—क अवधारणा आवश्यक अछि।

पञ्चम अध्याय: समीक्षा सिद्धान्तक उदाहरणात्मक प्रयोग

५.१ उदाहरण: प्रस्तुत संकलनक समीक्षा

प्रस्तुत संकलन (मैथिलीमे अनूदित दलित साहित्य) क विश्लेषण निम्नलिखित स्तर पर होयत:

प्रथम स्तर: भाषिक विश्लेषण

- मैथिली अनुवादमे मूल तेलुगु, गुजराती, उड़िया भाषाक *लय, शब्दावली, मुहावराकेँ* कइ प्रकारेँ प्रस्तुत कएल गेल अछि?

-*उर्दू* शब्दसभ (जे तेलुगु तेलंगाना बोलीमे उपस्थित अछि) क मैथिली अनुवादमे कइ प्रकारेँ *स्थानीयकरण* (स्थानीयकरण) कएल गेल अछि?

द्वितीय स्तर: शैलीगत विश्लेषण

- कवितासभमे *बिम्ब-विधान* (जेना—*जरैत खोपड़ी, साड़ीक कोर, मान्केनापुव्वु*) क प्रयोग कइ प्रकारेँ *दलित सौन्दर्यशास्त्रक* निर्माण करैत अछि?

- कहानी ("कौआ", "कारी मसि") मे *आख्यान-तकनीक* (यथार्थवादी, प्रतीकात्मक, रूपकात्मक) क प्रयोग की अछि?

तृतीय स्तर: रस-ध्वनि विश्लेषण

-*रौद्र, वीभत्स, करुण*—ई तीन रसक *स्थायी भावक* पहिचान।

-*शृङ्गारक विपर्यास*—*श्रम-शरीर, अभाव-शरीरक शृङ्गारक* रूपमे प्रस्तुति।

-*व्यङ्ग्यक स्तर—जरैत खोपड़ीक व्यङ्ग्य* (दलित-अस्मिता, धर्म-राजनीति, पुनर्जन्म-विडम्बना) ।

चतुर्थ स्तर: सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण

-*वर्ग-संघर्ष—जमीन्दार-किसान, पूँजी-श्रमिकक* द्वन्द्व।

-*जाति-राजनीति—सवर्ण-दलितक* द्वन्द्व, *अस्पृश्यता, जाति-हिंसा*।

-*लिङ्ग-राजनीति—पितृसत्ता, स्त्री-शरीरक उत्पीड़न, दलित-स्त्रीक दोहरा उत्पीड़न*।

-*सबाल्टर्न आवाज—मादिग* (चर्मकार), *बण्डोड़ु, कलन्दर* (भालू-नचबै बला) जहिना हाशियाकृत समुदायक प्रतिनिधित्व।

पञ्चम स्तर: आस्वादक विश्लेषण

-*पीड़ाक आस्वाद*—की पाठक *दलित-पीड़ाक आस्वाद* करि सकैत अछि? यदि करि सकैत अछि, तऽ ई *आस्वादक नैतिकता* की अछि?

-*दूरी* आ *निकटता*—दलित-पाठक आ गैर-दलित-पाठकक *आस्वादक* अनुभव भिन्न होइत अछि वा नै?

-*रस-निष्पत्ति*—की एहि साहित्यमे *रसक निष्पत्ति* भेल अछि, वा ई *रसक सीमा* पर ठोकर खाइत अछि?

षष्ठ अध्याय: समीक्षा सिद्धान्तक सीमा आ सम्भावना

६.१ सीमा (सीमासभ)

कोनो सिद्धान्त पूर्ण नै होइत अछि। ई समीक्षा सिद्धान्तक निम्नलिखित सीमा अछि:

क. समन्वयक कठिनाई: भारतीय आ पाश्चात्य सिद्धान्तक *शब्दावली, अवधारणा, दर्शन* भिन्न अछि। ओकर समन्वय हमेशा *तनाव* (तनाव) सृजना करैत अछि। ई सिद्धान्त ओहि *तनावकेँ दमन* नै करैत, बल्कि *सर्जनात्मक* रूपमे प्रयोग करबाक सुझाव दैत अछि।

ख. मैथिली साहित्यक विविधता: मैथिली साहित्य *विद्यापतिसँ वर्तमान धरि* अपार विविधतासँ भरल अछि—*महाकाव्य, पद्यावली, लोक-नाट्य, आधुनिक कविता, उपन्यास, कहानी, दलित-लेखन, महिला-लेखन, प्रवासी-लेखन*। एकटा सिद्धान्त सभ विधाक पूर्ण व्याख्या करि सकय, ई दावा करब अनुचित अछि। ई सिद्धान्त *लचीलापन* (लचीलापन) पर बल दैत अछि—समीक्षक अपन *विवेकसँ* सिद्धान्तक प्रयोग करत।

ग. अनुवादक विशिष्टता: अनूदित साहित्यक समीक्षा लेल *मूल* आ *अनुवादक* दुनूक ज्ञान आवश्यक अछि। मुदा सभ समीक्षक बहुभाषी नै होइत अछि। ई सिद्धान्त *अनुवाद-समीक्षाक* सीमाकेँ स्वीकार करैत अछि, आ *सहयोगात्मक समीक्षा* (सहयोगात्मक समीक्षा) क सम्भावना खोजैत अछि।

६.२ सम्भावना (सम्भावनासभ)

क. अन्तःविषयकता: ई समीक्षा सिद्धान्त *साहित्यकेँ इतिहास, समाजशास्त्र, राजनीति-विज्ञान, दर्शन, भाषा-विज्ञानसँ* जोड़ैत अछि। ई *अन्तःविषयक* दृष्टि मैथिली साहित्यक *बहु-आयामी* (बहुआयामी) विश्लेषणक सम्भावना खोलैत अछि।

ख. तुलनात्मक साहित्य: ई सिद्धान्त *मैथिली साहित्यक अन्य भारतीय भाषाक साहित्य* (तेलुगु, गुजराती, उड़िया, बंगला, हिन्दी) आ *वैश्विक साहित्यसँ* तुलनात्मक अध्ययनक सम्भावना खोलैत अछि।

ग. अनुवाद-अध्ययन: ई सिद्धान्त *अनुवादकेँ गौण* (गौण) नै, बल्कि *सर्जनात्मक* (सर्जनात्मक) विधाक रूपमे स्थापित करैत अछि। ई *अनुवाद-समीक्षाक* विकासक सम्भावना खोलैत अछि।

घ. सिद्धान्तक स्थानीयकरण: ई सिद्धान्त *पाश्चात्य सिद्धान्तक स्वीकार* आ *आलोचना* दुनूक प्रस्ताव करैत अछि—*उपनिवेशवाद-उत्तर* (उपनिवेशवाद-उत्तर) सिद्धान्तक प्रयोग करैत, मुदा *यूरोकेन्द्रिक* (यूरोप-केन्द्रित) प्रवृत्तिक आलोचना सेहो करैत अछि।

निष्कर्ष: समीक्षा सिद्धान्तक भविष्य

ई समीक्षा सिद्धान्त *भारतीय* आ *पाश्चात्य* सिद्धान्तक *समन्वयक* प्रयास अछि, मुदा ई *समन्वय अन्तर्विरोधसँ* मुक्त नै अछि। ई *अन्तर्विरोध* सिद्धान्तक *दुर्बलता* नै, बल्कि *शक्ति* अछि—कारण ई साहित्यक *जटिलताक* स्वीकार करैत अछि, ओकरा *सरल* करबाक प्रयास नै करैत।

मैथिली साहित्य, अपन हजार वर्षक इतिहास, अपन लोक-शास्त्र-संगम, अपन प्रवास-अनुभव, अपन दलित-महिला-आवाजक उदय—एहि सभ विशिष्टता लेल एकटा *समीक्षा सिद्धान्तक* आवश्यकता अछि जे *स्थानीय* (स्थानीय) केँ केन्द्रमे राखैत, *वैश्विक* (वैश्विक) सँ संवाद करय। ई सिद्धान्त ओहि *आवश्यकताक* उत्तर देबाक प्रयास अछि।

ई सिद्धान्त *अन्तिम सत्यक* दावा नै करत; ई *प्रारम्भिक बिन्दु* अछि। ई मैथिली साहित्यक समीक्षाक *नव द्वारक* खोलैत अछि—जतय *रस* आ *दर्द*, *ध्वनि* आ *प्रतिरोध*, *अलंकार* आ *हाइब्रिडिटी*, *शान्त* आ *संघर्षक* संवाद संभव होइत अछि।

समीक्षकक अन्तिम टिप्पणी: कोनो समीक्षा सिद्धान्त *जीवित* तखन होइत अछि, जखन ओ *विकसित* (विकसित होब) होइत रहैत अछि, *प्रश्नक* रैत रहैत अछि, *नव साहित्यिक अनुभवक* सामना करैत रहैत अछि। ई सिद्धान्त ओहि *विकासक* आमन्त्रण अछि। मैथिली साहित्यक भविष्यक समीक्षा एहि आमन्त्रणक प्रतिक्रिया देति रहत।

परिशिष्टः समीक्षा सिद्धान्तक संक्षिप्त रूपरेखा

विश्लेषण स्तर

भारतीय सिद्धान्त

पाश्चात्य सिद्धान्त

मैथिली विशिष्टता

भाषिक

शब्द-शक्ति, व्याकरण

स्टाइलिस्टिक्स, लिंग्विस्टिक्स

मैथिली उच्चारण, मुहावरा

शैलीगत

रीति, अलंकार, गुण, दोष

नैरेटोलॉजी, इमेजरी, सिंबोलिज्म

लोक-अलंकार, कहावत

रस-ध्वनि

रस, ध्वनि, व्यङ्ग्य

फेनोमेनोलॉजी, हर्मेन्यूटिक्स

दलित-रस, प्रवास-रस

सामाजिक

-

मार्क्सवाद, नारीवाद, पोस्टकोलोनियल

जाति-लिङ्ग-वर्ग-प्रवास

आस्वादक

सहृदय, व्युत्पत्ति

रिसेप्शन थ्योरी, रीडर-रेस्पॉन्स

दलित-पाठक, गैर-दलित-पाठक

ई रूपरेखा समीक्षककेँ *लचीलापन* दैत अछि—अपन विवेकसँ स्तर आ सिद्धान्तक चयन करबाक स्वतन्त्रता।

दलित साहित्य लेल समीक्षा सिद्धान्त: भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य सिद्धान्तक आधार पर मैथिली मूल आ अनूदित दलित गद्य-पद्य साहित्यक विशिष्ट समीक्षा हेतु

प्रस्तावना: दलित साहित्यक समीक्षाक विशिष्ट आवश्यकता

दलित साहित्य केवल साहित्यक विधा नै अछि; ई एकटा *आन्दोलन* अछि, *प्रतिरोधक* एकटा *घोषणापत्र* अछि। ई *दर्द* (पीड़ा), *आक्रोश* (आक्रोश), *अस्मिता* (अस्मिता), *संघर्ष* (संघर्ष) केँ अपन केन्द्रबिन्दु बनाबैत अछि। एहि कारण, दलित साहित्यक समीक्षा लेल *सामान्य* साहित्यिक सिद्धान्त अपर्याप्त अछि। एकटा *विशिष्ट* समीक्षा सिद्धान्तक आवश्यकता अछि—जे दलित साहित्यक *विशिष्टता* (विशिष्टता) केँ स्वीकार करय, ओकर *राजनीति* (राजनीति) केँ समझय, आ ओकर *सौन्दर्यशास्त्र* (सौन्दर्यशास्त्र) केँ *रस* सिद्धान्तक परम्परासँ संवाद कराबय।

प्रस्तुत सिद्धान्त *भारतीय* (रस, ध्वनि, अलंकार, रीति, औचित्य) आ *पाश्चात्य* (मार्क्सवाद, नारीवाद, उपनिवेशवाद-उत्तर, दलित-आन्दोलन सिद्धान्त, उत्तर-आधुनिकतावाद) सिद्धान्तक समन्वय करैत, मैथिली मूल आ अनूदित दलित गद्य-पद्य साहित्यक समीक्षा लेल एकटा *फाइन-ट्यून्ड* ढाँचा प्रस्तुत करैत अछि।

प्रथम अध्याय: दलित साहित्यक विशिष्टता—सैद्धान्तिक आधार

१.१ दलित सौन्दर्यशास्त्रक आधारभूत तत्व

दलित साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र *शास्त्रीय* सौन्दर्यशास्त्रसँ मूलतः भिन्न अछि। शास्त्रीय सौन्दर्यशास्त्र (रस, अलंकार, ध्वनि) *सहृदयक आस्वाद* पर केन्द्रित अछि; दलित सौन्दर्यशास्त्र *दलित-अनुभवक प्रामाणिकता* (प्रामाणिकता) पर केन्द्रित अछि। ई सिद्धान्त निम्नलिखित *दलित-विशिष्ट* अवधारणासभक स्वीकार करत:

क. दर्द (पीड़ा) स्थायी भावक रूपमे: शास्त्रीय रस सिद्धान्तमे *करुण* (करुणा) क स्थायी भाव *शोक* (शोक) अछि। मुदा दलित साहित्यमे *शोक* नै, *दर्द*—जे *शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, ऐतिहासिक*—सब स्तर पर व्याप्त अछि। ई सिद्धान्त *दर्द* केँ *स्थायी भाव* क रूपमे स्वीकार करत, आ ओकर *रस-परिणति* क सम्भावना खोजत।

ख. आक्रोश रौद्रक विस्तारक रूपमे: शास्त्रीय *रौद्र* (उग्र क्रोध) क *स्थायी भाव* *क्रोध* अछि, आ ओकर *आश्रय* *राजा-योद्धा* (असुर-दैत्य-वध) अछि। दलित साहित्यमे *आक्रोश* क *आश्रय दलित समुदाय* अछि, आ ओकर *विषय* *जाति-व्यवस्था* अछि। ई सिद्धान्त *आक्रोश* केँ *रौद्र* क विस्तार (आ नव रूप) क रूपमे स्वीकार करत।

ग. अस्मिता वीरक नव रूपक रूपमे: शास्त्रीय *वीर* (वीर) क *स्थायी भाव* *उत्साह* अछि, आ ओकर *आश्रय* *राजा-क्षत्रिय-योद्धा* अछि। दलित साहित्यमे *अस्मिता* क *उत्साह दलित-पहिचान* क *पुनर्निर्माण* (पुनर्दावा) अछि। ई सिद्धान्त *अस्मिता* केँ *वीर* क नव रूपक रूपमे स्वीकार करत।

घ. संघर्ष रसक नव रूपक रूपमे: *श्रम, अभाव, प्रतिरोध, प्रवास*—ई सभ *स्थायी भाव* शास्त्रीय रसक कोनो श्रेणीमे सीधा नै अबैत अछि। ई सिद्धान्त ई सभकेँ *नव स्थायी भाव* क रूपमे स्वीकार करत, आ ओकर *रस-परिणति* (श्रम-रस, अभाव-रस, प्रतिरोध-रस, प्रवास-रस) क सम्भावना खोजत।

१.२ दलित साहित्यक सामाजिक-राजनीतिक आधार

क. जाति-व्यवस्थाक केन्द्रीयता: दलित साहित्यक समीक्षा लेल *जाति-व्यवस्था* केन्द्रीय श्रेणी अछि। *वर्ग* (वर्ग), *लिङ्ग* (लिंग), *क्षेत्र* (क्षेत्र) सभ महत्वपूर्ण अछि, मुदा *जाति* (जाति) दलित साहित्यक *मूल-संरचना* (प्राथमिक संरचना) अछि।

ख. अस्पृश्यताक अनुभव: *अस्पृश्यता* (अस्पृश्यता) केवल *सामाजिक* नै, *मानसिक, शारीरिक, आध्यात्मिक*—सब स्तर पर दलित-अनुभवक *केन्द्रीय तत्व* (केन्द्रीय तत्त्व) अछि। दलित साहित्यक समीक्षामे *अस्पृश्यताक सौन्दर्यशास्त्र* (अस्पृश्यताक सौन्दर्यशास्त्र) क विकास आवश्यक अछि।

ग. बहिष्कारक राजनीति: दलित साहित्य *बहिष्कार* (बहिष्करण) क दस्तावेज अछि—*शिक्षासँ, धर्मसँ, समाजसँ, इतिहाससँ, साहित्यसँ* दलित साहित्यक समीक्षा एहि *बहिष्कारक संरचना* (संरचना) आ *प्रतिरोधक रणनीति* (रणनीति) क विश्लेषण करत।

घ. दलित-इतिहासक पुनर्लेखन: दलित साहित्य *इतिहास* (इतिहास) केँ *पुनः लिखबाक* (पुनर्लेखन) प्रयास अछि—*सवर्ण-इतिहास-लेखनक विरुद्ध* (विरुद्ध) आ *दलित-दृष्टि* (दलित दृष्टिकोण) सँ *इतिहासक पुनर्निर्माण* (पुनर्निर्माण) । दलित साहित्यक समीक्षा एहि *इतिहास-लेखनक राजनीति* (इतिहासलेखनक राजनीति) क विश्लेषण करत।

द्वितीय अध्याय: दलित साहित्य लेल भारतीय सिद्धान्तक फाइन-टयूनिंग

२.१ रस सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

क. दर्द-रस (पीड़ा रस) क प्रस्तावना

शास्त्रीय रस सिद्धान्तमे *दर्द* (पीड़ा) केवल *करुण* (करुणा) क *अनुभाव* (परिणाम) अछि, *स्थायी भाव* (स्थायी भाव) नै। दलित साहित्यक अनुभवसँ ई सिद्धान्त *दर्द*केँ *स्थायी भाव*क रूपमे स्वीकार करैत अछि:

-**स्थायी भाव**: दर्द (पीड़ा)

-**विभाव** (विभाव): जाति-हिंसा, अस्पृश्यता, भूख, बेरोजगारी, प्रवास, शोषण, अपमान, बहिष्कार

-**अनुभाव** (अनुभाव): आँसु, विलाप, शरीरक पीड़ा, मौन, क्रोध, प्रतिरोध, एकाकीपन, आत्म-हत्या

-**व्यभिचारी भाव** (सञ्चारी भाव): निराशा, आशा, क्रोध, भय, घृणा, लज्जा, गर्व, उत्साह

-**रस-निष्पत्ति**: दर्द-रस

ख. आक्रोश-रस (आक्रोश रस) क प्रस्तावना

शास्त्रीय *रौद्र* (उग्र क्रोध) दलित साहित्यक *आक्रोश* (आक्रोश) क पूर्ण व्याख्या नै करि सकैत, कारण *रौद्र*क *आश्रय* (कर्ता-विषय) *राजा-योद्धा* अछि, *आक्रोश*क *आश्रय* *दलित समुदाय*। ई सिद्धान्त *आक्रोश-रस*क प्रस्ताव करैत अछि:

-**स्थायी भाव**: आक्रोश

-**विभाव**: जाति-अपमान, शोषण, अत्याचार, न्याय-विहीनता, ऐतिहासिक अन्याय

-**अनुभाव**: चीत्कार, प्रतिरोध-गीत, संघर्ष-आन्दोलन, लेखन-क्रान्ति, आत्म-साक्ष्य

-**व्यभिचारी भाव**: क्रोध, घृणा, उत्साह, साहस, भय, आशा, निराशा

-**रस-निष्पत्ति**: आक्रोश-रस

ग. अस्मिता-रस (अस्मिता रस) क प्रस्तावना

शास्त्रीय *वीर* (वीर) दलित साहित्यक *अस्मिता* (अस्मिता) क पूर्ण व्याख्या नै करि सकैत, कारण *वीर*क *आश्रय क्षत्रिय-योद्धा* अछि, *अस्मिता*क *आश्रय* *दलित-पुनर्जागरण* (दलित पुनर्जागरण) । ई सिद्धान्त *अस्मिता-रस*क प्रस्ताव करैत अछि:

-**स्थायी भाव**: अस्मिता

-**विभाव**: दलित-इतिहासक पुनर्खोज, दलित-प्रतीकक पुनर्स्थापना, दलित-भाषाक पुनर्निर्माण

-**अनुभाव**: गर्व, आत्म-विश्वास, साहस, संघर्ष, एकता, संगठन

-**व्यभिचारी भाव**: उत्साह, गर्व, क्रोध, आशा, निराशा, संकल्प

-**रस-निष्पत्ति**: अस्मिता-रस

घ. संघर्ष-रस (संघर्ष रस) क प्रस्तावना

श्रम, अभाव, प्रतिरोध, प्रवास—ई सभ *स्थायी भाव* दलित साहित्यक केन्द्रीय अनुभव अछि। ई सिद्धान्त *संघर्ष-रसक* प्रस्ताव करैत अछि:

-**स्थायी भाव**: संघर्ष

-**विभाव**: श्रम, अभाव, प्रतिरोध, प्रवास, जीविका-संघर्ष

-**अनुभाव**: श्रम-गीत, प्रतिरोध-गीत, प्रवास-गीत, शरीरक थकावट, संघर्षक आँसु

-**व्यभिचारी भाव**: निराशा, आशा, क्रोध, उत्साह, भय, साहस

-**रस-निष्पत्ति**: संघर्ष-रस

२.२ ध्वनि सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

ध्वनि सिद्धान्त (आनन्दवर्धन) *व्यङ्ग्य* (व्यञ्जित अर्थ) पर बल दैत अछि। दलित साहित्यमे *व्यङ्ग्यक* तीन स्तर विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण अछि:

क. व्यङ्ग्यक प्रथम स्तर—शाब्दिक व्यङ्ग्य: शब्दक *शाब्दिक* (शाब्दिक) अर्थ आ *व्यङ्ग्य* (व्यञ्जित) अर्थक बीचक अन्तर। उदाहरण लेल, "हमर पैतृक अधिकार" कवितामे *कब्रिस्तान खननाइ*—शाब्दिक अर्थ अछि *मुर्दा-खोदाइ*, व्यङ्ग्य अर्थ अछि *अधिकार-खोज*।

ख. व्यङ्ग्यक द्वितीय स्तर—पौराणिक व्यङ्ग्य: पुराण-इतिहासक प्रतीकसभक *दलित-दृष्टि*सँ पुनर्पाठ। उदाहरण लेल, "हमर पैतृक अधिकार" कवितामे *व्यास, अरुन्धती, मत्स्यगन्धी*—ई सभ पौराणिक चरित्रक *दलित-दृष्टि*सँ पुनर्व्याख्या।

ग. व्यङ्ग्यक तृतीय स्तर—वैचारिक व्यङ्ग्य: *जाति-व्यवस्था, धर्म, राजनीति, इतिहास*—ई सभ *विचारधारा* (विचारधारा) क *दलित-दृष्टि*सँ *व्यङ्ग्य*। उदाहरण लेल, "जरैत खोपड़ी सभ" कवितामे *पुनर्जन्मक* अवधारणाक व्यङ्ग्य—*धर्मक आवरण*मे *जाति-हिंसाक* स्थापना।

२.३ अलंकार सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

अलंकार केवल *अलंकरण* (अलंकरण) नै, दलित साहित्यमे *प्रतिरोधक हथियार* अछि:

क. विपर्यास-अलंकार (उलट-अलंकार): शास्त्रीय अलंकारक *दलित-विपर्यास*। उदाहरण लेल, *साड़ीक कोर*क कवितामे *मैसम्मा देवी*क उपमा—ई *उपमा-अलंकारक* विपर्यास अछि, जतय *देवी* (शास्त्रीय आदर्श) क *श्रम-शरीर* (दलित-यथार्थ) मे परिणत कएल गेल अछि।

ख. लोक-अलंकार: शास्त्रीय अलंकार (उपमा, रूपक, उत्प्रेक्षा, आदि) क संग-संग *लोक-अलंकार*—*कहावत, मुहावरा, लोकोक्ति, पहेली, लोक-गीतक अलंकार*—कैँ समान मूल्य देनाइ। उदाहरण लेल, "गुड़-पीटल पाथर जकाँ अचल" (सदा लेल मित्र उपन्यासमे)—ई *लोक-अलंकार* अछि।

ग. अभाव-अलंकार (अनुपस्थिति-अलंकार): *अभाव* (अनुपस्थिति) कैँ *अलंकारक* रूपमे प्रयोग। उदाहरण लेल, "लोक, जमि जाय" कवितामे *खालीपन, पाथर, कङ्कड़*—ई सभ *अभावक प्रतीक* अछि, जे *अभाव-अलंकारक* रूपमे प्रयोग भेल अछि।

२.४ रीति सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

रीति सिद्धान्त (वामन) *शैली* (शैली) पर बल दैत अछि। दलित साहित्यक *शैली*गत विशिष्टता:

क. प्रतिरोधक शैली (प्रतिरोध-शैली): शास्त्रीय *माधुर्य-गुण* (माधुर्य) वा *ओज-गुण* (ओज) क विपरीत, दलित साहित्यक *शैली तीक्ष्ण, कर्कश, अश्लील, विद्रोही* होइत अछि। ई शैली *शास्त्रीय-शैलीक दलित-विपर्यास* अछि।

ख. साक्षी-शैली (साक्ष्य-शैली): दलित साहित्यक शैली *साक्षी* (साक्ष्य) क शैली अछि—*आत्म-कथा, अनुभव-कथा, दस्तावेज-कथा*। ई शैली *व्यक्तिगत* (व्यक्तिगत) आ *सामूहिक* (सामूहिक) क बीच *सीमा-रेखा* मिटाबैत अछि।

ग. लोक-शैली: दलित साहित्यक शैली *लोक-भाषा, लोक-गीत, लोक-कथा, लोक-नाट्य*सँ गहिर रूपसँ जुड़ल अछि। ई *लोक-शैली* *शास्त्रीय-शैलीक दलित-प्रतिरोध* अछि।

तृतीय अध्यायः दलित साहित्य लेल पाश्चात्य सिद्धान्तक फाइन-ट्यूनिंग

३.१ उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

क. सबाल्टर्न (निम्नवर्गीय) क दलित-पुनर्पाठ: गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाकक प्रश्न—"केन सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि? "—दलित साहित्यक समीक्षाक लेल मूलभूत अछि। दलित साहित्य *सबाल्टर्न* (उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्तक श्रेणी) आ *दलित* (भारतीय जाति-व्यवस्थाक श्रेणी) क बीच *तनाव* (तनाव) कैँ प्रकट करैत अछि। ई सिद्धान्त पूछतः दलित साहित्यमे *सबाल्टर्नक* आवाज *मध्यस्थता* (मध्यस्थता) सँ मुक्त अछि वा नै? यदि मुक्त नै अछि, तऽ ओ *मध्यस्थता सशक्तीकरण* (सशक्तीकरण) अछि वा *पुनरुत्पादन* (पुनरुत्पादन)?

ख. प्रान्तीयकरणक दलित-पुनर्पाठ: दीपेश चक्रवर्तीक *प्रान्तीयकरण* (यूरोपकैँ प्रान्तीय बनाब) क अवधारणा दलित साहित्यक समीक्षाक लेल प्रासंगिक अछि। दलित साहित्य *सवर्ण-साहित्य* (ब्राह्मणवादी साहित्य) कैँ *प्रान्तीय* (प्रान्तीय) सिद्ध करबाक प्रयास अछि—जे *सार्वभौमिक* (सार्वभौमिक) क दावा करैत अछि, मुदा वास्तवमे *जाति-विशिष्ट* (जाति-विशिष्ट) अछि। दलित साहित्यक समीक्षा एहि *सार्वभौमिक-दावाक विखण्डन* (विखण्डन) करैत अछि।

ग. हाइब्रिडिटी (संकरता) क दलित-पुनर्पाठ: होमी के. भाभाक *हाइब्रिडिटी* (संकरता) दलित साहित्यक *पहिचान-राजनीति* (अस्मिता-राजनीति) क विश्लेषण लेल उपयोगी अछि। दलित साहित्य *सवर्ण-संस्कृति* आ *दलित-संस्कृतिक* बीच *हाइब्रिड* स्थान पर खड़ा अछि—न त पूर्णतः *सवर्ण-आत्मसात* (आत्मसात), न पूर्णतः *दलित-मुक्त* (मुक्त) । ई *हाइब्रिडिटी* दलित साहित्यक *तनाव* (तनाव) आ *रचनात्मकता* (सर्जनात्मकता) क स्रोत अछि।

३.२ दलित-नारीवाद (दलित नारीवाद) क सिद्धान्तक प्रयोग

क. अन्तर्विच्छेदीयता (बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध): दलित-नारीवाद (जेना—शैला देवी, बीमा भीम, जे. सुभद्रा, विनोदिनी) *जाति* आ *लिङ्गक* दोहरा उत्पीड़नक विश्लेषण करैत अछि। दलित साहित्यक समीक्षा लेल *अन्तर्विच्छेदीयता* (बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध) केन्द्रीय श्रेणी अछि—जे *जाति, लिङ्ग, वर्ग, क्षेत्र, धर्मक संगम* (संगम) पर दलित-स्त्रीक अनुभवक विश्लेषण करत।

ख. शरीरक राजनीति (देह-राजनीति): दलित-स्त्री-शरीर *शास्त्रीय-शृङ्गारक अलंकार* नै, *श्रमक दस्तावेज* अछि। दलित साहित्यक समीक्षा *शरीरक राजनीतिक* विश्लेषण करत—*शरीर* कइ प्रकारेँ *जाति-व्यवस्थाक निशान* (चिह्न) बनि जाइत अछि? *शरीर* कइ प्रकारेँ *प्रतिरोधक स्थान* (स्थल) बनि जाइत अछि?

ग. दलित-स्त्री-स्वर (दलित-स्त्री स्वर): दलित-स्त्री-स्वर *दलित-स्वर* आ *स्त्री-स्वरक* बीच एकटा *तृतीय-स्थान* (तृतीय स्थान) अछि—जे *दलित-पुरुष-स्वर* सँ भिन्न अछि, आ *सवर्ण-स्त्री-स्वर* सँ सेहो भिन्न अछि। दलित साहित्यक समीक्षा एहि *तृतीय-स्थानक विशिष्टता* (विशिष्टता) क विश्लेषण करत।

३.३ मार्क्सवादी सिद्धान्तक दलित-पुनर्पाठ

क. वर्ग आ जातिक द्वन्द्व: मार्क्सवादी सिद्धान्त *वर्ग-संघर्ष* (वर्ग-संघर्ष) पर बल दैत अछि। दलित साहित्य *वर्ग-संघर्षक जाति-संघर्ष* (जाति-संघर्ष) क रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। दलित साहित्यक समीक्षा *वर्ग* आ *जातिक* बीच *संवाद* (संवाद) आ *तनाव* (तनाव) क विश्लेषण करत।

ख. हेगेमोनी (प्रभुत्व) क दलित-पुनर्पाठ: ग्राम्सीक *हेगेमोनी* (प्रभुत्व) दलित साहित्यक *सवर्ण-वर्चस्व* (ब्राह्मणवादी प्रभुत्व) क *सांस्कृतिक* रूपक विश्लेषण लेल उपयोगी अछि। उदाहरण लेल, विद्यापतिकैँ *ब्राह्मण* घोषित करबाक प्रक्रिया—ई *हेगेमोनीक सांस्कृतिक* कार्य अछि। दलित साहित्य ओहि *हेगेमोनीक विरुद्ध* (विरुद्ध) लिखल जाइत अछि।

ग. बाजार-पूँजीवादक दलित-समीक्षा: दलित साहित्यक *प्रकाशन-उद्योग* (प्रकाशन-उद्योग), *बाजार* (बाजार), *पुरस्कार* (पुरस्कार) क *राजनीति* (राजनीति) क समीक्षा आवश्यक अछि। मार्क्सवादी समीक्षा पूछतः दलित साहित्य *बाजारक दबावमे सर्जनात्मकता* (सर्जनात्मकता) खोइ रहल अछि वा नै? *पुरस्कार सशक्तीकरण* (सशक्तीकरण) अछि वा *सह-विकल्प* (सह-विकल्पन)?

३.४ दलित-आन्दोलन सिद्धान्त (दलित आन्दोलन सिद्धान्त)

**क. जोतिराव फुलेक* गुलामगिरी *(गुलामगिरी) क परम्परा: फुलेक* गुलामगिरी *(1873) दलित साहित्यक* आधार-ग्रन्थ *(आधार-ग्रन्थ) अछि। दलित साहित्यक समीक्षा* गुलामगिरी *सँ शुरू भऽ* वर्तमान दलित साहित्य *धरिक* सातत्य *(सातत्य) आ* परिवर्तन* (परिवर्तन) क विश्लेषण करत।

ख. डॉ. बी. आर. अम्बेडकरक बौद्धिक परम्परा *(बौद्धिक परम्परा): अम्बेडकरक* बौद्धिक परम्परा—जाति-विच्छेद *(जाति-विच्छेद),* बौद्ध-धर्म-परिवर्तन *(बौद्ध धर्म-परिवर्तन),* संविधान-निर्माण *(संविधान-निर्माण)—दलित साहित्यक* वैचारिक आधार *(वैचारिक आधार) अछि। दलित साहित्यक समीक्षा एहि* बौद्धिक परम्परा *क* साहित्यिक* रूपक विश्लेषण करत।

ग. दलित-पैंथर (दलित पैंथर्स) क प्रतिरोध-साहित्य *(प्रतिरोध-साहित्य): 1970 क दशकक* दलित-पैंथर *आन्दोलन दलित साहित्यक* आक्रोश-शैली *(आक्रोश शैली) क* निर्माण *(निर्माण) मे मूलभूत भूमिका निभौलनि। दलित साहित्यक समीक्षा* दलित-पैंथर *स* वर्तमान दलित साहित्य *धरिक* निरन्तरता *(सातत्य) आ* विच्छेद* (विच्छेद) क विश्लेषण करत।

चतुर्थ अध्यायः दलित साहित्य लेल समीक्षा सिद्धान्तक व्यावहारिक ढाँचा

४.१ दलित साहित्यक समीक्षाक स्तर

प्रथम स्तर: जाति-विश्लेषण

- कृतिक *जाति-संरचना* (जाति संरचना) क पहिचान—*पात्र* (चरित्रसभ) के जाति की अछि? *कथानक* (कथानक) *जाति-सम्बन्धक* कइ प्रकारेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि? *लेखक* (लेखक) क *जाति-स्थिति* (जाति स्थिति) कृतिक *दृष्टि* (दृष्टिकोण) केँ कइ प्रकारेँ निर्धारित करैत अछि?

-अस्पृश्यता (अस्पृश्यता), जाति-हिंसा (जाति-हिंसा), जाति-भेद (जाति भेदभाव) क सौन्दर्यशास्त्र (सौन्दर्यशास्त्र) क विश्लेषण।

द्वितीय स्तर: दलित-सौन्दर्यशास्त्र (दलित सौन्दर्यशास्त्र) विश्लेषण

-*दर्द* (पीड़ा), *आक्रोश* (आक्रोश), *अस्मिता* (अस्मिता), *संघर्ष* (संघर्ष)—ई सभ *स्थायी भावक रस-परिणति* (रस-निष्पत्ति) क विश्लेषण।

-*प्रतिरोध-शैली* (प्रतिरोध-शैली), *साक्षी-शैली* (साक्ष्य-शैली), *लोक-शैली* (लोक-शैली) क विश्लेषण।

-*विपर्यास-अलंकार* (उलट-अलंकार), *अभाव-अलंकार* (अनुपस्थिति-अलंकार), *लोक-अलंकार* (लोक-अलंकार) क विश्लेषण।

तृतीय स्तर: सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण

-*जाति-राजनीति* (जाति राजनीति): सवर्ण-दलित द्वन्द्व, आरक्षण, राजनीतिक प्रतिनिधित्व, दलित-आन्दोलन।

-*वर्ग-राजनीति* (वर्ग राजनीति): जमीन्दार-किसान, पूँजी-श्रमिक, आर्थिक शोषण।

-*लिङ्ग-राजनीति* (लिंग राजनीति): दलित-स्त्रीक दोहरा उत्पीड़न, शरीरक राजनीति, दलित-नारीवाद।

-*प्रवास-राजनीति* (प्रवास राजनीति): प्रवासक अर्थशास्त्र, प्रवासक मनोविज्ञान, प्रवासक अस्मिता।

चतुर्थ स्तरः ऐतिहासिक-अभिलेखीय विश्लेषण

- दलित-इतिहासक *पुनर्लेखन* (पुनर्लेखन) क प्रक्रियाक विश्लेषण।

-*सवर्ण-इतिहास-लेखन* (ब्राह्मणवादी इतिहासलेखन) क *विखण्डन* (विखण्डन) ।

-*मौन-इतिहास* (मौन इतिहास) क *पुनर्निर्माण* (पुनर्निर्माण)—जे *लिखित-इतिहास* (लिखित इतिहास) मे अनुपस्थित अछि, ओकर *लोक-इतिहास* (लोक इतिहास), *मौखिक-इतिहास* (मौखिक इतिहास), *दलित-इतिहास* (दलित इतिहास) क *पुनर्पाठ* (पुनर्पाठ) ।

पञ्चम स्तर: आस्वाद-राजनीति विश्लेषण (सौन्दर्य-अनुभवक राजनीति)

-*दलित-पाठक* (दलित पाठक) आ *गैर-दलित-पाठक* (गैर-दलित पाठक) क *आस्वादक* अनुभव भिन्न अछि वा नै?

-*दर्दक आस्वाद* (पीड़ाक आस्वाद) क *नैतिकता* (नैतिकता) की अछि? *पीड़ाक सौन्दर्यीकरण* (पीड़ाक सौन्दर्यीकरण) *उत्पीड़नक पुनरुत्पादन* (उत्पीड़नक पुनरुत्पादन) तँ नै अछि?

-*सहृदय* (सहानुभूतिशील पाठक) क अवधारणा *दलित-सन्दर्भ* (दलित सन्दर्भ) मे कइ प्रकारेँ *पुनर्परिभाषित* (पुनर्परिभाषित) करबाक चाही?

४.२ दलित साहित्यक विधा-विशिष्ट विश्लेषण

क. दलित कविता लेल:

-*छन्द-लय* (छन्द-लय) क विश्लेषण—की पारम्परिक *छन्द* (जेना—दोहा, चौपाई, सोरठा) प्रयोग भेल अछि, वा *मुक्त-छन्द* (मुक्तछन्द)?

-*बिम्ब-प्रतीक* (बिम्ब-प्रतीक) क विश्लेषण—*जरैत खोपड़ी, साड़ीक कोर, मान्केनापुव्वु, कारी मसि*—ई सभ *दलित-बिम्ब* (दलित बिम्ब) कइ प्रकारेँ *प्रतिरोधक प्रतीक* (प्रतीक क प्रतिरोध) बनि जाइत अछि?

-*व्यङ्ग्य-ध्वनि* (व्यञ्जना) क विश्लेषण—कविताक *शाब्दिक-अर्थ* (शाब्दिक अर्थ) आ *व्यङ्ग्य-अर्थ* (व्यञ्जित अर्थ) क बीच *दलित-दृष्टि* (दलित दृष्टिकोण) कइ प्रकारेँ स्थापित होइत अछि?

ख. दलित कहानी आ उपन्यास (दलित लघुकथा आ उपन्यास) लेल:

-*आख्यान-तकनीक* (आख्यान तकनीक)—*प्रथम-पुरुष-आख्यान* (प्रथम-पुरुष आख्यान) आ *साक्षी-शैली* (साक्ष्य-शैली) दलित साहित्यमे विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण अछि, कारण ई *प्रामाणिकता* (प्रामाणिकता) क दावा करैत अछि।

-*चरित्र-विकास* (चरित्र विकास)—*दलित-चरित्र* (दलित चरित्र) क *मनोविज्ञान* (मनोविज्ञान), *सवर्ण-चरित्र* (सवर्ण चरित्र) क *प्रतिनिधित्व* (प्रतिनिधित्व), *चरित्र-सम्बन्ध* (चरित्र सम्बन्ध) *जाति-व्यवस्थाक* कइ प्रकारेँ *पुनरुत्पादन* (पुनरुत्पादन) वा *प्रतिरोध* (प्रतिरोध) करैत अछि?

-*स्थान-काल* (देश-काल) क राजनीति—*गाम* (गाम), *शहर* (शहर), *वन* (वन), *झोपड़ी* (झोपड़ी), *महल* (महल), *थाना* (पुलिस थाना)—ई सभ *स्थान* (स्थान) *जाति-व्यवस्थाक भौगोलिक-संरचना* (भौगोलिक संरचना) कइ प्रकारेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि?

ग. दलित नाटक लेल:

-*रङ्गमञ्चीयता* (रङ्गमञ्चीयता)—*बिदापत नाच, जात्रा, तमाशा, लोक-नाट्य* (लोक-रङ्गमञ्च) क परम्परासँ *दलित-नाटकक* सम्बन्ध।

-*अभिनय-वाद्य-संवाद* (अभिनय-सङ्गीत-संवाद)—*शरीर* (देह), *आवाज* (स्वर), *लय* (लय) दलित-नाटकमे *प्रतिरोधक हथियार* (प्रतिरोधक हथियार) कइ प्रकारेँ बनि जाइत अछि?

-*दर्शक-सम्बन्ध* (दर्शक-सम्बन्ध)—दलित-नाटक *दर्शककेँ सहृदय* (सहानुभूतिशील) नै, *सहभागी* (सहभागी) बनाबैत अछि। ई *दर्शक-सम्बन्धक* विश्लेषण।

घ. अनूदित दलित साहित्य लेल:

-*अनुवादक-सर्जनात्मकता* (अनुवादकक सर्जनात्मकता)—*स्रोत-भाषा* (स्रोत-भाषा) क *दलित-स्वर* (दलित स्वर) *लक्ष्य-भाषा* (लक्ष्य-भाषा) मे कइ प्रकारेँ *प्रतिष्ठापित* (स्थापित) अछि?

-*सांस्कृतिक-अनुवाद* (सांस्कृतिक अनुवाद)—*जाति-व्यवस्था, दलित-अनुभव, प्रतिरोध-परम्परा*—ई सभ *सांस्कृतिक-श्रेणी* (सांस्कृतिक श्रेणीसभ) *अनुवाद-प्रक्रिया* (अनुवाद-प्रक्रिया) मे कइ प्रकारेँ *स्थानीयकृत* (स्थानीयकृत) अछि?

-*दलित-अनुवादक राजनीति* (दलित अनुवादक राजनीति)—*दलित-साहित्यक अनुवाद दलित-आवाजक विस्तार* (विस्तार) अछि वा *विकृति* (विकृति)? *अनुवाद दलित-साहित्यकेँ वैश्विक-पाठक* (वैश्विक पाठक) धरि पहुँचाबैत अछि वा *मुख्यधारा-साहित्यक सह-विकल्प* (सह-विकल्पन) क *हथियार* (हथियार) बनि जाइत अछि?

पञ्चम अध्याय: दलित साहित्यक समीक्षा सिद्धान्तक उदाहरणात्मक प्रयोग

५.१ प्रस्तुत संकलन (मैथिलीमे अनूदित दलित साहित्य) क समीक्षा

प्रथम स्तर: जाति-विश्लेषण

- संकलनक *केन्द्रीय-विषय* (केन्द्रीय विषय) *जाति-व्यवस्था* अछि—*जाति-हिंसा* (जाति-हिंसा), *अस्पृश्यता* (अस्पृश्यता), *दलित-प्रतिरोध* (दलित प्रतिरोध), *दलित-अस्मिता* (दलित अस्मिता) ।

-*पात्र-जाति* (चरित्र जाति)—*दलित-पात्र* (दलित चरित्रसभ): बोयी भीमन्नाक कविताक *व्यास, अरुन्धती, मत्स्यगन्धी* (पौराणिक-दलित); जे. सुभद्राक *दलित-स्त्री-श्रमिक;* कोलकलुरी इनोचक *बण्डोड्डु* (मादिग); पेद्दिंति अशोक कुमारक *ईमाम* (कलन्दर) ।

-*सवर्ण-पात्र* (सवर्ण चरित्रसभ): *जमीन्दार, पटेल, एमआरओ, एसआई, सरपंच, बच्ची श्रिया* (जे *दलित-विरोधी* (दलित-विरोधी) बनि जाइत अछि) ।

द्वितीय स्तर: दलित-सौन्दर्यशास्त्र विश्लेषण

-*स्थायी भाव* (स्थायी भाव): *दर्द* (जे. सुभद्राक "लोढ़ब", "अव्वा"), *आक्रोश* (बोयी भीमन्नाक "हमर पैतृक अधिकार"), *अस्मिता* (चल्लपल्ली स्वरूपरानीक "मान्केनापुव्वु"), *संघर्ष* (कोलकलुरी इनोचक "कौआ", पेद्दिंति अशोक कुमारक *सदा लेल मित्र*) ।

-*रस-निष्पत्ति* (रस-निष्पत्ति): *दर्द-रस* (पीड़ा रस), *आक्रोश-रस* (आक्रोश रस), *अस्मिता-रस* (अस्मिता रस), *संघर्ष-रस* (संघर्ष रस) ।

-*प्रतिरोध-शैली* (प्रतिरोध-शैली): तीक्ष्ण, कर्कश, विद्रोही भाषा; *साक्षी-शैली* (साक्ष्य-शैली): प्रथम-पुरुष-आख्यान, आत्म-कथात्मक शैली; *लोक-शैली* (लोक-शैली): कहावत, मुहावरा, लोक-गीतक प्रयोग।

तृतीय स्तर: सामाजिक-राजनीतिक विश्लेषण

-*जाति-राजनीति*: सवर्ण-दलित द्वन्द्व, जाति-हिंसा, अस्पृश्यता, जाति-व्यवस्थाक मनोविज्ञान।

-*वर्ग-राजनीति*: जमीन्दार-किसान द्वन्द्व, पूँजी-श्रमिक द्वन्द्व, आर्थिक शोषण।

-*लिङ्ग-राजनीति*: दलित-स्त्रीक दोहरा उत्पीड़न, शरीरक राजनीति, दलित-नारीवादी स्वर।

-*प्रवास-राजनीति*: *सदा लेल मित्र* उपन्यासमे *प्रवास* (प्रवास) क अर्थशास्त्र आ मनोविज्ञान।

चतुर्थ स्तर: ऐतिहासिक-अभिलेखीय विश्लेषण

-*पौराणिक-इतिहासक दलित-पुनर्पाठ*: बोयी भीमन्नाक *व्यास, अरुन्धती, मत्स्यगन्धी*क पुनर्व्याख्या।

-मध्यकालीन-इतिहासकदलित-पुनर्पाठ: जाति-व्यवस्था, दलित-प्रतिरोधक ऐतिहासिक-दस्तावेज (ऐतिहासिक दस्तावेज) क पुनर्पाठ।

-*आधुनिक-इतिहासक दलित-पुनर्पाठ*: *गान्धी, अम्बेडकर, दलित-आन्दोलन*क प्रतिनिधित्व (गुजराती कविता "खरड़ाक डाँट सब" मे *गान्धी*पर व्यंग्य) ।

पञ्चम स्तर: आस्वाद-राजनीति विश्लेषण

-*दलित-पाठक* (दलित पाठक): संकलन *पहिचान* (अस्मिता) क *आस्वाद* (आस्वाद) प्रदान करैत अछि—*अपन-दर्दक साहित्यिक-अभिव्यक्ति* (साहित्यिक अभिव्यक्ति) ।

-*गैर-दलित-पाठक* (गैर-दलित पाठक): संकलन *असुविधा* (असुविधा) आ *जागरण* (जागरण) क अनुभव प्रदान करैत अछि—*दूसरक-दर्दक साक्षी* (साक्षी) बनबाक अवसर।

-*दर्दक आस्वादक नैतिकता* (नैतिकता क पीड़ाक आस्वाद): संकलन *पीड़ाक सौन्दर्यीकरण* (सौन्दर्यीकरण) नै करैत, बल्कि *पीड़ाक दस्तावेजीकरण* (दस्तावेजीकरण) करैत अछि। ई *दस्तावेजीकरण* पाठककेँ *पीड़ाक साक्षी* (साक्षी) बनाबैत अछि, *उपभोक्ता* (उपभोक्ता) नै।

षष्ठ अध्याय: दलित साहित्यक समीक्षा सिद्धान्तक सीमा आ सम्भावना

६.१ सीमा (सीमासभ)

क. सैद्धान्तिक-समन्वयक कठिनाई: भारतीय (रस, ध्वनि, अलंकार) आ पाश्चात्य (मार्क्सवाद, नारीवाद, उपनिवेशवाद-उत्तर) सिद्धान्तक *शब्दावली* (शब्दावली), *दर्शन* (दर्शन), *प्राथमिकता* (प्राथमिकता) भिन्न अछि। ओकर समन्वय हमेशा *तनाव* (तनाव) सृजना करैत अछि। ई सिद्धान्त ओहि *तनाव*केँ *दमन* (दमन) नै करैत, बल्कि *सर्जनात्मक* (सर्जनात्मक) रूपमे प्रयोग करबाक सुझाव दैत अछि।

ख. दलित-साहित्यक आन्तरिक-विविधता: दलित साहित्य *एकरूप* (एकरूप) नै अछि—*दलित-कविता, दलित-कहानी, दलित-उपन्यास, दलित-नाटक, दलित-आत्मकथा, दलित-समीक्षा*—ईसभक शैलीगत, संरचनात्मक, वैचारिक भिन्नता अछि। एकटा सिद्धान्त सभ विधाक पूर्ण व्याख्या करि सकय, ई दावा करब अनुचित अछि। ई सिद्धान्त *लचीलापन* (लचीलापन) पर बल दैत अछि—समीक्षक अपन *विवेक*सँ सिद्धान्तक प्रयोग करत।

ग. अनूदित-दलित-साहित्यक विशिष्टता: अनूदित दलित साहित्यक समीक्षा लेल *मूल-भाषा* (स्रोत-भाषा) आ *अनुवाद-भाषा* (लक्ष्य-भाषा) दुनूक ज्ञान आवश्यक अछि। मुदा सभ समीक्षक बहुभाषी नै होइत अछि। ई सिद्धान्त *अनुवाद-समीक्षाक* सीमाकेँ स्वीकार करैत अछि, आ *सहयोगात्मक समीक्षा* (सहयोगात्मक समीक्षा) क सम्भावना खोजैत अछि।

घ. दलित-समीक्षाक संस्थागत-सीमा: दलित साहित्यक समीक्षा *शैक्षणिक-संस्थान* (शैक्षणिक संस्थासभ), *प्रकाशन-उद्योग* (प्रकाशन-उद्योग), *पुरस्कार-व्यवस्था* (पुरस्कार-व्यवस्था) क *दबाव* (दबाव) मे आबि रहल अछि। ई *संस्थागत-सीमा* (संस्थागत सीमा) *दलित-समीक्षाक स्वतन्त्रता* (स्वायत्तता) पर प्रश्न चिन्ह लगाबैत अछि।

६.२ सम्भावना (सम्भावनासभ)

क. दलित-सौन्दर्यशास्त्रक विकास (दलित सौन्दर्यशास्त्रक विकास): ई समीक्षा सिद्धान्त *दलित-सौन्दर्यशास्त्र* (दलित सौन्दर्यशास्त्र) क *सैद्धान्तिक-आधार* (सैद्धान्तिक आधार) प्रदान करैत अछि—*दर्द, आक्रोश, अस्मिता, संघर्षकेँ स्थायी भाव* (स्थायी भाव) क रूपमे स्थापित करैत अछि, आ ओकर *रस-परिणति* (रस-निष्पत्ति) क सम्भावना खोजैत अछि।

ख. अन्तःविषयकता: ई समीक्षा सिद्धान्त *साहित्यकेँ समाजशास्त्र, इतिहास, राजनीति-विज्ञान, दर्शन, मानव-विज्ञान* (मानव विज्ञान) सँ जोड़ैत अछि। ई *अन्तःविषयक* (अन्तःविषयक) दृष्टि दलित साहित्यक *बहु-आयामी* (बहुआयामी) विश्लेषणक सम्भावना खोलैत अछि।

ग. तुलनात्मक-दलित-साहित्य-अध्ययन (तुलनात्मक दलित साहित्य-अध्ययन): ई सिद्धान्त *मैथिली-दलित-साहित्यक तेलुगु, गुजराती, उड़िया, तमिल, कन्नड़, मराठी, हिन्दी, बंगला*—सभ भारतीय भाषाक दलित साहित्यसँ तुलनात्मक अध्ययनक सम्भावना खोलैत अछि। ई *तुलनात्मक-दलित-साहित्य-अध्ययन* (तुलनात्मक दलित साहित्य-अध्ययन) भारतीय दलित साहित्यक *एकता* (एकता) आ *विविधता* (विविधता) दुनूक विश्लेषण करत।

घ. अनुवाद-अध्ययनक दलित-पुनर्पाठ: ई सिद्धान्त *अनुवादकेँ गौण* (गौण) नै, बल्कि *सर्जनात्मक* (सर्जनात्मक) विधाक रूपमे स्थापित करैत अछि। *दलित-अनुवाद-अध्ययन* (दलित अनुवाद-अध्ययन) दलित साहित्यक *भाषा-अन्तर-प्रवाह* (अन्तरभाषिक प्रवाह) क विश्लेषण करत।

ङ. दलित-समीक्षाक वैश्वीकरण: ई सिद्धान्त *दलित-समीक्षाकेँ वैश्विक-सैद्धान्तिक-चर्चा* (वैश्विक सैद्धान्तिक विमर्श) सँ जोड़ैत अछि—*उपनिवेशवाद-उत्तर* (उपनिवेशवाद-उत्तर), *सबाल्टर्न* (निम्नवर्गीय), *अन्तर्विच्छेदीयता* (बहु-उत्पीड़न-अन्तर्सम्बन्ध), *दर्द-की-राजनीति* (पीड़ाक राजनीति), *साक्षी-साहित्य* (साक्ष्य-साहित्य) जहिना वैश्विक सैद्धान्तिक धारासभसँ दलित साहित्यक *संवाद* (संवाद) स्थापित करैत अछि।

निष्कर्षः दलित साहित्यक समीक्षा सिद्धान्तक भविष्य

दलित साहित्य केवल *साहित्य* नै अछि; ई एकटा *आन्दोलन* अछि, *प्रतिरोधक* एकटा *घोषणापत्र* अछि। एहि कारण, दलित साहित्यक समीक्षा लेल *सामान्य* साहित्यिक सिद्धान्त अपर्याप्त अछि। ई समीक्षा सिद्धान्त *भारतीय* (रस, ध्वनि, अलंकार, रीति) आ *पाश्चात्य* (मार्क्सवाद, नारीवाद, उपनिवेशवाद-उत्तर, दलित-आन्दोलन सिद्धान्त) सिद्धान्तक *समन्वय* (संश्लेषण) करैत, दलित साहित्यक *विशिष्टता* (विशिष्टता) केँ केन्द्रमे राखैत अछि।

ई सिद्धान्त *अन्तिम-सत्य* (अन्तिम सत्य) क दावा नै करैत अछि; ई *प्रारम्भिक-बिन्दु* (प्रारम्भिक बिन्दु) अछि। ई दलित साहित्यक समीक्षाक *नव-द्वार* (नव द्वार) खोलैत अछि—जतय *दर्द-रस* (पीड़ा रस) आ *आक्रोश-रस* (आक्रोश रस), *अस्मिता-रस* (अस्मिता रस) आ *संघर्ष-रस* (संघर्ष रस) क *सैद्धान्तिक-प्रतिष्ठा* (सैद्धान्तिक वैधता) संभव होइत अछि।

दलित साहित्यक भविष्यक समीक्षा एहि *प्रारम्भिक-बिन्दुसँ आगाँ* (आगाँ) बढ़त—*दलित-सौन्दर्यशास्त्र* (दलित सौन्दर्यशास्त्र) क *समृद्धि* (समृद्धि), *तुलनात्मक-दलित-साहित्य-अध्ययन* (तुलनात्मक दलित साहित्य-अध्ययन) क *विस्तार* (विस्तार), *दलित-अनुवाद-अध्ययन* (दलित अनुवाद-अध्ययन) क *विकास* (विकास), *दलित-समीक्षाक वैश्वीकरण* (दलित-समीक्षाक वैश्वीकरण)—ई सभ दिशासभमे।

परिशिष्टः दलित साहित्यक समीक्षा सिद्धान्तक संक्षिप्त रूपरेखा

विश्लेषण स्तर

भारतीय सिद्धान्त (दलित-पुनर्पाठ)

पाश्चात्य सिद्धान्त (दलित-पुनर्पाठ)

दलित-विशिष्टता

जाति-विश्लेषण

-

जाति-राजनीति, अस्पृश्यता, जाति-हिंसा

पात्र-जाति, लेखक-जाति, कथानक-जाति

दलित-सौन्दर्यशास्त्र

दर्द-रस, आक्रोश-रस, अस्मिता-रस, संघर्ष-रस

-

विपर्यास-अलंकार, अभाव-अलंकार, लोक-अलंकार

सामाजिक-राजनीतिक

-

जाति-वर्ग-लिङ्ग-प्रवास-राजनीति

अन्तर्विच्छेदीयता, दलित-नारीवाद, सबाल्टर्न-आवाज

ऐतिहासिक-अभिलेखीय

-

उपनिवेशवाद-उत्तर, पुरातत्व-विधि

दलित-इतिहास-पुनर्लेखन, मौन-इतिहास-पुनर्निर्माण

आस्वाद-राजनीति

सहृदय (दलित-पुनर्पाठ)

रिसेप्शन थ्योरी, रीडर-रेस्पॉन्स

दलित-पाठक, गैर-दलित-पाठक, दर्दक आस्वादक नैतिकता

ई रूपरेखा समीक्षककेँ *लचीलापन* (लचीलापन) दैत अछि—अपन *विवेक* (विवेक) सँ स्तर आ सिद्धान्तक चयन करबाक, आ *दलित-साहित्यक विशिष्ट-सन्दर्भ* (विशिष्ट सन्दर्भ) मे प्रयोग करबाक स्वतन्त्रता।

समीक्षकक अन्तिम टिप्पणी: दलित साहित्यक समीक्षा *सैद्धान्तिक-शुद्धता* (सैद्धान्तिक शुद्धता) क दावा नै करैत, *साहित्यिक-प्रामाणिकता* (साहित्यिक प्रामाणिकता) क खोज करैत अछि। ई सिद्धान्त ओहि *खोजक दिशा-निर्देश* (दिशानिर्देश) मात्र अछि। दलित साहित्य *जीवित* (जीवित) अछि, *विकसित* (विकसित होइत) अछि, *प्रतिरोध* (प्रतिरोध करैत) अछि। ओकर समीक्षा सेहो *जीवित, विकसित, प्रतिरोधी* होबाक चाही। ई सिद्धान्त ओहि *प्रतिरोधी-समीक्षा* (प्रतिरोधी समीक्षा) क *आमन्त्रण* (आमन्त्रण) अछि।

अनुलग्नकः २ः विद्यापतिक विदेसियाक एकटा समालोचनात्मक मूल्यांकन

पाश्चात्य समालोचना-सिद्धान्त आ भारतीय सौन्दर्यशास्त्रीय परम्पराक संयुक्त दृष्टिसँ एहि मैथिली नाट्य-पाठ—अथवा विद्यापतिक पदावलीमे निहित प्रदर्शन-पटकथा—कैँ बहुविध पद्धतिसँ पढ़ल जा सकैत अछि। आगाँक समालोचनात्मक पाठ उपनिवेशवाद-उत्तर सिद्धान्त, नारीवादी समालोचना, प्रदर्शन-अध्ययन, तुलनात्मक साहित्य आ संस्कृत रस-परम्परा सहित विविध दृष्टिकोणकैँ एकत्र करैत अछि।

१. विधा आ वर्गीकरणक समस्या

पाठ स्वयंकैँ विद्यापतिक *विदेसिया* परम्पराक "समानान्तर ब्रह्माण्ड"क रूपमे घोषित करैत अछि। ई दावा तुरंत एकटा आधारभूत प्रश्न उठाबैत अछि: की ई एकटा पुनरुद्धार अछि, पुनर्निर्माण अछि, रूपान्तरण अछि, या ओहसँ बहुत अधिक जटिल कोनो चीज? लेखक रचनाकैँ *प्रलेखन* (रामखेलावन मण्डल जहिना दलक) आ *सृजन* ("ई परिकल्पित नाटक प्रस्तुत अछि") दुनूक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। विधाक ई अस्थिरता कोनो दोष नै अछि, बल्कि एकटा उत्पादक तनाव अछि, जेकरा पाठ कहियो पूर्ण रूपसँ हल नै करि पाबैत अछि।

उत्तर-संरचनावादी दृष्टिसँ, ई अनिर्धार्यता कोनो "प्रामाणिक" लोक परम्पराक पुनर्प्राप्तिक असम्भवताक उद्घाटन करैत अछि। लेखकक अपन ढाँचा—जे एहि बात पर ध्यान दैत अछि जे सालहेसआ चूड़ामल जहिना व्यक्तित्वसभ पर "कोनो शोध नै भेल अछि"—विरोधाभासी रूपसँ ओह अभिलेखीय अधिकार कैँ कमजोर करैत अछि, जकर दावा पाठ एक साथ करैत अछि। ई रचना जाक देरिदाक शब्दावलीमे *अभिलेख ज्वर* (अभिलेख-ज्वर) बनि जाइत अछि: उत्पत्तिकैँ पुनः प्राप्त करबाक एह बेचैनी, जे कहियो स्थिर नै छल।

औपचारिक समालोचना एह बात पर ध्यान देति कि नाटक *गीत-नाट्यक* संरचना अपनाबैत अछि, मुदा नियमित नाट्यकीय अनुशासनक अभाव अछि। रङ्गमञ्च निर्देशन न्यूनतम अछि, सात दृश्यसभक बीचक सम्बन्ध अस्पष्ट अछि, आ विद्यपति स्वयं एकटा *पात्रक* रूपमे प्रवेश करैत अछि, अर्थ समझाबैत अछि, आ "अन्धकारमे विलीन" भ जाइत अछि—ई सभ एकटा ब्रेख्तीय *विमोहन प्रभाव* (अलगाव-प्रभाव) सृजना करैत अछि, जकरा पाठ अपन लेल कोनो सैद्धान्तिक व्याख्या नै करैत अछि। की विद्यापति संस्कृत परम्पराक *सूत्रधार* अछि? एकटा ब्रेख्तीय कथाकार जे नाटकीय भ्रमकैँ उजागर करैत अछि? या एकटा भक्ति उपस्थिति जे कवि-संतक अधिकारक आह्वान करैत अछि? पाठ निर्णय लेनाइ अस्वीकार करैत अछि, आ ई अस्वीकार, जखन कि बहु व्याख्याक सम्भावना राखैत अछि, तखन संरचनात्मक असंगतिक कारणो बनि जाइत अछि।

२. प्रवास आख्यानः उपनिवेशवाद-उत्तर आ सबाल्टर्न पाठ

एकर विषयगत केन्द्रबिन्दु अछि *प्रवास*—आ ओकर प्रतीक्षाक स्त्री-अनुभव। लेखक भोजपुरी *विदेसिया* परम्परा (भिखारी ठाकुरद्वारा उदाहरित) आ मैथिली सन्दर्भक बीच एकटा महत्वपूर्ण अन्तर खिचैत अछि, तर्क करैत अछि जे मिथिलामे प्रवास "हालियाघटना" अछि, जबकि भोजपुरीमे श्रम प्रवासक लम्बा आ अधिक गहन संस्कृति अछि।

उपनिवेशवाद-उत्तर दृष्टिसँ, ई भेद सावधानीपूर्वक परीक्षणक माग करैत अछि। लेखकक ई दावा जे भोजपुरी साहित्य "परिमाणक दृष्टिसँ मैथिली सँ कम समृद्ध" अछि मुदा किछु क्षेत्रसभमे "गुणवत्ताक दृष्टिसँ बेसी" अछि, एकटा अन्तर्निहित पदानुक्रम पर टिकल अछि, जकर पाठ कहियो विखण्डन नै करैत अछि। "समृद्धि" आ "गुणवत्ता"क मानदण्ड केकर अछि? ई तुलना भिखारी ठाकुरक *विदेसियाकैँ* अपन "मार्मस्पर्शी रूप" लेल मूल्यवान ठहराबैत अछि, जबकि मैथिली साहित्यक "बोझिल" महाकाव्यात्मक आख्यानसभक समालोचना करैत अछि। ई एकटा मूल्यवान अन्तर्दृष्टि अछि, मुदा एकरा अधिक कठोर सैद्धान्तिकीकरणक आवश्यकता अछि। मैथिली साहित्यिक संस्कृति *महाकाव्य* रूप सभकैँ *लोककथा* पर कियों वरीयता दैत अछि? एकर उत्तर **साहित्यक समाजशास्त्र**मे निहित अछि: मैथिलीक ब्राह्मण्य प्रतिष्ठा (पण्डित आ सरनाट अभिजात वर्गक भाषाक रूपमे) बनाम भोजपुरी साहित्यिक अभिव्यक्तिक अधिक जन-साधारण, श्रमजीवी मूल।

सबाल्टर्न अध्ययनक एकटा पाठ ओहु आगा धकेलत। एहि नाटकमे स्त्री पात्र—प्रतीक्षारत *युवती*, यात्रीकेँ फेरि देबिहार *ननद*, मञ्चपर बाहर मरि जाए *सास*—पितृसत्तात्मक संरचनाक भीतरक आवाज अछि, जकरा पाठ बिना पर्याप्त प्रश्नकेँ पुनरुत्पादित करैत अछि। जखन युवती गाबैत अछि, "हम एकाकी छी, हमर पिय देशान्तर, " तखन ओ *रस*परम्पराक केन्द्रीय *विरह*क अभिनय करैत अछि। मुदा की पाठ एहि पीड़ाक कोनो नारीवादी समालोचना प्रस्तुत करैत अछि, या ओ स्त्रीक प्रतीक्षाकेँ उदात्त रूपमे सौन्दर्यीकृत करैत अछि? *रस* ढाँचा *करुण* आ *विप्रलम्भ शृङ्गार*केँ महत्व देत, मुदा गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक जहिना**नारीवादी समालोचक**पूछत: की सबाल्टर्न स्त्री एतय बाजि सकैत अछि, या ओ केवल पुरुष-रचित पद्य आ एकटा पुरुष कवि-पात्रक माध्यम अछि, जे दर्शकसभक लेल ओकर अनुभवक व्याख्या करैत अछि?

३. रस, भक्ति, आ सौन्दर्यात्मक दूरीक प्रश्न

पाठ स्पष्ट रूपसँ विद्यापतिक *पदावली*पर आधारित अछि, जे *शृङ्गार* आ *भक्ति* दुनू परम्परा सभमे सहभागी अछि। *नेपाल पदावली*सँ गीतसभक चयन—जे विरह, वियोग आ प्रेमीक प्रतीक्षामे स्त्रीक दशाक चिन्तासँ सम्बन्धित अछि—रचनाकेँ ओह *विरह* सौन्दर्यशास्त्रमे स्थापित करैत अछि, जे संस्कृत काव्यशास्त्रकेँ उत्तर भारतक भक्ति साहित्यसँ जोड़ैत अछि।

अभिनवगुप्तक ध्वनि सिद्धान्तक दृष्टिसँ, एहि गीतसभक *व्यङ्ग्य* (व्यंजित अर्थ) प्रवासी पति कऽ प्रतीक्षा करैत स्त्रीक शाब्दिक आख्यानकेँ पार करि जाइत अछि। *विदेसिया*रूपक बनि जाइत अछि: दिव्यसँ वियुक्त आत्माक लेल, अपन सांस्कृतिक जड़सँ विच्छिन्न मिथिला क्षेत्रक लेल, विस्थापनक युगमे मैथिली भाषा स्वयंक लेल। मुदा जखन विद्यापति रङ्गमञ्च पर "अर्थ समझाबय" आबैत अछि, तखन पाठ ओह जोखिमक सामना करैत अछि, जेकरा *रस*परम्परा मूलभूत त्रुटि मानैत अछि: *विभाव*आ *अनुभाव*केँ *व्यङ्ग्य* द्वारा *रस* उत्पन्न करबाक अनुमति देनाइक बदला, स्पष्ट करि देल जाइत अछि। कवि-पात्रक व्याख्यात्मक हस्तक्षेप मूल पद्यसभक बहुअर्थीताकेँ समतल करि दैत अछि।

भक्तिपाठ अधिक उदार हो सकैत अछि। उत्तर भारतक भक्ति परम्परा सभमे, विरहक रस स्वयं एकटा प्रकारक साक्षात्कार अछि। *युवती*राधा अछि; *पिय देशान्तर*कृष्ण अछि; प्रतीक्षा दिव्यसँ मिलनक आत्माक तड़प अछि। कवि-सन्तक रूपमे विद्यापतिक उपस्थिति एहि पाठकेँ बल देबैत अछि: ओ केवल टीकाकार नै अछि, बल्कि एकटा *सन्त* अछि, जकर पद्य स्वयं *साधना*क रूप अछि। नाटकक प्रदर्शन सन्दर्भ—जतय रामक नाम पर दल अछि आ समूह भक्ति-नाटकक रूपमे मञ्चन करैत अछि—एहि व्याख्याक समर्थन करैत अछि।

तथापि, पाठक अपन ढाँचा भक्तिपरक निष्कर्षकेँ पूर्ण रूपसँ स्वीकार नै करैत। अन्तिम पंक्ति, *पिय देशान्तर*क *अवधारणा*क "विवेकशील दर्शकसभक समक्ष प्रस्तुत" आ "गहन श्रद्धाक साथ अर्पित" कहल गेल अछि, एकटा समालोचनात्मक दूरी बनाए राखैत अछि। नाटक न त पूर्ण रूपसँ *भक्ति रङ्गमञ्च* अछि, न पूर्ण रूपसँ धर्मनिरपेक्ष *लोक नाट्य*। ई संकरता उत्पादक अछि, मुदा कहियो कहियो अस्थिरो सेहो।

४. अन्तर्पाठचता आ प्रभावक चिन्ता

पाठक भिखारी ठाकुरक *विदेसिया*सँ सम्बन्ध ओकर सबसँ महत्वपूर्ण अन्तर्पाठ्य सगाई अछि। हेरोल्ड ब्लूमक *प्रभावक चिन्ता* (प्रभावक चिन्ता) एकटा उपयोगी ढाँचा प्रदान करैत अछि: मैथिली पाठ अपन भोजपुरी पूर्ववर्तीसँ भिन्न एकटा स्थान बनाबाक संघर्ष करैत अछि, जखन कि ओकरा ओही अनिवार्य रूपसँ आकार देल गेल अछि।

लेखक दावा करैत अछि जे मैथिलीमे भोजपुरी *विदेसिया*क "सूक्ष्म विवरण"क अभाव अछि, *सालहेस*आ *चूड़ामल*केँ एहन आख्यानक उदाहरणक रूपमे उद्धृत करैत अछि जे "क्षेत्रीय सीमाकेँ पार करैत अछि" मुदा जाहि पर पर्याप्त शोध नै भेल अछि। ई *कानन* (मान्य साहित्यिक परम्परा) क बारेमे एकटा दावा अछि: जे मैथिली लोक साहित्यक संस्कृतिकृत महाकाव्य परम्पराक तुलनामे उपेक्षा कएल गेल अछि। प्रस्तुत नाटककेँ एक प्रकारक**कानन-समालोचना** (मान्य-परम्परागत समीक्षा) क प्रदर्शनक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि, जे हाशियाकृत चीजकेँ पुनः प्राप्त करैत अछि।

मुदा नाटकक विद्यापति पर निर्भरता—मैथिली साहित्यमे सबसँ अधिक कानन-सम्मत व्यक्तित्व—एहि परियोजनाकेँ जटिल बनाबैत अछि। लेखक प्रभावी रूपसँ सबसँ प्रतिष्ठित मैथिली साहित्यिक व्यक्तित्वक उपयोग एकटा लोक परम्पराकेँ प्राधिकार प्रदान करबाक लेल करैत अछि, जे संभवतः विद्यापतिक अपन रचनाकर्म ऐतिहासिक रूपसँ हाशियाकृत केनए छल। ई एकटा**उपनिवेशवाद-**

उत्तरपुनर्प्राप्तिक इशारा अछि, मुदा ई अभिजात साहित्यिक रूपसभक मध्यस्थता बिना "लोक" धरि पहुँचबाक कठिनाईकेँ सेहो प्रकट करैत अछि।

पाठक-प्रतिक्रियासमालोचक ध्यान देत कि पाठक अपन परियोजनाक स्पष्ट ढाँचा—लम्बा गद्य प्रस्तावना, दलक विस्तृत विवरण, नगेन्द्रनाथ गुप्तक संस्करणक उद्धरण—एकटा विशिष्ट पठन-अनुबन्ध सृजना करैत अछि। दर्शककेँ बिना मध्यस्थताक *रस*अनुभव करबाक आमन्त्रण नै देल जाइत, बल्कि निर्माणक *प्रक्रिया,* अभिलेखीय श्रम, क्षेत्रीय साहित्यिक परम्परा सभक राजनीति केँ समझबाक आमन्त्रण देल जाइत अछि। ई रूपान्तरण-नाटकीय (आत्म-रङ्गमञ्चीय) आयाम नाटकक सबसँ विशिष्ट योगदान अछि।

५. प्रदर्शन अध्ययन आ दर्शकत्वक प्रश्न

एकटा प्रदर्शन पाठक रूपमे, *विद्यापतिक विदेसिया*एकटा सीमान्त स्थानमे विद्यमान अछि। ई न त पूर्ण पटकथा अछि, न प्रदर्शन अभिलेख। रङ्गमञ्च निर्देशन न्यूनतम अछि: "कवि विद्यापति प्रवेश करैत अछि, " "युवती प्रतीकात्मक रूपसँ एकटा दोकान खोलैत अछि, " "अन्धकार पसरैत अछि। " एकटा **प्रदर्शन अध्ययन**विद्वान पूछत: एतय की दस्तावेजीकृत कएल जाइत अछि? कोनो विशिष्ट दलक *लीला?* कोनो लुप्त परम्पराक पुनर्निर्माण? या *भविष्यक प्रदर्शन लेल एकटा पटकथा?*

पाठक प्रत्येक गीतक *राग* (धनाशी, मलावा, कोलार, घनाशी) पर विस्तृत ध्यान संगीतात्मक विशिष्टताक सुझाव दैत अछि। मुदा बिना स्वरलिपि या प्रदर्शन निर्देशनक, ई केवल नाम मात्र अछि। नाटककार, या प्रलेखक, एकटा पाठकक परिकल्पना करैत अछि जे एहि संगीत परम्परा सभसँ गहिर परिचित अछि—एकटा पाठक, अर्थात्, जे पहिने सँ मैथिली प्रदर्शन संस्कृतिक भीतर अछि।

ई दर्शक-सम्बोधनक प्रश्न उठबैत अछि: ई पाठ केकर लेल अछि? उपलब्ध अंग्रेजी अनुवाद मैथिलीभाषी पाठक-वर्गसँ परे एकटा अतिरिक्त दर्शक-वर्गक सम्भावना देखबैत अछि। तथापि, नाटकक भीतर गीतसभक अनुवाद नहि कएल गेल अछि; मैथिली मूल प्रस्तुत अछि आ ओकर अर्थ मैथिली गद्यमे देल गेल अछि। भाषा आ अनुवादक ई तह होमी भाभाक शब्दावलीमे “तृतीय स्थान” सृजित करैत अछि—न पूर्णतः मैथिली, न पूर्णतः अंग्रेजी; न केवल प्रदर्शन, न केवल प्रलेखन; न केवल लोक, न केवल शास्त्रीय।

६. साहित्यिक तुलनाक राजनीति

लेखकक भोजपुरी आ मैथिलीक बारेमे तुलनात्मक टिप्पणीसभ**समाज-समालोचनात्मक** दृष्टिसँ ध्यानाकर्षक अछि। "भोजपुरी साहित्य मैथिली सँ परिमाणमे कम समृद्ध अछि, " पाठ दावा करैत अछि, "मुदा गुणवत्ताक दृष्टिसँ किछु क्षेत्रसभमे ई मैथिली सँ बेसी अछि। " ई एकटा उत्तेजक दावा अछि जे, यदि विश्लेषित कएल जाय, त उत्तर भारतीय साहित्यिक संस्कृतिक भीतर गहन पदानुक्रमकेँ उजागर करत।

मैथिलीक एकटा शास्त्रीय साहित्यिक परम्परा अछि जे विद्यापति (१४-१५वीं शताब्दी) धरि जाइत अछि, एकटा मान्यता प्राप्त व्याकरण (*मैथिली व्याकरण*) अछि, आ विद्वतापूर्ण उत्पादनक लम्बा इतिहास अछि। भोजपुरी, अपन विशाल वक्ता संख्या केबावजूद, ऐतिहासिक रूपसँ एकटा*बोली*क रूपमे कलंकित कएल गेल अछि, *भाषा*नै, एकर साहित्यिक परम्परा सभकेँ हिन्दी आ मैथिली दुनू अभिजात वर्गद्वारा हाशियाकृत कएल गेल अछि। लेखकक ई दावा जे भोजपुरी किछु *गुणात्मक* क्षेत्रसभमे—विशेषतः *विदेसिया* परम्परामे—"श्रेष्ठ" अछि, एहि पदानुक्रमक एकटा रणनीतिक विपर्यास अछि। ई भोजपुरी लेल ओह चीजक दावा करैत अछि जे ओकरा अस्वीकार कएल गेल छल: सौन्दर्यात्मक परिष्कार, भावनात्मक गहराई, आ सांस्कृतिक मूल्य।

तथापि, पाठ एहि विपर्यासक पूर्ण सैद्धान्तिकीकरण नै करैत अछि। ई ओह तुलनात्मक ढाँचामे फँसल रहैत अछि, जेकरा ओ चुनौती देनाइ चाहैत अछि। एकटा सच्चा**उपनिवेश-उन्मूलनवादी** (उपनिवेश-मुक्त) समालोचना पूछत: तुलना कियों करब? प्रत्येक परम्पराकेँ अपन सौन्दर्यात्मक मापदण्ड, अपन मूल्यक मानदण्ड देबाक कियों नै देनाइ? तुलना ओह पदानुक्रमसभकेँ पुनः प्रतिष्ठापित करबाक जोखिम उठाबैत अछि, जकर ओ समालोचना करैत अछि।

७. अनिराकृत प्रश्न आ उत्पादक अस्पष्टतासभ

पाठ किछु प्रश्नसभकेँ अनिराकृत छोड़ैत अछि, आ ई मौन समालोचक लेल उत्पादक अछि:

१. **विद्यापतिक स्थिति**: की ओ नाटकक भीतर एकटा पात्र अछि, स्रोत सामग्रीक लेखक अछि, एकटा *सूत्रधार*आकृति अछि, या एकटा भक्ति उपस्थिति? पाठक उत्तर अछि "सभटा, " आ ई बहुलता एकर शक्ति आ दुर्बलता दुनू अछि।

२. **सात दृश्यसभक बीच सम्बन्ध**: दृश्यसभ एकटा स्थिति—एकटा स्त्री, एकटा यात्री, विदेश गेल प्रेमीक याद—क भिन्नता प्रस्तुत करैत प्रतीत होइत अछि। मुदा की ई एकटा आख्यानात्मक प्रगति बनाबैत अछि? एकटा अनुष्ठान चक्र? सौन्दर्यात्मक भिन्नता (*प्रकार*) क एकटा श्रृंखला? पाड नै कहैत अछि।

३. **लिङ्गक राजनीति**: युवतीक स्वर गीतसभ पर हावी अछि, मुदा ओकर एजेन्सी सीमित अछि। ओ यात्रीकेँ मना नै सकैत, नै जा सकैत, नै अपन पतिसँ सीधा बाजि सकैत अछि। पाड ई सीमाकेँ बिना टिप्पणीकेँ पुनरुत्पादित करैत अछि। की ई स्रोत सामग्रीक प्रति निष्ठा अछि, या समालोचनात्मक दूरीक विफलता?

४. ननदक भूमिका: बादक दृश्यसभमे, ओ गायब भ जाइत अछि, यात्री आ युवती अकेला रहि जाइत अछि। एहि सम्बन्धक की भेल? पाडक मौन सुझावपूर्ण अछि मुदा अपूर्ण सेहो।

५. **अन्त्य**: अन्तिम "विलीन" *पिय देशान्तर*मे अस्पष्ट अछि। की ई प्रेमीक सँ मिलन अछि? मृत्यु? नाटकीय भ्रमक पतन? पाड, संभवतः जानि बूझि कऽ, व्याख्याकेँ रोकि राखैत अछि।

८. निष्कर्ष: एकटा समालोचनात्मक अभिग्रहणक दिशामे

औपचारिक सुसंगति, विषयगत जटिलता, आ परम्परा-नवाचारक बीच उत्पादक तनाव—एहि मानकसभ पर *विद्यापतिक विदेसिया* पर्याप्त रुचिक रचना अछि, मुदा अनिराकृत अन्तर्विरोधसभक सेहो।

एकर सबसँ बड़ शक्ति एकर **अन्तरालीय स्थिति** (अन्तरालीय स्थिति) अछि: लोक आ शास्त्रीयक बीच, मैथिली आ भोजपुरीक बीच, प्रदर्शन आ पाठक बीच, भक्ति आ समालोचनाक बीच। ई स्थिति एकरा ओह तनावसभकेँ मञ्चित करबाक अनुमति दैत अछि, जे आधुनिक मैथिली अस्मिताकेँ परिभाषित करैत अछि—एकटा गौरवशाली साहित्यिक अतीत आ वर्तमानक आर्थिक अनिश्चितताक बीच, संस्कृतिकृत प्रतिष्ठा आ लोक जीवन्तताक बीच, *विरह*क वेदना आ राजनीतिक मान्यताक मागक बीच फँसल।

एकर सबसँ बड़ दुर्बलता अछि एकर **सैद्धान्तिक अपर्याप्त विस्तार**। पाड जानैत अछि जे ओ की करबाक चाहैत अछि—एकटा परम्पराकेँ पुनः प्राप्त करबाक, विद्यापतिकेँ सम्मान करबाक, मैथिली प्रवासक वर्तमान क्षणसँ बाजि करबाक—मुदा ओ हमेशा नै जानैत अछि जे ओ *कइ प्रकार*ेँ करि रहल अछि। विधाक अस्थिरता, अस्पष्ट रङ्गमञ्चन, विद्यापतिक पात्रक रूपमे अनिराकृत भूमिका: ई अपने आपमे दोष नै अछि, मुदा ई एकटा आत्म-विवेचनात्मक विवरणक माग करैत अछि, जे पाड प्रदान नै करैत अछि।

अभिग्रहण-केन्द्रित समालोचक ध्यान देत कि ई पाड अब बहु सन्दर्भसभमे विद्यमान अछि: मैथिली पाठकसभ लेल, ई सांस्कृतिक स्मृतिक एकटा दस्तावेज अछि; अंग्रेजी पाठकसभ लेल, एकटा अनूदित जिज्ञासा; भारतीय रङ्गमञ्चक विद्वान लेल, प्रदर्शन परम्परा सभक अभिलेखीकरणक चुनौतीसभक एकटा केस स्टडी। प्रत्येक पठन सन्दर्भ एकटा भिन्न पाड उत्पन्न करैत अछि।

अन्ततः, *विद्यापतिक विदेसिया* ओहिमे सफल अछि जे ई संभवतः सबसँ मौलिक रूपसँ प्रयास करैत अछि: मैथिली *विदेसिया*—प्रवासी, आ प्रतीक्षारत स्त्री—क अनुभवकेँ मिथिलाक सबसँ प्रतिष्ठित साहित्यिक परम्पराक भीतर रखबाक। एहन करि कऽ, ई एकटा दावा करैत अछि: जे श्रम प्रवासक पीड़ा राधा-कृष्णक *विरह*जकर समान सौन्दर्यात्मक ध्यानक हकदार अछि; जे *लोकशास्त्र*क भीतर अछि; जे विस्थापनक वर्तमान क्षण शताब्दी-पुरान काव्य भाषाक संसाधनसभक माग करैत अछि।

की पाड ई दावाकेँ पूर्ण रूपसँ प्राप्त करैत अछि, ई समालोचक लेल एकटा खुला प्रश्न अछि। मुदा दावा स्वयं—आ एकर अभिव्यक्तिक श्रम—सम्मानक माग करैत अछि।

पाँच सैद्धान्तिक दृष्टिकोणसभद्वारा विद्यापतिक विदेसियाक एकटा समालोचनात्मक पाठ

१. गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक: की मैथिली सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि?

स्पिवाकक आधारभूत प्रश्न—"केन सबाल्टर्न बाजि सकैत अछि? "—ओह तंत्रकेँ पूछैत अछि जकर द्वारा हाशियाकृत विषयसभकेँ प्रभुत्वशाली प्रवचनमे प्रतिनिधिकृत कएल जाइत अछि, जे हमेशा संस्थागत आ वैचारिक संरचनासभद्वारा मध्यस्थ होइत अछि जे प्रामाणिक आत्म-अभिव्यक्तिकेँ अवरुद्ध करैत अछि। *विद्यापतिक विदेसिया* स्पिवाकीय विश्लेषणक लेल एकटा बाध्यकारी केस स्टडी प्रस्तुत करैत अछि, ठीक ओहि कारण जे ई प्रतिनिधित्वक ओह संकटकेँ मञ्चित करैत अछि, जकर सैद्धान्तिकीकरण ओकर काज करैत अछि।

*युवती*जे नाटकक गीतसभ पर हावी अछि, सतह पर एकटा सबाल्टर्न आकृतिक रूपमे प्रकट होइत अछि: एकटा ग्रामीण स्त्री जकर पति श्रम लेल प्रवास करि गेल अछि, जे पितृसत्तात्मक आ आर्थिक संरचनासभक भीतर अपन स्थितिक अनिश्चिततासँ जूझबाक लेल छोड़ि देल गेल अछि, जे ओकरा कोनो एजेन्सी नै दैत अछि। तथापि, ओकर वाणी—गीत जे ओ गाबैत अछि—ओकर अपन नै अछि। ई विद्यापतिक रचना अछि, जे १४-१५वीं शताब्दीक एकटा पुरुष कवि, बहु पाठ्य संचरण (*नेपाल पदावली,* नगेन्द्रनाथ गुप्तक संकलन) द्वारा मध्यस्थ, आ समकालीन नाटककार/प्रलेखक द्वारा अरू मध्यस्थ, जे चयन, व्यवस्था आ ढाँचा प्रदान करैत अछि। *युवती*बाजैत अछि, मुदा जे ओ बाजैत अछि, ओ पहिने सँ अभिजात पुरुष-रचित साहित्यक एकटा उद्धरण अछि।

स्पिवाकक उपनिवेशवादक "ज्ञानमूलक हिंसा" (ज्ञानमीमांसात्मक हिंसा) क समालोचना एतय भारतीय साहित्यिक संस्कृतिक भीतर आन्तरिक उपनिवेशवादसभ धरि विस्तारित होइत अछि। नाटककारक ढाँचा—जे मैथिलीमे भोजपुरी लोक आख्यानक "सूक्ष्म विवरण"क अभाव अछि—प्रामाणिक लोक अभिव्यक्तिक बारेमे एकटा बेचैनी प्रकट करैत अछि, जे नाटक विद्यापतिक पद्यसभकेँ एक प्रकारक आदि-लोक अभिलेखक रूपमे पुनः प्राप्त करि कऽ हल करबाक प्रयास करैत अछि। मुदा स्पिवाक पूछत: एहि पुनर्प्राप्तिमे की मिटाएल जाइत अछि? वास्तविक मैथिली महिला जे प्रवास केनए अछि, या प्रवासीक प्रतीक्षा केनए अछि, ओकर स्थान एकटा साहित्यिक निर्माण—संस्कृतिकृत काव्यशास्त्रक *विरहिणी*—ले लैत अछि। सबाल्टर्न स्त्री आर कोनो चीजक प्रतीक बनि जाइत अछि: मैथिली सांस्कृतिक अस्मिता, साहित्यिक परम्पराक प्रतिष्ठा, कवि-सन्तक अधिकार।

नाटकक अन्तिम इशारा—अन्धकारसँ उदित होइत*पिय देशान्तर* (विदेश सँ लौटल प्रेमी) क अस्पष्ट उपस्थिति—स्पिवाकीय दृष्टिसँ विशेष रूपसँ शिक्षाप्रद अछि। की ई मिलन अछि? मुक्ति? पाड ई अनिराकृत छोड़ैत अछि। मुदा स्पिवाक ध्यान देत कि सबाल्टर्न स्त्रीक इच्छा अन्ततः*पुरुष*आकृतिक वापसी पर विस्थापित भ जाइत अछि। *युवती*क प्रतीक्षा अपन पूर्ति ओकर अपन एजेन्सीमे नै, बल्कि प्रेमीक आगमनमे पाबैत अछि। ओकर विषयता पूर्ण रूपसँ ओकर अनुपस्थिति आ उपस्थितिक सापेक्ष निर्मित अछि। ओ बाजैत अछि, मुदा ओ ओकर बारेमे, ओकर लेल, ओकरा बाजैत अछि। ओकर अपन स्वर, ओकर अपन इच्छा जकाँ, मध्यस्थ बनि रहैत अछि।

नाटककारक अपन स्थान ओह समस्याक दर्पण करैत अछि जेकरा स्पिवाक पहिचान करैत अछि। एकटा शिक्षित, संभवतः शहरी, संभवतः पुरुष या पुरुष-पहिचान वाला व्यक्तिक रूपमे जे एहि ग्रामीण प्रदर्शन परम्परा सभक दस्तावेजीकरण आ ढाँचा प्रदान करैत अछि, नाटककार ओह प्रतिनिधित्वक कार्यकेँ स्वयं करैत अछि, जकर स्पिवाक समालोचना करैत अछि। लम्बा गद्य प्रस्तावना—दलक, गाम, प्रदर्शन इतिहासक अभिलेखीय विवरण—नृवंशविज्ञान सम्बन्धी अधिकारक दावाक रूपमे कार्य करैत अछि। मुदा की ई प्रलेखन सबाल्टर्न वाणीकेँ सक्षम करैत अछि या अवरुद्ध? *युवती* गाबैत अछि, मुदा ओकर गीत टीकाकृत, अनूदित, व्याख्यात अछि—पहिल नाटकक भीतर पात्रक रूपमे विद्यापति द्वारा, फिर नाटककारक ढाँचा द्वारा, फिर एहि समालोचक द्वारा। मध्यस्थताक प्रत्येक तह केँ कोनो बिना मध्यस्थताक सबाल्टर्न स्वरसँ अधिक दूर करि दैत अछि।

स्पिवाक हमरा याद दियैत अछि जे "सबाल्टर्नकेँ बाजि देनाइ" क इच्छा स्वयं एकटा पाश्चात्य-बौद्धिक कल्पना अछि, प्रामाणिकताक पुनः प्राप्तिक एकटा परियोजना जे अनिवार्य रूपसँ ओह संरचनासभक पुनरुत्पादन करैत अछि जेकरा ओ विखण्डित करबाक चाहैत अछि। *विद्यापतिक विदेसिया*एहि विरोधाभाससँ बचि नै सकैत अछि, मुदा ई एकरा असामान्य आत्म-जागरूकताक साथ मञ्चित करैत अछि। जखन विद्यापति पात्र*युवती*क गीतसभक "अर्थ समझाबय" आबैत अछि, तखन नाटक समालोचकक अपन कार्यकेँ रूपकित करैत अछि। प्रश्न अछि: की नाटक एहि रूपककेँ एकटा समस्या क रूपमे पहिचान करैत अछि, या ई भोलेपनसँ कविक व्याख्यात्मक अधिकारक उत्सव मनाबैत अछि?

२. दीपेश चक्रवर्ती: मैथिली साहित्यिक कल्पनाकेँ प्रान्तीयकरण

चक्रवर्तीक *प्रान्तीयकरण यूरोप* (यूरोपकेँ प्रान्तीय बनाब) तर्क करैत अछि जे ऐतिहासिकतावाद (इतिहासवाद)—इतिहास लेखनक यूरोपीय मोड, जे एकटा सार्वभौमिक, रैखिक कालगतिकी मानैत अछि—आधुनिक दक्षिण एशियाई चिन्तनकेँ एहन तरहसँ संरचित केनए अछि जे कालगतिकीय अनुभवक अन्य रूपसभकेँ अवरुद्ध करैत अछि। चक्रवर्ती एकटा इतिहासलेखनक आह्वान करैत अछि जे "देवताक राजनीति" आ अस्तित्वक अन्य एहन मोडसभक लेल स्थान बनाबय, जे धर्मनिरपेक्ष, विकासवादी समयमे समाहित नै होइत अछि।

*विद्यापतिक विदेसिया*चक्रवर्तीक ढाँचाक अनुप्रयोगक लेल एकटा समृद्ध स्थल प्रदान करैत अछि कारण ई एक साथ अनेक असंगत कालगतिकीसभमे संचालित होइत अछि। नाटक*प्रवास*क बारेमे अछि, जे एकटा आधुनिक आर्थिक परिघटना अछि: पाड टिप्पणी करैत अछि जे मिथिलामे प्रवास "हालिया घटना" अछि, जे "गाम उजाड़ भ गेल अछि। " तथापि, एहि आधुनिक स्थितिक प्रतिनिधित्वक

लेल नाटकक सौन्दर्यात्मक संसाधन विद्यापतिक १४वीं शताब्दीक *पदावली*सँ आहरित अछि, जे एकटा पूर्व-आधुनिक, भक्ति-शृङ्गार परम्परासँ सम्बन्धित अछि। जे *युवती* अपन प्रवासी पति कऽ प्रतीक्षा करैत अछि, ओ एक साथ एकटा समकालीन मैथिली स्त्री आ राधा कृष्णक प्रतीक्षारत अछि। पाड एहि कालगतिकीसभक बीच चयन नै करैत अछि; ई दुनूमे एक साथ निवास करैत अछि।

चक्रवर्ती एहिकेँ ऐतिहासिकतावादक कालक्रमिक शुद्धताक मागक एकटा अस्वीकारक रूपमे पहिचान करत। नाटक ई कहबाक अस्वीकार करैत अछि: "ई अछि पूर्व-आधुनिक *विरह* परम्परा; ई अछि आधुनिक प्रवास आख्यान। " बल्कि, ई जोर दैत अछि जे श्रम प्रवासक आधुनिक अनुभव *विरहक* एकटा रूप *अछि*, जे समकालीन मैथिली प्रवासीक अनिश्चितता आत्माक अपन प्रियतमक लेल शाश्वत तड़प *अछि*। ई कोनो रूपकात्मक प्रतिस्थापन नै अछि बल्कि एकटा कालगतिकीय अध्यारोपण (कालिक अध्यारोपण) अछि: दुइ समय एकटा स्थानमे विद्यमान।

पाडक मैथिली आ भोजपुरी साहित्यिक परम्परा सभक बीच तुलना सेहो चक्रवर्तीय पाठक आमन्त्रित करैत अछि। नाटककार दावा करैत अछि जे भोजपुरीक *विदेसिया* परम्परा किछु गुणात्मक क्षेत्रसभमे "श्रेष्ठ" अछि, जबकि मैथिली "बोझिल" महाकाव्यात्मक आख्यानसभसँ बाँधल अछि। ई, अन्य बातसभक अतिरिक्त, *साहित्यिक समयक* बारेमे एकटा दावा अछि। तर्क अछि जे भोजपुरीमे एकटा आधुनिक, प्रतिक्रियाशील, लोक-भाषायी यथार्थवाद (भिखारी ठाकुरक प्रवासी पीड़ाक मार्मिक गीत) उत्पन्न भेल अछि, जबकि मैथिली संस्कृत अतीतक "भारी" रूपसभमे फँसल अछि। नाटकक परियोजना—विद्यापतिक प्रयोग करि कऽ वर्तमानसँ बाजि करबाक—एहि ऐतिहासिकतावादी धारणाकेँ प्रान्तीयकृत करबाक एकटा प्रयासक रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि जे "आधुनिक" रूप (यथार्थवाद, उपन्यास, धर्मनिरपेक्ष आख्यान) केवल आधुनिक अनुभवक प्रतिनिधित्वक पर्याप्त माध्यम अछि।

मुदा चक्रवर्ती एहि कालगतिकीय संकरताक रोमान्टिकाइजेशनक विरुद्ध सेहो सचेत करबैत अछि। नाटकक विद्यापतिक अधिकारक आह्वान—कवि-सन्त जे *विदेसिया* परम्पराकेँ प्रमाणित करैत अछि—ओह ब्राह्मण्य प्रतिष्ठा संरचनासभक पुनरुत्पादन करबाक जोखिम उठाबैत अछि, जे ऐतिहासिक रूपसँ लोक अभिव्यक्तिकेँ हाशियाकृत केनए अछि। *युवतीक* गीत स्वीकार्य होइत अछि, संभवतः, कारण ई *विद्यापतिक* गीत अछि। आधुनिक प्रवासीक पीड़ा सौन्दर्यात्मक रूपसँ वैध होइत अछि कारणई एकटा कानन-सम्मत साहित्यिक परम्परा द्वारा ढाँचाबद्ध अछि। चक्रवर्ती पूछत: की हमरा एहन वर्तमानक राजनीति भ सकैत अछि जेकरा पूर्व-आधुनिक पवित्रक प्राधिकरणक आवश्यकता नै अछि?

नाटकक प्रदर्शन सन्दर्भ—रामक नाम पर दल, भक्ति-नाटकक रूपमे मञ्चन—एकटा उत्तर सुझावैत अछि। रामखेलावन मण्डलक अभ्यासकर्तासभक लेल, विद्यापति कोनो अधिकार नै अछि जे आधुनिक चिन्तासभकेँ वैधता प्रदान करबाक लेल आहूत कएल गेल हो; ओ एकटा निरन्तर भक्ति अभ्यासक भीतर एकटा जीवित उपस्थिति अछि। "आधुनिक" आ "पूर्व-आधुनिक"क बीचक अन्तर ओकरा लेल एहन रूपमे विद्यमान नै होइत, जेना ई साक्षर समालोचकक लेल अछि। चक्रवर्ती हमरा आग्रह करबैत अछि जे हम ई केँ गम्भीरतासँ लेबू: *रामखेलावन* परम्पराक कालगतिकी ऐतिहासिकतावादी समय नै, अनुष्ठानिक समय अछि, चक्रीय समय अछि, *लीला* (दिव्य क्रीडा) क समय अछि। यूरोपकेँ प्रान्तीयकृत करबाक अर्थ अछि ओह ऐतिहासिकतावादी धारणासभकेँ प्रान्तीयकृत करबाक जे हमरा विद्यापतिक उपस्थितिकेँ एकटा अनाक्रोनिज्मक रूपमे देखबाक लेल बाध्य करैत अछि, न कि एकटा निरन्तरताक रूपमे।

३. ए. के. रामानुजनः लोक आ शास्त्रीय काननक अन्तर्क्रिया

रामानुजनक जीवन-कार्य भारतीय साहित्यमे "लोक" आ "शास्त्रीय" परम्परा सभक बीच पदानुक्रमिक विरोधकेँ चुनौती देबाक लेल समर्पित छल। ओ प्रदर्शित केलखिन जे ई श्रेणीसभ स्थिर सार नै अछि, बल्कि गतिशील, परस्पर गठन करैत रूप अछि। "शास्त्रीय" निरन्तर "लोक" संसाधनसभ पर आकर्षित करैत अछि; "लोक" "शास्त्रीय" रूपसभकेँ आत्मसात आ रूपान्तरित करैत अछि। रामानुजनक *स्पीकिंग ऑफ शिव, द इन्टीरियर ल्याण्डस्केप,* आ *फोल्कटेल्स फ्रम इण्डियाक* अनुवाद ओकर विधिक उदाहरण अछि: लोक परम्परा सभकेँ काननिक पाठसभक समान गम्भीरतासँ व्यवहार करबाक, ओकर औपचारिक परिष्कार आ सांस्कृतिक जटिलताक प्रति ध्यान देबाक।

विद्यापतिक विदेसिया अनेक प्रकारसँ रामानुजन-शैलीक एकटा पाठ अछि। ई स्पष्ट रूपसँ विद्यापति—मैथिली साहित्यक सबसँ काननिक आकृति—आ *विदेसियाक* लोक प्रदर्शन परम्परा सभक बीच सम्बन्धसँ सम्बन्धित अछि। नाटककार टिप्पणी करैत अछि जे विद्यापतिक *पदावली*मे "शुद्ध *विदेसिया*" पद्य अछि, विशेषतः *नेपाल पदावली*मे, ई सुझाव दैत अछि जे शास्त्रीय कवि स्वयं लोक विषय आ रूपसभसँ जुड़ल छल। वर्णित प्रदर्शन दल—रामखेलावन मण्डल, रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद—लोकप्रिय प्रदर्शन

सन्दर्भसभमे एहि पद्यसभक चालू जीवनक प्रतिनिधित्व करैत अछि। पाठ "उच्च" साहित्यिक परम्पराकेँ "निम्न" प्रदर्शन परम्परासँ अलग करबाक अस्वीकार करैत अछि।

रामानुजन नाटकक *अनुवादक* प्रति विशेष रुचि लेत—केवल भाषिक अनुवाद नै, बल्कि विधा, रजिस्टर आ सामाजिक जगतक बीच अनुवाद। *युवती*क गीत *शृङ्गार* आ *विरह*क बीच, शास्त्रीय *राग* प्रणाली (धनाशी, मलावा, कोलार, घनाशी) आ रङ्गमञ्च निर्देशनक लोक-भाषायी मुहावराक बीच आवाजाही करैत अछि। विद्यापति पात्र "अर्थ समझाबय" आबैत अछि, विद्वान-टीकाकारक कार्य करैत अछि जे शास्त्रीय पाठ आ लोकप्रिय अभिग्रहणक बीच मध्यस्थता करैत अछि। तथापि, ई मध्यस्थता एकदिशीय नै अछि: विद्यापति गाबैक बाद *युवती* सेहो पद्यसभक व्याख्या करैत अछि, "एकर अर्थ पर विस्तार" करैत अछि। अर्थ शास्त्रीय अधिकारद्वारा स्थिर नै करल जाइत, बल्कि संवादात्मक प्रदर्शनद्वारा उद्भूत होइत अछि।

रामानुजनक "सन्दर्भ-संवेदनशील" अर्थक अवधारणा—ओकर आग्रह जे भारतीय साहित्यिक रूपसभकेँ ओकर प्रदर्शन सन्दर्भसभक भीतर समझल जाए—एहि पाठक पढ़बाक लेल महत्वपूर्ण अछि। नाटक पाश्चात्य अर्थमे एकटा "पाठ" नै अछि बल्कि प्रदर्शन-लेल-पटकथा अछि, एकटा दस्तावेज जे एकटा मूर्त, संगीतमय, अनुष्ठानिक घटनाक संकेत करैत अछि। *राग* पर विस्तृत ध्यान, प्रवेश आ निकास चिह्नित करैत रङ्गमञ्च निर्देशन, पात्र आ दर्शकक बीच अन्तर्क्रिया (दृश्य ७ मे यात्री दर्शकक ओर इशारा करैत अछि)—सभ एकटा प्रदर्शन परम्पराक संकेत करैत अछि जे ओकर साहित्यिक सामग्रीमे घटाएल नै जा सकैत अछि।

रामानुजन पाठक *क्षेत्रीय* विशिष्टताक प्रति सगाई केँ सेहो नोट करत। नाटककारक समस्तीपुर, पूर्णिया, सुपौल, सहरसाक दलक सावधानीपूर्वक प्रलेखन—गाम, पञ्चायत, डाकघरक नामकरण—मात्र पुरातन-वस्तु-प्रेम नै अछि। ई *स्थान*क बारेमे एकटा दावा अछि: जे ई परम्परा विशिष्ट समुदायसभक विशिष्ट स्थानसभमे अछि, जे ओकर अर्थ स्थानीय भूगोल आ इतिहासमे निहित अछि। ई क्षेत्रीय आधार शास्त्रीय संस्कृत सौन्दर्यशास्त्र आ पाश्चात्य साहित्यिक सिद्धान्त दुनूक सार्वभौमिकीकरण प्रवृत्तिकेँ चुनौती दैत अछि।

तथापि, रामानुजन ओह *अनुपस्थिति*केँ सेहो नोट करत, जे एहि पाठक पीछा करैत अछि। नाटककार विलाप करैत अछि जे सालहेस आ चूड़ामल जहिना लोक व्यक्तित्वसभ पर "कोनो शोध नै भेल अछि, " जे मैथिलीमे भोजपुरीमे भेटल विस्तृत लोक आख्यानसभक कमी अछि। ई, रामानुजनक शब्दावलीमे, *कानन*क अपन लोक स्रोतसभकेँ पहिचान करबाक विफलता अछि। शास्त्रीय मैथिली परम्परा, संभवतः, लोक सामग्रीसभकेँ बिना स्वीकार कऽ आत्मसात करि लेलक, ओकरा "बोझिल" महाकाव्यात्मक रूपसभमे रूपान्तरित करि देनए जे ओकर लोक-भाषायी मूलकेँ अस्पष्ट करिदैत अछि। नाटकक परियोजना—विद्यापतिक *पदावली*क भीतर *विदेसिया*केँ पुनः प्राप्त करबाक—एहि प्रक्रियाकेँ उलटबाक एकटा प्रयास अछि, ई देखाबाक लेल जे शास्त्रीय कवि सेहो एकटा लोक कवि छल, जे काननिक पाठक भीतर स्त्री, प्रवासी आ बञ्चितक आवाज अछि।

४. रुस्तम भारुचाः भारतीय रङ्गमञ्च आ प्रदर्शनक राजनीति

भारुचाक काज निरन्तर भारतीय प्रदर्शन परम्परा सभक पश्चिम-उन्मुख "आधुनिक" रङ्गमञ्च आ राज्य-प्रायोजित "लोक" पुनरुद्धार आन्दोलन दुनू द्वारा उपयोगिताकेँ चुनौती देबैत अछि। *थिएटर एन्ड द वर्ल्ड* आ *द पॉलिटिक्स ऑफ कल्चरल प्रैक्टिस*मे, भारुचा विशिष्ट सन्दर्भ, समुदाय आ शक्ति सम्बन्धसभ पर कठोर ध्यान देबाक तर्क करैत अछि, जकर भीतर प्रदर्शन परम्परा सभ विद्यमान अछि। ओ "अन्तर-सांस्कृतिक" रङ्गमञ्चसँ संशयित अछि, जे सौन्दर्यात्मक रूपसभकेँ ओकर सामाजिक आधारसँ उखाड़ि लैत अछि, आ एहन तरहसँ "लोक" परम्परा सभकेँ शहरी, मध्यम-वर्गीय, या अन्तर्राष्ट्रीय दर्शकसभक लेल पुनः प्याकेज कएल जाबाक आलोचनात्मक अछि।

विद्यापतिक विदेसिया ठीक ओह विवादित स्थानमे विद्यमान अछि, जेकर भारुचा मानचित्रण करैत अछि। पाड प्रदर्शन परम्परा सभक दस्तावेजीकरण करैत अछि—रामखेलावन मण्डल, रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद—जे ऐतिहासिक रूपसँ ग्रामीण मैथिली समुदायसभमे निहित छल। ई दल स्थानीय दर्शकसभक लेल, ग्रामीण परिवेशमे, अनुष्ठानिक आ भक्ति चक्रक भागक रूपमे प्रदर्शन करैत छल। तथापि, पाड जेना हमरा लग अछि, ओ एकटा *प्रलेखन* अछि, एकटा अनुवाद अछि, एकटा प्रस्तुति अछि "विवेकशील दर्शकसभक समक्ष"—अर्थात्, एकटा एहन दर्शकक समक्ष, जे आवश्यक रूपसँ मूल ग्रामीण समुदाय नै अछि। नाटक, अपन वर्तमान रूपमे, अपन मूल प्रदर्शन सन्दर्भसँ *उखाड़ि* लेल गेल अछि आ एकटा भिन्न जनता—मैथिली पाठक, संभवतः, मुदा (अनुवादक माध्यमसँ) अंग्रेजी-भाषी विद्वान आ विद्यार्थी—केँ अर्पित कएल गेल अछि।

भारुचा पूछत: एहि उखाड़बाकिमे की नुकसान होइत अछि? पाडमे रङ्गमञ्च निर्देशन न्यूनतम अछि: "रङ्गमञ्च पर, हमर *विदेसिया* विदाई लैत अछि, " "युवती प्रतीकात्मक रूपसँ एकटा दोकान खोलैत अछि। " जे कहियो रामखेलावन मण्डलकेँ प्रदर्शन करैत नै देखलक, ओकरा लेल ई निर्देशन केवल एहि बातक सबसँ न्यूनतम सुझाव दैत अछि जे प्रदर्शन *देखल* जा सकैत छल, *सुनल* जा सकैत छल, *महसूस* कएल जा सकैत छल। *राग* क नाम देल गेल अछि मुदा स्वरलिपिबद्ध नै; गति संकेतित अछि मुदा कोरियोग्राफिड नै; दर्शक अन्तर्क्रिया नोट कएल गेल अछि मुदा वर्णित नै। पाड प्रदर्शनक एक प्रकारक *प्रेत* बनि जाइत अछि, किछु सूचना संरक्षित करैत अछि मुदा ओह मूर्त, संवेदी, सामुदायिक आयामसभकेँ खोइ दैत अछि, जकरा भारुचा अघटनीय (अवघटनीय) मानैत अछि।

भारुचा एहि परम्परा सभक साहित्यिक-समालोचनात्मक उपकरणक भीतर *ढाँचाबद्धीकरण* केँ सेहो प्रश्न करत। लम्बा गद्य प्रस्तावना—मैथिली आ भोजपुरीक बीच एकर तुलना, नगेन्द्रनाथ गुप्तक संस्करणक उद्धरण, *विदेसिया* परम्पराक भीतर विद्यापतिकेँ स्थापित करबाक—एकटा *शैक्षणिक* ढाँचाक गठन करैत अछि जे मूल अभ्यासकर्तासभक लेल पराया भ सकैत अछि। नाटक विद्यापतिक *विदेसिया* क "समानान्तर ब्रह्माण्ड"क रूपमे प्रस्तुत अछि, एकटा वाक्यांश जे एकटा जीवित प्रदर्शन परम्पराक बदला एकटा साहित्यिक-अन्तर्पाठ्य सम्बन्धक सुझाव दैत अछि। भारुचा पूछत: ई पाड केकर लेल अछि? आ ई केकर हितक सेवा करैत अछि?

नाटकक भिखारी ठाकुरक *विदेसिया* परम्परासँ सम्बन्ध भारुचाक दृष्टिसँ विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण अछि। नाटककार टिप्पणी करैत अछि जे भिखारी ठाकुरक *विदेसिया* कलकत्तामे प्रवासीक रूपमे ओकर अपन अनुभव आ भोजपुरी-भाषी समुदायसभक लेल ओकर प्रदर्शनसँ उद्भूत भेल छल। ई, भारुचाक शब्दावलीमे, एकटा *समुदाय-आधारित* रङ्गमञ्च छल: अपन अभ्यासकर्ता आ दर्शकसभक जीवित अनुभवमे निहित, ओकर आवश्यकता आ चिन्तासभक प्रति प्रतिक्रियाशील। प्रस्तुत पाडक विद्यापतिक पद्यसभक माध्यमसँ एकटा मैथिली *विदेसिया* बनाबाक प्रयास, ओकर विपरीत, एकटा *साहित्यिक* निर्माण अछि: ई समकालीन अनुभवक बदला एकटा काननिक कविसँ अधिकार आकर्षित करैत अछि। भारुचा पूछत: की ई प्रतिस्थापन—आधुनिक प्रवासक लेल शास्त्रीय *विरह*—समकालीन मैथिली प्रवासीसभक विशिष्ट पीड़ाक न्याय करैत अछि, या ई ओह पीड़ाकेँ एहन रूपमे सौन्दर्यीकृत करैत अछि जे ओकरा ओकर भौतिक वास्तविकतासँ दूर करि दैत अछि?

पाडक अन्तिम इशारा—"पिय देशान्तरक ई अवधारणा एहन विवेकशील दर्शकसभक समक्ष प्रस्तुत अछि। मैथिली प्रवासीक (*विदेसिया*) वर्तमान दशाक बीच, ई अर्पण महाकवि विद्यापतिक प्रति गहन श्रद्धाक साथ प्रस्तुत अछि"—ओह तनावकेँ उजागर करैत अछि जेकर भारुचा पहिचान करैत अछि। प्रवासीक "दशा" स्वीकार कएल जाइत अछि मुदा फिर विस्थापित: अर्पण प्रवासीसभकेँ नै, विद्यापतिकेँ कएल जाइत अछि। "विवेकशील दर्शक" केँ सामाजिक स्थितिक प्रति प्रतिक्रिया देबाक बदला सौन्दर्यात्मक अवधारणाक सराहना करबाक आमन्त्रण देल जाइत अछि। भारुचा आग्रह करत कि एकटा सच्चा राजनीतिक रङ्गमञ्च एहि विस्थापनकेँ अनुमति नैदेत; ई सौन्दर्यात्मक ढाँचाक ऊपर भौतिक पीड़ाक प्राथमिकता पर जोर देत।

५. एडवर्ड सईद: यात्रा करैत सिद्धान्त आ उत्पत्तिक प्रश्न

सईदक "यात्रा करैत सिद्धान्त" (यात्रा करैत सिद्धान्त) क अवधारणा एहि बात पर ध्यान दैत अछि जे कइ प्रकारेँ विचार, पाठ आ अभ्यास सांस्कृतिक आ ऐतिहासिक सन्दर्भसभमे यात्रा करैत अछि, अनिवार्य रूपसँ प्रक्रियामे रूपान्तरित होइत अछि। "ट्रैवलिंग थ्योरी" आ "ट्रैवलिंग थ्योरी रिकन्सिडर्ड"मे, सईद तर्क करैत अछि जे सिद्धान्त यात्रा करत समय शक्ति खोबैत या पाबैत अछि, ओकर अर्थ ओह सन्दर्भसभद्वारा आकारित होइत अछि जे ओ प्रवेश करैत अछि, आ "उत्पत्ति"क प्रश्न हमेशा एहि गतिविधिसभद्वारा जटिल होइत अछि। *लेट स्टाइल* पर ओकर बादक काज सेहो एहि बात पर विचार करबाक लेल संसाधन प्रदान करैत अछि जे कइ प्रकारेँ परम्परा सभ बादक अभ्यासकर्तासभद्वारा अभिग्रहीत, अनुकूलित आ पुनः सजीव कएल जाइत अछि।

विद्यापतिक विदेसिया एकटा पाठ अछि जे उत्पत्ति आ ओकर जटिलतासभसँ गहिर सम्बन्धित अछि। नाटककार परम्पराकेँ बहु वंशावलीसभक माध्यमसँ अनुरेखित करैत अछि: कटघराक रामखेलावन मण्डल, गायाघाटक रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, पूर्णियाक *पिय देशान्तर* दल। ई *प्रामाणिकताक, उत्पत्ति* क दावा अछि जे परम्पराकेँ विशिष्ट समुदाय आ स्थानसभमे आधारित करैत अछि। तथापि, पाड ई सेहो स्वीकार करैत अछि जे *विदेसिया* परम्परा स्वयं एकटा यात्रा करबैवाला अछि: ई पूर्णियासँ सुपौल, सहरसा, समस्तीपुर जाइत अछि; ई नेपाल (*नेपाल पदावली*) सँ बिहार यात्रा करैत अछि; ई विद्यापतिक १४वीं शताब्दीक दरबारसँ २१वीं शताब्दीक ग्रामीण प्रदर्शन धरि यात्रा करैत अछि।

सईदक रुचि होत कि पाड *विदेसिया* परम्पराक *भोजपुरी* उत्पत्तिकेँ कइ प्रकारेँ संभालैत अछि। भिखारी ठाकुरक *विदेसिया* केँ एकटा पूर्ववर्ती, प्रभावशाली पाठक रूपमे स्वीकार कएल जाइत अछि—एतय धरि जे मैथिली पाठकेँ ओकर विरुद्ध अपनाकेँ परिभाषित

करबाक पड़ैत अछि। नाटककारक ई दावा जे भोजपुरी किछु गुणात्मक क्षेत्रसभमे "श्रेष्ठ" अछि, सईदक शब्दावलीमे, यात्रा करबैवाला परम्पराक *शक्तिक* एकटा स्वीकारोक्ति अछि। मैथिली पाड भिखारी ठाकुरकेँ अनदेखा नै करि सकैत अछि; ओकरा ओकर साथ संघर्ष करबाक, ओकरा आत्मसात करबाक, ओकर माध्यमसँ आ ओकर विरुद्ध अपनाकेँ परिभाषित करबाक पड़ैत अछि। ई प्रभावक चिन्ता अछि, मुदा यात्रा करैत सिद्धान्तक उत्पादक गतिशीलता सेहो: भोजपुरी *विदेसिया* मैथिलीमे यात्रा करैत अछि आ मैथिली साहित्यिक परम्परा की करि सकैत अछि, ओकर पुनर्विचार करबाक लेल बाध्य करैत अछि।

पाडक विद्यापति (१४-१५वीं शताब्दीक आकृति) क एकटा आधुनिक भोजपुरी परम्पराक प्रतिक्रिया देबाक लेल उपयोग यात्रा करैत सिद्धान्तक एकटा रूप अछि। विद्यापतिक *पदावली* अपन मूल दरबारी-भक्ति सन्दर्भसँ यात्रा करैत मैथिली *विदेसियाक* समकालीन प्रदर्शन सन्दर्भमे प्रवेश करैत अछि। कवि-सन्त, एहि नव सन्दर्भमे, ओह रूपमे परिणत होइत अछि जे ओ पहिने कहियो नै छल: श्रम प्रवासक एकटा वृत्तान्तकार। ई कोनो साधारण अर्थमे "गलत पठन" नै अछि बल्कि एकटा सर्जनात्मक उपयोगिता अछि, नव आवश्यकतासभकेँ पूरा करबाक लेल एकटा परम्पराक पुनः सजीवीकरण। सईद एहिकेँ यात्रा करैत सिद्धान्तक जीवन्तता क रूपमे पहिचान करत: विचार नव शक्ति प्राप्त करैत अछि जखन ओ नव सन्दर्भसभमे प्रवेश करैत अछि, तखन सेहो (विशेषतः तखन) जखन ओह सन्दर्भसभक ओकर उद्भावकर्ताद्वारा पूर्वानुमान नै कएल गेल छल।

पाडक *शोधक* प्रति चिन्ता—सालहेस आ चूड़ामल जहिना व्यक्तित्वसभ पर "कोनो शोध नै भेल अछि" क विलाप—यात्रा करैत सिद्धान्तक एकटा भिन्न प्रकार प्रकट करैत अछि: शैक्षणिक ज्ञान अभ्यासक लोक परम्परा सभमे गति। नाटककार, एकटा साक्षर, शैक्षणिक सन्दर्भमे स्थित या ओकरा सम्बोधित करैत, अभिलेखीय अनुसन्धान, पाठ्य समालोचना, आ ऐतिहासिक प्रलेखनक मूल्यसभकेँ प्रदर्शन परम्परा सभ पर आरोपित करैत अछि जे संभवतः एहि मूल्यसभक अनुसार संचालित नै भ रहल छल। सईद नोट करत कि ई कोनो तटस्थ कार्य नै अछि; ई ओह परम्परा सभकेँ रूपान्तरित करैत अछि जेकरा ओ दस्तावेजीकृत करबाक चाहैत अछि, ओकरा मापदण्ड (जेना "शोध") क अधीन करैत अछि जे अन्यत्र उत्पन्न होइत अछि।

अन्तमे, सईदक "प्रतिपक्षीय पठन" (प्रतिपक्षीय पठन) क अवधारणा पाडक बहु, अतिव्यापी उत्पत्तिसभकेँ समझबाक एकटा मार्ग प्रदान करैत अछि। नाटक एक साथ अछि: रामखेलावन मण्डलक प्रदर्शन परम्पराक एकटा दस्तावेज; विद्यापतिक *विदेसिया* पद्य सभक एकटा पुनर्निर्माण; भिखारी ठाकुरक भोजपुरी *विदेसियाक* एकटा प्रतिक्रिया; मैथिली साहित्यिक संस्कृतिमे एकटा योगदान; भविष्यक मञ्चनक लेल एकटा प्रदर्शन पाठ; आ शैक्षणिक अध्ययनक एकटा वस्तु। ई प्रतिस्पर्धी उत्पत्ति नै अछि बल्कि सह-अस्तित्वशील अछि, एकटा प्रतिपक्षीय रचनामे संगीत पंक्ति जकाँ स्तरित। एकटा उत्पत्तिकेँ दोसर पर प्राथमिकता देनाइ—ई कहबाक जे "वास्तविक" पाठ रामखेलावन मण्डलक प्रदर्शन अछि, या विद्यापतिक पद्य, या नाटककारक सृजन—पाठक आधारभूतस्थितिकेँ अस्वीकार करबाक होत: एकटा यात्रा करबैवाला, रूपान्तरित, बहु-मूलीय सांस्कृतिक वस्तुक रूपमे।

संश्लेषण: अभिसरण आ विचलन

ई पाँच सैद्धान्तिक दृष्टिकोण, जखन कि ओकर उत्पत्ति आ प्रतिबद्धतामे भिन्न अछि, *विद्यापतिक विदेसियाक* बारेमे किछु मुख्य अन्तर्दृष्टिसभ पर अभिसरण करैत अछि:

१. मध्यस्थताक समस्या: स्पिवाक, चक्रवर्ती आ सईद सभ, भिन्न तरिकासँ, एहि बात पर जोर दैत अछि जे सबाल्टर्न, पूर्व-आधुनिक, "मूल" हमेशा पहिने सँ मध्यस्थ होइत अछि। *युवती* विद्यापतिक माध्यम बिना नै बाजैत अछि; विद्यापति प्रदर्शन परम्परा सभक माध्यम बिना नै बाजैत अछि; प्रदर्शन परम्परा सभ प्रलेखनक माध्यम बिना नै बाजैत अछि। पाड मध्यस्थता पर स्वयं एकटा चिन्तन अछि।

२. पुनर्प्राप्तिक राजनीति: रामानुजन आ भारुचा दुनू शास्त्रीय ढाँचाक माध्यमसँ लोक परम्परा सभकेँ "पुनः प्राप्त" करबाक परियोजनाक प्रश्न करैत अछि। रामानुजनक लेल, शास्त्रीय आ लोक हमेशा पहिने सँ जुड़ल अछि; भारुचाक लेल, पुनर्प्राप्ति उपयोगिताक एकटा रूप भ सकैत अछि। पाडक विद्यापतिकेँ *विदेसिया* परम्पराक लेल दावा करबाक प्रयास एक साथ काननक एकटा कट्टरपन्थी लोकतान्त्रीकरण अछि आ लोक अभ्यासक विशिष्टताक संभावित विलोपन सेहो।

३. कालगतिकी आ इतिहास: चक्रवर्ती आ सईद दुनू सांस्कृतिक विकासक रैखिक, ऐतिहासिकतावादी विवरणसभकेँ चुनौती दैत अछि। पाडक विद्यापतिक *विरह* आ आधुनिक प्रवासक अध्यारोपण, १४वीं शताब्दीक कवि २१वीं शताब्दीक स्थितिसँ बाजैत अछि एहि आग्रह, ऐतिहासिकतावादी धारणाकेँ अस्वीकार करैत अछि जे प्रत्येक युगक अपन उपयुक्त सौन्दर्यात्मक रूप होइत अछि। ई अनाक्रोनिज्म नै, बल्कि समयसँ एकटा भिन्न सम्बन्ध अछि।

४. दर्शकक प्रश्न: स्पिवाक पूछैत अछि के बाजैत अछि; भारुचा पूछैत अछि केकरा लेल। पाडक बहु दर्शक—ग्रामीण प्रदर्शन समुदाय, मैथिली पाठक, अंग्रेजी-भाषी विद्वान—कोनो सरल उत्तरकेँ जटिल बनाबैत अछि। नाटक विभिन्न जनताक लेल विभिन्न रूपसभमे विद्यमान अछि, आ ई विभिन्न अस्तित्व एकटा "मूल"मे घटाएल नै जा सकैत अछि।

५. सिद्धान्तक सीमा: एहि सिद्धान्तकारसभमे सँ प्रत्येक हमरा याद दियैत अछि जे सिद्धान्तक सीमा अछि। स्पिवाकक सबाल्टर्न अन्ततः नै बाजि सकैत; चक्रवर्तीक गैर-ऐतिहासिकतावादी कालगतिकीसभ शैक्षणिक गद्यमे प्रतिनिधित्व करबाक लेल कठिन अछि; रामानुजनक लोक-शास्त्रीय संश्लेषण विद्वतापूर्ण श्रेणीसभद्वारा पूर्ण रूपसँ कब्जा नै कएल जा सकैत; भारुचाक मूर्त प्रदर्शन प्रलेखनसँ बचि जाइत अछि; सईदक यात्रा करैत सिद्धान्त हमेशा उपयोगिताक दोसर रूप बनि जाबाक जोखिम उठाबैत अछि। *विद्यापतिक विदेसिया*संभवत: ठीक एहि तनावसभकेँ हल करबाक अस्वीकार करबामे, बहु, आंशिक आ अपूर्ण बनि रहबाक आग्रह करबामे सफल अछि।

समापन चिन्तन

एहि सैद्धान्तिक परम्परा सभक आलोकमे*विद्यापतिक विदेसिया*एकहि साथ आलोकित आ अशान्त करैत अछि। पाठ स्वयंकेँ विद्यापतिक प्रति अर्पणक रूपमे, लोक परम्पराक एकटा दस्तावेजक रूपमे, समकालीन प्रवासक एकटा प्रतिक्रियाक रूपमे, आ एकटा प्रदर्शन-पटकथाक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। ई ओहि प्रकारक सैद्धान्तिक प्रभुत्वक प्रतिरोध करैत अछि जे एकरा एकटा अर्थ, एकटा उत्पत्ति, एकटा दर्शकसँ बाँधि देत। सम्भवतः ई एकर सबसँपैघ शक्ति अछि: ई शास्त्रीय आ लोक, पाठ आ प्रदर्शन, अतीत आ वर्तमानक बीच तनावसभकेँ हल नहि करैत, बल्कि ओहि तनावसभकेँ एहन ईमानदारीसँ मञ्चित करैत अछि जकर प्रतिध्वनि सैद्धान्तिक समालोचनामे सुनाइत अछि।

एहि पाँच सिद्धान्तकारक प्रत्येक दृष्टि एहि पाठमे अपन चिन्ताक कोनो-न-कोनो रूप देखैत अछि। स्पिवाक निम्नवर्गक मध्यस्थ वाणी देखैत छथि; चक्रवर्ती गैर-इतिहासवादी कालगतिकी देखैत छथि; रामानुजन लोक-शास्त्रीय निरन्तरता देखैत छथि; भारुचा प्रदर्शन-प्रलेखनक राजनीति देखैत छथि; सईद यात्रा करैत सिद्धान्तक क्रियाशीलता देखैत छथि। मुदा कोनो दृष्टि ई दावा नहि करैत जे पाठ ओकर ढाँचामे घटाओल जा सकैत अछि। पाठ सिद्धान्तकेँ अतिक्रमण करैत अछि, जेना सांस्कृतिक वस्तु प्रायः करैत अछि। ओही अतिक्रमण एकरा समालोचनात्मक ध्यानक योग्य बनाबैत अछि आ समालोचकक काजकेँ सदैव आनुपातिक, सदैव अपूर्ण, आगाँक पठन लेल सदैव खुला राखैत अछि।

अनुलग्नक -३; मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)-गजेन्द्र ठाकुर

राम ठाकुर

आब आउ मूल मुद्दापर

जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास। आ

मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द

बोधि कायस्थ

उगना महादेव

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जाति-अजातिपर विशेष बल दै छथि, रक्त शुद्धता/ जाति हुनका लेल महत्वपूर्ण छन्हि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- अकुलीन कोनो दयाक अधिकारी नै अछि!! आ सौन्दर्य मात्र धनिक आ विशिष्ट वर्गक एकाधिकार अछि!! संस्कृत आ अवहट्ठबला (किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला) विद्यापति कहै छथि- जाति सामाजिक जीवनमे अन्तिम निर्धारक तत्व अछि। जे खराप कुलमे जन्म लैए ओ दुष्ट दिमागक साँप मात्र बनि सकैए!! किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- ओ देश जतऽ जातिक निअम लागू नै होइए से म्लेच्छ देश थिक। (मध्यकालीन मिथिलाक समाज आ अर्थव्यवस्थाक पक्ष — उपेन्द्र ठाकुर)

पुरख महत सब हमर सजाति॥

“जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।”

आ

“मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द”

फणीश्वरनाथ रेणु बिदापत नाचपर रिपोर्ताज लिखलनि जे १ अगस्त १९४५ ई. कैं साप्ताहिक “विश्वमित्र” मे प्रकाशित भेल। ऐ रिपोर्ताजक महत्व अछि, कारण ई ऐ विषयपर ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखित विवरणक ७०० बर्ख बाद लिखल गेल आ ऐ ७०० बर्खमे जे विद्यापतिकैँ समानान्तर परम्परा जिआ कऽ रखलक।

आ जे एकरा जिआ कऽ रखलक ओकरासँ अनचोक्के विद्यापति छीनि लेल गेलन्हि। बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीत गबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकेँ प्राप्त केलन्हि जे विद्यापतिकैँ पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीनि लेलक। ब्रह्मपुराक कानूनगो बद्री प्रसाद ठाकुर, पोखरिभीड़ाक बिनोद ठाकुर, रुद्रपुरक सरयुग ठाकुर आ मेंहथक जयराम ठाकुर आ बिस्फीक सौंसे गाम आइयो ई रटि रहल छथि। शालिग्राम यादव, अवधिया ठाकुर बिस्फी गामक परम्पराक गवाह छथि। विद्यापति कर्मकाण्डीय अपहरण मे हुनकर जन्म आदिक प्रति सभ तरहक अनर्गल तर्क उपस्थित होइत रहल मुदा हुनकर समानान्तर परम्पराक मादे कोनो शोध-पत्रमे चर्चो धरि नै भेल। ई आलेख बिदेश्वर ठाकुर सन हजारक हजार समानान्तर परम्पराक लोकक प्रति समर्पित अछि जे बिदापतक ज्योतिरीश्वर आ फणीश्वरनाथ रेणुक दुनू आलेखक बीच विद्यापतिकैँ जिआ कऽ रखलन्हि।

मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्परा आ मिथिलाक समानान्तर परम्परा

वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल “गाथिन”, “गातुविद्” आ “गाथपति” ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल।

वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल।

प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण २.४) ।

जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि।

वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि।

शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धारा, आ तकर समानान्तर मुख्यधारा:

ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मणवाद मिथिलामे शुरुएसँ रहल अछि। ज्योतिरीश्वर लिखै छथि- बौध पक्ष अइसन- आपात भीषण। अगतिशील शतपथ ब्राह्मणक परम्परा नामक साम्यताक कारण संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ पूज्य बनबैपर बिर्त अछि। ऋक् आ नाराशंसी, महाकवि विद्यापति आ पागबला विद्यापति, मोक्ष आ स्वर्ग-नर्क ई दुनू परस्पर विरोधी विचारधारा मिथिलामे रहल।

शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, सीता, जनककेँ रटैत-रटैत ई परम्परा विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग प्रतिष्ठापन जइ तीव्र गतिये केलक से ओकर शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

१७६० ई. क माधव सिंहक शाखा पञ्जीक आदेशक बाद मिथिलामे ब्राह्मण आ कायस्थ मध्य नव-कुलीनवादक प्रसार भेल आ भलमानुस (बत्तेसगमिया) उपजातिक कर्ण कायस्थमे आ स्रोत्रिय उपजातिक मैथिल ब्राह्मणमे उत्पत्ति भेल, ओइसँ शारीरिक आ मानसिक बीमारी ऐ दुनू उपजाति मध्य भयंकर रूपसँ बढ़ल, संगे बहुविवाह, बाल-विवाहक आ विधवाक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल। आ ईहो जइ शान्तिपूर्ण रूपसँ आ तीव्रगतिसँ भेल से शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

विद्यापतिपर दिनेश्वर लाल आनन्द आ रामवृक्ष बेनीपुरीक विचार

दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ भ्रम रहन्हि, ओइ कालमे पञ्जी गुप्त चीज रहै, जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार (निम्न कोटिक) कऽ देल गेल रहै। शाखा पञ्जी १७६० ई. सँ पहिने रहबे नै करै आ तकर प्रमाण अछि जे अयाची मिश्रक मूलक निचुलका पीढ़ी स्रोत्रिय उपजातिमे अछि आ ब्राह्मण उपजातिमे सेहो। ई ओहिना अछि जे सिन्धु घाटी सभ्यतामे बड़द रहै मुदा गाय नै (सीलपर), मुदा बिनु गाय बड़दक उत्पत्ति कोना हएत। दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ पञ्जीक सभ तथ्य उपलब्ध नै रहन्हि, प्रायः पद्यावली बला विद्यापति आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक एक्के हेबाक दुष्प्रचारमे हुनका लागल हेतन्हि जे अवहट्ठमे लिखबाक कारण जँ विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार करबाक सम्बन्धसँ जोड़ल जाए तँ विद्यापति ठक्कुरः किए क्रान्तिकारी भेलाह से व्याख्या कएल जा सकत। मुदा दिनेश्वर लाल आनन्द सेहो मानै छथि जे पद्यावलीक हुनकर (विद्यापतिक) हाथक तँ छोड़ू, हुनकर कालोमे संगृहीत पदक कोनो विवरण नै अछि। मुदा से कोना सम्भव जखन संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति अपन संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थ सभ टहंकारसँ आरम्भ आ समापन करै छथि, के राजा-रानी हुनका प्रेरित केलखिन्ह, ककर आश्रित छलाह, सभ वर्णन दैत। पूर्ण लेखकीय अन्दाज, सरस्वती आ लक्ष्मी दुनुक बल; तखन पद्यावलीमे से किए नै? दिनेश्वर लाल आनन्द गुम्म छथि। संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति अपन आश्रयदाताक विषयमे लिखने छथि मुदा कोनो संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थमे अपना विषयमे किछुओ नै लिखने छथि। ओ अवह्ट्ठ लिखबोमे दवाबक अनुभव करै छथि, जे तखुनका मुख्य परम्पराक साहित्यिक भाषा छल। मुदा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक प्रभाव एतेक छलन्हि जे हुनका संस्कृत नाटक गोरक्षविजयमे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि (जेना विदाञोतक पहिल रिपोर्ताज लिखनिहार ज्योतिरीश्वरकेँ संस्कृत नाटक धूर्तसमागममे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि) ।

गोविन्द झा ज्योतिरीश्वरक विदाञोतमे विद्यापतिक परम्परा देखि लै छथि, चर्च करै छथि मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिकेँ आगाँ किए नै बढ़ा पबैत छथि जखन बिदेश्वर ठाकुर गाबि-गाबि कऽ प्राण त्यागि रहल छथि? विद्यापति नाटकमे विद्यापतिकेँ प्यास जतऽ लगलन्हि ओ नाटक लेखकक गाम कोना भऽ जाइए? सभ अपना-अपना हिसाबसँ “हम्मर विद्यापति” पर नाटक लिखि रहल छथि।

रामबृक्ष बेनीपुरी लग सेहो पञ्जीक तथ्य नै छन्हि। एकटा उपजातिक बनोतरी आ किंवदन्तीक आधारपर ओ केशव मिश्रक विद्यापतिपर हँसब लिखै छथि; द्वैत परिशिष्टक ई केशव मिश्र वाचस्पति-२ (१४००-१४९०) क पौत्र छथि। एकटा आर केशव मिश्र (११५० लगभग) छथि जे तर्कभाष लिखै छथि आ जकर समीक्षा तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक पुत्र वर्धमान “तर्कप्रकाश” मे करै छथि। आनन्द कुमारस्वामे जतेक शोध १९१५ ई. मे केने रहथि ओइसँ एक्को डेग आगाँ नहिये बेनीपुरी जा सकलथि नहिये आनन्दस्वामीक सए बर्ख बाद कियो दोसर मुख्यधाराक शोधकर्ता जा सकल छथि। वएग उगनाक कथा बेनीपुरी कहै छथि, मुदा महादेव संस्कृत आ अवहट्ठक कट्टर विद्यापतिक “शैवसर्वस्वसार” पर कैलाशमे नचता आकि ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक नचारीपर, ओइपर गुम छथि। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ बुझल छन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत उपलब्ध अछि आ इहो जे विद्यापतिकेँ गंगालाभ कोना भेलन्हि, गंगा हुनका अपनामे लीलि लेलखिन्ह। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक लिखल पुरुषपरीक्षाक विषयमे सुनल छन्हि मुदा पढ़ल नै छन्हि, आ से नै तँ हुनका बुझल रहितन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति गंगालाभक कथा बोधि कायस्थक विषयमे लिखने छथि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विषयमे ई कथा उगनाक कथा सन प्रचलित छल जे बादमे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिसँ कर्मकाण्डीय रूपमे जोड़ल गेल आ पुरुषपरीक्षाक कथा बोधि

कायस्थ एकर प्रमाण अछि। कीर्तिपताकाकेँ बेनीपुरी मैथिली गीतक संग्रह कहै छथिइ!! पूछि-पाछि कऽ शोध कएल जाइ छै? जे आधार कुमारस्वामी सए बर्ख पहिने रखलन्हि, ओइपर सुखाएल मुख्यधारा किए नै आगाँ बढ़ल कारण ई शतपथ ब्राह्मणवादी मुख्यधारा ओकरा एकर अनुमति नै दै छै। मुदा बिना कोनो प्रमाणक शिवसिंहक मित्र पुरादित्यकेँ भूमिहार ब्राह्मण सिद्ध कऽ दै छथि, ओहिना जेना गोविन्ददास (झा) केँ रमानाथ झा स्रोत्रिय बतेलन्हि (सुकुमार सेन तकरा हास्यास्पद मानै छथि), आ रामदेव झा ब्राह्मण सिद्ध करै छथि आ कालिदासकेँ वर्माजी (लालदास स्मारिकामे) कायस्थ सिद्ध करै छथि।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति पूर्ण कर्मकाण्डक संग पुस्तकक प्रारम्भ आ अन्त करै छथि, राजा-रानी-आश्रयदाताकेँ मोन पाड़ै छथि मुदा अपन चर्च नै करै छथि। मुदा पद्यावली लोककण्ठमे किए रहि गेल, पुस्तकक तामझाम ओ तकरा किए नै देलन्हि, कारण ओ हुनकासँ कए सए पूर्वक रचना छल, जखन पागक उत्पत्ति मिथिलामे नै भेल छल। पद्यावलीमे रूपनारायण, शिवसिंह, लखिमा, देव सिंह, हर सिंह, पद्म सिंह, विश्वास देवे, अर्जुन-अमर, राघव सिंह, रुद्र सिंह, धीर सिंह, भैरव सिंह, चन्द्र सिंह आदि बादमे घोसिआएल गेल, जे गीतक लयकेँ प्रभावित करैत स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। संस्कृत-अवहट्ठबला विद्यापति भू-परिक्रमा (देव सिंह), कीर्तिलता (कीर्ति सिंह आ वीर सिंह), कीर्तिपताका, गोरक्षविजय (शिव सिंह), लिखनावली (पुरादित्य), दान वाक्यावली (रानी धीरमति) आदि स्पष्ट रूपसँ राज्याश्रित रचना छल। गोरक्षविजय नाटक भैरव पूजाक अवसरपर लिखल गेल आ ऐ मे धूर्त समागम सन मैथिली गीत छल जे ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक भयंकर प्रभाव स्वरूप छल। नामक असमानता नै रहैत तँ ज्योतिरीश्वरकेँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति बना देल जाइत।

निष्कर्ष

तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश १२००० ग्रन्थक बराबर एकटा ग्रन्थ लिखलन्हि। प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य "मिथिलामे नव्य-न्यायक इतिहास" मे लिखै छथि- "जे परिवार सामाजिक स्थितिमे निम्न मानल जाइत छल, से आब मिथिलामे लुप्त भऽ गेल अछि... गंगेशक परिवार पूर्णतः उपेक्षित अछि, आ हमरा सभसँ हुनकर पिताक नाम धरि जनबाक अपेक्षा नहि कएल जाइत अछि।" आ ईसभ सूचना, ओ लिखै छथि, हुनका प्रो. आर. झा (रमानाथ झा) देलखिन्ह!

आब आउ पञ्जीमे वर्णित तथ्यपर- ओइमे स्पष्ट रूपसँ लिखल अछि जे तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेलन्हि आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलन्हि, तँ ई गप रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किए नुकेलन्हि? एकटा उपजाति द्वारा हिनकर मूर्खसँ विद्वान बनबाक गपपसारल गेलन्हि आ हिनका खतम करबाक साजिश भेल।

गंगेशक पुत्र वर्द्धमान गंगेशकेँ सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि। मुदा गंगेश सन प्रसिद्ध विद्वानक कविता कोन साजिशक अन्तर्गत आइ उपलब्ध नै अछि से ऊपर देल उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। बंगालक वासुदेव पक्षधर मिश्रक सहपाठी रहथि, मिथिला पढ़ैले एला, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलन्हि आ सर्वभौम उपाधि भेटलन्ह्। वासुदेव गंगेशक तत्वचिन्तामणि आ उदयनक न्यायकुसुमांजलिक कारिकाकेँ कंठस्थ कऽ लेलन्हि। पक्षधर आ आन मिथिलाक शिक्षक तत्वचिन्तामणि लिखबाक (प्रतिलिपि करबाक) अनुमति नै दै छला! वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अपन गुरु पक्षधर मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे हरा प्रमाणित करबाक अधिकार लेलन्हि। नव्यन्याय स्कूलक नवद्वीपमे वासुदेव-रघुनाथ द्वारा स्थापना भेल। पक्षधर मिश्र संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन छला। आ रघुनाथक संग बंगालसँ मिथिला विद्यार्थीक आगमन बन्द भऽ गेल।

शिवसिंह द्वारा संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ जे बिस्फी ताम्रपत्र देल गेल तकरा ग्रियर्सन फर्जी कहलन्हि कारण ओ विद्यापतिक पद्यावलीसँ परिचित रहथि आ बूझि गेल रहथि जे ओइ विद्यापतिकेँ ई ताम्रपत्र भेटब असम्भव छल। मुदा ई ताम्रपत्र तँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ भेटल छलन्हि आ दुनूक बीचक अन्तर ग्रियर्सन नै सोचि सकला। मुदा से म. म. हरप्रसाद शास्त्री सोचलन्हि आ ऐ ताम्रपत्रकेँ असली बतेलन्हि।

श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतमे कैवर्त पपीहाक गंगापर स्तुति गीत अछि। राधाकृष्णक गीत अछि। लक्ष्मणसेनक राज कवि धोयी (जोलहा) रहथि।

लखिमा ठकुराइन पद्यावली नै लिखलन्हि संस्कृतमे पद्य लिखलन्हि (ग्रियर्सन) । श्रीधरदासक अभिलेख अंधरा ठाढ़ीमे अछि आ ओ नान्यदेव आ गंगदेवक मंत्री रहथि। हुनकर वंशज अमिअकर संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन रहथि। गंगदेवकेँ उपेन्द्र ठाकुर कलचुरी मानै छथि। विजय कुमार ठाकुर कलचुरि कर्णक स्तुतिमे सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास) क विद्यापतिक गीतकेँ मानै छथि। राधाकृष्ण चौधरीक मत ऐ सँ भिन्न छन्हि।

कोनो परिस्थितिमे ई विद्यापति ज्योतिरीश्वर पूर्व रहथि।

“रामचरित”- विग्रहपाल-३ कर्णकेँ हरेलन्हि, ऐ सम्बन्धमे बेगूसरायसँ उत्तर १६ किमी. नौलागढ़सँ दूटा पाल अभिलेख राधाकृष्ण चौधरीकेँ भेटलन्हि। ओहो कर्ण ११म शताब्दीक छथि।

ज्योतरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पद्यावली बंगालमे प्रसिद्ध अछि। ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम दक्षिण भारतमे प्रसिद्ध अछि। आ तकर बाद बंगालसँ मिथिलामे विद्यार्थी एनाइ बन्द भऽ गेल आ संगे मिथिलाक नाटक आ पद्यावलीक बहिर्गमन सेहो।

अनुलग्नक:३ केर अनुलग्नक क

फणीश्वर नाथ रेणु: एकटा लोकगीतक विद्यापति

भूमिका

महाकवि विद्यापतिपर “खोज” करैत काल हमरा लागल जे एक अध्यायक शीर्षक राख’ पड़त- “खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति” । कारण पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पद्यावली गाबि-गाबि क’ भाव देखाक’ नाचैबलाक मण्डली सभ अछि। ऐ मण्डली सभक नायक महिसवार, चरबाह आ गाड़ीक बहलमाने होइ छथि प्राय:। मैथिल पण्डित लोकनिसँ पुछलौं

, ई कोना भेल? बजला, अहाँ कोन फेरामे पड़ल छी? अही सभ मूर्खक कारण आइ विद्यापतिक दुर्दशा भ’ रहल अछि। ऐ मामूली लोक सभक मोनमे जखन एलै विद्यापतिक नामपर “चारिटा पद्यावली” जोड़ि देलक। ..अहाँ दिग्भ्रमित भ’ रहल छी। .. मिथिलाक पण्डितक वर्जना-वाणीपर कान-बात नै दैत हम सहर्ष सहरसा (बा सहर्षा?) यात्राक तैयारी शुरू क’ देलौं। ..कनचीरा गाम एकटा एहन गाम अछि जइपर दू-दू जिलाक जिला अधिकारीक शासन चलैत अछि। अदहा गाम सहरसामे, अदहा गाम पूर्णियाँमे।

... कनचीराक विद्यापति-मण्डलीक नाम दुनू जिलाक लोक लै छथि। ... जइ दिन कनचीरा गाम पहुँचलौं, गाममे एकटा अघट घटना घटित भ’ गेल रहै। दस सालसँ इलाकाक प्रतिनिधित्व करैबला नेताजी चुनावमे चितंग भ’ गेल रहथि। तइ द्वारे ओइ राति नाच-गानक दोसरे मतलब निकालल जा सकै छल, ऐ डरे “विद्यापति-मण्डली” क नायक जनकदास नाच करबाक अनुमति नै देलनि।

दोसर राति ओ बड्ड खुशामद करेलाक बाद अनुमति देलनि। नायक जनकदास बड्ड तर्क-वितर्क केलाक बाद घुमा-फिरा क’ दोहरा-तेहरा क’ कहलनि, “विद्यापति- नाच” क जन्म हुनके परिवारमे पहिले-पहिल भेल। विस्तारसँ ओ कहियो किछु नै कहलनि। आ हुनका जखन ई विश्वास भ’ गेलनि जे “विद्यापति नाच मण्डली” क नामपर खर्च करबा लेल हजार- दू हजार टाका सरकारक खजानासँ ल’ क’ हम नै बहराएल छी, तखन ओ मृदंगपर थाप देलनि। राति भरि नाच देखैत रहलौं। गाए चरबैबला छौड़ा, साड़ी पहीर विरहिनी राधा बनि गेलि आ कानि-कानि गाबए लागलि- “कतेक दिवस हरि खेपब हो, तुम एसकरि नारी!” दोसर दिन, जनकदाससँ ऐ नाचक उत्पत्तिक इतिहास पुछलौं तँ ओ बाजल- नै जानि कहियासँ ऐ नाचक मूलगैनी हमरा परिवारमे चलैत आबि रहल अछि। जनकदासक ऐ उदासीक कारण छल- हमर टेपरेकार्डर। .. चुप्पे-चुप्पे सभ गीत फीतामे अहाँ भरि लेलौं, चलाकीसँ। मंगनीमे अपन काज सुतारि लेलौं अहाँ? आ, अंतिममे पचास टाका नगदी देलाक बादो ओ हमर ऐ प्रश्नक कोनो उत्तर नै देलनि कि खेतिहर-बोनिहार, चरवाह आ बहलमान सभ कहिया आ केना विद्यापतिक पद्यावलीकेँ गाबि-गाबि नाचब प्रारम्भ केलनि। जनकदासक पलानीमे पुआरपर पड़ल रही दिन भरि, ओकरा दया नै लगलै। ओकर मसोमात जवान बेटी हमरा दिससँ पैरवी केलक, तखनो ओ नै पसिझल, अपन खानदानीक “हँसी” करबैबला गप के “गजट” मे “छापी” कराब’ चाहत? बुरहा जनकदास बड़द खोलि चरबै लेल चलि गेला। हम ओकर पलानीमे पड़ल रहलौं आ तकर बादे एकटा खिस्सा सुनलौं बा सपना देखलौं बा“भ्रम” मे पड़ि गेलौं- ई नै कहि सकै छी।

अनुलग्नक:३ केर अनुलग्नक ख

बिदापत नाच (मूल रिपोर्ताज फणीश्वरनाथ रेणु)

बिदापत नाच

ऐ नाचक उत्पत्ति दरभंगा जिलामे भेलै, एहन अंदाज कएल जाइ छै | लेकिन अपने मातृभूमिमे ई कोन तरहक अवस्थामे अछि एकरा कहबाक जरूरत नै बुझाइत अछि, परंच उत्तरी बिहारक किछु जिला आ भागलपुर, पूर्णिया आदिक गाम सभमे आइयो एकर कद्र छै। ई छोटका लोक सभक नाच बनि कऽ रहि गेल अछि। तथाकथित भद्र समाजक लोक एकरा देखबामे अपन हेठी बुझै छथि। मुदा मुसहर, धाँगड़, दुसाधक ठाम विवाह, मुंडन संगे अन्य अवसरोपर एकर धूम मचल रहै छै। ऐ नाचमे सात-आठ टा कलाकार रहै छै आ दुइए टा वाद्य यन्त्र- मृदंग आ मंजीरा रहै छै।

तँ चलू। बिदापत-नाचक आनंद उठाबी। अपन भद्रताकेँ किछु काल लेल त्यागि....

धृंग धा, धृंग धा तिन्ना- बाजि कऽ मृदंग बौक भऽ गेल। कुन कुन कुन कुन... मजीरा स्वरमे संग देलकै।

गननायकं फलदायकं पंडितम् पतितम्... अहाँ सभ हँसू जुनि। ई मंगलाचरण छलै, शुद्ध संस्कृतमे।

धृंगा धृंगा धृंगा धृंगा- मृदंग बाजऽ लागल।

किनकां, किनकां, किनकां, किनकां.. मजीरा संग देलकै।

नाचैबला चारू तरफ जेम्हर-जेम्हर समाजी छल, चक्कर देनाइ शुरू केलक। ओकर पाछू बिपटा सेहो घिरनी जकाँ चक्कर लगा रहल छल आ मुँहकेँ रंग-बिरंगक बनबैत ओय -ओय -ओय -ओय बाजि रहल छल।

धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी- मृदंग ताल बदलि दोसर सुर निकाललक। किनकां, किनकां... आब रहए दिअ। बड़ नचौलौं... आब बादमे नाचक कथा हेतै।

समाजी सुरमे सुर मिलेलक।

'हे लेल परबेश परम सुकुमारि

हंस गमन वृषभान दुलारि....'

'हे! तन मन बदन पवन सहजोर हे

दामिनी ऊपर उगलन्हि चाना...'

लाज बदन लेल फेरि..”

अँगना आएत जब रसिया

पलट चलब हम इषत् हँसिया

कान्ह जतन बहु करयिन्ह

“सखि हे...

“जनम अवधि हम रूप निहारलौं,

तबहु न तिरपित भेल |"

-हे नेक जी (नायक जी) ।

-हूँ।

-आब हमरो सुनू।

“बाप रे!

बाप रे कोन दुर्गति नहि भेल

सात साल हम सूद चुकाओल,

तबहुँ उरिन नहि भेलौं।

कारज बढ़त हि गेल

लोटा बेच चौकीदारी।

फटकनाथ गिरधारी।”

'धृंगा-धृंगा, धिधिन्ना तिन्ना '....

“सखि हे!

ई माह भादर, भरल बादर,

शून्य मंदिर मोर। ...”

सुन्दर! सुन्दर!! ठीके विद्यापति मैथिल कोकिल....

अहाँ सभ फेर भसियाए लगलौं, अहूँ सभ बिपटासँ कम नै छी। कतबो मना कएल जाए ओकरा जकाँ सभ गीतपर किछु ने किछु सुनाबऽ लागै छी। ई लिअ, बिपटा महोदय फेर टपकला...

“ई माह भादर, बरिसे बादर,

चुअत छप्पर मोर।”

“हहा-हहा...!!” दर्शक मंडली हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ रहल अछि। हँ एक टा बात कहब बिसरि गेलौं जे बिपटा अपनाकेँ कृष्ण बुझैत अछि आ परदेशी साजन सेहो, लेकिन संगे इहो बात नै बिसरैत अछि जे कि ओ कलरू मुसहर अछि, हलहलियाक रहनिहार आ मनुष्य रहितो ओ बुझै छै जे कोल्हूक बड़दसँ बेसी ओकर हैसियत नै छै। नाचएबला सभ जखन ओकर गरदनिमे बाँहि मान-अभिमानसँ प्रेमक प्रदर्शन करैत बुझबैत छै कि ---माधव तजि के चललौं विदेश। .. तखनि ओ बिसरि जाइत अछि जे ओ कृष्ण अछिआ गोकुलसँ मथुरा जा रहल अछि। ओकरा सामने जीवनक विषमता मूर्त रूप भऽ नाचि उठै छै आ ओ बुझबै छै-

'नहिं बरसल अदरा (आद्रा नक्षत्र) नहि अशरेस,

चारु दिस देखै छी बुढ़ियाक केश....

माछ काछू सब गेल पाताल,

अब कि पड़त सखि महा अकाल,

दिन भरि खटि के एक सेर धान,

एकरा से कैसे बचत परान,

छोडि- छोडि सजनि जाइ छी विदेश’

फेर दोसरे क्षण जखन नर्तक गाबऽ लागै छै-

'गोद लय बलमाकेँ चललि बाजार

हटिया के लोग पूछे, के लागे तोहार।

सासू जी के लड़िका, ननद के जेठ भाय,

पूर्व के लिखल स्वामी छिक् हे हमार। '

आब बिकटा बच्चा जकाँ जिलेबी, बताशा आ खिलौना लेल छिरिऐ लागल..

तखने एकटा नचनिया गीत गेलक--

राति जखन भिनसरवा रे,

पहूँ (स्वामी) आयल हमार।

कर कौशल कर कँपइत रे हरवा उर जार

कर पंकज उर थपइत रे मुखचन्द्र निहार”

बिपटा बीचेमे रोकि कऽ एकटा समाजीसँ एकर अर्थ बुझबै लेल कहै छै आ समाजी खुलि कऽ अइ गीतपर टीका करऽ लागल। केना नायिका पुआरपर अपन झोपड़ीमे सुतल छलय आ बिपटा आएल छल।

चलू दर्शक सभक बीचमे। कारी-कारी मोटगर आ गठगर देहबला नवयौवना मंद-मंद मुसकीकेँ दबा आ एक दोसरकेँ केहुनिया-केहुनिया कऽ कनफुसकी करैमे आनंदित भऽ बिपटाक दिस एक टक निहारि रहल छलि। अधेड़ उम्रक मौगी सभ बनावटी तामस व्यक्त कऽ युवती सभकेँ रोकए चाहै छै, लेकिन दबल हँसी आ गुदगुदायल हृदए कखन मानै छै।

एम्हर नचनियाँ सभ आलाप कऽ उठल।

“चलू मन, चलू मन ... ससुरालि

जइबै हो रामा,

कि आहो रामा, नैहरा मे

अगिया लगाइब रे कि...

युवती चंचल भऽ जाइ छै आ युवक लोकनिक नसमे बिजली दौड़ऽ लगलनि। नाच आब खत्म हुअबला छै-

“चलू मन, चलू मन

धिन धिनक धिनक, धिन धिनक धिनक...

कि आहो रामा, नैहरा मे अगिया लगाइब रे कि ...!

डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक ...”

अरे ई की? ओहो, चेथरू गुँसाइ जी छथि। गुँसाइ जी कबीरक भक्त छथि। दस-पंद्रह साल पहिने जमींदार साहबक कहलापर ओ झूठ गवाही नै देलनि। ऐपर जमींदार खिसिया कऽ गुँसाइ जी केँ बेघर कऽ देलकनि आ तखनेसँ ओ बैरागी भऽ गेला। खंजरी, झोरा आ चिमटा, जटा आ नमगर दाढ़ी... ई लिअ। गुँसाइ जी खंजरी बजा बजा नचनियाँ संगे नाच करऽ लागला...

“डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक

कि आहो रामा नैहरा मे अगिया..

बात ई छै जे चेथरू गुँसाइ जी अइ गीतकेँ पूरा निर्गुण मानै छै।

अहा! ओकर धँसल आँखिमे नोर चमकि उठै छै। आ नाच समाप्त भऽ गेल।

(फणीश्वरनाथ रेणुक ई रिपोर्ताज साप्ताहिक “विश्वामित्र” क १ अगस्त १९४५ क अंकमे प्रकाशित भेल छल। ई हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद (मधुपनाथ झा द्वारा, विदेह: सदेह ११) फणीश्वरनाथ रेणुकेँ समर्पित कएल जा रहल अछि।)

अनुलग्नक: ४: विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर- बिदापत नाचक अलाबे मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

विद्यापतिक पिआ देसाँतर

दृश्य १

नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

दृश्य २

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।

हे पथिक! एतय विश्राम करू।

दृश्य ३

एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।

दृश्य ४

दृश्य ५

दृश्य ६

दृश्य ७

ग्रन्थ-सूची आ सन्दर्भ-सूची

नोट: नीचाँक सूची मूल दस्तावेजमे उल्लिखित प्राथमिक रचना, लेखक आ सैद्धान्तिक ग्रन्थपर आधारित अछि। जतय मूल दस्तावेज प्रकाशन-वर्ष/प्रकाशक नहि दैत अछि, ओतय अप्रमाणित विवरण नहि जोड़ल गेल अछि।

क. प्राथमिक साहित्य आ समीक्षित रचना

- बोयी भीमन्ना — "जरैत खोपड़ी सभ"; "हमर पैतृक अधिकार" ।
- जे. सुभद्रा — "लोढ़ब"; "लाण्डा"; "साड़ीक कोर"; "अव्वा" ।
- चल्लपल्ल्ली स्वरूपरानी — "मान्केनापुव्वु"; "माटि-भेल हाथ" ।
- दरिशे शशिनिर्मला — "हमही छी जे सभ किछु हारि देलहुँ"; "हम रजस्वला कपड़ा ओढ़ि रहल छी"; "एकटा दलित स्त्री" ।
- एम. गौरी — "मेहदी लागल हाथ" ।
- मद्दुरी विजयश्री — "अलिसम्माक स्राप" ।
- अनीश गारंगे — "पोस्टर" ।
- राजेन्द्र वडेल 'जीता' — "सम्भोग" ।
- उमेश सोलंकी — "लोक, जमि जाए"; "खरड़ाक डाँट सभ" ।
- बासुदेव सुनानी — "अखनो बहुत किछु होबाक बाकी अछि"; "पता"; "सदानन्द" ।
- कोलकलुरी इनोच — "कौआ" ।
- विनोदिनी — "कारी स्याही" ।
- पेद्दिंति अशोक कुमार — "सदा लेल मित्र (जिगिरी)" ।
- विद्यापति — पदावली; नगेन्द्रनाथ गुप्त-सम्पादित पाठक सन्दर्भ सहित।
- फणीश्वरनाथ रेणु — "बिदापत नाच" (रिपोर्ताज); मैथिली रूपान्तरक सन्दर्भ सहित।
- "विद्यापतिक पिआ देसाँतर" — दस्तावेजमे प्रस्तुत नाट्य-पाठ।

ख. दलित चिन्तन, आलोचना आ सामाजिक सिद्धान्त

- डॉ. बी. आर. आम्बेडकर — जाति-विच्छेद; शूद्र के छलाह?; हिन्दू धर्मक पहेलियाँ।
- जोतिराव फुले — गुलामगिरी।
- शरणकुमार लिम्बाले — दलित साहित्यक सौन्दर्यशास्त्र दिस।
- ओमप्रकाश वाल्मीकि — दलित साहित्य आ सौन्दर्यशास्त्र सम्बन्धी आलोचनात्मक लेखन।
- फ्रान्ट्ज फानों — धरतीक अभागल; कारी चमड़ी, उज्जर मुखौटा।
- वाल्टर बेंजामिन — इतिहासक दर्शन पर थीसिस।
- गायत्री चक्रवर्ती स्पिवाक — "की निम्नवर्ग बाजि सकैत अछि?"

•शर्मिला रेगे — दलित-नारीवादी दृष्टिस्थान सम्बन्धी लेखन।

•पैट्रिशिया हिल कॉलिन्स — प्रभुत्वक जाल आ अन्तर्सम्बन्धी उत्पीड़न सम्बन्धी सिद्धान्त।

ग. साहित्य-सिद्धान्त, संस्कृति आ अनुवाद

•रेमंड विलियम्स — देश आ शहर।

•एड्रियन रिच — स्त्रीक रूपमे जन्म।

•गणेश देवी — विस्मृतिक बाद।

•ऑड्रे लॉर्ड — बाहरी बहिन; "मौनक भाषा आ क्रियामे रूपान्तरण" ।

•शोशाना फेलमैन आ डोरी लाउब — साक्ष्य: साक्षीपनक संकट।

•अल्बेर कामू — सिसिफसक मिथक।

•एफ. दोस्तोयेव्स्की — अपराध आ दण्ड।

•दीपेश चक्रवर्ती — यूरोपकेँ प्रान्तीय बनाब।

•होमी भाभा — तृतीय स्थान आ सांस्कृतिक संकरता सम्बन्धी सिद्धान्त।

•एडवर्ड सईद — यात्रा करैत सिद्धान्त आ प्रतिपक्षीय पठन सम्बन्धी लेखन।

•ए. के. रामानुजन — लोक आ शास्त्रीय परम्पराक अन्तर्क्रिया सम्बन्धी लेखन।

•रुस्तम भारुचा — भारतीय रङ्गमञ्च आ प्रदर्शनक राजनीति सम्बन्धी लेखन।

•हेरॉल्ड ब्लूम — प्रभावक चिन्ता।

•लॉरिन्स वेन्यूटी — अनुवाद-नैतिकता आ विदेशीपन-संरक्षण सम्बन्धी सिद्धान्त।

घ. मिथिला, विद्यापति आ नव्य-न्याय सन्दर्भ

•दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य — मिथिलामे नव्य-न्यायक इतिहास।

•उपेन्द्र ठाकुर — मध्यकालीन मिथिलाक समाज आ अर्थव्यवस्थाक पक्ष।

•विद्यापति सम्बन्धी पदावली, लोक-प्रदर्शन आ विदेसिया परम्पराक दस्तावेजमे उद्धृत/पुनर्प्रस्तुत सन्दर्भ।

७६. जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोष

सारांश

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ कैँ सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि।

बीजशब्द: जयकान्त मिश्र; मैथिली शब्दकोश; कोशविज्ञान; शब्दार्थ; भाषा-इतिहास; कॉर्पस; शब्दकोश-परम्परा

मैथिलीक पुरोधा जयकान्त मिश्र (१९२२-२००९) क ३ फरबरी २००९ कैँ सात बजे साँझमे निधन भऽ गेलन्हि। मैथिली साहित्यक एकटा बड़ पैघ विद्वान डॉ. जयकांत मिश्र १९८२ ई. मे इलाहाबाद विश्वविद्यालयक अंग्रेजी आ आधुनिक यूरोपियन भाषा विभागक प्रोफेसर आ हेड पद सँ सेवा निवृत्त भेल छलाह। तकरा बाद ओ चित्रकूट ग्रामोदय विश्वविद्यालयमे भाषा आ समाज विज्ञानक डीन रूपमे कार्य कएलन्हि। स्व. मिश्र अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबादक अध्यक्ष, गंगानाथ रिसर्च इंस्टीट्यूट, इलाहाबादक अवैतनिक सचिव आ सम्पादक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयागक प्रबन्ध विभागक संयोजक आ साहित्य अकादमी, नई दिल्लीक मैथिली प्रतिनिधि आ भाषा सम्पादक रहल छलाह। मैथिली साहित्यक इतिहास, फोक लिटेरेचर ऑफ मिथिला, कीर्तनिया ड्रामा सभक क्रिटिकल एडीशन, लेक्चर्स ऑन थॉमस हार्डी, लेक्चर्स ऑन फोर पोएट्स आ द कॉम्प्लेक्स स्टाइल इन एंगलिश पोएट्री हिनक लिखित किछु ग्रंथ अछि। हिनकर वृहत मैथिली शब्द कोषक मात्र दू खण्ड प्रकाशित भए सकल, जाहिमे देवनागरीक संग मिथिलाक्षर आ फोनेटिक अंग्रेजीमे सेहो मैथिली शब्दक नाम रहए। ई दुनू खण्ड मैथिली शब्दकोष संकलक लोकनिक लेल सर्वदा प्रेरणास्पद रहत। विदेह डाटाबेसक आधारपर सोलह खण्डमे गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली अंग्रेजी शब्दकोष जाहिमे मिथिलाक्षर आ अंतर्राष्ट्रीय फोनेटिक रोमन आ देवनागरीमे शब्द आ शब्दार्थ देल गेल अछि जयकांत मिश्र, दीनबन्धु झा-गोविन्द झा, भवनाथ मिश्र-मतिनाथ मिश्र 'मतंग' आ युगलकिशोर मिश्रकेँ समर्पित कएल गेल अछि।

मैथिलीमे शब्दकोश निर्माण देरीसँ शुरू भेल आ पहिल गम्भीर प्रयास दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा विद्योतनमे उपस्थित ११२५ टा धातु-रूप अछि (१९४६ ई.) आ फेर हुनके द्वार संकलित मिथिलाभाषाकोषः शब्दकोश (१९५२ ई.) अछि। एहिसँ पहिने भव नाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड आएल (१९१४ ई.), मुदा ओ बड्ड संक्षिप्त रहए आ ओकरा शब्दकोश नहि वरन ग्लॉसरी कहि सकैत छी। अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली – अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) सेहो अति संक्षिप्त अछि। मैथिली अकादमीक मैथिली शब्दकोश (१९९३, मूल संग्रहकर्त्ता-युगल किशोर मिश्र) पहिल बेर एकटा विराट संकल्पक संग सोझाँ आएल, मुदा संयोजक, सम्पादक, कार्यकारी सम्पादक, सम्पादन उपसमिति आदि-आदि मध्य हुनकर नाम बीचमे मूल संग्रहकर्ताक रूपमे मात्र घोसिआएल देखबामे अबैत अछि।

एहि मध्य जयकांत मिश्रक बृहत् मैथिली शब्दकोशक पहिल खण्ड १९७३ ई. मे आ दोसर खण्ड १९९५ ई. मे आएल। एहि दुनू खण्डमे स्वर वर्णमालाक अ सँ औ एतबहि वर्णसँ शुरू भेल शब्दक वर्णन आबि सकल आ क सँ शुरू भेल शब्दक मात्र पहिल पृष्ठ आएल। जयकांत बाबूक मृत्युक संग एकर आगामी खण्ड सभक आएब आब सम्भव नहि अछि।

भव नाथ मिश्रक पुत्र मतिनाथ मिश्र 'मतंग' क मैथिली शब्द कल्पद्रुम १९९८ ई. मे आएल जे दोसर बेर एकटा विराट संकलनक संग (युगल किशोर मिश्रक मैथिली अकादमी, पटनाक कोशक बाद) सोझाँ आएल। एहिमे भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशक पहिल खण्ड सेहो प्रारम्भमे देल गेल अछि।

दीनबन्धु झाक पुत्र गोविन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्द कोश (कल्याणी कोश, १९९९) जयकांत बाबूक कोशक समान द्विभाषी छल जाहिमे मैथिलीक संग अंग्रेजीमे शब्दार्थ अछि। एम्हर २००७ ई. मे उमेश चन्द्र झाक संक्षिप्त चातुर्भाषिक शब्दकोश (मैथिली, संस्कृत, हिन्दी एवं अंगरेजी) सेहो आएल अछि।

एकर सभक अतिरिक्त साझा प्रकाशन, नेपाल द्वारा सेहो एकटा बृहत् मैथिली शब्दकोश प्रस्तावित अछि।

अंग्रेजी शब्दकोशक डाटाबेस आधारपर बनल शब्दकोश सभ:

अंग्रेजी शब्दकोशक ऐतिहासिक महत्त्वक शब्दकोशक अतिरिक्त जे आधुनिक समयमे डाटाबेस/ कम्प्युटरीकृत लिखित-मौखिक कोर्पस (पत्र-पत्रिका, पोथी, मौखिक वार्तालाप, रेडियो-टी. वी. कार्यक्रममे प्रयुक्त आ पाण्डुलिपि आधारित शब्द) आधारित वैज्ञानिक

सिद्धांत आधारित शब्दकोश आएल अछि, ओहिमे तीन टा शब्दकोश उल्लेख योग्य अछि: १. ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरी (१९४८ प्रथम संस्करणसँ सातम संस्करण १९९५),

२. लॉन्गमेन डिक्शनरी ऑफ कन्टेमपरोरी इन्गलिश (१९७८ प्रथम संस्करणसँ पाँचम संस्करण २००९) आ

३. कोलिन्स कोबिल्ड एडवान्स्ड लर्नर्स इंग्लिश डिक्शनरी (१९९५ प्रथम संस्करणसँ छठम संस्करण २००८) ।

एकर अतिरिक्त सी. डी. पर आ ऑनलाइन उपलब्ध माइक्रोसॉफ्ट एनकार्टा डिक्शनरी उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग सेहो दैत अछि (ऑक्सफोर्ड एडवान्स्ड लर्नर्स डिक्शनरीक आ दोसरो कोशक सी. डी. वर्सन उच्चारणक ध्वनि रेकार्डिंग दैत अछि) ।

कोनो कोशक उत्कष्टताक निर्धारण ओहिमे सम्मिलित शब्दक संकलनसँ लगाओल जएबाक चाही। पहिल ई जे पाठक जाहि शब्दक ताकिमे छथि से हुनका भेटन्हि आ ई ओहि शब्दकोशक अद्यतन, फील्डवर्क आधारित (मिथिलाक सभ क्षेत्रसँ आ प्रवासी मैथिलक नव-नव प्रयोगसँ) आ नव-नव विषय (जेना अन्तर्जाल, विज्ञान-कला-वाणिज्य, संगणक आ नूतन घटनाक्रम आधारित) केँ समाहित कएने बिना सम्भव नहि। विद्वताक संग तकनीकक प्रयोग विषय वस्तु चयनमे होएबाक चाही, एहिमे खेल-धूप, गप-शप आ लिखित साहित्यक संग मौखिक साहित्य सेहो रहए। तखन ताहि शब्दक परिभाषा सेहो ततबे महत्वपूर्ण- ओहि चयनित शब्दक भाषायी विश्लेषण ततेक सूक्ष्मतासँ होएबाक चाही जाहिसँ भाषाक कोनो सन्दर्भ/ कोनो अर्थ छूटि नहि जाए। एहि क्रममे ई उल्लेखनीय अछि जे दीनबन्धु झाक ११२५ टा धातुरूपकेँ जे आर कनेक परिवर्धित आ संशोधित कए देल जाए आ एकरा लगभग २००० आधारभूत शब्द धरि बढ़ा देल जाए तँ ओ सभ मैथिली भाषी, जिनका भाषापर नीक पकड़ नहि छन्हि, ५००००-१००००० शब्दक मैथिली कोशक सभ शब्दक अर्थ आ संदर्भ बुझि सकताह।

कोशमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे होएबाक चाही। एतए मौखिक उच्चारण आ प्रयोगपर ध्यान सेहो आवश्यक अछि। पाठककेँ ईहो बुझाऊ जे कोन शब्द बेशी आ कोन शब्द कखनो-काल प्रयुक्त होइत अछि। लोकोक्तिक प्रयोग सेहो उदाहरण दए ठाम-ठाम होएबाक चाही।

संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय एहि सभक संकलन शब्दक संग आवश्यक। कोनो शब्द-मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक जुड़ब आ समान वा तेहन-सन अर्थमे प्रयुक्त होएब सेहो देखाएब आवश्यक।

व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, सेहो स्थान-स्थानपर करू। वाक्यमे प्रयोग अनुसारेँ शब्दक अर्थमे परिवर्तन दर्शित करू।

कोश मध्य बुझेबाक लेल चित्रक प्रयोग सेहो आवश्यक। आधुनिक वैज्ञानिक शब्दकोशमे उच्चारण भिन्नताक निरूपण सेहो होएबाक चाही।

मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग (जेना ब्राह्मण कहैत छथि- दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट; मुदा तथाकथित जाति-व्यवस्थाक निचुलका सीढ़ीक लोक कहैत छथि- दस बाभन एक पेट, दस राड़ दस पेट), यदि एहन प्रयोग उपलब्ध अछि, सेहो दर्शित करू।

दीनबन्धु झाक मिथिलाभाषा विद्योतनक धातुपाठ मे अर्थक व्युत्पत्ति बड्ड नीकसँ देल गेल अछि, जेना- (१०) डिक- अधिकक अँटकब। ई जगह गहीँड़ अछि तेँ एहिठाम पानि डिकल अछि- अधिक अँटकल अछि। मिथिला भाषा विद्योतनक दुनू खण्डमे उपस्थित ४३ टा सारणी मे मैथिली शब्दक व्युत्पत्ति विस्तृत रूपमे देल गेल अछि दीनबन्धु झाक मिथिला भाषा कोषक भूमिकामे सेहो ढेर रास शब्दक अन्वय, उच्चारण, लिङ्ग-निर्णय आ व्याकरणक विवेचन कएल गेल अछि। मूलकोषमे सेहो सभ शब्दमे तँ नहि, मुदा अधिकांशमे शब्द, ओकर सन्धि-विच्छेद, व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न-रूप आ शब्दक संग क्रियादि जुटबासँ अर्थक भिन्नता सेहो देखाओल गेल अछि। मैथिली अकादमी, पटनाक युगल किशोर मिश्र बला शब्दकोशमे शब्द, तकर बाद व्याकरणगत विशेषता आ अर्थ देल गेल अछि। अलाइस इरवीन डेविसक बेसिक कलोक्विअल मैथिली – अ मैथिली-नेपाली-इंगलिश वोकाबुलेरी (१९८४ ई.) मात्र रोमन आ फोनेटिक रोमन वर्णमालाक प्रयोग करैत अछि आ मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ नेपाली आ अंग्रेजीमे दैत अछि। तकर बाद किछु संरचनात्मक टिप्पणीक बाद नेपाली आ अंग्रेजी इंडेक्स देल गेल अछि जाहिमे नेपालीसँ मैथिली आ अंग्रेजीसँ मैथिली अर्थ देल गेल अछि। भवनाथ मिश्रक मिथिला शब्द प्रकाशमे मिथिलाभाषामे शब्द, फेर ओकर हिन्दी आ संस्कृतमे अर्थ, तखन लिङ्ग आ अन्तमे संस्कृतमे ओकर प्रमाण देल गेल अछि। मति नाथ मिश्र “मतंग” क मैथिली

शब्द कल्पद्रुममे मैथिली शब्द, ओकर व्याकरणगत विशेषता आ तकर अर्थ आ अन्तमे शब्द मैथिली, देशज, तत्सम वा तद्भव अछि तकर वर्णन देल गेल अछि। गोविन्द झाक कल्याणी कोश- अ मैथिली-इंग्लिश डिक्शनरी मे प्रस्तावनामे देल किछु संरचना आ उच्चारणक विश्लेषणक संग एपेन्डिक्समे क्रियापदीय प्रत्यय, नाम-प्रत्यय आ एकक, सौरमास ओ नक्षत्र, चान्द्रमास, विभिन्न संवत, भार-मान, नपना, रैखिक मान, वर्ग-मान, मुद्रा आ प्रकीर्ण गणनाक सारणी देल गेल अछि। मूल कोशमे देवनागरीमे मैथिली शब्द, फेर रोमन फोनेटिक वर्णमालामे ओकर ट्रांसक्रिप्शन, व्याकरणगत विशेषता आ मैथिली आ अंग्रेजीमे तकर अर्थ देल गेल अछि। यत्र-तत्र शब्दक भिन्न अर्थ आ संदर्भ सेहो देल गेल अछि। उमेश चन्द्र झाक चातुर्भाषिक शब्दकोशमे मैथिली शब्द आ तकर संस्कृत, हिन्दी आ अंग्रेजी अर्थ देल गेल अछि। सी-डैकक तंत्रांश-शब्दकोश मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शनरीमे मैथिली टाइप केलासँ अंग्रेजीमे अर्थ आ अंग्रेजी टाइप केलासँ मैथिलीमे अर्थ अबैत अछि। विदेह डाटाबेसक आधारपर गजेन्द्र ठाकुर, नागेन्द्र कुमार झा आ पञ्जीकार विद्यानन्द झाक मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोष आ अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोश विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अछि आ प्रिंट आ ऑनलाइन, (http://w ww.videha.co.in/ पर) दुनू रूपमे उपलब्ध अछि आ निरन्तर संवर्धनशील अछि। एहि कोशमे अन्तर्जाल, संगणक आ विज्ञान शब्दावली आन आधुनिक विषयक संग सम्मिलित कएल गेल अछि। एखन मैथिली-अंग्रेजी शब्दकोषमे अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेटमे मैथिली शब्द, फेर ओहि शब्दक देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ट्रांसलिटेरेशन, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ आ व्याकरणगत विशेषता देल गेल अछि। विदेह-कॉर्पोराक आधारपर बनल अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोशमे अंग्रेजी शब्द आ ओकर व्याकरणगत विशेषता, फेर अन्तर्राष्ट्रीय फोनेटिक अल्फाबेट, देवनागरी आ मिथिलाक्षरमे ओकर अर्थ आ अन्तमे अंग्रेजीमे अर्थ देल गेल अछि। सम्पूर्ण डाटाबेस प्रिंट भेलाक बाद कोशमे देल शब्द सभक अर्थ बेशी प्रयुक्तसँ कम प्रयुक्त अर्थक क्रममे, संयुक्त शब्द, लोकोक्ति आधारित मिश्रित संयुक्त शब्द, कोनो शब्दसँ निकलल शब्द, पर्याय-विपर्याय शब्द, मोहाबराक संग दोसर शब्द सभक व्याकरणीय विवेचन-समानता-असमानता दुनू देखबैत, कोश मध्य बुझेबाक लेल चित्रक प्रयोग, मोहाबरा आ लोकोक्तिक सापेक्ष सन्दर्भमे प्रयोग, शब्दक वाक्यमे प्रयोग (विदेह कॉर्पोरासँ) क संग दोसर संस्करणमे तंत्रांश-शब्दकोश सी.डी.मे उपलब्ध करेबाक योजना अछि, जाहिमे ध्वन्यात्मक रेकार्डिंग रहत। ओना http://w ww.videha.co.in/ केर आर्काइवमे उच्चारणक ऑडियो फाइल डाउनलोड/ श्रवण लेल ऑनलाइन राखल गेल अछि।

जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोश: विवेचना:

कोनो शब्दकोश लिखल नहि जाइत अछि वरन संग्रीहीत कएल जाइत अछि। मुदा जे विषय नव अछि तखन ओहि लेल मौखिक-साहित्यिक परम्पराकेँ देखैत शब्दक निर्माण करए पड़त आ विदेशज शब्दकेँ सेहो ठाम-ठाम स्वीकार करए पड़त। ओना शब्दकोशक लक्ष्य मात्र संग्रहण अछि मुदा ई देखल जाइत अछि जे नहि चाहियो कऽ ई मानकीकरण प्रसंगकेँ आगाँ बढ़बैत अछि आ लोक-व्यवहारकेँ प्रभावित करैत अछि। एहि कारणसँ कोशक सम्पादकक दायित्व आर बढ़ि जाइत अछि।

एहि तरहेँ श्री जयकान्त मिश्रक शब्दकोश आधुनिक कोनो शब्दकोशसँ कोनो तरहेँ न्यून नहि अछि। ई एक तरहेँ एक डेग आगाँ बढ़ैत अछि, जखन शब्दक अर्थ निर्दिष्ट करबाक लेल कॉर्पोरासँ लेल ओहि शब्दयुक्त वाक्य-प्रयोगमे प्राचीन (८म शताब्दी सँ १३२४ ई. पर्यन्त-चर्यापद, ज्योतिरीश्वर आदि), पूर्वकालीन मध्ययुग (१३२४ ई-१५०० ई., विद्यापति आदि), मध्ययुग (१५०० ई-१८६० ई., लोचन गोविन्ददास आदि) आ आधुनिक मैथिली (१८६० ई.-१९६० ई., चन्दा झा, हरिमोहन झा आदि) सँ संदर्भ सहित उदाहरण दैत अछि।

जयकान्त मिश्रक मैथिली शब्दकोश आ जयकान्त मिश्र आ मैथिली शब्दकोश एहि तरहेँ एक दोसराक पूरक भए सकत जखन हुनकर कार्यकेँ आगाँ बढ़ाओल जाए आ पूर्ण कएल जाए।

दर्शन, शास्त्र आ तुलनात्मक अध्ययन

७७. गङ्गेश उपाध्याय

सारांश

गङ्गेश उपाध्याय जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत मिथिलाक भूमि एशियामे संस्कृत बौद्धिक संस्कृतिक सबसँ निरन्तर उत्पादक केन्द्रसभमे सँ एक रहल अछि।

बीजशब्द: गङ्गेश · उपाध्याय · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई समेकित आलेख गङ्गेश उपाध्यायक जीवन-वृत्त, पञ्जी-साक्ष्य, तत्त्वचिन्तामणिक चारि प्रमाण-खण्ड, ज्ञानक वैधता-अवैधता, प्रत्यक्ष-अनुमान-उपमान-शब्द, व्याप्ति, कारकवाद, अवच्छेदक-आधारित नव्य-न्याय भाषा, टीका-परम्परा, विश्व-दर्शनक तुलनात्मक सन्दर्भ, आ मिथिलाक समानान्तर बौद्धिक इतिहासक परिप्रेक्ष्यकेँ एक क्रममे रखैत अछि। दोहराओल विवेचनकेँ यथासम्भव समेकित कऽ मूल तर्क, उदाहरण, अभिलेखीय विवरण आ तकनीकी विश्लेषण अक्षुण्ण राखल गेल अछि।

गङ्गेश उपाध्याय जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत

विशेष आलेख

जीवन, तर्कशास्त्र, तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्याय परम्परामे विरासत

विषय-विन्यास · १. जीवन, सन्दर्भ आ प्रारम्भिक दार्शनिक रूपरेखा · २. विस्तृत ज्ञानमीमांसीय परीक्षण · ३. तकनीकी नव्य-न्याय, कारकवाद आ आधुनिक पठन · ४. अभिलेखीय साक्ष्य, प्रत्यक्षखण्ड आ सांस्कृतिक पुनर्पाठ · परिशिष्ट · ग्रन्थसूची

भाग १ · जीवन, सन्दर्भ आ दार्शनिक रूपरेखा

जीवनवृत्त: त्रिस्तरीय स्रोत-विवेक

अध्यायसभक एकटा विशिष्ट योगदान गङ्गेशक जीवनवृत्तक बहुस्तरीय प्रस्तुति अछि। परम्परागत चमत्कार-कथा (मन्दबुद्धि बालक, काली-वरदान, ननिहालक अपमान) केँ आख्यानक रूपमे राखल गेल अछि; ऐतिहासिक कालनिर्धारण (लगभग १३२० ईस्वी, हरिसिंहदेवक शासनकाल, करियन-निवास) केँ प्रामाणिक स्रोतसँ; आ पञ्जी-आधारित सामाजिक विवरणकेँ—पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म, अन्तर्जातीय विवाह (चर्मकारिणीसँ), दूषण-पञ्जीक साक्ष्य—एकटा तेसर, समानान्तर स्रोत-धाराक रूपमे। ई त्रिस्तरीय स्रोत-विवेक ग्रन्थकेँ पारम्परिक जीवनी-लेखनसँ फराक कऽ आधुनिक इतिहास-पद्धतिक निकट आनैत अछि।

परिचय: मिथिलाक एक दार्शनिक

मिथिलाक भूमि एशियामे संस्कृत बौद्धिक संस्कृतिक सबसँ निरन्तर उत्पादक केन्द्रसभमे सँ एक रहल अछि। एतय राजा जनकक दरबारमे बृहदारण्यक उपनिषदक दार्शनिक संवाद भेल; एतय याज्ञवल्क्य, गौतम, आ कात्यायन — जे न्याय-सूत्र परम्परा आ वैदिक व्याकरण दुनूकेँ केन्द्रीय नाम अछि — सभकेँ मैथिल मूल आ मैथिली सम्बन्ध बताएल जाइत अछि; एतय कवि विद्यापति मैथिलीमे गीत गाबलक जे लोक साहित्यकेँ महान बनौलक; एतय खगोलशास्त्री-गणितज्ञ आर्यभट्ट अपन प्रारम्भिक बौद्धिक श्वास लेलक। ई परिवेशमे — उत्पादक, वाद-विवादप्रिय, गहन शैक्षिक — गङ्गेश उपाध्याय अपन रचना केलक जे भारतीय दर्शनक चेहरा बदलि देलक।

चौदहम् शताब्दीक प्रारम्भमे गङ्गेश उपाध्याय तत्त्वचिन्तामणि — सत्यक विचार-रत्न — क रचना केलक, ई रचना भारतक बौद्धिक परिदृश्यक स्थायी रूपसँ परिवर्तित क देलक। तत्त्व-चिन्तामणि (शाब्दिकअर्थ 'सत्यक विचार-रत्न', प्रमाण-चिन्तामणि या केवल चिन्तामणि सेहो कहल जाइत अछि) गङ्गेशक एकमात्र जीवित महान कृति अछि। ई एकटा प्रमाण-शास्त्र अछि — ज्ञानक वैध साधन पर एकटा ग्रन्थ — जे चारि भागमे विभाजित अछि: (१) प्रत्यक्ष-खण्ड (प्रत्यक्ष), (२) अनुमान-खण्ड (अनुमान), (३) उपमान-खण्ड (तुलना/सादृश्य), आ (४) शब्द-खण्ड (शाब्दिक प्रमाण) । तत्त्व-चिन्तामणि गङ्गेशक एकमात्र जीवित कृति अछि आ संस्कृत परम्परामे सबसँ बेसी टीका-टिप्पणी भेल ग्रन्थसभमे सँ एक अछि। पहिनेक न्याय-वैशेषिक लेखनक सम्पूर्ण-श्रेणी-आच्छादन छोड़ि आ अपनाकेँ केवल प्रमाणसभमे सीमित कए गङ्गेश परम्पराकेँ एकटा नीक लक्ष्य आ एकर अनुरूप नव नाम देलक। हुनकर समय सँ पहिनेक सभ न्याय साहित्य प्राचीन-न्याय (पुरान तर्क) कहलाइत अछि; हुनकर रचना सँ आगाक सभ नव्य-न्याय (नव तर्क) । ई काल-

विभाजन, यद्यपि सरल अछि, एकरा गुणात्मक परिवर्तनक सच्चाई पकड़ैत अछि: शब्दावलीमे, पद्धतिमे, विश्लेषणात्मक सटीकताक स्तरमे, आ पुरान सभ टीका-टिप्पणीकेँ हटा कए तत्त्व-चिन्तामणिकेँ विद्यालयक एकमात्र केन्द्रीय ग्रन्थक रूपमे स्थापित करवामे।

जखन गङ्गेश एहि विद्यालयक समेकन करनिहार अछि, तखन ई पद्धतिक वास्तविक संस्थापक जकरा हुनकासिद्ध केलक, ओ छलह ११म् शताब्दीक बहुश्रुत उदयनाचार्य, जकर परिशुद्धि आ कुसुमाञ्जलि प्राचीन न्याय युगकेँ समाप्त करबाक सीमा प्रदान केलक। आधुनिक शैक्षिक सहमति, जाहिमे स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी सेहो अछि, गङ्गेशकेँ मिथिला राज्यक एकटा 'महोपाध्याय' (ग्रेट प्रोफेसर) क रूपमे पहिचान करैत अछि।

मुख्यधाराक भारतीय दार्शनिक इतिहासलेखनमे गङ्गेश उपाध्यायकेँ नव्य-न्यायक निर्विवाद वास्तुकारक रूपमे श्रद्धा कएल जाइत अछि। हुनकर हिन्दी मोनोग्राफ, 'भारतीय साहित्य के निर्माता: गङ्गेश उपाध्याय' मे, उदयनाथ झा 'आशोक' गङ्गेशक तिथि लगभग १३००–१३५० ई. ठहरबैत छथि। झा एकटा विद्वानक चित्र अंकित करैत छथि जे 'महामहोपाध्याय' क प्रतिष्ठित उपाधि अर्जित केलक — ई उपाधि मिथिलामे केवल ओहि दार्शनिकसभकेँ लेल सुरक्षित छल जे न्याय, मीमांसा आ धर्मशास्त्रमे अद्वितीय निपुणता रखैत छल।

एहि प्रकारे, दिनेश चन्द्र भट्टाचार्यक 'हिस्ट्री ऑफ नव्य न्याय इन मिथिला' मिथिलाक बौद्धिक वंशावलीक अनुसरण करैत अछि, जे गौतमक प्राचीन प्रमेय-केन्द्रित (तत्त्वमीमांसात्मक) न्याय सँ गङ्गेशक प्रमाण-केन्द्रित (ज्ञानमीमांसीय) कठोरता धरि विकासक मानचित्र तइर करैत अछि।

ई सभ परिष्कृत, रूढ़िवादी विवरणसभकेँ दूषण पंजी (मिथिलामे सामाजिक अपराध या 'दोष' के वंशावली रिकॉर्ड) सँ तुलना करैत एकटा महत्वपूर्ण विसंगति उजागर होइत अछि, जेना विदेह समानांतर इतिहास अनुसन्धानमे विस्तार सँ प्रलेखित अछि।

दूषण पंजी गङ्गेश उपाध्यायक बारेमे दुई विस्फोटक जीवनी विवरण उजागर करैत अछि:

१. पितृ-मरणोत्तर जन्म: गङ्गेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल।

२. पञ्जी-आधारित विवाह-साक्ष्य: गङ्गेशक विवाह वल्लभा चर्मकारिणीसँ भेल।

सत्यक इतिहासलेखीय 'सम्मान-हत्या'

मुख्यधाराक ग्रन्थ आ दूषण पंजीक बीचक विसंगति आकस्मिक नै अछि; ई एकटा सक्रिय इतिहासलेखीय दमन अछि। प्रो. रामानाथ झा, आधुनिक मैथिली पंजी व्यवस्थाक एक केन्द्रीय व्यक्ति, एहि विशिष्ट दूषण पंजी अभिलेखसभकेँ दबाबै लेल समानांतर इतिहास अभिलेखमे उल्लिखित अछि।

किएक कए गङ्गेश मिथिलाकेँ भारतीय तर्कक निर्विवाद राजधानी धरि पहुँचौलक, ओकर पितृ-मरणोत्तर जन्म आ बाह्य-जातीय विवाहक स्वीकारोक्ति युगक ब्राह्मण्य शुद्धता कथाओंकेँ खतरामे डालि देलक। परिणामस्वरूप, रूढ़िवादी इतिहासकार सभ ओहि बातमे संलग्न भेल जे समानांतर इतिहास 'हुनकर विरासतक सम्मान-हत्या' कहैत अछि। उदयनाथ झाक हालिया मोनोग्राफ ई चुप्पीक परम्परा जारी रखैत अछि, पूर्ण रूपसँ गङ्गेशक संस्कृत उपाधि आ दार्शनिक प्रतिष्ठापर ध्यान केन्द्रित करैत आ ओकर हाशियाकृत व्यक्तिगत पृष्ठभूमिक सामाजिक-ऐतिहासिक वास्तविकताकेँ अनदेखा करैत अछि। ई दमनक मान्यता आधुनिक विद्वत्ता लेल महत्वपूर्ण अछि, किएक एकरा गङ्गेशकेँ केवल एकटा अभिजात तर्कशास्त्रीक रूपमे नै, बल्कि एकटा प्रतिभाशाली मस्तिष्कक रूपमे चित्रित करैत अछि जे अपार सामाजिक बहिष्कारकेँ पार कएलक।

नव्य-न्यायक संक्रमण: प्रमेय सँ प्रमाणक प्रतिमान बदलाव

जेना कार्ल एच. पॉटर 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन फिलॉसफीज' (खण्ड ६) मे उल्लेख करैत छथि, शास्त्रीय न्याय षोडश पदार्थसभ सँ निपटैत छल, जाहिमे आन्टोलॉजी, ज्ञानमीमांसा आ वाद-विवाद द्वन्द्वशास्त्र मिलाएल छल। गङ्गेश विशाल तत्त्वमीमांसात्मक ढाँचाकेँ हटा कए केवल प्रमाणपर — ज्ञान प्राप्तिक वैध साधनपर — ध्यान केन्द्रित कए एकटा अभूतपूर्व प्रतिमान बदलावक शुरुआत केलक।

तत्त्व चिन्तामणिकेँ पूर्ण रूपसँ ज्ञानमीमांसापर समर्पित कए, गङ्गेश एकटा अति-सटीक तकनीकी भाषा विकसित केलक। हुनका नव तार्किक संचालक (जेना अवच्छेदक) बनौलक ताकि अस्पष्टता सँ बचल जाए, ई विधि जेकरा स्टीफन फिलिप्स आ बेन-अमी शार्फस्टाइन २०म् शताब्दीक पश्चिमी विश्लेषणात्मक दार्शनिक जेना फ्रेगे या रसेलक विश्लेषणात्मक कठोरता सँ बराबरी करैत छथि।

प्रत्यक्ष खण्ड

तत्त्वचिन्तामणिक पहिल आ आधारभूत पुस्तक प्रत्यक्ष खण्ड अछि। वी. पी. भट्ट आ एस. सी. विद्याभूषणक विस्तृत अनुवाद आ व्याख्या पर निर्भर रहि, ई खण्ड प्रत्यक्ष बोधक तंत्र परिभाषित करैत अछि।

मङ्गलवाद आ प्रामाण्यवाद (ज्ञानक वैधता)

गङ्गेश मङ्गलवाद (आशीर्वचन) सँ शुरुआत करैत अछि, कार्यक सफल समापन लेल देवता (शिव) कैँ आह्वान करबाक आवश्यकताक औचित्य सिद्ध करैत अछि। ओकर बाद ओ अत्यधिक विवादित प्रामाण्यवाद (वैधताक सिद्धान्त) मे प्रवेश करैत अछि।

• मीमांसक दृष्टिकोण: प्रभाकर आ कुमारिल स्वतः प्रामाण्य (आन्तरिक वैधता) क तर्क करैत छल — जे ज्ञान उत्पन्न भेला क्षण सँ अपन वैधता आपु स्वयं प्रमाणित करैत अछि।

• गङ्गेशक नैयायिक दृष्टिकोण: गङ्गेश परतः प्रामाण्य (बाह्य वैधता) क प्रबलतापूर्वक बचाओ करैत अछि। ओ तर्क करैत अछि जे कोनो बोधक वैधता आपु स्वयं ज्ञान द्वारा अन्तर्निहित रूपसँ ज्ञात नै होइत, बल्कि बादमे सफल व्यावहारिक गतिविधि (संवादिप्रवृत्ति) द्वारा अनुमानित होइत अछि। उदाहरण लेल, पानि देखबाक मात्र तखन वैध ज्ञानक रूपमे प्रमाणित होइत अछि जखन कोनो ओकरा पास जाइत अछि आ सफलतापूर्वक अपन प्यास बुझाबैत अछि।

सन्निकर्ष (इन्द्रिय-विषय सम्पर्क)

प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष) के इन्द्रियार्थसन्निकर्ष सँ उत्पन्न बोधक रूपमे परिभाषित कएल गेल अछि। गङ्गेश छहि प्रकारक सामान्य सम्पर्कक विवरण देबैत छथि:

१. संयोग (संयोग): जेना, आँखि सँ घड़ा देखबा।

२. संयुक्त-समवाय (संयुक्त वस्तुमे समवाय): आँखि सँ घड़ाक रंग देखबा।

३. संयुक्त-समवेत-समवाय (संयुक्त वस्तुमे समवेत तत्वक समवाय): आँखि सँ सार्वभौमिक 'रंगत्व' देखबा।

४. समवाय (समवाय): कान सँ शब्द सुनबा।

५. समवेत-समवाय (समवेत तत्वमे समवाय): कान सँ सार्वभौमिक 'शब्दत्व' क अनुभव करबा।

६. विशेष्यनविशेष्यभाव (विशेषण-विशेष्य सम्बन्ध): अभावक प्रत्यक्ष (जेना, फर्शपर घड़ाक अनुपस्थिति देखबा) ।

सविकल्पक आ निर्विकल्पक

• निर्विकल्पक (निर्विकल्पक प्रत्यक्ष): कोनो वस्तुक उसकर विशेषणसभक बिना, अवधारणा-पूर्वक, केवल कच्चा आकलन। ई अकथनीय आ अभाषिक होइत अछि।

• सविकल्पक (सविकल्पक प्रत्यक्ष): कोनो वस्तुक उसकर गुणसभक साथ सम्बन्धपूर्वक बोध (जेना, "ई नील घड़ा अछि") । केवल सविकल्पक प्रत्यक्षके भाषामे व्यक्त कएल जा सकैत अछि आ सत्य या असत्यक रूपमे निर्णय कएल जा सकैत अछि।

अलौकिक सन्निकर्ष (असाधारण प्रत्यक्ष)

गङ्गेश तीन प्रकारक असाधारण प्रत्यक्षक रूपरेखा देबैत छथि, जे न्यायक पश्चिमी अनुभववाद सँ अलग करैत अछि:

१. सामान्यलक्षण: एकटा सदस्यके देखि पूरा सार्वभौमिक वर्गक सभ सदस्यसभकैँ प्रत्यक्ष करबा (जेना, धुएँक एकटा उदाहरण देखि सामान्य रूपसँ सब 'धुआँ' के जानबा) ।

२. ज्ञानलक्षणः स्मृतिपर आधारित एकटा अन्तःसंवेदी प्रत्यक्ष (जेना, चन्दनक लकड़ी देखिओकरा सुगन्धित होबाक 'प्रत्यक्ष' करबा, बिना सुँघलै) ।

३. योगजः योगिक या रहस्यमय प्रत्यक्ष जे गुप्त, भूत या भविष्यक वस्तुसभकैँ देखबा।

अनुमान खण्ड

अनुमान खण्ड, जेकर व्यापक रूपसँ वी. पी. भट्ट द्वारा अनुवाद कएल गेल अछि आ स्टीफन फिलिप्स द्वारा गहन विश्लेषण कएल गेल अछि, नव्य-न्यायक तार्किक संरचनाक मूल अछि।

व्याप्तिक अवधारणा (व्याप्ति)

अनुमान व्याप्ति पर निर्भर करैत अछि — हेतु (जेना, धुआँ) आ साध्य (जेना, आगि) क बीच अविनाभाव सम्बन्ध। गङ्गेश पहिनेक तर्कशास्त्रीसभ द्वारा प्रस्तावित व्याप्तिपञ्चक (पाँच अस्थायी परिभाषा) क विश्लेषण करैत अछि आ सभटाकेँ खण्डन करैत अछि किएक एकरा असमानाधिकरण धर्मसभक मामलामे विफलता भेटैत अछि। ओकर बाद ओ अपन सिद्धान्त लक्षण (अन्तिम परिभाषा) स्थापित करैत अछि: व्याप्ति अर्थात् साध्यक अभावक आश्रयमे हेतुक अनुपस्थिति।

ईश्वरानुमान (ईश्वरक अनुमान)

गङ्गेश अनुमानक माध्यम सँ ईश्वरक अस्तित्व सिद्ध करबाक लेल एकटा खण्ड समर्पित करैत अछि। ओ तर्क करैत अछि जे पृथ्वी, अंकुर आदिकेँ एकटा बुद्धिमान निर्माता होएबाक चाही, किएक एकरा कार्य छथि, जेना घड़ा कुम्हारक कार्य अछि। ई सीधा नास्तिक मीमांसा आ बौद्ध विद्यालयसभक खण्डन करैत अछि।

हेत्वाभास (हेत्वाभास)

गङ्गेश तार्किक हेत्वाभास (हेत्वाभास — 'जे हेतुक रूपमे प्रतीत होइत अछि मुदा नै अछि') क सूक्ष्म वर्गीकरण करैत अछि। एहिमे सव्यभिचार (अनियमित हेतु), विरुद्ध (विरोधी हेतु), सत्प्रतिपक्ष (समान बलक प्रतिहेतु), असिद्ध (असिद्ध हेतु), आ बाधित (बाधित हेतु) शामिल अछि।

उपमान खण्ड

जखन बौद्ध आ वैशेषिक उपमानकेँ अनुमानमे सम्मिलित करि देलक, तखन गङ्गेश एकरा एकटा स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे बचाओ करैत अछि। उपमान ओ प्रक्रिया अछि जाहि द्वारा कोनो व्यक्ति अनुभूत समानता द्वारा शब्दक अर्थ सीखैत अछि। उदाहरण लेल, एकटानगरवासीके कहल जाइत अछि जे गवय (जङ्गली बैल) गाय जकाँ देखाबैत अछि। जखन ओ जंगलमे प्रवेश करैत अछि आ गाय सँ मिलैत जानवर देखैत अछि, तखन निर्देशक स्मृति आ दृश्य समानता मिलि वैध ज्ञान उत्पन्न करैत अछि: "ई जानवर अछि जकरा 'गवय' शब्द कहैत अछि।"

शब्द खण्ड

अन्तिम पुस्तकमे, गङ्गेश शब्द, अर्थ आ वाक्यसभक विश्लेषण करैत अछि। शब्दकेँ आप्तोपदेश (विश्वसनीय प्रामाणिक व्यक्तिक निर्देश) क रूपमे परिभाषित कएल गेल अछि। ओ वाक्यक सार्थक ज्ञान देबाक लेल चारि आवश्यक शर्तसभक रूपरेखा देबैत छथि:

१. आकाङ्क्षा (आकाङ्क्षा): शब्दसभक एक-दोसरकेँ पूरा करबाक वाक्यात्मक आवश्यकता (जेना, "लाओ" सँ "का?"क आकाङ्क्षा) ।

२. योग्यता (अर्थगत योग्यता): शब्दसभक तार्किक संगतता (जेना, "ओ आगि सँ पौधा सिंचैत अछि" मे योग्यता नै अछि) ।

३. सन्निधि (सन्निधि): शब्दसभक समीप कालिक क्रममे उच्चारण।

४. तात्पर्य (तात्पर्य): वक्ताक सन्दर्भ या आशय, विशेष रूपसँ अस्पष्ट शब्दसभ जेना 'सैन्धव' (जकर अर्थ नमक आ घोड़ा दुनू होइत अछि) लेल महत्वपूर्ण।

जेना एस. सी. विद्याभूषण बताबैत छथि, गङ्गेश स्पष्ट रूपसँ संकेत (चेष्टा), जनश्रुति, या ऐतिह्यकेँ स्वतन्त्र प्रमाणक रूपमे सम्मिलित करबाक खण्डन करैत अछि, हुनका शब्द या अनुमानमे समाहित करैत अछि।

स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (एसईपी) आ बेन-अमी शार्फस्टाइनक 'अ कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी' क अनुसार, नव्य-न्याय विद्यालय विश्व बौद्धिक उपलब्धिक एक शिखर अछि।

जखन पश्चिमी दर्शन प्राय: ज्ञानमीमांसा, आन्टोलॉजी आ भाषाविज्ञानक अलग-अलग करैत अछि, तखन गङ्गेश हुनका एकटा एकल, अत्यधिक तकनीकी सटीकताक भाषामे संगलित क देलक। स्टीफन फिलिप्स बल देबैत छथि जे गङ्गेशक सत्य (प्रमा) क परिभाषा — जे एकटा बोध अछि जे वास्तविकता सँ मेल खाबैत अछि, बिना व्यक्तिपरक संदेहक हस्तक्षेपक — नव्य-न्यायकेँ मजबूत ज्ञानमीमांसीय यथार्थवादक शिविरमे मजबूती सँ रखैत अछि। शार्फस्टाइन नोट करैत छथि जे नव्य-न्यायक शैक्षिक गहनता पश्चिमी मध्ययुगीन शैक्षिकतावाद (थॉमस एक्विनास या विलियम ऑफ ओक्कम) सँ अत्यधिक तुलनीय अछि, मुदा एकर भाषाई निरूपणमे गणितीय रूपसँ सटीक अछि।

गङ्गेश उपाध्यायक अध्ययन हुनकर विशाल दार्शनिक बुद्धिमत्ता आ हुनकर समयक कठोर सामाजिक-राजनीतिक वास्तविकताक बीच सन्तुलन बनाबऽ मँग करैत अछि। उदयनाथ झा 'आशोक' द्वारा रचित मोनोग्राफ आ रामानाथ झाक इतिहासलेखन हुनकर दार्शनिक विरासतकेँ संरक्षित करैत अछि, मुदा दूषण-पञ्जीमे सुरक्षित सामाजिक-जीवनी तथ्यक सम्यक् प्रस्तुति अलग प्रश्न अछि। तत्त्वचिन्तामणि अद्वितीय तार्किक सटीकताक उत्कृष्ट कृति बनल रहैत अछि; संगहि पञ्जी-साक्ष्य ई स्पष्ट करैत अछि जे गङ्गेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलनि। एहि तथ्यसभकेँ पारम्परिक आख्यानसँ अलग, अभिलेखीय स्रोत-धारा रूपमे पढ़ब आवश्यक अछि।

लेखकक वास्तविक नाम छल की? उत्तर ई अछि जे औपचारिक या संस्कारिक नाम गङ्गेश्वर छल, जबकि दैनिक या व्यवहारिक नाम गङ्गेश छल। ई दुई प्रकारक साक्ष्य सँ निश्चित रूपसँ स्थापित अछि। पहिल, गङ्गेश आपु स्वयं तत्त्व-चिन्तामणिक मङ्गलाचरण (आशीर्वचन श्लोक) मे प्रथम पुरुषमे 'गङ्गेश-स्तुते मितेन वचसे श्री-तत्त्व-चिन्तामणिम्' लिखैत छथि — 'गङ्गेश' नामक प्रयोग करैत। दोसर, हुनकर पुत्र आ मुख्य शिष्य वर्धमान, किरणावली-प्रकाशमे, अपन पिता आ गुरुक रूपमे स्पष्ट रूपसँ 'गङ्गेश्वर' के प्रणाम करैत छथि: 'न्यायाम्भोज-पतङ्गाय मीमांसा-पारदृश्वने / गङ्गेश्वराय गुरवे पित्रे श्वभवते नमः।' ई नाम 'गङ्गेश्वर' कुसुमाञ्जलि-प्रकाशमे सेहो प्रकट होइत अछि। एहि प्रकारे दुनू नाम अलग-अलग व्यक्ति नै भऽ एकटे व्यक्तिक औपचारिक आ अनौपचारिक पदनाम अछि।

पंजी वंशावली अभिलेख सभ समान जीवनी स्थान आ सम्बन्धसभक सन्दर्भमे दुनू नामसभकेँ उल्लेख करैत अछि, आ 'छादन' गामकेँ पंजी-प्रबन्धमे 'छादनं तत्त्व-चिन्तामणि-कारक महामहोपाध्याय परमगुरुः गङ्गेश्वरः' क रूपमे उद्धृत कएल गेल अछि। वर्धमानक स्पष्ट गवाही, एकरा सँ अधिक, ई कायम राखबा असम्भव करि देबैत अछि जे दुनू नाम अलग-अलग व्यक्तिक अछि: जे व्यक्ति अपन कृति मे 'गङ्गेश-स्तुते' लिखलक, हुनकर पुत्र द्वारा 'गङ्गेश्वर गुरवे पित्रे' क रूपमे प्रणाम कएल गेल, जेना एकर संगे वर्धमान ओही श्लोकमे न्याय आ मीमांसाक समानता बताबैत अछि — ई विशेषता गङ्गेशक अपन आशीर्वचन श्लोकमे सेहो भेटैत अछि।

गङ्गेशक जन्मस्थानक प्रश्नमे पर्याप्त विद्वत्तापूर्ण विवाद भेल अछि। विभिन्न विद्वान सभ अलग-अलग गामसभक प्रस्ताव केनए अछि: (१) मङ्गरौनी (या मङ्गलवनी), मधुबनी मण्डलक एकटा गाम; (२) किर्यन (किरियं सेहो), दरभंगा सँ १२ माइल दक्षिण-पूर्वमे एकटा गाम; (३) चकउती; आ (४) चाजं (ऐतिहासिक रूपसँ छादन), अखन मुजफ्फरपुर जिलामे तुर्की रेलवे स्टेशनक नजदीक। पंजी अभिलेख, जकर गवाही एहि प्रश्नसभमे सबसँ आधिकारिक अछि, लगातार गङ्गेशकेँ 'छादन संभूत' — छादन/चाजं क मूल निवासी — क रूपमे वर्णन करैत अछि। चाजं गाम, तुर्की चौक सँ पश्चिम लगभग तीन किलोमीटर दूर, सबसँ संभावित स्थानक रूपमे, आ चारो तरफ रुपौली, बहिलवारा, आ सुपना जकाँ गामसभ सँ घेरल अछि — एहि मे सँ अन्तिम गामगङ्गेशक पुत्र सूपन सँ जुड़ल अछि। तिब्बती यात्री धर्मस्वामी, जे करणाट राजा रामसिंहदेवक शासनकाल (१२३४ ई.) मे मिथिला भ्रमण केलक, 'तो-की' नामक स्थानक उल्लेख केलक जतय जैन आ बौद्ध अनुयायी बहुत छल — ई 'तो-की' के अखनक 'तुर्की' सँ पहिचानल जाइत अछि, जाहि नजदीक गङ्गेशक चाजं गाम अछि। अल्पमत दृष्टिकोण, राजेन्द्रनाथ घोष द्वारा प्रस्तुत आ बंगाली स्रोतसभ पर आधारित, ई मानैत अछि जे गङ्गेश बंगाली छल। घोष आपु स्वयं अन्ततः हुनका मिथिलावासी आ मैथिल ब्राह्मण कहैत छथि। पंजी अभिलेख, जेना एम. एम. फणिभूषण तर्कवागीश कहैत छथि, हुनकर जन्मभूमि 'मङ्गौरी' कहैत अछि — मुदा गाम-विशिष्ट पंजी अभिलेख अधिक स्थिरतापूर्वक 'छादन'क तर्फ इशारा करैत अछि।

गङ्गेशक गोत्र काश्यपगोत्रीय अछि। हुनकर 'मूल' (पंजी प्रणालीमे पैतृक गाम-सम्बद्धता) 'सिरिसबे-छादन' छल — अर्थात, ओ सिरिसबा मूल, विशेष रूपसँ ओकर छादन शाखा, सँ सम्बन्ध रखैत छल। पंजी अभिलेख हुनका 'सिरिसबे-छादन मूल' काश्यपगोत्रीय क रूपमे पहिचान करैत अछि। हुनकर पिताक नाम गिरीश्वर उपाध्याय छल, जे गङ्गेशक जन्म सँ पाँच वर्ष पहिने देहान्त करि गेलाह।

किछु पंजी अभिलेख देखाबैत छथि जे हुनकर आपु स्वयंक औपचारिक नाम गङ्गेश्वर आ बोलचालक नाम गङ्गेश छल। हुनकर दुई पत्नी छल: पहिल सँ हुनका एकटा बेटी आ ज्येष्ठ पुत्र वर्धमान भेल; दोसर सँ पुत्र सूपन आ हर भेल। पंजी साक्ष्य ई सेहो स्थापित करैत अछि जे वर्धमानक बेटीक विवाह शाण्डिल्य-गोत्रीय खण्डवाला-मूल (विश्वनाथ-सुत शिवनाथक वंश) मे भेल, वर्धमानक पुत्र चन्द्रक-बलभद्र-शोभाक विवाह छादन-संभूत परिवारसभ सँ भेल, सूपनक बेटीक विवाह जिजिवाला-मूल शाण्डिल्य-गोत्रीय सँ भेल, आ सूपन स्वयं भाण्डारिसमय मूल मे विवाह केलक। पी. राजेन्द्रनाथ घोष क अनुसार, गङ्गेश अपन पिताकेँ जल्दी खो देलक आ अपन मामाक घर किर्यन गाममे पालल गेल, जतय हुनकर मामा एकटा पाठशाला चलैत छल। बालक गङ्गेश प्रारम्भमे बहुत विद्वत्तापूर्ण योग्यता नै देखौलक आ ओकरा किछु हद धरि एकटा मन्द बुद्धिक छात्र मानल जाइत छल। एकटा पौराणिक कथा जे विभिन्न रूपमे प्रचलित

छल, ओ कहैत अछि जे काति गङ्गेशके हुनकर मामाक पत्नी द्वारा चिढ़ाएल गेल — ओकरा 'गौः' (गाय या मूर्ख) कहल गेल। ई घटना 'गोत्व' (गाय-स्वभाव, या कुल-पहिचान) पर एकटा उल्लेखनीय संस्कृत श्लेष-रचनाकेँ प्रेरित केलक, जे गङ्गेश स्वतःस्फूर्त रूपसँ रचलक आ जाहि द्वारा हुनकर मामा एकटा आश्चर्यजनक गुप्त बुद्धिमत्ताक पहिचान केलक, हुनका आलिंगन केलक आ ओकरा सब किछु सिखाबाक प्रतिज्ञा केलक। चाहे ई कथा शाब्दिक रूपसँ सत्य हो या नै, ई एकटा वास्तविक दार्शनिक बिन्दुकेँ सांकेतिक रूपमे व्यक्त करैत अछि: 'गोत्व' पर श्लोक आपु स्वयं सार्वभौमिक (सामान्य) क प्रश्न पर एकटा छोट अभ्यास अछि जे नव्य-न्याय तर्कक हृदयमे अछि। गङ्गेशक प्रारम्भिक लोककथा गोत्व के बारेमे एकटा श्लेषपूर्ण दार्शनिक तर्क केन्द्रित होएनाइ अत्यधिक उपयुक्त अछि।

एन. एस. रामानुजताताचार्यक ग्रन्थमे उल्लेख अछि जे गङ्गेशक पहिल पत्नी सँ एकटा पुत्र आ दोसर सँ दुई पुत्र (सूपन आ हर) छल; ज्येष्ठ पुत्र वर्धमान छल। तीनु भाई — वर्धमान, सूपन, आ हर — के पुरुष-वंशज नै छल।

मुदा दूषण पंजीकेँ कहबाक लेल आर किछु अछि।

ई रचना सँ एकटा दार्शनिक क्रान्तिक शुरुआत भेल जकर प्रभाव मिथिला, बंगाल, नवद्वीप, मद्रास, महाराष्ट्र, काश्मीर आ अन्ततः सम्पूर्ण भारतमे अनुभव कएल गेल, जे पिछला पाँच सय वर्षक संस्कृत विद्वत्ताकेँ एकरा बिना अकल्पनीय बना देलक। मिथिला सम्बन्ध केवल जीवनी संबन्धी नै अछि। गङ्गेशक मातृभूमि नव्य-न्याय विद्वत्ताक बौद्धिक केन्द्र बनल रहल अछि, आ ओहीबौद्धिक धरोहर अखनो जर्नल 'विदेह' (विदेह वेब-अभिलेख, आईएसएसएन २२२९-५४७X) मे जीवित अछि, जे आरम्भ सँ (लगभग २०००) मैथिली भाषा, साहित्य आ संस्कृतिक लेल एकटा डिजिटल अभिलेखक रूपमे सेवा करैत अछि — ओहि सभ्यतागत भूमि जतय गङ्गेश खड़ा छल। विदेह अभिलेख मिथिलाक इतिहास, हुनकर दार्शनिक, आ हुनकर साहित्यिक परम्परा सँ जुड़ल रचनासभक डिजिटल संस्करण बनाए रखैत अछि, जाहिमे विद्यापति-पूर्व कविता आ पंजी अभिलेख शामिल अछि। गङ्गेश, एहि प्रकारे, केवल दर्शनक इतिहास सँ नै, बल्कि जीवित सांस्कृतिक स्मृतिक सेहो अछि जे मैथिल विद्वान सभ आजो पुनः प्राप्त करैत आ प्रसारित करैत अछि।

नवद्वीपक विश्वविद्यालय, जे १५०३ ई. मे स्थापित भेल, मुख्य रूपसँ महान टीकाकार रघुनाथ शिरोमणिक कारण तत्त्व-चिन्तामणिक बंगालमे लोकप्रियता के मुख्य माध्यम बनल। बंगाल सँ ई रचना मद्रास, महाराष्ट्र, आ काश्मीर धरि फैलल, आ दुई शताब्दीक भीतर ई उपमहाद्वीपमे जानल गेल। सतीश चन्द्र विद्याभूषण अपन परिचयमे नोट करैत छथि जे "आधुनिक भारतमे संस्कृत विद्वत्ता के कोनो मूल्य नै मानल जाइत अछि जब तक ई तत्त्व-चिन्तामणि या कम सँ कम एकर कोनो भागक ज्ञान सँ साथ नै होइत।"

गङ्गेश, जे गङ्गेश्वर सेहो कहलाइत छथि आ उपाध्याय उपनामसँ विभूषित, चौदहम् शताब्दीक प्रारम्भक मिथिलाक दार्शनिक छलाह। आधुनिक विद्वत्ता हुनकर सक्रिय काल लगभग १३२० ई. मानैत अछि, आ ई काल हरिसिंहदेवक शासनकालसँ मेल खाइत अछि। करियन/करिओन हुनकर निवास-परम्परासँ जुड़ल अछि; पञ्जी-अभिलेख छादन/चादना मूलक उल्लेख सेहो करैत अछि, तेँ निवास आ मूलग्रामकेँ जन्मस्थानक समानार्थी नहि मानल जाए। जन्मक निश्चित वर्ष अभिलेखसँ निर्धारित नहि होइत; दूषण-पञ्जीक निर्णायक जीवनी सूचना ई अछि जे हुनकर जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल।

पूर्व-आधुनिक कालमे मिथिलाक बौद्धिक प्रतिष्ठा एकर शैक्षिक संरक्षण प्रणाली पर टिकल छल, जे पण्डितसभकेँ (विद्वान विद्वान) अनेक विषयसभमे समर्थन करैत छल। ई क्षेत्रक ब्राह्मण परिवार न्याय, मीमांसा, वेदान्त, व्याकरण, ज्योतिष आ कानूनमे पीढ़ी-दर-पीढ़ी विशेषज्ञ बनाए रखैत छल। गङ्गेश एहि परम्पराक भीतर काज केलक आ हुनकर समकालीनसभ द्वारा जगद्गुरु (विद्याभूषणक शब्दमे 'डिस्टिंग्विश्ड प्रोफेसर', जे विश्व-शिक्षकक समकक्ष अछि) क रूपमे मान्यता देल गेल। हुनकर निपुणता केवल न्यायमे सीमित नै छल: ओ, स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफीक विवरणक अनुसार, मीमांसा, वैदिक व्याख्याशास्त्रक विद्यालय, के एकटा महान उस्ताद सेहो छल, आ पाणिनिक व्याकरण परम्परा आ महाकाव्य साहित्य सँ सेहो पूर्ण रूपसँ परिचित छल, तत्त्व-चिन्तामणि मे कतेक स्थान पर भगवद्गीताक उद्धरण देबैत छल।

मिथिलाक भूमि, जे वर्तमान बिहार आ दक्षिणी नेपालक गंगा-मैदानमे फैलल अछि, वी. पी. भट्ट अपन अनुवादक प्रस्तावना (२०१२) मे उपलब्धिक परिमाण बताबैत छथि: 'भारतीय दर्शनक छहि प्रणालीसभमे सँ एक, न्याय शास्त्र, ने भारतमे दर्शन, तर्क आ ज्ञानमीमांसाक विकास आ विश्लेषणमे महत्वपूर्ण भूमिका निभौलक... हालाँकि, नव्य-न्यायक आगमन न्याय दर्शनक दृष्टिकोणमे एकटा क्रान्तिकारी परिवर्तन लेलक। ई सभ न्याय आ वैशेषिक अवधारणा सभकेँ व्यवस्थित केलक आ चारि शीर्षक सभक तहत

लेलक, अर्थात् १) प्रत्यक्ष, २) अनुमान, ३) उपमान आ ४) शब्द... टी. सी. मे विभिन्न सिद्धान्तसभक प्रस्तुतिकरणमे प्रयुक्त पद्धति ने भारतमे तेरहम् शताब्दीई. सँ अठारहम् शताब्दी ई. धरि पाँच सय वर्षक अवधिमे दार्शनिक लेखन पर गहन प्रभाव डाललक; आ लगभग सभ शास्त्रकार टी. सी. क पद्धतिक प्रस्तुतिकरण अपनायलक।' ओ आगा कहैत छथि: 'दर्शन, तर्क आ ज्ञानमीमांसाक सन्दर्भमे ग्रन्थ (टी. सी.) के महत्व पर पर्याप्त बल देबा अतिशयोक्ति नै होइत।'

बेन-अमी शार्फस्टाइनक 'अ कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी' मे, गङ्गेशकेँ डेसकार्टेस आ लाइबनिजक साथ-साथ तीन दार्शनिकसभमे सँ एकक रूपमे रखल गेल अछि जकर साझा विषय पद्धतिगत रूपसँ प्रयुक्त तर्कक माध्यम सँ निश्चितताक खोज अछि। शार्फस्टाइनक लेल, तीनु दार्शनिक सभ एकटा मौलिक अभिविन्यास साझा करैत छथि: ओ तर्कशास्त्री अछि एहि अर्थमे जे ओ दुनियाँ के समझबाक चाहैत छथि तर्क पद्धतिकेँ अलग करि आ सिद्ध करि, नै कि एकर विषय-वस्तु के। 'गङ्गेश अपन काज के करैत अछि, आगमन क सबसँ भरोसेमंद साधन, नियमितता सुनिश्चित करबाक लेल एकटा मौजूदा तार्किक तकनीककेँ सिद्ध करबाक लेल।' हुनकर रचना, शार्फस्टाइन कहैत छथि, हुनका 'द ज्वैलर' क उपाधि देलक — जे एकटा विचार-रत्न बनौलक — आ एकर लगभग तीन सौ पृष्ठ 'अनुमानित रूपसँ दस लाख पृष्ठक टीका-टिप्पणी के लेल उत्तरदायी छल।'

पॉटर-भट्टाचार्य 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन फिलॉसफीज' (१९९३) सरल रूपसँ कहैत अछि: 'गङ्गेशक एकटा अद्वितीय प्रतिभा छल, जे हुनका विश्वक उत्कृष्ट दार्शनिक मस्तिष्कसभमे सुरक्षित रूपसँ रखैत अछि।'

न्याय विद्यालय अपन शास्त्रीय स्थापना गौतमक न्याय-सूत्र (लगभग १०० ई.) आ वात्स्यायनक एकर प्रारम्भिक प्रमुख टीका (लगभग ४०० ई.) सँ पता लगाबैत अछि। ई विद्यालय बाह्य जगतक प्रति गहन यथार्थवाद आ प्रमाणसभक (ज्ञानक वैध स्रोत) व्यवस्थित विवरण सँ विशेषता रखैत अछि: प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष), अनुमान (अनुमान), उपमान (सादृश्य), आ शब्द (शाब्दिक प्रमाण) । लगभग एक सहस्राब्दी धरि, उद्द्योतकर (लगभग ६०० ई.), वाचस्पति मिश्र (लगभग ९५० ई.), आ उदयन (लगभग १००० ई.) सहित टीकाकार सभ प्रणालीक विस्तार केलक, उदयन सबसँ महत्वपूर्ण रूपसँ एकरा वैशेषिक श्रेणी-आन्टोलॉजी सँ मिला देलक। गङ्गेश स्पष्ट रूपसँ स्वयंकेँ उदयनक अनुयायीक रूपमे स्थापित केलक आ सात वैशेषिक श्रेणी — द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, आ अभाव — केँ अपन ज्ञानमीमांसीय परियोजनाक तत्त्वमीमांसात्मक ढाँचाक रूपमे शामिल केलक।

गङ्गेश द्वारा शुरू कएल 'पुरान' न्याय (प्राचीन-न्याय) आ 'नव' न्याय (नव्य-न्याय) क बीच अन्तर, जेना स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी सावधान करैत अछि, एकटा साफ-सुथरा विच्छेद नै अछि। लगभग दुई-हजार वर्षक इतिहासमे, विकास निरन्तर छल। तथापि, तत्त्व-चिन्तामणि ने एकटा गुणात्मक परिवर्तन प्राप्त केलक: ई सूत्र-टीकाक परम्पराकेँ हटा देलक, असाधारण सटीकताक एकटा नव विश्लेषणात्मक शब्दावली खड़ा केलक, आ प्रत्येक बादक नैयायिक के हुनका सँ निपटबाक लेल बाध्य क देलक। गङ्गेशक पूर्ववर्ती मणिकण्ठ मिश्र मे अधिकांश तकनीकी उपकरण मौजूद छल, आ बौद्ध तर्कशास्त्री धर्मकीर्ति (लगभग ६०० ई.) हेत्वाभास पर गङ्गेशक कतेक चर्चाक पूर्वानुमान केनए छल, मुदा हुनकर सँ पहिने कोनो परम्पराकेँ इतना व्यापक रूपसँ संश्लेषित आ विस्तारित नै केनए छल।

पूर्ण शीर्षक तत्त्व-चिन्तामणिक अर्थ 'सत्यक विचार-रत्न' (तत्त्व = सत्य/वास्तविकता; चिन्तामणि = चिन्ताक एकटा मनोकामना पूरक रत्न, रूपक रूपसँ विचारक रत्न) अछि। एकरा प्रमाण-चिन्तामणि सेहो कहल जाइत अछि, 'ज्ञानक विचार-रत्न'। शीर्षक एक साथ ज्ञानमीमांसीय आ आकांक्षापूर्ण अछि: ई वैध ज्ञानक समझक इच्छा पूरा करबाक रत्न होबाक दावा करैत अछि। गङ्गेश कार्यक शुरुआत शिवकेँ आशीर्वचनसँ करैत अछि, जे न्यायक मङ्गल-वाद (आशीर्वादक आह्वान) क अभ्यास सँ मेल खाबैत अछि, आ तुरन्त प्रश्नमे कूद जाइत अछि जे प्रमा (वैध ज्ञान) का अछि।

पुस्तक १ — प्रत्यक्ष-खण्ड (प्रत्यक्ष): चारि पुस्तकसभमे सबसँ लम्बा आ दार्शनिक रूपसँ सबसँ समृद्ध, ई सामान्य ज्ञान सिद्धान्त, वैध आ अवैध बोधक प्रकृति, प्रत्यक्ष प्रक्रियाक एकटा विस्तृत घटनाविज्ञान जाहिमे सामान्य (लौकिक) आ अतीन्द्रिय (अलौकिक) रूप शामिल अछि, समवायक सिद्धान्त, अभावक समस्या, आ मनक परमाणु प्रकृति स्थापित करैत अछि। ई निर्विकल्पक आ सविकल्पक प्रत्यक्ष, आ अनुव्यवसाय (आत्म-चेतना) के सिद्धान्त पर चर्चाक साथ समाप्त होइत अछि।

पुस्तक २ — अनुमान-खण्ड (अनुमान): तकनीकी रूपसँ सबसँ कठिन आ प्रभावशाली खण्ड, ई अनुमानात्मक ज्ञानक शर्तसभ, सर्वोपरि महत्वपूर्ण अवधारणा व्याप्ति (अविनाभाव सम्बन्ध या 'व्याप्ति'), उपाधि (सशर्त मध्य पद) क सिद्धान्त, हेत्वाभासक

वर्गीकरण, आ न्याय (सिलोजिज्म) केँ अपन-लेल (स्वार्थानुमान) आ पर-लेल (परार्थानुमान) दुनू रूपमे काम करैत अछि। एहिमे आत्मक अस्तित्वक प्रमाण, एकटा ईश्वरवादी तर्क (ईश्वरानुमान), आ मुक्तिक संभावनाक प्रमाण सेहो शामिल अछि।

पुस्तक ३ — उपमान-खण्ड (तुलना): चारि पुस्तकसभमे सबसँ छोट, ई तर्क करैत अछि जे सादृश्य एकटा वास्तविक रूपसँ भिन्न प्रमाण गठित करैत अछि जे अनुभूत समानता द्वारा शब्द-अर्थक ज्ञान देबैत अछि। मानक उदाहरण — एकटा यात्री 'गवय' (एक प्रकारक भैंस) शब्द 'गाय जकाँ' क विवरण सँ सीखैत अछि आ जङ्गलमे जानवरक पहिचान करैत अछि — दर्शाबैत अछि जे सादृश्य ज्ञान प्रत्यक्ष आ अनुमान दुनू मे अपरिवर्तनीय अछि।

पुस्तक ४ — शब्द-खण्ड (शाब्दिक प्रमाण): भाषा पर एकटा प्रमाणक रूपमे विस्तृत विश्लेषण, जाहिमे वैध भाषणक परिभाषा, सार्थक उच्चारणक शर्त (आकाङ्क्षा/अपेक्षा, योग्यता/शब्दार्थ योग्यता, आसत्ति/समीपता, तात्पर्य/आशय), शक्ति (सामर्थ्य) आ लक्षणा (गौण अर्थ) क प्रकृति, समस्त शब्दक श्रेणी, क्रियात्मक प्रत्यय, धातु आ उपसर्ग, शब्दक सिद्धान्त, आ वैदिक विधि (आज्ञा) क विस्तृत प्रश्न शामिल अछि। एहि अध्यायमे, स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी क अनुसार, सम्पूर्ण तत्त्व-चिन्तामणि मे सबसँ लम्बा एकल खण्ड अछि, जे लक्षणा (गौण अर्थ) के लेल समर्पित अछि।

ज्ञानमीमांसा आ तर्क

सत्य आ त्रुटिः गङ्गेशक वैध ज्ञानक सिद्धान्त

सत्यक परिभाषा (प्रामाण्यवाद)

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया (पृ. ५३-५४) प्रत्यक्ष-खण्डक प्रामाण्यवाद खण्डमे निर्धारित गङ्गेशक सत्यक सिद्धान्तक एकटा सटीक तकनीकी सूत्रीकरण प्रदान करैत अछि। गङ्गेश सत्य (प्रामाण्य) केँ परिभाषित करैत अछि: '(क) या तऽ एकटा बोध होएबाक चाही जकर मुख्य विशेष्य, १०, ओहि चीजमे अछि जे १० के धारण करैत अछि, या (ख) एकटा बोध होएबाक चाही जे १० के सम्बन्ध ओहि चीज सँ अछि जे १० के धारण करैत अछि।' ई कहैत अछि जे एकटा प्रमाण (वैध बोध) एकटा बोध अछि (क) जकर विधेय पद अपन कर्ता पद सँ सम्बन्धित अछि, या (ख) जे सही रूपसँ एकटा गुण १० केँ एकटा सत्ताकेँ बताबैत अछि जे वास्तवमे १० के धारण करैत अछि। इन्साइक्लोपीडिया नोट करैत अछि जे 'गङ्गेश, अपन विश्लेषणक पक्षमे, तर्क करैत अछि जे केवल तखन (क) या (ख) संतुष्ट होइत अछि, तखन व्यक्ति प्रश्नगत बोध पर आधारित कार्य करैत अछि। एकर अतिरिक्त, ओ तर्क करैत अछि, ई सत्यक सबसँ किफायती विवरण अछि।' महत्वपूर्ण रूपसँ, गङ्गेश ईसत्यक एकटा 'सामान्य मंच' विश्लेषणक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि — ई सूत्रीकरण सभ विद्यालय सभकेँ लेल स्वीकार्य अछि चाहे ओ सत्य स्वतः-प्रामाण्य या परतः-प्रामाण्य अछि पर ओकर दृष्टिकोण जेना सेहो हो।

शार्फस्टाइनक तुलनात्मक दृष्टिकोण एहि ज्ञानमीमांसीय रुखक महत्व पर प्रकाश डालैत अछि: 'गङ्गेश न्यायक वास्तविक, बाह्य दुनियाँमे विश्वास, वास्तविक, अभौतिक आत्मामे विश्वास, आ प्रत्यक्ष आ अनुमान, प्रत्येक एक-दोसरक सहायता करैत, निश्चितता धरि पहुँचबाक विशेष क्षमतामे प्रतिबद्ध अछि।' मीमांसकक आत्म-प्रमाणीकरण थीसिस (जे मानैत छल जे प्रत्येक बोध उत्पन्न भेला पर आपु स्वयं प्रमाणित होइत अछि) क विपरीत, गङ्गेश कायम रखैत अछि जे प्रमाणीकरणकेँ दोसर-स्तरीय अनुमानात्मक कार्यक आवश्यकता होइत अछि। जेना ओ संशयवादीक विरुद्ध तर्क करैत अछि: 'अनुमान पर आपन तर्क अनुमान पर निर्भर अछि। जखन अहाँ कहैत छी जे अनुमान ज्ञानक कोनो साधन नै अछि, त अहाँक अर्थ ई अछि जे ई कहनाए की अनुमान एहि प्रकारक साधन अछि, संदिग्ध या असत्य अछि। मुदा ई कि संदिग्ध या असत्य अछि, प्रत्यक्ष द्वारा ज्ञात नै होए सकैत अछि।'

प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सम्बन्ध आ ज्ञानमीमांसीय तर्क

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया बोधक सिद्धान्त पर नव्य-न्यायक सिद्धान्तक एकटा प्रमुख विशेषता पर प्रकाश डालैत अछि जे औचित्यक सिद्धान्तक लेल दार्शनिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि: प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सम्बन्ध (प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सम्बन्ध) । ई केवल एकटा मनोवैज्ञानिक नियम नै अछि जे दुई चीज पर एक साथ ध्यान देबाक असम्भवताक बारेमे अछि; ई एकटा ज्ञानमीमांसीय तर्कक नियम अछि जे बोधक वस्तुसभ द्वारा निर्धारित होइत अछि। जखन प क बोध एकटा सचेतन कृत्यक रूपमे बना रहैत अछि, ई पक अभाव क बोधक उत्पत्तिक रोकैत अछि, केवल मनोवैज्ञानिक प्रतिस्पर्धा सँ नै, बल्कि तार्किक आवश्यकता सँ: 'एकटा कृत्यक उपस्थिति दोसर कृत्यक उत्पत्तिक रोकैत अछि, ताकि ओ कभी सह-उपस्थित नै होए सकैत, एक पलक लेल सेहो नै।' ई सम्बन्ध संदेहक सिद्धान्त आ तर्क (परिकल्पनात्मक तर्क) द्वारा संदेहक समाधान लेल महत्वपूर्ण अछि।

इन्साइक्लोपीडिया बताबैत अछि जे ई सिद्धान्त काति आगमन (आगमन) क समस्या — विशेष रूपसँ व्याप्ति पर संदेह काति समाधान होइत अछि — के समाधान करैत अछि: 'न्याय सिद्धान्त ई अछि जे निर्णायक कारक एतय विचारकमे संदेहक उपस्थिति या अनुपस्थिति अछि... जे कोनो व्यक्तिकैँ ई संदेह होइत अछि जे हेतु (हेतु) एकटा सव्यभिचारी होए सकैत अछि, ओ तब धरि हेतु आ साध्य क बीच व्याप्ति नै जानि सकत, जब धरि हुनका ओ संदेह रहैत अछि। एतय प्रश्न अछि: का ई नियम एकटा मनोवैज्ञानिक नियम अछि? न्याय दुई प्रकारक अवरोधक बीच अन्तर करैत अछि... ओ एकटा बोधक अवस्थाक दोसर बोधक अवस्था द्वारा ओकर वस्तुसभक कारण सँ अवरोधक एक अलग प्रकारमे रुचि रखैत अछि। जे चीज कोनो व्यक्तिकैँ एकटा विशिष्ट व्याप्ति जानबा सँ रोकैत अछि, ओ हुनकर मानसिक संरचना नै अछि, बल्कि ई तथ्य अछि जे हुनका एकटा विशिष्ट संदेह अछि।' ई ज्ञानमीमांसीय तर्क अछि, मनोविज्ञान नै।

प्रत्यक्षक सिद्धान्त

प्रत्यक्ष आ आत्म

गङ्गेशक प्रत्यक्षक विवरण मन आ आत्मक एकटा समृद्ध तत्वमीमांसामे अन्तर्निहित अछि। शार्फस्टाइनक व्याख्या प्रकाश डालैत अछि: 'न्याय सिद्धान्तमे मन एकटा अचेतन आन्तरिक इन्द्रिय या कारण अछि जे बाह्य इन्द्रियसभ सँ आवैवाली क्रमिक संवेदनासभकैँ सचेतनआत्माक धरि पहुँचाबैत अछि... मन एक समयमे केवल एकटा इन्द्रिय सँ जुड़ सकैत अछि। ई सीमा कैँ मनक आकार अत्यन्त न्यूनतम, एकटा परमाणुक आकार होएबाक सूचित करैत अछि... ई आत्मा अछि जे स्मृतिक लेल जिम्मेदार अछि... यदि कोनो स्थायी, मध्यस्थ आत्मा नै होएत, तऽ अतीतमे नील क प्रत्यक्ष बादमे ओही नील क स्मृतिक लेल काति जिम्मेदार होएत? यदि आत्मा आ ओ स्मृति जे ओ संरक्षित करैत अछि नै होएत, तऽ कोनो काति ई व्याख्या करि सकत कि एक बात जे मैं अपन बायाँ आँखि सँ देखल छल, बादमे मोर दहिना आँखि सँ पहिचानल जाइत अछि?' आत्मा शरीर, इन्द्रियसभ, या मनमे अपरिवर्तनीय नै अछि — ई चेतनाक अद्वितीय आधार आ स्मृति, पहिचान, आ अन्तःसंवेदी संश्लेषणक स्थान अछि।

निर्विकल्पक आ सविकल्पक प्रत्यक्ष

गङ्गेशक निर्विकल्पक (अनिश्चित) आ सविकल्पक (निश्चित) प्रत्यक्षक बीच अन्तर हुनकर सबसँ दार्शनिक रूपसँ महत्वपूर्ण योगदानसभमे सँ एक अछि। शार्फस्टाइन अनिश्चित चरणकैँ अवधारणा-रहित जागरूकताक रूपमे वर्णन करैत अछि — जे नाम, सार्वभौमिक आदि सँ जुड़ल नै होइत, जे कोनो चीज के योग्य रूपमे नै समझैत अछि आ जे कोनो विशेषण सँपूर्ण रूपसँ रहित अछि। एकर बाद जे आबैत अछि, ओ संरचित, सम्बन्धात्मक, योग्य — अवधारणा-युक्त जागरूकता होइत अछि। हम जे अनुभव करैत छी, ओकरा पूर्ण रूपसँ तखन जानैत छी जखन हम एकरा सार्वभौमिक क विशिष्ट सँ बनल जटिलता क रूपमे जागरूक होइत छी, आ कहि सकैत छी — विजयी स्वरमे — घड़ा, या ई घड़ा अछि।

निर्विकल्पक प्रत्यक्षक अस्तित्व मानबाक दार्शनिक आवश्यकता दुनू स्रोतसभमे स्पष्ट रूपसँ बताएल गेल अछि। पॉटर इन्साइक्लोपीडियामे गङ्गेशक अपन उदाहरणक उपचार सँ: यदि कोनो सार्वभौमिक या सामान्य गुणसभकैँ (जेना पश्चिमी दर्शनमे) उदाहरण धारण करबाक रूपमे सोचैत अछि, बजाय विशेषसभमे निहित होएबाक, तऽ कोनो एकटा भारतीय दृष्टिकोणक अनुवाद करैत अछि जे न त प्लेटोनिक अछि न त अरस्तूवादी। एकटा विशेषण (विशेषण) सम्बन्धित अछि विशेष्य (विशेष्य या धर्मी) सँ। जखन कोनो घड़ाक प्रत्यक्ष करैत अछि, तऽ सार्वभौमिक घटत्व (विशेषण, विशेषण) विशेषण अछि; व्यक्तिगत घड़ा विशेष्य अछि। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष एहि विशेष्य आ विशेषणकैँ कियो सम्बन्धात्मक विधान सँ पहिने अलग-अलग रूपमे पंजीकृत करैत अछि; ई व्याख्या करैत अछि जे काति हम एक प्रकारक चीजक सामना पहिल बेर करि सकैत छीआ फरो सेहो ओकरा सही रूपसँ वर्गीकृत करि सकैत छी।

अनुव्यवसाय (अनुव्यवसाय)

अनुव्यवसायक सिद्धान्त — प्रत्यक्ष जे पूर्ववर्ती बोधकैँ अपन वस्तुक रूपमे लैत अछि — गङ्गेशक प्रमाणीकरणक विवरणक लेल दार्शनिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि। शार्फस्टाइन 'सरल जागरूकता' कैँ 'आत्म-चिंतनशील जागरूकता या पश्चात्-बोध, शब्दसभमे व्यक्त जेना मैं एहि बात सँ जागरूक छी' क रूपमे वर्णन करैत अछि। पॉटर इन्साइक्लोपीडिया आत्मनिरीक्षणात्मक संरचना निर्दिष्ट करैत अछि: 'एकटा बोध एकटा संस्कार उत्पन्न करि सकैत अछि; वास्तवमे, कोनो संस्कार केवल कोनो कृत्यक कारण सँ ही उत्पन्न होए सकैत अछि... आत्मनिरीक्षणात्मक कृत्य केवल एकटा छलाँग पीछा अछि जे कृत्य जे एकर सामग्री अछि। जाग्रत अवस्थामे दुई बोधक बीच कोनो अनुभूत अन्तराल नै होइत अछि। जखन पूर्ववर्ती बोध अपन दोसर चरणमे (अवधिक) होइत अछि, तखन उत्तरवर्ती

बोध उत्पन्न होइत अछि आ पूर्ववर्ती के बदलि देइत अछि।' गङ्गेश तर्क करैत अछि जे अनुव्यवसाय विस्तारित बोधक आशयात्मक संरचनाक सम्बन्धमे अचूक अछि — यद्यपि एकर सत्यताक सम्बन्धमे नै।

भ्रमः अन्यथाख्यातिवाद

'अन्यथाख्यातिवाद' — सिद्धान्त जे भ्रम एकटा चीजक 'एकरा सँ भिन्न' रूपमे जागरूकतामे समाविष्ट अछि — प्रत्यक्ष-खण्डक सबसँ लम्बा खण्डसभमे सँ एक अछि। शार्फस्टाइनक विवरण: 'जखन सेहो कोनो रस्सी के साँप समझल जाइत अछि, तखन किछु सच्चा ज्ञान अछि, जमीन पर पड़ल वस्तुक 'ईपन' क ज्ञान। प्रत्यक्ष बोधक झूठा भाग वस्तुत: जे देखल जाइत अछि, ओकर एक अलग प्रकारक वस्तु सँ आंशिक या पूर्ण पहिचान पर निर्भर करैत अछि... साक्ष्य जे साबित करैत अछि जे मोर प्रत्यक्ष बोध समग्र रूपमे सही या गलत अछि, ओ बोध सँ अनुसरण करैवाली कार्यसभक सफलता या विफलता अछि: केवल साँप, रस्सी नै, वास्तवमे डंसैत अछि।' गङ्गेश उदयनक अनुसरण करैत अछि जे प्रारम्भिक बोध (जे गलत नै होए सकैत) आ बादक, संरचित बोध (जाहिमे गलती संभव अछि) क बीच अन्तर करैत अछि। भ्रामक बोधक सामग्री सदा पूर्ववर्ती वास्तविक बोधसभ सँ अनुरेखणीय होइत अछि — शुक्ति भ्रममे रजतत्व पूर्ववर्ती वास्तविक रजतक प्रत्यक्ष सँ आबैत अछि। ई गङ्गेशक त्रुटिक विवरणकेँ मजबूती सँ यथार्थवादी बनाबैत अछि।

अनुमानक सिद्धान्तः व्याप्ति समस्या आ एकर समाधान

व्याप्ति (व्याप्ति): दार्शनिक दाँव

गङ्गेशक सबसँ बड़ तकनीकी उपलब्धि व्याप्ति (अविनाभाव सम्बन्ध, 'व्याप्ति') क एकर निर्णायक विवरण अछि। दार्शनिक दाँव विशाल अछि: व्याप्ति ओ सम्बन्ध अछि जे सभ अनुमानक आधार अछि, आ एकर एकटा पर्याप्त परिभाषा वास्तविक अनुमान आ छद्म-अनुमानक बीच अन्तर करबाक लेल आवश्यक अछि। शार्फस्टाइन मौलिक धारणा समझाबैत छथि: 'गङ्गेशक लेल, व्याप्ति अर्थात् हेतु या कारणक स्वभाव सँ उत्पन्न बिना शर्त सम्बन्ध, जेना धूम्रता (धुआँपन) क अग्निता (आगिपन) सँ अविनाभाव सम्बन्ध, जे ई मामलामे आगिक प्रकृति आ आगिक उत्पादक धुआँक प्रकृति सँ व्याख्या कएल जा सकैत अछि। ज्ञान कैँ बिना शर्त कहबाक अर्थ ई सेहो अछि जे हम कोनो ऐसन चीज नै जानैत छी जे सम्बन्ध कैँ आकस्मिक दर्शाबैत अछि।'

अपन अन्तिम परिभाषा पर पहुँचबा सँ पहिने, गङ्गेश कतेक पूर्व प्रयाससभ पर विचार करैत अछि आ हुनका अस्वीकार करैत अछि। शार्फस्टाइन नोट करैत छथि जे ओ 'इक्कीस प्रस्ताव' खारिज करैत अछि (झा'आशोक' मोनोग्राफ चौबीस कहैत अछि, उप-प्रकारक गिनती करि) । पॉटर इन्साइक्लोपीडिया सबसँ तकनीकी रूपसँ सटीक विवरण प्रदान करैत अछि। पहिल परिभाषा प्रस्तुत — 'अव्यभिचार' — विफल होइत अछि किएक 'ई उन मामलासभमे लागू नै होइत अछि जतय साध्य (साध्य) अलोकस-व्यापी अछि।' बादक परिभाषा प्रत्येक विशिष्ट प्रतिउदाहरणसभ पर ठोकर खाबैत अछि, विशेष रूपसँ 'वृक्षमे बन्दर' के मामला जतय आरोपित गुण अलोकस-व्यापी अछि। अन्तिम, निर्णायक परिभाषा अछि: 'व्याप्ति अर्थात् गुण १० (हेतु) क गुण ख (साध्य) क सह-अस्तित्व, जे ओहि निरपेक्ष अभावक प्रतियोगिताक अवच्छेदक सँ योग्य नै अछि जे १० क साथ सामानाधिकरण्य रखैत अछि आ अपन प्रतियोगी सँ सामानाधिकरण्य नै रखैत अछि।' शार्फस्टाइन गोकूपक सरलीकृत संस्करण प्रस्तुत करैत अछि: 'क द्वारा ख क व्याप्ति अछि यदि, आ केवल यदि, क क ख सँ सामानाधिकरण्य एहि प्रकारे अछि जे ख उन चीजसभमे सँ कोनो नै अछि जे वर्गक रूपमे क के कोनो स्थान सँ पूर्ण रूपसँ अनुपस्थित अछि।'

व्याप्ति पर संदेहक समाधानः तर्क

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया व्याप्ति पर संदेहक समाधान करबामे तर्क (परिकल्पनात्मक / अप्रमाणिक तर्क) काति कार्य करैत अछि, एकर सबसँ पूर्ण उपचार प्रदान करैत अछि। न्याय सिद्धान्त अछि जे व्याप्ति पर संदेह व्याप्तिक बोधक अवरोधकक रूपमे कार्य करैत अछि। तर्क आपु स्वयं व्याप्ति-ज्ञान नै देबैत अछि; ई ओ संदेह कैँ दूर करैत अछि जे ओ बोधक रोकि रहल छल। धुआँ-आगि उदाहरण पर एकटा तर्क तर्कक औपचारिक संरचना ई प्रकार चलैत अछि: 'यदि धुआँ आगि सँ विचलित होएत तऽ ओ आगि सँ उत्पन्न नै होएत। मुदा धुआँ आगि सँ उत्पन्न अछि। एहि कारण, धुआँ आगि सँ विचलित नै होए सकैत।' संदेहक समाधान एहि प्रकारे नव आगमनात्मक साक्ष्य जोड़ि नै, बल्कि ई दर्शाबैत अछि जे संदेह बनाए रखबा सँ एकटा निष्कर्ष निकलैत अछि जे दुनू पक्ष असत्य मानैत अछि। ई कारण अछि जे गङ्गेश उदयनक व्यावहारिक तर्क सँ संशयवादीक विरुद्ध सहमत अछि: 'ओ यदि धुआँ उत्पन्न करबाक चाहैत अछि तऽ आगि सदा जराबैत अछि... संशयवादीक अपन क्रिया संदेह कैँ निरर्थक करि देबैत अछि।'

इन्साइक्लोपीडिया पश्चिमी आगमन (आगमन) दर्शन सँ एकटा महत्वपूर्ण अन्तर खिचैत अछि: 'न्याय सिद्धान्त अछि जे किछु मामलामे केवल एकटा अवलोकन पर्याप्त अछि, जबकि दोसर मामलामे असंख्य अवलोकन सेहो पर्याप्त नै होइत अछि, व्याप्तिक ज्ञान उत्पन्न

करबाक लेल। निर्णायक कारक एतय विचारकमे संदेहक उपस्थिति या अनुपस्थिति अछि... यद्यपि संदेह अछि या नै, ई पूर्ण रूपसँ व्यक्तिपरक मामला अछि, तथापि न्याय सिद्धान्त मनोवैज्ञानिक नै अछि। न्याय एकटा सार्वभौमिक नियम कहैत अछि: जे कोनो व्यक्तिकेँ ई संदेह होइत अछि जे हेतु (हेतु) एकटा सव्यभिचारी होए सकैत अछि, ओ तब धरि हेतु आ साध्य क बीच व्याप्ति नै जानि सकत, जब धरि हुनका ओ संदेह रहैत अछि।' आगा, नव्य-न्याय आगमन (आगमन) केँ कार्य-कारण या प्रकृतिक एकरूपताक नियमक आह्वान द्वारा औचित्य सिद्ध करबाक पश्चिमी प्रवृत्ति सँ अलग अछि: 'न्याय क अनुसार ई जानबाक पर्याप्त अछि जे दुई चीज सदा सह-उपस्थित अछि; हमें एहि तथ्यक कोनो कारण देबाक प्रयास करबाक आवश्यकता नै अछि।'

उपाधि (अतिरिक्त शर्त) आ हेत्वाभास

उपाधि (सशर्त मध्य पद, अतिरिक्त शर्त) क अवधारणा गङ्गेशक छद्म-अनुमानसभक पहिचान करबाक आ रोकबाक उपकरण अछि। एकटा उपाधि उपाधि-गुण एगो गुण अछि जे साध्य साध्य क व्याप्त करैत अछि (सभ साध्य, उपाधि-गुण अछि) मुदा हेतु हेतु केँ व्याप्त नै करैत अछि (किछु हेतु, उपाधि-गुण नै अछि) । जखन एहि प्रकारक उपाधि-गुण अस्तित्वमे अछि, तखन हेतु द्वारा साध्य क आभासी व्याप्ति टूटि जाइत अछि: हेतु-उदाहरण अछि जे साध्य नै अछि, किएक उपाधि-गुण ओ हेतु-उदाहरणसभ सँ अनुपस्थित अछि। शास्त्रीय नव्य-न्याय उदाहरण: आभासी अनुमान 'धुआँ-उत्पादक चीज आगि-उत्पादक अछि, किएक एकरा उत्पाद अछि' उपाधि 'गीला-ईंधन-होएबाक' द्वारा अवरुद्ध अछि — गीला ईंधन धुआँ-उत्पादक अछि मुदा आगि-उत्पादक नै अछि। अनुमान-खण्डमे उपाधि पर खण्ड (उपाधिवाद) कतेक उप-प्रकरणसभ धरि फैलल अछि आ सम्पूर्ण तत्त्व-चिन्तामणिमे सबसँ तकनीकी रूपसँ कठिन खण्डसभमे सँ एक अछि।

पाँच हेत्वाभास (हेत्वाभास)

हेत्वाभासप्रकरण अनुमान-खण्डक अन्तिम प्रमुख खण्ड अछि। पाँच छद्म-हेतुसभक अन्तर कएल गेल अछि: (१) सव्यभिचार (अनियमित/चंचल — हेतु सपक्ष आ विपक्ष दुनू मे पाबैत अछि); (२) विरुद्ध (विरोधी — हेतु इच्छित निष्कर्षक विपरीत साबित करैत अछि); (३) सत्प्रतिपक्ष (समान-बलक प्रतिहेतु द्वारा सन्तुलित); (४) असिद्ध (अस्थापित — हेतुक उपस्थिति, प्रकृति, या व्याप्ति संदिग्ध अछि); (५) बाधित (पहिने सँ पराजित — निष्कर्ष पहिने सँ ज्ञात बातक विरोधाभास करैत अछि) । एहि हेत्वाभाससभक नव्य-न्याय उपचार, विशेष रूपसँ सव्यभिचारक साधारण (सामान्य/सार्वभौमिक) आ असाधारण (असामान्य/विशिष्ट) मे विभाजन आ अनैकान्तिकक एकटा उपश्रेणीक रूपमे जोड़बा, न्याय-सूत्रक मूल पाँच सँ बहुत आगा बढ़ि जाइत अछि।

तीन दार्शनिक अनुमान

तकनीकी तर्क सँ परे, गङ्गेश तीन विवादास्पद दार्शनिक अनुमान आगा बढ़ाबैत अछि। आत्मक प्रमाण (आत्मन्) केवल-व्यतिरेकी (केवल-व्यतिरेकी) अनुमानक रूप लैत अछि: 'प्रत्येक जीवित शरीरमे आत्मा अछि, किएक प्रत्येक जीवित शरीरमे प्राण अछि, घड़ा जकाँ नै।' हुनकर ईश्वरवादी अनुमान तर्क करैत अछि जे पृथ्वी आ अन्य कार्यसभक एकटा सचेतन कर्ता हुनकर नैमित्तिक कारणक रूपमे अछि, किएक एकरा कार्य अछि, घड़ा जकाँ, परमाणु जकाँ नै। मुक्तिक संभावनाक अनुमान (मुक्ति-साधक-अनुमान) दीपकक बुझबाक सादृश्यक उपयोग करैत अछि जे तर्क करबाक लेल जे दुःख, एकटा निरन्तर कार्य-गुण होएबाक कारण, सैद्धान्तिक रूपमे पूर्ण रूपसँ समाप्त कएल जा सकैत अछि। ई तीनु नव्य-न्याय अनुमानात्मक तंत्र — केवलान्वयी आ केवल-व्यतिरेकी अनुमान, उपाधि, आ तर्कक अपन विशिष्ट उपचार सहित — केँ प्रदर्शित करबाक लेल उतनाए काम करैत अछि जतना ओ अपन तात्विक निष्कर्ष स्थापित करबाक लेल।

उपमान (सादृश्य) आ शब्द (शाब्दिक प्रमाण) क सिद्धान्त

गङ्गेशक लेल, उपमान (सादृश्य/तुलना) सख्त रूपसँ ओ प्रमाण अछि जाहि द्वारा कोनो व्यक्ति अनुभूत समानता द्वारा शब्द आ एकर वस्तुक बीच सम्बन्ध सीखैत अछि। मानक उदाहरण: एकटा यात्रीके कहल जाइत अछि जे गवय (एकटा विशाल गोजातीय) गाय जकाँ देखाबैत अछि; जङ्गलमे जानवर सँ सामना भेला पर, यात्री ज्ञान बनाबैत अछि 'ई, जे गाय जकाँ अछि, ओहि चीज अछि जकरा 'गवय' शब्द कहैत अछि।' एहि प्रमाणक परिणाम (उपमिति) शब्द-वस्तु सम्बन्ध (साद्यसाधनसम्बन्ध) क ज्ञान अछि। गङ्गेश उपमानकेँ प्रत्यक्ष आ अनुमान दुनू मे अपरिवर्तनीय बताबैत अछि — प्रमुख कदम ई अछि जे वनवासीक कथन 'गवय गाय जकाँ अछि' एकटा विवरण सँ अधिक कार्य करैत अछि (जे केवल एकटा तथ्यक प्रत्यक्ष या शाब्दिक ज्ञान दे सकत अछि) मुदा एकटा अर्थ-वाहक उच्चारणक रूपमे जे श्रोताक वस्तु सँ सीधा सामना द्वारा शब्द-अर्थ-सम्बन्धक नव ज्ञान उत्पन्न करैत अछि।

शब्दः प्रमाणक अपरिवर्तनीयता

शब्द-खण्ड शाब्दिक प्रमाणक एकटा चौथा, अपरिवर्तनीय प्रमाणक रूपमे बचाओ करैत अछि। न्यूनीकरणवादी कदमक विरुद्ध — शब्द वास्तवमे वक्ताक विश्वसनीयता सँ अनुमान अछि — गङ्गेश तर्क करैत अछि जे अनुमानात्मक शृंखला आपु स्वयं शाब्दिक ज्ञान पूर्वकल्पित करैत अछि: अहाँ 'ई वक्ता प कहैत अछि' क आधार सेहो नै बना सकैत छी जब तक अहाँ कथन नै समझैत छी, जे पहिने सँ एकटा शाब्दिक कार्य अछि। प्रमाणक अद्वितीय भाषाई तंत्र — आकाङ्क्षा (वाक्यात्मक अपेक्षा), योग्यता (शब्दार्थ योग्यता), आसत्ति (समयिक समीपता), आ तात्पर्य (वक्ताक आशय) — कोनो अनुमानात्मक प्रक्रिया सँ अलग अछि।

तात्पर्यवाद खण्ड गङ्गेशक नवाचार प्रस्तुत करैत अछि: लक्षणा (गौण अर्थ) क ट्रिगर सामान्य धारणा जकाँ योग्यता (शब्दार्थ योग्यता) क उल्लंघन नै अछि, बल्कि समग्र वाक्यात्मक सम्बन्ध (अन्वय) क उल्लंघन अछि। प्रसिद्ध उदाहरण — 'गंगायां घोषः' (गंगा पर बस्ती) — लक्षणाक आवश्यकता ई नै अछि किएक 'गंगा' आ 'बस्ती' शब्दार्थ रूपसँ असंगत अछि, बल्कि किएकसमग्र निर्माण नदीक जलक प्राथमिक संदर्भ सँ सुसंगत नै करल जा सकैत अछि।

वर्धमान उपाध्यायः तत्काल उत्तराधिकारी

एन. एस. रामानुजताताचार्य द्वारा उद्धृत एक परम्परा अनुसार वर्धमान गङ्गेशक ज्येष्ठ पुत्र छल अपन पहिल पत्नी सँ, आ तत्त्व-चिन्तामणिक प्राथमिक प्रसारक छल। ओ आपु स्वयं सेहो पर्याप्त प्रतिष्ठाक एकटा दार्शनिक छल। हुनकर रचनासभमे शामिल अछि: कुसुमाञ्जलि-प्रकाश, किरणावली-प्रकाश, तात्पर्य-परिशुद्धि (न्यायनिबन्ध-प्रकाश कहल जाइत अछि), आत्मतत्त्वविवेक-प्रकाश, श्रीवल्लभाचार्यक न्यायलीलावती-प्रकाश, खण्डनखण्डखाद्य-प्रकाश, आ केशव मिश्रक तर्कभाषा-प्रकाश। एकटा अलग, स्वतन्त्र रूपसँ आरोपित रचना न्यायसूत्रवृत्ति 'अन्वीक्षण्ययतत्त्वबोध' अछि।

वर्धमान, अपन पिता सँ भिन्न, जानबूझि अपन टीकासभ 'जेना हमर पिता कहैत छथि' (अस्मत्पुत्रुच्चरणास्तु) क ध्वज तहत लिखलक, उदयन आ श्रीवल्लभक रचनासभ सँ तत्त्व-चिन्तामणिक सिद्धान्तसभक लेन्स सँ जुड़ल। ओ अपन समयक लगभग प्रत्येक प्रमुख दार्शनिक रचना पर प्रकाश टीका लिखलक। देवानन्द पंजी हुनका 'उपयकारक' कहैत अछि — जे चीजसभकेँ उपयोगमे लाबैवाला। डॉ. किशोरनाथ झा क उद्धरण: यद्यपि वर्धमान तत्त्व-चिन्तामणि पर सीधा टीका नै लिखलक (संभवतः किएक हुनकर पिता जीवित छल जखन रचना प्रसारित भ रहल छल आ ओ एकरा समयपूर्व मानलक), 'हुनकर शैली सभ टीकामे तत्त्व-चिन्तामणिक उद्धृत करबाक अछि जेना प्रासंगिक सन्दर्भ, जतय तत्त्व-चिन्तामणिक सिद्धान्त सदा परिलक्षित होइत अछि।'

टीका परम्परा (व्याख्या-परम्परा)

तत्त्व-चिन्तामणि पर टीका परम्परा संस्कृत परम्परामे सबसँ विस्तृत विद्वत्तापूर्ण संचयनसभमे सँ एक अछि।

पक्षधर-रघुनाथ-नवद्वीप अक्ष

तत्त्व-चिन्तामणिक लोकप्रियताक निर्णायक क्षण पक्षधर उपाध्याय (जे जयदेव मिश्र सेहो कहल जाइत अछि, १५म् शताब्दी) द्वारा 'आलोक' क रचना छल। वासुदेव सार्वभौम, महान नवद्वीप विद्वान, प्रारम्भमे पक्षधर मिश्र (हुनकर मामा हरिमिश्रक छात्र) सँ पढ़बाक आएल छल; मुदा पक्षधर हुनका फेर जाएबाक कहलक, हुनका पहिने हरिमिश्रक अधीन पढ़बाक निर्देश देत, जाहि पर वासुदेव वापस गेल आ बादमे अपन छात्र रघुनाथ शिरोमणिकेँ मिथिला पढ़बाक भेजलक। जखन रघुनाथ पक्षधरक संग तत्त्व-चिन्तामणि पढ़बाक आएल, तखन कहानी अछि जे पक्षधर हुनका पुछलक जे इन्द्र के छल (सामान्यलक्षण प्रत्यक्ष पर एकटा चाल प्रश्न — का कोनो 'इन्द्रत्व' क सार्वभौमिक द्वारा एक साथ सभ इन्द्रसभक प्रत्यक्ष करि सकैत अछि) । रघुनाथक उत्तर, दुई-आँखि आ तीन-आँखि प्राणीसभक प्रकारक बीच अन्तर करैत, पक्षधरके एतना प्रभावित केलक जे ओ हुनका पहिने सँ 'शिरोमणि' (तर्कशास्त्रीसभक शिरोमणि) घोषित क देलक। पूरा आदान-प्रदान नव्य-न्यायक चकाचौंध द्वन्द्वशास्त्रीय संस्कृतिक उदाहरण अछि।

रघुनाथ शिरोमणिक दीधिति नव्य-न्याय परम्पराक सबसँ महत्वपूर्ण द्वितीयक ग्रन्थ अछि, जे सभ अन्य टीकाक प्रभावमे ग्रहण करि देलक। नवद्वीपमे आधारित, रघुनाथ गङ्गेशक अन्तर्दृष्टिकेँ एकटा व्यवस्थित ढाँचामे विकसित केलक जे वर्तमान धरि बिना रुकावट अध्ययन कएल गेल अछि। दीधिति पर आपु स्वयं टीकासभ आकर्षित केलक उपमहाद्वीप भरिक विद्वानसभ सँ: रामकृष्णभट्टाचार्य (लीलावती), रघुनाथ विद्यालंकार (दीधितिप्रतिबिम्ब), कृष्णदास सार्वभौम (प्रसारिणी), मथुरानाथ तर्कवागीश (रहस्य), जगदीश तर्कालंकार (जागदीशी), गदाधर भट्टाचार्य (गादाधर), आ रुद्र-न्यायवाचस्पति (सारंग्रह), अनेक दोसरसभक बीच।

मैथिल परम्परा

मिथिलामे आपु स्वयं, टीका परम्परा वर्धमानक तत्त्व-चिन्तामणि सँ अपन प्रकाश टीकासभक माध्यम सँअन्तर्निहित जुड़ाव सँ शुरू भेल, पक्षधरक आलोक (जे नवद्वीप परम्पराक प्रज्वलित केलक) सँ जारी रहल, आ पक्षधरक छात्र नरहरि उपाध्यायक 'दूषणोद्धार', पक्षधरक पुत्र माधव मिश्रक 'दीपिका', आ अनेक मैथिल प्रकरण ग्रन्थसभ द्वारा विस्तारित भेल। आ लोक परम्परा (पक्षधरक वंश, जे यज्ञपति द्वारा अनुसरण कएल गेल) आ दूषणोद्धार-परम्परा (नरहरिक वंश) क बीच आन्तरिक विद्वत्तापूर्ण विवाद — उपाधि-सिद्ध आ सव्यभिचार प्रकरणसभ पर व्याख्यात्मक मतभेद सँ अलग — देखाबैत अछि जे काति दुनू विद्यालय सभ शताब्दीसभ धरि नव्य-न्यायक आन्तरिक विकासक संचालन केलक।

ज्ञात टीकाकारः एक चयन

२३ ज्ञात टीकाकारसभमे सँ, पहिने उल्लिखित सभ सँ परे, सबसँ महत्वपूर्ण अछि: पटनाभ मिश्र (प्रकाश), गोकुलनाथोपाध्याय (रश्मिचक्र/चक्ररश्मि), गोपीनाथ ठाकुर (मणिसार), वासुदेव मिश्र (न्यायसिद्धान्तसार/दीप्ति), माधव मिश्र पक्षधरसुत (दीपिका), माधव मिश्र खांतरसुत (माधवी), हीरादास न्यायालंकार (अनुमान-खण्ड पर प्रकाश), कणाद तर्कवागीश (टीका), भवानन्द सिद्धान्तवागीश (भवानन्दी), रामानुज दीक्षित (दर्पण), श्रीकण्ठ दीक्षित (टीका), हनुमद-भट्ट (वाक्यार्थ-दीपिका), चन्द्र-नारायण भट्ट (अनुगम), राजचूडामणि मखिन (दर्पण), आ धर्मराजवीरेन्द्र (तर्कचूडामणि) ।

गङ्गेश आ मिथिलाक सभ्यतागत धरोहरः विदेह परिप्रेक्ष्य

विदेह पत्रिका (विदेह वेब-अभिलेख, आईएसएसएन २२२९-५४७X), पहिल मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका जे लगभग २००० ई. सँ निरन्तर संचालित अछि, मिथिलाक जीवित सांस्कृतिक धरोहरक प्रमुख डिजिटल अभिलेख अछि। एकर पुस्तकालय (विदेह पोथी अभिलेख) सैकड़ों पाठकेँ पीडीएफ प्रारूपमे उपलब्ध कराबैत अछि — बौद्धगानपद (हरप्रसाद शास्त्री संस्करण १९०७ मे संरक्षित प्रारम्भिक बंगाली-मैथिली सिद्ध रचना), विद्यापति संग्रह, आधुनिक मैथिली कथा, कविता, नाटक, समालोचना, महिला साहित्य, दलित साहित्य, लोक विद्वत्ता, आ भाषाई अनुसन्धान धरि।

पंजी अभिलेख — ग्यारह हजार सँ अधिक ताड़पत्र अभिलेख जे प्रीति ठाकुर द्वारा २२ खण्डमे संकलित, स्क्यान, आ सूचीबद्ध कएल गेल अछि — विदेह अभिलेखक माध्यम सँ उपलब्ध अछि आ मैथिल ब्राह्मण विद्वत्तापूर्ण समुदायक सामाजिक इतिहासक लेल एकल सबसँ महत्वपूर्ण प्राथमिक स्रोत अछि, जाहि समुदायमेगङ्गेश रहल। पंजी प्रणालीक वंशावली अभिलेख गङ्गेशक नाम, गोत्र, मूल, परिवार सम्बन्ध, आ गाम 'छादन' हुनकर पैतृक घरक रूपमे अंकित केलक। पंजी परम्पराक बिना — जे विदेह अभिलेख सक्रिय रूपसँ अङ्कीकृत आ संरक्षित करैत अछि — गङ्गेशक जीवनी के बारेमे जतना हम जानैत छी, ओकर बहुत किछु खोइ जाएत।

आशीश अंचिन्हारक 'मैथिली वेब पत्रकारिताक इतिहास' आ प्रीति कारण सेतु बान्हल ('रेडिफाइनिंग मैथिली'), दुनू विदेह अभिलेखक माध्यम सँ उपलब्ध, समानांतर साहित्य आन्दोलनक प्रलेखीकरण करैत अछि जे मैथिली लोक, दलित, आ महिला साहित्यिक आवाजसभकेँ संस्कृत दार्शनिक कैनन सँगे पुनः प्राप्त आ उत्सव मनाबैत अछि। गङ्गेशक असाधारण रूपसँ अमूर्त आ तकनीकी उपलब्धि मैथिली सभ्यतागत अभिव्यक्तिक पूर्ण स्पेक्ट्रमक एक छोर पर अछि; बौद्धगानपदक लोकगीत, गोनू झाक हास्य कथा, सल्हेस महाकाव्य परम्परा, आ अंचिन्हारक 'अंचिन्हार आखर' द्वारा समर्थित आधुनिक मैथिली गजल परम्परा दोसर छोर पर अछि। विदेह परियोजनाक ई सभटाकेँ एक साथ राखबाक आग्रह — महामहोपाध्याय आ लोक-कवि, तत्त्व-चिन्तामणि आ चर्या-पद — एकर सबसँ महत्वपूर्ण सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य अछि। गङ्गेश सम्पूर्ण मिथिलाक अछि, केवल एकर संस्कृत अभिजात वर्गक नै।

राधाकृष्ण चौधरीक 'मिथिलाक इतिहास', जयकान्त मिश्रक 'अ हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर, वॉल्यूम १', आ उपेन्द्र ठाकुरक 'हिस्ट्री ऑफ मिथिला' — सभ विदेह अभिलेखक माध्यम सँ उपलब्ध — गङ्गेशक लेल व्यापक ऐतिहासिक आ साहित्यिक सन्दर्भ प्रदान करैत अछि। ओ हुनका एकटा सभ्यतामे अन्तर्निहित देखाबैत छथि जे एक साथ सर्वोच्च तकनीकी दर्शन आ सबसँ घनिष्ठ लोक अभिव्यक्ति, सबसँ कठोर तर्क आ सबसँ कोमल भक्ति कविता केँ मूल्यवान मानैत छल। ओही मिथिला जे तत्त्व-चिन्तामणि उत्पादन केलक, विद्यापतिक पद सेहो उत्पादन केलक — आ ई ओहि सम्पूर्ण सभ्यतागत धरोहरक निरन्तर अस्तित्व अछि, जे अखन विदेहक माध्यम सँ डिजिटल रूपसँ संरक्षित कएल जाइत अछि, जे गङ्गेशक रचनाकेँ एकर सबसँ पूर्ण अर्थ देबैत अछि।

निष्कर्ष: स्थायी उपलब्धि

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्व-चिन्तामणि, कोनो सेहो मापदण्ड सँ, ढाई हजार वर्षक भारतीय दर्शनक इतिहासमे दस या पन्द्रह सबसँ परिणामकारी रचनासभमे सँ एक अछि। ई प्रत्येक पूर्ववर्ती न्याय ग्रन्थकेँ अध्ययनआ टीकाक केन्द्रीय वस्तुक रूपमे विस्थापित क देलक; ई भारतक तार्किक परम्पराकेँ एकर सबसँ सटीक विश्लेषणात्मक शब्दावली प्रदान केलक; ई न्यायक प्रभावकेँ व्याकरण, न्यायशास्त्र, चिकित्सा, आ सौन्दर्यशास्त्र सहित संस्कृत विद्याक प्रत्येक शाखामे विस्तारित केलक; आ ई नव्य-न्याय विद्यालयक रचना केलक जकर टीकाकार आ उप-टीकाकार सभ दुनियाँ के कोनो सेहो परम्परामे निरन्तर व्यवस्थित दार्शनिक लेखनक सबसँ विशाल निकायसभमे सँ एक अछि।

मिथिलामे जन्मल, पण्डित गिरीश्वरक पुत्र, संस्कारिक नाम गङ्गेश्वर आ दैनिक नाम गङ्गेश धारण करबैवाला, न्याय, मीमांसा, आ धर्मशास्त्रमे निपुणता लेल ही आरक्षित परम्परा द्वारा महामहोपाध्यायक उपाधि सँ सम्मानित, हरिसिंहदेव (करणाट राजासभमे सबसँ सांस्कृतिक रूपसँ प्रतिभाशाली) क शासनकालमे सक्रिय, आ संभवतः चादना/चाजं गाममे रहल जे अखन मुजफ्फरपुर जिलामे तुर्की स्टेशनक नजदीक अछि — ई जीवनी रूपरेखा अछि जे पंजी अभिलेख, तत्त्व-चिन्तामणिक आन्तरिक साक्ष्य, आ दिनांकित समकालीनसभक बाह्य साक्ष्यक संयुक्त गवाही सँ उभरैत अछि।

जीवनी-साक्ष्यक विस्तृत टिप्पणी

लेखकक वास्तविक नाम

लेखकक वास्तविक नाम की छल? उत्तर अछि जे औपचारिक वा कर्मकांडी नाम गङ्गेश्वर छल, जखनकि दैनिक वा व्यावहारिक नाम गङ्गेश। ई दू प्रकारक साक्ष्यद्वारा निर्णायक रूपेँ स्थापित अछि। प्रथमतः, गङ्गेश स्वयं तत्त्वचिन्तामणिक मङ्गलाचरण (आह्वान श्लोक) मे प्रथम पुरुषमे 'गङ्गेश-स्तुते मितेन वचसे श्री-तत्त्व चिन्तामणिम्' लिखैत छथि — 'गङ्गेश' नामक उपयोग करैत। द्वितीयतः, हुनकर पुत्र आ प्राथमिक शिष्य वर्धमान, किरणावली-प्रकाश मे, अपन पिता आ गुरुक रूपमे स्पष्टतः 'गङ्गेश्वर' क नमन करैत छथि: 'न्यायाम्भोज-पतंगाय मीमांसा-पारदृश्वने / गङ्गेश्वराय गुरवे पित्रे भवते नमः।' एही नाम 'गङ्गेश्वर' कुसुमाञ्जलि-प्रकाश मे भी आउत छैक।

पञ्जी वंशावली अभिलेख दुनू नामसभकेँ समान जीवनी-स्थलसभ आ संबंधसभसँ जोड़ैत छथि, आ एही स्थान 'चादन' ग्रामकेँ पञ्जी-प्रबंधमे 'चादनं तत्त्वचिन्तामणि-कारक महामहोपाध्याय परमगुरुः गङ्गेश्वरः' क रूपमे उद्धृत कएल गेल अछि।

जन्मस्थान

गङ्गेशक जन्मस्थान प्रश्न बहुत शैक्षणिक विवाद उत्पन्न केने अछि। विभिन्न विद्वानसभ विभिन्न ग्रामसभक प्रस्ताव केलनि: (१) मंगरौनी (वा मंगलवानी), मधुबनी मंडलक एक ग्राम; (२) किर्यन (किरियं सेहो), दरभंगासँ १२ मील दक्षिण-पूर्वमे; (३) चकौटी; आ (४) छाजं (ऐतिहासिक छादन), अखन मुजफ्फरपुर जिलामे तुर्की रेलवे स्टेशनक निकट। पञ्जी अभिलेख, एहि प्रश्नसभ लेल जिनकर साक्ष्य सर्वाधिक प्रामाणिक अछि, निरंतर गङ्गेशकेँ 'छादन-संभूत' — छादन/छाजंक मूल निवासी — वर्णित करैत छथि।

तिब्बती यात्री धर्मस्वामी, जे कर्णाट राजा रामसिंहदेवक शासनकाल (१२३४ ई.) मे मिथिला आएल छलाह, 'तो-कि' नामक एक स्थानिता उल्लेख केलनि जाहिक निकट जैन आ बौद्ध अनुयायी प्रचुर संख्यामे छल — ई 'तो-कि' वर्तमान 'तुर्की' सँ अभिन्न मानल जाइत अछि, जाहिक निकट गङ्गेशक छाजं ग्राम अवस्थित अछि।

गोत्र आ परिवार

गङ्गेशक गोत्र काश्यपगोत्रीय अछि। पञ्जी प्रणालीमे हुनकर 'मूल' (पूर्वज-ग्राम-संबंध) 'सिरिसबे-छादन' छल — अर्थात् ओ सिरिसब मूलक, विशेषतः हुनकर छादन शाखासँ संबंधित छलाह। पञ्जी अभिलेख हुनका 'सिरिसबे-छादन मूल' काश्यपगोत्रीय क रूपमे अभिलेखित करैत अछि। हुनकर पिताक नाम गीरीश्वर उपाध्याय छल, जिनकर मृत्यु गङ्गेशक जन्मसँ पाँच वर्ष पूर्व भेल छल।

किछु पञ्जी अभिलेखमे देखल जाइत अछि जे हुनकर औपचारिक नाम गङ्गेश्वर आ प्रचलित नाम गङ्गेश छल। हुनकर दू पत्नी छलनि: प्रथमासँ एक कन्या आ ज्येष्ठ पुत्र वर्धमान; द्वितीयासँ पुत्र सूपन आ हर। पञ्जी साक्ष्य ई भी स्थापित करैत अछि जे वर्धमानक कन्याक विवाह शाण्डिल्य-गोत्रीय खंडवाला-मूल (विश्वनाथ-सुत शिवनाथक वंशमे), वर्धमानक पुत्र चंद्रक-बलभद्र-शोभाक विवाह छादन-संभूत परिवारसभसँ, सूपनक कन्याक विवाह जिजिवाल-मूल शाण्डिल्य-गोत्रीयमे, आ सूपनक स्वयं विवाह भंडारीसमय मूलमे भेल।

भाग २ · ज्ञानमीमांसाक विस्तृत परीक्षण

ज्ञानमीमांसीय आवश्यकतासभ, ओहि संयम, वैध ज्ञानक प्रकृति आ शर्तसभक अलावा कोनो चीज पर चर्चा करबाक ओ इनकार, ओहि चीज छल जे तत्त्व-चिन्तामणिकेँ एकर विश्व-परिवर्तनकारी शक्ति देलक। नव्य-न्याय विद्यालय जे शुरू केलक / भारतीय दार्शनिक परम्पराकेँ विचारक सटीकता आ तर्कक कठोरतामे प्रशिक्षित केलक, जे 'बुद्धि आ प्रतिभाक कसौटी, सोनाक कसौटी' क रूपमे कार्य करैत अछि। गङ्गेश मिथिलाक, भारतक, आ विश्वक दार्शनिक धरोहरक अछि।

विदेह पत्रिकाक मिथिलाक बौद्धिक आ साहित्यिक धरोहरक चालू डिजिटल संरक्षण — पंजी अभिलेख सँ जे गङ्गेशक गाम, गोत्र, आ परिवार तक अंकित करैत अछि, समकालीन मैथिली रचनात्मक लेखन धरि जे ओ सभ्यताक निरन्तरता रखैत अछि जे हुनका परिभाषित करबामे सहायक छल — वास्तविक अर्थमे, ओ परम्पराक जीवित संस्थागत उत्तराधिकारी अछि जे हुनका मूर्त रूप देनए छल। ई विद्यापति सँ दलित महिला कविता धरि ग्रन्थसभक अभिलेख करैत अछि, ओ ओही सभ्यतागत प्रतिबद्धता केँ आगा ले जाबैत अछि जे कठोर विचार आ अभिव्यक्तिपूर्ण स्वतंत्रता केँ उत्पादन केनए छल, जे सात शताब्दी पहिने, विश्व दर्शनक उत्कृष्ट कृतिसभमे सँ एक उत्पादन केनए छल।

ज्ञानमीमांसीय योगदान

वैध ज्ञानक प्रकृति (प्रमा)

गङ्गेशक ज्ञानमीमांसा प्रमाक परिभाषा सँ शुरुआत करैत अछि: वैध ज्ञान अर्थात् चीजक जेना अछि, वैसा ज्ञान — विशेष रूपसँ, एकटा सार्वभौमिक प्रकृतिक वास्तविक रूपसँ अपन कर्ता विषयमे निवास करबाक ज्ञान। चाँदीक एक टुकड़ा के चाँदी जानबा वैध ज्ञान अछि किएक "चाँदीपन" वास्तविक रूपसँ ओहि व्यक्तिगत चाँदीमे अपन विषयक रूपमे निवास करैत अछि। एहि विपरीत, शुक्ति (सीप) के चाँदी समझबा अप्रमा (अवैध ज्ञान या अन्यथा-ख्याति, "चीजक एकरा सँ भिन्न ज्ञान") अछि, किएक चाँदीपन शुक्तिमे निवास नै करैत अछि।

गङ्गेश ओहि दृष्टिकोण केँ आगा बढ़ाबैत अछि जे समकालीन पश्चिमी दर्शन विश्वसनीयतावादी (रिलायबिलिस्ट), वास्तवमे अपूरणीय-बाह्यवादी (इनफैलिबिलिस्ट-एक्सटर्नलिस्ट) क रूपमे पहिचान करत — वास्तविक ज्ञान स्रोत (प्रमाण) कभी गुमराह नै करैत अछि। केवल छद्म-स्रोत (प्रमाणाभास) करैत अछि। स्रोत आपु स्वयं — प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, शब्द — तथ्यात्मक रूपसँ परिभाषित अछि; भ्रम आ त्रुटि वास्तविक स्रोत सँ नै, बल्कि ओहि चीज सँ उत्पन्न होइत अछि जे एकर भेस धरैत अछि। ई गङ्गेशकेँ दुनू कायम राखबाक अनुमति देबैत अछि: भ्रमणशीलता (हम कोनो सेहो अवसर पर गलत होए सकैत छी) आ स्रोत-अपूरणीयता (वास्तविक स्रोत, जखन संचालनमे अछि, सदा सत्य देबैत अछि) ।

प्रमाणीकरण: परतः-प्रामाण्य (बाह्य वैधता)

भारतीय ज्ञानमीमांसामे एक केन्द्रीय बहस अछि जे ज्ञानक वैधता स्वयं-प्रमाणित (स्वतः-प्रामाण्य, जेना मीमांसक मानैत छल) होइत अछि या बाह्य प्रमाणीकरण (परतः-प्रामाण्य) के आवश्यकता होइत अछि। गङ्गेश बादक लेल तर्क करैत अछि। एकटा बोध (अनुभव) प्राथमिक रूपसँ वैध मानल जाइत अछि — हम स्वाभाविक रूपसँ आ स्वतः हमरा सँ प्रस्तुत नव सूचना सत्य मानि लैत छी — मुदा प्राथमिकता केँ खण्डन कएल जा सकैत अछि आ संदेहक मामलामे, ज्ञान स्रोतक पहिचान या कार्यमे व्यावहारिक सफलता द्वारा आगा अनुमानात्मक प्रमाणीकरणक आवश्यकता होइत अछि। मीमांसक दावा जे बोध आपु स्वयं प्रमाणित अछि, गङ्गेश तर्क करैत अछि, संदेहक घटनात्मक वास्तविकता केँ खाता नै करि सकैत अछि: यदि प्रत्येक बोध आपु स्वयं अन्तर्निहित रूपसँ उत्पन्न भेला पर सत्य प्रमाणित होएत, तऽ हम कभी एकटा यथार्थ प्रत्यक्ष पर संदेह नै करि सकैत, मुदा हम स्पष्ट रूपसँ करैत छी।

प्रत्यक्षक परिभाषा

गङ्गेशक प्रत्यक्षक परिभाषा अक्षपादक न्याय-सूत्रक मूल सूत्रीकरण पर निर्माण करैत अछि मुदा पर्याप्त रूपसँ परिष्कृत करैत अछि। स्वीकृत परिभाषा (इन्द्रियक एकर वस्तु सँ समागम सँ उत्पन्न ज्ञान, अव्यभिचारी, या तऽ चिंतनशील या अचिंतनशील होएबाक) क विरुद्ध, गङ्गेश तर्क करैत अछि जे ई दुनू बहुत व्यापक अछि (स्मृति आ आत्माक अनुमान शामिल करैत अछि) आ बहुत संकीर्ण अछि (ईश्वरक प्रत्यक्ष बहिष्कृत करैत अछि) । हुनकर पसंदीदा विशेषता अछि: प्रत्यक्ष एकटा अपरोक्ष ज्ञान अछि जकर नैमित्तिक कारण कोनो अन्य ज्ञान नै अछि। ई एकरा अनुमान (जकर नैमित्तिक कारण आधारसभ पर विचार अछि) आ शब्द (जकर नैमित्तिक कारण कथनक बोध अछि) सँ अलग करैत अछि।

सामान्य आ अतीन्द्रिय प्रत्यक्ष

न्याय परम्पराक अनुसरण करैत, गङ्गेश इन्द्रिय आ एकर वस्तुक बीच प्रत्यक्ष समागमक दुई व्यापक श्रेणीसभक अन्तर करैत अछि। सामान्य समागम (लौकिक-सन्निकर्ष) छहि तरह सँ होइत अछि: (१) संयोग — आँखि क घड़ा सँ मिलन; (२) संयुक्त-समवाय — आँखि आ घड़ाक रंग; (३) संयुक्त-समवेत-समवाय — आँखि आ रंग-जाति; (४) समवाय — कान आ आकाशमे निहित शब्द; (५) समवेत-समवाय — कान आ शब्दक जाति शब्दत्व; (६) विशेषणता — आँखि आ फर्श पर घड़ाक अभाव।

अतीन्द्रिय समागम (अलौकिक-सन्निकर्ष) के तीन रूप अछि: (१) सामान्य-लक्षण — धुएँक सार्वभौमिक प्रकृति आ एहि प्रकारे सभ समय आ सभ स्थान पर धुएँक सभ मामलासभक प्रत्यक्ष करबा; (२) ज्ञान-लक्षण — "अप्रत्यक्ष प्रत्यक्ष" जे पश्चिमी मनोविज्ञानमे मान्य अछि, जेना जखन चन्दन देखि हम स्मरण सक्रिय भेला द्वारा सुगन्ध कैँ प्रत्यक्ष करैत छी; (३) योगज — उन्नत तपस्वीसभक प्रत्यक्ष शक्ति।

गङ्गेशक सबसँ दार्शनिक रूपसँ परिष्कृत योगदानसभमे सँ एक निर्विकल्पक (अनिश्चित, अचिंतनशील) आ सविकल्पक (निश्चित, चिंतनशील) प्रत्यक्षक बीच अन्तर सँ सम्बन्धित अछि। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष पहिल, अतीन्द्रिय, अवधारणा-मुक्त क्षण अछि जाहिमे एकटा विषय आ एकर सार्वभौमिक प्रकृति अलग-अलग रूपमे पंजीकृत होइत अछि, ओ जुड़बा सँ पहिने — "केवल घड़ा" या "केवल घटत्व" बिना कोनो सम्बन्धात्मक विशिष्टताक। सविकल्पक प्रत्यक्ष बादक, अवधारणा-युक्त, एकटा विशेष्य क एकटा विशेषण द्वारा जागरूकता अछि: "ई घड़ा अछि," जतय घटत्व ई के विधेय कएल गेल अछि।

गङ्गेश एकटा प्रसिद्ध विचार प्रयोगक प्रयोग करैत अछि: एकटा बच्चा जे पहिल बेर गाय सँ सामना करैत अछि, ओ तर्क करैत अछि, विशेषणक एकटा निर्विकल्पक बोध द्वारा गोत्व कैँ समझि सकैत अछि आ सही रूपसँ कहि सकैत अछि "ओ गाय अछि," बिना पूर्व गाय-अनुभवक। ई समस्या कैँ समाधान करैत अछि जे काति अवधारणा बिना पूर्व अवधारणा-धारणा पूर्वकल्पित कए प्रत्यक्षमे उत्पन्न होए सकैत अछि — एकटा समस्या जे विश्लेषणात्मक ज्ञानमीमांसा "गैर-दोक्सास्टिक" या "गैर-असर्टिव" प्रत्यक्ष अवस्थासभक धारणा द्वारा संबोधित करैत अछि।

गङ्गेशक अनुव्यवसायक सिद्धान्त — एकटा प्रत्यक्ष जे पूर्ववर्ती बोध कैँ अपन वस्तुक रूपमे लैत अछि — हुनकर उत्तर अछि प्रश्नक जे काति कोनो जानैत अछि जे ओ का जानैत अछि। ओ तर्क करैत अछि जे एहि प्रकारक आत्म-निर्देशित प्रत्यक्ष विस्तारित बोधक आशयात्मक सामग्री (विषयता) क सम्बन्धमे अचूक अछि, यद्यपि एकर सत्यताक सम्बन्धमे नै। एकटा प्रत्यक्ष जागरूकता कैँ अनुभव करि आ एकरा प्रत्यक्ष (अनुमानात्मक या स्मृतिपरकक बजाय) क रूपमे पहिचान करि, विषय प्रमाणीकरण या प्रश्न करबाक लेल एकटा सुरक्षित आधार प्राप्त करैत अछि। ई सिद्धान्त गङ्गेशक ज्ञानमीमांसा कैँ आत्मनिरीक्षण, द्वितीय-क्रम ज्ञान, आ आत्म-चेतना पर पश्चिमी चर्चाक साथ उत्पादक संवादमे रखैत अछि।

अनुमानक सिद्धान्त (अनुमान)

अविनाभाव सम्बन्ध (व्याप्ति)

अनुमान सिद्धान्तमे गङ्गेशक सबसँ बड़ उपलब्धि व्याप्ति (अविनाभाव सम्बन्ध, अक्सर "व्याप्ति" या "प्राकृतिक अन्तर्निहितता" क रूपमे अनुवादित) क एकर निर्णायक परिभाषा अछि। एकटा व्याप्ति एकटा अनुमान कैँ आधार देबैत अछि: जे धुआँ आगि कैँ व्याप्त करैत अछि (जतय धुआँ अछि, ततय आगि अछि) पहाड़ पर देखल धुआँ सँ ओहि पहाड़ पर आगिक अनुमान कैँ अधिकृत करैत अछि। चुनौती अछि व्याप्ति कैँ एहि प्रकारे परिभाषित करबाक जे (१) साधारण अनुमानसभक संभालि सकए, (२) विशेष रूपसँ सकारात्मक अनुमानसभ कैँ शामिल करए जतय साध्यक कोनो नकारात्मक उदाहरण नै अछि, आ (३) उपाधि (सशर्त मध्य पद) क समस्या सँ बचए।

चौबीस पूर्व परिभाषासभक (जाहिमे "सिंह" आ "व्याघ्र" क उपाधिसभ तहत आगा बढ़ाएल गेल सभ शामिल अछि — सिंह-व्याघ्रोक्त-व्याप्तिलक्षण) जाँच आ अस्वीकार करबाक बाद, गङ्गेश अपन सिद्धान्त-लक्षण (अन्तिम परिभाषा) पर पहुँचैत अछि: व्याप्ति अर्थात् हेतु (हेतु) आ साध्य (साध्य) क सह-अस्तित्व जे ओहि निरपेक्ष अभावक प्रतियोगिताक प्रकृति सँ योग्य नै अछि जे (क) हेतु क समान आश्रयमे रहैत अछि, मुदा (ख) ओहि प्रतियोगी क सम्बन्धमे भिन्न आश्रयमे रहैत अछि। विद्याभूषणक परिचय एहि विस्तृत द्वन्द्वशास्त्रक एकटा सुलभ सारांश प्रदान करैत अछि, जे प्रसिद्ध वृत्ताकार आरेखसभ धुआँ-आगि, अभिधेय-ज्ञेय, वृक्ष-वानर, आ दोसरसभ सहित पूरा अछि, जे क्रमिक अस्थायी आ अन्तिम परिभाषासभक उदाहरण दैत अछि।

न्याय (सिलोजिज्म) आ परार्थानुमान

गङ्गेश अनुमानक दुई विधाक अन्तर्गत विश्लेषण करैत अछि। स्वार्थानुमान (स्व-लेल अनुमान) ओ संज्ञानात्मक प्रक्रिया अछि जाहि द्वारा कोनो व्यक्ति अनुमानात्मक ज्ञान पर पहुँचैत अछि: रसोईघर आ यज्ञशालामे धुआँ कैँ आगि क साथ बार-बार सह-उपस्थित देखि, कोनो व्यक्ति पहाड़ पर धुआँ देखैत अछि, व्याप्ति कैँ स्मरण करैत अछि, आ ज्ञान पर पहुँचैत अछि जे पहाड़ आगि सँभरल अछि। प्रमुख मानसिक घटना अछि परामर्श — चिह्न पर विचार, ज्ञान जे "धुआँ, जे आगि क साथ अविनाभाव सम्बन्धमे अछि, एहि पहाड़ मे निवास करैत अछि।" ई अनुमिति (अनुमानात्मक निष्कर्ष) क कारण अछि।

परार्थानुमान (दोसर-लेल अनुमान) पाँच-अवयवी न्याय (सिलोजिज्म) द्वारा अपन अनुमानक प्रदर्शन अछि: (१) प्रतिज्ञा (प्रस्ताव) — "ई पहाड़ आगि सँ भरल अछि"; (२) हेतु (कारण) — "किएक ई धुआँ सँ भरल अछि"; (३) उदाहरणम (उदाहरण) — "जे किछु धुआँ अछि, ओकरा आगि अछि, जेना रसोईघर"; (४) उपनय (अनुप्रयोग) — "ई पहाड़ सेहो धुआँ अछि"; (५) निगमनम् (निष्कर्ष) — "एहि कारण ई पहाड़ आगि सँ भरल अछि।" न्याय श्रोतामे "चिह्न पर विचार" (परामर्श) उत्पन्न करैत अछि जे हुनकर अनुमानात्मक ज्ञानमे परिणत होइत अछि।

हेत्वाभास (हेत्वाभास)

गङ्गेशक हेत्वाभास (हेत्वाभास, शाब्दिक अर्थ "कारणक आभास") क विश्लेषण, विद्याभूषण द्वारा उद्धृत विद्वानक शब्दमे, "बौद्धिक उपलब्धिक क्षेत्रमे विश्वक एक आश्चर्य" अछि। दोषपूर्ण हेतुक पाँच प्रकारक पहिचान कएल गेल अछि: (१) सव्यभिचार (अनियमितया विचलित) — एकटा हेतु जे सपक्ष (सजातीय) आ विपक्ष (विजातीय) दुनू उदाहरणसभमे होइत अछि; (२) विरुद्ध (विरोधी) — एकटा हेतु जे साध्यक विपरीत साबित करैत अछि; (३) सत्प्रतिपक्षित (समान-बलक प्रतिहेतु द्वारा सन्तुलित) — एकटा हेतु जे एकटा समान बलक प्रतिअनुमान द्वारा मेल खाबैत अछि; (४) असिद्ध (अस्थापित) — एकटा हेतु जकर आश्रय पर, अपन प्रकृतिमे, या अपन व्याप्तिमे उपस्थिति अस्थापित अछि; (५) बाधित (असंगत/पहिने सँ पराजित) — एकटा हेतु जे निष्कर्षक ओर ले जाइत अछि जे पहिने सँ ज्ञानक दोसर साधन द्वारा खण्डन कएल गेल अछि।

तकनीकी तर्क सँ परे, गङ्गेश तीन विवादास्पद अनुमान आगा बढ़ाबैत अछि। आत्मक प्रमाण (आत्मन्) केवल-व्यतिरेकी अनुमानक रूप लैत अछि: "प्रत्येक जीवित शरीरमे आत्मा अछि, किएक प्रत्येक जीवित शरीरमे प्राण अछि, घड़ा जकाँ नै।" हुनकर ईश्वरवादी अनुमान तर्क करैत अछि: "पृथ्वी आ तत्समानक एकटा सचेतन कर्ता नैमित्तिक कारणक रूपमे अछि, किएक एकरा कार्य अछि, घड़ा जकाँ, परमाणु जकाँ नै।" मुक्तिक संभावनाक प्रमाण (मुक्ति) दीपकक बुझबाक सादृश्य द्वारा एकटा जटिल अनुमान कैँ नियोजित करैत अछि, तर्क करैत अछि जे दु:ख, एकटा निरन्तर गुण होएबाक कारण जे केवल एकटा कार्यक रूपमे होइत अछि, सैद्धान्तिक रूपमे पूर्ण रूपसँ नष्ट कएल जा सकैत अछि। ई तीनु अनुमानात्मक प्रणालीक प्रदर्शनक रूपमे सेहो काम करैत अछि — उपाधि, तर्क (परिकल्पनात्मक तर्क), आ सपक्ष/विपक्ष उदाहरणक अपन विशिष्ट उपचार सहित — जेना ओ वास्तविक तात्विक या मोक्षशास्त्रीय थीसिस अछि।

उपमान (सादृश्य) क सिद्धान्त

उपमान, तुलना या सादृश्य, गङ्गेशक लेल सख्त रूपसँ ज्ञानक ओ स्रोत अछि जाहि द्वारा कोनो व्यक्ति शब्द आ एकर वाच्यक बीच सम्बन्ध सीखैत अछि। मानक उदाहरण: एकटा विषय, बताएल गेल जे गवय (बाइसन जकाँ जानवर) गाय जकाँ अछि, बादमे जङ्गलमे जानवर सँ सामना करैत अछि आ ओकरा गवयक रूपमे पहिचान करैत अछि — ई पहिचानक साधन सादृश्य ज्ञान अछि। गङ्गेश मानैत अछि जे ई ज्ञान वास्तविक रूपसँ अपरिवर्तनीय अछि: ई प्रत्यक्ष सँ अनुरेखण नै कएल जा सकैत अछि (जे वर्तमान उदाहरण सँ परे कतेक मामलासभमे धरि रहल सम्बन्ध कैँ नै देखि सकैत अछि) न अनुमान सँ (जे व्याप्तिक ज्ञानक आवश्यकता होइत अछि, मुदा एतय कोनो एहि प्रकारक व्याप्ति उपलब्ध नै अछि) । उपमानक व्यापार (संचालन) बड़कक शिक्षाप्रद उच्चारणक स्मरण अछि; एकर परिणाम (उपमिति) नाम आ नामितक सम्बन्धक ज्ञान अछि।

शब्द (शाब्दिक प्रमाण) क सिद्धान्त

भाषाक एकटा अपरिवर्तनीय प्रमाणक रूपमे

न्याय-सूत्र (१.१.७) क अनुसरण करैत, गङ्गेश स्वीकार करैत अछि जे शाब्दिक प्रमाण विश्वसनीय विशेषज्ञ (आप्त-वाक्य) क सत्य कथन अछि। योगाचार बौद्धसभक विरुद्ध जे भाषाक सत्य-योग्यताक अस्वीकार करैत छथि, आ वैशेषिकसभक विरुद्ध जे शाब्दिक ज्ञान कैँ अनुमानमे न्यूनीकृत करबाक चाहैत छथि, गङ्गेश तर्क करैत अछि जे शब्द एकटा अद्वितीय भाषाई तंत्र द्वारा काम करैत अछि।

श्रोताक ज्ञान अनुमानात्मक तर्क "ई वक्ता जानैत अछि आ सत्य बताबाक आशय रखैत अछि" सँ नै, बल्कि तुरन्त शब्दसभक एकटा सार्थक समग्रक रूपमे जुड़ल समझ सँ उत्पन्न होइत अछि — एकटा प्रक्रिया जे विश्लेषणात्मक रूपसँ प्रत्यक्ष आ अनुमान दुनू सँ अलग अछि।

शाब्दिक ज्ञानक शर्तसभ

गङ्गेश चारि वाक्यात्मक शर्तसभक पहिचान करैत अछि जे एकटा कथनक शाब्दिक ज्ञान उत्पन्न करबाक लेलपूरा होएबाक चाही: (१) आकाङ्क्षा — वाक्यात्मक अपेक्षा, प्रत्येक शब्दक दोसरक आवश्यकता एकटा जुड़ल अर्थ उत्पन्न करबाक लेल; (२) योग्यता — शब्दार्थ योग्यता, समझबाक लेल कोनो वैध अवरोधक अनुपस्थिति; (३) आसत्ति — समीपता, शब्दसभक अत्यधिक विराम बिना उच्चारण; (४) तात्पर्य — वक्ताक एकटा विशिष्ट अर्थ बताबाक आशय। गङ्गेशक नवाचार अछि लक्षणा (गौण/अप्रत्यक्ष अर्थ) क ट्रिगर कैँ पुनर्व्याख्या करबाक, नै योग्यता क उल्लंघनक रूपमे (जेना आम तौर पर मानल जाइत छल), बल्कि अन्वय (समग्र निर्माणात्मक सम्बन्ध) क उल्लंघनक रूपमे, एकटा सूक्ष्म आ अधिक सटीक मापदण्ड।

शक्ति (सामर्थ्य) आ लक्षणा (गौण अर्थ)

शब्द अध्याय एकटा समृद्ध भाषाई अर्थक सिद्धान्तमे परिणत होइत अछि। प्रत्येक शब्दमे एकटा शक्ति (सामर्थ्य) अछि — एकर वाच्य क स्मरण उत्पन्न करबाक क्षमता — जे ईश्वरक इच्छा सँ (प्राथमिक/स्थायी सामर्थ्यक लेल) या मनुष्यक इच्छा सँ (तकनीकी/आकस्मिक सामर्थ्यक लेल) प्राप्त होइत अछि। शब्दक वाच्य सदा एकटा व्यक्ति होइत अछि जे अपन सार्वभौमिक सँ योग्य, दुनू साधारण बोधमे अविभाज्य। जतय प्राथमिक वाच्य वाक्यक जुड़ल अर्थकसाथ सुसंगत नै होए सकैत अछि, ततय लक्षणा (गौण अर्थ) संचालित होइत अछि, श्रोताकैँ सम्बन्धित अर्थक ओर निर्देशित करैत अछि — जेना "गंगायां घोषः" (गंगा पर बस्ती) नदीक जलक बजाय एकर तट कैँ इंगित करैत अछि। गङ्गेशक लक्षणाक एकटा किफायती व्याख्यात्मक उपकरणक रूपमे बचाओ उन सभक विरुद्ध जे सभ गौण अर्थ कैँ प्राथमिक संदर्भ या अर्थक बहुलता मे न्यूनीकृत करबाक चाहैत छथि, तत्त्व-चिन्तामणि मे सबसँ तकनीकी रूपसँ प्रतिभाशाली तर्कसभमे सँ एक अछि।

तत्त्वमीमांसात्मक प्रतिबद्धतासभ

गङ्गेशक ज्ञानमीमांसीय परियोजना न्याय आ वैशेषिकक उदयनक संश्लेषण सँ विरासतमे प्राप्त एकटा मजबूत यथार्थवादी आन्टोलॉजीमे आधारित अछि। सात श्रेणी — द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, आ अभाव — हुनकर ज्ञान सिद्धान्तक तत्त्वमीमांसात्मक फर्नीचर प्रदान करैत अछि। ज्ञान आ अन्य मानसिक घटना वास्तविक आ अन्तर्विषयी रूपसँ ज्ञेय मानल जाइत अछि। सार्वभौमिक वास्तविक आवर्ती गुण अछि जे द्रव्य आ एकर गुण दुनू कैँ योग्य करैत अछि; समवाय ओ "तत्त्वमीमांसात्मक गोंद" अछि जे गुण आ सार्वभौमिक सभकैँ अपन आधारसभ सँ एकटा सम्बन्धमेबान्धैत अछि जे आगा विश्लेषण नै कएल जा सकैत अछि।

अभावक प्रति गङ्गेशक उपचार विशेष रूपसँ सूक्ष्म अछि। उन सभक विरुद्ध जे अभाव कैँ एकटा अलग तत्त्वमीमांसात्मक श्रेणीक रूपमे अस्वीकार करैत छथि, ओ तर्क करैत अछि जे फर्श पर घड़ाक अनुपस्थितिक हमर प्रत्यक्ष केवल फर्शक विशेषतासभ सँ व्याख्या नै कएल जा सकैत अछि — फर्श पर किछु ("अभाव" एकटा अलग विशेषक रूपमे) होएबाक चाही जे घड़ाक अनुभव करबामे हमर विफलतामे काम करैत अछि, जे प्रतियोगी अछि। अभावक दुई मुख्य प्रकार अछि: सार्वभौमिक (पूर्ववर्ती, उत्तरवर्ती, नित्य) आ इतरेतराभाव (पहिचान-आधारित) । प्रत्येकक अपन प्रत्यक्ष तंत्र आ ज्ञानमीमांसीय परिणाम अछि।

प्रभाव आ विरासत

नव्य-न्याय विद्यालय

तत्त्व-चिन्तामणि ने सभ पूर्ववर्ती न्याय साहित्य कैँ तुरन्त ग्रहण क देलक। एकर रचना क एक शताब्दीक भीतर ई भारतक मुख्य सांस्कृतिक केन्द्रसभमे अध्ययन आ टीका कएल जा रहल छल। नवद्वीप (बंगाल) परम्परा असाधारण परिष्कारक टीकाकार उत्पादन केलक —रघुनाथ शिरोमणि, जगदीश, गदाधर — जे गङ्गेशक विश्लेषणात्मक शब्दावली, विशेष रूपसँ एकर विशेषणता (विशेषणता) क सिद्धान्त आ अभावक तर्क, कैँ बीसम् शताब्दी सँ पहिने कोनो सेहो दार्शनिक परम्परामे अभूतपूर्व एकटा अमूर्त प्रतीकात्मक पथरीमे विकसित केलक। प्रभाव मीमांसा, वेदान्त, व्याकरण, धर्मशास्त्र, आ चिकित्सा धरि विस्तारित भेल, किएक विभिन्न विषयसभक विद्वान नव्य-न्यायक तकनीकी शब्दावली अपनाक अपन स्थितिसभ अधिक सटीकताक संगे बताबाक लागल।

मिथिला आ जीवित परम्परा

मिथिलामे आपु स्वयं — आ ई विदेह पत्रिकाक लेल विशेष महत्व रखैत अछि — तत्त्व-चिन्तामणि पण्डित शिक्षाक शिखर बनल रहल। दरभंगा राज शैक्षिक संरक्षणक एकटा परम्परा बनाए रखलक जे मिथिलामे नव्य-न्याय अध्ययन कैं संरक्षित केलक, भले नवद्वीप एकर अधिक प्रसिद्ध केन्द्र बनल। पंजी प्रणाली (मैथिल ब्राह्मण परिवारक वंशावली अभिलेख), जे प्रीति ठाकुर विदेह अभिलेखक लेल ग्यारह हजार सँ अधिक ताड़पत्र अभिलेखसभक संकलन, स्क्यान, आ सूचीबद्ध केनए अछि, सीधा उन सामाजिक संरचनासभ सँ जुड़ल अछि जे उस पण्डित परम्परा कैं उत्पादन आ निरन्तरता देलक जाहिमे गङ्गेश काज केलक। विदेह अभिलेखक मैथिली आ संस्कृत पाण्डुलिपिसभक संरक्षण, जाहिमे ठक्कुर आ मिश्र सभक रचना शामिल अछि जे गङ्गेशक सर्कलक प्रत्यक्ष बौद्धिक वंशज छल, सात शताब्दी पार जीवित विद्वत्तापूर्ण सम्बन्ध बनाबैत अछि।

आधुनिक विद्वत्ता

तत्त्व-चिन्तामणि पर पश्चिमी विद्वत्ता सतीश चन्द्र विद्याभूषणक 'हिस्ट्री ऑफ इंडियन लॉजिक' (१९२१) आ कामाख्यानाथ तर्कवागीश द्वारा मथुरानाथक माथुरी टीकाक साथ सम्पादित बिब्लियोथेका इंडिका संस्करण (१८८४-१९०१) सँ गम्भीरतापूर्वक शुरू भेल। बीसम् शताब्दीमे व्यक्तिगत खण्डसभक आंशिक अनुवाद देखलक: सी. गोकूपक व्याप्ति अध्यायक अध्ययन (१९६७), बी. के. मतिलालक अभाव आ निर्विकल्पक प्रत्यक्ष पर काम, शिबजिबन भट्टाचार्यक कतेक खण्डसभक विस्तृत विश्लेषण, आ दोसर। तत्त्व-चिन्तामणिक पहिल पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद तीन खण्डमे स्टीफन एच. फिलिप्स द्वारा २०२० मे (ब्लूम्सबरी) प्रकाशित भेल, जे सम्पूर्ण ग्रन्थ कैं पहिल बेर गैर-संस्कृत पाठकसभक लेल सुलभ बना देलक।

नाम, जन्मस्थान, परिवार, आ कालक्रम

गङ्गेश या गङ्गेश्वर?

साहित्य अकादमी मोनोग्राफ निर्णायक रूपसँ स्थापित करैत अछि जे औपचारिक नाम गङ्गेश्वर आ बोलचालक नाम गङ्गेश छल — दुनू एकटे व्यक्तिके निर्देशित करैत अछि। हुनकर पुत्र वर्धमान किरणावली प्रकाशमे 'गङ्गेश्वराय गुरवे पित्रे' प्रणाम करैत अछि; गङ्गेश आपु स्वयं तत्त्वचिन्तामणिक आशीर्वचन श्लोकमे 'गङ्गेश-स्तुते मितेन वचसे श्री-तत्त्व-चिन्तामणिम्' लिखैत अछि। पंजी अभिलेख हुनका 'तत्त्व-चिन्तामणि-कारक महामहोपाध्याय परमगुरुः गङ्गेश्वरः' क रूपमे वर्णन करैत अछि।

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया पुष्टि करैत अछि: 'गङ्गेश मिथिलाक मूल निवासी छल। देखाबैत अछि जे हुनकर जन्म आ पालन-पोषण चादना नामक गाममे भेल, जे अब पहिचान योग्य नै अछि, मुदा ओ बादक जीवनमे करिओनमे रहल, जे उदयनक गाम छल, दरभंगा सँ लगभग बारह माइल दक्षिण-पूर्व। ओ काश्यप गोत्र सँ सम्बन्ध रखैत छल। परम्परा अछि जे हुनकर कतेक पत्नी, तीन पुत्र आ एकटा बेटी छल। पुत्रसभमे सँ एक वर्धमान छल। परस्पर विरोधी परम्परा कहैत अछि जेगङ्गेश या तऽ (क) एकटा महान प्रतिभाशाली छल या (ख) एकटा अनपढ़ बच्चा छल।'

समानांतर इतिहासक पुनःप्राप्तिः दमित पंजी साक्ष्य

मैथिली साहित्यक समानांतर इतिहास — जेना विदेह आन्दोलन आ गजेन्द्र ठाकुर द्वारा प्रलेखित — गङ्गेशक जीवनीक एकटा आयाम प्रकट करैत अछि जे संस्थागत इतिहासकार द्वारा जानबूझि दमन कएल गेल छल। पंजी प्रणाली, जे १४म् शताब्दीमे हरिसिंहदेवक अधीन स्थापित भेल, मैथिल ब्राह्मणक वंशावली अभिलेखन पद्धति अछि। जखन विदेह आन्दोलन २००९ मे दूषण पंजी अभिलेख अङ्कीकृत आ जारी केलक, तखन ओ उजागर केलक जे समानांतर इतिहास 'गङ्गेश उपाध्यायक विरासतक सम्मान-हत्या' कहैत अछि।

मूल पंजी अभिलेख प्रकट करैत अछि जे गङ्गेश उपाध्याय एकटा चर्मकारिणी — चमड़ा सिझावै वाली जातिक महिला — सँ विवाह केनए छल आ ई जे हुनकर पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म भेल छल। ई तथ्य, जे गङ्गेशक एकटा अविवाद्य ब्राह्मण रूढ़िवादिताक व्यक्ति क रूपमे चित्र कैं जटिल बनाबैत अछि, रामानाथ झा (साहित्य अकादमीमे मैथिलीक पहिल संयोजक) द्वारा दमन कएल गेल छल जखन ओ इतिहासकार दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य कैं जीवनी सूचना संप्रेषित केलक। साहित्य अकादमीक २०१६ मोनोग्राफ गङ्गेश पर, समानांतर इतिहास नोट करैत अछि, ई दमन कैं कायम राखलक। समानांतर इतिहास एहि प्रकारे गङ्गेश कैं ब्राह्मण्य विद्वत्ताक एकटा स्मारकक रूपमे नै, बल्कि एकटा व्यक्तिक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि जे, तत्त्वचिन्तामणिक अपन द्वन्द्वशास्त्रीय पद्धति जकाँ, हुनका पर लागू प्रत्येक धारणा कैं चुनौती देबैत अछि।

एहि जीवनी पुनःप्राप्तिक गहन प्रभाव अछि। पंजी प्रणाली आपु स्वयं जाति नियन्त्रणक एकटा साधन छल — तथापि एकर अपन अभिलेख, जखन जारी भेल, ओ जाति शुद्धता कथा कैँ कमजोर करैत अछि जे एकरा बनाए रखबाक लेल डिजाइन कएल गेल छल। गङ्गेश, जे दार्शनिक जे आग्रह करैत छल जे प्रत्येक परिभाषाकैँ एकर सभ संभावित प्रतिउदाहरणसभक विरुद्ध परीक्षण कएल जाए, समानांतर इतिहासमे एकटा व्यक्ति बनि जाइत अछि जकर जीवन आपु स्वयं जाति विचारधारा कैँ एकटा प्रतिउदाहरण अछि जे बादमे हुनका दावा केलक। जेना शार्फस्टाइन नव्य-न्याय पद्धति क बारेमे अवलोकन केनए छल: 'ओ आ हुनकर अनुयायी परिभाषासभ रचना करैत छथि जे मन कैँ फैलाबैत अछि आ सटीक आलोचना कैँ आमन्त्रित करैत अछि' — ओही आलोचनात्मक भावना जे हुनकर तर्क कैँ सजीव केलक, हुनकर सामाजिक अस्तित्व कैँ सेहो सजीव केलक, यदि पंजी साक्ष्य स्वीकार कएल जाए।

कालक्रम

पॉटर इन्साइक्लोपीडियाक आधिकारिक मूल्यांकन गङ्गेशक तिथि फ्लोरुइट १३२० ई. निर्धारित करैत अछि। प्रमुख पाण्डुलिपि साक्ष्य: वर्धमानक कुसुमाञ्जलिप्रकाशक एकटा प्रति बचल अछि 'शिलालेखीय साक्ष्य पर १३००-१३६० क अवधि सँ उत्पन्न' बताएल गेल; गङ्गेश श्रीहर्षक खण्डनखण्डखाद्य उद्धृत करैत अछि, आ श्रीहर्ष निश्चित रूपसँ १२३३ सँ पूर्व अछि। शाक १३१० (१३८८ ई.) मे संकलित पंजी अभिलेख हुनका 'तत्त्वचिन्तामणिकारक' क विशेषण सँ पहिचान करैत अछि — तत्त्वचिन्तामणिक निर्माता। साहित्य अकादमी मोनोग्राफ १२७०-१३७० ई. क एक सीमा प्रदान करैत अछि; शार्फस्टाइन फ्लोरुइट १३२० ई. क प्रयोग करैत अछि। समानांतर इतिहास, गङ्गेशक पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म भेलबाक पंजी साक्ष्य कैँ उद्धृत करैत, नोट करैत अछि जे ई जीवनी विवरण हुनकर सक्रिय जीवन कैँ हरिसिंहदेव (लगभग १२९५-१३२६ ई.) क करणाट-वंश कालमे मजबूती सँ रखैत अछि।

मिथिला, करणाट वंश, आ बौद्धिक परिस्थितिकी

हरिसिंहदेव (लगभग १२९५-१३२६ ई.) क अधीन करणाट वंश गङ्गेशक जीवनक राजनीतिक ढाँचा छल। हरिसिंहदेव संस्कृत विद्याक एकटा उदार संरक्षक छल। ओ १३१० ई. मे पंजी वंशावली अभिलेख कैँ आदेश देलक; हुनकर मन्त्री चण्डेश्वर ठाकुर बहुधा लिखलक; ओ एकटा दरबार बनाए रखलक जाहिमे युगक महानतम् संस्कृत पण्डित प्रतिस्पर्धा आ सहयोग करैत छल। समानांतर इतिहास ई कैँ मिथिलाक न्याय-मीमांसा विद्याक केन्द्रक रूपमे लम्बा इतिहासक भीतर प्रासंगिक बनाबैत अछि — जे बौद्धिक राजधानी छल जे, डी. सी. भट्टाचार्य द्वारा प्रलेखित, सात शताब्दी पार गङ्गेश-पूर्ववर्ती २४ मैथिल नैयायिक उत्पादन केलक।

मुदा समानांतर इतिहास ई सेहो आग्रह करैत अछि जे ई दरबारी संस्कृति एकटा बहिष्कारी सामाजिक आधार पर निर्मित छल। ओही पंजी प्रणाली जे गङ्गेशक प्रतिभा कैँ प्रलेखित केलक, जाति अन्तर्विवाह कैँ लागू केलक आ एकर मानदण्डसभक उल्लंघन करबैवालाक वंशावली 'अयोग्यता' अंकित केलक। गङ्गेशक अपन अन्तर्जातीय विवाहक दूषण पंजी सँ पुनःप्राप्ति एहि प्रकारे दुगुना महत्वपूर्ण अछि: ई पंजी कैँ एकटा साधनक रूपमे देखाबैत अछि जे उन सभक बारेमे विध्वंसकारीतथ्य दुनू दबा सकैत छल आ अनजानेमे संरक्षित सेहो करि सकैत छल जे ओ उत्सव मनाबैक दावा करैत छल।

तत्त्वचिन्तामणि — संरचना, नवीनता, आ नव्य-न्याय प्रणाली

तत्त्वचिन्तामणि आ नव्य-न्यायक प्रकृति

संरचना आ दायरा

वी. पी. भट्टक प्रस्तावना भारतीय बौद्धिक इतिहासमे तत्त्वचिन्तामणिक स्थानक एकटा स्पष्ट विवरण प्रदान करैत अछि: 'तत्त्व चिन्तामणि (टी. सी.) क रचना मिथिलाक गङ्गेशोपाध्याय द्वारा तेरहम् शताब्दी ई. मे केल गेल छल। ई भारतीय ज्ञान आ तर्क सिद्धान्तक विकासमे एकटा नव युगक शुरुआत केलक आ नव्य-न्याय पर विभिन्न ग्रन्थसभमे पहिल कृति मानल जाइत अछि। ई चारि पुस्तकसभमे विभाजित अछि, अर्थात् प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द आ नव्य-न्यायक षोडश श्रेणीसभकैँ चारि शीर्षकसभक तहत लेलक।' केवल प्रत्यक्ष-खण्ड, जेना भट्टक अनुवाद प्रकट करैत अछि, १३ प्रमुख प्रकरण (उप-खण्ड) अछि: मङ्गलवाद, प्रामाण्यवाद, प्रमालक्षण, अप्रमावाद, प्रत्यक्षवाद, समवायवाद/सन्निकर्षवाद, अनुपलब्धिवाद, अभाववाद, प्रत्यक्षकारणवाद, मनोऽणुत्ववाद, प्रत्यभिज्ञावाद/अनुव्यवसायवाद, निर्विकल्पकवाद, आ सविकल्पकवाद। ई तेरहम् शताब्दी-वाला कालनिर्धारण वी. पी. भट्टक प्रस्तावनाक स्रोत-मत रूपमे उद्धृत अछि; एहि ग्रन्थक समेकित कालक्रम गङ्गेशक सक्रिय काल (floruit) लगभग १३२० ई. मानैत अछि, जकरा हरिसिंहदेवक शासनकाल आ पञ्जी-साक्ष्यक समानान्तर पाठसँ जोड़ि देखल गेल अछि।

पॉटर-भट्टाचार्य इन्साइक्लोपीडिया नवाचार कैँ चित्रित करैत अछि: 'नव्यन्याय वास्तवमे बोधक एकटा तर्क अछि।' अपन चिन्ता कैँ केवल प्रमाण (ज्ञानक वैध स्रोत) धरि सीमित करि आ पहिनेक न्याय ग्रन्थसभक सभ-श्रेणी ढाँचाकैँ त्यागि, तत्त्वचिन्तामणि अभूतपूर्व

विश्लेषणात्मक सटीकता प्राप्त केलक। संस्कृत शब्द ज्ञान, जे 'जागरूकता' क रूपमे अनुवादित अछि, केवल प्रस्तावनात्मक कृत्यसभ नै, बल्कि सचेतन आकलनक कोनो सेहो अवस्था कें दर्शाबैत अछि। एकटा ज्ञान सदा एकटा प्रासंगिक घटना अछि — किछु जे एकटा समयमे होइत अछि — कभी एकटा संवेगात्मक विश्वास नै अछि। संवेगक लेल संगत शब्द अछि संस्कार: अचेतन स्मृति-निशान जे, जखन सक्रिय होइत अछि, सचेतन स्मरण उत्पन्न करैत अछि।

पद्धतिः ई अध्ययन किएक करब?

भट्ट शैक्षणिक आवश्यकता पर जोर देबैत छथि: 'एहि कारण, ई आवश्यक अछि जे दर्शनक छात्र आ विद्वान दर्शनक सिद्धान्तसभक जटिलतासभ समझबाक लेल नव्य-न्याय पद्धतिक तर्क सँ परिचित होएब... एहिकारण, टी. सी. क अध्ययन केवल एकर सामग्रीक लेल नै, बल्कि एकर पद्धतिक लेल सेहो आवश्यक अछि।' पद्धति पर ई आग्रह आपु स्वयं दार्शनिक रूपसँ महत्वपूर्ण अछि। तत्त्वचिन्तामणि केवल निष्कर्ष पर नै पहुँचैत अछि — ई निष्कर्ष पर पहुँचबाक एकटा तरीका प्रदर्शित करैत अछि जे अगला पाँच शताब्दी धरि संस्कृत दर्शनमे बौद्धिक कठोरताक मानक बनल।

शार्फस्टाइन, अपन तुलनात्मक मूल्यांकनमे, केन्द्रीय पद्धतिगत विशेषता कें पहिचान करैत अछि: 'गङ्गेश दर्शन कें एकटा विशिष्ट भाषामे निपुण व्यक्तिसभक निस्संदेह क्षेत्र बना देबैत अछि। ओ आ हुनकर अनुयायी परिभाषासभ रचना करैत छथि जे मन कें फैलाबैत अछि आ सटीक आलोचना कें आमन्त्रित करैत अछि, मुदा केवल उन सभक लेल जे प्रासंगिक तकनीकी शब्द आ तर्क पद्धतिसभमे निपुण भऽ गेल अछि।' आ तथापि, जेना समानांतर इतिहास हमरा याद दिलाबैत अछि, पद्धतिक ई विशिष्टता आपु स्वयं जाति बहिष्कारक एकटा साधन बनल — एकटा भाषा जे केवल उन सभक लेल सुलभ छल जिनका पण्डित प्रशिक्षणक वर्ष अर्जित करबाक लेल सामाजिक पूंजी छल।

ज्ञानमीमांसा — ज्ञान, वैधता, आ त्रुटि

ज्ञानक प्रकृति (ज्ञान) – एकटा व्यापक तुलनात्मक विवरण

विद्यालयसभक बीच ज्ञानः भट्टक परिचय

वी. पी. भट्टक प्रत्यक्ष खण्ड अनुवादक सामान्य परिचय कोनो एकल अंग्रेजी स्रोतमे उपलब्ध भारतीय ज्ञान सिद्धान्तसभक सबसँ व्यवस्थित तुलनात्मक सर्वेक्षण प्रदान करैत अछि। ई सबसँ मूलभूत प्रश्न सँ शुरुआत करैत अछि: ज्ञान का अछि?

ज्ञान (ज्ञान), भट्ट समझाबैत छथि, न्याय सूत्र (१.१.१५) आ वैशेषिक सूत्र (८.२) मे बुद्धि (बोध) के अर्थ होइत अछि; वैध ज्ञान एकटा विशेष प्रकारक बोध (बुद्धि विशेष) अछि। न्यायमे ज्ञान बोध या आकलनक गठन करैत अछि आ वस्तुक प्रकाशन (अर्थ प्रकाश) मे समाविष्ट अछि। नैयायिक प्रतिस्पर्धी विवरणसभ कें अस्वीकार करैत छथि: बौद्ध आ मीमांसकक विरुद्ध जे ज्ञान कें एकटा क्रिया (क्रिया) मानैत छथि, न्याय तर्क करैत अछि जे गतिविधि सिद्धान्त 'ज्ञान आ क्रिया क्रिया क जानबाक क्रिया क बीच भ्रम सँ उत्पन्न होइत अछि।' सांख्य आ योग प्रणालीक विरुद्ध जे ज्ञान कें बुद्धि (बुद्धि) क एकटा परिणाम (परिणाम) मानैत छथि, न्यायआपत्ति करैत अछि जे केवल आत्मा — नै अबुद्धि मन-सिद्धान्त — ज्ञानक आधार होए सकैत अछि। ज्ञान आत्माक एकटा गुण (गुण) अछि, नै एकटा क्रिया, नै बुद्धिक एकटा परिणाम।

ज्ञानक वर्गीकरण: नैयायिक ज्ञान कें मुख्य रूपसँ दुई प्रकारमे विभाजित करैत छथि — अनुभव (प्रत्यक्ष अनुभव) आ स्मृति (स्मरण) । अनुभव वस्तुसभक सीधा प्रकट करैत अछि; स्मृति वस्तुसभक सीधा प्रस्तुत कए बिना पूर्ववर्ती ज्ञानक पुनरुत्पादन अछि। अनुभव आ स्मृति दुनू वैध (प्रमा) या अवैध (अप्रमा) होए सकैत अछि, हुनकर कारणसभ पर निर्भर करि।

वैध ज्ञान (प्रमा) – मूल परिभाषा

भट्ट पूर्ण तुलनात्मक उपकरण सहित न्याय परिभाषा प्रदान करैत अछि: वैध ज्ञान (प्रमा) अर्थात् 'चीजक जेना अछि, वैसा ज्ञान' (यथार्थज्ञान) । ई एकटा वस्तुक यथार्थ अनुभव (यथार्थानुभव) अछि। वैध ज्ञान वास्तविकताक एकटा अनुभव अछि। ई एकटा निश्चित आ प्रमाणित बोध (असंदिग्ध) सेहो अछि, आ एहि कारण सन्देह, त्रुटि आ तर्क जकाँ सभ प्रकारक अवैध ज्ञान कें बहिष्कृत करैत अछि, साथे स्मृति कें सेहो।

वैध ज्ञान सत्य या अचूक ज्ञान अछि — ई एकर वस्तुक अनुभव सँ विरोधाभास नै करैत अछि (अर्थव्यभिचारिन्) । प्रसिद्ध उदाहरण: 'ई घड़ा अछि' (अयं घटः) एकटा वैध ज्ञान अछि, किएक ई घड़ाक घटत्वक गुण द्वारा चित्रित ज्ञान अछि। एहि प्रकारे, वैध ज्ञान (न्यायकोश) कें एकटा वस्तुक ज्ञानक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैत अछि जाहिमे एकर निहित गुण एकर विशेषताक रूपमे बोध

कएल जाइत अछि। वैध ज्ञानमे तीन कारक शामिल अछि: प्रमाता (विषय), प्रमेय (वस्तु), आ प्रमाण (ज्ञानक साधन) । ज्ञानक साधन (प्रमाण) ज्ञान उत्पादन करबाक विशेष कारण (असाधारण कारण) अछि — ई एकटा कार्यकारी कारण अछि जे वैध ज्ञान प्राप्त करबामे सहायक होइत अछि आ एहि कारण ज्ञानक विधि अछि।

महान विद्यालयसभक बहसः अन्तर्निहित बनाम बाह्य वैधता

भट्टक परिचयक सबसँ दार्शनिक रूपसँ समृद्ध खण्ड ज्ञानक वैधता आ अवैधताक महान अन्तःसम्प्रदायिक बहसक सर्वेक्षण करैत अछि — चाहे ई गठित आ ज्ञात अन्तर्निहित रूपसँ (स्वतः) होइत अछि या बाह्य रूपसँ (परतः) । ई सीधा गङ्गेशक अपन प्रामाण्यवाद खण्ड पर मैप करैत अछि।

सांख्य सामान्यतः स्वीकार करैत छल जे वैधता आ अवैधता दुनू अन्तर्निहित स्थितिसभ द्वारा गठित आ ज्ञात होइत अछि — ज्ञान उत्पादन करबैवाला कारणसभक समग्रता द्वारा। बौद्ध मानैत छथि जे ज्ञानमे असत्यता या अवैधता अन्तर्निहित अछि, जबकि सत्यता या वैधता बाह्य अछि। मीमांसक आ वेदान्ती स्वीकार करैत छथि जे ज्ञानक वैधता स्वयं-स्पष्ट आ अन्तर्निहित स्थितिसभ द्वारा गठित अछि, जबकि ज्ञानक अवैधता दोसरसभ द्वारा साक्ष्यित आ बाह्य स्थितिसभ द्वारा ज्ञात होइत अछि।

नैयायिक, तथापि, सामान्यतः स्वीकार करैत छथि जे दुनू बाह्य स्थितिसभ द्वारा गठित आ ज्ञात होइत अछि (परतः) । ज्ञानक वैधता आ अवैधता स्वयं-स्पष्ट नै अछि; ओ बाह्य स्थितिसभ सँ अनुमानित होएबाक चाही। सांख्य-मीमांसा अन्तर्निहित-वैधता स्थितिक न्याय उत्तर निर्णायक अछि: 'यदि वैधता एहि प्रकारे होएत, तऽ कोनो अवैध ज्ञान बिल्कुल नै होएत। वैध ज्ञान केवल ज्ञान सँ अधिक अछि; आ एहि कारण ज्ञानक वैधता कैँ ज्ञानक अवैधता जकाँ किछु विशेष स्थितिसभ आ विशेषतासभ द्वारा गठित होएबाक आवश्यकता अछि। यदि वैधता ज्ञानमे अन्तर्निहित होएत, तऽ प्रत्येक ज्ञान सत्यता आ वैधता धारण करत आ सन्देह आ त्रुटि अस्थिर भऽ जाएत।'

पश्चिमी सत्य सिद्धान्त, जेना भट्ट सर्वेक्षण करैत छथि, देखाबैत अछि जे 'पश्चिममे भारतीय ज्ञानक वैधता आ अवैधताक सिद्धान्तक कोनो सटीक समानान्तर नै अछि।' रीड सोचैत छथि सत्य केवल ज्ञान अपन काम करैत अछि; यथार्थवादी मानैत छथि सत्य तथ्यसभ सँ संगति अछि; अलेक्जेंडर मानैत छथि सुसंगति सत्यक आधार अछि; प्रयोगवादी मानैत छथि सत्य व्यावहारिक रूपसँ उपयोगी परिणाम उत्पन्न करबाक क्षमतामे निहित अछि। नैयायिक स्थिति — जे न वैधता न अवैधता स्वयं-स्पष्ट अछि, दुनू बाह्य स्थितिसभ सँ अनुमानक आवश्यकता, जेना सफल या असफल गतिविधि — वास्तविक रूपसँ अद्वितीय अछि।

अवैध ज्ञानः सन्देह, त्रुटि, आ तर्क

भट्ट तीन प्रकारक अवैध ज्ञानक व्यवस्थित विवरण प्रदान करैत अछि जे गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि संबोधित करैत अछि। सन्देह (संशय) एकटा ही वस्तु क सम्बन्धमे विरोधाभासी बोध (विमर्श) अछि, जे एकटा ही वस्तु कैँ आरोपित विभिन्न विरोधाभासी गुणसभक बोधसभक गठन करैत अछि। 'ई खम्भा अछि या मनुष्य?' — सन्देह बिना कोनो भेदक निश्चित बोध पर पहुँचै बिना विकल्पसभक बीच डोलैत अछि। सन्देह पाँच कारणसभ सँ उत्पन्न होए सकैत अछि: सामान्य गुण, अद्वितीय गुण, आत्मा क सम्बन्धमे परस्पर विरोधी गवाहीक कारण, प्रत्यक्षक अनियमितताक कारण, आ किसी वस्तुक अस्तित्व या अनस्तित्वक अनुपलब्धिक कारण।

त्रुटि या भ्रम (विपर्यय) अवैध ज्ञानक दोसर प्रकार अछि — 'किसी वस्तुक जेना नै अछि, तेना बोध' (अयथार्थ) । एकटा त्रुटिमे, कोनो वस्तु कैँ किछु गैर-मौजूद गुण धारण करबाक रूपमे बोध कएल जाइत अछि। नैयायिक प्रस्ताव करैत छथि जे त्रुटि अवैध ज्ञान (अन्यथाख्याति) अछि: जखन वैध ज्ञान वस्तुनिष्ठ अछि, तखन अवैध ज्ञान व्यक्तिपरक अछि वस्तु पर किछु बाहरी विशेषतासभक अध्यारोपणक कारण। भ्रममे, इन्द्रिय किछु दोषक कारण वस्तु (शुक्ति) क वास्तविक विशेषतासभ कैँ निश्चित करबामे विफल रहैत अछि, आ ई एकरामे किछु गैर-मौजूद बाहरी विशेषता (चाँदी) कैँ आरोपित करैत अछि। एहि प्रकारे त्रुटि वस्तु (शुक्ति) कैँ किछु दोसर (चाँदी) क रूपमे निर्णयमे परिणत होइत अछि — अन्यथा ख्याति।

भ्रम सिद्धान्तसभक तुलनात्मक विश्लेषण विस्तृत अछि। बौद्ध (योगाचार) प्रस्ताव करैत छथि जे त्रुटि या भ्रम व्यक्तिपरक विचारक बाह्य या अतिरिक्त मानसिक वास्तविकता क रूपमे (आत्म-ख्याति) अछि। माध्यमिक, जे सभ अस्तित्व कैँ नकारैत छथि, अनस्तित्वक ज्ञानक सिद्धान्त कैँ नकारैत छथि। वाचस्पति मिश्र प्रस्ताव करैत छथि जे त्रुटि असत् (असत्-ख्याति) क ज्ञान अछि। प्रभाकर मीमांसक मानैत छथि जे त्रुटि वस्तुक अज्ञान या अबोध (अख्याति) अछि। अद्वैतवादी प्रस्ताव करैत छथि जे त्रुटि या भ्रम अव्याख्येय (अनिर्वचनीय) क ज्ञान अछि। नैयायिक एहि सभ कैँ खण्डन करैत छथि, आग्रह करैत जे त्रुटि एकटा विभेदक आ निश्चित

ज्ञान होएबाक चाही जे गतिविधि उत्पन्न करैत अछि — ई अज्ञान नै होए सकैत, किएक एकरामे वस्तुक जेना नै अछि, तेना ज्ञान अस्तित्वमे अछि।

तर्क (परिकल्पनात्मक तर्क) अवैध ज्ञानक तेसर प्रकार अछि। ई एकटा प्रकारक निहितार्थपूर्ण तर्क अछि जाहि द्वारा कोनो तर्कक वैधताक परीक्षण कएल जा सकैत अछि। तर्कमे तर्क प्रक्रिया (तर्क भाषा, पृ. ४३) किछु अस्थिर प्रस्तावसभ (अनिष्ट प्रसङ्ग) क निष्कर्षणमे समाविष्ट अछि, जकर तार्किक प्रभाव प्रतिप्रस्तावक समर्थन करबैवाला प्रस्तावसभक अवैधताक उजागर करबाक अछि। पाँच प्रकारक तर्क — आत्माश्रय, अन्योन्याश्रय, चक्रक, अनवस्था, आ प्रमाणबाधितार्थप्रसङ्ग — सीधा गङ्गेशक अपन अनुमान-खण्डमे तर्क प्रकार्य पर मैप करैत अछि।

प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष) – तत्त्वचिन्तामणिक पहिल पुस्तक

प्रत्यक्षक प्रकृति आ परिभाषा

न्याय परिभाषा आ गङ्गेशक नवाचार

भट्टक प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष) क प्रकृति पर परिचय एकर दार्शनिक आधारभूत स्थिति सँ शुरुआत करैत अछि: 'प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष) ज्ञानक सबसँ मौलिक आ अन्तिम परीक्षण अछि। कोनो अनुमान आदि क सत्यता या वैधता पर प्रश्न उठा सकैत अछि; मुदा प्रत्यक्षक सत्यता या वैधता पर प्रश्न नै उठा सकैत अछि; ई प्रश्न सँ परे अछि।' प्राच्य-नैयायिक (पुरान न्याय) प्रत्यक्ष कैँ इन्द्रियार्थसन्निकर्ष (इन्द्रिय-वस्तु सम्पर्क) सँ उत्पन्न ज्ञानक रूपमे परिभाषित करैत छथि। ई परिभाषा शब्द प्रत्यक्षक व्युत्पत्तिपरक अर्थक अनुसरण करैत अछि (न्यायभाष्य, १.१.४ पर): प्रत्यक्ष अर्थात् वस्तुसभ तक पहुँचबाक लेल इन्द्रियसभक संचालन।

हालाँकि, गङ्गेशक नव्य-नैयायिक (तत्त्व चिन्तामणि १.३...) प्रत्यक्ष कैँ एकटा अपरोक्ष ज्ञान (साक्षात्कारी ज्ञान) क रूपमे परिभाषित करैत छथि जे कोनो पूर्ववर्ती ज्ञानक साधनता (ज्ञानकारणकं ज्ञानम्) बिना उत्पन्न होइत अछि। हुनकर अनुसार, एहि प्रकारक परिभाषा प्रत्यक्षक सभ मामलासभमे लागू होइत अछि, किएक अपरोक्षता (साक्षात्कारित्व) आ बिना पूर्ववर्ती ज्ञानक उत्पन्न भेल अवस्था सभ प्रत्यक्षमे सामान्य अछि। एहि प्रकारे, केवल नव्यक प्रत्यक्षक परिभाषा — एकटा अपरोक्ष ज्ञान जे बिना पूर्ववर्ती ज्ञानक उत्पन्न भेल — सभ प्रत्यक्षक मामलासभमे लागू होइत अछि; आ अपरोक्षता सभ प्रत्यक्षक एकटा आवश्यक विशेषता अछि।

भट्ट एहि नवाचारक तुलना पश्चिमी दृष्टिकोण सँ करैत छथि: 'पश्चिमी दर्शनक अनुसार, प्रत्यक्षक सत्यता अप्रश्ननीय आ स्वयं-स्पष्ट अछि। एहि प्रकारे, जे. एफ. मिल (अ सिस्टम ऑफ लॉजिक, पृ. ४), कहैत अछि जे चेतना (अन्तर्ज्ञान) द्वारा हमरा जे किछु ज्ञात अछि, ओ प्रश्नक संभावना सँ परे ज्ञात अछि। आ डब्ल्यू. टी. मार्विन (द न्यू रियलिज्म, पृ. ६६) कहैत अछि जे प्रत्यक्ष अन्तिम निर्णायक परीक्षण अछि आ एहि प्रकारे ई अपन संभावनाक पूर्वकल्पना नै करैत अछि।' बौद्ध परिभाषा — प्रत्यक्ष कैँ कोनो सेहो कल्पना सँ रहित (कल्पनापोढम्) एकटा दिएल वस्तुक अचूक बोधक रूपमे — खण्डन कएल जाइत अछि किएक 'यदि प्रत्यक्ष वस्तुसभ द्वारा निर्धारित अछि, तऽ सभ सच्चा ज्ञान प्रत्यक्ष होएबाक चाही।' वेदान्ती प्रत्यक्ष कैँ तात्कालिक आ कालातीत ज्ञान (चैतन्य) क रूपमे परिभाषित करैत छथि — मुदा ई मानसिक परिवर्तन (मनोवृत्ति) कैँ वस्तुसभ सँ अलग नै करैत अछि, किएक प्रत्यक्षक तात्कालिकता केवल इन्द्रिय-उत्तेजना सँ उत्पन्न नै होए सकैत अछि।

इन्द्रियसभ, मन, आत्मा, आ हुनकर कार्यसभ

भट्ट प्रत्यक्ष तंत्रक एकटा विस्तृत विवरण प्रदान करैत अछि। न्याय कहैत अछि जे प्रत्यक्ष इन्द्रिय-वस्तु-सम्पर्क सँ उत्पन्न होइत अछि आ आत्मा मनक माध्यम सँ वस्तु सँ सम्पर्कमे आबैत अछि; प्रत्यक्षक उत्पादनमे चारि कार्यकारी कारण शामिल अछि: इन्द्रियसभ, वस्तु, मन (मनस्), आ आत्मा (न्याय सूत्र, १.१.४) । नैयायिक आ वैशेषिक मानैत छथि जे मन (मनस्) आत्मा (आत्मन्) मे स्थित आन्तरिक इन्द्रिय (अन्तरिन्द्रिय) क गठन करैत अछि। वस्तुसभक प्रत्यक्ष केवल बाह्य इन्द्रियसभक वस्तुसभ सँ सम्पर्क सँ उत्पन्न नै होए सकैत अछि; प्रत्यक्ष तखन उत्पन्न होए सकैत अछि जखन बाह्य इन्द्रियसभ आन्तरिक इन्द्रिय मन सँ सम्पर्कमे आबैत अछि। चूँकि मन परमाणु आकारक अछि, विभिन्न बाह्य इन्द्रियसभ अलग-अलग समय पर मन सँ सम्पर्कमे आबि विभिन्न वस्तुसभक प्रत्यक्ष उत्पन्न करि सकैत अछि।

आत्मा (आत्मन्) व्यक्तिगत आत्मा (जीवात्मन्) क गठन करैत अछि जे सभ ज्ञानक आधार अछि। ज्ञान आअन्य गुण केवल आत्माक अछि आ आत्माक अलावा कोनो अन्य भौतिक पदार्थ कैँ नै अछि, किएक ओ मानसिक अछि। आत्मा विभिन्न शरीरसभमे भिन्न अछि आ नित्य (नित्य) आ सर्वव्यापी या विभु (विभु) अछि। नैयायिक (भाषापरिच्छेद, ५१) वेदान्त दृष्टिकोण नै स्वीकार करैत छथि जे

आत्मा नित्य आ स्वयं-प्रकाशित बुद्धि (चित्) अछि। बरु, ई द्रव्य (द्रव्य) अछि जे बुद्धि जकाँ गुणसभक आधार अछि आ एहि कारण अहं या मैं चेतनाक स्थानक रूपमे जानल जाइत अछि।

इन्द्रियसभ (इन्द्रिय) छहि अछि: घ्राण (घ्राण), रसना (रसना), चक्षु (चक्षु), त्वक् (त्वक्), श्रोत्र (श्रोत्र) आ आन्तरिक इन्द्रिय या मन (मनस्) । इन्द्रियसभक कार्य वस्तुसभक प्रत्यक्ष उत्पन्न करैत अछि; इन्द्रियसभ केवल वस्तुसभ सँ सीधा सम्पर्क सँ कार्य करैत अछि। इन्द्रिय-वस्तु-सम्पर्क छहि प्रकारक अछि: १) संयोग; २) संयुक्त समवाय; ३) संयुक्त समवेत समवाय; ४) समवाय; ५) समवेत समवाय; आ ६) विशेषणता।

सामान्य आ असाधारण प्रत्यक्ष

प्रत्यक्ष दुई प्रकारक अछि: सामान्य प्रत्यक्ष (लौकिक) आ असाधारण प्रत्यक्ष (अलौकिक) । सामान्य प्रत्यक्ष इन्द्रिय-वस्तु-सम्पर्क सँ उत्पन्न होइत अछि; जबकि असाधारण प्रत्यक्ष असामान्य माध्यम सँ उत्पन्न होइत अछि। सामान्य प्रत्यक्ष आगा दुई प्रकारमे विभाजित अछि: बाह्य प्रत्यक्ष (बाह्य) आ आन्तरिक प्रत्यक्ष (मानस) । बाह्य प्रत्यक्ष छहि इन्द्रिय सम्पर्कसभ सँ सम्बन्धित अछि; आन्तरिक प्रत्यक्ष (भाषापरिच्छेद, ५७) आन्तरिक इन्द्रिय मन (मनस्) सँ उत्पन्न होइत अछि आ एकर वस्तु सुख, दुःख, इच्छा, द्वेष, ज्ञान आ प्रयत्नक भावनासभ अछि।

न्याय प्रणाली तीन प्रकारक असाधारण (अलौकिक) प्रत्यक्ष कैँ मान्यता देबैत अछि: १) सामान्य लक्षण द्वारा विशेषित अनिश्चित प्रत्यक्ष; २) ज्ञानलक्षण द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष; आ ३) योगज (अन्तर्ज्ञानपूर्ण सम्पर्क) द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष। सामान्य लक्षण द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष असाधारण प्रत्यक्षक पहिल प्रकार गठित करैत अछि — ई सार्वभौमिक या सामान्य गुण द्वारा विशेषित वस्तुसभक सम्पूर्ण वर्गक एकटा प्रत्यक्ष अछि। उदाहरण: 'ई घड़ा अछि' (अयं घटः) घटत्वक सार्वभौमिक द्वारा विशेषित घड़ाक एकटा प्रत्यक्ष अछि। नैयायिक मानैत छथि ई एकटा आवश्यकता अछि — यदि सार्वभौमिक द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष स्वीकार नै कएल जाए, तऽ 'जतय धुआँ अछि, ततय आगि अछि' जकाँ अविनाभाव सम्बन्धक ज्ञान अस्थिर भऽ जाएत।

ज्ञानलक्षण द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष असाधारण ज्ञानक दोसर प्रकार गठित करैत अछि। ई ज्ञानक संचालन (विषयियस्य तस्यैव व्यापारः) द्वारा अर्जित इन्द्रियसभ सँ सम्पर्कमे एकटा वस्तुक प्रत्यक्ष अछि। उदाहरण: 'हम सुगन्धित चन्दन देखैत छी' (सुरभिचन्दनम्) ज्ञानलक्षण द्वारा विशेषित एकटा प्रत्यक्ष अछि, किएक सुगन्धित चन्दन दृष्टि इन्द्रिय सँ प्राप्त नै कएल जा सकैत अछि, आ एकरा ज्ञानक संचालन द्वारा प्राप्त करबाक आवश्यकता होइत अछि। नैयायिक आगा कहैत छथि जे 'ई (शुक्ति) चाँदीक टुकड़ा अछि' (इदं रजतम्) जकाँ भ्रम सेहो चाँदीक पूर्ववर्ती ज्ञानक संचालन द्वारा समझाएबाक आवश्यकता अछि, किएक दृष्टि इन्द्रिय केवल शुक्ति सँ सम्पर्कमे अछि, चाँदी सँ नै। ज्ञानलक्षण (योगज) द्वारा विशेषित प्रत्यक्ष तेसर प्रकार गठित करैत अछि — ई ध्यान (योगाभ्यास जनितो धर्म विशेषः) द्वारा मनमे उत्पन्न शक्तिसभ सँ अतीत, वर्तमान आ भविष्यक वस्तुसभक प्रत्यक्ष अछि।

निर्विकल्पक आ सविकल्पक प्रत्यक्ष — गङ्गेशक मूल सिद्धान्त

सामान्य प्रत्यक्षक तीन प्रकार

भट्ट क अनुसार, सामान्य प्रत्यक्ष तीन प्रकारक अछि: १) निर्विकल्पक प्रत्यक्ष, २) सविकल्पक प्रत्यक्ष, आ ३) प्रत्यभिज्ञा या अनुव्यवसाय। निर्विकल्पक प्रत्यक्ष याज्ञान (निर्विकल्पक) सामान्य प्रत्यक्षक पहिल प्रकार गठित करैत अछि। ई वस्तुसभक सबसँ अमूर्त दृष्टि अछि — शाब्दिक सम्बन्ध बिना वस्तुक अस्तित्वक एकटा सरल बोध। सविकल्पक प्रत्यक्ष वस्तुसभक एकर गुणसभ सहित सबसँ मूर्त प्रत्यक्ष अछि। प्रत्यभिज्ञा सविकल्पक प्रत्यक्षक पश्चात्-ज्ञान अछि आ निर्विकल्पक आ सविकल्पक दुनू सँ स्पष्ट रूपसँ भिन्न अछि।

निर्विकल्पक प्रत्यक्ष पर अन्तःसम्प्रदायिक बहस

वेदान्ती (रामानुज ब्रह्मसूत्र १.१.१ पर) मानैत छथि जे निर्विकल्पक ज्ञान शुद्ध सत्ता (सन्मात्र) क ज्ञान अछि — 'ई किछु अछि' (इदं किञ्चित्) — आ एकरामे कोनो सम्बन्ध या गुणसभक विशिष्टता शामिल नै अछि। बौद्ध मानैत छथि (प्रमाणसमुच्चय, अध्याय १) जे निर्विकल्पक ज्ञान वैध ज्ञानक एकमात्र प्रकार अछि — ई कोनो सेहो विचार या कल्पना सँ रहित (कल्पनापोढम्) अछि। मीमांसक मानैत छथि जे निर्विकल्पक ज्ञान एकटा वास्तविक व्यक्तिक एकटा प्रत्यक्ष बोध अछि जे सार्वभौमिक आ विशिष्टक एकता अछि।

हालाँकि, प्रभाकर मीमांसकक स्थिति महत्वपूर्ण अछि: निर्विकल्पक ज्ञान इन्द्रियसभ आ वस्तुसभक बीच सम्पर्क पर स्वतःस्फूर्त रूपसँ उत्पन्न होइत अछि — ई बच्चा आ तत्समानक प्रत्यक्ष अछि। तथापि प्रभाकर मीमांसकक भाषाविद्सभक खण्डन सेहो

महत्वपूर्ण अछि: निर्विकल्पक ज्ञान किसी वस्तुक पहिल अनुभव अछि आ शाब्दिक सम्बन्ध बिना वस्तुक अस्तित्वक एकटा सरल बोध अछि। जखन सविकल्पक ज्ञानमे वस्तु आ एकर गुण विषय-विधेय सम्बन्धमे खड़ा रहैत अछि, तखन निर्विकल्पक ज्ञानमे ओही वस्तु आ गुण असम्बद्ध अछि आ विषय-विधेय सम्बन्धमे नै रहैत अछि। नैयायिक, दोसर दिशा सँ, मानैत छथि जे निर्विकल्पक ज्ञान एकटा वास्तविक मुदा अतीन्द्रिय सचेतन अवस्था (अतीन्द्रिय) अछि। चूँकि ई एकटा अनिश्चित वस्तुक अविभेदित अनुभूति अछि, ई निश्चित प्रत्यक्ष नै होए सकैत अछि।

सविकल्पक प्रत्यक्ष आ विशिष्ट संरचना

सविकल्पक प्रत्यक्ष या ज्ञान (सविकल्पक) सामान्य प्रत्यक्षक दोसर प्रकार गठित करैत अछि। ई वस्तुसभक एकर गुणसभ सहित सबसँ मूर्त प्रत्यक्ष अछि। वेदान्ती (रामानुज ब्रह्मसूत्र १.१.१ पर) मानैत छथि जे सविकल्पक ज्ञान एकटा वस्तुक एकटा विशिष्ट ज्ञान अछि जे एकरा दोसर वस्तुसभ सँ अलग करैत अछि (विकल्प) । नव अद्वैतवादी ज्ञानमीमांसकसभ सँ सहमत अछि जे सविकल्पक ज्ञान एकटा व्यक्तिगत सम्पूर्णक रूपमे वस्तुक एकटा शाब्दिक निर्णय अछि। बौद्ध (न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका, १.१.४ पर) मानैत छथि जे सविकल्पक ज्ञान एकटा शाब्दिक अभिव्यक्ति अछि जाहिमे एकटा वस्तु नाम, वर्ग आदि (नामजात्यादियोजनसहित) क अवधारणासभ द्वारा निर्धारित होइत अछि।

नैयायिक (भाषापरिच्छेद, ५८) मानैत छथि जे सविकल्पक ज्ञान एकटा विशिष्ट ज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) अछि जाहिमे वस्तु गुणसभ द्वारा योग्य जानल जाइत अछि। हुनकर अनुसार, प्रत्यक्षक वस्तु एतय किछु गुणसभ द्वारा योग्य जानल जाइत अछि। उदाहरण लेल, सविकल्पक ज्ञान एकटा निर्णय अछि जेना 'ई गाय अछि' (अयं गौः) जाहिमे वस्तु गाय गोत्वक गुण द्वारा योग्य जानल जाइत अछि। एहि प्रकारे, सविकल्पक ज्ञान एकटा प्रस्ताव अछि जाहिमे विषय वस्तु या व्यक्ति अछि आ विधेय गुण अछि। जखन निर्विकल्पक सामान्य प्रत्यक्षक पहिल चरण अछि, तखन सविकल्पक प्रत्यक्षक दोसर चरण अछि।

प्रत्यभिज्ञा (पहिचान, अनुव्यवसाय)

प्रत्यभिज्ञा (प्रत्यभिज्ञा या अनुव्यवसाय) सामान्य प्रत्यक्षक तेसर प्रकार गठित करैत अछि। ई सविकल्पक प्रत्यक्षक पश्चात्-ज्ञान अछि आ निर्विकल्पक आ सविकल्पक दुनू सँ स्पष्ट रूपसँ भिन्न अछि। पहिचान (प्रत्यभिज्ञा), सामान्य अर्थमे, वस्तुक प्रकृतिक एहि प्रकारे बोध के अर्थ अछि; आ ई, संकीर्ण अर्थमे, पहिने सँ ज्ञात किसी वस्तु कैँ फेर सँ जानबाक अर्थ अछि। पहिचान (प्रत्यभिज्ञा) क प्रयोग न्याय दर्शनमे एहि दोसर संकीर्ण अर्थमे होइत अछि।

नैयायिक (मिताभाषिणी, पृ. २५) मानैत छथि जे पहिचान अखन प्रत्यक्ष कएल गेल किसी वस्तु कैँ पहिने प्रत्यक्ष कएल गेल वस्तुक रूपमे ज्ञान अछि। उदाहरण लेल, पहिचान 'ई (देवदत्त) ओ देवदत्त अछि' (सोऽयं देवदत्तः) अखन प्रत्यक्ष कएल गेल देवदत्तक पहिने प्रत्यक्ष कएल गेल देवदत्तक रूपमे ज्ञान अछि। एहि प्रकारक पहिचान दुनू इन्द्रियसभ आ वस्तुसभक पूर्ववर्ती अनुभवक संस्कार (संस्कार) द्वारा उत्पन्न ज्ञान अछि (न्यायमञ्जरी, पृ. ४५९) । एहि प्रकारे, पहिचान प्रत्यक्ष आ स्मरण दुनू गठित करैत अछि, किएक ई दुनू इन्द्रियसभ आ संस्कारसभ द्वारा उत्पन्न होइत अछि।

तुलनात्मक आ विश्व-दार्शनिक परिप्रेक्ष्य

गङ्गेश, डेसकार्टेस, आ लाइबनिजः तर्क-संवेदनशील तत्वमीमांसा

शार्फस्टाइनक 'अ कम्पेरेटिव हिस्ट्री' क सबसँ प्रकाश डालबैवाला योगदानसभमे सँ एक अध्याय १० ('तर्क-संवेदनशील, पद्धतिगत तत्वमीमांसा: गङ्गेश, डेसकार्टेस, लाइबनिज') मे गङ्गेशक डेसकार्टेस (१५९६-१६५०) आ लाइबनिज (१६४६-१७१६) क साथ व्यवस्थित तुलना अछि। आयोजन थीम पद्धतिगत रूपसँ प्रयुक्त तर्कक माध्यम सँ निश्चितताक खोज अछि — प्रत्येक दार्शनिक ज्ञान कैँ तर्क पद्धतिकैँ सिद्ध करि स्थापित करबाक चाहैत अछि, नै कि अधिक अनुभवजन्य सामग्री जोड़ि।

शार्फस्टाइन कतेक संरचनात्मक समानतासभक पहिचान करैत अछि। तीनु दार्शनिक प्रतिबद्ध तर्कशास्त्री अछि जे तर्क-विधिसभक सुधार करबाक चाहैत अछि आ हुनका मानवीय चिन्ताक पूर्ण दायरामे लागू करबाक — केवल दर्शन नै, बल्कि जीवनक लेल सेहो, डेसकार्टेसक मामलामे चिकित्सा तक, आ लाइबनिजक मामलामे कानून तक। गङ्गेशक वैध आगमन आ किफायती व्याख्याक समस्यासभ सँ जुड़ाव भावना मे समकालीन विज्ञानक दार्शनिकसभ जकाँ अछि।' तीनु सेहो 'दुनियाँक समझक लेल एकटा तत्वमीमांसीय रूपसँ अप्रश्ननीय आधार खोजैत छथि जे अनुभवजन्य आ सैद्धान्तिक आ धर्मनिरपेक्ष आ पवित्र कैँ जोड़ैत अछि।' आ तीनु तीव्र संशयवादी चुनौतिसभक प्रतिक्रिया देबैत छथि — गङ्गेश चार्वाक आ श्रीहर्ष कैँ, डेसकार्टेस कार्टेशियन दानव कैँ, लाइबनिज कट्टर अनुभववाद कैँ।

विपरीततासभ सेहो समान रूपसँ शिक्षाप्रद अछि। डेसकार्टेस परम्परा सँ टूटैत अछि, स्रोत उद्धृत करबा सँ इनकार करैत अछि; गङ्गेश, सभ भारतीय दार्शनिक जकाँ, अपन पूर्ववर्ती उदयन सँ आदरपूर्वक जुड़ैत अछि, भले ओ हुनका सँ विदा होएत। डेसकार्टेसक विधि स्वयंसिद्ध-निगमनात्मक अछि, जे स्पष्ट आ विशिष्ट विचारसभक माध्यम सँ निश्चितताक लक्ष्य रखैत अछि; गङ्गेशक विधि परिभाषा-द्वन्द्वात्मक अछि, जे व्याप्ति आ अन्य प्रमुख अवधारणासभक प्रतिस्पर्धी परिभाषासभक व्यापक जाँच आ अस्वीकारक माध्यम सँ निश्चितताक लक्ष्य रखैत अछि। लाइबनिज, वास्तविक रचनात्मक तर्कशास्त्री, नव प्रारूपवादक आविष्कार करैत अछि; गङ्गेश पूर्ण रूपसँ एकटा विरासतमे प्राप्त शब्दावलीक भीतर काम करैत अछि मुदा अपन परिभाषा विश्लेषणक सटीकता आ पूर्णता द्वारा एकरा रूपान्तरित करैत अछि।

शार्फस्टाइनक अपन तुलनात्मक निर्णय: 'गङ्गेश दर्शन कैँ एकटा विशिष्ट भाषामे निपुण व्यक्तिसभक निस्संदेह क्षेत्र बना देबैत अछि। ओ आ हुनकर अनुयायी परिभाषासभ रचना करैत छथि जे मन कैँ फैलाबैत अछि आ सटीक आलोचना कैँ आमन्त्रित करैत अछि, मुदा केवल उन सभक लेल जे प्रासंगिक तकनीकी शब्द आ तर्क पद्धतिसभमे निपुण भऽ गेल अछि।' गङ्गेश जे नव्य-न्याय प्रणालीक शुरुआत केलक, प्रभावी रूपसँदार्शनिक प्रवचनक लेल एकटा औपचारिक भाषा बनौलक जे उन्नीसम् शताब्दीक अन्तमे यूरोपमे प्रतीकात्मक तर्कक विकासक आश्चर्यजनक तरिकासभमे पूर्वानुमान करैत अछि — यद्यपि प्रतीकात्मक संकेतन बिना।

गङ्गेश आ उदयनः परम्पराक भीतर नवाचार

गङ्गेश आ हुनकर सबसँ महत्वपूर्ण पूर्ववर्ती उदयन (फ्लोरुइट १०५० ई.) क बीच सम्बन्ध शार्फस्टाइन आ पॉटर इन्साइक्लोपीडिया दुनूमे एक केन्द्रीय विषय अछि। शार्फस्टाइन नोट करैत छथि: 'किएक हुनकर दर्शनक बहुत किछु उदयनक विस्तार अछि, जाहि पर हम एतय आकर्षित करैत छी, गङ्गेशक मौलिकता हुनकर द्वन्द्वशास्त्रमे, जिस सावधानी आ तीक्ष्णता सँ ओ तर्क करैत अछि — बाल बाँटबा, कहबा आसान अछि — मौलिक सिद्धान्त सँ अधिक प्रदर्शित होइत अछि।' एकटा फुटनोट जोड़ैत अछि: 'उदयन दुनूमे सँ अधिक मौलिक होए सकैत अछि। अधिक मौलिकता गङ्गेशक उत्तराधिकारी, टीकाकार आ आलोचक, रघुनाथ (फ्लोरुइट १५०० ई.) कैँ सेहो आरोपित कएल गेल अछि।' पॉटर इन्साइक्लोपीडिया शार्फस्टाइनक तुलनात्मक अध्याय (हुनकर पुस्तकक अध्याय ९, उदयन पर) कैँ गङ्गेश अध्याय पढ़बाक लेल दार्शनिक सन्दर्भ प्रदान करबाक रूपमे पहिचान करैत अछि।

हालाँकि, पॉटर इन्साइक्लोपीडिया गङ्गेशक मौलिकताक अधिक सूक्ष्म मूल्यांकन प्रदान करैत अछि। महत्वपूर्ण नवाचार अछि: (१) सभ पूर्व प्रयाससभक व्यापक जाँचक बाद व्याप्तिक निर्णायक उपचार; (२) प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सिद्धान्तक बोधक एकटा व्यवस्थित तर्कमे विकास; (३) बौद्ध सँ मीमांसाक प्राथमिक प्रतिद्वन्द्वीक रूपमे परिवर्तन — जे चौदहम् शताब्दीक भारतक बदलल दार्शनिक परिदृश्य कैँ प्रतिबिम्बित करैत अछि; (४) शब्द-खण्डक 'भाषाई मोड़', जे नव्य-न्याय कैँ भाषा दर्शनक अपन संस्करण देलक; आ (५) सबसँ ऊपर, तत्त्व-चिन्तामणि आपु स्वयंक माध्यम सँ एकटा नव बौद्धिक समुदायक सृजना — एकटा ग्रन्थ जे सभ बादक नैयायिक बहसक लेल सामान्य सन्दर्भ बिन्दु बनल।

तत्त्वमीमांसात्मक ढाँचा आ रघुनाथ शिरोमणि

नव्य-न्याय तत्वमीमांसाः श्रेणी आ हुनकर नियति

पॉटर इन्साइक्लोपीडियाक परिचय (अध्याय ३, 'तत्वमीमांसा') सात वैशेषिक श्रेणीसभक गङ्गेश सँ रघुनाथ शिरोमणि धरि विकासक अनुरेखण करैत अछि, ई दर्शाबैत अछि जे काति नव्य-न्यायक विश्लेषणात्मक कठोरता धीरे-धीरे ओ तत्त्वमीमांसात्मक संरचना कैँ कमजोर क देलक जे एकरा विरासतमे मिलल छल। गङ्गेश आपु स्वयं तत्त्वमीमांसात्मक रूपसँ रूढ़िवादी अछि, सात श्रेणीसभक ढाँचाक भीतर काम करैत अछि — द्रव्य, गुण, कर्म, सामान्य, विशेष, समवाय, अभाव। ओ समवाय कैँ 'एकटा अलग श्रेणी, जे ई असमाप्य अछि, जे ई बोधगम्य अछि, आ ई एक अछि' क रूपमे बचाओ करैत अछि। ओ एहि दृष्टिकोणक विरुद्ध तर्क करैत अछि जे अभाव कैँ अभेदक पक्षमे समाप्त कएल जा सकैत अछि।

अभावक उपचार विशेष रूपसँ आकर्षक विकासक क्षेत्र अछि। गङ्गेश प्रत्यक्ष-खण्डमे एकरा एकटा अध्याय समर्पित करैत अछि, मुदा ओ अभावक अभावक समस्या नै उठाबैत अछि। बादक टीकाकार, विशेष रूपसँ रघुनाथ, जे 'किसी चीजक निरपेक्ष अभावक निरपेक्ष अभाव ओही चीज अछि' कैँ अपन कार्यशील सिद्धान्तक रूपमे लैत अछि, परिमाणीकरणक उपकरणक रूपमे बढ़ती तकनीकी परिष्कार क साथ अभावसभक प्रयोग करैत अछि। इन्साइक्लोपीडिया नोट करैत अछि जे 'गङ्गेश सँ रघुनाथ धरि नव्यन्यायक विकासक सबसँ आकर्षक विशेषतासभमे सँ एक अछि परिमाणीकरणक साधनक रूपमे अभावसभक प्रयोगमे उल्लेखनीय वृद्धि।'

रघुनाथ शिरोमणि: गङ्गेशक महान आलोचक आ उत्तराधिकारी

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया रघुनाथ शिरोमणि (फ्लोरुइट १५०० ई.) कें खण्ड ६ मे सर्वेक्षण काल समाप्त करबैवाला आ सभ बादक नव्य-न्यायक लेल एजेंडानिर्धारित करबैवाला व्यक्तिक रूपमे भूमिका देबैत अछि। रघुनाथक पक्षधर मिश्र (जयदेव) सँ मिथिलामे साक्षात्कारक प्रसिद्ध कहानी — झा 'आशोक' मोनोग्राफमे संरक्षित — ओ बिन्दु कें चिह्नित करैत अछि जतय नवद्वीप (बंगाल) परम्परा नव्य-न्यायक आगा विकासक प्राथमिक वाहन बनल। रघुनाथक तत्त्व-चिन्तामणि पर दीधिति परम्पराक सबसँ महत्वपूर्ण द्वितीयक ग्रन्थ अछि, जे जगदीश आ गदाधर सँ आगा अपन विशाल टीका साहित्य उत्पन्न केलक।

रघुनाथक गङ्गेश सँ सम्बन्ध आलोचनात्मक विस्तारक अछि: ओ गङ्गेशक ढाँचा स्वीकार करैत अछि जबकि लगभग प्रत्येक विशिष्ट सिद्धान्त कें कट्टरपंथी संशोधन कें अधीन करैत अछि। इन्साइक्लोपीडियाक शब्दमे: 'रघुनाथ गङ्गेशक तर्क (कतेक तकनीकी बिन्दुसभ पर) अस्वीकार करैत अछि' — आ वास्तवमे पैटर्न पूरा खण्डमे दोहराबैत अछि। सार्वभौमिक पर, जतय गङ्गेश रूढ़िवादी अछि, रघुनाथ लगभग सभ उचित सार्वभौमिक कें समाप्त करि देबैत अछि, सामान्य गुणसभक आरोपित गुण (उपाधि) क रूपमे मानैत अछि। विशेष पर, ओ श्रेणी कें पूर्ण रूपसँ समाप्त करि देबैत अछि। समवाय पर, जतय गङ्गेश एकटा एकल समवाय क बचाओ करैत अछि, रघुनाथ घोषित करैत अछि जे जतना जोड़ी जोड़ी सम्बन्धित होएबाक अछि, उतना समवाय अछि। अवच्छेदकत्व सम्बन्ध पर, ई रघुनाथ अछि जे एकरा विश्लेषणक एकटा विशेष रूपसँ महत्वपूर्ण उपकरण बनाबैत अछि। पॉटर इन्साइक्लोपीडिया सारांशित करैत अछि: 'रघुनाथक उपकरणक कतना हुनकर आविष्कार छल, आ कतना ओ अपन शिक्षकसभ आ परम्परा सँ प्राप्त केलक, जे दुई महान नैयायिकसभक बीच हस्तक्षेप करबैवाला व्यक्तिसभक निकट अध्ययन नै कएल गेल, तब धरि कहबा असम्भव अछि।'

विरासत, टीका परम्परा, आ मिथिलाक जीवित धरोहर

टीका परम्परा

तत्त्व-चिन्तामणि पर टीका परम्परा संस्कृत साहित्यमे सबसँ विस्तृत परम्परा सभमे सँ एक अछि। झा 'आशोक' मोनोग्राफ २३ ज्ञात टीकाकारसभक एकटा तालिका प्रदान करैत अछि हुनकर रचनासभक साथ; पॉटर इन्साइक्लोपीडिया हुनका गङ्गेश आ वटेश्वर सँ रघुनाथ शिरोमणि धरि पचास क्रमांकित प्रविष्टिसभमे सर्वेक्षण करैत अछि। परम्परा भौगोलिक रूपसँ तीन परम्परा सभमे विभाजित अछि: मैथिल, बाङ्गाल (नवद्वीप), आ दक्षिण।

मिथिलामे, परम्परा वर्धमान उपाध्यायक अन्तर्निहित जुड़ाव सँ पक्षधर मिश्र (जयदेव) 'आलोक' टीका आ बादक आलोक-परम्परा (पक्षधर-यज्ञपति रेखा) आ दूषणोद्धार-परम्परा (नरहरि-माधव रेखा) क बीच आन्तरिक विवाद धरि चलैत अछि। बंगालमे, रघुनाथ शिरोमणिक दीधिति अध्ययनक प्राथमिक वस्तु बनल, जे रुचिदत्त मिश्र, जगदीश तर्कालंकार, गदाधर भट्टाचार्य, मथुरानाथ तर्कवागीश, आ अनेक दोसर सँ टीकासभ आकर्षित केलक। शार्फस्टाइन मतिलाल कें परम्पराक उपलब्धि पर उद्धृत करैत छथि: 'नव्य-न्यायक उस्ताद पहिने निष्कर्ष नै रचैत छल आ बादमे सिद्धान्त सँ हुनका औचित्य देबैत छल। ओ गम्भीरतापूर्वक वास्तविकताक अनुसरण करबामे संलग्न छल, जतय सेहो ओ हुनका ले जाए, अपन पूर्वाग्रहसभ कें यथासंभव हल्का रूपसँ थोपैत छल... ई ठीक ओही गुण अछि जे मैं आधुनिक विज्ञान आ दर्शनक रचनात्मक कार्यकर्तासभमे सराहनीय पाबैत छी।'

पॉटर इन्साइक्लोपीडिया (प्रस्तावना) एहि परम्परा द्वारा प्रस्तुत विद्वत्तापूर्ण चुनौती कें स्पष्ट करैत अछि: 'भारतक दुई सबसँ उल्लेखनीय दार्शनिक, गङ्गेश आ रघुनाथ शिरोमणि, एहि पृष्ठसभमे शामिल अछि — वास्तवमे, ओ सर्वेक्षण काल शुरू आ समाप्त करैत अछि... लगभग १३१० आ १५१० क बीच केवल दुई सौ वर्ष। एहि छोटअवधि पर एहि गहन ध्यानक लेल अच्छा कारण अछि।' आशय ई अछि जे विश्व दर्शनमे अन्यत्र समान अवधि शायद ही कभी एकटा परम्परामे तुलनीय प्रतिष्ठाक दुई व्यक्ति उत्पन्न करैत अछि — आ हुनकर बीचक दुई शताब्दी दर्जनों टीकाकार उत्पन्न केलक जकर रचना उच्चतम स्तर पर एकटा निरन्तर, आत्म-आलोचनात्मक, दार्शनिक रूपसँ कठोर वार्तालाप गठित करैत अछि।

मैथिली संस्कृतिक समानांतर इतिहासमे गङ्गेश

मुख्यधारा बनाम समानांतर इतिहासलेखन

मैथिली साहित्यक समानांतर इतिहास — जेना विदेह आन्दोलनक अनुसन्धान आ दस्तावेज 'अ पैरेलल हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' मे प्रलेखित — संस्थागत मैथिली साहित्यिक कैननक लेल एकटा व्यापक प्रतिकथा प्रस्तुत करैत अछि। मुख्यधाराक इतिहास, जेना जयकान्त मिश्रक दुई-खण्डीय 'हिस्ट्री ऑफ मैथिली लिटरेचर' (१९४९-१९५०) मे क्रिस्टलाइज भेल आ १९६५ सँ साहित्य अकादमी द्वारा संस्थागत रूपसँ लागू कएल गेल, 'मूल रूपसँ पहिचान-निर्माणमे एकटा अभ्यास छल, जे मैथिली कें हिन्दीक

बोलीक बजाय एकटा स्वतन्त्र भाषाक रूपमे स्थापित करबाक लेल डिजाइन कएल गेल छल। जबकि ई रचना मैथिलीक भारतीय संविधानक आठम् अनुसूचीमे अन्ततः मान्यता दिलाबामे सहायक छल, समानांतर इतिहास तर्क करैत अछि जे ओ एकटा रूढ़िवादी, ब्राह्मण-केन्द्रित मानक सेहो स्थापित केलक जे उदारवादी आ उपेक्षित आवाजसभकेँ बहिष्कृत केलक।'

समानांतर इतिहास नौ परतसभमे प्रकट होइत अछि: (१) बौद्ध आधार — २३ सिद्ध कविसभ (लुइपाद, कण्हपाद, सरहा) के ५० चर्यापद मैथिली गीतक सच्चा जड़क रूपमे; (२) दुई विद्यापति — विदेहक सबसँ महत्वपूर्ण विद्वत्तापूर्ण हस्तक्षेपसभमे सँ एक, प्रसिद्ध पदावली कवि (ज्योतिरीश्वर-पूर्व) कैँ संस्कृत/अवहट्ट लेखक विद्यापति ठक्कुरह (१३५०-१४३५) सँ अलग करबाक; (३) दमित गङ्गेश — मूल पञ्जी-पाण्डुलिपि ई तथ्य सुरक्षित करैत अछि जे दार्शनिक गङ्गेश उपाध्यायक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलनि; (४) औपनिवेशिक युगक विरोध कविता — फतुरीलालक अकाल कविता (१८७३-७४); (५) हरिमोहन झाक बहिष्कार; (६) जीवित उस्ताद — राजदेव मण्डल आ बेचन ठाकुर; (७) विनीत उत्पल/ आशीष अनचिन्हार द्वारा आरटीआई खुलासा (२०११-१२) ९०%+ साहित्य अकादमी नियुक्ति सलाहकार बोर्डक मित्र/रिश्तेदार कैँ गेल; (८) नेपाल पक्ष — नेपाल तराईक मैथिली समान रूपसँकेन्द्रीय; (९) डिजिटल प्रतिकार-अभिलेख — विदेह आपु स्वयं।

दमित गङ्गेश — एक विरासतक सम्मान-हत्या

समानांतर इतिहास गङ्गेशक जीवनीक संस्थागत उपचार कैँ 'सम्मान-हत्या' कहैत अछि। विशिष्ट आरोप, दूषण पंजी (वंशावली अभिलेखक 'काली किताब', जे गजेन्द्र ठाकुरक विदेह द्वारा २००९ मे जारी) सँ प्रलेखित: गङ्गेश उपाध्याय एकटा चर्मकारिणी (चमड़ा सिझावै वाली जातिक महिला) सँ विवाह केनए छल आ हुनकर पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म भेल छल। ई सूचना रामानाथ झा — साहित्य अकादमीमे मैथिलीक पहिल संयोजक आ संस्थागत मैथिली कैननक प्राथमिक द्वारपाल — द्वारा दमन कएल गेल छल जखन ओ इतिहासकार दिनेश चन्द्र भट्टाचार्य कैँ साथ संवाद केलक। साहित्य अकादमीक २०१६ मोनोग्राफ गङ्गेश पर, भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखलामे उदयनाथ झा 'आशोक' द्वारा प्रकाशित, दमन कैँ कायम राखलक।

ई पुनःप्राप्तिक महत्व जीवनी सँ परे अछि। पंजी प्रणाली — जे संस्थागत इतिहास सांस्कृतिक विशिष्टताक चिह्नक रूपमे मानैत अछि — जाति शुद्धता बनाए रखबाक लेल डिजाइन कएल गेल छल, वंशावली डेटा रिकार्ड करि जे विवाह गठबन्धन कैँ लागू या अस्वीकार करबाक लेलप्रयोग कएल जा सकत छल। दूषण पंजी अभिलेख जारी करि, विदेह आन्दोलन प्रदर्शित केलक जे ई प्रणाली आपु स्वयं, जखन ईमानदारी सँ जाँचल जाए, तऽ शुद्धता क विचारधारा कैँ कमजोर करैत अछि जे एकरा बनाए रखबाक लेल छल। मिथिला परम्पराक सबसँ महान दार्शनिक, जे व्यक्ति प्रत्येक परिभाषाक प्रत्येक संभावित प्रतिउदाहरणक विरुद्ध परीक्षण करबाक आग्रह करैत छल, एकटा जीवन जीवलक जे आपु स्वयं जाति मानदण्डसभक एकटा प्रतिउदाहरण छल जे बादमे हुनका दावा केलक।

मैथिलीक व्यापक बौद्धिक परिस्थितिकीमे गङ्गेश

समानांतर इतिहास गङ्गेश कैँ संस्थागत कथा सँ अनुमति देबाक अपेक्षा अधिक बहुलवादी बौद्धिक परिस्थितिकीक भीतर रखैत अछि। ओही १४म् शताब्दीक मिथिला जे तत्त्वचिन्तामणि उत्पादन केलक, ओहिमे नाथ सम्प्रदाय साहित्यमे सिद्धाचार्य परम्पराक प्रभाव सेहो छल; ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्णनरत्नाकर (कोनो पूर्वोत्तर भारतीय भाषामे सबसँ पुरान गद्य रचना) एकर अरबी आ फारसी उधार शब्दसभ सहित; आ अन्तर्जातीय सांस्कृतिक नेटवर्क जाहिमे गङ्गेशक अपन परिवार स्पष्ट रूपसँ भाग लेनए छल। समानांतर इतिहास नोट करैत अछि जे 'मिथिला कोनो एहि प्रकारक संघर्षनै छल, जे कारण अछि जे तर्कशास्त्र या न्यायशास्त्र, एकर मिथिलामे प्रगति इतनी उच्च छल जे भारतक कोनो अन्य क्षेत्र उतना न्याय विद्वान या न्याय ग्रन्थ उत्पादन नै केलक' — मुदा जोड़ैत अछि जे ई बौद्धिक उत्कृष्टता एकटा सामाजिक दुनियाँमे प्राप्त आ संचालित भेल जे संस्थागत इतिहास स्वीकार करबाक अपेक्षा अधिक जटिल छल।

लिपि, भाषा, आ डिजिटल पुनःप्राप्ति

समानांतर इतिहास मिथिलाक लिपिसभक इतिहास कैँ सांस्कृतिक पहिचानक केन्द्रीय रूपमे दस्तावेज करैत अछि। तिरहुता लिपि (मिथिलाक्षर), गुप्त लिपिक पूर्वी किसिम सँ विकसित, लगभग एक सहस्राब्दी धरि सभ शैक्षिक, सांस्कृतिक आ धार्मिक मामलासभक लेल प्रयोग कएल गेल। बीसम् शताब्दीमे देवनागरीमे संक्रमण — मुद्रण सुविधा आ हिन्दी-पेटी प्रशासनिक तर्क सँ प्रेरित — समानांतर इतिहासकार सभ द्वारा सांस्कृतिक अधिकार हननक एकटा रूपक रूपमे देखल जाइत अछि। विदेह आन्दोलनक यूनिकोडमे तिरहुता (२०१४) क सफल मानकीकरण आ डिजिटल फ़ॉन्टक विकास भाषाई संप्रभुताक एकटा तकनीकी पुनःदावा क अभ्यावेदन करैत अछि।

डिजिटल अभिलेख विदेह ने मिथिलाक बौद्धिक धरोहर क चारो ओर निर्माण केनए अछि — हजारों अङ्कीकृत पुस्तक, ११, ००० अनुलेखित ताड़पत्र तिरहुता पाण्डुलिपि, दूषण पंजी अभिलेख, पहिल मैथिली वेबसाइट एकत्रीकरणकर्ता, तिरहुता यूनिकोड प्रतिनिधित्व, आ मैथिली गूगल ट्रांसलेट आ विकिपीडिया स्थानीयकरण — जे समानांतर इतिहास 'जीवित समानांतर संस्था' कहैत अछि, गठित करैत अछि। गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि एहि अभिलेख सँ ब्राह्मण्य रूढ़िवादिताक स्मारकक रूपमे नै, बल्कि एकटा सम्पूर्ण सभ्यतागत धरोहरक भागक रूपमे सम्बन्धित अछि जकर जटिलता संस्थागत कथा ने लगातार कम करि कए बतौलक।

मैथिली गजलक पुनरुत्थानः अंचिन्हार आखर

समानांतर इतिहास मैथिली समानांतर साहित्य आन्दोलनक सबसँ उल्लेखनीय हालिया उपलब्धिसभमे सँ एक — अंचिन्हार आखर समूहक माध्यम सँ मैथिली गजलक पुनरुत्थान — केँ दस्तावेज करैत अछि। आन्दोलन ११ अप्रैल २००८ केँ अंचिन्हार आखर ब्लगक शुभारम्भ सँ शुरू भेल, जे आशीष अंचिन्हार द्वारा शुरू कएल गेल, बादमे गजेन्द्र ठाकुर द्वारा सह-सम्पादित। एक दशकक भीतर, ई ३५० से ४०० नव आ पहिने सँउपेक्षित लेखकसभकेँ मैथिली साहित्यिक मुख्यधारामे लानेलक, संस्थागत द्वारपालसभक पूर्ण रूपसँ दरकिनार करि।

गजल — एकटा अरबी-फारसी काव्य रूप अपन दोहा (शेर/बैत), कठोर मात्रात्मक पैटर्न (बहर), तुक (क़ाफ़िया), अंतरा (रदीफ), आ अन्तिम दोहामे कविक हस्ताक्षर (मकता तखल्लुस सहित) सँ परिभाषित — लम्बा समय धरि संस्थागत मैथिली साहित्यिक प्रतिष्ठान द्वारा एकर उर्दू आ मुस्लिम सांस्कृतिक परम्परा सँ जुड़ावक कारण विरोध कएल गेल छल। समानांतर इतिहास विडम्बना बताबैत अछि: ज्योतिरीश्वरक वर्णनरत्नाकर अरबी आ फारसी उधार शब्दसभक प्रयोग करैत अछि, आ मुस्लिम बुनकरसभक बोली (जोलाहीबोली) आपु स्वयं मैथिलीक एकटा क्रियोल रूप अछि। 'इक्कीसम् शताब्दीमे मैथिली गजलक औपचारिक पुनरुत्थान एहि कारण एकटा विच्छेद सँ कम आ दमित अन्तःसांस्कृतिक धागाक पुनःप्राप्ति सँ अधिक अछि।'

गजेन्द्र ठाकुर, मैथिलीक पहिल 'अरूजी' (गजल छन्दशास्त्रक विद्वान) क रूपमे मान्य, पहिल 'गजलशास्त्रम्' (मैथिली गजल छन्दशास्त्र) क रचना केलक, जे समकालीन कविसभक लेल एकटा व्यवस्थित सैद्धान्तिक ढाँचा प्रदान केलक आ प्रदर्शित केलक जेक़ाफ़िया-रदीफ संरचना केँ मैथिलीक प्राकृत आ अपभ्रंश सँ प्राप्त मोरिक छन्द परम्परा मे सफलतापूर्वक अनुकूलित कएल जा सकैत अछि। ओही कठोरता जे गङ्गेश व्याप्ति परिभाषासभ पर लागू केनए छल — प्रत्येक परिभाषाक प्रतिउदाहरणसभक विरुद्ध परीक्षण करबाक जब धरि सबसँ सटीक सूत्रीकरण पर नै पहुँचल जाए — आन्दोलन द्वारा गजल छन्दशास्त्र पर लागू कएल जाइत अछि, औपचारिक नियम स्थापित करैत जे मैथिली गजल केँ एकटा सुसंगत विधा बनाबैत अछि, नै एकटा ढीला अनुकूलन।

निष्कर्ष

भाग ३ • तकनीकी नव्य-न्याय, कारकवाद आ आधुनिक पठन

गङ्गेश उपाध्यायः दर्शन, इतिहास, आ प्रतिरोध

एहि शोध-प्रबन्ध छहि प्रमुख स्रोतसभक माध्यम सँ गङ्गेश उपाध्याय केँ अनुरेखण केनए अछि जे एकर बीच हुनकर महत्वक छहि अलग-अलग पहलू पर प्रकाश डालैत अछि। साहित्य अकादमी मोनोग्राफ आ डी. सी. भट्टाचार्यक 'हिस्ट्री' सँ: हुनकर जीवनी विवरण — नाम, जन्मस्थान, गोत्र, परिवार, कालक्रम, २४ पूर्ववर्ती जे हुनका संश्लेषित आ पार कएलक। पॉटर-भट्टाचार्य इन्साइक्लोपीडिया सँ: नव्य-न्यायक तकनीकी संरचना — एकर सम्बन्धात्मक शब्दावली, बोधक तर्क, सत्य आ जागरूकताक सिद्धान्त, आ गङ्गेश सँ रघुनाथ शिरोमणि धरि प्रक्षेपवक्र। शार्फस्टाइनक तुलनात्मक इतिहास सँ: विश्व दर्शनमे हुनकर स्थान डेसकार्टेस आ लाइबनिज क संग, आ अन्तःसांस्कृतिक ढाँचामे हुनकर पद्धतिगत कठोरताक अर्थ। वी. पी. भट्टक प्रत्यक्ष खण्ड अनुवाद सँ: तत्त्वचिन्तामणिक पहिल पुस्तक अंग्रेजीमे — ज्ञानक पूर्ण सिद्धान्त एकर तुलनात्मक आधार सँ लेल वैध आ अवैध ज्ञान, प्रत्यक्ष, एकर प्रकार, निर्विकल्पक आ सविकल्पक बोध, पहिचान, आ असाधारण प्रत्यक्ष धरि, सांख्य, बौद्ध, मीमांसा, वेदान्त, आ जैन स्थितिसभ सँ अन्तःसम्प्रदायिक बहससभ व्यवस्थित रूपसँ मानचित्रित कएल। समानांतर इतिहास सँ: दूषण पंजी सँ दमित जीवनी तथ्य, गङ्गेशक विरासतक संस्थागत सम्मान-हत्या, आ एकर पूर्ण मिथिलाक एकटा व्यक्तिक रूपमे पुनःप्राप्ति — नै केवल एकर अभिजात अल्पसंख्यक।

तत्त्वचिन्तामणिक तीन सौ पृष्ठ, जे दस लाख पृष्ठक टीका-टिप्पणी उत्पन्न केलक, एकटा व्यक्ति द्वारा उत्पादित छल जकर जीवन बादमे हुनका दावा करबैवाली जाति रूढ़िवादिता सँ सहमत नै छल। संस्कृत परम्पराक सबसँ महान तर्कशास्त्री, दार्शनिक जे आग्रह करैत छल जे प्रत्येक परिभाषाक प्रत्येक संभावित प्रतिउदाहरणक विरुद्ध परीक्षण कएल जाए, एकटा प्रतिउदाहरण जीवलक। ई, शायद, समानांतर इतिहास गङ्गेशक बारेमे सबसँ गहन सबक अछि: जे हुनकर दार्शनिक विधि आ हुनकर जीवनी वास्तविकता

विरोधाभासी नै बल्कि अभिसारी अछि — दुनू ओ सिद्धान्त केँ मूर्त रूप देबैत अछि जे वास्तविकता कोनो एकल ढाँचा सँ अधिक जटिल अछि, आ जे ईमानदार जाँच केँ प्रत्येक धारणा, चाहे कतना सेहो गहर धरि धरल गेल हो, संशोधित करबाक इच्छा मँग करैत अछि।

वी. पी. भट्टक प्रस्तावना तत्त्वचिन्तामणिक निरन्तर प्रासंगिकताक दृष्टिकोण सँ समाप्त होइत अछि: 'दर्शन, तर्क आ ज्ञानमीमांसाक सन्दर्भमे ग्रन्थ (टी. सी.) के महत्व पर पर्याप्त बल देबा अतिशयोक्ति नै होइत।' पॉटर इन्साइक्लोपीडिया: 'गङ्गेशक एकटा अद्वितीय प्रतिभा छल, जे हुनका विश्वक उत्कृष्ट दार्शनिक मस्तिष्कसभमे सुरक्षित रूपसँ रखैत अछि।' समानांतर इतिहास: पञ्जी-साक्ष्य अनुसार हुनकर जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलनि; एहि जीवनी तथ्यक प्रस्तुति संस्थागत इतिहासलेखनमे विवादक विषय बनल। शार्फस्टाइन: वैध आगमन सँ हुनकर जुड़ाव 'भावना मे समकालीन विज्ञानक दार्शनिकसभ जकाँ अछि।' विदेह: ओ सम्पूर्ण मिथिलाक अछि, एकर द्वारपालसभक नै।

सभ छहि दृष्टिकोण आवश्यक अछि। कोनो एक अकेल पर्याप्त नै अछि। जे व्यक्ति तत्त्वचिन्तामणिक प्रारम्भिक श्लोकमे 'गङ्गेश-स्तुते मितेन वचसे' — मैं, गङ्गेश, ई संक्षेपमे कहैत छी — लिखलक, ओ अपन शर्त पर लेल जाएबाक माँग करैत छल। सात शताब्दीक टीका, संस्थागत विनियोजन, समानांतर इतिहास पुनःप्राप्ति, आ डिजिटल अभिलेखन अखनो ओ शर्तसभक सामग्री केँ समाप्त नै केनए अछि।

तत्त्वचिन्तामणि (टी. सी.) क "विस्मयकारी अगम्य शैली आ विचार" ने लम्बा समय धरि अनुवादकसभकेँ रोकि राखल छल। तथापि ओही विश्लेषणात्मक कठोरता — बाल-विभाजन भेद, प्रतिस्पर्धी परिभाषासभक व्यापक गणना आ अस्वीकार, माँग जे प्रत्येक पद ठीक ओही भार ढोए जे एकरा पर रखल गेल अछि — ठीक ओही चीज अछि जे गङ्गेश केँ केवल एकटा ऐतिहासिक जिज्ञासा नै बल्कि दार्शनिक उद्यममे एकटा स्थायी योगदान बनाबैत अछि: एकटा प्रदर्शन जे विचारक स्पष्टता, जतय सेहो प्राप्त कएल जाए, एकटा मानवीय उपलब्धि अछि जे परम्परा, भाषा, आ समयक सीमासभक पार करैत अछि।

गङ्गेश न्याय-वैशेषिक संश्लेषण केँ परिष्कृत करबैवाला आ बौद्ध तर्क सँ खण्डन करबैवाला पूर्ववर्तीसभक लम्बा शृंखला सँ विरासतमे प्राप्त एकटा तर्क-संवेदनशील तत्वमीमांसा केँ परिष्कृत केलक:

• उदयनाचार्यः 'वास्तविक संस्थापक' जकर लक्षणमाला संशयवादीसभ द्वारा हमलाक गेल वैध ज्ञान (प्रमा) क पहिल परिभाषा प्रदान केलक।

• मणिकण्ठ मिश्र: न्यायरत्नक लेखक, जकर अनुमान आ व्याप्ति पर काम गङ्गेशक लेल एकटा प्राथमिक स्रोत छल, जे हुनका प्रायः अनाम रूपसँ उद्धृत करैत छल।

• तरणि मिश्र: रत्नकोषक लेखक, जकर निषेध आ कार्य-कारण पर दृष्टिकोण गङ्गेश द्वारा उद्धृत आ प्रायः खण्डन कएल गेल।

• शशधरः न्यायसिद्धान्तदीपक लेखक, जकर जटिल शैली 'चमकीला सोना' जकाँ विषयसभ पर गङ्गेशक जटिलताक टेम्पलेट प्रदान केलक।

• सोणदोपाध्याय: एकटा विद्वान जे निषेधक सिद्धान्तकेँ पथ प्रदर्शन केनए छल जतय प्रतियोगिता एकटा भिन्न आश्रय (व्यधिकरण-धर्मावच्छिन्न-प्रतियोगिता) मे रहैवाला गुण द्वारा निर्धारित होइत अछि।

गङ्गेशक पारिवारिक जीवनमे हुनकर पत्नी वल्लभा, तीन पुत्र — वर्धमान, सूपन, आ हरिशर्मा — आ एकटा बेटी छल।

• वर्धमान उपाध्याय: ज्येष्ठ पुत्र आ गङ्गेशक छात्र, ओ एकटा प्रसिद्ध विद्वान बनल जे प्रकाश आ उपाय टीका लिखलक, पुरान आ नव तर्कक बीच पुल बनौलक।

• बेटी: ओ बभनियम गामक साठे उपाध्याय सँ विवाह केलक, आ हुनकर पुत्र रत्नाकर वंशावली अभिलेखमे गङ्गेशक पोता क रूपमे अंकित अछि।

समानांतर इतिहास आन्दोलन, विदेह अभिलेख द्वारा संचालित, गङ्गेशक वंश सँ सम्बन्धित विवादास्पद विवरण पुनः प्राप्त केनए अछि जे रामानाथ झा जकाँ संस्थागत इतिहासकार द्वारा दमन कएल गेल छल। 'दूषण पंजी' (ब्लैक बुक), २००९ मे डिजिटल रूपसँ जारी, एकटा 'गुप्त' अभिलेख समाविष्ट करैत अछि जे गङ्गेश अपन पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद (पितृ परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते) जन्मल छल। आगा, ई अभिलेख हुनकर पत्नी वल्लभा केँ चर्मकारिणी (चमड़ा सिझावै वाली जाति) क रूपमे पहिचान करैत अछि। समानांतर

शोधकर्ता तर्क करैत छथि जे ई तथ्य अभिजात सामाजिक पदानुक्रम बनाए रखबाक लेल दमन कएल गेल, दमन कैँ एकर सच्ची विरासतक 'सम्मान-हत्या' क रूपमे वर्णन करैत छथि।

तकनीकी पद्धतिः बोधक तर्क

नव्य-न्याय मूल रूपसँ एकटा 'प्रमाण-न्याय' (ज्ञान-स्रोतक तर्क) अछि, जे प्राचीन विद्यालयक श्रेणी-केन्द्रित 'पदार्थ-न्याय' क विपरीत अछि। ई बोधक अवस्थासभक विशिष्ट पहलुसभ कैँ इंगित करबाक लेल 'सम्बन्धात्मक अमूर्तता' (रिलेशनल एब्स्ट्रैक्ट्स) क उपयोग करैत अछि:

• ज्ञान (ज्ञान): एकटा प्रासंगिक बोधात्मक कृत्यक रूपमे परिभाषित जे 'प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सम्बन्ध' (प्रतिबन्धकता) पर संचालित होइत अछि, जतय एकटा ज्ञान दोसरा कैँ अवरुद्ध करि सकैत अछि।

• विशेषण-विशेष्य ढाँचा: प्रस्तावनात्मक जागरूकता क रूपमे संरचित अछि, एकटा विशेष्य () क एकटा विशेषण () द्वारा एकटा सम्बन्ध () क माध्यम सँ योग्य प्रतिनिधित्व करैत अछि।

• अवच्छेदक (अवच्छेदक): 'प्रस्तुतिकरणक विधा' जे ठीक-ठीक बताबैत अछि जे कोन गुण सम्बन्ध संभव बनाबैत अछि। उदाहरण लेल, एकटा नील घड़ामे, घटत्व घड़ामे निवास करबैवाली विशेष्यताक अवच्छेदक अछि।

• परिमाणीकरण (परिमाणीकरण): नव्य-न्याय पश्चिमी परिमाणीकरणक परिणाम अमूर्तता द्वारा प्राप्त करैत अछि, जेना 'धुएँमे आगिक अभावक आश्रय द्वारा वर्णित आगिक अभावक एकटा सामान्य अभाव अछि'।

तत्त्वचिन्तामणिक संरचनात्मक अवलोकन

तत्त्वचिन्तामणि चारि प्रमाणसभक चारो ओर संगठित अछि आ लगभग १२, ००० ग्रन्थि सहित ४६ व्यापक खण्ड (प्रकरण) मे विभाजित अछि।

पुस्तक एकः प्रत्यक्ष खण्ड

२५ उप-खण्डसभमे विभाजित, ई प्रत्यक्ष कैँ ज्ञानक प्राथमिक स्रोतक रूपमे स्थापित करैत अछि।

• मङ्गलवादः गङ्गेश बहस करैत अछि जे का शुभ आशीर्वाद बाधासभ दूर करैत अछि या पूर्णता उत्पन्न करैत अछि, निष्कर्ष निकालैत अछि जे ओ अन्वय-व्यतिरेकक तर्क द्वारा बाधासभ दूर करैत अछि।

• प्रामाण्य-वादः एकटा 'अतिविश्वसनीयतावादी' या 'अपूरणीयवादी' दृष्टिकोण क बचाओ करैत अछि जतय ज्ञानक वास्तविक स्रोत तथ्यात्मक अछि। ओ मीमांसा सिद्धान्त 'स्वतः-प्रामाण्य' (आत्म-प्रमाणीकरण) कैँ अस्वीकार करैत अछि, बनाए रखैत अछि जे ज्ञान बाह्य रूपसँ बादक गतिविधिक सफलता द्वारा प्रमाणित होइत अछि।

• अनुव्यवसाय (अनुव्यवसाय): मनक अपन अवस्थासभक आन्तरिक प्रत्यक्ष। गङ्गेश एहि कैँ अचूक मानैत अछि।

• प्रत्यक्षक चरणः निर्विकल्पक (विशेषणसभक अनिश्चित बोध) कैँ सविकल्पक (निश्चित, अवधारणा-युक्त प्रत्यक्ष) सँ अलग करैत अछि।

• तात्विक बहससभः भट्टक अनुवादक खण्ड २ मे वायु कैँ स्पर्श द्वारा बोध कएल जाएबाक बहस आ सिद्धान्त शामिल अछि जे सोना एकटा अग्निमय प्रकाश अछि नै कि पार्थिव पदार्थ।

• आन्तरिक अङ्ग (मनस्): गङ्गेश स्थापित करैत अछि जे मन परमाणु आकार (अणु) अछि ताकि ई समझाएल जा सकए जे काति अनेक प्रत्यक्ष एक साथ किएक नै होए सकैत अछि।

पुस्तक दुईः अनुमान खण्ड

रचनाक सबसँ जटिल भाग, जे प्राकृतिक अन्तर्निहितता या व्याप्ति सँ निपटैत अछि।

• सिंह-व्याघ्रि परिभाषाः व्याप्तिक प्रसिद्ध 'सिंह-व्याघ्री' परिभाषासभ शामिल अछि।

• पक्षताः अनुमानात्मक विषयक शर्त, जे एकटा गुण-धारकक रूपमे परिभाषित जतय साध्य स्थापित करबाक इच्छा अछि।

• ईश्वरानुमानः विश्वक कार्य होएबाक आधार पर विश्वक कर्ताक रूपमे ईश्वर केँ स्थापित करैत अछि।

पुस्तक तीनः उपमान खण्ड

सबसँ छोट खण्ड, ज्ञात आ अज्ञात वस्तु (जेना गाय आ गवय) क बीच समानताक ज्ञानक विश्लेषण करैत अछि।

पुस्तक चारः शब्द खण्ड

त्रयीक एक-तिहाई गठन करैत अछि आ शाब्दिक बोध (शब्दबोध) पर केन्द्रित अछि।

• शब्दबोधक आवश्यकतासभः वाक्यात्मक अपेक्षा (आकाङ्क्षा), तार्किक संगतता (योग्यता), समीपता (आसत्ति), आ वक्ताक आशय (तात्पर्य) आवश्यक अछि।

कारकवादः व्याकरण आ तर्कक एकटा संश्लेषण

कारक-वाद, शब्द-खण्डमे पाबल जाइत अछि, क्रिया (क्रिया) क सम्बन्धमे संज्ञासभ निभाबैवाला शब्दार्थ आ वाक्यात्मक भूमिकासभक जाँच करैत अछि।

• कारकक परिभाषाः क्रियाक सम्पादनमे सहायक कारक (क्रिया-निर्वर्तकम्) ।

• कर्तृक प्रधानता: स्वतन्त्र कारक (स्वतन्त्रः कर्ता) क रूपमे परिभाषित, विशेष रूपसँ कृतिमत्व (इच्छाशक्ति या मानसिक प्रयासक धारण) सँ विशेषता।

• परिणामक आश्रय (कर्मन्)ः वस्तु केँ विश्लेषण कएल जाइत अछि क्रियाक परिणामक आधार (फलाश्रय) क रूपमे।

• पदानुक्रमः कर्तृ, कर्मन्, आ करण प्रमुख कारक अछि, जबकि सम्प्रदान, अपादान, आ अधिकरण आश्रित अछि।

• समास विश्लेषण: गङ्गेश छहि प्रकारक समासक एकटा व्यापक विश्लेषण प्रदान करैत अछि, जाहिमे बहुव्रीहि आ तत्पुरुष शामिल अछि।

आधुनिक वैश्विक प्रभाव आ अनुवाद (२००५–२०२५)

२१म् शताब्दीमे अंग्रेजीमे व्याख्यात्मक अनुवादक निश्चित पूर्णता देखल गेल:

१. स्टीफन फिलिप्स (२०२०): एकटा तीन-खण्डीय टिप्पणी सहित अनुवाद, 'ज्वेल ऑफ रिफ्लेक्शन ऑन द ट्रुथ अबाउट ज्ञानमीमांसा' (ब्लूम्सबरी), गङ्गेशक 'अतिविश्वसनीयतावाद' केँ आधुनिक विश्लेषणात्मक दर्शनक लेल सुलभ बनाबैत अछि।

२. वी. पी. भट्ट (२००५–२०२५): एकटा बहु-खण्डीय शृंखला पूर्वीय बुक लिंकर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशितः

• शब्द (शब्द-खण्ड): २००५ (२ खण्ड) ।

• प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष-खण्ड): २०१२ (२ खण्ड) ।

• अनुमान (अनुमान-खण्ड): २०२१ (२ खण्ड) ।

• ईश्वरानुमान आ उपमान (ईश्वरानुमान आ उपमान-खण्ड): २०२५ (२ खण्ड) ।

तुलनात्मक आ संगणनात्मक परिप्रेक्ष्य

बेन-अमी शार्फस्टाइन गङ्गेश केँ 'तर्क-संवेदनशील पद्धतिगत तत्वमीमांसा'क अन्तर्गत वर्गीकृत करैत अछि, डेसकार्टेस आ लाइबनिज सँ समानता खिचैत अछि। आधुनिक शोधकर्ता नोट करैत छथि जे नव्य-न्यायक अवच्छेदकक पदानुक्रमित उपयोग आधुनिक कृत्रिम बुद्धिमत्ता आ प्राकृतिक भाषा प्रसंस्करण (एनएलपी) सँ संगत अछि।

डिजिटल लोकतंत्रीकरण आ अभिलेखीय प्रतिरोध

समकालीन विदेह आन्दोलन मिथिलाक धरोहरक संरक्षणक लेल डिजिटल मंचसभक उपयोग करैत अछि, ११, ००० ताड़पत्र तिरहुता पाण्डुलिपिसभक अनुलेखन करैत आ यूनिकोडक लेल तिरहुता (मिथिलाक्षर) लिपिक मानकीकरण करैत अछि। दूषण पंजी कैं होस्ट करि, ओ 'विचार-रत्न' क एकटा लोकतांत्रिक आ बहुआयामी समझ सुनिश्चित करैत अछि।

गङ्गेश उपाध्यायक विरासत भारतीय बौद्धिक परम्पराक शिखरक रूपमे खड़ा अछि। जखन संस्थागत इतिहास तार्किक नवाचार आ धार्मिक रूढ़िवादिता पर जोर देबैत अछि, तखन डिजिटल अभिलेख सभ द्वारा पुनः प्राप्त समानांतर इतिहासलेखन हुनकर जीवनीक उपेक्षित आ विवादास्पद पहलुसभ, जेना एकर अन्तर्जातीय विवाह आ हुनकर पितृ-मरणोत्तर जन्मक दमित अभिलेख, पुनः प्राप्त करैत अछि। २०२५ मे वी. पी. भट्टक अनुवादक पूर्णता सुनिश्चित करैत अछि जे एकर ज्ञान सिद्धान्त अर्थ, क्रिया, आ वास्तविकता पर वैश्विक बहससभ कैं प्रकाशित करबाक लेल जारी रहत।

गङ्गेश उपाध्याय काश्यप-गोत्रीय मैथिल ब्राह्मण छल जे मिथिलामे करणाट वंशक पतन (११९१–१३२६ ई.) आ ओइनिवार वंशक उदय (१३४४–१४१३ ई.) क बीच एकटा महत्वपूर्ण राजनीतिक संक्रमणकालमे रहल। वंशावली उत्तराधिकार हुनकर अवधि लगभग १३००–१३५० ई. स्थापित करैत अछि। जखन पारम्परिक विवरण हुनका करिओन गाममे रखैत अछि, तखन पूर्वज अभिलेख हुनका मुख्य रूपसँ चादना गाम सँ जोड़ैत अछि, जे राजा द्वारा हुनकर परिवार कैं उपहारमे देल गेलछल। मिथिलामे, ओ 'जगद्गुरु' आ 'महामहोपाध्याय' क प्रतिष्ठित उपाधि धारण केनए छल।

गङ्गेश उपाध्याय (फ्लोरुइट १३२० ई.) विश्व दर्शनक इतिहासमे सबसँ तकनीकी रूपसँ निपुण आ दार्शनिक रूपसँ परिणामकारी विचारकसभमे सँ एक अछि। तत्त्व-चिन्तामणिक उपलब्धि — जेना पॉटर इन्साइक्लोपीडिया, शार्फस्टाइनक तुलनात्मक इतिहास, आ विदेह अभिलेखक प्रासंगिक सामग्री सभ अपन-अपन दृष्टिकोण सँ पुष्टि करैत अछि — केवल एकटा परम्पराक आन्तरिक बहस कैं आगा बढ़ाबैक नै छल, बल्कि उन स्थितिसभ कैं रूपान्तरित करबाक छल जे सभ बादक भारतीय दार्शनिक विचार आयोजित कएल गेल।

पॉटर इन्साइक्लोपीडियाक फैसला: 'गङ्गेशक एकटा अद्वितीय प्रतिभा छल, जे हुनका विश्वक उत्कृष्ट दार्शनिक मस्तिष्कसभमे सुरक्षित रूपसँ रखैत अछि।' शार्फस्टाइनक तुलनात्मक निर्णय: जे गङ्गेशक 'वैध आगमन आ किफायती व्याख्याक समस्यासभ सँ जुड़ाव भावना मे समकालीन विज्ञानक दार्शनिकसभ जकाँ अछि।' गङ्गेश तर्क विकसित केलक, एकर सिद्धान्तसभ कैं एकटा व्यवस्थित रूप देनए, आ सत्य आ असत्यक बीच अन्तर केलक। ई मूल्यांकन — विश्वकोशीय विद्वत्ता, तुलनात्मक इतिहास, आ मैथिली बौद्धिक जीवनी सँ — एकटा निष्कर्ष पर अभिसरण होइत अछि: जे तत्त्व-चिन्तामणि मे, मिथिलाक एकटा दार्शनिक चौदहम् शताब्दीमे एकटा रचना बनौलक जकर विचारक सटीकता, तर्कक कठोरता, आ एकटा महान सभ्यता पर परिवर्तनकारी प्रभाव मानव मनक स्थायी उपलब्धिसभमे मान्यताक हकदार अछि।

समानांतर साहित्य आन्दोलन जे मैथिली लोक, दलित, आ महिला साहित्यिक आवाजसभकैं संस्कृत दार्शनिक कैननक साथे पुनः प्राप्त आ उत्सव मनाबैत अछि जे तत्त्व-चिन्तामणि उत्पादन केलक। विदेह परियोजनाक मिथिलाक सम्पूर्ण सांस्कृतिक उत्पादन कैं एक साथ राखबाक आग्रह — महामहोपाध्याय आ लोक-कवि, तत्त्व-चिन्तामणि आ चर्या-पद, व्याप्ति-द्वन्द्वशास्त्र आ विद्यापति पद — एकर सबसँ महत्वपूर्ण सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य अछि। गङ्गेश सम्पूर्ण मिथिलाक अछि, केवल एकर संस्कृत अभिजात वर्गक नै।

भाग ४ • अभिलेखीय साक्ष्य, प्रत्यक्षखण्ड आ सांस्कृतिक पुनर्पाठ

ई गङ्गेश उपाध्याय (फ्लोरुइट १३२० ई., मिथिला) पर अब धरि कोनो भाषामे उत्पादित सबसँ व्यापक विद्वत्तापूर्ण अध्ययन क एकत्र करैत अछि। सात प्रमुख स्रोतसभ पर आधारित — साहित्य अकादमी मोनोग्राफ (झा आशोक, २०१६), डी. सी. भट्टाचार्यक 'हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला' (१९५८), कार्ल एच. पॉटर आ शिबजिबन भट्टाचार्यक 'एन्साइक्लोपीडिया ऑफ इंडियन फिलॉसफीज' खण्ड ६ (१९९३), बेन-अमी शार्फस्टाइनक 'अ कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी' (एसयूएनवाई, १९९८), वी. पी. भट्टक तत्त्वचिन्तामणि पर अनुवाद आ टीका, गजेन्द्र ठाकुरक विदेह/पंजी प्रबन्ध मूल दूषण पंजी अभिलेख (२००९ जारी) सहित, आ स्टीफन एच. फिलिप्सक स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफीमे गङ्गेश पर प्रविष्टि (२०२०) आ अन्य स्रोतसभ — शोध-प्रबन्ध हुनकर महत्वक प्रत्येक आयाम क अनुरेखण करैत अछि: जीवनी, ग्रंथीय, ज्ञानमीमांसीय, तार्किक, विश्व-तुलनात्मक, टीका-ऐतिहासिक, आ सभ्यतागत। विशेष ध्यान पूरे वी. पी. भट्टक प्रत्यक्ष-खण्ड अनुवादक सामग्री पर देनए गेल अछि, जे मङ्गलवाद, पूर्ण प्रामाण्यवाद

(गुण-दोष बहस, वैधताक गठन खण्ड, आ प्रभाकर-नैयायिक द्वन्द्वशास्त्र सहित), प्रमालक्षण, त्रुटिक सिद्धान्त एकर सम्पूर्ण नैयायिक रूपमे, सन्निकर्ष-वाद, समवायवाद, अभाववाद, प्रत्यक्षकारणवाद, मनोऽणुत्ववाद, प्रत्यभिज्ञावाद, निर्विकल्पकवाद, आसविकल्पकवाद कैँ शामिल करैत अछि। प्राथमिक-स्रोत दूषण पंजी पाठ पुनरुत्पादित आ पूर्ण विश्लेषण कएल गेल अछि।

जीवन, उपाधि, आ दमित पंजी साक्ष्य

गङ्गेशक उपाधि आ पंजी गवाही

स्टीफन एच. फिलिप्स स्टैनफोर्ड इन्साइक्लोपीडिया ऑफ फिलॉसफी (२०२०) मे लिखैत छथि: 'मिथिलामे रखल वंशावली अभिलेख सुझाबैत अछि जे हुनकर एकटा पत्नी आ तीन पुत्र आ एकटा बेटी छल। एकटा बच्चा प्रसिद्ध न्याय लेखक, वर्धमान छल। गङ्गेश स्पष्ट रूपसँ अपन जीवनकालमे बहुत प्रसिद्धि प्राप्त केलक, जगद्गुरु क रूपमे उल्लिखित, जे हुनकर समयक शैक्षिक संस्थासभक लेल 'डिस्टिंग्विश्ड युनिवर्सिटी प्रोफेसर' क स्थूल समकक्ष होत।'

गजेन्द्र ठाकुर सीधा पंजी अभिलेख सँ लेल आगा सटीकता जोड़ैत छथि: गङ्गेश केवल जगद्गुरु नै, बल्कि परमगुरु — सर्वोच्च शिक्षक उपाधि — सेहो धारण केनए छल। पंजी क अनुसार, मिथिलाक सम्पूर्ण अभिलेखित बौद्धिक इतिहासमे केवल एकटा अन्य व्यक्ति परमगुरुक उपाधि धारण केनए छल: नूतन वाचस्पति (पूर्ववर्ती वाचस्पति मिश्रक उत्तराधिकारी), जेगङ्गेशक बाद आएल। ई गङ्गेश कैँ मिथिलाक सम्पूर्ण इतिहासमे ठीक दुई परमगुरुसभमे सँ एक बनाबैत अछि। गङ्गेशक स्मृतिक साथ कएल गेल अन्याय — 'पहिल रामानाथ झा द्वारा, तखन उदयनाथ झा आशोक द्वारा' — एहि कारण मिथिलाक सम्पूर्ण परम्परामे सबसँ सजाएल दार्शनिकक जीवनी दबाबैक मे समाविष्ट अछि।

वी. पी. भट्टक अनुवाद गङ्गेशक प्रारम्भिक श्लोकसभमे समर्पण आ आत्म-प्रस्तुति क पुष्टि करैत अछि: 'शिक्षकसभ सँ तर्कशास्त्र सीखि, गुरुसभक सिद्धान्त अर्थात् प्रभाकर मीमांसकसभक सिद्धान्त जानि, दुनू विद्यालयसभक सम्पूर्ण सार विचारक दिव्य नेत्र सँ अवलोकन करि, दोषसभक झुण्डक कारण सबसँ कठिन नियमसभक मामलामे निर्णायक सिद्धान्तसभक शिक्षाक गङ्गेश, उपाध्याय, तत्त्व-चिन्तामणिक रचना मापल शब्दसभ सँ करैत अछि।' वाक्यांश 'मितेन वचसे' — मापल शब्दसभ सँ — तत्त्वचिन्तामणिक पद्धतिक गङ्गेशक अपन चित्रण अछि: सटीक, किफायती, यथार्थ।

दूषण पंजी: मूल पाठ आ विश्लेषण

पंजी प्रणाली आ हरिसिंहदेव

पंजी प्रणाली मिथिलाक अन्तिम महान करणाट राजा हरिसिंहदेव (जन्म १२९४ ई., राज्यारोहण १३०७ ई., गियासुद्दीन तुगलक सँ पराजयक बाद नेपाल भागल १३२४-२५ ई.) द्वारा स्थापित कएल गेल छल। संस्थापक पंजीकार गुणाकर झा (मैथिल ब्राह्मण), शंकरदत्त (कर्ण कायस्थ), विजयदत्त (क्षत्रिय) छल। पंजी अपन वर्तमान स्वरूपमे शाक १२४८ (१३२६ ई.) मे मिथिलाक पण्डितसभ द्वारा औपचारिक रूप देल गेल। हरिसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छल, जे शाक १००९ मे करणाट वंश स्थापित केनए छल। बादक संशोधन मिथिलेश महाराजा माधव सिंह द्वारा १७६० ई. मे आदेशित कएल गेल; ई संशोधनक बाद (आ १८०० ई. सँ पहिने नै) मैथिल ब्राह्मणसभक बीच श्रोत्रिय उपजाति उत्पन्न भेल। नेपालक मिथिला भागमे आजो मैथिल ब्राह्मणसभक बीच कोनो श्रोत्रिय उपजाति नै अछि।

पंजी पाण्डुलिपिसभक अङ्कीकरण गजेन्द्र ठाकुर द्वारा २००७ आ २००९ क बीच कएल गेल। अंशुमान पाण्डे (पीएचडी, मिशिगन विश्वविद्यालय, २०१४) स्वीकार करैत छथि: 'नयाँ दिल्लीक गजेन्द्र ठाकुर हमरा २००७ मे मैथिल ब्राह्मणक वंशावली अभिलेखक अङ्कीकृत प्रतिप्रदान केनए छल... हम २००७ मे गजेन्द्र ठाकुर सँ पंजी अभिलेखक एकटा पूर्ण अङ्कीकृत सेट प्राप्त करबाक लेल पर्याप्त भाग्यशाली छलाह।' पाण्डुलिपिसभ २००९ मे विदेह वेब-अभिलेख आ गूगल बुक्स पर विदेह पोथीमे अपलोड कएल गेल।

गङ्गेशक लेल दूषण पंजी प्रविष्टि — मूल मैथिली पाठ

निम्नलिखित गङ्गेशक लेल मूल पंजी प्रविष्टि अछि, जे दूषण पंजी (पंजी प्रबन्ध खण्ड १ & २, गजेन्द्र ठाकुर/विदेह, २००९ जारी) सँ पुनरुत्पादित:

४९.१८८/२. चर्मकारिणी। मन्दर। वभनियम। छदन। तत्त्वचिन्तामणि-कारक-गङ्गेश। छदन-गङ्गेश-कनक / रत्नाकरमात्र (अज्ञात) / गङ्गेश / वल्लभ / भवै / महेश्वर // // जीवे

२१//१० छदन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक जगद्गुरु गङ्गेश

छदन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक गङ्गेश-की वल्लभ चर्मकारिणी पितृ-परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते तत्त्व चिन्तामणि कारक गङ्गेश-उत्पत्ति --- चर्मकारिणी मेधा-क संतान-क लगिमे छलन्हि

छदन सँ तत्त्व चिन्तामणि कारक म. म. गङ्गेश

तत्त्व चिन्तामणि कारक म. म. पा. गङ्गेश-विषयक लेख प्राचीन पंजी सँ उपलब्ध। पितृ-परोक्षे पञ्च वर्ष व्यतीते गङ्गेशोत्पत्तिः इति प्राचीन लेखनीयः कुत्रापि

देवानन्द पंजी ३९-२: छदन सँ जगद्गुरु गङ्गेश सुताया वभनियम सँ जनादित्य सुत साधुकार पत्नी

देवानन्द पंजी ३३९-३: जगद्गुरु गङ्गेश सुता सूपन दौ भाण्डारिसमास सँ हरादित्य दौ। पुत्र सुताच गोरा, जाजीवल सँ जीवे पत्नी, सुता सन्दगाही भवेश्वर। अत्र अस्थाने सूपन-भ्रातृ हरिशर्मा दारिति क्वचित् जाजीवल ग्राम

देवानन्द पंजी ३०=५: छदन सँ उपयाकारक म. म. पा. वर्धमान सुताच खण्डवाला सँ विश्वनाथ सुता शिवनाथ पत्नी। गङ्गेश --- म. म. वर्धमान / सूपन / हरिशर्मा

प्रविष्टिक निर्णायक जीवनी तथ्य स्पष्ट अछि: तत्त्वचिन्तामणिकार गङ्गेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेल आ हुनकर वल्लभा चर्मकारिणी छलथि। पञ्जी-पाठमे भवै, महेश्वर, जीवे, सूपन/हरिशर्मा आ वर्धमान आदि नाम अलग-अलग वंश-सूत्रमे अबैत अछि; एहि कारण 'वल्लभ' केँ स्वतः सन्तान मानब उचित नहि। देवानन्द-पञ्जी सूपन/हरिशर्मा आ वर्धमान सहित आगाँक वंश-सम्बन्धक अतिरिक्त विवरण दैत अछि।

दमन शृंखला आ एकर परिणाम

डी. सी. भट्टाचार्य 'हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला' (१९५८, अध्याय ३, पृ. ९६-९९) मे लिखैत छथि: 'जे परिवार सामाजिक स्थितिमे निम्न छल, ओ अखन मिथिलामे विलुप्त अछि — गङ्गेशक परिवार पूर्ण रूपसँ उपेक्षित अछि आ हमरा हुनकर पिताक नाम सेहो जानबाक अपेक्षा नै कएल जाइत... चूँकि गङ्गेशक कोनो अन्य सन्दर्भ नै अछि, हम मानि सकैत छी जे परिवार फेर सँ महत्वहीन भऽ गेल आ हुनकर पुत्रक मृत्युक तुरन्त बाद विलुप्त भऽ गेल।' ओ स्पष्ट रूपसँ कहैत अछि जे ई सभ सूचना प्रो. रामानाथ झा द्वारा आपूर्ति कएल गेल छल। गजेन्द्र ठाकुर ई केँ 'पूर्ण असत्य' कहैत छथि — देवानन्द पंजी अभिलेख नामित गामसभमे गङ्गेशक वंशज केँ अनेक पीढ़ी धरि देखाबैत अछि।

२०१६ साहित्य अकादमी मोनोग्राफ उदयनाथ झा आशोक द्वारा (गङ्गेश उपाध्याय, भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखला) दमन केँ कायम राखलक: 'ओ मुद्दा केँभ्रमित करबाक प्रयास करैत अछि, मुदा अखन कम सँ कम २००९ सँ कोनो भ्रम नै अछि। मुदा २०१६ मे साहित्य अकादमी जातिवादी एजेंडा केँ आगा बढ़ाबैत देखाबैत अछि। उदयनाथ झा हुनकर नाम, वंश आदि खोजबाक ढोंग करैत अछि, जतय खोजबाक लेल किछु नै अछि, तथापि ओ सत्य बताबाक साहस नै जुटा सकलक, आ अन्ततः २०१६ मे ओही तथ्य दोहराबैत अछि जे दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य पहिने सँ १९५८ मे प्रकाशित करि चुकल छल' (गजेन्द्र ठाकुर) ।

नव्य-न्याय विद्यालयक लेल परिणाम: बंगालक वासुदेव सार्वभौम पक्षधर मिश्रक सहपाठीक रूपमे मिथिला पढ़बाक आएल, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलक आ सार्वभौमक उपाधि प्राप्त केलक। ओ तत्त्वचिन्तामणि (किएक पक्षधर आ मिथिलाक अन्य शिक्षक एकर नकल करबाक अनुमति देनए नै छल) आ उदयनक न्यायकुसुमाञ्जलि-कारिका कण्ठस्थ केलक। रघुनाथ शिरोमणि, वासुदेवक शिष्य, शास्त्रार्थ मे अपन गुरु पक्षधर केँ पराजित केलक आ प्रमाणीकरणक अधिकार लेलक। नव्य-न्याय विद्यालक बाद नवद्वीपमे स्थापना भेल। रघुनाथ शिरोमणिक बाद, बंगालक छात्र मिथिला आबै बन्द क देलक। 'नव्य-न्याय विद्यालयक मिथिला सँ विलुप्ति, जेना ऊपर वर्णित अछि, गङ्गेश उपाध्याय आहुनकर परिवारक सम्मान-हत्या क विरुद्ध प्रकृतिक बदला छल' (गजेन्द्र ठाकुर) ।

वर्धमान, गङ्गेशक पुत्र, गङ्गेश केँ 'सुकविकैरवकाननेंदुः' — सुकविसभक जङ्गलमे चन्द्रमा — कहैत अछि। वर्धमानक अपन लेखनमे संरक्षित ई काव्यात्मक उपाधि आपु स्वयं वंशावली साक्ष्यक एकटा रूप अछि जे पंजी अभिलेख पुष्टि करैत अछि: गङ्गेश तर्कक साथ-साथ कविता सेहो लिखलक, मुदा हुनकर काव्य संग्रह पूर्ण रूपसँ खोइ गेल अछि — 'गङ्गेश जकाँ प्रसिद्ध विद्वानक कविता अखन उपलब्ध नै होएबाक अन्तर्निहित षड्यन्त्र स्पष्ट अछि' (गजेन्द्र ठाकुर) ।

गङ्गेश आ तत्त्वचिन्तामणिक पूर्ण अनुवाद

गजेन्द्र ठाकुर दस्तावेज करैत अछि जे दुई विद्वान अखन तत्त्वचिन्तामणिक पूर्ण अंग्रेजी अनुवाद उत्पादन केनए अछि। स्टीफन एच. फिलिप्सक 'ज्वेल ऑफ रिफ्लेक्शन ऑन द ट्रुथ अबाउट ज्ञानमीमांसा: अ कम्प्लीट एंड अनोटेटेड ट्रांसलेशन ऑफ द तत्त्व-चिन्ता-मणि' (ब्लूम्सबरी एकेडमिक, २०२०) सभ चारि पुस्तकक पहिल एकल-अनुवादक अंग्रेजी रूपान्तरण अछि। वी. पी. भट्ट अखन सभ चारि पुस्तक आठ खण्डमे पूर्ण केनए अछि: शब्द खण्ड (२ खण्ड, २००५); प्रत्यक्ष खण्ड (२खण्ड, २०१२); अनुमान खण्ड (२ खण्ड, २०२१); ईश्वरानुमान आ उपमान खण्ड (२ खण्ड, २०२५) — सभ पूर्वीय बुक लिंकर्स, दिल्ली द्वारा प्रकाशित, परिचय, संस्कृत पाठ, अनुवाद आ व्याख्या सहित।

फिलिप्सक प्रति गजेन्द्र ठाकुर द्वारा उल्लिखित अन्याय: किएक रामानाथ झाक दमन भट्टाचार्यक १९५८ इतिहासमे आ तखन २०१६ साहित्य अकादमी मोनोग्राफमे प्रसारित भेल, फिलिप्स — जे जीवनी सूचनाक लेल एहि स्रोतसभ पर निर्भर रहबाक लेल बाध्य छल — गङ्गेशक परिवार आ सामाजिक स्थितिक बारेमे अपूर्ण आ विकृत तथ्य प्राप्त केलक। २०म् आ २१म् शताब्दीक दमनक 'दूष्परिणाम' एहि प्रकारे पहिल पश्चिमी विद्वान पर पड़ल जे सम्पूर्ण तत्त्वचिन्तामणिक अनुवाद केलक। दूषण पंजी अभिलेख, विदेह द्वारा २००९ मे जारी, सुधार अछि जे फिलिप्स आ गङ्गेशक प्रत्येक बादक विद्वानक लेल आवश्यक अछि।

तत्त्वचिन्तामणि — संरचना, दायरा, आ नव्य-न्याय

रचना आ एकर सांस्कृतिक स्थान

वी. पी. भट्टक प्रत्यक्ष खण्ड अनुवादक प्रस्तावना तत्त्वचिन्तामणि कैं नव्य-न्यायक पहिल आ परिभाषित रचनाक रूपमे वर्णन करैत अछि: ई 'भारतीय ज्ञान आतर्क सिद्धान्तक विकासमे एकटा नव युगक शुरुआत केलक' आ 'नव्य-न्यायक षोडश श्रेणीसभकैं चारि शीर्षकसभ' प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान, आ शाब्दिक प्रमाणक तहत लेलक। एकर अनुवाद इतिहासमे: भट्टक आठ-खण्डीय शृंखला (२००५-२०२५) सभ चारि पुस्तक कैं शामिल करैत अछि; फिलिप्सक ब्लूम्सबरी २०२० एकल-खण्ड अनुवाद सेहो एकरा करैत अछि। दुनू रचना एक साथ पाठ कैं पहिल बेर अन्तर्राष्ट्रीय दार्शनिक समुदायक लेल सुलभ बनाबैत अछि।

शार्फस्टाइनक तुलनात्मक निर्णय: गङ्गेशक ३००-पृष्ठ पाठ 'अनुमानित रूपसँ दस लाख पृष्ठक टीका-टिप्पणी के लेल उत्तरदायी छल।' पॉटर-भट्टाचार्य: 'गङ्गेशक एकटा अद्वितीय प्रतिभा छल, जे हुनका विश्वक उत्कृष्ट दार्शनिक मस्तिष्कसभमे सुरक्षित रूपसँ रखैत अछि।' भट्टक अनुवादमे केवल प्रत्यक्ष खण्ड दुई खण्डमे ८०० सँ अधिक पृष्ठ धरि फैलल अछि, आ ई चारि पुस्तकसभमे सँ केवल पहिल अछि। एकटा पाठक एकर टीका-टिप्पणी सँ माप केवल मात्रात्मक नै अछि: एकर अर्थ ई अछि जे गङ्गेशक बाद पाँच सय वर्ष धरि, कोनो गम्भीर भारतीय दार्शनिक हुनकर शब्दावली, हुनकर परिभाषा, आ हुनकर पद्धति बिना नै सोचि सकत छल।

ज्ञानमीमांसा — प्रत्यक्ष-खण्ड पूर्ण रूपमे

सभ तेरह खण्डक अवलोकन

तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्ष-खण्ड तेरह प्रमुख प्रकरण (उप-खण्ड) सँ मिलल अछि, जेना वी. पी. भट्टक दुई-खण्डीय अनुवाद द्वारा प्रलेखित: (१) मङ्गलवाद; (२) प्रामाण्यवाद; (३) प्रमालक्षण; (४) अप्रमावाद; (५) प्रत्यक्षवाद; (६) समवायवाद / सन्निकर्षवाद; (७) अनुपलब्धिवाद; (८) अभाववाद; (९) प्रत्यक्षकारणवाद; (१०) मनोऽणुत्ववाद; (११) प्रत्यभिज्ञावाद / अनुव्यवसायवाद; (१२) निर्विकल्पकवाद; (१३) सविकल्पकवाद। भट्टक अनुवादक खण्ड १ सामान्य परिचय आ प्रारम्भिक खण्डसभ कैं शामिल करैत अछि; खण्ड २ (पृ. २६२-८०३) मङ्गलवाद सँ सविकल्पकवाद धरि कैं शामिल करैत अछि।

मङ्गलवाद (१.१)

गङ्गेश तत्त्वचिन्तामणिक शुरुआत भगवान ईश्वर कैं प्रणाम सँ करैत अछि: 'तीन पुरसभक संहारक आ अनन्त महिमाक; जे, यद्यपि गुण सँ परे अछि, अच्युत संकल्पक अछि, तीन गुणसभक माध्यम सँ ब्रह्माण्डक कारण अछि, तीन नित्य पहलुसभक प्रकृतिक अछि, तीन रूपक अछि आ सृष्टि, स्थिति आ विनाशक कार्यकरैत अछि, आ करुणाक सागर आ तीनों लोकक एकमात्र परम शरण अछि' (भट्ट खण्ड २, पृ. २६२) ।

मङ्गलवाद खण्ड २ क एक महत्वपूर्ण भाग घेरैत अछि किएक ई दार्शनिक रूपसँ भारित अछि: एकरा काजक शुरुआतमे आशीर्वाद कार्यक पूर्णता सँ कार्यकारण सम्बन्ध रखैत अछि (मङ्गल-कारणत्व) ई स्थापित करबाक आवश्यकता होइत अछि। गङ्गेश पहिल मीमांसक दृष्टिकोण प्रस्तुत करैत अछि (१.१.२): शिक्षकसभ सँ तर्कशास्त्र सीखि, गुरुसभक सिद्धान्त (प्रभाकर मीमांसक) जानि, दुनू

विद्यालयसभक सम्पूर्ण सार विचारक दिव्य नेत्र सँ अवलोकन करि, गङ्गेश तत्त्व-चिन्तामणिक रचना 'मापल शब्दसभ' (मितेन वचसे) सँ करैत अछि।

शीर्षकक औचित्य (१.१.३): 'विद्वानसभ द्वारा (विचारक) रत्नक पालिस करबाक क्रिया अर्थात् भयंकर नास्तिकसभ (बौद्ध) के अज्ञानक अन्धकार दूर करबाक क्रिया अछि। ई संभव अछि, किएक न त विरोधीसभ (बौद्ध आदि) के दृष्टिकोणमे जाँचक कौशलक अनुरेखण कएल जा सकैत अछि, न अपन प्रणाली (न्याय) क निर्णायक सिद्धान्त स्थापित करबैवाला शब्दसभमे दरिद्रताक अनुरेखण कएल जा सकैत अछि।' गङ्गेश एहि प्रकारे अपन प्रारम्भिक पंक्तिसभ सँ घोषणा करैत अछि जे एकर परियोजना एक साथ रचनात्मक (न्यायप्रणाली स्थापित करबाक) आ विवादात्मक (बौद्ध चुनौती दूर करबाक) अछि।

मङ्गलक कार्य-कारण पर बहस (१.१.५-२५, भट्ट खण्ड २, पृ. २६५-३००): बौद्ध आपत्ति करैत छथि जे मङ्गलक कार्य-कारण अन्वय-व्यतिरेक द्वारा निश्चित नै कएल जा सकैत अछि। मीमांसक परिशेष-अनुमान द्वारा उत्तर देबैत छथि। गङ्गेश स्थापित करैत अछि जे मङ्गल आरम्भ कएल गतिविधिक एकटा सहायक अनुष्ठानक रूपमे उचित अछि, बाधाक विनाश द्वारा पूर्णताक फल उत्पन्न करैत अछि — वैदिक आहुति द्वारा उत्पन्न पारलौकिक पुण्य द्वारा नै। तर्क (परिकल्पनात्मक तर्क) क पाँच-प्रकार वर्गीकरण एहि सन्दर्भमे उत्पन्न होइत अछि: आत्माश्रय, अन्योन्याश्रय, चक्रक, अनवस्था, आ प्रमाणबाधितार्थप्रसङ्ग।

प्रामाण्यवाद (२.२) — पूर्ण विवरण

आन्तरिक बनाम बाह्य वैधता

प्रामाण्यवाद (प्रामाण्यवाद) भट्ट खण्ड २, पृ. ३००-४१० कैं घेरैत अछि, आ प्रत्यक्ष-खण्डक सबसँ दार्शनिक रूपसँ घनत्वपूर्ण खण्ड अछि। केन्द्रीय बहस: का ज्ञानक वैधता (प्रामाण्य/प्रमाणत्व) अन्तर्निहित रूपसँ (स्वतः) गठित आ ज्ञात होइत अछि या बाह्य रूपसँ (परतः)?

सांख्य-मीमांसा स्थिति (स्वतः): वैधता आ अवैधता दुनू स्वयं-प्रमाणित अछि, ज्ञान उत्पादन करबैवाला कारणसभक समग्रता द्वारा गठित आ ज्ञात। बौद्ध स्थिति: ज्ञानमे अवैधता अन्तर्निहित अछि, सत्यता बाह्य अछि। नैयायिक स्थिति (परतः): वैधता आ अवैधता दुनू बाह्य स्थितिसभ — सफल या असफल गतिविधि — कैं एकर गठन आ निर्धारणक लेल आवश्यकता होइत अछि।

नैयायिक परिभाषा: 'ज्ञानक वैधता या प्रामाणिकताक निर्धारणक स्वतःत्व या तऽ पहिल ज्ञानसभक कारणसभक समग्रता द्वारा जे निर्धारित होइत अछि, एकर अवस्था अछि, या प्रामाणिकताक सभ आश्रयसभक निर्धारण करबैवाला द्वारा निर्धारित होएबाक अवस्था अछि, या ओही प्रामाणिकताक सन्दर्भ करबैवाला उत्पादित ज्ञान द्वारा निर्धारित होएबाक अवस्था अछि। आ ज्ञानक प्रामाणिकताक निर्धारणक परतस्त्व अर्थात् कारणसभक समग्रता बिना निर्धारित होएबाक अवस्था अछि।' (भट्ट खण्ड २, पृ. ३४२-३४३)

गुण-दोष बहस: वैधताक गठन

प्रामाण्य-उत्पत्ति-वाद (वैधताक गठन या उत्पादनक सिद्धान्त) भट्ट खण्ड २ (पृ. ३७०-४१०) मे स्थापित करैत अछि जे वैध ज्ञान देखल वस्तुक साथ सम्पूर्ण इन्द्रिय-विषय-सम्पर्क जकाँ सभ गुणसभक सामूहिक उपस्थितिमे उत्पन्न होइत अछि, आ अवैध ज्ञान एहि प्रकारक गुणसभक अनुपस्थितिमे उत्पन्न होइत अछि। मीमांसक आपत्ति करैत छथि (१.२.३५): वैध ज्ञान सँ भिन्न होएबाक अवस्था (प्रामाण्यत्व) साध्यक स्थापना या अनुमानमे एकटा विचलित स्थिति (उपाधि) अछि।

नैयायिकक खण्डन: किएक हेतु (हेतु) जेना भिन्न वर्गक कार्य होएबाक अवस्था (विजातीय कार्यत्व) साध्य जेना भिन्न वर्गक कारण सँ उत्पन्न होएबाक अवस्था (विजातीय कारण जन्यत्व) सँ व्याप्त अछि, तहिना तथाकथित विचलित स्थिति (उपाधि) साध्य कैं व्याप्त नै करि सकैत — हेतु कैं विचलित नै करि सकैत। प्रमुख ज्ञानमीमांसीय सिद्धान्त (१.२.३६): वैध ज्ञान सम्पूर्ण इन्द्रिय-विषय-सम्पर्क जकाँ सभ गुणसभक सामूहिक उपस्थितिमे उत्पन्न होइत अछि, आ अवैध ज्ञान इन्द्रिय-विषय-सम्पर्क आदिक अनुपस्थितिमे (तदभाव) उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण, गुणक (गुण) उपस्थिति वैध ज्ञानक कारण अछि आ गुणक अनुपस्थिति (तदभाव) अवैध ज्ञानक कारण अछि।

नैयायिक आगा केवल दोषक अभाव (दोषाभाव) आ गुणक सकारात्मक उपस्थिति नै, वैध ज्ञानक कारणक रूपमे स्वीकार कएल जा सकैत अछि, एहि सुझावक खण्डन करैत छथि। निर्णायक तर्क: दोषक अभाव (दोषाभाव) केवल वैध ज्ञानक कारणसभक समग्रतामे अन्तरक सूचक (समग्रि भेदोपलक्षक) अछि, कारणत्वक अवच्छेदक होएबाक द्वारा। चीन गुलाब उदाहरण: स्फटिक पर चीन गुलाबक

उपस्थितिमे श्वेत रूपक वैध ज्ञान उत्पन्न नै होइत अछि; स्फटिक पर चीन गुलाबक अनुपस्थितिमे श्वेत रूपक वैध ज्ञान उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण, दोषक अनुपस्थिति सेहो वैध ज्ञानक कारण होएबाक चाही, अनावश्यक नै होएबाक द्वारा।

ज्ञानक वैधतामे विश्वास

प्रामाण्यवादक अन्तिम खण्ड (१.२.३१, भट्ट खण्ड २, पृ. ४९३): 'किछु दोसर सभ एतय एहि प्रकारे आपत्ति करैत छथि: जखन किछु ज्ञानसभ नैयायिक द्वारा अवैध स्वीकार कएल जाइत अछि, तखन ज्ञानक वैधतामे विश्वास काति संभव होएत? हालाँकि, ई आपत्ति सही नै अछि। ज्ञानक वैधता या प्रामाणिकताक निर्धारणक साधन पहिने सँ कहल या समझाएल गेल अछि।' ज्ञानमे विरोधाभासक नियम: ज्ञानक अवैधता (ज्ञान मिथ्यात्वे) विरोधाभासी ज्ञान (बाध्य बाधक व्यवस्था) द्वारा विरोधाभासित अछि। ई स्थापित करैत अछि जे अवैध ज्ञान एकटा अवैध बोधक स्वीकारोक्ति द्वारा अनावश्यक नै कएल जाएत; बल्कि, अवैध ज्ञानक भ्रामकता (भ्रमत्वबुद्धि) क विचार आपु स्वयं विरोधाभासी ज्ञान द्वारा विरोधाभासित अछि।

प्रमालक्षण (वैध ज्ञानक परिभाषा)

गङ्गेशक प्रमाक औपचारिक परिभाषा, जेना भट्ट खण्ड २ द्वारा अनुवादित: 'या तऽ (क) एकटा बोध होएबाक चाही जकर मुख्य विशेषण १० ओहि चीजमे अछि जे १० के धारण करैत अछि, या (ख) एकटा बोध होएबाक चाही जे १० के सम्बन्ध ओहि चीज सँ अछि जे १० के धारण करैत अछि।' नैयायिक मानैत छथि जे सविकल्पक (निश्चित) ज्ञान एकटा विशिष्ट ज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) अछि एकटा वस्तुक एकर गुणसभ द्वारा योग्य क रूपमे। उदाहरण लेल, 'ई गाय अछि' (अयं गौः) एकटा वैध ज्ञान अछि किएक गाय गोत्वक गुण द्वारा योग्य जानल जाइत अछि।

खण्ड २ मे अप्रमावाद (अवैध ज्ञानक सिद्धान्त) त्रुटिक विशिष्ट रूप स्थापित करैत अछि। विशिष्ट नैयायिक दावा: अवैध ज्ञान (ज्ञान मिथ्यात्वे) आ विरोधाभासी ज्ञानक बीच विरोधाभासक नियम रहैत अछि किएक अवैध ज्ञानक भ्रामकताक पहलू आपु स्वयं विरोधाभासी ज्ञान द्वारा विरोधाभासित अछि। प्रभाकर मीमांसकक वैकल्पिक स्थिति — जे भ्रमक पहलू कैं विरोधाभासित नै कएल जा सकैत किएक ओ सदा विद्यमान अछि —खण्डन कएल जाइत अछि: नैयायिक तर्क करैत छथि जे गतिविधिक पहलू (अवैध ज्ञान उत्पन्न करबाक) कैं विरोधाभासित नै कएल जा सकैत, किएक अतीत गतिविधि आदि पहिने सँ भऽ चुकल अछि, आ एहि कारण भ्रामकताक विचार (भ्रमत्व बुद्धि) ही विरोधाभासित होइत अछि।

प्रत्यक्षक सिद्धान्त आ सन्निकर्ष (१.५-६)

गङ्गेशक प्रत्यक्षक परिभाषा

नव्य-नैयायिक परिभाषा: प्रत्यक्ष (प्रत्यक्ष) एकटा साक्षात्कारी ज्ञान (साक्षात्कारी ज्ञान) अछि जे कोनो पूर्ववर्ती ज्ञानक साधनता बिना उत्पन्न भेल। ई परिभाषा प्रत्यक्षक सभ मामलासभ — सामान्य (लौकिक) आ असाधारण (अलौकिक) — पर लागू होइत अछि, किएक साक्षात्कारित्व (तात्कालिकता) आवश्यक आ सार्वभौमिक विशेषता अछि।

प्राच्य (पुरान न्याय) परिभाषा — इन्द्रियार्थसन्निकर्ष सँ उत्पन्न ज्ञान — बहुत संकीर्ण अछि: ई केवल मानवीय प्रत्यक्ष पर लागू होइत अछि आ दिव्य प्रत्यक्ष पर लागू नै होइत अछि जे इन्द्रिय-विषय-सम्पर्क बिना उत्पन्न होइत अछि (न्याय कुसुमाञ्जलिः, १.१) । सन्निकर्ष-वाद (सन्निकर्ष-वाद, १.५) खण्ड २, फाइल १ क पूरा दोसरभाग घेरैत अछि — पृ. ५१८-५३७ — आ प्रत्यक्ष सिद्धान्तक तकनीकी मूल अछि।

सन्निकर्ष-वाद (सम्पर्क सम्बन्ध सिद्धान्त)

सन्निकर्ष-वाद (सम्पर्क सम्बन्ध सिद्धान्त) स्थापित करैत अछि जे काति छहि प्रकारक इन्द्रिय-विषय-सम्पर्क सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे कार्य करैत अछि। भट्ट खण्ड २ (पृ. ५१८-५३७) सँ प्रमुख तर्क: पूर्वपक्षी आपत्ति करैत अछि जे सम्पूर्ण वस्तु (अवयवि ग्रह) क प्रत्यक्ष केवल इन्द्रिय सँ जुड़ल वस्तुमे समवाय (संयुक्त समवायिन्) सँ संभव अछि; आ एहि कारण, इन्द्रिय सँ सम्पर्कक सम्बन्ध सम्पूर्ण वस्तुक प्रत्यक्षक कारण होएबाक आवश्यकता नै अछि।

नैयायिक उत्तर: इन्द्रियक संयोग (इन्द्रिय संयोग) द्रव्यक कारण मानल जाइत अछि, आ एहि कारण ओही अन्य द्रव्य जेना सम्पूर्ण वस्तुक कारण मानल जा सकैत अछि। इन्द्रिय सँ जुड़ल वस्तुमे समवाय (संयुक्त समवाय) कैं सम्पूर्ण वस्तुक कारणक रूपमे आग्रह नै कएल जा सकैत संक्षिप्तताक कारण, किएक एकर कारणत्व (कारणता) कैं फेर सँ मानबाक आवश्यकता होएत।

निर्णायक खण्ड (१.५.२२-२३): शब्द कानक छिद्र सँ घेरल आकाशमे बोध कएल जाइत अछि। केवल कानक छिद्र सँ घेरल आकाश श्रोत्र अछि। किएक, ओहीआवश्यक अछि आ संक्षिप्तता अछि; ओही कानक छिद्र सँ घेरल आकाश सामान्य शब्दक प्रत्यक्षक कारण निर्धारित कएल जाइत अछि। केवल किसी वस्तुक प्रत्यक्षक साधन, जबकि शरीर सँ जुड़ल, इन्द्रिय (इन्द्रिय) अछि। अनुभव 'हम वीणाक शब्द कानक छिद्र सँ सुनैत छी' केवल कानक छिद्र सँ घेरल आकाश कैँ कानक प्रत्यक्षक साधन साबित करैत अछि। अन्तिम निर्धारण: शब्दत्व कैँ रूपत्वादि न्याय (रूपत्वादि न्याय) द्वारा सार्वभौमिक गुण साबित कएल जा सकैत अछि। 'एहि प्रकारे श्री गङ्गेशोपाध्याय द्वारा रचित तत्त्वचिन्तामणिमे प्रत्यक्षमे सन्निकर्ष-वाद समाप्त भेल।'

समवायवाद (१.६) — समवाय सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे

समवाय-वाद (समवाय-वाद, खण्ड १.६) खण्ड २ फाइल २ क शुरुआत (पृ. ५३८-५७०) घेरैत अछि। गङ्गेश प्रारम्भिक दृष्टिकोण (पूर्वपक्ष) सँ शुरुआत करैत अछि जे समवाय कैँ सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे स्थापित नै कएल जा सकैत, किएक ओही समवाय सार्वभौमिक गुण, गुण, आदि क सम्पर्क सम्बन्ध नै होए सकैत समवायक असिद्धताक कारण (समवायसिद्धि) ।

सिद्धान्तीक तर्क: सार्वभौमिक गुण (जाति), गुण (गुण), क्रिया (क्रिया), आ हुनकर संबंधित आश्रयसभ एक-दोसर सँ समवाय द्वारा सम्बन्धित अनुभव कएल जाइत अछि (मिथ: संबद्धौ), आ विशिष्ट ज्ञान आ विशिष्ट पदनाम असम्बद्ध प्रकृतिक दुई सत्तासभ (असम्बद्ध स्वरूप द्वये) क सम्बन्धमे संभव नै अछि। एहि कारण समवाय कैँ सम्बन्धक रूपमे स्वीकार कएल जाएबाक चाही।

पूर्वपक्षीक खण्डन: समवायक सम्बन्ध सम्बद्ध सत्तासभक अनुभव (संबद्धानुभव) क आधार पर विशेषण (विशेषण) क रूपमे प्रकट नै होए सकैत; समवायक सम्बन्ध न त विशेष्य क रूपमे प्रकट होए सकैत, न अपन स्वरूपमे एकटा स्वतन्त्र वस्तुक रूपमे; समवायक वस्तुत्वक अनुभव जेना 'हम समवाय जानैत छी' क अनुपस्थिति अछि। नैयायिकक अन्तिम उत्तर (१.६.१८): जखन अभाव समवायक माध्यम सँ होइत अछि, तखन विनाश अन्तर्निहित कारणक हानि पर खोइ जाएबाक आवश्यकता होएत। आ सकारात्मकता कैँ निर्धारक कारणक रूपमे नै रखल जा सकैत जे जे खोएबाक अछि, ओकरा बनाबैत। निर्णायक निर्धारण: अन्तर्निहित वस्तुमे समवाय (समवेत समवाय) कैँ शब्दत्वक प्रत्यक्ष उत्पन्न करबैवाला सम्पर्क सम्बन्ध (ग्राहक) होएबाक आवश्यकता नै अछि शब्दत्वक सार्वभौमिक गुणक अनुपस्थितिक कारण (शब्दत्व) । गङ्गेशक अनुसार, शब्दत्व कैँ रूपत्वादि न्याय (रूपत्वादि न्याय) द्वारा सार्वभौमिक गुण साबित कएल जा सकैत अछि।

अभाववाद (१.८), प्रत्यक्षकारणवाद (१.९), आ मनोऽणुत्ववाद (१.१०)

अभाववाद (अभाव-वाद)

अभाव-वाद (अभाव-वाद, खण्ड १.८) मीमांसकक आपत्ति सँ शुरुआत करैत अछि: वस्तुसभक अभाव केवल खाली आश्रयक अस्तित्वक प्रकृति (भावात्मन्) अछि। प्राच्य नैयायिकक उत्तर: वस्तुसभक अभावक अविरोधी ज्ञान जेना 'घड़ा जमीन पर नै अछि' वास्तवमे विद्यमान पाबल जाइत अछि; ई ज्ञान केवल आश्रय (जमीन) पर आधारित नै होए सकैत। आगा निर्धारण (१.८.३): विशेष अभावाश्रय अछि — विशिष्टता अभावक स्थान अछि। वस्तुसभक अभाव एकटा विशिष्ट आश्रय जेना जमीन सँ घेरल अनुभव कएल जाइत अछि; एहि कारण अभाव एकटा अलग तत्त्वमीमांसात्मक श्रेणी अछि।

प्रत्यक्षकारणवाद (१.९)

प्रत्यक्ष-कारण-वाद (प्रत्यक्ष-कारण-वाद) वायुक परमाणु अप्रत्यक्षता स्थापित करैत अछि। नवीन स्थिति: केवलबोधगम्य स्पर्श (उद्भूत स्पर्श मात्र) स्पर्श इन्द्रिय द्वारा द्रव्यक बोधगम्यताक कारण नै अछि। निर्णायक तर्क: स्पर्श आ रूप सँ सम्बन्धित अभिव्यक्तित्व (उद्भवत्व जाति) क सार्वभौमिक गुण केवल कारणत्वक अवच्छेदक (कारणतावच्छेदके) गठित करैत अछि — ओ कारण (कारणे) नै अछि। एहि कारण वायु अप्रत्यक्ष अछि। ई सीधा अनुमान-खण्डमे विकसित कार्य-कारण सिद्धान्त सँ जुड़ैत अछि।

मनोऽणुत्ववाद (१.९/१०)

मनोऽणुत्ववाद (मनक परमाणु प्रकृतिक सिद्धान्त) स्थापित करैत अछि जे मनस् (मन) परमाणु (अणु) अछि। केन्द्रीय तर्क: यदि मन सर्वव्यापी होएत, तऽ विभिन्न बाह्य इन्द्रियसभ एकरा सँ एक साथ सम्पर्कमे आबि पाँच भिन्न गुणसभक एक साथ प्रत्यक्ष उत्पन्न करि सकत। मुदा हम क्रमिक, वास्तविक रूपसँ एक साथ नै, बहु-इन्द्रिय प्रत्यक्ष अनुभव करैत छी। परमाणु मन अंगसभक संगति (सङ्कोच विकास) द्वारा विस्तार आ संकुचित होइत अछि, एक साथताक आभास आ क्रमिक उत्पादन दुनू क समझाबैत अछि।

मीमांसक आपत्ति (१.१०.१९): बड़ गोल रोटी खाबैत पाँच भिन्न गुणसभक पाँच भिन्न ज्ञान काति उत्पन्न होइत अछि? नैयायिक उत्तर: पाँच ज्ञानक एक साथताकज्ञान बाधाक अनुपस्थितिमे एकटा वास्तविकता (प्रमा) अछि। जखन मनक कोनो एकटा इन्द्रिय सँ निकट या तीव्र सम्पर्क पाँच भिन्न प्रत्यक्षात्मक ज्ञानसभक लेल बाधक (बाधक) अछि, तखन मन केँ पाँच भाग सँ मिलल एकटा सम्पूर्ण (अवयविन्) मानल जा सकैत अछि, आ दुनू प्रकारक ज्ञान केँ मनक भागसभक विस्तार आ संकुचन (सङ्कोच विकासाभ्याम्) द्वारा समझाएल जा सकैत अछि।

प्रत्यभिज्ञा, निर्विकल्पक, आ सविकल्पक ज्ञानक सिद्धान्त (१.११-१३)

प्रत्यभिज्ञा (अनुव्यवसाय / पहिचान)

प्रत्यभिज्ञा-वाद (पहिचान-वाद, १.११) पहिचान केँ सामान्य प्रत्यक्षक तेसर प्रकारक रूपमे स्थापित करैत अछि — निर्विकल्पक आ सविकल्पकक बाद — अपन संरचना सहित जे दुनू मे अपरिवर्तनीय अछि। नैयायिक स्थापित करैत छथि जे प्रत्यक्ष वैध ज्ञानक साधन नै अछि जे साधारण पहिल ज्ञान केँ आत्म-सचेत साबित करैत अछि; किएक, साधारण पहिल ज्ञानक 'हम ई चाँदीक रूपमे जानैत छी' (इदम् अहं जानामि) रूप धारण करबाक स्थापित नै कएल गेल अछि। प्रमुख तर्क: वस्तुक लेल गतिविधि ज्ञानक वस्तुसभक निर्धारण सँदेखल जाइत अछि; साधारण पहिल ज्ञान केवल वस्तुक आपु स्वयं केँ सन्दर्भित करैत अछि; ई आत्मा केँ अपन वस्तुक रूपमे सन्दर्भित करबाक अनुभव नै कएल गेल अछि। एहि कारण पहिचान (सोऽयं देवदत्तः — 'ई ओ देवदत्त अछि') दुनू इन्द्रियसभ आ पूर्व अनुभवक संस्कार (संस्कार) द्वारा उत्पन्न होइत अछि।

निर्विकल्पक ज्ञान — गङ्गेशक स्वयंक स्थिति

निर्विकल्पक-वाद (निर्विकल्पक-वाद, १.१२) मे गङ्गेशक अपन स्थितिक सबसँ सावधान वक्तव्य अछि: निर्विकल्पक ज्ञान गोत्व (विशेषण) क ज्ञान अछि जखन विशेषण गोत्व गायमे प्रकट होइत अछि — केवल गोत्व (गोत्व), आ गोत्वक विशिष्टता (तद्वैशिष्ट्य) नै, ततय उत्पन्न होइत अछि। सिद्धान्तीक आपत्ति: विशेषण गोत्व विशिष्ट प्रत्यक्षात्मक ज्ञानमे अपन गुण द्वारा योग्य (स्वधर्म विशिष्ट) क रूपमे प्रकट होए सकैत अछि। गङ्गेशक खण्डन: एहि प्रकारक गुण पहिने सँ अज्ञात अछि; एकर प्रकटन अनवस्था उत्पन्न करत। निर्णायक निर्धारण: विशेषण सार्थक (१.१२.९) अछि — विशेषण जे अनुमानमे असिद्धताक दूर करैत अछि, ओ विशेषण अछि जे वास्तविक रूपसँ उपयोगी अछि। केवल गोत्व, नै गोत्वत्व-त्व, ई कार्य करैत अछि।

सविकल्पक ज्ञान — अन्तिम खण्ड

सविकल्पक-वाद (निश्चित ज्ञान-वाद, १.१३) अन्तिम अध्याय अछि। गङ्गेश: सविकल्पक (सविकल्पक) एकटा विशिष्ट ज्ञान (विशिष्ट ज्ञान) अछि जेना 'ई (गाय) गाय अछि' (गौर् अयम्) । ई एकटा प्रत्यक्ष अछि, किएक सार्वभौमिक गुण गोत्व आदि जकाँ वस्तुसभ अन्ततः वास्तविक (परमार्थ सत्) अछि आ ओही ज्ञान इन्द्रियसभक वस्तु सँ सम्पर्क सम्बन्ध सँ उत्पन्न होइत अछि। एकटा सविकल्पक ज्ञान सेहो एकटा विशिष्ट पहिचान (प्रत्यभिज्ञा) उत्पन्न करैत अछि जे इन्द्रियसभ सँ उत्पन्न — 'हम जानैत छी जे ई गाय ओ गाय अछि' (सोऽयम्) — जे संस्कार सहकारिणीक सहयोगी कारणक कारण, वस्तु 'गाय' केँ तत्-त्व द्वारा योग्य इदम्-त्व द्वारा योग्य वस्तु 'गाय' सँ पहिचान क वर्णन करैत अछि।

खण्ड २ अन्त (पृ. ८०३) सविकल्पक-वादक समाप्ति पर, तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्ष-खण्ड केँ पूर्ण करैत अछि। भट्टक कोलोफोन: 'एहि प्रकारे श्री गङ्गेशोपाध्याय द्वारा रचित तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्ष खण्ड समाप्त भेल।'

तुलनात्मक आ विश्व-दार्शनिक आयाम

बेन-अमी शार्फस्टाइनक 'अ कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी' क अध्याय १० गङ्गेश केँ डेसकार्टेस आ लाइबनिज क साथ विषयक तहत रखैत अछि: पद्धतिगत रूपसँ प्रयुक्त तर्कक माध्यम सँ निश्चितताक खोज। तीनु दार्शनिक तर्क पद्धतिकेँ आपु स्वयं केँ दार्शनिक जाँचक प्राथमिक वस्तुक रूपमे अलग करैत छथि, नै कि अधिक अनुभवजन्य सामग्री जोड़ि। 'गङ्गेशक वैध आगमन आ किफायती व्याख्याक समस्यासभ सँ जुड़ाव भावना मे समकालीन विज्ञानक दार्शनिकसभ जकाँ अछि।' तीनु तीव्र संशयवादी चुनौतिसभक प्रतिक्रिया सेहो देबैत छथि — गङ्गेश चार्वाक आ श्रीहर्ष केँ, डेसकार्टेस कार्टेशियन दानव केँ, लाइबनिज कट्टर अनुभववाद केँ।

व्याप्तिक २२-परिभाषा उपचार आ डेसकार्टेसक पद्धतिक बीच विशिष्ट समानान्तर संरचनात्मक अछि: गङ्गेश एकटा परिभाषा प्रस्ताव करैत अछि, प्रतिबन्धक-प्रतिबद्ध सम्बन्धक माध्यम सँ एकटा प्रतिउदाहरण उत्पन्न करैत अछि, परिभाषा केँ अस्वीकार करैत अछि, आ

आगा बढ़ैत अछि — जब धरि कोनो प्रतिउदाहरण उत्पन्न नै कएल जा सकैत। ई डेसकार्टेसक 'कठिनाइसभ कैं यथासंभव अनेक भागसभमे विभाजित करू आ सरल सँ जटिल कैं आगा बढ़ू' क द्वन्द्वशास्त्रीय संस्करण अछि। अन्तर: डेसकार्टेस व्यक्तिगत निश्चितता सँ बाहर कैं निर्माण करैत अछि; गङ्गेश एकटा सामुदायिक परम्पराक सटीकता कैं भीतर परिष्कृत करैत अछि। दुनू ज्ञान स्थापित करबाक लेल तर्क लागू करैत अछि, मुदा विपरीत दिशासभ सँ।

शार्फस्टाइनक अवलोकनक सामाजिक आयाम — जे गङ्गेश 'दर्शन कैं एकटा विशिष्ट भाषामे निपुण व्यक्तिसभक निस्संदेह क्षेत्र बना देबैत अछि' — दूषण पंजी साक्ष्यक विरुद्ध पढ़ल जाए पर अपन पूर्ण महत्व प्राप्त करैत अछि। दार्शनिक जे संस्कृत परम्परामे सबसँ तकनीकी रूपसँ कठिन ज्ञान-प्रणाली बनौलक, ओ आपु स्वयं, जीवनी रूपसँ, ओ सामाजिक पदानुक्रम सँ पूर्ण रूपसँ नियंत्रित नै छल जे परम्परा सेवा करैत छल। एकर दार्शनिक विधि (प्रत्येक परिभाषाक प्रत्येक प्रतिउदाहरणक विरुद्ध परीक्षण करू) आ एकर जीवनी वास्तविकता (एकटा जीवन जे आपु स्वयं जाति-शुद्धता मानदण्डसभक एकटा प्रतिउदाहरण छल) आकस्मिक समानता सभ नै बल्कि संरचनात्मक अभिसरण अछि।

टीका परम्परा — वर्धमान सँ रघुनाथ शिरोमणि

पॉटर-भट्टाचार्य इन्साइक्लोपीडिया खण्ड ६ अवधि १३१०-१५१० ई. पार पचास लेखकसभक कैं शामिल करैत अछि। रघुनाथ शिरोमणिक दीधिति निर्णायकद्वितीयक ग्रन्थ अछि, जे जगदीश तर्कशंकर आ गदाधर भट्टाचार्य सँ आगा अपन विशाल टीका साहित्य उत्पन्न करैत अछि। इन्साइक्लोपीडिया नोट करैत अछि जे 'एहि सम्बन्धसभक सबसँ जटिल उपयोग दीधिति परम्परामे जागरूकताक विश्लेषणक सम्बन्धमे होइत अछि' — एकटा परम्परा जे केवल ई कारण उत्पन्न होए सकैत छल किएक गङ्गेश तत्त्वचिन्तामणिमे, ओ संकल्पनात्मक ढाँचा बनौलक जाहि भीतर एहि प्रकारक विश्लेषण संभव छल।

नव्य-न्याय विद्यालयक मिथिला सँ नवद्वीपमे प्रसारण — गजेन्द्र ठाकुर द्वारा पंजी अभिलेख सँ प्रलेखित — दुनू संस्थागत आ दार्शनिक कथा अछि। पक्षधर मिश्रक तत्त्वचिन्तामणिक नकल करबाक अनुमति देबा सँ इनकार, जे वासुदेव सार्वभौम कैं एकरा कण्ठस्थ करबाक लेल बाध्य केलक, विरोधाभासी रूपसँ पाठक प्रसारण सुरक्षित केलक: जे नकल नै कएल जा सकत छल, ओ पाण्डुलिपि प्रसारणक अनिश्चिततासभ सँ खोइल नै सकत छल, किएक ई एकटा मानव स्मृतिमे वहन कएल गेल छल जे एकरा अक्षुण्ण राखबाक लेल प्रशिक्षित छल। विद्यालय बंगाल चल गेल; पाठ बचल रहल।

मैथिली साहित्यक समानांतर इतिहास आ गङ्गेशक सभ्यतागत स्थान

नौ-परत समानांतर इतिहासमे गङ्गेश

मैथिली साहित्यक समानांतर इतिहास — जेना गजेन्द्र ठाकुर/विदेह द्वारा प्रलेखित — नौ परतसभमे प्रकट होइत अछि: (१) बौद्ध चर्यापद आधार; (२) दुई विद्यापति; (३) दमित गङ्गेश (दूषण पंजी सँ); (४) अकाल विरोध कविता; (५) हरिमोहन झाक बहिष्कार; (६) जीवित उस्ताद (राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुर); (७) आरटीआई खुलासा (विनीत उत्पल/आशीष अंचिन्हार: साहित्य अकादमी मैथिली नियुक्तिसभक ९०%+ सलाहकार बोर्डक मित्र/रिश्तेदार कैं गेल); (८) नेपाल मल्ल धागा; (९) विदेहक डिजिटल प्रतिकार-अभिलेख।

गङ्गेशक जीवनीक दमन परत ३ आ ९ मे दार्शनिक आ राजनीतिक जोड़ैत अछि: ओही संस्थागत संस्कृति जे हरिमोहन झा (सबसँ लोकप्रिय मैथिली व्यंग्यकार, जे ब्राह्मण रूढ़िवादिता पर हमला करैत छल) कैं साहित्य अकादमी पुरस्कार सँ वंचित केलक, ओ सुनिश्चित केलक जे गङ्गेशक बारेमे दूषण पंजी तथ्य गुप्त राखल जाए। साहित्य अकादमीक २०१६ गङ्गेश पर मोनोग्राफ— जे विदेहक २००९ जारीक बाद रिकर्ड सीधा करबाक एकटा अवसर होएबाक चाही छल — एकरा बदले दमन कैं दोहरौलक।

विदेहक डिजिटल अभिलेख आ गङ्गेशक पुन:प्राप्ति

विदेहक ११, ००० ताड़पत्र तिरहुता-लिपि पाण्डुलिपिसभ (गङ्गेशक जीवनी दस्तावेज करबैवाला पंजी अभिलेख सहित) क अङ्कीकरण, यूनिकोडमे तिरहुता (२०१४) क सफल मानकीकरण, मैथिली विकिपीडिया आ गूगल ट्रांसलेट स्थानीयकरण, आ विदेह पोथी डिजिटल पुस्तकालय मिलि समानांतर इतिहास जे 'एकटा जीवित समानांतर संस्था' कहैत अछि, गठित करैत अछि। गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणि एहि अभिलेख सँ ब्राह्मण्य रूढ़िवादिताक स्मारकक रूपमे नै, बल्कि एकटा सम्पूर्ण सभ्यतागत धरोहरक भागक रूपमे सम्बन्धित अछि।

अंचिन्हार आखर समूह (आशीष अंचिन्हार आ गजेन्द्र ठाकुर, २००८ सँ) द्वारा मैथिली गजल पुनरुत्थान समानांतर साहित्य आन्दोलनक सबसँ विशिष्ट औपचारिक उपलब्धि क अभ्यावेदन करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुर, मैथिलीक पहिल अरूजी (गजल छन्दशास्त्र विद्वान) क

रूपमे मान्य, गजलशास्त्रम् क रचना केलक। ओही आलोचनात्मक कठोरता जे गङ्गेशक व्याप्तिक २२-परिभाषा उपचार कैं सजीव करैत अछि, आन्दोलनककठोर छन्द नियमसभ पर आग्रह कैं सजीव करैत अछि। दुनू दार्शनिक आ आन्दोलन सिद्धान्त लागू करैत अछि: प्रत्येक दावाक प्रत्येक संभावित प्रतिउदाहरणक विरुद्ध परीक्षण करू, तब धरि संशोधित करू जब धरि कोनो दोष नै रहैत।

दूषण पंजी (गजेन्द्र ठाकुर/विदेह, २००९): दमित जीवनी सत्य — अपन पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म, एकटा चर्मकारिणी सँ विवाह, मिथिला ब्राह्मण मानकसभ द्वारा हुनकर परिवार 'निम्न सामाजिक स्थिति', हुनकर कविता जानबूझि दमन द्वारा पूर्ण रूपसँ खोइल। समानांतर इतिहास: दमन संस्थागत पैटर्नक रूपमे, डिजिटल पुन:प्राप्ति सभ्यतागत प्रतिरोधक रूपमे।

एकटा एकल सिद्धान्त जे गङ्गेश आपु स्वयं तत्त्वचिन्तामणिक शुरुआतमे प्रतिपादित केनए छल: 'मापल शब्दसभ' सँ रचना, दुनू विद्यालयसभक 'सम्पूर्ण सार विचारक दिव्य नेत्र सँ अवलोकन' करबाक बाद। प्रत्येक परिभाषाक परीक्षण कएल जाए; कोनो दोष नै रहए। समानांतर इतिहास आन्दोलन ओही सिद्धान्त अपन विषय पर लागू केनए अछि: प्रत्येक स्रोतक जाँच कएल गेल, प्रत्येक दावाक परीक्षण कएल गेल, कोनो आवश्यक तथ्य दमन नै कएल गेल।

परिशिष्ट १ · अनुपलब्धि, समवाय, मनोऽणुत्व आ शब्दशास्त्रम्

परिशिष्ट

परिशिष्ट १: अनुपलब्धिक अवैधताक सिद्धान्त आ आगा विस्तार

[परिशिष्ट १, २, ३, ४, ५ क मैथिली अनुवाद, मूल अंग्रेजी पाठक समान पूर्णता, तकनीकी सटीकता एवं विस्तार सहित]

परिशिष्ट १: अनुपलब्धि-वाद (१.७) आ आगा विस्तार

क. अनुपलब्धि-वाद (अनुपलब्धि-वाद, १.७)

अनुपलब्धि-वाद (अनुपलब्धि-वाद) प्रत्यक्ष-खण्डक सबसँ दार्शनिक रूपसँ सूक्ष्म खण्डसभमे सँ एक अछि। ई अभावक सकारात्मक तत्त्वमीमांसात्मक स्थिति स्थापित करैत अछि, एहि दृष्टिकोणक विरुद्ध जे अनुपलब्धि (अनुपलब्धि) आपु स्वयं एकटा प्रमाण (ज्ञानक वैध स्रोत) अछि — एहि स्थिति प्रभाकर मीमांसक आ किछु वेदान्ती धारण करैत छल।

प्रारम्भिक तर्क (१.७.१): गङ्गेश तर्क करैत अछि जे वस्तुसभक अभावक अनुपलब्धि (अभावानुपलब्धा) वस्तुसभक अस्तित्वक ज्ञान (भाव ग्रह) क कारण नै होए सकैत, किएक ई वस्तुसभक अस्तित्वक ज्ञान (भाव धी) द्वारा अनावश्यक होइत अछि। वस्तुसभक अस्तित्वक ज्ञान (भाव धी) कभी विलम्बित नै होइत, वस्तुसभक अभावक अनुपलब्धि बिना, बशर्ते कि इन्द्रियसभ आ वस्तुसभक बीच सम्पर्क (इन्द्रियार्थसन्निकर्ष) उपस्थित हो।

भट्टसभक आपत्ति: इन्द्रिय (इन्द्रिय) वस्तुसभक अभावक ज्ञान (अभाव ग्रहे) क मामलामे कारण (हेतु) होएबाक चाही, किएक ओही वस्तुसभक अभावक ज्ञानक साधन नियुक्त कएल गेल अछि (तदनुविधानात्) । नैयायिकक उत्तर: इन्द्रियसभ, जेना आँखि, वस्तुसभक अभावक आश्रयक ज्ञान उत्पन्न करि समाप्त होइत अछि (तदुपक्षयात्), किएक इन्द्रियसभ वस्तुसभक अभाव सँ सम्बद्ध या सम्पर्क सम्बन्धमे नै अछि; आ इन्द्रियसभ केवल उन सभक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि जे हुनका सँ सम्बद्ध अछि।

'इन्द्रिय प्रमाण नै अछि' (१.७.२): वस्तुसभक अभावक आश्रयक ज्ञान इन्द्रियक संचालन अछि; आ एहि कारण, ओही इन्द्रिय वस्तुसभक अभावक ज्ञानमे आश्रयक ज्ञान द्वारा अनावश्यक नै अछि। इन्द्रियक संचालनक अवस्था (व्यापारत्व) केवल इन्द्रियसभक कारणत्वक स्थापना पर स्थापित होइत अछि; मुदा इन्द्रियसभक कारणत्व आपु स्वयं स्थापित नै अछि, किएक इन्द्रियसभक वस्तुसभ सँ कोनो सम्पर्क सम्बन्धक अनुपस्थितिक कारण — वस्तुसभक अभाव इन्द्रियसभ सँ परे (अतीन्द्रिय) अछि।

वेदान्तीक दृष्टिकोण (१.७.३): किएक वस्तुसभक अभाव केवल इन्द्रिय सँ जानल जाएबाक चाही, केवल विशेषणता, अर्थात् आत्म-सम्बन्ध सम्बन्ध (विशेषणता), कैं वस्तुसभक अभावक प्रत्यक्षमे सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे मानबाक आवश्यकता अछि। हालाँकि, नैयायिक एहि क खण्डन करैत छथि: गैर-दुर्बल इन्द्रिय (अनुपक्षीणेन्द्रिय) रूप आदिक प्रत्यक्षमे साधन नियुक्त कएल जाइत अछि; आ एहि कारण केवल संयुक्त समवाय ततय सम्पर्क सम्बन्ध अछि। मुदा चूँकि इन्द्रिय एतय (इह) वस्तुसभक अभावक प्रत्यक्षक मामलामे, केवल वस्तुसभक अभावक आश्रयक ज्ञान उत्पन्न करि दुर्बल भऽ गेल अछि, ओही इन्द्रिय कैं विशेषणता (प्राप्त्यन्तर) क कोनो अन्य सम्पर्क सम्बन्ध मानबाक आवश्यकता नै अछि।

नैयायिकक निर्णायक स्थिति (१.७.११): नैयायिकक निर्णायक दृष्टिकोण अछि जे केवल एकटा अलग वस्तुसभक अभाव, जे एकटा प्रतियोगी केँ सन्दर्भित करैत अछि, अनुभव कएल जाइत अछि। उदाहरण लेल, अनुभव एहि प्रकारक अछि जेना 'ई घड़ा नै अछि' आ 'ई वस्त्र नै अछि' आदि। वस्तुसभक अभावक केवल खाली आश्रय कभी अनुभव नै कएल जाइत अछि। एहि कारण, प्रतियोगी केँ वस्तुसभक अभावक ज्ञान सँ जानल जाएबाक चाही। अनुभव साबित करैत अछि जे वस्तुसभक अभावक ज्ञान प्रतियोगीक ज्ञान पर निर्भर अछि, गायक सादृश्य जकाँ। आ केवल खाली आश्रय वस्तुसभक अभाव गठित नै करैत अछि; किएक केवल खाली आश्रयक ज्ञान प्रतियोगीक ज्ञान बिना सेहो संभव अछि। वस्तुसभक अभाव एकटा अलग सकारात्मक श्रेणी (प्रतियोगिमदाधिकरण) अछि — ई वस्तुसभक अभाव (अभाव) होएबाक अवस्था अछि। ई निर्णायक रूपसँ अभाव केँ छहि वैशेषिक श्रेणीसभ सँ परे सातम् श्रेणीक रूपमे स्थापित करैत अछि, एकर अपन सम्पर्क सम्बन्ध (विशेषणता) सहित।

ख. खण्ड ७-८ सीमाः अभावक सम्बन्धमे अनुपलब्धिक अवैधता

अभाव-वाद (खण्ड १.८) सीधा अनुपलब्धि-वाद खण्ड पर निर्माण करैत अछि। प्रमुख संक्रमण तर्क: केवल खाली आश्रय जेना जमीनक ओही ज्ञान वस्तुसभक अभावक ज्ञानक दुनू वस्तु (प्रमेय) आ साधन (प्रमाण) गठित करैत अछि, ज्ञानसभक स्वप्रकाशत्व (स्वप्रकाशत्व) कारण। प्रभाकर मीमांसक एहि आपत्ति क खण्डन करैत छथि जे जखन केवल खाली आश्रय जेना जमीनक ज्ञान वस्तुसभक अभावक ज्ञान गठित करैत अछि, तखन प्रतियोगी जेना घड़ा (प्रतियोगी ज्ञान अपेक्षा) क ज्ञानक अपेक्षा आवश्यक नै होएत।

अभावक लेल नैयायिकक अन्तिम निर्धारण: केवल एकटा अलग वस्तुसभक अभाव, जे एकटा प्रतियोगी केँ सन्दर्भित करैत अछि, अनुभव कएल जाइत अछि। ज्ञान आ उपयोग जेना 'जमीन पर घड़ाक अभाव अछि' विद्यमान पाबल जाइत अछि — आ एहि प्रकारक ज्ञान केवल आश्रय (जमीन) पर आधारित नै होए सकैत, किएक तखन ओही ज्ञान घड़ा धारण करबैवाली जमीनमे आकस्मिक भऽ जाएत। 'घड़ाक अभाव' शब्दक प्रयोगक वस्तु होएबाक अवस्था केवल तखन प्रतियोगी धारण करबाक अवस्था सँ निर्धारित होइत अछि जखन एकर 'घड़ाक अभाव' शब्दक प्रयोगक वस्तु होएबाक अवस्था अछि। एहि प्रकारे, परस्पर निर्भरता आकस्मिक भऽ जाइत अछि — आ नैयायिक समाधान: 'गायक सादृश्य' शब्दक प्रयोगक वस्तु होएबाक अवस्था, गायक ज्ञान सँ उत्पन्न, 'गवयक गाय सँ सादृश्य' क रूपमे स्वीकार कएल जाए, आ एहि प्रकारे एकटा अलग सादृश्य स्वीकार करबाक पर्याप्त अछि।

ग. समवाय पर नैयायिक-सिद्धान्ती बहसः पूर्ण प्रलेखीकरण

समवाय-वाद (१.६) भट्ट खण्ड २ मे सम्पूर्ण प्रत्यक्ष-खण्डक सबसँ तकनीकी रूपसँ जटिल बहससभमे सँ एक अछि। केन्द्रीय मुद्दा: का समवाय (समवाय) ओ सम्पर्क सम्बन्ध अछि जे विशिष्ट ज्ञान उत्पन्न करैत अछि? सिद्धान्ती स्थापित करैत छथि (१.६.१) जे सार्वभौमिक गुण (जाति), गुण (गुण), क्रिया (क्रिया) आ हुनकर आश्रयसभ समवाय द्वारा परस्पर सम्बन्धित अनुभव कएल जाइत अछि (मिथः संबद्धौ) । विशिष्ट ज्ञान आ विशिष्ट पदनाम असम्बद्ध प्रकृतिक दुई सत्तासभ (असम्बद्ध स्वरूप द्वये) क सम्बन्धमे संभव नै अछि।

पूर्वपक्षीक समवाय केँ सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे बहु-चरणीय खण्डन: (१) समवायक सम्बन्ध सम्बद्ध सत्तासभक अनुभव (संबद्धानुभव) क आधार पर विशेषण (विशेषण) क रूपमे प्रकट नै होए सकैत; (२) सम्पर्क स्थापित करबैवाला अनुभवक विपरीत, समवाय स्थापित करबैवाला अनुभव ('ई दुई वस्तु अन्तर्निहित अछि') क अनुपस्थिति अछि; (३) समवायक सम्बन्ध न त विशेष्य क रूपमे प्रकट होए सकैत, न अपन स्वरूपमे एकटा स्वतन्त्र वस्तुक रूपमे; (४) समवायक वस्तुत्वक अनुभव जेना 'हम समवाय जानैत छी' क अनुपस्थिति अछि। नव्यक उत्तर (१.६.६): नव्य प्रस्ताव करैत छथि जे समवाय स्थापित करबैवाला अनुमान अछि जे 'गुण, क्रिया या सार्वभौमिक गुणक विशिष्ट ज्ञान सम्बन्धी उपवाक्य सँ भिन्न सम्बन्धक सन्दर्भ करैत अछि।' ई अनुमान दोषपूर्ण नै अछि जे हेतु अभावादि विशिष्ट बुद्धि (अभावादि विशिष्ट बुद्धि) क मामलामे विचलित होइत अछि।

अन्य विद्वानसभ (अन्ये) क दृष्टिकोण (१.६.३): अनुमान इन्द्रियक सम्पर्क सम्बन्धक घटक भागक रूपमे स्थापित होइत अछि, सम्पर्कक सम्बन्धक रद्दीकरण पर। मुदा नैयायिक एहि क खण्डन करैत छथि: इन्द्रिय अपन स्वभाव सँ अपन सँ सम्बद्ध वस्तुक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि (स्वसम्बद्ध व्यवहार कारिन्) । सार्वभौमिक गुण आदिक ज्ञान इन्द्रियसभ सँ सम्बन्ध (गुण आदिक जे (इन्द्रिय सँ) जुड़ल अछि) सँ उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण, समवाय केँ सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे स्वीकार करैत सेहो, आत्म-सम्बन्ध सम्बन्ध (विशेषणता) आवश्यक अछि।

भट्टसभक दृष्टिकोण (१.६.३ जारी): अनुमान इन्द्रियक सम्पर्क सम्बन्धक घटक भागक रूपमे स्थापित होइत अछि, सम्पर्कक सम्बन्धक रद्दीकरण पर, अनुमान सँ जे 'शब्द, सार्वभौमिक गुण आ रूप आदि इन्द्रियसभ सँ सम्बन्धित अछि; किएक ओ बोधगम्य अछि, घड़ाजकाँ।' किएक इन्द्रिय अपन सँ सम्बद्ध वस्तुक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। एहि कारण अछि, समवाय बोधगम्य नै अछि, किएक ओही कोनो इन्द्रिय सँ सम्बन्ध नै रखैत अछि। नैयायिकक अन्तिम निर्धारण (१.६.१८): शब्दत्व कैँ रूपत्वादि न्याय (रूपत्वादि न्याय) द्वारा सार्वभौमिक गुण साबित कएल जा सकैत अछि। ई निर्णायक रूपसँ समवाय कैँ सार्वभौमिक (रूपत्व) आ एकर उदाहरणसभक बीच पुलक रूपमे एकर भूमिकाक माध्यम सँ सम्पर्क सम्बन्धक रूपमे स्थापित करैत अछि।

घ. मनोऽणुत्ववादः मनक परमाणु प्रकृतिक सिद्धान्त — पूर्ण विवरण

मनोऽणुत्ववाद (मनोऽणुत्ववाद, १.१०) स्थापित करैत अछि जे मनस् (मन) परमाणु (अणु) अछि — न्यूनतम, अविभाज्य आकार धारण करैत अछि। भट्ट खण्ड २ मे केन्द्रीय तर्क शृंखला: यदि मन सर्वव्यापी (विभु) होएत, तऽ विभिन्न बाह्य इन्द्रियसभ एकरा सँ एक साथ सम्पर्कमे आबि पाँच भिन्न गुणसभक एक साथ प्रत्यक्ष उत्पन्न करि सकत। मुदा पाँच गुणसभक एक साथ ज्ञान बाधाक अनुपस्थितिमे एकटा वास्तविकता (प्रमा) अछि।

नैयायिक प्रस्ताव करैत छथि: जखन मनक कोनो एकटा इन्द्रिय सँ निकट या तीव्र सम्पर्क पाँच भिन्न प्रत्यक्षात्मक ज्ञानसभक लेल बाधक (बाधक) अछि, तखन मन कैँभागसभ सँ मिलल एकटा सम्पूर्ण (अवयविन्) मानल जा सकैत अछि — पाँच भिन्न गुणसभक पाँच भिन्न प्रत्यक्षात्मक ज्ञान आ एकटा एकल गुणक एकटा ज्ञान कैँ मनक भागसभक संगतिक विस्तार आ संकुचन (सङ्कोच विकासाभ्याम्) द्वारा समझाएल जा सकैत अछि।

मीमांसक आपत्ति (१.१०.१९, भट्ट खण्ड २, पृ. ७१८-७२५): एकटा बड़ गोल रोटी खाबैत, पाँच भिन्न गुणसभ (जेना गन्ध, स्वाद, रूप, स्पर्श आ शब्द) क पाँच भिन्न ज्ञान पाँच इन्द्रियसभ सँ उत्पन्न होइत अछि। ई नैयायिकक सिद्धान्त द्वारा काति समझाएल जाइत अछि? नैयायिक उत्तर: पाँच भिन्न प्रत्यक्षात्मक ज्ञानसभक उत्पादनमे एकटा क्रम (क्रम) अस्तित्वमे अछि। पाँच ज्ञानक एक साथताक ज्ञान बाधाक अनुपस्थितिमे एकटा वास्तविकता (प्रमा) अछि। इन्द्रिय (श्रोत्र) अनेक शब्दसभक लेल सक्षम अछि (नाना शब्द ग्रह): नैयायिक उत्तर करैत छथि जे सुख आदि गुणसभमे अन्तर एक साथ अनेक लोकनि द्वारा गाएल समान गीत सुनबाक मामलामे अनुभव कएल जाइत अछि, एक व्यक्ति द्वारा गाएल गीतक तुलनामे। एहि कारण कान एक साथ अनेक शब्दसभक प्रत्यक्षक लेल सक्षम होएबाक आवश्यकता अछि — आ ई केवल तखनसंभव अछि जखन परमाणु मन अपन भागसभक संगति द्वारा विस्तारित होइत अछि।

ङ. गङ्गेशक शब्दशास्त्रम् — लघुकथा आ एकर महत्व

गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली लघुकथा 'शब्दशास्त्रम्' (शब्दक विज्ञान), गङ्गेश उपाध्यायक वास्तविक पंजी अभिलेख पर आधारित, लेखक आपु स्वयं द्वारा अनुवादित आ इंडियन लिटरेचर खण्ड ५८, नं. २ (२८०), मार्च-अप्रैल २०१४, पृ. ७८-९३ (१६ पृष्ठ, साहित्य अकादमी द्वारा प्रकाशित) मे प्रकाशित भेल। ई प्रकाशन कतेक स्तर पर महत्वपूर्ण अछि: ई विदेहक ऐतिहासिक तथ्य दमन करबैवाली संस्थासभ (साहित्य अकादमी) मे रचनात्मक कथा क रूपमे जीवनी पुन:प्राप्ति प्रकाशित करबाक समानांतर रणनीति क अभ्यावेदन करैत अछि; ई दूषण पंजी अभिलेख कैँ कथा रूपमे प्रलेखित करैत अछि; आ ई जीवनी दमन कैँ साहित्य अकादमीक अपन प्रकाशनसभमे सार्वजनिक साहित्यिक रिकर्डक विषयक रूपमे स्थापित करैत अछि — ओही संस्था जकर २०१६ गङ्गेश पर मोनोग्राफ दमन कैँ कायम राखलक।

शीर्षक 'शब्दशास्त्रम्' (शब्दक विज्ञान) आपु स्वयं एकटा दार्शनिक सन्दर्भ अछि: शब्द-शास्त्र शाब्दिक प्रमाण (शब्द-प्रमाण) क अनुशासन अछि, तत्त्वचिन्तामणिक चौथा प्रमाण। कथा एहि प्रकारे गङ्गेशक दार्शनिक परियोजना आ हुनकर जीवनी स्थितिक बीच सम्बन्ध कैँ नाटकीय रूप देबैत अछि — एकटा व्यक्ति जकर वैध शाब्दिक प्रमाणक विज्ञान आपु स्वयंक बारेमे दमित जीवनी सत्य पुनः प्राप्त करबाक कार्य पर लागू अछि।

च. पक्षधर मिश्र, विद्यापति, आ दुई-परम्परा समस्या

गजेन्द्र ठाकुरक पंजी अनुसन्धान अवधिक बौद्धिक इतिहासमे आगा सटीकता जोड़ैत अछि: 'पक्षधर मिश्र विद्यापति (जे पदावली लेखक सँ अलग जे ज्योतिरीश्वर-पूर्व कालक छल) क समकालीन छल जे संस्कृत आ अवहट्टमे लिखलक।' ई समानांतर इतिहासक दुई-विद्यापति समस्या पर केन्द्रीय विद्वत्तापूर्ण हस्तक्षेपक पुष्टि करैत अछि: प्रसिद्ध पदावली कवि संस्कृत/अवहट्ट लेखक विद्यापति

ठक्कुरह (१३५०-१४३५ ई.) सँ अलग अछि। जे विद्वान पक्षधर मिश्र (संस्कृत/अवहट्ट विद्यापति) सँ बहसमे लिप्त छल, ओ लोक-गीत कवि सँ अलग व्यक्ति छल जकर गीत पूर्वी भारतमे फैलल।

ई अन्तर, पंजी साक्ष्य द्वारा स्थापित, गङ्गेशक तिथिकरण आ मिथिलाक बौद्धिक इतिहास सँ सीधा सम्बन्ध रखैत अछि। पक्षधर मिश्र — मिथिलाक शिक्षक जे तत्त्वचिन्तामणिक नकल करबाक अनुमति देबा सँइनकार केलक, वासुदेव सार्वभौम कैँ एकरा कण्ठस्थ करबाक लेल बाध्य केलक — संस्कृत/अवहट्ट विद्यापतिक समकालीन छल, जे हुनका १४म् शताब्दीक अन्त सँ १५म् शताब्दीक आरम्भमे रखैत अछि। ई रघुनाथ शिरोमणि (फ्लोरुइट १५०० ई.) क वासुदेवक शिष्यक रूपमे मानक तिथिकरण सँ संगत अछि, आ अनुक्रम पुष्टि करैत अछि: गङ्गेश (फ्लोरुइट १३२०)→वर्धमान→पक्षधर→वासुदेव सार्वभौम→रघुनाथ शिरोमणि।

छ. ग्रन्थसूची अद्यतन — भट्टक अनुवादक सभ खण्ड

परिशिष्ट २-५ • कारकवाद, व्याप्ति, वैश्विक अध्येता आ तुलनात्मक तर्क

परिशिष्ट २: कारकवाद

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिमे कारकवादक ज्ञानमीमांसात्मक आ शब्दार्थक आधार

तत्त्वचिन्तामणि के शब्दखंड मे गङ्गेशक कारकवाद व्याकरणिक सिद्धांत, तर्कशास्त्र, आ संज्ञानात्मक विज्ञानक एहन जंक्शन पर स्थित अछि जाहिठाम ईबोधगम्य अभिकर्ताओंक क्रियासभसँ संबंध की एक परिष्कृत विवरण प्रदान करैत अछि।

शब्दबोधक सैद्धांतिक सिद्धांत

कारकसभमे प्रवेशसँ पहिले गङ्गेशद्वारा परिभाषित शब्दबोध (शाब्द अनुभूति) क आवश्यकताओंकैँ समझब आवश्यक। एक वाक्य केवल शब्दोंका संग्रह नहि अछि अपितु एक संरचित सत्ता अछि जाहिकैँ चार शर्तसभकैँ पूर्ण करब आवश्यक: आकांक्षा (वाक्यगत प्रत्याशा), योग्यता (संगतता), असत्ति (निकटता), आ तात्पर्य (वक्ताक आशय) ।

कारकवाद: व्याकरण आ तर्कशास्त्रक संयोजन

कारक ओ कारण-भाव अछि जे किसी क्रियाकैँ साध्य करैत अछि (क्रिया-निर्वर्तकम्) । नव्य-न्यायमे, एहिक विश्लेषण कार्य-कारणताक दृष्टिसँ होइत अछि। प्रत्येक कारक एक विशिष्ट कारण-कारक (कारण) अछि जे क्रियाक अंतिम परिणाम (फल) मे योगदान दैत अछि।

कर्ता (कर्त्ता): स्वतंत्र कारक (स्वतन्त्रः कर्ता) । नव्य-न्यायक तकनीकी परिष्करणमे, कर्ताक विशेषता कृतिमत्व अछि — संकल्प (कृति) क अधिकार। ई परिभाषा महत्त्वपूर्ण, कारण ई न्यायकैँ सचेत अभिकर्ताआ जड़ उपकरणक बीच अंतर करबाकैँ सक्षम बनाइत अछि।

कर्म (कर्मन्): परम्परागत रूपैँ कर्मकैँ कर्ताद्वारा सर्वाधिक अभीष्ट (कर्तुरिप्सिततमं कर्म) क रूपमे परिभाषित कएल जाइत अछि। गङ्गेश एहिक विश्लेषण फल-अधिकरणत्व (फल-श्रयत्वम्) की अवधारणाद्वारा करैत छथि।

ऐतिहासिक काल-क्रम

भारतीय तर्कशास्त्र आ ज्ञानमीमांसाक ऐतिहासिक काल-क्रम:

- प्राचीन काल (६५० ई. पू. – १०० ई.) — न्यायसूत्र — अक्षपाद गौतम
- मध्यकालीन काल (१०० ई. – १२०० ई.) — प्रमाणसमुच्चय — दिग्नाग, धर्मकीर्ति, उदयन
- आधुनिक काल (१२०० ई. से) — तत्त्वचिन्तामणि — गङ्गेश उपाध्याय, रघुनाथ शिरोमणि

परिशिष्ट ३: गङ्गेशक नव्य-न्याय: तर्कशास्त्र, भाषा, आ व्याप्ति — एक तुलनात्मक अध्ययन

गङ्गेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि (तत्त्वचिन्तामणि) पर आधारित ई अध्ययन नव्य-न्यायक तीन प्रमुख क्षेत्रोंमे बौद्धिक भूमिक मानचित्रण करैत अछि: भाषा-दर्शन (क्रिया-धातु आ क्रिया-प्रत्यय), औपचारिक तर्कशास्त्र (व्याप्ति आ हुनकर परिभाषा), आ ज्ञानमीमांसात्मक ढाँचा। तोशीहिरो वाडाक चार पेपर, जे. एल. शॉक अध्ययन (संगति), आ यूको मियासाकाक गङ्गेश आ रघुनाथ शिरोमणिमे व्याप्ति-परिभाषाक चित्रात्मक विवरण मिलाइकैँ प्रकट करैत अछि जे गङ्गेशक परियोजना असंबद्ध तकनीकी अभ्यासोंका समूह नहि, अपितु एकीकृत ज्ञानमीमांसात्मक उद्यम अछि।

साझा ज्ञानमीमांसात्मक आधारः यथार्थवाद आ अनुभूतिक संरचना

सभी छह पेपरोंके पूर्व सामान्य ज्ञानमीमांसात्मक ढाँचाकेँ समझब आवश्यक। मियासाकाक पेपर एकरा सर्वाधिक स्पष्ट रूपेँ कहैत अछि: नव्य-न्याय पूर्ण यथार्थवाद अछि। प्रत्येक विशिष्टज्ञान (विशिष्टज्ञान) मे विशेषण (विशेषण/प्रकार), विशेष्य (विशेष्य), आ हुनकर संयोजक (संबंध) की संरचना होइत अछि। महत्त्वपूर्णतः, ई संरचना मानसिक निर्माण वा अनुभवपर आरोपित भाषाई रूप नहि प्रस्तुत करैत — ई बाह्य जगतकी वास्तविक संरचनाक मानचित्रण करैत अछि जेना अनुभूत।

व्याप्तिक परिभाषाः औपचारिक संरचना आ आद्यात्मिक आधार

गङ्गेशक निर्णायक परिभाषा

मियासाकाक पेपर आ वाडाक १९९४ पेपर दुनू गङ्गेशक व्याप्तिक निर्णायक परिभाषाकेँ संबोधित करैत छथि: 'प्रतियोग्य-असामानाधिकरण-यत्-सामानाधिकरणात्यन्ताभाव-प्रतियोगितावच्छेदकावच्छिन्न-यं यन् न भवति तेन समं तस्य सामानाधिकरण्यं व्याप्तिः।' अर्थात्: 'व्याप्ति ओ वस्तु १० क ख सहित सहस्थिति अछि जे एहन नहि जे एक अवच्छेदकद्वारा निर्धारित हो जे ओ अभावक प्रतियोगिताक अवच्छेदक अछि जे १० के साथ किसी लोकमे सहस्थित हो आ अपने प्रतियोगीक साथ कोई लोक साझा न करे।'

वाडाक १९९४ पेपर एहि परिभाषाक ऐतिहासिक स्रोतकेँ शशधरक न्यायसिद्धांतदीपसँ खोजैत अछि, दर्शाइत जे गङ्गेश शशधरक प्रारूप-परिभाषामे अवच्छेदक (परिसीमक) क अवधारणाकेँ प्रस्तुत कए उसे परिष्कृत केलनि।

संगति (प्रासंगिकता) — दार्शनिक अन्वेषणक तर्कशास्त्र

शॉक संगतिक छह प्रकारोंका सूचीबद्ध करैत छथि: (१) प्रसंग (स्मृति-संदर्भ), (२) उपोद्घात (न्यायोचितता), (३) हेतु (कारण), (४) अवसर (आपत्तिजनक प्रश्नसभक समाप्ति), (५) निर्वाहक-एकत्व (समान कारण होएब), आ (६) कार्य-एकत्व (समान प्रभाव होएब) । प्रत्येक प्रकार दो अनुभूतियोंकी वस्तुसभक बीच एक भिन्न वास्तविक संबंध निर्दिष्ट करैत अछि।

अवच्छेदक — एक एकीकरण अवधारणा

शायद सबसे उल्लेखनीय खोज जे सभ छह पेपरोंकेँ पढ़िकेँ उभरैत अछि ओ अछि सभ तीन क्षेत्रोंमे अवच्छेदक (परिसीमक) अवधारणाक केँद्रीय आ एकीकृत भूमिका।

तार्किक क्षेत्रमे: प्रतियोगिताक अवच्छेदक गङ्गेशक व्याप्ति-परिभाषामे मुख्य नवाचार अछि। ई चलन-समस्या (चालनी-न्याय) केँ रोकैत अछि।

क्रिया-धातुसभक शब्दार्थ क्षेत्रमे: कारण-अवस्थाक अवच्छेदक गङ्गेश धातुवादक भाग तृतीय खण्ड मे प्रस्तुत करैत छथि।

क्रिया-प्रत्ययसभक शब्दार्थ क्षेत्रमे: अवच्छेदक गङ्गेशक सामानाधिकरण्यक पुनर्परिभाषा द्वारा कार्य करैत अछि।

परिशिष्ट ४: पश्चिमी आ पूर्व-एशियाई गङ्गेश उपाध्याय विद्वान

पश्चिमी दार्शनिक आ तत्त्वचिन्तामणि

अ. डेनियल एच. एच. इंगॉल्स — पथ-प्रदर्शक (हार्वर्ड, १९५१)

गङ्गेशक ग्रंथक साथ पहिल गंभीर पश्चिमी शैक्षणिक संपर्क इंगॉल्सद्वारा भेल। १९५५ के अपने निबंध 'भारतमे तर्कशास्त्र' मे इंगॉल्स प्राचीन न्याय विद्यालयक संबंधमे नव्य-न्यायक तीन मुख्य नवाचारोंको अलग केलनि: 'परिसीमन (अवच्छेदकता) की अवधारणाद्वारा संभव सामान्यीकरणक एक नव विधि; प्रतिज्ञावादी तर्कशास्त्रक प्रमेयोंसँ समान कई नियमोंक खोज; संबंधोंकी परिभाषामे नव रुचि आ इन संबंधोंका बहुत जटिल संक्रियाओंमे उपयोग।' एहिसभकेँ औपचारिक नवाचार क रूपमे पहचानल गेल।

ब. फ्रेगे-रसेल-नव्य-न्याय तुलना

सर्वाधिक नाटकीय पश्चिमी समानांतर गङ्गेशद्वारा प्रारंभ नव्य-न्याय आंदोलन आ पश्चिममे प्रतीकात्मक तर्कशास्त्रमे क्रांतिक बीच दर्शाया गया है। साहित्यमेनव्य-न्याय आंदोलनकेँ फ्रेगे, रसेल, आ विट्गेंस्टाइनक लेखनमे पश्चिममे १९वीं शताब्दीक अंत आ २०वीं शताब्दीक प्रारंभमे प्रतीकात्मक तर्कशास्त्रक उदय आ हुनकर तत्सम दार्शनिक चिंतनसँ प्रभावोंमे तुलनीय आंदोलन क रूपमे वर्णित कएल गेल अछि।

ग. स्टीफन एच. फिलिप्स — व्यवस्थित पश्चिमी संपर्क (२००४)

फिलिप्स आ तातचार्यक ज्ञानमीमांसा ऑफ परसेप्शन (२००४), तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्षखंडक अनुवाद, मे एक प्रस्तावना सम्मिलित अछि जाहिमे आवश्यक सैद्धांतिक आ ऐतिहासिक पृष्ठभूमि तथा पश्चिमी ज्ञानमीमांसात्मक परम्पराओंसँ न्यायक तुलना शामिल अछि।

घ. बिमल कृष्ण मतिलाल — 'मतिलाल रणनीति' (ऑक्सफोर्ड)

बिमल कृष्ण मतिलाल (१९३५-१९९१) एक प्रख्यात दार्शनिक छलाह जिनकर लेखनमे भारतीय दार्शनिक परम्पराकेँ एक व्यापक तर्कशास्त्र आ ज्ञानमीमांसा-समेट प्रणालीक रूपमे प्रस्तुत कएल गेल। १९७७ सँ १९९१ तक हुनकर ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालयमे पूर्वी धर्म आ नैतिकताक स्पाल्डिंग प्रोफेसरक पदपर थे।

जापानी दार्शनिक आ तत्त्वचिन्तामणि

अ. तोशिहिरो वाडा (नागोया विश्वविद्यालय)

वाडा नागोया विश्वविद्यालयसँ डी. लिट्. (२००२) प्राप्त केलनि आ मुख्यतः नव्य-न्यायमे तर्कशास्त्र आ भाषा-दर्शनपर कार्य करैत छथि। हुनकर दृष्टिकोण परम्परागत संस्कृत भाषाशास्त्रकेँ औपचारिक तर्कशास्त्र आ दृश्य आरेखशास्त्रक उपकरणसभसँ संयुक्त करैत अछि।

वाडाक नव्य-न्याय फिलॉसफी ऑफ लैंग्वेज मे, गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणिक 'आख्यातवाद' (क्रिया-प्रत्यय खंड) क विश्लेषण करैत, ओ रिक्त पदसभ जेहेन 'गोल त्रिभुज', 'फ्रांसक वर्तमान राजा', आ 'खरहाक सींग' पर नव्य-न्यायक उपचारक विवरण दैत छथि। ई आखिरी बिंदु दार्शनिक दृष्टिसँ उल्लेखनीय: रिक्त पदसभ (अर्थशून्य निर्देश) पर नव्य-न्यायक उपचार सीधे बर्ट्रांड रसेलक 'ऑन डिनोटिंग' (१९०५) — अवास्तविक वस्तुओंक निर्देश-समस्या — सँ समानांतर अछि।

परिशिष्ट ५: इज़राइल आ गङ्गेश उपाध्याय

तालमूडी तर्कशास्त्र परम्परा — इज़राइलक अपन विश्लेषणात्मक समानांतर

ई वो परम्परा अछि तालमूडी तर्कशास्त्र (हिग्गायोन तालमूदी) क, जाहि विषयमे इजरायली आ प्रवासी यहूदीशिष्यत्वमे गहन आधुनिक औपचारिकीकरण भए रहल अछि।

अ. तालमूडी तर्कशास्त्र परियोजना (डोव गब्बे, बार-इलान / किंग्स कॉलेज लंदन)

तालमूडी तर्कशास्त्र परियोजना, २००८ सँ चल रहल, आधुनिक तार्किक उपकरणसभक उपयोग करैत तालमूडी तर्कक तार्किक विश्लेषण प्रस्तुत करैत अछि। ई परियोजना तालमूडी तर्कशास्त्रक सिद्धांतोंकी जांच करैत अछि आ प्रत्येक सिद्धांत हेतु एक-एक पुस्तकक श्रृंखला प्रकाशित करैत अछि।

ब. संरचनात्मक तुलनाः नव्य-न्याय आ तालमूडी तर्कशास्त्र

दुनू परम्पराओंक बीच समानांतर संरचनात्मक रूपेँ महत्त्वपूर्ण अछि:

• व्याप्ति (अव्यभिचारी सहगमन) ~ बिन्यान अव (कानूनी पूर्वोदाहरणसँ उपमान-विस्तार)

• उपाधि (अनुमान-खंडन शर्त) ~ पिर्का (तालमूडी खंडन)

• पक्ष, साध्य, हेतु ~ निद्दोन, मेलमेद, लिमुद (विषय, पूर्वदृष्टांत, व्युत्पन्न नियम)

• अवच्छेदकता (गुणक क्षेत्र-परिसीमन) ~ गेजेरा शावा (किसी नियमक क्षेत्र सीमित करनिहार परिभाषात्मक समतुल्यता)

• शब्दखंड (साक्ष्यक ज्ञानमीमांसा) ~ तालमूडी मेसिराह, श्मुआह, काबालाह (मौखिक प्रसारणकी ज्ञानमीमांसा)

दुनू परम्पराएँ एक प्राकृतिक-भाषा आधारमे (संस्कृत आ अरामी क्रमशः) कठोर तकनीकी भाषाओंका विकास केलनि, दुनू ओहि प्रश्न सँ सरोकार रखैत छल जे कहियाँ अनुमान वैध अछि आ कहियाँ असफल, आ दुनू धार्मिक-कानूनी संदर्भोंमे उभरलीं जाहिठाम तार्किक परिशुद्धता के दाँव उच्च छल।

ग. माध्ययुगीन यहूदी दर्शन आ न्याय आस्तिक तर्क

न्याय विद्यालयक व्यापक परम्परा आ यहूदी दर्शनक बीच एक अप्रत्यक्ष संपर्क बिंदु अछि: ईश्वरक अस्तित्व हेतु ब्रह्मांडीय आ प्रयोजनात्मक तर्क। उदयनक न्यायकुसुमाञ्जलि (११वीं शताब्दी) आ गङ्गेशक ढाँचेमे विकसित न्याय विद्यालय मेमोनाइड्सक गाइड फॉर द पर्प्लेक्ड (१२वीं शताब्दी) क ब्रह्मांडीय तर्कोंसँ संरचनात्मक तुलनीय विश्व-सृजनक ईश्वर (ईश्वर) हेतु कठोर तार्किक तर्क विकसित केलनि।

घ. इज़राइल इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज — एक संभावित स्थल

इज़राइल इंस्टीट्यूट फॉर एडवांस्ड स्टडीज (भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान), हिब्रू विश्वविद्यालय, जेरूसलेमद्वारा १९७५ मे स्थापित, एक स्व-शासी निकाय अछि जाहिक मिशन अकादमिकसभक बहु-विषयकशिक्षण समुदाय बनाएब अछि। भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान पूर्वमे तुलनात्मक दर्शन आ विज्ञान-इतिहासमे शोध समूहसभकेँ आयोजित कए चुकल अछि।

ङ: बेन-आमी शार्फस्टाइन (१९१९-२०१९) — इज़राइली-अमेरिकी दार्शनिक

बेन-आमी शार्फस्टाइन तेल अवीव विश्वविद्यालयमे दर्शनशास्त्र विभागक संस्थापक सदस्य थे। हुनकर महत्त्वपूर्ण कृति ए कम्पेरेटिव हिस्ट्री ऑफ वर्ल्ड फिलॉसफी: फ्रॉम द उपनिषद्स टू कांट (१९९८) मे बेन-आमी शार्फस्टाइन गङ्गेश उपाध्याय (नव्य-न्यायक १४वीं शताब्दीक संस्थापक) केँ एक अद्वितीय वैश्विक संदर्भमे रखैत छथि। हुनकर दर्शनकेँ 'तर्क-संवेदनशील, पद्धतिगत अद्यात्मशास्त्र' वर्गीकृत करैत हुनकर गङ्गेशकेँ देकार्त आ लाइबनिजक साथ रखैत छथि।

शार्फस्टाइन गङ्गेशकेँ हुनकर अभूतपूर्व स्पष्टता आ बौद्धिक ईमानदारी हेतु प्रशंसा करैत छथि। हुनकर दृष्टिकोणमे, नव्य-न्याय 'मृत' विद्वतावाद नहि, अपितु मानवीय विश्लेषणात्मक उपलब्धिक एक शिखर अछि जाहि औपचारिक परिशुद्धताक स्तरकेँ पश्चिम १९वीं वा २०वीं शताब्दीक अंत तक नहि पहुँच सकल।

तत्त्वचिन्तामणिमे उद्धृत प्रमुख पूर्ववर्ती ग्रन्थ

- मण्डनमिश्र। ब्रह्मसिद्धि। [गङ्गेश द्वारा शब्द-खण्डमे उद्धृत।]
- प्रभाकर मिश्र। तात्पर्याचार्य। [प्रामाण्यवाद खण्डमे उद्धृत।]
- वाचस्पति मिश्र। तात्पर्यटीका, भामती, न्यायसूचीनिबन्ध। [सम्पूर्ण उद्धृत।]
- उदयन। कुसुमाञ्जलि, किरणावली, परिशुद्धि, आत्मतत्त्वविवेक, न्यायकुसुमाञ्जलि। [गङ्गेशक प्राथमिक स्वीकृत पूर्ववर्ती।]
- श्रीवल्लभाचार्य। न्यायलीलावती। [अनुमान आ शब्द खण्डसभमे उद्धृत।]
- जयन्तभट्ट। न्यायमञ्जरी। [उद्धृत।]
- शिवादित्य मिश्र। सप्तपदार्थी। [निर्विकल्पकवादमे उद्धृत — 'शिवादित्य' सन्दर्भ ई रचनाक अछि, लगभग १०५०-११५० ई., यद्यपि उद्धृत श्लोक जीवित पाठमे उपलब्ध नै अछि।]
- मणिकण्ठ मिश्र। न्यायरत्न। [एकटा महत्वपूर्ण तत्काल पूर्ववर्तीक रूपमे सम्पूर्ण उद्धृत।]
- तरणि मिश्र (तर्कवर्द्धन) । रत्नकोष। [विशेषणोपलक्षणवादमे उद्धृत।]

ग्रन्थसूची

गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि, चारि खण्ड। सम्पादक कामाख्यानाथ तर्कवागीश; मथुरानाथ तर्कवागीशक टीका सहित। कलकत्ता: एशियाटिक सोसाइटी, बिब्लियोथेका इण्डिका, १८८४–१९०१; पुनर्मुद्रण १९९०–९१।

गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि — प्रत्यक्षखण्ड। सम्पादक एन. एस. रामानुज ताताचार्य; रुचिदत्त मिश्रक प्रकाश आ रामकृष्णाध्वरिनक उपटीका सहित। तिरुपति: केन्द्रीय संस्कृत विद्यापीठ, १९७२।

भट्ट, वी. पी. । शब्द: तत्त्वचिन्तामणिक शब्दखण्ड, परिचय, संस्कृत पाठ, अनुवाद आ व्याख्या सहित, दू खण्ड। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, २००५।

भट्ट, वी. पी. । प्रत्यक्ष: तत्त्वचिन्तामणिक प्रत्यक्षखण्ड, परिचय, संस्कृत पाठ, अनुवाद आ व्याख्या सहित, दू खण्ड। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, २०१२।

भट्ट, वी. पी. । अनुमान: तत्त्वचिन्तामणिक अनुमानखण्ड, दू खण्ड। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, २०२१।

भट्ट, वी. पी. । ईश्वरानुमान आ उपमान: तत्त्वचिन्तामणिक सम्बन्धित खण्ड, दू खण्ड। दिल्ली: ईस्टर्न बुक लिंकर्स, २०२५।

फिलिप्स, स्टीफन एच. । ज्ञानमीमांसाक सत्य पर विचार-रत्न: गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणिक सम्पूर्ण टिप्पणी-सहित अनुवाद, तीन खण्ड। लन्दन: ब्लूम्सबरी अकादमिक, २०२०।

झा "अशोक", उदयनाथ। गङ्गेश उपाध्याय। भारतीय साहित्यक निर्माता शृंखला। नव दिल्ली: साहित्य अकादेमी, २०१६।

भट्टाचार्य, दिनेश चन्द्र। मिथिलामे नव्य-न्यायक इतिहास। दरभंगा: मिथिला इंस्टिट्यूट, १९५८।

विद्याभूषण, सतीश चन्द्र। भारतीय तर्कशास्त्रक इतिहास। कलकत्ता: कलकत्ता विश्वविद्यालय, १९२१।

दासगुप्त, सुरेन्द्रनाथ। भारतीय दर्शनक इतिहास, खण्ड १–२। कैम्ब्रिज: कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय प्रेस, १९२२–३२।

पॉटर, कार्ल एच. आ शिवजीवन भट्टाचार्य, सम्पादक। भारतीय दर्शनक विश्वकोश, खण्ड ६: गङ्गेश सँ रघुनाथ शिरोमणि धरि न्याय-वैशेषिक विश्लेषण। प्रिन्सटन आ दिल्ली: प्रिन्सटन विश्वविद्यालय प्रेस / मोतीलाल बनारसीदास, १९९३।

शार्फस्टाइन, बेन-अमी। विश्व-दर्शनक तुलनात्मक इतिहास: उपनिषद सँ कान्ट धरि। अल्बानी: स्टेट युनिवर्सिटी ऑफ न्यूयॉर्क प्रेस, १९९८; अध्याय १०, पृ. ३२९–३६६।

मतिलाल, बिमल कृष्ण। नव्य-न्यायक अभाव-सिद्धान्त। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, १९६८।

मतिलाल, बिमल कृष्ण। प्रत्यक्ष: शास्त्रीय भारतीय ज्ञान-सिद्धान्त पर एक निबन्ध। ऑक्सफोर्ड: क्लेरेंडन प्रेस, १९८६।

गोएकूप, सी. । तत्त्वचिन्तामणिमे अविनाभावी सह-अस्तित्वक तर्क। डॉर्ड्रेक्ट: डी. रीडेल, १९६७।

इंगॉल्स, डैनियल एच. एच. । नव्य-न्याय तर्कक अध्ययन-सामग्री। कैम्ब्रिज: हार्वर्ड विश्वविद्यालय प्रेस, १९५१।

वत्तांकी, जॉन। गङ्गेशक ईश्वर-दर्शन। मद्रास: अड्यार पुस्तकालय, १९८४।

भट्टाचार्य, शिवजीवन। गङ्गेशक निर्विकल्पक प्रत्यक्ष-सिद्धान्त। नव दिल्ली: भारतीय दार्शनिक अनुसंधान परिषद्, १९९३।

ठाकुर, उपेन्द्र। मिथिलाक इतिहास। दरभंगा: मिथिला इंस्टिट्यूट, १९५६।

चौधरी, राधाकृष्ण। मिथिलाक इतिहास।

झा, जयकान्त। मैथिली साहित्यक इतिहास, खण्ड १।

पाण्डेय, अंशुमान। मध्यकालीन मिथिलामे ब्राह्मणक पुनर्गठन: उत्तर बिहारक मैथिल ब्राह्मणसभमे जातीय पहिचानक उद्गम। पीएच. डी. शोध-प्रबन्ध, मिशिगन विश्वविद्यालय, २०१४।

ठाकुर, गजेन्द्र। मैथिली साहित्य आ मिथिलाक समानान्तर इतिहास। विदेह अभिलेख।

ठाकुर, गजेन्द्र। पञ्जी-प्रबन्ध, खण्ड १–२; दूषण-पञ्जी अभिलेख सहित। २००९।

ठाकुर, गजेन्द्र। "शब्दशास्त्रम्": गङ्गेशक पञ्जी-अभिलेख पर आधारित मैथिली लघुकथा। इण्डियन लिटरेचर, खण्ड ५८, अंक २, २०१४, पृ. ७८–९३।

ठाकुर, प्रीति, संकलनकर्ता। मिथिलाक ११, ००० ताड़पत्रीय तिरहुता पञ्जी-पाण्डुलिपि, खण्ड १–२२। विदेह अभिलेख, २००७ सँ।

वाडा, तोशिहिरो। गङ्गेशक तत्त्वचिन्तामणिक "धातुवाद" अथवा क्रिया-धातु प्रकरण।

वाडा, तोशिहिरो। गङ्गेशक मतमे क्रिया-प्रत्ययक अर्थ। नागोया भारतीय संस्कृति आ बौद्ध अध्ययन, २०१३–१४।

वाडा, तोशिहिरो। गङ्गेशक व्याप्तिक निर्णायक परिभाषाक एक स्रोत। भारतीय आ बौद्ध अध्ययन पत्रिका, खण्ड ४२, अंक २, १९९४।

स्टैनफोर्ड दर्शन विश्वकोश। "गङ्गेश" आ "नव्य-न्याय" सम्बन्धी प्रविष्टि। प्रथम प्रकाशन २०२०; संशोधित २०२४।

७८. भामती (चतु:सूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

सारांश
भामती (वाचस्पति)/ आत्मतत्त्वविवेक (उदयन)/ न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन)/तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश)/(मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन [मूल संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र...

बीजशब्द · Keywords: भामती · चतु:सूत्री · सार · समालोचनात्मक · अनुवाद · अछि। · मूल्याङ्कन

सारांश · Abstract

ई अध्याय “भामती (चतु:सूत्री): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। भामती (वाचस्पति)/ आत्मतत्त्वविवेक (उदयन)/ न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन)/तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश)/ (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन [मूल संस्कृत सँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] गजेन्द्र ठाकुर कृत शुद्ध मैथिली अनुवादक एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन नवम शताब्दीक मिथिलाक 'सर्वतन्त्रस्वतन्त्र' दार्शनिक वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित "भामती"—शंकराचार्यक शारीरक भाष्यपर लिखल टीका—अद्वैत वेदान्तक इतिहासमे एकटा स्वतन्त्र प्रस्थान (भामती-प्रस्थान)क आधारग्रन्थ अछि। सहस्राधिक वर्ष धरि ई कृति संस्कृत वाङ्मयक परिधिमे सीमित रहल, यद्यपि एकर रचयिता स्वयं मिथिलाक सन्तान छलाह।

भामती (वाचस्पति)/ आत्मतत्त्वविवेक (उदयन)/ न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयन)/तत्त्वचिन्तामणि (गंगेश)/(मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन [मूल संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर]

भामती (चतु:सूत्री)

गजेन्द्र ठाकुर कृत शुद्ध मैथिली अनुवादकएकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे

मूल संस्कृत: वाचस्पति मिश्र • संस्कृतसँ मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर

प्रथम संस्करण 2004 · परिवर्धित संस्करण 2026 · ISBN 978-93-5943-682-1 · विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका · ISSN 2229-547X

अध्यासभाष्यसँ चतु:सूत्री-समाप्ति धरि

१. प्रस्तावना, उद्देश्य आ समीक्ष्य ग्रन्थक संरचना

नवम शताब्दीक मिथिलाक 'सर्वतन्त्रस्वतन्त्र' दार्शनिक वाचस्पति मिश्र द्वारा रचित "भामती"—शंकराचार्यकशारीरक भाष्यपर लिखल टीका—अद्वैत वेदान्तक इतिहासमे एकटा स्वतन्त्र प्रस्थान (भामती-प्रस्थान) क आधारग्रन्थ अछि। सहस्राधिक वर्ष धरि ई कृति संस्कृत वाङ्मयक परिधिमे सीमित रहल, यद्यपि एकर रचयिता स्वयं मिथिलाक सन्तान छलाह। गजेन्द्र ठाकुर—विदेह ई-पत्रिकाक सम्पादक, नव्य-न्याय आ गङ्गेश उपाध्यायक परम्पराक अध्येता, आ मैथिली-हिन्दी-संस्कृत-अंग्रेजी चारू भाषामे सक्रिय साहित्यकार—एहि ऐतिहासिक अभावक पूर्ति अपन मूल संस्कृतसँ शुद्ध मैथिली अनुवाद द्वारा कएलनि अछि। प्रथम संस्करण 2004 आ परिवर्धित/ऑडिट-संशोधित संस्करण 2026 (विदेह ग्रन्थ-शृङ्खला, ISSN 2229-547X) एहि अनुवादक दू दशकक परिपक्व साधनाक साक्षी अछि।

प्रस्तुत अनुशीलनक उद्देश्य दुइ अछि: पहिल, समीक्ष्य 491 पृष्ठक सम्पूर्ण पाठक—मंगलाचरणसँ लऽ कऽ समन्वयाधिकरणक अन्तिम पुष्पिका "एतय चतु:सूत्री-भामती समाप्त होइत अछि" धरि—कोनो अंश नहि छोड़ैत, ओकर विस्तृत, क्रमबद्ध ग्रन्थ-सार प्रस्तुत करब; दोसर, ई ग्रन्थ (मूल दार्शनिक कृति आ ओकर अनुवाद-कर्म दुनू) कैं भारतीय काव्यशास्त्र (रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण-रीति, औचित्य, आ मिथिलाक अपन नव्य-न्याय-दृष्टि) तथा पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त (अनुवाद-सिद्धान्त: श्लायरमाखर-वेनुटीक deशीकरण/विदेशीकरण, नाइडाक गतिशील-औपचारिक तुल्यता, वाल्टर बेन्यामिनक "अनुवादकक कार्य", गाडामरक हर्मेन्यूटिक्स, आ नव समीक्षाक निकट-पाठ पद्धति) क आलोकमे समालोचनात्मक दृष्टिसँ परखब।

ई अनुसन्धान प्रतिवेदन वाचस्पति मिश्रक दार्शनिक अवदान, भामती-प्रस्थानक तात्त्विक सिद्धान्त, गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवादक भाषिक आ दार्शनिक समीक्षा, तथा मैथिली वाङ्मयमे एहि ग्रन्थक समावेशसँ उत्पन्न नव बौद्धिक विमर्शक विस्तृत मीमांसा प्रस्तुत करैत अछि। एतदतिरिक्त ई प्रतिवेदन मैथिली साहित्यक नवजागरणमे सास्थानिक योगदानक सेहो विस्तृत विवेचन करैत अछि।

समीक्ष्य अनुवाद संचयी संस्करणक पृष्ठ १ सँ ४९१ धरि विस्तृत अछि आ निम्नलिखित क्रममे संरचित अछि: (क) आवरण आ प्रकाशकीय पृष्ठ; (ख) शंकरक अध्यासभाष्यक मूल पाठक मैथिली रूपान्तर; (ग) वाचस्पति मिश्रक सात मंगलश्लोकक गद्यानुवाद; (घ) "अध्यास" शीर्षकसँ अध्यासभाष्यपर भामती-टीकाक सम्पूर्ण अनुवाद; (ङ) प्रथम सूत्र 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा'क टीका; (च) द्वितीय सूत्र 'जन्माद्यस्य यतः'क टीका; (छ) तृतीय सूत्र 'शास्त्रयोनित्वात्'क टीका; आ (ज) चतुर्थ सूत्र 'तत्तु समन्वयात्' (समन्वयाधिकरण) क विशालकाय टीका, जे अकेल सम्पूर्ण ग्रन्थक लगभग एक-तिहाइ भाग घेरैत अछि—मूल भामतीक अनुपातक प्रति अनुवादककनिष्ठाक प्रमाण। संस्करणक अन्तमे (अध्याय ४ रूपमे) एकटा विस्तृत, बारह खण्डमे विभाजित बिबलियोग्राफी अछि, जाहिमे समीक्ष्य संस्करण, ब्रह्मसूत्र-शाङ्करभाष्यक आधार-पाठ, भामतीक संस्कृत संस्करण, भामतीपर टीका-उपटीका (वेदान्तकल्पतरु, कल्पतरुपरिमल, आभोग, भामतीतिलक आदि), विवरण-प्रस्थानक तुलनात्मक ग्रन्थ, वाचस्पतिक अन्य कृति, आधुनिक शोध, आ डिजिटल संग्रह—सभक सूचीकरण, प्रत्येकक "उपयोगिता"-टिप्पणीसहित, कएल गेल अछि। ई सम्पादकीय अंश शोधार्थीक हेतु विशेष उपयोगी अछि, यद्यपि ई स्वयं अनुवाद-कर्मक भाग नहि, अपितु सहायक उपकरण अछि, तेँ प्रस्तुत ग्रन्थ-सारमे एकर अलग सङ्क्षिप्त उल्लेखे पर्याप्त बुझल गेल।

पुस्तक चारि मुख्य अध्यायमे व्यवस्थित अछि। पहिल अध्याय प्रस्तावना आ दार्शनिक अनुशीलन, दोसर विस्तृत दार्शनिक–अनुवाद-समीक्षात्मक–साहित्यिक समीक्षा, तेसर मूल शुद्ध मैथिली अनुवादक परिशिष्ट, आ चारिम विस्तृत सन्दर्भग्रन्थ-सूची अछि। तेसर अध्यायमे अध्याससँ आरम्भ कऽ ब्रह्मसूत्रक पहिल चारि सूत्र धरि पूरा चतु:सूत्री-भामती राखल अछि।

दोसर अध्याय पहिल अध्यायक विषयसभकेँ फेर लैत अछि, मुदा अधिक सूक्ष्म उपशीर्षकमे बाँटैत अछि—अध्यासक सात उपभाग, पहिल सूत्रक चारि उपभाग, चतुर्थ सूत्रक पाँच उपभाग, अनुवाद-कला, भारतीय-पाश्चात्य समीक्षा, मैथिली वाङ्मयमे स्थान, निरीक्षण, उपसंहार आ समग्र निर्णय।

२. वाचस्पति मिश्रः 'सर्वतन्त्रस्वतन्त्र' दार्शनिक व्यक्तित्व आ ऐतिहासिक धरोहर

वाचस्पति मिश्र (लगभग ९०० - ९८० ई.) भारतीय दर्शनक इतिहासमे एकटा अलोकसामान्य प्रतिभाक धनी छलाह। हुनक आविर्भाव मिथिलाक मधुबनी जिलान्तर्गत अन्धराठाढ़ी (जे ओहि समय राजा नृगक राजधानी छल) अथवा समौल गाममे भेल छल। वैशेषिक दर्शन कैँ छोड़ि, भारतीय दर्शनक प्रायः सभ आस्तिक प्रस्थानपर हुनक अधिकारपूर्ण टीकासभ उपलब्ध अछि, जकर कारणेँ हुनका पण्डितसभ द्वारा 'सर्वतन्त्रस्वतन्त्र' क उपाधिसँ विभूषित कएल गेल अछि। भारतीय दार्शनिक परम्परामे एहन कोनो दोसर विद्वान नहि भेलाह जकर लेखनीसँ षड्दर्शनक प्रायः सभ प्रमुख शाखामे एतेक प्रामाणिक आ युगांतरकारी भाष्य रचित भेल होय।

वाचस्पति मिश्रक विपुल वाङ्मयक परिदृश्य अत्यन्त व्यापक अछि। न्याय दर्शनमे हुनक 'न्यायवार्तिकतात्पर्यटीका' उपलब्ध अछि, जकरा कारण न्याय सम्प्रदायमे हुनका 'तात्पर्याचार्य' क रूपमे ख्यातिभेटल आ एहि टीका द्वारा ओ उद्योतकरक न्यायवार्तिकक रक्षा कएलनि। एतदतिरिक्त न्यायसूत्रक कालक्रम आ विषय वस्तुक व्यवस्थापन हेतु 'न्यायसूचीनिबन्ध' सेहो हुनक महत्वपूर्ण कृति अछि। सांख्य दर्शनमे ईश्वरकृष्णक सांख्यकारिकापर हुनक 'सांख्यतत्त्वकौमुदी' अद्यावधि सांख्यक सर्वमान्य व्याख्या मानल जाइत अछि। योग दर्शनमे पतञ्जलिक योगसूत्रपर आधारित व्यासभाष्यपर 'तत्त्ववैशारदी' नामक हुनक टीका योगक मनोवैज्ञानिक आ दार्शनिक गुत्थीसभकेँ सुलझबैत अछि। पूर्वमीमांसा दर्शनमे मण्डन मिश्रक विधिविवेकपर 'न्यायकणिका' आ शब्दबोधपर आधारित स्वतन्त्र ग्रन्थ 'तत्त्वबिन्दु' हुनक मीमांसक दृष्टिक परिचायक अछि। वेदान्त दर्शनमे मण्डन मिश्रक 'ब्रह्मसिद्धि' पर 'ब्रह्मतत्त्वसमीक्षा' (जे आब अनुपलब्ध अछि) आ शारीरक भाष्यपर 'भामती' हुनक कीर्तिकेँ अमर बना देलक।

एहि ऐतिहासिक भूमिकाक महत्त्व ई अछि जे पाठक भामतीकेँ केवल शंकराचार्यक वाक्यक पद-पदार्थ व्याख्या मानि नहि बैसथि। वाचस्पति मिश्र भाष्यकारक अनुचर अवश्य छथि, मुदा हुनक टीकाक भीतर स्वतंत्र तर्क-विस्तार, प्रतिपक्ष-निर्माण, प्रमाण-विवेचन आ अवधारणात्मक वर्गीकरण अछि। एही स्वतंत्र बौद्धिक आकारक कारण “भामती-प्रस्थान” नाम सार्थक होइत अछि।

२.१ भामती नामकरणक नेपथ्यक जनश्रुति

वाचस्पति मिश्रक जीवनक अन्तिम आ सर्वश्रेष्ठ कृति 'भामती' क नामकरणक पाछाँ एकटा अत्यन्त मार्मिक आ प्रेरणादायी किंवदन्ती अछि, जे भारतीय नारीक मौन तपस्याक शाश्वत प्रतीक अछि। जनश्रुति आ ऐतिहासिक सन्दर्भक अनुसार, वाचस्पति मिश्रक विवाह अल्पायुमे भामती नामक कन्या सँ भेल छल। विवाहक पश्चात् ओ आचार्य शंकरक शारीरक भाष्यपर टीका लिखबाक महान् संकल्प लेलनि आ अपन पत्नी भामती सँ आग्रह कएलनि जे यावत् ई ग्रन्थ पूर्ण नहि होइत, तावत् हुनका एहि साधनामे कोनो प्रकारक विघ्न नहि देल जाय।

भामती अपन पतिक एहि महान् उद्देश्यक सम्मान करैत सम्पूर्ण गृहस्थीक भार अपन कान्हपर लऽ लेलनि। वर्षों धरि (किछु सन्दर्भक अनुसार लगभग ३० वर्ष) वाचस्पति मिश्र साहित्य आ दर्शनक साधनामे एतेक लीन रहलाह जे हुनका ईहो भान नहि रहल जे हुनक सेवा के कऽ रहल अछि, हुनका लेल भोजन, जल, आ दीपमे तेलक प्रबन्ध के करैत अछि। एक दिन सन्ध्या काल जखन दीपमे तेल समाप्त भऽ रहल छल आ दीप बुझबाक कगारपर छल, तखने वाचस्पति मिश्रक ग्रन्थ सेहो पूर्ण भेल। दीप बुझैतदेखि भामती शीघ्रतासँ तेल भरबाक लेल अएलीह। जखन वाचस्पति मिश्र अपन पोथीसँ दृष्टि उठौलनि, तँ सम्मुख एकटा प्रौढ़ा स्त्रीकेँ ठाढ़ देखलनि। ओ विस्मयपूर्वक पुछलनि, "हे देवि, अहाँ के छी?" भामती नम्रतापूर्वक उत्तर देलनि, "हे देव, हम अहाँक पत्नी भामती छी"।

अपन पत्नीक एहि अपूर्व त्याग, असीम समर्पण आ निस्वार्थ सेवाकेँ देखि वाचस्पति मिश्र अभिभूत भऽ गेलाह। ओ अनुभव कएलनि जे हुनक जीवन-संगिनी हुनका लेल अपन सम्पूर्ण जीवनक आहुति दऽ देलनि। एहि असीम त्यागक प्रति कृतज्ञता प्रकट करैत ओ अपन एहि महान् वेदान्त-टीकाक नाम 'भामती' रखलनि, जाहिसँ सम्पूर्ण विश्व दार्शनिक ज्ञानक संगे-संग एकटा भारतीय नारीक महान् त्यागकेँ सेहो अनन्त काल धरि स्मरण रखैत। ई ग्रन्थ आइयो अद्वैत वेदान्तक सर्वोच्च ग्रन्थसभमे गिनल जाइत अछि आ भामतीक नाम दर्शनक इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे अङ्कित अछि। आधुनिक कालमे साहित्यकार उषाकिरण खान एहि ऐतिहासिक आ दार्शनिक प्रेमकथाकेँ आधार बना कऽ मैथिली आ हिन्दीमे 'भामती-एक अविस्मरणीय प्रेमकथा' नामक उपन्यासक रचना कएलनि, जकरा साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सेहो सम्मानित कएल गेल।

३. भामती-प्रस्थान, विवरण-प्रस्थान आ टीका-परम्परा

चतुःसूत्री-अंशमे भामती-प्रस्थानक अनेक बीज-सिद्धान्त उपस्थित अछि, जकरा अनुवाद कोनो बाह्य टिप्पणी बिना, पाठ-निष्ठ रहितहुँ, स्वतः उजागर करैत अछि। भामती-प्रस्थान आ पद्मपादाचार्यक पंचपादिकापर प्रकाशात्मयति-रचित 'पंचपादिका-विवरण'सँ उद्भूत विवरण-प्रस्थानक तात्त्विक भेद तर नीचाँ देल तालिकामे संक्षेपतः देखल जा सकैत अछि:

अविद्याक जीवाश्रयत्वक ई भामती-सिद्धान्त, ब्रह्म साक्षात्कारकेँ मननजन्य अन्तःकरण-वृत्तिरूप मानब, आ अध्यासकेँ भेदाग्रह-मूलक बुझबामे प्राभाकर-सामग्रीक अद्वैत-सात्करण—ई सभ बिन्दु अनुवादमे पाठकेँ स्वतः भेटि जाइत अछि, जे अनुवादकक शास्त्रीय गहराइक प्रमाण अछि।

अद्वैत वेदान्तक विकास-क्रममे आचार्य शंकरक परवर्ती कालमे दुइटा प्रमुख प्रस्थान (सम्प्रदाय) स्थापित भेल—वाचस्पति मिश्रक 'भामती-प्रस्थान' आ पद्मपादाचार्यक 'पञ्चपादिका' पर प्रकाशात्मयति द्वारा रचित 'पञ्चपादिका-विवरण' सँ उद्भूत 'विवरण-प्रस्थान'। एहि दुनू प्रस्थानक तात्त्विक भेद अद्वैत दर्शनक सूक्ष्मताकेँबुझबाक लेल नितान्त आवश्यक अछि, जकर निर्वाह गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवादमे पूर्ण निष्ठासँ भेल अछि।

भामती-प्रस्थानमे जीवकेँ कर्ता, भोक्ता आ अविद्याक आश्रय मानल गेल अछि। अविद्याक जीवाश्रयत्वक ई सिद्धान्त भामतीक आधारभूत विशेषता अछि। वाचस्पति मिश्रक अनुसार, अविद्या वास्तवमे अनिर्वचनीय अछि आ ओकरा दुइ भागमे विभक्त कएल जा सकैत अछि—आवरण (मूलाविद्या) आ विक्षेप (तूलाविद्या/संस्कार) । ई सम्पूर्ण पृष्ठभूमि गजेन्द्र ठाकुरक अनुवादमे स्वतः प्रतिध्वनित होइत अछि, जतय अनुवादक बिना कोनो बाह्य टिप्पणीक पाठ-निष्ठ रहि भामतीक आशयकेँ स्पष्ट करैत छथि।

ई तुलना उपयोगी अछि, मुदा एहि जगह एकटा शास्त्रीय सावधानी आवश्यक अछि। भामती-विवरण भेदक अनेक सूत्र उत्तरवर्ती परम्पराक व्यवस्थित वर्गीकरणक फल सेहो अछि; अतः पाठककेँ ई न बुझबाक चाही जे सभ भेद एहि रूपमे स्वयं वाचस्पतिक मूल पाठमे सूचीबद्ध भेटैत अछि। पुस्तक मूल अनुवाद आ परम्परागत सिद्धान्त-इतिहासक बीच भेद आर स्पष्ट करितय तँ शोधोपयोगिता बढ़ितय।

वाचस्पति मिश्रक भामती एतेक प्रौढ आ गम्भीर अछि जे ओकरा बुझबाक लेल स्वयं भामतीपर अनेक टीकासभ रचित भेल। तेरहम् शताब्दीमे अमलानन्द सरस्वती (जिनकर गुरु अनुभवानन्द छलाह) भामतीपर'वेदान्तकल्पतरु' नामक प्रसिद्ध टीका लिखलनि, जाहिसँ भामती-प्रस्थानकेँ अद्वैत वेदान्तक क्षेत्रमे अपूर्व प्रतिष्ठा भेटल। अमलानन्दक कल्पतरुपर सोलहम शताब्दीमे अप्पय दीक्षित 'कल्पतरुपरिमल' आ लक्ष्मीनृसिंह 'आभोग' नामक टीका लिखलनि। एहि अतिरिक्त भामतीपर वल्लालसूरी कृत 'भामतीतिलक', अखण्डानुभूति यति कृत 'ऋजुप्रकाशिका', अच्युतकृष्णतीर्थ कृत 'भामती-भावदीपिका' आ सुब्रह्मण्यशास्त्री कृत 'भामती-विवरण' सन अनेक टीकासभ उपलब्ध अछि।

एहि टीकासभमे कतहु-कतहु भामती आ कल्पतरुक सिद्धान्तसभक सूक्ष्म मतभेद परिलक्षित होइत अछि। अप्पय दीक्षित अपन 'परिमल' मे जतय वाचस्पति आ अमलानन्दक शारीरक भाष्यसँ असमानता देखलनि, ओतय हुनका लोकनिक खण्डन कऽ शारीरक भाष्यक समर्थन कएलनि। मुदा 'आभोग' कार लक्ष्मीनृसिंह परिमलक एहि व्यवस्थाक तीव्र आलोचना कऽ भामतीकार आ कल्पतरुकारक समर्थन कएलनि। एहि प्रकार भामती-प्रस्थानक भीतर सेहो दुइ उप-प्रस्थान विकसित भेल। ई सम्पूर्ण टीका-सम्पत्ति वाचस्पति मिश्रक मूल ग्रन्थक बौद्धिक वर्चस्व प्रमाणित करैत अछि।

तात्त्विक आ ज्ञानमीमांसक बिन्दु

भामती-प्रस्थान (वाचस्पति मिश्र)

विवरण-प्रस्थान (पद्मपाद / प्रकाशात्मयति)

अविद्याक आश्रय (Locus of Avidya)

अविद्याक आश्रय 'जीव' अछि (जीवाश्रित अविद्या)। ब्रह्म अविद्याक विषय अछि, आश्रय नहि।

अविद्याक आश्रय 'ब्रह्म' अछि (ब्रह्माश्रित अविद्या)। अज्ञान ब्रह्ममे स्थित अछि।

जीव आ ईश्वरक स्वरूप

अवच्छेदवाद: जीव अविद्यासँ सीमित (अवच्छिन्न) ब्रह्म अछि, जहिना घटाकाश आ महाकाश।

प्रतिबिम्बवाद: जीव अविद्यामे ब्रह्मक प्रतिबिम्ब अछि, जहिना जलमे सूर्यक प्रतिबिम्ब।

अविद्याक एकत्व-नानात्व

अविद्या अनेक अछि (नाना जीव, नाना अविद्या)। प्रत्येक जीवक अपन अविद्या अछि।

मूलाविद्या एक अछि। सम्पूर्ण प्रपञ्च एकहि अविद्याक कार्य अछि।

ब्रह्मसाक्षात्कारक साधन

मननजन्य अन्तःकरणक ब्रह्माकार वृत्ति (मन) अपरोक्ष ज्ञानक मुख्य साधन अछि (निदिध्यासन)।

महावाक्य (शब्द) साक्षात् अपरोक्ष ज्ञानक साधन अछि (शब्दापरोक्षवाद / श्रवण)।

मोक्षक साधन

जीव अविद्याक आश्रय अछि आ निदिध्यासनक माध्यमसँ जीवन्मुक्ति प्राप्त करैत अछि।

श्रवण मात्र पर्याप्त अछि, अविद्या ब्रह्माश्रित अछि आ ब्रह्मज्ञानसँ स्वतः नष्ट होइत अछि।

सृष्टिक्रम आ भूत-मिश्रण

त्रिवृत्करण (तीन भूतसभक मिश्रण—तेज, जल, अन्न/पृथ्वी) मान्य अछि।

पञ्चीकरण (पाँच भूतसभक मिश्रण—आकाश, वायु, तेज, जल, पृथ्वी) मान्य अछि।

४. विस्तृत ग्रन्थ-सार आ दार्शनिक मीमांसा

४.१ मङ्गलाचरणः दर्शन आ काव्यक संगम

भामतीक सात मंगलश्लोक अनुवादमे गद्यानुवाद रूपमे प्रस्तुत अछि, छन्द-सुरक्षापर अर्थ-सुरक्षा कैँ प्राथमिकता देल गेल अछि। प्रथम श्लोकमे ब्रह्म कैँ 'अपरिमेय आनन्द आ ज्ञानस्वरूप' कहि, 'दुइ प्रकारक अनिर्वचनीय अविद्या कैँ मन्त्री बना कऽ' पंचभूतक मिथ्या अभिव्यक्तिकर्ता रूपमे प्रणाम कएल गेल अछि—एतहि भामती-प्रस्थानक बीज-सिद्धान्त (द्विविध अविद्या: आवरण आ विक्षेप/संस्कार) क सङ्केत भेटि जाइत अछि। द्वितीयश्लोक—'वेद हुनक श्वास छथि, पाँचो महाभूत हुनक दृष्टि छथि, चल-अचल जगत हुनक मुस्की अछि आ हुनक निद्रा महाप्रलय अछि'—मे 'मुस्की' शब्दक प्रयोगसँ ब्रह्माण्डीय लीला घरेलू आत्मीयता पाबि लैत अछि। आगाँ वेद-भव, मार्तण्ड-तिलकस्वामिन्-महागणपति, व्यास आ शंकरक वन्दना क्रमशः अछि। सातम श्लोकक विनयोक्ति—'जहिना राजपथक पानि गङ्गाक धारमे पड़ि शुद्ध भऽ जाइत अछि, तहिना हमरा सन लोकक तुच्छ वचन आचार्यक रचनासँ जुड़ि पवित्र भऽ जाइत अछि'—टीकाकारक शास्त्रीय आत्म-नम्रताक प्रतिरूप अछि।

एहि मङ्गलाचरणमे अनुवादक पद्धति स्पष्ट भऽ जाइत अछि—छन्द छोड़ल जा सकैत अछि, अर्थ नहि; संस्कृत पदावली राखल जा सकैत अछि, मुदा वाक्य मैथिलीमे साँस लेबाक चाही। समग्र अनुवादमे यही नीति बारम्बार सफल देखाइत अछि।

४.२ अध्यास-भाष्यः पूर्वपक्ष, गौण-मिथ्या भेद, ख्यातिवाद आ आत्माक स्वयंप्रकाशता

टीका एकटा दीर्घ पूर्वपक्षसँ आरम्भ होइत अछि: जाहि वस्तुमे सन्देह नहि आ जकर ज्ञानसँ प्रयोजन सिद्ध नहि हो, ओ जिज्ञासाक विषय नहि भऽ सकैत ('तेज इजोतमे उपस्थित घट' आ 'कौआक दाँत'क दृष्टान्त) । पूर्वपक्षी 'हम' (अस्मत्) क अपरोक्ष अनुभव कृमि-पतङ्गसँ लऽ कऽ देवता-ऋषि धरि सभमे निर्विवाद देखबैत अछि; बाल्यकालसँ वृद्धावस्था धरिक प्रत्यभिज्ञा, फूल आ गूँथनिहार सूतक दृष्टान्त, स्वप्न-दिव्यदेह-बाध, योगबलजनित बाघ-देहमे आत्माभिन्नता, आ इन्द्रिय-व्यभिचारक तर्कसभद्वारा देहेन्द्रियादिसँ आत्माक भेद स्थापित करैत अछि। पूर्वपक्षक चरम उद्घोष—'हजार शास्त्र मिलियो घट कैँ पट नहि बना सकैत अछि'—अनुभवविरोधी श्रुतिकैँ गौणार्थक मानबाक आग्रह अछि।

सिद्धान्त-पक्ष उपक्रम-उपसंहार-अभ्यासादि तात्पर्यलिङ्गक आधारपर श्रुतिक निरुपाधिक आत्म-प्रतिपादन स्थापित करैत अछि। श्रुतिजन्य ज्ञान प्रत्यक्षक व्यावहारिक प्रामाण्य कैँ नष्ट नहि करैत, केवल पारमार्थिक प्रामाण्यक निषेध करैत अछि—ई व्यावहारिक-पारमार्थिक भेद अद्वैत-प्रमाणमीमांसाक मेरुदण्ड अछि। 'दीर्घा चिचिया रहल अछि' सन गौणी वृत्तिक उदाहरण, कुण्डपायिनाम् अयनक 'अग्निहोत्र', सिंह-शिष्य, आ तैल-सरिसोक दृष्टान्तसभद्वारा सिद्ध कएल गेल जे गौण प्रयोग भेदज्ञानपूर्वक होइत अछि, मुदा 'हम'क प्रयोगमे देहसँ भेदज्ञानक अभावक कारण ओ गौण नहि, अपितु मिथ्या (अध्यास) अछि।

अध्यासक भाष्यीय लक्षण—'पहिने देखल वस्तुक स्मृतिसदृश स्वरूपमे आन ठाम प्रकट होएब'—क पदशः विश्लेषण, अतिव्याप्ति-अव्याप्तिक परीक्षा (कालाक्षी गाएमे गोत्व-प्रत्यभिज्ञा, स्वप्नज्ञान), आ भ्रमक लौकिक कोश—शुक्ति-रजत, दर्पण-प्रतिबिम्बभ्रम, द्विचन्द्र, अलातचक्र, मृगतृष्णा, बाँसमे साँप—सम्पूर्णतः अनूदित अछि। एहि आधारपर ख्यातिवादक शास्त्रार्थ अछि: आत्मख्याति

(सौत्रान्तिक-विज्ञानवादी बौद्ध), अख्याति (प्राभाकर मीमांसक), आ अन्यथाख्याति (नैयायिक) । वाचस्पति एहि सभक तीक्ष्ण खण्डन करैत छथि—'अहा! बेचारा ज्ञानक ई केहन महान सौभाग्य अछि जे असत्यक द्वारा सेहो निश्चितता प्राप्त कऽ लैत अछि!' सन व्यंग्य-वैभवसहित। सिद्धान्ततः अनिर्वचनीयख्याति स्थापित होइत अछि: किरणपर आरोपित मृगतृष्णाजल 'ने सत्य अछि, ने असत्य, आ ने सत्य-असत्य दुनू'—सदसद्विलक्षणताक ई त्रैविध्य-निषेध अद्वैत प्रमाणमीमांसाक हृदय अछि।

चैतन्यक स्वप्रकाशताक शास्त्रार्थमे 'अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि प्रत्येक डेगपर खसैत अछि' (अन्धपरम्परा-दूषण), ज्ञानान्तर-कल्पनामे अनवस्था-दोष, आ विज्ञानवादीक विषय-प्रकाशवादक निरास—एहि सभद्वारा आत्माक स्वयंप्रकाश, नित्य, निरवयव स्वरूप स्थापित कएल गेल अछि। अप्रत्यक्ष आकाशपर अविवेकी बालकद्वारामलिनता-आरोप (इन्द्रनील मणिसँ बनल विशाल उलटल कटोराक उपमा) क दृष्टान्तद्वारा अविद्याकल्पित बुद्धि-मन-देहोपाधिसँ जीवभावक निष्पत्ति देखाओल गेल अछि।

'अध्यास कैँ ज्ञानी लोक अविद्या कहैत छथि' ई युग्म-लक्षण, प्रमातृत्वक अध्यासाधीनता, आ पशु-साम्यक प्रसिद्ध भाष्यांश—लाठी उठौने मनुष्य देखि भागब, हरियर घास देखि लग जाएब—मैथिलीमे ग्राम्य-जीवनक जीवन्त चित्र बनि जाइत अछि। धर्माध्यास (हम गूँग/एकनयन/बहिर छी) आ धर्म्यध्यास (इच्छा-सङ्कल्प-संशय-निश्चय) क विवेकसहित उपोद्घात 'यथार्थ ज्ञानक अभ्याससँ भ्रम-संस्कारक उच्छेद' रूपी प्रतिज्ञापर पूर्ण होइत अछि।

आत्मख्याति (बौद्ध-सौत्रान्तिक/विज्ञानवादी): बाह्य वस्तुक असत्ता मानि, भीतरक ज्ञानाकारक बाह्य आरोप।

अख्याति (मीमांसक-प्राभाकर): स्मृति आ ग्रहणक भेदाग्रह; स्मृतिक स्मृतित्व लुप्त भऽ जाएब।

अन्यथाख्याति (नैयायिक): एक विद्यमान वस्तुक दोसर रूपमे ज्ञान (यथा सीपमे बाजारक रजतक भान) ।

ई अंश आधुनिक दर्शनक भाषा मे सेहो महत्त्वपूर्ण अछि, कारण प्रश्न मात्र “भ्रम किएक होइत अछि?” नहि, बल्कि “अनुभवमे उपस्थित वस्तुक सत्ता-स्थिति की अछि?” एहि रूपमे उठैत अछि। अनुवाद एहि प्रश्नक दार्शनिक गरिमा सुरक्षित रखैत अछि।

४.३ प्रथम सूत्रः 'अथातो ब्रह्मजिज्ञासा' – अधिकार, साधन, कर्म-ज्ञान सम्बन्ध आ मोक्ष

'अथ' शब्दक चारि अर्थ-विकल्प (आनन्तर्य, आरम्भ, मंगल, अधिकार) क परीक्षा, आ 'धर्मजिज्ञासाक अनन्तर ब्रह्मजिज्ञासा' पक्षक खण्डन—ब्रह्मसाक्षात्कारक उत्पाद्य-विकार्य-संस्कार्य-आप्य चतुर्विध कार्यतासँ बहिर्भाव (आटाक गोला, दही, ओखलीक प्रोक्षण, दूध दुहबक दृष्टान्तचतुष्टय)—एहि सूत्रक केन्द्रीय विषय अछि। कर्म कैँ केवल 'दूरस्थ सहायक' ठहराओल गेल अछि। साधन-चतुष्टय (नित्यानित्यवस्तुविवेक, इहामुत्रार्थभोगविराग, शमदमादिसाधनसम्पत्ति, मुमुक्षुत्व) क व्याख्यामे वैराग्य-विरोधी दृष्टान्तसभ—काँटासहित माछ, भूँसीसहित धान, वन्य पशुक डरे बीज नहि छोड़निहार किसान—मैथिली गद्यक विशेष सरसताक स्थल अछि। सूत्रक अन्तमे 'ब्रह्मणे जिज्ञासा' (चतुर्थी समास) क खण्डन कऽ 'ब्रह्मणः जिज्ञासा' (षष्ठी तत्पुरुष) स्थापित कएल गेल अछि—ई ऐतिहासिक दृष्टिएँ महत्त्वपूर्ण अछि, कारण एतय वाचस्पति शाङ्कर-पूर्व वृत्तिकार-परम्पराक खण्डन करैत छथि। प्रकरण आत्मस्वरूपक ऐतिहासिक मत-सर्वेक्षण (लोकायत, इन्द्रियात्मवाद, मन-आत्मवाद, क्षणिकविज्ञानवाद, शून्यवाद, सांख्य, न्याय-वैशेषिकक जीवभिन्न ईश्वर, आ अद्वैत) सँ समाप्त होइत अछि—भारतीय दर्शनक एकटा लघु-विश्वकोश।

'अथ' शब्दक मङ्गल, आरम्भ आ अधिकार अर्थक निरास कऽ 'आनन्तर्य' अर्थ स्थापित कएल गेल अछि। मङ्गल ध्वनिक दृष्टान्त "मृदङ्ग वा शङ्खक ध्वनि" आ "दोसर प्रयोजन लेल आनल जलपूर्ण कलशक दर्शन" सँ देल गेल अछि। धर्मजिज्ञासाक अनन्तर ब्रह्मजिज्ञासा हो—एहि मीमांसक पूर्वपक्षक तीव्र खण्डन कएल गेल अछि। मोक्ष उत्पाद्य (आटाक गोला), विकार्य (दही), संस्कार्य (ओखलीक प्रोक्षण), वा आप्य (दूध दुहब) नहि अछि। कर्म केवल वैराग्य आ बुद्धिशुद्धिक "दूरस्थ सहायक" अछि।

एहि सूत्रक वास्तविक शक्ति कर्म–ज्ञान सम्बन्धक विमर्शमे अछि। पूर्वमीमांसक आग्रह—धर्मजिज्ञासाक बादे ब्रह्मजिज्ञासा—कैँ कठोर अनिवार्यता रूपमे अस्वीकार कएल जाइत अछि। मुदा कर्मकैँ सर्वथा निरर्थक नहि कहल गेल अछि। पुस्तक मूल पाठमे विभिन्न मत सुरक्षित रखैत अछि: कर्म अन्तःकरणक मल हटबैत अछि; साधककैँ शुद्ध करैत अछि; तीन ऋण चुकाबैत अछि; वा ब्रह्मभावनाक सहायक होइत अछि। श्रवण, मनन आ निदिध्यासनक क्रम एहि चर्चा बीच विकसित होइत अछि।

एतय अनुवादक विशेष सफलता ई अछि जे अत्यन्त तकनीकी मीमांसक तर्कक बीच लौकिक उदाहरण पाठककैँ थाकय नहि दैत। काँटासहित माछ, भूँसीसहित धान, वन्य पशुक भय, भिखारीक भय, मधुमे मिश्रित विष—ई सभ वैराग्यक तर्कमे केवल सजावट नहि, बल्कि दार्शनिक प्रमाणक उदाहरण बनैत अछि।

एतय भामतीक ज्ञानसाधना बहुत सूक्ष्म अछि। श्रवणजन्य वाक्यार्थ मननसँ दृढ़ होइत अछि; निदिध्यासन विपरीत संस्कार हटबैत अछि; अन्तःकरणक ब्रह्माकार वृत्ति उपाधिबद्ध “त्वम्” क वास्तविक “तत्” स्वरूपकेँ प्रकट करैत अछि। मोक्ष उत्पन्न नहि होइत—अज्ञान हटैत अछि।

४.४ द्वितीय सूत्रः 'जन्माद्यस्य यतः' – ब्रह्मक जगत्कारणता

तटस्थलक्षणक स्थापना—'ब्रह्मसँ उत्पन्न होएबाक कारण जगत ब्रह्मक लक्षण भऽ सकैत अछि, जहिना विभिन्न देशमे पहुँचब सूर्यक गतिक लक्षण होइत अछि'—एहि सूत्रक केन्द्रीय तर्क अछि। यास्कक छह भावविकार (जायते, अस्ति, वर्धते, विपरिणमते, अपक्षीयते, विनश्यति) क उत्पत्ति-स्थिति-विनाशमे अन्तर्भावसहित निरुक्त-विमर्श, आ जगद्वैचित्र्यसँ सर्वज्ञ-सर्वशक्तिमान् कारणक स्थापना—नियत-व्यवस्थाक अपूर्व दृष्टान्तचतुष्टय (निश्चित देशमे कृष्णमृगक उत्पत्ति, निश्चित कालमे कोइलीक कूजब, वर्षाक आरम्भमे मेघगर्जनसँ बगुलाक गर्भाधान) सहित—अछि। प्रकरणक निर्णायक मोड़ ई अछि जे सूत्र स्वतन्त्र अनुमानक सङ्केत नहि, अपितु भृगु-वरुण-संवादक तैत्तिरीय-श्रुतिक उपन्यास मात्र अछि; अविद्यासहित रस्सीक सर्प-उपादानता दृष्टान्तसँ ब्रह्मक (अविद्यासहितक) उपादान-कारणता सिद्ध कएल गेल अछि, आ वस्तुतन्त्र-पुरुषतन्त्र-भेदक प्रथम उपस्थापन सेहो एतय भेटैत अछि, जे आगाँ चतुर्थ सूत्रक भूमिका बनैत अछि।

ब्रह्म निमित्त-कारण मात्र नहि; अविद्यासहित ब्रह्म उपादान-कारणो। रस्सी–सर्पक उदाहरण एहि कठिन अद्वैत कारणवादकेँ संक्षिप्त दृश्य रूप दैत अछि।

४.५ तृतीय सूत्रः 'शास्त्रयोनित्वात्' – ब्रह्म आ शास्त्रक द्विमुख सम्बन्ध

दुइ शास्त्रसम्मत व्याख्या क्रमशः देल गेल अछि: (क) 'शास्त्रक कारण ब्रह्म'—असङ्ख्य विद्यास्थानसँ परिपूरित शास्त्र-समूहक योनि ब्रह्म छथि, पाणिनि-व्याकरणकदृष्टान्तसँ 'रचयिता ओहि शास्त्रक विषयसँ बेसी व्यापक ज्ञान रखैत छथि' ई व्याप्ति स्थापित कएल गेल; (ख) 'ब्रह्मक प्रमाण शास्त्र'—ब्रह्म केवल शास्त्रसँ ज्ञात होइत छथि, स्वतन्त्र अनुमानसँ नहि। एहि प्रसंगमे वेद-नित्यता-विमर्श विशेष मूल्यवान अछि—वर्ण-नित्यतावादी मीमांसकक क्रमविशिष्ट शब्द-वाक्यक अनित्यता स्वीकार करैक बाध्यता, नृत्य-शिक्षक-शिष्यक दृष्टान्तसँ वेद-पाठ-क्रमक अनुवर्तनक व्याख्या, आ जैमिनीय-व्यासमतक समन्वय। 'कोनो सृष्टिमे ब्रह्महत्या पुण्यक कारण नहि बनैत, नहि अश्वमेध पापक; जहिना अग्नि कखनो भिजबैत नहि, जल कखनो जरबैत नहि'—नियत-स्वभाववादक ई सूक्ष्म प्रतिपादन सम्पूर्ण वेद-प्रामाण्य-मीमांसा केँ मैथिलीमे पहिल बेर एहि गहराइसँ उपलब्ध करबैत अछि।

४.६ चतुर्थ सूत्रः 'तत्तु समन्वयात्' – वेदान्त-वाक्यक फलवत्ता, वस्तुतन्त्र ज्ञान, मोक्षक नित्यता आ जीवन्मुक्ति

समन्वयाधिकरण ग्रन्थक सभसँ विशाल आ शास्त्रार्थ-सघन अंश अछि, जे सम्पूर्ण अनुवादक लगभग एक-तिहाइ भाग घेरैत अछि। पूर्वपक्ष मीमांसक-सिद्धान्तपर ठाढ़ अछि: 'शास्त्रक प्रयोजन कर्मक शिक्षा अछि'; वेदान्तवाक्य या तँ विधि-शेष, या ध्यानादि-कर्मक विधायक, या 'अमरत्व चाहनिहार लेल ब्रह्मोपासनाक विधान' (प्रतिपत्तिविधि-वाद) मानल जाय। 'तत्त्वमसि सुनलाक बादो संसारधर्म—सुख, दुःख, भय आदि—पहिनेक जकाँ बनल रहैत अछि' ई अनुभव-मूलक आक्षेप सेहो पूर्वपक्षक भाग अछि। सिद्धान्त-पक्ष 'समस्त वेदान्त-वाक्य एकहि तात्पर्यसँ ब्रह्ममे समन्वित होइत अछि' ई आधार-वाक्यक पुष्टि 'सदेव सोम्य इदमग्र आसीत्', 'एकमेवाद्वितीयम्' आदि श्रुतिसमूह आ उपक्रमोपसंहारक एकवाक्यतासँ करैत अछि।

मोक्षक नित्यताक स्थापनामे चतुर्विध कार्यताक (उत्पाद्य, विकार्य, संस्कार्य, आप्य) क्रमिक खण्डन एहि अधिकरणक मेरुदण्ड अछि—नाविक-नौकाक रमणीय दृष्टान्त (परिवर्तनशील तट-फेन-तरंग छोड़ि तरंगरहित शान्त मध्यभागमे पहुँचब), गुणाधान (लाखक रससँ रंगल जवा फूल) आ दोषापनयन (ईंटक चूर्णसँ घसल दर्पण) क ब्रह्ममे असम्भवता—एहि सभसँ 'ज्ञान बाहेक कर्मक छायो मोक्षमे प्रवेश नहि पबैत अछि' ई निष्कर्ष-वाक्य स्थापित होइत अछि। कूटस्थनित्यता-परिणामिनित्यताक विवेक, भेदाभेदवादक विस्तृत खण्डन ('घट केँ एहिमे बदरी अछि नहि कहल जाइत, आ चैत्र-मैत्र एक आसनपररहितहुँ चैत्र मैत्र अछि नहि कहल जाइत'), आ 'माटि मात्र सत्य अछि' (वाचारम्भण) श्रुतिसँ कूटस्थपक्षक निर्णय—एहि सभक संग मोक्षक साद्यन्तताक श्रुति-राशि आ वामदेवक 'हम मनु भेलहुँ, हम सूर्य भेलहुँ' उदाहरण अछि।

'ज्ञान वस्तुतन्त्र अछि, पुरुषतन्त्र नहि' ई भाष्यीय सिद्धान्तक व्याख्यामे 'मन वास्तवमे अग्नि अछि' सन आरोपमूलक उपासना (पुरुषतन्त्र) आ प्रसिद्ध अग्निक अग्निबुद्धि (वस्तुतन्त्र) क भेद स्पष्ट कएल गेल अछि। सिद्धवस्तु-वाक्यक फलवत्ताक स्थापनामे भामतीक दुइ अविस्मरणीय स्थल—सुमेरु-वर्णनक अलंकृत गद्य, आ आर्यभाषा नहि जाननिहार द्रविड़क प्रसिद्ध आख्यान (दूतद्वारा 'अहाँक पुत्र जन्मल अछि' कहलापर द्रविड़ द्वारा देवदत्तक रोमांच आ खिलल मुख देखि वाक्यार्थ-ज्ञानक अनुमान)—भाषा-दर्शनक ई

युगान्तकारी तर्क मैथिलीमे कथा जकाँ प्रवाहमय अछि। निषेध-मीमांसा (ब्राह्मणकेँ नहि मारबाक चाही—नञ्-पदक अभाव-बोधकता, प्रजापतिव्रतक पर्युदास-व्यवस्था), आ अन्तमे गौण-मिथ्या अहंबुद्धिक विवेक तथा जीवन्मुक्तिक स्थापन (साँपक त्यक्त केंचुली बाँबीपर मृत पड़ल रहबाक श्रुति-दृष्टान्त)—एहि सभसँ ग्रन्थ अपन तार्किक वृत्त पूर्ण करैत अछि। 'हम ब्रह्म छी—एहि ज्ञानमे सभ विधि आ अन्य समस्त प्रमाण समाप्त भऽ जाइत अछि' ई चरम-सिद्धान्तवाक्यसँ, आ प्रथम सूत्रसँ अन्विति साधि (रचना-शिल्पक दृष्टिएँ वृत्त-पूर्ति/ring composition) चतु:सूत्री-भामतीक ई अनुवाद समाप्त होइत अछि।

सिद्धवस्तु विषयक वाक्य निरर्थक नहि। “ई रस्सी अछि, साँप नहि” कहला मात्रसँ भ्रमजन्य भय हटि सकैत अछि। तहिना आत्माक संसारित्व मिथ्या बुझला पर ब्रह्मज्ञान स्वयं फलदायी अछि। श्रवण, मनन, निदिध्यासन नूतन मोक्ष उत्पन्न नहि करैत, बल्कि संशय आ विपरीत संस्कार हटबैत अछि।

घट–बदरी, चैत्र–मैत्र, सुवर्ण–कुण्डल आदि उदाहरणसँ भेद आ अभेदकेँ एकहि सम्बन्धमे समानरूपेँ वास्तविक मानबाक कठिनाइ देखाओल गेल अछि। दूरसँ सुवर्ण बुझलासँ कुण्डलरूप विशिष्ट वस्तुक ज्ञान नहि होइत—एहिसँ सामान्य द्रव्यज्ञान आ विशेषाकारज्ञानक अन्तर निकलैत अछि। भेद आ अभेद एक-दोसरपर निर्भर होइत तँ परस्पराश्रय-दोष उत्पन्न होइत।

“नहि” क अर्थ, पर्युदास, निषेध, निवृत्ति आदिक सूक्ष्म मीमांसा पुस्तकक सभसँ कठिन भाषा-दर्शनात्मक अंशमे अछि। कवच हटलाक बादो बाण नहि लगल तँ जीवन तत्काल समाप्त नहि—एहन दृष्टान्त निवृत्ति आ फलसम्बन्ध बुझबैत अछि। अन्ततः अहंकारक गौण-मिथ्या भेद आ जीवन्मुक्तिक प्रसङ्गमे साँपक त्यक्त केंचुली तथा धन त्यागल मनुष्यक उदाहरण देल गेल अछि। “हम ब्रह्म छी” ज्ञानपर विधि आ प्रमाणक व्यवहारिक प्रयोजन समाप्त होयब चतु:सूत्रीक चरम बिन्दु बनैत अछि।

५. अनुवाद-सिद्धान्त, भाषा-रणनीति, मुहावरा आ पारिभाषिकी-निर्माण

अनुवादक भाषा-रणनीति तीन स्तरपर काज करैत अछि। पहिल, पारिभाषिक शुद्धता: अध्यास, अनिर्वचनीय, समानाधिकरण, प्रत्यभिज्ञा, अर्थापत्ति, संयोग-पृथक्त्व, कूटस्थ, उपादान सन शब्द यथावत् राखल गेल अछि, मुदा प्रथम प्रयोगपर मैथिली व्याख्यासहित—एहिसँ मैथिलीमे मीमांसा-न्याय-वेदान्तक पारिभाषिकीक सफल आ स्थायी निर्माण भेल अछि। दोसर, वाक्य-रचनाक मैथिलीकरण: संस्कृतक दीर्घ समास-गुम्फित वाक्यकेँ तोड़ि 'बात ई अछि—', 'मानि लिअ', 'कहल ई जा रहल अछि—', 'एकर उत्तर... दैत छथि' सन सूत्रधार-पदक प्रयोग कएल गेल अछि, जाहिसँ शास्त्रार्थक गति-यति स्पष्ट रहैत अछि। तेसर, देशज मुहावराक विवेकपूर्ण प्रयोग—'अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि प्रत्येक डेगपर खसैत अछि', 'जौक खीर नोनगर नहि अछि', 'हजार शास्त्र मिलियो घट कैँ पट नहि बना सकैत अछि'—संस्कृत न्यायोक्तिकेँ मैथिली लोकवाणीमे रूपान्तरित करबाक ई पद्धति अनुवादकसर्वोत्कृष्ट पक्ष अछि। लिंग-वचन-सङ्गति, 'छथि' (आदरार्थ: ब्रह्म, आत्मा, आचार्यक हेतु) आ 'अछि' (सामान्य) क अनुशासित प्रयोग, तथा नुक्ताक सङ्गति (ड़/ढ़ मात्र, विदेह-मानकक अनुरूप) पूरा 491 पृष्ठमे सुसंगत अछि, जे समीक्ष्य संस्करणक सम्पादकीय श्रमक प्रमाण अछि।

गजेन्द्र ठाकुरक अनुवाद "अर्थानुगामी किन्तु वाक्-स्वतन्त्र" सिद्धान्तपर आधारित अछि। मूलक तर्क-क्रम, दृष्टान्त-क्रम आ प्रमाण-क्रमसँ तनिकहु विचलन नहि अछि, मुदा वाक्य-विन्यास पूर्णतः मैथिलीक अपन देशज प्रकृतिमे अछि।

"हजार कारीगरो घटसँ वस्त्र नहि बना सकैत"।

"बाणक दाँतक परीक्षा जकाँ निरर्थक वस्तुमे जिज्ञासा"।

सम्पूर्ण समीक्षामे ई बात स्पष्ट रहबाक चाही जे पहिल-दोसर अध्याय चाहे जतबा महत्त्वपूर्ण हो, पुस्तकक स्थायी मूल्य तेसर अध्यायक वास्तविक अनुवाद-पाठपर निर्भर अछि। एहि परिशिष्टमे अध्यास आ ब्रह्मसूत्र १.१.१–१.१.४क चतु:सूत्री-भामती क्रमशः देल अछि।

एहि अनुवादक मुख्य गुण अछि—तर्कक क्रम नहि टूटैत अछि। पूर्वपक्षी जतेक लम्बा तर्क करैत अछि, ओकरा कृत्रिम रूपेँ छोट नहि कएल गेल। उदाहरण, आपत्ति, प्रतिउत्तर, पुनःआपत्ति, सूत्र, भाष्यवाक्य, व्याकरणिक विवेचन आ मीमांसक न्याय सभ जगह बनल अछि। फलतः पाठक “वाचस्पति की निष्कर्ष देलनि” मात्र नहि, “ओ निष्कर्ष धरि केना पहुँचलाह” सेहो देखैत अछि।

दार्शनिक मैथिली लिखबाक दुइ खतरा रहैत अछि—एक दिस संस्कृतक एतेक बोझ जे मैथिली केवल विभक्ति-मात्र रहि जाए; दोसर दिस एतेक सरलीकरण जे शास्त्रीय भेद विलीन भऽ जाए। एहि अनुवादक श्रेष्ठ अंशमे दुनू संकट टारल गेल अछि।

विशेष महत्त्व ई जे देशजता हास्य वा ग्राम्यता नहि बनैत; गंभीर दार्शनिक गद्यक मर्यादा बनल रहैत अछि। “अन्हर अन्हरक हाथ पकड़ि...” जकाँ वाक्य अनवस्था-दोषक अर्थ केतेको संस्कृतपरक परिभाषासँ बेसी तुरन्त स्पष्ट कऽ दैत अछि।

एहि अनुवादकेँ “शाब्दिक” वा “स्वच्छन्द”—एहि दू साधारण कोटिमे नहि राखल जा सकैत अछि। एकर पद्धति मूलतः तर्क-निष्ठ अर्थानुवाद अछि। मूलक दार्शनिक क्रम, प्रतिपक्ष, उदाहरण आ प्रमाण राखल जाइत अछि; संस्कृतक वाक्यरचना नहि। एहि कारण अनुवाद मूलपाठक दार्शनिक संरचना प्रति निष्ठावान रहितहुँ मैथिलीमे कृत्रिम नहि सुनाइत।

शास्त्रीय पदकेँ पूर्णतः देशज पर्यायसँ बदलि देबाक प्रलोभनसँ बचल गेल अछि। “अध्यास” केँ प्रत्येक बेर “आरोप” कहि देल जाए तँ अवधारणाक शास्त्रीय इतिहास मिटि जाइत; “अनिर्वचनीय”, “प्रत्यभिज्ञा”, “कूटस्थ”, “उपादान” आदिक संग सेहो यही बात। मुदा आसपासक वाक्य मैथिलीमे अर्थ खोलैत अछि। ई पारिभाषिक शब्दनिर्माणक अपेक्षा पारिभाषिक शब्द-स्वीकार आ मैथिली वाक्य-व्याख्याक पद्धति अछि, जे दर्शन-अनुवाद लेल व्यवहारतः सफल अछि।

६. भारतीय साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

६.१ रस-सिद्धान्तः शास्त्रार्थमे शान्त रसक अन्तःसलिला

भरत-आनन्दवर्धन-अभिनवगुप्तक रस-सिद्धान्त मूलतः काव्य-नाट्यक हेतु प्रवर्तित भेल छल, मुदा शास्त्रीय गद्यमे सेहो एकर प्रयोग असंगत नहि, विशेषतः जखन विषय स्वयं मोक्ष आ चित्तवृत्ति-निरोध सम्बन्धी हो। एहि अनुवादमे आलम्बन-विभाव निर्विशेष ब्रह्म अछि, उद्दीपन-विभाव पूर्वपक्ष-सिद्धान्तक द्वन्द्वात्मक आवाजाही, आ व्यभिचारी भाव तर्क-कौतुक, विस्मय आ (वाचस्पतिक कटाक्षमे) क्षणिक हास्यक स्फुरण अछि। समग्र स्थायीभावक रूपमे शम—जे शान्तरसक स्थायी भाव अछि—समन्वयाधिकरणक अन्तिम जीवन्मुक्ति-वर्णनमे स्पष्ट परिपाक पबैत अछि। अनुवादक एहि रसात्मक अन्तःसूत्रकेँ भंग नहि करैत छथि; बरु मैथिली लोकोक्तिक 'रस' (जौक खीर नोनगर नहि अछि, हजार शास्त्र मिलियो घट केँ पट नहि बना सकैत अछि) शास्त्रार्थक शुष्कतामे सरसताक सिञ्चन करैत अछि, जे भारतीय काव्यशास्त्रक दृष्टिएँ 'माधुर्य' गुणक निकट अछि।

६.२ ध्वनि-सिद्धान्तः पाठ-निष्ठताक व्यंजना-शक्ति

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक अनुसार काव्यक आत्मा वाच्यार्थक पाछाँ छिपल व्यंग्यार्थमे अछि। अनुवादमे अनुवादक कतहु स्पष्टीकरणात्मक टिप्पणी नहि जोड़ैत छथि—भामती-प्रस्थानक विशिष्ट सिद्धान्त (अविद्याक जीवाश्रयत्व, मननजन्य साक्षात्कार) पाठकेँ केवल पाठ-निष्ठ अनुवादसँ स्वतः, ध्वनित रूपमे, भेटैत अछि। ई 'अनुवादकक अदृश्यता'क आदर्श—जकरा पाश्चात्य अनुवाद-सिद्धान्तमे सेहो महत्त्वपूर्ण मानल जाइत अछि (देखू ६.१)—भारतीय ध्वनि-सिद्धान्तक 'वस्तु-ध्वनि' आ 'रसध्वनि'क द्वैत सिद्धान्तसँ मेल खाइत अछिः शब्दार्थ (वाचस्पतिक तर्क-वाक्य) यथावत् रहितहुँ ओकर दार्शनिक अभिप्राय (व्यंग्यार्थ) मैथिली पाठकक हृदयमे स्वतः स्फुरित होइत अछि।

६.३ वक्रोक्तिः वाचस्पतिक कटाक्ष आ अनुवादकक निर्वाह

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्त 'शब्दार्थयोः वैदग्ध्यभंगीभणिति'केँ काव्यत्वक हेतु मानैत अछि। वाचस्पतिक शास्त्रार्थमे उपचार-वक्रता (Nyāyika-खण्डनमे 'अहा! बेचारा ज्ञानक ई केहन महान सौभाग्य अछि जे असत्यक द्वारा सेहो निश्चितता प्राप्त कऽ लैत अछि!' जकाँ व्यंग्यात्मक प्रशंसा-वाक्य) आ वाक्य-वक्रता (प्रौढ़वादक रीतिसँ शंका-समाधान) क प्रचुर प्रयोग अछि। गजेन्द्र ठाकुरक अनुवाद एहि कटाक्ष-कौशलकेँ मैथिलीक अपन व्यंग्य-सामर्थ्यसँ (जे मैथिली लोकोक्ति आ ठट्ठाक परम्परामे सेहो प्रचुर अछि) पूर्णतः मेल खुआ दैत अछि, जे अनुवादकक द्विभाषिक वक्रोक्ति-सम्वेदनशीलताक प्रमाण अछि।

६.४ गुण-रीतिः प्रसाद, माधुर्य आ समता

वामन-आचार्यक रीति-सिद्धान्त आ दण्डी-भामहक गुण-विमर्शक दृष्टिएँ ई अनुवाद 'प्रसाद' गुणक आदर्श अछि—अर्थ-गाम्भीर्य रहितहुँ शब्द-प्रसन्नता, जाहिसँ जटिलतम शास्त्रार्थ सेहो पाठकक बुद्धिमे बिना अवरोधक प्रवेश करैत अछि। शास्त्रीय गद्यक 'समता' (एकरूप रचना-शैली, कतहु आडम्बर वा शैथिल्य नहि) एकर स्थायी धर्म अछि। 'इजोत', 'अन्हार', 'मुस्की', 'बाछा', 'औँठी', 'केंचुली', 'बाँबी', 'धुँधलका', 'गड़ेरिया', 'भूँसी', 'ओखली', 'जुलाहा', 'कुम्हार' सन देशज शब्दावली माधुर्य-गुणक (कर्णप्रियता, चित्त-द्रवीकरण) संचार करैत अछि, तैयो कतहु ग्राम्यताक अतिरेकसँ गाम्भीर्य खण्डित नहि होइत—ई भरतमुनिक 'अर्थव्यक्ति' आ दण्डीक 'श्लेष-रहित प्रसाद'क सूक्ष्म सन्तुलन अछि।

६.५ औचित्य-सिद्धान्तः क्षेमेन्द्रक कसौटीपर

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार-चर्चाक अनुसार रस, अर्थ, अलंकार, आ शब्द-सभक औचित्य ही काव्यक (आ शास्त्रीय गद्यक) सौष्ठवक निर्णायक अछि। एहि अनुवादमे तीन प्रमुख औचित्य-निर्णय विशेष उल्लेखनीय अछि: (क) श्लोकसभक गद्यानुवाद—दार्शनिक ग्रन्थमे छन्दक बन्धनसँ मुक्त भऽ अर्थ-परिशुद्धता कैँ प्राथमिकता देब औचित्यपूर्ण अछि; (ख) पारिभाषिक शब्दक यथावत्-रक्षण (अध्यास, अनिर्वचनीय, समानाधिकरण, प्रत्यभिज्ञा, कूटस्थ, उपादान)—शास्त्रीय अर्थ-सूक्ष्मताक हेतु आवश्यक; (ग) देशज लोकोक्तिक विवेकपूर्ण, न्यून-किन्तु-सटीक प्रयोग—अतिरेक होइत तँ शास्त्रीय गाम्भीर्य खण्डित होइत। तीनू निर्णय वाक्य-पद-वर्ण-स्तरपर औचित्यक कसौटीपर खरा उतरैत अछि।

६.६ नव्य-न्याय-दृष्टिसँ पारिभाषिक परिशुद्धता

मिथिलाक अपन नव्य-न्याय-परम्परा (गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि-धारा, जकर पूर्वपीठिका भामतीक ख्याति-विमर्श आ प्रामाण्य-विमर्शमे निहित अछि) क दृष्टिसँ परखने ई अनुवाद विशेष रूपेँ प्रशंसनीय अछि, कारण एहिमे लक्षण-परीक्षा (अतिव्याप्ति, अव्याप्ति, असम्भव) क पद्धति, हेतु-साध्य-व्याप्तिक कठोर क्रम, आ प्रत्येक तर्कस्थल (पूर्वपक्ष→शंका→समाधान→पुनःशंका→सिद्धान्त) क अनुशासित निर्वाह मैथिलीमे संरक्षित अछि। नव्य-न्यायक परिभाषा-निर्माण-कौशल—जाहिमे प्रत्येक पद अपन प्रयोजन सिद्ध करैत अछि, कोनो अतिरिक्त वा न्यून पद नहि—एहि अनुवादक वाक्य-रचनामे प्रतिफलित होइत अछि: प्रत्येक 'बात ई अछि—', 'मानि लिअ', 'कहल ई जा रहल अछि—' सन सूत्रधार-पद ठीक ओतबे स्थानपर अछि जतय तार्किक सन्धिक आवश्यकता अछि, ने बेसी ने कम।

७. पाश्चात्य साहित्य आ अनुवाद-सिद्धान्तक आलोकमे मूल्याङ्कन

७.१ विदेशीकरण आ देशीकरण

फ्रीड्रिश श्लायरमाखर (1813) क प्रसिद्ध द्वैध—'या तँ अनुवादक पाठककेँ लेखक लग लऽ जाइत छथि (foreignizing), या लेखककेँ पाठक लग लऽ अबैत छथि (domesticating)'—एहि अनुवादपर प्रयुक्त करलापर एकटा सूक्ष्म संकरता (hybridity) उजागर होइत अछि। तर्क-संरचना, दृष्टान्त-क्रम, प्रमाण-क्रम आ पारिभाषिक शब्दावलीक स्तरपर अनुवाद पूर्णतः स्रोत-निष्ठ (foreignizing) अछि—लॉरेन्स वेनुटीक शब्दमे कहल जाय तँ ई 'मूलक विदेशीपनकेँ लक्ष्यभाषामे दृश्यमान राखब' क सिद्धान्तक निर्वाह अछि, जाहिसँ अनुवाद अपनहि एकटा स्वतन्त्र दार्शनिक-पाठ्य रूपमे प्रतिष्ठित होइत अछि, केवल सरलीकृत सारांश नहि। परञ्च अभिव्यक्ति-स्तरपर (वाक्य-विन्यास, मुहावरा, लय) ई पूर्णतः देशीकृत (domesticating) अछि—मैथिली लोकोक्ति आ देशज शब्दावलीक भरपूर प्रयोगसँ। ई दुइ प्रवृत्तिक एक साथ, बिना परस्पर-विरोधक, उपस्थिति एहि अनुवादक सभसँ पैघ सैद्धान्तिक उपलब्धि मानल जा सकैत अछि—ई सिद्ध करैत अछि जे विदेशीकरण आ देशीकरण अनिवार्यतः परस्पर-विरोधी नहि, अपितु भिन्न-भिन्न स्तरपर (सामग्री बनाम शैली) एक साथ प्रवर्तित भऽ सकैत छथि।

७.२ नाइडाक औपचारिक आ गतिशील तुल्यता

यूजीन नाइडाक 'formal equivalence' (मूलक रूप-संरचना कैँ यथासम्भव सुरक्षित राखब) आ 'dynamic equivalence' (लक्ष्यभाषाकपाठकपर मूलक जकाँ प्रभाव उत्पन्न करब) क द्वैध-कसौटीपर ई अनुवाद विशेष अछि, कारण ई दुनूकेँ एक साथ साधैत अछि—जे नाइडाक मूल सिद्धान्तमे प्रायः या-या (either-or) रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। तर्कक्रम आ प्रमाणक्रमक अविचलित निर्वाह औपचारिक तुल्यताक निर्वाह अछि; वाक्य-संरचनाक मैथिलीकरण (दीर्घ समास-गुम्फित संस्कृत-वाक्यक खण्डन कऽ छोट, सम्भाषणात्मक वाक्यसभमे रूपान्तर) गतिशील तुल्यताक निर्वाह अछि, जाहिसँ आधुनिक मैथिली पाठकपर सेहो ओहि प्रकारक बौद्धिक प्रभाव पड़ैत अछि जे संस्कृतज्ञ पाठकपर मूल पाठक पड़ैत छल।

७.३ गाडामरक 'क्षितिज-सम्मेलन' आ बेन्यामिनक 'अनुवादकक कार्य'

हान्स-गेओर्ग गाडामरक हर्मेन्यूटिक्स-सिद्धान्तक अनुसार बुझब सदिखन 'क्षितिज-सम्मेलन' (fusion of horizons) अछि—पाठक आ पाठ, दुनूक ऐतिहासिक-सांस्कृतिक क्षितिज एक-दोसरसँ मिलि नव अर्थ उत्पन्न करैत अछि। भामती एतय दोहरा हर्मेन्यूटिक स्तरपर काज करैत अछि: शंकरक अध्यासभाष्य (मूलपाठ), वाचस्पति मिश्रक टीका (नवम शताब्दीक व्याख्या-क्षितिज), आ गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद (एकविंश शताब्दीक तेसर क्षितिज)—तीनूक सम्मेलन। अनुवादमे भाष्यांश-उद्धरण आ टीका-गद्यक स्पष्ट विभाजन एहि त्रि-स्तरीय हर्मेन्यूटिक संरचनाकेँ पारदर्शी बनाबैत अछि, जे वाल्टर बेन्यामिनक निबन्ध 'The Task of the Translator' मे प्रस्तावित विचारसँ मेल खाइत अछि—अनुवादकक कार्य मूलकेँ प्रतिस्थापित करब नहि, अपितु मूल आ लक्ष्यभाषा

दुनूकेँ एक साथ, परस्पर-पूरक 'शुद्ध भाषा' (reine Sprache) क अंश रूपमे प्रकट करब अछि। एतय मैथिली संस्कृत-तर्कक 'शुद्ध भाषा'क वाहक बनि रहल अछि, ओकर प्रतिस्पर्धी नहि।

७.४ पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त

वुल्फगांग ईज़र आ स्टैनली फिशक 'reader-response' सिद्धान्तक दृष्टिएँ, ई अनुवाद पाठककेँ केवल निष्कर्ष नहि, अपितु सम्पूर्ण शास्त्रार्थ-प्रक्रिया (पूर्वपक्ष→शंका→उत्तर→पुनःशंका→समाधान→सिद्धान्त) मे सक्रिय सहभागी बनबैत अछि। 'मानि लिअ' (मानो, संस्कृत 'ननु'क अनुवाद) सन सूत्रधार-पद पाठककेँ पूर्वपक्षक भूमिकामे बेर-बेर आमंत्रित करैत अछि, जाहिसँ ईज़रक 'गैप्स' (पाठ-रिक्ति) भरबाक कार्यमे पाठक स्वयं तार्किक सहभागी बनि जाइत छथि। ई तकनीक शास्त्रार्थ-गद्यकेँ शुष्क सूचना-प्रस्तुतिसँ ऊपर उठा एकटा गतिशील, नाट्य-सदृश बौद्धिक अनुभवमे बदलि दैत अछि।

७.५ नव समीक्षा: निकट-पाठ आ जैविक एकता

नव समीक्षाक 'close reading' आ 'organic unity'क कसौटीपर परखने अनुवादक आन्तरिक सामंजस्य विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि। पारिभाषिक शब्दक (यथा 'अपरोक्ष', 'भेदाग्रह', 'गौण-मिथ्या') एकरूप प्रयोग—जे प्रथम अंश (अध्यास-भाष्य) मे स्थापित होइत अछि, ओ चतुर्थ सूत्र धरि निर्वाहित रहैत अछि—पाठकेँ एकटा जैविक, आत्मनिर्भर इकाई बनबैत अछि, जाहिमे भाग आ समग्रक सम्बन्ध क्लीन्थ ब्रुक्सक 'well-wrought urn'क आदर्शसँ मेल खाइत अछि। रचना-शिल्पक दृष्टिएँ ग्रन्थक अन्तिम पंक्ति (प्रथम सूत्रसँ अन्विति साधि उपसंहार) एकटा स्पष्ट 'ring composition' (वृत्त-पूर्ति) अछि, जे नव-समीक्षकसभद्वारा प्रशंसित संरचनात्मक बन्दिशक (structural closure) उदाहरण अछि।

७.६ तुलनात्मक सैद्धान्तिक सीमाक प्रश्न

पुस्तक अपन अनुवादकेँ भारतीय काव्यशास्त्रक प्रसाद-गुण, समता, वक्रोक्ति आ औचित्यसँ परखैत अछि। विशेषतः वाचस्पतिक व्यङ्ग्यात्मक वाक्य, शास्त्रीय पारिभाषिक पदक संरक्षण आ देशज लोकोक्तिक उपयुक्त स्थानक विवेचन सार्थक अछि। पाश्चात्य अनुवादचिन्तनक दृष्टिएँ मूल-निष्ठा आ लक्ष्यभाषा-निष्ठाक सन्तुलन तथा भाष्य आ टीकाक दोहरा स्तरक व्याख्याशास्त्रीय चुनौती चिन्हित कएल गेल अछि।

एहि समीक्षात्मक अंशक सीमा ई अछि जे पाश्चात्य सिद्धान्तसभक नाम आ अवधारणा उल्लेखित छथि, मुदा ओकरासँ मूल पाठमे दीर्घ तुलनात्मक संवाद नहि कएल गेल अछि। अतः ई “सैद्धान्तिक संकेत” अधिक अछि, स्वतंत्र तुलनात्मक सिद्धान्त-ग्रन्थ नहि। पुस्तकक लक्ष्य देखैत ई कमी घातक नहि।

८. मैथिली वाङ्मय, विदेह आ संस्थागत परिदृश्य

वाचस्पति मिश्र मैथिल छलाह—ई गौरव-वाक्य मैथिलीमे बेर-बेर दोहराओल जाइत अछि, मुदा हुनक ग्रन्थ मैथिलीमे नहि छल। गजेन्द्र ठाकुरक ई अनुवाद ओहि ऐतिहासिक अभावक पूर्ति अछि आ ओहि गौरव केँ पाठ्य-सम्पत्तिमे बदलैत अछि। विदेह ई-पत्रिका (स्थापना २०००, ISSN 2229-547X) आ ओकर ग्रन्थ-शृङ्खलामे शास्त्रीय संस्कृत ग्रन्थक जे मैथिली-सेतु बनि रहल अछि, ताहिमे भामती-सन दर्शन-ग्रन्थक समावेश ई सिद्ध करैत अछि जे मैथिली केवल गीत-कथाक नहि, कठोरतम शास्त्र-विमर्शक सेहो सक्षम वाहिका अछि।

गजेन्द्र ठाकुर द्वारा न्याय दर्शनक सर्वोच्च ग्रन्थ गङ्गेश उपाध्यायक 'तत्त्वचिन्तामणि' क मैथिली अनुवाद सेहो प्रकाशित कएल गेल अछि, जे मिथिलाक दार्शनिक धरोहरक पुनरुद्धारक दिशामे एकटा क्रान्तिकारी डेग अछि। साहित्यक क्षेत्रमे सेहो हुनक योगदान अप्रतिम अछि; हुनक वृहत् मैथिली कादम्बरी 'गोहि सभक बीच जलसमाधि' न्याय दर्शन आ समकालीन अपराध-गाथाक एकटा अद्वितीय सम्मिश्रण अछि, जतय 'गोहि देह खाइत अछि, नाम नै' सन रूपकक माध्यमसँ सामाजिक आ दार्शनिक यथार्थकेँ उघाड़ल गेल अछि।

मैथिली साहित्यक एहि नवजागरणमे 'साहित्य अकादेमी' जकाँ राष्ट्रिय संस्थासभक सेहो महत्त्वपूर्ण भूमिका अछि। मैथिली भाषाकेँ अष्टम अनुसूचीमे स्थान भेटलाक पश्चात् (९२म संविधान संशोधन, २००३) मैथिली साहित्यकेँ राष्ट्रिय स्तरपर व्यापक मान्यता प्राप्त भेल अछि। साहित्य अकादेमी द्वारा निरन्तर उत्कृष्ट मैथिली रचनासभकेँ पुरस्कृत कएल जा रहल अछि। वर्ष २०२५ क साहित्य अकादेमी पुरस्कार वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. महेन्द्र झा केँ हुनक संस्मरण 'धात्री पात सन गाम' लेल प्रदान कएल गेल, जे ग्रामीण जीवन, सामाजिक संरचना आ मानवीय भावनासभक एकटा जीवन्त दस्तावेज अछि। एहि सँ पूर्व यशोधर झा केँ 'मिथिला वैभव' (दार्शनिक

प्रबन्ध) लेल १९६६ मे, आ यात्री (नागार्जुन) केँ 'पत्रहीन नग्न गाछ' लेल १९६८ मे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ सम्मानित कएल जा चुकल अछि।

मैथिली वाङ्मयक दार्शनिक आ साहित्यिक ग्रन्थसभक संरक्षणमे 'राष्ट्रिय पुस्तकालय (National Library), कोलकाता' आ 'इन्दिरा गान्धी राष्ट्रिय कला केन्द्र (IGNCA)' जकाँ संस्थासभक अवदान सेहो स्मरणीय अछि। राष्ट्रिय पुस्तकालयक स्थापना १९ अम शताब्दीमे 'कलकत्ता पब्लिक लाइब्रेरी' क रूपमे भेल छल आ ई भारतक सभसँ पैघ पुस्तकालय अछि जतय २२ लाखसँ बेसी पोथी आ पाण्डुलिपि संरक्षित अछि। एतय मैथिली भाषा प्रभागमे विद्यापतिक 'कीर्तिलता', 'कीर्तिपताका', 'पुरुष परीक्षा' आ ज्योतिरीश्वर ठाकुरक 'वर्णन रत्नाकर' जकाँ प्राचीन आ दुर्लभ पाण्डुलिपिसभ संरक्षित अछि, जे मैथिली भाषाक मध्यकालीन आ प्राचीन इतिहासक अध्ययनक लेल अपरिहार्य अछि। IGNCA आ एशियाटिक सोसाइटी जकाँ संस्थासभ हजारो पाण्डुलिपिक डिजिटलीकरण कऽ रहल अछि, जाहिमे मैथिली (तिरहुता) लिपिमे रचित दार्शनिक आ तान्त्रिक ग्रन्थसभ सेहो सम्मिलित अछि। ई सम्पूर्ण सास्थानिक आ व्यक्तिगत प्रयास मैथिली भाषाक बौद्धिक क्षितिजकेँ निरन्तर विस्तार दऽ रहल अछि।

एहि दावामे वजन अछि, कारण वाचस्पति मिश्र मिथिलाक दार्शनिक इतिहासक केन्द्रीय पुरुष छथि। हुनक मूल ग्रन्थ मैथिली पाठक धरि आनब केवल भाषान्तर नहि, एक प्रकारक बौद्धिक इतिहासक पुनःस्थापन अछि।

९. विस्तृत सन्दर्भग्रन्थ-सूचीक अकादमिक मूल्य

चारिम अध्याय मात्र नामक सूची नहि। प्रत्येक खण्डमे ग्रन्थक उपयोगिता सेहो बताओल गेल अछि। पहिने समीक्ष्य मैथिली संस्करण, फेर ब्रह्मसूत्र–शाङ्करभाष्यक आधार-पाठ, भामतीक संस्कृत संस्करण, चतुःसूत्री केन्द्रित अनुवाद, टीका–उपटीका, विवरण-प्रस्थान, वाचस्पतिक आन रचना, आधुनिक अध्ययन, अद्वैतक इतिहास–पद्धति–प्रमाणमीमांसा, उपनिषद्–प्रस्थानत्रयी, डिजिटल संग्रह आ दुर्लभ/अनिश्चित ग्रन्थ क्रमशः व्यवस्थित अछि।

बालशास्त्रीक बिब्लियोथेका इंडिका संस्करण, जीवनानन्द विद्यासागर संस्करण, ढुण्ढिराज शास्त्रीक काशी संस्करण, संयुक्त भाष्य–भामती–कल्पतरु–परिमल संस्करण आदि देल गेल अछि।

आधुनिक अध्ययनो विस्तृत अछि—हसुरकर, सहदेव झा, राजेन्द्र प्रसाद दुबे, रङ्गनाथ, रूदुरमुन, कार्ल पॉटर, हाजिमे नकामुरा, माइकल कोमन्स, इलियट डॉइच, अनन्तानन्द रामबचन, बीना गुप्ता, एण्ड्रू फोर्ट आदि।

विशेष प्रशंसनीय पक्ष दुर्लभ ग्रन्थसभक सामने “पूर्ण सत्यापन अपेक्षित” कहबाक सावधानी अछि। आभोग, ऋजुप्रकाशिका, भामती-भावदीपिका, भामती-विवरण, वेदान्तकल्पतरुमञ्जरी, भामती-व्याख्या, भामती-विलास आदिक विषयमे पुस्तक असत्य निश्चितता नहि देखबैत, बल्कि पाण्डुलिपि-सूची आ संस्थागत अभिलेखसँ सत्यापनक सलाह दैत अछि।

शोधार्थी लेल सूत्र→शाङ्करभाष्य→भामती→कल्पतरु→परिमल क्रम, संस्करण आ पृष्ठ स्पष्ट करब, पाठभेद मिलान, अनुवाद तुलना करितहुँ मूल संस्कृतकेँ निर्णायक मानब, आ ओसीआर पाठकेँ प्रत्यक्ष उद्धरणक आधार नहि बनायब—ई सभ अत्यन्त उपयोगी शोध-पद्धतिक निर्देश अछि।

१०. पुस्तकक अङ्ग्रेजी उत्तरार्ध आ द्विभाषिक संरचना

एहि फाइलक एकटा महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक विशेषता अवश्य चिन्हित करबाक अछि: मैथिली भाग समाप्त भेलाक बाद पुस्तकमे अङ्ग्रेजी रूपमे फेर प्रकाशकीय पृष्ठ, अनुक्रम, अध्याय १, अध्याय २, पूरा चतुःसूत्री-विषयक पाठ आ सन्दर्भग्रन्थ-सूची आबैत अछि। अङ्ग्रेजी अनुक्रम स्पष्ट रूपेँ ओही चारि अध्यायक समान संरचना देखबैत अछि—दार्शनिक अध्ययन, विस्तृत समीक्षा, “Pure Maithili Translation of Bhamati” नामक परिशिष्टक अङ्ग्रेजी प्रस्तुति, आ विस्तृत bibliography।

अङ्ग्रेजी भागमे सेहो भामती–विवरणक तुलनात्मक सारणी, अध्यास, ख्यातिवाद, ब्रह्मजिज्ञासा, समन्वयाधिकरण आदि पुनः पूर्ण रूपेँ प्रस्तुत अछि। अन्तक अङ्ग्रेजी bibliography सेहो आधुनिक भामती-अध्ययन आ अद्वैत-वेदान्तक सन्दर्भसभ दोहरबैत अछि।

एहि द्विभाषिक व्यवस्था लाभकारी सेहो अछि—गैर-मैथिली शोधककेँ सामग्री उपलब्ध होइत अछि। मुदा सम्पादकीय दृष्टिसँ एकटा समस्या अछि: पुस्तकक मुख्य परिचय “संस्कृतसँ शुद्ध मैथिली अनुवाद” रूपमे अछि, जखन फाइलक पैघ उत्तरार्ध अङ्ग्रेजी अछि। अतः अगिला संस्करणमे आवरण वा प्रकाशकीय पृष्ठपर “मैथिली मूल अनुवाद सहित अङ्ग्रेजी अध्ययन/रूपान्तर” सन स्पष्ट सूचना देल जाए तँ पुस्तकक वास्तविक द्विभाषिक स्वरूप तुरन्त बुझाइत।

दोसर बात, मैथिली आ अङ्ग्रेजी भागमे पहिल दू आलोचनात्मक अध्याय तकरीबन समान संरचना दोहरबैत अछि। शोध-सुविधा लेल ई उपयोगी अछि, मुदा मुद्रित ६×९ हार्डबैकमे पुस्तकक आयतन बढ़बैत अछि। यदि द्विभाषिकता प्रकाशकीय लक्ष्य अछि तँ उचित; यदि लक्ष्य मुख्यतः शुद्ध मैथिली संस्करण अछि तँ अङ्ग्रेजी भाग अलग सहायक खण्ड वा अलग संस्करण होयब अधिक स्वाभाविक होइत।

११. सम्पादकीय आ पाठगत परिष्कार

'अपरोक्क्ष' रूप पाठमे सात ठाम, जखन कि शुद्ध 'अपरोक्ष' चारि ठाम आएल अछि—एहि द्वैधक एकरूपीकरण वांछनीय।

प्रतिलिप्यधिकार-पंक्तिमे 'प्रीति ठाकर' मुद्रित अछि; अभीष्ट 'प्रीति ठाकुर' बुझना जाइत अछि।

रूपान्तरण-त्रयक गणनासूचीमे प्रवाह-सम्बन्धी एकटा लघु योजक-वाक्यक अभाव अछि, जकर पूर्ति सँ पठनीयता आर सहज भऽ सकैत अछि।

भावी संस्करणमे पारिभाषिक शब्दक मैथिली-संस्कृत कोश-परिशिष्ट, सूत्र-भाष्य-टीका स्तरक मुद्रण-भेद (भिन्न टंकन-शैली), आ अधिकरण-अनुक्रमणिका जोड़ल जा सकैत अछि, जाहिसँ शोधार्थीक हेतु सन्दर्भ-अन्वेषण आर सुलभ होएत।

एहि सभक अतिरिक्त वर्तमान फाइलमे किछु उत्पादनगत चिह्न सेहो देखाइत अछि—कतहु शब्दक बीचक अन्तराल टूटल, कतहु शीर्षकमे अक्षर दोहरायल/विभक्त जकाँ देखाइत अछि, यथा “अनुवा नु द”, “सूत्रसू”, “मूल्या मू ङ्कन”; किछु ठाउँ रोमन पाठ वा URL सेहो विच्छिन्न रूपमे देखाइत अछि। ई सभक किछु अंश दस्तावेज-पाठ निष्कर्षणक दोष हो सकैत अछि, तें मुद्रित पृष्ठपर प्रत्यक्ष सत्यापन बिना सभकेँ मूल DOCXक दोष मानब उचित नहि। मुदा अन्तिम मुद्रणपूर्व दृश्य-पृष्ठ परीक्षणमे एहि प्रकारक स्थान अवश्य जाँचबाक चाही।

१२. आलोचनात्मक सीमा आ भावी संस्करणक दिशा

कृतिक प्रशंसा करितहुँ किछु सीमा स्पष्ट अछि। पहिल, अध्याय १ आ अध्याय २ मे सामग्रीक पर्याप्त पुनरावृत्ति अछि। दोसर, पुस्तकक भीतर अनुवादक स्वयं समीक्षक सेहो छथि; एहि कारण समीक्षात्मक अध्यायमे प्रशंसात्मक स्वर स्वाभाविक रूपेँ अधिक अछि। बाह्य शास्त्रीय समीक्षकक स्वतंत्र असहमति, विशिष्ट संस्कृत पाठभेद आ अन्य अनुवादसँ पङ्क्ति-दर-पङ्क्ति तुलना जोड़ल जाए तँ भविष्यक संस्करण अकादमिक दृष्टिएँ आर मजबूत होएत।

तेसर, भामती–विवरण भेद, आधुनिक अनुवाद-सिद्धान्त आ पाश्चात्य दर्शनक तुलना उपयोगी अछि, मुदा किछु ठाउँ ई व्यापक पृष्ठभूमि मूल चतुःसूत्री पाठसँ आगाँक परम्परागत वर्गीकरणपर निर्भर अछि। तें “मूल पाठमे प्रत्यक्ष”, “उत्तरवर्ती भामती-परम्परामे विकसित”, आ “आधुनिक तुलनात्मक व्याख्या”—एहि तीन स्तरकेँ दृश्य रूपेँ अलग कएल जाए तँ विद्वत् उपयोगिता बढ़त।

चारिम, द्विभाषिक फाइलक संरचना आर स्पष्ट चाही। मैथिली भागक बाद अङ्ग्रेजी पुनरावृत्ति हेतुक प्रस्तावना, पृथक् खण्ड-पृष्ठ वा “अङ्ग्रेजी सहायक संस्करण” क उद्घोष रहला पर पाठकीय दिशा अधिक स्पष्ट होयत।

१३. उपसंहार आ समग्र साहित्यिक-दर्शनिक निर्णय

भामती (चतुःसूत्री) क मूल्य केवल ऐतिहासिक गौरवमे नहि अछि। वास्तविक प्रश्न ई अछि—की मैथिलीमे वाचस्पति मिश्रक जटिल शास्त्रार्थ बिना बौद्धिक क्षति चलि सकैत अछि? एहि पुस्तकक उत्तर अधिकांशतः हाँ अछि।

अध्यासमे विषय–विषयी विरोध, भ्रमक सत्ता, आत्माक स्वयंप्रकाशता; पहिल सूत्रमे अधिकार, वैराग्य, कर्म आ ज्ञान; दोसरमे ब्रह्मक कारणता; तेसरमे श्रुति-प्रामाण्य; चारिमे विधिवादक प्रतिरोध, वस्तुतन्त्र ज्ञान, सिद्धवस्तु-वाक्यक फलवत्ता, मोक्षक अनुत्पाद्यता, भेदाभेद-विमर्श आ जीवन्मुक्ति—ई सभ क्रमशः मैथिलीमे दार्शनिक भाषाक परीक्षा लैत अछि। अनुवाद बारम्बार एहि परीक्षामे सफल होइत अछि।

एकर साहित्यिक शक्ति एहि बातमे अछि जे तर्कक कठोरता बीच भाषा निर्जीव नहि होइत। “मुस्की”, “इजोत”, “अन्हार”, “भूँसी”, “ओखली”, “केंचुली”, “बाँबी” जकाँ शब्द ब्रह्म, आत्मा, अविद्या, मोक्ष आ प्रमाणक विमर्शक संग सहज रूपेँ रहैत अछि। फलतः दर्शन लोकभाषामे “सरल” नहि बनाओल जाइत, बल्कि लोकभाषा दर्शन धारण करबाक योग्य सिद्ध होइत अछि।

सन्दर्भग्रन्थ-सूची एहि अनुवादकेँ एकल साहित्यिक उपलब्धिसँ उठाकऽ शोध-साधन बनबैत अछि; मूल संस्कृत संस्करण, उत्तरवर्ती टीका, आधुनिक अध्ययन, डिजिटल संग्रह आ दुर्लभ ग्रन्थक सत्यापन-पद्धति धरि देब पुस्तकक अकादमिक उपयोगिता बढ़बैत अछि।

अतः समग्र रूपेँ ई कृति मैथिली दार्शनिक गद्य, अनुवाद-वाङ्मय आ मिथिलाक बौद्धिक परम्परा—तीनू क्षेत्रमे महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ अछि। एकर प्रमुख शक्ति मूल तर्कक अखण्डता, शास्त्रीय पारिभाषिक अनुशासन आ स्वाभाविक मैथिली गद्य अछि; प्रमुख सम्पादकीय आवश्यकता पाठगत सूक्ष्म त्रुटिक एकरूपीकरण, अनावश्यक सम्पादकीय अवशेष हटायब, अध्याय १–२क भूमिका-भेद स्पष्ट करब, सूत्र–भाष्य–टीका दृश्यतः अलग करब, आ मैथिली–अङ्ग्रेजी द्विखण्डक प्रकाशकीय स्वरूप स्पष्ट करब अछि।

अन्तिम निर्णयतः, ई केवल भामतीक अनुवाद नहि; ई मैथिलीमे शास्त्रार्थ करबाक एकटा विकसित गद्य-पद्धतिक प्रदर्शन अछि। वाचस्पतिक दर्शन एहिमे केवल मैथिली शब्द पबैत नहि, मैथिली आवाज पबैत अछि।

अध्यासभाष्यक सूक्ष्मतम ख्याति-विमर्शसँ लऽ कऽ समन्वयाधिकरणक विराट शास्त्रार्थ धरि—कतहु तर्कक कड़ी टूटल नहि, कतहु भाषाक सांस फूलल नहि। 'जहिना राजपथक पानि गंगाक धारमे पड़ि शुद्ध भऽ जाइत अछि'—वाचस्पतिक ई विनयोक्ति एहि अनुवादपर उनटा कऽ लागू होइत अछि: आचार्यक गंगा-धार आब मिथिलाक राजपथ धरि आबि गेल अछि, आ पथिक-मात्र ओहिमे अवगाहन कऽ सकैत छथि। मैथिली दर्शन-वाङ्मयक हेतु ई ग्रन्थ दीर्घकाल धरि सन्दर्भ-स्तम्भ रहत, आ शेष भामतीक (प्रथमाध्यायक अवशिष्ट अंशसँ चतुर्थाध्याय धरिक) मैथिली-आगमनक प्रतीक्षा एहि संस्करणक पाठक स्वाभाविके करताह।

७९. आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

सारांश

दार्शनिक पृष्ठभूमि, भारतीय-पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, अनुवाद-मीमांसा, भाषिक उपलब्धि आ सम्पादकीय परीक्षण उदयनाचार्यक «आत्मतत्त्वविवेक» — जकरा परम्परामे «बौद्धधिक्कार» वा «बौद्धाधिकार» नामसँ सेहो अभिहित कएल जाइत अछि — न्याय-वैशेषिक दर्शनक ओहि महत्त्वपूर्ण वाद-ग्रन्थसभमेसँ अछि जतय बौद्ध आ नैयायिक शास्त्रार्थ अत्यन्त सघन तार्किक रूप ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद एहि कृतिक दार्शनिक तर्ककेँ मिथिलाक आधुनिक भाषिक क्षेत्रमे उपलब्ध करबैत अछि।

बीजशब्द: आत्मतत्त्वविवेक · एकीकृत · विस्तृत · ग्रन्थ · सार · समालोचनात्मक · मूल्याङ्कन · समीक्षाशास्त्र

सारांश · Abstract

ई अध्याय “आत्मतत्त्वविवेक: एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। दार्शनिक पृष्ठभूमि, भारतीय-पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, अनुवाद-मीमांसा, भाषिक उपलब्धि आ सम्पादकीय परीक्षण उदयनाचार्यक «आत्मतत्त्वविवेक» — जकरा परम्परामे «बौद्धधिक्कार» वा «बौद्धाधिकार» नामसँ सेहो अभिहित कएल जाइत अछि — न्याय-वैशेषिक दर्शनक ओहि महत्त्वपूर्ण वाद-ग्रन्थसभमेसँ अछि जतय बौद्ध आ नैयायिक शास्त्रार्थ अत्यन्त सघन तार्किक रूप ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद एहि कृतिक दार्शनिक तर्ककेँ मिथिलाक आधुनिक भाषिक क्षेत्रमे उपलब्ध करबैत अछि। विधागत दृष्टिसँ ई पूर्वपक्ष आ उत्तरपक्षक अटूट शृङ्खलापर निर्मित शास्त्रीय गद्य अछि।

दार्शनिक पृष्ठभूमि, भारतीय-पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, अनुवाद-मीमांसा, भाषिक उपलब्धि आ सम्पादकीय परीक्षण

१. भूमिका आ कृतिक समग्र स्वरूप

उदयनाचार्यक «आत्मतत्त्वविवेक» — जकरा परम्परामे «बौद्धधिक्कार» वा «बौद्धाधिकार» नामसँ सेहो अभिहित कएल जाइत अछि — न्याय-वैशेषिक दर्शनक ओहि महत्त्वपूर्ण वाद-ग्रन्थसभमेसँ अछि जतय बौद्ध आ नैयायिक शास्त्रार्थ अत्यन्त सघन तार्किक रूप ग्रहण करैत अछि। गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद एहि कृतिक दार्शनिक तर्ककेँ मिथिलाक आधुनिक भाषिक क्षेत्रमे उपलब्ध करबैत अछि।

विधागत दृष्टिसँ ई पूर्वपक्ष आ उत्तरपक्षक अटूट शृङ्खलापर निर्मित शास्त्रीय गद्य अछि। चारि प्रमुख दार्शनिक मोर्चा क्रमशः क्षणभङ्गवाद, विज्ञानवाद, गुण-गुणी अभेद आ नैरात्म्यवादक परीक्षण करैत आत्मा, ईश्वर, शास्त्रप्रामाण्य आ मोक्ष-विवेचन धरि पहुँचैत अछि; अन्तिम ध्यान-सोपान सर्वदर्शनक क्रमिक साधना-रूप पाठ प्रस्तुत करैत अछि।

प्रस्तुत परिवर्धित प्रकाशनक स्वरूप केवल भाषान्तरक नहि, अध्ययन-संस्करणक अछि। एकर भीतर मूल संस्कृत कृतिक मैथिली अनुवाद, दार्शनिक विवेचन, भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आधारपर आलोचना, अनुवाद-सिद्धान्तपर विमर्श, अनुसन्धानपरक सामग्री, विषयवार टिप्पणीसहित विस्तृत ग्रन्थसूची आ आङ्ग्ल प्रस्तुति समाहित अछि। प्रकाशन-विवरणमे प्रथम संस्करण २००४ आ परिवर्धित संस्करण २०२६ देल अछि।

एहि बहुस्तरीय संरचनाक कारण पाठक एक्के जिल्दमे उदयनक दर्शन, ओकर मैथिली भाषिक पुनर्जन्म, आलोचनात्मक व्याख्या आ अनुसन्धान-संसाधन पबैत छथि। ई व्यापकता कृतिक बल अछि; संगहि, मूल परिवर्धित संस्करणमे आलोचनात्मक सामग्रीक किछु आंशिक पुनरावृत्तिक कारण सेहो बनैत अछि।

पहिल पृष्ठक आवरण सेहो कृतिक मिथिला-केन्द्रित सांस्कृतिक अभिप्रायकेँ दृश्य रूप दैत अछि—मिथिला-चित्रकला सँ प्रेरित सीमा-विन्यास, सूर्य, पक्षी, पुष्प आ हाथीक लोक-मोटिफ दार्शनिक पोथीकेँ शुष्क अकादमिक ग्रन्थक बदला सांस्कृतिक वस्तु रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

संस्कृत जँ एहि ग्रन्थक मूल शास्त्रीय भाषा अछि, तँ मैथिली ओकर भू-सांस्कृतिक परिवेशसँ गहरे जुड़ल भाषा अछि। एहि अर्थमे अनुवाद स्रोत-परम्परा आ आधुनिक मैथिली पाठकक बीच जीवन्त सेतु बनैत अछि।

२. ऐतिहासिक आ दार्शनिक पृष्ठभूमि

भारतीय दार्शनिक परम्परामे न्याय-वैशेषिक आ बौद्ध दर्शनक मध्य भेल वैचारिक संघर्ष अत्यन्त गहन, सुदीर्घआ तार्किक उत्कर्षसँ परिपूर्ण रहल अछि। द्वितीय शताब्दी ईसवीमे जखन वात्स्यायन न्यायसूत्रपर अपन भाष्य रचलनि आ ताहिमे नागार्जुन तथा वसुबन्धु जकाँ महान् माध्यमिक आ योगाचार बौद्ध दार्शनिक सभक मतक आलोचना कएलनि, तखने सँ एहि महाविवादक आधारशिला राखल गेल छल। एकर पश्चात् दिङ्नाग, धर्मकीर्ति, शान्तरक्षित आ कमलशील जकाँ बौद्ध तार्किक सभ न्याय-वैशेषिक परम्परापर तीक्ष्ण प्रहार कएलनि, जकर उत्तर उद्योतकर, त्रिलोचन आ वाचस्पति मिश्र जकाँ नैयायिक लोकनि देलनि। मुदा दशम-एकादश शताब्दीक मिथिलामे, करियन गामक माटिपर बैसि, नैयायिक-शिरोमणि उदयनाचार्य द्वारा रचित कालजयी ग्रन्थ 'आत्मतत्त्वविवेक' एहि सहस्राब्दी-व्यापी शास्त्रार्थक अन्तिम आ निर्णायक चरमोत्कर्ष थिक।

उदयनाचार्यक एहि ग्रन्थक मुख्य लक्ष्य बौद्ध दर्शनक क्षणिकवाद, विज्ञानवाद, गुण-गुणी अभेद आ नैरात्म्यवादक परीक्षण आ खण्डन करैत न्याय-वैशेषिक सम्मत आत्मा आ ईश्वरक यथार्थताक स्थापना करब अछि। ग्रन्थ न्याय आ वैशेषिक तत्त्वमीमांसाक समन्वित धरातल सेहो तैयार करैत अछि।

दशम-एकादश शताब्दीक ई बौद्धिक वातावरण अत्यन्त संघर्षात्मक छल। उदयनाचार्यक एहि तार्किक महासमरमे मुख्य बौद्ध प्रतिपक्षी ज्ञानश्रीमित्र आ हुनकर शिष्य रत्नकीर्ति छलाह। ज्ञानश्रीमित्र विक्रमशिला महाविहारक 'महास्तम्भ' मानल जाइत छलाह आ हुनक 'ज्ञानश्रीमित्रनिबन्धावली' तथा रत्नकीर्तिक 'रत्नकीर्तिनिबन्धावली' मे न्याय-वैशेषिक दर्शनक ज्ञानमीमांसा आ तत्त्वमीमांसाक तीव्र आलोचना कएल गेल छल। 'आत्मतत्त्वविवेक' मे उदयन प्रत्यक्ष रूपेँ ज्ञानश्रीमित्रक नाम लऽ कऽ हुनक मतक खण्डन कएलनि अछि। परवर्ती कालक महान् नैयायिक शङ्कर मिश्र अपन टीका 'कल्पलता' मे एहि बातक पुष्टि करैत छथि जे उदयनक प्रहारक मुख्य लक्ष्य ज्ञानश्रीमित्र छलाह, आ 'कल्पलता' मे ज्ञानश्रीमित्रक उल्लेख अनेक बेर भेल अछि। एहि खण्डन-मण्डनक परम्परामे बौद्ध दार्शनिक सभक तर्क एतेक क्षीण भऽ गेल जे उदयनक परवर्ती कालमे भारतवर्षमे बौद्ध तर्कशास्त्रक पतन सुनिश्चित भऽ गेल।

उदयनाचार्यक 'आत्मतत्त्वविवेक' प्राचीन न्याय आ नव्य-न्यायक बीचक एकटा महत्त्वपूर्ण सङ्क्रमण-बिन्दु थिक। हुनक एहि ग्रन्थक तार्किक सूक्ष्मता एतेक गम्भीर छल जे परवर्ती कालमे मिथिला आ बङ्गालक विद्वान् सभ एकरा आधार बनाकऽ नव्य-न्यायक विकास कएलनि। चौदहम शताब्दीमे गङ्गेश उपाध्याय द्वारा 'तत्त्वचिन्तामणि'क रचना भेलाक बाद नव्य-न्यायक जे धारा प्रवाहित भेल, तकर बीजारोपण उदयनक एही ग्रन्थमेभऽ चुकल छल। बादमे पक्षधर मिश्र, शङ्कर मिश्र ('कल्पलता'), रघुनाथ शिरोमणि ('दीधिति'), भगीरथ ठक्कुर आ मथुरानाथ तर्कवागीश जकाँ दिग्गज नैयायिक सभ 'आत्मतत्त्वविवेक' पर गम्भीर टीका सभ लिखि एकर दार्शनिक महत्ताकेँ आओर सुदृढ़ कएलनि। गजेन्द्र ठाकुरक मैथिली अनुवाद एहि समस्त टीका-परम्पराक आलोकमे मूल ग्रन्थक गूढ़ार्थकेँ आधुनिक पाठकक समक्ष प्रस्तुत करैत अछि।

अनुसन्धानपरक व्याख्यामे कतिपय स्थलपर ई मजबूत ऐतिहासिक दावा कएल गेल अछि जे उदयनक प्रहारक बाद भारतमे बौद्ध तर्कशास्त्रक आधार निर्णायक रूपेँ क्षीण भऽ गेल। मुदा एकीकृत आलोचनात्मक दृष्टिसँ एहन कथनकेँ सावधानीसँ पढ़ब उचित अछि: बौद्ध धर्म आ बौद्ध दार्शनिक परम्पराक ऐतिहासिक परिवर्तन अनेक सामाजिक, संस्थागत, राजनीतिक आ बौद्धिक कारणक फल छल; एकटा ग्रन्थकेँ एकमात्र कारण मानब जटिल इतिहासकेँ विजय-कथामे संकुचित कऽ सकैत अछि।

३. पोथीक विन्यास, अनुक्रम आ अध्ययन-संस्करणक स्वरूप

प्रकाशन-विवरणक बाद देल विस्तृत अनुक्रम पोथीक बौद्धिक मानचित्रक काज करैत अछि। मूल परिवर्धित संस्करणमे साहित्यिक-सांस्कृतिक आलोचना, न्याय-वैशेषिक आ बौद्ध विमर्शपर अनुसन्धानपरक प्रबन्ध, अधिक कठोर पाठालोचनात्मक परीक्षण, तकर बाद मूल ग्रन्थक चारि खण्डक मैथिली अनुवाद व्यवस्थित अछि। अनुक्रम क्षणिकवाद, अपोह, विज्ञानवाद, अवयव-अवयवी, आत्मा, ईश्वर, शास्त्रप्रामाण्य आ मोक्ष धरि सम्पूर्ण तर्कयात्रा पहिनहि सँ देखबैत अछि।

एहि विशाल अनुक्रमक उपयोगिता असाधारण अछि। उदयनक वाद-ग्रन्थ स्वभावतः विकल्प, प्रतिविकल्प, आपत्ति, उत्तर, पुनरापत्ति आ निष्कर्षक घन जाल अछि। सम्पादकीय शीर्षकसभ एकरा बोधगम्य बनबैत अछि। मुदा एहिमे एकटा मूलभूत सम्पादकीय प्रश्न रहि जाइत अछि—कोन शीर्षक मूल संस्कृत पाठक अछि आ कोन अनुवादक-संपादक द्वारा जोड़ल गेल? एहि भेदक स्पष्ट चिह्न नहि रहने शोधार्थी अनुवाद आ व्याख्याक सीमा तत्काल नहि पकड़ि सकैत छथि।

'आत्मतत्त्वविवेक' विधाक दृष्टिसँ वाद-ग्रन्थ अछि। मैथिली संस्करणमे मूलक कठिन तर्कक्रमकेँ चारि खण्ड आ ४०५ सँ अधिक विषयसूचक खण्ड-शीर्षकमे बाँटि अध्ययन-सुगम बनाओल गेल अछि। ई शीर्षक पाठककेँ विकल्प, प्रतिविकल्प, आपत्ति, उत्तर आ पुनरापत्तिक घन जालमे दिशा दैत अछि; मुदा शोध-संस्करण लेल मूलशीर्षक आ सम्पादकीय शीर्षकक भेद स्पष्ट चिह्नित होयब आवश्यक अछि।

मैथिली मूल-पाठक परिशिष्ट पृष्ठ ७९ सँ स्पष्ट रूपेँ आरम्भ होइत अछि; स्तुतिपद्यक बाद विचारणीय विषय, विरोधी सिद्धान्त आ सार्वत्रिक क्षणिकताक अनुमानक परीक्षण शुरू होइत अछि।

४. विस्तृत ग्रन्थ-सार

४.१ खण्ड १ — क्षणभङ्गवादक खण्डन

४.१.१ मंगलाचरण, विषय-निर्धारण आ अविनाभाव-सिद्धिक प्रश्न

ग्रन्थ स्तुतिपरक मंगल-पद्यसँ आरम्भ होइत अछि, जाहिमे उदयन अपन गुरु-परम्परा आ इष्टदेवकेँ नमन करैत आगाँक तर्क-यात्राक भूमिका बान्हैत छथि। विचारणीय विषय स्पष्ट कएल जाइत अछि: न्याय-वैशेषिक मतमे आत्मा नित्य, स्थायी द्रव्य थिक, जखन बौद्ध मत एकर प्रबल विरोध करैत सभ सत्ताकेँ क्षणिक मानैत अछि। सर्वप्रथम बौद्ध पक्ष अपन प्रस्ताव रखैत अछि — सत्ताक क्षणिकत्व एहि अनुमानसँ सिद्ध होइत अछि जे जे किछु सत् अछि, से क्षणिके अछि, कारण सत्ता आ क्षणिकत्वकबीच अविनाभाव (अनिवार्य सहचार) अछि। उदयन एहि अनुमानक मूलमे प्रहार करैत छथि — अविनाभावे असिद्ध अछि, कारण ओकरा सिद्ध करएवला कोनो प्रमाण नहि भेटैत।

४.१.२ अपोहवादक प्रथम खण्डन-शृङ्खला

बौद्ध पक्ष अविनाभाव सिद्ध करबाक लेल अपोह-सिद्धान्त (शब्दक अर्थ भिन्न वस्तुक बहिष्करण मात्र थिक) क सहारा लैत अछि। उदयन एकरा कएक कोणसँ खण्डित करैत छथि: एक-दोसराकेँ बहिष्कृत करएवला वस्तु सभक बीच अपोहक भेद कोना सम्भव, अपोह सभमे आंशिक समावेश आ आंशिक बहिष्कार कोना सम्भव, आगन्तुक गुणक भेदसँ अपोहक भेद कोना सिद्ध होयत, आ ज्ञानक भिन्नता मात्रसँ अपोह सभ भिन्न कोना बनि जायत — एहि चारू प्रश्नक उत्तरमे बौद्ध पक्षक हर विकल्प निरस्त होइत अछि।

अपोह-विमर्शक व्यवहारिक पक्ष सेहो महत्त्वपूर्ण अछि। जँ 'गाय' क अर्थ केवल 'अगाय नहि' मानल जाए, तँ 'अगाय' बुझबाक लेल पहिने 'गाय' क सकारात्मक परिचय आवश्यक भऽ जाइत अछि, जाहिसँ परस्पराश्रयक दोष उठैत अछि। व्यवहारमे सेहो व्यक्ति जल भरबाक लेल 'ई अघट नहि अछि' सोचि प्रवृत्त नहि होइत, बल्कि 'ई घट अछि' एहि सकारात्मक ज्ञानपर प्रवृत्त होइत अछि।

४.१.३ सामर्थ्यवाद-विमर्श: कारण-कार्यक अनिवार्य क्रमिकताक तर्क

एकर बाद बहस केन्द्रित होइत अछि सामर्थ्य (उत्पादन-योग्यता) क प्रश्नपर। बौद्ध पक्ष तर्क दैत अछि — कारणमे स्थित उत्पादन-सामर्थ्य तीन रूपमे भऽ सकैत अछि, मुदा उदयन एक-एक कऽ तीनू रूपकेँ खण्डित करैत छथि। पहिल रूप स्वतः अस्वीकार्य अछि; दोसर रूपक विस्तृत खण्डन कएल जाइत अछि, जाहिमे नव-नव प्रमाणक प्रस्ताव आ ओकर क्रमशः निराकरण होइत अछि; तेसर रूपक खण्डनक लेल नव हेतुक प्रस्ताव अबैत अछि, से सेहो खण्डित होइत अछि। विलम्ब आ अविलम्ब उत्पादकताक अर्थ स्पष्ट कएल जाइत अछि, आ एहि पूरा विमर्शक निष्कर्षमे उदयन देखबैत छथि जे केवल उत्पादक कारणे सहायक कारणसँ जुड़ैत अछि — एहि मतक तीन सम्भावित रूप आ हुनकासँ निकलएवला व्यङ्ग्यपूर्ण परिणाम (जेना गदहा आ ऊँट सन असम्बद्ध वस्तुओकेँ एकत्र

मानय पड़त) देखाओल जाइत अछि। बीजत्व अंकुरत्वकेँ निर्धारित करैत अछि — एहि निष्कर्षक वैकल्पिक प्रमाण आ ओकर अनुमानात्मक रूप प्रस्तुत होइत अछि, आ सहायक कारणसँ युक्त बीज अपन कार्यउत्पन्न करैत अछि — एहि आपत्तिक उत्तर देल जाइत अछि।

४.१.४ विरोध-असंगतिक तर्कः एके वस्तु उत्पादक आ अनुत्पादक दुनू नहि भऽ सकैत

आब उदयन एकटा नव आ बलशाली तर्क प्रस्तुत करैत छथि — एके व्यक्तिवस्तु एके समय उत्पादक आ अनुत्पादक दुनू नहि भऽ सकैत, तेँ जँ कोनो कारण-वस्तु सहायक कारणक अनुपस्थितिमे अनुत्पादक अछि आ उपस्थितिमे उत्पादक, तँ ओ वस्तु स्वयं परिवर्तित भऽ गेल, से क्षणिकतावादक विरुद्ध जाइत अछि। विरोधक भिन्न-भिन्न प्रकार आ उदाहरण देल जाइत अछि, आ ओकर पहिल-दोसर रूपक खण्डन होइत अछि। की एके द्रव्यमे अलग-अलग समयमे भिन्न परिमाण रहि सकैत अछि — एहि प्रश्नक विस्तृत विवेचन होइत अछि, आ सामर्थ्य-असामर्थ्यक सहस्थितिपर उठल आपत्ति सभक क्रमशः निराकरण होइत अछि। एहि प्रसङ्गमे अलग-अलग स्थानक प्रत्येक उत्पादन लेल अलग कारण मानबाक विकल्प, आ विरोधी गुणक सहस्थिति सिद्ध करबाक लेल प्रस्तावित अनुमान-युग्म — दुनूक खण्डन विस्तारसँ कएल जाइत अछि। सहायक कारण सभक एकत्रीकरणमे असंगतिक आपत्ति, आ एकत्रीकरणक अव्याप्यवृत्तित्वपर आधारित आपत्ति — ई सभ सेहो एक-एक कऽ निरस्त होइत अछि।

४.१.५ अवास्तविक वस्तु, अभाव आ शब्दार्थ-नियामकताक विमर्श

तर्कक धारा आब अवास्तविक (असत्) वस्तुक व्यवहारपर मुड़ैत अछि — खरहाक सींग सन अवास्तविक वस्तुक व्यवहार आत्मविरोधी अछि की नहि, अवास्तविक वस्तुमे गुण आरोपित भऽ सकैत अछि की नहि, आ केवल ज्ञानसँ व्यवहार निर्धारित होइत अछि — एहि मतक समीक्षा आ खण्डन होइत अछि। शब्दार्थक नियामकक निरूपण आ समीक्षा एकटा महत्त्वपूर्ण उप-प्रकरण थिक, जाहिमे संस्कार (वासना) केँ शब्दार्थक नियामक मानयवला मतक खण्डन होइत अछि — 'खरहाक सींग' पदक संकेत-सम्बन्ध अवास्तविक वस्तुसँ कोना ज्ञात भऽ सकैत अछि, ई प्रश्न आ ओकर सभटा सम्भावित उत्तर (आन उपाय, व्यक्तिगत संस्कार आदि) क्रमशः खण्डित होइत अछि। एकर बाद निषेध वा अभावक स्वरूपक परीक्षा होइत अछि — वैध ज्ञान बिना अभाव व्यवहारक विषय भऽ सकैत अछि की नहि, सकारात्मक आ नकारात्मक वस्तु परस्पर बहिष्काररूप अछि की नहि — एहि सभ प्रश्नक उत्तरमे वस्तु आ ओकर निषेध दुनूक वैध सिद्धि देखाओल जाइत अछि।

४.१.६ विनाशक अनिवार्यताक तर्क आ ओकर बहुमुखी खण्डन

क्षणिकताक समर्थनमे बौद्ध पक्ष एकटा नव तर्क रखैत अछि — विनाश अनिवार्य अछि, तेँ सत्ता क्षणिक अछि। उदयन विनाशक अनिवार्यताक तीन सम्भावित व्याख्या (विनाश आ विनष्ट वस्तुक अभिन्नता, अनस्तित्वक अनिवार्यता, आ अन्तिम व्याख्या) – एक-एककेँ बारी-बारीसँ, प्रत्येकक भीतरक उप-विकल्प सभकेँ सेहो खण्डित करैत छथि। एहि क्रममे विनाश आ प्रतियोगीक सम्बन्धपर कएक आपत्ति-उत्तर होइत अछि, आ अन्तमे बौद्धक अनुमान सभक दोषक व्यवस्थित निरूपण आ तार्किक पुष्टि देल जाइत अछि। एहि खण्डक एकटा निर्णायक मोड़ अबैत अछि जखन उदयन वस्तु सभक स्थायित्वक सकारात्मक प्रमाण प्रस्तुत करैत छथि — ई केवल खण्डन नहि, स्थापनात्मक तर्क थिक, जाहिपर उठल आपत्ति सभक सेहो समाधान देल जाइत अछि।

विनाश-विमर्शक सरल दृष्टान्तमे घट दण्डक प्रहारसँ नष्ट होइत अछि। जँ विनाश सर्वथा अहेतुक होइत, तँ ओकर निश्चित समयक अनुभव व्याख्यायित नहि भऽ सकैत। 'आब घट नष्ट भेल' सन अनुभव विनाशक समय, कारण आ प्रतियोगी-सापेक्ष स्वरूपक प्रश्नकेँ सामने आनैत अछि।

४.१.७ जाति (सामान्य) क विमर्श आ अपोह-सिद्धान्तक पुनः विस्तृत खण्डन

खण्डक अन्तिम आ सभसँ लम्बा भाग जाति (सामान्य-रूप) क वास्तविकतापर केन्द्रित अछि। वस्तु सभक सामान्य रूपक स्वरूपपर विचार होइत अछि, बहिष्कार-ज्ञानक पक्षमे आपत्ति सभक खण्डन होइत अछि, आ बौद्ध आचार्य ज्ञानश्रीक मत — जे बहिष्कार ज्ञानक केवल गौण विषय अछि — ओकर विस्तृत समीक्षा आ खण्डन होइत अछि। सविकल्पक ज्ञानमे वास्तविक सामान्य रूपक प्राकट्यक औचित्य सिद्ध कएल जाइत अछि। अपोह- सिद्धान्तक विभिन्न अनुमान-प्रमाण — हेतुक तेसर आ चारिम परिभाषा, ज्ञानश्रीक अनुमान, आ अपोह-सिद्धान्तक कएकटा प्रतिरक्षा-प्रयास — एक-एककेँ क्रमशः खण्डित कएल जाइत अछि। एहि क्रममे धर्मकीर्तिक मतक विस्तृत समीक्षा आ आलोचना अबैत अछि, जाति-व्यक्ति सम्बन्धक गहन विचार होइत अछि, आ अन्तमे सविकल्पक जातिज्ञानक इन्द्रियजन्यता आ प्रत्यक्षताक समर्थन सहित अपोह-सिद्धान्त स्वीकार करबाक प्रयोजनक खण्डन आ ज्ञानश्रीक मतक अन्तिम आलोचनासँ प्रथम खण्ड समाप्त होइत अछि।

४.२ खण्ड २ — विज्ञानवादक खण्डन (बाह्य वास्तविकताक निषेधक परीक्षा)

४.२.१ वाद-विषयक परिचय आ विज्ञानवादी अनुमानक दोष-निरूपण

दोसर खण्ड बौद्ध विज्ञानवाद (चेतनाक बाहर किछु नहि अछि) क परीक्षा करैत अछि। विज्ञानवादी अनुमानक दोष निरूपित कएल जाइत अछि, आ रत्नकीर्ति नामक बौद्ध आचार्यक उत्तरक विस्तृत खण्डन होइत अछि, जाहिमे व्यंग्यात्मक प्रत्युत्तरक शैली सेहो प्रयुक्त अछि।

४.२.२ चित्रज्ञान-विमर्श

एहि खण्डक दार्शनिक हृदय-स्थल चित्रज्ञानक (एके ज्ञानमे नील-पीत आदि अनेक रूपक युगपत् प्रतीति) विमर्श थिक। शुद्ध ज्ञान विभेदरहित अछि — एहि आपत्तिक खण्डन होइत अछि; ज्ञानमे असंगत गुणक प्राकट्य भ्रमात्मक अछि — ई आपत्ति सेहो खण्डित होइत अछि; भिन्नता अवास्तविक अछि — एहि मतक प्रतिरक्षा आ खण्डन कएल जाइत अछि। चित्रज्ञान भिन्नो नहि, अभिन्नो नहि — एहि आपत्तिक उत्तर, आ चित्रता समस्त निर्धारणसँ परे अछि — एहि आपत्तिक खण्डन, दुनू विस्तारसँ प्रस्तुत होइत अछि। रत्नकीर्तिक मतक अन्तिम समीक्षा आ खण्डनसँ ई उप-प्रकरण समाप्त होइत अछि।

ज्ञान-विषय भेदकेँ 'हम नील देखैत छी' सन अनुभवसँ सेहो स्पष्ट कएल जाइत अछि: 'हम' ज्ञाता, ज्ञान प्रकाशक, आ नील ज्ञेय विषय अछि। सार्थक प्रवृत्ति बाह्यविषयक दिशामे होइत अछि, जाहिसँ विज्ञानसँ भिन्न ज्ञेयक वास्तविकताक प्रतिरक्षा मजबूत बनैत अछि।

४.२.३ ज्ञान-ज्ञेय सम्बन्धक विमर्श आ विभिन्न दार्शनिक मतक समीक्षा

आब प्रश्न होइत अछि — ज्ञानसँ भिन्न वस्तु ओकर विषय होयबामे की दोष अछि? विषयक ज्ञानसँ जातिगत समानताक प्रतिरक्षा होइत अछि, ज्ञेयताक नव-नव परिभाषाक निर्माण आ खण्डन होइत अछि, आ अन्तमे वेदान्तक मतक व्याख्या सेहो प्रस्तुत होइत अछि। एकर बाद न्याय-वैशेषिक मतक ज्ञान-सम्बन्धक प्रतिरक्षा होइत अछि, सांख्य आदि मतक ज्ञान-सम्बन्धक आश्रय-विषयक खण्डन होइत अछि, आ बौद्ध मतक विरोधाभासी स्वभावक व्याख्या दऽ न्यायवाक्यक प्रयोजनपर विमर्श समाप्त होइत अछि। निषेधमुखी अनुमान सभक हेतु सभक आ अनुमानमे देल उदाहरण सभक खण्डनसँ ई उप-खण्ड अपन निष्कर्षपर पहुँचैत अछि।

४.२.४ अवयवी द्रव्यक वास्तविकता: परमाणुवाद-विमर्श

खण्डक सभसँ विस्तृत आ तार्किक दृष्टिसँ सघन भाग अवयवी वस्तु (सम्पूर्ण, जेना घट) क वास्तविकताक स्थापना अछि, जकरा बौद्ध पक्ष केवल परमाणु-समूह मानि अवयवीक पृथक् वास्तविकता नकारैत अछि। भेदक वास्तविकतापर आपत्ति, आ भेदक विभिन्न मत (पहिल, दोसर, तेसर) क क्रमशः रक्षा होइत अछि। सातम आ आठम प्रतिज्ञाक रक्षा तथा आंशिक स्वीकृति होइत अछि, आ एकर बाद अवयवी वस्तुक वास्तविकतापर एकटासँ बेसी क्रमिक आपत्ति (पहिल, दोसर, तेसर आ अन्य) आ हुनकर खण्डन होइत अछि — ई खण्डन-क्रम कएकटा उप-चक्रमे बारम्बार आगू बढ़ैत अछि, जाहिमे परमाणुक निषेधपर आधारित नव-नव आपत्ति, माध्यमिक (शून्यवादी) मतक खण्डन, स्थूलताक ज्ञान मिथ्या अछि — एहि आपत्तिक खण्डन, परमाणु सभमे एकत्व-ज्ञानक प्रतिरक्षा आ खण्डन, अदृश्य परमाणु प्रत्यक्ष नहि भऽ सकैत — एहि विषयक खण्डन, आ स्थूलताए इन्द्रियग्राह्यताक निर्धारक अछि — एहि खण्डनक विस्तार सामिल अछि। एहि पूरा उप-खण्डक निष्कर्ष ई अछि जे बाह्य, अवयवी वस्तुक वास्तविकतापर उठल कोनो आपत्ति नहि टिकैत अछि, आ प्रसङ्ग-विपर्ययरूप शर्तयुक्त तर्कक खण्डन आ अवयवी वस्तुक अनुमानात्मक प्रमाणक माँगक खण्डनसँ ई प्रकरण समाप्त होइत अछि।

अवयवी-विमर्शमे स्थूल दृश्य वस्तुक प्रश्न निर्णायक बनैत अछि। जँ घट केवल अदृश्य परमाणुसभक समूह होइत, तँ अनेक अदृश्य अंशक मात्र समष्टि दृश्य स्थूलताकेँ कोना जन्म देत? न्याय-पक्ष स्थूलताकेँ अवयव-संयोगसँ उत्पन्न नव अवयवी धर्मक रूपमे व्याख्यायित करैत अछि।

४.२.५ बाह्यार्थ-वादपर सामान्य आपत्ति आ स्वप्रामाण्यक विमर्श

आब बाह्य वस्तुक वास्तविकतापर एकटा सामान्य आपत्ति आ ओकर खण्डन अबैत अछि, आ ताहि पछाति सविकल्पक मिथ्याज्ञानक सम्भावनाक समर्थन, भिन्नताक अज्ञानक वैकल्पिक व्याख्या आ ओकर निराकरण होइत अछि। 'सभ ज्ञान मिथ्या अछि' — एहि चरम विकल्पक खण्डनक बाद खण्ड ज्ञानक स्वप्रामाण्यक (ज्ञान स्वयं अपन प्रामाण्यक ज्ञापक अछि, कोनो बाहरी प्रमाणक आवश्यकता नहि) दिस मुड़ैत अछि। ई प्रतिरक्षा कएल जाइत अछि, ताहिपर दू क्रमिक आपत्ति आ हुनकर खण्डन होइत अछि। यथार्थता परामर्शज्ञान (द्वितीयक, प्रतिवेदनात्मक ज्ञान) द्वारा ज्ञात होइत अछि — एहि प्रतिस्पर्धी मतक विस्तृत खण्डन होइत अछि,

जाहिमे परामर्शज्ञानमे सत्य-असत्यक द्वैत किएक नहि रहैत अछि – एहि प्रश्नक उत्तरो सामिल अछि। अन्तमे जागरण आ स्वप्नक भेदक स्पष्टीकरणसँ खण्ड २ अपन अन्तिम निष्कर्षपर पहुँचि समाप्त होइत अछि।

४.३ खण्ड ३ — गुण आ द्रव्यरूप आश्रयक भेदपर वाद-विवाद

ई सभसँ छोट खण्ड अछि, मुदा तर्क-सघनतामे न्यून नहि। बौद्ध पक्षक चुनौती ई अछि – जँ गुण (रंग, स्पर्श आदि) आ हुनकर आश्रय (द्रव्य) परस्पर अभिन्न मानल जाय, तँ आत्मा-सन द्रव्यक स्वतन्त्र अस्तित्वे नहि रहत, केवल क्षणजीवी ज्ञान शेष रहत। उदयन देखब-छूबबसँ एके वस्तुक पुनःपहचानक प्रमाण दैत पाँचटा सम्भावित विकल्प (एकल गुण, गुण-समूह, गुण-भिन्न वस्तु, अवास्तविक रूप, आ सर्वथा अविद्यमान वस्तु) प्रस्तुत करैत क्रमशः खण्डित करैत छथि। गुण-समूहक चारि सम्भावित आधार — समान आश्रय, समकालिकता, एके फल, आ एके कारण — चारू खण्डित होइत अछि, आ तेसर विकल्प (द्रव्ये गुणक आश्रय अछि) स्वीकृत होइत अछि। एकर बाद गुण आ आश्रयक अभेदक पक्षमे प्रस्तुत प्रमाण सभ (उज्जर शङ्ख पित्तदोषसँ पियर देखाइत अछि — एहि दृष्टान्तक सहारेँ) विस्तारसँ खण्डित होइत अछि, आ दूर-निकटसँ देखलापर वस्तुक स्पष्ट-धुँधल प्रतीतिक व्याख्याक माध्यमसँ द्रव्य आ गुणक भेद पुष्ट कएल जाइत अछि। खण्डक अन्त निर्विकल्पक आ सविकल्पक ज्ञानक सम्बन्धक सूक्ष्म प्रश्नमे विलीन होइत अछि, जे अगिला खण्डक भूमिका बान्हैत अछि।

४.४ खण्ड ४ — नैरात्म्यवादक खण्डन, आत्मसिद्धि, ईश्वरसिद्धि आ मोक्ष-विवेचन

४.४.१ 'आत्मा ज्ञात नहि होइत अछि' — एहि प्रमाणक खण्डन

अन्तिम आ सभसँ विस्तृत खण्ड बौद्धक अन्तिम आ केन्द्रीय दावासँ आरम्भ होइत अछि — आत्मा ज्ञात नहि होइत, तेँ आत्मा नहि अछि। उदयन एहि अनुमानकेँ स्वतन्त्र (बौद्धक अपन मान्यतापर आधारित) कहि, ओकर हेतु (अज्ञातता) क आत्मश्रयी दोष देखबैत छथि — न्याय-वैशेषिक दर्शन तँ आत्माकेँ ज्ञेय आ प्रत्यक्षगम्य मानिते अछि, तेँ ई अनुमान बौद्धक अपन मान्यताक विरुद्ध अपने ढहि जाइत अछि।

४.४.२ आत्मज्ञानक प्रमाण आ ओकर प्रतिरक्षा

आत्माक वास्तविकताक प्रमाण प्रस्तुत होइत अछि, आ ओकर प्रतिरक्षा होइत अछि। बाहरी इन्द्रियसँ आत्मा ज्ञात नहि होयबाक कारण ओकरा अवास्तविक मानब — ई आपत्ति खण्डित होइत अछि (जँ एना मानल जाय तँ चेतनाक स्वसंवेदनो निराधार भऽ जायत) । आत्मज्ञानक विषय शरीर भऽ सकैत अछि — ई आपत्ति सेहो खण्डित होइत अछि, आ 'चेतनाए आत्मा अछि' — एहि योगाचार-बौद्ध मतक विस्तृत खण्डन होइत अछि, जाहिमे 'हम काटैत छी' आ 'हम जानैत छी' — एहि दुनू क्रिया-प्रयोगक समान्तर तर्कसँ कर्ता (आत्मा) आ क्रिया (चेतना) क भेद सिद्ध कएल जाइत अछि।

चतुर्थ खण्डक आत्मसिद्धि 'हम छी' क प्रत्यक्ष बोध धरि पहुँचैत अछि। एहि बोधकेँ न केवल शब्दजन्य, न अनुमानजन्य, न स्मृतिमात्र मानल गेल अछि; ई आत्माक प्रत्यक्ष उपलब्धिक पक्षकेँ रेखांकित करैत अछि।

४.४.३ प्रत्यभिज्ञाक अनुमानः आत्माक एकत्वक प्रमाण

आत्माक अस्तित्व सिद्ध करएवला मुख्य अनुमान प्रत्यभिज्ञा (देखब आ छूबब जकाँ भिन्न अनुभव सभक माध्यमसँ एके वस्तुक पुनःपहचान) थिक। एकर वैधतापर उठल आपत्ति (जेना जलैत दीपशिखाक भ्रामक एकत्व-प्रत्यभिज्ञाक उदाहरण) क विस्तृत उत्तर देल जाइत अछि। उपादान-कारण-कार्य सम्बन्धक परिभाषापर लम्बा बहस होइत अछि — शिक्षक-शिष्यक ज्ञान, नवजात शिशुक पूर्वजन्मक स्मृति, घट-ठीकराक कारण-कार्य सम्बन्ध, आ काठ-कोइलाक रूपान्तरण — एहि सभ दृष्टान्तक माध्यमसँ क्षणिकतावादी मतमे वास्तविक उपादान-कारणता असम्भव सिद्ध कएल जाइत अछि, जखन नित्य आत्माक सिद्धान्तमे ई सहजहि सिद्ध होइत अछि। कर्ताकएकत्वक प्रमाणक विस्तार, आ प्रसङ्ग-विपर्ययक सहारे एहि निष्कर्षक समर्थनसँ ई खण्ड आगू बढ़ैत अछि।

स्मृति आ प्रत्यभिज्ञाक तर्क नैतिक निरन्तरतासँ सेहो जुड़ैत अछि। जँ कर्मक कर्ता आ फलभोगी पूर्णतः भिन्न क्षणिक सत्ता होथि, तँ कृतप्रणाश — अपन कएल कर्मक फल नहि भेटब — आ अकृताभ्यागम — नहि कएल कर्मक फल भेटब — क दोष उठैत अछि। एहि कारण आत्माक प्रश्न केवल तत्त्वमीमांसाक नहि, नैतिक उत्तरदायित्वक प्रश्न सेहो बनैत अछि।

४.४.४ आत्मज्ञानक आवश्यकता आ आत्मा-अनात्माक विवेकपूर्ण ज्ञानक प्रमाण

आत्मज्ञानक आवश्यकतापर दूटा क्रमिक आपत्ति आ हुनकर खण्डनक बाद, उदयन आत्मा आ अनात्माक विवेकपूर्ण ज्ञानक प्रमाण देल शास्त्रीय प्रमाणक ओर मुड़ैत छथि। एहि मतक शास्त्रीय समर्थन देल जाइत अछि, आ ई शास्त्रक प्रामाण्यक प्रमाणक भूमिका बनि जाइत अछि — जे आगाँ ईश्वरसिद्धिक तर्कसँ जुड़ैत अछि।

४.४.५ ईश्वरसिद्धिः सृष्टिकर्ताक अनुमानात्मक प्रमाण

एहि खण्डक दार्शनिक रूपेँ सभसँ महत्त्वाकांक्षी भाग ईश्वरसिद्धि थिक। ईश्वरसिद्धिक अनुमानपर तीनटा क्रमिक आपत्ति आ हुनकर खण्डन होइत अछि, आ अविनाभावक ज्ञान असम्भव अछि — एहि मौलिक आपत्तिक विस्तृत उत्तर देल जाइत अछि। शरीरधारी कर्तासँ सृष्टिकेँ उपाधि (सीमित शर्त) मानि ईश्वरक अस्तित्व नकारबाक तर्कक खण्डन कएल जाइत अछि, आ अविनाभावपर दोसर आ तेसर आपत्तिक खण्डन सेहो होइत अछि। अनुमान लेल आवश्यक अविनाभावक स्वरूप स्पष्ट कएल जाइत अछि, आ एकर बाद 'ईश्वर सर्वज्ञ नहि छथि' — एहि मतक खण्डन, शास्त्रक प्रामाणिकताक सिद्धि, आ ईश्वरक सर्वज्ञताक प्रमाण — ई त्रयी क्रमशः प्रस्तुत होइत अछि। 'महानता' शब्दक अर्थपर सूक्ष्म विमर्श, आ शास्त्रीय प्रमाणिकता अनादि परम्परासँ समर्थित — एहि निष्कर्षसँ ईश्वरसिद्धिक प्रकरण समाप्त होइत अछि।

ईश्वरसिद्धिक प्रसिद्ध अनुमान 'क्षित्यादिकं सकर्तृकं कार्यत्वात् घटवत्' क आशय ई जे पृथ्वी आदि कार्य अछि, अतः ओकर कर्ताक प्रश्न उठैत अछि, जेना घटक कर्ता कुम्हार। शरीरधारिता कर्तृत्वक अनिवार्य शर्त अछि की नहि, ज्ञान-इच्छा-प्रयत्नक भूमिका, सर्वज्ञता, अविनाभाव आ उपाधिक प्रश्न—ई सभ एहि प्रकरणकेँ साधारण 'घट-कुम्हार' उदाहरणसँ बहुत अधिक जटिल बनबैत अछि।

शास्त्रप्रामाण्यक विवेचनमे चिकित्साशास्त्रक दृष्टान्तद्वारा विश्वसनीय वक्ता, सफल व्यवहार आ प्रमाणिक वचनक सम्बन्ध खोलल गेल अछि। न्याय-वैशेषिकक ईश्वर-प्रणीत शास्त्र-दृष्टि एतय मीमांसक अपौरुषेयता सँ भिन्न रूपमे उभरैत अछि।

४.४.६ मोक्षक स्वरूपक विस्तृत विवेचन

ग्रन्थक दार्शनिक आ साहित्यिक दुनू दृष्टिसँ सभसँ मार्मिक भाग मोक्षक स्वरूपक विवेचन थिक। मोक्ष — आत्माक स्वरूपसँ दुःखक आत्यन्तिक निवृत्ति — क परिभाषा देल जाइत अछि, आ दुःखनिवृत्ति सुख प्राप्त करबाक लेल चाहल जाइत अछि की नहि, ई सूक्ष्म प्रश्न उठाओल जाइत अछि। उदयन एतय सुख आ दुःखक अनुपातपर एकटा गहन जीवन-दर्शन प्रस्तुत करैत छथि — 'दुःख सदा सुखक साधनसँ युक्त नहि, मुदा सुख प्रायः दुःखक साधनसँ घेरल रहैत अछि'; धर्मसम्मत ढंगसँ अर्जित वस्तुमे सुखक अल्प चिनगी रहैत अछि, जखन ओकरा अर्जित करय आ सुरक्षित रखयमे दुःखक अनगिन वर्षा-दिन। मधु-विष-मिश्रित भोजनक रूपक, आ भूसीसँ अन्न अलग करबाक कृषक-बिम्बसँ ई तर्क पुष्ट होइत अछि। एकर बाद 'सुख नित्य अछि' — एहि मतक विस्तृत खण्डन होइत अछि, आ ज्ञान आ सुखक नित्यता-अनित्यताक सूक्ष्म विश्लेषणसँ मोक्षक स्वरूप अन्ततः आत्माक स्वस्वरूप-स्थितिक रूपमे स्थापित होइत अछि।

न्याय-वैशेषिक परम्परामे अपवर्ग दुःखक आत्यन्तिक निवृत्ति थिक; तुलनात्मक सारणीमे एकरा एकाइस प्रकारक दुःखक पूर्ण निवृत्तिक रूपमे सेहो संकेत कएल गेल अछि। सुखक अनुभूति शरीर-मन-इन्द्रिय-संयोगपर निर्भर मानल गेल कारण मोक्षकेँ नित्य सकारात्मकसुखक अनुभूति मानबाक बदला दुःखनिवृत्ति आ आत्माक स्वस्वरूप-स्थिति रूपमे स्थापित कएल जाइत अछि।

४.४.७ ध्यान-सोपानः सर्वदर्शन-समन्वयक विलक्षण उपसंहार

ग्रन्थक उपसंहार भारतीय दर्शनक इतिहासमे अपन कोटिक अनूठा अछि। उदयन आत्मध्यानक क्रमिक अवस्था सभक वर्णन करैत सम्पूर्ण भारतीय दर्शन-परम्पराकेँ एकटा एकल साधना-यात्राक सोपानक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि: पहिल अवस्थामे बाह्य वस्तुक अध्ययन (मीमांसा, चार्वाक), दोसरमे आत्माकेँ सभ वस्तुसँ अभिन्न मानब (त्रिदण्डी मत, योगाचार बौद्ध), तेसरमे आत्माकेँ समस्त वास्तविकताक बहिष्काररूपेँ ध्यान करब (ब्रह्म-परिणामवाद, बौद्धक शून्यता-नैरात्म्य), चारिममे आत्माकेँ जगत्सँ भिन्न मानब (सांख्य), पाँचममे आत्माकेँ एकमात्र वास्तविकता मानब (अद्वैत), आ अन्तमे सभ संस्कार मिटला पछातिक शुद्ध आत्माक निर्विकल्पक ज्ञान — जकरा न्याय-दर्शन मोक्षनगरक शिखरशिला कहैत अछि। प्रत्येक अवस्थाक समर्थनमे आ खण्डनमे उपनिषद्क वचन उद्धृत होइत अछि, जाहिसँ ई सोपान चार्वाकसँ अद्वैत धरि प्रत्येक दर्शनकेँ सत्यक एक-एक आंशिक झलकक रूपमे सम्मान दैत, अन्ततः न्याय-दर्शनक निर्विकल्पक आत्मज्ञानपर स्थिर होइत अछि।

४.४.८ समापन-पद्य

ग्रन्थ एकटा तीक्ष्ण, आत्मविश्वासपूर्ण समापन-पद्यसँ बन्द होइत अछि — उदयन अपनाकेँ अनेक परमतक अन्हारमे भटकल लोकक मार्गदर्शक कहैत छथि, आ अन्हराक झुंड द्वारा चित्रक प्रशंसासँ चित्रकारक गौरव नहि बढ़बाक व्यंग्यपूर्ण उपमाद्वारा अयोग्य प्रशंसाकेँ अस्वीकार करैत, ज्ञानी लोक द्वारा देखाओल भूलपर प्रसन्न होयबाक शास्त्रार्थी विनम्रताक संग ग्रन्थकेँ समर्पित करैत छथि।

५. कृतिक दार्शनिक एकता आ तर्क-कथानक

चारू खण्ड अलग विवाद नहि। हुनकर भीतर क्रमिक दार्शनिक योजना अछि।

क्षणिकवाद स्थायित्वकेँ चुनौती दैत अछि। अपोह सकारात्मक सामान्य आ भाषिक यथार्थकेँ चुनौती दैत अछि। विज्ञानवाद बाह्य ज्ञेयकेँ चुनौती दैत अछि। गुण-समष्टिवाद द्रव्यकेँ चुनौती दैत अछि। नैरात्म्यवाद स्थायी ज्ञाताकेँ चुनौती दैत अछि। उदयन प्रत्येक स्तरपर पहिने ओ सत्ता बचबैत छथि जकरा बिना अगिला स्तरक प्रश्न उठिए नहि सकैत।

वस्तु टिकत तखन कारणता सम्भव। बाह्य ज्ञेय रहत तखन ज्ञान-विषय सम्बन्ध अर्थपूर्ण। द्रव्य रहत तखनगुणक आश्रय सम्भव। कालगत आत्मा रहत तखन स्मृति, कर्म आ मोक्ष सम्भव। ईश्वर आ शास्त्र तकर बाद व्यापक विश्व-व्यवस्था आ मोक्षमार्गक आधार बनैत अछि।

एहि कारण “आत्मतत्त्वविवेक” क शीर्षक केवल चतुर्थ खण्डक संकेत नहि; सम्पूर्ण पूर्ववर्ती तर्क आत्म-विवेकक भूमि तैयार करैत अछि।

ग्रन्थक संरचनाकेँ “प्रतिज्ञा→आपत्ति→प्रश्न→विकल्प→खण्डन→दृष्टान्त→निष्कर्ष” क आवर्त रूपमे पढ़ल जा सकैत अछि। वास्तविक कथानक घटना-प्रधान नहि, तर्कक क्रमिक शुद्धीकरण अछि। क्षणिक वस्तुसँ स्थायी वस्तु, विज्ञानसँ बाह्य ज्ञेय, गुणसभसँ द्रव्य, क्षणिक चेतना-सन्तानसँ आत्मा, आत्मासँ ईश्वर आ अन्ततः मोक्ष—ई आरोह एक अखण्ड बौद्धिक कथानक बनबैत अछि।

६. भारतीय साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे समालोचना

कृति मूलतः काव्य नहि, तथापि संवाद, व्यङ्ग्य, दृष्टान्त, रूपक, प्रश्नोत्तर आ मोक्षाभिमुख अन्तर्ध्वनिक कारण एकर साहित्यिक परीक्षण पूर्णतः सार्थक अछि। उदयनक तर्क-विन्यास “ज्ञान-नाटक” सन अनुभव उत्पन्न करैत अछि: प्रतिज्ञा, आपत्ति, प्रतिप्रश्न, विकल्प, खण्डन आ निष्कर्षक आवृत्त लय नाटकीय तनाव बनबैत अछि।

६.१ रस-विमर्श

आचार्य अभिनवगुप्तक अनुसार शान्त रस सभ रसक प्रकृति (मूल आधार) थिक, कारण ओ मोक्षपुरुषार्थसँ जुड़ल अछि। «आत्मतत्त्वविवेक»क स्थायी भाव निर्वेद-मूलक तत्त्वजिज्ञासा अछि — ग्रन्थक आरम्भ दुःखसँ आत्यन्तिक निवृत्तिक आकांक्षासँ होइत अछि, आ समापन मोक्षनगरक शिखरशिला-रूपी निर्विकल्पक आत्मज्ञानपर। एहि दृष्टिसँ सम्पूर्ण चारि खण्डक तर्क-यात्रा शान्त रसक विभाव-सामग्री थिक; प्रत्येक खण्डन-मण्डन ओहि परम प्रशान्तिक व्यभिचारी भाव जकाँ काज करैत अछि।

मुदा शान्तक अङ्गी-रसत्वक भीतर वीर रसक एकटा बौद्धिक रूप — जकरा ‘तर्कवीर’ वा ज्ञानवीरक कोटिमे राखल जा सकैत अछि — निरन्तर स्पन्दित अछि। उत्साह एतय स्थायी भाव थिक: प्रत्येक विकल्पक व्यवस्थित संहार, ‘नहि।’ क दृढ़ एकाक्षरी प्रहार, आ प्रसङ्ग-विपर्ययक शस्त्र-सञ्चालन पाठमे ओज भरैत अछि। हास्य आ व्यङ्ग्यक अंश सेहो अल्प नहि — असंगत ज्ञान-स्वीकृतिकेँ ‘एहन दैत्य जन्मबैत अछि जे ओहि ज्ञान सभकेँस्वयं नष्ट कऽ दैत अछि’ कहब, वा गदहा आ ऊँटक असम्भव समूहक उपमा — ई सभ शास्त्रीय गद्यमे विरल परिहास-चातुर्यक उदाहरण थिक। खण्ड ४ क मोक्ष-विवेचनमे करुण रसक अछूता झलको अछि — संसारक दुःख-बहुलताक चित्रण, आ ‘स्वर्गीय सुखो दुःखक बाणसँ आर-पार बेधल अछि’ सन कथनमे संसारक अनित्यताक प्रति गहन वैराग्यभाव प्रकट होइत अछि।

“तर्कवीरता” क अवधारणा आलोचनात्मक रूपसँ उपजाऊ अछि, मुदा एकरा सम्प्रदायगत विजय-घोषणामे बदलल नहि जाए। “समूल पराभव” सन भाषा ऐतिहासिक जटिलताकेँ संकुचित करैत अछि; साहित्यिक वीरभाव आ इतिहासलेखनक दावामे स्पष्ट दूरी आवश्यक अछि।

६.२ ध्वनि-विमर्श

आनन्दवर्धनक कसौटीपर शास्त्रग्रन्थ प्रायः 'चित्र' कोटिमे (जतय ध्वनि अपेक्षा वाच्यार्थक प्राधान्य रहैत अछि) पड़ैत अछि, मुदा «आत्मतत्त्वविवेक»मे वस्तुध्वनिक कतोक स्तर सक्रिय अछि। पहिल ध्वनि आत्मगौरवक अछि — सम्पूर्ण खण्डन-परम्पराक व्यङ्ग्यार्थ ई जे मनुष्यक प्रत्यभिज्ञा, स्मृति, कर्तृत्व आ नैतिक दायित्व, सभ आत्माक स्थायित्वपर टिकल अछि; क्षणिकवाद मानब अपन जीवनक प्रत्येक अनुभवकेँ नकारब थिक। दोसर ध्वनि भाषा-यथार्थ-सम्बन्धक अछि — अपोहवाद-खण्डनक अन्तर्ध्वनि ई जे शब्द नकारसँ नहि, सत्तासँ जुड़ल अछि। तेसर, आ सभसँ गहन ध्वनि, ध्यान-सोपानक संरचनामे अछि — प्रत्येक पूर्व-दर्शनक खण्डन ओकर सर्वथा अस्वीकार नहि, अपितु ओकर आंशिक सत्यताक स्वीकृति आ ओकर उत्क्रमण थिक; एहि व्यञ्जनासँ ई ध्वनित होइत अछि जे सत्य क्रमिक, संचयी प्रक्रिया थिक, आ भारतीय दर्शन-परम्परा एकटा एकल, समन्वित यात्रा थिक — ई ग्रन्थक सभसँ दूरगामी अर्थ थिक, जे कतहु प्रत्यक्ष रूपेँ नहि कहल गेल अछि, मुदा उपसंहारक रचना-शिल्पेँ प्रकट होइत अछि।

ध्वनिक एक आधुनिक स्तर मैथिलीक दार्शनिक सामर्थ्य सेहो अछि। अपोह, अविनाभाव, सह-उपलम्भ, प्रत्यभिज्ञा, अन्योन्याभाव, उपाधि, सविकल्पक आ निर्विकल्पक सन पद मैथिली वाक्य-विन्यासमे सक्रिय भऽ कऽ ई व्यञ्जित करैत अछि जे मैथिली केवल दर्शनक वर्णन करएवाली नहि, दार्शनिक तर्क करएवाली भाषा सेहो बनि सकैत अछि।

६.३ वक्रोक्ति-विमर्श

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धान्तक भाषामे एहि ग्रन्थक प्रधान वक्रता प्रकरण-वक्रता आ वाक्य-वक्रता थिक। प्रश्नोत्तर-शृङ्खला — 'की एना मानल जाए जे...? नहि।' — पाठककेँ निष्क्रिय श्रोता नहि रहय दैत अछि; प्रत्येक 'की' क बाद पाठक क्षण भरि स्वयं उत्तर सोचैत अछि, आ तखन उदयनक 'नहि' ओकरा अपन अनुमानसँ भिड़ाबैत अछि। पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षक ई अनवरत आवृत्ति — कहियो उत्तर देल गेल आपत्तिपर फेर आपत्ति, फेर ओकरो खण्डन, फेर ताहिपर सेहो आपत्ति — एकटा प्रकरण-स्तरीय वक्रताक जाल बुनैत अछि, जाहिमे पाठक कहियो निश्चित नहि भऽ सकैत अछि जे तर्क कतय रुकत। अलंकारमे दृष्टान्तक प्राचुर्य अछि (बीज-अंकुर, रज्जु-सर्प, राजमहलक फाटकपर हाथी देखिकऽ अन्हार-मेघ-छाया बुझयवला मूर्खक दृष्टान्त, सर्प-नेउरक स्वाभाविक वैर, उज्जर शंख पित्तदोषसँ पियर देखाएब), रूपकक सघनता समापनमे ('मोक्षनगरक शिखरशिला', 'लक्ष्यभेदी बाण'), आ समापन-पद्यमे व्याजस्तुतिक छटा — अन्हराक प्रशंसासँ चित्रकारक गौरव नहि बढ़ैत — जे आत्मप्रशंसाक स्थानपर पाठकीय योग्यताक माँग रखैत अछि।

६.४ गुण, रीति आ औचित्य

गुण-विमर्शमे उदयनक प्रधान शैली-गुण ओज आ प्रसाद दुनू थिक — ओज खण्डन-अंशमे प्रधान अछि, जतय 'नहि।' क आवृत्ति वज्रपात जकाँ पड़ैत अछि, आ प्रसाद-माधुर्य मोक्ष-विवेचन तथा स्तुति-पद्यमे। क्षेमेन्द्रक औचित्य-कसौटीपर देखल जाय तँ प्रत्येक पारिभाषिक पद (अविनाभाव, अपोह, सह-उपलम्भ, प्रसङ्ग-विपर्यय, उपादान-कारण, सविकल्पक-निर्विकल्पक, परस्पराश्रय, अन्यथानुपपत्ति) अपन प्रकरणक अनुरूप ठीक स्थानपर प्रयुक्त होइत अछि, जाहिसँ शास्त्रीय गद्यक कठोरतमपन बचाओल गेल अछि, आ फेर सेहो प्रत्येक तर्क-चरणक भीतर एकटा नाटकीय गति बनल रहैत अछि। रीतिक दृष्टिसँ ग्रन्थ वैदर्भी रीतिक निकट अछि — छोट-छोट, स्पष्ट, अल्पसमास वाक्य, जे तर्कक सूक्ष्मताकेँ भार नहि बनय दैत।

प्रश्नोत्तर-वक्रता अनुवादक शैलीगत उपलब्धि सेहो अछि। "की?", "नहि", "तखन?", "मुदा?" सन छोट संकेत संस्कृत शास्त्रार्थकेँ मैथिली मौखिकता दैत अछि। पारिभाषिक पदकेँ जबर्दस्ती घरेलू पर्यायमे बदलल नहि गेल; एहि कारण अवधारणाक ऐतिहासिक विशिष्टता सुरक्षित रहैत अछि।

६.५ अलंकार-योजना आ काव्य-लिंग

अन्तमे, «आत्मतत्त्वविवेक» मे अर्थालंकार सभक (दृष्टान्त, रूपक, व्याजस्तुति, अर्थान्तरन्यास) घनिष्ठ सम्बन्ध तर्क-संरचनासँ यैह अछि जे ई सभ केवल सजावट नहि, प्रमाणक अंग बनि जाइत अछि — दृष्टान्त स्वयं एकटा लघु-प्रमाण थिक, रूपक निष्कर्षकेँ सान्द्र करैत अछि। एहि दृष्टिसँ ई ग्रन्थ भारतीय शास्त्र-साहित्यक ओहि दुर्लभ कोटिक उदाहरण थिक जतय तर्क आ काव्य एक्के वाक्यमे अभिन्न भऽ जाइत अछि।

७. पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ तुलनात्मक दार्शनिक पुनर्पाठ

७.१ सोक्रेटिक-प्लेटोनिक द्वन्द्वात्मकता आ नाटकीय संवाद

प्लेटोक संवाद-ग्रन्थ (Dialogues) जकाँ «आत्मतत्त्वविवेक» मे सत्य प्रत्यक्ष घोषणासँ नहि, अपितु एलेन्खोस (elenchus) — प्रश्न-प्रतिप्रश्न द्वारा प्रतिपक्षक मतक आन्तरिक असंगति उजागर करबाक सोक्रेटिक पद्धति — सँ उभरैत अछि। उदयनक प्रत्येक 'नहि।' सोक्रेटिक elenchusक ओही क्षण जकाँ काज करैत अछि जतय वार्ताकार अपन दावाक असंगति स्वयं देखबाक लेल बाध्य होइत अछि। मुदा एतय एकटा महत्त्वपूर्ण अन्तर सेहो अछि — प्लेटोक संवादमे प्रायः खुल्ला प्रश्नक (aporia) संग समाप्ति होइत अछि, जखन उदयनक ग्रन्थ अपोरियासँ शुरू भऽ निश्चित सिद्धान्त (आत्मा, ईश्वर, मोक्ष) क स्थापनापर समाप्त होइत अछि। ई अन्तर एहि ग्रन्थकेँ प्लेटोनिक संवादसँ बेसी अरस्तूक व्यवस्थित निबन्ध-शैलीक निकट लऽ जाइत अछि, यद्यपि नाटकीय रूप (काल्पनिक विरोधीक वाणी, प्रश्नोत्तर) प्लेटोनिके रहैत अछि।

७.२ अरस्तूक रेटरिक आ काव्यशास्त्र

अरस्तूक Rhetoric मे वर्णित तीन अनुनय-साधन — एथोस (वक्ताक विश्वसनीयता), पैथोस (श्रोताक भावनात्मक संलग्नता), आ लोगोस (तार्किक प्रमाण) — तीनू «आत्मतत्त्वविवेक» मे स्पष्ट देखल जा सकैत अछि। लोगोस स्वाभाविक रूपेँ प्रधान अछि — अनुमान, हेतु, दृष्टान्तक न्याय-शास्त्रीय संरचना। एथोस उदयनक बारम्बार पूर्वपक्षक तर्कक पूर्ण, निष्पक्ष प्रस्तुतीकरणसँ निर्मित होइत अछि — ओ विरोधीक मतकेँ कमजोर बना कऽ नहि रखैत छथि, अपितु ओकर सभसँ सशक्त रूपमे प्रस्तुत कऽ तखन खण्डित करैत छथि (जे 'भद्रलोकक तर्क' यानी steel-manning कहल जा सकैत अछि) । पैथोस — व्यङ्ग्य, दृष्टान्त, आ मोक्ष-विवेचनमे भावनात्मक अपील (दुःखक बहुलताक चित्रण) — शुद्ध तार्किक विधाकेँ पाठकीय संलग्नतासँ जोड़ैत अछि। एकर अतिरिक्त, अरस्तूक Poetics मे वर्णित catharsis (शुद्धीकरण, जे त्रासदीक अन्तमे भय-करुणाक विरेचनसँ होइत अछि) क एकटा दार्शनिक समानान्तर एतय देखल जा सकैत अछि — खण्डन-मण्डनक लम्बा, कष्टप्रद यात्राक अन्तमे मोक्षक निर्विकल्पक शान्तिपर पहुँचब एकटा प्रकारक बौद्धिक catharsis थिक, जतय पाठक तर्क-संघर्षक 'भय' सँ गुजरि निर्विकल्पक ज्ञानक शान्तिमे विरेचित होइत अछि।

७.३ बाख्तिनक संवादवाद आ बहुस्वरात्मकता

मिखाइल बाख्तिनक संवादवाद (dialogism) आ बहुस्वरात्मकता (polyphony) सिद्धान्तक आलोकमे «आत्मतत्त्वविवेक» एकटा असाधारण पाठ थिक। बाख्तिनक अनुसार सच्चा संवादात्मक पाठमे विभिन्न स्वर (voices) परस्पर बराबरीक हैसियतसँ संवाद करैत छथि, कोनो एक स्वर पूर्णतः दोसराकेँ अधीन नहि बनबैत। उदयनक ग्रन्थमे बौद्ध पूर्वपक्ष — रत्नकीर्ति, ज्ञानश्री, धर्मकीर्तिक मत — केवल कठपुतली बनि खण्डित होयबाक लेल नहि अबैत अछि; हुनकर तर्क पूर्ण दार्शनिक गम्भीरतासँ, अपन आन्तरिक तर्कशक्तिसँ युक्त रूपमे प्रस्तुत होइत अछि, अनेक स्थलपर बहुस्तरीय आपत्ति- प्रत्युत्तरक शृंखला एतेक लम्बी अछि जे पाठकक मनमे क्षणिक भरि बौद्ध पक्षक जीतक सम्भावना सेहो जागि सकैत अछि। ई तनावे ग्रन्थकेँ एकपक्षीय प्रवचनसँ बचबैत, सच्चा शास्त्रार्थ (dialectical agon) बनबैत अछि। तथापि बाख्तिनी अर्थमे पूर्ण बहुस्वरात्मकता (जेना दोस्तोयेव्स्कीक उपन्यासमे) एतय नहि अछि, कारण अन्ततः लेखकीय स्वर (उदयन-सिद्धान्तपक्ष) निर्णायक विजय प्राप्त करैत अछि — ई मोनोलॉजिक निष्कर्षसहित डायलॉजिक प्रक्रियाक संयोग थिक, जे शास्त्रीय वाद-साहित्यक विशिष्ट रूप-लक्षण मानल जा सकैत अछि।

७.४ रूपवाद, नवसमालोचना आ पाठक-प्रतिक्रिया

रूसी रूपवाद (Formalism) क 'साहित्यिकता' (literariness) क अवधारणासँ देखल जाय तँ «आत्मतत्त्वविवेक» क साहित्यिक प्रभाव ओकर विषय वस्तुसँ बेसी ओकर 'उपकरण' (device) — विशेषतः स्वचालन-हटाओनक (defamiliarization / ostranenie) प्रयोगसँ अबैत अछि। प्रश्नोत्तर-रूपक बारम्बार आवृत्ति एकटा लयबद्ध अनुभूति उत्पन्न करैत अछि, जाहिमे पाठक 'नहि' क प्रत्येक आघातसँ नव-नव रूपेँ चौंकैत अछि, चाहे तर्क- संरचना पूर्वानुमेय होइतो होइक। न्यू क्रिटिसिज्मक 'क्लोज रीडिंग' पद्धतिसँ देखल जाय तँ ग्रन्थक पाठ स्वयं-निर्भर (self-contained) अछि — प्रत्येक अनुच्छेदक आन्तरिक तनाव (आपत्ति बनाम उत्तर) आ ओकर समाधान एकटा सूक्ष्म-इकाईक रूपमे विश्लेषणीय अछि, जे पूरा ग्रन्थक बृहत् संरचनाकेँ प्रतिबिम्बित करैत अछि (part mirrors whole) । आ पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त (Reader-Response Theory, वुल्फगांग ईज़र) क दृष्टिसँ ग्रन्थक प्रश्नोत्तर-शैली पाठकक सक्रिय सहभागिताक माँग करैत अछि —ईज़रक 'रिक्त स्थान' (Leerstelle / gaps) क सिद्धान्त एतय

प्रत्येक ‘की…?’ क पछातिक क्षणिक विराममे साकार होइत अछि, जतय पाठक अपन उत्तर स्वयं निर्मित करैत अछि, इएह पाठकक निर्मित उत्तर आ ग्रन्थक वास्तविक उत्तरक बीचक टकराव पाठ-अनुभवक केन्द्रीय गतिशीलता बनि जाइत अछि।

७.५ उत्तर-संरचनावादी दृष्टि आ विखण्डन

देरिदाक विखण्डनवाद (deconstruction) क आलोकमे एकटा रोचक विडम्बना उभरैत अछि — उदयनक पूरा पद्धति स्वयं एकटा ‘खण्डन’-केन्द्रित पाठ थिक, जे प्रतिपक्षक अवधारणा सभक भीतरी विरोधाभास (जेना क्षणिकत्व आ अविनाभाव, अपोह आ भेद) उजागर करैत ओकरा ध्वस्त करैत अछि — ई विधि deconstructive पद्धतिसँ संरचनात्मक समानता रखैत अछि, यद्यपि उद्देश्यमे विपरीत अछि: देरिदा खण्डनक बाद कोनो स्थायी सत्यपर नहि पहुँचैत छथि, जखन उदयन खण्डनकेँ स्थापनाक साधन बनबैत छथि। ई अन्तर स्वयं भारतीय आ पाश्चात्य चिन्तनक एकटा मौलिक भेदकेँ उजागर करैत अछि — भारतीय खण्डन-पद्धति (जेना नागार्जुनक प्रसंग वा उदयनक अनुमान-खण्डन) प्रायः ‘प्रासंगिक’ (dialectical) होइत अछि, अन्तिम रूपेँ अस्थिरतामे नहि, स्थापनामे समाप्त होइत अछि, जखन उत्तर-आधुनिक विखण्डन जान-बूझि खुल्ला अनिश्चितता (aporia) मे विराम करैत अछि। ई तुलना ग्रन्थकेँ विश्व-साहित्यिक सिद्धान्तक संवादमे एकटा विशिष्ट स्थान दैत अछि।

बाख्तिनीय कसौटीपर पूर्वपक्षकेँ पर्याप्त स्वर भेटैत अछि, मुदा अन्तिम अधिकार उत्तरपक्षक अछि। तेँ ई पूर्ण बहुस्वरात्मक ग्रन्थ नहि, बल्कि संवादात्मक संरचनावला न्याय-प्रधान ग्रन्थ अछि—मोनोलॉजिक निष्कर्षसहित डायलॉजिक प्रक्रिया।

संरचनात्मक स्तरपर स्थायी/क्षणिक, ज्ञान/ज्ञेय, द्रव्य/गुण, अवयव/अवयवी, आत्मा/अनात्मा आ सत्य/भ्रमक द्वन्द्व चारू खण्डकेँ जोड़ैत अछि। उदयन प्रतिपक्षक प्रतिज्ञाक भीतरी असंगति धरि पहुँचि खण्डन करैत छथि; मुदा देरिदीय अनिर्णयपर नहि रुकि सकारात्मक स्थापना करैत छथि। एहि कारण एकरा “विखण्डनात्मक विधि, अविखण्डनवादी निष्कर्ष” कहब सार्थक अछि।

७.६ व्याख्याशास्त्र, घटनाविज्ञान आ पाठकीय सहभागिता

स्मृति, प्रत्यभिज्ञा आ “काल्हि अनुभवनिहार हम आइ स्मरण करैत छी” सन संरचना कालगत आत्म-अनुभवक घटनावैज्ञानिक अध्ययन लेल उपयोगी अछि। मुदा उदयनक वस्तुवादी आत्मसिद्धि आ आधुनिक घटनाविज्ञान एकहि वस्तु नहि; तुलना प्रश्नक स्तरपर उपयोगी, सिद्धान्तक समानताक दावा रूपमे नहि।

पाठक-प्रतिक्रिया दृष्टिसँ प्रश्नोत्तर पाठककेँ सहभागी बनबैत अछि। तथापि “अस्वीकार्य”, “खण्डन”, “दोष” सन सम्पादकीय शीर्षक पहिने निष्कर्ष कहि देबाक कारण पाठकक स्वतन्त्र खोजक स्थान किछु घटा सकैत अछि।

७.७ तुलनात्मक दर्शन

प्रत्यभिज्ञाकेँ पाश्चात्य व्यक्ति-अनन्यता-विमर्श, विज्ञानवादक आलोचनाकेँ प्रत्ययवाद-विवाद, अपोहकेँ नामवाद-यथार्थवाद विवाद, आ ईश्वरसिद्धिकेँ अभिकल्प-तर्कक समानान्तर पढ़ल जा सकैत अछि। अपोह-विमर्श क्वाइन आ गुडमैनक नामवाद-यथार्थवाद प्रश्नकेँ स्मरण करबैत अछि; ज्ञान-ज्ञेय भेद जी. ई. मूरक प्रत्ययवाद-विरोधी तर्कसँ संवाद करैत अछि; स्मृति-प्रत्यभिज्ञा जॉन लॉक आ डेरेक पारफिटक व्यक्ति-अनन्यता प्रश्नक समान क्षेत्र छूबैत अछि; ईश्वरक कार्यत्व-तर्क विलियम पेलीक अभिकल्प-विमर्शक समानान्तर राखल जा सकैत अछि।

मुदा एहि समानता सभ मुख्यतः प्रश्नक समानता अछि, उत्तरक नहि। भारतीय न्यायीय आत्मा, बौद्ध विज्ञान-सन्तान, आधुनिक मनोवैज्ञानिक निरन्तरता आ पाश्चात्य व्यक्ति-अनन्यता भिन्न तत्त्वमीमांसीय पृष्ठभूमिसँ आबैत अछि। अतः तुलनात्मक पठन क्षितिज खोलैत अछि, प्रत्यक्ष सिद्धान्त-समानता स्थापित नहि करैत।

८. भारतीय अनुवाद-दृष्टि: तात्पर्य, भाषा-भाष्य आ मैथिलीकरण

पोथी अनुवादकेँ शब्दानुवादक बदला तात्पर्यानुवाद आ भाषा-भाष्य रूपमे देखैत अछि। ई दृष्टि एहि काजपर उपयुक्त अछि। अनुवादक मूल तर्कक्रमकेँ राखैत छथि, मुदा दीर्घ संस्कृत संरचनाकेँ मैथिली वाक्यमे खोलैत छथि, बीच-बीचमे विषयसूचक शीर्षक दैत छथि आ प्रश्नोत्तरक रूपमे तर्ककेँ श्रव्य बनबैत छथि।

एहि ठाम एकटा महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि—पारिभाषिक विदेशीपन आ वाक्यगत देशीयता एक्के संग। शब्द “अपोह” रहैत अछि, मुदा ओकर चारूकात मैथिली वाक्य रहैत अछि। “प्रत्यभिज्ञा” रहैत अछि, मुदा स्मृतिक तर्क मैथिली अनुभव-वाक्यमे खुलैत अछि। एहि विधिसँ स्रोत परम्परा मेटैत नहि अछि आ लक्ष्यभाषा सेहो संस्कृतक छाया मात्र नहि बनैत अछि।

एहि अनुवादक महत्त्वपूर्ण विशेषता ई जे स्रोत-परम्पराक पारिभाषिक विदेशीपन आ लक्ष्यभाषाक वाक्यगत देशीयता एक्के संग चलैत अछि। “अपोह” आ “प्रत्यभिज्ञा” सन पद सुरक्षित रहैत अछि, मुदा ओकर तर्क मैथिली अनुभव-वाक्य, प्रश्नोत्तर आ स्वाभाविक संयोजकसभमे खुलैत अछि। ई शब्दानुवादक बदला तर्कक मैथिलीकरणक परियोजना बनैत अछि।

९. पाश्चात्य अनुवाद-सिद्धान्तक आलोकमे

९.१ विदेशीकरण आ देशीकरण

फ्रीडरिष श्लायरमाखर आ लरेन्स भेनुटीक सिद्धान्तक आलोकमे ई अनुवाद दुनू मार्गपर एक्के संग चलैत अछि। पारिभाषिक स्तरपर विदेशीकरण (Foreignization) अछि, जाहिसँ पाठककेँ उदयनक वैचारिक जगत्मे प्रवेश करय पड़ैत अछि। दोसर दिस, वाक्य तथा दृष्टान्तक स्तरपर देशीकरण (Domestication) अछि—खरिहान, गदहा-ऊँट, 'प्रिय भाय' जकाँ प्रयोग उदयनकेँ मैथिल आङनमे बजैत देखाबैत अछि। अनुवादक अदृश्य नहि बनैत छथि, मुदा भाषिक बाधा हटाकऽ वैचारिक चुनौतीकेँ ज्यों-क-त्यों रखैत छथि।

९.२ गतिशील समतुल्यता, अर्थपरक-संप्रेषणपरक सन्तुलन आ प्रयोजन

यूजीन नाइडाक गतिशील समतुल्यता (Dynamic Equivalence) क मानदण्डपर ई अनुवाद संकर (hybrid) कोटिक अछि। तर्क-संरचनामे रूपात्मक निष्ठा अछि, मुदा वाक्य-स्तरपर गतिशील समतुल्यता अछि जाहिसँ मैथिल पाठकपर ओएह प्रभाव उत्पन्न होइत अछि जे संस्कृतज्ञ पाठकपर मूल करैत छल। पीटर न्यूमार्कक शब्दावलीमे ई अर्थपरक (semantic) आ संप्रेषणपरक (communicative) अनुवादक सन्तुलन थिक। राइस-फर्मीरक स्कोपोस-सिद्धान्त (Skopos Theory) क अनुसार एहि अनुवादक प्रयोजन द्वैध अछि—मैथिली भाषाकेँ दार्शनिक गद्यक सामर्थ्य देब आ मैथिल शोधार्थीकेँ अपन परम्पराक प्रवेश-द्वार देब। खण्ड-शीर्षक आ सुगठित प्रकरण-विभाजन एकरा स्वयंशिक्षण-योग्य पाठ बनबैत अछि।

९.३ स्टाइनरक चतुश्चरण आ बेन्यामिनक उत्तरजीवन

स्टाइनरक अनुवादक चारि चरण—विश्वास, आक्रमण, आत्मसात् आ प्रतिदान—एहि अनुवादमे प्रत्यक्ष लक्षित कएल जा सकैत अछि। अनुवादकक ई विश्वास जे एहि प्राचीन पाठमे मैथिली पाठक लेल अर्थ अछि; मूलक अखण्ड गद्यकेँ ४०५ खण्डमे बाँटब (आक्रमण); पारिभाषिक कोषकेँ मैथिली वाक्यमे घोरब (आत्मसात्); आ अन्ततः 'आत्मतत्त्वविवेक' केँ आओर विस्तृत जीवन देब (प्रतिदान) । वाल्टर बेन्यामिनक सिद्धान्तानुसार अनुवाद मूलक 'उत्तरजीवन' (Fortleben) थिक; बेन्यामिनक मान्यता जे श्रेष्ठ अनुवाद मूल आ लक्ष्य-भाषा दुनूकेँ ओहि 'विशुद्ध भाषा' दिस ठेलैत अछि, से प्रस्तुत कृतिमे घटित देखाइत अछि।

स्टाइनर आ बेन्यामिनक अवधारणा सांस्कृतिक रूपसँ आकर्षक तुलनात्मक बाट खोलैत अछि। मुदा एकरा भारतीय अनुवाद-परम्पराक “समान सिद्धान्त” मानबाक बदला तुलनात्मक पठनक उपकरण मानब अधिक सावधान पद्धति होयत।

९.४ बहुतन्त्र, पुनर्लेखन आ पुनर्प्राप्ति

आन्द्रे लेफेभेयरक पुनर्लेखन सिद्धान्त (Rewriting) आ इतमार इभेन-जोहारक बहुतन्त्र-सिद्धान्त (Polysystem Theory) क परिप्रेक्ष्यमे विदेह ई-पत्रिकाक ई स्वायत्त, संस्थेतर प्रकाशन एकटा सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य अछि। मैथिली साहित्य-तन्त्रमे दार्शनिक गद्यक स्थान जे प्रायः रिक्त छल, तकरा ई अनुवाद भरैत केन्द्रीय स्थान ग्रहण करैत अछि। ई केवल एकटा पोथी नहि, भविष्यक मैथिली दर्शन-लेखनक एकटा गद्य-प्रतिमान (Register) स्थापित करैत अछि। गणेश देवीक 'अनुवाद पुनर्प्राप्ति थिक' (Translation as Retrieval) सिद्धान्त एतय पूर्णतः चरितार्थ होइत अछि, कारण मिथिलाक बौद्धिक स्मृतिमे उदयन एकटा नाम मात्र रहि गेल छलाह, ई अनुवाद ओहि नामकेँ फेर सँ पाठ बनबैत अछि।

९.५ टूरी, हाउस आ बर्मनक कसौटी

अनुवादकेँ अर्थपरक भाषान्तर, संप्रेषणपरक पुनर्वाक्यीकरण आ व्याख्यात्मक प्रस्तुतिक मिश्रण मानल जा सकैत अछि। एहि तीनू तत्वक सह-अस्तित्व कृतिक वास्तविक प्रकृति बुझबाक उपयोगी सूत्र अछि।

टूरीक लक्ष्य-पाठ दृष्टिसँ मैथिली स्वीकार्यता सफल अछि; स्रोतपरक पर्याप्तता पारिभाषिक पद द्वारा बचल अछि। मुदा संस्कृत आधारपाठ समानान्तर नहि रहने “किछु छुटल कि नहि”, “किछु बढ़ाओल गेल कि नहि”, “शीर्षक मूल कि सम्पादकीय”—ई प्रश्न पूर्णतः जाँचल कठिन अछि।

जुलियाने हाउसक प्रत्यक्ष अनुवादक कसौटी सेहो एहिठाम प्रासंगिक अछि। ऐतिहासिक दूरीकेँ मेटाओल नहि गेल, मुदा आधार-संस्करण, पाठभेद आ सम्पादकीय हस्तक्षेपक विवरण नहि रहने पारदर्शिता अपूर्ण अछि।

बर्मनक विकृति-प्रवृत्तिक आलोकमे सामान्य शीर्षकसभ तर्ककेँ अधिक व्यवस्थित अवश्य करैत अछि, मुदा मूलक अनिश्चितता वा क्रमशः खुलैत निष्कर्षकेँ समयसँ पहिने बता दैत अछि। “पहिल विकल्प अस्वीकार्य” सँ नीक “पहिल विकल्पक परीक्षण” सन तटस्थ शीर्षक शोध-संस्करण लेल अधिक उपयुक्त होयत।

१०. मैथिली भाषाक उपलब्धि आ अनुवादक शैली

कृतिक सर्वाधिक स्थायी उपलब्धि शायद कोनो एक दार्शनिक निष्कर्ष नहि, बल्कि मैथिली दार्शनिक गद्यक व्यवहारिक प्रदर्शन अछि।

अनुवाद देखबैत अछि जे मैथिलीमे दीर्घ विकल्प-विभाजन, कारण-कार्य विश्लेषण, हेत्वाभास, परस्पराश्रय, स्मृति, प्रत्यक्ष, अनुमान, अभाव, सामान्य, ईश्वर आ मोक्षपर लगातार शास्त्रीय तर्क सम्भव अछि। “मुदा”, “तेँ”, “तखन”, “जँ—तँ”, “अथवा”, “की”, “नहि” सन स्वाभाविक मैथिली संयोजक जटिल न्यायीय संरचनाकेँ उठबैत अछि।

एतय विशेष महत्त्व ई जे संस्कृत पदावली मैथिली व्याकरणकेँ विस्थापित नहि करैत। वाक्यक हड्डी मैथिली अछि; संस्कृत पारिभाषिक पद ओकर अवधारणात्मक केन्द्र अछि। एहि सन्तुलनक कारण पाठ न संस्कृतककृत्रिम छाया बनैत अछि, न दार्शनिक शुद्धता छोड़ि अत्यधिक सरलीकृत गद्य।

अनुवादक विशिष्ट उपलब्धि चारि बिन्दुमे देखल जा सकैत अछि:

• मैथिली दार्शनिक शब्द-संसारक सक्रियकरण: ‘अविनाभाव’, ‘प्रत्यभिज्ञा’, ‘सविकल्पक’ आदि संस्कृत पद मैथिली वाक्य-विन्यासक भीतर काज करैत छथि।

• संस्कृत-भारक नियन्त्रण: पारिभाषिक केन्द्र संस्कृतनिष्ठ रहितो क्रिया, संयोजक आ सम्बन्ध-सूचक पद मैथिली अछि, जाहिसँ पाठ स्वतन्त्र मैथिली गद्य बनैत अछि।

• तर्कक मौखिकीकरण: ‘की?’, ‘नहि’, ‘ठीक अछि’, ‘तखन’, ‘मुदा’ सन संकेत शास्त्रार्थक श्रव्य लय उत्पन्न करैत अछि।

• विकल्प-विभाजनक वाक्य-रचना: ‘अथवा’, ‘वा’, ‘की…की’ आदि संयोजक पाठककेँ बिना आरेखक तर्क-संरचना पकड़बाक सुविधा दैत अछि।

एहि कारण कृतिक सर्वाधिक स्थायी भाषिक उपलब्धि कोनो एक शब्दक पर्याय खोजब नहि, बल्कि दीर्घ न्यायीय तर्ककेँ मैथिली वाक्य रचनामे टिकाऊ ढंगसँ चलायब अछि।

११. साहित्यिक बिम्ब आ उदयनक लेखक-व्यक्तित्व

बीज-अङ्कुर, घट-दण्ड, खरहाक सींग, हाथी, चिकित्सक, अन्हरा, चित्रकार, सुख-दुःख, मोक्षनगर आ बाण—ई उदाहरणसभ हटि जाइत तँ पोथी तार्किक रूपेँ बचि सकैत छल, मुदा साहित्यिक रूपेँ निर्धन भऽ जाइत।

अनुवादकक महत्त्वपूर्ण गुण ई जे उदाहरणसभकेँ “केवल तर्कक दृष्टान्त” नहि बुझि हुनकर कथात्मक ऊर्जा बचाओल गेल अछि। विशेषतः हास्य आ व्यङ्ग्य उदयनक वादात्मक व्यक्तित्वकेँ उपस्थित करैत अछि। एकर कारण पाठक एक निर्जीव सूत्र-संग्रह नहि, एक जीवित शास्त्रार्थक अनुभूति करैत अछि।

काल-सापेक्ष कठोर, सम्प्रदायगत अथवा स्त्री-विषयक उदाहरण आधुनिक पाठक लेल सम्पादकीय टिप्पणी माँगैत अछि। एहन अंश ऐतिहासिक स्रोतक हिस्सा होयबाक कारण हटाओल नहि जाए; मुदा स्पष्ट कएल जाए जे ई मूलक कालबद्ध विवादात्मक भाषा अछि, आधुनिक सम्पादक वा अनुवादकक मूल्य-स्वीकृति नहि।

१२. भाषिक, सम्पादकीय आ अनुसन्धानपरक सीमासभ

वर्तमान पोथीक मुख्य कमजोरी अनुवादक मूल सामर्थ्यमे कम, सम्पादकीय संरचना आ शोध-पारदर्शितामे बेसी देखाइत अछि।

१२.१ आधार-संस्करण आ स्रोत-पारदर्शिता

ग्रन्थसूचीमे अनेक संस्कृत संस्करण उपलब्ध कराओल गेल अछि, मुदा अनुवाद मुख्यतः कोन आधार-संस्करणपर टिकल अछि से स्पष्ट घोषणाक आवश्यकता अछि। संस्कृत मूल समानान्तर नहि रहने "किछु छुटल कि नहि", "किछु बढ़ाओल गेल कि नहि", "शीर्षक मूल कि सम्पादकीय"—ई प्रश्न पूर्णतः जाँचब कठिन होइत अछि।

१२.२ मूल पाठ आ सम्पादकीय शीर्षकक भेद

४०५ सँ अधिक शीर्षक अध्ययन-सुगमता बढ़बैत अछि, मुदा मूल संस्कृत शीर्षक आ अनुवादक-संपादक द्वारा जोड़ल शीर्षक अलग चिह्नित होयब चाही। "पहिल विकल्प अस्वीकार्य" क बदला "पहिल विकल्पक परीक्षण" सन तटस्थ शीर्षक शोध-संस्करणमे अधिक उपयुक्त होयत, कारण निष्कर्ष समयसँ पहिने नहि बताओत।

१२.३ भाषा-नीति आ रूपगत एकरूपता

"खंड/खण्ड", संयुक्त पदमे हाइफनक उपयोग, किछु वर्तनी-रूप, आ "भऽ सकैत अछि/हो सकैत अछि" सन क्रियारूप लेल एकरूप सम्पादकीय नीति अपेक्षित अछि। मैथिली आलोचनात्मक भागमे रोमन अंग्रेजी पदक अधिकता मुख्य देवनागरी-प्रधान गद्यक प्रवाह तोड़ैत अछि; पाश्चात्य सिद्धान्तक नाम आवश्यक रूपेँ राखि तकनीकी अवधारणाक मैथिली वा देवनागरी रूप प्रधान कएल जा सकैत अछि।

१२.४ प्रशस्तिपरक इतिहास-वाचन

"समूल खण्डन", "एक ग्रन्थक कारण बौद्ध तार्किक आधारक समाप्ति", "युगान्तरकारी" आदि भाषाआलोचनात्मक अनुसन्धानसँ हटि प्रशस्ति दिस जा सकैत अछि। उदयनक दार्शनिक महत्त्व कम केने बिना इतिहासक बहुकारणीय जटिलता सुरक्षित राखब आवश्यक अछि।

१२.५ अध्ययन-उपकरण

पूर्ण अन्तरराष्ट्रीय अध्ययन-संस्करणक लेल आधार संस्कृत पाठक स्पष्ट घोषणा, चयनित संस्कृत मूल, पाठभेद, अनुवादक द्वारा जोड़ल शब्द/शीर्षकक चिह्न, पारिभाषिक कोश, विषयानुक्रमणिका आ सम्भव हो तँ मूल पाठक क्रम-संख्या उपयोगी होयत। ई कमी अनुवादक पठनीयता वा दार्शनिक क्षमता कम नहि करैत; ई शोधीय सत्यापनक प्रश्न अछि।

१३. विस्तृत ग्रन्थसूची, आङ्ग्ल अर्धांश आ अनुसन्धान-संसाधन

मैथिली भागक अन्तमे विषयवार ९९ प्रविष्टिक टिप्पणीसहित विस्तृत ग्रन्थसूची अछि। एकर आरम्भ मूल संस्कृत पाठ, प्रमुख संस्करण, टीका आ अनुवादसँ होइत अछि आ क्रमशः उदयनक अन्य ग्रन्थ, न्याय-वैशेषिक, बौद्ध तर्क, आत्ममीमांसा, भारतीय काव्यशास्त्र, अनुवाद-सिद्धान्त तथा डिजिटल-पाण्डुलिपि संसाधन धरि फैलैत अछि। ग्रन्थसूची अपन उद्देश्य सेहो स्पष्ट करैत अछि।

अन्तिम प्रविष्टि राष्ट्रीय पाण्डुलिपि मिशन धरि पहुँचैत अछि आ सम्पादकीय टिप्पणी स्पष्ट करैत अछि जे आलोचनात्मक संस्करण तैयार करैत काल संस्कृत उद्धरण मुद्रित मूल अथवा विश्वसनीय पाण्डुलिपिसँ मिलान आवश्यक अछि।

सन्दर्भ-सूचीक पूर्ववर्ती आलोचनामे विकिपीडिया, व्यावसायिक पुस्तक-विक्रेता आ सामान्य वेबसाइटक उपस्थिति जकाँ समस्या उठाओल गेल छल; मुदा वर्तमान अंतिम ग्रन्थसूची ९९ व्यवस्थित प्रविष्टि आ उपयोगिता-टिप्पणीसहित अधिक परिष्कृत रूपमे अछि। अतः पुरान सन्दर्भ-आलोचनाक जे अंश वर्तमान सूचीपर लागू नहि होइत, ओकरा अगिला संस्करणमे अद्यतन करब उचित होयत।

पृष्ठ २९१क आसपाससँ प्रकाशन-विवरण फेर आङ्ग्लमे शुरू होइत अछि। ओतय मूल संस्कृत ग्रन्थ, मैथिली अनुवादक आ परिवर्धित संस्करणक विवरण पुनः देल अछि।

तकर बाद विशाल आङ्ग्ल अनुक्रम, आलोचनात्मक निबन्धसभ, मूल अनुवादक आङ्ग्ल प्रस्तुति आ विस्तृत ग्रन्थसूची अछि। अध्याय-क्रममे समीक्षा, आलोचनात्मक अध्ययन, दार्शनिक पाठक आङ्ग्ल प्रस्तुति आ ग्रन्थसूची क्रमशः व्यवस्थित अछि।

एहि द्विभाषिक संरचनाक लाभ बहुत पैघ अछि—मैथिली नहि जननिहार शोधार्थी सेहो कृतिक तर्क-विन्यास आ आलोचनात्मक सामग्री धरि पहुँचि सकैत छथि। एहि कारण पोथीक सम्भावित पाठक-वर्ग क्षेत्रीय सीमासँ बाहर जाइत अछि।

मुदा एकर मूल्य आकार आ पुनरावृत्तिक रूपमे देब पड़ैत अछि। मैथिली आ आङ्ग्ल सामग्री एक्के जिल्दमे लगभग पूर्णरूपेँ दोहरल रहने पोथी भारी बनैत अछि। शोध-संस्करण लेल ई उपयोगी; सामान्य पाठक लेल पृथक् मैथिली आ पृथक् आङ्ग्ल संस्करण अधिक सुगम भऽ सकैत छल।

एक छोट सम्पादकीय असंगति सेहो अछि—आङ्ग्ल भागक अध्याय ४ “बिबलियोग्राफी विद मैथिली एनोटेशन्स” कहैत अछि, मुदा ओहि भागक उपयोगिता-टिप्पणी स्वयं आङ्ग्लमे अछि। शीर्षककेँ केवल “टिप्पणीसहित विस्तृत ग्रन्थसूची” क समतुल्य आङ्ग्ल रूप देब अधिक यथार्थ होयत।

१४. अन्तिम समेकित मूल्याङ्कन

‘आत्मतत्त्वविवेक’ क प्रस्तुत परिवर्धित संस्करणक महत्त्व चारि स्तरपर स्थिर अछि।

दार्शनिक स्तरपर, ई क्षणिकता, कारणता, भाषा, सामान्य, बाह्य यथार्थ, अवयवी, आत्मा, स्मृति, ईश्वर, शास्त्र आ मोक्षकेँ एक अखण्ड तार्किक यात्रामे जोड़ैत अछि।

अनुवादक स्तरपर, ई संस्कृतक कठिन पारिभाषिक परम्पराकेँ नष्ट नहि करैत, मुदा ओकरा मैथिली वाक्यक प्राकृतिक प्रवाहमे जीवित करैत अछि। अनुवादक प्रधान उपलब्धि शब्द बदलब नहि, तर्कक मैथिलीकरण अछि।

साहित्यिक स्तरपर, तर्क-नाटक, व्यङ्ग्य, दृष्टान्त, प्रश्नोक्ति, बीज-अङ्कुर, हाथी, खरहाक सींग, चिकित्सक, अन्हरा, चित्रकार, मोक्षनगर आ लक्ष्यभेदी बाण कृतिक सौन्दर्य-ऊर्जा बनैत अछि। शान्त रसक अन्तर्धारा आ तर्कवीरताक ओज एकरा शुष्क न्यायग्रन्थ रहबासँ बचबैत अछि।

सांस्कृतिक स्तरपर, ई पोथी मैथिलीमे उच्च दार्शनिक गद्यक सम्भावनाकेँ दाबी मात्र नहि करैत—प्रत्यक्ष पाठ द्वारा ओकर प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। यैह कृतिक सर्वाधिक स्थायी देन अछि।

एकर सीमासभ सेहो स्पष्ट अछि—किछु आरम्भिक प्रशस्तिपरक अतिरेक, स्रोत-संस्करणक अस्पष्टता, मूल आ सम्पादकीय हस्तक्षेपक भेदक अभाव, रोमन पदक अधिकता, सामान्य शीर्षकक पुनरावृत्ति, मूल परिवर्धित संस्करणक आलोचनात्मक सामग्रीमे आंशिक पुनरुक्ति, आ आङ्ग्ल अर्धांशक कारण बढ़ल आकार। मुदा वर्तमान ९९-प्रविष्टिक ग्रन्थसूची देखबैत अछि जे सम्पादकीय उपकरणक क्षेत्रमे पहिनुक अनेक कमी सुधारल जा चुकल अछि।

अन्ततः, एहि पोथीकेँ केवल “उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद” कहब एकर वास्तविक स्वरूपकेँ छोट करब होयत। ई मूल दर्शनक पुनर्पाठ, मैथिली दार्शनिक गद्यक निर्माण, अनुवाद-सिद्धान्तक प्रयोग, आत्मालोचनात्मक सम्पादकीय विमर्श, अनुसन्धान-संसाधन आ आङ्ग्ल सेतु—एहि सभक संयुक्त ग्रन्थ अछि। एकर सर्वश्रेष्ठ अंश स्वयं मूल मैथिली अनुवाद अछि; ओकर चारूकातक आलोचनात्मक सामग्री ओकर अर्थ-क्षेत्र विस्तृत करैत अछि, यद्यपि किछु ठाम अपनहि उत्साहकेँ संयमित करबाक आवश्यकता अछि।

कृतिक समापनमे मोक्षकेँ दुःखक आत्यन्तिक निवृत्ति कहि दीर्घ तर्कयात्राकेँ साधनाक दिशि मोड़ल गेल अछि, आ अन्तिम पद्य आलोचकसँ अन्ध प्रशंसा नहि, तथ्यगत दोषक निर्देश माँगैत अछि। एहि कसौटीपर प्रस्तुत संस्करणक उचित मूल्याङ्कन ई अछि—दार्शनिक अनुवाद रूपमे अत्यन्त समर्थ, मैथिली बौद्धिक इतिहासमे महत्त्वपूर्ण, अध्ययन-संस्करण रूपमे समृद्ध, आ पूर्ण समालोचनात्मक संस्करण बनबाक दिशामे एखन किछु स्पष्ट सम्पादकीय काज शेष।

८०. न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

सारांश

भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, दर्शन आ अनुवाद-विज्ञानक आलोकमे — मूल संस्कृत: उदयनाचार्य; मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर; प्रकाशक: विदेह, ISSN 2229-547X ई एकीकृत समीक्षा सम्पूर्ण ग्रन्थक आरम्भिक प्रकाशन-सामग्री, अनुक्रम, अध्याय १ सँ अध्याय १२ धरि सभ आलोचनात्मक-अनुसन्धानात्मक खण्ड, पाँचू फूलक गुच्छमे देल पूर्ण मैथिली अनुवाद, परिशिष्ट, सन्दर्भ-ग्रन्थसूची, तथा ग्रन्थक उत्तरार्धमे देल अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड—सभकेँ एकहि समग्र दृष्टिसँ देखैत अछि।

बीजशब्द: न्यायकुसुमाञ्जलि · उदयनाचार्यक · अनुवाद · एकीकृत · विस्तृत · ग्रन्थ · सार · समालोचनात्मक

सारांश · Abstract

ई अध्याय “न्यायकुसुमाञ्जलि (उदयनाचार्यक मैथिली अनुवाद): एकीकृत विस्तृत ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, दर्शन आ अनुवाद-विज्ञानक आलोकमे — मूल संस्कृत: उदयनाचार्य; मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर; प्रकाशक: विदेह, ISSN 2229-547X ई एकीकृत समीक्षा सम्पूर्ण ग्रन्थक आरम्भिक प्रकाशन-सामग्री, अनुक्रम, अध्याय १ सँ अध्याय १२ धरि सभ आलोचनात्मक-अनुसन्धानात्मक खण्ड, पाँचू फूलक गुच्छमे देल पूर्ण मैथिली अनुवाद, परिशिष्ट, सन्दर्भ-ग्रन्थसूची, तथा ग्रन्थक उत्तरार्धमे देल अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड—सभकेँ एकहि समग्र दृष्टिसँ देखैत अछि। ग्रन्थ अपनाकेँ उदयनाचार्यक मूल संस्कृत ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’, गजेन्द्र ठाकुरक संस्कृतसँ मैथिली अनुवादक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि।

भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त, दर्शन आ अनुवाद-विज्ञानक आलोकमे — मूल संस्कृत: उदयनाचार्य; मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर; प्रकाशक: विदेह, ISSN 2229-547X

१. समीक्षा-आधार, ऐतिहासिक अवस्थिति आ अनुवादक स्वरूप

ई एकीकृत समीक्षा सम्पूर्ण ग्रन्थक आरम्भिक प्रकाशन-सामग्री, अनुक्रम, अध्याय १ सँ अध्याय १२ धरि सभ आलोचनात्मक-अनुसन्धानात्मक खण्ड, पाँचू फूलक गुच्छमे देल पूर्ण मैथिली अनुवाद, परिशिष्ट, सन्दर्भ-ग्रन्थसूची, तथा ग्रन्थक उत्तरार्धमे देल अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड—सभकेँ एकहि समग्र दृष्टिसँ देखैत अछि। ग्रन्थ अपनाकेँ उदयनाचार्यक मूल संस्कृत ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’, गजेन्द्र ठाकुरक संस्कृतसँ मैथिली अनुवादक रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। प्रकाशन-सूचनामे प्रथम संस्करण २००४, परिवर्धित संस्करण २०२६, अनुवाद-संपादन-पुस्तक-विन्यासक दायित्व आ विदेहक प्रकाशकीय भूमिका सेहो स्पष्ट अछि।

सम्पूर्ण पुस्तकक मूल उपलब्धि केवल ई नहि अछि जे एकटा संस्कृत न्यायग्रन्थ मैथिलीमे पहुँचल; एकर वास्तविक महत्त्व ई अछि जे न्याय-वैशेषिकक अत्यन्त जटिल ज्ञानमीमांसा, कारण मीमांसा, अभाव-विचार, प्रमाणशास्त्र, भाषादर्शन, वाद-विधि आ ईश्वरानुमान लेल मैथिलीमे एकटा व्यवस्थित दार्शनिक गद्य-विन्यास निर्मित भेल अछि। एहि अर्थमे ई पोथी अनुवाद, भाष्य, आलोचना, अनुसन्धान, ग्रन्थेतिहास आ भाषा-निर्माण—पाँचू कार्य एकहि ठाम करैत अछि।

भारतीय दर्शनक इतिहासमे दसम-एगारहम शताब्दीक उदयनाचार्य ओहि सन्धि-बिन्दु पर ठाढ़ छथि जतयसँ प्राचीन न्याय नव्य-न्यायक दिशामे मुड़ैत अछि। हुनकर न्यायकुसुमाञ्जलि — शाब्दिक अर्थमे "न्यायरूपी फूलक अञ्जलि" — ईश्वरक अस्तित्वक पक्षमे भारतीय परम्पराक सर्वाधिक व्यवस्थित, सर्वाधिक सूक्ष्म आ सर्वाधिक प्रभावशाली दार्शनिक प्रबन्ध मानल जाइत अछि। पाँच स्तबक (फूलक गुच्छ) मे विभक्त ई ग्रन्थ कारिका आ स्वोपज्ञ गद्य-व्याख्याक मिश्रित शैलीमे रचित अछि, आ एकर प्रत्येक पृष्ठ पर पूर्वपक्ष-उत्तरपक्षक द्वन्द्वात्मक नाट्य चलैत अछि जे पछाति गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिमे अपन चरम परिष्कार पबैत अछि।

उदयनाचार्य मिथिलाक विभूति छथि, आ न्यायकुसुमाञ्जलि मिथिलाक माटिमे जनमल चिन्तनक फल अछि, मुदा सहस्राधिक वर्ष धरि ई फल संस्कृतक कोठीमे बन्द रहल — मिथिलाक जनभाषा ओकरा छूबि नहि सकल। गजेन्द्र ठाकुरद्वारा कएल प्रस्तुत मैथिली अनुवाद तेँ केवल एकटा भाषिक स्थानान्तरण नहि; ई अपन बौद्धिक पैतृक सम्पत्तिक घर-वापसी (repatriation) अछि। जे तर्क कहियो मिथिलाकटोलक सभा, पाठशाला आ शास्त्रार्थ-मण्डपमे संस्कृत माध्यमसँ गुंजित होइत छल, ओ आब पहिल बेर व्यवस्थित रूपेँ ओही धरतीक मातृभाषामे बाजि रहल अछि। विदेह-परम्पराक समानान्तर साहित्य आन्दोलनक दृष्टिसँ ई घटना असाधारण अछि, कारण एहिमे अनुवाद उपनिवेश-मुक्तिक, आत्म-पुनराधिकारक कार्य बनि जाइत अछि। अनुवादक इतिहास स्वयं रोचक अछि: प्रथम संस्करण 2004मे आएल, आ 2026क परिवर्धित संस्करण दुइ दशकक परिपक्वताक साक्ष्य दैत अछि — एहन अनुवाद जे बीस वर्ष धरि अनुवादकक संग जीबैत रहल, ओ अनुवाद-कर्म कैँ घटना नहि, प्रक्रिया मानबाक जीवन्त उदाहरण अछि।

मूल न्यायकुसुमाञ्जलि कारिका (पद्य) आ गद्य-विवरणक द्विस्तरीय बुनावटिमे अछि। प्रस्तुत अनुवाद एहि द्विस्तरीयता कैँ एकटा धारावाहिक, अनुच्छेद-बद्ध मैथिली गद्यमे रूपान्तरित करैत अछि, जाहिमे प्रत्येक तर्क-प्रकरण एकटा स्पष्ट मैथिली शीर्षकसँ चिह्नित अछि — "जिज्ञासाक विषयक निरूपण", "सामर्थ्य कैँ स्वतन्त्र सत्ता मानबाक तर्क", "क्षणभंगुरता-विषयक संशयक निराकरण" इत्यादि। ई शीर्षक-प्रणाली आधुनिक पाठकक लेल मानचित्रक काज करैत अछि; शास्त्रीय पाठ जे भूलभुलैया-स्वरूप छैक, ताहिमे ई शीर्षकसभ मील-पाथर जकाँ ठाढ़ अछि।

रोमन याकोब्सनक त्रिविध वर्गीकरणक भाषामे कही तँ एतय तीनू प्रकारक अनुवाद एक्के संग घटित भऽ रहल अछि: अन्तरभाषिक (संस्कृतसँ मैथिली), अन्त:भाषिक (कारिकाक संकेत-सघन सूत्रात्मकता केँ व्याख्या-गद्यक संग मिलाकऽ एकटा विस्तारित स्वत:पूर्ण कथनमे घोरब — मूलक भीतरे जे टीका-स्तर छल, से अनुवादमे अवशोषित भऽ गेल अछि), आ एक अर्थमे अन्तरसांकेतिक (पद्यक लय-संकेतसँ गद्यक तर्क-संकेतमे माध्यमान्तरण) ।

२. पुस्तकक सम्पूर्ण वास्तु: अनुवादसँ बहुस्तरीय ज्ञान-ग्रन्थ धरि

पुस्तकक रचना साधारण “भूमिका–अनुवाद–ग्रन्थसूची” प्रकारक नहि अछि। पहिल दस अध्याय अनुवादक विभिन्न अवस्थामे भेल आलोचनात्मक, साहित्यशास्त्रीय, दार्शनिक आ अनुवादशास्त्रीय मूल्याङ्कनक क्रमिक अभिलेख जकाँ उपस्थित अछि। अध्याय ११मे पाँचू गुच्छक मैथिली अनुवाद अछि। अध्याय १२मे विस्तृत ग्रन्थसूची अछि। तकर बाद अङ्ग्रेजीमे एहि सम्पूर्ण अनुसन्धान-सामग्री आ अनूदित पाठक समानान्तर प्रस्तुति देल गेल अछि। अङ्ग्रेजीखण्ड अपन पृथक् प्रकाशन-सूचना आ अनुक्रमसँ शुरू होइत अछि।

ई संरचना एक दिस असाधारण रूपसँ समृद्ध अछि, कारण पाठक केँ अनूदित ग्रन्थक संग-संग ओकर व्याख्या, सिद्धान्त, आलोचना, पृष्ठभूमि आ तुलनात्मक अध्ययन सभ भेटैत अछि। दोसर दिस, एतेक सामग्री एकहि जिल्दमे रहने एकटा सम्पादकीय समस्या सेहो उत्पन्न करैत अछि: आरम्भिक अध्यायसभ कखनो ओहि अवस्थाक समीक्षा छथि जखन अनुवाद पूर्ण नहि छल, मुदा पछिला अध्यायसभ पाँचू गुच्छ पूर्ण भऽ गेलाक बाद लिखल गेल छथि। उदाहरणार्थ एक ठाम चारिम-पाँचम स्तबक “प्रतीक्षित” कहल गेल अछि, मुदा पछिला समग्र अध्ययन स्पष्ट करैत अछि जे पाँचू गुच्छ पूर्ण उपलब्ध अछि।

एहि कारण पुस्तकक अन्तिम अकादमिक स्वरूपमे आरम्भिक अध्यायसभकेँ “अनुवाद-निर्माणक अमुक अवस्था पर लिखल समीक्षा” कहि तिथि अथवा संस्करण-संकेत देब अत्यन्त आवश्यक अछि। एना कएलासँ जे बात एखन विरोधाभास जकाँ बुझाइत अछि, से वास्तवमे अनुवादक बाइस वर्षक विकास-यात्राक मूल्यवान अभिलेख बनि जाएत।

३. अनुसन्धानात्मक अध्यायसभक क्रमिक आलोचनात्मक विकास

अध्याय १: पहिल विस्तृत समीक्षा — अनुवादक साहित्यिक आ भाषिक आत्मबोध

अध्याय १ ग्रन्थ, ग्रन्थकार, अनुवादक आ ऐतिहासिक अवस्थिति सँ शुरू होइत अछि। उदयनाचार्य केँ प्राचीन न्यायसँ नव्य-न्यायदिस संक्रमणक महत्त्वपूर्ण बिन्दु मानि, ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ क पाँच-स्तबकीय स्वरूप आ कारिका-सहित स्वोपज्ञ गद्य-व्याख्याक संरचना रेखाङ्कित कएल गेल अछि।

एहि अध्यायक सर्वाधिक सफल अंश मंगलाचरणक श्लेष-विवेचन अछि। मूलमे फूल आ न्याय-सिद्धान्त एक्के शब्द-समूहक द्वि-अर्थक रूपमे आबैत अछि। अनुवाद एकर समाधान “फूलक अर्थमे” आ “न्याय-सिद्धान्तक अर्थमे” दू स्तर खोलिकऽ करैत अछि। शुद्ध काव्यानुवादक दृष्टिसँ एक्के क्षणमे फूटनिहार श्लेषक चमत्कार एना दू भागमे विभाजित अवश्य भऽ जाइत अछि; मुदा शास्त्रीय अनुवादक दृष्टिसँ कोनो अर्थ हराइतनहि। ई निर्णय एहि सम्पूर्ण अनुवाद-पद्धतिक प्रतिनिधि उदाहरण अछि: चमत्कारक किछु हानि स्वीकार कऽ अर्थक सम्पूर्णता बचाएब।

“दबाओल गेलो पर फूल नहि मुरझाइत” सन बिम्बक व्याख्यामे फूलक विरोधाभासी दृश्य आ तर्कक अखण्डनीयताक संकेत एकहि ठाम देखाओल गेल अछि। एहि आधारपर अध्याय श्लेष, वक्रोक्ति आ ध्वनिक सफल अध्ययन करैत अछि।

रस-विवेचनमे शान्त रस केँ मूल प्रवाह मानल गेल अछि, मुदा शास्त्रार्थक टकराहटिमे वीरक एक विशेष “तर्कवीर” रूप आ सूक्ष्म तर्कक बौद्धिक आश्चर्यमे अद्भुतक उपस्थिति देखाओल गेल अछि। ई व्याख्या शास्त्रक गद्यपर काव्यशास्त्र लागू करबाक सर्जनात्मक प्रयास अछि। एतय सावधानी एतबे चाही जे रसक ई प्रयोग नाटक वा महाकाव्यक प्रत्यक्ष रसानुभव जकाँ नहि, बल्कि दार्शनिक गद्यक सौन्दर्यात्मक प्रभाव बुझबाक व्याख्यात्मक उपकरणक रूपमे ग्रहण कएल जाए।

औचित्य-विचारमे अध्याय अनुवादक द्विस्तरीय शब्दनीति ठीक पकड़ैत अछि। हेतु, साध्य, व्याप्ति, उपाधि, समवाय, प्रतियोगी, अन्वय-व्यतिरेक जकाँ पारिभाषिक पद अक्षुण्ण राखल गेल; दोसर दिस “खरहाक सींग” जकाँ उदाहरण पाठकक निकट मैथिली भाषाभूमिमे उतारल गेल। पछिला समग्र अध्ययन सेहो एहि द्विस्तरीय नीति केँ अनुवादक प्रमुख उपलब्धि मानैत अछि।

रीति आ वाक्यलयक विवेचनमे “जँ–तँ”, “तैँ”, “मुदा”, “अतः” आदि मैथिली संयोजकसभ द्वारा संस्कृत तर्क-वाक्यक कारण–परिणाम-सम्बन्ध केँ पुनर्गठित करबाक क्षमता देखाओल गेल अछि। ई उचित निरीक्षण अछि। एहि अनुवादक वास्तविक भाषिक उपलब्धि संस्कृतक वाक्य रचनाक नकल करब नहि, बल्कि मैथिलीक अपन तर्क-वाक्य विकसित करब अछि।

भर्तृहरि, शब्द-प्रमाण आ अनुवादक आत्म-सन्दर्भिताक चर्चा विशेष रोचक अछि। जखन ग्रन्थ शब्द केँ स्वतन्त्र ज्ञान-साधन मानैत अछि, तखन अनुवाद स्वयं शब्दार्थ, वाक्यार्थ, वक्ता, तात्पर्य आ बोधशक्ति पर विचार करैत पाठ बनि जाइत अछि। एकरा अनुवाद-सिद्धान्तक भारतीय अन्तःस्रोतसँ जोड़बाक प्रयत्न अध्यायक मौलिकता अछि।

पाश्चात्य खण्डमे बाख्तिनक बहुस्वरता, श्लायरमाखर-गादामरक व्याख्याशास्त्र, नाइडा, वेनुती, बेन्यामिन, स्टाइनर, स्कोपस, लफ़ेव्रे, बहु-प्रणाली, इज़र आदि द्वारा पाठ केँ पढ़ल गेल अछि। ई तुलनासभ उपयोगी अछि, मुदा सभठाम ई स्पष्ट रहबाक चाही जे आधुनिक सिद्धान्त उदयनाचार्यक “ऐतिहासिक स्रोत” नहि, आधुनिक पाठकीय व्याख्याक उपकरण छथि।

अध्याय १क एकटा महत्त्वपूर्ण सीमा स्वयं ओकर ऐतिहासिक अवस्थिति अछि: ई ओहि समयक समीक्षा अछि जखन चारिम आ पाँचम गुच्छ पूर्ण अनुवादमे सम्मिलित नहि छल। अतः एहि अध्यायकेँ वर्तमान सम्पूर्ण ग्रन्थक अन्तिम निर्णय नहि, बल्कि अनुवाद-निर्माणक पहिल आलोचनात्मक पड़ाव मानल जाए।

अध्याय २: उत्तरार्धक दार्शनिक वास्तु आ तर्कक गहनता

अध्याय २क संरचना अधिक सघन अछि। एहिमे समीक्ष्य अंशक ग्रन्थीय स्थान, दार्शनिक वास्तु, भारतीय काव्यशास्त्र, नव्य-न्यायदृष्टि, पाश्चात्य दर्शन, अनुवाद-सिद्धान्त, भाषा-शैली, सीमा आ उपसंहार अछि। अनुक्रममे ई पूरा विन्यास स्पष्ट देल अछि।

पहिल अध्याय जतय अनुवादक साहित्यिक-भाषिक प्रकृति पर अधिक केन्द्रित छल, दोसर अध्याय तर्कक गहन संरचना पर अधिक बल दैत अछि। विशेषतः तेसर गुच्छक पछिला भाग, प्रमाणक संख्या, शब्द-प्रमाण, अन्वित अर्थ, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि; तकर बाद ज्ञातता-विवाद आ ईश्वर-सिद्धिदिस गमन—एहि सम्पूर्ण क्रम केँएकटा वास्तुक रूपमे देखबाक क्षमता अध्याय २क विशेषता अछि।

नव्य-न्याय दृष्टिसँ उदयनसँ गङ्गेश धरिक सेतुक चर्चा पुस्तकक व्यापक उद्देश्यसँ मेल खाइत अछि। मुदा ई सेतु “सीधा सिद्धान्तगत वंशानुक्रम” कहबाक बदला बौद्धिक पूर्वपीठिका मानल जाए—एहन सावधानी ऐतिहासिक विश्लेषण केँ अधिक कठोर बनाओत।

अनुवाद-सिद्धान्तक दृष्टिसँ अध्याय २ ई बुझबाक प्रयास करैत अछि जे मूलक सूत्र-सघनता मैथिलीमे व्याख्यात्मक प्रसार किएक पबैत अछि। एहि प्रसारकेँ केवल “अधिक शब्द” कहि दोष देब उचित नहि; न्यायशास्त्रक आधुनिक मातृभाषिक पाठक लेल प्रसङ्ग, पूर्वपक्ष आ उत्तर स्पष्ट करब अनुवादक प्रयोजनक अंग अछि। मुदा एतहि अनुवाद आ भाष्यक सीमा चिह्नित करब जरूरी भऽ जाइत अछि—ई समस्या पुस्तकक अनेक अध्यायमे फेर उठैत अछि।

अध्याय ३: सभसँ व्यापक आरम्भिक आलोचनात्मक परीक्षण

अध्याय ३ पहिल चरणक सभसँ व्यवस्थित समीक्षा थिक। एहिमे समीक्षा-सार, पद्धति, ग्रन्थक दर्शन-शास्त्र-साहित्यात्मक स्वरूप, पाठ-संरचना, भारतीय साहित्यशास्त्र, पाश्चात्य सिद्धान्त, भारतीय आ आधुनिक अनुवाद-परम्परा, चयनित खण्डक निकट-पाठ, भाषा-शैली, सम्पादकीय उपकरण, तुलनात्मक मूल्याङ्कन आ संशोधित आलोचनात्मक संस्करणक अनुशंसा सम्मिलित अछि।

भारतीय साहित्यशास्त्रीय खण्डमे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, गुण, रीति, औचित्य, अलङ्कार आ दृष्टान्त सभक पृथक् विवेचन भेल अछि। ई अध्यायक एकटा पैघ गुण अछि जे ई ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ केँ केवल ईश्वर-सिद्धिक तर्कपुस्तक नहि मानैत; ओकर शीर्षक, फूलक बिम्ब, संवाद-विन्यास, पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष, उदाहरण आ समापन-प्रार्थनाक सौन्दर्यगत भूमिका सेहो चिन्हैत अछि।

पाश्चात्य खण्ड अरस्तूवादी तर्क-वक्तृत्वसँ रूसी रूपवाद, नव-समीक्षा, संरचनावाद, बाख्तिनीय संवादवाद, व्याख्याशास्त्र, पाठक-प्रतिक्रिया आ विखण्डन धरि जाइत अछि। व्यापकता प्रभावशाली अछि, मुदा एतय अध्यायक कमजोरी सेहो छैक: एकहि पाठपर बहुत सिद्धान्त एकैबेर लगाओल गेलासँ कतहु-कतहु सिद्धान्तक नाम स्वयं विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि। चयनित दू-तीन सिद्धान्तक अधिक गहन प्रयोग कखनो दस सिद्धान्तक संक्षिप्त प्रयोगसँ अधिक फलदायी होइत।

अनुवाद-सिद्धान्तमे नाइडा, न्यूमार्क, स्कोपस, देशीकरण–विदेशीकरण, कॅटफोर्ड, टूरी, बहु-प्रणाली, बर्मन आ स्टाइनरक कसौटी सभ लगाओल गेल अछि। एहि बहुविध परीक्षणसँ एकटा बात स्पष्ट उभरैत अछि—अनुवाद न पूर्ण देशीकृत अछि, न पूर्ण संस्कृताभिमुख; तकनीकी कोश संस्कृतपरम्परासँ आबैत अछि, मुदा तर्क-वाक्य आ उदाहरण मैथिली पाठक दिस मुड़ैत अछि।

“अकस्मात्” क चार अर्थ, अभावक कारणता, सांख्य-चार्वाक-बौद्ध पक्ष, प्रामाण्य, शब्द-अनित्यता, अग्रहण-अनस्तित्व, अनुमान-उपाधि, उपमान-शब्द आ अन्वितार्थ—एहि प्रतिनिधि स्थलसभक निकट-पाठ अध्यायकेँ वास्तविक आलोचनात्मक धरातल दैत अछि; केवल सिद्धान्तक नामक प्रदर्शनसँ बचबैत अछि।

सम्पादकीय खण्ड अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। पुस्तक स्वयं भविष्यक आलोचनात्मक संस्करण लेल मूल संस्कृत पाठ, प्रवाहपूर्ण मैथिली अनुवाद, दार्शनिक व्याख्या, पादटिप्पणी, पारिभाषिक कोश, अनुक्रमणिका आ डिजिटल समानान्तर दृश्यक पृथक् व्यवस्था सुझबैत अछि। ई अनुशंसा एखनहुँ सम्पूर्ण पुस्तकक सर्वाधिक उपयोगी सम्पादकीय दिशा अछि।

मुदा अध्याय ३ सेहो आंशिक पाठक अवस्था सँ सम्बद्ध अछि। अतः जतय ओ “अधूरापन” पर टिप्पणी करैत अछि, ओ वर्तमान पूर्ण अनुवादक दोष नहि, पूर्वावस्थाक दस्तावेज अछि।

अध्याय ४: कठोर आत्मालोचनाक अध्याय

अध्याय ४ भारतीय आ पाश्चात्य साहित्यिक तथा अनुवाद-सिद्धान्तक आलोकमे दोसर विस्तृत समीक्षा अछि। ई रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, अलङ्कार, रीति, गुण, औचित्य, रूपवाद, नव-समीक्षा, संरचनावाद, पाठक-प्रतिक्रिया, व्याख्याशास्त्र, विखण्डन, वक्तृत्वशास्त्र, औपचारिक-कार्यात्मक समानता, अर्थप्रधान-संप्रेषणप्रधान अनुवाद, देशीकरण-विदेशीकरण, स्कोपस, अनुवादकीय विस्तार, पारिभाषिकता, मैथिली भाषाक गुणवत्ता, पुनरावृत्ति, सम्पादकीय त्रुटि, विचारधारा, उपलब्धि, सीमा, प्रकाशनपूर्व सुधार आ मूल्याङ्कन धरि जाइत अछि।

एहि अध्यायक विशेषता ओकर प्रशंसासँ अधिक आत्मालोचनात्मक कठोरता अछि। पुरान अवस्थामे ओ दू शीर्षकक अनुचित विलय, अन्तिम वाक्यक अपूर्णता, उद्धरण-स्रोतक अस्पष्टता आ लेखक-भाष्यकार-अनुवादकक आवाजक सीमा अस्पष्ट रहबाक प्रश्न उठबैत अछि। पुरान मूल्याङ्कन-सारणीमे दार्शनिक सम्प्रेषण आ तर्क-क्रम केँ उच्च, मुदा आलोचनात्मक सम्पादकीय उपकरण आ तत्काल प्रकाशन-तत्परता केँ अपेक्षाकृत कम अंक देल गेल छल।

वर्तमान पूर्ण ग्रन्थक सन्दर्भमे एहि निर्णयकेँ हूबहू अन्तिम निर्णय मानब उचित नहि, कारण पछिला अध्याय स्वयं पूर्ण पाँच-गुच्छीय पाठक घोषणा करैत अछि। एहि अध्यायकेँ पाठ-संशोधनक ऐतिहासिक निरीक्षण-पत्रक रूपमे राखल जाए तँ एकर मूल्य बहुत बढ़ि जाइत अछि। ई पाठक केँ देखबैत अछि जे ग्रन्थ अन्तिम रूप धरि कोना पहुँचल।

अध्याय ५: मैथिली भाषा, इतिहास, लिपि, संस्था आ आधुनिकता

अध्याय ५ केवल ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ क पाठालोचना नहि, मैथिली भाषाक व्यापक सामाजिक-बौद्धिक परिसरसँ एहि अनुवादकेँ जोड़ैत अछि। एहिमे मैथिलीक ऐतिहासिक अवस्थिति, जनसांख्यिक विस्तार, भाषिक संरचना, ध्वनिविज्ञान, “नल-सब्जेक्ट” व्याकरण, उपभाषा आ मानकीकरण, आधुनिक डिजिटल भाषिक तकनीक, मिथिलाक्षर/तिरहुता, युनिकोड, दार्शनिक परम्परा, विदेह, समानान्तर साहित्य आन्दोलन, शैक्षणिक संस्था आ आधुनिक प्रसारक चर्चा अछि। भाषिक इतिहासक प्रसङ्गमे वर्णरत्नाकर, विद्यापति आदि सेहो आबैत छथि।

एहि अध्यायक बौद्धिक उद्देश्य स्पष्ट अछि: ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ क अनुवादकेँ एकटा पृथक् पुस्तक नहि, मैथिली भाषाक आधुनिक ज्ञानक्षमता बढ़ेबाक व्यापक परियोजनाक अंग मानब। विदेह आ समानान्तर साहित्य आन्दोलनक चर्चा सेहो एही ढाँचामे अछि।

ई विस्तार महत्त्वपूर्ण अछि, मुदा एहि अध्यायमे सभसँ अधिक स्रोत-सावधानी आवश्यक अछि। जनसङ्ख्या, विश्वविद्यालयीय पाठ्यक्रम, युनिकोड, संस्था, आधुनिक डिजिटल भाषिक तकनीक, डिजिटल परियोजना आदि परिवर्तनीय तथ्य छथि। ताहि लेल प्रत्येक एहन तथ्यक संग स्पष्ट वर्ष, स्रोत आ पादटिप्पणी रहबाक चाही। अन्यथा ग्रन्थक स्थायी दार्शनिक भागक बीच काल-विशिष्ट सूचना शीघ्र पुरान भऽ सकैत अछि।

दार्शनिक भागमे श्लेष-वक्रोक्ति, पाँच नास्तिक आपत्ति, मीमांसक अदृष्ट-सामर्थ्य, सांख्य, चार्वाक, बौद्ध क्षणभंगवाद, शब्द-प्रमाण आ पाश्चात्य सिद्धान्तक सम्बन्ध देल अछि। अध्याय एतय भाषा-इतिहास आ दर्शनकेँ जोड़ैत अछि, मुदा संरचनात्मक दृष्टिसँ एकरा दूपृथक् अध्याय—“मैथिली भाषा-इतिहास” आ “अनुवादक दार्शनिक महत्त्व”—मे बाँटला पर अधिक सघनता आबि सकैत छल।

अध्याय ६: ज्ञानमीमांसा आ ईश्वर-सिद्धिक दार्शनिक गहिराइ

अध्याय ६ पुस्तकक विशुद्ध दार्शनिक अध्यायसभमे प्रमुख अछि। एहिमे अन्विताार्थवाद, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, ज्ञानक प्रामाण्य, ज्ञातता, ईश्वरक सर्वज्ञता, ईश्वर-सिद्धिक आठ हेतु, वैदिक विधि आ प्रेरक शक्ति, योगिक प्रत्यक्ष तथा तर्क-आस्थाक सम्बन्धक विश्लेषण अछि। अध्याय स्वयं अन्विताार्थवाद, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि आ ज्ञातता-विवादकेँ ईश्वरसिद्धिक पूर्वपीठिका बनबैत अछि।

एतय पुस्तकक एकटा महत्त्वपूर्ण दार्शनिक गुण स्पष्ट होइत अछि: ईश्वर-सिद्धि पाँचम गुच्छमे अचानक शुरू नहि होइत। पहिल चारि गुच्छमे कारणता, प्रमाण, भाषिक बोध, अभाव, प्रामाण्य, ज्ञातता, जगत् आ ज्ञानक एहन सिद्धान्त तैयार होइत अछि जाहिपर पाँचम गुच्छक सकारात्मक अनुमान ठाढ़ भऽ सकय। अतःपाँचम गुच्छ केँ अलग “ईश्वरक आठ प्रमाण” क सूची मात्र मानब ग्रन्थक वास्तु बुझब नहि होएत।

अन्विताभिधानवादक प्रतिवादमे शब्दक स्वतन्त्र अर्थबोध आ वाक्यगत अन्वयक प्रश्न अनुवादक लेल सेहो आत्मसन्दर्भी भऽ उठैत अछि। अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक स्वतन्त्र प्रमाणत्वक विरोध न्याय-मिमांसक मतभेदक केन्द्रीय प्रश्न बनैत अछि।

ज्ञातताक खण्डन अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। जँ यथार्थ ज्ञान लेल प्रत्येक बेर “नवीनता” अथवा बाह्य ज्ञातता-धर्म आवश्यक मानल जाए तँ नित्य सर्वज्ञ ईश्वरक ज्ञान समस्या बनि सकैत अछि। चौथ गुच्छ एहि अड़चन केँ हटबैत पाँचम गुच्छ लेल ज्ञानमीमांसीय भूमि तैयार करैत अछि।

ईश्वर-सिद्धिक आठ आधार—कार्य, आयोजन, धृति, पद, प्रत्यय, श्रुति, वाक्य आ संख्या—पुस्तकक दार्शनिक चरम-बिन्दु छथि। अध्याय ६क एकटा सकारात्मक गुण ई अछि जे ई सभ आठ केँ एकहि प्रकारक तर्क नहि मानैत; किछु कारणतत्त्वपर, किछु परमाणु-संयोजनपर, किछु भाषा-संकेतपर, किछु ज्ञानक प्रामाण्यपर, किछु वैदिक वाक्यपर आश्रित अछि।

आधुनिक तुलनाक उपयोग करैत काल सावधानी चाही। “विश्वोत्पत्तिक तर्क”, “भाषिक तर्क”, “प्राकृतिक धर्मदर्शन” आदि आधुनिक नाम पाठक लेल उपयोगीपुल छथि, मुदा उदयनक तर्कक ऐतिहासिक अर्थकेँ यूरोपीय धर्म दर्शनक श्रेणीमे पूर्णतः विलीन नहि करबाक चाही।

अध्याय ७: उदयनाचार्य, टीका-परम्परा आ भारतीय ईश्वर-विमर्श

अध्याय ७ शोध-प्रस्तावना, उदयनाचार्यक जीवन आ मिथिलाक न्याय परम्परा, ग्रन्थीय संरचना, स्तबक-कारिकाक संख्या, पाँच विप्रतिपत्ति, पाँचू स्तबक, टीका-भाष्य-परम्परा, ऐतिहासिक अनुवाद, नारायण शास्त्री द्रविड़क अध्ययन, नव्य-न्यायपर प्रभाव आ निष्कर्ष समेटैत अछि। टीका-परम्परा आ द्रविड़क अध्ययनक पृथक् खण्ड अनुक्रममे स्पष्ट अछि।

ई अध्याय पुस्तकक ग्रहण-इतिहास तैयार करैत अछि। अनुवाद केँ केवल वर्तमान भाषिक कृत्य नहि, अनेक संस्कृत टीका, आधुनिक सम्पादन आ अनुवादक शृङ्खलामे राखब एकर महत्त्वपूर्ण अकादमिक उपलब्धि अछि।

मुदा जीवनी, कालनिर्धारण, कारिका-सङ्ख्या आ संस्करणभेद सन विषय पर स्रोत-पादटिप्पणी अत्यन्त आवश्यक अछि। पुस्तकक एक अंश ७२ वा ७३कारिकाक विकल्पक उल्लेख करैत अछि। एहन भेदक कारण, कोन संस्करणमे कोन गणना, आ कोन कारिका संयुक्त वा पृथक् गनल गेल अछि—ई आलोचनात्मक संस्करणमे स्पष्ट होयबाक चाही।

अध्याय ७क मूल्य एहि बातमे अछि जे ई मैथिली अनुवाद केँ आधुनिक स्वतन्त्र प्रयास मानितो ओकर पाछाँक दीर्घ टीका-परम्परा नहि विसरैत।

अध्याय ८: समेकित दार्शनिक, भाषिक आ सांस्कृतिक अध्ययन

अध्याय ८ ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ आ ओकर मैथिली अनुवादक एकटा व्यापक समेकित अध्ययन अछि। एहिमे नव्य-न्याय पृष्ठभूमि, मैथिलीक ऐतिहासिक-सामाजिक अवस्थिति, पाँच विप्रतिपत्ति, पाँचू स्तबक, ईश्वर-सिद्धिक आठ हेतु, न्याय-मिमांसक प्रमाण-विवाद, अन्विताार्थवाद, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, अनुवादक भाषिक-दर्शनात्मक महत्त्व, भारतीय साहित्य-सिद्धान्त, पाश्चात्य अनुवाद-सिद्धान्त, समानान्तर साहित्य आन्दोलन आ डिजिटल रूपान्तरण सभ एकत्र भेल अछि।

एहि अध्यायक निष्कर्ष उदयनक कृतिकेँ धार्मिक घोषणाक बदला कठोर तर्क, ज्ञानमीमांसा आ वाद-विवादपर आधारित ईश्वर-विमर्श मानैत अछि; आठ हेतु कार्यात्, आयोजनात्, धृत्यादेः, पदात्, प्रत्ययतः, श्रुतेः, वाक्यात् आ संख्याविशेषाच्च धरि क्रमबद्ध करैत अछि।

एहि अध्यायक सीमा पुनरावृत्ति अछि। अध्याय ५–७मे जे सामग्री अलग-अलग विस्तार पबैत अछि, अध्याय ८ ओकर समेकित पुनर्पाठ करैत अछि। जँ पुस्तक शोध-प्रबन्धक रूपमे व्यवस्थित हो, तँ एहि अध्यायकेँ "समग्र संश्लेषण" कहि चिह्नित करब आवश्यक अछि; अन्यथा पाठक केँ एकहि विषय बारम्बार आबि रहल बुझा सकैत अछि।

अध्याय ९: पाँचू गुच्छपर आधारित पहिल वास्तविक समग्र समीक्षा

अध्याय ९ पुस्तकक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण मोड़ अछि। एतय स्पष्ट रूपसँ पाँचू गुच्छ पूर्ण पाठक आधारपर अध्ययन कएल गेल अछि। अध्याय स्वयं कहैत अछि जे आरम्भिक मंगलाचरणसँ अन्तिम पुष्पाञ्जलि धरि पूर्ण पाठ उपलब्ध भेलापर मात्र तर्कक अखण्ड प्रवाह, रूपक-विधान आ भाषिक नीति केँ आद्योपान्त जाँचब सम्भव भेल।

एहि अध्यायक तर्क-मानचित्र विशेष सफल अछि: पहिल गुच्छ कारणता, अदृष्ट आ आत्माक नित्यता; दोसर प्रामाण्य, शब्दक अनित्यता आ सृष्टि-प्रलय; तेसर अनुपलब्धि, प्रमाण-मीमांसा आ शब्द-विमर्श; चारिम प्रमा आ ईश्वरक नित्य ज्ञान; पाँचम ईश्वर-साधक प्रमाण आ पुष्पाञ्जलि।

एहि अध्यायमे मंगलाचरणक श्लेष, शान्त रसक अधीन तर्कवीर, अलङ्कार, औचित्य, वक्रोक्ति; पाश्चात्य पक्षमे तर्कप्रधान धर्मदर्शन, बाख्तिनीय बहुस्वरता, गादामरी क्षितिज-संगम, रूपवाद आ नव-समीक्षा; अनुवादशास्त्रमे नाइडा-न्यूमार्क, वेनुती-बर्मन, स्कोपस-टूरी; भाषा-शैलीमे पारिभाषिक शब्दावली आ लोक-कोष—सभक सुव्यवस्थित परीक्षण अछि।

एहि अध्यायक सभसँ महत्त्वपूर्ण अकादमिक सद्गुण पद्धतिगत विनय अछि। अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड स्पष्ट कहैत अछि जे अध्ययन लक्ष्य-पाठ—मैथिली अनुवाद—पर केन्द्रित अछि; संस्कृत मूलक पङ्क्ति-दर-पङ्क्ति मिलान एकर क्षेत्र नहि, अतः शब्दस्तरीय मूलनिष्ठाक अन्तिम प्रमाणपत्र देब सम्भव नहि। लक्ष्य-पाठक आन्तरिक संगति आ स्रोत-निष्ठा दू पृथक् कसौटी मानल गेल अछि। ई स्वीकारोक्ति एहि सम्पूर्ण पुस्तकक विद्वत्तापूर्ण विश्वसनीयता बढ़बैत अछि।

अध्याय १०: सम्पूर्ण ग्रन्थक केन्द्रीय अनुसन्धानात्मक शिखर

अध्याय १० एहि पुस्तकक सर्वाधिक सुव्यवस्थित, सर्वाधिक परिपक्व आ सर्वाधिक उपयोगी अकादमिक खण्ड अछि। ई वास्तवमे एकटा स्वतन्त्र शोधग्रन्थ जकाँ अछि।

एहि अध्यायमे आधार-पाठ, शोध-निवेदन, शोध-सार, बीजशब्द, पद्धति, ऐतिहासिक-पाठपरम्परागत अवस्थिति, "कुसुमाञ्जलि" रूपक, पाँच मूल संशय, पाँचू गुच्छक तर्क, वाद-पद्धति, प्रमाणमीमांसा, अभाव-अर्थापत्ति-अनुपलब्धि, आत्मा-परमाणु-अदृष्ट-सृष्टि-प्रलय, पद-वाक्य-तात्पर्य-विधि, ईश्वरक स्वरूप, प्रतिपक्षसभक न्यायोचित प्रस्तुति, भारतीय काव्यशास्त्र, आधुनिक व्याख्याशास्त्र, तुलनात्मक दर्शन, अनुवाद-पद्धति, भाषा-शैली, सम्पादन-विन्यास, बारह प्रतिनिधि स्थल, मैथिली ज्ञान-परम्परामे कृतिक महत्त्व, निष्कर्ष, भावी शोध आ पाँच परिशिष्ट सम्मिलित अछि। एहि व्यापक विषयविन्यासक मूल रूप पुस्तकमे स्पष्ट अछि।

पाँचू गुच्छक दार्शनिक एकता

अध्याय १०क मुख्य उपलब्धि ई अछि जे ओ पाँच स्तबक केँ पाँच पृथक् निबन्ध नहि मानैत, एकटा आरोही तर्क-यात्राक रूपमे पढ़ैत अछि।

पहिल गुच्छ कारणता, कर्मफल, आत्मा आ क्षणिकवादक समस्या सँ प्रारम्भ करैत अछि। दोसर प्रामाण्य, शब्द-अनित्यता आ सृष्टि-प्रलय द्वारा ज्ञान आ परम्पराक आधार जाँचैत अछि। तेसर ईश्वर-अभावक अनुमान, अनुमान-विरोधक आत्मविरोध, उपमान, शब्द, अन्विताभिधान, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धिक समीक्षा करैत अछि। चारिम प्रमा, स्मृति आ ज्ञातता-विवाद द्वारा नित्य सर्वज्ञ ज्ञानक सम्भावना सुरक्षित करैत अछि। पाँचम कार्य, आयोजन, धृति, पद, प्रत्यय, श्रुति, वाक्य आ संख्या द्वारा सकारात्मक ईश्वरानुमान करैत अछि। पुस्तक स्वयं एहि अनुक्रमकेँ एही रूपमे संक्षेपित करैत अछि।

अध्याय १० एहि दार्शनिक एकताकेँ सर्वाधिक स्पष्ट करैत अछि। एहि कारण पाठक केँ ई बुझाइत अछि जे 'न्यायकुसुमाञ्जलि' क चरम "ईश्वर अछि" कहबाक घोषणा नहि, बल्कि ई प्रश्न अछि जे कारण, ज्ञान, भाषा, संख्या, प्रमाण आ नैतिक व्यवस्था कोन प्रकारक तत्त्वमीमांसा माँगैत अछि।

तर्क-पद्धति

पूर्वपक्ष कें पूरा बलसँ उपस्थित करब, तकर परिणाम देखाएब, दोष चिह्नित करब, प्रतितथ्यात्मक परिस्थिति मानि ओकर परिणाम जाँचब आ अन्ततः आत्मविरोध धरि पहुँचेब—ई उदयनक पद्धतिक महत्त्वपूर्ण रूप अध्याय १० ठीक पकड़ैत अछि।

विशेष रूपसँ चार्वाकक अनुमान-विरोध: जँ सभ अनुमान अस्वीकार्य, तखन अनुमानक अस्वीकार स्वयं कोना सर्वमान्य ठहरत? एहि प्रकारक व्यवहारिक आत्मविरोध आधुनिक पाठक लेल बहुत प्रभावी होइत अछि।

अभाव आ अनुपलब्धि

अभावक प्रतियोगी, अनुपलब्धिक स्वरूप, अर्थापत्तिक अनुमानमे अन्तर्भाव आ अनुपलब्धिक स्वतन्त्र प्रमाणत्वक अस्वीकार—ई सूक्ष्म प्रश्नसभ अध्याय १०मे व्यवस्थित अछि। एहिमे आधुनिक सरल भाषा उपयोगी अछि, मुदा मूल पारिभाषिक संस्कृत पदक समानान्तर सूची रहितय तँ शोधार्थी लेल आरो उपयोगी होइत।

तत्त्वमीमांसा

आत्माक स्थायित्व, अदृष्ट आ नैतिक कारणता, परमाणु आ सृष्टि-प्रलयक विवेचनक एकटा विशेष गुण ई अछि जे अध्याय आधुनिक विज्ञानसँ अनुचित एकरूपता करबाक विरुद्ध सावधानी सेहो देत अछि। अदृष्ट कें“अज्ञात चमत्कार” क बदला कर्म आ फलकें जोड़निहार कारणसूत्रक रूपमे व्याख्यायित कएल गेल अछि; परमाणु-विचार कें आधुनिक परमाणुविज्ञानक बराबर ठहराएब ऐतिहासिक भूल मानल गेल अछि। ई विवेक प्रशंसनीय अछि।

भाषादर्शन

पद, वाक्य, तात्पर्य, विधि, शब्दार्थ, वाक्यार्थ आ लेखकत्वक प्रश्न पुस्तकक अनुवादकीय परियोजनासँ प्रत्यक्ष जुड़ैत अछि। शब्दक स्वतन्त्र बोधशक्ति, तात्पर्यक भूमिका, वाक्यक अन्वय आ विधि-वाक्यक प्रेरणा—ई सभ केवल प्राचीन मिमांसा-विवाद नहि, अनुवादक दैनिक निर्णयक आधार सेहो बनैत अछि।

परिशिष्ट

पाँचू गुच्छक विषय-मानचित्र, तर्क-दोषक लघुकोश, चयनित पारिभाषिक शब्दकोश, शोधार्थी प्रश्नावली आ पाठ-स्रोत/उद्धरण-नीति—ई परिशिष्ट अध्याय १० कें सामान्य आलोचना सँ विश्वविद्यालयीय अध्ययन-सामग्रीक स्तरपर लऽ जाइत अछि। भविष्यक संस्करणमे एहि परिशिष्टसभकें अझ विस्तारित कऽ पुस्तकक अन्तमे साझा शोध-उपकरणक रूपमे देल जाए तँ उपयोगिता बहुत बढ़त।

अध्याय ११: सम्पूर्ण मैथिली अनुवाद

ई पुस्तकक केन्द्रबिन्दु अछि। पहिल दस अध्याय एहि पाठक चारूकात आलोचनात्मक परिधि निर्मित करैत अछि, मुदा पुस्तकक वास्तविक ऐतिहासिक मूल्य अध्याय ११मे निहित अछि।

४. सम्पूर्ण मैथिली अनुवादक पाँच फूलक गुच्छ: तर्कक अखण्ड यात्रा

फूलक पहिल गुच्छः कारणता, कर्म, सामर्थ्य, आत्मा आ क्षणिकवाद

पहिल गुच्छ मंगलाचरणक विनय-पद्यसँ शुरू होइत अछि। तकर बाद जिज्ञासाक विषय, जिज्ञासाक आवश्यकता, विचारार्थ प्रतिज्ञा, “अकस्मात्” उत्पत्तिक सम्भावना, कारण-कार्य सम्बन्ध, सामान्य-विशेष कारण, अद्वैत आ सांख्यक कारणवाद, अदृश्य कारण, सामर्थ्य, अभावक कारणता, मीमांसक सामर्थ्य-सिद्धान्त, उत्पादित अथवा आरोपित सामर्थ्य, यज्ञक प्रभाव, कर्ताक संस्कार, न्यायमतक सामर्थ्य, सांख्य, चार्वाक, सार्वभौम क्षणभंगुरता, स्थायित्व आ कारणता—सभ क्रमशः आबैत अछि; अन्तमे प्रार्थना अछि।

एहि गुच्छक मूल प्रश्न अछि: जगत् आ अनुभवमे नियमितता किएक अछि? “अकस्मात्” कहि कारणता सँ बचल जा सकैत अछि की नहि? कर्मक फल दूर भविष्य धरि कोना पहुँचैत अछि? आत्मा क्षणिक हो तँ स्मृति, संस्कार, नैतिक फल आ अनुभवक एकता कोना सम्भव?

अनुवाद एहि कठिन तर्कक लेल प्रश्न–उत्तर शैलीक सुन्दर उपयोग करैत अछि। “जँ ई मानि ली तँ…”, “मुदा एतय आपत्ति होइत अछि…”, “एकर उत्तर…” सन मैथिली विन्यास न्यायशास्त्रक तकनीकी अनुक्रम कें वाचिक शास्त्रार्थक सहजता दैत अछि।

मंगलाचरणक द्वि-अर्थ खोलबाक निर्णय एतय पुनः विशेष स्मरणीय अछि। फूलक ताजगी, सुगन्ध, अमरता आ न्याय-सिद्धान्तक प्रमाणिकताक सम्बन्ध स्पष्ट करैत अनुवाद श्लेषक अर्थ-सम्पदा बचबैत अछि।

फूलक दोसर गुच्छः प्रामाण्य, शब्दक अनित्यता, सृष्टि आ प्रलय

दोसर गुच्छ ज्ञानक प्रामाण्यक कारण सँ शुरू होइत अछि। यथार्थ ज्ञानक सत्यता बाह्य कारणसँ ज्ञात होइत अछि की स्वतः—ई प्रश्न न्याय-मिमांसक मतभेदक केन्द्र बनैत अछि। तकर बाद शब्दक अनित्यता सिद्ध करबाक प्रयास, शब्द-परम्परा, उच्चारण, रूपसामान्य, शिक्षक-शिष्य परम्परा, सृष्टि-प्रलय, धर्म-आचार-शिक्षाक क्रमिक ह्रास, स्मृति, अप्राप्य वैदिक विधान, प्रलयमे परम्पराक विच्छेद, नवसृष्टि आ कपिलादि ऋषिक सर्वज्ञता द्वारा शास्त्रप्रवर्तनक मतक आलोचना आबैत अछि। शब्दव्यक्ति अनित्य होइतहुँ अर्थसम्बन्ध परम्परासँ टिकि सकैत अछि—एहि भेदक विवेचन उल्लेखनीय अछि।

ई गुच्छ पहिल गुच्छक कारणमीमांसासँ ज्ञानमीमांसा आ ब्रह्माण्ड मीमांसा दिस संक्रमण करैत अछि। बाह्य रूपेँ विषय बदलल बुझाइत अछि, मुदा अन्तर्सम्बन्ध स्पष्ट अछि: जँ परम्परा अनादि अखण्ड नहि, तँ ज्ञान-व्यवस्थाक पुनःस्थापनक प्रश्न उठैत अछि; ई प्रश्न आगाँ सर्वज्ञ नियामकक आवश्यकता दिस बढ़ैत अछि।

भाषिक दृष्टिसँ ई गुच्छ पहिलक अपेक्षा अधिक सघन अछि। प्रामाण्य-विवेचनमे दीर्घ वाक्य पाठकक ध्यानमाँगैत अछि। स्वयं आरम्भिक समीक्षा एहिठाम चयनात्मक वाक्य-विभाजन उपयोगी मानैत अछि।

फूलक तेसर गुच्छः नास्तिक अनुमान, चार्वाक, उपमान, शब्द, अन्वित अर्थ, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि

तेसर गुच्छ ग्रन्थक प्रमाणमीमांसक केन्द्र अछि। ईश्वरक ज्ञान नहि होएबाक आधारपर अनस्तित्व सिद्ध करबाक तर्क, निषेधक प्रतियोगी, अवास्तविक वस्तु, ईश्वर-अभावक अन्य अनुमान, तकर प्रतिरक्षा-खण्डन, चार्वाकक अनुमान-विरोध, न्याय द्वारा अनुमानक औचित्य, उपमान, मीमांसक आ न्यायमतक मतभेद, वैशेषिक प्रत्यापत्ति, शब्द-प्रमाण, प्रभाकरक वैदिक–लौकिक वाक्यभेद, अन्वित अर्थ, सर्वज्ञ स्रष्टापर शब्दाधारित आपत्ति, अर्थापत्ति आ अनुपलब्धि—ई सभ एकहि बौद्धिक कड़ीमे आबैत अछि। एहि क्रमक सूची पुस्तकमे स्पष्ट अछि।

ई गुच्छ अनुवादक लेल सभसँ कठिन क्षेत्रसभमे एक अछि, कारण “अनुपलब्धि”, “प्रतियोगी”, “विशेष्य”, “व्याप्ति”, “उपमान”, “बोधशक्ति” आदि पदक सूक्ष्म सीमासभ सामान्य पर्यायसँ बदलल नहि जा सकैत अछि। अनुवाद एतय मूल पद बचबैत मैथिली व्याख्यात्मक वाक्य रचैत अछि—ई सही नीति अछि।

चार्वाकक स्वरकेँ हास्यास्पद बना देबाक बदला ओकर तर्क पूरा बलसँ देल गेल अछि। एही कारण उत्तरपक्षक विजय बौद्धिक रूपसँ विश्वसनीय बनैत अछि। बहुस्वरताक दृष्टिसँ पुस्तकक ई सर्वोत्तम स्थलसभमे एक अछि।

फूलक चारिम गुच्छः प्रमा, स्मृति आ ज्ञातता

चारिम गुच्छ आकारमे अपेक्षाकृत छोट मुदा दार्शनिक वास्तुमे अत्यन्त निर्णायक अछि। ज्ञानक स्वरूप, मीमांसक मत, “ज्ञातता” नामक वस्तुगत धर्मक पक्षमे पहिल प्रमाण आ ओकर खण्डन, दोसर प्रमाण आ ओकर खण्डन—ई मुख्य प्रवाह अछि।

एकर महत्त्व पाँचम गुच्छक पूर्वपीठिकाक रूपमे बुझल जाए। जँ ज्ञानक यथार्थता अनिवार्य रूपसँ नवज्ञान, ज्ञातता अथवा ज्ञानोत्तर बाह्य गुणपर निर्भर मानल जाए तँ ईश्वरक नित्य सर्वज्ञ ज्ञानपर कठिनाई उठैत। चारिमगुच्छ एहि बाधाकेँ हटबैत अछि। पुस्तकक समग्र विश्लेषण सेहो स्पष्ट करैत अछि जे चारिम गुच्छ ज्ञातता-खण्डन द्वारा सर्वज्ञक नित्य ज्ञानक वैधता सुरक्षित करैत अछि।

अनुवादक दृष्टिसँ ई अंश बहुत सघन अछि। भविष्यक शोध-संस्करणमे “प्रमा”, “प्रामाण्य”, “ज्ञातता”, “विषयता”, “स्मृति” आदिक परिभाषा प्रथम प्रयोगक समय बगलमे देल जाए तँ पाठकीय भार घटत।

फूलक पाँचम गुच्छः ईश्वर-सिद्धिक आठ हेतु आ तर्कक भक्तिमय परिणति

पाँचम गुच्छ सम्पूर्ण ग्रन्थक चरम अछि। ईश्वरक अस्तित्वक प्रमाण प्रस्तुत आ प्रतिरक्षित कएल जाइत अछि; आपत्ति आ प्रत्युत्तर होइत अछि; नास्तिकक शर्ताधारित प्रतितर्कक आत्मविरोध देखाओल जाइत अछि; परमाणुक प्रथम गति लेल चेतन कारण, विश्वधारण, पद, प्रत्यय, श्रुति, वाक्य, संख्या, विधि, आज्ञा, क्रियाप्रत्यय, प्रयत्न, फलसम्बन्ध, शास्त्रीय वचन, वैदिक शाखाक नामकरण, योगिक प्रत्यक्ष आ ईश्वरप्रत्यक्षक शास्त्रीय समर्थन धरि चर्चा पहुँचैत अछि।

आठ प्रसिद्ध हेतु—कार्य, आयोजन, धृति, पद, प्रत्यय, श्रुति, वाक्य, संख्या—ग्रन्थक मुकुटमणि छथि। मुदा एहि आठकेँ आधुनिक अर्थमे आठ स्वतंत्र “वैज्ञानिक प्रमाण” कहब उचित नहि। ई न्याय-वैशेषिक तत्त्वमीमांसा, भाषादर्शन, ज्ञानमीमांसा आ वैदिक परम्पराक भीतर गढ़ल परस्पर सम्बद्ध अनुमान-समूह छथि।

एहि आठ हेतुक संग्राहक श्लोक अछि: "कार्यायोजनधृत्यादेः पदात् प्रत्ययतः श्रुतेः। वाक्यात् संख्याविशेषाच्च साध्यो विश्वविदव्ययः॥" अर्थात् कार्यत्व, आयोजन, धृति-संहार, पद, प्रत्यय, श्रुति, वाक्य आ संख्याविशेष — एहि आठ मार्गसँ अविनाशी विश्वविद् (सर्वज्ञ) ईश्वरक सिद्धि कएल गेल अछि।

(१) कार्यात्: संसार उत्पादित वस्तु (कार्य) अछि, जेना घट कुम्हारसँ बनैत अछि, तहिना संसारक सेहो एकटा सर्वज्ञ कर्ता होएबाक चाही। नास्तिकक आपत्ति जे कर्ता देहधारी होएबाक चाही, ताहिकेँ उदयनाचार्य "उपाधि" (अनावश्यक शर्त) मानि खण्डित करैत छथि — कार्यत्व सामान्य धर्म अछि, देहधारिता विशेष धर्म, आ ईश्वरक नित्य ज्ञान-इच्छा देहरहित कर्तृत्वकेँ सम्भव बनबैत अछि। (२) आयोजनात्: परमाणुसभक आदिम गति (जड़ वस्तुक गति सदिखन चेतनक प्रेरणासँ होइत अछि) क लेल एकटा चेतन, सर्वज्ञ प्रेरक चाही। (३) धृत्यादेः: ब्रह्माण्डक धारण (गुरुत्वाकर्षण-सन प्राकृतिक नियमकपाछाँ ईश्वरीय धारणकारी प्रयत्न) आ महाप्रलयक संहार-प्रक्रिया लेल चेतन कर्ता आवश्यक अछि। (४) पदात्: भाषा-संकेतक आदिम स्थापना, विशेषतः प्रत्येक सृष्टि-चक्रक आरम्भमे नव जीवसभकेँ भाषा सिखयबाक लेल एकटा आदि-गुरु चाही। (५) प्रत्ययतः: वेदक प्रामाण्य ओकर वक्ताक दोषरहितता सिद्ध करैत अछि, अतः एकटा पूर्णज्ञानसम्पन्न वक्ता चाही। (६) श्रुतेः: वेद वाक्य-समूह अछि, आ वाक्य-समूहक कोनो रचयिता अवश्य होइत अछि; अतीन्द्रिय सत्यक यथार्थ वर्णन केवल सर्वज्ञ ईश्वरे कऽ सकैत छथि। (७) वाक्यात्: वैदिक वाक्यक तात्पर्य वक्ताक अभिप्रायपर निर्भर करैत अछि, आ वेदमे प्रयुक्त प्रथम-पुरुष सर्वनामक सार्थकता एकटा स्वतन्त्र वक्ताक अस्तित्व माँगैत अछि। (८) संख्याविशेषाच्च: द्व्यणुक-त्र्यणुकक परिमाणक व्याख्या "अपेक्षा बुद्धि" (गणना-चेतना) क अस्तित्व माँगैत अछि, जे सृष्टिक आरम्भमे — जखन कोनो जीव नहि छल — केवल सर्वज्ञ ईश्वरक ओतहि सम्भव अछि। एहि पाँचम गुच्छक समापन वैदिक आज्ञा-विधिक दार्शनिक स्वरूप, योगिक प्रत्यक्षक सम्भावना आ ईश्वर-प्रार्थनासँ होइत अछि।

एहि आठ प्रमाणक अनुक्रम स्वयं एकटा तार्किक स्थापत्य अछि — कार्यकारण-न्याय (cosmological), गतिशास्त्रीय (kinetic), भौतिक-नियमशास्त्रीय (sustenance-dissolution), भाषा-दार्शनिक (linguistic), ज्ञानमीमांसीय (epistemic), शास्त्र-प्रामाण्यमूलक (scriptural), वाक्यार्थमूलक (semantic) आ गणितीय-आणविक (numerical) — आठ भिन्न अनुशासनसँ एके निष्कर्ष दिस अभिसरण करैत अछि, जे उदयनाचार्यक तार्किक प्रतिभाक बहुआयामी विस्तारकेँ प्रमाणित करैत अछि।

एकटा विशेष अनुवादकीय उपलब्धि “मूल पाठमे प्रयुक्त हेतु-पदसभक वैकल्पिक अर्थ” क पृथक् खण्ड अछि। जेना मंगलाचरणमे बहुअर्थता अलग-अलग खोलल गेल, तहिना अन्तिम गुच्छमे सेहो मूल पदक द्वितीय अर्थ-परत बचाओल गेल। पुस्तक एकरा “स्तरित निष्ठा” क उदाहरण मानैत अछि।

समापनमे तर्क भक्तिमे रूपान्तरित होइत अछि। लेखकक कामना अछि जे एहि तर्क-पुष्पक सुगन्ध आस्तिक आ नास्तिक दुनू धरि पहुँचय; अन्ततः बौद्धिक पुष्पाञ्जलि ईश्वरकेँ समर्पित होइत अछि। अङ्ग्रेजी समानान्तर पाठ सेहो ई समापन, नास्तिकक लेल सद्बुद्धिक प्रार्थना, प्रभुमे मनक निमज्जन आ पाँच गुच्छक पुष्परूपक सँ समाप्त करैत अछि।

एहि अन्तिम गतिमे ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ क साहित्यिकता सर्वाधिक उजागर होइत अछि: तर्क अपनाकेँ नष्ट नहिकरैत, बल्कि पुष्प बनिकऽ समर्पणमे परिणत होइत अछि।

५. विशिष्ट दार्शनिक मीमांसा: ज्ञान, ध्वनि, कारणता, प्रलय, कर्म आ परम्परा

भारतीय दार्शनिक परम्परा अत्यन्त समृद्ध आ बहुआयामी अछि, जाहिमे सत्ता, ज्ञान, आ मोक्षक साधनसभपर सहस्राब्दीसँ गहन विमर्श होइत रहल अछि। एहि बौद्धिक मन्थनमे न्याय-वैशेषिक दर्शनक स्थान सर्वोपरि अछि, जे अपन तार्किक यथार्थवाद (Logical Realism) आ परमाण्विक बहुलवाद (Atomic Pluralism) लेल सम्पूर्ण विश्वमे ख्यात अछि। न्याय दर्शन मुख्य रूपेँ प्रमाणशास्त्र (Epistemology) पर केन्द्रित अछि, जखन कि एकर समानतन्त्र (Samanatantra) वैशेषिक दर्शन प्रमेयक (Ontology) सूक्ष्म विश्लेषण करैत अछि। दुनू दर्शनक अन्तिम उद्देश्य सांसारिक दुःखसँ पूर्ण निवृत्ति अर्थात् मोक्ष प्राप्त करब अछि, जे यथार्थ ज्ञानसँ सम्भव अछि। दशम शताब्दीक महान् दार्शनिक उदयनाचार्य द्वारा रचित 'न्यायकुसुमाञ्जलि' एक एहन कालजयी ग्रन्थ अछि, जाहिमे ईश्वरक अस्तित्व, ज्ञानक सत्यता, कार्य-कारण सम्बन्ध, आ सृष्टिक भौतिक नियमसभक विशद तार्किक व्याख्याकएल गेल अछि। उदयनाचार्यक ई ग्रन्थ नहि केवल न्याय दर्शनक आधारशिला अछि, अपितु ई बौद्ध दर्शन जकाँ नास्तिक मतसभक सशक्त खण्डन सेहो करैत अछि।

५.१ ज्ञानमीमांसा आ प्रमाणशास्त्रक सैद्धान्तिक पृष्ठभूमि

ज्ञान (Cognition) कोना उत्पन्न होइत अछि, ओकर स्वरूप की अछि, आ ओकर सत्यता (Validity) क निर्धारण कोना होइत अछि, ई भारतीय दर्शनक एकटा अत्यन्त जटिल आ आधारभूत प्रश्न अछि। न्याय दर्शन, जे ज्ञान कैँ विषय (Object) आ विषयी (Subject) दुनू सँ पृथक् एकटा प्रकाशक तत्त्व मानैत अछि, यथार्थवादक समर्थन करैत अछि। अद्वैत वेदान्त जतय ज्ञानक पारमार्थिक स्वरूपपर बल दैत अछि, ओतय न्याय दर्शन ज्ञानक व्यावहारिक आ तार्किक स्वरूपक गम्भीर मीमांसा करैत अछि।

न्याय दर्शनक अनुसार ज्ञान अथवा प्रमिति यथार्थ अनुभूति अछि, जकरा 'प्रमा' कहल जाइत अछि। जे ज्ञान यथार्थ नहि अछि, ओ 'अप्रमा' (Invalid knowledge) अछि। ज्ञानक उत्पत्तिक लेल न्यायमेएकटा विशिष्ट मनोवैज्ञानिक आ तार्किक प्रक्रिया वर्णित अछि। बाह्य वस्तुक प्रत्यक्ष बोध तखन धरि सम्भव नहि अछि, जखन धरि इन्द्रियसभक सम्पर्क मन (Manas) सँ नहि हो, आ मनक सम्पर्क आत्मा (Self) सँ नहि हो। एहि प्रकार, इन्द्रिय-विषय सम्पर्क वस्तुतः मन-इन्द्रिय आ आत्मा-मन सम्पर्कक पूर्वकल्पना करैत अछि। मन एतय आत्मा आ इन्द्रियसभक बीच मध्यस्थक (Mediator) काज करैत अछि।

दर्शनक नाम

मुख्य सिद्धान्त

स्वीकृत प्रमाणक सङ्ख्या

न्याय दर्शन (प्राचीन)

तार्किक यथार्थवाद (Logical Realism)

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द

नव्य-न्याय (उदयनाचार्य आदि)

नव्य-तर्कशास्त्र

प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान (४ प्रमाण)

वैशेषिक दर्शन

परमाण्विक बहुलवाद (Atomic Pluralism)

प्रत्यक्ष, अनुमान (२ प्रमाण)

५.२ प्रामाण्यवादः ज्ञानक सत्यताक दार्शनिक सङ्घर्ष

ज्ञानमीमांसाक क्षेत्रमे प्रामाण्यक (Validity of Knowledge) सिद्धान्त पर भारतीय दर्शनमे एकटा पैघ विमर्श विद्यमान अछि। एहि विमर्शमे मुख्य रूपेँ दुइटा पक्ष अछि: अद्वैत वेदान्त आ मीमांसा द्वारा समर्थित 'स्वतः प्रामाण्यवाद' (Intrinsic Validity) आ न्याय दर्शन द्वारा स्थापित 'परतः प्रामाण्यवाद' (Extrinsic Validity)।

स्वतः प्रामाण्य बनाम परतः प्रामाण्य

अद्वैत वेदान्त आ मीमांसाक मन्तव्य अछि जे ज्ञान अपन सत्यता स्वयं प्रमाणित करैत अछि; जँ ज्ञान अछि, तँ ओ मूलतः सत्य अछि, जावत कोनो बाह्य बाधक तत्त्व ओकरा असत्य नहि प्रमाणित कऽ दे। ई 'स्वतः प्रामाण्यवाद' अछि। एकर विपरीत, न्यायक 'बाह्य प्रामाण्यवाद' (परतः प्रामाण्यवाद) क अनुसार, कोनो ज्ञानक सत्यता (प्रामाण्य) आ ओकर सत्यताक बोध स्वयं ज्ञानक कारणसभसँ नहि, बल्कि बाह्य परिस्थिति आ कारणसभपर निर्भर करैत अछि।

न्याय ई बात केँ खण्डित करैत अछि जे ज्ञान स्वतः सत्य होइत अछि। न्यायक तर्क अछि जे ज्ञानक प्रामाण्य ओकर 'विषयानुरूपता' अछि—अर्थात् जेना वस्तु अछि, ओकरा ओहिने रूपमे जननाइ सत्य अछि। ज्ञान नवीन हो, इन्द्रिय द्वारा उत्पन्न हो, वा पहिने अज्ञात वस्तु केँजाने, ई सभ शर्तसभ सत्यताक लेल अनिवार्य नहि अछि। सत्यताक अन्तिम कसौटी 'कारण-सम्बन्ध' पर आधारित अछि। ज्ञानक सत्यता सिद्ध करबाक लेल न्याय दर्शन अनुमानक सहारा लैत अछि। एतय अनुमानक मुख्य हेतु (मध्यपद) अछि— "सफल कर्मप्रवृत्ति उत्पन्न करबाक कारण होएब"। अर्थात्, जे ज्ञान व्यक्ति केँ कोनो वस्तु दिस प्रवृत्त करैत अछि आ ओ प्रवृत्ति जँ सफल होइत अछि, तँ ओ ज्ञान सत्य मानल जाइत अछि।

अन्योन्याश्रय दोष आ स्मृति-संस्कारक मनोवैज्ञानिक तन्त्र

जँ ज्ञानक सत्यता 'सफल प्रवृत्तिक कारणता' सँ अनुमानित होइत अछि, तँ एतय एकटा गम्भीर तार्किक सङ्कट—'अन्योन्याश्रय दोष' (Circularity/Mutual Dependence)—उत्पन्न होइत अछि। प्रतिपक्ष तर्क दैत अछि जे साध्य (ज्ञानक प्रामाण्य) आ हेतु (सफल प्रवृत्तिक कारणता) एकहि भऽ जाइत अछि, कारण प्रवृत्तिक सफलता स्वयं ज्ञानक सत्यतापर निर्भर करैत अछि। ज्ञानक प्रामाण्य ओहि मध्यपद द्वारा सिद्ध कएल जा रहल अछि, जकर मध्यपदत्व स्वयं प्रामाण्यपर निर्भर अछि।

एहि दोष सँ बचाव करबाक लेल न्याय एकटा सूक्ष्म मनोवैज्ञानिक आ तार्किक व्यवस्था प्रस्तुत करैत अछि। न्याय कहैत अछि जे "सफल प्रवृत्तिक कारणता" कोनो सामान्य जातिगत धर्म नहि अछि। प्रत्येक सत्य ज्ञान अपन-अपन सफल प्रवृत्तिक विशिष्ट कारण होइत अछि; एही व्यक्तिगत कारणताक आधारपर ओहि ज्ञानक सत्यता अनुमानल जाइत अछि। मुदा एकटा व्यावहारिक समस्या अछि—जखन धरि प्रवृत्तिक फल (सफलता) प्राप्त होइत अछि, तखन धरि मूल ज्ञान (जे क्षणिक होइत अछि) नष्ट भऽ चुकल रहैत अछि। तखन ई कारण-सम्बन्ध कोना ज्ञात होइत अछि?

एकर उत्तर 'स्मृति' (Memory) आ 'संस्कार' (Mental Impression) क मनोवैज्ञानिक तन्त्रमे निहित अछि। जखन मूल ज्ञान नष्ट भऽ जाइत अछि, तखन ओ चेतनामे अपन एकटा 'संस्कार' वा स्मृतिरूप छाप छोड़ि जाइत अछि। जखन कार्य सफल होइत अछि, तखन ओ छाप मूल ज्ञानक स्मृति केँ जाग्रत करैत अछि; एहि स्मृतिक माध्यमसँ व्यक्ति बुझैत अछि जे "ई ज्ञान सफल प्रवृत्तिक कारण छल"।

एहि सिद्धान्त केँ 'धरतीपन' (Earthhood) आ गन्ध (Smell) क उदाहरणसँ स्पष्ट कएल गेल अछि। जँ ककरो ई सिद्ध करबाक अछि जे कोनो वस्तु भौतिक धरती-तत्त्व अछि, तँ पहिने ओकर विशेष धर्म 'गन्ध' क अनुभव कएल जाइत अछि। तकर बाद पूर्व अनुभूत वस्तुसभक संस्कारसँ स्मृति जाग्रत होइत अछि, जे ईसिद्ध करैत अछि जे वर्तमान वस्तु सेहो ओही धरतीपन सँ सम्बन्धित अछि जाहिमे गन्ध रहैत अछि। एतय ई ध्यातव्य अछि जे प्रत्यभिज्ञान (पहचान) वा स्मृति कोनो दुइ अलग प्रकृति क ज्ञानक मिश्रण नहि अछि। "ई ओही घट अछि जे हम पहिने देखल छल"—एहि ज्ञानमे वर्तमान प्रत्यक्ष आ पुरान स्मरण दुनू एक मानसिक निष्कर्षमे जुड़ैत अछि, मुदा दुनूक अपन अलग-अलग कारणशर्तसभ होइत अछि। वर्तमान ज्ञान वा केवल संस्कार जकाँ अतिरिक्त शर्तसभ द्वारा ही आत्मज्ञान प्रत्यक्ष अथवा स्मरणात्मक बनैत अछि।

न्यायक आन्तरिक प्रामाण्यवाद-विरोधी मुख्य तर्क ई अछि जे ज्ञानक प्रामाण्यपर बारम्बार संशय उठैत अछि। मुदा, न्याय कहैत अछि जे सभ आत्मानुभूत ज्ञानक प्रामाण्यपर संशय करब आत्मघाती अछि। जँ कोनो आत्मज्ञान सत्य नहि अछि, तँ संशयक उपस्थिति सेहो सत्य नहि भऽ सकैत अछि। जँ संशय केँ सत्य मानल जाए, तँ ओकरा जननिहार आत्मज्ञानक प्रामाण्य सेहो मानए पड़त। ई तर्क अद्वैत वेदान्त जकाँ दर्शनसभक लेल एकटा तगड़ा चुनौती प्रस्तुत करैत अछि।

तुलनाक बिन्दु

स्वतः प्रामाण्यवाद (अद्वैत/मीमांसा)

परतः प्रामाण्यवाद (न्याय दर्शन)

ज्ञानक सत्यताक आधार

ज्ञानक निज स्वरूपमे अन्तर्निहित।

बाह्य परिस्थिति आ सफल प्रवृत्ति पर निर्भर।

संशयक स्थिति

ज्ञान स्वयं संशय-रहित होइत अछि, बाधक तत्त्व बादमे आबैत अछि।

संशय सम्भव अछि, जकरा दूर करबाक लेल अनुमानक आवश्यकता होइत अछि।

कारणताक सिद्धान्त

सत्यताक लेल कोनो बाह्य कारणक आवश्यकता नहि।

स्मृति आ संस्कार द्वारा कारणता स्थापित होइत अछि।

५.३ न्यायक अनुमान-प्रक्रिया

न्याय दर्शन ज्ञानक सत्यता केँ स्थापित करबाक लेल अनुमान (Inference) क जे पञ्चावयव (Five-part syllogism) प्रस्तुत करैत अछि, ओ भारतीय तर्कशास्त्रक मेरुदण्ड अछि। एकर पाँचटा अङ्ग अछि: १. प्रतिज्ञा (Pratijna) - जेना, "ई पहाड़ अग्निमान अछि" (Parvatovahniman) । २. हेतु (Hetu)- जेना, "कारण ओतय धूआँ अछि" (Dhumat) । ३. उदाहरण (Udaharana) - जेना, "जतय-जतय धूआँ अछि, ओतय-ओतय अग्नि अछि, जेना चुल्हा" (Yatra yatra dhoomah, tatra tatra vahnih) । ४. उपनय (Upanaya) - जेना, "ई पहाड़ सेहो ओहिने अछि" (Tatha chaasau) । ५. निगमन (Nigamana) - जेना, "ताहि कारण ई पहाड़ अग्निमान अछि" (Tasmat tatha) ।

एही सूक्ष्म तार्किक ढाँचाक आधारपर न्याय दर्शन ईश्वर, ज्ञानक सत्यता, आ जगत्-प्रपञ्चक व्याख्या करैत अछि। नव्य-न्याय (Neo-Logic) क संस्थापक गङ्गेश उपाध्याय अपन ग्रन्थ 'तत्त्वचिन्तामणि' मे एहि तार्किक प्रणालीक चरम विकास केलनि, जे न्यायकुसुमाञ्जलिक सिद्धान्तसभसँ गहिर रूपेँ प्रभावित अछि।

५.४ शब्द आ ध्वनिक भौतिकी

न्याय-वैशेषिक परम्परामे भौतिकी (Physics) आ तत्त्वमीमांसा (Ontology) क बीच घनिष्ठ सम्बन्ध अछि। शब्द आ ध्वनिक उत्पत्तिक विश्लेषण केवल भौतिकीक विषय नहि अछि, अपितु ई मीमांसा दर्शनक 'जातिशक्तिवाद' (Jatishaktivada) क खण्डनक लेल सेहो आवश्यक अछि। मीमांसक सभक माननाइ अछि जे शब्द आ जाति (Universals) नित्य अछि आ ओहिमे अर्थ प्रकट करबाक शाश्वत शक्ति होइत अछि। ओ तर्क दैत छथि जे जेना अनित्य वस्तुसभक विनाशक कारण देखल जाइत अछि, तेना शब्दक विनाशक कोनो कारण नहि भेल करैत अछि, ताहि लेल शब्द नित्य अछि। मुदा न्याय दर्शन एहि सिद्धान्त कैं पूर्ण रूपैं अस्वीकार करैत अछि।

आकाश, कम्पन, आ ध्वनिक सम्बन्ध

न्याय दार्शनिकसभक अनुसार, ध्वनि (Sound) अनित्य अछि आ ई आकाशक (Space/Ether/Akasha) गुण अछि। वाद्ययन्त्र (Instrument), जेना वीणा, बाँसुरी, वा मृदङ्ग, स्वयं ध्वनिक आश्रय नहि अछि। साधारण जनमानसक भाषामे हम कहैत छी जे "वीणा वा बाँसुरी बज रहल अछि" वा "वाद्ययन्त्र ध्वनियुक्त अछि", मुदा दार्शनिक अर्थमे वाद्ययन्त्र केवल ध्वनि उत्पन्न करबाक गतिविधि (कम्पन वा Vibration) क स्रोत मात्र अछि। वाद्ययन्त्र निमित्त कारण अछि, मुदा ध्वनिक समवायी कारण वा वास्तविक आश्रय आकाश अछि।

जखन कोनो व्यक्ति दूरसँ ध्वनि नहि सुनि पाबैत अछि, तखन एकर अर्थ ई नहि जे ध्वनि सर्वव्यापक अछि आ केवल श्रवण नहि भऽ रहल अछि; एकर अर्थ अछि जेश्रवणेन्द्रिय (कान) आ ध्वनिक कारण-समूहक बीच कोनो बाधक तत्त्व उपस्थित अछि वा श्रवणेन्द्रियमे दोष अछि। "सुनाइ नहि पड़ब = ध्वनि विद्यमान नहि" ई नियम सार्वत्रिक नहि अछि, बल्कि ई कारण समूहक भेद कैं बुझावैत अछि।

ध्वनिक 'विनाश' आ 'अत्यन्ताभाव' क तार्किक भेद

जखन वाद्ययन्त्र बजाएब बन्द कऽ देल जाइत अछि, तखन ध्वनि रुकि जाइत अछि। एतय मीमांसक प्रश्न उठा सकैत अछि जे वाद्य बन्द भेलापर ध्वनिक की होइत अछि? की ओ सर्वदाक लेल सुप्त भऽ जाइत अछि? न्याय दर्शनक तर्क अछि जे जँ ध्वनि नष्ट नहि होइत, आ केवल अश्राव्य (inaudible) भऽ जाइत, तखन वाद्य बन्द भेलो पर अनन्त पुरान ध्वनिसभ आकाशमे कतहु न कतहु विद्यमान मानए पड़त—जकर कोनो प्रमाण नहि अछि।

एतय न्याय दर्शन 'विनाश' (Dhvamsa) आ 'अत्यन्ताभाव' (Absolute Non-existence) क बीच स्पष्ट अन्तर करैत अछि। अत्यन्ताभाव कालसीमाहीन होइत अछि—ई अपन आश्रयमे सदिखन रहैत अछि (जेना- आकाशमे रूप वा रङ्गक अत्यन्ताभाव) । मुदा जखन वाद्य बन्द होइत अछि, तखन जे अभाव उत्पन्न होइत अछि ओ 'विनाश'(प्रध्वंसाभाव) अछि, अर्थात् जे वस्तु पहिने छल आ आब समाप्त भऽ गेल। जँ वाद्यमे ध्वनिक 'अत्यन्ताभाव' सिद्ध कएल जाए, तँ एखने समाप्त भेल ध्वनिक 'विनाश' सिद्ध नहि भऽ सकत, आ ई अनुमान साध्याभाव दोषमे पड़ि जाएत।

पुनः, कोनो वस्तुक नाश सर्वदा ओतय होइत अछि जतय ओकर वास्तविक आश्रय होइत अछि। जेहेतु ध्वनिक आश्रय आकाश अछि, यन्त्र नहि, ताहि कारण ध्वनिक विनाश सेहो आकाशेमे होइत अछि। कम्पन रुकि जेनाइ कारण-कार्य सम्बन्धक आधारपर ध्वनिक अभाव सिद्ध करैत अछि।

ई दार्शनिक विश्लेषण योग दर्शन आ अन्य तान्त्रिक परम्परा सभक ध्वनिक अवधारणासँ सेहो सम्वाद करैत अछि। योग दर्शनमे पतञ्जलि 'ॐकार' (Pranava) कैं एकटा सार्वभौमिक प्रतीक वा समस्त ध्वनिसभक आधार (norm or matrix of all kinds of sounds) मानैत छथि, जकर ध्यानसँ समाधि प्राप्त होइत अछि। वैदिक परम्परा सभमे तँ ध्वनिक कम्पन (sound vibrations) आ मानसिक शक्ति (hypnosis) सँ शारीरिक चिकित्सा धरिक प्रभाव मानल गेल अछि। मुदा न्याय दर्शन ध्वनिकैं केवल एकटा भौतिक गुणक रूपमे विश्लेषित करैत अछि, जे कार्य-कारणक बन्धनमे अछि।

५.५ तत्त्वमीमांसा आ सृष्टिविज्ञानः कार्य-कारण सिद्धान्त आ परमाणुवाद

न्याय-वैशेषिक दर्शन पूर्णतः यथार्थवादी अछि आ ई मानैत अछि जे विश्वक प्रत्येक परिवर्तन 'कार्य-कारण सम्बन्ध' (Law of Causality) सँ नियन्त्रित अछि। ई दर्शन परमाणुवाद (Atomism) क पक्का समर्थक अछि, जाहिमे ब्रह्माण्डक मूल उपादान कारण (Material Cause) नित्य परमाणुसभ कैं मानल गेल अछि।

परमाणु, अवयवी, आ आकस्मिक कारणता

न्याय दर्शनक अनुसार, कोनो सेहो कार्य (Effect) वा सृजन विशिष्ट कारण-समूहक उपस्थितिसँ उत्पन्न होइत अछि आ ओहि कारण-समूहक अभावमे समाप्त भऽ जाइत अछि। कारण उपस्थित हो तँ प्रभाव उत्पन्न, कारण अनुपस्थित हो तँ प्रभाव अनुपस्थित—ई विश्वक सामान्य नियम अछि।

प्रतिपक्षक ई तर्क जे कोनो कार्यक उत्पत्ति वा विनाश केवल मानव अनुभवक प्रयोजनपर निर्भर अछि, न्याय द्वारा अमान्य कएल गेल अछि। न्याय निद्रामे चलैतश्वास-प्रश्वासक उदाहरणसँ ई सिद्ध करैत अछि जे निद्रामे सुतनिहार व्यक्ति ओकर उपयोगक चेतना नहि रखैत अछि, मुदा श्वास चलैत रहैत अछि। अर्थात्, उपयोग वा चेतना नहि रहितो भौतिक कार्य-कारण नियम ब्रह्माण्डमे सक्रिय रहैत अछि।

जँ उत्पादक कारणसभ नित्य आ सदा समान रूपेँ सक्रिय होइत, तँ प्रभाव सेहो नित्य होइत आ ओकर समय-विशेषमे उत्पत्ति असम्भव भऽ जाएत। मुदा सृष्टि परिवर्तनशील अछि। द्व्यणुक (Diatoms) सँ लऽ कऽ सूक्ष्मतम जीव आ विशालतम ब्रह्माण्ड धरि समस्त विश्व कार्य-कारण नियमक अधीन अछि। ताहि कारण, ई मानए पड़त जे कारण-समूहक एकत्रीकरण आ विघटन आकस्मिक (Contingent) अछि, नित्य नहि। परमाणु (Paramanu) नित्य अछि, मुदा परमाणुसभक संयोगसँ बनल 'अवयवी' (Composite whole) पूर्णतः अनित्य आ विनाशी अछि।

प्रलय (Cosmic Dissolution) आ अपरिहार्य विनाश

जखन ब्रह्माण्ड अपन जीवन-चक्र पूर्ण कऽ लैत अछि, तखन समस्त ब्रह्माण्ड परमाण्विक अवस्थामे विघटित भऽ जाइत अछि। एहि अन्तिम अवस्था केँ दर्शनमे 'प्रलय' (Dissolution) कहल जाइत अछि। प्रलयक समयमे समस्त परमाणु एक-दोसरसँ पृथक् भऽ जाइत अछि आ सृष्टिक पूर्ण अन्त होइत अछि। यद्यपि, प्रलयमे परमाणु नष्ट नहि होइत अछि, केवल हुनकर संयोजन (संयोग) टुटि जाइत अछि।

न्यायक प्रबल तर्क अछि जे जखन मूल आधार (परमाणु) विघटित भऽ गेल, तखन कोनो सेहो सजीव वा निर्जीव वस्तु अपन संयुक्त (अवयवी) रूपमे कोना बचि सकत? ओ सभ पूर्णतः विघटित होएबाक लेल बाध्य अछि। एहि अपरिहार्य विनाश (Inescapable destruction) केँ स्पष्ट करबाक लेल 'न्यायकुसुमाञ्जलि' मे तीनटा अत्यन्त सटीक आ व्यावहारिक दृष्टान्त देल गेल अछि:

दृष्टान्त (Analogy)

विनाशक कारण (Cause of Destruction)

परिणाम (Consequence)

उदुम्बर फल आ मक्खी

क्रुद्ध बानर द्वारा फल (जे आश्रय अछि) केँ खा लेब।

फलक भीतरक मक्खीसभक अनिवार्य विनाश होइत अछि।

वृक्षक छिद्रमे कीड़ा

वृक्षमे प्रचण्ड अग्नि लागब।

कीड़ासभ वृक्षक सङ्गे भस्म भऽ जाइत अछि।

जहाजमे एकत्र यात्री

प्रलयकालीन समुद्री अग्निक भड़कनाइ।

सभ यात्रीसभ जहाजक सङ्गे नष्ट भऽ जाइत छथि।

ई दृष्टान्तसभ ई निर्विवाद रूपेँ सिद्ध करैत अछि जे उचित विनाशकारी कारण उपस्थित भेला पर, अवयवी जगत् (Composite world) अपन आधारसभक विनाशसँ ककरो स्थितिमे बचि नहि सकैत अछि।

ईश्वरक अस्तित्वक तार्किक सिद्धि

प्रलय आ अवयवी विनाशक ई सम्पूर्ण तार्किक शृङ्खला न्याय दर्शनक लेल मात्र भौतिक विज्ञान नहि, अपितु ईश्वर-सिद्धि (Teleological Argument) क एकटा प्रमुख आधार अछि। जँ प्रलयक बाद सभ परमाणु पूर्णतः अलग भऽ गेल अछि, तखन पुनः सृष्टिक लेल हुनका सभमे 'आद्य गति' (Initial Motion), द्वित्व (Dyadic combination) आ संयोग कोना उत्पन्न होएत? । अचेतन आ जड़ परमाणु स्वयं सँ गति नहि कऽ सकैत अछि।

एतय उदयनाचार्य एकटा चेतन अभिकर्ता (Conscious Agent) क अनिवार्यता सिद्ध करैत छथि, जकरा ईश्वर कहल गेल अछि। गङ्गेश उपाध्याय सेहो अपन 'तत्त्वचिन्तामणि' मे एहि विषयक विस्तार करैत स्पष्ट करैत छथि जे पृथ्वी आ भौतिक वस्तुसभ कार्य अछि, अतः हुनकर एकटा चेतन कारण (ईश्वर) होएबाक चाही। अचेतन परमाणुसभक संयोग आ वियोग बिना कोनो चेतन नियन्त्रकक सम्भव नहि अछि। ई तर्कपाश्चात्य दर्शनक 'Unmoved Mover' वा 'First Cause' सिद्धान्त सँ गहिर दार्शनिक समानता रखैत अछि।

५.६ कर्म-सिद्धान्त, संस्कार आ मानवीय परम्पराक क्रमिक ह्रास

न्याय दर्शन भौतिक जगत् (परमाणु) सँ आगाँ बढ़ि मनोवैज्ञानिक आ नैतिक जगत् क सञ्चालनक सूक्ष्म विवेचन सेहो करैत अछि। जँ प्रलयक समय सभ अवयवी वस्तु नष्ट भऽ जाइत अछि, तखन पुनः सृष्टिकेँ आकार आ विविधता के दैत अछि? एकर उत्तर 'अदृष्ट' (Unseen force) वा 'कर्मफल' अछि।

कर्म, अनुभव आ सन्तति

समस्त सुख-दुःख आदिक अनुभव जीवक पूर्व सञ्चित 'कर्मफल' सँ उत्पन्न होइत अछि। यद्यपि जीवक अनुभव कर्मफलसँ होइत अछि, मुदा एकर कारण वस्तुसभक स्वाभाविक भौतिक कार्य-कारण सम्बन्ध खण्डित नहि होइत। बौद्ध दर्शनक 'कर्म-सन्तति' (karmic continuity) आ वेदान्तक संस्कारक अवधारणासभ सँ सहमति रखैत, न्याय सेहो ई मानैत अछि जे जीवक पूर्व जन्मक संस्कार आ कर्म प्रलयक बाद सेहो आत्मामेअदृष्ट रूपमे विद्यमान रहैत अछि। एही संस्कारक आधारपर अगिला सृष्टिमै जीवक भोगाधिकार (experiences) तय होइत अछि। कर्म एकटा एहन पारलौकिक नियम अछि जे व्यक्ति कैँ अपन कार्यक उत्तरदायी बनबैत अछि आ जन्म-मरणक चक्र कैँ सञ्चालित करैत अछि।

युगानुरूप परम्परा आ आचारक ह्रास

'न्यायकुसुमाञ्जलि' मे केवल ब्रह्माण्डक भौतिक प्रलयक चर्चा नहि अछि, अपितु मानवीय सामाजिक आ सांस्कृतिक परम्परा सभक क्रमिक पतनक (Devolution/Degradation) एकटा गहिर समाजशास्त्रीय-दार्शनिक चित्र सेहो प्रस्तुत कएल गेल अछि। कालक प्रवाहक सङ्ग (विभिन्न युगसभमे) जन्म, संस्कार, शिक्षा, अध्ययन-निष्ठा, आ कर्तव्यपालन क्रमशः क्षीण होइत जाइत अछि।

एकर सभसँ ज्वलन्त उदाहरण
सन्तानोत्पत्ति आ जन्म-परम्पराक पतनक

रूपमे देल गेल अछि:

अवस्था/युग

सन्तानोत्पत्ति प्रक्रिया

चारित्रिक विशेषता

प्रथम अवस्था (प्राचीन काल)

केवल मानसिक सङ्कल्प (Mental Resolve) सँ सन्तानक उत्पत्ति।

शुद्ध इच्छाशक्ति आ चेतनाक चरम विकास।

द्वितीय अवस्था

माता-पिता द्वारा सन्तान पाबयक शुद्ध उद्देश्यसँ सम्भोग (Copulation)।

कर्तव्य-प्रेरित आ धर्मसम्मत व्यवहार।

तृतीय अवस्था

कामवासना (Lust) सँ प्रेरित पति-पत्नीक अनिवार्य सहवास।

शारीरिक आकर्षण प्रधान, मुदा वैवाहिक मर्यादामे।

चतुर्थ अवस्था (वर्तमान काल)

स्त्री-पुरुषक पशुवत् असंयमित आ उच्छृङ्खल सम्पर्क।

देश, काल आ मर्यादाक पूर्ण क्षय; पाशविक प्रवृत्ति।

एहि पतनक प्रभाव केवल जन्म-प्रक्रिया पर नहि, बल्कि गर्भाधान आ जन्म-संस्कारसभ (Sacraments) पर सेहो पड़ल अछि। पहिने गर्भवती स्त्री जे खाद्य-पदार्थ ग्रहण करैत छल, ओ सभ मन्त्र आ संस्कारपूर्वक पवित्र कएल जाइत छल। कालान्तरमे खाद्यक स्थानपर स्वयं गर्भवती स्त्रीक व्यक्तिगत संस्कार कएल जाए लागल, आ अन्त्यमे केवल गर्भमे पलैत भ्रूणक संस्कारक विधान शेष रहि गेल।

ई विवरण स्पष्ट करैत अछि जे जेना भौतिक जगत् मे व्यवस्था सँ अव्यवस्था (Order to Disorder) दिस प्रवृत्तिक नियम अछि, तहिना सामाजिक-नैतिक जगत् मे सेहो चेतनाक स्खलन होइत अछि। विशुद्ध मानसिक धरातल सँ खसि कऽ पूर्णतः भौतिक-पाशविक धरातल पर आबब ई सिद्ध करैत अछि जे कर्म बन्धन जतबे गाढ़ होइत अछि, जीव ततबे जड़ता (Materialism) दिस बढ़ैत अछि।

५.७ अन्य दार्शनिक परम्परा सभक सङ्ग अन्तःसम्बन्ध

न्याय दर्शनक ई प्रस्थापनासभ शून्यमे विकसित नहि भेल अछि। एकर विकास अद्वैत वेदान्त, विशिष्टाद्वैत, मीमांसा, आ बौद्ध दर्शनक सिद्धान्तसभक एकटा गम्भीर प्रतिक्रिया आ प्रतिवादक रूपमे भेल अछि।

अद्वैत वेदान्त आ बौद्ध दर्शन सँ विरोध

अद्वैत वेदान्त (शङ्कराचार्यक दर्शन) मानैत अछि जे अन्तिमतः केवल एकटा ब्रह्म सत्य अछि, आ ई सम्पूर्ण जगत्, जीव, आ माया ओकरे विवर्त (Illusory manifestation) अछि। वेदान्तक लेल ज्ञाता, ज्ञान, आ ज्ञेयक त्रिपुटी (Triad of Knower, Knowledge, Object) केवल व्यावहारिक स्तर पर सत्य अछि, पारमार्थिक स्तर पर अद्वैतमे ई सभविलीन भऽ जाइत अछि। ओतय न्याय पूर्णतः यथार्थवादी अछि। न्याय मानैत अछि जे ज्ञाता (आत्मा), ज्ञान (प्रमिति), आ ज्ञेय (विषय) पूर्णतः भिन्न आ वास्तविक सत्ता अछि। न्याय-वैशेषिकक जगत् मिथ्या वा माया नहि अछि, बल्कि परमाणुक यथार्थ संयोजन अछि। यद्यपि, अज्ञान सँ बन्धन आ यथार्थ ज्ञान सँ मोक्ष (अपवर्ग) प्राप्त होइत अछि, एहि विषयमे न्याय आ वेदान्त दुनू सहमत अछि।

दोसर दिस, उदयनाचार्य आ अन्य न्याय दार्शनिकसभ बौद्ध चिन्तकसभक कड़ा आलोचना केलनि अछि। बौद्ध दर्शन वेदासभक प्रमाणिकता कैँ अस्वीकार करैत अछि (नास्तिक दर्शन) आ आत्माक नित्यता (No-self) कैँ नहि मानैत अछि। उदयनाचार्य अपन 'न्यायकुसुमाञ्जलि' आ 'आत्मतत्त्वविवेक' मे बौद्धसभक क्षणिकवाद आ अनीश्वरवादक तार्किक खण्डन केलनि, आ श्रुति (Vedas) क निन्दक मानि कऽ हुनका सभ कैँ 'भ्रमित' धरि कहलनि।

विशिष्टाद्वैत वेदान्तक परिप्रेक्ष्य आ समन्वय

रामानुजाचार्य आ परवर्ती दार्शनिक वेदान्त देशिक द्वारा प्रवर्धित विशिष्टाद्वैत दर्शन, न्यायक बहुलांश तार्किक सिद्धान्तसभक आलोचनात्मक उपयोग करैत अछि। वेदान्त देशिक अपन प्रसिद्ध ग्रन्थ 'न्याय-सिद्धाञ्जन'(Nyaya-Siddhanjana) मे न्यायक प्रमेयसभ (Objects of valid knowledge) कैं विशिष्टाद्वैतक 'शरीर-शरीरी भाव' (Body-Soul relationship) क प्रकाशमे व्याख्यायित करैत छथि।

विशिष्टाद्वैतमे, न्याय जकाँ ईश्वर कैं मात्र एकटा निमित्त कारण वा तार्किक अभिकर्ता (Logical Agent) नहि मानल गेल अछि। रामानुज ईश्वर कैं सर्वान्तर्यामी आ प्रकृतिकैं ओकर 'शरीर' मानैत छथि। प्रलयक सम्बन्धमे विशिष्टाद्वैत सेहो मानैत अछि जे प्रकृतिक तत्त्व (अचेतन) आ जीव (चेतन) सूक्ष्म अवस्थामे ईश्वरक भीतर लीन भऽ जाइत अछि, जे न्यायक परमाण्विक विघटन सँ किञ्चित् भिन्न मुदा एकटा समानान्तर अवधारणा अछि। न्याय-सिद्धाञ्जनमे देशिक स्पष्ट करैत छथि जे पञ्चभूतमे शब्दक उत्पत्ति आ विनाश केवल इन्द्रिय-व्यापारक विनाश अछि, वर्ण-स्वरूपक नहि, जे रामानुजक सिद्धान्तसभसँ मेल खाइत अछि।

६. भारतीय साहित्यशास्त्रक कसौटी पर

श्लेष आ वक्रोक्तिः मंगलाचरणक कौशल

मंगलाचरणक विनय-पद्यमे द्विअर्थी (श्लिष्ट) शब्दसभक प्रयोगद्वारा न्याय-दर्शनक सिद्धान्तसभक तुलना फूलसभसँ कएल गेल अछि — "स्तबक" शब्दक अर्थ एके संग "फूलक गुच्छ" आ "ग्रन्थक अध्याय" दुनू होइत अछि। ई श्लेष केवल भाषिक क्रीड़ा नहि, कुन्तकक वक्रोक्तिजीवित-सिद्धान्तक अर्थमे "वैदग्ध्य-भङ्गी-भणिति" क उत्कृष्ट उदाहरण अछि, जतय तर्कशास्त्रीय कठोरता आ काव्यात्मक कोमलताक एक्के संग सह-अस्तित्व अछि। अनुवादकक लेल ई द्वि-क्षेत्रीय अर्थ (शीर्षक स्वयं द्वि-अर्थी) कैं मैथिलीमे सुरक्षित राखब एकटा वास्तविक अनुवाद-चुनौती छल, जकर समाधान अनुवादक व्याख्यात्मक टिप्पणीक सहारे कएने छथि।

रस-विमर्शः शान्तक अंगीत्वमे अद्भुत आ वीरक संचरण

काव्यप्रकाशक अनुसार दर्शन-प्रधान ग्रन्थमे शान्त रस अंगी (प्रधान) रहैत अछि, आ न्यायकुसुमाञ्जलिमे सेहो एहन्ने अछि। तर्क-विजयक उल्लासमे कतहु-कतहु वीर रसक झलक (जेना नास्तिक-मतक निर्णायक खण्डनक क्षणमे), आ ब्रह्माण्ड-रचनाक विराटताक वर्णनमे अद्भुत रस (जेना परमाणु-सृष्टिक वर्णनमे) अंगी शान्तक अंगबनि उपस्थित होइत अछि। मंगलाचरण, दुःख-मुक्तिक उल्लेख आ मोक्ष-वर्णनमे भक्ति-संवेदना प्रबल अछि, जे शान्त रसक भक्तिपरक उपशाखाकैं पुष्ट करैत अछि। अनुवाद एहि रसात्मक स्तरकैं यथासम्भव सुरक्षित रखबाक प्रयास करैत अछि, विशेषतः मंगलाचरण आ स्तबक-समापन-प्रार्थनासभमे। मानव-दुःखक चिन्तामे करुणाक सूक्ष्म स्पर्श सेहो एहि रसात्मक संरचनाकैं व्यापक बनबैत अछि।

ध्वनि-सिद्धान्तः वाच्यार्थसँ परे तर्कक अर्घ्य

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्तक दृष्टिसँ शीर्षक आ मंगलाचरण अत्यन्त महत्त्वपूर्ण अछि। "फूलक गुच्छ" (स्तबक) क रूपक केवल संरचनात्मक विभाजन नहि, अपितु व्यंजनाशक्तिद्वारा ई सूचित करैत अछि जे तर्क स्वयं एकटा उपासना अछि — तार्किक विजय ईश्वरक चरणमे अर्पित फूल जकाँ अछि। एहि प्रकार दार्शनिक ध्वनि (philosophical resonance) उत्पन्न होइत अछि, जतय वाच्यार्थ (शाब्दिक तर्क-प्रस्तुति) सँ परे व्यंग्यार्थ (भक्ति-भाव, समर्पण) प्रतिध्वनित होइत अछि। पुष्पगुच्छक रूपक तर्कसँ भक्तिदिस गमनकसूचक अछि — ग्रन्थक अन्तमे तर्क स्वयं प्रार्थनामे विलीन भऽ जाइत अछि।

वक्रोक्ति आ अलंकार

अनुवादमे उपमा (जेना कुदाल-चालकक दृष्टान्त, कुम्हार-घटक दृष्टान्त), रूपक (फूलक गुच्छक केन्द्रीय रूपक) आ व्यङ्ग्य (नास्तिक-मतक आत्म-विरोधी स्वरूपकैं उजागर करैत विडम्बनात्मक स्वर) क सम्यक् प्रयोग भेल अछि। दृष्टान्त-प्रयोग (जेना धुआँसँ अग्निक अनुमान) अमूर्त न्याय-तर्ककैं मूर्त, सुबोध बनबैत अछि, जे अनुमानक सौन्दर्यशास्त्रीय आयाम अछि।

औचित्य-सिद्धान्तः क्षेमेन्द्रक कसौटी

क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचार-चर्चाक कसौटी पर परखला पर ई अनुवाद विषय, भाषा आ पाठकक बीच सामान्यतः उचित संगति राखैत अछि। दार्शनिक गाम्भीर्यक अनुकूल गद्य-लय, पारिभाषिक पदक संस्कृतनिष्ठता आ लोक-बोधगम्य दृष्टान्तक सन्तुलन — ई सभ द्विभाषिक पदावलीक (संस्कृत-तत्सम आ तद्भव मैथिली) एकटासन्तुलित औचित्य-बोधकैं प्रकट करैत अछि। तथापि किछु स्थान पर

पारिभाषिक कठोरता (जेना "अभावक कारणता" जकाँ खण्डसभमे) सामान्य पाठकक लेल भार बनि जाइत अछि, जे औचित्यक एकटा सीमा अछि।

रीति आ गुण

अनुवादक प्रधान गुण प्रसाद अछि — स्पष्टता आ सुगमता, विशेषतः दृष्टान्त आ उदाहरणसभमे। खण्डनात्मक भागसभमे ओज गुणक उपस्थिति अछि, जतय समास-रहित, दृढ़ वाक्य-रचनाद्वारा तार्किक प्रहारक तीव्रता व्यक्त होइत अछि। मंगलाचरण, फूल-बिम्ब आ मोक्ष-वर्णनमे माधुर्य गुण प्रधान अछि। एहि तीन गुणक सन्तुलन ग्रन्थक त्रिविध स्वभाव (तर्क, खण्डन, भक्ति) क अनुरूप अछि। भाषा-लयक दृष्टिसँ ई वैदर्भी रीतिक निकट अछि, यद्यपि तर्क-सान्द्र खण्डसभमे कहीं-कहीं गौड़ी-सन सामासिक गहनता सेहो झलकैत अछि।

७. पाश्चात्य साहित्यिक आ व्याख्यात्मक सिद्धान्तक आलोकमे

एहि आधुनिक सिद्धान्तसभकेँ उदयनाचार्यक ऐतिहासिक स्रोत नहि, आधुनिक पाठकीय व्याख्याक उपकरणक रूपमे ग्रहण कएल जाए —ई पद्धतिगत सावधानी आवश्यक अछि।

अरस्तूवादी वक्तृत्वशास्त्र आ बौद्धिक नाटच

अरस्तूक रेटोरिकक दृष्टिसँ ग्रन्थक पूर्वपक्ष-उत्तरपक्ष-संरचना एकटा शास्त्रीय dialectical demonstration क रूप लैत अछि, जतय logos (तर्क), ethos (शास्त्र-वक्ताक प्रामाण्य) आ pathos (भक्ति-भाव) क त्रिविध अपील एक साथ काज करैत अछि।

रूसी रूपवाद आ अपरिचितीकरण

श्क्लोव्स्कीक "ostranenie" (defamiliarization) क अवधारणा एतय लागू होइत अछि जखन उदयनाचार्य परिचित उदाहरणसभ (घट-कुम्हार, कुदाल-चालक) क माध्यमसँ अपरिचित तात्त्विक सत्यकेँ नव दृष्टिसँ देखबैत छथि — सामान्य वस्तुसभकेँ दार्शनिक तर्कक साधन बनाकऽ ओकरा नव अर्थ दैत छथि।

नव-समीक्षा (New Criticism) आ आन्तरिक एकता

नव-समीक्षात्मक निकट-पाठ (close reading) क दृष्टिसँ शीर्षक, मंगलाचरण आ तर्कक बीच एकटा जैविक (organic) सम्बन्ध देखल जा सकैत अछि — "फूल" केवल अलंकार नहि, अपितु सम्पूर्ण कृतिक संरचनात्मक एकता (organic unity) क केन्द्रीय बिम्ब अछि, जे आरम्भसँ अन्त धरि (मंगलाचरणसँ अन्तिम प्रार्थना धरि) व्याप्त अछि।

संरचनावाद आ द्विपदी विरोध

संरचनावादी दृष्टिसँ सम्पूर्ण ग्रन्थ आस्तिक/नास्तिक, चेतन/जड़, नित्य/अनित्य, कार्य/कारण जकाँ द्विपदीविरोधसभ (binary oppositions) क संरचनापर आधारित अछि, जे प्रत्येक स्तबकमे नव रूपमे प्रकट होइत छथि आ अन्ततः पञ्चम स्तबकमे एकटा उच्चतर संश्लेषण (सर्वज्ञ ईश्वर) मे विलीन भऽ जाइत छथि।

बाख्तिनीय संवादवादः शास्त्रार्थक बहुस्वरता

बाख्तिनक "बहुस्वरता" (polyphony) आ "संवादवाद" (dialogism) क अवधारणा शास्त्रार्थ-परम्पराक स्वाभाविक व्याख्याकार अछि। ग्रन्थमे नैयायिक, मीमांसक, चार्वाक, बौद्ध, सांख्य आ वैशेषिकक स्वर एक्के पाठमे परस्पर संवाद करैत छथि, कोनो एक स्वर पूर्णतः दबल नहि अछि — प्रत्येक प्रतिपक्षकेँ पूर्ण न्यायपूर्ण प्रस्तुति देल जाइत अछि, तखने ओकर खण्डन होइत अछि। ई बहुस्वरता अनुवादमे सेहो सुरक्षित अछि।

व्याख्याशास्त्र (Hermeneutics): श्लायरमाखर, गादामर आ क्षितिज-संगम

गादामरक "क्षितिज-संगम" (fusion of horizons) क अवधारणाक अनुसार अनुवादक कर्म दू क्षितिज — उदयनाचार्यक एगारहम शताब्दीक संस्कृत-क्षितिज आ आजुक मैथिली पाठकक क्षितिज — क बीच सेतु बनबैत अछि। श्लायरमाखरक "अनुवादक या तँ पाठककेँ लेखक लग लऽ जाए वा लेखककेँ पाठक लग" वाला द्वैतमे प्रस्तुत अनुवाद संतुलित मार्ग अपनबैत अछि, न पूर्णतः विदेशीकरण न पूर्णतः देशीकरण।

पाठक-प्रतिक्रिया सिद्धान्त: इज़रक रिक्त-स्थान

वोल्फगांग इज़रक "रिक्त-स्थान" (Leerstellen/gaps) सिद्धान्तक अनुसार शीर्षक "फूलक अञ्जलि" स्वयं एकटा रिक्त-स्थान अछि, जकरा पाठक अपन व्याख्याद्वारा भरैत अछि — कि ई फूल तर्कक अछि, भक्तिक अछि, वा दुनूक? अनुवादक ई अनिश्चय (ambiguity) केँ जानि-बुझिकऽ सुरक्षित रखने छथि, जे पाठकीय संलग्नताकेँ बढ़बैत अछि।

विखण्डनवाद (Deconstruction) क सम्भावना आ सीमा

देरिदाक दृष्टिसँ देखल जाए तँ ग्रन्थक "उपाधि" (unwarranted condition) क अवधारणा स्वयं एकटा विखण्डनकारी औजार अछि — ई देखबैत अछि जे नास्तिक-तर्क अपन आधारभूत श्रेणीसभ (जेना देहधारिता) पर अत्यधिक निर्भर अछि, जकरा हटौला पर तर्क ढहि जाइत अछि। तथापि ग्रन्थक अन्तिम लक्ष्य (ईश्वर-सिद्धि) स्वयं एकटा केन्द्र-स्थापक (foundationalist) परियोजना अछि, अतः विखण्डनवादी पाठ केवल आंशिक रूपेँ लागू होइत अछि — ई सीमा स्वयं ध्यातव्य अछि।

८. आधुनिक अनुवाद-सिद्धान्तक आधार पर मूल्याङ्कन

यूजीन नाइडाक औपचारिक बनाम गतिशील समानताक (formal vs. dynamic equivalence) कसौटीपर ई अनुवाद अधिकांशतः गतिशील समानतादिस झुकल अछि — पाठकक बोधगम्यताकेँ प्राथमिकता देल गेल अछि, यद्यपि पारिभाषिक पदसभमे औपचारिक निष्ठा सेहो सुरक्षित अछि। पीटर न्यूमार्कक अर्थप्रधान (semantic) आ संप्रेषणप्रधान (communicative) अनुवादक द्वैतमे ई अनुवाद दुनूक संतुलन खोजैत अछि — दार्शनिक पारिभाषिकतामे अर्थप्रधानता, आ दृष्टान्त-व्याख्यामे संप्रेषणप्रधानता। वर्मीरक स्कोपोस-सिद्धान्तक (उद्देश्य ही अनुवादक निर्णायक तत्त्व) दृष्टिसँ अनुवादक स्पष्ट उद्देश्य — मैथिली पाठककेँ शास्त्रीय दार्शनिक बहसमे सहभागी बनाएब — अनुवादक हरेक निर्णयकेँ न्यायसंगत ठहरबैत अछि।

लॉरेंस वेनुतीक देशीकरण-विदेशीकरणक (domestication vs. foreignization) द्वन्द्वमे ई अनुवाद आंशिक विदेशीकरणक मार्ग अपनबैत अछि — संस्कृत पारिभाषिक पद (अदृष्ट, उपाधि, अभाव, प्रामाण्य) सुरक्षित रखल गेल अछि, जे मूलशास्त्रीय-सांस्कृतिक "अन्यता" (otherness) क आदर करैत अछि, जखन कि वाक्य-रचना आ दृष्टान्त-प्रस्तुतिमे देशीकरणक तत्त्व अछि — ई एन्तवान बर्मनक "विकृतिकरण-प्रवृत्ति" (deforming tendencies) क विरुद्ध सचेत सावधानीक परिचायक अछि। कैटफोर्डक अनुवाद-परिवर्तन (translation shifts) क दृष्टिसँ कारिकासँ गद्य-रूपान्तरण एकटा श्रेणी-परिवर्तन (category shift, विशेषतः "structure-shift") अछि, जे मूल कवितात्मक बन्धनकेँ शिथिल करैत अर्थ-स्पष्टताकेँ प्राथमिकता दैत अछि। गिडियोन टूरीक स्वीकार्यता-पर्याप्तता (acceptability vs. adequacy) क मानदण्डपर ई अनुवाद स्वीकार्यतादिस अधिक झुकल अछि, अर्थात् लक्ष्य-भाषा (मैथिली) क स्वाभाविक मानकसभक अनुसरण मूल-भाषाक रूपगत निष्ठासँ बेसी प्राथमिकता पबैत अछि। आन्द्रे लफ़ेव्रेक पुनर्लेखन-सिद्धान्त (rewriting) आ पॉलीसिस्टम-सिद्धान्तक दृष्टिसँ ई अनुवाद मैथिली साहित्यिक बहुतन्त्र (polysystem) मे एकटा नव उपतन्त्र — शास्त्रीय दार्शनिक गद्य — क स्थापना करैत अछि, जे विदेह-परम्पराक समानान्तर साहित्य-संस्था-विमर्शक अनुरूप अछि। जॉर्ज स्टाइनरक "आफ्टर बेबल" मे प्रस्तुत व्याख्यात्मक गति (hermeneutic motion —trust, aggression, incorporation, restitution) क चतुष्टयी प्रक्रिया एहि अनुवादमे स्पष्ट देखल जा सकैत अछि: मूल पाठपर विश्वास, तार्किक-आक्रमणपूर्वक अर्थ-निष्कर्षण, मैथिली गद्यमे समावेशन, आ अन्ततः दार्शनिक सन्तुलन-पुनर्स्थापन (restitution)।

९. अनुवाद-पद्धति, पारिभाषिकता, भाषा-शैली आ मैथिली ज्ञानगद्य

९.१ शाब्दिक अनुवाद नहि, व्याख्यात्मक शास्त्रीय अनुवाद

ई पाठकेँ शाब्दिक अनुवाद कहब एकर स्वभाव गलत बुझब होएत। मूल कारिका, स्वोपज्ञ गद्य, दार्शनिक संकेत, तर्कक पूर्वापर सम्बन्ध आ आधुनिक पाठकक आवश्यकता मिलिकऽ मैथिलीमे विस्तारित रूप लैत अछि। पुस्तक स्वयं उचित रूपसँ एकरा “व्याख्यात्मक शास्त्रीय अनुवाद” मानबाक पक्षमे अछि।

एहि पद्धतिक लाभ स्पष्ट अछि: पाठ पठनीय होइत अछि, तर्कक चरण देखाइत अछि, शास्त्रीय भूलभुलैयामेशीर्षक मानचित्रक काज करैत अछि। हानि ई जे मूल, स्वोपज्ञ भाष्य, अनुवादक स्पष्टीकरण आ सम्पादकीय टिप्पणीक सीमा कतहु धुँधली भऽ सकैत अछि।

ताहि लेल आलोचनात्मक संस्करणमे चार स्तर स्पष्ट होयबाक चाही: मूल संस्कृत; निकट मैथिली अनुवाद; प्रवाहपूर्ण व्याख्यात्मक मैथिली; सम्पादकीय टिप्पणी। पुस्तकक अपन आलोचना सेहो एही पृथक्करणक आवश्यकता स्वीकार करैत अछि।

१.२ नव्य-न्याय पारिभाषिकता आ शब्दनीति

न्यायकुसुमाञ्जलि प्राचीन न्यायसँ नव्य-न्यायक संक्रमण-बिन्दु पर अछि, आ अनुवादमे एहि संक्रमणकालीन पारिभाषिकताक — अभाव, प्रतियोगी, उपाधि, व्याप्ति, अपेक्षा-बुद्धि, ज्ञातता, अन्विितार्थ, अभिहितान्वय आदि पद — सम्यक् मैथिलीकरण कएल गेल अछि। "उपाधि" जकाँ पारिभाषिक शब्दक व्याख्या करैत अनुवादक एकर आधुनिक तार्किक तुल्य ("unwarranted condition") सेहो कोष्ठकमे देल छथि, जे शास्त्रीय आ आधुनिक तर्कशास्त्रक बीच सेतु बनबैत अछि। उदयनसँ गंगेश धरिक वैचारिकनिरन्तरताक दृष्टिसँ ई अनुवाद उपाधि-निरूपण, अभावक कारणता आ अन्वितार्थवाद-अभिहितान्वयवादक द्वन्द्व — नव्य-न्यायक तीनू केन्द्रीय अवधारणाक बीजकेँ यथोचित उजागर करैत अछि। यद्यपि एकटा समर्पित पारिभाषिक शब्दकोश आ तुलनात्मक-सारणीक अभाव शोधार्थीक लेल एकटा सीमा रहि जाइत अछि।

अनुवादक सभसँ उचित निर्णय ई कएने छथि जे न्यायशास्त्रक मूल तकनीकी पदसभकेँ जबरदस्ती सामान्य मैथिली पर्यायसँ बदलल नहि गेल। हेतु, साध्य, व्याप्ति, उपाधि, समवाय, प्रतियोगी, प्रामाण्य, उपमान, शब्द-प्रमाण, अभाव आदि पदक ऐतिहासिक परिभाषा अछि; ओकरा बदलला पर सरलता तँ आबि सकैत अछि, मुदा दार्शनिक सटीकता नष्ट होएत।

एकर चारूकात मैथिली वाक्यरचना बनाओल गेल अछि। पुस्तक एहि उपलब्धिकेँ जटिल प्रतिपक्ष, विकल्प, हेतु, साध्य, व्याप्ति, उपाधि, अभाव, प्रमाण आ शब्दार्थ-विचार लेल आधुनिक मैथिली बौद्धिक गद्यक निर्माण मानैत अछि।

१.३ लोक-कोष आ शीर्षक-प्रणाली

“खरहाक सींग”, “भँवरा”, “गङ्गामे गोठ” सन रूप अनुवादकेँ जीवित रखैत अछि। ई देशीकरण मात्र नहि; ईदार्शनिक अमूर्तताकेँ स्थानीय अनुभूतिक दृश्य धरातल दैत अछि।

प्रत्येक जटिल तर्कक आगाँ स्पष्ट मैथिली शीर्षक एहि अनुवादक महान सम्पादकीय उपलब्धि अछि। मूल शास्त्रीय पाठक निरन्तर गद्य-पद्य जालमे आधुनिक पाठक हेरा सकैत छल; शीर्षक तर्कक दिशा बतबैत अछि। पूर्ण अध्ययन सेहो एहि शीर्षक-चिह्नित धारावाहिक गद्यकेँ प्रमुख उपलब्धि मानैत अछि।

१.४ दीर्घ वाक्य, पठनीयता आ लक्षित पाठक

किछु प्रामाण्य, अन्वितार्थ, ज्ञातता आ अनुमान-खण्डमे वाक्य बहुत उपवाक्य वहैत अछि। ई केवल अनुवादक दोष नहि; मूल शास्त्रीय तर्कक प्रकृति सेहो एहन अछि। तथापि सम्पादकीय स्तरपर जँ निष्कर्षक सीमा नहि टूटय तँ दीर्घ वाक्यक चयनात्मक विभाजन पठनीयता बढ़ाओत।

मैथिली वाक्य-विन्यासक दृष्टिसँ अनुवाद प्रायः स्वाभाविक अछि, यद्यपि संस्कृतनिष्ठ दीर्घ-समासयुक्त वाक्यसभमे कहीं-कहीं अनुवाद-गन्ध (translationese) रहि जाइत अछि। पारिभाषिक पदक नीतिमे संस्कृत-तत्सम पदक संरक्षण एकटा सुविचारित निर्णय अछि, जे शास्त्रीय गाम्भीर्यकेँ अक्षुण्ण रखैत अछि, मुदा सामान्य पाठकक लेल कठिनाइ बनि सकैत अछि। स्पष्टता आ पुनरावृत्ति (शीर्षक-प्रणाली आ प्रश्नोत्तर-शैली) पाठकक मार्गदर्शनमे सहायक अछि। स्वर-दृष्टिसँ अनुवाद सम्मानजनक बहसक मर्यादा राखैत अछि — प्रतिपक्षी मतसभक प्रस्तुतिमे कोनो व्यंग्यात्मक अपमान नहि अछि, जे शास्त्रार्थ-परम्पराक औचित्यक अनुरूप अछि। पठनीयता आ लक्षित पाठकक दृष्टिसँ ई अनुवाद उच्चशिक्षित, दर्शन-रुचि-सम्पन्न पाठक-वर्गकेँ लक्षित करैत अछि, आम पाठकक लेल अतिरिक्त सहायक-सामग्रीक आवश्यकता रहत।

१.५ प्रतिपक्ष-प्रस्तुतिक नैतिकता

दार्शनिक अनुवादक एकटा गम्भीर कसौटी ई होइत अछि जे ओ अपन विरोधीक तर्ककेँ ईमानदारीसँ दैत अछि की ओकर कमजोर रूप बनाकऽ आसानीसँ खण्डन करैत अछि। एहि दृष्टिसँ पुस्तक सफल अछि। चार्वाकक भौतिकवाद, बौद्ध क्षणिकवाद, सांख्य कारणवाद, कुमारिल-प्रभाकर मिमांसा, वैशेषिक आपत्ति—सभकेँ पर्याप्त बौद्धिक सम्मान देल गेल अछि।

ई गुण साहित्यिक बहुस्वरता मात्र नहि, दार्शनिक न्यायशीलता अछि। अनुवादक स्वर कतहु विजयी होइत अछि, मुदा प्रतिपक्ष केँ विदूषक बनबैत नहि।

१.६ मैथिली दार्शनिक गद्यक ऐतिहासिक महत्त्व

एहि कृतिक ऐतिहासिक मूल्यक सभसँ पैघ आधार भाषा अछि। मैथिलीमे प्रेम, लोकगीत, आख्यान, नाटक वा कविता लिखल जा सकैत अछि—ई सिद्ध करबाक आवश्यकता नहि। कठिन प्रश्न छल: की मैथिली “व्याप्ति”, “उपाधि”, “प्रतियोगी”, “ज्ञातता”,

"अन्विताभिधान", "अर्थापत्ति", "अनुपलब्धि", "परतः प्रामाण्य", "प्रतितथ्यात्मक शर्त", "निमित्त कारण" जकाँ अवधारणाक क्रमबद्ध विश्लेषण वहन कऽ सकैत अछि?

ई पुस्तक व्यवहारतः उत्तर दैत अछि—हँ।

ई उपलब्धि केवल शब्दकोषक नहि। दार्शनिक भाषा वाक्य-विन्याससँ बनैत अछि। "जँ… तँ…", "एहि आपत्तिक उत्तर…", "मुदा जँ एना मानल जाए…", "तैं…", "अतः…" जकाँ तर्कसूचक संरचनाक दीर्घअभ्यास एहि पोथीमे मैथिली बौद्धिक गद्यक एकटा व्यवहारिक व्याकरण रचैत अछि।

१०. सन्दर्भ-ग्रन्थसूची आ अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड

अध्याय १२: सम्पूर्ण सन्दर्भ-ग्रन्थसूची

अध्याय १२ एहि विशाल परियोजनाकेँ शोधयोग्य बनबैत अछि। ग्रन्थसूची आधार-पाठ आ संस्कृत संस्करण; उदयनाचार्यक आन कृति; न्याय-वैशेषिक आ नव्य-न्यायक मूल ग्रन्थ; मीमांसा, बौद्ध, सांख्य, योग, जैन आ वेदान्तक तुलनात्मक स्रोत; आधुनिक उदयन-अध्ययन; भारतीय काव्यशास्त्र; पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त; अनुवाद-सिद्धान्त; मैथिली भाषा-साहित्य आ दार्शनिक गद्यक स्रोत—एहि सभ क्षेत्रकेँ समेटैत अछि। एहि नौ प्रकारक विन्यास अनुक्रममे स्पष्ट रूपेँ देल अछि।

ग्रन्थसूचीक विस्तार पुस्तकक बहुविषयी चरित्रक अनुरूप अछि। न्यायसूत्र, भाष्य-टीका, उदयनक संस्करण, आधुनिक शोध, काव्यशास्त्र, व्याख्याशास्त्र आ अनुवाद-विज्ञानक एकहि परियोजनामे संगठित उपस्थिति शोधार्थीक लेल बहुत उपयोगी अछि।

एकरा आरो सशक्त करबाक सर्वाधिक आवश्यक उपाय ई अछि जे पुस्तकक प्रत्येक ऐतिहासिक, भाषिक, संस्थागत अथवा उद्धृत दावाकेँ सम्बन्धित ग्रन्थसूची-प्रविष्टिक पृष्ठ अथवा टिप्पणी सँ जोड़ल जाए। केवल अन्तिम ग्रन्थसूची पर्याप्त नहि; दावा सँ स्रोत धरि प्रत्यक्ष मार्ग आवश्यक अछि।

अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड

पुस्तकक उत्तरार्धमे एकटा विशाल अङ्ग्रेजी रूपान्तर अछि। ई केवल छोट सारांश नहि; अपन प्रकाशन-सूचना, अनुक्रम, अध्याय १ सँ १० धरि अनुसन्धानात्मक सामग्री, अध्याय ११ रूपेँ सम्पूर्ण अनूदित पाठक अङ्ग्रेजी प्रस्तुति, आ अन्तमे "Complete PNS Bibliography" रखैत अछि। अङ्ग्रेजी खण्डक ग्रन्थसूची मूल पाठ, संस्कृत संस्करण, टीका, अनुवाद, न्याय-वैशेषिक, प्रतिपक्षी दर्शन, आधुनिक शोध, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य समीक्षा आ अनुवाद-सिद्धान्त सभ समेटैत अछि।

एहि अङ्ग्रेजी खण्डक सांस्कृतिक उपयोगिता स्पष्ट अछि। मैथिलीमे निर्मित दार्शनिक ज्ञान केवल मैथिलीपाठक धरि सीमित नहि रहैत; विश्वक शोधार्थी ओकर दार्शनिक संरचना आ अनुवाद-पद्धति तक पहुँचि सकैत छथि।

मुदा पुस्तक-विन्यासक दृष्टिसँ एतय दू समस्या अछि। पहिल, पूरा सामग्री पुनः देल गेलासँ पुस्तक अत्यन्त विशाल भऽ गेल अछि। दोसर, मैथिली आ अङ्ग्रेजी खण्डक बीच अध्याय-दर-अध्याय, खण्ड-दर-खण्ड समानान्तर पृष्ठ-सूचक नहि रहने तुलनात्मक उपयोग कठिन भऽ सकैत अछि।

भविष्यक संस्करणमे "मैथिली खण्ड" आ "अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड" स्पष्ट विभाजक पृष्ठसँ शुरू हो, आ एकटा मैथिली पृष्ठ/अध्याय↔️अङ्ग्रेजी पृष्ठ/अध्याय मिलान-सूची जोड़ल जाए तँ पुस्तकक शोध-मूल्य बहुत बढ़त।

अङ्ग्रेजी ग्रन्थसूचीक एकटा नीक नीति ई अछि जे विदेशी भाषाक प्रकाशित शीर्षक शोध आ पुस्तकालयीय पहचान बचेबाक लेल मूल रूपेँ राखल गेल अछि।

११. पुनरावृत्ति, शास्त्रीय विश्वसनीयता आ सम्पादकीय परिष्कार

पुस्तकक भीतर पुनरावृत्तिक प्रश्न

अध्याय १ सँ १० धरि समान विषय अनेक बेर लौटैत अछि—उदयनाचार्यक ऐतिहासिक स्थान, फूलक रूपक, पाँच गुच्छ, श्लेष, रस, बहुस्वरता, नाइडा-वेनुती, मैथिली ज्ञान-सम्प्रभुता, समानान्तर साहित्य आदि।

सामान्य पुस्तक-संपादनक दृष्टिसँ ई पुनरावृत्ति घटाओल जा सकैत अछि। मुदा वर्तमान पुस्तकक निर्माण-इतिहास देखला पर ई पुनरावृत्ति दू प्रकारक अछि। किछु वास्तविक अनावश्यक पुनरावृत्ति अछि; किछु क्रमिक आलोचनात्मक विकास अछि—पहिने तीन गुच्छ आधारित समीक्षा, तकर बाद उत्तरार्धक समीक्षा, अन्ततः पाँचू गुच्छक पूर्ण अध्ययन।

अतः सभ पुरान समीक्षा हटाएब उचित नहि। सही उपाय ई होएत जे प्रत्येक अध्यायक आरम्भमे स्पष्ट संकेत हो—

"ई समीक्षा अनुवादक अमुक संचयी अवस्था पर लिखल गेल छल";

"ई अध्याय तेसर गुच्छ धरि उपलब्ध पाठक अध्ययन थिक";

"ई अध्याय पाँचू गुच्छ पूर्ण भेला बाद समग्र पुनर्मूल्याङ्कन थिक।"

एना भेला पर पुनरावृत्ति "त्रुटि" सँ "अनुवाद-इतिहास" बनि जाएत।

शास्त्रीय विश्वसनीयता आ मूल-संस्कृतक प्रश्न

पुस्तकक अपन सर्वाधिक विवेकपूर्ण स्वीकारोक्ति ई अछि जे लक्ष्यभाषिक गुणवत्ता आ मूलनिष्ठा एक बात नहि। मैथिली पाठ सुन्दर, संगत आ तार्किक होएतहुँ प्रत्येक संस्कृत पदक अर्थ हूबहू बचल अछि—ई केवल मैथिली पाठ पढ़िकऽ प्रमाणित नहि कएल जा सकैत अछि। पूर्ण स्रोत-निष्ठाक निर्णय लेल संस्कृत मूलक पङ्क्ति-दर-पङ्क्ति मिलान आवश्यक अछि।

ताहि लेल भविष्यक "आलोचनात्मक शोध-संस्करण" मे मूल संस्कृत कारिका आ गद्य, पाठभेद, कारिका-सङ्ख्या, तकर सोझाँ निकट मैथिली अनुवाद, तकर बाद व्याख्यात्मक मैथिली—ई व्यवस्था आदर्श होएत। पुस्तक स्वयं मूल संस्कृत, मैथिली, व्याख्या, कोश, अनुक्रमणिका आ डिजिटल समानान्तर दृश्यक अनुशंसा करैत अछि।

ई सुधार वर्तमान अनुवादक मूल्य घटबैत नहि; उलटे ओकर विद्वत्तापूर्ण प्रतिष्ठा सुरक्षित करत।

सम्पादकीय आ पुस्तक-विन्यास सम्बन्धी समीक्षा

वर्तमान संस्करणक मुखपृष्ठ, प्रकाशन-सूचना, विस्तृत अनुक्रम आ अध्याय-विभाजन पुस्तक कैँ औपचारिक ग्रन्थरूप दैत अछि। आरम्भिक पृष्ठपर मूल संस्कृत ग्रन्थकार, अनुवादक, सम्पादक, संस्करण-वर्ष आ प्रकाशकक पहचान स्पष्ट अछि।

मुदा एकटा हजार पृष्ठसँ पैघ द्विभाषिक शोधग्रन्थमे सामान्य विषय-सूची पर्याप्त नहि। एहि स्तरक संस्करण लेल चार प्रकारक अन्तिम अनुक्रमणिका बहुत उपयोगी होएत: दार्शनिक पद, व्यक्ति/सम्प्रदाय, उदाहरण-दृष्टान्त, आ संस्कृत कारिका। पुस्तकक अपन आलोचनात्मक अनुशंसा सेहो पूर्ण विषय-सूची, पद-सूची, व्यक्ति/सम्प्रदाय-सूची आ अन्तर्निर्देश जोड़बाक बात करैत अछि।

मैथिली-अङ्ग्रेजी समानान्तर अध्याय मिलान-सूची सेहो चाही। एहि बिना अङ्ग्रेजी पाठक जँ कोनो मैथिली अनुच्छेदक समतुल्य अङ्ग्रेजी पाठ खोजय चाहत तँ कठिनाई होएत।

तथ्यात्मक आ स्रोतगत सावधानी

दार्शनिक मूल पाठपर आधारित विवेचन पुस्तकक मजबूत धरातल अछि। मुदा अध्याय ५–८मे भाषा-जनसङ्ख्या, आधुनिक संस्था, विश्वविद्यालय, युनिकोड, आधुनिक डिजिटल भाषिक तकनीक, डिजिटल आन्दोलन, लेखकसभक संस्थागत स्थान आदि पर जे बाह्य तथ्य देल गेल अछि, ओहि सभक लेल पादटिप्पणी अनिवार्य बनाओल जाए।

एहने प्रकारेँ प्रत्यक्ष शास्त्रीय उद्धरण, वेद-वाक्य, भगवद्गीता, उपनिषद्, न्यायसूत्र अथवा टीकाकारक कथनक संग संस्करण, पृष्ठ/कारिका अथवा सूत्र-सङ्ख्या रहबाक चाही।

ग्रन्थसूची व्यापक अछि; आब ओकरा उद्धरण-तन्त्रसँ जोड़ब शेष काज अछि।

एहि कृतिक दस मुख्य बौद्धिक उपलब्धिक समेकित अर्थ

सम्पूर्ण पुस्तक पढ़लापर एकर उपलब्धि दसटा पृथक् उपलब्धिक रूपमे नहि, एकहि अन्तरसम्बद्ध परियोजनाक रूपमे बुझाइत अछि। उदयनाचार्यक संस्कृत तर्क मैथिलीमे आबैत अछि; मैथिली तर्क-वाक्य विकसित करैत अछि; शास्त्रीय पारिभाषिकता बचैत अछि; लोक-कोष सँ पाठ जीवन्त बनैत अछि; पाँच गुच्छक दार्शनिक एकता स्पष्ट होइत अछि; प्रतिपक्षसभ न्यायपूर्ण स्वर पबैत छथि; भारतीय काव्यशास्त्र ग्रन्थक साहित्यिकता उद्घाटित करैत अछि; आधुनिक अनुवाद-विज्ञान अनुवादक निर्णय बुझबैत अछि;

अनुसन्धानात्मक अध्याय अनुवादक सीमा स्वयं चिन्हैत अछि; आ अङ्ग्रेजी समानान्तर खण्ड एहि मैथिली ज्ञानक वैश्विक पठनीयता बनबैत अछि।

ताहि कारण एकरा केवल "उदयनाचार्यक पुस्तकक मैथिली रूप" कहब बहुत छोट परिभाषा होएत। ई वास्तवमे मैथिलीमे न्याय-दर्शनक अध्ययन-परिसर निर्मित करबाक प्रयास अछि।

आवश्यक भावी परिष्कार

सम्पूर्ण ग्रन्थक आधारपर सभसँ आवश्यक परिष्कार चारि स्तरपर अछि। पहिल, प्रारम्भिक आंशिक समीक्षा आ पछिला पूर्ण समीक्षा बीच संस्करण-काल स्पष्ट कएल जाए। दोसर, मूल–अनुवाद–व्याख्या–सम्पादकीय स्वरक दृश्य भेद बने। तेसर, मूल संस्कृत समानान्तर पाठ, कारिका-सङ्ख्या, पाठभेद आ स्रोत-पादटिप्पणी जोड़ल जाए। चारिम, मैथिली-अङ्ग्रेजी समानान्तरअनुक्रम, पदकोश, व्यक्ति-सूची, उदाहरण-सूची आ तर्क-नकाशा जोड़ल जाए।

पुस्तकक भीतर पहिनेसँ एहि दिशाक बहुत स्पष्ट योजना उपस्थित अछि—मूल संस्कृत आ पाठभेद, प्रवाहपूर्ण मैथिली, दार्शनिक व्याख्या-पादटिप्पणी, पारिभाषिक कोश-सूची-ग्रन्थसूची, तथा खोजयोग्य डिजिटल समानान्तर संस्कृत-मैथिली दृश्य। अतः ई बाहरी आलोचकक आरोप नहि; पुस्तक अपन अगिला परिपक्व अवस्थाक बाट स्वयं देखबैत अछि।

एहि सभक अतिरिक्त, सामान्य पाठकक सुविधा लेल अध्यायान्त लघु-सार वा तर्क-चित्र उपयोगी होएत; कतहु-कतहु हिन्दी-प्रभावित रूप आ पदक्रमगत अस्वाभाविकताकेँ मानक मैथिली अनुरूप परिष्कृत कएल जाए; आ प्रत्येक प्रत्यक्ष उद्धरणक संग स्तबक, कारिका, संस्करण अथवा पृष्ठ-सूचना देल जाए।

१२. अन्तिम समग्र मूल्याङ्कन

'न्यायकुसुमाञ्जलि' क एहि संस्करणक सर्वाधिक महत्त्व ई अछि जे ई मैथिली केँ दार्शनिक जटिलताक बोझ उठेबाक अवसर नहि मात्र दैत अछि, ओकर व्यवहारिक क्षमता देखबैत अछि। कारणता, अदृष्ट, सामर्थ्य, क्षणभंगवाद, प्रामाण्य, शब्द-अनित्यता, अभाव, अनुमान, उपमान, शब्द-प्रमाण, अन्विताार्थ, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, ज्ञातता, परमाणु, तात्पर्य, विधि आ ईश्वरानुमान—एतेक विविध आ सूक्ष्म विषय एकहि मातृभाषिक गद्य-परम्परामे आबि जाइत अछि।

अनुवादक सर्वाधिक सफल जतय छथि, ओतय संस्कृत पद केँ छोड़ैत नहि, मुदा संस्कृत वाक्यक दासता सेहो स्वीकारैत नहि। मूलक पारिभाषिक स्मृति बचैत अछि, लक्ष्यभाषाक व्याकरण सक्रिय रहैत अछि। एही द्वन्द्वात्मक सन्तुलनमे कृतिक वास्तविक अनुवाद-कला अछि।

आलोचनात्मक अध्यायसभक बारम्बार आत्मपरीक्षण पुस्तकक दोसरो विशिष्ट गुण अछि। कतहु पाठक अधूरापन, कतहु सम्पादकीय सीमा, कतहु मूल-संस्कृतक अभाव, कतहु दीर्घ वाक्य, कतहु स्रोत-निर्देश—ई सभ प्रश्न पुस्तक अपन भीतर स्वयं उठबैत अछि। पछिला पूर्ण अध्ययन पहिल आंशिक अध्ययनकेँ अप्रासंगिक नहि करैत; ओकरा विकास-इतिहासमे बदलि दैत अछि। मुदा अन्तिम संस्करणमे एहि कालक्रमकेँ स्पष्ट करब जरूरी अछि।

दार्शनिक दृष्टिसँ कृतिक सर्वाधिक प्रभावशाली उपलब्धि पाँचम गुच्छक आठ हेतु नहि मात्र, बल्कि पहिल चारि गुच्छ द्वारा ओकर भूमि तैयार करब अछि। कारणता सँ प्रमाण, प्रमाण सँ भाषा, भाषा सँ ज्ञान, ज्ञान सँ सर्वज्ञता, आ तकर बाद ईश्वरानुमान—ई क्रम 'न्यायकुसुमाञ्जलि' क वास्तुशिल्प अछि। एहि वास्तुकेँ मैथिलीमे स्पष्ट करब अनुवादक मुख्य सफलता अछि।

साहित्यिक दृष्टिसँ फूलक रूपक आरम्भसँ अन्त धरि ग्रन्थकेँ बाँधैत अछि। तर्क पुष्प बनैत अछि, विवाद गुच्छ बनैत अछि, आ निष्कर्ष अञ्जलि। शान्ति, बौद्धिक वीरता, आश्चर्य आ अन्तिम भक्ति एहि कठोर न्यायग्रन्थकेँ निर्जीव तर्क-संग्रह होमय सँ रोकैत अछि।

अनुवादशास्त्रीय दृष्टिसँ ई निष्ठा बनाम सृजनशीलताक सरल द्वन्द्व केँ अस्वीकार करैत अछि। कतहु मूल पद हूबहू बचैत अछि; कतहु लोक-मैथिली प्रवेश करैत अछि; कतहु श्लेष दू अर्थमे खुलैत अछि; कतहु सूत्र व्याख्यात्मक गद्य बनैत अछि। अतः एकर श्रेष्ठ परिभाषा वही अछि जे पुस्तक स्वयं सुझबैत अछि—व्याख्यात्मक शास्त्रीय अनुवाद।

सम्पादकीय दृष्टिसँ ई विशाल कृति एखन सेहो एकटा आरो उच्चतर "आलोचनात्मक समानान्तर संस्करण" क सम्भावना रखैत अछि। मूल संस्कृत, कारिका-सङ्ख्या, पाठभेद, स्पष्ट अनुवाद-व्याख्या विभाजन, स्रोत-पादटिप्पणी, विस्तृत अनुक्रमणिका आ मैथिली-

अङ्ग्रेजी मिलान-सूची जोड़ल गेलापर ई केवल महत्त्वपूर्ण अनुवाद नहि, विश्वविद्यालयीय स्तरक मानक अनुसन्धान-संस्करण बनबाक सामर्थ्य रखैत अछि।

अन्तिम निर्णय ई अछि: प्रस्तुत 'न्यायकुसुमाञ्जलि' मैथिली दार्शनिक गद्यक एकटा अत्यन्त महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि। एकर मुख्य शक्ति पूर्ण पाँच-गुच्छीय अनुवाद, कठिन न्याय-पारिभाषिकताक संरक्षण, स्वाभाविक मैथिली तर्क-वाक्य, प्रतिपक्षक न्यायपूर्ण प्रस्तुति, श्लेष आ पुष्परूपकक अर्थ-संरक्षण, विस्तृत आलोचनात्मक आत्मपरीक्षण, शोधोपयोगी अध्याय, परिशिष्ट, ग्रन्थसूची आ अङ्ग्रेजी समानान्तर विस्तारमे अछि। एकर मुख्य सम्पादकीय चुनौती पुरान आंशिक समीक्षा आ वर्तमान पूर्ण पाठक कालक्रम स्पष्ट करब, मूल–अनुवाद–व्याख्याक सीमा पृथक् करब, स्रोत-तन्त्र मजबूत करब आ विशाल सामग्रीक पुनरावृत्तिकेँ ऐतिहासिक क्रममे व्यवस्थित करब अछि।

एहि सुधारसभक बाद ई कृति केवल उदयनाचार्यक 'न्यायकुसुमाञ्जलि' क मैथिली अनुवाद नहि रहत; ई मिथिला-जनित न्याय परम्पराक मातृभाषिक पुनर्प्रतिष्ठा, मैथिली ज्ञानगद्यक विस्तार, आ शास्त्रीय दर्शनक आधुनिक पाठकीय पुनर्जीवनक एकटा दीर्घजीवी आधार-ग्रन्थ बनि सकैत अछि।

८१. तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन

सारांश

प्रस्तुत अध्ययन गङ्गेशोपाध्याय-प्रणीत तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली अनुवादित आ विस्तृत संस्करणक कृतिसार तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ परम्परागत अर्थमे उपन्यास वा काव्यकृति नहि, अपितु भारतीय ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, भाषादर्शन आ सत्तामीमांसाक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ थिक।

बीजशब्द · Keywords: अनुवाद · तत्त्वचिन्तामणि · अछि। · भारतीय · शास्त्रीय · सार · समालोचनात्मक

सारांश · Abstract

ई अध्याय "तत्त्वचिन्तामणि (मैथिली अनुवाद): ग्रन्थ-सार आ समालोचनात्मक मूल्याङ्कन" विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। तत्त्वचिन्तामणि [मूल संस्कृत कृति: गङ्गेश उपाध्याय · मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर] प्रस्तुत अध्ययन गङ्गेशोपाध्याय-प्रणीत तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली अनुवादित आ विस्तृत संस्करणक कृतिसार तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ परम्परागत अर्थमे उपन्यास वा काव्यकृति नहि, अपितु भारतीय ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, भाषादर्शन आ सत्तामीमांसाक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ थिक। तथापि एकर पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षात्मक रचना, तर्कक नाटकीय गति, अवधारणाक क्रमिक परिष्कार, भाषिक घनत्व आ बौद्धिक विस्मय एकरा साहित्यिक आलोचनाक अनेक उपकरणसँ पढ़बाक अवसर दैत अछि।

भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे एक अध्ययन

तत्त्वचिन्तामणि [मूल संस्कृत कृति: गङ्गेश उपाध्याय · मैथिली अनुवाद: गजेन्द्र ठाकुर]

प्रस्तुत अध्ययन गङ्गेशोपाध्याय-प्रणीत तत्त्वचिन्तामणिक मैथिली अनुवादित आ विस्तृत संस्करणक कृतिसार तथा आलोचनात्मक मूल्यांकन प्रस्तुत करैत अछि। ई ग्रन्थ परम्परागत अर्थमे उपन्यास वा काव्यकृति नहि, अपितु भारतीय ज्ञानमीमांसा, तर्कशास्त्र, भाषादर्शन आ सत्तामीमांसाक महत्त्वपूर्ण शास्त्रीय ग्रन्थ थिक। तथापि एकर पूर्वपक्ष–उत्तरपक्षात्मक रचना, तर्कक नाटकीय गति, अवधारणाक क्रमिक परिष्कार, भाषिक घनत्व आ बौद्धिक विस्मय एकरा साहित्यिक आलोचनाक अनेक उपकरणसँ पढ़बाक अवसर दैत अछि। अध्ययनमे रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति, औचित्य, शब्दशक्ति आ शास्त्र-काव्य सम्बन्ध जकाँ भारतीय अवधारणाक संग अरस्तूवादी तर्क, रूपवाद, संरचनावाद, व्याख्याशास्त्र, पाठक-प्रतिक्रिया, विखण्डन, व्यवहारवाद, विश्वसनीयतावाद आ विश्लेषणात्मक दर्शनक तुलनात्मक उपयोग कएल गेल अछि। मुख्य निष्कर्ष ई अछि जे तत्त्वचिन्तामणिक वास्तविक साहित्यिकता कथानकमे नहि, बल्कि विचारक संरचना, संवादात्मकता, परिभाषात्मक अनुशासन आ सत्यक अनवरत परीक्षणमे निहित अछि। मैथिली अनुवाद एहि शास्त्रीय धरोहरकेँ आधुनिक मातृभाषायी ज्ञान-संसारमे पुनः प्रतिष्ठित करैत अछि आ मैथिली अकादमिक गद्यक सामर्थ्यकेँ विस्तृत करैत अछि।

कूटशब्द: तत्त्वचिन्तामणि, गङ्गेश उपाध्याय, नव्य-न्याय, मैथिली अनुवाद, ज्ञानमीमांसा, भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य आलोचना, भाषादर्शन।

१. प्रस्तावना: कृति, परम्परा, संस्करण आ आलोचनात्मक समस्या

भारतीय बौद्धिक इतिहासमे किछु ग्रन्थ एहन होइत अछि जे केवल अपन विषयक प्रतिपादन नहि करैत, अपितु विचार करबाक भाषा, पद्धति आ अनुशासनकेँ बदलि दैत अछि। गङ्गेशोपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणि एहनहि ग्रन्थ थिक। प्राचीन न्याय-वैशेषिक परम्पराक अनेक तत्त्वकेँ स्वीकार करैतहुँ ई कृति प्रमाणमीमांसाकेँ केन्द्रमे आनैत अछि आ अवधारणा, सम्बन्ध, अभाव, ज्ञान, स्मृति, भ्रम, अनुमान तथा शब्दार्थक विश्लेषण लेल एहन पारिभाषिक ढाँचा विकसित करैत अछि जे परवर्ती भारतीय दर्शनक लगभग सभ प्रमुख शास्त्रीय परम्पराकेँ प्रभावित करैत अछि।

गङ्गेश उपाध्याय-विरचित 'तत्त्वचिन्तामणि'क ई मैथिली अनुवाद (अनुवादक-सम्पादक: गजेन्द्र ठाकुर; विदेह प्रकाशन; प्रथम संस्करण २००४, परिवर्धित संस्करण २०२६; ISBN 978-93-6123-729-4) मैथिली गद्य-साहित्यक इतिहासमे एकटा असाधारण घटना अछि। चौदहम शताब्दीक मिथिलामे रचित जे ग्रन्थ सम्पूर्ण भारतीय ज्ञानमीमांसाक दिशा बदलि देलक, ओ सात सय बर्खक बाद पहिल बेर अपने माटिक जीवन्त भाषामे, समग्र रूपेँ, घुरि आयल अछि—ई तथ्य अपने-आपमे एहि ग्रन्थक सांस्कृतिक महत्त्वक घोषणा अछि। संस्कृतक जटिलतम शास्त्रीय गद्यकेँ—जकर पारिभाषिक सघनता विश्वक तर्कशास्त्रीय साहित्यमे अद्वितीय मानल जाइत अछि—मैथिलीमे उतारब केवल भाषान्तरण नहि, अपितु मैथिली भाषाक शास्त्रधारण-क्षमताक अग्निपरीक्षा छल, आ ई संस्करण ओहि परीक्षामे भाषाकेँ उत्तीर्ण सिद्ध करैत अछि।

ग्रन्थक स्थापत्य द्विस्तरीय अछि। पहिल स्तरपर छह अध्याय अछि जे क्रमशः भूमिका आ प्रारम्भिक दार्शनिक विवेचन, प्रत्यक्षखण्ड, अनुमानखण्ड, ईश्वरानुमान, उपमान खण्ड आ शब्दखण्डक परिचय प्रस्तुत करैत अछि—ई अध्यायसभ पाठककेँ मूल पाठक सोझाँ ठाढ़ हेबासँ पहिने आवश्यक दार्शनिक, ऐतिहासिक आ पारिभाषिक भूमि उपलब्ध करबैत अछि। दोसर स्तरपर पाँच परिशिष्टमे पाँचू खण्डक (प्रत्यक्ष, अनुमान, ईश्वरानुमान, उपमान आ शब्द) पूर्ण मैथिली अनुवाद अछि। छठम परिशिष्ट 'अध्ययन-सहचर'क रूपमे ग्रन्थक प्रमुख परिभाषा, पूर्वपक्ष, सिद्धान्त, आपत्ति आ उत्तरकेँ स्रोत-क्रममे सूत्रबद्ध करैत अछि—अध्यापन आ पुनरावृत्ति लेल ई एकटा स्वतन्त्र लघुग्रन्थक काज करैत अछि। अन्तमे व्यापक सत्यापित ग्रन्थसूची अछि जे बिब्लियोथेका इण्डिका संस्करणसँ आरम्भ कऽ तिरुपति-संस्करण, फ्राउवाल्नर, गूकूप, सिबजीवनभट्टाचार्य, वी. एन. झा आ स्टीफन फिलिप्स धरिक अन्तरराष्ट्रीय अध्ययन-परम्पराकेँ समेटैत अछि। एहि प्रकारेँ ई संस्करण अनुवाद, भाष्य, पाठ्यपुस्तक आ शोध-सन्दर्भ—चारू भूमिका एक्केसंग निमाहैत अछि।

अतः ई केवल भाषान्तरण नहि, बल्कि पाठकीय प्रवेश, शास्त्रीय पारिभाषिकता, आधुनिक तुलनात्मक दृष्टि आ क्षेत्रीय बौद्धिक इतिहासकेँ एकत्र करयवला सम्पादित ज्ञान-परियोजना थिक।

एहि अध्ययनक आलोचनात्मक समस्या दू स्तरपर अछि। पहिल, दर्शन-ग्रन्थक साहित्यिक मूल्यांकन कोना कएल जाए? दोसर, भारतीय आ पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्तक उपकरण एहन शास्त्रीय तर्कग्रन्थपर कतय धरि सार्थक सिद्ध होइत अछि? एहि प्रश्नक उत्तर लेल साहित्यकेँ केवल कल्पित कथा अथवा रसात्मक पद्यक संकुचित परिभाषामे नहि, बल्कि भाषामे विन्यस्त मानवीय अनुभव, ज्ञान, विवाद आ अर्थ-निर्माणक व्यापक क्रियारूपेँ ग्रहण करब आवश्यक अछि।

२. शोधक उद्देश्य, प्रश्न आ पद्धति

एहि अध्ययनक मुख्य उद्देश्य तत्त्वचिन्तामणिक समग्र वैचारिक संरचनाकेँ संक्षिप्त किन्तु पर्याप्त रूपेँ प्रस्तुत करब, एकर शास्त्रीय गद्यक साहित्यिक गुणसभकविवेचन करब, भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणासँ एकर अन्तर्सम्बन्ध निर्धारित करब, पाश्चात्य आलोचनात्मक सिद्धान्तक आलोकमे एकर पुनर्पाठ करब आ मैथिली अनुवादक सांस्कृतिक तथा भाषिक महत्त्वक मूल्यांकन करब थिक।

मुख्य शोध-प्रश्न ई सभ अछि: तत्त्वचिन्तामणिक वैचारिक एकता कोन तत्त्वसँ निर्मित होइत अछि? पूर्वपक्ष–सिद्धान्तात्मक संरचना कोना बौद्धिक नाटकीयता उत्पन्न करैत अछि? रस, ध्वनि, वक्रोक्ति, रीति आ औचित्य जकाँ सिद्धान्त दर्शन-ग्रन्थपर कोना लागू होइत अछि? संरचनावाद, व्याख्याशास्त्र आ विखण्डन जकाँ आधुनिक पद्धति नव्य-न्यायक अर्थ-निर्माणकेँ कोना उद्घाटित करैत अछि? मैथिली अनुवाद मूल शास्त्रीय घनत्वकेँ सुरक्षित रखैत मातृभाषायी सुबोधता कोना निर्मित करैत अछि?

पद्धतिक स्तरपर ई अध्ययन पाठकेन्द्रीय, तुलनात्मक, व्याख्यात्मक आ मूल्यांकनात्मक अछि। मूल प्रतिपादनक कथ्य, तर्क-विन्यास, उदाहरण, पारिभाषिकता आ भाषिक शैलीक अध्ययन भारतीय तथा पाश्चात्य सिद्धान्तक चयनित अवधारणाक संग कएल गेल अछि। दर्शनक ऐतिहासिक सत्यता आ साहित्यिक प्रभावकेँ अलग-अलग स्तरपर ग्रहण कएल गेल अछि।

३. तत्त्वचिन्तामणिक संरचना आ बौद्धिक परियोजना

एहि ग्रन्थक केन्द्रीय जिज्ञासा अछि—मनुष्य यथार्थ ज्ञान कोना प्राप्त करैत अछि, यथार्थ आ अयथार्थ ज्ञानक भेद कोना निश्चित होइत अछि, आ कोन ज्ञान-साधनकेँ प्रमाण मानल जाए। गङ्गेशोपाध्याय प्राचीन न्यायक सोलह पदार्थपर केन्द्रित विन्यासक स्थानपर प्रमाणमीमांसाकेँ केन्द्रमे स्थापित करैत प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—एहि चारि प्रमाणक सूक्ष्म विश्लेषण करैत छथि।

तत्त्वचिन्तामणिक बौद्धिक केन्द्र प्रमाण थिक। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—एहि चारि माध्यमसँ यथार्थ ज्ञान कोना उत्पन्न होइत अछि, ओकर सीमा कतेक अछि, दोष कोना प्रवेश करैत अछि आ सत्यताक निर्णय कोना होइत अछि—ग्रन्थक समस्त विमर्श एहि प्रश्नक चारूकात विकसित होइत अछि।

ग्रन्थक रचना-प्रक्रियामे पूर्वपक्ष केवल औपचारिक विरोधी नहि। मीमांसक, बौद्ध, वेदान्ती, व्याकरणविद् आ प्राचीन नैयायिक मतसभक सबलतम रूप प्रस्तुत कएल जाइत अछि। ओकर बाद व्यभिचार, अतिव्याप्ति, अव्याप्ति, असम्भव, अनवस्था, अन्योन्याश्रय, गौरव वा बाध जकाँ दोषसभक परीक्षण होइत अछि। परिभाषा आसिद्धान्त एहि द्वन्द्वात्मक प्रक्रियासँ क्रमशः परिष्कृत होइत अछि।

एहि कारण कृतिक समग्रता विषयसभक मात्र संग्रह नहि। एकर एकता विधिमे अछि—कोनो ज्ञान-दाबीकेँ तखने स्वीकार करब जखन ओकर कारण, सीमा, विषय, विरोधी उदाहरण आ प्रामाण्य स्पष्ट हो। सत्य एतय पूर्वनिर्धारित निष्कर्ष नहि, अपितु परीक्षणक प्रक्रिया थिक।

४. विस्तृत कृतिसार

४.१ मङ्गलवाद आ कारणताक परीक्षण

ग्रन्थक आरम्भ मङ्गलाचरणक फलपर विवादसँ होइत अछि। सामान्य मान्यता अछि जे मङ्गलाचरण ग्रन्थक सफल समाप्तिक कारण अछि। गङ्गेश एहि दावाकेँ अन्वय-व्यतिरेकक कसौटीपर परखैत छथि। मङ्गलाचरणक बिना सेहो काज पूर्ण होइत अछि आ मङ्गलाचरणक बादो लेखकक मृत्यु वा अन्य कारणसँ ग्रन्थ अधूरा रहि सकैत अछि। अतः मङ्गलाचरण स्वयं समाप्तिक प्रत्यक्ष कारण नहि।

सिद्धान्त ई स्थापित होइत अछि जे मङ्गलाचरण सम्भावित विघ्नक नाश करैत अछि। जखन विघ्न दूर होइत अछि, तखन लेखकीय प्रयास, ज्ञान, समय आ सामग्री जकाँ लौकिक कारण काज पूर्ण करैत अछि। ई विमर्श धार्मिक आचारकेँ तार्किक कारणवादक भीतर पुनः परिभाषित करैत अछि।

जतय मङ्गल बिना काज पूर्ण होइत अछि ओतय पहिनेसँ विघ्नाभाव मानल जाइत अछि। एहि प्रकार एकटा प्रतीयमान लघु धार्मिक प्रश्न कार्यकारणभावक गम्भीर तार्किक विमर्शमे बदलि जाइत अछि।

४.२ प्रामाण्यवाद, भ्रम आ ज्ञानक सत्यता

मीमांसक स्वतःप्रामाण्यवादक अनुसार ज्ञान अपन सत्यता स्वयं प्रकाशित करैत अछि। नैयायिक परतः प्रामाण्यवादक अनुसार ज्ञानक यथार्थता ओकर उत्पत्तिक क्षण स्वतः निश्चित नहि होइत अछि, अपितु अनुमान, सफल प्रवृत्ति अथवा प्रमाणान्तरसँ—अर्थात् एकटा पृथक्, परवर्ती मानसिक प्रक्रियासँ—ज्ञात होइत अछि। जँ प्रत्येक ज्ञान उत्पन्न होइतहि प्रमाणित हो, तँ संशय आ भ्रमक अनुभव असम्भव होएबाक चाही; संशयक अनुभवे स्वतःप्रामाण्यक विरुद्ध निर्णायक साक्ष्य अछि।

शुक्ति-रजत भ्रम एहि विवादक प्रसिद्ध उदाहरण थिक। प्रभाकर मतमे सोझाँ उपस्थित शुक्ति आ स्मृत रजतक भेद ग्रहण नहि होइत अछि; भ्रम भेदाग्रह थिक। न्यायमतमे शुक्तिमे रजतत्वक सकारात्मक आरोप होइत अछि। एहि अन्यथाख्यातिवादमे भ्रम केवल रिक्त अज्ञान नहि, बल्कि विशेष्य-विशेषणक सदोष संयोजन थिक।

४.३ प्रत्यक्ष, सन्निकर्ष, अभाव आ मन

प्रत्यक्षकेँ साक्षात्कारी प्रमा मानल गेल अछि। गङ्गेश प्रत्यक्षक लक्षण, छह प्रकारक लौकिक सन्निकर्ष—संयोग, संयुक्त-समवाय, संयुक्त-समवेत-समवाय, समवाय, समवेत-समवाय आ विशेष्य-विशेषण-भाव—तथा तीन प्रकारक अलौकिक प्रत्यक्ष—

सामान्यलक्षण, ज्ञानलक्षण आ योगज—क विवेचन करैत छथि। निर्विकल्पक-सविकल्पक भेद सेहो एहि खण्डक महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। निर्विकल्पक प्रत्यक्षक स्थापना ई देखबैत अछि जे प्रथम अनुभवमे वस्तु आ जाति पृथक्-पृथक् गृहीत होइत अछि, संसृष्ट रूपेँ नहि; अवधारणाशून्यसँ नहि गढ़ल जाइत अछि, बाह्य वास्तविकतासँ प्राप्त होइत अछि। ई सन्निकर्ष द्रव्य, गुण, कर्म, जाति, शब्द आ अभावक प्रत्यक्ष स्पष्ट करैत अछि।

अनुमान, उपमान आ शब्द पूर्वज्ञानपर आश्रित छथि, जखन कि प्रत्यक्ष इन्द्रिय-विषय सम्बन्धसँ उत्पन्न होइत अछि; इन्द्रियक सम्बन्ध केवल स्थूल द्रव्यसँ नहि।

अभावकेँ पृथक् यथार्थ मानब न्याय-दर्शनक महत्त्वपूर्ण विशेषता अछि। घटयुक्त भूमि आ घटरहित भूमि दृश्यतः एकहि अधिकरण होइतहुँ अनुभूतिक स्तरपर भिन्न छथि। “भूमिपर घट नहि अछि” ज्ञान केवल भूमिक ज्ञान नहि, बल्कि भूमिविशिष्ट घटाभावक प्रत्यक्ष थिक।

एहि बिन्दुपर न्याय दर्शन अनुपलब्धिकेँ स्वतन्त्र प्रमाण मानबाक आवश्यकता अस्वीकार करैत अछि।

मनक अणुत्वक सिद्धान्त ज्ञानक क्रमिकताकेँ स्पष्ट करैत अछि। मन जँ सर्वव्यापक होइत, तँ सभ इन्द्रियक विषय एकहि समय ज्ञात होइत। मुदा ज्ञान क्रमशः उत्पन्न होइत अछि। एहि कारण मन अणुपरिमाणक आ एक समयमे एक इन्द्रियसँ संयुक्त मानल गेल अछि। “हम जनैत छी जे हम घटकेँ देखि रहल छी” एहन आत्मपरक ज्ञानक लेल अनुव्यवसाय नामक द्वितीय मानसिक ज्ञान स्वीकार कएल गेल अछि।

अनुव्यवसायक सिद्धान्त—ज्ञानक ज्ञान—एहि खण्डक सर्वाधिक सूक्ष्म उपलब्धिमेसँ अछि: बाह्य प्रत्यक्षमे भ्रमसम्भव अछि, मुदा ‘हमरा देबाल पियर देखाइत अछि’ एहि आन्तरिक अनुभूतिमे भ्रम नहि भऽ सकैत अछि।

४.४ अनुमान, व्याप्ति, परामर्श आ उपाधि

अनुमानखण्ड नव्य-न्यायक हृदय आ ग्रन्थक तार्किक चरमोत्कर्ष थिक। एतय अनुमिति, व्याप्ति, पक्षता, परामर्श, उपाधि, तर्क, केवलान्वयी, केवलव्यतिरेकी आ हेत्वाभासक विश्लेषण अछि। व्याप्तिक—साध्य आ हेतुक अविनाभाव-सम्बन्धक—निर्दोष परिभाषाक खोज प्रसिद्ध ‘व्याप्तिपञ्चक’ सँ आरम्भ भऽ ‘सिंह-व्याघ्री’ लक्षण धरि पहुँचैत अछि। व्याप्तिग्रहक उपाय, तर्कक भूमिका, सामान्यलक्षणा-प्रत्यासत्तिक अनिवार्यता आ उपाधिक सिद्धान्त मिलिकऽ आगमनात्मक ज्ञानक एकटा पूर्ण दर्शन निर्मित करैत अछि। पक्षताक परिभाषा ‘सिषाधयिषा-विरह-विशिष्ट-सिद्ध्यभाव’ क रूपमे कएल गेल अछि, जे अनुमानक मनोवैज्ञानिक पूर्वशर्तकेँ तार्किक परिशुद्धतासँ बान्हैत अछि।

अनुमान अज्ञात साध्यक ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। पर्वतपर धूम देखि अग्निक अनुमिति तखन सम्भव अछि जखन धूम-अग्निक व्याप्ति स्मृत हो आ वर्तमान पर्वतमे व्याप्तिविशिष्ट धूमक पक्षधर्मता ग्रहण हो। एहि संयुक्त ज्ञानकेँ परामर्श कहल जाइत अछि।

व्याप्तिक परिभाषा करैत गङ्गेश सम्भावित अतिव्याप्ति, अव्याप्ति, असम्भव आ उपाधि-दोषसभकेँ क्रमशः हटबैत छथि। एहि पद्धतिमे परिभाषा कोनो स्थिर वाक्य नहि, अपितु प्रतिपक्षीय आक्षेपसभक अग्निमे परिशोधित अवधारणा थिक।

मात्र “जतय हेतु, ततय साध्य” कहब पर्याप्त नहि, कारण सोपाधिक सहचार व्यभिचारी भऽ सकैत अछि।

उपाधि एहन गुप्त शर्त थिक जे साध्यक संग तँ रहैत अछि, मुदा हेतुक संग सर्वत्र नहि। “अग्नि अछि, अतः धूम अछि” अनुमान आर्द्र इन्धनक उपाधिसँ दूषित अछि, कारण प्रत्येक अग्नि धूम उत्पन्न नहि करैत अछि। एहि प्रकार उपाधि दृश्य सहसम्बन्ध आ वास्तविक अविनाभावक बीचक भेद उद्घाटित करैत अछि।

केवलान्वयी, अन्वयव्यतिरेकी आ केवलव्यतिरेकी अनुमान द्वारा सकारात्मक आ नकारात्मक सहचारक भिन्न स्थितिसभ स्पष्ट होइत अछि। अर्थापत्तिकेँ पृथक् प्रमाण मानबाक मीमांसक मतकेँ न्याय केवलव्यतिरेकी अनुमानमे समाहित करैत लाघवक सिद्धान्त अपनबैत अछि।

४.५ पञ्चावयव, वाद आ हेत्वाभास

न्याय-वाक्यक पाँच अवयव—प्रतिज्ञा, हेतु, उदाहरण, उपनय आ निगमन—तर्ककेँ सार्वजनिक, क्रमबद्ध आ परीक्षणीय बनबैत अछि। उदाहरण व्याप्तिक सामान्य नियम देखबैत अछि, उपनय ओहि नियमकेँ वर्तमान पक्षपर लागू करैत अछि, आ निगमन निष्कर्ष स्थापित करैत अछि।

हेत्वाभास तर्कक आन्तरिक दोषसभक व्यवस्थित वर्गीकरण थिक। सव्यभिचार अनियमित हेतु, विरुद्ध विपरीत निष्कर्षक हेतु, सत्प्रतिपक्ष समानबल विरोधी कारण, असिद्ध अप्रमाणित हेतु आ बाधित प्रबल प्रमाणसँ पूर्वहि खण्डित साध्यक द्योतक अछि। ई वर्गीकरण केवल शास्त्रार्थक उपकरण नहि; आधुनिक बौद्धिक विमर्श, न्यायिक तर्क, वैज्ञानिक प्रतिपादन आ सार्वजनिक संवादमे सेहो एकर उपयोगिता अक्षुण्ण अछि।

४.६ ईश्वरानुमान, शक्ति आ पुरुषार्थ

ईश्वरानुमान आस्थाक आवेगपर नहि, कार्य-कारण सम्बन्धपर आधारित अछि। पृथ्वी आदि कार्य छथि; कार्यबुद्धिमान कर्त्ताक अपेक्षा करैत अछि; अतः जगतक निमित्त कारणरूपेँ ईश्वरक स्थापना कएल जाइत अछि। परमाणु उपादान कारण छथि, ईश्वर संयोजक निमित्त कारण।

ईश्वरानुमान-खण्डमे 'क्षित्यङ्कुरादिकं सकर्तृकं कार्यत्वात् घटवत्' एहि पञ्चावयव अनुमानक रक्षा प्रतिपक्षीक आक्रमण-शृङ्खलाक विरुद्ध कएल गेल अछि। पक्षक अनुगत रूपक अभाव, अन्योन्याश्रय, संदिग्धानैकान्तिकता, सिद्धसाधन आ अर्थान्तरक आपत्तिसभक क्रमबद्ध परिहार एहि खण्डकेँ भारतीय दार्शनिक ईश्वरवाद-विमर्शक सर्वाधिक कठोर तार्किक दस्तावेजमेसँ एक बनबैत अछि।

एहि तर्कपर शरीररहित कर्त्ता, अनेक कर्त्ता, अदृष्टक स्वतन्त्रता आ जगतक स्वाभाविक गठन जकाँ आपत्तिसभ उठैत अछि। न्याय परम्परा इच्छा, ज्ञान, प्रयत्न, शक्ति आ कर्मफल-वितरणक अवधारणाद्वारा उत्तर दैत अछि।

एहिमे दाहशक्ति-सिद्धान्त, प्रतिबन्धकाभाव, कार्य-कारण सम्बन्ध, पुरुषार्थवाद, कर्मफल आ मोक्षक विवेचन सेहो अछि। एतय ईश्वर आस्थाक नहि, अनुमानक विषय छथि—पक्ष, साध्य, हेतु, व्याप्ति आ उपाधिक कसौटीपर कसल गेल निष्कर्ष।

ग्रन्थ ईश्वरक अस्तित्वक प्रश्नकेँ भावावेग वा धार्मिक आदेशक विषय नहि, सार्वजनिक तर्कक विषय बनबैत अछि।

४.७ उपमानः सादृश्यसँ नाम-ज्ञान

उपमान सादृश्यद्वारा संज्ञा आ संज्ञीक सम्बन्धक ज्ञान थिक। "गवय गायसदृश वन्य पशु अछि" ई वचन सुनल व्यक्ति वनमे गायसदृश जीव देखि "एहि वस्तुक नाम गवय अछि" बुझैत अछि। एतय केवल सादृश्यक ज्ञान नहि, पूर्वश्रुत शब्द आ वर्तमान वस्तुक सम्बन्धक नवीन बोध उत्पन्न होइत अछि।

गङ्गेश उपमानकेँ प्रत्यक्ष, अनुमान वा शब्दमे पूर्णतः विलीन नहि करैत छथि। उपमानक स्वतन्त्रता एहि विशिष्ट फलमे अछि जे ज्ञात सादृश्यक माध्यमसँ शब्दक वाच्य वस्तुक पहचान होइत अछि। एहि विमर्शमे सादृश्यक सत्ता, एकत्व, अनेकत्व, धर्म-साम्य आ शब्दशक्तिक सूक्ष्म प्रश्न उठैत अछि।

४.८ शब्द, वाक्यार्थ आ तात्पर्य

शब्दखण्ड भाषा दर्शनक दृष्टिसँ अत्यन्त समृद्ध अछि। शब्द प्रमाण तखन बनैत अछि जखन विश्वसनीयवक्ताक अर्थपूर्ण वचन श्रोतामे यथार्थ ज्ञान उत्पन्न करैत अछि। वाक्यार्थ-बोध लेल आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य आवश्यक मानल गेल अछि।

आकाङ्क्षा पदसभक परस्पर अपेक्षा थिक; योग्यता अर्थसभक सम्भव सम्बन्ध; आसत्ति पदसभक उचित सामीप्य; तात्पर्य वक्ताक अभिप्रेत अर्थ। "अग्निसँ सींचू" वाक्यमे व्याकरणिक आकाङ्क्षा रहितो अर्थगत योग्यता नहि अछि। व्यङ्ग्य, अनेकार्थकता, लक्षणा आ प्रसङ्गजन्य अर्थमे तात्पर्य निर्णायक बनैत अछि।

शब्दखण्ड जाति आ व्यक्ति, अभिधा आ लक्षणा, योग आ रूढ़ि, समास, धातु, आख्यात, उपसर्ग तथा विधिवाक्यक अर्थक विवेचन करैत अछि। एहि कारण ई खण्ड केवल प्रमाणशास्त्र नहि, एकटा सुविकसित अर्थविज्ञान आ वाक्यदर्शन सेहो थिक।

बौद्ध आ वैशेषिक आक्षेपसभक खण्डन, शब्दानित्यतावादक स्थापना आ वेदक पौरुषेयत्व-विमर्श एहि खण्डक अन्य प्रमुख विषय अछि। एहि प्रकार ग्रन्थ ज्ञानक चारू स्रोत—प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्द—क एकटा पूर्ण, अन्तःसंगत ज्ञानमीमांसीय स्थापत्य निर्मित करैत अछि।

५. कृतिक बौद्धिक नाटकीयता आ शास्त्रीय गद्य

यद्यपि ई कृति उपन्यास नहि, तथापि एकर अन्तरंग संरचनामे विशिष्ट नाटकीय गति अछि। प्रत्येक प्रसङ्गमे सामान्यतः पाँच अवस्था देखाइत अछि—

पूर्वपक्ष अपन मत प्रस्तुत करैत अछि;

सिद्धान्ती ओहिमे दोष देखबैत अछि;

पूर्वपक्ष प्रत्युत्तर दैत अछि;

सिद्धान्ती परिभाषाकेँ परिष्कृत करैत अछि;

अन्ततः दोषरहित अथवा अपेक्षाकृत समर्थ निष्कर्ष स्थापित होइत अछि।

ई संरचना शास्त्रीय वादक बौद्धिक नाट्य थिक। एहिमे पात्रक स्थानपर दार्शनिक मतसभ उपस्थित छथि; संघर्षक स्थानपर अवधारणात्मक विरोध; उत्कर्षक स्थानपर सूक्ष्मतम आपत्ति; आ समाधानक स्थानपर सिद्धान्त-लक्षण। पाठक निष्क्रिय श्रोता नहि रहैत, अपितु प्रत्येक तर्कक सम्भावित दोष खोजयवला सह-विचारक बनि जाइत अछि।

नाटकीय उत्कण्ठा एहि प्रश्नसँ उत्पन्न होइत अछि जे प्रस्तुत परिभाषा अगिला आपत्तिक सामना कऽ सकत वा नहि।

शास्त्रीय गद्यक सौन्दर्यक मूल पारिभाषिक अनुशासन, क्रमिकता आ अवधारणात्मक घनत्वमे अछि। वाक्यक उद्देश्य सजावट नहि, अर्थक सीमांकन अछि।

६. भारतीय साहित्य-सिद्धान्तक आलोकमे आलोचनात्मक अनुशीलन

६.१ रसः बौद्धिक अद्भुत आ शान्ति

परम्परागत रसदृष्टिसँ दार्शनिक ग्रन्थमे शृङ्गार, करुण वा वीर रसक प्रत्यक्ष आयोजन नहि भेटैत अछि। तथापि ज्ञानानुभूतिक स्तरपर एहि कृतिक प्रधान भाव “बौद्धिक अद्भुत” थिक। जटिल समस्याक सूक्ष्म समाधान, सामान्य अनुभवक भीतर निहित तार्किक संरचनाक उद्घाटन आ परिभाषाक क्रमिक परिष्कार विस्मय उत्पन्न करैत अछि।

रस-सिद्धान्त मूलतः नाट्य आ काव्यक भावानुभूतिक विवेचन करैत अछि; तत्त्वचिन्तामणिमे परम्परागत कलात्मक योजना नहि भेटैत अछि, मुदा ज्ञानानुभूतिक स्तरपर रसात्मक प्रभावक सम्भावना बनैत अछि।

शान्त रसक सम्भावना सेहो ग्रन्थक अन्तिम पुरुषार्थमे निहित अछि। यथार्थ ज्ञानद्वारा मिथ्याज्ञान, दोष, प्रवृत्ति, जन्म आ दुःखक शृङ्खला विच्छिन्न करब आ अपवर्ग प्राप्त करब न्याय दर्शनक चरम प्रयोजन अछि। अतः ग्रन्थक बौद्धिक यात्रा अन्ततः शान्तिक आध्यात्मिक लक्ष्यसँ जुड़ैत अछि।

६.२ ध्वनिः सत्यक परीक्षण, बौद्धिक नैतिकता आ सांस्कृतिक वस्तुध्वनि

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त मुख्यतः काव्यार्थक व्यञ्जनापर केन्द्रित अछि। तत्त्वचिन्तामणि प्रत्यक्षतः अभिधामूलक आ परिभाषात्मक ग्रन्थ थिक। तथापि एकर व्यापक सांस्कृतिक ध्वनि स्पष्ट अछि—सत्य परम्परासँ मात्र प्राप्त नहि होइत; सत्यकेँ तर्क, प्रतिपक्ष, अपवाद आ अनुभवक परीक्षासँ गुजरय पड़ैत अछि।

ग्रन्थक प्रत्येक खण्ड अप्रत्यक्ष रूपसँ बौद्धिक स्वाधीनताक व्यञ्जना करैत अछि। अपन सम्प्रदायक सिद्धान्तो आलोचनासँ मुक्त नहि। एहि अर्थमे कृतिक गहनतम ध्वनि “विचारक उत्तरदायित्व” थिक।

प्रतिपक्षकेँ दुर्बल बनाकऽ पराजित करब उचित नहि; ओकर सबलतम रूप प्रस्तुत करि उत्तर देब चाही।

आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धान्त शास्त्रगद्यपर सोझे लागू नहि होइत अछि—शास्त्रक प्रयोजन व्यङ्ग्य नहि, वाच्य अछि। तथापि एहि संस्करणक समग्र संयोजनमे एकटा वस्तुध्वनि अवश्य स्फुरित होइत अछि: मिथिलाक भूमिपर रचित ग्रन्थ मिथिलाक भाषामे घुरब—ई तथ्य कतहु घोषित नहि कएल गेल अछि, मुदा प्रत्येक पृष्ठसँ ध्वनित होइत अछि जे मैथिली केवल गीत-कथाक नहि, प्रमाणशास्त्रक सेहो भाषा अछि। एही ध्वनिकेँ ग्रन्थक गम्भीरतम व्यङ्ग्यार्थ मानल जा सकैत अछि।

६.३ वक्रोक्तिः दृष्टिक अवधारणात्मक विचलन

कुन्तकक वक्रोक्ति काव्यमे अभिव्यक्तिक विशिष्ट विचलन आ सौन्दर्यक सिद्धान्त थिक। नव्य-न्याय गद्य अलङ्कारिक वक्रताक बदला अवधारणात्मक वक्रता उत्पन्न करैत अछि। सामान्य भाषा “अभाव”, “सम्बन्ध”, “ज्ञान” वा “समानता” केँ सरल मानैत अछि; गङ्गेश एहि प्रत्यक्ष सरलताकेँ उलटि ओकर भीतरक जटिलता उद्घाटित करैत छथि।

एहि प्रकार वक्रता शब्दालङ्कारमे नहि, दृष्टिकोणमे अछि। “नहि देखाइ पड़ब” आ “अभावक प्रत्यक्ष” एक नहि; “दू वस्तु समान अछि” आ “सादृश्य कोन धर्मसँ अवच्छिन्न अछि” एक नहि। एहि विश्लेषणात्मक विचलनमे कृतिक मौलिक सौन्दर्य निहित अछि।

६.४ रीति, गुण आ शास्त्रगद्यक परम्परा

भारतीय साहित्यशास्त्रमे काव्य आ शास्त्रक भेद स्वीकृत अछि, मुदा शास्त्रगद्यक अपन सौन्दर्यशास्त्र सेहो अछि—वात्स्यायन-भाष्यसँ उदयनक ‘न्यायकुसुमाञ्जलि’ धरि शास्त्रीय गद्य अपन प्रौढ़ि, अर्थगौरव आ वाक्य-विन्यासक कौशलसँ काव्यगुणक स्पर्श करैत रहल अछि। मूल नव्य-न्याय-गद्य गौडीरीतिक समासभूयिष्ठ सघनताक चरम अछि; प्रस्तुत अनुवादक गद्य वैदर्भी रीतिक निकट अछि—समास-लाघव, प्रसाद-गुणक प्राधान्य, आ ओज ओतबे जतय तर्कक तीक्ष्णता माङ्गैत अछि।

तथापि विषयक सूक्ष्मता कारण प्रसादगुण सर्वत्र समान नहि। ओजगुण विशेषतः खण्डन, दोषोद्घाटन आ सिद्धान्त-स्थापनमे प्रबल अछि; माधुर्यक स्थानपर बौद्धिक दृढ़ता आ परिभाषात्मक कठोरता प्रमुख अछि। अनुवादक अवच्छेदक, प्रतियोगिता, अनुयोगिता, सिषाधयिषा जकाँ पारिभाषिक शब्दक अक्षुण्ण रक्षा करैत छथि, मुदा परिचयात्मक अध्याय, उदाहरण आ सरल विवेचनद्वारा पाठकीय प्रवेश सुगम बनबैत छथि।

ई सन्तुलन क्षेमेन्द्रक औचित्य-सिद्धान्तक कसौटीपर विशेष रूपेँ खरा उतरैत अछि: शास्त्रानुवादमे औचित्य ई अछि जे सरलीकरण अर्थ-हानिक मूल्यपर नहि हो आ पारिभाषिकता दुर्बोधताक बहाना नहि बनय। ‘जँ मीमांसकक बात मानि लेल जाए... तँ अनभ्यास-दशामे संशय सर्वथा असम्भव भऽ जाएत’—एहन वाक्य-रचनामे मूलक तर्कक धार आ मैथिलीक स्वाभाविक अन्वय दुनू सुरक्षित अछि।

६.५ औचित्यः कठिनता, विस्तार आ प्रयोजन

क्षेमेन्द्रक औचित्य दृष्टिसँ ग्रन्थक भाषा, विषय आ प्रयोजनमे गहन सामञ्जस्य अछि। सूक्ष्म तत्त्वक विवेचन लेल सूक्ष्म पारिभाषिकता आवश्यक अछि। जँ नव्य-न्यायक अवधारणाकेँ अत्यधिक सरल करि देल जाए, तँ ओकर तार्किक सीमा नष्ट भऽ जाएत। अतः कठिनता सर्वत्र दोष नहि; किछु कठिनता विषयगत औचित्यक परिणाम थिक।

अवच्छेदक, प्रतियोगिता, निरूपकता आ समानाधिकरण्य जकाँ पदसभ बिना सूक्ष्म सम्बन्ध व्यक्त करब कठिन अछि।

तथापि जतय एकहि निष्कर्ष प्रश्नोत्तर, सारांश आ पुनर्व्याख्याक रूपमे अनेक बेर दोहराओल गेल अछि, ओतय औचित्य शिथिल होइत अछि। अध्यापन-सहायक पुनरावृत्ति आरम्भिक पाठक लेल उपयोगी भऽ सकैत अछि, मुदा विशेषज्ञ पाठक लेल ई विस्तारक भार उत्पन्न करैत अछि।

आदर्श संस्करणमे मूल अनुवाद, सरल व्याख्या, शोध-टिप्पणी आ अभ्यास-सामग्री अलग स्तरपर व्यवस्थित होएबाक चाही।

६.६ शब्दशक्ति, तात्पर्यवृत्ति आ आत्मप्रतिबिम्बी अनुवाद

कृतिक शब्दखण्ड भारतीय अर्थमीमांसाक भीतरसँ अपन आलोचनात्मक उपकरण स्वयं प्रदान करैत अछि। अभिधा, लक्षणा, योग, रूढ़ि, जाति, व्यक्ति, तात्पर्य आ वाक्यार्थक प्रश्न केवल भाषाक बाह्य अध्ययन नहि; ग्रन्थ अपन अभिव्यक्तिक शर्तसभक सेहो परीक्षण करैत अछि।

एहि आत्मप्रतिबिम्बी स्वरूपक कारण तत्त्वचिन्तामणि एकटा एहन कृति बनैत अछि जे भाषाक माध्यमसँ दर्शन करैत अछि आ संगहि दार्शनिक रीति सँ भाषाक प्रकृतिक अन्वेषण सेहो करैत अछि।

ग्रन्थ भाषाक माध्यमसँ दर्शन करैत अछि आ दर्शनक माध्यमसँ भाषाक सीमा, शक्ति आ प्रमाणत्व निर्धारित करैत अछि।

एहि ग्रन्थक सर्वाधिक रोचक साहित्यशास्त्रीय आयाम ई अछि जे ई अपन अनुवाद-पद्धतिक सिद्धान्त स्वयं अपना भीतर धारण करैत अछि। शब्दखण्ड शाब्दबोधक जे चारि तत्त्व स्थापित करैत अछि—आकाङ्क्षा, योग्यता, आसत्ति आ तात्पर्य—से अनुवाद-कर्मक चारू कसौटी सेहो अछि। अनुवादककेँ मूल वाक्यक पदसभकपारस्परिक आकाङ्क्षा पकड़ऽ पड़ैत छनि, लक्ष्यभाषामे ओकर योग्यता (अर्थ-सङ्गति) सुनिश्चित करऽ पड़ैत छनि, वाक्य-विन्यासक आसत्ति निमाहऽ पड़ैत छनि, आ सर्वोपरि ग्रन्थकारक तात्पर्यक निर्णय करऽ पड़ैत छनि। नैयायिक तात्पर्य-सिद्धान्त—जे अर्थ-निर्णयमे वक्ताक विवक्षाकेँ निर्णायक मानैत अछि—अनुवादकक अपन कर्मक शास्त्रीय आधार अछि। एहि दृष्टिसँ ई अनुवाद आत्म-प्रतिफलित (स्वसंवेदी) कृति अछि: जे सिद्धान्त ओ अनुवादित करैत अछि, ओही

सिद्धान्तसँ ओ अनुवादित होइत अछि। भर्तृहरिक स्फोटवाद आ नैयायिक खण्डशः शाब्दबोधक ऐतिहासिक द्वन्द्वमे ई अनुवाद व्यवहारतः नैयायिक पक्षक साक्ष्य अछि—वाक्यार्थ पद-पदार्थक अन्वयसँ निर्मित होइत अछि, आ तेँ ओ भाषान्तरणीय अछि।

७. पाश्चात्य आलोचना-सिद्धान्तक आलोकमे पुनर्पाठ

७.१ अरस्तूवादी तर्क आ वाग्मिता

अरस्तूक वाग्मितामे वक्ताक विश्वसनीयता, श्रोताक भाव आ तर्कगत प्रमाण—ई तीन प्रमुख पक्ष मानल जाइत अछि। तत्त्वचिन्तामणिमे भावात्मक प्रेरणाक स्थान न्यून आ तर्कप्रधान प्रमाणक स्थान सर्वोच्च अछि। तथापि आप्तवाक्यक सिद्धान्त वक्ताक विश्वसनीयता, ज्ञान आ दोषरहित अभिप्रायक प्रश्न उठबैत अरस्तूवादी वक्ता-विश्वसनीयतासँ संवाद स्थापित करैत अछि।

न्यायक पञ्चावयव अनुमान अरस्तूवादी त्रिपदी न्यायवाक्यसँ अधिक संवादात्मक अछि। उदाहरण, उपनय आ निगमनद्वारा ई केवल निष्कर्ष नहि दैत, अपितु श्रोताकेँ सामान्य नियमसँ वर्तमान पक्षधरि क्रमशः लऽ जाइत अछि।

७.२ रूपवाद आ अपरिचयीकरण

रूसी रूपवाद साहित्यिक कृतिक निर्माण-विधि आ युक्तिपर बल दैत अछि। एहि दृष्टिसँ तत्त्वचिन्तामणिक वास्तविक “कथ्य” जतेक महत्त्वपूर्ण अछि, ओकर प्रस्तुति-विधि सेहो ओतबे महत्त्वपूर्ण अछि। पूर्वपक्ष, उत्तरपक्ष, दोष, समाधान, अवच्छेदक आ सिद्धान्त-लक्षणक आवर्ती संरचना ग्रन्थक प्रमुख रचनात्मक उपकरण थिक।

एहि उपकरणसभ सामान्य विचारकेँ अपरिचित बनबैत अछि। दैनिक जीवनमे सहज बुझाइत “देखब”, “नहि होएब”, “समान होएब” वा “जानब” जकाँ क्रियासभ ग्रन्थमे जटिल दार्शनिक घटना बनि उठैत अछि। ई अपरिचयीकरण कृतिक बौद्धिक प्रभावक मूल स्रोत अछि।

७.३ संरचनावादः अर्थ-सम्बन्धक जाल

संरचनावादी दृष्टि अर्थकेँ पृथक् वस्तुमे नहि, सम्बन्धक जालमे देखैत अछि। नव्य-न्याय सेहो विशेष्य–विशेषण, आश्रय–आश्रित, धर्म–धर्मी, प्रतियोगी–अभाव, साध्य–हेतु, शब्द–अर्थ आ ज्ञाता–ज्ञेयक सम्बन्धात्मक संरचनापर आधारित अछि।

अर्थात् कोनो तत्त्व अपनहि पूर्णतः परिभाषित नहि; ओकर सीमा अन्य तत्त्वसँ सम्बन्ध आ भेदद्वारा निश्चित होइत अछि। एहि दृष्टिसँ नव्य-न्यायक “अवच्छेदक” आधुनिक संरचनात्मक चिन्तनक अत्यन्त निकट पड़ैत अछि। मुदा अन्तर ई अछि जे संरचनावाद प्रायः भाषिक संरचनाकेँ प्राथमिक मानैत अछि, जखन कि न्याय भाषा-बाह्य वस्तुजगतक यथार्थ अस्तित्व स्वीकार करैत अछि।

७.४ व्याख्याशास्त्र आ विश्लेषणात्मक दर्शन

गाडामरपरक व्याख्याशास्त्र मानैत अछि जे पाठक अपन ऐतिहासिक क्षितिजसहित पाठक समीप अबैत अछि। प्रस्तुत मैथिली अनुवादमे संस्कृत शास्त्रीय क्षितिज आ आधुनिक मैथिली पाठकीय क्षितिजक संगम होइत अछि। अनुवाद केवल शब्द-प्रतिस्थापन नहि; ओ परम्परा आ वर्तमानक बीच संवाद थिक।

परिचयात्मक अध्याय, उदाहरण, पारिभाषिक व्याख्या आ अध्ययन-सहचर पाठकक पूर्वबोध तैयार करैत अछि। एहि कारण अनुवाद मूल पाठक पुनरुक्ति मात्र नहि, अपितु एकटा व्याख्यात्मक सेतु बनि जाइत अछि।

तथापि व्याख्याशास्त्रीय दृष्टिसँ अनुवादक प्रत्येक सरलीकरण एकटा चयन सेहो अछि। जतय मूलक बहुअर्थकता वा विवादग्रस्तता एक निश्चित व्याख्यामे बदलि जाइत अछि, ओतय पाठक अन्य सम्भावित अर्थसँ वञ्चित भऽ सकैत अछि। अतः मूल संस्कृत पद, मैथिली अनुवाद आ आवश्यक पाठ-टिप्पणीक त्रिस्तरीय व्यवस्था एहि प्रकारक ग्रन्थ लेल विशेष उपयोगी होइत।

गादामरक क्षितिज-संलयन (Horizontverschmelzung) क अवधारणा एहि संस्करणक द्विस्तरीय स्थापत्यक सटीक व्याख्या करैत अछि: चौदहम शताब्दीक शास्त्रार्थ-सभाक क्षितिज आ एकैसम शताब्दीक मैथिली पाठकक क्षितिज—परिचयात्मक अध्याय एही दुनू क्षितिजक संलयन-भूमि अछि, जतय गङ्गेशक 'रिलायबिलिज्म', 'एक्सटर्नलिज्म' आ 'फैलिबिलिज्म' सन समकालीन विश्लेषणात्मक ज्ञानमीमांसाक अवधारणासँ संवाद करैत छथि। ई संवाद आरोपित नहि, अर्जित अछि—इङ्गल्स, मतिलाल, सिबजीवन भट्टाचार्य आ स्टीफन फिलिप्सक अध्ययन-परम्परा सिद्ध कऽ चुकल अछि जे गङ्गेशक विशेष्य-विशेषण-विश्लेषण फ्रेगे-रसेलक तर्कशास्त्रीय विश्लेषणक समकक्ष अछि, आ गङ्गेशक परतः प्रामाण्यवाद समकालीन विश्वसनीयतावादी (reliabilist)

ज्ञानमीमांसाक पूर्वाभास। एहि ग्रन्थक परिचयात्मक अध्याय एहि तुलनात्मक विमर्शकेँ मैथिलीमे पहिल बेर व्यवस्थित रूपेँ उपलब्ध करबैत अछि।

७.५ पाठक-प्रतिक्रिया: द्विस्तरीय पाठक

ग्रन्थ दू प्रकारक पाठक निर्मित करैत अछि। पहिल, आरम्भिक पाठक, जकर लेल प्रश्नोत्तर, उदाहरण, सरल व्याख्या आ अध्यायगत परिचय आवश्यक अछि। दोसर, विशेषज्ञ पाठक, जे मूल तर्क, पाठान्तर, पूर्वपक्षीय स्रोत आ परम्परा, पारिभाषिक अन्तर तथा सूक्ष्मता खोजैत अछि।

प्रस्तुत संस्करण दुनू पाठक-वर्गकेँ सम्बोधित करबाक प्रयास करैत अछि। एहि कारण कखनो व्याख्या अत्यन्त सरल, कखनो मूल अनुवाद अत्यन्त सघन देखाइत अछि। ई द्विस्तरीयता कृतिक उपयोगिता बढ़बैत अछि, मुदा शैलीगत एकरूपताकेँ कखनो बाधित सेहो करैत अछि।

दुनू अपेक्षाकेँ एकहि सतत शैलीमे पूरा करबाक प्रयास कखनो असमानता उत्पन्न करैत अछि; स्तरित विन्यास अधिक उपयुक्त होएत।

७.६ विखण्डन: परिभाषाक निरन्तर अस्थिरता

विखण्डनवादी आलोचना पाठक भीतर उपस्थित द्वन्द्व आ अस्थिर सीमाकेँ उद्घाटित करैत अछि। तत्त्वचिन्तामणि सत्य–असत्य, प्रमाण–अप्रमाण, उपस्थिति–अभाव, प्रत्यक्ष–स्मृति आ शब्द–अर्थक स्पष्ट सीमा स्थापित करबाक प्रयत्न करैत अछि। मुदा ग्रन्थक अपन विमर्श देखबैत अछि जे एहि सीमासभकेँ स्थापित करबा लेल निरन्तर अतिरिक्त विशेषण, अवच्छेदक आ अपवादक आवश्यकता पड़ैत अछि।

एहि तथ्यसँ ग्रन्थ विफल नहि होइत; उलटे एकर दार्शनिक ईमानदारी प्रमाणित होइत अछि। प्रत्येक परिभाषा अपन सम्भावित विघटनकेँ आमन्त्रित करैत अछि आ फेर अधिक सूक्ष्म रूपमे पुनर्गठित होइत अछि। एहि अर्थमे तत्त्वचिन्तामणि स्थिर अर्थक ग्रन्थ नहि, अर्थक निरन्तर अनुशासन आ संशोधनक ग्रन्थ थिक।

७.७ व्यवहारवाद, विश्वसनीयतावाद आ बाह्यवाद

ज्ञानक सत्यता सफल प्रवृत्तिसँ निश्चित होएबक न्यायसिद्धान्त आधुनिक व्यवहारवादक समीप अछि। जँ जलक ज्ञानसँ प्रेरित प्रवृत्ति प्यास बुझबैत अछि, तँ ओ ज्ञान सफल आ प्रमाणित अछि। संगहि ज्ञानक यथार्थता ओकर उचित कारण-शृङ्खलासँ जुड़ल अछि; ई आधुनिक विश्वसनीयतावादी ज्ञानमीमांसासँ साम्य रखैत अछि। प्रस्तुत ग्रन्थ स्वयं सेहो गङ्गेशक दर्शनकेँ वस्तुनिष्ठ कारण-प्रक्रिया आ बाह्य यथार्थवादसँ सम्बद्ध करैत अछि। एहि कारण न्याय आधुनिक विश्वसनीयतावाद आ बाह्यवादक निकट सेहो देखाइत अछि।

तथापि न्याय सत्यकेँ मात्र उपयोगितामे विलीन नहि करैत।

७.८ अनुवाद-सिद्धान्त: श्लायरमाखर, बेन्यामिन आ वेनुती

फ्रीडरिख श्लायरमाखरक प्रसिद्ध द्विभाजन—अनुवादक पाठककेँ लेखक दिस लऽ जाय अथवा लेखककेँ पाठक दिस—एहि अनुवादमे एकटा तेसर मार्ग पबैत अछि। परिचयात्मक अध्यायसभ पाठककेँ गङ्गेश दिस लऽ जाइत अछि; परिशिष्टक पूर्ण अनुवाद गङ्गेशकेँ मैथिली पाठकक आङनमे आनैत अछि। लॉरेन्स वेनुतीक शब्दावलीमे ई अनुवाद 'विदेशीकरण' (foreignization) क पक्षधर अछि—अवच्छेदकत्व, प्रतियोगिता, संदिग्धानैकान्तिकता सन पद अननूदित रहैत अछि, कारण एहि पदसभक पारिभाषिक परिशुद्धते नव्य-न्यायक प्राण अछि; 'सहजीकरण' (domestication) केवल वाक्य-विन्यास आ अन्वयक स्तरपर कएल गेल अछि। वाल्टर बेन्यामिनक 'अनुवादकक कार्य'क दृष्टिसँ ई अनुवाद मूलक 'उत्तरजीवन' (Fortleben) अछि—तत्त्वचिन्तामणि एहि अनुवादमे केवल संरक्षित नहि, पुनर्जीवित भेल अछि, आ मैथिली भाषा एहि प्रक्रियामे अपन 'विशुद्ध भाषा'क सम्भावनाक—अपन शास्त्रधारण-क्षमताक—साक्षात्कार कएलक अछि।

७.९ परापाठ, अभिग्रहण आ अधीनस्थ ज्ञानक पुनर्वास

जेरार झेनेतक परापाठ (paratext) सिद्धान्तक दृष्टिसँ एहि संस्करणक परिचय-अध्याय, अध्ययन-सहचर आ सत्यापित ग्रन्थसूची केवल सहायक सामग्री नहि, अर्थ-निर्माणक सक्रिय उपकरण अछि—ई परापाठे ग्रन्थकेँ शोध-प्रयोग्य बनबैत अछि आ पाठकक अभिग्रहण-क्षितिज (यौसक Erwartungshorizont) केँ निर्मित करैत अछि। सर्वाधिक मार्मिक पाश्चात्य प्रतिध्वनि मुदा फूकोक

'अधीनस्थ ज्ञान' (subjugated knowledges) आ सबाल्टर्न इतिहास-दृष्टिमे भेटैत अछि: गङ्गेशक जीवनवृत्तक पञ्जी-आधारित समानान्तर विवरण—अन्तर्जातीय विवाह, चर्मकार-टोलसँ सम्बन्ध, मुख्यधारा जीवनी-लेखनमे एहि तथ्यक मौन—मध्यकालीन मिथिलामे ज्ञान, जाति आ प्रतिष्ठाक सम्बन्धपर जे प्रश्न उठबैत अछि, से इतिहास-लेखनक वंशावली-पद्धति (genealogy) क शुद्ध उदाहरण अछि। ग्रन्थ ई देखबैत अछि जे भारतक सर्वश्रेष्ठ तार्किकक अपन जीवने तर्क आ सामाजिक संरचनाक द्वन्द्वक रणभूमि छल—आ ई द्वन्द्व इतिहास-लेखनमे आइयो अनिर्णीत अछि।

८. मैथिली अनुवाद: कला, भाषा, परम्परा आ ज्ञानक लोकतन्त्रीकरण

अनुवादक भाषा-नीति तीन स्तम्भपर ठाढ़ अछि। पहिल, पारिभाषिक अविकलता: नव्य-न्यायक तकनीकी पदावली यथावत् राखल गेल अछि आ प्रथम प्रयोगपर कोष्ठकमे आङ्ग्ल समतुल्य (जेना Invariable Concomitance, Apperception, Qualificandum) देल गेल अछि, जाहिसँ ग्रन्थ अन्तरराष्ट्रीय अध्ययन-परम्परासँ जुड़ल रहैत अछि। दोसर, वाक्य-विन्यासक मैथिलीकरण: संस्कृतक दीर्घ समास-शृङ्खलाकेँ मैथिलीक स्वाभाविक अन्वय-क्रममे तोड़ल गेल अछि—'ईहो नहि कहल जाए जे...', 'एतबा सेहो नहि कहल जाए जे...' सन प्रतिषेध-सूत्रसभ शास्त्रार्थक गतिकेँ मैथिली गद्यमे जीवन्त राखैत अछि। तेसर, पूर्वपक्ष-सिद्धान्तक नाट्यशास्त्रीय स्पष्टता: आपत्ति, खण्डन, पुनःस्थापना आ निष्कर्षक अनुक्रम उपशीर्षकसभसँ एना चिह्नित अछि जे शास्त्रार्थक सम्पूर्ण नाट्य-संरचना—जकरा पाश्चात्य विद्वान 'डायलेक्टिकल थिएटर' कहलनि अछि—पाठकक सोझाँ मञ्चित भऽ जाइत अछि। मैथिलीक व्याकरणिक सम्पदा—आदरार्थक क्रिया-रूप, 'छथि/अछि'क भेद, 'सेहो/तँ/मुदा'क तर्क-संयोजक शक्ति—शास्त्रीय विमर्शक सूक्ष्म भेदसभकेँ वहन करबामे पूर्ण समर्थ सिद्ध भेल अछि, आ एतबे एहि अनुवादक स्थायी भाषावैज्ञानिक प्रमाण-मूल्य अछि।

नव्य-न्यायक जन्मभूमि मिथिला रहल, मुदा आधुनिक मैथिली पाठक लेल एकर अधिकांश मूल सामग्री संस्कृत अथवा विदेशी भाषामे सीमित रहल। मैथिली अनुवाद एहि ऐतिहासिक विडम्बनाकेँ कम करैत अछि; ई सांस्कृतिक पुनरधिग्रहण आ ज्ञानक भाषिक लोकतन्त्रीकरण थिक।

प्रामाण्य, व्याप्ति, अवच्छेदक, प्रतियोगिता, उपाधि, अनुव्यवसाय आ तात्पर्य जकाँ विषयक निरूपण मैथिली अकादमिक गद्यक क्षमता सिद्ध करैत अछि।

ई मैथिलीकेँ केवल भावात्मक, लोक काव्यात्मक, घरेलू, लोकजीवन, गीत-कथा वा भावाभिव्यक्तिक भाषा नहि, बल्कि सूक्ष्म तर्क, ज्ञानमीमांसा, भाषादर्शन आ सत्तामीमांसाक समर्थ भाषा सिद्ध करैत अछि; मिथिलाक दार्शनिक विरासतकेँ वर्तमान भाषिक समुदायसँ पुनः जोड़ैत अछि; आ पारिभाषिक शब्दनिर्माण तथा शास्त्रीय गद्य-विन्यासक माध्यमसँ मैथिली अकादमिक गद्यक सम्भावना विस्तृत करैत अछि।

मैथिली अनुवादक ऐतिहासिक महत्त्व एहि बातमे सेहो अछि जे ई मिथिलाक शास्त्रीय बुद्धिवादकेँ आधुनिक मैथिली जनसमुदायक भाषिक अधिकारक भीतर पुनः स्थापित करैत अछि।

मुख्य चुनौती पारिभाषिक समरूपता थिक। एकहि संस्कृत पदक भिन्न मैथिली रूप, अनावश्यक विदेशी कोष्ठक, अत्यधिक शाब्दिकता अथवा अत्यधिक सरलीकरण अर्थक सीमा बदलि सकैत अछि।

९. प्रमुख कलात्मक, बौद्धिक आ सांस्कृतिक उपलब्धिसभ

कृतिक सभसँ पैघ उपलब्धि तार्किक सूक्ष्मता थिक। कोनो परिभाषाकेँ स्वीकार करबासँ पूर्व ओकर प्रत्येक सम्भावित अपवाद खोजल जाइत अछि। एहि बौद्धिक अनुशासनक कारण पाठकक सोचबाक पद्धति परिवर्तित होइत अछि।

दोसर उपलब्धि संवादशीलता थिक। प्रतिपक्षकेँ दुर्बल रूपमे प्रस्तुत नहि कएल जाइत; ओकर समर्थतम तर्क रखि तकर उत्तर देल जाइत अछि। एहि कारण ग्रन्थ वास्तविक शास्त्रार्थक आदर्श प्रस्तुत करैत अछि।

तेसर उपलब्धि ज्ञान आ भाषाक अभिन्न सम्बन्धक उद्घाटन थिक। सत्य केवल वस्तुजन्य नहि; ओकर बोध शब्द, सम्बन्ध, स्मृति, तात्पर्य, सन्निकर्ष आ मानसिक प्रक्रियापर निर्भर अछि।

ज्ञानमीमांसा, सत्तामीमांसा, भाषादर्शन आ मनोविज्ञानक अन्तर्सम्बन्ध एहि कृतिक एकटा अन्य महत्त्वपूर्ण उपलब्धि अछि।

चारिम उपलब्धि बौद्धिक नैतिकता थिक। ग्रन्थ पाठककेँ सिखबैत अछि जे निष्कर्षसँ प्रेम करबासँ पूर्व कारणक परीक्षा आवश्यक अछि; परम्पराक सम्मान तकर आलोचनात्मक परीक्षण रोकबाक कारण नहि बनबाक चाही।

मैथिली भाषामे शास्त्रीय ज्ञानक विशाल भण्डार उपलब्ध करेनाइ एहि संस्करणक विशिष्ट सांस्कृतिक उपलब्धि थिक।

१०. निष्कर्ष

तत्त्वचिन्तामणि भारतीय दर्शनक केवल ऐतिहासिक धरोहर नहि, विचारक पद्धति थिक। तत्त्वचिन्तामणि भारतीय बुद्धिवादक महान स्मारक थिक। एकर मूल शक्ति कोनो एक सिद्धान्तक स्थापना मात्र नहि, अपितु विचार करबाक एकटा अनुशासित विधिक निर्माणमे अछि। ई ग्रन्थ सिखबैत अछि जे ज्ञानक दाबी तखने स्वीकार्य अछि जखन ओकर कारण स्पष्ट हो, ओकर व्याप्ति सुरक्षित हो, ओकर विरोधी उदाहरणक उत्तर हो आ ओकर भाषा भ्रमरहित हो।

अन्ततः कहल जा सकैत अछि जे तत्त्वचिन्तामणिक वास्तविक नायक कोनो व्यक्ति नहि, “यथार्थ ज्ञान” थिक; एकर संघर्ष अज्ञान, भ्रम, अस्पष्टता आ अव्याप्त परिभाषासँ अछि; एकर कथा विचारक क्रमिक परिष्कारक कथा थिक; आ एकर चरम परिणति मनुष्यक बुद्धिकेँ अधिक सूक्ष्म, उत्तरदायी आ सत्याभिमुख बनेबामे निहित अछि।

प्रत्येक दाबीकेँ प्रश्न, प्रत्येक परिभाषाकेँ अपवाद, प्रत्येक निष्कर्षकेँ प्रमाण आ प्रत्येक भाषिक प्रयोगकेँ अर्थक उत्तरदायित्वसँ गुजरय पड़ैत अछि।

समग्रतः ई संस्करण तीन स्तरपर ऐतिहासिक अछि। ज्ञानमीमांसाक स्तरपर ई गङ्गेशक सम्पूर्ण प्रमाण-चतुष्टयकेँ पहिल बेर मैथिलीमे समग्र रूपेँ उपलब्ध करबैत अछि। भाषाक स्तरपर ई मैथिलीक शास्त्रधारण-क्षमताक निर्णायक प्रमाण अछि—जे भाषा विद्यापतिक पदावली गाबि सकैत अछि, से सिंह-व्याघ्री-लक्षणक सूक्ष्मता सेहो वहन कऽ सकैत अछि। आ सांस्कृतिक स्तरपर ई एकटा ऐतिहासिक ऋणक परिशोध अछि: मिथिला जे ग्रन्थ विश्वकेँ देलक, से विश्व-परिक्रमा कऽ—कलकत्ता, तिरुपति, विएना आ हार्वर्ड होइत—अपन जन्मभूमिक भाषामे घुरि आयल अछि। भारतीय काव्यशास्त्रक औचित्य-तात्पर्य-दृष्टि हो अथवा पाश्चात्य अनुवाद-व्याख्याशास्त्र—दुनू कसौटीपर ई कृति एकटा परिपक्व, आत्मसजग आ दूरगामी महत्त्वक शास्त्रानुवाद सिद्ध होइत अछि, जे मैथिली गद्यक इतिहासमे शास्त्रगद्यक एकटा नव अध्यायक उद्घाटन करैत अछि।

११. तुलनात्मक सारणी

आलोचनात्मक दृष्टि

तत्त्वचिन्तामणिमे प्रासंगिक तत्त्व

मुख्य निष्कर्ष

रस-सिद्धान्त

तर्कजन्य विस्मय, दुःखनिवृत्तिक लक्ष्य

बौद्धिक अद्भुत आ शान्तिपरक परिणति

ध्वनि

परम्परागत दावाक निरन्तर परीक्षण

बौद्धिक नैतिकता आ सत्याभिमुखता

वक्रोक्ति

सामान्य अनुभवक अवधारणात्मक पुनर्रचना

दृष्टिगत वक्रता कृतिक सौन्दर्य

औचित्य

सूक्ष्म विषय लेल पारिभाषिक कठिनता

आवश्यक कठिनता उचित; पुनरावृत्ति सीमित हो

रूपवाद

पूर्वपक्ष-दोष-सिद्धान्तक संरचना

कथ्यसँ अधिक प्रस्तुति-विधि प्रभावकारी

संरचनावाद

विशेष्य-विशेषण, हेतु-साध्य, प्रतियोगी-अभाव

अर्थ सम्बन्धक जालमे निर्मित

व्याख्याशास्त्र

संस्कृत मूल आ आधुनिक मैथिली पाठकक संवाद

अनुवाद क्षितिज-संगम थिक

विखण्डन

परिभाषाक निरन्तर संशोधन

स्थिर अर्थक बदला अनुशासित परिष्कार

विश्वसनीयतावाद

उचित कारण-सामग्रीसँ प्रमा

ज्ञानक सत्यता प्रक्रियात्मक आ वस्तुनिष्ठ

१२. चयनित ग्रन्थसूची

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक। विविध संस्कृत संस्करण।

अरस्तू। पोएटिक्स तथा रेटोरिक। विभिन्न अनुवाद आ संस्करण।

उदयनाचार्य। न्यायकुसुमाञ्जलि।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

क्षेमेन्द्र। औचित्य विचार चर्चा।

गङ्गेश उपाध्याय। तत्त्वचिन्तामणि। प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान आ शब्दखण्ड।

गौतम। न्यायसूत्र। वात्स्यायनभाष्यसहित।

भट्ट, वी. पी. तत्त्वचिन्तामणिक विभिन्न खण्डपर सम्पादन आ अध्ययन।

भरतमुनि। नाट्यशास्त्र।

मम्मट। काव्यप्रकाश।

वामन। काव्यालङ्कारसूत्रवृत्ति।

फिलिप्स, स्टीफन एच. गङ्गेश आ भारतीय ज्ञानमीमांसापर विभिन्न अध्ययन।

गाडामर, हान्स-गेओर्ग। ट्रुथ एण्ड मेथड।

ईगलटन, टेरी। लिटरेरी थ्योरी: एन इन्ट्रोडक्शन।

सॉस्यूर, फर्डिनान्द द। कोर्स इन जनरल लिङ्ग्विस्टिक्स।

देरिदा, जाक। ऑफ ग्रामेटोलॉजी तथा राइटिंग एण्ड डिफरेन्स।

८२. फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत

सारांश

गजेन्द्र ठाकुर (गाम, मेंहथ, भाया-झंझारपुर, जिला-मधुबनी) विशेष सहयोग श्री केशव महतो (बहादुरगंज, जिला किशनगंज, बिहार) एहि क्षेत्रकार्यक सूचक श्री केशव महतो सीत बसंतक फील्डवर्कमे विशेष सहयोगक कारण एहि प्रबन्धक सह-लेखक छथि। सीत बसंतक कथाक कैक टा विभिन्न रूप पाओल गेल आ ओहि सभक विवरण यथास्थान देल गेल अछि।

बीजशब्द: फील्ड · वर्कपर · खिस्सा · सीत · बसंत · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “फील्ड-वर्कपर आधारित खिस्सा सीत-बसंत” विषयक क्षेत्रकार्य-आधारित लोकसांस्कृतिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे फील्ड-वर्कपर; आधारित; खिस्सा; सीत-बसंत; बच्चा प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर क्षेत्रकार्य, मौखिक स्रोत आ पाठरूपक तुलनात्मक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

गजेन्द्र ठाकुर (गाम, मेंहथ, भाया-झंझारपुर, जिला-मधुबनी)

विशेष सहयोग श्री केशव महतो (बहादुरगंज, जिला किशनगंज, बिहार)

एहि क्षेत्रकार्यक सूचक श्री केशव महतो सीत बसंतक फील्डवर्कमे विशेष सहयोगक कारण एहि प्रबन्धक सह-लेखक छथि। सीत बसंतक कथाक कैक टा विभिन्न रूप पाओल गेल आ ओहि सभक विवरण यथास्थान देल गेल अछि। समाज आ संस्कृतिकेँ बुझबामे लोक कथाक बड्ड महत्व अछि, मुदा बिना फील्ड-वर्क कएने लिखल लोककथा अपन उद्देश्य प्राप्तिमे असमर्थ रहैत अछि। श्री सुभाषचन्द्र यादवजीक हम सेहो आभारी छी जिनकर एहि विषयक आलेख (फील्डवर्क आ लोककथापर) एकटा सेमीनारमे सुनलाक बाद हम आर तन्मयतासँ एहि कार्यमे लागि गेलहुँ।

एहि क्षेत्रकार्यमे आधुनिक फील्डवर्क तकनीक केर उपयोग कएल गेल आ सहभागिता, प्रेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली इत्यादिक आधारपर ई लोककथा निर्मित भेल अछि। लोककथा-कविताक कोनो स्वरूपमे कोनो परिवर्त्तन अवैज्ञानिक अछि आ तकर ध्यान एतए राखल गेल अछि।

मणीपुर नगरक राजा महेश्वर सिंह छलाह।

ओ बड्ड प्रतापी राजा छलाह। ओ बड्ड निकेनासँ राज्य चला रहल छलाह।

किछु दिनुका बाद ओहि राजाकेँ दू टा बेटा जन्म लेलक।

ओकर रानी सेहो बड्ड सुशील आ स्वाभिमानी छलीह।

एक बेरुका गप अछि।

रानी अपन महलमे रहैत छलीह आ बहुत दिनसँ ओहि महलमे दू टा पौरकी चिड़ै खोता बना कए रहैत छल। एक दिन ओ अपन खोतामे दू टा अंडा देलक। अंडासँ दू टा बच्चा बहार भेल। एक दिन अनचोक्केमे ओहि बच्चा सभक माए मरि गेल। तकर बाद पौरकी सभकेँ बड्ड कष्ट होमए लगलैक। ओकर बाप किछु दिनुका बाद एकटा बोनसँ एकटा पौरकीकेँ बियाह कए आनि लेलक। तकर बाद दू-चारि दिन कोनो तरहेँ बीतल। तकर बाद एक दिन पौरकीक कनियाँ ओहि दुनू बच्चाकेँ खेनाइ खुअएला काल मुँहमे काँट धऽ देलक। ओ दुनू बच्चा ओही काल मरि गेल। मरलाक बाद ओ खोतासँ दुनू बच्चाकेँ लोलसँ धकेल कऽ नीचाँ खसा देलक। ओहि समय रानी महलमे छलीह आ बच्चा सभकेँ खसबैत ओ देखलन्हि। ओही दिनसँ रानीकेँ शंका भऽ गेलन्हि आ सभ दिन हुनका चिन्ता घेरि लेलकन्हि।

राजाकेँ रानी कहलन्हि — हे राजा। देखू। अपना महलमे दू टा पौरकी रहैत रहए। ओ दू टा बच्चा देलक। बच्चाक माए मरि गेल। तकर बाद ओ दोसर बियाहि कए अनलक। दू चारि दिनुका बाद ओ दुनू बच्चाकेँ मारि देलक। से हे राजा, कतहु हमहूँ मरि जाइ तँ अहाँ दोसर बियाह कए लेब तखन हमरो दुनू बच्चाक ईएह हाल ने भऽ जाए।

राजा बाजल- यै रानी। एखन अहाँ जीवित छी, तखन एहि गपक अहाँ किएक चिन्ता कए रहल छी।

रानी बजलीह - नहि राजा। यदि हम मरि गेलहुँ तँ अहाँ बियाह तँ नहि कए लेब?

राजा उत्तर देलक- नहि। हम दोसर बियाह नहि करब।

ई कहि राजा अपन दरबज्जामे आपस चलि गेल।

ओही दिनसँ रानी दुखित रहए लगलीह आ अनचोक्के एक दिन मरि गेलीह।

आब एहि गपकेँ लए राजा बड्ड चिन्तामे पड़ि गेल। आब दुनू भाए सीत आ बसन्त सेहो दिक्कतमे पड़ि गेलाह।

राजाकेँ राजाक खबासिनी, मन्त्री, मुंशी आ मारते रास लोक सभ बुझाबए लागल।

ओ सभ राजासँ कहए लगलाह- राजा यदि अहाँ बियाह नहि करैत छी, तखन एहि दुनू बच्चाक की दशा होएत। ने एकरा सभक खेनाइक कोनो ठेकान रहत आ नहिये पढ़ाइक। ताहि द्वारे अहाँ एकटा बियाह करू।

एहि तरहेँ बुझओलापर राजा बाजल - ठीक अछि। जखन अहाँ सभक यैह विचार अछि तखन जाऊ, कोनो गरीबक लड़की भेटत तँ हम ओकरा संग बियाह कए लेब।

एहि तरहेँ राजाक सभटा गप बुझि-गुणि मुन्शी दीवान सभ क्यो लड़की ताकए लगलाह। एकटा लड़की राजाक नगरमे भेटल। ओ लड़की महागरीबक बेटी छलीह। राजा शुभलग्न बना कए ओहि लड़कीकेँ बियाह कए आनि लेलक। किछु दिन धरि ओ लड़की घरमे रहलीह। किछु दिनुका बाद ओकर ममता ओहि दुनू भाएपर कम होमए लागल। दुनू भाए स्कूलसँ पढ़ि कए घर आबथि आ अपन दरबज्जापर गेन्द लए खेलाइमे लागि जाथि। एक दिन अनचोक्केमे गेन्द आँगनमे जा कए खसि पड़ल।

ओहि समयमे ओकर सभक सतमाए आँगनमे छलीह। गेन्द खसलाक संग ओ गेन्दकेँ उठा कए अपन कोरामे राखि लेलन्हि। ओ दुनू भाए गेन्द तकैत आँगनमे अएलाह आ कहलन्हि जे माए गेन्द हमरा सभकेँ दए दिअ। हम दुनू भाए खेला रहल छी। माँ कहलखिन्ह जे हमरा लग गेन्द नहि अछि, अहाँ सभ चलि जाऊ। गेन्दकेँ दुनू भाए मायक कोरामे देखलन्हि। फेर कहलन्हि - माँ हमरा सभकेँ गेन्द दिअ। हम सभ खेलाएब। एहि तरहेँ दुनू भाए मँगैत-मँगैत माँक कोरासँ गेन्द लए लेलन्हि। गेन्द लऽ लेलाक बाद रानीक हृदयमे बड्ड तामस अएलन्हि। रानी तामसे भेर भेल कोचपर आबि पड़ि रहलीह आ खेनाइ-पिनाइ त्यागि देलन्हि। खबासिनी सभ बुझा कए थाकि गेलीह जे रानी चलू, हमरा सभ खा ली। मुदा रानी कोनो उत्तर नहि देलन्हि। ओ कहलन्हि जे आब हम मरि जाएब। एतेक गप सुनि खबासिनी राजा लग जा कए कहलक जे रानी बड्ड दुखित छथि। आब बचबा योग्य नहि छथि। अहाँ जा कए देखू। राजा एतेक गप सुनि कए अपन महलमे गेलाह आ रानीसँ पुछलन्हि। राजा पुछलन्हि जे तोहर एहन हालत कोना भेलह जल्दी बताबह।

रानी कहलन्हि-अहाँ हमरासँ पुछैत छी तँ पहिने अहाँ हमरासँ सत करू तँ हम कहब। नहि तँ हम मरि जाएब। राजा किछु नहि सोचलन्हि। ओ रानीक संग सत कए लेलन्हि। सत केलाक बाद रानी कहलन्हि- हमर ई दशा अहाँक दुनू बेटा कएने अछि। हमर बिमारीक यैह एकटा उपाय अछि नहि तँ हम नहि बचि सकैत छी - अहाँ ओहि दुनूकेँ मारि ओकर करेज निकालि हमरा दिअ। तखन हम बचि सकैत छी। राजा एतेक गप सुनि कए बड्ड तमसा गेल। ओ दुनू बेटाकेँ बजा कए बड्ड मारि मारलक आ तकर बाद जल्लादक हाथसँ मरबएबा लेल पठा देलक। जल्लाद दुनू भाएकेँ मारैत-पिटैत बोनमे लए गेल। दुनू भाए बड्ड कानि रहल छलाह। जखन जल्लाद सभ ओकरा दुनू गोटेकेँ मारए लागल तँ ओ सभ कहलन्हि जे हमरा सभकेँ नहि मारू। हमरा सभकेँ छोड़ि देब तँ हम सभ घुरि कए नगर नहि जाएब। अहाँ सभ कोनो माल-जानवरकेँ मारि ओकर करेज जा कए दए दियौक। आ ई कहि दुनू भाए, संगमे जतेक पाइ छलन्हि सेहो जल्लाद सभकेँ दए देलन्हि। एक जल्लाद कहलक जे एकरा सभकेँ मारि दियौक। दोसर कहलक जे नहि मारू। ई सभ घुरि कए जएबो करत तँ हम सभ कहबैक जे हम सभ की करू। हम सभ तँ करेज आनि कए देने छलहुँ। मरलाक बाद जीबि गेल होएत।

जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

कथा रूप १: जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

दुनू भाए ओहि बोनमे भटकए लगलाह। रातुक मौसममे दुनू भाए एकटा गाछक नीचाँ सूति गेलाह। किछु कालक बाद दुनू भाए उठि गेलाह आ गाछक ऊपर एकटा साँपकेँ चढ़ैत देखलन्हि। ओहि गाछपर दू टा हंसक बच्चा रहैत छल। हंस चरबाक लेल गेल रहए। ओहि साँपकेँ देखि कए हंसक बच्चा बाजए लागल।

दुनू भाए सोचलक- देखू। ई साँप बच्चाकेँ खा जएत। एतेक सोचलाक बाद तलवारसँ मारि कए साँपकेँ ओ सभ नीचाँ खसा देलक। बच्चा बजनाइ बन्न कए देलक। जखन भोर भेल तँ हंस-हंसिनी चरि कए आएल आ बच्चा लेल खेनाइ अनलक। बच्चाकेँ आहार खुआबए लागल तँ बच्चा आहार नहि खएलक आ कहलक जे माँ हमरा ई बताऊ जे एहि गाछपर हम पहिल देल बच्चा छी, आकि अहाँ पहिनहियो एहि एहि गाछपर बच्चा देने छी। माए कहलकै जे हम पहिनहियो बच्चा देने छी मुदा आइ धरिमे मात्र अहाँ दुनु गोटेक मूँह देखि रहल छी।

कथा रूप २: बेशी लोकप्रिय आ पसरल क्षेत्रमे: जल्लाद ओहिना कएलक आ दुनू भाएकेँ छोड़ि देलक।

दुनू भाए ओहि बोनमे भटकए लागल, खूब बौआएल। रातुक समय दुनू भाए एकटा गाछक तरमे सूति गेल। भोरे, बोनसँ बहराइत दोसर देश जाए लागल। दुनू भाए भूख-पिआसक मारे व्याकुल भऽ गेल। जा कए एकटा गाछक नीचाँ बैसि कए सुस्ताए लागल। ओ सभ सोचए लागल जे आब कोन उपाय करू। ओही समय ओहि गाछपर दू टा मएनाक बच्चा रहए। ओहिमेसँ एकटा कहैत अछि जे हमर जे काँचहि मौस खा जएत तकरा बड्ड शीघ्र राज्य भेटि जएतैक। आ दोसर कहलक जे हमरा जे आगिमे पका कए खाओत तँ किछु दिनुका बाद ओ राज पाबि जएत। एतेक गप दुनू भाए सुनलक आ हाथमे एकटा लाठी लए ओकरा सभकेँ मारि कए नीचाँ खसा देलक आ लऽ कए बिदा भेल। किछु दूर आगाँ गेल तँ देखलक जे गाए-महीस चराबए बला चरबाहा सभ एकटा बएरक काँटक बोन - झाँखुरकेँ जरा रहल छलाह। ओ दुनू भाए सोचलक जे अही अगिनवानमे पका कए एकरा खाएब। ओहि आगिमे दुनू गोटे मेनाक बच्चाकेँ पका कए खएलक। काँटमे जे ओ सभ पका कए खएलक तँ ओकर सभक भाग्यमे सेहो काँट लागि गेलैक।

ओतएसँ दुनू भाए बिदा भेल। किछु दूर गेलाक बाद ओकरा सभकेँ आमक एकटा गाछी भेटलैक।

बसन्त चलैत-चलैत थाकि गेल रहए आ ओकरा आर चलल नहि भऽ पाबि रहल छलए।

सीत कहलक-भाइ, तूँ एतए बैस, हम ओहि गामसँ किछु माँगि कए अनैत छी आ तखन खा कए हमरा सभ आगाँ चलब। सीत मँगबा लेल गाममे चलि गेल। सीत जाहि गाममे (कथा रूप ३ गामक नाम हस्तिनापुर सेहो कतहु-कतहु कहल जाइत अछि) मँगबाक लेल गेल ओहि गाममे राजाक बेटीक स्वयम्बर रचाओल गेल छल। ओहि स्थान पर जन सम्मर्द छल। ओतए भीड़ देखि सीत अटकि गेल आ देखए लागल। सीत अपन भाएक सुरता बिसरि गेल। स्वयम्बरमे लड़की जयमाल लए सभामे घुरए लागलि आ माला सीतक गरदनिमे पहिरा देलक। ओहीठाम सीतक बियाह ओहि लड़कीक संग भए गेल।

(रूप ४) बियाहक पहिने ओतुक्का लोक सभ बाजए लागल जे ई राजाक बेटी होइतो एकटा भिखमंगाक गरदनिमे माला पहिरा देलक। आ ईहो जे ओ लड़की बताहि भऽ गेल अछि। ओकर गरदनिसँ माला निकालि कए ककरो दोसराक गरदनिमे माला पहिराऊ नहि तँ बियाह नहि होमए देब। ई गप सुनि लड़की बाजलि जे हमर भाग्यमे ईएह भिखमंगा लिखल अछि तँ हमरा राजा कतएसँ भेटत? हम एकरे संग बियाह करब। ई गप सुनि सभ राजा अपन-अपन घर चलि गेलाह आ कहलन्हि जे एहि लड़कीकेँ एहि गामसँ निकालि दिअ आ कोनो दोसर ठाम पठा दिअ। राजा ओनाही कएलक। ओहि दुनू गोटेकेँ अपन गामसँ बाहर पठा देलक। ओ ओही नगरमे रहए लागल। किछु दिनुका बाद लोक सभ राजाकेँ कहए लागल जे अहाँ ओहि लड़काक संग लड़कीसँ छोड़ा दियौक आ कोनो दोसर लड़काक संग ओकर बियाह कराए दियौक।

सभक कहलापर राजा एकटा कुटनी बुढ़ियाकेँ जहर-माहुर संगमे दए पठेलक, जतए सीत आ राजाक बेटी रहैत छल। ओ बुढ़िया ओकरा सभक संगे रहए लागल। किछु दिन धरि ओ ओतहि रहल। दुनू गोटेकेँ कोनो गपक चिन्ता नहि भेलैक। एक दिन सीतकेँ अनचोक्केमे बड्ड पियास लगलैक। ओ अपन रानीसँ बाजल-हमरा पानि पिया दिअ। बुढ़िया फटाकसँ उठि कए गेल आ एक गिलास पानिमे जहर घोरि सीतकेँ देलक। सीतकेँ बड़ जोरसँ पियास लागल रहैक से ओ खटसँ पानि लऽ कए पीबि गेल। पानि पीबिते सीतकेँ किछुए कालक उपरान्त बड्ड निशा अएलैक। स्थिरे-स्थिरे निसाँ बढ़ैत गेल। निसाँमे सीत ओन्घरा गेल। बुढ़िया बाजल जे कोनो गप नहि। चिन्ता नहि करू। सभ ठीक भऽ जएत। कनेक कालक बाद सीत मरि गेल। रानी खूब हाक्रोस कए कानए लागलि। ओहि ठाम कोनो गाम नहि छल। सीतकेँ धारक कात लऽ जा कए गारि देल गेल। बुढ़िया कहलक- देखू चिन्ता नहि करू। आब हम सभ असनान कए ली। असनान करए गेल तँ एकटा नाह किनारमे लागल छल। बुढ़िया बाजल जे चलू, ओहि नाहपर बैसि कए स्नान कए लेब। तखन दुनू गोटे ओही नाहपर बैसिकए नहाए लागल। तखन आस्ते-आस्ते नाह आगाँ जाए लागल। जखन नाह बीच धारमे गेल तँ (रूप ५: एतए रानीक नाम फुलवन्ती सेहो अबैत अछि) रानी बुझलक जे नाह बीच धारमे आबि गेल अछि। तखन ओकरा बुझबामे अएलैक जे ई बुढ़िया ओकरा ठकि कए लए जा रहल छै। ओ रानी अपन पतिक बियोगमे छलीह। ओ हृदयमे सोचलक जे ओकर पति मरि गेल

छै तँ ओ जीवित रहि कए की करत। ई सोचि कए नाहसँ कूदि कऽ ओ धारमे फाँगि गेल। भँसैत-भँसैत ओ बड्ड दूर चलि गेल आ ओतए ओ कात लागि गेल।

आब बसन्तक खिस्सा:

बसन्त ओहि गाछीमे भाएक आस तकैत रहए। दिन साँझमे बदलए लागल। ओहि गाछीमे कुम्भकार लोकनि गाछीक पात खड़रि रहल रहथि। तखने बसन्त कनैत-कनैत ओहि कुम्भकार लग गेल। कुम्भकार पुछलक-अहाँ किएक कानि रहल छी। बसन्त सभ गप बतेलक। कुम्भकार कहलक-अहाँ चिन्ता नहि करू। अहाँ हमरा घरपर चलू। अहाँ हमरा घरपर रहब। बसन्त कुम्भकार लग चलि गेल आ रहए लागल। ओतए रहैत-रहैत एक बेर एकटा बनिजारा अपन जहाज लए वाणिज्य करए लेल जा रहल छल आकि बीच धारमे ओकर जहाज ठाढ़ भए गेलैक।

जहाजक इन्जीनिअरसँ (रूप ६ एतए बनिजाराक नाम नैका बनिजारा सेहो कहैत सुनल गेल) बनिजारा पुछलक जे की जहाज एतएसँ आगाँ नहि जा रहल अछि। इन्जीनिअर कहलक-जहाज बलि माँगि रहल अछि। कोनो मनुक्खक बच्चाक बलि देलाक बाद जहाज आगाँ जएत। एतेक गप ओ बनिजाराकेँ कहलक तँ बनिजारा तीन लाख रुपैया लए एकटा बच्चाक तलाशमे गेल। ताकैत-ताकैत ओ ओही गाममे गेल, जाहि गाममे बसन्त रहैत छल। बनिजारा अबाज लगबैत जा रहल छल जे, जे क्यो एकटा बच्चा देत ओकरा हम तीन लाख रुपैया देब। एहि प्रकारसँ ओ अबाज लगबैत जा रहल छल। क्यो गोटे नहि बाजल। जखन ओ कुम्भकारक दरबज्जाक सोझाँ गेल तँ कुम्भकार कहलक-हँ हम एकटा लड़का देब। हमरा पाइ चाही। बनिजारा ओहि कुम्भकारकेँ तीन लाख टाका देलक आ ओतएसँ ओ बसन्तकेँ लए अपन जहाज लग गेल।

बसन्त ओकरासँ पुछलक-बनिजारा। अहाँ हमरा कतए लए जा रहल छी।

बनिजारा बाजल-हम अहाँकेँ बलि चढ़एबा लेल लए जा रहल छी। किएक तँ हमर जहाज धारक बीचमे ठाढ़ भऽ गेल अछि। ताहि द्वारे अहाँक बलि हम चढ़ाएब। एतेक गप सुनि कए बसन्त बाजल जे हे बनिजारा। हमरा ओतए गेलाक बाद, जहाज छूलाक बाद जे जहाज खुजि जएत तँ अहाँ हमरा छोड़ि देब ने?

बनिजारा कहलक-हमर जहाज जे खुजि जएत तँ हम अहाँकेँ छोड़ि देब।

बसन्त बीच धारमे जा कए हाथसँ जहाजकेँ छूबि कए बाजल। जहाज अहाँ जाऊ तँ हमर जान बाँचि जएत।

एतेक कहबाक देरी रहए आकि जहाज ओतएसँ बिदा भऽ गेल।

इन्जीनिअर बनिजाराकेँ कहलक-एकरा बैसा लिअ जहाजमे। कतहु आन ठाम ठाढ़ भऽ जएत तखन?

बसन्त बाजल-हमरा मारि देने रहितहुँ तँ फेर जहाज ठाढ़ भेलाक बाद हमरा कतएसँ अनितहुँ?

बनिजारा बाजल-छोड़ि दिअ एकरा।

बसन्त ओतएसँ धारक काते-काते बिदा भेल आ ओतए पहुँचि गेल, जतए सीतक स्त्री कानि रहल छलीह।

बसन्त पुछलक-अहाँ किएक कानि रहल छी?

एतबा सुनितहि ओ कानब बन्द कए चुप भए गेलीह।

बसन्त कहलक-हमहूँ दुखक मारल छी। हम बिछुड़ि कए दू सँ एक भए गेल छी।

स्त्री पुछलक-अहाँक की नाम छी आ अहाँक भाएक की नाम छी?

बसन्त बाजल-हमर नाम बसन्त छी आ हमर भाएक नाम सीत छल।

ई बात सुनैत स्त्री फेरसँ कानए लागल आ कहलक जे अहाँक भाए स्वर्गवासी भए गेलाह। हुनके वियोगमे हम कानि रहल छी। ई गप सुनि कए (रूप: ७ एतए नाम दिल बसन्त सेहो अबैत अछि) बसन्त कहलक जे आब हमरो जीवित नहि रहबाक अछि।

ई गप सुनितहि सीतक स्त्री मरि गेलि आ बसन्त ओही समय बोनमे जा कए एकटा पैघ गाछपर चढ़ि कए अपन जान देबाक लेल तैयार भऽ गेल। ओही समय एकटा आकाशवाणी ओकरा अबाज देलक-बसन्त तूँ अपन जान नहि गमा। तोहर भाए जीवित छौक। जो जतए

तोहर भाएक सारा छौक ओहि पर अपन दहिन हाथक कंगुरिया आँगुर काटि कए ओहि पर छीटि दे। तोहर भाए जीवित भए जएतौक। एतेक गप सुनि कए बसन्त गाछसँ नीचाँ उतरि गेल आ जतए ओकर भाएक सारा छल ओहि पर ओ ओहिना कएलक। सीत राम-राम बजैत उठि गेल। दुनू भाइ गरा मिलल। ओहि ठामसँ दुनू भाए बिदा भेल। दिनसँ साँझ पड़ि गेल आ दुनू भाए एक ठाम गाछक नीचाँ अटकि जाइ गेलाह।

सीत कहलक-भाए बसन्त, एतहि रुकैत छी। भोर भऽ जएत तखन फेर हम सभ बिदा होएब।

दुनू भाए ओहि गाछक नीचाँ रात्रि व्यतीत करए लगलाह।

खिस्सा रूप ८: रात्रिक बारह बाजल तँ बोनसँ एकटा साँप बहार भेल आ गाछपर चढ़ए लागल। ओही गाछपर हंसक खोता रहए। ओहि हंसक खोतामे दू टा हंसक बच्चा रहए। साँपकेँ देखि कए दुनू बच्चा अबाज देमए लागल। ई अबाज दुनू भाए सुनलक आ साँपकेँ गाछपर चढ़ैत देखलक आ सोचलक जे ई साँप बच्चा सभकेँ खा जएत से एकरा जे मारि दी तँ बच्चा सभक जान बचि जएत। ओ सभ साँपकेँ मारि देलक।

तावत हंस दहमे चरए लेल गेल रहए। हंस ओहि खोतामे कतेक बेर बच्चा देने रहए मुदा एकोटा बच्चा उठा नहि सकल रहए। भोरे सकाले हंस दहसँ चरि कए आएल। बच्चा सभकेँ जीवित देखि बड्ड प्रसन्न भेल। बच्चाकेँ अहार देमए लागल। बच्चा मुँह घुमा लेलक आ पुछलक-माँ अहाँ एहि गाछपर कतेक बच्चा पाड़लहुँ आकि हमही पहिल बच्चा छी।

माँ बाजलि-नहि एहि गाछपर कएक बेर हम बच्चा देलहुँ मुदा मुँह अहीं दुनूक हम आइ देखलहुँ।

बच्चा बाजल जे हमरो मुँह अहाँ नहि देखि सकितहुँ, जे ई मुसाफिर नहि रहितए। नीचाँ देखू की पड़ल अछि।

हंस देखलक जे नीचाँ मे एकटा साँप पड़ल छै आ दू टा मुसाफिर फिरि रहल अछि।

बच्चा बाजल-ओहि साँपकेँ यैह दुनू मुसाफिर मारलक अछि। पहिने जा कए ओही मुसाफिरकेँ खएबा लेल दियौक। ओ खाओत तँ हम खाएब।

हंस नीचाँ उतरि कए आएल आ कहलक- मुसाफिर, जखन अहाँ नहि खाएब तँ ई दुनू बच्चा सेहो नहि खाएत।

ई दुनू भाए कहलक-माँ, खेनाइसँ प्रेम पैघ अछि। माँ हमहूँ सभ, परिस्थितिक मारल छी। हमर सभक के सहायता करत?

हंस बाजल-हमर सहायता अहाँ कएलहुँ से अहाँक सहायता हम करब। लिअ एकटा बच्चा हम अहाँ सभकेँ दैत छी। ई अहाँक सहायता करत। सियान भेलापर ई अहाँ दुनू भाएकेँ अपन पाँखिपर बैसा कए उड़ि सकैत अछि। जतए मोन होएत, ओतए जा सकैत छी। ई वरदान हम दैत छी जे अहाँ दुनू भाए सफल रहब। दुनू भाए प्रणाम कए ओतएसँ बिदा भेलाह। ओ सभ जतए कतहु बिलमैत रहथि, ओतए हंस अपन दुनू पाँखि पसारि छाह कए दैत छल। एहि प्रकारेँ किछु दिन बीतल। हंसक बच्चा पैघ भऽ गेल। ओ आब दुनू भाएकेँ चढ़ा कए लऽ जाए योग्य भऽ गेल।

हंस बाजल-भाए। आब तौँ दुनू भाए हमर ऊपर बैसि जाह। अहाँ जतए कतहु कहब हम अहाँ सभकेँ लए चलब।

दुनू भाए ओतएसँ हंसपर सवार भए आगू बिदा भेलाह आ जा कए कंचनपुर शहर पहुँचलाह। नगरक बाहर एकटा बरक गाछ छल। ओही गाछक लग ओ सभ डेरा खसेलक आ रहए लागल, आ शहरमे जा कए काज करए लागल। साँझ भेला उत्तर, ओही गाछक लग खेनाइ खा कए ओ सभ सूति जाथि। हंस भरि राति दुनू भाएक देख-रेख करैत छल। किछु दिनुका बाद ओहि कंचनपुर शहरक राजाक कंचना नाम्ना बेटीसँ सीत प्रेम करए लागल।

ओहि लड़कीक प्रत्येक दिन फूलसँ ओजन कएल जाइत छल। प्रेम कएलाक बाद लड़कीक ओजन बहुत बढ़ए लागल। राजाकेँ खबर भेल जे लड़कीक ओजन किएक बढ़ए लागल अछि? राजा अपन महलक चारू कात सिपाहीक पहरा दिआ देलक। ताहूपर सीत हंसपर सवार भए महलमे चलि जाइत छलाह। सम्पूर्ण शहरमे हिलकोर उठि गेल जे के ई लोक अछि, जे हमर राजाक महलमे चोरिसँ चलि जाइत अछि। एक दिन संजोगसँ सीत गेल आ कोचपर बैसि दुनू गोटे हँसी मजाक करए लागल आ अहीमे दुनू गोटेकेँ निन्न लागि गेलैक। हंस बेचारा घुरि कए आपस अपन डेरापर आबि गेल आ भोरमे दुनू गोटेकेँ एक्के संग महलमे पकड़ि लेल गेलैक।

राजा सभटा गप पुछलक। सीत सभटा गप बतेलक।

लड़की कहलक जे हमर भाग्यमे यैह अछि आ यैह रहत।

राजा सोचि कए कहलक-अहाँ अपन भाएकेँ लए आऊ आ हंसकेँ सेहो।

बसन्त आ हंसकेँ सीत लए अनलक। हंसकेँ देखि कए राजा बड्ड प्रसन्न भेल।

राजा कहलक-हमर मन्त्रीकेँ एकटा बेटी छै। दुनू भाएक एकहि बेर बियाह कए देल जएत।

बड्ड धूम-धामसँ दुनू भाएक बियाह भेल।

सीतकेँ कंचनपुरक राज भेटल, कारण राजाक तँ एकेटा बेटी रहए। ताहि द्वारे सीत किछु दिन बितलाक बाद कहलक जे आब हम अपन शहर जाएब।

राजा खुशीक संग ओहि चारू गोटे बेटी-जमाएकेँ बिदा कएलक। सीत-बसन्त दुनू भाए अपन देश बिदा भेल। किछु दिनुका बाद ओ सभ अपन नगर पहुँचल तँ ओतुक्का हालत बड्ड गम्भीर देखलक। अपन राजक एक कोनमे ओ सभ अपन घर बनेलक आ रहए लागल। सीतक माए आ पिता दुनू गोटे आन्हर भए गेल रहथि। सभ दिसनसँ विपत्ति आएल छलन्हि। एक दिन हुनका पता लगलन्हि जे हुनकर राज्यक एक कोनमे कोनो दोसर राजा घर बना कए रहि रहल अछि। चलू ओकरासँ भेँट कए आबी।

ओ सभ जखन अएलाह तँ दरबज्जापर सीत-बसन्त दुनू गोटे चीन्हि गेलथि जे यैह हमर माए-बाप छथि। दुनू भाए अपन-अपन स्त्रीकेँ इशारा कएलन्हि। एहि दुनू गोटेकेँ भीतर लए जइयन्हु आ नीक जेकाँ असनान करबाऊ, नीक कपड़ा पहिराऊ आ खूब आ नीक खेनाइ खुआऊ आ तकर बाद एतए आनू आ मंचपर बैसाऊ।

तकर बाद सीत आ बसन्त दुनू भाए माँ-पिताक आगाँ ठाढ़ भए कहलन्हि-ई तँ बताऊ जे अहाँकेँ कैकटा बेटा अछि।

राजा महेश्वर सिंह कहलन्हि-हमरा दू टा बेटा रहए मुदा आब एकोटा नहि अछि। हमर भाग्यक दोख अछि। नहि जानि ओ सभ जीवित अछि आकि मरि गेल? हम तँ मरबा देने रहियैक।

सीत-बसन्त बाजल-नहि। अहाँक दुनू बेटा जीवित अछि। एतेक कहैत ओकरा सभक आँखि नोरा गेलैक।

—पिताजी वैह सीत-बसन्त हम सभ छी।

ओही समय राजाक आँखि खुजि गेलैक आ दुनूकेँ अँकवारमे भरि पकड़िकेँ ओ कानए लागल आ अपन गल्ती स्वीकार कएलक। धन्य लाला, अहाँक अउरदा बढ़ए। अमर रहू।

८३. मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”

सारांश
“माँझ आंगनमे कतिआएल छी” मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि।

बीजशब्द: मुन्नाजीक · माँझ · आंगनमे · कतिआएल · छी · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मुन्नाजीक “माँझ आंगनमे कतिआएल छी”” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मुन्नाजीक; माँझ; आंगनमे; कतिआएल; गजलकार प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

“माँझ आंगनमे कतिआएल छी” मुन्नाजीक रुबाइ आ गजल संग्रहक नाम अछि। कतिआएल आ सेहो माँझ आंगनमे! की कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि ई आकि गजलक स्वभाव अछि ई? नहिये ई कबीरक उलटबासीक प्रभाव अछि नहिये ई गजलक स्वभाव अछि, ई एकटा यथार्थ अछि। मुन्नाजी सन कतेको लोक कतिआएल छथि, प्रतिभा अछैत हेराएल छथि। मुदा गजलकार सभटा दोख अपनेपर लऽ लै छथि।

आब तँ माँझ आंगनमे कतिआएल छी

अपने चालिसँ आब बेरा गेलहुँ हम

आ सएह कारण अछि जे ओ नोरक सुख भोगऽ लागै छथि।

नोर तँ खसैए मुदा मजा सन लगैए

केहन नीक प्रेमक दुख लेलहुँ हम

बड़का खाधिमे खसै छथि आ तहू लेल अपनेकेँ दोखी मानै छथि:

छोटको ठेससँ नै सबक लेलहुँ हम

तँए बड़का खाधिमे खसि गेलहुँ हम

तँ की गजलकार प्रेमक महत्व बिसरि गेल छथि, नै प्रेम तँ सभकेँ चाही।

सभ उमेर वर्गकेँ प्रेम चाही

मरितो धरि कुशल-छेम चाही

आ हिनका जँ कोस दू-कोस मात्र चलबाक रहितन्हि तखन ने, हिनका तँ बहुत आगाँ बढ़बाक छन्हि तेँ प्रेम चाही।

डाहसँ पहुँचब कोस-दू कोस

आगू बढ़बा लेल तँ प्रेम चाही

आ से सभ ठाम। एकटा हमर संगी छल, एकटा परीक्षामे टॉप केलक तँ बाजल- नै कम्पीट करै छी तँ नै करै छी, आ करै छी तँ टॉप करै छी। ओ गजलकार नै छल जँ रहितए तँ अहिना लिखितए जेना मुन्नाजी लिखै छथि:

बदरी लादल रहै कोनो बात नै

जदि बरसी तँ बरिसात बनि कऽ

आ नजरि-नजरिक फेर आ हाफ ग्लास फुल, ई दुनू टा अवधारणा ऐ रूपमे ओ राखै छथि:

नजरि उठा कऽ देखबै तँ खाली बुझाएत ई दुनियाँ

नजरि गरा कऽ देखबै तँ सभ देखाएत ई दुनियाँ

समालोचना आ विरोध दुनूकेँ गजलकार नीक मानै छथि।

पक्षधरसँ राखू अपनाकेँ बचा कऽ

विपक्षीक सभ बातकेँ नै तीत बुझू

महगाइसँ लोक बेकल अछि मुदा तकरा लेल झुमैत मचानक बिम्ब देखू:

महगाइसँ खूने नै हड्डियो सुखाइए

आब झुलैत मचान सन लगैए लोक

आ ई उलटबासी देखू, बिम्ब नव, भावना शाश्वत:

हम तँ घूर जड़ेलौं गर्मी मासमे

मिझाएल आगिसँ पसाही कहियो

ई कोन गोष्ठी छी जे अछि कोन पत्रिकाक प्रायोजित चिट्ठी छपबाक राजनीति सन, ई रुबाइ देखू:

मोन भए उठल दुखित होहकारीसँ

उठि दर्शक भागल मारामारीसँ

प्रायोजक तँ पथने रहल कान अपन

कर्ता देखार भेला जतियारीसँ

मुदा बाढ़िक विषय जँ मैथिली गजलक अंग नै बनए तँ बुझू जे गजलकार समाजसँ कतिआएल छथि। मुदा से नै अछि।

धार एखन धरि तँ उफानपर अछि

लोक ताका-ताकी करैत बान्हपर अछि

आब पड़ाइन घटल अछि, मिथिलासँ पड़ाइन। बाहरी लोक बिहारीकेँ मजदूर आ श्रमिकक पर्यायवाची मानि लेने छथि। तहूपर गजलकारक कलम चलल अछि।

बिहारक सिरखारी बदलि गेल सन लगैए आब

श्रमिक घटलासँ कंपनी-मालिक लगै बिहारी जकाँ

मुन्नाजीक गजल आ रुबाइ स्वच्छन्द रूपसँ बमकोला जेकाँ बहल अछि। शेरक स्वभाव होइ छै जे जँ ओकरा नीकसँ कहल जाए तँ आह-बाह लोक करिते अछि। मैथिलीमे गजल-रुबाइ जइ तरहेँ प्रसारित भऽ रहल अछि से देखि कऽ यएह लागि रहल अछि जे जतेक ई विधा अपनाकेँ पसारि रहल अछि तइसँ बेशी मैथिली लाभान्वित भऽ पसरि रहल अछि।

गजेन्द्र ठाकुर

८४. विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”

सारांश

बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- एहि नामसँ १० टा गीतक संग्रह लए श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि। ई एहि सालक दोसर पोथी छी जे देवनागरीक संग मिथिलाक्षरमे सेहो आयल अछि, आऽ एकरा हम अंशुमन पाण्डेयकेँ पठा देलियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक लेल, कारण विनीतजी हमरा एहि पोथीकेँ ई-मेलसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि लेल हुनका धन्यवाद। “भरल नोरमे” शीर्षक पद्यमे की सुतलासँ भेटलै अछि ककरो अधिकार आऽ “गाम नगरमे”- लोकतंत्रमे अपन अधिकार लऽ कऽ रहत मधेसी, ई घोषणा छन्हि कविक तँ “कोरो आऽ पाढ़ि’ मे गरीब छोड़िकऽ के बुझतै गरीबीके मारि- ई कहि कवि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ रखैत छथि।

बीजशब्द: विनीत · ठाकुरक · बाँकी · हमर · दूधक · कर्ज · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विनीत ठाकुरक “बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज”” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विनीत; ठाकुरक; बाँकी; हमर; दूधक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज- एहि नामसँ १० टा गीतक संग्रह लए श्री बिनीत ठाकुर- शिक्षक, प्रगति आदर्श ई. स्कूल, लगनखेल, ललितपुर प्रस्तुत भेल छथि। ई एहि सालक दोसर पोथी छी जे देवनागरीक संग मिथिलाक्षरमे सेहो आयल अछि, आऽ एकरा हम अंशुमन पाण्डेयकेँ पठा देलियन्हि, यूनीकोडक मैपिंगक लेल, कारण विनीतजी हमरा एहि पोथीकेँ ई-मेलसँ पठेबाक अनुमति देने छथि, ताहि लेल हुनका धन्यवाद।

“भरल नोरमे” शीर्षक पद्यमे की सुतलासँ भेटलै अछि ककरो अधिकार आऽ “गाम नगरमे”- लोकतंत्रमे अपन अधिकार लऽ कऽ रहत मधेसी, ई घोषणा छन्हि कविक तँ “कोरो आऽ पाढ़ि’ मे गरीब छोड़िकऽ के बुझतै गरीबीके मारि- ई कहि कवि अपन आर्थिक चिन्तन सेहो सोझाँ रखैत छथि। चहुँदिश अमङ्गलमे जङ्गलक विनाशपर –मुश्किलेसँ सुनी चिड़ियाके चिहुं-चिहुं- कहि कवि अपन पर्यावरण चिन्तन सोझाँ रखैत छथि। “जे करथि घोटाला” मे भ्रष्टाचारपर आऽ “जाइतक टुकड़ी” मे जाति प्रथापर कवि निर्ममतासँ चोट करैत छथि तँ “बेटीक भाग्यविधान” मे कविक भावना उफानपर अछि। “कम्प्युटरक दुनिया” आऽ “अङ्गरेजिया” मे कवि सामयिकताकेँ नहि बिसरल छथि तँ अन्तिम पद्य “ताल मिसरी” मे वरक सासुर प्रेम कनेक व्यंग्यात्मक सुरमे कवि कहि अपन एहि क्षेत्रमे सेहो दक्ष होएबाक प्रमाण दैत छथि। ओना तँ कविक ई प्रथम प्रकाशित कृति छन्हि, मुदा कवि जाहि लए सँ कविता कएने छथि ओऽ अभूतपूर्व रूपेँ प्रशंसनीय अछि।

८५. संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”

सारांश
संतोषजीक “एना किए..?” पद्य संग्रह मैथिली पद्यक भविष्यक प्रति आश्वस्ति दैत अछि। एहिमे युवा कविक २४ गोट पद्यक संग्रह अछि। संतोषजीक कविता एना किए मे स्त्रीक समस्या तँ काल्पनीक सत्यमे जीवनक दर्शनक द्वन्द सोझाँ अनैत छथि।

बीजशब्द: संतोष · कुमार · मिश्र · एना · किए · पोसपुत · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “संतोष कुमार मिश्र — “एना किए..?” आ “पोसपुत”” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे संतोष; कुमार; मिश्र; एना; किए प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१

संतोषजीक “एना किए..?” पद्य संग्रह मैथिली पद्यक भविष्यक प्रति आश्वस्ति दैत अछि। एहिमे युवा कविक २४ गोट पद्यक संग्रह अछि।

संतोषजीक कविता एना किए मे स्त्रीक समस्या तँ काल्पनीक सत्यमे जीवनक दर्शनक द्वन्द सोझाँ अनैत छथि। बिचित्र कविता सेहो द्वन्दे अछि आ अएना कविकेँ अपन बचहनक स्मृतिमे लऽ जाइत छन्हि। दुविधा कवितामे कवि एहि दुविधामे छथि जे अनुभवकेँ डुमा कए आ भावनाकेँ हेरा कए जे ओ प्रेममे पड़लाह से सामाजिक अपराध अछि! भद्रक बलि मे सगरमाथा आ मकालुकेँ नहि छोड़बाक आ कोशी आ कर्णलीकेँ खा जएबाक बिम्ब कविताकेँ सार्थक करैत अछि। पहिने नुका कऽ मारैत छल आ आब देखा कऽ मारैत अछि, ओ राक्षस जकर हाथमे कानून छैक। हमर मायकेँ बुद्धिए नहि छैक मे आजुक समाजक सत्य उद्घाटित होइत अछि जतए नीक लोक ओ अछि जे पाइवला अछि; नीक पद प्राप्ति करबाक लेल घूस देमए पड़ैत छैक आ नमहर नेता बनबाक लेल जनताकेँ धोखा देल जाइत अछि। नामी बनिञाकेँ.. कवितामे कवि नीक गबैयाक स्वर सुनला उत्तर महाँ बेकार पबैत छथि। अन्नेसँ आनन्द कविता समाजक अंधविश्वासपर कटाक्ष अछि। टहटही इजोरियासँ कविक प्रश्न आ सौन्दर्यक परिभाषा इजोरिया कवितामे भेटैत अछि तँ मायकेँ प्रश्नमे सागरक पानिसँ बेशी नोर बहाबैत माएक दर्दकेँ कवि स्वर दैत छथि। मातृभूमि आ मिथिलाक जे छी तँ कविता मिथिला आ मैथिलीकेँ समर्पित अछि तँ हमर कनिञामे हास्यक संग दहेज आ अमेल विवाहक चर्चा होइत अछि। हमर आशमे बच्चाक आ नवीन शिक्षा पद्धति, डोनेशन आधारित एडमिशनक तँ हम आ हमरमे सेहो कवि सर-समाजक नीक-अधलाह वर्णन उठा कऽ कविता बना दैत छथि। मूल्य अभिबृद्धि कर अर्थव्यवस्थाक वर्णन करैत अछि। हमर मीत जीवन-मृत्युक तँ सभामे आब केओ नहि अछि निक लोक एतऽ कहि कवि अपन व्यथा सोझाँ रखैत छथि। बाटमे डेग-डेग पर गहुमन-धामन कवि देखैत छथि, मुदा जीबनमे कविक आशावादिता घुरि अबैत छन्हि।

एहि संग्रहक पद्य भावना आ स्मृतिसँ जुड़ल अछि आ एकटा आन्तरिक भूचाल अनैत अछि। अपन एहि पद्य संग्रहमे कवि प्रतिभाक जे प्रदर्शन देने छथि से हमरा सभ आसमे छी जे हुनकर आर संग्रह सेहो अओतन्हि जे हमरा सभकेँ झमारि देत।

२

सन्तोष कुमार मिश्र केर कथा संग्रह पोसपुत प्राप्त भेल अछि। नेपालक एहि कथाकारक सात गोट कथा पोसपुत, एकटा ब्यथा पत्रमे, जखन कनिञा भेलखिन बिमार, सिपाहि, डाक्टर, भाग्य अप्पन-अप्पन आ’ दाग एहिमे सम्मिलित अछि। कथावस्तु प्रस्तुत करबासँ पहिने एकर अन्य पक्ष पर चर्च करब आवश्यक।

पहिल गप जे एहि पुस्तकक समीक्षासँ एकर प्रारम्भ भेल अछि। श्री कालीकान्त ‘तृषित’, देपुरा रुपैठा, जनकपुर एकर सांगोपांग समीक्षा कएलन्हि अछि, आ’ ई कथाकारक उच्च मानसिकता अछि जे ओ’ एहि समीक्षाकेँ उचित रूपमे लेलन्हि, कारण जौँ से नहि रहैत तँ एकर एहि रूपमे स्थान पोथीमे नहि भेटैत।

दोसर गप जे ई पोथी एक दिशिसँ देखला उत्तर देवनागरीमे आ’ दोसर दिशिसँ देखला उत्तर मिथिलाक्षरमे लिखल बुझि पड़ैत अछि आ’ से अछियो। 21म शताब्दीक ई प्रायः एहि तरहक प्रथम प्रयास अछि, जे मैथिलीमे देखबामे आएल अछि।

आब पहिने तृषित जीक समालोचना देखैत छी। ओ’ लिखैत छथि, जे कथाकारक कथामे पलायनवादी सोचक प्रधानता रहैत अछि, संगहि ईहो गप उठबैत छथि जे साहित्य सृष्टाकेँ तटस्थ प्रस्तोता होयबाक चाही आकि पथ प्रदर्शक, पलायनवादे होयबाक चाही आकि संघर्षक प्रेरणाश्रोत?

‘पोसपुत’ क विषयमे तृषित जी कहैत छथि, जे एहिमे तीनपुस्तक वर्णन अछि, आ’ राजा महेन्द्र आ’ राजा त्रिभुवनक समयमे भेल घटनाक वर्णन जोड़बाक अभिप्राय स्पष्ट नहि अछि।

’ एकटा व्यथा पत्रमे’ केर विषयमे ऋषित कहैत छथि जे कालक गति, लोकक विवशता आ’ अनुभूतिक वर्णन अछि एहिमे।

तेसर कथा ‘जखन कनिञा भेलखिन बिमार’ केँ तृषित जी बिमार कथा घोषित करैत छथि।

‘सिपाही’ कथामे ओहि पदक विवरण अछि जे विवाह दानमे प्राथमिकता पबैत छल आ’ आब त्याज्य भ’ गेल अछि।

‘डॉक्टर’ कथाकेँ तृषितजी पलायनवादी सोचक पराकाष्ठा कहैत छथि। तृषितजीक विचारेँ डॉक्टरकेँ मरैत दम तक रोगीकेँ बचेबाक प्रयास करबाक चाही।

’ भाग्य अपन अपन’ भाग्य चक्र पर आधारित अछि। ‘दाग’ मे क्षणिक आवेशमे उठाओल गेल डेग, अपरिपक्व उम्रमे भेल प्रेमविवाह फेर तकरा बाद दोसराक संग भागि जायब ई सभ पथभ्रष्टताक प्रतीक अछि।

पोसपुत आत्मकथात्मक शैलीमे लिखल गेल अछि, मुदा एकर समापन अकस्मात् होइत अछि, पोसपुतक किरदानीसँ आ’ मायक नैहरि जएबासँ।

दोसर कथा पत्र शैलीमे अछि, जतय पोस्पुत कथा जेकाँ पात्र संतोष छथि। एहि कथाक समापन सेहो बड्ड हड़बड़ीमे भेल अछि, आ’ घटनाक तारतम्य लेखकसँ पाठक धरि नहि पहुँचि सकल।

ओहिना जखन कनिञा भेलखिन बिमारमे लेखक अपन कथ्य स्पष्ट नहि कए सकलाह।

सिपाहि कथामे सेहो पात्रक नाम संतोष छन्हि, मुदा कथ्य आत्मकथात्मक नहि अछि। डॉक्टरकेँ देशमे सेवा करबाक पुरस्कार भेटलैक प्रमाण-पत्रक रद्द होयब आ’ से ओकरा हेतु प्राणघातक सिद्ध भेल। भाग्य अपन-अपन पुरान खिस्सा कहबाक शैलीमे अछि, जे राजा देशमे सर्वेक्षण करएबाक हेतु राजकुमारकेँ पठबैत छथि आ’ ई कथ नीक बनि पड़ल अछि। दाग कथा कथात्मक अछि आ’ हड़बड़ीमे लिखल भाषित होइत अछि।

एहि कथा संग्रहकेँ तृषित जी समीक्षाक संग भाषायी रूपसँ संपादित नहि कएलन्हि, कारण एहिमे मानकताक अभाव अछि। प्रूफ रीडिंग सेहो नीक जेँका नहि भेल अछि। मानकताक हेतु विदेह आ’ मिथिला मंथनसँ प्रयास शुरू भेल अछि, आ’ विदेहक रचना लेखन स्तंभमे एकरा स्थान देल गेल अछि। केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर द्वारा सेहो मैथिली स्टाइल मैनुअलक निर्माण भ’ रहल अछि, आवश्यकता अछि, जे नेपालक विद्वान लोकनि सेहो अपन मत मैथिली अकादमीक मानक निर्धारण शैलीक आधार पर बनाओल जा’ रहल शैली पर देथि, जाहिसँ ई सर्वग्राह्य होए।

८६. दूर्वाक्षत

सारांश

दूर्वाक्षत यजुर्वेदक अध्याय २२ मंत्र २२ कैं विश्वक पहिल राष्ट्रभक्ति गीत होएबाक गौरव प्राप्त छै। मुदा मिथिलामे दूभि-अक्षत छीटि कऽ ऐ मंत्रकेँ दूर्वाक्षत मंत्र बना देल गेल। बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि. दूर्वाक्षत नामसँ नवम वर्गक किताब छपने अछि।

बीजशब्द: दूर्वाक्षत · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “दूर्वाक्षत” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे दूर्वाक्षत; जमीन्दारक; मंत्र; नवम; वर्गक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

दूर्वाक्षत

यजुर्वेदक अध्याय २२ मंत्र २२ कैं विश्वक पहिल राष्ट्रभक्ति गीत होएबाक गौरव प्राप्त छै। मुदा मिथिलामे दूभि-अक्षत छीटि कऽ ऐ मंत्रकेँ दूर्वाक्षत मंत्र बना देल गेल। बिहार स्टेट टेक्स्ट बुक पब्लिशिंग कॉरपोरेशन लि. दूर्वाक्षत नामसँ नवम वर्गक किताब छपने अछि। ऐ पोथीमे मिथिला आ मैथिलीकेँ पछुएबाक षडयंत्र पूर्ण रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। अठारह पन्नामे मिथिलाक एकटा जिलाक स्थायी बन्दोबस्तीबला जमीन्दारक जीवनी पढ़ाओल गेल अछि!! मैथिली लिपिक संरक्षणपर डेढ़ पन्नाक पचास बर्ख पुरान लेख अछि जकर आइक तकनीकी युगमे कोनो महत्व नै छै, प्रवासी मैथिल समाज लेख पुरातनपंथी अछि आ अखुनका बच्चाकेँ ई हास्यास्पद बुझेतै, प्रवासक अर्थ, मैथिलक अर्थ आ प्रवासक कारण सभ किछु बदलि गेल अछि। तँ की ई बच्चा सभकेँ गुलामीक पाठ पढ़ेबाक षडयंत्र नै अछि? लोक नवम वर्गक हिन्दी, अंग्रेजी, बांग्ला आ आन भाषाक पोथीसँ एकर तुलना करैए तँ स्थिति आर भयावह भऽ जाइए। शिक्षकसँ आग्रह जे जमीन्दारक जीवनी बच्चा सभकेँ नै पढ़ाबथु, प्रश्न-पत्र सेट केनिहारसँ आग्रह जे ओ जमीन्दारक जीवनीबला अध्यायसँ प्रश्न नै पु छथि।

८७. स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”

सारांश

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८): स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेलाह आ संस्कृतमे “साहित्य आचार्य” क उपाधि प्राप्त केलन्हि। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेलाह पाली आ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल।

बीजशब्द: स्व · श्री · वैद्यनाथ · मिश्र · यात्री · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री”” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे स्व; श्री; वैद्यनाथ; मिश्र; यात्री प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८): स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेलाह आ संस्कृतमे “साहित्य आचार्य” क उपाधि प्राप्त केलन्हि। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेलाह पाली आ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल। ओतए ओ बौद्ध धर्ममे दीक्षित भऽ गेलाह आ हुनकर नाम पड़लन्हि -नागार्जुन। मुदा बादमे पुनः गाममे यज्ञोपवीत कऽ ब्राह्मण धर्ममे घुरलाह।

यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छलाह, १९२९ ई. क अन्तिम मासमेमे मैथिली भाषामे पद्य लिखब शुरू कएलन्हि। १९३५ ई. सँ हिन्दीमे सेहो लिखए लगलाह। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल सांकृत्यायनक संग ओ किसान आन्दोलनमे संलग्न रहलाह आ १९३९ सँ १९४१ धरि ऐ क्रममे विभिन्न जेलक यात्रा कएलन्हि। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक बाद लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित कऽ देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकेँ देल समर्थनक बाद कम्युनिस्ट पार्टीसँ मतभेद भेलन्हि। जे. पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपात्कालमे हिनका जेलमे ठूसि देल गेल। यात्रीजी हिन्दीमे बाल साहित्य सेहो लिखलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीक अतिरिक्त बांग्ला आ संस्कृतमे सेहो हिनकर लेखन आएल। मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यात्रीजीकेँ हुनकर कविता संग्रह “पत्रहीन नग्न गाछ” पर भेटलन्हि। १९९४ ई. मे ओ साहित्य अकादमीक फेलो -हिन्दी आ मैथिली कविक रूपमे- भेलाह।

यात्रीजी जखन २० वर्षक छलाह तखन १२ वर्षक कान्यासँ हिनकर विवाह भेल। हिनकर पिता गोकुल मिश्र अपन समाजमे अशिक्षितक गनतीमे रहथि आ चरित्रहीन छलाह। यात्रीजीक बच्चाक स्मृतिमे छन्हि जे हुनकर पिता कोना हुनकर अस्वस्थ आ ओछाओन धएल मायपर कुरहड़ि लऽ मारबाक लेल उठल छलाह, जखन ओ बेचारी हुनकासँ कुमार्ग छोड़बाक गुहारि कऽ रहल छलीह। यात्रीजी मात्र छह वर्षक छलाह जखन हुनकर माए हुनका छोड़ि प्रयाण कऽ गेलीह। यात्रीजीकेँ अपन पिताक ओ चित्र सेहो रहि-रहि सतबैत रहलन्हि जइमे हुनकासँ मातृवत प्रेम करएवाली हुनकर विधवा काकीक, हुनकर पिताक अवैध सन्तानक गर्भपातमे, लगभग मृत्यु भऽ गेल छलन्हि। के एहन पाठक होएत जे यात्रीजीक हिन्दीमे लिखल “रतिनाथ की चाची” पढ़बाक काल बेर-बेर नै कानल होएत। पिता-पुत्रक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुत्र अपन बाल-पत्नीकेँ पिता लग छोड़ि वाराणसी प्रयाण कए गेलाह।

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप
हम टा संतति, से हुनक पाप
ई जानि हैन्हि जनु मनस्ताप
अनको बिसरक थिक हमर नाम
माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम! (काशी/ नवंबर १९३६)

काशीसँ श्रीलंका प्रयाण, “कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप” ई कहि यात्रीजी अपन पिताक प्रति सभ उद्गार बाहर कऽ दैत छथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी अपन पत्नी, अपराजिता, लग आबि गेलथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी दू टा मैथिली कविता लिखलन्हि- “बूढ़ वर” आ

“विलाप” आ एकरा पाम्फलेट रूपमे छपबाए ट्रेनक यात्री लोकनिकेँ बेचलन्हि। जीविकाक ताकिमे साँसे भारत दुनू प्राणी घुमलाह। पत्नीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुमि कऽ आबथि। आ फेर आएल १९४९ ई., अपना संग लेने यात्रीजीक पहिल मैथिली कविता-संग्रह “चित्रा” । १९५२ ई. धरि पत्नी संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहए लगलीह। यात्रीजी बीच- बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीकेँ छह टा सन्तान भेलन्हि, आ सभक भार पत्नी अपना कान्हपर लेने रहलीह। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत रहथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहैत छलाह। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छलाह आ कम्युनिस्ट पार्टीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अगिले दिन यात्रीजी अपनाकेँ ओइ धोधा-धोखीमे गेल सभाक कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमर्जेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर. एस. एस. क कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भेँट भेलन्हि आ जे. पी. क सम्पूर्ण क्रान्तिक विरुद्ध सेहो जेलसँ बाहर अएलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैद्यनाथ मिश्र "यात्री" आ हिन्दीमे “नागार्जुन” क नामसँ रचना लिखलन्हि।

“पृथ्वी ते पात्रं” १९५४ ई. मे “वैदेही” मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखैत छथि- “आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान निर्भूमि परिवारकेँ देखार कए दैत छैक। से कातिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटैँ पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अन्नसँ कतउ नबान भेलइए”?

यात्री एकटा मिथ छथि? की यात्री एकटा मिथ छथि? ओ मुख्यतः हिन्दीक लेखक रहथि, मैथिलीमे ओ हिन्दीक दशमांशो नै लिखलन्हि। जे लिखबो केलन्हि तइमे सँ बेशी स्वयं द्वारा हिन्दीसँ अनूदित। मैथिली आ मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृति हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगलै मुदा तइमे सेहो ढेर रास कमी रहै जेना एकटा उदाहरण यात्री समग्रसँ-।   यात्री समग्र-पृ. २२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२-..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

एहेन बेमारी आनो मैथिली-हिन्दी लेखकमे छन्हि। ई ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठ, मे) वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा केँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि। मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृतिक- जे हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगै छै- तथ्यमे ई मैथिली-हिन्दी लेखक सभ अपन अज्ञानतासँ ढेर रास गलत तथ्य पड़सि रहल छथि, साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि (मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समए मे रहबे नै करथि)!

यात्री समग्रमे बलचनमा नै लेल गेल कारण ओ हिन्दीक कृति अछि, ओकर मैथिली अनुवाद सेहो भ्रष्ट अछि लगैए जेना अदहा अनुवाद केलाक बाद मैथिली लेल हुनका लग समयाभाव भऽ गेल होइन्ह। यात्री समग्रमे नवतुरिया लेल गेल, ओहो मूल हिन्दी अछि, किए मूल मैथिली कहि कऽ लेल गेल तकर जबाब सम्पादक देताह। मैथिलीमे प्रूफ रीडरकेँ सम्पादक कहेबाक सख छन्हि आ लोक ग्रियर्सन धरिक रचनाक रिप्रिन्ट अपन सम्पादकत्वमे करबा रहल छथि। एकटा दोसर उदाहरणमे पी. सी. रायचौधुरीक दरभंगा जिला गजेटियरक तेसर अध्यायक चारिटा उपशीर्षकक अंग्रेजी रचनाकेँ मोहन भारद्वाज अपन सम्पादकत्वमे रमानाथ झा रचनावलीमे -किनको कहलासँ सत्य मानि- रमानाथ झाक रचना मानि घोसिया देलन्हि, जखन की लिखित आ वैयाकरणिक शिल्पक आधारपर ओ रचना पी. सी. रायचौधुरीक अछि। यात्री स्वयं कहै छथि जे ओ मैथिली बलचनमा पहिने लिखलन्हि आ तकर हिन्दीमे अनुवाद केलन्हि। मुदा हिन्दी बलचनमामे ओ ई नै लिखै छथि आ ओकरा हिन्दीक पहिल आंचलिक उपन्यास कहै छथि। ई बेमारी आइयो मैथिलीक लेखककेँ गरोसने अछि आ यात्री जीक ऐ मे सायास-अनायास योगदान दुखदायी अछि।

राजकमल यात्रीकेँ अमर-सुमन सन पुरान ढर्राक कवि कहै छथि, प्रायः यात्रीक छन्दक प्रति सजगतासँ राजकमलकेँ ई भ्रम भेल छलन्हि।

रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक मैथिली बोली अछि आकि भाषा, ऐ विषयक सम्वादक भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ कोनो खास महत्व नै छै। रामविलास शर्मा बहुत पैघ साम्यवादी चिन्तक रहथि आ हुनकर कविता, आलेख सँ बेसी प्रभावी हुनकर कएकखण्डक भारतक

इतिहास विवेचन अछि. । मैथिलीकेँ भाषाक रूपमे स्थापित करबामे सुभद्र झा, रामावतार यादव, योगेन्द्र यादव, सुनील कुमार झा आदि भाषाशास्त्री काज केने छथि, रामविलास शर्मा आ यात्रीजीक सम्वाद गपाष्टक मात्र अछि।

चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता एहि दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइत छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म छैक तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्दात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होइत अछि जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत आ प्रायोगिक मार्क्सवादपर कताक दशक चलत।

आ अन्तमे यात्रीजीक संस्कृत पद्य: -
वासन्ती कनकप्रभा प्रगुणिता
पीतारुर्णैः पल्लवैः
हेमाम्भोजविलासविभ्रमरता
दूरे द्विरेफाः स्ता
यैशसण्डलकेलिकानन कथा
विस्मरिता भूतले
छायाविभ्रमतारतम्यतरलाः
तेऽमी “चिनार” द्रुमाः॥
-बसंतक स्वर्णिम आभा द्विगुणित भऽ गेल अछि पीयर-लाल कोपड़सँ। स्वर्णकालक भ्रममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अछि। नन्दनवनक विहारकेँ जे पृथ्वीपर बिसरा दैत अछि, छाह झिलमिल घटैत-बढ़ैत जकर डोलब अछि चंचल आ तरल। ओइ चिनारकेँ हम देखने छी अडिग भेल ठाढ़।

८८. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

सारांश

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार। शिक्षा- दर्शनशास्त्रमे एम. ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त।

बीजशब्द: स्व · श्री · हरिमोहन · झा · १९०८ · १९८४ · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८–१९८४)” विषयक काव्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे स्व; श्री; हरिमोहन; १९०८; १९८४ प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर काव्य-पाठ, छन्द, बिम्ब, भाषा आ संवेदनाक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४) जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार। शिक्षा- दर्शनशास्त्रमे एम. ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त। सन् १९३३ सँ बी. एन. कॉलेज पटनामे व्याख्याता, पटना कॉलेजमे १९४८ ई. सँ प्राध्यापक, सन् १९५३ सँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष आऽ सन् १९७० सँ १९७५ धरि यू. जी. सी. रिसर्च प्रोफेसर रहलाह। हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे “कन्यादान” (उपन्यास), १९४३ मे “द्विरागमन”(उपन्यास), १९४५ मे “प्रणम्य देवता” (कथा-संग्रह), १९४९ मे “रंगशाला”(कथा-संग्रह), १९६० मे “चर्चरी”(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे “खट्टर ककाक तरंग” (व्यंग्य) अछि। “एकादशी” (कथा-संग्रह) क दोसर संस्करण १९८७ ए. मे आयल जाहिमे ग्रेजुअट पुतोहुक बदलाने “द्वादश निदान” सम्मिलित कएल गेल जे पहिने “मिथिला मिहिर” मे छपल छल मुदा पहिलुका कोनो संग्रहमे नहि आएल छल। श्री रमानथ झाक अनुरोधपर लिखल गेल “बाबाक संस्कार” सेहो एहि संग्रहमे अछि। आऽ हुनकर “खट्टर काका” हिन्दीमे सेहो १९७१ ई. मे पुस्तकाकार आएल। एकर अतिरिक्त हिनकक स्फुट प्रकाशित-लिखित पद्यक संग्रक “हरिमोहन झा रचनावली खण्ड ४ (कविता)” एहि नामसँ १९९९ ई. मे छपल आऽ हिनकर आत्मचरित “जीवन-यात्रा” १९८४ ई. मे छपल। हरिमोहन बाबूक “जीवन यात्रा” एकमात्र पोथी छल जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल छल आऽ एहि ग्रंथपर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार १९८५ ई. मे मृत्योपरान्त देल गेलन्हि। साहित्य अकादमीसँ १९९९ ई. मे “बीछल कथा” नामसँ श्री राजमोहन झा आऽ श्री सुभाष चन्द्र यादव द्वारा चयनित हिनकर कथा सभक संग्रह प्रकाशित कएल गेल, एहि संग्रहमे किछु कथा एहनो अछि जे हिनकर एखन धरिक कोनो पुरान संग्रहमे सम्मिलित नहि छल। हिनकर अनेक रचना हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषामे अनुवादित भेल। हिन्दीमे “न्याय दर्शन”, “वैशेषिक दर्शन”, “तर्कशास्त्र”(निगमन), दत्त-चटर्जीक “भारतीय दर्शनक” अंग्रेजीसँ हिन्दी अनुवादक संग हिनकर सम्पादित “दार्शनिक विवेचनाएँ” आदि ग्रन्थ प्रकाशित अछि। अंग्रेजीमे हिनकर शोध ग्रंथ अछि- “ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनेलिसिस इन इंडियन फिलोसोफी” । प्राचीन युगमे विद्यापति मैथिली काव्यकेँ उत्कर्षक जाहि उच्च शिखरपर आसीन कएलनि, हरिमोहन झा आधुनिक मैथिली गद्यकेँ ताहि स्थानपर पहुँचा देलनि। हास्य व्यंग्यपूर्ण शैलीमे सामाजिक-धार्मिक रूढ़ि, अंधविश्वास आऽ पाखण्डपर चोट हिनकर लेखनक अन्यतम वैशिष्ट्य रहलनि। मैथिलीमे आइयो सर्वाधिक कीनल आऽ पढ़ल जायबला पीथी सभ हिनकहि छनि। हरिमोहन झा समग्र

हरिमोहन झा जीक समग्र रचनाक एक बेर सिंहावलोकन कएल जाए।
कथा-एकांकी

१.१. अयाची मिश्र (एकाङ्की) २. मंडन मिश्र (एकाङ्की) ३. महाराज विजय (एकाङ्की) ४. बौआक दाम (एकाङ्की) ५. रेलक झगड़ा (एकाङ्की) ६. संगठनक समस्या- पत्र शैली ७. “रसमयी” क ग्राहक – पत्र-शैली ८. पाँच पत्र –पत्र-शैली ९. दलानपरक गप्प१०. घूरपरक गप्प११. पोखड़िपरक गप्प १२. चौपाड़िपरक गप्प १३. धर्मशास्त्राचार्य १४. ज्योतिषाचार्य १५. पंडितजी १६. कविजी १७. परिवर्तन १८. युगक धर्म १९. महारानीक रहस्य २०. सात रंगक देवी २१. नौ लाखक गप्प २२. रंगशाला २३. अँचारक पातिल २४. चिकित्साक चक्र २५. रेशमी दोलाइ २६. धोखा २७. प्रेसक लीला २८. देवीजीक संस्कार २९. एहि बाटे अबै छथि सुरसरि

धार ३०. कन्याक जीवन ३१. रेलक अनुभव ३२. ग्रामसेविका ३३. मर्यादाक भंग ३४. तिरहुताम ३५. टोटमा ३६. तीर्थयात्रा ३७. अलंकार-शिक्षा ३८. बाबाक संस्कार ३९. द्वादश निदान ४०. ग्रेजुएट पुतोहु ४१. ब्रह्माक शाप ४२. आदर्श भोजन ४३. सासुरक चिन्ह ४४. कालीबाड़ीक चोर ४५. कालाजारक उपचार४६. विनिमय ४७. दरोगाजीक मोंछ ४८. शास्त्रार्थ ४९. विकट पाहुन ५०. आदर्श कुटुम्ब ५१. साझी आश्रम ५२. घरजमाय५३. भदेशक नमूना ५४. बीमाक एजेन्ट ५५. अंगरेजिया बाबू

पद्य

१. सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक २. कन्याक नीलामी डाक ३. मिथिलाक मिहिर सँ ४. ढाला झा ५. टी. पार्टी ६. बुचकुन झा ७. पंडित लोकनि सँ ८. निरसन मामा ९. आगि १०. अङरेजिया लड़कीक समदाउनि ११. गरीबनीक बारहमासा १२. श्री यात्रीजीक प्रति: मैथिलीक उक्ति १३. सौराठ १४. अलगी १५. अशोक-वाटिकामे १६. पटना-स्तोत्र १७. श्रद्धेय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धांजलि १८. हिन्दी ओ मैथिली १९. बुचकुन बाबाक चिट्ठी २०. जगमग-जगमग दीप जराऊ २१. कलकत्ता गेला उत्तर २२. अकाल २३. कलकत्ता हमरा बड़ पसन्द २४. सलगमक खण्ड २५. बूढ़ानाथ २६. नवकी पीढ़ीसँ २७. पंडित ओ मेम २८. पंडित-विलाप २९. गंगाक घाटपर ३०. समयक चक्र ३१. महगी-माहात्म्य ३२. रस-निमन्त्रण ३३. अकविताक प्रति: कविताक उक्ति ३४. हम पाहुन छी ३५. अनागत प्रेयसीसँ ३६. मत्स्य-तीर्थ ३७. मिष्टान्न ३८. हे राजकमल ३९. घटक सौं ४०. पंडितजी सौं ४१. कनियाँक समस्या ४२. मुक्तक ४३. गजल ४४. मातृभूमि ४५. नारी-वन्दना ४६. हे दुलही के माय ४७. मात्रृभूमि वन्दना ४८. चन्द्रमाक मृत्यु ४९. मिथिला वन्दना ५०. कवि हे! आब कोदारि धरु ५१. महगी ५२. नव पराती ५३. चालिस आ चौहत्तरि ५४. प्रयोगवादी कविता ५५. स्व. ललित नारायण मिश्रक स्मृतिमे ५६. उद्गार ५७. अन्तिम सत्य ५८. मधुर भाषा मैथिली छी ५९. छगुन्ता ६०. विद्यापति पर्व महान हमर ६१. आठ संकल्प ६२. घूटर काका ६३. वनगाम-महिषी स्मृति ६४. मैथिली-वन्दना ६५. हे मातृभूमि केर माटि ६६. कहू की औ बाबू ६७. कश्मीर हमर थीक ६८. मंगल प्रभात ६९. बुचकुन बाबाक स्वप्न ७०. जय विद्यापति ७१. शुभांशसा ७२. पारिचारिका स्तोत्र ७३. मनचन बाबा ७४. एहि बेरक फगुआ ७५. परतारु जुनि ७६. हे मजूर! कष्ट लखि अहाँक (कविजी: प्रणम्य देवता) ७७. हे हे मजूर! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७८. अबि! अनन्त कोमल करुणे! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७९. हे वीर! हलायुध धर खड्ग (कविजी: प्रणम्य देवता) ८०. अयि! प्रचंड चंडिके! (कविजी: प्रणम्य देवता) ८१. झाँसीक रानी (कविजी: प्रणम्य देवता) ८२. हे प्रगतिशील महिला समाज (कविजी: प्रणम्य देवता) ८३. प्रिये! हम जाइत छी ओहि पार (कविजी: प्रणम्य देवता) ८४. धन्य-धन्य मातृभूमि (अयाची मिश्र: चर्चरी) ८५. धन्य ई मिथिलेशक दरबार (अयाची मिश्र: चर्चरी) ८६. हे डीह! अमर कीर्तिक निधान! (अयाची मिश्र: चर्चरी) ८७. हरिहर जन्म किएक लेल (माछक महत्व: खट्टर ककाक तरंग) ८८. केहन भेल अन्हेर (खट्टर ककाक टटका गप्प: खट्टर ककाक तरंग)

खट्टर ककाक तरंग (कथा-व्यंग्य)

कन्यादान (उपन्यास)

द्विरागमन (उपन्यास)

जीवनयात्रा (आत्मकथा)

कन्यादानक समर्पण- जे समाज कन्या कैं जड़ पदार्थवत् दान कय देबा मे कुंठित नहि होइत छथि, जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कैं पढ़ैबाक पाछाँ हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि, जाहि समाजमे बी. ए. पास पतिक जीवन-संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया घोड़ाक संग निरीह बाछी कैं जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि, ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय समर्पित।

प्रणम्य देवताक समर्पण- आइ सँ सात वर्ष पूर्व जे कार्तिकी पूर्णिमाक करार पर हमरा सँ पैंच लऽ गेलाह और तहियासँ पुनः कहियो दर्शन देबाक कृपा नहि कैलन्हि, जनिक चिर-स्मरणीय कीर्ति-कलाप प्रथमे कथा मे विशद रूप सँ वर्णित छैन्ह, जे "प्रणम्य देवता" क मध्य सर्वश्रेष्ठ आसन पर अधिकार जमा सकैत छथि, जनिक वन्दनीय बन्धुवर्ग ई पुस्तक देखि विनु मङनहि अपन स्वत्व स्थापित कय लऽ सकैत छथि, तेहन प्रमुख चरित-नायक, विकट पाहुन भीमेन्द्रनाथ क सुदृढ़ विशाल मुष्टिमे ई विचित्र-चरित्र-पूर्ण पोथी विवशतापूर्वक अर्पित छैन्ह!

खट्टर ककाक तरंगक समर्पण- जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा बहा दैत छथि; जनिक प्रवाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बातमे अद्भुत रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि; जे मर्मस्पर्षी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्तल मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि; तेहन चिर आनन्दमूर्ति, परिहास-प्रिय खट्टर कका कैं- त्वदीयं वस्तु पितृव्य! तुभ्यमेव समर्पितम्।

रंगशालाक समर्पण- जे अक्षययौवना नटी एहि अनादि अनन्त रंगशालाक प्रवर्तिका थिकीह, जे मनोहर वीणा-वादिनी सम्पूर्ण चराचर विश्वकैं अपना आंगुरक अग्रभाग पर नचा रहल छथि, जे रहस्यमयी अपन मोहिनी लीलाक झलक देखाय ककरो स्पर्श नहि करय दैत छथिन्ह, जे कल्पनाक रंगीन पाँखि पर आबि कलाकारक कलामे रसक संचार करैत छथिन्ह, तेहन आश्चर्यकारिणी चिरसुन्दरी त्रैलोक्य-विजयिनी माया देवी कैं।

८९. जगदीश प्रसाद मण्डल

सारांश

१९४२-४३ क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे एहि अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओहिमे नहि भेल। तहिना मिथिलाक १९६७ ई. क अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकेँ देखाओल गेलन्हि जे कोना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा एहिपर कथा लिखल गेल २००९ ई. मे। २००९ ई. मे जगदीश प्रसाद मंडलजी बिसाँढ़पर मैथिलीमे कथा लिखलन्हि।

बीजशब्द: जगदीश · प्रसाद · मण्डल · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “जगदीश प्रसाद मण्डल” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे जगदीश; प्रसाद; मण्डल; मैथिली; हिनकर प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

१९४२-४३ क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे एहि अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओहिमे नहि भेल। तहिना मिथिलाक १९६७ ई. क अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकेँ देखाओल गेलन्हि जे कोना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा एहिपर कथा लिखल गेल २००९ ई. मे। २००९ ई. मे जगदीश प्रसाद मंडलजी बिसाँढ़पर मैथिलीमे कथा लिखलन्हि। आ एहि विलम्बक कारण सेहो स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह प्रवृत्ति रहल अछि, ताहि कारणसँ अमर्त्य सेन जेकाँ हमरो साहित्यकार सभ ओहि महाविभीषिकासँ ओतेक प्रभावित नहि भेल होएताह। आ एतए जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह होएबासँ बचा लैत अछि। एहि संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ट अछि, रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल शिल्पी छथि, कथ्यकेँ तेना समेटि लैत छथि जे पाठक विस्मित रहि जाइत अछि। मुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (कथा, उपन्यास, नाटक, प्रेरक-कथा सभमे) उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओहि स्थानपर स्थापित करैत अछि, जतएसँ मैथिली साहित्यक इतिहास “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ” एहि दू खण्डमे पाठित होएत। समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नहि वरन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर अएबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे कतहु अभाव-भाषण नहि भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखैत छथि से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरुद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमामंडित भेटैत अछि, आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचैत छी, जे करैत छी सएह लिखैत छी- ताहि कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओही भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ देखाओल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिक क्षेत्र टा मे नहि वरन् आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत। विदेह मे हिनकर पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ दू दर्जनसँ बेशी कथा, नेना-भुटका-किशोर लेल सएसँ ऊपर प्रेरक कथा ई-प्रकाशित भऽ विश्व भरिमे पसरल मैथिली भाषीकेँ दलमलित करैत मैथिली साहित्यक एकटा रिक्त स्थानक पूर्ति कऽ देने अछि।

१०. प्रेमशंकर सिंह

सारांश

मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी - प्रेमशंकर सिंहजीक एहि निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न प्रिय-अप्रिय पक्षपर चर्चा भेल अछि। अप्रिय पक्ष अबैत अछि एहि द्वारे जे राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि। मैथिली साहित्यक पुरान सन्दर्भ मैथिली भाषा आ साहित्यमे वर्णित अछि।

बीजशब्द: प्रेमशंकर · सिंह · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “प्रेमशंकर सिंह” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे प्रेमशंकर; सिंह; मैथिली; चर्चा; साहित्यक प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मैथिली भाषा साहित्य: बीसम शताब्दी - प्रेमशंकर सिंहजीक एहि निबन्ध-प्रबन्ध-समालोचना संग्रहमे मैथिली साहित्यक २०म शताब्दी आ एक्कैसम शताब्दीक पहिल दशकक विभिन्न प्रिय-अप्रिय पक्षपर चर्चा भेल अछि। अप्रिय पक्ष अबैत अछि एहि द्वारे जे राजनैतिक-सामाजिक-आर्थिक-सांस्कृतिक समस्या-परिवर्तन आ एकीकरणक प्रक्रिया कखनो काल परस्पर विरोधी होइत अछि।

मैथिली साहित्यक पुरान सन्दर्भ मैथिली भाषा आ साहित्यमे वर्णित अछि। लोकगाथा मे मणिपद्मक लोकगाथाक क्षेत्रमे अवदानकेँ रेखांकित करैत लोकगाथाक चर्चा भेल अछि। लोकनाट्य मे मैथिली लोकनाट्यक विस्तृत उल्लेख अछि। बीसम शताब्दी- स्वर्ण युगमे मैथिली साहित्यक सए बर्खक सर्वेक्षण अछि। पारंपरिक नाटक मे मैथिलीक आ मैथिलीमे अनूदित पारम्परिक नाटकक चर्चा अछि। सामाजिक विवर्तक जीवन झा मैथिली नाट्य साहित्यमे हुनका द्वारा आनल नूतन कथ्य-शिल्पकेँ रेखांकित करैत अछि। हरिमोहन झाक परवर्त्ती रचनाकारपर प्रभाव हरिमोहन झा पर समीक्षा अछि। मैथिली आन्दोलनक सजग प्रहरी जयकान्त मिश्रक अवदानक आधारित अछि। संस्मरण साहित्य मे मणिपद्मक हुनकासँ भेँट भेल छल क सन्दर्भमे संस्मरण साहित्यपर चर्चा भेल अछि। अमरक एकांकी: सामाजिक यथार्थ मे अमरजीक एहि विधा सभक तँ मायानन्दिक रेडियो शिल्पु मे मायानन्द मिश्रक एहि विधाक सर्वेक्षण अछि। चेतना समिति ओ नाट्यमंच मे चेतना समिति द्वारा कएल रचनात्मक कार्यक विवरण अछि।

एहि सभ आलेखमे सत्यक आ कलाक कार्यक सौंदर्यीकृत अवलोकन, संस्था सभक निर्माण वा वर्तमानमे संपूर्ण समुदायक धर्म-नस्ल-पंथ भेद रहित आर्थिक आ सामाजिक हितपर आधारित सुधारक आवश्यकता, महिला-लेखन आ बाल-साहित्यक स्थान-स्थापर चर्चा, यथासंभव मेडियोक्रिटी चिन्हित करबाक प्रयास, मूल्यांकनमे ककरो प्रति पूर्वाग्रह वा घृणा नहि राखब- ई सभटा समीक्षाक आवश्यक तत्वक ध्यान राखल गेल अछि। एक पाँतिक वक्तव्य कतहु नहि भेटत, पूर्ण विवेचन भेटत।

९१. अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन

सारांश

अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन: अरविन्द ठाकुर (१९५४-) आ देवशंकर नवीन (१९६२-) दू टा एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिली कथा लिखै छथि, मुदा कम लिखै छथि, अरविन्द ठाकुर तँ बहुते कम, कारण एकहके टाक कथा संग्रह आइ-धरि आएल छन्हि, अन्हारक विरोधमे- अरविन्द ठाकुरक आ हाथी चलए बजार - देवशंकर नवीनक। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक कथा सभ तँ देवशंकर नवीन अपन भाषिक शब्दकोशक विशालता लेने सोझाँ अबै छथि।

बीजशब्द: अन्हारक · विरोधमे · हाथी · चलए · बजार · अरविन्द · देवशंकर · नवीन

सारांश · Abstract

ई अध्याय “अन्हारक विरोधमे “हाथी चलए बजार” — अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन” विषयक कथासाहित्यिक आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे अन्हारक; विरोधमे; हाथी; चलए; बजार प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर कथ्य, पात्र, संरचना, भाषा आ सामाजिक अर्थक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन: अरविन्द ठाकुर (१९५४-) आ देवशंकर नवीन (१९६२-) दू टा एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिली कथा लिखै छथि, मुदा कम लिखै छथि, अरविन्द ठाकुर तँ बहुते कम, कारण एकहके टाक कथा संग्रह आइ-धरि आएल छन्हि, अन्हारक विरोधमे- अरविन्द ठाकुरक आ हाथी चलए बजार - देवशंकर नवीनक। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक कथा सभ तँ देवशंकर नवीन अपन भाषिक शब्दकोशक विशालता लेने सोझाँ अबै छथि। मैथिली कथाक जड़ता कम तँ होइत अछि मुदा बहुत रास आवश्यक पक्ष कम लिखबाक आ गबदी मारने (मैथिल गबदी) रहबाक कारण छुटि जाइत अछि। देवशंकर नवीन एक्के प्लॉट बेर-बेर सोझाँ अनैत छथि, जेना ऋणखौक आ इजोतमे पुतोहुक ससुरकेँ मारबाक चर्च आ एहि तरहक आनो क्रम, जे आभास दैत अछि जे एकेटा कथाक प्लॉटसँ कैक टा कथा बनल अछि, तँ उस्सर जमीनक उत्तरार्धक प्लॉट, जकरा कथाकार नीक जेकाँ उपयोग नहि कऽ सकलाह। उत्तरार्धक प्लॉटक हम एहि द्वारे चर्चा कएलहुँ कारण ओहि प्लॉटक अनुभव सभ मैथिलकेँ छन्हि आ ओहि आधारपर कुमार पवन एकटा अविस्मरणीय कथा पइठ (अंतिकामे प्रकाशित) लिखि दैत छथि जे हुनकर यश एकमात्र अही कथाक कारण अक्षय रखबामे समर्थ अछि जेना चन्द्रधर शर्मा “गुलेरी” केँ उसने कहा था कथा रखलकन्हि। अरविन्द ठाकुर कथा लिखै छथि आ जे लिखै छथि से सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिककेँ तेनाकेँ जोड़ि कऽ जे मैथिली कथाक एकटा रिक्तताक पूर्तिक प्रयास करैत अछि, मुदा बड्ड कम लिखै छथि से पाठक पियासल रहिये जाइत अछि, घट अपूर्ण रहैत अछि।

अन्हारक विरोधमे- खिस्सा सियार-यार- रामनारायण महराज-एक्स एम. एल. ए. आ भूतपूर्व चेयरमैन सरकारी प्रकाशन कमिटी, तहिया कोनो घोटालामे मुख्यमंत्रीक भाइ रामाधार पांडे, एम. एल. ए. हिनका बचेने रहथिन्ह। गरीबदास आजाद जिला कमिटीक महामंत्री, अनेक बर्ख धरि सोशलिस्ट आ आब महासभा पार्टीमे, बेटा सेहो ट्रेनमे डकैती धरि करए लागल छन्हि। शालिगराम राय आ लखन यादव- मनबढ़ू सभ। मीटिंग। राजनाथ झा आ जीबछ मंडलक मुँहे राजनीतिपर किछु पैराग्राफ अबैत अछि। सदानन्द विद्रोही महासभापार्टीक विरोधी दलक स्वयंभू नेता तोफान सिंहक शागिर्द आ हुनका संग एकटा बम विस्फोटमे दहिना हाथ गमेने एकटा जुआन। हुनकर अफसोच करब, रघुबंश मंडलक जिला कमिटीक भाइस प्रेसिडेन्ट बनबामे पांडेजीक दाँव- बैकवार्डकेँ जगह भेटबाक चाही, आ चौधरीजीक प्रतिष्ठाकेँ देखि हुनकर चुप भए जाएब! राजमंगल श्रीवास्तव आ सतीश सिंह परमार (छत्तीस बाबू छत्री- मनबढ़ू शब्दावली) । एकावन गोट मेम्बरबला संस्था धेला कमिटीक सर्वेसर्वा परमारजी। श्रीवास्तव आ परमारक जोड़ी कुख्यात- अलग-अलग रहलापर दुहू गोटे एक दोसराकेँ गारि पढ़ैत छथि मुदा रहै छथि संगे। पूर्व प्रखण्ड अध्यक्ष शनिचर “शनि”-गाजा आदिक अनवरत सेवी आ वर्तमान युवा अध्यक्ष गणेश गुरमैता-पेटीशनबाज। चटर्जी दा- पटनासँ फोनपर रहै छथि- चौधरीजी आ पांडेजीक विरोधमे चौबेजीक संगे फ्रंटक नियार छनि। शनि-गुरमैताकेँ परमार गपमे ओझरा लैत छन्हि तँ क्यो गोटे दुनू गोटेकेँ फुसियाहीं कऽ सोर करै छन्हि आ त्राण दियाबै छन्हि। जटाशंकर मलिक प्रसिद्ध माखन बाबू (सभ नट वोल्टपर फिट होअएबला सलाइ-रिंच- मनबढ़ू शब्दावली) । अपनापर ध्यान आकर्षित करबा लेल पारसमणि चौधरीकेँ सोर करै छथि आ हुनकर प्रणामक उत्तर तीन प्रणामसँ दै छथि। हुनकर कार बेटा बौका बाबू (सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर) लऽ गेल छन्हि आ जीप खराप छन्हि- दुसधटोली बलाक पंचैती करबाक छलन्हि से रिक्शा मँगबाबए पड़लन्हि। च्यवनप्राश खाइते रहै छथि- राघोपुरसँ होमियोपैथिक इलाज करेने छथि। सीता बाबू महासभा पार्टीक प्रखण्ड अध्यक्ष (माखन बाबूक बहु- मनबढ़ू शब्दावली) । सुबोधनारायण सिंह प्रसिद्ध सुबोधजी। एक्स. एम. एल. ए. आ एक्स अध्यक्ष जिला

महासभा पार्टी (समर्थक शब्दावली- जिलाक गाँधी, विरोधी शब्दावली- नटवरलाल आ मनबढ़ू शब्दावली- मुँहदुबरा) । सादगी रहन-सहन, विनम्र। रामाधार पांडेजीक भाए मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित। मुदा चौधरीजीसँ बेसी सटबाक सजा मुदा शिवाधारजी हिनका पार्टीक उम्मीदबारी वापस लेबा लेल कहि कऽ देलखिन्ह। राजीव शर्मा-गलतफहमीक शिकार- जे छल-प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक बिनहु राजनीति कएल जा सकैत अछि। ठाँहि-पठाँहि बजै छथि आ से मनबढ़ू सभ कटाह कहै छन्हि। सुबोधजीक कहलापर जे शिवाधार बाबूक फोन अएलन्हि तँ हुनका नाम आपिस करए पड़लन्हि, ओ कहै छथि जे एहि लुच्चा-लफंगा सभक सरदरबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि हमरासभ। ओतहि रामसोगारथ मंडल सेहो छथि, स्वतंत्रता सेनानी मुदा सम्मान-पेंशन अस्वीकार कऽ चुकल छथि। कियो कहै छन्हि तँ कहै छथिन्ह जे जाऊ बाऊ जाऊ, ई गप सुन्नर ठाकुरकेँ सिखेबन्हि जे मुनिस्टर सभक केश-दाढ़ी बनबैत सुराजी पेंशन हथिआए नेने-ए। आ तखने अनघोल, फेर बाजी मारि लेलन्हि चमोक्कनि! आ माखन बाबू बड़का गाड़ीसँ उतरैत रामाधार पांडेक गरामे माला पहिरा दै छथि। फेर एकाएकी माला पहिरेबाक चलन आ फेर एकाएकी भाषण-भाख। आ ओम्हर रामसोगारथ मंडलक सपनामे कारी-कारी भयावह आकृति सोनहुला सपनाकेँ चारू कातसँ घेरि लैत छन्हि। पियासल पानि- रामचरनक खेती करब, आब हरबाही मुदा ओकर बेटा लखनाक माथपर छैक आ तखने ओकर गौना होइ छै आ अबैए नारायणपुरबाली। लेखक वा कथाक सूत्रधार कनियाँक मुँहदेखाइ लेल जाइत छथि आ देखै छथि ओकर अपार रूप-राशि। लखनाक काकी बेरियाबाली ठट्ठा करै छन्हि आ ओ बहार भऽ जाइ छथि। नारायणपुरबाली एक दिन सूत्रधारक पएर जाँतऽ लगै छथि। रोपनी, डोभनी, कटनी आ कमौनी, कोनो काजमे नारायणपुरबालीक जोड़ नहि। एक दिन अन्हरगरे सूत्रधार खेतमे कटनी करबए बिदा होइ छथि तँ आमक कलम लग नारायणपुरबालीक आतुर ठोर हुनकर गाल, माथ आ कंठपर निशान छोड़ि दै छन्हि। मुदा तखने घरैया नोकर सरजुगबाक अबाज अन्हारसँ अबै अछि आ बज्जर खसाबथुन भगवान एहि दुसमनमापर- कहैत निराशा, लालसा आ घृणासँ कुंडाबोर नारायणपुरबाली आगाँ बढ़ि जाइ छथि। ओम्हर नारायणपुरबालीपर डाकनी सवार छै से घोल होइए, देहपरक कपड़ा-बस्तर ओ फेकि लैए। मोतिया दुसाध दारू पिबैए, बरहम बाबाक परसादी आ फेर भगता बनि सात टा काँच करची नारायणपुरबालीक देहपर तोड़ि दैत अछि। आ डाकनीकेँ हरदुआरक श्मशान पीपर गाछपर भगा दैत अछि! भागि जाइए नारायणपुरबाली। दोसर बेर लखनाक बियाह होइ छै मुदा एहि बेर सूत्रधार एगारह गो टका अनका दिया पठा दै छथि। कनियाँक होनहारिक खबरि सुनि रामचरन प्रसन्न भेल मुदा लखना अपन कपार फोड़ि लैत अछि, कारण ओ नामरद अछि। नारायणपुरबाली...लछमी छलै, बेकसूर, बेचारी, अभागलि। अन्हारक विरोधमे- हो हल्ला। कथाकर वा सूत्रधार बहराइ छथि आ पहुँचै छथि अलाउद्दीन लग। कहै छनि अलाउद्दीन, मुसलमान कुजड़ा। जनारदन चौधरी ओकर यार। ओकरे टोलमे बिकुआ ओकर एहि यारक भाइकेँ गारि पढ़लकै। ओकर बेहुदपनीक शिकाइत लऽ कऽ जनारदनक भाइक आएब, भैया कहि सोर पारब, मुदा तखने बिकुआक मारब आ तखने ओकर घरक मौगी सभक ओकरा गारि पढ़ब शुरू भेलै। आ उनटे हिन्दू-मुसलमानक शगूफा सेहो छोड़ै रहै। कोन इज्जति रहि गेलै एहि टोलक। आकि तखने, चारू दिस अपन डराओन छाँह पसारने अन्हारक छातीकेँ चीरैत बिजलीक जगमग इजोत दूर-दूर धरि पसरि गेल। ढाँचा-१९९२- कथाक सूत्रधारक चिट्ठी। स्वीकारोक्ति जे जे किछु लिखा गेल छन्हि से वातावरणक दबाबमे। हालहिमे जॉन्डिस भेल छलन्हि, जीहकेँ रास लगा कऽ पड़ल छलाह। रौद, गरदा आ धुँआसँ अकच्छ छथि। एकटा आर विचित्र बेमारी, देहमे तेज हउहटि आ चमड़ापर नहुँ-नहुँ चकत्ता उभरऽ लगै छन्हि। एक दिन सहरसासँ घुरै छलाह आकि स्कूटर खराप भऽ गेलन्हि। मिस्तरी आधा घंटामे स्कूटर ठीक करबाक गप कहलन्हि मुदा पाट-पुरजा खोलि कऽ छिड़िया देलकन्हि आ चारि घंटा लगलन्हि। सुपौल घुरि डॉ. दासक क्लिनिक गेलाह, होमियोपैथिक दवाइक बुन्न असरि केलकन्हि मुदा घंटा लागि गेलन्हि। एक बेर सासुरसँ घुरैत काल सेहो एहिना भेलन्हि। एक तँ पत्नीसँ बिछोह आ दोसर हाड़ कंपकपाबय बला ठार आ सिहकैत हबा! गोष्ठी, प्रो. राजेन्द्र, डॉ मुखर्जी आ के. के. इन्स्टीटय़ूट ऑफ मैडोलॉजीक प्रिंसिपल झा। प्रो. राजेन्द्रक डॉ मुखर्जीसँ कहलापर जे इलाजक फीस पाँच टका तँ दऽ देब मुदा दबाइ देबए पड़त मुफ्तिया, फिजिशियन सैम्पल। ताहि पर मुखर्जीक कहब जे मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव सभ हुनका घासो नहि दै छन्हि आ एहि लेल तँ डॉ. दास लग जाए पड़त। फेर अयोध्यामे बाबरी मस्जिदक ढ़ाँचाक ध्वस्त हएब। सूत्रधारक देहक कँपकँपी, हउहटि, चकता आ सूजन फेरसँ। कोनो प्रत्यक्ष कारण नहि रहए एकर, मुदा तैयो हुनकर देह एकरा भोगने छलन्हि। मूस- ओ आ ओकर दबाइक दोकान। नबका ड्रग इंस्पेक्टर एहि दुर्गा पूजामे पाँच सए टाका सलामी लऽ गेलै। दोकान थसे जेकाँ लेने छै। अनुज बैसै छै दोकानपर। भुमिहार पेंच भिड़ाओत आकि दोकान करत! बैंकक पुरना लोन, घरक पाँच सालक बिजलीक बिल।..जेठका सार नागपुरमे एकाउन्टेन्ट छै, सनगर नोकरी आ सेहन्तगर कनियाँ छै। जे ओ जादूगर रहैत आ तखन गिली-गिली फू आ अलाउद्दीनक चिराग जे रहितै ओकरा हाथमे तखन! मुसबा तँ परेशान केने छै, खाइतो काल, मुदा एखन ओकरा एक्को रत्ती तामस नहि उठै छै। ई शहर अनुमण्डलसँ जिला मुख्यालय भऽ गेल छै, जमीनक दाम बढ़ि गेल छै। जमीन बेचि सभटा कर्जा-बर्जा सधा देत। निन्नक बदलामे पारदर्शी बुनबुना आ विभिन्न आकृतिक आ रूपक मूस, कुतरैत, लड़ैत, नचैत, प्रेम करैत, पोथी पढ़ैत आ रम्मी खेलाइत मूस। दोसर बेर बड़का टा बुनबुन्ना, मूसक कारणसँ प्लेग। मेहनतकश मूस बिहरि बनबैत अछि मुदा साँप

ओहिमे रहैत अछि। अचकचाकऽ ओ उठि गेल। स्वर्गीय पिताक चित्र देखैत अछि। पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग साँपे जेकाँ करत? केआरीमे अनेरुआ घास-पात खुरपीसँ साफ करऽ लागल। प्रजातंत्र परिकथा- एकटा हत्या आ दू टा घरमे डकैती। कमल कुमार शर्मा एहि खबरिकेँ देखैत अछि, सेन्सर्ड सन खबरि। ई गपक चर्चा नहि जे ओ डॉक्टर के. पी. भगत सेवानिवृत्त छल आ मामूली फीस लै छल। ओकर घरमे डकैत सभ गरीब मरीज आ ओकर परिजन बनि पैसल छल। ओहि पत्रकारपर कालाबाजारी आ मिलावटक केस एखनो लटकल अछि से ओ कोना लिखितए जे ओहि घरसँ पुलिस थाना अगबे एक सय डेगपर आ आरक्षी महोदयक निवास अगबे साठि-सत्तरि डेगक दूरीपर छलै। फेर डॉक्टर ओहिठामसँ ओ सभ राष्ट्रपति पदक प्राप्त हालहिमे रिटायर भेल शिक्षक विक्रम प्रसाद वर्माक घर पहुँचि गेल, डकैती सेहो केलक आ खेनाइ बनबार्कें सेहो खएलक। विक्रम बाबूक भाइ गजानन बाबू आरक्षी अधीक्षकक ओहिठाम नजरि बचा कऽ पहुँचि गेलाह। मुदा तैयो किछु नहि भेल। अस्पतालक हाताक मुख्यद्वारपर लोक सभ जुटि गेल। मधुरेश किशोर द्विवेदीक केमिस्ट आ ड्रगिस्ट एसोशियेशन एकरा नेतृत्व दऽ रहल छलै। स्कूलसँ घुरैत बेदरा सभकेँ किछु भऽ जाय..। वक्ता सभ शुरू- दलाल ईश्वर चौधरी, भड़ुआ मुरलीधर अग्रवाल, मटिया तेल फेंटि कऽ पेट्रोल बेचिनिहार पत्रकार, चोरिक माल खरीद-बिक्री केनिहार नगरपालिका चेयरमैन बुचनू बाबू, मुनीमक कृपासँ चारिटा संतानक बाप पचीस वर्षीय सेठानीक साठि वर्षीय पति कालाबजरिया सेठ कनकधारीमल- ध्वनि विस्तारक यंत्रपर ओकर हँफसबाक स्वर छोट-मोट अन्हड़क भ्रम दैत छल। बार एशोसिएशनक अध्यक्ष ज्ञाननाथ सिंह जे खूनी आ डकैत सभ पैरवी करै छथि, बाढ़ि प्रभावित इलाकाकेँ डिजनीलैण्डमे परिवर्तित करबाक मुफ्त योजना प्रस्तुत करएबला गंजेड़ी छुटभैया कृष्णानन्द तिवारी..गोरका डाक्टर धरमचन्द सहाय जकरा बुझनुक लोक सभ डी. सी. एस. माने दारू, छौड़ी, सार बहानचो कहै छथि..ओकर धीपल-तबधल शब्द सभ। फेर भीड़क नेतृत्वहीन होएब, प्रतिनिधिमंडल नहि जन-समूह द्वारा डाइरेक्ट वार्ता करबाक गप, आ एहिनामे टैरेसपर ओल्ड फॉक्सक अन्तर्राष्ट्रिय समस्या सभपर बकथोथी। तखने मोटरसाइकिलक एकटा सवार भीड़केँ नियंत्रणमे लेमए चाहैत अछि, ओ बंदा एकटा संप्रदायवादी दलक नव्यतम रंगरूट छल। मधुरेशजी सावधानी बरतै छथि। एकटा धग्गर आ टटका जनमल नारा कमल आ अनकर ध्यान आकृष्ट करैत छन्हि। फेर अबै छथि प्रदीप क्रान्तिकारी जे समाजसेवाक वशीभूत अभियन्त्रणक पढ़ाइ छोड़ने छथि वा निशाबाजी आ बलात्कारक कारण निष्कासित कएल गेल छथि। अनुमंडलाधिकारीक जीपपर आक्रमण होइत अछि। प्रदीप क्रांतिकारी कहैत अछि- कोयला लयसेंसमे सात हजार टका चाही हरामजदाकेँ। देखलहक तूफान। मधुरेशजी किछु आर गोटेकेँ संगमे लऽ लेने छलाह जेना गजेन्द्रजी- स्थानीय कॉलेजक व्याख्याता आ व्यापारी संगठनक माधवजी आ कृष्णमोहनजी। बिना अप्रिय घटनाक भीड़ गाँधी चौक आ जयप्रकाश चौक पहुँचल। तखने मिठाइ दोकानपर बैसएबला गोल्डिया जे क्रिकेट सेहो खेलाइ छल आ तहूमे बॉलक सुविधाक ध्यान रखै छल..बैटपर आबि गेलै तँ छक्का आ नहि तँ क्लीन बोल्ड... से सरकारी गाड़ीकेँ देखि मार..आगि लगा दे.. बाजि उठल। किछु लोक गाड़ी दिस दरबर मारलक, मुदा गाड़ीक चालक गाड़ी भगौलक। न्याय चौक वा नबाब चौक पर विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभ बजरंगबलीक स्थापना कऽ देने छल कारण तराजू आ आँखिपर पट्टी बला मूर्ति नहि लागि सकल रहए। बजरंग चौकक बोर्ड लागि गेल रहए। प्रशासनमे ओहि समए दलित अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ चौकक नाम अम्बेदकर चौक करए चाहै छलाह से ओ सभ बजरंगबलीकेँ गिरफ्तार कऽ थाना लऽ गेलाह जतए सुनै छियै आइयो हुनकर पूजा कएल जाइत छन्हि। से ई चौक नगरपालिकाक पार्श्वमे रहलासँ आब नगरपालिका चौक कहाइत अछि। अनुमंडलाधिकारी फोर्स लऽ कऽ एतए आबि गेल आ सभ मिलि लाठी भांज लागल। पुलिसबला सभ दूर धरि दरबर मारि रहल छल। मुदा फेर लोक सभ गर धऽ कऽ रोड़ा फेकब प्रारम्भ कएलक। पुलिस असबार भए भागल..एकटा हिटलर कट मोँछबला इंस्पेक्टर आएल.. बरगाँही सभ ओकर गाड़ी लऽ भागल रहै! अनुमंडलाधिकारी आ दोसर सभ हाँइ-हाँइ जीपमे बैसिकऽ पतनुकान लऽ लेने छल। कमल नजरि खिरओने छल। गोल्डी ओकरासँ बहस केलकै तँ अमजद अली कमलक बाँहि गसिअयने...क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज महिषक बीच दर्जन भरि लोक..। राजैतिक आ सामाजिक गुटबन्दीसँ बाहरक लोक ठकुरसोहाती नहि जनै छलाह। ने छल..कथी लेल एकर सभक मुँह लागै छी। दू गोट गिरफ्तार संगीक रिहा करबाक माँग..मुदा अधिकारी सभ अपन रक्षार्थ ताहि लेल तैयार नहि छलाह। लोफरकट डी. एस. पी. क मबालीकट अशिष्ट बोली..। मधुरेशजी बजलाह- अहाँ सभकेँ निखत्तर जयबाक सिहन्ता होअय आकि निछक्क जयपंथी-ए घेरने होअय तँ..। बन्हककेँ छोड़बापर सहमति भेल। मनुक्खक कोन कथा कोनो कागपंछी नहि देखाइत छलै..महाभारत समाप्त भेलापर की कुरुक्षेत्रो एहिना निसबध भेल होयतैक। बेदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदानमे प्रवेश कऽ रहल छल। अथ गिरगिट कथा- मुक्कन बाबू माने मुकुन्द जायसवाल- जनवितरण प्रणालीक दोकानक एकटा डीलर। एहि नामक एकटा दरोगा सेहो आयल छल आ खूब हँसोथि कऽ गेल छल। रामलखन पोद्दार, बी. एस. सी. ऑनर्स, वल्द किशन पोद्दार, चाह-पान बेचयबला, टॉपर मुदा नोकरी लेल जुत्ता खियाय गेलै। नगर-हबाक नापबाक यंत्र- कायराना भद्रताक पचहत्तरि प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियस वाइरस पाँच प्रतिशत अनुपातमे उपस्थित रहत। एकटा गोदाम सन मकानमे अछि पुलिस फाँड़ी आ तकरे सटल दारूक भट्ठी! एक दिन अनायासे दुनूक अहं सोझाँ-सोझी होइत छन्हि जखन मुकुन्द पुलिस फांड़ीसँ

फराकैत भऽ निकलै छथि आ रामलखन भट्ठीसँ। झगड़ाक बाद पुलिसबला सभक सहानुभूति मुकुन्दक प्रति रहए आ भट्ठासँ बहराए बला सभक पोद्दारक पक्षमे। रामलखन पोद्दार गिरफ्तार भऽ गेल आ भोरमे ओकर बाप पुलिसबलाकेँ फूल-पत्ती चढ़ा कऽ ओकरा छोड़ओलक। फेर मुक्कन बाबू एक सोड़ह लोक लऽ नशा विरोधी नागरिक मंच बनेलन्हि आ भट्ठीपर धरना देलन्हि। ई सोलह गोटे छलाह सात गोट पितिऔत-ममिऔत-पिसिऔत-मसिऔत, दू टा हरबाहा, धनकुट्टा मशीनक आपरेटर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र। मुदा एम्हर पोद्दारजी अधिकार सुरक्षा हेतु ३६ गोटेक संगे आबि गेलाह। नशा विरोधी नागरिक मंचक सेनापति लंक लऽ पड़एलाह तँ शेषकेँ धरपटांग उठा देलकन्हि। फेर मारि-पीटक क्रम शुरू भेल। रंगबाजी स्पेशलिस्ट सुब्रत मुखर्जी एकरा गैंगवार कहैत छथि। मुदा तखने नगरपालिकाक चुनावक घोषणा भेल। स्वार्थाना यारीक वाइरस शीवाज रीगलक सोझाँ रंग धेलक। मुक्कन बाबू चेयरमैन छथि, पोद्दारजी वाइस-चेयरमैन। नगरमे शान्ति अछि। अय्यासी- दोसराक संग बैसलमे मौज मुदा पत्नीक बोल- तरकारी लेल दसटकही..किराना समान काल्हियो-परसू जे आबि जाय। दोसक ओतय बिदा भेल, बेटाक गप नहि सुनऽ चाहलक। पटेल चौक... महात्मा गाँधी चौक पहुँचल। संगमे बिसटकही। रिक्शाबला अपन टोपर तानि कऽ सुस्ताइत रहए। रिक्शापर बैसल, रस्तामे दोस लेल दू टाकाक सिकरेट लेलक, अपन फेवरिट पत्रिका मोर बारह टाकामे आ चारि टाका रिक्शाबलाकेँ देलक। दोसक घरमे पंखाक हबासँ किछु आफियत अनुभव भेलै। बचल दू टाका ओकरा मुँह दुसलकै, घरक तरकारी आ बेटाक किताब-कापी.. घर घुरल देह घामसँ कुंडाबोर। पत्नीक फुलल-लाल आँखि देखि लगलै जे अय्यासी कऽ घुरल होअए। बैकबा-फोड़बा- मूल समाचार- मतायल हबाक पेट्रोलकेँ स्वार्थक सलाइ देखौने छल। घटना- प्रकाश अगरवालक फर्म “वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार”- उधारीक रकम लाख ठेकि गेलै तँ स्वरगीय रघुनाथ झाक पुत्र अठमा फेल मातृविहीन अबंड सिकन्दर झाकेँ वसूली लेल राखलक। एहि क्रममे ओ पहुँचल एक दिन रामचन्द मड़र लग, ओकर बेटा कालेश्वर मड़र जे आब नाममे यादव लिखै छल चारि बरख पहिने तीन हजारक थ्री-पीस सूट बनबेने छल। मुदा बाप ओकर ऋणक मादेँ मना कऽ देलकै। रस्तेमे पान खएबाक क्रममे मुन्ना ठाकुरक दोकानपर कालेश्वर यादवसँ ओकरा भेँट भेलै, कालेश्वर संगे परिवारक लोक आ कुटुम्ब सेहो छलै। पहिने सिकन्दर जे फिरंटगिरी करै छल सैह आइ काल्हि कालेश्वर करै छल से तगेदापर मारि बजड़ि गेल। सिकन्दर ओकरा छातीपर चढ़ि गेल। सिकन्दरक पुरनका संगी सभ जुटि गेल आ कालेश्वरक कुटुम्ब सभकेँ धोपलक। फेर दोसर दिन पिछड़ा एकताक जुलुस निकलल आ वस्त्र भंडारक शीसा फोड़लक। मुदा लठैत सभ आबि लाठी बरसाबऽ लागल। जकर जेने सिंग अंटलै, ओम्हरे पड़ायल। लूट, अराजकता..पसरि गेल। झलकी- दृश्य एक: जिलाध्यक्ष पुऋषोत्तम मंडलक स्वर, अठारह कोठली आ दू टा बड़का-बड़का हॉल बला राजनीतिक दलक कार्यालयमे। सद्भावना जुलुस निकलत..शिष्य चिरंजीव सिंह, पार्टीक युवा मंचक अध्यक्ष आ मंडलजीक घोर समर्थक। मुदा ओ तामसे घोर भऽ जाइत अछि- अहाँ सेहो छोट जातिक छी से ओकरा सभक पक्ष लेबे करबै। बहरा जाइत अछि। दृश्य दू: फूसक घर। धनीलाल, रामनारायण। बैकबा-फोड़बा की होइ छै। मटरू की जानय। किछु काल चुप रहलाक बाद आल्हा टेर देने अछि। दृश्य तीन: कामरेड रामसेवक साहुक चाह-नाश्ताक दोकान। बहस..विद्यानिवासजीक भाषण, जाति नामक कोनो वस्तु नहि। हुनका पागल कहि क्यो छौड़ा बहरा जाइत अछि। दृश्य चारि: टिफिनमे बच्चा सभक खेल: घास-फूस बला घर हमर आ हम बनब जादब। दोकान बिरजूक आ ओ बनत बाभन। दुनूमे झगड़ा होएत आ लल्लू, मोहन, नरेन आ बबलू आओत आ हमर घरमे आगि लगा देत। तखन सुरेश बनत नेता आ विनोद बनत दरोगा। सुरेश दरोगाकेँ कहत जे एकरा दुनूक घर-दोकान बनबा दियौक आ पकड़ि कऽ लाऊ। सुरेश दुनुक हाथ मिलबाकऽ दोस्ती कराओत। बैकबा-फोड़बा खेल भरि टिफिन चलैत रहल। विष-पान- वकालतखानाक कुर्सीपर बैसल गोपालजी कछमछाइत छथि। कचहरीक द्वारपर सुग्गाबला जोतखी बैसल छथि। ओतहि एकटा बैनर सेहो अछि आँखिक रोशनी बढ़बए बला ममीरा सुरमा। अदालतिक बरंडापरसँ अर्दली रामेसर मंडल बल्द जागेसर मंडल केँ चिकरैत अछि, मोकील वकीलकेँ अगिला तारीखपर बाँकी-बकियौता देबाक गप कहै छन्हि मुदा ओ कलमक उनटा छोरसँ कान खोदैत रहैत छथि। गोपाल सुनै छथि। गोपाल, एक दिन पानबला दोकानपर चतुरानन लाठी लेने आयल आ बरसाबय लागल। ओ खसि पड़लाह। बाबूजीक पुरान नोकर नेनिया आबि चतुराननकेँ बजाड़ि दैत अछि मुदा ओ मौका देखि भागि जाइत अछि। रामप्रसादक साठि वर्षीय माय मरौनावाली सभसँ पहिने गोपालक सुधि लेलक। फेर गोपाल अस्पताल आनल गेल। चतुरानन सेहो ओतय आयल रहय इलाज आ इन्जरी रिपोर्ट लेल, मुदा क्यो चीन्हि गेलै आ जरनाक चेरासँ ओकरा मारि कऽ भगा देलकै। चतुराननकेँ सभ आदि अपराधी कहै छल मुदा गोपाल ओकरा सुधारैक लेल प्रयासरत छलाह। से आब ओ भस्मासुर बनि गेल। पुलिस चतुराननसँ पाइ असूललक आ ओ घरहिमे रहै छल। प्रगतिक तारीख केसमे पड़ैत रहलन्हि आ हुनकर एक्स-रे प्लेट सेहो अस्पतालसँ निपत्ता भऽ गेल। तीन बर्खक बाद गबाही शुरू भेल आ फेर शुरू भेल जिरह, ओहि दिन भरि बाँहुक कमीज पहिरने छलाह, कालर आ जेबी रहै वा नहि, रंग..। जे लाठी बजरलन्हि तकर लम्बाइ, बनावटि..। वकील मित्र..मुदा एक दिन स्वरक तुर्शी नुकायल नहि रहलै. देखै छियै मोकील सभकेँ आखिर पाइ देने अछि तँ ओकर सभक काजकेँ प्राथमिकता तँ देबहि पड़त। आ ओहि दिन गवाही नहि गुजरि सकल..फाइलपर हाकिम विपरीत टिप्पणी कऽ देलन्हि। चतुरानन तीन हजारमे गप फिट कएलक जे ओहिसँ बेशी अहाँ दऽ सकी तँ..।

एंटी-पार्टीक वकीलक मार्फत वकील-मित्र लग ऑफर सेहो आयल छलन्हि। मुदा गोपालक कहलापर कोर्ट ट्रांसफर करेबाक प्रक्रिया शुरू भेल। मुदा कोर्ट ट्रांसफर भेल शीलभद्र झाक कुटमैतीमे जे गोपालजीक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी छलाह आ चतुरानन आइ-काल्हि हुनके छत्र-छायामे छल। मेल पेटीशनपर गोपाल दसखत कऽ दै छथि, आत्मसमर्पण जेना भारत-पाक युद्धमे एक लाख सेनाक संग जनरल नियाजी कएने छल।

हाथी चलए बजार: कथा संग्रह तीन खण्डमे अछि, मूलधनमे सामान्य लम्बाइक कथा सभ अछि, मोटा-मोटी २००० शब्दक, जकरा अंग्रेजीमे शॉर्ट स्टोरी कहल जाइ छै। मुदा मैथिलीक शॉर्ट स्टोरी (लघु कथा) एक पन्नाक भीतर लिखल जाइत अछि आ तकर संग्रह ब्याजक अन्तर्गत दोसर खण्डमे कएल गेल अछि। अन्तिम खण्ड लोरहा-बिच्छामे कथाकार छोट-पैघ ओहि सभ कथाकेँ संकलित कएने छथि, जे हुनका दृष्टिएँ कनेक दब कथा अछि- मुदा पढ़ला उत्तर एहिमेसँ बहुत रास कथा मूलधन आ ब्याज क अन्तर्गत संकलित होएबा योग्य अछि, संगहि मूलधन आ ब्याजक बहुत रास कथा लोरहा-बिच्छा खण्डमे जाइ जोगर अछि।

मूलधन: अन्हार- लौहार गाम बाटे जाइबला सड़क पक्की भेल छै, सरकारी जीप सभ, महिषी उग्रतारा लग बलिप्रदान देबऽ लेल खदबद-करैत जाइत छागर-पारा सभ। ओलतीसँ ओलती सटल गहूमक नारीसँ छाड़ल घरसँ बहराइत नेना सभ। तेतर मुसहर। सरौनी गामक गृहस्थ लग हरबाही करैत छल आ रमानन्द सिंहक सुतरी काटि रहल छल। कुलबन्त सिंहक ट्रकक पहिआ ओकर छौड़ापर चढ़ि गेलै। मुखियाजीक आगमन। छह हजार सरदार कुलवन्त सिंहसँ लेलन्हि आ दू हजार तेतराकेँ दएबाक गप केलन्हि। तेतराक सौंसे देह झनकि उठलैक, गनत कोना कऽ..कतेक पंचटकिया हेतै। कनियाँ बलुआहाबालीकेँ बुझबैत अछि, हमर-तोहर जिनगी रहत तँ बाल-बच्चा फेर नञि हेतैक? टैक्स फ्री- चलित्तर चिमनीपर काज करैए। साढ़े छह टाकाक बदला पाँच टका भेटै छै। डेढ़ टाका मुंशी मारि लै छै। मुदा काल्हिये बजट पास भेल छै आ जे वस्तु पौने पांच टकामे भेटैत रहए से आब सात टाका सत्तरि पाइमे भेटतै। जकरा ओ भोट देने छल से डाक बंगलापर आयल छै, चलित्तर ओतए जाइये। कहैत अछि जे भोटसँ पूर्व जतेक अधपेटा भेटैत छल सेहो आब नहि भेटैए। मुदा ओ मंत्री बनल नेता दुत्कारि दैत छन्हि, कतेक नुआ-फट्टा दियौलियै, टेलीविजन, भी. डी. ओ. टैक्स फ्री करबेलियै, तैयो जस देनिहार कियो नहि। चलित्तरकेँ पुलिस बाहर कऽ दै छै। घुस्सा, थापर, चमेटा सेहो लगै छै। ओ ककरासँ टैक्स फ्रीक अर्थ बुझत? बबूर-रौदी मरड़क महायात्रा। ओकर एक्केटा बेटा उदबा। गामक बाबू भैयासँ बाऊकेँ बड़ लागि रहै। बिदा भेल बभनटोली दिस। एकहको टाक ठाढ़ि देतै तँ ढेरी भऽ जएतैक। मुदा ओकरा सुनए पड़लै- पुरखा-पातिक मांसु तँ कुकुर कौआ खेलकनि आ रौदियाकेँ जड़बै लेल गाछ चाहियनि। उदबा समाद पठबैत अछि, लहासकेँ लऽ कऽ बान्हपर आ। ताबत ओ सरकारी जमीनपर सरकारी बबूर काटि-चीरि कए चिता सजा दैत अछि। उदबा आगि फूकि देलक। पंडीजी अएलाह आ पंडीजीक ई कहलापर जे बबूरक लकड़ीपर चिता केहन होइ छै, मुँहमे ऊक दऽ कऽ धारमे भसिया दितही, उदबा हुनकर पतरा छीनि लैत अछि आ ओही चितामे फेकि दैत अछि। उदबा पित्तीसँ बजैत अछि- तोरा आऊरक चानन ईएह बबूर छिअह। संबंध- सुगिया आ ओकर घरबला जीबछ। जीबछक घर एही चौकक कातमे छै। झिल्ली मुरही आ चीनीपाक मिठाइ, बतासाक उठल्लू दोकान। रतुका खाइक आ नीनसँ सुतैक बिचला अवधिमे दुनू एक दोसराक बाँहिमे पड़ल किछु गप्प करए। बुढ़िया जे एहि बरख टा जीबैत रहितए तँ ओकर सख संग लागल नहि जइतै..। सुगिया गर्भवती छल। आइ भात-परोड़ खाइत इतियौत-पितियौत सभक बापकेँ कंठ दाबि मारबाक ध्वनि सुनलक। ओ धरहड़िमे गेल मुदा ओ सभ ओकरेपर फरसा चला देलकै। फेर थाना..। ओतए दरोगाजी टेक्टरबलासँ सलटि रहल छलाह। फेर ओ सुगियासँ केसक फीस दू सए टाका मँगलन्हि। जीबछक कमीजक जेबीमे मात्र साठि टाका रहै। बाला आ हंसुली बेचए लेल सोनार लग गेल, ओहो मौका देखि कम पाइ लगेलक। टाकाक जोगार भेलै मुदा तावत जीबछ ढनमना गेलै। दरोगाजी कहलखिन्ह जे ई बिना कुछ बजने मरि गेल। भऽ सकैए तौं दोसर मर्दक संग संबंध रखने छँह आ एकर खून गुंडासँ करबेने हेबहीं। दरोगाजी ओकरा हाजतिमे बन्न कऽ देलखिन आ अपन डेरामे समाद दऽ देलखिन्ह जे ओ आइ राति डेरा नहि आबि सकताह। अंतिम बेहोशी- कथाक सूत्रधार वा कथाकारक भौजी- माने ललिता मिश्र, प्रोफेसर समरेश मिश्र, विभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र विभागक धर्मपत्नी। दुनु पहिने प्रोफेसर आ शिष्या रहथि, फेर प्रेमी-प्रेमिका भेलाह आ तखन पति-पत्नी। उमरिमे कमसँ कम दस बर्खक अंतर होएतन्हि। तीन टा बच्चा दू टा बेटी चौदह बर्खक सुषमा आ बारह बर्खक माधुरी आ एक टा बेटा श्वेताभ दस बर्खक। भौजीक ई चारिम गर्भाधान। कारण जांघक भूख प्रबल। मुदा बेटीसभकेँ स्कूलमे लोक उपहास करए लगलै आ ओ सभ माइकेँ कहलक जे हमरा सभक उपहाससँ माथ फटैए आ तोरा बिआइसँ छुट्टीए नहि छौ। भौजी गर्भपातक प्रयास कएलन्हि मुदा समरेश भाइक कोनो मदति नहि भेटलन्हि। बेटी सभक गप..पेट उनारने बैसल अछि..बेलनाक हूड़सँ फोड़ि ने दे पेट कए। भौजी मूर्छित भऽ गेलीह। भौजी पहिल बच्चा भेलाक बाद जे चौदह बर्खक बाद गर्भवती होइतीह तँ की हुनकर बेटी, ओहो शिप्रा जेकाँ देवी-देवताक पूजा नहि करितए। शिप्रा सूत्रधारक कॉलेजमे छात्रा, सतरह बर्खक बाद ओकरा एकटा भाइ भेल छलै। बड़ प्रसन्न छलि। डाक्टरनीक मोन उछतगर नहि बुझि पड़लन्हि। भौजीक शिशु सूत्रधारक कोरामे छन्हि। भौजी चलि गेलीह, प्रपंचकेँ

छोड़ि। छब्बीस घंटाक बच्चाकेँ लऽ कऽ सूत्रधार समरेश भाइक डेरा ढुकैत छथि। भौजीक दस बर्खक बेटा खुशीसँ ओकरा संग एकतरफा बतकही कऽ रहल छल। भौजीकेँ अंतिम बेर होश आयल छलन्हि तँ ई समाद कहबा लेल। दुनू बहिनकेँ अंग्रेजी स्कूल चंडी बना देने छै। ओ सभ एकरा नहि जीबऽ देतै। आब अहीं एकर माए आ बाप। कथाकार सोचमे छथि। दुनू बहिन स्कूल गेल छल। कोना भौजीक दस वर्षीय बेटाकेँ उतरी पहिरेताह। उस्सर जमीन: तेजो बाबू। कथाक सूत्रधारक दियादी पित्ती। खरहू सभ फूल कका कहै छन्हि। समर्थाइमे खेत-पथारमे काज करैबाली बोनिहारिनसँ राजी वा जबरदस्ती वासनाक पूर्ति करथि। आब दू-दू पुतोहु आ एकटा जमाएक ससुर भेलाह। फूल कका सूत्रधारक टेढ़ आँखिक नकल करथि आ से करैत-करैत आइ हुनकर दहिना आँखिक डीम उपरका पलमे ढुकि गेलनि अछि। आब अपन पोता-पोतीक खापड़िक पेन सन मुँह, बुढ़बा परोर सन ठोर, अल्लु सन-सन नाक, बिलाड़ि सन-सन आँखि आ फगुआक पू सन गाल देखै छथि तँ पश्चाताप करै छथि। हुनकर राम आ लछमन बेटाक भिनाउज लेल पंच बैसल अछि कारण राम बेटीक बाप छथि आ बेटीक बाप पहिनहिये बुढ़ा जाइत अछि- आ लछमन बेटाक बाप छथि। से लछमनक कनियाँ सिमराहा बाली सोचलन्हि जे जेठ जनकेँ परुकाँ एकटा कन्यादान हेतन्हि आ दोसरो लागले छन्हि से फूट भऽ जाइ आ एहि लेल उड़कुन तकलन्हि। पंच, अमीन आ अन्न जोखबा लेल पल्लेदार आयल। जे फूल कका अनका घरमे पंचैती करै छलाह, हुनका घरमे पंचैती। सभ वस्तुक हिस्सा भेल मुद लादि इनार एक्केटा। से लादि फोड़ि देल गेल आ इनार भथि देल गेल। मुदा माए-बापकेँ कोना फोड़ब आकि भथब? से रामक संग बुरहा आ लछमनक संग बुरही गेलीह। नूर-गोबरौर जेकाँ दुनू गोटे पड़ल छथि। कारण सिमराहीबाली समाराजसँ दू बीघा जमीन बुरहा-बुरहीकेँ देबामे नोकसान देखलन्हि। जे छोटकाक घरमे तस्मै बनै तँ बुढ़ीक पातोपर एकाध चम्मच खसै। मुदा असगरे खाइमे हुनकर हीया सालए लागनि। आब फूल काका दार्शनिक बनि गेल छथि। बांझ गाए, उस्सर जमीन आ कोढ़ि बरद सेवा-बरदासिक आश किऐ रखैए? पवन पुल- कथाक सूत्रधारक आइ. एस. सी. क परीक्षा भेल छन्हि, प्रैक्टिकल परीक्षा बाँचल छन्हि आ ओ ओहि अवधिमे गाम गेल छथि, कारण अल्पवेतनभोगी पिताक ऊपर बेसी जोर नहि देमए चाहैत रहथि। मात्र तीन दिन पहिने सहरसा गेल छथि। गाममे मृत्यु सय्यापर सूत्रधारक अनुजा सरोज पड़लि छथि। तीनू अनुजामे सभसँ पैघ मुदा सूत्रधारसँ तीन बर्ख छोट, जकर दस बर्खक बएसमे विवाह भेलै आ तेरह बर्खक बएसमे द्विरागमन। सासुर गेलाक छह मासमे ओकरा टाँगि कए नैहर आनल गेलै। हुनकर पति अज्ञानी-लफंगा छलखिन्ह, जिनका सूत्रधार कहथिन्ह जे ऑटोमेटिक घड़ीक ह्रिजए आ इंग्लिश रेले साइकिलक निर्माणक तिथि बताऊ, जे ई दुनू चीज चाही। आ एहि हँसी लेल सेहो सरोजकेँ तारणा भेटलन्हि। सूत्रधार प्रैक्टिकल परीक्षामे उत्तल तालक वक्रता नहि नापि सकलाह मुदा प्रात भेने सरोज ओहि वक्र सीमासँ मुक्त भऽ गेलीह। सझिला पित्ती, जिनका सूत्रधार बाबू कहै छथि, सूत्रधार आ सरोजकेँ जानसँ बेशी मानैत छथि। समाजक लोकक लहास उठबै लेल नहि आएब। सूत्रधारक काकीक ई सूचित करब जे अपनहि बैसि चारू दिआदनी कानी आ चारू-चारूकेँ चुप करी आ कोनटी-फटकीसँ अबाज, जे छौड़ी समर्थ होइत-होइत मरलैए, तेहेन डाकिन हेतैक जे टोलमे भरि-भरि राति घोड़दौर करतै। मुदा भोज कालमे रंगनाथ मिश्रक कहब, जे पहिल कर के उठाओत, मात्र एक्कैस ब्राह्मण छथि बाइससँ एक कम। सूत्रधारक छोट पित्ती अपने बैसि जाइ छथि। सूत्रधार रंगनाथ मिश्रकेँ बाँहि पकड़ि उठबैत छथि..निकलि जाउ जल्दी, अन्यथा एक्को जुत्ता नीचाँ नञि खसए देब..। जे कसाइ छथि, तिनका जाए दिअनु। हुनकर पात भिखो डोमक सूगरकेँ खोआ दिअनु..। चरित्र- घोर कम्युनिस्ट गौतमजी। जातिएँ कर्ण कायस्थ छथि- बीड़ी पीबि (ताहिसँ सर्वहारा छवि बनबैमे सुविधा छन्हि) मोंछक टुरनी कैल भऽ गेल छनि। कलकत्तामे बसल मैथिल। तीन टा बेटी। बेटी विवाह कालमे अपन प्रेमिका संगे लड़का देखए लेल जाइत छथि। ओतए एक ठाम अम्बष्ठ कायस्थ रहलाक कारण आ दोसर ठाम लड़काक पिता कर्णजीक दोसर पत्नीक क्रिश्चियन विधवा रहलाक कारण ओ कथा सभ हुनका सूट नहि करै छन्हि। एडलिनाक कथा बीचमे आबि जाइए..एहि क्रममे प्रधानाध्यापकक एड्लीनाक सम्बन्धमे टिप्पणीपर एकटा नवनियुक्त शिक्षकक टिप्पणी- एडलीना अहाँक छोटकी बेटीसँ दुइए-तीन बर्ख जेठ होएतीह..हुनका लेसि दै छन्हि। अस्तु, कथाक अन्त गौतम जीक माझिल बेटीक पिताकेँ देल रपटानक संग खतम होइत अछि। इजोत- मधुकरजीक संग कथाक सूत्रधारक शतरंजक खेल चलि रहल छन्हि। शतरंजक खेलक संग सूत्रधार मधुकरजीक शतरंजक संग जीवनमे कएल बेइमानीक संगे-संगे चरचा करै छथि। हुनका द्वारा मधुकर जीकेँ पातकी गुरुक चेला कहलापर मधुकरजी बिगड़ि जाइ छथि, कहै छथि जे..हमहीं अहांक घरवालीकेँ सिखबै छी जे अहाँक माए-बापकेँ मारए, अहाँक घरक फजहति करए, अहाँक ससुरबासि बहिनकेँ घरमे नहि रहए दिअए। मधुकरजीक विशेषताक शतरंजक बिसातपर चर्च होइत अछि- बियाहमे भाँगठ करब, एकलव्य जेकाँ धनुर्विद्याक प्रयोग कुकुरक मुँह बन्द करबामे करब, सूत्रधारक कनियाँकेँ अनट-बनट पढ़ाएब। सूत्रधारक बहिनिक सासु-ससुरकेँ ओ कहि आएल छथिन्ह- दिल्लीमे जगह किनबा लेल पाइ छै आ बहिन बहनोइकेँ देबा लेल पाइ नहि छै? सूत्रधारक पत्नी सासु-ससुरकेँ पाँच बाढ़नि-पाँच सुपाठ चलबिते छलखिन्ह आब बहिन लेल पाँच बाढ़नि-सुपाठक काज आओर बढ़ि गेलन्हि..बेचारी परलोक गेलीह। अन्तमे सूत्रधार मधुकर जीक घोड़ा उठा कए पुरना जगहपर राखि दै छथि, आ चालिमे इमानदारी अनबाक लेल कहै छथि। हाथी चलए बजार- भवानी दाइ! बापक दुलारि। माएक मृत्युक बाद लालन-पालन आ विवाह। फेर कल्याणक योग्यता भेलन्हि तँ

ई समाचार सुनि पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि, खुशीसँ। फेर भवानी दाइकेँ पुत्र भेलन्हि आ फेर हुनकर पतिक मृत्यु। फेर इनश्योरेन्स आ अनुकम्पाक नोकरी लेल हुनका दू तरहक अनुभव भेलन्हि। इनश्योरेन्स कम्पनीक मनेजर कम उमरिक लेखक, भद्र। सभटा काज मिनटमे भऽ गेलन्हि। मुदा पतिक कार्यालयक हाकिम पतित। कथाक अन्त हाकिमक बेटी गीताक पिताकेँ देल दुत्कारिसँ होइत अछि। छगुन्ता- बैरागीजी, रामाधीन पाण्डेय "बैरागी", हुनकर बेटा कओलेजमे प्रोफेसर भऽ गेलखिन्ह। हुनकर बेटाक अपहरणसँ कथामे तेजी अबैत अछि। पचीस हजार भविष्य निधिसँ निकालि कऽ रखलथि आ सेहो गाएब छन्हि। हुनकर जेठ बेटा अरुण सेहो निपत्ता छथि। फेर कथामे दुखमोचनक चर्च अछि जे स्वतंत्रता सेनानी- जे पेंशन लेबासँ मना कऽ देलन्हि- क पुत्र छथि। मुदा अपराधी चरित्रक, हाइ स्कूलेसँ अपन भविष्यक परिचय देमए लगलाह, जखन जाति आ अर्थें हीन पड़ोसियाक बेटीपर हाथ साफ कऽ लेलनि। फेर बटमारी, छीना झपटी...निम्न जातीय एम. एल. ए. भगत जीक नेतृत्व पसिन्न नहि पड़लन्हि तँ ओ केसमे फसा देलखिन्ह आ आब ओ फरारी राजनीतिज्ञ भऽ गेलाह, अपन जातिक लोकक मदति सेहो भेटलन्हि। फेर हुनकर फल्लां दिन आत्म-समर्पण आ शक्ति प्रदर्शन हएत। निछक्का स्वजाति, एकवर्णा गहूम जेकाँ। आबालवृद्धवनिता। दुखमोचन पैघ लोक भऽ गेलाह। तही दुखमोचनसँ अरुणक धर्मयुद्ध। मुदा दुखमोचन जीक चीलर-चमोकनि सभ अरुण द्वारा वध भऽ रहल छलाह आ ओ दिल्ली-पटनामे मौज करै छथि। गति- जगत झा, गामक बिलाड़ि। गाम मोहनपुर। भुमिहार आ डोमक अतिरिक्त सभ जातिक लोक, भुमिहारक सामाजिक लोकाचारमे कोनो प्रयोजन नहि, मुदा डोमक होइ छै, से ओ अबैत अछि चन्द्रायणसँ। दु बरख दसैंया पासी लग बन्हकी लगलाक बाद फेरसँ मोहनपुर भिखो डोमक हिस्सामे आबि गेल अछि। गाममे मनोहर धानुकक बेटी चनरमा। बभनाक नेत खूब बुझै छल। बिआहक बाद सासुर बकौरसँ सांझकेँ डेनिअएने चलि अएल। कारण बकौरक राछछ सभकेँ ओकरा नहि चीन्हल छलै मुदा मोहनपुरक सभटा कुकुर ओकरा चीन्हल छलै। फेर चारिटा बेटी भेलै। जगत झा तरबन्नीसँ अबैत अनिल सिंहकेँ चनिया ओकर पाइ देलकै वा नहि पूछि भड़कबैत छथि। टी. टी. क बेटा अनिल सिंह। फेर मारि-पीट आ पुलिस-फौदारी। मुदा फेर जखन दुनू पक्षकेँ जगत बाबूक असलियत बुझबामे अबै छन्हि तँ फेर दुनू पक्ष मिलि कऽ..। मध्यांतर- जगतारणि आ अलकादेवी- दुनू सौतनि मुदा सौतिया डाहक कतहु लेशो नहि। अलका देवीक दू टा सन्तान। तारानन्द निर्धन परिवारक आ अलका - सुखी सम्पन्न परिवारक- एक्के संगे पढ़ैत रहथि। तारानन्द लोक सेवा आयोगक परीक्षा पास केलन्हि तँ बियाह जगतारणि- करिया पाथरक बनल मुरुत मुदा व्यवहारसँ सुन्दर- सँ दहेज प्रथाक कारण भऽ गेलन्हि। फेर कुरुप जगतारणिक प्रयाससँ अलका सेहो घर आबि गेलीह। फेर जगतारणिक दूरक संबंधक दीअर मनोहरक पत्नी जाहिल मीराक आगमन होइत अछि। फेर मीराक दामपत्य जीवनक सूत्रक कमजोर होएब आ वकीलक आगमन। मीरा केस जीति जाइत छथि मुदा मनोहरक ओकील, आ मीराक ओकील हुनका संगे गलत कर्म करैत अछि..। फेर जगतारणि द्वारा मीराकेँ भोल भरोस देल जाएब।

ब्याज: किराया- पूर्णियाँ गुलाबबाग, देह व्यापारक अड्डा।.. कतेको कोढ़ीकेँ रगड़ि कए फुला देल गेल छल। आ..दस टाकामे होइ छौ अपनो साती आ बापोक साती..एहन सन अबाजक बीच कथाक सूत्रधारक प्रति शब्द..स्सालेकेँ ने जेबीमे दम रहै, ने डांड़मे। पतन- बाढ़िक कछाछोप पानिमे चनमा द्वारा झोली मिसरक सन्दूकक वस्तु-जात निकालबाक प्रयास आ साँपक फेंच तानि ठाढ़ होएब, जेना कहि रहल हो- हम तोरासँ बेसी बिखाह नहि छी। उसांस- विधवा थानाबाली, ओकर बेटी डोली बेराम रहै। हवेली गेनाइ नागा कऽ देलक। मालिक दस सटका घैंच देलकै। फेर माए रोहुआ बुआरक मोनिमे अत्याचार आ कब्बै द्वारा ओकर कंठमे काँट पसारि ओकरा मारबाक खिस्सा डोलीकेँ सुनबै छै। डोली कहै छै, ऐ मालिक लेल कोनो कब्बै नहि छै? ओटघन- मालिक-मलकाइन आ मुसबा, जितिया पाबनिमे मुसबाकेँ छुट्टी नहि भेटलैक। जितबाहनक तेल, मलकाइनक बच्चाकेँ माथमे लठ-लठ करैत लागए आ मुसबा ओहि तेलक एक ठोपक आस लगेने रहए। आ सपनामे जखन ओकरा माए कहै छै जे किए एलें, ओतए मलकाइन सुच्चा दूधक पौरल दहीसँ औटघन करबितौ, तँ ओ कहैए जे चढ़ौआ तेल तँ ओहि सिमबक्शीक हाथसँ बहरएबे नहि कएलैक आ ओटघन ओ की कराओत? जागृति- एकटा कौआ राजपथक दुफेरापर बैसि रहल, सोझाँ दूधसँ नहाएल संसद भवन, दूधसँ नहाएल नवयुवती जेकाँ चमकैत। आ पारम्परिक कथा- कुकुरक कौआसँ गीत गएबा लेल कहब जे ओ रोटी ओकरा खएबाक मौका भेटए। मुदा कौआ रोटीकेँ चांगुरमे राखि कए बजैत अछि जे खोहमे रहि बाहरी दुनियाँक गीत कोना सुनबह। जाति- कामेश्वर बाबू आ सुगनी हुनकर घरमे काज करएबाली। शारीरिक संबंध दुनूमे। मुदा बहुत दिनुका बाद ओकर बेटी सरोसतियाकेँ कामेश्वर बाबू कामवशीभूत देखै छथि आ पु छै छथि तँ सुगनी कहै छन्हि जे हँ जुआन तँ ई भइए गेल अछि, मुदा सोचै छी जे कोन जातिक लड़का एकरा लेल ताकी, अपना जातिक वा अहाँक जातिक। महामंत्री- अर्थशास्त्रमे एम. ए. पास विनोदक कृषि राज्य मंत्री पाण्डेयजीक चक्रचालिमे फँसि अपन धनकुटियाक धंधा खराप करब आ पाण्डेयजी द्वारा आबंटित राशिकेँ ऊपरे-ऊपर हँसोथि जएबाक खिस्सा। एकोदिष्ट- मालिक बाबाक एकोदिष्ट। हुनकर जेठ बेटा मधु भाइ (तामसे मधुकंता कहै छथि) क नोतपर नहि अएलापर तामसे बिख छथि, हुनकर कार्यालयक व्यस्ततासँ हुनका कोनो मतलब नहि छन्हि आ कहै छथि जे सुनराकें एकर बदला नोत किएक नहि देल गेल। धरफड़ाइत अबैत मधु भाइ ई सुनि लै छथि...। भारत- गाँधीजीक मूर्तिक

खसब आ सभक ओकरा श्रद्धासँ नमन कए बढ़ि जएब मुदा उठेबाक पलखति ककरो नहि। एकटा भिखमंगाक ओतए कम भीख भेटलाक बादो ओतहि भीख माँगब, एहि आशामे जे गाँधीबाबा उठताह तँ देशक दशा कहबन्हि। कृतज्ञता- सुस्मित, अक्षयवट आ राकेश जाइत रहए गप करैत। रामनारायण सिंह प्रोफेसरक कृपासँ नीक अंक भेटल रहै। फेर प्रोफेसर साहेब सेहो सूत्रधारकेँ भेटै छथिन्ह आ फेर नीक छत्ताक उपहारक बदला देल अंकक भेद खुजैए। विसंगति- सूत्रधार मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव छथि, नाथो बहिनकेँ पेट दर्द, तेजो काकाकेँ तिलकैत केसक इलाज आ अवधेश भाइ लेल भूखक गोटी.. मुदा सूबेलाल हरबाह, जकर बेटा सूत्रधारसँ पाँच बर्ख जेठ छथिन्ह, सूत्रधारकेँ मालिक कहै छथिन्ह। पेट खरापक दबाइ गोटी हुनका मुदा नहि चाही, कारण जतेक अन्न पचेबाक तागति छन्हि ततेक तँ अन्नो नहि जुड़ै छन्हि, भूख कम करबाक जे कोनो दबाइ होइ तँ से मँगै छथि। बोइन- जुगो मरर, ओकर कनियाँ धोरएबाली बिन बोइनक खेरही डेंगाबए किंकर बाबूक अंगनामे, बेटा लालमोहरा सेहो पेटेपर ओहि अंगनामे काज करए। सूत्रधारक मदतिसँ वृद्धा पेंशन भेटलै, मुदा जेकरा ओतए ओ काज करैए ओ जे दू दिन ओकरा काजसँ दौगत, से दू दिनुका बोइन नहि देत। फेर ब्लॉकमे जखन ओकरासँ बिनु पाइ लेने हाकिम कागच राखि लै छथि तँ ओकरा होइ छै जे काज नहि भेल कारण बिन बोइनक तँ गरीबे-गुरबा सभ ने काज कऽ सकैए। पहिचान- वृखोत्सर्ग श्राद्धक क्रममे दगलासँ बाछीक मृत्यु। अनुत्तरित- दीना बाबूक काम लिप्सा आ हुनकर हरबाहक बेटी बुधनीक कहब जे ई सलवार फराक पहिरने हम हुनकर बड़की दैया सन लगै छिअइ? योग्यता- रफीक साहेबक स्कूल खोलब आ योग्यतामे युवतीक उमरि पूछब। कथा सशक्त नहि। उद्देश्य- मुख्यमंत्री द्वारा शिक्षामंत्रीपर परीक्षामे चोरिपर प्रतिबन्धक गप आ त्यागपत्र माँगब। बोध- राजाक नागराजक पत्नीक ढोढ़िया संग संभोग देखब आ नागराजक पत्नीक कहब, मिसिया भरि पुंसत्व, पहाड़ भरि कुलशीलसँ पैघ होइत छैक? मोल-जोल- पांकी रोड डालटनगंजमे भरत बाबूक माइक श्राद्ध आ दूध-तेल गिरै लेल कंटाहा ब्राह्मण द्वारा एक सए एकावन आ फेर आर पचास टाका भेटलोपर मोन उछितगर नहि होएबाक बाद एकटा ब्राह्मण भिखमंगा द्वारा ओहि टाकाक बदला दूध-तिल पीबाक ऑफर। मूल्य- लखन बाबूक निर्देशनमे मनोरमाक पी. एच. डी. करब आ लखन बाबूक प्रणय निवेदनपर उत्तर, जे जाहि आँखिए अहाँक एतेक महान छवि देखने छी, ताहि आँखिए अहाँकेँ नांगट कोना देखब? आस्था- गोदानक बदलामे पंडितजीक द्वारा आपतमे एगारह टाका दए तिल-कुश-जौ-अक्षतसँ उसगरबाक गपपर सूत्रधार द्वारा आशंका करबापर कहब जे ओ कोनो मनुक्ख थिकै... जानवर थिकै, जानवर। अंतिम अभिलाष- मदर दासक अंतिम इच्छा पुछलापर ओकर कहब मोन करैए.. जे अल्लू दम आ भात खाइ। सरोकार- फूलबाबूक मृत्यु आ तखने अमेरिकामे छपल कविताक एवजमे डॉलरमे पाइ आएब आ मदनेश्वर बाबूक पूछब- एकर कतेक टाका भारतमे भेटतैक? प्रतिबद्धता- रामशरणजीक भारतक गरीबी आ नारी-शोषणक ज्ञान विदेशी लेखकक किताब पढ़लासँ एतेक फरिच्छ छनि। ललिता एक माससँ हुनकर कामक वशीभूत अछि, मुदा फेमिनिज्म लए कऽ ओहि दिन जखन वार्तामे भेद खुजैए तँ ओकर दुत्कारलापर रामशरणजी फेमिनिज्मकेँ अल्हड़ छौड़ीकेँ रागतर दाबऽ वला हथियार कहै छथि। जोगाड़- कुमार गंधर्वक स्वर्गवासपर जे. एन. यू. कावेरी हॉस्टलक दू टा अखबारी समीक्षकक विवाद- ओहिमेसँ एकटा तहिए सँ आलेख लिखि रहल छल जहियासँ गंधर्व दुखित भेल छलाह, से ओ दोसरकेँ कविता लिखबा लेल कहै छन्हि। पिंडदान- चक्रधर बाबूक झिंगुर झाक माइक मृत्युक बाद जमीन लेने बिना पाइ नहि देबाक निर्णय आ अपन पितरक पिंडदान लेल गया जएबाक भोरक रातिक स्वप्न- जीबैतकेँ नहि उजाड़, मरल लोक तँ अपनहि बसि जाएत।

लोरहा-बिच्छा: भूख- सूत्रधारक बाल्यकालक संगी रमकिसना। मुदा आब ओ चरबाही करैत अछि आ सूत्रधार छथि प्रोफेसर। होलीक दिन सूत्रधार द्वारा रंग देबाक प्रयासपर ओकर कहब- मैल-कुचैलमे रंग पकड़बे नहि करत। पेटक चाम चारि दिनसँ जरि रहल छै ओकर। महगी उन्मूलन- मणीन्द्र अपन पिता आ परिवार संगे पटियालाक सड़कपर जा रहल अछि- एक भाषा-भाषीकेँ छोड़ि कऽ सभकेँ मुड़ै-भाटा जेकाँ काटि देल जाइत अछि। मणीन्द्र बचि जाइत अछि, फेर फागुमे महामहिम लग लाशक रंगक बदला दुर्गन्धयुक्त पानिसँ होली खेलाए पहुँचैत अछि, कारण ई बेशी सस्ता छै। कसाइ- बिलट सिंहक जमीन चौकोड़ हेबामे सुरेनमाक जमीन पड़ै छै मुदा ओ तैयार नहि अछि। मारि पड़ै छै। दरोगा पाइ मँगै छै मुदा एस. पी. क ओहिठाम कहलाक बादो काज नहि होइ छै, कारण दरोगा ओकरा पाइ दऽ कऽ बहाल भेल अछि। दहेज- छोट बहिनक द्विरागमन आ ओकरा द्वारा एकटा सलाइ आ एक टीन मटिया तेल लेने बिना सासुर नहि जएबाक गप। पीढ़ीक द्वन्द- नियतिक चक्र आ साहेब राय आ रामदेव रायमे मतभिन्नता आ पिताक नाम रामदेवसँ चतुर्भुज राय कराएब। पहिने, आइ, आ काल्हि- गोनू बाबासँ सूत्रधारक प्रश्न आ ओ लाउर, चाउर आ रिभलबॉल लेल भूत, वर्तमान आ भविष्यमे लोक कानत से गप कहै छथि। प्रतिफल- विज्ञानक भारती-शरत सिद्धांतक प्रतिफल। बेटा कोना होअए, से बेटीक संख्यामे कमी भेल। आ आब स्त्री लेल युद्ध। उपराग- कामो झाक पहिल पत्नी दिबड़ावाली आ दोसर मुरलीवाली। मुरलीवालीकेँ एक बेटा आ तीन बेटी। ओकर बेटा निरंजनकेँ साँप डसि लेलकै, से शिवलिंगकेँ छूबि कऽ पूजा केलासँ आकि सौतिनक हक्कलि डइनपनासँ। कामोक पिता मुसाइ झाक पुतोहु दिबड़ावालीसँ अवैध संबंध। मुरलीबालीक मृत्युपर ओकर आगि देबा लेल ओकर बेटा इन्द्रदेवकेँ लोकसभक

कहलापर मुरलीबाली रहस्य खोलै छथि जे अहाँ हुनकर बेटा नहि छिअनि वरन छिअन्हि दी...दीअर! कोउ काहू मगन- सूत्रधार आ संगबए लोकनि टहलैत छथि, तखने एकटा दसटकही सड़कपर चौधरीजीकेँ भेटै छन्हि, ककर ई पाइ हएत-एक ठाम खाधि कएलेपर दोसर ठाम ऊँच हेतैक ने? ऋणखौक- नीलेश गरीब परिवारक, फेर पढ़लक-लिखलक तँ गामक लोक सभ पिताकेँ दवाबमे दऽ विवाह करा देलन्हि- कनियाँ तेहन जे पिताकेँ मारै छल। फेर नीलेशक दोसर जातिमे विवाह करबाक निर्णय आ पड़ोसीक कहब- ई ऋणखौक अछि, पितृऋण बिना उतारनहि मरत।

कथा: शिक्षित मध्यवर्गमे मैथिली भाषा नवम वर्गसँ स्नातक-स्नातकोत्तर धरि मैथिलीकेँ भाषा वा मातृभाषाक रूपमे लेनिहार एहिसँ स्नेह करै छथि। अन्तर्जालपर मैथिलीक आगमनसँ सेहो मातृभाषासँ स्नेह फेरसँ जागल। मैथिलीक पोथीक सुगमतासँ नहि भेटब जाहिमे सरकारी संस्थाक मैथिली पाठ्यपुस्तक सम्मिलित अछि। एहिमे अन्तर्जाल द्वारा सीमित रूपमे हस्तक्षेप भेल अछि। आ एहि सभक परिणामक रूपमे मैथिली लेखकक भीतर हीन भावना (सुपीरियोरिटी कॉम्प्लेक्स सेहो हीन भावनाक रूप अछि) पैसि गेल आ साहित्य सोंगरपर ठाढ़ कएल जाए लागल। वाद-विवाद उत्पन्न कऽ आरोप-प्रत्यारोप आधारित साहित्यक चर्चा प्रारम्भ भेल। पति-पत्नी, जिला-जबार आ पिता-पुत्रक अपन पक्षमे वातावरण तैयार करब आरम्भ भेल। माने ब्लैकमेलिंग आ ब्लैक-मार्केटिंग द्वारा कथा-कविताक पुरस्कार लेल लिखल जाएब। मुदा बुकर आ नोबल साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्य सेहो कालातीत नहि रहि पबैत अछि, बहुत रासकेँ तँ लोक मोन रखैत अछि मुदा ढेर रास विस्मृत भऽ जाइत छथि आ पाठक ओकर मूल्यांकन कऽ दैत छथि। मुदा मैथिलीमे खाढ़ीक-खाढ़ी बीति जाइत अछि मुदा पाठकक अभावमे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, जिला-जबार आ आब कथाकार-कविक बनल गोल सभ एकर ब्लैकमेलिंगक आधारपर मूल्यांकन करैत अछि। अन्तर्जालक हस्तक्षेप सीमित रहलाक कारण नीक साहित्य, सृजनात्मक साहित्य आ कल्याणकारी साहित्य सोझाँ नहि आबि पाबि रहल अछि, नहि सृजित कएल जा रहल अछि। विवाद कऽ समाचारमे रहएबला कवि-कथाकारकेँ अहाँ प्रश्रय देब कारण ओ ब्लैकमेलिंग कऽ रहल छथि वा धूरा-गर्दामे रहनिहार मानवतावादी कवि-कथाकारकेँ। आ जखन से करब तखने निरर्थक देखाएबला मैथिली साहित्यमे प्राणवायु भरि पाएब।

पूरक विवेचन

अरविन्द ठाकुर आ देवशंकर नवीन: अरविन्द ठाकुर (१९५४-) आ देवशंकर नवीन (१९६२-) दू टा एहन कथाकार छथि जे कनियाँ काकी आ बुच्ची दाइसँ हटि कऽ मैथिली कथा लिखै छथि, मुदा कम लिखै छथि, अरविन्द ठाकुर तँ बहुते कम, कारण एकहके टाक कथा संग्रह आइ-धरि आएल छन्हि, अन्हारक विरोधमे- अरविन्द ठाकुरक आ हाथी चलए बजार - देवशंकर नवीनक। अरविन्द ठाकुरक सशक्त पक्ष छन्हि राजनैतिक-आर्थिक कथा सभ तँ देवशंकर नवीन अपन भाषिक शब्दकोशक विशालता लेने सोझाँ अबै छथि। मैथिली कथाक जड़ता कम तँ होइत अछि मुदा बहुत रास आवश्यक पक्ष कम लिखबाक आ गबदी मारने (मैथिल गबदी) रहबाक कारण छुटि जाइत अछि। देवशंकर नवीन एक्के प्लॉट बेर-बेर सोझाँ अनैत छथि, जेना ऋणखौक आ इजोतमे पुतोहुक ससुरकेँ मारबाक चर्च आ एहि तरहक आनो क्रम, जे आभास दैत अछि जे एकेटा कथाक प्लॉटसँ कैक टा कथा बनल अछि, तँ उस्सर जमीनक उत्तरार्धक प्लॉट, जकरा कथाकार नीक जेकाँ उपयोग नहि कऽ सकलाह। उत्तरार्धक प्लॉटक हम एहि द्वारे चर्चा कएलहुँ कारण ओहि प्लॉटक अनुभव सभ मैथिलकेँ छन्हि आ ओहि आधारपर कुमार पवन एकटा अविस्मरणीय कथा पइठ (अंतिकामे प्रकाशित) लिखि दैत छथि जे हुनकर यश एकमात्र अही कथाक कारण अक्षय रखबामे समर्थ अछि जेना चन्द्रधर शर्मा “गुलेरी” केँ उसने कहा था कथा रखलकन्हि। अरविन्द ठाकुर कथा लिखै छथि आ जे लिखै छथि से सामाजिक-राजनैतिक-आर्थिककेँ तेनाकेँ जोड़ि कऽ जे मैथिली कथाक एकटा रिक्तताक पूर्तिक प्रयास करैत अछि, मुदा बड्ड कम लिखै छथि से पाठक पियासल रहिये जाइत अछि, घट अपूर्णे रहैत अछि।

अन्हारक विरोधमे- खिस्सा सियार-यार- रामनारायण महराज-एक्स एम. एल. ए. आ भूतपूर्व चेयरमैन सरकारी प्रकाशन कमिटी, तहिया कोनो घोटालामे मुख्यमंत्रीक भाइ रामाधार पांडे, एम. एल. ए. हिनका बचेने रहथिन्ह। गरीबदास आजाद जिला कमिटीक महामंत्री, अनेक बर्ख धरि सोशलिस्ट आ आब महासभा पार्टीमे, बेटा सेहो ट्रेनमे डकैती धरि करए लागल छन्हि। शालिगराम राय आ लखन यादव- मनबढ़ू सभ। मीटिंग। राजनाथ झा आ जीबछ मंडलक मुँहे राजनीतिपर किछु पैराग्राफ अबैत अछि। सदानन्द विद्रोही महासभापार्टीक विरोधी दलक स्वयंभू नेता तोफान सिंहक शागिर्द आ हुनका संग एकटा बम विस्फोटमे दहिना हाथ गमेने एकटा जुआन। हुनकर अफसोच करब, रघुबंश मंडलक जिला कमिटीक भाइस प्रेसिडेन्ट बनबामे पांडेजीक दाँव- बैकवार्डकेँ जगह भेटबाक चाही, आ चौधरीजीक प्रतिष्ठाकेँ देखि हुनकर चुप भए जाएब! राजमंगल श्रीवास्तव आ सतीश सिंह परमार (छत्तीस बाबू छत्री- मनबढ़ू शब्दावली) । एकावन गोट मेम्बरबला संस्था धेला कमिटीक सर्वेसर्वा परमारजी। श्रीवास्तव आ परमारक जोड़ी कुख्यात- अलग-अलग रहलापर दुहू गोटे एक दोसराकेँ गारि पढ़ैत छथि मुदा रहै छथि संगे। पूर्व प्रखण्ड अध्यक्ष शनिचर “शनि”-गाजा आदिक अनवरत सेवी आ वर्तमान युवा अध्यक्ष गणेश गुरमैता-पेटीशनबाज। चटर्जी दा- पटनासँ फोनपर रहै छथि- चौधरीजी आ पांडेजीक विरोधमे चौबेजीक संगे फ्रंटक नियार छनि। शनि-गुरमैताकेँ परमार गपमे ओझरा लैत छन्हि तँ क्यो गोटे दुनू गोटेकेँ फुसियाहीं कऽ सोर करै छन्हि आ त्राण दियाबै छन्हि। जटाशंकर मलिक प्रसिद्ध माखन बाबू (सभ नट वोल्टपर फिट होअएबला सलाइ-रिंच- मनबढ़ू शब्दावली) । अपनापर ध्यान आकर्षित करबा लेल पारसमणि चौधरीकेँ सोर करै छथि आ हुनकर प्रणामक उत्तर तीन प्रणामसँ दै छथि। हुनकर कार बेटा बौका बाबू (सम्प्रदायवादी पार्टीक मेम्बर) लऽ गेल छन्हि आ जीप खराप छन्हि- दुसधटोली बलाक पंचैती करबाक छलन्हि से रिक्शा मँगबाबए पड़लन्हि। च्यवनप्राश खाइते रहै छथि- राघोपुरसँ होमियोपैथिक इलाज करेने छथि। सीता बाबू महासभा पार्टीक प्रखण्ड अध्यक्ष (माखन बाबूक बहु- मनबढ़ू शब्दावली) । सुबोधनारायण सिंह प्रसिद्ध सुबोधजी। एक्स. एम. एल. ए. आ एक्स अध्यक्ष जिला महासभा पार्टी (समर्थक शब्दावली- जिलाक गाँधी, विरोधी शब्दावली- नटवरलाल आ मनबढ़ू शब्दावली- मुँहदुबरा) । सादगी रहन-सहन, विनम्र। रामाधार पांडेजीक भाए मुख्यमंत्री शिवाधार पांडेक प्रति समर्पित। मुदा चौधरीजीसँ बेसी सटबाक सजा मुदा शिवाधारजी हिनका पार्टीक उम्मीदबारी वापस लेबा लेल कहि कऽ देलखिन्ह। राजीव शर्मा-गलतफहमीक शिकार- जे छल-प्रपंच, फूसि आ विश्वासघातक बिनहु राजनीति कएल जा सकैत अछि। ठाँहि-पठाँहि बजै छथि आ से मनबढ़ू सभ कटाह कहै छन्हि। सुबोधजीक कहलापर जे शिवाधार बाबूक फोन अएलन्हि तेँ हुनका नाम आपिस करए पड़लन्हि, ओ कहै छथि जे एहि लुच्चा-लफंगा सभक सरदरबाक गोल्हड़ी झाड़ि देबनि हमरासभ। ओतहि रामसोगारथ मंडल सेहो छथि, स्वतंत्रता सेनानी मुदा सम्मान-पेंशन अस्वीकार कऽ चुकल छथि। कियो कहै छन्हि तँ कहै छथिन्ह जे जाऊ बाऊ जाऊ, ई गप सुन्नर ठाकुरकेँ सिखेबन्हि जे मुनिस्टर सभक केश-दाढ़ी बनबैत सुराजी पेंशन हथिआए नेने-ए। आ तखने अनघोल, फेर बाजी मारि लेलन्हि चमोक्कनि! आ माखन बाबू बड़का गाड़ीसँ उतरैत रामाधार पांडेक गरामे माला पहिरा दै छथि। फेर एकाएकी माला पहिरेबाक चलन आ फेर एकाएकी भाषण-भाख। आ ओम्हर रामसोगारथ मंडलक सपनामे कारी-कारी भयावह आकृति सोनहुला सपनाकेँ चारू कातसँ घेरि लैत छन्हि। पियासल पानि- रामचरनक खेती करब, आब हरबाही मुदा ओकर बेटा लखनाक माथपर छैक आ तखने ओकर गौना होइ छै आ अबैए नारायणपुरबाली। लेखक वा कथाक सूत्रधार कनियाँक मुँहदेखाइ लेल जाइत छथि आ देखै छथि ओकर अपार रूप-राशि। लखनाक काकी बेरियाबाली ठट्ठा करै

छन्हि आ ओ बहार भऽ जाइ छथि। नारायणपुरबाली एक दिन सूत्रधारक पएर जाँतऽ लगै छथि। रोपनी, डोभनी, कटनी आ कमौनी, कोनो काजमे नारायणपुरबालीक जोड़ नहि। एक दिन अन्हरगरे सूत्रधार खेतमे कटनी करबए बिदा होइ छथि तँ आमक कलम लग नारायणपुरबालीक आतुर ठोर हुनकर गाल, माथ आ कंठपर निशान छोड़ि दै छन्हि। मुदा तखने घरैया नोकर सरजुगबाक अबाज अन्हारसँ अबै अछि आ बज्जर खसाबथुन भगवान एहि दुसमनमापर- कहैत निराशा, लालसा आ घृणासँ कुंडाबोर नारायणपुरबाली आगाँ बढ़ि जाइ छथि। ओम्हर नारायणपुरबालीपर डाकनी सवार छै से घोल होइए, देहपरक कपड़ा-बस्तर ओ फेकि लैए। मोतिया दुसाध दारू पिबैए, बरहम बाबाक परसादी आ फेर भगता बनि सात टा काँच करची नारायणपुरबालीक देहपर तोड़ि दैत अछि। आ डाकनीकेँ हरदुआरक श्मशान पीपर गाछपर भगा दैत अछि! भागि जाइए नारायणपुरबाली। दोसर बेर लखनाक बियाह होइ छै मुदा एहि बेर सूत्रधार एगारह गो टका अनका दिया पठा दै छथि। कनियाँक होनहारिक खबरि सुनि रामचरन प्रसन्न भेल मुदा लखना अपन कपार फोड़ि लैत अछि, कारण ओ नामरद अछि। नारायणपुरबाली...लछमी छलै, बेकसूर, बेचारी, अभागलि। अन्हारक विरोधमे- हो हल्ला। कथाकर वा सूत्रधार बहराइ छथि आ पहुँचै छथि अलाउद्दीन लग। कहै छनि अलाउद्दीन, मुसलमान कुजड़ा। जनारदन चौधरी ओकर यार। ओकरे टोलमे बिकुआ ओकर एहि यारक भाइकेँ गारि पढ़लकै। ओकर बेहुदपनीक शिकाइत लऽ कऽ जनारदनक भाइक आएब, भैया कहि सोर पारब, मुदा तखने बिकुआक मारब आ तखने ओकर घरक मौगी सभक ओकरा गारि पढ़ब शुरू भेलै। आ उनटे हिन्दू-मुसलमानक शगूफा सेहो छोड़ै रहै। कोन इज्जति रहि गेलै एहि टोलक। आकि तखने, चारू दिस अपन डराओन छाँह पसारने अन्हारक छातीकेँ चीरैत बिजलीक जगमग इजोत दूर-दूर धरि पसरि गेल। ढाँचा-१९९२- कथाक सूत्रधारक चिट्ठी। स्वीकारोक्ति जे जे किछु लिखा गेल छन्हि से वातावरणक दबाबमे। हालहिमे जॉन्डिस भेल छलन्हि, जीहकेँ रास लगा कऽ पड़ल छलाह। रौद, गरदा आ धुँआसँ अकच्छ छथि। एकटा आर विचित्र बेमारी, देहमे तेज हउहटि आ चमड़ापर नहुँ-नहुँ चकत्ता उभरऽ लगै छन्हि। एक दिन सहरसासँ घुरै छलाह आकि स्कूटर खराप भऽ गेलन्हि। मिस्तरी आधा घंटामे स्कूटर ठीक करबाक गप कहलन्हि मुदा पाट-पुरजा खोलि कऽ छिड़िया देलकन्हि आ चारि घंटा लगलन्हि। सुपौल घुरि डॉ. दासक क्लिनिक गेलाह, होमियोपैथिक दवाइक बुन्न असरि केलकन्हि मुदा घंटा लागि गेलन्हि। एक बेर सासुरसँ घुरैत काल सेहो एहिना भेलन्हि। एक तँ पत्नीसँ बिछोह आ दोसर हाड़ कंपकपाबय बला ठार आ सिहकैत हबा! गोष्ठी, प्रो. राजेन्द्र, डॉ मुखर्जी आ के. के. इन्स्टीट्यूट ऑफ मैडोलॉजीक प्रिंसिपल झा। प्रो. राजेन्द्रक डॉ मुखर्जीसँ कहलापर जे इलाजक फीस पाँच टका तँ दऽ देब मुदा दबाइ देबए पड़त मुफ्तिया, फिजिशियन सैम्पल। ताहि पर मुखर्जीक कहब जे मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव सभ हुनका घासो नहि दै छन्हि आ एहि लेल तँ डॉ. दास लग जाए पड़त। फेर अयोध्यामे बाबरी मस्जिदक ढ़ाँचाक ध्वस्त हएब। सूत्रधारक देहक कँपकँपी, हउहटि, चकता आ सूजन फेरसँ। कोनो प्रत्यक्ष कारण नहि रहए एकर, मुदा तैयो हुनकर देह एकरा भोगने छलन्हि। मूस- ओ आ ओकर दबाइक दोकान। नबका ड्रग इंस्पेक्टर एहि दुर्गा पूजामे पाँच सए टाका सलामी लऽ गेलै। दोकान थसे जेकाँ लेने छै। अनुज बैसै छै दोकानपर। भुमिहार पेंच भिड़ाओत आकि दोकान करत! बैंकक पुरना लोन, घरक पाँच सालक बिजलीक बिल।..जेठका सार नागपुरमे एकाउन्टेन्ट छै, सनगर नोकरी आ सेहन्तगर कनियाँ छै। जे ओ जादूगर रहैत आ तखन गिली-गिली फू आ अलाउद्दीनक चिराग जे रहितै ओकरा हाथमे तखन! मुसबा तँ परेशान केने छै, खाइतो काल, मुदा एखन ओकरा एक्को रत्ती तामस नहि उठै छै। ई शहर अनुमण्डलसँ जिला मुख्यालय भऽ गेल छै, जमीनक दाम बढ़ि गेल छै। जमीन बेचि सभटा कर्जा-बर्जा सधा देत। निन्नक बदलामे पारदर्शी बुनबुना आ विभिन्न आकृतिक आ रूपक मूस, कुतरैत, लड़ैत, नचैत, प्रेम करैत, पोथी पढ़ैत आ रम्मी खेलाइत मूस। दोसर बेर बड़का टा बुनबुन्ना, मूसक कारणसँ प्लेग। मेहनतकश मूस बिहरि बनबैत अछि मुदा साँप ओहिमे रहैत अछि। अचकचाकऽ ओ उठि गेल। स्वर्गीय पिताक चित्र देखैत अछि। पूर्वजक अर्जित सम्पत्तिक उपयोग साँपे जेकाँ करत? केआरीमे अनेरुआ घास-पात खुरपीसँ साफ करऽ लागल। प्रजातंत्र परिकथा- एकटा हत्या आ दू टा घरमे डकैती। कमल कुमार शर्मा एहि खबरिकेँ देखैत अछि, सेन्सर्ड सन खबरि। ई गपक चर्चा नहि जे ओ डॉक्टर के. पी. भगत सेवानिवृत्त छल आ मामूली फीस लै छल। ओकर घरमे डकैत सभ गरीब मरीज आ ओकर परिजन बनि पैसल छल। ओहि पत्रकारपर कालाबाजारी आ मिलावटक केस एखनो लटकल अछि से ओ कोना लिखितए जे ओहि घरसँ पुलिस थाना अगबे एक सय डेगपर आ आरक्षी महोदयक निवास अगबे साठि-सत्तरि डेगक दूरीपर छलै। फेर डॉक्टर ओहिठामसँ ओ सभ राष्ट्रपति पदक प्राप्त हालहिमे रिटायर भेल शिक्षक विक्रम प्रसाद वर्माक घर पहुँचि गेल, डकैती सेहो केलक आ खेनाइ बनबाकेँ सेहो खएलक। विक्रम बाबूक भाइ गजानन बाबू आरक्षी अधीक्षकक ओहिठाम नजरि बचा कऽ पहुँचि गेलाह। मुदा तैयो किछु नहि भेल। अस्पतालक हाताक मुख्यद्वारपर लोक सभ जुटि गेल। मधुरेश किशोर द्विवेदीक केमिस्ट आ ड्रगिस्ट एसोशियेशन एकरा नेतृत्व दऽ रहल छलै। स्कूलसँ घुरैत बेदरा सभकेँ किछु भऽ जाय..। वक्ता सभ शुरू- दलाल ईश्वर चौधरी, भड़ुआ मुरलीधर अग्रवाल, मटिया तेल फेंटि कऽ पेट्रोल बेचिनिहार पत्रकार, चोरिक माल खरीद-बिक्री केनिहार नगरपालिका चेयर मैन बुचनू बाबू, मुनीमक कृपासँ चारिटा संतानक बाप पचीस वर्षीय सेठानीक साठि वर्षीय पति कालाबजरिया सेठ कनकधारीमल- ध्वनि विस्तारक यंत्रपर ओकर हँफसबाक स्वर छोट-मोट अन्हड़क भ्रम दैत छल। बार

एशोसिएशनक अध्यक्ष ज्ञाननाथ सिंह जे खूनी आ डकैत सभ पैरवी करै छथि, बाढ़ि प्रभावित इलाकाकेँ डिजनीलैण्डमे परिवर्तित करबाक मुफ्त योजना प्रस्तुत करएबला गंजेड़ी छुटभैया कृष्णानन्द तिवारी..गोरका डाक्टर धरमचन्द सहाय जकरा बुझनुक लोक सभ डी. सी. एस. माने दारू, छौड़ी, सार बहानचो कहै छथि..ओकर थीपल-तबधल शब्द सभ। फेर भीड़क नेतृत्वहीन होएब, प्रतिनिधिमंडल नहि जन-समूह द्वारा डाइरेक्ट वार्ता करबाक गप, आ एहिनामे टैरेसपर ओल्ड फॉक्सक अन्तर्राष्ट्रिय समस्या सभपर बकथोथी। तखने मोटरसाइकिलक एकटा सवार भीड़केँ नियंत्रणमे लेमए चाहैत अछि, ओ बंदा एकटा संप्रदायवादी दलक नव्यतम रंगरूट छल। मधुरेशजी सावधानी बरतै छथि। एकटा धग्गर आ टटका जनमल नारा कमल आ अनकर ध्यान आकृष्ट करैत छन्हि। फेर अबै छथि प्रदीप क्रान्तिकारी जे समाजसेवाक वशीभूत अभियन्त्रणक पढ़ाइ छोड़ने छथि वा निशाबाजी आ बलात्कारक कारण निष्कासित कएल गेल छथि। अनुमंडलाधिकारीक जीपपर आक्रमण होइत अछि। प्रदीप क्रांतिकारी कहैत अछि- कोयला लयसेंसमे सात हजार टका चाही हरामजदाकेँ। देखलहक तूफान। मधुरेशजी किछु आर गोटेकेँ संगमे लऽ लेने छलाह जेना गजेन्द्रजी- स्थानीय कॉलेजक व्याख्याता आ व्यापारी संगठनक माधवजी आ कृष्णमोहनजी। बिना अप्रिय घटनाक भीड़ गाँधी चौक आ जयप्रकाश चौक पहुँचल। तखने मिठाइ दोकानपर बैसएबला गोल्डिया जे क्रिकेट सेहो खेलाइ छल आ तहूमे बॉलक सुविधाक ध्यान रखै छल..बैटपर आबि गेलै तँ छक्का आ नहि तँ क्लीन बोल्ड... से सरकारी गाड़ीकेँ देखि मार..आगि लगा दे.. बाजि उठल। किछु लोक गाड़ी दिस दरबर मारलक, मुदा गाड़ीक चालक गाड़ी भगौलक। न्याय चौक वा नबाब चौक पर विश्व हिन्दू सेनाक सेनानी सभ बजरंगबलीक स्थापना कऽ देने छल कारण तराजू आ आँखिपर पट्टी बला मूर्ति नहि लागि सकल रहए। बजरंग चौकक बोर्ड लागि गेल रहए। प्रशासनमे ओहि समए दलित अधिकारी सभक बाहुल्य छलै आ ओ सभ चौकक नाम अम्बेदकर चौक करए चाहै छलाह से ओ सभ बजरंगबलीकेँ गिरफ्तार कऽ थाना लऽ गेलाह जतए सुनै छियै आइयो हुनकर पूजा कएल जाइत छन्हि। से ई चौक नगरपालिकाक पार्श्वमे रहलासँ आब नगरपालिका चौक कहाइत अछि। अनुमंडलाधिकारी फोर्स लऽ कऽ एतए आबि गेल आ सभ मिलि लाठी भांज लागल। पुलिसबला सभ दूर धरि दरबर मारि रहल छल। मुदा फेर लोक सभ गर धऽ कऽ रोड़ा फेकब प्रारम्भ कएलक। पुलिस असबार भए भागल..एकटा हिटलर कट मौँछबला इंस्पेक्टर आएल.. बरगाँही सभ ओकर गाड़ी लऽ भागल रहै! अनुमंडलाधिकारी आ दोसर सभ हाँइ-हाँइ जीपमे बैसिकऽ पतनुकान लऽ लेने छल। कमल नजरि खिरओने छल। गोल्डी ओकरासँ बहस केलकै तँ अमजद अली कमलक बाँहि गसिअयने ...क्रुद्ध चीता आ कूढ़मगज महिषक बीच दर्जन भरि लोक..। राजैतिक आ सामाजिक गुटबन्दीसँ बाहरक लोक ठकुरसोहाती नहि जनै छलाह। ने छल..कथी लेल एकर सभक मुँह लागै छी। दू गोट गिरफ्तार संगीक रिहा करबाक माँग..मुदा अधिकारी सभ अपन रक्षार्थ ताहि लेल तैयार नहि छलाह। लोफरकट डी. एस. पी. क मबालीकट अशिष्ट बोली..। मधुरेशजी बजलाह- अहाँ सभकेँ निखत्तर जयबाक सिहन्ता होअय आकि निछक्क जयपंथी-ए घेरने होअय तँ..। बन्हककेँ छोड़बापर सहमति भेल। मनुक्खक कोन कथा कोनो कागपंछी नहि देखाइत छलै..महाभारत समाप्त भेलापर की कुरुक्षेत्रो एहिना निसबध भेल होयतैक। बेदरा सभक एकटा गोल क्रिकेट खेलेबाक लेल मैदानमे प्रवेश कऽ रहल छल। अथ गिरगिट कथा- मुक्कन बाबू माने मुकुन्द जायसवाल- जनवितरण प्रणालीक दोकानक एकटा डीलर। एहि नामक एकटा दरोगा सेहो आयल छल आ खूब हँसोथि कऽ गेल छल। रामलखन पोद्दार, बी. एस. सी. ऑनर्स, वल्द किशन पोद्दार, चाह-पान बेचयबला, टॉपर मुदा नोकरी लेल जुत्ता खियाय गेलै। नगर-हबाक नापबाक यंत्र- कायराना भद्रताक पचहत्तरि प्रतिशत, स्वार्थाना यारीक बीस प्रतिशत आर मिसलेनियस वाइरस पाँच प्रतिशत अनुपातमे उपस्थित रहत। एकटा गोदाम सन मकानमे अछि पुलिस फाँड़ी आ तकरे सटल दारूक भट्ठी! एक दिन अनायासे दुनूक अहं सोझाँ-सोझी होइत छन्हि जखन मुकुन्द पुलिस फांड़ीसँ फराकैत भऽ निकलै छथि आ रामलखन भट्ठीसँ। झगड़ाक बाद पुलिसबला सभक सहानुभूति मुकुन्दक प्रति रहए आ भट्ठासँ बहराए बला सभक पोद्दारक पक्षमे। रामलखन पोद्दार गिरफ्तार भऽ गेल आ भोरमे ओकर बाप पुलिसबलाकेँ फूल-पत्ती चढ़ा कऽ ओकरा छोड़ओलक। फेर मुक्कन बाबू एक सोड़ह लोक लऽ नशा विरोधी नागरिक मंच बनेलन्हि आ भट्ठीपर धरना देलन्हि। ई सोलह गोटे छलाह सात गोट पितिऔत-ममिऔत-पिसिऔत-मसिऔत, दू टा हरबाहा, धनकुट्टा मशीनक आपरेटर, तीन कुख्यात मित्र आ कुलपुरोहितक दू टा लफंगा पुत्र। मुदा एम्हर पोद्दारजी अधिकार सुरक्षा हेतु ३६ गोटेक संगे आबि गेलाह। नशा विरोधी नागरिक मंचक सेनापति लंक लऽ पड़एलाह तँ शेषकेँ धरपटांग उठा देलकन्हि। फेर मारि-पीटक क्रम शुरू भेल। रंगबाजी स्पेशलिस्ट सुब्रत मुखर्जी एकरा गैंगवार कहैत छथि। मुदा तखने नगरपालिकाक चुनावक घोषणा भेल। स्वार्थाना यारीक वाइरस शीवाज रीगलक सोझाँ रंग धेलक। मुक्कन बाबू चेयरमैन छथि, पोद्दारजी वाइस-चेयरमैन। नगरमे शान्ति अछि। अय्यासी- दोसराक संग बैसलमे मौज मुदा पत्नीक बोल- तरकारी लेल दसटकही..किराना समान काल्हियो-परसू जे आबि जाय। दोसक ओतय बिदा भेल, बेटाक गप नहि सुनऽ चाहलक। पटेल चौक.... महात्मा गाँधी चौक पहुँचल। संगमे बिसटकही। रिक्शाबला अपन टोपर तानि कऽ सुस्ताइत रहए। रिक्शापर बैसल, रस्तामे दोस लेल दू टाकाक सिकरेट लेलक, अपन फेवरिट पत्रिका मोर बारह टाकामे आ चारि टाका रिक्शाबलाकेँ देलक। दोसक घरमे पंखाक हबासँ किछु आफियत अनुभव भेलै। बचल दू टाका ओकरा मुँह दुसलकै, घरक तरकारी आ बेटाक किताब-कापी.. घर घुरल देह

घामसँ कुंडाबोर। पत्नीक फुलल-लाल आँखि देखि लगलै जे अय्यासी कऽ घुरल होअए। बैकबा-फोड़बा- मूल समाचार- मतायल हबाक पेट्रोलकेँ स्वार्थक सलाइ देखौने छल। घटना- प्रकाश अगरवालक फर्म “वृद्धिचन्द भँवरलाल वस्त्र भंडार”- उधारीक रकम लाख ठेकि गेलै तँ स्वरगीय रघुनाथ झाक पुत्र अठमा फेल मातृविहीन अबंड सिकन्दर झाकेँ वसूली लेल राखलक। एहि क्रममे ओ पहुँचल एक दिन रामचन्द मड़र लग, ओकर बेटा कालेश्वर मड़र जे आब नाममे यादव लिखै छल चारि बरख पहिने तीन हजारक थ्री-पीस सूट बनबेने छल। मुदा बाप ओकर ऋणक मादेँ मना कऽ देलकै। रस्तेमे पान खएबाक क्रममे मुन्ना ठाकुरक दोकानपर कालेश्वर यादवसँ ओकरा भेँट भेलै, कालेश्वर संगे परिवारक लोक आ कुटुम्ब सेहो छलै। पहिने सिकन्दर जे फिरंटगिरी करै छल सैह आइ काल्हि कालेश्वर करै छल से तगेदापर मारि बजड़ि गेल। सिकन्दर ओकरा छातीपर चढ़ि गेल। सिकन्दरक पुरनका संगी सभ जुटि गेल आ कालेश्वरक कुटुम्ब सभकेँ धोपलक। फेर दोसर दिन पिछड़ा एकताक जुलुस निकलल आ वस्त्र भंडारक शीसा फोड़लक। मुदा लठैत सभ आबि लाठी बरसाबऽ लागल। जकर जेने सिंग अंटलै, ओम्हरे पड़ायल। लूट, अराजकता..पसरि गेल। झलकी- दृश्य एक: जिलाध्यक्ष पुरुषोत्तम मंडलक स्वर, अठारह कोठली आ दू टा बड़का-बड़का हॉल बला राजनीतिक दलक का र्यालयमे। सद्भावना जुलुस निकलत..शिष्य चिरंजीव सिंह, पार्टीक युवा मंचक अध्यक्ष आ मंडलजीक घोर समर्थक। मुदा ओ तामसे घोर भऽ जाइत अछि- अहाँ सेहो छोट जातिक छी से ओकरा सभक पक्ष लेबे करबै। बहरा जाइत अछि। दृश्य दू: फूसक घर। धनीलाल, रामनारायण। बैकबा-फोड़बा की होइ छै। मटरू की जानय। किछु काल चुप रहलाक बाद आल्हा टेर देने अछि। दृश्य तीन: कामरेड रामसेवक साहुक चाह-नाश्ताक दोकान। बहस..विद्यानिवासजीक भाषण, जाति नामक कोनो वस्तु नह ि। हुनका पागल कहि क्यो छौड़ा बहरा जाइत अछि। दृश्य चारि: टिफिनमे बच्चा सभक खेल: घास-फूस बला घर हमर आ हम बनब जादब। दोकान बिरजूक आ ओ बनत बाभन। दुनूमे झगड़ा होएत आ लल्लू, मोहन, नरेन आ बबलू आओत आ हमर घरमे आगि लगा देत। तखन सुरेश बनत नेता आ विनोद बनत दरोगा। सुरेश दरोगाकेँ कहत जे एकरा दुनूक घर-दोकान बनबा दियौक आ पकड़ि कऽ लाऊ। सुरेश दुनुक हाथ मिलबाकऽ दोस्ती कराओत। बैकबा-फोड़बा खेल भरि टिफिन चलैत रहल। विष-पान- वकालतखानाक कुर्सीपर बैसल गोपालजी कछमछाइत छथि। कचहरीक द्वारपर सुग्गाबला जोतखी बैसल छथि। ओतहि एकटा बैनर सेहो अछि आँखिक रोशनी बढ़बए बला ममीरा सुरमा। अदालतिक बरंडापरसँ अर्दली रामेसर मंडल बल्द जागेसर मंडल केँ चिकरैत अछि, मोकील वकीलकेँ अगिला तारीखपर बाँकी-बकियौता देबाक गप कहै छन्हि मुदा ओ कलमक उनटा छोरसँ कान खोदैत रहैत छथि। गोपाल सुनै छथि। गोपाल, एक दिन पानबला दोकानपर चतुरानन लाठी लेने आयल आ बरसाबय लागल। ओ खसि पड़लाह। बाबूजीक पुरान नोकर नेनिया आबि चतुराननकेँ बजाड़ि दैत अछि मुदा ओ मौका देखि भागि जाइत अछि। रामप्रसादक साठि वर्षीय माय मरौनावाली सभसँ पहिने गोपालक सुधि लेलक। फेर गोपाल अस्पताल आनल गेल। चतुरानन सेहो ओतय आयल रहय इलाज आ इन्जरी रिपोर्ट लेल, मुदा क्यो चीन्हि गेलै आ जरनाक चेरासँ ओकरा मारि कऽ भगा देलकै। चतुराननकेँ सभ आदि अपराधी कहै छल मुदा गोपाल ओकरा सुधारैक लेल प्रयासरत छलाह। से आब ओ भस्मासुर बनि गेल। पुलिस चतुराननसँ पाइ असूललक आ ओ घरहिमे रहै छल। प्रगतिक तारीख केसमे पड़ैत रहलन्हि आ हुनकर एक्स-रे प्लेट सेहो अस्पतालसँ निपत्ता भऽ गेल। तीन बर्खक बाद गबाही शुरू भेल आ फेर शुरू भेल जिरह, ओहि दिन भरि बाँहुक कमीज पहिरने छलाह, कालर आ जेबी रहै वा नहि, रंग..। जे लाठी बजरलन्हि तकर लम्बाइ, बनावटि..। वकील मित्र..मुदा एक दिन स्वरक तुर्शी नुकायल नहि रहलै. देखै छियै मोकील सभकेँ आखिर पाइ देने अछि तँ ओकर सभक काजकेँ प्राथमिकता तँ देबहि पड़त। आ ओहि दिन गवाही नहि गुजरि सकल..फाइलपर हाकिम विपरीत टिप्पणी कऽ देलन्हि। चतुरानन तीन हजारमे गप फिट कएलक जे ओहिसँ बेशी अहाँ दऽ सकी तँ..। एंटी-पार्टीक वकीलक मार्फत वकील-मित्र लग ऑफर सेहो आयल छलन्हि। मुदा गोपालक कहलापर कोर्ट ट्रांसफर करेबाक प्रक्रिया शुरू भेल। मुदा कोर्ट ट्रांसफर भेल शीलभद्र झाक कुटमैतीमे जे गोपालजीक राजनैतिक प्रतिद्वन्दी छलाह आ चतुरानन आइ-काल्हि हुनके छत्र-छायामे छल। मेल पेटीशनपर गोपाल दसखत कऽ दै छथि, आत्मसमर्पण जेना भारत-पाक युद्धमे एक लाख सेनाक संग जनरल नियाजी कएने छल।

हाथी चलए बजार: कथा संग्रह तीन खण्डमे अछि, मूलधनमे सामान्य लम्बाइक कथा सभ अछि, मोटा-मोटी २००० शब्दक, जकरा अंग्रेजीमे शॉर्ट स्टोरी कहल जाइ छै। मुदा मैथिलीक शॉर्ट स्टोरी (लघु कथा) एक पन्नाक भीतर लिखल जाइत अछि आ तकर संग्रह ब्याजक अन्तर्गत दोसर खण्डमे कएल गेल अछि। अन्तिम खण्ड लोरहा-बिच्छामे कथाकार छोट-पैघ ओहि सभ कथाकेँ संकलित कएने छथि, जे हुनका दृष्टिएँ कनेक दब कथा अछि- मुदा पढ़ला उत्तर एहिमेसँ बहुत रास कथा मूलधन आ ब्याज क अन्तर्गत संकलित होएबा योग्य अछि, संगहि मूलधन आ ब्याजक बहुत रास कथा लोरहा-बिच्छा खण्डमे जाइ जोगर अछि।

मूलधन: अन्हार- लौहार गाम बाटे जाइबला सड़क पक्की भेल छै, सरकारी जीप सभ, महिषी उग्रतारा लग बलिप्रदान देबऽ लेल खदबद-करैत जाइत छागर-पारा सभ। ओलतीसँ ओलती सटल गहूमक नारीसँ छाड़ल घरसँ बहराइत नेना सभ। तेतर मुसहर। सरौनी

गामक गृहस्थ लग हरबाही करैत छल आ रमानन्द सिंहक सुतरी काटि रहल छल। कुलबन्त सिंहक ट्रकक पहिआ ओकर छौड़ापर चढ़ि गेलै। मुखियाजीक आगमन। छह हजार सरदार कुलवन्त सिंहसँ लेलन्हि आ दू हजार तेतराकेँ दएबाक गप केलन्हि। तेतराक सौंसे देह झनकि उठलैक, गनत कोना कऽ..कतेक पंचटकिया हेतै। कनियाँ बलुआहाबालीकेँ बुझबैत अछि, हमर-तोहर जिनगी रहत तँ बाल-बच्चा फेर नञि हेतैक? टैक्स फ्री- चलित्तर चिमनीपर काज करैए। साढ़े छह टाकाक बदला पाँच टका भेटै छै। डेढ़ टाका मुंशी मारि लै छै। मुदा काल्हिये बजट पास भेल छै आ जे वस्तु पौने पांच टकामे भेटैत रहए से आब सात टाका सत्तरि पाइमे भेटतै। जकरा ओ भोट देने छल से डाक बंगलापर आयल छै, चलित्तर ओतए जाइये। कहैत अछि जे भोटसँ पूर्व जतेक अधपेटा भेटैत छल सेहो आब नहि भेटैए। मुदा ओ मंत्री बनल नेता दुत्कारि दैत छन्हि, कतेक नुआ-फट्टा दियौलियै, टेलीविजन, भी. डी. ओ. टैक्स फ्री करबेलियै, तैयो जस देनिहार कियो नहि। चलित्तरकेँ पुलिस बाहर कऽ दै छै। घुस्सा, थापर, चमेटा सेहो लगै छै। ओ ककरासँ टैक्स फ्रीक अर्थ बुझत? बबूर-रौदी मरड़क महायात्रा। ओकर एक्केटा बेटा उदबा। गामक बाबू भैयासँ बाऊकेँ बड़ लागि रहै। बिदा भेल बभनटोली दिस। एकहको टाक ठाढ़ि देतै तँ ढेरी भऽ जएतैक। मुदा ओकरा सुनए पड़लै- पुरखा-पातिक मांसु तँ कुकुर कौआ खेलकनि आ रौदियाकेँ जड़बै लेल गाछ चाहियनि। उदबा समाद पठबैत अछि, लहासकेँ लऽ कऽ बान्हपर आ। ताबत ओ सरकारी जमीनपर सरकारी बबूर काटि-चीरि कए चिता सजा दैत अछि। उदबा आगि फूकि देलक। पंडीजी अएलाह आ पंडीजीक ई कहलापर जे बबूरक लकड़ीपर चिता केहन होइ छै, मुँहमे ऊक दऽ कऽ धारमे भसिया दितही, उदबा हुनकर पतरा छीनि लैत अछि आ ओही चितामे फेकि दैत अछि। उदबा पित्तीसँ बजैत अछि- तोरा आऊरक चानन ईएह बबूर छिअह। संबंध- सुगिया आ ओकर घरबला जीबछ। जीबछक घर एही चौकक कातमे छै। झिल्ली मुरही आ चीनीपाक मिठाइ, बतासाक उठल्लू दोकान। रतुका खाइक आ नीनसँ सुतैक बिचला अवधिमे दुनू एक दोसराक बाँहिमे पड़ल किछु गप्प करए। बुढ़िया जे एहि बरख टा जीबैत रहितए तँ ओकर सख संग लागल नहि जइतै..। सुगिया गर्भवती छल। आइ भात-परोड़ खाइत इतियौत-पितियौत सभक बापकेँ कंठ दाबि मारबाक ध्वनि सुनलक। ओ धरहड़िमे गेल मुदा ओ सभ ओकरेपर फरसा चला देलकै। फेर थाना..। ओतए दरोगाजी टेक्टरबलासँ सलटि रहल छलाह। फेर ओ सुगियासँ केसक फीस दू सए टाका मँगलन्हि। जीबछक कमीजक जेबीमे मात्र साठि टाका रहै। बाला आ हंसुली बेचए लेल सोनार लग गेल, ओहो मौका देखि कम पाइ लगेलक। टाकाक जोगार भेलै मुदा तावत जीबछ ढनमना गेलै। दरोगाजी कहलखिन्ह जे ई बिना कुछ बजने मरि गेल। भऽ सकैए तोँ दोसर मर्दक संग संबंध रखने छँह आ एकर खून गुंडासँ करबेने हेबहीं। दरोगाजी ओकरा हाजतिमे बन्न कऽ देलखिन आ अपन डेरामे समाद दऽ देलखिन्ह जे ओ आइ राति डेरा नहि आबि सकताह। अंतिम बेहोशी- कथाक सूत्रधार वा कथाकारक भौजी- माने ललिता मिश्र, प्रोफेसर समरेश मिश्र, विभागाध्यक्ष, रसायन शास्त्र विभागक धर्मपत्नी। दुनु पहिने प्रोफेसर आ शिष्या रहथि, फेर प्रेमी-प्रेमिका भेलाह आ तखन पति-पत्नी। उमरिमे कमसँ कम दस बर्खक अंतर होएतन्हि। तीन टा बच्चा दू टा बेटी चौदह बर्खक सुषमा आ बारह बर्खक माधुरी आ एक टा बेटा श्वेताभ दस बर्खक। भौजीक ई चारिम गर्भाधान। कारण जांघक भूख प्रबल। मुदा बेटीसभकेँ स्कूलमे लोक उपहास करए लगलै आ ओ सभ माइकेँ कहलक जे हमरा सभक उपहाससँ माथ फटैए आ तोरा बिआइसँ छुट्टीए नहि छौ। भौजी गर्भपातक प्रयास कएलन्हि मुदा समरेश भाइक कोनो मदति नहि भेटलन्हि। बेटी सभक गप..पेट उनारने बैसल अछि..बेलनाक हूड़सँ फोड़ि ने दे पेट कए। भौजी मूर्छित भऽ गेलीह। भौजी पहिल बच्चा भेलाक बाद जे चौदह बर्खक बाद गर्भवती होइतीह तँ की हुनकर बेटी, ओहो शिप्रा जेकाँ देवी-देवताक पूजा नहि करितए। शिप्रा सूत्रधारक कॉलेजमे छात्रा, सतरह बर्खक बाद ओकरा एकटा भाइ भेल छलै। बड़ प्रसन्न छलि। डाक्टरनीक मोन उछतगर नहि बुझि पड़लन्हि। भौजीक शिशु सूत्रधारक कोरामे छन्हि। भौजी चलि गेलीह, प्रपंचकेँ छोड़ि। छब्बीस घंटाक बच्चाकेँ लऽ कऽ सूत्रधार समरेश भाइक डेरा ढुकैत छथि। भौजीक दस बर्खक बेटा खुशीसँ ओकरा संग एकतरफा बतकही कऽ रहल छल। भौजीकेँ अंतिम बेर होश आयल छलन्हि तँ ई समाद कहबा लेल। दुनू बहिनकेँ अंग्रेजी स्कूल चंडी बना देने छै। ओ सभ एकरा नहि जीबऽ देतै। आब अहीं एकर माए आ बाप। कथाकार सोचमे छथि। दुनू बहिन स्कूल गेल छल। कोना भौजीक दस वर्षीय बेटाकेँ उतरी पहिरेताह। उस्सर जमीन: तेजो बाबू। कथाक सूत्रधारक दियादी पित्ती। खरहू सभ फूल कका कहै छन्हि। समर्थाइमे खेत-पथारमे काज करैबाली बोनिहारिनसँ राजी वा जबरदस्ती वासनाक पूर्ति करथि। आब दू-दू पुतोहु आ एकटा जमाएक ससुर भेलाह। फूल कका सूत्रधारक टेढ़ आँखिक नकल करथि आ से करैत-करैत आइ हुनकर दहिना आँखिक डीम उपरका पलमे ढुकि गेलनि अछि। आब अपन पोता-पोतीक खापड़िक पेन सन मुँह, बुढ़बा परोर सन ठोर, अल्लू सन-सन नाक, बिलाड़ि सन-सन आँखि आ फगुआक पू सन गाल देखै छथि तँ पश्चाताप करै छथि। हुनकर राम आ लछमन बेटाक भिनाउज लेल पंच बैसल अछि कारण राम बेटीक बाप छथि आ बेटीक बाप पहिनहिये बुढ़ा जाइत अछि- आ लछमन बेटाक बाप छथि। से लछमनक कनियाँ सिमराहा बाली सोचलन्हि जे जेठ जनकेँ परुकाँ एकटा कन्यादान हेतन्हि आ दोसरो लागले छन्हि से फूट भऽ जाइ आ एहि लेल उड़कुन तकलन्हि। पंच, अमीन आ अन्न जोखबा लेल पल्लेदार आयल। जे फूल कका अनका घरमे पंचैती करै छलाह, हुनका घरमे पंचैती। सभ वस्तुक हिस्सा भेल मुद लादि इनार एक्केटा। से लादि फोड़ि देल गेल आ इनार भथि देल गेल। मुदा माए-बापकेँ कोना फोड़ब आकि भथब? से

रामक संग बुरहा आ लछमनक संग बुरही गेलीह। नूर-गोबरौर जेकाँ दुनू गोटे पड़ल छथि। कारण सिमराहीबाली समाराजसँ दू बीघा जमीन बुरहा-बुरहीकेँ देबामे नोकसान देखलन्हि। जे छोटकाक घरमे तस्मै बनै तँ बुढ़ीक पातोपर एकाध चम्मच खसै। मुदा असगरे खाइमे हुनकर हीया सालए लागनि। आब फूल काका दार्शनिक बनि गेल छथि। बांझ गाए, उस्सर जमीन आ कोढ़ि बरद सेवा-बरदासिक आश किऐ रखैए? पवन पुल- कथाक सूत्रधारक आइ. एस. सी. क परीक्षा भेल छन्हि, प्रैक्टिकल परीक्षा बाँचल छन्हि आ ओ ओहि अवधिमे गाम गेल छथि, कारण अल्पवेतनभोगी पिताक ऊपर बेसी जोर नहि देमए चाहैत रहथि। मात्र तीन दिन पहिने सहरसा गेल छथि। गाममे मृत्यु सय्यापर सूत्रधारक अनुजा सरोज पड़लि छथि। तीनू अनुजामे सभसँ पैघ मुदा सूत्रधारसँ तीन बर्ख छोट, जकर दस बर्खक बएसमे विवाह भेलै आ तेरह बर्खक बएसमे द्विरागमन। सासुर गेलाक छह मासमे ओकरा टाँगि कए नैहर आनल गेलै। हुनकर पति अज्ञानी-लफंगा छलखिन्ह, जिनका सूत्रधार कहथिन्ह जे ऑटोमेटिक घड़ीक ह्रिजए आ इंग्लिश रेले साइकिलक निर्माणक तिथि बताऊ, जे ई दुनू चीज चाही। आ एहि हँसी लेल सेहो सरोजकेँ तारणा भेटलन्हि। सूत्रधार प्रैक्टिकल परीक्षामे उत्तल तालक वक्रता नहि नापि सकलाह मुदा प्रात भेने सरोज ओहि वक्र सीमासँ मुक्त भऽ गेलीह। सझिला पित्ती, जिनका सूत्रधार बाबू कहै छथि, सूत्रधार आ सरोजकेँ जानसँ बेशी मानैत छथि। समाजक लोकक लहास उठबै लेल नहि आएब। सूत्रधारक काकीक ई सूचित करब जे अपनहि बैसि चारू दिआदनी कानी आ चारू-चारूकेँ चुप करी आ कोनटी-फटकीसँ अबाज, जे छौड़ी समर्थ होइत-होइत मरलैए, तेहेन डाकिन हेतैक जे टोलमे भरि-भरि राति घोड़दौर करतै। मुदा भोज कालमे रंगनाथ मिश्रक कहब, जे पहिल कर के उठाओत, मात्र एक्कैस ब्राह्मण छथि बाइससँ एक कम। सूत्रधारक छोट पित्ती अपने बैसि जाइ छथि। सूत्रधार रंगनाथ मिश्रकेँ बाँहि पकड़ि उठबैत छथि..निकलि जाउ जल्दी, अन्यथा एक्को जुत्ता नीचाँ नञि खसए देब..। जे कसाइ छथि, तिनका जाए दिअनु। हुनकर पात भिखो डोमक सूगरकेँ खोआ दिअनु..। चरित्र- घोर कम्युनिस्ट गौतमजी। जातिएँ कर्ण कायस्थ छथि- बीड़ी पीबि (ताहिसँ सर्वहारा छवि बनबैमे सुविधा छन्हि) मोंछक टुरनी कैल भऽ गेल छनि। कलकत्तामे बसल मैथिल। तीन टा बेटी। बेटी विवाह कालमे अपन प्रेमिका संगे लड़का देखए लेल जाइत छथि। ओतए एक ठाम अम्बष्ठ कायस्थ रहलाक कारण आ दोसर ठाम लड़काक पिता कर्णजीक दोसर पत्नीक क्रिश्चियन विधवा रहलाक कारण ओ कथा सभ हुनका सूट नहि करै छन्हि। एडलिनाक कथा बीचमे आबि जाइए..एहि क्रममे प्रधानाध्यापकक एड्लीनाक सम्बन्धमे टिप्पणीपर एकटा नवनियुक्त शिक्षकक टिप्पणी- एडलीना अहाँक छोटकी बेटीसँ दुइए-तीन बर्ख जेठ होएतीह..हुनका लेसि दै छन्हि। अस्तु, कथाक अन्त गौतम जीक माझिल बेटीक पिताकेँ देल रपटानक संग खतम होइत अछि। इजोत- मधुकरजीक संग कथाक सूत्रधारक शतरंजक खेल चलि रहल छन्हि। शतरंजक खेलक संग सूत्रधार मधुकरजीक शतरंजक संग जीवनमे कएल बेइमानीक संगे-संगे चरचा करै छथि। हुनका द्वारा मधुकर जीकेँ पातकी गुरुक चेला कहलापर मधुकरजी बिगड़ि जाइ छथि, कहै छथि जे ..हमहीं अहांक घरवालीकेँ सिखबै छी जे अहाँक माए-बापकेँ मारए, अहाँक घरक फजहति करए, अहाँक ससुरबासि बहिनकेँ घरमे नहि रहए दिअए। मधुकरजीक विशेषताक शतरंजक बिसातपर चर्च होइत अछि- बियाहमे भाँगठ करब, एकलव्य जेकाँ धनुर्विद्याक प्रयोग कुकुरक मुँह बन्द करबामे करब, सूत्रधारक कनियाँकेँ अनट-बनट पढ़ाएब। सूत्रधारक बहिनिक सासु-ससुरकेँ ओ कहि आएल छथिन्ह- दिल्लीमे जगह किनबा लेल पाइ छै आ बहिन बहनोइकेँ देबा लेल पाइ नहि छै? सूत्रधारक पत्नी सासु-ससुरकेँ पाँच बाढ़नि-पाँच सुपाठ चलबिते छलखिन्ह आब बहिन लेल पाँच बाढ़नि-सुपाठक काज आओर बढ़ि गेलन्हि..बेचारी परलोक गेलीह। अन्तमे सूत्रधार मधुकर जीक घोड़ा उठा कए पुरना जगहपर राखि दै छथि, आ चालिमे इमानदारी अनबाक लेल कहै छथि। हाथी चलए बजार- भवानी दाइ! बापक दुलारि। माएक मृत्युक बाद लालन-पालन आ विवाह। फेर कल्याणक योग्यता भेलन्हि तँ ई समाचार सुनि पिताक मृत्यु भऽ गेलन्हि, खुशीसँ। फेर भवानी दाइकेँ पुत्र भेलन्हि आ फेर हुनकर पतिक मृत्यु। फेर इनश्योरेन्स आ अनुकम्पाक नोकरी लेल हुनका दू तरहक अनुभव भेलन्हि। इनश्योरेन्स कम्पनीक मनेजर कम उमरिक लेखक, भद्र। सभटा काज मिनटमे भऽ गेलन्हि। मुदा पतिक कार्यालयक हाकिम पतित। कथाक अन्त हाकिमक बेटी गीताक पिताकेँ देल दुत्कारिसँ होइत अछि। छगुन्ता- बैरागीजी, रामाधीन पाण्डेय “बैरागी”, हुनकर बेटा कओलेजमे प्रोफेसर भऽ गेलखिन्ह। हुनकर बेटाक अपहरणसँ कथामे तेजी अबैत अछि। पचीस हजार भविष्य निधिसँ निकालि कऽ रखलथि आ सेहो गाएब छन्हि। हुनकर जेठ बेटा अरुण सेहो निपत्ता छथि। फेर कथामे दुखमोचनक चर्च अछि जे स्वतंत्रता सेनानी- जे पेंशन लेबासँ मना कऽ देलन्हि- क पुत्र छथि। मुदा अपराधी चरित्रक, हाइ स्कूलेसँ अपन भविष्यक परिचय देमए लगलाह, जखन जाति आ अर्थें हीन पड़ोसियाक बेटीपर हाथ साफ कऽ लेलनि। फेर बटमारी, छीना झपटी...निम्न जातीय एम. एल. ए. भगत जीक नेतृत्व पसिन्न नहि पड़लन्हि तँ ओ केसमे फसा देलखिन्ह आ आब ओ फरारी राजनीतिज्ञ भऽ गेलाह, अपन जातिक लोकक मदति सेहो भेटलन्हि। फेर हुनकर फल्लां दिन आत्म-समर्पण आ शक्ति प्रदर्शन हएत। निछक्का स्वजाति, एकवर्णा गहूम जेकाँ। आबालवृद्धवनिता। दुखमोचन पैघ लोक भऽ गेलाह। तही दुखमोचनसँ अरुणक धर्मयुद्ध। मुदा दुखमोचन जीक चीलर-चमोकनि सभ अरुण द्वारा वध भऽ रहल छलाह आ ओ दिल्ली-पटनामे मौज करै छथि। गति- जगत झा, गामक बिलाड़ि। गाम मोहनपुर। भुमिहार आ डोमक अतिरिक्त सभ जातिक लोक, भुमिहारक सामाजिक लोकाचारमे कोनो प्रयोजन नहि,

मुदा डोमक होइ छै, से ओ अबैत अछि चन्द्रायणसँ। दु बरख दसैंया पासी लग बन्हकी लगलाक बाद फेरसँ मोहनपुर भिखो डोमक हिस्सामे आबि गेल अछि। गाममे मनोहर धानुकक बेटी चनरमा। बभनाक नेत खूब बुझै छल। बिआहक बाद सासुर बकौरसँ सांइकेँ डेनिअएने चलि अएल। कारण बकौरक राछछ सभकेँ ओकरा नहि चीन्हल छलै मुदा मोहनपुरक सभटा कुकुर ओकरा चीन्हल छलै। फेर चारिटा बेटी भेलै। जगत झा तरबन्नीसँ अबैत अनिल सिंहकेँ चनिया ओकर पाइ देलकै वा नहि पूछि भड़कबैत छथि। टी. टी. क बेटा अनिल सिंह। फेर मारि-पीट आ पुलिस-फौदारी। मुदा फेर जखन दुनू पक्षकेँ जगत बाबूक असलियत बुझबामे अबै छन्हि तँ फेर दुनू पक्ष मिलि कऽ..। मध्यांतर- जगतारणि आ अलकादेवी- दुनू सौतनि मुदा सौतिया डाहक कतहु लेशो नहि। अलका देवीक दू टा सन्तान। तारानन्द निर्धन परिवारक आ अलका - सुखी सम्पन्न परिवारक- एक्के संगे पढ़ैत रहथि। तारानन्द लोक सेवा आयोगक परीक्षा पास केलन्हि तँ बियाह जगतारणि- करिया पाथरक बनल मुरुत मुदा व्यवहारसँ सुन्दर- सँ दहेज प्रथाक कारण भऽ गेलन्हि। फेर कुरुप जगतारणिक प्रयाससँ अलका सेहो घर आबि गेलीह। फेर जगतारणिक दूरक संबंधक दीअर मनोहरक पत्नी जाहिल मीराक आगमन होइत अछि। फेर मीराक दामपत्य जीवनक सूत्रक कमजोर होएब आ वकीलक आगमन। मीरा केस जीति जाइत छथि मुदा मनोहरक ओकील, आ मीराक ओकील हुनका संगे गलत कर्म करैत अछि..। फेर जगतारणि द्वारा मीराकेँ भोल भरोस देल जाएब।

ब्याज: किराया- पूर्णियाँ गुलाबबाग, देह व्यापारक अड्डा। ..कतेको कोढ़ीकेँ रगड़ि कए फुला देल गेल छल। आ..दस टाकामे होइ छौ अपनो साती आ बापोक साती..एहन सन अबाजक बीच कथाक सूत्रधारक प्रति शब्द..स्सालेकेँ ने जेबीमे दम रहै, ने डांड़मे। पतन- बाढ़िक कछाछोप पानिमे चनमा द्वारा झोली मिसरक सन्दूकक वस्तु-जात निकालबाक प्रयास आ साँपक फेंच तानि ठाढ़ होएब, जेना कहि रहल हो- हम तोरासँ बेसी बिखाह नहि छी। उसांस- विधवा थानाबाली, ओकर बेटी डोली बेराम रहै। हवेली गेनाइ नागा कऽ देलक। मालिक दस सटका घैंच देलकै। फेर माए रोहुआ बुआरक मोनिमे अत्याचार आ कब्बै द्वारा ओकर कंठमे काँट पसारि ओकरा मारबाक खिस्सा डोलीकेँ सुनबै छै। डोली कहै छै, ऐ मालिक लेल कोनो कब्बै नहि छै? ओटघन- मालिक-मलकाइन आ मुसबा, जितिया पाबनिमे मुसबाकेँ छुट्टी नहि भेटलैक। जितबाहनक तेल, मलकाइनक बच्चाकेँ माथमे लठ-लठ करैत लागए आ मुसबा ओहि तेलक एक ठोपक आस लगेने रहए। आ सपनामे जखन ओकरा माए कहै छै जे किए एलें, ओतए मलकाइन सुच्चा दूधक पौरल दहीसँ औटघन करबितौ, तँ ओ कहैए जे चढ़ौआ तेल तँ ओहि सिमबक्शीक हाथसँ बहरएबे नहि कएलैक आ ओटघन ओ की कराओत? जागृति- एकटा कौआ राजपथक दुफेरापर बैसि रहल, सोझाँ दूधसँ नहाएल संसद भवन, दूधसँ नहाएल नवयुवती जेकाँ चमकैत। आ पारम्परिक कथा- कुकुरक कौआसँ गीत गएबा लेल कहब जे ओ रोटी ओकरा खएबाक मौका भेटए। मुदा कौआ रोटीकेँ चांगुरमे राखि कए बजैत अछि जे खोहमे रहि बाहरी दुनियाँक गीत कोना सुनबह। जाति- कामेश्वर बाबू आ सुगनी हुनकर घरमे काज करएबाली। शारीरिक संबंध दुनूमे। मुदा बहुत दिनुका बाद ओकर बेटी सरोसतियाकेँ कामेश्वर बाबू कामवशीभूत देखै छथि आ पु छै छथि तँ सुगनी कहै छन्हि जे हँ जुआन तँ ई भइए गेल अछि, मुदा सोचै छी जे कोन जातिक लड़का एकरा लेल ताकी, अपना जातिक वा अहाँक जातिक। महामंत्री- अर्थशास्त्रमे एम. ए. पास विनोदक कृषि राज्य मंत्री पाण्डेयजीक चक्रचालिमे फँसि अपन धनकुटियाक धंधा खराप करब आ पाण्डेयजी द्वारा आबंटित राशिकेँ ऊपरे-ऊपर हँसोथि जएबाक खिस्सा। एकोदिष्ट- मालिक बाबाक एकोदिष्ट। हुनकर जेठ बेटा मधु भाइ (तामसे मधुकंता कहै छथि) क नोतपर नहि अएलापर तामसे बिख छथि, हुनकर कार्यालयक व्यस्ततासँ हुनका कोनो मतलब नहि छन्हि आ कहै छथि जे सुनराकें एकर बदला नोत किएक नहि देल गेल। धरफड़ाइत अबैत मधु भाइ ई सुनि लै छथि...। भारत- गाँधीजीक मूर्तिक खसब आ सभक ओकरा श्रद्धासँ नमन कए बढ़ि जएब मुदा उठेबाक पलखति ककरो नहि। एकटा भिखमंगाक ओतए कम भीख भेटलाक बादो ओतहि भीख माँगब, एहि आशामे जे गाँधीबाबा उठताह तँ देशक दशा कहबन्हि। कृतज्ञता- सुस्मित, अक्षयवट आ राकेश जाइत रहए गप करैत। रामनारायण सिंह प्रोफेसरक कृपासँ नीक अंक भेटल रहै। फेर प्रोफेसर साहेब सेहो सूत्रधारकेँ भेटै छथिन्ह आ फेर नीक छत्ताक उपहारक बदला देल अंकक भेद खुजैए। विसंगति- सूत्रधार मेडिकल रिप्रेसेन्टेटिव छथि, नाथो बहिनकेँ पेट दर्द, तेजो काकाकेँ तिलकैत केसक इलाज आ अवधेश भाइ लेल भूखक गोटी.. मुदा सूबेलाल हरबाह, जकर बेटा सूत्रधारसँ पाँच बर्ख जेठ छथिन्ह, सूत्रधारकेँ मालिक कहै छथिन्ह। पेट खरापक दबाइ गोटी हुनका मुदा नहि चाही, कारण जतेक अन्न पचेबाक तागति छन्हि ततेक तँ अन्नो नहि जुड़ै छन्हि, भूख कम करबाक जे कोनो दबाइ होइ तँ से मँगै छथि। बोइन- जुगो मरर, ओकर कनियाँ धोरएबाली बिन बोइनक खेरही डेंगाबए किंकर बाबूक अंगनामे, बेटा लालमोहरा सेहो पेटेपर ओहि अंगनामे काज करए। सूत्रधारक मदतिसँ वृद्धा पेंशन भेटलै, मुदा जेकरा ओतए ओ काज करैए ओ जे दू दिन ओकरा काजसँ दौगत, से दू दिनुका बोइन नहि देत। फेर ब्लॉकमे जखन ओकरासँ बिनु पाइ लेने हाकिम कागच राखि लै छथि तँ ओकरा होइ छै जे काज नहि भेल कारण बिन बोइनक तँ गरीबे-गुरबा सभ ने काज कऽ सकैए। पहिचान- वृखोत्सर्ग श्राद्धक क्रममे दगलासँ बाछीक मृत्यु। अनुत्तरित- दीना बाबूक काम लिप्सा आ हुनकर हरबाहक बेटी बुधनीक कहब जे ई सलवार फराक पहिरने हम हुनकर बड़की दैया सन लगै छिअइ? योग्यता- रफीक साहेबक स्कूल खोलब आ

योग्यतामे युवतीक उमरि पूछब। कथा सशक्त नहि। उद्देश्य- मुख्यमंत्री द्वारा शिक्षामंत्रीपर परीक्षामे चोरिपर प्रतिबन्धक गप आ त्यागपत्र माँगब। बोध- राजाक नागराजक पत्नीक ढोढ़िया संग संभोग देखब आ नागराजक पत्नीक कहब, मिसिया भरि पुंसत्व, पहाड़ भरि कुलशीलसँ पैघ होइत छैक? मोल-जोल- पांकी रोड डालटनगंजमे भरत बाबूक माइक श्राद्ध आ दूध-तेल गिरै लेल कंटाहा ब्राह्मण द्वारा एक सए एकावन आ फेर आर पचास टाका भेटलोपर मोन उछितगर नहि होएबाक बाद एकटा ब्राह्मण भिखमंगा द्वारा ओहि टाकाक बदला दूध-तिल पीबाक ऑफर। मूल्य- लखन बाबूक निर्देशनमे मनोरमाक पी. एच. डी. करब आ लखन बाबूक प्रणय निवेदनपर उत्तर, जे जाहि आँखिए अहाँक एतेक महान छवि देखने छी, ताहि आँखिए अहाँकेँ नांगट कोना देखब? आस्था- गोदानक बदलामे पंडितजीक द्वारा आपतमे एगारह टाका दए तिल-कुश-जौ-अक्षतसँ उसगरबाक गपपर सूत्रधार द्वारा आशंका करबापर कहब जे ओ कोनो मनुक्ख थिकै... जानवर थिकै, जानवर। अंतिम अभिलाष- मदर दासक अंतिम इच्छा पुछलापर ओकर कहब मोन करैए.. जे अल्लू दम आ भात खाइ। सरोकार- फूलबाबूक मृत्यु आ तखने अमेरिकामे छपल कविताक एवजमे डॉलरमे पाइ आएब आ मदनेश्वर बाबूक पूछब- एकर कतेक टाका भारतमे भेटतैक? प्रतिबद्धता- रामशरणजीक भारतक गरीबी आ नारी-शोषणक ज्ञान विदेशी लेखकक किताब पढ़लासँ एतेक फरिच्छ छनि। ललिता एक माससँ हुनकर कामक वशीभूत अछि, मुदा फेमिनिज्म लए कऽ ओहि दिन जखन वार्तामे भेद खुजैए तँ ओकर दुत्कारलापर रामशरणजी फेमिनिज्मकेँ अल्हड़ छौड़ीकेँ रागतर दाबऽ वला हथियार कहै छथि। जोगाड़- कुमार गंधर्वक स्वर्गवासपर जे. एन. यू. कावेरी हॉस्टलक दू टा अखबारी समीक्षकक विवाद- ओहिमेसँ एकटा तहिए सँ आलेख लिखि रहल छल जहियासँ गंधर्व दुखित भेल छलाह, से ओ दोसरकेँ कविता लिखबा लेल कहै छन्हि। पिंडदान- चक्रधर बाबूक झिंगुर झाक माइक मृत्युक बाद जमीन लेने बिना पाइ नहि देबाक निर्णय आ अपन पितरक पिंडदान लेल गया जएबाक भोरक रातिक स्वप्न- जीबैतकेँ नहि उजाड़, मरल लोक तँ अपनहि बसि जाएत।

लोरहा-बिच्छा: भूख- सूत्रधारक बाल्यकालक संगी रमकिसना। मुदा आब ओ चरबाही करैत अछि आ सूत्रधार छथि प्रोफेसर। होलीक दिन सूत्रधार द्वारा रंग देबाक प्रयासपर ओकर कहब- मैल-कुचैलमे रंग पकड़बे नहि करत। पेटक चाम चारि दिनसँ जरि रहल छै ओकर। महगी उन्मूलन- मणीन्द्र अपन पिता आ परिवार संगे पटियालाक सड़कपर जा रहल अछि- एक भाषा-भाषीकेँ छोड़ि कऽ सभकेँ मुड़ै-भाटा जेकाँ काटि देल जाइत अछि। मणीन्द्र बचि जाइत अछि, फेर फागुमे महामहिम लग लाशक रंगक बदला दुर्गन्धयुक्त पानिसँ होली खेलाए पहुँचैत अछि, कारण ई बेशी सस्ता छै। कसाइ- बिलट सिंहक जमीन चौकोड़ हेबामे सुरेनमाक जमीन पड़ै छै मुदा ओ तैयार नहि अछि। मारि पड़ै छै। दरोगा पाइ मँगै छै मुदा एस. पी. क ओहिठाम कहलाक बादो काज नहि होइ छै, कारण दरोगा ओकरा पाइ दऽ कऽ बहाल भेल अछि। दहेज- छोट बहिनक द्विरागमन आ ओकरा द्वारा एकटा सलाइ आ एक टीन मटिया तेल लेने बिना सासुर नहि जएबाक गप। पीढ़ीक द्वन्द- नियतिक चक्र आ साहेब राय आ रामदेव रायमे मतभिन्नता आ पिताक नाम रामदेवसँ चतुर्भुज राय कराएब। पहिने, आइ, आ काल्हि- गोनू बाबासँ सूत्रधारक प्रश्न आ ओ लाउर, चाउर आ रिभलबॉल लेल भूत, वर्तमान आ भविष्यमे लोक कानत से गप कहै छथि। प्रतिफल- विज्ञानक भारती-शरत सिद्धांतक प्रतिफल। बेटा कोना होएए, से बेटीक संख्यामे कमी भेल। आ आब स्त्री लेल युद्ध। उपराग- कामो झाक पहिल पत्नी दिबड़ावाली आ दोसर मुरलीवाली। मुरलीवालीकेँ एक बेटा आ तीन बेटी। ओकर बेटा निरंजनकेँ साँप डसि लेलकै, से शिवलिंगकेँ छूबि कऽ पूजा केलासँ आकि सौतिनक हक्कलि डइनपनासँ। कामोक पिता मुसाइ झाक पुतोहु दिबड़ावालीसँ अवैध संबंध। मुरलीबालीक मृत्युपर ओकर आगि देबा लेल ओकर बेटा इन्द्रदेवकेँ लोकसभक कहलापर मुरलीबाली रहस्य खोलै छथि जे अहाँ हुनकर बेटा नहि छिअनि वरन छिअन्हि दी...दीअर! कोउ काहू मगन- सूत्रधार आ संगबए लोकनि टहलैत छथि, तखने एकटा दसटकही सड़कपर चौधरीजीकेँ भेटै छन्हि, ककर ई पाइ हएत-एक ठाम खाधि कएलेपर दोसर ठाम ऊँच हेतैक ने? ऋणखौक- नीलेश गरीब परिवारक, फेर पढ़लक-लिखलक तँ गामक लोक सभ पिताकेँ दवाबमे दऽ विवाह करा देलन्हि- कनियाँ तेहन जे पिताकेँ मारै छल। फेर नीलेशक दोसर जातिमे विवाह करबाक निर्णय आ पड़ोसीक कहब- ई ऋणखौक अछि, पितृऋण बिना उतारनहि मरत।

कथा: शिक्षित मध्यवर्गमे मैथिली भाषा नवम वर्गसँ स्नातक-स्नातकोत्तर धरि मैथिलीकेँ भाषा वा मातृभाषाक रूपमे लेनिहार एहिसँ स्नेह करै छथि। अन्तर्जालपर मैथिलीक आगमनसँ सेहो मातृभाषासँ स्नेह फेरसँ जागल। मैथिलीक पोथीक सुगमतासँ नहि भेटब जाहिमे सरकारी संस्थाक मैथिली पाठ्यपुस्तक सम्मिलित अछि। एहिमे अन्तर्जाल द्वारा सीमित रूपमे हस्तक्षेप भेल अछि। आ एहि सभक परिणामक रूपमे मैथिली लेखकक भीतर हीन भावना (सुपीरियोरिटी कॉम्प्लेक्स सेहो हीन भावनाक रूप अछि) पैसि गेल आ साहित्य सोंगरपर ठाढ़ कएल जाए लागल। वाद-विवाद उत्पन्न कऽ आरोप-प्रत्यारोप आधारित साहित्यक चर्चा प्रारम्भ भेल। पति-पत्नी, जिला-जबार आ पिता-पुत्रक अपन पक्षमे वातावरण तैयार करब आरम्भ भेल। माने ब्लैकमेलिंग आ ब्लैक-मार्केटिंग द्वारा कथा-कविताक पुरस्कार लेल लिखल जाएब। मुदा बुकर आ नोबल साहित्य पुरस्कार प्राप्त साहित्य सेहो कालातीत नहि रहि पबैत अछि,

बहुत रासकेँ तँ लोक मोन रखैत अछि मुदा ढेर रास विस्मृत भऽ जाइत छथि आ पाठक ओकर मूल्यांकन कऽ दैत छथि। मुदा मैथिलीमे खाढ़ीक-खाढ़ी बीति जाइत अछि मुदा पाठकक अभावमे पति-पत्नी, पिता-पुत्र, जिला-जबार आ आब कथाकार-कविक बनल गोल सभ एकर ब्लैकमेलिंगक आधारपर मूल्यांकन करैत अछि। अन्तर्जालक हस्तक्षेप सीमित रहलाक कारण नीक साहित्य, सृजनात्मक साहित्य आ कल्याणकारी साहित्य सोझाँ नहि आबि पाबि रहल अछि, नहि सृजित कएल जा रहल अछि। विवाद कऽ समाचारमे रहएबला कवि-कथाकारकेँ अहाँ प्रश्रय देब कारण ओ ब्लैकमेलिंग कऽ रहल छथि वा धूरा-गर्दामे रहनिहार मानवतावादी कवि-कथाकारकेँ। आ जखन से करब तखने निरर्थक देखाएबला मैथिली साहित्यमे प्राणवायु भरि पाएब।

१२. मैथिलक वर्तमान समस्या

सारांश
सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि।

बीजशब्द: मैथिलक · वर्तमान · समस्या · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “मैथिलक वर्तमान समस्या” विषयक भाषावैज्ञानिक अध्ययन प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे मैथिलक; समस्या; जाए; बान्ह; मैथिल प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर भाषिक संरचना, शब्द-प्रयोग, अनुवाद वा लिपि-विन्यासक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि। आ एहि माइग्रेसनसँ एतए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भऽ गेल अछि।

कारण: १९६७ ई. क अकाल आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन आ फेर १९८७ ई. क बाढ़ि आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन ई सभ मिलि कऽ एकटा आर्थिक संकट उत्पन्न कएल जाहिसँ माइग्रेशन अपन विकट रूपमे सोझाँ आएल आ एकटा सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भेल। आर्थिक स्थिति खराप भेने जातिगत कट्टरता बढ़िते अछि। आ एहि संकट लेल आ एकरासँ निकलबाक लेल मिथिलाक संस्कृतिमे बहुत रास सहायक आ विरोधी तत्व सेहो उपलब्ध अछि। एतुक्का भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता, ई सभटा मिथिलाक इतिहासक अंग अछि। एहिमे राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म, दर्शन आ साहित्य सेहो सम्मिलित अछि। एतए विद्यापति सन लोक भेलाह जे समाजक विभिन्न वर्गकेँ समेटि कऽ राखलन्हि तँ संगहि एतए कट्टर तत्व सेहो रहल।

शिक्षा, जाति-पाति आ स्त्रीक दशा: जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नहि भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तँ ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्रक गण द्वारा एलेक्जेन्डरकेँ कड़गर विरोध सहए पड़लैक। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक जखन सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सँ भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजपुर किला, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकेँ मथए बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताराक मूर्ति आदि शिल्पी कलाक अन्य रूपक चर्चक रूपमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा जे ई कट्टरता बढ़ैत गेल तँ आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भऽ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भऽ गेल जे एक साँझ उपास रहए लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्राब्दी भरि विलुप्त रहलीह से जातिगत कट्टरता (जाति मध्य आन्तरिक अतरीकरण आ दू जाति मध्य- दुनु प्रकारक) कारणसँ। शिक्षाक ह्रास तँ तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन मिथिलासँ निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नहि केनिहारसँ भरल अछि।

बाढ़ि आ अर्थव्यवस्था: मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ सेहो जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ क बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भऽ गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक २००८ ई. क प्रकोप सोझाँ आएल। कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग अछि आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। कोशीपर भीमनगर बैरेज कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल? छहरक बीचमे जे रेत जमा भऽ जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। कोशी अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़ैत अछि आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करैत अछि।

मैथिली भाषा: मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक आधारपर मैथिली सेवी संस्था सभ जे विद्यापति पर्व आ संस्थाक निर्माण, पुरस्कार वितरण कए रहल छथि ओहिमे गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक प्रवेश सीमित अछि मुदा एम्हर ओ बढ़ि रहल अछि। आ ई मैथिलीक लेल एकटा शुभ लक्षण अछि। साहित्यमे सेहो गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लेखक आ पाठक बढ़ल छथि। मीडिया आ शिक्षा व्यवस्था एहि आधुनिक इन्फॉरमेशन सोसाइटीमे अपन हस्तक्षेपसँ मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृति लेल एकटा प्रहार सन अछि मुदा सौभाग्य मिथिला सन टी. वी. चैनल आ नेपालक कान्तिपुर एफ. एम., जानकी एफ. एम. आ रेडियो मिथिला सन रेडियो स्टेशन एहि प्रहारकेँ सीमित रूपमे रोकलक अछि। बाल साहित्यक निर्माण सेहो बढ़ल अछि। अन्तर्जाल सेहो एकभगाह मैथिली साहित्यमे हस्तक्षेप कएलक अछि।

उपाय की होअए? स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा देल जाए। प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बाढिक समस्याक समाधान होअए। दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधन। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भऽ गेल। कमला धारक हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई. सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए! एतए विश्वेश्वरैय्या मोन पड़ैत छथि। हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ

व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ, एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।

दिल्ली अछि दूर एखनो! निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब। स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी. बी एस. ई आ आइ. सी. एस. ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा आ प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए। कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तरपर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।

९३. विदेह सम्पादकीयसँ

सारांश
मोबाइल पर जखन हम मैथिली में गप करै छी तँ हमर सहकर्मी गौरी भोला कहै छिथ – “बड़ मीठ भाषा अछि।” गायत्री श्यंकट कहै छिथ – “अहाँक भाषा मैथिली अछि आ हम सभ अपन बेटीक नाम मैथिली राखै छी।” ऐ मिठासक भितुरका खटास हम हुनका बुझा नै पबै छियैह। २०१२ विभिन्न कारणसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक इतिहासमे मोन राखल जाएत।

बीजशब्द: विदेह · सम्पादकीयसँ · समीक्षाशास्त्र · मैथिली

सारांश · Abstract

ई अध्याय “विदेह सम्पादकीयसँ” विषयक नाट्य-आलोचना प्रस्तुत करैत अछि। विवेचनमे विदेह; सम्पादकीयसँ; मैथिली; श्री; साहित्य प्रमुख केन्द्रक रूपमे उभरैत अछि। मूल सामग्रीमे उपलब्ध उदाहरण, उद्धरण आ तर्कक आधारपर नाट्य-पाठ, पात्र-विन्यास, मंचीय संरचना आ सांस्कृतिक सन्दर्भक परीक्षण कएल गेल अछि, जाहिसँ पाठक विषयक आलोचनात्मक संरचना आ ओकर व्यापक सन्दर्भ दुनू बुझि सकथि।

मोबाइल पर जखन हम मैथिली में गप करै छी तँ हमर सहकर्मी गौरी भोला कहै छिथ – “बड़ मीठ भाषा अछि।” गायत्री श्यंकट कहै छिथ – “अहाँक भाषा मैथिली अछि आ हम सभ अपन बेटीक नाम मैथिली राखै छी।”

ऐ मिठासक भितुरका खटास हम हुनका बुझा नै पबै छियैह।

२०१२ विभिन्न कारणसँ मैथिली भाषा आ साहित्यक इतिहासमे मोन राखल जाएत। ऐ वर्षक शुरुमे चनौरागंज (झंझारपुर) मे बेचन ठाकुर जीक नेतृत्वमे जातिवादी रंगमंचक विरुद्ध समानान्तर मैथिली रंगमंचक “पहिल विदेह मैथिली नाट्य उत्सव” २०१२ क आरम्भमे सम्पन्न भेल। बेचन ठाकुर विगत २५-३० वर्षसँ मैथिली नाटकक निर्देशक रहल छिथ, दर्जन भरि नाटक ओ लिखने छिथ, जे अनेकानेक बेर मञ्चित आ प्रशंसित भेल अछि। ऐ बेरक नाट्य उत्सवक थीम रहए “भारतक नाट्य शास्त्रक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली नाटक आ रंगमंच” । दू दिनक ऐ दिन-रातिक महोत्सवमे जगदीश प्रसाद मण्डलक नाटक “वीरांगना”, बेचन ठाकुरक नाटक “विश्वासघात” आ गजेन्द्र ठाकुरक नाटक “उत्कामुख” मञ्चित भेल। एकर अलाबे नारी सशक्तिकरण/ लोकगाथा आधारित एकाङ्की प्रदर्शन सेहो भेल। मैथिली कवि सम्मेलन भेल आ विदेह सम्मान देल गेल।

समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपे प्रसिद्ध विदेह भाषा सम्मान साहित्य अकादेमी एक जाति विशेषक फर्ज साहित्यक (!) संस्था सभक साहित्य अकादेमी मैथिली विभागपर ४५ वर्षक कर्जाक विरुद्ध प्रतिक्रियाक रूपे सोझ आएल। ४४ सालमे मैथिल ब्राह्मण -३६ बेर, कायस्थ-६ बेर, राजपूत-२ बेर आ गैर सवर्ण- ० बेर ऐ पुरस्कारक प्राप्त कऽ सकला। ब्राह्मणमे नीक लेखक जेना ललित, धूमकेतु, धीरेन्द्र ऐ पुरस्कारसँ वञ्चित रहला आ हरिमोहन झा कऽ ई पुरस्कार जिबैत जी नै देल गेलनि। प्रतिक्रियावादी लेखक सभसँ ऐ पुरस्कारक लिस्ट भरल पड़ल अछि। सुभाष चन्द्र यादव, मेघनाथ प्रसाद, बिन्देश्वर मण्डल, जगदीश प्रसाद मण्डल, निचिकेता आदि गैर ब्राह्मण लेखक जिनका मैथिली साहित्यमे अपार आदर प्राप्त छैह, ब्राह्मणवादी साहित्य अकादेमीक कोपक शिकार छिथ।

मिथिला राज्यक आन्दोलनी लोक सभ द्वारा गुवाहाटीमे विख्याति पर्व (दिसम्बर २०१२) क अवसरपर जगदीश प्रसाद मण्डलकऽ मुख्य अतिथि बनाओल जाएबाक विरोध भेल, जकर घोर भर्त्सना कएल गेल।

विद्यापति विद्यापति मैथिलीक महाकवि छिथ। परम्पराक अनुसार ओ एकटा हाजाम ठाकुर परिवारक छिथ। ज्योतिरीश्वर ठाकुर हुनकर विवरण “वर्ण रत्नाकर” मे केने छिथ आ श्रीधर दास हुनकर पदावलीक उल्लेख उदाहरण सहित “सदुक्ति कर्णामृत” मे केने छिथ। श्रीधर दास आ ज्योतिरीश्वरक परवर्ती संस्कृत आ अवहट्टक लेखक विद्यापतिक उल्लेख मैथिल ब्राह्मणक पञ्जीमे भेल अछि। परन्तु किछु ब्राह्मणवादी संस्था सभ द्वारा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापति कऽ ब्राह्मण बना देबाक आ हुनका “पाग” पहिरा “यज्ञोपवीत संस्कार” करबाक प्रयास मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार करबाक षडयन्त्रक रूपे देखल जा रहल अछि। साहित्यक जगतमे सम्पूर्ण साल ऐपर चर्चा होइत रहल आ ई मामिला सालक अन्तमे भेल “इण्डिया हैबिटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव” मे सेहो उठल। विद्यापति पर्वक माध्यमसँ मैथिल ब्राह्मणक एकटा कट्टरवादी समूह जातिवादी रंगमंचक साथ मिलि कऽ मैथिली पर कर्जाक कोशिशमे लागल रहल आ तँए सामान्य लोक ऐसँ दूर भऽ रहल छिथ।

टैगोर लिटरेचर अवार्ड मैथिलीक लेल पहिल टैगोर लिटरेचर अवार्ड श्री जगदीश प्रसाद मण्डलकऽ “गामक जिनगी” लघुकथा संग्रह पर देल गेल। परन्तु एकर चर्चा दरभंगा सहित मिथिलांचलक कोनो हिंदी अखबार नै केलक, आकाशवाणी दरभंगा सेहो पूर्ण चुप्पी साधने रहल आ अपन जातिवादी चरित्र लोक सभक सोझ राखलक।

गूगल विदेह बुक्स विदेह द्वारा गूगलक सहयोगसँ ४०० सँ बेशी मैथिली किताब गूगल बुक्स पर १००% ब्राउज आ डाउनलोडक सुविधाक संग ऑनलाइन कएल गेल। अंग्रेजी-मैथिली शब्दकोषकऽ कॉमन क्रिएटिव शेयर अलाइक लाइसेन्सक अन्तर्गत रिलीज कएल गेल।

साहित्य अकादेमीमे मैथिली समन्वयकक मनोनयन आ साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक राजनीति साहित्य अकादेमीमे मैथिली समन्वयकक चयनक लेल ६ टा जातिवादी संगठनकऽ साहित्य अकादेमी मान्यता देने अछि। ई संगठन सभ मैथिलीक ८ म समन्वयकक मनोनयन केलक अछि। ई संयोग अछि बा दुर्याग कि आइ धरि एकर सभ समन्वयक मैथिल ब्राह्मण भेल छिथ, ऐ बेर सेहो ई ‘म जारी रहल। युवा पुरस्कार देबामे सभ नियम खतम करैत रेफरी द्वारा नाम देल सभ पुस्तकपर विचार करबासँ मना कऽ देलनि आ एक साधारण पुस्तककऽ ई पुरस्कार देलनि जकर लेखक मूलतः हिंदीमे लिखै छिथ।

की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी? यदि साहित्य अकादेमी आ जातिवादी संस्था सभक वश चलितै तँ उत्तर हँ रहितै। परन्तु समानान्तर विचारधारा आ समानान्तर रंगमंच ऐ धारणाकऽ खण्डित कऽ देलक। ऐ लिंक https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/ पर विदेह मैथिली विहिन कथा, विदेह मैथिली लघुकथा, विदेह मैथिली पद्य, विदेह मैथिली नाट्य उत्सव, विदेह मैथिली शिशु उत्सव, विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना ऑनलाइन उपलब्ध अछि। विनीत उत्पलक आर. टी. आई. क जे उत्तर साहित्य अकादेमी देलक अछि ओ साहित्य जगतकऽ लज्जित करैत अछि। समन्वयक आ ओकर एडवाइजरी बोर्डक सदस्य सभ जइ तरह सभटा असाइनमेन्ट स्वयं आ सर-संबंधीकऽ दऽ देलनि ओ ऐ संस्था सभक ब्राह्मणवादी वृत्तिकऽ सोझ अनैत अछि।

राजदेव मंडल, रामविलास साहु, उमेश पासवान, रामदेव प्रसाद मंडल झा दार, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश मंडल, सुभाष चन्द्र यादव, प्रेमशंकर सिंह, डॉ. उदय नारायण सिंह “निचिकेता”, मेघनाथ प्रसाद, संदीप कुमार साफी, विन्देश्वर ठाकुर आदि लेखक निःस्वार्थ भावसँ मैथिलीकऽ प्राणवायु दऽ रहल छिथ।

पागक राजनीति ब्राह्मणवादी पागक राजनीतिकऽ तखन बड़ पैघ धज्जा लागल जखन खरौआमे महाकवि लालदास जयन्तीक अवसरपर पहिल बेर आयोजक लोकिन ई मानलनि जे ई जाति विशेषक परिधान मिथिला मैथिलीक मंचपर प्रयोग नै कएल जाएबाक चाही आ ओ सएह केलनि। एकरा समानान्तर विचारधाराक बड़ पैघ विजयक रूपे देखल जा रहल अछि।

प्राथमिक आ मध्य विद्यालयमे शिक्षाक माध्यम मैथिली माध्यमसँ सुप्रीम कोर्टक निर्णयक बादो अखनो मिथिलामे शिक्षाक माध्यम मैथिली नै अछि। ऐ संबंधमे एकटा बैठक निमलीमे भेल जइमे जगदीश प्रसाद मण्डल, राम विलास साहु, राजदेव मण्डल, वीरेन्द्र यादव आदि उपस्थितिमे राहुल कुमार जीक संयोजकत्वमे विदेह विचार गोष्ठी सम्पन्न भेल आ हस्ताक्षर अभियान भेल। परन्तु ई चिन्ता सेहो व्यक्त कएल गेल जे मैथिली साहित्यक वर्तमान जातिवादी आ प्रतिक्रियावादी सिलेबसकऽ बदलल जाए, आततायी जातिवादी जमींदारक जीवनी कोन गुलाम मानसिकताक अन्तर्गत सिलेबसमे राखल गेल अछि? कोसी पुलक उद्घाटनक अवसर पर मुख्यमंत्री नीतीश कुमारकऽ ऐ संबंधमे स्मारक पत्र देल गेल।

एकर अलाबे विदेह गोष्ठी (परिचर्चा/ प्रैक्टिकल लेबोरेटरी प्रदर्शन) साहित्यक विभिन्न आयामपर सम्पन्न भेल।

नेपाल मे मैथिली डेनमार्क एंबेसीक सहयोगसँ “बुधियार छौड़ा आ राक्षस” (रमेश रंजन लिखित नाटक) कएक दर्जन स्थानपर मञ्चित भेल। विद्यापति पुरस्कारक घोषणा भेल, दू लाखक पुरस्कार रामभरोस कापड़ि झमरकऽ भेटलनि।

रंगमंच आयोजनामे जनकपुरमे मैथिली नाटक तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम सम्पन्न भेल। सांस्कृतिक कार्यक्रममे गीत एवं नृत्य प्रस्तुत भेल।

जानकी नवमी पर जनकपुरमे बम विस्फोट भेल, झगड़ू मण्डल सहित कई संस्कृतिकर्मी हत्या भेलनि। परमेश्वर कापड़ि घाइल भेला।

स्वास्थ्य महिला स्वास्थ्य परिवार- स्वास्थ्य समाज मूल नाराक संग यदुकोहा आ माची झिटकिहयामे सड़क नाटक प्रदर्शन भेल। परिवार नियोजनपर आधारित जंगलमे मंगल नामक मैथिली भाषाक सड़क नाटक पिसिआइ नेपालक सहयोगसँ चित्रित रंगमंच जनकपुर प्रदर्शित केलक।

युवा नाट्यकला परिषद परवाहा देउरी द्वारा बिमली शरद २०६९ क पूर्व सत्रमे अन्तरराष्ट्रीय मैथिली नाटक महोत्सव आयोजित भेल, उद्घाटन गणतन्त्र नेपालक पहिल राष्ट्रपति डा. रामवरण यादव केलिन। महोत्सवमे नेपाल आ भारतक आठ नाट्य समूह भाग लेलक।

निचिकेता क “एक छल राजा” क मञ्चन सरस्वती पूजनोत्सव तथा वसन्त पञ्चमी मेला २०६८ क अवसर पर तिलाठी मे भेल।

हम जखन बच्चा रही तँ गाममे “देशी कौआ” आ “कार कौआ” दुनू देखाइ पड़ैत छल, “कार कौआ” चकमक आ कर्कश, “देशी कौआ” हलुक रंगक आ मधुर आवाजबला। लोक ककरो कर्कश बोलीकऽ सुनि बजै छला- “केना कार कौआ सन बजै छै।” एकहर किछु बखतसँ “देशी कौआ” विलुप्त भऽ गेल अछि, लोक सभकऽ एकर दुख छै। चार दिन कार कौआक साम्राज्य ख्यात अछि।

टॉमस ट्रांस्ट्रोमर स्वीडनक कवि टॉमस ट्रांस्ट्रोमरकऽ २०११क साहित्य लेल १.५ मिलियन डॉलरक नोबल पुरस्कार देबाक घोषणा कएल गेल अछि। स्वीडिश एकेडमी कहलक “ओ अपन घनघोर पारदर्शी बिम्बसँ सत्यक एकटा नव द्वारक परिचय करेलनि” । हुनकर पोथी सबहक अंग्रेजी अनुवाद रहनि “द ग्रेट एनिग्मा”, “द हाफ फिनिश्ड हेवन”, “द डिलीटेड वर्ल्ड” । ओ असी बरखक छिथ, १५ सँ बेशी कविता संग्रह लिखने छिथ जे अंग्रेजी आ ६० आन भाषामे अनूदित भेल अछि। हुनकर जन्म स्टॉकहोममे भेलनि। ओ मनोचिकित्सक रहिथ आ हुनकर कवितामे मानवताक गहन मनोवैज्ञानिक विश्लेषण भेटैत अछि। हुनकर कविता गूढ़ मुदा सोझ होइत अछि। हुनकर कविता वैयक्तिक आ सार्वजनिक दुनू अछि। हुनकर कविता एहेन गूढ़ नै होइए जइपर चिन्ता करैत रहू, वरन ओ धरातलसँ अस्तित्वक उच्च शिखर दिस लऽ जाए। स्वीडनक नहर शीतकालक विवरण, ऋतुक लय, आ प्रकृतिक सौन्दर्य वातावरणक अद्भुत विवरण हुनकर कवितामे भेटैत अछि। हुनकर माता स्कूल शिक्षिका आ पिता पत्रकार रहिथन आ ओ साहित्य, इतिहास, धर्मशास्त्र आ मनोविज्ञान पढ़ने छिथ। १९९० सँ ओ एकटा आघातक बाद बजबामे सक्षम नै छिथ। १९९३ क बाद अमेरिकाक कोनो लेखककऽ साहित्यक नोबल नै भेटल छै। १९७४ क बाद आब जा कऽ कोनो स्वीडिशकऽ ई पुरस्कार भेटल छै। नोबल समिति आब गैर यूरोपीय भाषाक बेशी साहित्यक पोथीपर विचार करत।

विदेह साहित्य उत्सव २०१२ विदेह साहित्य उत्सव २०१२ आ विदेह साहित्य सम्मान समारोह १४ जनवरी २०१२ कऽ सम्पन्न भेल जतऽ विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार देल गेल आ कवि सम्मेलन सम्पन्न भेल। लोकक स्वत:-स्फूर्त सहयोग आ सहभागिता विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक सफलताक रूपे मोन राखल जाएत।

मैथिली मुस्लिम आ गैर सवर्ण (आब सवर्ण सेहो) सरकारी-मैथिलीसँ दूर भागल आ उर्दू-हिंदीक संग गेल। मुस्लिमक संग ई तमिल, मलयालम आ बंगालीक (आ कश्मीरीक) अतिरिक्त सभ भाषामे भेल। कश्मीरमे तँ लोक बजैए कश्मीरी आ पढ़ाओल जाइ छै उर्दू- (बिहार मे जेना पढ़ाओल जाइ छै हिंदी), मुदा एकटा छोट राज्य सिक्किममे नेपालीक दबदबा छै मुदा तकर अतिरिक्त लेपचा/ भुटिया सेहो ओ पढ़बै छै, ऐ छोट भाषा सभकऽ कोनो खतरा नै छै, लेपचा लिपि सेहो सुरक्षित छै आ नेपाली भाषाकऽ ऐसँ बल भेटै छै। ओकर कारण अछि सिक्किमक भाषायी उदारता जे बिहारमे (आइये नै जमींदारीये राजसँ) मैथिली आ मिथिलांचलक विरुद्ध अछि/ छल। मुदा बंगालमे दार्जिलिंगमे (जे बंगालमे छै आ बंगालमे दार्जिलिंग छोड़ि शेष ठाम बंगाली आ दार्जिलिंगमे नेपाली भाषाक दबदबा ओहिना छै जेना बिहारमे हिंदीक दबदबा छै), से उदारता नै छै।

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११ दिनांक ९ जुलाई २०११ कऽ सायं ४.४५ बजेसँ राति ७.४५ बजे धरि विदेह द्वारा आयोजित पहिल समानान्तर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११ निमली (जिला सुपौल) मे सम्पन्न भेल। साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजित कोलकाता मैथिली कवि सम्मेलन मे २१म शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह “अम्बरा” क लेखक राजदेव मंडल आ आन श्रेष्ठ कविकऽ नै बजाओल गेल आ ने कोनो सूचना देल गेल। साहित्य अकादेमीक प्रवेश निषेधक ऐ कृत्यक सुधार लेल विदेह द्वारा पहिल समानान्तर साहित्य अकादेमी मैथिली कवि सम्मेलन २०११ दिनांक ०९ जुलाई २०११ कऽ निमली (जिला सुपौल) मे असफल दास साहू समाज महिला इंटर महाविद्यालय परिसर (निमली- जिला सुपौल वार्ड नम्बर ७) मे आयोजित कएल गेल। ऐ मे ककरो प्रवेश निषेध नै छल। समारोहक उद्घाटन हरिनारायण कामत आ श्री रामजी मण्डल द्वारा दीप प्रज्वलित कऽ कएल गेल। समारोहक अन्तमे श्री राजदेव मण्डलक २०१० ई. मे प्रकाशित कविता संग्रह “अम्बरा”, जे २१म शताब्दीक पहिल दशकक सर्वश्रेष्ठ मैथिली कविता संग्रह मानल जा रहल अछि, क लोकापर्ण सम्मिलित पाँच गोटे (डॉ. बचेन्द्र झा, श्री जगदीश

प्रसाद मण्डल, श्री रामजी प्रसाद मण्डल, श्री रौशन कुमार गुप्ता, श्री हरिनारायण कामत, श्री नन्द विलास राय) द्वारा सम्पन्न भेल। ऐ काव्य संग्रहमे कविता पाठ केलनि- १. श्री राधाकान्त मण्डल (स्वागत गीत), २. उमेश पासवान (गेलहे घर छी, हाल, कबाड़ी), ३. श्री रामकृष्ण मण्डल छोटू (माइ), ४. श्री रामदेव प्रसाद मण्डल “झाड़ूदार” (५ टा गीत), ५. श्री नन्द विलास राय (इन्दिरा आवास), ६. श्री कपिलेश्वर साहु (कोसी), ७. श्री रामविलास साहु (३ टा कविता), ८. श्री उमेश मण्डल (२ टा कविता), ९. श्री राजदेव मण्डल (३ टा कविता), १०. श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (२ टा कविता) । सभ कविताक बाद कवितापर दुटपी समीक्षा सेहो भेल। कवि-सम्मेलनक अध्यक्षता श्री डॉ. बचेन्द्र झा केलिन आ कार्यक्रमक संचालन श्री दुग्धनन्द मण्डल केलिन।

ऐ कवि सम्मेलनक विशेषता ई रहल जे ऐ इलाकामे ऐ तरहक कार्यक्रम पहिले बेर आयोजित भेल, से श्रोता लोकिनक कहब छलनि। मुख्य अतिथि श्री जगदीश प्रसाद मण्डल कार्यक्रम बीचमे कहलनि जे ऐ कार्यक्रमकऽ एतेक हड़बड़ीमे आयोजित करबाक कारण ई भऽ गेल जे आइ साहित्य अकादेमी द्वारा कोलकातामे मैथिली कवि गोष्ठी कराओल जा रहल अछि, जे हमरा सभक लेल लाजमीक बात छिक जे हमरा-अहाँक गाममे होएबला कार्यक्रम कोलकातामे होइए आ हमरा-अहाँकऽ बुझलो नै अछि।

लोक सभ ईहो कहलनि जे आइ धरि ऐ इलाकामे कार्यक्रम सभक संचालन हिंदीमे होइ छल, ई पहिल बेर भेल अछि जे कोनो कार्यक्रमक संचालन ऐ इलाकामे मैथिलीमे भेल।

राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक मैथिली फेडोरा प्रोजेक्ट/ फ्यूल प्रोजेक्ट http: //maithili. sourceforge. net/ http: //ansiss. org/ http: //fedoraproject. org/ https: //fedorahosted. org/fuel/wiki/fuel-maithili http: //l10n. gnome. org/teams/mai http: //translate. fedoraproject. org/languages/mai

राजेश रंजन आ संगीता कुमारीक मैथिली स्पेलचेकर http: //extensions. services. openoffice. org/project/dict-mai

मैथिलीमे सम्पूर्ण कंप्यूटर सहित ऐ प्रसिद्ध ब्राउजरकऽ मैथिली जनसमूहक उपयोग लेल एक स्वैच्छिक समूह (मधेपुराक राजेश रंजन आ संगीता कुमारी) तैयार केलनि।

http: //www.mozilla.org/en-US/firefox/all.html

आब फायरफॉक्सक अन्तिम मैथिली वर्शन जारी- संगीता कुमारी आ मैथिली टीमक प्रयाससँ भेल ई सफल, फायरफॉक्स-मोजिला अपन जालवृक्ष...

विदेह गोष्ठी (६ आ ७ दिसम्बर २००८ आ फेर १३ आ १४ दिसम्बर २००८ / फेर ५ आ ६ दिसम्बर २००९ आ १२ आ १३ दिसम्बर २००९ / फेर ४ आ ५ दिसम्बर २०१० आ ११ आ १२ दिसम्बर २०१० / फेर अन्तिम परिचर्चा १७ आ १८ दिसम्बर २०११ आ २४ आ २५ दिसम्बर २०११ क मैथिली लेल गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट, गूगल लैंगुएज टूल, कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिक यूनिवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक आवेदनक स्वीकृतिपर आ विकिपीडिया मैथिली पर परिचर्चा आ तकर सन्दर्भमे प्रैक्टिकल लेबोरेटरीक प्रदर्शन निमली, जिला सुपौलमे भेल। ओतए ढेर रास सम्बन्धित एक्सपर्ट उपस्थित रहिथ। तकर बाद किछु आलेख आ रचना डाक आ ई मेलसँ सेहो आएल। तकर संक्षिप्त विवरण नीचाँ देल जा रहल अछि।)

गूगल ट्रांसलेटर टूलकिट आब सोर्स आ टार्गेट दुनू भाषाक रूपे मैथिलीक स्थान देलक, देखू http: //support. google. com/translate/toolkit/bin/answer. py? hl=en&answer=147837 आ http: //translate. google. com/toolkit/list? hl=en#translations/active

विदेहक विरोधक बाद गूगल बिहारी नाम कोनो भाषा नै हेबाक गप मानि लेने अछि, “विकिपीडिया मैथिली” क आवेदन पहिनहिये विदेह द्वारा देल गेल आ पहिनहिये बिहारी नाम कोनो भाषा नै हेबाक गप विकिपीडिया मानि लेने छल।

गूगल मैथिली: गूगल लैंगुएज टूल- http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

एतए अंग्रेजीमे भाषामे Bihari चुनू आ अपन योगदान गूगल ट्रांसलेट लेल क, आ कएल सम्पादन बदल्बा काल कारण मे (अंग्रेजीमे) “बिहारी” नाम कोनो भाषा नै हेबाक चर्चा क; ऐ लिंकपर अनुवाद क; गूगल एकाउंटसँ लॉग इन केलाक बाद।

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh

ऐ लिंक http: //www.google.co.in/language_tools? hl=en क मैथिलीक उपलब्धता लेल चेक करैत रहू।

विदेहक एकटा आर सफलता- गूगल सर्च इंजिन आब मैथिलीमे- पहिने गूगल एकरा बिहारी भाषा मानै छल, मुदा विदेहक विरोधक बाद गूगल मानि लेलक जे मैथिली भाषाक अलग सर्च इंजिन देल जाए। विदेहक विरोधक बाद विकिपीडिया ई पहिनहिये मानि लेने अछि।

https: //www.google.com/webhp? hl=bh अछि लिंक।

[गूगल कंपनी “बिहारी” नामसँ सर्च इंजिनक आरम्भ केलक, मुदा बिहारी नाम कोनो भाषा अछि नै। एक गोटे बिहारीक अनुवाद अंगिका कऽ देलनि (जेना विकिपीडियामे bh कोडमे बिहारी भाषाक बदला भोजपुरी कियो कऽ देलनि) आ से गूगल अंगिका कऽ कए सर्च इंजिन आबि गेल। फेर विदेहक विनीत उत्पल पत्र लिखलनि आ विदेह द्वारा समस्त अनुवाद वॉलन्टीयर रूपे कएल गेल, लोक सभसँ अपील कएल गेल मुदा बाहरी लोकक योगदान शून्य रहल, जे एकाध केबो केलनि से रोमनमे, ओकरा ठीक कएल गेल। आब गूगल मैथिली रूपे सर्च इंजिन देखा रहल अछि, मुदा अखनो ढेर रास काज बाकी अछि, अखनो विकिपीडिया/गूगलमे bh अछिये आ ऐ कोडक हटेबा लेल प्रयास कएल जा रहल अछि।- ऐ विषयपर विदेह गोष्ठीक चर्चा देखू http: //esamaad. blogspot. in/2012/01/blog-post_08. html लिंकपर।]

अनुवाद पूर्ण भेलाक बाद मैथिली एतऽ आओत: http: //www.google.com/language_tools? hl=bh http: //www.google.com/language_tools

VINIT UTPAL’ s LETTER- http: //groups. google. com/group/google-translate-general/browse_thread/thread/65656d86716ddf18/a9bdfbc9eac5a7a1? lnk=gst&q=maithili#a9bdfbc9eac5a7a1

सूचना: १. कैथी आ मिथिलाक्षर दुनू लिपिक यूनिवर्सल कैरेक्टर सेट (यूनिकोड) मे एनकोड करबाक अंशुमन पाण्डेय द्वारा देल आवेदन स्वीकृत भऽ गेल अछि। आब ई दुनू लिपिक यूनिकोड फॉन्ट बनेबाक क्रिया चालूमे लागि गेल अछि आ जखन एकर सभक बेर एतै ऐ दुनू लिपिक आधारभूत फॉन्ट बनेबाक क्रिया शुरू भऽ जाएत। मिथिलाक्षरक आधारभूत फॉन्टक नाम तिरहुता रहत (जेना देवनागरीक आधारभूत फॉन्टक नाम मंगल आ बंगालीक आधारभूत फॉन्टक नाम वृन्दा अछि) । मिथिलाक्षरक फॉन्ट लेल तेसर बेर संशोधित आवेदन देल गेल रहए, दोसर आ तेसर आवेदनमे विदेहक योगदानक विस्तृत चर्चा भेल अछि, यथा- [Figure 11: Excerpt from a Maithili e-journal published as PDF (from Videha 2011: 22; Videha: A fortnightly Maithili e-journal. Issue 80 (April 15, 2011), Gajendra Thakur [ed]. http: //www.videha.co.in/. “Gajendra Thakur of New Delhi graciously met with me and corresponded at length about Maithili, offered valuable specimens of Maithili manuscripts, printed books, and other records, and provided feedback regarding requirements for the encoding of Maithili in the UCS.”-Anshuman Pandey.]

यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक दिल्ली कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण डॉ. रमानन्द झा रमण जी द्वारा यूनिकोड पर साहित्य अकादेमीक कथागोष्ठीमे पर्चा वितरण कएल गेल। ऐसँ मात्र ई स्पष्ट भेल जे पर्चा लिखनिहारक नै ये यूनिकोडक विषयमे कोनो जानकारी छैह आ नै ये वेबटन वा यूनिकोड दुनू फॉन्टक निर्माणक कोनो प्रारम्भिक ज्ञान छैह। हँ ऐ पर्चाक ओइ सभ लोक लेल महत्त्व छै जे सीखए चाहै छिथ जे पूर्वग्रहपूर्ण आ पक्षपातपूर्ण मैथिली साहित्यक इतिहास कोना लिखल जाए। ऐसँ पहिने चेतना समितिक स्मारिकामे यूनिकोड लेल चेतना समितिक योगदानक चर्चा देखैत छी! तिरहुता यूनिकोड आवेदनकर्ता अंशुमन पाण्डेय जखन पटना गेल रहिथ तँ हम हुनका कहने रहियैह जे विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरक दोकान छैह, ओतऽ सँ अहाँ मैथिली किताब कीन सकै छी, मुदा दू तीन दिन ओ दोकान आ समिति बन्द रहलाक कारण ओतऽ सँ घुरि गेला, बादमे ओतए एक गोटे कहलकि�ह जे सभ दिन अहाँ अबै छी, से ई समिति अखन कमसँ कम १४-१५ दिन आर बन्द रहत कारण दू रूपमे झगड़ा-झाँटी भऽ गेल छै। ई अनुभव लऽ कऽ ओ घुरल रहिथ आ से समिति अपन स्मारिकामे यूनिकोड लेल ओ जे योगदान देलक तकर चर्चा करैत अछि! गोविन्द झा जीक पता मँगलापर एक गोट विद्वान (!) हुनका कहलिखैह जे धुर ओ की बतेता, आ गोविन्द झा जीक पता नै देलिखैह आ तखन दोसर ठामसँ हुनका पता उपलब्ध करबाओल गेल।

सूचना: २. विकिपीडिया मैथिली: मीडियाविकीक २६०० संदेश अंग्रेजीसँ मैथिलीमे विदेहक सदस्यगण द्वारा अनूदित कऽ देल गेल अछि। आब http: //translatewiki. net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai ऐ लिंकपर Group मे जा कऽ ड्रॉपडाउन मेनूसँ अ-अनूदित मैसेज अनूदित क। जँ अहाँ विकिपीडियाक ट्रांसलेटर नै छी तँ http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator ऐ लिंकपर मैथिलीमे ट्रांसलेट करबाक अनुमतिक लेल अनुरोध दियौ, ऐ सँ पहिने ओतै ऊपरमे दाहिना कात लॉग-इन (जँ खाता नै अछि तँ क्रिएट अकाउंट) कऽ आ

प्रेफरेन्समे भाषा मैथिली लऽ अपन प्रेफरेन्स खाताक लिंकक इलिक कऽ अपन प्रेफरेन्स खाता पमा बनाउ। किछु कालमे अहाँक ट्रांसलेट करबाक अनुमति भेट जाएत। तकरा बाद अनुवाद आरम्भ क।

सूचना ३: TWITTER IN MAITHILI लिंक क: http: //translate. twttr. com/welcome आ नीचाँ जाउ [Don' t see your language? We' re continually reviewing the list of languages we support, and would love your feedback] – फीडबैक लिंक क आ मैथिली लेल अधिकसँ अधिक संख्यामे आवेदन क, कारण सेहो निर्धारित स्थानमे लिखू।

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपे प्रस्तुत) बाल साहित्य लेल विदेह सम्मान २०१२ श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जी क हुनकर बाल-प्रेरक विहिन कथा संग्रह "तरेगन" लेल देल जा रहल अछि। ई पुरस्कार विदेह नाट्य उत्सव २०१३ क समारोहमे देल जाएत। "तरेगन" क सभसँ बेशी वोट भेटलै। तीनटा पोथी १.जगदीश प्रसाद मण्डलक तरेगन, २. जीवकान्तक "खिखिरक बीअरि" आ ३.मुरलीधर झा क "पिलपिलहा गाछ" क विदेह www.videha.co.in पर भऽ रहल ऑनलाइन वोटिंगमे राखल गेल छल। विशेषज्ञक मतानुसार "पिलपिलहा गाछ" मे बहुत रास कथा अछि जकरा बाल कथा नै कहल जा सकैए, तइ दुआरे ऐ पोथीक लिस्टसँ हटा देल गेल कारण ई पुरस्कार बाल साहित्य लेल अछि, ओनाहितो ऐ पोथीक सभसँ कम वोट भेटल रहै। ऐ पोथी सभक अतिरिक्त आन पोथी सभपर विचार नै कएल गेल कारण ओ सभ पोथीक आकारक नै वरन् बुकलेटक आकारक छल।

टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ साहित्य अकादेमीक टैगोर लिटरेचर अवार्ड २०११ मैथिली लेल श्री जगदीश प्रसाद मण्डलक हुनकर लघुकथा संग्रह "गामक जिनगी" लेल देल गेल। कार्यक्रम कोचिमे १२ जून २०१२क भेल।

मैथिली लेल विवादक अन्तक कोनो सम्भावना नै देखबामे आबि रहल अछि। ऐ पुरस्कारक शॉर्टलिस्ट बनेबा लेल एकटा तथाकथित साहित्यकारक चुनल गेल जे प्राप्त सूचनाक अनुसार जातिक आ संकीर्णताक आधारपर पोथीक नाम देलनि जइमे नै ये निचिकेताक पोथी रहए, नै ये सुभाष चन्द्र यादवक आ नै ये जगदीश प्रसाद मण्डलक; संगे ई शॉर्टलिस्ट बनौनिहार तथाकथित साहित्यकार अजित आजाद विदेहक सहायक सम्पादक मुन्नाजी क कहलनि जे जगदीश प्रसाद मण्डलक ऐ जिनगीमे टैगोर साहित्य पुरस्कार नै देल जाएति�ह! । रेफरी जखन ७ टा पोथीक नाम पठेलनि तखन ओइमे चन्द्रनाथ मिश्र "अमर" क अतीत मंथन सेहो रहए जखन कि ओ पोथी निर्धारित अवधि २००७-२००९ मे छपले नै अछि, तँ कि बिनु देखने पोथी अनुशंसित कएल गेल? ऐ तरहक शॉर्टलिस्ट बनैनिहार आ बिनु पढ़ने पोथी अनुशंसित केनिहार रेफरीक साहित्य अकादेमी चिन्हित करए, आ नाम सार्वजनिक कऽ स्थायी पसँ प्रतिबन्धित करए, से आह; तखने मैथिलीक प्रतिष्ठा बचल रहि सकत। एतए ईहो तथ्य अछि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक समन्वयक श्री विद्यानाथ झा विदित अखन धरि नै पुरस्कार भेटबाक सूचने आ नै पुरस्कार लेल बधाइये श्री जगदीश प्रसाद मण्डलजी क देलनि अछि जखनिक मण्डल जी पुरस्कार लऽ कऽ घुरि कऽ आबियो गेल छिथ। संगेह टैगोर साहित्य पुरस्कार मैथिली लेल पहिल बेर श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक देल जाएबा संबंधमे दरभंगा आकाशवाणी कोनो प्रकारक सूचना प्रसारित नै केलक आ दरभंगा, मधुबनी आदि हिंदी समाचार-पत्र सेहो ऐ संबंधमे कोनो समाचार प्रकाशित नै केलक जखनिक देशक सभ राष्ट्रीय अंग्रेजी पत्र एकर सूचना बिनु कोनो अपवादक प्रकाशित केलक। साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक, आकाशवाणी दरभंगाक आ दरभंगा-मधुबनीक हिंदी समाचार पत्रक पत्रकार लोकिनक संकीर्ण जातिवादी चेहरा नीक जेकै सोझ आबि गेल। श्री जगदीश प्रसाद मण्डल जीक "गामक जिनगी" मैथिली साहित्यक इतिहासक सर्वश्रेष्ठ लघु कथा संग्रह अछि। जगदीश प्रसाद मण्डल जीक बधाइ।

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग मौर कोढ़िलाक बनैत अछि आ पागसँ फराक अछि। कर्ण कायस्थमे सेहो सिद्धान्त कुमरम आदिमे मात्र पाग पहिरि कऽ विधि होइत अछि, ओहो सभ बियाह करऽ पाग नै मौर पहिरि कऽ जाइ छिथ। पूर्णियाक ब्राह्मणमे नव-विवाहिता बरसाइतमे मौर पहिरि कऽ वटवृक्ष धरि जाइ छिथ। पाग मात्र आ मात्र मैथिल ब्राह्मणक बियाहक विधि-बाधक प्रतीक अछि। विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठाकुर विद्यापति कृत लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छिथ। हमर उद्देश्य मैथिली पदावली बला विद्यापतिसँ अछि, हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हमर विद्यापति" बना लेल गेल। ई तखन नै भेल जखन विदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बखत गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिक जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासक पदावलीक अपन बना लेलक मुदा बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम १८७५ ई. मे कहलनि जे विद्यापति मिथिलाक कवि छिथ आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलनि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक कवि छिथ आ जखन ई तथ्य सोझ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल। राजकृष्ण मुखोपाध्याय जइ विद्यापतिक मिथिलाक कहने रहिथ ओ पदावलीक विद्यापतिक सन्दर्भमे छल, संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति ठाकुरः क बंगाल कहियो अपन नै कहने छल। ज्योतिरीश्वरक संस्कृत धूतसमागम नाटक आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक मध्य देल मैथिली गीत सेहो पदावलीक पुरान

परम्पराक द्योतक अछि आ ऐ दुनू लेखकपर मैथिली पदावलीक प्रभाव देखबैत अछि। फेर मिथिलाक विद्वानक सोह एलनि आ विद्यापतिक संस्कृत-अवहट्ट ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम आ विद्यापति नाम पत्रीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल, एतऽ रमानाथ झाक पत्रीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नुकसान पहुँचेलक। फेर अनचोहे पाग पहिरा कऽ (मिथिला संस्कृतिक परिषद- ई संस्था भारतक स्वतन्त्रताक बाद विद्यापतिक पाग पहिरा कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक) विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) क "हमर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। मुदा कबीर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पत्रीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छैह (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए। पूर्णियामे ग्रामदेवताक पूजामे हम गेल छी आ राम ठाकुर (भगवान) क देवता रूपे ढेपाबला खेतमे हम देखने छी, किए जोति देने रहै। मिथिलासँ छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेशमे बरही (काष्ठकार) मिथिलासँ गेला तँ मैथिली भाषी हेबाक कारण लोक हुनका झाजी कहए लागल, आ ओ सभ आब झा टाइटिल रखै छथि। बंगालक मालदह जिलामे ४-५ गाममे मैथिल ब्राह्मणक टाइटिल ओझा छै, आ अलीगढ़मे मैथिल ब्राह्मण (प्रजगढ़ मैथिल) क शर्मा। पत्रीमे कतेक विद्यापतिक विवरण उपलब्ध अछि, आरम्भक कोनो विद्यापतिमे झा आ ठाकुर नै लागल छै (पता नै रमानाथ झाक कोना भेटि गेलनि!) ।

विद्यापतिक कोनो पदावलीक रचनामे अपन संस्कृत/ अवहट्ट लेखक हेबाक चर्चा नै केने छथि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्टक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहिथ) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिमे किए नै अछि? संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापति तँ सर्वहारासँ घृणा करै छथि आ लिखित रूपे कठोर ब्राह्मण छथि। मुदा पदावलीक विद्यापति तँ निश्चल छथि, किछु कठोर पद कठोर ब्राह्मणवादी सम्पादक लोकिन द्वारा घोषित कएल गेल अछि (हायगार्ड रूपे) । पिआ देसान्तर (विद्यापतिक विदेशिया) क कन्सर्ट आब सुधीगणक समय अछि आ मैथिल विदेशिया लोकिनक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अपित अछि। कि ई दर्द अवहट्ट आ संस्कृतक विद्यापतिमे छैह?

मैथिली प्रतिभा पुरस्कारसँ ७ गोटे राजिबराजमे सम्मानित मैथिली कवि परिषद (मैथिली साहित्य परिषदक शाखा) द्वारा ई पहिने मैथिली बाल प्रतिभा पुरस्कार रूपे देल जाइ छल। ई पुरस्कार मैथिली कवि परिषदक अध्यक्ष श्री महेन्द्र मण्डल बनबारी द्वारा आरम्भ कएल गेल रहए। ऐ बेरसँ एकर नाम मैथिली प्रतिभा पुरस्कार राखल गेल अछि। कवि सागर वीर कादरी, रेडियो नाटक कलाकार जीबछ दास, भूपेन्द्र मण्डल, गायक देवेन्द्र साह सोनी आ शिवशंकर यादव, मैथिली संगीतक क्षेत्रमे राम अधीन साह आ प्रीति अधिकारीक ई पुरस्कार देल गेलनि।

सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत-बिगड़ैत" सुभाष चन्द्र यादवक "बनैत-बिगड़ैत" सँ जातिवादी मानसिकताक मैथिली साहित्यकारक कंक कारण स्पष्ट अछि। सुभाष चन्द्र यादव जे कम्युनिटी सँ आबै छथि ओकरा धोखा नै दै छथि, ओकर समस्या, ओकर भाषा लेल संघर्षरत छथि, समझौता नै करै छथि, आइडियोलोजीमे स्थिरता छैह (जे तारानन्द वियोगीमे नै छैह), आ सएह कारण अछि जे ओ ओइ जातिवादी मानसिकताक मोहन भारद्वाज, योगानन्द झा, रामदेव झा आदि कोपक शिकार छथि (जखन कि तारानन्द वियोगी आ महेन्द्र नारायण राम स्वीकृत) । यएह कारण अछि जे जखन मैथिली लेखक संघमे सुभाषचन्द्र यादवक "बनैत बिगड़ैत" पर परिचर्चा आयोजित भेल तखन अशोक आ तारानन्द वियोगी अपन आलेख रखबाक हिम्मत जुटेलनि मुदा योगानन्द झा आ मोहन भारद्वाज मौन धारण केने रहलाह (नवेन्दु कुमार झा ओइ परिचर्चामे उपस्थित रहिथ) । मुदा जखन कबिलपुरक ब्लैकमेलर सभक पत्र "विद्यापति टाइम्स" हम देखल' तँ चकित रहि गेल'- एकटा हेडिंग रहै - "घरदेखियासँ आगू नै बढ़ि सकला बनैत-बिगड़ैत केर लेखक- मोहन भारद्वाज"!!! -मैथिली लेखक संघक परिचर्चाक रिपोर्ट!!! योगानन्द झाक घृणित मानसिकता सोझ आएल छल हमरा लग। मोहन भारद्वाज ओइ खबरिक आइ धरि खण्डन नै केलिन, माने हुनकर सहमतिसँ ई झूठ प्रकाशित भेल। घर-बाहरमे आ मिथिला दर्शनमे कमल मोहन चमूक "महेन्द्र मलिंगिया" आ "मोहन भारद्वाज" सन जातिवादी मानसिकताक लोक लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार वकालत जखन लगातार आरम्भ भेल तखन अनायास हमरा "विद्यापति टाइम्स" मोन पड़ि गेल आ पूरा साजिश सोझ आबि गेल। कि ई सुभाष चन्द्र यादवक बनैत-बिगड़ैतक विरुद्ध साजिश नै अछि? जखन निचिकेताक "नो एंट्री मा विश्व" क विरुद्ध अमरेश पाठक, चन्द्रनाथ मिश्र अमर आ मायानन्द मिश्र एकजुट भऽ गेला आ प्रतिक्रियावादी कवि उदयचन्द्र झा विनोदक पिछला साल अकादेमी पुरस्कार दिया देल गेल तखनो सभ किछु स्पष्ट छल। पढ़ू बनैत-बिगड़ैत http: //sites. google. com/a/shruti-publication. com/shruti-publication/Home/Banait_Bigrait_SubhashChandraYadav. pdf? attredirects=0

३ राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ (सुभाष चन्द्र यादव) जे साहित्य अकादेमी द्वारा रामदेव झा आ मोहन भारद्वाजक कृपासँ प्रकाशित नै भऽ सकल।

https: //docs. google. com/a/videha. com/viewer? a=v&pid=sites&srcid=dmlkZWhhLmNvbXx2aWRlaGEtcG90aGl8Z3g6NDNiMmVhYThlOTNiMDA5Zg

राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ (सुभाष चन्द्र यादव) download link https: //sites. google. com/a/videha. com/videha-pothi/Home/Rajkamal_Monograph. pdf? attredirects=0&d=1

Gangesh Gunjan राजकमल जी (विनिबंध) क प्रकरण कान मे पडल तं छल, से कतेक वर्ष भ गेलै आब| मुदा से एहन कृप छैक से अहाँक एहि फेसबुकिया समाद मे स्पष्ट भेलय| त• एकर धन्यवाद अहाँ क• दैत छी गजेन्द्र जी |... ओना वास्तविक तं ई जे सम्पूर्ण पढ़बा सं पहिने मोन “विरक्त” भ' गेल | नै पढ़ि भेल आगाँ

! नीक केलौह• नेट पर द' कऽ| समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ ई कारी-कथा! हमरा सन लोकक विडम्बना देखू जे पूरा प्रकरण अपन अनुज-मित्र-अग्रज सं जुडल अछि| से एहन ऐतिहासिक दुर्घटना भ' गेल अछि! उत्तरदायी व्यक्तिगत हम कतहु सं नै | मुदा साहित्यिक पीढ़ीक नैतिकता सं "अपराध बोध" सहबा लेल अभिशप्त छी| उपाय? सस्नेह, 11 सितम्बर 2012 11: 26

साहित्य अकादेमीमे समन्वयक पद लेल कालाबाजारी (ब्लैक मार्केटिंग)- एकटा रिपोर्ट

साहित्य अकादेमी दिल्लीक मैथिली समन्वयक चुनाव लेल जे संस्था सभ निर्धारित अछि ओकर नाम अछि: - विद्यापति सेवा संस्थान, दरभंगा; सचिव वैद्यनाथ चौधरी “बैजू” आ अध्यक्ष- पं. चन्दनाथ मिश्र अमर। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगा; सचिव डॉ. गणपति मिश्र, अध्यक्ष रहिथ स्व. जयमन्त मिश्र। चेतना समिति, पटना, सचिव श्री विवेकानन्द ठाकुर, अध्यक्ष श्रीमती प्रमिला झा। रौटी मधुबनीक कोनो संस्था, सम्भवतः वर्तमान अध्यक्ष श्री हेतुकर झा। किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला संस्कृतिक परिषद (जे संस्था विद्यापतिकऽ पाग पहिरा कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक), वर्तमान अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र नारायण झा आ सचिव गंगाधर झा। पंचानन मिश्रक अखिल भारतीय मैथिली साहित्य समिति, इलाहाबाद। ऐ मे सँ किछु संस्थाक नाम आ वर्तमान अध्यक्ष आदिमे परिवर्तन सम्भव अछि। ऐ मे सँ अधिकतर संस्था कागजी अछि वा साहित्यक नै राजनैतिक अछि आ जातिवाद, क्षेत्रवाद आ आनुवंशिक आधारपर संचालित अछि।

**घर-बाहरक जातिवादी रंगमंचसँ जुड़ल वा सहिष्णु सम्पादक मण्डलक (वासुकीनाथ झा, रमानन्द झा रमण आ कमल मोहन चमूक) कृत्य: **

घर-बाहर जुलाई २०१२: ब्राह्मणवादी तेवर, माने चोरिक खुलेआम समर्थन। पंकज पराशर नामक चोरकऽ जुग-जुग जीवथु कॉलममे स्थान देल गेल अछि, जै मिथिलाक समाजमे बारहो वर्ण चोरकऽ खेहारि कऽ बाहर कऽ दै छै, ओतै मैथिली साहित्यक ब्राह्मणवादी सम्पादक मण्डल चोरक खुलेआम समर्थक बनि गेल, कारण चोर ओकर जातिक अछि। दोसर ऐ चित्र मे आनन्द कुमार झाकऽ युवा नाटककार सम्मान भेटलापर ऐ जातिवादी रंगमंचक सम्पादक लोकिनकऽ काँ छैह, चयन क्रियापर की सवाल उठल छल से अनुल्लेखित अछि, माने ब्राह्मणवादी ब्लैकमेलिंग, जातिवादी रंगमंचसँ जुड़ू, सहयोगी बनू आ नै तँ ब्लैकमेलिंग सहू।

विजयदेव झा वा शंकरदेव झा (चन्दनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ी) क गालियुक्त पोस्टकार्ड-ई-मेल

ऐ बेरक बाल साहित्य पुरस्कार मैथिलीमे अ-बाल साहित्य, मुरलीधर झाक "पिलपिलहा गाछ", कऽ देल गेल, मुरलीधर झा निलंजतापूर्वक फूल-माला-पाग पहिरि रहल छिथ आ किछु जातिवादी लोक निलंजतापूर्वक ई सभ हुनका पहिरा रहल अछि। प्रस्तुत अछि ऐ अंकमे ऐपर रिपोर्ट आ चन्दनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ीक गालिक अपशब्द। किछु मेल आ एस. एम. एस. सँ आएल गालिक संकलन ओइ रिपोर्टमे अछि। जिनका विजयदेव झा वा शंकरदेव झा (चन्दनाथ मिश्र अमर-रामदेव झाक तेसर पीढ़ी) क गालियुक्त पोस्टकार्ड-ई-मेल (वा अखबार-पत्रिकामे ब्लैकमेलिंगबला न्यूज) वा अपशब्दयुक्त एस. एम. एस. भेटल छैह ओ हमर ई-मेल ggajendra@videha. com पर स्कैन कॉपी अग्रसारित करथु वा मेल फॉरवर्ड करथु। ई सभ व्यक्ति जकर स्थान जेल छै ओ नपुंसक जातिवादी साहित्यक (!!) लोक सभक चलैत साहित्य अकादेमीक माध्यमसँ मैथिली साहित्यकऽ पिछला ४५ सालसँ ब्लैकमेल करैत रहल, मुदा तकर आइ अन्तिम दिन छल। एकटा अखबारमे ब्लैकमेलिंगबला न्यूज-रिपोर्टमे ई सभ ब्लैकमेलर निचिकेताकऽ मैथिल नै मानैए। निचिकेता, भीमनाथ झा आदि सेहो ऐ सभ लेल परोक्ष रूपसँ जिम्मेवार छैह, जे ऐ तरहक गालि-गरौअलि सुनैत रहला आ एकर सभक मोन बढ़ैत रहलै। मैथिलीक ब्राह्मणवादी आ कायस्थवादी (यएह दूटा वाद मे मैथिलीक पत्र-पत्रिका सभ बँटल अछि) पत्र-पत्रिकामे आपसमे घोर मतविभिन्नता छै, मारि-काटि छै मुदा विदेहक विरुद्ध ई सभ एक भऽ जाइए।

निचिकेता जीक "मिथिला दर्शन" सेहो आब ब्राह्मणवादी पत्रिका भऽ गेल अछि, आ प्रधान सम्पादक जिम्मेवारीसँ बचि नै सकै छथि, हुनकर ई कर्तव्य छैह जे ओ अपन सम्पादक मण्डलमे सुधार करथु आ ओइमे किछु गोटेमे साहसक संचार करथु।

सुकान्त सोमक अघोषित जातिवाद

सुकान्त सोमक एकटा लेख आएल छैह मिथिला दर्शनमे। ओइ आलेखमे बहुत रास गलत तथ्य अछि। अतीत मंथन २००७ सँ २००९ मे छपले नै छै से हुनका नै बुझल छैह। गामक जिनगी मैथिली साहित्यक सर्वश्रेष्ठ लघुकथा संग्रह छै ई तथ्य ओ स्वीकार नै कऽ सकला। मैथिलीमे कोहुना कोनो पुस्तीकऽ पुरस्कार भेटौ ई घुमा कऽ कहि अपन मंशा ओ व्यक्त कऽ देलनि। भगलपुरिया जूरीकऽ ओ दरभंगिया जूरी सन बना कऽ प्रस्तुत केलनि, आ अहूमे हुनकर निरपेक्षता घास चरै लेल गेल बुझाइत अछि। सुकान्त सोमकऽ बुझल छैह जे कार्यक्रम बंगलोर मे भेलै! जखनिक कार्यक्रम कोचिमे भेल रहै। सुकान्त सोम टैगोर साहित्य सम्मानकऽ रवीन्द्र पुरस्कार कहि रहल छथि!! सुकान्त सोमक अघोषित जातिवाद बहुत किछु कहि जाइत अछि।

**की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि? **

(समन्वय २०१२ इण्डिया हैबिटेट सेन्टर भारतीय भाषा महोत्सव, दिल्लीक बहसक आधारपर)

की मैथिली साहित्य अपन मूल स्वरमे ब्राह्मणवादी अछि?

हमर उत्तर दुनू अछि- हँ आ नै। जँ अहाँ मिथिला दर्शन, अन्तिका, पागबला विद्यापति पर्व समारोह केनिहार चेतना समितिक घर-बाहर, झारखण्डक सनेस वा जखन-तखनक लेखकक जातिक प्रोफाइल देखि कऽ कहि रहल छी, जातिवादी रंगमंचक मात्र दू जातिक कइ दशकक अहाँकऽ संतुष्ट करबा लेल प्रयुक्त कएल जा रहल आपत्तिजनक शब्दावलीक निलंजतापूर्ण प्रयोगक आधारपर कहि रहल छी, साहित्य अकादेमीमे आइ धरि सभटा आठो समन्वयक जातिक प्रोफाइलक आधारपर कहि रहल छी, सी. आइ. आइ. एल, एन. बी. टी., बा साहित्य अकादेमीक दुर्बल-पीअर कॉपी संकलन आ कार्यक्रमक आधारपर कहि रहल छी, आकाशवाणी दरभंगा वा हिंदी अखबारक दरभंगा संस्करणक आधारपर कहि रहल छी तँ उत्तर हँ अछि।

मुदा जँ ज्योतिरीश्वर पूर्व/ श्रीधर दास पूर्व बिनु पागबला गैर ब्राह्मण विद्यापति, बा पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद जन्म आ चर्मकारिणीसँ विवाह केनिहार तत्त्वचिन्तामणिकारक गंगेश जिनकर प्रेमकविता विलुप्त कऽ देल गेल, भोजकवा एफ. एम. चैनल, फुलवास लगक पकड़िया गाम (पोस्ट रतनसारा) क रामलखन साहुजी पुत्र स्व. खुशीलाल साहुजी जे २५ सालसँ नाच पार्टी कंपनी खोलने छथि आ दसो बिगहा बोहा देलनि, बा ऐ बेर दुर्गापूजामे नै किछु तँ सए नाच पार्टी नाच केलक; ई सभ देखी तँ उत्तर नै अछि। आ जँ आकाशवाणी दरभंगा, दरभंगाक हिंदी अखबार, आ मैथिलीक उपरविणित पत्रिका ओकरा समाचार नै बुझैए आ कोनो साधारण नाटककारक/ लेखकक सालाना उत्सवक न्यूजक आधारपर मैथिली नाटककऽ मृत घोषित करैत साक्षात्कार छपैए तँ ई ओकरा समस्या छै।

विद्यापतिक पदावलीक आधारपर भऽ रहल विदापत, आ ओही पदावलीक पिआ-देशान्तर (माइग्रेशन) क आधारपर भऽ रहल पिआ देशान्तरक पार्टी सभमे सेहो कमी आएल अछि, मुदा जँ अनुपात देखल जाए तँ मुख्य आ समानान्तरक बीच अखनो अन्तर एक आ निन्यानबे केर छै तखन तँ ई गैर ब्राह्मणवादी ने भेल।

पर्वत ऊपर भमरा सूतल मालिन बेटी सूतल फुलवारी हे

उठू-उठू मालिन बेटी गँथू गिरमल हार हे।

जँ शब्दशास्त्रम् केर ऐ गीतमे धीरेन्द्र प्रेमिशकऽ सर्वहारा गीत नै शास्त्रीय गीत देखबामे अबै छैह तँ ई गीत विदेह ऑडियोमे अपलोड छै, आ ओ ओही पाठक टोल (चर्मकार टोल) सँ रेकॉर्ड कएल गेल छै जकर ई कथा छै, आ यएह गैर-ब्राह्मणवादी परम्पराक जीत अछि। विद्यापतिक कोन परम्परा- जतऽ ओ वर्णाश्रम व्यवस्थाक समर्थन करै छथि बा स्त्रीक दर्दकऽ भोगैत: कौन तप चुकलहुँ भेलहुँ जननी गे बा गरीबक व्यथा -सुख सपनेहुँ निहं भेल, गबै छथि- एतौ उत्तर वएह अछि। समानान्तर परम्परा मुख्यधारा लेल सर्वदा फैशनक रूपे छै। ज्योतिरीश्वर आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापति सेहो धूतसमागम आ गोरक्षविजय नाटकमे ‘मश: एकरा फैशनक रूपे लेलनि। अवहट्ट सेहो साहित्यक भाषा रहै, आ समानान्तर परम्पराकऽ मुख्य धाराक गतिशील लोक द्वारा फैशनक रूपे प्रयोग कएल गेलै। जन कवि वा एन्टीविस्ट २-४-१०-२५-५० धरि पद्य लिखि कऽ संतुष्ट नै होइ छै, मुदा जँ ई फैशनक रूपे प्रयुक्त हुअए तँ से ज्योतिरीश्वर आ संस्कृत आ अवहट्टबला विद्यापतिक संग यायी-नागार्जुनक फैशनपरत गतिशील मैथिली कवितामे अबै छै। मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्वक बिनु पागबला गैर ब्राह्मण विद्यापतिक परम्परा तँ विदापत, पिआ देशान्तर आ रामदेव प्रसाद मण्डल झाड़ूदारक झा / महाझा मे देखा पड़त, हजारक हजार

झा लिखि कऽ बोहा देलनि, हमरा सन लोक जँ ओइमेसँ किछुओ लिखि कऽ टाइप कऽ लै छी तँ तकरो संख्या सए-दू सए ओहिना भऽ जाइ छै। जँ तरौनीक लोकनाथ झाक घरपर बैसि वर्णाश्रम धर्म बला कविता पदावलीमे घोसिया दियौ, शिव सिंह, लिखमा नाम घोसिया दियौ तँ ज्योतिरीश्वर पूर्व पदावलीक लय टूटि जाइए, आ विदापत आ पिआ देशान्तर पार्टी ओकर मंचन गायन नै कऽ पबैए आ ई षडयन्त्र बिनु परिश्रमक खतम भऽ जाइए।

'डायसपोरा कम्युनिटी' धरि पहुँचबाक उद्देश्यमे कनेक असहमति अछि, जे काज अखन हेबाक चाही से अछि नेटिव स्पीकर जतए रहि रहल छिथ ओतुजा दूरस्थचारक लेल ई सूचना समाज आग¡ आबए। वञ्चित, महिला आ समानान्तर परम्पराक स्पोंसपर्सनक रूपे। जहाँ धरि मैथिली प्रिंट मीडिया गप अछि, ओतौ समानान्तर लेखन क्वालिटी आ क्वान्टिटी दुनूमे ९०% स्थानपर अछि। इंटरनेट तँ बोनस छै, ४-५ सए मैथिली पुस्ती, दस हजार मैथिली ताल-पत्र पीडी. एफ. कैमरा रेडी कॉपीक रूपे विदेह आर्काइवमे मुक्त डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि। ओइमे देवनागरीक अतिरिक्त तिरहुता आ तेलमे सेहो मैथिली अछि। गूगल आ विदेहक सौजन्यसँ चार सएसँ ऊपर पुस्ती गूगल बुक्समे १००% ब्राउज आ डाउनलोड लेल उपलब्ध छै; ऐमे सँ मैथिली-अंग्रेजी आ अंग्रेजी-मैथिली डिक्शनरीक सात टा पुस्ती/ फाइल क्रिएटिव कॉमन्स (एट्रीब्यूशन-शेयर अलाइक) लाइसेन्सक अन्तर्गत १००% ब्राउज आ डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि, माने कियो एकर उपयोग क्रेडिट दऽ कऽ (माने साभार लिखि कऽ) आ अही तरह आग¡ लाइसेन्स वितरित करबाक शर्त स्वीकार कऽ कए कऽ सकै छिथ, एकरामे वृद्धि कऽ एकर संवर्धन आ व्यवसायिक उपयोग कऽ सकै छिथ।

'डायसपोरा कम्युनिटी' नेटिव कम्युनिटीक प्रति अपन कर्ज उतारि रहल अछि। नेटिव स्पीकर बड़ आग¡ बढ़ि गेल अछि, ओकर सोच आग¡ छै, ओ समानान्तर परम्पराक लेखनसँ अपनाकऽ आइडेंटिफाई कऽ रहल अछि, मुदा सुखाएल मुख्यधारा समाजसँ सकारात्मक दिशा आ समय दुनू क्षेत्रमे पाछ¡ अछि।

**की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा छी? **

सेंटर फॉर स्टडी ऑफ इंडियन ट्रेडिशन्स- मैथिली साहित्यसँ ऐ संस्थाक की सरोकार छै? विद्यापति सेवा संस्थान आ चेतना समिति राजनैतिक संस्था अछि- पागबला संस्कृत आ अवहट्टक विद्यापतिक सालाना विद्यापति पर्व करबाक अतिरिक्त एकर सभक की काज छै? ऑल इंडिया मैथिली साहित्य समितिक पड़ोसिसीयोकऽ पता नै छै जे ई संस्था छैहो बा नै, जयकान्त मिश्रक मृत्युक बाद ऐ संस्थाक मान्यता बरकरार किए छै, की जयकान्त मिश्रक मैथिली लेल कएल अहसानक पारिश्रमिक हुनकर बेटी-जमाए लऽ रहल छिथ। अखिल भारतीय मैथिली साहित्य परिषद की अछि आ एम. बी. बी. एस. डॉक्टर, जिनका साहित्यसँ कोनो सरोकार नै छैह, किए वोटक अधिकार लेल ऐ मुइल संस्थाक पता अपन नामसँ दै लेल तैयार भेल छिथ। मिथिला संस्कृतिक परिषद तँ विद्यापतिकऽ पागबला फोटो पहिरा कऽ विद्यापतिक नै मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार करबाक दोषी अछिये। तँ की ई मैथिल ब्राह्मणक खाँटी संस्था सभ मैथिलीकऽ मैथिल ब्राह्मणक भाषा बनबै लेल (साहित्य अकादेमी दिल्लीमे) मात्र वोट आ कर्जाक राजनीतिक अन्तर्गत साहित्य अकादेमीक मैथिली कन्वीनर चुनबाक लेल संस्थाक रूपे काज कऽ रहल अछि, आ तf अस्तित्वमे अछि?

**की मैथिली मात्र मैथिल ब्राह्मणक भाषा अछि? **

साहित्य अकादेमी, दिल्लीक पुरस्कारक बँटवारा (!!!) देखी तँ उत्तर की अछि?

(कुल बँटवारा ४३ बेर- २०११ धरि) मैथिल ब्राह्मण -३६ बेर!! कायस्थ-५ बेर

राजपूत-२ बेर गैर सवर्ण- ०००० बेर!!!!

चीनक लेखक मो यान

चीनक लेखक मो यान (लेखकीय नाम मो यान, वास्तविक नाम गुआन मोये) कऽ साहित्य लेल २०१२ क नोबल पुरस्कार देल जेति�ह, स्वीडिश एकेडमी ११ अक्टूबर २०१२ कऽ ई घोषणा केलक। प्रेस कॉन्फेरेन्समे कहल गेल जे "मो यान" लोकगाथा, इतिहास आ समकालीन घटनाक मिलनसँ जागल अवस्था आभासी (जागल अवस्था स्वप्न) वास्तविकताकऽ चित्रित करै छिथ। मो यान पहिल चीनक नागरिक छिथ जिनका साहित्य लेल नोबल पुरस्कार देल जेति�ह। पूर्व चीनक शांडोंग प्रान्तमे हुनकर जन्म भेलि�ह, मो यान (१९५५-) क माता-पिता किसान छलिख�ह। जखन ओ १२ बखतक रहिथ तखन सांस्कृतिक क्रान्तिक बाद हुनका स्कूल छोड़ि पहिने खेती आ फेर फैक्ट्रीमे काज करऽ पड़लि�ह। फेर ओ "जन स्वतंत्रता सेना" मे चिल गेला, हुनकर पहिल लघुकथा १९८१ ई. मे प्रकाशित भेलि�ह।

ओ अपन लेखनमे अपन युवावस्था आ अपन जन्मस्थलीक वर्णन करै छिथ, जेना “रेड सोघम- लाल ज्वार” मे, ऐपर फिल्म सेहो बनल, डकैती, जापानी कब्जा आ बोनीहारक दुखद स्थिति ऐमे विवरण अछि।

उपन्यासक अतिरिक्त हुनकर लघुकथा सभक संग्रह प्रकाशित छैह। मो यानक कहब छैह जे एकटा महान उपन्यास लिखल जाएब अखन बाकी अछि।

मैथिली

मैथिलीकऽ बी. पी. एस. सी. सँ हटाबै लेल लालू प्रसाद जिम्मेवार वा मैथिलीक कर्पधी प्रोफेसर सभ जिम्मेवार? जखन लालू प्रसाद पहिल बेर मुख्यमंत्री बनल रहिथ तखन बी. पी. एस. सी. नाम आ टाइटिलक संग बिहार प्रशासनिक/ आर्थिक/ (आ सम्भवतः वन आदि) सेवाक रिजल्ट सभ हिंदी अखबारमे छापने रहए। मैथिल ब्राह्मण सफल उम्मीदवारसँ ई लिस्ट भरल रहए, झा-झा देखि लोक घबड़ा गेल रहए। की ९०% मार्क्स हिसाब छोड़ि मैथिली लिटरेचरमे आबि सकैत अछि? बी. पी. एस. सी. मे एल. एस. डी., भूगोल आदि मार्क्स सेहो कोनो कोनो साल बहुत अबै छलै, मुदा एना नै, आ ओइमे कोनो एक टाइटिलकऽ फायदा नै होइ छलै। मैथिलीक प्रोफेसर सभक मूल्यांकनमे देखाओल गेल मुख्यतासँ लालू प्रसादपर चार दिनसँ दवाब पड़लि�ह, हुनकर सामाजिक न्यायक हँसी उड़ाओल गेल आ अन्ततः हुनका बी. पी. एस. सी. सँ मैथिलीकऽ हटाबऽ पड़लि�ह। आ तखन हुनका ज्ञात भेलि�ह जे ई तँ मैथिल ब्राह्मणोक ९०% लोकक हृदयमे कोनो शूल उत्पन्न नै कऽ सकल। जे २-४ सए गोटे प्रशासनिक/ आर्थिक/ (आ सम्भवतः वन आदि) सेवामे मैथिलीक कारणसँ गेलिथ, वएह मात्र जँ कोनो मैथिली पत्रिकाक ग्राहक बनि जाथि तँ मैथिली पत्रिका सभक ई स्थिति नै रहत। मुदा ऐमेसँ ९९% कऽ आइ मैथिलीसँ कोनो सरोकार नै अछि। मैथिलीक कर्पधी मुख्यधिराज प्रोफेसर सभ जातिवादिताक कारण मैथिलीक जे नुकसान पहुँचेलि�ह, से इतिहास हुनका सभकऽ क्षमा नै करत।

विदेह सम्मान

विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी सम्मान

१. विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१०-११

२०१० श्री गोविन्द झा (समग्र योगदान लेल)

२०११ श्री रमानन्द रेणु (समग्र योगदान लेल)

२. विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०११-१२

२०११ मूल पुरस्कार- श्री जगदीश प्रसाद मण्डल (गामक जिनगी, कथा संग्रह)

२०११ बाल साहित्य पुरस्कार- ले. क. मायानाथ झा (जकर नारी चतुर होइ, कथा संग्रह)

२०११ युवा पुरस्कार- आनन्द कुमार झा (कलह, नाटक)

२०१२ अनुवाद पुरस्कार- श्री रामलोचन ठाकुर- (पद्मनदीक माझी, बंगला- मानिक बन्दोपाध्याय, उपन्यास बंगालासँ मैथिली अनुवाद)

विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपे प्रस्तुत)

१. विदेह समानान्तर साहित्य अकादेमी फेलो पुरस्कार २०१२

२०१२ श्री राजनन्दन लाल दास (समग्र योगदान लेल)

२. विदेह भाषा सम्मान २०१२-१३ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपे प्रस्तुत)

२०१२ बाल साहित्य पुरस्कार - श्री जगदीश प्रसाद मण्डल क "तरेगन" बाल प्रेरक विहिन कथा संग्रह

२०१२ मूल पुरस्कार - श्री राजदेव मण्डलक "अम्बरा" (कविता संग्रह) लेल।

२०१२ युवा पुरस्कार- श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरीक “अर्चिस” (कविता संग्रह)

२०१३ अनुवाद पुरस्कार- श्री नरेश कुमार विकल "ययाति" (मराठी उपन्यास श्री विष्णु सखाराम खांडेकर)

विदेह भाषा सम्मान २०१३-१४ (वैकल्पिक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक रूपे प्रस्तुत)

२०१३ बाल साहित्य पुरस्कार – श्रीमती ज्योति सुनीत चौधरी- “देवीजी” (बाल निबन्ध संग्रह) लेल।

२०१३ मूल पुरस्कार - श्री बेचन ठाकुरक "बेटीक अपमान आ छीनरदेवी" (नाटक संग्रह) लेल।

२०१३ युवा पुरस्कार- श्री उमेश मण्डलक "निंस्तुकी" (कविता संग्रह) लेल।

२०१४ अनुवाद पुरस्कार- श्री विनीत उत्पलक "मोहनदास" (हिंदी उपन्यास श्री उदय प्रकाश) क मैथिली अनुवाद लेल।

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१२ क घोषणा

**अभिनय- मुख्य अभिनय, **

सुश्री शिल्पी कुमारी, उम्र- १७ पिता श्री लक्ष्मण झा

श्री शोभा कान्त महतो, उम्र- १५ पिता- श्री रामअवतार महतो,

हास्य-अभिनय

सुश्री प्रियंका कुमारी, उम्र- १६, पिता- श्री वैद्यनाथ साह

श्री दुग्धनन्द ठाकुर, उम्र- २३, पिता- स्व. भरत ठाकुर

नृत्य

सुश्री सुलेखा कुमारी, उम्र- १६, पिता- श्री हरेराम यादव

श्री अमीत रंजन, उम्र- १८, पिता- नागेश्वर कामता

चित्रकला

श्री पनकलाल मण्डल, उम्र- ३५, पिता- स्व. सुन्दर मण्डल, गाम छजना

श्री रमेश कुमार भारती, उम्र- २३, पिता- श्री मोती मण्डल

संगीत (हारमोनियम)

श्री परमानन्द ठाकुर, उम्र- ३०, पिता- श्री नथुनी ठाकुर

संगीत (ढोलक)

श्री बुलन राउत, उम्र- ४५, पिता- स्व. चिन्टू राउत

संगीत (रसनचौकी)

श्री बहादुर राम, उम्र- ५५, पिता- स्व. सरजुग राम

शिल्पी-वस्तुकला

श्री जगदीश मलिक, ५० गाम- चनौरागंज

मूर्ति-मृतिका कला

श्री यदुनन्दन पंडित, उम्र- ४५, पिता- अशफल पंडित

काष्ठ-कला

श्री झमेली मुखिया, पिता स्व. मूंगालाल मुखिया, ४९, गाम- छजना

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति

श्री लछमी दास, उम्र- ५०, पिता स्व. श्री फणी दास, गाम बेरमा

विदेह मैथिली पत्रकारिता सम्मान

-२०१२ श्री नवेन्दु कुमार झा

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान २०१३ क घोषणा

मुख्य अभिनय-

(१) सुश्री आशा कुमारी सुपुत्री श्री रामअवतार यादव, उम्र- १८, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाषा- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) मो. समसाद आलम सुपुत्र मो. ईशा आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाषा- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(३) सुश्री अर्पणा कुमारी सुपुत्री श्री मनोज कुमार साहु, जन्म तिथि- १८-२-१९९८, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

हास्य-अभिनय-

(१) श्री ब्रह्मदेव पासवान उर्फ रामजानी पासवान सुपुत्र- स्व. लक्ष्मी पासवान, पता- गाम+पोस्ट- औरहा, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) टॉफिक आलम सुपुत्र मो. समसाद आलम, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाषा- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (मांगिन खबास समग्र योगदान सम्मान)

**शास्त्रीय संगीत सह तानपुरा: **

श्री रामवृक्ष सिंह सुपुत्र श्री अनिरुद्ध सिंह, उम्र- ५६, गाम- फुलवरिया, पोस्ट- बाबूबरही, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मांगिन खबास सम्मान: मिथिला लोक संस्कृति संरक्षण: **

श्री राम लखन साहु स्व. खुशीलाल साहु, उम्र- ६५, पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

**नाटक, गीत, संगीत, नृत्य, मूर्तिकला, शिल्प आ चित्रकला क्षेत्रमे विदेह सम्मान (समग्र योगदान सम्मान): **

नृत्य -

(१) श्री हरि नारायण मण्डल सुपुत्र- स्व. नन्दी मण्डल, उम्र- ५८, पता- गाम+पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) सुश्री संगीता कुमारी सुपुत्री श्री रामदेव पासवान, उम्र- १६, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाषा- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

चित्रकला-

(१) श्री जय प्रकाश मण्डल सुपुत्र- श्री कुशेश्वर मण्डल, उम्र- ३५, पता- गाम- सनपतहा, पोस्ट– बौरहा, भाषा- सरायगढ़, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) श्री चन्दन कुमार मण्डल सुपुत्र श्री भोला मण्डल, पता- गाम- खड़गपुर, पोस्ट- बेलही, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार) संशोधित, छात्र स्नातक अंतिम वर्ष, कला एवं शिल्प महाविद्यालय- पटना।

हारमोनियम / हारमोनियम

(१) श्री महादेव साह सुपुत्र रामदेव साह, उम्र- ५८, बेलहा, वार्ड- नं. ०९, पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री जागेश्वर प्रसाद राउत सुपुत्र स्व. समरूप राउत, उम्र ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

ढोलक/ ढोलकिया

(१) श्री अनूप सदाय सुपुत्र स्व., पता- गाम- तुलसियाही, पोस्ट- मनोहर पढ़ी, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) श्री कल्कर राम सुपुत्र स्व. खट्टर राम, उम्र- ५०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

रसनचौकी वादक-

(१) बाबूदेव राम सुपुत्र स्व. अनूप राम, गाम+पोस्ट- निमली, वार्ड नं. ०७, जिला- सुपौल (बिहार)

शिल्पी-वस्तुकला-

(१) श्री बौकू मलिक सुपुत्र दरबारी मलिक, उम्र- ७०, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री राम विलास धरिकार सुपुत्र स्व. ठोढ़ाइ धरिकार, उम्र- ४०, पता- गाम+पोस्ट- चनौरागंज, भाषा- तमुरिया, जिला- मधुबनी (बिहार)

मूर्ति-मूर्तिका कला-

(१) घूरन पंडित सुपुत्र- श्री मोहनू पंडित, पता- गाम+पोस्ट– बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री भूषण पंडित सुपुत्र स्व., पता- गाम+पोस्ट- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

काष्ठ-कला-

(१) श्री जगदेव साहु सुपुत्र शनीचर साहु, उम्र- ३६, गाम- निमली-पुरवास, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) श्री योगेन्द्र ठाकुर सुपुत्र स्व. बुद्धू ठाकुर उम्र- ४५, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

किसानी-आत्मनिर्भर संस्कृति-

(१) श्री राम अवतार राउत सुपुत्र स्व. सुखद राउत, उम्र- ६६, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(२) श्री रौशन यादव सुपुत्र स्व. कपिलेश्वर यादव, उम्र- ३५, गाम+पोस्ट– बनगामा, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

अन्हार/महरार-

(१) मो. जीबछ सुपुत्र मो. बिलट मरहूम, उम्र- ६५, पता- गाम- बसहा, पोस्ट- बड़हारा, भाषा- अन्धराठाढ़ी, जिला- मधुबनी, पिन- ८४७४०१

जोगिरा-

श्री बख्शन मण्डल सुपुत्र स्व. सीताराम मण्डल, उम्र- ६०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

श्री रामदेव ठाकुर सुपुत्र स्व. जागेश्वर ठाकुर, उम्र- ५०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

पराती (प्रमाती) गौनिहार आ खजरी/ खौजरी वादक-

(१) श्री सुकदेव साफी सुपुत्र श्री, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाषा- निमली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

पराती (प्रमाती) गौनिहार - (अगहनसँ माघ-फागुन तक गाओल जाइत)

(१) सुकदेव साफी सुपुत्र स्व. बाबूनाथ साफी, उम्र- ७५, पता- गाम इटहरी, पोस्ट- बेलही, भाषा- निमली, थाना- मरौना, जिला- सुपौल (बिहार)

(२) लेखू दास सुपुत्र स्व. सनक मण्डल पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

झरनी-

(१) मो. गुल हसन सुपुत्र अब्दुल रशीद मरहूम, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(२) मो. रहमान साहब उम्र- ५८, गाम- नरिहिया, भाषा- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

नाल वादक-

(१) श्री जगत नारायण मण्डल सुपुत्र स्व. खुशीलाल मण्डल, उम्र- ४०, गाम+पोस्ट- ककरडोभ, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री देव नारायण यादव सुपुत्र श्री कुशुमलाल यादव, पता- गाम- बनरझुला, पोस्ट- अमही, थाना- घोघड़डीहा, जिला- मधुबनी (बिहार)

गीतहारी/ लोक गीत-

(१) श्रीमती फुदनी देवी पत्नी श्री रामफल मण्डल, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

(२) सुश्री सुविता कुमारी सुपुत्री श्री गंगाराम मण्डल, उम्र- १८, पता- गाम- मछधी, पोस्ट- बलियारी, भाषा- झंझारपुर, जिला- मधुबनी (बिहार)

खुरदक वादक-

(१) श्री सीताराम राम सुपुत्र स्व. जंगल राम, उम्र- ५२, पता- गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाषा- नरिहिया, थाना- लौकही, जिला- मधुबनी (बिहार)

(२) श्री लक्ष्मी राम सुपुत्र स्व. पंचू मोची, उम्र- ७०, पता- गाम+पोस्ट- बेरमा, भाषा- तमुरिया, थाना- झंझारपुर (आर. एस. शिविर), जिला- मधुबनी पिन- ८४७४१० (बिहार)

गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान

अनचिन्हार आखर (http: //anchinharakharkolkata. blogspot. com) द्वारा प्रायोजित “गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान” वर्ष २०११ लेल ओस्ताद सदरे आलम गौहर जीकऽ प्रदान कएल गेल। एहि बेरक मुख्यचयनकर्ता ओस्ताद सियाराम झा “सरस” छलिख�ह।

अनचिन्हार आखर (http: //anchinharakharkolkata. blogspot. com) द्वारा प्रायोजित “गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान” वर्ष २०१२ (गजल) ओस्ताद पंकज चौधरी (नवल श्री) जीकऽ देल गेल। एहि बेरक मुख्यचयनकर्ता श्री जगदीश चन्द्र ठाकुर “अनिल” जी छलिख�ह।

अनचिन्हार आखर (http: //anchinharakharkolkata. blogspot. com) द्वारा प्रायोजित “गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान” वर्ष २०१२ (बाल गजल) विदुषी इरा मलिक जीकऽ देल गेल। एहि बेरक मुख्यचयनकर्ता श्रीमती प्रीति ठाकुर जी छलिख�ह।

अनचिन्हार आखर (http: //anchinharakharkolkata. blogspot. com) द्वारा प्रायोजित “गजल कमला-कोसी-बागमती-महानंदा सम्मान” वर्ष २०१२ (आलोचना-समीक्षा) ओमप्रकाश जीकऽ देल गेल। एहि बेरक मुख्यचयनकर्ता श्री राजदेव मण्डल जी छलिख�ह।

विदेह घरे-घरे घुसि चुकल अछि, से ३१ मइ२०१४ कैं रमण-दरिहरे-बिहारीक "राड़कैं सुख बलाय"कथा गोष्ठीमे शामिल सभ ब्राहम्ण छद्म कथाकारक लिस्ट हमरा ०१ जून २०१४ क भोरमे चाही।

२. आब आउ सगर रातिकेँ खतम करबाक साहित्य अकादेमीक मैथिली शाखा आ ओकरा द्वारा मान्यताप्राप्त फ़र्ज़ी संस्था सभक पर।

३ रम ण साहित्य अकादेमीक मैथिली शाखासँ लाखक लाख असाइनमेण्ट क़ताक सालसँ ल'रहल छथि, से हुनका ई भार देल गेलन्हि जे सगर रातिपर विदेहक प्रभावकेँ ओ ओहिना ख़त्म करथु जेना आरती कुमारीकेँ ओ बिहारी-दरिहरे संग मिलि कऽ ख़त्म केने रहथि। मुदा हुनकर एस्टीमेट ऐबेर गड़बड़ा गेलन्हि, मैथिली लग आब पाठक छलै, शक्ति छलै, स्तर छलै, से मेडियोकर रमण-बिहारी-दरिहरे नै बुझि सकला। ख़ून रंग आनै छै, चेन्हासी छोड़ै छै ़़…ख़ून खूनीकेँ ताकि लै छ़ै.

मिथिलामे दुर्गापूजामे मोटामोटी चन्दा ओसूलि कऽ पूजा होइ छै। बस रोकि कऽ चन्दा ओसूली सरस्वती पूजा लेल आब शुरू भ' गेल छै, पहिने नै होइ छलै, कारण ई पर्व व्यक्तिगत निष्ठासँ सम्बन्धित छल। ओ निष्ठा यज्ञोपवीत करबा कऽ मूर्खतापूर्वक मोछैल आ क्लीन शेव (संगे प ाग पहिरने!) विद्यापतिक कोनो तत्कालीन वेशभूषाक अध्ययनसँ रहित जातिवादी कलाकार द्वारा बनाओल फोटोपर माल्यार्पणक विद्यापति पर्वमे सेहो नै भेटत। ई विद्यापति पर्व सभ, जातिवादी रंगमंच, साहित्य अकादेमीक मैथिली शाखा, प्रज्ञा संस्थान, साझा प्रकाशन आ सगर राति दीप जरय मैथिलीमे कट्टरता बढ़ेलक आकि घटेलक?

२. विश्वकर्मा पूजा, दुर्गापूजा आदि ई दाबा नै करैए जे ओ सभ मैथिली लेल काज करै छथि। मुदा ई सभ समाजमे मिलि काज केना करी से सिखबैए। एकर विपरीत विद्यापतिकेँ यज्ञोपवीत करबाकेँ जे सांस्कृतिक संस्थापर कब्जाक राजनीति सिखाओल गेल से जातिवादी रंगमंचमे पैसल, कोलकाताक कु र्मी-क्षत्रिय समाज मैथिलीसँ अलग कऽ देल गेल। छिट्टाक छिट्टा पोथी आ सम्मान मैथिल ब्राहम्ण आ कर्ण कायस्थ लेल रिज़र्व भ' गेल। दोसर जँ हिम्मत केलक तँ बुढ़ा सभ लफुआ युवाकेँ साहित्यकार बना कऽ हुलकाब' लगला। "राड़कँ सुख बलाय"क लेखक कैँ श्याम दरिहरे, प्रदीप बिहारी आ रमानन्द झा रमण द्वारा हुलकाएब ऐ प्रक्रियाक टटका उदाहरण अछि। मुदा ई प्रक्रिया जे ५० सालसँ मैथिलीमे ब्राह्मणवाद आ कायस्थवादक संजीवनी बूटी छल कोना धराशायी भ' गेल। मैथिली साहित्यमे एहन की भ' रहल अछि, कोन ऐतिहासिक क्रिया- प्रतिक्रिया चलि रहल अछि जे ई संभव केलक, आ जे रमण-बिहारी- दरिहरे आ हुनकर सभक आका साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग आ जातिवादी रंगमंच नै बूझि सकल?

३. सगर राति दीप जरय द्वारा ब्राहम्ण युवामे जे कट्टरता ढुकाओल जा रहल छल से जखन तोड़ल गेल तँ बिहारी- रमण- दरिहरे आ आका सभ बूझि नै सकल जे की भ' रहल अछि आ अन्ततः ओ सभ अपन पेशेन्स खतम कऽ लेलन्हि। मुदा ऐबेर तँ दुनियेँ उनटल छल।

रहुआ संग्रामक कथा गोष्ठीमे रमणजी सहित सभ निर्णय लेलन्हि जे राति भरि कियो नै सुतता, मुदा भोजनसँ पहिने जखन सभ नामी(!!) कथाकारक पाठ कऽ सुति रहला तँ भोरहरबामे जे युवा सभ नामी कथाकार लोकनिक कथा सुनने रहथि, तिनकर नम्बर एलन्हि। आशीष अनचिन्हार जखन कथा पढ़ैले एला तँ संचालक ओँघा रहल छला आ मात्र अध्यक्ष शिवशंकर श्रीनिवास जागल रहथि, नै सुतबाक निर्णय लेनहार रमणजी फोंफ काटि रहल रहथि, जकर विरोधमे अध्यक्षक कहलाक उपरान्तो आशीष अनचिन्हार कथा पाठ करबा सँ मना कऽ देलन्हि; ओ पोस्ट माडर्न कथा बादमे "विदेह लघु कथा" मे छपल।

मुदा ब्राह्मणवादी सेंसर प्रक्रिया एतेक जब्बर छै जे ने आयोजक, ने रमण आ ने अध्यक्ष- संचालकक फर्जी सगर रातिक इतिहासमे एकर वर्णन भेटत। अरुचिकर गपकेँ झँापि देबाक ब्राह्मणवादी प्रवृत्ति एकर कारण अछि।

८१ टा सगर राति भेबो कएल आकि नै, लोक हमरासँ पु छै छथि। पहिने डाकसँ रचना आबै आ से नामी (!!) कथा सभ पढ़ल जाइ छलै, जे युवा सभ सदेह आबथि तिनकर नम्बर एबे नै करन्हि, एबो करन्हि तँ सुतलाहा बेरमे, मुन्नाजी जखन एकर विरोध केलन्हि तँ वएह कहल गेल, गप झाँपू, रजिस्टरमे ओइ नै एनिहार सभक सेहो उपस्थिति दर्ज भेल तैँ। बहुत कथा गोष्ठीमे दसो टा कथाकार नै एला, मुदा उपस्तिथि रजिस्टरमे बहुत रास उपस्थित भेटता, किछु एबे नै केला, किछु डाकसँ एला(!!) आ किछु हाजरी बना कऽ निपत्ता भ' गेला सेहो। जेना युद्धमे ३००० सँ कम मुइने ओकरा युद्ध नै कहल जाइए, तहिना दस टा सँ कम उपस्थितिकेँ सगर राति केना कहल जा सकत? ८१ क संख्या बड्ड कम भ' जाएत, ८१ बड्ड बेशी होइ छै, एतेमे तँ शान्त क्रान्ति भ' जइतए, से किए नै भेल तकर कारण ऊपर देल अछि।

ऐ समानान्तर आन्दोलनमे हमरा सहयोग चाही बा विरोध, धनाकर ठाकुर आ गंगेश गुंजनक "आइडियोजिकल न्यूट्रेलिटी"क मतलब सेहो एकेटा छै, आ से छै समानान्तर धाराक विरोध।

आ इतिहास हमरो मूल्याँकन करत आ हुनको (विरोधी आ न्यूट्रल फिफ्थ कालमनिस्टक) ।

बहुत लोक ऐ तरहक कमेण्ट पछिला ६ सालसँ द' रहल छथि जे आब विदेह बदलि गेलै, ओकरा सभ सन भ' गेलै। विदेहक उद्देश्य ने बदलल छै आ ने बदलतै। कोन व्याख्या ककर तुष्टीकरण छै से स्पष्ट बिन केने ऐ तरहक कमेण्ट कएल जाएत अछि। हुनकर आशा जँ ई रहैए जे मैथिली साहित्य केँ युवाक उत्साह विदेहक माध्यमसँ नव दिशा प्राप्त करत आ से आब लागि रहल अछि जे से आब व्यक्तिगत कुण्ठाक मंचक रूपमे दुरुपयोगी भ' गेल अछि तँ ऐ सम्बन्ध में हमर यएह कहब अछि जे सत्यक कियो उपयोग कऽ सकैए आ कियो दुरुपयोग, जे हुनका दुरुपयोग आ व्यक्तिगत कुण्ठाक तुष्टीकरण आब लागि रहल छन्हि से बहुत गोटेकेँ ६ साल पहिनहिये सँ लागि रहल छन्हि, आ तकर व्याख्या हमरा लग यएह अछि जे ओ सभ मात्र विदेहसँ सिम्बोलिक विरोधक आशा करैत रहथि, असली परिवर्तन नै चाहनहारकेँ यैह असली ब्राह्मणवाद बुझेतन्हि, कारण बदलल पात्र सँ ब्राहम्णवादी मानसिकता उद्वेलित भ' गेल छै, ओ गेल तँ हम अबितौं मुदा ई सभ के आबि गेल। अहाँकेँ बुझबाक चाही जे मैथिली आगाँ एलै, जकरा जतेक प्रतिभा छलै ओ विदेहक माध्यमसँ ततेक सिखलकै आ ततेक आगां बढ़लै आ बढ़तै। किछु लोक जँ स्वार्थक लेल विदेहसँ जुड़ला मुदा आनुवंशिक जाति श्रेष्ठता हुनकासँ विदेहक निश्छल प्रयासोक बावजूद नै गेलन्हि, आ जइ विदेहकेँ ओ साहित्य आन्दोलन बुझै छला (हृदयसँ नै) आ विदेहकेँ इमोशनल ब्लैकमेल, धमकी, हमरा आ हमरा परिवारकेँ ईमेल- फोनसँ गारि, छोड़ि कऽ जेबाक धमकी (छोड़ि कऽ जेबाक धमकी देनिहारमे संयोगसँ अखन धरि मात्र ब्राहमणे छथि जिनका लगै छन्हि जे सिमबोलिक प्रोटेस्ट धरि मात्र विदेह सीमित रहितए), जे आब अहँू वएह (!!), बुझलौं प्राइज़ लेल, फलनाकेँ दिआबए चाहै छिऐ, व्यक्तिगत राजनीति, विदेहक भला नै हएत, ई सभ ६ सालसँ सुनि- सुनि हमर कान पाकि गेल अछि। रामदेव झा आ अमर पहिनेँ कहैत रहथि, हम अपन कनियाँकेँ पुरस्कार दिआब' चाहै छिऐ, सभ हँसि देलकन्हि जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग निर्वस्त्र अछि दोसराकेँ की सम्मानित करत तँ आब कहि रहल छथि जे उमेश मण्डल, राजदेव मण्डल, बेचन ठाकुरकेँ हम पुरस्कार दिआब' चाहै छिऐ। मोहन भारद्वाज देवशंकर नवीनक सोझाँ कहै छथि जे गजेन्द्र ठाकुर पागले ने छै जेना लखन झा छलै। दरिहरे सेहो लाल बुझक्कर छथि, हुनका आब बुझबामे आबि गेलन्हि जे हमरा साहित्य अकादमी सँ झगड़ा अछि तैँ, व्यक्तिगत राजनीति तैँ। बिहारी मुन्नाजीकेँ फ़ोन करै छथि आ कहै छथि मात्र जगदीशे मण्डलकेँ किए आगाँ बढ़ाओल जा रहल अछि (!!) ब्राहम्णवादी मानसिकता ई छिऐ, जे जगदीश मण्डल मेरिटसँ नै, बढ़ेलासँ आगाँ बढंल छथि जेना मैथिली साहित्यमे पहिने होइ छलै। प्रदीप बिहारी मुन्नाजीकेँ कहै छथि जे विदेह किए जातिवादी रंगमंचक विरोध करैए, किए समानान्तर परम्परा भ' कऽ मूल परम्पराक गुणवत्ताक समीक्षा करैए, समानान्तर तँ मूलसँ मिलित्े नै छै तँ किए हमर सभक नाम लै छी, अलग रहू, यएह छिऐ असल ब्राहम्णवाद- कायस्थवाद। चर्चे नै कर, काने बात नै दे!! आ ईहो संयोगे अछि जे जइ २-४ टा लोककेँ दिक़्क़त छन्हि से ब्राहम्णवादी प्रवृत्तक छथि, अनका ई दिक़्क़त किए नै छन्हि। पछिला ६ सालसँ विदेह जहिना छल ओहने रहत, अगिला कमसँ कम ३० साल धरि मैथिली साहित्य आब अहिना चलत। विदेहमे जकरा जे मेरिट छै ओ ओतेक बढ़त, चाहे ओ कोनो जाति, धर्म, क्षेत्रक होथि। विदेह जिनका बदलल लागि रहल छन्हि ओ स्वयंकेँ देखथु जे ओ तँ नै बदलि गेल छथि?

आब फेर आउ सगर राति दीप जरय पर।

अलिखित संविधानक नामपर बहुत रास खेल भेलै। ई मुख्य रूपेँ कथा वाचनक गोष्ठी छिऐ मुदा एत' आलोचनात्मक आलेख पढ़बाक सेहो अनुमति छै आ से जँ अहाँक नाम रमण अछि तखने टा, से जखन कबिलपुर गोष्ठीमे मुन्नाजी विहनि कथा पर आलेख पढ़बाक अनुमति मांगलन्हि तँ से अनुमति नै भेटलन्हि, आ एत' अलिखित संविधानक सोंगर लेल गेल, आ तकर दूटा कारण, एक तँ मुन्नाजीक नाम रमण नै छियन्हि, दोसर विहनि कथाक कनसेप्ट विदेह द्वारा आगाँ बढ़ाओल जा रहल अछि से तकर विरोध, किए नै ओ कनसेप्ट कतबो वैज्ञानिक होइ।

झंझारपुर गोष्ठी मे जे एला तिनकर कथाक पाठ नै भेलन्हि मुदा डाकसँ आएल कथाक पाठ भेल, आ जँ अहाँ अविनाश छी सुमन- अमरकेँ गारि लिखै छी यात्रीक नामपर, तँ अहूँ कथाकार, कवि सभ, नै रहितो, छी, देवघर गोष्ठीक संयोजकत्व सेहो बोनसमे अहाँकेँ भेटत। से घोंघरडीहा गोष्ठीमे जिनका सभकेँ कथा नै पढ़' देल गेलन्हि, ओ सभ युवा एकर विरोध केलन्हि, किछुकेँ कथा पढ़' देल गेलन्हि आ जिनका नै पढ़' देल गेलन्हि से अगिला कथा गोष्ठीसँ एनाइ बन्द कऽ देलन्हि।

जे सभ मैथिली फिल्म आ डोक्यूमेण्टरीक नामपर लोकसँ पाइ ठकलन्हि से रमण- दरिहरे- बिहारीक विदेहक विरोधमे संगी छथि, जे युवा प्राइज़ लेल मैथिलीयोमे लिखना्हि, जातिवादी सभसँ मिलि साहित्य अकादेमीक युवा पुरस्कार लेलन्हि ओ तँ स्वाभाविक रूँपे हुनकर संगी हेता।

विदेह उमेश मण्डल आ जगदीश प्रसाद मण्डलक कान्हपर बंदूक राखने अछि, यूज़ कऽ रहल अछि, आ जँ हुनकर सभक रचना नै छप' देल जाइत, "तिल बहब ने" छपबासँ पहिने, सकरबाबल जाइत, तखन सभ ठीक छल। ब्राहम्णवादी सभ जेकाँ विदेह कोनो काज

कएलासँ पहिने "तिल बहब ने"क शर्त क़रार नै करबैए आ सएह कारण अछि, नव ब्राह्मणवादी ई नै बूझि सकला, धू, एहनो क़तौ भेलैए। बिनु जान- पहिचान, भेंट- घांटक मात्र मैथिलीक नामपर सभ एकत्रित भ' गेल से हुनका अजगुत लगलन्हि।

प्रदीप बिहारी मुन्नाजीकेँ कहै छथि आ ई विचार रामदेव झाक सेहो छन्हि जे जखन विदेह साहित्य अकादेमीक समानान्तर पुरस्कार शुरू कैए देलक तखन साहित्य अकादेमी लेल शोर किए? माने ओकरा बकसि देल जाए! अशोक अविचल शिवकुमार जीकेँ कहै छथि जे मायानाथ झा, आनन्द कुमार झा (ऐमे गुणनाथ झा जोड़ि लिअ) आदि जिनका सभक चर्चा विदेह केलक सभकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार भेटलै, तँ हुनका उत्तर भेटल छलन्हि, जँ हुनकर सभक नाममे झा नै मण्डल रहितन्हि तँ की ई संभव छल?

आ साहित्य अकादेमी कोनो मनुक्ख नै छिऐ जकरा संग भतबरी कएल जाएत आ ने ककरो पैतृक संपत्ति जकर उपयोग ब्राहम्ण कायस्थक तथाकथित साहित्यकारकेँ ख़ैरात बँटबा लेल आब कएल जा सकत।

आ हमरा विषयमे जखन सभकेँ बुझबामे आबि गेलन्हि जे नै रौ, ई अपना सभ सन नै अछि, विदेह अपना सभ सन नै छौ, तँ हुनका सभ केँ आर चिन्ता लागि गेलन्हि! रौ कहीं, ईं हो सभ हमरे सभ सन, कहीन, ई जे अपने प्राइज़ लेब' चाहैए बा दोसराकेँ दिआब' चाहैए...

ब्राह्मणवाद मैथिलीकेँ गीरि गेलै, आ सभकेँ बुझल छै जे दूटा सहोदरो एक रंग नै होइए, से पूरा जाति नीक बा अधला हेतै ई कनसेप्ट विदेहक नै छै, ओ तँ ब्राह्मणवादी कनसेप्ट छिऐ।

अतुलेश्वर झा छथि ओना तँ ब्राहम्णवाादक विरोधमे रहथि मुदा पाग आ विद्यापतिक हमर लेख क बाद अलग भ' गेला़, आ एहेन बहुत रास लोक छथि, प्रेम चन्द्र पंकज आ अभय दासकेँ कोनो ने कोनो बात ल' कऽ विदेहसँ घृणा भ' गेलन्हि, आ ई गप ओ सभ मुन्नाजीकेँ सूचित केलन्हि जे ओ लोकनि विदेह पढ़नाइ आब छोड़ि देलन्हि, प्राय: आब ओ सभ चोरा नुका कऽ विदेह पढ़ै छथि, कारण सभ गतिविधिक जानकारी हुनका सभकेँ रहै छन्हि।

आब सगर राति पर आउ, यात्री दिससँ सुमन- अमर केँ गारि देनहार आ अमर- सुमन दिससँ यात्रीकेँ गारि देनहार, मैथिली साहित्यमे ब्राहम्णवाद बचेबाक लेल विदेहक विरुद्ध दरिहरे- रमण- बिहारीक संग आबि गेल छथि अंतिम लड़ाइ लड़बा लेल।

१४. गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।

सारांश

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि...जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति"बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापतिकेँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आजखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठलआ बादमे मानि गेल।

बीजशब्द: विदेह · पत्रिका · http · www · videha · co · in · ISSN

सारांश · Abstract

ई अध्याय “गजेन्द्र ठाकुर विदेह ई पत्रिका http://www.videha.co.in/ ISSN 2229-547X क सम्पादक छथि आ आइ काल्हि दिल्लीमे रहै छथि।” विषयक विवेचन प्रस्तुत करैत अछि। विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति केँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार क

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

विद्यापति: किछु प्रचलित कुप्रचारक निराकरण

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग

विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली बला विद्यापतिसँ अछि... जै सम्बन्धमे हम चर्चा केलौं जे हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल... ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकेँ जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति केँ आ गोविन्ददासकेँ अपन बना लेलक आ बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक भाषाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल। फेर मिथिलाक विद्वानकेँ सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल- रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) केँ "हम्मर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। किछु गोटे ज्योतिरीश्वरक भातिज कहि विद्यापतिकेँ सम्बोधित करऽ लगलाह!!

मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पज्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए।

राम ठाकुर

अहाँ बंगाल किए जाइ छी, पूर्णियाँमे ग्रामदेवताक पूजामे हम गेल छी आ राम ठाकुर (भगवान) केँ देवता रूपमे ढेपाबला खेतमे हम देखने छी, किये जोति देने रहै।

मिथिलासँ छत्तीसगढ़ मध्य प्रदेशमे गेल रहथि, मध्य प्रदेशसँ राज्यसभा सांसद प्रभात झा कहि रहल छला, जे बरही (काष्ठकार) मिथिलासँ गेला तँ मैथिली भाषी हेबाक कारण लोक हुनका झाजी कहए लागल, आ ओ सभ आब झा टाइटिल रखै छथि, प्रभात झा

कैंपेनिंग कऽ देलखिन्ह आ एक वोटसँ केण्डीडेट जीति गेलै। हमरा अहाँ सभकेँ ई अनुभव अछि जे कोनो टाइटिल हुअए पहिने, पटनो धरिमे लोक झाजी वा झौआ ओकरा कहि दै छै। बंगालक मालदह जिलामे ४-५ गाममे मैथिल ब्राह्मणक टाइटिल ओझा छै, आ अलीगढ़मे मैथिल ब्राह्म्ण (ब्रजस्थ मैथिल) क शर्मा।

<u>पञ्जीमे कतेक विद्यापतिक विवरण</u>

पञ्जीमे कतेक विद्यापतिक विवरण उपलब्ध अछि: १. पनिचोभ सँ विद्यापतिसुत रमापतिक विवाह विद्यापतिक- माता (देवदासी)-दूषण पंजी २. महो केशवो सुत म. म. पा० गोविन्द सुता महो लक्ष्मीनाथ म. म. विद्यापति म. म. दामोदर ३. महामहो विद्यापति गंगोली सँ मानकुढ़ वासी कविराज गणेश्वर ४. घोसोतसँ म. म. गोविन्द सुता म. लक्ष्मीधर म. म. विद्यापति ५. राजपण्डित म. म. उ. विद्यापति ६. करमहासँ देवनाथ सुत कवि विद्यापति ७. गुणपतिसन्तति-पठोङ्गी) । । विद्यापति-पुडरीक-मछदी। केशव-अमरावती। ८. । । सिंहाश्रम सँविद्यापति द्वौ० भागीरथ सुतौ कुलेश्वर: ९. सिधूक: ए सुता देल्हन विश्वनाथ श्रीनाथा: सिंहाश्रम सँ विद्यापति दौ। । १०. मिश्र जयदेव (७६/०६) सुता नगवाड़ घोसोत सँ महामहोपाध्याय विद्यापति दौ ११. महामहोपाध्याय गोविन्द सुता महामहो लक्ष्मीनाथा परनामक (२०९/०५) ठकरू म० म० उपा० विद्यापति १२. द्वौ०। । एवम् ठ० विद्यापति मातृक चक्रं। । १३. महोमहोपाध्याय विद्यापति सुता अनिरूद्ध अनन्त अच्युता: एकहरा सँ काशी दौ १४. सदु०सुपे सुतौ दामोदर: ए सुतौ डालूक: पवौलीसँ गोढि दौ डालू (३४/०६) सुतो विद्यापति १५. सुता शिरू पदम लाखू गादूका: एकहरा सँ श्री कर सुत चान्द दौ खौआल सँ भूले द्वौ० मधुसूदन सुता उमापति (८४/०१) विद्यापति १६. मुसै सुता खौआल सँ डालू सुत विद्यापति दौ भण्डारिसम सँ शुभे द्वौ० ठ० १७. सोदरपुर सँ छोटाई दौ (२८/०८) बसाउन सुता पशुपति विद्यापति १८. कल्याण सुता करमहा सँ विद्यापति दौ १९. जालय सँ रामेश्वरसुत महिघर दौ यमुगाम सँ गेणाई द्वौ० विद्यापति सुतो भगीरथ: २०. हरखू गोविन्दा सक० गुणे सुत विद्यापति दौ सुरगन सँ होरे द्वौ० २१. कृष्णपति सुता मुरारि विद्यापति प्रजापति टकबाल सँ रामकर दौ। । २२. कविन्द्र पदांकित म० म० उ० रघुनाथा करमहा सँ विद्यापति दौ २३. सुतो विद्यापति माण्डरसँ यग्यपति दौ २४. तल्हनपुर सँ गढ़वय द्वौ. विद्यापति २५. यशु सुतो रविपति रूद्रपति विद्यापति चन्द्रपति २६. नरउन सँ विद्यापति दौ २७. रविपति सुतो कृष्णपति विद्यापति घुसौत सँ होरे दौ। । २८. विद्यापति सुता बेलउँच सँराम दौ २९. गुणे सुत गौरीपति विद्यापति लक्ष्मीपति कुलपतिय: दरि० दिवाकर दौ ३०. महिपति झाक मातामह कवि कोकिल विद्यापति ठाकर) दामोदर सुतो पाँसदु. हरिदेव: नरउनसँ माङनि दौ ३१. गणपति सुतो कवि कोकिल राजपण्डित म० म० उपा०विद्यापति: ए सुतौ हरिपति धनपति। । ३२. महामहोपाध्याय विद्यापतिसुता ह्रषिकेश ३३. हरपति सुता विद्यापति काशी दामोदरा: ३४. रतिपति सुता सोदर० विद्यापति दौ ३५. विद्यापति प्रपौत्र पौत्र हरिश्वर धनेश्वर सुतो गोन्दूक पालीसँ ज्ञानदौ। । ३६. विद्यापति द्वौ. वेणी सुतो रविनाथ: ३७. सोदर० विद्यापति द्वौ० निकार ३८. श्रीपति सुतो विद्यापति परानौ दरिहरा ३९. सोदर० विद्यापति द्वौ० मिश्र कमलनयन सुता हरिअम सँ बछाई दौ ४०. रवौआलसँ सोने दौ देवनाथ सुतो कवि विद्यापति पचही सोदरपुरसँ जगन्नाथ दौ ४१. गोपी सुतो विद्यापति वाचस्पति शीवा हरिअमसँ नारायण दौ। । ४२. विद्यापति निधि प्र. धरापतिय: ४३. तरौनी करमहासँ महिधिर दौ। । (४६/०३) विद्यापति (१११/०३) सुतो मधुसूदन: ४४. कुलानन्द ह्रदयनन्दनो कर. पनाई दौ (१०९//१०६) विद्यापति (३१४/०५) सुता प्रितिनाथ शोभनाथ महिनाथा: ४५. उँमापति सुत विद्यापति सुतो जयपति: ४६. जागू सुता सुरपति हरिपति प्रभापति गिरपति विद्यापतिय: ४७. हचलू सुता हरपति विद्यापति महो ज्ञानपति दिनपति मणिकंठा ४८. कृष्ण सुता रमापति श्रीपति रत्नपति विद्यापति: बूधवाल सँ धीरू दौ। । ४९. दाशे सुता दयोरी खण्डबला सँ गोपीनाथ दौ (८५//०२) विद्यापति सुत जीवनाथ ५०. नरउन सँ विद्यापति द्वौ० ५१. धर्माधिक रणिक बाटू सुतो विद्यापति ५२. सोदरपुर सँ गयन दौ विद्यापति सुता रमापति होरिल हररवू जिवाईका माण्डर सँ सोढू दौ। । ५३. खौआल सँ रघुनाथ दौ (५४//०७) विद्यापति सुत जानू ५४. टकबालसँ विद्यापति द्वौ मतिनाथ ५५. खण्डबलासँ विद्यापति सुत जीवनाथ दौ ५६. करमहा सँ विद्यापति द्वौ० विश्वनाथ ५७. कृष्णपति सुतो उँमापति (ब० २८/०१) विद्यापति (३०२/०३) पण्डुआ सँ पाँ भगीरथ दौ ५८. महो हरिकृष्ण सुता खौआल सँ विद्यापति दौ ५९. मधुसूदन सुतो विद्यापति: अलय सँ अनिरूद्ध दौ ६०. माण्डर सँ देवशर्म्म द्वौ० विद्यापति सुता नरउन सँ बदनी दौ ६१. ठ० श्याम सुतोपुरन्दर परमानन्दो माण्डर सँ विद्यापति दौ ६२. विद्यापति सुता सोदरपुर सँ जयराम ६३. धर्मेश्वरौ खौआल सँ हराई सुत मनोहर दौ रूद सुतो राम: गंगोली सँ देवे दौ विस्फी सँ कवि कोकिल राज पण्डित म० म० पा० विद्यापति द्वौ० राम सुतो भिरवूक: फनन्दह सँ लोचन दौ पकलिया सँ दिनू द्वौ० भिरवू सुतो हराइक: सोदरपुर सँ विर सुत हरिदौ खौआल सँ शुभे द्वौ० हराई सुता मोहन मनोहरा कमल नारायणा: सोदरपुर सँ जगन्नाथ सुत भवानी दौ भवानी सुतो हरिदेव सदायकौ हरिअम सँ गोविन्द सुत श्रीधर दौ सक० जागे द्वौ० मनोहर सुता करमहा सँ रतनपति सुत कृष्णदाश दौ कृष्णदाश सुता सोदरपुर सँ मधुसूदन सुत सुन्दर दौ (४७//०५) दरिहरा सँ मुशाई द्वौ० हरि सुतो प्राणपति: सोदरपुर सँ नारायण सुत ननू दौ (११०//०१) (१०१//०१) नारायण सुतो ननूक: वुधवाल सँ बहुड़ी दौ (१८०/०४) दामोदर सुतो बहुड़ीक: सोदरपुर सँ परमानन्द सुत कांगव दौ परमानन्द सुतो कांगव: माण्डर सँ हलघर सुत पीताम्बर दौ (५८//०५) करमहा सँ श्रीराम द्वौ० कांगव सुता

करमहा सँ शिवदेव सुत कारम दौ माण्डर सँ वावू दौहित्र दौ० ६४. वावू दुर्गापति सिंह: सुतो वावू विद्यापति सिंह: करमहा सँ हरिनाथ सुत तारानाथ दौ ६५. खौआल सँ युवराज द्वौ० बावू विद्यापति सिंह सुतो वावू गिरिजापति सिंह ६६. वावू गंगापति सिंह सुता भेषपति सिंह विद्यापति सिंह ६७. वावू भेषपति सिंह पत्नी अन्तर्जातीय ए सुत हंसपति सिंह: वावू विद्यापति सिंह सुतो रमन कुमार सिंह: ६८. बाला सुतो भैया कल्याणौ खौआल सँ विद्यापति दौ ६९. विश्वनाथ काशीनाथा: अलय सँ विद्यापति दौ ७०. पाठक विद्यापति सुतो दुखमंजन कलरौ आसी एकहरा सँ उँमानन्द दौ ७१. नरपति सुता कल्याणपुर विस्फी सँ सुन्दर दौ कमलनयन सुत नारायण सुतो सुन्दर: करमहा सँ विद्यापति दौ ७२. मुरारि सुता दामोदर विद्यापति महिघर आनन्दा: ७३. विद्यापति सुता पद्मापति सभापति आदिपति गणपतिय: । । ७४. विद्यापति सुतो छीतू परमानन्दो माण्डर सँ नरपति दौ बहेराढ़ी सँ गदाधर द्वौ० ७५. अलय सँ कमल सुत नकटू दौ. विद्यापति सुत जीवनाथ सुतो परम: दरि. राम दौ। । ७६. करमहा सँ विद्यापति सुत मधुसूदन दौ ७७. मानी सोदरपुर सँ वाचस्पति सुत विद्यापति दौ ७८. खण्डबला सँ वावू दुर्गापति सिंह सुत वावू विद्यापति सिंह दौ ७९. खौआल सँ विद्यापति दौ ठ. मधुरापति सुतो वाछ शिवानन्दनो८०. सोदरपुर सँ बैद्यनाथ द्वौ. हरिकृष्ण सुता खौआल सँ मधुसूदनसुत विद्यापति दौ ८१. मधुसूदन सुत विद्यापति दौ ८२. दरिहरा सँ रमापति सुत वेणी दौ अलय सँ कृष्णपति सुत विद्यापति द्वौ ८३. अलय सँ विद्यापति द्वौ. ॥ ८४. ज्यो. शिवनन्दन सुतो विद्यापति. ८५. खौआल सँ भवदेव सुत विद्यापति दौ. ८६. पाठक कृष्णपति सुतो उषापति विद्यापति. ८७. विद्यापति सुतो दुखभंजन कलरो एकहरा सँ देवानन्द सुत उँमानन्द दौ ८८. अलय सँ विद्यापति सुत कलरु दौ ८९. कारु सुता पिताम्बर विद्यापति देवकीमाना का सोदरपुर सँ वैदयनाथ सुत जयि दौ ९०. सुरोइ प्र. शारदानन्द सुता गौरीनन्दन वाचस्पति प्र. विद्यापति दिवाकर प्र. मन्दू रत्नाकर प्र. भ्र. भोलन जी का नग. घुसौत सँ दामोदर सुत उग्रमोहन दौ एकहरा सँ शोभानन्द द्वौ. ९१. खौआल सँ विद्यापति दौ.

आब आउ मूल मुद्दापर

हमरा राजपण्डित आ आर कतेक रास धर्माधिकारणिक विद्यापति सभ जैमे एकटा देवदासीक पुत्र सेहो रहथि, केर ब्राह्मण हेबामे कोनो सन्देह नै अछि। हम विद्यापति ठक्कुरः आ कीर्तिलता कीर्तिपताका नै वरन विद्यापति पद्यावलीक गप कऽ रहल छी। तेँ कोनो ओझरीमे नै रहल जाए। आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) बार्बर कास्टमे भेल रहथि आ तकर प्रमाण ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कवि आ ओकर कृतिक चर्चा अछि।

महादेव मूलतः गएर ब्राह्मणक देवता रहथि, आस्ते-आस्ते ओ ब्राह्मण लोकनि द्वारा अपनाओल गेलाह। विद्यापतिक कोनो पद्यावलीक रचनामे हुनकर संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै अछि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? उदाहरण देखू।

विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर आ बिदापत नाच

भोजपुरीक साहित्य मैथिलीसँ कम समृद्ध अछि मुदा से अछि मात्र परिमाणमे, गुणवत्ताक दृष्टिमे ई कतेक क्षेत्रमे आगाँ अछि। भोजपुरीक भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक सन्दर्भमे हम ई कहि रहल छी। भिखाड़ी ठाकुर कलकत्तामे प्रवासी रहथि, घुरि कय अएलाह आ भोजपुर क्षेत्रमे अपन कष्टक वर्णन जाहि मर्मस्पर्शी रूपसँ गामे-गामे घुमि कए आ गाबि कए सुनओलन्हि से बनल बिदेसिया नाटक। मिथिलामे प्रवास आजुक घटना छी, गामक-गाम सुन्न भऽ गेल अछि। मिथिलाक बिदेसिया लोकनि देशक कोन-कोनमे पसरि गेल छथि। मुदा पहिने भोजपुर इलाका जेकाँ प्रवासक घटना मिथिलामे नहि छल। प्रवास मोरंग धरि सीमित छल जे नेपालक मिथिलांचल क्षेत्र अछि। आ ताहिसँ मैथिलीमे लोकगाथाक सूक्ष्म विवरणक बड़ अभाव, जे अछियो से लोकगाथा नायकक विवरण नहि वरन महाकाव्यक नायकक मैथिलीमे विवरण जेकाँ अछि, आ बोझिल अछि, भिखाड़ी ठाकुरक बिदेसियाक जोड़ नहि। सलहेसक कथाक विवरण लिअ, क्षेत्रीय परिधि पार करिते सलहेस राजासँ चोर बनि जाइत छथि आ चोरसँ राजा। तहिना चूहड़मल क्षेत्रीय परिधि पार करिते जतए सलहेस राजा बनैत छथि ओतए चोर बनि जाइत छथि, आ जतए सलहेस चोर कहल जाइत छथि ओतुक्का राजा/ शक्तिशालीक रूपेँ जानल जाइत छथि। मुदा एहि सभपर कोनो शोध नहि भए सकल अछि। एहि क्रममे विद्यापतिक पद्यावलीक पद सभमे तकैत हमरा समक्ष विभिन्न प्रकारक गीत सभ सोझाँमे आएल। एहिमे जे अधिकांश छल से रहए प्रेमी-प्रेमिकाक विरहक विवरण आ बिदेसियाक जे मूल कनसेप्ट अछि- रोजी-रोटी आ आजीविका लेल मोन-मारि कए प्रवास, ताहिसँ फराक। तखन जा कए हमरा किछु विशुद्ध बिदेसिया जकरा विद्यापति पिआ-देसाँतर कहैत छथि भेटल। एहिमे स्वाभाविक रूपेँ अधिकांश विद्यापतिक नेपाल पद्यावलीसँ भेटल आ एकटा नगेन्द्रनाथ गुप्तक संग्रीहीत पद्यावलीसँ। मोरंग नेपाल स्थित मिथिलाक भाग अछि आ प्रवास लेल प्रसिद्ध छल, से एकर सम्भावित कारण।

ताहि आधारपर विद्यापतिक पिआ देसाँतर स्टेजपर खेलायल जाइत छल।

से बिदापत नाच आ पिआ देसाँतर दू टा नाटक बिदापतक पद्यावलीपर आधारित अछि।

मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि?

पद्यावली एकटा पैरेलल संस्कृतिक द्योतक अछि। एक्के समयमे संस्कृत आ अवहट्ठ एक्के लेखक लिख लेत, ओकरा कष्ट छै जे अवहट्ठमे लिखलापर विद्वान ओकर उपहास करै छथि, मुदा ई दर्द की एकर लेशोमात्र पद्यावलीक विद्यापतिमे नै छन्हि। ओतए तँ उल्लास आ दर्द छै, सर्वहाराक उल्लास आ दर्द। ओ विद्यापति जे संस्कृत आ अवहट्ठ (पालि ताली नै) ओ राजपण्डित छला से विद्वान रहथि, हुनका अवहट्ठोमे लिखलापर लोक निन्दा करन्हि। मुदा मैथिलीक विद्यापति जे पैरेलल परम्पराक अंग छथि, ओइसँ दूर छला। ई पैरेलल परम्परा ऋगवेदक समयसँ छै (ओइ समयमे नाराशंसी रहै) । ई पैरेलल परम्पराक विद्यापति बार्बर कास्टक रहबे करथि, वा ब्राह्मण कास्टक रहबे करथि, से इतिहास ओइपर मौन अछि। मुदा लोककथा आ परम्परा, बिदापतक सर्वहारासँ सघन सम्बन्ध, बिस्फीक परम्परा हुनका गएर ब्राह्मण सिद्ध करैए। संस्कृत आ अवहट्ठक कोनो पाँति नहिये ओइ विद्यापतिक पद्यावलीक चर्चा करैए; आ नहिये पद्यावली पद्यावलीक विद्यापतिक संस्कृत वा अवहट्ठ केर रचनाक चर्चा करैए। संस्कृत आ अवहट्ठ मुस्लिम आक्रमणक, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि मुदा पद्यावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतए नै। आ जखन मैथिलीबला विद्यापति ब्राह्मण रहबो करथि वा नै तहीपर सवाल अछि तखन पाग पहिरा कऽ कोन सोच हम सभ पैदा कऽ रहल छी, "विद्यापति" हम्मर छलाह की नै? की विद्यापतिक ब्राह्मण नै रहलासँ ओ हमर नै हेताह? की हुनकर "पिआ देशांतर" बला माइग्रेशन बला गीत महत्वहीन भए जेतै? की हुनकर सृन्गारिक गीतक मात्र चर्चा कोनो षड़यंत्र तं नै? विद्यापति सन कविकेँ पाग पहिरा कऽ जातिगत बन्धनमे बान्हब कतेक सही अछि?"मध्यकालीन मिथिला"मे विजय कुमार ठाकुर लिखै छथि: "मिथिलाक धार्मिक क्षेत्रमे एहि सामन्तवादी युगीन धार्मिक विचारधाराक प्रभाव एहन सर्वव्यापी छल जे एखनहुँ एहि परम्पराक निम्नलिखित अवशेष समाजमे विद्यमान अछि: ...(घ) पाग सेहो तांत्रिक विचारधारासँ सम्बद्ध अछि। " (पृ. २६) तँ ईहो तंत्र मंत्र बियाह उपनयन धरि ने रहए दियौ। किए ओइ पैरेलल परम्पराक विद्यापतिकेँ ओइमे सानै छियन्हि। जँ ओ बार्बर कास्टक रहथि तैयो आ जँ ब्राह्मण रहथि तँ आरो (कारण २१म शताब्दीक ब्राह्मणक कट्टरता तँ देखिये रहल छी आ ई हजार साल पुराण ब्राह्मण जँ पैरेलल परम्पराक रहथि तँ पागरूपी सामन्तवादी अवशेष तांत्रिक धार्मिक कर्ममे मात्र प्रयुक्त हुअए, विद्यापतिक माथपर नै) ।

<u>दू विद्यापति: किछु किंवदन्ती आ किछु तथ्य: बोधि कायस्थ: उगना महादेव</u>

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व)

मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा)

कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पद्यावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति: - कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, (रचना ११ फरबरी १२०६, मध्यकालीन मिथिला, वि. कु. ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पद्यावलीक भाषा छी।

जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास। आ

मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ मे उल्लेख।

समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पद्यावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः 1350-1435 विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।

बोधि कायस्थ

विद्यापति ठक्कुरःक पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पद्यावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित आ बादमे विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक) विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

उगना महादेव

महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक अहिठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहैत छलाह। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

विद्यापतिक मिथिला सांस्कृतिक परिषद द्वारा यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग-प्रतिष्ठापन

संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति ठक्कुरः आ कविकोकिल विद्यापतिक बीचक अन्तर "मिथिला सांस्कृतिक परिषद" आ ओइसँ जुड़ल "किशोरीकान्त मिश्र" आदि नै बुझि सकला वा नै बूझऽ चाहलन्हि। ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठमे) । वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा कैं ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकैं भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकैं संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि।

समानान्तर परम्पराक विद्यापति आ पाग- विद्यापतिक संस्कृत ग्रन्थमे ठक्कुर विद्यापति कृता लिखल अछि/ आ ओ विद्यापति ब्राह्मण छथि। हमर उद्देश्य मैथिली पद्यावली बला विद्यापतिसँ अछि, हुनका किए पाग पहिरा कऽ "हम्मर विद्यापति" बना लेल गेल। ई तखन नै भेल जखन बिदापत नाचक माध्यमसँ आठ सए बर्ख गएर ब्राह्मण समुदाय विद्यापतिकैं जिएने रखलक, मुदा तखन भेल जखन बंगाल विद्यापति आ गोविन्ददासक पद्यावलीकैं अपन बना लेलक मुदा बंगालेक विद्वान राजकृष्ण मुखोपाध्याय सर्वप्रथम १८७५ ई. मे कहलन्हि जे विद्यापति मिथिलाक कवि छथि आ बंगालेक नगेन्द्रनाथ गुप्त सर्वप्रथम कहलन्हि जे गोविन्ददास सेहो मिथिलाक कवि छथि आ जखन ई तथ्य सोझाँ उठल तँ पहिने तँ सगर बंगाल हुनकापर मार-मार कऽ उठल आ बादमे मानि गेल।

राजकृष्ण मुखोपाध्याय जइ विद्यापतिकैं मिथिलाक कहने रहथि ओ पद्यावलीक विद्यापतिक सन्दर्भमे छल, संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः कैं बंगाल कहियो अपन नै कहने छल।

ज्योतिरीश्वरक संस्कृत धूर्तसमागम नाटक आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक गोरक्षविजय नाटक मध्य देल मैथिली गीत सेहो पद्यावलीक पुरान परम्पराक द्योतक अछि आ ऐ दुनू लेखकपर मैथिली पद्यावलीक प्रभाव देखबैत अछि।

फेर मिथिलाक विद्वानकैं सोह एलन्हि आ विद्यापतिक संस्कृत-अवहट्ठ ग्रन्थ, गोविन्ददास नाम्ना आ विद्यापति नाम्ना पञ्जीमे उपलब्ध विवरण दऽ विद्यापति ठाकुर आ गोविन्ददास झा (!!!) निकालल गेल, एतऽ रमानाथ झाक पञ्जीक सतही ज्ञान आ सीमित दृष्टिकोण नोकसान पहुँचेलक। फेर अनचोक्के पाग पहिरा कऽ (मिथिला सांस्कृतिक परिषद- ई संस्था भारतक स्वतंत्रताक बाद विद्यापतिकैं पाग पहिरा कऽ हुनका ब्राह्मण घोषित करबाक कुकृत्य केलक) विद्यापति (मैथिली बला, संस्कृत बला नै) कैं "हम्मर विद्यापति" ब्राह्मण वर्ग द्वारा बना लेल गेल। मुदा कवीश्वर ज्योतिरीश्वर सन बहुत रास कवि पञ्जीमे उपलब्ध छथि। आ जे नामक अन्तर विद्यापतिमे आबि जाइ छन्हि (जखन कि सभ काज प्लानिंगसँ भेलै तैयो एकटा सबूत बचि गेलै) से ज्योतिरीश्वरमे किए नै अबैए।

आब आउ गएर ब्राह्मण द्वारा गाओल बिदापत, जे ज्योतिरीश्वरसँ पूर्व (सम्भवतः) नौआ ठाकुर जातिमे भेल रहथि आ तकर प्रमाणमे ज्योतिरीश्वर द्वारा वर्णन रत्नाकरमे ऐ कविक चर्चा अछि।

विद्यापतिक कोनो पद्यावलीक रचनामे अपन संस्कृत/ अवहट्ठ लेखक हेबाक चर्च नै केने छथि। मुदा हुनकर रचना (संस्कृत आ अवहट्ठक विरुद्ध, जे दोसर विद्यापतिक रचना छी, जे ब्राह्मण रहथि) सर्वहाराक लेल जे दर्द अछि से संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिमे किए नै अछि? संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति तँ सर्वहारासँ घृणा करै छथि आ लिखित रूपमे कट्टर ब्राह्मण छथि।

मुदा पद्यावलीक विद्यापति तँ निश्छल छथि, किछु कट्टर पद कट्टर ब्राह्मणवादी सम्पादक लोकनि द्वारा घोसोआओल गेल अछि (हास्यास्पद रूपमे) ।

पिआ देसान्तर (विद्यापतिक बिदेसिया) क कन्सेप्ट आब सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि। की ई दर्द अवहट्ठ आ संस्कृतक विद्यापतिमे छन्हि?

पद्यावली एकटा पैरेलल संस्कृतिक द्योतक अछि। एक्के समयमे संस्कृत आ अवहट्ठ एक्के लेखक लिख लेत, ओकरा कष्ट छै जे अवहट्ठमे लिखलापर विद्वान ओकर उपहास करै छथि, मुदा ई दर्द की एकर लेशोमात्र पद्यावलीक विद्यापतिमे छन्हि? ओतए तँ उल्लास आदर्द छै, सर्वहाराक उल्लास आ दर्द। ओ विद्यापति जे संस्कृत आ अवहट्ठ मे लिखलन्हि ओ राजपण्डित छला से विद्वान रहथि, हुनका अवहट्ठोमे लिखलापर लोक निन्दा करन्हि। मुदा मैथिलीक विद्यापति जे पैरेलल परम्पराक अंग छथि, ओइसँ दूर छला। ई पैरेलल परम्परा ऋगवेदक समयसँ छै (ओइ समयमे नाराशंसी रहै) । ई पैरेलल परम्पराक विद्यापति नौआ ठाकुर जातिक रहबे करथि, वा ब्राह्मण जातिक रहबे करथि, से इतिहास ओइपर मौन अछि।

मुदा लोककथा आ परम्परा, बिदापतक सर्वहारासँ सघन सम्बन्ध, बिस्फीक परम्परा हुनका गएर ब्राह्मण सिद्ध करैए। संस्कृत आ अवहट्ठक कोनो पाँति नहिये ओइ विद्यापतिक पद्यावलीक चर्चा करैए आ नहिये पद्यावली पद्यावलीक विद्यापतिक संस्कृत वा अवहट्ठ केर रचनाक चर्चा करैए। संस्कृत आ अवहट्ठ मुस्लिम आक्रमणक, जनौ आ मन्दिर भ्रष्ट हेबापर दुखी अछि मुदा पद्यावली तँ सर्वहाराक हर्ष, उल्लास आ संघर्ष अछि; ओइ तरहक हाक्रोस ओतए नै, हुनका समएमे तँ प्रायः मुस्लिम मिथिलामे रहबो नै करथि। आ जखन मैथिलीबला विद्यापति ब्राह्मण रहबो करथि वा नै तहीपर सवाल अछि तखन पाग पहिरा कऽ कोन सोच हम सभ पैदा कऽ रहल छी, "विद्यापति" हम्मर छलाह कि नै? की विद्यापतिक ब्राह्मण नै रहलासँ ओ हमर नै हेताह? की हुनकर "पिआ देशांतर" बला माइग्रेशन बला गीत महत्वहीन भऽ जेतै? की हुनकर शृंगारिक गीतक मात्र चर्चा कोनो षडयंत्र तँ नै? विद्यापति सन कविकेँ पाग पहिरा कऽ जातिगत बन्धनमे बान्हब कतेक सही अछि? "मध्यकालीन मिथिला"मे विजय कुमार ठाकुर लिखै छथि: "मिथिलाक धार्मिक क्षेत्रमे एहि सामन्तवादी युगीन धार्मिक विचारधाराक प्रभाव एहन सर्वव्यापी छल जे एखनहुँ एहि परम्पराक निम्नलिखित अवशेष समाजमे विद्यमान अछि: ...(घ) पाग सेहो तांत्रिक विचारधारासँ सम्बद्ध अछि। " (पृ. २६)

तँ ईहो तंत्र मंत्र बियाह उपनयन धरि ने रहए दियौ। किए ओइ पैरेलल परम्पराक विद्यापतिकेँ ओइमे सानै छियन्हि। आ ई कुकृत्य किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषद केलक। ऐ तरहक लोक जै मिथिलाक संस्कृतिक रक्षक, ओ संस्कृति आ भाषा जँ आइयो बाँचल छै, तँ ई ओइ संस्कृति आ भाषाक विशेषता छिऐ।

चेतना समितिक पत्रिकामे मानेश्वर मनुज मंच सापेक्ष बयानमे जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यासक संख्या मात्र ४ लिखलन्हि!!!

जगदीश प्रसाद मण्डलक नाममे जँ मण्डल टाइटिल नै रहैत मात्र जगदीश प्रसाद रहैत तँ रमानाथ झाक अनुयायी हुनका श्रोत्रिय, अमर-रामदेव झाक अनुयायी हुनका ब्राह्मण आ "लालदासक स्मारिका"क लेखक वर्मा जी हुनका कायस्थ घोषित कऽ दैतथि।

आ जँ जगदीश प्रसाद मण्डलक फोटो उपलब्ध नै रहितै तँ किशोरीकान्त मिश्रक प्रतिक्रियावादी मिथिला सांस्कृतिक परिषद जगदीश प्रसाद मण्डलक यज्ञोपवीत संस्कार कऽ हुनका पाग पहिरा फेर वएह कुकृत्य करितए जे ओ विद्यापतिक संग एक हजार सालक बाद केलक। आ बेरमाक कोनो बुढ़बा माटिक ढिमकाकेँ देखबैत जगदीश प्रसाद "झा/ ठक्कुरः" केर काल्पनिक घराड़ी, यएह छी, घोषित कऽ दितए।

मलंगियाक बेटा, रामदेव झाक बेटा आ ढेर रास छद्मनामीक देल गाड़ि सेहो विदेहमे बिना काँट-छाँटक छपने अछि, जे लोक पढ़ि सकए, किछु गाड़ि जे नै छापल जा सकैए, सएह टा नै छपने छी। आ गारिक डरसँ अखन धरिक मैथिली आ मिथिलाक इतिहासकार ऐ विषयपर इशारा तँ केलन्हि मुदा आगाँ नै बढ़ला।

तेँ ओ ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) पूर्व विद्यापतिये रहथि से फेर सिद्ध होइए। जयदेव (लगभग १२००) क गीत-नृत्य आ किरतनियाँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पद्यावली मेल खाइत अछि, संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक काव्य सौष्ठवसँ मेल नै खाइत अछि।

आब पुनः आबी मिथिला सांस्कृतिक परिषदक मंच। ई परिषद विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार नै, मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार केलक। ओकर विद्यापतिकेँ पहिराओल पाग, कोलकातासँ बिन्ध्येश्वर मण्डल आ श्रीकान्त मण्डलकेँ लुप्त कऽ देलक आ मैथिलीक यज्ञोपवीत संस्कार पूर्ण भऽ गेल।

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक जातिगत कट्टरताक बानगी देखी: -

कीर्तिलता- जाति-अजातिक विवाह अधम कएँ पारक।

पुरुष-परीक्षामे विद्यापति कथा कहैत-कहैत लेखकीय वक्तव्य दै छथि कि राजपूतक स्त्री चरित्रहीन होइत अछि, ई ओहिना भेल जेना अथर्ववेदमे शूद्रक पत्नीकेँ बिना स्वीकृतिक कियो हाथ पकड़ि लऽ जा सए बला वक्तव्य, अथर्ववेद बा कोनो वेदमे ओइ तरहक वक्तव्य कहियो नै आयल छल।

शुक्ल यजुर्वेद (२६.२)-यथेमां वाचं कल्याणीमावदानि जनेभ्यः। ब्रह्मराजन्याभ्यां शूद्राय चार्याय च स्वाय चारणाय च। । हम सभ गोटेकें ई पवित्र वाणी (वेदवाणी) सुनाबी। ब्राह्मणकें, क्षत्रियकें, शूद्रकें आ आर्यकें; अपन लोककें आ अपरिचितकें सेहो (माने सभकें) । मुदा ऐ वेदवाक्यक विपरीत मनुस्मृति वेदवाणीक अध्ययन/ श्रवणकें समाजक किछु गोटे लेल निषेध करऽ चाहलक, मुदा स्मृति सेहो वेदवाक्यकें प्रमाण मानैत अछि (शब्द प्रमाण) तें तकर विरुद्ध देल ओकर निर्देश स्वयं अमान्य भऽ जाइत अछि।

मुदा पुरुष परीक्षामे तँ अछि, आ अहाँकँ लगैए जे संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतक ई साधांस हेतन्हि जे अपन आश्रयदाताक जातिक स्त्रीक प्रति एहेन लिखि सकता?

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति जाति-अजातिपर विशेष बल दै छथि, रक्त शुद्धता/ जाति हुनका लेल महत्वपूर्ण छन्हि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- अकुलीन कोनो दयाक अधिकारी नै अछि!! आ सौन्दर्य मात्र धनिक आ विशिष्ट वर्गक एकाधिकार अछि!! संस्कृत आ अवहट्ठबला (किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला) विद्यापति कहै छथि- जाति सामाजिक जीवनमे अन्तिम निर्धारक तत्व अछि। जे खराप कुलमे जन्म लैए ओ दुष्ट दिमागक साँप मात्र बनि सकैए!! किशोरीकान्त मिश्रक मिथिला सांस्कृतिक परिषदक जनौ आ पागबला संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति कहै छथि- ओ देश जतऽ जातिक निअम लागू नै होइए से म्लेच्छ देश थिक। (Aspects of Society and Economy ofMedieval Mithila- Upendra Thakur)

अमीर खुसरोसँ पहिने पागक वर्णन हमरा नै भेटल अछि।

मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति (पद्यावलीक लेखक) कहै छथि: - नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

ताहि द्वारे राजा ककरो दण्ड नहि दैत छथि आ सभटा पैघ लोक एके रंग छथि।

गोविन्ददासक पद्यो क्लिष्ट छलन्हि आ एकर समानान्तर परम्परा सेहो नै छल (सम्भवतः सवर्ण मध्य प्रचलनक कारण ई दुनू चीज छल), से बिदापत नाच जकाँ ओ एतुक्का माँटिमे संरक्षित नै भऽ सकल। गंगेश उपाध्यायक तत्त्वचिन्तामणिक चर्चा मुदा वर्धमान जे हुनका सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि, ओ कविता सभ कतऽ गेल? पक्षधर लिखैपर प्रतिबन्ध लगेलन्हि मुदा रघुनाथ शिरोमणि आ हुनकर शिष्य “उदयन” आ “गंगेश” क कृतिकेँ रटि कऽ चलि गेलाह आ नवद्वीपमे नव्य-न्याय स्कूलक स्थापनाक संगे बंगालसँ विद्यार्थी एनाइ बन्द भऽ गेल।

ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति: - कश्मीरक अभिनव गुप्त (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ)- ग्रन्थ “ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी” मे विद्यापतिक उल्लेख करै छथि।

श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत, - श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पद्यावलीक भाषा छी।

“जाव न मालतो कर परगास

तावे न ताहि मधुकर विलास।”

आ

"मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द"

(मध्यकालीन मिथिला, विजय कुमार ठाकुर)

ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल- ॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥..... विदातञो आस्थान भीतर भउ. तका पछा तेलङ्गी. मरहठी. वि। दओतिनी दुइ चित्रकइ गाङ्ग जउन निहालि अइसनि देषुअह. चउआञ्चरि चीरि एकहोङ्क परिहने ....से कइसन देषु. जइसे प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकैँ गङ्गाजमुनाक सम्वाहि। का हो तइसे ता विदाञोतके दुअओ सम्वाहिका हो भउअह. दशञुन्धी राजा अवधान कराउ. विदाञोत आस्थान वइसु.

(विदाञोत (पुरुख) भीतर भेल, तकर पाछाँ तेलङ्गी, मरहठी। विदओतनी (स्त्री) दूटा रंगक गङ्गा यमुनामे नहायलि एहन देखाइए। चारि-चारि आँचरबला चीर एकहकटा पहिरने। से केहन देखू. जेना प्रयागक्षेत्र सरस्वतीकैँ गङ्गाजमुनाक संगबे तेहने ओइ विदाञोतकैँ दुनू सम्वाहिका। दशञुन्धी राजाकैँ अवधान करेलक, विदाञोत स्थानपर बैसला।

अष्टमः कल्लोलः- ॥अथ राज्य वर्णना॥ ...विदाञोत त। न्हिक गीत. नृत्य. वाद्य. ताल. घाघर परिठरइतैँ आह...

विदाञोत लोकनिक गीत, नृत्य, वाद्य, ताल, घाघर पहीरि कऽ भेल।

उगना महादेव: महादेव (उगनारूपी) विद्यापतिक ऐठाम गीत सुनबा लेल उगना नोकर बनि रहै छलाह। मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) आ विद्यापति ठक्कुरः (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक आ राजा शिवसिंहक दरबारी) दुनूसँ सम्बद्ध कऽ उगनाक ई कथा प्रसिद्ध भेल।

बोधि कायस्थ: विद्यापति ठक्कुरःक पुरुष परीक्षामे हिनक गंगालाभक कथा वर्णित अछि। महाकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व मैथिली पद्यावली सभक लेखक) क विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित छल आ बादमे विद्यापति ठक्कुरक (संस्कृत आ अवहट्ठक लेखक) विषयमे सेहो गंगालाभक ई कथा प्रचलित भेल।

विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत साहित्य मिथिलाक विद्वान परम्पराक लोपक बाद सोझाँ आएल, आ संस्कृत साहित्यमे विद्यापति ठक्कुरःक कोनो खास चर्च नै भेटैत अछि आ बंगालक विद्यार्थीक एनाइयो कम भऽ गेल छल, जे अबितो रहथि हुनका लेल विद्यापति ठक्कुरःक संस्कृत आ अवहट्ठ साहित्य समकालीनक साहित्य छल जे खतम होइत विद्वता परम्पराक साहित्य छल आ सेहो तखन लिखाइये रहल छल, मुदा ज्योतिरीश्वर-पूर्व पद्यावली प्रसिद्धि प्राप्त कऽ लेने छल। ओइ कालक गोनू वा विद्यापतिक समय पाग रहबो करए सेहो निश्चित नै, कारण अमीर खुसरो (१२५३-१३२५) मात्र एकर चर्च केने छथि। विजय कुमार ठाकुर एकरा सामन्तवादी प्रतीक आ तंत्र मंत्रसँ सम्बद्ध मानै छथि। मुस्लिम आक्रमणक बाद अधीनस्थ सामन्तकैँ ई पहिराओल गेल हएत आ ई मुस्लिम टोपीसँ मेल खाइतो अछि, आ मात्र ब्राह्मण-कायस्थ मुस्लिम आक्रमणक बाद मिथिलामे सामन्त रहथि (राजपूत नै) आ आइयो अही दू वर्गक बीच ई कहियो काल बियाह आदिमे प्रयुक्त होइए।

महाकवि विद्यापति- कवीश्वर ज्योतिरीश्वर (लगभग १२७५-१३५०) सँ पूर्व (कारण ज्योतिरीश्वरक ग्रन्थमे हिनक चर्च अछि), मैथिलीक आदि कवि। संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरःसँ भिन्न। सम्भवतः बिस्फी गामक नौआ ठाकुर श्री महेश ठाकुरक पुत्र (परम्परा अनुसार) । समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पद्यावलीक (ज्योतिरीश्वरसँ पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि।

विद्यापति ठक्कुरः १३५०-१४३५ विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि।

फणीश्वरनाथ रेणु बिदापत नाचपर रिपोर्ताज लिखलनि जे १ अगस्त १९४५ ई. कैँ साप्ताहिक"विश्वमित्र" मे प्रकाशित भेल। ऐ रिपोर्ताजक महत्व अछि, कारण ई ऐ विषयपर ज्योतिरीश्वर द्वारा लिखित विवरणक ७०० बर्ख बाद लिखल गेल आ ऐ ७०० बर्खमे जे विद्यापतिकैँ समानान्तर परम्परा जिआ कऽ रखलक। आ जे एकरा जिआ कऽ रखलक ओकरासँ अनचोक्के विद्यापति छीनि लेल गेलन्हि। बिदेश्वर ठाकुर विद्यापति गीतगबैत आ हाक्रोश करैत मृत्युकैँ प्राप्त केलन्हि जे विद्यापतिकैँ पाग पहिरा कऽ ब्राह्मण सभ छीनि लेलक। ब्रह्मपुराक कानूनगो बद्री प्रसाद ठाकुर, पोखरिभीड़ाक बिनोद ठाकुर, रुद्रपुरक सरयुग ठाकुर आ मेंहथक जयराम ठाकुर आ बिस्फीक सौँसे गाम आइयो ई रटि रहल छथि। शालिग्राम यादव, अवधिया ठाकुर बिस्फी गामक परम्पराक गवाह छथि। विद्यापति कर्मकाण्डीय अपहरण मे हुनकर जन्म आदिक प्रति सभ तरहक अनर्गल तर्क उपस्थित होइत रहल मुदा हुनकर समानान्तर परम्पराक

मादे कोनो शोध-पत्रमे चर्चो धरि नै भेल। ई आलेख बिदेश्वर ठाकुर सन हजारक हजार समानान्तर परम्पराक लोकक प्रति समर्पित अछि जे बिदापतक ज्योतिरीश्वर आ फणीश्वरनाथ रेणुक दुनू आलेखक बीच विद्यापतिकेँ जिआ कऽ रखलन्हि।

<u>मिथिलाक शतपथ ब्राह्मणक परम्परा आ मिथिलाक समानान्तर परम्परा</u> वैदिक संस्कृतक प्राचीनतम ग्रन्थ ऋगवेदसँ पहिनेसँ भाषा अस्तित्वमे रहल हएत। कतेक मौखिक साहित्य जेना गाथा, नाराशंसी, दैवत कथा आ आख्यान सभ ओहिमे रचल गेल हएत। एहने गाथा सभक गायकक लेल“गाथिन”, “गातुविद्” आ“गाथपति” ऋगवेदमे प्रयुक्त भेल। वैदिक कालेसँ गाथा आ नाराशंसी समानान्तर रूपमे रहल। प्राकृतसँ वैदिक संस्कृत बहार भेल आकि वैदिक संस्कृतसँ प्राकृत? वेदमे नाराशंसी नाम्ना जन आख्यान यएह सिद्ध करैत अछि जे दुनू समानान्तर रूपेँ बहुत दिन धरि चलल। ई समानान्तर परम्परा दुनूकेँ प्रभावित केलक। आब ऋगवेद देखू- ओतए दुर्लभ लेल- दूलभ, (ऋगवेद ४.९.८) प्रयोग की सिद्ध करैत अछि? अथर्ववेदमे पश्चात् लेल पश्चा (अथर्ववेद १०.४.१०) की सिद्ध करैत अछि? गोपथ ब्राह्मणमे प्रतिसन्धाय लेल प्रतिसंहाय की सिद्द करैत अछि? (गोपथ ब्राह्मण२.४) । जे आर्य छथि से भारतक पच्छिम भागसँ मिथिलामे एलाह, आ हुनका सभक एबासँ पूर्व वेदक किछु अंश विद्यमान छल, तेँ ने बहुत रास शब्द जे मैथिलीमे अछि, बहुत रास उच्चारण जे मैथिलीमे अछि ओ वैदिक संस्कृतमे अछि, मुदा लौकिक संस्कृतमे नै अछि। अविद्या, कर्मसिद्धान्त, जन्म आ पुनर्जन्मक आवाजाही आ मोक्ष ई सभ अनार्यसँ आर्यकेँ भेटलै। तेँ ने उपनिषदमे मोक्ष प्राप्तिक मार्ग छै, स्वर्ग प्राप्तिक नै। मोक्ष भेटत कोना? यज्ञ केलासँ? नै, ई भेटत ज्ञानसँ आ मनन-चिन्तन आ समाधिसँ। राजा जनकक संरक्षणमे याज्ञवल्क्य बृहदारण्यक उपनिषदक तिरहुतक अनार्य क्षेत्रमे रचना केलन्हि। वाचस्पति मिश्र सांख्यकारिकाक सन्तावनम सूत्रक व्याख्या करैत कहै छथि जे की ई कहि सकै छी जे अचेतन दूध केर पोषणसँ परु पोसाइए आ अचेतन प्रकृतिक संचालनसँ जीवकेँ मुक्तिक ज्ञान भेटैए? ईश्वर तँ स्वयंमे पूर्ण छथि तँ ओ कोन उद्देश्ये विश्वक सृष्टि करताह आ जीव लेल जँ ओ सृष्टि करताह तँ सृष्टिक बादे तँ जीव बन्हाइए आ सृष्टिसँ पूर्व तँ बन्हेबाक प्रश्ने नै अछि, तखन जीवक प्रति कथीक दया? से प्रकृति द्वारा सृष्टि होइए आ जीव अपन प्रयाससँ अपवर्गक प्राप्ति करै छथि। आ विवेकसँ होइए प्रलय। से ईश्वरवाद नै निरीश्वरवाद अछि वाचस्पतिक व्याख्या। प्रकृति संचालनमे जँ ईश्वर भाग लै छथि तँ ओ चेतन प्रक्रिया हएत जे कोनो उद्देश्येसँ हएत आ तकर कोनो खगता ईश्वरकेँ छन्हिये नै। न्यायसूत्रक रचना केनिहार मिथिलाक गौतम सोलह पदार्थक ज्ञानसँ जीवक निःश्रेयस प्राप्त करबाक चर्च करै छथि, मुदा ऐ सभमे ईश्वरक कतौ चर्च नै अछि जे हुनको द्वारा मुक्ति सम्भव अछि। वैशेषिक सूत्र कहैए जे वेद विद्वान लोकनि द्वारा रचल गेल अछि नै कि ईश्वर द्वारा। कुमारिल भट्ट कहै छथि जे सृष्टिक पूर्व ईश्वरक विषयमे कोनो विश्वसनीय चर्चा असम्भव अछि। शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धारा, आ तकर समानान्तर मुख्यधारा: ब्राह्मण आ गएर ब्राह्मणवाद मिथिलामे शुरुएसँ रहल अछि। ज्योतिरीश्वर लिखै छथि- बौध पक्ष अइसन- आपात भीषण। अगतिशील शतपथ ब्राह्मणक परम्परा नामक साम्यताक कारण संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ पूज्य बनबैपर बिर्त अछि। ऋक् आ नाराशंसी, महाकवि विद्यापति आ पागबला विद्यापति, मोक्ष आ स्वर्ग-नर्क ई दुनू परस्पर विरोधी विचारधारा मिथिलामे रहल। शतपथ ब्राह्मणक विदेघमाथव आ पुराणक निमि दुनू गोटेक पुरोहित गौतम छथि से दुनू एके छथि आ एतएसँ विदेह राज्यक प्रारम्भ। माथवक पुरहित गौतम मित्रविन्द यज्ञक/ बलिक प्रारम्भ कएलन्हि आ पुनः एकर पुनःस्थापना भेल महाजनक-२ क समयमे याज्ञवल्क्य द्वारा। मैत्रेयी, याज्ञवल्क्य, सीता, जनककेँ रटैत-रटैत ई परम्परा विद्यापतिक यज्ञोपवीत संस्कार आ पाग प्रतिष्ठापन जइ तीव्र गतिये केलक से ओकर शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल। १७६० ई. क माधव सिंहक शाखा पञ्जीक आदेशक बाद मिथिलामे ब्राह्मण आ कायस्थ मध्य नव-कुलीनवादक प्रसार भेल आ भलमानुस (बत्तेसगमिया) उपजातिक कर्ण कायस्थमे आ स्रोत्रिय उपजातिक मैथिल ब्राह्मणमे उत्पत्ति भेल, ओइसँ शारीरिक आ मानसिक बीमारी ऐ दुनू उपजाति मध्य भयंकर रूपसँ बढ़ल, संगे बहुविवाह, बाल-विवाहक आ विधवाक संख्यामे अत्यधिक वृद्धि भेल। आ ईहो जइ शान्तिपूर्ण रूपसँआ तीव्रगतिसँ भेल से शतपथ ब्राह्मणक तथाकथित मुख्य धाराक अनुकूल छल।

<u>विद्यापतिपर दिनेश्वर लाल आनन्द आ रामवृक्ष बेनीपुरीक विचार</u> दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ भ्रम रहन्हि, ओइ कालमे पञ्जी गुप्त चीज रहै, जे संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापतिक विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार (निम्न कोटिक) कऽ देल गेल रहै। शाखा पञ्जी १७६० ई. सँ पहिने रहबे नै करै आ तकर प्रमाण अछि जे अयाची मिश्रक मूलक निचुलका पीढ़ी स्रोत्रिय उपजातिमे अछि आ ब्राह्मण उपजातिमे सेहो। ई ओहिना अछि जे सिन्धु घाटी सभ्यतामे बड़द रहै मुदा गाय नै (सीलपर), मुदा बिनु गाय बड़दक उत्पत्ति कोना हएत। दिनेश्वर लाल आनन्दकेँ पञ्जीक सभ तथ्य उपलब्ध नै रहन्हि, प्रायः पद्यावली बला विद्यापति आ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक एक्के हेबाक दुष्प्रचारमे हुनका लागल हेतन्हि जे अवहट्ठमे लिखबाक कारण जँ विषएवार बिस्फीकेँ पञ्जीमे जयवार करबाक सम्बन्धसँ जोड़ल जाए तँ विद्यापति ठक्कुरः किए क्रान्तिकारी भेलाह से व्याख्या कएल जा सकत। मुदा दिनेश्वर लाल आनन्द सेहो मानै छथि जे पद्यावलीक हुनकर (विद्यापतिक) हाथक तँ छोड़ू, हुनकर कालोमे संगृहीत पदक कोनो विवरण नै अछि। मुदा से कोना सम्भव जखन

संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति अपन संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थ सभ टहंकारसँ आरम्भ आ समापन करै छथि, के राजा-रानी हुनका प्रेरित केलखिन्ह, ककर आश्रित छलाह, सभ वर्णन दैत। पूर्ण लेखकीय अन्दाज, सरस्वती आ लक्ष्मी दुनुक बल; तखनपद्यावलीमे से किए नै? दिनेश्वर लाल आनन्द गुम्म छथि। संस्कृत आ अवहट्ठ बला विद्यापति अपन आश्रयदाताक विषयमे लिखने छथि मुदा कोनो संस्कृत आ अवहट्ठ ग्रन्थमे अपना विषयमे किछुओ नै लिखने छथि। ओ अवहट्ठ लिखबोमे दवाबक अनुभव करै छथि, जे तखुनका मुख्य परम्पराक साहित्यिक भाषा छल। मुदा ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक प्रभाव एतेक छलन्हि जे हुनका संस्कृत नाटक गोरक्षविजयमे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि (जेना विदाञोतक पहिल रिपोर्ताज लिखनिहार ज्योतिरीश्वरकेँ संस्कृत नाटक धूर्तसमागममे मैथिली गीत लिखऽ पड़लन्हि) । गोविन्द झा ज्योतिरीश्वरक विदाञोतमे विद्यापतिक परम्परा देखि लै छथि, चर्च करै छथि मुदा ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिकेँ आगाँ किए नै बढ़ा पबैत छथि जखन बिदेश्वर ठाकुर गाबि-गाबि कऽ प्राण त्यागि रहल छथि? विद्यापति नाटकमे विद्यापतिकेँ प्यास जतऽ लगलन्हि ओ नाटक लेखकक गाम कोना भऽ जाइए? सभ अपना-अपना हिसाबसँ“हम्मर विद्यापति” पर नाटक लिखि रहल छथि। रामबृक्ष बेनीपुरी लग सेहो पञ्जीक तथ्य नै छन्हि। एकटा उपजातिक बनोतरी आ किंवदन्तीक आधारपर ओ केशव मिश्रक विद्यापतिपर हँसब लिखै छथि; द्वैत परिशिष्टक ई केशव मिश्र वाचस्पति-२ (१४००-१४९०) क पौत्र छथि। एकटा आर केशव मिश्र (११५० लगभग) छथि जे तर्कभाष लिखै छथि आ जकर समीक्षा तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक पुत्र वर्धमान“तर्कप्रकाश” मे करै छथि। आनन्द कुमारस्वामे जतेक शोध १९१५ ई. मे केने रहथि ओइसँ एक्को डेग आगाँ नहिये बेनीपुरी जा सकलथि नहिये आनन्दस्वामीक सए बर्ख बाद कियो दोसर मुख्यधाराक शोधकर्ता जा सकल छथि। वएग उगनाक कथा बेनीपुरी कहै छथि, मुदा महादेव संस्कृत आ अवहट्ठक कट्टर विद्यापतिक“शैवसर्वस्वसार” पर कैलाशमे नचता आकि ज्योतिरीश्वरपूर्व विद्यापतिक नचारीपर, ओइपर गुम छथि। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ बुझल छन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक हाथक लिखल भागवत उपलब्ध अछि आ इहो जे विद्यापतिकेँ गंगालाभ कोना भेलन्हि, गंगा हुनका अपनामे लीलि लेलखिन्ह। आनन्द कुमारस्वामी जकाँ बेनीपुरीकेँ संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिक लिखल पुरुषपरीक्षाक विषयमे सुनल छन्हि मुदा पढ़ल नै छन्हि, आ से नै तँ हुनका बुझल रहितन्हि जे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति गंगालाभक कथा बोधि कायस्थक विषयमे लिखने छथि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विषयमे ई कथा उगनाक कथा सन प्रचलित छल जे बादमे संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापतिसँ कर्मकाण्डीय रूपमे जोड़ल गेल आ पुरुषपरीक्षाक कथा बोधि कायस्थ एकर प्रमाण अछि। कीर्तिपताकाकेँ बेनीपुरी मैथिली गीतक संग्रह कहै छथिइ!! पूछि-पाछि कऽ शोध कएल जाइ छै? जे आधार कुमारस्वामी सए बर्ख पहिने रखलन्हि, ओइपर सुखाएल मुख्यधारा किए नै आगाँ बढ़ल कारण ई शतपथ ब्राह्मणवादी मुख्यधारा ओकरा एकर अनुमति नै दै छै। मुदा बिना कोनो प्रमाणक शिवसिंहक मित्र पुरादित्यकेँ भूमिहार ब्राह्मण सिद्ध कऽ दै छथि, ओहिना जेना गोविन्ददास (झा) केँ रमानाथ झा स्रोत्रिय बतेलन्हि (सुकुमार सेन तकरा हास्यास्पद मानै छथि), आ रामदेव झा ब्राह्मण सिद्धकरै छथि आ कालिदासकेँ वर्माजी (लालदास स्मारिकामे) कायस्थ सिद्ध करै छथि। संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापति पूर्ण कर्मकाण्डक संग पुस्तकक प्रारम्भ आ अन्त करै छथि, राजा-रानी-आश्रयदाताकेँ मोन पाड़ै छथि मुदा अपन चर्च नै करै छथि। मुदा पद्यावली लोककण्ठमे किए रहि गेल, पुस्तकक तामझाम ओ तकरा किए नै देलन्हि, कारण ओ हुनकासँ कए सए पूर्वक रचना छल, जखन पागक उत्पत्ति मिथिलामे नै भेल छल। पद्यावलीमे रूपनारायण, शिवसिंह, लखिमा, देव सिंह, हर सिंह, पद्म सिंह, विश्वास देवे, अर्जुन-अमर, राघव सिंह, रुद्र सिंह, धीर सिंह, भैरव सिंह, चन्द्र सिंह आदि बादमे घोसिआएल गेल, जे गीतक लयकेँ प्रभावित करैत स्पष्ट रूपसँ दृष्टिगोचर होइत अछि। संस्कृत-अवहट्ठबला विद्यापति भू-परिक्रमा (देव सिंह), कीर्तिलता (कीर्ति सिंह आ वीर सिंह), कीर्तिपताका, गोरक्षविजय (शिव सिंह), लिखनावली (पुरादित्य), दान वाक्यावली (रानी धीरमति) आदि स्पष्ट रूपसँ राज्याश्रित रचना छल। गोरक्षविजय नाटक भैरव पूजाक अवसरपर लिखल गेल आ ऐ मे धूर्त समागम सन मैथिली गीत छल जे ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक भयंकर प्रभाव स्वरूप छल। नामक असमानता नै रहैत तँ ज्योतिरीश्वकेँ ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापति बना देल जाइत।

निष्कर्ष तत्वचिन्तामणिकारक गंगेश १२००० ग्रन्थक बराबर एकटा ग्रन्थ लिखलन्हि। प्रोफेसर दिनेशचन्द्र भट्टाचार्य“हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला” मे लिखै छथि-“The family which was inferior in social status is now extinct in Mithila... Gangesha’ s family is completely ignored and we are not expected to know even his father’ s name.” आ ई सभ सूचना, ओ लिखै छथि, हुनका प्रो. आर. झा (रमानाथ झा) देलखिन्ह! आब आउ पञ्जीमे वर्णित तथ्यपर- ओइमे स्पष्ट रूपसँ लिखल अछि जे तत्वचिन्तामणिकारक गंगेशक जन्म पिताक मृत्युक पाँच वर्ष बाद भेलन्हि आ ओ चर्मकारिणीसँ विवाह केलन्हि, तँ ई गप रमानाथ झा दिनेशचन्द्र भट्टाचार्यसँ किए नुकेलन्हि? एकटा उपजाति द्वारा हिनकर मूर्खसँ विद्वान बनबाक गपपसारल गेलन्हि आ हिनका खतम करबाक साजिश भेल। गंगेशक पुत्र वर्द्धमान गंगेशकेँ सुकविकैरवकाननेन्दुः कहै छथि। मुदा गंगेश सन प्रसिद्ध विद्वानक कविता कोन साजिशक अन्तर्गत आइ उपलब्ध नै अछि से ऊपर देल उदाहरणसँ स्पष्ट अछि। बंगालक वासुदेव पक्षधर मिश्रक सहपाठी

रहथि, मिथिला पढ़ैले एला, शलाका परीक्षा उत्तीर्ण केलन्हि आ सर्वभौम उपाधि भेटलन्ह्। वासुदेव गंगेशक तत्वचिन्तामणि आ उदयनक न्यायकुसुमांजलिक कारिकाकेँ कंठस्थ कऽ लेलन्हि। पक्षधर आ आन मिथिलाक शिक्षक तत्वचिन्तामणि लिखबाक (प्रतिलिपि करबाक) अनुमति नै दै छला! वासुदेवक शिष्य रघुनाथ शिरोमणि अपन गुरु पक्षधर मिश्रकेँ शास्त्रार्थमे हरा प्रमाणित करबाक अधिकार लेलन्हि। नव्यन्याय स्कूलक नवद्वीपमे वासुदेव-रघुनाथ द्वारा स्थापना भेल। पक्षधर मिश्र संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन छला। आ रघुनाथक संग बंगालसँ मिथिला विद्यार्थीक आगमन बन्द भऽ गेल। शिवसिंह द्वारा संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ जे बिस्फी ताम्रपत्र देल गेल तकरा ग्रियर्सन फर्जी कहलन्हि कारण ओ विद्यापतिक पद्यावलीसँ परिचित रहथि आ बूझि गेल रहथि जे ओइ विद्यापतिकेँ ईताम्रपत्र भेटब असम्भव छल। मुदा ई ताम्रपत्र तँ संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिकेँ भेटल छलन्हि आ दुनूक बीचक अन्तर ग्रियर्सन नै सोचि सकला। मुदा से म. म. हरप्रसाद शास्त्री सोचलन्हि आ ऐ ताम्रपत्रकेँ असली बतेलन्हि। श्रीधरदासक सदुक्तिकर्णामृतमे कैवर्त पपीहाक गंगापर स्तुति गीत अछि। राधाकृष्णक गीत अछि। लक्ष्मणसेनक राज कवि धोयी (जोलहा) रहथि।

लखिमा ठकुराइन पद्यावली नै लिखलन्हि संस्कृतमे पद्य लिखलन्हि (ग्रियर्सन) । श्रीधरदासक अभिलेख अंधरा ठाढ़ीमे अछि आ ओ नान्यदेव आ गंगदेवक मंत्री रहथि। हुनकर वंशज अमिअकर संस्कृत आ अवहट्ठबला विद्यापतिक समकालीन रहथि। गंगदेवकेँ उपेन्द्र ठाकुर कलचुरी मानै छथि। विजय कुमार ठाकुर कलचुरि कर्णक स्तुतिमे सदुक्तिकर्णामृत (श्रीधरदास) क विद्यापतिक गीतकेँ मानै छथि। राधाकृष्ण चौधरीक मत ऐ सँ भिन्न छन्हि।

कोनो परिस्थितिमे ई विद्यापति ज्योतिरीश्वर पूर्व रहथि।

“रामचरित”- विग्रहपाल-३ कर्णकेँ हरेलन्हि, ऐ सम्बन्धमे बेगूसरायसँ उत्तर १६ किमी. नौलागढ़सँ दूटा पाल अभिलेख राधाकृष्ण चौधरीकेँ भेटलन्हि। ओहो कर्ण ११म शताब्दीक छथि।

ज्योतरीश्वर पूर्व विद्यापतिक पद्यावली बंगालमे प्रसिद्ध अछि। ज्योतिरीश्वरक धूर्त समागम दक्षिण भारतमे प्रसिद्ध अछि। आ तकर बाद बंगालसँ मिथिलामे विद्यार्थी एनाइ बन्द भऽ गेल आ संगे मिथिलाक नाटक आ पद्यावलीक बहिर्गमन सेहो।

अनुलग्नक

<u>अनुलग्नक: १</u>

<u>फणीश्वर नाथ रेणु: एकटा लोकगीतक विद्यापति</u> भूमिका

महाकवि विद्यापतिपर “खोज” करैत काल हमरा लागल जे एक अध्यायक शीर्षक राख’ पड़त- “खेतिहर-बोनिहार आ बहलमानक कवि विद्यापति” । कारण पूर्णियाँ-सहरसाक इलाकामे आइयो विद्यापतिक पद्यावली गाबि-गाबि क’ भाव देखाक’ नाचैबलाक मण्डली सभ अछि। ऐ मण्डली सभक नायक महिसवार, चरबाह आ गाड़ीक बहलमाने होइ छथि प्रायः। मैथिल पण्डित लोकनिसँ पुछलौं

, ई कोना भेल? बजला, अहाँ कोन फेरामे पड़ल छी? अही सभ मूर्खक कारण आइ विद्यापतिक दुर्दशा भ’ रहल अछि। ऐ मामूली लोक सभक मोनमे जखन एलै विद्यापतिक नामपर“चारिटा पद्यावली” जोड़ि देलक। ..अहाँ दिग्भ्रमित भ’ रहल छी।.. मिथिलाक पण्डितक वर्जना-वाणीपर कान-बात नै दैत हम सहर्ष सहरसा (बा सहर्षा?) यात्राक तैयारी शुरू क’ देलौं। ..कनचीरा गाम एकटा एहन गाम अछि जइपर दू-दू जिलाक जिला अधिकारीक शासन चलैत अछि। अदहा गाम सहरसामे, अदहा गाम पूर्णियाँमे।... कनचीराक विद्यापति-मण्डलीक नाम दुनू जिलाक लोक लै छथि। ... जइ दिन कनचीरा गाम पहुँचलौं, गाममे एकटा अघट घटना घटित भ’ गेल रहै। दस सालसँ इलाकाक प्रतिनिधित्व करैबला नेताजी चुनावमे चितंग भ’ गेल रहथि। तइ द्वारे ओइ राति नाच-गानक दोसरे मतलब निकालल जा सकै छल, ऐ डरे“विद्यापति-मण्डली” क नायक जनकदास नाच करबाक अनुमति नै देलनि। दोसर राति ओ बड्ड खुशामद करेलाक बाद अनुमति देलनि। नायक जनकदास बड्ड तर्क-वितर्क केलाक बाद घुमा-फिरा क’ दोहरा-तेहरा क’ कहलनि, “विद्यापति- नाच” क जन्म हुनके परिवारमे पहिले-पहिल भेल। विस्तारसँ ओ कहियो किछु नै कहलनि। आ हुनका जखन ई विश्वास भ’ गेलनि जे“विद्यापति नाच मण्डली” क नामपर खर्च करबा लेल हजार- दू हजार टाका सरकारक खजानासँ ल’ क’ हम नै बहराएल छी, तखन ओ मृदंगपर थाप देलनि। राति भरि नाच देखैत रहलौं। गाए चरबैबला छौड़ा, साड़ी पहीर विरहिनी राधा बनि गेलि आ कानि-कानि गाबए लागलि-“कतेक दिवस हरि खेपब हो, तुम एसकरि नारी!” दोसर दिन, जनकदाससँ ऐ नाचक उत्पत्तिक इतिहास पुछलौं तँ ओ बाजल-नै जानि कहियासँ ऐ नाचक मूलगैनी हमरा परिवारमे चलैत आबि रहल अछि। जनकदासक ऐ उदासीक कारण छल- हमर टेपरेकार्डर।.. चुप्पे-चुप्पे सभ गीत फीतामे अहाँ भरि लेलौं, चलाकीसँ। मंगनीमे अपन काज सुतारि लेलौं अहाँ? आ, अंतिममे पचास टाका नगदी

देलाक बादो ओ हमर ऐ प्रश्नक कोनो उत्तर नै देलनि कि खेतिहर-बोनिहार, चरवाह आ बहलमान सभ कहिया आ केना विद्यापतिक पद्यावलीकेँ गाबि-गाबि नाचब प्रारम्भ केलनि। जनकदासक पलानीमे पुआरपर पड़ल रही दिन भरि, ओकरा दया नै लगलै। ओकर मसोमात जवान बेटी हमरा दिससँ पैरवी केलक, तखनो ओ नै पसिझल, अपन खानदानीक“हँसी” करबैबला गप के“गजट” मे“छापी” कराब’ चाहत? बुरहा जनकदास बड़द खोलि चरबै लेल चलि गेला। हम ओकर पलानीमे पड़ल रहलौं आ तकर बादे एकटा खिस्सा सुनलौं बा सपना देखलौं बा“भ्रम” मे पड़ि गेलौं- ई नै कहि सकै छी।

अनुलग्नक: २

बिदापत नाच (मूल रिपोर्ताज फणीश्वरनाथ रेणु)

बिदापत नाच

ऐनाचक उत्पत्ति दरभंगा जिलामे भेलै, एहन अंदाज कएल जाइछै|लेकिन अपने मातृभूमिमे ई कोन तरहक अवस्थामे अछि एकरा कहबाक जरूरत नै बुझाइत अछि, परंच उत्तरी बिहारक किछुजिला आ भागलपुर, पूर्णिया आदिक गाम सभमे आइयो एकरकद्र छै। ई छोटका लोक सभक नाच बनि कऽरहि गेल अछि। तथाकथित भद्र समाजक लोकएकरा देखबामे अपन हेठीबुझै छथि। मुदा मुसहर, धाँगड़, दुसाधक ठामविवाह, मुंडन संगेअन्य अवसरोपर एकर धूम मचल रहै छै। ऐनाचमे सात-आठ टा कलाकार रहै छै आ दुइए टा वाद्य यन्त्र-मृदंग आ मंजीरा रहै छै। तँचलू। बिदापत-नाचक आनंद उठाबी। अपन भद्रताकेँ किछु काल लेलत्यागि....

धृंग धा, धृंग धा तिन्ना- बाजि कऽ मृदंग बौक भऽ गेल। कुन कुन कुन कुन... मजीरा स्वरमे संग देलकै।

गननायकं फलदायकं पंडितम् पतितम्... अहाँ सभ हँसू जुनि। ई मंगलाचरण छलै, शुद्ध संस्कृतमे।

धृंगा धृंगा धृंगा धृंगा- मृदंग बाजऽ लागल।

किनकां, किनकां, किनकां, किनकां.. मजीरा संग देलकै।

नाचैबला चारू तरफ जेम्हर-जेम्हर समाजीछल, चक्कर देनाइ शुरू केलक। ओकर पाछू बिपटा सेहो घिरनी जकाँचक्कर लगा रहल छलआ मुँहकेँरंग-बिरंगक बनबैत ओय -ओय -ओय -ओय बाजि रहल छल। धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी, धिरिनांगी- मृदंग ताल बदलि दोसर सुर निकाललक। किनकां, किनकां...आब रहएदिअ। बड़नचौलौं... आब बादमे नाचक कथा हेतै।

नाच करैबला एकेटा जगहपर जमा भऽ झूमऽ लागल। धिरिनांगि तिनता, तिटक-तिटक धा, तिटकल गदगिन धा।

ताल समाप्त भेल आ नाचो शेष भऽ गेल आ नाचैबला सभ घोघ तानि दर्शक मंडलीमे जा बैसल। नाचमे जे बिपटा बनल छल ओ नाच करनिहारकेँ ताकऽ लागल। धृंगा-धृंगा...

'धिन-तिनक तिनक, धिन तिनक-तिनक'- मृदंग बाजल।

समाजी सुरमे सुर मिलेलक।

'हे लेल परबेश परम सुकुमारि

हंस गमन वृषभान दुलारि....'

नचनियाँ सभ उठि बिपटा लग आबि गेल आ हर्षित भऽ बिपटा ओय ओय ओय ओय केनाइ शुरू कऽ देलक।

'धिन-तिनक् तिनक् धिन-तिनक् तिनक्'

'हे! तन मन बदन पवन सहजोर हे

दामिनी ऊपर उगलन्हि चाना...'

नाच करऽबला सभ घोघ हटा लेलक आ चंद्रमुख (घुटल दाढ़ी, मोंछ आ बेडोल, केहने सन कऽ मुँह) देख दर्शको सभ हँसैत-हँसैत नेहाल भऽ जाइत अछि। नचनियाँ निच्चाँ दिस ताकि रहल, लाज सँ लज्जावती लता सन सिकुड़ल नाच कऽ रहल छल वा छली। बिपटा ओकरा अपना दिस आकर्षित करबाक कोशिश कऽ रहल अछि।

“हे बिहँसि उठलि पिऊ देखि सुहागिनी

लाज बदन लेल फेरि..”

नचनियाँ बिहुँसि कऽ मुँह फेर लेलक। हँसऽ कालमे तमाकुल सेवनसँ जे दाँत सभ कारी भेल छल से चमकि उठल। कृपया अहाँ सभ शांत भऽ जाउ। जी, जी हँ। विद्यापतिक पद्यावली भऽ सकैत अछि, परंच ई छी 'बिदापत नाच'।

न्यू थियेटर्स, विद्यापति, कानन बाला. पहाड़ी सान्यालक बक-बक बंद करै जाउ। आखिरी अलाप शुरू कऽ देलौं।

अहाँ सभकेँ कतेक बुझाउ जे ई 'बिदापत नाच' छिऐ आ ओ नाच करैबला टहलू पासवान, ओकर बाप बड़का डकैत छल। बापकेँ काला पानीक सजा भऽ गेलै। माय केकरो आन सने चलि गेलै आ ई बच्चेसँ नाचऽ लागल। अपन जवानीक दिनमे एकर धूम मचल रहै छलै... धूम मचबै छलै धूम। एकर आवभाव देखि तँ परबतिया अपन बसल-बसाएल गृहस्थी छोड़ि एकरा सने रातिये राति पड़ा आएल।

हँ तँ टहलू पासवान गाबि सकैत अछि जे...

अँगना आएत जब रसिया

पलट चलब हम इषत् हँसिया

कान्ह जतन बहु करयिन्ह

धृन्ना धृंगा, तिना-तिन्ना- मृदंग आब दोसर ताल बदललक।

किन्ना- किन्ना.. मंजीरा सेहो ताल बदललक।

“सखि हे...

सखि हे, कि पूछसि अनुभव मोहे..”

“जनम अवधि हम रूप निहारलौं,

तबहु न तिरपित भेल |"

'अरे? चुप! चुप!! ' -बिपटा खिसिया कऽ चुप करा रहल अछि। एक टा समाजी गमछाक कोड़ा बनेनाइ शुरू केलक। बिपटा कहनाइ आरम्भ केलक जे ओकरा पीट कऽ अनेरे समए बर्बाद कएल जा रहल अछि। जमींदारक जूता खाइत-खाइत ओकर पीठक चमरी मोट भऽ गेल छै। ओ अइ लेल मात्र चुप करा रहल छल..

“कि ओ जन्म भरि केकर रूप निहारैत रहल'... जखन ओकरा बुझा गेलै जे ओकरे रूप, तँ खुशी भऽ तुरंत पॉकेटसँ एकटा छोटका एना निकालि सगर्वसँ अपन मुँह देखऽ लागल।

गीत समाप्त भेल, आब बिपटा महादेवक बेर छनि।

-हे नेक जी (नायक जी) ।

-हूँ।

-आब हमरो सुनू।

“बापरे!

बाप रे कोन दुर्गति नहि भेल

सात साल हम सूद चुकाओल,

तबहुँ उरिन नहि भेलौं।

कोल्हुक बड़द सन खटलौं राति-दिन

कारज बढ़त हि गेल

थारी बेच पटवारीकेँ देलियन्हि,

लोटा बेच चौकीदारी।

बकरी बेच सिपाहीकेँ देलियन्हि

फटकनाथ गिरधारी। “

किछु बुझलिऐ अहाँ सभ.. अहूँ सभ पूराक पूरा फटकनाथ गिरधारी छी।

कने दर्शककेँ देखियन्हु ने जे ओ सभ की बुझलनि जे हँसैत-हँसैत पेटमे दर्द हुअ लगलनि।

'धृंगा-धृंगा, धिधिन्ना तिन्ना '....

“सखिहे!

ई माह भादर, भरल बादर,

शून्य मंदिर मोर। ...”

सुन्दर! सुन्दर!! ठीके विद्यापति मैथिल कोकिल....

अहाँ सभ फेर भसियाए लगलौं, अहूँ सभ बिपटासँ कम नै छी। कतबो मना कएल जाए ओकरा जकाँ सभ गीतपर किछु ने किछु सुनाबऽ लागै छी। ई लिअ, बिपटा महोदय फेर टपकला...

“ई माह भादर, बरिसे बादर,

चुअत छप्पर मोर।”

“हहा-हहा...!!” दर्शक मंडली हँसैत-हँसैत लोट-पोट भऽ रहल अछि। हँ एक टा बात कहब बिसरि गेलौं जे बिपटा अपनाकेँ कृष्ण बुझैत अछि आ परदेशी साजन सेहो, लेकिन संगे इहो बात नै बिसरैत अछि जे कि ओ कलरू मुसहर अछि, हलहलियाक रहनिहार आ मनुष्य रहितो ओ बुझै छै जे कोल्हूक बड़दसँ बेसी ओकर हैसियत नै छै। नाचएबला सभ जखन ओकर गरदनिमे बाँहि मान-अभिमानसँ प्रेमक प्रदर्शन करैत बुझबैत छै कि ---माधव तजि के चललौं विदेश। .. तखनि ओ बिसरि जाइत अछि जे ओ कृष्ण अछिआ गोकुलसँ मथुरा जा रहल अछि। ओकरा सामने जीवनक विषमता मूर्त रूप भऽ नाचि उठै छै आ ओ बुझबै छै-

'नहिं बरसल अदरा (आद्रा नक्षत्र) नहि अशरेस,

चारु दिस देखै छी बुढ़ियाक केश ....

माछ काछू सब गेल पाताल,

अब कि पड़त सखि महा अकाल,

दिन भरि खटि के एक सेर धान,

एकरा से कैसे बचत परान,

छोडि- छोडि सजनि जाइ छी विदेश’

फेर दोसरे क्षण जखन नर्तक गाबऽ लागै छै-

'गोद लय बलमाकेँ चललि बाजार

हटिया के लोग पूछे, के लागे तोहार।

सासू जी के लड़िका, ननद के जेठ भाय,

पूर्व के लिखल स्वामी छिक् हे हमार। '

आब बिकटा बच्चा जकाँ जिलेबी, बताशा आ खिलौना लेल छिरिऐ लागल..

तखने एकटा नचनिया गीत गेलक--

राति जखन भिनसरवा रे,

पहूँ (स्वामी) आयल हमार।

कर कौशल कर कँपइत रे हरवा उर जार

कर पंकज उर थपइत रे मुखचन्द्र निहार”

बिपटा बीचेमे रोकि कऽएकटा समाजीसँ एकर अर्थ बुझबैलेल कहै छै आ समाजी खुलि कऽ अइ गीतपर टीका करऽ लागल। केना नायिका पुआरपर अपन झोपड़ीमे सुतल छलय आ बिपटा आएल छल। चलूदर्शक सभक बीचमे। कारी-कारी मोटगर आ गठगर देहबला नवयौवना मंद-मंद मुसकीकेँ दबा आ एक दोसरकेँ केहुनिया-केहुनिया कऽ कनफुसकी करैमे आनंदित भऽ बिपटाक दिस एक टक निहारि रहल छलि। अधेड़ उम्रक मौगी सभ बनावटी तामस व्यक्त कऽयुवती सभकेँ रोकए चाहै छै, लेकिन दबल हँसी आ गुदगुदायल हृदए कखन मानै छै।

एम्हर नचनियाँ सभ आलाप कऽ उठल।

“चलू मन, चलू मन ... ससुरालि

जइबै हो रामा,

कि आहो रामा, नैहरा मे

अगिया लगाइब रे कि...

युवती चंचल भऽ जाइ छै आ युवक लोकनिक नसमे बिजली दौड़ऽ लगलनि। नाच आब खत्म हुअबला छै-

“चलू मन, चलू मन

धिन धिनक धिनक, धिन धिनक धिनक...

कि आहो रामा, नैहरा मे अगिया लगाइब रे कि ...!

डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक ...”

अरे ई की? ओहो, चेथरू गुँसाइ जी छथि। गुँसाइ जी कबीरक भक्त छथि। दस-पंद्रह साल पहिने जमींदार साहबक कहलापर ओ झूठ गवाही नै देलनि। ऐपर जमींदार खिसिया कऽ गुँसाइ जी कैँ बेघर कऽ देलकनि आ तखनेसँ ओ बैरागी भऽ गेला। खंजरी, झोरा आ चिमटा, जटा आ नमगर दाढ़ी... ई लिअ। गुँसाइ जी खंजरी बजा बजा नचनियाँ संगे नाच करऽ लागला...

“डिम डिमिक डिमिक, डिम डिमिक डिमिक

कि आहो रामा नैहरा मे अगिया..

बात ई छै जे चेथरू गुँसाइ जी अइ गीतकेँ पूरा निर्गुण मानै छै।

अहा! ओकर धँसल आँखिमे नोर चमकि उठै छै। आ नाच समाप्त भऽ गेल।

(फणीश्वरनाथ रेणुक ई रिपोर्ताज साप्ताहिक “विश्वामित्र” क १ अगस्त १९४५ क अंकमे प्रकाशित भेल छल। ई हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद (मधुपनाथ झा द्वारा, विदेह: सदेह ११) फणीश्वरनाथ रेणुकेँ समर्पित कएल जा रहल अछि।)

अनुलग्नक: ३

विद्यापतिक बिदेसिया- पिआ देसाँतर-बिदापत नाचक अलाबे मैथिली नाटकक एकटा समानान्तर दुनियाँ

रामखेलावन मण्डल गाम- कटघटरा, प्रखण्ड– शिवाजीनगर, जिला- समस्तीपुर, हिनके संग बिन्देश्वर मण्डल सेहो छलाह। उठैत मैथिली कोरस आ माँ गै माँ तूँ हमरा बंदूक मंगा दे कि हम तँ माँ सिपाही हेबै- एखनो लोककेँ मोन छन्हि। ऐ मंडली द्वारा रेशमा-चूहड़, शीत-वसन्त, अल्हाऊदल, नटुआ दयाल ई सभ पद्य नाटिका प्रस्तुत कएल जाइत छल।

पूर्णियासँ पिआ देसाँतर (मैथिली बिदेसिया) क टीम सुपौल-सहरसा-समस्तीपुर आदि ठाम अबैत छल। हसन हुसन नाटिका होइत छल। रामरक्षा चौधरी नाट्यकला परिषद, ग्राम- गायघाट, पंचायत करियन, पो. वैद्यनाथपुर, जिला- समस्तीपुर विद्यापति नाटक गोरखपुर धरि खेलाएल छल। ऐ मंडली द्वारा प्रस्तुत अन्य नाटक अछि- लौंगिया मेरचाइ, विद्यापति, चीनीक लड्डू आ बसात।

ताहि आधारपर ई संकल्पित नाटिका प्रस्तुत अछि।

विद्यापतिक पिआ देसाँतर

दृश्य १

स्टेजपर हमर बिदेसिया बिदेस नोकरीक लेल बिदा होइत छथि आ जुवती गबैत छथि- गीतक बीचमे एकटा पथिक अबैत छथि। मंचक दोसर छोड़पर चोर लोकनि धपाइत नुकायल छथि। मंचक दोसर छोरपर कोतवाल आ शुभ्र धोतीधारी पेटपर हाथ देने निफिकिर बैसल छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

हम जुवती, पति गेलाह बिदेस। लग नहि बसए पड़उसिहु लेस।

हम युवती छी आ हमर पति बिदेस गेल छथि। लगमे पड़ोसीक कोनो अवशेष नहि अछि।

सासु ननन्द किछुआओ नहि जान। आँखि रतौन्धी, सुनए न कान।

सास आ ननदि सेहो किछु नहि बुझैत छथि। हुनकर सभक आँखिमे रतौंधी छन्हि आ ओ सभ कानसँ सेहो किछु नहि सुनैत छथि।

जागह पथिक, जाह जनु भोर। राति अन्धार, गाम बड़ चोर।

हे पथिक! निन्नकेँ त्यागू। काल्हि भोरमे नहि आऊ। अन्हरिया राति अछि आ गाममे बड्ड चोर सभ अछि।

सपनेहु भाओर न देअ कोटबार। पओलेहु लोते न करए बिचार।

कोतबाल स्वपनहुमे पहरा नहि दैत अछि आ नोत देलोपर विचार नहि करैत अछि।

नृप इथि काहु करथि नहि साति।

पुरख महत सब हमर सजाति॥

विद्यापति कवि एह रस गाब। उकुतिहि भाव जनाब।

विद्यापति कवि ई रस गबैत छथि। उकतीसँ भाव जना रहलीह अछि।

विद्यापति कविक प्रवेश होइत छन्हि। कोतवालक लग शुभ्र-धोतीधारी आ एकटा गरीबक आगमन होइत अछि। कोतवाल आभाससँ धोतीधारीक पक्षमे निर्णय सुनबैत छथि आ मंचक दोसर कोनपर बैसलि जुवती माथ पिटैत छथि। गीतक अन्तिम चारि पाँती विद्यापति कवि गबैत छथि।

दृश्य २

जुवती एकटा दोकान खोलने छथि, सांकेतिक। मंचक दोसर कातसँ सासु आ ननदिकेँ जएबाक आ क्रेता पथिकक अएबाक संग युवती गेनाइ शुरू करैत छथि आ सभ पाँतिक बाद विद्यापति मंचपर अबैत छथि अर्थ कहैत छथि आ अंधकारमे विलीन भऽ जाइत छथि। मुदा अन्तिम पाँती विद्यापति गबैत छथि आ जुवती ओकर अर्थ बँचैत छथि।

मालवरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

बड़ि जुड़ि एहि तरुक छाहरि, ठामे ठामे बस गाम।

एहि गाछक छाह बड्ड शीतल अछि। ठामे-ठाम गाम बसल अछि।

हम एकसरि, पिआ देसाँतर, नहि दुरजन नाम।

हम असगरि छी, प्रिय परदेसमे छथि, कतहु दुर्जनक नाम नहि अछि।

पथिक हे, एथा लेह बिसराम।

हे पथिक! एतय विश्राम करू।

जत बेसाहब किछु न महघ, सबे मिल एहि ठाम।

जे किछु कीनब, किछुओ महग नहि। सभ किछु एतए भेटत।

सासु नहि घर, पर परिजन ननन्द सहजे भोरि।

घरमे सासु नहि छथि, परिजन दूरमे छथि आ ननदि स्वभावसँ सरल छथि।

एतहु पथिक विमुख जाएब तबे अनाइति मोरि।

एतेक रहितो जे अहाँ विमुख भए जाएब तँ आब हमर सक्क नहि अछि।

भन विद्यापति सुन तञे जुवती जे पुर परक आस।

विद्यापति कहैत छथि- हे युवती! सुनू जे अहाँ दोसराक आस पूरा करैत छी।

दृश्य ३

एहि गीतमे विद्यापति नहि छथि। जुवतीक ननदि पथिककेँ दबारि रहल छथि, से देखि जुवतीकेँ अपन पिआ देसाँतर मोन पड़ि जाइत छन्हि। ओ ननदि आ सखीकेँ सम्बोधित कए गीत गबैत छथि। गीतक अर्थ सखी कहैत छथि, सभ पाँतीक बाद।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

परतह परदेस, परहिक आस। विमुख न करिअ, अबस दिस बास।

परदेसमे नित्य दोसराक आस रहैत अछि। से ककरो विमुख नहि करबाक चाही। अवश्य वास देबाक चाही।

एतहि जानिअ सखि पिअतम-कथा।

हे सखी! प्रियतमक लेल एतबी कथा बुझू।

भल मन्द नन्दन हे मने अनुमानि। पथिककेँ न बोलिअ टूटलि बानि।

हे ननदि! मोनमे नीक-अधलाहक अनुमान कऽ पथिककेँ टूटल गप नहि बाजू।

चरन-पखारन, आसन-दान। मधुरहु वचने करिअ समधान।

चरण पखारू, आसन दियौक आ मधुर वचन कहि सान्त्वना दियन्हु।

ए सखि अनुचित एते दुर जाए। आओर करिअ जत अधिक बड़ाइ।

हे सखी पथिक एतयसँ दूर जायत से अनुचित से ओकर आर बड़ाई करू।

दृश्य ४

जुवती आ ननदि नगर आबि ठौर धेने छथि। एकटा पथिक आबि आश्रय मँगैत छथि तँ जुवती गबैत छथि आ ननदि सभ पाँतीक बाद अर्थ कहैत छथि। बीचमे चारि पाँती बिना अर्थक नेपथ्यसँ अबैत अछि। फेर जुवती आगाँ गबैत छथि आ ननदि अर्थ बजैत छथि। अन्तमे अन्तिम दू पाँती विद्यापति आबि गबैत छथि। दृश्यक अन्तमे ननदि कहैत छथि जे हम जे ओहि दिन पथिककेँ दबारि रहल छलहुँ से अहाँकेँ नीक नहि लागल रहए, मुदा आइ पथिककेँ आश्रय किएक नहि देलियैक।

कोलाररागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

हम एकसरि, पिअतम नहि गाम। तेँ मोहि तरतम देइते ठाम।

हम एकसरि छी आ प्रियतम गाममे नहि छथि। ताहि द्वारे राति बिताबए लेल कहबामे हमरा तारतम्य भऽ रहल अछि।

अनतहु कतहु देअइतहुँ बास। दोसर न देखिअ पड़ओसिओ पास।

यदि क्यो लगमे रहितथि तँ दोसर ठाम कतहु बास देखा दैतहुँ।

छमह हे पथिक, करिअ हमे काह। बास नगर भमि अनतह चाह।

हे पथिक क्षमा करू आ जाऊ आ नगरमे कतहु बास ताकू।

आँतर पाँतर, साँझक बेरि। परदेस बसिअ अनाइति हेरि।

बीचमे प्रान्तर अछि सन्ध्याक समय अछि आ परदेसमे भविष्यकेँ सोचैत काज करबाक चाही।

मोरा मन हे खनहि खन भाँग। जौवन गोपब कत मनसिज जाग।

चल चल पथिक करिअ प... काह। वास नगर भमि अनतहु चाह।

सात पच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसान्तर आन्तर भेल।

बारह वर्ष अवधि कए गेल। चारि वर्ष तन्हि गेला भेल।

घोर पयोधर जामिनि भेद। जे करतब ता करह परिछेद।

भयाओन मेघ अछि, रतुका गप छी सोचि कए निर्णय करू।

भनइ विद्यापति नागरि-रीति। व्याज-वचने उपजाब पिरीति।

विद्यापति कहैत छथि, ई नगरक रीति अछि जे कटु वचनसँ प्रीति अनैत अछि।

दृश्य ५

अहू दृश्यमे विद्यापति नहि छथि। एकटा पथिक अबैत छथि मुदा सासु-ननदि ककरो नहि देखि बास करबासँ संकोचवश मना कए आगाँ बढ़ि जाइत छथि। जुवती गबैत छथि।

घनछीरागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

उचित बसए मोर मनमथ चोर। चेरिआ बुढ़िआ करए अगोर।

कामदेव रूपी चोरक लेल हमर अवस्था ठीक अछि। बुढ़िया चेरी पहरा दऽ रहल छथि।

बारह बरख अवधि कए गेल। चारि बरख तन्हि गेलाँ भेल।

बारहम बरखक रही, तखन ओ गेलाह आ आब चारि बर्ख तकर भऽ गेल।

बास चाहैत होअ पथिकहु लाज। सासु ननन्द नहि अछए समाज।

सास आ ननदि क्यो संग नहि छथि आ पथिक सेहो डेरा देबासँ लजाइत छथि।

सात पाँच घर तन्हि सजि देल। पिआ देसाँतर आँतर भेल।

ओ कामदेव लेल घर सजा कए देशान्तर चलि गेलाह आ हमरा सभक बीचमे अन्तर आबि गेल।

पड़ेओस वास जोएनसत भेल। थाने थाने अवयव सबे गेल।

पड़ोसक बास जेना सय योजनक भऽ गेल सभ सर-सम्बन्धी जतए ततए चलि गेलाह।

नुकाबिअ तिमिरक सान्धि। पड़उसिनि देअए फड़की बान्धि।

लोकक समूह अन्हारमे विलीन भऽ गेल, पड़ोसिन फाटकि बन्न कए लेलन्हि।

मोरा मन हे खनहि खन भाग। गमन गोपब कत मनमथ जाग।

हमर मोन क्षण-क्षण भागि रहल अछि। कामदेव जागि रहल छथि गमनकेँ कतेक काल धरि नुकाएब।

दृश्य ६

एहि दृश्यमे सेहो, नहि तँ ननदि छथि, नहियेे सासु आ नहियेे विद्यापति। एकटा अतिथि अबैत छथि आकि तखने मेघ लाधि दैत अछि आ जुवती गबैत छथि।

धनछी रागे (नेपालसँ प्राप्त विद्यापति पद्यावली)-

अपना मन्दिर बैसलि अछलिहुँ, घर नहि दोसर केवा।

अपन घरमे बैसल छलहुँ, घरमे क्यो दोसर नहि छल,

तहिखने पहिआ पाहोन आएल बरिसए लागल देवा।

तखने पथिक अतिथि अएलाह आ बरखा लाधि देलक।

के जान कि बोलति पिसुन पड़ौसिनि वचनक भेल अवकासे।

की बजतीह ईर्ष्यालु पड़ोसिन से नहि जानि, बजबाक अवसर जे भेटि गेलन्हि।

घोर अन्धार, निरन्तर धारा दिवसहि रजनी भाने।

दिनहिमे रात्रि जेकाँ होमए लागल।

कञोने कहब हमे, के पतिअएत, जगत विदित पँचबाने।

हम ककरा कहब आ के पतियायत। कारण कामदेवक ख्याति तँ जगत भरिमे अछि।

दृश्य ७

मंचक एक दिससँ सासुक मृत्युक बाद हुनकर लहाश निकलैत छन्हि आ मंचपर अन्हार होइत अछि। फेर इजोत भेलापर ननदिक वर हुनका सासुर लए जाइत छन्हि। पथिक रस्तापर छथि दर्शकगणक मध्य आ दर्शकगणकेँ इशारा करैत जुवती गीत गबैत छथि आ विद्यापति सभ पाँतिक बाद अर्थ कहैत छथि। अन्तिम दू पाँतिमे विद्यापति गीत आ अर्थ दुनू बजैत छथि- विद्यापति अन्तिम दू पाँति आ ओकर अर्थ कैक बेर दोहराबैत छथि।

नगेन्द्रनाथ गुप्त सम्पादित पद्यावली-

सासु जरातुरि भेली। ननन्दि अछलि सेहो सासुर गेली।

सासु चलि बसलीह, ननदि सेहो सासुर गेलीह

तैसन न देखिअ कोई। रयनि जगाए सम्भासन होई।

क्यो नहि सम्भाषणक लेल पर्यन्त,

एहि पुर एहे बेबहारे। काहुक केओ नहि करए पुछारे।

एतुका एहन बेबहार, ककरो क्यो पुछारी नहि करैत अछि।

मोरि पिअतमकाँ कहबा। हमे एकसरि धनि कत दिन रहबा।

हमर पिअतमकेँ कहब, हम असगरे कतेक दिन रहब।

पथिक, कहब मोर कन्ता। हम सनि रमनि न तेज रसमन्ता।

पथिक हुनका कहबन्हि, हमरा सन रमणिक रसक तेज कखन धरि रहत।

भनइ विद्यापति गाबे। भमि-भमि विरहिनि पथुक बुझाबे।

विद्यापति गबैत छथि, विरहनि घूमि-घूमि कए पथिककेँ कहि रहल छथि।

विद्यापति गबैत-गबैत कनेक खसैत छथि- अन्हार पसरए लगैत अछि तँ एक गोटे जुवती दिस अन्हारसँ अबैत अस्पष्ट देखना जाइत छथि। की वैह छथि पिआ देसान्तर!! हँ, आकि नहि!!!

पिआ देसान्तरक घोल होइत अछि आ मंचपर संगीतक मध्य पटाक्षेप होइत अछि।

पिआ देसान्तरक ई कन्सेप्ट सुधीगणक समक्ष अछि आ मैथिल बिदेसिया लोकनिक वर्तमान दुर्दशाक बीच ई महाकवि विद्यापतिक प्रति ससम्मान अर्पित अछि।

(विद्यापतिक पद्य- नगेन्द्रनाथ गुप्तक विद्यापति पद्यावलीसँ।)

अनुलग्नक: ४: The Journal of the Bihar Research Society Vol. XLIV, March_June1958 (Parts I & II)- **EarlierVidyapatis- Dr. BimanbehariMajumdar**

९५. "प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!": स्त्री-कर्तृत्व आ आत्मबल

सारांश

प्रेम-चतुष्टयक प्रथम नाटिका 'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!' कुणालक नाट्य-लेखनमे एक नवीन मोड़ थिक। लोकनाट्य-त्रयीक बहु-पात्रीय, गीत-नृत्य-बहुल विस्तारसँ एकदम भिन्न—ई नाटिका मितव्ययी, तीक्ष्ण आ विचार-केन्द्रित अछि।

बीजशब्द: श्रुवावती; स्त्री-कर्तृत्व; आत्मबल; नारीवादी पाठ; अस्तित्ववाद; पौराणिक पुनर्पाठ

१. परिचय, नाटच-स्थापत्य आ मूल-प्रश्न

प्रेम-चतुष्टयक प्रथम नाटिका 'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!' कुणालक नाट्य-लेखनमे एक नवीन मोड़ थिक। लोकनाट्य-त्रयीक बहु-पात्रीय, गीत-नृत्य-बहुल विस्तारसँ एकदम भिन्न—ई नाटिका मितव्ययी, तीक्ष्ण आ विचार-केन्द्रित अछि। मंच निर्देश स्वयं बताबैत अछि—"त्रिस्तरीय मंच, स्तरक उपयोग कखनो प्लेटफार्म, कखनो सीढ़ी जकाँ"—आ पात्र मात्र चारि—दू अभिनेता, दू अभिनेत्री, जे अनेक भूमिका निभाबैत छथि (भारद्वाज/वृद्ध/वशिष्ठ/इन्द्र = एक-दू अभिनेता; श्रुवावती/सखी/स्त्री = एक-दू अभिनेत्री) ।

स्रोत पुराण-आख्यान थिक—महर्षि भारद्वाजक पुत्री श्रुवावती, जनिकर उल्लेख विभिन्न पौराणिक सन्दर्भमे अछि। मुदा कुणालक श्रुवावती परम्परागत आख्यानसँ बहुत आगाँ जाइत छथि। ओ 'विवाह-योग्य कन्या' क पारम्परिक भूमिकाकेँ अस्वीकार नहि करैत, मुदा विवाहक शर्त स्वयं निर्धारित करैत छथि—"जखने किओ हमरा लेल अर्थवान भ' जैत, हम विवाह क' लेब!" ई 'अर्थवान होएबा' क माँग नाटकक केन्द्रीय दार्शनिक-नाट्य प्रश्न थिक।

नाटकक पाँच क्रम—(१) भारद्वाजसँ श्रुवावतीक 'स्वतंत्र-स्वावलम्बी' घोषणा; (२) सरिता-तट पर इन्द्रक छायासँ प्रेम-अनुभव; (३) इन्द्रक प्रत्यक्ष प्रकटन आ प्रस्ताव—"मरणोपरांत स्वर्ग आउ"—श्रुवावतीक अस्वीकार; (४) वृद्ध-वेशमे/वशिष्ठ-वेशमे इन्द्रक परीक्षा—अद्भुत फल—फल पाथर बनब; (५) श्रुवावतीक चिता-संकल्प—इन्द्रक स्वीकृति—दुष्यन्त कुमारक शेरसँ समापन।

२. भारतीय नाटच-सिद्धांत

२.१ एकांकी-नाटिकाक शास्त्रीय स्वरूप आ 'अंक'-विधान

भरतमुनिक नाट्यशास्त्र नाटकक विस्तार आ संरचनाक अनुसार विभिन्न रूप-भेद करैत अछि। दशरूपकमे 'नाटिका' एक अपेक्षाकृत लघु रूप थिक—सामान्यतः चारि अंकसँ कम, एक केन्द्रीय प्रेम-वृत्तांत, नायिका-प्रधान आ करुण-सम्पृक्त। एहि नाटिकाक शीर्षकमे 'उर्फ' शब्दक प्रयोग अभिजन-परम्परा आ लोक-परम्पराक संयोग थिक—'प्रेम-प्रतिज्ञा' (शास्त्रीय भाव) आ 'श्रुवावतीक जय!' (लोक-उद्घोष) ।

त्रिस्तरीय मंचक उपयोग नाट्यशास्त्रक 'रंगमण्डप' सिद्धांतक आधुनिक रूपान्तरण थिक। भरत मंचकेँ तीन भागमे विभाजित करैत छथि—रंगशीर्ष (उपर), रंगपीठ (मध्य) आ नेपथ्य। कुणालक त्रिस्तरीय मंच एकर नव व्याख्या थिक—'शीर्ष सतह पर पुरुष' (उद्घोषक-सूत्रधार), 'मध्य सतह' (कथाक प्रमुख दृश्य) आ 'निचला स्तर' (वनस्पति-सरिता-तटक प्राकृत संसार) ।

२.२ रस-विचार: शृंगारक तीन रूप एकहि संग

एहि नाटिकामे शृंगार-रसक तीन उपभेद एकहि संग उपस्थित अछि—(क) 'संयोग-शृंगार' (आकर्षण-भाव, सरिता-तट पर छाया-दर्शन); (ख) 'वियोग-शृंगार' (इन्द्रक बारम्बार अस्वीकार, श्रुवावतीक प्रतीक्षा-यातना); (ग) भक्ति-शृंगार (माला गँथनाइ—"मोनक देवताकेँ पहिराब' क लेल") । भरत शृंगारक 'स्थायी भाव' 'रति' मानैत छथि, आ एकर उच्चतम अवस्था ओ 'परम-रति' मानैत छथि—जे इन्द्रियसँ परे शुद्ध प्रेम-तत्त्व थिक। श्रुवावती एहि परम-रतिक अवतरण छथि।

करुण-रसक एक विशिष्ट उपस्थिति सेहो अछि—"जाहि मोन मे प्रियक स्मरण नहि, से मोन ल' क' की?" ई विचार शुद्ध करुणाक नहि, एक दार्शनिक करुणाक अभिव्यक्ति थिक जाहिमे जीवनक मूल्य प्रश्नगत होइत अछि। अभिनवगुप्तक 'शान्त-रस'—जीवनक समस्त सम्बन्धसँ परे शान्त स्वीकृति—समापन-दृश्यमे उपस्थित अछि।

२.३ धर्मशास्त्र आ स्त्री-स्वाधीनता: नाटकक राजनीतिक पाठ

मनुस्मृतिक एक प्रसिद्ध उद्धरण—"पिता रक्षति कौमारे, भर्ता रक्षति यौवने"—स्त्रीक 'रक्षा' क उत्तरदायित्व पिता-पति-पुत्रमे विभाजित करैत अछि। भारद्वाज अही परम्पराक पालक छथि—"स्त्रीकेँ भाइ, पिता वा पतिएक संग रहबाक चाही।" श्रुवावती एहि धर्मशास्त्रीय मानदण्डकेँ एक प्रश्नसँ खण्डित करैत छथि—"किए? हम अपन रक्षा आ देखभाल स्वयं नहि क' सकैत छी बाबूजी!"

एहि प्रश्नक सांस्कृतिक महत्त्व असाधारण अछि। ई मात्र व्यक्तिगत स्वाधीनताक प्रश्न नहि—ई मैथिली पौराणिक-नाट्य-परम्पराक भीतरसँ एक धर्मशास्त्रीय मानदण्डकेँ चुनौती देबाक नाट्य-प्रयास थिक। भारद्वाजक अन्तिम उत्तर—“सुखी रही—गृहिणी जकाँ की तपस्विनी जकाँ”—ओ अपनहुँ श्रुवावतीक आत्मनिर्णयकेँ स्वीकार क’ लैत छथि। पितृसत्तात्मक संरचना एतय आत्म-समर्पण करैत अछि—एक नाट्य-क्षण जे भारतीय स्त्री-केन्द्रित नाट्य-परम्पराक (मैत्रेयी, गार्गी, शकुन्तला) क क्रमागत अगिला पड़ाव थिक।

२.४ वक्रोक्ति-दृष्टिः ‘अर्थवान’ शब्दक बहु-आयामी ध्वनि

कुन्तकक वक्रोक्ति-सिद्धांत आ आनन्दवर्धनक ध्वनि-सिद्धांत दुनूक परिप्रेक्ष्यमे ‘अर्थवान’ शब्द एहि नाटकक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण पद थिक। अभिधातः—‘महत्त्वपूर्ण/उपयोगी’; लक्षणातः—‘सार्थक जीवन जीबएवाला’; व्यंजनातः—‘जे हमर अस्तित्वकेँ अर्थ दैत हो’ । ई तृतीय अर्थ नाटकक दार्शनिक आत्मा थिक—श्रुवावती कोनो बाह्य मानदण्ड (सुन्दरता, सम्पत्ति, शौर्य) नहि, एक अन्तरंग ‘अर्थ’ क सम्बन्ध खोजैत छथि।

एहि शब्दक वक्रोक्ति एतय अछि—देवराज इन्द्र, जे सर्वशक्तिमान छथि, बहु-विवाहित छथि, स्वर्गक स्वामी छथि—ओ एक ऋषि-कन्याक ‘अर्थवान’ बनबाक परीक्षामे असफल होइत छथि, आ अंततः चिता-दृश्यमे जा क’ स्वयंकेँ ‘अर्थवान’ सिद्ध करैत छथि। एहि उनटा परीक्षामे वक्रोक्ति आ व्यंग्य एकहि संग अछि।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ सिमोन द बोउवारः ‘दोसर लिंग’ आ स्त्री-कर्तृत्व

फ्रांसीसी दार्शनिक-नारीवादी सिमोन द बोउवार (Simone de Beauvoir, १९०८–१९८६) अपन ‘द सेकेण्ड सेक्स’ (Le Deuxième Sexe, १९४९) मे घोषणा कएलनि—“one is not born, but rather becomes, a woman” (स्त्री जन्म नहि लैत, बनाओल जाइत अछि) । ओ तर्क देलनि जे स्त्रीक ‘अन्यता’ (otherness) सामाजिक-सांस्कृतिक निर्माण थिक।

श्रुवावतीक चरित्र बोउवारक एहि सिद्धांतक एक पौराणिक-नाट्य उदाहरण थिक। पिताक संरक्षण, राजकुलक विवाह-प्रस्ताव, इन्द्रक ‘मरणोपरांत’ प्रस्ताव—ई सभ श्रुवावतीकेँ एक वस्तु बनेबाक प्रयास थिक। श्रुवावती प्रत्येक बेर एहि प्रयासकेँ अस्वीकार क’ अपनाकेँ कर्ता बनेबाक दावा करैत छथि। हुनकर अन्तिम वाक्य—“हमरा तैँ हरदम स्वीकार छल प्रिय! अहाँ अपने कहूँ!”—एहि कर्तृत्वक पराकाष्ठा थिक—विजय हुनकर अछि।

३.२ सार्त्रः अस्तित्ववाद आ ‘अर्थ-निर्माण’

फ्रांसीसी दार्शनिक ज्याँ-पॉल सार्त्र (Jean-Paul Sartre, १९०५–१९८०) अपन अस्तित्ववादक केन्द्रीय घोषणा कएलनि—“existence precedes essence” (अस्तित्व सारसँ पहिने आबैत अछि) । मानव जन्मसँ कोनो पूर्व-निर्धारित ‘सार’ (essence) नहि लैत—ओ अपन स्वतंत्र निर्णयसँ अपनाकेँ परिभाषित करैत अछि।

श्रुवावतीक दर्शन सार्त्रीय अस्तित्ववादक एक पौराणिक-नाट्य प्रतिरूप थिक। ऋषि-कन्या होएब एक जन्म-दत्त ‘essence’ थिक; ‘स्वतंत्र-स्वावलम्बी व्यक्ति’ होएब हुनकर स्व-निर्मित ‘existence’ थिक। “अहीं कहने छी, अपवादों सँ नियमक पुष्टि होइत छै। हमरा आहाँ अपवाद बन’ दिअ’ बाबूजी!”—ई वाक्य सार्त्रक ‘radical freedom’ (मूलभूत स्वतंत्रता) क एक मैथिली अभिव्यक्ति थिक।

सार्त्र ‘mauvaise foi’ (bad faith / अ-प्रामाणिक जीवन) कहैत छलाह ओहि स्थितिकेँ जाहिमे व्यक्ति अपन स्वतंत्रतासँ मुँह मोड़ि परम्परा-आज्ञाक शरण लैत अछि। इन्द्रक बहु-वेश-प्रयास (वृद्ध, वशिष्ठ) एहि ‘mauvaise foi’ क देवत्व-संस्करण थिक—देवराज अपन यथार्थ पहचानसँ मुँह नुका क’ परीक्षा दैत छथि। श्रुवावती प्रत्येक वेश भेदि दैत छथि—“हम तखने विवाहित भ’ गेलहूँ जखन हृदयमे स्थान देलहूँ” ।

३.३ बाख्तिनः बहु-स्वरीय नाटक आ ‘डायलॉजिज्म’

मिखाइल बाख्तिन (Mikhail Bakhtin) अपन ‘डायलॉजिज्म’ (Dialogism) सिद्धांतमे तर्क दैत छलाह जे भाषा स्वभावतः बहु-स्वरीय (polyphonic) होइत अछि—प्रत्येक शब्दमे अनेक आवाज गूँजैत अछि। एहि नाटकमे सर्वाधिक उल्लेखनीय ‘डायलॉजिज्म’ थिक—समापनक उर्दू शेर।

दुष्यन्त कुमार (१९३१–1९७५) क प्रसिद्ध उर्दू शेर—“कौन कहता है कि आसमाँ में सुराख हो नहि सकता / एक पत्थर तो तबीअत से उछालो यारो”—मैथिली पौराणिक नाटिकाक समापनमे एकाएक उभरैत अछि। एहि ‘बहु-स्वरीय’ समापनमे एकहि क्षणमे तीन भाषा-

संस्कृति उपस्थित अछि—मैथिली पौराणिक आख्यान, हिन्दी उर्दू काव्य-परम्परा, आ आधुनिक राजनीतिक चेतना (आकाशमे सुराख = असम्भवकेँ सम्भव करब) । ई बाख्तिनक 'heteroglossia' (बहु-भाषी संवाद) क एक विशिष्ट नाट्य-उदाहरण थिक।

३.४ पीटर ब्रूक: 'खाली मंच' आ रंगमंचीय मितव्ययिता

ब्रिटिश निर्देशक पीटर ब्रूक (Peter Brook, १९२५–२०२२) अपन 'द एम्प्टी स्पेस' (The Empty Space, १९६८) मे घोषणा कएलनि—"एक व्यक्ति खाली मंच पर चलैत अछि, दोसर व्यक्ति ओकरा देखैत अछि—बस, एतबे रंगमंचक लेल पर्याप्त अछि।" ब्रूकक 'Holy Theatre' (पवित्र रंगमंच) सिद्धांतमे ओ माँगैत छलाह जे दृश्य-सामग्री न्यूनतम होए जाहिसँ दर्शकक कल्पना सक्रिय हो।

एहि नाटिकाक त्रिस्तरीय खाली मंच ब्रूकक 'खाली मंच' क एक सटीक मैथिली-पौराणिक संस्करण थिक। "स्तरक उपयोग कखनो प्लेटफार्म, कखनो सीढ़ी जकाँ"—दृश्य-सामग्री नहि, स्थान-सम्भावना। इन्द्रक अन्तर्धान आ पुनः प्रकटन, फलक पाथर बनब, चिताक निर्माण—ई सभ 'प्रकाश-परिवर्तन' आ अभिनय-क्रियाद्वारा निर्मित होइत अछि, नहि कि भारी दृश्यावली सज्जासँ। ब्रूकक 'holy theatre' यैह थिक—जाहिमे दर्शकक आत्म-चेतना जागृत होइत अछि।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ युआनफेन: भाग्य-निर्धारित प्रेम आ श्रुवावतीक चुनौती

चीनी सांस्कृतिक-दार्शनिक परम्परामे 'युआनफेन' (fate-bound love / भाग्य-सम्बन्ध) एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा थिक—दू आत्माकेँ मिलाबएवला एक पूर्व-निर्धारित दैवी डोरि। चीनी काव्य-नाट्यमे प्रायः 'युआनफेन' क साकार होएब नाटकक लक्ष्य होइत अछि।

श्रुवावती-इन्द्रक सम्बन्धमे 'युआनफेन' जटिलतापूर्वक उपस्थित अछि—श्रुवावती इन्द्रकेँ 'मोनक देवता' कहैत छथि, माला गँथैत छथि—ई 'युआनफेन' क स्वीकृति थिक। मुदा ओ इन्द्रक शर्त ('मरणोपरांत') नहि मानैत छथि—ई 'युआनफेन' क पुनः-परिभाषा थिक। श्रुवावती कहैत छथि जे 'युआनफेन' दैवी-निर्धारित भऽ सकैत अछि, मुदा ओकर समय आ शर्त स्वयं तय करब—ई स्त्री-कर्तृत्वक एक सूक्ष्म अभिव्यक्ति थिक।

४.२ काओयान: परीक्षा-नाटच-परम्परा

चीनी शास्त्रीय रंगमंचमे 'काओयान' (test/trial) एक प्रमुख नाट्य-उपकरण थिक। चीनी लोककथा-नाटकमे अनेक उदाहरण अछि जाहिमे प्रेमीक निष्ठाकेँ एक असाधारण परीक्षासँ सिद्ध करबाक चाही। प्रसिद्ध 'लियाङझू' (Butterfly Lovers) कथाक नाट्यीकरणमे सेहो निष्ठाक परीक्षा केन्द्रमे अछि।

एहि नाटकमे 'काओयान' एक उनटल संरचनामे अछि—सामान्यतः नायकक निष्ठाकेँ परखल जाइत अछि; एतय नायिका स्वयं परीक्षार्थी छथि (इन्द्र द्वारा दत्त 'फल-परीक्षा'), आ परीक्षक इन्द्र स्वयं परीक्षित होइत छथि (श्रुवावतीक चिता-संकल्प इन्द्रकेँ विचलित करैत अछि) । ई उनटल 'काओयान' नाटकक मौलिकताक प्रमाण थिक—परीक्षक स्वयं परीक्षित भ' जाइत अछि।

४.३ यीझी: इच्छाशक्ति आ नियोकन्फ्यूशियाई नैतिकता

नियोकन्फ्यूशियाई दार्शनिक (विशेषतः वांग यांगमिंग, १४७२–१५२९) 'यीझी' (moral will / नैतिक इच्छाशक्ति) आ 'झी लियाँगझी' (extending innate moral knowledge / सहज नैतिक ज्ञानक विस्तार) पर बल दैत छलाह। ओ मानैत छलाह जे मनुष्यक भीतर सहजाततः एक 'नैतिक ज्ञान' विद्यमान अछि—बाहरसँ थोपल नहि।

श्रुवावती 'यांगमिंग' क अर्थमे एक 'यीझी-सम्पन्न' पात्र छथि। हुनकर 'अर्थवान' क माँग, वशिष्ठ-वेशमे इन्द्रकेँ 'अनकर स्त्री' घोषित कएनाइ, आ चिता-संकल्प—ई सभ बाहरसँ शिखाओल नहि, भीतरसँ उपजल नैतिक निर्णय थिक। नाटककारक अपन सन्देश—"आत्मबल, मनुष्यक सभसँ पैघ संपत्ति अछि"—वांग यांगमिंगक दर्शनसँ अद्भुत साम्य रखैत अछि।

४.४ बेइजू: चीनी त्रासदी-सिद्धांत आ एहि नाटकक 'जय'

चीनी नाट्य-चिन्तकक परम्परामे यह प्रश्न उठाओल गेल अछि जे चीनी नाटकमे पाश्चात्य अर्थमे 'बेइजू' (tragedy) अछि वा नहि। वांग गुओवेई तर्क देलनि जे चीनी शास्त्रीय नाटकमे 'दुखद परिस्थिति' होइत अछि, मुदा अंत सामान्यतः समझौता वा समन्वयमे होइत अछि। एहि 'अर्ध-त्रासदी' कैं ओ 'दुखी खोज' कहलनि।

एहि नाटकक शीर्षकक 'जय!' शब्द यैह बताबैत अछि जे ई 'बेइजू' नहि, 'बेइ झोंग योऊ शी' (joy within sorrow) क एक रूप थिक। फलक पाथर बनब, चिता-संकल्प—ई दुखद; मुदा इन्द्रक स्वीकार आ 'जय' क उद्घोष—ई समन्वय थिक। मुदा विशेष ई जे एहि 'जय' क नायिका श्रुवावती छथि, देवराज इन्द्र नहि—ई एक महत्त्वपूर्ण उलटफेर थिक।

५. इजरायली नाटच-सिद्धांत

५.१ हनोख लेविन: मानव-प्रतिष्ठाक नाटच-रक्षा

इजरायलक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण नाटककार हनोख लेविन (Hanoch Levin, १९४३–१९९९) अपन नाटकमे बेर-बेर ओइ प्रश्नसँ जुझलाह—मानव-प्रतिष्ठाक (human dignity) कोन-कोन व्यवस्थाक विरुद्ध रक्षा करबाक चाही? हुनकर 'द लेबर ऑफ लाइफ' (The Labour of Life) जेकाँ नाटकमे स्त्री-पात्र प्राय: सामाजिक-पारिवारिक दबावक विरुद्ध अपन अस्मिताक लड़ाइ लड़ैत अछि।

श्रुवावतीक स्थिति लेविनक स्त्री-पात्रसँ एक महत्त्वपूर्ण भेदक संग समान अछि। लेविनक स्त्री प्राय: असफल होइत अछि—व्यवस्था ओकरा निगलि जाइत अछि। श्रुवावती विजयी होइत छथि। ई भेद कुणालक आशावादी मानवतावादक प्रमाण थिक—ओ लेविनक क्रूर यथार्थवादसँ भिन्न एक भारतीय-पौराणिक आशावाद लैत छथि जाहिमे 'आत्मबल' क अन्ततः विजय होइत अछि।

५.२ एली रोजिक: बहु-भूमिका आ 'परिवर्तनशील पहचान' क प्रतिमात्मकता

एली रोजिकक प्रतिमात्मकता (theatrical iconicity) क सिद्धांत एहि नाटकमे एक विशेष परीक्षामे पड़ैत अछि—बहु-भूमिका अभिनय (multi-role performance)। एक्के अभिनेता भारद्वाज, वृद्ध, वशिष्ठ आ इन्द्र बनैत अछि।

रोजिकक प्रश्न—जखन एक अभिनेता अनेक पात्र खेलाइत अछि, तखन दर्शक कोन 'प्रतिमा' देखैत अछि? रोजिक तर्क दैत छलाह जे दर्शक एकहि संग दू 'प्रतिमा' देखैत अछि—अभिनेताक आ पात्रक—एहि द्वैत-दर्शनमे रंगमंचक विशिष्ट सौन्दर्य निहित अछि। एहि नाटकमे एहि 'डबल आइकॉनिसिटी' क एक विशेष राजनीतिक अर्थ अछि—इन्द्र वृद्धक वेशमे आ वशिष्ठक वेशमे परीक्षा लैत छथि; दर्शक जनैत छथि जे ई इन्द्र छथि—ई 'dramatic irony' (नाट्य-विडम्बना) थिक जाहिमे श्रुवावतीक सत्य-दृष्टि आर अधिक उज्ज्वल भ' जाइत अछि।

५.३ उत्तर-हॉलोकास्ट नाटच-चिन्तन: 'अग्नि' आ 'अस्तित्व'

इजरायली रंगमंच-विद्वान ड्वोरा बेन शाउल (Dvora Ben-Shaul) आ अन्यक उत्तर-हॉलोकास्ट नाट्य-चिन्तनमे अग्नि एक अत्यन्त भार-वाहक प्रतीक (loaded symbol) बनि गेल अछि—विनाश आ उत्तरजीविता (survival) दुनू एकहि संग संगृहीत अछि।

श्रुवावतीक चिता-दृश्य एहि परिप्रेक्ष्यसँ एक जटिल प्रतिमा बनैत अछि। अग्नि-प्रवेश पारम्परिक भारतीय परम्परामे 'सती' क प्रतीक थिक—एक पितृसत्तात्मक संस्था। कुणाल एहि प्रतीककेँ उनटैत छथि—श्रुवावतीक चिता 'मरबाक' नहि, 'जीबाक माँग' क अभिव्यक्ति थिक। ओ स्वयं आगि लगाबैत छथि, आ घोषणा करैत छथि—"प्रियक स्मरण करैत हम अग्नि-प्रवेश करब।" ई 'नहि जीबाक' नहि, 'प्रेमसहित जीबाक वा नहि जीबाक' क द्विभाजन थिक। इजरायली दृष्टिसँ एहि 'उत्तरजीविताक राजनीति' मे श्रुवावती एक 'witness' (साक्षी) छथि—ओ अपन अस्तित्वकेँ 'प्रमाण' बनाबैत छथि।

५.४ याकोव शाबताई: समापनक उर्दू शेर आ 'अन्तर-सांस्कृतिक संवाद'

इजरायली नाटककार याकोव शाबताई (Yaakov Shabtai, १९३४–१९८१) अपन 'पास्ट कन्टीन्यूअस' (Past Continuous) जेकाँ कृतिमे भाषाक प्रयोग एक प्रमुख सौन्दर्यशास्त्रीय उपकरण बनाबैत छलाह—हिब्रू, यिद्दिश आ अरबीक मिश्रण एहि सांस्कृतिक संकरताक अभिव्यक्ति थिक।

कुणालक मैथिली नाटिकाक समापनमे उर्दू शेरक प्रयोग शाबताईक अन्तर-सांस्कृतिक संवादक समानांतर थिक। मैथिली + पौराणिक सन्दर्भ + उर्दू काव्य-परम्परा—ई संयोग मात्र सजावट नहि, एक सांस्कृतिक-राजनीतिक वक्तव्य थिक—जे 'आत्मबल' क भाषा सीमा नहि मानैत अछि, जे एहि सन्देशक उर्दू अभिव्यक्ति ओतबे प्रामाणिक अछि जतेक मैथिली। दुष्यन्त कुमारक 'एक पत्थर तो तबीअत से उछालो' श्रुवावतीक चिता-संकल्पक उर्दू अनुवाद थिक।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण: 'जय' क बहुआयामी अर्थ

चारू नाट्य-परम्पराकेँ एकठाम राखि देखल जाए तँ 'प्रेम-प्रतिज्ञा उर्फ श्रुवावतीक जय!' क केन्द्रीय प्रश्न स्पष्ट होइत अछि—'जय' केकर थिक, आ ओ 'जय' केहन?

भारतीय दृष्टि—शृंगारक तीनू उपभेद; धर्मशास्त्रक स्त्री-मानदण्डकेँ नाट्य-खण्डन; ‘अर्थवान’ क त्रि-स्तरीय ध्वनि; चिता = भक्ति-परम्पराक पुनःव्याख्या।

पाश्चात्य दृष्टि—बोउवारक ‘subject’-बनब; सार्त्रक radical freedom; बाख्तिनक heteroglossia (उर्दू शेर); ब्रूकक ‘holy theatre’ (खाली मंच) ।

चीनी दृष्टि—युआनफेनक पुनः परिभाषा; उनटल काओयान; वांग यांगमिंगक यीझी = आत्मबल; ‘बेइ झोंग योऊ शी’ जयन्ती।

इजरायली दृष्टि—लेविनक स्त्री बनाम कुणालक आशावादी आत्मबल; रोज़िकक double iconicity; अग्नि = उत्तरजीविताक राजनीति; शाबताईक अन्तर-सांस्कृतिक संवाद।

चारू परम्पराक साझा निष्कर्ष—श्रुवावतीक ‘जय’ एक ब्यक्तिगत प्रेम-विजय नहि। ई एक दार्शनिक ‘जय’ थिक—‘आत्मबल’ (जे भारतीयमे साहस, पाश्चात्यमे freedom, चीनीमे यीझी, आ इजरायलीमे dignity थिक) क ‘जय’ । शीर्षकक विस्मयादिबोधक चिह्न (‘!’) यैह कहैत अछि—ई घोषणा थिक, विवरण नहि।

पूरक आख्यान-विवेचन

संकलनक ई नाटक महाभारतक शल्यपर्व आ वनपर्वक आख्यान सँ अनुप्राणित अछि। ऋषि भरद्वाजक पुत्री श्रुवावतीक चरित्रक माध्यम सँ कुणाल स्त्रीक संप्रभुता आ आत्मनिर्णयक अधिकारकेँ स्वर दैत छथि।

श्रुवावती देवराज इंद्र सँ विवाहक संकल्प ल'क' कठोर तप करैत अछि। इंद्र वशिष्ठ ऋषिक भेषमे आबि ओकर निष्ठाक परीक्षा लैत छथि आ ओकरा बदरी (बेर) सिझबैत रहबाक आदेश दैत छथि। जखन जलावै बला काठ समाप्त भ' जाइत अछि, तखन श्रुवावती अपन अग्निकुंडमे अपन पैर जलावय सँ सेहो पाछू नहि हटैत अछि। ओकर एहि असीम शारीरिक कष्ट आ अविचल मानसिक संकल्पकेँ देखि इंद्र परास्त भ' जाइत छथि आ ओकरा अपन अर्धांगिनीक रूपमे स्वीकार करैत छथि। कुणाल एहि नाटकमे स्त्रीकेँ याचक नहि, अपितु अपन भाग्यविधाताक रूपमे मंचीय गौरव प्रदान करैत छथि।

९६. केदारनाथ चौधरीक समीक्षा

सारांश
नाइट ड्यूटीमे छलौं, दू बजे राति मे हमर फोन टनटना उठल। हमर गप हमर कलीग, जे तमिल भाषी रहथि, सुनि रहल छली। "कोन भाषामे अहाँ एक घण्टा गप कऽ रहल छलौं, बड्ड मीठ भाषा अछि"।

बीजशब्द: केदारनाथ चौधरी; कथा; मैथिली साहित्य; आलोचना; संस्था; पाठकीयता; भाषा

कथा १-१०

कथा १ 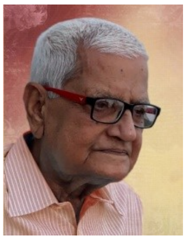

कथा २

डॉ कल्पना मणिकान्त मिश्र

मातृभाषा

मातृभाषाक प्रेम, बहुत किछु पढ़ल आ सुनल अछि। अहूँ सभ सुनने होयब, कतेक बेर, मुदा स्वयं अनुभव करबाक अवसर किछुएक लोककेँ भेटैत छन्हि। हम सभ बम्बइ आयले रही। ओना तँ ऐ गप्पक एक युगसँ बेसी भय गेल मुदा बिसरबाक हिम्मत नै कऽ सकैत छी, आर किएक बिसरु? महानगरीक चकाचौन्ध मे हरायल रही, कतौ भटकि नै जाइ से चिन्ता रहय। १९८०क दशक मे संजय गाँधीक एकटा योजना आयल छल, बेरोजगार ग्रेजुएट लेल बैंकसँ किछु सुविधा पर २०, ००० रुपया देबय लेल। हमहूँ बेरोजगार डाक्टर रही। आवेदन केलौं तँ लोन तुरत्ते भेट गेल। मुदा आब ओइ पाइक हम की करु? अपन रोजगार जेना दवाइखाना, कोनो छोटसन घर आदि जतऽ भविष्यमे अपन क्लीनिक खोलि सकी, जेकि ओइ समयमे अति सुलभ आर सम्भव छल, आब तँ से ओइ पाइमे सपना भऽ गेल अछि। ओइ पाइसँ निवेश कऽ हम अपन भविष्य सुरक्षित कऽ सकैत छलौं, गहना-गुड़िया बना अपन सख-सेहन्ता पूरा कऽ सकैत छलौं बा भारत भ्रमण कऽ सकैत छलौं। मुदा नै! हमर पति, डा. मणिकान्त मिश्रक इच्छा छलन्हि जे मैथिली भाषाक पत्रिका निकाली। हम दुनु गोटे मिलि कऽ 'विदेह' नामक मैथिली पत्रिकाक शुरुआत केलौं। पत्रिका तँ छपै, मुदा के कीनत आर के पढ़त? ई बड पैघ समस्या छल। कोनाहु कऽ कय अपन घरक पूँजी लगा कऽ २ बर्ख तँ पत्रिका चलेलौं। फेर हमरा सभकेँ बन्द करय पड़ल किएक तँ दुनु गोटे डाक्टरी व्यवसायमे लागल रही, घर-अस्पताल-पारिवारिक झन्झट सम्हारैत बड मुश्किल छल। बम्बइमे नबे-नबे रही। तहूमे एतेक दुस्साहस कोनो साधारण आदमी नै कऽ सकैत अछि मात्र आर मात्र डा. मणिकान्त मिश्र कऽ सकैत छलाह। किएक तँ मैथिलीक प्रति हुनका जुनूनी लगाव छलन्हि। बम्बइक आपाधापी भरल जीवन एवम् स्वास्थ्यक उतार-चढ़ाव किछुओ हुनकर मैथिली-प्रेमक उत्साहकेँ कम नै कऽ सकलन्हि।

कथा ३

तहिये बुझने रही जे

त्याग नहि कएल होएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहवला।

कथा ४

धोआ-धोती धारी लोकनिकें साहित्य अकादेमीक अपन-अपन अनुवाद-असाइनमेंट आपस कऽ देबाक चाही आ ओ सभ असाइनमेंट नंद विलास राय, राजदेव मण्डल, रामबिलास साहु, धीरेंद्र कुमार, दुर्गानंद मण्डल, मनोज कुमार मण्डल, शिव कुमार प्रसाद, उमेश पासवान, संदीप कुमार साफी, बेचन ठाकुर, मेघन प्रसाद, किशन कारीगर, लालदेव महतों, उमेश मण्डल, शारदानंन्द सिंह, सुभाष कुमार कामत, मुन्नी कामत आदि कें देल जाय, आ से केलासँ मैथिली लेल अग्निवीरक एकटा फौज तैयार भऽ जायत। मेघन प्रसाद विदेह मे अपन आलेखमे ई इच्छा व्यक्त केने छलाह मुदा तखनो हुनका अनुवाद-असाइनमेंट नै देल गेल। अशोक अविचल कें अदहा बधाइ, कारण दू टा कोरा धोतीक बदला हुनकर कार्यकालमे एक्केटा कोरा-धोतीकें पुरस्कार भेट पेलै। आब अगरा-पिछड़ा दुनू दिसुका धोआ-धोती बला मायावी सभ कोन-कोन बहन्ने की-की उकबा उड़ेतन्हि आ अगिला बर्खसँ फेर सँ एकछाहा धोआ-धोतियाइन साहित्य अकादेमी भऽ जायत बा नै तकर उत्तर तँ भविष्यक कोखिमे अछि।

कथा ५

एकटा साहित्यिक घटना

एकटा साहित्यिक घटनाक विवरण दै छी। ई घटना भेलै तमिल साहित्यक आधुनिक कालमे।

मूल धारा विश्व भरिसँ विद्वानकेँ बजेलक मारते रास प्रोग्राम-प्रचार। अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार बजाओल गेला, एकसँ एक कार्यक्रम, रेडियो टी. वी. पर प्रचार, टाकाक गुड्डी उड़ा देलक मूल धारा। एक नम्बरक प्रोग्राम समाप्त भेल।

आ समानान्तर धारा की केलक। ओ निकाललक समकालीन समानान्तर गद्य आ पद्यक एकटा संकलन जकर नाम छलै "कुरुक्षेत्रम्"। साधारण कागज पर साधारण डिजाइन पर बहार भेल ई "कुरुक्षेत्रम्" तमिल साहित्यकेँ सिहरा देलकै। आ एकटा बहस शुरू भेलै जे तमिल साहित्यक इतिहासमे एक्के समय मे भेल दू घटनासँ तमिल साहित्यकेँ कोन घटना बेशी फौदेलकै। टाकाक गुड्डी उड़बैबला तमिल साहित्यक विश्व आकि ब्रह्माण्ड सम्मेलन आकि कुरुक्षेत्रम्!

आ बहुमत मानलकै जे साधारण कागज पर साधारण डिजाइन कएल "कुरुक्षेत्रम्" श्रेष्ठ घटना छल।

विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांक मैथिली साहित्यक "कुरुक्षेत्रम्" बनि गेल अछि। फेसबुकपर बहसमे साहित्यकार लोकनि मानलन्हि जे साहित्य अकादेमी पुरस्कारसँ बेशी महत्त्व विदेहक जीवित साहित्यकारपर विशेषांकक भऽ गेल अछि। लाखक-लाख टाकाक साहित्य अकादेमीमे पसरैत कन्नारोहट घटबाक नामे नै लऽ रहल अछि, मुख्य धारा अपनेमे जालक ओझरी बनि गेल अछि, जकरा असाइनमेण्ट भेटलै से पुरस्कार लेल आ जकरा पुरस्कार भेटलै से असाइनमेण्ट लेल आफन तोड़ने अछि, आ जकरा दुनूमे सँ किछु नै भेटलै तकरा दुनू चाही तइले, आ जकरा दुनू भेटि गेलै तकर हालत तँ सभसँ बेशी खराप छै, ने अकादेमीये ओकरा मोजर दऽ रहल छै आ ओकर रचना सेहो तेहेन नै छै जे समानान्तर धारा लग ठठि सकतै। आ जँ किछु अपवाद अछि तँ ओ डिप्रेशनमे चलि गेल छथि बा अपनाकेँ सेहो कतिआयल माने समानान्तर धारक घोषित करबामे लागल छथि।

माने कतिआयल होयब घोषित करब बा समानान्तर धाराक होयब घोषित करब मूलधाराक (अगड़ा-पिछड़ा दुनूक अस्सी-अस्सी हाथक नम्हर-नम्हर साहित्यकार मूलधारामे छथि) एकटा फैशन बनि गेल अछि, मुदा ई फैशन अछि नै...

कथा ६

विद्वान केना बनी?

अक्खर (अक्षर) खम्भा

कथा ७

आब किछु भाषण-भाख

कथा ८

कथा ९

साकेतानन्द प्रकरण

ओ लिखैत छथि:

कथा १०

ई कोनो कथा नै

१७. "विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह": विश्वास, पहचान आ रूपान्तरण

सारांश
सुकन्या-च्यवन आख्यानक ई समीक्षा विश्वास, दृष्टि, पहचान, रूप-आत्मा, दाम्पत्य निष्ठा आ नैतिक कर्तृत्वक प्रश्नकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। भारतीय दर्शन, अभिज्ञान, मनोवैज्ञानिक पहचान, हृदय-दृष्टि, रूपान्तरण आ यहूदी-इजरायली आत्मीयताक तुलनात्मक सूत्र नाटकक अर्थ-संरचनाकेँ विस्तारित करैत अछि।

बीजशब्द: सुकन्या; च्यवन; विश्वास; पहचान; अभिज्ञान; हृदय-दृष्टि; रूपान्तरण

१. परिचय, कथा-स्थापत्य आ विशिष्टता

प्रेम-चतुष्टयक द्वितीय नाटिका 'विश्वासक शक्ति उर्फ सुकन्याक विवाह' महाभारतक शान्तिपर्वक सुकन्या-च्यवन-आख्यान पर आधारित अछि, मुदा कुणाल एहि परम्परागत कथाकेँ एक नवीन नारीवादी-दार्शनिक दृष्टिसँ पुन:-लिखैत छथि। नाटिकाक नामकरण सूचक अछि—'विश्वासक शक्ति' शीर्षक-भाव थिक, 'सुकन्याक विवाह' कथा-घटना।

नाटकक स्थापत्य अत्यन्त सुगठित अछि। पाँच नाट्य-क्रम—(१) वसन्तोत्सव: सूत्रधार+विद्यापतिक 'आयल रितुपति राज बसंत'+राजा-रानीक विरोधाभासी दर्शन; (२) च्यवनक वल्मीक-आच्छादित समाधि आ सुकन्याक क्रीड़ा-दुर्घटना; (३) च्यवनक क्षमा, विवाह-प्रस्ताव, राजाक असमञ्जस आ सुकन्याक स्वेच्छा-स्वीकार; (४) आश्रम-जीवन + अश्विनी कुमारक छल-परीक्षा (तीन एकसदृश रूप); (५) सुकन्याक नेत्र-परीक्षा, च्यवनकेँ यौवन, सोमरस-प्रदान आ समापन।

नाटककक केन्द्रीय नाट्य-प्रश्न—'विश्वास' केहन होइत अछि? ओ आँखिसँ उत्पन्न होइत अछि, वा हृदयसँ? जखन तीन एकसदृश रूप सोझाँ हो, तखन स्त्री अपन 'पति' केँ की द्वारा चिन्हैत अछि—देह द्वारा वा आत्मा द्वारा? एहि प्रश्नक नाट्य-उत्तर—"स्नेह, मात्सर्य, करुणा। एहि आँखि मे हिलकोरैए"—नाटकक वैचारिक पराकाष्ठा थिक।

२. भारतीय नाट्य-सिद्धांत

२.१ महाभारत-स्रोत आ पुनर्पाठ: नाट्यीकरणक राजनीति

महाभारतक शान्तिपर्वक सुकन्या-च्यवन-आख्यानमे सुकन्या एक आज्ञाकारी पुत्री थिकाह जे पिताक आज्ञासँ वृद्ध च्यवनसँ विवाह करैत छथि। कुणाल एहि 'आज्ञाकारी पुत्री' क स्थानमे एक 'स्वेच्छाकारी स्त्री' रखैत छथि। महाभारतमे सुकन्याक विवाहक निर्णय पिताक निर्णय थिक; एहि नाटकमे सुकन्या स्वयं घोषणा करैत छथि—"हमर अछि अपराध, हम करब परिमार्जन"—आ स्वेच्छासँ च्यवनक अर्धांगिनी बनैत छथि।

ई 'महाकाव्य-पुनर्पाठ' (epic rewriting) भारतीय स्त्री-लेखनक एक स्थापित परम्परा थिक—उर्मिला (रामायण), द्रौपदी (महाभारत), आ अन्यक दृष्टिकोणसँ मूल महाकाव्यक पुनर्कथन। कुणाल पुरुष-लेखकक रूपमे एहि परम्परासँ सचेत जुड़ाव देखाबैत छथि।

२.२ रस-विचार: शृंगारक तीन अवस्था + अद्भुतक विजय

शृंगार-रसक प्रवाह एहि नाटकमे एक विशिष्ट नाट्य-रूपरेखा लेलक अछि—(क) वसन्तपदसँ आरम्भ: विद्यापतिक 'आयल रितुपति राज बसंत' शृंगारक उदात्त काव्यात्मक प्रवेश थिक; (ख) वल्मीक-भेदनसँ करुण-भय: सुकन्याक क्रीड़ामे अनजान घाव, च्यवनक क्रोध, सुकन्याक अपराध-बोध; (ग) आश्रम-जीवनमे विश्वास-शृंगार: वल्कल-वेशमे 'तपस्विनी जकाँ जीबैत छी, प्रसन्न तखनहूँ छलहूँ, प्रसन्न एखनहूँ छी' ।

अद्भुत-रसक चरम क्षण थिक अश्विनी-परीक्षा—तीन एकसदृश रूप! ई नाट्यशास्त्रक 'अद्भुत' (विस्मय) क एक विशेष उपभेद थिक—'सुखद-अद्भुत' (pleasant wonder) । भरत कहलाह जे अद्भुत-रसक व्यभिचारी भाव थिक श्रम, हर्ष, असूया (ईर्ष्या), विषाद आ चपलता—एहि दृश्यमे सभ उपस्थित अछि।

२.३ नयन-परीक्षा: भारतीय दर्शनशास्त्रक आँखि-तत्त्व

भारतीय दार्शनिक परम्परामे आँखि (नेत्र/नयन) कएक अर्थमे महत्त्वपूर्ण अछि—प्रत्यक्ष-प्रमाणक इन्द्रिय, आत्माक 'दर्पण', आ मिलनक माध्यम। 'नयनसँ हृदय पढ़ब' एक सुदीर्घ काव्य-परम्परा थिक (विद्यापतिक पदमे सेहो नयन-संवाद प्रमुख अछि) ।

एहि नाटकमे 'तीन एकसदृश रूप' क परीक्षामे सुकन्याक विश्वास आँखिसँ उत्पन्न होइत अछि—मुदा बाह्य आँखिसँ नहि, 'अन्तरदृष्टि' सँ।

स्नेह, मात्सर्य, करुणा। एहि आँखि मे हिलकोरैए। आवेग, ममता, आनन्द। एहि आँखि मे बसैए।

न्याय-दर्शनक परिप्रेक्ष्यमे ई 'लाक्षणिक प्रत्यक्ष' (लक्षण-द्वारा प्रत्यक्ष) थिक—बाह्य रूपक अभावमे आन्तरिक गुण-धर्मसँ पहचान। नव्य-न्यायक शब्दमे—'लिंग' (hetu/mark) द्वारा 'साध्य' (conclusion) क सिद्धि। सुकन्या आँखिमे स्नेह-करुणाक 'लिंग' देखि 'च्यवन' क 'साध्य' सिद्ध करैत छथि।

२.४ 'च्यवनप्राश' प्रसंग: लोक-स्मृति आ नाट्य-विनोद

सूत्रधार नाटकक आरम्भमे एक मनोरंजक टिप्पणी करैत अछि—"च्यवनप्राश बला च्यवन कि...हँ...नइँ...मानि लिअ'...सैह।" एहि एक पंक्तिमे कुणाल दू हजार वर्षक अन्तरालकेँ एक हास्यात्मक नाटकीय क्षणमे समेटि दैत छथि—महर्षि च्यवन जे औषधि-ज्ञानक लेल विख्यात छलाह, ओहि परम्पराक आधुनिक उत्तराधिकार 'च्यवनप्राश' नामक उत्पाद थिक। भारतीय नाट्य-परम्पराक 'विदूषकोक्ति' (vidūṣaka utterance) जाहिमे पौराणिक गाम्भीर्यमे हास्य-व्यंग्य घुसड़ैत अछि, एकर उत्कृष्ट आधुनिक उदाहरण थिक।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ मार्टिन बुबर: 'आई-थाऊ' आ 'आई-इट' सम्बन्ध

जर्मन-यहूदी दार्शनिक मार्टिन बुबर (Martin Buber, १८७८–१९६५) अपन 'आइ एंड थाऊ' (Ich und Du / I and Thou, १९२३) मे दू प्रकारक मानव-सम्बन्ध प्रस्तुत कएलनि—'आई-थाऊ' (I-Thou) जाहिमे दोसर व्यक्तिकेँ एक सम्पूर्ण 'तुम' (subject) क रूपमे देखल जाइत अछि; आ 'आई-इट' (I-It) जाहिमे दोसरकेँ एक वस्तु (object) मानल जाइत अछि।

एहि नाटकमे अश्विनी कुमार 'आई-इट' क प्रतिनिधि छथि—ओ सुकन्याकेँ एक सुन्दर वस्तु बनेबाक चाहैत छथि ("देह टा देखैत छी, देह टा बुझाबैत छी")। च्यवन-सुकन्याक सम्बन्ध 'आई-थाऊ' क अवतरण थिक—च्यवन कहैत छथि—"अहाँ नेत्रक द्वार मे पैसि क' हृदय देखैत छी।" ई बुबरक 'मिटिंग' (Begegnung / genuine meeting) क नाट्य-रूपान्तरण थिक। अश्विनी-परीक्षाक उलटल-दिशा—सुकन्या आँखिसँ आत्मा पढ़ैत छथि—यैह 'आई-थाऊ' क पहचान-विधि थिक।

३.२ अरस्तू: 'एनागनोरिसिस' क एक नूतन रूप

अरस्तूक 'काव्यशास्त्र' मे 'अभिज्ञान' (ἀναγνώρισις / anagnorisis) एक महत्त्वपूर्ण नाट्य-क्षण थिक—जाहिमे पात्र एक महत्त्वपूर्ण 'पहचान' करैत अछि। सर्वोत्कृष्ट अभिज्ञान ओ थिक जे कथाक परिवर्तन-बिन्दुसँ (peripeteia) एकहि संग घटित हो।

एहि नाटकक तीन-मुखौटा दृश्यमे 'अभिज्ञान' एक अत्यन्त नवीन रूप लैत अछि—सुकन्या तीन एकसदृश रूपमेसँ पतिकेँ पहचानैत छथि। अरस्तूक अभिज्ञान प्रायः 'बाह्य चिह्न' (घाव, अँगूठी, नाम) सँ होइत अछि; एहि नाटकमे सुकन्याक अभिज्ञान 'आन्तरिक गुण-पठन' सँ होइत अछि—'स्नेह, करुणा, ममता' क पहचान। ई 'आन्तरिक अभिज्ञान' (internal anagnorisis) अरस्तूक श्रेणीकेँ विस्तारित करैत अछि।

३.३ एरिक एरिकसन: पहचान-संकट आ 'विश्वास' क विकास

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक एरिक एरिकसन (Erik Erikson, १९०२–१९९४) मानव-विकासक आठ चरण प्रस्तुत कएलनि। प्रथम चरणमे ओ 'बेसिक ट्रस्ट बनाम मिस्ट्रस्ट' (Basic Trust vs. Mistrust) रखलनि—एहि मौलिक 'विश्वास' क निर्माण व्यक्तित्वक सम्पूर्ण विकासक आधार थिक।

सुकन्याक विश्वास एरिकसनक अर्थमे 'बेसिक ट्रस्ट' क पौराणिक-नाट्य रूपान्तरण थिक। ओ एहन पितासँ आयल छथि जे 'प्रसन्न रहू, सब ठीक हेतै' (राजाक उदार आशावाद) आ 'यथार्थसँ आँखि जुनि फेरियाउ' (रानीक सतर्क यथार्थवाद) दुनूक दर्शन सुनने छथि। ई दुनू दृष्टिकोणसँ परे सुकन्या अपन मौलिक विश्वास स्वयं निर्मित करैत छथि—वल्मीक-भेदनक अपराध-बोध, स्वेच्छा-विवाह, अश्विनी-परीक्षामे अडिगता—यैह 'ट्रस्ट फॉर्मेशन' (विश्वास-निर्माण) क नाट्य-यात्रा थिक।

३.४ ब्रेख्त: हास्य-राजनीति आ 'अर्ध-देव' क विडम्बना

ब्रेख्तीय नाट्यशास्त्रमे हास्य-दृश्य प्रायः राजनीतिक व्यंग्यक वाहक होइत अछि। अश्विनी कुमारक दृश्य एहि दृष्टिसँ असाधारण अछि। 'अर्द्धदेव'—जे स्वर्गमे बसैत, अप्सराक संग रहैत, देवता कहबैत—ओ एक राजकुमारी जे अरण्यमे वल्कल पहिरि क' रहैत छथि, तनिकर समक्ष विफल होइत छथि।

ब्रेख्तक 'Gestus' (सामाजिक भाव-मुद्रा) क परिप्रेक्ष्यमे अश्विनी कुमारक दृश्य एक 'class critique' (वर्ग-आलोचना) थिक—विशेषाधिकार-प्राप्त देवता (privileged class) ओहन 'मानव-मूल्य' कैँ नहि बुझि सकैत जे एक साधारण 'नश्वर' स्त्री जीवैत अछि। सुकन्याक उत्तर—"आहाँ लोकनि तँ हृदय रखैत नहि छी"—यैह ब्रेख्तीय नैतिक-राजनीतिक निर्णय थिक।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ 心眼 (शीन-यान): हृदय-दृष्टि

चीनी काव्यशास्त्री आ बौद्ध दार्शनिक परम्परामे 'शीन-यान' (心眼, heart-eye / हृदय-आँखि) एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा थिक—ओ अन्तरदृष्टि जे बाह्य रूपक परे आन्तरिक सत्यकैँ देखैत अछि। चान-बौद्ध (禅) परम्परामे 'शीन-यान' कैँ 'धर्मेन्द्रिय' (dharma-eye) क एक रूप मानल जाइत अछि।

एहि नाटकक केन्द्रीय परीक्षा—तीन एकसदृश रूपमेसँ पतिकैँ पहचानब—ठीक 'शीन-यान' क अभ्यास थिक। सुकन्या बाह्य आँखि मूनि क' ("सुकन्या आँखि मुनैत अछि"), भीतरी हृदय-दृष्टिसँ प्रत्येक आँखिमे गुण-धर्म पढ़ैत छथि—गौरव-घमंड (अश्विनी-१), लिप्सा-कुत्सा-लोभ (अश्विनी-२), स्नेह-करुणा-आनन्द (च्यवन) । ई 'शीन-यान' क एक आश्चर्यजनक नाट्य-उदाहरण थिक।

४.२ 缘 (युआन): कर्म-सम्बन्ध आ प्रायश्चित्त-योग

चीनी बौद्ध-दार्शनिक परम्परामे 'युआन' (缘, karmic connection / कर्म-सम्बन्ध) एक केन्द्रीय अवधारणा थिक—दू प्राणीक मिलन एक पूर्व-कर्मक परिणाम थिक। एहि सिद्धांतमे कर्म-सम्बन्ध मात्र पूर्व-जन्मक ऋण नहि, वर्तमान क्षणक निर्णयसँ सेहो निर्मित होइत अछि।

सुकन्याक वल्मीक-भेदन एक अनजान कर्म थिक—"कर' नहि चाहलहूँ, भ' गेल" । मुदा हुनकर प्रतिक्रिया—"हम अपराधी छी, दंडक भागी छी"—एक सचेत 'प्रायश्चित्त-युआन' (karmic rectification) थिक। एहि 'युआन' क परिणाम थिक च्यवनक विवाह-प्रस्ताव। चीनी काव्य-नाट्यमे ई 'कर्म-विनाश' (karma-resolution) एक प्रमुख नाट्य-चाप थिक।

४.३ 形神 (शिंग-शेन): रूप आ आत्माक द्वन्द्व

चीनी सौन्दर्यशास्त्रमे 'शिंग-शेन' (形神, form and spirit) क द्वन्द्व एक प्रमुख चर्चा-विषय थिक। 'शिंग' (形) बाह्य रूप थिक, 'शेन' (神) आन्तरिक सत्ता। चीनी चित्रकला-सिद्धांतमे कहल जाइत अछि—'तुआन-की-शिंग-शी-शेन' (得其形似神, to capture the spirit through form) ।

एहि नाटकक तीन-मुखौटा दृश्यमे 'शिंग' (बाह्य रूप) एकसदृश अछि; 'शेन' (आन्तरिक आत्मा) भिन्न-भिन्न। सुकन्याक विश्वास 'शेन' कैँ 'शिंग' क परे देखबाक शक्ति थिक। अश्विनी कुमारक असफलता—ओ 'शिंग' नकल क' सकलाह, 'शेन' नहि—यैह चीनी 'शिंग-शेन' सिद्धांतक अनुरूप थिक।

४.४ 义务 (यीवू): कर्तव्य-बोध आ सुकन्याक नैतिक विकास

कन्फ्यूशियाई दार्शनिक परम्परामे 'यीवू' (义务, moral obligation / नैतिक कर्तव्य) एक केन्द्रीय मूल्य थिक। ई मात्र बाह्य नियम-पालन नहि—'मेंग्ज़ी' (孟子, Mencius) क अनुसार नैतिक कर्तव्य मनुष्यक अन्तर्निहित 'रेन' (仁, benevolence / मानवता) सँ उत्पन्न होइत अछि।

सुकन्याक नाट्य-यात्रा 'यीवू' क एक विशेष क्रम दर्शाबैत अछि—(क) अनजान कर्म (वल्मीक-भेदन) → (ख) कर्तव्य-बोध (अपराध-स्वीकार) → (ग) नैतिक निर्णय (स्वेच्छा-विवाह) → (घ) 'रेन' क प्रकटीकरण (अश्विनी-क्षमा, च्यवन-प्रेम) । ई एक मेंग्ज़ियन नैतिक-विकास-चाप (Mencian moral arc) थिक।

५. इजरायली नाटच-सिद्धांत

५.१ मार्टिन बुबर आ इजरायली आत्मीयता: 'हसिदिक' विश्वास-दर्शन

मार्टिन बुबर (जकर 'आई-थाऊ' सिद्धांत पाश्चात्य खण्डमे विवेचित भेल) इजरायली संस्कृतिक परम्पराक एक महत्त्वपूर्ण स्तम्भ थिकाह। बुबर हसिदिक (Hasidic Jewish) परम्पराक दार्शनिक थिकाह—जाहिमे 'विश्वास' (Emunah / אמונה) एक केन्द्रीय आध्यात्मिक-नैतिक मूल्य थिक।

बुबरक हसिदिक दर्शनमे 'विश्वास' मात्र बौद्धिक सहमति नहि, अपितु एक 'समर्पण' (Hingabe) थिक—समग्र आत्मासँ दोसरक ओर मुड़नाइ। सुकन्याक विश्वास एहि 'हसिदिक Emunah' क एक हिन्दू-पौराणिक समकक्ष थिक—ओ च्यवनकेँ बुद्धिसँ नहि, समग्र हृदयसँ पहचानैत छथि। एहि नाटिकाक शीर्षक 'विश्वासक शक्ति' आ बुबरक 'Emunah' एक्के आत्मिक यात्रा थिक।

५.२ एली रोज़िक: 'मास्क' क प्रतिमात्मकता आ पहचानक संकट

एली रोज़िकक प्रतिमा-सिद्धांत (theatrical iconicity) एहि नाटकमे एक असाधारण परीक्षामे पड़ैत अछि। तीन एकसदृश अभिनेता—एक्कहिं वेश, एक्कहिं रूप, एक्कहिं भाषा। रोज़िकक प्रश्न—'जखन प्रतिमा अपना 'referent' सँ अलग नहि क' सकल जाइत, तखन दर्शक की देखैत अछि?'

एहि नाटकमे दर्शक एकहि संग तीन स्तर पर देखैत अछि—(क) तीन अभिनेताक शारीरिक उपस्थिति; (ख) तीन काल्पनिक पात्र (च्यवन, अश्विनी-अग्रज, अश्विनी-अनुज); (ग) सुकन्याक 'हृदय-पाठ' जाहिमे प्रतिमाक 'referent' भिन्न हो जाइत अछि। रोज़िकक शब्दमे—ई 'iconic ambiguity' (प्रतिमात्मक-अस्पष्टता) क एक जटिल उदाहरण थिक जाहिमे पहचानक संकट स्वयं नाट्य-विषय बनि जाइत अछि।

५.३ यहूदी परम्पराक 'टिक्कुन ओलाम' आ प्रायश्चित्त-नाटच

यहूदी धर्म-दर्शनमे 'टिक्कुन ओलाम' (Tikkun Olam / संसार-सुधार) एक महत्त्वपूर्ण अवधारणा थिक—एहि दर्शनमे मानवक नैतिक दायित्व थिक जे ओ अपन कर्मद्वारा संसारकेँ ठीक करए। ई 'टिक्कुन' (सुधार/मरम्मत) व्यक्तिगत स्तर पर 'तेशुवा' (teshuva / पश्चाताप-परिवर्तन) सँ आरम्भ होइत अछि।

सुकन्याक आचरण एहि 'टिक्कुन'-दर्शनक एक हिन्दू-पौराणिक प्रतिरूप थिक। ओ वल्मीक-भेदनक 'शेबेर' (שבר, brokenness / टूटन) स्वीकार करैत छथि, 'तेशुवा' (पश्चाताप-स्वीकार) करैत छथि, आ अपन जीवनक 'टिक्कुन' करैत छथि—च्यवनक अर्धांगिनी बनि क' । नाटकक समापन ("स्नेह सँ सुरभित बरसात बहैत रहल") एहि 'टिक्कुन' क पूर्णता थिक।

५.४ इजरायली लोक-रंगमंचक 'पुरीम-शपील': कौतुक-विडम्बना

इजरायली लोक-नाट्य-परम्परामे 'पुरीम-शपील' (Purim Spiel / पुरीम-खेल) एक विशेष विधा थिक जाहिमे पारम्परिक आख्यानकेँ हास्य-व्यंग्यात्मक रूपमे प्रस्तुत कएल जाइत अछि। एहिमे ्रान्तिकारी पात्र-उलटफेर (inversion), वेश-परिवर्तन (costume change), आ गम्भीर विषयक हास्यात्मक उपस्थापन होइत अछि।

अश्विनी-कुमार-प्रसंग एहि 'पुरीम-शपील' शैलीक एक हिन्दू-पौराणिक संस्करण थिक। 'अर्द्धदेव' (देवता) एक 'सिद्धान्ततः उच्च' सत्ता छथि, मुदा एहि दृश्यमे ओ हास्यास्पद, असफल आ विडम्बित छथि। सुकन्याक धमकी—"आगाँ सँ मनुख, पाछाँ सँ बकरी"—एक पुरीम-शपील-सदृश कार्निवालेस्क उलटफेर थिक। गम्भीर देवता-पात्रमे हास्य-व्यंग्य एकहि संग नाटककेँ जीवन्त बनाबैत अछि।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण: 'विश्वासक शक्ति' के थिक?

चारू नाट्य-परम्पराकेँ एकठाम राखि देखल जाए तँ एहि नाटिकाक केन्द्रीय प्रश्नक उत्तर बहुआयामी भ' जाइत अछि।

भारतीय दृष्टि—महाकाव्य-पुनर्पाठ (स्वेच्छा-विवाह); शृंगार+अद्भुत+करुण; नव्य-न्यायक लिंग-साध्य (आँखिमे गुण-पठन); 'च्यवनप्राश' विदूषकोक्ति।

पाश्चात्य दृष्टि—बुबरक आई-थाऊ (हृदय-सम्बन्ध बनाम वस्तुकरण); अरस्तूक आन्तरिक-अभिज्ञान; एरिकसनक ट्रस्ट-फॉर्मेशन; ब्रेख्तीय वर्ग-आलोचना (अर्धदेव बनाम मानव-हृदय) ।

चीनी दृष्टि—(शीन-यान / हृदय-दृष्टि); (युआन / कर्म-सम्बन्ध + प्रायश्चित्त); (शिंग-शेन / रूप बनाम आत्मा); (यीवू / मेंग्ज़ियन नैतिक-चाप) ।

इजरायली दृष्टि—बुबरक हसिदिक Emunah (समग्र-हृदय-विश्वास); रोज़िकक iconic ambiguity; टिक्कुन ओलाम (संसार-सुधार = वल्मीक-भेदन → विवाह); पुरीम-शपील (अश्विनी-दृश्यक कार्निवालेस्क) ।

चारू परम्पराक साझा निष्कर्ष—'विश्वासक शक्ति' देह आ रूपक शक्ति नहि, हृदयक शक्ति थिक। एहि नाटकक सभ सँ उत्कृष्ट नाट्य-क्षण—जखन सुकन्या आँखि मुनि क' तीन एकसदृश रूपमेसँ स्नेह-करुणाक आँखि देखि पतिकेँ पहचानैत छथि—ई क्षण भारतीय, पाश्चात्य, चीनी आ इजरायली, चारू नाट्य-परम्पराक दृष्टिमे एकसमान 'आलोकित' क्षण थिक।

च्यवनक अन्तिम वाक्य—"नहि भ' सकैत छल...हम अहाँसँ परिचित छी प्रिय। अहाँ नेत्रक द्वार मे पैसिक' हृदय देखैत छी"—एहि चतुर्भुज-समीक्षाक समापन-वाक्य सेहो थिक।

पूरक विश्वास-विवेचन

ई नाटक पौराणिक सुकन्या आ वृद्ध-अंध महर्षि च्यवनक दाम्पत्य आख्यान थिक। सुकन्याक चरित्र पारम्परिक रूप सँ मात्र एकटा सतीक रूपमे पूजल गेल अछि, मुदा कुणाल एहि आख्यानमे 'विश्वास'क मनोवैज्ञानिक शक्तिकेँ प्रधानता दैत छथि।

देव-चिकित्सक अश्विनीकुमार द्वय जखन सुकन्याक सौंदर्य देखि ओकरा रिझाबक प्रयास करैत छथि, तखन सुकन्या अपन निष्ठा सँ हुनका पराजित करैत अछि। च्यवनकेँ नवयौवन देबाक प्रक्रियामे जखन तीनू (च्यवन आ दुनू अश्विनीकुमार) एकहि रूपमे जल सँ बाहर अबैत छथि, तखन सुकन्या अपन 'विश्वासक आंतरिक चक्षु' सँ अपन वास्तविक पतिक पहिचान क' लैत अछि। ई नाटक शारीरिक आकर्षणक तुलनामे मानसिक आ वैचारिक तादात्म्यक विजयक घोषणा करैत अछि।

९८. केदार नाथ चौधरीक- अबारा नहितन

सारांश

केदार नाथ चौधरी- हुनकर आ हुनकर उपन्यासक पुनर्पाठ मैट्रिकक परीक्षामे फेल भेलाक बाद सुगम स्थल एकमी पुलसँ बागमतीक प्रचण्ड वेगमे कूदि प्राणत्याग करबाक निर्णयमे शुद्ध देसी घीमे छानल जिलेबी-कचौड़ीक सुगन्धो व्यवधान नै दऽ सकल हँ मुदा ई निर्णय भेल जे आत्महत्यासँ पहिने एक तोड़ जिलेबी-कचौड़ी खा लेल जाय। आ भोजनालयमे जिलेबी-कचौड़ी खाउ आ एकमी पुल जाउ आ बात खतम।

बीजशब्द: अबारा नहितन; केदारनाथ चौधरी; उपन्यास; अध्याय-विन्यास; फिल्मीयता; कथा-गति

अध्याय ७ मे बम्बइ आगमन।

अध्याय दस राजनगरमे सूटिङ्ग।

शैलेन्द्र मोहन झा

सौभाग्यसँ हम ओहि गोनू झाक गाम, भरवारासँ छी, जिनका सम्पूर्ण भारत, हास्यशिरोमणिक नामसँ जनैत अछि। वर्तमानमे हम टाटा मोटर्स फाइनेन्स लिमिटेड, सम्बलपुरमे प्रबन्धकक रूपमे कार्यरत छी।

सपना

सुतल रही दुपहरियामे तँ देखलौ हम एक सपना
भयल विवाह हमर यै भौजी कनिया चान्द के जेना
हम्मर, टुटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे...

जहन भेँट भेल हुनकर हम्मर, भेलहुँ हम प्रसन्न
देखि कऽ हुनकर रूप हे भौजी, भय गेलौँ हम दङ
नाम पुछलियनि हुनकर हम तँ कहलनि ओऽ जे रजनी
स्वप्न सुन्दरी ओऽ बनि गेलि हम्मर ह्रदयक रानी

हमरा पुछली कहु हे साजन केहन हम लगै छी?
हम कहलियनि सुनु हे सजनी आहाँ चान्द लगै छी
चन्दामे तँ दागो छि, आहाँ बेदाग लगै छी
आँखि अहाँक ऐश्वर्या जेहन नाक अछि जुही चावला
केश अहाँक अछि नीलम जेहन गाल वैजन्तिमाला

एहि के बाद पुछलियनि हमहू केहन हम लगै छी?
कहय लगलि खराब छी, छी अहूँ ठीक-ठाक
लेकिन एहि यौवनमे साजन भेलहुँ कोन टाक*
कनिक लगै छी सन्नी जेना, किछु-किछु राहुल राय
किछु-किछु गुण गोविन्दा बाला, यैह अछि हम्मर राय

तहन कहलियनि चलु हे सजनि घुरए लेल दरभंगा
आहाँ लेल हम सारी किनब, अपनो लेल हम अंगा

दू टा टिकट अछि उमा टाकीजक, अगले-बगले सीट
दुनू गोटे बैस कऽ देखब "**ममता गाबय गीत**"**
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
हुनक हाथ लेल अपन हाथमे उठि विदाय हम भेलहुँ
तखने जगा देलक पिंटूआ, तखने जगा देलक पिंटुआ***, नीन्दसँ हम उठि गेलहुँ
हम्मर टूटि गेल सपना ये भौजी, भरल दुपहरियामे......

*= हमर केश किछु बेशी कम अछि
= **प्रसिद्ध मैथिली सिनेमा
***= हमर छोट भाई

९९. "प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार": कला, स्वाधीनता आ प्रेम

सारांश

श्वेता आ अतिरथक द्वन्द्वकेँ केन्द्रमे रखैत ई अध्याय कला, प्रेम, स्वाधीनता, विरक्ति, प्रकृति, परिवर्तन आ कलाकार-दर्शक सम्बन्धक विश्लेषण करैत अछि। भारतीय रस-ध्वनि, इब्सेन-सार्त्र-कामू-फ्रॉमक आधुनिक विचार, दाओवादी प्रकृति-दृष्टि आ इजरायली रंग-विमर्शक माध्यमसँ नाटकक मौलिक कल्पना आ संरचनात्मक तनाव दुनू पर विचार कएल गेल अछि।

बीजशब्द: श्वेता; अतिरथ; कला; स्वाधीनता; प्रेम; प्रकृति; परिवर्तन; कलाकार-दर्शक

१. परिचय, कथा-स्थापत्य आ रचना-वैशिष्ट्य

प्रेम-चतुष्टयक तृतीय नाटिका 'प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार' चतुष्टयक सर्वाधिक मौलिक आ वैचारिक रूपसँ साहसिक कृति थिक। एहि नाटिकाक कथा-वस्तु कोनो परम्परागत पौराणिक स्रोतसँ नहि आएल—ई कुणालक स्वतंत्र कल्पना थिक। राजनर्तकी श्वेता आ 'निरपेक्ष' राजा अतिरथ—दुनू काल्पनिक पात्र छथि, मुदा हुनकर द्वन्द्व एक चिरन्तन दार्शनिक-नाट्य प्रश्नकेँ मूर्त करैत अछि।

नाटककार एकटा अत्यन्त धाहक (daring) विरोधाभास रचैत छथि—राजा अतिरथ कलाक महान संरक्षक, संगीत-नृत्यक पारखी, प्रजावत्सल, संत-सदृश—मुदा ओ 'निरपेक्ष' छथि—"प्रेम करब तँ नितांत मूर्खता थिक, एक टा अकाजक काज!" ओकर विरुद्ध ठाढ़ छथि श्वेता—एक नर्तकी जे सात वर्षक साधनाक बाद ७-वर्षीया अनुरागसँ आन्दोलित छथि, जे हठपूर्वक माँग करैत छथि जे 'कलाकारकेँ देखबिनु कलाकेँ देखब असम्भव थिक' ।

नाटकक छह नाट्य-क्रम—(१) उद्घोषकक परिचय + श्वेताक नृत्य-अभ्यास + अतिरथक निरपेक्षता-दर्शन; (२) मंदिर-भेंट आ दरबारमे श्वेताक नृत्य-त्याग; (३) एकांत-माँग आ अतिरथक क्रोध-निष्कासन; (४) श्वेताक कथित जल-समाधि + अतिरथक व्याकुलता; (५) अरण्यमे भेंट, श्वेताक परिवर्तन—"कामना आ याचना हमर अतीत अछि"; (६) अतिरथक मुकुट-त्याग आ प्रकृतिमे एकमएक।

२. भारतीय नाट्य-सिद्धांत

२.१ शास्त्रीय नाट्यशास्त्रक नायिका-भेद आ श्वेता

भरतमुनिक नाट्यशास्त्रक अष्टनायिका-वर्गीकरणमे श्वेता एक विशेष स्थान रखैत छथि। ओ 'अभिसारिका' (प्रियतमसँ मिलनक लेल स्वयं जएवाली) नहि, 'स्वाधीनपतिका' (पतिकेँ वशमे रखएवाली) नहि—ओ एक ऐसी नायिका थिकाह जेकर निकटतम भारतीय नाट्य-समकक्ष 'उत्कंठिता' (प्रतीक्षारत) आ 'विरहोत्कंठिता' दुनू थिकाह, मुदा अंततः ओ दुनूसँ परे जाइत छथि। भरतक आठो नायिका-प्रकार प्रेमकेँ दोसर व्यक्तिक सापेक्षमे परिभाषित करैत अछि; श्वेता नाटकक अंतमे प्रेमकेँ 'परम-पुरुष' (प्रकृति-परमात्मा) मे विलीन कर' लैत छथि।

ई विलीनीकरण भारतीय भक्ति-परम्पराक 'विरहिणी-भक्त' क आदर्शसँ समरूप अछि—मीराबाईक 'बावरी' आ राधाक 'पागलपन'—जाहिमे सांसारिक प्रेमक असम्भावना भक्ति-प्रेमक उदात्तताक रूपान्तरण बनि जाइत अछि। श्वेताक अन्तिम उद्घोषणा —"एत' चर-गोचर-अगोचर सब हमरासँ प्रेम करत छथि, हम सबसँ प्रेम करत छी"—यैह भक्ति-परम्पराक 'विश्व-प्रेम' क घोषणा थिक।

२.२ रस-विचार: शृंगारसँ शान्तक विकास-यात्रा

एहि नाटिकाक सर्वाधिक उल्लेखनीय रस-विशेषता थिक—एकहि पात्रमे (श्वेता) शृंगार-रसक तीव्र अनुभव आ तकर शान्त-रसमे रूपान्तरण। अभिनवगुप्त शान्त-रसकेँ सर्वोच्च रस मानैत छथि—जाहिमे समस्त अनुराग-विराग शमित भ' एक 'निर्वैयक्तिक सौन्दर्य-अनुभव' उत्पन्न होइत अछि। श्वेताक अरण्य-जीवन एहि 'शान्त-रस' क अवतरण थिक।

एहि यात्राक विडम्बना सुन्दर थिक—अतिरथ जे सदासँ 'निरपेक्ष' (शान्त-रसक पात्र जेकाँ लगैत छलाह) ओ नाटकक अंतमे श्वेताक प्रेमसँ 'सपेक्ष' (अनुरक्त) भ' जाइत छथि; आ श्वेता जे 'अनुरक्त' छलीह ओ 'निरपेक्ष' (प्रकृति-विलीन) भ' जाइत छथि। एहि रस-उलटफेरमे नाटकक नाट्य-कुशलता थिक।

२.३ ध्वनि-विचार: 'आविष्कार' शब्दक बहु-अर्थता

आनन्दवर्धनक ध्वन्यालोकक परिप्रेक्ष्यमे शीर्षकक 'आविष्कार' शब्द एहि नाटकक सर्वाधिक ध्वनि-सम्पन्न पद थिक। संस्कृतमे 'आविष्कार'—अभिधात: 'प्रकटीकरण/खोज'; लक्षणात: 'स्वयंकेँ प्रकट करनाइ' (श्वेताक अतिरथ-समक्ष आत्म-प्रकटन); व्यंजनात: 'स्वयंकेँ आविष्कृत करनाइ' (श्वेताक स्वयं अपन परम-प्रेमकेँ आविष्कार करनाइ)।

एहि तृतीय अर्थमे 'आविष्कार' एक ज्ञानमीमांसीय घटना बनि जाइत अछि। श्वेता अतिरथ-प्राप्तिक असफलतासँ प्रेमक एक उच्चतर रूप 'आविष्कृत' करैत छथि—"आब हमरा प्रेमक असली स्वरूप सँ परिचय भेल अछि"। 'कुसमा-सलहेस' क टेक—"कुसुम बिना मकरंद तहिना प्रेम बिना की जीवन"—एहि नाटकमे श्वेताक मुँहसँ उद्धृत होइत अछि, आ नाटकक अंतमे ओ यैह 'मकरंद' प्रकृतिमे पाबैत छथि।

२.४ नाटचशिल्प: कला-कलाकार-दर्शकक त्रिकोण

अतिरथक दर्शन—"शरीरक महत्त्व एतबे जे ओ संवाहक छी कलाक"—भारतीय सौन्दर्यशास्त्रक एक महत्त्वपूर्ण विवाद उठाबैत अछि। अभिनवगुप्त अपन 'अभिनवभारती' मे कहलाह जे रस-निष्पत्ति तखने होइत अछि जखन दर्शक 'सहृदय' होएथि—कलाकारक व्यक्तित्वसँ 'तादात्म्य' (identification) नहि मुदा कलाक अनुभव—एहि अर्थमे अतिरथक दृष्टि अभिनवगुप्तक सहृदय-सिद्धांतक एक चरम रूप थिक।

मुदा श्वेता एकर सीमा प्रकट करैत छथि—कला आ कलाकारकेँ विभाजित करबाक प्रयास एक 'कृत्रिम नीर-क्षीर विवेक' थिक। कलाकारक भावना, शरीर, जीवन-अनुभव सभ कलामे विलीन होइत अछि—हुनकर 'देहसँ फराक' कला नहि होइत अछि। ई नाट्य-दार्शनिक विवाद सौन्दर्यशास्त्रक एक जीवित प्रश्न थिक।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ इब्सेन आ नोरा: प्रेम-अस्वीकारक बाद स्वतंत्रता

नार्वेजियन नाटककार हेनरिक इब्सेन (Henrik Ibsen, १८२८–१९०६) अपन 'ए डॉल्स हाउस' (A Doll' s House, १८७९) मे नोरा हेल्मेरक कथा लिखलनि—एक स्त्री जे समाज, पति आ परिवारक अपेक्षाकेँ तोड़ि क' स्वातंत्र्यक दिस प्रस्थान करैत अछि। नोराक प्रस्थान समाजक तथाकथित 'दायित्व' सँ पलायन नहि, अपन अस्मिताक खोजमे प्रस्थान थिक।

श्वेताक अरण्य-प्रस्थान इब्सेनक नोराक समानांतर थिक—मुदा एक महत्त्वपूर्ण उलटफेरक संग। नोरा 'दरवाजा बन्द कर' जाइत छथि (ओ अस्वीकृत समाजसँ विदा लैत छथि); श्वेता 'बाँहि पसारल' प्रकृतिक ओर जाइत छथि (ओ एक नव सम्बन्धक ओर बढ़ैत छथि)। नोराक प्रस्थान एकाकी; श्वेताक प्रस्थान अतिरथसँ जुड़ल—राजा मुकुट उतारि ओकर अनुगमन करैत छथि। ई इब्सेनसँ आगाँक एक नव रंगमंचीय कदम थिक।

३.२ सार्त्र आ कामू: विद्रोह-दर्शन आ 'अब्सर्ड'

फ्रांसीसी अस्तित्ववादी अल्बेर कामू (Albert Camus, १९१३–१९६०) अपन 'द मिथ ऑफ सिसिफस' (The Myth of Sisyphus, १९४२) मे 'अब्सर्ड' (absurd / निरर्थकता) क अनुभवकेँ विश्लेषित कएलनि—जखन मानवक अर्थ-खोजक इच्छा आ संसारक मूकता/प्रतिरोधक बीच टकराहट होइत अछि। एहि टकराहटक उत्तरमे कामू कहलनि—'एक सिसिफस केँ सुखी कल्पित करबाक चाही'।

अतिरथक 'निरपेक्षता' कामूक अर्थमे एक 'अब्सर्ड' स्थिति थिक—एक सुन्दर, रसिक, कला-पारखी व्यक्ति जे प्रेमकेँ 'अकाजक काज' घोषित करैत अछि। श्वेता एहि 'अब्सर्डिटी' क विरुद्ध विद्रोह करैत छथि—ओ दरबारमे नृत्य रोकि दैत छथि, मंदिरमे पयरमे माला रखैत छथि, एकांत-याचना करैत छथि। कामूक 'विद्रोही मानव' (l' homme révolté) क एक स्त्री-नाट्य-संस्करण थिकाह श्वेता।

नाटकक अन्तिम उलटफेर—जखन अतिरथ मुकुट उतारि क' अरण्यमे प्रवेश करैत छथि—कामूक 'सिसिफस-आनन्द' क एक रूप थिक। भार (राज-सिंहासन) केँ छोड़ि क' हुलास—ई कामूक दर्शनक नाट्य-प्रतिरूप थिक।

३.३ एरिक फ्रॉम: 'प्रेम कला थिक'

अमेरिकी-जर्मन मनोविश्लेषक एरिक फ्रॉम (Erich Fromm, १९०० –१९८०) अपन 'द आर्ट ऑफ लविंग' (The Art of Loving, १९५६) मे घोषणा कएलनि—"प्रेम एक कला थिक। कला जेकाँ ओकर सेहो सीखनाइ, अभ्यास आ समर्पण चाही।" फ्रॉम तर्क देलनि जे अधिकांश लोक प्रेमकेँ एक 'वस्तु' मानैत अछि जे 'भेटैत' अछि; वास्तवमे ओ एक 'क्षमता' थिक जकरा 'विकसित' करबाक चाही।

श्वेताक सात-वर्षीय साधना—नृत्यक नहि, प्रेमक सेहो—फ्रॉमक अर्थमे 'प्रेम-कला' क अभ्यास थिक। मुदा फ्रॉमक दृष्टिसँ श्वेताक वैचारिक यात्राक सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण क्षण ओ थिक जखन ओ घोषणा करैत छथि—"आब हमरा प्रेमक असली स्वरूप सँ परिचय भेल अछि।" एहि 'असली स्वरूप' मे प्रेम एक व्यक्ति-केन्द्रित वासना नहि, एक 'सर्वव्यापी भाव' बनि जाइत अछि। फ्रॉमक भाषामे—'mature love' (परिपक्व प्रेम) ।

३.४ एगॉन वील्ड आ 'एपिफैनी': नाटच-क्षणक चरमोत्कर्ष

आयरिश लेखक जेम्स जॉयस (James Joyce, १८८२–1९४१) अपन साहित्यिक सिद्धांतमे 'एपिफैनी' (epiphany / साक्षात्कार-क्षण) क अवधारणा दैत छलाह—एक साधारण क्षणमे अचानक सम्पूर्ण सत्यक प्रकटन। एहि सिद्धांतकेँ नाट्य-समीक्षक एगॉन वेल्ड (Egon Wellesz) आ अन्यक रंगमंचीय एपिफैनीक सिद्धांतमे विकसित भेल।

श्वेताक नदी-तट पर तारागण-दर्शन एक 'नाट्य-एपिफैनी' थिक—"हजारो-हजार तारावलि सँ भरल आकाश। केना स्नेह सँ देखि रहल छथि हमरा दिस!" ई साधारण वन-तट-दृश्य एकाएक एक विराट 'अर्थ-प्रकटन' मे बदलि जाइत अछि—"ई विचार हमरा मोन मे पहिने किएक नहि आएल?" । एहि क्षणमे श्वेताक वैचारिक रूपान्तरण होइत अछि। ई जॉयस-वेल्डक 'एपिफैनी' क एक मैथिली-नाट्य संस्करण थिक।

४. चीनी नाटच-सिद्धांत

४.१ 无为 (वूवेई): अतिरथक निरपेक्षता आ दाओवादी निष्क्रियता

दाओवादी दार्शनिक परम्परामे (लाओज़ी, ६ठी शती ई. पू.) 'वूवेई' (无为, non-action / निष्क्रिय-क्रिया) एक केन्द्रीय अवधारणा थिक—"दाओ क' कऽ नहि करैत अछि, तथापि सब कछ होइत अछि।" 'वूवेई' क अर्थ निष्क्रियता नहि, अपितु 'कृत्रिम हस्तक्षेपसँ मुक्त' क्रिया थिक।

अतिरथक निरपेक्षता 'वूवेई' क एक विकृत रूप थिक—ओ कलाक स्वाभाविक प्रवाहमे हस्तक्षेप नहि करैत छथि (उचित), मुदा मानवीय भावना-प्रवाहमे सेहो 'हस्तक्षेप नहि' करैत छथि (अस्वाभाविक) । दाओवादी दृष्टिसँ ओ 'वूवेई' क नहि, 'स्ट्रेन्ड इनएक्शन' (जबरदस्ती बनाओल निष्क्रियता) क शिकार छथि। श्वेताक आरोप—"अपना चारू भर फुसिक मर्यादाक शीश महल ठाढ़ केने छी अहाँ"—यैह दाओवादी आलोचना थिक।

४.२ 自然 (ज़ीरान): प्रकृति-तादात्म्य आ श्वेताक अरण्य-जीवन

दाओवादी-बौद्ध परम्परामे 'ज़ीरान' (自然, naturalness / स्वाभाविकता) एक उच्च आदर्श थिक—मानव-निर्मित बाधाकेँ तोड़ि 'प्राकृतिक प्रवाह' मे एकाकार होएब। चीनी 'शानशुई' (山水, mountain-water / पर्वत-नदी) चित्रकला-परम्परामे मानव एक छोट आकृति थिकाह, विराट प्रकृतिमे विलीन होइत।

श्वेताक अरण्य-जीवन 'ज़ीरान' क एक नाट्य-उदाहरण थिक। राजमहल, रंगमहल, आभूषण, सिंहासन सभ त्यागि क' 'गाछ-वृक्ष, फल आ फूल, निरंतर प्रवाहित निर्रिणी, उन्मुक्त आकाश' मे जीवन—एहिमे दाओवादी 'ज़ीरान' क प्रतिध्वनि अछि। उद्घोषकक अंतिम वाक्य—"ओ लोकनि प्रकृतिक संगीत मे मिलि गेलाह, एकमएक भ' गेलाह"—यैह 'ज़ीरान' क पराकाष्ठा थिक।

४.३ 变 (बियान): परिवर्तन आ 'आई-चिंग' क नाटच-विश्लेषण

'आई-चिंग' (易经, Book of Changes / परिवर्तनक पुस्तक) चीनी दर्शनक एक मूलभूत ग्रन्थ थिक जे 'बियान' (变, change / परिवर्तन) केँ सृष्टिक मूल-सिद्धांत मानैत अछि। एहिमे कहल गेल—परिवर्तन अनिवार्य थिक; यैह जे एकरा स्वीकार करैत अछि ओ मुक्त होइत अछि; जे एकरा रोकैत अछि ओ कष्ट पाबैत अछि।

एहि नाटकमे दू प्रकारक परिवर्तन-प्रतिक्रिया अछि। अतिरथ—परिवर्तनसँ भागैत छथि (निरपेक्षता ओकर रक्षा-कवच थिक); श्वेता—परिवर्तनकेँ स्वीकार करैत छथि (अस्वीकार भेलाक बाद सेहो, नदी-तट पर परिवर्तन) । आई-चिंगक दृष्टिसँ श्वेता एक 'junzi' (君子, superior person / श्रेष्ठ व्यक्ति) क जेकाँ व्यवहार करैत छथि—परिवर्तनक धाराक संग बहैत छथि।

४.४ 艺术 आ 生活 (यीशू आ शेंगहुओ): कला आ जीवनक द्वन्द्व

चीनी सौन्दर्यशास्त्री लियू झियुआन (Liu Zhiyuan) जेकाँ विद्वान लोकनि 'यीशू' (艺术, art) आ 'शेंगहुओ' (生活, life) क सम्बन्धक विश्लेषण कएलनि। ओ तर्क देलनि जे उत्कृष्ट कला जीवनसँ उत्पन्न होइत अछि, मुदा जीवनसँ 'फराक' कला एक खाली आकार मात्र थिक।

अतिरथक दर्शन—"शरीर मात्र संवाहक छी कलाक"—यैह 'यीशू' केँ 'शेंगहुओ' सँ विच्छेद करबाक प्रयास थिक। श्वेताक विरोध—"कलाकार सँ निरपेक्षता केना संभव भ' सकैए"—यैह लियू-परम्पराक तर्क थिक। चीनी सौन्दर्यशास्त्रमे 'क्वी' (气, vital energy / प्राण-शक्ति) क सिद्धांत कहैत अछि जे कलामे कलाकारक 'क्वी' (जीवन-ऊर्जा) अनिवार्यतः प्रवाहित होइत अछि—बिना ओकर 'क्वी' क कला मृत होइत अछि।

५. इजरायली नाटच-सिद्धांत

५.१ हनोख लेविन: राजसत्ताक मर्यादा आ मानव-विद्रोह

हनोख लेविन अपन 'द पेशेन्स ऑफ स्टोन' (Patience of Stone) जेकाँ नाटकमे बेर-बेर ओहि व्यक्तिक कथा कहलाह जे सत्ता-संरचनाक विरुद्ध व्यक्तिगत स्तर पर विद्रोह करैत अछि। लेविन एक विशेष नाट्य-तकनीक प्रयोग करैत छलाह—व्यक्तिक 'छोट विद्रोह' (small rebellion) जे सत्ताक भारी संरचनाकेँ हिला दैत अछि।

श्वेताक दरबारमे नृत्य रोकनाइ लेविनक 'छोट विद्रोह' क एक उत्कृष्ट उदाहरण थिक—ओ न हथियार उठाबैत छथि, न क्रान्ति घोषित करैत छथि; मात्र नृत्य रोकि दैत छथि। ई एकटा सटीक, व्यक्तिगत, सांकेतिक विद्रोह थिक जे राज-दरबारक सम्पूर्ण नाट्य-संरचनाकेँ एक क्षणक लेल स्तब्ध कर' दैत अछि। लेविनक भाषामे—'एक छोट मनुष्य, एकटा पैघ 'नहि' ।'

५.२ एली रोज़िक: 'ऑफ-स्टेज' क्षण आ प्रतिमा-अनुपस्थिति

एली रोज़िक अपन 'थिएट्रिकल इमेज' ग्रन्थमे 'ऑफ-स्टेज' (off-stage / मंचेतर) क्षणक प्रतिमात्मक महत्त्व विश्लेषित कएलनि। जे रंगमंच पर नहि देखाइत अछि मुदा दर्शकक कल्पनामे उपस्थित अछि, ओकर नाट्य-शक्ति बहुधा मंचीय दृश्यसँ अधिक होइत अछि।

एहि नाटकमे श्वेताक 'जल-समाधि' एकटा 'ऑफ-स्टेज' क्षण थिक—दर्शक ओ देखैत नहि, मात्र कंचुकीक वाक्यमे सुनैत अछि। रोज़िकक परिप्रेक्ष्यमे ई 'प्रतिमा-अनुपस्थिति' (iconic absence) सर्वाधिक नाट्य-शक्तिशाली क्षण थिक—अतिरथक प्रतिक्रिया ("एत्तहु भ' सकैत अछि जे जल-धारामे भसिया क' कतहु कछेर लागि गेल होधि") एहि 'अनुपस्थिति' क शक्तिकेँ मापैत अछि।

५.३ इजरायली थिएटर आ वनवास: निर्वासन-परम्परा

इजरायली रंगमंचक एक केन्द्रीय विषयवस्तु रहल अछि—'गलुत' (גָּלוּת, galut / exile / निर्वासन) । एहि निर्वासन-परम्परामे घर छोड़नाइ कोनो पतन नहि—ओ एक 'अपरिहार्य यात्रा' थिक जाहिमे नवीन अर्थ-निर्माण होइत अछि।

श्वेताक रंगमहलसँ निष्कासन एक 'गलुत' (निर्वासन) थिक जे एक 'तिशुवा' (teshuvah / घर-वापसी, मुदा आत्मिक घर) क रूपमे समाप्त होइत अछि। वन-निर्वासनमे श्वेता एक 'नव घर' पाबैत छथि—प्रकृतिक संग एकमएक। अतिरथक मुकुट-त्याग आ अरण्य-प्रवेश एहि यात्राक 'reverse galut' थिक—राजा अपन 'घर' (सिंहासन) छोड़ि श्वेताक 'घर' (अरण्य) मे आबैत छथि।

५.४ इज़राइली पर्यावरण-रंगमंच: प्रकृतिमे एकमएकक राजनीति

समकालीन इजरायली रंगमंचमे 'पर्यावरण-रंगमंच' (environmental theatre) आ 'प्रकृति-नाट्य' (site-specific theatre) क प्रवृत्ति प्रबल भेल अछि—जाहिमे मानव-प्रकृति सम्बन्धकेँ रंगमंचीय विषय बनाओल जाइत अछि। एहि परिप्रेक्ष्यमे नाटककार योसी माया (Yossi Maya) जेकाँ कलाकार लोकनि 'मानव बनाम प्रकृति' क राजनीतिकेँ रंगमंच पर अनलाह।

श्वेताक समापन-वाक्य—"एत' चर-गोचर-अगोचर सब हमरासँ प्रेम करत छथि, हम सबसँ प्रेम करत छी"—एहि पर्यावरण-नाट्य-दृष्टिसँ एक 'इकोलॉजिकल लव' (पारिस्थितिक प्रेम) क घोषणा थिक। मानवीय सम्बन्धक विफलता (अतिरथसँ प्रेम-अस्वीकार) एक 'बायोफिलिक' (जीव-प्रेम) पारिस्थितिकीय विस्तारमे पर्यवसित होइत अछि।

६. चतुर्भुज-संश्लेषण: प्रेमक ‘विस्तार’ केहन होइत अछि?

शीर्षकक ‘विस्तार’ शब्द एहि नाटकक मूल-प्रश्न थिक—प्रेम ‘विस्तृत’ होइत अछि, अर्थात ओ एक व्यक्तिसँ प्रारम्भ होइत अछि आ समग्र अस्तित्वक ओर बढ़ैत अछि। चारू नाट्य-परम्परा एहि ‘विस्तार’ केँ भिन्न-भिन्न कोणसँ देखैत अछि।

भारतीय दृष्टि—भक्ति-परम्पराक विरहिणी-नायिकाक ‘शान्त-रस’ मे रूपान्तरण; अभिनवगुप्तक शान्त-रस (श्वेता बनाम अतिरथक रस-उलटफेर); ‘आविष्कार’ क त्रि-स्तरीय ध्वनि; कला-कलाकार-दर्शनक नाट्य-विवाद।

पाश्चात्य दृष्टि—इब्सेनक नोरासँ परे प्रस्थान (विच्छेद नहि, नव सम्बन्ध); कामूक अब्सर्ड-विद्रोह; फ्रॉमक ‘mature love’ (सर्वव्यापी प्रेम); जॉयसक एपिफैनी (तारागण-दर्शन = रूपान्तरण-क्षण) ।

चीनी दृष्टि—अतिरथक विकृत वूवेई (无为); श्वेताक ज़ीरान (自然) = प्रकृति-तादात्म्य; आई-चिंगक बियान (变) = परिवर्तन-स्वीकार; यीशू-शेंगहुओ विवाद (कला बनाम जीवन) ।

इजरायली दृष्टि—लेविनक ‘छोट विद्रोह’ (दरबारमे नृत्य-त्याग); रोज़िकक iconic absence (जल-समाधि); गलुत-तिशुवा (निर्वासन→आत्मिक घर-वापसी); पर्यावरण-रंगमंचक इकोलॉजिकल लव।

चारू परम्पराक साझा निष्कर्ष—प्रेमक ‘विस्तार’ एक व्यक्ति (अतिरथ) क सीमासँ मुक्त होइत प्रकृति, ब्रह्माण्ड आ समग्र सत्तामे विलीन होएब थिक। एहि अर्थमे एहि नाटकक शीर्षक सम्पूर्ण प्रेम-चतुष्टयक सर्वाधिक महत्त्वाकांक्षी दार्शनिक घोषणा थिक।

अतिरथक मुकुट-त्याग आ अरण्य-प्रवेश—एहि नाटिकाक अंतिम रंगमंचीय छवि—एक विडम्बना-पूर्ण आनन्दक क्षण थिक। जे ‘निरपेक्ष’ बनल रहल, ओ अन्ततः ‘सपेक्ष’ भेल; आ जे ‘सपेक्ष’ छलीह ओ ‘निरपेक्ष’ भेलीह—यैह प्रेमक विस्तारक नाट्य-सत्य थिक।

पूरक रूपान्तरण-विवेचन

'प्रेमक विस्तार उर्फ श्वेताक आविष्कार' नाटक कुणालक हिन्दी नाट्य-कृति 'श्वेता'क दार्शनिक आ वैचारिक मैथिली रूपान्तरण थिक। हिन्दीमे ई नाटक इच्छाधारी नागक कल्पना पर आधारित एकटा संगीतमय नाटक छल।

मैथिली रूपान्तरमे नाटककार श्वेताक चरित्रक माध्यम सँ प्रेमक जैव-वैज्ञानिक आ ब्रह्मांडीय विस्तारक अन्वेषण करैत छथि। प्रेम मात्र मनुष्य सँ मनुष्य धरि सीमित नहि अछि, अपितु ई प्राणिमात्र, प्रकृति आ चेतना धरि विस्तृत अछि। श्वेताक आविष्कार ई थिक जे प्रेम जखन अपन चरमोत्कर्ष पर पहुँचेत अछि, तखन ओ सभ प्रकारक भौतिक आ प्रजातीय सीमाकेँ पार क' जाइत अछि।

१००. “प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र”: ज्ञान, परीक्षा आ प्रेम

सारांश

सुप्रभा-अष्टावक्रक नाट्यक ई समीक्षा शारीरिकता आ ज्ञान, प्रेमक परीक्षा, पितृ-श्राप, शास्त्रार्थ, रूपान्तरण, निष्ठा आ उर्वशी-अस्वीकारक अर्थकेँ बहु-दृष्टि पद्धतिसँ पढ़ैत अछि। भारतीय पौराणिक पुनर्पाठ, अर्थ-खोज, प्रश्नोत्तर-दर्शन, प्रदर्शन-प्रतिमा आ आशा-संवेदनाक माध्यमसँ अंतिम नाटककेँ समग्र संग्रहक वैचारिक परिणति रूपमे देखल गेल अछि।

बीजशब्द: अष्टावक्र; सुप्रभा; ज्ञान; परीक्षा; शास्त्रार्थ; रूपान्तरण; निष्ठा; प्रेम

१. परिचय, कथा-संरचना आ संग्रहक परिप्रेक्ष्यमे स्थान

प्रेम-चतुष्टयक अंतिम नाटिका ‘प्रेमक परीक्षा उर्फ सुप्रभा आ अष्टावक्र’ समग्र संग्रहक अंतिम कृति थिक आ एहि नाते एकर स्थान प्रतीकात्मक अछि—ई ‘प्रेमक विस्तार’ (षष्ठ) क बाद ‘प्रेमक परीक्षा’ थिक। एहि नाटकक महाकाव्यात्मक विस्तार (चौदह दृश्य, पाँच स्थान—आश्रम/मिथिला-नगर/जनक-दरबार/स्वर्ग/वन; कम-से-कम दस पात्र) प्रेम-चतुष्टयमे असाधारण अछि।

कथाक स्रोत महाभारतक अष्टावक्र-आख्यान थिक (वन-पर्व), मुदा कुणाल एकरा एक सम्पूर्ण प्रेम-नाटक बना दैत छथि जाहिमे जनक-दरबार आ वंदी-शास्त्रार्थक ऐतिहासिक-पौराणिक कथा एक ‘प्रेम-परीक्षा’ क फलकमे समाहित होइत अछि। नाटकक बारह दृश्य अष्टावक्रक—आ तेरहम-चौदहम सुप्रभाक—कथा थिक।

नाटकक सात प्रमुख नाट्य-क्रम—(१) गर्भमे ज्ञान-श्राप + जन्म; (२) उद्दालक आश्रम, पिता-अनुपस्थिति आ सुप्रभासँ प्रथम-मिलन; (३) मिथिला-यात्राक योजना; (४) महाराज जनकसँ सड़क-विवाद, वंदी-शास्त्रार्थ, पिता-मुक्ति; (५) नदी-स्नानसँ अष्टावक्रकेँ यौवन; (६) वदन्यक वर्ष-भर-परीक्षा + सुप्रभाक एकांत-प्रतीक्षा; (७) उर्वशी-अस्वीकार, वापसी आ श्वेत-कमल-माल्यसँ विवाह।

२. भारतीय नाट्य-सिद्धांत

२.१ महाभारत-पुनर्पाठ: विकलांग नायककेँ केन्द्रमे आनबाक साहस

महाभारतमे अष्टावक्र-आख्यानक प्रयोजन मुख्यतः दार्शनिक थिक—‘अष्टावक्र-गीता’ (जनकसँ वार्तालाप) आत्म-ज्ञानक ग्रन्थ थिक। वंदी-शास्त्रार्थ एक द्वितीय कथा-स्तर थिक। कुणाल एहिमे एक तृतीय स्तर जोड़ैत छथि—प्रेम-परीक्षा। एहिसँ उत्पन्न होइत अछि एक त्रि-स्तरीय नाटक—ज्ञान (वंदी-शास्त्रार्थ) + कर्तव्य (पिता-मुक्ति) + प्रेम (सुप्रभा-विवाह) ।

एहिसँ अधिक महत्त्वपूर्ण—कुणाल एक ‘विकलांग नायक’ केँ रंगमंचक केन्द्रमे रखैत छथि। भारतीय नाट्य-परम्परामे नायकक ‘शरीर-सम्पत्ति’ (नाट्यशास्त्रानुसार) एक मानदण्ड थिक—‘धीरोदात्त’ नायक बलशाली, सुन्दर, शूरवीर होइत अछि। अष्टावक्र एहि मानदण्डकेँ पलटि दैत छथि—आठ ठाम टेढ़ शरीर, मुदा असाधारण ज्ञान। भरतक नाट्यशास्त्रमे एहन ‘विकलांग नायक’ क स्पष्ट श्रेणी नहि अछि—कुणाल एक नव नाट्य-प्रतिमान रचैत छथि।

२.२ अग्नि-परीक्षाक रूपान्तरण: सोन-कसौटी

भारतीय काव्य-नाट्य-परम्परामे ‘अग्नि-परीक्षा’ एक प्रमुख मोटिफ थिक—रामायणमे सीताक अग्नि-परीक्षा प्रेम-निष्ठाक प्रमाण थिक। कुणाल एहि मोटिफकेँ रूपान्तरित करैत एक ‘शीत-परीक्षा’ रचैत छथि—अग्निमे नहि, विरहक एकांतमे, वर्ष-भरक अनदेखारमे। समापन-दोहा एहि रूपान्तरणकेँ स्पष्ट करैत अछि—

जहिना स्वर्ण मे आगि सँ आबए आर निखार / प्रेम, परीक्षा दैत अछि, तेँ होइछ आर प्रगाढ़।

एहि दोहामे ‘सोन-कसौटी’ (स्वर्णक अग्नि-परीक्षा) क रूपक प्रेमक परीक्षापर लागू होइत अछि। ई रूपकात्मक अग्नि (विरह-परीक्षा) सीताक शाब्दिक अग्नि-परीक्षासँ अधिक सूक्ष्म आ दार्शनिक थिक।

२.३ रस-महोत्सव: सात रसक सम्मिलन

एहि संग्रहक सातो नाटकमे एहिमे सर्वाधिक विस्तृत रस-महोत्सव अछि। ‘वीर’—अष्टावक्रक दरबार-संघर्ष आ वंदी-विजय; ‘करुण’—गर्भमे श्राप, पितृ-वियोग, सुप्रभाक प्रतीक्षा-व्यथा; ‘अद्भुत’—नदी-स्नानसँ यौवन-प्राप्ति, वंदीक जल-समाधि रहस्य-उद्घाटन; ‘हास्य’—दरबार-दृश्यमे उपस्थित जनताक ‘कूबड़ महाराज’ सम्बोधन आ वंदीक हँसी; ‘शृंगार’—सुप्रभा-अष्टावक्रक प्रेम; ‘शान्त’—अष्टावक्रक उर्वशी-अस्वीकार; ‘भयानक’—पिता जल-समाधिमे।

भरत 'अंगी-रस' + 'अंग-रस' क सिद्धांत कहलाह—एहि नाटकमे 'वीर' आ 'शृंगार' परस्पर अंगी-रस बनैत अछि। वीरताक ज्ञान-संघर्ष प्रेमक पात्रताक प्रमाण थिक; आ प्रेम वीरताक प्रेरणा।

२.४ अष्टावक्रक उर्वशी-अस्वीकार: भारतीय साहित्यमे एक दुर्लभ क्षण

भारतीय साहित्य-परम्परामे उर्वशी सर्वोच्च सौन्दर्यक प्रतीक थिकाह—पुरूरवाक उर्वशी-प्रेम, कालिदासक 'विक्रमोर्वशीय' एहि आकर्षणक शास्त्रीय नाट्य-रूप थिक। अष्टावक्रक उर्वशी-अस्वीकार एहि दीर्घ परम्पराक विरुद्ध एक साहसिक नाट्य-निर्णय थिक। ओ कहैत छथि—"हमर उर्वशी, मेनका, रंभा...सब सुप्रभा छथि। मात्र सुप्रभा।"—ई वाक्य शास्त्रीय 'अप्सरा-आकर्षण' परम्पराक एक सचेत नाट्य-विखण्डन थिक।

३. पाश्चात्य नाट्य-सिद्धांत

३.१ विक्टर फ्रैंकल: अर्थ-खोज आ पीड़ाक रूपान्तरण

ऑस्ट्रियाई मनोचिकित्सक विक्टर फ्रैंकल (Viktor Frankl, १९०५–१९९७) अपन 'मैन' स सर्च फॉर मीनिंग' (Man' s Search for Meaning) मे अपन नाजी-कारागार-अनुभवसँ सीखल सिद्धांत प्रस्तुत कएलनि—'लोगोथेरापी' (Logotherapy): मानव 'अर्थ' क खोजमे जीबैत अछि; जे व्यक्ति अपन पीड़ामे 'अर्थ' पाबैत अछि ओ ओकर सामना कर' सकैत अछि।

अष्टावक्रक जन्म एक पीड़ामे होइत अछि—पितृ-श्राप। मुदा माताक परिचय (श्वेतकेतुक कठोर वचनसँ) ओकर पीड़ाकेँ 'अर्थ' दैत अछि—"पिताश्रीकेँ मुक्त करब।" फ्रैंकलक भाषामे—'आत्म-अतिक्रमण' (self-transcendence)—स्वयंसँ परे एक 'अर्थ' क सेवामे अपनाकेँ समर्पित करनाइ—अष्टावक्रक सम्पूर्ण नाट्य-यात्रा एहि आत्म-अतिक्रमणक कथा थिक।

उर्वशी-अस्वीकार एहि दृष्टिसँ फ्रैंकलक 'अर्थ-पूर्ण जीवन' क सर्वोच्च अभिव्यक्ति थिक—ब्रह्माण्डक सर्वोच्च सौन्दर्य (उर्वशी) आ वैभव (स्वर्गसुख) केँ ठुकरा क' एक 'अर्थपूर्ण' सम्बन्ध (सुप्रभासँ प्रेम) केँ चुनब।

३.२ सोफोक्लीज: शारीरिक दोषक त्रासदी आ ज्ञान-विजय

ग्रीक त्रासदीकार सोफोक्लीज (Sophocles, ४९७–४०६ ई. पू.) अपन 'ईडीपस रेक्स' (Oedipus Rex) मे एक ऐसे नायककेँ प्रस्तुत कएलनि जे एक 'जन्म-दोष' (लँगड़ापन, 'swollen foot') लेक' जन्मल आ जकर पूरा जीवन एक श्राप-पूर्वनिर्धारित—ओकर जन्मसँ उत्पन्न ज्ञान-खोज ओकर विनाश बनि जाइत अछि।

अष्टावक्रसँ तुलना करनाइ रोचक थिक—दुनूक जन्म एक श्रापसँ जुड़ल (ओडिपस = पिता-श्राप, अष्टावक्र = पिता-श्राप); दुनूक जीवन पिता-खोजसँ आरम्भ; दुनू ज्ञान-केन्द्रित। मुदा निर्णायक भेद—ओडिपसक ज्ञान-खोज विनाशक ओर लेजाइत अछि; अष्टावक्रक ज्ञान-खोज मुक्ति आ प्रेमक ओर। एहि भेदमे भारतीय आशावादी नाट्य-दर्शन आ ग्रीक विडम्बनापूर्ण नाट्य-दर्शनक मूलभूत अंतर प्रकट होइत अछि।

३.३ बाख्तिन: 'दूर भगनाइ' आ 'मिलन' क कार्निवालेस्क

बाख्तिनक 'कार्निवालेस्क' सिद्धांत एहि नाटकमे एक विशेष रंगमंचीय क्षणमे प्रकट होइत अछि—अष्टावक्रक दरबार-भेंट। द्वारपाल 'कूबड़ महाराज' कहि बाट देलकतहि; मुदा ओही 'कूबड़' व्यक्ति बाटक अधिकारक क़ानूनी-नैतिक तर्क दैत छथि। ई कार्निवालेस्क उलटफेर थिक—समाजक 'निम्नतम' (विकलांग) समझाओल व्यक्ति समाजक 'उच्चतम' (महाराज) केँ ज्ञान सिखाबैत अछि।

अष्टावक्रक वंदी-विजयक बाद समवेत-हँसी क्षण—"नीक भेलनि, बड़ अतत्तह करैत छलाह"—बाख्तिनक 'रिलीविंग लाफ्टर' (मुक्तिदायक हँसी) थिक। जे समाज विकलांग बालककेँ दरबारसँ बाहर करबाक प्रयास केलक, ओही समाज हुनकर विजयमे आनन्दित होइत अछि—कार्निवालेस्क सामाजिक-न्याय।

३.४ पीटर ब्रूक: 'महाभारत' आ पौराणिक रंगमंच

पीटर ब्रूकक 'महाभारत' (१९८५, रंगमंच + फिल्म) एक महत्त्वपूर्ण प्रयोग थिक—महाभारतक विशाल आख्यानकेँ एक सार्वभौम मानवीय नाट्य-अनुभवमे परिणत करबाक प्रयास। ब्रूक एहि प्रक्रियामे पूरी तरह भारतीय नाट्य-परम्परासँ तत्त्व लेलनि, मुदा एहि परम्परामे बाहरसँ प्रवेश केलाह।

कुणाल ब्रूकसँ भिन्न—ओ एहि परम्पराक भीतरसँ लिखैत छथि। एहि नाटकमे महाभारतक 'वन-पर्व' क अष्टावक्र-आख्यानकेँ मिथिला-केन्द्रित बनाएब (जनक = मिथिलाक राजा), वंदीक रहस्य-उद्घाटन (ओ वरुण-पुत्र छथि, जल ओकर घर) केँ एक हास्य-सह-अद्भुत दृश्यमे परिणत करनाइ—ई ब्रूकक 'बाहरी पुनर्व्याख्या' सँ भिन्न एक 'आन्तरिक पुनर्जीवन' थिक।

४. चीनी नाट्य-सिद्धांत

४.१ 贬谪 (बियान-झे): निर्वासित-प्रतिभाक परम्परा

चीनी साहित्य-परम्परामे 'बियान-झे' (贬谪, exile of talented official / प्रतिभावान-व्यक्तिक निर्वासन/अपमान) एक प्रमुख विषयवस्तु थिक। कवि क्‍यू-युआन (屈原, ३४०–२७८ ई. पू.) सँ ल' क' सु-डोंगपो (苏东坡, १०३७–११०१) धरि—अनेक महान चीनी कवि-विद्वान अन्यायपूर्वक निर्वासित भेलाह, मुदा अपन प्रतिभासँ अमर भेलाह।

अष्टावक्रक जन्म-श्राप एक 'बियान-झे' थिक—ओ गर्भहि टासँ 'निर्वासित' छलाह (अपन ही शरीरसँ) । मुदा चीनी 'बियान-झे' परम्पराक जेकाँ हुनकर प्रतिभा ओहि निर्वासनकेँ एक 'महाकाव्यात्मक यात्रा' मे बदलि दैत अछि। वंदी-विजयक बाद नदी-स्नानसँ यौवन—ई चीनी 'बियान-झे-साहित्य' क अन्तिम मुक्ति-क्षणक समरूप थिक।

४.२ 忠 (झोंग): निष्ठा आ एकान्त-साधना

कन्फ्यूशियाई नैतिक-दार्शनिक परम्परामे 'झोंग' (忠, loyalty/faithfulness / निष्ठा) एक केन्द्रीय मूल्य थिक—एकरा प्रायः 'शासक-प्रति-निष्ठा' कहल जाइत अछि, मुदा मूल अर्थमे ई 'अपन वचनक प्रति निष्ठा' थिक।

वर्ष-भरक परीक्षामे दुनूक 'झोंग' परिलक्षित होइत अछि—अष्टावक्र वदन्यक शर्तक 'अक्षरशः पालन' करैत छथि (सुप्रभाक लग रहैतहुँ, जानि-बूझि देखैत-भागैत छथि); सुप्रभा पिताक इशाराकेँ गमि ल' 'सायास आश्रम सँ बहरेनाइ कम क' दैत छथि' । दुनूक 'झोंग' भिन्न-भिन्न दिशामे थिक मुदा एकहि 'अर्थ' (प्रेमक प्रमाण) प्रकट करैत अछि।

४.३ 折子戏 (झेज़ीशी) आ नाटकक खंड-संरचना

चीनी 'झेज़ीशी' (折子　, excerpt play) क परम्परा एहि नाटकक चौदह-दृश्यीय विस्तारकेँ बुझबामे सहायक अछि। एहि नाटकमे तीन स्वतंत्र 'झेज़ीशी' स्पष्टतः अछि—(क) वंदी-शास्त्रार्थ (जनक-दरबारक दृश्य—सम्पूर्णतः स्वायत्त नाट्य-खंड); (ख) वर्ष-परीक्षा (अष्टावक्र-सुप्रभाक एकांत-संघर्ष); (ग) उर्वशी-अस्वीकार। ई तीनू खंड स्वतंत्र 'झेज़ीशी' जेकाँ खेलल जा सकैत अछि मुदा एकहि संग मिलि क' एक विराट 'प्रेम-परीक्षा' बनाबैत अछि।

४.४ 问答 (वेन-दा): प्रश्न-उत्तर-दर्शन आ शास्त्रार्थ

चीनी दार्शनिक परम्परामे 'वेन-दा' (问答, question-answer dialogue) एक प्रमुख ज्ञान-विधि थिक—झुआंगज़ी (庄子) क संवाद, कन्फ्यूशियसक 'एनालेक्ट्स', आ झान बौद्धक कोआन। वंदी-शास्त्रार्थ एहि 'वेन-दा' परम्पराक एक नाट्य-संस्करण थिक। उद्घोषकक भाष्य—"शंका आ समाधान, खंडन आ मंडन, प्रश्न आ प्रतिप्रश्न"—यैह 'वेन-दा' क संरचना थिक।

अष्टावक्रक वंदीसँ पहिल वार्तालाप चीनी झान-दर्शनक 'कोआन' (공안, paradoxical riddle) जेकाँ थिक—बंदी हँसैत छथि 'कूबड़ बालकसँ शास्त्रार्थ' पर, अष्टावक्र उत्तर दैत छथि—"वक्रोक्ति आ हास सँ कोनहु लाभ नहि, शास्त्रार्थक अपेक्षा अछि।" ई 'वेन-दा' परम्पराक मूल आत्मा थिक—प्रश्नक गाम्भीर्य हँसीकेँ अप्रासंगिक बना दैत अछि।

५. इजरायली नाट्य-सिद्धांत

५.१ डिसेबिलिटी आ इजरायली रंगमंचः अष्टावक्रक शारीरिकता

इजरायलमे 'डिसेबिलिटी थिएटर' (Disability Theatre) एक महत्त्वपूर्ण समकालीन आन्दोलन थिक—'इशुव नागेश' (נגיש, accessible/inclusive) रंगमंच जे विकलांग कलाकारकेँ केन्द्रमे रखैत अछि। एहि परम्परामे शरीर एक 'कमतरी' नहि, एक 'भिन्न क्षमता' (different ability) थिक।

अष्टावक्रक नाट्य-प्रस्तुति एहि आन्दोलनसँ तीन दशक पूर्वक एक भारतीय-पौराणिक संस्करण थिक। ओ 'आठ ठाम टेढ़' शरीरकेँ न 'छिपाबैत छथि, न 'क्षमा माँगैत छथि—ओ कहैत छथि—"शरीर सँ आठ ठाम टेढ़ सेहो छी। परंतु बुद्धि के वयस आ रूप सँ सम्बन्ध नहि।" एहि एक वाक्यमे सम्पूर्ण 'डिसेबिलिटी जस्टिस' (disability justice) क दर्शन थिक।

५.२ एली रोज़िकः नदी-स्नान आ ‘रूपान्तरण-प्रतिमा’

एली रोज़िकक प्रतिमात्मकता-सिद्धांतमे ‘रूपान्तरण-प्रतिमा’ (transformation-icon) एक महत्त्वपूर्ण श्रेणी थिक—ओ क्षण जाहिमे रंगमंच पर एक पात्रक ‘छवि’ एकाएक बदलि जाइत अछि आ दर्शक एहि परिवर्तनक ‘साक्षी’ बनैत छथि।

नदी-स्नानक बाद अष्टावक्रक ‘सोझ आ स्वस्थ भ’ जाएब’ एक ऐसी ‘रूपान्तरण-प्रतिमा’ थिक जे रंगमंचमे अभिनयक माध्यमसँ दृश्यात्मक रूपमे प्रस्तुत होइत अछि। रोज़िकक परिप्रेक्ष्यमे एहि क्षणक दोहरा प्रतिमात्मकता अछि—(क) शारीरिक रूपान्तरण (टेढ़->सोझ) आ (ख) आत्मिक रूपान्तरण (पुत्र->ज्ञानी) । दर्शक दुनूकेँ एकहि संग देखैत अछि।

५.३ यहूदी तालमुद-परम्परा आ शास्त्रार्थः वंदी-विजयक समानांतर

यहूदी धर्म-परम्परामे ‘तालमुद’ (Talmud) एक विशिष्ट शास्त्रार्थ-परम्परामे संकलित अछि—‘पिल्पुल’ (פלפול, pilpul / dialectical disputation) जाहिमे दू विद्वान एक विषयपर तर्क-प्रतितर्कसँ सत्यकेँ उद्घाटित करैत छथि। एहि परम्परामे कनिष्ठ वा असम्भावित विद्वानक विजय एक नाट्य-परम्परा थिक।

वंदी-शास्त्रार्थ ‘पिल्पुल’ क एक हिन्दू-पौराणिक समानांतर थिक—एक अल्पवयस्क, विकलांग बालक (अष्टावक्र) एक ‘महापंडित’ (वंदी) केँ तर्क-प्रतितर्कसँ परास्त करैत अछि। जनकक मध्यस्थता पिल्पुलक ‘बेत-दिन’ (בית דין, house of judgment / न्याय-मण्डली) क समरूप थिक।

५.४ इजरायली ‘होप थिएटर’: प्रेमक परीक्षामे आशावाद

इजरायली रंगमंच-विद्वान नाओमी लापिद (Naomi Lapid) जेकाँ विचारक लोकनि एक विशेष धारा रेखांकित कएलनि—‘होप थिएटर’ (Theatre of Hope) जाहिमे विपरीत परिस्थितिमे सेहो आशाक अटूट धागा बनल रहैत अछि। ई ‘होप’ नैव, सरल आशावाद नहि—ओ एक ‘परीक्षित आशा’ थिक।

एहि नाटकक समापन-दोहा—“जहिना स्वर्ण मे आगि सँ आबए आर निखार / प्रेम, परीक्षा दैत अछि, तेँ होइछ आर प्रगाढ़”—इजरायली ‘होप थिएटर’ क आत्मिक घोषणा थिक। सम्पूर्ण संग्रहक अंतिम वाक्य—“प्रेम सँ बढ़िक’ भाव ने दोसर, महिमा अपरंपार / आउ करी सब मिलि एक स्वर सँ, प्रेमक जय-जयकार!”—सप्तम नाटकक नहि, समग्र संग्रहक जय-घोषणा थिक।

६. चतुर्भुज-संश्लेषणः ‘परीक्षा’ किएक अनिवार्य थिक?

चारू नाट्य-परम्पराकेँ एकठाम राखि देखल जाए तँ एहि नाटकक (आ समग्र संग्रहक) केन्द्रीय प्रश्नक उत्तर भेटैत अछि—‘परीक्षा’ प्रेमकेँ ‘प्रमाणित’ नहि करैत, ओकरा ‘परिपक्व’ करैत अछि।

भारतीय दृष्टि—विकलांग नायककेँ केन्द्रमे आनबाक नाट्यशास्त्रीय साहस; सप्त-रस-महोत्सव; अग्नि-परीक्षाक शीत-परीक्षामे रूपान्तरण; उर्वशी-अस्वीकार = अप्सरा-परम्पराक विखण्डन।

पाश्चात्य दृष्टि—फ्रैंकलक लोगोथेरापी (पीड़ामे अर्थ); ओडिपस-साम्य आ भेद (विनाश बनाम मुक्ति); बाख्तिनक कार्निवालेस्क (कूबड़ बालक -> दरबार-विजेता); ब्रूकक बाहरी बनाम कुणालक आन्तरिक पुनर्जीवन।

चीनी दृष्टि—贬谪 (बियान-झे / निर्वासित-प्रतिभा) परम्परा; 忠 (झोंग / निष्ठा) = दुनूक वर्ष-परीक्षा; 折子戏 (झेज़ीशी) त्रि-खंड; 问答 (वेन-दा / ज्ञान-शास्त्रार्थ) = वंदी-विजय।

इजरायली दृष्टि—डिसेबिलिटी जस्टिस (‘बुद्धि के वयस आ रूप सँ सम्बन्ध नहि’); रोज़िकक रूपान्तरण-प्रतिमा (नदी-स्नान); तालमुदिक पिल्पुल = वंदी-शास्त्रार्थ; होप थिएटर = समापन-दोहाक आशा-घोषणा।

चारू परम्पराक साझा निष्कर्ष—प्रेमक ‘परीक्षा’ एक बाह्य-थोपल यातना नहि, एक अन्तर-उत्पन्न ‘निखार’ थिक। जहिना अग्नि सोनकेँ नष्ट नहि, शुद्ध करैत अछि—तहिना वर्ष-भरक विरह-एकांत प्रेमकेँ नष्ट नहि, ‘प्रगाढ़’ करैत अछि। एहि अंतिम नाटकमे कुणाल समग्र संग्रहक वैचारिक धुरीकेँ—‘प्रेम सत्य छै’—एक बेर अंतिम रूपसँ घोषित करैत छथि।

७. संग्रह-समाहारः सातो नाटकक वैचारिक एकता

सातो नाटकक चतुर्भुज-समीक्षाक उपरांत, एक समग्र दृष्टिसँ देखला पर, ‘कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक’ एक सुसंगठित वैचारिक यात्रा थिक।

लोकनाट्य-त्रयीक वैचारिक क्रम: 'चालिस चोर' (बुद्धि) — 'बिदापत' (काव्य-अमरता) — 'कुसमा-सलहेस' (प्रेम-लोक-सेवा): एक नैतिक-दार्शनिक चाप।

प्रेम-चतुष्टयक वैचारिक क्रम: श्रुवावती (आत्मबल) — सुकन्या (विश्वास) — श्वेता (प्रेमक विस्तार) — सुप्रभा (प्रेमक परीक्षा-परिपक्वता): एक दार्शनिक विकास-क्रम।

समग्र संग्रहकेँ जोड़' वला धागा थिक समापन-टेक—"प्रेम सत्य छै, प्रेम छै सौरभ, प्रेमक भाव चिरंतन / बिनु मकरंदक कुसुम हो तहिना, प्रेम बिना की जीवन"—जे 'कुसमा-सलहेस' (तृतीय) क समापन-गीतसँ 'श्वेताक आविष्कार' (षष्ठ) क आत्म-घोषणा धरि प्रतिध्वनित होइत अछि। कुणालक समग्र नाट्य-कर्मक घोषणापत्र थिक—'प्रेम सर्वोच्च मानव-मूल्य थिक।' एहि मूल्यकेँ लोक-परम्परा, शास्त्र-परम्परा, आ स्वतंत्र-कल्पना—तीनू माध्यमसँ, चारू नाट्य-सभ्यताक कसौटी पर खरा उतरि, सिद्ध करनाइ—यैह एहि संग्रहक अवदान थिक।

पूरक दार्शनिक-आख्यान विवेचन

ऋषि अष्टावक्र आ वदान्य पुत्री सुप्रभाक विवाहक कथा पर आधारित ई नाटक शारीरिक सौंदर्य बनाम बौद्धिक ओ आध्यात्मिक तेजक द्वंद्वकेँ शास्त्रीय रूपमे प्रस्तुत करैत अछि। अष्टावक्र अपन पिता कहोड़क शाप सँ आठ जगह सँ टेढ़ भ' क' जन्म लेत छथि, मुदा ज्ञानमे ओ अद्वैत वेदांतक शीर्ष पुरुष थिकाह।

ऋषि वदान्य अष्टावक्रक प्रेमक परीक्षा लेबाक लेल हुनका उत्तर दिशाक कठिन यात्रा पर पठाबैत छथि, जत' ऐश्वर्य आ सौंदर्यक अधिष्ठात्री देवी उत्तरा (युवती रूपमे) हुनका कामुक प्रलोभन दैत छथि। अष्टावक्र अपन चारित्रिक ओ बौद्धिक निष्ठा सँ ओहि परीक्षा उत्तीर्ण क' सुप्रभा सँ विवाह करैत छथि। ई नाटक स्थापित करैत अछि जे प्रेम मात्र बाह्य आँखि सँ देखल जाय बला रूप नहि, अपितु आंतरिक आत्माक साक्षात्कार थिक।

१०१. प्रेमलता मिश्र ‘प्रेम’ क बहन्ने

सारांश
पटनामे स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकेँ सांस्कृतिक रूपमे श्रेष्ठ हएब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला वा सिक्की-मौनीक कारण नै। हम पुछने रहियै- "से की भेलौ अनचोक्के?" ओ मगही भाषी छल, उत्तर देलक- "पटनामे तोरा सभक कार्यक्रम गेल रही, कुमारि, बियाहल महिला सभ मंचपर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकमे भाग लऽ रहल छली।

बीजशब्द: प्रेमलता · मिश्र · प्रेम · बहन्ने · सेहो · कोनो · चर्चा

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क बहन्ने

बहुत पुरान गप्प। पटनामे स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकेँ सांस्कृतिक रूपमे श्रेष्ठ हएब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला वा सिक्की-मौनीक कारण नै। हम पुछने रहियै- "से की भेलौ अनचोक्के?"

ओ मगही भाषी छल, उत्तर देलक- "पटनामे तोरा सभक कार्यक्रम गेल रही, कुमारि, बियाहल महिला सभ मंचपर सांस्कृतिक कार्यक्रम आ नाटकमे भाग लऽ रहल छली। तूँ सभ बड्ड एडवान्स छैं।"

ओ कोनो मैथिलीक पर्व समारोह गेल छल आ नीलम चौधरीक नृत्य देखने छल आ प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क अभिनय सेहो। कतेक मुश्किलसँ महिला मंचपर जाइ छथि आ आंगुरपर गानल जा सकैत छथि, ऐसँ ओकरा कोनो मतलब नै रहै, ओ हमरा सभकेँ एडवांस मानि लेने छल। हमहूँ कएक बेर ऐ समारोह सभमे गेल रही, प्रायः १३ बर्ख आ २१ बर्खक बीचक उमेरमे। आ एक्सपर्ट कमेण्ट सुनैत रही।

"ऐं यौ, पर्दा कहाँ छै, कोठियामे अरुण बाबू सभजे नाटक खेलाइ छथि ओइमे तँ रङ-बिरङक पर्दा रहै छै।"

"बाबू कुणाल डाइरेक्टर छथि, खाली प्रकाश आ अन्हारक प्रयोगसँ सीन बदलै छथि। नाटकक बड्ड जानकार, हुनकर मानब छन्हि जे पर्दाक प्रयोग भेल नै आकि नाटक आधुनिक नै कहाओत।"

"आ बीच-बीचमे कॉमिक?"

"से सभ किछु नै, कुणालक नजरिमे ओ सभ नकली नाटक भेल।"

तखने लाइट चलि गेलै, मुदा पेट्रोमेक्स तैयार आ अक्कूक कॉमिक लाल आ हरियर सिन्दूरबला हास्य-कणिका जइ महिलाक पति प्रायः रेलवेमे छलै, से शुरुह भेल, बीचेमे।

"पहिल दिन नै एलौं?"

"पहिल दिन कोनो काजक कार्यक्रम नै होइ छै, धोइध बला सभक भाषण आ सड़ल-पाकल कविता के सुनत?"

मुदा सोङरपर ठाढ़ कएल गेल छै ऐ नाट्य-संस्था आ समारोह सभकेँ, साहित्योकेँ, तइसँ हमर संगीकेँ कोनो मतलब नै रहै। कानक सुनलपर ओ विश्वास करत आकि आँखिक देखलपर। मैथिलीक साहित्य उन्नत, ओतऽ महिला मंचपर अबैत छथि, प्रवासी मैथिलमे एकता छै तँ नैं। एक्के जाति छै तँ की, दोसर जातिक पात्र तँ नाटकमे छैहे किने? थोपड़ी ओकरे देखि कऽ तँ पड़ै छै, भले अपमानित करैबला डाइलोग घोसिया कऽ।

२००९ ई. क कोनो दिन।

एकटा फोन आयल-

"हमर नाम छी छत्रानन्द सिंह झा, नै चिन्हने हएब, हमरा लोक बटुक भाइ कहै छथि।"

"हम छत्रानन्द सिंह झा नामसँ अहाँकेँ बेशी चिन्है छी। ओइ समय 'भारती' कार्यक्रम आकाशवाणी पटनासँ होइ छलै, साढ़े पाँच बजे साँझसँ ६ बजे साँझ धरि। बृहस्पति आ रवि दिन। दिनो हमरा मोन अछि, कारण चितकोहड़ामे हाट लगै छलै ओही दू दिन, से तरकारी किनै लऽ हम दुनू भाँइ जाइत रही झटकारि कऽ, जे साढ़े पाँच बजे धरि घुरि कऽ आबि जाइ। आ ओइ कार्यक्रममे अहाँक नाम बटुक भाइ कहियो नै छल।"

"हम प्रेमलताजीक डेरापर छी, कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक लेल शुभकामना आ लिअ प्रेमलता जी सेहो गप करती।"

प्रेमलता जी सेहो शुभकामना देलन्हि।

मंत्रेश्वर झा जी समय-साल मे हमर बिनु नाम लेने एकटा व्यंग्य लिखलन्हि, जे एक गोटेक पञ्जीपर मोटका किताब आयल छन्हि, आ ओ पञ्जी आधारित व्यवस्थाक पुन: उद्धार करऽ चाहैत छथि।

पढ़ि कऽ ओ लिखैत छथि, तखन किए ओ से लिखलनि?

मुदा जखन पहिले अध्याय (प्राक्कथन) क दूषण पञ्जीक चर्च आ ओइमे नव्य-न्यायक जनक गंगेश उपाध्यायक पिता मृत्युक ५ साल बाद जन्म आ चर्मकारिणीक विवाह सहित मारते रास विवरणक चर्च शुरू भेल आ हम ईहो खुलासा केलौं जे केना रमानाथ झा ऐ विवरणकेँ "हिस्ट्री ऑफ नव्य-न्याय इन मिथिला"क लेखकसँ झूठ बाजि नुकेने छला, हुनका सहित सभ गोटे गुमकी लाधि देलनि, कारण पञ्जीक पोथीक आरम्भिक विरोधक असल कारण सोझाँ आबि गेल।

विदेह आगाँ बढ़ैत गेल, आ साहित्य अकादेमी सहित ओकर फण्डिंगबला एसोसियेशन/ संस्था सभ सोङ्गरेपर ठाढ़ रहल, हुकहुकाइत, मुदा ऐँठ-ऐँठ कऽ बजैत। हमरामे कमी अछि जे हम कोनो सभा-संस्थामे कम जाइ छी, मुदा २०१२ मे एकटा साहित्य-अकादेमी फण्डेड कार्यक्रमक बाद हमरा ई अनुभव भेल जे हुकहुकाइत संस्था सभमे सुधारक एकोरत्ती सम्भावना नै छै, आ मोटामोटी ई सभ हमरा आ विदेहसँ घृणा करैत अछि। ओहुनो हम कम्मे जाइ छलौं, से बन्दे कऽ देलिऐ।

फोन अखनो अबैत रहैत अछि, कवि सम्मेलन लेल, सेमीनार लेल, वेबीनार लेल, हम मना करैत छियन्हि (एतऽ धरि जे फेसबुकोपर फ्रेण्ड आ ग्रुपमे जखन हम मना करैत छियन्हि तखनो) आ ओ सभ ऐ लऽ कऽ उनटा-पुनटा बाजै छथि हमरा विषयमे, सभ नै किछु गोटे। हमर तँ एक्केटा शर्त अछि, मनुक्ख बनि जाउ आ हम अपन स्वाभावक विपरीतो आयब, ओना स्वभावक अनुसार हम ऐ सभ स्थानमे कम आबै जाइ-छी।

मनुक्ख केना बनी

पहिने साहित्य अकादेमी प्रसंग। किछु गोटे लिखने छला जे साहित्य अकादेमी हमरा आ विदेहकेँ मोजर नै दैत अछि तेँ हम सभ ओकर विरोध करै छी। से स्पष्ट भऽ गेल जे ओ सभ मोजर दै छथि आ विरोधक कारण अछि चोर-साहित्यकारकेँ, जकरा विदेह बैन कऽ देलक, तकरा साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्री सदस्य जातिक कारण बनेनाइ, ओइ जातिक जकर ऐ अकादेमीक मैथिली विभागपर एकछत्र राज्य छै, जकरा द्वारा मान्यताप्राप्त सातो लिटेरेरी एसोसियेशन ओही जातिक लोकक छै, जकर अनुवादसँ लऽ कऽ सभ असाइनमेण्ट दोसर जातिक लेल प्राप्त करब असम्भवे छै, जकर नाटक-निबन्ध-कथासँ लऽ कऽ सभटा संकलनमे एक्के जातिक ९९% रचना छै (ओना ई सभ गोदाममे सड़बा लेल छापल जाइ छै) ।

साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेश लेल कोनो संस्थाक कोनो योगदान नै छै, ई एकमात्र जयकान्त मिश्रक व्यक्तिगत प्रयाससँ सम्भव भेल, आ तेँ ओकर कोनो फाएदा मैथिलीभाषीकेँ नै भेलै। एक जातिक किछु लोक पचास हजार- लाख टाकाक अनुवाद असाइनमेण्ट लैत छथि, आ ओहीपर हुनका अनुवाद पुरस्कार सेहो भेटि जाइ छन्हि से पचास हजार टाका आर।

भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश हुअय वा विकीपीडियामे मैथिली वा गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली वा तिरहुता आ कैथीक यूनीकोड, मूलधाराक कोनो संस्थाक कोनो योगदान ऐमे नै छै। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश केना भेल तकर अभिलेखन हमर अंग्रेजी पोथी "A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE" मे कएल जा रहल अछि। हँ ऐ संस्था आ लोक सभसँ गूगल डेरा गेलै, विकीपीडिया डेरा गेलै आ भारत सरकार डेरा गेलै से फेसबुकपर पढ़बामे आबि जाएत। ओना जकरा बुते माछीयो नै मरै छै तकरासँ के डरतै? एकटा बात सेहो स्पष्ट हेबाक चाही जे मैथिली लेल विद्यापति पर्वसँ बेशी महत्व दुर्गापूजाक छै, एक तँ विद्यापति पर्वक जतेक प्रचार कएल जाइ छै अखबारमे से एकर लोकप्रियताक द्योतक नै अछि, ई मात्र एकर कर्ता-धर्ताक मीडियापर कब्जाकेँ देखबैत अछि। दोसर मात्र नाटक आ कुञ्जबिहारी लऽ कऽ दसटा लोक जुटै छै, नाटक बहुत ठामसँ निपत्ते छै। तेसर ऐमे जनसहयोग लगभग शून्य छै, आ एकर स्वरूप सेहो साहित्य अकादेमी सन छै वा एकरा सन साहित्य अकादेमीक छै, आ दुनू समाजमे कट्टरता पसारि रहल अछि। दुर्गापूजा गामे-गाम होइ छै, लोकक सहभागिता रहै छै, सांस्कृतिक कार्यक्रम नाच आदि क माध्यमसँ ई समाजक सभ अंग आ महिला-पुरुषकेँ जोड़ने अछि, ई विद्यापति पर्व आ साहित्य अकादेमी आ ओकर संपोषित संस्था सभ द्वारा पसारल जा रहल घृणाकेँ न्यूट्रल करैत अछि आ तइसँ आगाँ समरसता पसारैत अछि। ई जानकारी विद्यापति पर्वक आयोजनकर्ता लेल अछि जे फाँड़ बान्हि कऽ कहने फिरै छथि जे दोसर जातिमे औकाति छै तँ ओहो अप्पन नायकपर

पर्व करय। एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे विद्यापतिक जे फोटो ऐ संस्था सभ द्वारा प्रस्तुत कएल जा रहल अछि सएह त्रुटिपूर्ण अछि। संगहि ओ लोकनि अवहट्ठ आ संस्कृतबला विद्यापतिकेँ कविकोकिल विद्यापतिक रूपमे असफल रूपेँ ढोल बजा-बजा कऽ प्रस्तुत कऽ रहल छथि।

तँ की चारू कात अन्हार अछि?

नै, नै तँ प्रेममोहन मिश्र किए साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक परामर्शदात्रीक पदसँ त्यागपत्र दइतथि। कॉलेज सभक कटऑफ देखबै तँ सभसँ कम हिन्दी आ मैथिलीक कटऑफ भेटत, आ ओइ परामर्शदात्री समितिमे वएह सभ सहसह करैत छथि। आ जतऽ साँप सहसह करत ओतऽ मनुक्ख केना रहि सकैए। से रसायन विज्ञानी प्रेममोहन मिश्र त्यागपत्र दऽ देलन्हि।

सहसह करैत साँपक बीच मनुक्ख केना बनी

प्रेमलता जीक तीनटा पोथीक समीक्षासँ पूर्व हुनकर सहसह करैत साँपक बीच हथियार छोड़ि देबाक चर्च करब आवश्यक। कारण ई अंक प्रेमलता मिश्र 'प्रेम' विशेषांक अछि, अभिनन्दन ग्रंथ नै।

प्रेमलता जी कलाकार छथि, महिला कलाकार छथि, उच्च जातिक महिला कलाकार छथि। हमरा आशा छल जे ओ कलाकार रहितथि, सुच्चा कलाकार, बेशीसँ बेशी महिला कलाकार। मुदा परीक्षा काल ओ नै कलाकारे रहि सकली नहिये महिला कलाकार। भऽ गेली मात्र एकटा षडयंत्रक शिकार, जतऽ हुनका अपन महिला होयबाक आइडेण्टिटी आ अपन कलाकार होयबाक आइडेण्टिटी दुनू त्यागऽ पड़लन्हि।

घटना साहित्य अकादेमी युवा पुरस्कार २०२२, तीनटा जूरी रहथि, दूटा पुरुष (केष्कर ठाकुर आ राजन कुमार सिंह) आ एकटा महिला (प्रेमलता मिश्र 'प्रेम') । मुन्नी कामतक कविता संग्रह "अंततः", मुन्नी कामत- जिन्दगीक मोलक लेखिका आ असली फेमिनिज्मक कविता लिखनिहारि। ने रचनाक गुणवत्ता ने फेमिनिज्मक कोनो महत्व, मात्र जाति भारी पड़ल, ऐ पोथीकेँ केष्कर ठाकुर आ राजन कुमार सिंहक तँ छोड़ू प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क सेहो वोट नै भेटलै। सभकेँ दाम चुकाबऽ पड़ै छै, साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यताप्राप्त कथित लिटेरेरी एसोसियेशनक उपाध्यक्ष बनबाक दाम चुकेलन्हि प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', नै अड़ि सकलीह, अपन वोट अप्पन होइ छै, मुदा हिनकर वोट पुरुष बहुमतक, जाति बहुमतक संग चलि गेल।

शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा होइत-होइत बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित केलक।

शेखर प्रसंग

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' प्रसिद्ध सम्पादकजी पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि, पहिल अध्यायमे व्यक्तित्व आ कृतित्व, दोसर अध्यायमे कृति विवेचन, तेसर अध्याय मे हुनकर हिन्दी रचना आ चारिम अध्यायमे उपसंहार अछि।

ऐ पोथीक उपसंहारमे एक ठाम वर्णित भेल अछि जे केना उदयचन्द्र झा विनोद हुनकासँ भेँट करबाक लेल मिथिला मिहिर कार्यालय गेल छलाह मुदा ओ वाम हाथसँ लिखबामे तल्लीन छलाह। ओ एक्के बेर रचना फेयर कऽ लैत छलाह, मोनेमे काँट-छाँट कऽ लैत छलाह।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ तँ ततेक तेजीसँ सोचैत छलाह जे ओ शॉर्टहैण्डमे लिखैत छलाह जे तारतम्य नै टूटय, आ हुनकर पर्सनल असिसटेण्ट ओकरा लौंहहैण्डमे टाइप करथिन।

मिथिला मिहिर लेखकक एकटा सेना तैयार केलक, सहस्राधिक लेखकक।

ओ दिन ओ पल

ऐ मे १२ टा संस्मरण अछि।

हमर कक्का: यात्रीजी- ऐ संस्मरणमे एकटा घटनाक चर्चा करब आवश्यक अछि। यात्रीजीक जेठ बेटीक संग प्रेमलताजी भानस करथि, मुदा यात्रीजी हुनका दुनू गोटेकेँ एक दिन सप्ताहमे छुट्टी देलखिन्ह आ ओइ दिन हुनकर जेठ बेटा शोभा मिसर भानस करथिन्ह से निर्णय देलन्हि। प्रेमलता जी लिखैत छथि-

"अधिकारक बोध करओलनि कक्का।"

सत्य, जतऽ आइयो जनसंख्यामे डोमेस्टिक काजकेँ बेरोजगारी वा बिनु अर्जनबला काज मानल जाइ छै, ई गप आह्लादित केलक। कक्का नहि रहलाह।

काका, काकी आ...: ऐमे ने काकाक नाम छन्हि ने काकीयेक। हम ई ऐ दुआरे कहि रहल छी जे हमरा रहिकाक ऐ भगिनमानक नाम जनबाक उत्कण्ठा अछि। किए अछि? कारण ऐ संस्मरणमे काकीकेँ सम्बोधित कऽ प्रेमलता जी लिखैत छथि-

"ओ प्रथम मैथिल महिला मंच पर आयलि छलीह, आ से हमरा लेल सभदिन प्रेरणाक आधार रहल अछि।" से हुनकर नाम जनबाक सभकेँ इच्छा हेतन्हि आ प्रेमलता जी से करतीह से आशा अछि, ओना लोकक जिनगी बीति जाइ छै काकी-काकी करैत मुदा ओकर नैहर गामक पता तँ चलैत छै, काकीक नाम नै पता चलै छै।

अही संस्मरणमे सोङरपर ठाढ़ नाट्यमंचक प्रमाण सेहो देल गेल अछि जतऽ प्रेमलता जी पर कटाक्ष करैत कियो कहै छथि- "... हरिमोहन बाबू चाली कैँ फूकि कऽ साँप बना रहल छथि।"

कठघरामे ठाढ़ हम: ई संस्मरण सुधांशु शेखर चौधरी पर अछि। ओ हिनका एकबेर कहने रहथिन्ह जे नाटक लिखबा काल प्रेमलता जेना हुनका सोझाँ आबि जाइ छथिन्ह आ ओ सम्वाद ओ प्रेमलते लेल लिखैत छथि।

स्मृति-तर्पणक दू शब्द: ई संस्मरण पं. जयनाथ मिश्रक छन्हि प्रेमलता जीक अनुसार जनिकर मानसपुत्री 'मैथिली महिला संघ' अछि।

नारी-जागरणक अग्रदूत, नचैत रहल ओ क्षण सभ, बेर-बेर भसिया जाइत छी: ई तीनू संस्मरण हुनकर नैहर रहिकाक अछि। अही क्रममे ई तीनू संस्मरण नै अछि मुदा एकटा कारणसँ हम एकरा एक ठाम रखने छी। पहिलमे शिक्षक आ पिता रंगमंचपर हिनकर प्रवेशक पक्षधर रहथि, मुदा गौँआ सभक कारण ई सम्भव नै भेल, दिन मे ओना रिहर्सल कालमे गीतपर नृत्य केने रहथि, उमेर रहन्हि १३ बर्ख (सन् १९६१) । नाटक गोविन्द झा क 'बसात' रहै, से संस्मरणमे गोविन्द झा सेहो सम्मिलित भेलाह जखन प्रेमलता जी पछाति पटना गेलीह आ गोविन्द झा क कएकटा नाटकमे अभिनय केलन्हि। दोसरमे हिनकर उमेर रहन्हि ३७-३८ बर्ख (सन् १९८५-८६) आ वएह गौँआ सभ हिनका २४-२५ बर्ख बाद गामक विद्यापति पर्वमे मुख्य अतिथि बनेलकन्हि आ हिनकर बेटी अन्नूकेँ मंचपर गाबय लेल बजेलकन्हि। आ स्टेजसँ उतरलाक बाद २३ बर्ख बाद हिनका अपन गुरुजी सीतानाथ झाक दर्शन भेलन्हि जे प्रेमलता जीक नाम पुकारल जेबाक बाद अदहे खेनाइपरसँ उठि कऽ झटकारि कऽ आबि गेल छलाह। तेसर संस्मरणमे बिनु सह-कलाकार संग रिहर्सलक रहिकेमे नाटकमे अभिनयक गौँआ उदय चन्द्र झा 'विनोद'क आग्रहकेँ अस्वीकार केलन्हि, नाटक महेन्द्र मलंगियाक छल आ नाटक छल- 'ओकर आंगनक बारहमासा', ईहो लिखै छथि जे सभखन सभकेँ प्रसन्न नै राखल जा सकैए (उदय चन्द्र झा 'विनोद' अही अंकमे लिखै छथि जे प्रेमलता जी मानि गेल छलीह, मुदा गौँआ सभक प्रबल विरोधक कारण ओ दर्शके दीर्घामे रहलीह आ प्रेमलता जीक ई अपमान हुनका एतेक खराप लगलन्हि जे रहिकाक त्रिदिवसीय विद्यापति पर्वमे तकर बाद कोनो नाटक नै भेलै।) । तेसरे संस्मरणमे कोनो नजदीकी महिलाक चर्चा अछि जे हिनका कहलखिन्ह जे धन्य बटुक भाइ जे अहाँक बेटीक बियाह भऽ गेल आ आब अहाँ किछु बेशी बाजऽ सेहो लागल छी।

रंगयात्रासँ महायात्रा धरि: मैथिली नाटकक निर्देशक पं. त्रिलोचन झा प्रसिद्ध गुरुजी क संस्मरण ऐ आलेखमे अछि। ऐ सँ पहिने हिन्दीसँ निर्देशक आयातित होइत छलाह। पहिने ओ राजदरभंगाग थियेटरमे रहथि, ओ बन्द भऽ गेल। फेर चर्चा अछि कलकत्ताक मूनलाइट थियेटरक आ ओहो बन्द भऽ गेल तखन ओतुक्के 'यात्रा पार्टी'मे गेलाह मुदा ओतऽ मैथिली रंगसंस्था 'मिथियात्री (सहयोगी दयानाथ झा, गुणनाथ झा आ श्रीकान्त मण्डल)' सँ जुड़लाह।

यात्रा पार्टीमे घुमब जखन पार नै लगलन्हि तँ कमलनाथ सिंह ठाकुरक माध्यमसँ पटना चेतना समितक रंगमंच विभागसँ जुड़ि गेलाह।

मुदा एतऽ सेहो सोंगरपर ठाढ़ मैथिलीक चर्चा भेटैत अछि-

".. परिवारक अन्य सदस्यकेँ रंगमंचसँ वा रंगमंचक चर्चासँ फराक रखलनि।"

श्रीकान्त मण्डल: ७ जनवरी १९९४, श्रीकान्त मण्डलक मृत्यु। राजकमल चौधरीक 'ललका पाग' कथापर फिल्म बनेबा लेल फाइनेन्सर ताकि लेने छलाह, कन्ट्रैक्ट पर हस्ताक्षर भऽ गेल, गीत रेकर्ड भेल। प्रेमलता जी लिखै छथि जे ई गीत ओइ बर्खक विद्यापति पर्वमे लोक सुनबो केलक।

मुदा एकटा व्यक्तिक मृत्यु माने एकटा संस्थाक मृत्यु, से ने ओ गीते आब अछि आ नहिये ओ फिल्म बनल। मात्र व्यक्तिगत प्रयाससँ सोंगरपर ठाढ़ कएल काज, श्रीकान्त मण्डल सोंगर छलाह, ओ गेलाह आ हुनकर आ हुनकर गीतक चेन्हासी धरि मेटा गेल, वा मेटा देल गेल।

रंगकर्मी प्रमिला: श्रीनारायण झा प्रसिद्ध 'सर' आ हुनकर पत्नी आ बाल-भंगिमा (भंगिमा नाट्य संस्थाक बाल विभाग) क प्रभारी प्रमिला जीक संस्मरण अछि। संगमे सोनू आ मोनू (प्रमिला जीक दुनू पुत्र) आ भवनाथ झा (नाबार्ड) क सेहो चर्चा अछि आ ठहाका कार्यक्रमक सेहो। फेर प्रमिला जीक असमय मृत्यु भऽ जाइत अछि।

किछु तीत, किछु मिट्ठ: किछु चहटगर घटना सभक चर्चा अछि ओहने सभ जे कपिल शर्मा शो मे अहाँ सभ देखने हएब।

एकटा रंगकर्मीक यात्रा: पहिल बेर चेतना समितिक तत्त्वाधानमे आ बटुक भाइ कहलापर १९७३ ई मे प्रेमलता जी आ दस बर्खक भारती अभिनय केलन्हि। १९७४ मे शामिल भेलीह नृत्यांगना रमा दास। पुरुष कलाकारक चर्चा सेहो अछि- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), वेदानन्द झा, फनन्त झा, हृदयनाथ झा, सी. पी. झा, मोदनाथ झा, अशर्फी अजनबी, गोलोकनाथ मिश्र, बन्धुजी, शम्भुदेव झा। चेतना समितिक अतिरिक्त नाट्य संस्था रंगलोक, नवांगन, अरिपन, भंगिमा, आंगन, कला समिति क चर्चा भेल अछि आ जिम्मा लेनिहारमे रवीन्द्र नाथ ठाकुर, कौशल कुमार दास, छत्रानन्द, कुमार शैलेन्द्र, प्रशान्तकान्त, रवीन्द्र राजू, मनोज मनुज, विभूति आनन्द, कुणाल, उमाकान्त, किशोर केशव, रोहिणी रमण, जगन्नाथ लाल दास, कौशल मिश्र आ तरुण प्रभातक चर्चा भेल। महिला अभिनेत्रीक चर्चा केलनि- मंजू चौधरी, सुधा दास, तनुजा शंकर, विनीता, संगीता, निवेदिता, मंजू झा, आभा झा, पूनमश्री। मृदुला सिन्हाक चर्चा भेल अभिनयक संग निर्देशन आ आलेखन लेल सेहो। मंत्रेश्वर झा द्वारा 'अरिपन'क माध्यमसँ नाट्य प्रतियोगिताक आयोजन। मुदा...

मंजू चौधरी रंगमंचे नै ओइसँ जुड़ल लोकोसँ कुशल छेम-धरि पुछबासँ परहेज केलनि, मृदुला सिन्हा, सुधा दास, पूनमश्री, प्रभा झा, नूतन झा सभ एकाएकी छोड़ैत गेलीह।

सुरेन्द्र आचार्य धरि संग रहलाह।

तनुजा शंकर अभिनय आ निर्देशन दुनूमे छलीह मुदा ओ दिल्ली दूरदर्शनक सीरयल सभसँ जुड़ि गेलीह, हुनकर छोट बहीन कनुप्रिया शंकर राष्ट्रीय नाट्य विद्यालयसँ जुड़ि गेलीह।

शामिल भेलीह स्नेहा पल्लवी, शिल्पी आ रश्मि, तीनू सुपुत्री हरिहर प्रसाद (हिन्दीक कथाकार, फिल्मकार आ स्क्रिप्ट राइटर) । आनन्द मोहन झा आ हुनकर माय वैदेही झा केर सेहो चर्चा अछि। मधूलिका आनन्द, सोमा आनन्द आ दीपा आनन्द, सुप्रीता दास, ज्योति, सुनीता झा, अलका, नीतू, शारदा सिंह, नीलम सिंह, प्रीति, रश्मि मिश्र, अन्नू, मन्नू, बरखा सिंह, स्वाती सिंहक सेहो चर्चा अछि।

फेर चर्चा अछि हुनका सभक जे अपन परिवार, अपन पत्नीकेँ उत्साह आ गर्वक संग शामिल कयलनि- लल्लन प्रसाद ठाकुर (जमशेदपुर), अशोक कुमार झा (मिथिला विकास परिषद, कोलकाता), रोहिणी रमण झा (आंगन, पटना), प्रदीप बिहारी (बेगूसराय), चतुर्भुज आशावादी (विराटनगर, नेपाल) आ श्याम सुन्दर सिंह (भंगिमा, पटना) ।

एगो छली सिनेह: ऐ कथा संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि, जइमे एकटा कथा अछि 'एगो छली सिनेह', जे विधवा सिनेहक कमलेश संग शारीरिक सम्बन्ध, कमलेशक धोखा दऽ भागि जायब आ ओइ सम्बन्धसँ होइबला बच्चाकेँ जन्म देबाक जिदपर आधारित अछि। कताक साल बाद ओ घुरि कऽ एलि आ ओही भैंसुरकेँ अपन घराड़ी लिखि देलनि जे हुनका काटि कऽ गाड़ि देबाक निर्णय सुनेने छलखिन्ह।

ऐ संग्रहक एकटा आर कथा 'ब्यूटीपार्लर' विवाहेत्तर शारीरिर सम्बन्धपर आधारित अछि जइमे पुरुखकेँ बियाहल रहलोपर कुमारिसँ अफेयर करबाक छूट छै।

'वापसी' कथामे सासु-पुतोहुक खिस्सा छै। जे बेटा-पुतोहुकेँ सासु घर खाली करेलन्हि सएह सेवा केलकन्हि आ फेर वापसी भेल।

'अभागल'मे कोनो बातपर बच्चा घरसँ भागि गेल रहै आ फेर घुरि कऽ आबि गेलै तकरे कथा अछि।

'चँचरी पुल' मे बाढ़िक इलाका, चचरी पुलक गायब हएब आ फेर मरम्मति हएब, चँचरी पुल आ प्रकृतिक मिलि कऽ समाजमे एक सूत्रमे बन्हबाक वर्णन अछि। एम्हर पछिला साल एकटा समाचार आयल छल जे बिहारमे लोहाक पुलकेँ चोर काटि कऽ लऽ गेलै। से स्थिति अखनो ओहने छै, चँचरी पुल चोरि होइ छलै, आब लोहाक पुल चोरि होइ छै।

'मैयाँ' कथामे मैयाँ आ किसुनमाक आत्मीय सम्बन्धक चर्चा भेल अछि।

'वैतरणी'मे वएह गामक खिस्सा अछि, मरलाक बाद भोजमे मदति करू आ सभटा निकहा खेत लिखबा लिअ।

'जुमरातन' स्कूलक सेविका, एक तरहसँ ओकर चरित्र चित्रण कएल गेल अछि।

'छाहरि'मे सुधा आ रधियाक कथाक बहन्ने स्त्री-विमर्श आ जाति विमर्श दुनू आयल छै, आ ईहो जे महिलापर एकर दोबरा मारि पड़ैत छैक।

'ठेस'मे शहरमे बन्दक घोषणाक बाद महिला कर्मचारी सभक आपसी गपशपक विवरण छै।

'गृह-प्रवेश'मे केना इमोशनल कऽ सोझ लोकसँ काज लेल जाइ छैक तकर विवरण अछि।

'उदास आँगन' मे काकीक मृत्युक अवसरपर हुनकर खगता, नवका छौड़ी सभ तँ सिनेमाक भासपर गीत उठबैत अछि, काकीकेँ से नै सोहाइत छलन्हि। हुनकर अन्तिम संस्कारमे सौंसे टोलक छौड़ा सभ हुनक चितापर तिकुला-मज्जरसँ लदबद ठारि काटि कऽ धऽ देलक, जँ काकी ऐबेर नै छै तँ ककरो अँचार-आमिल नै बनबऽ दइ जेतै। काकीसँ प्रेम.. स्वर्गमे बैसि खूब चटनी बनबिहैं...

"तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।"

एनी एर्नौ पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क किछु कथा जेना 'एगो छली सिनेह', 'ब्यूटीपार्लर' बोल्ड अछि तँ आ 'छाहरि' आ 'उदास आँगन' मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अछि। मुदा हुनकर मजगूत पक्ष छन्हि 'संस्मरण' आ जतेक खजाना हुनका लगमे छन्हि से ओ एनी एर्नौ जकाँ संस्मरण लिखिये कऽ सधा सकैत छथि। आशा अछि जे हुनका कलमसँ ढेर रास संस्मरण आर निकलतन्हि।

पूरक विवेचन

बहुत पुरान गप्प। पटनामे स्कूलक संगी सभ मैथिली भाषीकेँ सांस्कृतिक रूपमे श्रेष्ठ हएब मानि गेल छल। मिथिला चित्रकला बा सिक्की-मौनीक कारण नै। हम पुछने रहियै- "से की भेलौ अनचोक्के?"

"आ बीच-बीचमे कॉमिक?"

"पहिल दिन नै एलौं?"

२००९ ई. क कोनो दिन।

एकटा फोन आयल-

प्रेमलता जी सेहो शुभकामना देलन्हि।

पढ़ि कऽ ओ लिखैत छथि, तखन किए ओ से लिखलनि?

मनुक्ख केना बनी

भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश हुअय बा विकीपीडियामे मैथिली बा गूगल ट्रान्सलेटमे मैथिली बा तिरहुता आ कैथीक यूनीकोड, मूलधाराक कोनो संस्थाक कोनो योगदान ऐमे नै छै। भारतीय संविधानक अष्टम अनुसूचीमे मैथिलीक प्रवेश केना भेल तकर अभिलेखन हमर अंग्रेजी पोथी "A PARALLEL HISTORY OF MAITHILI LITERATURE" मे कएल जा रहल अछि। हँ ऐ संस्था आ लोक सभसँ गूगल डेरा गेलै, विकीपीडिया डेरा गेलै आ भारत सरकार डेरा गेलै से फेसबुकपर पढ़बामे आबि जाएत। ओना जकरा बुते माछीयो नै मरै छै तकरासँ के डरतै? एकटा बात सेहो स्पष्ट हेबाक चाही जे मैथिली लेल विद्यापति पर्वसँ बेशी महत्व दुर्गापूजाक छै, एक तँ विद्यापति पर्वक जतेक प्रचार कएल जाइ छै अखबारमे से एकर लोकप्रियताक द्योतक नै अछि, ई मात्र एकर कर्ता-धर्ताक मीडियापर कब्जाकेँ देखबैत अछि। दोसर मात्र नाटक आ कुञ्जबिहारी लऽ कऽ दसटा लोक जुटै छै, नाटक बहुत ठामसँ निपत्ते छै। तेसर ऐमे जनसहयोग लगभग शून्य छै, आ एकर स्वरूप सेहो साहित्य अकादेमी सन छै बा एकरा सन साहित्य अकादेमीक छै, आ दुनू समाजमे कट्टरता पसारि रहल अछि। दुर्गापूजा गामे-गाम होइ छै, लोकक सहभागिता रहै छै, सांस्कृतिक कार्यक्रम नाच आदि क माध्यमसँ ई समाजक सभ अंग आ महिला-पुरुषकेँ जोड़ने अछि, ई विद्यापति पर्व आ साहित्य अकादेमी आ ओकर संपोषित संस्था सभ द्वारा पसारल जा रहल घृणाकेँ न्यूट्रल करैत अछि आ तइसँ आगाँ समरसता पसारैत अछि। ई जानकारी

विद्यापति पर्वक आयोजनकर्ता लेल अछि जे फाँड़ बान्हि कऽ कहने फिरै छथि जे दोसर जातिमे औकाति छै तँ ओहो अप्पन नायकपर पर्व करय। एतऽ स्पष्ट कऽ दी जे विद्यापतिक जे फोटो ऐ संस्था सभ द्वारा प्रस्तुत कएल जा रहल अछि सएह त्रुटिपूर्ण अछि। संगहि ओ लोकनि अवहट्ठ आ संस्कृतबला विद्यापतिकेँ कविकोकिल विद्यापतिक रूपमे असफल रूपेँ ढोल बजा-बजा कऽ प्रस्तुत कऽ रहल छथि।

तँ की चारू कात अन्हार अछि?

सहसह करैत साँपक बीच मनुक्ख केना बनी

१०२. शेखर प्रसंग, ओ दिन ओ पल आ एहो छली सिनेह

सारांश
शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा होइत-होइत बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित...

बीजशब्द: शेखर प्रसंग; ओ दिन ओ पल; एहो छली सिनेह; संस्मरण; स्मृति; चरित्र; आत्मीय गद्य

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि। 'ओ दिन ओ पल' आत्मकथा होइत-होइत बचि गेल अछि आ ई अछि संस्मरण संग्रह। 'एगो छली सिनेह' अछि कथा-संग्रह जकर किछु कथा हमरा आश्चर्यचकित केलक।

शेखर प्रसंग

शेखर-प्रसंग 'सुधांशु शेखर चौधरी' प्रसिद्ध सम्पादकजी पर हुनकर शोधक आधारपर रचित पोथी अछि, पहिल अध्यायमे व्यक्तित्व आ कृतित्व, दोसर अध्यायमे कृति विवेचन, तेसर अध्याय मे हुनकर हिन्दी रचना आ चारिम अध्यायमे उपसंहार अछि।

ऐ पोथीक उपसंहारमे एक ठाम वर्णित भेल अछि जे केना उदयचन्द्र झा विनोद हुनकासँ भेँट करबाक लेल मिथिला मिहिर कार्यालय गेल छलाह मुदा ओ वाम हाथसँ लिखबामे तल्लीन छलाह। ओ एक्के बेर रचना फेयर कऽ लैत छलाह, मोनेमे काँट-छाँट कऽ लैत छलाह।

जॉर्ज बर्नार्ड शॉ तँ ततेक तेजीसँ सोचैत छलाह जे ओ शॉर्टहैण्डमे लिखैत छलाह जे तारतम्य नै टूटय, आ हुनकर पर्सनल असिसटेण्ट ओकरा लौंहहैण्डमे टाइप करथिन।

मिथिला मिहिर लेखकक एकटा सेना तैयार केलक, सहस्राधिक लेखकक।

ओ दिन ओ पल

ऐ मे १२ टा संस्मरण अछि।

हमर कक्का: यात्रीजी- ऐ संस्मरणमे एकटा घटनाक चर्चा करब आवश्यक अछि। यात्रीजीक जेठ बेटीक संग प्रेमलताजी भानस करथि, मुदा यात्रीजी हुनका दुनू गोटेकेँ एक दिन सप्ताहमे छुट्टी देलखिन्ह आ ओइ दिन हुनकर जेठ बेटा शोभा मिसर भानस करथिन्ह से निर्णय देलन्हि। प्रेमलता जी लिखैत छथि-

"अधिकारक बोध करओलनि कक्का।"

सत्य, जतऽ आइयो जनसंख्यामे डोमेस्टिक काजकेँ बेरोजगारी बा बिनु अर्जनबला काज मानल जाइ छै, ई गप आह्लादित केलक। कक्का नहि रहलाह।

मुदा एकटा व्यक्तिक मृत्यु माने एकटा संस्थाक मृत्यु, से ने ओ गीते आब अछि आ नहिये ओ फिल्म बनल। मात्र व्यक्तिगत प्रयाससँ सोंगरपर ठाढ़ कएल काज, श्रीकान्त मण्डल सोंगर छलाह, ओ गेलाह आ हुनकर आ हुनकर गीतक चेन्हासी धरि मेटा गेल, बा मेटा देल गेल।

८२ बर्खक एनी एर्नो कें ऐ बेरुका साहित्यक नोबेल पुरस्कार देबाक घोषणा स्वेडिश एकेडमी केलक। स्वेडिश एकेडमी ओइसँ पहिने रवीन्द्रनाथ ठाकुरकेँ एकटा ट्वीटमे मोन पाड़लक।

"तितली मास नै, पल गानैत अछि, से ओकरा लग समये समय छै।"

एनी एर्नो पहिने आत्मकथात्मक उपन्यास लिखलन्हि मुदा शीघ्रे ओ मात्र आ मात्र संस्मरण लिखय लगलीह।

प्रेमलता मिश्र 'प्रेम'क किछु कथा जेना 'एगो छली सिनेह', 'ब्यूटीपार्लर' बोल्ड अछि तँ आ 'छाहरि' आ 'उदास आँगन' मे मनोवैज्ञानिक विश्लेषण अछि। मुदा हुनकर मजगूत पक्ष छन्हि 'संस्मरण' आ जतेक खजाना हुनका लगमे छन्हि से ओ एनी एर्नो जकाँ संस्मरण लिखिये कऽ सधा सकैत छथि। आशा अछि जे हुनका कलमसँ ढेर रास संस्मरण आर निकलतन्हि।

१०३. शरदिन्दु चौधरीक समीक्षा

सारांश

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] "बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल। संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे।

बीजशब्द: शरदिन्दु चौधरी; संस्मरण; हास्य-व्यंग्य; बात-बातपर बात; पुरस्कार-संस्कृति; संस्था; मैथिली गद्य

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)]

"बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल।

संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे। एतऽ ई संतोषक विषय अछि जे शरदिन्दु जी कैँ समानान्तर धारामे एक्कोटा लोलुप व्यक्ति नै भेटलन्हि।

एकर अतिरिक्त २००५ मे प्रकाशित "बड़ अजगुत देखल", २०११ मे प्रकाशित "गोबरगणेश" आ २०१६ मे प्रकाशित "करिया कक्काक कोरामिन"कैँ करिया कक्का व्यंग्य शृंखला कहि सकैत छी, कारण ऐ तीनू पोथीमे खट्टर कक्का सन करिया कक्का विराजमान भेटता, मुदा एतौ किछु आलेखमे करिया कक्का नै छथि, जेना गोबरगणेश संग्रहक 'तावत काल','गोलैसी- अर्थात्' आ 'सीडी समीक्षा '। मुदा ई तीनू संग्रह सेहो मोटा-मोटी संस्मरण आधारित अछि मुदा नोन-मिर्चक सङ आ सेहो पुष्टसँ। एतऽ 'करिया कक्काक कोरामिन' क लेखकीय मे ओ लिखै छथि जे (करिया कक्का) कैँ 'जे फुरेलनि सैह कयलनि मुदा ई ध्यान अवश्य रखलनि जे... अश्लीलताक आरोप नहि लागय..." मुदा ऐ पोथीसँ ५ साल पूर्व प्रकाशित 'गोबरगणेश' क 'सीडी समीक्षा ' मे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष विद्यानाथ झा 'विदित'क सम्बन्धमे लिखल गेल अछि, '.. ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह...'। ओही पोथीक 'तावत काल' आलेखमे लिखल गेल अछि- 'एहने सन प्रयोग साहित्य अकादेमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि।" तावत काल केर वर्णन अश्लील नै अछि मुदा सीडी समीक्षाक विवरण स्पष्टतया अश्लील अछि। ई स्पष्ट अछि जे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक सभ अध्यक्ष मैथिलीकैँ रसातल पहुँचेबाक काज केलन्हि अछि मुदा एकटा महिलो ओइमे छथि तँ ओ सत्य हरिश्चन्द्र किए बनथु? आ ओइपर सेक्सिस्ट कमेण्ट ईएह देखबैत अछि जे लेखक बा सम्पादक साहित्यमे आ सार्वजनिक स्थलपर महिला बा पुरुषेत्तर लिंगक प्रति सम्वेदनशील नै छथि। 'करिया कक्काक कोरामिन'मे 'सरकारक लिंग परीक्षा ' मे सेहो ई असम्वेदनशीलता देखल जा सकैए जतऽ 'स्त्री-गुणसँ परिपुरित सरकार' विनोद कुमार झा *[देखू 'ईर्ष्या द्वेष नहि- समन्वय चाही'- 'हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)' पोथीमे- सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट)]* लेल प्रयुक्त कएल गेल अछि।

१

<u>बात-बातपर बात खण्ड-१</u>

२

३

४

साक्षात् (बात-बातपर बात-४)

१

अथ ऑपरेशन साहित्य अकादेमी

२

अपील

३

ईहो पुरुष अलबत्ते

सहायक कलाकार- रिक्त।

४

देखल एकटा शूटिंग

अन्तिम प्रस्तोता- गुंजनजी।

५

स्वास्थ्य-रक्षा पुरस्कार

६

धन्य लालूजी जे आइ..

७

सम्पादकक नाम...

फचांड़ि मिसरक पत्र

८

एकालाप

९

सफेदपोशक भतार

१०

जँ हम जनितहुँ

११

१

'बड़ अजगुत देखल..'

<u>की मथै छी?</u>

<u>दर्शन-सुदर्शन</u>

..'मुदा हुनकासँ सीनियर...'

२

'गोबरगणेश'

<u>तावत काल</u>

<u>गोलैसी- 'अर्थात्'</u>

सीडी समीक्षा

३

'करिया कक्काक कोरामिन'

<u>बुद्धिक बखारीक वर्गीकरण</u>

'सरकार'क लिंग परीक्षण

व्यंग्य लिखबाक व्योंत

<u>कोरामे नेना, नगरमे सोर</u>

<u>पुरस्कार विज्ञानक फलाफल</u>

१०४. नचिकेताक समीक्षा

सारांश

गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत। पद्य छन्दबद्ध होअए वा छन्द-लय विहीन, जे ओहिमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत।

बीजशब्द: नचिकेता; कविता; नाटक; भाषा; शब्द; पाठ; रचनात्मक प्रयोग

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन

गद्यसँ पद्य एहि अर्थे फराक होइत अछि जे एहिमे बिम्बक माध्यमसँ कम शब्दमे बेशी गप कहल जएबाक गुंजाएश रहैत अछि। तेँ पद्यकेँ समयाभावमे शुरू कएल गद्यक विकल्पक रूपमे देखब सम्भव नहि, ओना तेहनो उदाहरण भेटत। पद्य छन्दबद्ध होअए वा छन्द-लय विहीन, जे ओहिमे गुणवत्ता अछि तँ प्रभावित करबे टा करत। सीलिंगसँ जमीन बचेबा लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग लोक द्वारा होइत अछि। मुदा सीलिंगमे पड़ल साहित्यक लेल वामपंथ वा दक्षिणपंथक प्रयोग, छंदबद्धता-लयबद्धताक आग्रह वा अनाग्रह गोलौसीक विस्तार मात्र अछि। आ एहि मध्य नचिकेताक तैंतीस टा कविताक संकलन अछि मध्यमपुरुष एकवचन। एहिमे कवि जखन विरोध समुद्रसँ मे तोहर आ हमर बीचमे जे समुद्र अछि, जकर तटपर, ओकर परिणामपर क्यो कानि रहल अछि, बीचमे माछ आ चीलक झुण्ड आ एहि मध्य ज्वार सभक टीककेँ धेने छथि वरुणदेव, सोचैत जे प्रेमकेँ जीतए देताह आकि समुद्रकेँ, कहै छथि आ फेर वरुणदेवक ज्वारक टीककेँ धरब, चित्र सोझाँ अबैत अछि। ऋतु-विशेष पृथ्वीपर- मे प्रेमक ऋतु विशेष, जकर प्रारम्भेमे बरखा मासक बुन्न सुखाए लगैत अछि। शब्द लेल जाल लेने आ शब्द करैत अछि आत्मसमर्पण कविताक संन्यासमे। आ फेर घुरैत नदी कछेर- भोरुका मंत्रक उच्चारण लेल जे जलकेँ बनबैत अछि अकास। बंजर देशक बरसातिक देव जे अकासोकेँ कना सकै छै बेहिसाब। भूतक नाचब लाठी बजारि-बजारि आ तरुण राजकुमारक देखब साम्यवादक स्वप्न-फुक्का उड़ाय अकासमे। शब्दसँ समझौता आ सभ आहक डूमब शब्दक चीत्कारमे। फेर आह्वान अकाससँ, कानू भोकारि पारि, जाहि वज्रपातक शब्दसँ विश्वास हएत जे साओन अएल अछि पृथ्वीपर। आ आकांक्षा, छूबि कपारक टपकैत बुन्नक सङे आ अपन लिखल पाँति पढ़बाक। पछिला बेरक हुनकर अपूर्ण कएल कार्य। आ यैह छी ऋतुविशेष- मोन पाड़ब हुनका। तोँ- मे वाक्यक हकमैत पैसब, धीपल हाथक धरब, धधकल आगि हमर, एहिमे हम तोँ, कल्पतरुक डारि, बाकी सभ छुच्छ आ बुढ़िया नानीक कोनो खिस्सा। आ दशोदिशा पकैत ताहिमे- भ्रान्ति-पथ (भ्रमित!) । नौ मासक गर्वक, गर्भक दीर्घप्रहर। पाँचम ऋतु (!) छठम रिपु(!)- राग सेहो विलम्बित, द्रुत ताल (त्रस्त) आ भानु अस्तमित। रातुक आ दिनक कथा- मे सूतल दुनियाँ कैं छोड़ि बुद्ध बहार होइत छथि घरसँ मुदा कविक प्रयाण कविताक भीतर- कानूनी अनुबन्धक अन्तर्गत बान्हल विवाह- विधि-प्रसव वेदनाक बाहर। कविताक भीतर छंदहीन, वर्णहीन भाँगल ग्रंथि, उघरल सिलाइ, सूचीकर्म, मर्ममे झरैत बिन्दु आ एकटा मैल मोटिया तौनी जकाँ करैत अछि झँपबाक प्रयत्न हमर शरीरकेँ (भीतरसँ उगैत अस्थिरता) अव्यवहृत आ जखन भूख, व्यथा-विच्छेदक कथा। ठाढ़ होइत देखबा लेल यौनता परसैत जएत जखन, बनि सघन छत्तीसो व्यंजन तोहर भानसमे। मुदा हमर सक- मात्र कवितेक भीतरक संधान, द्व्यर्थबोध पूर्ण अछि जे, सूक्ष्म तर्क तकर, ताल-लयसँ गलल। प्राकृत-यकृतमे ठूसल, महायोनि-लिंगबोध लदने जाहि शरीरपर। यैह टा सीखल उपाय- तोहर सपना देखैत रहब अनुखन। आ दुनियाँक जगलापर सूतब तोहर संग- हमर हे कविता कालरात्रि करबेटा करत, दूर करह व्यथा-विच्छेद, भूख-भय। एखने झलकि उठल उखा-किरण तेँ, आकांक्षाक आशा सन। चक्रान्त- मे अकासमे हेलैत अक्षरक मिजाज-तिक्त लहराबैत आगिक प्रवाह, ओकरा बुझाओत कविक दोख नहि। दुनियाँक चक्रक अन्त। मात्राक हुनका लग अएबाक कोनो आस-! ने हुनक कविता सजि सकती शब्द बनि बरसबाक लेल पहिनहि जेकाँ। दमयंतीकेँ उपदेश- मे तीर लग लोकक पथरल (!) पड़ल रहब। - बिना अंगक- अशक्त लोक। घास पात तकरा सभकेँ धेने आ सेमारमे सन्हिआयल-ओझरायल तक्षक। बसातमे डोलब आ झोंझमे झोंकाह आगिक सुनगब। दमयन्ती, दमयन्ती -सुन्न बोन। फूल-पातक बीचमे टुअर सुरुज(!), टुघड़ैत आ सावधानीसँ चिरैत हिरण्यक पेट, तैंतीस टा मूह, कुरुप, गाछ सभक एम्हर जाऊक उपदेश। दमयन्ती, जंगलपार नहि होऊ। अन्हारमे ईशान दिशामे देहक दलाल प्रतीक्षारत। दमयन्ती, समय। नैऋत कोणमे नुकएल नलदेव। गाछ-बिरीछक जानब-कविताक आगमन कोना होइत अछि। जानलक इतिहास, मनुक्खक निष्ठुरता। कोना महावन निर्विचार, उजार, उच्छन्न भेल। पोसुआ (!) गाछ बिसरल भाषा। दमयन्तीकेँ चेतौनी-मनुष्यपर विश्वास नहि करू, कथा-कविता-अफवाहसँ बान्हत ओ। नहि पार करू बोन। आ से भेने सभ टा गाछ लिखत दमयन्तीकेँ लऽ कऽ पहिल कविता। प्रश्नावली- मे अचल अन्तिम राति यैह? गीतक अंतिम पाँति यैह? आ हमर कविता पढ़ि सकै छी? हमर अंतिम दिवस यैह? किछु करबाक आब विवशता (!) तन भ्रमित, कोन दरिद्र (तत्क्षण अनुभूति) की? सूति सहल रहल की? हमर आखरक भवितव्य? अशान्त भ्रमर मनक विहंगम, अजर प्रेमक धार सन। भीतर उगैत शब्द- मे शब्दक ध्वनि तेहन सन जेना

गुफामे बैसि केओ कानि रहल। पहाड़क शिखरक ठहाका। दबले पएर अएबाक आहटि, लिफाफ खोलबाक अबाज। पत्रक सभटा पाँतिसँ खदबद करैत शब्द। आ बहिनक बहैत नोर देरीसँ बूझब। वाक्यक भसियायब, शेष आकि समास नहि बनब, मोशकिलसँ बूझब टूटल रीढ़क हड्डीक मर्मर मुदा कठुआएल कविकेँ घिसिअबैत कंठ पकड़ि। कवितामे मुदा सुनल-गमल-बुझल वस्तुक आभाष बनि अएब। अपनहि भीतरसँ बहरएल मुदा एहि शब्द सभकेँ परिवर्तन करबाक अधिकार कविकेँ सेहो नहि। मात्र चुम्बन प्रेमक मैथुनक अधिकार। मुदा मन्थन ग्रन्थनक आ नहि कोनो घृणा क्रोधक अधिकार। आ तकरा सजा सकैत छी फूल-पातसँ, वेणी गूहि सकै छी रातुक पहर। सेउंथ चमका सकै छी पहिल सुरुजक लालीसँ, गराक सिङरहार, उष्म वृक्षक वल्कल शब्द शरीरपर घटित भेल तथ्यक सन्मान।–ई कविता कवि इलारानी सिंहकेँ कवि द्वारा समर्पित छन्हि। जानल-पहिचानल- मे शरीरकेँ पन्नाक-पन्ना पढ़ब आ जीवनक लागब जानल पहिचानल। तह आ गह्वरक गीत आ कवि द्वारीए कहब - हुनकर विश्वास हमर शब्दपर सँ हटब। आ मात्र स्पर्शक भाषा- एकटा ग्रामीण अनुभूति व्युत्पत्ति नहि दऽ सकैत अछि केओ, तकरा जीबै छी। समार्थपद- सपनाक नहि बाजब, बजैत तँ अहाँक सभटा नाम सुनबैत, कविक अनुमान। शब्द-ने धातुमे दुर्बलता ने उपसर्ग-प्रत्ययक अभाव। नहि तँ उचरि सकैत प्रतिशब्द (चलि गेल छथि अश्वखुरक संगे अश्रव्य दर्शनक भाषा अछि तकर) । आ ताहि लेल नव अमरकोष, नव कविता लिखए पड़त। अंकुर- चारि टा कविताक बीआक मोनमे उगब आ ताहिमे प्रेमक शब्दक लिखब। आ ओकरा तेहन प्रश्नमे ने ओझरा दियौक जकर उत्तर हमरो बूझल नहि अछि। सुनैत गप्प अपनहि एक्के संग चारि-चारि टा कविकेँ बाँटि देने शब्द सम्पदा। आ तैयो एहि चारूकेँ मिलाकऽ गाएब आ प्रेमक आंकुरक उगब। कत्ते बरसक बाद- मे ठाढ़ अहाँ सबहक अंगनापर एकटा कविता पढ़ऽ देब, नेनपनेमे भगा देने छलहुँ, छंदभंगक जुर्माना (!) छल। आ ताहिमे आन चीजक संग रहथि दुखी दाइ, छठिक नहि कोनो जोगार, सालक मात्र चारिटा मासक अन्न-भुटकल अनोन अल्हुआ त्राता। हमरा एगो कविता पढ़ऽ देब। किऐ नहि लिखै छी?- पूर्ण विराम। नहि आब एको पाँति अहाँक नाम। कथी ले ई जिद्द जे लिखबे करी प्रेम पत्र, अनकर बनायल अक्षरमे। चढ़ा कऽ रंग, अर्थ, वस्त्र, व्याकुलता। सुखाइत ठोर, तरबापर खेलाइत आंगुरक भाषा, अद्भुत अन्तर्देशी शब्द सभ आ तकर विन्यास। तखन पत्र नहि लिखबाक नहि देब उपराग। राजहंस- कविताक राजहंस, शरीरसँ अहाँक दूर चलि लैक दू डेग। उल्कापात आदिक द्वारे अवकास नहि भेटल अछि ओकरा। आ शरीरो तोहर बेबहार नहि भेल छौक। ओकरा कहबै एक बेर उड़बा लेल तोरा संग। जाधरि सहि सकत तोहर ओजन। नोरक बुन्न कविक उपमा नुकायल जे आँचर तर तरबापर कहबै राजहंसकेँ राखि दै जिज्ञासा युवती जे बनि गेलै। अन्हेर- चिड़ै कहलकन्हि, नहि बाजू किछुओ गोपनीय, नहि तँ अन्हेर भऽ जएत। काल्हि रातुक पहर कविता आयल छली आ हेरा गेली गद्यक भीड़मे। आ गोपनीय इतिहास पाप प्रणयसँ परिणय धरिक दूरी आ एहने सन। किऐक घबड़ाइत छी। क्यो नहि पूछत अहाँक नाम। नहि पूछत, चिड़ै बता की जनै छलैँ कवि दऽ जकर कबर एखनहि खोधल गेल अछि। एक अहीं छी- कएक बेर अहाँकेँ बजा कऽ देखने छी कवितामे। मुदा घुरियो कऽ नहि देखै छी अहाँ। मामूली प्रेमक दस्तावेज नहि जाहिमे लाभ-हानिक हिसाब रहत लिखल। ने साधारण निमंत्रण ने मामूली लोकक भोज्य वस्तु। अहाँकेँ कवितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनमुन उचरि सकै छल। एहन नहि जकरापर सनसनाइत कथा बनि सकत। मुदा अहाँ किछु बजिते ने छी। पुरातन प्रेम- माँगि रहल गीतक दाम। करैत प्रश्न-उत्तर (मुदा प्रकृतिक पाठशालामे कत्तऽ तकर गुंजाइश?) सीमित पुरातन प्रेम, पाठ्यपुस्तकसँ इतिहासक पाठ धरि। पुछैए प्रश्न-पुरनका शब्दक वाक्यमे प्रयोग। सभटा वाक्य सत्य अछि वा फूसि। भावार्थ कहू...। मुदा आब हम भेलहुँ चलाक।..पढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक व्यथा। नापि सकै छी शुद्ध धैवत् क पातिव्रत्य। हमर शोणित चीन्हि गेल अछि जीवन-गणितक बर्बरताकेँ ठीके। कम बजै छी, बजबो करै छी तँ भूतकाल दऽ नहि अनाहत-अनागत प्रेतकाल दिस। अकथित-अनूदित अनुभूति दिस बढ़ैत दर्शन हमर। मलिछाह कऽ देलक, केतारी खेतक अढ़, भुतिआएल माल-जाल आ पुरनका प्रेम। चाह- जे हमरा किछु चाही, आ हमरा चाहबे की करी। अहाँ अनन्त, विशेषणसँ हटिकऽ, हमर मोनक गप पूर करब तत्क्षण। आ जे हम चाहब तावत् प्रत्यय एहि प्रपंचक, हमर जिनगी सुप्तिङन्तम्, आ बान्हल पदबन्ध, घटल निघण्टु। दऽ सकै छी ह्रस्व, अति ह्रस्व, ओंकार ऋचा आकार। हमर छोट मोट आकांक्षा, भाषा भावना वेदना अनियमित, इमन-कल्याणक गमक नियंत्रित। हमर पतिक लेल-१- अहाँक घरक चारमे भेल भूर, कठोर सर्द वायु सेरा देलक माड़ आ अकासी नोर हमर अल्हुआकेँ झोरा देलक। भीजल ओछैन, अहाँ निस्बद्ध, ई भूर करत खतम अहाँकेँ। आ ताहि विनाशक गीतो तँ लिखू अपन हाथेँ। हमर पतिक लेल-२- ओ कहै छथि हमर स्थान हुनकर माथपर, मुदा नहि रहब हतकेशी शिखा संग। ह्रदयमे, नहि रहबाक श्वासयंत्र संगे। आँखिमे, नहि रहबाक चश्माक तरक नोरक संग। ठोढ़पर, नहि बनबाक पूजाक जप मोती। जीहपर (भानसक स्वाद द्वारे!), हँ ठीके, मुदा एहिसँ बहार होएबाक गर। पएरक जुत्ता तर, पृथ्वीपर, राजनीति बुझै छी। कोना जुत्ता पएर तरसँ चढ़ि अबै छै माथपर। से जहिया बुझि जएब तँ भेटि जएत प्रतिवादक पहिल सबक। हमर पतिक लेल-३- नहि पुछू व्याकरणक, लिपिक मादेँ। एहि कविताक! की करू आगिमे फेकि दी हम, नहि कहू ई सभ। निरक्षर छी तँ की। जादू-छड़ी छी घुमा सकैत। हमरापर जे कियो लिखत कविता आ हमर चित्तपर व्याकरण तँ कोन आश्चर्य? नहि कहब एकरा छद्माडंबर! हिसाब- पाँच टा शब्द हिरिया दै छै झौलीकेँ भोरमे बाउग करऽ जाइत काल। अनोन अल्हुआ संग खाइत एकटा गेल, आध टा खर्च भेल जखन भुसहु

बाबू बरखामे पीपरतर देह बचबैत ओकरा तीन लात दैत छथि। बचल डेढ़, आ डेढ़ टा बान्हल अछि राखल चमरटोलीमे चुहड़ाक ठेकापर उधारक माल पीबाक काल। आ शेष शब्द (सात गुना चौदह गो शब्द!) ओ राखैए हाटमे वस्तुजात किनबाक लेल। साँझ धरि बचलै नहि एकोटा शब्द हिरियाक करेजपर रखबा लेल आ तखन बिनु शब्दक हिरिया कोना खोलत करेज, रहि जाइत अछि ठाढ़ ओस तर, भरि राति, अङनेमे। आत्मकथन- अहाँकेँ अपन मोनक विषयमे किछु बताबी, कपालकुंडल। मुदा हड़ताली बोनिहार जन-नेताक लेल ठाढ़ कएल गेलि गितहारि..। मदारी पढ़ैत हमरे कविता आ हम फराक डाँड़मे रस्सी पहिरने। तखन कविताक अतिरिक्त किछु गप करी। मुदा ने कोनो रस, ने शब्द, ने प्रहार कोनो बचल। ने हमर कोनो एहन नामे, बड्ड गद्यमय जीवन! चलू गद्यक चहरदेबारीक बाहरक किछु प्रश्न- कोन पुरुषक वचनमे ओझराएल, काल-कारकमे ओझरल अरण्यमे। अव्ययक विनाश, विशेषणक उघारब परिधेय आ विशेष्यक सिंहासनसँ उतारब। उपसर्ग देखि मनक भाव बुझबाक सामर्थ्य बला अछि कियो? बान्हल पौरुषक जटाजालमे पाणिनी अहाँक पाणि। आ करताह चित्कार महेश्वर सूत्रमे जे हम अहाँसँ किछु बाजी। आ पतंजलि आ हेमचन्द्र द्वारा कविकेँ दबारब बुझाएब मध्यमपुरुष एकवचन। त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि। कपालकुंडले, मनसिसँ जतएसँ सभ निअम/ वर्ग/ लक्ष्य विहीन आ अहाँ मध्यमे मात्र एकवचन। अहीं सँ प्रेम, घृणा अहीं सँ- अहीं सँ प्रेम, घृणा (अहीं) सँ- अन्तिम सत्यक दिन, दिअ फाँसी तखन नहि सुनि सकब हमरा। हमरा गीरि लेब ताहिसँ पहिने फेकि देब अहाँकेँ। दीप सभ अहाँ लगसँ हटा देने छी। प्रेम करै छी, मुदा घृणा आर बेशी। आँखि, हाथ, दुनु ठोरक अन्त कएल। मुद तैयो अहाँक हँसी अनृत शब्द बनेलक बरफ हमर दर्शनकेँ, आ फेरसँ नस-नस चलब हुनकर। कनी टा जगह छोड़ि दियह- एहि कोनमे छोड़ि दिअ, आखरक ढेरक नीचाँ हमर अभिलाषा। हमरे लिखने छलियै, अहींकेँ लऽ कऽ करऽ लेल कविता! जगह चाही, कारण तीनटा पएर कविक, एककेँ पशुतासँ मढ़ने छी, दोसरकाक नोकमे अछि रोशनाइ सुखाएल आ तेसर नकली हृदय। जे चाही हमरे सन कवि तँ कनेक जगह छोड़ि दिअ। भय-१- अथर्व कवि। पोथी ने चोरि भऽ जाए। तखन भरिसक कविता तँ दोसराक नामे रहि जाए मुदा कवि छूटि जएत इतिहाससँ। हमरा पोसबा लेल सेहो खरचा, हमर चिता सजेबा लेल सेहो तरद्दुत (गहन मंत्रसँ सजौलहुँ), हमर कविता कुपितापर लिखए पड़ल हैत कत्ते टा इतिहास! भय-२- आबि गेल चलक ऐब, आब ककरहुँसँ डर नहि। कारण बुझल भऽ गेल हेलबाक आ अधमतम होएबाक कला! अश्रव्य शब्दसँ शशक उलूकक जागब आ अस्पृश्य बालाक स्पर्शसँ भूखक जागब? आ बुझि गेल छी विनष्ट होएबाक कला! आब अदन्त नहि रहलहुँ- दाँतक जोड़ा आबि गेल अछि! कठिन शब्द, शीतल स्तन, बृहत् वाक्य, कोमल रचना, विभीषण भाष्य आ बिखरल पाठ, अर्थ अनर्थक भावैँ विह्वल। नामकरण- चानकेँ चन्द्रमा, तरेगणकेँ निहारिका नाम दए रातुक अर्थे बदलि गेल! इजोतकेँ प्रत्युष आ सुरुजकेँ मार्तण्ड्य कहबासँ आँखिक चोन्हिआयब। जंगलकेँ उपवन आ घास-फूसकेँ दूर्वाक्षत कहने आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपनहि। अथक खटनीकेँ निरलस प्रयास आ बेजोड़ शब्दक जोड़ीकेँ समास कहने टूटल भाङल करेज सेराय गेल! जीवन मात्र जीवितक, आ मात्र हमर अहाँक जे केओ रूप बदलि कऽ जी रहल छी, प्रतिपदा- प्रतिपदाक बदलैत राशिफल आ गणितक भरोसे। नाम हमर दुष्यन्त आ अहाँक शकुन्तला भेने कण्व आ मृगशिशुक फिकिर लागल रहत। आजुक कवि, बड़ उच्छृंखल कवि- आन्हल बान्हल, छंद निश्छंदक डोरीमे, फंसल फँसल, घायल आ घसल, अलंकारक व्यंजनमे रहू दहू, पकैत ढकैत, जुनि टपू पहाड़ दहाड़। धैवत रहू गबैत। कवि। अपन पंक्ति भऽ, जाइक पार! कवियारक ड्योढ़ीमे। आबि रहल छथि कविः कवी कवयः- धुन आधुनिक। कविता केँ जे करता छंदित बंधित आ वंदित सोचक आलोचक। रहए देता कविताकेँ आधा कविता अर्द्ध-अकविता, अर्द्धनारीश्वर अर्ध-पुरुषपर। बड़ उच्छृंखल ई आजुक कविवर हतनारीश्वर! अहाँ नहि बजलहुँ किछु- नहि बजलहुँ आइ धरि, दबा कऽ रखने छी शब्द-संपदा जमीन तर। मुदा जमीनक तर तँ गाड़ल जाइछ मुर्दा। मुदा हम तँ धर्मोन्माद हिन्दू प्रेमी छी, मरियो कऽ जमीन तर नहि जएब, जरब झरकब आ आगिमे भणब अपन गीत। नह केश हैत विलीन, कोन अनुशासन शास्त्र सिखेने अछि अनुभूतिपर लगाम लगायब- देह रहू झँपने अहंकार अलंकार तर, लगा दियौ ताला गरापर जे कोनो ध्वनि नहि बजा जाइक। मुदा हम सूर्यवंशी राजपूत, हमर अस्त्र अछि शब्द अर्थ स्वर लिपि। तर्कमे हारि जँ जाइ तँ करब आत्मसमर्पण! मुदा हारी वा जीती, बाजब अवश्ये। आलोकक यंत्र बेकल पड़ल, लाल-हरियर-पीयरक संकेत मूक। मोनमे हुलकी दऽ देखि रहल छी अहाँक योजना, वस्त्र-अस्त्र हरबाक, अर्द्धसत्यसँ अनृत बजएबाक, पाँतिमे बैसि अमृत चोरएबाक; द्योतक दावमे चढ़ल जिनगी शव शब्द! मुदा एखनो भरोस जे अहाँ बाजब किछु नहि तँ गाबिये उठब हमरे कोनो गीत। अपन कविता सुनाउ!- अहाँ अपन पुरातन प्रेमी माने हमरा लऽ गेलहुँ ओहि नवका मकानमे पहाड़क शिखरपर! अहाँक बाट पूछब मेघसँ ओहि ठामक, आ ओकर वंकिम मुस्कान, अहाँ सङे हमरा देखि! मुदा ने मेघक, ने तरेगणक, ने राशि-लग्न-अकासी ज्यामिति आ ने भाग्यक गणितक संक्रमणक कोनो गलती, जे सभ मिलि कएने रहए विच्छेदक संक्रमण! अंतिम मिलन जे भेल छल चानक गह्वरमे। ने पाथरक दोष आ ने अन्हारक भूगोलक। सूर्य आ पृथ्वीक संकेत, तरेगणक हस्ताक्षर विच्छेदक भएकेँ मिलि कऽ कएलक चक्रान्त। जाहिसँ हम सभ नहि बाजि सकी कोनो स्मरणीय पाँति-शब्द सभ!-दुनू गोटे। गरा दबबैत निःशब्दता। मुदा दोष ने निःशब्दताक आ ने देबारपर लिख ल शिलालेखक, जकर विजातीय अक्षर सभ हम पढ़ऽ सिखनहि नहि छलहुँ। गह्वर भरि गेल अहाँक कवितासँ, ऊपर उठैत कविताक पाँती सभ जकर शिखरपर चढ़बाक असफल प्रयास। ओहि पाँती

सभकेँ दोषै नहि छी। विश्वासघातपर अहीं टाक अधिकार नहि। आब सीखि गेल छी अहींक भाषा, कामनासँ धधकैत पहाड़पर चढ़बा लेल, पढ़ै लेल सभटा पाँति, कविता आ शिलालेख! हम सीखि गेल छी अहाँक हस्ताक्षर पढ़ब। मुदा एहि शिलालेखपर अहाँ देखा रहल छी पजेबा, काठ, बालु आ सीमेंटक राशि, दरबज्जा, कब्जा आ फर्श सभ! मुदा हम सुनऽ चाहै छी कैक टा कविता, अहाँसँ अहाँक भाषामे, जे एखन हमरहु भाषा अछि। जीवनी- छावनीक द्रोह, तांतिया टोपे, विक्टोरिया, सरकारी कवि रवीन्द्रनाथक जन्म आ विधवा विवाहक चर्च? रंगमंचक पहिल पृष्ठ, हेराशिम लेबेडफपर एकटा पूरा पन्ना कीड़ा चाटि लेलक? मुदा आजुक रंगमंचक पुरोधाक लेल जे ओ पृष्ठ नहियो भेटै तँ हर्ज नहि। ओकर दोसर दिसुका पृष्ठपर माइकल मधुसूदनपर एकटा लेख आ आधुनिक कविताक श्रीगणेशपर सेहो, मुदा १९९० ई. क बादक अनपढ़ कवि कोना जनबै गऽ! आ तैँ ने पटि जाइ छी हमरा सन बहुरुपियासँ। आ १९५१ ई. एहि शताब्दीक सरकारी कविक जन्म, नेनपनक दलिद्दर दशा, अवहेलना शिशुकालक, विवेकानन्दक फूसि-कथा आ स्तोकवाणी? हमर कथासँ पहिने गिरीश घोष, सर आशुतोष आ नेताजीक पलायन आ महात्माक कारावास अएबाक चाही? फूसि। कारण इतिहास शुरू होइछ गोडसेक आविर्भाव आ हमर जन्मक बादे? आ तखन टूटल भाङल भूगोल, हड़पक गणित आ शास्त्रीय वर्णभेद, “वेदणाक” मूर्धा। ह्निजय ठीक करू? –अहाँ हमर सरकारी जीवनीकार! अहाँक लेल अध्यायक अध्याय प्रारम्भ होएबाक चाही १९५१ ई. सँ। हमर विमाता कुल पितामही। मनगढ़ंत कथा, दादी-माँ दऽ, जे भऽ जाइ छली सोनबरसाक राजकन्या। कोना कविता अएलीह आ हमर जीवनमे आयलि रमणीक मार्देँ? त्यागि रहल छी, ताकू आने ककरहु। अजन्मा वा अज्ञात् अनामा क्यो कवि। तावत् कविते हमर ध्यान रखती, बतओतीह जीवन-कथा हमर! मध्यमपुरुष एकवचन- अहाँकेँ छोड़ि अनके दऽ सोची -एहन आदेश! मुदा गाछ-बृच्छ, फूल पाथरक वंचकता, विश्वासघाती व्याकरण धरि जाल पसारने! मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी! राजनीति, देशक ऋणक पहाड़, भ्रष्ट नियुक्ति.. मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा..लिखू नव्यन्याय-अन्याय, लिखू वैशेषिकक ढेरी, बिसरू धन-व्याकरण, मध्यमपुरुष एकवचन अहीं तँ छी मुदा..बेकार शृंगार रस तत्त्व ध्वनिक, मात्र क्षणिक। आयु लऽ जटायु धरि, बचबै लेल अनकर सीता, गीता। चलति चलतः चलंती कविता ऋता वाग्धारा सन व्याकरण मध्यमपुरुष एकवचन अहाँ तँ छी मुदा... कोना किछु सोचि सकै छी अहाँकेँ छोड़ि?

कविता: कविता लोक कम पढ़ैत अछि। संस्कृतसन भाषाक प्रचार-प्रसार लेल कएल जा रहल प्रयास, सम्भाषण-शिविरमे सरल संस्कृतक प्रयोग होइत अछि। कथा-उपन्यासक आधुनिक भाषा सभसँ संस्कृतमे अनुवाद होइत अछि मुदा कविता ओहि प्रक्रियामे बारल रहैत अछि। कारण कविता कियो नहि पढ़ैत अछि आ जाहि भाषा लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता भऽ गेल अछि, ताहि भाषामे कविताक अनुवाद ऊर्जाक अनर्गल प्रयोग मानल जाइत अछि। मैथिलीमे स्थिति एहन सन भऽ गेल अछि, जे गाम आइ खतम भऽ जाए तँ एहि भाषाक बाजएबलाक संख्या बड्ड न्यून भऽ जएत। लोक सेमीनार आ बैसकीमे मात्र मैथिलीमे बजताह। मैथिली-उच्चारण लेल शिविर लगेबाक आवश्यकता तँ अनुभूत भइए रहल अछि। तँ एहि स्थितिमे मैथिलीमे कविता लिखबाक की आवश्यकता आ औचित्य? समयाभावमे कविता लिखै छी, एहि गपपर जोर देलासँ ई स्थिति आर भयावह भऽ सोझाँ अबैत अछि। एहना स्थितिमे आस-पड़ोसक घटनाक्रम, व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा, आक्षेप आ यात्रा-विवरणी यैह मैथिली कविताक विषय-वस्तु बनि गेल अछि। मुदा एहि सभ लेल गद्यक प्रयोग किएक नहि? कथाक नाट्य-रूपान्तरण रंगमंच लेल कएल जाइत अछि मुदा गद्यक कवितामे रूपान्तरण कोन उद्देश्यसँ। समयाभावमे लिखल जा रहल एहि तरहक कविता सभक पाठक छथि गोलौसी केनिहार समीक्षक लोकनि आ स्वयं आमुखक माध्यमसँ अपन कविताक नीक समीक्षा केनिहार गद्यसँ पद्यमे रूपान्तरकार महाकवि लोकनि! पद्य सर्जनाक मोल के बूझत! व्यक्तिगत लौकिक अनुभव जे गहींर धरि नहि उतरत तँ से तुकान्त रहला उपरान्तो उत्कृष्ट कविता नहि बनि सकत। पारलौकिक चिन्तन कतबो अमूर्त रहत आ जे ओ लौकिकसँ नहि मिलत तँ ओ सेहो अतुकान्त वा गोलौसी आ वादक सोंगरक अछैतहुँ सिहरा नहि सकत। मनुक्खक आवश्यक अछि भोजन, वस्त्र आ आवास। आ तकर बाद पारलौकिक चिन्तन। जखन बुद्ध ई पु छै छथि जे ई सभ उत्सवमे भाग लेनिहार सभ सेहो मृत्युक अवश्यंभाविताकेँ जनै छथि? आ से जे जनै छथि तखन कोना उत्सवमे भाग लऽ रहल छथि। से आधुनिक मैथिली कवि जखन अपन भाषा-संस्कृतिक आ आर्थिक आधारक आधार अपना पएरसँ नीचाँसँ विलुप्त देखै छथि आ तखनहु आँखि मूनि कऽ ओहि सत्यताकेँ नहि मानैत छथि, तखन जे देश-विदेशक घटनाक्रमक वाद कवितामे घोसियाबए चाहै छथि, देशज दलित समाज लेल जे ओ उपकरि कऽ लिखऽ चाहै छथि, उपकार करऽ चाहै छथि, तँ ताहिमे धार नहि आबि पबै अछि। मुदा जखन राजदेव मंडल कविता लिखै छथि-

....

टप-टप चुबैत खूनक बून सँ

धरती भऽ रहल स्नात

पूछि रहल अछि चिड़ै

अपना मन सँ ई बात

आबऽ बाला ई कारी आ भारी राति

कि नहि बाँचत हमर जाति...?

तँ से हमरा सभकेँ सिहरा दैत अछि। कविक कवित्वक जाति, ओहि चिड़ैक जाति आकि..। कोन गोलौसी आ आत्ममुग्ध आमुखक दरकार छै एहि कविताकेँ। कोन गोलौसीक आ पंथक सोंगर चाही एहि सम्वेदनाकेँ। तँ कविताकेँ उत्कृष्टता चाही। भाषा-संस्कृतिक आधार चाही। ओकरा खाली आयातित विषय-वस्तु नहि चाही, जे ओकरापर उपकार करबाक दृष्टिएँ आनल गेल छै। ओकरा आयातित सम्वेदना सेहो नहि चाही जे ओकर पएरक नीचासँ विलुप्त भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारकेँ तकबाक उपरझपकी उपकृत प्रयास मात्र होअए। नीक कविता कोनो विषयपर लिखल जा सकैत अछि। बुद्धक मानवक भविष्यक चिन्ताकेँ लऽ कए, असञ्जाति मनकेँ सम्बल देबा लेल सेहो, नहि तँ लोक प्रवचनमे ढ़ोंगी बाबा लेल जाइते रहताह। समाजक भाषा-संस्कृति आ आर्थिक आधारक लेल सेहो, नहि तँ मैथिली लेल शिविर लगाबए पड़त। बिम्बक संप्रेषणीयता सेहो आवश्यक, नहि तँ कवि लेल पहिनेसँ वातावरण बनाबए पड़त आ हुनकर कविताक लेल मंचक ओरिआओन करए पड़त, हुनकर शब्दावली आ वादक लेल शिविर लगा कऽ प्रशिक्षण देल जएबाक आवश्यकता अनुभूत कएल जएत आ से कवि लोकनि कइयो रहल छथि! मिथिलाक भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता आ राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म आ दर्शन सेहो साहित्यमे अएबाक चाही। आ से नहि भेने साहित्य एकभगाह भऽ जएत, ओलड़ि जएत, फ्रेम लगा कऽ टँगबा जोगड़ भऽ जएत। कविता रचब विवशता अछि, साहित्यिक। जहिया मिथिलाक लोककेँ मैथिली भाषा सिखेबा लेल शिविर लगाओल जएबाक आवश्यकता अनुभूत होएत, तहिया कविताक अस्तित्वपर प्रश्न सेहो ठाढ़ कएल जा सकत। आ से दिन नहि आबए ताहि लेल सेहो कविकेँ सतर्क रहए पड़तन्हि। आ ओतए त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि-नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन-अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, मयि सँ फराक रूपमे सोझाँ अबैत अछि।

ऐ पोथीक अंग्रेजी अनुवाद Second Person Singular नामसँ कवि द्वारा स्वयं रिजियो योहानन राजक संग मिलि कऽ कएल गेल अछि। मैथिली पोथीमे कवि आमुख नै लिखने छथि मुदा एकर अंग्रेजी अनुवादमे आमुख लिखने छथि जकर मैथिली अनुवाद नीचाँ देल जा रहल अछि। मैथिली आ अंग्रेजी दुनू वर्सनमे कविता सभक बीचमे चित्र-रेखा देल गेल अछि, मुदा दुनू वर्सनक चित्ररेखा सभ अलग-अलग अछि (किछु छोड़ि कऽ), आ किछु चित्रक स्थान बदलल अछि, जखन कि चित्रकार एक्के (संजय भट्टाचार्य) छथि। संगे शुचिता-सुचरितासु क अंग्रेजी अनुवाद नै देल गेल अछि। कविक नामसँ अंग्रेजी अनुवादमे "नचिकेता" उपनाम हटा लेल गेल अछि।

शुरू करैत

I

जखन-कखनो हम भारत सन बहुलवादी वातावरणमे बाजै वा लिखै छी, श्रोतावर्गमे सँ कियो बुझऽ चाहै छथि: के बाजि रहल छथि, कृपाकऽ बुझाउ।

जखन अहाँ बहुभाषिक वातावरणमे कएक तरहक पात्र बनै छी, तखन एकटा पारिभाषिक लक्ष्मण रेखा खेचनाइ आवश्यक भऽ जाइए। मुदा हमर वैय्याकरणिक सहज वृत्ति हमर भीतरक कविकेँ कहियोकाल पराजित सेहो कऽ दैए। हमरा बुझल अछि जे जँ मौका भेटए, तँ ऐ पातर पोथीक पाठक वैय्याकरणक संग छोड़ऽ चाहता। हमरा अपन बाबा संग वाकयुद्ध मोन पड़ैए, जे की ठीक छै आ की नै, आ शब्दसँ नीक काज केना लेल जाए, पर होइ छल। खौँझा कऽ ओ कहै छला, "कखनो वैय्याकरणक मार्गमे नै आउ!" जखन कखनो हम एकर कारण पु छै छलियन्हि ओ विशुद्ध मैथिलीमे एकटा पुरान मोहाबरा कहै छला जकर अर्थ अछि:

"वैय्याकरणसँ भजार लगाउ आ अहाँक सभटा अक्षर गलतीक लाल रङसँ रङि जाएत, ओकरासँ झगड़ा करू आ अहाँ क्रियाभावमे गलती करब, ओकरासँ बहस करू आ अहाँ सभटा देखबैबला विशेषण बिसरि जाएब; वैय्याकरणकेँ मारू आ प्रेत कमजोर क्रियाक संग झूलत, ओकरा गारू आ ओइपर पुनरुक्तिक गाछ जनमत। अहाँ ओकरा दबा नै सकै छी, से अहाँक जँ एकटा वैय्याकरण आ साँपसँ भेँट हुअए, वैय्याकरणकेँ पहिने मारू। कोनो हालमे ओकरा मारू!"

व्याकरण आ भाषा विज्ञानकेँ पेशा बनेनाइक सम्बन्धमे जे किछु कहल जाए, ऐमे संदेह नै अछि जे सुस्पष्ट विचार जेना ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिना संदर्भक स्पष्ट नै होइए, पहिने बला शब्द जे अपन अर्थ बादबलाकेँ दैए आ कोनो अक्षरसँ समाप्त होइबला शब्द सभ (पुरुष-वचन-लिङ) अखनो अनुवादकक/ द्वैभाषिकक लेल आवश्यक अछि। अखनो स्थान आ वाकशैली आवश्यक अछि (होमी भाभा- द लोकेशन ऑफ कल्चर, न्यूयॉर्क, रौटलेज, १९९४), कारण ककरो वाक समृद्धि- वा खगता ओकर स्थान निर्धारित करैए। कछेरपर स्थित मैथिली सन भाषाक लेखकसँ बेशी नीक जकाँ के ई बुझि सकैए जे, जे भाषा कोनो कालमे, तेरहम शताब्दी सँ प्रारम्भ होइत, विद्यापति, लोचनदास, चन्दा झाक अविस्मरणीय गीत आ उमापति आ ३० टा आन नाटककारक अत्यधिक लोकप्रिय नाटक देखलक, मुदा अखुनका कालमे अधिक कवि आ उपन्यास लेखक नै देखलक जे दोसर भाषायी आ सांस्कृतिक स्थलपर पाठक बना सकए। ओना नागार्जुन (यात्री) आ राजकमल चौधरी सन कवि आ हरिमोहन झा आ लिली रे दोसर भारतीय भाषामे अनूदित भेल छथि मुदा अन्तर्राष्ट्रिय पाठक धरि पहुँचबाक बड्ड क्षीण प्रयास भेल अछि।

ओना ई सत्य अछि जे पाश्चात्य उत्तर आधुनिकता सन फैशनेबल सिद्धांत छोट रूपमे उपस्थित रहल अछि, आदर्शक विखण्डन आ संकेतक विजातीयता (तकर परिणाम भेल सामाजिक प्रक्रियाक विखण्डन), ई सभ मैथिली साहित्यमे सेहो आन आधुनिक भारतीय भाषा जकाँ आएल अछि। ई सभ धारा एहन व्याख्या सभक जन्म देने अछि जे सभटा वास्तविक आ आभाषी सामाजिक समस्याक अपूर्ण वा सापेक्ष व्याख्या करैए, सम्पूर्ण व्याख्या नै। आ, निश्चये, ई सभ हमरा सभकेँ ओतऽ लऽ जाइए, जतऽ स्थान आ लौकिकता सभटा, संदर्भसँ रहित भऽ जाइए। मुदा आइयो जखन हम गतिमान क्रिया आ एतऽ सँ ओतऽ धरिक उत्तर स्थानिक गपक चर्च करै छी, तखन स्थान आ ओ शब्द (वा फ्रेज) जकर अर्थ बिना संदर्भक अर्थ स्पष्ट नै होइए, संदर्भ सभ लेल, लेखकक रूपमे, महत्वपूर्ण अछि।

हमर कविता जे कहत, ओइमे पुरुष क भेद केन्द्रमे रहत, मुदा ओइसँ हमर लिङ आ वचन क प्रति भाव कम नै होइए, जे एतुक्का बहुत रास कवितासँ सिद्ध होइए, कारण ई सभ संकल्पना अनुवाद आ व्याख्या लेल आ दोसरक संकल्पना लेल अमूल्य अछि। ई दोसर गप अछि जे हमरा सभमे सँ किछु ई अनुभव कऽ सकै छी जे ढेर रास मूलभूत पारिभाषिक शब्दावली संदर्भहीन भऽ गेल अछि, ई अपवाद रहत जे कवि आ ओकर संभाषण करैबला लेल, “मध्यमपुरुष एकवचन” सदा एकटा वास्तविक दोसर रहत।

एतऽ हमरा लगैए जे हम आ ओ केर बहस/ वाद मे हम अपन पक्ष/ स्थान राखी, अपन पाठकक लेल, जइसँ ओ बहुसांस्कृतिक लेखकक पृष्ठभूमि बूझि सकथि। हम कविता आ नाटक मूल रूपमे मैथिली- जे उत्तर बिहार आ नेपालक तराइमे बाजल जाइए- मे लिखै छी आ बांग्लामे सेहो हम साहित्यिक निबन्ध आ गम्भीर कविता आ गीत लिखै छी। हिन्दीमे सेहो हम निबन्ध लिखने छी। हमर अंग्रेजीमे लेखन मुखतः साहित्य आ साहित्यिक अनुवादपर अछि। हम ढेर भाषामे छी आ से हमर पृष्ठभूमिक कारण अछि, हमर माँ मेमनसिंह, बांग्लादेशसँ छथि आ पत्नी मानक कोलकाता बांग्ला भाषी छथि, ओना हमर पिता मैथिलीक देशज भाषा-भाषी छलथि आ मैथिलीक लेखक-सम्पादक छलथि। हमर माता-पिता दुनू गोटे विश्वविद्यालयमे हिन्दी साहित्य पढ़बै छलथि, आ से हमरा सभकेँ हिन्दी आ मैथिली साहित्यक कतेको पैघ लेखकसँ घरपर भेँट करबाक अवसर भेटल। ऐ सभक संग हमर स्कूल स्तर धरि शिक्षाक माध्यम बांग्ला छल, आ कॉलेज आ विश्वविद्यालयमे ई मात्र अंग्रेजी छल। ई बहुभाषिक पृष्ठभूमि हमर साहित्यिक प्रवृत्तिकेँ पारिभाषित केलक। लेखकक रूपमे मैथिलीमे हमर किछु कविताक पोथी आ एगारहटा नाटक प्रकाशित अछि। हमर ई संग्रह मैथिलीमे २००५ मे प्रकाशित कविता संग्रह “मध्यमपुरुष एकवचन” क अनुवाद छी।

बांग्लामे हमर एकटा कविता संग्रह, एकटा बाल-पद्यक पोथी आ सम्पादित साहित्यिक निबन्ध सभक संग्रह प्रकाशित अछि। साहित्यिक अनुवादकक रूपमे हमरा लेल सभसँ संतोषप्रद काज रहल अछि अनुकृति (१९९९)- जे मैथिलीमे १९५० सँ लिखल उत्कृष्ट कविता सभक बांग्लामे अनुवाद अछि; आ १९९७ मे प्रकाशित रवीन्द्रनाथक बाल साहित्य। हमर मैथिलीसँ-बांग्ला-अंग्रेजी आ रस्तामे किछु पगक हिन्दीक यात्रा हमर लेखनमे विषय-वस्तु आ शिल्पक अभिवृद्धि केने अछि। हम विभिन्न भाषामे विभिन्न विषयपर लिखै छी, आ कविताकेँ छोड़ि ओ आन विधामे सेहो भिन्न अछि, मैथिलीमे नाटक, बांग्लामे साहित्यिक आलोचना, अंग्रेजीमे अनुवादपर निबन्ध आ हिन्दीमे भाषाक समाजशास्त्रपर लिखने छी।

II

से हम मोटामोटी तीनटा मूलभूत काज करै छी, आ अहिना हम अपनाकेँ ताकऽ चाहब: एकटा अमहत्वपूर्ण लेखक, कवितासँ निबन्ध धरि लिखैत, एकटा अनुवादक (ओतेक नीक नै, नै जानि आन कोना राखै छथि)- कएकटा भाषासँ आ कएकटा भाषामे अबैत जाइत रहनिहार, मुदा मुख्य रूपेँ अंग्रेजी, मैथिली, बांग्ला आ हिन्दी- अही क्रममे, आ एकटा भाषा विज्ञानी जे भाषाक संरचनात्मक आ सामाजिक दुनू क्षेत्रमे विशेषज्ञता प्राप्त केने अछि। ई ओना पाठक, शिक्षक आ नियोजकक रोल अछि।

लेखकक रूपमे हमर प्रारम्भिक काज, लगैए अपन व्यक्तित्वकेँ झाँपब रहल अछि। हम जखन कहियो ऐमे सँ कोनो भाषामे लिखै छी तँ हम ओइ सभ चिन्हासीकेँ मेटेबाक प्रयास करै छी जे हमर पेशा वा बहुलतारूपी- हमर उमेर वा शारीरिक निशान सेहो जे हमर खाढ़ीक रुचिक परिचए दिअए- उपस्थितिकेँ देखबैत हुअए। ई दोसर गप जे किछु चेन्हासी अखनो देखाइत हुअए वा ताकल जा सकैत हुअए। तेँ ई आश्चर्यक गप नै जे हम एकटा उपनाम मैथिलीमे राखलौं। हम ओहेन लेखक सभकेँ देखने छी आ जनै छी जे अपनाकेँ कियो आर वा किछु आर देखबै छथि, आ हम विश्वस्त छी जे हमरा सभमे सभक लग तकर कोनो ने कोनो कथा, लेखक सभक विषयमे, अछि जिनकर खेल स्वयंकेँ दोसर केनाइ अछि। एकरा कएक ढंगसँ कएल जाइए। किछु लोक कलछप्पन द्वारा अपन स्थान पारिभाषित करै छथि। किछु गोटे फ्रेमक निधारणमे काँट-छाँट करै छथि, जइमे टेक्स्ट फिट कएल जाइत अछि। किछु चक्षु-युगलकेँ नुकेबाक प्रयास करै छथि (समर्थकक वा कोनो कविता वा वृत्तांतक लोकप्रसिद्ध “हम”), जकर माध्यमसँ पाठकसँ घटना सभक अनावरणकेँ देखबाक अनुरोध कएल जाइत अछि। दोसर तरहक लोक सार्वजनिक बयान दै छथि, जकर माध्यमसँ समकालीन वा पुरानकेँ कूड़ा-करकट लेखक कहल जाइत अछि, वा सभ आलोचक आ शैक्षिक आलोचनाक हँसी उड़बै छथि। हम एकरा एकटा खेल बुझै छी जे सभ कियो खेलाइए। किछु गोटे ऐ खेलकेँ सोझाँ-सोझी खेलाइ छथि तँ किछु गोटे एकरा कएक विधियेँ नुका कऽ खेलाइ छथि। लेखकक रूपमे अपना लेल हमर जवाब अपन “हम” केँ पृष्ठभूमिमे ढकेलनाइ रहल अछि, आ मनोभाव, जोड़ आ तकर घर्षनाक सामाजिक भाष्यकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखब रहल अछि। दोसर तरहेँ बुझू जे ई अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्तकेँ प्रथम पुरुष एकवचनसँ तृतीय पुरुष एकवचन केनाइ अछि, “तोरा” सँ गप करबा लेल- हमर मध्यम पुरुष एकवचन।

अनुवादकक रूपमे, हम स्वयंकेँ केन्द्रबिन्दुमे राखऽ चाहै छी, आ सभसँ आगाँ सीट लेबा लेल प्रयास करै छी आ लै छी। ओना पाठ्यपुस्तक सन अनुवाद हमरा सभकेँ अपन गौण उपस्थिति रखनाइ सिखबैए, जइसँ रचनाक मूल लेखककेँ अपना द्वारा कएल प्रक्रियासँ रेखांकित कएल जा सकए, ऐ क्रियाकलापक प्रयोक्ताक रूपमे हमर व्यवहार बराबड़ीबला रहैए- स्वतंत्रता लेनाइ जँ तकर पलखति छै, जतऽ आवश्यक होइ, कोन सभकेँ सीनाइ वा मरम्मति केनाइ, आ नीकसँ चुनल वस्त्रक नीचाँ चिप्पी लगेनाइ जतऽ ई छोड़नाइ हमरासँ सम्भव नै होइए। ऐ क्रियाकलापमे लागल लोक, जे बहुत ज्ञानी छथि, सदिखन हमरा चेतौनी दैत रहला जे हम मात्र कोनो पाठ केर, बेशीसँ बेशी, प्राप्तकर्ता छी, पाठ केर लेखकक कथोपकथन करैबला। लेखक, अपन स्पष्ट वा सचर पेरैय्या सन प्रयाससँ ओकर स्वरकेँ दबबैत, हमरा कहल गेल, केँ ओकर प्रथम पुरुषक भव्य उपस्थिति देखेबाक अवसर देबाक चाही, जे सभ शब्दपर अंकित अछि, जे ओकर पाठ केर चरित्र बाजैए वा सभटा मोड़ जे पाठ लैए।

ई सत्य अछि जे लेखक अपन पाठकसँ अपन पाठ द्वारा कथोपकथन करैए, ओइसँ एक प्रकारक प्रथम आ द्वितीय पुरुषक युग्मीय सम्बन्ध बनैए। मुदा जखन हम अनुवादक क्षेत्रमे अपनाकेँ भिजेलौं, हमरा कहल गेल जे लेखक वा ओकर उद्देश्यकेँ टोकबाक हमरा कोनो अधिकार नै, कारण हम मात्र एकटा पाठक छी। दुर्भाग्यसँ, पाठक रूपेँ सेहो हम सभ लेखक द्वारा लेल निर्णयसँ आहत होइ छी, पाठ केर भीतर जा कऽ जखन कोनो पात्र हमर अपन भऽ जाइए, तखन ओकर अभाग्यसँ हम अधीर भऽ जाइ छी। तेँ ई आश्चर्यजनक नै अछि जे पाठक लेखकक ऐ निर्णय लेल ओकर समय-स्थानक ज्ञान, पढ़ाइ, पृष्ठभूमि आ विद्वतापर प्रश्न करत। रचनाक क्षणमे, जखन पाठक अपन निष्क्रिय भूमिका छोड़ि अनुवादक-दुभाषियाक रूपमे सक्रिय रचनात्मक भूमिकाक निर्वहण करैए, हम अनुवादक द्वारा निष्क्रिय गुंजायमान-बोर्ड नै रहबाक, असलमे रिपोर्ट भेल घटनासँ बेशी, सुस्पष्ट गुंजाइश देखै छी। ई, हमरा लगैए, ई एकटा शान्त क्रान्ति छिऐ, जे कएकटा अनुवादक पैघ काजमे भेल अछि, जेना-जेना समए बीति रहल अछि। यएह छी जकरा हम द्वितीय पुरुषसँ पहिल पुरुषमे परिवर्तित होइत देखऽ चाहब।

भाषा विज्ञानीक रूपमे, हम किछु भाषायी स्थितिमे काज केलौं जकरा विषयमे काजसँ पूर्व हमरा बेशी नै बुझल छल (लदाखी, अदी वा तेलुगु सेहो), मुदा हमर बेशी काज ओइ भाषा सभपर अछि जकरा विषयमे हमरा बेशी जानकारी अछि, आ किछु परियोजनामे हमर देशज भाषा-भाषीक सहज ज्ञान ई निर्णय लेबामे मुख्य भूमिका निर्वहण करैए जे कोन उपलब्ध समाधान सर्वश्रेष्ठ रहत। जखन कखनो हम बांग्ला, मैथिली आ हिन्दीक, तीनू भाषा जकरा हम प्राकृतिक रूपेँ प्राप्त केलौं, काज केलौं, सभसँ पैघ चुनौती जे भाषा विज्ञानक शास्त्रीय स्कूल कहलक, से छल जे हम पहिने ई जे हम ऐ भाषा सभकेँ बुझै छी, से बिसरि जाइ। ई चुनौती छल जे हमरा अपन व्यक्तिगत सापेक्षता छोड़बाक चाही, आ वस्तुनिष्ठ रूपेँ आ व्याकुलतासँ अपन भाषा दिस देखबाक चाही, से हमरा कहल गेल। भाषा विज्ञानी रूपमे दोसर बनब ऐ द्वारे आवश्यक बुझल गेल कारण कथनक बाद कथन, जे बिना मतलबक भऽ सकैए, किछु परिस्थितिमे सम्भावित कथन सभ भऽ सकैए। ओना ई बिनु अर्थक लगैए, हमरा सभकेँ प्राकृतिक भाषा लेल प्रशिक्षित कएल जाइ छल, हम एकटा आश्चर्यजनक निर्णय देखै छी जतऽ सत्य जीतैए आ असत्य हारैए। जँ हमर भाषायी सहज ज्ञान दोसर सांस्कृतिक स्थलसँ कएकटा कथनकेँ मथित करैए, ऐ संरचनात्मक वा कवित्वक फ्रेमक वा रचनाक परिप्रेक्ष्यमे, लोक तृतीय पुरुष सँ प्रथम पुरुषमे बदलैए।

से, हम जइ कोनो रोलमे अबै छी, हमर अपन व्यक्तिगत प्रत्यान्त किछु परिवर्तन द्वारा बदलैए। हमरा बुझल अछि आ विश्वास अछि जे जखन हम अपनो कविताक अनुवाद करै छी, अनुवाद कर्म मूल भाषा आ पाठ केर हिंसाकेँ जारी रखैए, से सभटा क्रिया व्याकरणक विरुद्ध विद्रोह बुझाइए, तैयो सभटा परिणामात्मक पाठ दोसर व्याकरणक निअम सभक परिणाम भऽ जाइए। एरिक चेफिट्ज (१९९७) द पोएटिक्स ऑफ इमपीरिअलिज्म (फिलाडेल्फिया: यूनिवर्सिटी ऑफ पेनसिलवेनिया प्रेस) मे तर्क करै छथि, निअमानुसार अनुवाद ओइ मूल पाठ पर हिंसापूर्ण शल्यचिकित्सा करैए जकरा परिवर्तित कएल जाइए, कारण ओ प्रयास मूल पाठमे अंतर्निहित विचारकेँ फेरसँ महत्वपूर्ण रूपमे कहैए जे पूरापूरी बराबर नै अछि। से जखन एकटा संस्कृति दोसराकेँ अनूदित करैए, ई मूलकेँ बदलि दैए।

कोन सीमा धरि ई परिवर्तन ऐ पोथीक पाठककेँ नीक लगतन्हि हमरा नै बुझल अछि। भाषा सभक बीच पुलक काज कऽ रहल संगठन सभमे कथा मुख्य संस्था अछि, ओकरा ई सभ गप निश्चित रूपेँ बुझल छै। ई हमरा पुनः आश्वस्त करैए, जखन हम ई मोन पाड़ै छी जे हमर कलाकार मित्र संजय भट्टाचार्य, जे ऐ कविता सभकेँ मूल आ अनूदित दुनू रूपमे पढ़लन्हि, कएक सप्ताह अपन स्टूडियोमे लगा कऽ आकर्षक चित्र सभ बनेलन्हि, जे ऐ पोथीकेँ मोन राखैबला दृश्य अनुभव सेहो बनबैए।

उदय नारायण सिंह अगस्त २००६

मध्यमपुरुष एकवचन नाम आब विश्व साहित्यमे सेहो लोकप्रिय भेल अछि। पहिने Thou (Second Person Singular) आ You (Second Person Plural) होइ छल मुदा आब You मध्यमपुरुष एकवचन आ बहुवचन दुनू अछि।

सयेद कसुआ एकटा अरब-इजराइली उपन्यासकार छथि। हुनकर हेब्रू उपन्यास २०१० मे आएल जे अंग्रेजीमे मिच गिन्सबर्ग द्वारा २०१२ मे "Second Person Singular -मध्यमपुरुष एकवचन" क रूपमे अनूदित भेल। ऐ उपन्यासमे दूटा प्लॉट अछि जकर कथा आगाँ जा कऽ मिलि जाइए।

दुनू प्लॉट इज़्रायलमे रहैबला अरब-इज़्राइलीक अछि, जे हिब्रू बजै छथि।

पहिल प्लॉटमे पश्चिम जेरूसलेममे एकटा वकील अछि जे एकटा पुरान पोथी किनैए, टॉल्स्टायक द क्रुत्जर सोनाटा (बीथोवेनक क्रुत्जर सोनाटाक नामपर नामकरण) किनैए। द क्रुत्जर सोनाटाक नायक ट्रेनमे अपन कथा सुनबैए जे केना ओ अपन पत्नीक एकटा वायलिन वादकक संग अवैध सम्बन्धसँ क्रोधित भऽ हत्या कऽ देने छल, ओकर पत्नी आ ओ वायलिन वादक बीथोवेनक क्रुत्जर सोनाटा संगे बजबै छलथि। ऐ पोथीपर ओइ समएमे प्रतिबन्ध लगा देल गेल रहै। वकीलक पत्नी ऐ पोथीक चर्च केने रहथि, कारण ऐ पोथीक चर्चा मनोविज्ञानक फ्रायडपर व्याख्यानमे अधिक काल होइ छल। ओइ पोथीमे वकीलसाहेबकेँ अरबीमे हुनकर पत्नीक हाथक लिखल एकटा लेख (प्रेम-पत्र सन) भेटै छन्हि आ ओइ पोथीक पहिल पृष्ठपर ओइ पोथीक पुरान मालिकक नाम लिखल अछि- योनाथन। ओ योनाथनकेँ सभ काज छोड़ि ताकऽ लगैए।

दोसर प्लॉट अछि आमिर, एकटा सामाजिक कार्यकर्ताक। एकटा नवप्रशिक्षु लैला संगे ओ डान्समे जाइए। ओइ राति आमिर नोकरी छोड़ि एकटा यहूदी योनाथन, जे मानसिक रूपसँ वानस्पतिक अवस्थामे अछि, क देखभालक नोकरी पकड़ैए, योनाथनसँ ओकर चेहरा-मोहरा मिलै छै आ ओम्हर लैला एकटा लेख आमीरक कार्यालमे छोड़ै छथि, जे ओ डान्स हुनका नीक लगलन्हि आ आमिरसँ ओ फोन करैले कहलखिन्ह। आमिर योनाथनक नामपर कला स्कूलमे नाम लिखा लैए आ योनाथनक मरलाक बाद स्वयं योनाथन बनि जाइए।

वकील जखन आमिरकेँ ताकि लैए तखन पता चलै छै जे लैला वकीलक पत्नी छिऐ। आमिर आ लैला दुनू कहैए जे ओ डान्स वकील आ लैलाक भेँटसँ पहिने भेल छल। वकील संतुष्ट भऽ जाइए। पुस्तकक पुनश्चमे वकील, बादमे, कला स्कूलक स्नातक सभक काज देखैले जाइए, जतऽ ओकरा योनाथन बनल आमिर द्वारा बनाएल एकटा नग्न चित्र देखाइ पड़ै छै जे एन-मेन लैला सन छै!

नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन: त्वम्, त्वाम्, त्वया, तुभ्यम्, त्वत्, तव, त्वयि लऽ कऽ आएल अछि नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन-अहम्, माम्, मया, मह्यम्, मत्, मम, मयि सँ फराक रूपमे।

बिम्बक विविधता कविताक प्राण बनल अछि, शब्द-शब्दसँ अर्थ निकलत तखने कविताक लिखल जाएब सार्थक हएत, शब्दक भाष्य लेल गद्य विधा तँ अछिये।

विरोध समुद्रसँ मे तोहर आ हमर बीच समुद्र अछि आ ज्वार सभक टीककेँ धेने छथि वरुणदेव, सोचैत जे प्रेमकेँ जीतऽ देता आकि समुद्रकेँ। पड़ल छथि सोचमे, कोनो निर्णयात्मक स्थिति नै अछि एतऽ, पड़ल छथि सोचमे, माने ईहो ठीक ओहो ठीक मुदा जीतत एक्केटा आ ककरा जीतऽ देब से पकड़ने छथि टीक ज्वारक। ऋतु-विशेष, पृथ्वीपर मे शब्द लेल जाल अछि आत्मसमर्पण आ से अछि

कविता आ से अछि संन्यास? जल बनैए अकास। अकासक बिम्ब, की अछि अकास, अनन्त एकरङाह, आ से जँ जल अछि तँ ओहो भेबे कएल ने अकास। बंजर देशक बरसातिक देव, कारण बरखा-बुन्नी हएत तँ ओ बंजर किए हएत। आ ई देव सिजनल तँ नै छथि- बरसातिक देव जे अकासोकेँ कना सकै छै बेहिसाब! शब्दसँ समझौता। आ तखने चलैए काज। शब्दसँ समझौता भेने अर्थसँ सेहो समझौता कएल जाएत, काज सेहो तखन सापेक्ष रहत। अर्थक खेल शब्दक खेलसँ हएत। तोँ- मे वाक्य हकमैत अछि, धीपल हाथकेँ धरैत अछि। अर्थसँ समझौता पछिला कवितामे भेल अछि तँ वाक्य तँ हकमबे करत, कारण शब्देसँ वाक्य बनैत अछि। रातुक आ दिनक कथा- मे सूतल दुनियाँ केँ छोड़ि बुद्ध बहार होइत छथि घरसँ मुदा तकर विपरीत कविक प्रयाण कविताक भीतर होइत अछि। चक्रान्त- मे अकासमे हेलैत अक्षर लहराबैए आगिक प्रवाह। अक्षरसँ शब्द, शब्दसँ वाक्य। घी नै अक्षर लहराबैए आगि, शब्द करैए समझौता आ वाक्य अछि हकमैत। दमयंतीकेँ उपदेश- मे गाछ-बिरीछकेँ सेहो बुझल छै जे कविताक आगमन केना होइत अछि। दमयन्ती .. नै पार करू बोन। आ से भेने सभ टा गाछ लिखत दमयन्तीकेँ लऽ कऽ पहिल कविता। अक्षर, शब्द आ वाक्य, आगि लगबैत, समझौता करैत, हकमैत... दमयन्ती जँ पार कऽ जेती बोन तँ सभटा गाछ दमयन्तीकेँ लऽ कऽ लिखत पहिल कविता कारण ओकरा सभकेँ बुझल छै, कविताक आगमन केना होइ छै। प्रश्नावली- आ हमर कविता पढ़ि सकै छी? हमर अंतिम दिवस यएह? आ आब कविता बनि गेल तखन ओकरा पढ़बाक खगत, ओकरा पढ़बाक साधांश। भीतर उगैत शब्द- वाक्य पहिने हकमै छल आब वाक्य भसिआइए। कवितामे मुदा अबैए सुनल-गमल-बुझल वस्तु आभाषे बनि तँ की। ई कविता कवयित्री इलारानी सिंहकेँ कवि द्वारा समर्पित छन्हि।

जानल-पहिचानल- शरीरकेँ पन्नाक-पन्ना पढ़ब आ जीवनक लागब जानल-पहिचानल। माने लिखल जाइए पन्नाक पन्ना मुदा एतऽ जीवन बढ़ैए पन्नाक पन्ना, आ जेना-जेना बढ़ैए जीवन ओ लागैए जानल-पहिचानल। समार्थपद- मे नव अमरकोष, नव कविता लिखऽ पड़तन्हि। माने नव कविता लेल नव शब्दावली। आ पहिने नव शब्दावलीक संग्रह, फेर कोनो कविता। अंकुर- मे चारि टा कविताक बीआक मोनमे उगब। एक्के संग चारि-चारि टा कविकेँ बाँटि देने शब्द सम्पदा। शब्दक खेल माने कविता! कत्ते बरसक बाद- नेनपनेमे भगा देल छला, छंदभंग केने छला। आब पैघ भऽ गेल छथि, कतेक काल बीतल, आबो हुनका एगो कविता पढ़ऽ देबन्हि। किऐ नहि लिखै छी?- मे कथी ले ई जिद्द जे लिखबे करी प्रेम पत्र। कारण सभटा तँ हएत अनकर बनाएल अक्षरमे, आ ओइपर चढ़ा कऽ रंग, अर्थ, वस्त्र, व्याकुलता। तखन फुसियाहींक ई जिद्द। राजहंस- कविताक राजहंस। ओकरा कहबै एक बेर उड़बा लेल तोरा संग। अन्हेर- काल्हि रातुक पहर कविता आएल छली आ हेरा गेली गद्यक भीड़मे। एक अहीं छी- अहाँकेँ कवितामे एकटा नाम देने छी जे चिड़ै चुनमुन उचरि सकै छल। मुदा अहाँ किछु बजिते ने छी। पुरातन प्रेम- पढ़ि सकै छी मन्दाक्रान्ता छन्दक व्यथा। नापि सकै छी शुद्ध धैवत् क पातिव्रत्य। हमर शोणित चीन्हि गेल अछि जीवन-गणितक बर्बरताकेँ ठीके। चाह- जे हमरा किछु चाही, आ हमरा चाहबे की करी। दऽ सकै छी ह्रस्व, अति ह्रस्व, ओंकार ऋचा आकार। हमर पतिक लेल-१- अकासी नोर, हमर अल्हुआकेँ झोरा देलक। हमर पतिक लेल-२- कोना जुत्ता पएर तरसँ चढ़ि अबै छै माथपर। से जहिया बुझि जाएब तँ भेटि जाएत प्रतिवादक पहिल सबक। हमर पतिक लेल-३- हमरापर जे कियो लिखत कविता आ हमर चित्तपर व्याकरण तँ कोन आश्चर्य? हिसाब- पाँच टा शब्द हिरिया दै छै झौलीकेँ भोरमे बाउग करऽ जाइ काल। साँझ धरि बचलै नै एकोटा शब्द हिरियाक करेजपर रखबा लेल आ तखन बिनु शब्दक हिरिया कोना खोलत करेज।

आत्मकथन- मदारी पढ़ैत हमरे कविता आ हम फराक डाँड़मे रस्सी पहिरने। बड्ड गद्यमय जीवन! आ पतंजलि आ हेमचन्द्र द्वारा कविकेँ दबारब बुझाएब मध्यमपुरुष एकवचन। लक्ष्य विहीन आ अहाँ मध्यमे मात्र एकवचन। अहीं सँ प्रेम, घृणा अहीं सँ- प्रेम करै छी, मुदा घृणा आर बेशी। कनी टा जगह छोड़ि दियह- जगह चाही, कारण तीनटा पएर कविक, एककेँ पशुतासँ मढ़ने छी, दोसरकाक नोकमे अछि रोशनाइ सुखाएल आ तेसर नकली हृदए। जँ चाही हमरे सन कवि तँ कनेक जगह छोड़ि दिअ। भय-१- हमरा पोसबा लेल सेहो खरचा, हमर चिता सजेबा लेल सेहो तरद्दुत! भय-२- आबि गेल चलक ऐब। आब अदन्त नै रहलौं- दाँतक जोड़ा आबि गेल अछि! नामकरण- जंगलकेँ उपवन आ घास-फूसकेँ दूर्वाक्षत कहने आबि गेल मंत्रक उच्चारण अपने। नाम हमर दुष्यन्त आ अहाँक शकुन्तला भेने कण्व आ मृगशिशुक फिकिर लागल रहत। नामसँ, शब्दसँ स्वभाव जन्म लैत अछि। आजुक कवि, बड़ उच्छृंखल कवि- आबि रहल छथि कविः कवी कवयः- धुन आधुनिक। कविता केँ जे करता छंदित, बंधित आ वंदित। अहाँ नहि बजलहुँ किछु- मरियो कऽ जमीन तर नै जाएब, जरब झरकब आ आगिमे भणब अपन गीत। हम सूर्यवंशी राजपूत, हमर अस्त्र अछि शब्द अर्थ स्वर लिपि। अपन कविता सुनाउ!- अहाँ अपन पुरातन प्रेमी माने हमरा लऽ गेलौं ओइ नवका मकानमे पहाड़क शिखरपर! अंतिम मिलन भेल चानक गह्वरमे। मुदा हम सुनऽ चाहै छी कएक टा कविता, अहाँसँ अहाँक भाषामे, जे अखन हमरो भाषा अछि। जीवनी- रंगमंचक पहिल पृष्ठ, हेराशिम लेबेडफपर एकटा पूरा पन्ना कीड़ा चाटि लेलक? इतिहास शुरू होइछ गोडसेक आविर्भाव आ हमर जन्मक बादे? अजन्मा वा अज्ञात् अनामा क्यो कवि। तावत् कविते ध्यान रखती, बतेती जीवन-कथा! मध्यमपुरुष एकवचन- ऐ संग्रहक दोसर टाइटल कविता, पहिलमे टाइटिलमे नै वरन् कविताक

बीचमे मध्यमपुरुष एकवचन आएल छल। देशक ऋणक पहाड़, भ्रष्ट नियुक्ति.... लिखू नव्यन्याय-अन्याय, लिखू वैशेषिकक ढेरी, बिसरू धन-व्याकरण, मध्यमपुरुष एकवचन अहीं तँ छी मुदा..

आ ई मध्यमपुरुष एकवचन एक्के संग ढेर रास बिम्बक संग आएल अछि।

मध्यमपुरुष एकवचन भेल सम्बोधित पुरुष वा महिला जे असगर हुअए। नचिकेताक मध्यमपुरुष एकवचन उत्तर आधुनिक समाजमे रचित अछि जतऽ अक्षर-शब्दक जाल, वाक्यक विन्यास सजाओल जाइ छै, जतऽ शब्द बदलने, पर्याय बदलने सूर्य ताप देमऽ लगै छै।

चारिटा उत्तर आधुनिक नाटक: सैमुअल बैकेटक फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश"

[नो एण्ट्री: मा प्रविश २००८ ई. मे छपल आ साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल एकर चयन २०१०, २०११ बा २०१२ मे नै भऽ सकलै। आब ई पोथी मैथिली साहित्य लेल साहित्य अकादेमी पुरस्कार लेल उपलब्ध नै रहत। ऐ तरहक आनो उदाहरण रहल अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश क मैथिली साहित्य आ विश्व साहित्य मध्य स्थान नीचाँक आलेखमे निरूपित कएल जा रहल अछि। ई शृंखला आगाँ सेहो जारी रहत।]

....

"वेटिंग फॉर गोडो" दू अंकीय ट्रेजी-कॉमेडी अछि। सैमुअल बैकेट द्वारा ई 1952 ई. मे फ्रेंच भाषामे लिखल गेल आ एकर पहिल प्रदर्शन पेरिसमे 1953 ई. मे भेल। एकर अंग्रेजी संस्करणक प्रदर्शन लंदनमे 1955 ई. मे भेल आ अंग्रेजी संस्करण 1956 ई. मे प्रकाशित भेल।

हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी" कैम्ब्रिजमे 1958 ई. मे मंचित भेल आ 1960 ई. मे प्रकाशित भेल।

बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" 1962 ई. मे लिखल गेल आ ई 1965 ई. मे कलकत्तामे मंचित भेल।

उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क "नो एण्ट्री: मा प्रविश" 2008 ई. मे ई-प्रकाशित आ फेर ओही बर्ख प्रकाशित भेल। 19 फरबरी 2011 कैँ कुणालक निर्देशनमे कालिदास रंगालय, पटनामे ई डेढ़ घण्टाक नाटक मंचित भेल।

फ्रेंच, अंग्रेजी, बांग्ला आ मैथिलीक ई चारू नाटक पोस्ट-मॉडर्न नाटकक श्रेणीमे गानल जाइत अछि। जखन सैमुअल बैकेटक "वेटिंग फॉर गोडो" देखि क' लोक सभ घुरल रहथि तँ हुनका लोकनिकेँ एकटा विचित्र अनुभवसँ साक्षात्कार भेल छलन्हि। ऐ नाटकमे मात्र पाँचटा पात्र अछि- एस्ट्रागोन, व्लादीमीर, लकी, पोजो आ एकटा छौड़ा। एकटा कण्ट्री रोडपर साँझमे एकटा गाछ लग एस्ट्रागोन एकटा ढिमकापर बैसल अछि आ अपन जुत्ता दुनू हाथसँ निकालबाक प्रयास क' रहल अछि आ अपस्याँत अछि, आ थाकि जाइए। व्लादीमीर संगे ओ गपक प्रारम्भ होइ छै, एम्हर ओम्हरक फुसियाँहीक नमगर गपशप होइ छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो बुझाइए मालिक अछि आ लकी दास। दासो तेहेन जकरा गर्दनिमे नमगर रस्सा पोजो लगेने अछि। पहिने लकी अबैए, फेर रस्सा पकड़ने पोजो। लकी बड़का बैग, एकटा फोल्डिंग स्टूल, एकटा पिकनिक बास्केट आ ग्रेटकोट उघने अछि। पोजो लग चाबुक छै। लकी आदेशपालक अछि। मालिकक गप मानि फेर सभ बोझ उठा क' ठाढ़ भ' जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीरकेँ ओकर बोझा उघनाइ नीक नै लगै छै। मुदा पोजो जखन कहै छै जे ओ ओहिने छै तँ एस्ट्रागोन पोजोकेँ आततायी बुझै छै। एस्ट्रागोन लकीक नोर पोछैए तखन ओकरा लकी मुक्का मारै छै। पोजो कहै छै जे तोरा कहलियौ ने जे लकीकेँ अनचिन्हार लोक पसिन्न नै छै। आ एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ओत' की क' रहल अछि? ओ दुनू गोटे कोनो गोडो नाम्ना व्यक्तिक बाट जोहि रहल अछि।

पोजो आ लकी चलि जाइए। एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर लग एकटा छौड़ा अबै छै आ कहै छै जे गोडो आइ नै आबि सकता, काल्हि एता। फेर एम्हर ओम्हरक फुसियाँहीक गपशप होइए आ ओहो छौड़ा चलि जाइए। तखने मंचपर सँ बिजली चलि जाइ छै आ फेर राति भ' जाइ छै, चन्द्रमा उगल छै। व्लादीमीर आ एस्ट्रागोनक गपशप शुरू होइ छै। फुसियाँहीक गपमे किछु अर्थपूर्ण गपशप सेहो होइ छै। दुनू गोटे जेबाक निर्णय करै छथि मुदा हिलै नै छथि। पहिल अंकक पर्दा खसैए।

दोसर अंक, वएह समए आ स्थान। व्लादीमीरकेँ सभ किछु मोन छै मुदा एस्ट्रागोन बिसरि गेल अछि। एस्ट्रागोन कहैए जे ओ सभ किछु तुरत्ते बिसरि जाइए बा कहियो नै बिसरैए। ओकरा किछु-किछु मोनो पड़ै छै। पोजो आ लकी अबैए। पोजो आन्हर भ' गेल अछि, लकी ओहिना बोझा उघने अछि। रस्सा सेहो छै मुदा किछु छोट। पोजो आ लकी खसि पड़ैए। पोजो सहायता लेल कहैए मुदा एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर गपशप करैए।

एस्ट्रागोन व्लादीमीरकेँ पहिल अंक जेकाँ “दीदी” कहैए। व्लादीमीर बाजैए जे “हमरा सभकेँ फुसियाँहीक गपशपमे समय नै बर्बाद करबाक चाही। “पोजोक “सहायता” क आर्तनाद नियत अंतरालपर बेर-बेर होइ छै। मुदा तइपर एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर ध्यान नै दैए। पोजो आब सहायता लेल सए फ्रैंक फेर दू सए फ्रैंकक लालच दैए। व्लादीमीर ओकरा उठबैले जाइए, प्रयासमे अपनो खसि पड़ैए आ सहायताक पुकार करैए। फेर किछु गपशपक बाद व्लादीमीरकेँ उठेबाक प्रयासमे एस्ट्रागोन खसि पड़ैए। व्लादीमीर पोजोकेँ मारैए, पोजो घुसकुनिया दैए। तखन व्लादीमीर ओकरा ताकैए, कहैए- आबि जो, तोरा नोकसान नै पहुँचेबौ।

एस्ट्रागोन आ व्लादीमीर उठबाक प्रयास करबाक सोचैए आ उठि जाइए। एस्ट्रागोन कहैए- उठनाइ बच्चाक खेल सन हल्लुक अछि आ व्लादीमीर बजैए- ई मात्र आत्मशक्तिक प्रश्न अछि। पोजो सहायता लेल कहैए। दुनू पोजोकेँ उठबैए, फेर छोड़ैए, पोजो खसि पड़ैए। फेर दुनू ओकरा उठबैए आ पकड़ने रहैए। किछु कालमे कने छोड़ि क’ जाँचैए मुदा जखन पोजो खस’ लगैए तँ पकड़ि लैए। पोजो सेहो बुझा पड़ैए जे काल्हिक घटना बिसरल सन अछि। ओ कहैए जे ओ एक दिन सुति क’ उठल तँ अपनाकेँ आन्हर देखलक, ओ कहैए जे ओकरा लगै छै जे ओ अखनो सुतले तँ नै अछि। ओ लकीक विषयमे पूछैए। लागैए जे कोना ओ दुनू खसल, से ओकरा मोन नै छै। पोजो कहैए जे लकीक गर्दनिक रस्साकेँ जोरसँ खीचू बा मुँहपर जूतासँ मारू तँ ओ उठि जाएत। व्लादीमीर एस्ट्रागोनकेँ कहैए जे ओकरा लेल बदला लेबाक नीक अवसर छै। एस्ट्रागोन पुछैए (ओकर स्मृति घुरै छै!) जे जँ लकी अपन रक्षा करए तखन? तइपर पोजो बाजैए जे लकी कखनो अपन रक्षा नै करैए। मुदा एस्ट्रागोन नै व्लादीमीर लकीकेँ पएरसँ मार’ लगैए मुदा अपने ओकरा चोट लागि जाइ छै। घटनाक्रमसँ लगै छै जे पोजो आब अपनासँ ठाढ़ भ’ गेल अछि।

पोजो जे लकीकेँ कोनो हाटमे बेचैले ल’ जा रहल अछि, केँ ने काल्हिक किछु मोन छै आ नहिये काल्हि आजुक किछु मोन रहतै। ओ लकीकेँ उठैले कहैए आ लकी उठि जाइए आ अपन बोझ उठा लैए। पोजो अपन चाबुक मांगैए। लकी सभ बोझ राखैए, आ चाबुक पोजोक हाथमे द’ क’ सभ बोझ उठा लैए। पोजो रस्सा मांगैए, लकी सभ बोझ राखि रस्सा पोजोकेँ पकड़ा क’ सभ बोझ उठा लैए!

लकी आ पोजो चलि जाइए। ओ छौंड़ा अबैए। ओ व्लादीमीरकेँ अल्बर्ट कहि सम्बोधित करैए। व्लादीमीर पु छै छै जे की ओ ओकरा नै चिन्हलक, की ओ काल्हि नै आएल छल। छौड़ा कहैए जे आइ ओ पहिल बेर आएल अछि। संदेश वएह छै, गोडो आइ नै आएत मुदा काल्हि अवश्य आएत। व्लादीमीर पुछैए जे “गोडो” करैए की? तँ छौड़ा कहैए जे गोडो किछु नै करैए। व्लादीमीर पुछैए जे छौड़ाक भाए केहन छै। तँ उत्तर भेटै छै, ओ दुखित छै। व्लादीमीर पुछैए जे की काल्हि ओकर भाए आएल छलै- तँ से छौड़ाकेँ नै बुझल छै। छौड़ा उत्तर दैत कहैए जे गोडोकेँ दाढ़ी छै आ ओ कारी नै गोर छै। छौड़ा (पहिल अंक जकाँ) पुछैए जे ओ गोडोकेँ की जा क’ कहतै। व्लादीमीर कहैए- जा क’ कहू जे तोरा हमरा सभसँ भेँट भेलउ। व्लादीमीर छौड़ापर छड़पैए मुदा ओ पड़ा जाइए। सूर्यास्त होइ छै। चन्द्रमा देखा पड़ै छै।

एस्ट्रागोन कहैए जे जँ दुनू गोटे अलग भ’ जाए तँ ई दुनू लेल नीक हेतै। जँ काल्हि गोडो नै एतै तँ ओ दुनू गोटे रस्सासँ लटकि जाएत (व्लादीमीर कहैए) आ जँ एतै तँ बचि जाएत। व्लादीमीर लकीक हैटमे ताकैए, हिलबैए, फेर पहिरैए। दुनू जेबाक निर्णय करैए मुदा कियो नै हिलैए। पर्दा खसैत अछि।

....

हैरोल्ड पिंटरक तीन अंकीय नाटक “द बर्थडे पार्टी”

पीटे, मेग, स्टैनले, लुलु, गोल्डबर्ग आ मैककान एकर पात्र छथि।

पहिल अंक- मेग पीटेकेँ जलखै दैए, पुछैए जे स्टेनली उठलै आकि नै। स्टेनली अबैए, ओकरो मेग जलखै दैए। पीटे काजपर चलि जाइए। मेग आ स्टैनलेमे अंतरंग गप होइए, हँसी मजाक होइए। पीटे मेगसँ कहने रहै जे दू गोटे एतै आ किछु दिन ओकरा घरमे रहतै। ओकर घर सूची (बोर्डिंग हाउस) मे छै। स्टैनली ई सुनि पूछ-पाछ करै छै, ओ चिंतित भ’ जाइए। स्टैनली कहैए जे ओकरा पेरिसमे नाइट क्लबमे पियानो बजेबाक नोकरीक ऑफर आएल छै। फेर एथेंस, कॉन्सटेनटिनोपल, जाग्रेब, व्लादीवोस्टक सेहो। ई सम्पूर्ण विश्वक दर्शनबला नोकरी अछि। पुछलापर ओ कहैए जे ओ संपूर्ण विश्व, संपूर्ण देशमे पियानो बजेने अछि। एक बेर ओ कंसर्ट सेहो केने रहए। फेर ओ कहैए जे पहिल कंसर्ट मे ओ स्थानक पता हरा देलक आ नै पहुँचि सकल। दोसर कंसर्टमे जखन ओ पहुँचल तँ स्थलपर ताला लागल रहै। मेगक इच्छा नै छै जे स्टेनली कतौ जाए।

स्टेनलीकेँ लागै छै जे ओ दुनू गोटे ककरो खोजमे अछि। लुलुक अबाज अबैए। मेग खरीदारीक झोरा ल’ क’ बहरा जाइए, कियो ओकरासँ मिसेज बोल्स सम्बोधित क’ गप करै छै। लुलु अबैए आ स्टैनलीसँ गप करैए। लुलु बहराइए तँ गोल्डबर्ग आ मैककेन अबैए।

मैककेन गोल्डबर्गकैँ नैट कहि सम्बोधित करैए। स्टैनली चोरा क’ पहिनहिये बहरा जाइए। मेग अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा मिसेज बोल्स कहि सम्बोधित करैए आ अपनाकैँ गोल्डबर्ग आ संगीकैँ मैककेन कहि परिचय दैए। गपशपक क्रममे गोल्डबर्ग पु छै छै जे ओइ रहनिहारक नाम की छै आ ओ की करैए। मेग कहैए जे ओकर नाम स्टैनले वेबर छै आ ओ एक बेर कंसर्ट देलक मुदा केयरटेकरक गलतीसँ रातिमे ओ ओतै बन्द रहि गेल आ भोर धरि बन्द रहल। आ फेर “टिप” ल’ क’ ट्रेन पकड़ि एत’ आबि गेल। तखने मेग कहैए जे आइ ओकर “बर्थडे” छिऐ। आ फेर “बर्थडे पार्टी” निर्धारित होइ छै 9 बजे। लुलुकैँ सेहो बेरू पहर नोति देल जेतै। तीनू बहराइए आ स्टैनली खिड़कीसँ ताकैए। मेग अबैए। स्टैनली ओइ दुनूसँ आशंकित अछि। नाम पुछैए तँ मेग नाम बिसरि जाइए आ ओकरा गोल्ड.. मोन पड़ै छै तँ स्टैनली मोन पाड़ै छै- गोल्डबर्ग। मेग पुछैए जे की स्टैनली ओकरा चिन्हैए तँ स्टैनली गुम्म रहैए। फेर स्टैनली कहैए जे आइ ओकर बर्थडे नै छिऐ। मेग ओकरा लेल बच्चाक ड्रम उपहारमे अनने अछि आ तकर बदलामे ओ स्टैनलीसँ चुम्मा मांगैए।

अंक 2 मे स्टैनली आ मैक्कानक गपशप भ’ रहल छै। स्टैनली बाहर जाए चाहैए। ओ मैक्कानकैँ कहै छै जे ई बोर्डिंग हाउस नै छी, नहिये कहियो रहै। पीटे आ गोल्डबर्ग अबैए। गोल्डबर्ग पीटेकैँ मिस्टर बोल्स कहि सम्बोधित करैए। पीटेक गेलाक बाद स्टैनली कहैए जे ऐ घरक लोकक सुंघबाक शक्ति चलि गेल छै तेँ ओ गोल्डबर्ग आ मैक्कानक खतरा नै चीन्हि पाबि रहल छथि, हुनका सभक प्रति ओकर (स्टैनलीक) जिम्मेवारी छै।

मैक्कान ओकरासँ चश्मा छीनि लैए। मैक्कान आ गोल्डबर्ग ओकरासँ पुछैए जे ओ किए अपन पत्नीक हत्या केलक। ओ नाम बदलने अछि आ चरित्रहीन अछि, स्त्रीकैँ दूषित करैए।

झगड़ा शुरू होइ छै। मुदा झगड़ा रुकलाक बाद (प्रायः मेगकैँ नै बुझल छै) मेग पार्टी ड्रेसमे अबैए। सामान्य गप होइ छै।

लुलु अबैए, गोल्डबर्ग ओकरा कोरामे बैसबैए। लुलुक पुछलापर जे ओकरा तँ होइ छलै जे ओ “नैट” छी, गोल्डबर्ग कहै छै जे ओकर पत्नी ओकरा “सिमे” कहि बजबै छै।

पार्टीमे खेल शुरू होइए, आँखिमे पट्टी बान्हि क’ । मिसेज बोल्सकैँ लुलु स्कार्फसँ आँखि बान्हैए। ओ जकरा छू देत तकरा आँखिपर पट्टी बान्हल जाएत। ओ मैक्केनकैँ छुबैए। फेर स्टैनली छुआइए। ओकर चश्मा लेल जाइ छै। स्टेनलीकैँ पट्टी बान्हल जाइ छै। मैक्केन स्टेनलीक चश्मा तोड़ि दैए। मैक्केन ड्रमकैँ स्टेनलीक रस्तामे राखैए, ओ खसि पड़ैए आ मेगक गर्दनि दबब’ चाहैए, मैक्केन आ गोल्डबर्ग बचबै छै।

अन्हार पसरैए।

स्टैनलीकैँ अबैत देखि लुलु बेहोश भ’ जाइए। स्टैनले लुलुकैँ टेबुलपर राखैए। मैक्कानकैँ टॉर्च भेटै छै। ओ टेबुल आ स्टैनलीपर टॉर्च बाड़ैए।

अंक 3: पीटे आ मेगमे गप होइ छै। मेग स्टैनलीक विषयमे पीटेसँ पुछैए। लुलु अबैए, गोल्डबर्गसँ पुछैए जे ओकर पिता बा एडी (ओकर पहिल प्रेमी) की सोचत जँ ओ ई सुनत। ओ कहैए जे गोल्डबर्ग अपन दुष्ट पियास तृप्त केलक, ओ लुलुकैँ से सभ सिखेलक जे एकटा युवती तीन बेर बियाहल जेबाक बादे सीखत। गोल्डबर्ग कहैए जे ओ ई केलक कारण लुलु ओकरा ई कर’ देलक।

लुलु जाइए।

मेगक अनुपस्थितिमे गोल्डबर्ग आ मैक्कान स्टेनलीकैँ ल’ जाइए। पीटे ओकरा छोड़ैले कहैए। गोल्डबर्ग आ मैक्कान पीटेकैँ सेहो संगमे चलैले कहैए, कारमे जगह छै। पीटे स्थिर रहैए। पीटे असगरे रहि जाइए, मेग अबैए। पुछैए, ओ सभ गेल? पीटे कहैए- हँ। स्टेनलीक विषयमे मेग पुछैए- ओ सुतले अछि? पीटे कहैए- ओ सुतल अछि।

-सुत’ दियौ।

मेग पुछैए- की ई नीक पार्टी नै छल तँ पीटे कहैए- ओ बादमे आएल।

पर्दा खसैए।

....

बादल सरकारक “एवम् इन्द्रजीत”

“एवम् इन्द्रजीत” मे लेखक, काकी, मानसी, अमल, विमल, कमल, इन्द्रजीत आ इन्द्रजीतक पत्नी (नाटकमे बादमे) दोसर मानसी पात्र अछि।

अंक 1- लेखक एकटा नाटकक खोजमे अछि। ओकर काकी ओकर खेनाइ-पिनाइ छोड़ि लिखैत रहबापर तमसाएल छै। मानसी पुछैए जे ओ पढ़त जे किछु ओ लिखलक। लेखक कहैए, ओ किछु नै लिखलक। मानसी ओकरा प्रयास करैले कहै छै। लेखक दर्शकमेसँ चारिटा बादमे आबैबलाकेँ स्टेजपर बजबैए, अमल, विमल, कमल। चारिम अपन नाम निर्मल कुमार कहैए। लेखक कहैए- ई नै भ’ सकै छै, अपन असली नाम बताउ। ओ कहैए- इन्द्रजीत राय। अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत। मानसी (असली नाम दोसर मुदा लेखक कहैए मानसीये) ओकर ममियौत बहिन छिऐ। ओ ओकरासँ प्रेम करैए, परम्परा तोड़’ चाहैए

अंक 2: बादमे ओकरा लागै छै जे की जँ ई प्रेम सफल भइयो जेतै तँ ओकरा उत्तर भेटतै? नै ने। ओ लंदन सेहो जाएत। मृत्यु चाहैए, नै क’ पाबैए। लेखक द्वारा नामित इन्द्रजीतक मानसी अविवाहित अछि, हजारीबागमे पढ़बैए।

मुदा अमल, विमल, कमलक विपरीत इन्द्रजीत लीखपर नै चलैए। अलग किछु कर’ चाहैए। काका, जकरा ओ माए कहैए, खाइले कहै छै आ मानसी लिखैले। मुदा जखन एक बेर मानसी लेखककेँ खाइले कहि दैए तँ लेखक दुखी भ’ जाइए, नै, अहूँ? नै।

मुदा फेर मानसीकेँ गलतीक भान होइ छै, ओ ओकर लेखनक विषयमे पुछैए। लेखक चिंतित अछि, ई इन्द्रजीत वास्तविकताकेँ नै मानैए, कोनो प्रतिबद्धता ओकरामे नै छै। मुदा मानसी से नै मानैए।

ओ सपना तँ देखैए ने।

इन्द्रजीत लंदनसँ कोलकाता घुरैए, एकटा दोसर स्त्रीसँ बियाह करैए, ओकरो नाम मानसी छिऐ (इन्द्रजीत एकरा मानसी कहैए, पहिलुका मानसी जेकरा लेखक मानसी कहैए ओ इन्द्रजीतक ममियौत छिऐ, जकरासँ इन्द्रजीत प्रेम करैए मुदा ओ भाएक रिश्तासँ ओकरासँ बियाह नै करैए जे लोक की कहतै, आ इन्द्रजीत लेखककेँ कहैत रहैए जे ओकर नाम मानसी नै छिऐ।)

इन्द्रजीत बुझ’ लगैए (मानसीकेँ ओ कहैए) जे व्यक्तिक भिन्नताक मात्र भ्रम अछि। स्वप्न स्वप्न अछि ओ वास्तविकता नै बनि सकैए। मानसी, मानसी, मानसी, सभ मानसी, जेना अमल, विमल, कमल। लेखक पूछैए तँ इन्द्रजीत कहैए- अमल, विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत (सेहो!) ।

लेखकक यात्राक कोनो लक्ष्य नै, कोनो उद्देश्य नै, फुसियाँहीक यात्रा जकर कोनो कारण नै। लेखक इन्द्रजीतकेँ कहैए, हमरा सभकेँ जीबाक अछि, चलबाक अछि, कोनो धर्मस्थल नै तैयो तीर्थयात्रा करबाक अछि।

उदय नारायण सिंह ‘नचिकेता’ क “नो एण्ट्री: मा प्रविश”

प्रथम कल्लोल: ई नाटक ज्योतिरीश्वरक परम्परामे कल्लोलमे (हुनकर वर्ण रत्नाकर कल्लोलमे विभक्त अछि जे नाटक नहि छी, धूर्त-समागम जे ज्योतिरीश्वर लिखित नाटक अछि- अंकमे विभक्त अछि) विभाजित अछि। चारि कल्लोलक विभाजनक प्रथम कल्लोल स्वर्ग (वा नरक) केर द्वारपर आरम्भ होइत अछि। ओतए बहुत रास मुइल लोक द्वारक भीतर प्रवेशक लेल पंक्तिबद्ध छथि। क्यो पथ दुर्घटनामे शिकार भेल बाजारी छथि तँ संगमे युद्मे मृत भेल सैनिक आ चोरि करए काल मारल गेल चोर, उच्चक्का आ पॉकिटमार सेहो छथि। ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागममे जे अति आधुनिक अब्सर्डिटी अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो देखबामे अबैत अछि। प्रथम कल्लोलमे जे बाजारी छथि से, पंक्ति तोड़ि आगाँ बढ़ला उत्तर, चोर आ उचक्का दुनू गोटेकेँ, कॉलर पकड़ि पुनः हुनकर सभक मूल स्थानपर दए अबैत छथि। उचक्का जे बादमे पता चलैत अछि जे गुण्डा-दादा थिक मुदा बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैत अछि, हुनकासँ अंगा छोड़बाक लेल कहैत अछि। मुदा जखन पॉकेटमार बाजारी दिससँ चोरक विपक्षमे बजैत अछि तखन उचक्का चक्कू निकालि अपन असल रूपमे आबि जाइत अछि आ पॉकेटमारपर मारि-मारि कए उठैत अछि। मुदा जखन चोर कहैत छनि जे ई सेहो अपने बिरादरीक अछि जे छोट-छीन पॉकेटमार मात्र बनि सकल, ओकर जकाँ माँजल चोर नहि, आ उचक्का जेकाँ गुण्डा-बदमाश बनबाक तँ सोचिओ नञि सकल, तखन उचक्का महराज चोरक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, जे बदमाश ककरा कहलँह। आब पॉकेटमार मौका देखि पक्ष बदलैत अछि आ उचक्काकेँ कहैत छन्हि जे अहाँकेँ नहि हमरा कहलक। संगे ईहो कहैत अछि जे चोरि तँ ई तेहन करए जनैत अछि, जे गिरहथक बेटा आ कुकुर सभ चोरि करैत काल पीटैत-पीटैत एतऽ पठा देलकए आ हमर खिधांश करैत अछि, बड़का चोर भेला हँ। भद्र व्यक्ति चोरक बगेबानी देखि ई विश्वास नहि कए पबैत छथि जे ओ चोर थिकाह। ताहिपर पॉकेटमार, चोर महाराजकेँ आर किचकिचबैत छन्हि। तखन ओ चोर महराज एहि गपपर दुख प्रकट करैत छथि जे नहि तँ ओहि राति एहि पॉकेटमारकेँ चोरिपर लए

जएतथि आ ने ओ हुनका पिटैत देखि सकैत। एम्हर बजारी जे पहिने चोर आ उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ि घिसिया चुकल छलाह, गुम्म भेल सभटा सुनैत छथि आ दुख प्रकट करैत छथि जे एकरा सभक संग स्वर्गमे रहब, तँ स्वर्ग केहन होएत से नहि जानि। आब बजारी महराज गीतक एकटा टुकड़ी एहि विषयपर पढ़ैत छथि। जेना धूर्तसमागममे गीत अछि तहिना नो एण्ट्री: मा प्रविश मे सेहो, ई एहि स्थलपर प्रारम्भ होइत अछि जे एहि नाटककेँ संगीतक बना दैत अछि। ओम्हर पॉकेटमारजी सभक पॉकेट काटि लैत छथि आ बटुआ साफ कए दैत छथि। आब फेर गीतमय फकड़ा शुरू भए जाइत अछि मुदा तखने एकटा मृत रद्दीबला सभक तंद्राकेँ तोड़ि दैत छथि, ई कहि जे यमालयक बन्द दरबज्जाक ओहि पार, ई बटुआ आ पाइ-कौड़ी कोनो काजक नहि अछि। आब दुनू मृत भद्र व्यक्ति सेहो बजैत छथि, जे हँ दोसर देसमे दोसर देसक सिक्का कहाँ चलैत अछि। आब एकटा रमणीमोहन नाम्ना मृत रसिक भद्र व्यक्तिक दोसर देसक सिक्का नहि चलबाक विषयमे टीप दैत छथि, जे हँ ई तँ ओहिना अछि जेना प्रेयसीक दोसरक पत्नी बनब। आब एहि गपपर घमर्थन शुरू भए जाइत अछि। तखन रमणी मोहन गपक रुखि घुमा दैत छथि जे दरबज्जाक भीतर रम्भा-मेनका सभ हेतीह। भिखमंगनी जे तावत अपन कोरामे लेल एकटा पुतराकेँ दोसराक हाथमे दए बहसमे शामिल भऽ गेल छथि, ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की इत्यादि कहैत छथि। मुदा पॉकेटमार कहैत अछि जे भीतरमे सुख नहि दुखो भए सकैत अछि। एहिपर बीमा बाबू अपन कार्यक स्कोप देखि प्रसन्न भए जाइत छथि। आब पॉकेटमार इन्द्रक वज्र पर रुपैय्याक बोली शुरू करैत अछि। एहि बेर बजारी तन्द्रा भंग करैत अछि आ दुनू भद्र व्यक्ति हुनकर समर्थन करैत कहैत अछि, जे ई अद्भुत नीलामी अछि, जे करबा रहल अछि से पॉकेटमार आ ओहिमे शामिल अछि चोर आ भिखमंगनी, पहिले-पहिल सुनल अछि आ फेर संगीतमय फकड़ा सभ शुरू भए जाइत अछि। मुदा तखने नंदी-भृंगी शास्त्रीय संगीतपर नचैत प्रवेश करैत छथि। आब नंदी-भृंगीक ई पुछलापर जे दरबज्जाक भीतर की अछि, सभ गोटे अपना-अपना हिसाबसँ स्वर्ग-नरक आ अकास-पताल कहैत छथि। मुदा नंदी-भृंगी कहैत छथि जे सभ गोटे सत्य कहैत छी आ क्यो गोटे पूर्ण सत्य नहि बजलहुँ। फेर बजैत-बजैत ओ कहए लगैत छथि, क्यो चोरि काल मारल गेलाह (चोर ई सुनि भागए लगैत छथि तँ दु-तीन गोटे पकड़ि सोझाँ लए अनैत छन्हि!) तँ क्यो एक्सीडेन्टसँ, आ एहि तरहेँ सभटा गनबए लगैत छथि, मुदा बीमा-बाबू कोना बिन मृत्युक एतए आयल छथि से हुनकहु लोकनिकेँ नहि बुझल छन्हि! बीमा बाबू कहैत छथि जे ओ नव मार्केटक अन्वेषणमे आएल छथि! से बिन मरल सेहो एक गोटे ओतए छथि! भृंगी नंदीकेँ ढ़ेर रास बीमा कम्पनीक आगमनसँ आएल कम्पीटिशनक विषयमे बुझबैत छथि! एम्हर प्रेमी-प्रेमिकामे घोंघाउज शुरू होइत छन्हि, कारण प्रेमी आब घुरि जाए चाहैत छथि। रमणी मोहन प्रेमीक गमनसँ प्रसन्न होइत छथि जे प्रेमिका आब असगरे रहतीह आ हुनका लेल मौका छन्हि। मुदा भृंगी ई कहि जे एतएसँ गेनाइ तँ संभव नहि मुदा ई भऽ सकैत अछि जे दुनू जोड़ी माय-बाप (!) केँ एक्सीडेन्ट करबाए एतहि बजबा लेल जाए। मुदा अपना लेल माए-बापक बलि लेल प्रेमी-प्रेमिका तैयार नहि छथि। तखन नंदी भृंगी दुनू गोटेक विवाह गाजा-बाजाक संग करा दैत छथि आ कन्यादान करैत छथि बजारी।

दोसर कल्लोल: दोसर कल्लोलक आरम्भ होइत अछि एहि आभाससँ, जे क्यो नेता मरलाक बाद आबएबला छथि, हुनकर दुनू अनुचर मृत भए आबि चुकल छथि आ नेताजीक अएबाक सभ क्यो प्रतीक्षा कए रहल छथि, दुनू अनुचर छोट-मोट भाषण दए नेताजीक विलम्बसँ अएबाक (मृत्युक बादो!) क्षतिपूर्ति कए रहल छथि, गीतक योग दए। एकटा गीत चोर नहि बुझैत छथि मुदा भिखमंगनी आ रद्दीबला बुझि जाइत छथि, ताहि पर बहस शुरू होइत अछि। चोरकेँ अपनाकेँ चोर कहलापर आपत्ति अछि आ भिखमंगनीकेँ ओ भिख-मंग कहैत अछि तँ भिखमंगनी ओकरा रोकि कहैत छथि जे ओ सरिसवपाहीक अनसूया छथि, मिथिला-चित्रकार, मुदा दिल्लीक अशोकबस्ती आबि बुझलन्हि जे एहि नगरमे कला-वस्तु क्यो नहि किनैत अछि आ तखन चौबटियाक भिखमंगनी बनि रहि गेलीह। चोर कहैत अछि जे मात्र ओ बदनाम छथि, चोरि तँ सभ करैत अछि। नव बात कोनो नहि अछि, सभ अछि पुरनकाक चोरि। तकर बाद नेताजी पहुँचि जाइत छथि आ लोकक चोर, उचक्का आ पॉकेटमार होएबाक कारण समाजक स्थितिकेँ कहैत छथि। तखने एकटा वामपंथी अबैत छथि आ ओ ई देखि क्षुब्ध छथि जे नेताजी चोर, उचक्का आ पॉकेटमारसँ घिरल छथि। मुदा चोर अपन तर्क लए पुनः प्रस्तुत होइत अछि आ नेताजीक राखल “चोर-पुराण” नामक आधारपर बजारी जी गीत शुरू कए दैत छथि।

तेसर कल्लोल: आब नेताजी आ वामपंथीमे गठबंधन आ वामपंथी द्वारा सरकारक बाहरसँ देल समर्थनपर चरचा शुरू भए जाइत अछि। नेताजी फेर गीतमय होइत छथि आकि तखने स्टंट-सीन करैत एकटा मुइल अभिनेता विवेक कुमारक अएलासँ आकर्षण ओम्हर चलि जाइत अछि। टटका-ब्रेकिंग न्यूज देबाक मजबूरीपर नेताजी व्यंग्य करैत छथि। वामपंथी दू बेर दू गोट गप- नव गप कहि जाइत छथि, एक जे बिन अभिनेता बनने क्यो नेता नहि बनि सकैत अछि आ दोसर जे चोर नेता नहि बनि सकैछ (ई चोर कहैत अछि) मुदा नेता सभ तँ चोरि करबामे ककरोसँ पाछाँ नहि छथि। तखने एकटा उच्च वंशीय महिला अबैत छथि आ हुनकर प्रश्नोत्तरक बाद एकटा सामान्य क्यूक संग एकटा वी. आइ. पी. क्यू बनि जाइत अछि। अभिनेता, नेता आ वामपंथी सभ वी. आइ. पी. क्यूमे ठाढ़ भऽ जाइत छथि! ई

पुछलापर जे पंक्ति किएक बनल अछि (?) ताहिपर चोर-पॉकेटमार कहैत छथि जे हुनका लोकनिकेँ पंक्ति बनएबाक (आ तोड़बाक सेहो) अभ्यास छन्हि।

चतुर्थ कल्लोल: यमराज सभक खाता-खेसरा देखि लैत छथि आ चित्रगुप्त ई रहस्योद्घाटन करैत छथि जे एक युग छल जखन सोझाँक दरबज्जा खुजितो छल आ बन्न सेहो होइत छल। नंदी भृंगी पहिनहि सूचित कए देलन्हि जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नहि, मात्र बुझबाक दोष छल। दरबज्जाक ओहि पार की अछि ताहि विषयमे सभ क्यो अपना-अपना हिसाबसँ उत्तर दैत छथि। चित्रगुप्त कहैत छथि जे सभक वर्णनक सभ वस्तु छै ओहिपार। नंदी-भृंगी सूचित करैत छथि जे एहि गेटमे प्रवेश निषेध छै, नो एण्ट्री केर बोर्ड लागल छै। आहि रे ब्बा! आब की होअए! नेताजीकेँ पठाओल जाइत छन्हि यमराजक सोझाँ, मुदा हुनकर सरस्वती ओतए मन्द भए जाइत छन्हि। बदरी विशाल मिश्र प्रसिद्ध नेताजी, केर खिंचाई शुरू होइत छन्हि असली केर बदला सर्टिफिकेट बला कम कए लिखाओल उमरिपर। पचपन बरिख आयु आ शश योग कहैत अछि जे सत्तरि से ऊपर जीताह से ओ आ संगमे मृत चारू सैनिककेँ आपिस पठा देल जाइत अछि। दूटा सैनिक नेताजीक संग चलि जाइत छथि आ दू टा अनुचर सेहो जाए चाहैत अछि। मुदा नेताजीक अनुचर सभक अपराध बड़ भारी, से चित्रगुप्तक आदेशपर नंदी-भृंगी हुनका लए, कराहीमे भुजबाक लेल बाहर लए जाइत छथि तँ बाँचल दुनू सैनिक हुनका पकड़ि कें लए जाइत छथि आ नंदी-भृंगी फेर मंचपर घुरि अबैत छथि। तहिना तर्कक बाद प्रेमी-प्रेमिका, दुनू भद्र पुरुष आ बजारीकेँ सेहो त्राण भेटैत छन्हि ढोल-पिपहीक संग हुनका बाहर लए गेल जाइत अछि। आब नन्दी जखन अभिनेताक नाम विवेक कुमार उर्फ...बजैत छथि तँ अभिनेता जी रोकि दैत छथि, जे कतेक मेहनतिसँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़ि सकल अछि, से उर्फ तँ छोड़िए देल जाए। वामपंथी गोष्ठीकेँ अभिनेता द्वारा मदति केर विवरणपर वामपंथी प्रतिवाद करैत छथि। हुनको पठा देल जाइत छनि। वामपंथीक की हेतन्हि, हुनकर कथामे तँ ने स्वर्ग-नर्क अछि आ ने यमराज-चित्रगुप्त। हुनका अपन भविष्यक निर्णय स्वयं करबाक अवसर देल जाइत छन्हि। मुदा वामपंथी कहैत छथि जे हुनकर शिक्षा आन प्रकारक छलन्हि, मुदा एखन जे सोझाँ घटित भए रहल छन्हि ताहिपर कोना अविश्वास करथु? मुदा यमराज कहैत छथि जे- भऽ सकैत अछि, जे अहाँ देखि रहल छी से दुःस्वप्न होअए, जतए पैसैत जाएब ओतए लिखल अछि नो एण्ट्री। आब यमराज प्रश्न पुछैत छथि जे विषम के, मनुक्ख आकि प्रकृति? वामपंथी कहैत छथि जे दुनू, मुदा प्रकृतिमे तँ नेचुरल जस्टिस कदाचित् होइतो छै मुदा मनुक्खक स्वभावमे से गुन्जाइश कतए? मुदा वामपंथी राजनीति एकर (समानताक, सुधार केर) प्रयास करैत अछि। ताहिपर हुनका संग चोर-उचक्का आ पॉकेटमारकेँ पठाओल जाइत अछि, ई अवसर दैत जे हिनका सभकेँ बदलू। चोर कनेक जाएमे इतस्तः करैत अछि आ ई जिज्ञासा करैत अछि जे हम सभ तँ जाइए रहल छी मुदा एहिसँ आगाँ? नंदी-चित्रगुप्त-यमराज समवेत स्वरमे कहैत छथि- नो एण्ट्री। भृंगी तखने अबैत छथि, अभिनेताकेँ छोड़ने। यमराज कहैत छथि - मा प्रविश। भृंगी नीचाँमे होइत चरचाक गप कहैत अछि, जे एतुक्का निअम बदलल जएबाक आ कतेक गोटेकेँ पृथ्वीपर घुरए देल जएबाक चरचा सर्वत्र भए रहल अछि। यमदूत सभ अनेरे कड़ाह लग ठाढ़ छथि क्यो भुजए लेल कहाँ भेटल छन्हि (मात्र दू टा अनुचर छोड़ि) । आब क्यो नहि आबए बला बचल अछि, से सभ कहैत छथि। चित्रगुप्त अपन नमहर दाढ़ी आ यमराज अपन मुकुट उतारि लैत छथि आ स्वाभाविक मनुक्ख रूपमे आबि जाइत छथि! मुदा चित्रगुप्तक मेकप बला नमहर दाढ़ी देखि भिखमंगनी जे ओतए छलीह, हँसि दैत छथि। भृंगी उद्घाटन करैत छथि जे भिखमंगनी हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि! कोन अभिनय! तकर विवरण मुहब्बत आ गुदगुदीपर खतम होइत अछि, तँ भिखमंगनी कहैत छथि जे नहि एहि तरहक अभिनय तँ ओतए (देखा कए) भऽ रहल अछि। ओत्तऽ रमणी मोहन आ उच्चवंशीय महिला निभाक रोमांस चलि रहल अछि। मुदा निभाजी तँ बजिते नहि छथि। भिखमंगनी यमराजसँ कहैत छथि जे ओ तखने बजतीह जखन एहि दरबज्जाक तालाक चाभी हुनका भेटतन्हि, बुझतीह जे अपसरा बनबामे यमराज मदति दए सकैत छथि, ई रमणीक हृदय थिक एतहु नो एण्ट्री! यमराज खखसैत छथि, तँ चित्रगुप्त बुझि जाइत छथि जे यमराज "पंचशर" सँ ग्रसित भए गेल छथि! चित्रगुप्तक कहला उत्तर सभ क्यो एक कात लए जाओल जाइत छथि मात्र यमराज आ निभा मंचपर रहि जाइत छथि। यमराज निभाक सोझाँ- सुनू ने निभा... कहि रुकि जाइत छथि। सभक उत्साहित कएलापर यमराज बड़का चाभी हुनका दैत छथि, मुदा निभा चाभी भेटलापर रमणी मोहनक संग तेना आगाँ बढ़ैत छथि जेना ककरो अनका चिन्हिते नहि होथि! ओ चाभी रमणी मोहनकेँ दए दैत छथि मुदा ओ ताला नहि खोलि पबैत छथि। फेर निभा अपने प्रयास करए लेल आगाँ बढ़ैत छथि मुदा चित्रगुप्त कहैत छथि जे ई मोनक दरबज्जा थिक, ओना नहि खुजत। महिला ठकए लेल चाभी देबाक (!) गप कहैत छथि। सभ क्यो हँसी करैत छनि जे मोन कतए छोड़ि अएलहुँ? ताहिपर एकबेर पुनः रमणी मोहन आ निभा मोन संजोगि कए ताला खोलबाक असफल प्रयास करैत छथि। नंदी-भृंगी-भिखमंगनी गीत गाबए लगैत छथि जकर तात्पर्य ईएह जे मोनक ताला अछि लागल, मुदा ओतए अछि नो एण्ट्री। मुदा ऋतु वसन्तमे प्रेम होइछ अनन्त आ करेज कहैत अछि मैना-मैना। तँ एतहि नो एण्ट्री दरबज्जापर धरना देल जाए।

विवेचन: भारत आ पाश्चात्य नाट्य सिद्धांतक तुलनात्मक अध्ययनसँ ई ज्ञात होइत अछि मानवक चिन्तन भौगोलिक दूरीकक अछैत कतेक समानता लेने रहैत अछि। भारतीय नाट्यशास्त्र मुख्यतः भरतक "नाट्यशास्त्र" आ धनंजयक दशरूपकपर आधारित अछि। पाश्चात्य नाट्यशास्त्रक प्रामाणिक ग्रंथ अछि अरस्तूक "काव्यशास्त्र" ।

भरत नाट्यकेँ "कृतानुसार" "भावानुकार" कहैत छथि, धनंजय अवस्थाक अनुकृतिकेँ नाट्य कहैत छथि। भारतीय साहित्यशास्त्रमे अनुकरण नट कर्म अछि, कवि कर्म नहि। पश्चिममे अनुकरण कर्म थिक कवि कर्म, नटक कतहु चरचा नहि अछि।

अरस्तू नाटकमे कथानकपर विशेष बल दैत छथि। ट्रेजेडीमे कथानक केर संग चरित्र-चित्रण, पद-रचना, विचार तत्व, दृश्य विधान आ गीत रहैत अछि। भरत कहैत छथि जे नायकसँ संबंधित कथावस्तु आधिकारिक आ आधिकारिक कथावस्तुकेँ सहायता पहुँचाबएबला कथा प्रासंगिक कहल जएत। मुदा सभ नाटकमे प्रासंगिक कथावस्तु होअए से आवश्यक नहि, नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि तँ कोनो तेहन आधिकारिक कथावस्तु अछि आ नहिए कोनो प्रासांगिक, कारण एहिमे नायक कोनो सर्वमान्य नायक नहि अछि। जे बजारी उच्क्काकेँ कॉलर पकड़ैत छथि से कनेक कालक बाद गौण पड़ि जाइत छथि। जाहि उच्क्काक सोझाँ चोर सकदम रहैत अछि से किछु कालक बाद, किछु नव नहि होइछ केर दर्शनपर गप करैत सोझाँ अबैत छथि। जे यमराज सभकेँ थर्रेने छथि, से स्वयं निभाक सोझाँमे अपन तेज मध्यम होइत देखैत छथि। भिखमंगनी हुनका दैवी स्वरूप उतारने देखैत हँसैत छथि तँ रमणी मोहन आ निभा सेहो हुनका आ चित्रगुप्तकेँ अन्तमे अपशब्द कहैत छथि। वामपंथीक आ अभिनेताक सएह हाल छन्हि। कोनो पात्र कमजोर नहि छथि आ समय-परिस्थितिपर रिबाउन्ड करैत छथि।

कथा इतिवृत्तिक दृष्टिसँ प्रख्यात, उत्पाद्य आ मिश्र तीन प्रकारक होइत अछि। प्रख्यात कथा इतिहास पुराणसँ लेल जाइत अछि आ उत्पाद्य कल्पित होइत अछि। मिश्रमे दुनूक मेल होइत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मिश्र इतिवृत्तिक होएबाक कोनो टा गुंजाइश तखने खतम भए जाइत अछि जखन चित्रगुप्त आ यमराज अपन नकली भेष उतारैत छथि आ भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहैत छथि जे ई भिखमंगनी सेहो हमरे सभ जेकाँ कलाकार छथि! मात्र यमराज आ चित्रगुप्त नामसँ कथा इतिहास-पुराण सम्बद्ध नहि अछि आ इतिवृत्ति पूर्णतः उत्पाद्य अछि। अरस्तू कथानककेँ सरल आ जटिल दू प्रकारक मानैत छथि। ताहि हिसाबसँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आकस्मिक घटना जाहि सरलताक संग फ्लोमे अबैत अछि, से ई नाटक सरल कथानक आधारित कहल जएत। फेर अरस्तू इतिवृत्तकेँ दन्तकथा, कल्पना आ इतिहास एहि तीन प्रकारसँ सम्बन्धित मानैत छथि। नो एण्ट्री: मा प्रविश केँ काल्पनिक मूलक श्रेणीमे एहि हिसाबसँ राखल जएत। अरस्तूक ट्रेजेडीक चरित्र य़शस्वी आ कुलीन छथि- सत् असत् केर मिश्रण। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे जे चरित्र सभ छथि ताहिमे सभ चरित्रमे सत् असत् केर मिश्रण अछि। निभा उच्चवंशीय छथि मुदा रमणी मोहन, जे बलात्कारक बादक भेल पिटानक बाद मृत भेल छथि, सँ हिलि-मिलि जाइत छथि। भिखमंगनी मिथिला चित्रकार अनसूया छथि। मुदा दुनू भद्रपुरुष, बजारी आ चारू सैनिक एहि प्रकारेँ बिन कलुषताक सोझाँ अबैत छथि। भरत नृत्य संगीतक प्रेमीकेँ धीरललित, शान्त प्रकृतिकेँ धीरप्रशान्त, क्षत्रिय प्रवृत्तिकेँ धीरोदत्त आ ईर्ष्यालूकेँ धीरोद्धत्त कहैत छथि। बजारी आ दुनू भद्रपुरुष संगीतक बेश प्रेमी छथि तँ रमणी मोहन प्रेमी-प्रेमिकाकेँ देखि कए ईर्ष्यालू। सैनिक सभ शान्त छथि क्षत्रियोचित गुण सेहो छन्हि से धीरोदत्त आ धीरप्रशान्त दुनू छथि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि प्रकारक विभाजन पूर्णतया सम्भव नहि अछि।

भारतीय सिद्धांत कार्यक आरम्भ, प्रयत्न, प्राप्त्याशा, नियताप्ति आ फलागम धरिक पाँच टा अवस्थाक वर्णन करैत अछि। प्राप्त्याशामे फल प्राप्तिक प्रति निराशा अबैत अछि तँ नियताप्तिमे फल प्राप्तिक आशा घुरि अबैत अछि। पाश्चात्य सिद्धांतमे अछि आरम्भ, कार्य-विकास, चरम घटना, निगति आ अन्तिम फल। प्रथम तीन अवस्थामे ओझराहटि अबैत अछि, अन्तिम दू मे सोझराहटि।

कार्यावस्थाक पंच विभाजन- बीया, बिन्दु, पताका, प्रकरी आ कार्य अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे बीया अछि एकटा द्वन्द - मृत्युक बादक लोकक, बीमा एजेन्ट एतए बिनु मृत्युक पहुँचि जाइत छथि। यमराज आ चित्रगुप्त मेकप आर्टिस्ट बहराइत छथि। विभिन्न बिन्दु द्वारा एकटा चरित्र ऊपर नीचाँ होइत रहैत अछि। पताका आ प्रकरी अवान्तर कथामे होइत अछि से नो एण्ट्री: मा प्रविश मे नहि अछि। बीआक विकसित रूप कार्य अछि मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे ओ धरणापर खतम भए जाइत अछि! अरस्तू एकरा बीआ, मध्य आ अवसान कहैत छथि। आब आऊ सन्धिपर, मुख-सन्धि भेल बीज आ आरम्भकेँ जोड़एबला, प्रतिमुख-सन्धि भेल बिन्दु आ प्रयत्नकेँ जोड़एबला, गर्भसन्धि भेल पताका आ प्राप्त्याशाकेँ जोड़एबला, विमर्श सन्धि भेल प्रकरी आ नियताप्तिकेँ जोड़एबला आ निर्वहण सन्धि भेल फलागम आ कार्यकेँ जोड़एबला। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे मुख/ प्रतिमुख आ निर्वहण सन्धि मात्र अछि, शेष दू टा सन्धि नहि अछि।

पाश्चात्य सिद्धांत स्थान, समय आ कार्यक केन्द्र तकैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे स्थान एकहि अछि, समय लगातार आ कार्य अछि द्वारक भीतर पैसबाक आकांक्षा। दू घण्टाक नाटकमे दुइये घण्टाक घटनाक्रम वर्णित अछि नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कार्य सेहो एकेटा अछि। अभिनवगुप्त सेहो कहैत छथि जे एक अंकमे एक दिनक कार्यसँ बेशीक समावेश नहि होअए आ दू अंकमे एक वर्षसँ बेशीक घटनाक समावेश नहि होअए। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे कल्लोलक विभाजन घटनाक निर्दिष्ट समयमे भेल कार्यक आ नव कार्यारम्भमे भेल विलम्बक कारण आनल गेल अछि। मुदा एहि त्रिकक विरोध ड्राइडन कएने छलाह आ शेक्सपिअरक नाटकक स्वच्छन्दताक ओ समर्थन कएलन्हि। मुदा नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एहि तरहक कोनो समस्या नहि अबैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे आपसी गपशपमे-जकरा फ्लैशबैक सेहो कहि सकैत छी- ककर मृत्यु कोना भेल से नीक जेकाँ दर्शित कएल गेल अछि।

भारतमे नाटकक दृश्यत्वक समर्थन कएल गेल मुदा अरस्तू आ प्लेटो एकर विरोध कएलन्हि। मुदा १६म शताब्दीमे लोडोविको कैस्टेलवेट्रो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि। डिटेटार्ट सेहो दृश्यत्वक समर्थन कएलन्हि तँ ड्राइडज नाटकक पठनीयताक समर्थन कएलन्हि। देसियर पठनीयता आ दृश्यत्व दुनूक समर्थन कएलन्हि। अभिनवगुप्त सेहो कहने छलाह जे पूर्ण रसास्वाद अभिनीत भेला उत्तर भेटैत अछि, मुदा पठनसँ सेहो रसास्वाद भेटैत अछि। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे पहिल कल्लोलक प्रारम्भमे ई स्पष्ट भऽ जाइत अछि जे एतए दृश्यत्वकेँ प्रधानता देल गेल अछि। पश्चिमी रंगमंचक नाट्यविधान वास्तविक अछि मुदा भारतीय रंगमंचपर सांकेतिक। जेना अभिज्ञानशाकुंतलम् मे कालिदास कहैत छथि- इति शरसंधानं नाटयति। नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भारतीय विधानकेँ अंगीकृत कएल गेल- जेना मृत्यु प्राप्त सभ गोटे द्वारा स्वर्ग प्रवेश द्वारक अदृश्य देबारक गपशप आ अभिनय कौशल द्वारा स्पष्टता। अंकिया नाटमे सेहो प्रदर्शन तत्वक प्रधानता छल। कीर्तनियाँ एक तरहेँ संगीतक छल आ एतहु अभिनय तत्वक प्रधानता छल। अंकीया नाटकक प्रारम्भ मृदंग वादनसँ होइत छल। नो एण्ट्री: मा प्रविश मैथिलीक परम्परासँ अपनाकेँ जोड़ने अछि मुदा संगहि इतिहास, पुराण आ समकालीन जीवनचक्रकेँ देखबाक एकटा नव दृष्टिकोण लए आएल अछि, सोचबा लए एकटा नव अंतर्दृष्टि दैत अछि।

ज्योतिरीश्वरक धूर्तसमागम, विद्यापतिक गोरक्षविजय, कीर्तनिञा नाटक, अंकीयानाट, मुंशी रघुनन्दन दासक मिथिला नाटक, जीवन झाक सुन्दर संयोग, ईशनाथ झाक चीनीक लड्डू, गोविन्द झाक बसात, मणिपद्मक तेसर कनियाँ, नचिकेताजीक “नायकक नाम जीवन, एक छल राजा”, श्रीशजीक पुरुषार्थ, सुधांशु शेखर चौधरीक भफाइत चाहक जिनगी, महेन्द्र मलंगियाक काठक लोक, राम भरोस कापड़ि भ्रमरक महिषासुर मुर्दाबाद, गंगेश गुंजनक बुधिबधिया केर परम्पराकेँ आगाँ बढ़बैत नचिकेताजीक नो एण्ट्री: मा प्रविश तार्किकता आ आधुनिकताक वस्तुनिष्टताकेँ ठाम-ठाम नकारैत अछि। वामपंथीकेँ यमराज ईहो कहैत छथिन्ह, जे वामपंथी देखि रहल छथि से सत्य नहि, सपनो भए सकैत अछि। विज्ञानक ज्ञानक सम्पूर्णतापर टीका अछि ई नाटक। सत्य-असत्य, सभ अपन-अपन दृष्टिकोणसँ तकर वर्णन करैत छथि। चोरक अपन तर्क छन्हि आ वामपंथी सेहो कहैत छथि जे चोर नेता नहि बनि सकैत छथि, मुदा नेताक चोरिपर उतरि अएलासँ चोरक वृति मारल जाए बला छन्हि। नाटकमे आत्म-केन्द्रित हास्यपूर्ण आ नीक-खराबक भावना रहि-रहि खतम होइत रहैत अछि। यमराज आ चित्रगुप्त धरि मुखौटामे रहि जीबि रहल छथि। उत्तर आधुनिकताक ई सभ लक्षणक संग नो एण्ट्री: मा प्रविश मे एके गोटेक कैक तरहक चरित्र निकलि बाहर अबैत अछि, जेना उच्चवंशीय महिलाक। कोनो घटनाक सम्पूर्ण अर्थ नहि लागि पबैत अछि, सत्य कखन असत्य भए जएत तकर कोनो ठेकान नहि। उत्तर आधुनिकताक सतही चिन्तन आ तेहन चरित्र सभक नो एण्ट्री: मा प्रविश मे भरमार लागल अछि, आशावादिता तँ नहिए अछि मुदा निराशावादिता सेहो नहि अछि। जे अछि तँ से अछि बतहपनी, कोनो चीज एक तरहेँ नहि कैक तरहेँ सोचल जा सकैत अछि- ई दृष्टिकोण विद्यमान अछि। कारण, नियन्त्रण आ योजनाक उत्तर परिणामपर विश्वास नहि, वरन संयोगक उत्तर परिणामपर बेशी विश्वास दर्शाओल गेल अछि। गणतांत्रिक आ नारीवादी दृष्टिकोण आ लाल झंडा आदिक विचारधाराक संगे प्रतीकक रूपमे हास-परिहास सोझाँ अबैत अछि।

एहि तरहेँ नो एण्ट्री: मा प्रविश मे उत्तर आधुनिक दृष्टिकोण दर्शित होइत अछि, एतए पाठक कथानकक मध्य उठाओल विभिन्न समस्यासँ अपनाकेँ परिचित पबैत छथि। जे द्वन्द नाटकक अंतमे दर्शित भेल से उत्तर-आधुनिक युगक पाठककेँ आश्चर्यित नहि करैत छन्हि, किएक तँ ओ दैनिक जीवनमे एहि तरहक द्वन्दक नित्य सामना करैत छथि।

उत्तर आधुनिक भावप्रधान निरर्थक (एबसर्ड) नाटक: एन एटेण्डेन्ट गोडो क सैमुअल बेकैट द्वारा स्वयं फ्रेंचसँ अंग्रेजीमे अनुवाद कएल गेल “वेटिंग फॉर गोडो” शीर्षकसँ आ उपशीर्षक “अ ट्रेजिकॉमेडी इन टू एक्ट्स” सेहो जोड़ल गेल जे फ्रेंच संस्करणमे नै छल। ट्रेजीकॉमेडी माने ट्रेजेडी आ कॉमेडीक मिश्रण। एकर कथानकसँ स्पष्ट भऽ गेल हएत जे एकर मुख्य पात्र “गोडो” ऐ नाटकमे छैहे नै, दोसर ओ भावक दृष्टिसँ सेहो नाटकक मुख्य तत्व नै छै। नाटकक मुख्य तत्व छै “वेटिंग” माने बाट तकनाइ। भाषा, स्टेज, बाजब, चुप्प रहब, चलबाक तरीका, ई सभ ऐ नाटकक अभिन्न अंग छिऐ। देश-कालमे भागैबला बनजारा जीवनशैलीक लोक सभ अछि एकर मुख्य

पात्र। बिनु बजने शारीरिक भावसँ अभिनय करैबला "माइम कलाकार" जेकाँ ऐ नाटकक पात्र अभिनय करै छथि। नाटकमे प्लॉट आ संतुलनक नव परिभाषा ई नाटक गढ़ैत अछि। आधुनिक थियेटरकेँ ई नाटक नव युगमे प्रवेश कराबैत अछि। ब्रिटेनक "म्यूजिक हॉल" थियेटर मे संगीत हास्य रहै छलै जइमे जीवनक निराशा "क्रॉस-टॉक" सँ बेकेट आ राजनैतिक-सामाजिक आतंक हैरोल्ड पिन्टर हास्य रूपमे देखबैत छथि। "नो एण्ट्री: मा प्रविश" सेहो स्वर्क (बा नरक) क द्वारपर आरम्भ होइए जतए ओना तँ सभ मृत लोक पंक्तिबद्ध छथि मुदा एकटा जीवित व्यक्ति सेहो छथि! उच क्का बाजारी लग सञ्च-मञ्च रहैए! प्रेमी-प्रेमिकाक ओतए बियाहो भऽ जाइ छै! नेताजी मृत्युक बादो विलम्बसँ एबा लेल अभिशप्त छथि! वामपंथी ओतौ बाहरसँ समर्थन दै छथि! वी. आइ. पी. क्यू सँ ओतौ त्राण नै भेटै छै! मुदा जइ दरबज्जाक बाहर लोक पंक्तिबद्ध छथि से एक युगमे खुजितो छल आ बन्न सेहो होइत छल, ई रहस्योद्घाटन चित्रगुप्त करै छथि! माने आब ई नै खुजत तखन इन्तजारी कथीक? नन्दी-भृंगी कहैए जे सोझाँक दरबज्जा स्वप्न नै, मात्र बुझबाक दोष छल! अभिनेता विवेक कुमार अपन "सरनेम" पुछल गेलापर कहै छथि जे कतेक मोश्किलसँ तँ जाति हुनकर पाछाँ छोड़लक अछि से उर्फ तँ छोड़िये देल जाए। वामपंथीक कथामे ने स्वर्ग-नर्क होइ छै आ नहिये यमराज-चित्रगुप्त, मुदा एतुक्का परिस्थिति देखि कऽ ओ अविश्वास कोना करथु? मुदा यमराजे हुनका कहै छथिन्ह जे ई दुःस्वप्न हुअए। यमदूत सभ कड़ाह लग अनेरे ठाढ़ छथि कियो भूजैले भेटिते नै छन्हि, चित्रगुप्तक मेकप बला दाढ़ी देखि भिखमंगनीक हँसलापर भृंगी कहै छथि जे भिखमंगनी सेहो हुनके सभ जेकाँ कलाकार छथि। मोनक दरबज्जा मोन छोड़ि एलापर कोना खुजत?

फ्रेंच नाटक "वेटिंग फॉर गोडो", हैरोल्ड पिंटरक अंग्रेजी नाटक "द बर्थडे पार्टी", बादल सरकारक बांग्ला नाटक "एवम् इन्द्रजीत" आ उदय नारायण सिंह 'नचिकेता' क मैथिली नाटक "नो एण्ट्री: मा प्रविश" पुरान नाटक जेकाँ परिभाषित आरम्भ आ अन्तक परिधिसँ अलग अछि। ई कतौ सँ शुरू भऽ जाइत अछि, कतौ खतम भऽ जाइत अछि। एवम् इन्द्रजीत मे लेखक पात्र ताकि रहल अछि, आ अनचोक्के ओ दर्शक दीर्घाकेँ सम्बोधित करैत चारिटा देरीसँ आएल दर्शककेँ मंचपर बजा लैए आ ओकरा नाटकक पात्र बना दैए। चारिम पात्र ओकरा प्रिय छै, ओ निर्मल नै "इन्द्रजीत" छी। ओ अलग अछि, इन्द्रकेँ जीतैबला ऐतिहासिक पात्र अछि। ओ अमल विमल, कमल जेकाँ लीखपर नै चलत। मुदा अन्त जाइत जाइत इन्द्रजीत सेहो अमल विमल, कमल एवम् इन्द्रजीत भऽ जाइए।

हैरोल्ड पिन्टरक "द बर्थडे पार्टी" क प्रारम्भमे तेहेन समीक्षा भेल जे हुनकर लेखकीय जीवन समाप्त हुअए पर आबि गेल। मुदा एकर पुनर्पाठ एकरा क्लासिक बना देलक। किछु रहस्य, किछु आतंककेँ ओ सम्पूर्ण नाटकमे बनेने रहलाह, हास्य कथ्यकेँ आर मजगूत केलक। स्टैनले की अछि, छल बा बनऽ चहैत अछि? की ओ स्त्रीकेँ दूषित करैए, बा ओ अपन पत्नीक हत्या केलक? मुदा मेग तँ ओकरा पसिन्न करै छै? ओकर पहिल आ दोसर कन्सर्ट, के तकर बाधक बनलै? की ओ झूठ बजैए बा वर्तमान सामाजिक आ राजनैतिक परिभाषासँ अलग व्यवहारक अछि? ओ मेगकेँ मोकऽ चाहैए मुदा तैयो किए मेग ओकरा पसिन्न करै छै आ सामाजिक आ राजनैतिक शक्ति ओकरा किए आ कोना उठा कऽ लऽ गेल जाइ छै, जकर सिपाही गोल्डबर्ग (गोल्डबर्गक लुलुक संग रहस्यमय व्यवहार) स्वयं आदर्श उपस्थित नै कऽ पाबै छथि।

सुन्न-मसान सड़कक कातक माटिक ढिमका आ पत्रहीन नग्न गाछ "वेटिंग फॉर गोडो" क स्टेज छिऐ, ताला लागल दरबज्जाक बाहरक स्थल/ मण्डप "नो एण्ट्री: मा प्रविश" क स्टेज छिऐ तँ "एवम् इन्द्रजीत" मे दर्शक दीर्घा, सएह स्टेज बनि जाइए। "द बर्थडे पार्टी" मे घरक कोठली स्टेज छिऐ मुदा पिन्टर एकर पात्र स्टैनले केँ डेरीडाक "विखण्डन" पद्धतिसँ कखनो खण्ड कऽ दैत छथि तँ कखनो फेरसँ जोड़ि दै छथि। लोक बा दर्शक ओकरासँ ईर्ष्या करऽ लगैए, खने सहानुभूति करऽ लगैए खने घृणा करऽ लगैए, मुदा स्टैनली गोल्डबर्ग आ मैक्कानक सोझाँ जखन निर्बल बुझि पड़ैए तँ दर्शक ओकरा संग अपनाकेँ देखैए, जेना ओ "एवम् इन्द्रजीत" मे इन्द्रजीत संग अपनाकेँ देखैए। "वेटिंग फॉर गोडो" मे जखन लोक गुलाम संग अपनाकेँ देखैए तखने सहानुभूति देखेलापर चमेटा पड़लापर ओ हतप्रभ रहि जाइए। "नो एण्ट्री: मा प्रविश" मे भिखमंगनी ईर्ष्यावश रम्भा-मेनकाकेँ मुँहझड़की कहैए! पॉकेटमार इन्द्रक व्रजपर रुपैय्याक बोली लगबैए। नन्दी-भृंगी कहैए जे सभ गोटे सत्य छी मुदा क्यो गोटे पूर्ण सत्य नै बजलौं। "एवम् इन्द्रजीत" मे इन्द्रजीतक हाल सिसीफस सन छै। शापित ग्रीक मिथक सिसीफस, संगमरमरक पाथरपर चढ़बाक लेल अभिशप्त, आ जखने ओ चोटीपर पहुँचैए आकि पाथर फेर गुरकि कऽ ओकरा नीचाँ आनि दै छै। मनुक्खक काज आ जीवन निरर्थकतापर आधारित अछि। मनुक्ख असफल होइले अभिशप्त अछि, इन्द्रजीत जेकाँ? आकि "नो एण्ट्री: मा प्रविश" क स्वर्ग-नरक, यमराज-चित्रगुप्तक अमान्यता देखलाहा गपकेँ देखि बदलत? मुदा तखन यमराजे कहै छथि जे देखलाहा गप दुःस्वप्न भऽ सकैए? "वेटिंग फॉर गोडो" ईश्वरक इन्तजारी नै छिऐ, बेकेट स्वयं कहै छथि जे इन्तजारी "गॉड" क नै "गोडो" क भऽ रहल अछि, ओना क्रिस्टियेनिटी "मिथोलोजी" अछि से ओ तकर प्रयोग करै छथि। अस्तित्ववादी विचारधारा, मनुक्ख आ ब्रह्माण्ड सभ निरर्थक अछि, अबसर्ड अछि।

गजलकार ओम प्रकाश झा, राजदेव मण्डलक अम्बरा, मैथिलीक भिखारी ठाकुरक पहिल जनकवि रामदेव प्रसाद मण्डल 'झारूदार', गजलकार मुन्ना जी बीहनि कथाकार मुन्नाजी, रामविलास साहु, उमेश मण्डलक "निश्तुकी", उमेश पासवानक "वर्णित रस", सुजीतक जिद्दी, विनीत ठाकुरक बाँकी अछि हमर दूधक कर्ज, संतोष कुमार मिश्र- "एना किए..?" आ "पोसपुत", महेन्द्र मलंगियाक छुतहा घैल

१०५. शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य

सारांश

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] "बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल। संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे।

बीजशब्द: शरदिन्दु · चौधरीक · संस्मरण · चर्चा · द्वारा · सेहो · पोथी

सारांश

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)] "बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल। संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे। एतऽ ई संतोषक विषय अछि जे शरदिन्दु जी कैं समानान्तर धारामे एक्कोटा लोलुप व्यक्ति नै भेटलन्हि।

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरण साहित्य [बात-बातपर बात (I-IV)]

"बात-बातपर बात खण्ड-१"; "मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"; "हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)" आ "साक्षात् (बात-बातपर बात-४) ई चारिटा पुस्तिका शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि, पहिल २०१९मे दोसर २०२०मे आ तेसर आ चारिम २०२१मे प्रकाशित भेल।

संगहि २००२ मे प्रकाशित "जँ हम जनितहुँ" हुनकर हास्य-व्यंग्य युक्त संस्मरणात्मक निबन्धक संग्रह छन्हि जे पुरस्कार-लोलुप मूल-धाराक साहित्यकारक नामसँ युक्त अछि आ हुनकर सभक किरदानी तँ तेहेन छन्हिये जे ओ संस्मरण हास्य-व्यंग्यक संग्रह अनायासे बनि जायत, मुदा ई पोथी शुद्ध संस्मरणक पोथी नै थिक, ऐमे नोन-मिर्च सेहो अछि मुदा कम मात्रामे। एतऽ ई संतोषक विषय अछि जे शरदिन्दु जी कैं समानान्तर धारामे एक्कोटा लोलुप व्यक्ति नै भेटलन्हि।

एकर अतिरिक्त २००५ मे प्रकाशित "बड़ अजगुत देखल", २०११ मे प्रकाशित "गोबरगणेश" आ २०१६ मे प्रकाशित "करिया कक्काक कोरामिन"कैं करिया कक्का व्यंग्य शृंखला कहि सकैत छी, कारण ऐ तीनू पोथीमे खट्टर कक्का सन करिया कक्का विराजमान भेटता, मुदा एतौ किछु आलेखमे करिया कक्का नै छथि, जेना गोबरगणेश संग्रहक 'तावत काल','गोलैसी- अर्थात्' आ 'सीडी समीक्षा '। मुदा ई तीनू संग्रह सेहो मोटा-मोटी संस्मरण आधारित अछि मुदा नोन-मिर्चक सङ आ सेहो पुष्टसँ। एतऽ 'करिया कक्काक कोरामिन' क लेखकीय मे ओ लिखै छथि जे (करिया कक्का) कैं 'जे फुरेलनि सैह कयलनि मुदा ई ध्यान अवश्य रखलनि जे... अश्लीलताक आरोप नहि लागय..." मुदा ऐ पोथीसँ ५ साल पूर्व प्रकाशित 'गोबरगणेश' क 'सीडी समीक्षा ' मे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक अध्यक्ष विद्यानाथ झा 'विदित'क सम्बन्धमे लिखल गेल अछि, '.. ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह...'। ओही पोथीक 'तावत काल' आलेखमे लिखल गेल अछि- 'एहने सन प्रयोग साहित्य अकादेमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि।" तावत काल केर वर्णन अश्लील नै अछि मुदा सीडी समीक्षाक विवरण स्पष्टतया अश्लील अछि। ई स्पष्ट अछि जे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटेरेरी एसोशियेशन सभ द्वारा चयनित मैथिली परामर्शदात्री समितिक सभ अध्यक्ष मैथिलीकैं रसातल पहुँचेबाक काज केलन्हि अछि मुदा एकटा महिलो ओइमे छथि तँ ओ सत्य हरिश्चन्द्र किए बनथु? आ ओइपर सेक्सिस्ट कमेण्ट ईएह देखबैत अछि जे लेखक वा सम्पादक साहित्यमे आ सार्वजनिक स्थलपर महिला वा पुरुषेत्तर लिंगक प्रति सम्वेदनशील नै छथि। 'करिया कक्काक कोरामिन'मे 'सरकारक लिंग परीक्षा ' मे सेहो ई असम्वेदनशीलता देखल जा सकैए जतऽ 'स्त्री-गुणसँ परिपुरित

सरकार' विनोद कुमार झा [देखू 'ईर्ष्या द्वेष नहि- समन्वय चाही'- 'हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)' पोथीमे- सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट)] लेल प्रयुक्त कएल गेल अछि।

१

बात-बातपर बात खण्ड-१

"बात-बातपर बात खण्ड-१" क "श्रेय आ प्रेय" मे मैथिलीक पुनः बिहार लोक सेवा आयोगमे प्रवेश आ ओकर पाठ्यक्रमक सम्बन्धमे श्यामानन्द चौधरीक योगदानक ओ चर्चा केलन्हि। शरदिन्दु जी ओ पाठ्यक्रम जे आयोग कार्यालयमे हरा गेल रहै, आयोगक गेटपर स्थित "झा जी बुकसेलर की दुकान" क नामसँ दोकान चलबैला स्व. चौधरी जी सँ लऽ कऽ श्यामानन्द चौधरीजी (तत्कालीन विशेष अधिकारी, बिहार लोक सेवा आयोग) कैँ देलन्हि। श्यामानन्द चौधरी जी २० दिसम्बर २०१८ कैँ कहलनि जे कोनो संस्था (मैथिलीक) ऐ सम्बन्धमे सरकारकैँ कोनो लिखित प्रस्ताव नै देलकै। मुदा चेतना समिति विधिवत एकर श्रेय लैत प्रसन्न्ता व्यक्त केलक! "हम आभारी छी"मे वैद्यनाथ चौधरी 'बैजू' द्वारा प्रेस रिलीज/ घोषणाक बादो २०१० क 'मिथिला रत्न' सम्मान सूचीसँ शरदिन्दु चौधरीक नाम बादमे हटा देबाक चर्च अछि। ई संस्था छल साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त विद्यापति सेवा संस्थान, सम्मान निर्णायक मण्डलमे रहथि डॉ. भीमनाथ झा, डॉ. फूलचन्द्र मिश्र 'रमण' आ कमलाकान्त झा, जँ शरदिन्दु चौधरीकैँ सम्मान देल जायत तँ ओ जहर खा लेता, ई धमकी देलन्हि साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त विद्यापति सेवा संस्थानक अध्यक्ष पं चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'। "हम नहि कहि सकैत छी..." मे साहित्य अकादेमी द्वारा कथित लिटरेरी एसोशियेशन रूपमे मान्यता प्राप्त करबा लेल असफल भेल संस्था 'मैथिली लेखक संघ ' आ विनोद कुमार झा केर राजनीति केर चर्चा अछि। पंजीयनमे ओना विनोदजीक अलाबे सभक बबुआने बनल रहबाक चर्चा अछि। मंत्रेश्वर झा पर मीटिंगमे अनेक आरोप लगाओल जयबाक, प्रेमलता मिश्र 'प्रेम', इन्दिरा झा आ पन्ना झा केर मूर्तिये सन व्यवहार (बुद्धिजीवी बनबाक लौलमे) केर चर्चा अछि। मैथिली लेखक संघमे आब स्थायी अध्यक्ष आ स्थायी सचिव छथि मुदा संघ स्वयं बिलायल अछि। से अकादेमीक कथित लिटेरेरी असोसियेशन सभक सेहो यएह खेरहा छै। विद्यानाथ झा 'विदित' तत्कालीन साहित्य अकादेमीक ५ साल धरि रहल मैथिली पदाधिकारी सेहो शरदिन्दुक 'सक्रिय सहयोग'(!) क अभिलाषी रहथि। "हमर दुर्गुण आ क्रोधक दुष्प्रभाव"मे लहेरियासरायक एकटा युवा लेखक/ पत्रकारक छद्म नामे अखबारमे लिखबाक चर्चा अछि जे शरदिन्दु साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी आ चेतना समितिकैँ भयादोहन कऽ कमाइत छथि। चेतना समितिक सम्बन्धमे ओ लिखै छथि- "... हम पत्रकार नहि रहितहुँ तँ हमरा संग किछु गोटे मारपीट सेहो करितथि। समितिक एकटा पूर्व सचिवक विरोध कयलापर हुनक कोना अभद्र रूपे गंजन भेल छल से लोककैँ बूझल छैक तथापि से स्थिति हमर नहि भेल।"

"समय-सालक जन्म आ साहित्यिक-राजनीतिक कुचक्र"मे विनोद बिहारी लालक पत्रक चर्चा अछि, ओ लिखलखिन्ह जे चलू 'सम्पादक रूपमे इतिहासमे अहाँक नाम अयबाक सख पूरा भऽ जायत।' २००१ ई. मे स्व. बबुआजी झा अज्ञातकैँ 'प्रतिज्ञा पाण्डव' महाकाव्यपर साहित्य अकादेमी पुरस्कारक विरोधमे राजमोहन झा द्वारा अभियान आ झूठ प्रचार जे ओ पोथी छपबे नै कएल अछि, ओइ हस्ताक्षर अभियानमे शरदिन्दु हस्ताक्षर नै केलन्हि आ तइपर राजमोहन झा 'अंतिका'मे अनाप-शनाप लिखलन्हि तकर चर्च अछि। एतऽ ई बता दी जे शरदिन्दु ओ छपलाहा पोथी ऊपर केलन्हि आ पटनाक अपन दोकानमे ओकरा प्रदर्शितो केलन्हि। मुदा फेर राजमोहन झाक चूक मानबाक आ शरदिन्दुक हुनका प्रति मोन फेरसँ निर्मल हेबाक चर्चा अछि। "नोकरी नहि करबाक निर्णय"मे अग्निपुष्पक चर्चा अछि, "एहन काज तँ अग्निपुष्प सन-सन पत्रकार कऽ सकैत छलाह जे आर्यावर्तमे हाथि कटबाक धमकी भरल स्वर निकालथि आ जागरणमे नांगरि सुटकाकऽ सेवानिवृति धरि काज कयलनि।" अहीमे प्रेसक मैनेजर सह कम्पोजीटर शिव कुमार ठाकुरक चर्चा अछि- "जे-से, ओ कम्पोजिटरसँ मालिक भेलाह- हमरा यैह प्रसन्नता अछि।" हमरा विचारे ओ शिवकुमार ठाकुरक प्रति कने बेशी 'हार्श' भऽ गेल छथि, चेतना समितिक विद्यापति भवन, बहुत गोटे मात्र हुनके (शिवकुमार ठाकुरक), पोथीक दोकान दुआरे जाइ छल, चेतना समितिकैँ सेहो नै अरघलै, अपने तँ ओ मैरेज हॉल बुक करैमे लागल रहैए, से पोथी किए बेचत, मुदा शिवकुमार ठाकुरक दोकान बन्न जरूर करबा देलकै। जे.. से..। "जीवन युद्धक भूमिका"मे मित्र दिलीप, अजित आजाद, अभय झा, पं. ताराकान्त झा, मंत्रेश्वर झा, बासुकी बाबू क सहयोगी, मदति केनिहार आ परामर्श देनिहारक रूपमे चर्चा अछि। "सम्मानक भूख"मे मूलधाराक पुरस्कार लोलुप साहित्यकारक वर्णन भेल अछि- "आदरणीय गोविन्द बाबूक खिस्सा प्रायः लोककैँ बुझले छैक जे पुरस्कार नहि भेटलापर मैथिली बाजब छोड़ि हिन्दीमे बाजल करथि जे 'मैथिली बईमानो की भाषा है'। "मैथिलक अविश्वसनीयता" मे मैथिल तांत्रिक बटेश महराज जीक 'कामाख्या संदेश'(मासिक) छपबाइयो कऽ ३० हजारसँ बेशी टाका नै देबाक चर्चा भेल अछि। "तीत लागय वा

कड़ू"मे उदयचन्द्र झा 'विनोद' १५७५ टाका नै देलखिन्ह मात्र ११०० टाकामे २०० पोथी लऽ गेलखिन्ह शेष ने पाइये देलखिन्ह ने पोथीये लऽ गेलखिन्ह, तकर चर्चा अछि।

२

मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)

"मर्मान्तक-शब्दानुभूति (बात-बातपर बात खण्ड-२)"क "महाकालक वज्राघात' कोरोना लाकडाउनमे २६.०३.२०२०कैँ लिखल गेल ४१ बर्ख पुरान घटनाक वर्णन अछि, मिश्रजीक बैंकक पाईक उनटफेरमे फँसब, नोकरी जायब, मायक मानसिक स्थितिक खराप हएब आ फेर हुनकर मृत्यु। "शेखर"क अवसानमे पिताक चर्च अछि, प्रभासजी, मुखियाजी, बटुक भाइ केर बरमहल सुधांशु शेखर चौधरीजी सँ भेँट करबा लेल अयबाक चर्चा अछि मुदा "हँ, ओ अंतिम साल भरि प्रवासी जीसँ गप्प करय चाहथि मुदा से सम्भव नहि भेलनि। हमरा कहलोपर प्रवासीजी भेँट नहि कयलथिन अन्त धरि।" माताक मृत्युक वर्णनक अगिला संस्मरण पिताक मृत्युक ई विवरण कोरोना लाकडाउनमे २७.०३.२०२०कैँ लिखल गेल। "अग्रलेखसँ भेंट"मे मिथिला मिहिरमे शरदिन्दुजीक आगमन (ओना नियुक्ति आर्यावर्तमे) आ तकरा भीमनाथ झा द्वारा अपन पदोन्नत्तिक मार्गमे बाधक बुझल जयबाक चर्चा अछि आ भीमनाथ झा ऐपर 'लंगूर' कविता लिखलन्हि जे सुधांशु शेखर चौधरी आ शरदिन्दु चौधरीकैँ बेधलकन्हि। भीमनाथ झाकैँ लगलन्हि जे हुनकासँ जूनियर गोकुल बाबूकैँ भीमनाथ झासँ टपा कऽ सहायक सम्पादक बना देल गेल आ सुधांशु शेखर चौधरी अपन पुत्र शरदिन्दु चौधरीकैँ नोकरी दिआबय खातिर से बर्दाश्त केलन्हि, जखनकि गोकुल बाबूक पैरवीकार रहथि कुमार साहेब (अखबार-प्रेसक मालिक) क नाना आ गोकुल बाबू रहथि कुमार साहेबक मौसा। एम्हर गोकुल बाबू धोती-कुर्ता छोड़ि सफारी सूटमे आबय लगलाह, से भीमनाथ झाकैँ आर असह्य भऽ गेलनि, मुदा फेर हुनकर नोकरी मिथिला विश्वविद्यालयमे लागि गेलनि। सुधांशु शेखर चौधरी (शरदिन्दुक पिता जिनका ओ लालकक्का कहैत छला) २ अक्टूबर १९८२कैँ सेवानिवृत्त भऽ गेलाह आ शरदिन्दु आ दिलीप (दिलीप सिंह झा) गोकुल बाबूक टेम्पो बनि रहि गेलाह। (आर्यावर्त, इण्डियन नेशन आ मिथिला मिहिरक राजनीति आ कोना ई राष्ट्रीय अखबार सभक पटना आगमनक बाद धराशायी भऽ गेल! सुनै छिऐ भाङ घोटल जाइ छलै ओतऽ बेरू पहर, किछु आर संस्मरण ऐपर एबाक चाही!) "सफलता ओ विफलताक कारण" मे पं हीरानन्द झा शास्त्री आ स्वं गजेन्द्र नारायण चौधरीसँ भेटल सम्पादकीय दायित्व आ अधिकारक ज्ञान भेटबाक चर्च अछि। मैथिलीक लेखक आ हिन्दीक पत्रकारक बेइमानीक चर्च अछि जे साहित्य अकादेमीक गोष्ठीमे मैथिली पत्रकारिताक श्रेय देसकोस आ विनोद कुमार झा कैँ देलनि आ मिथिला दैनिकक बेरमे 'जँ ओकरा दैनिक मानि लेल जाय' कहि ओकर उपलब्धिकैँ न्यून कऽ देलथिन। पाखण्डी युगक प्रतिनिधि रचनाकारक रूपमे बैद्यनाथ विमल केर चर्चा अछि आ कोनो ने कोनो सोंगरपर चतरयवला आलोचक/ सम्पादकक रूपमे रमानन्द झा 'रमण'क।

३

हमर अभाग: हुनक नहि दोष (बात-बातपर बात-३)

'भूमिका- श्यामपक्ष ओ हमर लेखन' मे ओ लिखैत छथि "हम जे लिखैत छी से प्रायः क्यो नहि लिखैत छथि। हँ कहियो काल लक्ष्मण झा 'सागर' क किछु-किछु एही तरहक आलेख पढ़बाक सौभाग्य भेटैत अछि।" "हमर अभाग: हुनक नहि दोष" मे 'मैथिलीपुत्र प्रदीप प्रभुनारायण झा ' पर निकलल मैथिली अकादमी पत्रिका विशेषांकक चर्चा अछि, काज सभटा शरदिन्दु जी केलन्हि सम्पादकमे नाम दिनेशचन्द्र झा केर छपलनि आ मेहनति केर मोल २८० टाका शरदिन्दुजीकैँ भेटलन्हि। "सम्पादकीय आ पाठकीय पत्र"मे बिनु नाम लेने रमेशक चर्चा अछि जे अबोध आ दुर्बोध मिश्रक नामसँ पाठकीय पत्र पठाबथिन आ शरदिन्दु आ हुनकर पिताक विषयमे अनाप-शनाप लिखैत छलाह कारण शशि बोध मिश्र 'शशि'क रचना समय-सालमे छपलासँ ओ आहत छलाह। बादमे कोना ओ केदार काननक पैरवीसँ पूर्वोत्तर मैथिलमे (जखन शरदिन्दु ओतऽ सम्पादक बनलाह) छापल गेलाह, ".. आब.. ओ जमीनपर छथि। नीक लिखैत छथि।" मधुकान्त झासँ प्राप्त पैरवीक आधारपर कोनो प्रोफेसर साहेबक कविता समय-सालमे छापलखिन्ह मुदा ई रमेश सन नीक नै लिखैत छथि, बड्ड दब कविता लिखैत छथि मुदा साहित्य अकादेमीक पुरस्कारक अन्तिम राउण्ड धरि तीन बेर पहुँचलाह- शरदिन्दु स्मरण करैत छथि। "मैथिलीक बदलैत स्वरूप"मे श्याम दरिहरेक पहिने अपने, फेर पोथी आ अन्तमे मैथिलीकैँ स्थान देबाक चर्चा अछि। "पैघत्वक अकारण प्रदर्शन किएक"मे कीर्तिनारायण मिश्र द्वारा 'अर्थान्तर' पोथी छपयबाक आ मोहन भारद्वाजक सोझाँमे मात्र ९००० टाका देबाक आ शेष ३५०० टाका नै देबाक चर्चा अछि जखनि कि सभटा पोथी हुनका घरपर पहुँचबा देल गेलन्हि। अहीमे साहित्य अकादेमीक 'मीट द ऑथर्स' केर चर्चा अछि जे ओकरा द्वारा मान्यता प्राप्त कथित लिटेरेरी एसोशियेसन चेतना समितिक प्रेक्षागृहमे आयोजित भेल। "कीर्ति बाबू सेहो हिन्दी-मैथिलीमे बजलाह। दावी जे हिन्दी-मैथिली दुनूक हम लेखक छी मुदा राजकमल-यात्री छोड़ि

ककर हिन्दीमे कोन स्थान रहलैक से देखल-बूझल अछि। ... हमर बेधक आ सटीक प्रश्न छल- अपने एतेक श्रेष्ठ साहित्यकार छी जे आइ अपनेपर साहित्य अकादेमी सन शीर्ष संस्था ई कार्यक्रम आयोजित कयलक अछि तखन अहाँ अपन नामपर जीविते किए 'कीर्तिनारायण मिश्र सम्मान' प्रारम्भ करौलहुँ, की अपनेकेँ भय अछि जे मरणोपरान्त क्यो स्मरण नहि करत तेँ जीविते अपन प्रचार-प्रसार देखबाक सेहन्ता छल? हमर एहि प्रश्नपर ओ विचलित भऽ उठलाह आ बजलाह- हमर पारिवारिक सदस्यक इच्छा रहनि। .. चेतना समितिक सम्पूर्ण पदाधिकारी एकर विरोध करय लगलाह आ ओतऽ स्वर गूँजय लागल- ई सम्मान कोनो हालतिमे निरन्तर चलैत रहत। एकर कारण रहैक ओ चेतना समितिकेँ पुनः डेढ़ लाख टाका पुरस्कार राशि बढ़यबा लेल टाका लऽ कऽ आयल रहथिन।" चेतना समिति द्वारा पुरस्कारक नामपर, पुरस्कार जिनका नामपर देल जाइत अछि हुनका आ हुनक परिवारसँ पाइ दोहनक ई एकटा फर्स्ट हैण्ड अकाउण्ट अछि, एहेन आर संस्मरण सोझाँ एबाक चाही।

"बइमान होयबाक घोषणा"मे 'साहित्यिकी ' (सरिसवपाही) पाहीक कोनो जगदीश मिश्रक चर्चा अछि, जे ख्यात साहित्यकार अशोककेँ १० टा पोथी शरदिन्दुजीकेँ देबा लेल कहने रहथिन्ह मुदा ओ विद्यापति भवनमे शिव कुमार ठाकुरकेँ दऽ देलन्हि आ ओ पोथी बेचिकऽ पाइ हुनका दऽ देलथिन्ह। मुदा ई जगदीश मिश्र माइक पर घोषित केलन्हि जे शरदिन्दु पोथी बेचि कऽ पाइ नहि देलनि आ ई सूचना रमानन्द झा 'रमण' शरदिन्दु जीकेँ देलन्हि। एक गोट घटना मोन पड़ैत अछि जे एक गोट रचनाकार अइ संस्थाकेँ 'सोइतिकी' कहैत छलाह आ जखन हुनकर पोथी ई संस्था छापि देलकन्हि तखने ओकरा 'साहित्यिकी ' कहलन्हि। 'हमर अभाग: हुनक सौभाग्य"मे भीमनाथ झा द्वारा फूलचन्द्र मिश्र 'रमण'केँ लेसि देबाक चर्चा अछि, कथित लिटरेरी असोशियेशन चेतना समिति द्वारा कोनो स्मारिकामे (स्मारिकाक राजनीति!) सत्यनारायण मेहता जी हुनकर रचना छाँटि देने रहथिन्ह। "मैथिलीक राजनीतिक कृपा"मे भारतीय भाषा संस्थानक अजित मिश्र आ अदिति मुखर्जीक वर्णन अछि। भारतीय भाषा संस्थानक 'सेमीनार सह वर्कशाप' मे हिनका आ मधुकान्त झाक नामपर दोसर गोटे द्वारा पाइ उठा लेबाक चर्चा अछि आ हेतुकर झाक पुत्र तेजकर झा केर सूचना जे शेखर प्रकाशनकेँ भारतीय भाषा संस्थानक अनुवाद मिशनक काज नै भेटैक से मैथिलीक २ टा विद्वान संस्थानक मीटिंगमे कहलन्हि। ९ टा पोथीक अनुवाद, प्रूफरीडिंग, प्रकाशन आ वितरणक भार शेखर प्रकाशनकेँ भेटल रहै, मुदा संस्थान एक-दूटा चमचाक कहलापर सम्पादकक चयन बिना शरदिन्दुसँ राय लेने चुनि लेलक, आ ओइ प्रकाशक-सम्पादकक मीटिंगमे हुनका नै बजाओल गेल। बादमे किछु काज नोवेल्टीक नरेन्द्र कुमार झा केँ भेटलन्हि, फेर पं सीताराम झाजीक पौत्र श्री चन्द्रनाथ झा जी हिनका कहलखिन्ह जे हुनकासँ ओ अनुवाद करा लेलखिन्ह आ कनी-मनी दऽ कऽ टारि देलखिन्ह। "ईर्ष्या द्वेष नहि- समन्वय चाही"मे परमेश्वर कापड़ि द्वारा ५ हजार टाकाक किताबक लऽ कऽ राम भरोस कापड़ि भ्रमरक कहलो उत्तर पाइ नै देब केर चर्चा अछि। केदार काननक कएकटा शिष्य सेहो एहिना केलखिन्ह। तारानन्द वियोगीक चर्चा अछि जे फेसबुकपर जाति विशेष (ब्राह्मण) लेल 'सभ बापूत' शब्दक प्रयोग खुलि कऽ करैत छथि। " .. ओ जाहि परिचर्चामे भाग लैत छथि ओहूमे ७० प्रतिशत वैह लोक भाग लैत छथि (ब्राह्मण) जकर पुरुखाकेँ ओ उकटैत छथिन... हम लोहा मानबनि श्री वियोगीजीक तखन जखन अपना सदृश बीसो टा व्यक्तित्वक निर्माण ओ अपना समाजसँ ठाढ़ कऽ देखाबथु। मात्र उकटा पैंची कयलासँ...।" मुदा हुनकर ई लिखब जे ओ परमेश्वर कापड़ि जीकेँ कहलनि- "अहाँकेँ एहिठाम बाँसमे बान्हि कऽ पीटी तँ कोनो हर्ज नहि ने। ओतऽ सरकार (विनोद कुमार झा, आब कवि सम्राट- व्यंग्यात्मक प्रयोग) आ युवा कवि बालमुकुन्दजी सेहो छलाह। "- मुदा बाँसमे बान्हि कऽ पीटी तँ कोनो हर्ज नहि ने- एकर कोनो तरहेँ समर्थन हम नै कऽ सकैत छी।

४

साक्षात् (बात-बातपर बात-४)

ऐमे शरदिन्दुजी स्मरण करैत छथि जे केना ".. एक गोटा हमरा पुरस्कार प्रक्रियाक स्तरहीनताक गप्पक क्रममे एहिमे लागल लोक सभकेँ माय-बहिनकेँ गारि-पढ़ैत कहलनि जे कोनो हालतिमे साहित्य अकादमियेे वा कोनो पुरस्कार हम नहि लेब, मुदा लगले छओ मासक अभ्यंतर पुरस्कार ग्रहण कऽ गदगद भऽ गेलाह। हम पूछैत छी एहिसँ हुनकर क्षमता, विद्वतामे कतेक अभिवृद्धि भेलनि। तखन अनेरे अर्र-दर्र बजने की लाभ! सेटिंग करैत रहू आ गारियो पढ़ैत चलू।" मैथिली साहित्यमे हिनका किरण, मधुप, सुमन, मणिपद्म, जयकान्त मिश्र, प्रभास, गुंजन, मन्त्रेश्वर, अमर, जीवकान्त, गोविन्द बाबू, बासुकी बाबू, प्रवासी, राजमोहन, बच्चा ठाकुर, भीम बाबू, रामदेव बाबू, शेखरजी, हेतुकर बाबू, अशोक, शिवशंकर श्रीनिवास, उषाकिरण खान, शेफालिका वर्मा, श्यामानन्द चौधरी, रंगनाथ दिवाकर, कमलमोहन चुन्नू, अजित आजाद, अशोक मेहता, सुरेन्द्र राउत, रमण कुमार झा, मुकुन्द मयंक आ बालमुकुन्द प्रभावित केलकन्हि। ओ ईहो कहैत छथि जे ".. पत्रकारिता माने आब बलिदान बूझल जाय लगलैक अछि। क्यो कहैत छथि- हमरा पत्रिका

निकालबामे आठ-दस लाख खर्च भऽ गेल। युवा ललित नारायण (मिथिला मिरर) एही वयसमे रिपोर्टिंगक क्रममे कहैत छथि- हम हड्डी गला रहल छी। जखन कि हमरा हिसाबें एखनेसँ प्रोफेशनल पत्रकार भऽ गेलाह अछि ओ।"

ओ कहैत छथि "जे प्रकाशक ओकरा कहैत छैक जे अपन पाइसँ अनकर किताब छापय आ मुद्रक ओकरा कहैत छैक जे पाइ लऽ कऽ काज करय। आ जे ई दुनू काज करय से अपनाकेँ मुद्रक आ प्रकाशक दुनू कहबैत अछि... शेखर प्रकाशन ई दुनू काज दुनू स्तरपर कयलक अछि। हमरा जनैत यैह काज पूर्वमे पुस्तक भण्डार आ ग्रन्थालय सेहो करैत छल।... कुल ५२ पोथी अपन दमपर छपने छी। आधा-आधी खर्चपर सेहो लगभग तीन दर्जनसँ बेसी पोथी छपने छी।..."

गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक संस्मरणात्मक हास्य-व्यंग्य संग्रह- 'जँ हम जनितहुँ'

हास्य-व्यंग्य संग्रह तँ फेर ई संस्मरण साहित्य केना भेल? एकर उत्तर शरदिन्दु स्वयं दैत छथि- "जँ हम जनितहुँ जे साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो राजनीतिये जकाँ खेल होइत छैक तँ कथमपि एहि क्षेत्रमे पैर रखबाक दुस्साहस नहि करितहुँ मुदा आब तँ फँसि गेल छी आ दूध-माछ दुनू बांतरवला परि सन भऽ गेल अछि। ने उगिलते बनैछ आ ने घोंटिते।" आ आगाँ ओ लिखैत छथि- "... जनिक चरित्र, हमरा हास्य-व्यंग्यमे फर्क छैक से नहि बुझय देलक आ जनिक सम्भाषण हमर लेखनक कथ्य बनल।... हमर पत्रकार प्रवृत्ति जहिया जे देखलक से लिखलक।" से सिद्ध भेल जे ई संस्मरणक पोथी थिक आ कॉमाक भीतर देल वक्तव्यमे कोनो नोन मिर्च नै-छै, हँ संस्मरणक हेडिंगमे आ इनवर्टेड कॉमाक बाहर नोन-मिर्च छै मुदा सेहो कने मने।

ऐ पोथीमे ११ टा संस्मरण अछि जे पुरस्कार लोलुप मैथिलीक मूल धाराक साहित्यकार, जइमे सभ जातिक साहित्यकार छथि, केर किरदानीक कारण हास्य-व्यंग्य संग्रह बनि गेल अछि। साहित्यकार सभक असली साहित्यिक नाम ऐ संग्रहमे देल गेल अछि जे एकर प्रामाणिकताकेँ बढ़बैत अछि, ई पोथी २००२ मे प्रकाशित भेल मुदा २०२२मे सेहो ओइ वर्णित साहित्यकार सभक ओहने छिच्छा छन्हि।

१

अथ ऑपरेशन साहित्य अकादेमी

ऐ संस्मरणमे मात्र सम्वाद अछि, इनवर्टेड कॉमाक भीतर। से कोनो नोन मिर्च नै, हेडिंग सेहो कम नोन-मिर्चक, 'अथ' संस्कृतक शब्द छिऐ, बिस्मिल्लाहक पर्याय, से 'अथ ऑपरेशन साहित्य अकादेमी'मे के सभ कलाकार छथि? विवरण नीचाँ अछि-

मुख्य कलाकार- मोहन भारद्वाज (आब स्वर्गीय) आ रमानन्द झा 'रमण'

किरदानी- लोकक (साहित्यकारक साहित्यक कुण्डली बाचब) मुदा बेसी काल आपसेमे टाल-गुल्ली खेलायब।

सहायक कलाकार- एकटा 'साठा तब पाठा' कवि, एकटा ससुर-जमायक जोड़ी।

किरदानी- पहिलुके पोथीसँ पुरान कवि सभकेँ मूर्च्छित करब, साहित्य अकादेमीक अकासमे विचरण।

टेक्निक- एक दोसाराक पोथीक ढिलहो, चेतने समिति जकाँ कतबो कटाउझ होउ, राज कक्केक आकि भातिजेक।

२

अपील

मुख्य कलाकार- मोहन भारद्वाज (आब स्वर्गीय), बासुकीनाथ झा आ रमानन्द झा 'रमण'

किरदानी- मैथिली अकादमी आ चेतना समितिक प्रकाशन गतिविधिपर कब्जा।

सहायक कलाकार- पाठकजी, दिनेशजी, इन्द्रकान्त जी।

किरदानी- क्रमसँ क्रोधी, भोगी आ लोभी।

टेक्निक- विद्वताक ढेकार करैत कठहँसी।

३

ईहो पुरुष अलबत्ते

मुख्य कलाकार- एकटा संस्थाक उच्चाधिकारी

किरदानी- काज बेरमे हाथ थरथरेनाइ।

सहायक कलाकार- रिक्त।

टेक्निक- कनफुसकीसँ प्रेरित भऽ समाज-सुधार आ भाषाक उद्धारक स्वांग।

४

देखल एकटा शूटिंग

मुख्य कलाकार- उपेन्द्रनाथ झा 'व्यास', मधुकान्त झा, मोहन भारद्वाज, रमानन्द झा 'रमण', रामदेव झा, पुर्णेन्दु चौधरी, चन्द्रनाथ मिश्र 'अमर'।

किरदानी- मैथिली अकादमी आ चेतना समितिक साहित्यक गतिविधिपर कब्जा। 'अंग्रेजी फूलक चिट्ठी' प्रसंग। सोमदेव, रमानन्द रेणु आ हंसराजकेँ बालिग नै होमऽ देब। चटिसारक चेला भीमनाथ, जयमन्त आ मदनेश्वर।

सहायक कलाकार- जयकान्त मिश्र, देवकान्त झा, कुलानन्द मिश्र, राजमोहन झा, उदय चन्द्र झा 'विनोद', अशोक, अग्निपुष्प, केदार, तारानन्द वियोगी, रमेश, शिवशंकर।

किरदानी- राजमोहन झा द्वारा भीम भाइसँ पहिने पुरस्कार प्राप्ति लेल अपन कोरपच्छु अशोक, अग्निपुष्प, केदारकेँ आगाँ करब। शरदूक एक्के बोलपर विजय कुमार मिश्र आ विवेकानन्द मैदानसँ बाहर, वीरेन्द्र झा द्वारा अमरेश पाठककेँ पानि पिआयब। गोकुलनाथ द्वारा प्रवासीकेँ लुढ़कायब।

मदारी- छत्रानन्द सिंह झा (बटुक भाइ), गोपेशजी।

नेपथ्यमे (संरक्षक)- उषाकिरण खान आ मंत्रेश्वर झा।

अन्तिम प्रस्तोता- गुंजनजी।

टेक्निक- मोहन भारद्वाज द्वारा भीम भाइ आ रामदेव झाकेँ लड़ायब आ स्वयं साहित्य अकादेमी परामर्शदातृ समितिमे घुसब, रमणजी द्वारा गोविन्द झा अभिनन्दन ग्रंथ सहित आन-आन ठाम ऐ कोठीक धान ओइ कोठीमे करब आ चेतना समितिकेँ सोधब।

पुरस्कार लोलुपक तीर्थ स्थल (सन २००२ धरि)- पटनाक गुरुद्वारा (आर-ब्लॉक), दरभंगाक श्यामा मन्दिर (राजकुमार गंज) आ प्रयाग (पी. सी. बनर्जी रोड) ।

५

स्वास्थ्य-रक्षा पुरस्कार

कार्यक्रमक प्रेरणा- बिनाका गीतमाला।

उद्घोषक- मैथिलीक अमीन सयानी छत्रानन्द मुदा हुनकर बटुक हेबाक कारण ई भार अशोककेँ देल गेल।

प्रश्न- गोविन्द झाकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार किए?

प्रश्नमंचमे के सभ शामिल नै?- रमानन्द रेणु, हंसराज, पूर्णेन्दु चौधरी, आ रहिकाक दुलहा उदयचन्द्र झा 'विनोद'।

एक सदस्यीय निर्णायक मण्डल- सुमनजी।

के सभ बहिष्कार केलन्हि?- उपेन्द्रनाथ झा व्यास, डॉ. अमरेश पाठक आ आनन्द मिश्र (एक सदस्यीय निर्णायक मण्डलमे नै रखबाक कारणसँ) ।

सुमनजी द्वारा जारी १६ सदस्यीय प्रतियोगीक सूची- सुरेश्वर झा, राजमोहन झा, मार्कण्डेय प्रवासी, मोहन भारद्वाज, भीमनाथ झा, प्रभास कुमार चौधरी, जीवकान्त, शेफालिका वर्मा, कीर्तिनारायण मिश्र, मन्त्रेश्वर झा, अग्निपुष्प, सुभाषचन्द्र यादव, मायानन्द मिश्र, डॉ धीरेन्द्र, सोमदेव आ केदार कानन।

स्वागत गीत- बुद्धिनाथ मिश्र आ शान्ति सुमन।

उत्तर- राजमोहन झा- गोविन्द झा द्वारा हिन्दीमे लिखल जयबाक आशंकाक (धमकीक) कारण।

घोषणाक उपरान्त- विनोद कुमार झा, अग्निपुष्प आ वियोगीक राजमोहन झाक कनहापर खुशीसँ झूमब। सुरेश्वर झा- जेँ हम प्रतिनिधि तेँ गोविन्द झाकेँ पुरस्कार। रवीन्द्रनाथ ठाकुर द्वारा महेन्द्रकेँ तलाक दऽ अशोक संग झूमब। प्रभास कुमार चौधरी- जेँ गोविन्द बाबू मनि लेलनि जे हुनकर कथा हमर आ मामा (गुंजन) सँ घटिया छनि, तेँ। अक्कूक ब्लड-प्रेसरक हाइ होयब, लटुआ कऽ खसब। विभारानीक आँचरसँ हवा करब, किशोर, रमेश आ कुमार शैलेन्द्रक ईर्ष्या। अशोक लंगूरभक्त भीमनाथकेँ आकृष्ट करैत छथि।

सुमनजी द्वारा अशोककेँ कहब- जयकान्त बाबूक जमाना नहि छनि जे सब काज पाइयेपर हेतै, आब किछु पैरबीयोपर हेतै।

अशोक- उमानाथ बाबू, चेतकर बाबू, सुभद्र बाबूकेँ देखिकेँ डरा जायब आ स्वास्थ्य रक्षा पुरस्कारक गप कहब। ई उत्तर ककर से लेखनाथ मिश्र आ डॉ. बासुकीनाथ झा द्वारा पूछब। मोहन भारद्वाज द्वारा आत्मप्रशंसा आ सुमनजी सँ फगुआ शिरोमणिक पुरस्कार। कुलानन्द मिश्र प्रतिज्ञा पूरा भेलापर अपन दाढ़ी छटयबाक लेल उपेन्द्र ठाकुरक घर दिस बिदा होइत छथि।

६

धन्य लालूजी जे आइ..

पं. ताराकान्त झा द्वारा मैथिलीकेँ बिहार लोक सेवा आयोगमे फेर सँ शामिल करबाबैले पटना उच्च न्यायालयमे जीत मुदा लालूजी द्वारा तकरा सर्वोच्चा न्यायालयमे लसकायब।

७

सम्पादकक नाम...

फचांड़ि मिसरक पत्र

८

एकालाप

मोहन भारद्वाजक साहित्य अकादेमी पुरस्कार नै भेटलापर आर्त्तनाद- राजमोहन झा अहाँक रक्षा ने गौरीनाथ ने अग्निपुष्प ने सुभाषचन्द्र यादव कऽ सकत।

भांग पिबैत शिष्य सभ: अशोकक नेतृत्वमे रमेश, वियोगी आ श्रीनिवास।

तारानन्द वियोगी (अशोककेँ)- लड़ाइये देलिअइ अशोक भाइ अहाँ दुनू पीठाचार्यकेँ (मोहन भारद्वाज आ राजमोहन झा) ।

पुनश्च: बादमे विद्यानाथ झा 'विदित'क उपन्यास 'विप्लवी बेसरा'क कलमतोड़ (गदगदी आ पलंगतोड़ समीक्षाक पर्याय) समीक्षाक बादो ओ हुनका पुरस्कार नै दियेलखिन्ह।

९

सफेदपोशक भतार

हवाला, यूरिया, वर्दीकाण्ड, पशुपालन, अलकतरा आदि घोटालाक वर्णन।

१०

जँ हम जनितहुँ

मूलधाराक मैथिलीक साहित्यकारकेँ देखबाक, चिन्हबाक आ भजारबाक अवसर।

११

प्लेटोक सपना, भारत आ कौमार्य-राजनीति

प्लेटोक रिपब्लिकक फिलास्फर किंग आ आइ-काल्हिक अविवाहित व्यक्तिक आचरणपर मनन।

गजेन्द्र ठाकुर

शरदिन्दु चौधरीक तीनटा व्यंग्य संग्रह- 'बड़ अजगुत देखल..', 'गोबरगणेश' आ 'करिया कक्काक कोरामिन'

'बड़ अजगुत देखल..' प्रकाशित भेल २००५ मे, 'गोबरगणेश' प्रकाशित भेल २०११ मे आ 'करिया कक्काक कोरामिन' प्रकाशित भेल २०१६ मे। तीनू पोथी करिया कक्का शृंखलाक व्यंग्य पोथी थिक आ हुनकर संस्मरण साहित्यसँ ई दू तरहेँ भिन्न अछि। करिया कक्का ओइ लोलुपताक प्रतीक छथि जकरा अहाँ चीन्हि सकै छियन्हि मुदा ओ कोनो असली नाम नै छथि, मुदा किछु आलेखमे करिया कक्का निपत्ता छथि आ किछुमे असली नामबला भूप सभ सायास प्रयन्तोक बादो जबरदस्ती आबिये जाइ छथि। मुदा लेखक ऐ तीनू पोथीमे सँ 'बड़ अजगुत देखल..'कैँ स्पष्टरूपेँ संस्मरणे कहै छथि। 'बड़ अजगुत देखल..'मे 'मुक्ति पयबाक प्रयत्न' आमुखमे ओ लिखैत छथि- "हम जे नै कऽ पौलहुँ, जे नहि सोचि पौलहुँ मुदा देखबामे आयल- सैह अछि- बड़ अजगुत देखलमे।"

१

'बड़ अजगुत देखल..'

की मथै छी?

"... हमर मैथिली.. जमाय-ससुरक बहिकिरनी बनबा लेल विवश अछि... किछु सामाजिक कार्यकर्ताक आमदनीक साधन बनल अछि।"

दर्शन-सुदर्शन

"...चलू महाकवि विद्यापतिक चेतना समिति स्थित वासा...

.. 'अयं यौ के छथि नेपालवला नाटककार?'

'महेन्द्र मलंगिया दिया पू छै छी सर।'

..'दऽ दियौ ओही नाटककारकैँ एहि बेरुक चेतना पुरस्कार।'

..'मुदा हुनकासँ सीनियर...'

'ककरो तँ देबे करबै, छोट होइ की पैघ।..'

'कवि-सम्मेलने बन्न भऽ जयबाक चाही। लोक रहिते ने छैक ओहिकालमे। ... होयबाक चाही तँ टाका जुटबियौ ने।... मैथिली अकादमी.. कवि-सम्मेलनक नामपर पाँच हजार गछलक मुदा देलक दुइये हजार। बाँचत कतऽ सँ डाँरेसँ घाटा लागि गेल छल।.. छपलाहा किताब सभमे दीवार लागल छै..।"

.. नहि भागू यौ, यात्रीजी एकर स्थापना कऽ भागि गेलाह। आइ हुनकर फोटो टांगल छनि मुदा संस्थापकक दावेदार कैक गोटे भऽ गेलाह...

२

'गोबरगणेश'

बोर्ड लागल टाटपर, सूतल छी खाटपर

मैथिली अकादमीक दलानपर। ओहो वैह फगुआ गाबि रहल छह। दुनूटा भाषणमालामे अपन परामर्शीयेकैँ भाषणबाज बना देलकौह आ कहाँदन तेसरसँ सभटा पोथीक सम्पादन करा रहल अछि (अशोक, तारानन्द वियोगी आ मोहन भारद्वाजकैँ लक्ष्य कऽ) ।

तावत काल

'एहने सन प्रयोग साहित्य अकादेमी सेहो कयलक जे जकरा होटल रहतैक सेहो परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनि सकैत छथि।.. पटनोमे खूब कचरम कूट होइत। लेखक संघकेँ सम्मानक टाटक नहि करय पड़ितैक।.. मैथिली लेखक संघ.. खाली अभिनन्दन-वन्दन, ने कोनो स्पन्दन आ ने कोनो गर्जन। मात्र कलहंत जकाँ अभावक अरण्य-रोदन।"

गोलैसी- 'अर्थात्'

जाहि आलोचनाक पोथीकेँ लोकोक्तिक बैसाखी नहि चला सकल, जाहि आलोचनाकेँ 'अखियासल ', 'बेसाहल ', 'भजारल ' (रमानन्द झा 'रमण'क अर्द्ध-समालोचनाक पोथी सभ) नहि भजा सकल तकरा गोलैसीक प्रतिमाने टा मानल जा सकैछ ने!

सीडी समीक्षा

'रमण'जी ओतऽ जायब जरूरी अछि, ओ असक छथि... भारद्वाजजीक लेखनीकेँ सक्रिय करबा लेल पंचलीटरा मोबिल लेबऽ लेल घेंटाजोड़ी कयने अशोक आ तारानन्द वियोगी नचिकेता मालिकसँ नेहोरा कऽ रहल छलाह मुदा मुंशी रामलोचन कहि देलथिन जे एक बेर देलियनि (मोहन भारद्वाजकेँ प्रबोध सम्मान चयन समितिमे रहितो प्रबोध सम्मान लेबा/ देबाकेँ लक्ष्य करैत) तँ उत्फाल मचि गेल छल आब देबनि तँ मिथिलो दर्शन लोककेँ नहि करा सकबैक।.. जीवकान्तक जोगीरा आ अमरक विरहाक मिक्सर होयत, भीमनाथक गुलगुल्ला आ रामदेवक वाइप्रोडक्टक लीला होयत आ होयत पन्ना-इन्दिरा-नीता-सुशीला आ वीणाक झंकार.. मन्त्रेश्वरजीक बाँहि पकड़ल- फरब-फुलायब। मुदा सख-सेहन्ता नहि पूरल। .. नर इन्द्र लग गेलहुँ .. मुदा ओ तँ आर किदन निकललाह।... हुनका हीरा-पन्नासँ फुरसतिए नहि। .. ई अग्निपुष्प थिक, एकरेसँ शृंगार करू.. कुणाल, सुकान्त आ साकेतानन्द.. ओ सभ समलैंगिक छथि.. विदितजी.... ओ तँ स्वयं रसिया छथि। प्रवासीजी संग संध्यावंदन करताह, ठकुराइन संग युगलबंदी करताह...'।

पाहुन इन्द्रकान्त झा.. झाजी वीरेन्द्र.. तार नेपालक उपराष्ट्रपतिसँ सोझे सोझ जुड़ल.. पं. योगानन्द झा.. वैद्यनाथ मिश्र, गणेश झा.. हमर मान-मर्दन करैत छथि..

बच्चा ठाकुरक नेतृत्वमे सुरेन्द्रनाथ, केदार कानन, रमेश चिचिआइत...फेर अजित (आजाद) बाजय लगलाह- .. जतऽ होइ ततहिसँ एस. एम. एस. कऽ एहि सरकारक ओहिना मदति करियनि जेना राजमोहन झा आ प्रेमशंकर सिंहकेँ एस. एम. एस. क बलपर सरकारक दर्जा दैत रहलियनि।

३

'करिया कक्काक कोरामिन'

बुद्धिक बखारीक वर्गीकरण

मात्र दू गोत्र (भारद्वाज-रमण) पाँजिक लेखक छोड़ि कऽ, कारण ई मैथिलीक पैथिलॉजिस्ट श्रेणीमे अबैत छथि।

'लीव इन रिलेशन'सँ जनमल सुन्नर नेना

पटनाक विख्यात समितिक विषपिपड़ी पी. आर. ओ. साहित्यकार एहू समारोहमे शामिल भऽ नेपाली साहित्यकार-समाज संग तेहन ने राजनीति कयलनि जे क्षुब्ध भऽ ओ लोकनि बटुआमे आनल 'नेरू' (नेपाली रुपया) सहयोग राशि ओहिना आपस अपना संगे लऽ गेलाह।

'सरकार'क लिंग परीक्षण

मैथिलक एक पुरुषवेश धारीकेँ अपन 'सरकार' (विनोद कुमार झा केँ लक्ष्य करैत) बनौलह मुदा एक्कोटा काज ओ पुरुषवला कऽ सकलथुन। कहियो आचार्य अरिष्टनेमीक बहिकिरनी बनि दिन कटलनि तँ आब एकटा संघमे द्रोपदी बनि सौभाग्यवती बनल छथुन।

व्यंग्य लिखबाक व्योंत

आचार्य अरिष्टनेमीक चर्च एतहु भेल अछि।

लुटन... आचार्य अरिष्टनेमी (चन्द्र नाथ मिश्र 'अमर') क दरबारी बनि मंच सभक तिरपेच्छन कयलह।...

कोरामे नेना, नगरमे सोर

'ई गोलैसिये ने छै हौ जे पुरना सरकार ठकैत-ठकैत सत्ता रूपी गाछसँ तुबि कऽ नीचाँ खसि पड़ल मुदा भेद नहि खोललक आ आब देखह जे नवको सरकार वैह धुन गाबि रहल अछि।

पुरस्कार विज्ञानक फलाफल

योगानन्द चुटकी लैत बजलाह- 'अहाँ डाक्टर साहेबसँ पोथी विमोचन करेबै आ मिश्रटोलाक श्रीमान् आ हुनकर ओझाजीक वर्चस्व स्वीकार नहि करबैक तँ गाछसँ सेव नीचे मुँहे किए खसैत छैक से कोना बुझबै।'...

वीणा-वादनक अभ्यासक संगहि 'इदं रसे, इदं गुद्दे'क सम्बोधनसँ मिश्रजी आ ओझाजीकेँ प्रसन्न करबाक प्रयास करथु...

१०६. राम भरोस कापड़ि ‘भ्रमर’ पर एकटा समग्र दृष्टि

सारांश

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' सर्वहारा वर्गकेँ गरिमा देलन्हि, जखन महेन्द्र मलंगिया आ जातिवादी रंगमंच शोलकन आ राड़ युक्त शब्दावली अपन स्लैपस्टिक ह्यूमर बला नाटक मे दऽ रहल छल, तखन भ्रमर जी ई केलन्हि, से आर महत्वपूर्ण छल। जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ जे पढ़बामे नीक लागत से भऽ जायत नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही?

बीजशब्द: भरोस · कापड़ि · भ्रमर · समग्र · दृष्टि · नाटक · मलंगिया

राम भरोस कापड़ि 'भ्रमर' पर एकटा समग्र दृष्टि

जँ नाटक पढ़बामे उद्वेलित नै करत तँ निर्देशक ओकर मंचनक निर्णय कोना लेत? आ जे पढ़बामे नीक लागत से भऽ जायत नाटकक पठनीय तत्त्वक आग्रही? आ जे जातिवादी अछि, जे 'स्लैपस्टिक ह्यूमर' लिखै छथि से भेला नाटकक मंचीय तत्वक आग्रही? २१म शताब्दीमे मलंगियाजी 'ओकर आंगनक बारहमासा'मे निम्न वर्गकेँ राड़ कहै छथि, कएक दशक बाद ई धरि सुधार आएल छन्हि जे ओ आब ओइ वर्गकेँ निम्न वर्ग कहि रहल छथि, ई सुधार स्वागत योग्य मुदा ऐ दीर्घ अवधि लेल बड्ड कम अछि। मलंगियाजी अपन जाति-आधारित वाक्य संरचना, आ भ्रष्ट-हिन्दी मिश्रित वाक्य रचना कोना घोसिया सकितथि जँ भगता आ निम्न वर्गक छद्म संकल्पना नै अनितथि, ई तथ्य ओ बड्ड चतुराइसँ नुकेबाक प्रयास करै छथि, आ तेँ ओ मेडियोक्रिटीसँ आगाँ नै बढ़ि पबै छथि। आ तेँ हुनकामे ऐ नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ छन्हि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। विष्णु शर्माक पंचतंत्रमे नीक कथा सभ अछि मुदा ओ अकारण शूद्र आ स्त्रीक पाछाँ पड़ि जाइ छथि, से नारायण पण्डितकेँ ओकर पुनर्लेखन कऽ हितोपदेश लिखय पड़लन्हि। रंगमंच निर्देशककेँ सेहो ऐ तरहक भाषाक पुनर्लेखन कऽ मंचन योग्य शब्दावली बनेबाक चाही।

भ्रमरक गरिमामय भाषा लोकक गरिमाक मान रखैत अछि।

मुदा पहिने भ्रमरक लघुकथा सभपर एकटा दृष्टि:

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा (१९८७)

ऐ संग्रहमे १२ टा लघुकथा अछि।

पहिल लघुकथा भगजोगनीक जबर्दस्त प्रारम्भ भेल। ग्लैमर गर्ल रेखा घर गृहस्थीक लेल चिन्तित, ई देखि कऽ प्रोटैगोनिस्ट अभि अचम्भित छथि। समाजसँ परिवारसँ जे ओकरा अठारहे उन्नैस बर्खमे पठा देलकै काठमाण्डो, कमाइ लेल। ओकरासँ खिन्न छलि रेखा। पति बनारसमे ओकरे कमाइपर पड़ल रहै छल, आ ओकर फैशनक खर्च पूरा करै छलै ओकर संगी शेखर, व्यापारी। मुदा कथाक अन्त कमजोर भऽ गेल अछि।

अन्हारमे भोतिआयल एकटा सिपाही उत्कृष्ट कथा अछि। गणेश आ गणेश सन लोकक स्केच। 'हमरे हरिपुर बला बट्टेदारसँ माङल दाउरा, सुरवाल, टोपी आ बाबूक पुरना जूता पयरमे आ आँखिमे टूटल बाँहिबला चश्मा, जकरा ओ डोरीसँ बन्हने रहैक।'

'भोतिआयल बाटक बटोही', 'नोरक बुन्न' आ 'असक्क' व्यक्तिक मनक विचार आ निराशाकेँ नीकसँ वर्णन करैत अछि। मुदा सर्वहाराक दर्द 'माटिक दरद'मे जइ प्रकारेँ आयल अछि, से अद्भुत अछि।

'मन:स्थितिक दंश' कथाक गढ़नि अद्भुत् अछि। बहुरियाक पति नाइट ड्यूटी, सिकरेटीपर जाइ छै। कमजोर छै। ससुर ओकरा घरमे पइसै छै, मुदा से ओकरा बादमे पता चलै छै, पहिल राति तँ ओ आदंकमे रहैए, ओकरा संग सम्भोगो भेलै आकि ओ सपनाइ छलि सेहो नै पता। कथा आगाँ बढ़ै छै। आर शिल्पगत विशेषता अबै छै। मुदा फेर अन्त होइत-होइत कथा कमजोर भऽ जाइए।

टीस दसम कक्षाक छात्राक कथा अछि, ओ किछु बनऽ चाहै छथि, मुदा..

जेना टीस गीताक कथा अछि तहिना मौसी मौसीक कथा अछि जे आइ जा रहल छथि, मुदा हुनका मोनसँ कियो निकालि नै पाबि रहल अछि।

आँचरमे बर्खा बुन्नीक बीच प्रोटैगोनिस्ट सोचि रहल छथि। भयंकर बर्खा, अड़ियानधान कऽ देतै। सरस्वती, सुनीता, गीता। सरस्वतीक सासुर नीक नै भेलै, गीता लेल लड़का प्रोटैगोनिस्ट ताकथु। स्मृति.. बर्खा बुन्नीक बीच।

पांकमे मॉडर्न रेखाक कथा अछि। मुदा कथा उद्देश्यहीन भटकैत रहैत अछि। तोरा संगे जयबौ रे कुजबा टाइटल कथा अछि मुदा पांक सन ईहो स्त्री पुरुष विमर्शकेँ नै फरिछा पाबैए। बैकफ्लैस आस जगबैत रहैए मुदा पाठक पियासले रहि जाइ छथि आ से प्यास तखन आर तीव्र भऽ जाइए जखन एतेक सशक्त पाँति कथाकार अन्तिममे आनै छथि।

तोरा संगे जयबौ रे कुजबा

बड़ सुख होयतै-

हथिया चढ़ि घुमबै जहान रे..

भ्रमरक नाटक

फील्डवर्कक आधारपर जँ लोककथाक संकलन, मोहाबराक संकलन नै करब तँ अहिना हएत जेना मलंगिया जीक नाटकमे होइए। अहाँ एक वर्गक प्रचलित मोहाबरा' दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट' मोहाबराक संकलन कऽ लेब मुदा दोसर वर्ग द्वारा प्रयुक्त' दस ब्राह्मण एक पेट..' केर संकलन नै कऽ सकब। महेन्द्र नारायण राम लिखै छथि जे लोककथामे जाति-पाइत नै होइ छै, मुदा मलंगियाजी से कोना मानताह? भगता सेहो हुनकर कथामे एबे करै छन्हि। आ असल कारण जइ कारणसँ ई मलंगिया जीक नाटकक अभिन्न अंग बनि जाइत अछि से अछि हुनकर आनुवंशिक जातीय श्रेष्ठता आधारित सोच। हुनकर नाटकमे मोटा-मोटी अढ़ाइ-अढ़ाइ पन्नाक घीच तीरि कऽ कइएकटा दृश्य होइत अछि, जइमे अन्तिम दू-तीन दृश्य धरि ओ छोटका जाइतक (मलंगियाजीक अपन इजाद कएल भाषा द्वारा) कथित भाषापर सवर्ण दर्शकक हँसबाक, आ भगताक भ्रष्ट-हिन्दीक माध्यमसँ छद्म हास्य उत्पन्न करबाक अपन पुरान पद्धतिक अनुसरण करै छथि। नाट्य-कथाकेँ उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह तँ अन्तिम दू-तीन दृश्यमे ओ करैत छथि मुदा सामर्थ्य नै आबि पबै छन्हि। “पचपनिया मैथिली” मे सुभाष चन्द्र यादव लिखैत छथि- “डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’ अपन नोटबुक मे टिपने छलाह-‘ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?’ एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।” चन्द्रेश “रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर': विचार, संवेदना आ चेतना [विदेह अंक ३७०]” मे लिखै छथि- “किएक तँ नेपालक मैथिली नाटककेँ नाटक बुझले नहि जाइक। दोसर, जे संस्था मिनाप नाटक करय ताहिमे कोनो एकटा खास व्यक्तिक मात्र नाटक खेलायल जाइक। एही वर्चस्ववादी रीतिकेँ तोड़बाक आ मानसिकताकेँ जाग्रत करबाक उद्देश्यें ओ एक समयमे नाटक लिखबा पर जोर देलनि।” ई एकटा खास व्यक्ति मलंगिया जी थिका, मलंगिया जी नेपाली राजशाही कालमे लेखकीय प्रतिबद्धताकेँ नै निमहा सकला आ राजनैतिक रूपसँ सत्ता पक्षक नाटक लिखलनि आ खयाल रखलनि जे दर्शक हँसय मात्र सर्वहारापर, सत्ताधीशपर नै। प्रा. परमेश्वर कापड़ि “’ मुर्दा’ नाटकक युगीन-सन्दर्भ [रमेश रञ्जन- मुर्दा, साल २०६९]” मे लिखै छथि- “डॉ. धीरेन्द्र आ मलंगिया... अपनाके राजनीतिसँ एतर रखने रहलाह। । तँए हिनका सबके रचनामे, रचनाधर्मितामे, राजनीतिक द्वन्द्वक लबलेस नहि देखाइ दैत अछि।” अही आलेखमे परमेश्वर कापड़ि रमेश रञ्जन आ मलंगिया जीक मादे लिखै छथि- “रमेशजी, मलंगियाके लगमे बहुत दिन धरि रहि रङ्गमञ्चीय सङ्घति करितो, यथार्थ ई अछि जे हिनकापर मलंगियाजीक कोनो छांह-भास नहि पड़ल बुझाइछ। दोसर यथार्थ तऽ इहो अछि जे मलंगियाजीसँ हटल रहले अवस्था आ संस्थामे ई महत्वपर्ण कृतिक रचना कए सकलथि। हमर कहबाक अभिप्राय ई अछि जे मलंगियाजी आ मिनापसँ जहिया रमेशजी अलग भऽ कऽ संकल्पसँ आबद्ध रहथि तहिए एकर रचना (मुर्दा, नाटक, वि. सं. २०५० सालमे) भेल अछि। ध्यातव्य अछि जे मिनाप एखनधरि एकर मञ्चन नहि कऽ सकल।”

ऐ परिस्थितिमे भ्रमर मैथिली नाटककेँ सम्वादक माध्यम बनौलनि, ओकरा लेल एकटा भाषा गढ़लनि जे सर्वहारा लेल अपमानजनक नै वरन गरिमामय छल। राजशाहीक तरमे रहितो आ नेपालक नागरिक रहितो (मलंगियाक कार्यस्थल नेपाल छल मुदा ओ भारतक नागरिक छला) ओ लोकगाथाक माध्यमसँ राजनीतिक विषयवस्तु अपन रचनाधर्मितामे अनलनि।

“भैया, अएलै अपन सोराज” केर पुरुष-१ आ पुरुष-२ सामन्तक बेगारी खटेबाक विरोधमे अछि आ पार्श्वसँ गीत उठै छै-

सभ दिन आई खढ़ कटाबै छै

सात सओ मुसहरबा से

सातो साओ मुसहरकेँ घरमे छागरे पोसल छै, दीना भद्री राजा भरथरीक गीत गबैत योगी रूपमे प्रवेश करै छथि।

तहिना’ महिषासुर मुर्दाबाद’ एकल नाटक अछि, जइमे पुरुष-१ अपनो आ पार्श्वसँ बाजल अबाजोक अभिनय कऽ सकैत अछि। एकटा केँ मारने बहुत रास जनमि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि, से काज अपूर्ण छै ओइ पात्रक, आ तेँ ओ फाँसी पर अखन नै लटकऽ चाहैए।

लोक नाट्य: जट जटिन (२००७) (शोध) हुनकर फील्डवर्कसँ जुड़ल रहबाक प्रमाण अछि। आ तेँ हुनका नेपालीय मैथिलीक लोकनाट्यधर्मी शेक्सपीयर कहल जाइत अछि।

१०७. नरेन्द्र झा: काव्य आ साहित्यिक मूल्यांकन

सारांश
दुनूक दल-बलमे द्वन्द्व बजरि गेल॥ कखनो ओ अपन कच (केश) बान्है छथि, कखनो फलका (बिथार) दइ छथि। कखनो अपन अंगकेँ झाँपै छथि, कखनो उघारि दइ छथि॥ थीर नयन आब अथिर भऽ गेलन्हि। उरोजक उदय-स्थल ललौन भऽ गेल छन्हि॥ चरण चपल छन्हि; आ चित्त चंचल सन भान भऽ रहल अछि।

बीजशब्द: नरेन्द्र · काव्य · साहित्यिक · मूल्यांकन · मिथिलाक · केलन्हि · चंचल

सम्पादकीय

नरेन्द्र झा

चपल चरन चित चंचल भान

सैसव जौवन दरसन भेल। दुहु दल-बलहि दन्द-परि गेल। ।

कबहुँ बाँधए कच कबहुँ बिथार। कबहुँ झाँपए अँग कबहुँ उघार। ।

थीर नयान अथिर किछु भेल। उरज उदय-थल लालिम देल। ।

चपल चरन, चित चंचल भान। जागल मनसिज मुदित नयान। ।

विद्यापति कह करु अवधान। बाला अंग लागल पंचवान। ।

[सैसव आ जौवनक भेंट भेल। दुनूक दल-बलमे द्वन्द्व बजरि गेल॥

कखनो ओ अपन कच (केश) बान्है छथि, कखनो फलका (बिथार) दइ छथि। कखनो अपन अंगकेँ झाँपै छथि, कखनो उघारि दइ छथि॥

थीर नयन आब अथिर भऽ गेलन्हि। उरोजक उदय-स्थल ललौन भऽ गेल छन्हि॥

चरण चपल छन्हि; आ चित्त चंचल सन भान भऽ रहल अछि। मनसिज (कामदेव) मुदित नयन (नयान) मे जागल छथि।

विद्यापति कहै छथि- संयम (अवधान- रोकटोक) राखू। बालाक अंगमे पाँचू वाण (मनसिज माने कामदेवक) लागल छन्हि।]

(ज्योतिरीश्वर पूर्व महाकवि विद्यापति)

नरेन्द्र झा अपन आत्मकथ्य’ चपल चरन चित चंचल भान’ (अंतिका, जनवरी-जून २००९) नामसँ लिखने छथि।

सन् १९३४, भूकम्प भेलै मिथिलामे, सहस्रबाढ़नि देखाइ पड़ल रहै किछु बर्ख पहिने, किछु अनहोनी हेतै, से लोक अनदाजने रहै।

आ तही भूकम्पमे नरेन्द्र झा केर बाबाक घर धराशायी भऽ गेलन्हि आ ओ सभ अपन नव-घराड़ी बनेलन्हि, पुरखाक खुनायल पोखड़िक दछिनबाड़ी भीड़पर। आ ओही नव घराड़ीपर जन्म भेलन्हि नरेन्द्र झा केर २२ सितम्बर १९३४ केँ। गाम तरौनी।

फेर शिव सिंहक समयमे करमहे मूलक श्रोत्रिय ब्राह्मणक ओ चर्च करै छथि जे तथ्यात्मक रूपेँ गलत अछि जँ ब्राह्मणक उपजातिक रूपमे स्रोत्रिय केँ देखी। हँ वेदपाठीकेँ श्रोत्रिय कहल जाइ छै, आ से सम्पूर्ण भारत/ नेपालमे आ से अखनो।

महाराज हरसिंहदेव- मिथिलाक कर्णाट वंशक। ज्योतिरीश्वर ठाकुरक वर्ण-रत्नाकरमे हरसिंहदेव नायक आकि राजा छलाह। १२९४ ई. मे जन्म आ १३०७ ई. मे राजसिंहासन। घियासुद्दीन तुगलकसँ १३२४-२५ ई. मे हारिक बाद नेपाल पलायन। मिथिलाक पञ्जी-प्रबन्धक ब्राह्मण, कायस्थ आ क्षत्रिय मध्य आधिकारिक स्थापक, मैथिल ब्राह्मणक हेतु गुणाकर झा, कर्ण कायस्थक लेल शंकरदत्त, आ क्षत्रियक हेतु विजयदत्त ऐ हेतु प्रथमतया नियुक्त भेलाह। हरसिंहदेवक प्रेरणासँ- आ ई हरसिंहदेव नान्यदेवक वंशज छलाह, जे नान्यदेव कार्णाट वंशक १००९ शाकेमे स्थापना केने रहथि- नन्दैद शुन्यं शशि शाक वर्षे (१०१९ शाके)... मिथिलाक पण्डित लोकनि शाके १२४८ तदनुसार १३२६ ई. मे पञ्जी-प्रबन्धक वर्तमान स्वरूपक प्रारम्भक निर्णय केलन्हि। पुनः वर्तमान स्वरूपमे थोडे बुद्धि विलासी लोकनि मिथिलेश महाराज माधव सिंहसँ १७६० ई. मे आदेश करबाय पञ्जीकारसँ शाखा पुस्तकक प्रणयन करबओलन्हि। ओकर बाद पाँजिमे (कखनो काल वर्णित १६०० शाके माने १६७८ ई. वास्तवमे माधव सिंहक बादमे १८०० ई. क आसपास) श्रोत्रिय नामक एकटा नव

ब्राह्मण उपजातिक मिथिलामे उत्पत्ति भेल। [मिथिलाक पञ्जी प्रबन्ध खण्ड १ आ २ द्रष्टव्य (जीनोम मैपिंग आ जीनियोलोजिकल मैपिंग, २००९, २०१२, गजेन्द्र ठाकुर, पञ्जीकार विद्यानन्द झा, नागेन्द्र कुमार झा)]

फेर राधाकृष्णक भक्त हिनकर बाबा पोखरिक भीड़पर मन्दिर बनाबऽ चहै छला, मुदा राघोपुरक पछवारि ड्योढ़ी (कार्नवालिसक स्थायी बन्दोबस्त दरभंगा राजकेँ भेटल रहै, जे वास्तवमे जमीन्दार छलाह, जिनका लोक अज्ञानतावश राजा, महराजा इत्यादि कहै छन्हि; आ स्थायी बन्दोबस्तक जमीन्दारक अन्तर्गत मारिते रास वसूली एजेण्ट/ गुमाश्ता सभ बहाल छल जकरा ड्योढ़ी इत्यादि कहल जाइत अछि।) रोक लगेलकन्हि से केस-फौदारी भेल जइमे हिनकर जेठ पित्ती भगीरथ झा आ बहिया गनौरा लड़ाइमे अगुआ रहथि। आ हिनकर वैष्णव गुरुबाबा ककरो पोखरिमे माछ नै मारऽ द इ छलखिन्ह, कियो मलाह चोरा-नुका कऽ पैसि गेल तँ ईहो पानिमे पैसि कऽ ओकरा भगबैत छलाह।

नरेन्द्र झा दरभंगासँ १९५४ ई. मे आई कॉम केलन्हि, फेर बी.कॉम केलन्हि। दरभंगामे किछु दिन लक्ष्मण झा (प्रसिद्ध लखन झा) संगे मिथिला-मैथिलीक काज केलन्हि। तही बीच सुनीति कुमार चटर्जी आ मिथिला रिसर्च इन्स्टीट्यूटक चर्चा अबैत अछि, आ मिथिलाक संस्कृत पण्डित लोकनि संग सुनीति कुमार चटर्जीक अशोभनीय व्यवहार, लक्ष्मण झा केर उलहन आ सुनीति कुमार चटर्जीक स्पष्टीकरणक चर्च होइत अछि। आ फेर कलकत्ता (आब कोलकाता) मे रहि, अगस्त १९५६ सँ सी.ए. केर तैयारी शुरू केलन्हि आ १९६६ क जनवरीमे चार्टर्ड अकाउण्टेण्ट (सी.ए.) भऽ गेला, फेर कलकत्ता दिल्ली होइत १९७५ ई सँ स्थायी रूपेँ पटनावासी भऽ गेला। तही बीच ३ जुलाई १९५९ केँ पन्ना झा संगे विवाह भेलन्हि। १९६४ ई. मे पत्नी बिहार विश्वविद्यालयसँ मनोविज्ञानमे बी.ए. (ऑनर्स) केलखिन्ह। १९६५ ई. मे पत्नी सेहो कलकत्ता आबि गेलखिन्ह। १९९७-९८ मे हृदय रोगक ऑपरेशन भेलन्हि आ मिथिला मैथिली लेल सक्रिय काज नै कएल हेतन्हि से बुझना गेलन्हि। से लेख लिखब शुरू केलन्हि आ आकाशवाणी पटनाक मैथिली कार्यक्रम’ भारती’ मे भाग लेब शुरू केलन्हि। अखन धरि हिनकर आ हिनकर पत्नीक निम्न पोथी सभ छपि गेल छन्हि, जे हिनकर अनुमतिसँ विदेह पेटारमे पी.डी.एफ. फार्मेटमे http://www.videha.co.in/pothi.htm लिंक पर उपलब्ध अछि (Psycho Social Stress and Schizophrenia 2003 केँ छोड़ि कऽ जे उपलब्ध नै भऽ सकल।)

नरेन्द्र झा

मिथिलाक आर्थिक विकास (२०००), मिथिलाक जनपदीय विकास (२००५), मिथिला मे जल-संसाधन ओ प्रबन्धन (२००६), विकास ओ अर्थतंत्र (२००८), परिभ्रमण (२०१२), अर्थतंत्र ओ भ्रष्टाचार (२०१२), स्मृति (२०१३); Mithila Rising (2014); चपल चरन चित चंचल भान (२०२१) ।

पन्ना झा

Psycho Social Stress and Schizophrenia 2003; अनुभूति (लघुकथा संग्रह) २००९, अनुशीलन (निबन्ध संग्रह) २०१२, अभिलाषा (लघुकथा संग्रह) (२०२१) ।

पटनाक मैथिली संस्था’ चेतना समिति’ केँ ओ’ अचेतना समिति’ कहै छथि, ऐ संस्थाक काजे सभ तेहने छै। हुनका कलकत्ता, जकरा ओ मिथिला-मैथिलीक कर्मभूमि कहै छथि, छुटबाक दुख छन्हि, ओ प्रबोध बाबू, बाबू साहेब चौधरी, सुखदेव ठाकुर, श्रीकान्त मण्डलकेँ मोन पाड़ै छथि, ओ सभ आब नै छथि। वीरेन्द्र मल्लिक अपन प्रज्वलित मैथिली साहित्यक रचना छोड़ि कर्मकाण्डमे ओझरायल छथि। असगरे रामलोचन ठाकुर की-की करताह (चपल चरन चित चंचल भान २००९ मे लिखल गेल आब रामलोचन ठाकुर सेहो स्वर्गीय भऽ गेल छथि।) । पत्नी पन्ना झा आ अनुज अग्निपुष्प आ कुणालकेँ कलकत्ता सँ पटना लऽ अनलन्हि जतऽ मैथिलीक काज नहिये सन होइत अछि। पन्ना झा संघक काज मे लागल रहै छथि (आब ओहो स्वर्गीय), अग्निपुष्प पत्रिका’ संवाद’ कुहरि कऽ निकालि रहल छथि, कुणाल मैथिली नाटक सीरियल निकालैमे लागल रहै छथि। जिबैत जी मिथिला राज्य नहिये बनि सकतनि।

टिप्पणी: नरेन्द्र झा जी केर पोथीमे देल परिचयमे हुनकर मायक नाम नै भेटल तेँ परिचयमे नै देल जा सकल।

पुनश्च: विदेहक नरेन्द्र झा विशेषांक ई-प्रकाशित भेलाक बाद श्री कुणाल जी नरेन्द्र झा जी केँ विशेषांक मुद्रित करा कऽ देलखिन्ह। केदारनाथ चौधरी विशेषांक बेरमे सेहो श्री अरविन्द गुप्ता जी विदेह ई-पत्रिकाक लिंक केदारनाथ चौधरी जी केँ देने रहथिन्ह, आ ई-पत्रिकाक विशेषांक मुद्रित करा कऽ सेहो। सभ गोटेक आभार।

१०८. रमानन्द झा ‘रमण’: कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा

सारांश
रमानन्द झा 'रमण': कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा — एक संपादकीय पुनरवलोकन जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब। अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त? लोक एहि ग्रन्थक दोष देखबैत मात्र एकर आलोचना करथि।

बीजशब्द: रमानन्द · कृतित्व · सीमा · रेखा · करैत · रचना · सेहो

रमानन्द झा 'रमण': कृतित्व आ ओकर सीमा-रेखा — एक संपादकीय पुनरवलोकन

जे व्यक्ति एहि ग्रन्थक गुण बुझबाक योग्य नहि, ओकर प्रशंसासँ हम प्रसन्न नहि होयब। अन्हरा सभक झुंड जँ कोनो चित्रक प्रशंसा करए, तँ चित्रकारक गौरव कोना बढ़त? लोक एहि ग्रन्थक दोष देखबैत मात्र एकर आलोचना करथि। ज्ञानी लोक अनजानमे कएल अपन तथ्यगत भूल दिस ध्यान आकृष्ट कएल जाएबासँ निश्चय प्रसन्न होइत छथि।- [आत्मतत्त्वविवेक ग्रन्थक आलोचनासम्बन्धी अन्तिम वचन- उदयनाचार्य]

एहि विशेषांकक लेल आएल सतरहो रचना — परिचयात्मक आलेखसँ लऽ कऽ दूटा दीर्घ पुस्तक-समीक्षा (अखियासल आ हिआओल पर), साक्षात्कार, संस्मरण, आ मूल्यांकनपरक निबन्ध धरि — एकठाम राखि पढ़ला उत्तर एकटा बात स्पष्ट होइत अछि: रमण जीक मैथिली साहित्यमे जे स्थान अछि, से निर्विवाद अछि, मुदा एहि विशेषांकक सार्थकता तखनहि पूर्ण होएत जखन प्रशंसाक संग-संग ओ सीमा सेहो चिह्नित होअए जे स्वयं योगदानकर्ता सभ, आ रमण जीक अपने आलोचना-पद्धतिक भीतरहि सँ, बेर-बेर रेखांकित होइत रहल अछि। नीचाँ ओहि सभटा सीमाकेँ चारि खण्डमे बाँटि एकठाम राखि रहल छी — पहिल, समालोचना-पद्धतिक सीमा (मुख्यतः 'अखियासल' पर आएल समीक्षासँ); दोसर, 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षासँ; तेसर, व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकनसँ जुड़ल सीमा; आ चारिम, संपादकीय-शैलीगत आ पाठकीय असहमतिसँ जुड़ल बिन्दु।

पहिल खण्ड: 'अखियासल' आ समालोचना-पद्धतिक मौलिक सीमा

'अखियासल' (1995) पर आएल विस्तृत समीक्षा (रचना ४) एहि सतरहोमेसँ सभसँ बेसी संरचित आ निर्मम अछि। एहि समीक्षाक उत्तरार्ध पूर्णतः 'अखियासल'क सीमा, दुर्बलता आ पद्धतिगत संकटकेँ समर्पित अछि, आ ओतय आठ गोट "सीमा" क्रमबद्ध रूपसँ गनल गेल अछि।

(क) पाठ बिना समीक्षा

सभसँ गम्भीर सीमा ई जे लगभग प्रत्येक प्रारम्भिक निबन्धमे समीक्षक स्वयं मूल रचनाक 'अनुपलब्धता'केँ स्वीकार करैत छथि। 'चन्द्रप्रभा'क प्रसंगमे स्वयं लिखल गेल अछि — "चन्द्रप्रभाक अध्ययन-विश्लेषण नीक जकाँ नहि कएल जा सकल अछि, एकर प्रमुख कारण थिक अनुपलब्धता"; त्रिलोचन झाक प्रसंगमे — "बड़ कम सामग्री उपलब्ध अछि"; यदुवरक प्रसंगमे — "यदुवरक प्रसंग अद्यावधि बड़ कम अनुसन्धान भेल अछि"; बिसरल जनार्दन झाक प्रसंगमे — "पत्र-पत्रिकोमे जे रचना प्रकाशित भेल होएत, आब सर्वसुलभ नहि अछि।" एतय एक गहन विरोधाभास उत्पन्न होइत अछि — जँ मूल कृति समीक्षककेँ स्वयं उपलब्ध नहि छल, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधारपर सम्भव भेल? बहुत ठाम समीक्षा वस्तुतः द्वितीयक स्रोतपर — जयकान्त मिश्रक मैथिली साहित्येतिहास, करुणाकान्त झाक शोध-प्रबन्ध, अन्य समीक्षकक उद्धरणपर — आश्रित भऽ जाइत अछि। पाठ-केन्द्रित समीक्षाक दृष्टिसँ ई एक मौलिक दुर्बलता थिक — पाठ बिना समीक्षा।

(ख) मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता आ आन्तरिक अन्तर्विरोध

रमानन्द झा एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि। गंगानन्द सिंह, 'चन्द्रग्रहण'क नारी-पात्र, ललित आ धीरेन्द्रक विवेचनमे समसामयिक यथार्थ-संवेदना, परिवेश-सम्पृक्ति आ युग-जीवनक प्रतिबिम्बनकेँ सर्वोच्च मूल्य मानल गेल अछि; मुदा व्यासक कथाकेँ ठीक एहि कारणें प्रशंसित कएल गेल जे ओ समसामयिक जीवनसँ विशेष प्रभावित नहि होइत अछि आ परिवर्तित युग-जीवनक विकृतिसँ अप्रभावित रहैत अछि। ई प्रत्यक्ष आत्मविरोध थिक — यथार्थ-सम्पृक्ति कखनहु गुण, कखनहु ओकर अभाव गुण। तहिना, हरिमोहन झाक हास्यकेँ "विचारक उन्मेष नहि करब"क कारणें न्यून मूल्य देल गेल, मुदा मधुपक गीतकेँ "तत्काल हृदय-प्रभाव" आ आनन्दक कारणें उच्च मूल्य देल गेल — जखन कि गीत सेहो प्रायः वैचारिक मन्थन नहि, अपितु भाव-तात्कालिकतापर आश्रित होइत अछि। 'कोबर-गीत' सन आत्म-विरोधी, प्रयोजन-प्रेरित रचनाकेँ "व्यक्तिसँ

पैघ समाज"क तर्कसँ उचित ठहराओल गेल, मुदा क्षेमेन्द्रक औचित्य-विचारक दृष्टिसँ आत्माक प्रतिकूल रचना भाव-औचित्यक मूल-भङ्ग थिक — समीक्षक एतय सैद्धान्तिक स्पष्टता प्रदान नहि कऽ पबैत छथि। ई अस्थिरता एहि कारणें अछि जे रमानन्द झा कोनो एक घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अपनबैत छथि — ओ प्रसंगानुसार कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक, कखनहु रूपवादी दृष्टि अपनबैत छथि। ई पद्धतिगत सारसंग्रहवाद एक दिस लचीलापन दैत अछि, तँ दोसर दिस मूल्याङ्कनकेँ अप्रत्याशित आ असंगत बना दैत अछि।

(ग) सैद्धान्तिक शब्दावलीक अनुपस्थिति

यद्यपि रमानन्द झाक समीक्षामे रस, ध्वनि, व्यञ्जना, औचित्य आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय अवधारणा अन्तर्निहित रूपेँ विद्यमान अछि, तथापि ओ एहि शास्त्रीय प्रतिमानकेँ कतहु सुस्पष्ट सैद्धान्तिक उपकरणक रूपमे प्रयोग नहि करैत छथि। "व्यञ्जित", "सम्प्रेषण", "भावाश्रित" सन शब्द तँ अबैत अछि, मुदा आनन्दवर्धन, अभिनवगुप्त, कुन्तक, क्षेमेन्द्र, भट्टनायक आदि आचार्यक नाम आ हुनक सिद्धान्तक व्यवस्थित अनुप्रयोग अनुपस्थित अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक सेहो कतहु नामोल्लेख अथवा सुविचारित प्रयोग नहि भेटैत अछि। एहिसँ एक द्वैध स्थिति उत्पन्न होइत अछि — एक दिस ई सैद्धान्तिक लाघव समीक्षाकेँ सुपाठ्य आ पत्रकारीय-सुलभ बनबैत अछि, मुदा दोसर दिस अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि। समीक्षा विवरणात्मक आ मूल्याङ्कनात्मक तँ अछि, मुदा सैद्धान्तिक-विश्लेषणात्मक कम अछि।

(घ) परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता — पुरुष-केन्द्रिकता आ वर्ण-केन्द्रिकता

पचीस निबन्धमे चौबीस पुरुष-रचनाकारकेँ समर्पित अछि; मात्र एक — हरिलता — स्त्री-रचनाकारकेँ। ओहूमे हरिलताक विवेचन मुख्यतः वैष्णव भक्ति धरि सीमित रहि जाइत अछि, ओकर सामाजिक-आलोचनात्मक सम्भावना — बाल-विवाह, वैधव्य आ स्त्री-शिक्षाक निषेधक विरुद्ध चोरा कऽ अक्षर सीखबाक संघर्ष — अनदेखा भऽ जाइत अछि। स्त्री अधिकतर पात्र अथवा प्रेरणाक रूपमे उपस्थित छथि, स्वतन्त्र लेखिका, सम्पादिका आ आलोचकक रूपमे कम। ओहिना विवेचित प्रायः समस्त रचनाकार एक विशिष्ट सामाजिक स्तरसँ अबैत छथि — मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा, अल्पसंख्यक आ लोक-परम्पराक अनाम रचयिता एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि।

(ङ) संकलनात्मक असंगति आ पाठ-प्रामाणिकताक प्रश्न

ई पचीस निबन्ध सन् 1972 सँ 1989 धरि विभिन्न पत्र-पत्रिकामे विभिन्न अवसरपर, विभिन्न पाठक-वर्गकेँ ध्यानमे राखि, स्वतन्त्र रूपेँ लिखल गेल छल। एकरा एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ एक अन्तर्निहित असंगति उत्पन्न होइत अछि — कतहु व्यक्तित्व-प्रधान, कतहु कृति-प्रधान, कतहु विधा-प्रधान, कतहु प्रवृत्ति-प्रधान समीक्षा। कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा समस्त निबन्धकेँ नहि बान्हैत अछि, आ एक सुनियोजित ग्रन्थमे जे भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहार अपेक्षित होइत अछि, से एहिमे अनुपस्थित अछि। संगहि, कृतिमे उद्धृत पद्यांश आ गद्यांशक पाठ-प्रामाणिकता सेहो सन्दिग्ध रहि जाइत अछि, किएक तँ स्वयं समीक्षक स्वीकार करैत छथि जे बहुतो रचना पत्र-पत्रिकामे छिड़िआएल आ अनुपलब्ध अछि, तेँ उद्धृत अंशक मूल पाठसँ तुलना-सत्यापन प्रायः असम्भव छल। "प्रथम" आ "मौलिक" सन पद लेल जे कठोर पाठालोचन, पाण्डुलिपि-अध्ययन आ प्रकाशन-इतिहास आवश्यक अछि, से एहि आरम्भिक कृतिमे अविकसित रहि जाइत अछि।

(च) समान्तर इतिहास-प्रतिमानक अपूर्ण सैद्धान्तिकीकरण

अन्ततः, सर्वाधिक मौलिक सीमा ई जे रमानन्द झा समान्तर इतिहासक अवधारणाकेँ व्यवहारमे तँ जीबैत छथि, मुदा ओकरा सिद्धान्तक रूपमे स्पष्टतः प्रतिपादित नहि करैत छथि। "दू कोटिक साहित्यकार"क सिद्धान्त एकर सर्वाधिक निकट थिक, मुदा ओ मुख्यधाराक कैननक — जयकान्त मिश्रक इतिहासक — विकल्प अथवा विरोध नहि, अपितु ओकर पूरक बनि रहि जाइत अछि। समीक्षक बेर-बेर जयकान्त मिश्रकेँ प्रामाणिक आधार मानि हुनकहि सूचनापर आश्रित रहैत छथि, जखन कि समान्तर इतिहासक असली दायित्व मुख्यधाराक कैननक आधार-मान्यताकेँ स्वयं प्रश्नाङ्कित करब थिक।

दोसर खण्ड: 'हिआओल' पर आएल अध्यायवार समीक्षासँ उठल सीमा

'हिआओल' (2012) पर आएल समीक्षा (रचना १६) एहि विशेषांकक सभसँ दीर्घ आ पद्धतिगत रचना अछि, जाहिमे भारतीय काव्यशास्त्र, पाश्चात्य साहित्य-सिद्धान्त आ विदेह समान्तर इतिहास-दृष्टि — तीनू कसौटीपर सत्रहो अध्यायकेँ अलग-अलग परखल

गेल अछि। एतय सेहो प्रत्येक अध्यायक उपलब्धिक संग-संग ओकर सीमा गनाओल गेल अछि, जकर किछु मुख्य बिन्दु एतय राखल जाइत अछि।

मैथिली भाषाक अध्ययनसँ जुड़ल सीमा

उद्घाटक अध्याय मुख्यतः पश्चिमी विद्वान् — कोलब्रुक, बीम्स, हार्नले, ग्रियर्सन — क साक्ष्यपर ठाढ़ अछि; दीनबन्धु झासँ पूर्वक देशी वैयाकरण-चेतना प्रायः अस्पर्शित रहि गेल। फलतः जाहि औपनिवेशिक ज्ञान-मीमांसाक आलोचना निबन्ध करैत अछि, तकरहि स्रोत-सामग्रीपर ओ स्वयं आश्रित भऽ जाइत अछि — ई उत्तर-औपनिवेशिक विमर्शक चिर-परिचित आत्म-विरोध थिक। मानक मैथिलीक निर्धारणमे अन्य उपभाषा-रूपक सामाजिक अधिकारक प्रश्न — मानक कोन शक्ति-संरचनासँ बनैत अछि — अनुत्तरित रहि जाइत अछि।

रमानाथ झा आ किरणजी सम्बन्धी अध्यायक सीमा

संग्रहक सभसँ दीर्घ अध्याय (रमानाथ झा आ मिथिला भाषा) संरचनाक दृष्टिएँ शिथिल अछि — प्रत्यालोचना, जीवनी, भाषा-प्राचीनता, लिपि-विमर्श, मानकीकरण आ भाषा-प्रबन्धन, छह स्वतन्त्र निबन्धक सामग्री एकहि छत्रमे अटकाओल गेल अछि। सन्तुलनक घोषित प्रतिज्ञाक बादो स्वर कतोक स्थानपर आलोचनात्मक जीवन-विवेचनसँ अधिक प्रतिरक्षात्मक श्रद्धाञ्जलि बनि जाइत अछि — किरणजीक मत-खण्डनकेँ "आवेगात्मक" कहल गेल, मुदा विरोधी पक्ष लेल प्रयुक्त लेखकक अपन शब्दावली सेहो आवेगसँ सर्वथा मुक्त नहि। 'प्रत्यालोचक किरणजी' अध्यायमे सेहो विरोधाभास-प्रदर्शनमे उद्धरण-चयन एकतरफा अछि — किरणजीक जाहि स्थल सभमे आत्म-संशोधन वा मत-परिमार्जन भेल हो, से खोजल नहि गेल; चालीस वर्षक लेखनमे मत-भिन्नता विकास सेहो भऽ सकैत अछि, केवल विरोधाभास नहि।

'कन्यादान'-पाठ आ यात्री-भाषा सम्बन्धी अध्यायक सीमा

'उपेक्षितक आँखिसँ कन्यादान पढ़ल जाए' — जे नारीवादी पुनर्पाठक दृष्टिसँ संग्रहक सभसँ चुनौतीपूर्ण अध्याय मानल गेल — ओहूमे प्रश्न-शृंखलाक अनुत्तरता एक सीमा थिक। "एकर उत्तरदायी के?" बेर-बेर पूछल गेल, मुदा लेखक अपन निर्णय सप्रमाण नहि देलनि — उपेक्षिताक आँखिसँ पढ़बाक जे प्रतिज्ञा छल, से अन्ततः प्रश्नवाचक मुद्रामे स्थगित भऽ गेल। कन्यादानक हास्य-रसक पक्ष — जे कृतिक लोकप्रियताक मूलाधार थिक — क रस-शास्त्रीय परीक्षा नहि भेल, आ कतोक स्थानपर पुनर्पाठ अभियोग-पत्र बनि जाइत अछि। तहिना, यात्रीक भाषासम्बन्धी अध्यायमे चारू शैलीविज्ञानिक उपकरण पश्चिमी स्रोतसँ आनल गेल अछि, आ भारतीय काव्यशास्त्रसँ संगति-स्थापन संकेत-मात्र रहि गेल — कुन्तकक छह वक्रता-भेदसँ चयन-विचलनक व्यवस्थित मिलान भेल रहितैक तँ पूर्व-पश्चिम-सेतु पूर्ण बनितैक, से अवसर छूटि गेल।

अनालोचित कवि लक्ष्मीपति सिंह आ मनमोहन झा सम्बन्धी सीमा

लक्ष्मीपति सिंह पर लिखल अध्यायमे लेखक स्वयं स्वीकारैत छथि जे छिड़िआएल कवितामेसँ "किछु मात्रे झोड़ि" सकलाह — ई ईमानदार स्वीकारोक्ति प्रशंसनीय अछि, मुदा एकर परिणाम ई जे निष्कर्ष सभ सीमित नमूनापर ठाढ़ अछि आ सामान्यीकरणक वैधता संदिग्ध रहैत अछि। कतोक प्राकृतिक प्रतीककेँ प्रत्यक्ष राजनीतिक रूपक मानल गेल अछि, मुदा प्रतीकक ई अर्थ कविताक आन्तरिक संरचना आ अन्य कविताक साक्ष्यसँ सभठाम पुष्ट नहि। मनमोहन झा सम्बन्धी अध्याय संग्रहक लघुतम अध्याय थिक, आ एकर लघुते एकर मुख्य सीमा थिक — "अनालोचित पक्ष"क घोषणा भेल, मुदा विश्लेषण कथा-सारक स्तरपर रहि गेल; निधनक दसम दिन लिखल गेलाक कारण श्रद्धांजलिक आर्द्र स्वर आलोचनाक तटस्थतापर भारी अछि।

समग्रतामे, 'हिआओल'क समीक्षक स्वयं अन्तमे लिखैत छथि — "समानान्तर धाराक पूर्ण पद्धति ओतऽ पहुँचैत अछि जतऽ हाशियाक स्वर अपने बाजए — 'हिआओल'मे हाशिया लेल बाजल गेल अछि, हाशियाकेँ बजाओल कम गेल अछि।" ई एकटा वाक्य समस्त संग्रहक सीमाकेँ संक्षेपमे समेटि दैत अछि।

तेसर खण्ड: व्यक्तित्व-कृतित्व आ संस्थागत मूल्यांकनसँ जुड़ल सीमा

समर्पण आ परिणामक बीचक खाधि

प्रवीण कुमार झाक आलेख (रचना १५) एहि विशेषांकक सभसँ बेबाक स्वर अछि। दीर्घ प्रशंसाक बाद "मुदा मुदा मुदा!" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि — "एक होइत अछि योगदान आ दोसर होइत अछि वृहद योगदान।" चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जेहन

संस्थामे एतेक दिन धरि महत्त्वपूर्ण पदपर, व्यापक बौद्धिक क्षमताक संग रहितहुँ, मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे राखबाक संघर्षमे रमण जीक कोनो निर्णायक भूमिका स्पष्ट रूपेँ सोझाँ नहि अबैत अछि; चेतना समिति सन संगठनमे रहितहुँ मैथिली-शिक्षाक क्षेत्रमे सेहो कोनो एहन पैघ परिणाम सोझाँ नहि अबैत अछि, जकरा हुनकर नेतृत्वक प्रत्यक्ष परिणाम कहल जा सकय। लेखक स्पष्ट करैत छथि जे प्रश्न समर्पणपर नहि, अपितु ओहि समर्पणक परिणामपर अछि — केओ कतेक समय देलनि आ कतेक मेहनत कएलनि, ई एकटा पक्ष अछि, मुदा ओहि मेहनतसँ भाषा, शिक्षा, साहित्यकार आ समाजकेँ की ठोस उपलब्धि भेटल, ई दोसर आ बेसी महत्त्वपूर्ण पक्ष अछि। एहि आलेखमे चेतना समितिक संग रहैत पुस्तक-साहित्यक संवर्धन आ संस्थागत गतिविधिकेँ लऽ कऽ रमण जीक कार्यकालसँ संबंधित किछु विवाद-आरोप, आ सरकार-सत्ताप्रतिष्ठानक संग संघर्षक बदला कूटनीतिक संवादकेँ बेसी महत्त्व देबाक आलोचना सेहो चर्चामे रहलाक उल्लेख अछि — यद्यपि लेखक स्वयं ई सेहो जोड़ैत छथि जे एहि आरोपकेँ अंतिम सत्य मानबासँ पहिने स्वतंत्र जाँच आवश्यक अछि।

मौनताक व्यंग्य

डा. धनाकर ठाकुरक आलेख (रचना ११) शैलीमे व्यंग्य-प्रधान अछि, मुदा ओकर भीतर एकटा तीक्ष्ण संकेत छिपल अछि। रमण जीकेँ चेतना समितिक "गुरु द्रोणाचार्य" कहि, लेखक मिथिला राज्यक प्रश्नपर चेतना समितिक — आ तेँ रमण जीक — मौनताकेँ द्रोणाचार्यक ओहि प्रसंगसँ तुलित करैत छथि जतय गुरु आँखि मुनने रहि गेला। "मिथिला राज्यक बात त चेतना समिति लेल सांढ़क लाल कपड़ा" — ई पंक्ति स्पष्ट कहैत अछि जे संस्था आ ओकर प्रमुख साहित्यिक स्तम्भ राजनीतिक रूपेँ संवेदनशील प्रश्नपर मौन रहबाकेँ प्राथमिकता दैत छथि।

निष्पक्षताक प्रश्न आ पंजीकरणक अपूर्णता

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख (रचना १२) मे उद्धृत राजलीन ठाकुरक मन्तव्य स्पष्ट अछि — "रमण जी हुनक प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनू, मुदा एकटा दोष जे ओ आन लोकक अपेक्षा सीमित समाजक कार्यकेँ बेसी उजागर करैत छथि, ताहि ठाम ओ निरपेक्ष नहि रहि पबैत छथि।" नबोनारायण मिश्रक संस्मरणपरक आलेख (रचना १३) मे सेहो साहित्यकार-पंजीकरणक जे सूची देल गेल अछि, ओहिमे बाबूसाहेब चौधरी सन आन्दोलनकारी-नाटककारक नाम सम्मिलित नहि होएबाक ओर संकेत अछि, जे रमण जीक पंजीकरण-कार्यक चयनात्मकतापर एकटा मौन प्रश्नचिह्न थिक।

चारिम खण्ड: संपादकीय-शैलीगत सीमा आ पाठकीय असहमति

पद्धतिगत अनुशासनहीनताक स्वीकृति

कुमार राहुलक आलेख (रचना ६) एहि दिशामे सभसँ प्रत्यक्ष अछि। "हम हुनकर सीमाकें तं रेखांकित कए सकैत छी" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि जे रमण जी समालोचनामे विद्वान आलोचक कोनो बान्हल-छेकल नियमक पालन करैत नहि देखाइत छथि, बल्कि कोनो एके टा तत्त्वसँ प्रभावित भऽ अपन निर्णय दऽ दैत छथि। किछु ठाम टिपाउट जेकाँ रमण जी कोनो रचना अथवा रचनाकारपर कम शब्दमे काज चला लेल करैत छथि आ अपन बात बेसी लिखैत छथि। हडसनक ओ मत उद्धृत करैत — जे आलोचनाक काज मात्र कृतिक उचित-अनुचित देखब नहि, बल्कि निश्चित मानदंड स्थापित करब थिक — लेखक ई स्वीकार करैत छथि जे रमण जीक कतोक आलेख एहि सैद्धान्तिक कसौटीपर पूर्ण नहि उतरैत अछि।

सम्पादकीय कार्यक असमानता

प्रदीप बिहारीक आलेख (रचना १४) एक ठाम स्पष्ट कहैत अछि जे 'घर-बाहर' पत्रिकाक सम्पादनमे ओ कौशल नहि झलकैत अछि, जे रमण जीक विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथीमे देखाइत अछि। भूमिका आ संपादकीय लेखनमे "कोनो लेखककेँ एहि दुनूक लेखनमे कतेक बेराएल होमक चाही, से रमण जी बेसी ठाम देखाइत छथि, सभ ठाम नहि। किछु ठाम एकभगाह भेलाह अछि।" एहि संग एहू बातक उल्लेख अछि जे हिनक साहित्यिक सेवा लेल हिनका प्रशंसा जतेक होइत छनि, आलोचना आ खिधांस सेहो होइत छनि, मुदा एहिपर ओ कतेक गंभीरतापूर्वक विचार करैत छथि, से हिनका चेहराक भावसँ बुझल नहि जा सकैछ।

तथ्यगत आ व्याख्यागत असहमति

कीर्तिनाथ झाक 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) मे एक ठाम स्पष्ट असहमति दर्ज अछि — जखन रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ स्वाधीनता-आन्दोलनक प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहैत छथि, तखन समीक्षक टिप्पणी करैत छथि — "मुदा, ई

विचार एहि विषयपर सर्वसम्मत थिक वा नहि, कहब कठिन।" अजित कुमार झाक आलेख (रचना ५) मे 'कन्यादान' पर रमण जीक पुनर्पाठसँ आरो स्पष्ट असहमति व्यक्त अछि — समीक्षकक तर्क एकाङ्गी बुझबैत, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झाक पाठकक जे तीन श्रेणी कएल गेल, ओहिमे एक चतुर्थ वर्गक (जे रमण जीक अपन साहित्यकेँ मिथिला-संस्कृतिपर आघात बुझैत छथि) चर्चा नहि भेल — "रमण जी अपन आलेखमे चारिम श्रेणीक चर्चा नहि केलनि अछि।" हितनाथ झाक आलेख (रचना १७) मे सेहो एक स्पष्ट असहमति अछि — रमण जी अपन बीज-भाषण संग्रहक प्रस्तावनामे साहित्यिक राजनीतिपर जे चोट कएने छथि, तकरा लेल समीक्षक लिखैत छथि — "ई मंच छल आ ई जाहि तरहक पोथी अछि, ओहि लेल हमरा जनैत उपयुक्त नहि... प्रहारसँ पहिने सुधारक सेहो गुंजाइस होयबाक चाही।"

आशीष अनचिन्हारक दृष्टिमे रमानन्द झा 'रमण' केर आलोचनात्मक-इतिहासलेखनक कमीसँ

आशीष अनचिन्हारक आलेखक मूल आग्रह ई अछि जे साहित्यक इतिहास लिखब केवल पोथी जमा करब, नाम गिनब वा बादमे प्रकाशित पुस्तककेँ आरम्भ-बिन्दु मानि लेब नहि थिक। हुनका अनुसार इतिहासकारक पहिल शर्त "इतिहासबोध" अछि—अर्थात् घटना, प्रकाशन, प्रभाव, पूर्ववर्ती प्रयोग, स्रोत आ श्रेयक क्रमकेँ निष्पक्ष ढङ्गसँ बुझब। एहि कसौटीपर ओ खास कऽ रमानन्द झा 'रमण' द्वारा धर्मेन्द्र विह्वलक पोथी "व्योमक ओहिपार" लेल लिखल भूमिकामे कतेको कमी देखैत छथि।

1. इतिहास बोधक अभाव

अनचिन्हारक सभसँ पैघ आपत्ति ई अछि जे रमण जी एहि प्रसंगमे "इतिहासबोध" बिसरि गेल छथि। अनचिन्हारक मते इतिहासकार वा भूमिका-लेखककेँ ई देखबाक चाही जे कोनो विधाक पहिल प्रकाशन, प्रारम्भिक प्रयोग, नियम-विवेचन आ बादक पुस्तकाकार विस्तार—ई सभ अलग-अलग चरण अछि। बादमे आयल एकटा पोथीकेँ आधार बनाकऽ पूर्वक चरणकेँ ओझरायल इतिहासक क्रमकेँ बिगाड़ैत अछि।

2. विधाक आरम्भ तय करबाक मापदण्डमे असंगति

अनचिन्हार स्पष्ट करैत छथि जे कोनो साहित्यिक विधाक आरम्भ ओहि समयसँ मानल जेबाक चाही जखन ओकर पहिल प्रमाणित प्रकाशन भेल—पत्रिकामे हो वा पुस्तक रूपमे। हुनकर आपत्ति ई अछि जे जँ एक लेखक लेल "पहिल पुस्तक" मानदण्ड बनाओल जाए आ आन लेखक लेल "पहिल प्रकाशन", तँ इतिहासलेखनमे दूहरा मापदण्ड आबि जाइत अछि। रमण जीक भूमिका एहि भेदकेँ पर्याप्त स्पष्ट नहि करैत अछि—एहने अनचिन्हारक आरोप अछि।

3. पूर्ववर्ती प्रकाशन आ प्रयोगक उपेक्षा

अनचिन्हार 2009 मे प्रकाशित गजेन्द्र ठाकुरक "कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक" पोथीक "मैथिली हाइकू हैकू क्षणिका" आलेखक उल्लेख करैत छथि, जतय टंका, शेनर्यू, हैबून, हैगा, वाका आदि जापानी विधापर चर्चा भेल बताओल अछि। ओ विदेहक फेसबुक समूह पर लगभग 2012 धरि एहि विधासभक प्रशिक्षण आ अनेक रचनाकारक भागीदारीक सेहो उल्लेख करैत छथि। अनचिन्हारक दृष्टिमे रमण जीक भूमिकामे एहि पूर्ववर्ती सार्वजनिक इतिहासक समुचित उल्लेख नहि भेनाइ एक महत्त्वपूर्ण कमी अछि।

4. स्रोत-सन्दर्भक अभाव

अनचिन्हारक आरोप अछि जे रमण जी टंका आदि विधाक नियम बतबैत छथि, मुदा ओहि नियमक मैथिलीमे पूर्व प्रस्तुति वा उपलब्ध स्रोतक संदर्भ नहि दैत छथि। साहित्येतिहास अथवा आलोचनात्मक भूमिकामे तथ्य मात्र कहब पर्याप्त नहि; ओकर स्रोत, पूर्वप्रयोग आ प्रमाण सेहो देब आवश्यक होइत अछि। अनचिन्हार एहि संदर्भहीनताकेँ विद्वतापूर्ण लेखनक कमजोरी मानैत छथि।

5. श्रेय-निर्धारणमे गड़बड़ी

अनचिन्हारक पठन अनुसार "व्योमक ओहिपार" केर भूमिका एहन प्रभाव दैत अछि मानो धर्मेन्द्र विह्वल टंका, शेनर्यू, हैबून, हैगा, वाका आदि विधाकेँ मैथिलीमे अनने होथि। अनचिन्हार एहि प्रभावकेँ ऐतिहासिक रूपेँ भ्रामक मानैत छथि, कारण हुनका अनुसार ई विधासभक चर्चा, नियम आ रचना-प्रयोग पहिने भऽ चुकल छल। तैँ भूमिका-लेखनमे "के पहिने परिचय देलनि", "के पहिल एकछाहा संग्रह देलनि", "के विधाकेँ लोकप्रिय बनौलनि"—ई अलग-अलग श्रेय स्पष्ट करब आवश्यक छल।

6. "पहिल पुस्तक" आ "विधाक पहिल उपस्थिति" क भेद अस्पष्ट

आलेखक परिशिष्टमे देल फेसबुक संवादकेँ अनचिन्हार अपन तर्कक समर्थनमे प्रस्तुत करैत छथि। ओहि संवादक आशय ई अछि जे धर्मेन्द्र विह्वल अपन पोथीकेँ एहि विधाक पहिल पुस्तकाकार/एकछाहा कृति कहबाक दाबी करैत छथि, मुदा विधा मैथिलीमे हुनकासँ पहिने नहि छल—एहन दाबी नहि करैत छथि। अनचिन्हारक मते रमण जीक भूमिका एहि अत्यन्त जरूरी भेदकेँ स्पष्ट रूपेँ स्थापित नहि कऽ सकल।

7. व्यक्तिगत वा वैचारिक असहमतिक प्रभावक आरोप

अनचिन्हारक आलोचना केवल तथ्यात्मक भूल धरि सीमित नहि अछि। ओ आरोप लगबैत छथि जे गजेन्द्र ठाकुरसँ वैचारिक असहमति वा "तामस" क कारण नाम आ योगदानकेँ नजरअन्दाज कएल गेल। ई एक गम्भीर आरोप अछि; अनचिन्हारक दृष्टिमे इतिहासकारक काज व्यक्तिगत पसन्द-अनपसन्दसँ ऊपर उठि श्रेयक निष्पक्ष निर्धारण करब थिक।

8. विरोधी प्रमाणक सामना नहि करब

अनचिन्हार चुनौती दैत छथि जे जँ गजेन्द्र ठाकुरसँ पहिने मैथिलीमे टंका, शेनर्यू, हैबून, हैगा, वाका आदि उपलब्ध छल आ ओकर नियमपर चर्चा भेल छल, तँ ओकर प्रमाण सामने आनल जाए। अर्थात् केवल मौन वा नाम-लोप पर्याप्त नहि; इतिहासलेखनमे वैकल्पिक दावाक दस्तावेजी प्रमाण देबाक चाही। अनचिन्हारक अनुसार रमण जीक भूमिकामे एहि स्तरक प्रमाण-विवेचन अनुपस्थित अछि।

9. भूमिका-लेखकक स्रोत-जाँचक जिम्मेदारी पूरा नहि भेनाइ

किसी पोथीक भूमिका केवल प्रशस्ति नहि, खास कऽ जखन ओ विधाक इतिहास आ नियमक दावा करैत हो। अनचिन्हारक दृष्टिमे रमण जीकेँ पूर्व प्रकाशन, कालक्रम, रचनाकारक सूची, सार्वजनिक पोस्ट, पुस्तक आ उपलब्ध प्रमाण सभक जाँच कऽ कतेक सावधानीसँ निष्कर्ष देबाक चाही छल। एहि स्रोत-जाँचक अभाव भूमिकाकेँ आलोचनात्मक दस्तावेजक अपेक्षा कमजोर बनबैत अछि।

10. इतिहासशुद्धिक आवश्यकता

अनचिन्हार अन्ततः सुधारक रास्ता सेहो सुझबैत छथि: जँ पूर्वक तथ्य गलत अछि तँ नब प्रमाण आनू; जँ पूर्ववर्ती योगदान अछि तँ ओकर नाम आ श्रेय पुनर्स्थापित करू। तैँ हुनकर दृष्टिमे रमण जीक उक्त लेखनक मूल कमी केवल "भूल" नहि, बल्कि सुधार योग्य ऐतिहासिक असंतुलन अछि।

निष्कर्ष: आशीष अनचिन्हारक आलोचनाक केन्द्र रमानन्द झा 'रमण' केर भाषा, शैली वा समग्र साहित्यिक कृतित्व नहि, बल्कि एहि विशिष्ट भूमिकामे इतिहासबोध, स्रोत-सन्दर्भ, कालक्रम, श्रेय-निर्धारण आ निष्पक्षताक प्रश्न अछि। हुनकर आरोपक सार ई अछि जे मैथिलीमे जापानी काव्य-विधासभक पूर्व इतिहासकेँ समुचित स्थान नहि देल गेल आ "पहिल पुस्तक" तथा "विधाक पहिल आगमन" क अन्तर धुँधला भेल। एही कारण ओ एहि लेखनकेँ इतिहासलेखनक दृष्टिसँ अपूर्ण आ पक्षपात-प्रभावित मानैत छथि।

उपसंहार

एहि सभटा सीमाकेँ एकठाम राखला उत्तर एकटा साझा सूत्र स्पष्ट होइत अछि। रमण जीक कार्य मात्रात्मक रूपेँ विपुल, अभिलेखीय दृष्टिसँ अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेमसँ प्रेरित अछि — एहिपर विशेषांकक कोनो योगदानकर्ता प्रश्न नहि उठबैत छथि। मुदा जखन ओहि कार्यकेँ सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ संस्थागत परिणामक कठोर कसौटीपर कसल जाइत अछि, तखन ओ पर्याप्त गुंजाइश छोड़ि दैत अछि — पाठ बिना समीक्षाक जोखिम, मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता, आत्मीयता-जनित प्रशंसाक अतिरेक, हाशियाक अल्प उपस्थिति, संस्थागत मौनता, आ चयनात्मक निष्पक्षता — ई सभटा बिन्दु आगामी अनुसन्धानक निमन्त्रण थिक, दण्ड नहि। 'हिआओल'क समीक्षक स्वयं जे कहलनि, से एहि समस्त विशेषांकपर सेहो लागू होइत अछि — "एकर श्रेष्ठता ओतए अछि जतए लेखक अभिलेख खोजैत छथि, प्रचलित भूल सुधारैत छथि, विस्मृत लेखककेँ पुनः उपस्थित करैत छथि... एकर सीमा ओतए अछि जतए अनुमान प्रमाणक स्थान लैत अछि, जीवनी कृतिक विश्लेषणपर भारी पड़ैत अछि।" रमण जीक अपने शब्दमे कही तँ — "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः" — एहि विवाद आ प्रतिवादसँ होइत तत्त्व-बोधे एहि विशेषांकक असली उपलब्धि थिक।

रमानन्द झा 'रमण': कृतित्वक सीमा-रेखा पर एक संपादकीय दृष्टि

रमण जीक मैथिली साहित्यमे जे स्थान अछि, से एहि सतरहो रचनासँ निर्विवाद बूझि पड़ैत अछि — मुदा एहि विशेषांकक सार्थकता तखनहि पूर्ण होएत जखन प्रशंसाक संग-संग ओ सीमा सेहो चिह्नित होअए जे स्वयं योगदानकर्ता सभ (आ रमण जीक अपन आलोचना-पद्धति) रेखांकित करैत अछि।

१. आलोचना-पद्धतिक सबसँ मौलिक सीमा — पाठ बिना समीक्षा

'अखियासल' पर आएल विस्तृत समीक्षामे (रचना ४) ई तथ्य साफ उजागर भेल अछि जे रमण जी प्रायः जाहि रचनाकेँ आलोचित करैत छथि, ओकर मूल पाठ हुनका लग उपलब्धे नहि रहैत छनि — 'चन्द्रप्रभा', त्रिलोचन झा, यदुवर, बिसरल जनार्दन झा — सभठाम समीक्षक स्वयं 'अनुपलब्धता' स्वीकारैत छथि। जखन मूल कृतिए समीक्षककेँ भेटले नहि, तँ ओकर सौन्दर्यशास्त्रीय मूल्याङ्कन कोन आधार पर सम्भव, ई प्रश्न अनुत्तरित रहि जाइत अछि। बहुतो ठाम समीक्षा जयकान्त मिश्रक इतिहास वा अन्य द्वितीयक स्रोत पर आश्रित भऽ जाइत अछि।

२. मूल्य-मानदण्डक अस्थिरता

एहि दुनू पोथीक समीक्षामे (रचना ४ आ १६) बेर-बेर देखाओल गेल अछि जे रमण जी एक निबन्धमे जाहि गुणकेँ सर्वोच्च मानैत छथि, दोसरमे ओकरे विपरीतकेँ प्रशंसित करैत छथि — जेना गंगानन्द सिंह, चन्द्रग्रहण आदिमे समसामयिक यथार्थ-सम्पृक्तिकेँ गुण मानब, मुदा व्यासक कथाकेँ ठीक ओही कारणें प्रशंसा करब जे ओ समसामयिक यथार्थसँ अप्रभावित रहल। एहि तरहक आत्मविरोध ई देखबैत अछि जे कोनो एकटा घोषित सैद्धान्तिक प्रतिबद्धता नहि अछि — समीक्षा कखनहु प्रभाववादी, कखनहु समाजशास्त्रीय, कखनहु जीवनीमूलक भऽ जाइत अछि।

३. आत्मीयता आ आलोचनात्मक दूरीक अभाव

लक्ष्मीपति सिंह, मोहन, राजेश्वर झा सन अध्यायमे व्यक्तिगत स्नेह समीक्षाकेँ संस्मरणात्मक श्रद्धांजलिक रूप दऽ दैत अछि, जाहिसँ वस्तुनिष्ठता प्रभावित होइत अछि। एकर ठीक उलट हरिमोहन झा पर जे आलोचनात्मक साहस देखाओल गेल, से समस्त संग्रहमे समान रूपेँ नहि अछि।

४. सैद्धान्तिक शब्दावलीक अनुपस्थिति

रस, ध्वनि, व्यञ्जना आदि भारतीय काव्यशास्त्रीय तत्त्व अन्तर्निहित रूपेँ तँ अछि, मुदा आनन्दवर्धन, कुन्तक, क्षेमेन्द्र आदिक व्यवस्थित सैद्धान्तिक प्रयोग नहि भेटैत अछि। पाश्चात्य सिद्धान्तक सेहो सुविचारित प्रयोग नहि। ई समीक्षाकेँ सुपाठ्य तँ बनबैत अछि, मुदा अकादमिक गहनताक अभाव उत्पन्न करैत अछि।

५. परिप्रेक्ष्यक संकीर्णता — स्त्री आ हाशियाक अल्प उपस्थिति

'अखियासल'क पचीसमे चौबीस पुरुष-रचनाकार, मात्र एक स्त्री (हरिलता) — ओहूमे विवेचन वैष्णव भक्ति धरि सीमित। मिथिलाक दलित, अतिपिछड़ा आ मौखिक-परम्पराक अनाम रचयिता एहि समान्तर इतिहाससँ प्रायः अनुपस्थित रहि जाइत छथि। कुमार राहुलक आलेख (रचना ६) मे सेहो ई कहल गेल जे रमण जी कोनो बान्हल सैद्धान्तिक नियमक पालन करैत नहि देखाइत छथि, बल्कि एकहि तत्त्वसँ प्रभावित भऽ अपन निर्णय दऽ दैत छथि, आ किछु ठाम टिपाउट जेकाँ कम शब्दमे रचनाकारक काज चला लैत छथि आ अपन बात बेसी लीखि दैत छथि।

६. संकलनात्मक असंगति

पचीसो निबन्ध विभिन्न कालमे, विभिन्न पत्रिकाक लेल स्वतंत्र रूपेँ लिखल गेल छल — एकठाम राखि 'ग्रन्थ' बना देलासँ कोनो एकसमान सैद्धान्तिक ढाँचा नहि बचल। भूमिका, पद्धति-कथन आ उपसंहारक अभाव एहि जोड़ा-जाड़ी प्रकृतिकेँ उघारि दैत अछि — ई बात 'हिआओल' पर सेहो लागू होइत अछि, जतय एक-एक अध्यायक विस्तार, पद्धति आ गहराइ असमान अछि।

७. व्यक्तिगत समर्पण आ संस्थागत परिणामक बीचक खाधि

प्रवीण कुमार झाक आलेख (रचना १५) एहि विशेषांकक सभसँ बेबाक स्वर अछि। "मुदा मुदा मुदा!" कहि ओ स्पष्ट लिखैत छथि जे चेतना समिति आ मैथिली लेखक संघ जेहन संस्थामे एतेक दिन धरि महत्त्वपूर्ण पदपर रहितहुँ मैथिलीकेँ संविधानक अष्टम अनुसूचीमे राखबाक संघर्षमे, मैथिली-शिक्षाक क्षेत्रमे रमण जीक कोनो निर्णायक, ठोस परिणाम स्पष्ट रूपेँ सोझाँ नहि अबैत अछि — समर्पण पर

प्रश्न नहि, परिणाम पर प्रश्न। एहि आलेखमे चेतना समितिक कार्यकालसँ जुड़ल किछु विवाद-आरोप आ सत्ता-प्रतिष्ठानक संग कूटनीतिक सम्बन्धकेँ प्राथमिकता देबाक आलोचना सेहो चर्चामे रहलाक उल्लेख अछि। डा. धनाकर ठाकुरक व्यंग्य-प्रधान आलेख (रचना ११) एहि दिशाकेँ आरो तीक्ष्ण करैत मिथिला राज्यक प्रश्न पर रमण जी आ चेतना समितिक मौनताकेँ द्रोणाचार्यक 'आँखि मुनने रहब' सँ तुलना करैत अछि।

८. निष्पक्षताक प्रश्न

डॉ. कैलाश कुमार मिश्रक आलेख (रचना १२) मे उद्धृत राजलीन ठाकुरक मन्तव्य स्पष्ट अछि — "रमण जी हुनक प्रिय लोक आ नीक समीक्षक दुनू, मुदा एकटा दोष जे ओ आन लोकक अपेक्षा सीमित समाजक कार्यकेँ बेसी उजागर करैत छथि, ताहि ठाम ओ निरपेक्ष नहि रहि पबैत छथि।" नबोनारायण मिश्रक आलेख (रचना १३) मे सेहो साहित्यकार-पंजीकरणक सूचीसँ बाबूसाहेब चौधरी सन आन्दोलनकारी-नाटककारक अनुपस्थितिक ओर संकेत अछि।

९. संपादकीय काजक असमानता

प्रदीप बिहारीक आलेख (रचना १४) एक ठाम स्पष्ट कहैत अछि जे 'घर-बाहर' पत्रिकाक सम्पादनमे ओ कौशल नहि झलकैत जे विवेचनात्मक-अनुसंधानात्मक पोथीमे देखाइत अछि — भूमिका आ संपादकीय लेखनमे जतेक वैचारिक त्वरा चाही, से सभठाम समान नहि। कीर्तिनाथ झाक 'विवर्त'-समीक्षा (रचना १०) मे सेहो एक ठाम असहमति दर्ज अछि — "ई विचार सर्वसम्मत थिक वा नहि, कहब कठिन" — जखन रमण जी मैथिली पत्र-पत्रिकाकेँ स्वाधीनता-आन्दोलनक प्रति "पूर्ण संवेदनशील आ उत्तरदायित्वपूर्ण" कहैत छथि।

१०. पाठकीय असहमति

अजित कुमार झाक आलेख (रचना ५) मे 'कन्यादान' पर रमण जीक पुनर्पाठसँ स्पष्ट असहमति व्यक्त अछि — समीक्षकक तर्क एकाङ्गी बुझबैत, आ रमण जी द्वारा हरिमोहन झाक पाठकक जे तीन श्रेणी कएल गेल, ओहिमे एक चतुर्थ वर्गक (जे रमण जीक अपन साहित्यकेँ मिथिला-संस्कृति पर आघात बुझैत छथि) चर्चा नहि भेल।

संगति — ई सभटा सीमा एक साझा सूत्रसँ बान्हल अछि: रमण जीक कार्य मात्रात्मक रूपेँ विपुल, अभिलेखीय दृष्टिसँ अमूल्य, आ मातृभाषा-प्रेमसँ प्रेरित अछि, मुदा सैद्धान्तिक अनुशासन, स्रोत-प्रामाणिकता, पूर्ण निष्पक्षता आ संस्थागत परिणामक स्तर पर ओ आगू बढ़बाक गुंजाइश छोड़ि दैत अछि — जकरा स्वयं हुनकहि शब्दमे कही तँ "वादे वादे जायते तत्त्वबोधः"।

१०९. स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४), जगदीश प्रसाद मण्डल, प्रेमशंकर सिंह, स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र “यात्री” (१९११-१९९८)

सारांश

जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार। शिक्षा- दर्शनशास्त्रमे एम. ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त।

बीजशब्द: हरिमोहन झा; जगदीश प्रसाद मण्डल; प्रेमशंकर सिंह; वैद्यनाथ मिश्र यात्री; मैथिली साहित्य; तुलनात्मक पुनर्पाठ

स्व. श्री हरिमोहन झा (१९०८-१९८४)

जन्म १८ सितम्बर १९०८ ई. ग्राम+पो.- कुमर बाजितपुर, जिला- वैशाली, बिहार, भारत। पिता- स्वर्गीय पं. जनार्दन झा “जनसीदन” मैथिलीक अतिरिक्त हिन्दीक लब्धप्रतिष्ठ द्विवेदीयुगीन कवि-साहित्यकार। शिक्षा- दर्शनशास्त्रमे एम. ए.- १९३२, बिहार-उड़ीसामे सर्वोच्च स्थान लेल स्वर्णपदक प्राप्त। सन् १९३३ सँ बी. एन. कॉलेज पटनामे व्याख्याता, पटना कॉलेजमे १९४८ ई. सँ प्राध्यापक, सन् १९५३ सँ पटना विश्वविद्यालयमे प्रोफेसर तथा विभागाध्यक्ष आऽ सन् १९७० सँ १९७५ धरि यू. जी. सी. रिसर्च प्रोफेसर रहलाह। हिनकर मैथिली कृति १९३३ मे “कन्यादान” (उपन्यास), १९४३ मे “द्विरागमन”(उपन्यास), १९४५ मे “प्रणम्य देवता” (कथा-संग्रह), १९४९ मे “रंगशाला”(कथा-संग्रह), १९६० मे “चर्चरी”(कथा-संग्रह) आऽ १९४८ ई. मे “खट्टर ककाक तरंग” (व्यंग्य) अछि। “एकादशी” (कथा-संग्रह) क दोसर संस्करण १९८७ ए. मे आयल जाहिमे ग्रेजुअट पुतोहुक बदलाने “द्वादश निदान” सम्मिलित कएल गेल जे पहिने “मिथिला मिहिर” मे छपल छल मुदा पहिलुका कोनो संग्रहमे नहि आएल छल। श्री रमानथ झाक अनुरोधपर लिखल गेल “बाबाक संस्कार” सेहो एहि संग्रहमे अछि। आऽ हुनकर “खट्टर काका” हिन्दीमे सेहो १९७१ ई. मे पुस्तकाकार आएल। एकर अतिरिक्त हिनकक स्फुट प्रकाशित-लिखित पद्यक संग्रक “हरिमोहन झा रचनावली खण्ड ४ (कविता)” एहि नामसँ १९९९ ई. मे छपल आऽ हिनकर आत्मचरित “जीवन-यात्रा” १९८४ ई. मे छपल। हरिमोहन बाबूक “जीवन यात्रा” एकमात्र पोथी छल जे मैथिली अकादमी द्वारा प्रकाशित भेल छल आऽ एहि ग्रंथपर हिनका साहित्य अकादमी पुरस्कार १९८५ ई. मे मृत्योपरान्त देल गेलन्हि। साहित्य अकादमीसँ १९९९ ई. मे “बीछल कथा” नामसँ श्री राजमोहन झा आऽ श्री सुभाष चन्द्र यादव द्वारा चयनित हिनकर कथा सभक संग्रह प्रकाशित कएल गेल, एहि संग्रहमे किछु कथा एहनो अछि जे हिनकर एखन धरिक कोनो पुरान संग्रहमे सम्मिलित नहि छल। हिनकर अनेक रचना हिन्दी, गुजराती, मराठी, कन्नड़, तेलुगु आदि भाषामे अनुवादित भेल। हिन्दीमे “न्याय दर्शन”, “वैशेषिक दर्शन”, “तर्कशास्त्र”(निगमन), दत्त-चटर्जीक “भारतीय दर्शनक” अंग्रेजीसँ हिन्दी अनुवादक संग हिनकर सम्पादित “दार्शनिक विवेचनाएँ” आदि ग्रन्थ प्रकाशित अछि। अंग्रेजीमे हिनकर शोध ग्रंथ अछि- “ट्रेन्ड्स ऑफ लिंग्विस्टिक एनेलिसिस इन इंडियन फिलोसोफी” ।

प्राचीन युगमे विद्यापति मैथिली काव्यकेँ उत्कर्षक जाहि उच्च शिखरपर आसीन कएलनि, हरिमोहन झा आधुनिक मैथिली गद्यकेँ ताहि स्थानपर पहुँचा देलनि। हास्य व्यंग्यपूर्ण शैलीमे सामाजिक-धार्मिक रूढ़ि, अंधविश्वास आऽ पाखण्डपर चोट हिनकर लेखनक अन्यतम वैशिष्ट्य रहलनि। मैथिलीमे आइयो सर्वाधिक कीनल आऽ पढ़ल जायबला पीथी सभ हिनकहि छनि।

हरिमोहन झा समग्र

हरिमोहन झा जीक समग्र रचनाक एक बेर सिंहावलोकन कएल जाए।

कथा-एकांकी

१.१. अयाची मिश्र (एकाङ्की) २. मंडन मिश्र (एकाङ्की) ३. महाराज विजय (एकाङ्की) ४. बौआक दाम (एकाङ्की) ५. रेलक झगड़ा (एकाङ्की) ६. संगठनक समस्या- पत्र शैली ७. “रसमयी” क ग्राहक – पत्र-शैली ८. पाँच पत्र –पत्र-शैली ९. दलानपरक गप्प१०. घूरपरक गप्प११. पोखड़िपरक गप्प १२. चौपाड़िपरक गप्प १३. धर्मशास्त्राचार्य १४. ज्योतिषाचार्य १५. पंडितजी

१६. कविजी १७. परिवर्तन १८. युगक धर्म १९. महारानीक रहस्य २०. सात रंगक देवी २१. नौ लाखक गप्प २२. रंगशाला २३. अँचारक पातिल २४. चिकित्साक चक्र २५. रेशमी दोलाइ २६. धोखा २७. प्रेसक लीला २८. देवीजीक संस्कार २९. एहि बाटे अबै छथि सुरसरि धार ३०. कन्याक जीवन ३१. रेलक अनुभव ३२. ग्रामसेविका ३३. मर्यादाक भंग ३४. तिरहुताम ३५. टोटमा ३६. तीर्थयात्रा ३७. अलंकार-शिक्षा ३८. बाबाक संस्कार ३९. द्वादश निदान ४०. ग्रेजुएट पुतोहु ४१. ब्रह्माक शाप ४२. आदर्श भोजन ४३. सासुरक चिन्ह ४४.

कालीबाड़ीक चोर ४५. कालाजारक उपचार४६. विनिमय ४७. दरोगाजीक मोंछ ४८. शास्त्रार्थ ४९. विकट पाहुन ५०. आदर्श कुटुम्ब ५१. साझी आश्रम ५२. घरजमाय५३. भदेशक नमूना ५४. बीमाक एजेन्ट ५५. अंगरेजिया बाबू

पद्य

१. सनातनी बाबा ओ कलियुगी सुधारक २. कन्याक नीलामी डाक ३. मिथिलाक मिहिर सँ ४. ढाला झा

५. टी. पार्टी ६. बुचकुन झा ७. पंडित लोकनि सँ ८. निरसन मामा ९. आगि १०. अङरेजिया लड़कीक समदाउनि

११. गरीबनीक बारहमासा १२. श्री यात्रीजीक प्रति: मैथिलीक उक्ति १३. सौराठ १४. अलगी १५. अशोक-वाटिकामे

१६. पटना-स्तोत्र १७. श्रद्धेय अमरनाथ झाक प्रति श्रद्धांजलि

१८. हिन्दी ओ मैथिली १९. बुचकुन बाबाक चिट्ठी

२०. जगमग-जगमग दीप जराऊ २१. कलकत्ता गेला उत्तर

२२. अकाल २३. कलकत्ता हमरा बड़ पसन्द २४. सलगमक खण्ड २५. बूढ़ानाथ २६. नवकी पीढ़ीसँ २७. पंडित ओ मेम

२८. पंडित-विलाप २९. गंगाक घाटपर ३०. समयक चक्र

३१. महगी-माहात्म्य ३२. रस-निमन्त्रण ३३. अकविताक प्रति: कविताक उक्ति ३४. हम पाहुन छी ३५. अनागत प्रेयसीसँ

३६. मत्स्य-तीर्थ ३७. मिष्टान्न ३८. हे राजकमल ३९. घटक सौं ४०. पंडितजी सौं ४१. कनियाँक समस्या ४२. मुक्तक

४३. गजल ४४. मातृभूमि ४५. नारी-वन्दना ४६. हे दुलही के माय ४७. मात्रभूमि वन्दना ४८. चन्द्रमाक मृत्यु ४९. मिथिला वन्दना ५०. कवि हे! आब कोदारि धरु ५१. महगी ५२. नव पराती ५३. चालिस आ चौहत्तरि

५४. प्रयोगवादी कविता ५५. स्व. ललित नारायण मिश्रक स्मृतिमे ५६. उद्गार ५७. अन्तिम सत्य ५८. मधुर भाषा मैथिली छी ५९. छगुन्ता ६०. विद्यापति पर्व महान हमर

६१. आठ संकल्प ६२. घूटर काका ६३. वनगाम-महिषी स्मृति

६४. मैथिली-वन्दना ६५. हे मातृभूमि केर माटि

६६. कहू की औ बाबू ६७. कश्मीर हमर थीक ६८. मंगल प्रभात ६९. बुचकुन बाबाक स्वप्न ७०. जय विद्यापति

७१. शुभांशसा ७२. पारिचारिका स्तोत्र ७३. मनचन बाबा

७४. एहि बेरक फगुआ ७५. परतारु जुनि ७६. हे मजूर! कष्ट लखि अहाँक (कविजी: प्रणम्य देवता) ७७. हे हे मजूर! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७८. अबि! अनन्त कोमल करुणे! (कविजी: प्रणम्य देवता) ७९. हे वीर! हलायुध धर खड्ग (कविजी: प्रणम्य देवता) ८०. अयि! प्रचंड चंडिके! (कविजी: प्रणम्य देवता) ८१. झाँसीक रानी (कविजी: प्रणम्य देवता)

८२. हे प्रगतिशील महिला समाज (कविजी: प्रणम्य देवता)

८३. प्रिये! हम जाइत छी ओहि पार (कविजी: प्रणम्य देवता)

८४. धन्य-धन्य मातृभूमि (अयाची मिश्र: चर्चरी)

८५. धन्य ई मिथिलेशक दरबार (अयाची मिश्र: चर्चरी)

८६. हे डीह! अमर कीर्तिक निधान! (अयाची मिश्र: चर्चरी)

८७. हरिहर जन्म किएक लेल (माछक महत्व: खट्टर ककाक तरंग)

८८. केहन भेल अन्हेर (खट्टर ककाक टटका गप्प: खट्टर ककाक तरंग)

खट्टर ककाक तरंग (कथा-व्यंग्य)

कन्यादान (उपन्यास)

द्विरागमन (उपन्यास)

जीवनयात्रा (आत्मकथा)

कन्यादानक समर्पण- जे समाज कन्या कैं जड़ पदार्थवत् दान कय देबा मे कुंठित नहि होइत छथि, जाहि समाजक सूत्रधार लोकनि बालक कैं पढ़ैबाक पाछाँ हजारक हजार पानि मे बहबैत छथि और कन्याक हेतु चारि कैञ्चाक सिलेटो कीनब आवश्यक नहि बुझैत छथि, जाहि समाजमे बी. ए. पास पतिक जीवन-संगिनी ए बी पर्यन्त नहि जनैत छथिन्ह, जाहि समाज कैं दाम्पत्य-जीवनक गाड़ी मे सरकसिया घोड़ाक संग निरीह बाछी कैं जोतैत कनेको ममता नहि लगैत छन्हि, ताही समाजक महारथी लोकनिक कर-कुलिश मे ई पुस्तक सविनय, सानुरोध ओ सभय समर्पित।

प्रणम्य देवताक समर्पण- आइ सँ सात वर्ष पूर्व जे कार्तिकी पूर्णिमाक करार पर हमरा सँ पैंच लऽ गेलाह और तहियासँ पुनः कहियो दर्शन देबाक कृपा नहि कैलन्हि, जनिक चिर-स्मरणीय कीर्ति-कलाप प्रथमे कथा मे विशद रूप सँ वर्णित छैन्ह, जे “प्रणम्य देवता” क मध्य सर्वश्रेष्ठ आसन पर अधिकार जमा सकैत छथि, जनिक वन्दनीय बन्धुवर्ग ई पुस्तक देखि विनु मङनहि अपन स्वत्व स्थापित कय लऽ सकैत छथि, तेहन प्रमुख चरित-नायक, विकट पाहुन भीमेन्द्रनाथ क सुदृढ़ विशाल मुष्टिमे ई विचित्र-चरित्र-पूर्ण पोथी विवशतापूर्वक अर्पित छैन्ह!

खट्टर ककाक तरंगक समर्पण- जे भंगक तरंगमे काव्य-शास्त्र-विनोदक धारा बहा दैत छथि; जनिक प्रवाहमे थोड़ेक कालक हेतु वेद-पुराण, धर्मशास्त्र, सभटा भसिया जाइत अछि; जे बात-बातमे अद्भुत रस ओ चमत्कारक चाशनी घोरि दैत छथि; जे मर्मस्पर्षी व्यंग्य द्वारा लोकक अन्तस्तल मे पहुँचि गुदगुदी लगा दैत छथि; तेहन चिर आनन्दमूर्ति, परिहास-प्रिय खट्टर कका कैं- त्वदीयं वस्तु पितृव्य! तुभ्यमेव समर्पितम्।

रंगशालाक समर्पण- जे अक्षययौवना नटी एहि अनादि अनन्त रंगशालाक प्रवर्तिका थिकीह, जे मनोहर वीणा-वादिनी सम्पूर्ण चराचर विश्वकैं अपना आंगुरक अग्रभाग पर नचा रहल छथि, जे रहस्यमयी अपन मोहिनी लीलाक झलक देखाय ककरो स्पर्श नहि करय दैत छथिन्ह, जे कल्पनाक रंगीन पाँखि पर आबि कलाकारक कलामे रसक संचार करैत छथिन्ह, तेहन आश्चर्यकारिणी चिरसुन्दरी त्रैलोक्य-विजयिनी माया देवी कैं।

जगदीश प्रसाद मण्डल

१९४२-४३ क बंगालक अकालक विषयमे अमर्त्य सेन लिखै छथि जे एहि अकालमे बंगालमे लाखक लाख लोक मुइलाह (फेमीन इन्क्वायरी कमीशनक अनुसार १५ लाख) मुदा अमर्त्यक एकोटा सर-सम्बन्धीक मृत्यु ओहिमे नहि भेल। तहिना मिथिलाक १९६७ ई. क अकालमे भारतक प्रधानमंत्रीकैँ देखाओल गेलन्हि जे कोना मुसहर लोकनि बिसाँढ़ खा कऽ अकालसँ लड़ि रहल छथि, मुदा एहिपर कथा लिखल गेल २००९ ई. मे। २००९ ई. मे जगदीश प्रसाद मंडलजी बिसाँढ़पर मैथिलीमे कथा लिखलन्हि। आ एहि विलम्बक कारण सेहो स्पष्ट अछि। मैथिली साहित्यमे जे एकभगाह प्रवृत्ति रहल अछि, ताहि कारणसँ अमर्त्य सेन जेकाँ हमरो साहित्यकार सभ ओहि महाविभीषिकासँ ओतेक प्रभावित नहि भेल होएताह। आ एतए जगदीश प्रसाद मंडल जीक कथा मैथिली कथा धाराक यात्राकेँ एकभगाह होएबासँ बचा लैत अछि। एहि संग्रहक सभटा कथा उत्कृष्ट अछि, रिक्त स्थानक पूर्ति करैत अछि आ मैथिली साहित्यक पुनर्जागरणक प्रमाण उपलब्ध करबैत अछि।

जगदीश प्रसाद मण्डल शिल्पी छथि, कथ्यकेँ तेना समेटि लैत छथि जे पाठक विस्मित रहि जाइत अछि। मुदा हिनका द्वारा कथ्यकेँ (कथा, उपन्यास, नाटक, प्रेरक-कथा सभमे) उद्देश्यपूर्ण बनेबाक आग्रह आ क्षमता हिनका मैथिली साहित्यमे ओहि स्थानपर स्थापित करैत अछि, जतएसँ मैथिली साहित्यक इतिहास “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व” आ “जगदीश प्रसाद मण्डलसँ” एहि दू खण्डमे पाठित होएत। समाजक सभ वर्ग हिनकर कथ्यमे भेटैत अछि आ से आलंकारिक रूपमे नहि वरन् अनायास, जे मैथिली साहित्य लेल एकटा हिलकोर अएबाक समान अछि। हिनकर कथ्यमे कतहु अभाव-भाषण नहि भेटत, सभ वर्गक लोकक जीवन शैलीक प्रति जे आदर आ गौरव ओ अपन कथ्यमे रखैत छथि से अद्भुत। हिनकर कथ्यमे नोकरी आ पलायनक विरुद्ध पारम्परिक आजीविकाक गौरव महिमामंडित भेटैत अछि, आ से प्रभावकारी होइत अछि हिनकर कथ्य आ कर्मक प्रति समान दृष्टिकोणक कारणसँ आ से अछि हिनकर व्यक्तिगत आ सामाजिक जीवनक श्रेष्ठताक कारणसँ। जे सोचैत छी, जे करैत छी सएह लिखैत छी- ताहि कारणसँ। यात्री आ धूमकेतु सन उपन्यासकार आ कुमार पवन आ धूमकेतु सन कथा-शिल्पीक अछैत मैथिली भाषा जनसामान्यसँ दूर रहल। मैथिली भाषाक आरोह-अवरोह मिथिलाक बाहरक लोककेँ सेहो आकर्षित करैत रहल आ ओही भाषाक आरोह-अवरोहमे समाज-संस्कृति-भाषासँ

देखाओल जगदीशजीक सरोकारी साहित्य मिथिलाक सामाजिक क्षेत्र टा मे नहि वरन् आर्थिक क्षेत्रमे सेहो क्रान्ति आनत। विदेह मे हिनकर पाँचटा उपन्यास, एकटा नाटक आ दू दर्जनसँ बेशी कथा, नेना-भुटका-किशोर लेल सएसँ ऊपर प्रेरक कथा ई-प्रकाशित भऽ विश्व भरिमे पसरल मैथिली भाषीकेँ दलमलित करैत मैथिली साहित्यक एकटा रिक्त स्थानक पूर्ति कऽ देने अछि।

प्रेमशंकर सिंह

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" (१९११-१९९८)

स्व. श्री वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" केर जन्म १९११ ई. मे अपन मामागाम सतलखामे भेलन्हि जे हुनकर पैतृक गाम तरौनीक लगेमे अछि। यात्री जी अपन गामक संस्कृत पाठशालामे पढ़ए लगलाह, फेर वाराणसी आ कलकत्ता सेहो गेलाह आ संस्कृतमे "साहित्य आचार्य" क उपाधि प्राप्त केलन्हि। तकर बाद ओ कोलम्बो लग कलनिआ स्थान गेलाह पाली आ बुद्ध धर्मक अध्ययनक लेल। ओतए ओ बौद्ध धर्ममे दीक्षित भऽ गेलाह आ हुनकर नाम पड़लन्हि -नागार्जुन। मुदा बादमे पुनः गाममे यज्ञोपवीत कऽ ब्राह्मण धर्ममे घुरलाह।

यात्रीजी मार्क्सवादसँ प्रभावित छलाह, १९२९ ई. क अन्तिम मासमेमे मैथिली भाषामे पद्य लिखब शुरू कएलन्हि। १९३५ ई. सँ हिन्दीमे सेहो लिखए लगलाह। स्वामी सहजानन्द सरस्वती आ राहुल सांकृत्यायनक संग ओ किसान आन्दोलनमे संलग्न रहलाह आ १९३९ सँ १९४१ धरि ऐ क्रममे विभिन्न जेलक यात्रा कएलन्हि। हुनकर बहुत रास रचना जे महात्मा गाँधीक मृत्युक बाद लिखल गेल छल, प्रतिबन्धित कऽ देल गेल। भारत-चीन युद्धमे कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा चीनकेँ देल समर्थनक बाद कम्युनिस्ट पार्टीसँ मतभेद भेलन्हि। जे. पी. अन्दोलनमे भाग लेबाक कारण आपात्कालमे हिनका जेलमे ठूसि देल गेल। यात्रीजी हिन्दीमे बाल साहित्य सेहो लिखलन्हि। हिन्दी आ मैथिलीक अतिरिक्त बांग्ला आ संस्कृतमे सेहो हिनकर लेखन आएल। मैथिलीक दोसर साहित्य अकादमी पुरस्कार १९६९ ई. मे यात्रीजीकेँ हुनकर कविता संग्रह "पत्रहीन नग्न गाछ" पर भेटलन्हि। १९९४ ई. मे ओ साहित्य अकादमीक फेलो -हिन्दी आ मैथिली कविक रूपमे- भेलाह।

यात्रीजी जखन २० वर्षक छलाह तखन १२ वर्षक कान्यासँ हिनकर विवाह भेल। हिनकर पिता गोकुल मिश्र अपन समाजमे अशिक्षितक गनतीमे रहथि आ चरित्रहीन छलाह। यात्रीजीक बच्चाक स्मृतिमे छन्हि जे हुनकर पिता कोना हुनकर अस्वस्थ आ ओछाओन धएल मायपर कुरहड़ि लऽ मारबाक लेल उठल छलाह, जखन ओ बेचारी हुनकासँ कुमार्ग छोड़बाक गुहारि कऽ रहल छलीह। यात्रीजी मात्र छह वर्षक छलाह जखन हुनकर माए हुनका छोड़ि प्रयाण कऽ गेलीह। यात्रीजीकेँ अपन पिताक ओ चित्र सेहो रहि-रहि सतबैत रहलन्हि जइमे हुनकासँ मातृवत प्रेम करएवाली हुनकर विधवा काकीक, हुनकर पिताक अवैध सन्तानक गर्भपातमे, लगभग मृत्यु भऽ गेल छलन्हि। के एहन पाठक होएत जे यात्रीजीक हिन्दीमे लिखल "रतिनाथ की चाची" पढ़बाक काल बेर-बेर नै कानल होएत। पिता-पुत्रक ई घमासान एहन बढ़ल जे पुत्र अपन बाल-पत्नीकेँ पिता लग छोड़ि वाराणसी प्रयाण कए गेलाह।

कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप

हम टा संतति, से हुनक पाप

ई जानि ह्वैन्हि जनु मनस्ताप

अनको बिसरक थिक हमर नाम

माँ मिथिले, ई अंतिम प्रणाम! (काशी/ नवंबर १९३६)

काशीसँ श्रीलंका प्रयाण, "कर्मक फल भोगथु बूढ़ बाप" ई कहि यात्रीजी अपन पिताक प्रति सभ उद्गार बाहर कऽ दैत छथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी अपन पत्नी, अपराजिता, लग आबि गेलथि। १९४१ ई. मे यात्रीजी दू टा मैथिली कविता लिखलन्हि- "बूढ़ वर" आ "विलाप" आ एकरा पाम्फलेट रूपमे छपबाए ट्रेनक यात्री लोकनिकेँ बेचलन्हि। जीविकाक ताकिमे सौँसे भारत दुनू प्राणी घुमलाह। पत्नीक जोर देलापर बीच-बीचमे तरौनी सेहो घुमि कऽ आबथि। आ फेर आएल १९४९ ई., अपना संग लेने यात्रीजीक पहिल मैथिली कविता-संग्रह "चित्रा" । १९५२ ई. धरि पत्नी संगमे घुमैत रहलथिन्ह, फेर तरौनीमे रहए लगलीह। यात्रीजी बीच- बीचमे आबथि। अपराजितासँ यात्रीजीकेँ छह टा सन्तान भेलन्हि, आ सभक भार पत्नी अपना कान्हपर लेने रहलीह। यात्रीजी दमासँ परेशान रहैत रहथि।

हम जखन दरभंगामे पढ़ैत रही तँ यात्रीजी ख्वाजा सरायमे रहैत छलाह। हमरा मोन अछि जे मैथिलीक कोनो कार्यक्रममे यात्रीजी आएल छलाह आ कम्युनिस्ट पार्टीबला सभ एजेन्डा छीनि लेने छल। अगिले दिन यात्रीजी अपनाकेँ ओइ धोधा-धोखीमे गेल सभाक

कार्यवाहीसँ हटा लेलन्हि। एमर्जेन्सीमे जेल गेलाह तँ आर. एस. एस. क कार्यकर्ता लोकनिसँ जेलमे भेँट भेलन्हि आ जे. पी. क सम्पूर्ण क्रान्तिक विरुद्ध सेहो जेलसँ बाहर अएलाक बाद लिखलन्हि यात्रीजी। यात्रीजी मैथिलीमे बैद्यनाथ मिश्र "यात्री" आ हिन्दीमे “नागार्जुन” क नामसँ रचना लिखलन्हि।

“पृथ्वी ते पात्रं” १९५४ ई. मे “वैदेही” मे प्रकाशित भेल छल, हमरा सभक मैट्रिकक सिलेबसमे छल। यात्रीजी लिखैत छथि-

“आन पाबनि तिहार तँ जे से। मुदा नबान निर्भूमि परिवारकेँ देखार कए दैत छैक। से कातिक अबैत देरी अपराजिता देवीक घोघ लटकि जाइन्हि। कचोटेँ पपनियो नहि उठा होइन्ह ककरो दिश! बेसाहल अन्नसँ कतउ नबान भेलइए”?

यात्री एकटा मिथ छथि? की यात्री एकटा मिथ छथि? ओ मुख्यतः हिन्दीक लेखक रहथि, मैथिलीमे ओ हिन्दीक दशमांशो नै लिखलन्हि। जे लिखबो केलन्हि तइमे सँ बेशी स्वयं द्वारा हिन्दीसँ अनूदित। मैथिली आ मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृति हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगलै मुदा तइमे सेहो ढेर रास कमी रहै जेना एकटा उदाहरण यात्री समग्रसँ-। यात्री समग्र-पृ. २२० जेठ सुदी चतुर्दशी कऽ रहनि पीसाक वर्षी। पहिले वर्षी..पृ.. २२२- ..कहाँ जे एको दिनक खातिर जाइ, कर्ता बना, अषाढ़ बढ़ि तृतियाक तिथिपर पहिल।

एहेन बेमारी आनो मैथिली-हिन्दी लेखकमे छन्हि। ई ऐतिहासिक लिखित तथ्य अछि जे गोनू झा १०५०-११५० मे भेलाह मुदा उषा किरण खान विद्यापतिसँ हुनकर शास्त्रार्थ करबै छथि (हिन्दीक ऐतिहासिक उपन्यास सिरजनहार, भारतीय ज्ञानपीठ, मे) वीरेन्द्र झा कहै छथि जे गोनू झा ५०० साल पहिने भेला आ तारानन्द वियोगी गोनू झा केँ ३०० साल पहिने भेल मानै छथि (दुनू गोटेक हिन्दीमे प्रकाशित गोनू झापर पोथी, क्रमसँ राजकमल प्रकाशन आ नेशनल बुक ट्रस्टसँ प्रकाशित) तँ विभा रानीक गोनू झापर हिन्दी पोथी (वाणी प्रकाशन) मे कुणाल गोनू झाकेँ भव सिंहक राज्यमे (१४म शताब्दी) भेल मानैत छथि। जखन पंजीमे उपलब्ध लिखित अभिलेखन गोनू झाकेँ विद्यापतिसँ दस पीढ़ी पहिने अभिलेखित करैत अछि, तखन ई हाल अछि। मिथिला क्षेत्रक शब्दावली आ संस्कृतिक- जे हिन्दीक लोककेँ अबूझ आ तेँ रुचिगर लगै छै- तथ्यमे ई मैथिली-हिन्दी लेखक सभ अपन अज्ञानतासँ ढेर रास गलत तथ्य पड़सि रहल छथि, साम्प्रदायिक लेखक लोकनि गोनू झाक कथामे मुस्लिम तहसीलदारक अत्याचार घोंसिया रहल छथि (मुस्लिम लोकनि मिथिलामे गोनूक समए मे रहबे नै करथि)!

चतुरानन मिश्र आ जगदीश प्रसाद मंडल कम्यूनिस्ट आन्दोलनसँ जुड़ल छथि, प्रायोगिक रूपमे, पार्टी स्तरपर, मुदा हिनकर दुनू गोटेक उपन्यास देखला उत्तर हमरा ई कहबामे कनेको कष्ट नै होइत अछि जे जइ रूपमे यात्री आ धूमकेतु मार्क्सवादक बैशाखी लऽ उपन्यासकेँ ठाढ़ करै छथि तकर बेगरता एहि दुनू उपन्यासकारकेँ नै बुझना जाइत छन्हि। मार्क्सवादक असल अर्थ हिनके दुनूक रचनामे भेटत। कतौ पार्टीक नाम वा विचारधाराक चर्च नै मुदा जे असल डायलेक्टिकल मैटेरियलिज्म छैक तकर पहिचान, जिनगीक महत्वपर विश्वास, द्वन्दात्मक पद्धतिक प्रयोग आ ई तखने सम्भव होइत अछि जखन लेखक दास कैपिटल सहित मार्क्सवादक गहन अध्ययन करत आ प्रायोगिक मार्क्सवादपर कताक दशक चलत।

आ अन्तमे यात्रीजीक संस्कृत पद्य:-

वासन्ती कनकप्रभा प्रगुणिता

पीतारुर्णे: पल्लवै:

हेमाम्भोजविलासविभ्रमरता

दूरे द्विरेफा: स्ता

यैशसण्डलकेलिकानन कथा

विस्मरिता भूतले

छायाविभ्रमतारतम्यतरला:

तेऽमी “चिनार” द्रुमा:॥

-बसंतक स्वर्णिम आभा द्विगुणित भऽ गेल अछि पीयर-लाल कोपड़सँ। स्वर्णकालक भ्रममे भौरा सभ एकरासँ दूर-दूर रहैत अछि। नन्दनवनक विहारकेँ जे पृथ्वीपर बिसरा दैत अछि, छाह झिलमिल घटैत-बढ़ैत जकर डोलब अछि चंचल आ तरल। ओइ चिनारकेँ हम देखने छी अडिग भेल ठाढ़।

११०. सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्यक समीक्षा आ मैथिली समीक्षाक कमलानन्द झा प्रसंग

सारांश

एहि विस्तृत अध्यायमे सुभाष चन्द्र यादवक समस्त मैथिली साहित्यक क्रमिक समीक्षा कएल गेल अछि। 'घरदेखिया' सँ 'गुलो' धरि कथा, उपन्यास, भाषा, लोकजीवन, सामाजिक संरचना आ लेखकक रचनात्मक विकासक परीक्षणक संग मैथिली समीक्षाक प्रवृत्ति आ कमलानन्द झा सम्बन्धी आलोचनात्मक प्रसंग जोड़ल गेल अछि।

बीजशब्द: सुभाष चन्द्र यादव; घरदेखिया; गुलो; कथा; उपन्यास; लोकजीवन; भाषा; मैथिली समीक्षा

नित नवल सुभाष चन्द्र यादव

(राइटर्स ब्लॉक- मैथिलीक समानान्तर धाराक लेखन- सुभाष चन्द्र यादवक समस्त साहित्य)

सुभाषचन्द्र यादव (१९४८-), जन्म ०५ मार्च १९४८, मातृक दीवानगंज, सुपौलमे। पैतृक स्थान: बलबा-मेनाही, सुपौल।

मूल मैथिली लेखन पहिल चरण: घरदेखिया (१९८३)

मूल मैथिली लेखन दोसर चरण: बनैत बिगड़ैत (विदेह ई-पत्रिकामे २००८ सँ २००९ धरि, फेर पुस्तककार २००९ मे), गुलो (मिथिला दर्शनमे प्रकाशन, २०१४, फेर पुस्तकाकार २०१५ मे), रमता जोगी (२०१९), मडर (२०२१), राजकमल चौधरी मोनोग्राफ (जनवरी १९९७ मे साहित्य अकादेमी द्वारा रिजेक्ट, रचना पत्रिकामे दिसम्बर २००५- मार्च २००६ अंकमे आ पुस्तकाकार २०२२ मे "नित नवल राजकमल" नामसँ), भोट (२०२२) ।

"जे सुनबैए खिस्सा से राज करैए ऐ संसारपर"- होपी अमेरिकी कबीलाक लोकोक्ति।

आ सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ छोड़ि देलन्हि।

"स्वप्नसुन्दरी एण्ड द मैजिकल बर्ड्स ऑफ मिथिला" (गीता धर्मराजन, कथा, १९९६)

मिथिलाक टुनमुनिया राजकुमारी स्वप्नसुन्दरीकेँ गाबैबला चिड़ै सभ बड्ड पसिन्न छलै। मुदा ओ माछ, बकड़ी आ गाय सभकेँ सेहो चिड़ै बना दैत छली। प्रजा सभ राजकुमारीकेँ उपराग देलक, राजकुमारी रूसि गेली आ चिड़ै बनेनाइ बन्न कऽ देलनि। ओ महलसँ बाहरो नै अबै छली। जादूबला देश मिथिलासँ जे बाँचल चिड़ै छल सेहो निपत्ता भऽ गेल। जनीजाति खेतमे अखनो गबैत छली, मुदा बिनु रङ-बिरङक चिड़ैक ई मिथिला आब ओ मिथिला नै लगैत छल। आ फेर आयल गाछक पैकार सभ, बिनु चिड़ै गाछक कोन काज, ई गप लोक सभकेँ बुझा, ठकि कऽ ओ सभ मिथिलाक सभटा गाछकेँ काटि कऽ लऽ गेल। जनीजाति सभ, सभटा जुगति भिड़ेलनि जे किछु गाछ बचि जाय, मुदा से भऽ नै सकल। बिनु गाछक सभटा धार सुखा गेल। बिनु गाछक लोक सभ होइत गेल गरीब आ पैकार सभ होइत गेल धनीक। जनीजाति सभ गेलीह राजकुमारी लग, कनैत, कहैत जे राजकुमारी, मदति करू, हम सभ गलत छलौं। स्वप्नसुन्दरी बैसल छली अपन कोठलीमे, जतऽ चारूकात देबालपर छल रङ बिरङक चिड़ै सभक चित्र। ओइ चिड़ैक चित्र सभकेँ देखैत मिथिलाक राजकुमारी स्वप्नसुन्दरी उदास भऽ बजली- नै, अहीं सभ ठीक छलौं। खाली चिड़ै हमरा सभकेँ प्रसन्न नै राखि सकैए। मुदा जनीजाति सभ बजली- बिनु चिड़ै सेहो हम सभ प्रसन्न नै रहि सकब, ओ चिड़ै सभ घुरा कऽ आनि दिअ राजकुमारी। मुदा राजकुमारी ततेक उदास छली जे ओ जादू नै कऽ सकली। तखन जनी-जाति सभ कहलन्हि- चिन्ता नै, हम सभ गाछ रोपब आ गाबैबला चिड़ै सभ घुरि आओत। आ ऐबेर ककरो बेइमानी सेहो हमरा सभ नै करऽ देबै। आ बताह सन खटऽ लागल सम्पूर्ण मिथिला। ककरो कोनो पलखति नै, आ ओ सभ गाबि कऽ नाचि कऽ रोपऽ लागल आ पटबऽ लागल गाछ। आ गाछ जेना-जेना बढ़ऽ लागल आ चकरगर होइत गेल सभ हँसऽ लगला, आ थोपड़ी पारऽ लगला। संग मिलि कऽ काज केलासँ हुनका सभकेँ खुशी होइन। आ ऐ सँ गाछो सभ नीकसँ आ जल्दीसँ बढ़ऽ लागल। आ स्वप्नसुन्दरीक देश मिथिलामे छोट-पैघ गाछ सभ मुस्की देमऽ लागल चारू कात। जादूबला संगीत चारू दिस पसरि गेल। लाल रङक, जोमक रङक, अकासी, पीअर, गुलाबी आ पनिसोखा सन सात रङक चिड़ै सभक डेरा बनत ई। राजकुमारी कहलनि जनीजाति सभसँ- हमर देशक बचियासभ पाठशाला जाथि, ई हमर सभ दिन सँ सपना अछि। जनीजाति सभ बजली- हँ राजकुमारी, जँ हम सभ पढ़ल लिखल रहितौं तँ कोनो पैकार हमरा सभकेँ ठकि नै सकितय। मुदा आयल एकटा झमेल। जनीजातिमे सँ किछु कहलनि- मुदा तखन घरक काज के करत?

तखन मिथिलाक राजकुमारी आदेश देलनि- बालक सभ बालिकाक काज सीखत आ बालिका सभ बालकक काज। मिलिये-जुलि कऽ आगाँ बढ़ैमे सभकेँ नीक लागत। आ स्वप्न सुन्दरी सभ पढ़ैबाली बालिकाकेँ देलन्हि एकटा साइकिल। स्वप्न सुन्दरी बुझेलखिन्ह- संसार भरिमे ओ सभ प्रसन्न छथि जे एक-ठामसँ दोसर ठाम जल्दी पहुँचि जाइ छथि, कारण तइसँ ओ सभ सभटा काज जल्दी-जल्दी पूरा कऽ लै छथि। जनीजाति सभ पुछलन्हि- की हम सभ साइकिल नै चला सकै छी? राजकुमारी कहलन्हि- किए नै? महिलाकेँ ओ सभ काज करबाक चाही जे ओकरा नीक लगै छै। किछु गोटे राजकुमारीसँ पुछलन्हि- मुदा टाका कतऽ सँ आओत? मुदा सभ ओकरा दबाड़ि देलक। सभटा काज राजकुमारिये करती? आ लगेलक सभ एकटा बड़का मेला। पाइ जमा भेल, आ बनल राजकुमारी स्वप्नसुन्दरीक पाठशाला। पाठशाला करैए जादू, ओतऽ बच्चा सभ जा कऽ बनि जाइत अछि जेना होथि रङ-बिरङक चिड़ै। अहूँ किए नै अबै छी पाठशाला राजकुमारी? राजकुमारी एक दिन पाठशाला एली, दोसर दिन एली आ सभ दिन आबय लगली। आ फेर ओ कहलनि जे बच्चा सभक माय बाबू सेहो आबथु पाठशाला। आ फेर राजकुमारी फेरसँ करऽ लगली जादू। मुद ऐबेर ओ खाली बेकार चीज सभकेँ बनबऽ लगली चिड़ै। आ बहुत रास कएक रङक पाँखिबला चिड़ै सभ सेहो घुरि आयल अछि मिथिलामे, बिनु जादू कयने। सभ अपना लोलमे एक-एक हजार पोथी लेने, उल्लास आनैबला पोथी सभ, लाल, गुलाबी आ अकासी रङक। लाल, जोमक रङक, पीअर, गुलाबी आ पनिसोखा सन सात रङक, कारण रेतक स्थान लऽ लेलक अछि हरियर कचोर गाछ सभ। आ चिड़ै सभ गाबि रहल अछि- बिनु ज्ञान सुन्दरता अछि सुखायल धार सन। आ ओइ टुनमुनिया राजकुमारीक मिथिला बनि गेल विश्वक सभसँ बेशी हरियर आ प्रफुल्लित देश। लोक सभ तँ ईहो कहैत छथि जे अही चिड़ै सभक कारण मिथिलाक हबामे रहैत अछि जादू सदिखन। आ जँ कहियो हमरो सभकेँ भेटि जाय एकटा एहेन स्थान, जतय महिला आ पुरुख सोचि सकथि पैघ-पैघ गप! ई जादूबला स्थान हमरा सभक लगे-पासमे तँ नै? ई स्थान जतऽ जादूबला बौस्तु सभ अछि, हमरे सन साधारण लोकक भितरे तँ नै अछि? जँ अहाँकेँ भेटय ई स्थान, जतऽ कतौऽ, तँ सूचित करू हमरा हमर ई-पत्र सङ्केत editorial.staff.videha@gmail.com पर।

सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ छोड़ि देलन्हि।

मुदा ओ १९८३ सँ अड़ल रहलाह असगरे, आइक तथाकथित निम्न वर्गक किछु लेखक सभ सेहो मैथिलीक आभासी वर्तनीक सङ्ग चलि गेला आ छोड़ि देलखिन्ह असगर हुनका, ओ सभ गैसलाइटिंगक शिकार भऽ गेला। पैकार सभ चारूकात सहसह करऽ लागल। ओइ टुनमुनिया राजकुमारी सन ओ देखैत रहलाह ...

मुदा ०१.०१.२००८ सँ ८ सालक तैयारीक बाद विदेह- मैथिली ई-पत्रिका गाछ रोपब शुरू केलक, मिथिलामे, पक्ष-दर-पक्ष, आ घुरि कऽ आबय लागल रङ-बिरङक चिड़ै सभ।

नचिकेता २५ बर्खक मौनभंगक बाद विदेह पाक्षिक ई-पत्रिका मे नो एण्ट्री: मा प्रविश प्रकाशित करय लगलाह आ ओही बर्ख २५ बर्खक बाद सुभाष चन्द्र यादव विदेहक पाठककेँ खिस्सा सुनबय लगलाह पक्ष-दर-पक्ष। सुभाष चन्द्र यादवक घरदेखिया आयल १९८३ मे आ २५ बर्खक बाद "बनैत बिगड़ैत" २००८-०९ मे विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद २००९ मे प्रिण्टमे सेहो आबि गेल।

"जे सुनायत खिस्सा सएह राज करत ऐ संसारपर" आ समानान्तर धारा सुना रहल अछि खिस्सा। मिथिलाक कएक रङगक पाँखिबला चिड़ै सभ घुरि आयल जेना सन्दीप कुमार साफी, उमेश पासवान, बेचन ठाकुर, कपिलेश्वर राउत, उमेश मण्डल, राम विलास साहु, राजदेव मण्डल, नन्द विलास राय, जगदीश प्रसाद मण्डल, दुर्गानन्द मण्डल, आचार्य रामानन्द मण्डल, ललन कुमार कामत, नारायण यादव, मुन्नी कामत, शिव कुमार प्रसाद, धीरेन्द्र कुमार, रामदेव प्रसाद मण्डल "झारूदार" एला रङ बिरङक कथा आ गीतक सङ।

घुरि आयल अछि सभ अपना लोलमे एक-एक हजार पोथी लेने, उल्लास आनैबला पोथी सभ, लाल, गुलाबी, जोमक, पनिसोखाक सात रङक आ अकासी रङक। कारण रेतक स्थान लऽ लेलक अछि हरियर कचोर गाछ सभ।

आ सुभाष चन्द्र यादव खिस्सा सुनेनाइ फेरसँ शुरू कऽ देलन्हि।

बनैत बिगड़ैतक बाद आयल रमता जोगी, गुलो, मडर, भोट। साहित्य अकादेमी द्वार रिजेक्ट कएल राजकमल चौधरी मोनोग्राफ आयल “नित नवल राजकमल” नामसँ। आ तैँ सुभाष चन्द्र यादव छथि “नित नवल सुभाष चन्द्र यादव” ।

मैथिली स्टोरी साइंस (मैथिला कथाशास्त्र) आ सुभाष चन्द्र यादव

मिशेल फोको (Foucault) क "अनुशासन संस्था" बा मनोवैज्ञानिक बार्टन आ ह्वाइटहेडक "गैसलाइटिंग" दुनूक लक्ष्य एक्के छै। मिशेल फोकोक "अनुशासन संस्था" अछि, सोझाँबलाकेँ अनुशासनमे आनू आ तइ लेल सभकेँ आपसेमे लड़ाउ, किछुकेँ पुरस्कृत करू

आ जे अनुशासनमे नै अबैए तकरा आस्ते-आस्ते माहुर दियौ। गैसलाइटिंगमे सोझाँबला कैँ विश्वास दिआओल जाइत अछि जे अहाँ जे यथास्थितिक विरोध कऽ रहल छी से कोनो विरोध नै, ई तँ सभ कऽ रहल अछि, अहाँ तँ विरोधक नामपर विरोध कऽ रहल छी आ से अपन कमी नुकेबा लेल। ऐमे समाजमे वर्तमान आधारभूत कमीक सहायता सेहो लेल जाइत अछि, आ आस्ते-आस्ते टारगेट बताह भऽ जाइत अछि बा पलायन कऽ जाइत अछि।

से सुभाष चन्द्र यादवक राइटर्स-ब्लॉक सामान्य राइटर्स ब्लॉक नै छल, ई छल "गैसलाइटिंग"।

मुदा एकर प्रतिकारमे अबैत अछि स्टोरी साइंस, कोन कथा सुनेलासँ लोक आ समाजपर की असर पड़त, ई ओइ आधारपर पूर्व-विश्लेषण करैत अछि। से समानान्तर धारा माहुरकैँ माहुरसँ काटबाक निर्णय लेलक। ओ मूलधाराक साहित्यकार सभ जे मानकीकरणक नामपर भाषाकैँ मरोड़ै छला, ओ स्टोरी साइंसक संग गैसलाइटिंगक आधारपर काज कऽ रहल छला। हुनकर उद्देश्य छल वर्तनीक भिन्नताकैँ अशुद्धताक नाम देब। रामदेव झा घरदेखियाकैँ लक्षित कऽ ई सभ लिखलन्हि जे, जे लिखब से बाजब असमियो मे असफल भेल से मैथिलीयोमे हएत।

आ सुभाषचन्द्र यादव असगर पड़ि गेलाह।

मुदा जखन रमानन्द झा’ रमण’ अही स्टोरी-साइंसक प्रयोग बिसाँढ़क सङ केलन्हि, आ तकर आलोकमे जगदीश प्रसाद मण्डलक शिवशंकर श्रीनिवास द्वारा वर्तनी-संशोधन कएल कथा (जइले ओ अशुद्धता दूर करबा लेल तीन दिन मेहनति कएल, अहि तरहक अहसान सेहो जतेलन्हि) उमेश मण्डलजी जखन हमरा पठेलन्हि तँ हमर कान ठाढ़ भऽ गेल।

कारण सुभाष चन्द्र यादवक वर्तनीक कथा विदेहमे तावत ई-प्रकाशित भेनाइ शुरू भऽ गेल छल। हम उमेश मण्डल जी कैँ स्टोरी-साइंसक मर्म बुझेलियन्हि आ बिनु तथाकथित शुद्ध कएल वर्तनीबला रूप विदेहमे छपब शुरू भेल [देखू दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)- (छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)] । दुध-पानि फराक-फराक (कथा एवं पाण्डुलिपि जगदीश प्रसाद मण्डल)(छाया एवं सम्पादन- उमेश मण्डल)

आ उमेश मण्डल सूचित केलन्हि जे वर्तनी शुद्धताक बाद जगदीश प्रसाद मण्डल जी गुम रहऽ लागल छलाह, आ जहियासँ ओ सुनलन्हि जे वर्तनीक शुद्धता बला रचना विदेहमे रिजेक्ट भऽ गेल छन्हि आ हुनकर असली वर्तनीबला वर्सन आब ई-प्रकाशित हेतन्हि तहियासँ हुनकामे नव उत्साह आबि गेल छन्हि।

फेर उमेश मण्डल जीक गप सुभाष चन्द्र यादवसँ भेलन्हि, तँ सुभाष चन्द्र यादव जी सूचित केलखिन्ह जे मूलधारा बला सभ किछु लिखि दियौ, सुनबे नै करत काने-बात नै देत। राजमोहन झा भाइ साहेबपर सेहो बड्ड विश्वास केने रहथि। "तँ तकर उपाय?" "उपाय वएह जे अहाँ सभ कऽ रहल छी, माने लेखक बढ़ाउ।"

आ स्टोरी साइंस सेहो सएह कहैए, जे कथा सुनायत से करत राज, आ जे जत्ते कथा सुनाओत से तत्ते आगाँ बढ़त। आ असगर बृहस्पतियो झूठ। मुदा ऐबेर दोसर चरणमे सुभाष चन्द्र यादव असगर नै रहथि।

आ समानान्तर धारा कथा सुना रहल अछि १५ सालसँ आ मूलधारा सुनि रहल अछि।

जखन कि मिशेल फोकोक सभटा डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशन "अनुशासन संस्था" जेना साहित्य अकादेमी, मैथिली अकादमी, मैथिली भोजपुरी अकादमी, आ साहित्य अकादेमी द्वारा मान्यता प्राप्त कथित लिटेरेरी असोसियेशन सभ मूल धारा लग छै।

मुदा मिशेल फोकोक सभटा डिसीप्लिनरी इंस्टीट्यूशन आ मूलधाराक गैसलाइटिंगक टेक्निक, गार्जियन बनबाक ऑफरक टेक्निक स्टोरी साइंस द्वारा खतम कऽ देल गेल छै।

स्टोरी साइंस तारानन्द वियोगीक शब्दावली (१) जेना थोकक हिसाबें मैथिलीमे उपन्यास बहराइत अछि, (२) मेहतरक भाषा आ (३) कूड़ा-कड़कटक पहाड़ ठाढ़ करबाक साजिश आ रमानन्द झा "रमण"क शब्दावली (१) "हाट-बजारक भाषा" (डॉ. प्रमोद कुमारक’ कनकिरबा’ क आमुखमे) कैँ उघार केलक।

ई सभ हतोत्साहित करबा लेल उपयुक्त गैस-लाइटिंग केर टेक्निक अछि जकरा समानान्तर धारा द्वारा स्टोरी साइंसक मदतिसँ खतम कऽ देल गेल अछि। तँ ई उदाहरण सिद्ध करैए जे मूल धारामे सभ जातिक लोक अछि आ समानान्तर धारामे सेहो। स्टोरी साइंसक मदतिसँ ब्राह्मणवादक संग गएर-ब्राह्मणक नव-ब्राह्मणवादकैँ सेहो चिन्हित कएल गेल अछि।

आ सएह कारण छै जे मैथिली कथा सुनेबाक आयोजन “सगर राति दीप जरय” कैँ साहित्य अकादेमी द्वारा गीड़ि लेबाक प्रयत्न भेल आ से विफल भऽ गेलापर रमानन्द झा’ रमण’ सहित मूल धाराक आन लोक अपन मानसिक सन्तुलन बना कऽ नै राखि सकला। रमानन्द झा’ रमण’ तँ सभटा सीमाक अतिक्रमण करैत एकटा ब्राह्मणवादी संस्थाक पत्रिकामे बिनु नाम लेने हमरा आ उमेश मण्डलकैँ अवाच कथा सेहो कहलन्हि आ तकर उपहार स्वरूप साहित्य अकादेमी दिल्लीक ओइ संस्थाकैँ कथित लिटेरेरी एसोसियेशनक रूपमे मान्यता देलक। ई घटना स्टोरी-साइंसक प्रभावकैँ दर्शित करैत अछि।

मुदा अशोक गत दस सालसँ’ सगर राति दीप जरय’ केर आयोजन समानान्तर धाराक लेखक सभ द्वारा कएल जेबासँ आह्लादित छथि आ कहै छथि- “एकर प्रारम्भिक उद्देश्य रहै गाम-गाम गोष्ठी करबाक, से आबे जा कऽ भऽ रहल छै। “यएह गप हमर गाममे भेल ८२ म सगर राति दीप जरय [कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथ] मे शिवशंकर श्रीनिवास सेहो बाजल छला- “जखन हम सभ’ सगर राति दीप जरय’ शुरू केने छलौं तखन एकर उद्देश्य छल जे ई गामे-गाम हुअय, मुदा ई तँ पटना-चेन्नै घुमऽ लागल। “कथा बौद्ध सिद्ध मेहथपा (बाल साहित्य केन्द्रित) मेंहथ

आ ओम्हर रामभरोस कापड़ि’ भ्रमर’ आ परमेश्वर कापड़ि सेहो पायापार नेपाल मे अड़ल छला। भारतक सरकारी संस्थाक संकलनमे हुनकर सभक रचना बाहरी (नेपालक) हेबाक कारण नै देल गेलनि मुदा ओही नेपालक दोसर लेखक, जे स्टेटस-को केर सङ छला, केर कथा देल गेलै।

जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरी, जुलिया क्रिस्टोवाक उर्ध्वाधर सम्बन्ध बला धूरी/ जेक्स डेरीडा- उत्तर संरचनावाद माने विखण्डनात्मक सिद्धान्त

कथाक यात्रा- वैदिक आख्यान, जातक कथा, ऐशप फेबल्स, पंचतंत्र आ हितोपदेश आ संग-संग चलैत रहल लोकगाथा सभ। सभ ठाम अभिजात्य वर्गक कथाक संग लोकगाथा रहिते अछि, आ से मैथिलीयो मे अछि।

ऐ सम्बन्धमे सुभाष चन्द्र यादवक निम्न विचार छन्हि:

“मैथिली मे लोक-कथा पर बड़ कम काज भेल अछि। लोक-कथाक किहुए संकलन उपलब्ध अछि आ से स्मृतिक आधार पर लिपिबद्ध कयल गेल अछि, फील्ड वर्कक आधार पर नहि। लोक-साहित्यक कोनो इकाइ हो, ओकर एक सँ अधिक रूप विद्यमान रहैत छैक, जे फील्ड वर्क कयले सँ प्राप्त भऽ सकैत अछि। स्मृति मे ओकर मात्र एकटा रूप रहैत छैक, जकरा सर्वोत्तम रूप मानि लेब गलत भऽ सकैत अछि। लोक-कथा क जतेक संकलन अखनधरि भेल अछि, से अपूर्ण अछि। मैथिली मे लोक-गीत, लोक गाथा आ लोक देवता क लेल तऽ किछु फील्ड वर्क कयलो गेल, लोक कथाक लेल भरिसक्के कोनो फील्ड वर्क भेल अछि। आब जखन एक पुश्त सँ दोसर पुश्त मे लोक साहित्यक अंतरण दिनोदिन संकटग्रस्त भेल जा रहल अछि, तैं एकर संरक्षण जरूरी अछि। लोकसाहित्यक संरक्षण मात्र एहि लेल जरूरी नहि अछि जे ओ अतीतक एकटा वस्तु थिक; ओ अपन समयक विमर्श आ आत्मवाचन सेहो होइत अछि आ एकटा प्रतिमान उपस्थित करैत अछि। ओकर रूपक, प्रतीक, भाव आ शिल्पक उपयोग लिखित साहित्य मे हम सभ अपन-अपन ढंग सँ करैत रहैत छी। तहिना लिखित साहित्य सेहो लोक-साहित्य कैँ प्रभावित करैत रहैत अछि। लोक-साहित्य संबंधी अध्ययन मुख्यत: स्थान आ कालक निर्धारण पर केन्द्रित रहल अछि। ओकर कार्य, अभिप्राय आ अर्थ सँ संबंधित प्रश्न अखनो उपेक्षित अछि। मैथिली मे तऽ लोक-साहित्य संबंधी अध्ययन अखन ठीक सँ शुरुओ नहि भेल अछि। जे पोथी अछि, ताहि मे लोक-साहित्यक परिभाषा आ सूची उपस्थित कयल गेल अछि। लोक-कथाक उपलब्ध संकलन सभ मे ओहन कथाक संख्या बेसी अछि जे देशांतरणक कारणेँ मैथिली मे आयल अछि। मैथिलीक अपन लोककथा, जकरा खाँटी मैथिल कहि सकैत छिऐक, से कम आयल अछि। रामलोचन ठाकुर द्वारा संकलित मैथिली लोक-कथा, जकरा हम अपन एहि अत्यंत संक्षिप्त अध्ययनक आधार बनौने छी, ताहू मे खाँटी मैथिली लोक-कथा कम्मे अछि। लोक-कथाक अभिप्राय आ अर्थ संबंधी अपन बात कहबाक लेल जाहि दूटा कथाक चयन हम कयने छी, से अछि- ‘एकटा बुढ़िया रहय’ आ ‘एकटा चिनिया खेलिऐ रओ भैया’ । एहि दुनू कथाक वातावरण विशुद्ध मैथिल अछि। दुनूक विमर्श, आत्मवाचन आ प्रतिमान मैथिल-मानसक अनुरूप अछि। दुनू कथाक विमर्श न्याय पर केंद्रित अछि। पहिल कथाक बुढ़िया दालिक एकटा फाँक लेल बरही, राजा, रानी, आगि, पानि आ हाथी कैँ न्याय पयबाक खातिर ललकारैत अछि, किएक तऽ खुट्टी ओकर दालि नुका लेने छैक आ दऽ नहि रहल छैक। कथाक विमर्श पद्यात्मक रूप मे एना व्यक्त भेल अछि- हाथी हाथी हाथी! समुद्र सोखू समुद्र। समुद्र ने अगिन मिझाबय, अगिन। अगिन ने रानी डेराबय, रानी। रानी ने राजा बुझाबथि, राजा। राजा ने बरही डाँड़थि, बरही। बरही ने खुट्टी चीड़य, खुट्टी। खुट्टी ने दालि दिअय, दालि। की खाउ, की पीबू, की लऽ परदेस जाउ। जाइत अछि। खुट्टी तैयार भऽ जाइत छैक। फेर तऽ खुट्टीक डरेँ हाथी, हाथीक डरेँ समुद्र, समुद्रक डरेँ आगि, आगिक डरेँ रानी, रानीक डरेँ राजा, राजाक डरेँ बरही न्याय करक लेल तैयार भऽ जाइत छैक आ खुट्टी

बुढ़िया कैँ दालि दऽ दैत छैक। ई कथा रामलोचन अपन माय सँ सुनने छलाह। ओ कहलनि जे माय वला वृत्तांत मे बुढ़िया हाथिए लग सँ घूरि जाइत छैक। लिपिबद्ध करैत काल ओ एकर पुनर्सृजन कयलनि। हुनक लिपिबद्ध कयल वृत्तांत मे बुढ़िया हाथियो सँ आगू खुट्टी धरि जाइत अछि। बुढ़िया कैँ खुट्टी धरि लऽ गेनाइ कथाक व्यंजना मे विस्तार अनैत छैक। लेकिन लोक कथाक एहन प्रलेखन कतेक उचित अछि? एहि कथाक आत्म वाचन बुढ़ियाक माध्यमे प्रकट भेल अछि। अपन स्थितिक प्रति बुढ़िया जे प्रतिक्रिया करैत अछि, सएह एहि कथाक आत्म वाचन थिक। एकटा दालिक बल पर बुढ़िया परदेस जेबाक नेयार करैत अछि। राजा-रानीक सेर भरि दालि देबाक प्रस्ताव कैँ तिरस्कृत करैत अछि। समुद्र सँ हीरा मोतीक दान नहि लैत अछि। दालि पर अपन अधिकार लेल लड़ैत रहैत अछि। तात्पर्य ई जे सपना देखबाक चाही। भीख आ दयाक पात्र नहि हेबाक चाही। दान लेब नीक नहि। स्वाभिमानी हेबाक चाही आ अपन हक लेल लड़बाक चाही। कथा ई प्रतिमान उपस्थित करैत अछि जे न्याय संघर्षे कयला सँ भेटैत छैक।' एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया' न्यायक विवेकशीलता पर विमर्श करैत अछि। मुनिया (चिड़ै) कैँ एकटा चीन खेबाक अपराध मे प्राणदंड भेटै वला छैक। ई विमर्श पद्यात्मक रूपमे चलैत छैक, जाहि मे ओकर दारुण अवस्था सेहो चित्रित भेल छैक।

बरदवला भाइ!

परबत पहाड़ पर खोता रे खोंता

भुखै मरै छै बच्चा

एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया

तइ लए पकड़ने जाइए।

फेर घोड़ावला अबै छै, हाथीवला अबै छै, खुद्दी-वला अबै छै। मुनिया सभ सँ मिनती करैत अछि। ओहो सभ खेतवला कैँ पोल्हबैत छैक; छोड़बाक बदला मे बड़द, घोड़ा, हाथी देबऽ लेल तैयार छैक, लेकिन खेतवला टस सँ मस नहि होइत अछि। जखन भूखे-प्यासे जान जाय लगै छैक, तखन खुद्दीक बदला मे मुनिया कैँ छोड़ि दैत अछि। मुनिया करुणा आ मानवीयताक आवाहन करैत अछि। मनुस्मृति मे कहल गेल छैक जे चुपचाप ककरो फूल तोड़ि लेब चोरि नहि होइत छैक; तहिना ककरो एकटा चीन खा लेब कोनो अपराध नहि भेल। इएह कथाक आत्मवाचन थिक। कथा ई प्रतिमान उपस्थित करैत अछि जे सभक जीवक मोल बराबर होइत छैक। असहाय आ निर्धनो कैँ जीबाक अधिकार छैक। एहि संसार मे ओकरो लेल एकटा स्पेस (जगह) हेबाक चाही।"

कथामे असफलताक सम्भावना उपन्यास-महाकाव्य-आख्यान सँ बेशी होइत अछि, कारण उपन्यास अछि "सोप ओपेरा" जे महिनाक-महिना आ सालक-साल धरि चलैत अछि आ सभ एपीसोडक अन्तमे एकटा बिन्दुपर आबि खतम होइत अछि। माने सत्तरि एपीसोडक उपन्यासमे उन्हत्तरि एपीसोड धरि तँ आशा बनिते अछि जे कथा एकटा मोड़ लेत आ अन्त धरि जे कथाक दिशा नहिये बदलल तँ पुरनका सभटा एपीसोड हिट आ मात्र अन्तिम एपीसोड फ्लॉप। मुदा कथा एकर अनुमति नै दैत अछि। ई एक एपीसोड बला रचना छी आ नीक तँ खूबे नीक आ नै तँ खरापे-खराप।

कथा-गाथा सँ बढ़ि आगू जाइ तँ आधुनिक कथा-गल्पक इतिहास उन्नैसम शताब्दीक अन्तमे भेल। एकरा लघुकथा, कथा आ गल्पक रूप मानल गेल। ओना ऐ तीनूक बीचक भेद सेहो अनावश्यक रूपसँ व्याख्यायित कएल गेल। रवीन्द्रनाथ ठाकुरसँ शुरु भेल ई यात्रा भारतक एक कोनसँ दोसर कोन धरि सुधारवाद रूपी आन्दोलनक परिणामस्वरूप आगाँ बढ़ल। असमियाक बेजबरुआ, उड़ियाक फकीर मोहन सेनापति, तेलुगुक अप्पाराव, बंगलाक केदारनाथ बनर्जी ई सभ गोटे कखनो नारीक प्रति समर्थनमे तँ कखनो समाजक सूदखोरक विरुद्ध अबैत गेलाह। नेपाली भाषामे "देवी को बलि" सूर्यकान्त ज्ञवाली द्वारा दसहराक पशुबलि प्रथाक विरुद्ध लिखल गेल। कोनो कथा प्रेमक बंधनक मध्य जाति-धनक सीमाक विरुद्ध तँ कोनो दलित समाजक स्थिति आ धार्मिक अंधविश्वासक विषयमे लिखल गेल। आ ई सभ करैत सर्वदा कथाक अन्त सुखद होइत छल सेहो नै।

वादः साहित्यः उत्तर आधुनिक, अस्तित्ववादी, मानवतावादी, ई सभ विचारधारा दर्शनशास्त्रक विचारधारा थिक। पहिने दर्शनमे विज्ञान, इतिहास, समाज-राजनीति, अर्थशास्त्र, कला-विज्ञान आ भाषा सम्मिलित रहैत छल। मुदा जेना-जेना विज्ञान आ कलाक शाखा सभ विशिष्टता प्राप्त करैत गेल, विशेष कऽ विज्ञान, तँ दर्शनमे गणित आ विज्ञान मैथेमेटिकल लॉजिक धरि सीमित रहि गेल। दार्शनिक आगमन आ निगमनक अध्ययन प्रणाली, विश्लेषणात्मक प्रणाली दिस बढ़ल। मार्क्स जे दुनिया भरिक गरीबक लेल एकटा दैवीय हस्तक्षेपक समान छलाह, द्वन्द्वात्मक प्रणालीकैँ अपन व्याख्याक आधार बनओलन्हि। आइ-काल्हिक "डिसकसन" वा द्वन्द्व जइमे पक्ष-विपक्ष, दुनू सम्मिलित अछि, दर्शनक (माधवाचार्यक सर्वदर्शन संग्रह-द्रष्टव्य) खण्डन-मण्डन प्रणालीमे पहिनहियेसँ विद्यमान छल।

से इतिहासक अन्तक घोषणा कयनिहार फ्रांसिस फुकियामा -जे कम्युनिस्ट शासनक समाप्तिपर ई घोषणा कयने छलाह- बादमे ऐसँ पलटि गेलाह। कम्यूनिस्ट शासनक समाप्ति आ बर्लिनक देबालक खसबाक बाद फ्रांसिस फुकियामा घोषित कएलन्हि जे विचारधाराक आपसी झगड़ा (द्वन्द्व) सँ सृजित इतिहासक ई समाप्ति अछि आ आब मानवक हितक विचारधारा मात्र आगाँ बढ़त। मुदा किछु दिन बाद ओ ऐ मतसँ आपस भऽ गेलाह आ कहलन्हि जे समाजक भीतर आ राष्ट्रीयताक मध्य अखनो बहुत रास भिन्न विचारधारा बाँचल अछि। तहिना उत्तर आधुनिकतावादी विचारक जैक्स डेरीडा भाषाकेँ विखण्डित कऽ ई सिद्ध केलन्हि जे विखण्डित भाग ढेर रास विभिन्न आधारपर आश्रित अछि आ बिना ओकरा बुझने भाषाक अर्थ हम नै लगा सकैत छी।

उत्तर-आधुनिकतावाद सेहो अपन प्रारम्भिक उत्साहक बाद ठमकि गेल अछि। अस्तित्ववाद, मानवतावाद, प्रगतिवाद, रोमेन्टिसिज्म, समाजशास्त्रीय विश्लेषण ई सभ संश्लेषणात्मक समीक्षा प्रणालीमे सम्मिलित भऽ अपन अस्तित्व बचेने अछि।

साइको-एनेलिसिस वैज्ञानिकतापर आधारित रहबाक कारण द्वन्द्वात्मक प्रणाली जकाँ अपन अस्तित्व बचेने रहत।

आधुनिक कथा अछि की? ई केहन हेबाक चाही? एकर किछु उद्देश्य अछि आकि हेबाक चाही? आ तकर निर्धारण कोना कएल जाय?

कोनो कथाक आधार मनोविज्ञान सेहो होइत अछि। कथाक उद्देश्य समाजक आवश्यकताक अनुसार आ कथा यात्रामे परिवर्तन समाजमे भेल आ होइत परिवर्तनक अनुरूपे हेबाक चाही। मुदा संगमे ओइ समाजक संस्कृतिसँ ई कथा स्वयमेव नियन्त्रित होइत अछि। आ ऐमे ओइ समाजक ऐतिहासिक अस्तित्व सोझाँ अबैत अछि।

जे हम वैदिक आख्यानक गप करी तँ ओ राष्ट्रक संग प्रेमकेँ सोझाँ अनैत अछि। आ समाजक संग मिलि कऽ रहनाइ सिखबैत अछि। जातक कथा लोक-भाषाक प्रसारक संग बौद्ध-धर्म प्रसारक इच्छा सेहो रखैत अछि।

मुस्लिम जगतक कथा जेना रूमीक “मसनवी” फारसी साहित्यक विशिष्ट ग्रन्थ अछि जे ज्ञानक महत्व आ राज्यक उन्नतिक शिक्षा दैत अछि।

आजुक कथा ऐ सभ वस्तुकेँ समेटैत अछि आ एकटा प्रबुद्ध आ मानवीय समाजक निर्माणक दिस आगाँ बढ़ैत अछि। आ जे से नै अछि तँ ई ओकर उद्देश्यमे सम्मिलित हेबाक चाही। आ तखने कथाक विश्लेषण आ समालोचना पाठकीय विवशता बनि सकत।

मनोविश्लेषण आ द्वन्द्वात्मक पद्धति जेकाँ फुकियामा आ डेरीडाक विश्लेषण सेहो संश्लेषित भऽ समीक्षाक लेल स्थायी प्रतिमान बनल रहत।

ककरा लेल कथा लिखी? वा कही? कथाक वाद: जिनका विषयमे लिखब से तँ पढ़ताह नै। कथा पढ़ि लोक प्रबुद्ध भऽ जायत? गीताक सप्पत खा कऽ झूठ बजनिहारक संख्या कम नै। तेँ की एहन कसौटीपर रचित कथाक महत्व कम भऽ जायत?

सभ प्रबुद्ध नै हेताह तँ स्वस्थ मनोरंजन तँ प्राप्त कऽ सकताह। आ जे एकोटा व्यक्ति कथा पढ़ि ओइ दिशामे सोचत तँ कथाक सार्थकता सिद्ध हएत। आ जकरा लेल रचित अछि ई कथा जे ओ नै, तँ ओकर ओइ परिस्थितिमे हस्तक्षेप करबामे सक्षम व्यक्ति तँ पढ़ताह। आ जा ई रहत ताधरि ऐ तरहक कथा रचित कएल जाइत रहत।

आ जे समाज बदलत तँ सामाजिक मूल्य सनातन रहत? प्रगतिशील कथामे अनुभवक पुनर्निर्माण करब, परिवर्तनशील समाजक लेल, जइसँ प्राकृतिक आ सामाजिक यथार्थक बीच समायोजन हुअए। आकि ऐ परिवर्तनशील समयकेँ स्थायित्व देबा लेल परम्पराक स्थायी आ मूल तत्वपर आधारित कथाक आवश्यकता अछि्? व्यक्ति-हित आ समाज-हितमे द्वैध अछि आ दुनू परस्पर विरोधी अछि। ऐमे संयोजन आवश्यक। विश्व दृष्टि आवश्यक। कथा मात्र विचारक उत्पत्ति नै अछि जे रोशनाइसँ कागचपर जेना-तेना उतारि देलिऐ। ई सामाजिक-ऐतिहासिक दशासँ निर्दिशित होइत अछि।

तँ कथा आदर्शवादी हुअय, प्रकृतिवादी हुअय वा यथार्थवादी हुअय। आकि ई मानवतावादी, सामाजिकतावादी वा अनुभवकेँ महत्व देमयबला ज्ञानेन्द्रिय-यथार्थवादी हुअय? आ नै तँ कथा प्रयोजनमूलक हुअय। ऐमे उपयोगितावाद, प्रयोगवाद, व्यवहारवाद, कारणवाद, अर्थक्रियावाद आ फलवाद सभ सम्मिलित अछि। ई सभसँ आधुनिक दृष्टिकोण अछि। अपनाकेँ अभिव्यक्त केनाइ मानवीय स्वभाव अछि। मुदा ओ सामाजिक निअममे सीमित भऽ जाइत अछि। परिस्थितिसँ प्रभावित भऽ जाइत अछि।

तँ कथा अनुभवकेँ पुनर्रचित कऽ गढ़ल जायत। आ व्यक्तिगत चेतना तखन सामाजिक आ सामूहिक चेतना बनि पाओत। शोषककेँ अपन प्रवृत्तिपर अंकुश लगबय पड़तन्हि। तँ शोषितकेँ एकर विरोध मुखर रूपमे करय पड़तन्हि।

स्वतंत्रता- सामाजिक परिवर्तन। कथा तखन संप्रेषित हएत, संवादक माध्यम बनत। कथा समाजक लेल शस्त्र तखने बनि सकत, शक्ति तखने बनि सकत।

जे कथाकार उपदेश देताह तँ ज्ञानक हस्तांतरण करताह, जकर आवश्यकता आब नै छै। जखन कथाकार सम्वाद शुरू करताह तखने मुक्तिक वातावरण बनत आ सम्वादमे भाग लेनिहार पाठक जड़तासँ त्राण पओताह।

कथा क्रमबद्ध हुअय आ सुग्राह्य हुअय तखने ई उद्देश्य प्राप्त करत। बुद्धिपरक नै व्यवहारपरक बनत। वैदिक साहित्यक आख्यानक उदारता संवादकेँ जन्म दैत छल जे पौराणिक साहित्यक रुढ़िवादिता खतम कय देलक।

आ संवादक पुनर्स्थापना लेल कथाकारमे विश्वास हेबाक चाही- तर्क-परक विश्वास आ अनुभवपरक विश्वास, जे सुभाषचन्द्र यादवमे छन्हि। प्रत्यक्षवादक विश्लेषणात्मक दर्शन वस्तुक नै, भाषिक कथन आ अवधारणाक विश्लेषण करैत अछि से सुभाषजीक कथामे सर्वत्र देखबामे आओत। विश्लेषणात्मक अथवा तार्किक प्रत्यक्षवाद आ अस्तित्ववादक जन्म विज्ञानक प्रति प्रतिक्रियाक रूपमे भेल। ऐसँ विज्ञानक द्विअर्थी विचारकेँ स्पष्ट कएल गेल।

प्रघटनाशास्त्रमे चेतनाक प्रदत्तक प्रदत्त रूपमे अध्ययन होइत अछि। अनुभूति विशिष्ट मानसिक क्रियाक तथ्यक निरीक्षण अछि। वस्तुकेँ निरपेक्ष आ विशुद्ध रूपमे देखबाक ई माध्यम अछि। अस्तित्ववादमे मनुष्य-अहि मात्र मनुष्य अछि। ओ जे किछु निर्माण करैत अछि ओइसँ पृथक ओ किछु नै अछि, स्वतंत्र हेबा लेल अभिशप्त अछि (सार्त्र) । हेगेलक डायलेक्टिक्स द्वारा विश्लेषण आ संश्लेषणक अंतहीन अंतस्संबंध द्वारा प्रक्रियाक गुण निर्णय आ अस्तित्व निर्णय करबापर जोर देलन्हि। मूलतत्व जतेक गहींर हएत ओतेक स्वरूपसँ दूर रहत आ वास्तविकतासँ लग।

क्वान्टम सिद्धान्त आ अनसरटेन्टी प्रिन्सिपल सेहो आधुनिक चिन्तनकेँ प्रभावित केने अछि। देखाइ पड़एबला वास्तविकता सँ दूर भीतरक आ बाहरक प्रक्रिया सभ शक्ति-ऊर्जाक छोट तत्वक आदान-प्रदानसँ सम्भव होइत अछि। अनिश्चितताक सिद्धान्त द्वारा स्थिति आ स्वरूप, अन्दाजसँ निश्चित करय पड़ैत अछि।

तीनसँ बेशी डाइमेन्सनक विश्वक परिकल्पना आ स्टीफन हॉकिन्सक “अ ब्रिफ हिस्ट्री ऑफ टाइम” सोझे-सोझी भगवानक अस्तित्वकेँ खतम कऽ रहल अछि कारण ऐसँ भगवानक मृत्युक अवधारणा सेहो सोझाँ आयल अछि, से एखन विश्वक नियन्ताक अस्तित्व खतरामे पड़ल अछि। भगवानक मृत्यु आ इतिहासक समाप्तिक परिप्रेक्ष्यमे मैथिली कथा कहिया धरि खिस्सा कहैत रहत? लघु, अति-लघु कथा (बीहनि कथा), कथा, गल्प आदिक विश्लेषणमे लागल रहत?

जेना वर्चुअल रिअलिटी वास्तविकता कैँ कृत्रिम रूपैँ सोझाँ आनि चेतनाकेँ ओकरा संग एकाकार करैत अछि तहिना बिना तीनसँ बेशी बीमक परिकल्पनाक हम प्रकाशक गतिसँ जे सिन्धुघाटी सभ्यतासँ चली तँ तइयो ब्रह्माण्डक पार आइ धरि नै पहुँचि सकब। ई सूर्य अरब-खरब आन सूर्यमेसँ एकटा मध्यम कोटिक तरेगण- मेडिओकर स्टार- अछि। ओइ मेडिओकर स्टारक एकटा ग्रह पृथ्वी आ ओकर एकटा नग्र-गाममे रहनिहार हम सभ अपन माथपर हाथ राखि चिन्तित छी जे हमर समस्यासँ पैघ ककर समस्या? हमर कथाक समक्ष ई सभ वैज्ञानिक आ दार्शनिक तथ्य चुनौतीक रूपमे आयल अछि।

होलिस्टिक आकि सम्पूर्णताक समन्वय करय पड़त! ई दर्शन दार्शनिक सँ वास्तविक तखने बनत।

पोस्टस्ट्रक्चरल मेथोडोलोजी भाषाक अर्थ, शब्द, तकर अर्थ, व्याकरणक निअम सँ नै वरन् अर्थ निर्माण प्रक्रियासँ लगबैत अछि। सभ तरहक व्यक्ति, समूह लेल ई विभिन्न अर्थ धारण करैत अछि। भाषा आ विश्वमे कोनो अन्तिम सम्बन्ध नै होइत अछि। शब्द आ ओकर पाठ केर अन्तिम अर्थ वा अपन विशिष्ट अर्थ नै होइत अछि।

ऐ सम्बन्धमे सुभाष चन्द्र यादवक निम्न विचार छन्हि:

“कोनो लेखक सँ ई अपेक्षा केनाइ जे ओ अपन रचनाक स्पष्टीकरण आ व्याख्या करए एकटा अनुचित अपेक्षा होएत। ई काज लेखकक नहि थिकैक। रचना चाहे कतबो दुर्बोध्य आ विवादास्पद हो, लेखक ओहि लेल जिम्मेदार तऽ होइत अछि, मुदा ओकर भाष्यकार हेबाक लेल बाध्य नहि। लेखक ककरा-ककरा अपन रचना बुझेने फिरत आ किएक? की ई सम्भव छैक? लेखक जँ चाहए तऽ अपन जीवनकालमे रचनाक संदर्भमे किछु सम्वाद स्थापित कऽ सकैत अछि, मुदा मृत्योपरांत? पाठक अपन बोध आ विवेकक अनुसार रचनाक पाठ करैत अछि। हरेक युगक सेहो अपन भिन्न बोध होइत छैक। तँ ई पथ भिन्नता आ परिवर्त्तनशीलता हरेक समर्थ रचनाक आनिवार्य गुण होइत अछि। समय के संग-संग रचनाक संवेदनात्मक अभिप्राय बदलैत रहैत छैक। तँ ई युग बदलला पर

रचनाक व्याख्या सेहो बदलि जाइत छैक। एहि तरहेँ कोनो एकटा रचना के एक्के टा आ समान पाठ नहि होइत अछि; मूल्यवान रचनाक पाठ अनंत होइत अछि। पाठ पर लेखकक नियंत्रण नहि होइत छैक। तँ ऐ पाठ भिन्नताक लेल ओकरा सफाइ आ स्पष्टीकरण देबाक कोनो बेगरता नहि हेबाक चाही। हमर अपन अनुभव तऽ ई अछि जे जाधरि कोनो घटना कलात्मक विजनसँ दीप्त नहि होएत ताधरि ओ रचनामे रूपांतरित नहि भऽ सकत। ओहि आरंभिक विजनकेँ पाठक भिन्न-भिन्न रूपेँ पकड़ैत अछि आ अलग-अलग व्याख्या करैत अछि। हमरा लगैत अछि जे कोनो रचनाक विजन आ दर्शनकेँ पाठक भले नहि बुझि पबैत हो, ओकर मर्मकेँ जरूर पकड़ि लैत अछि; ओकर संवेदनात्मक तत्वकेँ हृदयंगम कऽ लैत अछि। लोककथा सँ उदाहरण ली तऽ बात बेशी स्पष्ट होएत। एकटा चिनमा खेलिऐ रओ भइया तइ ले पकड़ने जाइए'- एहि उक्तिमे न्याय आ समानताकेँ जे विमर्श आ दर्शन छैक, तकरा पाठक भले नहि बूझि पबैत हो, मुदा स्वतंत्रताक लेल जे फुद्दीक आर्तनाद छैक तकर अनुभव पाठक अवश्य कऽ लैत अछि। तहिना हमर कथा 'नदी' आ 'कनियाँ पुतरा' मे जीवनदायिनी शक्तिक रूपमे प्रेमकेँ जे विजन (दर्शन) छैक तकरा बूझब ओतेक आसान जँ नहियो होइ, तैयो नेहक अनुभूति तऽ पाठक करिते अछि। साहित्यमे असली चीज ईएह संवेदना या मर्म होइत छैक। कोनो विचार (या दर्शन) संवेदनेक माध्यमसँ पाठक धरि पहुँचबाक चाही; कोनो नीरस विमर्श या नाराबाजीक रूपमे नहि। हमरा बुझने धर्म आ संस्कृतिक भित्ति प्रेमे थिक। प्रेमसँ बढ़ि कऽ एहि संसारमे कोनो दोसर भाव नहि अछि। हमर कथा सभ कोनो विचारधारात्मक या आचारशास्त्रीय आग्रह लऽ कऽ नहि चलैत अछि। ओ अपन समयकेँ आचार-विचारकेँ व्यक्त तऽ करैत अछि, मुदा ओहि सँ बद्ध नहि अछि। हमर धारणा अछि जे कलाकृति कोनो क्रांति नहि अनैत अछि। ओ मनुक्खक भावात्मक अभिवृत्ति आ दृष्टिकेँ बहुत सूक्ष्म ढ़ंगसँ बदलैत अछि आ दीर्घकालिक सामाजिक परिवर्त्तनक घटक होइत अछि। एकर अतिरिक्त आर किछु नहि। जे आलोचक एहिसँ इतर कोनो अपेक्षा आ आग्रह (जेना मैथिलीक चेतनावादी हठ) लऽ कऽ साहित्य लग जाएत, से अपनोकेँ ठकत आ दोसरोकेँ धोखा देत।"

आधुनिक आ उत्तर आधुनिक तर्क, वास्तविकता, सम्वाद आ विचारक आदान-प्रदानसँ आधुनिकताक जन्म भेल। मुदा फेर नव-वामपंथी आन्दोलन फ्रांसमे आयल आ सर्वनाशवाद आ अराजकतावाद आन्दोलन सन विचारधारा सेहो आयल। ई सभ आधुनिक विचार-प्रक्रिया प्रणाली ओकर आस्था-अवधारणासँ बहार भेल अविश्वासपर आधारित छल।

पाठमे नुकायल अर्थक स्थान-काल संदर्भक परिप्रेक्ष्यमे व्याख्या शुरू भेल आ भाषाकेँ खेलक माध्यम बनाओल गेल- लंगुएज गेम। आ ऐ सभ सत्ताक आ वैधता आ ओकर स्तरीकरणक आलोचनाक रूपमे आयल पोस्टमॉडर्निज्म।

कंप्युटर आ सूचना क्रान्ति जइमे कोनो तंत्रांशक निर्माता ओकर निर्माण कऽ ओकरा विश्वव्यापी अन्तर्जालपर राखि दैत छथि आ ओ तंत्रांश अपन निर्मातासँ स्वतंत्र अपन काज करैत रहैत अछि, किछु ओहनो कार्य जे एकर निर्माता ओकरा लेल निर्मित नै कयने छथि। आ किछु हस्तक्षेप-तंत्रांश जेना वायरस, एकरा मार्गसँ हटाबैत अछि, विध्वंसक बनबैत अछि तँ ऐ वायरसक एंटी वायरस सेहो एकटा तंत्रांश अछि, जे ओकरा ठीक करैत अछि आ जे ओकरो सँ ठीक नै होइत अछि तखन कम्प्युटरक बैकप लऽ ओकरा फॉर्मेट कए देल जाइत अछि- क्लीन स्लेट!

पूँजीवादक जनम भेल औद्योगिक क्रान्तिसँ आ आब पोस्ट इन्डस्ट्रियल समाजमे उत्पादनक बदला सूचना आ संचारक महत्व बढ़ि गेल अछि, संगणकक भूमिका समाजमे बढ़ि गेल अछि। मोबाइल, क्रेडिट-कार्ड आ सभ एहन वस्तु चिप्स आधारित अछि। २००८क कोसीक बाढ़िमे गौरीनाथजी गाममे फाँसल छलाह, भोजन लेल मारि पड़ैत रहय मुदा क्रेडिट कार्डसँ ए. सी. टिकट बुक भऽ गेलन्हि। मिथिलाक समाजमे सूचना आ संगणकक भूमिकाक आर कोन दोसर उदाहरण चाही? गुलोमे सेहो अहाँ मोबाइल चार्ज करबाक बिजनेसक चर्चा देखैत छी।

डी कन्सट्रक्शन आ री कन्सट्रक्शन विचार रचना प्रक्रियाक पुनर्गठन केँ देखबैत अछि जे उत्तर औद्योगिक कालमे चेतनाक निर्माण नव रूपमे भऽ रहल अछि। इतिहास तँ नै मुदा परम्परागत इतिहासक अन्त भऽ गेल अछि। राज्य, वर्ग, राष्ट्र, दल, समाज, परिवार, नैतिकता, विवाह सभ फेरसँ परिभाषित कएल जा रहल अछि। मारते रास परिवर्तनक परिणामसँ, विखंडित भऽ सन्दर्भहीन भऽ गेल अछि कतेक संस्था।

मैथिलीमे नीक कथा नै, नीक नाटक नै? मैथिलीमे व्याकरण नै? पनिसोह आ पनिगर ऐ तरहक विश्लेषण कतऽ अछि मैथिली व्याकरण मे, वएह अनल, पावक सभ अछि! सुभाष चन्द्र यादवक कथा यात्राक सन्दर्भमे ई गप कहब आवश्यक छल।

जइ समय मैथिलीक समस्या घर-घरसँ मैथिलीक निष्कासन अछि, जखन हिन्दीमे एक हाथ अजमेलाक बाद नाम नै भेला उत्तर लोक मैथिलीक कथा-कविता लिखि आ सम्पादक-आलोचक भऽ, अपन महत्वाकांक्षाक भारसँ मैथिली कथा-कविताक वातावरणकेँ भरिया

रहल छथि, मार्क्सवाद, फेमिनिज्म आ धर्मनिरपेक्षता घोसिया-घोसिया कऽ कथा-कवितामे भरल जा रहल अछि, तखन स्तरक निर्धारण सएह कऽ रहल अछि, स्तरहीनताक बेढ़ वाद बनल अछि।

जे गरीब आ निम्न जातीयक शोषण आ ओकरा हतोत्साहित करबामे लागल छथि से मार्क्सवादक शरणमे, जे महिलाकेँ अपमानित केलन्हि से फेमिनिज्मक शरणमे आ जे साम्प्रदायिक छथि ओ धर्मनिरपेक्षताक शरणमे जाइत छथि।

ओना साम्प्रदायिक लोक फेमिनिस्ट, महिला विरोधी मार्क्सिस्ट आ ऐ तरहक कतेक गठबंधन आ मठमे जाइत देखल गेल छथि। क्यो राजकमलक बड़ाइमे लागल अछि, तँ क्यो यात्रीक आ धूमकेतुक, आ हुनका लोकनिक तँ की पक्ष राखत तकर आरिमे अपनाकेँ आगाँ राखि रहल अछि। यात्रीक पारोकेँ आ राजकमल आ धूमकेतुक कथाकेँ आइयो स्वीकार नै कएल गेल अछि- ऐ तरहक अनर्गल प्रलाप!

क्यो तथाकथित विवादास्पद कथाक सम्पादन कऽ स्वयं विवाद उत्पन्न कए अपनाकेँ आगाँ राखि रहल छथि। मात्र मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक लेखनक बीच सीमित प्रतियोगिता जइ कवि-कथाकारकेँ विचलित कऽ रहल छन्हि आ हिन्दी छोड़ि मैथिलीमे एबाक बाद जइ गतिसँ ओ ई सभ करतब कऽ रहल छथि, तिनका मैथिलीक मुख्य समस्यापर ध्यान कहिया जेतन्हि से नै जानि? लोक ईहो बुझैत छथि जे हिन्दीक बाद जे मैथिलीमे लिखब, तँ स्वीकृति त्वरित गतिएँ भेटत? जे मैथिलीक रचनाकारेँकेँ ऐ तरहक भ्रम छन्हि आ आत्मविश्वासक अभाव छन्हि, अपन मातृभाषाक संप्रेषणीयतापर अविश्वास (!), तखन ऐ भाषाक भविष्य हिनका लोकनिक कान्हपर दऽ कोन छद्म हम सभ संजोगि रहल छी?

मैथिलीमे बीस टा लिखनहार छलाह आ पाँचटा पढ़निहार, से कोन विवाद उठल हएत? राजकमल/ यात्रीक मैथिलीक लेखन सौम्य अछि, से हुनकर सभक गोट-गोट रचना पढ़ि कऽ हम कहि सकैत छी। तइ स्थिति मे- ई विवाद रहय ऐ कवितामे आ ऐ कथामे- ऐ तरहक गप आनि आ ओकर पक्षमे अपन तर्क दऽ अपन लेखनी चमकायब?

आ तकर बाद यात्रीक बाद पहिल उपन्यासकार फलना आ राजकमलक बाद पहिल कवि चिलना-आब तँ कथाकार आ कविक जोड़ी सेहो सोझाँ अबैत अछि, एक दोसराक भक्तिमे आ आपसी वादकेँ आगाँ बढ़एबा लेल।

मैथिलीक मुख्य समस्या अछि जे ई भाषा ऐ सीमित प्रतियोगी (दुर्घर्ष!) सभक आपसी महत्वाकांक्षाक मारिक बीच मरि रहल अछि। कवि-कथाकार मैथिलीकेँ अपन कैरिअर बना लेलन्हि, सेमीनारक वस्तु बना देलन्हि। तखन कतऽ पाठक आ कोन विवाद!

जे समस्या हम देखि रहल छी जे बच्चाकेँ मैथिलीक वातावरण भेटओ आ सभ जातिक लोक ऐ भाषासँ प्रेम करथि तइ लेल कथा आ कविता कतऽ आगाँ अछि? कएकटा विज्ञान कथा, बाल-किशोर कथा-कविता कैरियरजीवी कवि-कथाकार लिखि रहल छथि।

सय-दू सय कॉपी पोथी छपबा कऽ, तकर समीक्षा करबा कऽ, सय-दू सय कॉपी छपयबला पत्रिकामे छपबा कय, तकर फोटोस्टेट कॉपी फोल्डर बना कऽ घरमे राखि पुरस्कार लेल आ सिलेबसमे किताब लगेबा लेल कयल गेल तिकड़मक वातावरणमे हमर आस गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखकपर जा स्थिर भऽ गेल अछि।

जे अपन घर-परिवार नै सम्हारि सकला से ढेरी-ढाकी भाषायी पुरस्कार लऽ बैसल छथि, मिथिला राज्य बनेबामे लागल छथि, पता नै राज्य कोना सम्हारि सकताह।

मराठी, उर्दू, तमिल, कन्नड़सँ मैथिली अनुवाद पुरस्कार निर्लज्जतासँ लैत छथि, वणक्कम केर अर्थ पुछबन्हि से नै अबैत छन्हि, अलिफ-बे-से केर ज्ञान नै, मराठीमे कोनो बच्चासँ गप करबाक सामर्थ्य नै छन्हि। आ मैथिलीमे हुनकर माथ फुटबासँ ऐ द्वारे बचि जाइत छन्हि कारण अपने छपबा कऽ समीक्षा करबैत छथि, से पाठक तँ छन्हि नै। पाठक नै रहयमे हुनका लोकनिकेँ फाएदा छन्हि। आ ऐ पुरस्कार सभमे जूरी आ एडवाइजरी बोर्ड अपनाकेँ आगाँ करबामे जखन स्वयं आगाँ अबैत छथि तखन ऐ सीमित प्रतियोगी लोकनिक आत्मविश्वास कतेक दुर्बल छन्हि, सएह सोझाँ अबैत अछि।

जिनकर सन्तान साहित्यमे नै अयलाह हुनकर चरचा फेर केना हएत, हुनकर पक्ष के आगाँ राखत? मैथिली साहित्यक ऐ सत्यकेँ देखार करबाक आवश्यकता अछि। आँखि मुनि कऽ सेहो एकर समाधान लोक मुदा ताकिये रहल छथि।

कथा-कविता-नाटक-निबन्ध संग्रह सभक सम्पादकक चेला चपाटी मैथिलीक सर्वकालीन संकलनमे स्थान पाबि जाइत छथि। पत्रिका सभक सेहो वएह स्थिति अछि। व्यक्तिगत महत्वाकांक्षामे कटाउझ करैत बिन पाठकक ई पत्रिका सभ स्वयं मरि रहल अछि आ मैथिलीकेँ मारि रहल अछि। ड्राइंग रूममे बिना फील्डवर्कक लिखल लोककथा जइ भाषामे लिखल जाइत हुअय, ओतय ऐ तरहक

हास्यास्पद कटाउझ स्वाभाविक अछि। आब तँ अन्तर्जालपर सेहो मैथिलीक किछु जालवृत्तपर जातिगत कटाउझ आ अपशब्दक प्रयोग देखबामे आएल अछि।

मार्क्सिस्ट आ फेमिनिस्ट बनि तकरो व्यापार शुरू करब आ अपन स्तरक न्यूनताक ऐ तरहेँ पूर्ति करब, सीमित प्रतियोगिता मध्य अल्प प्रतिभायुक्त साहित्यकारक ई हथियार बनि गेल अछि। जे मार्क्सक आदर करत से ई किएक कहत जे हम मार्क्सवादी आलोचक आकि लेखक छी? हँ जे मार्क्सक धंधा करत तकर विषयमे की कही। आ तकर कारण सेहो स्पष्ट। राष्ट्रीय सर्वेक्षण ई देखबैत अछि जे संस्कृत, हिन्दी, मैथिली आ आन साहित्य कॉलेजमे वएह पढ़ैत छथि जिनका दोसर विषयमे नामांकन नै भेटैत छन्हि, पत्रकारितामे सेहो यएह सभ अबैत छथि। प्रतिभा विपन्न एहने साहित्यसेवीकेँ साहित्यक चश्का लागल छन्हि आ हिनके हाथमे मैथिली भाषाक भविष्य सुरक्षित रहत? मुदा ऐ वास्तविकताक संग आगाँक बाट हमरा सभक प्रतीक्षामे अछि। सुच्चा मैथिली सेवी कथाकार आ पाठक जे धूरा-गरदामे जएबा लेल तैयार होथि, बच्चा आ स्त्री जनताक साहित्य रचथि आ अपन ऊर्जा मैथिलीकेँ जीवित रखबा मात्रमे लगाबथि ओ श्रेणी तैयार हेबे टा करत।

मैथिलीक नामपर कोनो कम्प्रोमाइज नै। सुभाषचन्द्र यादवजीक ई संग्रह धारावहिक रूपमे “विदेह” ई-पत्रिकामे (http://www.videha.co.in) अन्तर्जालपर ई-प्रकाशित भऽ हजारक-हजार पाठकक स्नेह पओलक, ऑनलाइन कामेन्ट ऐ कथा सभकेँ भेटलैक जइमे बेशी पाठक गैर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ रहथि, से हम हुनकर सभक उपनाम देखि अन्दाज लगाओल। एतऽ ईहो गप सोझाँ आयल जे शिक्षाक अभावक कारण सेहो, भाषाक उच्चारण आ वाचन मे अंतर अबै-ए। तकर ई मतलब नै जे बलचनमाक भाषा एखनो यादव जी बजैत छथि, आब जे ओ भाषा कथाक यादव पात्र लेल प्रयोग करब तँ शांकुन्तलम् केर संस्कृत नाटकक बीच जनसामान्यक लेल प्रयुक्त प्राकृत जेकाँ लागत, आ ओइ वर्गक लोककेँ अपमानजनक सेहो लगतन्हि। भाषा चलायमान होइत अछि आ लेखन परम्परा ओकर मध्य स्थिरता अनैत अछि। से सुभाषजीक भाषामे सेहो ई अन्तर स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, हुनकर कथाक भाषा आ निबन्धादिक भाषा मध्य।

जूलिया क्रिस्टोवा अपन प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल"मे इण्टर-टेक्स्टुअलिटी माने अन्तर-पाठ्यताक संकल्पना देलन्हि, मने कोनो पाठ एकटा देबारमे बन्न नै रहि सकैए। से ओ पाठकेँ संकलन कहै छथि।

आब गुलोमे देखू, रंजीता रंजनसँ छह वोटक एक हजार टका नरेशबा दियेतै। मुदा ओ निपत्ता भऽ जाइ छै। फुलबा मोदीकेँ जितेतै। एम. पी. केर एलेक्शन छिऐ।

से सुभाष चन्द्र यादव टेक्स्टक कनटेक्सट ताकि लेने छला २०१५ मे। से हुनका भीतर घुरियाइत हेतन्हि आ से विस्तृत रूपमे बहार भेल "भोट"मे एम. एल. ए. केर भेल एलेक्शनक संग २०२२ मे।

से अन्तर-पाठ स्थापित करैत अछि अन्तर-विषयक विषय-वस्तु। ई सभटा पाठ आ विषय एक दोसरासँ रगड़ा लैत रहैए आ एक दोसराक प्रभावकेँ खतम करैत रहैए, कखनो कोनो पाठ आगाँ तँ कखनो दोसर। आ ऐ पाठकेँ अहाँ समाज आ संस्कृतिक आधारसँ अलग नै कऽ सकै छिऐ। से समाज-संस्कृतिक पाठ आ साहित्यक पाठ मिज्झर भऽ जाइत अछि।

पाठ अभ्यास आ उत्पादनक विषय अछि। से पहिनेसँ समाज-संस्कृतिक पाठ आ साहित्यिक पाठ दू तरहक स्वर निकालैत अछि।

विचारधाराक संघर्ष आ तनावकेँ पाठ समाहित करैत अछि।

जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरीमे सोझे लेखक आ पाठकक बीच वार्ता होइ छै। माने लिफाफक बौस्तु आ लिफाफपर लिखल पता केर बीच सोझे वार्ता होइ छै। मुदा जुलिया क्रिस्टोवाक उर्ध्वाधर सम्बन्ध बला धूरीमे "पाठ" मूलधाराक साहित्य संगे सेहो आ एकटा छोट कालावधिमे भेल घटनाक बीच वार्ता करैत अछि। माने पाठ आ ओकर सन्दर्भक बीच वार्ता होइ छै, एक लेखकक पाठ दोसरक लेखकक पाठ संग वार्ता करैए।

ई दुनू धूरी जखन एक दोसराकेँ काटैए तखन शब्द बा पाठ उत्पन्न होइए जइमे कमसँ कम एकटा आर पाठ पढ़ल जा सकैए।

जुलिया क्रिस्टोवा बोली-बानीकेँ यथावत राखबाक आ किछु पाठ, जे मनुक्खसँ अलग अछि, केर रूपमे लेखकक अधिकार आ कर्तव्यक वर्णन करैत छथि।

जूलिया क्रिस्टोवाक प्रस्तुति "वर्ड, डायलॉग एण्ड नोवल"मिखाइल बाखतिनक संकल्पनाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि। संगहि जुलिया क्रिस्टोवा भाषाक संकेत आ प्रतीकक रूपमे सेहो विश्लेषण करैत छथि। जखन बच्चा संकेतक रूपमे, लयसँ गप करैत अछि तँ ओइमे

संरचना नै होइ छै, अर्थ नै होइ छै। मुदा जखन ओ पैघ होइए तँ ओकरा अपना आ आनमे अन्तर बुझाइ छै, ओ बाजऽ लगैए आ अङनासँ बहराइए। आ तकरा बाद ओ अपनाकेँ मायसँ दूर करैए। मुदा ओ लाक्षणिक सँ एकदम्मे दूर नै होइए वरन् लाक्षणिक आ प्रतीकात्मकक बीचमे झुलैत रहैत अछि। लाक्षणिक स्त्री गुण, संगीतमय, कविता आ लय सँ युक्त; आ प्रतीकात्मक पुरुष गुण, विधि आ संरचनासँ युक्त रहैत अछि। से चलचित्र आदिमे महिलाक शरीरक आ ओकर किरदारक जे अवमूल्यन पुरुष द्वारा कएल जाइत अछि से मायक शरीर द्वारा ओकर अस्तित्वक खतराक डर अछि। मुदा बेबी चाइल्ड अपन मायसँ लग रहैत अछि से ओ लाक्षणिक स्त्री गुण, संगीतमय, कविता आ लय सँ बेशी युक्त रहैत अछि, से ओ मायकेँ अस्वीकार तँ करैत अछि मुदा ओकरेसँ अपनाकेँ परिभाषित करैत अछि।

जेक्स डेरीडा योनि केन्द्रित विखण्डनात्मक सिद्धान्तसँ नारीवादी विचारधारामे जे हस्तक्षेप करै छथि तकर कोर्नेल समर्थन करैत छथि आ गायत्री चक्रवर्ती स्पीवाक स्वागत। किछु दार्शनिक विचारधारा जइ प्रकारसँ योनीकेँ अप्रत्यक्ष रूपेँ महत्व दइए ततऽ डेरीडा द्वारा योनि-केन्द्रित दृष्टिकोणक सीमाक प्रति ध्यानाकर्षण एकटा सार्थक हस्तक्षेप अछि आ तइसँ प्रतीकक घटकक फेरसँ एकटा प्रक्रियाक अन्तर्गत परिभाषा देब सम्भव भेल अछि।

डेरीडा आपसमे होइबला सम्वादक गुणनखण्डक असम्भाव्यताकेँ देखबै छथि, ओकरा सरल नै कएल जा सकैए। से स्त्रीकेँ अनुमान आ ज्ञानक वस्तुक रूपमे नै देखल जेबाक चाही। पुरुषत्वक सापेक्ष नारीवादकेँ नै देखबाक चाही वरन नारीवाद लेल एकटा अलगे मोहाबरा बनेबाक खगता अछि।

से पाठ, डेरीडा कहै छथि, मोटामोटी एकटा राजनैतिक कार्य अछि जे शक्ति-सम्बन्ध बा तकरा लेल होइत वार्ताक रूपमे परिभाषित कएल जा सकैए। मुदा डेरीडापर आरोप अछि जे ओ नारीक अबाजकेँ पुरुष द्वारा अधिगृहीत करबाबय चाहैत छथि, नारीक एतेक यत्नसँ जे बकार फुटल छन्हि, जे ओ अपना लेल बाजि रहल छथि, से अधिकार ओकरासँ छीनऽ चाहैत छथि। डेरीडाकेँ महिलाक दिन-प्रतिदिनक होइत समस्या आ शक्तिहीनतासँ कोनो मतलब नै छन्हि। डेरीडा विखण्डनात्मक पद्धतिकेँ नीक आ धनात्मक रूपमे लइ छथि आ नारीवादकेँ अस्तित्वक तत्त्वमीमांसाक/ तर्कक द्वैधक रूपमे राखैत छथि, जेना पुरुष स्त्री।

डेरीडा पाश्चात्य दर्शनक केन्द्र आधारित संरचनाक मोहकेँ उघार करैत छथि। सुसियोक भाषा विज्ञानसँ प्रेरित संरचनावाद सांस्कृतिक अस्तित्वक वैज्ञानिक विश्लेषणक प्रयास करैत अछि। लेवी स्ट्रॉसक संरचनात्मक मानव विज्ञान सएह लोकगाथा लेल करैत अछि। तहिना साहित्यमे गद्य आ पद्य लेल संरचनात्मक विश्लेषणक प्रयास कएल जाइत रहल अछि। मुदा डेरीडा एकरा उघार करैत छथि, संरचनावाद अपन विश्लेषण लेल एकटा ठोस आधार ताकैत अछि, व्यवस्थाक बाहर एकटा केन्द्र जइसँ ओ एकर वैज्ञानिक विश्लेषण कऽ सकय, मुदा से मात्र दार्शनिकक आभास मात्र अछि। माने कोनो लोकगाथाक कोनो स्थायी बा निर्धारित संरचना केना भऽ सकैए। से लोककथा बा लोक गाथाक संरचनाक अध्ययन करबा लेल अहाँकेँ ओ विचार बा ओ केन्द्र, जकर आधारपर अहाँ एकर विश्लेषण करऽ चाहैत छी, निर्धारित करऽ पड़त। डेरीडा कहै छथि जे कोनो संरचना लेल ओकर संकल्पना-विचार आवश्यक अछि, फेर टुकड़ी-टुकड़ी जोड़ि कऽ अहाँ ओकरा बनायब। मुदा बिनु अन्त सोचने संरचना सम्भवे नै अछि। आ से साहित्यमे सेहो अछि। यावत अहाँ कोनो रचना लेल एकटा स्वयंसिद्ध अर्थ नै ताकि लैत छी ओकर संरचना अहाँ नै ताकि सकै छी, कारण अर्थ माने अन्त ओकर संरचनाकें निर्धारित करैत अछि। से संरचनावादीकेँ अर्थ पहिनहियेसँ पता रहै छै आ तखने ओ ओकर विभिन्न अंग आ तकर आपसी सम्बन्धकेँ विश्लेषित कऽ सकैए। आ यएह विश्लेषणसँ पहिले ज्ञात स्वयंसिद्ध अर्थ अछि डेरीडाक केन्द्र। आ डेरीडा कहै छथि जे यएह निर्धारित करैत अछि जे पाठक संरचना केना बनत, कोन अंगकेँ लेल जायत आ कोन अंगकेँ छोड़ल जायत। से जखन हम साहित्यक संरचनाक विश्लेषण करैत छी तँ ओकर अर्थ आ ओकर प्रभावक गप करैत छी तँ हम ओइ संरचनासँ ओइ तत्त्व सभकेँ चिन्हबाक, फराक करबाक प्रयास करैत छी जे ओइ प्रभाव लेल उत्तरदायी अछि, से ओइ सम्भावित पैटर्नकेँ हम छोड़ि दैत छी जे ओ प्रभाव नै आनत। से ई केन्द्र आरम्भिक स्थल अछि संरचनाकेँ बुझबाक हेतु। मुदा ई विश्लेषणकेँ सीमित सेहो करैत अछि। कारण केन्द्र अपनाकेँ स्थिर रखबाक लेल स्तरीकरणक निर्माण करैत अछि, आ ओकरा पर नियंत्रण करैत अछि। आ ई अर्थक पूर्व ज्ञान पाठकक पूर्व इतिहास आ समकालीन आलोचना सिद्धान्त आ विचारधारापर निर्भर सेहो करैत अछि, ईहो सभ तँ संस्कृतिक अंग अछि तखन केना एकरा सभकेँ संरचनासँ दूर राखल जाइए जे एकरा सभकेँ सीमित करैए मुदा अपने एकरा सभसँ सीमित नै होइए? से अपन विश्लेषणक आधार कोनो स्थायी केन्द्रकेँ बनायब एकटा नुस्खा देब सन अछि आ ई प्रतिक्रियावादी बा यथास्थितिवादी स्थिति अछि। आ ऐ सँ मानक आ गएर-तुलनात्मक स्वतंत्र अर्थ निकालबाक मात्र इच्छा सिद्ध होइए। से ई भ्रम जे हम संरचना ताकि रहल छी भ्रमे अछि, वास्तवमे अहाँ पाठ्य सामग्रीसँ संरचनाक निर्माण कऽ रहल छी।

से डेरीडाक उत्तर संरचनावादमे सेहो केन्द्रक बिना प्रारम्भ नै भऽ सकैत अछि मुदा ओ ऐ सिद्ध नै भेल स्वयंसिद्धक विखण्डनात्मक विश्लेषणक आधारपर ओइ केन्द्रकेँ दोसर केन्द्र द्वारा स्थानापन्न करैत अछि मुदा ई नव केन्द्र सेहो स्थायी नै रहत।

तहिना सुसियो (Saussure) अपन प्रतीक सिद्धान्तमे प्रतीकक विश्लेषण करैत छथि जे कोनो शब्द जेना बिलाड़ि- बिलाड़ि बिलाड़ि अछि कारण ओ किछु आन नै अछि। से शब्द अछि प्रतीक चिन्ह आ जकरा ओ दर्शाबैत अछि से अछि बौस्तु/ प्रतीक। मुदा डेरीडा कहै छथि जे अहू लेल पहिने एकटा संकल्पना आनऽ पड़ैत अछि। आ जँ अहाँ प्रतीक चिन्हकेँ निरपेक्ष बना देब जे ओकर कोनो प्रतीकसँ सम्बन्ध नै छै, जे स्वयंमे एकटा स्वतंत्र संकल्पना अछि आ कोनो प्रतीक/ बौस्तुसँ ओकर कोनो प्रत्यक्ष सम्बन्ध नै छै, मुदा तखन ई संकल्पना सभ प्रतीक चिन्हकेँ पार कऽ जायत आ किछुओ सूचिते नै करत। आ जँ हम प्रतीक आ प्रतीक चिन्हकेँ एक्के मानी तँ प्रतीक चिन्हक जड़ियेपर चोट पहुँचत।

से सुसियोक सिद्धान्त तर्काधारितक विपक्षमे अछि जखन ओ कहैत अछि जे प्रतीक चिन्हमे अहाँ प्रतीकक कोनो लक्षण नै देखू। मुदा जखन ओ कहैत छथि जे प्रतीक चिन्ह प्रतीककेँ लक्षित करबा लेल मात्र प्रयुक्त होइत अछि आ तेँ ओकर अधीन अछि ओ तर्क आधारित सिद्धान्तक पक्षमे बुझाइत छथि। से डेरीडा कहैत छथि जे प्रतीक आ प्रतीक चिन्हक ई स्पष्ट भेद मान्य नै अछि, आ प्रतीककेँ प्रतीक चिन्हक ऊपर देल वरीयता सेहो उनटबाक खगता अछि।

प्रतीक चिन्हमे अर्थ पहिनहियेसँ विद्यमान नै रहै छै। आ पूर्ण अर्थ कोनो एकटा प्रतीक चिन्हमे नै भेटत। से पाठकेँ अहाँकेँ घोर-मट्ठा करऽ पड़त, आ ई अनन्त खोज दिस अहाँकेँ धकेलत। से ई प्रतीक चिन्ह दोसर प्रतीक चिन्हसँ अपन अन्तरक आधारपर प्रतीक निर्धारण करैत अछि, जतेक बेशी अन्तर ततेक लग अहाँ प्रतीकसँ होइ छी। मुदा ई कहियो नै हएत जे अहाँ सभटा अन्तर ताकि सकब। मुदा प्रतीक चिन्हमे बारम्बारता हेबाक चाही, तखनो जखन एक प्रतीक चिन्ह भिन्न प्रतीकक निर्धारण करैत अछि। आ ऐ लेल ओइ प्रतीक चिन्हक लिखित इतिहास जानब आवश्यक। से प्रतीक चिन्ह विभिन्न अर्थ आ कखनो काल उल्टा अर्थ सेहो देत।

डेरीडा लिखै छथि जे प्लेटोसँ सुसियो (Saussure) आ लेवी स्ट्रॉस धरि सभ लिखलाहासँ ऊपर बजलाहाकेँ राखै छथि, कारण लिखब एकटा माध्यम अछि, असल चीज तँ वाणी अछि। सुसियो लिखित रूपमे उच्चारण त्रुटिपर ध्यान दियाबैत छथि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सभ विशेषता जे वाणीमे छै से लेखनमे सेहो छै। आगाँ ओ कहै छथि, प्रतीकक विलुप्ति वाणीमे विचारक प्रत्यक्ष रहबाक भ्रम उत्पन्न करैए। मुदा जँ बाजल वाणीकेँ हम रेकॉर्ड कऽ कय सुनी तँ ओहो लिखल अक्षर सन प्रतीकक शृंखले अछि, जइमे विभिन्न प्रतीककेँ ओकर एक-दोसराक अन्तर सँ चिन्हल जा सकैए। आ लेखन सेहो सामान्य लेखन आ चित्रसँ बुझा कऽ कएल लेखन, ऐ दू तरहेँ भऽ सकैए। 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा' एकर सभक पाछाँ अछि।

पाश्चात्य दर्शनक 'अपन अवस्थितिक तत्त्वमीमांसा'मे जे मुख्य अछि से अछि सद्यः अनुभव- मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे एहेन कोनो अनुभव परा-भाषा स्तरपर नै होइत अछि, कारण ई अनुभव भाषाक माध्यमेसँ चिन्हल जाइत अछि। फेर ई जे दैवीय चेतनासँ हम परम सत्यकेँ बुझैत छी मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे ई मात्र सर्जकक सृजन अछि। फेर ईहो जे कोनो बौस्तुक पाछाँ सत्य नुकायल अछि, मुदा विखण्डनवाद कहैत अछि जे तेहन कोनो स्वतंत्र अस्तित्व नै होइ छै, सभटा निर्माण आ पुनर्निर्माण व्यवस्था द्वारा होइ छै। से सुसियोक स्वतः उपस्थिति किछु नै अछि कारण सभटा व्यवस्थाक अन्तर्गत निर्मित अछि।

डेरीडा कहैत छथि जे तर्क ऐ सभटा दार्शनिक चिन्तनक आधार अछि, से कोनो अन्तिम सत्य आ विश्वात्माक परिकल्पना देल जाइत अछि जे सर्वज्ञानी अछि। मुदा डेरीडा कहै छथि जे ओ सिद्ध नै भेल केन्द्रकेँ कखनो गॉड, कखनो विचार आ कखनो विश्वात्मा कहल गेल आ ओ अपनासँ नीचाँ विभिन्न स्तरक निर्माण केलक। से धर्म गॉडकेँ परम सत्य मानलक आ मनुक्ख आ आन रचनाकेँ ओ अपूर्ण, विरोधी आ ई सभटा केन्द्र बनल जे अपना हिसाबे विचार-व्यवस्था बनेबाक दावा केलक। मुदा एकरा सभकेँ व्यवस्थासँ ऊपर हेबाक चाही। से गॉडक स्वतंत्र रूपसँ धर्मक बाहर उपस्थिति हेबाक चाही। उत्तर संरचनावादी विखण्डनवाद एहेन कोनो परासत्यक उपस्थितिकेँ आभासी मानैत अछि उत्तर संरचनावादी भाषाक सिद्धांतक परिणाम मानैत अछि। से ऐ प्रतीक चिन्ह सभक आपसी खेलमे किछु अर्थ कोनो विचारधाराक हस्तक्षेपसँ उच्च स्थान प्राप्त करैत अछि आ ओकर दोसर अर्थ तकर पाछाँ जेबा लेल धकेल देल जाइत अछि। स्वतंत्रता, गणतंत्र, न्याय आदि सन विचारधारा हमरा सभक जिनगीक भाग छी मुदा लागैए जे ओइ सभसँ हमरा सभक जिनगीक बहुत रास अर्थ निकलल मुदा अन्वेषणक उपरान्त ओ सभ दोसर विचारसँ बहार भेल बुझायत। कोनो संकल्पना एहेन नै अछि जइमे दोसर विचारक अवशेष नै भेटय।

देखी गुलोक पाठ केना शुरू होइत अछि, ई शुरू होइत अछि तिला सकरांति सँ, आङन नीपि रहल अछि गुलोक छोटकी बेटी रिनियां। गुलो उपन्यासक आरम्भ रिनियाँ सँ किए भेल, गुलोक बेटासँ किए नै भेल। कारण जुलिया क्रिस्टोवाक अनुसारे बेटा अपनाकेँ मायसँ दूर करैत अछि, मुदा बेटीमे ओ लय, ओ गुण रहिते छै से ओ दूर होइतो मायसँ, संस्कृतिसँ लग रहैत अछि। कोनो आन प्रकारसँ ऐ उपन्यासक एतेक नीक आरम्भ नै भऽ सकैत छल। गीत गाबि रहल अछि रिनियाँ, फेर पानिक फाहा जकाँ ओस, पछिया हवा आ मायक चिन्तित हएब। "गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।"

बादोमे बेटी आ बेटामे अन्तर छैहे- छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।

आ फेर अबैए जुलिया क्रिस्टोवाक पुरुख, ओकर ऐंठी।"ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले।"

की ई हेंठी अहाँ लुटियन्स जोनमे नै देखै छिऐ, सगरे ई हेंठी भेटत। मानव समाजमे, खास कऽ पुरुख पात्रमे।

अपन कथा-कवितापर अपने समीक्षा कऽ आत्ममुग्धताक ई स्थिति समीक्षाक दुर्बलतासँ आयल अछि। ऐ एकमात्र आ पहिल शब्दसँ हमरा वितृष्णा अछि आ तकर निदान हम मैथिलीकेँ देल स्लो-पोइजनिंगक विरुद्ध “विदेह” ई-पत्रिकाक मैथिली साहित्य आन्दोलनमे देखैत छी। बच्चा आ महिलाक संग जाहि तरहेँ गैर मैथिल ब्राह्मण-कर्ण कायस्थ पाठक आ लेखक जुटलाह से अद्भुत छल। हमर ऐ गपपर देल जोरकेँ किछु गोटे (मैथिली) साहित्यकेँ खण्डित करबाक प्रयास कहताह मुदा हमर प्राथमिकता मैथिली अछि, मैथिली साहित्य आन्दोलन अछि, ई भाषा जे मरि जायत तखन ओकर ड्राइंग रूममे बैसल दुर्घर्ष सम्पादक-कवि-कथाकार-मिथिला राज्य आन्दोलकर्ता आ समालोचकक की हेतन्हि। सुभाषचन्द्र यादवजीक कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ ऐ रूपमे हमरा आर आकर्षित करैत अछि। आ एतऽ ईहो सन्दर्भमे सम्मिलित अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजीक फिक्शन कथाक पुनः पाठ आ भाषाक पुनः पाठ लऽ लगातार आबि रहल अछि। आ ई घटना मैथिलीकेँ सबल करत से आशा अछि।

आब आउ सुभाष चन्द्र यादवक सभटा मूल रचनाक बेरा-बेरी पाठ करी..... घरदेखिया

घरदेखियामे ३५ टा लघुकथा अछि। ऐमे दसम नम्बरपर’ काठक बनल लोक’ अछि जे नौमा-दसमाक बिहार विद्यालय परीक्षा समितिक पाठ्यक्रममे गल्प गुच्छ कथा संग्रहमे छल आ तेँ ई कथा सभसँ बेशी लोकप्रिय रहल अछि, सभसँ बेशी लोक एकरा पढ़ने छथि,’ घरदेखिया’ कथासँ सेहो बेशी।

प्रकाशकीय मदनेश्वर मिश्र, अध्यक्ष मैथिली अकादमीक अछि। ओ लिखै छथि जे ओ जाहि वर्गक लोकक सुख-दुख, आशा-आकांक्षा, उदासीनता, आक्रोश एवं सामाजिक, आर्थिक पृष्ठभूमिक चित्रण कयलनि अछि से एखन तक उपेक्षिते जेकाँ छल आ ईहो जे हिनक कथा बहुत मार्मिक, शैली सहज एवं स्पष्ट तथा भाषा सरल तथा सभक हेतु बोधगम्य रहैत अछि।

१

अभाव (१९७१)

लेखकक रचना लिखबाक, कविताकेँ कएक तरहसँ लिखबाक प्रयास। सुभाष चन्द्र यादव ओना तँ कविता नै लिखै छथि मुदा सन् १९७१ मे लिखल प्रस्तुत कथामे छोट-छोट तीनटा कविता लिखि गेल छथि जे साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त मूल आ अनूदित कविता संग्रहक कविता सभसँ कोनो तरहेँ न्यून नै अछि:-

पहिल कविता

हमर बाँहि आ पीठपर

लगाओल गेल बिल्ला

बिजली जकाँ छिटक’ लागल छल।

आ हम कँपैत रहलहुँ

आ वचावक दिशामे

एहि कोनसँ ओहि कोन धरि

भगैत रहलहुँ

जाहि कोठलीमे गेलहुँ

ओकर देबाल धधक’ लागल छलैक

कोठलीसँ निकलिते

मौसम बदलि गेलैक

आ हम मरुभूमिसँ नदी आ

पहाड़क अन्तहीन दूरी

नपैत रहलहुँ

दोसर कविता

शब्द संग नहि देलक कहियो

इच्छित सन्दर्भसँ अलग

बनैत अर्थक दुर्गम पहाड़

असफल रहलहुँ हम

कतहु पहुँचबामे

एक टा यातनामय संसारमे

जीबनक आरम्भ

तेसर कविता

हमर पहुँच ओत’ अछि

जाहि मोड़परसँ

शब्दक अर्थ

परिवर्तित आकारमे आब’ लगैत छैक

मुदा कविता ऐसँ आगाँ नै बढ़लैक।.. तखन ओ सोचने रहय जे काव्य-रचनाक लेल तीव्र दुःखात्मक आवेग आवश्यक छैक। व्यंग्यात्मक कविता लिखबाक प्रयास केलक मुदा सतही आक्रोश मात्र लिखयलैक।

आइ-काल्हिक कथित व्यंग्यकारपर सेहो ई लागू होइत अछि।

२

असंगति (१९७८)

कुकी आवाज देलकैक... ओकरा हाथमे तराउपरी दूटा कप राखल रहैक।

’ आर यू गोइंग टू दैट साइड?’

नवीनकेँ तामस उठलैक- कहलैक’ नो’, मुदा ओकरा मोनमे होइत रहलैक जे कुकी ओकर बगय देखि के कप लऽ जा कऽ राखय लेल कहय चाहै छल।

३

आँचर (१९६९)

आइ फेर नै उबेर भेलैक- डबल सतरिया। आसिन मास जँ बहय इसान, घर-घर कानय गाय-किसान। ओकर साँय सेहो कहै छै- बाजत ने भुकत आ बैसल-बैसल टुकटुक तकैत रहत। सभ ओकर सुखल आँचरकेँ लक्ष्य करै छै। ने धीया ने पूता, की करतैक। रौद कड़गर भऽ गेल छलैक। ओकरा बुझयलैक जेना तुलसी .. फेर पानि ढारऽ पड़तैक।

४

उत्तर मेघ (१९७२)

५ गोटे मौजी, शीबू, कामू, देबू आ विजेन्द्र। एकरे सभक संगे कथा आगाँ बढ़ैत अछि।

तीन टा मौगी, तीनू मुसहरनी, ओइमेसँ एकटा बुढ़िया। रुसिनिहारि बुढ़ियाक बेटी। बहुत रास नोछारक चेन्ह चेहरापर। आङीक अभाव आ ध्यान नै देलाक कारण दुनू स्तन झूलि रहल छलैक, शीबू, कामू आ विजेन्द्र ओइ दिस तकैत छल। घरक झगड़ा, पति सेहो रहै जकरा दिस बुढिया संकेत करै छै।

पाँचू आगाँ मेला दिस बढ़ि गेल।

फेर आगू एकटा बूढ़ लोक भेटलै, .. एकटा मास्टरनीक जासूसी कऽ घुरल छल।

आगाँ एकटा करिक्की अधवयसू मौगी।.. मौगी छप्पावला पियरका साड़ी आ लाल ब्लाउज पहिरने छलि।.. एकटा पुरुष संगे एकटा कोठलीमे चल गेलैक।

ट्रेनसँ एकटा परिवार उतरलैक, तीन-चारिटा एकतुरिया छौँड़ी सभ.. एक्कोटा नीक नै छैक!- कामू कहलकैक।

अहाँक आस-पास की सभ भऽ रहल अछि के की रोजगार कऽ रहल अछि, बेशी लोककेँ ई नै बूझल रहै छै।

५

एक टा दुःखान्त कथा (१९७७)

सुगियाक पति अनतऽ गेल रहै, ओ दिअर संगे सम्बन्ध बनबैए, ग्लानि होइ छै। किछु दिनक बाद फेरसँ सभ किछु शुरू भऽ गेल। पाप आकि कोनो पाप नै, दुविधा।

६

एकटा प्रयोग ओहिना (१९७०)

ओ दू घण्टासँ होटलमे बैसल कोनो निर्णय लेबासँ असमर्थ दू बेर चाह पीबि चुकल अछि। शिक्षा, राजनीति, कृषि, बेकारी आ बहुत रास सामयिक प्रसंगक चर्चाक स्वर कानसँ निरन्तर टकराइत छै.. जेबीमे बीसटा पाइ होयब.. मित्र आठ आना देने रहैक। सासुर जायत आ पाइ माङत.. जाड़ मास छोड़ि कोनो मौसममे ओ दिनमे सासुर नै जाइत छल। ओकर सासुर पूरा एक्के कोठलीमे रहैत छैक। से जाड़मे दिनोमे छतपर बैसल रहि सकैत अछि। सासु हितोपदेशक मोटरी लऽ कऽ बैसि गेलैक।

७

एक टा सम्बन्धक अन्त (१९७६)

खेल शुरू.. प्रदीप, रागिनी दत्ता आ विपुल- जे हारतै से कबाब खुएतै, कबाबमे आठ टाका.. से' हम' चुप्पे रहलथि, पाइ नै छलन्हि। प्रदीप आ' हम' एक दिस विपुल आ दत्ता दोसर दिस। विपुल दत्ताक ब्वाय-फ्रेण्ड छल, ओकर व्यवहार मुदा ब्वाय-फ्रेण्डक हिसाबे' हम' केँ विचित्र आ अनभोआर लगलन्हि।

८

एक दीनक घर (१९७३)

ट्रेनक आस, ट्रेन कखन खुजतै, आ जखन खुजलै तँ आउटर सिग्नलपर रुकि गेलै।

छोटी लाइन आ कखनो काल बड़ी लाइनक ट्रेन-गाड़ीमे ऐ तरहक घटना होइत रहैत छलै/अछि। बसमे तँ कमसँ कम पता चलैत रहैत छै जे कोन कारणसँ ओ ठाढ़ अछि, मुदा ट्रेनमे नै। तकरे मनोविश्लेषण कएल गेल अछि।

९

कल्पित मृत्यु (१९७०)

पति-पत्नी सम्वाद, ससुरक हाकपर पत्नीक जायब। ससुर द्वारा टाका दऽ तँ देब मुदा घुरेबाक अवधि निर्धारित केलापर पतिक खिन्न हएब। आ पत्नीक कहब जे जँए ओ तँए सम्बन्ध आ जऽ पत्नी मरि जाथि तँ फेर ससुरक संग पतिक कोन सम्बन्ध बाँचत।... की अहाँ हमर बहीनसँ कऽ लेबै बियाह?

१०

काठक बनल लोक (१९७६)

ऐ कथा संग्रहक सर्वश्रेष्ठ कथा। रामीक ब्लॉक जायब, घरखस्सीक पचास टाका लेल। ओकर बेटा बदरिया छै काठक बनल, मारि खेलोपर एको ठोप नोर नै खसै छै, आँखि धसल, छातीक सभटा हाड़ जागल, कम्मे बाजै, खेलेबो नै करै, तेना भऽ कऽ ताकै जेना किछु मोन पाड़ैत हो। मुदा जखन रामी रातिकऽ एलै तँ ओ काठक बनल बदरिया पू छै छै-' अँय हौ बाबू, कखन एलहक?"

- बाउ हौ, ऊठि गेलहक। आबऽ आबऽ आगि लग आबह। हम तँ अखनियैं एलियै बेटा।

-साँझे किएक नै एलहक?

ओकर ऐ प्रश्नपर बेलोबाली आ रामीकेँ लगलैक जेना सभटा दुख-संताप मेटा गेल हो। ओ दुनू दिन भरिमे पहिल बेर मुक्त भऽ कऽ हँसलैक।

११

कोनो पतापर (१९७४)

परदेशीकेँ चारिटा बच्चाक मायक आ ओकर पत्नीक सन्देश आ उलहनक चिट्ठी।

१२

गजखोर आ मजमुङर (१९६८)

बेचनीक सासुरमे सभ ओकर दुल्हाकेँ अबारा कहै छै आ ओकरो सभ ओल सन बोल सुनबैत छै, बेचनीकेँ कहै छै गजखोर आ ओकर साँयकेँ मजमुङर।

१३

घरदेखिया (१९७४)

टाइटल कथा। जगदीश प्रसाद मण्डल सेहो घरदेखिया लिखलन्हि विदेहमे ई-प्रकाशित भेल आ गामक जिनगी (२००९) कथा संग्रहमे संकलित भेल।

बिमला, सतरहम साल लगलै, देखलासँ मुदा नै लागै छै, मुँह-कान सुखायल छै। ओकरे देखैले लड़िकाबला सभ आयल छै, कम खर्चामे सभ काज होइ छै। लड़की पसिन्न पड़लै। लड़का डरेबर नै टरकपर खलासी छै। लड़की पसिन्न पड़ै गेलै। लड़का हालेमे कलकत्तासँ गाम आयल छलै एखन तुरते समाद पठाकऽ मङौनाइ खर्चाक घर भऽ जेतै। लगनसँ दस दिन पहिने आबि जेतै, जिनका देखऽ के हेतै, देखि लेतै।

१४

चेहरापर जमैत कुहेस (१९७२)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) आ ओ बालिका।'..राति केबाड़ खुलले राखब।' सूत्रधार कहै छथि, मुदा कहि कऽ बिसरि जाइ छथि।

’ केबाड़ खुलल छलैक, कुकूर ढुकि जइतैक तखन?’

’ खुलले छलैक!’ प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ जेना विश्वासे नै भऽ रहल छलन्हि।

१५

चौबटिया (१९६९)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) होटलमे बैसल, भूखसँ माथ धऽ लेने छन्हि। गाम जाइ छथि, काकाक अलग खिस्सा- तीन माससँ खाली रोटिये खाइत अछि। भातक आँखि नै देखलक अछि। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ तामस उठै छन्हि- एतेक जनमाकऽ ढेरी कऽ देने छथि आ आबो संयम नै करऽ अबैत छनि। काकाकैँ होइ छन्हि जे प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कैँ खूब रुपैय्या छन्हि, ओ पाइ मंगै छथिन्ह आ पुरनका पाइ मादे कहै छथिन्ह जे पटुआ बटाइ कयने छथि, बेचिकऽ हुनके दऽ देथिन्ह ता दस टाका मांगै छथिन्ह। मुदा प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) तँ पाइक अभावमे दू-दू साँझ भूखल रहि जाइत छथि। बिनु खयने बिदा भऽ जाइत छथि, कोनो संगी सँ पाइ मंगैत छथि, पहिने ओ देनहियो छन्हि, चरियो आना देबा लेल कहैत छथि मुदा ओ एक्को पाइ नै दैत छन्हि। दोसर संगी यदुनन्दन, एक टाका दू बर्ख धरि नै दऽ सकल छलथिन्ह, ओ काते दऽ चलि गेलन्हि। तेसर कालीचरण मुदा ओहो नै कहै छन्हि, फेर होटल, बहुत पहिलुका पाइ बिसरि गेल हेतन्हि, मुदा ओत्तऽ दोसर छौड़ा बैसल अछि।.. कतेक आरामदेह चौबटिया अछि!

१६

जासूस कुकूर आ चोर (१९७३)

चोरी, थानाकैँ खबरि आ भ्रष्टाचार, जासूसी कुकुरक नामपर दरोगा पाइ मंगै छै, .. कुकुर चोरकैँ धऽ लेतै। सिपाही ५ सय मंगलकै आ तीन सयपर तय तफसिला भेलै। मुदा कुकुर?

१७

झालि (१९७३)

धनकटनी, आइ नहायल नै भेलै रामाकैँ तँय जरौन लागय लगलैक। गाजा.. दुसधटोलीमे लरमाहा.. चारिये चिलममे लऽ कऽ उड़ि गेलै।– बिन्दुआ कहै छै। दुसधटोलीक बिजनेस, मौगी-छौड़ीसभ दिन आ भिनसुरको कऽ कोइला बिछैत छै। मरदसभ दिनमे गाजा बेचैमे रहतऽ आ छौड़ी सभ रातिकऽ। छिनरो भाय दरोगा पहुँचि गेलै, ... पचास टाका चट सिन लऽ लेलकै।.. जट्टा बाला गाजामे निसाँ बड़ जल्दी चढ़ैत छैक।

अमेरिकोमे अफ्रीकन-अमेरिकनमे ड्रगक ब्योपार होइ छै, की किछु समानता देखा पड़ल?

१८

टिप (१९७४)

होटलमे टिप देलापर मोजर आ नै देलापर?

१९

डर (१९६९)

डरक मनोविज्ञानक विश्लेषण।

२०

तीर्थ (१९६९)

बलबाबालीक अंगनाक खिस्सा। कोनो डाक्टर ओकरा बताहि नै कहतैक... मुदा ओ बताहि अछि। जहिये ओकर दुरागमन भेलैक तहियेसँ भूत लागऽ लगलैक।’ देखैत छिही कुसुमाकैँ। ओकर परतर कहियो हेबही तोरासभ?’ से कुसुमा बलबाबाली भऽ गेलि। चारिटा बच्चा, मुदा सोइरी-घरमे सभ बेर मडुआक रोटी आ साग भेटैत रहलैक। दिअर पाइ नै दएलकै तैयो सासुकैँ तीर्थ करेतै, ओकरा देखा देतै। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) सँ किछु टाका मांगै छन्हि, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) क हाथ छूछ छन्हि, पाइ नै भेटै छै। मुदा ओ बैजनाथजी

जेबे टा करतैक। एक-दू सेर चूड़ाक दामे की होयतैक, नेङरा दिअरकेँ देखा देतै। .. मुदा हरहर-खटखट कऽ कय जेनाइ ठीक नै होइतै तेँ ओ नै गेलि।

२१

धुंधमे घटना (१९७०)

कथाक पहिल दोसर तेसर स्थिति, फेर कथा संयोजकक दूटा समाद। आ कथाक अन्तिम स्थिति।

पहिल स्थितिमे भावकेँ छुबैत बा नै छुबैत पुरबा-पछबा, वातवरण टिनहा मकान, गुलमोहरक गाछ, घास, दूभि।

दोसर स्थितिमे साँझ, बगड़ाक खोंता आ मकड़ाक जाल। पुरान बिन मतलबक कागच। भरि दिन फाइल उघलाक बाद कोठलीसँ एक आदमी बजार गेल छथि।

तेसर स्थितिमे एकटा महिला जे कथा शुरू होइसँ पहिने कोठली छोड़ि देने छथि, ओ जँ आबि जेतीह तँ की-की हएत से सभ।

अन्तिम स्थितिक पहिने दूटा समाद- पहिल फाइलेरिया ग्रस्त प्रकाश- माने पिरौंछ आ दोसर गर्भसँ बहार होइत मृत बच्चा।

आ कथाक अन्तिम स्थितिमे सड़कक लेल' वेश्या सड़क' कहल गेल छै, एकर लतमर्दन होइ छै तेँ शाइत। पएर सुन्न आ भारी मुदा सांत्वना लेल वाक्य सभक टुकड़ी बनि-बनि आयब। मुदा प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ चाहियन्हि भीड़, इजोत। मुदा अदहा रस्ता आबि भागब बेकार।

फेर सुखायल धारक बिम्ब, तकर भित्तापर ठाढ़। चारू दिस कुहेस, ने गाम, ने लोक, ने प्रकाश, ई सभ सभ दिशामे थोड़े-थोड़े दूरपर छै, मुदा एखन से सभ व्यर्थ, अखन धुन्ध आ शून्य मृत्यु सन।

की अहाँकेँ' वेटिङ फॉर गोडो'(सेम्युल बेकेट) मोन नै पड़ैए?

२२

धुक्कड़ (१९७०)

बस खुजबाक समय नै बुझल अछि। बस आइ भरि दिन एही ठाम रहतैक? कंडक्टरकेँ सभ ठकि लै छै, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) सेहो। बड्ड कम टिकट बुक होइ छै।

मुदा फेर ओ कंडक्टर प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ नै भेटै छन्हि, कि पता नोकरी छोड़ि देने होइ।

२३

परिचय (१९७१)

नेताजी अपन घर चलबाक आग्रह केलखिन्ह, प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ बुझेलन्हि जे ओ हुनका मोजर देलखिन्ह मुदा संगी संगे जखन ओ हारि थाकि बिदा भेला तँ संगी नाटक कम्पनीक साँझ बला शो देखबाक जिद्द कयलन्हि आ ओतऽ नेताजी...

२४

पेट (१९७१)

कलीऽऽम!, ओ भीड़मे हेरा जाइत अछि। तीन घण्टा पहिने विनयकेँ हाक, मुदा ओ ध्यान नै देने छल। भूख .. होटलमे ऑर्डर दऽ दिऐ, मुदा पानि मात्र बाजि पाबै छी। दिनक अपेक्षा मोहल्ला शान्त छै। देबालसँ सटल नल कियो खुजले छोड़ि देने छै, हल्ला सहल नै होइत अछि, मुदा ईहो बुझल अछि जे भोरमे बेसी हल्ला हेतै।

२५

फँसरी (१९६९)

भेलबाबाली काकी, सय बर्खसँ बेसी उमेर, आँखि कमजोर (प्रायः मोतियाबिन्द), खाली छाहे टा देखैत छलीह। कातिक मासक बिम्ब अहू कथामे अछि। अगहनमे धनकटनी होइ छै, ओइसँ एक मास पूर्व माने अगहनक बादक ११म मास, बड्ड कठिन, पैसाक टाँट।

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) लग जाइ छथि, तमाकुल लेल चूना लेल काकी सोर कऽ रहल छथि, भोरेसँ किलोल कऽ रहल छथि। दू-तीन दिनसँ खाली चूने-चून भुकै छथि, चून रहतैक तखन ने कियो देतैक। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कनेक चून आनि देलखिन्ह, खैनी चुनाइयो देलखिन्ह। मालिक (बेटा) क खोज करैत छथि, सुपौल जाइबला रहै, मुदा एत्तै छै, माथ फुटैत रहैत छन्हि। पुतोहुकेँ होइ छन्हि जे शिकाइत कऽ रहल अछि, सहन नै कऽ सकलि। मुदा बुढियाक कान सेहो कमजोर छै, सुनि नै सकलि। अखन मरि जेतै तँ भोजो-भात कोना हेतै, बाइस टा झंझटि छै- प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) कहै छथिन्ह। काकी तीन-चारि दिन गरदनिमे फसरी लगौने रहलथि, माहुर सेहो एक दिन खेलथि तइयो नै मुइलथि, फसरी कसले नै गेलैक तँ केना मरितथि।

२६

फुकना (१९७०)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) मामागाममे छथि, मुदा हुनका ओतऽ दू रङक व्यवहार बुझना जाइ छन्हि। स्कूलसँ आबि बेरहट करबाक बदला दोआरि खरड़ैत रहलाह। भौजीकेँ गारि पढ़लन्हि तँ ओ हिनका बुझेलखिन्ह जे ओ छोटकी भौजी नै छथि एक्के चाटमे मुँह लाल कऽ देथिन्ह। नानी बचबिथिन्ह मुदा हुनकर कान-आँखि दुनू खराप छलन्हि। साइकिलक मिस्त्रियाइ शुरू केलन्हि आ बॉलपिन उड़ि गेलै। बॉलपिन भेटलन्हि तकर बदलामे तीन दर्जन फुकना किनलन्हि। रविन्दरकेँ किछु फुकना भेटलै, जेबीमे भूर छलन्हि, ओ नै गछलकन्हि तँ ओकरा पिटलन्हि। बाबू मोन पड़लन्हि। नानीकेँ पुछलखिन्ह- बाबू कहिया औथिन?

२७

बाँझ (१९६८)

साओन मास, थाल कीच, दुआरि अङ्ना सगरो, चाली सोहरैत। दुखनीक पहिल साओन आ तखनो ओकरा सासुरेमे छोड़ि देलिऐ? – दुखनी मायकेँ रामपुरवाली पुछलकै। डेढ़ बीघा जमीन बाँचल छै, सेहो दर-दियाद हड़पऽ चाहै छै। पतिक अवसान, दुखनीक बियाहक झंझटि- अरर मरर के झोपड़ी, सीता माइक खोपड़ी राखि लैह- राखि लैह। चार हटाओल गेल, दुखनी माय मुइल पड़ल। संयोगसँ दुखनी पड़ाकऽ आयलि, ओही दिन साँझमे। रामपुरबाली आन माउग लग तकर प्रचार केलनि- आन आने होइ छै- कहलकै- चास दी बास नै दी। दुखनी बिदा भऽ गेलि। मौसी ओहिठाम दुखनीक बड्ड आदर भाव होइ छलै, मौसा-मौसीक स्वार्थ भावकेँ ओ नै बूझि सकल। मुदा उड़न्ती उड़ऽ लगलै तँ मौसी पुछलकै जे सासुरसँ कियो किए नै अबै छै।

-ओ सभ हमरा बाँझ बुझै छथि।

मौसा-मौसी ओकर जमीन लिखबा लेलकै, लोक पुछतै तँ कहि देतै जे बियाहमे खर्च भऽ गेलै, बियाहक खर्च तँ बुढ़बे वरकेँ लगतै ऊपरसँ पाँचसय रुपैय्यो देतै।

२८

बेर-बेर (१९७९)

हरिवंश आ रघुवंश फस्ट क्लासमे आधा दूरीसँ बेशीक टिकट कटा लेने रहय। आब दस टा टीशन आर पार करबाक छलै। मुदा हरिवंशकेँ टी. टी. पकड़ि लेलकै। ओकरा जहल भऽ गेलै, मुदा एक दिन रघुवंश आबि कऽ ओकर जुर्माना भरि देलकै।

२९

महिमा (१९७५)

मीटिंग करै काल पुलिस पकड़ि कऽ सुखदेवकेँ लऽ गेलै जेल। एक मासमे छुटलै, मीसामे पकड़ायल रहै।

ओ थोड़े दिन नक्सली रहै आ सरकारी बान्ह काटबाक कारणसँ पहिनहियो आठ दिन जेलमे छलै।

भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै।

लड़ाइ-झगड़ा खूब होइ, नै ककरो तँ नरकटियेबालीकेँ धुमधुमा दै। जेलसँ नै किछु तँ चारि सय केर कपड़ा लऽ कऽ घुरल हेतै।

३०

रामनिहोर (१९७५)

मेसक हेल्पर रामनिहोर फैजाबाद जिलामे कोनो स्त्रीकेँ प्रतिमास दू सय टाका पठबैत छल। प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) सँ होल्डाल मांगि दस दिनक छुट्टीपर गाम गेल, दस दिन भऽ गेलै, साँझ धरि ओ आबि सकैए, होल्डाल ले एतेक चिन्तित नै हेबाक चाही।

३१

लिफ्ट (१९८०)

मिसेज कपूरसँ लिफ्ट लेब मनोजकेँ भारी पड़ि गेलै, कारण दिवाकरकेँ ओ जनै छली, ओकरा संगे मनोज किए गाड़ीमे चढ़ि गेल।

३२

संकेत (१९७४)

रूम नम्बर नाइनमे छह टा सीट छै।– ओकरा उठऽ दहिक तँ बेड बिछा लिहैं। ओना क्यो सूति रहतौक।

३३

सहरसा दुपहर राति (१९७२)

सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्त। सुकान्त भीड़सँ भागय चाहैत अछि, सुभाष निर्णयहीन अछि। महाप्रकाशकेँ ओतेक सोचय नै पड़ैत छैक। सुभाष कोनो छौड़ीक पीठपर जड़ैत सिगरेटक टुकड़ी फेकय चाहैत अछि। तीनूकेँ रातिमे घुमबाक लेल पुलिस पकड़ि लैत अछि।

३४

सिकरेट (१९६९)

सिकरेटक तलब, नोकरसँ मंगैत अछि मुदा ओ तँ मालिकक अधकट्टी निकालि कऽ पिबैत अछि। आ एकटा परिचित, किछु चतुरताइ आ विल्स फिल्टर भेटि गेलै।

३५

सुरंग (१९७२)

प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) आ किशोरी भाय पहुँचला शीला आ ओकर इंजीनियर पति लग। की इंजीनियर शंकालु भेल शीला आ किशोरी भायक प्रति? शीला किए नैहरमे रहय लगली। बेनी डेढ़ बरखक, एकटा अबोध बच्चाक दूध आ बिस्कुट छीनिकेँ ओ कोन प्रतिशोध लेबऽ चाहैत अछि, से चिट्ठीमे प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) पढ़ने रहथि। मुदा ओतऽ इंजीनियर बेबी संगे खेला रहल अछि।

इंजीनियर लैम्प वर्क्समे काज करैत अछि। किशोरी भाय सिक्सटी वॉटक बल्ब प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ पकड़बैत बिदा होइ छथि मुदा आगाँ गेलापर प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ पता चलैत छन्हि जे ओ फ्यूज छै, से प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ ओकरा बदलि अनबा ले कहै छथिन्ह।

घरदेखियाक कथा सभक थीम देखू, बदरियाक रेखा चित्र देखू (काठक बनल, मारि खेलोपर एको ठोप नोर नै खसै छै, आँखि धसल, छातीक सभटा हाड़ जागल, कम्मे बाजै, खेलेबो नै करै, तेना भऽ कऽ ताकै जेना किछु मोन पाड़ैत हो।), विवाहेत्तर सम्बन्धक कथा, प्रोटैगोनिस्टक गरीबी, खेखनियाँ। कएक टा कथा मे सुभाष अबै छथि आ एकटा कथामे सुभाष, महाप्रकाश आ सुकान्त तीनू [सहरसा दुपहर राति (१९७२)] ।

नित नवल राजकमल (राजकमल मोनोग्राफ)

[राजकमल चौधरी मोनोग्राफ (जनवरी १९९७ मे साहित्य अकादेमी द्वारा रिजेक्ट, रचना पत्रिकामे दिसम्बर २००५- मार्च २००६ अंकमे आ २०२२ मे "नित नवल राजकमल" नामसँ प्रकाशित)]

राजकमल जी (विनिबंध) क प्रकरण कान मे पडल तँ छल, से कतोक वर्ख भऽ गेलै आब। मुदा से एहन कुरूप छैक से अहींक समादमे स्पष्ट भेलय। तें एकर धन्यवाद अहीं केँ दैत छी गजेन्द्र जी। ओना वास्तविकता तँ ई जे सम्पूर्ण पढबासँ पहिने मोन’ विरक्त’ भऽ गेल | नै पढ़ि भेल आगाँ! नीक केलौहैं नेट पर दऽ कऽ। समकालीन आ आगत पीढ़ी सेहो बुझओ ई कारी-कथा! हमरा सन लोकक विडम्बना

देखू जे पूरा प्रकरण अपन अनुज-मित्र-अग्रज सँ जुडल अछि। से एहन ऐतिहासिक दुर्घटना भऽ गेल अछि! उत्तरदायी व्यक्तिगत हम कतहु सँ नै। मुदा साहित्यिक पीढ़ीक नैतिकता सँ "अपराध बोध" सहबा लेल अभिशप्त छी। उपाय?- सस्नेह, गंगेश गुंजन ११ सितम्बर २०१२ (विदेह ११७)

राजकमल मोनोग्राफ साहित्य अकादेमीक मैथिली विभाग द्वारा मोहन भारद्वाजक किरदानी आ राजमोहन झा केर सहयोगसँ अस्वीकृत भेल छल सन् जनवरी १९९७ ई मे आ तइ कृत्य लेल राजमोहन झाकेँ साहित्य अकादेमी द्वारा १९९६ ई. क मैथिलीक मूल पुरस्कारसँ पुरस्कृत कएल गेल सन् १९९७ मे। संगहि ओही कृत्यक सम्पादन लेल मोहन भारद्वाज साहित्य अकादेमीक मैथिली परामर्शदातृ समितिक सदस्य बनाओल गेले छलाह।

नित नवल राजकमल (राजकमलक जीवन) समर्पित अछि- धर्मप्राण संतोष कुमार कुन्दन सुव्रता गिरिवर कृष्ण राधे राधे।

नित नवल राजकमल - दन्तकथाक नायक

राजकमल चौधरी (मणीन्द्र नारायण चौधरी प्रसिद्ध फूल बाबू) १९२९-१९६७, महिषी, सहरसा। रचना- आदि कथा, आन्दोलन, पाथर फूल (उपन्यास), स्वरगंधा (कविता संग्रह), ललका पाग (कथा संग्रह), कथा पराग (कथा संग्रह सम्पादन) ।

भूकम्प, बंगाली संन्यासिन आ रासलीलाक चित्र राजकमलक आत्मवक्तव्यपर आधारित अछि। १९३४क भूकम्पक स्मृति, धरती कड़कड़ायल आ हुनकर माय बाबू अपन जानक चिन्तामे लागि गेला हिनका छोड़ि देलखिन्ह।

फेर ओइ भूकम्पक थोड़बे दिन बाद आयलि एकटा बंगाली संन्यासिन, कोनो तीर्थमे हुनकर माँ सँ ओइ संन्यासिनक भेँट छलनि। हुनका ओ अपना संगे चलै ले कहलखिन्ह आ ओहो जाय चाहैत छला।

एकटा रासलीलाक चित्र देखलन्हि कृष्ण आ कएकटा गोपी।

राजकमल ऐ सभ गपकेँ हवा देलन्हि। सभ अपन व्यक्तित्व लेल/ विचारधारा लेल कोनो बहन्ना तकैत अछि। राजकमल ई मार्केटिंग स्ट्राटेजी सेहो छल।

नित नवल राजकमल - जीवन

कोनो खास नै, वएह पहिल पत्नीमे बच्चा नै, से दोसर विवाह (रामपुर हवेली राजकमलक माय) मायक मृत्यु आ पिताक दोसर फेर तेसर बियाह हिनकर उमेरक युवतीसँ। राजकमल अपन पिता मधुसूदन चौधरीकेँ लाल कक्का कहै छला। तेसर विवाहक एकटा पुत्री मदालसा जीवित रहलखिन्ह, हुनकासँ राजकमलकेँ स्नेह छलन्हि। पिता आज्ञा, उपदेश आ मारिपीटक माध्यमसँ ब्राह्मण संस्कारमे दीक्षित केलखिन्ह। राजकमल केँ मैट्रिक पास करबासँ पूर्वे गीता आ दुर्गासप्तशतीक सभटा श्लोक कंठस्थ भऽ गेलन्हि। पिताक ट्रांसफरक संग एत्तऽ सँ ओत्तऽ घुमैत रहलथि, नवादासँ पटना एला बी. एन. कॉलेजमे नामांकन, पिता ४४२ टा निषेध मंत्र देलखिन्ह जे की-की नै करिहऽ।

प्रेम सम्बन्ध- पहिल प्रेम सम्बन्ध पटनामे शोभना झा संगे। एक बेर आइ. कॉममे फेल, फेर बी. कॉममे एक बेर फेल। १९५१ मे चानपुरा (दरभंगा) क शशिकान्ता सँ विवाह। बी. कॉम केर बाद पढ़ाइ समाप्त।

विवाहक बाद किछु दिन पटनामे कोनो अखबारमे प्रूफरीडर, फेर सचिवालयमे लोअर डिवीजन क्लार्क। दरभंगा, पटना, दिल्ली, मसूरी, फेर कलकत्ता। ओतहियेसँ मसूरीक सावित्री शर्मासँ पत्राचार, १९५६मे हुनका संग विवाह, फेर संतोष नामक स्त्री (प्रायः सावित्रीक भतीजी) सँ प्रेम, गर्भावस्थामे सावित्रीकेँ छोड़ि ३ जुलाइ १९५७केँ मसूरीसँ पलायन। फेर पटना, दरभंगा आ नवादा तीन- चारि मास धरि आ तखन कलकत्ता, हिन्दी लेखक छेदीलाल गुप्तक नामे यात्रीक चिट्ठी लऽ कऽ। बाबू साहेब चौधरीक मिथिला दर्शनसँ जुड़ि गेला। फेर भारतीय ज्ञानपीठ (कलकत्ता), पत्नी संगे छलथिन्ह। फेर नोकरी छोड़ि रागरंग बहार केलन्हि मुदा ओ बन्द भऽ गेल। छओ बर्खक कलकत्ता प्रवासमे बहुत साहित्य लिखलनि। शरीर दुर्बल, पेट पर जे लम्प छलन्हि से कलकत्ते मे शुरू भेलन्हि।

फेर दिल्ली।

कीर्ति नारायण मिश्र, जीवकान्त आ हंसराज संग पत्र व्यवहार होइन्हि।

फेर अक्टूबर ६३ मे ओ पटनामे स्थिर भऽ गेलाह।

१९६६, शशि, दिव्या, मुक्ता, नीलू नवादासँ भेँट करैले एलखिन्ह।

बनारसक अलका संगे पत्राचार, अन्तिम प्रेम प्रसंग। नवम्बर १९६६ क पहिल सप्ताहमे ओकरासँ भेँट करय बनारस गेलाह।

साम्यवादी आलोचक नामवर सिंह एक टा पोस्टकार्डो देब उचित नै बुझलनि, नईं कहानियाँमे मधुकर गंगाधरक वक्तव्य छपल जे राजकमलक बीमारीक इलाज चलि रहल अछि, ओ अभाव आ उपेक्षाक बहाना कए लोकसँ पाइ ऐंठय चाहैत छथि। ओ चिट्ठी लिखि कऽ लहरक सम्पादक प्रकाश जैन आ मनमोहिनीकेँ सेहो भड़कौलनि। राजकमल डायरीमे लिखलनि- मधुकर एण्ड लहर पीपुल्स हैभ जोइण्ड हैण्ड्स इन डर्टी प्रोपेगैण्डा अगेंस्ट मी।

एक दिन डॉ चतुर्वेदी हुनका कहलकनि जे अहाँक शिश्न मे यूरेथ्रल कैंसर भऽ सकैत अछि आ जँ से भेल, तखन शिश्न काटय पड़ि सकैत अछि। राजकमल डायरीमे लिखलनि- इफ आइ हैभ टू कट माइ पेनिस, आइ विल कमिट सूसाइड।

सभसँ बेशी सेवा चन्द्रमौलि उपाध्याय दुनू व्यक्ति केलखिन्ह, आर्थिक रूपेँ सेहो, राजकमलक मृत्युक बहुत दिन बाद चन्द्रमौलि उपाध्याय दुनू व्यक्ति आत्महत्या कऽ लेलनि। राजकमलक देहगाथा हिनके दुनू गोटेकेँ समर्पित अछि। हंसराज आ आलोक धन्वा देखैले अबथिन्ह अस्पताल। राजकमलक चारि भाँय पटनामे रहथिन्ह, तीन भाँयकेँ नोकरी सेहो रहन्हि मुदा एक पाइक दबाइयो अनबाक कष्ट ओ सभ नै केलन्हि।

जून १९६७मे मृत्यु।

नित नवल राजकमल - मैथिली साहित्य

राजकमल एक सय कविता, तीनटा उपन्यास, ३७टा कथा, तीन टा एकांकी आ चारि टा आलोचनात्मक निबन्ध लिखलनि। स्वरगंधामे राजकमलक नवम्बर १९५७ सँ अप्रैल १९५८ धरिक कलकत्ता प्रवासमे लिखल गेल कविता संकलित अछि। ओ यात्रीकेँ अर्वाचीन होइतो आधुनिक नै मानैत छथि। राजकमल उपन्यास लिखलनि आन्दोलन, पाथर फूल आ आदिकथा। लिली रेक रंगीन परदा हुनका एमाइल जोलाक उपन्यास लज्जाक स्मरण करा देलकन्हि। रमानाथ झा परम्परावादी चिन्तनक कारणेँ राजकमलक साहित्यक सम्पूर्ण शिल्पकेँ कृत्रिम घोषित कऽ देलन्हि।

बनैत बिगड़ैत

सुभाषचन्द्र यादवजीक “बनैत बिगड़ैत” कथा-संग्रहक सभ कथामे सँ अधिकांशमे ई भेटत जे कथा खिस्सासँ बेशी एकटा थीम लऽ आगाँ बढ़ल अछि आ अपन काज खतम करिते अन्त प्राप्त कएने अछि। दोसर विशेषता अछि एकर भाषा। बलचनमाक भाषा ओइ उपन्यासक मुख्य पात्रक आत्मकथात्मक भाषा अछि मुदा एतए ई भाषा कथाकारक अपन छन्हि आ तइ अर्थेँ ई एकटा विशिष्ट स्वरूप लैत अछि। एक दिस कथाक उपदेशात्मक खिस्सा-पिहानी स्वरूप ग्रहण करबाक परिपाटीक विरुद्ध सुभाषजीक कथाकेँ एकटा सीमित परिमितिमे थीम लऽ कऽ चलबाक, भाषाक शिल्प जे खाँटी देशी अछि पर ध्यान देबाक सम्मिलित कारणसँ पाठकक एक वर्गकेँ ऐ संग्रहक कथा सभमे असीम आनन्द भेटतन्हि तँ संगे-संग खिस्सा-पिहानीसँ बाहर नै आबि सकल पाठक वर्गकेँ ई कथा संग्रह निराश नै करत वरन हुनकर सभक रुचिक परिष्करण करत।

किछु भाषायी मानकीकरण प्रसंग- जेना ऐछ, अछि, अ इ छ। जइ कालमे मानकीकरण भऽ रहल छल ओइ समय ऐपर ध्यान देबाक आवश्यकता रहय। जेना “जाइत रही” केँ “जाति रही” लिखी आ फेर जाति (जा इ त) लेल प्रोनन्सिएशनक निअम बनाबी तेहने सन ऐछ संगे अछि। मुदा आब देरी भऽ गेल अछि से लेखको कनियाँ-पुतरा मे एकर प्रयोग कऽ दिशा देखबैत छथि मुदा दोसर कथा सभमे घुरि जाइत छथि। मुदा ऐसँ ई आवश्यकता तँ सिद्ध होइते अछि जे एकटा मानक रूप स्थिर कएल जाय आ “छै” लिखबाक अछि तँ सेहो ठीक आ “छैक” लिखबाक अछि तँ “अन्तक’ क’ साइलेन्ट अछि” से प्रोनन्सिएशनक निअम बनय। मुदा से जल्दी बनय आ सर्वग्राह्य हुअय तकर बेगरता हमरा बुझाइत अछि, आजुक लोककेँ “य” लिखल जाए वा “ए” ऐपर भरि जिनगी लड़बाक समय नै छै, जे ध्वनि सिद्धांत कहैत अछि से मानू, य व्यंजन थिक आ ए स्वर, से एकक बदला दोसरक सर्वभौम प्रयोग असम्भव। आ सेनै हुअय तँ प्रोनन्सिएशनक निअम बनाउ। “नहि” लेल “नजि” लिखब तँ बुझबामे अबैत अछि मुदा नइँ (अन्तिका), नइं (एन. बी. टी.) आ नँइ (साकेतानन्द - कालरात्रिश्च दारुणा) मे सँ साकेतानन्दजी बला प्रयोग ध्वनि-विज्ञान सिद्धांतसँ बेशी समीचीन सिद्ध होइत अछि आ से विश्वास नै हुअए तँ ध्वनि प्रयोगशाला सभक मदति लिअ।

"बनैत बिगड़ैत" पोथीक ई एकटा विशेषता अछि जे सुभाषचन्द्र यादवजी अपन विशिष्ट लेखन-शैलीक प्रयोग कएने छथि जे ध्वन्यात्मक अछि आ मानकीकरण सम्वादकेँ आगाँ लऽ जेबामे सक्षम अछि।

स्वतन्त्रताक बादक पीढ़ीक कथाकार छथि सुभाषजी। कथाक माध्यमसँ जीवनकेँ रूप दैत छथि। शिल्प आ कथ्य दुनूसँ कथाकेँ अलंकृत कऽ कथाकेँ सार्थक बनबैत छथि। अस्तित्वक लेल सामान्य लोकक संघर्ष तँ ऐ स्थितिमे हिनकर कथा सभमे भेटब स्वाभाविके। कएक दशक पूर्व लिखल हिनक कथा "काठक बनल लोक" क बदरिया साइते संयोग हंसैत रहय। एहु कथा संग्रहक सभ पात्र एहने सन विशेषता लेने अछि। हॉस्पीटलमे कनैत-कनैत सुतलाक बाद उठि कऽ कोनो पात्र फेरसँ कानय लगैत छथि तँ कोनो पात्र प्रेममे पड़ल छथि। किनकोमे बिजनेस सेन्स छन्हि तँ हरिवंश सन पात्र सेहो छथि जे उपकारक बदला सिस्टम फॉल्टक कारण अपकार कऽ जाइत छथि। आब "बनैत बिगड़ैत" कथा संग्रहक कथा सभपर गहिंकी नजरि दौगाबी।

कनियाँ-पुतरा- ऐ कथामे रस्तामे एकटा बचिया लेखकक पएर छानि फेर ठेहुनपर माथ राखि निश्चिन्त अछि, जेना माएक ठेहुनपर माथ रखने हुअय। नेबो सन कोनो कड़गर चीज लेखकसँ टकरेलन्हि। ई लड़कीक छाती छिऐ। लड़की निर्विकार रहय जेना बाप-दादा वा भाय बहिन सऽ सटल हो। लेखक सोचैत छथि, ई सीता बनत की द्रौपदी। राबन आ दुर्जोधनक आशंका लेखककेँ घेर लैत छन्हि।

कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद वएह सड़कक चौबटिया अछि आ वएह रेड-लाइटपर गाड़ी चलबैत-रोकैत काल बालक-बालिका सभ देखबामे अबैत छथि। मुदा आब दृष्टिमे परिवर्तन भऽ जाइत अछि। कारक शीसा पोछि पाइ मंगनिहार बालक-बालिकाकेँ पाइ-देने वा बिन देने, मुदा बिनु सोचने आगाँ बढ़ि जाएबला दृष्टिक परिवर्तन। कनियाँ-पुतरा पढ़बाक बाद की हुनकर दृष्टिमे कोनो परिवर्तन नै होयतन्हि? बालक तँ पैघ भऽ चोरि करत वा कोनो ड्रग कार्टेलक सभसँ निचुलका सीढ़ी बनत मुदा बालिका? ओ सीता बनत आकि द्रौपदी आकि आम्रपाली। जे सामाजिक संस्था, ह्यूमन राइट्स ऑरगेनाइजेशन कोनो प्रेमीक बिजलीक खाम्हपर चढ़ि प्राण देबाक धमकीपर नीचाँ जाल पसारि कऽ टी. वी. कैमरापर अपन आ अपन संस्थाक नाम प्रचारित करैत छथि ओ ऐ कथाकेँ पढ़लाक बाद ओइ पुरातन दृष्टिसँ काज कऽ सकताह? ओ सरकार जे कोनो हॉस्पीटलक नाम बदलि कऽ जयप्रकाश नारायणक नामपर करैत अछि वा हार्डिंग पार्कक नाम वीर कुँअर सिंहक नामपर कऽ अपन कर्त्तव्यक इतिश्री मानि लैत अछि ओ समस्याक जड़ि धरि पहुँचि नव पार्क आ नव हॉस्पीटल बना कऽ जयप्रकाश नारायण आ वीर कुँअर सिंहक नामपर करत आकि दोसरक कएल काजमे "मेड बाइ मी" केर स्टाम्प लगाओत? ई संस्था सभ आइ धरि मेहनतिसँ बचैत अयबाक आ सरल उपाय तकबाक प्रवृत्तिपर रोक नै लगाओत?

असुरक्षित- ट्रेनसँ उतरलाक बाद घरक २० मिनटक रस्ताक राति जतेक असुरक्षित भऽ गेल अछि तकर सचित्र वर्णन ई कथा करैत अछि। पहिने तँ एहन नै रहैक- ई अछि लोकक मानसिक अवस्था। मुदा ऐ तरहक समस्या दिस ककरो ध्यान कहाँ छै। पैघ-पैघ समस्या, उदारीकरण आन कतेक विषयपर मीडिआक ध्यान छै। चौक-चौराहाक ऐ तरहक समस्यापर नव दृष्टि अबैत अछि, ऐमे स्टेशनसँ घरक बीचक दूरी रातिक अन्हारमे पहाड़ सन भऽ जाइत अछि। प्रदेशक तत्कालीन कानून-व्यवस्थापर ई एक तरहक टिप्पणी अछि।

एकाकी- ऐ कथामे कुसेसर हॉस्पीटलमे छथि। हॉस्पीटलक सचित्र विवरण भेल अछि। ओतय एकटा स्त्री पतिक मृत्युक बाद कनैत-कनैत प्रायः सुति गेलि आ फेर निन्न टुटलापर कानय लागलि। एना होइत अछि। कथाकार मानव जीवनक एकटा सत्यता दिस इशारा दैत आ हॉस्पीटलक बात-व्यवस्थापर टिप्पणी तेना भऽ कऽ नै वरण जीवन्तता देखा कऽ करैत छथि।

ओ लड़की- ऐ कथामे हॉस्टलक लड़का-लड़कीक जीवनक बीच नवीन नामक युवक एकटा लड़कीक हाथमे ऐंठ खाली कप, जे ओइ लड़कीक आ ओकर प्रेमीक अछि, देखैत अछि। लड़की नवीनकेँ पुछैत छै जे ओ केम्हर जा रहल अछि। नवीनकेँ होइत छै जे ओ ओकरा अपनासँ दब बुझि कप फेंकबाक लेल पुछलक। नवीन ओकरा मना कऽ दैत अछि। विचार सभ ओकर मोनमे घुरमैत रहैत छै। ई कथा एकटा छोट घटनापर आधारित अछि...जे ओ हमरा दब बूझि चाहक कप फेकबाक लेल कहलक? आ ओ दृढ़तासँ नै कहि आगाँ बढ़ि जाइत अछि। एकाकी जेकाँ ई कथा सेहो मनोवैज्ञानिक विश्लेषणपर आधारित अछि।

एकटा प्रेम कथा- पहिने जकरा घरमे फोन रहैत छल तकरा घरमे दोसराक फोन अबैत रहैत छल, जे एकरा तँ ओकरा बजा दिअ। लेखकक घरमे फोन छलन्हि आ ओ एकटा प्रेमीक प्रेमिकाक फोन अयलापर, ओकर प्रेमीकेँ बजबैत रहैत छथि। प्रेमी मोबाइल कीनि लैत अछि से फोन आयब बन्द भऽ जाइत अछि। मुदा प्रेमी द्वारा नम्बर बदलि लेलापर प्रेमिकाक फोन फेरसँ लेखकक घरपर अबैत अछि। प्रेमिका, प्रेमीक ममियौत बहिनक सखी रितु छथि आ लेखक ओकर सहायताक लेल चिन्तित भऽ जाइत छथि। ऐ कथामे प्रेमी-प्रेमिका, मोबाइल आ फोन ई सभ नव युगक संग नव कथामे सेहो स्वाभाविक रूपेँ अबैत अछि।

टाइटल कथा अछि बनैत-बिगड़ैत। तीन टा नामित पात्र। माला, ओकर पति सत्तो आ पोती मुनियाँ। गाम-घरक जे सास-पुतोहुक गप छै, सेहन्ता रहि गेल जे कहियो नहेलाक बाद खाइ लेल पुछितए, एहन सन। मुदा सैह बेटा-पुतोहु जखन बाहर चलि जाइत छथि तँ वएह सासु कार कौआक टाहिपर चिन्तित होमए लगैत छथि। माइग्रेशनक बादक गामक यथार्थकेँ चित्रित करैत अछि ई कथा। सत्तोक संग कौआ सेहो एक दिन बिला जायत आ मुनियाँ कौआ आ दादा दुनूकेँ तकैत रहत। प्रवासीक कथा, बेटा-पुतोहुक आ पोतीक कथा, सासु-पुतोहुक झगड़ा आ प्रेम!

अपन-अपन दुःख कथामे पत्नी, अपन अवहेलनाक स्थितिमे, धीया-पुताकेँ सरापैत छथि। रातिमे धीया-पुताक खेनाइ, खा लेबा उत्तर भनसाघरक ताला बन्द रहबाक स्थितिमे पत्नीक भूखल रहब आ परिणामस्वरूप पतिक फोंफक स्वरसँ कुपित हएब स्वाभाविक। सभक अपन संसार छै। लोक बुझैए जे ओकरे संसारक सुख आ दुःख मात्र सम्पूर्ण छै मुदा से नै अछि। सभक अपन सुख-दुःख छै, अपन आशा आ आकांक्षा छै। कथाकार ओहन सत्यकेँ उद्घाटित करैत छथि, जे हुनकर अनुभवक अंतर्गत अबैत छन्हि। आत्मानुभूति परिवेश स्वतंत्र कोना भऽ सकत आ से सुभाष चन्द्र यादवजीक सभ कथामे सोझाँ अबैत अछि।

आतंक कथामे कथाकारकेँ पुरान संगी हरिवंशसँ कार्यालयमे भेँट होइत छन्हि। लेखकक दाखिल-खारिज बला काज ऐ लऽ कऽ नै भेलन्हि जे हरिवंशक स्थानान्तरणक पश्चात् ने क्यो हुनकासँ घूस लेलक आ तइ द्वारे काजो नै केलक। हरिवंशक बगेबानी घूसक अनेर पाइक कारण छल से दोसर किएक अपन पाइ छोड़त? लेखक आतंकित छथि। कार्यालयक परिवेश, भ्रष्टाचार आ एक गोटेक स्थानांतरणसँ बदलैत सामाजिक सम्बन्ध ई सभ एतऽ व्यक्त भेल अछि। आइ काल्हि हम आकि अहाँ ब्लॉकमे वा सचिवालयमे कोनो काज लेल जाइत छी, तँ यैह ने सुनऽ पड़ैत अछि, जे पाइ जे माँगत से दऽ देबैक आ तखन कोनो दिक्कत हुअय तँ कहब! आ पाइक बदला ककरो नाम वा पैरवी लऽ गेलौं तँ कर्मचारी ने पाइये लेत आ नहिये अहाँक काज हएत।

एकटा अन्त कथामे ससुरक मृत्युपर लेखकक साढ़ू केश कटेने छथि आ लेखक नै, ऐपर कएक तरहक गप होइत अछि। साढ़ू केश कटा कऽ निश्चिन्त छथि। ई जे सांस्कृतिक सिम्बोलिज्म आयल अछि, जे पकड़ा गेल से चोर आ खराप काज केनिहार, जे नै पकड़ाएल से आदर्शवादी। पूरा-पूरी तँ नै, मुदा अहू कथामे एहने आस्था जन्म लैत अछि आ टूटि जाइत अछि। हरियाणामे बापो मरलापर लोक केश नै कटबैत अछि, तँ की ओकर दुःखमे कोनो कमी रहैत छै तँँ? पंजाबक महिला एक बरखक बाद ने सिनूर लगबैत छथि आ ने चूड़ी पहिरैत छथि मुदा पहिल बरख कान्ह धरि चूड़ी भरल रहैत छन्हि, तँ की बियाहक पहिल बरखक बाद हुनकर पति-प्रेममे कोनो घटंती आबि जाइत छन्हि?

कबाछु कथा मे चम्पीबलाक लेखक लग आयब, जाँघपर हाथ राखब। अभिजात्य संस्कारक लोक लग बैसल रहबाक कारणसँ लेखक द्वारा ओकर हाथ हटायब। चम्पीबला द्वारा ई गप बाजब जे छुअल देहकेँ छूलामे कोन संकोच। जेना चम्पीवला लेखककेँ बुझाइय रहन्हि जे हुनका युवती बुझि रहल छलन्हि। लेखककेँ लगैत छन्हि जे ओ स्त्री छथि आ चम्पीबला ओकर पुरान यार। ठाम-कुठाम आ समय-कुसमयक महीन समझ चम्पीवलाकेँ नै छइ, नै तँ लेखक ओतेक गरमीयोमे चम्पी करा लितय। चम्पीवलाक दीनतापर अफसोच भेलन्हि मुदा ओकर शी-इ-इ केँ मोन पाड़ैत वितृष्णा सेहो। फ्रायडक मनोविश्लेषणक बड्ड आलोचना भेल जे ओ सेक्सकेँ केन्द्रमे राखि गप करैत छथि। मुदा अनुभवसँ ई गप सोझाँ अबैत अछि जे सेक्ससँ जतेक दूरी बनायब, जतेक एकरा वार्तालाप-कथा-साहित्यसँ दूर राखब, ओकर आक्रमण ततेक तीव्र हएत।

कारबार मे लेखकक भेँट मिस्टर वर्मा, सिन्हा आ दू टा आर गोटेसँ होइत अछि। बार मे सिन्हा दोस्ती आ बिजनेसकेँ फराक कहैत दू टा खिस्सा सुनबैत अछि। सभ चीजक मोल अछि, ऐपर एकटा दोस्तक वाइफ लेल टी. वी. किनबाक बाद फ्रिजक डिमान्ड अएबाक गप बीचेमे खतम भऽ जाइत अछि। दोसर खिस्सामे एकटा स्त्री पतिक जान बचबय लेल डॉक्टरक फीस देबाक लेल पूर्व प्रेमी लग जाइत अछि। पूर्व प्रेमी पाइ देबाक बदलामे ओकरा संगे राति बितबय लेल कहैत छै। सिन्हा ऐ कथामे ककरो गलती नै मानैत छथि, डॉक्टर बिना पाइ लेने किए इलाज करत, पूर्व प्रेमी मँगनीमे पाइ किए देत आ ओ स्त्री जे पूर्व प्रेमी संग राति नै बिताओत, तँ ओकर पति मरि जेतै।

आब बारसँ लेखक निकलैत छथि तँ दरबानक सलाम मारलापर अहूमे पैसाक टनक सुनाइ पड़ऽ लगैत छन्हि। प्राचीन मूल्य, दोस्ती-यारी आ आदर्शक टूटबाक स्थिति एकटा एकाकीपनक अनुभव करबैत अछि।

कुश्ती मे सेहो फ्रायड सोझाँ अबैत छथि, कथाक प्रारम्भ लुंगीपरक सुखायल कड़गर भेल दागसँ शुरू होइत अछि। मुदा तुरत्ते स्पष्ट होइत अछि, जे ओ से दाग नै अछि, वरन घावक दाग अछि। फेर हाटक कुश्तीमे गामक समस्याक निपटारा, हेल्थ सेन्टरक बन्द रहब,

ओतय ईंटाक चोरिक चरचा अबैत अछि। छोट भाइ कोनो इलाजक क्रममे एलोपैथीसँ हटि कऽ होम्योपैथीपर विश्वास करय लगैत छथि, ऐ गपक चरचा आयल अछि। लोक सभक घावक समाचार पुछबा लऽ एनाइ आ लेखक द्वारा सभकेँ विस्तृत विवरण कहि सुनओनाइ मुदा उमरिमे कम वयसक कएक गोटेकेँ टारि देनाइ, ई सभ क्रम एकटा वातावरणक निर्माण करैत अछि।

कैनरी आइलैण्डक लारेल कथामे सुभाष आ उपिया कथाक चरित्र छथि। एतऽ एकटा बिम्ब अछि- जेना निर्णय कोसीक धसना जकाँ। ममियौत भाइक चिट्ठी, कटारि देने नाहपर जयबाक, गेरुआ पानिक धारमे आयब, नाहक छीटपर उतारब, छीटक बादो बहुत दूर धरि जांघ भरि पानिक रहब। धीपल बालुपर साइकिलकेँ ठेलैत देखि कियो कहैत छन्हि- “साइकिल ससुरारिमे देलक-ए? कने बड़द जकाँ टिटकार दियौक” । दीदी-पीसा ऐठाम ऐ गपक चरचा सुनलन्हि, जे कोटक खातिर हुनकर बेटीक विवाह दू दिन रुकि गेल छलन्हि आ ईहो जे बेसी पढ़ने लोक बताह भऽ जाइत अछि। सुभाष चाहियो कऽ दू सय टाका नै मांगि पबैत छथि, दीदीक व्यवहार अस्पष्ट छन्हि, सुभाष आश्वस्त नै छथि आ घुरि जाइत छथि।

तृष्णा कथामे लेखककेँ अखिलन भेटैत छन्हि। श्रीलतासँ ओ अपन भेँटक विवरण कहि सुनबैत अछि। पाँचम दिन घुरलाक बाद ट्रेनमे ओ नै भेटलीह। आब अखिलन की करत, विशाखापत्तनम आ विजयवाड़ाक बीचक रस्तामे चक्कर काटत आकि स्मृतिक संग दिन काटत।

छोट-छोट भावनात्मक घटनाक विश्लेषण अछि कथा “कैनरी आइलैण्डक लारेल” आ “तृष्णा” ।

दाना कथामे मोहन इन्टरव्यू लेल गेल अछि, ओतय सहृदय चपरासी सूचित करैत अछि जे बाहरीकेँ नै लैत छै, पी. एच. डी. रहितय तँ कोनो बात रहितय। मोहनकेँ सभ चीज बीमार आ उदास लगैत रहय। फुद्दी आ मैना पावरोटीक टुकड़ीपर ची-ची करैत झपटैत रहय। प्रतियोगी परीक्षाक साक्षात्कारमे बाहरी आ लोकल केर जे संकल्पना आयल अछि तकर सम्वेदनात्मक वर्णन भेल अछि।

दृष्टि कथामे पढ़ाइ खतम भेलाक बाद नोकरीक खोज, गाममे लोकसभक तीक्ष्ण कटाक्ष। फेर दक्षिण भारतीय पत्रकारक प्रेरणासँ कनियाँक विरोधक बावजूद गाममे लेखकक खेतीमे लागब। ई सभ गप एकटा सामान्य कथ्य रहलाक बादो ठाम-ठाम सामाजिक सत्य उद्घाटित करैत अछि। एतय गामक लोकक कुटीचाली अछि, जे काजक अभावमे खाली समय बेशी रहलाक कारण अबैत अछि। संगमे आइ-काल्हिक स्त्रीक शहरी जीवन जीबाक आकांक्षा सेहो प्रदर्शित करैत अछि।

नदी कथामे कथ्य कथाक संगे चलैत अछि आ खतम भऽ जाइत अछि। गगनदेवक घरपर बिहारी आयल छै। शहरमे ओकरा एक साल रहबाक छै। गगनदेवकेँ ओकरा संग मकान खोजबाक क्रममे एकटा लड़कीसँ भेँट होइत छै। ओकरा छोड़ि आगाँ बढ़ल तँ ई बुझलाक बादो जे आब ओकरासँ फेर भेँट नै हेतइ ओ उल्लास आ प्रेमक अनुभूतिसँ भरि गेल।

परलय बाढिक कथा थिक, कोसीक कथा कहल गेल अछि एतय। बौकी बुनछेकक इन्तजारीमे अछि। मुदा धारमे पानि बढ़ि रहल छै। कोशीक बाढ़ि बढ़ल आबि रहल छै आ एम्हर मायक रद्द-दस्तसँ हाल-बेहाल छै। माल-जाल भूखसँ डिकरैत रहै। रामचरनक घरमे अन्नपानि बेशी छै से ओ सभकेँ नाहक इन्तजाम लेल कहैत छै। बौकूक घरसँ कटनियाँ दूर रहै। मृत्यु आ विनाश बौकूकेँ कठोर बना देलकै, मोह तोड़ि देलकै। मुदा बरखा रुकि गेलै। बौकू चीज सभकेँ चिन्हबाक आ स्मरण करबाक प्रयत्न करऽ लागल।

बात कथामे सेहो कथाकार अपन कथानककेँ बाट चलिते ताकि लैत छथि आ शिल्पसँ ओकरा आगाँ बढ़बैत छथि। नेबो दोकानपर नेबोवला आ एकटा लोकक बीचमे बहस सुनैत लेखक बीचमे कूदि पड़ैत छथि। नेबोवलासँ एक गोटे अपन छत्ता मांगि रहल अछि जे ओ नीचाँ रखने रहय। दुखक गप, लेखकक अनुसार, बेशी दिन धरि लोककेँ मोन रहैत छै।

रंभा कथामे पुरुष-स्त्रीक बीचक बदलैत सम्बन्धक तीव्र गतिसँ वर्णन भेल अछि। पुरुष यावत स्त्रीसँ दूर रहैत अछि तँ सभ ओकरा मेनका आ रम्भा देखाइ पड़ैत छै। मुदा जे सम्वादक प्रारम्भ होइत अछि तँ बादमे लेखक केँ लगैत छन्हि जे ओ बेटीये छी। रस्तामे एक स्त्री अबैत अछि। लेखक सोचैत छथि जे ई के छी, रम्भा, मेनका आकि...। ओकरा संग बेटा छै, ओतेक सुन्नर नै, कारण एकर वर सुन्दर नै होएतैक। ओ गपशपमे कखनो लेखककेँ ससुर जकाँ, कखनो अपनाकेँ हुनकर बेटी तुल्य कहैत अछि। पहिने लेखककेँ खराप लगलन्हि। मुदा बादमे लेखककेँ नीक लगलन्हि। मुदा अन्तमे ओकर पएर छूबए लेल झुकब मुदा बिन छूने सोझ भऽ जाएब नै बुझिमे अएलन्हि।

हमर गाम कथामे लेखकक गामक रस्ता, कटनियाँ सँ मेनाही गामक लोकक छिड़िआएब आ बान्हक बीचमे अहुरिया काटैत लोकक वर्णन अछि। कोसिकन्हाक लोक- जानवरक समान, जानवरक हालतमे। कटनियाँमे लेखकक घर कटि गेलन्हि से ओ नथुनियाँ ऐठाम

टिकैत छथि। मछबाहि आ चिड़ै बझाबऽ लेल नथुनी जोगार करैत अछि। जमीनक झगड़ा छन्हि, एक हिस्सेदारक जमीन धारमे डूमल छै से ओ लेखकक गहूमवला खेत हड़पऽ चाहैत अछि। शन आ स्त्रीक (!) पाछू लोक बेहाल अछि।

स्त्रीक पाछू बिन कारण लेखक पड़ि गेल छथि जेना विष्णु शर्मा पंचतंत्रमे कथा कहैत-कहैत शूद्र आ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि।

यावत सभ कमलक घूर लग कपक अभावमे बेरा-बेरी चाह पिबैत छथि, फसिल कटि कऽ सिबननक एतऽ चलि जाइ-ए। झौआ, कास, पटेरक जंगल जखन रहय, चिड़ै बड्ड आबए, आब कम अबैत अछि। खढ़िया, हरिन, माछ, काछु, डोका सभ खतम भऽ रहल छै- जीवनक साधन दुर्लभ भऽ गेल अछि। साँझमे जमीनक पंचैती होइत अछि। सत्तोक बकड़ी मरि गेलैक, पुतोहु एकर कारण सासुक सरापब कहैत अछि। सासु एकर कारण बलि गछलोपर पाठी सभकेँ बेचब कहैत छथि। सत्तोक बेटीक जौबनक उभारकेँ लेखक पुरुष सम्पर्कक साक्षी कहैत छथि आ सकारण फेरसँ महिलाक पाछाँ पड़ि जाइत छथि, कारण ई धारणा लोकमे छै। सत्तोक बेटी अखन सासुर नै बसैत छै। सुकन रामक ऐठाम खाइत काल लेखककेँ संकोच भेलन्हि, जकरासँ उबरबाक लेल ओ बजलाह- आइ तोरा जाति बना लेलिअह। कोसी सभ भेदभावकेँ पाटि देलक, डोम, चमार, मुसहर, दुसाध, तेली, यादव सभ एके कलसँ पानि भरैत अछि। एके पटियापर बैसैत अछि।

गुलो (हिन्दी अनुवाद)

[गुलो हिन्दी अनुवाद (अंतिका प्रकाशन) क पाठपर आधारित।]

पहिने गुलोक हिन्दी अनुवादपर टिप्पणी। (सैद्धांतिक विवेचन लेल देखू हमर पोथी- मैथिली समीक्षाशास्त्रक मैथिली लेल एकटा अनुवाद सिद्धान्त आ अनूदित साहित्यक समीक्षाशास्त्र, विदेह पेटार http://www.videha.co.in/pothi.htm मे उपलब्ध।)

जेना कोनो हिट फिल्म जेना कन्नड़क “कनतारा” जँ अहाँ पी. वी. आर. मे देख लेने छी तँ की पाँचो मिनट तकरा अहाँ ओ. टी. टी. प्लेटफॉर्मपर देखि सकै छी?

जेना हरिमोहन झा केर “कन्यादान” क हिन्दी अनुवाद (विभा रानी द्वारा) देखि कऽ हुनकर पुत्र राजमोहन झा दुखी भऽ माथ पकड़ि लेने छला, सैक्रेड गेम्सक अनुराग कश्यप द्वारा घटिया वेब सीरीज रूपान्तरण देखि कऽ लेखक विक्रम चन्द्रा दुखी भेल छला, सएह अनुभूति गुलोक हिन्दी अनुवाद देखि कऽ हमरा भेल।

मूल धाराक लोक बिनु अनुवाद सिद्धान्त पढ़ने अनुवाद करैए, मूल धाराक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी लेखक सभक जखन मौलिक लेखनेमे शब्द-भण्डारक सुखार रहै छै तँ अनुवादक कथे कोन। अनुवादक रमण कुमार सिंह लग ने मैथिलीक शब्द-भण्डार छन्हि आ ने हिन्दीक। अखबारी भाषामे ओ गुलोक अनुवादक पहिले पाँतीमे “तिला सकरांति” क अनुवाद “मकर संक्रान्ति” करैत छथि! की मकर संक्रान्ति मैथिलीक मूल धाराक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी लेखक सभ नै प्रयुक्त करैत छथि, आ गुलोक पहिल पाँतिमे “तिला-सकरांति” केँ सुभाष चन्द्र यादव “मकर संक्रान्ति” नै लिखि सकै छला?

से जँ अहाँकेँ सुभाष चन्द्र यादवक गुलो केँ हिन्दी आ मैथिली दुनूमे पढ़बाक इच्छा हुअय आ गैसलाइटिंगक सिद्धांतक प्रयोग देखबाक हुअय तँ पहिने हिन्दी अनुवाद पढ़ू आ फेर मूल मैथिली पढ़ू। कारण मूल मैथिली जँ अहाँ पहिने पढ़ि लेलौं तँ अहाँकेँ सिनेमाकेँ पी. वी. आर. मे देखबाक अनुभूति हएत, आ जँ पहिने अहाँ मूल मैथिली पढ़ि लेब तँ हिन्दी अनुवाद एक्को पन्ना नै पढ़ि सकब, आ तखन गैसलाइटिंग केर प्रयोग केना देखि सकब? हमर इच्छा अछि जे अहाँ ई प्रयोग देखी।

अही सन्दर्भमे २०२१ मे गएर-सवर्णकेँ पहिल बेर देल मैथिलीक साहित्य अकादेमी पुरस्कारक चर्चा करब आवश्यक अछि। जगदीश प्रसाद मण्डलक उपन्यास “पंगु” ओतऽ सँ शुरू होइए जतऽ यात्रीक बलचनमा खतम होइत अछि, आ मूल धाराक लोक छड़पटाय लगला जे जगदीश प्रसाद मण्डल यात्रीजी सँ आगू केना बढ़ि गेला आ ओ सभ यात्रीजी सँ आगाँ बढ़ब तँ दूर पाछुए किए जा रहल छथि? २०१८ मे ई उपन्यास विदेहमे ९ खण्ड मे ई-प्रकाशित भेल आ संकलित भेल विदेह:सदेह २१ मे (प ृ. ६७७-७७९), फेर ओ पुस्तकाकार आयल ओही बर्ख, आ आब ओ विदेह पेटार मे सेहो उपलब्ध अछि। ऐ पोथीक हिन्दी अनुवाद रामेश्वर प्रसाद मण्डल द्वारा कयल गेल (पल्लवी प्रकाशन) आ हमर अनुरोध अछि जे ई हिन्दी अनुवाद अहाँ मूल मैथिली पढ़लाक बाद पढ़ू, अहाँ पूरा पोथी पढ़ि सकब। पंगुक मूल आ हिन्दी दुनू विदेह पेटार मे उपलब्ध अछि।

फेर घुरू गुलोक हिन्दी अनुवाद पर, से अनुवाद केना भेल आ केना मैथिलीक इन्साइडर व्यू हिन्दी-अनुवाद वर्जनमे आउटसाइडर व्यू बनि गेल नव-ब्राह्मणवादक अनूदित-स्टोरी-साइंसक प्रयोग सँ, से नीचाँ टेबुलमे देल अछि। बहुत ठाम हिन्दी शब्दकोषक अकालक कारण शब्द लेल शब्द नै वरन् विवरण देल गेल अछि, सेहो बहुत ठाम अशुद्ध आ बहुत ठाम अनूदित भेबे नै कएल, आकि अर्थक अनर्थ करैत शाब्दिक/ अर्थानुवाद भेल।

मूल मैथिली “गुलो”

अनूदित हिन्दी “गुलो”

तिला-सकरांति

मकर संक्रान्ति

एक्के ससपेन मे मुँह तोड़ि

एक ही सस्पेन से मुँह तोड़

ओकरा टांसलकै

उसका घी बनाया

घरनियो*

पत्नी भी

टुकदुम-टुकदुम

किसी तरह

कबइ

कबई मछली

दबिया

दाब

देखबहक छौड़िए!

देखेगी तू,

देलियह

आपको दिए

अमाठी

आम की टहनियाँ

करची

बाँस की छड़ियाँ

कठुआयल

स्तंभित

दाब-दाब करैत रहै छै

दबाव बनाए रखते हैं

बात उनटा दइ छै**

बात को पलट देती है

पनिजाब

पंजाब

मुँह बाबि कऽ

हताश

सड़लाह खुट्टा

घुन लगे खूँटे

उपरेलक

ढूढ़कर लाई

गज्जन

इज्जत

ओगरइ-ए

देखभाल करता है

रमराहड़ि

अरहर

ठिठुआ***

ठिठुआ

कोय लटेलक

कोई उसे हथेली पर रगड़ता है

भाकन

जलकुम्भी

परचारै छै

ताना देती है

भोटिया

सुजनी

भोमहैर लेतै

काट खाएँगे

हपकुनियाँ

उंकड़ूं

चास, समार आ चौकी***

चास, समार और चौकी

टोन करइ-ए

टुकड़े-टुकड़े करती है

पांगय लागल

काटने लगा

खराय

डंठल सूखकर सख्त

गोसांइ डुमानी

सूर्य डूबने

पछड़ैत-पुछड़ैत

किसी तरह

सिदहा

भोजन की सामग्री

गुलो उकटि देलकै

गुलो ने कहा

जुमा कए

निशाना साधकर

हपसि-हपसि

हाँफ –हाँफ

भासि गेल

हिल गए

पाढ़ि

छप्पर को टेकनेवाला आधार

हटहट

पत्थर

गिरहत दहित रहै

गृहस्थ उदार था

छील-मोठि

छीलकर

हड़ौथ

हड़ौथ बाँस

खढ़ उछाहि देलकै

फूस उड़ गई

कालीबंदीक सेवा

कालीबंदी की पूजा

कुशक कलेप***

कुश का कलेप

पाट

अंतर्धान

आरा

बगीचा

गाछी

आम के बगीचे

गैढ़

काटकर

छौड़ी कए समांगे ने होइ छै

उसकी तबीयत ठीक नहीं है

टाट

घास फूस से बनी दीवार

दोसर बिछेलक

दूसरी बनाने लगा है

आलन

अस्तर

जैराठो

जड़ें

दू गो सुपारी नोत मे आयल छै

निमंत्रण की सुपारी मिली है

बाछय लागल

अलग करके रखने लगा

टिरसि कए

गुस्से में

कननमुँह

रुआँसा

बीट लगाएत

बाँस रोपेगा

सिसोहि लेलकै

तोड़ ले गया

अरिकंचन***

अरिकंचन

लाट मे झुनियो रहै

झुनिया भी थी

अढ़े-अढ़

चुपके से

नौ बजे राति मे

दस बजे रात में

ओलैत

चुनता

झखइ

अफसोस जता रहा

डंगेलक

उसे तैयार किया

टपय

आने

जोगतै

रखवाली कौन करेगा

सात-आठ टा नभका खुट्टा काटि

खूँटे काट रखे

खिखिर

नेवला

पजोठने

लेकर

हाक दाए

बुलाकर

जुआयल***

जुआया हुआ

गलि कए भात भाए जेतौ****

गलकर भात हो जाएगा

तुम्मा***

तुम्मा

अवाच कथा

बुरी बात

भूमकम

भूकम्प*****

भूकम्प

भूकम्प*****

ठठरी***

ठठरी

ऊक

मुखाग्नि

हिन्नू

हिन्दू

करइ छै केना

बोलता क्या है

अरबा-अरबाइन***

अरबा-अरबाइन

झोड़ा

बटुआ

टानि कए

लेकर

अखरा***

अखरा

*सुभाष चन्द्र यादव पत्नी लेल घरनी आ जगदीश प्रसाद मण्डल भनसिया केर प्रयोग करै छथि, दुनू दू-स्थितिमे दू तरहक प्रयोग छै। अनुवादक की दुनू लेल “पत्नी” शब्दक प्रयोग करता?

**बातकेँ पलटि देनाइ भेलै घुमा देनाइ, एतऽ छै छुटिते उनटा जबाब देनाइ।

***अनूदित नै भेल

****शाब्दिक अनुवाद

*****अर्थानुवाद

हिन्दी वर्जनमे अध्याय परिवर्तन सेहो पता नै चलैत अछि, मूल मैथिलीमे नव पृष्ठसँ विवरण शुरू कऽ, आ जतऽ जगह खाली छै ओतऽ फोटो पाड़ि कऽ अध्याय परिवर्तन स्पष्ट कएल गेल छै।

डेनमार्कक शब्दकोष बड विस्तृत छै, प्रायः २३ वोल्यूम सँ बेशीमे छै, आप्रवासी प्रायः ओकर नागरिकता लेल लइ जायबला डेनिस भाषाक परीक्षामे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि। एकटा महिला जे डेनिससँ विवाह केने रहथि हुनकर बच्चा डेनमार्कक नागरिक भऽ गेल मुदा ओ कहलन्हि जे भाषा पेपर बड्ड कठिन होइ छै, डेनिस सेहो ओइमे अनुत्तीर्ण भऽ जाइ छथि। जनसंख्या वा क्षेत्रफलक छोट रहब डेनिस वोकाबुलेरी लेल हानिकारक नै भेलै।

हिन्दी जइ हिसाबे अपन भूगोल बढेलक अछि ओइ हिसाबे ओकर शब्दावली नै बढ़ल छै। अमेरिकामे ३५० शब्दक अंग्रेजीक "हाइ प्रेक्वेन्सी" आ ३५०० "बेसिक वर्ड लिस्ट" हाइ स्कूलक छात्र लेल छै जे क्रमशः कॉलेज आ ग्रेजुएट स्कूल (ओतए पोस्ट ग्रेजुएटकेँ ग्रेजुएट स्कूल कहल जाइ छै) धरि पहुँचलापर दुगुना (गएर भाषा फेकल्टीक छात्र लेल) भऽ जाइ छै। साहित्यक विद्यार्थी/ साहित्यकार लेल ऐ सँ दस गुणा अपेक्षित होइत अछि। हिन्दीमे अपवाद, जकरा हिन्दीक पुरोधा लोकनि उपहासमे आंचलिक उपन्यास/ लेखन कहैत छथि आ एक तरहेँ नकारैत छथि, केँ छोड़ि हिन्दीक कवि आ उपन्यासकार अठमा वर्गक २००० शब्दक शब्दावलीसँ साहित्य (पद्य, उपन्यास) रचै छथि आ मैथिलीक किछु साहित्यकार ऐ बेसिक २००० शब्दक वर्ड लिस्ट धरि सीमित रहए चाहै छथि, जखन कि जापानी अल्फाबेटक चेन्ह ५०० धरि पहुँचि जाइ छै।

जइ भाषामे रामलोचन शरण १४-१५ हजार पाँतीक श्रीरामचरित मानसक अनुवाद सन् १९६८ (वि. २०२५) मे पूर्णभाव रक्षित मैथिली रूपमे केलन्हि ओत सन् २०२१ (वि. २०७८) मे गुलोक ऐ तरहक हिन्दी अनुवाद मोनकेँ विखिन्न करैत अछि।

गुलो केर आमुख “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा”- लेखक केदार कानन

मूल मैथिली गुलोक प्रारम्भसँ पूर्व एकटा आमुख अछि “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा” । ई अछि मूल धाराक कन्नारोहट आ ऐ बेर ओइ कन्नारोहटक भार छन्हि केदार काननक कान्हपर, आ ई लिखल गेल अछि तिला-संक्रान्ति दिन!

मुदा सुभाष चन्द्र यादव तँ आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा लिखबे नै केने छथि। ई आमुख सुभाष चन्द्र यादवक लेखनीकेँ ओइपार ठाढ़ करबाक कुत्सित प्रयास अछि। ओ तँ लिखने छथि गुलो मण्डलक जीवनी, ओ गुलो मण्डल जे कहैत छथि-

“हमरा चिन्है छिही? ने चिन्है छिही तऽ चीन्ह ले। हम छिऐ गुलो मण्डल। अही चौक पर घर छै। हमरा संगे ठेठपनी केलही तऽ बूझि ले। हम छिऐ गुलो मण्डल। “

आ केदार कानन कऽ रहल छथि ठेठपनी गुलो मण्डलक सङ।

“बड़का-बड़का ठोप-चानन कयनिहार भाषा कें दूषित करब मानैत छथि। “- केदार कानन लिखै छथि।

मुदा ओइ ठोप-चानन कयनिहारक नाम लेबाक साहस केदार काननमे नै छन्हि।

केदार कानन सभटा लाभ साहित्य अकादेमी आ मैथिली अकादेमीक ठोप-चानन कयनिहारसँ लैत छथि। आ आब जखन ओ ठोप-चानन कयनिहार मरनासन्न छथि, किछु वास्तविक रूपमे मरियो गेल छथि, तँ ओ अपनाकेँ ओकरासँ अलग देखाबय चाहैत छथि।

आ ठोप-चानन कयनिहारक बाल बच्चा सभ जँ केदार काननकेँ, वीणा ठाकुरकेँ, अशोक अविचलकेँ आ आन लाखक-लाख टाकाक अनुवाद/ सम्पादनक असाइनमेण्ट आ साहित्य अकादेमीक बाल/ अनुवाद पुरस्कार लेनिहार केँ कृतघ्न कहि रहल छन्हि तँ ओ हुनका लोकनिक आपसी मामिला छन्हि। मुदा ठोप-चानन कयनिहारक बाल बच्चाक पुरखाक कृपासँ हुनका सभकेँ ई सभ भेटलन्हि से तँ सत्य छैहे।

संगहि जँ अहाँ ठोप-चानन नै कऽ रहल छी, बा धोती-कुर्ता नै वरन् पेण्ट-शर्ट पहिरै छी बा नव-ब्राह्मणवादी छी तँ अहाँकेँ सभ छल-प्रपञ्चक अधिकार स्वतः भेटि जाइत अछि, से केदार काननक आमुख सँ जनतब भेटैत अछि।

गुलो २०१५ मे प्रकाशित भेल केदार कानन जी केर आमुखक संग।

२०१९क साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार केदार कानन जी केँ हिन्दी कविता संग्रह "अकाल में सारस" (लेखक- केदार नाथ सिंह) क मैथिली अनुवादपर देल गेल। आब अहाँ पहिने हमरा बताउ जे के एहन लोक अछि जे हिन्दीक कविता संग्रह नै पढ़ि सकैए आ से ओकरा मैथिली अनुवादक खगता छै? आ ऐ मे केदार काननकेँ अनुवाद असाइनमेण्ट आ पुरस्कार, डबल फएदा भेलन्हि सएह ने। कारण रमता जोगी (२०१९) मे केदार कानन निपत्ता छथि, मडर (२०२१) मे कोनो आमुख नै अछि।

मुदा भोट (२०२२) मे केदार कानन बैक-कवरमे ८ पाँति लिखने छथि- मुदा एक्कोटा क्रान्तिकारी पाँति ओइमे नै अछि, किए?

आब "गुलो" उपन्यासक सङ साहित्य अकादेमी की केलक।

२०१६-२०२० मे प्रकाशित रचनाकेँ साहित्य अकादेमी पुरस्कार २०२२ मे देल जयतै। माने गुलो रेससँ बाहर।

माने गुलोक क्रान्तिकारी आमुख लिखनिहारकेँ साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार आ गुलो रेससँ बाहर।

तँ गुलोक आमुख ब्लैकमेलिंग छल? बुझि तँ सएह पड़ैए।

गुलोक आमुखमे आर बहुत रास कन्नारोहट अछि।

’ देसिल बयना सब जन मिट्ठा’, मूल धाराक सभकेँ ई रटल छै, से केदार काननकेँ सेहो रटल छन्हि। मुदा अवहट्ठ तँ साहित्यिक भाषा छल।

मुदा ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापति संस्कृत आ अवहट्ठक विद्यापति ठक्कुरः सँ भिन्न छथि। सम्भवतः बिस्फी गामक बार्बर कास्टक श्री महेश ठाकुरक पुत्र। समानान्तर परम्पराक बिदापत नाचमे विद्यापति पदावलीक (ज्योतिरीश्वर पूर्वसँ) नृत्य-अभिनय होइत अछि। ज्योतिरीश्वर पूर्व विद्यापतिक विवरण- कश्मीरक अभिनव गुप्त द्वारा (दशम शताब्दीक अन्त आ एगारहम शताब्दीक प्रारम्भ) लिखल ग्रन्थ अछि "ईश्वर प्रत्याभिज्ञा- विभर्षिणी" जइमे ओ विद्यापतिक उल्लेख करै छथि। श्रीधर दासक सदुक्तिकर्णामृत- (रचना ११ फरबरी १२०६, देखू मध्यकालीन मिथिला, विजय कुमार ठाकुर)- श्रीधर दास विद्यापतिक पाँच टा पद एतऽ उद्धृत केने छथि जे विद्यापतिक पदावलीक भाषा छी। "जाव न मालतो कर परगास तावे न ताहि मधुकर विलास।" आ "मुन्दला मुकुल कतय मकरन्द"। ज्योतिरीश्वर (१२७५-१३५०) षष्ठः कल्लोल-॥अथ विद्यावन्त वर्णना॥ अष्टमः कल्लोलः-॥अथ राज्य वर्णना॥ मे बिदापत केर उल्लेख करैत छथि। से विद्यापति ततेक प्रसिद्ध भऽ गेल रहथि जे ज्योतिरीश्वर तकर उल्लेख नाचक रूपमे केलन्हि। (विद्यापतिक चित्र: विदेह चित्रकला सम्मानसँ पुरस्कृत पनकलाल मण्डल द्वारा) ।

केदार कानन तकर बाद गुलो उपन्यासक सारांश लिखै छथि। लगैए ओ ठीकसँ उपन्यास पढ़लन्हि नै बा अर्थ बुझि नै सकला। ओ लिखै छथि- "अनवरकेँ बूझल छैक जे बुढ़िया (सुखबाक माय) लग पाइ छैक। ओकर कोनो प्रयास निरर्थक नै हेतैक। .. ऐंठ लेत" आर की की।

मुदा उपन्यासमे से छैहे नै, अनवरे नै आनो पात्र एहेन नै करैए जे केदार कानन बुझाबय चाहै छथि। पलाइबला पाइ दैए जखन सभकेँ होइ छै जे ओ नै देत। पंखाबला पंखा बदलि कऽ दऽ दैए जखन गुलोकेँ सेहो आशंका रहय जे ओ नै बदलत। अनवर तँ कतेक बेर मदति केलकै, बादमे सतर्को केलकै जे गिद्ध सभ पाइ लेल मड़रा रहल छै। हँ कताक बेर पाइ नै भेटलापर/ भेटैमे देरी भेलापर एक बेर ओ अनठेने जरूर रहै।

गुलो केर भाषासँ केदार कानन अचम्भित छथि, मूल धारा केर लोककेँ हेबाको चाही। मुदा से हुनकर मैथिली साहित्यसँ १५ सालसँ दूर हएब मात्र दर्शित करैत अछि।

केदार काननकेँ आनो बहुत चीजपर आश्चर्य होइ छन्हि, उपन्यासक एकटा झगड़ाक बादक स्थितिपर ओ लिखै छथि जे "तथाकथित भद्र समाजमे एतबे टा घटना की सँ की कऽ दैत अछि मुदा सामान्य लोकक घरमे एहन घटना रहरहाँ..."।

केदार काननक ऐ तरहक अचम्भित होयबाक स्वाङ करब हास्य उत्पन्न करैत अछि, मूलधाराक ऐंठीक रूपमे हम एकरा देखैत छी। लगैत अछि जे ओ कोनो दोसर ग्रहसँ आयल छथि आ सुपौलक एकटा बड़का महलमे रहै छथि, दीन-दुनियाँ सँ दूर।

९ पन्नाक ई आमुख गुलोक पाठमे व्यवधान उत्पन्न करैत अछि। से अहाँसँ आग्रह जे पृ. सं १७ सँ सोझे गुलो पढ़नाइ शुरू करू। एक निसाँसमे उपन्यास पढ़ि जाउ। फेर घुरि कऽ ई आमुख बा कन्नारोहट हास्य आलेखक रूपमे पढ़ू। गुलोक हिन्दी अनुवादमे केदार

काननक आमुख “आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा” केर अनुवाद उपन्यासक अन्तमे देल गेल अछि आ तइ लेल गौरीनाथ धन्यवादक पात्र छथि।

गुलो (मूल मैथिली)

गुलो मे गिरहत आ मालिकक चर्च मात्र भेल अछि, जिनकर कलम-गाछी छन्हि, मुदा बस चर्चे अछि, आ एक बेर बभना कहि कऽ सम्बोधन अछि, माने ओ ब्राह्मण थिका।

मात्र गुलोक मरलाक बाद डाक्टर मलिक अबै छथि, जे कानैत कहैत छथि जे आब हुनका मालिक के कहतन्हि, मानि लिअ ओ कायस्थ छथि, मुदा ऐ उपन्यासमे हुनकर जातिक विवरण नै अछि। से एकटा गिरहत/ मालिक दू-चारि बेर आ डाक्टर साहेब एक बेर।

आ सभसँ पाइबला छथि पलाइ मिलक मालिक- दशरथ मण्डल।

ई उपन्यास मोटा-मोटी १४ खण्डमे विभक्त अछि, आ फ्लैशबैकक संग गुलो मण्डलक जीवनक विवरण ओकर लगक वातावरणक विवरणक संग दैत अछि। उपन्यासक उद्देश्य काल-स्थानक विस्तारपूर्ण विवरण देबाक नै अछि, आ से समाज बा अर्थव्यवस्थाक अन्तर्निहित समस्याक विश्लेषण ई नै करैत अछि। गुलो मण्डलक चारू कात ई घुमैत अछि। गुलो मण्डलक आँखि, गुलो मण्डलक आभासी बा वास्तविक उपस्थिति जतऽ जतऽ ओ जाइत अछि ततऽ ततऽ ई उपन्यास विचरैत अछि। कने काल लेल एम्हर-ओम्हर गेबो कएल तँ फेर आपस। मृत्युक बादो जखन लोक अनुकम्पा राशिमे अपन हिस्साक लेल जोगार कऽ रहल छथि, लेखक रिर्नियां लग घुरि अबैत छथि आ गुलोक हाक रिनियाँकेँ सुनाइ पड़ै छै, ओ बाबाक एकटा आर हाकक आसमे कान पथने अछि। "अकानैत रहइ-ए।" आ उपन्यास खत्म होइत अछि- "बबा तए चलि गेलइ। रिनियां कानइ-ए।"

ई पोथी सामान्य उपन्याससँ भिन्न शब्द आ वाक्यक पाठ्यता (टेक्स्टुएलिटी) क रूपमे विश्लेषण मंगैत अछि। जुलिया क्रिस्टोवाक अनुदैर्घ्य सम्बन्ध बला धूरी जे लेखक आ पाठककेँ जोड़ैत अछि आ उर्ध्वाधर धूरी जे ऐ पाठकेँ दोसर पाठ संग जोड़ैत अछि।

गुलो अध्यायमे विभक्त नै अछि, ई एकटा धार सन बहैत जाइत अछि, मुदा टाइपोग्राफीक प्रयोगसँ प्रिण्ट वर्सनमे अध्याय वा खण्ड पाठकक सुविधा लेल सम्भव कएल गेल अछि। ओना कए बेर खण्डक भीतर पैराग्राफ-स्पेस दऽ कऽ खण्डक भीतर उपखण्ड सेहो बनाओल गेल अछि।

आब एकबेर गुलो केर पुनर्पाठ करी।

गुलोक पहिल खण्ड

पाठ शुरू होइत अछि तिला सकरांति सँ, मकर संक्रान्तिसँ नै! (अनुवादकक लेल ई गप अछि।)

आङन नीपि रहल अछि रिनियां (गुलोक छोटकी बेटी), गीत गाबि रहल अछि। की अहाँकेँ कन्नारोहट बा कोनो हीन भावना गुलोक परिवारमे देखा रहल अछि। सिनोमेटोग्राफिक अनुभव लिअ, सोचू-गुणू, गीत गबैत नीपब, फेर पानिक फाहा जकाँ ओस, पछिया हवा, बड्ड जाड़, रिनियां पहिरने अछि खाली सलवार आ फराक आ मायक हाक- "ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।" आ करू ऐ दृश्यक मंचन। मुदा नीपै कालमे चद्दरि लेटा जेतै, मैल लेटेलाक बाद हेतै (अनुवादकक लेल ई गप अछि।)

आ आब सोचू जे ई गुलो मण्डल नै तथाकथित भद्र समाजक गुलो काननक घर अछि।

तथाकथित भद्र समाजमे सेहो अहिना भोर होइ छै, अहिना तिला सकरांति बाजल जाइ छै, अहिना नीपल जाइ छै, आ अहिना माय चिचिआइ छै "ई छौड़ी हमरा जीअय नै देत। गे चद्दरि ओढ़ि ने ले।"

गुलोक परिवारक भोरुका आन सभ बात सेहो अहाँकेँ एतऽ भेट जायत।

गुलोक दोसर खण्ड

फ्लैशबैक एक पाराग्राफमे, गुलोक बाप मुनीलाल, गुलोक दूटा छोट बहीन, ओकर मायक मरब, बापक रेलवेक नोकरी छोड़ब, सहरसाक रेलवेक बड़ाबाबू बनरजी साहेबक मोन नै रहै जे मुनीलाल नोकरी छोड़य, ओकरा बड़का-बड़का जिन्दा कबइ के देतै? मुनीलालक जेठकी बेटीक मांग तीन संतानक बाद पोछाय गेलै, मुनीलाल सभकेँ अपने लग लाए आनलक। नाति चरफर-चलाक रहै (महेन्दर).. बासडीह लिखा लेलकै। गुलो भागि कऽ कोसी चौक, सिपौल आबि गेल। बिहार सरकारक जमीनपर बसि गेल।

रेलवे मे रहैत मुनीलाल लोहा-लक्कड़क बहुत सामान बनबेने रहय। छोट-पैघ खुरपी, कोदारि, खंती, दबिया, कुड़हरि, भाला, बरछी। ई सब अखनियो गुलोक घर मे छै। इएह ओकर बपौती छिऐ। बाप-पुरखाक छोड़ल और कुइछ नै छै।

फेर रिनियांक चंचलता। ओकरा स्कूलमे पाँच सय टाका भेटल रहइ, पोशाक राशि। दीदीजी कहने रहइ-' जुत्ता कीन लिहे।' मुदा गुलोक दोसर बेगरतामे से खर्च भऽ गेलै, रिनियाँ कहै छै.. सभटा चाटि गेलह।

गुलोक तेसर खण्ड

छोटुआ (गुलोक छोटका बेटा) आ रिनियांक काजक प्रति दृष्टिकोणक द्वन्द्व।

गुलोक चारिम खण्ड

एक मास पहिने गुलोक बड़का बेटा अरजुनमा पनिजाब (पंजाब नै- अनुवादकक लेल टिप्पणी) चलि गेलै। कंदाहावाली (अरजुनमाक बौह) आ सुजीत (अरजुनमाक बेटा) ।

रिनियाँक पेटमे चाली छै कारण ओ पचपच थूकै छै।

नया साल दिन माछ बनल रहय, कारण नया साल आब उत्सवक दिन बनि गेल छै सभक लेल। ओइ दिन रिनियाँ माछ बोकरि देने रहय। ओना रिनियाँक आग्रह रहै मौंस खेबाक।

गुलोक बगले मे अनवर एगो कठघरा मे बैठइ-ए। ऊ सुइया दै छै। एगो सुइया दइ के दस टका लै छै।

गुलोक ससुरारि छै बेला आ ओकर पत्नीक नाम छै बेलावाली।

पहिने गुलोकेँ गाजा पीऐत-पीऐत दम्मा उखड़ि गेलै। माने चारू कात गाजाक नशाक व्यापार होइत हेतै। से बेलासँ ओकर सरहोजि अपन ननदि माने गुलोक पत्नीकेँ देखय आयल छै आ कहै छै- "ई गजपीआ हमर बहीन कए मारि देलक।"

कंदाहावाली जरना उपरेलक (जोगार केलक, ताकि कऽ नै अनलक- अनुवादकक लेल टिप्पणी) ।

भगिनाक बियाहक नोत पुरबाक क्रम, साड़ी, साया, बिलाउज आ दू सय एकावन टाका दिअ पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ रिनियां संग छै। गुलोक बड़की बेटी रुनियाँ सेहो सासुरसँ सोझे ओतऽ आयल छै, बहीन रिनियाँकेँ अपन सासुर लऽ जाय चाहै छै। मुदा ओ मना कऽ देलकै, लोक कहतै जे बाप रोगाह भऽ गेलै, दिन टगि गेलै तँ पेट पोसै लए आयल छै। ओ बड्ड कानल, गुलो केँ छगुन्ता होइ छै, छौड़ी ई सब बात केना बूझि गेलै। कनियाँ दब छै मुदा मना करितै तँ कोनो गज्जन बाँकी रहितय (कोनो कर्म बाँकी रहितय, इज्जत तँ छोट शब्द छै- अनुवादकक लेल टिप्पणी), "मारियो खइतौं..।"

रिनियाँ लेल सोनक कोनो तीरथसँ कम नै कारण ओ अखैनधरि रेलगाड़ियो नै देखने-ए, माने चढ़ल तँ नहिये अछि, देखबो नै केने अछि, माने मात्र सुनने अछि। से दूटा इण्डिया छै।

गुलोक पाँचम खण्ड

घूर-धुँआ। "अनवर कोनो जवाब नै दै छै। ऊ पहिने कएक बेर मदद केने छै, टाका देने रहै, दवाइ देने रहै, सुइया देने रहै। ... गुलो घुरबै के नाम नै लै छै।"

गुलोक छअम खण्ड

राजिनदर डीलर आ ओकर समदाही इनरा गानही। इनरा गानहीक जेठका डोमा किराना के दोकान करै छै। दोसर बेटा के पानक दोकान छै, सब तरहक चार्जर राखने-ए आ एकटा मोबाइल चार्ज करइ के पाँच टका लै छै। पुनरबास मे बहुत कए बिजली नै छै। तेसर बेटा मोबाइल रिचार्ज करइ-ए, फिलिम आ गाना डाउनलोड करइ-ए। फोटो एसटेट करइ-ए। फोटो खींचइ-ए। चारिम बेटा बरजेश दवाइ के दोकान करइ-ए। ओकर कहब छै-' कोनो डाक्टर आ हमरा मे फरक एतबे छै जे डाक्टर कए डिगरी छै आ हमरा डिगरी नै छै।

गुलोक सातम खण्ड

कंदाहावालीकेँ मलहदक चाँपमे मखानक कमौनीक नव-रोजगार भेटलइ-ए।

सुखबा अपन माय कए घर सए निकालि देलक। ओ छै इनरा गानहीक पितिया सासु।

सुखबा माय कए घर लाए आनलक।

गुलोक आठम खण्ड

मूंगक बीया बाउग हेतै, हरवला चास, समार आ चौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै।

कल ठीक करेबाक छै।

"एमपी के एलेकशन छिऐ। कांगरेस रंजीता रंजन कए ठाढ़ केने-ए।" नरेशबा रंजीता रंजनसँ गुलो कैँ एक हजार टका दिएतै, गुलोक घरमे छहटा भोट छै। मुदा नरेशबा निपत्ता भऽ गेलै। मुदा फुलबा मोदीकैँ जितेतै, मुदा गुलो नै जाएत मीटिंगमे "तोरा (फुलबाकैँ) मोटका गड्डी भेटल हेतौ। तू कर गे (मीटिंग) ।"

फेर घरक झगड़ा, कंदाहावाली ससरफानी बनेलक आ गरदनि मे फँसा लेलक। कंदाहावाली बोइनवला गहूम डराममे बन्न कऽ ताला लगा नैहर चलि गेल।

गुलोक नअम खण्ड

गुलोक दूटा घर भासि गेलै।

बाबा कहलकै, घरपर मरछाउर छीट देने छह। जंतर देलकै, मुदा ओ कोनो काजक नै।

कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब कुशक कलेपो नै लगतै।

गुलोक दसम खण्ड

छोटुआ काज करैए पिलाइ मालिक दशरथ मण्डल ओइठाम। कल ठीक करबैले १२०० टाका एडवांस मांगैए, १००० भेटै छै। मुदा कल ठीक करेबाक बदला ओ साइकिल कीनि लैए कारण अरजुनमा अपन पाइसँ कीनल साइकिल बेचि लेने रहै। ओकरा देखेबाक छै।

अनवर रिनियांक बोखार उतारबाक लेल गोली देलकइ।

गुलोक दसम खण्ड

गुलो कैँ दूटा सुपारी दूटा नोत मे आयल छै- एकटा लालो पण्डित के पोती के बियाह, दोसर सारि के जैधी के बियाह।

गुलोक एगारहम खण्ड

गुलो मालिकसँ टॉर्च मांगत, ओ नै देतै तऽ एक्को गो आम कि लुच्ची भोग नै हुअय देत।

बाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै, गुलो चोरा कए बेचत तैं एक्के सय मे दिअय पड़तै। पाच टा बाँसक पाइ भेटलै, पान सय मे रिनियाँ पाठी किनलक। घड़िए घंटा मे पाठी रिनियाँ कए चीन्ह गेलै।

गिरहत टौर्च नै देलकै, अपना पचास टका लगा कए किनलक।

चोरबा सौंसे गाछक लुच्ची सिसोहि लेलकै। एकटा ठकुरबा सेनियल चोर छै।

रिनियां, झुनियां आ बरस्सेरवाली लुच्ची चोरबैए।

’ पकड़लकह नै?’- रिनियाँ पुछलकै।

’ ऊ बभना हमरा पकड़त? ..” (बरस्सेरवाली)

गुलोक बड़की बेटी रुनियाँ बीनामे बियाहल छै। अनवरक मोबाइलपर फोन एलै ओकर। गुलो ओतऽ जाइए, छोटुआ सेहो सङ जाइ छै। रिनियांबला लुच्ची सनेस बनि जाइ छै।

मूंगक पहिल तोड़ रिनियां सतलरेनमाकैँ देलक, ओ बीस टाका देलकै।

रुनियाँ के दीयर नेरहू एलै, ओ चुपचाप रिनियां के देखैत रहइ-ए आ मुस्की छोड़इ-ए।

दशरथ मण्डलक साढ़ूक लड़का नेपालमे छै, रिनियां लेल कथा अबै छै। मुदा गुलो चारि मासक टेम मंगैए, अरजुनमा नालायक छै मुदा तैयो ओकरासँ पुछतै।

गुलोक बारहम खण्ड

अनवरक मोबाइलपर फोन एलै अरजुनमाक, ओ रबाड़ि दै छै।

गुलोकेँ खोंखी होइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओलइ के बात भेलै। कतेक गरदा फेफड़ामे गेल हेतइ। खौंत बाड़ि देलकै, दस टाकाक पंखा टूटि गेलै मुदा नंगड़ा दोसर बदलि देलकै।

गुलोक तेरहम खण्ड

एक बेर रिनियाँ गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै तऽ मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकानि खाइ लए देने रहै।

बेलावालीक बोखार उतरिते नै छै। कोन छौड़ा, कोन मौगी काए टा आम लाए गेलइ।

गुलो भरि राति छटपट करैत रहल। दम फुलइ आ खोंखी होइ।

"बुढिया कए बोखार लागल छै। ओकरा (गुलोकेँ) अपना उठले ने होइ छइ।.. छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।"

गुलोक अन्तिम खण्ड

गुलो सात-आठ टा नभका खुट्टा काटि कए राखने-ए। .. आब तऽ सके ने लागइ छै जे कुछो करत।

रिनियाँक पाठी खाइ-पीअइ नै छै। नै जानि की भाए गेलै।

आन बेर गुलो रातिओ कए गाछी ओगरैत रहय। अइ बेर नै ओगरि भेलै। आब ओते पैरुख नै छै..

...कंदाहावाली पहुँच गेलइ।–' पपा, कल वला मिसतरी कए बजा आनथिन। ठीक काए देतै।'

गुलो बाजल-' कनियाँ, ओइ मे एक हजार लागतै। हमरा हाथ पर एक्को गो टका नै छै।'

' बजा कए आनथिन ने। जे लागतै से देबै।'

अरजुन पनिजाब सए घूरि आयल।

भगिना महिनदर जे बेइमानी सऽ गुलोक घराड़ी गुलोक बाप सऽ लिखबा लेने रहै से ठकहरबा भगिना सुनलकै जे ममा बेमार छै त भेंट करय एलै। गुलो ओकरा अवाच कथा कहि देलकै।

महिनदर सतलराएन भगवानक पूजा करेलक। रिनियां ओतऽ गेल, भौजी रातिमे रोकि लेलकै। रिनियांकेँ पता चललै जे गुलोक मन बहुत खराप छै। ओ भोरे आबि गेल।

ऐ उपन्यासक महा-अन्त... कला देखू..

माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक-' माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।'

...

रिनियां कनहा पकड़ि कए डोलेलकै-' बबा!'

कुइछ नै। कतौ कुइछ नै।

' माय, दौड़ गे। देखही ने बबा कए की भेलै गे! बबा हौ! हौ बबा! बबा हौ बबा!'

...

' हंसा उड़ि गेलै।'

फेर पाइक अभावमे लकड़ी नै आ लकड़ीक अभावमे गुलोकेँ गाड़ि देल जेतै।

“… भूमकम होइ छै हौ!” परमेसर बाजल।

…

भूकम्प फेर एलै।

ऊक दइतिए ता दू गोटे मोटरसाइकिल सए एलै, कन्हैया आ जगदीस।

फेर मृत गुलो अस्पताल जाइए, ओकर पोस्टमार्टम होइ छै, भूकम्पसँ गुलो मरलै से पहिनहियेसँ अस्पतालमे हल्ला रहै, से कागच बनि गेलै।

फेर दोबारा गुलोकेँ असमसान आनल गेलै। ऊक देलकै छोटुआ, दुनू कोदरवाह माटि सए गुलोकेँ तोपि देलकै।

किछु खरहू आ जनीजाति जे मुसलमान रहै से आगि दैत आ दफनो होइत देखि बाजै छै- ई हिन्नू हइ कि मुसलमान.. हिन्नुओ के कोनो धरम हइ!... धरम ले के की होतइ? पैसा होइ हइ त बालोबच्चा गुजर करिहइ।…

नेता/ मंत्री सभक भूकम्पक बाद अनुकम्पा राशि देबाक प्रतियोगिता। कोनो प्राकृतिक आपदा एलापर केना मुइल लोककेँ अनुकम्पा राशि देबालेल आपसमे प्रतियोगिता होइ छै आ से न्यूज मे रहबाक लेल, से लेखक एतऽ देखबऽ चाहै छथि।

वाड कमिशनर पनरह सौ टाका..

एमपी .. पाँच हजार टाका..

मंत्री… दस हजार..

सरकारी आदमी.. चारि लाखक चेक..

आ फेर ओइ पाइ लेल रगड़ा..

जगदीस केँ ओइमे सँ एक लाख चाही। मुदा लेखक घुरै छथि रिनियाँ लग।

“रिनियां उदास अय। बबा मन पड़ै छै।.. दाइ गे! कते साफ अबाज रहै।.. ओकरा भेलै जे हाक दइ- बबा! हौ बबा!..”

रमता जोगी

यात्रा विवरणी, डायरी रूपमे। लेखक लिखै छथि-[०५.०३.२०१९] "मैथिलीमे अखनधरि जे यात्रा साहित्य लिखल गेल अछि, ताहिमे अधिकांश नीरस आ बेजान अछि। अनावश्यक विवरण आ महत्वहीन सूचनाक भण्डार अछि। ओहिमे इतिवृत्तात्मकता बेसी आ आख्यानपरकता कम छैक। डायरी शैलीमे लिखल ऐ वृत्तांतमे इतिहास आ पुरातत्वक बारीक आ ब्यौरेवार अन्वेषण नै अछि। विभिन्न देशक जीवन-शैली आ संस्कृतिकेँ आलोकित करऽवला रोचक मानवीय प्रसंग अछि।"

लेखक आस्ट्रेलियासँ प्रभावी छथि- 'आस्ट्रेलिया विकसित, समृद्ध, स्वच्छ, शुद्ध आबोहवा आ उन्नत जीवन स्तर बला देश अछि।.. गरीबी, अशिक्षा आ सामाजिक भेदभाव नै रहलाक कारणे ओतौका जीवनमे बहुत शान्ति छैक।'

हमरा मोन पड़ैए जे एकटा हमर संगी कोनो परीक्षा दइले दरभंगा गेल आ यूनिवर्सिटी एरिया घूमि कऽ चलि आयल, कहलक जे दरभंगासँ नीक शहर तँ पूरा बिहारमे कोनो नै छै। ओना तँ लेखक कहै छथि जे हुनकर ऐ यात्रावृत्तान्तमे इतिहास आ पुरातत्वक बारीक आ ब्यौरेवार अन्वेषण नहि अछि, मुदा उपरका अनुच्छेदक आलोकमे हम ऐपर ध्यान दिआबऽ चाहब जे जखन सन् १७७८ मे ब्रिटेन अमेरिकाक कॉलोनीसँ हाथ धो लेलक तँ अपराधी सभकेँ पठेबा लेल वर्जीनिया आब ओकरा लग नै रहलै। से कैप्टन फिलिप तीन जहाजमे पशु, बीआ, भेड़ा, हर आ ६ टा छोट जहाज आ १४०० महिला पुरुष जइमे सँ अदहा अपराधी रहथि, लऽ कऽ २६ जनवरी १७८८ केँ वर्तमान सिडनीक तटपर पहुँचला, आ आस्ट्रेलियाक चारू कात समुद्र तटसँ मूल आदिवासीकेँ भीतर परती दिस आस्ते-आस्ते धकेल देल गेल। मूल निवासीक वाटरहोल (जलस्रोत) पर कब्जा कऽ लेल गेल, आ आइयो जखन २६ जनवरीकेँ ओतऽ ऑस्ट्रेलिया दिवस मनाओल जाइए, मूल आदिवासी ओइ दिन शोक दिवस मनबैत छथि, आब ओ रिजर्वेशन (अधूसूचित बोन) मे रहैत छथि। मुदा जेम्स कुक जखन न्यूजीलैण्ड गेला तँ ओतुक्का मूल निवासी माओरी सभक संग नीक व्यवहार केलन्हि।

आब आउ रमता जोगी पर-

[३०.०९.२०१८] अपन पुत्र कुमार सौम्य संगे बिजनेस क्लासमे ओ मेलबॉर्न बिदा भेलाह।

पैघ बेटा संतोष कुमारकेँ पहुँचलापर फोटो पठबैत छथि। बेटा कुमार सौम्य सी. ए. छथिन्ह आ पुतोहु मधुलिका (मधु) सॉफ्टवेयर इंजीनियर, बेटा जातियेमे बियाह केने छन्हि से देखेबा लेल लेखक निम्न वाक्यक प्रयोग करैत छथि- "भाटा-अदौरीक तीमन बनल छैक। अदौरी मधुलिकाक मम्मी जयमाला यादव..."।

सैंक्चुअरी लेकक किछु भारतीयक दोकानक चर्चा अछि आ पतंजलि उत्पादक सेहो। चारि माससँ सौम्य कैंसर पीड़ित मायक मृत्योपरान्त सेवा केलन्हि आ आब पिताकेँ संग अनने छथि। सौम्य कहै छथिन्ह जे संतोलाकेँ ऑस्ट्रेलियामे ऑरेन्ज नै मेंडेरिन कहैत छैक। प्वाइंट कुक मेलबर्नक पछबरिया भाग छिऐक। एतय इंडियन आ अफ्रीकन बेसी रहैत अछि, क्राइम सेहो होइत छैक (तेँ होइत छैक- से लेखक नै लिखने छथि।)

स्वस्तिका गोयनका (सी. ए.) आ आनन्द गोयनका (सॉफ्टवेयर इंजीनियर) क चर्चा अछि। हिन्दी फिल्म 'सुईधागा'ऑस्ट्रेलियामे लागल छै। डोसा हटमे सब सुन्दर भारतीय युवती वेट्रेस छै। एकटाक मुस्की लम्बा छलै... लेखक सोचैत छथि- ओ किएक मुस्कायलि?... जे हो, सुखायल जीवनमे एहन तरल आत्मिक अनुभूति किछु क्षणक लेल सुख दऽ जाइत छैक।

भारतसँ सुखद समाचार एलनि, यूनिवर्सिटी पेंशनक बकाया राशिक भुगतान लेल तत्पर भेल। दूर-दूर जाइबला ट्रेनकेँ एतऽ बिलाइन ट्रेन कहल जाइत छैक, ताहूमे दुर्घटना नै घटैत छैक। सिटीमे ट्राम चलैत छैक, कलकत्ते टामे ट्राम नै छै, मुदा एतुक्का ट्राम नीक छै।

केदार काननक भातिज राहुल वत्ससँ गप भेलनि। ओ आ हुनकर पत्नी अश्विनी, दुनू इंजीनियर छथि आ मेलबर्नमे नोकरी करैत छथि, बेटी अयस्का। किशनपुरक अहमद नोमानीसँ सेहो गप भेलनि।

दू टा हब्सी आ महिलाक चिचियायब सुनलन्हि। निग्रो आ हब्सी अपमानजनक शब्द छिऐ जेना मधुबनीक सिमराक गिदरमाड़ा, ओकरा बंजारा कहियौ, जेना पाकिस्तानमे पश्तूनकेँ अपमानित करैलेल पठान कहै छै, मुदा भारत मे लोक पठान टाइटल सेहो राखैए। आगाँ जा कऽ लेखक मुदा हब्शी शब्दक कहलासँ अपनाकेँ दूर करै छथि।

ससुर पुतोहुक (सासु-पुतोहु नै) केर सम्बन्ध फरिछायल अछि। "कतेक गार्जन धियापूता लग गेल तऽ ओहि देशक मुद्रा पहिनहि कीनि लेलक। अहूँ जँ ओहिना करितहुँ तऽ हमरा बड्ड खराब लगैत। मधु थोड़े आउट स्पोकेन छथि।"

मेलबर्नक रॉकबैंडक दुर्गापूजा। -ऐठाम हिंसाक कोनो स्थान नै छैक। चारि साल पहिने केदार कानन, सुस्मिता, टुस्सी आ रमण कुमार सिंह संगे तारानन्द वियोगी लग महिषी महाअष्टमी मे गेल रहथि, माँ ताराक दर्शन, बलि प्रदान, फेर कारूथान, लोक दूध चढ़बैत अछि। वियोगी कहैत छथि- ताराथानमे रक्त बहैत छैक आ कारूथानमे दूध बहैत छैक!

कार ड्राइवर बेसी महिले।

"ऑफिसक शराब पार्टी, मधु हैंगओवरमे छलीह।"

सौम्य ऑस्ट्रेलियामे बसय चाहैत छथि तीन साल भेल छन्हि, चारि साल पूरा हेतन्हि तँ नागरिकता लेल अप्लाइ करताह।

एक्केटा चद्दरिमे एक दोसरसँ सटल दू टा स्त्री सड़कपर चलल जाइत छलि। बहुत सम्भव जे लेस्बियन हो।"

शशि कपूर अपन विदेशक अनुभवमे कहने छलाह जे हुनकर दोस्त सभ एक दोसरासँ छूबि कऽ हँसी मजाक करैत छला तँ ओतुक्का लोककेँ होइ छलै जे ओ सभ गे छथि। से लेखक ठीके भजियेने हेताह।

सौम्य ओतऽ बसऽ चाहैत छथि मुदा मधुकेँ डर होइत छन्हि।

लेखकक प्रोफेसर महेन्द्र झा सँ गप भेलनि, जून-जुलाइक पेंशन आयल छन्हि। ओ चाहै छथि आ केदार, कामता, विनय कुमार झा, वैद्यनाथ झा चाहै छथि जे ओ ओतऽ खूब साहित्य लिखथि। मडर उपन्यासक पहिल अंश अंतिकामे मार्च २०१६ मे आयल, फेर नै आयल। २४.१०.२०१८ केँ एकटा नव उपन्यास लिखब प्रारम्भ केने छथि। नाम फुरायल नै छन्हि। सच्चिदानन्द सच्चूकेँ 'मडर' के अंश बहुत नीक लागल छलनि। मैसेज पठौने छलखिन्ह।

लेखकक पुनर्वास (सुपौल) वला खेतक धान कटि जेतन्हि, बटाइ देने छथिन्ह। भरेबाक छन्हि, जँ बटेदार फेर किछु बाउग कऽ देलकन्हि तँ फेर कए मास लटकि जेतन्हि। दू गोटेसँ गप भऽ रहल छन्हि, पाइ टानि कऽ ठकि लेतन्हि तकरो चिन्ता छन्हि।

मधु तीन गिलास ह्वाइट वाइन (देसी शराब) क ऑर्डर दैत छथिन्ह, स्वादा ताड़ी जकाँ छैक।

सौम्य एकटा जापानी व्यंजन सुसी (बसिया भात आ मुर्गाक बनल) ऑर्डर करैत छथि।

समुद्री माँछ बारामुंडी, मुदा पोखरि, चांप आ धारक माछ सन स्वाद नै। रमण कुमार सिंहकेँ 'फेरसँ हरियर' काव्य संग्रहपर कोनो पुरस्कार भेटल छन्हि (पुरस्कारक नाम नै लिखल छै), ओ गुलो केर हिन्दी अनुवाद कऽ रहल छथि (२८.१०.२०१८) ।

२९.१०.२०१८- चारि पेज लिखलन्हि एतबो रोज लिखि लेताह तँ एक मासमे उपन्यास तैयार (जापानी उपन्यासकार हारुकी मुराकामी प्रतिदिन बिनु नागा केने १० जापानी पन्ना लिखैत छथि- मोटामोटी १६०० शब्द) ।

नगर परिषदकेँ ऐठाम विनढम कहैत छै। अफ्रीकी अभिवादन- मुट्ठीपर मुट्ठी टकरेलक। माइकी कार्डसँ अहाँ मेट्रो, बस आ ट्राममे सफर कऽ सकैत छी। एकटा स्टेशनक अजीब नाम- एयरक्राफ्ट।

डिब्बामे एकटा मांगैबाली चढ़ल, सौम्यकेँ भेलनि जे ओ ड्रग्स केर खातिर मंगैत होयत। फेर नीचाँमे ओकरा देखलनि, सिगरेट मुँहमे दबेने अबैत, छातीकेँ मललक जेना लाइटर ताकि रहल हो.. भरिसक कामुक इशारा..।

लेखककेँ हेमोग्लोबिनक स्तर सामान्य राखक लेल मासमे एक बेर एनफो इंजेक्शन लेबऽ पड़ैत छनि।

आइ नोत अछि। विकास, प्रियंका, अभिषेक, निधि आ अश्विनी..। विकास आ अश्विनीक नोकरीपर खतरा छैक। टाटासँ निधिक मायक फोन आयल छैक।

नौआक दोकान... एकटा महिला दोकानक हिसाब-किताबमे लागल अछि। तकलक.. बुझेलै जे हम पहिनहिसँ देखि रहल छिऐ। ... ओ हमरा दिस तकलक। हम ओकरा दिस तकलिऐ। हमरा डर भेल। ओकरा की भेलै?

अफ्रीकनकेँ जँ हब्शी या ब्लैक कहबै तऽ ओ नाराज भऽ जायत। सब अफ्रीकन कारी आ लंबा होइत अछि। बहुत कम्मे एहन होइत अछि जकर गढ़नि नीक होइत अछि। ई संयोगे छिऐ जे रेस्त्राँमे महजूद अफ्रीकी युवती सुन्दर छलि।

सौम्यक मित्र जसवंत सिंह, बियाह ईसाइ एंजेलीनासँ। धर्म परिवर्तन केर कोनो चक्कर नै, यज्ञो हेतै आ चर्चमे प्रार्थना सेहो।

सौम्य आ मधु स्नोरकेलिंग..स्कूबा... दुनूमे भाग लै छथि। रीफक दर्शन, बोटक पेनीमे शीसा लागल छै।

जेस टिया आ बेकी बॉलडॉक.. एक दोसरसँ गला मिलैत छी। आरम्भ जेस टिया करैत अछि। बेकी के आलिंगनमे एकटा चुम्बकीय तरंग छैक।

फ्रॉग्स रेस्त्राँमे घड़ियाल के माउस खा सकैत छी। कंगारू के खाल कीनि सकैत छी। आस्ट्रेलियाई आदिवासीकेँ प्राचीन डिजेरिडू वाद्य बजबैत सुनि सकैत छी।

एतऽ अपनेसँ पेट्रोल भरय पड़ैत छैक।

आइ पहिल दिन पोर्क (सुग्गरक माउस) खा रहल छी।

पैंग्विन पैरेड...

भोरे केदार के मैसेज देखलहुँ। डी एम साहेब गप्प करऽ चाहैत छह।... हुनका खाली जिज्ञासा रहनि जे मेलबर्नमे कोना छी। हमहूँ निश्चिन्त भेलहुँ।

देखलिऐ दूटा लड़की एक दोसरकेँ कसिकऽ पकड़ने चुम्मा-चाटी लऽ रहल अछि। बुझाइ-ए लेस्बियन अछि। आस्ट्रेलियामे समलैंगिकता वैध छै। गे गे संगे आ लेस्बियन लेस्बियन संगे विवाहो कऽ सकैत अछि।

अंकुर आयल छथि। ओ मधु संगे पढ़ै छलाह।

दूटा जनानी डिब्बामे चढ़लि। मधु बतेलथि ई सभ रेभलर्स अछि। निशां वला सुइया लऽ कऽ मस्ती करैत रहैत अछि।

दू बीत के गोलमटोल झबरा कोआला एगो ठाढ़िपर गबदी मारने बैसल अछि... आलसी जीव।

कंगारू.. सहमिलू

एमू चिड़ै.. उज्जर पेलिकन..लायर बर्ड.. तस्मानिया डेविल्स (लुप्तप्राय) ।

ऑस्ट्रेलियासँ कुआलालम्पुर फेर होची मिन्ह सिटी। एक करोड़ जनसंख्या बला शहरमे ७० लाख दुपहिया।

दक्षिण वियतनाम, मैकोंग नदी। पहिल बेर धानक कटनी मशीनसँ देखलिऐ। वियतनाममे साँपो, कुकुड़ो खाइत छैक। कुत्ता के माउंस पुंसत्व बढ़बैत छै से ओतऽ विश्वास छै।

वियतनाममे महाप्रकाश बड्ड मोन पड़ि रहल अछि..

सिटी टूर, चीनी पगोडा, जकरा बाल बच्चा नै होइ छै से चिड़ै कीनि कऽ उड़ा दैत छै। मधु एकटा चिड़ै कीनि कऽ उड़ा दैत छथि।

होची मिन्ह सिटीसँ हनोइ, उत्तरी वियतनाम। ओतुक्का नदी रेड रीवर।

मधु के सखी रुचि आ पति गौरव ओतऽ भेटलन्हि।

यात्रा वृत्तान्तबला नोटबुक हेरा जाइ छन्हि फेर भेट जाइ छन्हि।

रुचि ब्राह्मण छथि आइ. ए. एस. ऑफिसरक बेटी, गौरव राजपूत। प्रेम विवाह केने छथि। रुचिक पिता ऐ विवाहक घोर विरोध केलनि।

कठपुतली, कखनो सोंसि तऽ कखनो बोच बनैत अछि।

रुचि संगे विदाइ के आलिंगन होइत अछि।

कम्बोडिया अंगकोर वात हिन्दू आ बौद्ध धर्मक सम्मिश्रण अछि। भाइ योगेन्द्र पाठक वियोगी अंगकोर वातक बहुत सूक्ष्म आ विस्तृत अन्वेषण कयने छथि।

पब स्ट्रीट के चौराहा.. पैंतीस सालक आदमी.. वांट गर्ल सर? थर्टी डालर फॉर वन आवर। सिक्सटी डालर फॉर वन नाइट।.. नो आइ डोंट वांट। स्पेनिश महिला.. उनोस, दोस, त्रेस... (एक दू तीन)

पुछलिऐ- दोंदे भिभा उस्तेद (अहाँ कतय रहैत छी?)

कहलक- एसपान्या (स्पेन) ।

..रातिमे तरल बेंग चिखैत छी।

बैंकाक, सुवर्णभूमि एयरपोर्ट.. बीचमे समुद्र मंथन के बिम्ब ठाढ़ करैत मूर्ति.. हिन्दीओमे चेतावनी लिखल छै.. कोई टिप्स नहीं। बैंकाकक लम्बा वात अरुण मन्दिर।

पटाया.. कृशकाय जर्जर बुद्ध.. बुद्धक एहेन मूर्ति नै देखने छलिऐक। रातिमे एक बजे मुम्बई पहुँचब। सम्राट रिसीव करताह। [०४.०१.२०१९]

परिशिष्ट- अंडमान डायरी

सितम्बर २०१२- माझिल बालक संजय सपत्नीक पोर्ट ब्लेयर जा रहल छथि, बजेलथि। हम सहरसासँ ओ मुम्बईसँ, पोर्टब्लेयर एयरपोर्टपर भेंट होयत।

टैस्की लऽ कऽ अन्नादुर्रै ठाढ़ अछि, ओ चेन्नैमे घर बना रहल अछि, ओकरा होइ छै अंडमान कहियो समुद्रमे डूबि जेतै। ओकर राँचीक ड्राइवर बादमे अबै छै उदय। पोर्टब्लेयरमे राँची नाम्ना एकटा मोहल्ले छै। अंडमानमे सभसँ बेशी बंगाली अछि फेर तमिल।

नॉर्थ बे, बिसटकही नोट पर जे फोटो छपैत छैक से अही टापूक पहाड़ आ जंगल के। एतऽ स्नोरकेलिंग, स्कूबा डाइविंग, स्पीड बोट सभ छै। कोरल रीफ छै। ग्लासबोट (पेनीमे ग्लास) बैसल-बैसल सागरक जीवन देखि सकै छी।

जॉली ब्वायमे प्लास्टिक प्रतिबन्धित छै।

बरटंग जारवा अदिवासी। मित्र लल्लन (विनय कुमार झा, आइ. ए. एस.) बहुत जोर देने रहथि, जारवाकेँ जरूर देखिहेँ।

हैवलॉक आइलैंड।

मडर

साहित्यप्रेमी सम्राट आ नेहा लेल सपर्पित ई पोथी पुरुष-स्त्री सम्बन्ध आ पुरुष प्रतिनायक मदनक संदेह केना ओकरा हत्यारा बना दै छै, तइपर आधारित अछि। फेर अपराधी बैकग्राउण्डक सम्बन्धी ओकरा शरण दै छै, से मदनक दुरुपयोग कएल जेतै ओइ सम्भावना आ मदनक मानसिक उद्वेलनक संगे उपन्यास खतम होइत अछि।

मदनक पत्नी राधा सिलाइ-फड़ाइ कऽ कय घर चला रहलि अछि। ओकर बड़की बेटी शनिचरी शनि दिन जनमल रहै। मुदा ओकर कत्तौ पता नै, गम्हरियाबालीक ब्लाउज सिया गेल छै, से दऽ अबितै तँ बीस टाका भेटितिऐ आ चाउर-अल्हू बेसाहि कऽ लऽ अनैत। अपने जायत तँ मदन जँ देखि लेलकै तँ ओदबाद कऽ देतै, ओ राधाकेँ कत्तौ जाय नै दै छै। ओकर माथामे संदेहक कीड़ा घुरघुराइत रहै छै।

मुदा पहिने एना नै रहै, मदन तकतान करैत रहै जे राधाक तेल-साबुन सठलै कि छै। ओकर बाप कामेसर आजाद अपन जमानाक इण्टर पास। बाप-पित्ती जरे रहै, पचास-साठि बिगहाक जोतदार। मुदा मुदा कामेसरक पित्तीक मृत्युक बाद भिन-भिनाउज आ कामेसरक हिस्सामे पाँच बीघा जमीन पड़लै, दू-बेटा, दू बेटी आ अपने दू परानी। सामाजिक काज रोगीक इलाजमे कामेसरकेँ बड मोन लागै। दुनू बेटा जेना-तेना बी. ए. केलक। मदन बम्बइ भागि गेल, ओतऽ राधा मोन पड़ै। ओतऽ बड्ड खटनी से घुरि आयल, राधा नैहर चलि गेल रहै। ओ सासुर गेल, राधा सिनेमा देखऽ गेल रहै, ओकर जेठका साढ़ू संगे आ अत्तैसँ संदेह शुरू भेलै।

राधाकेँ विदागरी करा कऽ कामेसर आनलक। शनिचरी भेलै, करमू भेलै। मुदा मदनक संदेह कम नै भेलै, पहरा आ मारि-पीट शुरू।

मदन आ किशोर दुनू भाय भिन्न भाय गेल। कलममे आड़ापर एकटा शीसोक गाछ सूखि गेलै, ओकर दाम-छाप केलक मुदा किशोर अड़ंगा लगा देलक, गहिकी भड़कि गेलै। फेर बिकेलै।

मदन आ कमलामे मारि बझलै, मदन ओकर कान काटि पड़ा गेल। कमला केस काय देलकै, कामेसर २-३ सय टाका दय पुलिसकेँ शान्त केलक। पीसा मदनकेँ टेम्पो जोगार काय देलकै, पिपरासँ सिपौल आ सिपौलसँ पिपरा चलबऽ लागल। कामेसर राधाकेँ विदागरी करा कऽ आनि देलक मुदा माय ओकरा लेसि देलकै- “ओकरा सैंत, नै तँ नाक कटा देतौ। “फेर मारि-पीट आ राधा नैहर तिनटोलिया चलि जाइए। राधा के पएर भारी रहै।

मैट्रिक पास केला पर राधा इंटर मे नाम लिखेने रहय। तकर परीक्षा के फारम भराइ छै। ओकर सखी सासुर सए अही खातिर आयल छै। कौलेज राघोपुर मे छै। राधा फारम भरइ-ए..

एकटा एहनो समय रहइ जे ... मदन ओकरा निर्वस्त्र काए दइ। .. अइ सए बढ़ि कए और कोनो आनन्द जीवन मे नइँ छै। लेकिन आब नइँ। आब तकलीफ होइ छै। राधा कए होइत रहै कतहु भागि-पड़ा जाय। ककरो संगे उढ़रि जाय। अशोक.. ओकर आँखि मे अपना लेल सिनेह देख इ-ए।... राधा कए शनिचरी मोन पड़ै छै। करमू मोन पड़ै छै। कोर के दुधपीवा बच्चा कय की हेतै?

राधा कए कैक टा लड़का मोन पड़ैत छै जे ओकरा चाहैत रहइ।.. बेर तोड़इ, जिलेबी तोड़इ, आम दइ जामुन दइ।.. ने कहियो देह मे सटइ।... करजइन वला अपन बहनोइयो...। मिठबोलिया छै। एक बेर जाड़ मे नेपाल सए बड़ सुन्नर कनटोपी आनने रहइ।

इंटर के रिजल्ट निकललै। राधा कए इंटरो मे फस्ट डिविजन भेलै (माने मैट्रिकोमे फस्ट डिवीजन भेल रहै) । राधा के ससुरारि पथरेमे महावीर के घर सए थोड़े हटि कए छै। पथरा के दू टा लड़की इंटर के परीक्षा देने रहइ। मगर ककरो फस्ट डिवीजन नै भेलइ। महावीर के फस्ट डिवीजन भेलै, पथरा पंचायत के प्राइमरी इसकूलमे मास्टरी लए दरखास देत। मुखिया कहलकै हाकिमके कने पैसा-तैसा दिअ पड़तै, जँ ४-५ हजार लगतै तँ पनरह सौ मानदेय भेटतै, ३-४ महीनामे टका ऊपर भाए जेतै। ओ तिनटोलिया अपन बहीन के विदाइ करबय आयल-ए। महावीर ओकरा कहलकइ जँ दरखास देत तए राधा कए पथरा इसकूल मे मास्टरी भेट जेतइ। ससुरो समाद पठेने रहइ। राधा कए अपनो मोन रहइ।

इंटर के परीक्षा खतम होइते राधा कए एगो बेटी भेल रहइ।

राधा नौकरी धाए लेलक। आब मदन गारि-मारि बिसरि गेल रहय। महावीर कए ओही इसकूल मे नौकरी भेट गेलै। रेखा सेहो ओतहि आबि गेलै, ऊ राधाक बहिना रहय, ओकरो ससुरारि पथरे रहइ।

मुदा मानदेयक खोज पुछारीक बहन्ने मदन राधाक पहरेदारी करय। ..एगो रघुनाथ सहनी रहइ। ऊ सब कए कहने घुरइ- गोढ़नीक कोनो बिसबास नै!.. रघुनाथ निछच्छ बताह रहइ। मदन बताह नै छै। ...नोकरी छोड़बा देलकै। राधा घर बैठ गेल। मदन ममहर गेल मदति लेल मुदा पान सय टाका भेटलै। मास्टरक मानदेय बढ़ि कऽ चारि हजार भऽ गेलै। राधा बेसी पछताय लागल। फेरसँ नोकरी भऽ जाइ, महावीर कहलकै हेडमास्टर आ मुखिया सऽ भेँट करइ लेल, हेडमास्टर कहलकै मुखिया सऽ भेँट करइ लेल। कामेसर मुखिया लग गेल, मुदा मुखिया साफ नकारि गेलै कारण बहुत दिन भाए गेलै।

मदन महावीर सऽ राधाक भेँटपर शंकालु होइ छै। कामेसर चरचित लैत रहै छै। की घटलइ, कोन दुख तकलीफ छै। ससुर संगे ओ किए खुसुर-फुसुर करैए, मदन पु छै छै। राधाकेँ दुख होइ छै।

मदन बहीन लग गेल। बहनोइ राजकुमार इंटर कौलेज मे पढ़बइ छै। दरमाहा नै भेटै छै। लेकिन टीसन खूब चलै छै। बहनोइ पुछलकै- कनियाँ कए नौकरी किए छोड़ाय देलिऐ?.. अहाँ बलौ संदेह करइ छिऐ।

मदन चैल देलक। घर पहुँचल.. राधा.. मटिया तेल ढारि कए देह मे आगि लगाय लेने रहइ। कामेसर जे राधा के सेवा केलकइ.. दुनू मे जरूर कोनो लटपट छै।

मदन बहीन लग जाइत रहय तए राधा भनभनाइत रहय- ससुरो-भैंसुर कए नै छोड़लक।.. आगि लगा लेब...

.. कामेसर छौंड़ा कए लाए जाइ छै। .. राधा लेल टॉनिक कीनै छै। ओकर बाप ओइ दुनू लए एतेक चिन्ता.. मदन सोचैत रहइ-ए। ओकर संदेह पक्का भेल जाइ छै।

राधा कहइ छै- पिपराही वाली दीदी सए चाउर लाए ने आबौ।

दीदी पाँच किलो चाउर देलकै.. मदन कए रीस उठलै। अपन चाउर राख..

खाली ई मौगी केलक। बुढ़बा भतार लग सूतइ खातिर बैलाय देलक।.. बापक हाथमे दबिया देखि शनिचरी कए डर भेलै- माय कए नै मारहक हौ पप्पा।.. राधाक गरदनि कटि गेलै।

मदन निकलि गेल। रामपुरमे मदन के मामक ससुरारि छै। ममा के मझिला सार तए अपराधी सभक सरदार छिऐ। ऊ ममाक जेठका सार लग गेल जेठका के कनियाँ डरि गेलै। मझिला ओत्तहि रहइ। बाजलै- एकरा हम राखबै। पड़ल-पड़ल कखनू आँखि लागि गेलइ। राधा फेर आयल छै। उज्जर नूआँ पहिरने। गला मे खूँट लपेटने।

निन्न टूटि गेलइ। राधा कतौ नइँ छै। लेकिन ओकरा बुझाइ छइ राधा सामने ठाढ़ छै।

भोट

भोटमे लेखक- प्रोटैगोनिस्ट (सूत्रधार) केँ भातिज (ओ प्रोटैगोनिस्टक भातिज छथिन्ह तकर खुलासा बादमे होइए) यदुवंश्, जे बहुत पहिने एमेले एक बेर भेल रहय (एकरो चर्चा बादमे छै) केँ लोक विधायकजी कहै छै, केर फोन अबैत छन्हि। प्रोटैगोनिस्ट सुभाष जी क नीक लोकमे गिनती छन्हि से ओ हिनकासँ सहायता मांगैत छन्हि। करिहो पहुँचै छथि। राजद नेता राजिनदर कहै छन्हि जे सबहक ऐठाम एक-एक कप चाह पीबि लेता तहीमे बेड़ा पार।

एमेले चुनावमे राजद, जदयू आ कांगरेस पाटी के गठबंधन छै। यदुवंश कुमार यादव पिपरा विधान सभासँ उम्मेदवार छिऐ, ई राजद के हिस्सामे पड़ल छै। करिहो पहिने सुपौलमे पड़ैत रहइ। अइ बेर काइट कए पिपरा विधान सभामे दाए देलकइए, विजेनदर यादव एतऽ सऽ जितैत रहइ, तैं एतौका बेसी भोटर जदयू के छै। राजिनदर यादव एतऽ सऽ मुखिया के एलेक्शन लड़ल रहय। जीत नै सकल, मुदा योग्य आदमी छै, गएर सरकारी कौलेजमे नाम छै, मासमे दू-चारि दिन कौलेज जाइए आ हाजरी बना कऽ चैल आबइए। जहिया कहियो अनुदान आबै छै तए थोड़े आमदनी भाए जाइ छै। लाट बना कऽ सभ घूमैए। प्रोटैगोनिस्ट सेहो सङमे घूमै छथि। हरदी के परोग्राम बनत तऽ प्रोटैगोनिस्ट कामता (जदयू) संगे निकलि जेता, मुदा ने दीना पाठक (जदयू) केँ किछु पता छै ने एकटा आन कांगरेसीये केँ। प्रोटैगोनिस्ट कामताकेँ कहै छथि जे ऐ तरहेँ सोचलासँ राजद, जदयू आ कांगरेसक गठबन्धन कमजोर भऽ जेतै। कामता हरदी जाइले तैयार भऽ जाइए। फेर हरदासँ करिहो। एलेक्शनक परचारक प्रोटैगोनिस्टक ई पहिल अनुभव छन्हि। यदुवंश कहै छन्हि जे पैसा नइ अय। प्रोटैगोनिस्टकेँ ई चिन्तित करै छन्हि। बिनु पाइक चुनाव केना लड़त? प्रोटैगोनिस्ट कतेक चन्दा दऽ सकतिन्ह ५-१० हजार, ओइसँ तँ नीक जे परचारमे ओत्तेक खर्च कऽ देथि, चाह-पानमे की कोनो कम खर्च होइ छै! सोचै छथि जे करिहोक खर्चाक भार उठा लेथि, मुदा

फेर होइ छन्हि जे नै जानि कत्ते खर्च हेतइ। प्रोटैगोनिस्ट आ कामता सुपौलमे पढ़ैत रहथि आ यदुवंश रफीगंजमे, तकर एकटा खिस्सा प्रोटैगोनिस्ट सुनबै छथि, कामताक साइकिलसँ प्रोटैगोनिस्ट आ यदुवंश एकडारा गेलथि ओत्तऽ साइकिल चोरि भऽ गेलै, कामता यदुवंशकेँ मोन पाड़ैत अछि, यदुवंश आब ओकरे क्षेत्रक एमेले बनतै, एक दोसर के बेगरता पड़तै। मुदा पाटी लाए कए दूरी छै, शीर्ष नेता सभ समझौता कऽ लेलकै मुदा एतेक दिनक कटुता तुरन्ते भाफ जकाँ केना उड़ि जेतै? बिन्दुलाल दास मखौलिया अय। खिस्सा सुनबै छै, चाह दोकानबलाक नाम बीडियो छै, घूस जे लेलकै, से ससपेन भाए गेलै। तहिया सए चाह बेचइ छै। सभ भभारो हँसलै, बीडियो मिडिलो पास नइ-ए। बीडियोसँ प्रोटैगोनिस्ट पू छै छथि, ओ ककरा भोट देत, मुदा ओ टेढ़ जबाब दइ छन्हि- ककरा देबै आ ककरा नै देबै, से तोरा कहि कए! बीजेपी के कंडीडेट विश्वमोहन छिऐ, एक बेर एमपी भएल रहइ, दोसर बेरा हारि गेलै, एतुक्क एमेले ओकर कनियाँ सुजाता छिऐ। विश्वमोहन कीयट छिऐ। एक बेर दिलेसर कामत जीतल रहै, ओहो कीयटे रहइ। ओना सोशलिस्ट पाटी के नेता विनायक यादवक जमाइ दीनबन्धु यादव सेहो एक बेर जीतल छै। पिपरामे कीयट के जनसंख्या बेशी छै। दोसर नम्बरपर धानुक आ तेसर नम्बरपर जादव छै। धानुक जातिके अपन कोनो कंडीडेट नै छै, से ओकर भोट बँटतै, चौधरी भेलै बनियाँ आ बीजेपी भेलै बनियां पाटी, ऊ बीजेपी छोड़ि कतय जेतै? हँ पाइ पर कियो ढ़ूइल जाइ तँ.. समाजवादी पाटी के कंडीडेट सत्यनारायण गुप्ता, ऊ तेली छिऐ, तेली के बेसी भोट ओकरे जेतै। वामपंथी के उमेदवार नागेसर यादवक कोनो चरचा नै छै। मुसलमान बीजेपी सए भड़कै छै, ऊ सब छेहा गठबंधन के भोटर छिऐ। तहिना बाभन गठबंधन सए भड़कै छै। सुखदेव बीजेपी मे छै, ओना ओकर उमेदवार सए जनता नराज छै। शिवजीक चाहक दोकान छै, नै नीक चाह बनबै छै, निशांमे रहै छै, परधानमंतरी तक के गारि दै छै, प्रोटैगोनिस्टकेँ कहै छन्हि खरचा करै ले- तोरे कोन कमी छह! ओकर बेटी लछमी जीन्स आ टॉप पिन्हइ छै। लिट्टी चाह बनबइ आ गैंहकी सम्हारइमे ओस्ताज भाए गेल छै। प्रोटैगोनिस्टकेँ शिवजी लछमीसँ पढ़ाइक टेस्ट करबैत अछि, प्रोटैगोनिस्ट पू छै छथिन्ह पुष्प माने की? उत्तर- फूल। शिवजी, बेटी पढ़ैमे तेज छौ! प्रोटैगोनिस्ट कंडीडेट संगे अपन सम्बन्ध सभकेँ बता देनहि छथि, ता बात पसरइ छै, दस दिनुका बाद फेर एता। घरनी कहै छथिन्ह- घुचघुच जाय कए की हेतै। अहाँ के कहने लोग भोट दाए देतै? दाइ सकइए। सौ-पचास भोट के फरक पड़तै। तए फैदा हेतै यदुवंश कए। अहाँ कए यदुवंश की देत?.. अपन काम करतै तए दू गो पैसो हेतै। परचार केने सए पेट भरतै? सब कुइछ पैसे नै ने छिऐ। नै छिऐ तए जाउ। ओनही बैठल रहब।.. आइ हम नै काम देबै तए काइल्ह ऊ हमरा काम देतै? जे मन होइ-ए सएह करू- घरनी आजिज भेल कहइए।

यदुवंश नामांकन दाखिल केलक। प्रभास प्रभारी छिऐ। चुनाव लगिचा गेलै, प्रोटैगोनिस्ट करिहो पहुँचै छथि। कामता मंत्रीजी के परचार करय गेल अय, ओ ओकर पाटी जदयू के उमेदवार छिऐ, क्षेत्र बदैल गेलै, लेकिन पाटी तए नै बदललै। बिन्दू मास्टरी करइए। पराइविट। .. पचास टके मेहीना। .. कोय दइ छइ, कोय नइ दइ छइ। .. जैह भेटल, सैह लाए लेलक। चाउरे देबें, दूधे देबें, जरने देबें..। एक बेर ऊ पंचायत समिति के सदस्य भेल। मुखिया कए कहि कए पब्लिक के कोनो-कोनो काम.. इनरा आवास तए ककरो बिरधा पिलसिन। काम भए गेला पर.. कोय दस, कोय बीस।.. लेकिन अगिला चुनाव जातीय गोलबन्दी के ओजह सए हाइर गेल।

मन्नू.. मालजाल के पैकारी करइ-ए। खाली खरचा-पाइन के इंतजाम केने जाहक.. मन्नू हमरा मुल्हा तए ने बूझ्झ रहल अय। मन्नू भाय, पहिने चुनाव कते चिक्कन आ शान्त होइत रहइ।.. आब स्वार्थ के उठा पटक छै।

आइ सभक टारगेट मुसहरी आ डोमराही रहै। करिहोमे मुसहर के दूटा घनगर टोल छै।.. सटले डोमराहियो छै।.. सब भोटर के दुआर पर जाउ।.. हमरो भेलू देलक। हमरो पुछलक। करिहो के दुनू टोल आ बगहीओ के मुसहरी धांगलिऐ।.. साँझ पैड़ गेलै।.. चंदेसरी चाह-पान के पैसा तए हमरा सए लेबे केलक; मुसहरी के एगो नेता खातिर सौ टका और लेलक।.. नीतीश कुमार भोटर के नाम जे अपील केने छै से, सात निश्चय बला घोषणा-पत्र, बैलेट पेपर के नमूना आ कलेंडर लाए कए निकलै छी।.. भाइजी गड्डी के गड्डी आनने छह।.. हम अपन आटा गील काए रहल छी।.. महिला कए ठीक सए बुझाबहक। कहिहक नीतीश आ लालू मिल गेलै। दुनू एक भाए गेलै। अइ बेर एतय तीर के निशान नै रहतै। लालटेम रहतै।.. अइ बेर लालटेमो मे देबहक तए नीतीशे जिततै। पुछलक- नीतीश मुखमंतरी बनतै ने? महिला खातिर बहुत कुइछ केलकइए। जनीजाति नीतीश के कट्टर समर्थक छै।

सफीना आयल हइ!- जमील सुनबइए। सफीना केहन-केहन के आँड़ गलाय दइ छै। फेर सफीनाक एकटा खिस्सा।.. मुखियोमे ठाढ़ भेल। लोक चिन्हलकै। चंदेसरी सफीना के भक्त रहय, संगे घूमइमे चंदेसरी कए खूब मन लागइ। ओकरा भोट के देतै! चंदेसरी सोचइए.. कहिया काम पर भोट देतै? सफीना बेसी पढ़ल लिखल नै छै, फोकानियां पास छै,..।

विश्वमोहन के घर कटैये छै। ओतय पान सय टका भेटै छै। संजय आ जयप्रकाश दुनू बीजेपी के समर्थक छिऐ। अखबारमे रोज समाचार.. गड्डी के नोट आ शराब के बोतल पकड़ल जाइ छै। गगना- दारू आ माँस चलै छै। बीजेपी जितले छै।

सिपौल.. राहुल गाँधी के भाषण रहइ। पूरा गांधी मैदान भरल रहइ.. कहलकइ मोदी चोर छइ.. दंगा करबै छै, हिन्नू-मुसलमान कए लड़बै छै।.. गठबंधने जिततै। समाजवादी पाटी.. सत्यनारायण साह.. कामता खौंझाइए.. भोटकटुआ.. विश्वमोहनो के झाड़लक कामता.. जदयू.. फेर राजद.. कहियो बीजेपी कहियो बंगला छाप.. नीतीश महिला लए बड्ड काज केलकै, सौ मे तैंतीस टा सीट, साइकिल देलकै।

पाठक टोल के छै.. परचा घुराय देलक। लालटेन नै, कमल। हम- लालटेम। ऊ- कमल। कमल।

मोदी की कहलकइ। लालू कए बदनाम करइ वला बात। अपहरण, बलात्कार आ हत्या.. साँझ पड़ैत लोग घर मे बन्न.. लोक मोदी आ लालू के नकल करइ छै।

.. बीजेपी जिततै तए रिजरभेसन खतम काए देतै।.. समीक्षा हेबाक चाही से गप मोहन भागवत बाजलइए।.. मतलब एक्के.. मंडल के विरोध मे कमंडल..।

एमेलसी हारुण रशीद- बाभन के जनसंख्या कते? दूइए-अढ़ाइ परसेंट ने? आ नौकरी मे.. सगरे तए वएह छै!

चंदेसरी.. सफीना बेसी गोर भाए गेल छै.. सब पाटी पैसा लै छै, तब टिकट दै छै। ओकरा लेट भाए गेलै। ताधैर टिकट बिक गेल रहइ।.. चंदेसरी.. सफीना के अंग-अंग निहारय लागल।.. बीजेपी मुसलमान कए भगबय चाहय छै। मुसलमान डरल छै- सफीना कहलकइ।.. जेना हिटलर यहूदी कए कतल केलकै, तहिना मोदियो मियाँ कए काइट देतै।.. अइ देस मे गिद्ध उड़तै।

बीजेपी अनधुन खरचा काए रहलइए।..जमील.. मोदी तए एक नम्मर के झुट्ठा छै! रामधन बात लोकइ छै।

आइ परभास आयल रहइ। बूथ-खरचा के सात हजार टका दाए गेलइ। दूटा बूथ छै।

राम मन्दिर तए बीजेपीए बनेतै।.. चुनलकै से मंदिरे बनबै लए?.. हम मोदिए कए भोट देबै।.. पकिया अंधभक्त..

सूर्यनारायण कौमनिस्ट.. नीतीश गनगुआइर छिऐ.. एगो मुँह भाजपा.. दोसर राजद।

कमल दास बीजेपी समर्थक छिऐ। ..छप्पन इंच के छाती.. पाकिस्तान कतौ भारत मे ठठलइए!... चीन के लगही भाए जेतै.. रामदेव के गप पर सब हँसइए।

भोट खातिर मोदी पाकिस्तान पर हमलो काए सकइए। .. बीजेपी लड़ाइ किए करतइ? हिन्दुए खातिर ने करतै?.. मुसलमान के पाकिस्तान भेजल जाए। लाल पाठक विस्फोट केलकै।.. राष्ट्रवादी लाल तए आइबिए गेलु! आब मनुवादिए टा के कमी छै। दीना पाठक.. मोदी पर भ्रष्टाचार के आरोप नै लागल.. मोदी तए महाभ्रष्टाचारी छै। सुधीर चाह दहक- कामता के ई उदारता माहौल कए एकदम बदैल देलकै।

परचार खतम भाए गेलइ।.. शान्त.. सब चीज भुम्हूर जकाँ तरेतर सुनगै छै।

लोग एक घण्टा पहिनइ लाइन मे लागय लागल। बेचना ककही दाए कए महिला भोटर पटियाबैत रहइ, सिपौल बजार मे पोलिंग कम भाए रहलइए। ई समाचार बीजेपी समर्थक कए चिन्तित केलकइ। शहरमे कमल के भोटर बेसी छै।

सफीना भोट गिरबै लए आयल छै। .. काइल्ह एबह- कहि कए चंदेसरी निकैल गेल। सफीना मुस्कुरायल। बिहान भने चंदेसरी नवटोल गेल। सफीना संगे चुनाव के गप होइत रहलै।.. भाजपा कहै छै हम जितबै। गठबंधन कहै छै हम जितबै। आब जे होइ। सफीना दू-तीन दिन मे दिल्ली चैल जायत। चंदेसरी पुछलकै- एबहक कहिया? सफीना बाजलै- भाजपाई रोज नया-नया काण्ड करै छै।.. चंदेसरी- एना हीया हारने जिनगी चलतह? सफीना छगुनैत रहल.. लड़ैत-लड़ैत मैर गेनाइ नीक छै।.. मरनाइए, जिनाइ छिऐ।

घरदेखिया, राजकमल मोनोग्राफ (नित नवल राजकमल), बनैत बिगड़ैत, गुलो, रमता जोगी, मडर आ भोटक पुनर्पाठ

ऊपर देल गेल घरदेखिया, राजकमल मोनोग्राफ (नित नवल राजकमल), बनैत बिगड़ैत, गुलो, रमता जोगी आ भोटक सैपलसँ अहाँकेँ सुभाष चन्द्र यादवक शैली, प्रतीक आ प्रतीक चिन्हक प्रयोग, सदा परिवर्तित होइत वृत्तक केन्द्र, दृश्यात्मक आ ध्वन्यात्मक चित्र ई सभ स्पष्ट भऽ गेल हएत। सलहेसक भगता सन लोकदेवता लेखकक भीतर प्रवेश करैत छन्हि आ ओ टीपऽ लगै छथि, खोंचारि कऽ सभ चीज-बौस्तु बहार आनऽ लगैत छथि, अभिलेखित करऽ लगै छथि।

तँ सुभाष चन्द्र यादवक शैली भेल भगता शैली।

मुदा घरदेखियाक महिमामे (सन् १९७५ मे लिखल) सुखदेव भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै। से भोट उपन्यास बनल २०२२ मे, १९७५ सँ २०२२ मे किछु अन्तर तँ एलै कारण प्रोटैगोनिस्ट कहै छथि भोट (२०२२ मे)- मन्नू भाय, पहिने चुनाव कते चिक्कन आ शान्त होइत रहइ।.. आब स्वार्थ के उठा पटक छै। मुदा १९७५ मे सेहो ओ कहै छथि- अछरकटुआ भऽ कऽ सुखदेव केन एत्ते कमा लै छै। भोटमे कतेक गोटे सँ टाका ठकने रहै। घरदेखियेक धुंधमे घटना (सन् १९७१ मे लिखल)' वेटिङ फॉर गोडो'(सेम्युल बेकेट) क मोन पाड़लक से कोनो पोस्टमॉडर्न उपन्यास बनि सकैए। हुनकर घरदेखियाक तर्जपर जगदीश प्रसाद मण्डल लिखलन्हि अपन तर्जक घरदेखिया। से पाठ एकटा दोसर लेखसँ सम्वाद स्थापित केलक जे उमेरमे तँ हुनके बराबरक छथिन्ह (एक साल पैघे) मुदा लेखन हुनकासँ तीस साल बाद शुरु केलन्हि।

से हुनकर पाठ काल-स्थानमे अपन पाठसँ सम्वाद करैए, तँ दोसर लेखकक पाठसँ सेहो।

सुभाषचन्द्र यादवक घरदेखिया-

लड़का हालेमे कलकत्तासँ गाम आयल छलै एखन तुरते समाद पठाकऽ मङौनाइ खर्चाक घर भऽ जेतै। लगनसँ दस दिन पहिने आबि जेतै, जिनका देखऽ के हेतै, देखि लेतै।

जगदीश प्रसाद मण्डलक घरदेखियाक ई अंश देखू-

“दुनू जोड़ धोती नागेसर आंगनसँ आनि आगूमे रखि देलकनि। धोती देखि डोमन बजलाह- ‘‘समैध, कतबो गरीब छी तैं की मुदा इज्जति बचा कऽ रखने छी। बेटीक दुआरपर कोना धोती पहिरब?’’ टाटक भुरकी देने लुखिया देखैत रहिथ। डोमनक बात सुनि दोगसँ बाजलीह-‘समैधकैं कहिअनु जे जखन बेटी आओत तखन ने बेटीक घर हेतिन, ताबे तँ हमर छी कीने। हम दैत छिअनि’ । ठहाका दैत डोमन बजलाह- ‘‘जखन हमर बेटी एहि घर आओत तखन ने ओ समधीन हेतीह आकि अखने?’’

जेना रिनियाँ अमाठी, करची, पतलो, जहिया भेटि गेलै आनैए, तहिना सुभाष चारू कातसँ तथ्य एकट्ठा करैत छथि आ आख्यान, महाआख्यान सृजित करैत छथि। से गुलोक नायक गुलो नै रिनियाँ अछि, रिनियाँसँ प्रारम्भ, रिनियाँ सँ अन्त। आ से रिनियाँ ई स्थान अपनेसँ बनेलक, लेखक ओकरा लेल एकटा सह-कलाकारक भूमिका निर्धारित केने रहथि, मुदा ओ अपन समर्पणसँ लेखककैं विवश कऽ देलक नायिका बनाबै लेल। गुलोक बेटी आ गुलोक छोटका बेटाक घरक काजक प्रति दृष्टिकोणक द्वन्द्व। छौड़ी असकरे कखून घर तऽ कखनू गाछी दौड़ैत रहइ छइ। छौड़ा आठ बजे धरि सुतले रहै छै।

मुदा फेर जखन बाँस चोरा कऽ ५०० टाकामे गुलो बेचैए तखन ओइ पाइसँ रिनियाँ पाठी कीनैए। लेखक से नै लिखै छथि जे ई वएह ५०० टका छिऐ, मुदा गुलो जइ आसानी सँ रिनियाँकैं ओ पाइ दऽ दैत अछि तइसँ रिनियाँक आत्मविश्वास सोझाँ अबैत अछि।

गुलोक बाप गुलो लेल छोड़ि गेलै छोट-पैघ खुरपी, कोदारि, खंती, दबिया, कुड़हरि, भाला, बरछी। घूर-धुँआ, छल प्रपंच, आ गुलोकैं सरकारी जमीनपर बसऽ पड़लै।

गुलोक मरलाक दुखो सभसँ बेशी रिनियैंकैं भेलै, से लेखक प्रारम्भ आ अन्त दुनूमे रिनियाँक उपस्थिति रखने छथि।

गुलोक बड़का बेटाक रोजगार लेल पनिजाब पलायन। पूरा बजार राजिनदर डीलरक समदाही इनरा गानही आ ओकर चारिटा बेटा। फेर बजारसँ बाहर आउ, बेला, बीना आ सोनक। आ तखन गुलो कैं दूटा सुपारी दूटा नोत मे आयल छै- एकटा लालो पण्डित के पोती के बियाह, दोसर सारि के जैधी के बियाह। गुलोक ससुरारि छै बेला आ ओकर पत्नीक नाम छै बेलावाली। पहिने गुलोकैं गाजा पीऐत-पीऐत दम्मा उखड़ि गेलै। चारू कात माने गाजाक नशाक व्यापार होइत हेतै। भगिनाक बियाहक नोत पुरबाक क्रम, साड़ी, साया, बिलाउज आ दू सय एकावन टाका दिअ पड़तै। ओ सोनक जाइए, छोटुआ आ रिनियां संग छै। गुलोक बड़की बेटी रुनियाँ बीनामे बियाहल छै। रुनियाँ सेहो सोझे बीनासँ आयल छै, बहीन रिनियाँकैं अपन सासुर लऽ जाय चाहै छै। मुदा ओ मना कऽ देलकै, लोक कहतै जे बाप रोगाह भऽ गेलै, दिन टगि गेलै तँ पेट पोसै लए आयल छै। ओ बड्ड कानल, गुलो कैं छगुन्ता होइ छै, छौड़ी ई सब बात केना बूझि गेलै। आ अन्तिममे बेटी रिनियांकैं पता चललै जे गुलोक मन बहुत खराप छै। ओ भोरे आबि गेल। माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक- 'माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।'

भगिनाक बियाहमे गुलो सोनक जाइए। गुलोक ओतऽ चलती छै ओतऽ ओकर बॉडी लैंगुएज बदलल छै। कनियाँ दब छै मुदा ओ डाँटि-डपटि दैए, बियाह हेतै, नै तऽ गज्जन होइतै।

कोन कोन रोजगार छै से देखाबैले उपन्यासकार पुतोहु कंदाहावालीकेँ मलहदक चाँपमे मखानक कमौनीक नव-रोजगार भेटलइ-ए, ओतऽ लऽ जाइ छथि। छोटुआ काज करैए दशरथ मण्डलक पिलाइ मिलमे। मूंगक बीया बाउग हेतै, हरवला चास, समार आ चौकी दइ के अढ़ाइ सय मांगै छै। फेर गुलोक मृत्युक प्रारम्भ एना करै छथि गुलोकेँ खोंखी होइ छै, दू सय टाकामे दू कट्ठा थोकड़ा ओलइ के बात भेलै।

पारिवारिक सम्बन्ध, वृद्धावस्थाक समस्याक विवरण देखैले सुखबा लग जाउ, ओ अपन माय कए घर सए निकालि देलक, फेर बदनामी भेलापर आपस लऽ गेल। ओ छै इनरा गानहीक पितिया सासु।

स्थानीय संस्कृति देखबैले कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब तकरा बाद कुशक कलेपो नै लगतै।

गुलो मालिकसँ टौर्च मांगत, ओ नै देतै तऽ एक्को गो आम कि लुच्ची भोग नै हुअय देत। आ एतबी नै आर देखू- बाँस डेढ़ सय सए कम मे नै भेटै छै, गुलो चोरा कए बेचत तैं एक्के सय मे दिअय पड़तै।

आ चोर सेहो छै। चोरबा सौंसे गाछक लुच्ची सिसोहि लेलकै। एकटा ठकुरबा सेनियल चोर छै। से गुलोक बाँसक चोरि आ ठकुरबाक चोरिमे अन्तर छै। गुलोक मुख्य धंधा छै चाहक दोकान, बाँसक चोरि तँ सालमे एकाध बेर मुदा ठकुरबा सेनियल चोर छै। रिनियां, झुनियां आ बरस्सेरवाली लुच्ची चोरबैए। 'ऊ बभना हमरा पकड़त? ..' (बरस्सेरवाली) से सभटा गाछी बभना लग छै।

गाछीक मालिक कियो आन छै। आदिवासी इलाकामे ओ सरकारक रहै छै आ फॉरेस्ट एक्टमे आदिवासीकेँ ओतऽ जाड़नि, महुआ, वन्य-उत्पाद बिछबाक अधिकार देल गेल छै। मुदा सिपौलमे गाछी सरकारक नै छिऐ। से एतुक्का सर्वहाराक स्थिति आरो खराप, फॉरेस्ट एक्ट एतऽ लागू नै अछि। से एक बेर रिनियाँ गछपक्कू आम लाए कए गेल रहै तऽ मालिक पचास गो टाका देने रहै। मलिकानि खाइ लए देने रहै।

दशरथ मण्डलक साढ़ूक लड़का नेपालमे छै, रिनियां लेल कथा अबै छै। मुदा गुलो चारि मासक टेम मंगैए, अरजुनमा नालायक छै मुदा तैयो ओकरासँ पुछतै। दशरथ मण्डल पाइबला छै, मुदा एक्के बेरमे गुलो हँ नै कहलकै, अरजुनमासँ पुछतै। माने संस्था वर्तमान छै।

से रिनियां तऽ लग छैहे गुलोक, पुतोहु जे झगड़ा कऽ कय गेल रहै सेहो एकदम्मे दूर नै छै, देखू एतऽ- ..कंदाहावाली पहुँच गेलइ। 'पपा, कल वला मिसतरी कए बजा आनथिन। ठीक काए देतै। जे लागतै से देबै।’

लेखक अहाँकेँदूर आ लग सभ ठाम लऽ जाइ छथि। केन्द्र कखनो गुलो रहैए, कखनो रिनियां आ कखनो कन्दाहावाली।

रमता जोगीमे सुभाष चन्द्र यादव किछु एहेन चीजक अनुभव करै छथि जे बहुत लोक आनो ठाम करैत अछि (भारतकेँ छोड़ि कऽ), जेना जेब्रा क्रॉसिगपर मनुक्खकेँ जाइत देखि गाड़ी सभक रुकि जायब, जेना सिंगापुरमे। यूरोपमे जँ अहाँ जाइ तँ सड़कक तिराहाबला कॉर्नरपर अहाँकेँ देखि दोसर गाड़ी सभ ठाढ़ भऽ जायत, अपन ऐठाम लोक अपन गाड़ी आगाँ बढ़ा लैए, ऐ आशामे जे दोसर पाछाँ आबैबला सदाशयता देखाओत। लेखक सिगरेट बहुत पीबै छथि, से हुनका ईहो बुझना गेलन्हि जे ओतय निअम छै जे पूरा बा अल्प घेराबाबला जगहपर अहाँ सिगरेट नाइ पीबि सकै छी, मुदा सार्वजनिक स्थलपर सिगरेट नै पीब आब भारतोमे स्वीकृत भऽ गेल छै, पहिने लोक ऑफिसमे सिगरेटक धुँआक छल्ला बनबैत छल आ आब जँ बाथरूमोमे नुकाकेँ पीबऽ चाहैए तँ लोक आँखि गुराड़ि कऽ देखै छै। घरदेखिया कथा संग्रहक प्रोटैगोनिस्ट सेहो खूब सिगरेट पीबैए, से सिगरेट पीबाक हिस्सक लेखकमे पुरान बुझाइत छन्हि, आ तेँ पुतोहु मधुलिका सेहो ऐ लऽ कऽ चिन्तित होइत छथिन्ह। फेर सुपौलसँ फोन अबिते रहैत छन्हि, डी. एम. गप करै छन्हि, खाली केना छथि से पु छै छन्हि तखने जा कऽ निश्चिन्त होइ छथि। माने पुलिस-प्रशासन कुशल क्षेम पुछत से अखनो लोककेँ विश्वास नै होइ छै।

घरदेखियाक’ एक दीनक घर (१९७३)’ मे मनोविश्लेषणात्मक पद्धतिक प्रयोग कएल गेल छल, घरदेखियेक’ तीर्थ (१९६९)’ मे कथाकार लिखै छथि बलबाबालीक अंगनाक खिस्सा। कोनो डाक्टर ओकरा बताहि नै कहतैक... मुदा ओ बताहि अछि।

मडर (२०२१) मे ई पद्धति विस्तार पेलक।!.. रघुनाथ निछच्छ बताह रहइ। मदन बताह नै छै। ... आ स्त्री-विमर्श, मदनक कनियाँ राधाक फर्स्ट डिविजनमे पास हएब मुदा चाहियो कऽ अपन शरीरपर अधिकार जतबैत मदनकेँ रोकि नै सकब, घुरब, नोकरी छोड़ब, मुदा ओकर हत्या। आ ओइ हत्याक प्रयासकेँ रोकबा लेल लेखक शनीचरीकेँ आगाँ करैत छथि- “माय कए नै मारहक हौ पप्पा। “लेखक मदनकेँ मुदा बेनीफट ऑफ डाउट नै दै छथि, ओ घोषित कऽ दै छथि जे मदन बताह नै छै। मुदा ओकरा शरण भेट जाइ छै, मामाक ससुरारिमे, ओ सभ दबंग छइ, मझिला सार तए अपराधी सभक सरदार छिऐ। आ ओ शरण दऽ दै छै। ओ किए शरण दै छै, पाठक बूझि जाइए, ओकरासँ अपराध करबेतै तेँ ने। से लेखक माहौल बना कऽ कथाक पाठ आ पुनर्पाठ करबा लेल पाठककेँ छोड़ि दै छथि।

आ डेरीडाक विखण्डनवाद तँ छोड़ू एतऽ खेतक विखण्डन सेहो भेल छै- मदनक बाप कामेसर आजाद अपन जमानाक इण्टर पास। बाप-पित्ती जरे रहै, पचास-साठि बिगहाक जोतदार। मुदा मुदा कामेसरक पित्तीक मृत्युक बाद भिन-भिनाउज आ कामेसरक हिस्सामे पाँच बीघा जमीन पड़लै।

आ से भाषामे सेहो हेतै। जे ठेंठी/ पचपनिया बाजै बला पनिजाबकेँ पंजाब बाजबे करत आ लिखबे करत आ केदार काननक कथित अभिजात्य वर्ग सेहो जखन डेंगू बजै छथि तँ अंग्रेजी बाजैबला ओकरा डेंगी कहि सुधार कऽ दैत छन्हि। लैटिन आ संस्कृत व्याकरण भषाकेँ स्थिर केलक मुदा आधुनिको कालमे संत ज्ञानेश्वरक मराठी ज्ञानेश्वरी पढ़ैले मराठी भाषीकेँ भाष्यक मदति लेबऽ पड़ि रहल छन्हि।

डेरीडाक विखण्डनवाद भाषाक संगे ध्वनि, इतिहास आ संस्कृतिकेँ पाठक अंग मानैत अछि।

गुलोमे अहाँकेँ लागत जे ने कियो शोषक छै ने कियो शोषित, आ से भाषासँ लागत, गुलो एक्को टा लुच्ची मालिककेँ भोग नै हुअ देतै, बाँसो काटि लेलकै आदि आदि। मुदा तखने अहाँकेँ वातावरण मोन पड़त जे सिपौल तँ फॉरेस्ट एरिया छिऐ नै आ बभना मालिक छिऐ। मुदा पलाइ मिल दशरथ मण्डलक छिऐ, चौक चौराहापर सौंसे व्यापार गएर बाभन कऽ रहल छै। बाबा कहलकै, घरपर मरछाउर छीट देने छह। जंतर देलकै, मुदा ओ कोनो काजक नै। जंतर मे ठका गेलै तमसेबो केलै, अहाँकेँ लागत जे अन्धविश्वास खतम भऽ गेलै मुदा फेर कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि। आब कुशक कलेपो नै लगतै। से संस्कृतिमे सेहो परिवर्तन भेलै, अर्थशास्त्रमे सेहो।

घरदेखियाक काठक बनल लोक अहाँ पढ़ब तँ लागत जे गुलो पढ़ि रहल छी। घरखस्सीक पाइ सरकार देतै। मडरमे देखेबे केलौं जे स्त्री विमर्श कोना राधाक इण्टरमे फेर फर्स्ट डिवीजन भेलैसँ सोझाँ आयल माने मैट्रिकोमे आयल हेतै। एक्के पाठकेँ अहा~ कएक तरहेँ पढ़ि सकै छी। गुलो मण्डलक जाति नै बतायल गेल छै, टाइटिल सँ जे अन्दाज लगेबाक हुअय लगाउ, मंडल कमीशनक मंडल यादव रहथि आ पश्चिम बंगालमे मंडल दलितमे अबैत छथि। केदार कानन गुलोक चाह दोकानपर सुभाष चन्द्र यादव जी केँ देखने छथिन्ह आ कुमार पवनक' पइठ' सभ पढ़लक मुदा हुनकर गौँआ सभ कहलक जे अहाँ सभ ओ कथा पढ़ने छी हम सभ सद्यः देखने छी, अपन गाममे घटित होइत। मडरमे तँ लेखक आरो सतर्क छथि, कामेसरक बाप पित्ती लग ५०-६० बिगहा जमीन रहै, मडर केलाक बाद मदन मामाक ससुरारि गेल, ओ सभ दबंग सभ छै। तँ गुलोक कएक तरहक पाठ भऽ सकैए आ मडरक सेहो आ सएह जेक्स डेरीडाक विखण्डनवाद कहै। दक्षिण भारतमे कतेक आदिवासी समाजक पुरोहित ब्राह्मण बनि गेला, कालीबन्दीक सेवा, भगैत, फुलहासि पुरोहित अबैत छथि, गएर ब्राह्मण हेता ब्राह्मणो भऽ सकै छथि, जे फील्डवर्क बिनु केने बजता से कहता ब्राह्मण केना गहबर आ भगता बनत, मुदा ग्राम-रुद्रपुर (भाया तुलापतगंज, जिला मधुबनी) मे गहबरक सेवा ब्राह्मण भगैत करैत छथि। मिथिलामे पसरल सतार (संथाल) समुदायमे मुर्मु पण्डित लयमे सिन्धु नदी घाटी सभ्यताक कालक ग्रन्थक बिनती पढ़ैत छथि, से संथाल समुदायक लोक अहाँकेँ बतेता। ई एकटा तरीका अछि अपन लिपि, इतिहास आ सभ्यताक पुरातनता आ निरन्तरता सिद्ध करबाक। से रहि रहि कऽ दू टा द्वन्द्व आपसमे वार्तालाप प्रारम्भ करऽ लगैत अछि, आ से स्थान, समय आ लोकक अनुसार मुदा कोनो स्थिर केन्द्रक बदलैत रहैत अछि। साहित्य, लोक संस्कृति, मौखिक परम्परा, इतिहास आ विज्ञान मिज्झर भऽ जाइत अछि।

अंग्रेजक गेलाक बाद भारतक लोक अपन इतिहास, संस्कृति आ एकर सैद्धान्तिक आधारक नव परिभाषा बनबय लगला। मुदा ऋगवैदिके कालसँ भारतमे नाराशंसीक रूपमे, आख्यानक रूपमे समानान्तर परम्परा रहल छै। मुदा मैथिलीमे सभटा स्पेस एकटा खास मानसिकताक लोक लेबऽ चाहलक। अपन अज्ञानताक भारसँ ओइ स्पेसकेँ दलमलित करऽ चाहलक। मुदा मिशेल फोकोक डिसिप्लिनरी संस्था सभक अछैत आब ओ सम्भव नै छै, आ तइ लेल अन्तर्जालक अपन महत्व छै। मुदा देखल गेल जे महिला आ वंचितक अन्तर्जालमे उपस्थिति सभ भाषायी स्पेसमे कम छै, से मैथिलीक समानान्तर धारा ओइपर बेसी काज केलक, आ आइ परिणाम सभक सोझाँ अछि। जे मूलधारा समानान्तर धाराक नोटिस नै लै छल, काने-बात नै दै छल आइ समानान्तर धारा द्वारा नोटिस लेल जयबाक आकांक्षी भऽ गेल अछि।

आ से आयल डेमोक्रेसीसँ, आ से अछि भोट आधारित। आब' भोट' पर आउ। एकरो कएक तरहक पाठ भऽ सकैए। कतेक तरहक समीकरण बनैत देखने हएब ऐ उपन्यासिकामे। कोनो केन्द्र स्थायी नै। जमीनी स्तरपर सभ एक दोसराक विरोधी मुदा ऊपरमे निर्णय किछु आरे भऽ गेल।

स्त्री विमर्श आब पलटी मारलक, मडरमे राधा फर्स्टे डिव्जन करै छली मुदा दबियासँ गरदनि उतारि देल गेल। मुदा नीतीश महिला लेल बड्ड कऽ रहल छै। फिफ्टी पर्सेंट भोट ओकर छै तँ किने। रिनियाँकेँ पोशाकक ५०० टाका भेटल रहै से अहाँ गुलो मे पढनहियै रही। आब

भोटमे ३३% रिजर्वेसन महिला लेल, साइकिल बचिया सभ लेल। आ तेँ जखन राजद, कांग्रेस आ जदयू केर महागठबंधनक कैंडीडेट ठाढ़ भेलै तँ प्रोटैगोनिस्ट कहै छथि- लालटेनो कैँ भोट देलासँ नीतिशे मुख्यमंत्री बनतै से महिला सभकेँ बतेनाइ जरूरी छै। भोट आ इलेक्शनमे लाख कमी होइ, मुदा ई सभ ५ सालपर एकटा नव सामाजिक तत्त्वकेँ हिलोड़ैत अछि आ तइसँ जे वंचित वर्ग अछि, महिला जइमे सम्मिलित अछि तकरा शक्तिशाली हेबाक अनुभव होइ छै। मुसलमान बी. जे. पी. सँ भड़कै छै, बाभन महागठबन्धनसँ भड़कै छै, बी. जे. पी. बनियाँक पार्टी छिऐ, सभ पार्टी टिकट बेचै छै, ई सभटा गप पिपराक चाहोक दोकानप होइ छै आ दिल्लीक लुटयन्स जोनमे सेहो।' चिल्लर पार्टी' फिल्मक ओइ बाल मजदूरक गप मोन पड़ि गेल जे कहैत अछि- सभकेँ सिखायल जाइ छै जे झूठ नै बाजू आदि आदि, मुदा पैघ होइए तँ सभ झूठ बाजैए आदि आदि, तखन की फर्क पड़लै साब जे क्यो पढ़लक आ कियो नै पढ़लक!

गुलो: कला आ भाषा

' गुलो: कला आ भाषा' सम्पादित केने छथि नव-ब्राह्मणवादी तारानन्द वियोगी आ ब्राह्मणवादी केदार कानन, दुनू साहित्य अकादेमीसँ पुरस्कृत आ मोटगर-मोटगर असाइनमेण्ट प्राप्त।

आ तेँ पचपनिया बा ठेंठी लिखनिहार एकोटा व्यक्तिकेँ ऐ पोथीक आलेख लिखबा लेल निमंत्रित नै कएल गेल कारण ओ सभ समानान्तर धारासँ छथि जे सम्पादक द्वयक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी दुनुक काल अछि आ तेँ दुनू विचारधाराक लोक आपसमे तँ गारा-गारी करै छथि मुदा समानान्तर धाराक बेरमे मिलि जाइ छथि, आ तेँ ई भतबरी (ई आगाँ जा कऽ आर स्पष्ट कएल जायत) ।

६७ पन्नाक' गुलो' मे ९ पन्नाक आमुख लिखने रहथि केदार कानन (आखिरी विपन्न मनुक्खक गाथा), आब से भार' गुलो: कला आ भाषा' मे तारानन्द वियोगीक कान्हपर छन्हि (५ पन्नाक भूमिका) । सुभाष चन्द्र यादवक अनुसार तारानन्द वियोगीक विचारधारा (आइडियोलोजी) मे स्थिरता नै छै, मुदा हमरा विचारे हुनकर आइडियोलोजी स्थिर छन्हि, आ से छन्हि वएह केदार काननक ब्लैकमेलिंग बला। ब्राह्मणवादी संस्था सभमे बहुत रास दुर्गुण छै, आ सएह ओकरा सभकेँ ब्लैकमेलिंग लेल वलनरेबल बनबै छै। कोनो ब्राह्मणवादी संस्था नै अछि जकरा तारानन्द वियोगी दू-चारि मासपर गरियाबै नै छथिन्ह आ सम्मान भेटलापर फेर ढाकीक ढाकी प्रशंसा नै करैत छथिन्ह। उदाहरण स्वरूप चेतना समिति आ साहित्य अकादेमीक उदाहरण देल जा रहल अछि। ओ एकठाम लिखै छथि-' ब्राह्मणवादक जन्मदाता भने ब्राह्मण होथि मुदा एकर गछाड़ मे पचपनियां सेहो छथि, दलित सेहो। ने तं ई कोना होइतय जे दू सौ के करीब संख्या मे दलित-पचपनियां लोकनि मैथिली मे लिखैत ठीक-ठीक वैह बात, ओही भंगिमा मे लिखि रहला अछि जे ब्राह्मणवादक इष्टसिद्धि मे साधक छैक। एहन दलित लोक कें अहां ब्राह्मणसभा मे अध्यक्षता करैत सेहो देखि सकै छियनि, सम्मान पबैत सेहो।' आ अहाँकेँ लागत जे ई सभ गप ओ अपनेपर लिखि रहल छथि, हुनकर भाषा, हुनकर साहित्य, हुनकर विषय-वस्तु, हुनकर कथित गजल सभ, छल-प्रपंच, पुरस्कार लोलुपता, व्यवहार सभ विशुद्ध ब्राह्मणवादी अछि, हुनके ब्राह्मणवादी संस्थाक सभामे अध्यक्षता करैत सभ देखै छन्हि, आ सम्मान पबैत सेहो।

मुदा सुभाष चन्द्र यादव अड़ल रहलाह। कारण हुनकर एकटा आइडियोलोजी छन्हि।

' गुलो: कला आ भाषा' क ५ पन्नाक भूमिका सेहो गुलोक समीक्षाकेँ आगाँ नै बढ़बैत अछि वरन् ओ ब्राह्मणवादी संस्था सभक ब्लैकमेलिंगक एजेण्डाकेँ आगाँ बढ़बैत अछि, आ ऐ बेर हुनकर लक्ष्य छन्हि' मिथिला सांस्कृतिक परिषद्, कलकत्ता' । मुदा ऐ बेर हुनकर प्रयास व्यर्थ जेतन्हि किए से आगाँ स्पष्ट हएत।

पहिल जे हरिमोहन झा ब्राह्मणवादी संस्था आ व्यक्तिक निशानापर रहथि, यात्री नै। रमानाथ झाक दुश्मन रहथि हरिमोहन झा, से ओ हुनकर गैसलाइटिंग केलखिन्ह आ साहित्य अकादेमीमे मैथिलीक प्रवेशक बाद हरिमोहन झा मैथिली लिखनाइ छोड़ि देलखिन्ह, पुरस्कार देबाक तँ कोनो प्रश्ने नै! (विशेष विवरण देखू हमर पोथी Rajdeo Mandal- Maithili Writerमे जे विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर सेहो उपलब्ध अछि) । http://videha.co.in/pothi.htm

महाकवि विद्यापति ठाकुर १३५०-१४३५ (मैथिलीक आदि कवि ज्योतिरीश्वर-पूर्व विद्यापतिसँ भिन्न, संस्कृत आ अवहट्ठमे लेखन), विद्यापति ठक्कुरः विषएवार बिस्फी-काश्यप (राजा शिवसिंहक दरबारी) आ संस्कृत आ अवहट्ठ लेखक। कीर्तिलता, कीर्तिपताका, पुरुष परीक्षा, गोरक्षविजय, लिखनावली आदि ग्रंथ समेत विपुल संख्यामे कालजयी रचना। ई मैथिलीक आदिकवि विद्यापति (ज्योतिरीश्वर पूर्व) सँ भिन्न छथि। चित्रक आधार मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल, कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।

मुदा ई संस्था मिथिला सांस्कृतिक परिषद यात्रीक नजदीकी संस्था रहन्हि। यात्रीजीक नजदीकी रमानाथ झासँ सेहो रहथिन्ह आ साहित्य अकादेमीसँ सेहो रहन्हि। ओ तँ ब्राह्मणवादी संस्था सभक मुख्य अतिथि रहै छला, ब्राह्मणवादी संस्था सभकेँ हरिमोहन झा सँ समस्या रहै यात्रीसँ नै।

तारानन्द वियोगी लग मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर यात्रीक कोनो तरहक आरोपक प्रमाण नै छन्हि, से ओ गपाष्टक शुरू करै छथि आ मोहन भारद्वाजक खचरपनी बला भाषाक प्रवेश करबै छथि। मोहन भारद्वाज आ तारानन्द वियोगी द्वारा मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर खचरपनीक आरोप आ पाण्डुलिपि हरा देबाक आरोप क्रिमिनल एक्ट अछि। मोहन भारद्वाज बा तारानन्द वियोगी लग प्रमाण छन्हि? उत्तर अछि नै। मिथिला सांस्कृतिक परिषदमे आर बहुत रास कमी छै मुदा यात्री आ मणिपद्मक साहित्यकेँ मिथिला सांस्कृतिक परिषद बिना कोनो सरकारी मदतिक प्रकाशित केलक, आ से नैतिकता ने मोहन भारद्वाजमे छन्हि आ ने तारानन्द वियोगीमे। मोहन भारद्वाज तँ माफी मांगैले जीवित नै छथि मुदा जँ तारानन्द वियोगीमे किछुओ नैतिकता बाँकी छन्हि तँ ओ अविलम्ब मिथिला सांस्कृतिक परिषदसँ माफी मांगथि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद पर तारानन्द वियोगी अनेरे समय व्यर्थ कऽ रहल छथि, ओ घोषित ब्राह्मणवादी संस्था छिऐ तहिना जेना चेतना समिति आ विद्यानाथ झा विदित जकर ओ काज सुतरलाक बाद ढाकीक ढाकी प्रशंसा करैत छथि। मुदा ओकर आर्थिक स्थिति एहन नै छै जे चट पाण्डुलिपि दियौ आ पट छापि देत। बलचनमाक लेखक नागार्जुनकेँ ओइ पोथीसँ कोनो समस्या नै रहन्हि नहिये हुनकर पुत्र शोभाकान्त (जकरा यात्रीजी शोभा मिसर कहैत छला) ओइ पोथीकेँ मैथिली पोथी मानै छथि आ तैँ' यात्री समग्र' (राजकमल प्रकाशन) मे ओ संकलित नै अछि। मिथिला सांस्कृतिक परिषद चेतना समिति सन पाइबला संस्था नै अछि, चन्दा भेटै छै तखने ओ पोथी छापै छै, कोनो कंस्पिरेसी थ्योरी लेल कोनो स्थान नै। फेर ओ किशोरीकान्त मिश्रक नवीन प्रिण्टिंग प्रेसमे एकटा कोठली मासमे एक बेर मासिक' बैसार' लेल खोलै छै। तैँ ऐ संस्थाक ब्लैकमेलिंगसँ कोनो सम्मानक आशा सेहो बेकार। तेसर जे ओ बिहारमे नै छै, से बिहारक ब्राह्मण सभ बिहारक वर्तमान राजनीतिकेँ देखैत कने मने डेराइयो जाइत अछि मुदा कलकत्ताक ऐ संस्थाकेँ तकरो भय नै।

आब हुनका मोन पड़ैत छन्हि जे ई समीक्षाक पोथी तँ अछि सुभाष चन्द्र यादवक' गुलो' पर जिनकर पाइपर ओ छहर-महर कऽ रहल छथि तखन ओ गुलोपर घुरैत छथि- मुदा फेर ओ जगदीश प्रसाद मण्डल नाम लेने बिनु (ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवादमे मे नाम नै लेबाक दूटा कारण छै, दू नै तीनटा कारण छै, पहिल साधंश नै हएब, दोसर प्रमाणक अभावमे किछु लोक आदिक बाजि कऽ अपन एजेण्डा रूपी स्टोरी चलायब आ तेसर कारण छै हीन भावना, जे हम नाम लऽ लेबै तँ ओइ व्यक्तिक चलती बढ़ि जेतै, तीनू तीन भिन्न स्थितिमे होइ छै) बाइ मे आबि जाइ छथि- "जेना थोकक हिसाबे मैथिली मे उपन्यास बहराइत अछि.." । ई अछि तारानन्द वियोगीक नव-ब्राह्मणवादी होयबाक एकटा आर प्रमाण, हमरा अलाबे दोसर गएर ब्राह्मण केना साहित्य अकादेमी पुरस्कार लऽ लेलक, हम तँ टैलेण्टेड छी जन्मना, मुदा ओ.. मुदा नाम नै लेब। सएह तँ केदारो कानन केलन्हि जखन ओ सुरेन्द्र झा' सुमन', चन्द्रनाथ मिश्र' अमर', रमानाथ झा, विद्यानाथ झा' विदित', मायानन्द मिश्र आदिक बिनु नाम लेने लिखलन्हि- "बड़का-बड़का ठोप-चानन कयनिहार भाषा कें दूषित करब मानैत छथि। "भऽ सकैए आगाँ जा कऽ हुनकामे हिम्मति एतन्हि। मुदा ऐमे सँ सभ सम्पादक द्वयक करीब छथि/ रहथि, तखन अपनाकेँ कतिआयल कहब लोककेँ कोना अरघत, ई सभ तथ्य इतिहासक शुद्धता लेल अभिलेखित कएल जा रहल अछि। ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद एक्के रङ छल-प्रपंचक सङ एक दोसराकेँ पल्लवित-पुष्पित कऽ रहल अछि, आ दुनू समानान्तर धाराक विरोध करबामे एक दोसराक सहयोगी अछि।

तारानन्द वियोगीक ऐ' गुलो: कला आ भाषा' क भूमिकाक ५ पन्नामे गुलोक विषयमे मात्र ५ पाँती लिखल गेल अछि।

केदार नाथ चौधरी आलेख लिखबामे असमर्थता व्यक्त केलन्हि। मुदा फणीश्वर नाथ रेणुक चिट्ठीक चर्चा नीक लागल।

मंत्रेश्वर झा पन्ना पुरेलन्हि। हुनका गुलो मर्मस्पर्शी लागलन्हि, सटीक चित्रण बुझेलन्हि, मुदा ऐ लेल कागत खर्च करबाक कोनो बेगरता हमरा नै बुझाइत अछि।

गंगानाथ गंगेशक प्रिय कथाकार राजमोहन झा सेहो रहलखिन्ह अछि, सम्पादक द्वय ऐमे एडिट कऽ सकै छला, सरकार जहिया राजमोहन झा कैँ ई दुनू गोटे सम्पादित करता तहिया लिखब, मुदा सुभाषो चन्द्र यादव गंगानाथ गंगेशक प्रिय छथिन्ह से देखि शाइत पाँती नै काटलखिन्ह। मुदा ई पोथी तँ सुभाषो चन्द्र यादवोपर नै छन्हि मात्र हुनकर गुलो पर छन्हि। आ आब अहाँ बुझि गेल हेबै जे ६९ पन्नाक गुलोपर ५ पन्नाक समीक्षा आ २०२ पन्नाक आलेख सम्पादक द्वय कोना पुरेलन्हि। ओना ओ डेढ़ पन्नाक बाद गुलोपर अबै छथि।

शोभाकान्त (प्रायः शोभा मिसर) स्वयं स्वीकार करै छथि जे ओ साहित्यक कोनो विधाक लोक नै छथि, मुदा ओ नीक जकाँ सारांश लिखने छथि।

रामलोचन ठाकुर मिथिला दर्शनमे गुलोकेँ छपने छला, आ से ओ संस्मरण लिखलन्हि, पहिने मिथिलाक विषयमे किछु तथ्य देलाक बाद।

अशोक मूलतः कथाकार छथि से ओ रस लेलन्हि अछि, मुदा समीक्षा नै कऽ सकल छथि। नारायणजी संस्मरण सेहो घोसियेने छथि।

केदार काननक संस्मरण जापानी उपन्यासकार हारुकी मुराकामीक' नोवेलिस्ट एज ए वोकेशन' उपन्यास केना लिखल जाइत अछि, सन लागल। ओना समीक्षाक दृष्टिसँ ऐ मे किछु नै छै, मुदा पाठककेँ ई पाठ सुभाष चन्द्र यादव बा आन उपन्यासकार देथि तँ ओ एकटा नवीन गप हएत।

तारानन्द वियोगी की लिखऽ चाहै छथि हुनका स्वयं तकर ज्ञान नै छन्हि। पन्ना पुरेलासँ हुनकर मतलब रहैत छन्हि, लोक, किछु लोक आदि लिखि कऽ ओ स्कोप बरकरार राखै छथि। रमानाथ झा केर बाद मैथिली समीक्षा बुरबक बाट पकड़लक सँ हम आंशिक रूपमे सहमत छी, रमानाथ झाये सँ मूलधाराक समीक्षा, जइमे तारानन्द वियोगी सेहो सम्मिलित छथि आ हुनकर सहयोगी मोहन भारद्वाज सेहो, (प्रमाण- देखू साहित्य अकादेमी प्रायोजित' मैथिली पत्र पत्रिका' पोथी जइ मे ऐ महानुभाव सभक ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी दृष्टिकोण आर फरिच्छ भऽ गेल अछि, मोहन भारद्वाज मिथिला सांस्कृतिक परिषदपर खचरपनीक आरोप लगबै छथि मुदा सएह ओ सभ ऐ पोथीमे केलनि अछि), बुरबक बाट पकड़लक। (विशेष विवरण देखू हमर पोथी Rajdeo Mandal- Maithili Writerमे जे विदेह आर्काइवमे http://videha.co.in/pothi.htm लिंकपर सेहो उपलब्ध अछि)। एतऽ सेहो तारानन्द वियोगी आ सुभाष चन्द्र यादवक विचारधारा विपरीतता सोझाँ अबैत अछि, सुभाष चन्द्र यादव नित नवल राजकमलमे रमानाथ झा केर समीक्षाकेँ परम्परावादी कहने छथि, आ ईहो जे ओ राजकमल चौधरी संग न्याय नै कऽ सकल छलाह।

रमेश ललित-किसुन-मायानन्द कहि एक्के तराजू पर सभकेँ राखि दै छथि, कतऽ ललित आ कतऽ किसुन आ मायानन्द। मुदा बैलेंस बनेबाक छन्हि नै तँ आलेख छपबे नै करतन्हि, मूलधारामे समीक्षा माने बड़ाइ।

कृष्णमोहन झा' मोहन' फेर सारांश लिखै छथि, वैद्यनाथ झा केँ तँ मैथिली उपन्यासकार सभ नामो नै बुझल छन्हि, कुमार मनीष अरविन्द अखने गुलो समाप्त केने छथि आ समीक्षाक नाम पर ओ बैलेंस बनबै छथि-' उपन्यासक शैली कोनो बेशी उन्नत नै छैक। एकर गढ़नि सेहो बहुत संगठित नै। एक दिस सँ सभटा बात केँ बेरा-बेरी कहि देल गेलैक अछि। सांठबाक कोनो प्रयास नै छैक। मुदा भाषा तेहेन सटीक छैक..। "आ फेर बैलेंस, ई भाषा ईएह भाषा सुच्चा। समानान्तर धाराक मैथिली नै पढ़लासँ सोझे कलम उठा कऽ लिखब आरम्भ कऽ देलासँ हुनका सन लेखक अचम्भित होइते रहैत अछि।

ऐ संग्रहक एकमात्र काजक आलेख अछि विद्यानन्द झा केर "लटकल छी मुदा बाँचल छी: बाँचल रहबाक महाआख्यान, गुलो", केदार कानन, तारानन्द वियोगी आ अनका मुँहपर ओ प्रहार करै छथि जखन ओ कहै छथि जे-"दुखक पॉरनोग्राफी नै छी। "पोथीक क्षीणकाय होयबापर सार्थक टिप्पणी आयल अछि। ई विपन्न वर्गक नै वरन् मिथिलाक महाआख्यान अछि। विद्यानन्द झा केँ आलोचनामे एबाक चाहियनि मुदा मूल धाराबला सभ द्वारा बारि देबाक डरसँ ओ से नै कऽ सकताह, कारण ओ सरल मार्गक अभ्यासी छथि। मुदा ओ जे प्रहार केलन्हि अछि तकर गूँज सम्पादक द्वयकेँ बहुत दिन धरि सुनाइत रहतन्हि।

रमण कुमार सिंह तारानन्द वियोगी सन पेट्रोनाइजिंग करबाक अभ्यासी छथि, आलोचक लोकनि ई सोचताह, हरबिर्रो मचि गेल आ "यदा यदा हि धर्मस्य.." हएत तारानन्द वियोगी आ रमण कुमार सिंहक आगमन हएत आ संसार बचि जायत। आ जे हुनकर आलोचना/ समालोचना करताह से भेला ब्राह्मणवादी। आ अही तरहक लोककेँ हम कहै छ्ऐ नव-ब्राह्मणवादी। ई मुख्यतः पुस्तक परिचय लिखै छथि जकरा ओ समीक्षाक नाम दैत छथि, कवर नीक, कथ्य नीक, सुन्दर चित्रण, भाषा नीक। सभटा बड्ड नीक बड्ड सुन्दर।

नव-ब्राह्मणवादी सभक कन्नारोहटक बीच मुदा अरुण कुमार सिंह लिखै छथि- "१९८३ मे प्रकाशित 'घरदेखिया आ २००९ मे प्रकाशित 'बनैत बिगड़ैत' मैथिली कथा संग्रहक भाषा मादे विद्वान लेखक सँ हुनक मैसूर प्रवासक

दौरान हमर जिज्ञासोपरांत ओ कहने छलाह जे हुनक कथा मे भाषाक पाछु जनपदीय माहौल रहैत अछि, जकरा हम धरतीक माहौल कहैत छी। "से विद्यानन्द झा केर समीक्षा सेहो उघार केलक जकरा हम सम्पादक द्वयक मुँहपर प्रहारक रूपमे वर्णित केलौं।

सतीश वर्माक “मेहनतकश बहुजन समाजक महाकाव्य” मे ओ दुनियाँक सभ इकोनोमिक सिद्धांत के फेल होइत देखबैत छथि। ओ उद्धृत करै छथि-

गुलोक बेटा छोटुआ मुँह मे ऊक देलकै। गुलो कें माटि सँ तोपि देल गेल। कुछ जनीजाति जे ई सब तमाशा देखैत रहै, ओहि मे सँ एगो मुसलमान दोसर मुसलमान सँ बाजल’ ई सब हिन्नू हई कि मुसलमान? आगो दै हइ आ दफनो करइ है। दोसर मुसलमान बाजल‘या अल्लाह! तू देखलहू ना। एक बार गाड़ के ले गेलइ, फेनू से गाड़लकै हइ। कहाँ दुन पैसा भेटतइ। हिन्नुओ के कोनो धरम हई।’ तेसर मुसलमान बाजल’ धरम ले के की होतइ? पैसा होइ हइ त’ बालो-बच्चा गुजर करिहइ।’

आ अपन निर्णय दैत छथि- “कबीर जकाँ समाज संगे धार्मिक-राजनीतिक संवाद सेहो स्थापित करैत छथि। “आ ई निर्णय ठीक अछि, मुल्ला बांग दे बला, पहिने मुस्लिम सुपीरियोरिटी लऽ कऽ एक गोटेक बाजब फेर दोसर द्वारा ओकरा पोलिटिकिली करेक्ट करब, आ ओ दोसर सतीश वर्माक हिसाबे कबीर सुभाष चन्द्र यादव छथि।

अरुणाभ सौरभक’ यातनापूर्ण विपन्नताक यथातथ्” मे फेर कन्नारोहट शुरू। “मैथिली साहित्य मे उपन्यास कम लिखल जा रहल अछि। “भऽ गेल निर्णय जखन कि तथ्य एकर उलट अछि, आइ काल्हि कविताक बाद सभसँ बेशी उपन्यास लिखल जा रहल अछि। मुदा हुनका शंको छन्हि जे कहीं लिखाइतो हेतै तँ से तकरो इन्तजाम- “जौं लिखले गेल अछि त’ पाठकक मोनक कछमछी आ छटपटी सँ सोझे जुड़बा मे बहुत समर्थ नै बुझाएल। “बिनु पढ़ने बिनु अध्ययनक आलेख लिखबामे यएह सभ समस्या छै। दू तीन पन्नाक कन्नारोहटक बाद हिनको मोन पड़ैत छन्हि जे गुलोक विषयमे सेहो लिखबाक अछि। गलती हिनकर नै सम्पादक द्वयक छन्हि जे सम्पादनकेँ मात्र प्रूफ रीडिंग बुझैत छथि। तकर बादो कन्नारोहट खतम नै भेल अछि जे हुनकर अध्ययनक अभावकेँ देखार करैत अछि खास कऽ समानान्तर साहित्यक अध्ययनकेँ।

आशीष चमन लिखैत छथि- “ऐ कथाक जे पृष्ठभूमि अछि से ‘समाजक आखिरी विपन्न आदमी’ कथा सँ आयल छैक ओकर वर्णन हू-ब-हू ओकरे सभक मुँह सँ कएल गेल छैक। “हम पहिनहिये लिखने छी जे गुलोक केदार काननक आमुख गुलोक पाठकेँ बाधित करैत अछि, से बाधिते नै विकृत आ प्रभावित सेहो केलक अछि से आशीष चमनक आलेखसँ देखबामे आओत।

रघुनाथ मुखिया’ गुलोक बहन्ने मैथिली भाषा पर विचार’ करैत छथि मुदा सभटा भार छन्हि सुभाष चन्द्र यादवक कान्ह पर आ समानान्तर धाराक कान्हपर, रघुनाथ मुखिया अपने तारानन्द वियोगी सन’ विशुद्ध’ मैथिली लिखैत रहताह।

तारानंद वियोगीक मोन नै भरल छन्हि, ओ एकटा आर आलेख “पचपनिया मैथिली: एक जमीनी परिचर्चा- फेसबुक पोस्ट आ ताहि पर प्रतिक्रिया आ विवाद” लऽ कऽ अबैत छथि, ओना ओ कोन नोकरी करैत छथि से नै जानि, भरि दिन फेसबुक ओगरने रहैत छथि। मुदा मैथिलीमे फेसबुकपर ओ कोनो डिसकसन करै नै छथि, ओ तुरत्ते कन्ना-खिज्जी करऽ लगैत छथि, जे डिसकसन होइतो छै (मूलधारामे) से तइमे ५-१० टा सँ बेशी कमेण्ट नै, विदेह फेसबुक ग्रुपमे २०० सँ बेशी ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादी आइ. डी. हम सभ बैन केने रही, आ आइक तिथिमे ओ सभ इनैक्टिव अकाउण्ट छै, कारण चोरि पकड़ि लेलिऐ, मुदा ई सभ कहियो एक्टिव मोडमे आबि सकैए, से ऐ स्लीपर सेल सभपर समानान्तर धाराक नजरि छै। मुदा फेरो वएह गप जे ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद कोनो काज तँ करैत नै अछि खाली माहौल बनेबापर विश्वास करैत अछि आ तकरा देखार करबा लेल हम ई अभिलेखित कऽ रहल छी जे ५-७ टासँ बेशी लोक कोनो डिसकसनमे नै रहै छै आ ई प्रतिक्रियाकेँ विवाद कहब आ अपन पीठ अपने ठोकब भेल। आ फेर वएह गप हमरा दोहराबऽ पड़ि रहल अछि- “मुदा सभटा भार छन्हि सुभाष चन्द्र यादवक कान्ह पर आ समानान्तर धाराक कान्हपर, रघुनाथ मुखिया आ तारानन्द वियोगी विशुद्ध मैथिली लिखैत रहताह। “मुदा अपनाकेँ विक्टिम देखायब आ अपनाकेँ पचपनिया मैथिली संग जोड़ब, सुभाष चन्द्र यादवक जे गैसलाइटिंग केलन्हि तकरा संग मिलि प्रपंच आ तइयो अपनाकेँ सुभाष चन्द्र यादवक विचारधाराक कहब, से कतेक झूठ हिनका बाजऽ पड़ैत छन्हि आ तइ लेल कतेक निर्लज्जता चाही, से सभक लेल सम्भव नै। तारानन्द वियोगी टा सँ से सम्भव अछि। ओना ब्राह्मणवादी आ नव-ब्राह्मणवादीक बीचक ई कन्नारोहट अहाँकेँ पढ़बाक चाही। ई दुनू वर्ग स्प्लिट पर्सनेलिटीक शिकार अछि, आपसमे रगड़घस करैत रहैत अछि, आपसमे गारा-गारी करैत रहैत अछि (कारण गरिखर अछि) मुदा समानान्तर धाराक विदेह मैथिली साहित्य आन्दोलनक विरुद्ध ई सभ एक भऽ जाइत अछि। ब्राह्मणवाद आ नव-ब्राह्मणवाद छल-प्रपंचमे तरा-उपरी अछि मुदा दुनू एक दोसराकेँ पल्लवित-पुष्पित करैत रहैत अछि।

आ अन्तमे “पचपनिया मैथिली” मे सुभाष चन्द्र यादव पुनः साहित्य अकादेमी पुरस्कार प्राप्त सम्पादक द्वयपर प्रहार करै छथि जखन ओ लिखैत छथि-

“एक बेर प्रोफेसर इन्द्रकान्त झा फोन केलनि- अहाँ कें साहित्य अकादेमी पुरस्कार पहिनहि भेटि जेबाक चाही छल। अहाँ डिजर्व करैत छी। अहाँक कथाक हम प्रशंसक छी। अहाँक ‘बनैत-बिगड़ैत’ रेस मे शीर्ष पर अछि। मुदा एकर भाषा ठीक नहि अछि। पुरस्कारक लेल अहाँ कें एकटा और संग्रह देबय पड़त, जकर भाषा दोसर हो। “एहि प्रसंग मे उल्लेखनीय तथ्य ई अछि जे ‘बनैत बिगड़ैत’ मे पहिल कथा अभिजात मैथिली आ शेष समस्त कथा पचपनिया मैथिली मे लिखल गेल अछि।

आ समय मोन पड़ल? ई वएह समय छल जखन वएह साहित्य अकादेमीक दल “विदित” क नेतृत्वमे नङटे नाचि रहल छल, आ ओही समय मे तारानन्द वियोगीकेँ वएह दल पुरस्कृत केने छल, हुनकर’ विशुद्ध’ मैथिली भाषापर, आ ओइ विदितक ढाकीक ढाकी प्रशंसा केने छलखिन्ह तारानन्द वियोगी। ओइ “बनैत-बिगड़ैत” क आमुख लिखने छलौं हम, जकर बलि-प्रदान कएल गेल छल।

ओ छथि “काठक बनल लोक” कथाक लेखक जे हम पढ़ने रही १९८३ आ १९८४ मे नौमा आ दसमामे, ओ अड़ल रहता। घरदेखियाक बाद बनैत बिगड़ैत २५ सालक बादो ओ अड़ल रहथि, आ आब गुलो, मडर आ भोट। आ देखियौ लीला, इन्द्रकान्त झा केर गालपर समधानि कऽ प्रहार तखन पड़ल जखन जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ ठेंठी/ पचपनिया वर्तनी पर’ पंगु’ उपन्यास लेल मैथिलीक साहित्य अकादेमीक मूल पुरस्कार २०२१ देल गेल।

डॉ. रमानन्द झा ‘रमण’ अपन नोटबुक मे टिपने छलाह-‘ब्राह्मण कहैत छथि सोइत छी, सोल्हकन कहैत अछि बाभन छी। हम की कही जे की छी?’ एहि टीप मे सोल्हकन लेल जे निरादर व्यक्त भेल अछि, से आर किछु नहि; जातीय विद्वेष आ घृणाक भाषिक अभिव्यक्ति थिक।

सुभाष चन्द्र यादवकेँ उत्तर देलखिन्ह रमानन्द झा’ रमण’ १० दिसम्बर २०२२ केँ हमर विदेह मे’ नित नवल सुभाषचन्द्र यादव (भाग-१)’ ०१ दिसम्बर २०२२केँ ई प्रकाशित भेलाक बाद आ तकर विरोध केलखिन्ह नेपालसँ दिनेश यादव आ समर्थन केलखिन्ह भारतसँ ललितेश मिश्र।

रमानन्द झा’ रमण’ - बिना पढ़ने अमीनी:

खेतक नापी अमीन करैत छथि। अमीनी गीत नहि थिक जे केओ गाबि लेत वा रिरिआ लेत। ओ एक विद्या थिक, बिना अमीनी विद्या सीखने जड़ी-कड़ीक महत्त्व की छैक, से नहि बूझि सकैत छी। एक कड़ी एमहर-ओमहर भेलापर भाइ-भाइमे कपर-फोड़ौअलि भए जाइत अछि। ओहिना भाषाक नापी केनिहारकेँ भाषाशास्त्र वा भाषाविज्ञानक ज्ञान अर्जित करए पड़ैत छनि। ओएह कहि सकैत छथि ई भाषा थिक, ई भाषिका थिक, ई मिश्रभाषा भेल, ई क्रिओल थिक आदि। ओएह कहि सकैत छथि जे उच्चरित भाषा आ लिखित भाषा, सामान्य भाषा आ साहित्यिक भाषा, पात्रक भाषा आ लेखकक भाषामे की अन्तर छैक।

रमानाथ झा मानैत छथि जे’ मिथिला भाषा आजुक भाषा नहि थिक। जकर स्वरूप कालक्रमेँ स्थिर होएत। छओ सए वर्षसँ लिखल जाइत परम्परा एम्हर आबि एहि पचास वर्षमे हिन्दीक प्रभावसँ भ्रष्ट भेल जाइत अछि। लिपि पहिने गेल, आब भाषाक स्वरूप नष्ट होएबा पर अछि। भाषा एक गोटाक थिकैक नहि जे सभ व्यक्ति सभ रंगक लिखत, तखन भाषा रहत नहि। ‘

सामाजिक सम्पत्तिक सुरक्षा आ उपयोगक लेल एक अनुशासन होइत छैक। जेना खेतक पटौनीक लेल पौटी आवश्यक अछि, ओहिना राष्ट्रीय-अन्तरराष्ट्रीय मंचपर भाषाक प्रतिष्ठा आ स्वीकार्यताक लेल पौटीक महत्त्व अछि। मिथिला भाषाक अमीन सभ ई काज कएने छथि।

जॉर्ज अब्रहम ग्रिअर्सन मिथिला भाषाकेँ भाषावैज्ञानिक आधारपर चिन्हि एक स्वतन्त्र भाषा घोषित कए, ओकर भाषिका सभक विशेषता निर्धारित कएलनि। महा वैयाकरण दीनबन्धु झा, म. म. उमेश मिश्र, आचार्य रमानाथ झा, डा. सुभद्र झा, पण्डित श्री गोविन्द झा, डा. रामावतार यादव, उदयनारायण सिंह ‘नचिकेता, योगेन्द्र प्रसाद यादव, डा. सुनील कुमार झा आदि ओहि शास्त्रक अध्ययन कए वैश्विक स्तरपर मिथिला भाषाकेँ व्याप्ति आ प्रतिष्ठा दिऔलनि। किन्तु, सम्प्रति एहन धुक्कर उठल अछि वा उठाओल गेल अछि जे केओ ककरो मोजर नहि दैत अछि। ने ओ पण्डित श्री गोविन्द झाकेँ मानैत छथि आ ने डा. रामावतार यादवकेँ। ओ मैथिलीक कवि छथि, कथाकार छथि, उपन्यासकार छथि, आलोचक छथि, राजनीति प्रेरित सामाजिक कार्यकर्ता छथि, आ सबसँ बढ़ि बिना शास्त्र पढ़ने भाषावैज्ञानिक बनि गेल छथि।

दिनेश यादवक उत्तर देखू:

सर्वप्रथम, भाषा खौका सभके खोजी कयल जाए, निष्कर्ष पर शिघ्र पहुँचबाक आसानी होएत। ब्याकरण चाहि मुदा केहेन, मानक चाहि मुदा निर्धारण कोनाके करी? बभनौटी शैली, भाष्य किंवा मानक आब लोकजन अस्वीकार कए देलैथ। मैथिलीभाषी लोकजन आब पहिने जका निछाह मुर्ख नै रहला, सभ बुज्नुक भऽगेला अछि। हम मैथिली लिखैत आ पढैत छी, मुद्दा हमर बोली, शैली आ भाषिका के मानक जातिवाला महानुभाव लोकैन मान्यता नय दैत छैथ.....! तई अइ तरहे पुरातन सोच, आ दरिद्र मानसिकताके परित्याग करैत नव शिरा सऽ आगा बढबाक जरूरी छैक। आब स्तुति, गणेश परिक्रमा कके पुरस्कृत होमेवाला परिपाटिके अन्त्येष्ठी करैटा पड़त। समाजशास्त्रीय, मनोविज्ञानशास्त्रीय दृष्टिकोण जाधरि नै बनत, ताधरि मैथिली जातिय दर्शन, मान्यता आ विचारके घेराबन्दीमे रहत। जै घेरासऽ मैथिलीके मात्र क्षति आ क्षति होएत। वैज्ञानिक सोच, समान व्यवहार, सर्वजातिय मान्यता, विविध भाषिकासऽ समेटनाइ आदि मैथिलीके हुकहुकी बचेबाक दबाई थिक, एकरा अंगिकार कके आगा बढल जाय त अखनो विलम्भ नै भेल अछि। मैथिली चमकत आ दमकत!

मुदा ललितेश मिश्रक समर्थन भेटल रमानन्द झा’ रमण’ कैँ, मुदा हुनकर कुटिलता, जे ओ एहेन स्वांग करै छथि जे ओ ई सुभाष चन्द्र यादवकैँ नै नवतुरिया/ फेसबुकिया दिया कहि रहल छथि। तैँ हम हुनकर ऐ व्यवहारकैँ “पौराणिक समीक्षा’ क नाम देने छी, मंच सापेक्ष। जेहेन मंच तेहेन समीक्षा, गरुड़ पुराणमे गरुड़ ब्रह्मा-विष्णु-महेशसँ ऊपर आ मत्स्य पुराणमे मत्स्य ब्रह्मा-विष्णु-महेशसँ ऊपर।

ललितेश मिश्रक रमानन्द झा’ रमण’ क समर्थन

... सभहि कें मार्ग दर्शनक अवश्यकता नहि छनि. ओएह जन अपनेक मार्ग दर्शन क'देताह. ओ लोकनि सभ बिषयक वेत्ता स्वयं कें मानैत छथि. कोनो भाषाविद्क हुनका प्रयोजन नहि. मैथिलीक बेस विकास भेलैक अछि. नव ज्ञान संपन्न युग अएलैक अछि. आब रास्ता देखयबाक जरूरति नहि छैक. ज्ञान बखारब गंजन कें आमंत्रित करब होएत.

मुदा हमर मायो कम नै- मैथिलीक लोकोक्तिक किताबमे लिखल रहै- “दस ब्राह्मण दस पेट, दस राड़ एक पेट” तँ ओ सिखेलन्हि जे ई गलत छै, ई ब्राह्मण कहै छै, ब्राह्मण लेल दोसर वर्ग कहै छै- “दस ब्राह्मण एक पेट। “रमानन्द झा’ रमण’ आ ललितेश मिश्रकैँ कोन तरहक शिक्षा भेटल छन्हि नै जनि।

मुदा दुनू गोटे की कऽ रहल छथि से हुनका सभकैँ बुझल छन्हि, आ तकरा एत्तऽ उघार कएल जा रहल अछि। रमानन्द झा’ रमण’ लिखै छथि- ओएह कहि सकैत छथि ई भाषा थिक, ई भाषिका थिक, ई मिश्रभाषा भेल, ई क्रिओल थिक आदि। अहाँकैँ कोनो षडयंत्र ऐमे देखा पड़ैए? तँ देखू ई कोन षडयंत्र अछि।

अंग्रेजी सेहो बाजल जाइए कएह तरहक मातृभाषा आ द्वितीय भाषा केर रूपमे, आ तकर अतिरिक्त कएक तरहक पिडगिन अंग्रेजी आ क्रेयोल अंग्रेजी सेहो छै। पिडगिन अंग्रेजी सेहो दू वर्गमे विभक्त छै- अटलांटिक पिडगिन आ प्रशान्त पिडगिन। अटलांटिक पिडगिन अंग्रेजी पश्चिमी अफ्रीकामे विकसित भेल आ दास-व्यापारक माध्यमसँ वेस्ट इण्डीज आ अमेरिका पहुँचि गेल, मुदा ऐ क्षेत्रमे पिडगिन बाजनहारकैँ मूर्ख आ सुस्त मानल गेल। मुदा से प्रशान्त पिडगिन लेल सत्य नै अछि, ई हवाइ, पापुआ न्यू गिनी आ दोसर ब्रिटिश उपनिवेशमे विकसित भेल, व्यापारक विवशताक कारण, न्यू गिनीमे क्रेयोल ओकर राष्ट्रिय भाषा छै, कारण ई विकसित भऽ गेल, अपन शब्द भण्डार बढ़ा लेलक आ वाक्य संरचना सेहो। आ पिडगिन छिऐ की? ई एकटा संचार माध्यम अछि जे दू तरहक लोकक बीचमे, जे दू विभिन्न भाषा बजैत छथि, संचारक माध्यम बनैत अछि, पिडगिन ककरो मातृभाषा नै अछि। कालान्तरमे पिडगिन किछु लोकक मातृभाषा बनि जाइत अछि, आ तखन ओकरा क्रेयोल कहल जाइत अछि। अंग्रेजी आधारित पिडगिन आ क्रेयोल ब्रिटिश उपनिवेशमे पसरल जतऽ ई अंग्रेज मालिक आ स्थानीय लोकक मध्य संचारक माध्यम बनल। पिडगिन आ क्रेयोलकैँ अंग्रेजीक अमानकीकृत रूप कहल जाइत अछि। ई सभ सीमित व्यवस्था सन अछि, जइमे संरचना आ शब्द भण्डार सेहो सीमित रहैत अछि। आब हम बूझि रहल छी जे अहाँकैँ रमणक अज्ञानतापर हँसी लागि रहल हएत, जे २००० शब्दक शब्द भण्डार आ ५० टा वाक्य संरचनाक आधारबला मैथिलीकैँ मूल आ लाख शब्दसँ ऊपर शब्द भण्डार आ हजारसँ ऊपर वाक्य संरचनाबला समानान्तर धाराबला मैथिलीकैँ क्रेयोल कहि रहल छथि। मुदा अहाँ पेट पकड़ि कऽ बैसल रहू कारण अहाँकैँ रमानन्द झा’ रमण’ आ ललितेश मिश्र अज्ञानतापर आर हँसी छूटयबला अछि।

हवाइ केर पिडगिन

अंग्रेजी-समटाइम्स देयर इज अ गुड रोड.

हवाइ केर पिडगिन- समटेम, गुड रोड गेट

अंग्रेजी- समटाइम्स थेयर आर थिन्ग्स लाइक बेण्ड्स, एंग्ल्स, राइट?

हवाइ केर पिडगिन- समटेम, ओलसेम बेन गेट, एनगुरू गेट, नो?

कैमरून केर पिडगिन

अंग्रेजी- गो.

कैमरून केर पिडगिन- गो. (कोनो परिवर्तन नै)

अंग्रेजी- डॉण्ट गो.

कैमरून केर पिडगिन- नो गो.

अंग्रेजी- दे कैन गो.

कैमरून केर पिडगिन- डेम फिट गो.

अंग्रेजी- दे काण्ट गो.

कैमरून केर पिडगिन- डेम नो फिट गो.

अंग्रेजी- नोबडी केम.

कैमरून केर पिडगिन- नो मैन नो बिन काम.

नाइजीरियन पिडगिन

अंग्रेजी- गवर्नमेण्ट! ऑल आवर रोड्स आर रुइण्ड कम्प्लीटली.

नाइजीरियन पिडगिन- गोफ्रूमेण्ट! ऑल आवर रोड्स डोन यामुटु फिनिस.

अंग्रेजी- प्लीज मेक समबडी कम फ्रॉम द गवर्नमेण्ट ईवन इफ इट इज फ्रॉम कानो.

नाइजीरियन पिडगिन- बिको मेक समबडी गोफूमेण्ट एफेन इ फिट फ्रॉम कानो कम सेफ.

अंग्रेजी- अनीवन हू इज अवलेबल सर, लेट हिम जस्ट गेट समथिंग डन.

नाइजीरियन पिडगिन- अनीवन्स एट ऑल अफलाबुलु सा, मेक इ जुस फाइण्ड समटिन्स डन फॉर.

अंग्रेजी- ऑल दीज रोड्स आर इन अ वोफुल स्टेट.

नाइजीरियन पिडगिन- ऑल दिस रोड डेम वे डन वोवो फिनिस.

चीनक तटीय पिडगिन

अंग्रेजी- ही इज/ वाज वेरी सिक.

चीनक तटीय पिडगिन- ही प्लेण्टी सिक.

अंग्रेजी- आइ एम द चीफ बॉय.

चीनक तटीय पिडगिन- मै ब्लोन्ग नेम्बर- वान बोज.

अंग्रेजी- दिस इज एन एक्सेलेण्ट बुक.

चीनक तटीय पिडगिन- दिस अ नोम्बा वान गुड बुक.

(क्रिस्टल डी.: द इंग्लिश लैंगुएज, पेंगुइन बुक्स, इंगलैण्ड, १९९०)

आब आउ षडयंत्रपर। से रमानन्द झा’ रमण’ कहऽ की चाहै छथि? मालिक नोकरक सम्बन्ध भाषामे, बा पिडगिन मैथिली क्रेयोल मैथिली बनि गेल अछि से? बा ओ किछु नै कहऽ चाहै छथि कारण ऐ विषयपर हुनका कोनो ज्ञान छन्हिये नै, अज्ञानतासँ मात्र दलमलित

करऽ चाहै छथि? ऐ तरहक गपकेँ हमरा गाममे बकथोथी कहल जाइ छै आ नीक नै मानल जाइ छै। आ तेँ रमानन्द झा' रमण' जे बिना पढ़ने अमीनी कऽ रहल छथि आ अपना पक्षमे जे रामावतार यादव, योगेन्द्र प्रसाद यादव, सुनील कुमार झा आदिक नाम गनौने छथि (जकरा दिल्लीमे नेमड्रॉपिंग कहै छै आ नीक नै मानल जाइ छै) से ई सिद्ध करैत अछि जे ओ बिनु हुनकर सभ पोथी पढ़ने बिबलियोग्राफी बनौने छथि, गूगल सर्चमे कीवर्ड दऽ कऽ। योगेन्द्र प्रसाद यादवक तँ अंग्रेजी आलेख विदेहमे सेहो ई-प्रकाशित भेल अछि, सएह पढ़ि लेने रहितथि तँ दृष्टि किछु फरिच्छ भेल रहितन्हि, सुभाष चन्द्र यादवक पक्षमे रामावतार यादवक शोध अछि, तखन बिनु पढ़ने अमीनी के कऽ रहल अछि से स्पष्ट भेल।

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-

मैथिलीक वैयाकरण सभ संस्कृताह आ हिंदिआह व्याकरणिक ढाँचा तैयार कयलनि। ओ सभ दलित मैथिलीक विशिष्टता आ भिन्नता कें विचार-योग्य नहि बुझलनि। डॉ. रामावतार यादव एकमात्र एहन भाषाशास्त्री छथि जे एहि पर थोड़े विचार कयने छथि।

सुभाष चन्द्र यादव पुनः लिखै छथि-

एक बेर अनुग्रह नारायण सिन्हा सामाजिक संस्थान, पटना मे एकटा कार्यक्रम भेल। केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर एहि कार्यक्रमक आयोजन कयने छल। कार्यक्रमक मूल चिन्ता मैथिली भाषाक विकास छल। विकास कोना हो, ताहिपर अनेक वक्ता अपन-अपन वक्तृता देलनि। डॉ. मेघन प्रसाद सेहो अपन विचार रखलनि। हुनक भाषा मे ओतेक आदरसूचकता नहि छलनि, जतेक विद्वत समूह कें अपेक्षा रहनि। फल ई भेल जे हुनक भाषिक स्खलन लेल भाषणक बिच्चहि मे बहुत अशिष्टतापूर्वक हुनकर हँसी उड़ाओल गेल। ई दृश्य हमरा विचलित कयने छल आ एहि तरहक भाषिक असहिष्णुताक प्रतिकार हम तत्क्षण कयने रही।

अही केन्द्रीय भाषा संस्थान, मैसूर क सेमीनारक एकटा आलेख जे मेघन प्रसाद पढ़ने छला, से रमानन्द झा' रमण' क कथित लिटेरेरी एसोशियेसनक पत्रिका' घर बाहर' मे बिनु पहिल पैराग्राफक छपल (ऐ काजमे रमानन्द झा' रमण' उस्ताद छथि), मुदा ओ आलेख अविकल रूपमे विदेहमे बादमे ई-प्रकाशित भेल। आ अहाँकेँ बूझल अछि जे ओइ कुटिलता द्वारा कोन तथ्य सेंसर कएल जेबाक प्रयास छल? मेघन प्रसाद लिखने छला जे ओ कएक बेर साहित्य अकादेमीसँ अनुवाद असाइनमेण्ट लेल इच्छा व्यक्त केने रहथि मुदा साहित्य अकादेमीकेँ हुनकासँ प्रेम छै से कोनो असाइनमेण्ट कहियो नै भेटलन्हि। आब अहाँकेँ बूझऽमे आबि गेल हएत जे मूलधारा आ साहित्य अकादेमी लेल मेघन प्रसाद आ सुभाष चन्द्र यादव किए बारल छथि आ तारानन्द वियोगी किए स्वीकार्य।

सुभाष चन्द्र यादव लिखै छथि-

पाग-दोपटावला मैथिली चल जायत, लेकिन गोलगलावला मैथिली जीबैत रहत।

आ गोलगला बला विद्यापतिक चित्र जे ऐ विनिबन्धमे अहाँ देखलौं से बनाओल गेल विदेह सम्मानसँ सम्मानित पनकलाल मण्डल द्वारा, पदावलीबला विद्यापति, ज्योतिरीश्वर-पूर्वबला विद्यापति, जे अछि विदेहक लोगो।

संस्कृत आ अवहट्ठ बला पाग-दोपटाबला चित्र मिथिला सांस्कृतिक परिषद, कोलकाता द्वारा कोनो कलाकारसँ बनबाओल गेल, आ ओइ कलाकारक नाम ६०-७० सालसँ अज्ञात कारणसँ गुप्त राखल गेल अछि।

सुभाष चन्द्र यादव हमरा हमर पिता मोन पाड़ि देलन्हि- मृत्युक २७ बर्ख बाद, पता नै कतऽ सँ नोर घुरि आयल अछि हमरा आँखिमे-

पिताक सत्यकेँ लिबैत देखने रही स्थितप्रज्ञतामे

तहिये बुझने रही जे

त्याग नै कएल हएत

रस्ता ई अछि जे जिदियाहबला।

माय रतुका पूजा दिआ पुछलकै। औतौका हाल सुनबइ मे रिनियां कए मन नै लागलै। माए कए कहलक-' माय, पैसा दही ने। बबा कए गोली लाबि दइ छिऐ।' (गुलो, उपन्यास २०१५)

१९९५, हम ट्रेनिङ सँ बिना कोनो कारण घर आबि गेलौं, मोन उचटि गेल छल। माय पुछलक ट्रेनिङक विषयमे, ओतुक्का गप करैक हमरा मोन नै भेल। पिताक मोनक विषयमे पुछलिऐ। ओ खाटपर सूतल छथि। ३ बजे चाह पिआबैले उठेबन्हि। खाइले परसल थारी,

हम दोसर थाड़ीसँ झाँपि कऽ राखि देलिऐ, पिता सूतल छथि, रवि दिनुका दुपहरिया। ओ उठता तखन हम खायब। मोन ठीक छन्हि ने। ३ बजे चाह लऽ कऽ पिताकेँ माय उठबैले गेली.. पिता नै उठलथि। (हमरा सङ घटल सत्य घटना, १९९५)

१११. गोपाल झा ‘अभिषेक’ क ‘आउ स्वप्न साझी करी’: साहित्यिक अनुशीलन

सारांश
मैथिली साहित्यक समकालीन परिदृश्यमे गोपाल झा 'अभिषेक' एकटा एहन सशक्त आ प्रखर हस्ताक्षरक रूपमे उभरल छथि, जिनका रचनामे गामक माटिक सोंधगर गंधक संग-संग वैश्विक चेतनाक प्रखर स्वर सुनाइत अछि। हिनक नवीन कविता-संग्रह 'आउ स्वप्न साझी करी' (२०२१) मैथिली काव्य-परम्परामे एकटा मीलक पत्थर थिक, जे पाठकक संवेदनशीलताकें झंकृत करैत ओकरा आत्म-मंथन लेल विवश करैत अछि। अनुप्रास प्रकाशन, मधुबनी द्वारा प्रकाशित एहि संग्रहमे संकलित कविता सभ मात्र शब्दक विन्यास नहि, अपितु अपन समयक विसंगति, मानवीय पीड़ा, राजनैतिक पाखण्ड आ भविष्यक स्वप्नक एकटा प्रामाणिक दस्तावेज थिक।

बीजशब्द: गोपाल · अभिषेक · स्वप्न · साझी · साहित्यिक · अनुशीलन · कविता

गोपाल झा 'अभिषेक'क 'आउ स्वप्न साझी करी': साहित्यिक अनुशीलन

कविक व्यक्तित्व आ काव्य-दर्शन

गोपाल झा 'अभिषेक'क जन्म १५ अप्रैल १९६६ ई० कें मधुबनी जिलाक बिस्फी प्रखण्डक मुरलियाचक गाममे भेलनि। इतिहासक विद्यार्थी रहबाक कारणे हिनक काव्य-दृष्टिमे ऐतिहासिक बोध आ सामयिक यथार्थक सुंदर समन्वय पाओल जाइत अछि। 'आउ स्वप्न साझी करी' सँ पूर्व हिनक एकटा हिन्दी कविता-संग्रह 'एक आदिम गंध की तलाश' (२०११) आ मैथिली कविता-संग्रह 'कइएक अर्थमे' (२०१७) प्रकाशित भऽ चुकल छनि, जाहि सँ हिनक काव्य-शिल्पक परिपक्वता प्रमाणित होइत अछि।

अभिषेकजीक काव्य-दर्शन 'मनुखताइ' कें केंद्रमे राखि कऽ चलैत अछि। हिनका लेल कविता कोनो आसनक वा महंथानक गुण-कीर्तन नहि, अपितु ओ प्रतिरोधी सम्प्रेषणक ओजार थिक। संग्रहक भूमिका 'लक्ष्य धरि पहुच'बैत अछि कविता' मे आलोचक मिथिलेश कुमार झा उचिते लिखने छथि जे अभिषेकजीक कविता पाठककें संवेदनशील बनबैत अछि, जाहि सँ सभ्यता आ संस्कृतिक बिचला खाम्ह 'मनुखताइ' कें बचा कऽ राखल जा सकय।

गोपाल झा 'अभिषेक'क प्रमुख कृति आ परिचय

विवरण जानकारी

जन्म स्थान मुरलियाचक, बिस्फी, मधुबनी

शिक्षा एम०ए० (इतिहास)

मैथिली कविता-संग्रह कइएक अर्थमे (२०१७), आउ स्वप्न साझी करी (२०२१)

हिन्दी कविता-संग्रह एक आदिम गंध की तलाश (२०११)

अप्रकाशित नाट्यकृति मुक्तिपर्व, रूपनगर, एकटा आर अग्नि परीक्षा

सम्मान आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' राष्ट्रीय शिखर साहित्य सम्मान (२०१८)

'आउ स्वप्न साझी करी': शीर्षकक सार्थकता

एहि संग्रहक शीर्षक 'आउ स्वप्न साझी करी' अपनामे एकटा आमंत्रण अछि। ई आमंत्रण छैक एकटा एहन समाजक निर्माण लेल, जतय दुःख-सुख सामूहिक होइक। स्वप्न देखब आ ओकरा साझी करब कविक दृष्टिमे भविष्यक प्रति आश्वस्त रहबाक प्रक्रिया थिक। जखन संसार हिंसा, स्वार्थ आ अलगाववादक अन्हारमे डूमल हो, तखन स्वप्न देखब एकटा बड़ पैघ प्रतिरोध अछि। 'वैह स्वप्न तँ अछि कविता' मे कवि स्पष्ट कहैत छथि जे कविता सपनाकेँ मरि जेबासँ रोकबाक एकटा उपक्रम थिक।

कविता सभक विस्तृत साहित्यिक समीक्षा

संग्रहमे संकलित प्रत्येक कविता अपन कथ्य आ शिल्पमे विशिष्ट अछि। नीचाँ प्रमुख कविता सभक विस्तृत विवेचना कएल जा रहल अछि:

१. मानवीय संवेदना आ करुणाक स्वर

'अंतिम आस': ई कविता न्यूजीलैंडक प्रधानमंत्री जेसिंडा अर्डर्न कें समर्पित अछि। कवि एहिठाम नारीकें करुणाक अंतिम आश्रय मानैत छथि। जखन-जखन संसार ध्वंसक बाट पर चलल अछि, तखन नारीक उपस्थिति रक्षा कवच बनि कऽ सोझाँ आएल अछि। "अंतिम आस जँ जोगेलिऐ / अकारण तऽ नहिये"- ई पंक्ति वैश्विक स्तर पर नारीक नेतृत्व आ ओकर करुणाक महत्ता कें रेखांकित करैत अछि।

'कोना परतारब हे तथागत': मुजफ्फरपुरमे चमकी बोखार सँ मरल बच्चा सभक स्मृतिमे लिखल ई कविता गम्भीर दार्शनिक प्रश्न उठबैत अछि। कवि तथागत बुद्ध सँ पुछैत छथि जे जहिया सांत्वनाक एक मुट्ठी सरिसो कोनो काज नहि आबय, तहिया कोनो माएकें कोना बुझाएल जाय। ई कविता स्पष्ट करैत अछि जे मृत्युक विरुद्ध कोनो चमत्कार नहि, अपितु 'चिकित्सकीय अनुसंधान' आ 'यथोचित संसाधन'क आवश्यकता अछि। व्यवस्थाक पंगुता पर ई एकटा करुण प्रहार अछि।

'दोसरे दिन जकाँ': हैदराबादक प्रियंका रेड्डी हत्याकांडक पृष्ठभूमिमे लिखल ई कविता मानवक भीतर बसल 'भेड़िया'क चित्रण करैत अछि। कविक पीड़ा एहि बातमे अछि जे सभ दिन जकाँ निकलल एकटा लड़की कोना 'चतुर-चण्डाल'क जालमे फसि जाइत अछि। ई कविता मनुष्यताक लज्जित होयबाक क्षणक साक्ष्य थिक।

२. राजनैतिक आ सामाजिक विसंगति

'साहेब': ई कविता मिथिलाक समाजमे व्याप्त जातिवादी मानसिकता पर कड़ा व्यंग्य अछि। झा, मिश्र, पाठक, यादव, पासवान, ठाकुर आदि उपनाम सभक माध्यम सँ कवि ई दर्शबैत छथि जे कोना लोक अपन-अपन जातिक साहेबक मुँह ताकैत अछि। 'साहेब'क पसंद-नापसंद सँ निर्धारित होइत भाग्योदय पर कवि तीक्ष्ण कटाक्ष केलनि अछि।

'पाग': मिथिलाक मान-सम्मानक प्रतीक 'पाग' आजुक समयमे मात्र प्रदर्शनीक वस्तु बनि गेल अछि। कवि सुझाव दैत छथि जे एकरा संग्रहालयमे राखि देल जाय, कारण माथ पर ई आब बेसी काल नहि टिकैत अछि। परम्पराक खोखलापन पर ई एकटा गम्भीर टिप्पणी अछि।

'कार्यकर्ता': राजनैतिक पतनक चित्रण करैत कवि पुछैत छथि जे आब कार्यकर्त्ता कतय छथि? आब तऽ मात्र नेता, दर्शक आ अन्धसमर्थक बचल छथि। "कार्यकर्त्ता माने एकटा लक्ष्य / एकटा संग्रामक समक्ष"- ई परिभाषा आब विस्मृत भऽ गेल अछि।

'सर्वसम्मति बनयबाक क्रममे': जनतंत्रमे सर्वसम्मतिक नाम पर जे वंचना होइत अछि, तकर कवि विरोध करैत छथि। ओकर मानब अछि जे सर्वसम्मति कखनो-कखनो जनतंत्रक कंठ मोकि देबाक एकटा कुटिल चालि थिक।

३. प्रतीक आ बिम्बक नवीनता

'ट्रान्सफर्मर': कवि आधुनिक बिम्बक प्रयोगमे सिद्धहस्त छथि। 'ट्रान्सफर्मर' कवितामे समाजक संतुलित समन्वय कें सुचालक आ कुचालकक माध्यम सँ बुझबैत छथि। चिनमाटिक साधारण कुचालक वस्तु (Insulator) कोना अवांछित प्रवाह सँ समाज कें सुरक्षित रखैत अछि, ई देखब कविक नवीन दृष्टि थिक।

'पहाड़: एकटा संभावना': पहाड़ कें कवि मात्र एकटा अवरोध नहि, अपितु 'स्थापित प्रतिपक्षी' मानैत छथि। जखन कोनो बड़ पैघ विरोध सोझाँ होइत अछि, तखने ओकरा पार करबाक संभावना सेहो जन्म लैत अछि।

'फुकना': ई कविता लोकक खयाली पुलाव आ सपनाक टुटबाक प्रतीक थिक। जखन सभ कलाबाजी मात्र हवाक बले होइत अछि, तखन ओकर टुटब स्वाभाविक छैक।

४. गाम, प्रकृति आ भूगोल

'धार बसबैत रहलए गाम': मिथिलाक नदी आ ओकर धारक बदलबाक प्रक्रिया कें कवि जीवनक निरंतरता सँ जोड़ैत छथि। नदीक धार जतय गाम कें उजाड़ैत अछि, ओतय दोसर गाम सेहो बसाबैत अछि। "धार तँ बसबैत रहलए गाम / आ बसा विदा होइत रहलए" - ई पंक्ति मिथिलाक शाश्वत यथार्थकें उरेहैत अछि।

'पोखरि' (श्रृंखला ५-८): मिथिलाक प्राण पोखरि आब कूड़ा-करकट फेकबाक स्थान बनि गेल अछि। कवि एहि बात पर क्षोभ प्रकट करैत छथि जे प्रशासन आ जनता दूनू एकर प्रति चुप अछि। पोखरिक दुर्गति सँ गामक सभ्यताक अधोगतिक चित्रण कवि केलनि अछि।

'ई छोट-छिन गाछ': ई कविता भविष्यक प्रति कविक आश्वस्त रहबाक भाव अछि। जखन धरि गाछमे पात अछि, तखन धरि जीवनक चेन्ह सुरक्षित अछि।

५. वैश्विक आ दार्शनिक चेतना

'जेरुसलम': ई कविता वैश्विक संघर्षक प्रति कविक चिंता अछि। जेरुसलम ककर होयबाक चाही, एहि प्रश्न सँ ऊपर उठि कऽ कवि 'सभक हक लेल लड़बाक' बात करैत छथि।

'इतिहास कहलक' आ 'इतिहासक इजोतमे': इतिहास कें कवि कोनो रगड़ा वा झगड़ाक साधन नहि मानैत छथि। 'इतिहासक इजोतमे' ओ स्वीकार करैत छथि जे इतिहासक कठघरामे हमही ठाढ़ छी आ अपन गलती कें स्वीकार करब इतिहासक प्रति न्याय थिक।

'नैतिकताक देहरिपर': आधुनिक तकनीक आ मशीनी आँखि (CCTV आदि) कोना मानवक नैतिकता कें ताख पर धऽ देलक अछि, तकर चित्रण एहि कवितामे अछि। मशीनादि लग नैतिकताक कोनो प्रश्न नहि रहि जाइत अछि।

६. आपत्काल आ विस्थापनक व्यथा

'एहि आपत्कालमे' (१-२): ई कविता कोरोना कालक प्रवासी मजदूरक पीड़ाक महाकाव्य थिक। जखन महानगर सभ अपन निर्माता कें 'दूधक माछी' जकाँ निकालि देलक, तखन मजदूरक पएर अपन माटिक लेल कते क्लेश सहि कऽ चलल, तकर मार्मिक वर्णन अछि। "घरे रहू! / घरे रहू! घरे रहूके मंत्र" ओहि लोक लेल कतेक व्यंग्य छल जकर घर महानगरक 'खोली' छल जे किराया नहि देबाक कारणे धकिया देल गेल।

'हमहु रहब एतहि': ई कविता मानवक संग-संग अन्य जीव-जंतुक सेहो एहि धरती पर अधिकारक बात करैत अछि। विकासक नाम पर प्रकृति कें उजाड़ब अपन विनाश कें आमंत्रण देनाइ थिक।

शिल्प, भाषा आ बिम्ब-विधान

गोपाल झा 'अभिषेक'क काव्य-शिल्प अपन कथ्यक अनुरूप अछि। हिनक भाषा 'अकृत्रिम' अछि, जाहिमे कोनो पांडित्य-प्रदर्शनक प्रयास नहि अछि। ओ गामक आम बोलचालक शब्द सभकें एहन ढंग सँ प्रयोग करैत छथि जे ओ विशिष्ट बनि जाइत अछि।

भाषाक वैशिष्ट्य:

पक्ष विशेषता

शब्द चयन अकृत्रिम, प्रचलित आ गामक शब्दावलीक सुंदर प्रयोग 1

छंद अधिकांश कविता मुक्त छंदमे अछि, जे आधुनिक संवेदना कें व्यक्त करबा लेल उपयुक्त अछि

बिम्ब ट्रान्सफर्मर, फुकना, सड़कक खधिया, मेनहोल आदि नवीन बिम्बक प्रयोग

व्यंग्य सामाजिक आ राजनैतिक विसंगति पर तीक्ष्ण आ मारक व्यंग्य

अभिषेकजीक कविताक एकटा बड़ पैघ विशेषता अछि ओकर 'सम्प्रेषणीयता'। ओ जटिल सँ जटिल विषय कें बड़ सरलता सँ पाठक धरि पहुँचैत छथि। हिनक कवितामे 'प्रसाद गुण'क प्रधानता अछि, जे पाठक कें झटपट अपन प्रभावमे लऽ लैत अछि।

कविता संग्रहक विषयगत वर्गीकरण

संग्रहक कविता सभकें अध्ययनक सुविधे लेल नीचाँ देल गेल श्रेणीमे बाँटल जा सकैत अछि:

श्रेणी प्रमुख कविता सभ

मानवीय संवेदना अंतिम आस, कोना परतारब हे तथागत, दोसरे दिन जकाँ, प्रद्युम्न

सामाजिक यथार्थ पाग, साहेब, जाति, भिन्ने बथान, व्यथा-कथा

राजनैतिक चेतना लाक्षागृह, कार्यकर्ता, सर्वसम्मति, अंतिम चरणक चुनाव

प्रकृति आ भूगोल धार बसबैत रहलए गाम, पोखरि, ई छोट-छिन गाछ

प्रेम आ गृहस्थी ताहि बीच, प्रेम संग, गृहस्थी, अहाँक बहन्ने

आधुनिकता आ विसंगति ट्रान्सफर्मर, दिल्ली दर्शन, नैतिकताक देहरिपर, सड़क-संवेद

गम्भीर दार्शनिक आ वैचारिक विन्दु

'आउ स्वप्न साझी करी' संग्रह मात्र कविताक संकलन नहि, अपितु एकटा गम्भीर दार्शनिक विमर्श सेहो अछि।

१. प्रतिरोधक कविता: अभिषेकजीक कविता अन्यायक विरुद्ध 'प्रतिरोधक दृढ़ स्वर' अछि। ओ अन्याय कें सहबाक पक्षमे नहि छथि। 'कोनो देवासुर संग्रामक नहि बनब साक्षी' मे ओ स्पष्ट कहैत छथि जे ओ कोनो थोपल गेल युद्धक हिस्सा नहि बनताह, अपितु केवल 'न्याय-अन्याय' क निकष पर अपन समर्थन तय करताह।

२. स्त्री-चेतना: कवि अपन कवितामे नारीक विचार जानबाक आ ओकर भागीदारी सुनिश्चित करबाक आह्वान करैत छथि। 'एक बेर पूछि तँ लिऔ' कविता नारीक निर्णय-शक्ति कें सम्मान दैत अछि।

३. इतिहास बोध: इतिहासक विद्यार्थी रहबाक कारणे कवि जानैत छथि जे अतीतक गौरव मात्र सँ काज नहि चलत। 'तकरे हो जीर्णोद्धार' मे ओ अनुपयुक्त परंपरा सभ कें त्यागबाक आ उपयुक्त कें सँजोबाक बात करैत छथि।

४. लोकतंत्रक चिंता: 'जनता-फोरम' आ 'अंतिम चरणक चुनावसँ पहिने' जकाँ कविता सभ लोकतंत्रमे होयबाक चीरहरण आ लाक्षागृहक निर्माण पर कवि कें चिन्तित दर्शबैत अछि।

मैथिली साहित्यमे अभिषेकजीक योगदानक मूल्यांकन

मैथिली साहित्यक वर्तमान कालखंडमे गोपाल झा 'अभिषेक' एकटा एहन कवि छथि जे अपन भाषा कें वैश्विक चिन्ता सँ जोड़ैत छथि। जहिआ मैथिली कविता पर आरोप लागल जे ई मात्र गामक दलान आ पोखर धरि सीमित अछि, तहिआ अभिषेकजी जेरुसलम, न्यूजीलैंडक प्रधानमंत्री आ वैश्विक तकनीक कें अपन विषय बनेलनि।

हिनक कविताक शैली विवरणात्मक अछि आ ओ सम्बद्ध विषयमे नीक जानकारी दैत अछि। हिनक पर्यवेक्षण-दृष्टि स्पष्ट छनि आ गामक अराजक स्थितिक सेहो ओकरा गम्भीर परिचय छनि। भाषाक स्तर पर ओ बड़ सजग आ सावधान छथि, जाहि सँ हिनक कवितामे एकटा 'आधुनिक दृष्टि' आ 'विश्व दृष्टि' पाओल जाइत अछि।

उपसंहार

'आउ स्वप्न साझी करी' कविता-संग्रह मैथिली कविताक एकटा उज्ज्वल पक्ष कें सोझाँ अनैत अछि। ई संग्रह कविक संवेदनशीलता, वैचारिक दृढ़ता आ भाषाई कुशलताक परिचायक थिक। अभिषेकजीक कविता सभमे जतय वर्तमानक विसंगति पर कड़गर प्रहार अछि, ततय एकटा नीक भविष्यक लेल स्वप्न देखबाक आ ओकरा साझी करबाक संकल्प सेहो अछि।

'आउ स्वप्न साझी करी': दार्शनिक आ भाषाई मीमांसा

गोपाल झा 'अभिषेक'क ई कृति मात्र संवेदनामक उच्छवास नहि, अपितु शब्द आ अर्थक एकटा जटिल 'संसर्ग' थिक, जतय मिथिलाक स्थानीयता आ वैश्विक चेतना एके ठाम 'समानान्तर' रूप सँ प्रवाहित होइत अछि।

१. गंगेशक नव्य न्याय आ 'अवच्छेदकता'क निकष पर समीक्षा

गंगेश उपाध्याय (१४अम शताब्दी) द्वारा प्रतिपादित नव्य न्यायक मुख्य उद्देश्य छल भाषाक अस्पष्टता कें दूर कऽ ओकरा 'परिष्कृत' करब।

स्वप्नक अवच्छेदकता: संग्रहक शीर्षक 'आउ स्वप्न साझी करी' मे 'स्वप्न' मात्र एकटा काल्पनिक 'विषयता' (contentness) नहि अछि। न्यायशास्त्रक दृष्टि सँ देखल जाय तऽ एहि ठाम स्वप्न 'कर्तृत्व-अवच्छिन्न' (agency-limited) अछि। कविक लेल स्वप्न ओहि 'साध्य'क रूप मे अछि जे 'मनुखताइ' (humanity) रूपी हेतु सँ व्याप्त अछि। जखन कवि कहैत छथि जे "आउ स्वप्न साझी करी", तखन ओ 'स्वप्न' कें वैयक्तिक संकीर्णता सँ मुक्त कऽ ओकरा 'सामूहिकता-अवच्छिन्न' (limited by collectivity) बना दैत छथि।

'ट्रान्सफर्मर' आ 'संसर्गता': अभिषेकजीक कविता 'ट्रान्सफर्मर' मे समाजक संतुलन कें सुचालक आ कुचालकक माध्यम सँ बुझाओल गेल अछि। नव्य न्यायक 'संसर्गता' (relationship) सिद्धांतक अनुसार, समाजक अस्तित्व ओहि 'विशिष्ट' संबंध पर निर्भर अछि जतय 'कुचालक' (साधारण लोक) अवांछित 'प्रवाह' कें रोकबाक 'प्रतियोगी' (counter-positive) बनैत छथि। एहि ठाम उर्जान्वित समाजक 'विशेष्यता' ओहि संतुलित समन्वय मे निहित अछि।

२. हरिमोहन झाजीक 'भाषाई विश्लेषण' (Linguistic Analysis) फ्रेमवर्क

प्रो. हरिमोहन झाक अनुसार शब्दक तीनटा शक्ति होइत अछि: अभिधा, लक्षणा आ व्यंजना।

लक्षणाक प्रयोग: 'साहेव' आ 'पाग' सन कविता मे देखल जा सकैत अछि। जखन कवि 'पाग' कें संग्रहालय मे राखबाक बात करैत छथि, तखन 'पाग' अपन मूल 'अभिधा' (शिरोवस्त्र) कें त्याग कऽ अपन 'लक्ष्यार्थ' (अतीतमुखी जडता) कें प्रकट करैत अछि।

व्यंजनाक प्रखरता: 'अंतिम आस' कविता मे न्यूजीलैंडक प्रधानमंत्रीक प्रसंग मे नारी कें "अंतिम आस" कहब 'प्रयोजनवती लक्षणा' थिक, जाहि सँ 'व्यंजना' ई निकलैत अछि जे वैश्विक संकट मे करुणा एकमात्र रक्षक अछि। हरिमोहन झाजीक 'शाब्दिक बोध'क सिद्धांतक अनुसार, एहि ठाम शब्दक 'शक्ति' पाठक मे एकटा नूतन 'संस्कार' (impression) जागृत करैत अछि।

३. विदेह समानान्तर इतिहास फ्रेमवर्क (गजेन्द्र ठाकुर)

'विदेह'क फ्रेमवर्क साहित्य कें 'सत्ता' आ 'वंचित'क बीचक विचारधारात्मक संघर्षक रूप मे देखैत अछि।

वंचितक स्वर: 'एहि आपत्कालमे' कविता श्रृंखला कोरोना कालक प्रवासी मजदूरक 'समानान्तर इतिहास' कें उरेहैत अछि। जखन मुख्यधाराक इतिहास 'आँकड़ा' लिखैत छल, तखन अभिषेकजीक कविता ओहि 'वंचित'क पीड़ा कें 'वास्तविक शब्दशास्त्र' (actual philology) मे परिवर्तित कऽ रहल छल।

इतिहास बोध: 'इतिहास कहलक' आ 'इतिहासक इजोतमे' कविता मे कवि इतिहास कें कोनो 'झग्गड़क साक्ष्य' नहि, अपितु एकटा 'पुनरुत्थानक नव अध्याय' मानैत छथि। ई 'विदेह'क ओहि दृष्टिक अनुरूप अछि जे मानैत अछि जे ज्ञान आ सत्य 'बनाओल' जाइत अछि (Foucaultian perspective) आ कविता ओहि सत्य कें नव रूप दैत अछि।

४. भारतीय आ पाश्चात्य समीक्षा सिद्धांतक समन्वय

भारतीय काव्यशास्त्र (रस आ ध्वनि): अभिषेकजीक कविता मे 'प्रसाद गुण' प्रधान अछि, जे पाठक कें सहजहि 'अर्थोपलब्धि' करबैत अछि। 'कोना परतारब हे तथागत' मे 'करुण रस' अपन चरमोत्कर्ष पर अछि। पाश्चात्य 'ट्रेजेडी'क विपरीत एहि ठाम करुणा केवल शोक नहि, अपितु 'चिकित्सकीय अनुसंधान'क तार्किक माँग करैत अछि, जे भारतीय 'न्याय' आ पाश्चात्य 'वैज्ञानिक तर्कवाद'क सुंदर मेल थिक।

आधुनिकता बनाम परम्परा: पाश्चात्य समीक्षाक 'मॉडर्निटी' (modernity) अभिषेकजी लग कोनो नकल नहि, अपितु एकटा 'जीवन दृष्टि' थिक। 'पहाड़: एकटा संभावना' कविता मे पहाड़ कें 'स्थापित प्रतिपक्षी' कहब हेगेलियन द्वंद्वात्मकता (Dialectics) कें भारतीय दर्शनक 'धैर्य' सँ जोड़ब थिक।

निष्कर्ष

'आउ स्वप्न साझी करी' काव्य-संग्रह अपन 'शाब्दिक बोध' मे 'अखंड वाक्य स्फोट' जकाँ अछि, जतय प्रत्येक कविता अलग होइतहुँ एकटा पूर्ण 'मनुखताइ'क विमर्ष ठाढ़ करैत अछि। नव्य न्यायक सूक्ष्मता, हरिमोहन झाजीक भाषाई गहनता आ विदेहक समानान्तर ऐतिहासिक दृष्टि एहि पोथी कें मैथिली साहित्यक एकटा 'कालजयी' दस्तावेज सिद्ध करैत अछि।

ई संग्रह मात्र मैथिली पाठक लेल नहि, अपितु कोनो सेहो साहित्यक अनुरागी लेल पठनीय अछि। अभिषेकजीक कविता अपन कथ्य सँ पाठक कें सहजहि जोड़ि लैत अछि आ ओकरा चिंतन करबा लेल बाध्य करैत अछि। संक्षेपमे कहल जाय तऽ 'आउ स्वप्न साझी करी' एकटा एहन 'साक्षी' थिक जे अपन समयक सत्य कें निर्भीकता सँ कहैत अछि।

Works cited

1. बेनीपट्टी परिसरक लेखन-1: मिथिलेश कुमार झा, Maithil Manch; 6 मई 2026 कैं अभिगमित: https://www.maithilmanch.in/

2. विदेह पोथी—विदेह प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका; 6 मई 2026 केँ अभिगमित: https://www.videha.co.in/

सन्दर्भ-सूची एवं आभार

(मैथिली समीक्षाशास्त्र आ मैथिली समीक्षाशास्त्र भाग-२)

सन्दर्भ-सूची

सम्पादकीय टिप्पणी: मूल पाण्डुलिपिमे जाहि स्रोतक प्रकाशन-वर्ष, संस्करण वा पूर्ण प्रकाशकीय विवरण उपलब्ध नहि अछि, ओहि ठाम कोनो अनुमानित विवरण जोड़ल नहि गेल अछि।

रामविलास शर्माक इतिहासबोध सम्बन्धी सभटा पोथी- दिल्ली विश्वविद्यालय।

आर्यभट/ शंकराचार्य/ बासवाचार्य/ अम्बेदकरपर आ आन व्यक्तिपर आ संस्कृतिपर पर- प्रकाशन विभाग/ ने. बु. ट./ साहित्य अकादेमी/ कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत वि. वि./ मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट/ का. सि. संस्कृत वि. वि./ दिल्ली वि. वि./ संस्कृत भारती/ अरविन्द आश्रम/ चौखम्बा/ मोतीलाल बनारसीदास/ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानक अनेक पोथी।

बलदेव उपाध्याय, कपिलदेव द्विवेदी, भारतेन्दु द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठीक संस्कृत आ संस्कृति सम्बन्धी सभटा पोथी।

चारुदेव शास्त्रीक संस्कृत सम्बन्धी पोथी।

किशोर कुणाल, बच्चा यादव, रवीन्द्र भारती, मणिपद्म, वीरेन्द्र झा, मनोज कुमार मिश्र, माखन झा, ओमप्रकाश भारती, विशेश्वर मिश्र, महेन्द्र नारायण राम, बुचरू पासवान आदिक लोकगाथा/ संस्कृति सम्बन्धी आलेख/ पोथी/ भारत-नेपालक लोककथा-गाथा आ मिस्टिक कथा (जेना संकर्षण नाटक लेल हरियाणाक एकटा कारी कुकुरबला लोककथा)/ भरत नाट्य शास्त्र, विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी आ विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) आदिक पोथी सभ।

आभार

लेखक निम्नलिखित व्यक्ति सभक मौखिक/लिखित सामग्री, संवाद आ सहयोग लेल आभार व्यक्त करैत छथि: Kapileshwar Raut, Kapileshwar Sahu, Hemnarayan Sahu, Madan Prasad Sahu, Rajdeo Mandal, Durganand Mandal, Yoganand Jha, Smt. Kamla Chaudhary, Smt. Lalita Jha, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Jagdish Prasad Mandal, Mahendra Narayan Ram, Om Prakash Bharati, Shiv Kumar Jha, Manoj Kumar Karn (Munnaji), Poonam Mandal, Priyanka Jha, Bechan Thakur, Nand Vilas Roy, Jagdish Mallik, Ram Vilas Sahu, Jhameli Mukhiya, Lakshmi Das, Indrakant Mishra (Bauwa Kakka), Direndra Kumar, Shashikant Jha, Shiv Kumar Mishra, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Bacheshwar Jha, Bahadur Ram, Yadunandan Pandit, Bulan Raut, Parmanand Thakur, Manoj Kumar Mandal, Jitendra Yadav, Mohammed Gul Hasan, Umesh Kumar Mahto, Keshav Mahto, Sanjay Kumar Mandal, Sanjeev Kumar Shama, Mihir Jha, Phulo Paswan, Om Prakash Jha, Chandan Jha, Amit Mishra, Sandeep Kumar Safi, Anand Kumar Jha, Kashyap Kamal, Dinesh Mishra, Preeti Thakur, Laxmi Thakur, Swastika Thakur, Madhulika Chaudhary, Buchru Paswan, Tulika Choudhary, Neelima Choudhary, Shreemohan Choudhary, Dukhiya (Durganand) Chaudhary, Panjikar Vidyanand Jha, Vinit Utpal, Jyoti Sunit Chaudhary।

मैथिली लोककथा, संगीत, सांस्कृतिक प्रवासन तथा मिथिलाक अर्थव्यवस्था, समाज आ संस्कृतिक विस्तृत बुझाइमे एहि संग्रह आ संवाद सभसँ सहायता भेटल।

लोककथाकार सभक योगदान विशेष रूपेँ स्मरणीय अछि: Jayram Thakur, Saryug Thakur, Currant Lal, Vishnudev Paswan, Bindeshwar Paswan, Ramdev Ram, Shivan Paswan, Shivchandra Paswan, Beli Roy, Anil Sada, Rajo Sada, Suresh Sada, Rajendra Sada, Jagdish Sada, Chhotelal Sada, Nirmal Sada, Pawan Singh Paswan, Jage Mahto, Jage Raut, Yogendra Yadav, Ganga Ram Mallick, Rambabu Paswan, Ghuran Paswan, Bablu, Shrawan, Dinesh, Lalu, Shanti Devi तथा अनेक आन अलिखित/अप्रसिद्ध परम्परा-वाहक व्यक्ति।

सन्दर्भ-सामग्रीमे दर्शन आ धर्म सम्बन्धी पोथी, बिहार राष्ट्रभाषा परिषदक पत्रिका/पोथी, राष्ट्रीय आ अन्तर्राष्ट्रीय समाचार-पत्रिका, प्राचीन संस्कृत साहित्य, कुन्ताप सूक्त, वेद, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, ऋग्वैदिक, उत्तरवैदिक, उत्तर-उत्तरवैदिक, जैन आ बौद्ध साहित्य; Y. Masih, Motilal Banarasi Dass, Chaukhambha Orientalia तथा आन प्रकाशक; IGNOU, IIM, Bihar State Textbook Publishing Corporation, Bihar/Uttar Pradesh/Madhya Pradesh/Rajasthan Hindi Granth

Akademi, Bihar Sanskrit Akademi, NBT, CIIL, भारत आ नेपालक साहित्य/समाज/श्रम/व्यवसाय-अध्ययन/अन्तर्राष्ट्रीय सम्बन्ध/मानविकी सम्बन्धी पाठ्य-सामग्री; Sangeet Natak Akademi, Delhi आ IGNCA क ऑडियो-वीडियो अभिलेख; तथा Ramashraya Jha Ramrang क संगीत सम्बन्धी पोथी सम्मिलित अछि।

समेकित सन्दर्भ-सूची

दूनू खण्डमे उद्धृत वा स्रोत-पाठमे निर्दिष्ट ग्रन्थ, लेख, डिजिटल स्रोत आ कृति-सन्दर्भक समेकित सूची।

कुणाल। कुसमा-सलहेस आ अन्य छओ गोट नाटक। गाजियाबाद: अंतिका प्रकाशन प्रा. लि., २०२१। ISBN 978-93-88799-77-5।

भरतमुनि। नाट्यशास्त्र।

आनन्दवर्धन। ध्वन्यालोक।

कुन्तक। वक्रोक्तिजीवित।

Aristotle. Poetics.

Abel, Lionel. Metatheatre: A New View of Dramatic Form. New York: Hill and Wang, 1963.

Bakhtin, Mikhail. Rabelais and His World. Translated by Hélène Iswolsky. Cambridge, MA: MIT Press, 1968.

Beauvoir, Simone de. The Second Sex. 1949.

Ben-Zvi, Linda, ed. Theater in Israel. Ann Arbor: University of Michigan Press, 1996.

Bhabha, Homi K. The Location of Culture. London/New York: Routledge, 1994.

Brecht, Bertolt. Brecht on Theatre: The Development of an Aesthetic. Edited and translated by John Willett. London: Methuen, 1964.

Brook, Peter. The Empty Space. London: MacGibbon & Kee, 1968.

Buber, Martin. I and Thou. 1923.

Erikson, Erik H. Identity: Youth and Crisis. New York: W. W. Norton, 1968.

Frankl, Viktor E. Man' s Search for Meaning. 1946.

Fromm, Erich. The Art of Loving. New York: Harper & Brothers, 1956.

Gramsci, Antonio. Selections from the Prison Notebooks. Edited and translated by Quintin Hoare and Geoffrey Nowell Smith. London: Lawrence & Wishart, 1971.

Lukács, Georg. The Historical Novel. London: Merlin Press, 1962.

Nora, Pierre. "Between Memory and History: Les Lieux de Mémoire." Representations 26 (1989): 7–24.

Rozik, Eli. Generating Theatre Meaning: A Theory and Methodology of Performance Analysis. Brighton: Sussex Academic Press, 2008.

Levy, Shimon. The Bible as Theatre. Brighton: Sussex Academic Press, 2002.

Wang Guowei. Renjian Cihua (Remarks on Ci Poetry in the Human World), 1908–1909.

Yeh, Florence Chia-Ying. Seven Lectures on Wang Guowei' s Renjian Cihua. Translated by Maija Bell Samei. Routledge, 2019.

Li Yu. Xianqing Ouji (Casual Expressions of Idle Feeling), 1671.

Arendt, Hannah. The Human Condition. Chicago: University of Chicago Press, 1958.

Ansky, S. The Dybbuk.

Sophocles. Oedipus Rex.

महाभारत। श्रुवावती, सुकन्या–च्यवन आ अष्टावक्र-संबद्ध आख्यान।

सम्पादकीय टिप्पणी: मूल पाण्डुलिपिमे जाहि स्रोतक प्रकाशन-वर्ष, संस्करण वा पूर्ण प्रकाशकीय विवरण उपलब्ध नहि अछि, ओहि ठाम कोनो अनुमानित विवरण जोड़ल नहि गेल अछि।

रामविलास शर्माक इतिहासबोध सम्बन्धी सभटा पोथी- दिल्ली विश्वविद्यालय।

आर्यभट/ शंकराचार्य/ बासवाचार्य/ अम्बेदकरपर आ आन व्यक्तिपर आ संस्कृतिपर पर- प्रकाशन विभाग/ ने. बु. ट./ साहित्य अकादेमी/ कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत वि. वि./ मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट/ का. सि. संस्कृत वि. वि./ दिल्ली वि. वि./ संस्कृत भारती/ अरविन्द आश्रम/ चौखम्बा/ मोतीलाल बनारसीदास/ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानक अनेक पोथी।

बलदेव उपाध्याय, कपिलदेव द्विवेदी, भारतेन्दु द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठीक संस्कृत आ संस्कृति सम्बन्धी सभटा पोथी।

चारुदेव शास्त्रीक संस्कृत सम्बन्धी पोथी।

किशोर कुणाल, बच्चा यादव, रवीन्द्र भारती, मणिपद्म, वीरेन्द्र झा, मनोज कुमार मिश्र, माखन झा, ओमप्रकाश भारती, विशेश्वर मिश्र, महेन्द्र नारायण राम, बुचरू पासवान आदिक लोकगाथा/ संस्कृति सम्बन्धी आलेख/ पोथी/ भारत-नेपालक लोककथा-गाथा आ

मिस्टिक कथा (जेना संकर्षण नाटक लेल हरियाणाक एकटा कारी कुकुरबला लोककथा)/ भरत नाट्य शास्त्र, विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी आ विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) आदिक पोथी सभ।

मूल स्रोतमे उपलब्ध समेकित सन्दर्भ

(कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक आ कुरुक्षेत्रम् अन्तर्मनक भाग-२) खण्ड १-८

रामविलास शर्माक इतिहासबोध सम्बन्धी सभटा पोथी- दिल्ली विश्वविद्यालय। आर्यभट/ शंकराचार्य/ बासवाचार्य/ अम्बेदकरपर आ आन व्यक्तिपर आ संस्कृतिपर पर- प्रकाशन विभाग/ ने. बु. ट./ साहित्य अकादेमी/ कविकुलगुरु कालिदास संस्कृत वि. वि./ मिथिला रिसर्च इंस्टीट्यूट/ का. सि. संस्कृत वि. वि./ दिल्ली वि. वि./ संस्कृत भारती/ अरविन्द आश्रम/ चौखम्बा/ मोतीलाल बनारसीदास/ राष्ट्रिय संस्कृत संस्थानक अनेक पोथी। बलदेव उपाध्याय, कपिलदेव द्विवेदी, भारतेन्दु द्विवेदी, राधावल्लभ त्रिपाठीक संस्कृत आ संस्कृति सम्बन्धी सभटा पोथी। चारुदेव शास्त्रीक संस्कृत सम्बन्धी पोथी। किशोर कुणाल, बच्चा यादव, रवीन्द्र भारती, मणिपद्म, वीरेन्द्र झा, मनोज कुमार मिश्र, माखन झा, ओमप्रकाश भारती, विशेश्वर मिश्र, महेन्द्र नारायण राम, बुचरू पासवान आदिक लोकगाथा/ संस्कृति सम्बन्धी आलेख/ पोथी/ भारत-नेपालक लोककथा-गाथा आ मिस्टिक कथा (जेना संकर्षण नाटक लेल हरियाणाक एकटा कारी कुकुरबला लोककथा)/ भरत नाट्य शास्त्र, विश्विद्यालय प्रकाशन, वाराणसी आ विश्वभारती अनुसन्धान परिषद ज्ञानपुर (वाराणसी) आदिक पोथी सभ।

आभार: मौखिक, लिखित आ क्षेत्रकार्य-स्रोत

लेखक निम्नलिखित व्यक्तित्व आ स्रोतक योगदानक प्रति आभार प्रकट करैत छथि— Kapileshwar Raut, Kapileshwar Sahu, Hemnarayan Sahu, Madan Prasad Sahu, Rajdeo Mandal, Durganand Mandal, Yoganand Jha, Smt. Kamla Chaudhary, Smt. Lalita Jha, Umesh Mandal, Umesh Paswan, Jagdish Prasad Mandal, Mahendra Narayan Ram, Om Prakash Bharati, Shiv Kumar Jha, Manoj Kumar Karn (Munnaji), Poonam Mandal, Priyanka Jha, Bechan Thakur, Nand Vilas Roy, Jagdish Mallik, Ram Vilas Sahu, Jhameli Mukhiya, Lakshmi Das, Indrakant Mishra (Bauwa Kakka), Direndra Kumar, Shashikant Jha, Shiv Kumar Mishra, Ramdeo Prasad Mandal 'Jharudar', Bacheshwar Jha, Bahadur Ram, Yadunandan Pandit, Bulan Raut, Parmanand Thakur, Manoj Kumar Mandal, Jitendra Yadav, Mohammed Gul Hasan, Umesh Kumar Mahto, Keshav Mahto, Sanjay Kumar Mandal, Sanjeev Kumar Shama, Mihir Jha, Phulo Paswan, Om Prakash Jha, Chandan Jha, Amit Mishra, Sandeep Kumar Safi, Anand Kumar Jha, Kashyap Kamal, Dinesh Mishra, Preeti Thakur, Laxmi Thakur, Swastika Thakur, Madhulika Chaudhary, Buchru Paswan, Tulika Choudhary, Neelima Choudhary, Shreemohan Choudhary, Dukhiya (Durganand) Chaudhary, Panjikar Vidyanand Jha, Vinit Utpal, Jyoti Sunit Chaudhary and others whose oral/ written collections of Maithili Folk Tales/ music/ cultural diaspora; and the discussions held with some of them and many others helped author understand the economy, society and culture of Mithila in detail. The author acknowledges the contribution of folktellers like Jayram Thakur, Saryug Thakur, Currant Lal, Vishnudev Paswan, Bindeshwar Paswan, Ramdev Ram, Shivan Paswan, Shivchandra Paswan, Beli Roy, Anil Sada, Rajo Sada, Suresh Sada, Rajendra Sada, Jagdish Sada, Chhotelal Sada, Nirmal Sada, Pawan Singh Paswan, Jage Mahto, Jage Raut, Yogendra Yadav, Ganga Ram Mallick, Rambabu Paswan, Ghuran Paswan, Bablu, Shrawan, Dinesh, Lalu, Shanti Devi and numerous other unsung personalities/ philosophy books/ authors who are the real torch bearers of Mithila' s rich tradition; and; Bihar Rashtrabhasha Parishad journal/ books, national and international news magazines/ newspapers/ ancient Samskrit Literature, the kuntapa hymns, Vedas, Upanishads, Brahmins, and Rg Vedic, Later Vedic, Post-Vedic and Jaina and Buddhist Literature. Books on Philosophy and Religion by Y. Masih/ Motilal Banarasi Dass/ Chaukhambha Orientalia and other publishers/ IGNOU/IIM/ Bihar State Textbook publishing Corporation/ Bihar/ Uttar Pradesh/ Mafhya Pradesh/ Rajasthan Hindi Granth akademi/ Bihar Samskrit Akademi/ Faculty courseware/ NBT/ CIIL books regarding literature/ society/ labour/ business studies/ international relations/ humanities/ Text books of India and Nepal; Audio-video-books archive of Sangeet Natak Akademi, Delhi and IGNCA, books on music by Ramashraya Jha Ramrang..

http://web.krao.kg/2_inostran/english/3.pdf

https://plato.stanford.edu/archives/sum2020/entries/gangesa/

http://videha.co.in/pothi.htm

www.videha.co.in

https://www.facebook.com/groups/videha

http://www.videha.co.in/

http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseProject

http://www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity
http://www.google.co.in/language_tools? hl=en
http://translatewiki.net/wiki/Special: Translate
http: //translatewiki. net/wiki/Project: Translator
http://ultimategerardm.blogspot.com/.../bihari-wikipedia
http://meta.wikimedia.org/.../Requests.../Wikipedia_Maithili
http: //incubator. wikimedia. org/wiki/Wp/mai
http: //translatewiki. net/wiki/MediaWiki: Mainpage/mai
http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py
http://translate.google.com/toolkit/list? hl=en
https://www.google.com/webhp? hl=bh
http://esamaad.blogspot.in/2012/01/blog-post_08.html
http://www.google.com/language_tools? hl=bh
http://www.google.com/language_tools
http://std.dkuug.dk/JTC1/SC2/WG2/docs/n4035.pdf
https://esamaad.blogspot.com/2012/01/blog-post_08.html?fbclid=IwAR2oAS6in4rKo0uC1CK1sX2dM7ivqI_CuF8KFNAbIN7NH12-pTuPKlkdMsE
http://support.google.com/translate/toolkit/bin/answer.py? hl=en&answer=147837
http://translate.google.com/toolkit/list? hl=en#translations/active
http: //www.google.com/transconsole/giyl/chooseActivity? project=gws&langcode=bh
http: //translatewiki. net/wiki/Special: Translate? task=untranslated&group=core-mostused&limit=2000&language=mai
http: //meta. wikimedia. org/wiki/Requests_for_new_languages/Wikipedia_Maithili
http://ultimategerardm.blogspot.com/2011/05/bihari-wikipedia-is-actually-written-in.html
http://translate.twttr.com/welcome
https://translate.google.com/? sl=en&tl=mai&op=translate
https://translate.google.com/about/contribute/
https://books.google.co.in/books? id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA1#v=onepage&q&f=false
https://books.google.co.in/books? id=cTezCU59bJwC&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false
https://books.google.co.in/books? id=3zKudz6wAO8C&lpg=PP1&pg=PP1#v=onepage&q&f=false
https://www.facebook.com/groups/videha/permalink/138489416229195/
https://mai.wikipedia.org/s/kgv
https://mai.wikipedia.org/s/s6h
https://mai.wikipedia.org/s/ipm
https://mai.wikipedia.org/s/ie1
https://mai.wikipedia.org/s/iu1
https://mai.wikipedia.org/s/jc2
https://mai.wikipedia.org/s/jc0
https://mai.wikipedia.org/s/jc3
https://mai.wikipedia.org/s/jc4
https://mai.wikipedia.org/s/jc5
https://mai.wikipedia.org/s/iu7
https://mai.wikipedia.org/s/ion
https://mai.wikipedia.org/s/idz
https://mai.wikipedia.org/s/iex
https://mai.wikipedia.org/s/if1
https://books.google.co.in/books? id=VC-BD5Ad6z4C&lpg=PA1&pg=PA2#v=onepage&q&f=false
https://books.google.co.in/books? id=zmIugpjpOKYC&lpg=PA1&pg=PA600#v=onepage&q&f=false

https://books.google.co.in/books? id=-U04e5FfnTEC&lpg=PA1&pg=PA405#v=onepage&q&f=false

https://youtu.be/nP-nMZpLM1A

https://youtu.be/PeUXBvRExic

http://www.videha.co.in/new_page_90.htm

www.museindia.com

https://www.diorama.in/

https://watch.diorama.in/story-market/

https://watch.diorama.in/story/the-science-of-words/

http://museindia.com/Home/PastIssue

http://www.videha.co.in/archive.htm

http://www.videha.co.in/investigation.htm

http://www.islrtc.nic.in/

https://www.youtube.com/@islrtcnewdelhi4069/playlists

http://rameshkagalkar.appspot.com

https://youtu.be/Jo3T3E20JRM

https://youtu.be/9_A3EK_fV24

https://youtu.be/93BVVsJVUks

https://youtu.be/6ecBHlL_Hu4

https://ncert.nic.in/bs-2021.php

https://empower2021.iiitb.ac.in/paper2021/

https://www.youtube.com/@videha_ejournal

https://youtu.be/gTjPY_ebTfU

https://youtu.be/kEVuF08mYuM

https://youtu.be/IU6o_oNSckQ

https://youtu.be/JTr0w8vVTtA

https://youtu.be/MpX9d-NI7dg

https://youtu.be/XROIdeGqnXk

https://youtu.be/3lxtfz3_R-c

https://youtu.be/2PoOrwsnY88

https://youtu.be/6UWTq5Z9U2c

https://youtu.be/gWw4IQFCZ2w

https://youtu.be/DPKtPI9qJbY

https://youtu.be/vIVr4E5H-6c

https://youtu.be/DhRLfc-uWLA

https://youtu.be/SJAmLreMz4s

https://youtu.be/nW9e5eO6a_E

https://youtu.be/U0SdbM9Qs1w

https://youtu.be/_Gz1Sudph3Q

https://youtu.be/WBHcO-wShJk

https://keyman.com/windows/download.php

https://keyman.com/keyboards? q=tirhuta

https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.tirhuta.exe?
_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074

https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.malar_tirhuta.exe?
_ga=2.26983796.856782072.1678802904-87949676.1676042074

https://downloads.keyman.com/windows/stable/16.0.138/keyman-setup.itrans_devanagari_sanskrit_vedic.exe?
_ga=2.267216455.856782072.1678802904-87949676.1676042074

https://keyman.com/mac/download.php

https://keyman.com/linux/download.php

https://keyman.com/android/
https://keyman.com/iphone-and-ipad/
https://keymanweb.com/
http://videha.co.in/
http://videha.co.in/new_page_89.htm
http://www.videha.co.in/pothi.htm
https://www.videha.co.in/new_page_1.htm
https://www.videha.co.in/new_page_27.htm
https://www.videha.co.in/new_page_28.htm
https://www.videha.co.in/new_page_90.htm
https://www.videha.co.in/gajenthakur.htm
www.videha.co.in/new_page_27.htm
www.videha.co.in/new_page_28.htm
www.videha.co.in/new_page_82.htm
www.videha.co.in/new_page_90.htm
www.videha.co.in/aboutme.htm
https://literariness.org/2016/03/22/deconstruction/
https://ijels.com/upload_document/issue_files/46-IJELS-APR-2019-14-Deconstruction.pdf
https://study.com/academy/lesson/deconstructionism-in-literature-definition-examples-quiz.html
https://ebooks.inflibnet.ac.in/hinp16/chapter/%E0%A4%B5%E0%A4%BF%E0%A4%96%E0%A4%A3%E0%A5%8D%E0%A4%A1%E0%A4%A8%E0%A4%B5%E0%A4%BE%E0%A4%A6/
https://www.youtube.com/watch? v=UyyrgxYXNQc
https://archive.org/download/a-survey-of-maithili-literature/A%20Survey%20of%20Maithili%20Literature.pdf
https://ijirt.org/publishedpaper/IJIRT189645_PAPER.pdf
https://www.scribd.com/document/383738676/dancing-soul-of-mount-everst-english
https://www.khanacademy.org/test-prep/mcat/critical-analysis-and-reasoning-skills-practice-questions/critical-analysis-and-reasoning-skills-tutorial/e/deconstructionism-and-literature
https://www.kannuruniversity.ac.in/media/documents/MA_Hindi.pdf
https://www.nbtindia.gov.in/writereaddata/attachment/friday-july-17-20153-12-53-pmhindi-samwad-may-2015-compressed.pdf
https://testbook.com/ugc-net-hindi/alochana
https://www.maithilmanch.in/
https://www.videha.co.in/
http://www.videha.co.in/new_page_89.htm
http://saketanands.blogspot.com/2009/11/blog-post_12.html

प्रबन्ध · निबन्ध · समालोचना

सिद्धान्त आ अनुप्रयुक्त अध्ययन

एहि विशाल ग्रन्थमे गजेन्द्र ठाकुरक समीक्षा-दृष्टि दुइ खण्डमे संकलित अछि। प्रथम खण्ड — सिद्धान्तमे मैथिली लेल एकटा समग्र समीक्षाशास्त्रक निर्माण कएल गेल अछि, जइमे विहनि कथा, लघुकथा, उपन्यास, बाल-साहित्य, अनूदित साहित्य, पद्य, नाट्य, हाइकू, दोहा-रोला आदि विधाक सैद्धान्तिक आधार, नारी-केन्द्रित समीक्षादृष्टि आ भारतीय-पाश्चात्य समालोचना-परम्पराक तुलनात्मक विवेचन अछि। द्वितीय खण्ड — अनुप्रयुक्त अध्ययनमे ई सिद्धान्त मैथिलीक विशिष्ट कृति आ रचनाकार पर प्रयोग कएल गेल अछि। मार्क्सवाद, संरचनावाद, विखण्डनवाद, उत्तर-आधुनिकतावाद, जादू-वास्तविकतावाद आ भारतीय रस-ध्वनि-अलंकार सिद्धान्तक आलोकमे कएल गेल ई अनुप्रयुक्त समालोचना मैथिली समीक्षाशास्त्रकेँ एकटा नव आयाम दैत अछि।

गजेन्द्र ठाकुर मैथिली भाषाक विशिष्ट कथाकार, समीक्षक आ विदेह ई-पत्रिकाक सम्पादक छथि। हिनक समीक्षा-कर्म मैथिली साहित्यक सैद्धान्तिक आ अनुप्रयुक्त, दुनू आयामकेँ समृद्ध कएने अछि।

www.videha.co.in

विदेह — प्रथम मैथिली पाक्षिक ई-पत्रिका
ISSN 2229-547X
© Gajendra Thakur & Preeti Thakur, 2009, 2026